BIBLIORUM
SACRORUM
TOMUS
TERTIUS.

איוב : א

CAP. I. א

ille vir erat & :ejus nomen Ijob ,Hus terra in fuit Vir
איש היה בארץ־עוץ איוב שמו והיה האיש ההוא 1
ſunt nati Et .malo à recedens & ,Deum timens & ,rectus & ,perfectus
תם וישר וירא אלהים וסר מרע: ויולדו 2
ſeptem ejus *res pecuaria* fuit Et .filiæ tres & ,filii ſeptem ei
לו שבעה בנים ושלש בנות: ויהי מקנהו שבעת 3
juga quingenta & ,camelorum millia tria & ,*pecoris* millia
אלפי־צאן ושלשת אלפי גמלים וחמש מאות צמד־
: valde multum famulitium & ,aſinæ quingentæ & ,*bovis*
בקר וחמש מאות אתונות ועבדה רבה מאד
ibant Et .Orientis filiis omnibus *præ magnus* ille vir eratque
ויהי האיש ההוא גדול מכל־בני־קדם: והלכו 4
, mittebant & : ſuo die *vir* domum convivium faciebant & ejus filii
בניו ועשו משתה בית איש יומו ושלחו
bibendum ad & ,*veſcendum ad* ſuas ſorores tres vocabantque
וקראו לשלשת אחיתיהם לאכל ולשתות
, Jiob mittebat & , convivii dies *circuierunt* cùm ,fuit Et .eis cum
עמהם: ויהי כי הקיפו ימי המשתה וישלח איוב 5
aſcenſiones faciebat aſcendere & ,mane in *manicabat* & ,eos ſanctificabat &
ויקדשם והשכים בבקר והעלה עלות
peccaverunt Forſitan ; Ijob dicebat nam : ipſorum omnium numerum
מספר כלם כי אמר איוב אולי חטאו
Ijob faciebat ſic *: ſuo corde* in Deo *benedixerunt* & , mei filii
בני וברכו אלהים בלבבם ככה יעשה איוב
, Dei filii venerunt & , dies fuit Et .diebus cunctis
כל־הימים: ויהי היום ויבאו בני האלהים 6
.eorum medium in Satan etiam venit & ; *Dominum ſuper ſtandum ad*
להתיצב על־יהוה ויבוא גם־השטן בתוכם:
Satan reſpondit & *? venies* Unde : Satan ad Dominus Dixitque
ויאמר יהוה אל־השטן מאין תבא ויען השטן 7
perambulando à & , *terra in* circumeundo A : dixit & , Domino
את־יהוה ויאמר משוט בארץ ומהתהלך
tuum cor poſuiſti Nunquid : Satan ad Dominus Dixitque *.ea in*
בה: ויאמר יהוה אל־השטן השמת לבך 8
, perfectus vir , terra in *ipſe ſicut* non quòd , Ijob meum ſervum ſuper
על־עבדי איוב כי אין כמהו בארץ איש תם
Satan reſpondit Et ?malo à recedens & , Deum timens ,rectus &
וישר ירא אלהים וסר מרע: ויען השטן את־ 9
Nonne ? Deum Ijob *timens* gratis Nunquid :dixit & ,Domino
יהוה ויאמר החנם ירא איוב אלהים: הלא־ 10
quod omne circa & ,ejus domum circa & ,eum circa ſepem poſuiſti tu
את שכת בעדו ובעד־ביתו ובעד כל־אשר־
erupit ejus *res pecuaria* & ,benedixiſti ejus manuum operi *? circuitu à* ei
לו מסביב מעשה ידיו ברכת ומקנהו פרץ
; ei quod omne *in* tange & ,tuam manum nunc mitte verùm Et .terra in
בארץ: ואולם שלח־נא ידך וגע בכל־אשר־לו 11
.tibi *benedixerit tuam faciem ſuper non ſi*
אם־לא על־פניך יברכך:

Verſio VULG. LAT.

LIBER JOB.

CAP. I.

1 VIr erat in terra Hus, nomine Job, & erat vir ille ſimplex, & rectus, ac timens Deũ,
2 & recedens à malo: Natíque ſunt ei ſeptem filii, et tres filiæ.
3 Et fuit poſſeſſio ejus, ſeptem millia ovium, & tria millia camelorum, quingenta quoque juga boum, et quingentæ aſinæ, ac familia multa nimis: erátque vir ille magn' inter omnes
4 Orientales. Et ibant filii ejus, & faciebant conviviũ per domos, unuſquiſque in die ſuo. Et mittentes vocabant tres ſorores ſuas, ut comederent & bi-
5 berent cum eis. Cúmque in orbem tranſiſſent dies convivii, mittebat ad eos Job, & ſanctificabat illos, conſurgénſque diluculò offerebat holocauſta pro ſingulis. Dicebat enim; Ne fortè peccaverint filii mei, & benedixerint Deo in cordibus ſuis. Sic faciebat Job
6 cunctis diebus. Quâdam autem die, cùm veniſſent filii Dei ut aſſiſterent coram Domino, affuit inter eos etiam Satan.
7 Cui dixit Dominus, Unde venis? Qui reſpondens, ait; Circuivi terram, & perambulavi
8 eam. Dixitque Dominus ad eum; Numquid conſiderâſti ſervum meum Job, quòd non ſit ei ſimilis in terra, homo ſimplex, & rectus, ac timens Deũ,
9 & recedens à malo? Cui reſpondens Satan, ait; Numquid
10 Job fruſtrà timet Deum? Nónne tu vallâſti eum, ac domum ejus, univerſámque ſubſtantiam per circuitum, operibus manuum ejus benedixiſti, & poſſeſſio ejus crevit in terra?
11 Sed extende paululùm manum tuam, & tange cuncta quæ poſſidet, niſi in faciem benedixerit tibi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΙΩ'Β.

ΚΕΦΑ'ΛΑΙΟΝ α

1 † (α) ἌΝθρωπός τις ἦν ἐν χώρᾳ τῇ Αὐσίτιδι, ᾧ ὄνομα Ἰὼβ, † ϗ ἦν ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος (β) ἀληθινὸς, ἄμεμπτος, δίκαιος, θεοσεβὴς, † ἀπεχόμενος ἀπὸ παντὸς πονηροῦ
2 πράγματος. † Ἐγένοντο δὲ αὐτῷ υἱοὶ ἑπτὰ ϗ
3 θυγατέρες (γ) τρεῖς. † Καὶ ἦν τὰ κτήνη αὐτοῦ πρόβατα ἑπτακισχίλια, † κάμηλοι (δ) τρισχίλιαι, † ζεύγη βοῶν πεντακόσια, † (ε) θήλειαι ὄνοι νομάδες πεντακόσιαι, † ϗ ὑπηρεσία πολλὴ σφόδρα, † ϗ ἔργα μεγάλα ἦν αὐτῷ ἐπὶ τῆς γῆς, † ϗ ἦν ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος εὐγενὴς τῶν
4 ἀφ᾽ ἡλίου ἀνατολῶν. † Συμπορευόμενοι δὲ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ πρὸς ἀλλήλους, † (ζ) ἐποιοῦσαν πότον καθ᾽ ἑκάστην ἡμέραν, † συμπαραλαμβάνοντες ἅμα ϗ τὰς τρεῖς ἀδελφὰς αὐτῶν, ἐσθίειν ϗ
5 πίνειν μετ᾽ αὐτῶν. † Καὶ ὡς ἂν συνετελέσθησαν αἱ ἡμέραι τοῦ πότου, † (η) ἀπέστελλεν Ἰὼβ ϗ ἐκαθάριζεν αὐτοὺς ἀνιστάμενος τὸ πρωῒ, † (θ) ϗ προσέφερε περὶ αὐτῶν θυσίας, κατὰ τὸν ἀριθμὸν αὐτῶν, † ϗ μόσχον ἕνα περὶ ἁμαρτίας (ι) περὶ τῶν ψυχῶν αὐτῶν. † Ἔλεγε γὰρ Ἰὼβ, Μή ποτε οἱ υἱοί μου (κ) ἐν τῇ διανοίᾳ αὐτῶν κακὰ ἐνενόησαν (λ) πρὸς Θεόν. † (μ) Οὕτως οὖν
6 ἐποίει Ἰὼβ πάσας τὰς ἡμέρας. † Καὶ ἐγένετο ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, † (ν) ϗ ἰδοὺ ἦλθον οἱ ἄγγελοι τοῦ Θεοῦ παραστῆναι ἐνώπιον τοῦ κυρίου,
7 † ϗ ὁ διάβολος ἦλθεν μετ᾽ (ξ) αὐτῶν. † Καὶ εἶπεν ὁ κύριος τῷ διαβόλῳ, Πόθεν παραγέγονας; † ϗ ἀποκριθεὶς ὁ διάβολος τῷ κυρίῳ, εἶπε, † Περιελθὼν τὴν γῆν ϗ ἐμπεριπατήσας τὴν ὑπ᾽ οὐρανὸν πάρειμι. † Καὶ εἶπεν αὐ-
8 τῷ (ο) ὁ κύριος, † Προσέσχες τῇ διανοίᾳ σου κατὰ (π) τοῦ παιδός μου Ἰὼβ; † ὅτι οὐκ ἔστι (ρ) κατ᾽ αὐτὸν ἐπὶ τῆς γῆς; † ἄνθρωπος ἄμεμπτος, (σ) ἀληθινὸς, θεοσεβὴς, † ἀπεχόμενος
9 ἀπὸ παντὸς πονηροῦ πράγματος; † Ἀπεκρίθη δὲ ὁ (τ) διάβολος, ϗ εἶπεν ἐναντίον τοῦ κυρίου, † Μὴ δωρεὰν Ἰὼβ σέβεται (υ) τὸν κύ-
10 ριον; † Οὐ σὺ περιέφραξας (φ) τὰ ἔξω αὐτοῦ, ϗ τὰ ἔσω τῆς οἰκίας αὐτοῦ, † ϗ τὰ (χ) ἔξω πάντων τῶν ὄντων (ψ) αὐτοῦ κύκλῳ; † τὰ δὲ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτοῦ εὐλόγησας; † ϗ τὰ κτήνη
11 αὐτοῦ πολλὰ ἐποίησας ἐπὶ τῆς γῆς; † Ἀλλὰ ἀπόστειλον τὴν χεῖρά σου, ϗ ἅψαι πάντων ὧν ἔχει· † (⁖) ἦ μὴν εἰς πρόσωπόν σε εὐλογήσει.

JOB.

C A P. I

HOmo quidam erat in (a) regione Auſitide, cui nomen Job: & erat homo ille verax, ſine (b) crimine, juſtus, colens Deũ, abſtinens ab omni mala re. 1
Nati ſunt autē ei filii ſeptem, & filiæ tres. 2
Et erant pecora ejus oves ſepties mille, cameli ter mille, juga boum quingenta, fœminæ aſinæ paſcuales quingentæ: & (c) miniſterium multum valdè, & opera magna erant ei ſuper terram: & erat homo ille (d) nobilis, inter eos qui à Solis ortu. 3
Convenientes autem filii ejus adinvicèm, faciebant convivium per (e) ſingulos dies, aſſumentes ſimul & tres ſorores ſuas, ut comederent, & biberent cum eis. 4
Cúmque (f) conſummati eſſent dies convivii; mittebat Job, et purificabat eos exurgens manè, & offerebat pro eis victimas ſecundùm numerum eorum, & vitulum unum pro peccato, pro animabus eorum. Dicebat enim Job, Ne (g) fortè filii mei in mente ſua cogitaverint mala erga Deum. Sic igitur faciebat Job omnibus diebus.* 5
Et factum eſt ſicut dies hæc; & ecce venerunt (h) angeli Dei, ut ſtarent coram Domino, & diabolus venit (i) cum eis. 6
Et dixit Dominus diabolo, Unde ades? & reſpondens diabolus Domino, dixit; Poſtquàm circuivi terram, & perambulavi eam, quæ ſub cœlo; adſum. 7
Et dixit ei Dominus; Attendiſti mente tuâ ſuper puerum meum Job? quòd non eſt juxta eum in terra? homo (k) ſine crimine, verax, colens Deum, abſtinens ab omni mala re? 8
Reſpondit autem diabolus, & dixit coram Domino; Num gratis Job (l) colit Dominum? 9
Nónne tu munîſti ea quæ extra ipſum, et quæ intra domum ejus, & quæ extrà ex omnibus quæ ſunt in circuitu ejus? opera autem manuum ejus benedixiſti, & pecora ejus multa feciſti ſuper terram? 10
Sed mitte manum tuam, & tange omnia quæ habet: certè (m) in faciem te benedicet. 11

MS. A. Ἰώβ. (α) Ἄνθρωπος ἦν (β) ἄμεμπτος, δίκαιος, ἀληθινὸς, θεοσεβὴς, (γ) τρεῖς. (δ) τρισχίλιοι,) ὄνοι θήλειαι νομάδες πεντακόσιοι, (ζ) ἐποίουν (η) ἀπέστελλεν (θ) προσέφερέν τε θυσίας περὶ αὐτῶν, (ι) ὑπὲρ τῶν ψυχῶν (κ) ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῶν (λ) πρὸς τὸν Θεόν. (μ) οὕτως ἐποίει πάσας τὰς ἡμέρας αὐτῶν. (ν) καὶ ἦλθον (ξ) αὐτῶν περιελθὼν τὴν γῆν, † καὶ ἐμπεριπατήσας τὴν ὑπ᾽ οὐρανὸν Καὶ εἶπεν ὁ κύριος πρὸς τὸν διάβολον, (ο) ὁ θεὸς, (π) τοῦ θεράποντός μου (ρ) ἄνθρωπος ὅμοιος αὐτῷ τῶν ἐπὶ τῆς γῆς; (σ) δίκαιος, ἀληθινὸς, (τ) διάβολος ἐναντίον κυρίου, Μὴ δωρεὰν (υ) τὸν θεόν; (φ) αὐτοῦ τὰ ἔξω, (χ) ἔξωθεν (ψ) αὐτῷ κυκλόθεν; (⁖) εἰ μὴν

תרגום TARGUM.

א

1 2 גבר הוה בארעא דעוץ איוב שמיה והוה גברא ההוא שלים ותריץ דחל מן קדם יי ועדי מן ביש : ואתילידו ליה שבע בנין ותלת בנן : והוה ניתה 3
שבעא אלפין דען מן אלפא לברא ותלתא אלפין דגמליא מן אלפא לכל ברתא וחמש מאה פדנין דתורין לגרמיה וחמש מאה אתנן לגרם אתתיה
ופולחנא סגיעא לחדא והוה גברא ההוא רב בנכסין מכל בני מדנחא : ואזלין בנוי ועבדין שירותא בית גבר יומיה עד משלם יומי שבעא ומשדרין 4
ומזמנין לתלת אחיתהון למיכל ולמשתי עמהון : והוה כד שלימו יומי שירותא ושדר איוב וזמנינון ומקדים בצפרא ומסק עלון סכומי כולהון ארום אמר 5
איוב דלמא חבון בני וארגיזו קדם יי ברעיונהון הכדין יעבד איוב כל יומיא : והוה ביומא דדינא בריש שתא ואתו כתי מלאכיא למקום בדינא 6
קדם יי ואתי לחוד סטנא במציעהון : ואמר יי לסטנא מנן את אתי ואתיב סטנא קדם יי ואמר מן שוט בארעא למבדק בעובדי בני אנשא ומן מהלכא בה : 7
ואמר יי לסטנא אפשר דשוית לבך בעבדי איוב ארום לית דכמיה בארעא דעממי גבר שלים ותריץ דחל מן קדם יי ועדי מן ביש : ואתיב סטנא קדם יי 8 9
ואמר האפשר די למגן איוב דחל מן קדם יי : הלא מימרך טללתא אמטולתיה ואמטול ביתיה ואמטול כל דיליה מן חזור חזור עובדי ידוי ברכתא וניתוי 10
תקיף בארעא : וברם אושיט כען מחת ידך וקרב בכל די ליה אין לא באנפי מימרך ירגזנך : 11

Verſio SYRIACA

* ܟܬܒܐ ܕܐܝܘܒ *

* ܒܫܡ ܐܒܐ ܘܒܪܐ ܘܪܘܚܐ ܩܕܝܫܐ ܚܕ ܐܠܗܐ ܡܫܪܝܢܢ ܠܡܟܬܒ ܟܬܒܐ ܕܐܝܘܒ ܙܕܝܩܐ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

1 * ܓܒܪܐ ܚܕ ܐܝܬ ܗܘܐ ܒܐܪܥܐ ܕܥܘܨ. ܐܝܘܒ ܫܡܗ. ܓܒܪܐ ܗܘܐ ܬܡܝܡ ܘܬܪܝܨ. ܘܕܚܠ ܠܐܠܗܐ ܘܦܪܝܫ
2 ܡܢ ܒܝܫܬܐ. * ܘܐܬܝܠܕܘ ܠܗ ܫܒܥܐ ܒܢܝܢ. ܘܬܠܬ ܒܢܢ. * ܘܗܘܐ ܩܢܝܢܗ ܫܒܥܐ ܐܠܦܝܢ ܥܢܐ.
3 ܘܬܠܬܐ ܐܠܦܝܢ ܓܡܠܐ. ܘܚܡܫ ܡܐܐ ܦܕܢܝܢ ܕܬܘܪܐ. ܘܚܡܫܡܐܐ ܐܬܢܢ. ܘܦܠܚܘܬܐ ܣܓܝܐܬܐ ܛܒ. ܘܓܒܪܐ
4 ܗܘ ܪܒ ܗܘܐ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܡܕܢܚܐ. * ܘܐܙܠܝܢ ܗܘܘ ܒܢܘܗܝ. ܘܥܒܕܝܢ ܡܫܬܝܐ ܒܒܝܬ ܓܒܪ
5 ܒܝܘܡܗ. ܘܡܫܕܪܝܢ ܘܩܪܝܢ ܠܬܠܬ ܐܚܘܬܗܘܢ. ܠܡܐܟܠ ܘܠܡܫܬܐ ܥܡܗܘܢ. * ܘܗܘܐ ܕܟܕ ܫܠܡܘ ܝܘܡܝ
ܡܫܬܝܐ. ܫܕܪ ܐܝܘܒ ܘܩܕܫ ܐܢܘܢ. ܘܩܕܡ ܐܝܘܒ ܒܨܦܪܐ. ܘܐܣܩ ܥܠܘܬܐ ܡܢܝܢ ܟܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܡܪ
6 ܐܝܘܒ. ܕܠܡܐ ܚܛܘ ܒܢܝ. ܘܓܕܦܘ ܠܐܠܗܐ ܒܠܒܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܥܒܕ ܗܘܐ ܐܝܘܒ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ. * ܘܗܘܐ
ܝܘܡܐ. ܘܐܬܘ ܡܠܐܟܐ ܠܡܩܡ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܬܐ ܐܦ ܣܛܢܐ ܒܝܢܬܗܘܢ. ܠܡܩܡ ܩܕܡ ܡܪܝܐ.
7 * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܡܢ ܐܝܟܐ ܐܬܝܬ. ܘܥܢܐ ܣܛܢܐ ܘܐܡܪ ܠܡܪܝܐ. ܢܦܩܬ ܒܐܪܥܐ. ܘܗܠܟܬ ܒܗ.
8 * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܐܘ ܣܡܬ ܠܒܟ ܥܠ ܥܒܕܝ ܐܝܘܒ. ܕܠܝܬ ܐܟܘܬܗ ܒܐܪܥܐ: ܓܒܪܐ ܬܡܝܡ
9 ܘܬܪܝܨ. ܘܕܚܠ ܠܐܠܗܐ. ܘܦܪܝܫ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. * ܘܥܢܐ ܣܛܢܐ ܘܐܡܪ ܠܡܪܝܐ. ܕܠܡܐ ܡܓܢ
10 ܕܚܠ ܐܝܘܒ ܠܐܠܗܐ. * ܐܝܟ ܕܐܓܢܬ ܐܝܕܟ ܥܠܘܗܝ. ܘܥܠ ܒܝܬܗ ܘܥܠ ܒܢܘܗܝ. ܘܥܠ ܟܠܡܕܡ ܕܐܝܬ
11 ܠܗ. ܒܟܠ ܕܘܟ. ܘܥܒܕܐ ܕܐܝܕܘܗܝ ܒܪܟܬ. ܘܩܢܝܢܗ ܣܓܝ ܒܐܪܥܐ. * ܒܪܡ ܦܫܘܛ ܐܝܕܟ
ܘܩܪܘܒ ܒܟܠܡܕܡ ܕܐܝܬ ܠܗ. ܐܢ ܠܐ ܒܐܦܝܟ ܢܓܕܦ.

Verſio ARABICA.

* بسم الآب والابن والروح القدس. وله المجد أبدًا *

* كتاب أيوب الصدّيق *

* الفصل الأول *

1 * كان رجلاً واحدًا بأرض عوص اسمه أيوب. رجل كان صالحًا وصدّيقًا. وخائفًا لله وبعيدًا من السوء *
2 3 * وولد له سبع بنين وثلاث بنات * وكان قنيانه سبعة آلاف من الغنم وثلاثة آلاف جمل وخمسمائة
4 فدّان بقر وخمسمائة أتان وثقلة كثيرة جدًا وكان ذلك الرجل أكبر من جميع بني المشرق * وكان
يذهبون بنوه فيصنعون متكأ في بيت الرجل ليومه * ويبعثون فيدعون ثلاثة أخواتهم ليأكلوا
5 ويشربوا معهم * فكانت إذا عادت أيام المتكأة بعث أيوب فقدّسهم * وبكّر أيوب في الصباح * فأصعد
ذبائح بعدد كلّهم * من أجل أنه قال أيوب * لعلّ بنيّ أخطؤوا وشتموا الله بقلوبهم * هكذا كان أيوب
6 يصنع كلّ الأيام * فكان ذات يوم وإذا بنو الوهيم وقفوا قدّام الرب. وجاء أيضًا الشيطان بينهم ليقف
7 قدّام الرب * فقال الرب للشيطان. من أيّ مكان أتيت. أجاب الشيطان وقال للرب. طفت في الأرض
8 وسلكت فيها * فقال الرب للشيطان. هوذا قد جعلت قلبك على عبدي أيوب. الذي ليس مثله
9 في الأرض رجل صالح مستقيم. ويخاف الله. ويبعد من السوء * فأجاب الشيطان وقال للرب. أباطلًا يخاف
10 الله أيوب * أنت حفظت يدك عليه وعلى بيته وعلى بنيه وعلى كل شي له في كل مكان. وأعمال يديه
11 باركت. وقنيانه أكثرت في الأرض * ولكن ابسط يدك. فاقرب إلى كل شي له. فإنه في وجهك يشتمك *

LIBER JOB.

IN NOMINE PATRIS & FILII
ET
SPIRITUS SANCTI,
unius Dei, aggredimur ſcriptionem libri Job Juſti.

VERSIONIS ARABICÆ

Tranſlatio Latina.

IN
NOMINE
PATRIS & FILII
ET
SPIRITUS SANCTI,
cui laus ſemper.

LIBER JOB JUSTI.

CAP. I.

Erat vir quidam in terra 1
us, cujus nomen Job: vir
erat rectus ac juſtus, & ti-
mens Deum, & remotus à
malo: Cui nati ſunt ſeptem 2
filii, ac tres filiæ: Et fuit 3
ejus poſſeſſio ſeptem millia
ovium, & tria millia came-
lorũ, et quingenta juga bo-
um, & quingentæ aſinæ, &
ſupellectilia multa valdè:
erátque vir ille maximus
omnium filiorum Orientis.
Ibántque filii ejus, & fa- 4
ciebant convivium in domo
uniuſcujuſque viri in die
ſuo, & mittebant & voca-
bant tres ſorores ſuas ut e-
derent & biberent ſecum.
Cúmque reverterentur dies 5
convivii, mittebat Job &
ſanctificabat eos: Et ſur-
gens Job diluculò, eleva-
bat hoſtias juxta numerum
omnium eorum: quoniam
dicebat Job, Fortè filii mei
peccaverunt, & contume-
liis Deum affecerunt in cor-
dibus ſuis. Sic Job facie-
bat omnibus diebus. Fuit- 6
que dies cùm veniſſent filii
Elohim & ſtetiſſent coram
Domino, venit quoque ſatan
inter eos ut ſtaret coram
Domino. Dixitque Domi- 7
nus ad ſatan, Unde veniſti?
Reſpondit ſatan & dixit
Domino, Circuivi terram,
ambulavique in ea. Dixit 8
Dominus ſatani; En jam
poſuiſti cor tuum ſuper ſer-
vum meum Job, cui non eſt
ſimilis in terra, vir rectus
ac juſtus, & timet Deum,
& ſecedit à malo? Re- 9
ſponditque ſatan & dixit
Domino, num fruſtrà timet
Deum Job? Tu ſervâſti 10
manum tuam ſuper eum, &
ſuper domum ejus, & ſu-
per filios ejus, & ſuper o-
mne quod habet in omni
loco, & opera manuum e-
jus benedixiſti, & poſſeſſio-
nem ejus multiplicâſti in
terra, Sed extende ma- 11
num tuam, & tange omne
quod habet; certè in fa-
cie tua te conviciis affi-
ciet.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT. I.

Vir erat in terra *Us* nomine Job, & erat vir ille perfectus & rectus, timens Dominum, & recedens à malo. Et nati ſunt ei ſeptem filii, & tres filiæ. Et fuit poſ- 1 2 3
ſeſſio ejus ſeptem millia ovium, *mille ſingulis filiis*, & tria millia camelorum, *mille ſingulis filiabus*, & quingenta juga boum *ſibimetipſi*, & quingentæ aſinæ *pro*
uxore ſua, & agricultura multa: erátque vir ille dives ſuper omnes filios orientales. Et ibant filii ejus & faciebant convivium per domos, unuſquiſque in die ſuo, 4
donec complerentur dies ſeptem: & mittebant, & *invitabant* tres ſorores ſuas, ut comederent & biberent cum eis. Et cùm *peractæ eſſent* dies convivii, mittebat Job, 5
& invitabat eos, & ſurgebat diluculo, & offerebat holocauſta juxta numerum omnium eorum; quia dicebat Job, Ne fortè peccaverint filii mei, & *provocaverint*
Dominum in *animis* ſuis: ſic faciebat Job cunctis diebus. Et fuit *dies* judicii *in principio anni*, & venerunt catervæ angelorum ut ſtarent *in judicio* coram Domino: 6
& venit etiam Sathan inter eos, ut ſtaret coram Domino. Et dixit Dñs ad Sathanam, Unde venis? & *reſpondit* Sathan coram Dño, & *dixit*; A *circumeundo* in terra, 7
ad ſcrutandum opera filiorum hominis, & ambulando per eam. Et dixit Dominus ad Sathanam, Nunquid poſuiſti cor tuum *in* ſervum meum Job, quòd non eſt ſimilis 8
ei in terra *gentium*, vir perfectus & rectus, timens à facie Domini & recedens à malo? Et reſpondit Sathan coram Domino, & ait, Nunquid gratis timet Job coram 9
Domino? Nonne *verbo tuo* protexiſti *circa* eum & *circa* homines domus ejus, & *circa* omnia quæ habet per circuitum? operibus manuum ejus benedixiſti, & *poſ-* 10
ſeſſiones ejus *creverunt* in terra. Veruntamen extende nunc *plagam manus tuæ*, & *tange* omnia quæ poſſidet, *ſi non ad faciem verbi tui provocabit te.* 11

איוב : ב

quod omne Ecce :Satan ad DOMINUS dixit Et
12 וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־הַשָּׂטָן הִנֵּה כָל־אֲשֶׁר־
: tuam manum mittas ne eum in tantùm : tua manu in *ei*
לוֹ בְּיָדֶךָ רַק אֵלָיו אַל־תִּשְׁלַח יָדֶךָ
; dies fuit Et .DOMINI *faciebus cum* à Satan est egressus &
וַיֵּצֵא הַשָּׂטָן מֵעִם פְּנֵי יְהוָה׃ 13 וַיְהִי הַיּוֹם
sui fratris domo in vinum *bibentes & comedentes* ejus filiæ & ,ejus filii &
וּבָנָיו וּבְנֹתָיו אֹכְלִים וְשֹׁתִים יַיִן בְּבֵית אֲחִיהֶם
Boves : dixit & , Ijob ad venit nuncius Et .primogeniti
הַבְּכוֹר׃ 14 וּמַלְאָךְ בָּא אֶל־אִיּוֹב וַיֹּאמַר הַבָּקָר
.eorum *manus super pascentes* asinæ & , *arantes fuerunt*
הָיוּ חֹרְשׁוֹת וְהָאֲתֹנוֹת רֹעוֹת עַל־יְדֵיהֶם׃
percusserunt pueros & , eos *cepit* & , Seba *est delapsa* Et
15 וַתִּפֹּל שְׁבָא וַתִּקָּחֵם וְאֶת־הַנְּעָרִים הִכּוּ
.tibi *nunciandum ad* ,ego solus ,ego tantùm evasi & ; gladii *os ad*
לְפִי־חָרֶב וָאִמָּלְטָה רַק־אֲנִי לְבַדִּי לְהַגִּיד לָךְ׃
Dei Ignis : dixit & , venit *hic* & , loquente illo Adhuc
16 עוֹד זֶה מְדַבֵּר וְזֶה בָּא וַיֹּאמַר אֵשׁ אֱלֹהִים
: eos *edit* & , pueris in & , *pecore in* est succensus &,cœlo de cecidit
נָפְלָה מִן־הַשָּׁמַיִם וַתִּבְעַר בַּצֹּאן וּבַנְּעָרִים וַתֹּאכְלֵם
illo Adhuc .tibi *indicandum ad* , ego solus ,ego tantùm evasi &
וָאִמָּלְטָה רַק־אֲנִי לְבַדִּי לְהַגִּיד לָךְ׃ 17 עוֹד זֶה
tria posuerunt *Chasdim* : dixit & , venit *hic* & , loquente
מְדַבֵּר וְזֶה בָּא וַיֹּאמַר כַּשְׂדִּים שָׂמוּ שְׁלֹשָׁה
& , eos tulerunt & , camelos super *vastaverunt* & , *capita*
רָאשִׁים וַיִּפְשְׁטוּ עַל־הַגְּמַלִּים וַיִּקָּחוּם וְאֶת־
, ego tantùm evasi & : gladii *os ad* percusserunt pueros
הַנְּעָרִים הִכּוּ לְפִי־חָרֶב וָאִמָּלְטָה רַק־אֲנִי
: dixit & ,venit *hic* & ,loquente illo Adhuc .tibi *indicandum ad*,ego solus
לְבַדִּי לְהַגִּיד לָךְ׃ 18 עַד זֶה מְדַבֵּר וְזֶה בָּא וַיֹּאמַר
sui fratris domo in vinum *bibentes & comedentes* tuæ filiæ & , tui Filii
בָּנֶיךָ וּבְנוֹתֶיךָ אֹכְלִים וְשֹׁתִים יַיִן בְּבֵית אֲחִיהֶם
, desertum trans à venit magnus ventus ecce Et .primogeniti
הַבְּכוֹר׃ 19 וְהִנֵּה רוּחַ גְּדוֹלָה בָּאָה מֵעֵבֶר הַמִּדְבָּר
, pueros super ceciditque , domus angulos quatuor *in tetigit* &
וַיִּגַּע בְּאַרְבַּע פִּנּוֹת הַבַּיִת וַיִּפֹּל עַל־הַנְּעָרִים
.tibi *indicandum ad*,ego solus ,ego tantùm evasi & : sunt mortui &
וַיָּמוּתוּ וָאִמָּלְטָה רַק־אֲנִי לְבַדִּי לְהַגִּיד לָךְ׃
; suum caput totondit & , suum pallium scidit & , Ijob surrexit Et
20 וַיָּקָם אִיּוֹב וַיִּקְרַע אֶת־מְעִלוֹ וַיָּגָז אֶת־רֹאשׁוֹ
sum egressus Nudus : dixit Et ; *se incurvavit* &,terram in se prostravit &
21 וַיִּפֹּל אַרְצָה וַיִּשְׁתָּחוּ׃ וַיֹּאמֶר עָרֹם יָצָתִי
DOMINUS : illuc revertar nudus & , meæ matris utero ex
מִבֶּטֶן אִמִּי וְעָרֹם אָשׁוּב שָׁמָּה יְהוָה
.benedictum DOMINI nomen sit : *cepit* DOMINUS & ,dedit
נָתַן וַיהוָה לָקָח יְהִי שֵׁם יְהוָה מְבֹרָךְ׃
insulsum *dedit* nec , Ijob peccavit non hoc omni In
22 בְּכָל־זֹאת לֹא־חָטָא אִיּוֹב וְלֹא־נָתַן תִּפְלָה
.Deo
לֵאלֹהִים׃

CAP. II. ב

super standum ad , Dei filii venerunt & , dies fuit Et
1 וַיְהִי הַיּוֹם וַיָּבֹאוּ בְּנֵי הָאֱלֹהִים לְהִתְיַצֵּב עַל־
standum ad,eorum medium in Satan etiam venit & ; DOMINUM
יְהוָה וַיָּבוֹא גַם־הַשָּׂטָן בְּתֹכָם לְהִתְיַצֵּב
, Ubi : Satan ad DOMINUS Dixitque .*DOMINUM super*
2 עַל־יְהוָה׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־הַשָּׂטָן אֵי
: dixit & , DOMINO Satan respondit & ? *venies* unde
מִזֶּה תָּבֹא וַיַּעַן הַשָּׂטָן אֶת־יְהוָה וַיֹּאמַר
.*ea in* perambulando & , *terra in* circumeundo A
מִשֻּׁט בָּאָרֶץ וּמֵהִתְהַלֵּךְ בָּהּ׃

Versio VULG. LAT.

12 Dixit ergò Dominus ad Satan; Ecce, universa quæ habet, in manu tua sunt: tantùm in eum ne extendas manum tuam. Egressúsque est Satan à facie 13 Domini. Cùm autem quadam die filii & filiæ ejus comederent & biberent vinũ in domo 14 fratris sui primogeniti, Nuntius venit ad Job, qui diceret; Boves arabant, & asinæ pasce15 bantur juxta eos, Et irruerunt Sabæi, tulerúntque omnia, & pueros percusserunt gladio, & evasi ego sol° ut nuntiarẽ tibi. 16 Cúmque adhuc ille loqueretur, venit alter, & dixit; Ignis Dei cecidit è cœlo, & tactas oves puerósque consumpsit, & effugi ego solus ut nuntiarem 17 tibi. Sed & illo adhuc loquente, venit alius, & dixit; Chaldæi fecerunt tres turmas, & invaserunt camelos, & tulerunt eos, necnon & pueros percusserunt gladio, & ego fugi sol° ut nun18 tiarem tibi. Adhuc loquebatur ille, & ecce alius intravit, & dixit; Filiis tuis & filiabus vescentibus & bibentibus vinum in domo fratris sui pri19 mogeniti, Repentè ventus vehemens irruit à regione deserti, & concussit quatuor angulos domûs, quæ corruens oppressit liberos tuos, & mortui sunt, et effugi ego solus ut nuntiarem 20 tibi. Tunc surrexit Job, & scidit vestimenta sua, & tonso capite corruens in terram, ad21 oravit, Et dixit; Nudus egressus sum de utero matris meæ, & nudus revertar illuc: Dominus dedit, Dominus abstulit: sicut Domino placuit, ita factum est: sit nomen Do22 mini benedictum. In omnibus his non peccavit Job labiis suis, neque stultum quid contra Deum locutus est.

CAP. II.

1 FActum est autem, cùm quadam die venissent filii Dei, & starent coram Domino, venisset quoque Satan inter eos, & 2 staret in conspectu ejus, Ut diceret Dominus ad Satan; Unde venis? Qui respondens ait; Circuivi terram, & perambulavi eam.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

12 † (ω) Τότε εἶπεν ὁ κύριος τῷ διαβόλῳ, † Ἰδοὺ πάντα ὅσα ἐστὶν αὐτῷ, (α) δίδωμι ἐν τῇ χειρί σου, † ἀλλ' αὐτοῦ μὴ ἅψῃ. † Καὶ ἐξῆλθεν ὁ διάβολος (β) παρὰ τοῦ κυρίου. 13 † Καὶ ἦν ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, † οἱ υἱοὶ Ἰὼβ καὶ αἱ θυγατέρες αὐτοῦ (γ) ἔπινον οἶνον † ἐν τῇ οἰκίᾳ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτῶν τοῦ πρεσβυτέρου. 14 † Καὶ ἰδοὺ ἄγγελος ἦλθε πρὸς Ἰὼβ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, † Τὰ ζεύγη τῶν βοῶν ἠροτρία, † καὶ αἱ θήλειαι 15 ὄνοι ἐβόσκοντο ἐχόμεναι αὐτῶν, † Καὶ ἐλθόντες οἱ αἰχμαλωτεύοντες ᾐχμαλώτευσαν (δ) αὐτάς, † καὶ τοὺς παῖδας (ε) ἀπέκτειναν ἐν μαχαίραις· σωθεὶς δὲ ἐγὼ μόνος ἦλ16 θον τοῦ ἀπαγγεῖλαί σοι. † Ἔτι τούτου λαλοῦντος, ἦλθεν ἕτερος ἄγγελος (ζ), καὶ εἶπεν πρὸς Ἰὼβ, † Πῦρ ἔπεσεν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ (η), † καὶ κατέκαυσε τὰ πρόβατα, καὶ τοὺς ποιμένας (θ) κατέφαγεν ὁμοίως· † (ι) σωθεὶς δὲ ἐγὼ μό17 νος ἦλθον τοῦ ἀπαγγεῖλαί σοι. † Ἔτι τούτου λαλοῦντος, (κ) ἦλθεν ἕτερος ἄγγελος, † καὶ εἶπε πρὸς Ἰὼβ, Οἱ ἱππεῖς ἐποίησαν ἡμῖν (λ) κεφαλὰς τρεῖς, καὶ ἐκύκλωσαν τὰς καμήλους, καὶ ᾐχμαλώτευσαν αὐτάς, † καὶ τοὺς παῖδας ἀπέκτειναν ἐν μαχαίραις· † (μ) ἐσώθην δὲ ἐγὼ μόνος, καὶ ἦλθον τοῦ ἀπαγγεῖλαί σοι. 18 † Ἔτι τούτου λαλοῦντος, ἄλλος ἄγγελος ἔρχεται (ν) λέγων τῷ Ἰὼβ, † Τῶν υἱῶν σου καὶ τῶν θυγατέρων σου † ἐσθιόντων καὶ πινόντων (ξ) παρὰ † τῷ ἀδελφῷ αὐτῶν τῷ πρεσβυ19 τέρῳ, † Ἐξαίφνης πνεῦμα μέγα (ο) ἐπῆλθεν ἐκ τῆς ἐρήμου, † καὶ ἥψατο τῶν τεσσάρων γωνιῶν τῆς οἰκίας, † καὶ ἔπεσεν ἡ οἰκία ἐπὶ τὰ παιδία σου, καὶ ἐτελεύτησαν· (π) ἐσώθην δὲ ἐγὼ μόνος, καὶ ἦλθον τοῦ ἀπαγ20 γεῖλαί σοι. † Οὕτως (ρ) ἀναστὰς Ἰὼβ ἔρρηξε τὰ ἱμάτια ἑαυτοῦ, † καὶ ἐκείρατο τὴν κόμην τῆς (σ) κεφαλῆς, † καὶ πεσὼν χαμαί, 21 προσεκύνησε (τ), Καὶ εἶπεν, † Αὐτὸς γυμνὸς ἐξῆλθον ἐκ κοιλίας μητρός μου, γυμνὸς καὶ ἀπελεύσομαι ἐκεῖ· † ὁ κύριος ἔδωκεν, ὁ κύριος ἀφείλατο· † ὡς τῷ κυρίῳ ἔδοξεν, (υ) οὕτως ἐγένετο· † εἴη τὸ ὄνομα κυρίου (φ) εὐλο22 γημένον. † Ἐν τούτοις πᾶσι τοῖς συμβεβηκόσιν αὐτῷ (χ) οὐδὲν ἥμαρτεν Ἰὼβ ἐναντίον τοῦ κυρίου· † καὶ οὐκ ἔδωκεν ἀφροσύνην τῷ θεῷ.

Tunc dixit Dominus diabolo; Ecce, omnia quæcunque sunt ei, do in manum tuam: sed ipsum ne tetigeris. Et exivit diabolus à Domino. 12

Et erat sicut dies hec, filii Job, & filiæ ejus bibebant vinum in domo fratris sui senioris. 13

Et ecce nuntius venit ad Job, & dixit ei; Juga boum arabant, & fœminæ asinæ pascebantur conjunctæ eis, 14

Et (n) venientes prædones prædati sunt eas, & pueros interfecerunt in gladiis: salvatus autem ego solus veni ut annuntiarem tibi. 15

Adhuc (o) isto loquente, venit alius nuntius, & dixit ad Job; Ignis (p) cecidit de cœlo, & combussit oves, & pastores devoravit similiter: salvatus autem ego solus veni ut annuntiarem tibi. 16

Adhuc isto loquente venit alius nuntius, & dixit ad Job; (q) Equites fecerunt nobis capita tria, & circumdederũt camelos, et ceperunt eas, et pueros occiderunt in gladiis: salvatus autem sum ego solus, & veni ut annuntiarem tibi. 17

Adhuc isto loquente, alius nuntius advenit, dicens Job; Filiis tuis & filiabus tuis manducantibus, & bibentibus apud fratrẽ suum seniorem, 18

Repentè (r) spiritus magnus irruit è deserto, & tetigit quatuor angulos domûs, & cecidit domus super parvulos tuos, & mortui sunt: salvatus autem sum ego solus, & veni ut annuntiarem tibi. 19

Sic exurgens Job conscidit (s) vestimenta sua, et totondit comam (t) capitis, et procumbens humi adoravit, 20

Et dixit; Ipse nudus egress° sum de utero matris meæ, nudus et revertar illuc: Dominus dedit, Dominus abstulit: (u) sicut Domino placuit; ita factum est: sit nomen Domini (x) benedictum. 21

In omnibus his, quæ acciderunt ei, nihil peccavit Job coram Domino: et (y) non dedit insipientiam Deo. 22

ΚΕΦ. β'.

1 † Ἐγένετο δὲ ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, † καὶ ἦλθον οἱ ἄγγελοι τοῦ θεοῦ παραστῆναι (α) ἔναντι κυρίου, † καὶ ὁ διάβολος (β) ἦλθεν ἐν μέσῳ αὐτῶν παραστῆναι (γ) ἐναντίον τοῦ κυρίου. 2 † Καὶ εἶπεν ὁ κύριος τῷ διαβόλῳ, Πόθεν σὺ ἔρχῃ; † τότε εἶπεν ὁ διάβολος (δ) ἐνώπιον τοῦ κυρίου, † Διαπορευθεὶς τὴν ὑπ' οὐρανὸν, καὶ (ε) ἐμπεριπατήσας τὴν σύμπασαν, πάρειμι.

CAP. II.

FActum est autem ut dies hæc; venerunt (a) angeli Dei, ut assisterent coram Domino, et diabolus venit in medio eorum, ut assisteret coram Domino. 1

Et dixit Dominus diabolo, Unde tu advenis? Tunc dixit diabolus in conspectu Domini; Postquàm peragravi eam quæ sub cœlo, et obambulavi universam; adsum. 2

MS.A. (ω) Καὶ εἶπεν (α) ἐν τῇ χειρί σου δέδωκα, ἀλλὰ (β) ἀπὸ προσώπου κυρίου. Καὶ ἐγένετο ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, καὶ οἱ υἱοὶ τοῦ Ἰὼβ (γ) ἤσθιον καὶ ἔπινον (δ) αὐτούς, (ε) ἐπάταξαν ἐν στόματι μαχαίρας, καὶ ἐσώθην ἐγὼ μόνος, καὶ ἦλθον (ζ) πρὸς Ἰὼβ, καὶ εἶπεν αὐτῷ, Πῦρ (η) ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ κατέφαγεν τὰ (θ) κατέκαυσεν (ι) καὶ ἐσώθην ἐγὼ μόνος, καὶ ἦλθον (κ) ἕτερος ἄγγελος ἔρχεται πρὸς Ἰὼβ, καὶ λέγει αὐτῷ, Οἱ (λ) ἀρχὰς τρεῖς, (μ) καὶ ἐσώθην ἐγὼ (ν) πρὸς Ἰὼβ, λέγων, Τῶν (ξ) παρὰ * τοῦ υἱῷ σου τῷ (ο) ἦλθεν ἀπὸ τῆς (π) καὶ ἐσώθην ἐγὼ (ρ) ἀκούσας Ἰὼβ, ἀναστὰς διέρρηξεν τὰ ἱμάτια αὐτοῦ, (σ) κεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ κατεπάσατο γῆν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ, καὶ πεσὼν (τ) τῷ κυρίῳ, Καὶ εἶπεν (υ) οὕτω καὶ ἐγένετο· (φ) εὐλογημένον εἰς τοὺς αἰῶνας. Ἐν (χ) οὐχ ἥμαρτεν Ἰὼβ οὐδὲν ἔναντι κυρίου, οὐδὲ ἐν τοῖς χείλεσιν αὐτοῦ· καὶ οὐκ

Κεφ. β'. MS.A. (α) ἐνώπιον κυρίου, (β) ἐν μέσῳ αὐτῶν ἦλθεν (γ) ἔναντι κυρίου. (δ) ἔναντι κυρίου, (ε) ἐμπεριπατήσας τὴν γῆν, πάρειμι.

תרגום TARGUM.

12 13 וַאֲמַר יְיָ לְסָטָנָא הָא כָּל דְּאִית לֵיהּ מְסִיר בִּידָךְ לְחוֹד לְוָתֵיהּ לָא תּוֹשִׁיט יְדָךְ וּנְפַק סָטָנָא בְּהַרְמָנָא מִן קֳדָם יְיָ : וַהֲוָה אִתְחוֹלֵי יוֹמָא שְׁבוּעְתָא
14 15 וּבְנוֹי וּבְנָתֵיהּ אָכְלִין וְשָׁתַיִן חַמְרָא בְּבֵית אֲחוּהוֹן בּוּכְרָא : וְאִזְגַּד אֲתָא לְוָת אִיּוֹב וַאֲמַר תּוֹרַיָּא הֲוָאָה רָדִין וְאַתְנָן רָעֲיָן עַל סִטְרֵיהוֹן : וּנְפַלַת בִּתְכֵיף
16 לִילִית מַלְכַּת זְמַרְגַּד וְדַבְּרַתְנוּן וְיַת עוּלֵמַיָּא קְטַלוּ אוֹכְלוּסָהָא לְפִתְגַּם דְּחֶרֶב וְאִשְׁתֵּזְבִית לְחוֹד אֲנָא בִּלְחוֹדִי לְחַוָּאָה לָךְ : עַד כְּדוֹן דֵּין מְמַלֵּל וְדֵין
17 אֲתָא וַאֲמַר אִשָּׁתָא מִן קֳדָם יְיָ נְפַלַת מִן שְׁמַיָּא וְאוֹקִידַת בְּעָנָא וּבְעוּלֵמַיָּא וְגַמְּרַתְנוּן וְאִשְׁתֵּזְבִית לְחוֹד אֲנָא לְבִלְחוֹדִי לְחַוָּאָה לָךְ : עַד כְּדוֹן דֵּין מְמַלֵּל
וְדֵין אֲתָא וַאֲמַר כַּסְדָּאֵי מַנִּיאוּ תְּלָתָא רֵישֵׁי אוֹכְלוּסִין וְאִתְפַּשְּׁטוּ עַל גַּמְלַיָּא וְדַבְּרוּנוּן וְיַת עוּלֵמַיָּא קְטַלוּ לְפִתְגַּם דְּחֶרֶב וְאִשְׁתֵּזְבִית לְחוֹד אֲנָא לְבִלְחוֹדִי
16 18 לְחַוָּאָה לָךְ : עַד כְּדוֹן דֵּין מְמַלֵּל וְדֵין אֲתָא וַאֲמַר בְּנָךְ וּבְנָתָךְ אָכְלִין וְשָׁתַיִן חֲמַר בְּבֵית אֲחוּהוֹן בּוּכְרָא : וְהָא זַעְפָּא רַבְּתָא אַתְיָא מִסִּטְרֵי מַדְבְּרָא
20 וּקְרִיב בְּאַרְבַּע זָוְיָן דְּבֵיתָא וּנְפַל עַל עוּלֵמַיָּא וּמִיתוּ וְאִשְׁתֵּזְבִית לְחוֹד אֲנָא לְבִלְחוֹדִי לְחַוָּאָה לָךְ : וְקָם אִיּוֹב וּבְזַע יַת מְעִילֵיהּ וְסַפַּר יַת רֵישֵׁיהּ
21 וּנְפַל עַל אַרְעָא וּסְגִיד : וַאֲמַר עַרְטִילַי נְפַקִית מִן כַּרְסָא דְּאִמִּי וְעַרְטִילַי אָתִיב לְבֵית קְבוּרְתָּא מֵימְרָא דַּיְיָ יְהַב וּמֵימְרָא דַּיְיָ וּבֵית דִּינֵיהּ נְסִיב יְהֵי שְׁמָא
22 דַּיְיָ מְבָרַךְ : בְּכָל דָּא לָא חָב אִיּוֹב וְלָא מְסַדַּר מִלֵּי מַחְשֵׁי קֳדָם יְיָ :

ב

1 2 וַהֲוָה יוֹם דִּינָא רַבָּא יוֹם שְׁבוּק סָרְחָנַיָּא וַאֲתוֹ כִּתֵּי מַלְאֲכַיָּא לִמְקוֹם בְּדִינָא קֳדָם יְיָ וַאֲתָא לְחוֹד סָטָנָא בִּמְצִיעֵיהוֹן לִמְקוֹם בְּדִינָא קֳדָם יְיָ : וַאֲמַר
יְיָ לְסָטָנָא מְנָן אַתְּ אָתֵי וַאֲתִיב סָטָנָא קֳדָם יְיָ וַאֲמַר מִן לְמִשָׁט בְּאַרְעָא לְמִבְדַּק בְּעוֹבָדֵי בְּנֵי נָשָׁא וּמִן מְהַלְּכָא בַּהּ :

Verſio SYRIACA.

* ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܗܐ ܟܠܡܕܡ ܕܐܝܬ ܠܗ ܡܫܠܡ ܒܐܝܕܝܟ. ܒܠܚܘܕ ܒܗ ܠܐ ܬܘܫܛ ܐܝܕܟ. 12
ܘܢܦܩ ܣܛܢܐ ܡܢ ܩܕܡ ܐܦܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ ܝܘܡܐ. ܘܒܢܘܗܝ ܘܒܢܬܗ ܕܐܝܘܒ. ܐܟܠܝܢ ܗܘܘ 13
ܘܫܬܝܢ ܒܒܝܬ ܐܚܘܗܘܢ ܩܫܝܫܐ. * ܘܡܠܐܟܐ ܐܬܐ ܠܘܬ ܐܝܘܒ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܬܘܪܐ ܕܒܪܝܢ ܗܘܘ ܒܦܕܢܐ. ܘܐܬܢܐ 14
ܪܥܝܢ ܗܘܘ ܥܠ ܓܒܝܗܘܢ. * ܘܢܦܠܘ ܫܒܝܐ. ܘܕܒܪܘ ܐܢܘܢ. ܘܠܛܠܝܐ ܩܛܠܘ ܒܦܘܡ ܚܪܒܐ. 15
ܘܐܫܬܘܙܒܬ ܐܢܐ ܒܠܚܘܕܝ. ܘܐܬܝܬ ܕܐܚܘܝܟ. * ܘܥܕ ܗܘ ܡܡܠܠ. ܐܬܐ ܐܚܪܝܢ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܢܘܪܐ ܕܐܠܗܐ ܢܦܠܬ 16
ܡܢ ܫܡܝܐ. ܘܐܘܩܕܬ ܒܥܢܐ ܘܒܪܥܘܬܐ. ܘܐܟܠܬ ܐܢܘܢ. ܘܐܫܬܘܙܒܬ ܐܢܐ ܒܠܚܘܕܝ. ܘܐܬܝܬ ܕܐܚܘܝܟ. * ܘܥܕ ܗܘ 17
ܡܡܠܠ. ܐܬܐ ܐܚܪܝܢ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܟܠܕܝܐ ܐܬܦܠܓܘ ܠܬܠܬ ܪܫܝܢ. ܘܢܦܠܘ ܥܠ ܓܡܠܐ. ܘܕܒܪܘ
ܐܢܘܢ. ܘܠܛܠܝܐ ܩܛܠܘ ܒܦܘܡ ܚܪܒܐ. ܘܐܫܬܘܙܒܬ ܐܢܐ ܒܠܚܘܕܝ. ܘܐܬܝܬ ܕܐܚܘܝܟ. * ܘܥܕ ܗܘ ܡܡܠܠ. ܐܬܐ 18
ܐܚܪܝܢ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܒܢܝܟ ܘܒܢܬܟ ܐܟܠܝܢ ܗܘܘ ܘܫܬܝܢ. ܒܒܝܬ ܐܚܘܗܘܢ ܩܫܝܫܐ. * ܘܗܐ ܪܘܚܐ ܪܒܬܐ 19
ܐܬܬ ܡܢ ܥܒܪܐ ܕܡܕܒܪܐ. ܘܐܬܟܪܟܬ ܒܐܪܒܥ ܙܘܝܬܗ ܕܒܝܬܐ. ܘܢܦܠ ܥܠ ܛܠܝܐ. ܘܡܝܬܘ. ܘܐܫܬܘܙܒܬ
ܐܢܐ ܒܠܚܘܕܝ. ܘܐܬܝܬ ܕܐܚܘܝܟ. * ܘܩܡ ܐܝܘܒ ܘܨܪܐ ܡܪܛܘܬܗ. ܘܓܙ ܪܫܗ. ܘܢܦܠ ܥܠ ܐܪܥܐ ܘܣܓܕ. * ܘܐܡܪ. 20 21
ܥܪܛܠܝ ܢܦܩܬ ܡܢ ܟܪܣܐ ܕܐܡܝ. ܘܥܪܛܠܝ ܐܗܦܘܟ. ܡܪܝܐ ܝܗܒ. ܘܡܪܝܐ ܢܣܒ. ܢܗܘܐ ܫܡܗ
ܕܡܪܝܐ ܡܒܪܟ. * ܘܒܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܠܐ ܚܛܐ ܐܝܘܒ. ܐܦܠܐ ܝܗܒ ܫܛܝܘܬܐ ܠܐܠܗܐ. 22

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

* ܘܗܘܐ ܝܘܡܐ. ܘܐܬܘ ܒܢܝ ܐܠܗܐ ܠܡܩܡ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܬܐ ܐܦ ܣܛܢܐ ܒܝܢܬܗܘܢ ܠܡܩܡ 1
ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܡܢ ܐܝܟܐ ܐܬܝܬ. ܥܢܐ ܣܛܢܐ. ܘܐܡܪ ܠܡܪܝܐ. 2
ܡܢ ܡܟܪܟܘ ܒܐܪܥܐ ܘܡܗܠܟܘ ܒܗ.

Verſio ARABICA.

* فقال الرب للسيطان * فان كل سي له مسلما اليك وفي يديك * ولكن عليه لا تبسط يدك * 12
فخرج السيطان من قدام وجه الرب * وكان يوم بنوا ايوب وبناته ياكلون ويسربون عند اخيهم 13
الاكبر * ورسول اتا ايوب فقال له * البقر كانت تسوق الفدادين * والاتن يرتعين الي جانبها * 14
* فوقع الجيس وساقها * والغلمان قتلوا بالسيف * وفلتت انا وحدي وجيت لاخبرك * وبينما هو يتكلم 15 16
جاء اخر * فقال له * نار من الله سقطت من السماء وسقت في الغنم والرعيان * فاحرقتهم * وفلتت انا
وحدي فجيت لاخبرك * وبينما هو يتكلم جاه اخر فقال له * الكلدانيون افترقوا ثلاثة فرق * 17
ووقعوا علي الجمال واستاقوها * والغلمان قتلوا بالسيف * وفلتت انا وحدي وجيت لاخبرك * وبينما هو 18
يتكلم جاء اخر فقال له * بنوك وبناتك كانوا ياكلون ويسربون عند اخيهم الاكبر * فاذا ريح 19
سديدة جات من اقطار القفر * فانتسبت في اربع زوايا البيت فسقطت علي الصبيان * فماتوا وافلتت
انا وحدي وجيت لاخبرك * فقام ايوب وسق ملحفه * وجز راسه وسقط علي الارض ساجدا * فقال * 20 21
عريان خرجت من بطن امي * وعريان اعود * الرب اعطا والرب اخذ * يكون اسم الرب مباركا من الان
والي الدهر * وفي هذا كله لم يخطي ايوب ايضا ولا افتري علي الله * 22

* الفصل الثاني *

* فكان ذات يوم فاتوا بنوا الوهيم فوقفوا قدام الرب * وجاء السيطان ايضا بينهم * ووقف قدام الرب * 1
* فقال الرب للسيطان * من اين اتيت * اجاب السيطان وقال للرب * طفت في الارض وسلكت فيها * 2

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Dixitque Dominus ſa- 12
tani, Omne quod habet,
(a) eſt tibi traditum, &
in manibus tuis, ſed
ſuper eum ne extendas
manum tuam: egreſſuſ-
que eſt ſatan è conſpe-
ctu Domini. Et quâ- 13
dam die filii Job, ac fi-
liæ ejus comedebant at
bibebant apud fratrem
ſuum natu majorem, Et 14
venit nuntius ad Job,
dixitque ei; Boves du-
cebant juga, & aſinæ
paſcebantur prope eos,
Et irruit turma, & du- 15
xit eos: & famuli occiſi
ſunt gladio, & evaſi e-
go (b) ſolus & veni, ut
tibi nuntiarem: Adhuc 16
eo loquente venit alius et
dixit, Ignis Dei cecidit
de cœlo, & ſuccenſus
eſt in ovibus & paſto-
ribus, & combuſſit eos,
& effugi ego (c) ſolus,
& veni ut tibi nuntia-
rem. Adhuc eo loquen- 17
te venit ad eum alius
& dixit, Chaldæi divi-
ſerunt ſe in tres partes,
& irruerunt in camelos,
duxeruntque eos: & pu-
eri occiſi ſunt gladio:
& evaſi ego (d) ſolus,
venique ut nuntiarem
tibi. Et dum ipſe lo- 18
queretur, venit alius &
dixit ei; Filii tui & fi-
liæ tuæ edebant & bi-
bebant apud fratrem ſu-
um natu majorem, Et 19
ecce ventus vehemens
venit ex finibus deſerti,
& alliſit quatuor angu-
los domûs, & cecidit
ſuper filios, & mortui
ſunt, & evaſi ego (e) ſo-
lus, & veni ut tibi
nuntiarem. Surrexitque 20
Job, ſciditque pallium
ſuum, & totondit caput
ſuum, ac cecidit ſuper
terram adorans, Et ait, 21
Nudus egreſſus ſum de
ventre matris meæ, &
nudus revertar, Dominus
dedit, & Dominus acce-
pit: Sit nomen Domini
benedictum ex nunc &
uſque in ſeculum. Et 22
in his omnibus non pec-
cavit Job adhuc, neque
blaſphemavit Deum.

CAP. II.

ET quâdam die ve- 1
nerunt filii Elohim, &
ſteterunt coram Domino,
& venit ſathan quoque
inter eos & ſtetit coram
Domino. Dixitque Do- 2
minus ad Sathan, Unde
venis? Reſpondit Sathan,
& dixit Domino, Cir-
cuivi terram & ambula-
vi in ea.

INTERP. SYRIACA.

(a) traditum eſt in manibus tuis, (b) ſolus ut tibi (c) ſolus ut tibi (d) ſolus ut tibi (e) ſolus ut tibi.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixit Dominus ad Sathanam: En univerſa quæ habet, *tradita ſunt* in manu tua; tantùm in eum ne extendas manum tuam: & egreſſus eſt Sathanas *cum poteſtate* 12
à facie Domini. Et factum eſt die primo hebdomadis, & filii ejus & filiæ ejus comedebant & bibebant vinum in domo fratris ſui primogeniti. Et nuncius venit ad 13 14
Job, & ait: Boves arabant, & aſinæ paſcebantur juxta eos: Et irruit repente Lilith regina Zamargad, & tulit eos, & pueros occiderunt exercitus ejus in ore 15
gladii; & evaſi tantùm ego ſolus ut nunciarem tibi. Adhuc iſte loquebatur, & alius venit, & ait: Ignis cecidit de cœlo à facie Domini, & combuſſit oves & pue- 16
ros & conſumpſit eos; & evaſi tantùm ego ſolus ut nunciarem tibi. Adhuc iſte loquebatur, & alius venit, & ait: Chaldæi conſtituerunt tres turmas, & diffuſi ſunt 17
ſuper camelos & tulerunt eos, & pueros occiderunt in ore gladii; & evaſi *tantùm* ego ſolus ut nunciarem tibi. Adhuc iſte loquebatur, & alius venit & ait: Filii 18
tui & filiæ tuæ comedebant & bibebant vinum in domo fratris ſui primogeniti: Et ecce turbo magnus venit à latere deſerti, & tetigit quatuor angulos domus, & 19
ruit ſuper pueros, & mortui ſunt: & evaſi *tantùm* ego ſolus ut nunciarem tibi. Et ſurrexit Job, & ſcidit pallium ſuum, & totondit caput ſuum, & cecidit ſuper ter- 20
ram & adoravit. Et dixit: Nudus egreſſus ſum de ventre matris meæ, & nudus revertar illuc ad domum ſepulturæ: verbum Domini dedit, et *verbum Domini & do-* 21
mus judicii ejus abſtulit, ſit nomen Domini benedictum. In omnibus his non peccavit Job, neque *inſtituit* verba blaſphemiæ coram Domino. 22

CAP. II.

ET fuit dies judicii magni dies remiſſionis delictorum, et venerunt catervæ angelorum ut ſtarent in judicio coram Domino, et venit etiam Sathanas in medio eorum, 1
ut ſtaret in judicio coram Domino. Et dixit Dominus ad Sathanan: Unde venis? et reſpondit Sathanas Domino, et dixit: A diſcurrendo in terram ut inquirerem 2
opera filiorum hominum, et ab ambulando in ea.

איוב : ב

tuum cor poſuiſti Nunquid : Satan ad DOMINUS Dixitque
3 וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־הַשָּׂטָן הֲשַׂמְתָּ לִבְּךָ
vir , terra in *ipſe ſicut* non quòd , Ijob meum ſervum *ad*
אֶל־עַבְדִּי אִיּוֹב כִּי אֵין כָּמֹהוּ בָּאָרֶץ אִישׁ
ipſe adhuc & ; malo à recedens & , Deum timens ,rectus &,perfectus
תָּם וְיָשָׁר יְרֵא אֱלֹהִים וְסָר מֵרָע וְעֹדֶנּוּ
eum *deglutiendum ad* , eum *in* me incitâſti & ,ſuam perfectionem *in tenens*
מַחֲזִיק בְּתֻמָּתוֹ וַתְּסִיתֵנִי בוֹ לְבַלְּעוֹ
Pellem : dixit & , DOMINO Satan reſpondit Et ? gratis
4 חִנָּם : וַיַּעַן הַשָּׂטָן אֶת־יְהוָה וַיֹּאמַר עוֹר
.ſua anima pro dabit viro quæ cuncta & , pelle pro
בְּעַד־עוֹר וְכֹל אֲשֶׁר לָאִישׁ יִתֵּן בְּעַד נַפְשׁוֹ :
, ejus os *ad* tange & ,tuam manum nunc *mitte* Veruntamen
5 אוּלָם שְׁלַח־נָא יָדְךָ וְגַע אֶל־עַצְמוֹ
.tibi *benedixerit tuas facies ad non ſi* ; ejus carnem *ad* &
וְאֶל־בְּשָׂרוֹ אִם־לֹא אֶל־פָּנֶיךָ יְבָרֲכֶךָּ :
; tua manu in *ipſe* Ecce : Satan ad DOMINUS Dixitque
6 וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־הַשָּׂטָן הִנּוֹ בְיָדֶךָ
à Satan eſt egreſſus Et .ſerva ejus animam veruntamen
7 אַךְ אֶת־נַפְשׁוֹ שְׁמֹר : וַיֵּצֵא הַשָּׂטָן מֵאֵת
vola à ,*mala inflammatione in* Ijob percuſſit & ;DOMINI *faciebus*
פְּנֵי יְהוָה וַיַּךְ אֶת־אִיּוֹב בִּשְׁחִין רָע מִכַּף
ſe ſcalpendum ad,teſtam ſibi tulit Et .ejus verticem ad uſque &,ejus pedis
8 רַגְלוֹ וְעַד קָדְקֳדוֹ : וַיִּקַּח־לוֹ חֶרֶשׂ לְהִתְגָּרֵד
: ſua uxor ei dixit Et .cineris medio in *ſedens* ipſe & ; ea *in*
9 בּוֹ וְהוּא יֹשֵׁב בְּתוֹךְ־הָאֵפֶר : וַתֹּאמֶר לוֹ אִשְׁתּוֹ
.morere & , Deo *benedic* ? tuam perfectionem *in tenens tu* Adhuc
עֹדְךָ מַחֲזִיק בְּתֻמָּתֶךָ בָּרֵךְ אֱלֹהִים וָמֻת :
etiam : loqueris *ſatuarum unam loqui Secundùm* : eam ad dixit Et
10 וַיֹּאמֶר אֵלֶיהָ כְּדַבֵּר אַחַת הַנְּבָלוֹת תְּדַבֵּרִי גַּם
non malum & , Deo à *ſuſcipiemus* bonum
אֶת־הַטּוֹב נְקַבֵּל מֵאֵת הָאֱלֹהִים וְאֶת־הָרָע לֹא
.ſuis labiis in Ijob peccavit non hoc omni in ?ſuſcipiemus
נְקַבֵּל בְּכָל־זֹאת לֹא־חָטָא אִיּוֹב בִּשְׂפָתָיו :
, hoc malum omne Ijob *ſocii* tres audierunt Et
11 וַיִּשְׁמְעוּ שְׁלֹשֶׁת ׀ רֵעֵי אִיּוֹב אֵת כָּל־הָרָעָה הַזֹּאת
, Themanites Eliphaz ,ſuo loco è *vir* venerunt & : *eum ſuper veniens*
הַבָּאָה עָלָיו וַיָּבֹאוּ אִישׁ מִמְּקֹמוֹ אֱלִיפַז הַתֵּימָנִי
ſimul convenerunt & ; Nahamathites Sophar & , Suchites Bildad &
וּבִלְדַּד הַשּׁוּחִי וְצוֹפַר הַנַּעֲמָתִי וַיִּוָּעֲדוּ יַחְדָּו
elevaverunt Et .eum conſolandum ad &,ei condolendum ad *veniendum ad*
12 לָבוֹא לָנוּד־לוֹ וּלְנַחֲמוֹ : וַיִּשְׂאוּ
levaverunt & :eum cognoverunt non & , longè à ſuos oculos
אֶת־עֵינֵיהֶם מֵרָחוֹק וְלֹא הִכִּירֻהוּ וַיִּשְׂאוּ
ſparſerunt & ,ſuum pallium *vir* ſciderunt & ; fleverunt & ,ſuam vocem
קוֹלָם וַיִּבְכּוּ וַיִּקְרְעוּ אִישׁ מְעִלוֹ וַיִּזְרְקוּ
terra in eo cum ſederunt Et .cœlum in ſua capita ſuper pulverem
13 עָפָר עַל־רָאשֵׁיהֶם הַשָּׁמָיְמָה : וַיֵּשְׁבוּ אִתּוֹ לָאָרֶץ
eum ad *loquens* non & ; noctibus ſeptem & , diebus ſeptem
שִׁבְעַת יָמִים וְשִׁבְעַת לֵילוֹת וְאֵין־דֹּבֵר אֵלָיו
.valde dolor creverat quòd videbant quia : verbum
דָּבָר כִּי רָאוּ כִּי־גָדַל הַכְּאֵב מְאֹד :

CAP. III. ג

.ſuo diei maledixit & ,ſuum os Ijob aperuit hoc Poſt
1 אַחֲרֵי־כֵן פָּתַח אִיּוֹב אֶת־פִּיהוּ וַיְקַלֵּל אֶת־יוֹמוֹ :
: ea *in* ſum natus , dies Pereat : dixit & , Ijob reſpondit Et
2 3 וַיַּעַן אִיּוֹב וַיֹּאמַר : יֹאבַד יוֹם אִוָּלֶד בּוֹ
,*obſcuritas* ſit illa Dies .vir eſt Conceptus : dixit nox &
4 וְהַלַּיְלָה אָמַר הֹרָה גָבֶר : הַיּוֹם הַהוּא יְהִי חֹשֶׁךְ
.lux eam ſuper *irradiet* nec ; deſuper Deus illam requirat ne
אַל־יִדְרְשֵׁהוּ אֱלוֹהַּ מִמָּעַל וְאַל־תּוֹפַע עָלָיו נְהָרָה :

Verſio VULG. LAT.

3 Et dixit Dominus ad Satan; Numquid conſideràſti ſervum meum Job, quòd non ſit ei ſimilis in terra, vir ſimplex & rectus, ac timens Deum, & recedens à malo, & adhuc retinens innocentiam? Tu autem commoviſti me adverſùs eum, ut affligerem eum fruſtrà. 4 Cui reſpondens Satan ait; Pellem pro pelle, & cuncta quæ habet homo, 5 dabit pro anima ſua: Alioquin mitte manum tuam, & tange os ejus & carnem, & tunc videbis quòd in faciem 6 benedicat tibi. Dixit ergò Dominus ad Satan; Ecce in manu tua eſt, veruntamen 7 animam illius ſerva. Egreſſus igitur Satan à facie Domini, percuſſit Job ulcere peſſimo, à planta pedis uſque 8 ad verticem ejus: Qui teſtâ ſaniem radebat, ſedens in ſter-9 quilinio. Dixit autem illi uxor ſua, Adhuc tu permanes in ſimplicitate tua? benedic Deo 10 & morere. Qui ait ad illam, Quaſi una de ſtultis mulieribus locuta es: ſi bona ſuſcepimus de manu Dei, mala quare non ſuſcipiamus? In omnibus his non pecca-11 vit Job labiis ſuis. Igitur audientes tres amici Job omne malum, quod accidiſſet ei, venerunt ſinguli de loco ſuo, Eliphaz Themanites, & Baldad Suhites, & Sophar Naamathites. Condixerant enim, ut pariter venientes viſitarent eum, & conſolaren-12 tur. Cúmque elevâſſent procul oculos ſuos, non cognoverunt eum, & exclamantes ploraverunt, ſciſſiſque veſtibus ſparſerunt pulverem ſuper caput ſuum in cœlum. 13 Et ſederunt cum eo in terra ſeptem diebus & ſeptem noctibus, & nemo loquebatur ei verbum: videbant enim dolorem eſſe vehementem.

CAP. III.

1 Poſt hæc aperuit Job os 2 ſuum, & maledixit diei ſuo. Et 3 locutus eſt; Pereat dies in qua natus ſum, & nox in qua dictum eſt; Conceptus eſt 4 homo. Dies ille vertatur in tenebras, non requirat eum Deus deſuper, & non illuſtretur lumine.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 † Εἶπε δὲ ὁ κύριος πρὸς τὸν (ζ) διάβολον, † Προσέσχες οὖν τῷ θεράποντί μου Ἰὼβ, † ὅτι οὐκ ἔστι κατ' αὐτὸν τῶν ἐπὶ τῆς γῆς; (η) ἄνθρωπος ἄκακος, † ἀληθινὸς, ἄμεμπτος, θεοσεβὴς, † ἀπεχόμενος ἀπὸ παντὸς κακοῦ, ἔτι δὲ ἔχεται ἀκακίας· † σὺ δὲ εἶπας (θ) ὑπάρχοντα αὐτοῦ διακενῆς ἀπο-4 λέσαι. † Ὑπολαβὼν δὲ ὁ διάβολος εἶπε τῷ κυρίῳ, Δέρμα ὑπὲρ δέρματος, † (ι) ὅσα ὑπάρχει ἀνθρώπῳ ὑπὲρ τῆς ψυ-5 χῆς αὐτοῦ ἐκτίσει. † Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ ἀποστείλας τὴν χεῖρά σου, ἅψαι τῶν ὀστῶν αὐτοῦ καὶ τῶν σαρκῶν αὐτοῦ· † (∴) ἦ μὴν εἰς 6 πρόσωπόν σε εὐλογήσει. † Εἶπε δὲ ὁ κύριος τῷ διαβόλῳ, Ἰδοὺ παραδίδωμί σοι αὐτόν· † μόνον τὴν ψυχὴν αὐτοῦ (κ) 7 διαφύλαξον. † Ἐξῆλθε δὲ ὁ διάβολος (※) ἀπὸ τοῦ κυρίου· † καὶ ἔπαισε τὸν Ἰὼβ ἕλκει πο-8 νηρῷ ἀπὸ ποδῶν ἕως κεφαλῆς. † Καὶ ἔλαβεν (λ) ὄστρακον, ἵνα τὸν ἰχῶρα ξύῃ, † καὶ ἐκάθητο ἐπὶ τῆς κοπρίας ἔξω τῆς πόλεως. 9 † Χρόνου δὲ πολλοῦ προβεβηκότος, εἶπεν (μ) αὐτῷ ἡ γυνὴ αὐτοῦ, † (ν) Μέχρι τίνος καρτερήσεις, λέγων, Ἰδοὺ ἀναμένω χρόνον ἔτι μικρὸν, προσδεχόμενος τὴν ἐλπίδα τῆς σωτηρίας μου; † ἰδοὺ γὰρ ἠφάνισταί (ξ) σου τὸ μνημόσυνον ἀπὸ τῆς γῆς· (ο) † υἱοὶ καὶ θυγατέρες, ἐμῆς κοιλίας ὠδῖνες καὶ πόνοι, † οὓς εἰς τὸ κενὸν ἐκοπίασα μετὰ μόχθων· † (π) σύ τε αὐτὸς ἐν σαπρίᾳ σκωλήκων κάθησαι διανυκτερεύων αἴθριος, † (ρ) κἀγὼ πλανωμένη καὶ λάτρις † τόπον ἐκ τόπου (σ) καὶ οἰκίαν ἐξ οἰκίας, † προσδεχομένη τὸν ἥλιον πότε (τ) δύσεται, † ἵνα ἀναπαύσωμαι (υ) τῶν μόχθων μου, † καὶ τῶν ὀδυνῶν αἵ με νῦν συνέχουσιν. † (※) ἀλλὰ εἰπόν τι ῥῆμα (φ) εἰς κύριον, καὶ τε-10 λεύτα. † Ὁ δὲ ἐμβλέψας, (χ) εἶπεν αὐτῇ, † Ὥσπερ μία τῶν ἀφρόνων γυναικῶν (ψ) ἐλάλησας. † εἰ τὰ ἀγαθὰ ἐδεξάμεθα ἐκ χειρὸς κυρίου, (ω) τὰ κακὰ οὐχ ὑποίσομεν; † (α) ἐν πᾶσι τούτοις τοῖς συμβεβηκόσιν αὐτῷ (β) οὐδὲν ἥμαρτεν Ἰὼβ 11 τοῖς χείλεσιν ἐναντίον τοῦ θεοῦ. † Ἀκούσαντες δὲ οἱ τρεῖς φίλοι αὐτοῦ τὰ κακὰ πάντα τὰ ἐπελθόντα αὐτῷ, † παρεγένοντο ἕκαστος ἐκ τῆς (γ) ἰδίας χώρας πρὸς αὐτόν· † Ἐλιφὰζ ὁ Θαιμανῶν βασιλεὺς, † (δ) Βαλδὰδ ὁ (ε) Σαυχέων τύραννος, † (ζ) Σωφὰρ Μιναίων βασιλεύς· † καὶ παρεγένοντο (η) πρὸς αὐτὸν ὁμοθυμαδὸν, τοῦ παρακα-12 λέσαι καὶ ἐπισκέψασθαι αὐτόν. † Ἰδόντες δὲ αὐτὸν πόῤῥωθεν, οὐκ ἐπέγνωσαν· † καὶ βοήσαντες φωνῇ μεγάλῃ ἔκλαυσαν, † (θ) ῥήξαντες ἕκαστος τὴν ἑαυτοῦ στολὴν, καὶ κατα-13 πασάμενοι (ι) γῆν, † Παρεκάθισαν αὐτῷ ἑπτὰ ἡμέρας καὶ ἑπτὰ νύκτας, † καὶ οὐδεὶς αὐτῶν (κ) ἐλάλησεν· † ἑώρων γὰρ τὴν πληγὴν δεινὴν οὖσαν καὶ μεγάλην σφόδρα.

ΚΕΦ. γʹ.

1 † (α) Μετὰ τοῦτο ἤνοιξεν Ἰὼβ τὸ στόμα αὐτοῦ, † καὶ κατηράσατο τὴν ἡμέραν αὐτοῦ, 2 (β) Λέγων, 3 † Ἀπόλοιτο ἡ ἡμέρα ἐν ᾗ (γ) ἐγεννήθην, † καὶ ἡ νὺξ ἐκείνη, ᾗ εἶπαν, 4 Ἰδοὺ ἄρσεν. † (δ) Ἡ νὺξ ἐκείνη εἴη σκότος, καὶ μὴ ἀναζητήσαι αὐτὴν ὁ κύριος ἄνωθεν, † μηδὲ ἔλθοι εἰς αὐτὴν φέγγος.

3 Dixit autem Dominus ad diabolum, Attendiſti igitur famulo meo Job? quòd non eſt juxta eum de iis qui ſunt ſuper terram, homo innocens, verax, irreprehenſibilis, timens Deum, abſtinens ab omni malo: adhuc autem (b) retinet innocentiam. Tu (c) verò dixiſti ſubſtantiam ejus fruſtà perdere. 4 Suſcipiens autem diabolus dixit Domino; Pellem pro pelle, (d) quæcunque ſunt homini, pro anima ſua pendet. 5 Alioquin autem mittens manum tuam, tange oſſa ejus, & carnes ejus: certe in faciem te benedicet. 6 Dixit autem Dominus diabolo, Ecce trado tibi eum: tantummodò (e) animam ejus cuſtodi. 7 Exivit autem diabolus à Domino, & percuſſit Job ulcere maligno, à pedibus uſque ad caput: 8 Et ſumpſit teſtam, ut (f) ſaniem raderet, & ſedebat in (g) ſterquilinio extra civitatē. 9 (h) Tempore autem multo tranſacto, dixit ei uxor ejus; Quouſque ſuſtinebis, dicens, Ecce permaneo tempus adhuc parvum, expectans ſpem ſalutis meæ? Ecce enim deletum eſt memoriale tuum de terra; filii, & filiæ, mei uteri dolores, & labores, quos in vacuum laboravi cum ærumnis: tu verò ipſe in putredine vermium ſedes, pernoctans ſub dio: & ego errans, & ancilla, locum (i) ex loco, & domum è domo, expectans Solem, quando occidet, ut requieſcam ab ærumnis meis, & doloribus, qui me nunc premunt. Sed dicito (k) aliquod verbum in Dominum, & morere. 10 Ille verò inſpiciens dixit ei; Tanquam una (l) inſipientum mulierum locuta es. Si bona ſuſcepimus de manu Domini; mala cur non ſuſtinebimus? In omnibus his, quæ acciderunt ei, nihil peccavit Job labiis coram Deo. 11 Cùm audiſſent autē tres amici ejus, mala omnia quæ ſupervenerant ei; advenerunt unuſquiſque è propria regione ad eum: Eliphaz Tæmanorum rex, Baldad Sauchæorum tyrannus, Sophar Minæorum rex: & acceſſerunt ad eum (m) unanimiter ad conſolandum, & viſitandum eum. 12 Cùm vidiſſent autem eum de longè, non agnoverunt: & clamantes voce (n) magnâ ploraverunt, ſcindentes unuſquiſque ſtolam ſuam, & aſpergentes terram, 13 Aſſederunt (o) ei ſeptem dies, & ſeptem noctes, & nemo eorum locutus eſt: videbant enim plagam eſſe gravem, et magnam valdé.

CAP. III.

1 Poſt hec aperuit Job os ſuum, et maledixit diei ſuæ, 2 Dicens; 3 Pereat dies in qua natus ſum, et nox illa, (a) quâ dixerunt; Ecce maſculus. 4 (b) Nox illa ſit tenebræ, neque requirat eam Dominus deſuper: nec veniat in eam lumen:

MS.A. (ζ) σατανᾶν, (η) ἄνθρωπος ὅμοιος αὐτῷ, ἄμεμπτος, δίκαιος, ἀληθινὸς, θεοσεβὴς, (θ) τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ ἀπολέσαι διακενῆς. (ι) καὶ πάντα ὅσα ὑπάρχει τῷ ἀνθρώπῳ, δώσει ὑπὲρ τῆς ψυχῆς αὐτοῦ. (∴) εἰ μὴ εἰς (κ) διατήρησον. (※) παρὰ τοῦ (λ) Ἰὼβ ὄστρακον, ἵνα ἀποξέῃ τὸν ἰχῶρα αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς ἐκάθητο (μ) πρὸς Ἰὼβ ἡ (ν) Μέχρις τίνος (ξ) τὸ μνημόσυνόν σου (ο) υἱοί σου, καὶ θυγατέρες, τῆς ἐμῆς (π) σὺ δὲ (ρ) καὶ ἐγὼ πλανῆτις (σ) περιερχομένη, καὶ (τ) δύσῃ, (υ) τῶν μόχθων, καὶ τῶν περιεχουσῶν με ὀδυνῶν (※) ἀλλ' (φ) πρὸς (χ) αὐτῇ εἶπεν, Ἵνα τί ὥσπερ (ψ) οὕτως ἐλάλησας. εἰ τὰ μὲν ἀγαθὰ (ω) τὰ δὲ κακὰ (α) ἐν τούτοις πᾶσιν (β) οὐχ ἥμαρτεν Ἰὼβ, οὐδὲ ἐν τοῖς χείλεσιν αὐτοῦ ἐναντίον (γ) ἰδίας πόλεως πρὸς αὐτὸν, τοῦ παρακαλέσαι καὶ ἐπισκέψασθε αὐτόν. (δ) Βαλδὰς (ε) Αὐχαίων (ζ) καὶ Σωφὰρ ὁ Μιναίων (η) ὁμοθυμαδὸν πρὸς αὐτὸν, (θ) ῥήξαντες δὲ ἕκαστος (ι) γῆν ἐπὶ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν, Παρεκάθισαν αὐτῷ (κ) ἐλάλησεν πρὸς αὐτὸν λόγον· ἑώρων γὰρ Κεφ. γʹ. MS.A. (α) Καὶ μετὰ ταῦτα (β) Καὶ ἀπεκρίθη Ἰὼβ, λέγων, (γ) ἐγεννήθην ἐν αὐτῇ, καὶ ἡ νὺξ ἐν ᾗ εἶπον, (δ) Ἡ ἡμέρα ἐκείν

תרגום TARGUM.

ואמר יי לסטנא אפשר דשויתא לבך בעבדי איוב ארום לית דכמוהי בארעא דעממי גבר שלים ותריץ דחיל מן קדם יי ועדי מן ביש ועוד כדון הוא 3
מתקף בשלימותיה וגריתא מימרי ביה לסלעמותיה מגן : ואתיב סטנא קדם יי ואמר אברא אמטול אברא וכל די לבר נש ימסור אמטול 4
נפשיה : ברם אושיט כדון מחת ידך וקריב לגרמיה ולבסריה אין לא באנפי מימרך ירגזנך : ואמר יי לסטנא הא מסיר בידך לחוד ית נפשיה 6 5
נטר : ונפק סטנא בהרמנא מן קדם יי ומחא ית איוב בשיחנא בישא מפרסת רגליה ועד מוקריה : ונסיב ליה פחר לאתקרצפא ביה והוא 8 7
יתב באמצע קטמא : ואמרת ליה דינה אתתיה עד כדון אנת מתקף בשלימותך ברוך מימרא דיי ומית : ואמר לה הכמה די ממללן חדא 10 9
מן נשיא דעבדין קלנא בבית אבהתהון הכדין אנת ממללא לחוד ית טבא נקבל מן קדם יי וית בישא לא נקבל בכל דא לא חב איוב
בספוותיה ברם ברעיוניה הרהר במלין : ושמעו תלתא חברי איוב ית כל בישתא הדא דאתת עלוהי [כד חמון ית אילני פרדסיהון די יבישו ולחם 11
סעודתהון אתהפך לבסרא חיא וחמר משתיהון אתהפך לדמא] ואתו גבר מאתריה [בזכותא אתפציו מן אתר מזמן להון בגהנם] אליפז דמן
תימן ובלדד די מן שוח וצופר די מן נעמה ואתחברו כחדא למיתי למנד ליה ולנחמותיה : וזקפו ית עיניהון מן רחיק ולא אשתמודעוהי וארימו 12
קלהון ובכו ובזעו גבר מעיליה ודרקון עפרא על רישיהון לצית שמיא : ויתיבו עמיה לארעא שבעא יומין ושבעא ליליין ולית די ממלל עמיה 13
פתגם ארום חמון ארום סגא כיבא לחדא :

ג

מן בתר כדין פתח איוב ית פומיה ולטט ית יומיה : ואתיב איוב ואמר : יהובד יומא דאתילידת ביה [ומלאכא די ממני על עבור] ולילייא די 3 2 1
אמר אתברא גבר : יומא ההוא יהי קבלא לא יתבעניה אלהא מן לעילא ולא תנהר עלוי שפרפרא : 4

Verſio SYRIACA.

* ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܗܐ ܣܡܬ ܠܒܟ ܥܠ ܥܒܕܝ ܐܝܘܒ. ܕܠܝܬ ܐܟܘܬܗ ܒܐܪܥܐ: ܓܒܪܐ ܬܡܝܡܐ ܘܬܪܝܨܐ. 3
ܘܕܚܠ ܠܐܠܗܐ. ܘܣܛܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܥܕܟܝܠ ܡܚܝܕ ܒܬܡܝܡܘܬܗ. ܘܐܢܬ ܐܝܬ ܠܟ ܒܗ
ܕܐܘܒܕܝܘܗܝ ܡܓܢ. * ܘܥܢܐ ܣܛܢܐ ܘܐܡܪ ܠܡܪܝܐ. ܡܫܟܐ ܚܠܦ ܡܫܟܐ. ܘܟܠܡܕܡ ܕܐܝܬ ܠܒܪܢܫܐ. 4
ܢܬܠ ܚܠܦ ܢܦܫܗ ܘܢܬܦܨܐ. * ܘܐܠܐ ܐܘܫܛ ܐܝܕܟ ܘܩܪܘܒ ܠܓܪܡܘܗܝ ܐܘ ܠܒܣܪܗ. ܐܢ ܠܐ ܒܐܦܝܟ 5
ܢܓܕܦܟ. * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ ܒܐܝܕܝܟ. ܒܪܡ ܢܦܫܗ ܛܪ. * ܘܢܦܩ ܣܛܢܐ ܡܢ ܩܕܡ 6 7
ܐܦܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܚܝܗܝ ܠܐܝܘܒ ܒܫܘܚܢܐ ܒܝܫܐ. ܡܢ ܦܣܬܐ ܕܪܓܠܘܗܝ. ܘܥܕܡܐ ܠܩܕܩܕܗ. * ܘܢܣܒ 8
ܠܗ ܚܨܦܐ ܠܡܣܪܩܘܬܗ ܒܗ. ܘܝܬܒ ܗܘܐ ܥܠ ܩܛܡܐ. * ܘܐܡܪܐ ܠܗ ܐܢܬܬܗ. ܥܕܟܝܠ ܐܢܬ ܡܚܝܕ 9
ܐܢܬ ܒܬܡܝܡܘܬܟ. ܒܪܟ ܠܐܠܗܟ ܘܡܘܬ. * ܐܡܪ ܠܗ. ܐܝܟ ܕܡܡܠܠܐ ܚܕܐ ܡܢ ܣܟܠܬܐ. ܡܠܠܬܝ. ܛܒܬܗ 10
ܕܐܠܗܐ ܩܒܠܢ. ܘܒܝܫܬܗ ܠܐ ܢܩܒܠ. ܘܒܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ ܠܐ ܚܛܐ ܐܝܘܒ ܩܕܡ ܐܠܗܐ
ܒܣܦܘܬܗ. * ܘܫܡܥܘ ܬܠܬܐ ܪܚܡܘܗܝ ܕܐܝܘܒ. ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܐ ܗܠܝܢ ܕܐܬܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܐܬܘ ܓܒܪ 11
ܡܢ ܐܬܪܗ. ܐܠܝܦܙ ܬܝܡܢܝܐ. ܘܒܠܕܕ ܫܘܚܝܐ. ܘܨܘܦܪ ܢܥܡܬܝܐ. ܘܐܬܘ ܐܟܚܕܐ
ܠܡܬܬܘܝܘ ܥܡܗ. ܘܠܡܒܝܐܘܬܗ. * ܘܚܪܘ ܥܝܢܝܗܘܢ ܡܢ ܪܘܚܩܐ ܘܠܐ ܐܫܬܘܕܥܘܗܝ. ܘܐܪܝܡܘ ܩܠܗܘܢ 12
ܘܒܟܘ. ܘܨܪܘ ܓܒܪ ܡܪܛܘܛܗ. ܘܙܪܘ ܥܦܪܐ ܥܠ ܪܝܫܝܗܘܢ ܠܘܬ ܫܡܝܐ. * ܘܝܬܒܘ ܥܡܗ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܫܒܥܐ 13
ܝܘܡܝܢ: ܘܫܒܥܐ ܠܠܘܬܐ. ܘܠܝܬ ܕܐܡܪ ܡܠܬܐ. ܡܛܠ ܕܚܙܘ ܕܟܐܒܗ ܣܓܝ ܗܘܐ ܠܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

* ܘܡܢ ܒܬܪ ܗܠܝܢ ܦܬܚ ܐܝܘܒ ܦܘܡܗ. ܘܠܛ ܝܘܡܐ ܕܐܬܝܠܕ ܒܗ. ܘܥܢܐ 1
ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܢܐܒܕ ܝܘܡܐ ܕܐܬܝܠܕܬ ܒܗ. ܘܠܠܝܐ ܕܐܡܪܘ ܒܗ ܕܐܬܒܛܢ ܓܒܪܐ. * ܝܘܡܐ ܗܘ ܢܗܘܐ 2 3
ܚܫܘܟܐ. ܠܐ ܢܬܒܥܝܘܗܝ ܐܠܗܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܘܠܐ ܢܕܢܚ ܥܠܘܗܝ ܢܘܗܪܐ.

Verſio ARABICA.

* فقال الرب للشيطان* انك قد وضعت قلبك على عبدي ايوب* الذي ليس مثله في الارض رجلا 3
صالحا تقيا خايفا لله عادلا من السوء* وحتي الان هو متمسك بصلاحه* وانت تغريني به لاهلكه باطلا*
* فاجاب الشيطان فقال للرب* جلد مكان جلد* وكل شي للرجل فانه يعطيه فداء نفسه ويفلت* فان 4 5
كان ليس كذلك فابسط يدك فاقرب الي بشره او الي عظمه* فانه في وجهك يشتمك* فقال الرب 6
للشيطان فانه مسلم في يديك* ولكن فاحتفظ من نفسه* فخرج الشيطان من قدام وجه الرب* 7
وضرب ايوب بقرحة سوء من موطاء رجليه وحتي دماغه* فاخذ له خزفا ليجرده به* وجلس على الرماد* 8
* فقالت له امراته* حتي الي الان ايضا انت متمسك بصلاحك* اشتم الاهك ومت* قال لها* مثل 9 10
كلام واحدة من السفيهات تكلمت* نعم الله قبلنا* وبلواه لا نقبل* وفي هذا كله لم يخطي ايوب ايضا
ولم افتري على الله بشفتيه* وسمع ثلاثة احباب ايوب جميع هذه البلوي الذي جاءت عليه* 11
فتواعدوا واتوا اليه كل رجل من بلده* اليفاز التيمي* وبلداد الشوحاني* وصوفار النعماني* فتواعدوا
جميعا لياتوه* وليسلوا قلبه ويعزوه* فرفعوا اعينهم من بعيد فلم يعرفوه* ورفعوا اصواتهم فبكوا وشق 12
كل رجل ملحفه* وذروا ترابا على رؤسهم الي السماء* وجلسوا معه على الارض سبعة ايام وسبعة ليالي* 13
وليس احد يقول كلمة* لانهم راوا انه قد عظمت ضربته جدا* * الفصل الثالث *
* ومن بعد ذلك فتح ايوب فاه فلعن يوما ولد فيه وقال* ليهلك اليوم الذي ولدت فيه* والليل 1 2
الذي قيل فيه انه قد حبل به في ذلك الرجل* ويكون مظلما* لا يطلبه الله من فوق* ولا يشرق عليه النور* 3

INTERP. ARABICA.

3 Dixit Dominus Sathanæ, Appoſuiſtine cor tuum ſuper ſervum meum Job, cui non eſt par in terra, vir rectus & juſtus ac timens Deum, declinans à malo, & adhuc retinens eſt ſuam probitatem? & tu provocas me ut illum perdam immeritò. 4 Reſpondit Sathan dicens Domino, Pellis pro pelle, & omne quod habet homo dat pro anima ſua, & liberatur: 5 Alioquin, extende manum tuam, & tange carnem ejus aut os ejus, & quidem in facie tua conviciabitur tibi. 6 Dixit Dominus Satanæ, Ecce in manibus tuis eſt traditus, ſed ſerva animam ejus. 7 Egreſſúſque eſt Satan de coram facie Domini, & percuſſit Job ulcere malo; à planta pedis et uſque ad cerebrum ejus, 8 Sumpſitque ſibi teſtam, ut eâ ſe raderet, & ſedebat ſuper cinere, 9 Dixitque ei uxor ejus, Adhuc conſtans es in tua innocentia? conviciare Deo tuo & morere, 10 Dixit ei, ut loquitur una è ſtultis locuta es; beneficia Dei accepimus, tribulationes autem ejus nónne ſuſcipiemus? Et in his omnib⁹ non peccavit Job, neque Deum blaſphemavit labiis ſuis. 11 Percepérúntque tres amici Job omnes has calamitates, quæ venerunt ſuper eum, & condicto tempore venerunt ad eum unuſquiſque de regione ſua; Elifaz Temanites, & Baldad Suhites, & Sofar Naamatites: cõdixerũt omnes ut venirent ad eum, & confortarent cor ejus, & conſolarentur eum; 12 Levavérúntque de longè oculos ſuos, & non cognoverunt eum, & elevaverunt voces ſuas, & plorârunt, & unuſquiſque ſcidit ſuum veſtimentũ, & ſparſerunt pulverem ſuper capita ſua verſùs cœlum, 13 Sedéruntq; cum eo ſuper terram ſeptem diebus et ſeptem noctibus, & nullus dicebat verbum, quia viderunt ejus percuſſionem jam creviſſe valdè.

CAP. III.

1 Poſt hæc aperuit Job os ſuum, & maledixit diei in qua natus eſt, (a) 2 dixitque, Pereat dies in qua natus ſum, & nox in qua dictum eſt, Jam conceptus eſt ille homo; 3 Et (b) ſit tenebroſa, non requirat eã Deus deſuper, nec ei oriatur lux:

INTERP. SYRIACA.

(a) Et reſpondens Job dixit, (b) dies illa

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixit Dominus ad Sathanan: Nunquid poſuiſti cor tuum ad ſervum meum Job? quia non eſt ei ſimilis in terra populorum; vir perfectus & rectus, timens à facie 3
Domini, & recedens à malo: & adhuc ipſe retinet perfectionem ſuam, & commoviſti verbum meum adverſus eum ut affligeret eum fruſtrà. Et reſpondit Sathanas 4
coram Domino & ait: Membrum pro membro, & omnia quæ habet filius hominis, tradet pro anima ſua. Veruntamen extende nunc plagam manus tuæ, & tange 5
os ejus & *carnem* ejus, ſi non in conſpectu verbi tui irritabit te. Et dixit Dominus ad Sathanan: Ecce traditus eſt in manu tua: veruntamen animam illius ſerva. 6
Et egreſſus eſt Sathanas *cum licentia* à facie Domini, & percuſſit Job ſcabie peſſimâ à planta pedis ejus uſque ad verticem ejus. Et tulit ſibi teſtam ut ſcalperet ſe cum 7 8
ea: & ipſe ſedebat in medio cineris. Et dixit ei *Dinah* uxor ejus: Adhuc tu retines ſimplicitatem tuam? benedic verbo Domini, & morere. Et dixit ei: Sicut lo- 9 10
quitur una de mulieribus quæ operantur ignominiam in domo patris ſui, ſic tu loqueris: tantummodò bonum recipiemus à facie Domini, & malum non ſuſcipiemus?
In omnibus his non peccavit Job labris ſuis; *ſed in animo ſuo cogitavit verba.* Et audierunt tres ſocii Job omne malum iſtud quod venerat ſuper eum, *cùm vidiſſent* 11
arbores hortorum ſuorum arefactas, & panem cibi ſui converſum in carnem vivam, & vinum potus ſui in ſanguinem: & venerunt unuſquiſque de loco ſuo, *& ob hoc*
meritum liberi qui ſunt à loco deſtinato ipſis in Gehenna; Eliphaz qui erat de Theman, & Baldad qui erat de Sua, & Sophar qui erat de Naama, & conjuncti ſunt ſimul
ut venirent & moverent capita ſua *in* eum, & conſolarentur eum. Et levaverunt oculos ſuos à longè, & cognoverunt eum: & levaverunt vocem ſuam & fleve- 12
runt, & ſciderunt unuſquiſque pallium ſuum, & aſperſerunt pulverem ſuper capita ſua verſus cœlum. Et ſederunt cum eo in terra ſeptem diebus & ſeptem noctibus, 13
& nemo loquebatur ei verbum, quia videbant quòd creſcebat dolor vehementer.

CAPUT. III.

Poſt hæc aperuit Job os ſuum, & maledixit diei ſuo. Et *reſpondit* Job & ait: Pereat dies in qua natus ſum, *& Angelus qui præfectus eſt conceptui*: & nox, 1 2 3
qua dixit *ipſis*: Creatus eſt vir. Dies illa ſit tenebroſa: Non requirat eam Deus deſuper, neque luſtretur matutina luce. 4

איוב : ד

illam ſuper habitet : *mortis umbra &* , *obſcuritas* illam Polluant
יִגְאָלֻהוּ חֹשֶׁךְ וְצַלְמָוֶת תִּשְׁכָּן־עָלָיו 5
illam Noctem .diei *amari tanquam* illam terreant ; nubes
עֲנָנָה יְבַעֲתֻהוּ כִּמְרִירֵי יוֹם׃ הַלַּיְלָה הַהוּא 6
numerum in ; anni *diebus in adunetur ne* , caligo *eam* tollat
יִקָּחֵהוּ אֹפֶל אַל־יִחַדְּ בִּימֵי שָׁנָה בְּמִסְפַּר
, ſolitaria ſit illa nox Ecce .veniat non menſium
יְרָחִים אַל־יָבֹא׃ הִנֵּה הַלַּיְלָה הַהוּא יְהִי גַלְמוּד 7
, diei *maledicentes eam* Execrentur .illa in *canticum* veniat non
אַל־תָּבֹא רְנָנָה בוֹ׃ יִקְּבֻהוּ אֹרְרֵי־יוֹם 8
:ejus crepuſculi ſtellæ Obtenebrentur .ſuum luctum ſuſcitare parati
הָעֲתִידִים עֹרֵר לִוְיָתָן׃ יֶחְשְׁכוּ כּוֹכְבֵי נִשְׁפּוֹ 9
.auroræ *palpebras in* videat nec ; non & ,lucem *ad* expectet
יְקַו־לְאוֹר וָאַיִן וְאַל־יִרְאֶה בְּעַפְעַפֵּי־שָׁחַר׃
dolorem *abſcondit &* , mei uteri *fores* concluſit non Quòd
כִּי לֹא סָגַר דַּלְתֵי בִטְנִי וַיַּסְתֵּר עָמָל 10
ventre ex ?ſum mortuus vulva à non quid Ut .meis oculis ab
מֵעֵינָי׃ לָמָּה לֹּא מֵרֶחֶם אָמוּת מִבֶּטֶן 11
cur & ? genua me prævenerunt Cur *? expiravi & ,ſum* egreſſus
יָצָאתִי וְאֶגְוָע׃ מַדּוּעַ קִדְּמוּנִי בִרְכָּיִם וּמַה־ 12
: quieſcerem & , *jacerem* nunc Etenim *? ſugerem quòd* , ubera
שָּׁדַיִם כִּי אִינָק׃ כִּי־עַתָּה שָׁכַבְתִּי וְאֶשְׁקוֹט 13
conſulibus & , regibus Cum .mihi *eſſet* requies tunc , dormirem
יָשַׁנְתִּי אָז יָנוּחַ לִי׃ עִם־מְלָכִים וְיֹעֲצֵי 14
principibus cum Vel .ſibi *ſolitudines ædificantibus* , terræ
אָרֶץ הַבֹּנִים חֳרָבוֹת לָמוֹ׃ אוֹ עִם־שָׂרִים 15
Vel .argento ſuas domos *implentibus* , *eis* aurum
זָהָב לָהֶם הַמְמַלְאִים בָּתֵּיהֶם כָּסֶף׃ אוֹ 16
non parvuli ſicut ; eſſem non , abſconditus abortivus ſicut
כְנֵפֶל טָמוּן לֹא אֶהְיֶה כְּעֹלְלִים לֹא־
requieverunt ibi & ;*terrorem* ceſſaverunt impii Ibi .lucem viderunt
רָאוּ אוֹר׃ שָׁם רְשָׁעִים חָדְלוּ רֹגֶז וְשָׁם יָנוּחוּ 17
audierunt non ; *fuerunt pacati* vincti Pariter .robore feſſi
יְגִיעֵי כֹחַ׃ יַחַד אֲסִירִים שַׁאֲנָנוּ לֹא שָׁמְעוּ 18
manumiſſus ſervus & ; idem ibi magnus & Parvus .exactoris vocem
קוֹל נֹגֵשׂ׃ קָטֹן וְגָדוֹל שָׁם הוּא וְעֶבֶד חָפְשִׁי 19
amaris *vitas* & ; lucem laboranti dedit quid Ut .ſuo domino à
מֵאֲדֹנָיו׃ לָמָּה יִתֵּן לְעָמֵל אוֹר וְחַיִּים לְמָרֵי 20
eam *effodiunt* & ; *ipſa* non & , mortem *ad Expectantibus* ? animo
נָפֶשׁ׃ הַמְחַכִּים לַמָּוֶת וְאֵינֶנּוּ וַיַּחְפְּרֻהוּ 21
cùm *exultabunt* ; *gaudium ad Lætantibus* .*abſconditis theſauris præ*
מִמַּטְמוֹנִים׃ הַשְּׂמֵחִים אֱלֵי־גִיל יָשִׂישׂוּ כִּי 22
texit & ;eſt abſcondita *ejus* via cujus viro .ſepulchrum invenerint
יִמְצְאוּ־קָבֶר׃ לְגֶבֶר אֲשֶׁר־דַּרְכּוֹ נִסְתָּרָה וַיָּסֶךְ 23
meum ſuſpirium *mei panis facies ad* Quia ? eum circa Deus
אֱלוֹהַּ בַּעֲדוֹ׃ כִּי־לִפְנֵי לַחְמִי אַנְחָתִי 24
pavorem Quia .mei rugitus aqua ſicut ſunt effuſi & ; veniet
תָבֹא וַיִּתְּכוּ כַמַּיִם שַׁאֲגֹתָי׃ כִּי פַחַד 25
Non .mihi *veniet* ,*ſum veritus* quod & ; mihi evenit & , *expavi*
פָּחַדְתִּי וַיֶּאֱתָיֵנִי וַאֲשֶׁר יָגֹרְתִּי יָבֹא לִי׃ לֹא 26
.*tremor* venit & ,requievi non & , quievi neque ,*fui tranquillus*
שָׁלַוְתִּי וְלֹא שָׁקַטְתִּי וְלֹא־נַחְתִּי וַיָּבֹא רֹגֶז׃

CAP. IV. ד

verbum *tentabimus Nunquid* : dixit & , Themanites Eliphaz reſpondit Et
וַיַּעַן אֱלִיפַז הַתֵּימָנִי וַיֹּאמַר׃ הֲנִסָּה דָבָר 1
2 erudiviſti Ecce ? poterit quis ſermones *in cohibere & ?laſſaberis* , te ad
אֵלֶיךָ תִּלְאֶה וַעְצֹר בְּמִלִּין מִי יוּכָל׃ הִנֵּה יִסַּרְתָּ 3
;tui ſermones erexerunt *Labantem* .roboráſti laſſas manus & ; multos
רַבִּים וְיָדַיִם רָפוֹת תְּחַזֵּק׃ כּוֹשֵׁל יְקִימוּן מִלֶּיךָ 4
.roboráſti *curvantia* genua &
וּבִרְכַּיִם כֹּרְעוֹת תְּאַמֵּץ׃

Verſio VULG. LAT.

5 Obſcurent eum tenebræ, &
umbra mortis, occupet eum
caligo, & involvatur amaritudine.
6 Noctem illam tenebro-
ſus turbo poſſideat, non computetur
in diebus anni , nec
7 numeretur in menſibus. Sit
nox illa ſolitaria, nec laude digna :
8 Maledicant ei qui maledicunt
diei, qui parati ſunt
9 ſuſcitare Leviathan : Obtenebrentur
ſtellæ caligine ejus:
expectet lucem & non videat,
nec ortum ſurgentis auroræ.
10 Quia non concluſit oſtia ventris,
qui portavit me,nec abſtulit
mala ab oculis meis.
11 Quarè non in vulva mortuus
ſum, egreſſus ex utero non ſtatim
12 perii? Quarè exceptus
genibus ? cur lactatus uberibus?
13 Nunc enim dormiens
ſilerem, & ſomno meo requieſcerem :
14 Cum regibus &
conſulibus terræ,qui ædificant
15 ſibi ſolitudines : Aut cum
principibus, qui poſſident aurum :
& replent domos ſuas
16 argento : Aut ſicut abortivum
abſconditum non ſubſiſterem,
vel qui concepti non viderunt
17 lucem. Ibi impii ceſſaverunt
à tumultu, & ibi requieverunt
18 feſſi robore. Et
quondam vincti pariter ſine
moleſtia,non audierunt vocem
19 exactoris. Parvus & magnus
ibi ſunt, & ſervus liber à domino
20 ſuo. Quarè miſero data
eſt lux, & vita his, qui in amaritudine
21 animæ ſunt? Qui
exſpectant mortem,& non venit,
quaſi effodientes theſaurum.
22 Gaudéntque vehementer
cùm invenerint ſepulchrũ.
23 Viro cujus abſcondita eſt via,
& circumdedit eum Deus tenebris?
24 Antequàm comedam
ſuſpiro : & tanquàm inundantes
aquæ , ſic rugitus meus :
25 Quia timor , quem timebam,
evenit mihi:& quod verebar,
26 accidit. Nónne diſſimulavi?
nónne ſilui ? nónne quievi ?
& venit ſuper me indignatio.

CAP. IV.

1 Reſpondens autem Eliphaz
2 Themanites,dixit ; Si cœperimus
loqui tibi, forſitan moleſtè
accipies, ſed conceptum
ſermonem tenere quis poterit?
3 Ecce docuiſti multos, & manus
4 laſſas roboráſti : Vacillantes
confirmaverunt ſermones
tui , & genua trementia
confortáſti :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 † Ἐκλάβοι δὲ αὐτὴν σκότος καὶ σκιὰ θανάτου,
† (ε) ἐπέλθοι ἐπ᾽ αὐτὴν γνόφος·
6 † καταραθείη ἡ (ζ) ἡμέρα Καὶ ἡ νὺξ ἐκείνη,
† ἀπενέγκοιτο αὐτὴν σκότος· † μὴ
εἴη εἰς ἡμέρας (η) ἐνιαυτοῦ, † μηδὲ ἀριθμηθείη
7 εἰς ἡμέρας μηνῶν. † Ἀλλὰ ἡ νὺξ
ἐκείνη εἴη (θ) ὀδύνη, † καὶ μὴ ἔλθοι ἐπ᾽
8 αὐτὴν εὐφροσύνη, μηδὲ χαρμονή. † Ἀλλὰ
καταράσαιτο αὐτὴν ὁ καταρώμενος τὴν ἡμέραν
ἐκείνην, † ὁ μέλλων τὸ μέγα κῆτος
9 (ι) χειρώσασθαι. † Σκοτωθείη τὰ ἄστρα τῆς
νυκτὸς ἐκείνης· ὑπομείναι, (κ) καὶ εἰς φωτισμὸν
μὴ ἔλθοι, † καὶ μὴ ἴδοι Ἑωσφόρον
10 ἀνατέλλοντα. † Ὅτι οὐ συνέκλεισε πύλας
γαστρὸς μητρός μου, † ἀπήλλαξε γὰρ ἂν (λ)
11 πόνον ἀπὸ ὀφθαλμῶν μου. † Διατί γὰρ ἐν
κοιλίᾳ οὐκ ἐτελεύτησα; † ἐκ γαστρὸς δὲ ἐξῆλθον,
12 καὶ οὐκ εὐθὺς ἀπωλόμην; † (μ) Ἱνατί
δὲ συνήντησάν μοι (ν) τὰ γόνατα; † ἱνατί
13 δὲ μαστοὺς ἐθήλασα (ξ); † Νῦν ἂν κοιμηθεὶς
ἡσύχασα, ὑπνώσας δὲ ἀνεπαυσάμην
14 † Μετὰ βασιλέων (ο) βουλευτῶν γῆς,
15 † οἳ ἐγαυριῶντο ἐπὶ ξίφεσιν, † (π) Ἢ
μετὰ ἀρχόντων, ὧν πολὺς ὁ χρυσὸς, οἳ ἔπλησαν
16 τοὺς οἴκους αὐτῶν ἀργυρίου· † Ἢ ὥσπερ
ἔκτρωμα ἐκπορευόμενον ἐκ μήτρας μητρὸς,
17 † ἢ ὥσπερ νήπιοι οἳ οὐκ εἶδον φῶς. † Ἐκεῖ
ἀσεβεῖς (ρ) ἐξέκαυσαν θυμὸν ὀργῆς, † ἐκεῖ
ἀνεπαύσαντο κατάκοποι (σ) τῷ σώματι.
18 † Ὁμοθυμαδὸν δὲ (τ) οἱ αἰώνιοι οὐκ ἤκουσαν
19 φωνὴν φορολόγου. † Μικρὸς καὶ μέγας ἐκεῖ
ἐστι, καὶ θεράπων (υ) δεδοικὼς τὸν κύριον
20 αὐτοῦ. † Ἱνατί γὰρ δέδοται τοῖς ἐν (φ) πικρίᾳ
φῶς; † ζωὴ δὲ ταῖς ἐν ὀδύναις ψυχαῖς,
21 † Οἳ (χ) ἱμείρονται τοῦ θανάτου, καὶ οὐ τυγχάνουσιν,
† ἀνορύσσοντες (ψ) ὥσπερ θησαυρούς,
22 † Περιχαρεῖς δὲ ἐγένοντο ἐὰν (ω) κατατύχωσι;
23 † Θάνατος ἀνδρὶ ἀνάπαυμα,
24 † Συνέκλεισε γὰρ ὁ Θεὸς κατ᾽ αὐτοῦ. † Πρὸ
γὰρ τῶν σίτων μου (α) στεναγμὸς ἥκει, δακρύω
25 δὲ ἐγὼ συνεχόμενος φόβῳ. † Φόβος γὰρ (β)
ὃν ἐφρόντισα ἦλθέ μοι, † καὶ ὃν ἐδεδοίκειν
26 συνήντησέ μοι. † Οὔτε εἰρήνευσα, οὔτε ἡσύχασα,
οὔτε ἀνεπαυσάμην, ἦλθε δέ μοι
ὀργή.

Sed (c) excipiant illam tenebræ, 5
& umbra mortis: ſuperveniat in
eam (d) caligo: (e) maledicta
ſit dies Et nox illa: auferant e- 6
am tenebræ: (f) non ſit in diebus
anni, neque numeretur in diebus
menſium : Sed nox illa ſit (g) 7
dolor, & non veniat ſuper eam
lætitia, neque (h) gaudium: Sed 8
maledicat ei, qui maledicit diem
illam : (i) qui habet magnum
cetum opprimere: Obtenebreſcant 9
ſydera noctis illius : (k) permaneat,
& in lucem non veniat,
& non videat Luciferum exorientem.
Quoniam non concluſit 10
portas ventris matris meæ :
abſtuliſſet enim utique laborem ab
oculis meis. Quarè enim in ventre 11
non obii? ex utero autem
exii, & non protinus perii? ut 12
quid autem occurrerunt mihi
genua? quarè autem ubera ſuxi?
Nunc utique dormiens quieſcerem; 13
ſomnum autem capiens requieſcerem
Cum regibus, conſi- 14
liariis terræ, qui gloriabantur in
gladiis , Aut cum principibus, 15
quibus multum fuit aurum, qui
compleverunt domos ſuas argento:
Aut tanquam abortivum 16
exiens de vulva matris: aut tanquam
infantes, qui non viderunt
lucem. ubi impii (l) accenderunt 17
furorem iræ: ibi requieverunt
fatigati corpore : Pariter 18
autem (m) ſeculares non audierunt
vocem (n) exactoris: Puſil- 19
lus & magnus ibi eſt, & ſervus
(o) timens dominum ſuum. ut 20
quid enim data eſt eis, qui in
amaritudine ſunt, lux; & vita
animabus, quæ ſunt in doloribus?
Qui deſiderant mortem, & non 21
contingit illis ; effodientes quaſi
theſauros: Læti autem facti ſunt, 22
ſi fuerint conſequuti : Mors vi- 23
ro (p) requies: (q) concluſit enim
Deus ſuper eum : Ante eſcas 24
quippe meas (r) gemitus adeſt, &
(ſ) fleo ego coarctatus timore.
Timor enim, quem verebar, venit 25
mihi; et quem metueram, occurrit
mihi; Neque in (t) pace fui, ne- 26
que in ſilentio, neque in requie :
venit autem mihi (u) ira.

MS.A. (ε) καὶ ἐπέλθοι (ζ) ἡ ἡμέρα ἐκείνη Καὶ (η) ἐνιαυτῶν, (θ) ὀδυνηρά, (ι) χειρώσασθαι, (κ) καὶ μὴ ἔλθοι, καὶ μὴ φωτίσαι, μηδὲ ἴδοι (λ) κόπον (μ) Καὶ ἱνατί συνήντησέν (ν) γόνατα; (ξ) μαζός μου; Νῦν (ο) καὶ βουλευτῶν (π) Καὶ μετὰ (ρ) ἔπαυσαν (σ) σώματι. (τ) δι᾽ αἰῶνος οὐκέτι ἤκουσαν (υ) οὐ δεδοικὼς (φ) πικρίᾳ ψυχῆς φῶς, (χ) ὁμείρονται θανάτου, (ψ) αὐτὸν ὥσπερ θησαυρὸν, (ω) κατατύχωσιν θανάτου. Θάνατος γὰρ ἀνδρὶ ἀνάπαυσις, οὗ ἡ ὁδὸς ἀπεκρύβη, συνέκλεισεν γὰρ ὁ κύριος κατ᾽ (α) στεναγμός μοι ἥκει, (β) ὃν εὐλαβούμην, ἦλθέν μοι, καὶ ὃν

ΚΕΦ. δ'.

1 † ὙΠολαβὼν δὲ Ἐλιφὰζ ὁ Θαιμανίτης,
2 λέγει, † Μὴ πολλάκις σοι λελάληται ἐν
κόπῳ; † ἰσχὺν δὲ ῥημάτων σου τίς ὑποίσει;
3 † Εἰ γὰρ σὺ ἐνουθέτησας πολλοὺς, † καὶ χεῖρας
4 (α) ἀσθενοῦς παρεκάλεσας, † (β) Ἀσθενοῦντάς
τε ἐξανέστησας ῥήμασι, † (γ) γόνασί τε
ἀδυνατοῦσι (δ) θάρσος περιέθηκας.

CAP. IV.

Suſcipiens autem Eliphas The- 1
manites, ait ; Num (a) ſæpe ti- 2
bi ſermo eſt habitus in moleſtia?
pondus autem verborum tuorum
quis ſuſtinebit ? Si enim tu eru- 3
diviſti multos, & manus infirmas
conſolatus es , Et eos qui 4
infirmabantur , erexiſti verbis,
genibúſque impotentibus fiduciam
circumpoſuiſti :

MS.A. (α) ἀσθενούντων (β) Ἀσθενοῦντας δὲ (γ) γόνασιν δὲ (δ) περιέθηκας θάρσος.

תרגום TARGUM.

5 יטנפון יתיה חשוכא וטולי מותא תשרי עלוי עננא יבעתון יתיה היך מרירי יומא [צערא דאצטער ירמיה על חורבן בית מקדשא ויונה באטלקותיה בימא
6 דטורסים :] ליליא ההוא ידברניה קבלא לא יתיחד עם יומין טבין דשתא במנין רישי ירחיא לא יעול : הא ליליא ההוא יהי צערא לא תעול רננא 7
8 [דתרנגול ברא למקלסא] ביה : ילטטוניה נבייא די לטטין יומא דפורענותא דאטימוסא לאדכר באתערותהון אליותהון : יתחשכון כוכבי נשף שיריה 9
10 יסתכי לנהרא ולא יחמי בתסורי קרצתא : ארום לא אחד פאתי דלתתי דהנון דשי כרסי וטשר עמלא מן עיני : למא לא מן רחמא אמות מכרסא כד 11
12 נפקית ואתנגד : מה דין אקדימו יתי רכוביא ומה תדיא ארום אינק : ארום השתא שכיבית ואשדוך דמכית בכן ינוח לי : עם מלכיא ויעטי ארעא 13 14
15 דמשכללין צדין להון : או עם רברביא דדהב להון דממלין קורטוריהון סימא : או היך נפלא דטמיע במעינא לית אפשר דאהי היך טליא דלא חמון 16
17 נהור אוריתא : תמן רשיעיא דעבדו תתובא פסקו רוגז גהנם ותמן ינוחון תלמידיא דאשתלהי חילהון באוריתא : כחדא אסירי מדרשיא שליאו לא 18
19 שמעו ינקי בית רבא קל אמוראה : יעקב דאתקרי דרדק ואברהם דאתקרי קשיש תמן הוא ויצחק עבדא דיי דנפק בר חורין מן כופתא מן קירים דידיה : 20
21 למה יהיב ללעי נהורא וחיי למרירי נפש : דאורכין למותא וליתוי וחפסין ליה מן טומעיא : דהוו חדין לדיצא השתא יחדון ארום ישכחון בית קבורתא : 22
23 24 כל אלין מרירתא לגבר די אורחיה מטמרא וטלל אלהא אמטולתיה : ארום קדם סעודתי תנחתי תעול ונתון היך מוי אכליותי : ארום דלוחא דלחית ואתת 25
26 ליתי ומה דדלחית ייתי לי : לא שליית מבסורתא דתורי ואתנן ולא שדוכית מן בסורתא דיקדתא ולא ניחית מבסורתא דגמליא ואתא רוגזא
על בסורתא די בניא :

ד

1 2 ואתיב אליפז דמן תימן ואמר : הא על נסיון פתגמא דמטא לותך תשתלהי ולמעכבא במליא מן יכול : הא כסנית סגיען ידיא חלשיא תקפתא : 3
דתקל בחובא יקימון מליך וארכוביא דחמטן בעבירא תחיל : 4

Versio SYRIACA.

4 * ܢܚܫܟܘܢܝܗܝ ܚܫܘܟܐ ܘܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ. ܢܫܪܐ ܥܠܘܗܝ ܥܢܢܐ. ܢܕܚܠܘܢܝܗܝ ܡܪܝܪܝ ܝܘܡܐ. * ܠܠܝܐ ܗܘ
5 ܢܚܫܟܘܢܝܗܝ ܥܪܦܠܐ. ܝܘܡܐ ܗܘ ܠܐ ܢܬܚܫܒ ܒܡܢܝܢܐ ܕܝܘܡܬܐ ܕܫܢܬܐ. ܘܒܡܢܝܢܐ ܕܝܪܚܐ ܠܐ ܢܥܘܠ.
6 * ܠܠܝܐ ܗܘ ܢܗܘܐ ܚܪܒܐ. ܘܠܐ ܬܥܘܠ ܒܗ ܬܫܒܘܚܬܐ. * ܢܠܘܛܘܢܝܗܝ ܠܝܛܝ ܝܘܡܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܥܬܝܕܝܢ
7 ܠܡܥܝܪܘܬܗ ܠܠܘܝܬܢ. * ܢܚܫܟܘܢ ܟܘܟܒܐ ܕܢܫܦܗ. ܢܣܟܐ ܠܢܘܗܪܐ ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ. ܘܠܐ ܢܚܙܐ ܙܠܝܩܐ
8 ܕܨܦܪܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܚܕ ܬܪܥܐ ܕܟܪܣܐ ܕܐܡܝ. ܘܟܣܐ ܥܡܠܐ ܡܢ ܥܝܢܝ. * ܠܡܢܐ ܠܐ ܡܝܬܬ ܡܢ ܡܪܒܥܐ. ܘܡܢ
9 10 ܟܪܣܐ ܢܦܩܬ. ܘܐܒܕܬ ܐܝܟ. * ܠܡܢܐ ܩܕܡܘܢܝ ܒܘܪܟܐ. ܘܡܢ ܬܕܝܐ ܕܡܢܐ ܝܢܩܬ. * ܗܫܐ ܕܝܢ ܫܟܝܒ
11 12 ܗܘܝܬ ܘܫܠܐ ܗܘܝܬ. ܘܕܡܟ ܗܘܝܬ ܘܢܝܚ ܗܘܐ ܠܝ. * ܥܡ ܡܠܟܐ ܘܡܕܒܪܢܐ ܕܐܪܥܐ. ܕܒܢܝܢ ܠܗܘܢ ܚܘܪܒܬܐ. * ܐܘ
13 14 ܥܡ ܫܠܝܛܢܐ. ܕܕܗܒܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ. ܘܡܠܝܢ ܒܬܝܗܘܢ ܣܐܡܐ. * ܐܘ ܐܝܟ ܫܩܠܐ ܛܡܝܪܐ. ܐܝܟ ܠܐ ܗܘܝܬ.
15 ܐܝܟ ܥܘܠܠܐ ܕܠܐ ܚܙܘ ܢܘܗܪܐ. * ܕܬܡܢ ܥܘܠܐ ܫܠܝܘ ܡܢ ܪܘܓܙܗܘܢ. ܘܬܡܢ ܐܬܢܝܚܘ ܐܝܠܝܢ ܕܠܐܝܘ
16 ܒܚܝܝܗܘܢ. * ܘܐܣܝܪܐ ܐܝܟܚܕܐ ܫܬܝܩܝܢ. ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ ܩܠܐ ܕܡܫܥܒܕܢܐ. * ܙܥܘܪܐ ܘܪܒܐ ܬܡܢ ܗܘ. ܘܥܒܕܐ
17 18 ܕܡܬܚܪܪ ܡܢ ܡܪܗ. * ܠܡܢܐ ܡܬܝܗܒ ܢܘܗܪܐ ܠܠܐܝܐ. ܘܚܝܐ ܠܡܪܝܪܝ ܢܦܫܐ. * ܕܡܣܟܝܢ ܠܡܘܬܐ
19 20 ܘܠܝܬ. ܘܒܥܝܢ ܠܗ ܐܝܟ ܕܠܣܝܡܬܐ. * ܚܕܝܢ ܘܡܬܟܢܫܝܢ ܘܪܘܙܝܢ. ܡܐ ܕܡܫܟܚܝܢ ܩܒܪܐ. * ܠܓܒܪܐ
21 22 ܕܐܘܪܚܗ ܡܛܫܝܐ. ܘܡܛܠܠ ܐܠܗܐ ܥܠܘܗܝ. * ܡܛܠ ܕܩܕܡ ܠܚܡܝ ܣܠܩ ܬܢܚܬܝ. ܘܐܫܬܦܟ ܐܝܟ ܡܝܐ
23 24 ܩܥܬܝ. * ܡܛܠ ܕܕܚܠܬܐ ܕܕܚܠܬ ܐܬܬ ܥܠܝ. ܘܡܕܡ ܕܙܥܬ ܡܢܗ ܡܛܝܢܝ. * ܠܐ
25 ܫܠܝܬ ܘܠܐ ܫܠܝܬ. ܘܠܐ ܢܚܬ ܘܐܬܐ ܪܘܓܙܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܕ * ܘܥܢܐ ܐܠܝܦܙ ܬܝܡܢܝܐ ܘܐܡܪ.
1 2 * ܕܠܡܐ ܡܠܬܐ ܥܡܟ ܐܡܠܠ. ܐܠܐ ܠܡܟܠܝܘ ܡܠܐ ܡܢܘ ܡܫܟܚ. * ܗܐ ܪܕܝܬ ܣܓܝܐܐ. ܘܐܝܕܝܐ
3 ܡܪܦܝܬܐ ܐܚܝܠܬ. * ܟܪܝܗܐ ܠܐ ܢܩܝܡܘܢ ܡܠܝܟ. ܘܒܘܪܟܐ ܪܦܝܬܐ ܐܚܝܠܬ.
4

Versio ARABICA.

4 5 * يغطيه الظلام وظلال الموت * تميل عليه السحاب * يبتعونه مريرو النفس * ذلك الليل يغطيه الغمام
6 ذلك اليوم لا يحسب في عدد ايام السنة * وفي عدد الشهور لا يدخل فيه * ذلك الليل يكون معدوما * ولا
7 8 يدخل فيه التسبحة * يلعنه لاعنو اليوم الذين هم معتادين ان يأتوا لعبادتنا * تظلم كواكب صبحه *
9 10 * حين لم يأخذ ابواب ارحام امي * وستر العمل من عيني * لماذا لم امت من الرحم * ومن البطن لماذا
11 12 خرجت * هلكت الآن * لماذا ربتني الحجور ومن الاثداء لماذا استرضعت * لعلني الآن كنت
13 مضطجعا ساكتا ونائما اكون * وساكنا * مع الملوك وسلاطين الارض الذين يبنون لهم الخرائب *
14 15 * أو مع الصالحين الذين لهم الذهب ومملوة بيوتهم من الفضة * أو من الاشياء المدفونة * كيف
16 لم أكن مثل الاطفال الذين لم يروا الضوء * فان هنالك الاشرار سكتوا من ان يغضبوا * وهناك
17 18 يستريحون الذين تعبوا في حياتهم * وجميع الاسراء سكوت * ولا يسمعون صوت المستعبد لهم * الصغير
19 20 والكبير هناك كانوا * والعبد الذي يتحرر وسيده * لماذا يعطي النور المتعوبين * والحياة لمري نفس
21 * الذين ينتظرون الموت * وليس * يطلبونه مثل الوديعة * يفرحون ويجمعون ويسرون اذا ما وجدوا قبرا *
22 23 * لرجل طريقه مستورة ويجن الله عليه * لان من قدام خبزي صعد تنهدي * واستقاط مثل الماء نحيبي *
24 25 * لان المخافة التي حسبت جات علي * ومن الذي كنت افزع اتاني * لم اسكت ولم اهدا * ولم استرح
1 2 واتا الغضب * الفصل الرابع * فاجاب اليفاز التيمني * وقال * ان عدت ان
3 اتكلم معك تضيق * ولامساك الكلام عنك من الذي يستطيع * فاني قد ارضيت كثيرا * وايدي
4 مرضوضة قد قويتها * الضعفاء لا يقيمون كلامك * والركب المرتعدة فانك قد قويتها *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Tegat eam caligo, et umbra mortis, inclinentur ſuper eam nubes, et (c) expetant eam acerbi animo. 4 *Illam noctem cooperiat caligo, dies illa non computetur in numero dierum anni, & in numerum menſium non ingrediatur,* 5 *Nox illa ſit deſolata, nec ingrediatur eam laus,* 6 *Maledicant ei maledicentes diei, (d) qui ſunt aſſueti venire ad noſtrum obſequium,* 7 *Obſcurentur ſtellæ matutini (e) ejus,* 8 *Quia non (f) abſtulit portas vulvæ matris meæ, et non texit laborem ab oculis meis.* 9 *Quarè non mortuus ſum inde à vulva, & de utero cur egreſſus ſum? periiſſem utinam.* 10 *Cur educaverunt me (g) ſinus? & cur de uberibus hic ſuxi?* 11 *Fortè nunc eſſem jacens, et tranquillus, et dormiens, et quietus,* 12 *Cum regibus, et principibus terræ, qui ſibi ædificant ruinas,* 13 *Aut cum (h) felicibus, quibus eſt aurum, & quorum domus plenæ ſunt argento,* 14 *Aut (i) rebus humo ſepultis: quomodo non fui ſicut infantes, qui non viderunt lucem?* 15 *Quoniam ibi iniqui deſinunt irritare, ibique quieſcunt qui laboraverunt in vita ſua;* 16 *Et omnes captivi ſilentes ſunt; nec audiunt vocem ſubjicientis eos.* 17 *Parvus & magnus ibi ſunt, & ſervus qui emancipatur (k), & dominus ejus.* 18 *Cur datur lux feſſis? (l) et vitam cur videt anima eorum?* 19 *Qui expectant mortem, et non adeſt? expetunt eam quaſi theſaurum.* 20 *Gaudent et congregantur, & lætantur cùm invenerint ſepulchrum?* 21 *Viro cujus via eſt abſcondita, & quem Deus protegit?* 22 *Equidem (m) ante luctum meum aſcendit gemitus meus, & exundat ſicut aqua clamor meus;* 23 *Quoniam timor quem metui, venit ſuper me, & id à quo timebam evenit mihi:* 24 *Non ſilui, non fui tranquillus, non quievi; tamen venit indignatio.* 25

CAP. IV.

Reſpondit Eliphaz Temanites, et dixit; 1 *Si verba ſubtexam tecum, (a) faſtidis; at ſermonem à te continere quis poſſit?* 2 *(b) Nam ego ſatisfeci multis, & manus quaſſatas (c) ego roboravi.* 3 *Infirmi non confirmarent verba tua, etiã genua tremula tu quidem corroboràſti,* 4

INTERP. SYRIACA.

(c) horreſcant eam *ut* amaritudines diei. (d) qui ſunt parati ad excitandũ Leviathan, (e) ejus, expectent lucem, & non adſit illi, neque aſpiciat radios auroræ, (f) clauſit (g) genua? (h) principibus, (i) abortivis abſconditis: (k) à dño ſuo. (l) et vita acerbis animo? (m) ante panem *Cap. iv.* (a) te angis; (b) Ecce corripuiſti multos, (c) corroboràſti.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Coinquinent eã tenebræ, et umbra mortis; habitent in ea nubes; & conturbent eã quaſi amaritudo diei, *dolor quo affect⁹ eſt Jirmejah ob excidiũ dom⁹ ſanctuarii, et Jonah* 5
cum ejiceretur in mare Tarſenſe. Noctem illam occupent tenebræ; ne computetur in dieb⁹ ſolennib⁹ anni: in numero Kalendarũ menſium non veniat. In nocte illa ſit 6 7
tribulatio, non veniat cantus *galli ſylveſtris ut reſonet* in ea. Maledicant ei *prophetæ* qui maledicunt diei ultionis, *quæ parata eſt*, cùm ſuſcitantur, *commemorare* lamen- 8
tationem ſuam. Obſcurentur ſtellæ noctis caligine ejus, expectet lucem & non adſit, neque videat ſurgentem auroram. Quoniam non concluſit *meat⁹* portarũ *mearum* 9 10
quæ ſunt oſtia ventris *mei*: nec abſcondit laborẽ ob oculis meis. Quare non à vulva mortuus ſum? & quando egreſſus ſum de ventre, defeci? Quare prævenerunt me 11 12
genua; & quare ubera, ut ſugerem? Jam enim cubarẽ et requieſcerẽ: dormirem, tunc quies eſſet mihi, Cum regib⁹ et conſiliariis terræ, qui ædificant ſibi ſolitudines: 13 14
Aut cum principib⁹ quibus eſt aurũ, qui implent curias ſuas argento. Aut ſicut abortivũ quod abſconditũ eſt in ventre, non ſubſiſterem, vel ſicut parvuli qui non vide- 15 16
runt lucem *legis*. Ibi impii qui egerunt pœnitentiã, ceſſaverunt à tumultu gehennæ, & ibi quieverunt diſcipuli quorũ virtus laboravit in lege. Simul vincti in gymnaſiis 17 18
quieverũt: non audierunt parvuli in domo magiſtri vocem doctoris. Jacob qui vocat⁹ eſt parv⁹, et Abraham qui vocat⁹ eſt vetus, ibi ſunt, & Iſaac ſerv⁹ Dñi, qui egreſſus 19
eſt liber ab alligatione à *Domino ſuo*. Quare datur fatigato lux, et vita his qui amaro ſunt animo? Qui expectant mortẽ et non venit; et ſcrutantur eã magis quàm theſauros 20 21
abſconditos. Qui lætabantur in exultatione, modò lætantur cùm invenerint domum ſepulchri. Omnes hæ amaritudines ſunt viro cuj⁹ via abſcondita eſt, & obumbravit 22 23
De⁹ apud eum. Quoniam ante prandiũ meum gemit⁹ me⁹ venit, & fluunt velut aquæ rugit⁹ mei. Quia timor quẽ timebam venit mihi; & quod formidabã, evenit mihi. 24 25
Nonne diſſimulavi, quoniam nunciatum eſt mihi de bobus & aſinis? & nonne dormivi quoniam nunciatum eſt mihi de incendio? & nonne quievi quando 26
nunciatũ eſt mihi de camelis, & venit indignatio quoniam nunciatũ eſt mihi de morte filiorum?

CAP. IV.

ET reſpondit Eliphaz qui erat de Theman & dixit: Nunquid propter tentationem rei quæ ad te pervenit, deficis; & retinere verba quis poterit? Ecce caſtigabas 1 2 3
multos & manus inſirmas roborabas. Et cornuentem in peccatum ſuſcitabant verba tua, & genua labentia in delictum confortabas 4

איוב : ה

, te ad uſque pergit ; tuliſti ægrè & , te ad venit nunc Quia
5 כי עתה תבוא אליך ותלא תגע עדיך
integritas & , tua expectatio ; tua fiducia tuus timor Nonne . es territus &
6 ותבהל : הלא יראתך כסלתך תקותך ותם
ubi & ; periit innocens ille quis nunc Recordare ? tuarum viarum
7 דרכיך : זכר־נא מי הוא נקי אבד ואיפה
; iniquitatem arantes vidi Quemadmodum ? fuerint ſucciſi recti
8 ישרים נכחדו : כאשר ראיתי חרשי און
; peribunt Dei mente A . illum metent , laborem ſeminantes &
9 וזרעי עמל יקצרהו : מנשמת אלוה יאבדו
; leonis vox & , leonis Rugitus . conſumentur ejus naris ſpiritu à &
10 ומרוח אפו יכלו : שאגת אריה וקול שחל
; præda abſque periit major Leo . ſunt evulſi leunculorum dentes &
11 ושני כפירים נתעו : ליש אבד מבלי־טרף
; eſt dictum furtivè verbum me ad Et . ſe ſeparabunt leonis filii &
12 ובני לביא יתפרדו : ואלי דבר יגנב
viſionibus à ramuſculis In . eo de puſillum mea auris ſuſcepit &
13 ותקח אזני שמץ מנהו : בשעפים מחזינות
, mihi occurrit Pavor . homines ſuper ſoporem cadere in , noctis
14 לילה בנפל תרדמה על־אנשים : פחד קראני
ſpiritus Et . fecit pavere meorum oſſium multitudinem & ; tremor &
15 ורעדה ורב עצמותי הפחיד : ורוח
. meæ carnis crinem faciet horripilare ; tranſibit meas facies ſuper
על־פני יחלף תסמר שערת בשרי :
; meis oculis coram imago : ejus aſpectum agnoſcam non & , Stabit
16 יעמד ולא־אכיר מראהו תמונה לנגד עיני
? juſtificabitur Deo præ homo Nunquid . audiam vocem & ſilens murmur
17 דממה וקול אשמע : האנוש מאלוה יצדק
; credet non ſuis ſervis in Ecce ? vir mundabitur ſuo factore præ an
18 אם־מעשהו יטהר גבר : הן בעבדיו לא יאמין
domos habitantes Etiam . glorationem ponet ſuis angelis in &
19 ובמלאכיו ישים תהלה : אף שכני בתי־
faciei ad , eos conterent ; eorum fundamentum pulvere in quorum , luti
חמר אשר בעפר יסודם ידכאום לפני־
, ponentem non propter : conterentur veſperam ad manè A . tineæ
20 עש : מבקר לערב יכתו מבלי משים
? eis in eorum dignitas eſt profecta Nonne . peribunt ſeculum in
21 לנצח יאבדו : הלא־נסע יתרם בם
. ſapientia in non & , morientur
ימותו ולא בחכמה :

CAP. V. ה

. obtinueris ſanctis de quem ad & : tibi reſpondens eſt ſi , nunc Clama
1 קרא־נא היש עונך ואל־מי מקדשים תפנה :
. invidia interficiet ardelionem & ; iracundia occidet ſtultum Quia
2 כי לאויל יהרג־כעש ופתה תמית קנאה :
ejus habitaculo ſum imprecatus & , radicantem ſtultum vidi Ego
3 אני ראיתי אויל משריש ואקוב נוהו
, porta in conterentur & ; ſalute à ejus filii Elongabuntur . ſtatim
4 פתאם : ירחקו בניו מישע וידכאו בשער
ſpinis de & , comedet famelicus ejus meſſem Cujus . eruens non &
5 ואין מציל : אשר קצירו רעב יאכל ואל־מצנים
egreditur non Quia . eorum virtutem ſitibundi abſorbebit & , eam capiet
6 יקחהו ושאף צמים חילם : כי לא־יצא
Quia . moleſtia germinabit non humo de & : iniquitas pulvere de
7 מעפר און ומאדמה לא־יצמח עמל : כי
. volatum elevabunt prunæ filii & : eſt natus laborem ad homo
אדם לעמל יולד ובני רשף יגביהו עוף :
ponam Deum ad & ; Deum ad quæram ego Veruntamen
8 אולם אני אדרש אל־אל ואל־אלהים אשים
. meum eloquium
דברתי :

Verſio VULG. LAT.

5 Nunc autem venit ſuper te plaga,
& defeciſti : tetigit te, &
6 conturbatus es. Ubi eſt timor
tuus, fortitudo tua, patientia
tua, & perfectio viarum
7 tuarum ? Recordare, obſecro
te, quis unquam innocens periit
? aut quando recti deleti
8 ſunt ? Quin potiùs vidi eos,
qui operantur iniquitatem, &
ſeminant dolores, & metunt
9 eos, Flante Deo periiſſe, &
ſpiritu iræ ejus eſſe conſumptos :
10 Rugitus leonis, & vox
leænæ, & dentes catulorum
11 leonum contriti ſunt. Tigris
periit eò quòd non haberet
prædam, & catuli leonis diſſipati
12 ſunt. Porrò ad me dictum
eſt verbum abſconditum, &
quaſi furtivè ſuſcepit auris
13 mea venas ſuſurri ejus. In horrore
viſionis nocturnæ, quando
ſolet ſopor occupare homines,
14 Pavor tenuit me, & tremor,
& omnia oſſa mea perterrita
15 ſunt : Et cùm ſpiritus
me præſente tranſiret, inhorruerunt
16 pili carnis meæ. Stetit
quidam, cujus non agnoſcebam
vultum, imago coram oculis
meis, et vocem quaſi auræ
17 lenis audivi. Numquid homo,
Dei comparatione juſtificabitur,
aut factore ſuo purior erit
18 vir ? Ecce qui ſerviunt ei, non
ſunt ſtabiles, & in angelis ſuis
19 reperit pravitatem : Quantò
magis hi qui habitant domos
luteas, qui terrenum habent
fundamentum, conſumentur
20 velut à tinea ? De manè uſque
ad veſperam ſuccidentur : &
quia nullus intelligit, in æternum
21 peribunt. Qui autem
reliqui fuerint, auferentur ex
eis : morientur, & non in ſapientia.

CAP. V.

1 Voca ergò, ſi eſt qui tibi
reſpondeat, & ad aliquem ſanctorum
2 convertere. Verè
ſtultum interficit iracundia, &
3 parvulum occidit invidia. Ego
vidi ſtultum firma radice, &
maledixi pulchritudini ejus
4 ſtatim. Longè fient filii ejus
à ſalute, & conterentur in porta,
5 & non erit qui eruat. Cujus
meſſem famelicus comedet, &
ipſum rapiet armatus, & bibent
ſitientes divitias ejus.
6 Nihil in terra ſine cauſa fit,
& de humo non oritur dolor.
7 Homo naſcitur ad laborem,
8 & avis ad volatum. Quam
ob rem ego deprecabor Dominum,
& ad Deum ponam
eloquium meum :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

5 †(ϖ)Νῦν δὲ ἥκει ἐπὶ σὲ πόνος καὶ ἥψατό σου,
6 (ε)σὺ δὲ ἐσπούδασας. †Πότερον (ζ)οὐχ ὁ φόβος
σου ἐστὶν ἐν ἀφροσύνῃ, †καὶ ἡ ἐλπίς σου καὶ
7 ἡ κακία τῆς ὁδοῦ σου; †Μνήσθητι οὖν (η)τίς
καθαρὸς ὢν ἀπώλετο, †ἢ πότε ἀληθινοὶ
8 (θ) ὁλόρριζοι ἀπώλοντο; †Καθ' ὃν
τρόπον εἶδον τοὺς ἀροτριῶντας τὰ ἄτοπα,
†οἱ δὲ σπείροντες αὐτὰ ὀδύνας θεριοῦσιν
9 (ι) ἑαυτοῖς. †Ἀπὸ προστάγματος κυρίου
ἀπολοῦνται, †ἀπὸ δὲ πνεύματος ὀργῆς αὐτοῦ
10 ἀφανισθήσονται. †Σθένος λέοντος, φωνὴ
δὲ λεαίνης, †γαυρίαμα δὲ δρακόντων ἐσβέσθη.
11 †Μυρμηκολέων ὤλετο παρὰ τὸ μὴ
ἔχειν (κ) βοράν, †σκύμνοι δὲ λεόντων
12 ἔλιπον ἀλλήλους. †Εἰ δέ τι ῥῆμα ἀληθινὸν
ἐγεγόνει ἐν λόγοις σου, †(λ) οὐθὲν ἂν
σοι τούτων κακὸν ἀπήντησε. †πότερον
(∴)οὐ δέξεταί (μ) μου τὸ οὖς ἐξαίσια παρ'
13 αὐτοῦ; †Φόβῳ δὲ καὶ ἠχῷ νυκτερινῇ †ἐπιπίπτων
14 φόβος ἐπ' ἀνθρώπους, †(ν) Φρίκη
μοι συνήντησε καὶ τρόμος, †καὶ μεγάλως
15 μου τὰ ὀστᾶ (ξ) διέσεισε, †Καὶ πνεῦμα
ἐπὶ πρόσωπόν μου ἐπῆλθεν, †ἔφριξαν
16 δέ μου τρίχες καὶ σάρκες. †(ο) Ἀνέστην καὶ
οὐκ ἐπέγνων, †εἶδον καὶ οὐκ ἦν μορφὴ πρὸ
ὀφθαλμῶν μου, †ἀλλ' ἢ αὔραν καὶ φωνὴν
17 ἤκουον. †Τί γάρ; μὴ καθαρὸς ἔσται βροτὸς
(π) ἐναντίον τοῦ κυρίου; †ἢ ἀπὸ τῶν
18 ἔργων αὐτοῦ ἄμεμπτος ἀνήρ; †Εἰ κατὰ
παίδων αὐτοῦ οὐ πιστεύει, †κατὰ δὲ ἀγγέλων
19 αὐτοῦ σκολιόν τι ἐπενόησε. †(ρ) Τοὺς δὲ
κατοικοῦντας οἰκίας πηλίνας, (σ) ἐξ ὧν
καὶ αὐτοὶ ἐκ τοῦ αὐτοῦ πηλοῦ ἐσμεν, †ἔπαισεν
20 αὐτοὺς σητὸς τρόπον, †(τ) Καὶ ἀπὸ
πρωΐθεν μέχρι ἑσπέρας οὐκ ἔτι εἰσί, †παρὰ
τὸ μὴ δύνασθαι αὐτοὺς ἑαυτοῖς βοηθῆσαι,
21 ἀπώλοντο. †Ἐνεφύσησε γὰρ αὐτοῖς καὶ (υ) ἐξηράνθησαν,
†ἀπώλοντο παρὰ τὸ μὴ ἔχειν
αὐτοὺς σοφίαν.

Nunc autem venit ſuper te labor, 5
& tetigit te : (a) Turbatus es.
Nonne timor tuus eſt in (c) ſtultitia? 6
& ſpes tua, & iniquitas
viæ tuæ? Recordare igitur quis 7
cùm mundus eſſet, periit, vel
quando veraces radicitùs perierunt?
Quemadmodum vidi eos 8
qui arabant abſurda : qui autem
ſeminant ea, dolores metent ſibi:
A præcepto Domini peribunt: 9
à ſpiritu autem iræ ejus delebuntur.
*Robur leonis, & vox leænæ, 10
& gaudium draconum extinctum eſt. (d) Myrmicoleon 11
periit, eò quòd non haberet eſcã:
& catuli leonum diviſi ſunt ab
invicem. Si quod (e) autem verbum 12
verax fuiſſet in ſermonibus
tuis; nihil tibi horum malum accidiſſet.
Nunquid non capiet
auris mea ab eo (f) magnifica?
(g) Timore autem, et ſonitu nocturno 13
incidens timor ſuper homines,
Horror mihi occurrit, & 14
tremor, & valdè oſſa mea concuſſit,
Et ſpiritus in (h) faciem 15
meam incurrit; horruerunt autem
pili mihi, et carnes: (i) Surrexi, 16
& non cognovi : vidi, &
non erat figura ante oculos meos:
ſed (k) auram & vocem audiebam
: Quid enim? Nunquid 17
homo coram Domino mundus erit,
vel de operibus ſuis inculpabilis
vir? Si contra (l) ſervos 18
ſuos non credit, & adverſus angelos
ſuos pravũ quid advertit;
Habitantes autem domos (m) luteas, 19
ex quibus & ipſi de eodem
luto ſumus? Percuſſit illos tanquam
tinea, Et à manè uſque 20
ad veſperam ultrà non ſunt : eò
quòd non poſſent ſibi ipſis ſubvenire,
perierunt : (n) Inſufflavit 21
enim eis, et exaruerũt: interierũt,
quia non habebant ſapientiam.

MS.A. (ϖ)Νυνὶ (ε)σὺ δὲ ἐσπούδακας. (ζ)οὐχὶ (η)ὅτι οὐδεὶς καθαρὸς (θ)ὁλόριζοι (ι)ἐν αὐτοῖς. (κ)βορρᾶν, (λ) οὐδὲν ἂν τούτων κακῶν συνήντησέ μοι. (∴)οὐκ οὖν (μ)σου τὸ οὖς μου ἐξέστη; ἐξέστοι γὰρ παρ' αὐτοῦ φόβοι καὶ ἠχὼ νυκτερινή, (ν)Φρίκη δέ μοι (ξ)συνέσεισεν, (ο)Καὶ ἀνέστην (π)ἔναντι κυρίου; (ρ)Ἔα δὲ τοὺς (σ)ἐξ οὗ καὶ αὐτοί ἐσμεν ἐκ τοῦ αὐτοῦ πηλοῦ, (τ)Ἀπὸ πρωΐθεν ἕως ἑσπέρας καὶ οὐκ ἔτι εἰσίν, καὶ παρὰ (υ) ἐπελάκτισαν, καὶ παρὰ τὸ μὴ ἔχειν αὐτοὺς σοφίαν, ἀπώλοντο.

ΚΕΦ. ε'. 5.

1 †Ἐπικάλεσαι δὲ εἴ τις (α)σοι ὑπακούσεται,
2 †ἢ εἴ τινα (β) ἀγγέλων ἁγίων ὄψῃ. †Καὶ
γὰρ ἄφρονα ἀναιρεῖ ὀργή, †πεπλανημένον
3 δὲ θανατοῖ ζῆλος. †Ἐγὼ δὲ (γ) ἑώρακα
ἄφρονας ῥίζαν βάλλοντας, †ἀλλ' (δ) εὐθέως
4 ἐβρώθη αὐτῶν ἡ δίαιτα. †Πόρρω (ε)
γένοιντο οἱ υἱοὶ αὐτῶν ἀπὸ σωτηρίας, †κολαβρισθείησαν
δὲ ἐπὶ θύραις ἡσσόνων, †καὶ οὐκ ἔσται
5 ὁ ἐξαιρούμενος. †Ἃ γὰρ ἐκεῖνοι (ζ) συνήγαγον,
δίκαιοι ἔδονται, αὐτοὶ δὲ ἐκ κακῶν οὐκ
(η) ἐξαίρετοι ἔσονται· †ἐκσιφωνισθείη
6 αὐτῶν ἡ ἰσχύς. †Οὐ γὰρ μὴ ἐξέλθῃ (θ)
ἐκ τῆς γῆς κόπος, †οὐδὲ ἐξ ὀρέων ἀναβλαστήσει
7 πόνος. †Ἀλλὰ ἄνθρωπος (ι) γεννᾶται
κόπῳ, †νεοσσοὶ δὲ (κ) γυπὸς τὰ ὑψηλὰ
8 πέτονται. †Οὐ μὴν δὲ (ϖ) ἀλλὰ ἐγὼ δεηθήσομαι
κυρίου, †κύριον δὲ (λ) τὸν πάντων
δεσπότην ἐπικαλέσομαι,

CAP. V.

Invoca autem, ſi quis tibi reſpondeat, 1
vel, ſi quem angelorum
ſanctorum aſpicias: Etenim ſtultum 2
perimit ira : (a) errantem
autem occidit zelus. Ego autem 3
vidi ſtultos radicem mittentes;
(b) ſed ſtatim abſumpta eſt illorum
habitatio. Longè fiant filii 4
eorum à ſalute, & (c) conterantur
ſuper januas minorum ; &
non erit qui eripiat. Quæ enim 5
illi* congregaverunt; (d) juſti
comedent : ipſi (e) verò ac malis
non liberabuntur: exhauriatur
(f) fortitudo eorum : Non enim 6
(g) prodiet de terra labor, neq; de
montibus germinabit moleſtia. Sed 7
homo naſcitur labori : (h) pulli
autem vulturis altiſſimè volitant.
Veruntamen ego deprecabor 8
Dominũ: Dominum autem omniũ
horum dominatorem invocabo:

MS.A. (α) σου εἰσακούσετε, (β) ἁγίων ἀγγέλων (γ) ἑόρακα (δ) εὐθὺς ἡ δίαιτα αὐτῶν ἐβρώθη. (ε) ἐγένοντο (ζ) ἐθέρισαν, (η) ἐξαιρεθήσονται· καὶ ἐξιφωνισθείη (θ) ἐκ γῆς (ι) ἐν κόπῳ γεννᾶται, (κ) γυπῶν (ϖ) ἀλλ' (λ) τὸν παντοκράτορα ἐπικαλέσομαι,

תרגום TARGUM.

ארום כדון תיתי לותך ותשתלהי תמטי נבך ואתבהלתא : הלא דחלתך סכויך סברך ושלמות אורחתך : אדכר כדון מן דזכי כאברהם הובד והאן תריצין 5 6 7
כיצחק ויעקב אתכחדו : היכמה די חמיתי דרא דטובענא עבדי שקרא ופלחי לעות ישתלמון כמניה : מן מימר אלהא יהובדון ומן זעפא דנחיריה ישתיצון : 8 9
אכליות עשו דמתיל לאריא טרפא וקל אדום דמתיל לשחלא מרתיחין כדביא בחטופיהון ורברבנוי דמתילין לליתא מתפרשין למבזבזתא : היכמה 10 11
דאריא יהובד מדלית עדאה היכדין יהובד ישמעאל מדלית זכותא ובנוי לסטיא אתפרשו מן אורחין תריצין : תא ישמעאל דמתיל לאריון יהובד
מדלית זכותא ובנוי דלוט דמתיל לליתא יתפרשון מקהלא : לותי פתגם אתאמר בנטיר ואליפת אודני קצת דאתמצי מניה : במחשבתא דמן חזותא 12 13
בליליא כד נפלת שנתא על בני נשא : דלוחא ערעני ורתיתא וסוגעי אברי דליח : ווקא על אפי יעבר מצלהבא עלעולא בסרי : יקום ולא אשתמודע 14 15 16
חזויה דמו לקבל עיני חשי וקל סוגעין אשמע : אברז ואמר אפשר דבר נש מאלהא יזכי אם מן דעבדיה ידכי גבר : הא בעבדוי נבייא לא יימין ובאזגדוי ישוי 17 18
עילא : כל דכן רשיעיא דשרין בקבורת טנא די בעפרא שיתאסיהון ידככנון קדם זהלא : מצפר לרמש משתפפין מן דלית משוי להון ארכא לעלמא 19 20
יהובדון : הלא מדלית זכותא להון אנטל סעיד מנהון ימותון ולא בחכמתא : 21

ה

קרי כדון האית עני לך ולמן מן קדישיא תתפני : ארום לשטיא יקטול רוגזא דקירים ושבירא תמית טננא דבריתא : אנא חמית שטיא דמתציב ולטטירת 1 2 3
מדוריה בתכיף : מתרחקין בנוי מפירקנא לעלמא דאתי וישתפפון במעלנא דהנם ביום דינא רבא וליתדפצי : די חצדיה כפינין ייכלון ופולמוסין במני זיינא 4 5
יברזוניה ויבזון לסטיסין נכסיהון : ארום לא נפיק מעפרא שקר ומן אדמתא לא ירבי לעות : ארום בר נש למלעי באורייתא אתברי ובני מזיקי נגובהא 6 7
ישיסין : הא ארום בר נש לליעות אתיליד וסיפוהי היך נצין דנתרין מן גומריא ומתנבהין היכדין יעוף : ברם אנא אתבע אולפן מן תקיפא ולאלהא 8
אשוי מלתי :

Verſio *SYRIACA.*

5 * ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܐܬܬ ܥܠܝܟ ܠܐܝܬ. ܘܡܛܬ ܥܕܡܐ ܠܘܬܟ ܘܐܬܕܘܕܬ. * ܗܐ ܕܚܠܬܟ ܗܝ ܟܘܢܝܟ. ܘܣܒܪܟ
6 7 ܘܬܪܝܨܘܬ ܐܘܪܚܬܟ. * ܐܬܕܟܪ ܗܫܐ. ܡܢܘ ܙܟܝܐ ܕܐܒܕ. ܐܘ ܡܢܘ ܟܐܢܐ ܕܐܬܒܗܬ. * ܐܝܟ ܕܚܙܝܬ ܐܝܠܝܢ ܕܪܗܛܝܢ ܒ
8 9 ܚܛܗܐ ܘܙܪܥܝܢ ܥܡܠܐ ܢܚܨܕܘܢ. * ܘܡܢ ܢܫܡܬܐ ܕܐܠܗܐ ܢܐܒܕܘܢ. ܘܡܢ ܪܘܚܐ ܕܪܘܓܙܗ ܢܣܘܦܘܢ. * ܢܗܡܬܐ ܕܐܪܝܐ
10 11 ܘܩܠܐ ܕܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ. ܘܫܢܝܐ ܕܓܘܪܝܐ ܐܬܬܒܪ. * ܐܪܝܐ ܐܒܕ ܡܢ ܕܠܝܬ ܠܗ ܛܪܦܐ. ܘܒܢܝ ܓܘܪܝܐ ܐܬܒܕܪܘ.
12 * ܘܠܝ ܦܬܓܡܐ ܐܬܐܡܪ. ܘܩܒܠܬ ܐܕܢܝ ܐܝܟ ܙܥܘܪ ܡܢܗ. * ܒܫܠܝܐ ܒܚܙܘܐ ܕܠܠܝܐ. ܟܕ ܢܦܠ ܫܢܬܐ
13 14 ܥܡܝܩܬܐ ܥܠ ܐܢܫܐ. * ܕܚܠܬܐ ܩܪܬܢܝ ܘܪܬܝܬܐ. ܘܣܘܓܐܐ ܕܓܪܡܝ ܐܬܬܙܝܥܘ. * ܘܪܘܚܐ ܥܠ ܐܦܝ ܥܒܪܬ.
15 16 ܘܐܙܕܩܦܘ ܣܥܪܐ ܕܒܣܪܝ. * ܘܩܡܬ ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܬ. ܘܠܐ ܐܝܬ ܗܘܐ ܚܙܘܐ ܠܩܘܒܠ ܥܝܢܝ. ܘܫܡܥܬ ܪܛܢܐ ܘܩܠܐ ܕܐܡܪ
17 ܕܠܡܐ. * ܐܢܫܐ ܡܢ ܐܠܗܐ ܢܙܕܕܩ. ܐܘ ܡܢ ܥܒܘܕܗ ܢܬܕܟܐ ܓܒܪܐ. * ܗܐ ܒܥܒܕܘܗܝ ܠܐ ܡܗܝܡܢ.
18 19 ܘܒܡܠܐܟܘܗܝ ܣܐܡ ܬܗܪܐ. * ܐܦ ܐܝܠܝܢ ܕܥܡܪܝܢ ܒܒܬܐ ܕܛܝܢܐ. ܕܒܥܦܪܐ ܡܫܐܝܥܝܢ. ܢܬܡܟܟܘܢ ܩܕܡ
20 ܥܪܦܠܐ. * ܡܢ ܨܦܪܐ ܠܪܡܫܐ ܢܬܡܟܟܘܢ. ܕܠܐ ܢܬܬܩܢܘܢ ܥܡܘܪܐ ܠܥܠܡ ܢܐܒܕܘܢ. * ܗܐ ܫܩܠ
21 ܝܘܬܪܢܗܘܢ ܡܢܗܘܢ. ܘܫܡܗܘܢ ܒܗܘܢ ܢܡܘܬ. ܘܠܐ ܒܚܟܡܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܗ * * ܩܪܝ ܗܫܐ.
1 2 ܐܢ ܐܝܬ ܠܟ. ܘܡܢܘ ܡܢ ܩܕܝܫܐ ܬܬܦܢܐ. * ܡܛܠ ܕܠܣܟܠܐ ܩܛܠ ܪܘܓܙܐ. ܘܠܫܛܝܐ ܡܡܝܬܐ ܚܣܡܐ. * ܐܢܐ
3 4 ܚܙܝܬ ܥܘܠܐ ܕܡܫܬܪܫ. ܘܐܒܕ ܕܪܗ ܡܢ ܒܬܪܗ. * ܢܬܪܚܩܘܢ ܒܢܘܗܝ ܡܢ ܦܘܪܩܢܐ ܘܢܬܡܟܟܘܢ ܒܬܪܥܐ.
5 6 ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ ܦܪܘܩܐ. * ܕܚܨܕ ܟܦܢܐ ܢܐܟܠܘܢ. ܘܠܨܗܝܐ ܢܬܪܩܘܢ. ܘܢܥܠ ܨܗܝܐ ܒܩܢܝܢܗܘܢ. * ܡܛܠ
7 ܕܠܐ ܢܦܩ ܡܢ ܥܦܪܐ ܥܘܠܐ. ܘܠܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܢܥܒܐ ܥܡܠܐ. * ܡܛܠ ܕܓܒܪܐ ܠܥܡܠܐ ܐܬܝܠܕ. ܘܒܢܝ
8 ܦܪܚܬܐ ܢܪܝܡܘܢ ܓܦܐ. * ܒܪܡ ܐܢܐ ܐܒܥܐ ܡܢ ܐܠܗܐ. ܘܠܘܬ ܐܠܗܐ ܐܣܝܡ ܡܠܬܝ.

Verſio *ARABICA.*

5 6 * من اجل انها الآن جاءت عليك فتعبت * وبلغت اليك فتحيرت * فالآن مخافتك هي ملامتك * ورجاؤك
7 وصلاح طريقتك * اذكر الآن اي زكي هلك * او اي صالح بهت * كما قد رايت الذين يجرون في
8 9 الخطاء ويزرعون فان عملهم يحصدون * ومن نسمة الله يبيدون * ومن روح غضبه يفنون * همهمة الاسد
10 11 وصوت جرو الاسد وانياب الاسد تتكسر * الاسد يهلك من قبل ان ليس له مفترس * وابناء الاسد
12 13 يتبددون * وعلي جواب القول ارجع * وقبلت اذني مثل اصغر منه * في السكوت برويا الليل * في وقوع
14 السنة العميقة على الناس * المخافة دعتني والرهبة * وكثير عظامي تقلقلت * والروح عبر على وجهي
15 16 وقامت شعور جسدي * وقمت ولم افهم وليس منظرا مقابل عيني * وسمعت نغمة وصوتا يقول * ا الانسان
17 18 قدام الله يزكوا او من صانعه يخلص الرجل * فانه لعبيده لا يامن * وفي ملائكته يجعل التحيير * وايضا
19 20 الذين هم حلولا في بيوت الطين التي بتراب مكلسة يتواضعون قدام الظلام * من الصباح الي
21 العشي يتواضعون * ليلا يجعلوا سكانا للدهر ويبادون * فقد اخذ نفعهم منهم * وبقيتهم فيهم يموتون ولا
1 بالحكمة * الفصل الخامس * فادعوا الآن ان كان لك مجيبا والا من القديسين *
2 3 والتفت * من اجل ان السفيه يقتله الغضب * والسخيف تقتله الحمية * اني رايت منافقا استقام وهلكت
4 5 ذريته من بعده * بنوه يتباعدون من الخلاص * ويتواضعون في الباب وليس لهم مخلصا * الذي
6 يحصد جوعا ياكل * وللعطش يستفرغون * ويتخلل العطش في اباهم * من اجل انه ليس يخرج من
7 التراب اثم * ولا ايضا من الثرا يظهر الشر * من اجل ان الانسان للعمل ولد * وابناء الطير يرفعون
8 الاجنحة * لكي انا اطلب الي الله * والي الله اضع كلمتي *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Jam eo quòd evenerit tibi, tu fatigareris? & pervenerit ad te, obſtupeſceres? Modò timor tuus eſt reprehenſio tua, & ſpes tua, & rectitudo viæ tuæ. Cogita modò quis innocens perierit, aut quis juſt⁹ confuſus ſit. ut equidem vidi, qui in peccatis currunt, & ſeminant, opera ſanè ſua metunt, Flatu Dei pereunt, & ſpiritu furoris ejus conſumuntur, Rugitus leonis, & vox catuli leonis, & canini leonis, franguntur; Leo perit eò quòd non habeat prædam, & catuli leonum diſſipantur. Et mihi ſermonis reſponſum datum eſt, ex quo ferè minimum percepit auris mea. In ſilentio, in viſione noctis, quando occupat ſopor profundus homines, Timor vocavit me, & pavor, & pleraq; oſſa mea contremuerunt, Et ſpiritus tranſiit ſuper faciem meam, & ſteterunt pili corporis mei, Et ſurrexi & nihil intellexi, nec aderat ſpectrum coram oculis meis; & audivi obmurmurationem, & vocem dicentem, Anne homo coram Deo juſtificabitur? aut præ factore ſuo purgabitur vir? Quandoquidem in ſervis ſuis non credit, & in angelis ſuis ponit ſtuporem; Quantò magis ii qui habitant in domibus luti, quæ ſunt pulvere oblitæ, humiliabuntur coram caligine: A mane uſque ad veſperam humiliabuntur, ne habitatores collocentur in æternum, ſed pereant. Ecce abſtulit utilitatem eorum ab ipſis, (d) et reſidui eorum in ipſis morientur, & non in ſapientia.

5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21

CAP. V.

INvoca autem modò, (a) ſi quem habes propitium & patronum ex ſanctis & convertere. Quoniam ſtultum occidit furor, & (b) amentem interficit ira. Equidem vidi iniquum (c) ſe erigentem, & perire progeniem ejus (d) poſt ipſum: Et filii ejus recedent à ſalute, & humiliabuntur in porta, & non habebunt redemptorem. Qui meſſuerit, famem comedet, & ad ſitim evacuabuntur, & (e) penetrabit ſitis in vaſa ipſorum; Quoniam non egreditur è terra iniquitas, nec de humo emergit malitia: Quia homo ad laborem natus eſt, & filii volucrum extollunt alas. At ego (f) Deum precor, et ad Deum facio eloquium meum;

1 2 3 4 5 6 7 8

INTERP. SYRIACA.

(d) ut nomen eorum in ipſis morietur, Ca. v. (a) ſi quis ſit qui reſpondeat tibi, & ad quemnã ex ſanctis convertêris? (b) ſtultum interficit odium. (c) proficere, (d) ſubitò: (e) poſſeſſionem eorum perdet ſitis; (f) de Deo exquiro,

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Nunc enim venit ad te & defeciſti: tetigit te & turbat⁹ es. Nónne timor tuus erat expectatio tua: ſpes tua & perfectio viarũ tuarum? Recordare nunc quis eſt juſtus 5 6 7
ſicut Abraham qui perierit, & ubi recti ſicut Iſaac & Jacob deleti ſunt? Quemadmodum vidi generationẽ diluvii, operantes iniquitatem & facientes laborem retribu- 8
tionem accipient ab eo. A verbo Dei peribunt, & à turbine naris ejus conſumentur. Rugitus Eſau, qui comparat⁹ eſt leoni rapaci, & vox Edom quæ comparata eſt leæ- 9 10
næ, *faciunt* ſicut urſi in rapina ſua, & principes ejus qui comparati ſunt leænæ ſeparati ſunt ut diripiant prædam. *Sicut leo perit cum non ſit ei præda, ſic* peribit 11
Iſmahel eò quod non habet meritum: & filii ejus prædones qui ſeparati ſunt à viis rectis. *Targum aliud*: Iſmahel, qui comparatus eſt *leonibus*, peribit,
eo quòd non habeat meritum: *& filii Lot, qui aſſimilatus eſt leoni veteri, ſeparabuntur à congregatione.* Ad me autem dictum eſt verbũ *ſecretò*, & didicit auris mea 12
aliquid quod redundavit ex eo. In cogitationibus viſionis nocturnæ, quando irruit ſomnus ſuper filios hominum. Timor accidit mihi & tremor, & multitudinem mem- 13 14
brorum meorum pavere fecit. Et turbo ſuper faciem meam tranſivit: inflammat tempeſtas carnem meam. Aſtitit quidam cujus aſpectum non agnoſcebam; ſimilitudo 15 16
erat in conſpectu oculorũ meorum: ſuſurrationem, & quaſi vocem multorum audiebam. Clamavit & dixit: Nunquid poteſt filius hominis Dei comparatione juſtifi- 17
cari, aut factore ſuo mundior erit vir? Ecce ſervis ſuis prophetis non credit, & in angelis ſuis ponit occaſionem. Quanto magis impii qui habitant in ſepulchris luti, 18 19
quorum fundamenta ſunt in pulvere, conterentur coram verme! De manè uſque ad veſperam *contriti* ſunt: eò quod non imponit eis terminum, in æternum peribunt. 20
Nonne quia non eſt eis juſtitia, ablatum eſt auxilium eorum, morientur & non in ſapientia? 21

C A P. V.

VOca nunc ſi eſt qui tibi reſpondeat, & ad aliquem ex ſanctis reſpice. Quia ſtultum interficiet ira Dñi, & inſipientem occidet invidia inſaniæ. Ego vidi ſtultum 1 2 3
plantatum, & maledixi habitaculo ejus repentè. Longè ſint filii ejus à ſalute in ſeculo venturo, & conterantur in portis Gehennæ in die judicii magni, & non ſit 4
qui eripiat. Cujus meſſem famelici comedent, & armati armis bellicis tollent eum, & diripient prædones ſubſtantiam ejus. Quoniam non egreditur de pulvere iniqui- 5 6
tas, & de terra non oritur labor. Filius enim hominis ad laborandum in lege creatus eſt, & filius dæmonum in altum volat. *Targum aliud:* Filius enim hominis *ad la-* 7
borem natus eſt, & exitus ejus eſt ad modum ſcintillarum, quæ ſparguntur à prunis & ſurſum feruntur, ſic avolabit. Veruntamen ego quæram doctrinam à fortiſſimo, 8
& ad Deum ponam eloquium meum

איוב : ו

non ad usque mirabilia ; investigatio non & , magna Facientem

9 עֹשֶׂה גְדֹלוֹת וְאֵין חֵקֶר נִפְלָאוֹת עַד־אֵין

super aquas mittentem & ;terræ facies super pluviam Dantem .numerum

10 מִסְפָּר׃ הַנֹּתֵן מָטָר עַל־פְּנֵי אָרֶץ וְשֹׁלֵחַ מַיִם עַל־

denigrati & ; excelso in humiles ponendum Ad .platearum facies

11 פְּנֵי חוּצוֹת׃ לָשׂוּם שְׁפָלִים לְמָרוֹם וְקֹדְרִים

non & , callidorum cogitationes irritas Facientem .salute sunt elevati

12 שָׂגְבוּ יֶשַׁע׃ מֵפֵר מַחְשְׁבוֹת עֲרוּמִים וְלֹא־

sapientes Capientem .consistentiam eorum manus facient

13 תַעֲשֶׂנָה יְדֵיהֶם תּוּשִׁיָּה׃ לֹכֵד חֲכָמִים

Interdiu .præcipitatur pravorum consilium & ;eorum calliditate in

14 בְּעָרְמָם וַעֲצַת נִפְתָּלִים נִמְהָרָה׃ יוֹמָם

servavit Et .meridie in palpabunt nocte veluti & ; obscuritati occurrent

15 יְפַגְּשׁוּ־חֹשֶׁךְ וְכַלַּיְלָה יְמַשְׁשׁוּ בַצָּהֳרָיִם׃ וַיֹּשַׁע

tenui fuit Et .indigum fortis manu de & ; eorum ore ab ,gladio à

16 מֵחֶרֶב מִפִּיהֶם וּמִיַּד חָזָק אֶבְיוֹן׃ וַתְּהִי לַדַּל

, hominis beatitudines Ecce .suum os compescuit iniquitas & ; spes

17 תִּקְוָה וְעֹלָתָה קָפְצָה פִּיהָ׃ הִנֵּה אַשְׁרֵי אֱנוֹשׁ

.reprobes ne Saddai correctionem & : Deus cum increpaverit

יוֹכִחֶנּוּ אֱלוֹהַּ וּמוּסַר שַׁדַּי אַל־תִּמְאָס׃

.sanabunt ejus manus &,transfiget :fasciabit & , faciet dolere ipse Quia

18 כִּי הוּא יַכְאִיב וְיֶחְבָּשׁ יִמְחַץ וְיָדָו תִּרְפֶּינָה׃

.malum te in tanget non septima in & :te eruet angustiis sex In

19 בְּשֵׁשׁ צָרוֹת יַצִּילֶךָּ וּבְשֶׁבַע לֹא־יִגַּע בְּךָ רָע׃

.gladii manibus è bello in & , morte à te redimet fame In

20 בְּרָעָב פָּדְךָ מִמָּוֶת וּבְמִלְחָמָה מִידֵי חָרֶב׃

cùm vastitate à timebis non & ; te abscondes linguæ flagello In

21 בְּשׁוֹט לָשׁוֹן תֵּחָבֵא וְלֹא־תִירָא מִשֹּׁד כִּי

ne terræ bestia à & : ridebis fame in &,vastitate In .venerit

22 יָבוֹא׃ לְשֹׁד וּלְכָפָן תִּשְׂחָק וּמֵחַיַּת הָאָרֶץ אַל־

bestia & : tuum pactum agri lapidibus cum Quia .timeas

23 תִּירָא׃ כִּי עִם־אַבְנֵי הַשָּׂדֶה בְרִיתֶךָ וְחַיַּת

,tuum tentorium pax quòd scies Et .tibi erit pacifica agri

24 הַשָּׂדֶה הָשְׁלְמָה־לָךְ׃ וְיָדַעְתָּ כִּי־שָׁלוֹם אָהֳלֶךָ

scies Et .peccabis non & , tuum habitaculum visitabis &

25 וּפָקַדְתָּ נָוְךָ וְלֹא תֶחֱטָא׃ וְיָדַעְתָּ

.terræ herba sicut tuæ propagines & ; tuum semen multum quòd

כִּי־רַב זַרְעֶךָ וְצֶאֱצָאֶיךָ כְּעֵשֶׂב הָאָרֶץ׃

tritici acervum ascendere sicut ; sepulchrum in maturitate in Ingredieris

26 תָּבוֹא בְכֶלַח אֱלֵי־קָבֶר כַּעֲלוֹת גָּדִישׁ

, illud audi : ipsum sic,illud investigavimus hoc Ecce .suo tempore in

27 בְּעִתּוֹ׃ הִנֵּה־זֹאת חֲקַרְנוּהָ כֶּן־הִיא שְׁמָעֶנָּה

.tibi scito tu &

וְאַתָּה דַע־לָךְ׃

CAP. VI. ו

appenderetur appendendo Utinam : dixit & , Ijob respondit Et

1 2 וַיַּעַן אִיּוֹב וַיֹּאמַר׃ לוּ שָׁקוֹל יִשָּׁקֵל

.pariter elevarent bilancibus in meum infortunium & ; mea ira

כַּעְשִׂי וְהַיָּתִי בְּמֹאזְנַיִם יִשְׂאוּ־יָחַד׃

mea verba ideo : gravesceret marium arena præ nunc Quia

3 כִּי עַתָּה מֵחוֹל יַמִּים יִכְבָּד עַל־כֵּן דְּבָרַי

earum venenum quarum , mecum Saddai sagittæ Quia .sunt absorpta

4 לָעוּ׃ כִּי חִצֵּי שַׁדַּי עִמָּדִי אֲשֶׁר חֲמָתָם

rudet Nunquid .me invadunt instructi Dei terrores : meus spiritus bibens

5 שֹׁתָה רוּחִי בִּעוּתֵי אֱלוֹהַּ יַעַרְכוּנִי׃ הֲיִנְהַק־

? suum pabulum super bos mugiet an ? gramen super onager

פֶּרֶא עֲלֵי־דֶשֶׁא אִם יִגְעֶה־שּׁוֹר עַל־בְּלִילוֹ׃

sapor est an ? sale absque insipidum comedetur Nunquid

6 הֲיֵאָכֵל תָּפֵל מִבְּלִי־מֶלַח אִם־יֶשׁ־טַעַם

ægritudines sicut illa ,mea anima tangere renuit ? vitelli saliva in

7 בְּרִיר חַלָּמוּת׃ מֵאֲנָה לִנְגּוֹעַ נַפְשִׁי הֵמָּה כִּדְוֵי

.meæ carnis

לַחְמִי׃

Versio VULG. LAT.

9 Qui facit magna & inscrutabilia, & mirabilia absque numero: 10 Qui dat pluviam super faciem terræ, & irrigat aquis universa: 11 Qui ponit humiles in sublime, & mœrentes erigit sospitate: 12 Qui dissipat cogitationes malignorum, ne possint implere manus eorum quod cœperant: 13 Qui apprehendit sapientes in astutia eorum, & consilium pravorum dissipat: 14 Per diem incurrent tenebras, & quasi in nocte sic palpabunt in meridie. 15 Porrò salvum faciet egenum à gladio oris eorum, & de manu violenti pauperem. 16 Et erit egeno spes, iniquitas autem contrahet os suum. 17 Beatus homo, qui corripitur à Deo: increpationem ergò Domini ne reprobes: 18 Quia ipse vulnerat, & medetur: percutit, & manus ejus sanabunt. 19 In sex tribulationibus liberabit te: & in septima non tanget te malum. 20 In fame eruet te de morte, & in bello de manu gladii. 21 A flagello linguæ absconderis, & non timebis calamitatem cùm venerit. 22 In vastitate & fame ridebis, & bestias terræ non formidabis. 23 Sed cum lapidibus regionũ pactum tuum, & bestiæ terræ pacificæ erunt tibi. 24 Et scies quod pacem habeat tabernaculum tuum, & visitans speciem tuam, non peccabis. 25 Scies quoque quoniam multiplex erit semen tuum, & progenies tua quasi herba terræ. 26 Ingredieris in abundantia sepulchrum, sicut infertur acervus tritici in tempore suo. 27 Ecce, hoc, ut investigavimus, ita est: quod auditum, mente pertracta.

CAP. VI.

1 Respondens autem Job, dixit; 2 Utinam appenderentur peccata mea, quibus iram merui: & calamitas, quam patior, in statera. 3 Quasi arena maris, hæc gravior appareret: unde & verba mea dolore sunt plena: 4 Quia sagittæ Domini in me sunt, quarum indignatio ebibit spiritum meũ, & terrores Domini militant contra me. 5 Numquid rugiet onager cùm habuerit herbam? aut mugiet bos cùm ante præsepe plenum steterit? 6 Aut poterit comedi insulsũ, quod non est sale conditum? aut potest aliquis gustare, quod gustatum affert mortem? 7 Quæ prius nolebat tangere anima mea, nunc præ angustia, cibi mei sunt,

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

9 †Τὸν ποιοῦντα μεγάλα καὶ ἀνεξιχνίαστα, †ἔνδοξά τε καὶ ἐξαίσια, ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός, 10 †Τὸν διδόντα ὑετὸν (μ) ἐπὶ τὴν γῆν, †ἀποστέλλοντα ὕδωρ ἐπὶ τὴν ὑπ᾽ οὐρανόν, 11 †Τὸν ποιοῦντα ταπεινοὺς εἰς ὕψος, καὶ ἀπολωλότας ἐξεγείροντα, 12 †(ν) Διαλλάσσοντα βουλὰς πανούργων, †καὶ οὐ μὴ ποιήσουσιν αἱ χεῖρες αὐτῶν ἀληθές. 13 †Ὁ καταλαμβάνων σοφοὺς ἐν τῇ (ξ) φρονήσει, †βουλὴν δὲ πολυπλόκων ἐξέστησεν. 14 †(ο) Ἡμέρας συναντήσεται αὐτοῖς σκότος, †τὸ δὲ μεσημβρινὸν ( ) ψηλαφήσαισαν ἴσα νυκτί, 15 Ἀπόλοιντο δὲ ἐν πολέμῳ. †ἀδύνατος δὲ 16 ἐξέλθοι ἐκ χειρὸς δυνάστου. (π) Εἴη δὲ ἀδυνάτῳ ἐλπίς, †ἀδίκου δὲ στόμα ἐμφραχθείη. 17 †Μακάριος δὲ ἄνθρωπος ὃν ἤλεγξεν ὁ κύριος (ρ), †νουθέτημα δὲ παντοκράτορος μὴ ἀπαναίνου. 18 †Αὐτὸς γὰρ ἀλγεῖν ποιεῖ, καὶ πάλιν ἀποκαθίστησιν· †(σ) ἔπαισε, καὶ αἱ χεῖρες αὐτοῦ (τ) ἰάσαντο. 19 †Ἑξάκις ἐξ ἀναγκῶν (υ) σε ἐξελεῖται, †ἐν δὲ τῷ 20 ἑβδόμῳ, (φ) οὐ μὴ ἅψηταί σου κακόν. †Ἐν λιμῷ ῥύσεταί σε ἐκ θανάτου, †(χ) ἐν πολέμῳ δὲ ἐκ χειρὸς σιδήρου λύσει σε. 21 †Ἀπὸ μάστιγος γλώσσης (ψ) σε κρύψει, †καὶ οὐ 22 μὴ φοβηθῇς ἀπὸ κακῶν ἐρχομένων. †Ἀδίκων καὶ ἀνόμων καταγελάσῃ· †ἀπὸ δὲ θηρίων ἀγρίων (ω) οὐ μὴ φοβηθῇς· 23 †Θῆρες γὰρ ἄγριοι εἰρηνεύσουσί σοι. 24 †(α) Εἶτα γνώσῃ ὅτι εἰρηνεύσει σου ὁ οἶκος· †ἡ δὲ δίαιτα τῆς σκηνῆς σου οὐ μὴ ἁμάρτῃ. 25 (β) †Γνώσῃ δὲ ὅτι πολὺ τὸ σπέρμα σου, †τὰ δὲ τέκνα σου ἔσται ὥσπερ τὸ παμβότανον 26 τοῦ ἀγροῦ. †(γ) Ἐλεύσῃ δὲ ἐν τάφῳ ὥσπερ σῖτος ὥριμος κατὰ (δ) καιρὸν θεριζόμενος, †ἢ ὥσπερ θημωνία ἅλωνος καθ᾽ ὥραν 27 συγκομισθεῖσα. †Ἰδοὺ ταῦτα οὕτως ἐξιχνιάσαμεν· ταῦτά ἐστιν ἃ ἀκηκόαμεν· †Σὺ δὲ γνῶθι σεαυτῷ, εἴ (ε) τι ἔπραξας.

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 †Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, 2 †(α) Εἰ γάρ τις ἱστῶν στήσαι μου τὴν ὀργήν, †τὰς δὲ ὀδύνας μου ἄραι ἐν ζυγῷ ὁμοθυμαδόν. 3 †Καὶ δὴ ἄμμου παραλίας (β) βαρυτέρα ἔσται. †ἀλλ᾽ ὡς ἔοικε τὰ ῥήματά μου ἐστὶ 4 φαῦλα. †Βέλη γὰρ κυρίου ἐν τῷ σώματί μου ἐστίν, †ὧν ὁ (γ) θυμὸς αὐτῶν ἐκπίνει μου τὸ αἷμα, †ὅταν ἄρξωμαι λαλεῖν, 5 κεντοῦσί με. †Τί γάρ; μὴ διακενῆς κεκράξεται ὄνος ἄγριος, ἀλλ᾽ ἢ τὰ σῖτα ζητῶν; †εἰ δὲ καὶ ῥήξει φωνὴν βοῦς ἐπὶ 6 φάτνης ἔχων τὰ βρώματα; †Εἰ βρωθήσεται ἄρτος ἄνευ ἁλός; †εἰ δὲ καὶ ἔστι 7 γεῦμα ἐν ῥήμασι κενοῖς; †(δ) Οὐ δύναται γὰρ παύσασθαί μου ἡ ὀργή. †Βρόμον γὰρ ὁρῶ τὰ σῖτά μου ὥσπερ ὀσμὴν λέοντος.

9 Qui facit magna, & non vestigabilia, gloriosaque, & magnifica, quorum non est numerus, 10 Qui dat pluviam super terram, qui mittit aquam super (i) eam quæ sub cœlo, 11 Qui facit humiles in altitudinem, & suscitat eos qui perierant, 12 Qui (k) avertit consilia versutorum, & non facient manus eorum veritatem: 13 Qui * capit sapientes in prudentia: consilium autem astutorum (l) disjecit: 14 In die (m) occurrent eis tenebræ: in meridie autem palpent tanquam in nocte, 15 Et pereant in bello: infirmus autem egrediatur de manu potentis: 16 Sit autem (n) infirmo spes, injusti autem os obstruatur. 17 Beatus autem homo, quem arguit Dominus: monitionem verò Omnipotentis ne renuas. 18 Ipse enim dolere facit, & rursus (o) restituit: percussit, & manus ejus sanaverunt: 19 (p) Sexies de necessitatibus te eruet, & in (q) septimo non te tanget malum. 20 In fame te liberabit à morte, in prælio verò de manu ferri solvet te: 21 A flagello linguæ abscondet te, & non timebis à malis (r) venientibus: 22 (s) Injustos, & iniquos deridebis: & feroces bestias non (t) timebis. 23 Bestiæ enim feræ pacatæ erunt tibi: 24 Deindè scies quòd in pace erit domus tua: (u) habitatio autem tabernaculi tui non peccabit. 25 Scies autem quòd multum semen tuum, & filii tui erunt, quasi omnis herba campi, 26 Et venies in sepulchrum, tanquam frumentum maturum, quod in tempore messuerunt, vel sicut acervus areæ in tempore comportatus. 27 Ecce hæc ita exquisivimus: hæc sunt quæ audivimus: Tu verò scito tibi ipsi, si quid egeris.

CAP. VI.

1 Respondens autem Job, dicit; 2 Si verò quis (a) appendens, appenderet iram meam, & dolores meos tolleret in statera pariter: 3 Et utique arenâ maris * gravior erit. Sed ut videtur, verba (b) mea sunt mala: 4 Sagittæ enim (c) Domini in corpore meo sunt; quarum furor earum bibit sanguinem meum: cùm incœpero loqui, stimulant me. 5 Quid enim? nunquid (d) frustrà onager clamabit, nisi escas requirens? nunquid & erumpet vocem bos, cùm habeat in præsepe cibos? 6 Nunquid potest (e) sine sale edi panis, aut est sapor in sermonibus vanis? 7 Non potest enim cessare (f) ira mea: fœtorem enim video escas meas, sicut est odor leonis.

MS.A. (μ) ἐπὶ τῆς γῆς, † ἀποστέλλοντα (ν) Τὸν διαλλάσσοντα (ξ) φρονήσει αὐτῶν, βουλὰς δὲ (ο) Ἐν ἡμέρᾳ αὐτοῖς συναντήσεται σκότος, ( ) ψηλαφήσιαν (π) Καὶ εἴη ἀδυνάτῳ ἐλπίς, καὶ ἀδίκου στόμα (ρ) ἐπὶ τῆς γῆς, νουθέτημα (σ) πατάξει, (τ) ἰάσονται. (υ) ἐξελεῖταί σε, (φ) οὐχ ἅψηται (χ) καὶ ἐν πολέμῳ ἐκ χειρὸς σιδήρου ῥύσεταί σε. (ψ) κρύψει σε, καὶ οὐ φοβηθήσῃ ἀπὸ κακῶν ἐρχομένων. † Καὶ οὐ φοβηθήσῃ ἀπὸ ταλαιπωρίας, †ὅτι ἐλεύσεται) ταλαιπωρία. Ἀδίκων (ω) τῆς γῆς οὐ φοβηθήσῃ (α) †Ὅτι μετὰ τῶν λίθων τοῦ ἀγροῦ ἡ διαθήκη σου, †καὶ τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ εἰρηνεύσουσί σοι. †Καὶ γνώσῃ ὅτι ἐν εἰρήνῃ τὸ σπέρμα σου, †καὶ ἐπισκοπὴ τῆς εὐπρεπείας σου, καὶ σὺ μὴ ἁμάρτῃς. Εἶτα γνώσῃ (β) Καὶ γνώσῃ ὅτι (γ) Ἀπελεύσῃ (δ) καιρὸν αὐτοῦ θεριζόμενος, (ε) τί ἐποίησας. Κεφ. ϛʹ. MS.A. (α) Τί γάρ; (β) βαρύτεραί εἰσιν. (γ) θυμὸς ἐκπίνει μου (δ) Οὐ δύναται δέ μου παύσασθαι ἡ ψυχή.

תרגום TARGUM.

9 10 11 עבד רברבן ולית סכום פרישן עד דלית מנין׃ דיהב מטרא על אפי ארעא דישראל ומשדר מיא על אפי מחוזי עממיא׃ מטול לשואה מכיכי אולצנא
12 13 לרומא ואוכמי מסכינותא תקפו פורקנא׃ דבטל מחשבתהון דמצראי דחכימו לאבאשא לישראל ולא עבדא אידיהון מלכת חכמתהון׃ מאחד
14 15 חכימי פרעה בחכימותהון ומלכת אסטנינוהי עוקמניא אוחית עליהון׃ בימם יערעון חשוך והיך ליליא ימששון בטיהרא׃ ופרק עמיה מן קטילא
16 17 18 דפומהון ומן יד מלך תקיף עמא חשיכא׃ והות למסכנא סברא ונבלתא דרשיעי טפפת פומה׃ הא טוביה דאברהם גברא חסידא דיכסנניה אלהא ואנת
19 20 ישראל מרדותא דשדי לא תרחיק׃ ארום הוא מיתי כיבא ומעל סמתירא ימחי וידוי מסין׃ בשית עקתין יפצנך ובשביעתא לא יקריב ביך ביש׃ בכפנא
21 22 דמצרים פרקך מטותא ובקרבא דעמלק מקטול סיפא׃ בנוקא דלישן דבלעם תטמר ביני ענניא ולא תדחל מן חבל מדינאי כד ייתי׃ לחבל סיחון ולאולצן
23 מדברא תגחך ומן משרית עוג דמתיל לחיות ברא דארעא לא תדחל׃ ארום עם לוחי אבנא דאתיהיבו בפומבי בחקלא קימך וכנענאי דמתילין לחיות ברא
24 25 26 אשלימו עמך׃ ותנדע ארום שלם בית אולפנך ותוסין מדור בית משכנך ולא תנויק׃ ותנדע ארום סגיעין בנך ובני בנך היך עסבא דחקלא׃ תעול בשלימות
27 שניך בבוכא לקבורתא היך מסק גדישא בעדניה׃ הא דא פשפשנא יתה הכדין היא קבלנה ואנת דע לך׃

ו

1 2 ואתיב איוב ואמר׃ מאים מתקל יתקל רוגזי ואתרגושתי במסחתא יטלון כחדא׃ ארום כדון יתיר מחלא דימא יתיקר בגין כן מלי משתלהין׃ ארום גירי שדי
3 4 5 6 בהדי די ארסהון שתית רוחי ביעותא דמן קדם אלהא יסדרון לקבלי׃ האפשר דמברים מרודא עלוי דתאה היך יגעי תורא על אספסתיה׃ האפשר דמתאכל
7 תבשילא מדלית מלחא אין אית טעם בחלבון ביעתא וחלמונא׃ הא כמה דלא מתאכל מידי בשש בלא מלחא הכדין לית טעמא ברירא דחלמונא׃ סריבת
למקרב נפשי הנון מתחשבין היך דוותא לסעודתי׃ הא סריבת למקרב נפשי הנון עבדין יתי אסתניס והות מסתיא לסעודתי׃

Verſio SYRIACA

9 10 * ܕܥܒܕ ܪ̈ܘܪܒܬܐ ܕܠܐ ܣܟ܂ ܘܬܕܡܪ̈ܬܐ ܕܠܐ ܡܢܝܢ܂ * ܕܝܗܒ ܡܛܪܐ ܥܠ ܐ̈ܦܝ ܐܪܥܐ܂ ܘܫܕܪ ܡܝ̈ܐ ܥܠ ܐ̈ܦܝ
11 ܫܘ̈ܩܐ܂ * ܠܡܣܡ ܡܟ̈ܝܟܐ ܒܪܘܡܐ܂ ܘܡܟ̈ܝܟܐ ܢܬܥܫܢܘܢ ܒܦܘܪܩܢܐ܂ * ܡܒܛܠ ܡܚܫܒܬܐ ܕܚܟ̈ܝܡܐ܂ ܘܠܐ
12 13 ܥܒ̈ܕܢ ܐܝ̈ܕܝܗܘܢ ܚܟܡܬܐ܂ * ܐܚܕ ܚܟ̈ܝܡܐ ܒܚܟܡܬܗܘܢ܂ ܘܡܪܥܝܬܐ ܕܢܟ̈ܝܠܐ ܡܒܛܠ܂ * ܒܐܝܡܡܐ
14 15 ܢܓܫܘܢ ܐܝܟ ܕܒܚܫܘܟܐ܂ ܘܐܝܟ ܕܒܠܠܝܐ ܢܓܫܫܘܢ ܒܛܗܪܐ܂ * ܦܪܩ ܡܢ ܚܪܒܐ ܦܘܡܗܘܢ܂ ܘܡܢ
16 17 ܐܝܕܐ ܕܥܫܝܢܐ ܠܡܣܟܢܐ܂ * ܘܢܗܘܐ ܠܡܣܟܢܐ ܣܒܪܐ܂ ܘܥܘܠܐ ܢܣܟܘܪ ܦܘܡܗ܂ * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ
18 ܕܡܪܕܐ ܠܗ ܡܪܝܐ܂ ܘܡܪܕܘܬܐ ܕܡܪܝܡܐ ܠܐ ܫܐܛ܂ * ܡܛܠ ܕܗܘ ܟܐܒ ܘܡܚܒܫ܂ ܡܚܐ ܘܐܝ̈ܕܘܗܝ ܡܐܣ̈ܝܢ܂
19 20 * ܒܫܬ ܐܘ̈ܠܨܢܐ ܢܦܨܝܟ܂ ܘܒܫܒܥܐ ܠܐ ܢܩܪܒ ܠܟ ܒܝܫܐ܂ * ܒܟܦܢܐ ܢܦܪܩܟ ܡܢ ܡܘܬܐ܂ ܘܒܩܪܒܐ ܡܢ
21 22 ܐܝ̈ܕܝ ܚܪܒܐ܂ * ܡܢ ܫܘܛܐ ܕܠܫܢܐ ܬܬܛܫܐ܂ ܘܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܥܩܬܐ ܟܕ ܐܬܝܐ܂ * ܠܒܙܬܐ ܘܠܟܦܢܐ ܬܓܚܟ܂
23 ܘܡܢ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܠܐ ܬܕܚܠ܂ * ܡܛܠ ܕܥܡ ܟܐ̈ܦܐ ܕܒܪܐ ܩܝܡܟ܂ ܘܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܢܫܬܠܡܢ ܠܟ܂ * ܘܬܕܥ
24 25 ܕܫܠܡܐ ܗܘ ܡܫܟܢܟ܂ ܘܬܣܥܘܪ ܕܝܪܟ ܘܠܐ ܬܚܛܐ܂ * ܘܬܕܥ ܕܣܓܝ ܙܪܥܟ܂ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܕܐܪܥܐ܂
26 27 * ܘܬܥܘܠ ܒܫܠܝܐ ܠܩܒܪܐ܂ ܐܝܟ ܓܕܝܫܐ ܕܚܛܐ ܒܙܒܢܗ܂ * ܗܕܐ ܒܨܝܢ ܘܗܟܢܐ ܐܝܬܝܗ܂ ܘܐܢܬ
ܕܥ ܠܟ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ̄ *

1 2 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ܂ * ܠܘ ܐܝܟ ܕܡܬܩܠܐ ܬܩܠܝ܂ ܘܡܣܐܡ ܕܘܘܝ ܒܡܣܐܬܐ ܐܟܚܕܐ܂ ܡܛܠ ܕܗܫܐ
3 4 ܡܢ ܚܠܐ ܕܝܡܡܐ ܝܩܝܪ܂ ܡܛܠܗܢܐ ܡ̈ܠܝ ܒܠ̈ܥܝ ܡܢܝ܂ * ܡܛܠ ܕܓܐܪ̈ܘܗܝ ܕܚܣܝܢܐ ܒܒܣܪܝ܂ ܘܚܡܬܗܘܢ ܫܬܝܐ
5 6 ܪܘܚܝ܂ ܘܕܚܠܬܗ ܕܐܠܗܐ ܒܥܬܬܢܝ܂ * ܕܠܡܐ ܢܥܝܩ ܦܪܐܐ ܥܠ ܕܬܐܐ܂ ܐܘ ܓܥܐ ܬܘܪܐ ܥܠ
7 ܣܢܝܩܘܬܗ܂ * ܐܘ ܡܬܐܟܠ ܦܟܝܗܐ ܕܠܐ ܡܠܚܐ܂ ܐܘ ܐܝܬ ܛܥܡܐ ܒܪܘܩܐ ܕܚܠܡܐ܂ * ܕܚܠܬ ܢܦܫܝ ܒܡܚܘܬܗ܂ ܐܘ ܓܥܐ ܐܝܟ ܚܡܪܐ ܕܡܢ ܟܣܐ܂

Verſio ARABICA.

9 10 * الذي صنع كباير بلا منتهى وعجايب لا تحصى * الذي بعث المطر على وجه الارض * وارسل المياه على
11 12 وجه الاسواق * ليضع الضعفاء في العلو والمتواضعين يعظمون بالخلاص * يبطل فكر الحكماء ليلا تتم
13 14 على ايديهم الحيلة * ياخذ الحكماء بحكمتهم وراي الماكرين يبطل * في النهار يتحسسون مثل الظلام
15 16 ومثل الذي في الليل يتحسسون في الظهر * يخلص من السيف افواههم ومن يد العظيم المسكين
17 18 * ويكون للمسكين رجاء والمنافق يسد فاه * طوبا لرجل يودبه الله وموعظة العزيز لا يرفض * من
19 اجل انه يكسر ويجبر * ويضرب ويداه تشفي * في ستة كربات يخلصك * وفي السابعة لا يقرب اليك
20 21 السوء * في الجوع يخلصك من الموت وفي القتال من يدي السيف * من سوط اللسان تستتر * ولا تخاف
22 23 من البلاء اذا ما ياتي * على النهب وعلى الجوع تهزي * ومن حيوانة القفر لا ترهب * من اجل انه مع
24 حجارة القفر ميثاقك * وحيوانات القفر سلمت اليك * فتعرف انه سالما خباك * فترجع الى مستقرك
25 26 ولا تخطي * وتعلم ان كثيرا زرعك وولدك مثل عشب الارض * وتدخل بالراحة الى القبر مثل
27 مصعد الكديس في اوانه * هاك فهمناها وكذلك سمعناها وانت فاقبل اليك * الفصل السادس *
1 2 * فاجاب ايوب وقال * ليت لي من يوزن غيضي والذي اصابني بالميزان معا * من اجل انه من رمال
3 4 البحر اعظم * من اجل ذلك فان اقوالي ممتنعة * لان سهام العزيز في بشري * وحميتها تشرب روحي
5 6 ووعيد الله افزعني * العل يستروح حمار الوحش على الحشيش * او يعج الثور على الجرور * او يوكل
7 البسع بغير ملح او يكون طعما في ريق الحمقاء * ملت نفسي بفكاكها او يصيح مثل السكرن قبالي

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Qui fecit magnalia ſine fine, et miracula ſine numero: Qui miſit pluvias ſuper faciem terræ, & miſit aquas ſuper faciem platearum: 9 10
ut collocet imbecilles in excelſo, & humiles exaltentur in ſalute. 11
Diſſipat cogitationem ſapientum (g) ne perficiatur per manus eorum aſtutia. 12
Deprehendit ſapientes in eorum ſapientia, et intentionem aſtutorū diſſipat: 13
In die palpabunt quaſi in tenebris; & velut is qui eſt in nocte, palpabunt in meridie: 14
Eruit à gladio ora eorum, et à manu potentis pauperem. 15
Et erit pauperi ſpes, & iniquus claudet os ſuum. 16
Beatus vir quem Dominus erudit, & diſciplinā excelſi non deſpicit: 17
Quoniam ipſe frangit & conſolidat, & percutit, & manus ejus ſanant. 18
In ſex triſtitiis liberabit te, & in ſeptima non accedet ad te malū. 19
In fame eruet te à morte, & in bello è manibus gladii, 20
(h) A voce linguæ protegêris, neque formidabis (i) tribulationē cùm venerit: 21
Propter rapinā & famem ridebis, neque timebis ob beſtiā deſerti: 22
Quoniam cum lapidibus deſerti eſt pactum tuum, beſtiæ deſerti tradent ſe tibi: 23
Et ſcies ſalvum eſſe tentorium tuum, & reverteris ad tabernaculum tuum, & non peccabis: 24
Et cognoſces eſſe multiplex ſemen tuum, & ſobolem tuam ſicut herbam terræ: 25
Et ingredêris cum tranquillitate ſepulchrum, ſicut acervus frumenti in tempore ſuo. 26
Hec intelleximus, et ſic audivimus ea: tu ergo (k) reſpice. 27

CAP. VI.

Reſpondit Iob & dixit, 1
utinam adeſſet qui iram meam & quod evenit mihi, in ſtatera ſimul appenderet, 2
Quoniam modò crevit magis quàm arenæ maris; proptereà ſermones mei ſunt detenti: 3
Quia ſagittæ potentis ſunt in carne mea, & furor earum ebibit ſpiritum meum, & timor Dei terruit me. 4
Num onager ſuper herbam reſpirat, et bos mugit ſuper ſectum gramen? 5
Num comeditur inſipidum ſine ſale, aut eſt guſtus (a) in ſucco portulacæ? 6
(b) Reſpirat animus meus libertatem ſuam, aut (c) incedit velut ebrius pugna mea. 7

INTERP. SYRIACA.

(g) ne exequantur manus eorum ſapientiam. (h) A virga (i) confractionem (k) ſcito hoc tibi. CAP. VI. (a) in albumine vitelli? (b) Tæder animam meam in percuſſione ſua, (c) vociferatur velut

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Qui facit magna quorum non eſt *ſupputatio*, & mirabilia donec non ſit numerus. Qui dat pluviam ſuper faciem terræ Iſrael, & mittit aquas ſuper faciem *provinciarum* 9 10
populorum. Ut ponat humiles ſame in ſublime, & denigrati inopia confortentur ſalute. Qui irritas fecit cogitationes Ægyptiorum, qui callidè cogitaverunt, ut malè 11 12
facerent Iſrael, & non eſt operata manus eorum conſilium ſapientiæ ſuæ. Qui comprehendit ſapientes Pharaonis in ſapientia eorum, & conſilium aſtrologorum ſuorū 13
perverſorum *velociter fecit* ſuper eos. Per diem incurrebant tenebris, & ſicut in nocte palpabant in meridie. Et redemit populum ſuum ab occiſione oris eorum, et de 14 15
manu regis fortis populum pauperem. Et fuit pauperi ſpes, et *flagitium* impii obturavit os ſuum. Ecce beatus eſt Abraham vir *pius*, quem corripiebat Deus: et tu 16 17
Iſrael diſciplinam omnipotentis ne abjicias. Quoniam ipſe adducit plagam, et adfert medecinam; percutit, et manus ejus ſanant. In ſex tribulationibus liberabit te, 18 19
et in ſeptima non accedet ad te malum. In fame Ægypti redemit te à morte, et in bello Amalec de occiſione gladii. In nocumento linguæ Balaam abſconderis inter 20 21
nubes, et non timebis à vaſtitate Madianitarum cùm venerit. In vaſtitate Sion et in fame deſerti ridebis, et à caſtris Og qui comparatus eſt beſtiæ *feræ* terræ, non time- 22
bis. Quoniam cum tabulis lapideis quæ datæ ſunt *pro lege* in agro, eſt pactum tuum: et Cananæi qui comparati ſunt beſtiis agri, inierunt pacem tecum. Et ſcies quo- 23 24
niam pax erit in *domo* doctrinæ tuæ, et præparabis habitaculum domus ſanctuarii tui, et non nocebis. Et ſcies quia multi ſunt filii tui, et filii filiorum tuorum quaſi her- 25
ba agri. Ingredieris in perfectione annorum tuorum in ſenio in *ſepulchrum*, ſicut tollitur acervus tritici in tempore ſuo. Ecce hoc ſcrutati ſumus, et ita eſt: ſuſcipe 26 27
illud: et tu ſcito tibi.

CAP. VI.

Et reſpondit Iob et dixit: Utinam appendendo appenderetur ira mea, et conturbatio mea in ſtatera levarentur ſimul. Quoniam nunc arenâ maris gravior eſt: ſi ideò 2 3
verba mea deficiunt. Quoniam ſagittæ omnipotentis in me ſunt, quarū venenū bibit ſpiritus meus: turbationes quæ ſunt à facie Dei, ordinantur contra me. Nunquid 4 5
poteſt *rudere* onager ſuper herbam *à gramine*? mugiet bos ſuper pabulum ſuū? Nunquid comedi poteſt pulmentū abſq; ſale, aut eſt guſtus in albumine ovi & albagine vi- 6
telli? *Targum aliud: Sicut non comeditur quicquam fatuum abſque ſale, ſic non eſt ſapor in mucilagine vitelli.* Quæ renuit tangere anima mea, ipſa reputata ſunt quaſi in- 7
firmitas prandio meo. *Targum aliud: Quæ renuit tangere anima mea, ipſa facta ſunt mihi ſicut ſufficientia* prandio meo.

איוב : ז

? Deus det meam expectationem & ,mea petitio veniat det Quis
8 מי־יתן תבוא שאלתי ותקותי יתן אלוה׃
.me succidat & ,suam manum solvat ;me conterat & ,Deus velit Et
9 ויאל אלוה וידכאני יתר ידו ויבצעני׃
;parcet non ,ægritudine in consolidasca & ,mea consolatio adhuc erit Et
10 ותהי עוד נחמתי ואסלדה בחילה לא יחמול
? sperem ut ,mea fortitudo Quæ .Sancti eloquia abscondi non quia
11 כי־לא כחדתי אמרי קדוש׃ מה־כחי כי איחל
lapidum fortitudo An ? meam animam prolongem ut ,meus finis quis &
12 ומה־קצי כי־אאריך נפשי׃ אם־כח אבנים
meum auxilium Nonne ? ænea mea caro an ? mea fortitudo
13 כחי אם־בשרי נחוש׃ האם אין עזרתי
suo socio à Dissoluto ? me à est expulsa subsistentia & ? me in
14 בי ותשיה נדחה ממני׃ למס מרעהו
sunt prævaricati mei Fratres .derelinquet Saddai timorem & ,misericordia
15 חסד ויראת שדי יעזוב׃ אחי בגדו
præ Nigrescentes .transibunt torrentium impetus sicut : torrens sicut
16 כמו־נחל כאפיק נחלים יעברו׃ הקדרים מני־
: excidentur ,effluxerint tempore In .nix occultabitur eis super ,gelu
17 קרח עלימו יתעלם־שלג׃ בעת יזרבו נצמתו
: eorū viæ semitæ Declinabunt .suo loco de extinguentur eo incalescendo in
18 בחמו נדעכו ממקומם׃ ילפתו ארחות דרכם
; Thema semitas Respexerunt .peribunt & ,nihilum in ascendent
19 יעלו בתהו ויאבדו׃ הביטו ארחות תמא
quoniam ,sunt affecti Pudore .sibi expectaverunt Seba itinera
20 הליכת שבא קוו־למו׃ בשו כי־
nunc Quia .pudore sunt affecti & : illud usque venerunt : speravit
21 בטח באו עדיה ויחפרו׃ כי־עתה
: dixi vere Num .timetis & ,fractionem videbitis : nihil fuistis
22 הייתם לא תראו חתת ותיראו׃ הכי־אמרתי
me liberate Et ? me pro donate vestra facultate de & ,mihi Afferte
23 הבו לי ומכחכם שחדו בעדי׃ ומלטוני
, me Docete : me redimetis terribilium manu è & ,hostis manu è
24 מיד־צר ומיד עריצים תפדוני׃ הורוני
Quàm .me intelligere facite erravi quo & ; tacebo ego &
25 ואני אחריש ומה־שגיתי הבינו לי׃ מה־
increpans increpabit quid & ! rectitudinis eloquia sunt roborata
נמרצו אמרי־ישר ומה־יוכיח הוכח
ventum in & : cogitabitis sermones increpandum ad Nonne ! vobis ex
26 מכם׃ הלהוכח מלים תחשבו ולרוח
fodietis & ; projicietis pupillum super Etiam ? desperati eloquia
27 אמרי נאש׃ אף־על־יתום תפילו ותכרו
super & : me in respicite velitis nunc Et .vestrum sodalem super
28 על־ריעכם׃ ועתה הואילו פנו־בי ועל־
: iniquitas sit ne ,nunc Convertimini .mentiar si ,vestram faciem
29 פניכם אם־אכזב׃ שבו נא אל־תהי עולה
mea lingua in est Nunquid .ea in mea justitia ,adhuc revertimini &
30 ושבי עוד צדקי־בה׃ היש־בלשוני
? infortunia intelliget non meum palatum an ? iniquitas
עולה אם־חכי לא־יבין הוות׃

CAP. VII. ז

? ejus dies mercenarii dies sicut & : terram super homini militia Nonne
1 הלא־צבא לאנוש על־ארץ וכימי שכיר ימיו׃
.suum opus expectabit mercenarius sicut & ,umbram anhelabit servus Sicut
2 כעבד ישאף־צל וכשכיר יקוה פעלו׃
ærumnæ noctes & ; vanitatis menses mihi accepi hæreditate Sic
3 כן הנחלתי לי ירחי־שוא ולילות עמל
.mihi numeraverunt
מנו־לי׃

Versio VULG. LAT.

8 Quis det ut veniat petitio mea : & quod expecto, tribuat 9 mihi Deus ? Et qui cœpit, ipse me conterat : solvat manum suam, & succidat me ? 10 Et hæc mihi sit consolatio, ut affligens me dolore, non parcat, nec contradicam sermo- 11 nibus Sancti. Quæ est enim fortitudo mea, ut sustineam ? aut quis finis meus, ut patien- 12 ter agam ? Nec fortitudo lapidum fortitudo mea, nec caro 13 mea ænea est. Ecce, non est auxilium mihi in me, & necessarii quoque mei recesse- 14 runt à me. Qui tollit ab amico suo misericordiam, timo- 15 rem Dñi derelinquit. Fratres mei præterierunt me, sicut torrens qui raptim transit in 16 convallibus. Qui timent prui- 17 nam, irruet super eos nix. Tempore, quo fuerint dissipati, peribunt : & ut incaluerit, sol- 18 ventur de loco suo. Involutæ sunt semitæ gressuum eorū : ambulabunt in vacuum, & per- 19 ibunt. Considerate semitas Thema, itinera Saba, & ex- 20 pectate paulisper. Confusi sunt quia speravi : venerunt quoque usque ad me, & pudore 21 cooperti sunt. Nunc venistis : & modò videntes pla- 22 gam meam timetis. Numquid dixi ; Afferte mihi, et de substantia vestra donate mihi ? 23 Vel, Liberate me de manu hostis, & de manu robustorum e- 24 ruite me ? Docete me, & ego tacebo : & siquid fortè igno- 25 ravi, instruite me. Quare detraxistis sermonibus veritatis, cū è vobis nullꝰ sit qui possit 26 arguere me ? Ad increpandum tantùm eloquia concinnatis, et 27 in ventū verba profertis. Super pupillū irruitis, & subver- 28 tere nitimini amicū vestrū. Veruntamen ꝙ cœpistis explete : præbete aurem, & videte an 29 mentiar. Respondete, obsecro, absq; contentione : et loquen- 30 tes id ꝙ justū est, judicate. Et non invenietis in lingua mea iniquitatem : nec in faucibus meis stultitia personabit.

CAP. VII.

1 Militia est vita hominis super terram : & sicut dies mer- 2 cenarii, dies ejus. Sicut servus desiderat umbram, & sicut mercenarius præstolatur finem 3 operis sui : Sic & ego habui menses vacuos, & noctes laboriosas enumeravi mihi.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

8 † Εἰ γὰρ δῴη, καὶ (ε) ἔλθοι μου ἡ αἴτησις, † καὶ τὴν ἐλπίδα μου δῴη (ζ) ὁ κύριος. 9 † Ἀρξάμενος ὁ κύριος (η) τρωσάτω με, εἰς 10 τέλος δὲ μή με ἀνελέτω. † Εἴη δέ (θ) μου πόλις τάφος, ἐφ᾽ ἧς ἐπὶ τειχέων ἡλλόμην, ἐπ᾽ αὐτῆς † (ι) οὐ φείσομαι· οὐ γὰρ ἐψευσάμην (κ) ῥήματα ἅγια θεοῦ μου. 11 † Τίς γάρ μου ἡ ἰσχύς, ὅτι ὑπομένω; † ἢ τίς μου ὁ χρόνος, ὅτι ἀνέχεταί μου ἡ ψυχή; 12 † Μὴ ἰσχὺς λίθων ἡ ἰσχύς μου; † ἢ αἱ σάρκες μου εἰσὶ (λ) χάλκεαι; 13 † Ἦ οὐκ ἐπ᾽ αὐτῷ ἐπεποίθειν; † βοήθεια δὲ ἀπ᾽ ἐμοῦ ἄπεστιν. 14 † (μ) Ἀπείπατό με ἔλεος, 15 (ν) ἐπισκοπὴ δὲ κυρίου ὑπερεῖδέ με. † Οὐ προσεῖδόν με οἱ ἐγγύτατοί μου; † ὥσπερ χειμάρρους ἐκλείπων, † ἢ ὥσπερ (ξ) κῦμα 16 παρῆλθόν με. † Οἵτινές με (ο) διευλαβοῦντο, νῦν ἐπιπεπτώκασί μοι, † ὥσπερ χιὼν ἢ κρύσταλλος πεπηγώς. 17 † Καθὼς (π) τακεῖσα θέρμης γενομένης, οὐκ ἐπεγνώσθη 18 ὅπερ ἦν, † (ρ) Οὕτω κἀγὼ κατελείφθην ὑπὸ πάντων, † ἀπωλόμην (σ) δὲ καὶ 19 ἔξοικος ἐγενόμην. † Ἴδετε ὁδοὺς Θαιμανῶν, (τ) ἀτραποὺς Σαβῶν † οἱ διορῶν- 20 τες. † Καὶ αἰσχύνην ὀφειλήσουσιν, † οἱ ἐπὶ 21 πόλεσι καὶ χρήμασι πεποιθότες. † (υ) Ἀτὰρ δὲ καὶ ὑμεῖς ἐπέβητέ μοι ἀνελεημόνως, † ὥστε ἰδόντες τὸ ἐμὸν τραῦμα φοβήθητε. 22 † Τί γάρ; μή τι ὑμᾶς ᾔτησα, ἢ τῆς παρ᾽ 23 ὑμῶν ἰσχύος ἐπιδέομαι, † Ὥστε σῶσαί με (φ) ἐξ ἐχθρῶν, ἢ ἐκ χειρὸς δυναστῶν ῥύ- 24 σασθαί με; † Διδάξατέ με, ἐγὼ δὲ κωφεύσω· † εἴ τι πεπλάνημαι, φράσατέ μοι. 25 † Ἀλλ᾽ ὡς ἔοικε φαῦλα (χ) ἀληθινοῦ ῥήματα, † οὐ γὰρ (ψ) παρ᾽ ὑμῶν ἰσχὺν αἰτοῦμαι. 26 † Οὐδὲ (ω) ἔλεγχος ὑμῶν ῥήμασί με παύσει, † οὐδὲ γὰρ ὑμῶν φθέγμα ῥήματος ἀν- 27 έξομαι. † Πλὴν ὅτι (α) ἐπ᾽ ὀρφανῷ ἐπιπίπτετε, † ἐνάλλεσθε δὲ ἐπὶ φίλῳ ὑμῶν. 28 † Νυνὶ δὲ (β) εἰσβλέψας εἰς πρόσωπα ὑμῶν, 29 οὐ ψεύσομαι. † Καθίσατε δὴ καὶ μὴ εἴη (γ) ἄδικον, † καὶ πάλιν τῷ δικαίῳ 30 συνέρχεσθε. † Οὐ γάρ ἐστιν (δ) ἐν γλώσσῃ μου ἄδικον, † ἢ ὁ λάρυγξ μου οὐχὶ σύνεσιν μελετᾷ;

Si enim det, & veniat postulatio mea, & spem meam det Dominus : 9 Qui cœpit Dominus, vulneret me : in (g) finem autem ne me tollat : 10 Si (h) autem mea civitas sepulchrum, super cujus muros saltabam super eam : non parcam : non enim mentitus sum verba sancta Dei mei. 11 Quæ enim virtus mea, ut sufferam ? aut (i) quod tempus meum, ut sustineat anima mea ? 12 Nunquid virtus lapidum virtus mea, aut carnes meæ sunt æneæ ? 13 Aut non in ipso confidebam ? Sed adjutorium à me recessit : 14 Negavit me misericordia, & visitatio Domini me despexit : 15 Propinqui mei non respexerunt me : tanquam torrens deficiens, aut sicut fluctus, transierunt me : 16 Qui verebantur me, nunc irruerunt super me : sicut nix aut gelu concretum. 17 Quemadmodum quod liquefactum est calore exorto, non cognitum est quod erat : 18 Ita & ego derelictus sum ab omnibus : Perii autem, & exul de domo mea factus sum. 19 Vias (k) Themanorum videte, semitas Sabeorum intuentes : 20 Et confusionem debebunt, qui in civitatibus & pecuniis confiderunt. 21 Nunc autem, & vos insurrexistis in me sine misericordia. Itaque videntes vulnus meum timete. 22 Quid enim ? nunquid aliquid vos petii, aut fortitudine vestrâ indigeo ? 23 Ut salvetis me de inimicis, vel de manu potentium liberetis me ? 24 Docete me, & ego obmutescam : si quid erravi, dicite mihi : 25 Sed ut (l) videtur, vilia veracis verba : non enim à vobis fortitudinem peto, 26 Neque correptio vestra verbis me sedabit : neque enim eloquutionem sermonis vestri sustinebo. 27 Veruntamen super pupillum irruitis, & insultatis super amicum vestrum. 28 Nunc autem (m) inspiciens in facies vestras, non mentiar. 29 (n) Sedete, obsecro, et non sit injustum, & rursus justo adestote. 30 Non est enim in lingua mea iniquitas, aut fauces meæ nonne intellectum meditantur?

ΚΕΦ. ζʹ.

1 Πότερον οὐχὶ πειρατήριόν ἐστιν ὁ βίος ἀνθρώπου ἐπὶ τῆς γῆς; † καὶ ὥσπερ (α) 2 μισθίου αὐθημερινοῦ ἡ ζωὴ αὐτοῦ; † Ἢ ὥσπερ θεράπων δεδοικὼς τὸν κύριον αὐτοῦ, καὶ (β) τετευχὼς σκιᾶς; † ἢ ὥσπερ μι- 3 σθωτὸς ἀναμένων τὸν μισθὸν αὐτοῦ; † Οὕτως (γ) κἀγὼ ὑπέμεινα μῆνας κενούς, † νύκτες δὲ ὀδυνῶν δεδομέναι μοί εἰσιν.

CAP. VII.

1 Nunquid non tentatio est vita hominis super terram ? & sicut quotidiani mercenarii vita ejus ? 2 Aut tanquam servus metuens dominum suum, & consequutus umbra ? aut tanquã mercenarius expectans mercedē suā ? 3 Sic et ego expectavi menses vanos : & noctes dolorum datæ sunt mihi.

MS.A. (ε) ἔλθοι (ζ) ὁ θεός. (η) τρωσάτω, εἰς τέλος (θ) μοι ἡ πόλις μου τάφος, (ι) οὐ μὴ φείσωμαι· (κ) ἐν ῥήματι ἁγίου θεοῦ μου. (λ) χάλκεαι; (μ) Ἀπείπατο δέ με (ν) καὶ ἐπισκοπὴ κυρίου (ξ) κύματα (ο) εὐλαβοῦντο (π) τακεῖς θέρμης γενομένης, οὐκέτι ἐγνώσθη (ρ) Οὕτως καὶ ἐγὼ (σ) τε καὶ (τ) καὶ ἀτραποὺς * ἀσεβῶν οἱ διορῶντες αἰσχύνθηται. Αἰσχύνην οἱ ὁρῶντες ὀφειλήσουσιν, οἱ ἐπὶ (υ) Ἀτὰρ δὲ (φ) ἐκ χειρὸς κακῶν, ἢ ῥύσασθαί με ἐκ χειρὸς δυναστοῦ; (χ) ἀνδρὸς ἀληθινοῦ (ψ) παρ᾽ ὑμῶν ῥῆμα οὐδὲ ἰσχὺν (ω) ὁ ἔλεγχος ὑμῶν τὰ ῥήματά μου παύσει, οὐδὲ * φθέγματος ῥήματος ὑμῶν ἀνέξομαι. (α) ὀρφανῷ (β) ἐμβλέψας (γ) ἄδικον ἐν κρίσει, καὶ πάλιν (δ) ἄδικον ἐν γλώσσῃ μου, οὐχὶ δὲ καὶ ὁ * λάρυγξ μου σύνεσιν μελετᾷ; Κεφ. ζʹ. MS.A. (α) * μισθοῦ (β) πετυχηκὼς (γ) καὶ ἐγώ

תרגום TARGUM.

8 9 10 מן יהיב ותיתי שאלתי וסברי יתן אלהא : ושרי אלהא למסכן יתי יתיר ידיה ויעתיר יתי : ותהי דא תנחומתי ואבוע ברתיחא ולא יחוס על רשיעא
11 12 ארום לא כסיתי מלי קדישא : מה חילי ארום אוריך ומה סופי ארום נגדנא נפשי : אין חילא היך אבניא חילי אין בסרי קרים כנחשא : המדלית סיועי
13 14 15 בי וחוכמתא אתפרחת מני : לגברא דמנע מן חבריה חסדא ודחלת שדי ישבוק : אחי בזוו היך נגוד נחלא היך מפקנות פצדי נחליא עברין : דשחימין
16 17 18 מן צנתא עליהון יתחיל תלגא : בעדן דחבו דר טובענא אשתרבבו אתמגרו ברתחיה אתמחיאו מן אתריהון : מטול דמקלקלין אסרטי
19 20 אורחיהון סלקין ללמא ויהובדון : אסתכו אסרטי תימא הלכתא דומרנד סברו להון : בהיתו ארום אתרחיצו בטעיותהון אתו לנברה ואתכסיפו :
21 22 23 ארום כדון הויתון כלא הויתון חמיתון תברא ואתבהלתון : הבקושטא אמרית הבו לי ומן נכסיכון שחדו אמטולתי : ושזבוני מן יד מעיקא
24 25 26 ומן ידיהון דתקיפי פרוקו יתי : אליפו יתי ואנא אשתוק ומה דשליתי אסבילו לי : מה בסימין הנון מלין תריצין ומן דכשר לכסנא יכסן מנכון :
27 28 29 אפשר דלכסנא במליא אתון חשבין ולקבלא אמתילו מלי יאושא : רגיז על יתם תשדון ותחשלון על חבריכון : וכדון שרו אסתכלו בי וקדמיכון
30 אם אכזב : תובו כדון לא תהי רשיעא ותובו תוב לזכאותי בה : האית בלישני רשעא אין מוריגי לא יתבין רגושתא :

ז

1 2 3 הלא חילא לבר נש עלוי ארעא והיך ויומי אגירא יומוי : היך עבדא דשאף טולא והיך אגירא דמודיק סטריה : הכדין אחסנית לי ירחין דמגן
ולילון דלעות חשיבו לי :

Verſio SYRIACA.

8 * ܡܢܘ ܢܬܠ ܠܝ ܕܬܐܬܐ ܫܐܠܬܝ܂ ܘܣܒܪܝ ܢܬܠ ܠܝ ܐܠܗܐ܂ * ܘܢܬܪܥܐ ܐܠܗܐ܂ ܘܢܕܟܝܢܝ܂ ܘܢܦܫܘܛ
9 ܐܝܕܗ ܘܢܫܡܠܝܢܝ܂ * ܘܢܗܘܐ ܬܘܒ ܗܘ ܒܘܝܐܝ܂ ܘܐܬܚܝܠ ܐܦ ܗܘܐ ܒܚܝܠܐ ܕܠܐ ܚܘܣܢ܂ ܡܛܠ ܕܠܐ ܕܓܠܬ ܒܡܐܡܪܘܗܝ
10 11 ܕܩܕܝܫܐ܂ * ܘܡܢܐ ܗܘ ܚܝܠܝ ܕܐܣܝܒܪ܂ ܘܡܢܐ ܗܘ ܚܪܬܝ ܕܐܓܪ ܢܦܫܝ܂ * ܠܐ ܐܝܟ ܚܝܠܗ ܕܟܐܦܐ ܚܝܠܝ܂
12 13 ܐܘ ܒܣܪܝ ܕܢܚܫܐ ܗܘ܂ * ܐܢ ܠܝܬ ܥܘܕܪܢܗ ܒܝ܂ ܘܦܘܪܩܢܗ ܐܬܪܚܩ ܡܢܝ܂ * ܕܟܠܐ ܛܝܒܘܬܐ ܡܢ ܚܒܪܗ܂
14 15 ܘܕܚܠܬܗ ܕܫܕܝ ܫܒܩ܂ * ܐܚܝ ܕܓܠܘ ܐܝܟ ܢܚܠܐ܂ ܘܐܝܟ ܪ̈ܕܝܐ ܕܢܚ̈ܠܐ܂ * ܕܐܟܡܝܢ ܗܘܘ ܡܢ ܓܠܝܕܐ܂
16 17 ܕܥܠܝܗܘܢ ܣܓܝ ܬܠܓܐ܂ * ܘܒܥܕܢܐ ܕܢܕܢܚ ܒܗܘܢ܂ ܢܦܣܩܘܢ܂ ܘܒܚܘܡܗܘܢ ܢܕܥܟܘܢ ܡܢ ܐܬܪܗܘܢ܂
18 19 * ܢܬܥܩܡܘܢ ܫܒܝ̈ܠܝ ܐܘܪ̈ܚܬܗܘܢ܂ ܘܢܣܩܘܢ ܠܬܗܪܐ ܘܢܐܒܕܘܢ܂ * ܚܙܘ ܠܐܘܪ̈ܚܬܐ ܕܬܝܡܢ܂ ܘܫܒܝ̈ܠܐ
20 21 ܕܫܒܐ ܣܟܘ ܠܗܘܢ܂ * ܒܗܬܘ ܕܣܒܪܘ ܒܗ܂ ܘܐܬܘ ܥܕܡܐ ܠܗ܂ ܘܐܬܚܦܝܘ܂ * ܐܘ ܐܦ ܐܢܬܘܢ ܗܘܝܬܘܢ
22 ܠܟܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܚܙܝܬܘܢ ܬܒܪܝ ܘܕܚܠܬܘܢ܂ * ܠܡܐ ܐܡܪܬ ܠܟܘܢ ܗܒܘ ܠܝ܂ ܐܘ ܡܢ ܢܟܣܝܟܘܢ
23 24 ܫܘܚܕܐ ܗܒܘ ܠܝ܂ * ܘܦܨܘܢܝ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ܂ ܐܘ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܥܫܝܢܐ ܦܪܘܩܘܢܝ܂ * ܐܠܦܘܢܝ ܘܐܢܐ
25 ܐܫܬܘܩ܂ ܘܡܕܡ ܕܛܥܝܬ ܣܟܠܘܢܝ܂ * ܠܡܢܐ ܐܬܡܪܡܪܘ ܠܟܘܢ ܡ̈ܠܐ ܕܩܘܫܬܐ܂ ܘܡܢܘ ܡܢܟܘܢ ܡܟܣ ܡܟܣ܂
26 27 * ܐܘ ܠܡܟܣܘܬܐ ܡ̈ܠܝܢ ܡܬܚܫܒܝܢ ܐܢܬܘܢ܂ ܘܠܪܘܚ ܡ̈ܠܝ ܠܐ ܡܬܒܩܝܢ܂ * ܐܦ ܥܠ ܝܬܡܐ ܡܬܪܡܝܢ ܐܢܬܘܢ܂
28 29 ܘܡܥܕܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܪ̈ܚܡܝܟܘܢ܂ * ܘܗܫܐ ܐܬܦܢܝܘ ܘܚܘܪܘ ܒܝ܂ ܘܒܐܦܝܟܘܢ ܠܐ ܐܕܓܠ܂ * ܗܦܘܟܘ ܠܝ ܗܫܐ܂
30 ܘܠܐ ܬܗܘܘܢ ܐܝܟ ܥܘܠܐ܂ ܗܦܘܟܘ ܘܬܘܒ ܙܕܩܘ ܒܗ܂ * ܕܠܝܬ ܒܠܫܢܝ ܥܘܠܐ܂ ܐܘ ܦܘܡܝ ܠܐ ܡܣܬܟܠ ܚܒܠܐ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *

1 * ܗܐ ܦܘܠܚܢܐ ܗܘ ܠܒܪܢܫܐ ܥܠ ܐܪܥܐ܂ ܘܐܝܟ ܝܘ̈ܡܬܐ ܕܐܓܝܪܐ ܝܘ̈ܡܬܗ܂
2 3 * ܘܐܝܟ ܥܒܕܐ ܕܡܣܟܐ ܠܛܠܠܐ܂ ܘܐܝܟ ܐܓܝܪܐ ܕܡܣܟܐ ܠܫܘܠܡܗ ܕܥܒܕܗ܂ * ܗܟܢܐ ܐܚܕܬ ܠܝ ܝܪ̈ܚܐ
ܣܪ̈ܝܩܐ ܘܠܠܝ̈ܐ ܕܥܡܠܐ ܠܐ ܐܬܡܢܝܘ ܠܝ܂

Verſio ARABICA.

8 9 *من الذي يعطيني ان تاتي مسالتي ورجاي يعطيني * فيرضا الله ويطهرني * ويبسط يدك فيكملني *
10 11 * فيكون ايضا عزاي * واستتم ايضا بقوة بلا قدر * من اجل اني لم اكذب بقول القدوس * وكم تكون
12 قوتي حتي اصبر وماذا تكون اخرتي حتي اطيل بروحي * فلو كانت قوتي مثل قوة الحجر * او بسري كان
13 14 نحاسا * فانه ليس عونه معي * وخلاصه قد تباعد مني * الذي يمنع السلام من صاحبه خشية العالي
15 16 يترك * اخوتي كذبوا مثل الاودية * ومثل السواقي الجارية * الذين كانوا يفرعون من الجليد عليهم
17 18 كثر الثلج * وفي ساعة يظهر فيهم يتحللون * وبسكونهم يتحللون من اماكنهم * تعوج سبل
19 20 طرايقهم ويصعدون في التحيير فيهلكون * لما نظروا طرايق التيمن والي مسالك سبا قصدوا * خزوا في
21 الذي توكلوا * بلغوا اليه فبهتوا * وانتم ايضا كنتم علي من اجل انه من قبل ان تروا تحريكا
22 23 فزعتم * الواني قلت لكم هبوا لي * ومن اموالكم ارشوا بدلي * وفلتوني من يدي معاندي * او من يد
24 25 العزيز نجوني * فاعلموني وانا اصمت * وماذا طغيت فانبوني * لماذا تدفعون قول الصدق * ومن الذي
26 27 ينصح ويعظ منكم * فالان لتفتيش الكلام تفكرون * وعلي روح كلمتي تتفهمون * فهوذا علي اليتيم
28 29 تتكبرون * ولاحبائكم تحزنون * والان فاقبلوا وانظروا وقدامكم اتكلم ولا اكذب * توبوا من الان ولا
30 تكونوا مثل الاشرار * عودوا الان وازكوا * العل ترون في لساني اثما * او فمي ليس ينطق بالصدق *

* الفصل السابع *

1 2 فان الان زمانا للناس علي الارض * ومثل ايام الاجير ايامه * ومثل ايام العبد الذي
3 يرتقب الظل ومثل الاجير الذي ينتظر تمام فاعله * هكذا ورثت اشهرا بطالة وليالي العمل لم تحسب لي *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Quis mihi det ut veniat 8 *poſtulatio mea, & ſpem meam* (d) *det mihi: Et* 9 *placetur Deus, & me mundet: & extendat manum ſuam, & me perficiat, Sitque de-* 10 *nuò conſolatio mea, & perficiar quoque virtute* (e) *ſine menſura, quandoquidem non ſum mentitus in ſermonem ſanctiſſimi; Et quanta eſt* 11 *fortitudo mea, ut ſuſtineam? & quinam eſt finis meus, ut patientiam habeam? Si eſſet for-* 12 *titudo mea ut fortitudo lapidis, aut caro mea eſſet ænea: Quoniam* 13 *auxilium ejus non eſt mecum, & ſalus ejus jam receſſit à me. Qui* 14 *prohibet pacem ab amico ſuo, timorem altiſſimi derelinquit. Fratres* 15 *mei mentiti ſunt, velut torrentes & ſicut rivuli fluentes. Qui ti-* 16 *mebant glaciem, multiplicata eſt ſuper eos nix; Et tempore quo exoritur* 17 *in eos dies, liqueſcunt, & in calore ſuo diſſolventur de locis ſuis: Et detorquebuntur ſemi-* 18 *tæ viarum eorum, & aſcendent in ſtupore, & peribunt: Eò quòd re-* 19 *ſpexerint ad vias Auſtri, ſemitas Saba intenderint. Confuſi ſunt* 20 *in eo in quo confiſi ſunt; ad illud pervenerunt, & ſtupore capti ſunt. Vos* 21 *quoque factis contra me, quoniam antequam vidiſſetis perturbationem, deterriti eſtis. Quid* 22 *ſi dixiſſem vobis, Date mihi, aut de bonis veſtris fœneramini pro me, Et liberate me de mani-* 23 *bus adverſariorum meorum, aut de manu potentis eruite me? Do-* 24 *cete me, & ego ſilebo: & quam in re erraverim, indicate mihi. Quare* 25 *repellitis ſermonem veritatis? & quis veſtrûm* (f) *hortatur et cómonet? Modò ad verba diſqui-* 26 *renda excogitatis, & contra ſpiritū ſermonis mei meditamini. Ecce ad-* 27 *verſùs pupillū elevamini, & amicos veſtros contriſtatis. Jam verò,* 28 *admittite & conſiderate, & corā vobis loquar, & non mentiar. Pœni-* 29 *teat vos modò, & ne ſitis velut ſceleſti; convertimini modò, & innocentes eſtote. Num* 30 *lingua mea* (g) *videt iniquitatem, aut os meum non profert veritatem?*

CAP. VII.

Nunc enim tempus eſt homini ſuper terram, & ſicut dies mercenarii dies ejus, Et ſicut dies ſervi qui expectat umbram, & ſicut mercenarius qui expectat † ultimatum operis factoris ſui. Sic poſſedi menſes otioſos, & noctes laboris non ſunt computatæ mihi.

INTERPR. SYRIACA. (d) det Deus: (e) ſine inopia; (f) redarguit & increpat: (g) eſt iniquitas, † ut abſolvatur opus

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quis det ut veniat petitio mea, & expectationem meam det Deus. Et Deus qui cœpit pauperem me *facere*, ſolvat manum ſuam; & divitem me faciat. 8 9
Et hæc erit conſolatio mea, & exultabo cùm venerit *furor* ſuper *impium*, & non parcet, quia non celavi verba ſancti. Quæ eſt enim fortitudo mea ut expectem? & quis 10 11
eſt finis meus cur protraham animam meam? Nunquid ſicut fortitudo petrarum eſt fortitudo mea, aut caro mea eſt robuſta ſicut æs? Nunquid non eſt auxilium in me, 12 13
& ſapientia expulſa eſt à me? Qui prohibet à viro amico ſuo miſericordiam, timorem omnipotentis derelinquit. Fratres mei diſſipuerunt ſicut alveus torrentis, 14 15
ſicut egreſſio rivorum torrentium qui pertranſeunt. Qui denigrati ſunt propter frigus, contra eos prævalebit nix. In tempore quo peccaverunt generatio diluvii, 16 17
diſſipati ſunt, conſumpti ſunt in furore ſuo, & *deleti ſunt* de loco ſuo. Pro eo quòd diſſipaverunt greſſus viarum ſuarum; aſcendunt in vanum & peribunt. Con- 18 19
ſideraverunt ſemitas Thema, itinera Zamargadi expectaverunt ſibi. Confuſi ſunt quia ſperaverunt in idolis ſuis, venerunt uſque illuc, & erubuerunt. Quoniam 20 21
nunc fuiſtis quaſi non eſſetis; vidiſtis interitum, & *conturbati fuiſtis*. Nunquid verè dixi: Date mihi, & de ſubſtantiis veſtris munera date pro me. Et liberate me de 22 23
manu hoſtis, & de manu robuſtiorum redimite me. Docete me, & ego tacebo; & ſi erravi, intelligere facite me. Quàm ſuaves ſunt ſermones rectorum! & qui aptus 24 25
eſt ex vobis ad corripiendum, corripiat. Nunquid ad corripiendum verbis vos cogitatis; & tenebris comparatis verba deſperata? Irata ſuper pupillum mittitis, & co- 26 27
gitatis contra amicum veſtrum. Nunc autem incipite & contemplamini me, & [*videte*] an mentiar coram vobis. Convertimini nunc, ut ſit *iniquum*, & [illegible] 28 29
adhuc ut juſtificer in eo. Nunquid eſt iniquitas in lingua mea, aut guttur meum non intelligit tumultus? 30

CAP. VII.

Nonne militia eſt filio hominis ſuper terram: & ſicut dies mercenarii, dies ejus? Sicut ſervus qui deſiderat umbram, & ſicut mercenarius qui expectat [illegible]
operis ſui: Sic poſſedi mihi menſes vanitatis, & noctes laborioſas enumeraverunt mihi.

איוב : ח

: veſperam eſt menſum & ,ſurgam quando , dixi & , jacui Si
4 אם־שכבתי ואמרתי מתי אקום ומדד־ערב
eſt Induta .crepuſculum ad uſque evagationibus ſum ſaturatus &
5 ושבעתי נדדים עדי־נשף : לבש
.ſe diſſolvit & ,ſe ſcidit mea cutis :pulveris ramento & ,verme mea caro
בשרי רמה וגוש עפר עורי רגע וימאס :
.expectationis fine in defecerunt & :radio præ veloces fuerunt mei Dies
6 ימי קלו מני־ארג ויכלו באפס תקוה :
meus oculus revertetur non : meæ vitæ ventus quod Memento
7 זכר כי־רוח חיי לא־תשוב עיני
tui oculi ;me videntis oculus me intuebitur Non .bonum videndum ad
8 לראות טוב : לא־תשורני עין ראי עיניך
, infernum ad deſcendens ſic ;abiit & nubes Defecit .ego non & ,me in
9 בי ואינני : כלה ענן וילך כן יורד שאול
non & ;ſuam domum ad ultrà revertetur Non .aſcendet non
10 לא יעלה : לא־ישוב עוד לביתו ולא
;meum os prohibebo non ego Etiam .eius locus ampliùs eum cognoſcet
11 יכירנו עוד מקומו : גם־אני לא אחשך־פי
amaritudine in confabulabor : mei ſpiritus anguſtia in loquar
אדברה בצר רוחי אשיחה במר
me ſuper ponas quod ,cetus aut ,ego mare Nunquid .meæ animæ
12 נפשי : הים־אני אם־תנין כי־תשים עלי
[illegible] ;meus lectus me conſolabitur , dixero Si ? cuſtodiam
13 משמר : כי־אמרתי תנחמני ערשי ישא
viſionibus à & ,ſomniis in me conteres Et .mei cubile meo eloquio in
14 בשיחי משכבי : וחתתני בחלמות ומחזינות
.meis oſſibus præ mortem ,mea anima ſtrangulationem elegit Et .me terrebis
15 תבעתני : ותבחר מחנק נפשי מות מעצמותי :
quia , mei ceſſa : ſum victurus ſeculum in non ,ſum Abominatus
16 מאסתי לא־לעלם אחיה חדל ממני כי־
quod & , eum magnifices quod , homo Quid .mei dies vanitas
17 הבל ימי : מה־אנוש כי תגדלנו וכי־
momenta ad ? matutinis in eum viſites Et ? tuum cor eum ad ponas
18 תשית אליו לבך : ותפקדנו לבקרים לרגעים :
me omittis non ? me à recedis non Quouſque .eum probabis
19 תבחננו : כמה לא־תשעה ממני לא־תרפני
tibi operabor quid , Peccavi ? meam ſalivam me abſorbere ad uſque
20 עד־בלעי רקי : חטאתי מה אפעל לך
tui & , tibi occurſum in me poſuiſti quid ut ? hominis cuſtos
נצר האדם למה שמתני למפגע לך ואהיה
[illegible] tranſire & ,meam prævaricationem tollis non cur Et ? onus in me ſuper
21 עלי למשא : ומה לא־תשא פשעי ותעביר
[illegible] me quæres & ,accumbam pulvere in nunc quia ? meam iniquitatem
את־עוני כי־עתה לעפר אשכב ושחרתני
.ego non &
ואינני :

CAP. VIII. ח

iſta loqueris Uſquequo : dixit & ,Suchites Bildad reſpondit Et
1 2 ויען בלדד השחי ויאמר : עד־אן תמלל־אלה
,judicium pervertet Deus Nunquid ? tui oris dicta validus ſpiritus &
3 ורוח כביר אמרי־פיך : האל יעות משפט
,ei peccaverint tui filii Si ? juſtitiam pervertet Saddai an &
4 ואם־שדי יעות־צדק : אם־בניך חטאו־לו
.Deum ad ſurrexeris mane tu Si .eorum prævaricationis manu in eos emiſit &
5 וישלחם ביד־פשעם : אם־אתה תשחר אל־אל
nunc quia , tu rectus & ,mundus Si : fueris deprecatus Saddai ad &
6 ואל־שדי תתחנן : אם־זך וישר אתה כי־עתה
erit Et .tuæ juſtitiæ habitaculum reddet pacificum & ,te ſuper ſuſcitabit
7 יעיר עליך ושלם נות צדקך : והיה
Quia .valde creſcet tuum noviſſimum & ,parvum tuum principium
8 ראשיתך מצער ואחריתך ישגה מאד : כי־
inveſtigationem ad te præpara & ; priſtinam generationem nunc interroga
שאל־נא לדר רישון וכונן לחקר
: eorum patrum
אבותם :

Verſio VULG. LAT.

4 Si dormiero, dicam; Quando conſurgam? & rurſum expectabo veſperā, & replebor doloribus uſque ad tenebras. 5 Induta eſt caro mea putredine & ſordibus pulveris, cutis mea aruit, et contracta eſt. 6 Dies mei velociùs tranſierunt quàm à texente tela ſucciditur, et conſumpti ſunt abſque ulla 7 ſpe. Memento quia ventus eſt vita mea, et non revertetur oculus meus ut videat bona. 8 Nec aſpiciet me viſus hominis: oculi tui in me, et non 9 ſubſiſtam. Sicut conſumitur nubes, et pertranſit: ſic qui deſcenderit ad inferos, non 10 aſcendet. Nec revertetur ultrà in domū ſuam, neq; cognoſcet 11 eum ampliùs locus ejus. Quapropter et ego non parcam ori meo, loquar in tribulatione ſpiritûs mei: confabulabor cum amaritudine animæ 12 meæ. Numquid mare ego ſum, aut cetus, quia circumdediſti 13 me carcere? Si dixero; Conſolabitur me lectulus meus, et relevabor loquens mecum in 14 ſtrato meo: Terrebis me per ſomnia, et per viſiones hor15 rore concuties. Quam ob rem elegit ſuſpendium anima 16 mea, et mortē oſſa mea. Deſperavi, nequaquàm ultrà jam vivam: parce mihi, nihil enim 17 ſunt dies mei. Quid eſt homo, quia magnificas eū? aut quid 18 apponis erga eū cor tuū? Viſitas eū diluculò, et ſubitò pro19 bas illū: Uſquequò non parcis mihi, nec dimittis me ut glu20 tiam ſalivā meā? Peccavi, quid faciā tibi, ô cuſtos hominum? quarè poſuiſti me contrarium tibi, & factus ſum mihimetipſi 21 gravis? Cur non tollis peccatū meum, & quarè non aufers iniquitatē meā? ecce, nunc in pulvere dormiā: & ſi manè me quæſieris, non ſubſiſtam.

CAP. VIII.

1 Reſpondens autem Baldad 2 Suhites, dixit; Uſquequò loquêris talia, & ſpiritus multi3 plex ſermones oris tui? Numquid Deus ſupplantat judiciū, aut Omnipotens ſubvertit quod 4 juſtū eſt? Etiā ſi filii tui peccaverunt ei, & dimiſit eos in 5 manu iniquitatis ſuæ: Tu tamen ſi diluculò conſurrexeris ad Deum, & Omnipotentem 6 fueris deprecatus: Si mundus & rectus inceſſeris, ſtatim evigilabit ad te, & pacatū reddet 7 habitaculū juſtitiæ tuæ: In tantum, ut ſi priora tua fuerint parva, & noviſſima tua multi8 plicentur nimis. Interroga enim generationē priſtinam, et diligenter inveſtiga patrū memoriam:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 † Ἐὰν κοιμηθῶ, λέγω, Πότε ἡμέρα; † ὡς δ᾽ ἂν ἀναστῶ, πάλιν, Πότε ἑσπέρα; † πλήρης δὲ (δ) γίνομαι ὀδυνῶν (ε) ἀπὸ 5 ἑσπέρας ἕως πρωΐ. † Φύρεται δέ μου τὸ σῶμα ἐν σαπρίᾳ σκωλήκων, † τήκω δὲ βώλακας γῆς ἀπὸ ἰχῶρος (ζ) ξύ6 ων. † Ὁ δὲ βίος μου ἐστὶν ἐλαφρότερος (η) λαλιᾶς, † ἀπόλωλε δὲ ἐν κενῇ ἐλπί7 δι. † (θ) Μνήσθητι οὖν ὅτι πνεῦμά μου ἡ ζωή, † καὶ οὐκ ἔτι ἐπανελεύσεται ὀφθαλμός 8 μου ἰδεῖν ἀγαθόν. † (ι) Οὐ περιβλέψεταί με ὀφθαλμὸς ὁρῶντός με, † οἱ ὀφθαλμοί σου ἐν ἐμοί, καὶ οὐκ ἔτι εἰμί· 9 † Ὥσπερ νέφος ἀποκαθαρθὲν ἀπ᾽ οὐρανοῦ. † ἐὰν γὰρ ἄνθρωπος καταβῇ εἰς ᾅδην, (κ) 10 οὐκ ἔτι μὴ ἀναβῇ, † Οὐδ᾽ οὐ μὴ ἐπιστρέψῃ εἰς τὸν ἴδιον οἶκον, † (λ) οὐδ᾽ οὐ μὴ 11 ἐπιγνῷ αὐτὸν ἔτι ὁ τόπος αὐτοῦ. † Ἀτὰρ οὖν οὐδὲ ἐγὼ φείσομαι τῷ στόματί μου, † (μ) λαλήσω ἐν ἀνάγκῃ ὤν, † ἀνοίξω πικρίαν ψυχῆς μου συνεχόμενος. 12 † Πότερον θάλασσά εἰμι ἢ δράκων, (ν) ὅτι κατέταξας ἐπ᾽ ἐμὲ φυλακήν; † (ξ) 13 Εἶπα ὅτι παρακαλέσει με ἡ κλίνη μου, † ἀνοίσω δὲ πρὸς ἐμαυτὸν (ο) ἰδίᾳ λόγον 14 τῇ κοίτῃ μου. (π) Ἐκφοβεῖς με ἐνυπνί15 οις, καὶ ἐν ὁράμασί με καταπλήσσεις. † (ρ) Ἀπαλλάξεις ἀπὸ πνεύματός μου τὴν ψυχήν μου, † ἀπὸ δὲ θανάτου τὰ ὀστᾶ 16 μου. Οὐ γὰρ εἰς τὸν αἰῶνα ζήσομαι, ἵνα μακροθυμήσω. † ἀπόστα ἀπ᾽ ἐμοῦ, κενὸς 17 γάρ μου ὁ βίος. † Τί γάρ ἐστιν ἄνθρωπος ὅτι ἐμεγάλυνας αὐτόν; ἢ ὅτι προσ18 έχεις τὸν νοῦν εἰς αὐτόν; † Ἢ ἐπισκοπὴν αὐτοῦ (σ) ποιήσῃ ἕως τὸ πρωΐ; † 19 καὶ εἰς ἀνάπαυσιν αὐτὸν κρινεῖς; Ἕως τίνος οὐκ ἐᾷς με, οὐδὲ προΐῃ με, † ἕως ἂν 20 καταπίω τὸν πτύελόν (τ) μου; † Εἰ ἐγὼ ἥμαρτον, (υ) τί δυνήσομαι πρᾶξαι, † ὁ ἐπιστάμενος τὸν νοῦν τῶν ἀνθρώπων; † διατί ἔθου με κατεντευκτήν σου, † εἰμὶ δὲ 21 ἐπὶ σοὶ φορτίον; (φ) † Διατί οὐκ ἐποιήσω τῆς ἀνομίας μου λήθην, † καὶ καθαρισμὸν (χ) τῆς ἁμαρτίας μου; νυνὶ δὲ εἰς γῆν ἀπελεύσομαι, ὀρθρίζων δὲ οὐκ ἔτι εἰμί.

ΚΕΦ. η΄.

1 Ὑπολαβὼν δὲ Βαλδὰδ ὁ Σαυχίτης, λέ2 γει, † Μέχρι τίνος λαλήσεις ταῦτα, πνεῦμα (α) πολυρρῆμον τοῦ στόματός σου; † 3 Μὴ ὁ κύριος ἀδικήσει κρίνων; † ἢ ὁ τὰ πάντα ποιήσας ταράξει τὸ δίκαιον; † (β) 4 Εἰ οἱ υἱοί σου ἥμαρτον ἐναντίον αὐτοῦ, † ἀπ5 έστειλεν ἐν χειρὶ (γ) ἀνομίας αὐτῶν. † Σὺ δὲ ὄρθριζε πρὸς κύριον παντοκράτορα δεό6 μενος. † Εἰ καθαρὸς εἶ καὶ ἀληθινὸς (δ), δεήσεως ἐπακούσεταί σου, † ἀποκαταστήσει 7 δέ σοι δίαιταν δικαιοσύνης. † Ἔσται οὖν τὰ μὲν πρῶτά σου ὀλίγα, τὰ δὲ ἔσχατά σου 8 ἀμύθητα. † Ἐπερώτησον (ε) γὰρ γενεὰν πρώτην, † ἐξιχνίασον δὲ κατὰ γένος πατέρων·

Si dormiero, dico; Quando (a) dies? & ſi ſurrexero, rurſùs; Quando veſper? repleor autem doloribus à veſpera uſque ad mane. 5 Et conſpergitur corpus meum in putredine vermium: infundo autem glebas terræ à ſanie radens: 6 Et vita mea (b) exilior eſt, quàm loquela: (c) periit autem in vana ſpe. 7 Recordare ergò, quia ſpiritus eſt vita mea; & non revertetur ultrà oculus meus ad cernendum bonum; 8 Non circumſpiciet me oculus videntis me: oculi tui in me, & non ultrà ſum, 9 Tanquàm (d) nubes expurgata de cœlo. Si enim homo deſcenderit ad infernum, ultrà non aſcendet: 10 Et non revertetur ampliùs in domum ſuam, neque cognoſcet ampliùs eum locus ejus. 11 Proptereà itaque & ego non parcam ori meo: loquar, cùm (e) in neceſſitate ſim: aperiam (f) amaritudinem animæ meæ compreſſus. 12 Utrùmne mare ſum ego, aut draco, quia ſtatuiſti ſuper me (g) cuſtodiam? 13 Dixi quia (h) conſolabitur me lectus meus: & (i) referam ad meipſum privatim ſermonem thoro meo. 14 Exterres me per ſomnia, & per viſiones me obſtupefacis: 15 (k) Abſolves à ſpiritu meo animam meam: & à morte (l) oſſa mea. 16 Non enim in ſempiternum vivam, ut (m) longanimiter agam: diſcede à me: vana eſt enim (n) vita mea. 17 Quid enim eſt homo, quòd magnificâſti eum? aut quòd adhibes mentem erga eum? 18 Num (o) viſitationem ejus facies uſque mané? & in (p) requie judicabis eum? 19 Uſquequò non ſinis me, neque dimittis me, donec deglutiam ſalivam (q) meā? 20 Si ego peccavi, quid (r) potero facere; qui ſcis mentem hominum? quarè conſtituiſti me, ut (s) loquerer adverſùs te; ſum autem ſuper te (t) onus? 21 Quarè non feciſti iniquitatis meæ oblivionem, & purgationem peccati mei? Nunc autem in terram abibo: mane autem ſurgens ultrà non ero.

CAP. VIII.

1 Reſpondens autem Baldad Sauhites, ait; 2 Uſquequò loqueris hæc, (a) ſpiritus multiloquus oris tui? 3 Nunquid Dominus injuſtè aget judicans? aut qui omnia fecit, turbabit (b) juſtitiam? 4 Si filii tui peccaverunt coram eo, miſit in manu iniquitates eorum. 5 Tu autem diluculò ſurge ad Dominum omnipotentem deprecans: 6 Si mundus es, & verax; deprecationem exaudiet tuam: reſtituet autem tibi habitaculum juſtitiæ: 7 Et erunt priora quidem tua pauca, noviſſima autem tua inenarrabilia. 8 Interroga enim generationem primam, & inveſtiga per genus patrum:

MS. A. (δ) γίνωμαι (ε) ἀφ᾽ ἑσπέρας (ζ) ζέων. (η) δρομέως, (θ) Μνήσθητι οὖν (ι) Οὐκ [illegible] μοι ὁ ὀφθαλμὸς (κ) οὐ μὴ ἂν ἀναβῇ ἔτι, Οὐδὲ μὴ ἐπιστραφῇ ἔτι εἰς (λ) οὐδὲ μὴ ἐπιγνῷ αὐτὸν ὁ τόπος αὐτοῦ ἔτι. Τοιγαροῦν (μ) λαλήσω δὲ ἐν ἀνάγκῃ ὢν τοῦ πνεύματός μου, ἀνοίξω τὸ στόμα μου ἐν πικρίᾳ ψυχῆς συνεχόμενος. (ν) ἐπεὶ κατέταξας κατ᾽ ἐμοῦ (ξ) Εἶπον, Παρακαλέσει (ο) διὰ λόγον ἰδίᾳ τῇ (π) Διατί ἐκφοβεῖς (ρ) Ἀπαλλάξεις δὲ ἀπὸ πνεύματος τὴν ζωήν μου, τὴν δὲ ψυχήν μου ἀπὸ τοῦ σώματός μου. Οὐ γὰρ (σ) ποιῇ τὸ πρωΐ; (τ) μου ἐν ὀδύνῃ; Εἰ (υ) τί δύναμαί σοι πρᾶξαι, (φ) Καὶ διατί οὐ λήθην ἐποιήσω τῆς ἁμαρτίας μου, (χ) τῆς ἀνομίας Κεφ. η΄. MS. A. (α) πολυρήμον (β) Εἰ υἱοί (γ) τὴν ἀνομίαν (δ) εἶ, δεήσεώς σου ἐπακούσεται, (ε) γενεὰν

תרגום TARGUM.

אין שכיבית ואמרית אימתי אקום ונדדית ברמשא ושבעית נדדת שנתא עד עדן שפרפרא : לבש בסרי מורני וגרגשתא דעפרא משכי רטט ואתמסי : 4 5
יומי קלילו מן גרדית מחי ופסקו מדלית סברא : אדכר ארום היך רוחא חיי לא תתוב עיני למחמי טב : לא תסכי יתי עינא דחמיא יתי עיניך 6 7 8
במימרי ולא איתי : הכמא דפסק ענגא ואזיל הכדין דנחת לבי קבורתא לא יסק : לא יתוב תוב לביתיה ולא אשתמודעיה תוב אתריה : לחוד אנא 9 10 11
לא אמנע פומי אמלל בעקת רוחי אשיח במריר נפשי : הכמצראי דאתחייבו למטבע בימא דסוף אתחייבית אנא אין כפרעה דאשתנק במציעיה 12
בחוביה ארום תמני עלי מטרא : תא היכמא רבא אנא דמתרגף לקציא אין לויתן דאטימוס לאתחדא ארום תשוי עלי נטירא : ארום 13
אמרית תנחמנני דרגשי יסובר במלי בירת משכבי : ותברתני בחלמיא ומחזוניא תבעת יתי : ובחרת שרנוקא נפשי מותא מן קיומם גרמי : רחיקית 14 15 16
ולא לעלם אחי פסק מני ארום הבל למא יומי : מה בר נש ארום תרבניה וארום תשוי לותיה לבך : ותסערניה לצפריא לשעתא תבחנניה : כמה לא 17 18 19
תשבוק מני לא תשלנני עד דאבלע רקי : חבית מה אעבד לך נטריה דבר נשא למא שויתני למארע לך והויתי עלי למטור : ומה דין לא תשבוק מרודי 20
ותעבר ית עויתי ארום כדון לעפרא אשכוב ותתבעני ולא איתי : 21

ח

ואתיב בלדד דמן שוח ואמר : עד אימתי תמלל כאליו וזועפא רבא מימרי פומך : אפשר דאלהא יעקם דינא ואם שדי יקלקל צדקא : אין בניך חבו 1 2 3 4
קדמוי ושדרנון באתר מרדיהון : אין את הקדם בצלו קדם אלהא ולות שדי תצלי : אין בריר ותריץ את ארום כדון יתנבר עלך וישלם יאות צדיקך : ויהי 5 6 7
שירותך זעיר וסופך יסגא לחדא : ארום שאל כדון לדר קדמי וכון לפשפיש אבהתהון : 8

Verſio SYRIACA.

* ܐܢ ܫܟܒܬ ܘܐܡܪܬ ܐܦ ܐܡܬܝ ܐܩܘܡ. ܘܡܫܚ ܐܢܐ ܠܪܡܫܐ. ܘܫܟܒܬ ܐܢܐ. ܘܐܫܬܓܫܬ ܠܨܦܪܐ. * ܠܒܫ ܒܣܪܝ 4
ܥܦܪܐ. ܘܦܓܪܝ ܩܠܦܐ ܕܐܪܥܐ. ܡܫܟܝ ܐܬܟܡܫ ܘܐܬܡܣܝ. * ܝܘܡܬܝ ܩܠܝܠܝܢ ܡܢ ܙܩܘܪܐ. ܘܫܠܡܘ ܕܠܐ 5 6
ܣܒܪܐ. * ܐܬܕܟܪ ܕܪܘܚܐ ܚܝܐ ܗܝ. ܘܬܗܦܘܟ ܥܝܢܝ ܠܡܚܙܐ ܛܒܬܐ. * ܠܐ ܬܚܙܝܢܝ ܥܝܢܐ ܕܚܙܝܐ ܠܝ. ܘܥܝܢܝܟ 7
ܒܝ. ܘܠܝܬܝ. * ܐܝܟ ܕܡܬܦܫܪ ܥܢܢܐ ܘܐܙܠ. ܗܟܢܐ ܡܢ ܕܢܚܬ ܠܫܝܘܠ ܠܐ ܢܣܩ. * ܘܠܐ ܢܗܦܘܟ ܬܘܒ ܠܒܝܬܗ. 8 9 10
ܘܠܐ ܢܫܬܘܕܥܝܘܗܝ ܬܘܒ ܐܬܪܗ. * ܐܦ ܐܢܐ ܠܐ ܐܟܠܐ ܦܘܡܝ. ܐܡܠܠ ܒܥܩܬܐ ܕܪܘܚܝ. ܘܐܫܬܥܐ ܒܡܪܝܪܘܬܐ ܕܢܦܫܝ. 11
* ܝܡܐ ܐܢܐ ܐܘ ܬܢܝܢܐ. ܕܣܡܬ ܥܠܝ ܢܛܘܪܐ. * ܡܛܠ ܕܐܡܪܬ ܕܢܒܝܐܝܢܝ. ܘܢܫܬܒܩ ܠܝ ܡܢ ܥܪܣܝ 12
ܘܡܫܟܒܝ. * ܗܝܕܝܢ ܙܘܥܬܢܝ ܒܚܠܡܐ. ܘܒܚܙܘܢܐ ܐܒܗܬܬܢܝ. * ܘܓܒܬ ܢܦܫܝ ܡܢ ܚܒܠܐ. ܘܓܪܡܝ 13 14
ܡܢ ܡܘܬܐ. * ܐܬܛܠܩܬ ܠܝ. ܠܐ ܗܘܐ ܠܥܠܡ ܚܝ ܐܢܐ. ܫܒܘܩ ܠܝ. ܡܛܠ ܕܣܪܝܩܝܢ ܝܘܡܬܝ. * ܡܢܘ 15 16
ܒܪܢܫܐ ܕܬܘܒܕܝܘܗܝ. ܘܬܣܝܡ ܠܒܟ ܥܠܘܗܝ. * ܘܬܣܥܘܪܝܘܗܝ ܒܨܦܪܐ. ܘܒܫܥܬܐ ܬܒܩܝܘܗܝ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܠܐ 17 18
ܫܒܩܬ ܐܢܬ ܠܝ. ܠܐ ܡܪܦܐ ܐܢܬ ܠܝ ܕܐܒܠܥ ܪܘܩܝ. * ܐܢ ܚܛܝܬ ܡܢܐ ܐܥܒܕ ܠܟ ܢܛܘܪܗ ܕܒܢܝܢܫܐ. 19 20
ܠܡܢܐ ܣܡܬܢܝ ܕܐܦܓܥ ܒܟ. ܘܗܘܝܬ ܥܠܝ ܠܡܘܥܒܐ. * ܘܠܡܢܐ ܠܐ ܫܒܩܬ ܚܘܒܝ. ܘܠܐ ܥܒܪܬ 21
ܥܠ ܣܟܠܘܬܝ. ܕܗܫܐ ܒܥܦܪܐ ܐܫܟܒ. ܘܬܒܥܝܢܝ ܘܠܝܬܝ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܚ * * ܘܥܢܐ ܒܠܕܕ 1
ܫܘܚܝܐ ܘܐܡܪ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܬܡܠܠ ܗܠܝܢ. ܘܪܘܚܐ ܪܒܬܐ ܡܠܝܐ ܦܘܡܟ. * ܠܡܐ ܐܠܗܐ ܡܥܘܠ ܕܝܢܐ. ܐܘ 2
ܚܝܠܬܢܐ ܡܥܘܠ ܟܐܢܘܬܐ. * ܐܢ ܒܢܝܟ ܚܛܘ ܠܗ. ܫܕܪ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕ ܚܛܗܝܗܘܢ. * ܘܐܢ ܐܢܬ. ܒܥܝ ܡܢ ܐܠܗܐ. 3 4
ܘܡܢ ܚܝܠܬܢܐ ܐܬܟܫܦ. * ܐܢ ܕܟܐ ܐܢܬ ܘܬܪܝܨ. ܗܫܐ ܢܬܥܝܪ ܥܠܝܟ. ܘܢܫܠܡ ܕܝܪܬܐ ܕܙܕܝܩܘܬܟ. * ܘܢܗܘܐ 5 6
ܫܘܪܝܟ ܙܥܘܪܐ. ܘܚܪܬܟ ܬܣܓܐ ܛܒ. * ܫܐܠ ܠܕܪܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܐܣܬܟܠ ܒܣܘܟܠܐ ܕܐܒܗܬܗܘܢ. 7 8

Verſio ARABICA.

* فان هجعت وقلت متى اقوم • وسكنت الى العشي فهجعت واضطربت للصباح * ألبس اذ بشري غبارا 4 5
وجسدي ترابا • جلدي تقبض وتماسي * ايامي اقل من خيط السلك • بادت لانه ليس رجاء * اذكر ان 6 7
الروح حية هي • فتعود عيني ان ترى خيرا * لا تراني لي عين تراني • وعيناك فيّ وليس انا * كما تضمحل 8 9
السحاب وتذهب • هكذا من يهبط الى الهاوية لا يصعد * ولا يرجع ايضا الى بيته ولا يعرف ايضا مكانه 10
* وانا ايضا فلا امسك فمي • اتكلم بكرب روحي واخبر بمرارة فمي * ابحر انا ام تنين • حتى تقيم عليّ 11 12
الحراس * لاني قلت اني اتعزا واتقوى من كربة مضجعي * فالان قد اقلقتني بالاحلام وبالرؤيا ارهبتني 13 14
* واملكت نفسي من الهلاك وعظامي من الموت * قد ايست • وليس للدهر احيا • وترفق بي من اجل 15 16
انها عدم ايام حياتي * من هو الانسان حتى تهلكه وتضع عليه قلبك * وفي الصباح تفتقده • وفي الوقت 17 18
تمتحنه * حتى متى الان لا تتركني • ولا تمهلني حتى ابتلع ريقي * فان كنت اخطيت فماذا اصنع بك 19 20
يا صانع الناس • لماذا جعلتني للتفجع • كنت علي ثقل * وحتى متى لا تترك ادواني • وتترك خطاياي • 21
فانا الان على التراب اهجع • فتطلبني ولا تجدني •

الفصل الثامن •

* فاجاب بلداد السوحاني • فقال * حتى متى تتكلم بهذا • وروح العظمة ملآء فمك * العل الله يجور في 1 2
القضاء • او العزيز يظلم في الحكم * ان كان بنوك اخطيوا له • فابعهم بخطاياهم * وان كنت انت فاطلب 3 4 5
من الله والى القوي فتضرع * ان كنت زكيا صالحا فالان يستيقظ عليك ويتمم عاقبة صلاحك * فتكون 6 7
اوليك صغيرة واخرتك جدا تكثر * اسال الان عن الاجيال القديمة • وتفهم اخبار ابائهم • 8

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

*4 Si dormiero, dico etiam; quando ſurgam? (a) et ſilui uſque ad veſperas, & dormivi, & perturbatus ſum uſque ad matutinum. 5 Induta eſt quidem caro mea pulvere, & corpus meum terrâ: pellis mea (b) contracta eſt, & putrefacta eſt: 6 Dies mei tenuiores ſunt (c) filo ſutorio: perierunt, eò quòd non ſit ſpes. 7 Memento quòd ſpiritus vivens eſt, & revertetur oculus meus videre bonum. 8 Non apparet mihi oculus, qui me videt, & oculi tui in me, & non ſum ego. 9 Sicut diſſipatur nubes, & perit, ſic qui deſcendit in foveam non aſcendet, 10 Nec revertetur adhuc ad domum ſuã, nec etiam cognoſcet locum ſuum. 11 Etiam ego non tenebo os meum, loquar in mœrore ſpiritûs mei, & enarrabo in amaritudine (d) oris mei. 12 Num mare ſum ego aut draco, ut conſtituas ſuper me cuſtodes? 13 Quoniã dixi, Ego conſolabor, & confortabor à calamitate cubilis mei. 14 Modò conturbâſti me in ſomniis, & in viſione me terruiſti: 15 Et inveſtigâſti animam meam à perditione, et oſſa mea à morte. 16 Jam viribus defectus ſum, nec in æternum vivã, & lenis in me eſto, quoniam (e) nihil ſunt dies vitæ meæ. 17 Quis eſt homo, ut perdas eum, et apponas erga eum cor tuum, 18 Et in matutinis viſitas eum, et in momento probas illũ? 19 Quouſque jam non dimittes me, neque tempus mihi dabis, ut deglutiam ſalivam meam? 20 Si peccavi, quid faciam tibi O factor hominum? quare poſuiſti me (f) in calamitate, & factus es mihi onus? 21 Et quouſque non dimittes debita mea, & parces peccatis meis? Ego modò ſuper terra dormiam, quæres me, (g) & non invenies me.

CAP. VIII.

1 Reſpondítque Baldad Suhites, & dixit; 2 uſquequo loquêris hæc, & ſpiritus ſuperbiæ implebit os tuum? 3 Nunquid Deus falſat judicium, aut Potens (a) opprimit in vero? 4 Si filii tui ei peccaverunt, miſit eos in peccatis eorum: 5 Sin verò tu, ora Deum, & Potenti ſupplica. 6 Si es innocens probus, modò expergiſcetur ad te, (b) & perficiet finem probitatis tuæ: 7 Et erit initium tuum parvũ, & finis tuus valdè augebitur. 8 Interroga modo antiquas generationes, & intellige hiſtorias patrum eorum.

INTERP. SYRIACA.

(a) & dimetior (b) conſumpta eſt, (c) tela araneæ: (d) animæ meæ. (e) vanitas (f) ut occurram tibi, (g) & non ero. CAP. VIII. (a) pervertit jus? (b) & pacabit habitaculum juſtitiæ tuæ:

PARAPH CHALD. Verſio Latina.

Si cubui, tum dixi, Quando conſurgam? & inſtabilis fui veſperè, & ſaturatus ſum inſomnii vagationibus uſque ad tempus matutinum. Induta eſt caro mea vermibus 4 5
& gleba pulveris: pellis mea contremuit, et tabefacta eſt. Dies mei velociores ſunt radio textoris, & ſucciſi ſunt abſque ſpe. Recordare quia ſicut ventus eſt vita mea: 6 7
non revertetur oculus meus ut videat bonũ. Neque aſpiciat me oculus videntis me: oculi tui in verbum meum, & non ſubſiſtam. Ecce ſicut 8 9
ceſſat fumus & deficit; ſic qui deſcendit ad ſepulchrum, non aſcendet. Non revertetur ampliùs in domum ſuam, neque cognoſcet eum ampliùs locus ejus. Verun- 10 11
tamen ego non prohibeo os meum: loquar in tribulatione ſpiritus mei: meditabor in amaritudine animæ meæ. Nunquid ut Ægyptii qui condemnati ſunt ut ſubmer- 12
gerentur in mari rubro, condemnatus ſum ego: aut ſicut Pharao qui ſuffocatus eſt in medio ejus *in peccato ſuo*, quoniam conſtituis ſuper me cuſtodiam? *Targum aliud:*
Nunquid ſicut mare magnum ego ſum, quod commovetur ad extrema? An Leviathan cui prope abeſt ut capiatur, quòd apponis mihi cuſtodiam? Si enim dixi: Con- 13
ſolabitur me lectus meus; ſuſtinebit verba mea domus ſtrati mei: Terruiſti me inſomniis, & per viſiones conturbas me. Elegit ſuffocationem anima mea; & mor- 14 15
tem magis quam ſuſtentationem meipſius. Abjeci; nequaquam in ſempiternum vivam: dimitte me, quoniam nihil ſunt dies mei. Quid eſt filius hominis quia ma- 16 17
gnificas eum, & quia ponis ad eum cor tuum? Et viſitas eum diluculo, & ſubitò probas illum. Uſquequo non parces mihi, nec dimittes me, donec deglutiam ſali- 18 19
vam meam? Peccavi: quid faciam tibi cuſtos filiorum hominis? quare poſuiſti me in contrarium tibi, & factus ſum mihimetipſi in onus? Et quare non dimittis 20 21
tranſgreſſionem meam, & transfers iniquitatem meam? quoniam nunc in pulvere dormiam, & quæres me, & non ero.

CAP. VIII.

ET reſpondit Bildad qui erat de Suah, & ait: Uſquequo loquêris iſtha? & ſicut ventus magnus erunt verba oris tui? Nunquid Deus ſubvertet judicium, aut 1 2 3
omnipotens corrumpet juſtitiam? Si filii tui peccaverunt coram eo, & dimiſit eos in locum tranſgreſſionis ſuæ: Si tu manè Deum in oratione præveneris, & ad 4 5
omnipotentem oraveris. Si mundus & rectus es tu, nunc [illegible] orabitur ſuper te, & *perficiet* pulchritudinem juſtitiæ tuæ. Et erit principium tuum parvum, 6 7
& noviſſimum tuum multiplicabitur nimis. Interroga enim [illegible] generationem priorem, & attende inquiſitioni patrum eorum. 8

איוב : ט

ſuper noſtri dies umbra quia ; neſcimus & , nos heri Quia
כי-תמול אנחנו ולא נדע כי צל ימינו עלי 9
ſuo corde è & , tibi dicent , te docebunt ipſi Nonne .terram
ארץ: הלא-הם יורוך יאמרו לך ומלבם 10
? luto abſque juncus creſcet Nunquid ? eloquia proferent
יוציאו מלים: היגאה-גמא בלא בצה 11
non , ſuo virore in eo Adhuc ? aqua abſque *pratum* creſcet
ישגה-אחו בלי-מים: עדנו באבו לא 12
ſemitæ Sic .areſcet *herbæ omnis facies ad* & ; ſuccidetur
יקטף ולפני כל-חציר ייבש: כן ארחות 13
.peribit *hypocritæ* ſpes & ; Dei obliviſcentium omnium
כל-שכחי אל ותקות חנף תאבד:
.ejus fiducia araneæ domus & ; *ejus* ſpes *abominabitur Quem*
אשר-יקוט כסלו ובית עכביש מבטחו: 14
non & , eam *in roborabit* : ſtabit non & , *ſua domo ſuper* Innitetur
ישען על-ביתו ולא יעמד יחזיק בו ולא 15
ſuo horto *ſuper &* ; *Solis facies ad ipſe Tener* .permanebit
יקום: רטב הוא לפני-שמש ועל-גנתו 16
ejus radices fontem *Super* .egredietur tener ejus ramus
יונקתו תצא: על-גל שרשיו 17
; ſuo loco è eum *deglutierit* Si .*aſpiciet lapidum* domum ; *intricabuntur*
יסבכו בית אבנים יחזה: אם-יבלענו ממקמו 18
; ejus viæ gaudium illud Ecce .te vidi Non : *eo in* negabit &
וכחש בו לא ראיתיך: הן-הוא משוש דרכו 19
reprobabit non Deus Ecce .germinabunt *alio pulvere* de &
ומעפר אחר יצמחו: הן-אל לא ימאס 20
impleat Donec .malignorum manum *in* apprehendet nec ; perfectum
תם ולא יחזיק ביד-מרעים: עד-ימלה 21
te habentes Odio .jubilatione tua labia & , tuum os riſu
שחוק פיך ושפתיך תרועה: שנאיך 22
.*ipſum* non impiorum *tentorium* & ; pudore induentur
ילבשו-בשת ואהל רשעים איננו:

CAP. IX. ט

; ita quòd novi Verè : dixit & , Iiob reſpondit Et
ויען איוב ויאמר: אמנם ידעתי כי-כן 1 2
voluerit Si ? Deo cum homo ſe juſtificabit *quid* &
ומה-יצדק אנוש עם-אל: אם-יחפץ 3
.mille ex unum ei reſpondebit non ; eo cum contendere
לריב עמו לא יעננו אחת מני-אלף:
, *eum ad* induravit quis : robore fortis & , corde Sapiens
חכם לבב ואמיץ כח מי-הקשה אליו 4
qui ; cognoverunt non & , montes *Transferens* ? habuit pacem &
וישלם: המעתיק הרים ולא ידעו אשר 5
; ſuo loco è terram *Tremefaciens* .ſuo *naſo* in eos ſubvertit
הפכם באפו: המרגיז ארץ ממקומה 6
; oritur non & , Soli *Dicens* .contremiſcent ejus columnæ &
ועמודיה יתפלצון: האמר לחרס ולא יזרח 7
, ſolus cœlos *Extendens* .ſignabit ſtellas *ſupra* &
ובעד כוכבים יחתם: נטה שמים לבדו 8
, *His Faciens* .maris excelſa ſuper *calcans* &
ודורך על-במתי-ים: עשה עש 9
non uſque , magna *Faciens* .*auſtri penetralia &* , *Chima &* , *Cheſil*
כסיל וכימה וחדרי תמן: עשה גדלות עד-אין 10
tranſibit Ecce .*numerus non donec* ,mirabilia & ; *inveſtigatio*
חקר ונפלאות עד-אין מספר: הן יעבר 11
.eum intelligam non & , *præteribit* & ; videbo non & , me ſuper
עלי ולא אראה ויחלף ולא-אבין לו:
: eum ad dicet quis ? eum faciet reſtituere quis , *rapiet En*
הן יחתף מי ישיבנו מי-יאמר אליו 12
? facis Quid
מה-תעשה:

Verſio VULG. LAT.

9 (Heſterni quippè ſumus, & ignoram⁹ quoniã ſicut umbra 10 dies noſtri ſunt ſup terrã:) Et ipſi docebunt te: loquentur tibi, & de corde ſuo proferent 11 eloquia. Numquid virere poteſt ſcirpus abſque humore? aut creſcere carectum ſine a- 12 qua? Cùm adhuc ſit in flore, nec carpatur manu, ante 13 omnes herbas areſcit: Sic viæ omnium qui obliviſcuntur Deum, & ſpes hypocritæ per- 14 ibit: Non ei placebit vecordia ſua, & ſicut tela ara- 15 nearum fiducia ejus. Innitetur ſuper domum ſuam, & non ſtabit: fulciet eam, & non 16 conſurget: Humectus videtur antequàm veniat Sol, & in ortu ſuo germen ejus egredie- 17 tur. Super acervum petrarum radices ejus denſabuntur, & inter lapides commorabitur. 18 Si abſorbuerit eum de loco ſuo, negabit eum, & dicet; 19 Non novi te. Hæc eſt enim lætitia viæ ejus, ut rurſum de 20 terra alii germinentur. Deus non projiciet ſimplicem, nec porriget manum malignis: 21 Donec impleatur riſu os tuum, 22 & labia tua jubilo. Qui oderunt te, induentur confuſione: & tabernaculum impiorum non ſubſiſtet.

CAP. IX.

1 2 ET reſpondens Job, ait; Verè ſcio quòd ita ſit, & quòd non juſtificetur homo compoſitus 3 Deo. Si voluerit contendere cum eo, non poterit ei reſpon- 4 dere unum pro mille. Sapiens corde eſt, & fortis robore: quis reſtitit ei, & pa- 5 cem habuit? Qui tranſtulit montes, & neſcierunt hi quos 6 ſubvertit in furore ſuo. Qui commovet terram de loco ſuo, & columnæ ejus concutiuntur. 7 Qui præcepit Soli, & non oritur: & ſtellas claudit quaſi ſub 8 ſignaculo: Qui extendit cœlos ſolus, & graditur ſuper fluctus 9 maris. Qui facit Arcturum, & Oriona, & Hyadas, & in- 10 teriora Auſtri. Qui facit magna, & incomprehenſibilia, & mirabilia, quorum non 11 eſt numerus. Si venerit ad me, non videbo eum: ſi abi- 12 erit, non intelligam. Si repente interroget, quis reſpondebit ei? vel quis dicere poteſt, Cur ita facis?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

9 † Χθιζοὶ γάρ ἐσμεν, καὶ οὐκ οἴδαμεν· † (ζ) Σκιὰ γάρ ἐστιν ἡμῶν (η) ἐπὶ 10 τῆς γῆς ὁ βίος. † Ἢ οὐχ οὗτοί σε διδάξουσι (θ) καὶ ἀναγγελοῦσι, † καὶ 11 ἐκ καρδίας ἐξάξουσι ῥήματα; † Μὴ θάλλει πάπυρος ἄνευ ὕδατος, † ἢ ὑψω- 12 θήσεται βούτομον ἄνευ πότου; Ἔτι ὂν ἐπὶ ῥίζης, † καὶ οὐ μὴ θερισθῇ, πρὸ τοῦ πιεῖν † (ι) πᾶσα βοτάνη οὐχὶ ξηραί- 13 νεται; † Οὕτως τοίνυν ἔσται τὰ ἔσχατα πάντων τῶν ἐπιλανθανομένων (κ) τοῦ κυρίου· ἐλπὶς γὰρ ἀσεβοῦς (λ) ἀπολεῖ- 14 ται· † Ἀοίκητος (μ) γὰρ αὐτοῦ ἔσται ὁ οἶκος (ν)· † ἀράχνη δὲ αὐτοῦ ἀπο- 15 βήσεται ἡ σκηνή. † Ἐὰν ὑπερείσῃ τὴν οἰκίαν αὐτοῦ, οὐ μὴ στῇ· † ἐπιλαβομένου δὲ (ξ) αὐτοῦ, οὐ μὴ ὑπομείνῃ· † 16 Ὑγρὸς γάρ ἐστιν ὑπὸ ἡλίου· † καὶ ἐκ σαπρίας αὐτοῦ ὁ ῥάδαμνος αὐτοῦ ἐξε- 17 λεύσεται. † (ο) Ἐπὶ συναγωγὴν λίθων κοιμᾶται· † ἐν δὲ μέσῳ χαλίκων ζήσε- 18 ται. † Ἐὰν καταπίῃ, (π) ὁ τόπος ψεύσεται αὐτόν. † οὐχ ἑώρακας τοιαῦ- 19 τα, Ὅτι καταστροφὴ ἀσεβοῦς τοιαύτη, † ἐκ δὲ γῆς (ρ) ἄλλον ἀναβλαστήσει. † 20 Ὁ γὰρ κύριος οὐ μὴ ( ) ἀποποιήσηται τὸν ἄκακον· † πᾶν δὲ δῶρον ἀσεβοῦς οὐ δέ- 21 ξεται. † Ἀληθινῶν δὲ στόμα ἐμπλήσει γέλωτος, † (σ) τὰ δὲ χείλη αὐτῶν ἐξομολο- 22 γήσεως. † Οἱ δὲ ἐχθροὶ αὐτῶν (τ) ἐνδύσονται αἰσχύνην, † δίαιτα δὲ ἀσεβοῦς οὐκ ἔσται.

Heſterni enim ſumus, & neſcimus: umbra enim eſt noſtra ſuper terram vita. An non hi docebunt te, & referent tibi, & è corde proferent verba? Numquid viret ſcirpus ſine aqua? aut creſcet carectum ſine potu? Adhuc in radice exiſtens, & non metetur: ante omnem herbam nonne areſcet? Sic igitur erunt noviſſima omnium qui obliviſcuntur Dominum: ſpes enim impii peribit: Inhabitabilis enim ejus erit domus: (d) aranea autem evadet ejus tabernaculum: Si (e) fulſerit domum ſuam, non ſtabit: & cum ceperit, non permanebit: (f) Humidus enim eſt ſub Sole, & de putredine ejus (g) germen ejus exibit. In (h) congregationem lapidum dormit, in medio autem ſilicum vivet. Si (i) abſorbuerit, locus mentietur eum. Non vidiſti talia, Quoniam ſubverſio impii talis, de terra autem alium germinabit. Dominus enim non (k) improbabit innocentem, nec ullum munus impii accipiet: Veracium autem os implebit riſu, labia autem eorum confeſſione. Inimici autem eorum induentur confuſionem, & tabernaculum impii non erit.

ΚΕΦ. Θ'.

1 2 † ὙΠολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, † Ἐπ' ἀληθείας οἶδα, ὅτι οὕτως ἐστί· † πῶς γὰρ 3 ἔσται δίκαιος βροτὸς παρὰ κυρίῳ; † Ἐὰν γὰρ βούληται κριθῆναι (α) αὐτῷ, οὐ μὴ ὑπακούσῃ αὐτῷ, † ἵνα μὴ ἀντείπῃ 4 πρὸς ἕνα λόγον αὐτοῦ ἐκ χιλίων. † Σοφὸς γάρ ἐστι διανοίᾳ, κραταιός τε καὶ μέγας. † τίς σκληρὸς γενόμενος ἐναν- 5 τίον αὐτοῦ ὑπέμεινεν; † Ὁ παλαιῶν ὄρη καὶ οὐκ οἴδασιν, † ὁ καταστρέφων 6 αὐτὰ (β) ὀργῇ· † Ὁ σείων τὴν ὑπ' οὐρανὸν ἐκ θεμελίων, † οἱ δὲ στῦλοι αὐ- 7 τῆς σαλεύονται· † Ὁ λέγων τῷ ἡλίῳ (γ) καὶ οὐκ ἀνατέλλει, † κατὰ δὲ ἄ- 8 στρων κατασφραγίζει. † Ὁ τανύσας τὸν οὐρανὸν μόνος, † καὶ περιπατῶν (δ) ὡς 9 ἐπ' ἐδάφους ἐπὶ θαλάσσης· † Ὁ ποιῶν Πλειάδα καὶ Ἕσπερον καὶ Ἀρκτοῦρον, καὶ 10 ταμιεῖα Νότου· † Ὁ ποιῶν μεγάλα καὶ ἀνεξιχνίαστα, † ἔνδοξά τε καὶ ἐξαίσια, 11 ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός. † Ἐὰν ὑπερβῇ με, οὐ μὴ ἴδω· † (ε) ἐὰν παρέλθῃ με, οὐδ' ὡς ἔ- 12 γνων. † Ἐὰν ἀπαλλάξῃ, τίς ἀποστρέψει; † ἢ τίς ἐρεῖ αὐτῷ, Τί ἐποίησας;

CAP. IX.

REſpondens autem Job, ait, Verè ſcio, quia ita eſt, Quomodò enim erit juſtus homo apud Dominum? Si enim voluerit judicari cum eo, non obaudiet ei: ut non (a) contradicat ad unum ſermonem ejus de mille: Sapiens eſt enim mente, robuſtuſque & magnus. Quis durus factus ante (b) eum permanſit? Qui in (c) vetuſtatem perducit montes, & neſciunt: qui vertit eos in ira: Qui commovet (d) eam, quæ ſub cælo, à fundamentis, & columnæ ejus (e) quatiuntur: Qui dicit Soli, & non oritur: contra ſidera autem ſignaculum ponit: Qui extendit cælum ſolus & ambulat ſuper mare, tanquàm ſuper pavimentum. Qui facit Pleiada, & Heſperum, & (f) Arcturum, & penetralia Auſtri. Qui facit magna, & non veſtigabilia, glorioſaque, & mirabilia, quorum non eſt numerus. Si tranſgreſſus me fuerit, non videbo: ſi præterierit me, neque ſic novi: Si amoverit, quis reſtituet? aut quis dicet ei, Quid feciſti?

MS.A. (ζ) Σκιὰ δέ ἐστιν (η) ὁ βίος ἐπὶ τῆς γῆς· (θ) ῥήματα, † καὶ ἀναγγελοῦσίν σοι σύνεσιν σοφίας; καὶ ἐκ καρδίας σε διδάξουσιν ῥήματα; Μὴ (ι) πρὸ βοτάνης, † ἐὰν δὲ μὴ πίῃ ξηραίνεται. (κ) τὸ θεοῦ (λ) ὀλεῖται (μ) δὲ ἔσται αὐτοῦ (ν) καὶ ὁ οἶκος αὐτοῦ· ἡ δὲ σκηνὴ αὐτοῦ ἀράχνη ἀποβήσεται. Ἐὰν ὑπερείσῃ (ξ) αὐτ, (ο) Ἐπὶ συναγωγῇ (π) αὐτὸν ὁ τόπος ψεύσεται. οὐχ ἑώρακας (ρ) ἄλλο( ) ἀποποιήσεται (σ) καὶ τὰ χείλη αὐτῶν ἀγαλλιάσεως. (τ) ἐνδύσονται αἰσχύνην, καὶ δίαιτα ἀσεβοῦς

Κεφ. Θ'. MS.A. (α) μετ' αὐτοῦ, (β) ἐν ὀργῇ· (γ) μὴ ἀνατέλλειν, καὶ ἐκ (δ) ἐπὶ θαλάσσης ὡς ἐπ' ἐδάφους· (ε) καὶ ἐὰν

תרגום TARGUM.

יב מאתמלי אנחנא ולא נדע ארום היך טולא יומנא עלוי ארעא : הלא אנון ילפונך וימרון לך ומרעיותהון ומרעיניהון יפקון מלין : האפשר 9 10 11
אתאי גומא בלא בצא יסגא ערקא בלא מיא : עד די הוא בנויתיה לא אתליש וקדם כל עסבא ייבש : הכדין אסרט כל דשלין אלהא 12 13
בר מדילטור הדבר : דיתיה סבריה והיך בי מטויאתא רוחצניה : מסתמיך על ביתיה ולא יקום ותתקף בידיה ולא יתקיים : רטיב הוא קדם 14 15 16
ית שמשא ועל פרדיסיה ינקותיה תפוק : די על אינר שרשוי חרשין בית אבניא יעוין : אם יסלעמניה מן אתריה ויכדב ביה לא חמיתך : 17 18
הוא חדות אורחתיה ומן עפרא אוחרן ילבלבון : הא אלהא לא ירחיק שלים ולא יתקף ביד מבאשין : עד די ימלא חוכא פומך וספוותך הי 19 20 21
בא : סנאך ילבשון בהתא ומשכנא דרשיעי ליתוהי : 22

ט

תיב איוב ואמר : ברם בקושטא ידעית ארום היכנא ומה ידכי בר נש עם אלהא : אם יצבי למנצי עמיה לא יתיבנויה חדא מן אלף : חכימא 1 2 3 4
באילים חילא מן אקשי ליתיה ואשלים : דמסלק מלכין תקיפין היך טוריא ולא ידעו ארום הפיכנון ברוגזיה : דמרגיז ארעא מאתרה ועמודיה מתפלגין : 5 6
אמר לשמשא ולא ידנח ואמטול כוכביא יחתום בעננין : דמתח שמיא לבלחודיה ומטייל על רום תקוף ימא : דעבד עש נפלא וכימא ואדרוני שיבי 7 8 9
יא בסטר דרומא : דעבד רברבן עד דלית סוף ופרישן עד דלית מנין : הא יעבר עלי בשמי מרומא ולא אחמי ויחלוף ולא אתבין ליה : הא יחטוף אנש 10 11 12
למא ומן יתיבניה מן יימר ליה מה את עבד :

Versio SYRIACA.

9 * ܕܐܬܡܠܝ ܚܢܢ. ܘܠܐ ܝܕܥܝܢܢ. ܘܐܝܟ ܛܠܠܐ ܕܛܠܐ ܝܘܡܝܢ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܗܐ ܗܢܘܢ ܢܠܦܘܢܟ ܘܢܐܡܪܘܢ
10 ܠܟ. ܘܡܢ ܠܒܗܘܢ ܢܦܩܘܢ ܡܠܐ. * ܕܠܡܐ ܣܓܝܐ ܐܓܡܐ ܒܐܬܪܐ ܨܗܝܐ. ܐܘ ܢܫܓܐ ܐܓܡܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܝܐ.
11 12 * ܟܕ ܗܘ ܒܚܘܛܪܗ ܠܐ ܡܬܠܩܛ. ܘܩܕܡ ܟܠ ܥܣܒܐ ܢܒܫ. * ܗܟܢܐ ܐܢܘܢ ܐܘܪܚܬܗ ܕܟܠ ܡܢ
13 ܕܛܥܐ ܠܐܠܗܐ. ܘܣܒܪܗ ܕܚܢܦܐ ܢܐܒܕ. * ܘܢܬܦܣܩ ܬܘܟܠܢܗ. ܘܒܝܬܐ ܕܓܘܓܝܐ ܬܘܟܠܢܗ. * ܢܬܬܟܠ
14 15 ܥܠ ܒܝܬܗ. ܘܠܐ ܢܩܘܡ. ܘܢܬܚܝܠ. ܘܠܐ ܢܬܩܝܡ. * ܐܝܟ ܪܛܝܒܘܬܐ ܩܕܡ ܫܡܫܐ. ܘܥܠ ܓܠܠܐ ܫܪܫܘܗܝ
16 ܢܬܦܫܛܘܢ. * ܘܒܝܬܐ ܕܟܐܦܐ ܢܚܙܐ. * ܐܢ ܢܥܩܪܝܘܗܝ ܡܢ ܐܬܪܗ. ܘܢܕܓܠ ܒܗ ܘܢܐܡܪ ܠܗ ܠܐ ܚܙܝܬܟ.
17 18 * ܗܐ ܗܘܝܘ ܚܕܘܬܐ ܕܐܘܪܚܗ. ܘܡܢ ܥܦܪܐ ܐܚܪܢܐ ܢܬܓܠܐ. * ܠܐ ܡܣܠܐ ܐܠܗܐ ܠܬܡܝܡܐ. ܘܠܐ ܐܚܕ
19 20 ܐܝܕܐ ܕܡܒܐܫܢܐ. * ܥܕܡܐ ܕܢܬܡܠܐ ܦܘܡܟ ܓܘܚܟܐ. ܘܣܦܘܬܟ ܬܫܒܘܚܬܐ. * ܣܢܐܝܟ ܢܠܒܫܘܢ
21 22 ܒܗܬܬܐ. ܘܡܫܟܢܐ ܕܥܘܠܐ ܠܐ ܢܫܬܟܚ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܛ *

1 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܗܟܢܐ ܗܘ. ܘܠܐ ܙܟܐ ܠܐܠܗܐ ܐܢܫ. * ܐܢ ܢܨܒܐ ܕܢܕܘܢ
2 ܥܡܗ. ܠܐ ܢܥܢܝܘܗܝ ܚܕܐ ܡܢ ܐܠܦ. * ܚܟܝܡ ܒܠܒܐ ܗܘ. ܘܥܫܝܢ ܒܚܝܠܐ. ܡܢܘ ܐܬܩܫܝ
3 4 ܠܘܩܒܠܗ ܘܫܠܡ ܠܗ. * ܗܘ ܕܡܥܬܩ ܛܘܪܐ ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ. ܘܗܦܟ ܐܢܘܢ ܒܪܘܓܙܗ. * ܗܘ ܕܡܙܝܥ ܐܪܥܐ
5 6 ܡܢ ܐܬܪܗ. ܘܥܡܘܕܝܗ ܡܬܬܙܝܥܝܢ. * ܗܘ ܕܐܡܪ ܠܫܡܫܐ ܘܠܐ ܕܢܚ. ܘܚܬܡ ܒܥܠ ܟܘܟܒܐ. * ܗܘ
7 8 ܕܡܬܚ ܫܡܝܐ ܒܠܚܘܕܘܗܝ. ܘܕܪܟ ܥܠ ܡܘܡܐ ܕܝܡܐ. * ܗܘ ܕܥܒܕ ܥܝܘܬܐ ܘܟܝܡܐ ܘܓܢܒܪܐ. ܘܬܘܢܝ
9 ܬܝܡܢܐ. * ܗܘ ܕܥܒܕ ܪܘܪܒܬܐ ܕܠܐ ܣܟ. ܘܬܕܡܪܬܐ ܕܠܐ ܡܢܝܢ. * ܗܐ ܐܢ ܥܒܪ ܥܠܝ. ܠܐ ܚܙܐ ܐܢܐ ܠܗ.
10 11 ܘܐܢ ܡܬܚܠܦ ܥܠܝ. ܠܐ ܡܬܒܝܢ ܐܢܐ ܠܗ. * ܗܐ ܐܢ ܢܚܛܘܦ ܡܢܘ ܢܬܒܥ ܡܢ ܐܝܕܗ. ܘܡܢܘ ܢܐܡܪ ܠܗ.
12 ܡܢܐ ܥܒܕܬ ܗܟܢܐ.

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

(*Nam quod heri extitit,* 9 *nos neſcimus, & (c) ſicut umbra umbræ dies noſtri ſuper terram.) Et ex* 10 *ipſæ docebunt te & dicent tibi, & de cordibus ſuis educent ſermonem. Num multiplicantur paludes in loco ſitibundo,* 11 *aut viget ſcirpus ubi non ſunt aquæ? Quidum in virga ſua eſt non* 12 *colligitur, & ante omnem herbam areſcit. Sic ſunt ſemitæ omnis* 13 *qui obliviſcitur Deum, & ſpes perverſi peribit, Et* 14 *fiducia ejus frangetur, & domus araneæ domus ejus. Et confidet in domo* 15 *ſua, nec ſtabit, & apprehendet eam, nec permanebit, Velut humiditas* 16 *eſt coram ſole, & ſuper undas radices ejus (d) extenduntur, Et domum* 17 *lapidum videt. Si eradica erit eam de loco* 18 *ſuo, negabit eam, dicens ei; (e) Ipſe te video: Quoniam inveſtigabit o-* 19 *mnes vias ejus, & de terra alius apparebit. Deus autem non repellit* 20 *juſtos, nec tenet manus iniquorum. Donec impleatur os tuum riſu, &* 21 *labia tua laude; O o-* 22 *res tui induentur confuſione, & habitaculum iniqui non reperietur.*

Verſio ARABICA.

9 * فان الذي كان بالامس نحن لا نعرفه * ومثل افياء الطلال ايامنا على الارض * وهودا هم يعلمونك
10 ويقولون لك * ومن قلوبهم يخرجون الكلام * العل يكثر الاجام في الموضع العطشان * او ينبت البردي 11
12 حيث ليس امياه * الذي بينما هو في قضيبه لا يقطف * وقبل كل حشيش ييبس * هكذا طرايق كل
13
14 من ينسا الله * ورجاء الحنيف يهلك * وينقطع اتكاله * وبيت العنكبوت بيته * ويتكل على بيته فلا
15
16 يقوم * ويستمسك فلا يثبت * مثل الرطوبة هو قدام الشمس وعلي الامواج اصوله تنبسط * وبيت الحجارة
17
18 يبصر * ان قلعه من مكانه وكذب به * وقال له اني اراك * فانه يفحص جميع طرايقه * ومن التراب اخر
19
20 يشرق * ولا يرفض الله الصالحين * ولا ياخذ بيدي المسيئين * حتى يمتلي فمك ضحكا وشفتاك تسبيحا
21
22 * بغضاءك يلبسون خزيا * ومسكن المنافق لا يوجد * الفصل التاسع -

1 * فاجاب ايوب وقال * حقا اني لاعلم انه لكذلك ولا يغلب الله احد * ان اراد ان يحاجه فانه واحدا
2
3 من الف لا يجيبه * فانه حكيما قلبه عظيمة قوته * من الذي استصعب عليه فكان سالما * ذلك الذي
4
5 يسير الجبال لا يعلم * والذي يقلبها بغضبه * ذلك الذي يزعزع الارض من اواسيها وسكانها يرعدون *
6
7 * ذلك الذي امر الشمس فلم تشرق * وختم على وجه الكواكب * ذلك الذي بسط السماء وحده * ووطي
8
9 على عظمة البحر * ذلك الذي صنع الثريا والعيوق والجبار واطراف التيمن * ذلك الذي صنع الكباير
10
11 التي لا تنتهي * والقوة التي لا تحصا * فهو ان جاز فليس اراه * وان طاف حوالي ليس استبينه * والان
12
ان انكسر من الذي يغير عليه * ومن الذي يقول له ماذا صنعت هكذا *

CAP. IX.

R*Eſpondit Job & dixit,* 1 *Verè ſcio ſic eſſe,* 2 *nec vincit Deum quiſquam: Si velit conten-* 3 *dere cum eo, non reſpondebit ei unum ex mille. Sapiens enim eſt corde e-* 4 *jus, & fortis ejus potentia. Quis reſtitit ei, & evaſit incolumis? Qui* 5 *transfert montes, neſcit? & qui evertit eos in furore ſuo? Qui contur-* 6 *bavit terram à fundamentis, & habitores ejus contremiſcunt: Qui* 7 *præcepit ſoli, & non ortus eſt, & clauſit ſuper facies ſtellarum: Qui* 8 *extendit cœlum ſolus, & calcavit ſuper magnificentiam maris. Qui* 9 *fecit Pleiadas, & Arcturum, & Gigantem, & terminos Auſtri: Qui* 10 *fecit magnalia ſine fine, & potentias quæ non numerantur. (a) Quòd ſi* 11 *ipſe tranſierit prope me, non video eum: & ſi circum me ierit, non ſentio eum. Et modò ſi fra-* 12 *ctus fuerim, (b) quis zelabit adverſus eum; & quis dicet ei, (†) Cur feciſti ſic?*

INTERP. SYR. (c) ſicut umbra ſunt dies (d) ſuſtentantur, (e) Non te video. Ca. ix. (a) Ecce ſi, (b) quis requiret illud de manu ejus; (†) Quid tu facis?

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniam ab heri ſumus nos, & neſcimus, quia ſicut umbra ſunt dies noſtri ſuper terram. Nonne ipſi docebunt te, & dicent tibi, & de *voluntate & mente ſua* 9 10 proferent ſermones? Nunquid poteſt creſcere ſcirpus abſque cœno, aut creſcere carectum abſque aqua? Dum eſt in culmine ſuo, non evellitur, & ante omne fœ- 11 12 num areſcet. Sic ſemitæ omnium qui ignorant Deum, & ſpes *à delatore* peribit. Quoniam auferetur ſpes ejus, & ſicut domus araneæ fiducia ejus. Innititur ſuper 13 14 domum ſuam & non ſtabit; confortabitur in ea, & non permanebit. Viridis eſt antequàm oriatur ſol, & in horto ſuo germen ejus egredietur. Super acervum radices 15 16 ejus condenſantur: domum lapidum implicabit. Si abſorbuerit eum de loco ſuo, & mentitus fuerit ei, [*dicens*:] Non vidi te: Ecce hoc ipſum eſt gaudium viæ ejus, 17 18 & de pulvere alio germinabunt. Ecce Deus non projiciet perfectum, neque confortabit manum malignantium. Donec impleat os tuum riſu, & labia tua jubilatione. 19 20 Inimici tui induentur confuſione, & tabernaculum impiorum non ſubſiſtet. 21

CAP. IX.

ET reſpondit Job & dixit: Verè utique ſcio quia ita eſt, & quomodo juſtificabitur filius hominis cum Deo? Si voluerit contendere cum eo, non reſpondebit ei 1 2 3 unum de mille. Sapiens corde eſt & fortis robore: quis arguit eum, & pacem habuit? Qui transfert reges *fortes inſtar montium*, & neſciunt quòd ſubvertit eos in ira 4 5 ſua. Qui commovet terram de loco ſuo, & columnæ ejus concutiuntur. Qui dicit ad ſolem & non oritur, & ſtellas ſigillat nubibus. Qui extendit cœlos ſolus, & 6 7 8 ambulat per altitudinem fortitudinis maris. Qui fecit arcturum, oriona & hyadas, & cubicula *dominationis* planetarum in latere Auſtrali. Qui facit magnalia ita 9 10 ut non ſit finis, & mirabilia ita ut non ſit numerus. Ecce tranſibit ſuper me *in cœlis excelſis*, & non videbo; & abibit, nec intelligam illum. Ecce auferet homi- 11 12 nem *in ſeculo*, & quis erit qui reducat illum? quis dicet ei: Quid tu facis?

איוב : י

auxiliatores ſe incurvaverunt eo ſub ; ſuum naſum avertet non Deus
13 אלוה לא־ישיב אפו תחתו שחחו עזרי
? eo cum mea verba eligam ei reſpondebo ego quia Etiam ſuperbiæ
14 רהב׃ אף כי־אנכי אעננו אבחרה דברי עמו׃
me judicare facientem ad ; reſpondebo non , fuero juſtus ſi Qui
15 אשר אם־צדקתי לא אענה למשפטי
quòd credam non ; mihi reſponderit & ; invocavero Si . deprecabor
16 אתחנן׃ אם־קראתי ויענני לא־אאמין כי־
multiplicabit & ; me cõteret turbine in Qui . meam vocem auſcultaverit
17 יאזין קולי׃ אשר־בשערה ישופני והרבה
ſed ; meum ſpiritum reducere me dabit Non . gratis mea vulnera
18 פצעי חנם׃ לא־יתנני השב רוחי כי
: ecce robuſtus potentiam ad Si . amaritudinibus me ſaturabit
19 ישבעני ממררים׃ אם־לכח אמיץ הנה
, me juſtificavero Si ? me faciet convenire quis , judicium ad ſi &
20 ואם־למשפט מי יועידני׃ אם־אצדק
. me faciet perverſum & , ego integer : me condemnabit meum os
פי ירשיעני תם־אני ויעקשני׃
. meam vitam reprobabo : meam animam noſcam non , ego Perfectus
21 תם אני לא־אדע נפשי אמאס חיי׃
. conſumens ipſe , impium & , perfectum ; dixi ideo , ipſum Unum
22 אחת היא על־כן אמרתי תם ורשע הוא מכלה׃
. ſubſannabit innocentium tentationem ad , ſubito occidat ; flagellum Si
23 אם־שוט ימית פתאם למסת נקים ילעג׃
: operiet ejus judicum facies , impii manu in eſt data Terra
24 ארץ נתנה ביד־רשע פני־שפטיה יכסה
præ fuerunt leves mei dies Et ? ipſe quis ubi , non ſi
25 אם־לא אפו מי־הוא׃ וימי קלו מני־
cum Tranſierunt . bonum viderunt non , fugerunt : curſore
26 רץ ברחו לא־ראו טובה׃ חלפו עם־
Si . eſcam ad volabit aquila ſicut ; Ebeh navibus
27 אניות אבה כנשר יטוש עלי־אכל׃ אם־
. cõfortabo & , meas facies relinquam : mei eloquii obliviſcar , me dicere
אמרי אשכחה שיחי אעזבה פני ואבליגה׃
. me mundabis non quòd novi ; meos dolores omnes Timui
28 יגרתי כל־עצבתי ידעתי כי־לא תנקני׃
me lavero Si ? laborabo vanè jam quid ut : ero impius Ego
29 30 אנכי ארשע למה־זה הבל איגע׃ אם־התרחצתי
Tunc : meas volas puritate in mundavero & , nivis aquis in
31 במי־שלג והזכותי בבר כפי׃ אז
. mea veſtimenta me abominabuntur & , me demerges foveam in
בשחת תטבלני ותעבוני שלמותי׃
. judicium in ſimul ingrediamur , ei reſpondebo , ego ſicut vir non Quia
32 כי־לא־איש כמני אעננו נבוא יחדו במשפט׃
. nos ambos ſuper ſuam manum ponat , arguens nos inter eſt Non
33 לא יש־בינינו מוכיח ישת ידו על־שנינו׃
non ejus terror & , ſuam virgam me deſuper Removeat
34 יסר מעלי שבטו ואמתו אל־
ſic non quia : eum timebo non & , Loquar . me terreat
35 תבעתני׃ אדברה ולא איראנו כי־לא־כן
. me apud ego
אנכי עמדי׃

CAP. X. יוד

. me adverſum relinquam , meis vitis in mea anima eſt Pertæſa
1 נקטה נפשי בחיי אעזבה עלי
Dicam . meæ animæ amaritudine in loquar : meum eloquium
2 שיחי אדברה במר נפשי׃ אמר
quid ſuper me ſcire fac ; me reum peragas Ne : Deum ad
אל־אלוה אל־תרשיעני הודיעני על־מה־
. mecum litiges
תריבני׃

Verſio VULG. LAT.

13 Deus, cujus iræ nemo reſiſtere poteſt, & ſub quo curvantur 14 qui portant orbem. Quantus ergò ſum ego, ut reſpondeam ei, & loquar verbis meis cum 15 eo? Qui etiam ſi habuero quidpiam juſtum, non reſpondebo, ſed meum judicem deprecabor. 16 Et cùm invocantem exaudierit me, non credo quòd audierit vocem meam. 17 In turbine enim conteret me, & multiplicabit vulnera mea 18 etiam ſine cauſa. Non concedit requieſcere ſpiritũ meum, & implet me amaritudi- 19 nibus. Si fortitudo quæritur, robuſtiſſimus eſt: ſi æquitas judicii, nemo audet pro me te- 20 ſtimonium dicere. Si juſtificare me voluero, os meum condemnabit me: ſi innocentem oſtendero, pravum me com- 21 probabit. Etiam ſi ſimplex fuero, hoc ipſum ignorabit anima mea, & tædebit me 22 vitæ meæ. Unum eſt quod locutus ſum, & innocentem 23 & impium ipſe conſumit. Si flagellat, occîdat ſemel, & non de pœnis innocentum ri- 24 deat. Terra data eſt in manus impii, vultum judicum ejus operit: quòd ſi non ille 25 eſt, quis ergo eſt? Dies mei velociores fuerunt curſore: fugerunt, & non viderunt bo- 26 num. Pertranſierunt quaſi naves poma portantes, ſicut 27 aquila volans ad eſcam. Cùm dixero, Nequaquàm ita loquar: commuto faciem meam, 28 & dolore torqueor. Verebar omnia opera mea, ſciens quòd 29 non parceres delinquenti. Si autem & ſic impius ſum, quarè 30 fruſtrà laboravi? Si lotꝰ fuero quaſi aquis nivis, & fulſerint velut mundiſſimæ manus meæ: 31 Tamen ſordibus intinges me, & abominabuntur me veſti- 32 menta mea. Neq; enim viro qui ſimilis meî eſt, reſpondebo: nec qui mecum in judicio 33 ex æquo poſſit audiri. Non eſt qui utrumq; valeat arguere, & ponere manum ſuam in 34 ambobus. Auferat à me virgam ſuam, & pavor ejus non 35 me terreat. Loquar, & non timebo eum: neque enim poſſum metuens reſpondere.

CAP. X.

1 Tædet animam meam vitæ meæ, dimittam adverſùm me eloquiũ meũ, loquar in amari- 2 tudine animæ meæ. Dicam Deo, Noli me condemnare: indica mihi cur me ita judices.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

13 † Αὐτὸς γὰρ ἀπέστραπται (ζ) ὀργὴν, † ὑπ' αὐτοῦ (η) ἐκάμφθησαν κήτη τὰ ὑπ' οὐρανόν. 14 † Ἐὰν δέ μου (θ) ὑπακούσηται, ἢ διακρινεῖ τὰ ῥήματά μου. † (ι) 15 Ἐὰν γὰρ ὦ δίκαιος, οὐκ εἰσακούσεταί μου, † τοῦ κρίματος αὐτοῦ δεηθήσομαι. 16 † Ἐάν τε καλέσω (κ) καὶ μὴ ὑπακούσῃ, † οὐ πιστεύω ὅτι εἰσακήκοέν (λ) μου τῆς 17 φωνῆς. † Μὴ γνόφῳ με ἐκτρίψῃ. † πολλὰ δέ μου τὰ (μ) συντρίμματα πεποίηκε διακενῆς. 18 † Οὐκ ἐᾷ γάρ με ἀναπνεῦσαι· † ἐνέπλησε δέ με πικρίας, † 19 Ὅτι μὲν γὰρ ἰσχύϊ κρατεῖ. † τίς οὖν κρίματι 20 αὐτοῦ ἀντιστήσεται; † Ἐὰν γὰρ ὦ δίκαιος, τὸ στόμα μου ἀσεβήσει· † ἐάν τε ὦ ἄμεμπτος, σκολιὸς ἀποβήσομαι. 21 † Εἴτε γὰρ ἠσέβησα, οὐκ οἶδα τῇ ψυχῇ, † (ν) 22 πλὴν ἀφαιρεῖταί μου ἡ ζωή. † Διὸ εἶπον, Μέγαν καὶ δυνάστην ἀπολλύει ὀρ- 23 γή, † Ὅτι φαῦλοι ἐν θανάτῳ (ʹ) ἐξαισίῳ, † ἀλλὰ δίκαιοι καταγελῶνται. † 24 Παραδέδονται γὰρ εἰς χεῖρας ἀσεβοῦς, † πρόσωπα κριτῶν (ξ) αὐτῆς συγκαλύπτει. † εἰ δὲ μὴ αὐτός (ο) ἐστι, τίς 25 ἐστιν; † Ὁ δὲ βίος μου ἐστὶν ἐλαφρότερος δρομέως· † ἀπέδρασαν, καὶ οὐκ εἴ- 26 δοσαν. † Ἦ καὶ ἔστι ναυσὶν ἴχνος ὁδοῦ, † ἢ ἀετοῦ πετομένου ζητοῦντος (π) βο- 27 ράν; † Ἐάν τε γὰρ εἴπω, Ἐπιλήσομαι λαλῶν, † συγκύψας τῷ προσώπῳ στε- 28 νάξω· (ρ) Σείομαι πᾶσι τοῖς μέλεσιν, † οἶδα γὰρ ὅτι οὐκ ἀθῷόν με ἐάσεις. † (σ) 29 Ἐπειδὴ δέ εἰμι ἀσεβής, διὰ τί οὐκ 30 ἀπέθανον; † Ἐὰν γὰρ (ʹ) ἀπολούσωμαι χιόνι, καὶ ἀποκαθάρωμαι χερσὶ καθα- 31 ραῖς, † Ἱκανῶς (τ) ἐν ῥύπῳ με ἔβαψας, 32 † ἐβδελύξατο δέ με (υ) ἡ στολή. † Οὐ γὰρ εἶ ἄνθρωπος κατ' ἐμέ, (φ) ᾧ ἀντικρινοῦμαι, † ἵνα ἔλθωμεν ὁμοθυμαδὸν 33 εἰς κρίσιν. † (χ) Εἴθε ἦν ὁ μεσίτης ἡμῶν, (ψ) καὶ ἐλέγχων, καὶ διακούων ἀνα- 34 μέσον ἀμφοτέρων. † (ω) Ἀπαλλαξάτω ἀπ' ἐμοῦ τὴν (α) ῥάβδον, ὁ δὲ φόβος αὐτοῦ 35 μή με στροβείτω, † Καὶ οὐ μὴ φοβηθῶ, ἀλλὰ λαλήσω· † (β) οὐ γὰρ οὕτω συνεπίσταμαι.

Ipſe (g) enim avertit à ſe iram, (h) incurvati ſunt cete, qui ſub cœlo: Si verò me audierit, vel dijudicabit verba mea: Quòd ſi etiam fuero juſtus, non exaudiet me, judicium ejus precabor. Si (i) verò invocavero, & non exaudierit, non credam, quòd exaudierit vocem meam: Ne (k) caligine me conterat; multas autem tribulationes meas fecit in (l) vanum; Non enim ſinit me reſpirare: implevit autem me amaritudine, Quoniam ſcilicèt (m) valet potentiâ. Quis ergò judicio ejus reſiſtet? Quòd ſi etiam (n) fuero juſtus, os meum impia loquetur: ſive (o) fuero ſine crimine, tortuus evadam. Si enim impiè egi, non novi animo: verùntamen aufertur vita mea. (p) Quapropter dixi, Magnum & potentem diſperdit ira, Quia nequam homines in magna morte erunt, ſed juſti deridentur. (q) Traditi enim ſunt in manus impii: (r) facies judicum ejus operit. Quòd ſi non ipſe eſt; (ſ) quis eſt? (t) Vita autem mea levior eſt curſore: aufugerunt, & non viderunt. Nunquid & eſt (u) navibus veſtigium viæ, aut aquilæ volantis quærentis eſcam? Quòd etſi locutus fuero, Obliviſcar, dum loquor: declinans in faciem ingemiſcam: Commoveor omnibus membris: ſcio enim, quòd non inſontem me ſines: Et quia ſum iniquus; quarè (x) non ſum mortuus? Nam ſi lotus fuero nive, & mundatus fuero mundis manibus; Satis in ſorde me tinxiſti; & execratum eſt veſtimentum. Non es enim homo ſicut ego, cui contradicam, ut veniamus pariter in judicium. Utinam eſſet nobis medians, & arguens, & diſceptans inter utrumque. Avertat à me virgam: timor autem ejus non me tranſverſum agat: Et non timebo; (y) ſed loquar: non enim (z) ſic conſcius ſum.

ΚΕΦ. ι'.

1 † (α) Κάμνων τῇ ψυχῇ μου, † στένων (β) ἐπαφήσω ἐπ' αὐτὸν † τὰ ῥήματά μου. λαλήσω πικρίᾳ ψυχῆς μου συνεχόμενος, 2 † Καὶ ἐρῶ πρὸς κύριον, Μή με ἀσεβεῖν δίδασκε· † καὶ διατί με οὕτως (γ) ἔκρινας;

CAP. X.

Laborans animâ meâ, gemens (a) dimittam ſuper me verba mea: loquar amaritudine animæ meæ compreſſus: Et dicam ad Dominum; Noli me (b) docere impium eſſe, & cur me ita judicaſti?

MS.A. (ζ) ὀργῇ, (η) ἐκάμφθη (θ) εἰσακούσῃ, ἢ διακρίνῃ (ι) Ἐάν τε γὰρ (κ) καὶ εἰσακούσῃ, (λ) μου. Μὴ ἐν γνόφῳ (μ) συντρίμματά μοι πεποίηκεν (ν) πλὴν ὅτι ἀφῄρηταί (ʹ)* ἐξαισίῳ ἀπολοῦνται, (ξ) αὐτοῦ (ο) ἐστι. Ὁ δὲ βίος μου ἐλαφρότερός ἐστιν δρομέως· ἀπέδρα, καὶ οὐκ ἴδον. (π)* βυββάει; (ρ) Σείομαι γὰρ πᾶσιν (σ) Ἐπειδή εἰμι (ʹ) ἀπολέσομαι (τ) με ἐν ῥύπῳ (υ) ἡ στολή μου. (φ) ὃ ἀντικείσομαι, (χ) Εἰ γὰρ ἦν (ψ) καὶ ὁ διελέγχων, καὶ διακούων (ω) δυεῖν δέ μοι χρεία. Ἀπαλλαξάτω (α) ῥάβδον αὐτοῦ, καὶ ὁ φόβος αὐτοῦ (β) οὐ γὰρ συνεπίσταμαι ἐμαυτῷ ἄδικον.

MS. A. Κεφ. ι'. (α) Κάμνω δὲ τῇ (β) ἐπ' ἐμαυτὸν ἐπαφήσω τὸν θυμόν μου. Τὰ δὲ ῥήματά μου λαλήσω ἐν πικρίᾳ ψυχῆς συνεχόμενος, (γ) ἔκρινες;

תרגום TARGUM.

13 14 אלהא לא יתיב רוגזיה תחותוי שחן רשיעיא יתברון גיותניא דמסיעין בסוגעא : אף כל דכן ארום אנא אתיבניה אבחר פתגמי עמיה :
15 16 17 דאין זכיית לא אתיב למן דדין יתי אצלי : אין קרית ואתיב יתי לא אימין ארום יצית לקלי : דעד חוטי בינתא מדקדק עמי ואסגי הלבשושי מגן :
18 19 20 לא ישבקנני לאתבא רוחי ארום יסבעננני מרוריא : אם לחילא טלים הא הוא ואין לדינא מן יסהיד עלי : אין זכי אנא פומי יחייבנני שלים אנא
21 22 23 ומקלקל יתי : שלים אנא לא אנדע נפשי ארחיק חיי : חדא מכילא היא בגין כן אמרית שלים וחייב הוא משיצי : אין ברוגז ימות בתכיף כד
24 25 מתמסמסין זכאין ידחך : ארעא אתמסרת ביד חייבא מן קדם יי דינהא יחפי זכותא אין לא דיכי מן הוא : יומי קלילו יתיר מן טולי עופא דרהט ערקו
26 27 28 לא חמון טבתא : חלפין עם אלפיא דטעינין מגדיא היך נשרא דטיס על מיכלא : אין איימר אתנשי מלי אשבק רוגזי ואתנבר : כנשית כולהון
29 30 31 צערי ידעית ארום לא תזכי יתי : אנא אתחייב למא דין ללמא אלעי : אין אסחיית במי תלגא ודכאית באהלא ידי : הכדין בשחותא תטמשנני
32 33 34 וירחקין יתי כסותי : ארום לא בר נש דכמי אתיבניה נעול כחדא בדינא : לא אית ביננא מכסין ישוי ידיה על תרווננא : יעדי מעלי מחתיה ודחלתיה
35 לא תבעתינני : אמלל ולא אדחל מניה ארום לא הכנא אנא כחדי :

י

1 2 אתנוררת נפשי בחיי אשבוק עלי מלי אמלל במרירות נפשי : אימר לאלהא לא תחייבנני אודע יתי מטול מה תנצי עמי :

Verſio SYRIACA.

13 * ܐܠܗܐ ܠܐ ܡܗܦܟ ܪܘܓܙܗ. ܘܬܚܘܬܘܗܝ ܢܬܟܦܦܘܢ ܡܥܕܪܢܐ ܕܥܠܡܐ. * ܐܦ ܐܢܐ ܐܝܟ ܐܬܥܢܝܘܗܝ. ܘܐܓܒܐ
14 ܡܠܝ ܩܕܡܘܗܝ. * ܐܢ ܠܐ ܐܙܕܕܩ. ܠܐ ܐܬܥܢܐ. ܘܠܕܝܢܝ ܐܬܚܢܢ. * ܐܢ ܩܪܐ ܐܢܐ ܘܥܢܐ ܠܝ. ܠܐ ܡܗܝܡܢ ܐܢܐ
15 16 ܕܫܡܥ ܒܩܠܝ. * ܕܒܥܠܥܠܐ ܬܒܪܢܝ. ܘܐܣܓܝ ܡܚܘܬܝ ܡܓܢ.
17 * ܘܠܐ ܫܒܩܢܝ ܕܐܬܢܝܚ ܪܘܚܝ. ܡܛܠ ܕܐܣܒܥܢܝ ܡܪܪܐ. ܘܐܪܘܝܢܝ ܡܪܪܐ. * ܐܢ ܒܚܝܠܐ ܐܚܝܕ ܗܘ. ܐܘ
18 19 ܒܕܝܢܐ. ܡܢܘ ܢܬܪܥܡܘܗܝ. * ܐܢ ܐܙܕܕܩ ܦܘܡܝ ܢܚܝܒܢܝ. ܬܡܝܡ ܐܢܐ ܘܡܥܩܡ ܠܝ. * ܬܡܝܡ ܐܢܐ ܘܠܐ
20 21 ܝܕܥ ܐܢܐ ܢܦܫܝ ܘܡܣܠܐ ܐܢܐ ܚܝܝ. * ܚܕܐ ܗܝ ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪܬ. ܕܠܬܡܝܡܐ ܘܠܚܛܝܐ ܗܘ ܡܫܠܡ. * ܐܢ ܫܘܛܐ
22 23 ܡܡܝܬ ܡܚܕܐ. ܘܠܐ ܢܣܝܘܢܐ ܕܙܕܝܩܐ ܡܓܚܟ. * ܐܪܥܐ ܐܫܬܠܡܬ ܒܐܝܕܐ ܕܪܘܫܥܐ. ܘܐܦܝܗܘܢ ܕܕܝܢܐ ܡܟܣܐ.
24 ܐܠܐ ܗܘ ܡܢܘ ܗܘ. * ܘܝܘܡܝ ܩܠܝܠܘ ܡܢ ܪܗܛܐ. ܥܪܩܘ ܘܠܐ ܚܙܘ ܛܒܬܐ. * ܥܒܪܘ ܥܡ ܐܠܦܐ
25 26 ܡܚܝܠܬܐ ܐܝܟ ܢܫܪܐ ܕܦܪܚ ܠܡܐܟܘܠܬܗ. * ܐܢ ܐܡܪ ܐܢܐ ܐܛܥܐ ܡܛܠܬܝ. ܐܘ
27 ܐܫܒܘܩ ܪܘܓܙܝ ܘܐܬܒܝܐ. * ܕܚܠ ܐܢܐ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܟܐܒܝ. ܡܛܠ
28 ܕܝܕܥ ܐܢܐ ܕܠܐ ܡܙܕܩ ܐܢܬ ܠܝ. * ܘܐܢ ܐܬܚܝܒܬ. ܠܡܢܐ ܐܝܟ ܣܪܝܩܐ ܠܐܝܬ ܐܢܐ. * ܘܐܢ ܐܣܚܐ
29 30 ܒܡܝܐ ܕܬܠܓܐ. ܘܐܕܟܐ ܐܢܐ ܒܒܘܪܝܬܐ ܐܝܕܝ. * ܗܝܕܝܢ ܒܫܘܚܬܐ ܬܛܡܫܢܝ. ܘܢܣܠܘܢܢܝ ܡܐܢܝ ܠܒܘܫܝ.
31 * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܓܒܪܐ ܕܐܝܟܘܬܝ. ܕܐܦܢܐ ܠܗ ܦܬܓܡܐ. ܘܢܥܘܠ ܐܟܚܕܐ ܒܕܝܢܐ. * ܘܐܠܘ ܐܝܬ ܗܘܐ
32 33 ܡܟܣܢܐ ܒܝܢܬܢ. ܕܢܣܝܡ ܐܝܕܗ ܥܠ ܬܪܘܝܢ. * ܘܢܥܒܪ ܡܢܝ ܫܒܛܗ. ܘܕܚܠܬܗ ܠܐ ܬܒܥܬܢܝ.
34 * ܐܡܠܠ ܘܠܐ ܐܕܚܠ ܡܢܗ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܝܬ ܒܡܩܒܠܬܗ. * ܫܠܡܘ * ܛ *
35 1 * ܩܢܛܬ ܢܦܫܝ ܒܚܝܝ. ܐܫܒܘܩ ܥܠܝ. ܘܐܡܠܠ ܒܡܪܝܪܘܬ ܢܦܫܝ. * ܘܐܡܪ ܠܐܠܗܐ. ܠܐ ܬܚܝܒܢܢܝ. ܘܐܘܕܥܢܝ
2 ܥܠ ܡܢܐ ܕܐܢ ܐܢܬ ܠܝ.

Verſio ARABICA.

13 14 * الله لا يرد عصبه. وتحته يتواضع معينو الكثير * وانا ايضا اخاطبه وارسم كلامي قدامه * فان لم
15 اكن صادقا فلا اجاب. والي دياني اتضرع * فان ظننت انه اذا دعوت يجيبني. فاني لا اصدق حتى يسمع
16 17 صوتي * انه في جميع شعر راسي بالقوة ضربني. واكثر كلامي باطلا * ولم يتركني لتستريح روحي
18 19 لانه قد اشبعني مرارات * ان كان في القوة فانه قوي. وان كان للحجة فمن يواجهه * ان انا زكوت
20 21 فمي دحظني. وان كنت صالحا عوقني * اصالحا انا لست ادري. قد ابغضت الحياة نفسي * واحدة هي
22 من اجل هذا فاني اقول ان الصالحين والمنافقين هو يبيدهم * ان كان سوطه فانه بسرعة يقتل. وعلى
23 سخافة الزاكيين يستهزي * الارض جعلها بيد المنافقين. ووجوه الديانين مغطية. ولكن عصبه
24 25 من يقاسيه * ايامي اسرع من الركض هربت ولم ترى خيرا * جازت مع سفاين كثير للغداء مثل
26 27 النسر الذي يطير على ماكلته * مع مرارتي نسيت اخباري. فان تركت فكري او كلامي ضاقت علي
28 * وان انا صمت خفت من كل سوء لاني اعلم انك لا تزكيني * وان انا دحضت لماذا مثل العدم تهلكني
29 30 * فان اغتسلت بماء الثلج وتطهرت بطهارة يدي * عند ذلك في العمق تغرقني ويتباعد مني لبوسي
31 32 * من اجل انه ليس هو رجل مثلي فارد عليه. وندخل جميعا في القضاء * فليت الان كان قاضيا
33 34 بيننا. فيضع يده على فم كلينا * ويبعد مني سوطه. ومخافته لا تروعني * فاتكلم ولا افزع منه من
35 اجل اني لست مواجهه *

الفصل العاشر

1 * ضاقت نفسي بحياتي. اهممت همي. واتكلم بمرار نفسي * فاقول لله. لا تدحضني. واخبرني على ماذا تدينني
2

(c) [illegible] (d) vulnera mea, (†) et tribulationibus inebriavit me. (e) me pervertet. (f) Perfectus si eſſem, at non cognoſcerent: (g) navibus multis inimicorum, (h) omnem anguſtiam: (i) vanum: (k) reprehenſor

INTERP. ARABICA

Deus non retrahit furorem ſuum, & ſub quo humiliabuntur auxiliantes multi. 13 Et ego quoque alloquar eum, & proponam ſermones meos coram ipſo. 14 Si non fuero verax, non exaudiar, & judici meo ſupplicabo. 15 (c) Et cùm ſi arbitratus ſum, cùm eum invocavero, me exauditurum; non tamen credam, donec audiat vocem meam, 16 Quoniam ipſe in ſingulis pilis capitis mei cum validitate me percuſſit: & fruſtrà multiplicabo (d) ſermones meos, 17 Et non permiſit ut quieſceret ſpiritus meus: nam ſaturavit me amaritudinibus (†). 18 Si in fortitudine, ipſe eſt fortiſſimus: Et ſi in lite, quis occurrat ei? 19 Si ego innocens fuero, ore meo me condemnabit: Et ſi fuero juſtus: ipſe (e) me deturbabit. 20 (f) An ſim juſtus, neſcio jam: odit vitam meam anima mea. 21 Unum eſt (propterea dico ego) quòd juſtos, & iniquos ipſe perdit. 22 Si acciderit flagellum ejus, ſtatim occidit, & ſtultitiam innocentium deridet. 23 Terram poſuit in manu iniquorum, & vultus judicum ſunt velati. At furorem ejus quis poteſt ſuſtinere? 24 Dies mei velociores curſu fugerunt, & non viderunt bonum; 25 Tranſierunt cum (g) navibus aptiſſimis ad currendum, velut aquila quæ volat ſuper eſcam ſuam. 26 Cùm amaritudine mea oblitus ſum narrationum mearum. Si omiſero cogitationem meam aut ſermones meos, ægrè fero. 27 E ſi tacuero, timeo (h) omne malum: quia ſcio quòd tu me non juſtificabis. 28 Quòd ſi reprobatus ſum, cur ut (i) nihilum perdis me? 29 Si autem lavero me aquis nivium, & mundavero me in puritate manuum mearum; 30 Tunc in profundum me immerges, & recedet à me indumentum meum: 31 Quoniam ipſe non eſt vir ſicut ego, ut reſpondeam ei, & ingrediamur ſimul in judicium. 32 Utinam modo eſſet (k) judex inter nos, ut poneret manum ſuam ſuper os utriuſque noſtrûm, 33 Et removeret à me flagellum ſuum, & formido ejus non me conturbaret: 34 Et loquerer, & eum non formidarem: quoniam ego non ſum adverſarius ipſius. 35

CAP. X.

TÆdet animam meam vitæ meæ, cui à meâ ſum anxius, & loquar in amaritudine animæ meæ, 1 Dicam Deo, Ne me reprobes. Indica mihi qua de re me judices? 2

INTERP. SYRIACA. (c) Si invocavero ipſe, et re-

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Deus non avertet iram ſuam: ſub eo curvantur *impii; confringentur ſuperbi* qui auxiliantur in multitudine. Quanto minus ego reſpondebo ei, & eligam verba mea 13 14
cum eo? Qui ſi juſtificatus fuero, non reſpondebo: ad judicem meum orabo. Si vocavero, & reſponderit mihi, non credam quòd auſcultaverit vocem meam. 15 16
Uſque ad filum capilli conterit me, & multiplicat plagas meas gratis. Non permittit me attrahere ſpiritum meum, quia ſatiat me amaritudinibus. Quantum ad for- 17 18
titudinem, robuſtiſſimus eſt; & ſi ad judicium, quis teſtificabitur pro me? Si juſtificatus fuero, os meum condemnabit me; perfectus ego ſum, et diſſipat me. Per- 19 20
fectus ego ſum, neſcio animam meam: abjicio vitam meam. Una menſura eſt: ideò dixi, Perfectum & peccatorem ipſe conſumit. Si in furore occidit ſubitò, 21 22
quando tabeſcent innocentes ridebit. Terra tradita eſt in manu impii, à facie *Domini judices* ejus *operiunt* juſtitiâ: ſi non eſt hic, quis eſt? Dies mei velociores ſunt um- 23 24
bra avis volantis: fugerunt, non viderunt bonum. Tranſierunt cum navibus onuſtis optimis fructibus, ſicut aquila quæ volat ad cibum. Si dixero, Obliviſcar ſer- 25 26
monum meorum, dimittam iram meam & confortabor: *Congregavi* omnes tribulationes meas: novi quòd non juſtificabis me. Ego meipſum condemno: quare 27 28
fruſtra laboro? Si lotus fuero in aquis nivis, et mundavero ſapone manus meas: Tunc in fovea intinges me, et abominabuntur me veſtimenta mea. Non eſt enim 29 30
[illegible] ſimilis mei ut reſpondeam ei et ingrediamur ſimul in judicio. Non eſt inter nos arguens qui ponat manum ſuam ſuper nos ambos. Auferat à me 31 32
flagellum, et timor ejus non me terreat. Loquar, et non timebo eum; neque enim ſic ego ſum apud me. 33

CAP. X.

Tædet animam meam in vita mea: dimittam adverſus me eloquium meum: loquar in amaritudine animæ meæ. Dicam Deo: Ne condemnes me: indica mihi quare 1 2
contendis mecum.

איוב : יא

laborem reprobes quòd , opprimas quòd tibi bonum Nunquid
3 הטוב לך כי־תעשק כי־תמאס יגיע
oculi Nunquid ? irradies impiorum conſilium ſuper & ; tuarum volarum
4 כפיך ועל־עצת רשעים הופעת: העיני
dies ſicut Nunquid ? videbis hominis videre ſecundùm num ? tibi carnis
5 בשר לך אם־כראות אנוש תראה: הכימי
quæras Quod ? viri dies ſicut tui anni an ? tui dies hominis
6 אנוש ימיך אם־שנותיך כימי גבר: כי־תבקש
quod te ſcire Super .inquiras meum peccatum & ,meam iniquitatem
7 לעוני ולחטאתי תדרוש: על־דעתך כי־
tuæ Manus .eruens tua manu de non & : egerim impiè non
8 לא ארשע ואין מידך מציל: ידיך
Memento ?me deglutíes & ,circum pariter me fecerunt & ,me elaboraverunt
9 עצבוני ויעשוני יחד סביב ותבלעני: זכר־
.me facies redire pulverem in & ; me feceris lutum ſicut quòd ,quæſo
נא כי־כחמר עשיתני ואל־עפר תשיבני:
? me coagulabis caſeum ſicut & ,me fundes lac ſicut Nonne
10 הלא כחלב תתיכני וכגבנה תקפיאני:
.me cooperies nervis & oſſibus in & ,me veſtes carne & Pelle
11 עור ובשר תלבישני ובעצמות וגידים תשככני:
cuſtodivit tua viſitatio & ; mecum feciſti miſericordiam & Vitas
12 חיים וחסד עשית עמדי ופקדתך שמרה
hoc quod novi : tuo corde in abſcondiſti hæc Et .meum ſpiritum
13 רוחי: ואלה צפנת בלבבך ידעתי כי־זאת
non mea iniquitate ab & : me obſervabis & , peccavi Si .tecum
14 עמך: אם־חטאתי ושמרתני ומעוני לא
non ,fui juſtus & ; mihi veh , egi impiè Si .me mundes
15 תנקני: אם־רשעתי אללי לי וצדקתי לא־
.meam afflictionem vide & ,ignominia Saturus .meum caput elevabo
אשא ראשי שבע קלון וראה עניי:
ſis mirabilis ,revertaris & ; me venêris leo ſicut ,multiplicetur Et
16 ויגאה כשחל תצודני ותשב תתפלא־
tua indignatio ſe multiplicet & , me coram tuos teſtes Renoves .me in
17 בי: תחדש עדיך נגדי ותרב כעשך
vulva de quid ut Et .mecum militia & , mutationes : mecum
18 עמדי חליפות וצבא עמי: ולמה מרחם
Quemadmodum .me videat non oculus & , expirabo ? me eduxiſti
19 הצאתני אגוע ועין לא־תראני: כאשר
parum Nonne .deferar ſepulchrum ad utero ab ; ero fuiſſem non
20 לא־הייתי אהיה מבטן לקבר אובל: הלא־מעט
Antequam .paululum confortabo & , me à deponat : ceſſet ? mei dies
21 ימי יחדל ישית ממני ואבליגה מעט: בטרם
.mortis umbræ & , tenebræ terram ad ; revertar non & , vadam
אלך ולא אשוב אל־ארץ חשך וצלמות:
, ordines non & ,mortis umbræ caligo ſicut obſcuritatis Terram
22 ארץ עפתה כמו־אפל צלמות ולא סדרים
.caligo ſicut tenebreſcet &
ותפע כמו־אפל:

CAP. XI. יא

multitudini Nunquid : dixit & , Nahamathites Sophar reſpondit Et
1 ויען צפר הנעמתי ויאמר: הרב
2 labiorum vir num & , reſpondebitur non verborum
דברים לא יענה ואם־איש שפתים
non & ſubſanniſti & , facient tacere homines tuæ Nugæ ? juſtificabitur
3 יצדק: בדיך מתים יחרישו ותלעג ואין
fui mundus & ; mea doctrina Pura , dixiſti Et .pudefaciens
4 מכלם: ותאמר זך לקחי ובר הייתי
.tuis oculis in
בעיניך:

Verſio VULG. LAT.

3 Numquid bonum tibi videtur,
ſi calumnieris me, & oppri-
mas me opus manuum tuarum,
& conſilium impiorum adju-
4 ves? Numquid oculi carnei
tibi ſunt: aut ſicut videt homo,
5 & tu videbis? Numquid ſic-
ut dies hominis dies tui, &
anni tui ſicut humana ſunt
6 tempora, Ut quæras iniqui-
tatem meam, & peccatum
7 meum ſcruteris? Et ſcias quia
nihil impium fecerim, cùm ſit
nemo qui de manu tua poſſit
8 eruere. Manus tuæ fecerunt
me, & plaſmaverunt me totum
in circuitu: & ſic repentè præ-
9 cipitas me? Memento, quæſo,
quòd ſicut lutum feceris me, et
10 in pulverem reduces me. Nónne
ſicut lac mulſiſti me, & ſic-
11 ut caſeum me coagulâſti? Pel-
le & carnibus veſtiſti me: oſſi-
bus & nervis compegiſti me:
12 Vitam & miſericordiam tri-
buiſti mihi, & viſitatio tua cu-
13 ſtodivit ſpiritum meum. Licèt
hæc celes in corde tuo, tamen
ſcio quia univerſorum memi-
14 neris. Si peccavi, & ad ho-
ram pepercisti mihi: cur ab
iniquitate mea mundum me eſ-
15 ſe non pateris? Et ſi impius
fuero, væ mihi eſt: & ſi juſtus,
non levabo caput, ſaturatus
16 afflictione & miſeriâ. Et pro-
pter ſuperbiam quaſi leænam
capies me, reverſúſque mira-
17 biliter me crucias. Inſtauras
teſtes tuos contra me, & mul-
tiplicas iram tuam adverſùm
me, & pœnæ militant in me.
18 Quarè de vulva eduxiſti me?
qui utinam conſumptus eſſem
19 ne oculus me videret. Fuiſſem
quaſi non eſſem, de utero tranſ-
20 latus ad tumulum. Numquid
non paucitas dierum meorum
finietur brevi? dimitte ergò
me, ut plangam paululùm do-
21 lorem meum: Antequàm va-
dam & non revertar, ad ter-
ram tenebroſam, & opertam
22 mortis caligine: Terram mi-
ſeriæ & tenebrarum, ubi um-
bra mortis, & nullus ordo,
ſed ſempiternus horror inha-
bitat.

CAP. XI.

1 Reſpondens autem Sophar
2 Naamathites, dixit; Num-
quid qui multa loquitur, non
& audiet? aut vir verboſus
3 juſtificabitur? Tibi ſoli ta-
cebunt homines? & cùm cæ-
teros irriſeris, à nullo confuta-
4 beris? Dixiſti enim; Purus eſt
ſermo meus, & mundus ſum
in conſpectu tuo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

3 † Ἦ καλόν σοι (δ) ἐὰν ἀδικήσω; † ὅ-
τι ἀπείπω (ε) ἔργα χειρῶν σου, βου-
4 λῇ δὲ ἀσεβῶν προσέσχες. † Ἦ ὥσπερ
βροτὸς ὁρᾷ, καθορᾷς; † ἢ καθὼς ὁρᾷ
5 ἄνθρωπος, (ζ) βλέψῃ; † Ἦ ὁ βίος
σου (η) ἀνθρώπινός ἐστιν, ἢ τὰ ἔτη σου
6 ἀνδρὸς, † Ὅτι ἀνεζήτησας τὴν ἀνομίαν
μου, καὶ τὰς ἁμαρτίας μου ἐξιχνίασας;
7 † (θ) Οἶδας γὰρ ὅτι οὐκ ἠσέβησα· ἀλ-
λὰ τίς ἐστιν ὁ ἐκ τῶν χειρῶν σου ἐξαι-
8 ρούμενος; † Αἱ χεῖρές σου (ι) ἔπλα-
σάν με καὶ ἐποίησάν με, † μετὰ ταῦτα
9 μεταβαλών με ἔπαισας. † Μνήσθητι, ὅτι
πηλόν με ἔπλασας, † εἰς δὲ γῆν με πά-
10 λιν ἀποστρέφεις. † Ἦ οὐχ ὥσπερ γάλα
με ἤμελξας, † (κ) ἐτύρωσας δέ με ἴσα
11 τυρῷ; † (λ) Δέρμα δὲ καὶ κρέας με ἐνέ-
δυσας, † ὀστέοις δὲ καὶ νεύροις (μ) με ἐ-
12 νεῖρας. † Ζωὴν δὲ καὶ (ν) ἔλεος ἔθου παρ'
ἐμοί, † ἡ δὲ ἐπισκοπή σου ἐφύλαξέ μου
13 τὸ πνεῦμα. † Ταῦτα ἔχων ἐν σεαυτῷ,
οἶδα ὅτι πάντα δύνασαι· ἀδυνατεῖ δέ
14 σοι (ξ) οὐθέν. † Ἐάν τε γὰρ ἁμάρ-
τω, (ο) φυλάσσεις με, † ἀπὸ δὲ ἀνομίας
15 οὐκ ἀθῷόν με (π) πεποίηκας. † Ἐάν τε
γὰρ ἀσεβήσω, (ρ) οἴμοι· † ἐὰν δὲ ὦ δί-
καιος, οὐ δύναμαι ἀνακύψαι, † πλήρης
16 (σ) γὰρ ἀτιμίας εἰμί. † Ἀγρεύομαι (τ)
γὰρ ὥσπερ λέων εἰς σφαγήν. † (υ) πάλιν
γὰρ μεταβαλὼν δεινῶς με ὀλέκεις,
17 Ἐπανακαινίζων ἐπ' ἐμὲ τὴν ἔτασίν
(*) μου· † ὀργῇ δὲ μεγάλῃ μοι ἐχρήσω, (φ)
18 ἐπήγαγες δὲ ἐπ' ἐμὲ πειρατήρια. † Ἱ-
νατί οὖν ἐκ κοιλίας με ἐξήγαγες, καὶ
οὐκ ἀπέθανον, † ὀφθαλμὸς δέ με οὐκ
19 εἶδε, Καὶ ὥσπερ οὐκ ὢν (χ) ἐγενόμην;
† διατί γὰρ ἐκ γαστρὸς εἰς μνῆμα οὐκ (ψ)
20 ἀπηλλάγην; † Ἦ οὐκ ὀλίγος ἐστὶν (ω)
ὁ βίος τοῦ χρόνου μου; † ἔασόν με ἀ-
21 ναπαύσασθαι μικρὸν, † Πρὸ τοῦ με πο-
ρευθῆναι ὅθεν οὐκ (α) ἀναστρέψω, † εἰς
22 γῆν σκοτεινὴν καὶ γνοφεράν, † Εἰς γῆν
σκότους αἰωνίου, οὗ οὐκ ἔστι φέγγος, οὐδὲ
ὁρᾷν ζωὴν βροτῶν.

Aut bonum (c) eſt tibi, ſi
inique egero? quia deſpexiſti
opera manuum tuarum; &
ad conſilium impiorum animad-
vertiſti? Aut ſicut mortalis 4
videt, deſpectas? aut ſicut
homo videt, perſpicies? Aut 5
humana eſt vita tua, aut an-
ni tui ſunt viri? Quoniam 6
inquiſiviſti iniquitatem meam,
& peccata mea inveſtigâſti.
Scis enim me non egiſſe im- 7
piè: ſed quis eſt qui de ma-
nibus tuis eripiat? Manus tuæ 8
(d) plaſmaverunt me, & fe-
cerunt me: poſteà (e) mu-
tans percuſſiſti me. Memor 9
eſto, quod lutum finxiſti me,
& in terram me iterum con-
vertes. Nonne tanquàm lac 10
mulſiſti me, & coagulâſti me
æquè, ac caſeum? Pelle au- 11
tem & carne veſtiſti me, oſ-
ſibus & nervis (f) con-
ſeruiſti me: Vitam autem, 12
& miſericordiam poſuiſti apud
me: & viſitatio tua cuſto-
divit ſpiritum meum. Hæc 13
cùm habeas in teipſo; ſcio
quòd omnia potes: & nihil
tibi evadit impoſſibile. Quòd 14
ſi & peccavero, cuſtodis me:
ab iniquitate autem non (g)
inſontem me feciſti. Sive e- 15
nim impiè egero, væ mihi:
& ſi juſtus (h) fuero, non
poſſum ſuſpicere: plenus enim
ſum opprobrio: Et (i) ca- 16
pior ſicut leo ad occiſionem.
Iterum enim (k) commutans
ſæpe me perdis, (l) Inſtau- 17
rans in me inquiſitionem me-
am: irâ autem magnâ mi-
hi uſus es: & induxiſti ſuper
me tentationes. Quarè ergò de 18
ventre eduxiſti me, & non
ſum mortuus? oculus autem
non vidiſſet me, Et eſſem, 19
tanquàm non fuiſſem? Cur e-
nim de utero in monumentum
non ſum tranſlatus? Aut nun- 20
quid non eſt (m) parva vita
temporis mei? Patere me (n)
requieſcere puſillùm: Antequàm 21
eam, unde non revertar, ad
terram tenebroſam, & (o) caliginoſam, Ad (p) terram tenebrarum 22
æternarum, ubi non eſt lux, neque eſt videre vitam hominum.

ΚΕΦ. ια'.

1 † Ὑπολαβὼν δὲ Σωφὰρ ὁ Μιναῖος, λέ-
2 γει, † Ὁ τὰ πολλὰ λέγων, καὶ ἀντακούσε-
ται· † ἢ καὶ ὁ εὔλαλος οἴεται (α) εἶναι δί-
καιος; † εὐλογημένος (β) γεννητὸς γυ-
3 ναικὸς ὀλιγόβιος. † Μὴ πολὺς ἐν ῥή-
μασι γίνου, † οὐ γάρ ἐστιν ὁ ἀντικει-
4 νόμενός σοι. † Μὴ γὰρ λέγε, Ὅτι καθα-
ρός εἰμι τοῖς ἔργοις, † καὶ ἄμεμπτος ἐν-
αντίον αὐτοῦ.

CAP. XI.

Reſpondens autem Sophar 1
Minæus, ait; (a) Qui mul- 2
ta dicit; & viciſſim audiet:
aut etiam eloquens putat ſe
eſſe juſtum? benedictus natus
mulieris brevis vitæ: Nè mul- 3
tus ſis in verbis, cùm nemo
ſit, qui contradicat tibi. No- 4
li enim dicere, Quia mundus
ſum operibus, & irreprehen-
ſibilis ante eum:

MS. A. (δ) ἐστὶν ἐὰν ἀσεβήσω; (ε) με ἔργα (ζ) βλέψεις; (η) ἀνθρώπινος, ἢ τὰ (θ) Οἶδα γὰρ (ι) ἐποίησάν με καὶ ἔπλασάν με, μετὰ δὲ ταῦτα (κ) ἔπηξας (λ) Δέρμα καὶ κρέας (μ) ἔνειράς με. (ν) ἔλεον (ξ) οὐδέν. (ο) φυλάξεις (π) ἐάσεις. (ρ) οἴμμοι· ἐὰν γὰρ ὦ δίκαιος, οὐ δυνήσομαι ἀνακύψαι, (σ) γάρ εἰμι ἀνομίας. (τ) δὲ (υ) καὶ πάλιν μεταβαλών με δεινῶς (*) σου (φ) καὶ ἐπήγειρας ἐπ' ἐμὲ (χ) ἐγεγόνειν; διὰ τί δὲ οὐκ (ψ) ἀπῆλθον; (ω) ὁ χρόνος τοῦ βίου μου; (α) ἀναστρέψω,

MS. A. Κεφ. ια'. (α) δίκαιος εἶναι; (β) γυναικὸς γεννητὸς

תרגום TARGUM.

3 4 5 התקין קדמך ארום תטלום ארום תרחק לעות ידך ועל מלכת דרשיעי אופעת: העינין כבר בשרא לך אין כמחמי בר נש תחמי: הכיומי בר נש
6 7 8 יומך אין שניך היך יומי גברא: ארום תבעי לעויתי ולחובי תתבע: על מנדעך ארום לא אתחיב ולית מן ידך פצי: ידך צירוני ועבדו יתי כחדא
9 10 חזור חזור וסלעמתא יתי: אדכר כדון ארום איך טינא עבדתני ולעפרא תתיבנני: הלא היך חלבא סננתא יתי והיך גובנין קרשתא יתי:
11 12 13 משכא ובסרא אלבשתני ובגרמיא וגדיא אשתיתני: חיי וחסדא עבדתא עמי ודכרנך נטרת רוחי: ואלין אטישתא בלבך ידעית ארום דא גבך:
14 15 16 אין חבית ונטרתני ומן חובי לא תזכנני: אין חבית חבל עלי מן דינא רבא וזכיתי לא אזקוף רישי מן קדם חיביא דאסבע חסודא ואחמי סנופי: וארים
17 18 ויהי היך אריא תצוד יתי ותתוב תדין בי: תחדת סהדיך לקבלי ותסני רוגזך בהדי מתחלפן מחותה מתחילין גבי: ולמא מן רחמא אפקתני אתנגיד
19 20 21 ועינא לא תסכנני: היכמה דלא הויתי אהי מן כריסא לבי קבורתא אתעל: הלא קלילין יומי ופסקן ושוי עלי ואנוח זעיר: עד דלא איזיל
22 ולא אתוב לארעא חשוכא וטולא דמותא: ארעא דתימורהא היך קבל טולי מותא ולא סדרי יתוב בני נשא ומפעפעא היך קבל:

יא

1 2 3 4 ואתיב צופר דמן נעמה ואמר: אפשר דמסגי מליא לא יתותב ואין בר נש מרי ספון יזכי: ברבוביך גובריא משתקין ודחכתא ולית דמכסף: ותימר
דכי אילפני ובריר הויתי בעינך:

Verſio SYRIACA.

* ܠܐ ܫܦܝܪ ܠܟ. ܕܬܥܫܘܩ ܐܢܬ ܘܬܣܠܐ ܐܢܬ ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܟ. ܘܥܠ ܡܠܟܐ ܕܪܫܝܥܐ ܐܢܗܪܬ. * ܕܠܡܐ: ܥܝܢܝܟ 3
ܐܝܟ ܕܒܣܪܐ ܐܢܝܢ. ܐܘ ܐܝܟ ܡܚܙܝܬܗ ܕܒܪܢܫܐ ܚܙܐ ܐܢܬ. * ܐܘ ܝܘܡܝܟ ܐܝܟ ܝܘܡܝ ܒܪܢܫܐ 4
ܐܢܘܢ. ܐܘ ܫܢܝܟ ܐܝܟ ܝܘܡܝ ܓܒܪܐ. * ܕܡܬܒܥܐ ܐܢܬ ܠܚܛܗܝ ܘܡܬܒܥܐ ܐܢܬ ܣܟܠܘܬܝ. * ܘܝܕܥ ܐܢܬ ܕܐܢܐ ܙܟܝ 5 6
ܐܢܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܦܨܐ ܡܢ ܐܝܕܝܟ. * ܐܝܕܝܟ ܓܒܠܘܢܝ ܘܥܒܕܘܢܝ. ܘܡܢ ܒܬܪܟܢ ܦܢܝܬ ܒܝ. * ܠܡܚܒܠܘܬܢܝ 7 8
ܘܠܡܣܬܚܦܘܬܢܝ. * ܐܬܕܟܪ ܕܐܝܟ ܛܝܢܐ ܗܘ ܒܪܝܬܢܝ. ܘܠܥܦܪܐ ܡܗܦܟ ܐܢܬ ܠܝ. * ܘܐܝܟ ܚܠܒܐ ܗܘ 9
ܐܪܒܝܬܢܝ. ܘܐܝܟ ܓܒܬܐ ܩܪܫܬܢܝ. * ܡܫܟܐ ܘܒܣܪܐ ܐܠܒܫܬܢܝ. ܘܒܓܪܡܐ ܘܒܓܝܕܐ ܚܒܫܬܢܝ. * ܚܝܐ 10 11
ܘܛܝܒܘܬܐ ܥܒܕܬ ܥܡܝ. ܘܦܘܩܕܢܝܟ ܢܛܪܬ ܪܘܚܝ. * ܘܗܠܝܢ ܟܣܝܬ ܒܠܒܟ. ܝܕܥܬ ܕܗܠܝܢ ܥܡܟ ܐܢܝܢ 12 13
ܒܬܪܥܝܬܟ. * ܐܢ ܚܛܝܬ ܘܝ ܠܝ. ܘܐܢ ܙܕܩܬ ܠܐ ܐܪܝܡ ܪܫܝ. ܣܒܥܬ ܨܥܪܐ. * ܘܐܢ ܐܬܪܝܡܬ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܬܨܘܕܢܝ 14 15
ܘܬܬܦܢܐ ܘܬܬܕܪܫ ܥܡܝ. * ܘܡܚܕܬ ܐܢܬ ܣܗܕܘܬܟ ܠܘܩܒܠܝ. ܘܡܣܓܐ ܐܢܬ ܪܘܓܙܟ ܥܠܝ. ܘܚܝܠܘܬܐ 16
ܥܠܝ. * ܘܠܡܢܐ ܡܢ ܟܪܣܐ ܐܦܩܬܢܝ. ܡܝܬ ܗܘܝܬ ܘܥܝܢܐ ܠܐ ܚܙܬܢܝ. * ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܕܠܐ ܗܘܝܬ 17 18
ܘܡܢ ܟܪܣܐ ܠܩܒܪܐ ܐܝܬܝܘܢܝ. * ܗܐ ܙܥܘܪܝܢ ܝܘܡܝ ܙܒܢܝ. ܫܒܘܩ ܠܝ ܘܐܬܢܝܚ ܩܠܝܠ 19 20
ܩܕܡ. * ܕܐܙܠ ܘܠܐ ܐܗܦܘܟ. ܠܐܪܥܐ ܕܚܫܘܟܐ ܘܕܛܠܠܝ ܡܘܬܐ. * ܐܪܥܐ ܕܚܫܘܟܐ ܐܝܟ ܕܚܫܘܟܐ 21 22
ܘܛܠܠܝ ܡܘܬܐ. ܘܠܝܬ ܒܗ ܣܕܪܐ. ܘܡܚܘܝܐ ܐܝܟ ܚܫܘܟܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *
* ܘܥܢܐ ܨܘܦܪ ܢܥܡܬܝܐ ܘܐܡܪ. * ܕܣܓܝܐܐ ܡܡܠܠ ܠܐ ܢܫܡܥ. ܘܓܒܪܐ ܡܡܠܠܐ ܒܡܠܘܗܝ ܢܙܕܕܩ 1 2
ܡܣܟܢܐ. * ܐܦ ܠܐ ܡܟܝܟܝܢ ܡܠܝܟ ܕܝܠܟ. ܐܝܬ ܡܥܠܥܠܐ ܘܠܝܬ ܕܡܟܠܐ ܠܟ. ܘܐܢ ܡܡܝܩ ܐܢܬ 3
ܠܝܬ ܕܡܟܣܐ ܠܟ. * ܘܐܡܪܬ ܐܝܬ ܕܙܕܝܩܐ ܐܢܐ. ܘܙܟܝܐ ܗܘܝܬ ܩܕܡ ܢܦܫܝ. 4

Verſio ARABICA.

* اما كفاك ان ظلمت . الا ورفض عمل يديك . وعلي فكر المنافقين اطلعت * العل عينيك مثل 3 4
اعين البشر هي . او مثل نظر الانسان تنظر * او ايامك مثل ايام الانسان هي او سنوك مثل ايام الرجل 5
هي * حين تفحص على اثامي وعلي خطاياي * وانت تعلم اني بري وليس من يديك منجا * يداك 6 7
تعبن في وصنعتني . ومن بعد ذلك تريد ان تدحضني وتغرقني * اذكر انك مثل الطين صنعتني . والي 8 9
التراب تردني * ومثل اللبن ربيتني ومثل الجبنة مصيتني * والجلد والبشر البستني . وبالعصب والعظام 10 11
قويتني * والحياة والسلام صنعت معي . ووصاياك حفظها روحي * وهولاي كتمت في قلبك . قد كنت 12 13
اعلم ان هذه كانت في فكرك * * فان خطيت الويل لي . وان صلحت لم ارفع راسي . شبعت هوانا وابصرت 15
اتضاعي * وان ارتفعت مثل الاسد تصطادني . وترجع متجبرا علي * وتغري سلاحك تجاهي . وتكثر 16 17
غضبك الي . والجنود تبدلها علي * ولماذا من الرحم اخرجتني . هلكت الان وعين لم ترني * وكنت 18 19
كاني لم اكن . ومن البطن الي القبر ودوني * فقليلة هي ايام حياتي . فكف عني فاسكت واستريح قليلا 20
* قبل ان اذهب . وايضا لا ارجع الي الظلمة واطباق الموت * الخاوية مثل القفر وظلال الموت . وليس فيها 21 22
صفوف الجيال . وملهبة مثل السراب * الفصل الحادي عشر .
* فاجاب صوفار النعماني فقال * انه يكثر القول لا يجيب . ولا ايضا الرجل المتكلم بقوله يزكوا * فان 1 2
علي كلامك الاموات يصمتون . انت تتكلم وليس من يمنعك . وان استهزيت فليس احد يبكتك 3
* ويقول انك صالحا سلكت . وزاكيا كنت عند نفسك 4

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

[illegible] tibi quòd [illegible]s, [illegible]ſpicies 3
opus manuum tuarum, &
ad cogitationem ſceleſto-
rum [illegible]xiſti? Num o- 4
culi tui ſunt ſicut oculi
carnis? aut ſicut videt
homo, tu vides? Diéſne 5
tui ſicut dies hominis ſunt?
an anni tui ſicut dies viri
ſunt: Dum ſcrutaris de- 6
licta mea, et peccata mea,
Et tu ſcis me eſſe innocen- 7
tem? cùm nullum ſit de
manu tua effugiū? Manꝰ 8
tuæ laboraverunt in me,
et fecerunt me, et poſt hoc
vis me condemnare, &
ſubmergere? Memento 9
quòd tu ſicut lutum feci-
ſti me, et ad terram redu-
ces me, Et ſicut lac nu- 10
trivisti me, & ſicut caſe-
um me condenſâſti. Et 11
pelle & carne me veſti-
ſti, & nervis ac oſſibus
me corroborâſti, Et vi- 12
tam, & pacem mecum fe-
ciſti, & mandata tua cu-
ſtodivit ſpiritus meus: Et 13
hæc abſcondiſti in corde
tuo? Jam ſciebam hæc
eſſe in cogitatione tua. (†)
Si peccavero, væ mihi; ſi 15
juſtificatus fuero, non at-
tollam caput meum: ſatu-
ratus ſum abjectione, &
vidi ſubmiſſionem meam.
Si me extollam, ſicut leo 16
me venaberis, & reverte-
rêris fortificatꝰ cōtra me:
Et (l) exuades arma 17
tua contra me, & multi-
plicabis furorem tuum
adverſùm me, & exerci-
tus immutas contra me.
Et quare de vulva edu- 18
xiſti me? periiſſem mo-
dò, & oculus non me
vidiſſet, Et ac ſi non 19
eſſem, fuiſſem, & ab ute-
ro ad ſepulcrū me tranſ-
tuliſſent. Pauci ſunt 20
dies vitæ meæ: recede
à me, ut ſileam & quie-
ſcam paululùm, Antequā 21
vadam, & amplius non
revertar (m) ad tene-
bras, & opercula mor-
tis, Quæ eſt deſo- 22
lata velut (n) ſolitudo &
umbra mortis: nec ſunt
in ipſa ordines generati-
onum, & ardens eſt vel-
uti (o) æſtus.

CAP. XI.

REſpondit Sofar Na- 1
amathites & dixit, Co- 2
piam verborū non exau-
dit, nec quoque vir lo-
quax ſuo ſermone juſti-
ficabitur: Quoniam ad 3
verba tua mortui ſilebunt.
Tu loquens, & non eſt
qui te cohibeat; & ſi ſub-
ſannes, nullus eſt qui te
redarguat, Et dicis te 4
juſtè inceſſiſſe, & inno-
centem te extitiſſe (a) a-
pud animam tuam.

INTERP. SYR.

(†) 14. Quod ſi peccarem, obſervares me, & à peccatis meis non juſtificares me. (l) accerſes arma (m) ad terram tenebrarum & opercula (n) fovea (o) fovea Cap. xi. (a) in conſpectu animæ tuæ.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina,

Nunquid rectum eſt coram te ſi calumnieris, & projicias laborem manus tuæ, & conſilium impiorum illuſtres. Nunquid ſunt tibi oculi ſicut carnali homini: 3 4
aut ſicut videt filius hominis, vides? Nunquid ſicut dies filii hominis ſunt dies tui? aut anni tui ſunt ſicut dies viri? Ut quæras iniquitatem meam, & 5 6
peccatum meum requiras? In ſcientia enim tua non condemnabor, & nullus eſt qui de manu tua eruat. Manus tuæ formaverunt me, & fecerunt me ſimul in circuitu, 7 8
& diſperdis me. Memento nunc quòd ſicut lutum feceris me, & in pulverem reduces me. Nonne ſicut lac depurâſti me, & ſicut caſeum coagulâſti me? Pelle & 9 10
carne veſtiſti me, & oſſibus & nervis compegiſti me. Vitam & miſericordiam feciſti mecum, & memoria tua cuſtodivit ſpiritum meum. Et hæc abſcondiſti in corde 11 12
tuo: novi quòd hæc ſint apud te. Si peccavi, ſervâſti me: & ab iniquitate mea non mundabis me? Si peccavi, perditio mihi à *judicio magno:* & ſi juſtus fuero, non 13 14
levabo caput meum propter impios, ſed ſatiabor opprobrio, & videbo afflictionem meam. Leva autem manum tuam, ſicut leo venaberis me; & converſus judicabis 15 16
me. Innovas teſtes tuos contra me, & multiplicas iram tuam mecum: mutantur plagæ, militant apud me. Quare enim de vulva eduxiſti me? expirâſſem, & ocu- 17 18
lus non videret me. Fuiſſem ſicut qui non fuiſſem; de utero ad ſepulturam adductus fuiſſem. Nonne veloces ſunt dies mei & deficientes? at pone mihi [*ſpatium*] & me 19 20
recolligam paululùm. Antequam vadam, & non revertar ad terram tenebroſam & umbram mortis: Terram cujus vapor eſt ſicut caligo umbrarum mortis, nec ſunt 21 22
ordines ut habitent filii hominum, & lux lucidet ſicut caligo.

CAP. XI.

ET reſpondit Sophar [illegible] & dixit: Nunquid illi qui multa loquitur non reſpondetur? & an filius hominis habens labia, juſtificabitur? Mendacia tua viros 1 2 3
ſilere faciant, & irrides [illegible] Et dixiſti: Munda eſt doctrina mea, & mundus ſum in oculis tuis. 4

איוב : יב

.tecum sua labia aperiret & ,loqui Deum dabit quis verè Et
ואולם מי־יתן אלוה דבר ויפתח שפתיו עמך: 5
: essentia in duplicia quia ,sapientiæ occulta tibi indicaret Et
ויגד־לך תעלמות חכמה כי־כפלים לתושיה 6
investigatione Num .tua iniquitate de Deus te facit latere quòd scito &
ודע כי־ישה לך אלוה מעונך: החקר 7
? invenies Saddai perfectionem ad usque Num ? invenies Deum
אלוה תמצא אם עד־תכלית שדי תמצא:
? cognosces quid inferno præ profundam ? operaberis quid , cœlorum altis
גבהי שמים מה־תפעל עמקה משאול מה־תדע: 8
.mari præ latitudo & ;ejus mensura terra præ Longa
ארכה מארץ מדה ורחבה מני־ים: 9
quis & ,fecerit congregare & ,fecerit claudere & ,succiderit Si
אם־יחלף ויסגיר ויקהיל ומי 10
,iniquitatem vidit & ;mendacii homines novit ipse Quia ? eum averteret
ישיבנו: כי־הוא ידע מתי־שוא וירא־און 11
onagri pullus & ,cordabitur concavus vir Et .intelliget non &
ולא יתבונן: ואיש נבוב ילבב ועיר פרא 12
expanderis & ,tuum cor præparaveris tu Si .nascetur homo
אדם יולד: אם־אתה הכינות לבך ופרשת 13
, eam elonga ,tua manu in iniquitas Si : tuas volas eum ad
אליו כפיך: אם־און בידך הרחיקהו 14
tunc Quia .iniquitatem tuis tentoriis in facias habitare ne &
ואל־תשכן באהליך עולה: כי־אז 15
.timebis non & ,firmatus eris & ,macula à tuas facies elevabis
תשא פניך ממום והיית מצק ולא תירא:
.recordaberis transierunt aquæ sicut ;oblivisceris laboris tu Quia
כי־אתה עמל תשכח כמים עברו תזכר: 16
.eris mane sicut ,tenebresces : tempus surget meridie præ Et
ומצהרים יקום חלד תעפה כבקר תהיה: 17
non &,cubabis Et .jacebis fiducia in ,fodies & ;spes est quia,confidisti Et
ובטחת כי־יש תקוה וחפרת לבטח תשכב: ורבצת ואין 18 19
impiorum oculi Et .multi tuas facies deprecabuntur & : exterrens
מחריד וחלו פניך רבים: ועיני רשעים 20
.animæ exhalatio eorum spes & : eis ab peribit refugium & , deficient
תכלינה ומנוס אבד מנהם ותקותם מפח־נפש:

CAP. XII. יב

;populus vos quod Verè :dixit & ,Ijob respondit Et
ויען איוב ויאמר: אמנם כי אתם־עם 1 2
; vobis sicut cor mihi Etiam .sapientia morietur vobiscum &
ועמכם תמות חכמה: גם־לי לבב כמוכם 3
? hæc sicut non quo cum Et .vobis à ego cadens non
לא־נפל אנכי מכם ואת־מי־אין כמו־אלה:
: illi respondit & ,Deum ad clamanti ;ero ,suo socio Irrisio
שחק לרעהו אהיה קרא לאלוה ויענהו 4
cogitationi est contempta Lampas .perfectus justus Irrisio
שחוק צדיק תמים: לפיד בוז לעשתות 5
tentoria tranquilla Erunt .pedis nutationes ad paratus ;pacati
שאנן נכון למועדי רגל: ישליו אהלים 6
qui ei : Deum provocantibus confidentiæ & , prædonum
לשדדים ובטחות למרגיזי אל לאשר
quæso interroga verè Et .sua manu in Deum adduxit
הביא אלוה בידו: ואולם שאל־נא 7
.tibi indicabit & , cœlorum volatile & ; te docebit & , jumenta
בהמות ותרך ועוף השמים ויגד־לך:
pisces tibi narrabunt & : te docebit & , terræ loquere Vel
או שיח לארץ ותרך ויספרו לך דגי 8
manus quòd , his omnibus in novit non Quis .maris
הים: מי לא־ידע בכל־אלה כי יד־ 9
? hoc fecit DOMINI
יהוה עשתה זאת:

Versio VULG. LAT.

5 Atque utinam Deus loqueretur tecum, & aperiret labia sua 6 tibi. Ut ostenderet tibi secreta sapientiæ, & quòd multiplex esset lex ejus, & intelligeres quòd multò minora exigaris ab eo, quàm meretur iniquitas 7 tua. Forsitan vestigia Dei comprehendes, & usque ad perfectum Omnipotentē reperies? 8 Excelsior cœlo est, & quid facies? profundior inferno, & 9 unde cognosces? Longior terra mensura ejus, & latior mari. 10 Si subverterit omnia, vel in unum coarctaverit, quis contra-11 dicet ei? Ipse enim novit hominum vanitatem, & videns iniquitatē, nonne considerat? 12 Vir vanus in superbiam erigitur, & tanquam pullum onagri 13 se liberum natum putat. Tu autem firmâsti cor tuum, & expandisti ad eum manus tuas. 14 Si iniquitatem, quæ est in manu tua, abstuleris à te, & non manserit in tabernaculo tuo 15 injustitia: Tunc levare poteris faciem tuam absque macula, & eris stabilis, & non time-16 bis. Miseriæ quoque oblivisceris, & quasi aquarum quæ 17 prætererunt recordaberis. Et quasi meridianus fulgor consurget tibi ad vesperam: & cùm te consumptum putave-18 ris, orieris ut Lucifer. Et habebis fiduciam, propositā tibi spe, & defossus securus dormi-19 es. Requiesces, & non erit qui te exterreat: & deprecabuntur faciem tuam plurimi. 20 Oculi autem impiorum deficient, & effugium peribit ab eis, & spes illorum abominatio animæ.

CAP. XII.

1 Respondens autem Job, di-2 xit; Ergò vos estis soli homines, & vobiscum morietur sa-3 pientia? Et mihi est cor, sicut & vobis, nec inferior vestrì sum: quis enim hæc, quæ nô-4 stis, ignorat? Qui deridetur ab amico suo sicut ego, invocabit Deum & exaudiet eum: deridetur enim justi simplici-5 tas. Lampas contempta apud cogitationes divitum, parata 6 ad tempus statutum. Abundant tabernacula prædonum, & audacter provocant Deum, cùm ipse dederit omnia in ma-7 nus eorum. Nimirùm interroga jumenta, & docebunt te: & volatilia cœli, & indica-8 bunt tibi. Loquere terræ, & respondebit tibi: & narra-9 bunt pisces maris. Quis ignorat quòd omnia hæc manus Domini fecerit?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 † Ἀλλὰ πῶς ἂν (γ) ὁ κύριος λαλήσαι πρὸς σὲ, † καὶ (δ) ἀνοίξει χείλη αὐτοῦ 6 μετὰ σοῦ; † Εἶτα ἀναγγελεῖ σοι δύναμιν σοφίας, † ὅτι διπλοῦς (*) ἔσται τῶν κατὰ σέ· † καὶ τότε γνώσῃ, ὅτι ἄξιά σοι (*) ἀπέβη 7 ἀπὸ κυρίου ὧν ἡμάρτηκας. † (ε) Ἢ ἴχνος κυρίου εὑρήσεις, † ἢ εἰς τὰ ἔσχατα ἀφίκου 8 (ζ) ἃ ἐποίησεν ὁ παντοκράτωρ; † Ὑψηλὸς ὁ οὐρανὸς, (η) καὶ τί ποιήσεις; † βα-9 θύτερα δὲ τῶν ἐν ᾅδου, τί οἶδας; † Ἢ μακρότερα (θ) μέτρου γῆς, ἢ εὔρους θα-10 λάσσης; † Ἐὰν δὲ καταστρέψῃ τὰ πάντα, 11 τίς ἐρεῖ αὐτῷ, Τί ἐποίησας; † Αὐτὸς γὰρ οἶδεν ἔργα ἀνόμων, † ἰδὼν δὲ (ι) ἄτοπα 12 οὐ παρόψεται. † Ἄνθρωπος δὲ ἄλλως νήχεται (κ) λόγοις· † βροτὸς δὲ γεννητὸς 13 γυναικὸς (λ) ἴσα ὄνῳ ἐρημίτῃ. † Εἰ γὰρ σὺ καθαρὰν ἔθου τὴν καρδίαν σου, † (μ) ὑπτιάζεις δὲ χεῖρας πρὸς αὐτὸν, † 14 Εἰ ἄνομόν τί ἐστιν ἐν χερσί σου, πόρρω ποίησον αὐτὸ ἀπὸ σοῦ, † ἀδικία δὲ ἐν 15 διαίτῃ σου μὴ αὐλισθήτω· † Οὕτως γὰρ ἀναλάμψει (ν) σου τὸ πρόσωπον, ὥσπερ ὕδωρ καθαρὸν, † ἐκδύσῃ δὲ ῥύπον, καὶ οὐ 16 μὴ (ξ) φοβηθήσῃ· † Καὶ τὸν κόπον ἐπιλήσῃ, ὥσπερ κῦμα παρελθὸν, (ο) καὶ οὐ 17 πτοηθήσῃ· † Ἡ δὲ εὐχή σου ὥσπερ Ἑωσφόρος, † ἐκ δὲ μεσημβρίας ἀνατελεῖ 18 σοι ζωή· † Πεποιθώς τε ἔσῃ, ὅτι ἐστί σοι ἐλπὶς, † ἐκ δὲ μερίμνης καὶ φροντί-19 δος ἀναφανεῖταί σοι εἰρήνη· † Ἡσυχάσεις γὰρ, καὶ οὐκ ἔσται ὁ πολεμῶν σε· † (π) μεταβαλόμενοι δὲ πολλοί σου δεηθήσονται. 20 † (ρ) Σωτηρία δὲ αὐτοὺς ἀπολείψει· † ἡ γὰρ ἐλπὶς αὐτῶν (σ) ἀπώλεια, † ὀφθαλμοὶ δὲ ἀσεβῶν (τ) τακήσονται.

Sed (b) quomodò Dominus loquetur ad te, & aperiet labia sua tecum? Deinde annuntiabit tibi (c) virtutem sapientiæ, quia duplex erit ad ea, quæ circa te: & tunc scies quia digna evenient tibi à Domino, quæ (d) peccâsti. Aut vestigium Domini invenies? aut ad ultima pervenisti, quæ fecit Omnipotens? Sublime (e) est cœlum, & quid facies? profundiora autem iis quæ in inferno; quid nôsti? Nonne longiora quàm mensura terræ, vel latitudo maris? Si autem subverterit omnia, quis dicet illi, Quid fecisti? Ipse enim novit opera iniquorum: videns autem absurda non despiciet. Homo verò aliter (f) natat sermonibus: & vir natus mulieris tanquàm onager solitarius. Nam si tu mundum posuisti cor tuum, & (g) extendis manum ad eum; Si iniquum quid est in manu tua, longè facito illud à te, & (h) iniquitas in domo tua non maneat: Sic enim fulgebit facies tua tanquàm aqua pura: exues autem sordem, & non timebis: Et laborem oblivisceris tanquàm fluctum qui præterit, & non terreberis: Et oratio tua tanquàm Lucifer erit: (i) de meridie autem orietur tibi vita: Confidensque eris, quia est tibi spes: & de cura, ac solicitudine (k) apparebit tibi pax. Quiesces enim, & non erit qui oppugnet te: (l) transmutati autem multi rogabunt te; Salus autem eos deseret: spes enim eorum perditio, & (m) oculi impiorum tabescent.

ΚΕΦ. ιβʹ.

1 2 † Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, † (α) Εἶτα ὑμεῖς ἐστε ἄνθρωποι, † ἢ μεθ' ὑμῶν τελευ-3 τήσει σοφία; † (β) Κἀμοὶ μὲν καρδία 4 καθ' ὑμᾶς ἐστιν, † Δίκαιος γὰρ ἀνὴρ καὶ ἄμεμπτος (γ) ἐγενήθη εἰς χλεύασμα· † 5 Εἰς χρόνον γὰρ τακτὸν ἡτοίμαστο (δ) πεσεῖν ὑπὸ ἄλλων, † οἴκους τε (ε) αὐτοῦ ἐκπορθεῖσθαι ὑπὸ ἀνόμων. † οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ μηδεὶς πεποιθέτω πονηρὸς ὢν ἀθῷος ἔ-6 σεσθαι, † (ζ) Ὅσοι παροργίζουσι τὸν κύ-7 ριον, ὡς οὐχὶ καὶ ἔτασις αὐτῶν ἔσται. † Ἀλλὰ δὴ (*) ἐρώτησον τετράποδα ἐάν σοι (η) εἴπωσι, † πετεινὰ δὲ οὐρανοῦ ἐάν σοι (θ) 8 ἀπαγγείλωσιν. † Ἐκδιήγησαι (ι) γῇ, ἐάν σοι φράσῃ, † (κ) καὶ ἐξηγήσονταί σοι οἱ 9 ἰχθύες τῆς θαλάσσης. † (λ) Τίς οὖν οὐκ ἔγνω ἐν πᾶσι τούτοις, ὅτι χεὶρ κυρίου ἐποίησε ταῦτα;

CAP. XII.

Respondens autem Job, ait; Itaque vos estis homines: aut vobiscum (a) morietur sapientia? Et mihi quidem cor juxta vos est: Sed justus vir, & sine crimine venit in derisum: In tempus autem statutum paratus fuerat, ut caderet ab (b) aliis, & domus ejus ut devastarentur ab iniquis Veruntamen nemo confidat, cùm malignus sit, futurum se insontem, Quicunque irritant Dominum, tanquàm inquisitio in eos non sit futura: Sed tamen interroga quadrupedia, si tibi respondeant; volatilia autem cœli, si tibi annuntient: Enarra terræ, si tibi dicat; & exponent tibi pisces maris. Quis igitur non cognovit in omnibus his, quòd manus Domini fecit hæc?

MS. A. (γ) λαλήσαι ὁ κύριος (δ) ἀνοίξῃ (*) ἐστιν (*) παρέβη (ε) Μὴ ἴχνος (ζ) ὧν (η) γῆ δὲ βαθεῖα, καὶ τί ποιήσεις; ἢ βαθύτερα τῶν (θ) μέτρων γῆς ἐπίστασαι, ἢ εὗρος (ι) ἄτοπον (κ) * ἀλόγοις (λ) * ὄνῳ ἐρημείτῃ. (μ) ὑπτίασας δὲ τὰς χεῖράς σου πρὸς (ν) τὸ πρόσωπόν σου, (ξ) φοβηθῇς· Καὶ τῶν κόπων σου (ο) καὶ οὐ μὴ (π) μεταβαλλομένου (ρ) Καὶ σωτηρία αὐτοῦ (σ) ἀπολεῖται, (τ) τακήσονται. † Παρ' αὐτῷ γὰρ σοφία καὶ δύναμις.

Κεφ. ιβʹ. MS. A. (α) Μὴ ὑμεῖς ἐστε ἄνθρωποι μόνοι, ἢ μεθ' (β) Καὶ ἐμοὶ (γ) ἐγενόμην εἰς χλευασμόν (δ) πεσεῖν με ὑπ' ἄλλοις, (ε) μου (ζ) Ὅτι γὰρ ὀργίζουσιν (*) ἐπερώτησον (η) εἴπῃ, πετεινὰ τοῦ (θ) ἀναγγείλῃ. (ι) δὲ γῇ, (κ) καὶ εἰ ἐξηγήσηταί (λ) Ὅτι τίς

תרגום TARGUM.

וברם מן יתן אלהא ממלל ויפתח ספיותיו עמך : ויחוי לך כסוין דחוכמתא ארום כופלא לחוכמתא ודעארום אנשי לך אלהא מעויך : אפשר 5 6 7
דבשפוש אלהא תשכח אין עד סיפי שדי תשכח : בגבהי שמיא מה את עבד באוריתא דעמיקא מן שיול מה את ידע : דנגידא יתיר מן ארעא 8 9
משחתה ופתיה יתיר מן ימא : אין יחלוף וייחוד שמיא בעננו ויכנוש משרין מן יתיבניה : ארום הוא חכים גברי שקרא ואפשר דחמי שקר ולא 10 11
אתבין : וגבר חריף יתחכם לביה ועילא דמרודא היך בר נש אתיליד : תא ובר נש מפלפל יריק ועולם מסרבן דאתבן גברא רבא מתעבד : אין את 12 13
כוונתא לבך ותפרוס לותיה בצלו ידיך : אין שקר בידך רחק יתיה ולא תשרי במשכנך עולא : ארום הידין תוקוף אפיך דלא מום ותהוי סנין 14 15
מחבולא ולא תדחל : ארום את לעות תתנשי היך מוי דעברו תדכר : ומטהר יומיך יקום גושמך דהלך בגרנושתא דפעפועא דקבלא היך צפרא 16 17
תהוי : ותתרחיץ ארום אית סבר ותתקין בי קבורתא לרוחצן תשכוב : ותרבע ולא דמניד וישחרון אפך סגיעין : ועינין דרשיעיא תשתיצון 18 19 20
ושיבותא הובד מנהון וסברתהון מפח נפש :

יב

ואתיב איוב ואמר : בקושטא ארום אתון חבריא ועמכון תסוף חוכמתא : לחוד לי לבא דכמתכון לא פריש אנא מנכון ועם מן לית דכמת 1 2 3
אלין : חוכא לחבריה אהי דקרי לאלהא ועני יתיה חיך לזכאה ושלימא : אודא דבסיר לרשיעא מן מחשבא שליו מכון להרפתקי זמנא : תא בוערא 4 5
בסיר לעשו דמן מחשבתת רחיץ שליו ברם הוא מעתד לאודעות רגלא : ובני עשו דשלוין במשכניהון יתמסרון לבווזין ובני ישמעאל דרחיצין 6
יתמסרון לשאר אומיא דמרגזין אלהא דכמתהון זמן אלהא בידיה : תא ובני ישמעאל דשלוין במשכניהון יתמסרון לבווזין ועמונאי ומואבאי
דשרין לרחצן יתמסרון ביד רשיעיא דמרגזין אלוה היך פרעה דאיתי אלוה עלוהי מחתא בידיה : וברם שיל כדון בעירי וילפינך ועופא דשמיא ויחוי לך : 7
אימלל לארעא ויתלפנך וישתעון לך נוני ימא : מן לא ידע בכל אלין ארום מחת יקרא דיי עבדת דא : 8 9

Verſio SYRIACA.

5 * ܒܪܡ ܡܢ ܢܬܠ ܕܢܦܢܐ ܗܘܐ ܠܐܠܗܐ ܦܬܓܡܐ. ܘܢܪܝܡ ܗܘܐ ܣܦܘܬܗ ܥܡܟ. * ܘܢܚܘܐ ܗܘܐ ܠܟ
6 ܟܣܝܬܐ ܕܚܟܡܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܠܗ ܦܘܠܓܐ ܠܚܟܡܬܐ. ܘܕܥ ܗܘܝܬ ܕܫܒܩ ܗܘܐ ܠܟ ܐܠܗܐ ܚܛܗܝܟ.
7 8 * ܟܣܝܘܬܗ ܕܐܠܗܐ. ܡܫܟܚ ܐܢܬ ܠܡܕܪܟ. ܐܘ ܠܐ ܫܘܠܡܗ ܕܫܠܝܛܐ. ܡܫܟܚ ܐܢܬ ܠܡܕܪܟܘ. * ܪܘܡܐ
9 ܕܫܡܝܐ: ܚܙܝ ܐܢܬ. ܐܘ ܥܘܡܩܐ ܕܫܝܘܠ. ܡܢ ܐܝܟܐ ܚܙܝ ܐܢܬ. * ܐܪܝܟܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܡܫܘܚܬܗ. ܘܦܬܝܐ ܗܝ
10 11 ܡܢ ܝܡܐ. * ܐܢ ܢܥܒܪ ܠܡܣܒ ܘܠܡܟܢܫ. ܡܢܘ ܢܟܠܝܘܗܝ. * ܡܛܠ ܕܗܘ ܝܕܥ ܙܒܢܐ ܘܚܙܐ ܗܘܐ ܥܘܠܐ.
12 13 ܘܣܒܪܐ ܥܘܠ. ܗܘܐ ܡܬܚܟܡ. * ܘܓܒܪܐ ܕܟܝܐ. ܡܬܚܝܠ. ܘܓܢܒܪܐ ܥܕܪ ܠܐܢܫܐ. * ܐܠܐ ܐܢ ܬܬܩܢ ܠܒܟ.
14 15 ܘܬܦܫܛ ܐܝܕܝܟ ܠܘܬܗ. * ܐܢ ܐܝܬ ܗܘܐ ܥܘܠܐ ܒܐܝܕܝܟ. ܪܚܩ ܗܘܐ ܠܟ. ܘܠܐ ܐܥܡܪ ܒܡܫܟܢܟ ܥܘܠܐ. * ܘܗܝܕܝܢ
16 17 ܬܪܝܡ ܐܝܕܝܟ. ܘܡܢ ܢܟܝܢܐ ܠܐ ܬܕܚܠ. * ܘܗܝܕܝܢ ܬܛܥܐ ܥܡܠܟ. ܘܐܝܟ ܡܝܐ ܕܥܒܪܘ ܬܬܕܟܪ. * ܘܡܢ ܛܗܪܐ ܬܩܘܡ
18 19 ܫܝܛܘܬܐ. ܘܡܪܘܝܢ ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܢܗܘܘܢ. * ܘܬܬܬܟܠ ܕܐܝܬ ܠܟ ܣܒܪܐ. ܘܬܕܡܟ ܘܬܬܢܝܚ. * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܡܢ ܕܢܙܝܥܟ. ܘܢܒܥܘܢ
20 ܐܦܝܟ ܣܓܝܐܐ. * ܘܥܝܢܝܗܘܢ ܕܪܫܝܥܐ ܢܚܫܟܢ. ܘܥܘܫܢܗܘܢ ܢܐܒܕ ܡܢܗܘܢ. ܘܣܒܪܐ ܕܢܦܫܗܘܢ.
1 2 * ܦܣܘܩܐ * ܝܒ * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܐܢܬܘܢ ܐܢܫܐ. ܘܥܡܟܘܢ ܬܡܘܬ ܚܟܡܬܐ.
3 4 * ܐܦ ܠܝ ܠܒܐ ܐܝܬ ܠܝ ܐܝܟ ܕܠܟܘܢ. ܘܠܐ ܗܘܝܬ ܒܨܝܪ ܡܢܟܘܢ. * ܠܡܢ ܗܘܐ ܐܝܟ ܗܠܝܢ. ܗܘܝܬ ܓܘܚܟܐ
5 ܠܚܒܪܘܗܝ. ܩܪܐ ܠܐܠܗܐ ܘܥܢܝܗܝ. ܥܕܠܐ ܠܙܕܝܩܐ ܕܠܐ ܡܘܡ. * ܠܡܣܬܒܪܘ ܕܫܘܠܡܐ ܒܣܘܟܠܐ. ܘܠܡܩܡܘ
6 ܪܓܠܐ ܕܫܠܝܐ. * ܢܫܠܘܢ ܡܫܟܢܝܗܘܢ ܕܒܙܘܙܐ. ܘܣܒܪܗܘܢ ܕܡܪܓܙܝܢ ܠܐܠܗܐ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܐܠܗܐ
7 8 ܒܠܒܗܘܢ. * ܘܐܢ ܠܐ ܫܐܠ ܠܒܥܝܪܐ. ܘܬܠܦܟ. ܘܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܬܚܘܝܟ. * ܘܡܠܠ ܠܐܪܥܐ. ܘܬܠܦܟ.
9 ܘܢܫܬܥܘܢ ܠܟ ܢܘܢܝ ܝܡܐ. * ܡܢܘ ܕܠܐ ܝܕܥ ܒܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ. * ܕܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܥܒܕܬ ܗܠܝܢ.

Verſio ARABICA.

5 6 * ولكن من الذي يقدر يجاوب الله بالقول. او يرفع شفتيه معك * يوريك سراير الحكمة من اجل ان
7 للحكمة اقفالا * فكنت تعلم ان الله سيترك لك خطاياك * سر الله انت تستطيع ان تعلم او على منتهى
8 9 العزيز تستطيع ان تقوم * ارتفاع السماء هل تعرف. او غور الهاوية من اين تدري * اطول من الارض
10 11 مسلكها واعرض هي من البحر * فان جاء لياخذ وليجمع من الذي يرده * لانه يعلم متى يكون
12 13 الزمان. وينظر الاثم وهو يفهم * والرجل الطاهر يتقوى. والجبار يعين الانسان * لو انك اصلحت
14 15 قلبك ورفعت اليه يديك * فان كان اثما في يديك باعده. ولم يحل في مسكنك اثم * وعند ذلك ترفع
16 17 يديك. ومن الضر لا تخاف * وعند ذلك تنسا عملك. ومثل المياه الجارية تنساه * ومن الظهر يقم
18 19 الخزي. والظلام يكون مثل الصبح * وتتكل ان لك رجاء وتنام وتستريح * وليس من يوقظك يطلبون
20 وجهك الكثير * واعين المنافقين تظلم * ووهم تبيد منهم * ورجاء انفسهم *

* الفصل الثاني عشر *

1 2 * فاجاب ايوب وقال * بالصدق انتم اقوام *
3 4 ومعكم تموت الحكمة * وانا ايضا لي قلب مثلكم. وما كنت باصغر منكم * فمن اصاب مثل هذا *
5 فكان ضحكا لاصحابه * ودعا الله فاجابه الذي يرتضي بالصالحين الذين بلا عيب * ليبعد السفاهة
6 والاثم * وليثبت رجلا متزعزعة * تتباعد مساكن الناهبين. ورجاء الذين يغضبون الله. لان ليس الله
7 8 في قلوبهم * فان كان ليس كذلك فسل الحيوانة فتعلمك * ولطاير السماء فتخبرك * واخبر الارض
9 فتعلمك. ويعلمك سمك البحر * من الذي لم يعلم بهذه كلها. ان يد الرب صنعها.

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

(b)Sed quis poteſt Deo reſpondere in ſermone, aut 5
extollere labia ſua tecum,
Et oſtendere tibi ſecreta 6
ſapientiæ? (quoniam ſapientiæ ſunt ſeræ) ſanè
ſcires quod Deus dimitteret tibi peccata tua. (c)
Secretum Dei poteſne 7
ſcire? aut terminos Potentis vales deprehendere?
Sublimitatem cœli poteſne 8
percipere? aut profunditatem inferni undenam
percipies? Longior eſt terrâ 9
menſura ejus, & latior eſt mari. Si (d) venerit 10
ad accipiendum & colligendum, quis poterit
eum impedire? Quia ſcit 11
quando eſt tempus, & videt iniquitatem, & ipſe
intelligit: Vir autem purus 12
confortatur, et potentiſſimus auxiliatur homini.
Si tu direxeris cor 13
tuum, & elevaveris manus tuas ad eum: Si fuerit 14
iniquitas in manibus tuis, removebit eam, &
non habitabit in domo tua ſcelus. Tunc attolles manus 15
tuas, & (e) à nocumento non timebis: Et 16
tunc obliviſcêris laboris tui, et ſicut aquæ fluentes
ducêris. Et ſupra meridiem 17
ſurget ignominia: & te ebræ erunt velut
matutinum: Et confides te 18
ſpem habere, & dormies, & requieſces, Et non 19
erit qui te excitet: expetent faciem tuam multi,
Et oculi iniquorum ob- 20
ſcurabuntur, et vis eorum peribit ab ipſis, & ſpes
animarum ſuarum,

CAP. XII.

Reſpondit Job & dixit, 1
Cùm veritate vos 2
eſtis gentes, & vobiſcũ moritur ſapientia.
Et ego etiam habeo cor ſicut 3
vos, & non ſum minor vobis.
Is cui acciderunt 4
ſimilia his, & fuit deriſio amicis ſuis; invocabit Dñũ,
& exaudiet is qui complacet ſibi in juſtis qui ſunt
ſine macula: Repellendo 5
ſtultitiam & ſcelus, & confirmando pedem titubantem.
(a) Elongabuntur 6
habitacula prædonum, & ſpes illorum qui irritant
Deum: quia Deus non eſt in cordibus eorum.
Et ſi non eſt ſic, interroga 7
belluam, & docebit te, & volucrem cœli, & enarrabit
tibi: Et expone 8
terræ, & erudiet te, & erudient te piſces maris.
Quis ignorat quòd manus 9
Domini fecerit omnia?

INTERP. SYRIACA.

(*b*) Verùm quis *ita* fecit, ut Deo det reſponſum, & extollat (*c*)Inquiſitionem Dei (*d*) tranſierit (*e*) ab anguſtia *CAP. xii.* (*a*) Tranſibunt

Paraph. Chald. Verſio Latina.

Veruntamen quis dabit ut Deus loquatur, & aperiat labia ſua tibi! Annunciaret enim tibi ſecreta ſapientiæ, quoniam in duplum eſt ſapientia ejus: & ſcito quòd re- 5 6
um ageret te Deus ob tuam iniquitatem. Nunquid inveſtigationem Dei invenies: aut uſque ad fines omnipotentis reperies? In altitudine cœli quid tu facies? in le- 7 8
ge quæ profundior eſt inferno, quid tu ſcies? Cujus menſura longior eſt terra, & latior mari. Si tranſierit & clauſerit cœlos nubibus, & congregaverit exercitus; 9 10
quis avertet eum? Quoniam ipſe novit viros falſitatis, & quomodo videre poteſt iniquitatem ut non intelligat? Et vir diſertus ſapientior fiet in corde ſuo, & pullus 11 12
onagri ſicut filius hominis naſcitur. *Targum aliud: Et homo ſolers perpendebit; & adoleſcens refractarius, qui prudens evaſerit, vir magnus fiet.* Si tu direxeris 13
cor tuum, & extenderis ad eum in oratione manus tuas: Si qua iniquitas eſt in manu tua, longè eam facito, neque habitet in tabernaculo tuo iniquitas. Tunc enim 14 15
levabis vultum tuum abſque macula, & eris purgatus à corruptione, & non timebis. Quoniam tu laboris obliviſceris, & quaſi aquarum quæ præterierunt recordabe- 16
ris. Et de meridie dierum tuorum conſurget corpus tuum, quod abiit in glebam; *quia* obſcuritas tenebrarum quaſi lux matutina erit. Et confides quoniam eſt tibi 17 18
ſpes, & præparabis domum ſepulturæ, & ſecurus dormies. Et cubabis, & non erit qui exterreat, & deprecabuntur faciem tuam plurimi. Et oculi impiorum con- 19 20
ſumentur, & liberatio peribit ab eis, & ſpes eorum mœror animæ.

CAP. XII.

Et reſpondit Job & dixit: In veritate quia vos eſtis focii, & vobiſcum deficit ſapientia. Veruntamen eſt mihi cor ſicut vobis: non ſum ego differens à vobis, & 1 2 3
apud quem non ſunt ſicut iſta? Deriſio amico ejus ſum, qui invocat Deum & reſpondet ei: irridet juſtum & perfectum. Torris contemptus eſt impiis, qui à co- 4 5
gitationibus ſecur' eſt, præparans te ad tempus ſtatutũ. *Targum aliud: Fax contempta eſt Eſau, qui à cogitationibus confidenter ſecurus eſt; ſed futurum eſt ut vacillet*
tibi pes. Et filii Eſau qui proſpere degunt in tabernaculis ſuis tradentur direptoribus: Filii autẽ *Iſmael qui confidenter agunt*, tradentur *reliquis gentibus, quæ* provocant 6
Deum ſicut *ipſi, paravit Deus manu ſua. Targum aliud. Et filii Iſmael* qui proſpere degunt in tabernaculis ſuis, tradentur direptoribus, Amonitæ autem et Moabitæ
qui morantur confidenter tradentur in manũ impiorũ qui provocant Deũ, ſicut Pharao ſup quẽ adduxit Deus plagas manu ſua. Veruntamen interroga nunc jumenta, et 7
docebunt te; et aves cœli, et nunciabunt tibi. Aut loquere terræ et docebit te: et narrabunt tibi piſces maris. Quis neſcit omnia hæc, quoniã *plaga man'* Dñi fecit hoc? 8 9

איוב : יב

carnis omnis ſpiritus & ; viventis omnis anima *ejus* manu in Cujus
אשר בידו נפש כל־חי ורוח כל־בשר 10
? ſibi *guſtabit* cibum *palatum* & ; *probabit* ſermones auris Nonne .viri
איש׃ הלא־אזן מלין תבחן וחך אכל יטעם־לו׃ 11
.intelligentia dierum longitudine & , ſapientia decrepitis In
בישישים חכמה וארך ימים תבונה׃ 12
.intelligentia & , conſilium ei : fortitudo & , ſapientia ipſo Cum
עמו חכמה וגבורה לו עצה ותבונה׃ 13
non & , virum *ſuper* claudet : ædificabitur non & , diruet Ecce
הן יהרוס ולא יבנה יסגר על־איש ולא 14
, eas emittet & ; areſcent & , *aquis in* detinebit Ecce .aperietur
יפתח׃ הן יעצר במים ויבשו וישלחם 15
poſſeſſiontia & fortitudo illi Cum .terram ſubvertent &
ויהפכו ארץ׃ עמו עז ותושיה 16
, *ſtultitiam* conſiliarios *faciens Ire* .faciens errare & , errans ei
לו שגג ומשגה׃ מוליך יועצים שולל 17
linivit & , ſolvit regum Vinculum .*infatuabit* judices &
ושפטים יהולל׃ מוסר מלכים פתח ויאסר 18
, [illegible] *ſpoliatos ire faciens* .eorum *lumbis* in cingulum
אזור במתניהם׃ מוליך כהנים שולל 19
diſſipabit & , veracibus labium *Removens* .ſubvertet fortes &
ואיתנים יסלף׃ מסיר שפה לנאמנים וטעם 20
; principes ſuper deſpectionem *Effundens* .tollet ſenum
זקנים יקח׃ שופך בוז על־נדיבים 21
de profunda *Revelans* .*debilitavit* fortium fortitudinem &
ומזיח אפיקים רפה׃ מגלה עמקות מני־ 22
Multiplicans .mortis umbram lucem ad educit & ; *tenebris*
חשך ויצא לאור צלמות׃ משגיא 23
Removens .eas ducit & , gentibus *dilatans* : eas perdit & gentes
לגוים ויאבדם שטח לגוים וינחם׃ מסיר 24
abſque ſolitudine in eos facit errare & , terræ populi *capitum* cor
לב ראשי עם־הארץ ויתעם בתהו לא־
eos fecit errare & : lucem non & , *tenebram* Palpabunt .via
דרך׃ ימששו־חשך ולא־אור ויתעם 25
.ebrius ſicut
כשכור׃

CAP. XIII. יג

.ſibi intellexit & , mea auris audivit : meus oculus vidit omnia Ecce
הן־כל ראתה עיני שמעה אזני ותבן לה׃ 1
.vobis à ego cadens non : ego etiam novi , vos *ſcire* Sicut
כדעתכם ידעתי גם־אני לא־נפל אנכי מכם׃ 2
Deum ad *altercari* & ; loquar *Saddai* ad ego Attamen
אולם אני אל־שדי אדבר והוכח אל־אל 3
medici , *mendacii concinnatores* vos verè Et .volam
אחפץ׃ ואולם אתם טפלי־שקר רפאי 4
eſſet & ; taceretis tacendo *dabit Quis* .vos omnes *nihili*
אלל כלכם׃ מי־יתן החרש תחרישון ותהי 5
, meam *argumentationem* quæſo Audite : ſapientiam ad vobis
לכם לחכמה׃ שמעו־נא תוכחתי 6
loquemini *Deo* Nunquid .attendite meorum labiorum *litibus* &
ורבות שפתי הקשיבו׃ הלאל תדברו 7
ejus *facies* Nunquid ? dolum loquemini *ei* & ? iniquitatem
עולה ולו תדברו רמיה׃ הפניו 8
quod bonum Nonne ? *litigabitis* Deo an ? accipietis
תשאון אם־לאל תריבון׃ הטוב כי־ 9
ſicam in illudetis , *hominem in illudere ut* An ? vos inquireret
יחקר אתכם אם־כהתל באנוש תהתלו בו׃
.acceperitis *facies* abſcondito in ſi , vos arguet Arguendo
הוכח יוכיח אתכם אם־בסתר פנים תשאון׃ 10
? vos ſuper cadet ejus pavor & : vos terrebit ejus *celſitudo* Nonne
הלא שאתו תבעת אתכם ופחדו יפל עליכם׃ 11

Verſio VULG. LAT.

10 In cujus manu anima omnis viventis, & ſpiritus univerſæ 11 carnis hominis. Nonne auris verba dijudicat, & fauces comedentis, ſaporem? 12 In antiquis eſt ſapientia, & in 13 multo tempore prudentia. Apud ipſum eſt ſapientia & fortitudo, ipſe habet conſilium & intelligentiam. 14 Si deſtruxerit, nemo eſt qui ædificet: ſi incluſerit hominem, 15 nullus eſt qui aperiat. Si continuerit aquas, omnia ſiccabuntur: & ſi emiſerit eas, 16 ſubvertent terram. Apud ipſum eſt fortitudo & ſapientia: ipſe novit & decipientem, 17 et eum qui decipitur. Adducit conſiliarios in ſtultum finem, & judices in ſtuporem. 18 Balteum regum diſſolvit, & præcingit fune renes eorum. 19 Ducit ſacerdotes inglorios, & 20 optimates ſupplantat: Commutans labium veracium, & doctrinam ſenum auferens. 21 Effundit deſpectionem ſuper principes, eos, qui oppreſſi 22 fuerant, relevans. Qui revelat profunda de tenebris, & producit in lucem umbram 23 mortis. Qui multiplicat gentes & perdit eas, & ſubverſas 24 in integrum reſtituit. Qui immutat cor principum populi terræ, & decipit eos ut fruſtrà 25 incedant per invium: Palpabunt quaſi in tenebris, & non in luce, & errare eos faciet quaſi ebrios.

CAP. XIII.

1 Ecce omnia hæc vidit oculus meus, et audivit auris mea, et intellexi ſingula. 2 Secundùm ſcientiam veſtram et ego novi: nec inferior ve- 3 ſtri ſum. Sed tamen ad Omnipotentem loquar, et diſputare 4 cum Deo cupio: Priùs vos oſtendens fabricatores mendacii, et cultores perverſorum 5 dogmatum. Atque utinam taceretis, et putaremini eſſe ſa- 6 pientes. Audite ergo correptionem meam, et judicium labiorum meorum attendite. 7 Numquid Deus indiget veſtro mendacio, ut pro illo loqua- 8 mini dolos? Numquid faciem ejus accipitis, et pro Deo ju- 9 dicare nitimini? Aut placebit ei quem celare nihil poteſt? aut decipietur ut homo, 10 veſtris fraudulentiis? ipſe vos arguet, quoniam in abſcondito faciem ejus accipitis. 11 Statim ut ſe commoverit, turbabit vos, et terror ejus irruet ſuper vos.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 † (μ) Εἰ μὴ ἐν χειρὶ αὐτοῦ ψυχὴ πάντων (ν) ζώντων, καὶ πνεῦμα παντὸς ἀν-
11 θρώπου. † (ξ) Οὖς μὲν γὰρ ῥήματα διακρίνει, † λάρυγξ δὲ σῖτα γεύεται. †
12 Ἐν πολλῷ χρόνῳ (ο) σοφία, † ἐν δὲ
13 πολλῷ βίῳ ἐπιστήμη. † Παρ' αὐτῷ σοφία καὶ δύναμις, † (π) αὐτῷ βουλὴ καὶ σύν-
14 εσις. † Ἐὰν (ρ) καταβάλῃ, τίς οἰκοδομήσει; † (σ) ἐὰν κλείσῃ κατ' ἀνθρώπων,
15 τίς ἀνοίξει; † Ἐὰν κωλύσῃ τὸ ὕδωρ, ξηρανεῖ τὴν γῆν· † (τ) ἐὰν δὲ ἐπαφῇ, ἀπ-
16 ώλεσεν αὐτὴν καταστρέψας. † Παρ' αὐτῷ κράτος καὶ ἰσχύς, † (υ) αὐτῷ ἐπιστήμη καὶ
17 σύνεσις. † Διάγων βουλευτὰς αἰχμαλώτους, † κριτὰς δὲ γῆς ἐξέστησε. † (φ)
18 Καθιζάνων βασιλεῖς ἐπὶ θρόνους, † καὶ (χ)
19 περιέδησε ζώνῃ ὀσφύας αὐτῶν. † (ψ) Ἐξαποστέλλων ἱερεῖς αἰχμαλώτους, † δυνάστας
20 δὲ γῆς κατέστρεψε. † Διαλλάσσων χείλη πιστῶν, † σύνεσιν δὲ πρεσβυτέρων ἔγνω.
21 † Ἐκχέων ἀτιμίαν ἐπ' ἄρχοντας, † ταπεινοὺς δὲ ἰάσατο. † (ω) Ἀνακαλύπτων βαθέα ἐκ σκότους, † ἐξήγαγε δὲ εἰς φῶς
23 σκιὰν θανάτου. † Πλανῶν ἔθνη καὶ ἀπολλύων αὐτά, † καταστρωννύων ἔθνη καὶ
24 καθοδηγῶν αὐτά. † Διαλλάσσων καρδίας (α) ἀρχόντων γῆς· † ἐπλάνησε δὲ αὐ-
25 τοὺς ἐν ὁδῷ ᾗ οὐκ ᾔδεισαν. † (β) Ψηλαφήσαισαν σκότος (γ) καὶ μὴ φῶς, † πλανηθείησαν δὲ ὥσπερ ὁ μεθύων.

Si non in manu ejus eſt anima omnium viventium, & ſpiritus omnis hominis? Nam (c) auris quidem dijudicat verba, fauces autem cibos guſtant: In (d) multo tempore ſapientia eſt, & in multa vita eſt ſcientia. Apud ipſum ſapientia, & virtus, ipſi conſilium, & intellectus. Si deſtruxerit, quis ædificabit? ſi clauſerit contra hominem, quis aperiet? Si prohibuerit aquam; ſiccabit terram: quod ſi emiſerit, perdidit evertens eam. Apud ipſum potentia & fortitudo; ipſi ſcientia & intellectus. (e) Qui ducit conſiliatores captivos: judices autem terræ, in pavorem [illegible]. Qui collocat reges ſuper [illegible], & circumdedit (f) baltheo lumbos eorum. Qui emittit ſacerdotes captivos: dynaſtas autem terræ evertit. Qui (g) permutat labia fidelium, intelligentiam autem ſenum cognovit. Qui effundit ignominiam ſuper principes, humiles autem ſanavit: Qui revelat profunda de tenebris, & eduxit in lucem umbram mortis. Decipiens gentes, & perdens eas: ſternens gentes, & inducens eas. (i) Permutans corda principum terræ: [illegible] fecit eos in via, quam non noverant: (k) Palpent tenebras, & non lucem: (l) errent autem, tanquam ebrius.

ΚΕΦ. ιγ'.

1 † Ἰδοὺ ταῦτα (α) ἑώρακέ μου ὁ ὀφθαλ-
2 μός, (β) καὶ ἀκήκοέ μου τὸ οὖς. † Καὶ οἶδα ὅσα καὶ ὑμεῖς ἐπίστασθε, † (γ) καὶ οὐκ
3 ἀσυνετώτερός εἰμι ὑμῶν. † Οὐ μὴν δὲ (δ) ἀλλ' ἐγὼ πρὸς κύριον λαλήσω, † ἐλέγξω δὲ ἐναντίον αὐτοῦ ἐὰν βούληται. †
4 (ε) Ὑμεῖς δέ ἐστε ἰατροὶ ἄδικοι, καὶ ἰαταὶ
5 κακῶν πάντες. † Εἴη δὲ ὑμῖν κωφεῦσαι,
6 καὶ ἀποβήσεται ὑμῖν (ζ) σοφία. † (η) Ἀκούσατε δὲ ἔλεγχον τοῦ στόματός μου, †
7 κρίσιν δὲ χειλέων μου προσέχετε. † Πότερον οὐκ ἔναντι κυρίου λαλεῖτε, † ἔναντι δὲ
8 αὐτοῦ φθέγγεσθε δόλον; † ( ) Ἢ ὑποστελεῖσθε; (θ) ὑμεῖς δὲ αὐτοὶ κριταὶ γένεσθε.
9 † Καλὸν γὰρ ἐὰν ἐξιχνιάσῃ ὑμᾶς· εἰ γὰρ τὰ πάντα ποιοῦντες προστεθήσεσθε
10 (ι) αὐτῷ, Οὐθὲν ἧττον ἐλέγξει ὑμᾶς. † εἰ δὲ καὶ κρυφῇ (κ) πρόσωπα θαυμάσεσθε,
11 Πότερον (λ) οὐχὶ δεινὰ αὐτοῦ στροβήσει ὑμᾶς, † (μ) ὁ φόβος δὲ παρ' αὐτοῦ ἐπιπεσεῖται ὑμῖν;

CAP. XIII.

Ecce hæc (a) vidit oculus meus, & audivit auris mea. Et novi, quæcunque & vos ſcitis: & non ſum minus intelligens quàm vos. Veruntamen ego ad Dominum loquar, & arguam in conſpectu ejus, ſi voluerit. Vos autem eſtis (e) medici injuſti, & curatores malorum omnes: Sit autem vobis obmuteſcere, & evadet vobis ſapientia. Audite ergò increpationem oris mei, & judicium labiorum meorum animadvertite. Nunquid non coram Domino loquimini, & ante conſpectum ejus profertis dolum? [illegible] vos autem [illegible] ſi judices ſitis. Bonum enim ſi inveſtiget vos: [illegible] facientes adjiciemini [illegible] Nihilominus arguet vos. (d) [illegible] & ſi occultas perſonas mirami[ni] [illegible] facitis; Nonne commotio ejus verſabit vos? Timor autem ab eo cadet ſuper vos.

MS. A. (μ) Ὅτι ἐν χειρὶ (ν) τῶν ζώντων, (ξ Νοῦς μὲν (ο) σοφία εἰσχεται, ἐν δὲ μακρῷ βίῳ (π) παρ' αὐτῷ (ρ) καταστρέψῃ, (σ) ἐὰν δὲ καὶ ἀποκλείσῃ κατὰ ἀνθρώπου, (τ ἐὰν δὲ καὶ ἐπαφῇ, (υ) παρ' αὐτοῦ (φ) γῆς αἰχμαλώτους, φ Καθίζων (χ) περιζωννύων αὐτοὺς * ζώνῃ ὀσφύος (ψ) Ὁ ἐξαποστέλλων (ω) Ὁ ἀποκαλύπτων βαθέα (α) ἀρχόντων· ἐπλάνησεν δὲ αὐτοὺς ἐν ὁδῷ (β Ψηλαφήσαισαν (γ) καὶ οὐ φῶς,

Κεφ. ιγ'. MS. A. (α ἑόρακεν (β καὶ τὸ οὖς μου ἀκήκοεν (γ) καί γε οὐ νεώτερος ὑμῶν οὐκ εἰμὶ ἀσυνετώτερος ὑμῶν. δ) ἀλλὰ πρὸς κύριον λαλήσω ἐγώ, (ε) Ὑμεῖς γάρ ἐστε (ζ) εἰς σοφίαν. η) Ἀκούσατε ἔλεγχον στόματός μου, κρίσει δὲ ( ) Εἰ (θ) αὐτοὶ ὑμεῖς κριταὶ γένεσθαι, καλῶς γε λαλοῦντες, ἐὰν γὰρ ἐξιχνιάσῃ ὑμᾶς, εἰ καὶ τὰ πάντα (ι) ὅσα αὐτῷ, (κ) πρόσωπον * θαυμάσετε, (λ) οὐχὶ δεινὰ αὐτοῦ (μ) φόβος δὲ κυρίου ἐπιπεσεῖται ὑμῖν, Καὶ ἀποβήσεται ὑμῶν

תרגום TARGUM.

11 10 בידיה נפשתא דכל חיותא ורוחא דכל בסר גבר : הלא אודנא מלין תבחן ומורינא מיכלא יטעם ליה : בקשישיא חכמתא ונגדי יומין בינתא :
13 12 15 14 עמיה חוכמתא וגבורתא דיליה מלכא ובינתא : הא יצדי ולא יתבני יסגיר על גבר בקבורתא ולא יתפתח : הא אחד במיא ומתיבשין וכד ישלחינון
17 16 18 יהפכון בארעא : גביה עושנא וחוכמתא דיליה שלי ומשלי : דמוביל מרי מלכא כד משתלשלין ונגודיא יתלעב : שושילתא דמלכא משרי
19 21 20 ואסר קמור בחרציהון : דמוליך רברבניא בבותא ותקיפיא מקלקל : מעדי קשוט ספותא מבהימנין וטעם סביא יסלק : שדי בסרניותא על סרכיא
23 22 ותוקף מלכיא מחליש : מגלי עמיקתא מן חשוכא ומפק לנהורא טולי מותא : מפיש לעממיא ומאבדנון משטח מצודתא לאומיא ודברנון :
25 24 מעדי חכמת לבא דרישי עמא דארעא ומתענן בלמא דלית אורחא : ימשמשון חשוך ולא נהורא ומתענן היך רוי :

יג

3 2 1 הא כולא חמת עיני שמעת אודני ואתבינת לה : היך מנדעכון ידעית אוף אנא ולית פריש אנא מנכון : ברם אנא לות שדי אמלל ומכסנא
6 5 4 לאלהא צבי : וברם אתון מחברי שקר כמא מאיל ומידקא דפלטיה סכינא הכדין כולכון : לוי דמשתק תשתקון ותהוי לכון לחוכמתא : שמעו
9 8 7 כדון מכסנותי ומצות ספותי אציתו : הלאלהא אתון ממללין שקר ולותיה תמללון נכילתא : האפוי הסבין אין לאלהא תנצון : התקין ארום יפשפש
11 10 יתכון אין היך מתלעבא בבר נש תתלעבון ביה : מכסנא יכסן יתכון אין בטומרא אפוי הסבין : הלא באורקפיתיה על [illegible] ודחלתיה
יפול עליכון :

Versio SYRIACA.

10 *ܡܛܠ ܕܒܐܝܕܗ ܐܝܬ ܢܦܫܬܐ ܕܟܠܚܝܢ. ܘܪܘܚܐ ܕܟܠܒܣܪ ܘܐܢܫ. *ܐܕܢܐ ܡܦܪܫܐ ܡܠܐ. ܘܚܟܐ ܛܥܡ
11 12 ܡܐܟܘܠܬܐ. *ܒܣܝܒܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܝܘܡܬܐ ܣܘܟܠܐ. *ܥܡܗ ܗܝ ܚܟܡܬܐ ܘܓܢܒܪܘܬܐ.
13 14 ܕܝܠܗ ܗܝ ܬܪܥܝܬܐ ܘܣܘܟܠܐ. *ܘܐܢ ܗܦܟ. ܡܢܘ ܒܢܐ. ܘܐܢ ܐܚܕ ܥܠ ܐܢܫ. ܡܢܘ ܦܬܚ. *ܘܐܢ ܟܠܐ
15 16 ܡܝܐ. ܢܒܫܘܢ. ܘܐܢ ܫܒܩ ܐܢܘܢ. ܢܗܦܟܘܢ ܐܪܥܐ. *ܕܝܠܗ ܗܘ ܥܘܫܢܐ ܘܚܟܡܬܐ. ܕܝܠܗ ܗܘ ܪܒܘܬܐ
17 ܘܦܘܪܩܢܐ. *ܡܕܒܪ ܡܠܟܐ ܒܬܡܗܐ. ܘܕܝܢܐ ܗܘ ܡܫܛܐ. *ܘܡܚܬ ܡܠܟܐ ܠܬܪܥܐ. ܘܐܣܪ ܐܣܘܪܐ
18 19 ܒܚܨܝܗܘܢ. *ܡܕܒܪ ܟܗܢܐ ܒܬܡܗܐ. ܘܬܩܝܦܐ ܡܫܦܠ. *ܡܥܒܪ ܡܠܬܐ ܡܢ ܡܗܝܡܢܐ. ܘܢܣܒ
20 21 ܡܕܥܐ ܡܢ ܣܒܐ. *ܐܝܟ ܡܫܕܐ ܒܘܣܪܐ ܥܠ ܪܘܪܒܢܐ. ܘܚܝܠܐ ܕܥܫܝܢܐ ܡܪܦܐ. *ܡܓܠܐ ܥܡܝܩܬܐ
22 23 ܡܢ ܚܫܘܟܐ. ܘܡܦܩ ܢܘܗܪܐ ܡܢ ܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ. *ܡܣܓܐ ܠܥܡܡܐ. ܘܡܘܒܕ ܠܗܘܢ. ܫܛܚ ܠܥܡܡܐ
24 ܘܡܕܒܪ ܠܗܘܢ. *ܡܥܒܪ ܠܒܐ ܕܪܫܐ ܕܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܡܛܥܐ ܠܗܘܢ ܒܕܒܪܐ ܕܠܐ ܐܘܪܚܐ. *ܢܓܫܘܢ
25 ܒܚܫܘܟܐ ܘܠܐ ܒܢܘܗܪܐ. ܢܬܬܙܝܥܘܢ ܒܚܫܘܟܐ. ܘܠܐ ܢܘܗܪܐ. ܘܡܛܥܐ ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܪܘܝܐ.
*ܩܦܠܐܘܢ * ܝܓ *
1 *ܗܐ ܗܠܝܢ ܟܠܗܘܢ ܚܙܬ ܥܝܢܝ. ܘܫܡܥܬ ܐܕܢܝ ܘܐܣܬܟܠܬ. *ܐܝܟ ܝܕܥܬܟܘܢ. ܝܕܥ ܐܢܐ ܐܦ ܐܢܐ. ܘܠܐ ܒܨܝܪ
2 3 ܐܢܐ ܡܢܟܘܢ. *ܒܪܡ ܕܝܢ ܐܢܐ ܥܡ ܫܕܝܐ ܡܡܠܠ ܐܢܐ. ܘܡܟܣܢܘܬܝ ܥܡ ܐܠܗܐ ܐܚܘܐ. *ܒܪܡ ܐܢܬܘܢ
4 ܐܝܬܝܟܘܢ ܡܠܦܝ ܫܘܩܪܐ ܐܝܬܝܟܘܢ. ܘܡܐܣܝܢ ܥܠ ܡܕܡ ܐܝܬܝܟܘܢ. *ܡܢ ܕܝܢ ܢܬܠ ܕܫܬܩܐ ܫܬܩܝܢ ܗܘܝܬܘܢ.
5 ܘܗܘܐ ܠܟܘܢ ܐܝܟ ܗܕܐ ܚܟܡܬܐ. *ܫܡܥܘ ܗܫܐ ܡܟܣܢܘܬܝ. ܘܨܘܬܘ ܕܝܢܐ ܕܣܦܘܬܝ. *ܠܐ ܠܐܠܗܐ ܡܡܠܠܝܢ
6 7 ܐܢܬܘܢ ܥܘܠܐ. ܘܥܠܘܗܝ ܡܡܠܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܢܟܠܐ. *ܐܦܘܗܝ ܢܣܒܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܐܘ ܥܡ ܐܠܗܐ ܕܐܢܝܢ ܐܢܬܘܢ.
8 9 *ܛܒ ܠܟܘܢ ܕܢܒܨܐ ܠܟܘܢ. ܐܘ ܐܝܟ ܕܡܬܒܙܚ ܒܒܪܢܫܐ. ܡܬܒܙܚܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܗ. *ܡܟܣܘ ܢܟܣܐ ܠܟܘܢ.
10 11 ܘܐܢ ܒܛܘܫܝܐ ܐܦܘܗܝ ܢܣܒܝܢ ܐܢܬܘܢ. *ܙܝܥܬܗ ܬܙܝܥܟܘܢ. ܘܕܚܠܬܗ ܬܦܠ ܥܠܝܟܘܢ.

Versio ARABICA.

10 11 *مِنْ اَجْلِ اَنْ بِيَدِهِ اَنْفُسَ جَمِيعِ الاَحْيَاءِ وَرُوحَ كُلِّ بَشَرٍ وَإِنْسَانٍ *اَلاُذُنُ تَسْمَعُ ٱلْكَلَامَ • وَٱلْحَنَكُ يُطْعَمُ
12 13 ٱلطَّعَامَ *وَفِي ٱلاَكَابِرِ ٱلْحِكْمَةُ • وَفِي طُولِ ٱلاَيَّامِ ٱلْبَيَانُ *مَعَهُ ٱلْحِكْمَةُ وَٱلْجَبَرُوتُ • لَهُ ٱلْفَهْمُ وَٱلْبَيَانُ *فَاِنَّهُ اِنْ
14 15 هَدَمَ مَنِ ٱلَّذِي يَبْنِي • وَاِنْ اَغْلَقَ فِي وَجْهِ ٱلاِنْسَانِ مَنِ ٱلَّذِي يَفْتَحُ *وَاِنْ زَجَرَ ٱلْمِيَاهَ فَاِنَّهَا تَيْبَسُ • وَاِنْ
16 17 اَرْسَلَهَا اَقْلَبَتِ ٱلاَرْضَ *لَهُ ٱلْقُوَّةُ وَٱلْحِكْمَةُ • لَهُ ٱلْعَظَمَةُ وَٱلْخَلَاصُ *يُدَبِّرُ ٱلْمُلُوكَ بِٱلْعَجَايِبِ • وَٱلدَّيَّانِينَ يُسَفِّهُ
18 19 *يُهْبِطُ ٱلْمُلُوكَ اِلَى ٱلْبَابِ وَيَشُدُّ ٱلرِّبَاطَ فِي اَوْسَاطِهِمْ *يُدَبِّرُ ٱلْكَهَنَةَ بِٱلْعَجَايِبِ وَٱلْعُظَمَاءَ يَحُطُّهُمْ *يُبْعِدُ
20 21 ٱلْكَلَامَ مِنَ ٱلْمُومِنِينَ • وَيَاخُذُ ٱلْحِلْمَ مِنَ ٱلْمَشَايِخِ *يُلْقِي ٱلسَّخَافَةَ عَلَى ٱلسَّلَاطِينِ • وَمَرَادَةَ ٱلاَقْوِيَاءِ يَرْفُضُهَا
22 23 *يُظْهِرُ ٱلْخَفِيَّاتِ مِنَ ٱلظَّلَامِ • وَيُخْرِجُ ٱلنُّورَ مِنْ طَبَايِقِ ٱلْمَوْتِ *يُضِلُّ ٱلشُّعُوبَ وَيُبَدِّدُهَا يَسْطَحُ ٱلاُمَمَ
24 25 وَيَرْفُضُهَا *يُسَخِّفُ قُلُوبَ رُوَسَاءِ شَعْبِ ٱلاَرْضِ • وَيُضِلُّهُمْ فِي حَيْثُ بِلَا طَرِيقٍ *يَجُسُّونَ فِي ٱلظَّلَامِ وَلَا فِي
1 ٱلضَّوْءِ مُتَجَسِّسُونَ ٱلظُّلْمَةَ وَلَا ٱلنُّورَ • وَيُضِلُّهُمْ مِثْلَ ٱلسَّكَارَى * اَلْفَصْلُ ٱلثَّالِثَ عَشَرَ • *هُوَذَا
2 هٰذَا كُلَّهُ قَدْ اَبْصَرَتْ عَيْنَايَ وَسَمِعَتْ اُذُنِي وَفَهِمَتْ *مِثْلَ مَعْرِفَتِكُمْ فَاِنِّي اَنَا اَعْرِفُ • وَمَا كُنْتُ بِاَنْقَصَ
3 4 مِنْكُمْ *وَلَكِنْ عِنْدَ ٱلْعَزِيزِ اَتَكَلَّمُ • وَبَلِيَّتِي لِلّٰهِ اُخْبِرُ *وَلَكِنَّكُمْ اَنْتُمْ تَتَكَلَّمُونَ بِٱلزُّورِ وَتُعَالِجُونَ ٱلسِّقَا
5 6 بِلَا شَيْ *فَلَيْتَ كَانَ اَحَدٌ يُسْكِتُكُمْ سُكُوتًا وَيَكُونُ لَكُمْ هٰذَا حِكْمَةً *فَاسْمَعُوا ٱلآنَ مَوْعِظَتِي • وَاَنْصِتُوا
7 8 قَضَاءَ سَمْعِي *اَعَلَى ٱللّٰهِ تَتَكَلَّمُونَ بَاطِلًا • وَعَلَيْهِ تَقُولُونَ اِثْمًا *اَبِوَجْهِهِ تَاخُذُونَ • اَوْ مَعَ ٱللّٰهِ تَدِينُونَ *اَخَيْرًا
9 10 لَكُمْ اَنْ يَمْتَحِنَكُمْ • اَوْ مِثْلَ مَا يَدِينُ كُلَّ اِنْسَانٍ تَسْتَنْقِصُونَ بِهِ *تَبْكِيتًا يُبَكِّتُكُمْ • اَوْ بِوَجْهِهِ تَاخُذُونَ
11 *خَافَهُ يُرْهِبُكُمْ • وَفَزَعُهُ يَسْقُطُ عَلَيْكُمْ *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Quoniã in manu ejus sunt animæ omnium viventium, et spiritus omnis carnis et hominis. 10 *Auris audit verba, & palatus gustat cibum,* 11 *Et in senioribus sapientia, & longitudine dierum prudentia.* 12 *Cum ipso est sapientia & fortitudo, ipsius est intelligentia & prudentia:* 13 *Quia si ipse destruit, quis ædificat? & si claudit in faciem hominis, quis aperiet?* 14 *Et si increpat aquas, arescunt, & si dimittit eas, subvertunt terram,* 15 *Ipsius est fortitudo & sapientia, ipsius est magnificentia & salus:* 16 *Regit reges in stupore, & judices facit stultos:* 17 *Et descendere facit reges ad portã, & stringit vinculo renes eorum.* 18 *Ducit seniores in stupore, & magnates deprimit.* 19 *Removet verba à fidelibus, & tollit intellectum à senioribus:* 20 *Injicit imbecillitatem super principes, & proterviam potentium (b) despicit:* 21 *Eruit abscondita è tenebris, & educit lumen è mortis operculo:* 22 *In errorem inducit populos, & (c) dissipat eos: Prosternit gentes, & (d) repellit eas,* 23 *(e) Debilitat corda principum populi terræ, et errare facit eos in stupore absque via:* 24 *Palpabunt in tenebris, & non in luce: palpitabunt tenebras, & non lucem: & vacillare facit eos sicut ebrios.* 25

CAP. XIII.

Ecce hæc omnia viderunt oculi mei, & audierunt aures meæ, & intellexit. 1 *Juxta scientiam vestram ego scio, & non sum inferior vobis:* 2 *Sed ad Potentem loquar, & (a) tribulationem meam Deo exponam.* 3 *At verò vos loquimini falsitatem, & exercetis curationem absque ulla re.* 4 *Utinam aliquis esset qui vobis imponeret silentium, sanè esset vobis hoc sapientiæ.* 5 *Audite modò hortationẽ meam, & auscultate judicium labiorum meorũ.* 6 *Numquid contra Deum loquimini iniquitatem, & de eo dicitis (b) scelus?* 7 *Num personam ejus accipitis, aut cum Deo contenditis?* 8 *Meliùs estne vobis, ut probet vos? an quemadmodum judicat omnem hominem, vos judicatis eum?* 9 *Corripiens corripiet vos: numquid faciem ejus accipitis?* 10 *Timor ejus terreat vos, ac terror ejus cadat super vos.* 11

INTERP. SYR.

(b) debilitat: (c) disperdit (d) derelinquit (e) Infatuat CAP. XIII. (a) redargutionem meam (b) fraudem?

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

In cujus manu anima est omnis viventis, & spiritus omnis carnis viri. Nonne auris verba probat, & palatum cibum gustat sibi? In antiquis est sapientia, & in longævis dierum prudentia. Apud eum est sapientia & fortitudo, suum est consilium & intelligentia. Ecce destruet, & non ædificabitur; concludet hominem in sepulchro, nec aperietur. Ecce continebit aquas, & siccabuntur, & cùm emiserit eas, effundentur in terram. Apud eum est fortitudo & sapientia, ipse habet errantem & decipientem. Qui ducit consiliarios in catenis, & principes ad insaniam redigit. Catenam regum dissolvit, & accingit balteo lumbos eorum. Qui ducit *magnates inter spolia*, & fortes dissipat. Aufert veritatem labiorum veracium, & eloquium senum tollit. Effundit despectionem super principes, & fortitudinem regum infirmare facit. Qui revelat profunda de tenebris, & producit in lucem umbras mortis. Multiplicat populos, & disperdit eos; extendens rete gentibus, et capit eos. Auferens sapientiam cordis principum *populi* terræ, et errare facit eos in vacuum ubi non est via. Palpant tenebras et non lucem, et errare facit eos quasi ebrios. 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25

CAP. XIII.

Ecce omnia hæc vidit oculus meus; audivit auris mea, et intellexit sibi. Secundum scientiam vestram novi etiam ego, nec differo ego à vobis. Veruntamen ad omnipotentem loquar: et disputare cum Deo volo. Et vos utique estis coacervantes mendacium; quasi medici idolis, *& caro mortua quam excîdit cultor*, sic estis omnes vos. *Utinam* tacentes taceretis, et sit vobis in sapientiam? Audite nunc correctionem meam, et contentionem labiorum meorum auscultate. Nunquid Deo loquemini mendacium, et ad eum loquemini *dolum*? Nunquid faciem ejus accipietis, aut pro Deo contendetis? Nonne rectum esset quòd scrutaretur vos? an quemadmodum irridetur filius hominis, irridetis *eum*? Corripiendo corripiet vos, si in abscondito faciem ejus accipitis. Nonne cùm elevatus fuerit super solium judicii terror ejus conturbabit vos, et timor ejus irruet super vos. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11

איוב : יג

12 זִכְרֹנֵיכֶם מִשְׁלֵי־אֵפֶר לְגַבֵּי־חֹמֶר גַּבֵּיכֶם׃
13 הַחֲרִישׁוּ מִמֶּנִּי וַאֲדַבְּרָה־אָנִי וְיַעֲבֹר עָלַי מָה׃
14 עַל־מָה ׀ אֶשָּׂא בְשָׂרִי בְשִׁנָּי וְנַפְשִׁי אָשִׂים בְּכַפִּי׃
15 הֵן יִקְטְלֵנִי לא אֲיַחֵל אַךְ־דְּרָכַי אֶל־פָּנָיו אוֹכִיחַ׃
16 גַּם־הוּא־לִי לִישׁוּעָה כִּי־לֹא לְפָנָיו חָנֵף יָבוֹא׃
17 שִׁמְעוּ שָׁמוֹעַ מִלָּתִי וְאַחֲוָתִי בְּאָזְנֵיכֶם׃
18 הִנֵּה־נָא עָרַכְתִּי מִשְׁפָּט יָדַעְתִּי כִּי־אֲנִי אֶצְדָּק׃
19 מִי־הוּא יָרִיב עִמָּדִי כִּי־עַתָּה אַחֲרִישׁ וְאֶגְוָע׃
20 אַךְ־שְׁתַּיִם אַל־תַּעַשׂ עִמָּדִי אָז מִפָּנֶיךָ לֹא אֶסָּתֵר׃
21 כַּפְּךָ מֵעָלַי הַרְחַק וְאֵמָתְךָ אַל־תְּבַעֲתַנִּי׃
22 וּקְרָא וְאָנֹכִי אֶעֱנֶה אוֹ־אֲדַבֵּר וַהֲשִׁיבֵנִי׃
23 כַּמָּה לִי עֲוֹנוֹת וְחַטָּאוֹת פִּשְׁעִי וְחַטָּאתִי הֹדִיעֵנִי׃
24 לָמָּה־פָנֶיךָ תַסְתִּיר וְתַחְשְׁבֵנִי לְאוֹיֵב לָךְ׃
25 הֶעָלֶה נִדָּף תַּעֲרוֹץ וְאֶת־קַשׁ יָבֵשׁ תִּרְדֹּף׃
26 כִּי־תִכְתֹּב עָלַי מְרֹרוֹת וְתוֹרִישֵׁנִי עֲוֹנוֹת נְעוּרָי׃
27 וְתָשֵׂם בַּסַּד ׀ רַגְלַי וְתִשְׁמוֹר כָּל־אָרְחֹתָי עַל־שָׁרְשֵׁי רַגְלַי תִּתְחַקֶּה׃
28 וְהוּא כְּרָקָב יִבְלֶה כְּבֶגֶד אֲכָלוֹ עָשׁ׃

CAP. XIV. יד

1 אָדָם יְלוּד אִשָּׁה קְצַר יָמִים וּשְׂבַע־רֹגֶז׃
2 כְּצִיץ יָצָא וַיִּמָּל וַיִּבְרַח כַּצֵּל וְלֹא יַעֲמוֹד׃
3 אַף־עַל־זֶה פָּקַחְתָּ עֵינֶךָ וְאֹתִי תָבִיא בְמִשְׁפָּט עִמָּךְ׃
4 מִי־יִתֵּן טָהוֹר מִטָּמֵא לֹא אֶחָד׃
5 אִם חֲרוּצִים ׀ יָמָיו מִסְפַּר־חֳדָשָׁיו אִתָּךְ חֻקָּיו עָשִׂיתָ וְלֹא יַעֲבֹר׃
6 שְׁעֵה מֵעָלָיו וְיֶחְדָּל עַד־יִרְצֶה כְּשָׂכִיר יוֹמוֹ׃
7 כִּי יֵשׁ לָעֵץ תִּקְוָה אִם־יִכָּרֵת וְעוֹד יַחֲלִיף וְיֹנַקְתּוֹ לֹא תֶחְדָּל׃
8 אִם־יַזְקִין בָּאָרֶץ שָׁרְשׁוֹ וּבֶעָפָר יָמוּת גִּזְעוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

12 Memoria veſtra comparabitur cineri, & redigentur in lutum 13 cervices veſtræ. Tacete paulisper, ut loquar quodcunque 14 mihi mens ſuggeſſerit. Quare lacero carnes meas dentibus meis, & animam meam porto 15 in manibus meis? Etiam ſi occiderit me, in ipſo ſperabo: veruntamen vias meas in con-16ſpectu ejus arguã. Et ipſe erit ſalvator meus: non enim veniet in conſpectu ejus omnis 17 hypocrita. Audite ſermonem meum, & ænigmata percipite 18 auribus veſtris. Si fuero judicatus, ſcio quod juſtus in-19veniar. Quis eſt qui judicetur mecum? veniat: quare ta-20cens conſumor? Duo tantùm ne facias mihi, & tunc à facie 21 tua non abſcondar: Manum tuam longe fac a me, & for-22mido tua non me terreat. Voca me, & ego reſpondebo tibi: aut certe loquar, & tu re-23ſponde mihi. Quantas habeo iniquitates & peccata! ſcelera mea & delicta oſtende mihi. 24 Cur faciem tuam abſcondis, & arbitraris me inimicum tu-25um? Contra folium, quod vento rapitur, oſtendis potentiam tuam, et ſtipulam ſiccam 26 perſequeris: Scribis enim contra me amaritudines, et conſumere me vis peccatis 27 adoleſcentiæ meæ. Poſuiſti in nervo pedem meum, et obſervaſti omnes ſemitas meas, et veſtigia pedum meorum con-28ſideraſti: Qui quaſi putredo conſumendus ſum, et quaſi veſtimentum, quod comeditur a tinea.

CAP. XIV.

1 HOmo natus de muliere, brevi vivens tempore, reple-2tur multis miſeriis. Qui quaſi flos egreditur et conteritur, et fugit velut umbra, et nunquam in eodem ſtatu perma-3net. Et dignum ducis ſuper hujuſcemodi aperire oculos tuos, et adducere eum tecum 4 in judicium? Quis poteſt facere mundum de immundo conceptum ſemine? nonne tu 5 qui ſolus es? Breves dies hominis ſunt, numerus menſium ejus apud te eſt: conſtituiſti terminos ejus, qui præteriri 6 non poterunt. Recede paululum ab eo, ut quieſcat, donec optata veniat, ſicut mercena-7rii, dies ejus. Lignum habet ſpem: ſi præciſum fuerit, rurſum vireſcit, et rami ejus pul-8lulant. Si ſenuerit in terra radix ejus, et in pulvere emortuus fuerit truncus illius,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 † Ἀποβήσεται δὲ ὑμῶν τὸ γαυρίαμα ἴσα σποδῷ, † τὸ δὲ σῶμα πήλινον. 13 † Κωφεύσατε ἵνα λαλήσω, καὶ ἀναπαύσωμαι (ν) θυμοῦ, 14 † Ἀναλαβὼν τὰς σάρκας μου τοῖς (ξ) ὀδοῦσι, † ψυχὴν δέ μου θήσω (ο) ἐν χειρί. 15 † Ἐάν με χειρώσηται ὁ δυνάστης, ἐπεὶ καὶ ἦρκται, † (π) ἦ μὴν λαλήσω καὶ ἐλέγξω ἐναντίον αὐτοῦ. 16 † Καὶ τοῦτό μοι ἀποβήσεται εἰς σωτηρίαν, † (ρ) οὐ γὰρ ἐναντίον αὐτοῦ δόλος εἰσελεύσεται. 17 † Ἀκούσατε ἀκούσατε τὰ ῥήματά μου, † ἀναγγελῶ γὰρ ὑμῶν ἀκουόντων. 18 † Ἰδοὺ ἐγὼ ἐγγύς εἰμι τοῦ κρίματός μου, † οἶδα ἐγὼ ὅτι δίκαιος ἀναφανοῦμαι. 19 † Τίς γάρ ἐστιν ὁ κριθησόμενός μοι, (σ) ὅτι νῦν κωφεύσω καὶ ἐκλείψω; 20 † Δυεῖν δέ μοι (τ) χρήσῃ, τότε ἀπὸ τοῦ προσώπου σου οὐ κρυβήσομαι. 21 † Τὴν (υ) χεῖρα ἀπ' ἐμοῦ ἀπέχου, † καὶ ὁ φόβος σου μή με καταπλησσέτω. 22 † Εἶτα καλέσεις, ἐγὼ δέ σοι (φ) ὑπακούσομαι· † ἢ λαλήσεις, ἐγὼ δέ σοι δώσω (χ) ἀνταπόκρισιν. 23 † Πόσαι εἰσὶν αἱ ἁμαρτίαι μου καὶ ἀνομίαι μου; 24 (ψ) δίδαξόν με τίνες εἰσί; † Διατί ἀπ' ἐμοῦ κρύπτῃ, † ἥγησαι δέ με (ω) ὑπεναντίον σοι; 25 † Ἢ (α) ὡς φύλλον κινούμενον ὑπὸ ἀνέμου εὐλαβηθήσῃ; † ἢ ὡς χόρτῳ φερομένῳ ὑπὸ πνεύματος † ἀντίκειταί (β) μοι; 26 Ὅτι κατέγραψας κατ' ἐμοῦ κακά, (γ) περιέθηκας δέ μοι νεότητος 27 ἁμαρτίας. † Ἔθου δέ μου τὸν πόδα (δ) ἐν κωλύματι, ἐφύλαξας δέ μου πάντα τὰ ἔργα, † εἰς δὲ ῥίζας (ε) τῶν 28 ποδῶν μου ἀφίκου. (ζ) Ὃ παλαιοῦται ἴσα ἀσκῷ, ἢ ὥσπερ ἱμάτιον σητόβρωτον.

12 Evadet autem elatio veſtra tanquam cinis, corpus autem luteum. 13 Obmuteſcite ut loquar, et requieſcam ab ira, 14 Apprehendens meas carnes dentibus, & animam meam ponam in manu. 15 Licèt opprimat me, qui Potens eſt, quoniam & cœpit; tamen loquar, & coram eo arguam: 16 Et hoc mihi evadet in ſalutem: non enim coram eo dolus ingredietur. 17 Audite, audite verba mea: narrabo enim vobis audientibus: 18 Ecce ego appropinquo judicio meo: novi ego, quod juſtus apparebo. 19 Quis eſt enim qui judicium ſubiturus mihi; (e) quia nunc obmuteſcam, & deficiam? 20 Duo (f) autem mihi præbeas: tunc à (g) facie tua non abſcondar: 21 Manum aufer à me, & timor tuus non me terreat. 22 Deinde vocabis, ego autem tibi obediam: aut (h) loquêris, ego autem tibi dabo reſponſum. 23 Quot ſunt peccata mea, & iniquitates meæ? doce me quænam ſunt? 24 Cur abſconderis à me, & putas me eſſe contrarium tibi? 25 Nunquid quaſi folium, quod movetur à vento, vereberis? aut quaſi fœno, quod fertur à ſpiritu, oppoſuiſti te mihi? 26 Quoniam ſcripſiſti contra me mala, & impoſuiſti mihi peccata juventutis: 27 Et poſuiſti in (i) impedimento pedem meum, & obſervaſti omnia opera mea: & in radices pedum meorum perveniſti: 28 Qui veteraſcit (k) ſicut uter, aut velut veſtimentum, quod à tinea comeſtum eſt.

ΚΕΦ. ιδ'.

1 † Βροτὸς γὰρ γεννητὸς γυναικὸς, ὀ-2λιγόβιος, καὶ πλήρης ὀργῆς. † Ἢ ὥσπερ ἄνθος ἀνθῆσαν ἐξέπεσεν, † ἀπέδρα 3 δὲ ὥσπερ σκιὰ, καὶ οὐ μὴ στῇ. † Οὐχὶ καὶ τούτου λόγον ἐποιήσω, † καὶ τοῦτον ἐποίησας (α) εἰσελθεῖν ἐν κρίματι ἐνώ-4πιόν σου; † Τίς γὰρ (β) καθαρὸς ἔ-5σται ἀπὸ ῥύπου; (γ) ἀλλ' οὐθείς. † Ἐὰν καὶ μία ἡμέρα ὁ βίος αὐτοῦ ἐπὶ τῆς γῆς. † ἀριθμητοὶ δὲ μῆνες αὐτοῦ (δ) παρ' αὐτοῦ· 6 † εἰς χρόνον ἔθου, καὶ οὐ μὴ ὑπερβῇ. † Ἀπόστα (ε) ἀπ' αὐτοῦ, ἵνα ἡσυχάσῃ, καὶ εὐδοκήσῃ τὸν βίον, ὥσπερ ὁ μισθωτός. 7 † Ἔστι γὰρ δένδρῳ ἐλπὶς, † (ζ) ἐὰν γὰρ ἐκκοπῇ, ἔτι ἐπανθήσει, † καὶ ὁ ῥάδαμνος 8 αὐτοῦ οὐ μὴ ἐκλείπῃ. † Ἐὰν γὰρ γηράσῃ ἐν γῇ ἡ ῥίζα αὐτοῦ, † ἐν δὲ πέτρᾳ τελευτήσῃ, τὸ στέλεχος αὐτοῦ

CAP. XIV.

1 HOmo enim natus ex muliere, brevi vivens tempore, & 2 plenus (a) iracundiæ, Aut tanquam flos erumpens decidit, aufugit autem velut umbra: & non ſtabit. 3 Nunquid & hujus rationem feciſti, & hunc feciſti venire in judicium coram te? 4 Quis enim mundus erit à ſorde? at nemo, 5 Et ſi unus dies ſit vita ejus ſuper terram: dinumerati enim ſunt menſes ejus (b) ab eo: ad tempus poſuiſti, & non tranſgredietur. 6 Recede (c) ab eo, ut requieſcat, & bene velit vitam, ſicut mercenarius. 7 Eſt enim arbori ſpes: Si enim exciſa fuerit, adhuc pullulabit, & (d) germen ejus non deficiet: 8 Si enim ſenuerit in terra radix ejus, & in petra autem obierit truncus ejus

MS. A. (ν) θυμῷ μου, (ξ) ὀδοῦσίν μου, (ο) ἐν χερσίν μου. Ἐὰν μή με (π) οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ λαλήσω καὶ ἐλέγξω ὑμᾶς ἐναντίον αὐτοῦ (ρ) οὐ γὰρ εἰσελεύσεται ἐναντίον αὐτοῦ δόλος. Ἀκούσατέ μου, ἀκούσατέ μου τὰ ῥήματα, (σ) ἵνα τί νῦν (τ) χρεία. (υ) χεῖρά σου ἀπόσχου ἀπ' ἐμοῦ. (φ) ὑπακούω [illegible] λαλήσεις, (χ) ἀπόκρισιν. (ψ) τίνες εἰσὶν δίδαξόν με. Διατί με [illegible] (ω) [illegible] ἐναντίον σου (α) ὥσπερ [illegible] ἢ ὡς χόρτον φερόμενον (β) δέ μοι. (γ) καὶ περιέθηκάς μοι (δ) ἐν κωλύματι, καὶ ἐφύλαξάς μου (ε) τοῖς ποσίν μου (ζ) Ὃς παλαιοῦται. Κεφ. ιδ'. MS. A. (α) ἐν κρίματι εἰσελθεῖν ἐπὶ σοῦ (β) ἔσται καθαρὸς (γ) οὐδὲ εἷς. Ἐὰν καὶ μιᾶς ἡμέρας γένηται ὁ βίος (δ) παρ' αὐτῷ. εἰς χρόνον [illegible] (ε) ἀπ' ἐμοῦ, ἵνα ἡσυχάσω, καὶ εὐδοκήσω μου τὸν βίον, ὥσπερ μισθωτός. (ζ) ἐὰν δὲ καὶ ἐκκοπῇ, πάλιν ἀνθήσει, (η) ἐὰν δὲ πέτραις τελευτήσει,

תרגום TARGUM.

12 דכרנכון מתיל לקטמא לגב טינא גביכון׃ 13 שתוקו מני ואמלל אנא ויעבר עלי מדעם׃ 14 מטול מה אטול בסרי בככי ונפשי אשוי כד על גב ידוי׃ 15 הא אין יקטלנני קדמוי אצלי ברם אורחתי קדמוי אכסן׃ 16 לחוד הוא לי לפורקנא ארום לא קדמוי דיקטיר ייעול׃ 17 שמעו וקבילו מלתי ותנויי באודניכון׃ 18 הא כדון סדרית דינא ידעית ארום אנא זכאי׃ 19 מן הוא דינצי בהדי ארום השתא אשתוק ואתנגיד׃ 20 לחוד תרתין לא תעבד עמי הידין מן קדמך לא אטמר׃ 21 ידך מעלוי ארחק ודחלתך לא תבעתינני׃ 22 וקרי ואנא אתיב או אמלל ותתיבנני׃ 23 כמה לי עוין וחובין מרודי וחובתי אודעיתי׃ 24 למה שכינתך תסלק ותחשבנני לבעיל דבבא לך׃ 25 הטרפא דשקיף תתבר וית גלא יבש תרדוף׃ 26 ארום תכתוב עלי מרירתא ותרתנני עוית טליותי׃ 27 ותשוי בסדא רגלי ותנטור כולהון אסרטי על סמיוני רגלי תרשום׃ 28 והוא היך רקבובית יתבלי היך לבוש דנשריה וחי׃

יד

1 בר נש דאתיליד מן אתתא זעיר יומין ושבע רוגזא׃ 2 היך נצא נפק ואתמולל ועריק היך טולא ולא יקום׃ 3 לחוד על דין פקחתא עינך ויתי תעיל לדינא עמך׃ 4 מן יתן דכי מן גבר דאסתאב בחובין אלהין אלהא דהוא חד דישבוק ליה׃ 5 אין לא יתובון [illegible] עבירת ולא יעבר׃ 6 פסוק מניה ויפסוק מחוה עד דיקבל סוטריה היך כאגירא ביומיה׃ 7 ארום אית לאילנא סבר [illegible] לא תפסוק׃ 8 אין מיסב בארעא שורשוהי ובעפרא ימות נצביה׃

Verſio SYRIACA.

* ܐܬܕܟܪܘ ܕܡܢ ܥܦܪܐ ܗܘ ܫܘܠܛܢܟܘܢ. ܘܥܠ ܓܢܒ ܛܝܢܐ ܗܘ ܡܫܪܝܟܘܢ. * ܫܬܘܩܘ ܡܢܝ. ܘܐܡܠܠ 12 13
ܐܦ ܐܢܐ. ܘܐܡܪ ܟܠܡܕܡ ܕܥܒܪ ܥܠܝ. * ܠܡܢܐ ܐܫܩܘܠ ܐܢܐ ܒܣܪܝ ܒܫܢܝ. ܘܢܦܫܝ ܐܣܝܡ ܒܐܝܕܝ. * ܐܢ 14 15
ܢܩܛܠܢܝ. ܠܗ ܗܘ ܡܣܟܐ ܐܢܐ ܠܒܠܚܘܕ. ܡܛܠ ܕܐܘܪܚܬܝ ܩܕܡܘܗܝ ܐܢܝܢ. * ܘܐܦ ܗܘ ܢܗܘܐ ܠܝ 16
ܦܘܪܩܢܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܥܐܠ ܩܕܡܘܗܝ ܚܢܦܐ. * ܫܡܥܘ ܫܡܥܘ ܡܠܝ. ܘܚܘܝܘܬܝ ܒܐܕܢܝܟܘܢ. * ܗܐ 17 18
ܐܦ ܐܢܐ ܡܚܘܐ ܐܢܐ ܕܝܢܝ. ܘܝܕܥ ܐܢܐ ܕܐܢܐ ܗܘ ܙܟܝ. * ܡܢܘ ܕܢܬܕܝܢ ܥܡܝ. ܕܗܫܐ ܐܫܬܘܩ ܘܐܬܢܝܚ. * ܬܪܬܝܢ 19 20
ܐܢܝܢ. ܠܐ ܬܥܒܕ ܥܡܝ. ܘܗܝܕܝܢ ܡܢ ܩܕܡܝܟ ܠܐ ܐܬܛܫܐ. * ܐܝܕܟ ܠܐ ܬܪܚܩ ܡܢܝ. ܘܕܚܠܬܟ ܠܐ ܬܒܥܬܢܝ. 21
* ܩܪܝܢܝ. ܘܐܢܐ ܐܥܢܐ. ܐܘ ܐܡܠܠ. ܘܐܢܬ ܦܢܝ ܠܝ ܦܬܓܡܐ. * ܟܡܐ ܐܝܬ ܠܝ ܚܛܗܐ. ܘܚܘܒܐ. ܚܛܗܝ ܘܣܟܠܘܬܝ 22 23
ܐܘܕܥܝܢܝ. * ܠܡܢܐ ܡܗܦܟ ܐܢܬ ܐܦܝܟ ܡܢܝ. ܘܚܫܒܬܢܝ ܠܟ ܐܝܟ ܒܥܠܕܒܒܐ. * ܠܛܪܦܐ ܡܚܒܠܐ 24 25
ܝܒܝܫܐ ܕܐܫ ܐܢܬ. ܘܒܬܪ ܚܨܕܐ ܝܒܝܫܐ ܪܕܦ ܐܢܬ. * ܕܟܬܒܬ ܥܠܝ ܡܪܝܪܬܐ. ܘܐܘܪܬܬܢܝ ܚܛܗܐ ܕܛܠܝܘܬܝ. 26
* ܘܣܡܬ ܪ̈ܓܠܝ ܒܣܕܐ. ܘܢܛܪܬ ܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܝ. ܘܥܠ ܥܩܒܬܐ ܕܪ̈ܓܠܝ ܐܬܒܩܝܬ. * ܘܗܘ ܐܝܟ ܙܩܐ ܕܒܠܐ. 27 28
ܘܐܝܟ ܠܒܘܫܐ ܕܐܟܠܗ ܣܣܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܕ *

* ܗܟܢܐ ܗܘ ܐܢܫܐ. ܝܠܝܕ ܐܢܬܬܐ. ܒܨܝܪ ܝܘܡܝܢ ܗܘ. ܘܣܒܥ ܪܘܓܙܐ. * ܘܐܝܟ ܒܘܥܐ ܢܦܩ. ܘܡܬܝܒܫ 1 2
ܘܡܬܚܪܟ. ܘܥܪܩ ܐܝܟ ܛܠܠܐ. ܘܠܐ ܩܐܡ. * ܐܦ ܥܠ ܗܢܐ ܦܬܚܬ ܥܝܢܝܟ. ܘܐܥܠܬܝܗܝ ܥܡܟ ܒܕܝܢܐ. 3
* ܡܢܘ ܢܬܠ ܕܟܝܐ ܡܢ ܛܢܦܐ. ܐܦܠܐ ܚܕ. * ܐܢ ܦܣܝܩܝܢ ܐܢܘܢ ܝܘܡܘܗܝ: ܘܡܢܝܢܐ ܕܝܪ̈ܚܘܗܝ 4
ܫܠܡ. ܘܬܚܘܡܐ ܣܡܬ ܠܗ. ܕܠܐ ܢܥܒܪܝܘܗܝ. * ܘܫܒܘܩܝܗܝ ܥܕܡܐ ܕܢܫܠܡܘܢ ܐܝܟ ܐܓܝܪܐ ܝܘܡܘܗܝ. * ܡܛܠ 5 6
ܕܐܝܬ ܠܩܝܣܐ ܣܒܪܐ. ܕܐܢ ܡܬܦܣܩ. ܬܘܒ ܡܦܪܥ. ܘܢܝܩܘܗܝ ܠܐ ܦܣܩܝܢ. * ܘܐܢ ܢܣܒ ܒܐܪܥܐ 7 8
ܥܩܪܗ. ܘܒܥܦܪܐ ܢܡܘܬ ܢܨܒܬܗ.

Verſio ARABICA.

* اذكروا ان من التراب سلطانكم. وعلى جانب الطين مسكنكم * فاصمتوا عني فاتكلم ايضا انا واقول 12 13
جميع الذي جار علي * ماذا انا اخذ لحمي باسناني. ونفسي موضوعة في يدي * فان هو قتلني. فاياه 14 15
ارجوا فقط. لان طرايقي بين يديه * وهو يكون لي مخلصا من اجل انه لا يدخل قدامه بذيل * فاسمعوا 16 17
سمعا قولي ومعرفتي اقولها قدامكم * فاني ايضا اقرب قضاي. وانا اعلم اني بري * من الذي يحتج علي 18 19
حتي الان اسكت واطمان * ولكن كلتيهما لا تبعد عني. وعند ذلك من بين يديك لا تنساني * ويدك 20 21
لا تبعدها عني ومخافتك لا تفزعني * ادعوني وانا اجيب. او اتكلم فترد علي الجواب * كم لي من الاثام 22 23
والاحواب. اثامي وخطاياي فاعلمني * لماذا ترد وجهك عني وجعلتني لك مثل العدو * للورق اليابس 24 25
المذرور تدوس. او للقش اليابس تطرد * حين كتبت علي النقمة. وتذكر علي ايام صباي * وجعلت 26 27
رجلي في الوثاق. وحفظت جميع طرايقي. وعلى قود رجلي تنظر * وهو مثل السقاء البالي. ومثل 28
اللبوس الذي قد اكله السوس *

الفصل الرابع عشر

* كذلك هو الانسان ولد المراة وناقص الايام هو. وقابل الافزاع * مثل النبات يخرج ثم ييبس ويحترق. 1 2
ويذهب مثل الظل ولا يبقا * وايضا على هذا فتحت عينيك. واياه تدخل في القضا معك * من 3 4
الذي يخرج الطاهر من النجس. ولا احدا * ان كانت ايام حياته قد انقطعت. وعدد شهوره قد 5
انقضت. حدا جعلت لا يتجاوز * ويقيم حتي يسرع مثل الاجير ايامه * من اجل انه يكون للعود رجا. 6 7
ان هو قطع فانه ايضا يخلف واغصانه لا تنفد * وان عتق في الارض اصله وفي التراب يموت نباته. 8

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Mementote quod de terra est principatus veſter, & ſecus lutum eſt habitatio veſtra. 12 *Silete à me, & loquar ego etiam, & dicam omnia quæ ſuper me tranſierunt.* 13 *Quare ego accipio carnem meã dentib. meis, & anima mea poſita in manibus meis.* 14 *Si ipſe occiderit me, in ipſo ſperabo tantum; quoniam viæ meæ in conſpectu ejus,* 15 *Et ipſe erit mihi ſalvator; quoniam non intrat in conſpectum ejus profan⁹.* 16 *Audientes audite ſermonem meum, & (c) ſcientiam meam dicam coram vobis:* 17 *Quoniam ego quoque exponam judicium meum, & ego ſcio me eſſe immunem.* 18 *Quis eſt qui litigat adverſum me: ut nunc taceã, & (d) tutus ſim?* 19 *Veruntamen duo hæc ne removeas à me, & tunc de conſpectu tuo non obliviſcêris mei;* 20 *Manum tuam ne elonges à me, et timor tuus non me terreat.* 21 *Voca me, & ego reſpondebo: aut loquar, & tu reſponſum mihi dabis.* 22 *Quot ſunt mihi ſcelera & debita? ſcelera mea & peccata mea notifica mihi.* 23 *Cur avertis faciem tuam à me? & poſuiſti me tibi quaſi inimicum?* 24 *Folia ſicca dilapſa conculcas, & ſtipulas ſiccas perſequeris?* 25 *Cùm ſcripſeris contra me (e) vindictam, & commemoris adverſum me delicta juventutis meæ;* 26 *Et poſueris pedes meos in vinculo, & obſervaveris omnes ſemitas meas, & conſideres vim pedum meorum:* 27 *Ipſe verò ſit quaſi utercul⁹ marcidus, & velut veſtimentum, quod jam comeſtum eſt à tinea.* 28

CAP. XIV.

Sic eſt homo natus de muliere, & paucorum dierum, & ſuſceptibilis timorum eſt: 1 *Sicut flos egreditur, (a) tum exſiccatur, & comburitur, & abit velut umbra, & non remanet.* 2 *Etiam ſuper hunc aperuiſti oculos tuos, & adducis eum tecum in judicium?* 3 *Quis producit mundum de immundo? nec ull⁹ quidẽ,* 4 *(b) Si dies vitæ ejus præciſi ſunt, & numerus menſium ej⁹ jam finivit: (c) terminum poſuiſti que non præteribit,* 5 *Permanet donec percurrant ſicut mercenarii dies ejus.* 6 *Nam ligno ſpes eſt quòd ſi abſciſſum fuerit, rurſus germinet, & rami ejus non pereant.* 7 *Quòd ſi ſenuerit in terra radix ejus, & in terra mortuum fuerit germen ejus;* 8

INTERP. SYRIACA.

(c) declarationem meã (d) requieſcã? (e) correptionẽ, Cap. xxii. (a) marceſcit, & exſiccatur, & fugit (b) Si dies ejus præciſi (c) legem

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

[illegible] vestra comparata eſt cineri: apud lutum ſunt dorſa veſtra. Tacete à me, & loquar; & tranſeat ſuper me quicquid fuerit. Quare tollam carnem meam 12 13
[illegible] dentibus meis, & animam meam ponam quaſi in ſuperficie manuum [illegible]? Ecce ſi occiderit me, coram eo orabo: veruntamen vias meas coram eo arguam. Atta- 14 15
men ipſe eſt mihi in ſalutem, quoniam non ingredietur coram eo delator. Audite & ſuſcipite verba mea, & conventionem meam in auribus veſtris. Ecce nunc or- 16 17
dinavi judicium: ſcio quoniam juſtus [illegible]. Quis eſt qui contendat mecum? quoniam nunc ſi tacuero, emoriar. Attamen duo ne facias mihi: tunc à facie 18 19
tua non abſcondar. Manum tuam in longe fac à me, & timor tuus ne conturbet me. Et vocabis, & ego reſpondebo tibi: aut loquar, & reſpondebis mihi. Quantas 20 21
habeo iniquitates & peccata? [illegible] mea & delicta mea [illegible] mihi. Quare majeſtatem tuam auferes, & arbitraris me inimicum tuum? Nunquid folium quod 22 23
impellitur conteres, & [illegible] perſequeris? Scribis enim contra me amaritudines, & hæreditare me facis iniquitates adoleſcentiæ meæ. Et ponis velut 24 25
in nervo pedes meos, & obſervas omnes ſemitas meas; & veſtigia pedum meorum ſignaſti. Et quaſi putredo corrumpitur, & ſicut veſtimentum quod conſumit tinea. 26 27 28

CAP. XIV.

Filius hominis [illegible] muliere [illegible] dierum & ſatiatus ira: Sicut flos egreditur & conteritur; & fugit velut umbra, & non permanet. Veruntamen ſuper 1 2 3
hunc aperuiſti oculos tuos [illegible] in judicium. Quis dabit mundum [illegible] qui eſt pollutus in peccatis, niſi Deus qui unus eſt, qui parcet ei? Si non 4 5
convertatur [illegible]: decreta ei feciſti & non præteribit. Recede ab eo, & ceſſet plaga ejus, donec accipiat ſtipen- 6
[illegible] Habet enim arbor ſpem ſi ſucciſa fuerit, adhuc enim germinabit, & ramus ejus non ceſſabit. Si ſenuerit in terra radix 7 8
ejus, & in pulvere [illegible] ejus:

איוב : טו

.plantatio ſicut meſſem faciet & ; germinabit aquarum odore Ab
מריח מים יפרח ועשה קציר כמו־נטע : 9
? ille ubi & , homo obiit & ; infirmabitur & , morietur vir Et
10 וגבר ימות ויחלש ויגוע אדם ואיו :
.areſcet & , exiccabitur fluvius & ; mari de aquæ Abierunt
11 אזלו־מים מני־ים ונהר יחרב ויבש :
non cœlos non ad uſque , reſurget non & , jacuit vir Et
12 ואיש שכב ולא־יקום עד־בלתי שמים לא
det Quis .ſuo ſomno à ſuſcitabuntur non & ; expergiſcentur
13 יקיצו ולא יערו משנתם : מי יתן
: tuum naſum converti ad uſque me abſcondas ,me abſcondas ſepulchro in
בשאול תצפנני תסתירני עד־שוב אפך
Fuerit mortuus Si .mei recorderis & , ſtatutum mihi ponas
14 תשית לי חק ותזכרני : אם־ימות
venire uſque ; expectabo meæ militiæ diebus cunctis ? vivet nunquid , vir
גבר היחיה כל־ימי צבאי איחל עד־בוא
opus ad ; tibi reſpondebo ego & , Vocabis .mei mutationem
15 חליפתי : תקרא ואנכי אענך למעשה
; numerabis meos greſſus nunc Quia ? concupiſces tuarũ manuum
16 ידיך תכסף : כי־עתה צעדי תספור
faſciculo in Signata .meum peccatum ſuper obſervabis non
17 לא תשמור על־חטאתי : חתם בצרור
mons verè Et .mea prævaricatione ſuper conſues & ,mea prævaricatio
18 פשעי ותטפל על־עוני : ואולם הר־
Lapides .ſuo loco è transferetur ſaxum & ; defluet cadens
19 נופל יבול וצור יעתק ממקומו : אבנים
; terræ pulverem ejus ſponte naſcentia inundabit , aquæ contuderunt
שחקו מים תשטף ספיחיה עפר־ארץ
: ibit & ;perpetuum in ei Prævalebis .perdidiſti hominis expectationẽ &
20 ותקות אנוש האבדת : תתקפהו לנצח ויהלך
; neſciet & ,ejus filii fient Inclyti .eum emittes & , ejus facies mutans
21 משנה פניו ותשלחהו : יכבדו בניו ולא־ידע
; dolebit eo ſuper ejus caro Veruntamen .eis advertet non & , viliſcent &
22 ויצערו ולא־יבין למו : אך בשרו עליו יכאב
.lugebit ſe ſuper ejus anima &
ונפשו עליו תאבל :

CAP. XV. טו

ſapiens Nunquid : dixit & , Temanites Eliphaz reſpondit Et
1 2 ויען אליפז התימני ויאמר : החכם
? ſuum ventrem Euro implebit & ; venti ſcientiam reſpondebit
יענה דעת־רוח וימלא קדים בטנו :
? eis in proficiet non , ſermonibus & ; proderit non verbo in Arguere
3 הוכח בדבר לא יסכון ומלים לא־יועיל בם :
.Dei facies ad loquelam imminues & ; timorem diſſipabis tu Etiam
4 אף־אתה תפר יראה ותגרע שיחה לפני־אל :
.verſutorum linguam eliges & ; tuum os tua iniquitas docebit Quia
5 כי־יאלף עונך פיך ותבחר לשון ערומים :
teſtimonium reddent tua labia & ; ego non & , tuum os te peraget Reum
6 ירשיעך פיך ולא־אני ושפתיך יענו־
collium facies ad & ? eris natus Adam primus Nunquid .te in
7 בך : הראישון אדם תולד ולפני גבעות
te ad diminuetur & ; audies Dei ſecreto in Nunquid ? es formatus
8 חוללת : הבסוד אלוה תשמע ותגרע אליך
non & , intelliges ? ſciamus non & , nôſti Quid ? ſapientia
9 חכמה : מה־ידעת ולא נדע תבין ולא־
provectum ,nos inter decrepitus etiam ,canus Etiam ? illud nobiſcum
10 עמנו הוא : גם־שב גם־ישיש בנו כביר
; Dei conſolationes te à parum Nonne .diebus tuo patre præ
11 מאביך ימים : המעט ממך תנחומות אל
quid & ; tuum cor te capiet Quid ? tecum latet verbum &
12 ודבר לאט עמך : מה־יקחך לבך ומה־
? tui oculi connivent
ירזמון עיניך :

Verſio VULG. LAT.

9 Ad odorem aquæ germinabit,
et faciet comam quaſi cùm primùm
10 plantatum eſt: Homo
verò cùm mortuus fuerit, &
nudatus atque conſumptꝰ, ubi,
11 quæſo, eſt? Quomodò ſi recedant
aquæ de mari, & fluvius
12 vacuefactus areſcat: Sic homo
cùm dormierit, non reſurget;
donec atteratur cœlum,
non evigilabit, nec conſurget
13 de ſomno ſuo. Quis mihi hoc
tribuat, ut in inferno protegas
me, & abſcondas me, donec
pertranſeat furor tuus, &
conſtituas mihi tempus, in quo
14 recorderis mei? Putáſne mortuus
homo rurſum vivat? cunctis
diebus, quibus nunc milito,
expecto donec veniat immutatio
15 mea. Vocabis me, et
ego reſpondebo tibi: operi
manuum tuarum porriges dexteram.
16 Tu quidem greſſus
meos dinumeráſti, ſed parce
17 peccatis meis. Signáſti quaſi
in ſacculo delicta mea, ſed curáſti
18 iniquitatem meam. Mons
cadens defluit, & ſaxum tranſfertur
19 de loco ſuo. Lapides
excavant aquæ, & alluvione
paulatim terra conſumitur: &
hominẽ ergò ſimiliter perdes.
20 Roboráſti eum paululùm ut in
perpetuum tranſiret: immutabis
faciem ejus, & emittes
21 eum. Sive nobiles fuerint filii
ejus, ſive ignobiles, non intelliget.
22 Attamen caro ejus
dum vivet dolebit, & anima
illius ſuper ſemetipſo lugebit.

CAP. XV.

1 RESpondens autem Eliphaz
2 Themanites, dixit; Numquid
ſapiens reſpondebit quaſi in
ventum loquens, & implebit
3 ardore ſtomachum ſuum? Arguis
verbis eum qui non eſt æqualis
tibi, & loqueris quod
4 tibi non expedit. Quantum
in te eſt, evacuáſti timorem, et
5 tuliſti preces coram Deo. Docuit
enim iniquitas tua os tuũ,
& imitaris linguam blaſphemantium.
6 Condemnabit te
os tuum, & non ego: & labia
7 tua reſpondebunt tibi. Numquid
primus homo tu natus es,
8 & ante colles formatus? Numquid
conſilium Dei audiſti, &
inferior te erit ejus ſapientia?
9 Quid nôſti quod ignoremus?
quid intelligis quod neſciamꝰ?
10 Et ſenes & antiqui ſunt in nobis,
multò vetuſtiores quàm patres
11 tui. Numquid grande eſt
ut conſoletur te Deus? ſed verba
tua prava hoc prohibent.
12 Quid te elevat cor tuum, &
quaſi magna cogitans, attonitos
habes oculos?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

9 † Ἀπὸ ὀσμῆς ὕδατος ἀνθήσει, † (θ)
ποιήσει δὲ θερισμὸν, ὥσπερ νεόφυτον. †
10 Ἀνὴρ δὲ τελευτήσας ᾤχετο, † (ι) πεσὼν
11 δὲ βροτὸς οὐκ ἔτι ἐστί. † Χρόνῳ γὰρ σπανίζεται
θάλασσα, † (κ) ποταμὸς δὲ ἐρημωθεὶς
12 ἐξηράνθη. † Ἄνθρωπος δὲ κοιμηθεὶς
(λ) οὐ μὴν ἀναστῇ † ἕως ἂν ὁ οὐρανὸς
οὐ μὴ συῤῥαφῇ, † καὶ οὐκ ἐξυπνισθήσονται
13 ἐξ ὕπνου αὐτῶν. † Εἰ γὰρ ὄφελον
ἐν ᾅδῃ με (μ) ἐφύλαξας, † ἔκρυψας
δέ με ἕως ἂν παύσηταί σου ἡ ὀργὴ,
καὶ τάξῃ μοι χρόνον ἐν ᾧ μνείαν
14 μου ποιήσῃ. † Ἐὰν γὰρ ἀποθάνῃ ἄνθρωπος,
ζήσεται † συντελέσας ἡμέρας
τοῦ βίου αὐτοῦ. † (ν) ὑπομενῶ ἕως πάλιν
15 γένωμαι. † Εἶτα (ξ) καλέσεις, ἐγὼ δέ
σοι ὑπακούσομαι, † τὰ δὲ ἔργα τῶν χειρῶν
16 σου μὴ ἀποποιοῦ. Ἠρίθμησας δέ
μου τὰ ἐπιτηδεύματα, καὶ οὐ μὴ παρέλθῃ
17 σε οὐδὲν τῶν ἁμαρτιῶν μου. † Ἐσφράγισας
δέ μου (ʹ) τὰς ἀνομίας ἐν βαλαντίῳ,
(ο) ἐπεσημήνω δὲ εἴ τι ἄκων παρέβην.
18 † Καὶ πλὴν ὄρος (π) πίπτον διαπεσεῖται,
† καὶ πέτρα παλαιωθήσεται
19 ἐκ τοῦ τόπου αὐτῆς. † Λίθους (ρ) ἐλέαναν
ὕδατα, † καὶ κατέκλυσεν ὕδατα
ὕπτια τοῦ χώματος τῆς γῆς· † καὶ
20 ὑπομονὴν ἀνθρώπου ἀπώλεσας. † Ὤσας
αὐτὸν εἰς τέλος, καὶ ᾤχετο· † (σ)
ἐπέστησας αὐτῷ (τ) τὸ πρόσωπον, καὶ ἐξαπέστειλας.
21 † Πολλῶν δὲ γενομένων τῶν
υἱῶν αὐτοῦ, οὐκ οἶδεν· † (υ) ἐὰν δὲ ὀλίγοι
22 γένωνται, οὐκ ἐπίσταται. Ἀλλ' ἢ αἱ σάρκες
αὐτοῦ ἤλγησαν, † ἡ δὲ ψυχὴ αὐτοῦ (φ)
ἐπένθησεν.

Ab odore aquæ germinabit, & faciet meſſem, ſicut novella plantatio. Vir verò cùm mortuus fuerit, abiit: & mortalis, cum ceciderit, non ultrà eſt. Tempore enim rareſcit (f) mare, (g) & fluvius deſolatus exaruit. Homo autem cùm dormierit, non utique reſurget: quoadúſque cœlum (h) non ſit conſutum: & non excitabuntur de ſomno ſuo. Itaque utinam apud inferos me cuſtodiſſes, & abſcondiſſes me, donec requieſceret ira tua, & conſtituas mihi tempus, in quo memoriam mei facias. Si enim mortuus fuerit homo, vivet conſummatis diebus vitæ ſuæ: (i) ſuſtinebo donec rurſus fiam: Deindè vocabis, & ego obediam tibi: ſed opera manuum tuarum ne repellas. Numeráſti autem adinventiones meas, & non præteribit te ullum peccatorum meorum: Signáſti autem in ſacculo iniquitates meas, & annotáſti, ſi quid invitus erravi: Et quidem mons cadens decidet, & petra veteraſcet de loco ſuo: Lapides levigaverunt aquæ, & demerſerunt aquæ ſupini cumuli terræ: & (k) patientiam hominis perdidiſti: Impuliſti eum in finem, & abiit: (l) adjeciſti ei faciem, & dimiſiſti: Et cùm multi fuerunt filii ejus, neſcit: ſin autem pauci (m) fuerint, ignorat: Sed carnes ejus doluerunt, & anima ejus luxit.

ΚΕΦ. ιεʹ.

1 † ὙΠολαβὼν δὲ Ἐλιφὰζ ὁ (α) Θαι-
2 μανίτης, λέγει, (β) † Πότερον σοφὸς ἀπόκρισιν
δώσει συνέσεως (γ) πνεῦμα, †
3 καὶ ἐνέπλησε πόνον γαστρὸς, † (δ) Ἐλέγχων
ἐν ῥήμασιν οἷς οὐ δεῖ, † καὶ ἐν λόγοις οἷς
4 οὐδὲν ὄφελος; † (ε) Οὐ καὶ σὺ ἀπεποιήσω
φόβον, † συνετελέσω δὲ ῥήματα
5 τοιαῦτα ἔναντι (ζ) τοῦ κυρίου; † Ἔνοχος
εἶ ῥήμασι στόματός σου, † (η) οὐδὲ διέκρινας
6 ῥήματα δυναστῶν. † (ʹ) Ἐλέγξαι σε
τὸ σὸν στόμα καὶ μὴ ἐγὼ, † τὰ δὲ χείλη
7 σου (θ) καταμαρτυρήσουσίν σου. † Τί
γάρ; μὴ πρῶτος (ι) ἀνθρώπων ἐγεννήθης;
8 † ἢ πρὸ θινῶν ἐπάγης; † Ἢ σύνταγμα
κυρίου (κ) ἀκήκοας; † ἢ συμβούλῳ
σοι ἐχρήσατο ὁ θεός; † εἰς δέ σε
9 ἀφίκετο σοφία; † Τί γὰρ οἶδας, ὃ οὐκ
οἴδαμεν; † ἢ τί (λ) συνίεις σὺ, ὃ οὐ
10 καὶ ἡμεῖς; † Καί γε πρεσβύτης καί γε παλαιὸς
ἐν ἡμῖν, † βαρύτερος τοῦ πατρός
11 σου ἡμέραις. † Ὀλίγα ὧν ἡμάρτηκας μεμαστίγωσαι,
† μεγάλως ὑπερβαλλόντως λελάληκας.
12 † (μ) Τί ἐτόλμησεν ἡ καρδία
σου; † ἢ (ν) τί ἐπήνεγκαν οἱ ὀφθαλμοί
σου,

CAP. XV.

RESpondens autem Eliphaz Themanites, ait; Nunquid ſapiens reſponſionem dabit ſcientiæ (a) ſpiritus: & (b) implevit dolorem ventris, Arguens in verbis quibus non oportet, & in ſermonibus, quibus nulla utilitas? Nonne & tu (c) repuliſti timorem, (d) conſummáſti autem verba talia coram Domino? Reus es verbis oris tui, neque dijudicáſti verba potentum: Arguat te os tuum, & non ego: Et labia tua teſtificabuntur contra te. Quid enim? nunquid primus homo natus es? aut ante colles (e) concretus es? Aut (f) conſtitutionẽ Domini audiſti? aut conſiliario te uſus eſt Deus, & in te pervenit ſapientia? Quid enim nôſti, quod non novimus? aut quid intelligis tu, quod non & nos? Sed & ſenex & antiquus in nobis eſt patre tuo (g) gravior diebus: Pauca præ iis quæ peccáſti, accepiſti verbera: valdè ſupra modum locutus es. (h) Quid auſum fuit cor tuum? aut quid ſuſtinuerunt oculi tui,

MS.A. (θ) καὶ ποιήσει θερισμὸν, (ι) καὶ πεσὼν βροτὸς (κ) ποταμοὶ δὲ ἐρημωθέντες ἐξηράνθησαν. (λ) οὐ μὴ ἀναστῇ καὶ οὐ μὴ ἐξεγερθῇ ἕως ἂν ὁ οὐρανὸς παλαιωθῇ, καὶ οὐκ (μ) φυλάξεις, κρύψεις δέ με (ν) ὑπομενῶ σοι ἕως ἂν πάλιν (ξ) καλέσεις με, ἐγὼ (ʹ) τὰ ἁμαρτήματα ἐν (ο) καὶ ἐπεσημήνω εἴ τι (π) * πίπτων πεσεῖται, (ρ) ἐλέανεν (σ) καὶ ἐπέστησας (τ) τὸ πρόσωπόν σου, καὶ ἐξαπέστειλας. (υ) ἐάν τε (φ) ἐπ' αὐτῷ ἐπένθησεν. Κεφ. ιεʹ. MS.A. (α)* Θεμανίτης, (β) Τίνα ἄρα σοφὸς (γ) πνεύματος; ἐμπλήσει δὲ (δ) Ἐλέγχων μὴ ἐν ῥήμασιν κενοῖς, ἐν λόγοις (ε) Ὅτι καὶ σοὶ (ζ) κυρίου (η) καὶ οὐ (ʹ) Ἐλέγξει (θ) καταμαρτυρήσει (ι) ἄνθρωπος (κ) ἀκήκοας; ἢ εἰς σὲ ἀφίκετο σοφία; (λ) σὺ νοήσεις, ὃ οὐχὶ (μ) Τί ὅτι (ν) Τί σοι

תרגום TARGUM.

מן הנית מוי ילבלב ויעביד ואזא היך נצבא : וגברא ימות ויתמקמק אתנניד בר נש ואן הוא : אזלו מוי מן ימא דסוף והדרו לבית כנשתהון ויורדנא אתנניב 9 10 11
ויתיבש קדם ארונא דיי והדרו על בית פרצידיהון : ובר נש שכיב ולא יקום עד דלית שמיא לא יתערון רשיעיא ולא מתערין מבית דמכהון : לוי בבית 12 13
קבורתא תטשנני תטמרנני עד דיתוב רונזך תשוי לי נזירא ותדכרנני : אין ימות גברא רשיעא אפשר דיחי מטול היכנא כל יומי חילי אוריך עד דייתי חלופי 14
חיי : תהי קרי ואנא אתיב לך לעובדי אידך תרגרג : ארום כדון פסיעתי תמני לא תנטור על סורחני : חתים בספר דכרניא מרודי ותחבר על עויתי : וברם 15 16 17 18
טור נפל יתר וטינר מסתלק מן אתריה : תא וברם לוט דאתפרש מאברהם דמתיל לטור רם נתר ותקיפא סלק איקר שכנתיה מסדום דהוא אתריה :
אבניא שיפא מיא שטפא כתהא עפרא דארעא וסבר בר נש הובדתא : תשלמניה לעלמא ויזיל מתני קלסתריה ותשדרניה : שרין ביקר בנוי ולא 19 20 21
ידע ומצטערין ולא יתבין להון : ברם בסריה מן רחשא עלוי כאב ונפשיה בבית דינא עלוי מתאבלא : תא ברם בסריה עד לא יסתתם גוללא 22
עלוהי כאב ונפשיה שבעתא יומי אבלא עלוי מתאבלא בבית קבורתא :

טו

אתיב אליפז דמן תימן ואמר : האפשר דחכימא יתיב דעתא דדמי לזעפא וימלי היך רוח קדומא כרסיה : דמכסן במלין ולא יליף ומליא דלית משׁשא 1 2 3
בהון : לחוד ארת אין תפש דחלתא ותבצור מלתא קדם אלהא : ארום יאלף סורחנך פומך ותהי בחר לישנא דחכימיא : יחיבנך פומך ולא אנא 4 5 6
וספותך יסהדון בך : הא בקדמאי אדם בלא אבא ואמא אתילדתא וקדם גלמתא אתבריתא : אפשר דברז אלהא תשמע ואטפת לותך חוכמתא : מה 7 8 9
ידעתא ולא נדע תתבין ולא נבנא הוא : לחוד סיב וקשיש בנא ודרב מאבוך יומיא : תא לחוד אליפז דסיב ובלדד דקשיש בהדנא וצופר דרב מאבוך 10
יומין : הזעיר מנך נחמתא דאלהא ומללא בניח חוי למללא נכך : מה ילפנך רעיונך ומה מרמזין עינך : 11 12

Verſio SYRIACA.

9 * ܡܢ ܪܝܚܐ ܕܡܝܐ ܢܦܪܥ܂ ܘܢܥܒܕ ܛܪܦܐ ܐܝܟ ܢܨܒܬܐ܂ * ܘܓܒܪܐ ܡܐܬ ܘܒܠܐ܂ ܘܣܦ ܒܪܢܫܐ ܘܠܐ ܗܘܐ܂ * ܢܚܣܪܘܢ
10 ܡܝܐ ܡܢ ܝܡܐ܂ ܘܢܗܪܐ ܢܚܪܒ ܘܢܝܒܫ܂ * ܘܓܒܪܐ ܕܢܕܡܟ ܠܐ ܢܩܘܡ܂ ܥܕܡܐ ܕܢܒܠܘܢ ܫܡܝܐ܂ ܠܐ ܢܬܬܥܝܪܘܢ
11 ܡܢ ܫܢܬܗܘܢ܂ * ܡܢ ܢܬܠ ܕܒܫܝܘܠ ܬܛܫܝܢܝ܂ ܘܬܣܬܪܝܢܝ ܥܕܡܐ ܕܢܗܦܘܟ ܪܘܓܙܟ܂ ܘܬܣܝܡ ܠܝ ܙܒܢܐ
12 ܘܬܥܗܕܝܢܝ܂ * ܐܢ ܢܡܘܬ ܓܒܪܐ ܢܚܐ܂ ܘܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ ܕܦܘܠܚܢܝ ܡܣܟܐ ܐܢܐ
13 ܥܕܡܐ ܕܢܐܬܐ ܫܘܚܠܦܝ܂ * ܩܪܝܢܝ ܘܐܢܐ ܐܥܢܝܟ܂ ܘܠܥܒܕ ܐܝܕܝܟ ܬܪܓܝܓ܂ * ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܦܣܥܬܝ ܡܢܝܬ܂ ܘܠܐ
14 ܢܛܪܬ ܥܠ ܚܛܗܝ܂ * ܚܬܝܡܝܢ ܒܟܝܣܐ ܣܟܠܘܬܝ܂ ܘܛܫܝܬ ܥܘܠܝ܂ * ܘܒܪܡ
15 ܛܘܪܐ ܢܦܠ ܘܢܫܬܪܐ܂ ܘܫܘܥܐ ܢܫܬܢܐ ܡܢ ܕܘܟܬܗ܂ * ܟܐܦܐ ܫܚܩܘ ܡܝܐ܂ ܘܫܛܦܘ ܫܛܦܐ ܥܦܪܐ ܕܐܪܥܐ܂
16 ܣܒܪܗ ܕܐܢܫܐ ܐܘܒܕܬ܂ * ܬܬܩܦܝܘܗܝ ܠܥܠܡ ܘܢܐܙܠ܂ ܘܬܫܢܐ ܐܦܘܗܝ ܘܬܫܕܪܝܘܗܝ܂ * ܢܐܩܪܘܢ
17 ܒܢܘܗܝ ܘܠܐ ܢܕܥ܂ ܘܢܙܥܪܘܢ ܘܠܐ ܢܣܬܟܠ ܒܗܘܢ܂ * ܒܪܡ ܒܣܪܗ ܥܠܘܗܝ ܢܟܐܒ܂ ܘܢܦܫܗ ܥܠܘܗܝ
18 ܬܬܐܒܠ܂ * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܗ * ܘܥܢܐ ܐܠܝܦܙ ܬܝܡܢܝܐ ܘܐܡܪ܂ * ܚܟܝܡ
19 ܪܘܚܐ ܕܝܕܥܬܐ܂ ܘܢܡܠܐ ܒܛܢܗ ܪܘܚܐ܂ * ܠܡܟܣܘ ܒܡܠܐ ܕܠܐ ܦܐܫ܂ ܘܒܡܠܐ ܕܠܝܬ ܒܗܝܢ ܝܘܬܪܢܐ܂
20 * ܐܦ ܐܢܬ ܡܒܛܠ ܐܢܬ ܕܚܠܬܐ܂ ܘܡܣܓܐ ܐܢܬ ܡܠܐ ܩܕܡ ܐܠܗܐ܂ * ܡܠܦ ܓܝܪ ܦܘܡܟ ܥܘܠܟ܂
21 ܘܓܒܝܬ ܐܢܬ ܠܫܢܐ ܕܚܟܝܡܐ܂ * ܢܚܝܒܟ ܦܘܡܟ ܘܠܐ ܐܢܐ܂ ܘܣܦܘܬܟ ܢܣܗܕܢ ܒܟ܂ * ܕܠܡܐ ܩܕܡ
22 ܟܠ ܐܢܫܐ ܐܬܝܠܕܬ܂ ܐܘ ܩܕܡ ܪܡܬܐ ܐܬܒܪܝܬ܂ * ܕܠܡܐ ܒܐܪܙܘܗܝ ܕܐܠܗܐ ܫܡܥܬ܂ ܘܐܬܒܨܝܪܬ ܚܟܡܬܐ܂ * ܡܢܐ ܝܕܥ

1 ܐܢܬ ܕܠܐ ܝܕܥܝܢܢ܂ ܐܘ ܡܣܬܟܠ ܐܢܬ ܕܠܐ ܗܘܐ ܥܡܢ܂ * ܗܐ ܐܦ ܣܒܐ ܐܦ ܩܫܝܫܐ
2 ܘܝܬܝܪ ܐܦ ܡܢ ܐܒܘܟ ܒܝܘܡܬܐ܂ * ܐܥܒܪ ܡܢܟ ܡܘܥܕܢܘܬܗ ܕܐܠܗܐ܂ ܘܡܠܠ ܒܢܝܚܘܬܐ ܥܡ ܢܦܫܟ܂
3 * ܠܡܢܐ ܐܬܪܝܡ ܠܒܟ܂ ܘܡܢܐ ܡܪܡܙܢ ܥܝܢܝܟ܂

Verſio ARABICA.

9 * من رائحة الماء يفرع ويصنع ورقا مثل المنصوب * والرجل يبلا ويموت وينفد الانسان فلا يكون
10 * تنفد المياه من البحر والنهر يخرب وييبس * والرجل اذا اضطجع لا يقوم حتى تبلا السماء لا يستيقظون
11 من سنتهم ولا يستيقظون * من الذي صنع انك في الهاوية تخبيني وتسترني حتى يجوز غضبك وتجعل
12 لي ميثاقا لتذكرني * لعل ان مات الرجل يحيا وجميع ايام شبابه ينتظر ان ياتي كبره * ان تدعوني
13 فاني اجيبك وعلى عمل يديك اتفكر * من اجل ان طرايقي الان لا تحصي ولا تحفظ على خطاياي
14 * احتم في الاصرار اثامي وابعد مني خطاياي * احقا ان الجبل العظيم يسقط او الكهف يزول من مكانه
15 * الحجر تسحق بالماء ويطحن غبار الارض رجاء الانسان اهلكت * تعظمه للدهر فيجري تغيره
16 وجهه تلقيه * فان كثر بنوه لا يعلم وان قلوا لم يعرف * ولكن جسده عليه يوجع ونفسه عليه
17 تجزع * الفصل الخامس عشر * فاجاب اليفاز التيمني وقال
18 * حكيم الروح يجيب بالمعرفة ويملا بطنه حمية * ليبكت اقويل لا تنفع وكلاما ليس فيه
19 فضل * وانت ايضا تبطل المخافة وتكثر الكلام قدام الله * حتى يالف فمك الخطا وترضا بلسان
20 المكر * فيدحضك فمك ولا انا وشفتاك يشهدن عليك قدامي * اعساك قبل الناس ولدت او من
21 قبل الرواني جبلت * او باسرار الرب سمعت او ظهرت لك الحكمة * ماذا الذي تعلم ونحن لا نعلمه
22 او ماذا تفهم وليس هو عندنا * فهوذا فينا الشيخ وايضا فينا الكبير والذي اقدم ايضا من ابيك
1 اياما * ابعد عنك تغيظ الله وتكلم بالسكون عند نفسك * لماذا ارتفع قلبك ولماذا تغمض عينيك

9 *Ab odore aquarum pullulabit, et faciet folia velut plantatum.* 10 *Vir autem* (d) *marceſcit, & moritur, & perit homo, nec erit.* 11 *Deficient aquæ de mari, & flumen deſtruetur & areſcet.* 12 *Et vir, cùm jacuerit, non reſurget: donec marceſcat cœlum non excitabuntur à ſomno ſuo, nec evigilabunt.* 13 *Quis faciat ut in inferno abſcondas me, & contegas me donec pertranſeat furor tuus? & ponas mihi fœdus ut recorderis mei?* 14 *Anne ſi moritur vir, vivet? & omnibus diebus adoleſcentiæ ſuæ expectat donec veniat ejus ſenectus.* 15 *Si vocabis me, et ego reſpondebo tibi, & de opere manuum tuarum cogitabo.* 16 *Quoniam ſemitas meas præſentes ne numeres, neq; obſerves contra me peccata mea.* 17 *Claude in ſacculis ſcelera mea, & remove à me peccata mea.* 18 *Verùm enim eſt ingentem montem cadere, aut rupem migrare è loco ſuo?* 19 *Lapis conteritur aquis?* (e) *& molitur pulvis terræ? ſpem hominis perdidiſti.* 20 *Magnificabis eum in æternum, &* (f) *curret: confuſione faciei ejus dejicies eum:* 21 *Adeoque ſi multiplicati fuerint filii ejus, neſcit: & ſi diminuti fuerint, ignorat* (g). 22 *At* (h) *corpus ejus ſuper eum dolet, & anima ejus ſuper eum conſternatur.*

CAP. XV.

1 *REſpondit Eliphaz Temanites et dixit,* 2 *Sapiens ſpiritu reſpondet cum ſcientia, & implet ventrem ſuum irâ.* 3 *Ut arguat dicta quæ non* (i) *proſunt, & verba in quibus non eſt virtus.* 4 *Et tu adhuc irritum facis timorem, & multiplicas ſermones coram Deo.* 5 *Ita ut componat os tuum peccatum, & complaceas tibi in lingua doli.* 6 *Te condemnet os tuum & non ego: & labia tua teſtentur contra te in conſpectu meo.* 7 *Num forte ante homines natus es, vel ante colles conceptus?* 8 *An Domini ſecreta audiviſti, aut apparuit tibi ſapientia?* 9 *Quid ſcis quod nos neſciamus? aut quid intelligis quod non ſit apud nos?* 10 *Ecce inter nos eſt ſenex, & inter nos quoque eſt grandævus, & qui antiquior eſt etiam patre tuo diebus.* 11 (k) *Remove à te irritationem Dei, & loquere cum tranquillitate apud animam tuam.* 12 *Quare elatum eſt cor tuum? &* (l) *quare contrahis oculos tuos,*

INTERP. SYRIACA.

(d) moritur, & marceſcit; (e) aut ſponte naſcens de pulvere terræ? (f) incedit: (g) eos (h) caro ejus. CAP. XV. (i) ſunt recta. (k) Cohibe à te minas Dei, (l) quid annuunt oculi tui,

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ab amœnitate aquarum germinabit, & faciet ramum ſicut plantatio. Vir autem moritur & debilitatur: interit filius hominis, & ubi eſt? Abierunt aquæ de ma- 9 10
ri [illegible], & reverſæ ſunt ad locum congregationis ſuæ: & Jordanis exſiccatus eſt & aruit ante arcam Domini. & reverſæ ſunt ad locum alvei ſui. Et filius hominis 11 12
dormit, & non conſurgit donec non ſint cœli: non evigilabunt impii, nec ſuſcitabuntur à domo ſomni ſui. *Utinam* in domo ſepulturæ celes me, & abſcondas me 13
donec avertatur furor tuus, & ponas mihi ſtatutum ut recorderis mei? Si moriatur vir impius, nunquid poteſt vivere? propterea omnibus diebus militiæ meæ expe- 14
ctabo, donec veniat immutatio vitæ meæ. Vocabis, & ego reſpondebo tibi: opera manuum tuarum concupiſces. Nunc enim greſſus meos numeraſti, ne obſer- 15 16
ves ſcelera mea. Signatum eſt in libro memorialium delictum meum, & accumulas ſuper iniquitates meas. Veruntamen mons cadens defluet; & petra transferetur de 17 18
loco ſuo. *Targum aliud*: Veruntamen *Lot qui ſeparatus eſt ab Abrahamo, qui ſimilis erat monti excelſo, defluxit, & fortis ſuſtulit gloriam majeſtatis ſuæ de Sedom, quæ*
[illegible] Lapides comminuunt aquæ, & inundat fonte naſcentia pulveris terræ: ſic ſpem filii hominis perdidiſti. Perficies eum in ſeculo, & abibit, im- 19 20
mutans vultum ejus, & dimittis eum. Habitant in gloria filii ejus, & neſcit; tribulantur, & non attendit eis. Veruntamen caro ejus *a vermibus* ſuper eum dolebit: 21 22
& anima ejus [illegible] ſuper eum luget. *Targum aliud*: Veruntamen caro ejus antequam claudatur feretrum ſuper eum, dolebit: & anima ejus *ſeptem diebus*
luctus ſuper eum luget in domo ſepulturæ.

CAP. XV.

ET reſpondit Eliphaz qui erat de Theman, & ait: Nunquid ſapiens poteſt reſpondere ſententiam quæ ſimilis ſit vento, & implebit quaſi vento urente ventrem ſu- 1 2
um. Qui arguit verbis, & nihil docet, & ſermonibus in quibus non eſt utilitas. Attamen ſi tu multiplicaſſes timorem, & minuiſſes verbum coram Deo. Docebit enim 3 4 5
te iniquitatem tuam os tuum, & eliges linguam ſapientum. Contemnabit te os tuum & non ego, & labia tua teſtificabuntur contra te. Nunquid cum primo homine 6 7
citra patrem et matrem genitus es, et ante colles creatus es? Nunquid in ſecreto Dei audiſti, et extincta eſt tibi ſapientia? Quid noſti quod neſciamus? quid intel- 8 9
ligis quod non ſit nobiſcum? Veruntamen canus et longævus inter nos, et major patre tuo diebus. *Targum aliud*: Veruntamen *Eliphaz qui canus eſt*, et *Bildad* 10
longævus *eſt* [illegible], et *Sophar qui major eſt* patre tuo diebus. Nunquid parum tibi ſunt conſolationes Dei? et verbum in quiete [illegible] apud te. Quid de- 11 12
cepit te cogitatio tua, et quid annuunt oculi tui?

איוב : יו

Suo ore ex protulisti & ; tuus spiritus *Deum ad* respondit Quia
13 כי־תשיב אל־אל רוחך והוצאת מפיך
natus se justificet quòd & ; sit mundus quòd homo Quid .sermones
14 מלין: מה־אנוש כי־יזכה וכי־יצדק ילוד
fuerunt mundi non cœli & ; credet non suis sanctis in Ecce *? mulieris*
15 אשה: הן בקדשיו לא יאמין ושמים לא־זכו
bibens vir ; *graveolens* & ,abominabilis *quia Etiam* .ejus oculis in
16 בעיניו: אף כי־נתעב ונאלח איש־שתה־
, vidi hoc & ; me audi , tibi *Nunciabo* ? iniquitatem aquam sicut
17 כמים עולה: אחוך שמע־לי וזה־חזיתי
.suis patribus à *celarunt* non & ; *indicarunt* sapientes Quod .narrabo &
18 ואספרה: אשר־חכמים יגידו ולא כחדו מאבותם:
.eorum mediũ *in* alienus transivit non & ; terra est data solis Eis
19 להם לבדם נתנה הארץ ולא־עבר זר בתוכם:
annorum numerus & ; *se excrucians* ipse impius diebus Cunctis
20 כל־ימי רשע הוא מתחולל ומספר שנים
pace in ; ejus auribus in timorum Sonitus *.timendo sunt absconditi*
21 נצפנו לעריץ: קול־פחדים באזניו בשלום
; tenebris à redire credet Non *.ei superveniet* vastator
22 שודד יבואנו: לא־יאמין שוב מני־חשך
; *ubinam panem ad ipse Vagans* .gladium *ad ipse conspectum* &
23 וצפו הוא אלי־חרב: נדד הוא ללחם איה
eum Terrebunt .tenebrarum dies sua manu in est paratus quòd novit
24 ידע כי־נכון בידו יום־חשך: יבעתהו
.Jastiluamin ad paratus rex sicut *ei prævalebit* ; *coarctatio* & tribulatio
צר ומצוקה תתקפהו כמלך עתיד לכידור:
.se *roborabit Saddai ad* & ; suam manum Deum *ad* extendit Quia
25 כי־נטה אל־אל ידו ואל־שדי יתגבר:
.ejus scutorum *umbonum* densitate in ; collo in eum *ad* Curret
26 ירוץ אליו בצואר בעבי גבי מגניו:
super lubricum fecit & ; suo adipe in *suas facies* operuit Quia
27 כי־כסה פניו בחלבו ויעש פימה עלי־
habitabunt non domos , *excisas* civitates inhabitavit Et *.inguine*
28 כסל: וישכון ערים נכחדות בתים לא־ישבו
non & ,ditabitur Non *.acervos in* sunt paratæ quæ *: sibi*
29 למו אשר התעתדו לגלים: לא־יעשר ולא־
.eorum *complementum* terra in *extendetur* nec ; ejus *facultas* stabit
יקום חילו ולא־יטה לארץ מנלם:
; flamma siccabit ejus tenerum ramum ,tenebris è recedet Non
30 לא־יסור מני־חשך ינקתו תיבש שלהבת
; *errans mendacio in* credet Non .ejus oris spiritu in recedet &
31 ויסור ברוח פיו: אל־יאמן בשו נתעה
; *complebitur* suo die non In .ejus *immutatio* erit mendacium sed
32 כי־שוא תהיה תמורתו: בלא־יומו תמלא
; ejus acerbam uvam vitis sicut *Dejiciet* .viruit non ejus ramus &
33 וכפתו לא רעננה: יחמס כגפן בסרו
hypocritæ comitium Quia .ejus florem olea tanquam projiciet &
34 וישלך כזית נצתו: כי־עדת חנף
, *laborem* Concipere *.muneris tentoria peredit* ignis & ; *solitarium*
35 גלמוד ואש אכלה אהלי־שחד: הרה עמל
.fraudem parabit eorum venter & ; mendacium parere &
וילד און ובטנם תכין מרמה:

CAP. XVI. יו

consolatores ; *multa* hæc sicut Audivi : dixit & , Ijob respondit Et
1 ויען איוב ויאמר: שמעתי כאלה רבות מנחמי
2 te roborabit quid aut ? *spiritus* verbis finis Nunquid .vos omnes *miseriæ*
3 עמל כלכם: הקץ לדברי־רוח או מה־ימריצך
? responderis si
כי תענה:

Versio VULG. LAT.

13 Quid tumet contra Deum spiritus tuus, ut proferas de ore tuo hujuscemodi sermones? 14 Quid est homo, ut immaculatus sit, & ut justus appareat natus de muliere? 15 Ecce inter sanctos ejus nemo immutabilis, & cœli non sunt mundi in conspectu ejus. 16 Quantò magis abominabilis & inutilis homo, qui bibit quasi aquam iniquitatem? 17 Ostendam tibi, audi me: quod vidi narrabo tibi. 18 Sapientes confitentur, & non abscondunt patres suos. 19 Quibus solis data est terra, & non transivit alienus per eos. 20 Cunctis diebus suis impius superbit, & numerus annorum incertus est tyrannidis ejus. 21 Sonitus terroris semper in auribus illius: & cùm pax sit, ille semper insidias suspicatur. 22 Non credit quòd reverti possit de tenebris ad lucem, circumspectans undique gladium. 23 Cùm se moverit ad quærendum panẽ, novit quòd paratus sit in manu ejus tenebrarum dies. 24 Terrebit eum tribulatio, & angustia vallabit eum, sicut regem qui præparatur ad prælium. 25 Tetendit enim adversùs Deum manum suam, & contra Omnipotentẽ roboratus est. 26 Cucurrit adversùs eum erecto collo, & pingui cervice armatus est. 27 Operuit faciem ejus crassitudo, & de lateribus ejus arvina dependet. 28 Habitavit in civitatibus desolatis, & in domib⁹ desertis, quæ in tumulos sunt redactæ. 29 Non ditabitur, nec pseverabit substantia ejus, nec mittet in terra radicem suam. 30 Non recedet de tenebris: ramos ejus arefaciet flamma, & auferetur spiritu oris sui. 31 Non credet frustrà errore decept⁹, quòd aliquo pretio redimendus sit. 32 Antequàm dies ejus impleantur, peribit: 33 & manus ejus arescent. Lædetur quasi vinea in primo flore botrus ejus, & quasi oliva projiciens florem suum. 34 Congregatio enim hypocritæ sterilis, & ignis devorabit tabernacula eorum, qui munera libenter accipiunt. 35 Concepit dolorem, & peperit iniquitatem, & uterus ejus præparat dolos.

CAP. XVI.

1 RESpondens autem Job, dixit; 2 Audivi frequenter talia: consolatores onerosi omnes vos estis. 3 Numquid habebunt finem verba ventosa? aut aliquid tibi molestum est si loquaris?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

13 † Ὅτι θυμὸν ἔρρηξας ἔναντι κυρίου, † ἐξήγαγες δὲ ἐκ στόματος ῥήματα τοιαῦτα; 14 † Τίς γὰρ ὢν (ξ) βροτὸς, ὅτι ἔσται ἄμεμπτος; † ἢ ὡς ἐσόμενος δίκαιος γεννητὸς γυναικός; 15 † Εἰ κατὰ ἁγίων οὐ (ο) πιστεύει, † οὐρανὸς δὲ οὐ καθαρὸς ἐναντίον (π) αὐτοῦ. 16 † Ἔα δὲ, ἐβδελυγμένος καὶ ἀκάθαρτος ἀνὴρ, πίνων (ρ) ἀδικίας ἴσα ποτῷ. 17 † (σ) Ἀναγγελῶ δέ σοι, ἄκουέ μου, † ἃ δὴ ἑώρακα, ἀναγγελῶ σοι, 18 † Ἃ σοφοὶ (τ) ἐροῦσιν, καὶ οὐκ ἔκρυψαν πατέρες αὐτῶν. 19 † Αὐτοῖς μόνοις ἐδόθη ἡ γῆ, † καὶ οὐκ ἐπῆλθεν ἀλλογενὴς ἐπ᾽ αὐτούς. 20 † Πᾶς ὁ βίος (υ) ἀσεβοῦς ἐν φροντίδι, † ἔτη δὲ ἀριθμητὰ δεδομένα δυνάστῃ. 21 † Ὁ δὲ φόβος αὐτοῦ ἐν ὠσὶν αὐτοῦ· † ὅταν δοκῇ ἤδη (φ) εἰρηνεύειν, ἥξει αὐτοῦ ἡ καταστροφή. 22 † Μὴ πιστευέτω ἀποστραφῆναι ἀπὸ σκότους, (χ) ἐντέταλται γὰρ ἤδη εἰς χεῖρας σιδήρου, 23 † (ψ) Κατατέτακται δὲ εἰς σῖτα γυψίν. † οἶδε δὲ ἐν ἑαυτῷ ὅτι μένει εἰς πτῶμα· † (ω) ἡμέρα δὲ σκοτεινὴ αὐτὸν στροβήσει, 24 † Ἀνάγκη δὲ καὶ θλίψις αὐτὸν καθέξει, † ὥσπερ στρατηγὸς πρωτοστάτης (α) πίπτων· 25 † Ὅτι ἦρκεν χεῖρας (β) ἐναντίον (γ) τοῦ κυρίου, † ἔναντι δὲ κυρίου παντοκράτορος ἐτραχηλίασεν. 26 † Ἔδραμε δὲ ἐναντίον αὐτοῦ ὕβρει † ἐν (δ) πάχει νώτου ἀσπίδος αὐτοῦ. 27 † Ὅτι ἐκάλυψε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐν στέατι αὐτοῦ, † καὶ ἐποίησε περιστόμιον ἐπὶ τῶν (ε) μηρίων. 28 † Αὐλισθείη δὲ πόλεις ἐρήμους, (ζ) εἰσέλθοι δὲ εἰς οἴκους ἀοικήτους· † ἃ δὲ (η) ἐκεῖνοι ἡτοίμασαν, ἄλλοι ἀποίσονται. 29 † Οὔτε μὴ πλουτισθῇ, οὔτε μὴ μείνῃ (θ) αὐτοῦ τὰ ὑπάρχοντα· † (ι) οὐ μὴ βάλῃ ἐπὶ τὴν γῆν σκιάν, 30 † Οὐδὲ μὴ ἐκφύγῃ (κ) τὸ σκότος· † τὸν βλαστὸν αὐτοῦ (λ) μαράναι ἄνεμος, † (μ) ἐκπέσοι δὲ αὐτοῦ τὸ ἄνθος. 31 † Μὴ πιστευέτω ὅτι ὑπομενεῖ, † κενὰ γὰρ (ν) ἀποβήσεται αὐτῷ. 32 † Ἡ τομὴ αὐτοῦ πρὸ ὥρας φθαρήσεται, † καὶ ὁ ῥάδαμνος αὐτοῦ οὐ μὴ πυκάσῃ. 33 † Τρυγηθείη δὲ (ξ) ὡς ὄμφαξ πρὸ ὥρας, (ο) ἐκπέσοι δὲ ὡς ἄνθος ἐλαίας. 34 † Μαρτύριον γὰρ ἀσεβοῦς θάνατος· † πῦρ δὲ (π) καύσει οἴκους δωροδεκτῶν. 35 † Ἐν γαστρὶ δὲ λήψεται ὀδύνας, † ἀποβήσεται δὲ αὐτῷ κενά, ἡ δὲ κοιλία αὐτοῦ ὑποίσει (ρ) δόλον.

13 *Quòd furorem erupisti ante Dominum, (i) protulisti autem ex ore verba talia? 14 (k) Quis enim cùm homo sit, quia erit sine crimine? aut tanquàm futurus justus natus de muliere? (l) 15 Si in sanctis non credit, & cœlum non est mundum ante eum: 16 Sine (m) verò, abominatus & immundus vir bibens injustitias quasi potionem? 17 Annuntiabo autem tibi, audi me: quæ utique vidi, annuntiabo tibi: 18 Quæ sapientes dicent & non celaverunt parentes eorum. 19 Ipsis solis data est terra: nec supervenit illis extraneus. 20 Omnis vita impii in (n) solicitudine: anni autem (o) numerati potenti dati sunt; 21 Timor autem ipsius in auribus ipsius: cùm putaverit se esse jam in pace, veniet ejus (p) subversio. 22 Non credat converti à tenebris: (q) decretus enim est jam in manus ferri, 23 Et dispositus in escas vulturum: novit autem in seipso, quòd manet in ruinam: dies autem tenebrosa ipsum versabit: 24 Angustia autem & tribulatio ipsum comprimet, sicut dux in prima acie decidens: 25 Quia elevavit manus contra Deum, & contra Dominum omnipotentem induravit cervicem. 26 Cucurrit autem contra eum injuriâ in crassitudine dorsi scuti sui. 27 Quia operuit (r) faciem ejus in adipe suo, & fecit (s) peristomium super femora. 28 Habitet autem civitates desertas, & ingrediatur in domos nõ habitatas: quæ autem illi paraverunt, alii auferent. 29 Et non ditabitur, nec permanebit substantia ejus: non immittet super terram umbrã, 30 Neque effugiet tenebras: stirpem ejus arefaciet ventus, & decidat flos ejus. 31 Non credat, quia sustinebit: vana enim evadent ei. 32 Præcisio ejus ante horam corrumpetur; & ramus ejus non (t) condensabitur: 33 Vindemietur, sicut acresta ante horam, & decidat tanquàm flos olivæ. 34 (u) Testimonium enim impii mors: & ignis comburet domos eorum qui munera accipiunt.*

(x) Concipiet & in ventre gemitus: evadent autem ei vana, & venter ejus sustinebit dolum. 35

ΚΕΦ. ιϛ'.

1 2 † ΥΠολαβὼν δὲ Ἰώβ, λέγει, † Ἀκήκοα τοιαῦτα πολλά, † παρακλήτορες κακῶν πάντες. 3 † Τί γάρ; μὴ τάξις ἐστὶ ῥήμασι πνεύματος; † ἢ τί παρενοχλήσει σοι ὅτι ἀποκρίνῃ;

CAP. XVI.

RESpondens autem Job, ait; 1 *Audivi talia multa: consolatores (a) malorum omnes.* 2 *Quid ergò? nunquid ordo est sermonibus spiritûs? aut quid molestum tibi erit, quod respondeas?* 3

MS. A. (ξ) *βροτὸς ἔσται (ο) πιστεύει μέμψις, ὁ οὐρανὸς δὲ (π) αὐτοῦ, † ἄστρα δὲ οὐκ ἄμεμπτα. Ἔα δὲ, (ρ) ἀδικίαν (σ) Ἀναγγέλλω οὖν σοι, σὺ δέ μου ἄκουε, ἃ δὴ ἑόρακα, ἀναγγέλλω (τ) ἀνήγγειλαν, καὶ οὐκ (υ) ἀσεβῶν (φ) εἰρηνεύεσθαι, τότε ἥξει ἡ καταστροφὴ αὐτοῦ. (χ) ἐντέτακται γὰρ ἤδη εἰς χεῖρας* (ψ) † *Καταπίπτει δὲ εἰς ἐξάλειψιν, καὶ κατατέτακται εἰς (ω) ἡμέρα σκοτεινὴ στροβήσει αὐτόν, (α) πεπτωκώς· (β) ἔναντι (γ) κυρίου. (δ) παχεῖ νώτῳ τῆς ἀσπίδος αὐτοῦ. (ε) μηρῶν αὐτοῦ· † αἶνος δὲ αὐτοῦ ὕβρις. Αὐλισθείη (ζ) καὶ εἰσέλθοι εἰς (η) ἐκεῖνος ἡτοίμασεν, (θ) τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ· (ι) οὐδὲ μὴ (κ) σκότος· (λ) μαράνει (μ) καὶ ἐκπέσοι αὐτοῦ (ν) αὐτῷ ἀναβήσεται. (ξ) ὥσπερ (ο) καὶ ἐκπέσοι ὥσπερ (π) κατακαύσει οἴκους δωροδεκτῶν. Καὶ ἐν γαστρὶ λήμψονται (ρ) πόνον.*

תרגום TARGUM.

15 13 14 ארום תתיב לאלהא רוחך ותהנפק מפומך מליא: מה בר נש ארום יזכי וארום יזדכי ילוד אתתא: הא בקדישי עלאי לא יהימן ואנגלי מרומא לא זכאין
18 16 17 קדמוי: כל דכן מרחק ומסאב בר נש שתי היך מוי עילתא: אחוי לך קבל מני ודין דחמיתי ואשתעי: די חכימיא יחוון ולא מכדבין מן מסורתא דאבהתהון:
20 19 תא דשבטוי דיעקב חכימיא יתובון ולא יכסו מדם דאלפונון אבהתהון: להון בלחודיהון אתיהיבת ארעא ולא עבר חילוני במציעיהון: כל יומי
רשיעא הוא מתפס ומנין שניא אתטישו לתקיפא: תא כל יומי דעשו רשיעא מורכין ליה דיעבד תתובא ולא תב מנין שניא אטמרו לישמעאל תקיפא:
22 21 קל דלוחיא בגהנם באודניה כד שרין צדיקי בשלמא בחיי עלמא בזוויתא ייתניה: לא יהימין בחיוי למתב מן חשוכא ואטימוס הוא לקטלין בחרבא:
25 23 24 מנדד הוא למזונא האן הוא ידע ארום מעתד בידיה יום חשוכא: יבעתוניה עקא ומעיקא יחזרוניה היך מליך דאטימוס לגלוגדק: מטול דאושיט לאלהא
28 26 27 ידיה ולות שדי יתגבר: ירהוט לותיה בתוקפא בקושי רום תרסוי: ארום חפא אפוי בשומניה ועבד רוטבא עלוי כפלא: ועבד שכונן בקרוין צדין יתיב
30 29 בבתיא דלא יתבון להון די אתעתדו לינורין: לא יתעתר ולא יתקים עתריה דקרח ולא יתמתח לארעא מנהון ומהלין טבתא דדתן ואבירם: לא יעדי
32 31 מן חשוכא שבשיה תיבש שלהוביתא ויעדי בזעפא דפומיה דאלהא: לא יהימין בבר נש דבשקרא תעי ארום שקרא תהי פרוניה: בלא יומיה תתמלי
34 33 קבורתיה ועוביה לא תהי עבופיא: תא עד לא יומי תתמלי סביתיה וכליתיה לא תהי נננא: יתר היך גופנא בוסריה ויטלוק היך זיתא לבלביה: ארום
35 סיעת דילטור לצערא ואשתא נמרת משכני שוחדא: דחשלין לעות וממללין שקר ורעיוני כרסהון מתכנין נכלא:

יו

3 2 1 ואתיב איוב ואמר: שמעית כאלין סגיעתא מנחמין דלעות כולכון: האית סוף למלי זיקא או מה יבסמנך ארום תתיב:

Verſio SYRIACA.

13 14 * ܕܡܪܝܡ ܐܢܬ ܠܘܬ ܐܠܗܐ ܪܘܚܟ. ܘܡܦܩ ܐܢܬ ܡܢ ܦܘܡܟ ܡܠܐ. * ܡܢܘ ܐܢܫܐ ܕܢܙܕܟܐ. ܐܘ ܡܢܘ ܝܠܝܕ
15 ܒܛܢ ܐܢܬܬܐ. * ܗܐ ܒܩܕܝܫܘܗܝ ܠܐ ܡܗܝܡܢ. ܘܫܡܝܐ ܠܐ ܕܟܝܢ ܩܕܡܘܗܝ. * ܐܦ ܐܢ ܡܫܬܐܛ ܘܡܬܟܪܐ
16 17 ܓܒܪܐ. ܕܫܬܐ ܐܝܟ ܡܝܐ ܥܘܠܐ. * ܐܚܘܝܟ ܘܫܡܥ ܠܝ. ܘܡܕܡ ܕܚܙܝܬ ܐܫܬܥܐ. * ܕܚܟܝܡܐ ܚܘܝܘ ܘܠܐ ܟܣܝܘ
18 ܐܒܗܝܗܘܢ. * ܠܗܘܢ ܒܠܚܘܕܝܗܘܢ ܐܬܝܗܒܬ ܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܥܒܪ ܢܘܟܪܝܐ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܗ
19 20 ܕܪܫܝܥܐ ܡܬܚܡܨ. ܘܡܢܝܢ ܫܢܘܗܝ ܟܣܝܢ ܠܥܫܝܢܐ. * ܩܠܐ ܕܕܚܠܬܐ ܒܐܕܢܘܗܝ. ܘܒܫܠܡܐ ܒܙܘܙܐ ܢܐܬܐ
21 ܥܠܘܗܝ. * ܠܐ ܡܗܝܡܢ ܕܢܬܘܒ ܡܢ ܚܫܘܟܐ. ܚܙܐ ܚܪܒܐ. * ܢܥܪܘܩ ܠܘܬ ܥܘܠܢܐ ܕܕܝܢܐ. ܐܝܟܐ ܕܗܘ. ܝܕܥ ܕܡܛܝܒ
22 23 ܒܐܝܕܗ ܝܘܡܐ ܕܚܫܘܟܐ. * ܢܕܚܠܘܢܗ ܐܘܠܨܢܐ. ܘܢܕܪܟܘܢܗ ܐܠܨܢܐ. ܐܝܟ ܡܠܟܐ ܕܡܛܝܒ
24 25 ܠܩܪܒܐ. * ܡܛܠ ܕܐܪܝܡ ܥܠ ܐܠܗܐ ܐܝܕܗ ܘܥܠ ܫܠܝܛܐ ܐܬܥܫܢ. * ܪܗܛ ܥܠܘܗܝ ܒܨܘܪܐ ܪܡܐ.
26 ܘܒܥܒܝܘܬܐ ܕܩܕܠܗ. ܒܣܘܓܐ ܕܙܝܢܐ. * ܘܟܣܐ ܐܦܘܗܝ ܒܬܪܒܗ. ܘܣܡ ܟܝܡܐ ܥܠ ܥܝܘܬܐ.
27 28 * ܘܐܬܩܢ ܡܕܝܢܬܐ ܚܪܒܬܐ ܕܠܐ ܥܡܝܪܢ. ܘܐܬܛܝܒ ܠܩܪܒܐ. * ܠܐ ܢܟܬܪ ܘܠܐ ܢܩܘܡ ܚܝܠܗ. ܘܠܐ ܢܫܕܐ ܡܠܐ
29 30 ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܘܠܐ ܢܥܒܪ ܡܢ ܚܫܘܟܐ. ܘܣܘܟܘܗܝ ܢܝܒܫܘܢ ܫܠܗܒܝܬܐ. ܘܢܦܩ ܒܪܘܚܐ ܕܦܘܡܗ. * ܘܠܐ
31 32 ܢܗܝܡܢ ܒܕܓܠܘܬܐ ܕܡܛܥܝܢܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܣܪܝܩ ܗܘܐ ܡܨܒܬܗ. * ܣܛܪ ܡܢ ܝܘܡܘܗܝ ܢܫܠܡ. ܘܐܝܕܘܗܝ ܠܐ
33 ܢܫܟܚܘܢ. * ܢܬܩܛܦ ܐܝܟ ܓܦܬܐ ܦܪܥܗ. ܘܢܫܬܕܐ ܐܝܟ ܙܝܬܐ ܡܨܒܬܗ. * ܡܛܠ ܕܟܢܘܫܬܐ ܕܚܢܦܐ ܬܗܘܐ
34 35 ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܚܪܒܐ. ܘܢܘܪܐ ܬܐܟܘܠ ܡܫܟܢܐ ܕܥܘܠܐ. * ܒܛܢܘ ܥܡܠܐ ܘܝܠܕܘ ܥܘܠܐ. ܘܟܪܣܗܘܢ ܡܬܩܢ ܢܟܠܐ.
1 2 * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܘ * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܫܡܥܬ ܣܓܝܐܬܐ ܐܝܟ ܗܠܝܢ.
3 ܘܡܒܝܐܢܐ ܕܥܡܠܐ ܐܢܬܘܢ ܟܠܟܘܢ. * ܠܐ ܬܫܢܩܘܢ ܢܦܫܝ ܒܡܠܐ. ܘܐܢ ܬܘܣܦܘܢ ܬܡܠܠܘܢ ܥܡܝ ܠܐ ܐܦܢܐ.

Verſio ARABICA.

13 14 * حين ترفع الي الله روحك وتخرج من فمك الكلام * فمن من الناس يزكوا * او من الذي هو ولد
15 16 المراة ان يستطيع ان يبراء * فانه بقديسيه لا يامن * والسماء ليست بطاهرة قدامه * فان ارفض او
17 18 كرب الرجل افيشرب الاثم مثل الماء * اني اخبرك فاسمعني والذي رايت فاني ابين * فان الحكماء قد
19 20 اظهروا ولم يكتموا من اباءهم * لهم وحدهم اعطيت الارض ولم يدخل غريب بينهم * جميع ايامه
21 المنافق يستكبر * وعدد سنيه يحفظ للقوي * صوت الرهبة في اذنيه * وبالغفلة ياتي السلاب عليه *
22 23 * فلا يصدق انه يرجع من ظلمة * ينظر السيف * فيهرب الي جهود القضاء * حيث ما يكون فانه يعلم
24 25 انه مستعد له يوم الظلمة * يطلبه الضر ويدركه الضيق * مثل الملك المستعد للقتال * لاجل
26 انه رفع على الله يده * وعلى العزيز تجبر * وعدا عليه بعنق رفيع * وبغلظ الرقبة * بكثير صفوف
27 28 السلاح * وغطا وجهه بشحمه * وجعل الثريا فوق العيوق * واثبت القري الخربة التي لا تسكن *
29 30 واستعد للقتال * فلا يثبت * ولا تقوم قوته * ولا يلقي كلاما على الارض * ولا يفارقون الظلمة *
31 واغصانه تيبس بالاشتعال * يسقط بروح فمه * ولا يصدق بالكذب المضل * من اجل ان باطلا كان
32 33 منبته * وفي غير ايامه ييبس * ويداه لا تجدن * يقلع مثل الحصرم كرمه * ويطرح مثل الزيتون نباته *
34 35 * لان جماعة الحنفاء تكون للخراب والخلا * والنار تاكل مسكن الاشرار * حبلوا الاثم * وولدوا
العنت * وبطونهم مملوة غشا *

* الفصل السادس عشر *

1 2 3 * فاجاب ايوب وقال * قد سمعت كثيرا مثل هذا * وانتم تعزونني بالاثم كلكم * فلا تودن روحي
بالكلام * وايضا فان تقولون لي فلا اجيب *

VERS. SYR. & ARAB. Interp.Lat.

Dum elevas ad Deum ſpiritum tuum? & producis de ore tuo ſermones? 13 *Quiſnam hominum eſt, qui ſit innocens? aut quis eſt natus mulieris, ut poſſit ſe juſtificare?* 14 *Quandoquidem ſanctis ſuis non fidit, & cœlum non eſt mundum coram ipſo?* 15 *Et ſi deſpiciatur aut contriſtetur vir, num bibet iniquitatem velut aquam?* 16 *Ego verò narrabo tibi: audi me; et quæ vidi, exponam.* 17 *Nam ſapientes patefecerunt, & non abſconderunt (d) à diebus ſuis:* 18 *Ipſis ſolis data eſt terra, & non ingreſſus eſt advena inter eos.* 19 *Omnibus diebus vitæ ſuæ ſuperbit impius, & numerus annorũ ejus ſervabitur Potenti.* 20 *Vox terroris in auribus ejus, & (e) ex inſperato veniet prædo adverſùs eum.* 21 *Non credit ſe reverſurum è tenebris: videbit gladium,* 22 *Et fugiet ad (f) violentiam judicii: ubicunque fuerit, novit (g) ſibi paratum eſſe diem tenebrarum:* 23 *Perſequetur eum tribulatio, & comprehendet eum anguſtia velut regem paratum ad bellum:* 24 *Quoniam tetendit manum ſuam adverſùs Deum, & contra potentem confortatus eſt:* 25 *Et cucurrit adverſùs eum erecto collo, & pingui cervice cum copia ordinum armorum:* 26 *Et operuit faciem ſuam pinguedine ſuâ, & collocavit Pleiadas ſuper Arcturũ:* 27 *Et (h) confirmavit oppida deſolata quæ non habitantur, et præparatus eſt ad bellũ.* 28 *(i) Non reſiſtet, nec ſtabit vis ejus, nec effundet verba ſuper terram,* 29 *Neque recedent à tenebris, & rami ejus areſcent flammâ; & proprii oris ſpiritu delirabit:* 30 *Et non credet mendacio decipienti; quia vana erat ejus planta.* 31 *Præter dies ſuos areſcit, & manus ejus non invenient:* 32 *Eradicabitur velut vitis caro ejus, & projicietur velut oliva planta ejus:* 33 *Quoniam congregatio perverſorum erit in ruinam & deſolationem, & ignis devorabit habitaculũ iniquorum.* 34 *Conceperunt iniquitatem, & pepererunt (k) perniciem; & ventres eorum ſunt pleni dolo.* 35

CAP. XVI.

RESpondit Job & dixit, 1 *Audivi jam multa his ſimilia, & vos omnes me conſolamini cum iniquitatẽ.* 2 *Nolite affligere animam meam verbis: quòd ſi ulteriùs mihi loquamini, non reſpondebo.* 3

INTERP. SYRIACA.

(*d*) patres eorum: (*e*) in pace ſuperveniet (*f*) comminationem (*g*) in manu ſua eſſe (*h*) frequentia reddidit (*i*) Non permanebit, (*k*) oppreſſionem;

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quod ducas ad Deum ſpiritum tuum, & proferas de ore tuo ſermones. Quid eſt filius hominis ut juſtificetur, aut innocens ſit natus de muliere? Ecce in ſanctis ſuperioribus non credit, & angeli excelſi non ſunt mundi coram eo. Quanto magis abominabilis & immundus filius hominis, qui bibit ſicut aquam iniquitatem! Nunciabo tibi, audi me, & quod vidi narrabo. Quod ſapientes annunciaverunt, & non negaverunt quæ tradita ſunt à patribus eorum. *Targum aliud:* Quod *tribus Jaacob* ſapientes *convertentur* & non *occultabunt de eo quod docuerunt eos patres eorum.* Quibus ſolis data eſt terra, & non tranſit alienus inter eos. Omnibus diebus impii ipſe contaminatur, & numerus annorum abſconditus eſt robuſto. *Targum aliud:* Omnibus diebus *Eſau* impii *expectârunt eum ut pœnitentiam ageret, ſed non pœnituit:* numerus annorum abſconditus eſt *Iſmahel* robuſto. Vox timorum in gehenna in auribus ejus, quando habitabunt juſti in pace in vita æterna, vaſtitas veniet ei. Non credet *in vita ſua* reverti à tenebris, & paratus eſt iis qui occidunt gladio. Vagatur ipſe ad eſcam ubi eſt; ſcit quod parata eſt in manu ejus dies tenebrarum. Conturbabunt eum tribulatio & anguſtia, circundabunt eum ſicut regem qui *paratus eſt ad ſcabellum.* Quoniam extendit in Deum manum ſuam, & contra omnipotentem roboratus eſt. Curret ad eum in fortitudine, in duritia umbonis clypeorum ipſius. Et operuit vultum ſuum pinguedine ſua, & fecit arvinam ſuper ilia. Et fecit tabernacula in civitatibus deſertis, ut haberet in domibus quæ erant inhabitabiles, & quæ paratæ erant in acervos. Non ditabitur, neque permanebunt divitiæ *Korach,* neque extendetur in terram quicquam ex eis, *& ex illis bona Dathan & Abiram.* Non recedet à tenebris, ramum ejus areſaciet flamma, & auferetur per ſpiritum oris Dei. Non credet *in filio* hominis qui in falſitate errat, quia falſa erit permutatio ejus. Abſq; die ſuo implebitur ſepulchrum ejus, & ramus ejus non erit vireſcens. *Targum aliud: Cum nondum fuerit dies ejus* implebitur *ſenectus ejus, & ſponſa ejus non erit nupta.* Excutiet ſicut vitis *omphacem* ſuam, & projiciet ſicut oliva ramum ſuum. Quoniam turma delatoris in tribulatione, & ignis conſumpſit tabernacula muneris. Qui cogitant laborem & loquuntur iniquitatem, & cogitationes ventris eorum præparant dolos. 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35

CAP. XVI.

ET reſpondit Job & ait: Audivi ſicut hæc multa: conſolatores laboris vos omnes eſtis. Nunquid habebunt finem verba ventoſa, aut quid ſuave tibi erit, quia reſpondes? 1 2 3

איוב : יז

pro vestra anima esset utinam , loquar vos sicut ego Etiam
4 גם אנכי ככם אדברה לו יש נפשכם תחת
moverem & ; sermonibus in vos super me adjungerem ; mea anima
נפשי אחבירה עליכם במלים ואניעה
motio & ; meo ore in vos Roborarem .meum caput in vos super
5 עליכם במו ראשי : אאמצכם במו־פי וניד
prohibebitur non , fuero locutus Si .prohiberet meorum labiorum
6 שפתי יחשך : אם־אדברה לא־יחשך
Veruntamen ? abibit me à quid , desiero & ; meus dolor
7 כאבי ואחדלה מה־מני יהלך : אך־
.meum conventum omnem desolâsti , me fecit laborare nunc
עתה הלאני השמות כל־עדתי :
mea macies ,me in surrexit & ; fuit testem in , me fecisti rugare Et
8 ותקמטני לעד היה ויקם בי כחשי
, mihi est adversatus & , rapuit ejus Nasus .respondebit meas facies in
9 בפני יענה : אפו טרף וישטמני
suos oculos acuet meus hostis ; suis dentibus in me super frenduit
חרק עלי בשניו צרי ילטוש עיניו
percusserunt opprobrio in , suo ore in me super Hiârunt .me in
10 לי : פערו עלי בפיהם בחרפה הכו
Deus me Concludet .replebuntur me super simul ;meas maxillas
11 לחיי יחד עלי יתמלאון : יסגירני אל
.me faciet divertere impiorum manus super & ; iniquum ad
אל־עויל ועל־ידי רשעים ירטני :
, meam cervicem in apprehendit & , me contrivit & , eram Quietus
12 שלו הייתי ויפרפרני ואחז בערפי
Circuibunt .scopum in sibi me statuit & ; me dispersit contritum &
13 ויפצפצני ויקימני לו למטרה : יסבו
effundet : parcet non & , meos renes scindet ;ejus magni me super
עלי רביו יפלח כליותי ולא יחמל ישפך
facies super diruptione me Rumpet .meum fel terram in
14 לארץ מררתי : יפרצני פרץ על־פני־
super consui Saccum .potens sicut me super curret : rupturæ
15 פרץ ירץ עלי כגבור : שק תפרתי עלי
sunt lutificatæ meæ Facies.meum cornu pulvere in deturpavi & ; meam cutem
16 גלדי ועללתי בעפר קרני : פני חמרמרה
non quod Eo .mortis umbra meis palpebris super & , fletu præ
17 מני־בכי ועל עפעפי צלמות : על לא־
operias ne , Terra .munda mea oratio & ;meis volis in rapina
18 חמס בכפי ותפלתי זכה : ארץ אל־תכסי
Etiam .meo clamori locus fit ne & ; meum sanguinem
19 דמי ואל־יהי מקום לזעקתי : גם־
.excelsis in meus testis & ;meus testis cœlis in ecce nunc
עתה הנה־בשמים עדי ושהדי במרומים :
argueret Et .meus oculus stillavit Deum ad :mei socii Interpretes
20 21 מליצי רעי אל־אלוה דלפה עיני : ויוכח
anni Quia .suo sodali hominis filius & , Deo cum vir
22 לגבר עם־אלוה ובן־אדם לרעהו : כי־שנות
.ambulabo , revertar non ,semita & ; venient numeri
מספר יאתיו וארח לא־אשוב אהלך :

CAP. XVII. יז

Si .mihi sepulchra ,sunt succisi mei dies :est corruptus meus Spiritus
1 2 רוחי חבלה ימי נזעכו קברים לי : אם־
.meus oculus moraretur eorũ irritationibꝰ in &;mecum illusores non
לא התלים עמדי ובהמרותם תלן עיני :
meam manum ad ipse quis : tecum mihi pignora ,nunc Pone
3 שימה־נא ערבני עמך מי־הוא לידי
propterea ;intelligentia ab abscondisti eorum cor Quia ? se percutiat
4 יתקע : כי־לבם צפנת משכל על־כן
ejus filiorum oculi & ; amicis indicabit blanditiem Ad .exaltabis non
5 לא תרמם : לחלק יגיד רעים ועיני בניו
antea gehennæ ignis &;populorum comparare ad me statuit Et .consumẽtur
6 תכלינה : והצגני למשל עמים ותפת לפנים
.ero
אהיה :

Versio VULG. LAT.

4 Poteram & ego similia vestrî loqui : atque utinã esset anima 5 vestra pro anima mea : Consolarer & ego vos sermonibus, & moverẽ caput meum super 6 vos : Roborarem vos ore meo : & moverem labia mea, quasi 7 parcens vobis. Sed quid agã? si locutus fuero, non quiescet dolor meus : & si tacuero, non 8 recedet à me. Nunc autem oppressit me dolor meus, & in nihilum redacti sunt omnes ar- 9 tus mei. Rugæ meæ testimonium dicunt contra me: & suscitatur falsiloquus adversùs faciẽ meam contradicens mihi. 10 Collegit furorẽ suum in me, & comminans mihi, infremuit contra me dentibus suis : hostis meus terribilibꝰ oculis me 11 intuitus est. Aperuerunt super me ora sua, & exprobrantes percusserunt maxillam meam, 12 satiati sunt pœnis meis. Conclusit me Deus apud iniquum, et manibus impiorũ me tradi- 13 dit. Ego ille quondam opulentus, repentè contritus sum: tenuit cervicem meam, confregit me, & posuit me sibi 14 quasi in signum, Circumdedit me lanceis suis, convulneravit lumbos meos, non pepercit, & effudit in terra viscera 15 mea. Concidit me vulnere super vulnus, irruit in me quasi 16 gigas. Saccum consui super cutem meã, & operui cinere car- 17 nem meam. Facies mea intumuit à fletu, & palpebræ 18 meæ caligaverunt. Hæc passus sum absque iniquitate manûs meæ, cùm haberem mun- 19 das ad Deum preces. Terra, ne operias sanguinem meum, neque inveniat in te locum la- 20 tendi clamor meus. Ecce enim in cœlo testis meus, & consci- 21 us meus in excelsis. Verbosi amici mei : ad Deum stillat o- 22 culus meus. Atque utinam sic judicaretur vir cum Deo, quomodò judicatur filius hominis 23 cum collega suo. Ecce enim breves anni transeunt : & semitam, per quam non revertar, ambulo.

CAP. XVII.

1 SPiritus meus attenuabitur, dies mei breviabuntur, & solum mihi superest sepulchrum. 2 Non peccavi, & in amaritudinibus moratur oculus meus. 3 Libera me, Domine, & pone me juxta te, & cujusvis manus 4 pugnet contra me. Cor eorum longè fecisti à disciplina, pro- 5 pterea non exaltabuntur. Prædam pollicetur sociis, & oculi 6 filiorum ejus deficient. Posuit me quasi in proverbium vulgi, & exemplum sum coram eis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

4 † (α) Κἀγὼ καθ' ὑμᾶς λαλήσω, † (β) εἰ ὑπέκειτό γε ἡ ψυχὴ ὑμῶν ἀντὶ τῆς (γ) 5 ἐμῆς, † Εἶτ' ἐναλοῦμαι ὑμῖν (δ) ῥήμασι· 6 † κινήσω δὲ καθ' ὑμῶν κεφαλήν. † Εἴη δὲ ἰσχὺς ἐν τῷ στόματί μου, (ε) κίνησιν δὲ χειλέ- 7 ων οὐ φείσομαι. † Ἐὰν γὰρ λαλήσω, οὐκ ἀλγήσω (ζ) τὸ τραῦμα· † ἐὰν δὲ καὶ σιωπήσω, τί 8 ἔλαττον τρωθήσομαι; † Νῦν δὲ κατάκοπόν με πεποίηκε μωρὸν σεσηπότα, † καὶ ἐπελάβου 9 μου. Εἰς μαρτύριον (η) ἐγενήθη, † καὶ ἀνέστη ἐν ἐμοὶ τὸ ψεῦδός μου, κατὰ πρόσωπόν μου ἀν- 10 ταπεκρίθη. † Ὀργῇ χρησάμενος (θ) κατέβαλέ με, † ἔβρυξεν ἐπ' ἐμὲ τοὺς ὀδόντας, βέλη πειρατῶν αὐτοῦ ἐπ' ἐμοὶ (ι) ἔπεσε. † ἀκίσιν 11 ὀφθαλμῶν ἐνήλατο, † Ὀξεῖ ἔπαισέ με (κ) εἰς τὰ γόνατα, † ὁμοθυμαδὸν δὲ κατέδραμον (λ) 12 ἐπ' ἐμοί. † Παρέδωκε γάρ με ὁ κύριος εἰς χεῖρας (μ) ἀδίκων, † ἐπὶ δὲ ἀσεβέσιν ἔρ- 13 ριψέ με. † Εἰρηνεύοντα διεσκέδασέ με· † λαβών με τῆς κόμης διέτιλε, † κατέστησέ με 14 ὥσπερ σκοπόν. † Ἐκύκλωσάν με λόγχαις βάλλοντες εἰς νεφρούς μου, οὐ φειδόμενοι † ἐξέ- 15 χεαν εἰς (ν) τὴν γῆν τὴν χολήν μου. † Κατέβαλόν με πτῶμα ἐπὶ πτώματι, † ἔδραμον (ξ) 16 πρὸς μὲ δυνάμενοι. † Σάκκον (ο) ἔρραψαν ἐπὶ βύρσης μου, † τὸ δὲ σθένος μου (π) ἐν γῇ 17 ἐσβέσθη. † Ἡ γαστήρ μου συγκέκαυται ἀπὸ κλαυθμοῦ, ἐπὶ δὲ (ρ) βλεφάροις μου σκιά. 18 † Ἄδικον δὲ οὐδὲν ἦν ἐν χερσί μου, † εὐχὴ 19 δέ μου καθαρά. † Γῆ μὴ ἐπικαλύψῃς ἐφ' αἵματι (σ) τῆς σαρκός μου, μηδὲ εἴη τόπος 20 (ʹ) τῇ κραυγῇ μου. † Καὶ νῦν ἰδοὺ ἐν οὐρανοῖς ὁ (τ) μάρτυς μου, † ὁ δὲ συνίστωρ μου ἐν ὑψί- 21 στοις. † Ἀφίκοιτό (υ) μου ἡ δέησις πρὸς κύριον, † ἔναντι δὲ αὐτοῦ (φ) στάζοι μου ὁ ὀφθαλ- 22 μός. † Εἴη δὲ (χ) ἔλεγχος ἀνδρὶ ἔναντι κυρίου, † καὶ (ψ) υἱῷ ἀνθρώπου τῷ πλησίον 23 αὐτοῦ. † Ἔτη δὲ ἀριθμητὰ (ω) ἥκασιν, † ὁδῷ δὲ ᾗ οὐκ ἐπαναστραφήσομαι, πορεύσομαι.

4 Et ego secundùm vos loquar: Si (b) subjecta esset anima vestra pro mea; 5 Deindè insultabo in vos verbis, & movebo contra vos caput. 6 Sit autem fortitudo in ore meo: motui autem labiorum non parcam. 7 Si enim loquar, non dolebo (c) vulnus. Quod etsi tacebo, quid minùs vulnerabor? 8 Nunc autem lassatum me fecit, (d) stultum, putrem: (e) & apprehendisti me. 9 In (f) testimonium fuit, & surrexit super (g) me mendacium meum: contra faciem meam respondit. 10 Iracundiâ usus dejecit me: fremuit super me dentibus: sagittæ piratarum ejus super me deciderunt: acie (h) oculorum insiluit, 11 (i) Mucrone percussit me in genibus: & simul concurrerunt in me. 12 Tradidit enim me Dominus in manus injustorum, (k) & super impios projecit me: 13 In pace cùm essem, discerpsit me, (l) tenens me comâ divulsit: statuit me sicut signum. 14 Circumdederunt me lanceis emittentes in renes meos: non parcentes effuderunt in terram fel meum. 15 Dejecerunt me ruinam super ruinam: cucurrerunt erga me potentes: 16 Cilicium assuerunt corio meo, robur autem meum in terra extinctum est: 17 Venter meus combustus est à fletu, & super palpebras meas (m) umbra. 18 Injustum autem nihil fuit in manu mea: deprecatio autem mea munda. 19 Terra, (n) ne operias super sanguinem carnis meæ, nec sit locus clamori meo: 20 Et ecce nunc in cœlis est testis meus, & conscius meus in excelsis. 21 Perveniat oratio mea ad Dominum: & coram eo stillet oculus meus: 22 Sit autem redargutio viro coram Domino, & (o) filii hominis ad proximum suum. 23 Anni enim dinumerati venerunt: & viâ, per quam non revertar, ambulabo.

MS.A. (α) Καὶ ἐγὼ δὲ καθ' (β) εἴγε ὑπέκειτο ἡ (γ) ἐμῆς ψυχῆς, (δ) λόγοις· (ε) καὶ κίνησιν χειλέων (ζ) τὸ τραῦμά μου· (η) ἐγενήθην, (θ) κατέβαλέν με, ἔβρυξεν δὲ ἐπ' ἐμὲ τοὺς ὀδόντας αὐτοῦ, βέλη πειρατηρίων (ι) ἔπεσεν. (κ) ἐπὶ τὰ (λ) ἐπ' ἐμέ. (μ) ἀδίκου, ἐπὶ δὲ ἀσεβεῖς (ν) γῆν τὴν ζωήν μου. (ξ) ἐπ' ἐμὲ δυνατοί. (ο) *ἔρριψαν ἐπὶ βύρσῃ (π) εἰς γῆν ἐσβέσθη. (ρ) βλεφάρων μου σκιὰ θανάτου. Ἄδικον γὰρ (σ) σαρκός μου, (ʹ) τῆς κραυγῆς (τ) μάρτυς, ὁ δὲ (υ) ἡ δέησίς μου (φ) στάξαι ὁ ὀφθαλμός μου. (χ) ὁ ἔλεγχός μου ἔναντι (ψ) υἱὸς ἀνθρώπου (ω) ἥκουσίν μοι, ὁδῷ

ΚΕΦ. ιζʹ.

1 † ὈΛέκομαι πνεύματι φερόμενος, † δέ- 2 ομαι δὲ ταφῆς, καὶ οὐ τυγχάνω. † Λίσσομαι κάμνων (α) καὶ τί ποιήσας; † ἔκλεψαν δέ 3 μου (β) τὰ ὑπάρχοντα ἀλλότριοι. Τίς ἐστιν οὗτος; τῇ χειρί μου συνδεθήτω. 4 † Ὅτι καρδίαν αὐτῶν (γ) ἔκρυψας ἀπὸ φρονήσεως, 5 † διὰ τοῦτο (δ) οὐ μὴ ὑψώσῃς αὐτούς. † Τῇ μερίδι ἀναγγελεῖ κακίας, † ὀφθαλμοὶ (ε) δὲ ἐφ' 6 υἱοῖς ἐτάκησαν. † (ζ) Ἔθου δέ με θρύλλημα ἐν ἔθνεσι, (η) γέλως δὲ αὐτοῖς ἀπέβην.

CAP. XVII.

1 PErco spiritu agitatus: oro autem sepulchrum, & non contingit mihi. 2 (a) Preces adhibeo cum labore; & (b) quid feci? & furati sunt extranei bona mea. 3 Quis est iste? manu meâ ligetur. 4 Quia cor eorum (c) abscondisti à prudentia: propter hoc ne exaltaveris eos. 5 (d) Parti nuntiabit mala: & (e) oculi super filios tabuerunt. 6 Posuisti autem me (f) fabulam in nationibus, & risus illis deveni.

MS.A. (α) καὶ τί ποιήσω; (β) ἀλλότριοι τὰ ὑπάρχοντα. (γ) ἔκρυψαν (δ) οὐ μὴ (ε) δέ μου ἐφ' (ζ) Ἔθου με (η) καὶ ἀπέβην αὐτοῖς *γέλος.

תרגום TARGUM.

לחוד אנא כותכון אמלל לוי דאית נפשכון חלופי נפשי אחבר עליכון במליא ואטלטל עליכון במו רישי : אחילכון במו פומי וטלטול ספותי 4 5
יתמנע : אין אמלל לא יפסוק כיבי ואפסוק מה מני ייזל : לחוד כדון שלהיני צדיתא כל סיעתי : ונקפתני לסהיד הוה ואקים לאסהדא עלי 6 7 8
כדבובי על אפי : רוגזיה תבר ונטר לי דבבו עסי עלי בככוי מעיקי היך אומל חריף עינוי לי : פתחין עלי פומהון בחסודא מחו ליסתי כחדא 9 10
עלי בנסא מתמלאין : ימסרנני אלהא לות מרי זדונא ועל ידי דרשיעין ממרטט יתי : שליוא הויתי ודעדקנני ואחד בקדלי ותברנני ואוקמנני 11 12
ליה לפלנסא : יחזרון עלי גררוי יקטע כליתי ולא יחוס ישדי לארעא מרירתי : יתקפנני תקוף על אפי תקוף ירהוט עלי היך גברא : סקא 13 14 15
חיטית עלוי משכי ופלפלית בעפרא איקרי : אפי מטשטשין מן בכותא ועל תימורי טולי מותא : על דלית חטופא בידי וצלותי דכיא : 16 17
ארעא לא תחפין ארמי ולא יהי אתר לקבלתי : לחוד כדון דאית בשמיא מסהדי ומסהיד עלי במרומיא : פרקליטי חברי קדם אלהא ולגת 18 19 20
עיני : אפשר דמכסן בר נש עם אלהא והיך אנש עם חבריה : מטול דשני מנין אתין ואסרטא דלא אתוב איזל : 21 22

יז

נפשי מתחבלא יומי דעיכו קבורן מתקנן לי : אין לא מתלעבין בהדי ובפרוניהון תבית עיני : שוי כדון ערב יתי עמך מן הוא לידי יקים : 1 2 3
ארום לבהון אטשתא מסכלתנו מטול היכנא לא תרומם להום : למפלג על אחוית חבריא ועיני בנוי תשתיצון : ועתדני למתלין בעמיא ונהנם 4 5 6
מן לגיו אהי :

Verſio SYRIACA.

* ܐܦ ܐܢܐ ܐܝܟܘܬܟܘܢ ܐܡܠܠ. ܐܠܘ ܕܐܝܬ ܒܠܚܘܕ ܗܘܘ ܢܦܫܬܟܘܢ ܚܠܦ ܢܦܫܝ. ܘܡܒܩܐ ܗܘܝܬ
4 ܒܡܠܐ. ܘܡܢܝܕ ܗܘܝܬ ܥܠܝܟܘܢ ܒܪܫܝ. * ܡܒܩܐ ܗܘܝܬ ܒܡܠܝܟܘܢ. ܘܡܡܠܠܐ ܕܣܦܘܬܝ. ܠܐ ܗܘܝܬ ܟܠܐ ܡܢܟܘܢ.
5 6 * ܐܢ ܐܡܠܠ ܠܐ ܢܬܦܢܐ ܟܐܒܝ. ܘܐܢ ܫܠܐ ܐܢܐ ܡܢܘ ܡܦܨ ܠܝ. * ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܐܠܐܢܝ ܘܢܛܪ ܟܠܗܝܢ
7 8 ܣܗܕܘܬܝ. * ܘܐܩܝܡܢܝ ܘܗܘܝܬ ܣܗܕܐ. ܘܩܡ ܒܝ ܟܕܒܘܬܝ. ܘܩܕܡܘܗܝ ܡܠܠܬ. * ܘܪܘܓܙܗ ܬܒܪܢܝ
9 ܘܦܫܚܢܝ. ܘܚܪܩ ܥܠܝ ܫܢܘܗܝ. ܒܥܠܕܒܒܝ ܢܓܙܘ ܥܝܢܝܗܘܢ ܒܝ. * ܘܥܠܝ ܦܬܚܘ ܦܘܡܗܘܢ.
10 ܒܚܣܕܐ. ܘܡܚܘ ܦܟܝ ܐܟܚܕܐ. ܘܐܬܡܠܝܘ ܥܡܗܘܢ ܗܘܘ ܥܠܝ. * ܘܐܫܠܡܢܝ ܠܡܠܐܟܐ ܥܘܠܐ. ܘܒܐܝܕܝ
11 ܕܪܫܝܥܐ ܐܫܠܡܢܝ. * ܫܠܐ ܗܘܝܬ ܘܫܚܩܢܝ. ܘܐܚܕ ܒܨܘܪܝ ܘܦܪܦܪܢܝ. ܘܐܩܝܡܢܝ ܠܗ ܐܝܟ ܢܝܫܐ. * ܘܣܓܝܘ
12 13 ܥܠܝ ܓܐܪܘܗܝ. ܘܫܕܐ ܒܟܘܠܝܬܝ ܘܠܐ ܚܣ. ܐܫܕ ܠܐܪܥܐ ܡܪܪܬܝ. * ܬܒܪܢܝ ܬܒܪܐ ܓܘ ܬܒܪܐ. ܘܪܗܛ ܥܠ
14 15 ܥܠܝ ܐܝܟ ܠܓܢܒܪܐ. * ܣܩܐ ܚܛܬ ܥܠ ܡܫܟܝ. ܘܛܘܫܬ ܒܥܦܪܐ ܪܫܝ. * ܐܦܝ ܐܬܟܡܪܘ ܡܢ
16 17 ܒܟܝܐ. ܘܥܝܢܝ ܡܢ ܛܠܠܗ ܕܡܘܬܐ. * ܠܐ ܕܚܛܝܬ ܥܘܠܐ ܒܐܝܕܝ. ܘܨܠܘܬܝ ܕܟܝܐ. * ܐܪܥܐ ܠܐ ܬܟܣܐ ܕܡܝ.
18 19 ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܐܬܪܐ ܠܩܥܬܝ. * ܘܗܫܐ ܗܐ ܒܫܡܝܐ ܣܗܕܝ. ܘܝܕܘܥܝ ܒܡܪܘܡܐ. * ܐܚܝ ܘܪܚܡܝ ܠܘܬ ܐܠܗܐ
20 21 ܕܡܥܬ ܥܝܢܝ. * ܠܘ ܕܝܢ ܢܟܣ ܓܒܪܐ ܠܐܠܗܐ. ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܠܚܒܪܗ. * ܕܫܢܝܐ ܕܡܢܝܢܐ ܐܬܝܢ.
22 ܘܒܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܐܗܦܘܟ ܐܙܠ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܙ * ܪܘܚܝ ܐܬܚܒܠܬ. ܘܝܘܡܝ ܐܬܕܥܟܘ. ܩܒܪܐ
1 2 ܠܝ ܡܛܝܒ. * ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܥܘܠܐ ܠܘܬܝ. ܘܒܡܪܝܪܘܬܗܘܢ ܒܬܬ ܪܘܚܝ. * ܣܝܡ ܢܐ ܡܥܡܪܝ ܠܘܬܟ. ܡܢܘ
3 4 ܗܢܐ ܕܢܩܒܠ ܐܝܕܝ. * ܡܛܠ ܕܠܒܗܘܢ ܟܣܝܬ ܡܢ ܣܘܟܠܐ. ܡܛܠܗܢܐ ܢܬܪܝܡܘܢ ܒܦܠܓܘܬܐ.
5 6 * ܘܢܬܪܘܪܒ ܪܚܡܐ ܥܠ ܪܚܡܗ. ܘܥܝܢܝ ܕܒܢܝܗܘܢ ܢܚܫܟܢ. * ܘܐܩܝܡ ܫܠܝܛܐ ܕܥܡܡܐ.
ܘܬܫܥܝܬܐ ܠܐ ܐܦܝܗܘܢ ܐܗܘܐ.

Verſio ARABICA.

* وايضا انا مثلكم اتكلم. فليت الآن انفسكم كانت بدل نفسي. قد امتحنتكم بالقول ونغضت
4 برأسي عليكم * خصمتكم بكلامكم. وكلام شفتي لم امنعه منكم * إن تكلمت فلم يذهب وجعي.
5 6 وإن سكت فمن الذي يفرج لي * من اجل انه قد اتعبني. وحفظ جميع شهاداتي * واقامني فكنت
7 8 شاهدا. وقام علي كذبي. قدامه تكلمت * غضبه قد كسرني وسحقني. واصر علي باسنانه. اعداي اغمضوا
9 اعينهم * وعلي فتحوا افواههم بالحقد. وضربوا خدي جميعهم وامتلوا علي حمية * واسلمني الي الملك
10 11 المنافق. وبيد الفاجر اسلمني * ساكنا كنت فظلمني. واخذ بعنقي وبددني. اقامني له مثل الغرض.
12 * وكثرت علي سهامه فالقاها في كلايتي ولم يرثا. القا علي الارض مرارتي * ثلمني ثلمة في جوف ثلمة.
13 14 وعدا علي مثلما يعدوا علي الجبار * والمسح اكتسيت علي جسدي. وغطيت بالتراب راسي * ووجهي
15 16 تشوه من البكاء. ونواظري من ظلال الموت * حين ليس اثم في يدي. وصلاتي طاهرة * فان الارض لا
17 18 تغطي دمي. ولا يكون مكانا لصياحي * وهوذا في السماء شهودي وعارفي في العلو * اخوي واحبتي عند
19 20 الله. فاضت عيني * ليت كان يبكت الانسان الله. مثلما يبكت الرجل صاحبه * الذي عدد سنيه ياتي.
21 22 والي الطريق التي لا يرجع ينطلق. * الفصل السابع عشر * روحي كربت. وايامي انطفت
1 اعدوا لي حربا * فانه ليس اثم عندي. وفي مرارتهم باتت روحي * اصنع الان سكناي عندك.
2 3 من هذا الذي يسلم يدي. لان مسكني عندك * قلوبهم منعتها من الفهم. من اجل هذا يرتفعون
4 في القسمة * ويتكبر الحبيب علي حبيبه. وعيون ابنايهم تظلم * واقيم سلطانا علي الشعوب. وغشاء
5 6 علي وجوههم يكون.

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

4 *Ego quoque ſicut vos loquar. Utinam modò (a) eſſent animæ veſtræ pro anima mea: probarem vos ſermone, & moverem caput meum ſuper vos:* 5 *Diſquirerem vos ſermonibus veſtris, & verba labiorum meorum non prohiberem à vobis.* 6 *Si loquar, non recedet à me dolor meus; & ſi tacuero, quis me refocillabit?* 7 *Quia jam defatigavit me, & obſervavit omnia teſtimonia mea;* 8 *Et conſtituit me, ac fui teſtis, & inſurrexit in me mendacium meum: coram ipſo locutus ſum,* 9 *Et ira ejus fregit me laceravitque, & frenduit ſuper me dentibus ſuis. Inimici mei (b) clauſerunt oculos ſuos.* 10 *Et adverſum me aperuerunt ora ſua (c) cum indignatione, & percuſſerunt genas meas ſimul, & impleti ſunt contra me furore.* 11 *Et tradidit me angelo impio, & in manum perverſi tradidit me.* 12 *Pacificus eram, & oppreſſit me; & tenuit collum meum, & diſſipavit me: conſtituit me ſibi tanquã ſcopum,* 13 *Et multiplicatæ ſunt contra me ſagittæ ejus, & jaculatus eſt eas in renes meos, & non commotus eſt pietate: effudit ſuper terram fel meum,* 14 *(d) Incuſſit mibi labem intra labem, & irrupit in me ac ſi irrumperet in gigantem.* 15 *Unde cilicio indutus ſum ſuprà corpus meum, & (e) cooperui pulvere caput meum:* 16 *Et deturpata eſt facies mea præ fletu, & papillæ meæ ab umbra mortis;* 17 *Cùm non ſit iniquitas in manibus meis, & oratio mea pura.* 18 *Quoniam terra non tegit ſanguinem meum, & non eſt locus clamori meo,* 19 *Et (f) ecce in cœlo ſunt teſtes mei, & cognoſcentes me, in excelſo:* 20 *Fratres meos & amicos meos ad Deum profudit oculus meus.* 21 *Utinam argueret homo Deum, ſicut vir proximum ſuum arguit,* 22 *Cujus numerus annorum venit, quique ad viam per quam non revertitur, proficiſcitur.*

CAP. XVII.

1 *Spiritus meus contriſtatus eſt, et dies mei extincti ſunt, paraverunt mihi (†) bellũ.* 2 *Certè non eſt penes me iniquitas, tamen in amaritudine illorũ pernoctavit ſpiritus meus.* 3 *Fac modò habitationem meam apud te. Quis eſt ille qui fœdus ineat in manu mea, quandoquidem habitatio mea apud te eſt?* 4 *Corda eorũ cobibuiſti ab intelligẽtia, propterea extolluntur cũ diviſione.* 5 *Et exaltatur amicus in amicũ ſuum, et oculi filiorũ eorũ obſcurabuntur.* 6 *Et conſtituam principem (a) ſuper populos, & velamen ſuper oculos eorum (b) erit;*

INTERP. SYRIACA.

(a) factæ eſſent (b) appoſuerunt oculos in me. (c) cum probro, (d) Dirumpit me rupturâ intra rupturam, & incurrit in me ſicut in gigantem. (e) inquinavi (f) nunc ecce CAP. XVII. (†) ſepulchrum. (a) populorum, (b) ero;

PARAPH CHALD. Verſio Latina.

Attamen ego ſicut vos loquar: utinam eſſet anima veſtra pro anima mea: componerem ſuper vos ſermones: moverem ſuper vos caput meum. Roborarem vos ore 4 meo, & motus labiorum meorum prohiberetur. Si locutus fuero non *ceſſabit* dolor meus: & ſi ceſſavero, quid decedet à me? Attamen nunc laborare me facit: 6 7 deſolaſti omnem turbam meam. Et confregiſti cervicem meam, in teſtimonium fuit, & ſuſcitavit in teſtimonium contra me mendacium meum in faciem meam. Furore ſuo 8 9 confregit & obſervavit mihi inimicitiam; infremuit contra me dentibus ſuis: *adverſarius meus* quaſi novaculam acuit oculos ſuos contra me. Aperuerunt ſuper me 10 os ſuum in opprobrium, percuſſerunt maxillas meas, ſimul contra me repleti ſunt ira. Tradidit me Deus ſuperbis, & per manus impiorum convellit me. Opulentus 11 12 eram, & comminuit me: & tenuit cervicem meam, & confregit me, & poſuit me ſibi in ſcopum. Circundederunt me ſagittæ ejus, ſuccidit renes meos & non pepercit: effudit in terram fel meum. 13 14 Exarſit in me furore ſuper furorem, cucurrit contra me ſicut fortis. Saccum conſui ſuper cutem meam, & aſperſi ſuper pulvere gloriam 15 16 meam. Facies mea obliterata eſt fletu, & ſuper palpebras meas umbra mortis. Quoniam non eſt rapina in manibus meis, & oratio mea munda. Terra ne operias ſanguinem meum, neq; ſit locus clamori meo. 17 18 Attamen nunc, *ecce* eſt in cœlis teſtis meus, & teſtificans ſuper me in excelſis. Parachti mei ſocii mei, coram Deo ſtillat 19 20 oculus meus. Nunquid poteſt filius hominis arguere cum Deo, ſicut homo cum amico ſuo? Quia annorum numerus venit, & ſemitam per quam non revertar, ambulabo. 21 22

CAP. XVII.

Anima mea corrupta eſt, dies mei ſucciſi ſunt, ſepulchra parentur mihi. Si non ſunt irriſores mecum, & in commutatione eorum manet oculus meus. Pone nunc fidejuſſorem me apud te: quis eſt qui *manui meæ ſpondeat*. 1 2 Quoniam cor eorum abſcondiſti ab intellectu, propterea non exaltabis eos. Qui ad dividendum annuntiat ſociis, oculi filiorum ejus conſumentur. 3 4 Et ſtatuiſti me in proverbia in populis; & ab interitu gehenna ero. 5 6

איוב : יח

umbra ſicut meæ phantaſiæ & ; meus oculus *indignatione præ* caligavit Et
7 ותכה מכעש עיני ויצרי כצל
ſuper innocens & ,hoc ſuper recti Stupebunt .*ipſæ* univerſæ
8 כלם : ישמו ישרים על־זאת ונקי על־
mundus & ; ſuam viam juſtus tenebit Et .ſuſcitabitur *hypocritam*
9 חנף יתערר : ויאחז צדיק דרכו וטהר־
, revertimini omnes vos verè *Et* .fortitudinem addet manibus
10 ידים יסיף אמץ : ואלם כלם תשובו
mei Dies .ſapientem vos inter inveniam non & ; *nunc* venite &
11 ובאו נא ולא־אמצא בכם חכם : ימי
.mei cordis *poſſeſſiones* ; ſunt evulſæ meæ cogitationes ,tranſierunt
עברו זמתי נתקו מורשי לבבי :
.tenebrarum *faciebus* à propinquam lucem ; *ponent* diem in Noctem
12 לילה ליום ישימו אור קרוב מפני־חשך :
.*mea ſtrata* ſtravi tenebris in ; *meam domum* ſepulchrum expectavero Si
13 אם־אקוה שאול ביתי בחשך רפדתי יצועי :
meam ſororem & , meam matrem ; tu meus Pater : vocavi Foveam
14 לשחת קראתי אבי אתה אמי ואחתי
meam præſtolationem & ? mea præſtolatio nunc ubi Et .vermem
15 לרמה : ואיה אפו תקותי ותקותי
pariter num ; *deſcendent* inferni *Fulcra* ? *eam intuebitur* quis
16 מי ישורנה : בדי שאל תרדנה אם־יחד
? requies pulvere *ſuper*
על־עפר נחת :

CAP. XVIII. יח

ponetis Uſquequo : dixit & , Suchites Bildad reſpondit Et
1 2 ויען בלדד השחי ויאמר : עד־אנה תשימון
reputamur Cur : loquemur poſteà & ,intelligatis? ſermonibus fines
3 קנצי למלין תבינו ואחר נדבר : מדוע נחשבנו
ſuam animam *Rapiens* ? veſtris oculis in *ſumus clauſi* ;jumentum ut
4 כבהמה נטמינו בעיניכם : טרף נפשו
transferetur & ; terra derelinquetur te propter nunquid ,ſuo furore in
באפו הלמענך תעזב ארץ ויעתק
non & ; extinguetur impiorum lux Etiam ? ſuo loco è ſaxum
5 צור ממקומו : גם אור רשעים ידעך ולא־
; ejus tabernaculo in *tenebreſcit* Lux .ejus ignis ſcintilla ſplendebit
6 יגה שביב אשו : אור חשך באהלו
; ejus potentiæ greſſus Arctabuntur .extinguetur eum ſuper ejus lucerna &
7 ונרו עליו ידעך : יצרו צעדי אונו
rete *in* eſt miſſum Quia .ſuum conſilium eum projiciet &
8 ותשליכהו עצתו : כי שלח ברשת
Apprehendet .ambulabit *retiaculum* ſuper & ; ejus pedibus in
9 ברגליו ועל־שבכה יתהלך : יאחז
Abſconditum .*ſitibundos* eum *ſuper* roborabit ; laqueus calcaneum *in*
10 בעקב פח יחזק עליו צמים : טמון
Undique .ſemitam ſuper ejus decipula & ; ejus *funis* terra in
11 בארץ חבלו ומלכדתו עלי נתיב : סביב
Erit .ſuis pedibus *in* eum diſpergent & ; terrores eum terrebunt
12 בעתהו בלהות והפצהו לרגליו : יהי־
Comedet .ejus *coſtæ* *paratum* *exitium* & ; ejus *robur* famelicum
13 רעב אנו ואיד נכון לצלעו : יאכל
Evelletur .mortis primogenitus ejus *ramos* comedet ; ejus cutis *ramos*
14 בדי עורו יאכל בדיו בכור מות : ינתק
regem ad eum faciet incedere & ; ejus fiducia ejus tabernaculo è
מאהלו מבטחו ותצעדהו למלך
ſuper ſpargetur ; *ei non propter*,ejus tabernaculo in Habitabit .terrorum
15 בלהות : תשכון באהלו מבלי־לו יזרה על־
; ſiccabuntur ejus radices Deorſum .ſulphur ejus habitaculum
16 נוהו גפרית : מתחת שרשיו יבשו
.ejus *meſſis* excidetur ſurſum *de* &
וממעל ימל קצירו :

Verſio VULG. LAT.

7 Caligavit ab indignatione oculus meus, & membra mea
quaſi in nihilum redacta ſunt.
8 Stupebunt juſti ſuper hoc, &
innocens contra hypocritam
9 ſuſcitabitur. Et tenebit juſtus
viam ſuam,et mundis manibus
10 addet fortitudinem. Igitur omnes vos convertimini, & venite, & non inveniam in vo-
11 bis ullum ſapientem. Dies
mei tranſierunt, cogitationes
meæ diſſipatæ ſunt, torquentes
12 cor meum. Noctem verterunt
in diem, & rurſum poſt tene-
13 bras ſpero lucem. Si ſuſtinuero, infernus domus mea eſt,
& in tenebris ſtravi lectulum
14 meum. Putredini dixi, Pater
meus es: mater mea, & ſoror
15 mea, vermibus. Ubi eſt ergò
nunc præſtolatio mea, & patientiam meam quis conſiderat?
16 In profundiſſimum infernũ deſcendent omnia mea: putáſne
ſaltem ibi erit requies mihi?

CAP. XVIII.

1 RESpondens autem Baldad
2 Suhites,dixit; Uſque ad quem
finem verba jactabitis? intelligite priùs, & ſic loquamur.
3 Quarè reputati ſum⁹ ut jumenta, & ſorduimus coram vobis?
4 Qui perdis animã tuam in furore tuo, numquid propter te
derelinquetur terra, & transferentur rupes de loco ſuo?
5 Nónne lux impii extinguetur,
nec ſpendebit flamma ignis e-
6 jus? Lux obtenebreſcet in tabernaculo illi⁹, & lucerna, quæ
7 ſuper eum eſt, extinguetur. Arctabuntur greſſus virtutis ejus,
& præcipitabit eum conſilium
8 ſuum. Immiſit enim in rete pedes ſuos, & in maculis ejus am-
9 bulat. Tenebitur planta illius
laqueo, & exardeſcet contra
10 eum ſitis. Abſcondita eſt in
terra pedica ejus, & decipula
11 illius ſuper ſemitam. Undique terrebũt eum formidines,
12 & involvent pedes ejus. Attenuetur fame robur ejus, &
inedia invadat coſtas illius.
13 Devoret pulchritudinem cutis
ejus, conſumat brachia illius
14 primogenita mors. Avellatur
de tabernaculo ſuo fiducia ejus, & calcet ſuper eum, quaſi
15 rex, interitus. Habitent in
tabernaculo illius ſocii ejus,
qui non eſt, aſpergatur in ta-
16 bernaculo ejus ſulphur. Deorſum radices ejus ſiccentur,
ſurſum autem atteratur meſſis
ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 † (θ) Πεπώρωνται γὰρ ἀπὸ ὀργῆς οἱ ὀφθαλμοί
μου, † (ι) πεπολιόρκημαι μεγάλως ὑπὸ
πάντων. † Θαῦμα ἔσχεν ἀληθινοὺς (κ) ἐπὶ
8 τούτῳ, † δίκαιος δὲ ἐπὶ παρανόμῳ ἐπανα-
9 σταίη. † Σχοίη δὲ πιστὸς τὴν ἑαυτοῦ ὁδόν,
† (λ) καθαρὸς δὲ χεῖρας ἀναλάβοι θάρσος.
10 † Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ πάντες ἐρείδετε καὶ (μ)
δεῦτε δή, οὐ γὰρ εὑρίσκω ἐν ὑμῖν ἀληθές.
11 (ν) Αἱ ἡμέραι μου παρῆλθον ἐν βρόμῳ,
† ἐρράγη δὲ τὰ ἄρθρα τῆς καρδίας μου.
12 † Νύκτα εἰς ἡμέραν (ξ) ἔθηκα, † φῶς ἐγγὺς
13 ἀπὸ προσώπου σκότους. † Ἐὰν γὰρ ὑπομείνω,
ᾅδης μου ὁ οἶκος, † ἐν δὲ γνόφῳ ἔ-
14 στρωταί μου ἡ στρωμνή. † Θάνατον (ο) ἐπεκαλεσάμην
πατέρα μου εἶναι, † μητέρα δέ
15 μου καὶ ἀδελφὴν σαπρίαν. † Ποῦ οὖν μου (π)
ἔτι ἐστὶν ἡ ἐλπίς, † ἢ τὰ ἀγαθά μου (ρ) ὄ-
16 ψομαι; † Ἦ μετ᾽ ἐμοῦ εἰς (σ) ᾅδην καταβήσονται;
† ἢ ὁμοθυμαδὸν ἐπὶ χώματος
καταβησόμεθα;

Cæcati enim ſunt ab ira oculi mei: expugnatus ſum valdè ab omnibus. Admiratio tenuit veraces ſuper hoc: juſtus autem ſuper inimicum conſurgat. (g) Teneat autem fidelis viam ſuam: & purus manibus ſumat audaciam. Veruntamen omnes incumbite, & venite, quæſo: non enim invenio in vobis veritatem. Dies mei tranſierunt in ſtrepitu, & (h) rupti ſunt articuli cordis mei. Noctem in diem (i) poſui: lumen propè à facie tenebrarum. Nam ſi ſuſtinuero, inferi domus mea erunt: & in caligine ſtratum eſt ſtratum meum. Interitum appellavi patrem meum eſſe, matrem autem meam, & ſororem, tabem. Ubi igitur eſt mea jam ſpes? aut bona mea videbo? Aut mecum ad inferos deſcendent? aut pariter ſuper pulverem deſcendemus?

MS.A. (θ) Πεπήρωνται δὲ ἀπὸ ὀργῆς σου οἱ (ι) καὶ πεπολιόρκημαι ὑπὸ πάντων μεγάλως. (κ) ἐπὶ τούτοις, δικαίῳ γὰρ παράνομος ἐπανέστη. (λ) καὶ ὁ καθαρὸς χερσὶν (μ) δεῦτε, οὐ γὰρ (ν) Καὶ ἡμέραι μου παρῆλθον ἐν δρόμῳ, (ξ) ἔθηκαν, (ο) προσεκαλεσάμην (π) ἔτι ἡ ἐλπίς, (ρ) ὄψομαι ἔτι; (σ) τὸν ᾅδην καταβήσεται;

ΚΕΦ. ιη΄.

1 † ΥΠολαβὼν δὲ (α) Βαλδὰδ ὁ Σαυχίτης,
2 λέγει, † Μέχρι τίνος οὐ παύσῃ; † ἐπίσχες,
3 ἵνα καὶ αὐτοὶ λαλήσωμεν. † (β) Διατί δὲ
ὥσπερ τετράποδα σεσιωπήκαμεν ἐναντίον
4 σου; † (γ) Κέχρηταί σοι ὀργῇ. † τί γάρ;
ἐὰν (δ) σὺ ἀποθάνῃς, ἀοίκητος (ε) ἡ ὑπ᾽
οὐρανόν; † ἢ καταστραφήσεται (ζ) ὄρη ἐκ
5 θεμελίων; Καὶ φῶς ἀσεβῶν σβεσθήσεται,
6 † καὶ οὐκ (η) ἀποβήσεται αὐτῶν ἡ φλόξ. † Τὸ
φῶς αὐτοῦ σκότος ἐν (θ) διαίτῃ, † ὁ δὲ
7 λύχνος ἐπ᾽ αὐτῷ σβεσθήσεται. † (ι) Θηρεύσαισαν
ἐλάχιστοι τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ·
8 σφάλαι δὲ αὐτοῦ ἡ βουλή. † Ἐμβέβληται δὲ
ὁ ποὺς αὐτοῦ ἐν παγίδι, † (κ) ἐν δικτύῳ
9 ἑλιχθείη. † (λ) Ἔλθοισαν δὲ ἐπ᾽ αὐτὸν παγίδες
(μ), κατισχύσει ἐπ᾽ αὐτὸν διψῶντας.
10 Κέκρυπται ἐν τῇ γῇ σχοινίον αὐτοῦ, † καὶ ἡ
11 σύλληψις αὐτοῦ (ν) ἐπὶ τρίβων. Κύκλῳ
† ὀλέσαισαν αὐτὸν ὀδύναι· πολλοὶ δὲ
12 περὶ πόδα αὐτοῦ ἔλθοισαν Ἐν λιμῷ στενῷ·
† πτῶμα δὲ αὐτῷ (ʹ) ἡτοίμασται ἐξαίσιον.
13 † Βρωθείησαν αὐτοῦ κλῶνες ποδῶν, † κατέδεται
δὲ αὐτοῦ (ξ) τὰ ὡραῖα θάνατος.
14 † Ἐκραγείη δὲ ἐκ διαίτης αὐτοῦ ἴασις, †
σχοίη δὲ αὐτὸν ἀνάγκη (ο) αἰτίᾳ βασιλικῇ.
15 † Κατασκηνώσει ἐν τῇ σκηνῇ αὐτοῦ (π)
ἐν νυκτὶ αὐτοῦ, † καταπαρήσονται τὰ εὐ-
16 πρεπῆ αὐτοῦ θείῳ. Ὑποκάτωθεν αἱ ῥίζαι
αὐτοῦ ξηρανθήσονται, καὶ ἐπάνωθεν ἐπιπεσεῖται
θερισμὸς αὐτοῦ.

CAP. XVIII.

REſpondens autem Baldad Sauchites, ait: Quouſque non ceſſabis? cohibe te, ut et ipſi loquamur. Et cur tanquam quadrupedia tacuimus corã te? (a) Uſa eſt te ira. Quid enim? ſi tu mortuus fueris, inhabitabilis erit ea quæ ſub cœlo? aut ſubvertentur montes à fundamentis? Et lumen impiorum extinguetur, & non (b) procedet lumen eorum. Lux ejus tenebræ in domo, & lucerna ſuper eum extinguetur: Venentur infimi ſubſtantiam ejus; (c) erret autem ejus conſilium. Et (d) immiſſus eſt pes ejus in laqueum: in rete involvatur. Veniant autem ſuper eum laquei: confortabit ſuper eum (e) ſitientes. Abſconditus eſt in terra funiculus ejus, & (f) captio ejus in ſemita. Per circuitum perdant eum dolores: & (g) multi circa pedes ejus veniant In anguſtia famis: Ruina autem parata eſt ei inſignis: Comedantur rami pedum ejus, & mors devoret ſpecioſa ejus. Rumpatur autem de habitaculo ejus ſanitas: (h) & teneat eum neceſſitas cauſâ regali: Habitet in tabernaculo ejus, in (i) nocte ejus. Aſpergentur (k) ſpecioſa ejus ſulphure: De ſubtus radices ejus ſiccabuntur, & de ſurſum decidet meſſio ejus.

MS.A. (α) Βαλδὰς ὁ Αὐχίτης, (β) Ἵνα τί δὲ (γ) Κέχρησε δὲ ὀργῇ. (δ) * σοι (ε) ἔσται ἡ (ζ) ἡ γῆ ἐκ θεμελίων; (η) ἀναβήσεται αὐτοῦ (θ) διαίτῃ αὐτοῦ, ὁ δὲ λύχνος αὐτοῦ ἐπ᾽ αὐτῷ (ι) Θηρεύσαιαν τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ ἐλάχιστοι καὶ σφαλείη αὐτοῦ ἡ βουλή. Ἐμβληθείη δὲ (κ) καὶ ἐν δικτύῳ εἱλιχθείη. (λ) * Ἔλθοι δὲ ἐν δὲ (μ) κυκλόθεν, καὶ κατισχύσουσιν ἐπ᾽ αὐτὸν διψῶντες. Κέκρυπται δὲ ἐν (ν) ἐπὶ * τριβῶν κυκλόθεν, καὶ ὀλέσειαν αὐτὸν ὀδύναι, πολλῶν δὲ περὶ πόδας ἔλθοι Λιμῷ στενῷ· καὶ πτῶμα αὐτῷ (ʹ) ἡτοίμαστο (ξ) τὰ ὦμια. (ο) καὶ αἰτίᾳ βασιλικῇ. (π) καὶ ἐν σώματι αὐτοῦ, καταπαρήσεται

תרגום TARGUM.

7 8 9 וכהית מן רגיז עיני וקלסתורי היך טולא כולהון : ישתקון תריצי על דא דבי על דילטור יתגבר : ויוחד צדיקא אורחיה ודכי אידיה יוסיף
10 12 אתחילותא : וברם כולהון תתובון אתו כדון ולא אשכח בכון חכים : יומי עברו רעיוני אתבטילו לוחי לבבי : ליליא היך יממא ישוון נהורא
11 13 14 קריב מסלקין מן קדם חשוכא : אין אנא סבר דבי קבורתא ביתי בחשוכא מאכית שוויי : לשחתא קריתי אבא אנת אמי ואחתי לרחשא : והאן
15 16 דיכי סברי ומתינתי מן יסכנה : טנדו לבי קבורתא החתן אין כחדא על עפר שרן :

יח

1 2 3 ואתיב בלדד דמן שוח ואמר : עד אימת תשוון הרפתקי למליא תתבינון ומבתר כן נמלל : מא דין אתחשבנא היך בעירא טמענא במחמיכון :
4 דמצער נפשיה ברוגזיה אפשר דאמטולך תשתבק ארעא וטינר יסתלק מן אתריה : תא דטריד נפשיה לנרמיה אפשר דמטולתך תתנשי ארעא
5 6 7 מן למתב ותקיפא יסתלק מן אתריה : לחוד נהור רשיעי יטפי ולא ינהר גיה נוריה : נהור חשך במשכניה ושרגיה אמטולתיה יטפי : יתעיקן פסיעת
8 9 10 תוקפיה ותטלוקניה מלכתיה : מטול דאשתדר במצדתא ברגלוי ועלוי סרגתא יטיל : יאחוד בתקלא דפחא יתקופו עלוי נבריא : טמיע בארעא
11 12 אשליה ואוחדתיה עלוי שבילא : חזור חזור יבעתוניה אתרגושין ומבדרין יתיה לרגלוי : יהי כפן ביר בוכריה וצערא מכון לאנתתיה : תא יהי כפן
13 באנינותיה וצערא מזומן לסטריה : ייכול בוצנין דחפין למשכיה ינמר בנוי מלאך מותא : תא יכול בסרא תקוף משכיה וגמר בנוהי שרוי מותא :
14 15 16 יתעקר ממשכניה רוחצניה ותובלניה למלך רגושתא : תשרי אנתתיה במשכניה מדלית ליה ויבדר על מדוריה גופריתא : מארעא בנוי ישתיצון ומשמיא
יתער אובדניה : תא מלרע שרשוהי יתיבשון ומן לעיל יתמולל ואויה :

Verſio SYRIACA.

7 * ܟܪܒܬ ܡܢ ܪܘܓܙܐ ܥܝܢܝ. ܘܐܬܚܫܟܘ ܗܕܡܝ ܟܠܗܘܢ. ܐܝܟ ܛܠܠܐ. * ܢܬܕܡܪܘܢ ܬܪܝܨܐ ܥܠ ܗܕܐ. ܘܙܟܝܐ ܥܡ
8 9 ܚܢܦܐ ܢܬܢܦܨ. * ܢܐܚܘܕ ܙܕܝܩܐ ܐܘܪܚܗ. ܘܢܬܚܝܠ. ܘܕܟܝ ܐܝܕܝܐ ܢܘܣܦ ܚܝܠܐ. * ܒܪܡ ܗܐ ܟܠܟܘܢ
10 ܐܬܗܦܟܬܘܢ. ܘܐܬܝܬܘܢ ܠܘܬܝ. ܘܠܐ ܐܫܟܚ ܒܟܘܢ ܚܟܝܡܐ. * ܥܒܪܝܢ ܝܘܡܬܐ ܕܒܛܠܢܐ. ܘܡܬܚܫܒܢ
11 ܡܚܫܒܬܐ. ܘܡܘܒܕܝܢ ܠܒܘܬܐ ܕܥܡܡܐ. * ܠܠܝܐ ܠܐܝܡܡܐ ܥܒܕܝܬܘܢ. ܘܢܘܗܪܐ ܡܩܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢ ܩܕܡ
12 13 ܚܫܘܟܐ. * ܐܢ ܐܣܟܐ ܠܫܝܘܠ ܒܝܬܝ ܗܘ. ܘܒܚܫܘܟܐ ܫܘܝܬ ܥܪܣܝ. * ܠܚܒܠܐ ܩܪܝܬ ܐܒܝ ܐܢܬ.
14 15 ܐܡܝ ܘܚܬܝ ܠܪܡܬܐ. * ܘܐܝܟܐ ܗܘ ܗܫܐ ܣܒܪܝ. ܘܬܘܟܠܢܝ. ܘܣܒܪܝ ܡܢ ܢܚܙܝܘܗܝ. * ܒܚܝܠܐ ܠܫܝܘܠ
16 ܢܚܬܘܢ. ܘܐܟܚܕܐ ܠܥܦܪܐ ܢܬܪܡܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܚ * ܘܥܢܐ ܒܠܕܕ ܫܘܚܝܐ ܘܐܡܪ.

1 2 * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܬܣܝܡܘܢ ܣܟܐ ܠܡܠܐ. ܐܣܬܟܠܘ ܘܒܬܪܟܢ ܢܡܠܠ. * ܠܡܢܐ ܐܬܚܫܒܢ ܐܝܟ
3 4 ܒܥܝܪܐ. ܘܐܬܛܢܦܢ ܒܥܝܢܝܟ. * ܐܘ ܡܘܒܕ ܢܦܫܗ ܒܪܘܓܙܗ. * ܗܐ ܡܛܠܬܟ ܬܫܬܒܩ ܐܪܥܐ. ܘܢܫܬܢܐ ܛܘܪܐ ܡܢ
5 ܕܘܟܬܗ. * ܐܦ ܫܪܓܐ ܕܪܫܝܥܐ ܢܕܥܟ. ܘܢܫܬܠܐ ܫܒܒܐ ܕܢܘܪܗ. * ܢܘܗܪܐ ܢܚܫܟ ܒܡܫܟܢܗ.
6 7 ܘܫܪܓܗ ܥܠܘܗܝ ܢܕܥܟ. * ܢܬܡܚܠܢ ܗܠܟܬܗ ܒܟܐܒܘܗܝ. ܘܐܛܒܥܬܗ ܡܚܫܒܬܗ. * ܡܛܠ ܕܐܪܡܝ ܪܓܠܗ
8 9 ܒܢܫܒܐ. ܘܥܠ ܡܨܝܕܬܐ ܗܠܟ. * ܢܐܚܘܕ ܦܚܐ ܥܩܒܗ. ܘܢܬܚܝܠܘܢ ܥܠܘܗܝ ܨܗܝܐ. * ܛܡܝܪ
10 11 ܒܐܪܥܐ ܚܒܠܗ. ܘܡܨܝܕܬܗ ܥܠ ܫܒܝܠܐ. * ܢܚܦܘܢܝܗܝ ܙܢܝܐ ܕܬܘܗܬܐ. ܘܢܒܕܪܘܢ ܠܪܓܠܘܗܝ.
12 13 * ܘܢܗܘܐ ܟܦܢܐ ܒܝܫܗ. ܘܬܒܪܐ ܢܬܩܝܡ ܥܠ ܕܪܘܗܝ. * ܢܬܐܟܠܢ ܒܚܝܠܐ ܩܘܪܝܘܗܝ. ܘܒܚܝܠܐ
14 15 ܕܡܘܬܐ ܒܘܟܪܘܗܝ. * ܢܬܦܣܩ ܡܢ ܡܫܟܢܗ ܬܘܟܠܢܗ. ܘܢܣܬܪܗܒܘܢ ܠܘܬܗ ܬܗܪܐ ܕܡܠܟܐ. * ܘܢܥܡܪܘܢ
16 ܒܡܫܟܢܗ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܝܬ ܠܗ. ܢܬܒܕܪ ܥܠ ܐܪܥܗ ܟܒܪܝܬܐ. * ܡܢ ܠܬܚܬ ܥܩܪܘܗܝ ܢܝܒܫܘܢ.
ܘܡܢ ܠܥܠ ܢܬܩܛܦ ܩܛܦܗ.

Verſio ARABICA.

7 * توجعت من الغضب عيني وافكاري كلها مثل الظلال * يتعجب الصالحون على هذا والزكي على
8 9 الأثيم يستفزع * يأخذ الصديق طريقه ويثق والطاهر اليدين يزداد على القوة * ولكن الآن كلكم
10 11 قد عدتم ورجعتم تجيئم إلي ولم أجد فيكم حكيما * بل معبري الأيام ومبطلي الفكر ومهلكي
12 13 قلوب الشعوب * الليل نهارا تجعلونه والنور تقربونه من قبل الظلمة * إن أنا انتظرت الهاوية فانها
14 15 بيتي وفي الظلمة ساويت مفرشي * للفساد دعوت أنت أبي وأمي وأختي الدودة * فأين الآن رجاي
16 واتكالي ورجاي من الذي يجده * بالقوة إلى الهاوية ينحدرون وجميعا إلى التراب يهبطون

1 2 * الفصل الثامن عشر * فأجاب بلداد الشوحاني فقال * حتى إلى متى تضعون خلافا
3 4 للقول استفهموا وأخيرا نتكلم * لماذا حسبنا مثل البهيمة وتدنسنا في عينيك * أيها القاتل نفسه
5 بغضبه فالآن من أجلك تترك الأرض ويتباعد الجبل من مكانه * وأيضا فان سراج المنافقين يطفا
6 7 وأيضا تخمد الشهاب نار * والضوء يظلم في مسكنه وسراجه ينطفي عليه * تضعف خطواته بأوجاعه
8 9 ويغرقه فكره * من أجل أنه بسط رجله في المصادة وعلى الشبكة سلك * فأمسك الفخ عقبه ويعظم
10 11 عليه الخائف * مطموره في الأرض حباله وصيده على السبل تستدير * ويغشاه أصناف الحين فتبدد
12 13 حياته * ويكون الجوع داءه والانكسار يثبت على ذريته * فتوكل بالقدرة قراه وبقوة الموت أبكاره
14 15 * ينقطع من مسكنه رجاءه وتستعجله دواهي الملك * فتحل في مسكنه لأنه ليس أحد ويتبدد على
16 مكانه الكبريت * ومن تحت ييبس عروقه ومن فوق ييبس قطافه

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

Doluit præ furore oculus meus, & cogitationes meæ omnes velut umbra. 7 *Obſtupeſcent recti ſuper hoc, & innocens (c) evomet ſuper impium:* 8 *Tenebit juſtus viam ſuam; & (d) tutus erit, & mundus manibus augebitur viribus.* 9 *(e) At verò jam omnes converſi rediiſtis, & veniſtis ad me, & non invenio inter vos ſapientem:* 10 *Sed tranſigentes dies otioſis cogitationibus, perdentes corda populorum:* 11 *Noctem facitis diem, & lucem præponitis tenebris.* 12 *Si expecto infernum, ipſe dom⁹ mea eſt, & in tenebris ſtravi lectũ meũ:* 13 *Putredine vocavi, Tu es pater me⁹; et mater mea et ſoror mea, (f) pulverẽ.* 14 *Ubi nunc eſt ſpes mea, & fiducia mea? & ſpem meam quis inveniat?* 15 *Cum potentia in infernum deſcendent, & (g) omnes ad terram labentur.* 16

CAP. XVIII.

R*Eſpondit Beldad Suhites, & dixit,* 1 *Uſquequò ponetis obſtaculum ſermoni? Intelligite, tum demùm loquemur.* 2 *Cur reputati ſumus velut jumentum, & ſorduimus coram oculis tuis,* 3 *O occîdens animam ſuam in furore ſuo? (a) Et modò propter te relinquetur terra, & mons recedet à loco ſuo?* 4 *Imò etiam lucerna impiorũ extinguetur, & ſedabitur ardor ignis ejus,* 5 *Et lux obtenebreſcet in habitaculo ipſius, et lucerna ejus extinguetur ſuper eum:* 6 *(b) Infirmabuntur paſſus ejus in doloribus ejus, & ſubmerget eũ cogitatio ipſius:* 7 *Eò quòd extendit pedem ſuum ad rete, & ſuper (c) decipulam ambulavit;* 8 *Tenuit q; laqueus calcaneum ejus, & invaleſcent adverſùs eum (d) laquei:* 9 *Humatæ ſunt in terra pedicæ ejus, & reticulum ejus viam circundat.* 10 *Et (e) cooperient eum genera ſtuporum, & diſſipabunt (f) vitã ejus:* 11 *Et erit fames morb⁹ ejus, & fractio confirmabitur ſuper generationes ejus:* 12 *Comedentur magna cum potentia oppida ej⁹, et vi mortis primogenita ejus:* 13 *Abſcindetur ſpes ejus de habitaculo ejus, (g) & ſolicitabunt eum infortunia regis,* 14 *Et habitabunt in habitaculo ejus, eò quòd nullus ſit: diſſipabitur ſulphur ſuper (h) locum ejus:* 15 *Deorſum radices ejus ſiccabuntur, et ſurſum atterentur vindemiæ ejus:* 16

INTERP. SYRIACA.

(c) excutiet ſe cum impiis (d) conſtans erit, (e) Verùm ecce (f) vermem. (g) et ſimul ad terrã deſcendunt. *Cap. xviii.* (a) Ecce propter (b) Deſolabuntur (c) ſtoream (d) ſitibundi: (e) circundabunt eum ſeries (f) ad pedes ejus: (g) et feſtinabunt ad eum ſtupores regis, (h) terram ejus:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et caligavit à furore oculus meus, & vultus meus quaſi umbra totus eſt. Tacebunt recti ſuper hoc, juſtus contra delatorem ſe confortabit. Et apprehendet rectus viam ſuam, & mundus manibus addet robur. Veruntamen univerſi vos convertimini, venite nunc, & non inveniam in vobis ſapientem. Dies mei tranſierunt, cogitationes meæ ceſſaverunt in tabulis cordis mei. Noctem ponent *ſicut* diem, lucem propinquam auferunt à facie tenebrarum. Si ego ſuſtinuero, domus ſepulturæ domus mea erit: in tenebris ſternam *ſtratum meum.* Foveam vocavi, pater meus es tu: mater mea & ſoror mea vermi [*dixi.*] Et ubi eſt nunc ſpes mea, & expectationem meam quis intuebitur? Duo corpora in domum ſepulturæ deſcendent, ſi ſimul ſuper pulverem commorabuntur. 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16

CAP. XVIII.

ET reſpondit Baldad, qui erat de Suach, & ait: Uſquequo ponetis vices verbis? intelligite, & poſt hæc loquamur. Quare reputati ſumus ſicut jumentum: abſconditi ſumus in conſpectu veſtro? Qui tribulat animam ſuam in ira ſua, nunquid propter te derelinquetur terra, & transferetur rupes de loco ſuo? *Targum alind:* Qui *fatigat* animam ſuam *ſibiipſi,* nunquid propter te *oblivioni dabitur* terra, ne habitetur, & *fortis* transferetur de loco ſuo. Attamen lux impiorum extinguetur, & non ſplendebit *ſplendor* ignis ejus. Lux obtenebreſcet in tabernaculo ſuo, & lucerna ejus propter eum extinguetur. Artabuntur greſſus fortitudinis ejus, & projiciet eum conſilium ſuum. Quia immiſſus eſt in rete pedes ejus, & ſuper retiaculum deambulabit. Tenebitur offendiculo laquei, prævalebunt adverſus eum confodientes. Abſconditus eſt in terra funiculus ejus, & pedica ejus ſuper ſemitam. Per circuitum terrebunt eum tumultus, & diſpergent *eum ad* pedes ejus. Sit famelicus *filius primogenitus* ejus, & afflictio parata *uxori* ejus. *Targum aliud:* Sit famelicus in inedia ejus, & afflictio parata lateri ipſius. Devoret lucernam quæ operit cutem ejus: conſumat filios ej⁹ angelus mortis. *Targum aliud:* Devoret *carnem robur cutis* ejus, *&* conſumat filios ejus *principium* mortis. Succidatur de tabernaculo ſuo ſpes ejus, & deferat eum ad regem terrorum. Habitet uxor ejus in tabernaculo non ſuo, & exſpargatur ſuper habitaculum ejus ſulfur. *E terra filii ejus excindentur, & è cœlo decerpatur exitium ejus. Targum aliud:* Deorſum radices ejus ſiccabuntur, & ſurſum abſcindetur ramus ejus. 1 3 2 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16

איוב : יח

faciebus ſuper ei nomen non & ; terra è peribit ejus Memoria
17 זכרו־אבד מני־ארץ ולא־שם לו על־פני־
.eum amovebunt orbe de & ; tenebras ad luce de eum Expellent .plateæ
18 חוץ : יהדפהו מאור אל־חשך ומתבל ינדהו :
ſuperſtes non & ; ejus populo in nepos non & , ei filius Non
19 לא נין לו ולא־נכד בעמו ואין שריד
; noviſſimi obſtupuerunt ejus diem Super .ejus habitationibus in
20 במגוריו : על־יומו נשמו אחרנים
; iniqui habitacula hæc Veruntamen .horrorem apprehenderunt priſci &
21 וקדמנים אחזו שער : אך־אלה משכנות עול
.Deum novit non locus iſte &
וזה מקום לא־ידע אל :

CAP. XIX. יט

affligetis dolore Uſquequo : dixit & , Job reſpondit Et
1 2 ויען איוב ויאמר : עד־אנה תוגיון
decem Jam ? ſermonibus in me atteretis & ; meam animam
3 נפשי ותדכאונני במלים : זה עשר
.mihi eritis indurati erubeſcetis non : me affeciſtis pudore vicibus
פעמים תכלימוני לא־תבשו תהכרו־לי :
Si .meus error morabitur mecum ; erraverim verè etiam Et
4 ואף־אמנם שגיתי אתי תלין משוגתי : אם־
5 me ſuper argueritis & ; magnificaveritis me ſuper verò
אמנם עלי תגדילו ותוכיחו עלי
; me pervertit Deus quod nunc Scitote .meum opprobrium
6 חרפתי : דעו־אפוא כי־אלוה עותני
non & , injuriam clamavero En .fecit circuire me ſuper ſuum rete &
7 ומצודו עלי הקיף : הן אצעק חמס ולא
, ſepſit meam Semitam .judicium non & , vociferavero ; exaudiar
8 אענה אשוע ואין משפט : ארחי גדר
.poſuit tenebras meis ſemitis ſuper & ; tranſibo non &
ולא אעבור ועל־נתיבותי חשך ישים :
.mei capitis diadema removit & , fecit ſpoliare me deſuper meam Gloriam
9 כבודי מעלי הפשיט ויסר עטרת ראשי :
.meam ſpem lignum ſicut proficiſci fecit & , ivi & , undiquaque me Deſtruet
10 יתצני סביב ואלך ויסע כעץ תקותי :
.ipſum anguſtiatores ſicut ſibi me reputavit & , ſuū naſum me ſuper fecit iraſci Et
11 ויחר עלי אפו ויחשבני לו כצריו :
, ſuam viam me ſuper ſtraverunt & , ejus exercitus venerunt Simul
12 יחדו יבאו גדודיו ויסלו עלי דרכם
me deſuper meos Fratres .mei tabernaculi circuitu ſunt caſtrametati &
13 ויחנו סביב לאהלי : אחי מעלי
Deſierunt .me à ſunt alienati veruntamen , mei noti & : fecit elongare
14 הרחיק וידעי אך־זרו ממני : חדלו
, meæ domus Inquilini .mei ſunt obliti mei noti & : mei propinqui
15 קרובי ומידעי שכחוני : גרי ביתי
.eorum oculis in fui extraneus ; me reputabant alienum in meæ ancillæ &
ואמהתי לזר תחשבני נכרי הייתי בעיניהם :
deprecabar meo ore ipſo in : reſpondit non & , vocavi meum Servum
16 לעבדי קראתי ולא יענה במו־פי אתחנן־
filios ad deprecabar & : meæ uxori erat alienus meus Halitus .illum
17 לו : רוחי זרה לאשתי וחנתי לבני
loquebantur & , aſſurgebam : me in deſpexerunt iniqui Etiam .mei uteri
18 בטני : גם־עוילים מאסו בי אקומה וידברו־
, amavi hi & : mei ſecreti viri omnes me ſunt Abominati .me in
19 בי : תעבוני כל־מתי סודי וזה־אהבתי
evaſi & ; meum os adhæſit mea carne in & , mea pelle In .me in ſunt verſi
20 נהפכו־בי : בעורי ובבשרי דבקה עצמי ואתמלטה
; mei amici vos mei miſeremini , mei Miſeremini .meorum dentium pelle in
21 בעור שני : חנני חנני אתם רעי
: Deus ſicut , me perſequimini quid Ut .me in tetigit Dei manus quia
22 כי יד־אלוה נגעה בי : למה תרדפני כמו־אל
? ſaturabimini non mea carne de &
ומבשרי לא תשבעו :

Verſio VULG. LAT.

17 Memoria illi⁹ pereat de terra, & non celebretur nomen ejus 18 in plateis. Expellet eum de luce in tenebras, & de orbe 19 transferet eum. Non erit ſemen ejus neque progenies in populo ſuo, nec ullæ reliquiæ 20 in regionibus ejus. In die ejus ſtupebunt noviſſimi, et pri-21 mos invadet horror. Hæc ſunt ergò tabernacula iniqui, & iſte locus ejus qui ignorat Deum.

CAP. XIX.

1 REſpondens autem Job, di-2 xit; Uſquequò affligitis animam meam, & atteritis me ſer-3 monibus? En, decies confunditis me, & non erubeſcitis 4 opprimentes me. Nempè, etſi ignoravi, mecum erit ignoran-5 tia mea. At vos contra me erigimini, & arguitis me op-6 probriis meis. Saltem nunc intelligite, quia Deus non æquo judicio afflixerit me, & 7 flagellis ſuis me cinxerit. Ecce clamabo vim patiens, & nemo audiet: vociferabor, & non eſt 8 qui judicet. Semitam meam circumſepſit, & tranſire non poſſum, & in calle meo tene-9 bras poſuit. Spoliavit me gloriâ meâ, & abſtulit coronam 10 de capite meo. Deſtruxit me undique, & pereo, & quaſi evulſæ arbori abſtulit ſpem 11 meam. Iratus eſt contra me furor ej⁹, & ſic me habuit quaſi 12 hoſtem ſuum. Simul venerunt latrones ejus, & fecerunt ſibi viam per me, & obſederunt in 13 gyro tabernaculū meum. Fratres meos longè fecit à me, & noti mei quaſi alieni receſſe-14 runt à me. Dereliquerunt me propinqui mei: & qui me no-15 verant, obliti ſunt mei. Inquilini domûs meæ, & ancillæ meæ, ſicut alienum habuerunt me, & quaſi peregrinus fui in 16 oculis eorum. Servum meum vocavi, & non reſpondit, ore proprio deprecabar illum. 17 Halitum meum exhorruit uxor mea, & orabā filios uteri mei. 18 Stulti quoque deſpiciebāt me, & cùm ab eis receſſiſſe, detra-19 hebant mihi. Abominati ſunt me quondā conſiliarii mei: & quem maximè diligebam, aver-20 ſatus eſt me. Pelli meæ, conſumptis carnibus, adhæſit os meum, & derelicta ſunt tantummodò labia circa dentes 21 meos. Miſeremini mei, miſeremini mei, ſaltem vos amici mei, quia manus Domini teti-22 git me. Quarè perſequimini me ſicut Deus, & carnib⁹ meis ſaturamini?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

17 † Τὸ μνημόσυνον αὐτοῦ ἀπόλοιτο ἐκ γῆς,
καὶ (ρ) ὑπάρξει ὄνομα αὐτῷ ἐπὶ πρόσωπον
18 ἐξωτέρω. † (σ) Ἀπώσειεν αὐτὸν ἐκ
19 φωτὸς εἰς σκότος. † Οὐκ ἔσται ἐπίγνω-
στος (τ) ἐν λαῷ αὐτοῦ, † οὐδὲ σεσωσμέ-
νος ἐν τῇ ὑπ' οὐρανὸν ὁ οἶκος αὐτοῦ.
20 † Ἀλλ' (υ) ἐν τοῖς αὐτοῦ ζήσονται ἕτεροι.
† ἐπ' αὐτῷ ἐστέναξαν ἔσχατοι, † πρώτους
21 δὲ ἔσχε θαῦμα. † Οὗτοί εἰσιν (φ) οἱ οἶκοι
ἀδίκων, οὗτος δὲ ὁ τόπος τῶν μὴ εἰδότων
τὸν κύριον.

Memoriale ejus pereat de terra, & erit nomen ei ſuper faciem (l) extra: (m) Expellat eum de luce in tenebras. (n) Non erit cognominatus in populo ſuo, neque domus ejus ſalvata in ea quæ ſub cœlo. Sed in rebus ejus vivent alii: ſuper eum (o) gemuerunt ultimi: primos autem tenuit admiratio. Hæ ſunt domus impiorum: & hic eſt locus eorum, qui non noverunt Dominum.

MS. A. (ρ) ὑπάρχει (σ) Καὶ ἀπώσειαν (τ) ἐν τῷ λαῷ αὐτοῦ, (υ) ἐν τοῖς αὐτοῦ (φ) οἶκοι ἀδίκων, οὗτος δὲ τόπος

ΚΕΦ. ιθ'.

1 † ὙΠολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, † (α) Ἕως
2 τίνος ἔγκοπον ποιήσετε (β) ψυχήν μου,
καὶ καθαιρεῖτέ με λόγοις; † γνῶτε μόνον
3 ὅτι ὁ κύριος ἐποίησέ (γ) με οὕτως. Κατα-
λαλεῖτέ μου, οὐκ αἰσχυνόμενοί με (δ) ἐπίκεισθέ
4 μοι. † Ναὶ δὴ (ε) ἐπ' ἀληθείας ἐγὼ ἐ-
πλανήθην, † (ζ) παρ' ἐμοὶ δὲ αὐλίζεται
πλάνος· λαλῆσαι (η) ῥήματα ἃ οὐκ ἔδει,
τὰ δὲ ῥήματά μου πλανᾶται καὶ οὐκ ἐπὶ
5 καιροῦ. † Ἔα δὲ, ὅτι ἐπ' ἐμοὶ μεγαλύνεσθε,
6 † ἐνάλλεσθε δέ μοι ὀνείδει. † (θ) Γνῶτε
οὖν ὅτι κύριός ἐστιν ὁ (ι) ταράξας, † ὀχύρω-
7 μα δὲ αὐτοῦ ἐπ' ἐμὲ ὕψωσεν. † Ἰδοὺ (κ)
γελῶ ὀνείδει, οὐ λαλήσω· † κεκράξομαι, καὶ
8 οὐδαμοῦ κρίμα. † Κύκλῳ περιῳκοδόμημαι,
καὶ οὐ μὴ διαβῶ· † (λ) ἐπὶ πρόσωπόν μου
9 σκότος ἔθετο. † (μ) Τὴν δὲ δόξαν ἀπ'
ἐμοῦ ἐξέδυσεν, (ν) ἀφεῖλε δὲ στέφανον ἀπὸ
10 κεφαλῆς μου. Διέσπασέ (ξ) με κύκλῳ καὶ
ᾠχόμην, † ἐξέκοψε δὲ ὥσπερ δένδρον τὴν
11 ἐλπίδα μου. † Δεινῶς (ο) δέ μοι ὀργῇ
ἐχρήσατο, † ἡγήσατο δέ με ὥσπερ ἐχθρόν.
12 † Ὁμοθυμαδὸν (π) δὲ ἦλθον τὰ πειρατή-
ρια αὐτοῦ ἐπ' ἐμοὶ, ταῖς ὁδοῖς μου ἐκύκλωσαν
13 (ρ) ἐγκάθετοι. † Ἀπ' ἐμοῦ ἀδελφοί μου
ἀπέστησαν, † ἔγνωσαν ἀλλοτρίους ἢ ἐμέ·
† (σ) φίλοι δέ μου ἀνελεήμονες γεγόνα-
14 σιν· (τ) Οὐ προσεποιήσαντό με οἱ ἐγγύ-
τατοί μου, † (υ) καὶ οἱ εἰδότες μου τὸ ὄνο-
15 μα ἐπελάθοντό μου. Γείτονες (φ) οἰκίας,
θεράπαιναί τε μου, † ἀλλογενὴς ἤμην ἐν-
16 αντίον αὐτῶν. Θεράποντά μου ἐκάλεσα,
καὶ (χ) οὐχ ὑπήκουσε· † στόμα δέ μου
17 (ψ) ἐδέετο· † Καὶ ἱκέτευον τὴν γυναῖ-
κά μου, † (ω) προσεκαλούμην δὲ κολακεύων
18 υἱοὺς παλλακίδων μου· † Οἱ δὲ εἰς τὸν αἰῶνά
με (α) ἀπεποιήσαντο, † ὅταν ἀναστῶ,
19 κατ' ἐμοῦ λαλοῦσιν. † Ἐβδελύξαντό (β) με
οἱ ἰδόντες με· † (γ) οὓς δὴ ἠγαπήκειν,
20 ἐπανέστησάν μοι. † Ἐν δέρματί μου ἐ-
σάπησαν (') αἱ σάρκες μου, † τὰ δὲ ὀστᾶ μου
21 (δ) ἐν ὀδοῦσιν ἔχεται. † (ε) Ἐλεήσατέ με,
ἐλεήσατέ με, ὦ φίλοι, † χεὶρ γὰρ κυρίου (ζ)
22 ἡ ἁψαμένη μου ἐστίν. † Διατί με διώκετε
ὥσπερ καὶ ὁ κύριος; † ἀπὸ δὲ σαρκῶν μου
οὐκ ἐμπίπλασθε;

CAP. XIX.

REſpondens autem Job, ait; Uſquequò moleſtam facietis animæ meæ, & deſtruetis me verbis? ſcitote tantum, quia Dominus fecit (a) me ſic: (b) Loquimini contra me: non reveriti me, infeſti eſtis mihi: Eſto (c) utique in veritate ego erravi, & apud me moratur (d) error, loqui verba, quæ non oportebat, & verba mea errant, & non in tempore. Sine verò, quoniam ſuper me magnificamini: et (e) inſultatis mihi opprobrio. Scitote igitur quia Dominus eſt, qui (f) turbavit, & vallum ſuum ſuper me exaltavit. Ecce rideo * opprobrio, non loquar: (g) clamabo, & nuſquam judicium: In circuitu circumædificatus ſum, & non tranſibo: in (h) vultu meo tenebras poſuit. Et gloriam à me exuit, & abſtulit coronam de capite meo. Dirupit me undique, & abii: et excidit tanquam arborem ſpem meam. Graviter autem mihi irâ uſus eſt: & arbitratus eſt me tanquam inimicum; Unanimiter autem venerunt (i) tentationes ejus ſuper me: viis meis in circuitu inſederunt inſidiatores. A me fratres mei receſſerunt, noverunt alienos, quàm me, & amici mei immiſericordes facti ſunt. Non adhæſerunt mihi proximi mei: & ſcientes nomen meum obliti ſunt me. Vicini domûs, & ancillæ meæ; alienigena fui coram eis. Servum meum vocavi, & non obedivit: os autem meum deprecabatur. Et rogabam uxorem meam: & invocabam blanditiis filios (k) concubinarum mearum. Illi verò in (l) ſeculum me averſati ſunt: cùm exurrexero, contra me loquuntur. Abominati ſunt me, qui me videbant: & quos dilexeram, conſurrexerunt in me. (m) In cute mea computruerunt carnes meæ, et oſſa mea in (n) dentibus hærent. Miſeremini meî, miſeremini meî, ô amici: manus enim Domini eſt, quæ tetigit me. Quarè me perſequimini, ſicut & Dominus? & de carnibus meis non ſatiamini?

MS. A. (α) Ἕως πότε (β) τὴν ψυχήν μου, καὶ καθαιρεῖταί με (γ) μοι οὕτως. Καὶ καταλαλεῖταί με, (δ) καὶ ἐπίκεισθαί μοι. (ε) ἐγὼ ἐπ' ἀληθείας (ζ) καὶ ἐν ἐμοὶ αὐλίζεται (η) ῥῆμα ὃ οὐκ ἔδει, (θ) Γνῶτε ὅτι ὁ κύριος (ι) ταράξας με, (κ) λαλῶ ὀνείδη, καὶ οὐ (λ) ἐπὶ δὲ ἀτραπούς μου (μ) Τὴν δόξαν μου ἀπ' ἐμοῦ (ν) καὶ ἀφεῖλεν (ξ) δέ με (ο) μοι (π) αὐτοῦ ἦλθεν τὰ πειρατήρια ἐπ' ἐμὲ, (ρ) με ἐγκάθετοι. Ἀπ' ἐμοῦ δὲ ἀπέστησαν ἀδελφοί, (σ) οἱ φίλοι (τ) Καὶ οὐ (υ) οἱ ἰδόντες (φ) οἰκεῖοι, θεράποντες, * θεράπαιναι, ἀλλογενὴς ἐγενόμην ἐναντίον αὐτῶν. Θεράποντας δέ μου (χ) οὐκ ὑπήκουσάν μου· Στόμα (ψ) * ἐδέετο αὐτῶν· (ω) καὶ προσεκαλούμην κολακεύων (α) ἀπεῖπαντο, (β) δέ με οἱ ἰδόντες (γ) καὶ οὓς ἠγάπων, (') Σάρκες (δ) ἐν ὀδοῦσιν (ε) Ἐγγίσατέ μοι, ἐλεήσατέ με, ὦ φίλοι, ἐλεήσατέ με, χεὶρ (ζ) ἐστὶν ἡ ἁψαμένη με. Διατί δέ με

תרגום TARGUM.

17 18 19 ודכרניה הובד מן ארעא ולא שמא ליה על אנפי אשקקי : יהדפוניה מנהורא לחשוכא ומתבל יגלוניה : לא ביר ליה ולא בר ברא בעמיה ולית משיזיב
20 21 ביתוביה : מטול יומיה אצטדיאו בתראי וקדמונאי אחדו עלעולא : ברם אלין משרית עולא ודין אתר דמן דלא ידע אלהא :

יט

1 2 3 4 ואתיב איוב ואמר : עד אימת תנקטון נפשי ותשפפונני במליא : דנן עשר זמנין תכספונני לא תבהתון תשתמודעון לי : וברם בקושטא שליתי גבי תבית
5 6 7 שלותי : אין בקושטא עלי תתרברבון ותכסנון עלי חסודי : ידעו השתא ארום אלהא תקפני וסריגיה עלי אחזר : הא אקבל מן קדם חטוף ולא
8 9 10 איתחב עלי ולית דינא : אסרטי חסר ולא אעבר ועל שבילי חשוך ישוי : איקרי מעלוי אשלח ואעדי כלילי דרישי : יצדנני חזור חזור ואיזל ואטל
11 12 13 היך קסא סברי : ותקף עלי רוגזיה וחשבנני ליה היך מעיקוהי : כחדא ייתון איכלוסוהי וכבשו עלי ארחתהון ושרון חזור חזור למשכני : אחי
14 15 מעלוי ארחיק וידעי אתעבירו חילונאי מני : פסקו קריבי ומידעי אנשיני : דירי ביתי ולחינתי לחילונאי יחשבונני היך נוכראה הויתי במחמיהון
16 17 18 לעבדי קריתי ולא יתיב בפומי אבעא מניה : רוחי נוכריתא לאנתתי ואתחננית לבר מעי : לחוד נקיא יחכו ממימרי אקים וממללין מני
19 20 21 יחקו יתי כל אנשי רזי ודין די רחמית אתהפכו בי : במשכי ובסרי דבקת גרמי ואשתחרית במשך ככי : חוסו עלי חוסו עלי אתון חברי
22 ארום מחתא דיי קריבת בי : למא תרדפונני היכמא אלהא ומבסרי לא תסבעון :

Verſio *SYRIACA.*

* ܢܐܒܕ ܕܘܟܪܢܗ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܫܡܐ ܥܠ ܐܦܝ ܒܪܝܬܐ. * ܢܣܚܦܘܢܝܗ ܡܢ ܢܘܗܪܐ ܠܚܫܘܟܐ. ܘܡܢ 17 18
ܬܐܒܝܠ ܢܛܪܕܘܢܝܗ. * ܠܐ ܫܡܐ ܠܗ. ܘܠܐ ܕܘܟܪܢܐ ܒܥܠܡܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܫܪܟܐ ܒܡܥܡܪܗ. * ܥܠ ܝܘܡܘܗܝ 19
ܢܬܕܡܪܘܢ ܐܚܪܝܐ. ܘܩܕܡܝܐ ܣܡܪ ܣܥܪܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܢܘܢ ܡܫܪܝܬܗܘܢ ܕܥܘܠܐ. ܘܗܢܘ ܐܬܪܗ ܕܡܢ ܕܠܐ 20 21
ܝܕܥ ܠܐܠܗܐ. * ܦܘܠܓܐ * ܝܛ * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܥܝܩܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܢܦܫܝ: 1
ܘܡܡܟܟܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ ܒܡܠܐ. * ܗܐ ܥܣܪ ܙܒܢܝܢ ܡܚܣܕܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ. ܘܠܐ ܒܗܬܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܡܥܝܩܝܢ 2 3
ܐܢܬܘܢ ܠܝ. * ܘܐܢ ܫܪܝܪܐܝܬ ܛܥܝܬ. ܥܡܝ ܬܒܘܬ ܛܥܝܘܬܝ. * ܘܐܢ ܫܪܝܪܐܝܬ ܥܠܝ ܡܬܪܘܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ. 4
ܘܡܟܣܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ ܒܚܣܕܝ. * ܕܥܘ ܗܫܐ ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܥܘܠܢܝ. ܘܡܨܝܕܬܗ ܥܠܝ ܐܚܕ. ܘܐܢ ܡܫܬܐܠܢܐ 5 6
ܐܢܐ. ܐܢܫ ܠܐ ܡܥܢܐ ܠܝ. * ܘܐܢ ܐܩܥܐ ܠܝܬ ܕܦܪܩ ܠܝ. * ܐܘܪܚܬܝ ܣܓܪ. ܘܒܫܒܝܠܝ ܠܐ ܐܥܒܪ. 7 8
* ܘܥܠ ܫܒܝܠܝ ܚܫܘܟܐ ܣܡ. * ܐܩܝܪܘܬܝ ܫܠܚ ܡܢܝ. ܘܐܥܒܪ ܟܠܝܠܐ ܕܪܫܝ. * ܣܚܦܢܝ ܡܢ ܟܠ ܓܒܝܢ ܘܐܙܠܬ. 9
* ܘܥܩܪ ܐܝܟ ܩܝܣܐ ܣܒܪܝ. * ܘܐܥܫܢ ܥܠܝ ܪܘܓܙܗ. ܘܚܫܒܢܝ ܠܗ ܐܝܟ ܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܐܟܚܕܐ ܐܬܘ ܥܠܝ 10 11
ܓܝܣܘܗܝ. ܘܕܫܘ ܥܠܝ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܫܪܘ ܚܕܪ ܡܫܟܢܝ. * ܐܚܝ ܐܪܚܩܘ ܡܢܝ. ܘܝܕܥܝ ܢܟܪܘ ܡܢܝ. 12 13
* ܩܪܝܒܝ ܦܣܩܘ ܡܢ ܠܘܬܝ. ܘܝܕܥܝ ܛܥܘܢܝ. * ܬܘܬܒܐ ܕܒܝܬܝ ܘܐܡܗܬܝ ܐܝܟ ܢܘܟܪܝܐ ܚܫܒܘܢܝ. 14 15
* ܘܢܘܟܪܝܐ ܗܘܝܬ ܒܥܝܢܝܗܘܢ. * ܠܥܒܕܝ ܩܪܝܬ ܘܠܐ ܥܢܢܝ. ܘܐܬܟܫܦܬ ܠܗ ܒܦܘܡܝ. * ܘܗܘܝܬ ܢܘܟܪܝܐ 16
ܠܐܢܬܬܝ. ܘܐܬܟܫܦܬ ܠܒܢܝ ܟܪܣܝ. * ܘܐܦ ܥܘܠܐ ܐܫܬܝܛܘܢܝ. ܩܡܬ ܘܡܡܠܠܝܢ ܒܝ. * ܐܣܠܝܘܢܝ ܟܠܗܘܢ 17 18
ܡܠܟܝ ܡܠܟܝ. ܘܐܦ ܕܪܚܡܬ ܐܬܗܦܟܘ ܥܠܝ. * ܡܫܟܝ ܘܒܣܪܝ ܕܒܩܘ ܠܓܪܡܝ. ܘܐܬܦܠܛܬ ܒܡܫܟܐ 19 20
ܕܫܢܝ. * ܚܘܢܘܢܝ ܚܘܢܘܢܝ ܐܢܬܘܢ ܪܚܡܝ. ܡܛܠ ܕܐܝܕܗ ܕܐܠܗܐ ܩܪܒܬ ܒܝ. * ܠܡܢܐ ܪܕܦܝܢ 21
ܐܢܬܘܢ ܠܝ ܐܝܟ ܐܠܗܐ. ܘܡܢ ܒܣܪܝ ܠܐ ܣܒܥܝܬܘܢ. 22

Verſio *ARABICA.*

* يبيد ذكره من الارض ولا يكون له اسم على اوجه البرية * يطردونه من النور الى الظلام * ومن 17 18
الدنيا يبعدونه * فلا اسم يكون له ولا ذكر في اليوم ولا يكون له باقي بمسكنه * وعلى ايامه يتعجب 19 20
الاولون والاخرون ويقف شعرهم * ولكن هذه مساكن المنافقين وهذا مكان الذي لا يعرف الله * 21
* الفصل التاسع عشر * * فاجاب ايوب وقال * حتى متى تؤذون نفسي وترضوني 1
بالكلام * فان هذه عشر مرات تعيبوني ولا تخزون من ان تخربوني * فان كنت حقا هلكت فعلي 2 3
تكون ضلالتي * وان كان بالحق استكبرتم علي وبكتموني وعيرتموني * فاعلموا الان ان الله 4 5 6
دحضني ومصيدته بسطها علي * فان انا صحت فلم يجبني احد وان صرخت فليس من يعينني * 7
طرقي سدها لئلا اجوز ووضع الظلمة على سبلي * وسلبني كرامتي وابعد الاكليل من راسي * 8 9
قلعني من كل جوانبي فذهبت واخذ مثل العود رجاي * وشدد علي غضبه وعدني له مثل 10 11
العدو * وجميعا جاءت على رسله وداسوا على طرقهم وحلوا حوالي خباي * واخوتي ابتعدوا مني 12 13
ومعارفي جاروا * قطع قرابتي من عندي ومعارفي نسوني * وسكان بيتي واماي مثل الغريب عدوني 14 15
وغريبا كنت في اعينهم * لعبدي دعوت فلم يجبني وضرعت اليه بقول فمي وخضعت له * كنت 16 17
غريبا لامراتي وتضرعت لابن امعاي * وايضا فان المنافقين ارذلوني فقمت فتكلموا في * ارذلني اهل 18 19
جميع مشورتي وايضا فان احبائي انقلبوا علي * جلدي ولحمي لصقت بعظامي وانفلت لحم 20
اسناني * ارحموني ارحموني انتم يا احبائي من اجل ان يد الله اقتربت الي * لماذا تطردونني انتم 21 22
ايضا مثل الله ومن لحمي لا تشبعون *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

17 *Peribit de terra memoria ejus, & non erit ei nomen ſuper faciem creaturæ,* 18 *Deſtruent eum à luce ad tenebras, & à mundo arcebunt eum:* 19 *Nec erit ei nomen nec memoria (i) in die, nec erit ei ſuperſtes in habitaculo ſuo:* 20 *Et ſuper dies ejus ſtupebunt (k) priores, et poſteriores et horrebunt pili eorū.* 21 *Itaq; hujuſmodi ſunt habitacula impiorum, & hujuſmodi locus ejus qui Deum non cognoſcit.*

CAP. XIX.

1 *Reſpondit Job, ac dixit,* 2 *uſquequò vexabitis animam meam, & affligetis me verbis?* 3 *Quoniam ecce decies me carpitis, et non pudet vos me contriſtare.* 4 *(a) Si meritò perii, ſit ſuper me perditio mea:* 5 *At ſi meritò vos elati eſtis contra me & arguiſtis me, & probris affeciſtis;* 6 *Scitote jam quòd Deus me cōdemnaverit, & rete ſuum extenderit ſuper me.* 7 *Si ego (b) clamo, nemo reſpondet mihi; & ſi vociferor, non eſt qui me (c) adjuvet.* 8 *Circunſepſit vias meas ne pertranſirem, & poſuit tenebras ſuper viis meis:* 9 *Et ſpoliavit me honore meo, & amovit coronam à capite meo:* 10 *Avulſit me ab omnibus lateribus meis, et abii: & abſtulit quaſi ligni ſpem meam:* 11 *Et corroboravit ſuper me indignationem ſuam, & reputavit me ſibi quaſi inimicum:* 12 *Et ſimul venerunt contra me Apoſtoli ejus, ſuper me triverunt vias ſuas, & habitaverunt circa tabernaculum meum.* 13 *Et fratres mei receſſerunt à me, & noti mei diſceſſerunt.* 14 *Conſanguineos meos amputavit à me; & noti mei obliti ſunt mei:* 15 *Et habitatores domûs meæ & ancillæ meæ quaſi peregrinum me reputaverunt, & extraneus factus ſum in oculis ipſorum.* 16 *Servum meum vocavi, & non reſpondit mihi; & cum deprecatus ſum ſermone oris mei, ei q; humiliatus ſum.* 17 *Et fui extraneus uxori meæ, & ſupplicavi filio viſcerum meorum.* 18 *Et impii quoq; me deſpexerunt: ſurrexi, & locuti ſunt contra me.* 19 *Aſpernati ſunt me omnes conſiliarii mei, & amici quoq; mei converſi ſunt contra me.* 20 *Pellis mea & caro mea adhæſit oſſibus meis, & (d) evaſit caro dentium meorum.* 21 *Miſeremini mei, miſeremini mei vos O amici mei; quoniam manus Dei tetigit me.* 22 *Quare perſequimini me vos quoq; ſicut Deus, & de carne mea non ſaturamini?*

INTERP. SYRIACA. (*i*) in mundo, (*k*) poſteriores, & priores horruit pilus eorum. *Cap. xix.* (*a*) Et verè, ſi erravi erit ſuper me error meus: (*b*) loquor, (*c*) vindicabit. (*d*) evaſi cum cute dentium meorum.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Memoria ejus pereat de terra, & non ſit ei nomen ſuper faciem platearum. Pellant eum de luce in tenebras, & de orbe transferant eum. Non ſit ei filius neque filius filii 17 18
in populo ſuo, neque qui ſalvetur in tabernaculo ſuo. Propter diem ejus deſolabuntur noviſſimi, & primos invadit *turbo*. *Et dicent*, Attamen hæc ſunt habitacula ini- 19 20
qui, & hic eſt locus ejus qui ignorat Deum. 21

CAP. XIX.

Et reſpondit Iob & dixit: Uſq; quò moleſti eritis animæ meæ, & contereris me ſermonibus? Iam decies confudiſti me, & non erubeſcitis [*licet*] agnoſcatis me. 1 2 3
Attamen verè ſi ignoravi, mecum morabitur ignorantia mea. Si in veritate contra me magnificamini, & arguitis me opprobrio meo. *Sciant* nunc quoniam Deus ap- 4 5 6
prehendit me, & rete ejus *circundedit* me. Ecce clamabo vim patiens, & nemo eſt qui reſpondeat: orabo, nec erit judicium. Semitam meam ſepſit ut non tranſeam, 7 8
& ſuper itinera mea tenebras poſuit. Gloriâ meâ me exuit, & abſtulit coronam capitis mei. Deſtruxit me per circuitum, & abii: & abſtulit quaſi lignum ſpem meam. 9 10
Et invaluit contra me furore ſuo, & putavit me quaſi hoſtem ſuum. Simul venerunt contra me turmæ ejus, & ſtraverunt ſuper me viam ſuam, & caſtrametati ſunt in cir- 11 12
cuitu tabernaculi mei. Fratres meos longe fecit à me, & noti mei facti ſunt alieni à me. Ceſſaverunt propinqui mei, & noti mei obliti ſunt mei. Inquilini domus 13 14
meæ & concubinæ meæ ſicut alienum reputaverunt me: quaſi filius populorum fui in conſpectu eorum. Servum meum vocavi, & non reſpondit mihi, ore meo roga- 15 16
bam eum. Spiritus meus alienus factus eſt uxori meæ, & deprecabar filium uteri mei. Parvuli quoque deſpiciebant verba mea; conſurgebam & loquebantur de me. 17 18
Abominati ſunt me omnes viri ſecreti mei, & illi quos dilexi, verſi ſunt in me. Pelli meæ & carni meæ adhæſit os meum, & relictus ſum cantùm in pelle dentium me- 19 20
orum. Miſeremini mei, miſeremini mei vos amici mei, quia plaga *Domini* tetigit me. Quare perſequimini me ſicut Deus, & de carne mea non ſaturamini? 21 22

איוב : כ

libro in dabit quis : mei sermones scriberentur & nunc dabit Quis
23 מִי־יִתֵּן אֵפוֹ וְיִכָּתְבוּן מִלָּי מִי־יִתֵּן בַּסֵּפֶר
petra in perpetuum in plumbeo & , ferreo stylo In.imprimerentur &
24 וְיֻחָקוּ : בְּעֵט־בַּרְזֶל וְעֹפָרֶת לָעַד בַּצּוּר
novissimo & , vivum meum redemptorem novi ego Et .sculperentur
25 יֵחָצְבוּן : וַאֲנִי יָדַעְתִּי גֹּאֲלִי חָי וְאַחֲרוֹן
: hanc contriverint meam pellem postquam Et .staturum pulverem super
26 עַל־עָפָר יָקוּם : וְאַחַר עוֹרִי נִקְּפוּ־זֹאת
, mihi sum visurus ego Quem .Deum videbo mea carne de &
27 וּמִבְּשָׂרִי אֶחֱזֶה אֱלוֹהַּ : אֲשֶׁר אֲנִי אֶחֱזֶה־לִּי
.meo sinu in mei renes Defecerunt .alienus non & ,viderunt mei oculi &
וְעֵינַי רָאוּ וְלֹא־זָר כָּלוּ כִלְיֹתַי בְּחֵקִי :
est inventa verbi radix & : eum persequimur Cur : dicetis Quia
28 כִּי תֹאמְרוּ מַה־נִּרְדָּף־לוֹ וְשֹׁרֶשׁ דָּבָר נִמְצָא־
: gladii iniquitates ira quia , gladii faciebus à vobis Timete ? me in
29 בִי : גּוּרוּ לָכֶם מִפְּנֵי־חֶרֶב כִּי־חֵמָה עֲוֹנוֹת חָרֶב
.judicium quod sciatis ut
לְמַעַן תֵּדְעוּן שַׁדּוּן :

CAP. XX. כ

meæ cogitationes Idcirco : dixit & , Nahamathites Sophar respondit Et
1 2 וַיַּעַן צֹפַר הַנַּעֲמָתִי וַיֹּאמַר : לָכֵן שְׂעִפַּי
Correctionem .me in meum sensum propter & , me facient respondere
3 יְשִׁיבוּנִי וּבַעֲבוּר חוּשִׁי בִי : מוּסַר
: mihi respondebit meæ intelligentiæ spiritus & ? audiam meæ ignominiæ
כְּלִמָּתִי אֶשְׁמָע וְרוּחַ מִבִּינָתִי יַעֲנֵנִי :
? terram super hominem esse positum à , seculo à nosti hoc Nonne
4 הֲזֹאת יָדַעְתָּ מִנִּי־עַד מִנִּי שִׂים אָדָם עֲלֵי־אָרֶץ :
ad hypocritæ lætitia & : propinquo de impiorum laus Quod
5 כִּי רִנְנַת רְשָׁעִים מִקָּרוֹב וְשִׂמְחַת חָנֵף עֲדֵי־
ejus caput & ,ejus sublimitas cœlum in ascenderit Si .momentum
6 רָגַע : אִם־יַעֲלֶה לַשָּׁמַיִם שִׂיאוֹ וְרֹאשׁוֹ
eum videntes : peribit finem in ejus stercus Velut .attigerit nubem ad
7 לָעָב יַגִּיעַ : כְּגֶלֲלוֹ לָנֶצַח יֹאבֵד רֹאָיו
: eum invenient non & , volabit somnium Sicut ? ille Ubi : dicent
8 יֹאמְרוּ אַיּוֹ : כַּחֲלוֹם יָעוּף וְלֹא יִמְצָאֻהוּ
non & , eum vidit Oculus .nocturna visio sicut vagabitur &
9 וְיֻדַּד כְּחֶזְיוֹן לָיְלָה : עַיִן שְׁזָפַתּוּ וְלֹא
placabunt ejus Filii .ejus locus eum intuebitur ultrà nec ; addet
10 תוֹסִיף וְלֹא־עוֹד תְּשׁוּרֶנּוּ מְקוֹמוֹ : בָּנָיו יְרַצּוּ
ejus Ossa .suam violentiam reddent ejus manus & , mendici
11 דַלִּים וְיָדָיו תָּשֵׁבְנָה אוֹנוֹ : עַצְמוֹתָיו
.jacebit pulverem super eo cum & : ejus occultis sunt repleta
מָלְאוּ עֲלוּמָו וְעִמּוֹ עַל־עָפָר תִּשְׁכָּב :
.sua lingua sub illud celabit , malum ejus ore in dulcuerit Si
12 אִם־תַּמְתִּיק בְּפִיו רָעָה יַכְחִידֶנָּה תַּחַת לְשׁוֹנוֹ :
medio in ,illud prohibebit & : illud derelinquet non & ,eo super Parcet
13 יַחְמֹל עָלֶיהָ וְלֹא יַעַזְבֶנָּה וְיִמְנָעֶנָּה בְּתוֹךְ
aspidum Fel .est versus ejus visceribus in ejus Panis .sui palati
14 חִכּוֹ : לַחְמוֹ בְּמֵעָיו נֶהְפָּךְ מְרוֹרַת פְּתָנִים
ejus ventre de : eam evomet & ,deglutivit Facultatem .ejus interiori in
15 בְּקִרְבּוֹ : חַיִל בָּלַע וַיְקִאֶנּוּ מִבִּטְנוֹ
lingua eum occidet : suget aspidum Caput .Deus eam expellet
16 יֹרִשֶׁנּוּ אֵל : רֹאשׁ־פְּתָנִים יִינָק תַּהַרְגֵהוּ לְשׁוֹן
, mellis torrentes ,flumina : rivulos in videbit Non .viperæ
17 אֶפְעֶה : אַל־יֵרֶא בִפְלַגּוֹת נַהֲרֵי נַחֲלֵי דְּבַשׁ
facultatem velut : deglutiet non & , laborem Restituens .butyri &
18 וְחֶמְאָה : מֵשִׁיב יָגָע וְלֹא יִבְלָע כְּחֵיל
: pauperes dimisit , allisit Quia .exultabit non &,ejus permutationis
19 תְּמוּרָתוֹ וְלֹא יַעֲלֹס : כִּי־רִצַּץ עָזַב דַּלִּים
.eam ædificabit non & , rapuit domum
בַּיִת גָּזַל וְלֹא יִבְנֵהוּ :

Verſio VULG. LAT.

23 Quis mihi tribuat ut ſcribantur ſermones mei? quis mihi
24 det ut exarentur in libro Stylo ferreo, & plumbi lamina, vel celte ſculpantur in ſilice?
25 Scio enim quod Redemptor meus vivit, et in noviſſimo die de terra
26 ſurrecturus ſum: Et rurſùm circumdabor pelle mea, & in carne mea videbo Deũ meum.
27 Quem viſurus ſum ego ipſe, & oculi mei conſpecturi ſunt, & non alius: repoſita eſt hæc ſpes
28 mea in ſinu meo. Quare ergò nunc dicitis; Perſequamur eũ, & radicem verbi inveniamus
29 contra eum? Fugite ergò à facie gladii, quoniam ultor iniquitatum gladius eſt: & ſcitote eſſe judicium.

CAP. XX.

1 Reſpondens autem Sophar
2 Naamathites, dixit; Idcircò cogitationes meæ variæ ſuccedunt ſibi, & mens in diverſa
3 rapitur. Doctrinam, quâ me arguis, audiam, & ſpiritus intelligentiæ meæ reſpondebit
4 mihi. Hoc ſcio à principio, ex quo poſitus eſt homo ſuper
5 terram, Quòd laus impiorum brevis ſit, & gaudium hy-
6 pocritæ ad inſtar puncti. Si aſcenderit uſque ad cœlum ſuperbia ejus, & caput ejus nu-
7 bes tetigerit: Quaſi ſterquilinium in fine perdetur: & qui eum viderant, dicent; Ubi eſt?
8 Velut ſomnium avolans non invenietur, tranſiet ſicut viſio
9 nocturna. Oculus, qui eum viderat, non videbit, neque ultrà intuebitur eum locus ſuus.
10 Filii ej^9 atterentur egeſtate, & manus illius reddent ei dolo-
11 rem ſuum. Oſſa ejus implebuntur vitiis adoleſcentiæ ej^9, & cum eo in pulvere dormi-
12 ent. Cùm enim dulce fuerit in ore ejus malum, abſcondet
13 illud ſub lingua ſua. Parcet illi, & non derelinquet illud,
14 & celabit in gutture ſuo. Panis ejus in utero illius vertetur
15 in fel aſpidum intrinſecùs. Divitias, quas devoravit, evomet, & de ventre illius extrahet eas
16 Deus. Caput aſpidum ſuget, & occîdet eum lingua viperæ.
17 (Non videat rivulos fluminis, torrentes mellis, & butyri.)
18 Luet quæ fecit omnia, nec tamen conſumetur: juxta multitudinem adinventionum ſua-
19 rum, ſic & ſuſtinebit. Quoniam confringens nudavit pauperes: domum rapuit, & non ædificavit eam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

23 Τίς γὰρ ἂν (*) δῴη γραφῆναι τὰ ῥήματά μου,
τεθῆναι δὲ αὐτὰ ἐν βιβλίῳ εἰς τὸν αἰῶνα;
24 † Ἐν γραφείῳ σιδηρῷ (η) καὶ μολίβῳ, † ἢ
25 ἐν πέτραις ἐγγλυφῆναι; † Οἶδα γὰρ ὅτι (⁑)
ἀέναός ἐστιν ὁ ἐκλύειν με μέλλων, ἐπὶ γῆς
26 † (θ) Ἀναστῆσαι τὸ δέρμα μου τὸ ἀναντλοῦν
ταῦτα· † παρὰ γὰρ κυρίου (ι) ταῦτά μοι
27 συνετελέσθη, † Ἃ ἐγὼ ἐμαυτῷ συνεπίσταμαι, † ἃ (κ) ὁ ὀφθαλμός μου ἑώρακε, καὶ οὐκ
ἄλλος, πάντα δέ μοι συντετέλεσται ἐν
28 κόλπῳ. † Εἰ δὲ καὶ ἐρεῖτε, Τί ἐροῦμεν (λ) ἔναντι αὐτοῦ, † καὶ ῥίζαν λόγου (μ) εὑρήσομεν
29 ἐν αὐτῷ; † Εὐλαβήθητε (ν) δὴ καὶ ὑμεῖς
(ξ) ἀπὸ ἐπικαλύμματος, † θυμὸς γὰρ ἐπ'
(∴) ἀνόμους ἐπελεύσεται· † καὶ τότε γνώσονται,
(ο) ποῦ ἐστιν αὐτῶν ἡ ὕλη.

Quis enim utique det, ut ſcribantur verba mea, & ipſa poſita in libro in ſeculum, Et in ſtylo ferreo, & plumbo, aut in petris inſculpta? Scio enim quia æternus eſt, qui me reſoluturus eſt ſuper terram, (o) Ad reſuſcitandam autem meam, quæ perpetitur hæc. A Domino enim hæc mihi conſummata ſunt, Quorum ego mihi conſcius ſum, quæ oculus meus vidit, & non alius: & (p) omnia mihi conſummata ſunt in ſinu. Quòd ſi (q) & dixeritis, Quid dicemus contra eum, & (r) radicem ſermonis inveniemus in eo? Cavete (ſ) utique, & vos à tegmine. Ira enim ſuper iniquos veniet, & tunc (t) cognoſcent, ubi eſt eorũ materia.

MS.A. (*) δῴη (η) ἢ μολίβῳ, (⁑) ἀέναος (θ) Ἀναστήσει δέ μου τὸ σῶμα τὸ ἀναντλοῦν (ι) μοι ταῦτα συνετελέσθη, (κ) οἱ ὀφθαλμοί μου ἑοράκασιν, (λ) ἐναντίον (μ) εὕρησον (ν) δὲ (ξ) ἀπὸ κρίματος, (∴) ἀνόμοις (ο) ὅτι οὐδαμοῦ αὐτῶν ἡ ἰσχύς ἐστιν.

ΚΕΦ. κ'.

1 † Ὑπολαβὼν δὲ Σωφὰρ ὁ Μιναῖος, λέγει,
2 † Οὐχ οὕτως ὑπελάμβανον (α) ἀντερεῖν
σε ταῦτα, † καὶ οὐχὶ (α) συνίετε μᾶλλον
3 ἢ καὶ ἐγώ. † Παιδείαν ἐντροπῆς (*) μου ἀκούσομαι, † καὶ πνεῦμα ἐκ τῆς (γ) συνέσεως ἀπο-
4 κρίνεταί μοι. † Μὴ ταῦτα ἔγνως ἀπὸ τοῦ
ἔτι, ἀφ' οὗ ἐτέθη ἄνθρωπος ἐπὶ τῆς γῆς;
5 † Εὐφροσύνη (δ) δὲ ἀσεβῶν πτῶμα ἐξαίσιον,
† χαρμονὴ δὲ (ε) παρανόμων ἀπώλεια·
6 † Ἐὰν ἀναβῇ εἰς οὐρανὸν (ζ) αὐτοῦ τὰ δῶ-
ρα, † ἡ δὲ θυσία αὐτοῦ νεφῶν ἅψηται.
7 † (η) Ὅταν γὰρ δοκῇ ἤδη κατεστηρίχθαι, τό-
τε εἰς τέλος ἀπολεῖται· † οἱ δὲ εἰδότες
8 αὐτὸν ἐροῦσι, Ποῦ ἐστιν; † Ὥσπερ ἐνύπνι-
ον ἐκπετασθὲν οὐ μὴ εὑρεθῇ, † ἔπτη δὲ
9 ὥσπερ (θ) φάσμα νυκτερινόν. † Ὀφθαλμὸς
παρέβλεψε, καὶ οὐ προσθήσει, † (ι) καὶ οὐκ ἔτι
10 προσνοήσει αὐτὸν ὁ τόπος αὐτοῦ. † Τοὺς
υἱοὺς αὐτοῦ (κ) ὀλέσαιεν ἥττονες, † αἱ δὲ
χεῖρες αὐτοῦ (λ) πυρσεύσαισαν ὀδύνας.
11 † Ὀστᾶ αὐτοῦ (μ) ἐνεπλήσθησαν νεότητος αὐ-
τοῦ, † καὶ μετ' αὐτοῦ ἐπὶ χώματος κοιμη-
12 θήσεται. (ν) Ἐὰν γλυκανθῇ ἐν στόματι αὐ-
τοῦ κακία, † κρύψει αὐτὴν ὑπὸ τὴν γλῶσσαν
13 αὐτοῦ, † Οὐ φείσεται αὐτῆς, καὶ οὐκ ἐγκα-
ταλείψει αὐτήν· † καὶ συνάξει αὐτὴν ἐν
μέσῳ τοῦ λάρυγγος αὐτοῦ, καὶ οὐ μὴ δυνη-
14 θῇ βοηθῆσαι ἑαυτῷ. † Χολὴ ἀσπίδος ἐν
15 γαστρὶ (*) αὐτοῦ. † Πλοῦτος ἀδίκως συναγό-
μενος ἐξεμεθήσεται, † (ξ) ἐξ οἰκίας αὐτοῦ
16 ἐξελκύσει αὐτὸν ἄγγελος. † Θυμὸν δὲ δρα-
κόντων θηλάσειεν, † ἀνέλοι δὲ αὐτὸν γλῶσσα
17 ὄφεως. † Μὴ ἴδοι ἄμελξιν νομάδων, μηδὲ
18 νομὰς μέλιτος καὶ βουτύρου. † Εἰς κενὰ καὶ
μάταια ἐκοπίασεν, † (ο) πλοῦτον ἐξ οὗ οὐ
γεύσεται· ὥσπερ (π) στρίφνος ἀμάσητος,
19 ἀκατάποτος. † Πολλῶν γὰρ (ρ) δυνατῶν
οἴκους (σ) ἔθλασεν· † δίαιταν δὲ (τ) ἥρπα-
σε, καὶ οὐκ ἔστησεν.

CAP. XX.

Reſpondens autem Sophar Minæus, ait; Non ſic putabam contradicere te his: & non intelligitis magis, quàm & ego. Eruditionem confuſionis meæ audiam; & ſpiritus ex intelligentia reſpondet mihi. Nónne hæc noſti (a) ab eo, quod olim, ex quo poſitus eſt homo ſuper terram? Lætitia (b) autem impiorum ruina inſignis: gaudium verò iniquorum eſt perditio; Si aſcenderint in cœlum dona ejus, & ſacrificium ejus tetigerit nubes. Nam cùm viſus fuerit jam firmatus eſſe, tunc in finem peribit: qui autem noverant eum, dicent; ubi eſt? Tanquam ſomnium quod avolavit, non invenietur: volavit autem, ſicut viſio nocturna: Oculus vidit, & non adjiciet: & non ultrà animadvertet eum locus ſuus. Filios ejus diſperdant minores: & ipſæ manus ejus (c) ſuccendant dolores. Oſſa ejus impleta ſunt juventute ejus, & cum eo ſuper pulverem dormient. Si dulcuerit in ore ejus malignitas, abſcondet eam ſub lingua ſua: (d) Non parcet ei, & non relinquet eam: & (e) colliget eam in medio gutture ſuo: & non poterit ſubvenire ſibi. (f) Fel aſpidis in ventre ejus: Divitiæ iniquè congregatæ evomentur de (g) domo ejus: * extrahet eum angelus. Et (h) furorem draconum ſugat: & interficiat illum lingua colubri. Non videat mulctram pecorum, neque (i) pabula mellis, & butyri. In vanum, & fruſtrà laboravit: divitias, ex quibus non guſtabit: (k) tanquam durum quid, quod mandi non poteſt, nec glutiri: Multorum enim (l) potentum domos fregit, & (m) habitaculum diripuit, & non ſtatuit.

MS.A. (α) σε εἶ, καὶ ἀντειπεῖν σε ταῦτα, (β) Συνιέναι μᾶλλον ἢ ἐγώ. (*) σου (γ) Συνέσεώς σου (δ) γὰρ (ε) ἀσεβῶν (ζ) τὰ δῶρα αὐτοῦ, (η) Ὅταν δοκῇ ἤδη ἐστηρίχθαι, (θ) φάντασμα (ι) καὶ οὐ προσνοήσει αὐτὸν ὁ τόπος αὐτοῦ οὐκέτι. (κ) θλάσειαν (λ) ψηλαφήσουσιν ὀδύνας. (μ) ἐνεπλήσθη (ν) Ἐγλυκάνθη (*) αὐτοῦ καὶ πόνος. Πλοῦτος (ξ) ἐκ κοιλίας αὐτοῦ· ἐξ οἰκίας δὲ αὐτοῦ ἐξελκύσει αὐτὸν ἄγγελος θανάτου. Θυμὸς δὲ δρακόντων θηλάσει, καὶ ἀνέλοι αὐτὸν (ο) χοίνικα πλοῦτον (π) στρύχνον ἀμάσητον, *ἀκαταπάτητον. (ρ) ἀδυνάτων (σ) ἔθρασεν· (τ) αὐτῶν ἥρπασεν,

תרגום TARGUM.

25 23 מַן יְהַב יָתִי וְיִכַּתְבוּן מִלַּי מַן יְהַב בְּפִתְקָא וְיִתְרַשְׁמוּן : בְּקוּלְמוֹס דְּפַרְזְלָא וְכַרְכְּמִישָׁא לְעָלְמָא בְּטִינָרָא יִתְפַּסְלָן : וַאֲנָא יְדַעִית דְּפָרִיקִי קַיָּם וּמִן בָּתַר
27 26 דְּיִן פּוּרְקָנֵיהּ עַל עַפְרָא יְקוּם : וּמִן בָּתַר דְּאִתְקַף מַשְׁכִּי תְּהֵי דָא וּמִבִּסְרִי אֶחְמֵי תוּב אֱלָהָא : דִּי אֲנָא אֶחְמֵי לִי וְעֵינַי יֶחֱמוּן וְלָא חִילוֹנַי שְׁלִימוּ כָּלְיָתִי
29 28 בְּעוּבִי : אֲרוּם תֵּימְרוּן מָה נִרְדַּף לֵיהּ וְעִקַּר מִלְּתָא נִשְׁכַּח בֵּיהּ : דְּחוּלוּ לְכוֹן מִן קֳדָם חַרְבָּא אֲרוּם כְּדַרְגִיז אֱלָהָא עַל סוּרְחָנוּתָא מְגָרֵי קְטוֹלִין דְּחַרְבָּא
מִן בְּגְלַל דְּתִנְדְּעוּן דְּדַיָּן קְשׁוֹט הוּא מָרֵי דִינָא :

כ

2 1 אֲתִיב צוֹפַר דְּמִן נַעֲמָה וַאֲמַר : מְטוּל דְּרַעְיוֹנַי מְתִיבִן לִי וּמְטוּל דְּרְגִישׁוּתִי בִּי : מַרְדּוּתָא דְּכִסּוּפִי אֶשְׁמַע וְהֵיךְ פּוּחָא מִן בִּיוּנְתִּי יְתִיבִנַּנִי : הֲדָא יְדַעְתָּא
4 3 6 5 מִן אֵילָא מִן עִדָּן דְּאַשְׁתְּוֵי בַּר נָשׁ עִלָּוֵי אַרְעָא : אֲרוּם בּוּעַת רַשִׁיעֵי שְׁצִית בְּעָגַל וְחֶדְוַת דִּילְטוֹר עַד שַׁעְתָּא : אִין יִסַּק לְצֵית שְׁמַיָּא זְוִקְפֵיהּ וְרֵישֵׁיהּ לַעֲנָנָא
9 8 7 מְטֵי : הֵיךְ רְעִיָּה לְעָלְמָא יְהוֹבַד חָמוֹי יֵימְרוּן הָאן הוּא : הֵיךְ חֶלְמָא יְטוּס וְלָא יִשְׁכְּחוּנֵיהּ יִגְלֵי הֵיךְ חֶזְוָתָא דְּלֵילְיָא : עֵינָא סְקַרְתֵּיהּ וְלָא תוֹסִיף
12 10 11 וְלָא תוּב תִּסְכְּנֵיהּ אַתְרֵיהּ : בְּנוֹי יְרַעְוּן מִסְכְּנִין וִידוֹי מְשַׁלְּמָן תְּקוֹף צַעֲרֵיהּ : גַּרְמוֹי אִתְמַלְיָאוּ חֵילֵיהּ וּבַהֲדֵיהּ עַל עַפְרָא תִּשְׁכּוֹב : אִין מִתְבַּסְּמָא
14 13 בְּפוּמֵיהּ בִּישְׁתָא יְכַדְּבִנָּהּ תְּחוֹת לִישָׁנֵיהּ : יְחוּס עֲלָהּ וְלָא יִשְׁבְּקִנָּהּ וִיכַסְּנָהּ בְּמִצַּע מוֹרִינֵיהּ : מֵיכְלֵיהּ בִּמְעוֹי אִתְהַפִּיךְ אַרְסָא דְּחוּרְמָנִין בְּגַוֵּיהּ :
17 15 16 נִכְסִין דְּסַלְעַם יִפְלֵט יְתִיהּ מִכַּרְסֵיהּ יְתָרְכִנֵּיהּ אֱלָהָא : רֵישֵׁי חוּרְמָנַיָּא יִינַק תִּקְטְלִנֵּיהּ לִשַּׁן חִוְיָא : לָא יִזְבֵּי לְמֶחֱמֵי בְּטִיפֵי נַהֲרָוָת נַחֲלַיָּא דְּמִן
19 18 דּוּבְשָׁא וּלְוַי : מְתִיב לָאוּת חוּרְנָא וְלָא יִגְמַר כְּדַעְתְרֵיהּ מְתִיהֵב שְׁלְחוּפֵיהּ וְלָא יְרוּז : אֲרוּם רָעַע עִסְקָא דְּמִסְכְּנִין בֵּיתָא אֲנַס וְלָא בְנָא
יָתֵיהּ :

Verſio *SYRIACA.*

23 * ܡܢ ܢܬܠ ܠܝ ܕܢܬܟܬܒܢ ܗܠܝܢ ܡܠܝ ܘܢܬܪܫܡܢ ܗܠܝܢ ܒܣܦܪܐ. * ܘܒܩܢܝܐ ܕܦܪܙܠܐ. ܘܒܟܘܪܝܐ ܕܐܒܪܐ.
24 ܠܥܠܡ. ܘܥܠ ܟܐܦܐ ܢܬܓܠܦܢ. * ܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܦܪܘܩܝ ܚܝ ܗܘ. ܘܒܚܪܬܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܢܬܓܠܐ. * ܘܥܠ 25
26 ܡܫܟܝ ܗܘ ܐܬܟܪܟ ܗܠܝܢ ܘܥܠ ܒܣܪܝ. * ܐܢ ܢܚܙܝܢ ܠܐܠܗܐ ܥܝܢܝ. ܢܚܙܝܢ ܢܘܗܪܐ. ܟܘܠܝܬܝ ܡܢ ܠܓܘ ܗܘ 27
28 ܣܦ ܫܩܠ ܡܢ ܕܘܟܬܝ. * ܘܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܡܢܐ ܢܪܕܦܝܘܗܝ ܠܗ. ܡܠܬܐ ܛܒܬܐ ܐܫܟܚܘ ܒܗ. * ܕܚܠܘ
29 ܠܟܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܩܪܒܐ. ܡܛܠ ܕܚܡܬܐ ܕܚܛܗܐ ܩܪܒܐ ܗܝ. ܕܬܕܥܘܢ ܕܐܝܬ ܬܡܢ ܕܝܢܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟ *
1 * ܘܥܢܐ ܨܘܦܪ ܢܥܡܬܝܐ ܘܐܡܪ. * ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܬܚܫܒܬܝ ܢܦܢܝܢܢܝ. ܘܡܛܠܬܝ
2 ܣܟܘ ܠܝ. * ܡܪܕܘܬܐ ܕܡܟܣܢܘܬܝ ܐܫܡܥܟܘܢ. ܘܪܘܚܐ ܕܣܘܟܠܝ ܬܥܢܝܢܝ. * ܗܕܐ ܝܕܥܬ ܡܢ ܥܠܡܐ. ܡܢ 3
4 ܐܝܡܬ ܕܐܬܒܪܝ ܐܕܡ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܡܢ ܕܥܒܕ ܠܒܢܝ ܐܢܫܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܡܛܠ ܕܫܘܒܚܗܘܢ ܕܪܫܝܥܐ ܡܢ ܟܪܣܗܘܢ. 5
6 ܘܚܕܘܬܗ ܕܥܘܠܐ. ܠܫܥܐ ܗܝ. * ܐܢ ܢܣܩ ܠܫܡܝܐ ܪܘܡܗ. ܘܪܫܗ ܠܥܢܢܐ ܢܡܛܐ. * ܐܝܟ
7 ܬܢܢܐ ܠܥܠܡ ܢܐܒܕ. ܘܚܙܝܢܘܗܝ ܢܐܡܪܘܢ ܐܝܟܘ. * ܘܐܝܟ ܚܠܡܐ ܢܦܪܚ. ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ. ܘܢܥܪܩ ܐܝܟ ܚܙܘܐ 8
9 ܕܠܠܝܐ. * ܥܝܢܐ ܕܚܙܬܗ. ܠܐ ܬܘܣܦ ܬܚܙܝܘܗܝ. ܘܠܐ ܬܘܒ ܢܚܙܝܘܗܝ ܐܬܪܗ. * ܒܢܘܗܝ ܢܬܒܪܘܢ
10 ܒܡܣܟܢܘܬܐ. ܘܐܝܕܘܗܝ ܢܦܫܛܢ ܒܝܠܕܗ. * ܓܪܡܘܗܝ ܡܠܝܢ ܡܘܚܐ. ܘܥܡܗ ܥܠ ܥܦܪܐ ܢܫܟܒܘܢ. * ܐܢ 11
12 ܐܬܒܣܡ ܒܦܘܡܗ ܒܝܫܬܗ. ܘܢܛܫܝܗ ܬܚܝܬ ܠܫܢܗ. * ܢܚܘܣ ܥܠܘܗܝ ܘܠܐ ܢܫܒܩܝܘܗܝ. 13
14 ܘܢܟܠܝܘܗܝ ܒܓܘ ܚܟܗ. * ܠܚܡܗ ܒܡܥܘܗܝ ܢܬܗܦܟ. ܘܡܪܪܬܐ ܕܐܟܕܢܐ ܒܓܘܗ. * ܘܡܐܟܘܠܬܐ
15 ܕܒܠܥ ܢܬܩܝܐ ܡܢ ܟܪܣܗ. ܘܢܦܩܝܗ ܐܠܗܐ. * ܡܪܪܬܐ ܕܦܬܢܐ ܢܝܢܩ. ܘܠܫܢܐ ܕܐܟܕܢܐ ܢܩܛܠܝܘܗܝ. 16
17 * ܠܐ ܢܚܙܐ ܦܘܠܓܐ ܕܢܗܪܘܬܐ: ܘܪܕܝܐ ܕܕܒܫܐ ܘܚܠܒܐ. * ܢܗܦܘܟ ܠܥܡܠܐ. ܘܠܐ ܢܐܟܘܠ. ܚܝܠܐ 18
19 ܕܚܠܘܦܘܗܝ ܠܐ ܢܗܢܝܘܗܝ. * ܕܐܬܪܥܝ ܠܡܫܒܩ ܡܣܟܢܐ. ܘܒܝܬܐ ܕܚܛܘܦܐ ܠܐ ܢܬܒܢܐ.

Verſio *ARABICA.*

23 * ليت كان أحد يهتم ان يكتب كلامي فكانت ترسم في سفر * بقلم حديد * وبنقش الآنك للدهر *
24 وعلي الحجارة تنقش * وانا فاني اعلم ان مخلصي حي * وعلي الفناء علي الارض يظهر * وعلي جلدي 25
26 ضاقت هاتي وعلي بشري * فان ابصرت الله عيناي فقد رأت النور * كلاي هلاكا هلكت من
27 موضعي * حين تقولون لماذا نطلبه * أحسنة هي الكلمة التي وجدوا * ان ابعد اليكم من قدام 28
29 الحرب * من اجل ان حمية الخطأ حربا هي * حتي تعرفوا ان القضاء هناك *
* الفصل العشرون *
1 * فاجاب صوفار النعماتي فقال * من اجل سعيي فاجيبوني ومن اجلي فارتقبوا علي * وتاديب موعظتي 2
3 اسمعكم * وروح فهمي يجيبني * قد علمت هذا من العوالم من ان خلق آدم علي الارض * من الذي 4
5 صنع الناس علي الارض * لان تحمد المنافقين من اجوافهم * وفرح الحنفاء انما هو لوقت قصير * ان 6
7 صعد الي السماء برفعته * والي السحاب يبلغ راسه * مثل العجاج للدهر يبيد * والناظرون يقولون اين هو
8 * ومثل الحلم يطير فلا يوجد * ويشرد مثل رويا الليل * والعين التي ابصرته ايضا لا تعود ان تراه * ولا 9
10 ايضا يتفقدون مكانه * بنوه ينكسرون بالمسكنة * ويداه تنبسطان في ولده * عظامه مملية مخا * ومعه علي 11
12 الارض يضطجعون * ان وقعت في فمه سوايته * والغش تحت لسانه يكتمه * فانه يتعجل عليه ولا يتركه * 13
14 ويحبسه في جوف حلقه * طعامه في امعائه يتردد * ومرارة التنين في جوفه * والماكلة التي يبتلع يقيها 15
16 من بطنه ويبيدها الله * مرارة الثعبان يسترضع * ولسان الافعا يقتله * فلا ينظر اقتراف الانهار وعيون 17
18 العسل واللبن * يرجع الي التعب ولا ياكل * بقوة غيره يهنا * حين تفكر ان يترك 19
المسكين * وبيت الغاصب لا يبنا *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

23 *Utinam quis curaret ſcribere ſermones meos, et imprimerentur in libro.* 24 *Calamo ferreo, et in plumbea cælatura in æternum, & ſuper lapides ſculperentur.* 25 *Ego quidē ſcio quòd Salvator meus vivens ſit, & in conſummatione ſuper terrã appariturus.* 26 *Et pellem meam* (e) *anguſtârunt hæc, & carnem meam.* 27 *Si viderint oculi mei Deum, videbũt lumen. Renes mei penitùs perierunt de loco meo,* 28 *Dùm dicitis, Quare perſequimur eũ?* (f) *Num bonum eſt verbũ quod invenerunt,* 29 (g) *Ut recedam ad vos à conſpectu belli, quoniam furor peccati eſt bellum; ut ſciatis* (h) *ibi eſſe judicium.*

CAP. XX.

1 *Reſpondit Sofar Naamathites, & dixit;* 2 *Propter vitæ meæ inſtitutum reſpondete mihi, & propter me* (a) *obſervate me,* 3 *Et diſciplinã correptionis meæ audire vos faciã, & ſpirit°* (b) *oris mei reſpondebit mihi.* 4 *Jam ſcivi hæc à ſeculis, ex eo tempore quo creatus eſt Adam ſuper terra, ex quo fecit homines ſuper terra?* 5 *Quia gloria impiorum à ventribus eorum, & lætitia perverſorũ eſt ad breve momentũ.* 6 *Si aſcēderit in cœlum* (c) *in ſua ſublimitate, et ad nubes perveniat caput ejus,* 7 (d) *Sicut fumus in æternum peribit, & videntes eũ dicent; ubi eſt?* 8 *Et velut inſomniũ evolabit, & non invenietur, & velut viſio noctis fugiet,* 9 *Et ocul° qui eum viderat, non adjiciet ut eũ videat, nec* (d) *viſitabunt locum ejus:* 10 *Filii ejus frangentur paupertate, & manus ejus extendentur in prolē ſuã.* 11 *Oſſa ej° ſunt plena medullâ, & cum eo ſuper terra jacebunt.* 12 *Etiamſi* (f) *poſita ſit ejus malitia in ore ipſius; & dolum ſub lingua ſua contegat:* 13 (g) *Tamen feſtinabit ad eum, & non dimittet eum, et concludet illũ* (h) *in ventre tenebrarum ſuarũ.* 14 *Cib° ejus volvetur in viſceribus ipſius, & fel draconis in ventre illius:* 15 *Et eſcam quam deglutiit, evomet è ventre ſuo; & delebit eum Deus:* 16 *Fel* (i) *aſpidis ſuget, et lingua* (k) *viperæ occîdet eũ.* 17 *Non videbit diviſionem fluminum, &* (l) *fontium mellis, &* (m) *lactis.* 18 *Revertetur ad laborem,* (n) *et non manducabit: virtute ipſius alter fruetur,* 19 *Eò quòd cogitaverit dimittere pauperē: et domus prædonis non ædificabitur.*

INTERP. SYRIACA.

(e) circundederunt hæc, (f) Nam bonum eſt verbum quod poſt me invenero, (g) Timete vobis à (h) quòd ſit judicium. *CAP. xx.* (a) expectate me, (b) intellectûs mei (c) elatio ejus, (d) Procellæ inſtar (e) ampliùs (f) dulceſcat ejus (g) Parcet ei, (h) in medio palati ſui. (i) viperæ (k) aſpidis (l) torrentiũ (m) butyri (n) & non abſorbebit, ſecundùm facultatem permutationis ejus, non proderit, Eò quòd

PAAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quis tribuat *mihi* ut ſcribantur ſermones mei: quis det ut ſignentur in libro? Stylo ferreo & plumbi lamina in æternum in petra ſculpantur. Et ego ſcio quia redemptor meus vivit, & poſt hæc redemptio ejus conſurget ſuper *pulverem.* Et poſtquàm inflata fuerit pellis mea, erit hoc: & de carne mea videbo iterùm Deum. Quem ego viſurus ſum mihi, & oculi mei videbunt, & non alius: conſumpti ſunt renes mei in ſinu meo. Quoniam dicitis: Quid perſequimur eum, & radicem verbi invenimus contra eum? Timete vobis à facie gladii; quia cùm iraſcitur Deus ſuper iniquitates, immittit occidentes gladio: ut ſciatis quòd judex verus eſt dominus judicii. 23 24 25 26 27 28 29

CAP. XX.

ET reſpondit Sophar qui erat de Naama, & ait: Idcirco cogitationes meæ reſpondent mihi, & quia ſenſus meus in me eſt. Doctrinam verecundiæ meæ audio, & quaſi ſpiraculũ intelligentiæ meæ reſpondet mihi. Nonne hoc ſcis ab initio, à tempore quo poſit° eſt homo ſuper terram? Quoniam gaudium impiorum finitur citò, & lætitia delatoris uſque ad momentum. Si aſcenderit verſus cœlum erectio ejus, & caput ejus ad nubes pertigerit: Sicut ſtercus ejus in æternum peribit: videntes eum, dicent, Ubi eſt? Sicut ſomnium avolabit, nec invenietur; & tranſmigrabit ſicut viſio noctis. Oculus qui eum intuebatur, non adjiciet [*eum videre,*] nec aſpiciet eum ultrà locus ejus. Filii ejus *conterent* pauperes, & manus ejus reſtituent fortitudinem tribulationis ſuæ. Oſſa ejus impleta ſunt fortitudine ſua, & cum eo in pulvere dormiet. Si dulce fuerit in ore ejus malum, *mentietur* illud ſub lingua ſua. Parcet illi, & non derelinquet illud, & operiet illud in medio gutturis ſui. Cibus illius in utero ejus vertetur, venenum *aſpidum* in medio ejus. Subſtantias quas devoravit evomet, & de ventre ejus ejiciet eas Deus. Capita aſpidum ſuget: occidet eum lingua *ſerpentis.* Non erit dignus ut videat rivos fluminum, torrentes mellis & butyri. Reddet laborem *alienum,* & non perficiet: cùm *opulentia* ejus *datur immutat eam,* & non exultabit. Quoniam confregit negocium pauperum; domum rapuit, & non ædificavit eam. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19

איוב : כא

.evadet non ejus desiderio in ; suo ventre in tranquillus novit non Quia
כי לא־ידע שלו בבטנו בחמודו לא ימלט׃ 20
parturiet non propterea : eum comedendum ad superstes Non
21 אין־שריד לאכלו על־כן לא־יחיל
omnis : ei erit angustia ,suam sufficientiam replendo In .ejus bonum
22 טובו׃ במלאות ספקו יצר לו כל־
,suum ventrem replendum ad Fuerit .eum invadet laborantis manus
23 יד עמל תבואנו׃ יהי למלא בטנו
.ejus carne in eum super pluere faciet & : sui nasi iram eum in mittet
ישלח־בו חרון אפו וימטר עלימו בלחומו׃
.æris arcus eum pertransibit : ferri armatura ab Fugiet
24 יברח מנשק ברזל תחלפהו קשת נחושה׃
eum super : exibit ejus felle de fulgur & ,corpore de exivit & , Eduxit
25 שלף ויצא מגוה וברק ממררתו יהלך עליו
ignis eum peredet : ejus occultis in abscondita tenebra Omnis .terrores
26 אמים׃ כל־חשך טמון לצפוניו תאכלהו אש
Revelabunt .ejus tabernaculo in superstes affligetur : sufflatus non
27 לא־נפח ירע שריד באהלו׃ יגלו
fructus Migrabit .eum in insurgens terra & : ejus iniquitatem cœli
28 שמים עונו וארץ מתקוממה לו׃ יגל יבול
impii hominis pars Hæc .ejus nasi die in fluentes : ejus domus
29 ביתו נגרות ביום אפו׃ זה חלק־אדם רשע
.Deo à ejus eloquii hæreditas & , Deo à
מאלהים ונחלת אמרו מאל׃

CAP. XXI. כא

; meum sermonem audiendo Audite : dixit & , Job respondit Et
1 ויען איוב ויאמר׃ שמעו שמוע מלתי
2 : loquar ego & , me Ferte .vestræ consolationes hoc sit &
3 ותהי־זאת תנחומתיכם׃ שאוני ואנכי אדבר
? meum eloquium hominem ad ego Num .subsannes me loqui post &
4 ואחר דברי תלעיג׃ האנכי לאדם שיחי
,me ad Respicite ? meus spiritus abbreviabitur non cur si &
5 ואם־מדוע לא־תקצר רוחי׃ פנו־אלי
,sum recordatus si Et .os super manum ponite & ,obstupescite &
6 והשמו ושימו יד על־פה׃ ואם־זכרתי
Cur .tremor meam carnem apprehendit & : sum attonitus &
7 ונבהלתי ואחז בשרי פלצות׃ מדוע
? robore sunt roborati etiam , senuerunt ,vixerunt impii
רשעים יחיו עתקו גם־גברו חיל׃
eorum germina & : eis cum eorum facies ad stabile eorum Semen
8 זרעם נכון לפניהם עמם וצאצאיהם
virga non & , pavere à pax eorum Domus .eorum oculis in
9 לעיניהם׃ בתיהם שלום מפחד ולא שבט
: extra semen projecit non & ,gravidavit ejus Bos .eos super Dei
10 אלוה עליהם׃ שורו עבר ולא יגעל
pecus velut Emittent .sterilescet non & , ejus vacca salvabit
11 תפלט פרתו ולא תשכל׃ ישלחו כצאן
, tympano in Elevabunt .subsilient eorum nati & : suos parvulos
12 עויליהם וילדיהם ירקדון׃ ישאו בתף
bono in vetustate Terent .organi vocem ad lætabuntur & : cithara &
13 וכנור וישמחו לקול עוגב׃ יבלו בטוב
,Deo dixerunt Et .descendent sepulchrum momento in & ,suos dies
14 ימיהם וברגע שאול יחתו׃ ויאמרו לאל
Quid .volumus non tuarum viarum scientiam & ; nobis à Recede
15 סור ממנו ודעת דרכיך לא חפצנו׃ מה
occurrerimus quod capiemus utilitatis quid & ? ei serviamus quod Saddai
שדי כי־נעבדנו ומה־נועיל כי נפגע־
impiorum consilium : eorum bonum eorum manu in non En ? ei in
16 בו׃ הן לא בידם טובם עצת רשעים
.me à fuit longè
רחקה מני׃

Versio VULG. LAT.

20 Nec est satiatus venter ejus :
& cùm habuerit quæ cōcupie-
21 rat, possidere non poterit. Non
remansit de cibo ejus, & pro-
pterea nihil permanebit de
22 bonis ej⁹. Cùm satiatus fuerit,
arctabitur, æstuabit, et omnis
23 dolor irruet super eum. Uti-
nam impleatur venter ejus, ut
emittat in eū iram furoris sui,
& pluat super illum bellū suū.
24 Fugiet arma ferrea, & irruet
25 in arcum æreum. Eductus, &
egrediens de vagina sua, &
fulgurans in amaritudine sua:
vadent & venient super eum
26 horribiles. Omnes tenebræ
absconditæ sūt in occultis ej⁹:
devorabit eum ignis, qui non
succenditur, affligetur relictus
27 in tabernaculo suo. Revela-
bunt cœli iniquitatem ejus, &
terra consurget adversùs eum.
28 Apertum erit germen domûs
illius, detrahetur in die furo-
29 ris Dei. Hæc est pars hominis
impii à Deo, & hæreditas ver-
borum ejus à Domino.

CAP. XXI.

1 RESpondens autem Job, di-
2 xit; Audite, quæso, sermones
meos, & agite pœnitentiam.
3 Sustinete me, & ego loquar, &
pòst mea, si videbitur, verba
4 ridete. Numquid contra ho-
minem disputatio mea est, ut
meritò non debeam contri-
5 stari? Attendite me, & ob-
stupescite, et superponite di-
6 gitum ori vestro: Et ego quan-
do recordatus fuero, perti-
mesco, et concutit carnem
7 meam tremor. Quarè ergò
impii vivunt, sublevati sunt,
8 confortatique divitiis? Se-
men eorum permanet coram
eis, propinquorum turba et
nepotum in conspectu eorum.
9 Domus eorum securæ sunt et
pacatæ, et non est virga Dei
10 super illos. Bos eorū concepit,
et non abortivit: vacca pepe-
rit, et non est privata fœtu
11 suo. Egrediuntur quasi greges
parvuli eorum, et infantes eo-
12 rum exultant lusibus. Tenent
tympanum, et citharam, et
gaudent ad sonitum organi.
13 Ducunt in bonis dies suos, et
in puncto ad inferna descen-
14 dunt. Qui dixerunt Deo; Re-
cede à nobis, et scientiam vi-
15 arum tuarum nolumus. Quis
est Omnipotens ut serviamus
ei? et quid nobis prodest si
16 oraverimus illum? Veruntamen
quia non sunt in manu
eorum bona sua, consilium
impiorum longè sit à me.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

20 † (υ) Οὐκ ἔστιν αὐτοῦ σωτηρία τοῖς ὑπάρ-
χουσιν, † ἐν ἐπιθυμίᾳ αὐτοῦ οὐ σωθήσεται.
21 † Οὐκ ἔστιν ὑπόλειμμα τοῖς βρώμασιν (φ)
αὐτοῦ, † διὰ τοῦτο οὐκ ἀνθήσει αὐτοῦ τὰ
22 ἀγαθά. † Ὅταν δὲ δοκῇ ἤδη πεπληρῶσθαι,
θλιβήσεται, † πᾶσα δὲ ἀνάγκη ἐπ' αὐ-
23 τὸν ἐπελεύσεται. (χ) Εἴ πως εἰ πληρῶσαι
γαστέρα αὐτοῦ, † ἐπαποστείλαι ἐπ' αὐτὸν
θυμὸν ὀργῆς, (ψ) νίψαι ἐπ' αὐτὸν ὀ-
24 δύνας, † Καὶ οὐ μὴ σωθῇ ἐκ χειρὸς σι-
δήρου· † (ω) τρώσαι αὐτὸν τόξον (α) χάλκει-
25 ον. † Διεξέλθοι δὲ διὰ σώματος αὐτοῦ βέ-
λος, † (β) ἄστρα δὲ ἐν διαίταις (γ) αὐτοῦ.
26 περιπατήσαισαν· † ἐπ' αὐτῷ φόβοι, (δ) Πᾶν
δὲ σκότος αὐτῷ ὑπομείναι. † κατέδεται (ε)
αὐτὸν πῦρ ἄκαυστον, † κακώσαι δὲ αὐτοῦ ἐπ-
27 ήλυτος τὸν οἶκον. † Ἀνακαλύψαι (ζ)
δὲ αὐτοῦ ὁ οὐρανὸς τὰς ἀνομίας, † γῆ δὲ
28 ἐπανασταίη αὐτῷ. † Ἑλκύσαι τὸν οἶκον
αὐτοῦ ἀπώλεια εἰς τέλος, † (η) ἡμέρα ὀρ-
29 γῆς ἐπέλθοι αὐτῷ. † Αὕτη ἡ μερὶς ἀν-
θρώπου ἀσεβοῦς παρὰ κυρίου, † καὶ κτῆμα
ὑπαρχόντων (θ) αὐτῷ παρὰ τοῦ ἐπισκόπου.

Non est ejus salus facultatibus: (u) in desiderio suo non salvabitur. Non sunt reliquiæ cibi ejus: propter hoc non florebunt ejus bona. Et cùm putaverit se jam repletum esse, coarctabitur: omnis autem necessitas in eum superveniet, (o) Si quo modo sit implere ventrem suum: immittat in eum furorem iræ, (p) lavet super eum dolores, Et non salvetur de manu ferri: vulneret eum sagitta ærea: Et pertranseat per corpus ejus jaculum: (q) sydera autem in tabernaculis ejus (r) obambulent: super eum timores, Omnes autem tenebræ ei (s) permaneant: comedet eum ignis, qui non (t) accenditur: lædat (u) advena domum ejus, Et detegat cœlum iniquitates ejus, & terra insurgat adversùs eum. Trahat domum ejus perditio in finem: dies iræ superveniat ei. Hæc est pars hominis impii à Domino, & possessio bonorum ejus (x) à superintendente.

MS.A. (υ) Διὰ τοῦτο οὐκ ἔστιν αὐτῷ σωτηρία ἐν τοῖς ὑπάρχουσιν αὐτοῦ, οὐδὲ ἀνθήσει αὐτοῦ τὰ ἀγαθά. Ἐν ἐπιθυμίᾳ αὐτοῦ (φ) αὐτοῦ. Ὅταν δοκῇ (χ) Καὶ πληρώσει γαστέρα αὐτοῦ, (ψ) ῥίψαι δὲ ἐπ' (ω) τρώσαι δὲ αὐτὸν (α) χάλκειον. Καὶ διεξέλθοι διὰ (β) ἄνδρα δὲ (γ) αὐτοῦ μὴ περιπατήσαι (δ) Καὶ πᾶν σκότος αὐτὸν ὑπομείναι. (ε) δὲ αὐτὸν πῦρ ἄσβεστον, καὶ κακώσαι αὐτοῦ (ζ) αὐτοῦ (η) καὶ * ἡμέραι (θ) αὐτοῦ

ΚΕΦ. κα'.

1 † ὙΠολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, † (α) Ἀκού-
2 σατε ἀκούσατέ μου τῶν λόγων, † ἵνα μὴ
(β) ᾖ μοι παρ' ὑμῶν αὕτη ἡ παράκλησις.
3 † Ἄρατέ με, ἐγὼ δὲ λαλήσω, † (γ) εἶτ'
4 οὐ καταγελάσετέ μου. † Τί γάρ; (δ) μὴ
ἀνθρώπου μου ἡ ἔλεγξις; † ἢ διὰ τί οὐ θυ-
5 μωθήσομαι; † (ε) Εἰσβλέψαντες εἰς ἐμὲ
θαυμάσατε, χεῖρα θέντες (ζ) ἐπὶ σιαγόνι.
6 † Ἐάν τε γὰρ μνησθῶ, ἐσπούδακα· † ἔ-
7 χουσι δέ μου τὰς σάρκας ὀδύναι. † (η) Διὰ
τί ἀσεβεῖς ζῶσι, † πεπαλαίωνται δὲ (θ)
8 καὶ ἐν πλούτῳ; † Ὁ σπόρος αὐτῶν κατὰ
ψυχὴν, † τὰ δὲ τέκνα αὐτῶν ἐν ὀφθαλ-
9 μοῖς (ι). † Οἱ οἶκοι αὐτῶν εὐθηνοῦσι, φό-
βος δὲ οὐδαμοῦ, † μάστιξ δὲ παρὰ κυρίου οὐκ
10 ἔστιν ἐπ' αὐτοῖς. † Ἡ βοῦς αὐτῶν οὐκ ὠμο-
τόκησε, † διεσώθη δὲ αὐτῶν (¨) ἐν γαστρὶ
11 ἔχουσα καὶ οὐκ ἔσφαλεν. † Μένουσι δὲ (κ) ὡς
πρόβατα αἰώνια, † τὰ δὲ παιδία αὐτῶν
12 (λ) προσπαίζουσιν, † Ἀναλαβόντες ψαλτή-
ριον καὶ κιθάραν, † καὶ εὐφραίνονται φωνῇ
13 ψαλμοῦ. † Συνετέλεσαν (μ) δὲ ἐν ἀγαθοῖς
τὸν βίον αὐτῶν, † ἐν δὲ ἀναπαύσει ᾅδου
14 ἐκοιμήθησαν. † Λέγει δὲ (ν) κυρίῳ, Ἀ-
πόστα ἀπ' ἐμοῦ, † (ξ) ὁδούς σου εἰδέναι οὐ βούλο-
15 μαι. † Τί ἱκανὸς, ὅτι δουλεύσομεν αὐτῷ;
† καὶ τίς ὠφέλεια, ὅτι (∴) ἀπαντήσομεν αὐ-
16 τῷ; † Ἐν χερσὶ γὰρ (ο) ἦν αὐτῶν τὰ ἀγαθὰ,
ἔργα δὲ ἀσεβῶν (π) οὐκ ἐφορᾷ.

CAP. XXI.

RESpondens autem Job, ait; 1
Audite, audite sermones meos, 2
(a) ut non sit mihi à vobis hæc
consolatio. Sustinete me, ego 3
autem loquar: deinde (b) non
irridebitis me. Quid enim? num- 4
quid hominis est castigatio mea?
aut quarè non irascar? Inspicien- 5
tes in me (c) admirabimini, manū
ponentes super (d) maxillam. Si 6
etenim recordatus fuero, (e)
solicitus fui: & tenentur carnes
meæ doloribus. Quarè impii 7
vivunt, senuerunt autem & in
divitiis? Semen eorum secun- 8
dùm animam, & filii eorum in
(f) oculis. Domus eorum abun- 9
dant: timor autem nusquam, et
flagellum à Domino non est super
eos. Bos eorum non (g) fœtum 10
immaturum peperit: & salvae-
vasit (h) eorum prægnans, &
non frustrata est. Et permanent, 11
sicut (i) oves æternæ, & parvu-
li eorum ludunt, Sumentes psal- 12
terium, & citharam: & lætan-
tur voce psalmi. Consummave- 13
runt autem in bonis vitam suam,
& in requie inferni dormierunt.
Dicit autem Domino; Recede à 14
me, vias tuas scire nolo. Quid 15
est omnipotens, quia serviemus
ei? Et quæ utilitas, quoniam ob-
viàm ibimus ei? Erant enim in 16
manibus eorum bona: opera au-
tem impiorum non inspicit.

MS.A. (α) Ἀκούσατέ μου, ἀκούσατέ μου (β) εἴη μοι αὕτη παρ' ὑμῶν παράκλησις. Βαστάσατέ με, ἐγὼ (γ) εἶτα μή μου καταγελᾶται. (δ) μὴ ἐξ ἀνθρώπου ἡ ἔλεγξίς μου; καὶ διὰ τί (ε) Ἐμβλέψαντες εἰς ἐμὲ θαυμάσατε, (ζ) ἐπὶ στόμα. (η) Διὰ τί οἱ ἀσεβεῖς (θ) καὶ πλούτῳ; (ι) αὐτῶν. (¨) ἡ ἐν γαστρὶ (κ) ὥσπερ (λ) προσπαίζει αὐτοῖς, Ἀναλαμβάνοντα (μ) ἐν ἀγαθοῖς (ν) ὁ ἀσεβὴς τῷ κυρίῳ, (ξ) τὰς ὁδούς (∴) ἀπαντήσωμεν (ο) αὐτῶν ἦν (π) οὐ καθαρά.

תרגום TARGUM.

22 21 20 ארום לא ידע דיהי שליו בכרסיה בנושמיה לא ישתזיב׃ לית משוב למכליה מטול היכנא לא יוריך טוביה׃ תתמלי סאתיה יתפרע מניה כל אידא
25 24 23 דלעי תיתניה׃ יהי למימלי כרסיה יגרי ביה תקיף רוגזיה ויחת עלוי מטרין בשלדיה׃ יערוק מן זיני פרזלא תשלחפניה קשתא דנחשא׃ שלף
27 26 ונפק מתיקה וברקא ממרירתיה יהלך עלוי דחיליא׃ כל חשוכא טמיע לטשיותיה תגמרניה נור דנהנא דלא נפיח ישרי משוב במשכניה׃ יפרסמון
29 28 אנגלי מרומא סורחניה ודיירי ארעא יקומון למבאשא ליה׃ יטלטל עבור ביתיה משחיה וחמריה מזדלפן ביומא דרוגזיה׃ דין חולק בר נש רשיעא מן
קדם יי ואחסנת מימריה מן קדם אלהא׃

כא

4 3 2 1 ואתיב איוב ואמר׃ שמעו וקבילו מלתי ותהי דא תנחמתכון׃ סבולו יתי ואנא אמלל ומן בתר דמלליות תדחך׃ אפשר דאנא לבר נש מלתי ואין
7 6 5 מדין לא תתעיק רוחי׃ אתפנו לותי ושתוקו ושוון אידא על פומא׃ ואין דכרית ואתבהלית ואחד בסרי רתיתא׃ מדין רשיעיא יחון אתקפו לחוד
10 9 8 קנו נכסין׃ בניהון מכוין קדמיהון עמהון ובני בניהון למחמיהון׃ בתיהון שלם דלית דלוחא ולית מחת אלהא עליהון׃ תוריה מבטין ולא יפלט
13 12 11 תשוב תורתיה ולא תתכל׃ ישדרון היך ענא טליהון ורוביהון יטפזון׃ יטלון בתופין וכנרין ויחדון לקל אבובא׃ יגמרון בטבא יומיהון ובמרגועא לבי
16 15 14 קבורתא נחתין׃ ואמרו לאלהא זור מננא ולמחכם אורחתך לא צבינא׃ מה שדי ארום נפלחניה ומה צרוך אית ביה ארום נצלי במימריה׃ הא לא
שתחר בידיהון טוביהון מלכת רשיעי רחקת מני׃

Verſio SYRIACA.

20 * ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ ܫܝܢܐ ܒܟܪܣܗ. ܘܒܪܓܬܗ ܠܐ ܢܬܦܨܐ. * ܠܝܬ ܕܦܠܛ ܡܢ ܐܘܟܠܬܗ. ܡܛܠ ܗܢܐ
21 22 ܠܐ ܢܣܬܟܐ ܛܒܬܗ. * ܟܕ ܬܬܡܠܐ ܣܦܩܘܬܗ ܢܬܥܩ. ܘܟܠܗ ܐܝܕܐ ܕܥܘܠܐ ܬܐܬܐ ܥܠܘܗܝ. * ܘܢܗܘܐ ܠܡܡܠܝܘ
23 ܟܪܣܗ. ܘܢܫܕܪ ܒܗ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. ܘܢܡܛܪ ܥܠܘܗܝ ܒܩܪܒܘܗܝ. * ܢܥܪܘܩ ܡܢ ܙܝܢܐ ܕܦܪܙܠܐ.
24 ܬܚܒܛܝܘܗܝ ܩܫܬܐ ܕܢܚܫܐ. * ܢܫܠܘܦ ܘܢܦܘܩ ܡܢ ܓܘܗ. ܘܡܪܪܬܐ ܕܟܒܕܗ ܬܬܦܬܚ. ܢܗܘܘܢ ܥܠܘܗܝ
25 ܐܘܠܨܢܐ. * ܘܟܠ ܚܫܘܟܐ ܛܡܝܪ ܠܥܡܘܪܘܗܝ. ܬܐܟܠܝܘܗܝ ܢܘܪܐ ܕܠܐ ܢܦܝܚܐ. ܘܢܝܒܫ ܫܪܟܐ ܕܡܫܟܗ.
26 27 28 * ܢܓܠܘܢ ܫܡܝܐ ܚܛܗܘܗܝ. ܘܐܪܥܐ ܬܬܦܪܥ ܡܢܗ. * ܢܬܓܠܘܢ ܫܬܐܣܐ ܕܒܝܬܗ. ܘܢܬܚܛܦ ܒܝܘܡܐ
29 ܕܪܘܓܙܐ. * ܗܢܘ ܡܢܬܗ ܕܒܪܢܫܐ ܥܘܠܐ ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. ܘܝܪܬܘܬܐ ܕܡܠܘܗܝ ܡܢ ܡܪܘܡܐ.

* ܦܘܠܓܐ * ܟܐ *   * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܫܡܥܘ ܡܫܡܥ ܡܠܝ. ܘܬܗܘܐ ܗܕܐ

1 2 ܒܘܝܐܐ. * ܣܝܒܪܘܢܝ ܘܐܡܠܠ. ܘܒܬܪ ܕܡܠܠܬ ܓܚܟܘ. * ܐܢܐ ܠܒܪܢܫܐ ܡܠܬܝ. ܘܠܡܢܐ ܠܐ ܬܬܥܩ
3 4 ܪܘܚܝ. * ܐܬܦܢܘ ܠܘܬܝ ܘܐܬܕܡܪܘ. ܘܣܝܡܘ ܐܝܕܝܟܘܢ ܥܠ ܦܘܡܟܘܢ. * ܐܢ ܐܬܕܟܪܬ ܐܬܬܙܝܥܬ. ܘܐܚܕܢܝ
5 6 ܚܒܠܐ ܕܝܠܕܐ. * ܡܛܠܡܢܐ ܪ̈ܫܝܥܐ ܚܝܝܢ. ܘܥܬܩܘ ܓܢܒܪ̈ܐ ܚܝܠܐ. * ܙܪܥܗܘܢ ܩܐܡ ܩܕܡܝܗܘܢ.
7 8 ܘܒܢܝܗܘܢ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. * ܒܬܝܗܘܢ ܫܠܝܢ ܡܢ ܕܚܠܬܐ. ܘܠܐ ܫܒܛܐ ܕܐܠܗܐ ܥܠܝܗܘܢ. * ܬܘܪܗ
9 10 ܥܒܪ ܘܠܐ ܓܥܐ. ܘܫܘܪܬܗ ܦܠܛܐ ܘܠܐ ܡܚܒܠܐ. * ܡܫܬܪܪܝܢ ܐܝܟ ܥܢܐ ܒܢܝܗܘܢ. ܘܝܠܘܕܝܗܘܢ ܡܫܘܪܝܢ.
11 12 * ܫܩܠܝܢ ܦܠܓܐ ܘܟܢܪ̈ܐ. ܘܚܕܝܢ ܠܩܠ ܙܡܪܐ. * ܡܓܡܪܝܢ ܒܛܒܬܐ ܝܘܡܝܗܘܢ. ܘܒܪܦܦ ܥܝܢܐ ܠܫܝܘܠ
13 14 ܢܚܬܝܢ. * ܘܐܡܪܝܢ ܠܐܠܗܐ. ܦܪܘܩ ܡܢܢ. ܘܝܕܥܬܐ ܕܐܘܪܚܬܟ ܠܐ ܨܒܝܢܢ. * ܘܐܡܪܝܢ. ܡܢܘ ܐܠܗܐ
15 16 ܕܢܦܠܚܝܘܗܝ. ܐܘ ܡܢܐ ܡܘܬܪ ܠܢ ܕܢܒܥܐ ܡܢܗ. * ܗܐ ܠܐ ܗܘܐ ܒܐܝܕܝܗܘܢ ܛܒܬܗܘܢ. ܘܡܬܚܫܒܬܗܘܢ
ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܐܬܪܚܩܬ ܡܢܝ.

Verſio ARABICA.

20 21 * مِنْ أَجْلِ انه لم يعرف قضاءه في بطنه ۰ وبشهواته لا ينفلت * وليس احد ينفلت من ذريته ۰ من اجل
22 هذا لا يثبت خيره * والمكيال الذي كال يجازى ۰ وكل يد من المنافقين تأتي عليه * ويكون
23 للهلاك فكره ۰ ويعري به حمية غضبه ويمطر عليه بمحاربته * الذي يفر من سنان الحديد يجوز
24 25 عليه قوس من نحاس * تسل وتخرج امعاؤه ۰ وجلد مرارته ينشق ۰ وعليه تدوم الشدة * وكل الشر
26 مطمورا لذريته ۰ تأكله نار غير منفوخة ۰ وييبس باقي جلدته * تظهر السماء خطاياه ۰ والارض تنتقم منه
27 28 * تظهر اواسي بيته ويجتذب في يوم الرجز * هذا نصيب الانسان المنافق من قدام الله ۰ ووراثة
29 كلامه من العلو * ۰ الفصل الحادي والعشرون ۰ * فأجاب ايوب وقال ۰
1 2 * اسمعوا استماعا قولي ۰ ويكون فيكم فهما * اصبروا لي فأتكلم ۰ وبعد كلامي فاهزؤا * اقول للناس
3 4 قولي ۰ لماذا تضيق روحي * التفتوا الي واعجبوا ۰ وضعوا ايديكم على افواهكم * فاني اذا ذكرت
5 6 ارتعدت ۰ واخذ بشري الطلق * من اجل ماذا المنافقون احياء ۰ ويعتق جبابرة القوة * ذريتهم واقفة
7 8 قدامهم ۰ وبنوهم عيانهم * بيوتهم امنة من المخافة ۰ وليس سوط الله عليهم * وثوره يجوز فلا يعج ۰
9 10 وتفلت بقرته ولا تفسد * مشددة مثل الغنم بنوهم ۰ واولادهم يطفرون * اخذوا البرابط والمزاهر
11 12 ويفرحون لصوت المزمار * يفنون بالنعيم ايامهم وبسرعة الى الهاوية يهبطون * ويقولون لله ابعد عنا ۰ وان
13 14 نعرف طرايقك فاننا لا نشتهي * ويقولون من هو الله حتى نعبده او ماذا ننتفع حتى ان نطلب ۰
15 16 * فالآن ليس بايديهم خلاصهم ۰ وفكر المنافقين استبعدت مني ۰

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia non ſcivit quod eſſet quietus in ventre ſuo, in corpore ſuo non liberabitur. Nihil eſt quod remaneat de cibo ejus: propterea non expectabit bonum ſuum. 20 21 Cùm impleta fuerit menſura ejus, vindictam ſumet ab eo: omnis manus laborantis veniet ei. Cùm fuerit ad implendũ ventrem ejus, mittet in eum furorem iracundiæ 22 23 ſuæ, & demittet ſuper eum *pluvias in tormentum carnis ejus*. Fugiet arma ferrea, confodiet eum arcus æreus. Evaginavit, & eductus eſt [*gladius*] de vagina *ſua*, & *fulgur* 24 25 *e felle* ejus, [illegible] ſuper eum terrores? Omnes tenebræ abſconditæ ſunt in occultis ejus: conſumet eum ignis gehennæ qui non eſt ſufflat⁰: habitabit qui evaſerit in 26 tabernaculo ejus. Manifeſtabunt angeli excelſi iniquitatem ejus, & habitatores terræ conſurgent ut malefaciant ei. Transferetur frumentum domus illius: oleum & 27 28 vinum ejus defluent in die furoris ejus. Hæc eſt pars filii hominis impii à facie Domini, & hæreditas verbi ejus a facie Dei. 29

CAP. XXI.

Et reſpondit Job, & dixit: Audite et ſuſcipite verbum meum, et ſit hoc conſolationes veſtræ. Suſtinete me, et ego loquar, et poſtquam locutus fuero, ridebis. 1 2 3 *Numquid* ego ad filium hominis ſermonem meum [*facio?*] et ſi ita eſt, quare non anguſtiabitur ſpiritus meus? Aſpicite ad me, et tacete, et ponite manum ſuper os. Et 4 5 ſi ego recordatus fuero, conturbatus ſum, et apprehendit carnem meam tremor. Quare impii vivunt, confortati ſunt, *etiam* poſſederunt divitias. Filii eorum præparati 6 7 ſunt coram eis cum eis, et filii filiorum ſuorum, videntibus illis. In domibus eorum eſt pax abſq; timore, et non eſt plaga Dei ſuper eos. Taurus ejus ingravidat, nec 8 9 irritum *facit* ſemen; parit vacca ejus, nec facit abortivum. Mittunt ſicut oves parvulos ſuos, et pueri ſui ſaliunt. Portant tympana et citharas, et lætantur ad 10 11 vocem organi. Conſumunt in bono dies ſuos, et in momento ad ſepulchrum deſcendunt. Et dicunt Deo: Recede à nobis, et ſcire vias tuas nolumus. 12 13 Quis eſt omnipotens ut ſerviamus ei, et quæ erit utilitas *in eo* ſi oraverimus verbum ejus? Ecce non miſſum eſt in manum eorum bonum ipſorum: conſilium impiorum longe eſt à me. 14 15

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Quia non cognovit judicium ſuum in ventre ſuo: & in concupiſcentiis ſuis non effugiet: 20 Et nullus evadet de generatione ejus. Propterea non durabit bonum ipſius: 21 Et menſura quâ menſus eſt, retribuetur ei, & omnis manus ab impiis veniet ſuper eum: 22 Et erit ad interitum (o) cogitatio ipſius, & occupabit illum ira indignationis ejus, et pluet ſuper eũ in ſua pugna. 23 Qui fugit à cuſpide ferri, tranſiet ſuper eum arcus æneus: 24 Educentur & extrahentur inteſtina ejus, et cutis fellis ejus diſrumpetur: & ſuper ipſum perdurabit (p) tribulatio, 25 Et (q) omne malum eſt abſconditum pro generatione ejus: devorabit eum ignis non concitatus: & exareſcet reliqua ejus pellis: 26 Revelabunt cœli peccata ipſius, & terra vindictam ſumet ab ipſo: 27 Aperientur fundamenta domûs ipſius, raptabitur in die furoris. 28 Hæc eſt ſors hominis iniqui à conſpectu Dei, & hæreditas verborum ejus ab excelſo. 29

CAP. XXI.

Reſpondit Job, ac dixit, 1 Audientes audite ſermonẽ meũ, & ſit in vobis prudentia: 2 Suſtinete me, et loquar, et poſt verba mea irridete. 3 Dicã homini ſermonem meum, cur coanguſtatur ſpiritus meus? 4 Convertimini ad me, et obſtupeſcite, et apponite manus veſtras ori veſtro: 5 Quia cùm memor, horreo, & capit carnem meã (a) dolor partûs. 6 Quare vivi ſunt impii, & inveteraſcunt gigantes fortiſſimi? 7 Progenies eorum perſeverat coram ipſis, & filii ipſorum in conſpectu eorum? 8 Domus eorum ſunt ſecuræ à metu, et flagellum Dei non eſt ſuper eo? 9 Bos ejus incedit, & non mugit, & vacca ejus dimiſſa nil corrumpit? 10 Corroborati velut oves filii eorum, & nati eorum ſaltant? 11 Sumunt fides ac citharas, & congaudent ad vocem pſalmodiæ? 12 Conſumunt dies ſuos in deliciis, & citò in infernum deſcendunt; 13 Et dicunt Deo, Recede à nobis, & cognoſcere vias tuas non cupimus; 14 Et dicunt; Quis eſt Deᵒ ut eum adoremus? & quid proderit nobis, (b) ſupplicare? 15 (c) Veruntamen nõne eſt in manibus eorum (d) ſalus eorum? & cogitatio impiorum procul abſceſſit à me. 16

INTERP. SYRIACA

(o) conceptio (p) robur. (q) omnes tenebræ abſconditæ ſunt. CAP. xxi. (a) vertigo. (b) ut precemur eum? (c) Ecce non eſt (d) bonum eorum?

איוב : כב

: eorum exitium eos ſuper veniet & ,extinguetur impiorum lucerna Quoties
17 כמה נר־רשעים ידעך ויבא עלימו אידם
; venti facies ad palea ſicut Erunt .ſuo naſo in partietur dolores
18 חבלים יחלק באפו: יהיו כתבן לפני רוח
: ejus robur ejus filiis abdet Deus .turbo eam eſt furatus gluma ſicut &
19 וכמץ גנבתו סופה: אלוה יצפן־לבניו אונו
: ſuum infortunium ejus oculi Videbunt .ſciet & ,eum ad reddet
20 ישלם אליו וידע: יראו עינו כידו
ſua domo in ejus voluntas quæ Nam .bibet Saddai furore de &
21 ומחמת שדי ישתה: כי מה־חפצו בביתו
Deum Nunquid .ſunt dimidiati ejus menſium numerus Et ? ſe poſt
22 אחריו ומספר חדשיו חצצו: הלאל־
morietur Iſte ? judicabit excelſos ipſe & ,ſcientiam docebit
23 ילמד־דעת והוא רמים ישפוט: זה ימות
ejus Mulctralia .pacificus & ,quietus ipſe totus ,ſuæ integritatis fortitudine in
24 בעצם תמו כלו שלאנן ושליו: עטיניו
morietur iſte Et .irrigabitur ejus oſſa medulla & ; lacte ſunt plena
25 מלאו חלב ומח עצמותיו ישקה: וזה ימות
ſuper Pariter .bono in comedit non & ; amaro animo in
26 בנפש מרה ולא אכל בטובה: יחד על־
novi En .eos ſuper operiet vermis & ; jacebunt pulverem
27 עפר ישכבו ורמה תכסה עליהם: הן ידעתי
.excogitabitis iniquè me adverſum molimina & ,veſtras cogitationes
מחשבותיכם ומזמות עלי תחמסו:
tabernaculum ubi & ? liberalis domus ubi ,dicetis Nam
28 כי תאמרו איה בית־נדיב ואיה אהל
tranſeuntes interrogaſtis non Nunquid ? impiorum habitaculorum
29 משכנות רשעים: הלא שאלתם עוברי
prohibebitur exitii die in Quia ? diſſimulabitis non eorum ſigna & ? viam
30 דרך ואתתם לא תנכרו: כי ליום איד יחשך
ejus faciem ſuper nunciabit Quis .inducentur furorum die in ;malus
31 רע ליום עברות יובלו: מי־יגיד על־פניו
ſepulchra ad ipſe Et .ei reddet quis fecit ipſe Et ? ejus viam
32 דרכו והוא עשה מי ישלם־לו: והוא לקברות
,torrentis ceſpites ei Dulcuerunt .vigilabit acervo ſuper & ,ducetur
33 יובל ועל־גדיש ישקוד: מתקו־לו רגבי נחל
.numerus non ejus faciem ad & ,trahet hominem omnem ſe poſt &
ואחריו כל־אדם ימשוך ולפניו אין מספר:
remanſit veſtris reſponſionibus & : vanum me conſolabimini quomodo Et
34 ואיך תנחמוני הבל ותשובתיכם נשאר־
? prævaricatio
מעל:

CAP. XXII. כב

proderit Deo Nunquid : dixit & ,Temanites Eliphaz reſpondit Et
1 ויען אליפז התמני ויאמר: הלאל־ יסכן־ 2
voluntas Nunquid .agens prudenter ſe ſuper proderit ſed ? vir
3 גבר כי־יסכן עלימו משכיל: החפץ
? tuas vias perficias quòd ,lucrum ſi & ? juſtificeris quòd ,Saddai
לשדי כי תצדק ואם־בצע כי־תתם דרכיך:
? judicium in tecum veniet : te arguet tui timore præ Nunquid
4 המיראתך יוכיחך יבוא עמך במשפט:
Etenim ? tuis iniquitatibus finis non & ,multa tua malitia Nonne
5 הלא רעתך רבה ואין־קץ לעונתיך: כי־ 6
.facies ſpoliare nudorum veſtes & ,gratis tuos fratres pignus in capies
תחבל אחיך חנם ובגדי ערומים תפשיט:
.panem prohibebis famelico à & ,propinabis laſſo aquam Non
7 לא־מים עיף תשקה ומרעב תמנע לחם:
ſedebit faciebus acceptus & ; terra ei brachii viro Et
8 ואיש זרוע לו הארץ ונשוא פנים ישב
pupillorum brachia & ,vacuè dimiſiſti Viduas .ea in
9 בה: אלמנות שלחת ריקם וזרעות יתמים
pavor te terruit & ,laquei tui circuitus Propterea .contundetur
10 ידכא: על־כן סביבותיך פחים ויבהלך פחד
.ſubito
פתאום:

Verſio VULG. LAT.

17 Quoties lucerna impiorum extinguetur, & ſuperveniet eis inundatio, & dolores dividet furoris ſui? 18 Erunt ſicut paleæ ante faciem venti, & ſicut favilla quam turbo diſpergit. 19 Deus ſervabit filiis illius dolorem patris: & cùm reddiderit, tunc ſciet. 20 Videbunt oculi ejus interfectionem ſuam, & de furore Omnipotentis bibet. 21 Quid enim ad eum pertinet de domo ſua poſt ſe? & ſi numerus menſium ejus dimidietur? 22 Numquid Deum docebit quiſpiam ſcientiam, qui excelſos judicat? 23 Iſte moritur robuſtus & ſanus, dives & fœlix: 24 Viſcera ejus plena ſunt adipe, & medullis 25 oſſa illius irrigantur: Alius verò moritur in amaritudine animæ abſque ullis opibus: 26 Et tamen ſimul in pulvere dormient, & vermes operient 27 eos. Certè novi cogitationes veſtras, & ſententias contra 28 me iniquas. Dicitis enim, Ubi eſt domus principis? & ubi tabernacula impiorum? 29 Interrogate quemlibet de viatoribus, & hæc eadem illũ intelligere cognoſcetis. 30 Quia in diem perditionis ſervatur malus, & ad diem furoris ducetur. 31 Quis arguet coram eo viam ejus? & quæ fecit, quis 32 reddet illi? Ipſe ad ſepulchra ducetur, & in congerie mortuorum vigilabit. 33 Dulcis fuit glareis Cocyti, & poſt ſe omnem hominem trahet, & 34 ante ſe innumerabiles. Quomodò igitur conſolamini me fruſtrà, cùm reſponſio veſtra repugnare oſtenſa ſit veritati?

CAP. XXII.

1 Reſpondens autem Eliphaz 2 Themanites, dixit; Numquid Deo poteſt comparari homo, etiam cùm perfectæ fuerit 3 ſcientiæ? Quid prodeſt Deo, ſi juſtus fueris? aut quid ei confers, ſi immaculata fuerit via 4 tua? Numquid timens arguet te, & veniet tecum in judici5um, Et non propter malitiam tuam plurimam, & infinitas 6 iniquitates tuas? Abſtuliſti enim pignus fratrum tuorum ſine cauſa, & nudos ſpoliâſti 7 veſtibus. Aquam laſſo non dediſti, & eſurienti ſubtraxiſti 8 panem. In fortitudine brachii tui poſſidebas terram, & po9tentiſſimus obtinebas eam. Viduas dimiſiſti vacuas, & lacertos pupillorum comminuiſti. 10 Propterea circumdatus es laqueis, & conturbat te formido ſubita.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 † Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ καὶ ἀσεβῶν λύχνος σβεσθήσεται, † ἐπελεύσεται δὲ αὐτοῖς ἡ καταστροφὴ, † (ρ) ὠδῖνες δὲ αὐτοὺς ἕξουσιν ἀπὸ 18 ὀργῆς. † Ἔσονται δὲ ὥσπερ ἄχυρα (σ) ὑπ' ἀνέμου, † ἢ ὥσπερ κονιορτὸς ὃν () ὑφείλετο 19 λαῖλαψ. † Ἐκλείποι (τ) υἱοὺς τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ, † ἀνταποδώσει πρὸς αὐτὸν 20 καὶ γνώσεται. † (υ) Ἴδοισαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ τὴν ἑαυτοῦ σφαγὴν, † (φ) ἀπὸ δὲ κυ21ρίου μὴ διασωθείη. † Ὅτι τὸ θέλημα αὐτοῦ ἐν οἴκῳ αὐτοῦ (χ) μετ' αὐτοῦ, † καὶ 22 ἀριθμοὶ μηνῶν αὐτοῦ διῃρέθησαν. † Πότερον οὐχὶ ὁ κύριός ἐστιν ὁ διδάσκων σύνεσιν καὶ ἐπιστήμην; † αὐτὸς δὲ (ψ) φόνους δια23κρινεῖ; † Οὗτος ἀποθανεῖται ἐν κράτει (ω) ἁπλοσύνης αὐτοῦ, † ὅλος δὲ εὐπαθῶν 24 καὶ εὐθηνῶν. † Τὰ δὲ ἔγκατα αὐτοῦ πλήρη στέατος, † (α) μυελὸς δὲ αὐτοῦ δια25κεῖται. † (β) Ὁ δὲ τελευτᾷ ὑπὸ πικρίας 26 ψυχῆς, οὐ φαγὼν (γ) οὐδὲν ἀγαθόν. † Ὁμοθυμαδὸν (δ) δὲ ἐπὶ γῆς κοιμῶνται, † σα27πρία δὲ αὐτοὺς ἐκάλυψεν (ε). † Ὥστε οἶδα 28 ὑμᾶς, ὅτι τόλμῃ ἐπίκεισθέ μοι. † Ὥστε ἐρεῖτε, Ποῦ ἐστιν (ζ) οἶκος ἄρχοντος; † καὶ ποῦ (η) ἐστιν ἡ σκέπη τῶν σκηνωμάτων τῶν 29 ἀσεβῶν; † Ἐρωτήσατε παραπορευομένους ὁδὸν, † καὶ τὰ σημεῖα αὐτῶν οὐκ (θ) ἀπ30αλλοτριώσετε. † Ὅτι εἰς ἡμέραν ἀπωλείας κουφίζεται ὁ πονηρὸς, † (ι) εἰς ἡμέραν 31 ὀργῆς αὐτοῦ (κ) ἀπαχθήσονται. † Τίς ἀπαγγελεῖ (λ) ἐπὶ προσώπου αὐτοῦ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, † (μ) καὶ αὐτὸς ἐποίησε; τίς ἀντα32ποδώσει αὐτῷ; † Καὶ αὐτὸς εἰς τάφους ἀπηνέχθη, † (ν) καὶ αὐτὸς ἐπὶ σωρῶν ἠγρύ33πνησεν. † Ἐγλυκάνθησαν αὐτῷ χάλικες χειμάρρου, † καὶ ὀπίσω αὐτοῦ πᾶς ἄνθρωπος ἀπελεύσεται, † καὶ ἔμπροσθεν αὐτοῦ ἀναρίθ34μητοι. † Πῶς δὲ παρακαλεῖτέ με κενά; † (ξ) τὸ δὲ ἐμὲ καταπαύσασθαι ἀφ' ὑμῶν οὐδέν.

ΚΕΦ. κβʹ.

1 † Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιφὰζ ὁ Θαιμανίτης, 2 λέγει, † Πότερον οὐχὶ ὁ κύριός ἐστιν ὁ 3 διδάσκων σύνεσιν καὶ ἐπιστήμην; † Τί γὰρ μέλει τῷ κυρίῳ, ἐὰν σὺ (α) ἦσθα τοῖς ἔργοις ἄμεμπτος; † ἢ ὠφέλεια (β), ὅτι ἁ4πλώσῃς τὴν ὁδόν σου; † Ἢ λόγον σου ποιούμενος (γ) ἐλέγξεις, καὶ συνεισελεύσε5ταί σοι εἰς κρίσιν; † Πότερον (δ) οὐχ ἡ κακία σου ἐστὶ πολλὴ, † ἀναρίθμητοι δέ (ε) σου εἰσὶν αἱ ἁμαρτίαι; 6 † Ἠνεχύραζες (ζ) δὲ τοὺς ἀδελφούς σου διακενῆς, † ἀμφίασιν δὲ γυμνῶν ἀφεί7λου. † Οὐδὲ ὕδωρ διψῶντας ἐπότισας, 8 † ἀλλὰ πεινώντων ἐστέρησας ψωμόν. † Ἐθαύμασας δέ τινων (η) πρόσωπον, † ᾤ9κισας δὲ τοὺς ἐπὶ τῆς γῆς. † Χήρας δὲ ἐξαπέστειλας κενὰς, † (θ) ὀρφανοὺς δὲ ἐκά10κωσας. † Τοιγαροῦν ἐκύκλωσάν σε παγίδες, † καὶ ἐσπούδασέ σε πόλεμος ἐξαίσιος.

Immò verò, & impiorum lucerna extinguetur, & ſuperveniet eis ſubverſio: dolores autem habebunt eos ab ira: Erunt autem tanquam paleæ ſub vento, aut tanquam pulvis, quem abſtulit turbo. (k) Deficiant filios bona ejus: retribuet ad eum, & cognoſcet. Videant oculi ejus (l) necem ſuam, & à Domino non ſalvetur. (m) Quia voluntas ejus in domo ejus cum eo, & numeri menſium ejus diviſi (n) ſunt. Nunquid (o) non Dominus eſt, qui docet intellectum, et ſcientiam? ipſe autem (p) homicidia dijudicat. Hic moritur in robore (q) ſimplicitatis ſuæ, totus autem benè affectus, & proſperè agens. Et inteſtina ejus plena ſunt adipe, & (r) medulla ejus diffunditur. Ille verò moritur ab amaritudine animæ ſuæ, cùm non comederit ullum bonum. Simul autem ſuper terram dormiunt, & putredo eos operuit. Itaque ſcio (ſ) vos audacter mihi inſiſtere. Quia dicetis, ubi eſt domus principis? & ubi eſt velamen in tabernaculis impiorum? Interrogate eos qui tranſeunt per viam, & ſigna eorum non (t) alienabitis: Quoniã in diem perditionis (u) ſublimatur malignus: in diem iræ ejus (x) abducentur. Quis annuntiabit in faciem ejus viam ejus, & ipſe fecit? quis retribuet ei? Et ipſe in ſepulchra deductus eſt, & ipſe ſuper acervos vigilavit: Dulces fuerunt ei lapides torrentis; & poſt eum omnis homo abibit, & ante eum innumerabiles: Quomodo autem conſolamini me inaniter? & ut ego ex vobis requieſcam, nihil eſt.

CAP. XXII.

Reſpondens autem Eliphaz 1 Themanites, ait; Nonne Dominus 2 eſt, qui docet intellectum, & ſcientiam? Quid enim (a) 3 curæ eſt Domino, ſi tu fuiſti operibus ſine crimine? aut utilitas, quòd ſimplicem facies viam tuam: Aut rationem tuã habens 4 (b) argues, & veniet tecum in judicium? Nonne malitia tua 5 eſt multa, & innumerabilia ſunt peccata? In pignus autem acce6piſti fratres tuos in (c) vanum: & amictum nudorum abſtuliſti: Neque aquâ ſitientes potâſti, ſed 7 eſurientium ſubtraxiſti panem: Et admiratus es quorundam per8ſonam: habitare autem feciſti (d) eos, qui ſuper terram. Et vi9duas dimiſiſti inanes, & pupillos afflixiſti: Igitur circumdede10runt te laquei, & ſolicitavit te bellum inſigne:

MS. A. (ρ) καὶ ὠδῖνες αὐτοῖς (σ) πρὸ ἀνέμου, () ὑφείλατο (τ) υἱοῖς (υ) *Ἴδοιεν δὲ οἱ (φ) καὶ ὑπὸ κυρίου μὴ διασωθείη. (χ) μετ' αὐτὸν, (ψ) σοφὸς (ω) ἀφροσύνης αὐτοῦ, (α) ὁ δὲ μυελὸς (β) Ὁ δέ γε τελευτᾷ (γ) ἀγαθὸν οὐδέν. (δ) δὲ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἐπὶ γῆς κοιμηθήσονται, (ε) ἐπὶ γῆς. Ὥστε (ζ) οἶκος ἀρχαῖος; (η) ἐστιν σκέπη (θ) *ἀπολλοτριωθήσεται. (ι) καὶ εἰς ἡμέραν (κ) ἀπαχθήσεται. (λ) ἐπὶ πρόσωπον αὐτοῦ (μ) καὶ ἃ αὐτὸς (ν) καὶ ἐπὶ σωρῷ ἠγρύπνησεν. (ξ) τὸ δὲ ἀφ' ὑμῶν καταπαῦσαί με οὐδέν ἐστιν. Κεφ. κβʹ. MS. A. (α) ἧς ἄμεμπτος τοῖς ἔργοις; (β) αὐτῷ, ὅτι (γ) ἐλέγξει σε, καὶ (δ) οὐχὶ (ε) σου αἱ ἁμαρτίαι; (ζ) γὰρ (η) πρόσωπα, *ἐκόμισας δὲ πτωχοὺς ἐπὶ γῆς. (θ) καὶ ὀρφανοὺς

תרגום TARGUM.

כמה שרגא דרשיעי יטפי וייתי עלהון תבריהון עדבין יפלינ ברוגזיה: יהון היך תבנא קדם זעפא וכמוזא דיטלטלניה עלעולא: 17 18
אלהא יטשי לבנוי צעריה יפרע לותיה וידע: יחמון עינוי תביריה ומן רוגזיה דשדי ישתי: ארום מה רעותיה בביתיה בתרוי ומנין ירחוי 19 20 21
אתפליגו: האפשר דלאלהא ילף מנדעא והוא שמי מרומא דאן: דין ימות בתקוף שלימותיה כוליה שדיך ושליו: ביזוי אתמליאו חלבא ומוקרא 22 23 24
דגרמוי פטים: ודין ימות בנפשא מרירא ולא אכל בטבתא: כחדא על עפרא שכבין ורחשא תחפי עליהון: הא גלין קדמי מחשבתכון וזמיונין 25 26 27
דעלי תחשלון: ארום תימרון האן בית ארכונא והאן פרסא דמשכני דרשיעיא: הלא שילתון עדי אורחא וסמניהון לא תשתמודעון: 28 29
ארום ליום תבירא יתמנע בישא ליום רגזתא יתעלון: מן יחוי קדמוי אורחיה והוא עבד מן ישלם ליה: והוא לקבורן יתעל ועל גדישין יעיר: 30 31 32
בסימן ליה גרגשתא דנחלא ובתרוי כל בר נש ינגוד וקדמוי לית מנין: והיך תנחמונני למא ותיובתכון אשתאר בהון שקר: 33 34

כב

ואתיב אליפז דמן תימן ואמר: אפשר דלאלהא יאלף גבר וכד ילף אפשר דעליהון משנח: העסקא אית לשדי ארום תזכי ואין ממון ארום 1 2 3
תשלם אורחתך: המדחל מנך יכסנך ייתי עמך בדינא: הלא על בישתך דסגיעא ולית סוף לעויתך: ארום תמשכן אחיך מגן ולבושין דערטילאין 4 5 6
תשלח: לא מיא למשלהי תשקי ומן כפן תמנע לחמא: וגבר נצחן ליה ארעא וסביר אפין יתיב בה: ארמלתא שדרתא סריקתא ואדרעת יתומי תשפף: 7 8 9
מטול היכנא חזרנותך פוחין ויבהלנך דלוחא בתכף: 10

Versio SYRIACA.

17 * ܟܡܐ ܕܕܥܟ ܫܪܓܗܘܢ ܕܪ̈ܫܝܥܐ. ܘܐܬܐ ܥܠܝܗܘܢ ܬܒܪܐ ܘܡܚܒܠܐ. ܢܦܠܓ ܪܘܓܙܗ. * ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܬܒܢܐ
18 ܩܕܡ ܪܘܚܐ. ܘܐܝܟ ܥܡܪܐ ܕܢܫܩܠ ܠܗ ܥܠܥܠܐ. * ܐܠܗܐ ܢܛܪ ܠܒܢܘܗܝ ܚܘܒܬܗ. ܘܢܦܪܥܝܘܗܝ ܘܢܕܥ.
19 20 * ܘܢܚܙܝܢ ܥܝ̈ܢܘܗܝ ܬܒܪܗ. ܘܡܢ ܚܡܬܗ ܕܐܠܗܐ ܢܫܬܐ. * ܡܢܘ ܗܘ ܨܒܝܢܗ ܒܒܝܬܗ. ܡܢ ܒܬܪܗ.
21 22 ܘܡܢܝܢܐ ܕܝܪ̈ܚܘܗܝ ܢܬܢܛܪ ܠܒܬܪ̈ܘܗܝ. * ܠܐܠܗܐ ܡܠܦܝܢ ܐܢܬܘܢ ܝܕܥܬܐ: ܘܗܘ ܠܡܪ̈ܡܐ ܕܐܢ. * ܗܢܐ
23 ܢܡܘܬ ܒܥܘܫܢܐ ܕܫܠܡܘܬܗ. ܘܫܠܝܐ ܗܘܐ ܘܫܠܡ: * ܘܓܒ̈ܘܗܝ ܡܠܝܢ ܬܪܒܐ: ܘܓܪ̈ܡܘܗܝ ܡܠܝܢ
24 ܡܘܚܐ. * ܘܗܢܐ ܢܡܘܬ ܒܢܦܫܐ ܡܪܝܪܬܐ. ܘܠܐ ܐܟܠ ܒܛܒܬܐ. * ܐܟܚܕܐ ܥܠ ܥܦܪܐ ܢܕܡܟܘܢ. ܘܬܘܠܥܬܐ ܬܟܣܐ
25 26 ܐܢܘܢ. * ܗܐ ܝܕܥܬ ܐܢܐ ܡܚܫ̈ܒܬܟܘܢ. ܘܡܠܟܐ ܕܡܠܟܬܘܢ ܥܠܝ ܐܢܬܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܡܪܬܘܢ. ܐܝܟܘ ܒܝܬܗ
27 28 ܕܪܘܪܒܐ. ܘܐܝܟܘ ܡܫܟܢܐ ܕܡܫܟܢ̈ܝ ܕܪ̈ܫܝܥܐ. * ܠܐ ܫܐܠܬܘܢ ܥܒܪ̈ܝ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܬܘܬܗܘܢ ܠܐ
29 ܐܫܬܘܕܥܬܘܢ.
30 * ܡܛܠ ܕܠܝܘܡܐ ܕܬܒܪܐ ܡܬܢܛܪ ܥܘܠܐ. ܘܠܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܐ ܡܬܕܟܪ. * ܡܢܘ ܢܚܘܐ ܠܗ ܐܘܪܚܗ. ܘܗܘ
31 32 ܡܕܡ ܕܥܒܕ. ܡܢܘ ܢܦܪܘܥ ܠܗ. * ܘܗܘ ܠܒܝܬ ܩܒܪܐ ܢܬܝܒܠ. ܘܥܠ ܓܕܝܫܐ ܢܬܢܛܪ. * ܘܚܠܝܢ ܠܗ ܩܠܩܠ̈ܐ
33 ܕܢܚܠܐ. ܘܒܬܪܗ ܟܠܗ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܢܬܢܓܕܘܢ. ܘܩܕܡܘܗܝ ܠܐ ܡܢܝܢ. * ܘܐܝܟܢܐ ܡܒܝܐܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ ܣܪܝܩܐܝܬ. ܘܦܬܓܡ̈ܝܟܘܢ
34 1 ܕܫܒܝܩܝܢ ܠܗܘܢ. ܒܥܘܠܐ ܡܫܬܟܚܝܢ. * ܫܠܡ ܩܦܠܐܘܢ * ܟܐ * ܘܥܢܐ ܐܠܝܦܙ ܬܝܡܢܝܐ. ܘܐܡܪ. * ܕܠܡܐ
2 ܥܡ ܐܠܗܐ ܐܡܪ ܐܢܬ ܓܢܒܪܐ. ܕܐܝܬܝܟ ܐܝܟܘܬܗ ܒܚܟܡܬܐ. * ܘܡܢܐ ܡܘܬܪܐ ܠܐܠܗܐ ܐܢ
3 4 ܬܬܪܨ ܐܘܪ̈ܚܬܟ. ܡܢ ܕܚܠܬܟ. ܢܟܣܢܟ ܘܢܥܘܠ ܥܡܟ ܒܕܝܢܐ. * ܗܐ ܐܘܠܨ̈ܢܝܟ ܣܓܝܐܝܢ. ܘܠܝܬ ܣܟܐ ܠܚܛܗ̈ܝܟ.
5 6 * ܡܛܠ ܕܡܫܟܢܐ ܡܫܟܢܬ ܠܐܚ̈ܝܟ ܡܓܢ. ܘܡܐܢܐ ܕܥܪ̈ܛܠܝܐ ܫܠܚܬ. * ܠܐ ܡܝܐ ܐܫܩܝܬ ܠܡܫܠܗܝܐ.
7 8 ܘܡܢ ܟܦܢܐ ܟܠܝܬ ܠܚܡܐ. * ܓܒܪܐ ܕܐܪܥܐ ܠܗ ܐܝܬ. ܘܢܣܝܒ ܐܦܐ ܝܬܒ ܒܗ. * ܘܐܪܡܠܬܐ ܫܪܝܬ
9 10 ܣܦܝܩܐܝܬ. ܘܕܪܥܐ ܕܝܬܡܐ ܬܒܪܬ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܕܪܘܟ ܦܚ̈ܐ. ܘܕܠܚܟ ܕܚܠܐ ܡܢ ܫܠܝ.

Versio ARABICA.

17 * كم ينطفي سراج المنافقين. ويأتي عليهم التبار والفساد. يقسم رجز * ويكونون مثل التبن قدام الريح
18 19 مثل العور التي تحمله الدبور * والله يحفظ نفاقه لذريته ويجازيه. فيعلم * وينظر عيناه بواره. من
20 21 حمية الله يشرب * وماذا يكون سرور في بيته من بعده. وعدد شهور يحفظ لعقبه * أفلله تعطون
22 23 المعرفة الذي هو للأعلين يدين * فان كان هذا يموت بقوة سلامته. وكان متوكلا ساكنا * وجوانبه مملوءة
24 25 ثربا وعظامه ممليه مخا * فهكذا يموت بنفس مرير. ولم ينطلق بخير * جميعا على الارض يضطجعون
26 27 والدودة تغطيهم * فالان علمت فكركم والراي الذي عليّ فيه اعزمتم * لانكم قلتم اين بيت الصديق
28 29 واين محل مسكن المنافق * أفلا سألتم عابري السبيل. وعلاماتهم لم تعرفوها * من أجل ان ليوم التبار
30 31 يحفظ الفاجر. وليوم الرجز يذكر * من الذي يريه الطريق. وذلك الذي صنع فمن الذي يجازيه.
32 33 * فهو يذهب الى القبر. وللنقمة يحفظ * تبتلعه جوالح الوادي. وبعده كل احد يجتذب. وقدامه بلا
34 عدد * وان تسلوني فان العدم وتقليب قوله قد كثر قدامي * الفصل الثاني والعشرون *
1 2 * فأجاب النفار التيمني فقال * ألعلك مع الله تقول أنت ايها الجبار انك استويت معه بالحكمة * وماذا
3 4 نفعا ان تبرر طرايقك من خشيتك * فانا نبكتك وندخل بالقضاء معك * فان بلواك كثير وليس
5 6 منتها لخطاياك * لانك اخذت رهاين اخوتك باطلا. ولبوس العريان سلبت * فلا ماء اسقيت لمكروب.
7 8 ومن الجيعان منعت خبزا * هاهنا رجلا يزرع له ارضا. وصاحب الغصب ياخذها منه * والارملة بعثتها
9 10 فارغة * وذراع اليتيم حطمت * من أجل هذا احدقت بك الفخاخ. وزعزعتك المخافة بسرعة *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

Cùm extinguitur lucerna 17
impiorum, & veniet super
eos fractura & corruptio,
distribuet iram suam : Et erunt velut paleæ 18
ante ventum, & velut
stipula quam asportat (e)
Boreas. Et Deus servabit 19
impietatẽ ejus progeniei
ipsius, & retribuet ei, &
cognoscet : Et videbunt 20
oculi ej⁹ interitum suum:
de furore Dei bibet. Et (f) 21
quodnã erit gaudium ej⁹
in domo ipsius post ipsum?
& numerus mensium
ejus asservabitur posteris
ejus. (g) Nũ Deo asservabitis 22
scientiam, qui (h) detractores
judicat? Quòd 23
si hic moriatur in robore
tranquillitatis suæ, dum
securus est et pacificus, Et 24
latera ejus plena adipe, &
ossa ejus referta medullâ;
Si moritur animo amaro, 25
& non (i) proficiscitur in
bono : (k) Omnes super 26
terrã jacebunt, & (l) pulvis
cooperiet eos. (m) Modò 27
cognovi cogitationem
vestrum, & consilium
quod contra me decrevistis:
Quia dixistis, ubi est 28
domus justi? & ubi habitatio
tabernaculi impii?
Nonne interrogâstis viatores, 29
et signa eorum nonne
cognovistis? Quia ad 30
diem fracturæ reservabitur
scelestus, & ad diem
iræ (n) commemorabitur.
Quis ostendet ei viam? et 31
quod commisit, quis reddet
ei? Ipse in sepulchrum 32
abibit, & (o) ad vindictam
servabitur: Deglutient 33
eum (p) brachia fluminis,
& post eum quilibet
trahetur, & ante ipsum
absq; numero. (q) Etiamsi 34
confortetis me, tamen vanitas
& (r) variatio sermonum
ejus multiplicata
est coram me.

CAP. XXII.

Respondens autẽ Elifaz 1
Temanites ait, Númne 2
cum Deo dicis tu, (a) O
gigas, te esse parem in sapientia?
Et prodest si (b) 3
justificaveris vias tuas
ex timore tuo? Nam nos 4
arguemus te, & intrabim⁹
in judicium tecum (c)
Etenim tribulationes tuæ 5
multæ, neque est terminus
peccatis tuis : Quia accepisti 6
pignora fratrum
tuorum (d) iniquè, & indumentum
nudi (e) furat⁹
es : Et aquam non præbuisti 7
anxio, & à famelico
panem continuisti. Adest 8
vir qui seminat sibi terrã,
et dominus violentiæ sumit
eam ab illo. Viduam 9
quoq; dimisisti vacuam, et
brachium pupilli depressisti.
Propter hoc circundederunt 10
te laquei, et concussit
te metus subitò,

INTERP. SYRIACA.

(e) turbo. (f) quænam voluntas sua (g) Deúmne docetis sapientiã, (h) superbos (i) comedit cum lætitia: (k) Simul (l) vermis (m) Ecce (n) adducetur. (o) ad acervum (p) glebæ vallis, (q) Quomodo consolamini me, (r) responsiones sermonũ ejus relictæ sunt coram me. *Cap. xxii.* (a) O vir, (b) integras feceris (c) Ecce (d) frustra, (e) detraxisti:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quoties lucerna impiorum extinguetur, & veniet super eos interitus eorum: sortes dividet in furore suo. Erunt sicut palea ante ventum; & sicut stipula quam tulit turbo. 17 18
Deus abscondet filiis suis tribulationẽ ejus, ultionem reddet ei, ut sciat. Videbunt oculi ejus interitum suũ, & de ira omnipotentis bibet. Quæ est enim voluntas 19 20
ej⁹ in domo sua post se? & numerus mensiũ ejus divisus est. Nunquid Deũ potest aliquis docere scientiam? & ipse cœlos excelsos judicat. Iste morietur in fortitudine 21 22
integritatis suæ, totus quietus & pacificus. Mulctra ejus plena sunt lacte, & medulla ossiũ ej⁹ pinguis est. Et iste morietur amaro animo, & non comedit in bonis. 23 24
Simul in pulvere dormiunt, & vermis operit eos. Ecce manifestæ sunt corã me cogitationes vestræ, & machinationes quas super me cogitatis. Dicitis enim: Ubi est domus 25 26
principis, & ubi est tentoriũ tabernaculorũ impiorũ? Nónne interogâstis transeuntes viã, & signa eorũ non cognoscetis? Quoniam in diem interit⁹ reservatur 27 28
mal⁹, in diẽ quo furores inducentur. Quis annunciabit corã eo viã suam, & quod ipse fecit quis reddet illi? Ipse enim ad sepulchra ducetur, & super congeriẽ vigilabit. 29 30
Dulces fuerunt ei glebæ torrentis, & post se omnes filios hominũ trahet, & ante se innumerabiles. Et quomodo consolamini me frustra, cùm responsio vestra remaneat 31 32
in eis falsa? 33 34

CAP. XXII.

Et respondit Eliphaz qui erat de Theman, & ait: Nunquid Deũ potest docere *vir*? & si docuerit, nunquid ad ea providebit? Quid emolumenti est omnipotenti, si 1 2 3
just⁹ fueris? & quid lucri, si perfectis reddideris vias tuas? Nunquid propter timorem tuũ arguet te, & veniet tecum in judiciũ? Nonne propter malitiã tuam quæ 4 5
multa est, & non est finis iniquitatib⁹ tuis? Quoniam pignorabas fratres tuos sine causa, & vestibus nudos spoliâsti. Non propinâsti aquam lasso, & à famelico prohibebas 6 7
panem. Et viro vincenti sua est terra, et aspectabilis vultu habitabit in ea. Viduas dimisisti vacuas, et brachia pupillorũ contrivisti. Propterea in circuitu tuo 8 9 10
sunt laquei, et conturbat te timor repentinus?

איוב : כב

te operiet aquarum redundantia & , videbis non , obscuritas Vel

11 או־חשך לא תראה ושפעת־מים תכסך׃

, stellarum caput vide & ? cælorum sublimitate in Deus Nonne

12 הלא־אלוה גבה שמים וראה ראש כוכבים

per Nunquid ? Deus novit quid , dixisti Et .sunt excelsæ quia

13 כי־רמו׃ ואמרת מה־ידע אל הבעד

: videat non & , ei absconsio Nubes ? judicabit caliginem

14 ערפל ישפוט׃ עבים סתר־לו ולא יראה

, observabis seculi semitam Nunquid ? perambulabit cælorum ambitum &

15 וחוג שמים יתהלך׃ הארח עולם תשמר

non & , sunt succisi Qui ? iniquitatis viri calcaverunt quam

16 אשר דרכו מתי־און׃ אשר־קמטו ולא

, Deo dicentes .eorum fundamento est diffusus Fluvius .tempus

17 עת נהר יוצק יסודם׃ האמרים לאל

implevit ipse Et ? eis Saddai operabitur quid & , nobis à recede

18 סור ממנו ומה־יפעל שדי למו׃ והוא מלא

.me à est factum longè impiorum consilium & , bono eorum domos

בתיהם טוב ועצת רשעים רחקה מני׃

.eos subsannabit innocens & : lætabuntur & , justi Videbunt

19 יראו צדיקים וישמחו ונקי ילעג־למו׃

devoravit eorum residuum & , nostra substantia fuit succisa non Si

20 אם־לא נכחד קימנו ויתרם אכלה

eis in : habeto pacem & , eo cum quæso Assuesce ? ignis

21 אש׃ הסכן־נא עמו ושלם בהם

, legem ejus ore ex quæso Accipe .bonus tuus proventus

22 תבואתך טובה׃ קח־נא מפיו תורה

ad fueris conversus Si .tuo corde in ejus eloquia pone &

23 ושים אמריו בלבבך׃ אם־תשוב עד־

pone Et .tuo tentorio à iniquitatem elongabis : ædificaberis , Saddai

24 שדי תבנה תרחיק עולה מאהלך׃ ושית־

Eritque .Ophir torrentes petræ & , munitionem pulverem super

25 על־עפר בצר ובצור נחלים אופיר׃ והיה

Quia .tibi fortitudinum argentum & , tua munitio omnipotens

26 שדי בצריך וכסף תועפות לך׃ כי־

.tuas facies Deum ad elevabis & delectaberis Saddai super tunc

אז על־שדי תתענג ותשא אל־אלוה פניך׃

decernes Et .reddes tua vota & , te exaudiet & , eum ad Orabis

27 28 תעתיר אליו וישמעך ונדריך תשלם׃ ותגזר

.lumen splendebit tuas vias super & , tibi erit firmus & , sermonem

אמר ויקם לך ועל־דרכיך נגה אור׃

oculis demissum & , exaltatio , dices & , se humiliaverint Cum

29 כי־השפילו ותאמר גוה ושח עינים

puritate in liberabitur & , innocens insulam Liberabit .salvabit

30 יושע׃ ימלט אי־נקי ונמלט בבר

.tuarum manuum

כפיך׃

CAP. XXIII. כג

: meum eloquium exacerbatio hodie Etiam : dixit & , Iiob respondit Et

1 2 ויען איוב ויאמר׃ גם־היום מרי שחי

, scirem dabit Quis .meum gemitum super est aggravata mea manus

3 ידי כבדה על־אנחתי׃ מי־יתן ידעתי

Disponerem .ejus locum ad usque venirem ; eum invenirem &

4 ואמצאהו אבוא עד־תכונתו׃ אערכה

Scirem increpationibus replerem meum os & , judicium ejus faciei ad

5 לפניו משפט ופי אמלא תוכחות׃ אדעה

.mihi diceret quid intelligerem & : mihi responderet eloquia

מלים יענני ואבינה מה־יאמר לי׃

ipse Veruntamen .Non ? mecum disceptabit potentia multa in Nunquid

6 הברב־כח יריב עמדי לא אך־הוא

perpetuum in liberarer & : eo cum arguens rectus Ibi .me in ponet

7 ישם בי׃ שם ישר נוכח עמו ואפלטה לנצח

.me judicante à

משפטי׃

Versio VULG. LAT.

11 Et putabas te tenebras non visurum, & impetu aquarum inundantium non oppressum 12 iri? An non cogitas quòd Deus excelsior cœlo sit, & super stellarum verticem sublimetur? 13 Et dicis, Quid enim novit Deus? & quasi per caliginem judicat. 14 Nubes latibulum ejus, nec nostra considerat, & circa cardines cœli perambulat. 15 Numquid semitam seculorum custodire cupis, quam calcaverunt viri iniqui? 16 Qui sublati sunt ante tempus suum, & fluvius subvertit fundamentum eorum: 17 Qui dicebant Deo, Recede à nobis: & quasi nihil posset facere Omnipotens, æstimabant eum: 18 Cùm ille implesset domos eorum bonis: quorum sententia procul sit à me. 19 Videbunt justi, & lætabuntur, & innocens subsannabit eos. 20 Nonne succisa est erectio eorum, & reliquias eorum devoravit 21 ignis? Acquiesce igitur ei, & habeto pacem, & per hæc 22 habebis fructus optimos. Suscipe ex ore illius legem, et pone sermones ejus in corde tuo. 23 Si reversus fueris ad Omnipotentem, ædificaberis, & longè facies iniquitatem à ta-24 bernaculo tuo. Dabit pro terra silicem, & pro silice tor-25 rentes aureos. Eritque Omnipotens contra hostes tuos, & argentum coacervabitur tibi. 26 Tunc super Omnipotentem deliciis afflues, & elevabis ad 27 Deum faciem tuam. Rogabis eum, & exaudiet te, & vota 28 tua reddes. Decernes rem, & veniet tibi, & in viis tuis 29 splendebit lumen. Qui enim humiliatus fuerit, erit in gloria: & qui inclinaverit ocu-30 los, ipse salvabitur. Salvabitur innocens, salvabitur autem in munditia manuum suarum.

CAP. XXIII.

1 Respondens autem Job, ait; 2 Nunc quoque in amaritudine est sermo meus, & manus plagæ meæ aggravata est super 3 gemitum meum. Quis mihi tribuat ut cognoscam & inveniam illum, & veniam us-4 que ad solium ejus? Ponam coram eo judicium, & os meum replebo increpationibus. 5 Ut sciam verba quæ mihi respondeat, & intelligam quid 6 loquatur mihi. Nolo multa fortitudine contendat mecum, nec magnitudinis suæ mole me 7 premat. Proponat æquitatem contra me, & perveniat ad victoriam judicium meum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 † Τὸ φῶς σοι (i) σκότος ἀπέβη, † κοι-12 μηθέντα δὲ ὕδωρ σε ἐκάλυψε. † (κ) Μὴ οὐχὶ ὁ τὰ ὑψηλὰ ναίων ἐφορᾷ; † τοὺς δὲ 13 ὕβρει φερομένους ἐταπείνωσε; † Καὶ εἶπας, Τί ἔγνω ὁ ἰσχυρός; ἢ κατὰ τοῦ 14 γνόφου κρίνει; † Νεφέλη ἀποκρυφὴ αὐτοῦ καὶ οὐχ ὁραθήσεται, † καὶ γῦρον οὐρανοῦ 15 (λ) διαπορεύεται. † Μὴ τρίβον αἰώνιον φυλάξεις, ἣν (μ) ἐπάτησαν ἄνδρες δί-16 καιοι, † Οἳ συνελήφθησαν ἄωροι; † πο-17 ταμὸς ἐπιῤῥέων οἱ θεμέλιοι αὐτῶν, † Οἱ λέγοντες, (ν) Κύριος τί ποιήσει ἡμῖν; † ἢ τί (ξ) ἐπάξεται ἡμῖν ὁ παντοκρά-18 τωρ; † (ο) Ὃς δὲ ἐνέπλησε τοὺς οἴκους αὐτῶν ἀγαθῶν, † βουλὴ δὲ ἀσεβῶν πόῤῥω 19 ἀπ' αὐτοῦ. † Ἰδόντες δίκαιοι ἐγέλασαν, 20 † ἄμεμπτος δὲ (π) ἐμυκτήρισεν. † Εἰ μὴ ἠφανίσθη (ρ) ἡ ὑπόστασις αὐτῶν, † καὶ τὸ κατάλειμμα αὐτῶν καταφάγεται πῦρ. † 21 Γενοῦ (σ) δὴ σκληρὸς, ἐὰν ὑπομείνῃς, † (τ) εἶτα ὁ καρπός σου ἔσται ἐν ἀγαθοῖς. † 22 Ἔκλαβε δὲ ἐκ στόματος αὐτοῦ (υ) ἐξηγορίαν, † καὶ ἀνάλαβε τὰ ῥήματα αὐτοῦ 23 ἐν καρδίᾳ σου. † Ἐὰν δὲ ἐπιστραφῇς καὶ ταπεινώσῃς σεαυτὸν ἔναντι κυρίου, † (φ) πόῤῥω ἐποίησας ἀπὸ διαίτης σου (χ) 24 ἄδικον. † Θήσῃ ἐπὶ χώματι ἐν πέτρᾳ, καὶ 25 (ψ) ὡς πέτρα χειμάῤῥου Σωφίρ. † Ἔσται οὖν σου ὁ παντοκράτωρ βοηθὸς ἀπὸ ἐχθρῶν, † καθαρὸν δὲ ἀποδώσει σε ὥσπερ ἀργύριον 26 πεπυρωμένον. † Εἶτα (ω) παῤῥησιασθήσῃ ἐναντίον κυρίου ἀναβλέψας εἰς τὸν οὐ-27 ρανὸν ἱλαρῶς. † Εὐξαμένου δέ σου πρὸς αὐτὸν εἰσακούσεταί σου· † δώσει δέ (α) 28 σοι ἀποδοῦναι τὰς εὐχάς. † Ἀποκαταστήσει δέ σοι δίαιταν δικαιοσύνης, † ἐπὶ δὲ ὁδοῖς 29 (β) σου ἔσται φέγγος. † Ὅτι ἐταπείνωσας σεαυτὸν, καὶ ἐρεῖς, (γ) Ὑπερηφανεύσατο, † 30 καὶ κύφοντα ὀφθαλμοῖς σώσει. (δ) Ῥύσεται ἀθῶον, † καὶ (ε) διασώθητι ἐν καθαραῖς χερσί σου.

ΚΕΦ. κγ'.

1 2 † Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, † Καὶ δὴ οἶδα ὅτι (α) ἐκ χειρός μου ἡ ἔλεγξίς ἐστι, † (β) καὶ ἡ χεὶρ αὐτοῦ βαρεῖα γέγονεν 3 (γ) † ἐπ' ἐμῷ στεναγμῷ. † Τίς δ' ἄρα γνοίη, ὅτι εὕροιμι αὐτὸν, (δ) καὶ ἔλθοιμι 4 εἰς τέλος, † Εἴποιμι δὲ (ε) ἐμαυτοῦ κρίμα, † τὸ δὲ στόμα μου (ζ) ἐμπλήσαι ἐλέγ-5 χων. † Γνοίην δὲ ἰάματα ἅ μοι ἐρεῖ, † 6 αἰσθοίμην δὲ τίνα μοι (η) ἀπαγγελεῖ. † Καὶ ἐν πολλῇ ἰσχύϊ ἐπελεύσεταί μοι, † 7 (θ) εἶτα ἐν ἀπειλῇ μοι οὐ χρήσεται. † Ἀλήθεια γὰρ καὶ ἔλεγχος (ι) παρ' αὐτοῦ, † ἐξαγάγοι δὲ εἰς τέλος τὸ κρίμα μου.

Lumen tibi in tenebras conversum est, & (i) dormientem te aqua operuit. Nonne is qui excelsa habitat, aspicit? eos autem qui (?) contumelia efferuntur, humiliavit? Et dixisti: Quid novit Fortis? An per (b) caliginem judicat? Nubes latibulum ejus, & non videbitur, & ambitum cœli perambulat. Numquid (i) semitam seculi observabis, quam calcaverunt viri justi? Qui (k) capti sunt immaturi? flumen decurrens, fundamenta eorum. Qui dicunt; Dominus quid faciet nobis? aut quid (l) inducet nobis Omnipotens? (m) Ille vero implevit domos eorum bonis: & consilium impiorum longè est ab eo. Videntes (n) justi riserunt, & inculpabilis (o) subsannavit: (p) Si non deleta est substantia eorum, & reliquias eorum comedet ignis. Esto utique durus: Si sustinueris, deinde fructus tuus erit in bonis: Excipe autem ex ore illius (q) enuntiationem, & assume verba ejus in corde tuo: Sin autem conversus fueris, & humiliaveris teipsum coram Domino; procul fecisti iniquitatem à tabernaculo tuo. (r) Poneris super aggerem in petra, & tanquàm (s) petra torrentis Sophir. Erit igitur tuus Omnipotens adjutor ab inimicis, & purum reddet te, tanquàm argentum examinatum igni. Deinde fiducialiter ages coram Domino inspiciens cœlum hilariter. Et cum deprecatus fueris ad eum; exaudiet te, & dabit tibi (t) reddere vota. Et restituet tibi tabernaculum justitiæ, & super vias tuas erit lumen. Quoniam humiliasti (u) teipsum, & dices, Elatus est in superbiam, & demissum oculis salvabit. Eruet innocentem, & salvaberis (x) munditiâ manuum tuarum.

CAP. XXIII.

Respondens autem Job, ait; Et quidem scio, quia de manu mea est increpatio: & manus (a) ejus gravis facta est super gemitum meum. Quis igitur (b) noverit, quòd inveniam eum, & dicam (c) in finem? Et (d) dicam meum ipsius judicium, os autem meum (e) replere increpationibus: Et (f) cognoscam sanationes, quas loquetur mihi, & sentiam, quæ annuntiabit mihi: Et in (g) multa virtute (h) superveniet mihi: (i) deinde in minis me non utetur: Veritas enim, & increpatio est ab eo: educat autem in (k) finem judicium meum.

MS. A. (ι) εἰς σκότος (κ) δέ σε ὕδωρ (κ) Μὴ ὁ τὰ ὑψηλὰ νέων οὐκ ἐφορᾷ; (λ) διαπορεύσεται. (μ) * ἐπατήσησαν (ν) Τί ποιήσει ἡμῖν ὁ κύριος; (ξ) ἐπάξει (ο) Ὅτε ς (π) ἐμυκτήρισεν αὐτούς. Εἰ μὴ (ρ) ὑπόστασις (σ) δὲ (τ) ἢ ὁ (υ) συνεξηγορείαν, (φ) καὶ πόῤῥω ποίησον (χ) τὸ ἄδικον. Θήσεις ἐπὶ χώματος (ψ) ὥσπερ χειμάῤῥους Ὠφείρ. Ἔσται δέ σοι (ω) ἐν παῤῥησίᾳ σὺ ἔναντι (α) τὰς εὐχάς σου ἀποδοῦναι. (β) σοι (γ) [illegible] (δ) Ῥύσεται (ε) διασωθήσῃ Κεφ. κγ'. MS. A. (α) ἐκ χειρῶν μου (β) ἡ χεὶρ (γ) ἐπ' ἐμοί, στενάζω δὲ ἐπ' ἐμαυτόν. Τίς δ' ἂν γνοίη, (δ) [illegible] (ε) ἐπ' αὐτῷ (ζ) ἐμπλήσαι με ἐλέγχου. Γνοίην δὲ ῥήματα ἅ (η) ἀπαγγελεῖ. Καὶ εἰ πολλῇ (θ) καὶ εἰ ἐν ἀπειλῇ οὐ χρήσεταί μοι. (ι) παρ' αὐτῷ.

תרגום TARGUM.

11 או בחשוכא תשרי לא תחמי ומסוגעית מיא תחפנך׃ 12 הלא אלהא בגיבהי שמיא וחמי ריש כוכביא ארום זקיפו׃ 13 ותימר מא ידע אלהא האפשר

דבלא לאמטתא ידין׃ 14 עננא טמירא ליה ולא יחמי ותקף רומא דשמיא יטייל׃ 15 האורחא דהוה מן עלמא תנטור די טילו אנשי שקרא׃

16 דאתבטילו מן ארעא בלא עדניהון בארעית נהרא אתיך גיפהון׃ 17 דאמרין לאלהא זור מננא ומה יעבד שדי להון׃ 18 והוא מלי בתיהון

טבא ומלכתהון דרשיעי רחקת מני׃ 19 יחמון צדיקיא ויחדון זכאה יחחך להון׃ 20 אין לא אתמניעו מלמקום ומותרהון נסרת אשתא׃

21 אלף כדון עמיה ותשתלם בהון עללתך טובא׃ 22 גמר כדון מפומיה אוריתא ושוי מימרוי בלבבך׃ 23 אין תתוב עד שדי תתבני תרחק עולתא

ממשכנך׃ 24 ושוי על עפרא כרך תקיף יהוך טינרא דנחליא דהבא דאופיר׃ 25 ויהי שדי כרך תוקפך ומן כסף תקיף רומא דילך׃ 26 ארום הכדין על

שדי תתפרנק ותזקוף קדם אלהא אפיך׃ 27 תצלי קדמוי ויקבל מנך ונדריך תשלם׃ 28 ותגזר מימרא ויקום לך ועל אורחתך יזהר נהורא׃ 29 ארום ירא

אמאך יתעבד גיותן ושוח בסורחנא הפריק׃ 30 ישיזב גבר דלית זכאי בזכיתך ואשתזיב בברירות ידיך׃

כג

1 ואתיב איוב ואמר׃ 2 להוד יומנא מריר מימרי מחתי תקפת על תונחתי׃ 3 מן יגזור אנדע ואשכחניה איתי עד מדור בית מוקדשיה׃ 4 אסדר

קדמוי דין ופומי אמלי מכסניתא׃ 5 אנדע מליא דיתיבנני ואתבין מה דיימר לי׃ 6 הבסוגעי חילא ינצי עמי לא ברם הוא ישוי תנראבי׃ 7 תמן תריצא ויתוכח

עמי ואשתזיב לעלמא מדאנא יתי׃

Verſio SYRIACA.

11 * ܐܝܟܐ ܗܘ ܚܫܘܟܐ ܠܐ ܚܙܝܬ. ܘܡܫܘܚܬܐ ܕܡܝܐ ܢܟܣܝܟ. * ܗܐ ܐܠܗܐ ܐܪܝܡ ܫܡܝܐ. ܘܚܙܝ ܪܫܐ ܕܟܘܟܒܐ
12 ܕܐܬܪܝܡ. * ܘܐܡܪܬ ܡܢܐ ܝܕܥ ܐܠܗܐ. ܐܢܗܘ ܕܒܓܘ ܥܪܦܠܐ ܕܐܢ. * ܥܢܢܐ ܛܘܫܝܗ ܘܠܐ
13 ܚܙܐ. ܘܥܠ ܚܘܓܐ ܕܫܡܝܐ ܡܗܠܟ. * ܐܘܪܚܐ ܕܥܠܡܐ ܢܛܪܬ. ܕܕܫܘ ܥܡܐ ܕܥܘܠܐ ܠܐ ܒܙܒܢܗܘܢ.
14 * ܘܒܡܥܒܪܬܐ ܕܢܗܪܐ ܐܬܟܠܝܘ. ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܘ ܠܡܢ ܕܥܒܕ ܫܘܬܐܣܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪܝܢ ܠܐܠܗܐ ܦܪܘܩ ܡܢܢ. ܘܡܢܐ ܢܥܒܕ
15 ܠܢ ܐܠܗܐ. * ܘܗܘ ܡܠܐ ܒܬܝܗܘܢ ܛܒܬܐ. ܘܡܚܫܒܬܐ ܕܪܫܝܥܐ ܪܚܝܩܐ ܡܢܗܘܢ. * ܢܚܙܘܢ ܙܕܝܩܐ ܘܢܚܕܘܢ.
16 ܘܙܟܝܐ ܢܡܝܩ ܒܗܘܢ. * ܐܢ ܠܐ ܐܬܡܟܟܘ ܡܢ ܩܫܝܘܬܗܘܢ. ܘܫܪܟܢܗܘܢ ܬܐܟܘܠ ܢܘܪܐ. * ܐܫܬܘܐ ܗܫܐ ܥܡܗ.
17 ܘܫܠܡ ܡܢܗ ܘܒܗ ܬܗܘܐ ܠܟ ܛܒܬܐ. * ܩܒܠ ܡܢ ܦܘܡܗ ܢܡܘܣܐ. ܘܣܝܡ ܡܠܘܗܝ ܒܠܒܟ. * ܐܢ ܬܬܘܒ
18 ܠܘܬ ܐܠܗܐ. ܬܬܒܢܐ. ܘܐܢ ܬܪܚܩ ܥܘܠܐ ܡܢ ܡܫܟܢܟ: * ܘܬܟܢܫ ܣܐܡܐ ܐܝܟ ܥܦܪܐ: ܘܐܝܟ ܚܠܐ ܕܢܚܠܐ ܕܗܒܐ
19 ܕܐܘܦܝܪ. * ܢܗܘܐ ܐܠܗܐ ܒܥܘܕܪܢܟ. ܘܟܣܦܐ ܕܠܐ ܡܢܝܢ ܢܗܘܐ ܠܟ. * ܘܬܪܝܡ ܠܘܬ ܐܠܗܐ ܐܦܝܟ. * ܘܬܨܠܐ
20 ܩܕܡܘܗܝ ܘܢܫܡܥܝܟ. ܘܢܕܪܝܟ ܬܫܠܡ. * ܘܬܓܙܘܪ ܡܠܬܐ ܘܬܩܘܡ ܠܟ. ܘܥܠ ܐܘܪܚܬܟ ܢܢܗܪ ܢܘܗܪܐ.
21 * ܡܛܠ ܕܡܢ ܕܡܬܡܟܟ ܐܡܪ ܕܢܬܪܝܡ. ܘܡܢ ܕܡܟܝܟ ܒܥܝܢܘܗܝ ܢܬܦܨܐ. * ܢܬܦܨܐ ܙܟܝܐ ܐܝܟܐ ܕܐܝܬܘܗܝ.
22 ܘܢܬܦܨܐ ܒܕܟܝܘܬܐ ܕܐܝܕܘܗܝ.
23
24
25
26
27
28
29
30

* ܦܬܓܡܐ * ܟܓ *

1 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܐܦ ܝܘܡܢܐ ܡܪܝܪܐ ܬܘܢܝܬܝ. ܘܐܝܕܗ ܝܩܝܪܐ ܥܠ ܬܢܚܬܝ. * ܡܢ ܢܬܠ ܠܝ.
2 ܘܐܕܥܝܘܗܝ ܘܐܫܟܚܝܘܗܝ ܘܐܬܐ ܥܕܡܐ ܠܡܘܬܒܗ. * ܘܐܣܕܪ ܩܕܡܘܗܝ ܕܝܢܐ. ܘܦܘܡܝ ܐܡܠܐ ܡܟܣܢܘܬܐ.
3 * ܘܐܕܥ ܡܠܐ ܕܥܢܐ ܗܘܐ ܠܝ. ܘܐܣܬܟܠ ܡܢܐ ܐܡܪ ܗܘܐ ܠܝ. * ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܐ ܕܐܢ
4 ܠܝ. ܐܠܘ ܠܐ ܗܘܐ ܕܚܠܬܐ ܣܐܡ ܥܠܝ. * ܬܡܢ ܒܙܕܝܩܘܬܐ ܕܐܢ ܗܘܝܬ ܥܡܗ. ܘܙܟܐ ܗܘܝܬ. ܘܡܬܦܨܐ
5
6
7 ܗܘܝܬ ܡܢ ܕܝܢܐ.

Verſio ARABICA.

11 12 * ومكان الظلام لم تبصر * وفيوض الماء يغطيك * هوذا الله رفع السماء فابصر راس الكواكب
13 14 لما ارتفع * وانت تقول ماذا يعرف الله * العله في جوف الظلام يدين * فان السحاب ستره ولم يروا وعلى
15 16 مستوى السماء يسلك * عسى طريق العالم حفظت الذي داسها شعب اثيم بغير حينهم * وفي معبر النهر
17 18 احتبسوا * ولم يذكروا من كون اساسهم * ويقولون لله ابتعد منا * وماذا يصنع بنا الله * وهو قد
19 ملا بيوتهم خيرا * وفكر المنافقين ابتعدت منهم * يبصرون الصديقون * ويفرحون * والزاكي
20 21 يستهزي بهم * ان لم يتواضعوا من قسوتهم * وبقيتهم تاكلهم النار * فاستوي الان معه * وسلم من
22 23 علايتك الطيبه * اقبل من فمه الناموس وضع كلامه في قلبك * فان تتوب الى الله فانك تبتني * وان
24 25 تبعد الاثم من مسكنك * وتجمع فضة مثل التراب ومثل رمال الاودية ذهب اوفير * يكون الله بعونك
26 27 وفضه بلا حساب تكون لك * وترفع الى الله وجهك * فتصلي قدامه ويسمعك * وتسلم نذورك * وتقول
28 29 قولا فيستقيم لك * وعلى طرقك يشرق الضوء * من اجل ان من قال انه يتواضع فانه يرتفع * والذي
30 يحفظ بصره يخلص * يفلت الزاكي حيث يكون * وينجوا بطهارة يديه *

* الفصل الثالث والعشرون *

1 2 فاجاب ايوب وقال * اليوم ايضا مرت همي ويد ثقلت
3 4 على اوجاعي * من الذي يقدر ان يجعلني استطيع البلوغ الى مجلسه * وانصب قدامه قضاي
5 6 واملا فمي تجاوز * فاعلم ما الذي يجيبني * وافهم ماذا الذي يقول لي * بكثر القوة يقضي علي
7 لولا مخافة يضع علي * فهناك بالعدل كنت اقضي معه * وكنت ازكوا وافلت من القضاء *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

11 (f) Et locum tenebrarum non vidiſti, & diluvium aquæ obruet te. 12 En Deus levavit cœlum, vidit que principem ſtellarum cùm ſeſe erexit: 13 Et tu dicis, Quid novit Deus? An ve ipſe in medio tenebrarum judicat? 14 Nubes enim velamen ejus, nec viderunt: & ſuper (g) planitiem cœli graditur. 15 Num ſortè viam mundi obſervâſti, quam conculcârunt populus iniquus extra tempus ſuũ? 16 Et ad tranſitũ fluminis detenti ſunt, nec recordati ſunt ejus qui fecit fundamenta eorum: 17 Dicunt q; Deo, Recede à nobis: & quid faciet nobis Deus? 18 Cùm ipſe tamen impleverit domos eorũ bonis, & cogitatio impiorũ receſſit ab ipſis. 19 Videbunt juſti, & gaudebunt, & innocens illudet eis, 20 Si non humiliati fuerint à duritie ſua, & reliquias eorũ comedet ignis. 21 Coæquate igitur illi & largire de frugibus tuis optimis. 22 Suſcipe ab ore ejus legem, & ponet verba ſua in corde tuo. 23 Si converſus fueris ad Deum, certè ædificaberis; & ſi amoveris iniquitatem à domicilio tuo, 24 Etiam congregabis argentum ſicut pulverem, & quaſi arenas (h) torrentium aurum ob zon. 25 Erit Deus in adjutorium tuum, & argentũ (i) abſq; numero erit tibi. 26 Et levabis ad Deum vultũ tuũ: 27 Orabiſq; coram eo, & exaudiet te: implebiſq; vota tua, 28 Dicefq; ſermonem, & rectus erit tibi, & ſuper vias tuas orietur lumen. 29 Quoniam qui (k) dixerit ſe humiliaturum ſeſe, exaltabitur: & (l) qui cuſtodierit viſum ſuum, ſalvabitur. 30 Evadet innocens ubicunque fuerit, & liberabitur in puritate manuum ſuarum.

CAP. XXIII.

1 Et reſpondens Job 2 ait, Hodie quoq; amaruit (a) ſolicitudo mea, & manus ejus aggravata eſt ſuper dolores meos. 3 Quis eſt qui poſſit facere ut valeam accedere ad habitaculum ejus, 4 Et (b) ſtatuere coram illo judiciũ meum, & implere os meum (c) lite? 5 Et ſciam quid mihi reſponderet, & intelligam quid diceret mihi; 6 In multitudine roboris judicat me: niſi timorem mihi imponeret. 7 Ibi in juſtitia judicarem cum illo, & juſtificarer atq; (d) evaderem ſententiam.

INTERP. SYRIACA.

(f) Undenam tenebræ non (g) ambitum (h) maris (i) computationum (k) humiliaverit ſe, dixit quod exaltabitur (l) depreſſi oculis ſervabuntur. Cap. xxiii. (a) narratio mea, (b) inſtruere (c) redargutione? (d) liberarer in judicio.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Aut in tenebris habitabis & non videbis, et multitudo aquarum operiet te. Nonne Deus eſt in altitudine cœli? & vide verticem ſtellarum quoniam elevatæ ſunt. 11 12
Et dices: Quid ſcit Deus? nunquid poſſibile eſt quòd per caliginem judicet. Nubes latibulum ejus, et non videt, et in fortitudine altitudinis cœlorum deambulat. 13 14
Nunquid viam quæ *fuit* à ſeculo, cuſtodies, per quam ambulaverunt viri iniquitatis? Qui ſublati ſunt à *terra* ante tempus ſuum, in profundo fluminis effuſum eſt corpus 15 16
eorum. Qui dicebant Deo: Recede à nobis: et quid faciet eis omnipotens? Et ipſe implevit domos eorum bono: et conſilium impiorum procul eſt à me. 17 18
Videbunt juſti et lætabuntur, et innocens ſubſannabit eos. Nonne prohibiti ſunt ne conſurgerent, et reliquias eorum conſumpſit ignis? Diſce nunc ab eo et habebis pa- 19 20
cem: per hæc fructus bonos habebis. Perfice nunc ex ore ejus legem, et pone verba ejus in corde tuo. Si converſus fueris uſque ad omnipotentem, ædificaberis: et 21 22
longè facies iniquitatem à tabernaculo tuo. Et pones ſuper pulverem arcem munitam, et ſicut petram torrentium, aurum Ophir. Et erit omnipotens arx munitionis 23 24
tuæ, et magis quàm argentum erit fortitudo excelſa tibi. Quia tum ſuper omnipotentem delectaberis, et levabis coram Deo faciem tuam. Orabis coram eo, et exaudiet te, 25 26
et vota tua reddes. Et decernes verbum et ſtabile erit tibi: et ſuper vias tuas ſplendebit lumen. *Generatio* enim *quæ humiliaverit ſe*, fiet ſublimis; et illum qui incli- 27 28
natus fuerit in delicto ſalvabis. Liberabitur vir qui non eſt innocens propter juſtitiam tuam, et liberabitur in munditia manus tuæ. 29 30

CAP. XXIII.

Et reſpondit Iob et dixit: Hodie quoq; amarus eſt ſermo meus, plaga mea aggravata eſt ſuper gemitum meum. Quis mihi decernet ut cognoſcam et inveniam illũ; 1 2 3
veniam uſque ad habitaculũ domus ſanctuarii ejus! Ordinabo coram eo judicium, et os meũ implebo increpationibus. Sciam verba quæ mihi reſpondeat, et intelligam 4 5
quid dicat mihi. An in multitudine fortitudinis contendet mecum? non utiq; ipſe ponet litem contra me. Ibi rectus & *paratus mecum*, et liberabor in ſeculum ab eo 6 7
qui judicat me.

אִיּוֹב : כג

.eum intelligam non & , retro & : ipſe non & , ibo ante En
8 הֵן קֶדֶם אֶהֱלֹךְ וְאֵינֶנּוּ וְאָחוֹר וְלֹא־אָבִין לוֹ׃
non & , dextram operiet : videbo non & , ipſum faciendo in Siniſtram
9 שְׂמֹאל בַּעֲשֹׂתוֹ וְלֹא־אָחַז יַעְטֹף יָמִין וְלֹא
aurum ſicut , me probavit : me apud viam novit Quia .videbo
10 אֶרְאֶה׃ כִּי־יָדַע דֶּרֶךְ עִמָּדִי בְּחָנַנִי כַּזָּהָב
, ſervavi ejus Viam .meus pes apprehendit ejus greſſum In .egrediar
11 אֵצֵא׃ בַּאֲשֻׁרוֹ אָחֲזָה רַגְלִי דַּרְכּוֹ שָׁמַרְתִּי
meo ſtatuto à : deſeram non & ,ejus labiorum Præceptum .declinabo non &
12 וְלֹא־אָט׃ מִצְוַת שְׂפָתָיו וְלֹא אָמִישׁ מֵחֻקִּי
? eum avertet quis & , uno in ipſe Et .ejus oris eloquia abſcondi
13 צָפַנְתִּי אִמְרֵי־פִיו׃ וְהוּא בְאֶחָד וּמִי יְשִׁיבֶנּוּ
: meum ſtatutum reddet Quia .fecit & , deſideravit ejus anima &
14 וְנַפְשׁוֹ אִוְּתָה וַיָּעַשׂ׃ כִּי יַשְׁלִים חֻקִּי
,intelligam : terrebor ejus faciebus à Idcirco .eo cum multa hæc ſicut &
15 וְכָהֵנָּה רַבּוֹת עִמּוֹ׃ עַל־כֵּן מִפָּנָיו אֶבָּהֵל אֶתְבּוֹנֵן
.me terruit Sadai & : meum cor emollivit Deus Et .eo ab timebo &
16 וְאֶפְחַד מִמֶּנּוּ׃ וְאֵל הֵרַךְ לִבִּי וְשַׁדַּי הִבְהִילָנִי׃
meis faciebus à & : obſcuritatis faciebus à ſum exciſus non Quoniam
17 כִּי־לֹא נִצְמַתִּי מִפְּנֵי־חֹשֶׁךְ וּמִפָּנַי
.caliginem operuit
כִּסָּה־אֹפֶל׃

CAP. XXIV. כד

videruntnon eum ſcientes & : tempora ſunt occultata non Sadai à Cur
1 מַדּוּעַ מִשַּׁדַּי לֹא־נִצְפְּנוּ עִתִּים וְיֹדְעוֹ לֹא־חָזוּ
.paverunt & , rapuerunt gregem , attingent Terminos ? ejus dies
2 יָמָיו׃ גְּבֻלוֹת יַשִּׂיגוּ עֵדֶר גָּזְלוּ וַיִּרְעוּ׃
.viduæ bovem accipient pignus in : ducent pupillorum Aſinum
3 חֲמוֹר יְתוֹמִים יִנְהָגוּ יַחְבְּלוּ שׁוֹר אַלְמָנָה׃
.terræ humiles latuerunt pariter : via de egenos facient Divertere
4 יַטּוּ אֶבְיֹנִים מִדָּרֶךְ יַחַד חֻבְּאוּ עֲנִיֵּי־אָרֶץ׃
mane ſurgentes , ſuum opus ad ſunt egreſſi deſerto in onagri Ecce
5 הֵן פְּרָאִים בַּמִּדְבָּר יָצְאוּ בְּפָעֳלָם מְשַׁחֲרֵי
ejus pabulum agro In .pueris panis ei ſolitudo : rapinam ad
6 לַטָּרֶף עֲרָבָה לוֹ לֶחֶם לַנְּעָרִים׃ בַּשָּׂדֶה בְּלִילוֹ
facient pernoctare Nudum .facient tardare impii vineam & : demetent
7 יִקְצוֹרוּ וְכֶרֶם רָשָׁע יְלַקֵּשׁוּ׃ עָרוֹם יָלִינוּ
inundatione Ab .frigore in operimentum non & : veſtimento abſque
8 מִבְּלִי לְבוּשׁ וְאֵין כְּסוּת בַּקָּרָה׃ מִזֶּרֶם
.petram ſunt amplexati protectione abſque & : madeſcent montium
הָרִים יִרְטָבוּ וּמִבְּלִי מַחְסֶה חִבְּקוּ־צוּר׃
.pignus accipient pauperem ſuper & : pupillum ubere ab Rapient
9 יִגְזְלוּ מִשֹּׁד יָתוֹם וְעַל־עָנִי יַחְבֹּלוּ׃
tulerunt famelici & : veſtimento abſque fecerunt ambulare Nudum
10 עָרוֹם הִלְּכוּ בְּלִי לְבוּשׁ וּרְעֵבִים נָשְׂאוּ
,calcaverunt torcularia : oleum exprimunt ſuos muros Inter .manipulum
11 עֹמֶר׃ בֵּין שׁוּרֹתָם יַצְהִירוּ יְקָבִים דָּרְכוּ
occiſorum anima & , gement viri urbe De .ſitiverunt &
12 וַיִּצְמָאוּ׃ מֵעִיר מְתִים יִנְאָקוּ וְנֶפֶשׁ־חֲלָלִים
fuerunt Ipſi .inſulſum ponet non Deus & : vociferabitur
13 תְּשַׁוֵּעַ וֶאֱלוֹהַּ לֹא־יָשִׂים תִּפְלָה׃ הֵמָּה הָיוּ
ſederunt nec : ejus vias cognoverunt non , luminis rebelles inter
בְּמֹרְדֵי־אוֹר לֹא־הִכִּירוּ דְרָכָיו וְלֹא יָשְׁבוּ
.ejus ſemitis in
בִּנְתִיבֹתָיו׃

Verſio VULG. LAT.

8 Si ad Orientem iero, non apparet : ſi ad Occidentem, non 9 intelligam eum. Si ad ſiniſtram, quid agam ? non apprehendam eum: ſi me vertam ad dexteram, non videbo il- 10 lum. Ipſe verò ſcit viam meam, & probavit me quaſi aurum, quod per ignem tranſit : 11 Veſtigia ejus ſecutus eſt pes meus, viam ejus cuſtodivi, & 12 non declinavi ex ea. A mandatis labiorum ejus non receſſi,& in ſinu meo abſcondi ver- 13 ba oris ejus. Ipſe enim ſolus eſt, & nemo avertere poteſt cogitationem ejus : & anima ejus quodcunque voluit, hoc 14 fecit. Cùm expleverit in me voluntatem ſuam, & alia mul- 15 ta ſimilia præſto ſunt ei. Et idcirco à facie ejus turbatus ſum, & conſiderans eum, ti- 16 more ſollicitor. Deus mollivit cor meum, & Omnipotens 17 conturbavit me. Non enim perii propter imminentes tenebras, nec faciem meam operuit caligo.

CAP. XXIV.

1 AB Omnipotente non ſunt abſcondita tempora : qui autem noverunt eum, ignorant 2 dies illius. Alii terminos tranſtulerunt, diripuerunt greges, 3 & paverunt eos. Aſinum pupillorum abegerunt, & abſtulerunt pro pignore bovem vi- 4 duæ. Subverterunt pauperum viam, & oppreſſerunt pariter 5 manſuetos terræ. Alii quaſi onagri in deſerto egrediuntur ad opus ſuum : vigilantes ad prædam, præparant panem 6 liberis. Agrum non ſuum demetunt : & vineam ejus, quem vi oppreſſerint, vindemiant. 7 Nudos dimittunt homines, indumenta tollentes, quibus non eſt operimentum in frigore : 8 Quos imbres montium rigant: & non habentes velamen, am- 9 plexantur lapides. Vim fecerunt deprædantes pupillos, & vulgum pauperem ſpoliave- 10 runt. Nudis & incedentibus abſque veſtitu, et eſurientibus 11 tulerunt ſpicas. Inter acervos eorum meridiati ſunt, qui cal- 12 catis torcularibus ſitiunt. De civitatibus fecerunt viros gemere, & anima vulneratorum clamavit, & Deus inultum 13 abire non patitur. Ipſi fuerunt rebelles lumini, neſcierunt vias ejus, nec reverſi ſunt per ſemitas ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

8 † (κ) Εἰ γὰρ πρῶτος πορεύσομαι, καὶ οὐκ ἔτι εἰμί, † τὰ δὲ ἐπ' ἐσχάτοις, τί οἶδα; † 9 Ἀριστερὰ ποιήσαντος αὐτοῦ καὶ οὐ κατέσχον, 10 † περιβαλεῖ δεξιὰ καὶ οὐκ ὄψομαι. † Οἶδε γὰρ ἤδη (λ) ὁδόν μου· † διέκρινε δέ με ὥσπερ τὸ χρυσίον. 11 † Ἐξελεύσομαι δὲ ἐν ἐντάλμασιν αὐτοῦ, † ὁδοὺς γὰρ αὐτοῦ ἐφύλαξα, καὶ οὐ μὴ ἐκκλίνω † (μ) ἀπὸ ἐν- 12 ταλμάτων αὐτοῦ, Καὶ οὐ μὴ παρέλθω, † (ν) ἐν δὲ κόλπῳ μου ἔκρυψα ῥήματα αὐτοῦ. 13 † Εἰ δὲ καὶ αὐτὸς ἔκρινεν οὕτως, † τίς ἐστιν ὁ (ξ) ἀντειπὼν αὐτῷ; † ὃ γὰρ αὐτὸς ἠ- 14 θέλησε, καὶ ἐποίησεν. † Διὰ τοῦτο ἐπ' αὐτῷ (ο) ἐσπούδακα· † νουθετούμενος δὲ, 15 ἐφρόντισα αὐτοῦ. † Ἐπὶ τούτῳ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ κατασπουδασθῶ· † κατανοήσω, 16 καὶ πτοηθήσομαι ἐξ αὐτοῦ. (π) Κύριος δὲ ἐμαλάκυνε τὴν καρδίαν μου· † ὁ δὲ παν- 17 τοκράτωρ (ρ) ἐσπούδασέ με. † Οὐ γὰρ ᾔδειν ὅτι (σ) ἐπελεύσεταί μοι σκότος, † (τ) πρὸ προσώπου δέ μου ἐκάλυψε γνόφος.

Nam (l) ſi primus ambulavero, & (m) non ultrà ſum 8 ; quæ autem in noviſſimis, quid novi? (n) A lævâ ſi ipſe 9 aget, & non apprehendi : circumteget dextra, & non videbo. Scit enim jam viam me- 10 am : probavit autem me, ſicut aurum. (o) Egrediar autem 11 in præceptis ejus. Vias enim ejus cuſtodivi, & non declino à præceptis ejus, Et non præ- 12 teream : in ſinu autem meo abſcondi verba ejus. Si autem 13 & ipſe judicavit ſic ; quis eſt qui contradicat ei? ipſe enim voluit & fecit. (p) Propter- 14 eà ſuper ipſo trepidavi, & commonitus ſolicitus fui de eo. Idcircò à facie ejus (q) 15 turbabor : (r) conſiderabo, & timebo ab eo. Et Dominus 16 mollivit cor meum : & Omnipotens (ſ) ſolicitavit me. Non 17 enim noveram quod ſupervenient mihi tenebræ : & ante faciem meam operuit caligo.

ΚΕΦ. κδ'.

1 † ΔΙατί δὲ (α) κύριον ἔλαθον ὧραι, † 2 Ἀσεβεῖς δὲ ὅριον ὑπερέβησαν, ποίμνιον 3 σὺν ποιμένι ἁρπάσαντες; † Ὑποζύγιον (β) ὀρφανῶν ἀπήγαγον, † καὶ βοῦν χήρας ἠνε- 4 χύρασαν. (γ) Ἐξέκλιναν ἀδυνάτους ἐξ ὁδοῦ δικαίας, † ὁμοθυμαδὸν δὲ ἐκρύβησαν 5 πραεῖς γῆς. (δ) Ἀπέβησαν δὲ ὥσπερ ὄνοι ἐν ἀγρῷ, † ὑπὲρ ἐμοῦ ἐξελθόντες (ε) τὴν ἑαυτῶν τάξιν· (ζ) ἡδύνθη αὐτῷ 6 ἄρτος εἰς νεωτέρους. Ἀγρὸν πρὸ ὥρας οὐκ αὐτῶν ὄντα ἐθέρισαν. ἀδύνατοι ἀμπελῶνας ἀσεβῶν ἀμισθὶ καὶ ἀσιτὶ εἰργάσαντο. 7 † Γυμνοὺς πολλοὺς ἐκοίμισαν ἄνευ ἱματίων, † ἀμφίασιν δὲ ψυχῆς (ʹ) αὐτῶν ἀφείλαν- 8 το. † Ἀπὸ ψεκάδων ὀρέων ὑγραίνονται, † (η) παρὰ τὸ μὴ ἔχειν ἑαυτοὺς σκέπην, 9 πέτραν περιεβάλοντο. † (θ) Ἥρπασαν ὀρφανὸν ἀπὸ μαστοῦ, † ἐκπεπτωκότα δὲ ἐτα- 10 πείνωσαν· † (ι) Γυμνοὺς δὲ ἐκοίμισαν ἀδίκως, † πεινώντων δὲ (κ) τὸν ψωμὸν ἀφεί- 11 λαντο. † (λ) Ἐν στενοῖς ἀδίκως ἐνήδρευσαν, 12 † ὁδὸν δὲ (μ) δικαίαν οὐκ ᾔδεισαν. † (ν) Οἳ ἐκ πόλεως καὶ οἴκων ἰδίων ἐξεβάλλοντο, † ψυχὴ δὲ νηπίων ἐστέναξε (ξ) μέγα. † αὐτὸς δὲ διατί τούτων ἐπισκοπὴν οὐ πεποίηται; 13 † (ο) Ἐπὶ γῆς ὄντων αὐτῶν καὶ οὐκ ἐπέγνωσαν, † ὁδὸν δὲ δικαιοσύνης οὐκ ᾔδεισαν, (π) † οὐδὲ ἀτραποὺς αὐτῶν ἐπορεύθησαν.

CAP. XXIV.

QUarè autem Dominum (a) 1 latuerunt horæ ? Et (b) impii 2 terminum (c) tranſgreſſi ſunt, gregem cum paſtore rapientes? Subjugale pupillorum abduxe- 3 runt, & bovem viduæ pro pignore tulerunt : (d) Diverte- 4 re fecerunt impotentes à via juſta: & ſimul (e) abſconditi ſunt mites terræ, Et evaſe- 5 runt tanquàm aſini in agro, ſuper (f) me, egreſſi ſuum ipſorum (g) ordinem : (h) ſuavis factus eſt ei panis in adoleſcentes. Agrum ante tem- 6 pus non ſuum demeſſuerunt. Impotentes vineas impiorum ſine mercede & ſine cibo operati ſunt. Nudos multos dor- 7 mire fecerunt ſine veſtimentis, & indumentum animæ eorum abſtulerunt. De ſtillicidiis mon- 8 tium madeſcunt : eò quòd ipſi (i) non habeant operimentum: petram ſibi circumdederunt. Rapuerunt ab ubere pupillum, 9 & eum qui (k) ceciderat, humiliaverunt. Et nudos dor- 10 mire fecerunt injuſtè, & eſurientiū buccellā abſtulerunt. In 11 anguſtiis inſidiati ſunt iniquè, & viam juſtam non noverunt. Hi de civitate et domibus pro- 12 priis ejiciebantur, anima verò parvulorum in gemitu valdè fuit. Ipſe (l) autem cur horum viſitationem non fecit? Cùm ſuper 13 terram ipſi eſſent, Et non agnoverunt, & viam juſtitiæ non noverunt, neque ſemitas (m) eorum ambulaverunt.

MS.A. (κ) Ἐὰν γὰρ πορευθῶ εἰς τὰ πρῶτα, οὐκέτι εἰμί, (λ) ὁδόν μου αὐτός· καὶ διέκρινέν με ὥσπερ χρυσίον. (μ) ἀπὸ ἐντολῶν αὐτοῦ Οὐ μὴ (ν) ἵνα μὴ ἀποθάνω, ἐν δὲ κόλπῳ (ξ) ἀντερῶν (ο) ἐσπουδάκειν· (π) Κύριός μου ἐμαλάκυνεν (ρ) ἐσπούδακεν ἐπ' ἐμέ. (σ) ἐπελεύσεταί μοι γνόφος, (τ) πρόσωπον δέ μου καλύψει σκότος.

Κεφ. κδ'. MS.A. (α) κύριε, ἔλαθον ὧραι ἀσεβεῖς ἄνδρες; ὅριον δὲ ὑπερέβησαν, καὶ ποίμνιον σὺν ποιμαίνει ἥρπασαν; (β) δὲ ὀρφανῶν (γ) Ἐξέκλινον δὲ ἀδυνάτους (δ) Καὶ ἀπέβησαν (ε) τῇ ἑαυτῶν πράξει. Ἀγρὸν πρὸ ὥρας (ζ) * ἡδυνήθη δὲ αὐτῷ ἄρτος εἰς νεωτέρους· ἀδύνατοι δὲ ἀσεβῶν ἀμπελῶνας ἀσιτὶ καὶ ἀμισθὶ εἰργάσαντο. Γυμνοὺς δὲ πολλοὺς (ʹ) ἑαυτῶν (η) καὶ παρὰ τὸ (θ) Ἥρπασαν δὲ ὀρφανοὺς ἀπὸ μαστοῦ, καὶ ἐκπεπτωκότα ἐταπείνωσαν· (ι) Γυμνοὺς ἐκοίμισαν (κ) ψωμὸν (λ) Ἐν σκοτινοῖς ἐνήδρευσαν ἀδίκως (μ) δικαίων (ν) Ἐκ πόλεως, καὶ ἐξ οἰκιῶν ἰδίων ἐξέβαλον αὐτούς, (ξ) μεγάλως. (ο) ἔτι ὄντων αὐτῶν ἐπὶ γῆς, καὶ οὐκ * ἐπεγνώσομαι, (π) οὐδὲ ἐπορεύθησαν ἀτραποὺς αὐτῆς.

תרגום TARGUM.

8 9 10 הא למדנחא אהליך וליתוי ולמערבא ולא אתבין ליה: בצפונא במעבדיה ולא אחמי כד מכבן דרומא ולא אסכי: ארום גלי קדמוי אורחא
11 12 13 דעמי בחן יתי היך דהבא אפיק: באסתוריה אחדת רגלי אורחתיה נטרית ולא צלית: פוקדנא דספותוי ולא אעדי מגזרתי אטשית מימרי פומוי: ואין
14 15 הוא יחידאי ומן יתיבניה ונפשיה רגנת ועבדת: ארום ישלים היך בקדמיתא גזרתי ודכמתהון סגיען עמיה: מטול דהיכנא מן קדמוי
16 17 אתבהל אתבין וארחל מניה: ואלהא רכך לבבי ושדי בהלנני: ארום לא אתנטרת מן קדם חשוך ומן קדמי טפר קבלא:

כד

1 2 3 מדין משדי לא אתטישו עדניא ודחכימין יתי לא חמין יומוי: תחומיא ישנון עדרא אנסון ורעון: חמרא דיתמי ידברון ימשכנון תור
4 5 ארמלא: יצלון חשיכי מן אורחא כחדא אטמרו מסכני ארעא: היך דין כמרודיא במדברא נפקו לעובדיהון בישיא מקדמין לבזא במשרא אנס
6 7 ליה מזונא לטליה: בחקלא מדלא דלהון חצדין וכרמא דרשיעי יכסחון: ערטלי יביתו דלית כסותא ודלית להון חופאה בקורא:
8 9 10 מקלוחיא דטוריא מטמשין ומדלית משרוי גפפו טינרא: יאנסון מבות יתם ועל עניא ממשכנין: ערטלי אוליכו מדלית כסו וכפנין נטלו מנהון עומרא:
11 12 13 בני אשיתהון יעצרון משח מעצרתא עצרו ומריהון אצחיאו: מקרתא בני נשא נהקין ונפשת קטולין בחרבא תצלי ואלהא לא ישוי חובא: הנון הוון
כמרדין באוריתא לא אשתמודעו אורחתיה ולא אתיתבו בשבילוי:

Verſio SYRIACA.

* ܐܢ ܩܕܡܝ ܐܙܠ. ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ. ܘܐܢ ܒܬܪܝ. ܠܐ ܡܣܬܟܠ ܐܢܐ ܒܗ. * ܠܣܡܠܝ ܒܥܝܬ. ܘܠܐ ܐܬܚܙܝ ܠܝ. 8
ܘܐܬܦܢܝܬ ܠܝܡܝܢܝ. ܘܠܐ ܚܙܝܬܗ. * ܗܘ ܕܝܢ ܝܕܥ ܐܘܪܚܝ. ܘܩܝܡܝ. ܘܒܩܢܝ ܐܝܟ ܕܗܒܐ ܘܢܦܩܬ. 9 10
* ܘܒܫܒܝܠܘܗܝ ܐܬܚܝܠܬ ܪܓܠܝ. ܐܘܪܚܬܗ ܢܛܪܬ. * ܘܠܐ ܫܛܬ ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܣܦܘܬܝ. ܘܠܐ ܥܒܪܬ ܡܢ 11
ܨܒܝܢܗ. ܡܠܐ ܕܦܘܡܗ ܢܛܪܬ. * ܘܗܘ ܒܚܕ ܡܢ ܗܠܝܢ. ܡܢܘ ܢܦܢܐ ܠܗ. ܢܦܫܗ ܐܨܒܝܬ. ܘܥܒܕ. 12
* ܐܠܐ ܢܫܠܡ ܩܝܡܗ. ܘܐܝܟ ܗܠܝܢ ܣܓܝܐܢ ܐܝܬ ܠܘܬܗ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܐܬܬܙܝܥܬ. 13 14
ܘܐܣܬܟܠܬ ܘܕܚܠܬ ܡܢܗ. * ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܐܪܟܟ ܠܒܝ. ܘܪܝܫܝ ܐܙܕܥܙܥ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܫܬܬܩܬ ܡܢ ܩܕܡ 15 16
ܚܫܘܟܐ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܐܦܝ ܥܡܛܢܐ ܕܚܫܘܟܐ. 17
* [illegible] * ܫܡ * [illegible] *
ܠܐ ܐܬܟܣܝܘ ܙܒܢܐ ܡܢ ܫܕܝܐ. ܘܝܕܥܘܗܝ ܠܐ ܚܙܘ ܝܘܡܘܗܝ. * ܘܬܚܘܡܐ ܫܢܘ. ܥܢܐ ܒܙܘ. * ܘܚܡܪܐ ܕܝܬܡܐ 1 2
ܕܒܪܘ. ܘܡܫܟܢܘ ܬܘܪܐ ܕܐܪܡܠܬܐ. * ܘܐܣܛܝܘ ܡܣܟܢܐ ܡܢ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܟܚܕܐ ܐܬܛܫܝܘ ܡܣܟܢܐ ܕܐܪܥܐ. * ܐܝܟ 3 4
ܥܪܕܐ ܕܒܡܕܒܪܐ. ܢܦܩܘ ܠܥܒܕܗܘܢ ܘܡܩܕܡܝܢ ܠܛܠܝܘܬܗܘܢ. * ܘܚܩܠܐ ܕܠܐ ܕܝܠܗܘܢ ܚܨܕܝܢ 5
ܘܟܪܡܐ ܕܪܘܫܥܐ ܩܛܦܝܢ. * ܥܪܛܠܝܐ ܡܒܝܬܝܢ ܕܠܐ ܠܒܘܫܐ. ܘܠܝܬ ܟܣܝܐ ܒܩܘܪܫܐ. * ܡܢ ܙܪܡܐ 6 7
ܕܛܘܪܐ ܢܬܪܛܒܘܢ. ܘܡܢ ܕܠܐ ܟܣܝܐ ܢܓܦܘܢ ܟܐܦܐ. * ܢܚܛܦܘܢ ܡܢ ܬܕܝܐ ܝܬܡܐ. ܘܠܐ ܡܣܟܢܐ 8
ܢܚܒܠܘܢ. * ܥܪܛܠܝܐ ܗܠܟܘ. ܡܢ ܕܠܐ ܠܒܘܫܐ. ܘܟܦܢܐ ܢܣܒܘ ܠܚܡܐ. ܘܒܕܘܟܬ ܦܬܘܪܐ 9
ܢܣܬܡܟܘܢ. ܘܢܟܦܢܘܢ. * ܘܗܢܘܢ ܣܝܡܝܢ ܟܝܠܐ ܘܡܫܘܚܬܐ. * ܘܐܝܡܬܝ ܕܟܦܢܝܢ ܥܠ ܦܬܘܪܝܗܘܢ. * ܘܥܨܪܬܐ 10 11
ܢܥܨܪܘܢ ܘܢܨܗܘܢ. * ܘܡܢ ܓܘ ܡܕܝܢܬܐ ܡܝܬܐ ܢܓܥܘܢ. ܘܢܦܫܬܐ ܕܩܛܝܠܐ ܢܥܘܢ. ܘܐܠܗܐ ܠܐ ܢܩܒܠ 12
ܨܠܘܬܗܘܢ. * ܗܢܘܢ ܗܘܘ 13
ܒܪܝܫ ܢܘܗܪܐ. ܘܠܐ ܝܕܥܘ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܠܐ ܗܠܟܘ ܒܫܒܝܠܘܗܝ.

Verſio ARABICA.

* فانه ان كان قدامي اي ينطلق فاني لا اعرفه * وان كان وراي فاني لا استبينه * من شمالي 8 9
طلبت فلم يتراي لي * وعطفت الي يميني فلم ابصره * وهو يعرف طريقي ومقامي * ويجربني مثل 10
الذهب خرجت * وفي سبله تشددت رجلي * طرايقه حفظتها * ولم تستخف بوصاياه شفتي * ولم ابتعد 11 12
من رضاه حفظت كلام فمه * وهو بواحد من هولاي * فماذا يجيبني اذا ارضيت نفسه * وصنع * 13
* لكني اوفي بعهدك * ومثل هذا كثيرا لي عنك * فمن اجل هذا من قدامه خشيت وفهمت وفزعت 14 15
منه * من اجل ان الله افزع قلبي وراسي تزعزع * اني لم اصمت من بين يدي الظلمة ومن غشيان 16 17
الظلام *

* الفصل الرابع والعشرون *

* من اجل ماذا من قدام الله لم تستخفي المنافقون * وعرفوا ولم يروا ايامهم * وتجاوزوا الحدود * 1 2
واستاقوا الاقطاع * وحمار اليتيم استاقوا وارهنوا ثوب الارملة * واخفا البايسون من الطريق * وجميعا 3 4
اختفا متواضعوا الارض * ومثل حمير الوحش في القفر الذين يسبقون لاطعام الخبز لشبابهم * وفي 5 6
الحقل شعيرا لهم يحصدون * وكروم المنافقين تلقط * يبيت العريان بغير لبوس * وليس كسوة مع 7
البرد * من مجاري الجبال يترطبون * ومن قلة الغطاء يعتنقون الحجارة * يخطفون من غصب اليتامى * 8 9
وعلى المساكين انصبة يطرحون * مشوا عراة بغير لبوس * والجياع اخذوا خبزا * وموضع الموايد 10
يتكون * ويجوعون وهم يجعلون السنة والمكيال * وفي اوان يجوعون على موايدهم * ومعاصير يعصرون 11
فيعطشون * ومن جوف القرية الاموات يستصرخون * وانفس القتلى تعج * والله لا يقبل صلواتهم * هم 12 13
كانوا في اعالي النور فلم يفهموا طرايقه ولم يسلكوا سبله *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

(e) Nam ſi fuerit ante me, 8
quò abeat ignoro; et ſi fuerit
poſt me, non percipio
illum. Ad lævam meam 9
quæſivi, nec apparuit mihi;
& (f) verti me ad dexteram
meam, nec vidi eum.
Ipſe verò novit iter meum, 10
et ſtationem meam: et
tentavit me, tanquam aurum
egreſſus ſum. Et in 11
ſemitis ejus (g) prævaluit
pes meus: vias ejus cuſtodivi,
neq; (h) deſpexerunt
mandata ejus labia mea,
Nec receſſi à voluntate 12
illius: ſervavi verba oris
ejus. Et ipſe ad unum ex 13
his quid reſpondebit mihi,
cùm placuerim animæ ejus,
& fecerit? At verò 14
complebo teſtamentū ipſius.
Et his ſimilia plura
habeo ad illum, Et proptereà 15
à conſpectu ejus timui,
& intellexi, ac metui
eum, Quoniam Deus terruit 16
cor meum, caput meum
concuſſum eſt. Non 17
enim ſilui à conſpectu tenebrarum,
& ab obſcuritate
caliginis.

CAP. XXIV.

Propter quid à (a) con- 1
ſpectu Dei non latuerunt
impii, & cogniti fuerunt,
ac non viderunt dies ſuos.
Et tranſgreſſi ſunt 2
limites, & abduxerunt
greges. Et aſinum pupilli 3
duxerunt, & pigneraverunt
(b) veſtem viduæ. Et 4
abſconderunt ſe inopes de
via, & ſimul delituerunt
humiles terræ, Et quaſi 5
onagri in deſerto, qui
præproperant ad cibandū
pane adoleſcentes ſuos,
Et in agro (c) fœnum pro 6
eis metunt, & vineas impiorum
vindemiant. Pernoctat 7
nudus abſq; indumentis,
nec eſt veſtimentum
cum frigore. De (d) 8
rivis montium humefient,
et præ defectu operimenti
amplectentur petras. Rapient 9
de violentia pupillorum,
et ſuper pauperes ſortes
projicient. Ambulaverunt 10
nudi abſque veſtimentis,
& famelici ſumpſerunt
panem: & in loco
(e) menſæ recumbent,
& eſurient: & ipſi (f)
conſtituunt modium &
menſuram, Et aliquando 11
eſurient ſuper (g) menſis
ſuis: & torcularia exprimient,
& ſitient. Et 12
de medio civitatis mortui
hic ſugent, & animæ
interfectorum mugient,
et Deus non accipiet precationes
eorum. Ipſi erant 13
in ſuprema luce, &
non intellexerunt vias ejus,
neque ambulaverunt
in ſemitis illius.

INTERP. SYRIACA.

(e) Si ambulaverit ante me, ignoro; (f) operui ad (g) corroboratur pes (h) deſpexi mandata labiorum ejus. *CAP. xxiv.* (a) Deo (b) bovem (c) pabuli non ſuum metunt, (d) vehementioribus montiū imbribus (e) conviviorum (f) ſumunt (g) epulis ſuis:

PARAPH CHALD. Verſio Latina.

Si ad Orientem iero, non comparet; & ſi ad Occidentem, non intelligam illum. *Ad* Aquilonem cum fecerit, non videbo; quando *texerit ſe* ad Auſtrum, non intuebor 8 9
illum. Quoniam manifeſta eſt coram eo via mea: probavit me; & quaſi aurum egrediar. Semitam ejus apprehendit pes meus; viam ejus cuſtodivi, nec declinavi. 10 11
A præcepto labiorum ejus non receſſi, à decreto meo abſcondi verba oris ejus. Et *ſi* ipſe eſt ſolus, & quis avertet eum? & anima ejus quod deſideravit hoc fecit. Quoniam 12 13
perficiet ſicut in principio ſtatutum meum, & multa ſimilia ſunt apud eum. Proptereà à facie ejus turbabor: intelligam, & timebo ab eo. Deus autem emollivit 14 15
cor meum, & omnipotens conturbavit me. Quoniam non ſum conſumptus à facie tenebrarum, & à facie mea operuit caligo. 16 17

CAP. XXIV.

Quare ab omnipotente non ſunt abſcondita tempora, & qui ſciunt *me* non viderunt dies ejus? Terminos mutaverunt, diripuerunt gregem & paverunt. Aſinum pupillorum 1 2 3
abigunt, & pignorant bovem viduæ. Avertunt pauperes à via: ſimul abſconduntur inopes terræ. Ecce ſicut onagri in deſerto, egreſſi ſunt ad opera ſua 4 5
mala, manè conſurgentes ad prædam, *in planicie diripit ſibi cibum* & pueris *ſuis*. In agro non ſuo metunt, & vineam impiorum amputant. Nudos faciunt pernoctare 6 7
abſq; indumento, quibus non eſt operimentum in frigore. A *diffluxionibus* montium madefacti ſunt, & non habentes habitaculum amplexati ſunt petram. Rapiunt ab 8 9
ubere pupillum, & pignus pauperum accipiunt. Nudum fecerunt ambulare abſq; operimento, & à famelicis tulerunt manipulum. Inter ſepta ſua exprimunt oleum, torcularia 10 11
calcaverunt, & domini eorum ſitiebant. De civitate filii hominum gemunt, & anima eorum qui ſunt occiſi gladio, clamat: *Et* Deus non imponat eis peccatum? 12
Ipſi fuerunt rebelles Legi: non cognoverunt viam ejus, nec habitaverunt in ſemitis illius. 13

איוב : כה כו

noctè in & : egenum & ,pauperem interficiet ,homicida surget luce In
14 לָאוֹר יָקוּם רוֹצֵחַ יִקְטָל־עָנִי וְאֶבְיוֹן וּבַלַּיְלָה
, crepusculum observavit adulteri oculus Et .fur tanquam erit
15 יְהִי כַגַּנָּב׃ וְעֵין נֹאֵף שָׁמְרָה נֶשֶׁף
.ponet *facierum absconsionem* & : oculus me aspiciet Non :dicendo
לֵאמֹר לֹא־תְשׁוּרֵנִי עָיִן וְסֵתֶר פָּנִים יָשִׂים׃
cognoverunt non ,sibi signaverunt die , domos *tenebra* in *Fodit*
16 חָתַר בַּחֹשֶׁךְ בָּתִּים יוֹמָם חִתְּמוּ־לָמוֹ לֹא־יָדְעוּ
agnoverit cùm : mortis umbra eis mane pariter Quia .lucem
17 אוֹר׃ כִּי יַחְדָּו בֹּקֶר לָמוֹ צַלְמָוֶת כִּי־יַכִּיר
, aquarum *facies super ipse* Levis .mortis umbræ terrores
18 בַּלְהוֹת צַלְמָוֶת׃ קַל־הוּא עַל־פְּנֵי־מַיִם
.vinearum viam respiciet non : terra in eorum pars maledicetur
תְּקֻלַּל חֶלְקָתָם בָּאָרֶץ לֹא־יִפְנֶה דֶּרֶךְ כְּרָמִים׃
sepulchrum , nivis aquas *rapiens* calor etiam *Siccitas*
19 צִיָּה גַם־חֹם יִגְזְלוּ מֵימֵי־שֶׁלֶג שְׁאוֹל
.vermis *ejus dulcore capietur* , *miseratio ipsum* Obliviscetur .peccaverunt
20 חָטָאוּ׃ יִשְׁכָּחֵהוּ רֶחֶם מְתָקוֹ רִמָּה
Frangens .*iniquitas* lignum ut ,confringetur &:memorabitur non Adhuc
21 עוֹד לֹא־יִזָּכֵר וַתִּשָּׁבֵר כָּעֵץ עַוְלָה׃ רֹעֶה
traxit Et .*benefaciet* non viduæ & : pareret ne , sterilem
22 עֲקָרָה לֹא תֵלֵד וְאַלְמָנָה לֹא יְיֵטִיב׃ וּמָשַׁךְ
ei Dabit .*vitis in* credidit non & , stetit :sua potentia in fortes
23 אַבִּירִים בְּכֹחוֹ יָקוּם וְלֹא־יַאֲמִין בַּחַיִּין׃ יִתֶּן־לוֹ
se Sustulerunt .eorum vias super ejus oculi & :innitetur &,*fiduciam ad*
24 לָבֶטַח וְיִשָּׁעֵן וְעֵינֵיהוּ עַל־דַּרְכֵיהֶם׃ רוֹמּוּ
caput sicut & :claudentur omnes sicut,*sunt humiliati* & ,*ipse* non &,paululum
מְּעַט וְאֵינֶנּוּ וְהֻמְּכוּ כַּכֹּל יִקָּפְצוּן וּכְרֹאשׁ
: me faciet mentiri quis ,*ubinam* non si Et .succidentur spicæ
25 שִׁבֹּלֶת יִמָּלוּ׃ וְאִם־לֹא אֵפוֹ מִי יַכְזִיבֵנִי
? meum sermonem nihilum ad ponet &
וְיָשֵׂם לְאַל מִלָּתִי׃

CAP. XXV. כה

timor & ,Dominium : dixit & , Suchites Bildad respondit Et
1 וַיַּעַן בִּלְדַּד הַשֻּׁחִי וַיֹּאמַר׃ הַמְשֵׁל וָפַחַד
2 numerus est Nunquid .suis excelsis in pacem faciens : eo cum
3 עִמּוֹ עֹשֶׂה שָׁלוֹם בִּמְרוֹמָיו׃ הֲיֵשׁ מִסְפָּר
quomodo Et ? ejus lux stabit non quem super Et ? ejus *agminibus*
4 לִגְדוּדָיו וְעַל־מִי לֹא־יָקוּם אוֹרֵהוּ׃ וּמַה־
natus erit mundus quomodo & ? Deo cum homo justificabitur
יִּצְדַּק אֱנוֹשׁ עִם־אֵל וּמַה־יִּזְכֶּה יְלוּד
stellæ & : *tabernaculum ponet* non & ,lunam ad usque Ecce ? muliere
5 אִשָּׁה׃ הֵן עַד־יָרֵחַ וְלֹא יַאֲהִיל וְכוֹכָבִים
filius & , vermis homo *quia Etiam* .ejus oculis in sunt mundæ non
6 לֹא־זַכּוּ בְעֵינָיו׃ אַף כִּי־אֱנוֹשׁ רִמָּה וּבֶן־
? vermis hominis
אָדָם תּוֹלֵעָה׃

CAP. XXVI. כו

? potentia non cui ? es auxiliatus Cui : dixit & , Ijob respondit Et
1 וַיַּעַן אִיּוֹב וַיֹּאמַר׃ מֶה־עָזַרְתָּ לְלֹא־כֹחַ
2 : sapientia non cui ?consuluisti Cui ? fortitudo non brachio Salvâsti
3 הוֹשַׁעְתָּ זְרוֹעַ לֹא־עֹז׃ מַה־יָּעַצְתָּ לְלֹא חָכְמָה
:sermones annunciâsti Cui ? fecisti scire *multitudinem in essentiam* &
4 וְתוּשִׁיָּה לָרֹב הוֹדָעְתָּ׃ אֶת־מִי הִגַּדְתָּ מִלִּין
sub *de* formabuntur *Mortui* ? te à exivit cujus anima &
5 וְנִשְׁמַת־מִי יָצְאָה מִמֶּךָּ׃ הָרְפָאִים יְחוֹלָלוּ מִתַּחַת
non & : eo coram infernus Nudus .*eorum habitatores* & , aquis
6 מַיִם וְשֹׁכְנֵיהֶם׃ עָרוֹם שְׁאוֹל נֶגְדּוֹ וְאֵין
: vacuum super Aquilonem Extendens .perditioni operimentum
7 כְּסוּת לָאֲבַדּוֹן׃ נֹטֶה צָפוֹן עַל־תֹּהוּ
.nihilum super terram suspendens
תֹּלֶה אֶרֶץ עַל־בְּלִימָה׃

Versio VUL. LAT.

14 Manè primo consurgit homicîda, interficit egenum & pauperem: per noctem verò erit 15 quasi fur. Oculus adulteri observat caliginem, dicens; Non me videbit oculus: & o-16 periet vultum suum. Perfodit in tenebris domos, sicut in die condixerant sibi, & igno-17 raverunt lucem. Si subitò apparuerit aurora, arbitrantur umbram mortis: & sic in tenebris quasi in luce ambulant. 18 Levis est super faciem aquæ: maledicta sit pars ejus in terra, nec ambulet per viam vi-19 nearum. Ad nimium calorem transeat ab aquis nivium, & usque ad inferos peccatum 20 illius. Obliviscatur ejus misericordia: dulcedo illius vermes: non sit in recordatione, sed conteratur quasi lignum 21 infructuosum. Pavit enim sterilem, quæ non parit, & vi-22 duæ benè non fecit. Detraxit fortes in fortitudine sua: & cùm steterit, non credet vitæ 23 suæ. Dedit ei Deus locũ pœnitentiæ, & ille abutitur eo in superbiam: oculi autem ejus 24 sunt in viis illius. Elevati sunt ad modicũ & non subsistent, et humiliabuntur sicut omnia, & auferentur, & sicut summitates 25 spicarũ conterentur. Quòd si non est ita, quis me potest arguere esse mentitum, et ponere ante Deum verba mea?

CAP. XXV.

1 RESpondens autem Baldad 2 Suhites, dixit; Potestas & terror apud eum est, qui facit concordiam in sublimibus suis. 3 Numquid est numerus militum ejus? & super quem non surget 4 lumen illius? Numquid justificari potest homo comparatus Deo, aut apparere mundus na-5 tus de muliere? Ecce luna etiam non splendet: & stellæ non sunt mundæ in conspectu ejus: 6 Quantò magis homo putredo, & filius hominis vermis?

CAP. XXVI.

1 RESpondens autem Job, di-2 xit; Cujus adjutor es? numquid imbecillis? & sustentas brachium ejus, qui non est for-3 tis? Cui dedisti consilium? forsitan illi, qui non habet sapientiam, & prudentiam tuam 4 ostendisti plurimam. Quem docere voluisti? nónne eum, 5 qui fecit spiramentum? Ecce gigantes gemunt sub aquis, & 6 qui habitant cum eis. Nudus est infernus coram illo, & nullum est operimentum perditi-7 oni. Qui extendit Aquilonem super vacuum, & appendit terram super nihilum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

14 † Γνοὺς δὲ αὐτῶν τὰ ἔργα, παρέδωκεν αὐτοὺς εἰς σκότος, † καὶ νυκτὸς ἔσται ὡς 15 κλέπτης. † Καὶ ὀφθαλμὸς μοιχοῦ ἐφύλαξε σκότος, † λέγων, Οὐ (ρ) προνοήσει με ὀφθαλμός, † καὶ ἀποκρυβὴν (σ) προσώπου ἔθε-16 το. † Διώρυξεν ἐν σκότει οἰκίας, † (τ) ἡμέρας ἐσφράγισαν ἑαυτούς, † οὐκ ἐπέγνω-17 σαν φῶς. † Ὅτι ὁμοθυμαδὸν (υ) αὐτοῖς τὸ πρωῒ σκιὰ θανάτου, † ὅτι ἐπιγνώσεται 18 (φ) ταραχὰς σκιᾶς θανάτου. † Ἐλαφρός ἐστιν (χ) ἐπὶ πρόσωπον ὕδατος, † καταραθείη ἡ μερὶς αὐτῶν ἐπὶ γῆς, † ἀναφανείη δὲ τὰ φυτὰ αὐτῶν ἐπὶ γῆς ξηρά. † ἀγκαλίδα γὰρ (ψ) ὀρφανῶν ἥρπασαν. 19 † (ω) Εἶτ' ἀνεμνήσθη αὐτοῦ ἡ ἁμαρτία· † ὥσπερ δὲ ὁμίχλη δρόσου ἀφανὴς ἐγένετο. 20 † (α) Ἀποδοθείη δὲ αὐτῷ ἃ ἔπραξεν, † συντριβείη δὲ πᾶς ἄδικος ἴσα ξύλῳ ἀνιάτῳ. 21 † (β) Στεῖραν γὰρ οὐκ εὖ ἐποίησε, καὶ γύναιον 22 οὐκ ἠλέησε, † Θυμῷ δὲ (γ) κατέστρεψεν ἀδυνάτους· † ἀναστὰς τοιγαροῦν, οὐ μὴ πι-23 στεύσῃ (δ) κατὰ τῆς ἑαυτοῦ ζωῆς. † (ε) Μαλακισθεὶς, μὴ ἐλπιζέτω (ζ) ὑγιασθῆναι, ἀλλὰ πεσεῖται νόσῳ. † πολλοὺς γὰρ ἐκάκωσε τὸ 24 ὕψωμα αὐτοῦ, † Ἐμαράνθη δὲ (η) ὥσπερ μολόχη ἐν καύματι, † ἢ ὥσπερ στάχυς (θ) ἀπὸ κα-25 λάμης αὐτόματος ἀποπεσών. † Εἰ δὲ μή, τίς ἐστιν ὁ (ι) φάμενος ψευδῆ με λέγειν, † καὶ θήσει (κ) εἰς οὐδὲν τὰ ῥήματά μου;

At qui novit eorum opera, tradidit eos in tenebras, & noctu erit ut fur. Et oculus adulteri observabit tenebras, dicens: Non considerabit me oculus, & (o) operimentum faciei posuit. Suffodit in tenebris domos: per diem (p) obsignaverunt seipsos, non cognoverunt lucem. Quia simul eis (q) manè umbra mortis, quia (r) cognoscet tumultum umbræ mortis. Levis est super (s) faciem aquæ: maledicatur pars eorum super terram; & (t) appareant plantæ eorum super terram aridæ: fasciculum enim pupillorum rapuerunt. Deindè rememoratum est peccatum ejus, et sicut nebula roris, factus est non apparens. Retribuantur autem ei, quæ fecit, & conteratur sicut lignum insanabile, omnis iniquus. Sterili enim non fecit benè, & mulieris misertus non est. Furore autem evertit impotentes. Consurgens ergò non (u) credat contra vitam suam. Cùm infirmari cœperit, non speret sanitatem, sed cadet morbo: multis enim nocuit altitudo ejus. Emarcuit autem, sicut (x) malva in æstu, aut sicut de stipula spica decidens sponte suâ. Alioquin quis est, qui loquatur mendacium me dicere, & ponet in nihilum verba mea?

ΚΕΦ. κε'.

1 † ΥΠολαβὼν δὲ Βαλδὰδ ὁ Σαυχίτης, λέ-2 γει, † Τί (α) γὰρ προοίμιον ἢ φόβος παρ' αὐτοῦ, † ὁ ποιῶν τὴν σύμπασαν ἐν ὑψί-3 στῳ (β); † Μὴ γάρ τις ὑπολάβοι ὅτι ἐστὶ παρέλκυσις πειραταῖς· † ἐπὶ τίνας δὲ (γ) 4 οὐκ ἐπελεύσεται ἔνεδρα παρ' αὐτοῦ; † Πῶς γὰρ ἔσται (δ) δίκαιος βροτὸς ἔναντι κυρίου; † ἢ τίς ἂν ἀποκαθαρίσαι (ε) αὐτὸν 5 γεννητὸς γυναικός; (ζ) Εἰ σελήνη συντάσσει, καὶ οὐκ ἐπιφαύσκει, † ἄστρα δὲ (η) οὐ 6 καθαρὰ ἐναντίον αὐτοῦ. † Ἔα δὲ, (θ) ἄνθρωπος σαπρία, καὶ υἱὸς ἀνθρώπου σκώληξ.

CAP. XXV.

REspondens autem Baldad Sauchites, ait; Quid enim exordium, quàm timor ab eo, qui facit universitatem in altissimo? Nemo enim putet esse (a) moram piratis: in quos autem non venient (b) insidiæ ab eo? Quomodò enim erit homo justus coram Deo? vel quisnam (c) mundaverit se natus ex muliere? Si lunæ præcipit, & non lucet, nec stellæ sunt mundæ apud eum? Sine verò, homo putredo, & filius hominis vermis.

ΚΕΦ. κϛ'.

1 † ΥΠολαβὼν δὲ Ἰὼβ, λέγει, † Τίνι πρόσ-2 κεισαι, ἢ τίνι μέλλεις βοηθεῖν; † πότερον οὐχ ᾧ πολλὴ (α) ἰσχύς, καὶ ᾧ βραχίων κρα-3 ταιός ἐστι; † Τίνι συμβεβούλευσαι; † οὐχ ᾧ (β) πᾶσα σοφία; † (γ) τίνι (δ) ἐπακολουθήσεις; οὐχ ᾧ (ε) μεγίστη δύναμις; 4 † Τίνι ἀνήγγειλας ῥήματα; † πνοὴ δὲ τίνος 5 ἐστὶν ἡ ἐξελθοῦσα ἐκ σοῦ; † Μὴ γίγαντες μαιωθήσονται † ὑποκάτωθεν ὕδατος (ζ) 6 καὶ τῶν γειτόνων αὐτοῦ; † Γυμνὸς ὁ ᾅδης ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔστι περιβόλαιον τῇ ἀπω-7 λείᾳ. † Ἐκτείνων Βορέαν ἐπ' οὐδέν, † (η) κρεμάζων γῆν ἐπὶ οὐδενός·

CAP. XXVI.

REspondens autem Job, ait; Cui ades, vel quem adjuturus es? nunquid non, cui multa est fortitudo, & cui brachium potens est? Cui consilium dedisti? nónne, cui omnis sapientia? Quem insequêris? nonne, cui maxima est virtus? Cui annunciâsti verba? spiramen autem cujus est, quod exit ex te? (a) Nunquid gigantes formabuntur subter aquam, & vicinos ejus? Nudus est infernus coram eo: & non est velamen perditioni. Extendens Aquilonem super (b) nihilum: suspendens terram super nihilum.

MS.A. (ρ) προσνοήσει με ὁ ὀφθαλμός, (σ) * πρὸς μὲ τοῦ ἔθετο. (τ) ἡμέρας δὲ (υ) * αὐτοῖς τὸ πρωῒ διεσκέδασεν. ὅτι (φ) ταραχὰς σκιὰ θανάτου. (χ) ἐπὶ προσώπου (ψ) ὀρφανοῦ (ω) Εἶτα ἐμνήσθη αὐτῶν ἡ ἁμαρτία καὶ ὥσπερ ὁμίχλη (α) Ἀποδοθείη αὐτῷ καθὰ ἔπραξεν, (β) Στεῖραν γὰρ οὐκ ἐποίκτειραν, οὐδὲ ἀγύναιον ἠλέησε. (γ) κατέστρεψεν (δ) ὑπο τῆς (ε) Μαλακισθεὶς δὲ, μὴ (ζ) ὑγιάναι, (η) ὥσπερ χλόη (θ) αὐτόματος ἀποπεσὼν ἀπὸ καλάμης. (ι) φάμενός με ψευδῆ λέγειν, (κ) εἰς οὐδὲν Κεφ. κε'. MS.A. (α) γάρ ἐστιν προοίμιον ὁ φόβος παρ' αὐτοῦ; (β) ἐστίν. Μὴ γάρ (γ) αὐτῶν οὐκ (δ) βροτὸς δίκαιος (ε) ἑαυτὸν † (ζ) * Οὐρανὸς οὐ καθαρός. † Ὁ λέγων τῷ ἡλίῳ μὴ ἀνατέλλειν, καὶ οὐκ ἀνατέλλει, σελήνη δὲ συντάσσει, καὶ οὐκ ἐπιφαύσκει, (η) οὐ ἄμεμπτα (θ) πᾶς ἄνθρωπος Κεφ. κϛ'. MS.A. (α) ἡ ἰσχὺς, καὶ ὁ βραχίων (β) ἡ πᾶσα (γ) ἢ τίνι (δ) ἐπακολουθεῖς; (ε) ἡ μεγίστη. (ζ) καὶ γειτόνων (η) κρεμάζων γῆν ἐπ' οὐδενός

תרגום TARGUM.

אורתא יקום קטולא יקטול עניא וחשיכא ובליליא יהי היך גנבא : ועינא דניפא נטרת נשף ליליא למימר לא תסכנני עינא וטמור אפיא ישוי כלפי לעיל : 14 15
אך בחשוכא בתיא בימטא מחתמין להון בנוניא לא ידעו נהורא : ארום כחדא צפרא דמי להון היך טולא דמותא ארום אשתמודע פורענות טולא 16 17
מותא : קליל הוא למשט על אפי מיא תהי ליט אורחא שעיעתהון בארעא לא יסכי שביל כרמיא : צהיא ולחוד חומתא אנסין מימי תלגא וליתיהון 18 19
כרין לשיול אתנשאו דאתחיבו : הא היך צהותא וחומא אנסין מימי תלגא וליתיהון הכרין לשיול אתנשיאו דאתחיבו : אכוראין דנשיאו לרחמא 20
סכינין אתבסימו לרחשא תוב לא ידכר ותתבר היך קיסא עילתא : הא מטול דבטילו אפרשותא דמעשר דאתפקדו בעדן חומא דקיטא אתמנעו מנהון
מימי מטרא ותלגא לבית קבורתא אתחיבו : דמרע עקרא דלא תילד וארמלתא לא יוטיב : ונגיד גבריא בחיליה יקום ולא יהימין בחיי : יהיב ליה תיובתא 21 22 23
רחיץ ויסתמיך ועינוי על אורחיהון : אוריכו כזעיר פון וליתוי רשיעא ואתמכיאו ככל מה יתקטעון וכריש שבולא יתקטפון : ואין לא קשוט דכי הן הוא 24 25
דיכדבנני וישוי כדלא הות עקר מלתי :

כה

אתיב בלדד דמן שוח ואמר : שולטנא ודלוחא נביה עבד שלם בשמי מרומא : הא מיכאל מן ימינא והוא דאשא וגבריאל מסמאליה והוא דמיא ובריתא 1 2
דישתא פתכין אשתא ומיא ובשולטנותיה וברחלתיה עבד שלמא בשמי שמיא דיליה : האית סכום לאוכלוסוי ועל מן לא יקום נהוריה : ומה יזכי בר 3 4
נש עם אלהא ומה יזכי יליד אנתתא : הא עד דפגמא סיהרא בסטר מדנחא לא ינהר שמשא וכוכביא לא אתברירו קדמוי : אף כל דכן בר נש דבחיוי ריחשא 5 6
בר נש דבמותוי מורני :

כו

אתיב איוב ואמר : מה סיעתא מדלית חילא פרקתא באדרע דלא עשין : מה מלכתא מדלית חוכמתא ודמי לך דחוכמתא לסוגעא אודעתא : ית מן חויתא 1 2
מליא ונשמתא דמן נפקת מנך : אפשר דגבריא דמתמזמזין יתברין ואנין מלרע למיא ומשריתהון : ערטילא מפרסם שיול לקובליה ולית חופאה לבית 3 4 5 6
אבדנא : דמתח צפונא על למא וזקף ארעא עלוי מיא מדלית מדעם דסמיך ליה : 7

Verſio SYRIACA.

14 * ܠܢܘܗܪܐ ܩܐܡ ܩܛܘܠܐ. ܘܩܛܠ ܠܡܣܟܢܐ ܘܠܒܨܝܪܐ. ܘܒܠܠܝܐ ܗܘܐ ܐܝܟ ܓܢܒܐ. * ܘܥܝܢܐ ܕܓܝܪܐ ܢܛܪܐ
15 ܚܫܘܟܐ. ܘܐܡܪܝܢ. ܠܐ ܬܚܙܝܢܢ ܥܝܢܐ. ܘܡܛܫܐ ܐܦܘܗܝ ܒܚܫܘܟܐ. * ܚܦܪ ܒܚܫܘܟܐ ܒܬܐ. ܘܒܐܝܡܡܐ
16 ܚܬܡ ܠܗܘܢ. ܕܠܐ ܢܚܙܘܢ ܢܘܗܪܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܒܥܘ ܠܗܘܢ ܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ. ܘܡܫܟܚܝܢ ܠܗ. ܘܡܙܝܥܝܢ ܠܗܘܢ
17 ܛܠܠܝ ܡܘܬܐ. * ܩܠܝܠ ܗܘ ܥܠ ܐܦܝ ܡܝܐ. ܬܬܠܝܛ ܡܢܬܗܘܢ ܒܐܪܥܐ. ܒܐܘܪܚܐ ܕܟܪܡܐ
18 ܡܬܗܦܟܝܢ. * ܨܗܝܐ ܘܚܘܡܐ ܢܚܛܦܘܢ ܐܢܘܢ ܡܝܐ ܕܬܠܓܐ. ܘܒܫܝܘܠ ܚܛܘ. * ܘܐܬܛܥܝܘ ܡܢ ܡܪܒܥܐ.
19 ܘܡܨܬ ܐܢܘܢ ܐܪܥܐ. ܘܡܝܬܐ ܐܦ ܠܐ ܢܬܕܟܪܘܢ. ܘܢܬܬܒܪ ܥܘܠܐ ܐܝܟ ܩܝܣܐ. ܘܥܩܪܬܐ ܠܐ
20 ܝܠܕܬ ܠܐ ܢܛܒܘܢ. ܘܠܐܪܡܠܬܐ ܠܐ ܐܛܝܒܘ. * ܘܩܢܝܢܐ ܕܪܒܐ ܒܚܝܠܗ ܢܩܘܡ. ܘܠܐ ܢܗܝܡܢ ܒܚܙܘܐ. ܠܐ ܢܬܘܩܘܢ.
21 * ܘܢܫܪܐ ܒܫܠܝܐ ܘܢܬܬܟܠ. ܘܥܝܢܘܗܝ ܥܠ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܢܬܬܪܝܡܘܢ. * ܩܠܝܠ ܘܠܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܢܬܡܟܟܘܢ
22 ܘܢܐܒܕܘܢ ܟܠܗܘܢ ܡܪܓܙܢܐ. ܘܐܝܟ ܪܫܐ ܕܫܒܠܐ ܢܝܒܫܘܢ ܘܢܬܦܪܟܘܢ. * ܘܐܢ ܠܐ ܗܘܐ. ܪܘܓܙܗ ܢܟܕܒܢܝ.
23 ܘܢܬܬܩܠ ܩܕܡ ܐܠܗܐ ܡܠܬܝ.
24 * ܘܥܢܐ ܒܠܕܕ ܫܘܚܝܐ ܘܐܡܪ. * ܫܘܠܛܢܐ ܘܕܚܠܬܐ ܥܡܗ. ܥܒܕ ܫܝܢܐ ܒܡܪܘܡܘܗܝ. * ܣܟܐ ܠܐ ܐܝܬ
25 ܠܚܝܠܘܬܗ. * ܘܥܠ ܡܢܘ ܠܐ ܕܢܚ ܢܘܗܪܗ. * ܘܐܝܟܢܐ ܢܙܕܕܩ ܒܪܢܫܐ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. ܐܘ ܐܝܟܢܐ ܢܙܟܐ ܝܠܝܕ
1 ܐܢܬܬܐ. * ܗܐ ܣܗܪܐ ܠܐ ܡܨܐ ܠܡܙܟܐ. ܘܟܘܟܒܐ ܠܐ ܙܕܩܝܢ ܩܕܡܘܗܝ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܒܪܢܫܐ ܥܦܪܐ. ܘܒܪ ܐܢܫܐ
2 ܬܘܠܥܬܐ. * ܣܦܪܐ ܥܣܪܝܢ ܘܫܬܐ * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ. * ܠܡܢܐ ܐܢܬ ܥܕܪ ܕܠܐ ܚܝܠܐ. ܘܦܪܩܬ ܕܪܥܐ ܕܠܐ
3 ܥܘܫܢܐ. * ܠܡܢܐ ܬܪܥܝܬ ܕܠܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܝܕܥܬܐ ܣܓܝܐܬܐ ܚܘܝܬ. * ܠܡܢ ܚܘܝܬ ܡܠܐ. ܘܢܫܡܬܐ
4 ܕܡܢܘ ܢܦܩܬ ܡܢܟ. * ܗܐ ܓܢܒܪܐ ܢܬܩܛܠܘܢ. ܘܡܢ ܡܝܐ ܢܬܢܫܠܘܢ. * ܥܪܛܠܝܐ ܗܝ ܫܝܘܠ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܠܝܬ ܟܣܝܐ
5 ܠܐܒܕܢܐ. * ܡܬܚ ܓܪܒܝܐ ܥܠ ܚܠܝܐ. ܘܬܠܐ ܐܪܥܐ ܥܠ ܠܐ ܡܕܡ.
6
7

Verſio ARABICA.

14 15 * وفي النور وقع القاتول فقتل المساكين والبائسين وفي الليل يكون السارق * واعين الزاني ترصد
16 الظلمة ويقولون لا تبصرنا عين ويستر وجهه بالظلمة * يعس في الظلام البيوت * والنهار يختمها لئلا
17 18 يروا النور * من اجل هذا طلبوا لهم ظلال الموت * قليلا وعلى وجه الماء تلعن قسمتهم في الارض في
19 20 طريق الكروم * العطش والحرور يخطفهم امياه الثلوج وفي الهاوية خطئوا * ونسوا من الرحم امتصهم
21 التراب والاموات ايضا لا يذكرون ويكسر الاثيم مثل العود * والعاقر السوء لا تلد والى الارملة لم
22 23 يحسنوا * وقنيان العظيم بقوته يقوم ولا يصدق بالنظر * ويحل بالسكون ويتوكل وعيناه على طرقهم
24 ترتفع * قليلا وليس هم يتواضعون ويبيدون جميع المسخطين ومثل راس السنبل ييبسون ويفركون
25 * فان لم يكن فان رجزه يكذبني ويحسب قدام الله كلمتي * الفصل الخامس والعشرون
1 2 * فاجاب بلداد السوحاني فقال * السلطان المخافة معه صنع السلم في علاه * وليس عدد لقوته وعلى
3 4 من ليس يشرق ضوؤه * وكيف يستطيع الانسان ان يزكو من الله او كيف يغلب مولود المراة
5 6 * هوذا القمر لا يستطيع ان يغلب والكواكب لا تزكو بين يديه * حقا ان الانسان ترابا وابن
الانسان دودا * الفصل السادس والعشرون
1 2 * فاجاب ايوب وقال * لماذا انت تعين بلا
3 4 قوة وتخلص ذراعا بلا عز * لماذا تفكرت بلا حكمة وعلما كثيرا اظهرت * لماذا اخبرت القول ونسمة
5 6 من خرجت منك * فان الجبابرة يقتلون ومن المياه يسلون * عريانة هي الهاوية بين يديه * وليس
7 ستر للهلاك * بسط الكبرياء من القفر وعلق الارض على لا شي *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Et in luce moratus eſt bo- 14
micida,occiditque paupe-
res ac inopes: & in nocte
erit fur. Et oculi fornica- 15
rii obſervant tenebras,&
dicunt ; Non videbit nos
oculus:velátq; faciem ſu-
am tenebris : Inquirit in 16
tenebris domos, & in die
obſignat illas, ne videant
lumen. Idcircò quæſierunt 17
umbram mortis (b). Pu- 18
ſillum et ſuper facie aquæ
maledicetur pars eorū in
terra,in itinere vinearum.
Sitis & æſtus, rapient eos 19
aquæ nivium,& in fovea
peccaverunt, Et oblivioni 20
traditi ſunt à vulva : (i)
exſuxit eos terra,& mor-
tui etiā non memorabun-
tur. Et frangetur impius
quaſi lignum : Et ſterilis 21
improbi non pariet:et vi-
duæ non beneficerunt. Et 22
poſſeſſio magni in virtute
ſua conſurget, nec credet
viſui. Et habitabit cum 23
quiete et confidet: et oculi
ejus ſuper viis eorum ele-
vabuntur. Puſillum, & 24
non erunt: humiliabuntur
& peribunt omnes irrita-
tores,et velut ſummitates
ariſtarum areſcent, atque
fricabuntur. Quòd ſi ita 25
non eſt, furor ejus mentiri
me faciat, & expendatur
coram Deo verbum meum.

CAP. XXV.

ET reſpondens Beldad 1
Subites,ait: (a)Penes Im- 2
peratorem timor adeſt, fe-
cit tranquillitatem in (b)
excelſo ſuo, Nec eſt nume- 3
rus potentiæ illius, et ſu-
per quem hominum non o-
ritur lumen ejus? Et quo- 4
modo poteſt homo juſtifi-
cari præ Deo ? aut quo-
modo ſuperabit natus mu-
lieris ? En luna nequit 5
vincere, & ſtellæ non ju-
ſtificantur coram illo. Ve- 6
rè homo (c) pulvis eſt, &
filius hominis vermis.

CAP. XXVI.

REſpondit Job, di- 1
cens ; Quarè tu auxili- 2
aris abſque robore, et ſal-
vas brachium abſque for-
titudine ? Quarè cogi- 3
tâſti ſine ſapientia, &
ſcientiam multam oſten-
diſti ? (a)Cur indicâſti 4
ſermonem, & ſpiritus cu-
juſnam exivit de te ?
(b) Nam gigantes interfi- 5
cientur, & ex aquis ex-
trahentur. Nuda eſt fo- 6
vea coram illo, nec eſt
velamen perditioni. Ex- 7
tendit Aquilonem de ſoli-
tudine, & (c) extendit
terram ſuper nihilo.

INTERP. SYRIACA.

(*b*) & inveniunt *eam*, & conſternant eos umbræ mortis. (*i*) dulcis *eſt* eis vermis, *CAP. xxv.* (*a*) Dominium & metus apud eum, (*b*) excelſis ſuis. (*c*) tinea *CAP. xxvi.* (*a*) Cui indicâſti ſermones, (*b*) Ecce (*c*) ſuſpendit

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ad lucem conſurget occiſor, occidet egenū & pauperem,& in nocte erit quaſi fur. Et ocul⁹ adulteri obſervat crepuſculū *noctis*,dicens:Non me videbit oculus, & abſ- 14 15
conſionē faciei ponet è regione ſurſū. Perfodit in tenebris domos quas in die obſignaverunt ſibi,*in occultis* non cognoverunt lumē. Quoniam ſimul aurora reputatur eis 16 17
ſicut umbra mortis:nota eſt enim ultio tenebrarū mortis. Levis eſt ut diffundatur ſuper faciem aquarū : erit maledicta via lubricitatis eorum in terra : & non aſpiciet 18
ſemitam vinearum. Siccitas & etiam calor *rapiunt* aquas nivis *& non ſunt : ſic in inferno oblivioni erunt* qui peccaverunt. *Targum aliud : Sicut* ſiccitas & calor *ra-* 19
piunt aquas nivis, *& non ſunt : ſic in inferno oblivioni dabuntur* qui peccaverunt. Crudeles ſunt qui obliti ſunt miſereri pauperibus, dulces erunt vermibus : deinceps 20
non erit memoria eorū ; & conterentur ſicut lignum iniquum. *Targum aliud : Propterea quòd aboleverunt oblationem decimarum, de quâ præceptum acceperant ; in*
tempore caloris æſtivi cohibitæ erunt ab eis aquæ pluviales & nivales, in domum ſepulturæ condemnati erunt. Qui confringit ſterilem quæ non parit,& viduæ non bene- 21
facit. Et attrahit fortes in fortitudine ſua : conſurget, & non credet vitæ ſuæ. Dedit ei pœnitentiā ut confideret & ſuſtentaretur,& oculi ejus ſuper vias eorū. *Expectant* 22 23
paululum,& non eſt ſcelerat⁹ : & humiliantur,juxta omnia *quæq; ſuccidentur*, & ſicut ſummitas ſpicæ *demetentur*. Et ſi non eſt *verum hoc*, ubi eſt qui mendacem me 24 25
comprobet,& ponat quaſi nihilum radicem ſermonis mei ?

CAP. XXV.

ET reſpondit Baldad qui erat de Sua,& dixit : Poteſtas & terror apud eum eſt, qui facit pacem in cœlis excelſis. *Targum aliud: Michael à dextra, cujus eſt ignis,* 1 2
& Gabriel à ſiniſtra ejus,qui aquæ præeſt, & creaturæ ſanctæ miſcent ignem & aquam ; & in poteſtate ac terrore ſuo facit pacem in cœlis *cœlorum ſuorum*. Nun- 3
quid eſt numerus exercitibus ejus, & ſuper quem non ſurget lumen illius ? In quo juſtificabitur fili⁹ hominis cum Deo, aut in quo innocens erit natus de muliere ? Ecce 4 5
adhuc Luna maculata eſt in parte Orientali ; non ſplendebit ſol : & ſtellæ non ſunt mundæ in conſpectu ejus. Quanto magis homo qui in vita ſua eſt reptile, & filius ho- 6
minis qui in morte ſua eſt vermis?

CAP. XXVI.

ET reſpondit Job & ait : Quid auxiliat⁹ es abſq; fortitudine ; ſalvâſti brachio invalido ? Quare dediſti conſiliū abſq; ſapientia, & videtur tibi quòd ſapientiam plu- 1 2 3
rimam oſtendiſti ? Cui annunciaſti ſermones, & cujus ſpiraculum exivit à te ? Nunquid poſſunt gigantes qui contremiſcunt regenerari ; cum ipſi ſint ſub aquis & 4 5
exercitus eorum ? *Nudus & publicus* eſt infernus coram eo, & non eſt operimentū domui perditionis. Qui extendit Aquilonem ſuper nihilum, ſublevat terram ſuper 6 7
aquas, nullo eam ſuſtinente.

איוב : כו

.eis sub nubes est scissa non & : suis nubibus in aquas Ligans
8 צֹרֵר־מַיִם בְּעָבָיו וְלֹא־נִבְקַע עָנָן תַּחְתָּם׃
Statuum .suam nubem illud super expandit : solii *facies* Tenens
9 10 מְאַחֵז פְּנֵי־כִסֵּה פַּרְשֵׁז עָלָיו עֲנָנוֹ׃ חֹק
lucis perfectionem ad usque : aquarum *facies super descripsit circino*
חָג עַל־פְּנֵי־מָיִם עַד־תַּכְלִית אוֹר
admirabuntur & *: conterentur* cœli Columnæ *.obscuritate* cum
11 עִם־חֹשֶׁךְ׃ עַמּוּדֵי שָׁמַיִם יְרוֹפָפוּ וְיִתְמְהוּ
sua intelligentia in & : mare *scidit* ejus potentia In .ejus increpatione ab
12 מִגַּעֲרָתוֹ׃ בְּכֹחוֹ רָגַע הַיָּם וּבִתְבוּנָתוֹ
formavit , *pulchritudo* *cœli* ejus spiritu *In .superbiam* percussit
13 מָחַץ רָהַב׃ בְּרוּחוֹ שָׁמַיִם שִׁפְרָה חֹלְלָה
, ejus viarum partes , hæc Ecce *.fugacem* serpentem ejus manus
14 יָדוֹ נָחָשׁ בָּרִחַ׃ הֶן־אֵלֶּה קְצוֹת דְּרָכוֹ
ejus fortitudinum tonitru & :eo *in* audivimus *verbum* pusillum quàm &
וּמַה־שֵּׁמֶץ דָּבָר נִשְׁמַע־בּוֹ וְרַעַם גְּבוּרֹתָו
? intelligetur quo
מִי יִתְבּוֹנָן׃

Versio VULG. LAT.

8 Qui ligat aquas in nubibꝰ suis,
ut non erumpant pariter deorsum.
9 Qui tenet vultum solii
sui, & expandit super illud
10 nebulam suam. Terminum
circumdedit aquis, usque dum
11 finiantur lux & tenebræ. Columnæ
cœli contremiscunt, &
12 pavent ad nutum ejus. In
fortitudine illius repentè maria
congregata sunt, & prudentia
ejus percussit superbum.
13 Spiritus ejus ornavit cœlos:
& obstetricante manu ejus, eductus
est coluber tortuosus.
14 Ecce, hæc ex parte dicta sunt
viarum ejus: & cùm vix parvam
stillam sermonis ejus audierimus,
quis poterit tonitruum
magnitudinis illius intueri?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

8 † Δεσμεύων ὕδωρ ἐν νεφέλαις αὐτοῦ, † καὶ οὐκ
9 ἐῤῥάγη νέφος (θ) ὑποκάτω αὐτοῦ. † Ὁ
κρατῶν πρόσωπον θρόνου, † (ι) ἐκπετάζων
10 ἐπ᾽ αὐτὸν νέφος αὐτοῦ. † Πρόσταγμα ἐγύρωσεν
ἐπὶ πρόσωπον ὕδατος, † μέχρι
11 συντελείας φωτὸς μετὰ σκότους. † Στῦλοι
οὐρανοῦ (κ) ἐπετάσθησαν, † καὶ ἐξέστησαν ἀπὸ
12 τῆς ἐπιτιμήσεως αὐτοῦ. † (λ) Ἰσχύϊ κατέπαυσε
τὴν θάλασσαν, † ἐπιστήμῃ δὲ (μ) ἔτρωσε
13 τὸ κῆτος. † (ν) Κλεῖθρα δὲ οὐρανοῦ
δεδοίκασιν αὐτόν· † προστάγματι δὲ ἐθανάτωσε
14 δράκοντα ἀποστάτην. † Ἰδοὺ ταῦτα
μέρη ὁδοῦ αὐτοῦ, † καὶ ἐπὶ ἰκμάδα λόγου
ἀκουσόμεθα ἐν αὐτῷ· † σθένος δὲ βροντῆς
αὐτοῦ τίς οἶδεν, ὁπότε ποιήσει;

Ligans aquam in nubibus ejus: 8
& non est scissa nubes sub eo;
Qui tenet faciem (c) throni, ex- 9
tendens super eum nubem suam.
(d) Præceptum circumdedit super 10
faciem aquæ, usque ad consummationem
lucis cum tenebris.
Columnæ cœli (e) expansæ sunt, 11
& obstupuerunt (f) ab increpatione
ejus. Virtute sedavit mare; 12
& scientiâ (g) stratus est
cetus. Et claustra cœli metuunt 13
eum: præcepto autem peremit
(h) draconem desertorem. Ecce 14
hæ partes viæ ejus: & (i) super
stillam verbi audiemus in eo:
virtutem autem tonitrui ejus
quis scivit quando faciet?

MS. A. (θ ὑποκάτωθεν (ι) Σκέπων (κ) * ἐπεστάθησαν, (λ) Ἰσχύϊ μὲν (μ) ἔστρωσεν (ν) Κλεῖθρά τε

CAP. XXVII. כז

Vivens : dixit & , suam parabolam assumere Ijob addidit Et
1 2 וַיֹּסֶף אִיּוֹב שְׂאֵת מְשָׁלוֹ וַיֹּאמַר׃ חַי־
affecit amaritudine *Saddai* & : meum judicium fecit removere Deus
אֵל הֵסִיר מִשְׁפָּטִי וְשַׁדַּי הֵמַר
Dei spiritus & : me in mea *mens* ,tempore omni Quia.meam animam
3 נַפְשִׁי׃ כִּי־כָל־עוֹד נִשְׁמָתִי בִי וְרוּחַ אֱלוֹהַּ
mea lingua & :iniquitatem mea labia loquentur Si *.meo naso* in
4 בְּאַפִּי׃ אִם־תְּדַבֵּרְנָה שְׂפָתַי עַוְלָה וּלְשׁוֹנִי
vos justificem *si* mihi Absit .dolum fuerit *molita* si
5 אִם־יֶהְגֶּה רְמִיָּה׃ חָלִילָה לִּי אִם־אַצְדִּיק אֶתְכֶם
mea justitia In .me à meam perfectionem removebo non :obiero quousq;
6 עַד־אֶגְוָע לֹא־אָסִיר תֻּמָּתִי מִמֶּנִּי׃ בְּצִדְקָתִי
meum cor afficiet probris non : eam dimittam non & , tenui
הֶחֱזַקְתִּי וְלֹא אַרְפֶּהָ לֹא־יֶחֱרַף לְבָבִי
, *me in insurgens* & : meus inimicus impius ut Erit .meis diebus à
7 מִיָּמָי׃ יְהִי כְרָשָׁע אֹיְבִי וּמִתְקוֹמְמִי
evellat si , *corraserit cùm hypocritæ* spes quæ Nam .iniquus ut
8 כְעַוָּל׃ כִּי מַה־תִּקְוַת חָנֵף כִּי יִבְצָע כִּי יֵשֶׁל
venerit cum :Deus audiet ejus clamorē Nunquid?ejus animam Deus
9 אֱלוֹהַּ נַפְשׁוֹ׃ הֲצַעֲקָתוֹ יִשְׁמַע אֵל כִּי־תָבוֹא
invocabit ?delectabitur omnipotente super *Si* ?tribulatio eum super
10 עָלָיו צָרָה׃ אִם־עַל־שַׁדַּי יִתְעַנָּג יִקְרָא
quod : Dei *manu in* vos Docebo ? tempore omni in Deum
11 אֱלוֹהַּ בְּכָל־עֵת׃ אוֹרֶה אֶתְכֶם בְּיַד־אֵל אֲשֶׁר
vos omnes vos Ecce .abscondam non omnipotente cum
12 עִם־שַׁדַּי לֹא אֲכַחֵד׃ הֵן־אַתֶּם כֻּלְּכֶם
pars Hæc *? evanescetis* vanitate quid propter & , vidistis
13 חֲזִיתֶם וְלָמָּה־זֶּה הֶבֶל תֶּהְבָּלוּ׃ זֶה חֵלֶק־
omnipotente ab fortium hæreditas & : Deo cum impii hominis
אָדָם רָשָׁע עִם־אֵל וְנַחֲלַת עָרִיצִים מִשַּׁדַּי
ejus *germina* &:gladium *ipsum* in,eiꝰ filii fuerint multiplicati Si .accipient
14 יִקָּחוּ׃ אִם־יִרְבּוּ בָנָיו לְמוֹ־חָרֶב וְצֶאֱצָאָיו
: sepelientur morte in ejus Superstites .pane saturabuntur non
15 לֹא יִשְׂבְּעוּ־לָחֶם׃ שְׂרִידָיו בַּמָּוֶת יִקָּבֵרוּ
pulverem ut coacervaverit Si .flebunt non ejus viduæ &
16 וְאַלְמְנֹתָיו לֹא תִבְכֶּינָה׃ אִם־יִצְבֹּר כֶּעָפָר
justus & ,Præparabit .vestimentum præparaverit lutū sicut &,argentum
17 כָּסֶף וְכַחֹמֶר יָכִין מַלְבּוּשׁ׃ יָכִין וְצַדִּיק
:suam domū tinea sicut Ædificavit *.partietur* innocens argentū & :se induet
18 יִלְבָּשׁ וְכֶסֶף נָקִי יַחֲלֹק׃ בָּנָה כָעָשׁ בֵּיתוֹ
.custos fecit *tugurium* sicut &
וּכְסֻכָּה עָשָׂה נֹצֵר׃

CAP. XXVII.

1 ADdidit quoque Job, assumens
parabolam suam, & dixit;
2 Vivit Deus, qui abstulit
judicium meum, & Omnipotens,
qui ad amaritudinem adduxit
3 animam meam. Quia
donec superest halitus in me,
& spiritꝰ Dei in naribus meis,
4 Non loquentur labia mea iniquitatem,
nec lingua mea meditabitur
5 mendacium. Absit
à me ut justos vos esse judicem:
donec deficiam, non recedam
6 ab innocentia mea. Justificationem
meam, quam cœpi
tenere, non deseram: neque
enim reprehendit me cor
7 meum in omni vita mea. Sit
ut impius, inimicus meus: &
adversarius meus quasi iniquus.
8 Quæ est enim spes hypocritæ
si avarè rapiat, & non
9 liberet Deus animā ejus? Numquid
Deus audiet clamorem ejus,
cùm venerit super eum angustia?
10 An poterit in Omnipotente
delectari, & invocare
11 Deum omni tempore? Docebo
vos per manum Dei quæ Omnipotens
habeat, nec abscondam.
12 Ecce, vos omnes nôstis,
& quid sine causa vana loquimini?
13 Hæc est pars hominis
impii apud Deum, & hæreditas
violentorum, quam ab Omnipotente
14 suscipient. Si multiplicati
fuerint filii ejus, in gladio
erunt, & nepotes ejus non
15 saturabuntur pane. Qui reliqui
fuerint ex eo, sepelientur in interitu,
& viduæ illiꝰ non plorabunt.
16 Si comportaverit quasi
terram argentum, & sicut lutum
præparaverit vestimenta:
17 Præparabit quidem, sed justus
vestietur illis: & argentum innocens
18 dividet. Ædificavit
sicut tinea domū suam, & sicut
custos fecit umbraculum.

ΚΕΦ. κζʹ.

1 † Ἔτι δὲ προσθεὶς Ἰὼβ (α) εἶπε τῷ προοιμίῳ·
2 † (β) Ζῇ ὁ θεὸς, ὃς (γ) οὕτω με κέκρικε,
† καὶ ὁ παντοκράτωρ (δ) ὁ πικράνας
3 μου τὴν ψυχήν· † Εἰ μὴν ἔτι τῆς πνοῆς
μου ἐνούσης (ε), † πνεῦμα δὲ θεῖον (ζ) τὸ περιόν
4 μοι ἐν ῥινὶ, † Μὴ λαλήσειν τὰ χείλη μου
ἄνομα, † οὐδὲ ἡ ψυχή μου μελετήσει (η)
5 ἄδικα. † Μή μοι εἴη δικαίους ὑμᾶς ἀποφῆναι
ἕως ἂν ἀποθάνω, † οὐ γὰρ ἀπαλλάξω
6 (*) μου τὴν ἀκακίαν μου. † Δικαιοσύνῃ δὲ
(θ) προσέχων οὐ μὴν προῶμαι, † οὐ γὰρ
7 σύνοιδα ἐμαυτῷ (ι) ἄτοπα πράξας. † Οὐ
μὴν δὲ (ⲱ) ἀλλὰ εἴησαν οἱ ἐχθροί μου ὥσπερ ἡ
καταστροφὴ τῶν ἀσεβῶν, † καὶ οἱ (κ) ἐπ᾽ ἐμὲ
ἐπανιστάμενοι, ὥσπερ ἡ ἀπώλεια τῶν παρανόμων.
8 † (λ) Καὶ τίς γάρ ἐστιν ἐλπὶς ἀσεβεῖ,
ὅτι ἐπέχει; † (μ) πεποιθὼς ἐπὶ
9 κύριον ἆρα σωθήσεται; † Ἢ τὴν δέησιν
αὐτοῦ (ν) εἰσακούσεται ὁ θεός; † ἢ ἐπελθούσης
10 αὐτῷ ἀνάγκης (ξ) Μὴ ἔχει τινὰ
παῤῥησίαν ἔναντι αὐτοῦ; † ἢ ὡς ἐπικαλεσαμένου
11 αὐτοῦ εἰσακούσεται αὐτοῦ; † Ἀλλὰ
δὴ ἀναγγελῶ ὑμῖν τί ἐστιν ἐν χειρὶ κυρίου,
† ἅ ἐστι (ο) παρὰ παντοκράτορι, οὐ
12 ψεύσομαι. † (π) Ἰδοὺ πάντες οἴδατε,
13 † ὅτι κενὰ κενοῖς ἐπιβάλλετε. † Αὕτη ἡ
μερὶς ἀνθρώπου ἀσεβοῦς παρὰ κυρίου, † (ρ) κτῆμα
δὲ δυναστῶν ἐλεύσεται παρὰ παντοκράτορος
14 ἐπ᾽ αὐτούς. † (σ) Ἐὰν δὲ πολλοὶ γένωνται
οἱ υἱοὶ (τ) αὐτῶν, εἰς σφαγὴν ἔσονται·
† ἐὰν δὲ καὶ ἀνδρωθῶσι, (*) προσαιτήσουσιν.
15 † Οἱ δὲ περιόντες (υ) αὐτοῦ ἐν θανάτῳ τελευτήσουσι,
† (φ) χήρας δὲ αὐτῶν οὐδεὶς ἐλεήσει.
16 † Ἐὰν συναγάγῃ ὥσπερ γῆν
ἀργύριον, † ἴσα δὲ πηλῷ (χ) ἑτοιμάσῃ
17 χρυσίον, † Ταῦτα πάντα δίκαιοι περιποιήσονται,
† τὰ δὲ χρήματα αὐτοῦ ἀληθινοὶ
18 καθέξουσιν. † Ἀπέβη δὲ ὁ οἶκος αὐτοῦ
(ψ) ὥσπερ σῆτες, † καὶ ὥσπερ ἀράχνη.

CAP. XXVII.

ADhuc autem (a) adjiciens 1
Job dixit proœmio: Vivit Deus, 2
qui sic (b) me judicavit, & Omnipotens,
qui afficit amaritudine
animam meam. Siquidem 3
adhuc halitu meo immanente, &
spiritus divinus, (c) qui circa
me est in naribus, Labia mea non 4
loquentur iniqua; neque anima
mea meditabitur injusta. Absit à 5
me justos vos pronuntiare, donec
moriar: non enim separabo (d)
à me innocentiam meam. Justitiæ 6
autem inhærens, non deseram:
nec enim conscius sum
mihi commisisse absurda. Ve- 7
runtamen sint inimici mei,
sicut subversio impiorum: *& qui*
super me insurgunt, sicut perdi-
tio iniquorum. *Etenim quæ spes* 8
est impio, quia (e) expectat;
(f) confidensne super Dominum
salvabitur? Aut deprecationem 9
illius exaudiet Deus? (g) aut
si evenerit ei necessitas; Habet- 10
ne fiduciam coram eo? aut tanquam
si invocaverit eum, exaudiet
eum? Quapropter annun- 11
tiabo vobis, quid sit in manu Domini,
quæ sint apud Omnipotentem:
non mentiar. Ecce omnes 12
nôstis, quia vana (h) vanis adjicitis.
Hec est pars hominis 13
impii à Domino: (i) possessio
verò potentium veniet ab Omnipotente
super eos. Quòd si mul- 14
ti fuerint filii (k) eorum, in occisionem
erunt: si autem (l) &
viri facti fuerint, mendicabunt.
Et qui circa eum sunt, in mor- 15
te morientur: & viduis eorum
nemo miserebitur. Si collegerit, 16
ut terram, argentum, & æque
ac lutum, paraverit aurum, Hæc 17
omnia justi vendicabunt, & pecunias
ejus veraces obtinebunt.
Evadet autem domus ejus, sicut 18
tineæ, & sicut aranea.

MS. A. (α) τῷ προοιμίῳ εἶπεν· (β) Ζῇ κύριος, ὅς (γ) οὕτως (δ) ὁ πικράνας (ε) ἐν ἐμοί, (ζ) ἔτι περιὸν ἐν * ῥήμασίν μου, Οὐ μὴ λαλήσει τὸ στόμα μου ἄδικα, οὐδὲ ἡ (η) ἄνομα. (*) τὴν (θ) προσέχων οὐ μὴ (ι) ἄτοπον (ⲱ) ἀλλ᾽ (κ) ἐπανιστάμενοί μοι. (λ) Ναὶ μὴν τίς γάρ ἐστιν ἐπ᾽ ἐλπίς (μ) Μὴ πεποιθὼς ἐπὶ κύριον εἰ ἄρα σωθήσεται; (ν) ἀκούσῃ ὁ κύριος; ἐπελθούσης δὲ αὐτῷ (ξ) Μὴ ἔχει παῤῥησίαν ἐναντίον αὐτοῦ; ἢ πῶς (ο) παρὰ τῷ παντοκράτορι, (π) Ἰδοὺ δὴ πάντες ὑμεῖς ἑωράκατε, διατί δὲ κενὰ κενοῖς ἐπιβάλλεσθε; (ρ) ὀργὴ δὲ δυναστῶν ἐξελεύσεται (σ) Ἐὰν πολλοὶ (τ) αὐτοῦ, (*) προσαιτήσωσιν. (υ) αὐτῶν κακῷ θανάτῳ τελευτήσωσιν, (φ) καὶ χήρας αὐτῶν (χ) χρυσίον ἑτοιμάσῃ, (ψ) ὥσπερ σητὸς, καὶ ὥσπερ ἀράχνη ὁ πλοῦτος αὐτοῦ. Πλούσιος κοιμηθεὶς οὐ προσθήσει,

תרגום Targum.

8 9 ייר מי מטרא בעננוי ולא אתבזע עננא תחותוי : מאחד באמטתא דמן כורסיה מן בגלל דלא יחמוניה מלאכיא פרס היך פרגודא עלוי עננא
10 11 12 קריה : גזר למשרי רקיע על אנפי מיא עד סוף נהורא עם חשוכא : עמודין דשמיא מזדעזעין ורתתין מן מזופיתיה : בחיליה גזר ימא ובסוכלתניה
13 14 חא גבריא : ברוח פומיה אפי שמיא אשתבהרו ברת ידיה לויתן דמתיל לחויא טריק : הא אלין סיפי אורחתוי ומה די אתמצי מן קצת
לתיה נשמענא מניה ורכפת גבורתוי מן יתבין :

כז

1 2 אוסיף איוב למטל מתליה ואמר : קים אלהא אעדי הלכת דיני ושדי אמרר נפשי : ארום פסק חוב נשמתי במימרי ורוחא דאלהא בנחירי :
3 4 5 לא ממללן ספותי שקרא ולישני אין מרגן נכלא : חס לי אין אזכי יתכון עד דאתנגיד לא אעדי שלמותי מני : בזכותי תקיפית ולא אשבקנה לא
6 7 8 יחסד לבבי מן יומי : יהי היך חייבא בעל דבבי וקאם עלוי היך רשיעא : ארום מן סבר דילטור ארום יכנוש ממון דשקר ארום ינחר אלהא נפשיה :
10 11 אשר הקבלתיה וקבל אלהא ארום תיתי עלוי עקא : אין על שדי יתפנק יהוי קרי אלהא בכל עדן : אליף יתכון בנבואתא אלהא די עם שדי לא
12 13 14 אכסי : הא אתון כולכון חמיתון ולמא דין הבלא תהבלון : דין חולק בר נש חייבא מלות אלהא ועדב תקיפין משדי יקבלון פירעניתהון : אין
15 16 יסגון בנוי מטול דקטלין בחרבא ובני בנוי לא יסבעון לחמא : משיזבוי במותא יהון קבירין וארמלתוי לא תבכין : אין יכנוש היך עפרא סימא
17 18 היך טינא יתקן לבושא : יתקן וצדיקא יהי לביש וסימא זכי יפליג : בנה היך רקבוביתא ביתיה ואיך מטללתא דעביד נטר פרי :

Verſio SYRIACA.

8 * ܕܨܪܪ ܡܝܐ ܒܥܢܢܘܗܝ. ܘܠܐ ܐܬܦܪܥܘ ܥܢܢܐ ܬܚܬܝܗܘܢ. * ܐܚܝܕ ܦܪܨܘܦܐ ܕܟܤܝܐ. ܘܦܪܤ ܥܠܘܗܝ
9 ܥܢܢܐ. * ܚܘܓܐ ܚܓ ܥܠ ܐܦܝ ܡܝܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܫܠܡ ܢܘܗܪܐ ܥܡ ܚܫܘܟܐ. * ܥܡܘܕܝ ܫܡܝܐ ܐܬܕܠܚܘ
10 ܘܐܬܡܗܝܘ ܡܢ ܟܐܬܗ. * ܒܚܝܠܗ ܟܐܐ ܝܡܐ: ܘܒܚܟܡܬܗ ܡܚܐ ܤܓܝܐܐ. * ܒܪܘܚܗ ܫܡܝܐ ܫܦܪ:
11 ܘܩܛܠܬ ܐܝܕܗ ܚܘܝܐ ܥܪܘܩܐ. * ܗܐ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܡܢ ܦܤܩܐ ܕܐܘܪܚܬܗ. ܘܡܢܘ ܡܠܬܐ ܒܝܫܬܐ
12 ܕܐܫܬܡܥܬ ܡܢܗ. ܘܤܘܓܐܐ ܕܓܢܒܪܘܬܗ ܡܢܘ ܕܡܤܬܟܠ.
13
14 * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܙ *

1 * ܘܐܘܤܦ ܐܝܘܒ ܠܡܬܠ ܡܬܠܗ ܘܐܡܪ. * ܚܝ ܗܘ ܐܠܗܐ ܕܥܩܒ ܕܝܢܝ. ܘܫܠܝܛܐ ܕܐܡܪܪ ܢܦܫܝ. ܘܐܚܕܗ ܒܝ
2 * ܘܪܘܚܗ ܕܐܠܗܐ ܒܢܚܝܪܝ. * ܕܠܐ ܢܡܠܠܢ ܤܦܘܬܝ ܥܘܠܐ: ܘܠܫܢܝ ܠܐ ܢܪܢܐ ܢܟܠܐ. * ܚܤ ܠܝ. ܥܕܡܐ
3 ܕܐܡܘܬ. ܠܐ ܬܥܒܪ ܬܡܝܡܘܬܝ ܡܢܝ. * ܘܒܙܕܝܩܘܬܝ ܐܬܚܝܕ. ܘܠܐ ܐܪܦܝܗ. ܘܠܐ ܟܪܐ ܠܝ ܠܒܝ ܡܢ
4 ܝܘܡܝ. * ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܪܫܝܥܐ ܒܥܠܕܒܒܝ. ܘܤܢܐܝ ܐܝܟ ܥܘܠܐ. * ܡܢܘ ܤܒܪܗ ܕܚܢܦܐ ܕܟܢܫ ܢܟܤܐ. ܟܕ ܢܫܩܘܠ
5 ܢܦܫܗ ܡܢܗ ܐܠܗܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥ ܐܠܗܐ ܩܠܐ ܕܨܠܘܬܗ. ܟܕ ܐܬܬ ܥܠܘܗܝ ܐܘܠܨܢܐ. * ܐܢ
6 ܥܠ ܫܠܝܛܐ ܡܬܬܟܠ. ܘܩܪܐ ܠܐܠܗܐ. ܒܟܠܙܒܢ ܢܥܢܝܘܗܝ ܐܠܗܐ ܘܢܫܡܥܝܘܗܝ. * ܠܟܘܢ ܐܢܐ
7 ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܒܐܝܕܐ ܕܐܠܗܐ. ܕܥܒܕܝܟܘܢ ܠܘܬ ܫܠܝܛܐ ܠܐ ܡܛܫܝܢ. * ܗܐ ܐܢܬܘܢ ܟܠܟܘܢ ܚܙܝܬܘܢ. ܘܠܡܢܐ
8 ܤܪܝܩܐܝܬ ܡܬܪܘܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ. * ܗܢܘ ܡܢܬܐ ܕܓܒܪܐ ܪܫܝܥܐ ܡܢ ܠܘܬ ܐܠܗܐ. ܘܝܪܬܘܬܐ
9 ܕܥܠܘܒܐ ܕܡܢ ܫܠܝܛܐ ܢܤܒܘܢ. * ܐܢ ܢܤܓܘܢ ܒܢܘܗܝ. ܠܤܝܦܐ. ܘܫܪܟܢܝܗܘܢ ܠܐ ܢܤܒܥܘܢ
10 ܠܚܡܐ * ܘܫܪܟܢܝܗܘܢ ܒܡܘܬܐ ܢܬܩܒܪܘܢ. ܘܐܪܡܠܬܗܘܢ ܠܐ ܢܒܟܝܢ. * ܐܢ ܢܟܢܫܘܢ ܤܐܡܐ ܐܝܟ ܥܦܪܐ.
11 ܘܐܝܟ ܛܝܢܐ ܢܛܝܒܘܢ ܠܒܘܫܐ. * ܗܢܘܢ ܢܛܝܒܘܢ. ܘܙܕܝܩܐ ܢܠܒܫ. ܘܤܐܡܗܘܢ ܢܦܠܓ. * ܒܢܐ
12 ܐܝܟ ܥܦܘܫܐ ܒܝܬܗ. ܘܐܝܟ ܡܛܠܬܐ ܕܥܒܕ ܢܛܘܪܐ.
13
14
15
16
17
18

Verſio ARABICA.

8 * ضم المياه في سحاباته ولم تنخرق السحابات تحتها * أخذ بأوجه الغطاء فبسط فوقه السحاب * رسم
9 البسيط على وجه الماء حتى كمل الدور مع الظلمة * أعمدة السماء ترعد ويتحيرون برجزه * من قوته
10 يهيج البحر وبحكمته يحيي كثيرين * وبروحه يدبر السماء ويده قتلت الحية التي هربت * أليس هذه
11 كلها من أقسام طرائقه * إنما القول السوء الذي سمع عليه وكثرة جبروته من الذي يفهم *
12
13
14

* الفصل السابع والعشرون *

1 * وأعاد أيوب ليمثل مثله ويقول * حي هو الله الذي عوق قضائي والقوي الذي مرر نفسي
2 وحبسها في * وروح الله في منخري * إن تكلمت شفتاي إثما ولساني إن تكلم غشا * حاش لي حتى
3 أن أموت لا يذهب صلاحي مني * وفي بري أثبت ولا أرفضه ولم يفسد على قلبي من أيامي *
4 * ويكون مثل المنافق عدوي ومبغضي مثل الأثيم * ماذا رجاء الحنيف الذي اقتنى العروض
5 في أوان يأخذ الله نفسه * من أجل أن الله لا يسمع صوت صلاته إذا ما جاء عليه البلاء * فإن
6 كان على العزيز يتكل ويدعو الله في كل حين فإن الله يسمعه ويجيبه * ولكم أنتم فإني أسلمكم
7 بيد الله فإن أعمالكم عنه لا تخفى * فإنكم كلكم قد رأيتم ولماذا تستكبرون باطلا * فإن هذه
8 قسمة الإنسان المنافق من عند الله ووراثة المسيئين التي من العزيز يقبلونها * إن يكثر أبناؤهم
9 فإنهم يقتلون * وذراريهم لا يشبعون خبزا * وبقيتهم بالموت يقبرون وأراملهم لم يبكون * وإن هم جمعوا
10 فضة مثل التراب ومثل الطين يعدون لباسا * فهم يعدون والصديق يلبسها * وفضتهم يقسمها
11 * إنه بنى مثل العنكبوت بيته * ومثل المظلة صنع ظلاله *
12
13
14
15
16
17
18

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

* Collegit aquas in nubibus 8
ſuis, nec diſruptæ ſunt
nubes ſub illis: Operuit 9
faciem tegminis, & extendit
ſuper illud nubes:
Deſignavit (d) æquor ſu- 10
per facie terræ, donec cõ-
pleta eſſet lux cum tene-
bris. Columnæ cœli con- 11
turbantur, et obſtupeſcunt
(e) in furore ejus. Præ 12
fortitudine ſua increpat
mare: & in ſapientia ſua
vivificat multos: Et ſpiri- 13
tu ſuo moderatur cœlum:
& manus ejus interfecit
ſerpentem qui fugit. (f) 14
Noune hæc omnia ſunt ex
particulis viarum ejus?
Quinam eſt ſermo malus
qui auditus de ipſo eſt?
& multitudinem fortitudinis
ejus quis eſt qui intelligat?

CAP. XXVII.

ET iteravit Job texere 1
proverbium ſuum, & dicere.
Vivus eſt Deus qui 2
(a) impedivit judicium
meum, & fortis qui amaricavit
animam meam,
concluſitque eam in me.
Dum ſpiritus Dei fuerit in 3
naribus meis, Non lo- 4
quentur labia mea impietatem,
& lingua mea non
proferet dolum. Abſit à 5
me. Quouſque moriar,
non abſcedet probitas mea
à me: Et in juſtitia mea 6
manebo, nec dimittam
eam: & non (b) corruptum
eſt ſuper me cor
meum à diebus meis. Siq; 7
tanquam impius, inimicus
meus: & oſor meus
velut ſceleſtus. Quænam 8
eſt ſpes perverſi poſſidentis
divitias, in tempore
quo ſumet Deus animam
ejus? Nam Deus non au- 9
diet vocem orationis illius,
cùm venerint ſuper
ipſum tribulatione. Quòd 10
ſi in fortiſſimo confidat,
& invocabit Deum in
omni momento, certè Deus
audiet, & reſpondebit
illi. Vos autem ipſos tra- 11
do in manum Dei quoniam
opera veſtra ipſum
non latent: (c) Quoniam 12
vos omnes jam vidiſtis;
et cur ſuperbitis fruſtrà?
(d) Nam hæc eſt pars 13
impii à Deo, & hæreditas
nocentium, quam à
potentiſſimo accipient. Si 14
multiplicati fuerint filii
eorum (e) interficientur;
& progenies eorum non
ſaturabuntur pane: Et re- 15
ſidui eorum in morte ſepelientur,
& viduæ eorum
non plorabunt. Et ſi 16
ipſi collegerint argentum
quaſi pulverem, & veluti
lutum præparaverint indumenta;
Ipſi præpara- 17
bunt, et juſtus induetur illis,
& argentum eorũ dividet:
Quia ipſe ædifi- 18
cavit uti aranea domum
ſuam, & velut umbraculum
fecit tectum ſuum.

INTERP. SYRIACA.
(d) circulum ſuper faciem aquarum, (e) ab increpatione ipſius. (f) Ecce hæc Cap. xxvii. (a) ſupplantavit (b) doluit mihi cor à (c) Ecce (d) Ecce (e) ad gladium;

PARAPH CHALD. Verſio Latina.

Qui ligat aquas pluviæ in nubibus ſuis, & non rumpitur nubes ſub ſe. Qui tenet caliginem ſolii ſui, ut non videant illum angeli: extendit illud ſicut velum ſuper 8 9
nubes gloriæ ſuæ. Decrevit, & dixit collocari firmamentum ſuper faciem aquarum, uſq; ad finem luminis cum tenebris: Columnæ cœli commoventur & contremiſcunt 10 11
ab increpatione ejus. In virtute ſua diviſit mare, & in prudentia ſua percuſſit *fortes* In ſpiritu oris ejus facies cœli lucidæ ſunt: creavit manus ejus Leviathan, 12 13
qui comparatus eſt ſerpenti mordenti. Ecce hæ ſunt ſummitates viarum ejus, & quod expreſſum eſt ex parte ſermonis ejus audivimus ab eo, & tonitru fortitudinis 14
ejus quis intelliget?

CAP. XXVII.

ET addidit Job aſſumens parabolam ſuam & ait: Vivus eſt Deus qui abſtulit regulam judicii mei: & omnipotens ad amaritudinem adduxit animam meam. Quoni- 1 2
am *deficit iterum* halitus meus in me, & ſpiritus Dei in naribus meis. Num loquentur labia mea mendacium, & lingua mea meditabitur dolum? Abſit à me ut 3 4
juſtificem vos donec deficiam: non auferam perfectionem meam à me. Juſtificationem meam apprehendam, & non dimittam eam: non *probro afficiet* cor meum à die- 5 6
bus meis. Sit ſicut peccator inimicus meus, & qui conſurgit adverſus me, ſicut impius. Quid enim expectat delator, quia congregat mammonam iniquitatis, quando 7 8
eradicat Deus animam ejus? Nunquid clamorem ejus audiet Deus, cùm venerit ſuper eum anguſtia? Nunquid in omnipotente delectabitur, aut clamabit ad Deum in 9 10
omni tempore? Docebo vos per prophetiam Dei, quæ apud omnipotentem non abſcondam. Ecce vos omnes vidiſtis, & quare vana & mania loquimini? Hæc eſt 11 12
pars filii hominis peccatoris à Deo, & ſors fortium qui recipiunt ab omnipotente retributionem ſuam. Si multiplicati fuerint filii ejus, his qui occidunt gladio erunt; & 13 14
filii filiorum ſuorum non ſaturabuntur pane. Qui evaſerint ex eo, in peſte ſepelientur, & viduæ ejus non plorabunt. Si congregaverit quaſi pulverem argentum, & quaſi 15 16
lutum præparaverit veſtimenta: Præparavit enim, ſed juſtus veſtietur; & argentum innocens dividet. Ædificavit ſicut tinea domum ſuam, & ſicut umbraculum quod 17 18
fecit cuſtos pomorum.

איוב : כח

, aperuit ſuos oculos : congregabitur non & , dormiet Dives
19 עשיר ישכב ולא יאסף עיניו פקח
eum eſt furatus ,nox : terrores aquæ ſicut eum Apprehendent .*ipſe* non &
20 ואיננו : תשיגהו כמים בלהות לילה גנבתו
eum commovebit turbine & : ibit & ,Eurus eum Tollet .turbo
21 סופה : ישאהו קדים וילך וישערהו
fugiendo ejus *manu* de ; parcet non & ,eũ ſuper projiciet Et .ſuo loco de
22 ממקומו : וישלך עליו ולא יחמל מידו ברוח
eum ſuper ſibilabit & : ſuis *palmis* eum ſuper Plaudet .fugiet
23 יברח : ישפק עלימו כפימו וישרק עליו
.ſuo loco de
ממקומו :

CAP. XXVIII. כח

.fundent , auro locus & : exitus argento eſt Quoniam
1 כי יש לכסף מוצא ומקום לזהב יזקו :
2 Finem .æs *fuſus lapis* & : tolletur *pulvere è* Ferrum
3 ברזל מעפר יקח ואבן יצוק נחושה : קץ
lapidem : *inquirens* ipſe , *fini* omni & , *tenebræ* poſuit
שם לחשך ולכל־תכלית הוא חוקר אבן
,*incola cum à torrens Erupit* .mortis umbram & , caliginis
4 אפל וצלמות : פרץ נחל מעם־גר
.ſunt motæ , homine præ ſunt elevatæ : pede à *oblivioni traditæ*
הנשכחים מני־רגל דלו מאנוש נעו :
ut eſt *verſus ea ſubter* & : panis egrediebatur *ea ex* Terra
5 ארץ ממנה יצא־לחם ותחתיה נהפך כמו־
.ei auri *pulveres* & : ejus lapides ſapphiri Locus .ignis
6 אש : מקום־ספיר אבניה ועפרת זהב לו :
oculus eam vidit nec : avis *eam* cognovit non Semitam
7 נתיב לא־ידעו עיט ולא שזפתו עין
tranſiit non : *ſuperbiæ filii* eam calcaverunt Non .*vulturis*
8 איה : לא הדריכהו בני־שחץ לא עדה
ſubvertit : ſuam manum miſit ſilicem In .leo eam juxta
9 עליו שחל : בחלמיש שלח ידו הפך
omne & : fecit erumpere rivos *rupibus In* .montes radice à
10 משרש הרים : בצורות יארים בקע וכל־
abſconditum & : *faſciavit* flumina *fletu* A .ejus oculus vidit precioſum
11 יקר ראתה עינו : מבכי נהרות חבש ותעלמה
hic ubi Et ? invenietur unde ſapientia Et .lucem *educet*
12 יצא אור : והחכמה מאין תמצא ואי זה
non & : ejus *ordinem* homo Neſcivit ? intelligentiæ locus
13 מקום בינה : לא־ידע אנוש ערכה ולא
: *ipſa* me in Non , dixit Vorago .viventium terra in invenietur
14 תמצא בארץ החיים : תהום אמר לא בי־היא
purum aurum dabitur Non .*me apud* Non , dixit mare &
15 וים אמר אין עמדי : לא־יתן סגור
Non .ejus precium argento ponderabitur non & : ea pro
16 תחתיה ולא ישקל כסף מחירה : לא
.ſapphiro & ,precioſo onyche cum : Ophir auro cum æſtimabitur
תסלה בכתם אופיר בשהם יקר וספיר :
vas ejus permutatio nec : *cryſtallus* & ,aurum eam adæquabit Non
17 לא־יערכנה זהב וזכוכית ותמורתה כלי־
ſapientiæ attractio & : commemorabitur non *unio* & , Coralia .*obrizi*
18 פז : ראמות וגביש לא יזכר ומשך חכמה
auro cum : Æthiopiæ ſmaragdus eam adæquabit Non .margaritis *præ*
19 מפנינים : לא־יערכנה פטדת־כוש בכתם
hic ubi & ? veniet unde ſapientia Et .æſtimabitur non mundo
20 טהור לא תסלה : והחכמה מאין תבוא ואי זה
: viventis omnis oculis ab ſe abſcondit Et ? intelligentiæ locus
21 מקום בינה : ונעלמה מעיני כל־חי
.eſt occultata cœli volucri à &
ומעוף השמים נסתרה :

Verſio VULG. LAT.

19 Dives cùm dormierit, nihil ſecum auferet : aperiet oculos
20 ſuos, & nihil inveniet. Apprehendet eum quaſi aqua inopia,
nocte opprimet eum tempe-
21 ſtas. Tollet eum ventus urens, & auferet, & velut turbo ra-
22 piet eum de loco ſuo. Et mittet ſuper eum, & non parcet:
de manu ejus fugiens fugiet.
23 Stringet ſuper eum man' ſuas, & ſibilabit ſuper illum, intuens locum ejus.

CAP. XXVIII.

1 HAbet argentum, venarum ſuarum principia: & auro locus
2 eſt, in quo conflatur. Ferrum de terra tollitur : & lapis ſolutus calore, in æs vertitur.
3 Tempus poſuit tenebris, & univerſorum finem ipſe conſiderat, lapidem quoque caliginis,
4 & umbram mortis. Dividit torrens à populo peregrinante, eos quos oblitus eſt pes e-
5 gentis hominis, & invios. Terra, de qua oriebatur panis in
6 loco ſuo, igni ſubverſa eſt. Locus ſapphiri lapides ejus, &
7 glebæ illius aurum. Semitam ignoravit avis, nec intuitus eſt
8 eam oculus vulturis. Non calcaverunt eam filii inſtitorum, nec pertranſivit per eam leæ-
9 na. Ad ſilicem extendit manum ſuam, ſubvertit à radici-
10 bus montes. In petris rivos excidit, & omne pretioſum
11 vidit oculus ejus. Profunda quoque fluviorum ſcrutat' eſt, & abſcondita in lucem produ-
12 xit. Sapientia verò ubi invenitur ? & quis eſt locus intel-
13 ligentiæ ? Neſcit homo pretium ejus, nec invenitur in ter-
14 ra ſuaviter viventium. Abyſſus dicit, Non eſt in me : & mare loquitur, Non eſt me-
15 cum. Non dabitur aurum obrizum pro ea, nec appendetur argentum in commutatio-
16 ne ejus. Non conferetur tinctis Indiæ coloribus, nec lapidi ſardonycho pretioſiſſimo,
17 vel ſapphiro. Non adæquabitur ei aurum vel vitrum, nec commutabuntur pro ea vaſa
18 auri : Excelſa & eminentia non memorabuntur comparatione ejus : trahitur autem ſa-
19 pientia de occultis. Non adæquabitur ei topazius de Æthiopia, nec tincturæ mundiſſimæ
20 componetur. Undè ergò ſapientia venit ? & quis eſt lo-
21 cus intelligentiæ ? Abſcondita eſt ab oculis omnium viventium, volucres quoque cœli latet.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 † Πλούσιος κοιμηθήσεται καὶ οὐ προσθήσει,
† (ʺ) ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ διήνοιξε καὶ οὐκ ἔστι.
20 † (ω) Συνήντησαν αὐτῷ ὥσπερ ὕδωρ αἱ
ὀδύναι, † νυκτὶ δὲ (α) ὑφείλετο αὐτὸν γνόφος.
21 † (β) Ἀναλήψεται δὲ αὐτὸν καύσων
καὶ ἀπελεύσεται, † καὶ λικμήσει αὐτὸν ἐκ
22 τοῦ τόπου αὐτοῦ. (γ) Καὶ ἐπιρρίψει ἐπ'
αὐτὸν καὶ οὐ φείσεται, † ἐκ χειρὸς αὐτοῦ φυγῇ
23 φεύξεται. † Κροτήσει (δ) ἐπ' αὐτοὺς
χεῖρας αὐτοῦ, † καὶ συριεῖ αὐτὸν ἐκ τοῦ
τόπου αὐτοῦ.

MS. A. (ʺ) ὀφθαλμὸς (ω) Κοιμηθέντι συναντήσονται αὐτῷ ὥσπερ ὕδωρ ὀδύναι, (α) ὑφείλατο (β) Ἀναλήμψεται αὐτὸν (γ) Καὶ ἀπορείψει αὐτὸν (δ) ἐπ' αὐτὸν χεῖρας αὐτοῦ,

Dives dormiet, & non adjiciet: oculos ſuos aperiet, & non eſt. Occurrerunt ei, ſicut aqua, dolores: nocte autem ſuſtulit eum caligo. Tollet autem eum æſtus, & abibit, & ventilabit eum de loco ſuo: Et projiciet ſuper eum, & non parcet: de manu ejus fugâ fugiet. Plaudet ſuper eos manibus ſuis, & exſibilabit eum de loco ſuo.

ΚΕΦ. κη'.

1 † Ἔστι γὰρ ἀργυρίῳ τόπος ὅθεν γίνεται,
† τόπος δὲ (α) χρυσίου ὅθεν διηθεῖται.
2 † Σίδηρος μὲν γὰρ ἐκ γῆς γίνεται, † χαλκὸς
3 δὲ ἴσα λίθῳ λατομεῖται. † Τάξιν ἔθετο
σκότει, † (β) καὶ πᾶν πέρας αὐτὸς ἐξακριβάζεται,
† λίθος σκοτία, καὶ σκιὰ
4 θανάτου. Διακοπὴ χειμάρρου ἀπὸ κονίας,
† οἱ δὲ ἐπιλανθανόμενοι (γ) ὁδὸν δικαίαν ἠσθένησαν,
5 ἐκ βροτῶν ἐσαλεύθησαν. † Γῆ,
ἐξ αὐτῆς ἐξελεύσεται ἄρτος, † ὑποκάτω
6 αὐτῆς ἐστράφη (δ) ὡσεὶ πῦρ. † Τόπος
σαπφείρου (ε) οἱ λίθοι αὐτῆς, † καὶ
7 χῶμα χρυσίον αὐτῷ. † Τρίβος, οὐκ ἔγνω
αὐτὴν (ζ) πετεινόν, † καὶ οὐ παρέβλεψεν
8 αὐτὴν ὀφθαλμὸς γυπός. † (η) Καὶ οὐκ
ἐπάτησαν αὐτὸν υἱοὶ ἀλαζόνων, † οὐ παρῆλθεν
9 ἐπ' αὐτῆς λέων. † Ἐν ἀκροτόμῳ
ἐξέτεινε χεῖρα αὐτοῦ, † κατέστρεψε δὲ ἐκ
10 ῥιζῶν ὄρη. † Δίνας δὲ ποταμῶν (θ) διέρρηξε,
† (ι) πᾶν δὲ ἔντιμον εἶδέ μου ὁ ὀφθαλμός.
11 † Βάθη δὲ ποταμῶν ἀνεκάλυψεν, † ἔδειξε
12 δὲ αὐτοῦ δύναμιν εἰς φῶς. † Ἡ δὲ σοφία
πόθεν εὑρέθη; † ποῖος δὲ τόπος (κ)
13 ἐστὶ τῆς ἐπιστήμης; † Οὐκ οἶδε βροτὸς ὁδὸν
αὐτῆς, † (λ) οὐδὲ μὴν εὑρέθη ἐν ἀνθρώποις.
14 † Ἄβυσσος εἶπεν, (μ) Οὐκ ἔνεστιν ἐν ἐμοί·
† καὶ ἡ θάλασσα εἶπεν, Οὐκ ἔνεστι μετ' ἐμοῦ.
15 † Οὐ δώσει συγκλεισμὸν ἀντ' αὐτῆς,
† καὶ οὐ σταθήσεται ἀργύριον ἀντάλλαγμα
16 αὐτῆς. † Καὶ οὐ (ν) συμβασταχθήσεται
χρυσίῳ Σωφίρ, † ἐν ὄνυχι τιμίῳ καὶ σαπφείρῳ.
17 † (ξ) Οὐκ ἰσωθήσεται αὐτῇ χρυσίον
καὶ ὕαλος, † καὶ τὸ ἄλλαγμα αὐτῆς
18 σκεύη χρυσᾶ. † Μετέωρα καὶ γαβὶς οὐ
μνησθήσεται, † καὶ ἕλκυσον σοφίαν ὑπὲρ
19 τὰ (ο) ἐσώτατα. Οὐκ ἰσωθήσεται αὐτῇ τοπάζιον
Αἰθιοπίας, † χρυσίῳ καθαρῷ οὐ συμβασταχθήσεται.
20 † (ʺ) Ἡ δὲ σοφία πόθεν εὑρέθη;
† ποῖος (π) δὲ τόπος ἐστὶ τῆς
21 συνέσεως; † Λέληθε πάντα ἄνθρωπον,
† καὶ ἀπὸ πετεινῶν τοῦ οὐρανοῦ (ρ) ἐκρύβη.

CAP. XXVIII.

Eſt enim argento locus, unde fit: locus autem auro, (a) unde percolatur. Etenim ferrum quidem de terra fit: æs autem ſimiliter ut lapis (b) cæditur. (c) Ordinem poſuit tenebris, & omnem finem ipſe (d) perſcrutatur: lapis (e) tenebræ, & umbra mortis. (f) Deciſio torrentis à pulvere: & qui obliviſcuntur viam juſtam, infirmati ſunt: ex (g) hominibus commoti ſunt. (h) Terra, ex ea egredietur panis: de ſubtus ea verſatum eſt, ſicut ignis. Locus ſapphiri lapides ejus, & agger aurum ei. Semita, quã non cognovit avis, nec vidit eam oculus vulturis. Et non calcaverunt (i) eum filii ſuperborum, non tranſiit ſuper eam leo. In duriſſimo lapide extendit manum ſuam, & evertit à radicibus montes. Et (k) gurgites fluminum dirupit: omne verò pretioſum vidit oculus meus. Et altitudines fluminum (l) revelavit: & oſtendit virtutem ſuam in lumine. Sapientia autem unde (m) inventa eſt? & qualis locus eſt ſcientiæ? Non novit homo (n) viam ejus: neque inventa eſt in hominibus. Abyſſus dixit, Non eſt in me: & mare dixit, Non eſt mecum. Non dabit (o) concluſuram pro ea, & non pendetur argentum commutatio ejus. Et non (p) conferetur auro (q) Sophir, in (r) onyche pretioſo, & ſapphiro. Non æquabitur ei aurum, et (ſ) vitrum, & (t) commutatio ejus vaſa aurea. (u) Sublimia, & Gabis non erunt in memoria: & (x) attrahe ſapientiam ſuper intima. Non æquabitur ei Topazium Æthiopiæ: auro puro non (y) conferetur. Sapientia autem unde inventa eſt? & qualis locus eſt intelligentiæ? Latuit (z) omnem hominem, & à volucribus cœli abſcondita eſt.

MS.A. (α) χρυσίῳ (β) καὶ καιρῶν πέρας αὐτοῦ ἐξακριβάζεται, (γ) ὁδοὺς δικαιοσύνης, ἠσθένησαν ἐκ βροτῶν. Γῆ, (δ) ὡς πῦρ. (ε) καὶ οἱ λίθοι (ζ) * πετεινῶν, (η) Οὐκ ἐπάτησαν αὐτὴν υἱοὶ * ἀλλαζόνων, οὐ γὰρ ἦλθεν (θ) ἔρρηξεν, (ι) πᾶν δὲ τίμιον ἴδεν αὐτοῦ ὁ ὀφθαλμός. Καὶ βάθη ποταμῶν (κ) ἐστὶν ἐπιστήμης; (λ) οὐδὲ μὴ (μ) Οὐκ ἔστιν ἐν ἐμοί· καὶ θάλασσα εἶπεν, Οὐκ ἔστιν (ν) συνβασταχθήσεται χρυσίῳ Ὠφείρ, (ξ) Καὶ οὐχ (ο) * ἔσωτα. (ʺ) Ἡ δὴ (π) δέ ἐστιν τόπος συνέσεως; (ρ) * οὐκ ἐκρύβη.

תרגום TARGUM.

19 20 עתיר ידמוך ולא יתכנש עינוי פקח וליתוי : תדבקניה היך מיא רגשתא ליליא טלטלניה זיקא : יטלניה רוח קדומא ויזיל ויעלעלניה מן אתריה : 21
22 שלוק עלוי ולא יחוס מן ידיה מערק יערוק : ישפוק עלויהון ידיהון וישרוק עלוי מן אתריה : 23

כח

1 2 ארום אית לסימא מפקנא ואתר לדהבא מסננין : פרזלא מעפרא יתנסיב ואבנא יתיך כרכומא : סוף שוי לחשוכא ולכל סופא הוא מפשפש אבנין 3
4 אפילמן דמתמן נפק חשוך וטולי מותא : תקף נחלא מן אתרא די מודלח מרוביא דמתנשין מן למעבר רגלא אזדקפו מבני נשא אטלטלו : ארעא 5
6 מנה נפק מזונא ולרע מנה גהנם דצנת תלגיה מתהפכא דכמת אשתא : וגנתא דעדן די אתר דשבזיזא אבניהא ועפרורין דדהבא ליה :
7 אורחא דלא חכמיה עופא ולא סקרתיה עין טרפיתא : תא שביל אילן חיי דלא חכמיה סמאל דפרח היך עופא ולא סקרתיה עינא דחוה : לא 8
9 שלו בה בני אריון לא זאר עלוי ליתא : תא לא הליכו בה בני אדם ולא סטא עלוהי חויא : בשמיר אושיט ידיה הפך מן עקריהון טוריא :
10 11 שינרין נהרין בזע וכל איקרא חמת עיניה : מן קלילי נהריא זרז ומחרבא דתעלומא יפיק נהורא : וחוכמתא מאן האן תשתכח והאן דין אתר ביונתא : 12
13 14 לא ידע בר נש עלויה ולא תשכח בארעא זרנין דמחטין בחייהון : תהומא אמר לא נבי היא וימא אמר לית בהדי : לא יתיהב דהב סנין חלופהא ולא יתקל 15
16 סימא פרוגה : לא תשתלחף בפטלין דמן אופיר בבירולין יקר ושבזיזא : לא יעלנה דהבא אספקלרא ופרוגה מאני אובריזין : תא לא יסדרנה 17
18 גבר עתיר בדהב וזכוכיתא לא יהב חלופה מאני דדהבא סנינא : סנדלכין ובירולין לא ידכר ונגדא דחוכמתא מן מרגלין : תא לית אפשר דתשתכח בקלותא
19 אלהין ביוקרא היך דהבא ומן דלא ינטרונה אולא ומתברא היך זגוגיתא ופרוג אגרה לעלמא דאתי מני פוזיא : לא יעלנה מרגלא ירקא דאתי מן כוש
20 בפטלין דכי לא תשתלחף : וחוכמתא מן האן תיתי והאן דין אתר ביונתא : וכסיא מחמיהון דכל חי ומעופא דשמיא מטמרא : 21

Verſio SYRIACA.

19 * ܡܛܠ ܕܥܬܝܪܐ ܢܕܡܟ. ܘܠܐ ܢܘܣܦ ܠܡܩܡ. ܦܬܚ ܥܝܢܗ ܘܠܝܬܘܗܝ. * ܢܕܪܟܘܢܝܗܝ ܕܘܘܢܐ ܐܝܟ
20 ܡܝܐ. ܘܐܝܟ ܦܘܪܚܬܐ ܕܦܪܚܐ. ܢܫܩܠܝܘܗܝ ܪܘܚܐ ܕܠܠܝܐ. * ܘܢܐܙܠ ܘܢܫܕܘܢܝܗܝ ܡܢ ܐܬܪܗ. * ܘܢܫܕܐ ܥܠܘܗܝ ܘܠܐ
21 ܢܚܘܣ. ܘܡܢ ܐܝܕܗ ܡܥܪܩ ܢܥܪܘܩ. * ܢܩܦ ܥܠܘܗܝ ܐܝܕܘܗܝ. ܘܢܫܪܘܩ ܥܠܘܗܝ
22 ܡܢ ܐܬܪܗ.
23 * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܚ *

1 * ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܠܣܐܡܐ ܡܦܩܐ. ܘܐܬܪܐ ܠܕܗܒܐ ܠܡܨܠܠܘ. * ܘܦܪܙܠܐ ܡܢ
2 ܥܦܪܐ ܡܬܢܣܒ. ܘܡܢ ܟܐܦܐ ܡܬܢܣܒ ܢܚܫܐ. * ܣܟܐ ܣܡ ܠܚܫܘܟܐ. ܘܠܟܠ ܫܘܠܡܐ ܗܘ ܒܨܐ. ܟܐܦܐ
3 ܕܥܡܛܢܐ. ܘܛܠܠܗ ܕܡܘܬܐ. * ܢܬܦܠܓ ܢܚܠܐ ܡܢ ܥܡܐ ܥܒܪܐ. ܕܐܬܛܥܝܘ ܡܢ ܪܓܠܐ. ܘܐܙܠܘ ܡܢ ܐܢܫܐ.
4 * ܐܪܥܐ ܕܡܢܗ̇ ܢܦܩ ܠܚܡܐ. ܘܬܚܬܝܗ̇ ܡܬܗܦܟܐ ܐܝܟ ܢܘܪܐ. * ܘܐܬܪܐ ܕܫܦܝܠܐ ܟܐܦܝܗ̇. ܘܥܦܪܐ
5 ܕܕܗܒܐ ܠܗ̇. * ܫܒܝܠܐ ܠܐ ܝܕܥܗ̇ ܦܪܚܬܐ. ܘܠܐ ܚܙܬܗ̇ ܥܝܢܐ ܕܕܝܬܐ. * ܘܠܐ ܕܫܘܗ̇ ܚܝܘܬܐ. ܘܠܐ ܥܒܪ ܥܠܝܗ̇ ܐܪܝܐ.
6 * ܒܛܪܢܐ ܐܘܫܛ ܐܝܕܗ. ܘܗܦܟ ܡܢ ܥܩܪܝܗܘܢ ܛܘܪܐ. * ܒܥܘܫܢܐ ܕܢܗܪܘܬܐ ܦܠܓ. ܘܟܠ ܪܡܬܐ
7 ܚܙܬ ܥܝܢܗ. * ܘܫܘܒܗܪܐ ܕܢܗܪܘܬܐ ܐܣܪ. ܘܡܢ ܛܡܝܪܬܐ ܢܦܩ ܢܘܗܪܐ. * ܘܚܟܡܬܐ ܡܢ ܐܝܟܐ ܡܫܬܟܚܐ. ܘܐܝܢܘ
8 ܐܬܪܐ ܕܣܘܟܠܗ̇. * ܠܐ ܝܕܥ ܒܪܢܫܐ ܣܝܡܬܗ̇. ܘܠܐ ܡܫܬܟܚܐ. ܐܠܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. * ܬܗܘܡܐ ܐܡܪ. ܠܐ ܗܘܬ ܒܝ. ܘܝܡܐ
9 ܐܡܪ: ܠܐ ܒܝ ܗܝ. * ܠܐ ܡܬܝܗܒ ܕܗܒܐ ܚܠܦܝܗ̇. ܘܠܐ ܡܬܡܢܐ ܟܣܦܐ ܒܕܡܝܗ̇. * ܠܐ ܡܬܚܠܦܐ ܒܕܗܒܐ ܕܐܘܦܝܪ
10 ܘܒܒܪܘܠܐ ܘܒܡܪܓܢܝܬܐ. * ܠܐ ܦܚܡ ܠܗ̇ ܕܗܒܐ. ܘܐܦ ܙܓܘܓܝܬܐ ܘܡܪܓܢܝܬܐ ܛܒܬܐ. ܘܐܒܢܐ ܣܘܡܩܬܐ
11 ܠܐ ܦܚܡܝܢ ܠܗ̇. * ܝܬܝܪܐ ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܟܐܦܐ ܝܩܝܪܬܐ. ܠܐ ܦܚܡ ܠܗ̇ ܫܝܪܝܐ ܝܩܝܪܐ. ܘܒܙܡܪܓܕܐ
12 ܘܒܡܪܓܢܝܬܐ ܠܐ ܡܙܕܒܢܐ. * ܝܬܝܪܐ ܗܝ ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܟܠ ܡܕܡ. ܘܡܕܡ ܠܐ ܦܚܡ ܠܗ̇. ܟܐܦܐ
13 ܕܟܘܫ ܘܟܐܦܐ ܕܝܩܢܬܐ ܠܐ ܦܚܡܢ ܠܗ̇. * ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܐܝܟܐ ܐܬܝܐ. ܘܐܝܢܐ ܐܬܪܐ ܕܣܘܟܠܗ̇. * ܘܟܣܝܐ ܡܢ
14 ܥܝܢܝ ܟܠ ܚܝ. ܘܡܢ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܡܛܫܝܐ ܗܝ.
15
16
17
18
19
20
21

Verſio ARABICA.

19 * من أجل الغنا يهجع ولا يعود أن يقوم • فتح عينا وليس هو * يدركه الاضطراب مثل الماء • ومثل
20 21 الفراش الطاير تحمله الريح بالليل ويذهب * ويبعدونه من مكانه * ويطرحه بغير رافة • ومن يدك هربا
22 23 يهرب * يصفق عليهم بيدك • ويصفر عليهم من مكانه •

الفصل الثامن والعشرون •

1 2 * من أجل انه يكون للفضة صفوا • وللذهب موضعا للسبك * والحديد من التراب يسبك • ومن
3 4 الحجارة يستفرغ النحاس * منتهى جعل للظلمة ولكل فناء • هو يعرف حجر القفر وظلال الموت * نعن
5 ورثوا من الشعب الزاني • الذين نسوا من المصانع ونحفوا من الناس * كشفوا الارض الذي منها
6 7 خرج المعاش • وتحتها ينقلب مثل النار * ومكان الجوهر حجارتها • ومصب الذهب في سبلها * لم تعرفها
8 9 الطاير • ولم تراها عين الحداة * ولم يدوسها الحيوان • ولم يجز عليها اسد * في حجر الصوان بسط
10 11 يدك • وقلب من اصولها الجبال * بعجلة الانهار يقسم • وكل فاير رات عينه * وعظمة الانهار حبسها • ومن
12 13 الظلام خرج النور * والحكمة في أي مكان توجد • وأي مكان فهمها * لا يعرف الانسان قدرها • ولا
14 15 توجد الا في ارض الحياة * القرار يقول لم يكون في • والبحر يقول ليست عندي * لا يعطي الذهب
16 17 بدلها • ولا تعد الفضة في ثمنها * ليس تبدل في ذهب اوفير وفي البلور والجوهر * ولا يشبهها الذهب
18 والياقوت والمرجان الجيد والحجارة الحمر لا يشبهوها * خير هي الحكمة من الحجارة الرفيعة • لا
19 يشبهها الحرير الفاخر • والزمرد والدر لا تباع * خير هي الحكمة من كل شي • وليس يشبهها شي جواهر
20 21 كوش وحجارة الياقوت لا يشبهوها * الحكمة من أي مكان تاتي • وأي مكان فهمها * خفية هي من
اعين كل حي • ومن طاير السماء فانها مستترة •

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

Propter divitias dormiet, 19
nec adjiciat ut reſurgat:
aperuit oculum, & ipſe
non ſunt. Apprehendet 20
eum perturbatio quaſi a-
quam, & quaſi (f) limum
volantem: Aſportabit eũ 21
ventus nocte, & abibit;
& expellent eum è loco
ſuo, Et projiciet illũ abſ- 22
que miſericordia, & de
manu ej⁹ fugiendo fugiet.
Plaudet ſuper eos manu 23
ſuâ, et ſibilabit ſuper illos
de loco ſuo.

CAP. XXVIII.

Etenim argento eſt 1
(a) purgatio, & auro locus
ad fundendum. Et ferrum 2
ex terra funditur, & de
lapidib⁹ educitur æs. Ter- 3
minum poſuit tenebris, &
omnẽ (b) interitũ ipſe no-
vit, lapidem ſolitudinis, et
umbrã mortis. Sciſſuram 4
hæreditate acquirent à po-
pulo fornicario qui oblivi-
oni traditi ſunt (c) è tur-
bis, et (d) attenuantur ab
hominibus. Detexerunt 5
terram è qua egreſſum eſt
alimentũ, ſub qua volvi-
tur quaſi ignis: Et locus 6
(e) gemmarũ lapides ejus,
et (f) fluxus auri in ſe-
mitis ejus. Non noverunt 7
eam volatilia, nec vidit eã
oculus milvi, Nec calcavit 8
eam animal, neq; tranſivit
ſuper illã (†) leo: In ſaxũ 9
ſilicis extendit manũ ſuã,
& ſubvertit à radicibus
eorum montes: Cum (g) fe- 10
ſtinatione fluvios dividit,
et (h) omnes colles vidit
oculus ejus: Et ſuperbiam 11
fluminum concluſit; et (i)
de tenebris egreſſũ eſt lu-
men. Et ſapientia in quo- 12
nam loco reperietur? &
quiſnam locus intelligen-
tiæ ipſius? Ignorat homo 13
theſaurum ejus, nec inve-
nitur niſi in terra vitæ.
Profundũ ait, Non fuit in 14
me; et mare dicit, Non eſt
apud me. Non datur au- 15
rum pro illa, neq; numera-
tur argentum in pretium
ejus: Non cõmutatur cum 16
auro obrizo, & cum (k)
cryſtallo ac gemmis. Non 17
comparatur cum ea aurũ;
et (l) jacynthus, & mar-
garitæ optimæ, et (m) lapi-
des rubri non ſunt ſimiles
illi. Melior eſt ſapientia 18
lapidib⁹ eminentibus. Non
æquat eam ſericum pretio-
ſiſſimum: et ſmaragdo atq;
(n) unionibus non vendi-
tur. Melior eſt ſapientia 19
omni re, nec aſſimulatur
ei res ulla. Gemmæ Æ-
thiopiæ & lapides (o) ja-
cynthi non ſunt illi ſimi-
les. Sapientia à quo loco 20
venit? et quiſnam locus
intelligentiæ ipſius? Abſ- 21
conſa eſt ab oculis omnis
viventis, & à volatilibus
cœli eſt quidem tecta.

INTERP. SYRIACA.

(f) tempeſtatem volantem: *Cap. xxviii.* (a) exitus, (b) finẽ (c) à vadis, (d) detracti ſunt ex (e) Sapphiri (f) conflatoriũ (†) viator: (g) robore (h) omne pretioſum (i) de occulto (k) beryllo & ſapphiro. (l) vitrum, (m) gemmæ & margaritæ (n) amethyſtis (o) Ephodi

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Dives dormiet, & non colligetur: oculos ſuos aperiet, & non ſubſiſtet. Apprehendet eum quaſi aqua tumultus: nocte transferet eum tempeſtas. Tollet eum ventus 19 20
urens, & abibit: & ſicut turbo rapiet eum de loco ſuo. Et projiciet ſuper eum, & non parcet: de manu ejus fugiens fugiet. Plaudet ſuper eum manibus, & ſibilabit 21 22
ſuper eum de loco ſuo. 23

CAP. XXVIII.

Habet enim argentum venam ex qua producitur; & locus auro eſt in quo confletur. Ferrum de terra tollitur, & lapis fuſione vertitur in chalybem. Finem poſuit te- 1 2 3
nebris & omnium fines ipſe ſcrutatur: lapides fortes, unde exeunt tenebræ & umbræ mortis. Diviſit torrentem à loco *diffuſo* in rivulos qui oblivioni traditi ſunt, ne 4
per eos tranſeat pes: elevati ſunt, à filiis hominum tranſlati ſunt. Terra de qua egrediebatur cibus; & ſub ea eſt gehenna, cujus nix frigida convertitur in ſimilitudinem 5
ignis. Et paradiſus voluptatis *qui* loc⁹ eſt, cujus lapides ſunt ſaphiri, & pulveres aurei ſunt ei. Semitam *quæ* nulla ſcivit avis: nec intuit⁹ eſt eam ocul⁹ vulturis. *Targum* 6 7
aliud: Semitam arboris vitæ, *quam non novit Sammael, volans inſtar* avis: nec intuitus eſt eam oculus *Evæ*. Non ambulaverunt in ea filii leonum, nec declinavit ad eam 8
leæna. *Targum aliud*: Non ambulaverunt in ea filii *hominis*, nec declinavit ad eam *ſerpens*. Ad ſilicem extendit manum ſuam, ſubvertit à radice montes. In petris ex- 9 10
cidit flumina, & omne precioſum videt oculus ejus. De imbribus accingit flumina, & de feneſtra occulta producit lumen. Sapientia autem ubi invenietur? & ubi eſt 11 12
locus prudentiæ? Neſcit homo excellentiam ejus, & non invenitur in terra ſuperborum qui peccant in vita ſua. Abyſſus dixit: Non eſt apud me: & mare dixit, Non 13 14
eſt mecum. Non dabitur aurum conflatum pro ea, nec appendetur argentum in commutatione ejus. Non permutabitur pro tinctis colorib⁹ Ophir, nec lapidibus beryl- 15 16
lis precioſis & ſaphiro. Non adæquabitur ei aurum & ſpeculum, nec permutabuntur pro ea vaſa obrizi. *Targum aliud: Non comparabit eam vir dives cum auro & cry-* 17
ſtallo, nec dabit pro ea vaſa auri conflati. Smaragdi & gemmæ non commemorabuntur, & attractio ſapientiæ melior eſt margaritis. *Targum aliud: Fieri nequit ut invenia-* 18
tur in vilitate, ſed in pretio eſt ſicut aurum: ſi quis autem non conſervet eam, abit & confringitur ut vitrum; & commutatio mercedis ejus in ſeculo venturo vaſa aurea. 19
Non adæquabitur ei margarita *viridis* quæ venit de Æthiopia: mundis coloribus non confertur. Sapientia autem unde venit? & quis eſt locus intelligentiæ? Et celata 20 21
eſt ab *aſpectu* omnis viventis, & ab avibus cœli abſcondita eſt.

אִיּוֹב : כט

.ejus *auditum* audivimus nostris auribus *In* :dixerunt mors & Perditio
22 אֲבַדּוֹן וָמָוֶת אָמְרוּ בְּאָזְנֵינוּ שָׁמַעְנוּ שִׁמְעָהּ :
.ejus locum cognovit ipse & : ejus viam intellexit Deus
23 אֱלֹהִים הֵבִין דַּרְכָּהּ וְהוּא יָדַע אֶת־מְקוֹמָהּ :
cœlo omni sub : aspiciet terræ fines ad ipse Quia
24 כִּי־הוּא לִקְצוֹת־הָאָרֶץ יַבִּיט תַּחַת כָּל־הַשָּׁמַיִם
appendat aquas & : pondus vento *faciendum Ad* .videbit
25 יִרְאֶה : לַעֲשׂוֹת לָרוּחַ מִשְׁקָל וּמַיִם תִּכֵּן
coruscationi viam & : statutum pluviæ *ipsum faciendo In* .mensura in
26 בְּמִדָּה : בַּעֲשֹׂתוֹ לַמָּטָר חֹק וְדֶרֶךְ לַחֲזִיז
etiam & , eam præparavit : eam *narravit* &,eam vidit Tunc .*tonitruorum*
27 קֹלוֹת : אָז רָאָהּ וַיְסַפְּרָהּ הֱכִינָהּ וְגַם־
ipsa Domini timor Ecce :homini dixit Et .eam investigavit
28 חֲקָרָהּ : וַיֹּאמֶר לָאָדָם הֵן יִרְאַת אֲדֹנָי הִיא
.intelligentia malo à recedere & : sapientia
חָכְמָה וְסוּר מֵרָע בִּינָה :

Versio VULG. LAT.

22 Perditio & mors dixerunt, Auribus nostris audivimus famā 23 ejus. Deus intelligit viam ejus, & ipse novit locum illius. 24 Ipse enim fines mundi intuetur: & omnia, quæ sub cœlo 25 sunt, respicit. Qui fecit ventis pondus, & aquas appendit 26 in mensura. Quando ponebat pluviis legem, et viam pro- 27 cellis sonantibus: Tunc vidit illam, & enarravit, & præ- 28 paravit, & investigavit. Et dixit homini; Ecce timor Domini, ipsa est sapientia: & recedere à malo, intelligentia.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

21 † Ἡ ἀπώλεια καὶ ὁ θάνατος (σ) εἶπαν, 23 Ἀκηκόαμεν δὲ αὐτῆς τὸ κλέος. † (′) Ὁ θεὸς εὖ συνέστησεν αὐτῆς τὴν ὁδὸν, † αὐτὸς 24 (τ) δὲ οἶδε τὸν τόπον αὐτῆς. † Αὐτὸς γὰρ τὴν ὑπ' οὐρανὸν πᾶσαν ἐφορᾷ, εἰδὼς τὰ ἐν τῇ 25 γῇ, πάντα ἃ (υ) ἐποίησεν, † Ἀνέμων σταθμὸν, ὕδατος μέτρα † ὅτε ἐποίησεν. 26 Οὕτως ἰδὼν ἠρίθμησε, † καὶ ὁδὸν ἐν τινάγ- 27 ματι φωνάς. † Τότε (φ) εἶδεν αὐτὴν, καὶ ἐξηγήσατο αὐτὴν, † ἑτοιμάσας ἐξιχνί- 28 ασεν. † Εἶπε δὲ ἀνθρώπῳ, Ἰδοὺ ἡ θεοσέβειά ἐστι σοφία, † τὸ δὲ ἀπέχεσθαι ἀπὸ κακῶν ἐστιν, ἐπιστήμη.

Perditio, & mors dixerunt; Audivimus verò ejus gloriam. Dominus (aa) benè cognovit viam ejus, & ipse novit locum ejus. Ipse enim omne, quod est sub cœlo, perspicit, nota habens quæ in terra, omnia, quæ fecit, Ventorum libramentū, (bb) aquarū mensuras, (cc) quando fecit. Sic videns numeravit, & viam in concussione, voces. Tunc vidit eam, & exposuit eam, (dd) cùm paràsset, investigavit. Dixit autem homini; Ecce cultus Dei, est sapientia: & abstinere à malo, est scientia.

MS.A. (σ) εἶπεν, Ἀκηκόαμεν αὐτῆς (′) Ὁ κύριος εὖ (τ) γὰρ οἶδεν (υ) ἐποίησεν. Ἐποίησεν δὲ ἀνέμων σταθμὸν, καὶ ὑδάτων μέτρα (φ) ἰδὼν

CAP. XXIX. כט

Quis : dixit & , suam parabolam *assumere* Ijob *addidit* Et
1 2 וַיֹּסֶף אִיּוֹב שְׂאֵת מְשָׁלוֹ וַיֹּאמַר : מִי־
.me custodiebat Deus dies juxta *: antiquitatis* menses juxta *mihi dabit*
יִתְּנֵנִי כְיַרְחֵי־קֶדֶם כִּימֵי אֱלוֹהַּ יִשְׁמְרֵנִי :
ejus lumen ad ; meum caput super suam lucernā *ipsum splendere faciendo In*
3 בְּהִלּוֹ נֵרוֹ עֲלֵי רֹאשִׁי לְאוֹרוֹ
; *mei opprobrii* diebus in eram Sicut *.obscuritatem per* ambulabam
4 אֵלֶךְ חֹשֶׁךְ : כַּאֲשֶׁר הָיִיתִי בִּימֵי חָרְפִּי
, *me apud Saddai adhuc In* .meo tabernaculo In , Dei *secreto in*
5 בְּסוֹד אֱלוֹהַּ עֲלֵי אָהֳלִי : בְּעוֹד שַׁדַּי עִמָּדִי
petra & , butyro in meas vias *lavando In* .mei pueri *mei circuitu*
6 סְבִיבוֹתַי נְעָרָי : בִּרְחֹץ הֲלִיכַי בְּחֵמָה וְצוּר
: civitatem super portam *me exeundo In* .olei rivuli *mecum* *fusa*
7 יָצוּק עִמָּדִי פַּלְגֵי־שָׁמֶן : בְּצֵאתִי שַׁעַר עֲלֵי־קָרֶת
, pueri me Videbant .meam cathedram faciebam parare platea in
8 בָּרְחוֹב אָכִין מוֹשָׁבִי : רָאוּנִי נְעָרִים
Principes .stabant ,surgebant decrepiti & : se abscondebant &
9 וְנֶחְבָּאוּ וִישִׁישִׁים קָמוּ עָמָדוּ : שָׂרִים
Vox .suo ori ponebant manum & :sermonibus in *cohibebant*
10 עָצְרוּ בְמִלִּים וְכַף יָשִׂימוּ לְפִיהֶם : קוֹל־
adhærebat eorum palato eorum lingua & : se abscondebant *ducum*
נְגִידִים נֶחְבָּאוּ וּלְשׁוֹנָם לְחִכָּם דָּבֵקָה
videbat oculus & : me beatificabat & , audiebat auris Cùm
11 כִּי אֹזֶן שָׁמְעָה וַתְּאַשְּׁרֵנִי וְעַיִן רָאֲתָה
, vociferantem pauperem liberabam *Quoniam .mihi testimonium perhibebat* &
12 וַתְּעִידֵנִי : כִּי־אֲמַלֵּט עָנִי מְשַׁוֵּעַ
me super *pereuntis* Benedictio .*ei* adjutor non & , pupillum &
13 וְיָתוֹם וְלֹא־עֹזֵר לוֹ : בִּרְכַּת אֹבֵד עָלַי
, induebam Justitiam .*faciebam canere* viduæ cor & : veniebat
14 תָּבֹא וְלֵב אַלְמָנָה אַרְנִן : צֶדֶק לָבַשְׁתִּי
.meum judicium cidarim & , pallium tanquam , me induebat &
וַיִּלְבָּשֵׁנִי כַמְּעִיל וְצָנִיף מִשְׁפָּטִי :
Pater .*ego* claudo pedes & : cæco eram Oculi
15 16 עֵינַיִם הָיִיתִי לַעִוֵּר וְרַגְלַיִם לַפִּסֵּחַ אָנִי : אָב
.*eam* investigabam , noveram non *litem* & : *egenis* *ego*
אָנֹכִי לָאֶבְיוֹנִים וְרִב לֹא־יָדַעְתִּי אֶחְקְרֵהוּ :
faciebam projicere ejus dentibus è & :iniqui molas conterebam Et
17 וָאֲשַׁבְּרָה מְתַלְּעוֹת עַוָּל וּמִשִּׁנָּיו אַשְׁלִיךְ
arenam sicut & *: expirabo* meo nido *cum* , dicebam Et .prædam
18 טָרֶף : וָאֹמַר עִם־קִנִּי אֶגְוָע וְכַחוֹל
ros & : aquas *ad* aperta mea Radix .dies multiplicabo
19 אַרְבֶּה יָמִים : שָׁרְשִׁי פָתוּחַ אֱלֵי־מָיִם וְטַל
.*mea messe* in morabitur
יָלִין בִּקְצִירִי :

CAP. XXIX.

1 ADdidit quoque Job, assumens parabolam suam, & di- 2 xit; Quis mihi tribuat, ut sim juxta menses pristinos, secundùm dies quibus Deus custo- 3 diebat me? Quando splendebat lucerna ejus super caput meum, & ad lumen ejus ambu- 4 labam in tenebris. Sicut fui in diebus adolescentiæ meæ, quando secretò Deus erat in 5 tabernaculo meo. Quando erat Omnipotens mecum, & in circuitu meo pueri mei. 6 Quando lavabam pedes meos butyro, & petra fundebat 7 mihi rivos olei. Quando procedebam ad portam civitatis, & in platea parabant ca- 8 thedram mihi. Videbant me juvenes, & abscondebantur: & senes assurgentes stabant. 9 Principes cessabant loqui, & digitum superponebant ori 10 suo. Vocem suam cohibebant duces, & lingua eorum 11 gutturi suo adhærebat. Auris audiens beatificabat me, & oculus videns testimonium red- 12 debat mihi. Eò quòd liberàssem pauperem vociferantem, & pupillum, cui non es- 13 set adjutor. Benedictio perituri super me veniebat, & cor 14 viduæ consolatus sum. Justitiâ indutus sum, & vestivi me, sicut vestimento & diademate, 15 judicio meo. Oculus fui cæ- 16 co, & pes claudo. Pater eram pauperum: & causam quam nesciebam, diligentissimè in- 17 vestigabam. Conterebam molas iniqui, & de dentibus 18 illius auferebam prædam. Dicebámque; In nidulo meo moriar, & sicut palma multi- 19 plicabo dies. Radix mea aperta est secus aquas, & ros morabitur in messione mea.

ΚΕΦ. κθ'.

1 † (α) Ἔτι δὲ προσθεὶς Ἰὼβ εἶπε τῷ προ- 2 οιμίῳ, † Τίς ἄν με θείη (β) κατὰ μῆνα ἔμπροσθεν ἡμερῶν, † ὧν με ὁ θεὸς ἐφύ- 3 λαξεν; † Ὡς ὅτε ηὔγει (′) ὁ λύχνος αὐτοῦ ὑπὲρ κεφαλῆς μου, † (γ) ὅτε τῷ φωτὶ αὐ- 4 τοῦ ἐπορευόμην ἐν σκότει. † Ὅτε ἤμην ἐπιβρίθων (δ) ὁδοὺς, † ὅτε ὁ θεὸς ἐπι- 5 σκοπὴν ἐποιεῖτο τοῦ οἴκου μου. † Ὅτε ἤμην ὑλώδης λίαν, κύκλῳ δέ μου οἱ παῖδες. 6 † Ὅτε (ε) ἐχέοντο αἱ ὁδοί μου βουτύρῳ, τὰ 7 δὲ ὄρη μου (ζ) ἐχέοντο γάλακτι. † Ὅτε ἐξ- 8 επορευόμην ὄρθριος ἐν πόλει, † ἐν δὲ πλατείαις ἐτίθετό μου ὁ δίφρος. † Ἰδόντες με νεανίσκοι ἐκρύβησαν (η), † πρεσβῦ- 9 ται δὲ πάντες (θ) ἔστησαν. † Ἁδροὶ δὲ ἐπαύσαντο λαλοῦντες, δάκτυλον (∴) ἐπιθέντες 10 ἐπὶ στόματι (ι). † Οἱ δὲ ἀκούσαντες ἐμακάρισάν με, † καὶ γλῶσσα αὐτῶν τῷ λάρυγγι 11 αὐτῶν ἐκολλήθη. † Ὅτι οὖς ἤκουσε καὶ ἐμακάρισέ με, † ὀφθαλμὸς (κ) δὲ ἰδών με ἐξέ- 12 κλινε. † Διέσωσα γὰρ πτωχὸν ἐκ χειρὸς δυνάστου, † καὶ ὀρφανῷ ᾧ οὐκ (λ) ἦν βοηθὸς, 13 ἐβοήθησα. † Εὐλογία ἀπολλυμένου ἐπ' ἐμὲ ἔλθοι, † στόμα δὲ χήρας (μ) με εὐλό- 14 γησε. † Δικαιοσύνην δὲ (ν) ἐνδεδύκειν, † ἠμφιασάμην δὲ κρίμα ἴσα διπλοΐδι. 15 † Ὀφθαλμὸς ἤμην τυφλῶν, πούς δὲ χωλῶν. 16 † Ἐγὼ ἤμην πατὴρ ἀδυνάτων, † δίκην 17 δὲ ἣν οὐκ ᾔδειν ἐξιχνίασα. † Συνέτριψα δὲ μύλας ἀδίκων, † (ξ) ἐκ μέσου τῶν ὀ- 18 δόντων αὐτῶν ἅρπαγμα ἐξήρπασα. † Εἶπα δὲ, Ἡ ἡλικία μου γηράσει ὥσπερ στέλεχος φοίνικος, † (ο) πολὺν χρόνον βιώσω. 19 † (π) Ἡ ῥίζα διήνοικται ἐπὶ ὕδατος, † καὶ δρόσος αὐλισθήσεται (ρ) ἐν τῷ θερισμῷ μου.

CAP. XXIX.

ADhuc autem adjiciens Job dixit proœmio; Quis utique (a) me ponat juxta mensem priorum dierum, quibus me Deus custodiebat? Sicut cùm lucebat lucerna ejus super caput meum: cùm lumine ejus ambulabam in tenebris. Cùm eram (b) gravescens viis: cùm Deus (c) visitationem faciebat domûs meæ. Cùm eram (d) materiatus nimis, & in circuitu meo pueri. Cùm fluebant viæ meæ butyro; & montes mei fluebant lacte. Cùm exibam matutinus in civitate: & in plateis ponebatur mihi sella. Videntes me adolescentuli abscondebantur: senes autem omnes steterunt. Et (e) potentes cessaverunt loqui, digitum imponentes super os. Qui autem audiverunt, beatificabant me: & lingua eorum gutturi eorum adhæsit; Quia auris audivit, & beatificavit me; & oculus videns me (f) declinavit. Salvavi enim mendicum de manu potentis; & pupillum, cui non erat adjutor, adjuvi. Benedictio pereuntis super me (g) veniat: & (h) os viduæ benedixit me: Justitiam verò indutus sum, & vestitus sum judicio, sicut diploide. Oculus fui cæcorum, & pes claudorum. Ego fui pater impotentium; & judicium, quod non noveram, exquisivi. Confregi autem molas iniquorum: de medio dentium eorum (i) rapinam eripui. Dixi (k) autem, Ætas mea senescet, sicut truncus palmæ: multo vivam tempore. Radix aperta est super aquam: & ros morabitur in messe mea.

MS.A. (α) Προσθεὶς δὲ ἔτι τῷ προοιμίῳ Ἰὼβ, λέγει, Τίς (β) μῆνα κατὰ μῆνα ἡμερῶν τῶν ἔμπροσθεν, ἡμερῶν ὧν ὁ θεὸς ἐφύλαττέν με; (′) λύχνος (γ) ὅτε ἐν τῷ φωτὶ (δ) ὁδοῖς, ὅτε ὁ κύριος (ε) ἐχέοντό μου αἱ ὁδοὶ (ζ) ἐχεῖτο (η) ἑαυτοῖς, πρεσβῦται (θ) ἐπανέστησαν. (∴) ἐπιθέντες (ι) αὐτῶν. Οἱ δὲ ἀκούσαντες περὶ ἐμοῦ ἐμακάρισάν με, (κ) δέ με ἰδὼν (λ) ὑπῆρχεν βοηθὸς, (μ) ηὐλόγησέν με. (ν) ἐνεδεδύκειν, (ξ) ἐκ δὲ μέσου ὀδόντων αὐτῶν ἅρπαγμα ἐξέσπασα. Εἶπον, Ἡλικία μου (ο) πολὺν δὲ χρόνον (π) Ἡ ῥίζα μου * διήνοικται (ρ) ἐπὶ τῷ θερισμῷ μου.

תרגום TARGUM.

22 24 אַבְדָנָא וּמַלְאַךְ מוֹתָא אָמְרוּ בְּאִתְיְהָבָא לְיִשְׂרָאֵל בְּמַשְׁמַעְנָה שְׁמַעְנָא שְׁמוּעְתָהּ : אֱלָהָא אִתְבַּיַּן אוֹרְחָהּ וְהוּא יְדַע יַת אַתְרָהּ : אֲרוּם הוּא לְסִיפֵי אַרְעָא
23 25 26 תַכַּל תְּחוֹת כָּל שְׁמַיָּא יֶחְמֵי : לְמֶעְבַּד לְרוּחָא מַתְקְלָא וּמַיָּא אַתְקֵן בְּמַשְׁחָתָא : בְּמֶעְבְּדֵיהּ לְמִטְרָא קְיָמָא נוּרְתָא וּמַהְלַךְ לַחֲזִיזֵי דְּרָהֲטִין בְּקָלַיָּא : הֵידִין
27 28 יהּ וְאִשְׁתָּעְיָהּ עַבַד מַלְאֲכֵי שֵׁירוּתָא אַתְקְנָהּ וּלְחוֹד פַּשְׁפֵּשׁ יָתָהּ : וַאֲמַר לְבַר נָשׁ הָא דַחַלְתָּא דַיְיָ הִיא חוּכְמְתָא וּלְמֶעְדֵי מִן בִּישְׁתָא הִיא בִּיוּנְתָא :

כט

1 2 3 אוֹסִיף אִיּוֹב לְמִטַּל מַתְלֵיהּ וַאֲמַר : מַן יְסַדְּרִנַּנִי הֵיךְ יַרְחִין דְּקַדְמִין יוֹמַיָּא דִּי אֱלָהָא יִטְרִנַּנִי : בְּאַנְהָרוּתֵיהּ שְׁרַגֵּיהּ עֲלֵי רֵישִׁי לִנְהוֹרֵיהּ אֵיזֵיל חֲשׁוֹכָא :
4 5 6 כְּמָא דַהֲוֵיתִי בְּיוֹמֵי חֲרִיפוּתִי בִּזְמַן דְּרָז אֱלָהָא עֲלֵי מַשְׁכְּנִי : בְּעוֹד כְּדוֹן דַּהֲוָה מֵימַר שַׁדַּי בְּסַעֲדִי חֲזוֹר חֲזוֹר דִּילִי עוּלֵימַי : בְּמִשְׁזוֹג אַסְחוֹרֵי בְּלוּאֵי
7 8 9 וְטִנָּר יַזְלֵף עִמִּי טִיפֵּי מְשַׁח : בְּמִפְּקִי תַּרְעָא עַל קַרְתָּא בִּפְתָאָה אַתְקֵין מוֹתְבִי : חָמוֹ יָתִי עוּלֵימַיָּא וְאִטַּמָּרוּ וְקַשִּׁישַׁיָּא יְקוּמוּן וְקָפוּ : נְגִידַיָּא כְּנִישׁוּ
10 11 12 מִלַּיָּא וְאִידָא יְשַׁוּוֹן לְפוּמְהוֹן : קָל אַרְכוֹנִין אִטַּמָּרוּ וְלִישָּׁנְהוֹן לְמוֹרִיגֵיהוֹן אַדְבֵּקַת : אֲרוּם אוּדְנָא שְׁמָעַת אֲמַרַת טַב לִי וְעֵינָא דַחֲמַת וְאַסְהֲדַת עֲלַי : אֲרוּם
13 14 אֲשֵׁיזֵב עַנְיָא דְּבָעֵי וְיַתַּם וְלָא סָעִיד לֵיהּ : בִּרְכְּתָא דְּאוּבְדָא עֲלַי תֵּיתֵי וְלִבָּא דְאַרְמַלְתָּא אַמְלֵי תוּשְׁבַּחְתָּא : זְכוּתָא לְבִישִׁית וְאַלְבְּשַׁנַּנִי הֵיךְ מְעִילָא
15 16 מִצְנַפְתָּא דִינִי : נְהוֹר עֵינִין הֲוֵיתִי לְסַמְיָא וְטַיּוֹל לַחֲגִירָא אֲנָא : תָּא תַּיָּר הֲוֵיתִי לְמִסְכְּנָא דְדָמֵי לְסַמְיָא וְטַיָּל לִקְצוֹר עַרְסָא דְמַתִּיל לְחַגִּירָא אֲנָא :
17 18 אַבָּא אֲנָא לַחֲשִׁיכַיָּא וְתִגְרָא דְלָא יָדְעִית אֲפַשְׁפְּשִׁנֵּיהּ : וְתַבְרֵית נִיבֵי מְקַלְקַל וּמִכַּכּוֹי רְמֵיתִי עֲדָאָה : וַאֲמָרִית עִם תּוּקְפֵּי בְּשַׁרְכְּפֵי אִתְנְגִיד וְהֵיךְ חָלָא אַסְגֵּי יוֹמַיָּא :
19 שִׁקְרֵי פְּתִיחַ לְמַבּוּעֵי מַיָּא וְטַלָּא יְבִית בַּחֲצָדִי :

Verſio SYRIACA.

22 23 * ܐܒܕܢܐ ܘܡܘܬܐ ܐܡܪܘ. ܕܒܐܕܢܝܢ ܫܡܥܢ ܫܡܥܗ̇. * ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܡܣܬܟܠ ܐܘܪܚܬܗ̇. ܘܗܘܝܘ ܝܕܥ
23 24 ܠܐܬܪܗ̇. * ܡܛܠ ܕܗܘ ܚܙܐ ܠܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܘܬܚܝܬ ܟܠ ܫܡܝܐ ܚܙܐ. * ܕܥܒܕ ܡܬܩܠܐ ܠܪܘܚܐ.
25 26 ܘܡܝܐ ܬܩܢ ܒܡܫܘܚܬܐ. * ܟܕ ܥܒܕ ܢܡܘܣܐ ܠܡܛܪܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܠܚܙܘܢܐ ܕܩܠܐ. * ܗܝܕܝܢ ܚܙܐܗ̇ ܘܐܫܬܥܝܗ̇.
27 28 ܘܬܩܢܗ̇ ܐܦ ܒܨܝܗ̇. * ܘܐܡܪ ܠܒܢܝܢܫܐ. ܕܗܐ ܕܚܠܬܗ ܕܐܠܗܐ ܗܝ ܚܟܡܬܐ. ܘܕܬܬܦܪܫ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܣܘܟܠܐ.
1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܛ * * ܘܐܘܣܦ ܐܝܘܒ ܕܢܣܒ ܡܬܠܗ. ܘܐܡܪ. * ܡܢ ܐܝܟ ܕܒܝܪܚܐ
2 3 ܩܕܡܝܐ. ܘܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܐܠܗܐ ܢܛܪܢܝ. * ܘܕܚܠܬܗ ܬܣܝܡ ܥܠ ܪܝܫܝ. ܒܡܬܚܬܗ ܕܫܪܓܗ
3 4 ܥܠܝ. ܘܒܢܘܗܪܗ ܗܠܟܬ ܒܚܫܘܟܐ. * ܐܝܟ ܕܗܘܝܬ ܒܝܘܡܬܐ ܕܛܘܒܝ. ܟܕ ܡܛܠܠ ܗܘܐ ܐܠܗܐ ܥܠ
5 ܡܫܟܢܝ. * ܘܟܕ ܚܝܠܬܢܐ ܗܘܐ ܚܕܪ ܛܠܝܘܬܝ. * ܟܕ ܢܦܩܬ ܠܬܪܥܐ ܘܩܪܝܬ. ܘܒܫܘܩܐ ܐܝܟ ܡܣܟܢܐ
7 8 ܝܬܒܬ. * ܚܙܘܢܝ ܛܠܝܐ ܘܐܬܛܫܝܘ. ܘܩܡܘ ܣܒܐ ܘܐܬܕܡܪܘ ܒܝ. * ܘܪܘܪܒܢܐ ܐܬܟܠܝܘ ܡܢ ܡܡܠܠܐ. ܘܐܝܕܝܗܘܢ
9 10 ܣܡܘ ܥܠ ܦܘܡܗܘܢ. * ܩܠܐ ܕܫܠܝܛܢܐ ܕܡܛܫܝܢ. ܘܠܫܢܗܘܢ ܕܒܩ ܒܚܟܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܕܢܐ
11 12 ܕܫܡܥܬ ܫܒܚܬܢܝ. ܘܥܝܢܐ ܕܚܙܬ ܣܗܕܬ ܠܝ. * ܡܛܠ ܕܦܪܩܬ ܠܡܣܟܢܐ ܡܢ ܐܘܠܨܢܐ. ܘܠܝܬܡܐ
12 13 ܕܠܝܬ ܠܗ ܡܥܕܪܢܐ. * ܒܘܪܟܬܗ ܕܐܒܝܕܐ ܥܠܝ ܥܐܠܐ. ܘܠܒܐ ܕܐܪܡܠܬܐ ܚܕܝܬ. * ܙܕܝܩܘܬܐ ܠܒܫܬ
14 15 ܘܠܒܫܬܢܝ ܐܝܟ ܦܪܣܐ ܘܟܠܝܠܐ ܕܕܝܢܐ. * ܥܝܢܐ ܗܘܝܬ ܠܥܘܝܪܐ. ܘܪܓܠܐ ܠܚܓܝܪܐ. * ܐܒܐ ܗܘܝܬ
16 17 ܠܡܣܟܢܐ. ܘܕܝܢܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܥܩܒܬ. * ܘܬܒܪܬ ܟܟܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܡܢ ܫܢܘܗܝ ܐܦܩܬ ܒܙܬܐ.
18 19 * ܘܐܡܪܬ. ܕܒܩܢܝ ܐܬܢܝܚ. ܘܐܝܟ ܚܠܐ ܐܣܓܐ ܝܘܡܝ. * ܥܩܪܝ
ܢܨܝܒܢ ܥܠ ܡܝܐ. ܘܛܠܠܐ ܢܒܘܬ ܒܚܨܕܝ.

Verſio ARABICA.

22 23 * البوار والموت يقولون اننا باذاننا سمعنا سماعا * من اجل ان الله بين لنا طرايقها. وهو يعرف مكانها *
24 25 * من اجل انه ينظر الي اقطار جميع الارض * وجميع ما تحت السماء هو يراه * الذي صنع ميزانا للروح *
26 27 والمثقال ساوي بالمكيال * جعل حدودا للمطر * وطريقا لمناظر الصوت * عند ذلك راها واظهرها ووزنها *
28 وايضا اعلمها * وقال للانسان * ان مخافة الله هي الحكمة * والنهي عن السيئة هو الفهم *
1 2 * الفصل التاسع والعشرون * * وعاد ايوب ان يمثل مثله * فقال * من الذي
3 صنعني مثل الشهور مثل الشهور الاولي * ومثل ايام الله حفظني * وخشيته وضعها فوق راسي * بانبساط
4 سراجه فوقي * وفي ضوءه سلكت في الظلمة * كما كنت في ايام صلاحي * حين كان يحنوا الله فوق
5 7 مسكني * وحين كان العزيز مطيفا بشبيبتي * اذا خرجت الي الباب وناديت * وفي السوق مثل البايس
8 9 قعدت * فابصرني الشبان واختفوا وقام المشايخ فتعجبوا مني * والكبراء امتنعوا من الكلام وايديهم
10 وضعوها علي افواههم * صوت السلاطين الذين يستخفون * والسنتهم لصقت في اعلا احناكهم *
11 12 * لان الاذن التي سمعت مدحتني * والعين التي ابصرت شهدت لي * لاني نجيت المسكين من الضر *
13 14 واليتيم الذي ليس له معين * بركة الهالك علي تدخل * وقلب الارملة فرحت * والحق لبست
15 16 ولبسني مثل الملتحف اكليل البر * كنت عينا للعميان * ورجلا للعرجان * كنت للبوس ابا *
17 والخير الي من لم اكن اعرف صنعت * كسرت انياب المنافق * واخرجت الغصب من بين اسنانه *
18 19 * وقلت اني اخلص شعبا مسكينا * ومثل القصبة استتم * ومثل رمال البحر اكثر ايامي * وعروقي
منصوبة علي الامياه * وفي الظل اهجع * وفي الحصاد ادعا *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Interitus & mors inquiunt, 22
Nos auribus noſtris audiendo audivimus: Quoniam 23
Deus oſtendit nobis
vias ejus, & ipſe novit
locum ejus: Quoniam 24
ipſe reſpicit in omnes fines terræ, & omne quod
eſt ſub cœlo, ipſe videt.
Qui poſuit ſtateram vento, 25
& (†) pondus æquavit
menſuræ. Conſtituit (p) 26
terminos imbri, & viam
ſpectaculis vocis. Tunc 27
vidit eam, & (q) manifeſtavit illam, et ponderavit
eam, atque (r) iterum indicavit illam: Et dixit 28
homini, Timor Dei eſt ſapientia, & abſtinentia à
malo eſt intellectus.

CAP. XXIX.

Et adjecit Job dicere 1
proverbium ſuum, & ait,
Quis faciat me in menſibus 2
antiquis, & ut diebus Dei ſervet me? Et 3
timorem ejus collocet ſuper caput meum? in extenſione lucernæ ejus ſuper me, & in lumine illius ambulavi in tenebris,
Quemadmodum fui in 4
diebus (a) fœlicitatis meæ,
quando (∴) inclinabitur
Deus (∴) habitationem
meam, Et quando erat Potentiſſimus 5
circumdans juventutem meam. Cum 7
exivi ad januam, & vocavi & in platea, velut
inops ſedi, Viderunt me 8
juvenes, & abſconderunt ſe; & ſteterunt ſenes, & mirati ſunt me;
Et magnates continuerunt 9
ſe (b) à loquela, et manus
ſuas impoſuerunt oribus
ſuis. Vox præſidum qui 10
latitant, & linguæ eorum
adhæſerunt ſupremis palatis eorum: Quia auris 11
quæ audivit, laudavit
me; & oculus qui vidit,
teſtatus eſt mihi, Quòd 12
liberavi pauperem de
miſeria, & pupillum qui
non habet adjutorem. Benedictio pereuntis ſuper 13
me ingrediebatur: et cor viduæ exhilaravi: Et veritatem 14
indui, & induit me
ut (∴) adulti coronâ juſtitiæ. Eram oculus cæcis, 15
et pes claudis: Eram pauperibus 16
pater, & (c) bonum in eos quos non noveram, egi. Fregi caninos 17
impii, & eduxi rapinam è dentibus ejus. Et 18
dixi, Salvabo populum
pauperem, & velut arundo perficiar, & ut arenas maris multiplicabo
dies meos, Et radices 19
meæ plantatæ ſuper aquas: (d) & in umbra dormiam, & in meſſe
vocabor.

INTERP. SYRIACA.

( ) aquas præparavit in menſura. (p) legē (q) enarravit (r) etiam inquiſivit illam: (∴) .xx.x. (a) beneficentiæ meæ, (∴) obtegebat (b) in ſermonibus, (∴) indumēto & coronâ judicii. (c) judicium quod non noveram, inveſtigabam. (d) & in umbra, pernoctat, & in

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Domus perditionis & angelus mortis dixerunt, quando data eſt Iſrael, auditu noſtro audivimus famam ejus. Deus intelligit viam ejus, & ipſe ſcivit locum ejus. Quoniam 22 23
ipſe fines terræ intuetur, & ſub omnibus cœlis videt. Ut faciat vento pondus, & aquas præparet in menſura. Dum facit pluviæ legem, *ſtatutum* & iter fulguri- 24 25
bus quæ currant cum ſonitu. Tunc vidit illam, & narravit eam, cum angelis in principio præparavit eam, & etiam inveſtigavit eam. Et dixit filiis hominum: Ecce 26 27
timor Domini eſt ſapientia; & recedere à malo, eſt intelligentia. 28

CAP. XXIX.

Et addidit Job aſſumens parabolam ſuam, & ait: Quis ordinaret me ſicut in menſibus antiquis, ſicut in diebus quibus De⁹ cuſtodiebat me. Quando ſplendere faciebat 1 2 3
lucernam ſuam ſuper caput meum, ad lumen ejus ambulabam in tenebris. Sicut eram in diebus adoleſcentiæ meæ, tempore quo ſecretò erat Deus in tabernaculo meo. 4 5
Dum erat verbum omnipotentis in auxilium meum, in circuitu *mei juvenes mei*. Quando lavabam greſſus meos butyro, & petra fluebat mihi rivis olei. Quando egre- 6 7
diebar ad portam civitatis, in platea parabam ſedem meam. Videbant me juvenes & abſcondebantur: & ſenes ſurgebant, erigebant ſe. Principes ceſſabant loqui, & 8 9
manum ponebant ori ſuo. Vocem ſuam abſcondebant duces, & lingua eorum adhærebat palato ſuo. Quia auris audiens dicebat me beatum, & oculus videns teſtimo- 10 11
nium reddebat mihi. Quia liberabam pauperem deprecantem, & pupillum cui non erat adjutor. Benedictio perituri ad me veniebat, & cor viduæ implebam laude. 12 13
Juſtitiam indutus ſum, & veſtivit me, ſicut pallio & tiara judicio meo. *Lux oculorum* eram cæco, & deambulatio claudo eram. *Targum aliud: Conductor fui pauperi,* 14 15
qui ſimilis eſt cæco; & ambulator pro eo qui curtus erat lecto, eò ſimilis claudo fui ego. Pater fui pauperum, & litem quam neſciebam ſcrutabar. Et conterebam molas 16 17
iniqui, & de dentibus ejus projiciebam prædam. Et dixi: Cum fortitudine mea in nido meo deficiam; & ſicut arena multiplicabo dies. Radix mea aperta erat ad 18 19
fontes aquarum, & ros morabatur in meſſe mea.

.innovabitur mea manu in meus arcus & : mecum [illegible] mea Gloria

10 כבודי חדש עמדי וקשתי בידי תחליף :

.meum conſilium ipſum ad tacebant & : expectabant & ,obediebant Mihi

21 לי־שמעו ויחלו וידמו למו עצתי :

.meus ſermo ſtillabat eos ſuper & :iterabant non meum verbum Poſt

22 אחרי דברי לא ישנו ועלימו תטף מלתי :

patefaciebant ſuum os & ,me pluviam ſicut expectabant Et

23 ויחלו כמטר לי ופיהם פערו

lucem & : credebant non ,eos ad Ridebam .ſerotinum imbrem ad

24 למלקוש : אשחק אליהם לא יאמינו ואור

ſedebam & ,eorum viam Eligebam .faciebant cadere non meorum facierum

25 פני לא יפילון : אבחר דרכם ואשב

lugentes quemadmodum ;agmine in rex ſicut habitabam & ,caput

ראש ואשכון כמלך בגדוד כאשר אבלים

.conſolatur

ינחם :

CAP. XXX. ל

quorum :diebus me præ minimi me ſuper derident nunc Et

1 ועתה שחקו עלי צעירים ממני לימים אשר־

potentia Etiam .mei pecoris canibus cum ponere eorum patres renuiſſem

2 מאסתי אבותם לשית עם־כלבי צאני : גם־כח

,penuria In .ſenium periit ipſis Super ?mihi quid propter eorum manuum

3 ידיהם למה לי עלימו אבד כלח : בחסר

,deſolationem ,obſcuritatem ,ſiccitatem fugientes ,ſolitarius eſurie in &

ובכפן גלמוד הערקים ציה אמש שואה

juniperorum radix & : virgulto ſuper malvam Succidentes .deſertum &

4 ומשאה : הקטפים מלוח עלי־שיח ושרש רתמים

,eos contra clamabant : expellebantur medio E .eorum panis

5 לחמם : מן־גו יגרשו יריעו עלימו

,pulveris foramina ;habitandum ad torrentium rimam In .furem ſicut

6 כגנב : בערוץ נחלים לשכן חורי עפר

.congregabantur urticam ſubter ;rudebant arbuſta Inter .petras &

7 וכפים : בין־שיחים ינהקו תחת חרול יספחו :

à erant contriti :nomine abſque filii etiam ,abjecti Filii

8 בני נבל גם־בני בלי־שם נכאו מן־

.ſermonem in eis ſui & :ſui eorum canticum nunc Et .terra

9 הארץ : ועתה נגינתם הייתי ואהי להם למלה :

non meis faciebus à & : me à ſe elongaverunt ,me ſunt Abominati

10 תעבוני רחקו מני ומפני לא־

frenum & : me afflixit & ,ſolvit meum funem Quia .ſputum prohibuerunt

11 חשכו רק : כי־יתרי פתח ויענני ורסן

meis pedes ,inſurgent parvulus dexteram Super .dimiſerunt meis faciebus à

12 מפני שלחו : על־ימין פרחח יקומו רגלי

Diruerunt .ſuæ contritionis vias me ſuper ſtraverunt & : impulerunt

13 שלחו ויסלו עלי ארחות אידם : נתסו

.eis adjutor non : profecerunt meam contritionem ad ,meam ſemitam

נתיבתי להותי יעילו לא עזר למו :

ſunt Converſi .ſe volverunt deſolatione Pro .venerunt lata fractura Sicut

14 כפרץ רחב יאתיו תחת שאה התגלגלו : ההפך

15 ;meam ſpontaneam ventus ſicut perſequetur ,terrores me adverſum

עלי בלהות תרדף כרוח נדבתי

:mea anima ſe vertet me contra nunc Et .mea ſalus tranſivit nubes ſicut &

16 וכעב עברה ישעתי : ועתה עלי תשתפך נפשי

,me deſuper perforavit mea oſſa Nocte .afflictionis dies me apprehendent

17 יאחזוני ימי־עני : לילה עצמי נקר מעלי

reputabatur potentiæ multitudine In .conficient non meæ venæ &

18 וערקי לא ישכבון : ברב־כח יתחפש

: lutum in me Projecit .me cinxit meæ tunicæ os Sicut .meum veſtimentum

19 לבושי כפי כתנתי יאזרני : הרני לחמר

non & ,te ad Clamavi .cinis & ,pulvis ſicut ſum aſſimilatus &

20 ואתמשל כעפר ואפר : אשוע אליך ולא

.mihi crudelem in te Vertes .me in adverſiſti & ,ſteti : mihi reſpondiſti

21 תענני עמדתי ותתבנן בי : תהפך לאכזר לי

.mihi minitaberis tuæ manus fortitudine In

בעצם ידך תשטמני :

Verſio VUL. LAT.

20 Gloria mea ſemper innovabitur, & arcꝰ meus in manu mea inſtaurabitur. 21 Qui me audiebant, expectabant ſententiã, & intenti tacebant ad conſilium meum. 22 Verbis meis addere nihil audebant, et ſuper illos ſtillabat eloquiũ meum. 23 Expectabant me ſicut pluviã, & os ſuũ aperiebant quaſi ad imbrẽ ſerotinum. 24 Si quando ridebã ad eos, non credebant, et lux vultꝰ mei non cadebat in terram. 25 Si voluiſſem ire ad eos, ſedebam primus: cúmque ſederem quaſi rex, circumſtante exercitu, erã tamen mœrentium conſolator.

CAP. XXX.

1 Nunc autẽ derident me juniores tempore, quorũ non dignabar patres ponere cum canibus gregis mei: 2 Quorũ virtꝰ manuũ mihi erat pro nihilo, et vitã ipſã putabantur indigni. 3 Egeſtate & fame ſteriles, qui rodebant in ſolitudine, ſqualentes calamitate & miſeriã. 4 Et mandebant herbas, et arborum cortices, & radix juniperorũ erat cibus eorũ. 5 Qui de convallibꝰ iſta rapientes, cùm ſingula reperiſſent, ad ea cum clamore currebant. 6 In deſertis habitabant torrentiũ, & in cavernis terræ, vel ſuper glaream. 7 Qui inter hujuſcemodi lætabantur, et eſſe ſub ſentibꝰ delicias computabãt. 8 Filii ſtultorũ & ignobilium, & in terra penitùs non parentes. 9 Nunc in eorũ canticum verſus ſum, et factꝰ ſum eis in proverbiũ. 10 Abominantur me, & longè fugiunt à me, & faciẽ meam conſpuere non verentur. 11 Pharetrã enim ſuam aperuit, & afflixit me, & frænũ poſuit in os meũ. 12 Ad dexterã orientis calamitates meæ illicò ſurrexerũt: pedes meos ſubverterunt, & oppreſſerunt quaſi fluctibus ſemitis ſuis. 13 Diſſipaverunt itinera mea, inſidiati ſunt mihi, & prævaluerunt, & non fuit qui ferret auxilium. 14 Quaſi rupto muro, et apertã januã, irruerunt ſuper me, & ad meas miſerias devoluti ſunt. 15 Redactꝰ ſum in nihilũ: abſtuliſti quaſi ventꝰ deſideriũ meũ: & velut nubes pertranſiit ſalus mea. 16 Nunc autẽ in memetipſo marceſcit anima mea, & poſſident me dies afflictionis. 17 Nocte os meum perforatur doloribꝰ: & qui me comedunt, non dormiunt. 18 In multitudine eorum conſumitur veſtimentũ meũ, et quaſi capitio tunicæ ſuccinxerũt me. 19 Comparatꝰ ſum luto, & aſſimilatus ſum favillæ et cineri. 20 Clamo ad te, et non exaudis me: 21 ſto, et non reſpicis me. Mutatus mihi in crudelẽ, & in duritia manꝰ tuæ adverſaris mihi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

20 † Ἡ δόξα μου καινὴ μετ᾽ ἐμοῦ, καὶ τὸ τόξον (σ) μου ἐν χειρὶ αὐτοῦ (τ) πορεύεται. 21 † (υ) Ἐμοῦ ἀκούσαντες προσέσχον, † ἐσιώπησαν δὲ ἐπὶ τῇ ἐμῇ βουλῇ. 22 † (φ) Ἐπὶ δὲ τῷ ἐμῷ ῥήματι οὐ προσέθεντο, † (χ) περιχαρεῖς δὲ ἐγίνοντο ὁπόταν αὐτοῖς ἐλάλουν. 23 † Ὥσπερ γῆ διψῶσα (ψ) προσδεχομένη τὸν ὑετόν, † οὕτως οὗτοι τὴν ἐμὴν (ω) λαλιάν. 24 † Ἐὰν γελάσω πρὸς αὐτούς, οὐ μὴ πιστεύσωσι, † καὶ φῶς τοῦ προσώπου μου οὐκ ἀπέπιπτεν. 25 † Ἐξελεξάμην ὁδὸν αὐτῶν, καὶ ἐκάθισα ἄρχων, † καὶ κατεσκήνουν ὡσεὶ βασιλεὺς ἐν μονοζώνοις, † ὃν τρόπον (α) παθεινοὺς παρακαλῶν.

Gloria mea (s) vana mecum, & arcus meus in manu ejus (t) graditur. Qui me audiebant, attenderunt: & ſiluerunt ſuper conſilio meo. Et in ſermone meo non adjecerunt: ſed gaviſi ſunt, cùm loquerer eis. Sicut terra ſitiens ſuſcipiens pluviam; ſic iſti meum ſermonem. Si (n) riderem ad eos, non credebant: & lumen faciei meæ non decidebat. Elegi (o) viam eorum, & ſedi princeps: & habitabam ſicut rex (p) in accinctis, quaſi (q) conſolans triſtes.

MS.A. (σ) αὐτοῦ ἐν (τ) πορεύσεται. (υ) Πρεσβύτεροι ἀκούσαντές μου προσέσχον, (φ) Ἐπὶ δὲ τῷ (χ) καὶ περιχαρεῖς ἐγίνοντο ὁπότε (ψ) προσδεχομένη ὑετόν, (ω) λαλιὰν προσεδέχοντο. Εἰ ἐγέλων πρὸς αὐτούς, οὐκ ἐπίστευον, καὶ (α) συμπαθεῖς

ΚΕΦ. λ΄.

1 † Νυνὶ δὲ κατεγέλασάν μου ἐλάχιστοι, † νῦν νουθετοῦσί με ἐν μέρει, ὧν ἐξουδένουν τοὺς πατέρας αὐτῶν, † οὓς οὐχ ἡγησάμην (α) ἀξίους κυνῶν τῶν ἐμῶν νομάδων. 2 † Καί γε ἰσχὺς χειρῶν αὐτῶν ἵνα τί μοι; † ἐπ᾽ αὐτοὺς ἀπώλετο συντέλεια. 3 † Ἐν ἐνδείᾳ καὶ λιμῷ ἄγονος, † οἱ φεύγοντες ἄνυδρον ἐχθὲς συνοχὴν καὶ ταλαιπωρίαν. 4 † Οἱ περικυκλοῦντες (β) ἅλιμα ἐπὶ ἠχοῦντι, † οἵτινες ἅλιμα ἦν αὐτῶν τὰ σῖτα, † ἄτιμοι δὲ καὶ πεφαυλισμένοι, (γ) ἐνδεεῖς παντὸς ἀγαθοῦ, † οἳ καὶ ῥίζας ξύλων (δ) ἐμασῶντο ὑπὸ λιμοῦ μεγάλου. 5 † Ἐπανέστησάν μοι κλέπται, 6 Ὧν οἱ οἶκοι αὐτῶν ἦσαν τρῶγλαι (˙˙) πετρῶν. 7 † Ἀναμέσον εὐήχων βοήσονται οἳ ὑπὸ φρύγανα ἄγρια διῃτῶντο. 8 † Ἀφρόνων υἱοὶ καὶ ἀτίμων, ὄνομα καὶ κλέος ἐσβεσμένον (∴) ἀπὸ γῆς. 9 † Νυνὶ δὲ (ε) κιθάρα ἐγώ εἰμι αὐτῶν, † καὶ ἐμὲ (ζ) θρύλημα ἔχουσιν. 10 † Ἐβδελύξαντο δέ με ἀποστάντες μακράν, † ἀπὸ δὲ (η) τοῦ προσώπου μου οὐκ ἐφείσαντο (θ) πτύσμα. 11 † Ἀνοίξας (ι) γὰρ φαρέτραν αὐτοῦ ἐκάκωσέ με, † καὶ χαλινὸν τοῦ προσώπου μου (κ) ἐξαπέστειλαν. 12 † Ἐπὶ δεξιῶν (λ) βλαστοῦ ἐπανέστησαν, † πόδα αὐτῶν ἐξέτειναν, καὶ ὡδοποίησαν ἐπ᾽ ἐμὲ τρίβους ἀπωλείας αὐτῶν. 13 † Ἐξετρίβησαν τρίβοι μου, † ἐξέδυσε γάρ (μ) μου τὴν στολήν. † Βέλεσιν αὐτοῦ κατηκόντισέ με. 14 † (˙˙) Κέχρηται δέ μοι ὡς (ν) βούλεται, † ἐν ὀδύναις πέφυρμαι. 15 † (ξ) Ἐπιστρέφονταί μου αἱ ὀδύναι, † ᾤχετό μου ἡ ἐλπὶς ὥσπερ πνεῦμα, † καὶ ὥσπερ νέφος ἡ σωτηρία μου (ο). 16 † Καὶ νῦν ἐπ᾽ ἐμὲ ἐκχυθήσεται ἡ ψυχή μου, † ἔχουσιν δέ με ἡμέραι ὀδυνῶν. 17 † (π) Νυκτὶ δέ μου τὰ ὀστᾶ συγκέχυται, τὰ δὲ νεῦρά μου διαλέλυται. 18 † (ρ) Ἐν πολλῇ ἰσχύϊ ἐπελάβετό μου τῆς στολῆς, † ὥσπερ τὸ περιστόμιον τοῦ χιτῶνός μου περιέσχε με. 19 † (σ) Ἥγησαι δέ με ἴσα πηλῷ, † ἐν γῇ καὶ σποδῷ (τ) μου ἡ μερίς. 20 † Κέκραγα δὲ πρὸς σὲ καὶ οὐκ (υ) ἀκούεις μου, 21 † ἔστησαν δὲ καὶ κατενόησάν με. † Ἐπέβησαν δέ μοι ἀνελεημόνως, † χειρὶ κραταιᾷ με ἐμαστίγωσας.

CAP. XXX.

Nunc autem deriſerunt me (a) minimi: nunc monent me in parte, quorum ſpernebam patres eorum, quos non putavi (b) dignos canibus meorum gregum. Et quidem virtus manuum eorum (c) ut quid mihi? ſuper eos periebat (d) conſummatio. In egeſtate, & fame (e) ſterilis: qui fugiebant (f) inaquoſam heri preſſuram, & miſeriam. Qui (g) circuibant (h) alima in (i) reſonante, quorum (k) quidem alima erat eorum cibaria: inhonorati autem & abjecti, egentes omni bono: qui & (l) radices lignorum manducabant propter magnam famem. Inſurrexerunt ſuper me fures, Quorum domus erant cavernæ petrarum: Inter (m) medium benè ſonantium clamabunt, qui ſub ſarmentis agreſtibus manebant, Stultorum filii, & ignobilium: nomen & gloria extincta eſt de terra. Nunc autem cithara eorum ego ſum, & me fabulam habent. Et abominati ſunt me, diſcedentes procul: nec in faciem meam pepercerunt ſpuere. Aperiens enim pharetram ſuam afflixit me: (n) et frænũ faciei meæ emiſerunt. Super (o) dextra germinis inſurrexerunt: pedem (p) ſuum extenderunt, et ſtraverunt ſuper me ſemitas (q) perditionis ipſorum. Contritæ ſunt ſemitæ meæ: exuerunt enim me ſtolâ. Jaculis ſuis vulneravit me: (r) judicavit autem mihi, ſicut (ſ) vult: in doloribus maceratus ſum: (t) convertuntur in me dolores. Diſceſſit (u) ſpes mea, ſicut ſpiritus; & ſicut nubes ſalꝰ mea. Et nunc ſuper me (x) effunditur anima mea: habent autem me dies dolorum. Nocte verò oſſa mea (y) confuſa ſunt: & nervi mei diſſoluti ſunt. In multa virtute apprehendit ſtolam meam: & quaſi ora capitii mei circundedit me. Reputâſti autem me, ſicut lutum: in terra, & cinere pars mea. Clamavi autem ad te, & non audis me: ſteterunt autem, & conſideraverunt me. (z) Inſultârunt autem mihi immiſericorditer: manu potenti me flagellâſti.

MS.A. (α) ἀξίους εἶ) * κοινῶν τῶν (β) ἄλιμμα ἐπὶ ἠχοῦ π, ὧν ἄλιμμα ἦν αὐτῶν τὰ σῖτα, ἄτιμοί τε (γ) ἐνδεεῖς ἀγαθοῦ, (δ) ἐμασσῶντο (˙˙) τῶν πτωχῶν (∴) ἐπὶ γῆς. (ε) κιθάρα αὐτῶν ἐγώ εἰμι, καὶ (ζ) θρύλημα ἔχουσιν. Ἐβδελύξαντό με. (η) προσώπου (θ) πτύελον. (ι) γὰρ ὅδε φαρέτραν (κ) ἐξαπέστειλεν. (λ) τοῦ βλαστοῦ (μ) με τὴν στολήν μου. (˙˙) Κέχρηται (ν) ἐβούλετο, (ξ) ἐπιστρέφονται δέ μου (ο) παρῆλθεν. Καὶ νῦν (π) Νύκτες δέ μου τὰ ὀστᾶ συνέθλασε, καὶ τὰ νεῦρα (ρ) Πολλῇ ἰσχύϊ (σ) Ἥγηται δέ (τ) ἡ μερίς μου. (υ) εἰσακούεις μου, ἔστησαν καὶ κατενόησάν * μοι. Ἀπέβησαν δέ μοι ἀνελεήμονες, ὡς χειρὶ

תרגום TARGUM.

20 21 חדת גבי וקשתי בידי משתלחפא : מני קבילו ואוריכו ושתיקו למלכתי : בתר פתגמי לא יתנון ועליהון תשפר מלתי : ואוריכו היך מטרא לותי והיך

22 23 24 25 ריסיא דפומהון פתחו למלקושא : אגחך אמטולהון ולא יהמנון וקלסתור אפי לא אסתכלון : אבחר אורחהון ואתיב ברישיהון היך חתנא ואשרי כמלכא

חילא היך כמן דאבלין מנחם :

ל

1 2 ין מנחכין עלי דעדקין מני ליומין די רחיקית אבהתהון לשואה עם כלבי נטרי עני : אוף חיל ידיהון למה לי עליהון הוביד כיך : תא לחוד חיל ידיהון

3 לי לקבלותיה שוחרא אין אתנגר להון להובדא בכוך קבורתא : בחוסרנא ובאולצנא דלא ולד הוין ערקין רשיעיא בארעא צהיא חשוכא היך רומשא

4 שיתא ורגושתא : דתלשין הובי חולף עספי מיכלא ועקרין רתמין מזוניהון : הא דשבקין פתגמי אוריתא מן לוח לבהון מטול מלי דעלמא עקרי

5 6 תמיא מתוקדין ומתעבדין גומרין למזוניהון : מן שלהיא מתרכין מיבבין עליהון היך גנבא : בתקוף פצידי נחליא למשרי בנקירתא דעפרא ואבניא :

7 8 9 10 ילניא נהקין תחות היגי מתחברין : בניא דנבל עם בני הדיוטין ישתפפון מן ארעא : וכדון זמרהון הויתי והויתי להון לשותא : רחקינני רחיקו מני

11 12 קדמי לא מנעו רוקא : ארום עושלתי ונימי אטוני שרא וסנפני וזממא מן קדמי פטרו : על ימינא בחוצפא בניהון קימין רגלי שדרו וכבשו עלי

13 14 15 קשי תבריהון : צדיאו שבילי לפורעניתי מהנין רית דסעיד להון : כתקוף פלטירין גללי ימא אתין תחות רגושא מתגלגלין : אתהפך עלי רגושתא

16 17 רדוף כזעפא רבנותי והיך עבא עברת פורקני : וכדון עלי מצטערא נפשי יאחדונני יומי עניותא : בליליא גרמי מתפקפקן מני ודמעסן יתי לא שכבין :

18 19 שיעי חילא יתבלש לבושי אגב כתוני יזרזנני : אשוו יתי לטינא ואתמתיל כעפרא וקטמא : הא אקשו יתי לאדם דאתברא מן טינא ואמתיל לאברהם

20 21 אמי לעפר וקטם : אצלי מנך ולא תעני יתי קמית יתבון במימרי : תתהפך לאכזראה לי באלימות אידך תנטנני :

Verſio SYRIACA.

20 [illegible]
21 22 [illegible]
23 24 [illegible]
25 [illegible]
1 [illegible]
2 [illegible]
5 [illegible]
6 7 [illegible]
8 9 [illegible]
10 11 [illegible]
12 13 [illegible]
14 [illegible]
15 16 [illegible]
17 18 [illegible]
19 20 [illegible]
21 [illegible]

Verſio ARABICA.

20 21 * فقد أخذ سعيي * وقوسي بيدي استبدلت * ولو أنهم سمعوني وصبروا وقبلوا رأيي * ومن قولي لم
22 23 يعدلوا * وحسنت عندهم كلمتي * انتظروني مثل المطر * وأفواههم تعروها مثل الذي يطلب الربيع *
24 25 * فأضحك عليهم * ولا يؤمنون * وفي ضياء وجهي لا يسلكون * وأفتش طرائقهم * وأرجع وأحل مثل
الملك بجنده * ومثل الرجل الذي يعزي المحزونين * الفصل الثلاثون *
1 * والآن فقد شمت بي الذين هم أصغر مني في الأيام * الذين أنا أرذلت آباءهم * وما حسبتهم إلا مع
2 5 كلاب غنمي * وقوة أيديهم لم تكن عندي شيئا * فقدت جميع العظمة ** * وبالقهر يخرج عليهم مثل
6 7 السارق * بقوة المصانع * ليطرح في غبار الأرض وحجارها * وتحت الكهوف وتحت السواقي * يهد البدون
8 9 السفهاء مع بني المنافقين * هنالك يتواضعون من الأرض * والآن فإني كنت أهمهم * وكنت لهم
10 11 عجبا * فصوني وابتعدوا عني * ولم يمسكوا البصاق عن وجهي * لأنهم من ورائي ابتدوا
12 13 ووضعوني * ولجامه ألقوه في فمي * عن يميني قاموا * وعقلوا رجلي وعقلوني في سبيل طرقي * وطرائقي
14 عوجوها باطلا * وعلى الذي أصابني فرحوا * ولهم فلا يكون فرج * مثل النعر العظيمة يأتون * وتحت
15 العجاج يتبددون * لأنهم ردوا علي الاضطراب * وطردوا مثل الريح طرائقي * ومثل السحاب التي تعبر
16 17 خلاصي * والآن فقد كربت نفسي وأطافت في أيام مذلتي * وفي الليل عظامي ثقلت علي * وجسدي
18 19 لم يحل بكثرة القوة * لبست لبوسي تشددت بثيابي * فألقوني في الطين وشبهت الرماد والتراب * فأعج
20 21 إليك ولا تجيبني * قمت ففهمتني * وجعلتني لك عدوا وبعظمة يديك حكمتني *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Jam enim populus meus comprehenſus eſt, et arcus meus in manu mea immutatus eſt. Quòd ſi ipſi 20 21 *audiviſſent me, & præſtolati fuiſſent, ac ſuſcepiſſent conſilium meum, Et* 22 *à ſermone meo non declinaſſent, & placuiſſet eis verbū meum, Expectâſſent me quaſi pluviam, &* 23 *ora ſua aperuiſſent: velut is qui petit ver. Irridebo* 24 *eos, nec credent: & in lumine vultûs mei non ambulabunt: Et inveſtigabo* 25 *vias eorum, & revertar, atque habitabo quaſi rex cum exercitu ſuo, et quaſi vir qui conſolatur afflictos.*

CAP. XXX.

ET nunc inſultant mihi qui ſunt minores me diebus, quorum ego patres 1 *vilipendi, nec reputavi eos niſi cum canibus ovium meorum, Quorum forti-* 2 *tudo manuum non fuit apud me ullius momenti. (a) Conſumpta eſt omnis celſitudo, Et cum violen-* 5 *tia (b) egredietur contra illos quaſi fur, cum impetu (c) turbarum, (d) ut* 6 *dejiciat in pulverem terræ, & lapides ejus; Et* 7 *ſub rupibus, & ſub pinnis Deſtruentur ſtulti (e) per-* 8 *verſi cum filiis impiorum: Ibi humiliabuntur à terra. Et nunc ſum illis ſoli-* 9 *citudini, & factus ſum illis (f) miraculum: (g) De-* 10 *vitârunt me, et receſſerunt à me, nec cohibuerunt ſputum à facie mea: Quo-* 11 *niam ipſi à tergo meo cœperunt et depreſſerunt me: et frænū ejus injecerunt in os meum. A dextera* 12 *mea ſteterunt, & impediverunt pedes meos, et implicaverunt me in ſemita viarum mearum, Et vias* 13 *meas diſtorſerunt gratis, & de iis quæ acciderunt mihi, gaviſi ſunt: ipſis verò non erit (h) gaudium. Veluti ruptio magna ve-* 14 *nient, & ſub turbine (i) diſpergentur: Quia re-* 15 *duxerunt ſuper me perturbationem, & expulerunt quaſi ventum vias meas; & quaſi nubes tranſeuntes, ſalutem meam. Et nunc jam contri-* 16 *ſtata eſt anima mea, et circumdederunt me dies afflictionis meæ: Et in no-* 17 *cte oſſa mea gravata ſunt ſuper me, et corpus meū non habitavit in multitudine roboris. Indutus ſum* 18 *veſtibus meis, et cinxi me indumentis meis, Et pro-* 19 *jecerunt me in lutum, & ſimilis factus ſum cineri & pulveri. Et vociferabor ad te, nec exaudies* 20 *me: ſtetiſti, et conſiderâſti me, Et poſuiſti me ad-* 21 *verſarium tibi, & in celſitudine manuum tuarum (k) cohibuiſti me.*

INTERP. SYRIACA.

(a) Super illos conſumpta (b) emanabit (c) torrentis, (d) Ad habitandum in ſciſſuris in pulvere & petris; Et ſub (e) ſtulti (f) ſtupor: (g) Abominantur (h) auxilium. (i) confringentur: (k) ligaſti me.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Gloria mea innovabatur apud me, & arcus meus in manu mea permutabatur. Audiebant me & expectabant, & tacebant ad conſilium meum. Poſt verbum meum non iterabant, & eis placebat eloquium meum. Et expectabant me ſicut pluviam, & ſicut hortulani qui os ſuum aperiunt ad imbrem ſerotinum. Ridebam ad eos & non credebant, & vultum faciei meæ non intuebantur. Eligebam viam eorum, & ſedebam in capite eorum ſicut ſponſus, & habitabam ſicut rex in exercitu, & ſicut ille qui lugentes conſolatur. 20 21 22 23 24 25

CAP. XXX.

NUnc autem derident me juniores me diebus, quorum patres abjeci ut ponerem eos cum canibus cuſtodientibus oves meas. *Etiam* virtus manuum ſuarum pro nihilo erat mihi: ſuper eos periit ſenium. *Targum aliud:* Verumtamen virtus manuum ſuarum pro nihilo erat mihi, *ut acciperem eam pro munere, cùm decretum eſſet de illis ut perirent in fovea ſepulchri.* In egeſtate & fame ſine filiis fuerunt fugientes impii, in terram *ſiticuloſam* & tenebroſam *ſicut veſpera,* in locum calamitatis & miſeriæ. Qui evellunt urticas pro herbis in cibum ſuum, & radices juniperorum cibus eorum. *Targum aliud: Qui dimittunt verba legis è tabula cordis ſui propter ſermones mundi, radices juniperorum comburentur & fient prunæ* cibus eorum. Ex improviſo ejiciebant, vociferabantur ſuper eos quaſi ſuper latronem. In præruptis rivorum torrentium ut habitarent in cavernis pulveris & petrarum. Inter arbores gemebant, & ſub ſentibus conjungebantur. Filii ſtulti cum filiis idiotarum conterentur de terra. Nunc autem canticum eorum ſum, & factus ſum eis in proverbium. Abominati ſunt me & longè receſſerunt à me, & à facie mea non prohibuerunt ſputum. Quoniam vinculum meum *& fila funis mei* diſſolvit, & *affixit me,* & *camum* à facie mea ſolverunt. Ad dextram cum impudentia filii eorum ſurrexerunt, pedes meos ſubverterunt, & ſtraverunt ſuper me ſemitas interitus eorum. Deſolaverunt itinera mea, in ultionem mei profecerunt, non eſt qui auxiliaretur eis. Quaſi rapiditas dilatationis fluctuum maris veniunt, ſub tumultu devolvuntur. Verſus eſt contra me tumultus, perſequeris quaſi ventus dominationem meam, & ſicut nubes pertranſivit ſalus mea. Nunc autem in memetipſo tribulatur anima mea, comprehenderunt me dies afflictionis. In nocte oſſa mea perforantur in me, & qui adverſum me fremunt, non quieſcunt. In multitudine virtutis *perquiritur* veſtimentum meum: apud tunicam meam accingit me. Comparaverunt me luto, & aſſimilatus ſum pulveri & cineri. *Targum aliud:* Comparaverunt me *Adamæ, qui creatus fuit* è luto; & aſſimilatus ſum *Abrahamo, qui ſimilis fuit* pulveri & cineri. Deprecor te, & non exaudis me; ſto, & [*non*] intendis in me. Converſus es mihi in crudelem, in fortitudine manus tuæ comminatus es mihi. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21

איוב : לא

me liquefacies & : me *facies* equitare , ventum super me *Elevabis*

22 תִּשָּׂאֵנִי אֶל־רוּחַ תַּרְכִּיבֵנִי וּתְמֹגְגֵנִי

domum & : me facies converti mortem novi Nam *subtilitate*

23 תְּשִׁיָּה׃ כִּי־יָדַעְתִּי מָוֶת תְּשִׁיבֵנִי וּבֵית

:manum mittet tumulum in non Veruntamen .viventis omnis *conventus*

24 מוֹעֵד לְכָל־חָי׃ אַךְ לֹא־בְעִי יִשְׁלַח־יָד

durum *ad* flevi non Si ? clamor ,eis ejus contritione in si

25 אִם־בְּפִידוֹ לָהֶן שׁוּעַ׃ אִם־לֹא בָכִיתִי לִקְשֵׁה־

, expectavi bonum Quando .*egeno* mea anima *indoluit* ; *die*

26 יוֹם עָגְמָה נַפְשִׁי לָאֶבְיוֹן׃ כִּי טוֹב קִוִּיתִי

mea Viscera .caligo venit & , lumen expectavi & :malum venit &

27 וַיָּבֹא רָע וַאֲיַחֲלָה לְאוֹר וַיָּבֹא אֹפֶל׃ מֵעַי

.afflictionis dies me prævenerunt : siluerunt non & , ferbuerunt

רֻתְּחוּ וְלֹא־דָמּוּ קִדְּמֻנִי יְמֵי עֹנִי׃

.clamavi *ecclesia* in , surrexi : sole absque ambulavi Pullatus

28 קֹדֵר הִלַּכְתִּי בְּלֹא חַמָּה קַמְתִּי בַקָּהָל אֲשַׁוֵּעַ׃

mea Cutis .*ululæ* filiabus *socius* & , draconi fui Frater

29 30 אָח הָיִיתִי לְתַנִּים וְרֵעַ לִבְנוֹת יַעֲנָה׃ עוֹרִי

.æstu ab est ustulatum meum os & ; me desuper est denigrata

שָׁחַר מֵעָלָי וְעַצְמִי־חָרָה מִנִּי־חֹרֶב׃

.flentium vocem in meum organum & : mea cithara luctum in *fuit* Et

31 וַיְהִי לְאֵבֶל כִּנֹּרִי וְעֻגָבִי לְקוֹל בֹּכִים׃

CAP. XXXI. לא

? virgine in *considerabo* quid & : meis oculis *excidi* Fœdus

1 בְּרִית כָּרַתִּי לְעֵינָי וּמָה אֶתְבּוֹנֵן עַל־בְּתוּלָה׃

? excelsis de *Sadai* hæreditas & : desuper Dei pars quæ Et

2 וּמֶה חֵלֶק אֱלוֹהַּ מִמָּעַל וְנַחֲלַת שַׁדַּי מִמְּרֹמִים׃

Nonne ? iniquitatis operariis alienatio & ,iniquo contritio Nonne

3 4 הֲלֹא־אֵיד לְעַוָּל וְנֵכֶר לְפֹעֲלֵי אָוֶן׃ הֲלֹא־

Si ? *dinumerabit* meos gressus omnes & ,meas vias *videbit* ipse

5 הוּא יִרְאֶה דְרָכָי וְכָל־צְעָדַי יִסְפּוֹר׃ אִם־

.meus pes dolum ad festinavit & , mendacio cum ambulavi

הָלַכְתִּי עִם־שָׁוְא וַתַּחַשׁ עַל־מִרְמָה רַגְלִי׃

.meam perfectionem Deus sciet & : justitiæ *bilancibus* in me Appendat

6 יִשְׁקְלֵנִי בְמֹאזְנֵי־צֶדֶק וְיֵדַע אֱלוֹהַּ תֻּמָּתִי׃

abiit meos oculos post Et .via de meus gressus declinavit Si

7 אִם תִּטֶּה אַשֻּׁרִי מִנִּי הַדָּרֶךְ וְאַחַר עֵינַי הָלַךְ

alius & , Seram .quicquam adhæsit meis *volis in* & : meum cor

8 לִבִּי וּבְכַפַּי דָּבַק מְאוּם׃ אֶזְרְעָה וְאַחֵר

meum cor est seductum Si .eradicentur *mea germina* & : comedat

9 יֹאכֵל וְצֶאֱצָאַי יְשֹׁרָשׁוּ׃ אִם־נִפְתָּה לִבִּי

Molat .sum insidiatus mei *socii* ostium juxta & : muliere super

10 עַל־אִשָּׁה וְעַל־פֶּתַח רֵעִי אָרָבְתִּי׃ תִּטְחַן

hoc Nam .alii incurventur eam super & : mea uxor alteri

11 לְאַחֵר אִשְׁתִּי וְעָלֶיהָ יִכְרְעוּן אֲחֵרִין׃ כִּי־הוּא

ad usque *ipsa* ignis Quia .*judicum* iniquitas *ipsum* & ,scelus

12 זִמָּה וְהִיא עָוֹן פְּלִילִים׃ כִּי אֵשׁ הִיא עַד־

Si .eradicet *meum proventum omnem* in & : devorat perditionem

13 אֲבַדּוֹן תֹּאכֵל וּבְכָל־תְּבוּאָתִי תְשָׁרֵשׁ׃ אִם־

.mecum *ipsos litigando in* , meæ ancillæ & ,mei servi judicium abhorrui

אֶמְאַס מִשְׁפַּט עַבְדִּי וַאֲמָתִי בְּרִבָם עִמָּדִי׃

quid , visitaverit cùm & : Deus surrexerit cùm faciam quid Et

14 וּמָה אֶעֱשֶׂה כִּי־יָקוּם אֵל וְכִי־יִפְקֹד מָה

nos disposuit & : eum fecit ,me *faciens* utero in Nonne ? illi respondebo

15 אֲשִׁיבֶנּוּ׃ הֲלֹא־בַבֶּטֶן עֹשֵׂנִי עָשָׂהוּ וַיְכֻנֶנּוּ

oculos & : *tenuium voluntate à* prohibui Si ? pariter vulva in

16 בָּרֶחֶם אֶחָד׃ אִם־אֶמְנַע מֵחֵפֶץ דַּלִּים וְעֵינֵי

.consumpsi viduæ

אַלְמָנָה אֲכַלֶּה׃

Versio VULG. LAT.

22 Elevâsti me, & quasi super
ventum ponens elisisti me va-
23 lidé. Scio quia morti trades
me, ubi constituta est domus
24 omni viventi. Veruntamen
non ad consumptionem eo-
rum emittis manum tuam: &
si corruerint, ipse salvabis.
25 Flebam quondam super eo qui
afflictus erat, & compatieba-
26 tur anima mea pauperi. Ex-
pectabam bona, & venerunt
mihi mala: præstolabar lu-
cem, & eruperunt tenebræ.
27 Interiora mea efferbuerunt
absque ulla requie, prævene-
28 runt me dies afflictionis. Mœ-
rens incedebam, sine furore;
consurgens, in turba clamabã.
29 Frater fui draconum, & socius
30 struthionum. Cutis mea de-
nigrata est super me, & ossa
mea aruerunt præ caumate.
31 Versa est in luctum cithara
mea, & organum meum in vo-
cem flentium.

CAP. XXXI.

1 PEpigi fœdus cum oculis
meis, ut ne cogitarem quidem
2 de virgine. Quam enim par-
tem haberet in me Deus desu-
pèr, & hæreditatem Omnipo-
3 tens de excelsis? Numquid
non perditio est iniquo, et alie-
natio operantibus injustitiam?
4 Nónne ipse considerat vias
meas, & cunctos gressus meos
5 dinumerat? Si ambulavi in
vanitate, & festinavit in dolo
6 pes meus: Appendat me in
statera justa, & sciat Deus sim-
7 plicitatem meam. Si decli-
navit gressus meus de via, & si
secutum est oculos meos cor
meum, & si manibus meis ad-
8 hæsit macula: Seram, & alius
comedat: & progenies mea
9 eradicetur. Si deceptum est
cor meum super muliere, & si
ad ostium amici mei insidiatus
10 sum: Scortum alterius sit uxor
mea, & super illam incurven-
11 tur alii. Hoc enim nefas est, et
12 iniquitas maxima. Ignis est
usque ad perditionem devo-
rans, & omnia eradicans geni-
13 mina. Si contempsi subire
judicium cum servo meo, &
ancillâ meâ, cùm disceptarent
14 adversùm me. Quid enim fa-
ciam cùm surrexerit ad judi-
candum Deus? & cùm quæ-
sierit, quid respondebo illi?
15 Numquid non in utero fecit
me qui & illum operatus est:
& formavit me in vulva unus?
16 Si negavi, quod volebant, pau-
peribus, & oculos viduæ ex-
pectare feci.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

21 †Ἔταξας δέ με ἐν ὀδύναις, καὶ (υ) ἀπέρρι-
23 ψάς με ἀπὸ σωτηρίας. †Οἶδα γὰρ ὅτι
θάνατός με ἐκτρίψει, †οἰκία γὰρ (φ) παν-
24 τὶ θνητῷ γῆ. †Εἰ γὰρ ὄφελον δυναίμην
ἐμαυτὸν χειρώσασθαι, †(χ) ἢ δεηθείς γε
25 ἑτέρου, καὶ ποιήσει μοι τοῦτο. †Ἐγὼ δὲ ἐπὶ
παντὶ ἀδυνάτῳ ἔκλαυσα, †(ψ) ἐστέναξα
26 ἰδὼν ἄνδρα (ω) ἐν ἀνάγκαις. †Ἐγὼ δὲ
ἐπέχων ἀγαθοῖς, ἰδοὺ συνήντησάν μοι
27 μᾶλλον ἡμέραι κακῶν. †Ἡ κοιλία μου
ἐξέζεσε καὶ οὐ σιωπήσεται, †προέφθασάν
28 (α) με ἡμέραι πτωχείας. †Στένων πε-
πόρευμαι ἄνευ φιμοῦ, †ἕστηκα δὲ ἐν ἐκκλη-
29 σίᾳ κεκραγώς. †Ἀδελφὸς γέγονα σει-
30 ρήνων, †ἑταῖρος δὲ στρουθῶν. †Τὸ δὲ δέρ-
μα μου (β) ἐσκότωται μεγάλως, †τὰ δὲ
31 ὀστᾶ μου ἀπὸ καύματος (γ). †Ἀπέβη δὲ
εἰς πένθος μου ἡ κιθάρα, †ὁ δὲ ψαλμός
μου εἰς κλαυθμὸν ἐμοί.

Statuisti autem me in doloribus: & projecisti me à salute. Novi enim, quòd mors me conteret: domus enim est omni mortali terra. Atque utinam possem mihi ipse manus afferre; aut rogarem alium, & faceret mihi hæc. Ego autem super omni impotente flevi: gemui videns virum in necessitatibus. Ego autem (aa) inhærens bonis: ecce occurrerunt mihi magis dies malorum. Venter meus efferbuit, & non (bb) tacebit: prævenerunt me dies mendicitatis. Gemens ivi (cc) sine fræno, & steti in cœtu clamans. Frater factus sum (dd) syrenum, & socius struthionum. Et cutis mea (ee) obtenebrata est valdè, & ossa (ff) mea ab æstu. Versa est autem in luctum cithara mea; & psalmus meus in fletum mihi.

MS.A. (υ) ἀπέριψας (φ) γῆ παντὶ θνητῷ. (χ) ἢ δεηθῆναι ἑτέρου, (ψ) καὶ ἐστέναξα (ω) ἐν ἀνάγκῃ. Καὶ* ἔπιχον ἐγὼ ἐν ἀγαθοῖς, καὶ ἰδοὺ *συνήντησέν (α) δέ με (β) μεμελάνωται μεγάλως, (γ) συνεφρύγη. Ἀπέβη εἰς πένθος ἡ κιθάρα μου,

ΚΕΦ. λα΄.

1 †Διαθήκην ἐθέμην τοῖς ὀφθαλμοῖς μου,
2 †καὶ οὐ συνήσω (α) ἐπὶ παρθένον. †(β) Καὶ τί
ἐμέρισεν ὁ θεὸς ἄνωθεν, καὶ κληρονομία
3 ἱκανοῦ (γ) ἐξ ὑψίστων; †(δ) Οὐαὶ, ἀπώλεια
τῷ ἀδίκῳ, καὶ ἀπαλλοτρίωσις τοῖς ποιοῦ-
4 σιν ἀνομίαν. †Οὐχὶ αὐτὸς ὄψεται ὁδόν
μου, καὶ πάντα τὰ διαβήματά μου (ε) ἐξα-
5 ριθμήσεται; †Εἰ δὲ ἤμην πεπορευμένος
μετὰ γελοιαστῶν, †εἰ δὲ καὶ ἐσπούδασεν (ζ)
6 ὁ πούς μου εἰς δόλον· †Ἕσταμαι γὰρ ἐν ζυ-
γῷ δικαίῳ, (η) οἶδε δὲ ὁ κύριος τὴν ἀ-
7 κακίαν μου· †Εἰ ἐξέκλινεν ὁ πούς μου (θ)
ἐκ τῆς ὁδοῦ, †εἰ δὲ καὶ τῷ (ι) ὀφθαλμῷ ἐπ-
ηκολούθησεν ἡ καρδία μου, †(κ) εἰ δὲ καὶ
8 ταῖς χερσί μου ἡψάμην δώρων, Σπεί-
ραιμι ἄρα καὶ ἄλλοι φάγοισαν, †ἄρριζος
9 δὲ γενοίμην ἐπὶ γῆς. †Εἰ ἐξηκολούθησεν
ἡ καρδία μου γυναικὶ ἀνδρὸς ἑτέρου,
†(λ) εἰ καὶ ἐγκάθετος ἐγενόμην ἐπὶ θύ-
10 ραις αὐτῆς, †Ἀρέσαι ἄρα καὶ ἡ γυνή μου
(μ) ἑτέρῳ, τὰ δὲ νήπιά μου ταπεινωθείη.
11 †Θυμὸς γὰρ ὀργῆς (ν) ἀκατάσχετος, τὸ
12 μιᾶναι ἀνδρὸς γυναῖκα. †Πῦρ γάρ ἐστι
καιόμενον (ξ) ἐπὶ πάντων τῶν μερῶν,
†οὗ δ' ἂν ἐπέλθῃ ἐκ ῥιζῶν ἀπώλεσεν.
13 †Εἰ δὲ καὶ ἐφαύλισα κρίμα θεράποντός
μου ἢ θεραπαίνης, κρινομένων αὐτῶν (ο)
14 πρὸς μέ, †Τί γὰρ ποιήσω ἐὰν ἔτασίν μου
(π) ποιῆται ὁ κύριος; †ἐὰν δὲ καὶ ἐπισκοπήν
15 τινα, ἀπόκρισιν ποιήσομαι; †Πότερον
(ρ) οὐχ ὡς καὶ ἐγὼ ἐγενόμην ἐν γαστρὶ, καὶ
ἐκεῖνοι γεγόνασι; †γεγόναμεν δὲ ἐν τῇ
16 αὐτῇ κοιλίᾳ. †Ἀδύνατοι (σ) δὲ χρείαν
ἥν ποτε εἶχον οὐκ ἀπέτυχον, †χήρας δὲ τὸν
ὀφθαλμὸν οὐκ ἐξέτηξα.

CAP. XXXI.

TEstamentum (a) posui oculis meis, & non (b) intelligam super virgine. Et quid (c) partitus est Deus desuper; & hæreditas Omnipotentis ex altissimis? Væ, perditio injusto, & abalienatio facientibus iniquitatem. Nónne ipse videbit viam meam, & omnes gressus meos enumerabit? Si verò incessi cum (d) irrisoribus, vel si festinavit ad dolum pes meus: ((e) Steti enim in statera justa, novit autem Dominus (f) innocentiam meam:) Si declinavit pes meus de via, vel si oculo obsequutum est cor meum, vel si manibus meis tetigi dona: Seram igitur, & alii edant: & sine (g) radice sim super terram. Si sequutum est cor meum mulierem viri alterius, aut si (h) obsedi januas ejus; (i) Placeat quoque uxor mea alteri, & filii mei humilientur. Furor enim (k) iræ indomitus, commaculare viri uxorem. Ignis enim est ardens super omnes (l) partes: quocunque supervenerit, à radicibus perdidit. Quòd si & (m) despexi judicium famuli mei, aut ancillæ, cùm ipsi litigarent mecum: Quid enim faciam, si (n) inquisitionem mei faciat Dominus? quòd, si & visitationem aliquam, responsum dabo? Nónne sicut ego factus sum in utero, & illi facti sunt? facti autem sumus in eodem (o) ventre. Impotentes autem, quacunque aliquando re opus habebant, non sunt frustrati; & viduæ oculum non tabefeci.

MS.A. (α) ἐπὶ παρθένων. (β) Καὶ ἐπεμέρισεν (γ) ἐξ ὑψίστου; (δ) Οὐαὶ, καὶ ἀπώλεια (ε) ἐξαριθμηθήσεται; Εἴγε ἤμην (ζ) εἰς δόλον ὁ πούς μου Ἕσταμε (η) οἶδεν ὁ κύριος (θ) ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ, εἰ (ι) ὀφθαλμῷ μου (κ) καὶ εἰ ἐν ταῖς χερσίν μου ἡψάμην δώρων, Σπείροιμι ἄρα καὶ ἄλλοι φάγονται, ἄριζος (λ) εἰ δὲ καὶ (μ) ἄλλῳ, (ν) ἀκάθεκτος, (ξ) ἐκ πάντων (ο) πρὸς ἐμὲ, (π) ποιήσῃ (ρ) οὐχ ὡς ἐγὼ (σ) δὲ ἥν ποτε εἶχον χρείαν οὐκ ἀπέτυχον, καὶ χήρας τὸν ὀφθαλμὸν οὐκ ἔτηξα.

תרגום TARGUM.

תשלנני לפוחא תרכבנני ותמסנני בתשיתא : ארום גלי קדמי דלמותא תתיב לי ובית קבורתא מזמן לכל דחי : לחוד לא ברתחא ישדר 22 23 24
מחתיה אין בעדן צעריה יקבל צלותהון : הא ברם לא לגרמיה יגרג מחתיה אין בחטטי ישוי להון אספלעיתא : אין לא בכית לקשי יומא עגמת 25
נפשי לחשיכא : ארום טב סברית ואתא ביש ואוריכית לנהורא ואתא קבלא : מעי חמרו ולית בהון חוו דמא אקדימו יתי יומי עניותא : אוכם 26 27 28
אזלית מדלית שמשא קמת בקהלא אבעי : אחא הויתי לירודין וחברא לברת נעמיתא : משכי שחם מעלוי וגרמי חרך מן נוגבא : והוא לאבלא 29 30 31
כנרי ואבובי אמתיל לקל בכין :

לא

קים גזרית לעיני ומה אסתכל על בתולתא : ומה חולק טב יהיב אלהא מלעלא ואחסנת שדי משמי מרומא : הלא צערא לזידונא ותבירא 1 2 3
לעבדי שקר : הלא הוא יחמי אורחתי וכל פסיעתי ימנה : אין הליכת עם שקרא וזריזת על נכילות רגלי : יתקלנני במשחתא דצדקא וידע אלהא 4 5 6 7
שלימותי : אין תצלי אסתורי מן אורחא ובתר עיני הלך לבי ובידי אדביק מדעם חבולא : אזרע וחורן ייכול ולבלבי נצרי יתלשון : אין אשתרגג 8 9
לבי על אתת גבר ועל תרע חברי כמנית : תשמש עם חורן אנתתי ועלה יחמטון חורנין : ארום היא זנו והוא סורחן פריש : ארום אשא היא 10 11 12
עד בי אבדנא תגמר ובכל אנבי תלשא : אין רחקית דין עבדי ואמהתי כד אית להון תגרא בהדי : ומה אעבד כד יקום אלהא וארום יסער 13 14
מה אתיבנה : הלא בכריסא עבדני מן דעבדיה ואתקן יתנא במעיא חד : אין אתמנע מלשלמא צבאות מסכינא ועיני ארמלתא אשיצי : 15 16

Versio SYRIACA.

22 * ܘܫܩܠܬܢܝ ܘܐܪܟܒܬܢܝ ܥܠ ܪܘܚܐ. ܘܡܟܟܬܢܝ ܘܐܬܪܝܬܢܝ. * ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܐܢܐ ܕܡܢ ܡܘܬܐ ܬܗܦܟܢܝ.
23 24 ܠܒܝܬ ܟܢܫܐ ܕܟܠܗܘܢ ܚܝܐ. * ܒܪܡ ܠܐ ܥܠܝ ܢܘܫܛ ܐܝܕܗ. ܘܟܕ ܐܩܥܐ ܠܗ ܢܦܪܩܢܝ. * ܒܟܝܬ ܥܠ
25 ܡܣܟܢܐ ܒܐܝܡܡܐ. ܘܟܪܝܬ ܢܦܫܝ ܥܠ ܒܨܝܪܐ. * ܣܟܝܬ ܠܛܝܒܘܬܐ. ܘܐܬܬ ܠܝ ܒܝܫܬܐ. ܣܟܝܬ ܠܢܘܗܪܐ
26 ܘܐܬܐ ܚܫܘܟܐ. * ܪܬܚܘ ܡܥܝ̈ ܘܠܐ ܫܠܝܘ. ܩܕܡܘܢܝ ܝܘܡܬܐ ܕܡܘܟܟܝ. * ܡܟܡܪܐܝܬ ܗܠܟܬ ܕܠܐ
27 28 ܚܡܬܐ. ܩܡܬ ܒܟܢܘܫܬܐ ܘܐܪܩܕܬ. * ܐܚܐ ܗܘܝܬ ܠܒ̈ܢܝ ܝܪܘܪܐ. ܘܚܒܪܐ ܠܒ̈ܢܬ ܢܥܡܝܬܐ. * ܡܫܟܝ ܐܬܩܦܠ ܥܠܝ.
29 30 ܘܓܪ̈ܡܝ ܚܡܘ ܐܝܟ ܕܒܫܘܒܐ. * ܘܗܘܐ ܟܢܪܝ ܠܐܒܠܐ. ܘܙܡܪܝ ܠܩܠܐ ܕܒܟܝܐ.
31 * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܐ *
1 * ܩܝܡܐ ܓܙܪܬ ܠܥܝܢ̈ܝ. ܕܠܐ ܐܬܒܩܐ ܒܒܬܘܠܬܐ. * ܘܡܢܘ ܦܠܓܗ ܕܐܠܗܐ ܕܡܢ ܠܥܠ.
2 3 ܘܝܪܬܘܬܗ ܕܐܠܗܐ ܕܡܢ ܡܪܘܡܐ. * ܐܠܐ ܐܒܕܢܐ ܠܥܘܠܐ. ܘܢܘܟܪܝܘܬܐ ܠܦܠܚ̈ܝ ܥܘܠܐ. * ܗܘ ܚܙܐ ܐܘܪ̈ܚܬܝ
4 5 ܘܟܠܗܘܢ ܗܠܟ̈ܝ ܡܢܐ. * ܐܢ ܗܠܟܬ ܥܡ ܫܩܪܐ: ܘܐܢ ܐܣܪܗܒܘ ܪ̈ܓܠܝ ܠܢܟܠܐ.
6 7 * ܢܬܩܠܢܝ ܒܡܣܐܬܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܘܢܕܥ ܐܠܗܐ ܬܡܝܡܘܬܝ. * ܐܢ ܐܣܛܝܘ ܗܠܟ̈ܝ ܡܢ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܢ ܐܙܠ
8 ܒܬܪ ܥܝܢ̈ܝ ܠܒܝ. ܘܐܢ ܕܒܩ ܒܝ ܡܕܡ. * ܐܠܐ ܐܢ ܙܪܥܬ. ܘܐܟܠܬ. ܘܐܢ ܢܨܒܬ. ܘܪܒܝܬ ܘܟܢܫܬ.
9 10 * ܘܐܢ ܐܬܦܬܝ ܠܒܝ ܥܠ ܐܢܬܬܐ ܢܘܟܪܝܬܐ. ܘܥܠ ܬܪܥܐ ܕܚܒܪܝ ܐܢ ܟܡܢܬ. * ܐܠܐ ܛܚܢܬ ܠܐܚܪ̈ܢܐ
11 ܐܢܬܬܝ. ܘܐܦܝܬ ܒܕܘܟܬܐ ܐܚܪܬܐ. * ܡܛܠ ܕܚܛܝܬܐ ܗܝ. ܘܥܝܢܐ ܕܢܟܠܐ. * ܘܢܘܪܐ ܕܥܕܡܐ
12 13 ܠܐܒܕܢܐ ܐܟܠܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܥܠܠܝ ܢܬܥܩܪܘܢ. * ܐܢ ܫܛܬ ܕܝܢܐ ܕܥܒܕܝ ܘܕܐܡܬܝ. ܟܕ ܕܝܢܝܢ ܗܘܘ
14 ܥܡܝ. * ܐܠܐ ܐܡܪܬ ܡܢܐ ܐܥܒܕ ܡܐ ܕܩܡ ܐܠܗܐ. ܘܡܐ ܕܦܩܕ. ܡܢܐ ܐܦܢܝܘܗܝ. * ܕܗܐ ܒܟܪܣܐ ܕܒܪܝܢܝ
15 16 ܒܪܝܗ. ܘܒܪܚܡܐ ܡܬܩܢܐ ܐܬܩܢܢ. * ܐܢ ܟܠܝܬ ܠܡܣܟܢܐ ܡܕܡ ܕܫܐܠ. ܘܐܢ ܐܚܫܟܬ ܥܝܢ̈ܝ ܕܐܪܡܠܬܐ.

Versio ARABICA.

22 * وحملتني فاربضتني علي الريح وحطيتني واسعيتني * والان اعلم انك من الموت تردني الي مجمع جميع
23 24 الاحياء * ولكن لا يبسط علي يدك واذا عججت اليه يخلصني * بكيت علي المسكين في النهار
25 26 وكربت نفسي علي البايس * انتظرت الرحمة فجات البلوا * انتظرت النور فجاء الظلام * تقلقلت
27 28 29 امعاي فما سكنت عاجلتني ايام تواضعي * بالهم سلكت بلا حمية * قمت في الجماعة وبكيت * اخا
30 كنت لاولاد الوحوش * وصاحبا لبنات الانعام * جلدي تقبض علي * وعظامي يبست كالذي
31 في السموم * كان مزهري بالحزن * ومزميري لصوت البكاء *

* الفصل الحادي والثلثون *

1 2 * عهدا اعاهد عيني ان لا انفطن في العذري * وماذا هي قسمة الله الذي من فوق * ووراثة الله
3 4 الذي من العلو * الا تبار المنافقين * والمكروهة علي صانعي الشر * فانه قد ابصر طرايقي * وجميع
5 6 خطواتي قد احصاها * ان كنت خطوت مع الاشرار وان استعجلت رجلي ان تسعا بالغش * فميزني
7 بميزان الحق * ويعرف الله برائتي * ان كنت عدلت خطواتي من الطريق * وان كان ذهب قلبي وراء
8 عيني * وان كان لصق بي شي * الا اذا زرعت عند ذلك اكلت * واذا ما نصبت عند ذلك ربيت
9 10 وحملت * وان استدل قلبي علي امراة غريبة * وعلي باب صاحبي ان كنت رصدت * ولكن طحنت
11 12 امراتي لاخرين * وخبزت مكانا اخر * من اجل انها خاطية * وهي عين المكر * والنار التي حتي الهلاك
13 14 تاكل * وجميع غلاتي تقلع * ان كنت رفضت قضاء عبدي وامتي اذا تداينوا معي * بل اقول
15 ماذا اصنع اذا ما قام الله وماذا اذا ما سال ان اجيبه * فانه في البطن الذي صنعني صنعه * وفي رحم
16 واحد ساوانا * ان كنت منعت المسكين الذي طلب وان كنت اظلمت عيني الارملة *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

Et portâſti me, tum cubare feciſti ſuper ventum, & (l) depoſuiſti me, ac tribulâſti me: Et nunc ſcio quòd à morte reduces me ad congregationem omnium vivorũ. Attamen non extendet ſuper me manum ſuam; & cùm clamavero ad eum, ſalvabit me. Ploravi ſuper pauperem in die, & mœruit anima mea ſuper inopem. Expectavi miſericordiam, & venit tribulatio. Expectavi lucem, & venerunt tenebræ. Cõmota ſunt viſcera mea, nec quieverunt. Prævenerunt me dies humilitatis meæ: (m) In anxietate ambulavi abſq; ira: ſteti in cõgregatione, et planxi. Frater factus ſum (n) filiis belluarum, & ſocius filiabus ſtruthionum. Cutis mea (o) contracta eſt ſuper me, & oſſa mea (p) aruerunt veluti ejus qui in vento calido eſt. Verſa eſt cithara mea in mœrorem, & pſalmodia mea in vocem luctûs. 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

CAP. XXXI.

Fœdus paciſcor cum oculis meis quòd non conſiderabo virginem. Et quænam eſt pars Dei, quæ deſuper eſt: & hæreditas Dei quæ ab excelſo eſt; Niſi interitus impiorum, et (a) abominatio ſuper operantes malum? Nam ipſe vidit vias meas, & cunctos paſſus meos numeravit. Si ambulavi cum improbis, & ſi acceleravi pedes meos (b) ut curarent dolum; Appendat me in ſtatera veritatis, & cognoſcat Deus innocentiam meam. Si diverti greſſus meos de via, & ſi abiit cor meum poſt oculos meos, & ſi adhæſit mihi quicquam. Sed potiùs cùm ſeminavi, tunc comedi; & cùm plantavi, tunc nutrivi & congeſſi: Et ſi (c) flexum eſt cor meũ ſuper muliere aliena, et ad januam proximi mei ſi inſidiatus ſum: Imò verò moluit uxor mea aliis, & panem confecit alio in loco, Quia ipſa peccatrix eſt, & oculus fraudis, Et ignis uſque ad interitum comedens. Et omnes fruges meæ eradicentur, Si recuſavi cauſam ſervi mei & ancillæ meæ, quando judicium inierunt mecum: Sed dico, Quid faciam quando ſteterit Deus? & quid cùm poſtulaverit ut reſpondeam ei? Nam in ventre in quo condidit me, condidit illum; & in vulva eadem (d) pares nos fecit. Si denegavi pauperi quod petiit, & ſi obſcuravi oculos viduæ: 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16

INTERP. SYRIACA.

(l) humiliâſti me, (m) Mœſtè (n) cani ſylveſtri, (o) conſumpta eſt (p) aduſta ſunt *Cap. xxxi.* (a) abalienatio (b) current in dolo; (c) ſolicitum fuit (d) aptavit nos.

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Elevâſti me ſuper ventum, & aſcendere me feciſti, & tabeſcere feciſti me in ſcientia. *Nam patefactum eſt mihi* quòd morti reduces me, & in domum ſepulturæ, quæ 22 23
præparatur omni viventi. *Verum non cum furore immittet* plagam ſuam, ſi *tempore anguſtiæ ejus ſuſceperit preces eorum. Targum aliud*: Veruntamen non in *os* 24
ejus ſuſcitabit plagam ſuam, ſi in ſcabie poſuerit ſuper ea emplaſtrum. Flebam utiq; ſuper eum qui mœrens erat in die, compatiebatur anima mea pauperi. Spe- 25 26
ravi enim bonum, & venit malum; & expectavi lucem, & venerunt tenebræ. Viſcera mea efferbuerunt, & non apparuit in eis ſanguis: prævenerunt me dies afflictio- 27
nis. Denigratus incedebam ſine ſole, conſurgens in turba deprecabar. Frater fui draconibus, & ſocius filiis ſtruthionis. Cutis mea denigrata eſt in me, & os meum 28 29 30
combuſtum eſt ſiccitate. Et verſa eſt in luctum cithara mea, & organum meum comparatum eſt voci flentium. 31

CAP. XXXI.

Pepigi fœdus cum oculis meis, & quid reſpicerem ſuper virginem? Quam enim partem bonam daret Deus deſuper, & poſſeſſionem omnipotens de cœlis 1 2
excelſis. Nonne tribulatio erit ſuperbo: & interitus operantibus iniquitatem? Nonne ipſe videbit vias meas, & omnes greſſus meos numerabit? Si ambulavi cum 3 4 5
falſitate, & feſtinavit in ſolicitudine pes meus. Appendat me in ſtatera juſtitiæ, ut Deus ſciat perfectionem meam. Si declinavit greſſus meus à via, & ſecutum eſt ocu- 6 7
los meos cor meum, & manibus meis adhæſit aliqua macula: Seram, & alius comedat, & germinationes propaginum mearum eradicentur. Si concupivit cor meum 8 9
uxorem viri, & ſi ad oſtium amici mei inſidiatus ſum. Dormiat cum alio uxor mea, & ſuper eam incurvent ſe alii: Quoniam hoc eſt fornicatio, & eſt iniquitas ma- 10 11
xima. Quia ignis eſt qui uſq; ad domum perditionis conſumet, & omnes fructus meos eradicabit. Si abjeci judicium ſervi mei & ancillæ meæ, quando erat eis con- 12 13
tentio mecum: Quid enim faciam cùm ſurrexerit Deus; & quando viſitabit, quid reſpondebo ei? Nonne in ventre fecit me, *qui* fecit illum, & præparavit nos in 14 15
utero unus? Si deſii reddere quod *volebat pauper*, & oculos viduæ conſumere feci. 16

איוב : לא

pupillus comedit non & : ſolus meam buccellam comedi Et
17 ואכל פתי לבדי ולא־אכל יתום
: patre tanquam , mecum crevit meis pueritiis à Quia .ea ex
18 ממנה׃ כי מנעורי גדלני כאב
pereuntem videbam Si .illam deduxi meæ matris utero ab &
19 ומבטן אמי אנחנה׃ אם־אראה אובד
non Si .mendico operimentum non & ; veſte abſque
20 מבלי לבוש ואין כסות לאביון׃ אם־לא
.ſe calefecit mearum ovium vellere de & ,ejus lumbi mihi benedixerunt
ברכוני חלצו ומגז כבשי יתחמם׃
viderem quòd , meam manum pupillum contra elevavi Si
21 אם־הניפותי על־יתום ידי כי־אראה
, cadat humero ab meum Latus .meum auxilium porta in
22 בשער עזרתי׃ כתפי משכמה תפול
, me ad pavor Quia .confringatur canna à meum brachium &
23 ואזרעי מקנה תשבר׃ כי־פחד אלי
poſui Si .potero non ejus celſitudine à & : Dei contritio
24 איד אל ומשאתו לא אוכל׃ אם־שמתי
Si .mea fiducia , dixi auro & : meam ſpem aurum
25 זהב כסלי ולכתם אמרתי מבטחי׃ אם־
invenit multum quia & : mea facultas multa quia , ſum lætatus
אשמח כי־רב חילי וכי־כביר מצאה
lunam & : reſplendebat quando ,lucem videbam Si .mea manus
26 ידי׃ אם־אראה אור כי יהל וירח
: meum cor abſcondito in ſe ſeduxit Et .incedentem honorificè
27 יקר הלך׃ ויפת בסתר לבי
: judicata iniquitas hoc Etiam .meum os mea manus eſt oſculata &
28 ותשק ידי לפי׃ גם־הוא עון פלילי
contritione in ſum lætatus Si .deſuper Deo ſum mentitus ſi
29 כי־כחשתי לאל ממעל׃ אם־אשמח בפיד
.malum eum invenit quia , me excitavi & , me habentis odio
משנאי והתעררתי כי־מצאו רע׃
execratione in petendum ad : meum palatum peccandum ad dedi non Et
30 ולא־נתתי לחטא חכי לשאל באלה
det Quis .mei tentorii viri dixerunt non Si .illius animam
31 נפשו׃ אם־לא אמרו מתי אהלי מי־יתן
: peregrinus pernoctabit non Foris ? ſaturemur non ejus carne de
32 מבשרו לא נשבע׃ בחוץ לא־ילין גר
homo ut operui Si .aperiebam viatori mea oſtia
33 דלתי לארח אפתח׃ אם־כסיתי כאדם
Quia .meam iniquitatem meo abdito in abdendum ad , meas prævaricationes
34 פשעי לטמון בחבי עוני׃ כי
, me conſternavit familiarum contemptus & , multam turbam frangebam
אערוץ המון רבה ובוז־משפחות יחתני
, me audientem mihi dabit Quis .oſtium ſum egreſſus non , tacui &
35 ואדם לא־אצא פתח׃ מי יתן־לי שמע לי
ſcripſit librum & : mihi reſpondebit , omnipotens meum ſignum Ecce
הן תוי שדי יענני וספר כתב
eum ligem ,illum portem meo humero ſuper non Si .meæ litis vir
36 איש ריבי׃ אם־לא על־שכמי אשאנו אענדנו
velut : illi nunciabo meorum greſſuum Numerum .mihi diademata
37 עטרות לי׃ מספר צעדי אגידנו כמו
mea humus me adverſum Si .eum faciam appropinquare ducem
38 נגיד אקרבנו׃ אם־עלי אדמתי
ejus robur Si .defleant ejus ſulci pariter & , clamet
39 תזעק ויחד תלמיה יבכיון׃ אם־כחה
.feci efflare ejus patronorum animam & : pecunia abſque comedi
אכלתי בלי־כסף ונפש בעליה הפחתי׃
.fætens herba hordeo pro & , ſpina egrediatur tritico Pro
40 תחת חטה יצא חוח ותחת־שערה באשה
.Job verba ſunt Perfecta
תמו דברי איוב׃

Verſio VULG. LAT

17 Si comedi buccellam meam ſolus, & non comedit pupillus ex ea: 18 (Quia ab infantia mea crevit mecum miſeratio: & de utero matris meæ egreſſa eſt mecum:) 19 Si deſpexi pereuntem, eo quòd non habuerit indumentum, & abſque operimento pauperem: 20 Si non benedixerunt mihi latera ejus, & de velleribus ovium mearum calefactus eſt: 21 Si levavi ſuper pupillum manum meam, etiam cùm viderem me in porta ſuperiorem: 22 Humerus meus à junctura ſua cadat, & brachium meum cum 23 ſuis oſſibus confringatur. Semper enim quaſi tumentes ſuper me fluctus timui Deum, & pondus ejus ferre non potui. 24 Si putavi aurum robur meum, & obrizo dixi; Fiducia mea. 25 Si lætatus ſum ſuper multis divitiis meis, & quia plurima 26 reperit manus mea. Si vidi Solem cùm fulgeret, & lunam 27 incedentem clarè: Et lætatū eſt in abſcondito cor meum, & oſculatus ſum manum 28 meam ore meo. Quæ eſt iniquitas maxima, & negatio 29 contra Deum altiſſimum. Si gaviſus ſum ad ruinam ejus qui me oderat, & exultavi quòd inveniſſet eum malum. 30 Non enim dedi ad peccandum guttur meum, ut expeterem maledicens animam ejus. 31 Si non dixerunt viri tabernaculi mei; Quis det de carni32bus ejus ut ſaturemur? Foris non manſit peregrinus, oſtium meum viatori patuit. 33 Si abſcondi quaſi homo peccatum meum, & celavi in ſinu 34 meo iniquitatem meam. Si expavi ad multitudinem nimiam, & deſpectio propinquorum terruit me: & non magis tacui, nec egreſſus ſum 35 oſtium. Quis mihi tribuat auditorem, ut deſiderium meum audiat Omnipotens; & librum ſcribat ipſe qui ju36dicat. Ut in humero meo portem illum, & circumdem illum quaſi coronam mihi? 37 Per ſingulos gradus meos pronuntiabo illum, & quaſi prin38cipi offeram eum. Si adverſùm me terra mea clamat, & cum ipſa ſulci ejus deflent: 39 Si fructus ejus comedi abſque pecunia, & animam agrico40larum ejus afflixi: Pro frumento oriatur mihi tribulus, & pro hordeo ſpina.

Finita ſunt verba Job.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 † Εἰ δὲ καὶ τὸν ψωμόν μου ἔφαγον μόνος, καὶ 18 οὐχὶ (τ) ὀρφανῷ μετέδωκα· † Ὅτι ἐκ νεότητός μου ἐξέτρεφον ὡς πατήρ, † καὶ ἐκ γα19στρὸς μητρός μου ὡδήγησα· † Εἰ δὲ καὶ ὑπερεῖδον γυμνὸν ἀπολλύμενον, καὶ οὐκ 20 (υ) ἠμφίασα αὐτόν. † Ἀδύνατοι δὲ εἰ μὴ εὐλόγησάν με, † ἀπὸ δὲ κουρᾶς (φ) ἀμνῶν μου ἐθερμάνθησαν οἱ ὦμοι αὐτῶν· 21 † (χ) Εἰ ἐπῆρα ὀρφανῷ χεῖρα, πεποιθὼς 22 ὅτι πολλή μοι βοήθεια (∴) περίεστιν· † Ἀποσταίη ἄρα (ψ) ὁ ὦμός μου ἀπὸ τῆς κλειδός, † ὁ δὲ βραχίων μου ἀπὸ τοῦ (ω) ἀγκῶνος 23 συντριβείη. † Φόβος γὰρ κυρίου (α) συνέσχε με, † ἀπὸ τοῦ λήμματος αὐτοῦ οὐχ 24 ὑποίσω. † Εἰ ἔταξα χρυσίον εἰς χοῦν μου, † εἰ δὲ καὶ λίθῳ πολυτελεῖ ἐπεποί25θησα. † Εἰ δὲ καὶ εὐφράνθην πολλοῦ πλούτου (β) μοι γενομένου, † (γ) εἰ δὲ καὶ ἐπ' 26 ἀναριθμήτοις ἐθέμην χεῖρά μου· † Ἦ οὐχ ὁρῶμεν ἥλιον τὸν ἐπιφαύσκοντα (δ) ἐκλείποντα, † σελήνην δὲ φθίνουσαν; οὐ 27 γὰρ ἐπ' αὐτοῖς ἐστί· † Καὶ εἰ ἠπατήθη λάθρα ἡ καρδία μου, † (ε) εἰ δὲ χεῖρά μου 28 ἐπιθεὶς ἐπὶ στόματί μου ἐφίλησα· † Καὶ τοῦτό μοι ἄρα ἀνομία (ζ) ἡ μεγίστη λογισθείη, † ὅτι ἐψευσάμην (η) ἐναντίον κυ29ρίου τοῦ ὑψίστου. Εἰ δὲ καὶ ἐπιχαρὴς ἐγενόμην (θ) πτώματι ἐχθρῶν μου, † καὶ εἶ30πεν ἡ καρδία μου, Εὖγε· † Ἀκούσαι ἄρα τὸ οὖς μου τὴν κατάραν μου, † θρυλληθείην δὲ (ι) ἄρα ὑπὸ λαοῦ μου κακού31μενος. Εἰ δὲ καὶ πολλάκις εἶπον αἱ θεράπαιναί μου, † Τίς ἂν δῴη ἡμῖν τῶν σαρκῶν αὐτοῦ (κ) πλησθῆναι; † λίαν μου 32 χρηστοῦ ὄντος· † Ἔξω δὲ οὐκ (λ) ηὐλίζετο ξένος, (μ) ἡ δὲ θύρα μου παντὶ ἐλθόντι 33 (ϛ) ἀνέῳκτο· † Εἰ δὲ καὶ ἁμαρτὼν ἀκουσίως 34 ἔκρυψα τὴν ἁμαρτίαν μου· † Οὐ γὰρ διετράπην πολυοχλίαν (ν) πλήθους, † τοῦ μὴ ἐξαγορεῦσαι (ξ) ἐνώπιον αὐτῶν· † εἰ δὲ καὶ εἴασα ἀδύνατον ἐξελθεῖν (ο) θύ35ραν μου κόλπῳ κενῷ· † Τίς δῴη ἀκούοντά μου; † χεῖρα δὲ κυρίου εἰ μὴ (˝) ἐδεδοίκειν· † συγ36γραφὴν δὲ ἣν εἶχον κατά τινος, † (π) Ἐπ' ὤμοις ἂν περιθέμενος στέφανον ἀνεγίνω37σκον, † Καὶ εἰ μὴ ῥήξας αὐτὴν ἀπέδωκα, † (ρ) οὐθὲν λαβὼν παρὰ (σ) χρεω38φειλέτου· † Εἰ ἐπ' ἐμοί ποτε ἡ γῆ ἐστέναξεν, † εἰ δὲ καὶ οἱ αὔλακες αὐτῆς ἔκλαυ39σαν ὁμοθυμαδόν. † (τ) Εἰ δὲ καὶ τὴν ἰσχὺν αὐτῆς ἔφαγον (υ) μόνος ἄνευ τιμῆς, † εἰ δὲ καὶ ψυχὴν κυρίου τῆς γῆς (ϛ) ἐκλαβὼν 40 ἐλύπησα· † Ἀντὶ πυροῦ (φ) ἄρα ἐξέλθοι μοι κνίδη, ἀντὶ δὲ κριθῆς βάτος.

Quòd ſi & buccellam meam comedi ſolus, & pupillo non communicavi. Quoniam à juventute mea enutriebam ut pater; & de ventre matris meæ dux eis fui. Aut ſi deſpexi nudum pereuntem, & non operui eum. Et ſi non benedixerunt me (p) impotentes, & de tonſura agnorum meorum calefacti ſunt humeri eorum. Si (q) levavi ſuper pupillum manum, confidens, quia mihi eſt adjutorium multum; (r) Diſcedat humerus meus (ſ) à junctura, & brachium meum à cubito confringatur. Timor enim Domini continuit me: à (t) prehenſione ejus non ſuſtinebo. Si poſui aurum (u) in congium meum: quòd ſi & in lapide pretioſo fidebam. Si & lætatus ſum, cùm eſſet mihi cenſus multus; ſi & in (x) innumerabilibus poſui manum meam. An non videmus Solem, qui lucebat, deficientem, lunam autem decreſcentem? non (y) enim in eis eſt. Et ſi (z) deceptum eſt clàm cor meum: quòd & ſi (aa) oſculatus ſum manum meam, ponens ad os meum; Et hoc igitur mihi iniquitas maxima computetur; quòd mentitus ſum coram Domino altiſſimo. Quòd ſi & gaviſus ſum ſuper ruina inimicorum meorum, & dixit cor meum, (bb) Euge; Audiat auris mea maledictionem meam, & diffamer à populo meo malè affectus. Quòd ſi & ſæpè (cc) dixerunt ancillæ meæ; Quis utique det nobis, ut carnibus ejus ſatiemur? cùm valdè bonus eſſem. Et foris non manebat hoſpes: & oſtium meum omni venienti patuit. Quòd ſi & cùm (dd) non ſponte peccâſſem, abſcondi peccatum meum. Non enim expavi turbam multitudinis; ut non enarrarem coram eis. Aut ſi dimiſi infirmum ſinu vacuo exire januam meam; Quis mihi tribuat auditorem? & manum Domini ſi non timui, (ee) ſyngrapham verò, quam habui contra quempiam, In humeris utique circumponens coronam legebam, Et ſi non ſcindens eam reddidi, nihil accipiens à debitore. Si ſuper me unquam terra gemuit, aut ſi ſulci ejus ploraverunt ſimul. Aut ſi & (ff) virtutem ejus comedi ſolus ſine pretio: aut ſi animam domini terræ recipiens (gg) contriſtavi: Pro tritico germinet mihi (hh) urtica, & pro hordeo ſpina.

ΚΕΦ. λβ'.

Καὶ ἐπαύσατο Ἰὼβ ῥήμασιν.

CAP. XXXII.

Et ceſſavit Job à verbis.

MS. A. (τ) μετέδωκα ὀρφανῷ· Καὶ ἐκ (υ) ἠμφίασα. Ἀδύνατοί δε εἰ μὴ εὐλόγουν με, (φ) ἀρνῶν (χ) Εἰ δὲ καὶ (∴) πάρεστιν· (ψ) ἀπὸ τῆς κλιδὸς ὁ ὦμός μου, (ω) ἀγκῶνός μου (α) Συνεῖχέν με, καὶ ἀπὸ (β) γενομένου μου, (γ) καὶ εἰ ἐπ' (δ) καὶ ἐκλείποντα, (ε) εἰ δὲ καὶ (ζ) λογισθείη μεγάλη, ὅτι (η) ἔναντι (θ) ἐπὶ πτώματι ἐχθροῦ μου, καὶ εἶπον τῇ καρδίᾳ μου, Εὖγε, εὖγε· (ι) ὑπὸ λαοῦ κακούμενος. (κ) ἐμπλησθῆναι; (λ) ἐυλίζετο (μ) καὶ ἡ θύρα (ϛ) ἠνέῳκτο· (ν) λαοῦ, τοῦ μὴ (ξ) ἐναντίον αὐτῶν· (ο) τὴν θύραν (˝) ἠδεδοίκειν· (π) Εἰ ἐπ' ὤμοις περιθέμενος ὡς στέφανον (ρ) οὐδὲν (σ) χρεοφειλέτου μου· (τ) Εἰ τὴν ἰσχὺν (υ) ἄνευ τιμῆς μόνος, (ϛ) ἐκβαλὼν (φ) ἐξέλθῃ

תרגום TARGUM.

17 18 19 אכלית טולמי בלחודי ולא אכל יתם מנה׃ מטול דמטליותי אסניעני היך כאבא ומכריסא דאמי דברני בניחותא׃ אין אחמי ערטילי מדלית
20 21 כסותא ולית חופאה לחשיכא׃ אין לא בריכו יתי חרצוי ומגותא דאמרי ישתחן׃ אין ארימית על יתם ידי ארום אחמי בתרעא סיועי׃ כתפי
22 23 24 מן שכמה תפול ואדרעי מן קנה תתבר׃ ארום דליח לותי תבר אלהא ומן מספייה לא אסובר׃ אין שויתי על דהב סכויי ולפטלון אמרית רוחצני׃
25 26 27 אין אחדי ארום סגא עתרי וארום בסוגעא אשכחת ידי׃ אין אחמי אסתהר ארום ינהר וסהרא זויתן מהלך׃ ושרגג בטומרא לבי ונשקת ידי
28 29 30 לפומי׃ לחוד הוא סורחן פריש ארום כדבית אלהא מלעלא׃ אין אחדי בצערא דסנאי ויבבית ארום ארעיה ביש׃ ולא שבקית למחטי מוריגי למשיל
31 32 33 במומתא נפשיה׃ אין לא אמרו אנשי משכני מן יגזור מבסריה לא נסבע׃ בשוקא לא יבית גיורא דשי לאכסניא פתחית׃ אין חפית כארם קדמוי
34 35 חובי למטמע בעטפי סורחני׃ ארום אתבר רבפת גיותניא ובסיר גניסתא יתברנני ושתקית לא אפוק מטלנא׃ מן יגזור עלי דיקבל מני הא
36 37 רשמי דשדי עני יתי ופטקא דכתב אנש תגרי׃ אין לא על כתפי אסוברניה ארכבניה כלילן לי׃ מנין פסיעתי אחוניה דכמת ארכונא אקרבניה׃
38 39 40 אין עלי ארעא תקבול וכחדא תלמהא בכן׃ אין חילה גמירית בלא כסף ונפש מריהא אפחית׃ חלף חנטיא יפקון כלן וחלף סערתא הומי
שלימו פתגמי איוב׃

Verſio SYRIACA.

17 [illegible]
18 [illegible]
19 [illegible]
20 [illegible]
21 [illegible]
22 [illegible]
23 [illegible]
24 [illegible]
25 [illegible]
26 [illegible]
27 [illegible]
28 [illegible]
29 [illegible]
30 [illegible]
31 [illegible]
32 [illegible]
33 [illegible]
34 [illegible]
[illegible]
35 [illegible]
36 [illegible]
37 [illegible]
38 [illegible]
39 [illegible]
40 [illegible]

Verſio ARABICA.

17 *وان كنت اكلت خبزي وحدي ولم ياكل منه اليتيم *من اجل انه من صباي رباني في الاوجاع
18 ومن بطن امي في الامراض *ان كنت رايت هالكا من العري وليس كسوة للبايس *بل على
19 20 حجري ربا ومن جزار غنمي اسدفا *ان كنت رفعت على اليتيم يدي الا اذا ما رايته في الباب 21
22 23 اعنته *كتفي من اصلها تسقط وذراعي من قصبته ينكسر *من اجل ان خشية الله افزعتني
24 وبان اني انكسار جاء علي *ومن الرهبة لم استطيع ان اقوم *ان كنت صنعت الذهب ثقتي
25 او قلت على الحجر الجيد اتكالي وان قلت على الابريز انك انت رجائي *ان كنت فرحت اذا ما
26 كثر قنياني واذا ما وجدت كثيرا يدي *ان كنت رايت النور اذا ما ظهر والقمر اذا ما اشرق
27 28 *فان انطلق واسترل في الخفا قلبي *وقبلت يدي فمي *فانه قد ابصر جميع اسراري *ان كنت
29 30 كذبت قدام الله *وان كنت فرحت ببوار مبغضي وان كنت سررت اذا ما كانت له البلوى *وان
31 كنت اسلمت فمي لخطاء ونفسي لواحدة من هذا ما طلبت *ولكن قال احبائي من الذي يعطينا
32 33 من لحمه فلا نشبع *فاني في السوق لم ابيت الغريب واني للضعيف فتحت *ان كنت سترت مثل
34 الناس خطايي وان كنت طمرت في الخفا اذواتي اي ذنوبي *وان كنت وطيت قوة الكثيرين بل
كثيرا من الشعوب كسروني *لم ارد من بابي احدا وفي كلام الشقيين ما تفكرت *سخاط الله
35 وضعني *من الذي يجعل الذي يسمعني ان كان كذلك الله يجيبني ويكتب في السفر قضايا الرجل
36 37 *ولكن على كتفي احمله وجعلته لي اكليلا *وعدد خطواتي اعلمه ومثل السليط اطهره *وعلي
38 39 40 الارض تنوح وحراثها جميعا ينكون *ان اكلت قوتها بلا فضة ونفس الحزين ان كنت اذيت *فبدل
الحنطة يخرج الزبل وبدل الشعير يخرج شوكه *تمت اقوال ايوب *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Sique comedi panem me- 17
um ſolus, nec comedit ex
eo pupillus; Quoniam à 18
pueritia mea educavit me
in doloribus, & de ventre
matris meæ (e) in mor-
bis: Si vidi pereuntem 19
(f) nuditate, & non
eſſe veſtimentum inopi:
Quia potiùs ſuper ſinu 20
meo enutritus eſt, & de
vellere ovium mearum
calefactus eſt. Si levavi 21
in pupillum manū meam,
ſed cùm vidi eum in oſtio,
adjuvi illum; Humerus 22
meus è radice ſua deci-
dat, & brachium meum à
lacerto frangatur. Quo- 23
niam timor Dei terruit
me, & fractio, id eſt, con-
tritio ejus venit ſuper me,
& præ terrore non potui
ſurgere. Si feci aurum ſe- 24
curitatem meā, aut dixi,
In lapide pretioſo fiducia
mea: & ſi dixi obri-
zo, Tu es ſpes mea: Si læ- 25
tatus ſum cùm multipli-
catæ ſunt poſſeſſiones meæ,
& cùm invenit multum
manus mea: Si vidi lu- 26
cem cùm apparuit, & lu-
nam cùm orta eſt: Si abi- 27
it & (g) prolapſum eſt in
abſcondito cor meum, &
oſculata eſt manus mea os
meum: Ipſe quidem iniqui- 28
tas eſt (h) omnia ſecreta
mea. Si mentitus ſum co-
rā Deo, Et ſi gavisus ſum 29
de fractione oſoris mei:
& ſi lætatus ſum quan-
do accidit ei tribulatio.
Et ſi tradidi os meū pec- 30
cato. At anima mea unum
ex his non appetiit. Atta- 31
men dixerunt amici mei,
Quis det nobis de carni-
bus ejus, neque ſature-
mur? Ego enim in platea 32
non permiſi dormire pere-
grinum, & oſtium meum
(i) infirmo aperui. Si ce- 33
lavi ut homines, peccata
mea; & ſi condidi in oc-
culto delicta mea, hoc eſt,
ſcelera mea: Et ſi con- 34
culcavi virtutem multo-
rum: imò multi ex popu-
lis fregerunt me. Non re-
jeci è janua mea quen-
quam: & ſermonem la-
borum non conſideravi.
Iræ Dei humiliârunt me.
Quis conſtituat qui me 35
audiat? ſi hæc ita ſunt,
Deus exaudiat me, &
ſcribat in libro judicia
hominis. (k) Sed ſuper 36
humeros meos portabo il-
lum, & feci eum mihi co-
ronam. Et numerum greſ- 37
ſuum meorum nuntiabo
ei, & tanquam præſi-
dem manifeſtabo eum; Et 38
ſuper me terra planget, &
aratores eam ſimul luge-
bunt. Si comedi virtu- 39
tem ejus abſque argento,
& animam mœſti ſi af-
flixi; Pro frumento ex- 40
eat fimus, & pro hordeo
exeat fenis. Completi ſunt
ſermones Job.

INTERP. SYRIACA.

(e) in gemitibus: (f) abſque indumento, (g) perſuaſum fuit (h) verſutias meas. (i) viatori (k) O Deus, ſuper

PARAPH CHALD. Verſio Latina.

Et ſi comedi buccellam meam ſolus, & non comedit pupillus ex eo. Quoniam ab infantia mea creſcere me fecit ſicut pater, & de ventre matris duxit me in re- 17 18
quiem. Si viderim nudum eo quod non habuiſſet indumentum, & pauperem abſq; operimento. Si non benedixerunt mihi renes ejus, & de vellere agnorum meorum 19 20
calefactus eſt. Si levavi ſuper pupillum manum meam, cùm viderem in porta auxilium meum. Humerus meus à ſcapula ſua cadat, & brachium meum à canna ſua 21 22
confringatur. Quoniam terribilis fuit apud me terror Dei, & à timore ejus non potero ſubſiſtere. Si poſui in auro ſpem meam, & obrizo dixi fiduciam meam. Si læta- 23 24
tus ſum quando multiplicatæ ſunt divitiæ meæ, & *quoniam copiam invenit manus mea*. Si circuitum ſolis contemplatus ſum cùm illuceſceret, & lunam cum ſplendore 25 26
incedentem. Et deceptum eſt in abſcondito cor meum, & oſculatum eſt manum meam os meum. Eſt etiam iniquitas maxima, quoniam negarem Deum deſuper. Si ga- 27 28
viſus ſum in *calamitate* ejus qui me oderat; & *exultavi cum obveniſſet ei* malum. Et non dimiſi ut peccaret palatum meum, ut expeteret mortem animæ ſuæ. Si non 29 30
dixerunt viri tabernaculi mei, quis tribueret ut de carnibus ejus non ſaturaremur? In platea non manebat peregrinus, oſtia mea hoſpitibus aperiebam. Si operui ſicut Adam 31 32
[illegible] peccatum meum, ut abſconderem in ſinum meum [illegible]. Quando roboratus ſum in tumultu *[illegible]*, & contemptibilis familiarum terrebat me, & tacui, 33 34
& non egrediebar oſtium. Quis det mihi [illegible], ut Omnipotens reſponderet mihi, & libellum ſcribat homo contentionis meæ. 35 36
Niſi in humero meo [illegible] in præconio [illegible]. Numerum greſſuum meorum nunciabo illi, & quaſi ad principem manus offeram illi. Si 37 38
[illegible] ſi virtutem ejus comedi abſq; argento, & animam domini ſui dolore [illegible]. Pro tritico [illegible] 39 40
& pro hordeo [illegible]. Completa ſunt verba Job.

איוב : לב

CAP. XXXII. לב

, Ijob *respondendo* à isti viri tres cessaverunt Et
1 וַיִּשְׁבְּתוּ שְׁלֹשֶׁת הָאֲנָשִׁים הָאֵלֶּה מֵעֲנוֹת אֶת־אִיּוֹב
filii Elihu *nasus* est iratus Et .suis oculis in justus ipse quia
2 כִּי הוּא צַדִּיק בְּעֵינָיו׃ וַיִּחַר אַף ׀ אֱלִיהוּא בֶן־
super ejus *nasus* est iratus Ijob in ,Ram familia de Buz tæ Barachel
בַּרַכְאֵל הַבּוּזִי מִמִּשְׁפַּחַת רָם בְּאִיּוֹב חָרָה אַפּוֹ עַל־
ejus *socios* tres in Et .Deum quam magis suam animam *ipsum justificare*
3 צַדְּקוֹ נַפְשׁוֹ מֵאֱלֹהִים׃ וּבִשְׁלֹשֶׁת רֵעָיו
, responsionem invenissent non quod eo , ejus *nasus* est iratus
חָרָה אַפּוֹ עַל אֲשֶׁר לֹא־מָצְאוּ מַעֲנֶה
Ijob ipsum expectavit Elihu Et .Ijob condemnaverant &
4 וַיַּרְשִׁיעוּ אֶת־אִיּוֹב׃ וֶאֱלִיהוּ חִכָּה אֶת־אִיּוֹב
vidit Et .*diebus* eo *præ* *ipsi* *senes* quia , verbis in
5 בִּדְבָרִים כִּי זְקֵנִים־הֵמָּה מִמֶּנּוּ לְיָמִים׃ וַיַּרְא
est iratus & , virorum trium ore in responsio non quòd Elihu
אֱלִיהוּא כִּי אֵין מַעֲנֶה בְּפִי שְׁלֹשֶׁת הָאֲנָשִׁים וַיִּחַר
: dixit & , Buzites Barachel filius Elihu respondit Et .ejus *nasus*
6 אַפּוֹ׃ וַיַּעַן ׀ אֱלִיהוּא בֶן־בַּרַכְאֵל הַבּוּזִי וַיֹּאמַר
, expavi Idcirco .decrepiti vos & , *diebus* *ego* *Minimus*
צָעִיר אֲנִי לְיָמִים וְאַתֶּם יְשִׁישִׁים עַל־כֵּן זָחַלְתִּי
dies , Dixi : vobis meam *scientiam indicando ab* timui &
7 וָאִירָא ׀ מֵחַוֹּת דֵּעִי אֶתְכֶם׃ אָמַרְתִּי יָמִים
Profectò .sapientiam faciet scire annorum multitudo & , loquentur
8 יְדַבֵּרוּ וְרֹב שָׁנִים יֹדִיעוּ חָכְמָה׃ אָכֵן
.eos intelligere faciet omnipotentis inspiratio & ,homine in *ipse* spiritus
רוּחַ־הִיא בֶאֱנוֹשׁ וְנִשְׁמַת שַׁדַּי תְּבִינֵם׃
.judicium *intelligent* senes nec *: erunt* sapientes *magni* Non
9 לֹא־רַבִּים יֶחְכָּמוּ וּזְקֵנִים יָבִינוּ מִשְׁפָּט׃
.ego etiam meam scientiam indicabo : me audi , dixi Ideo
10 לָכֵן אָמַרְתִּי שִׁמְעָה־לִּי אֲחַוֶּה דֵעִי אַף־אָנִי׃
,vestras intelligentias ad usque auscultavi : vestra verba expectavi Ecce
11 הֵן הוֹחַלְתִּי ׀ לְדִבְרֵיכֶם אָזִין עַד־תְּבוּנֹתֵיכֶם
non ecce & : considerabam vos *ad* Et .sermones investigaretis donec
12 עַד־תַּחְקְרוּן מִלִּין׃ וְעָדֵיכֶם אֶתְבּוֹנָן וְהִנֵּה אֵין
fortè Ne .vobis ex ejus sermonibus respondens *: arguens* Ijob contra
13 לְאִיּוֹב מוֹכִיחַ עוֹנֶה אֲמָרָיו מִכֶּם׃ פֶּן־
.vir non ,eum propulsavit Deus : sapientiam invenimus , diceretis
תֹּאמְרוּ מָצָאנוּ חָכְמָה אֵל יִדְּפֶנּוּ לֹא־אִישׁ׃
non ,*vestris sermonibus in* & : sermones me adversum ordinavit non Et
14 וְלֹא־עָרַךְ אֵלַי מִלִּין וּבְאִמְרֵיכֶם לֹא
removerunt : ultrà responderunt non , *sunt Consternati* .illi respondebo
15 אֲשִׁיבֶנּוּ׃ חַתּוּ לֹא־עָנוּ עוֹד הֶעְתִּיקוּ
sed : sunt locuti non sed ,expectavi Et .eloquia se à
16 מֵהֶם מִלִּים׃ וְהוֹחַלְתִּי כִּי־לֹא יְדַבֵּרוּ כִּי
ego etiam Respondebo .ultrà responderunt non ,steterunt
17 עָמְדוּ לֹא־עָנוּ עוֹד׃ אַעֲנֶה אַף־אֲנִי
sum plenus Quia .ego etiam meam *scientiam* indicabo : meam partem
18 חֶלְקִי אֲחַוֶּה דֵעִי אַף־אָנִי׃ כִּי מָלֵתִי
meus venter Ecce .mei uteri spiritus me coartavit , sermonibus
19 מִלִּים הֱצִיקַתְנִי רוּחַ בִּטְנִי׃ הִנֵּה בִטְנִי
.*disrumpetur* novi utres sicut ; *aperietur* non , vinum tanquam
כְּיַיִן לֹא יִפָּתֵחַ כְּאֹבוֹת חֲדָשִׁים יִבָּקֵעַ׃
.respondebo & , mea labia Aperiam .mihi erit *spacium* & , Loquar
20 אֲדַבְּרָה וְיִרְוַח־לִי אֶפְתַּח שְׂפָתַי וְאֶעֱנֶה׃
non hominem *ad* & , viri *facies* accipiam nunc Non
21 אַל־נָא אֶשָּׂא פְנֵי־אִישׁ וְאֶל־אָדָם לֹא
me *tollat* *parum ut* : *cognominabo* novi non Nam .cognominabo
22 אֲכַנֶּה׃ כִּי לֹא יָדַעְתִּי אֲכַנֶּה כִּמְעַט יִשָּׂאֵנִי
.meus factor
עֹשֵׂנִי׃

Versio VULG. LAT.

CAP. XXXII.

1 OMiserunt autem tres viri
isti respondere Job, eò quòd
2 justus sibi videretur, Et iratus,
indignatúsque est Eliu filius
Barachel Buzites, de cognatione
Ram : iratus est autem
adversùm Job, eò quòd
justum se esse diceret coram
3 Deo. Porrò adversùm amicos
ejus indignatus est, eò quòd
non invenissent responsionem
rationabilem, sed tantummodò
4 condemnassent Job. Igitur
Eliu expectavit Job loquentem
: eo quòd seniores
5 essent qui loquebantur. Cùm
autem vidisset quòd tres respondere
non potuissent, iratus
6 est vehementer. Respondénsque
Eliu filius Barachel
Buzites,dixit; Junior sum tempore,
vos autem antiquiores,
idcircò demisso capite, veritus
sum vobis indicare meam sententiam.
7 Sperabam enim quòd
ætas prolixior loqueretur, &
annorum multitudo doceret
8 sapientiam. Sed,ut video,Spiritus
est in hominibus,& inspiratio
Omnipotentis dat intelligentiam.
9 Non sunt longævi
sapientes,nec senes intelligunt
10 judicium. Ideò dicam; Audite
me,ostendam vobis etiam
11 ego meam sapientiã. Expectavi
enim sermones vestros, audivi
prudentiam vestram, donec
disceptaremini sermonibus
12 : Et donec putabam vos
aliquid dicere, considerabam:
sed, ut video, non est qui possit
arguere Job, & respondere
13 ex vobis sermonibus ejus. Ne
fortè dicatis; Invenimus sapientiam,Deus
projecit eum, non
14 homo. Nihil locutus est mihi,
& ego non secundùm sermones
vestros respondebo illi.
15 Extimuerunt, nec responderunt
ultrà, abstulerúntque à se
16 eloquia. Quoniam igitur expectavi,&
non sunt locuti:steterunt,nec
ultrà responderũt :
17 Respondebo & ego partem
meam, & ostendam scientiam
18 meam. Plenus sum enim sermonibus,&
coarctat me spiritus
19 uteri mei. En venter meus
quasi mustum absque spiraculo,
quod lagunculas novas disrumpit.
20 Loquar, & respirabo
paululùm : aperiam labia
21 mea, & respondebo. Non accipiam
personã viri, & Deum
22 homini non æquabo. Nescio
enim quàm diu subsistam,& si
post modicum tollat me Factor
meus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

1 Ἡσύχασαν δὲ καὶ οἱ (α) τρεῖς φίλοι (β) αὐτοῦ
ἔτι ἀντειπεῖν Ἰώβ, (γ) ἦν γὰρ Ἰὼβ δίκαιος
2 ἐναντίον αὐτῶν. † Ὠργίσθη δὲ Ἐλιοὺς ὁ
τοῦ Βαραχιὴλ (δ) ὁ Βουζίτης † ἐκ τῆς
συγγενείας (ε) Ῥάμ, τῆς Αὐσίτιδος χώρας·
† (ζ) ὠργίσθη δὲ τῷ Ἰὼβ σφόδρα,
διότι ἀπέφηνεν ἑαυτὸν δίκαιον
3 (η) ἐναντίον κυρίου. † Καὶ κατὰ (θ) τῶν
τριῶν δὲ φίλων ὠργίσθη σφόδρα, † διότι
οὐκ ἠδυνήθησαν ἀποκριθῆναι ἀντίθετα (ι)
4 Ἰώβ, † καὶ ἔθεντο αὐτὸν εἶναι ἀσεβῆ. † Ἐλιοὺς
δὲ ὑπέμεινε δοῦναι ἀπόκρισιν (') Ἰώβ, † ὅτι
5 (κ) πρεσβύτεροι αὐτοῦ εἰσιν ἡμέραις. † Καὶ
εἶδεν Ἐλιοὺς, ὅτι οὐκ ἔστιν ἀπόκρισις ἐν
στόματι τῶν τριῶν ἀνδρῶν, καὶ ἐθυμώθη ὀργῇ
6 αὐτοῦ. † Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιοὺς ὁ τοῦ
Βαραχιὴλ (λ) ὁ Βουζίτης, εἶπεν, † Νεώτερος
μέν εἰμι τῷ χρόνῳ, † ὑμεῖς δέ
ἐστε πρεσβύτεροι, † (μ) διὸ ἡσύχασα φοβηθεὶς
(ν) τοῦ ὑμῖν ἀναγγεῖλαι τὴν ἐμαυτοῦ
7 ἐπιστήμην. † Εἶπα δὲ, Ὅτι οὐχ ὁ χρόνος
ἐστὶν ὁ λαλῶν, † ἐν πολλοῖς δὲ ἔτεσιν οἴδασι
8 σοφίαν· † (ξ) Ἀλλὰ πνεῦμά ἐστιν
ἐν βροτοῖς· † πνοὴ δὲ παντοκράτορός (ο)
9 ἐστιν ἡ διδάσκουσα. † Οὐχ οἱ πολυχρόνιοί
εἰσιν σοφοί, † (") οὐδ᾽ οἱ γέροντες οἴδασι κρίμα.
10 † (π) Διὸ εἶπα, Ἀκούσατέ μου, καὶ
ἀναγγελῶ ὑμῖν ἃ οἶδα. † (ρ) Ἐνωτίζεσθέ
11 μου τὰ ῥήματα. Ἐρῶ γὰρ ὑμῶν ἀκουόντων
12 † (σ) ἄχρις οὗ ἐτάσητε λόγους, Καὶ μέχρι
ὑμῶν συνήσω, † καὶ ἰδοὺ οὐκ ἦν τῷ Ἰὼβ
(τ) ἐλέγχων † ἀνταποκρινόμενος (υ) ῥήματα
13 αὐτοῦ ἐξ ὑμῶν· † (φ) Ἵνα μὴ εἴπητε,
Εὕρομεν σοφίαν (χ) κυρίῳ προσθέμενοι.
14 † Ἀνθρώπῳ δὲ ἐπετρέψατε λαλῆσαι
15 τοιαῦτα ῥήματα. † Ἐπτοήθησαν, οὐκ
ἀπεκρίθησαν ἔτι, † ἐπαλαίωσαν ἐξ αὐτῶν
16 λόγους. † Ὑπέμεινα, οὐ γὰρ ἐλάλησα,
17 ὅτι ἔστησαν, οὐκ ἀπεκρίθησαν. † Ὑπολαβὼν
δὲ Ἐλιοὺς, λέγει, † Πάλιν λαλήσω,
18 Πλήρης γάρ εἰμι ῥημάτων, † ὀλέκει
(ψ) γάρ με τὸ πνεῦμα τῆς γαστρός.
19 † (ω) Ἡ δὲ γαστήρ μου ὥσπερ ἀσκὸς γλεύκους
(α) ζέων δεδεμένος, † ἢ ὥσπερ φυσητὴρ
20 (β) χαλκέως ἐρρηγώς. † Λαλήσω,
ἵνα ἀναπαύσωμαι ἀνοίξας (γ) τὰ χείλη,
21 † Ἄνθρωπον γὰρ οὐ μὴ αἰσχυνθῶ, † ἀλλὰ
22 μὴν οὐδὲ βροτὸν οὐ μὴ ἐντραπῶ. Οὐ γὰρ
ἐπίσταμαι θαυμάσαι (δ) πρόσωπα. † εἰ
δὲ μὴ, καὶ ἐμὲ σῆτες ἔδονται.

Cessaverunt autem & tres amici 1
ejus ultrà contradicere Job: erat
enim Job justus (a) coram eis.
Iratus est autem Elius filius Barachiel 2
Buzites de cognatione
Ram Ausitidis regionis. Iratus
est autem in Job valde, eò quòd
pronuntiaverat seipsum justum
coram Domino. Et verò adversùs 3
tres amicos iratus est valde,
eò quòd non potuerant respondere
opposita Job: & posuerant
ipsum esse impium. Elius 4
autem sustinuerat dare responsionem
Job, quoniam seniores eo
erant diebus. Et vidit Elius, 5
quòd non est responsio in ore trium
virorum, & indignatus est
irâ suâ. Suscipiens autem Elius 6
filius Barachiel Buzites, dixit;
Junior quidem sum tempore, vos
autem estis seniores: quare silui
timens in vobis annuntiare meam
ipsius (b) scientiam. Dixi 7
autẽ Quòd non est tempus, quod
loquitur, et in multis annis noverunt
sapientiam. (c) Sed spiritus 8
est in hominibus: spiratio autem
Omnipotentis est, quæ docet. Non 9
longævi sunt sapientes, neque senes
noverunt judicium. Quare 10
dixi, Audite me, & annuntiabo
vobis quæ novi: auribus percipite
mea verba. Dicam enim vobis 11
(d) audientibus, quoadusque
exquiratis sermones. Et usque 12
ad vos intelligam, Et ecce non
erat ipsi Job qui argueret; qui
vicissim responderet verbis ejus,
ex vobis: ut ne dicatis, Invenimus 13
sapientiam (e) Domino adjecti.
Homini autem commisistis 14
loqui talia verba: Exterriti sunt, 15
non responderunt ultrà: (f) veteres
fecerunt ex se sermones.
Sustinui, (g) non enim locutus 16
sum: quia steterunt, non responderunt. 17
(h) Suscipiens autem
Elius ait, Rursus loquar: Plenus 18
enim sum verborum: perdit
(i) enim me spiritus ventris.
Venter autem meus sicut (k) uter 19
musto fervens ligatus, aut
veluti follis ærarii diruptus. Loquar 20
ut requiescam aperiens labia:
Hominem enim non verebor: 21
sed neque erga mortalem
confundar. Non enim novi admirari 22
facies: alioquin & me
tineæ edent.

MS.A. (α) τρεῖς (β) αὐτοῦ· ἔτι δὲ ἀντεῖπεν (γ) ἦν γὰρ δίκαιος ἐναντίον αὐτῶν Ἰώβ. (δ) ὁ τοῦ Βουζὶ (ε) *Ῥαμὰ, (ζ) καὶ ὠργίσθη τῷ Ἰὼβ (η) ἔναντι κυρίου. (θ) τῶν δὲ τριῶν φίλων αὐτοῦ ὠργίσθη (ι) τῷ Ἰὼβ, (') τῷ Ἰὼβ, (κ) πρεσβύτεροί εἰσιν αὐτοῦ ἡμερῶν. Καὶ (λ) ὁ τοῦ Βουζὶ, λέγει, (μ) διότι (ν) τοῦ ἀναγγεῖλαι ὑμῖν τὴν ἐμὴν ἐπιστήμην. Εἶπον δὲ, Ὅτι χρόνος (ξ) Καὶ οὐχ οὕτως, ἀλλὰ πνεῦμά (ο) ἐστιν ἡ διδάσκουσά με. Οὐ γὰρ οἱ (") οὐδὲ οἱ (π) Διὸ εἶπον. (ρ) Ἐνωτίζεσθε τὰ ῥήματά μου. † (σ) Ἰδοὺ ἤκουσα τοὺς λόγους ὑμῶν, ἐνωτισάμην μέχρι συνέσεως ὑμῶν· ἄχρις οὗ ἐτάσηται τοὺς λόγους ὑμῶν, καὶ ἕως ὑμῶν συνήσω, (τ) ὁ ἐλέγχων (υ) ῥήμασιν (φ) Ἵνα δὲ μὴ (χ) προσθέμενοι κυρίῳ. (ψ) δέ με (ω) Καὶ ἡ γαστήρ (α) γέμων (β) χαλκέως δεδεμένος καὶ κατερρηγώς. (γ) τὰ χείλη μου, (δ) πρόσωπον.

תרגום TARGUM.

לב

1 נחו תלתא גבריא האלין מלאתבא ית איוב מטול דהוא זכי בעינוי : ותקף רוגזא דאליהוא בר ברכאל בוזאה מן גניסת אברהם באיוב תקיף 2
3 זיה מטול זכאותיה נפשיה מן אלהא : ובתלת חברוי תקף רוגזיה מטול דלא אשכחו תיובתא וחייבו ית איוב : ואליהו מתן ית איוב במליא 4
5 יום סבין הנון מניה ליומיא : וחמא אליהו ארום לית תיובתא בפום תלת גובריא ותקף רוגזיה : ואתיב אליהוא בר ברכאל בוזאה ואמר 6
7 עיר אנא ליומיא ואתון קשישין מטול היכנא אסתפיתי ודחילית מלחואה מנדעאי יתכון : אמרית יומיא ימללון וסגיעי שניא יודיעון חיכמתא :
8 9 קושטא רוח נבואתא היא בבר נש ומימר שדי מבינינון : לא רברבני חכימין וסביא יבינון דינא : בנין כן אמרית קבל מני אחוי מנדעי ברם אנא : 10
11 12 אוריכית לפתגמיכון אציתית עד דפשפשון מלייא : ועד ביוניכון אתבין והא לית לאיוב מכסן מתיב מימרוי מנכון : דלמא תימרון 13
14 שכחנא חוכמתא אלהא ישקפיניה לא גבר : ולא סדר לותי מלין ובמימריכון לא אתיבנניה : אתברו לא אתיבו תיב אסתלקו מנהון מלייא 15
16 17 18 אוריכית ארום לא ימללון שתקו ולא אתיבו תוב : אתיב לחוד אנא חולקי אחוי מנדעי אוף אנא : ארום מליתי מליא עקתני רוח דכריסי : הא 19
20 21 סי היך חמר חדת דלא יתפתח לגינין חדתין יתבזע : אמלל ויהוח לנרמי אפתח ספותי ואתיב : לא כדון אסב אפי גבר ולבר נש לא אשתמודע :
22 ב לא ידעית לאשתמודעא כזעיר פון יסבר לי אפין דעבד יתי :

Verſio SYRIACA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܒ * ܘܫܠܝܘ ܬܠܬܐ ܓܒܪܐ ܗܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܗܘܘ ܠܡܢܣܝܘܬܗ ܕܐܝܘܒ. ܡܛܠ ܕܗܘ 1
ܗܘܐ ܙܕܝܩ ܒܥܝܢܝܗܘܢ. * ܘܐܬܚܡܬ ܠܐܠܝܗܘ ܒܪ ܒܪܟܐܝܠ ܒܘܙܝܐ. ܡܢ ܫܪܒܬܐ ܕܪܡ. ܘܐܬܚܡܬ ܪܘܓܙܗ 2
ܥܠ ܐܝܘܒ. ܥܠ ܕܙܕܩ ܢܦܫܗ ܝܬܝܪ ܡܢ ܐܠܗܐ. * ܘܐܬܚܡܬ ܥܠ ܬܠܬܐ ܪܚܡܘܗܝ. ܥܠ ܕܠܐ ܐܫܟܚܘ
ܕܢܬܠܘܢ ܠܗ ܦܬܓܡܐ ܠܐܝܘܒ ܘܢܚܝܒܘܢܝܗ. * ܘܐܠܝܗܘ ܡܟܣ ܗܘܐ ܠܐܝܘܒ ܒܡܠܐ. ܡܛܠ ܕܩܫܝܫܝܢ 3
ܗܘܘ ܡܢܗ ܒܝܘܡܬܐ. * ܘܚܙܐ ܐܠܝܗܘ ܕܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܬܠܬܐ ܓܒܪܐ ܕܢܡܠܠܘܢ ܥܡܗ. ܘܐܬܚܡܬ 4
ܪܘܓܙܗ. * ܘܥܢܐ ܐܠܝܗܘ ܒܪ ܒܪܟܐܝܠ ܒܘܙܝܐ. ܘܐܡܪ. ܡܛܠ ܕܙܥܘܪ ܐܢܐ ܒܝܘܡܬܐ ܡܢܟܘܢ 5
ܘܐܢܬܘܢ ܩܫܝܫܝܢ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܟܘܠܬ ܘܕܚܠܬ ܕܐܚܘܐ ܠܟܘܢ ܝܕܥܬܝ. * ܐܡܪܬ ܓܝܪ. ܕܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ 6
ܡܡܠܠܝܢ. ܘܣܘܓܐܐ ܕܫܢܝܐ ܡܠܦܝܢ ܚܟܡܬܐ. * ܒܪܡ ܪܘܚܐ ܗܝ ܕܒܒܪܢܫܐ. ܘܢܫܡܬܗ ܕܐܠܗܐ ܗܝ 7
ܡܣܟܠܐ ܠܗܘܢ. * ܠܐ ܗܘܐ ܣܘܓܐܐ ܕܝܘܡܬܐ ܡܚܟܡ. ܘܐܦܠܐ ܣܒܐ ܡܣܬܟܠܝܢ ܕܝܢܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪܬ 8
ܫܡܥܘܢܝ. ܘܐܚܘܐ ܐܦ ܐܢܐ ܝܕܥܬܝ. * ܗܐ ܫܠܝܬ ܠܟܘܢ ܘܠܡܠܝܟܘܢ. ܘܨܘܬܬ ܥܕܡܐ ܕܫܠܡܬܘܢ 9 10
ܘܒܨܝܬܘܢ ܡܠܐ. * ܘܒܣܗܕܘܬܟܘܢ ܐܣܬܟܠܬ. ܘܗܐ ܠܝܬ ܕܡܟܣ ܠܐܝܘܒ. ܘܕܢܦܢܐ ܦܬܓܡܐ ܡܢܟܘܢ 11
* ܕܠܐ ܬܐܡܪܘܢ ܕܐܫܟܚܢ ܚܟܡܬܐ. ܐܠܗܐ ܗܘ ܡܚܝܗ. ܘܠܐ ܒܪܢܫܐ. * ܠܐ ܐܡܠܠ ܥܡܗ ܡܠܐ. ܘܒܡܠܝܟܘܢ 12
ܠܐ ܐܦܢܐ ܠܗ. * ܫܠܝܘ. ܘܠܐ ܐܘܣܦܘ ܠܡܦܢܝܘ. ܘܫܢܝܘ ܡܢܗܘܢ ܡܠܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܡܠܠܝܢ 13 14
ܘܩܡܘ. ܘܠܐ ܦܢܝܘ ܬܘܒ. * ܐܦܢܐ ܐܦ ܐܢܐ ܡܢܬܝ. ܘܐܚܘܐ ܐܦ ܐܢܐ ܝܕܥܬܝ. * ܡܛܠ ܕܡܠܐ 15 16
ܐܢܐ ܡܠܐ. ܘܐܠܨܬܢܝ ܪܘܚܐ ܕܟܪܣܝ. * ܗܐ ܟܪܣܝ ܐܝܟ ܚܡܪܐ. ܕܠܐ ܡܬܦܬܚ. ܘܐܝܟ ܙܩܐ ܚܕܬܐ 17 18
ܡܨܛܪܐ. * ܐܡܠܠ ܘܐܬܢܦܫ. ܐܦܬܚ ܣܦܘܬܝ ܘܐܦܢܐ. * ܠܐ ܐܣܒ ܒܐܦܐ ܕܓܒܪܐ. ܘܥܡ ܒܪܢܫܐ ܠܐ ܐܬܟܢܐ 19 20 21
* ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܠܡܬܟܢܝܘ. ܘܡܟܝܠ ܩܠܝܠ ܗܘܐ ܥܒܕܝ.
22

Verſio ARABICA.

* الفصل الثاني والثلثون * وصمت هولاي الثلاثة رجال الذين كانوا يريدون يفحصون ايوب 1
لانه كان صديقا في اعينهم * واحتما اليهو ابن بركيل البوري من قبيل رمون احتما غضبه على ايوب 2
حين برر نفسه اكثر من الله * واحتما على الثلاثة اصحابه حين لم يستطيعوا يعطونه جوابا اعني لايوب 3
ويدحضونه * واليهو كان يبكت ايوب بالقول * لانهم كانوا اسن منه في الايام * فابصر اليهو انهم لا يستطيعوا 4 5
هولاي الثلاثة رجال ان يكلموه * فاحتما غضبا * فاجاب اليهو ابن بركيال البوري * وقال * من اجل اني اصغر 6
منكم في الايام وانتم مشايخ * من اجل هذا خشيت وفزعت ان اخبركم معرفتي * واني قلت ان الايام 7
تتكلم * وكثر السنين تعلم الحكمة * حقا ان روحا في الانسان ونسمة الله تفهمهم * وليس الان كثر 8
الايام تحكم * وايضا وليس المشايخ يفهمون القضاء * من اجل هذا فاني اقول اسمعوني * وانا ايضا اخبركم 9 10
معرفتي * فاني قد سكت لكم ولاقوالكم * وتصنت حتى فرغتم وفحصتم بالقول * وفي شهاداتكم تفهمت 11
والان ليس لايوب مبكتا * والذي يعطيه منكم قولا * حين تقولون اننا قد وجدنا الحكمة * فان الله ضربه 12 13
وليس انسان * ولا اقول مقابل الكلام * وبقولكم فاني لا اتشبه * سكتوا وايضا فلم يجيبوه * وابعدوا منهم 14 15
القول وسكتوا * من اجل انهم لم يتكلموا وقاموا ايضا ولم يجيبوه * فاستجيب انا ايضا بكلمتي * واخبر 16 17
انا ايضا معرفتي * لاني امتليت كلاما واستفرغت الروح ببطني * فهاذ بطني وجعه لا ينفتح * ومثل 18 19
الفاكهة في الشهر ينشق * اتكلم فاستريح * وافتح شفتي وارد القول * ولا اخذ باوجه الناس * ومن 20 21
اوجه الناس لا احزا * من اجل اني لا اعرف الخزي * والي قليل ياخذ مني قوتي * 22

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

CAP. XXXII.

ET conticuêre illi tres 1 viri qui volebant (a) tentare Job, eò quòd eſſet juſtus in oculis eorum, Et 2 iratus eſt Elihu filius Barachiel Buzites de cognatione Remmon, accenſus eſt furor ejus adverſus Job, cùm juſtificavit ſeipſum plus Deo: Et iratus 3 tus eſt tribus amicis ejus quod nequiverint reddere illi (nempe Jobo) reſponſum, & convincere illum. Et Elihu arguebat Job in 4 ſermone: nam iſti erant provectiores ipſo, ætate. Vidit que Elihu non po- 5 tuiſſe hos tres viros (b) alloqui illum, & ſuccenſus eſt furore: Et re- 6 ſpondit Elihu filius Barachiel Buzites, ac dixit; Quia ſum minor vobis diebus, vos autem ſeniores; iccircò timui ac veritus ſum indicare vobis ſcientiam meam: Dixi 7 enim, quòd dies loquuntur, & multitudo annorum docet ſapientiam. Ve- 8 rè ſpiritus eſt in homine, & aura Dei dat illis intelligentiam. Non igi- 9 tur multitudo dierum ſapientem facit, neque etiam ſenes intelligunt judicium. Propterea ego dico; 10 Audite me, & ego quoque indicabo vobis ſcientiam meam: (c) Tacui enim 11 vobis & ſermonibus veſtris & auſcultavi donec abſolviſtis, & indagâſtis ſermocinationê: Et teſti- 12 monia veſtra intellexi: Et tandem non eſt qui Job redarguat, & qui tribuat illi ex vobis (d) ſermonem: Dum dicitis; Jam 13 invenimus ſapientiã. Deus quidem percuſſit illum, & non homo. Et non con- 14 tradicam verbis, (e) & ſermonem veſtrum nequaquam imitabor. Silue- 15 runt, nec ampliùs reſponderunt ei, & removerunt à ſe ſermonem, & tacuerunt. Quia non loquun- 16 tur, imo etiam ſubſtiterunt, & (f) non reſponderunt illi; Ideò adfe- 17 ram ego quoque verbum meum, & ſignificabo etiam ſcientiam meã, Quia 18 impletus ſum verbis, & evomuit ſpiritum venter meus. En venter meus do- 19 lore vexa.° non aperitur, & quaſi fructus in menſe, diſciſſus eſt. Loquar, et 20 reſpirabo, & aperiam labia mea, & reddam ſermonem: Nec accipiam fa- 21 cies hominum, & à faciebus hominum non erubeſcam, Quia non novi eru- 22 beſcentiam, & ad modicum ſumet à me virtutem meam.

INTERP. SYRIACA.

CAP. xxxii. (a) reum peragere (b) reſponſum dare illi, (c) Ecce tacui vobis (d) reſponſum: (e) neq; ſermonibus veſtris in illum me conjiciam. (f) ampliùs non

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXXII.

ET omiſerunt tres viri iſti reſpondere Job, eò quòd eſſet juſtus in oculis ſuis. Et iratus eſt furor Elihu filii Barachel Buzites, de cognatione Abraham, contra Job: 1 2
iratus eſt enim furor ejus eò quod juſtificaſſet animam ſuam magis quàm Deum. Et adverſus tres amicos ejus iratus eſt furor ejus, eò ꝙ non inveniſſent reſponſionem, 3
& condemnâſſent Job. Elihu autẽ expectavit Job in ſermonibus, quoniam ipſi ſeniores diebus erant illo. Et vidit Elihu ꝙ non eſſet reſponſio in ore triũ virorũ, & iratus 4 5
eſt furor ejus. Et reſpondit Elihu filius Barachel Buzites, & ait: Junior ſum diebus, & vos eſtis longævi, propterea dubitabam & timebã annunciare ſcientiã meam *vobis*. 6
Dixi: Diebus loquentur, & multitudine annorum oſtendent ſcientiam, Veruntamen ſpiritus prophetiæ eſt in filio hominis, & verbum omnipotentis intelligere faci- 7 8
et eos. Non magnifici ſunt ſapientes, nec ſenes intelligunt judicium. Propterea dixi: Audi me, annunciabo ſcientiam meam etiam ego. Ecce expectavi ſermones 9 10
veſtros, audivi uſque ad intelligentiam veſtram donec ſcrutaremini ſermones. Et apud vos intelligebam, & ecce non eſt qui arguat Job, nec reſpondeat verbis ejus ex 11 12
vobis. Ne fortè dicatis: Invenimus ſapientiam, Deus percuſſit eum, & non homo. Et non direxit ad me ſermones, & juxta verba veſtra non reſpondebo illi. Con- 13 14
triti ſunt & non reſponderunt ultrà, & abſtulerunt à ſe ſermones. Et expectavi quoniam non loquebantur; tacuerunt, & non reſponderunt ultrá. Quoniam plenus 15 16
ſum ſermonibus coarctavit me ſpiritus ventris mei. Ecce venter meus ſicut vinum novum quod non habet ſpiraculum; [*& ſicut*] lagenæ novæ, ſcinditur. Loquar & re- 17 18
ſpirabo in meipſo, aperiam labia mea & reſpondebo. Non modò accipiam faciem viri, & filium hominis non cognoſcam. Quoniam neſcio cognoſcere, quaſi mo- 19 20
dicum tollet *mihi faciem* qui fecit me. 21 22

איוב : לג

CAP. XXXIII. לג

.auſculta mea verba omnia & : mea eloquia Ijob quæſo audi verò Et
1 ואולם שמע־נא איוב מלי וכל־דברי האזינה :
.meo palato in mea lingua eſt locuta : meū os aperui nunc Ecce
2 הנה־נא פתחתי פי דברה לשוני בחכי :
puram mea labia ſcientiam & , mea eloquia mei cordis Rectitudo
3 ישר־לבי אמרי ודעת שפתי ברור
omnipotentis ſpiraculum & , me fecit Dei Spiritus .loquuntur
4 מללו : רוח־אל עשתני ונשמת שדי
meas facies ad , Diſpone : mihi reſponde , potueris Si .me vivificabit
5 תחיני : אם־תוכל השיבני ערכה לפני
luto ex , Deo tuum os ſecundùm ego Ecce .conſiſte
6 התיצבה : הן־אני כפיך לאל מחמר
, te terrebit non mea formido Ecce .ego etiam ſum excisus
7 קרצתי גם־אני : הנה אימתי לא תבעתך
dixiſti Veruntamen .erit gravis non te ſuper mea manus &
8 ואכפי עליך לא־יכבד : אך אמרת
ego Mundus .audiam ſermonum vocem & , meis auribus in
9 באזני וקול מלין אשמע : זך אני
.mihi iniquitas non & : ego tectus , prævaricatione abſque
בלי־פשע חף אנכי ולא עון לי :
.ſibi inimicum in me reputavit : invenit me adverſum occaſiones Ecce
10 הן תנואות עלי ימצא יחשבני לאויב לו :
.meas ſemitas omnes cuſtodiet : meos pedes cippo in Ponet
11 ישם בסד רגלי ישמר כל־ארחתי :
magnificabitur quia : tibi reſpondebo , fuiſti juſtus non hoc Ecce
12 הן־זאת לא־צדקת אענך כי־ירבה
? contendiſti eum adverſum Cur .homine præ Deus
13 אלוה מאנוש : מדוע אליו ריבות
loquitur uno in Quia ? reſpondebit non ſua verba omnia quòd
14 כי כל־דבריו לא יענה : כי־באחת ידבר־
viſionis ſomnium Per .eum intuebitur non duobus in & , Deus
15 אל ובשתים לא ישורנה : בחלום חזיון
ſuper dormitationes per ,homines ſuper ſoporem cadendo in , noctis
לילה בנפל תרדמה על־אנשים בתנומות עלי
ſuo vinculo in & : hominum aurem revelabit Tunc .cubile
16 משכב : אז יגלה אזן אנשים ובמסרם
.tegat viro à ſuperbiam & : opere hominē removendum Ad .obſignabit
17 יחתם : להסיר אדם מעשה וגוה מגבר יכסה :
.miſſile per tranſeundo à ejus vitam & : foveâ à ejus animam Prohibeat
18 יחשך נפשו מני־שחת וחיתו מעבר בשלח :
ejus oſſium multitudo & , ſuum cubile ſuper dolore in Corripiturque
19 והוכח במכאוב על־משכבו ורוב עצמיו
cibum ejus anima & : panem ejus vita eum abominari facit Et .fortis
20 אתן : וזהמתו חיתו לחם ונפשו מאכל
confringentur & : me vidente à ejº caro Conſumetur .aviditatis
21 תאוה : יכל בשרו מראי ושפו
: ejus anima foveæ appropinquavit Et .videbuntur non , ejus oſſa
22 עצמתיו לא ראו : ותקרב לשחת נפשו
angelus eum ſuper fuerit Si .mortificantibus ejus vita &
23 וחיתו לממתים : אם־יש עליו מלאך
.ejº rectitudinem homini indicandum ad : mille ex unus eloquens
מליץ אחד מני־אלף להגיד לאדם ישרו :
, foveam deſcendendo à ,eum Redime : dixerit & ,ejus fuerit miſertus Et
24 ויחננו ויאמר פדעהו מרדת שחת
revertetur : pueritia præ ejus caro erit Succulenta .propitiationem inveni
25 מצאתי כפר : רטפש בשרו מנער ישוב
.ſuarum adoleſcentiarum dies ad
לימי עלומיו :

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXXIII.

1 Audi igitur Job eloquia
mea, & omnes ſermones meos
2 auſculta. Ecce aperui os me-
um, loquatur lingua mea in
3 faucibus meis. Simplici corde
meo ſermones mei, & ſenten-
tiam puram labia mea loquen-
4 tur. Spiritus Dei fecit me, &
ſpiraculum Omnipotentis vi-
5 vificavit me. Si potes, reſpon-
de mihi, & adverſùs faciem
6 meam conſiſte. Ecce, & me
ſicut & te fecit Deus, & de
eodem luto ego quoque for-
7 matus ſum. Veruntamen mi-
raculum meum non te terreat,
& eloquentia mea non ſit tibi
8 gravis. Dixiſti ergò in auribus
meis, & vocē verborū tuorū
9 audivi; Mundus ſum ego, &
abſque delicto: immaculatus,
& non eſt iniquitas in me.
10 Quia querelas in me reperit,
ideò arbitratus eſt me inimi-
11 cum ſibi. Poſuit in nervo pe-
des meos, cuſtodivit omnes
12 ſemitas meas. Hoc eſt ergò,
in quo non es juſtificatus: re-
ſpondebo tibi, quia major ſit
13 Deus homine. Adverſùs eum
contendis, quòd non ad omnia
14 verba reſponderit tibi? Semel
loquitur Deus, & ſecundò
15 idipſum non repetit. Per
ſomnium in viſione nocturna,
quando irruit ſopor ſuper ho-
mines, et dormiunt in lectulo:
16 Tunc aperit aures virorum, &
erudiens eos inſtruit diſcipli-
17 nâ. Ut avertat hominem ab
his quæ facit, & liberet eum
18 de ſuperbia: Eruens animam
ejus à corruptione: & vitam
illius, ut non tranſeat in gla-
19 dium. Increpat quoque per
dolorem in lectulo, & omnia
oſſa ejus marceſcere facit.
20 Abominabilis ei fit in vita ſua
panis, & animæ illius cibus
21 antè deſiderabilis. Tabeſcet
caro ejus, & oſſa, quæ tecta
22 fuerant, nudabuntur. Appro-
pinquavit corruptioni anima
23 ejus, & vita illiº mortiferis. Si
fuerit pro eo Angelº loquens,
unus de millibus, ut annuntiet
24 hominis æquitatem: Miſerebi-
tur ejus, & dicet; Libera
eum, ut non deſcendat in cor-
ruptionem: inveni in quo ei
25 propitier. Conſumpta eſt ca-
ro ejus à ſuppliciis, reverta-
tur ad dies adoleſcentiæ ſuæ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. λγ΄.

1 † Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ ἄκουσον Ἰὼβ τὰ
ῥήματά μου, † (α) καὶ λαλιὰν ἐνωτίζου
2 μου. † Ἰδοὺ γὰρ ἤνοιξα τὸ στόμα μου,
3 καὶ ἐλάλησεν ἡ γλῶσσά μου. † Καθαρά
μου ἡ καρδία (β) ῥήμασιν, † Σύνεσις δὲ
4 χειλέων μου καθαρὰ νοήσει. † Πνεῦμα
θεῖον τὸ ποιῆσάν με, † πνοὴ δὲ παντοκρά-
5 τορος ἡ διδάσκουσά με. † (γ) Ἐὰν δύ-
νῃ, δός μοι ἀπόκρισιν, πρὸς ταῦτα †
ὑπόμεινον, (δ) στῆθι κατ᾽ ἐμὲ, καὶ ἐγὼ κατὰ
6 σέ. † Ἐκ πηλοῦ διήρτισαι σὺ ὡς καὶ ἐ-
7 γώ, † ἐκ τοῦ αὐτοῦ διηρτίσμεθα (ε)· † Οὐχ
ὁ φόβος μου (ζ) σε στροβήσει, † οὐδὲ ἡ
8 χείρ μου βαρεῖα ἔσται ἐπὶ σοί. † Πλὴν
εἶπας ἐν ὠσί μου· (η) φωνὴν ῥημάτων
9 σου ἀκήκοα· † διότι λέγεις, Καθαρός
εἰμι (θ) οὐχ ἁμαρτών, † ἄμεμπτός εἰμι, οὐ γὰρ
10 ἠνόμησα· † Μέμψιν δὲ κατ᾽ ἐμοῦ εὗρεν·
11 (ι) ἥγηται δέ με ὥσπερ ὑπεναντίον. † (κ)
Ἔθετο δὲ ἐν ξύλῳ τὸν πόδα μου, † ἐ-
φύλαξε δέ μου πάσας τὰς ὁδούς. † Πῶς
12 γὰρ λέγεις, Δίκαιός εἰμι, καὶ οὐκ ἐπακή-
κοέ μου; † αἰώνιος γάρ ἐστιν ὁ ἐπάνω
13 βροτῶν. † (λ) Λέγεις δέ, Διατί τῆς δίκης
14 μου οὐκ ἐπακήκοε μου πᾶν ῥῆμα; † Ἐν
γὰρ τῷ ἅπαξ λαλῆσαι ὁ κύριος, † ἐν
15 δὲ τῷ δευτέρῳ, Ἐνύπνιον † (μ) ἢ ἐν
μελέτῃ νυκτερινῇ, † ὡς ὅταν ἐπιπίπτῃ (ν)
δεινὸς φόβος ἐπ᾽ ἀνθρώποις, ἐπὶ νυσταγ-
16 μάτων ἐπὶ κοίτης· † Τότε ἀνακαλύπτει
νοῦν ἀνθρώπων, † ἐν εἴδεσι φόβου τοιού-
17 τοις (ξ) αὐτοὺς ἐξεφόβησεν. † Ἀποστρέ-
ψαι ἄνθρωπον (ο) ἀπὸ ἀδικίας, † τὸ δὲ
σῶμα αὐτοῦ (π) ἀπὸ πτώματος ἐρρύσατο. †
18 (ρ) Ἐφείσατο δὲ τῆς ψυχῆς αὐτοῦ ἀπὸ θα-
νάτου, † (σ) καὶ μὴ πεσεῖν αὐτὸν ἐν πο-
19 λέμῳ. † Πάλιν δὲ ἤλεγξεν (τ) αὐτὸν ἐπὶ
μαλακίᾳ ἐπὶ κοίτης, † καὶ πλῆθος (υ) ὀ-
20 στῶν αὐτοῦ ἐνάρκησε. † Πᾶν δὲ βρωτὸν
σίτου οὐ μὴ δύνηται προσδέξασθαι, † καὶ
21 ἡ ψυχὴ αὐτοῦ βρῶσιν ἐπιθυμήσει. † Ἕως
ἂν σαπῶσιν αὐτοῦ αἱ σάρκες, † καὶ ἀπο-
22 δείξῃ τὰ ὀστᾶ αὐτοῦ κενά. † (φ) Ἤγγισε
δὲ εἰς θάνατον ἡ ψυχὴ αὐτοῦ, † ἡ δὲ ζωὴ
23 αὐτοῦ (χ) ἐν ᾅδῃ. † Ἐὰν ὦσι χίλιοι ἄγ-
γελοι θανατηφόροι, † εἷς (ψ) αὐτῶν οὐ μὴ
τρώσῃ αὐτόν. † ἐὰν νοήσῃ τῇ καρδίᾳ
ἐπιστραφῆναι (ω) πρὸς κύριον, † ἀναγ-
γείλῃ δὲ ἀνθρώπῳ τὴν ἑαυτοῦ μέμψιν,
† (α) τὴν δὲ ἄνοιαν αὐτοῦ δείξῃ, † (β)
24 Ἀνθέξεται τοῦ μὴ πεσεῖν εἰς θάνατον·
† ἀνανεώσει δὲ αὐτοῦ τὸ σῶμα ὥσπερ ἀλοι-
φὴν ἐπὶ τοίχου, † (γ) τὰ δὲ ὀστᾶ αὐτοῦ
25 ἐμπλήσει μυελοῦ. † Ἁπαλυνεῖ δὲ αὐτοῦ τὰς
σάρκας ὥσπερ νηπίου, † (δ) ἀποκαταστή-
σει δὲ αὐτὸν ἀνδρωθέντα ἐν ἀνθρώποις.

CAP. XXXIII.

Veruntamen audi Job verba mea, & auribus percipe loquutionem meam. Ecce enim aperui os meum, & locuta eſt lingua mea. Mundum eſt cor meum verbis; & intellectus labiorum meorum munda cogitabit. Spiritus divinus eſt, qui me fecit: ſpiratio autem Omnipotentis eſt, quæ docet me. Si poteris, da mihi reſponſionem ad hæc: ſuſtine: ſta juxta me & ego juxta te. De luto formatus es tu, ſicut & ego: ex eodē formati ſumus. Non timor meus te (a) turbabit: neque manus mea gravis erit ſuper te. Veruntamen dixiſti in auribus meis: vocem verborum tuorum audivi, quandoquidem dicis; Mundus ſum non peccans: ſine crimine ſum, non enim iniquè egi. Accuſationem autem contra me invenit: putavit autem me, ſicut adverſarium. Poſuit autem in ligno pedem meum, & obſervavit omnes vias meas. Quomodò enim dicis; Juſtus ſum, & non exaudivit me? æternus enim eſt, qui eſt ſuper homines. Dicis autem; (b) Cur judicium meum non exaudivit, meum omne verbum? Semel enim (c) loquatur Dominus: ſecundò autem Somnium, aut in meditatione nocturna: ſicut (d) quando incidat ſævus timor in homines in dormitationibus ſuper cubili. Tunc revelat mentem hominum: in ſpeciebus timoris talibus eos exterruit. Avertat hominem ab injuſtitia: & corpus ejus à ruina liberavit: Et pepercit animæ ejus à morte, & non cadat ille in bello. Iterum autem arguit eum in languore ſuper cubile: & multitudo oſſium ejus obtorpuit. Et omnem eſcam frumenti non poterit ſumere; & anima ejus cibum deſiderabit: Quoadúſque putruerint ejus carnes, & oſtenderit oſſa ſua inania. Appropinquavit autem ad mortem anima ejus, & vita ejus in inferno. Si fuerint mille angeli mortiferi, unus eorum non vulnerabit eum: ſi cogitaverit corde reverti ad Dominum, annuntiaverit autem homini ſuum ipſius crimen, & (e) ſuā ſtultitiā oſtenderit: Retinebit ne cadat in mortē. Et renovabit corpus ejus, ſicut tectorium in pariete, & oſſa ejus implebit medullâ: Et molliet carnes ejus ſicut parvuli, & reſtituet eum (f) virum factum inter homines.

MS. A. καὶ τὴν λαλιάν μου ἐνωτίζου. Ἰδοὺ (β) ἐν ῥήμασιν, (γ) Ἐὰν δυνηθῇς, (δ) καὶ στῆθι σὺ κατ᾽ ἐμὲ, (ε) πηλοῦ. Οὐχὶ ὁ (ζ) στροβήσει σε, (η) φωνὴν δὲ ῥημάτων (θ) οὐχ ἥμαρτον τοῖς ἔργοις, ἄμεμπτος δέ εἰμι (ι) καὶ ἥγηταί με, (κ) Ἔθετο δὲ τὸν πόδα μου ἐν κυκλώματι, καὶ ἐφύλαξέν μου (λ) Λέγεις γάρ, Διατί τῆς δικαιοσύνης μου οὐκ ἐπακήκοεν ἐν παντὶ ῥήματι; Ἐν (μ) ὡς φάσμα ἐν μελέτῃ νυκτερινῇ, (ν) φόβος δεινὸς ἐπ᾽ ἀνθρώποις, (ξ) ἐξεφόβησεν αὐτούς. (ο) ἐξ ἀδικίας αὐτοῦ, (π) ἀπὸ ἀδικίας πτώματος (ρ) Καὶ ἐφείσατο τῆς (σ) τοῦ μὴ πεσεῖν (τ) αὐτὸν μαλακίᾳ (υ) ὀστέων (φ) Ἐγγίζῃ δὲ ἡ ψυχὴ αὐτοῦ εἰς θάνατον, ἡ δὲ (χ) ἐν τῷ ᾅδῃ. (ψ) ἐξ αὐτῶν (ω) ἐπὶ τὸν κύριον, (α) καὶ τὴν ἄνοιαν (β) Ἀνθέξεται αὐτοῦ, τοῦ μὴ πεσεῖν αὐτὸν εἰς θάνατον. (γ) καὶ τὰ ὀστᾶ (δ) καὶ ἀποκαταστήσει αὐτὸν

תרגום TARGUM

לג

1 2 3 4 ברם שמע כדון איוב מלי וכל פתגמי אצית : הא כדון פתחית פומי מלילת לישני במוריני : תריצות לבבי מימרי ומנדע ספותי ברור מלילו : רוח
5 6 7 אלהא עבדת יתי ומימר שדי תקימנני : אין תוכל תתיבנני סדר קדמי אתעתד : הא אנא דכמתך לאלהא מן טינא אתלשית לחוד אנא : הא
8 9 10 אימתי לא תבעתנך וטוני עלך לא ייקר : ברם אמרת באודני וקל מליא אשמע : זכי אנא מדלית מרד שוינ אנא ולא טורחנא לי : הא תרעומתא
11 12 13 עלי ישכח יחשבנני לבעל דבבא ליה : ישוי בשיע רגלי ינטר כל שבילי : הא דא לא זכיתא אתיבנך ארום יתרברב אלהא מן בר נש : מא דין לותיה
14 15 נציתא ארום כל פתגמוי לא יתיב : ארום בחדא שותא ימלל אלהא ובתניתא לא אצטריך למסכיה : בחלמא מן חזונא דליליא כד נפלת שינתא עמיקתא
16 17 על בני נשא בניומתא על בי מדמכא : הידין יגלי אודנא בני נשא ובמרדותהון יחתום : לאעדאה בר נש מן עובדא בישא וגיותנותא מגברא יכסי :
18 19 20 ימנע נפשיה מן שוחתא וחיוי מן למעבר בשלחא : ומתמכסן בכיבא על בי מדמכיה וסוגעי איברוי תקיפין : ומחונבא דנקיט ליה מרחיקא נפשיה
21 22 23 מזונא ונפשיה מיכלא רגינא : ישתצי בסריה מן רוו ושפין גרמוי לא אתחמו : וקריבת לשוחתא נפשיה ונשמתיה למיתותא : אין אית עלוי זכותא מודמן
24 25 מלאכא חדא פרקליטא מן ביני אלף קטיגוריא לחואה לבני נש תריצותיה : וחס עלוי ואמר פרוק יתיה מלמחת בשוחתא אשכחית פורקנא : אתחליש
בסריה יתיר מן רבותא יתוב ליומי טליותיה :

Verſio *SYRIACA.*

* ܦܘܠܓܐ * ܠܓ *

1 * ܒܪܡ ܐܢܬ ܫܡܥ ܐܝܘܒ ܡܠܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܝ ܨܘܬ.
2 * ܗܐ ܦܬܚܬ ܦܘܡܝ. ܘܒܦܘܡܝ ܡܡܠܠ ܠܫܢܝ. * ܬܪܝܨܘ ܡܡܠܠܗ ܕܦܘܡܝ. ܘܓܒܝܐ ܡܠܬܐ ܕܣܦܘܬܝ.
3 * ܘܪܘܚܗ ܕܐܠܗܐ ܥܒܕܬܢܝ. ܘܢܫܡܬܗ ܕܐܠܗܐ ܐܚܝܬܢܝ. * ܐܢ ܡܫܟܚ ܐܢܬ. ܐܦܢܝܢܝ ܦܬܓܡܐ.
4 5 ܐܬܛܝܒ ܘܩܘܡ ܩܕܡܝ. * ܘܗܐ ܐܢܐ ܐܝܟ ܕܐܢܬ ܠܘܬ ܐܠܗܐ. ܘܐܦ ܐܢܐ ܡܢ ܛܝܢܐ ܐܬܓܒܠܬ. * ܘܡܛܠܗܢܐ
6 7 ܕܚܠܬܝ ܠܐ ܬܒܥܬܟ. ܘܐܘܩܪܝ ܥܠܝܟ ܠܐ ܢܐܩܪ. * ܒܪܡ ܐܡܪܬ ܒܐܕܢܝ. ܘܩܠܐ ܕܡܠܝܟ ܫܡܥܬ. ܕܐܡܪܬ. * ܙܟܝ
8 9 ܐܢܐ ܕܠܐ ܣܟܠܘ. ܘܙܕܝܩ ܐܢܐ. ܘܠܝܬ ܠܝ ܣܟܠܘܬܐ. ܘܕܟܐ ܐܢܐ ܡܢ ܥܘܠܐ. * ܗܐ ܥܠܠܬܐ ܥܠܝ ܒܥܐ.
10 ܘܚܫܒܢܝ ܠܗ ܐܝܟ ܒܥܠܕܒܒܐ. * ܘܣܡ ܒܩܢܐ ܪܓܠܝ. ܘܢܛܪ ܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܝ. * ܒܗܕܐ ܠܐ ܙܕܩܬ
11 12 ܐܦܢܐ ܠܟ ܦܬܓܡܐ. ܕܪܒ ܗܘ ܐܠܗܐ ܡܢ ܐܢܫܐ. * ܡܛܠ ܡܢܐ ܐܢܬ ܕܐܢ ܥܡܗ. ܘܟܠܗܘܢ
13 14 ܦܬܓܡܘܗܝ ܠܐ ܥܢܐ. * ܡܛܠ ܕܚܕܐ ܙܒܢ ܡܡܠܠ ܐܠܗܐ. ܘܒܬܪܬܝܢ ܠܐ ܡܬܢܐ. * ܘܒܣܦܘܬܐ ܠܐ
15 ܡܠܦ. ܒܚܠܡܐ ܘܒܚܙܘܐ ܕܠܠܝܐ. ܟܕ ܢܦܠ ܫܢܬܐ ܥܠ ܒܢܝܢܫܐ ܒܡܫܟܒܐ ܥܠ ܡܫܟܒܐ. * ܗܝܕܝܢ ܓܠܐ
16 17 ܐܕܢܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܘܒܡܪܘܕܘܬܗܘܢ ܡܟܝܟ ܐܢܘܢ. * ܠܡܥܒܪܘ ܒܪܢܫܐ ܡܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܘܦܓܪܗ ܕܓܒܪܐ ܡܟܣܐ.
18 * ܢܦܨܐ ܢܦܫܗ ܡܢ ܚܒܠܐ. ܘܚܝܘܗܝ ܡܢ ܐܒܕܢܐ. * ܘܡܟܣܐ ܒܟܐܒܐ ܥܠ ܡܫܟܒܗ. ܘܣܘܓܐܐ ܕܓܪܡܘܗܝ
19 20 ܡܚܝܠ. * ܘܡܬܦܫܪ ܒܣܪܗ ܡܢ ܕܚܠܬܗ. ܘܢܦܫܗ ܠܐ ܢܣܒܥ ܠܚܡܐ. ܘܢܦܫܗ ܡܬܪܓܪܓܐ ܠܡܐܟܘܠܬܐ.
21 * ܘܢܐܟܘܠ ܒܣܪܗ ܡܢ ܕܚܠܬܗ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܪܡܘܗܝ ܠܐ ܢܚܙܐ. * ܘܬܬܩܪܒ ܠܚܒܠܐ ܢܦܫܗ. ܘܚܝܘܗܝ ܠܡܘܬܐ.
22 23 * ܐܢ ܐܝܬ ܠܗ ܡܠܐܟܐ ܕܢܫܡܥ ܠܗ ܚܕܐ ܡܢ ܐܠܦ. ܢܚܘܐ ܠܒܢܝܢܫܐ ܙܕܝܩܘܬܗ. * ܘܢܪܚܡ ܥܠܘܗܝ. ܘܢܐܡܪ
24 25 ܦܪܘܩܝܘܗܝ. ܕܠܐ ܢܚܘܬ ܠܚܒܠܐ. ܘܠܐ ܢܫܟܚ ܦܘܪܩܢܐ. * ܢܬܚܠܦ ܒܣܪܗ ܐܝܟ ܕܗܘܐ ܒܛܠܝܘܬܗ. ܘܢܗܦܘܟ
ܠܝܘܡܝ ܥܠܝܡܘܬܗ.

Verſio *ARABICA.*

* الفصل الثالث والثلثون *

1 * ولكن الآن اسمع يا ايوب قولي * وجميع كلامي فافهم
2 3 * فاني قد فتحت فمي * وفي فمي يتكلم لساني * مستقيما هو كلام فمي * ومرضيا هو قول شفتي * وروح
4 5 الله ايقظني * ونسمة الله احيتني * ان استطعت فرد علي قولا * واستعد وقف بين يدي * وانا مثلك عند
6 7 الله * وانا ايضا من الطين جبلت * فالآن مخافتي لا تقلقك * واثقالي عليك لا يثقلك * ولكن قلت
8 9 الآن وفي اذني صوت كلامك سمعته * لانك قلت * اني زكي بلا آثام * وصديق انا وليس لي خطايا * وبري
10 11 انا من الاثم * فانه يطلب علي العلل * وحسبني له مثل العدو * ووضع رجلي في الوثاق * وحفظ جميع
12 13 طرايقي * بهذا لا تستطيع ان تبرر * فاعطيك قولا ان الله اكبر من الناس * من اجل ماذا قضيت
14 15 معه * وفي جميع اقاويله لا يستجيب * من اجل ان بواحدة يتكلم الله * وفي اثنين لا يعود * بالشفتين
16 لا يفهم * بالحلم ورويا الليل اذا ما سقط النوم علي الانسان في الرقاد علي فراشه * عند ذلك يظهر اذن
17 18 الانسان وعنادهم يذللهم * ليبعد الانسان من اعماله * ويغطي جسد الرجل * ويمنع نفسه من الفساد
19 20 وحياته من الهلاك * ويغطي بالوجع علي مضجعه * وكثرة عظامه يقوي * ينقد لحمه من مخافته *
21 وجميع عظامه لا يبصرها * ونفسه لا تشبع خبزا * ونفسه تشتهي الاكل * فياكل لحمه من مخافته *
22 23 وجميع عظامه لا يبصرها * ويدنوا الي الفساد نفسه * والي الموت حياته * ان كان له رسولا يسمعه * واحدا
24 من الف يخبر الناس صلاحه * فيترحم عليه ويقول احلصه لئلا يهبط الي الفساد * ولا يجد الخلاص
25 * يتبدل بشره كالذي كان بصبوته * ويعود الي ايام شبيبته *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

CAP. XXXIII.

1 AT jam audi, O Job, ſermonem meũ, & omnia verba mea intellige: 2 Jam enim aperui os meum, & in ore meo loquetur lingua mea. 3 Recta ſunt verba oris mei, & (a) gratus ſt ſermo labiorum meorum. 4 Et ſpiritus Dei excitavit me, atque aura Dei vivificavit me. 5 Si vales, reſponde mihi ſermonem, & præpara te, & ſta coram me: 6 Et ego ſum ſicut tu apud Deum, & ego quoque de cœno coagulatus ſui; 7 Ideo timor meus non te perturbet, & (b) oppoſitio mei tibi, non ſit tibi gravis. 8 Itaque dixiſti (c) modò, & auribus meis vocem verborum tuorum audivi: nam dixiſti, 9 Innocens ſum, abſque ſceleribus & juſtus ſum, nec habeo peccata, & mundus ego ſum ab iniquitate: 10 (d) Ipſe tamen quærit adverſum me occaſiones, & reputavit me ſibi tanquam inimicum, 11 Et poſuit pedes meos in (e) ligamine, & obſervavit omnes vias meas. 12 In hoc non potes juſtificari; reſpondeo enim tibi quòd Deus eſt major hominibus: 13 Quare cum eo litigas, cùm ad omnia eloquia ejus non reſpondeat? 14 Quia unum loquitur Deus, & ſecundò non repetit: 15 Labiis non docet; per ſomnium & viſionem noctis, cùm ceciderit ſomnus ſuper hominem dum cubat in lecto, 16 Tunc aperit aurem hominum, & ob rebellionem ipſorum (f) affligit eos, 17 Ut removeat hominem ab operibus ejus. 18 Tegitque corpus viri, ut avertat animã ejus à corruptione, & vitam ipſius ab interitu. 19 Tegit etiam dolore ſuper lecto ipſius, et multitudinem oſſium ejus corroborat. 20 (g) Concidetur caro ejus præ timore ipſius, & cuncta oſſa ſua non intuebitur, & anima ejus non ſaturabitur pane; & anima ejus appetet cibum, 21 Et manducabit carnem ſuam ob timorem ſuum, & omnia oſſa ſua non videbit, 22 Et appropinquabit ad corruptionem anima ejus, & & ad mortem vita ipſius. 23 Si habuerit ſibi Apoſtolum qui audiat illum ſemel è millibus, annuntiabit hominibus probitatem ejus; 24 Miſerebitur illius, & dicet; Salvabo eum, ne deſcendat in corruptionem, & non (h) inveniat ſalutem: 25 Immutabitur caro ejus ſicut erat in pueritia ſua, & redibit ad dies juventutis ſuæ.

INTERP. SYRIACA.

CAP. xxxiii. (a) ſelectus (b) cura mea de te, (c) in auribus meis, & vocem (d) Quia ecce quærit (e) cippo, (f) humiliat (g) Et deſtruit carnem ejus præ timore ipſius, & anima ejus (h) ſibi inveniat

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXXIII.

1 2 3 VEruntamen audi nunc Job verba mea, & omnes ſermones meos auſculta. Ecce nunc aperui os meum: locuta eſt lingua mea in faucibus meis. Rectitudo cordis mei verba mea, & labia mea ſcientiam puram loquuntur. 4 5 Spiritus Dei fecit me, & verbum omnipotentis ſuſtentavit me. Si potes, reſponde mihi; ordinare coram me & ſta. 6 7 8 Ecce ego, ſicut tu es, Deo; de luto exciſus ſum etiam ego. Ecce timor meus non terreat te, & onus meum non ſit tibi grave. Veruntamen dixiſti in auribus meis, & vocem verborum audivi. [*dicentis*:] 9 10 Juſtus ſum ego abſque delicto; mundus ego ſum, & non eſt in me iniquitas. Ecce querelas in me reperit, arbitratus eſt me inimicum ſibi. 11 12 Poſuit in nervo pedes meos, cuſtodit omnes ſemitas meas. Ecce non hoc juſtificatus es, reſpondeam tibi; quia major eſt Deus homine. 13 14 Quare adverſus eum contendis? quia omnia verba ſua non reſpondebit. Quoniam una vice loquitur Deus, & in ſecunda non indiget intueri illud. 15 16 In ſomnio per viſionem noctis, quando irruit ſomnus profundus ſuper filios hominum, in ſopore ſuper lectulo: Tunc aperit aurem filiorum hominis, & in eruditione eorum ſignat. 17 18 Ut auferat filium hominis ab opere malo, & ſuperbiam à viro operiat. Prohibet animam ejus à corruptione, & vitam ejus ne tranſeat per gladium. 19 20 Et increpabitur per dolorem in domo lectuli, & in multitudine membrorum ejus [*dolores*] validi. Et propter faſtidium quod moleſtum eſt ei, abominatur *anima* ejus eſcam, & anima illius cibum deſiderabilem. 21 22 Conſumetur caro ejus *ab aſpectu*, & contrita oſſa ejus ne appareant. Et appropinquavit corruptioni anima ejus, & ſpiraculum ejus *morti*. 23 Si eſt in eo meritum, præparatur angelus unus paracletus de millibus accuſatoribus, ut annunciet filio hominis rectitudinem ſuam. 24 25 Et parcet ei, & dicet: Redime eum, ne deſcendat in corruptionem, inveni redemptionem. *Infirmatur* caro ejus magis quàm caro puerilis, revertetur ad dies adoleſcentiæ ſuæ.

איוב : לד

ejus *facies* videbit & , ei *volet bene* & , Deum ad Orabit
26 יעתר אל־אלוה ׀ וירצהו וירא פניו
super Prospiciet .ejus justitiam homini reddet & : jubilo in
27 בתרועה וישב לאנוש צדקתו: ישר ׀ על־
.mihi *fuit æquum* non & ,perverti rectum & , peccavi , *dicet* & , homines
אנשים ויאמר חטאתי וישר העויתי ולא־שוה לי:
lucem *in mea* vita & *: foveam in transeundo à ,meam* animam Redemit
28 פדה נפשי מעבר בשחת וחיתי באור
tribus vicibus ; Deus operabitur ista omnia Ecce .videbit
29 תראה: הן־כל־אלה יפעל־אל פעמים שלש
,fovea à ejus animam *convertendum Ad* .viro cum
30 עם־גבר: להשיב נפשו מני־שחת
: me audi ,Ijob Attende .viventium luce in *lucendum ad*
31 לאור באור החיים: הקשב איוב שמע־לי
: mihi responde ,sermones sunt Si .loquar ego & , tace
32 החרש ואנכי אדבר: אם־יש־מלין השיבני
: me audi *tu* , non Si .te justificare *volui* quia , loquere
33 דבר כי חפצתי צדקך: אם־אין אתה שמע־לי
.sapientiam te docebo & , tace
החרש ואאלפך חכמה:

CAP. XXXIV. לד

sapientes Audite : dixit & , Elihu respondit Et
1 2 ויען אליהוא ויאמר: שמעו חכמים
sermones auris Quia .me auscultate scientes & ; meos sermones
3 מלי וידעים האזינו לי: כי־אזן מלין
eligamus Judicium *.vescendum ad gustabit* palatum & *: probabit*
4 תבחן וחך יטעם לאכל: משפט נבחרה־
: Ijob dixit Quippe .bonum quid nos inter , sciamus : nobis
5 לנו נדעה בינינו מה־טוב: כי־אמר איוב
meo judicio In .meum judicium fecit removere Deus & *, sum Justus*
6 צדקתי ואל הסיר משפטי: על־משפטי
vir Quis .prævaricatione absque *mea* sagitta *dolorata* : mentiar
7 אכזב אנוש חצי בלי־פשע: מי־גבר
iter faceret Et ? aquam ut , subsannationem biberet , Ijob sicut
8 כאיוב ישתה־לעג כמים: וארח
cum deambulandũ ad & : iniquitatẽ operãtibus cum societatem ad
לחברה עם־פעלי און וללכת עם־
ipso cõplacendo in , *vir proficiet* Non : dixit Quoniam *.improbitatis* hominib⁹
9 אנשי־רשע: כי־אמר לא יסכן־גבר ברצתו
Absit .me audite cordis viri Ideo .Deo cum
10 עם־אלהים: לכן ׀ אנשי לבב שמעו לי חללה
opus Quia *.iniquitate ab omnipotens & , improbitate ab* Deo à
11 לאל מרשע ושדי מעול: כי פעל
.ei faciet invenire *viri* viam juxta & : ei reddet hominis
אדם ישלם־לו וכארח איש ימצאנו:
pervertet non omnipotens & : faciet impiè non Deus verè Insuper
12 אף־אמנם אל לא־ירשיע ושדי לא־יעות
posuit quis & : terram *illo super visitavit Quis* .judicium
13 משפט: מי־פקד עליו ארצה ומי שם
,ejus spiritum ; suum cor eum super poneret Si ? universum orbem
14 תבל כלה: אם־ישים אליו לבו רוחו
,simul caro omnis Obiret *.colligeret* se ad ejus flatum &
15 ונשמתו אליו יאסף: יגוע כל־בשר יחד
audi , intelligentia si Et .reverteretur *pulverem* in homo &
16 ואדם על־עפר ישוב: ואם־בינה שמעה־
etiam Nunquid .meorum eloquiorum vocem ausculta : hoc
17 זאת האזינה לקול מלי: האף
?facies impium ,*insignem* justum *an* Et *? obligabit* judicium habens odio
שונא משפט יחבוש ואם־צדיק כביר תרשיע:
? principes ad ,impius *: profectu absque* , regi dicendũ Nunquid
18 האמר למלך בליעל רשע אל־נדיבים:

Versio VULG. LAT.

26 Deprecabitur Deum, & placabilis ei erit : & videbit faciem ejus in jubilo, & reddet
27 homini justitiam suam. Respiciet homines, & dicet; Peccavi, & verè deliqui, & , ut eram dignus, non recepi.
28 Liberavit animam suam ne pergeret in interitum, sed vi-
29 vens lucem videret. Ecce, hæc omnia operatur Deus tribus
30 vicibus per singulos. Ut revocet animas eorum à corruptione, & illuminet luce viven-
31 tium. Attende Job, & audi me : & tace, dum ego loquor.
32 Si autem habes quod loquaris, responde mihi, loquere : volo enim, te apparere justum.
33 Quòd si non habes, audi me : tace, et docebo te sapientiam.

CAP. XXXIV.

1 PRonuntians itaq; Eliu, eti-
2 am hæc locutus est ; Audite sapientes verba mea, et eru-
3 diti auscultate me: Auris enim verba probat, et guttur escas
4 gustu dijudicat. Judicium eligamus nobis, et inter nos vi-
5 deamus quid sit melius. Quia dixit Job; Justus sum, et Deus
6 subvertit judicium meum. In judicando enim me mendacium est : violenta sagitta mea
7 absque ullo peccato. Quis est vir ut est Job, qui bibit subsannationem quasi aquam :
8 Qui graditur cum operantibus iniquitatem, et ambulat
9 cum viris impiis? Dixit enim; Non placebit vir Deo, etiam si
10 cucurrerit cum eo. Ideò viri cordati audite me, absit à Deo impietas, et ab Omnipotente
11 iniquitas. Opus enim hominis reddet ei, et juxta vias singu-
12 lorum restituet eis. Verè enim Deus non condemnabit frustrà, nec Omnipotens subver-
13 tet judicium. Quem constituit alium super terram? aut quem posuit super orbem, quem fa-
14 bricatus est? Si direxerit ad eum cor suum, spiritum illius
15 et flatum ad se trahet. Deficiet omnis caro simul, et homo in
16 cinerem revertetur. Si habes ergò intellectum, audi quod dicitur, et ausculta vocem
17 eloquii mei. Numquid qui non amat judicium, sanari potest? et quomodò tu eum, qui justus est, in tan-
18 tum condemnas? Qui dicit regi, apostata : qui vocat duces, impios :

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

26 †(ε) Εὐξάμενος δὲ πρὸς κύριον καὶ δεκτὰ αὐτῷ ἔσται, † (ζ) εἰσελεύσεται προσώπῳ ἱλαρῷ σὺν ἐξηγορίᾳ· † ἀποδώσει δὲ (η)
27 ἀνθρώποις δικαιοσύνην. † Εἶτα τότε (ʹ) ἀπομέμψεται ἄνθρωπος αὐτὸς ἑαυτῷ, λέγων, † Οἷα (θ) συνετέλουν; καὶ οὐκ ἄξια
28 ἤτασέ με ὧν ἥμαρτον. † Σῶσον (ι) ψυχήν μου τοῦ μὴ (κ) ἐλθεῖν εἰς διαφθοράν, † (λ) καὶ ἡ ζωή μου φῶς ὄψεται. †
29 Ἰδοὺ ταῦτα πάντα ἐργᾶται ὁ ἰσχυρὸς
30 ὁδοὺς (μ) τρεῖς μετὰ ἀνδρός. † Καὶ ἐρρύσατο τὴν ψυχήν μου ἐκ θανάτου, † ἵνα (ν) ἡ ζωή μου ἐν φωτὶ αἰνῇ (ξ) αὐτόν. †
31 Ἐνωτίζου Ἰὼβ καὶ ἄκουέ μου· † κώφευ-
32 σον, καὶ ἐγώ εἰμι λαλήσω. † Εἰ εἰσί σοι λόγοι, ἀποκρίθητί μοι· † λάλησον, θέλω
33 γὰρ (ο) δικαιωθῆναί σε. † Εἰ μή, σὺ ἄκουσόν μου, † κώφευσον καὶ διδάξω (π) σε.

(ε) *Deprecatus autem ad Dominum, & accepta ei erunt: intrabit facie (h) hilari cum (i) professione: reddet autem hominibus justitiam. Deinde tunc accusabit homo se ipse, dicens; Qualia consummabam? & non dignè in me inquisivit pro iis, quæ peccavi. Salva animam meam, ne veniat in corruptionem : & vita mea lucem videbit. Ecce hæc omnia operatur fortis (k) vias tres cum viro : Et eruit animam meam de morte : ut vita mea in lumine collaudet illum. Auribus percipe Job, & audi me: obmutesce, & ego quidem loquar : Si sunt tibi sermones; responde mihi : loquere, volo enim justificari te : Sin minùs, tu audi me: obmutesce, & docebo te.*

ΚΕΦ. λδʹ.

1 2 † ΥΠολαβὼν δὲ Ἐλιοὺς, λέγει, † Ἀκούσατέ μου σοφοὶ, ἐπιστάμενοι (α) ἐνωτί-
3 ζεσθε. † Ὅτι οὖς λόγους δοκιμάζει, † καὶ λά-
4 ρυγξ γεύεται βρῶσιν. † Κρίσιν ἑλώμεθα ἑαυτοῖς, † γνῶμεν ἀναμέσον (β) ἑαυτῶν, ὅ, τι
5 καλόν. † Ὅτι εἴρηκεν Ἰὼβ, Δίκαιός εἰμι· † ὁ κύριος ἀπήλλαξέ μου τὸ κρίμα· †
6 (γ) Ἐψεύσατο δὲ τῷ κρίματί μου, † βί-
7 αιον τὸ βέλος μου ἄνευ ἀδικίας. † Τίς ἀνὴρ ὥσπερ Ἰὼβ, πίνων μυκτηρισμὸν ὥσ-
8 περ ὕδωρ; † Οὐχ ἁμαρτὼν οὐδὲ ἀσεβήσας, † (δ) ἢ οὐδ᾽ οὐ κοινωνήσας μετὰ ποιούντων τὰ ἄνομα, † τοῦ πορευθῆναι μετὰ ἀσεβῶν.
9 † Μὴ γὰρ εἴπῃς, Ὅτι οὐκ (ε) ἔσται ἐπισκοπὴ ἀνδρὸς, † καὶ ἐπισκοπὴ (ζ) αὐτῷ παρὰ
10 κυρίου. † Διὸ συνετοὶ (η) καρδίας ἀκούσατέ μου, † μή μοι εἴη ἔναντι κυρίου ἀσεβῆσαι, † (θ) καὶ ἔναντι παντοκράτορος ταράξαι τὸ δίκαιον.
11 † (ι) Ἀλλὰ (κ) ἀποδιδοῖ ἀνθρώπῳ καθὰ ποιεῖ ἕκαστος αὐτῶν, † καὶ ἐν τρίβῳ ἀνδρὸς εὑρήσει αὐτόν. †
12 (λ) Οἴει δὲ τὸν κύριον (μ) ἄτοπα ποιήσειν, † ἢ ὁ παντοκράτωρ ταράξει (ν) κρίσιν,
13 † ὃς ἐποίησε τὴν γῆν; † Τίς δέ ἐστιν (ξ) ὁ ποιῶν τὴν ὑπ᾽ οὐρανὸν, καὶ τὰ ἐνόντα
14 πάντα; † Εἰ γὰρ βούλοιτο συνέχειν, καὶ
15 τὸ πνεῦμα παρ᾽ αὐτῷ κατασχεῖν, † Τελευτήσει πᾶσα σὰρξ ὁμοθυμαδὸν, † (ο) πᾶς δὲ βροτὸς εἰς γῆν ἀπελεύσεται, ὅθεν καὶ
16 ἐπλάσθη. † Εἰ δὲ μὴ νουθετῇ, ἄκουε (π) ταῦτα,
17 † ἐνωτίζου φωνὴν ῥημάτων. † (ρ) Ἴδε σὺ τὸν μισοῦντα (σ) ἄνομα, καὶ τὸν ὀλλύντα τοὺς πονηροὺς, † ὄντα αἰώνιον (τ) δίκαιον. † Ἀσε-
18 βὴς ὁ λέγων βασιλεῖ, Παρανομεῖς, † (υ) ἀσεβέστατε τοῖς ἄρχουσιν.

CAP. XXXIV.

RESpondens autem Elius, dixit; Audite me sapientes, qui habetis scientiam, auribus percipite: Quia auris sermones probat, & guttur gustat escam. (a) Judicium eligimus nobis, noscamus inter nos, quod bonum: Quia dixit Job, Justus sum: Dominus removit judicium meum : Et mentitus est in judicio meo : violentum jaculum meum sine injustitia. Quis vir, ut Job, bibens subsannationem sicut aquam? Qui neq; peccavit, neque impiè egit, (b) aut neque communicavit cum facientibus iniqua: ut ambularet cum impiis. Ne (c) enim dixeris, Quia non erit visitatio viri : & visitatio ei à Domino. Quarè intelligentes corde audite me. (d) Absit à me coram Domino impiè agere, & coram Omnipotente turbare justitiam : Sed reddat homini, sicut facit unusquisque eorum : & in semita viri inveniet eum. Putas autem Dominum absurda facturum? aut Omnipotens turbabit judicium, qui fecit terrã? Quis autem est, qui facit eam quæ sub cælo, & quæ insunt omnia? Nam si velit cohibere, & spiritum apud se detinere; Peribit omnis caro simul : & omnis mortalis in terrã abibit; undè & formatus est: Sin (e) autẽ non sis monitus, audi hæc, auribus percipe voci verborum. Vide tu eum, qui odit iniqua, & perdit malignos, esse æternum justum. Impius est, qui dicit regi, Injustè agis, impiissime principibus;

MS. A. (ε) Εὔξεται πρὸς κύριον (ζ) εἰσελεύσεται δὲ προσώπῳ καθαρῷ σὺν (η) ἀνθρώπῳ τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ. (ʹ) ἀποπέμψεται (θ) συνετελούμην; (ι) τὴν ψυχήν (κ) ἐξελθεῖν (λ) καὶ ζωή (μ) τρεῖς (ν) ἡ ψυχή μου (ξ) αὐτόν. † Ὑπολαβὼν δὲ Ἐλιοὺς, λέγει, † Ἀκούσατέ μου σοφοὶ, ἐπιστάμενοι ἐνωτίσεσθε τὸ καλόν. † Ὅτι εἴρηκεν Ἰὼβ, Ἰδοὺ ταῦτα πάντα ἐργᾶται ὁ ἰσχυρὸς † ὁδοὺς τρεῖς μετ᾽ ἀνδρὸς, † τοῦ ἐπιστρέψαι ψυχὴν αὐτοῦ ἐκ διαφθορᾶς, † τοῦ φωτίσαι αὐτῷ ἐν φωτὶ ζώντων. † Πρόσεχε Ἰὼβ καὶ ἄκουσόν μου, † κώφευσον ἵνα λαλήσω. Εἰ εἰσίν (ο) σε δικαιωθῆναι. Εἰ δὲ μή, (π) διδάξω σε σοφίαν.

Κεφ. λδʹ. MS. A. (α) ἐνωτίζεσθε τὸ καλόν. Ὅτι * νοῦς δοκιμάζει λόγους, λάρυγξ δὲ γεύεται (β) αὐτοῖς, τί καλόν. (γ) Καὶ ἐψεύσατο τῷ (δ) οὐδὲ κοινωνήσας τοῦ μετὰ τῶν ποιούντων (ε) ἔστιν (ζ) αὐτοῦ (η) καρδίᾳ (θ) ἔναντι δὲ παντοκράτορος (ι) Ἀλλὰ γὰρ (κ) ἀποδίδωσιν (λ) Οἴῃ (μ) τὰ ἄτοπα (ν) τὸ δίκαιον (ξ) ὁ ποιήσας (ο) βροτὸς δὲ εἰς γῆν (π) ταῦτα Ἰὼβ, (ρ) Εἰ δὲ * σοι οὐκ οἴει τὸν (σ) τὰ ἄνομα, (τ) τὸ δίκαιον. (υ) ἀσεβέστατοι

תרגום TARGUM.

לי קדם אלהא ורעניה וחמא אפוי ברעוא ויתיב לאנש כצדקתיה : יתריץ לבני נשא ויימר חבית ותריץ קלקלית ולא הוא שוי לי : פרוק נפשיה 26 27 28
למעבר בשוחתא ונשמתיה בנהורא מעליא תחמי : הא כל אלין יעבד אלהא תרי זמנין ותלת עם בר נש : מטול לאתבא נפש מן שוחא לאנהרא בנהור 29 30
יא : אצית איוב קבל מני שתיק ואנא אמלל : אין אית מלין אתיב יתי מלל ארום צביתי לזכאותך : אין לא את קבל מני שתוק ואלפנך חוכמתא : 31 32 33

לד

אתיב אליהוא ואמר : שמעו חכימיא מלי וידעיא אציתו למימרי : ארום אודנא מליא בחנא ומוריגא טעמא למיכל : דין נתרעי לנא נידע ביננא 1 2 3 4
מה טב : ארום אמר איוב זכאית ואלהא אעדי דיני : על דיני אכדב בר נש דשדי גירי מדלית סורחנא : מן גברא היך איוב דשתי דוחכא היך מיא : 5 6 7
ואזל לאתחברא עם עבדי שקר ולהלכא עם אנשי רשעא : ארום אמר לא יאלף גברא במצביה עם אלהא : הא ארום אמר לא יסתכן בר נש 8 9
שיה עם אלהא : בגין כן אנשי חכימי קבילו מני חס לאלהא מן רשעא ושדי מן שקרא : ארום עובדי בר נש ישלם ליה וכאורחא דגברא 10 11
עניה : ברם בקושטא אלהא לא יחיב ושדי לא יקלקל דינא : מן פקד עלוי למעבד ארעא ומן שוי תבל כולה : אין ישוי עלוי לביה רוחיה 12 13 14
ונשמתיה לגביה יכנוש : יתנגיד כל בסרא כחדא ובר נש על עפרא יתוב : ואין תתבין שמע דא אצית לקל מלי : הברם סני דינא יסתמר ואין צדיק 15 16 17
יחיב : דבשר למימר למלכא רשיעא חיבא לארכונין : 18

Verſio SYRIACA.

* ܢܨܠܐ ܩܕܡ ܐܠܗܐ ܘܢܫܡܥܝܘܗܝ. ܘܢܬܪܥܐ ܒܗ. ܘܢܚܙܐ ܐܦܘܗܝ ܒܫܘܒܚܐ. ܘܢܦܪܘܥ ܠܒܪܢܫܐ 26
ܙܕܝܩܘܬܗ. * ܘܛܒܬܐ ܡܢ ܒܢܝ ܐܢܫܐ ܢܐܡܪ. ܘܢܐܡܪ ܗܐ ܚܛܝܬ ܘܫܪܝܪܐܝܬ ܐܥܘܝܬ. ܘܠܐ ܐܫܘܝܬ ܠܢܦܫܝ. * ܦܪܘܩ 27
ܢܦܫܝ ܡܢ ܐܒܕܢܐ ܕܚܒܠܐ. ܘܬܚܙܐ ܢܦܫܝ ܢܘܗܪܐ. * ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܥܒܕ ܐܠܗܐ ܬܠܬ ܙܒܢܝܢ ܥܡ 28
ܓܒܪܐ. * ܠܡܗܦܟܘ ܢܦܫܗ ܡܢ ܚܒܠܐ. ܠܡܚܙܐ ܢܘܗܪܐ ܕܚܝܐ. * ܐܣܬܟܠ ܐܝܘܒ ܘܫܡܥ. ܘܫܬܘܩ ܘܐܢܐ ܐܡܠܠ. 29 30
* ܐܢ ܐܝܬ ܠܟ ܡܠܐ. ܐܗܦܟܢܝ. ܡܛܠ ܕܨܒܐ ܐܢܐ ܗܘ ܕܬܙܕܕܩ. * ܘܐܢ ܠܐ ܫܡܥܬ ܐܢܬ ܠܝ. ܫܬܘܩ. ܘܐܠܦ 31 32
ܚܟܡܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܕ * ܘܥܢܐ ܐܠܝܗܘ ܘܐܡܪ. * ܫܡܥܘ ܚܟܝܡܐ ܡܠܝ. 33 1
ܘܝܕܘܥܐ ܫܡܥܘܢܝ. ܡܛܠ ܕܐܕܢܐ ܡܠܐ ܡܦܩܢ. ܘܚܢܟܐ ܛܥܡ ܡܐܟܘܠܬܐ. * ܢܓܒܐ ܠܢ ܕܝܢܐ 2 3
ܘܢܕܥ ܒܝܢܬܢ ܡܢܐ ܛܒ. * ܡܛܠ ܕܐܡܪ ܐܝܘܒ ܕܙܕܩܬ. ܘܐܠܗܐ ܗܘ ܐܥܒܪ ܕܝܢܝ ܡܢܝ. 4 5
* ܡܛܠ ܢܫܐ ܕܝܢܝ ܠܐ ܫܩܠ. ܡܛܠ ܕܟܐܒܐ ܐܝܟ ܓܐܪܐ. ܕܢܦܩܐ ܡܢ ܩܫܬܐ. * ܡܢܘ ܗܘܐ ܓܒܪܐ 6 7
ܐܝܟ ܐܝܘܒ. ܕܫܬܐ ܡܘܝܩܐ ܐܝܟ ܡܝܐ. * ܘܫܘܬܦܐ ܠܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. ܘܥܡ ܐܢܫܐ ܚܛܝܐ ܠܡܗܠܟܘ. * ܡܛܠ ܕܐܡܪ ܠܐ ܕܟܐ ܓܒܪܐ ܡܐ ܕܢܬܪܥܐ ܥܡ ܐܠܗܐ. 8 9
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܓܒܪܐ ܕܠܒܐ ܫܡܥܘܢܝ. ܚܣ ܠܐܠܗܐ ܕܢܥܒܕ ܥܘܠܐ. ܘܚܣ ܠܗ ܕܢܥܒܕ ܣܟܠܘܬܐ. * ܡܛܠ 10
ܕܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ ܕܒܪܢܫܐ ܦܪܥ ܠܗ. ܘܓܒܪܐ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܗ ܡܫܟܚ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܐܠܗܐ ܠܐ ܥܒܕ ܥܘܠܐ. 11 12
ܘܐܦ ܐܠܗܐ ܡܥܩܠ ܐܘܪܚܐ. * ܡܢܘ ܦܩܕ ܠܗ ܠܐܪܥܐ. ܘܡܢܘ ܣܡ ܬܒܝܠ ܟܠܗ. * ܐܢ ܢܦܢܐ ܠܘܬܗ 13
ܠܒܗ. ܪܘܚܗ ܘܢܫܡܬܗ ܠܘܬܗ ܢܟܢܫ. * ܢܫܠܡ ܟܠܗ ܒܣܪ ܐܟܚܕܐ. ܘܒܪܢܫܐ ܠܥܦܪܗ ܢܗܦܘܟ. * ܘܐܢ 14 15
ܡܣܬܟܠ ܐܢܬ. ܫܡܥ ܗܕܐ. ܘܨܘܬ ܠܩܠܐ ܕܡܠܝ. * ܡܢ ܕܣܢܐ ܕܝܢܐ. ܠܐ ܙܕܩ. ܘܐܢ ܐܙܕܩ ܗܘ. ܠܐ ܒܫܪܪܐ 16 17
ܡܬܚܝܒ. * ܕܐܡܪ ܠܗ ܠܡܠܟܐ ܥܘܠܐ. ܡܠܟܐ ܕܪܫܐ ܡܠܟܐ ܕܫܠܝܛܢܐ. 18

Verſio ARABICA.

* فيصلي قدام الله فيسمعه ويرضي به فيتراءى قدامه بالمجد ويجازي الانسان بر * والخير على الناس 26 27
يقول * ويقول قد اخطيت وحقا قد اسأت ولم انفع نفسي * خلص نفسي من بوار الفساد وتبصر نفسي 28
الضوء * هذه كلها يصنع الله مع الانسان ثلاث مرات * الذي يرد نفسه من الفساد ليرى نور الحياة 29 30
* افهم يا ايوب واسمع واصمت وانا اتكلم * فان كان لك كلاما فاجبني * فاني احب ان تزكوا * وان لم 31 32 33
تسمع * فاسكت واعلمك الحكمة *

الفصل الرابع والثلثون *

* فاجاب اليهوا وقال 1
* اسمعوا ايها الحكماء قولي * والذين تعرفون انصتوا الي * من اجل ان الاذن تختبر الكلام * والحنك يطعم 2 3
الطعام * فنختار لنا دينا فيعرف ما بيننا * ما الذي قلت حسنا يا ايوب فتبررت * حين قلت اني تبررت 4 5
وان الله رد قضاي علي * من الذي هلك من الناس بلا ذنب * ومن ذا رجلا مثل ايوب * الذي يشرب 6 7
الهزو مثل الماء * وكان شريكا وصاحبا لصانعي الشر * مع الناس الخطاة ينبغي يسلك * حين قلت انه 8 9
لا يزكوا رجل اذا ما خاف الله * من اجل هذا يا اهل العقل اسمعوني حاشا الله ان يصنع اثما * وحاشا الله 10
ان يفعل خطية * من اجل ان مثل اعمال الانسان يجازيه الله * والرجل مثل طريقه يجد * حقا ان الله لا 11 12
يصنع اثما * وان الله ايضا لا يعوق طريقا * من الذي خلق الارض ومن الذي جعل كل الدنيا * ان 13 14
رد عليه قلبه * فان روحه ونسمه اليه يجتمعن * يبيد كل البشر جميعا * والانسان الى ترابه يعود * ان كنت 15 16
تفهم فاسمع هذا وانصت لصوت كلامي * ان من يبغض الحق لا يزكوا * وان زكي افليس بالحق 17
يدحض * اذا قال في الملك اثما * ملك الرؤساء * ملك المسلطين * ملك الملوك * 18

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Orabit coram Deo, & exaudiet illum, & acceptabit eum, & apparebit ante ipſum in gloria, & retribuet homini juſtitiam ej⁹; 26
Et bonum de hominibus dicet: & dicet, Jam peccavi, et verè jam deliqui, nec profui animæ meæ: 27
Libera animam meam ab interitu corruptionis, & videat anima mea lucem. 28
Hæc omnia faciet Deus tribus vicibus erga hominem, 29
Qui retrahit animã ſuam à corruptione, ut videat lumen vitæ. 30
Intellige O Job, & audi, & ſile dum ego loquor, 31
Et ſi habes verba, reſponde mihi; opto enim ut juſtificeris. 32
Quòd ſi non audieris(i), tace, et docebo te ſapientiam. 33

CAP. XXXIV.

ET reſpondens Elihu ait, 1
Audite O ſapientes, ſermonem meum; & qui ſcitis, auſcultate me: 2
Quoniam auris complet ſermonem, & palatus guſtat cibum: 3
Eligamus igitur nobis judicem, ut ſciat(a) quod eſt inter nos. 4
(b) Quidnam dixiſti rectè O Job, & juſtificatus es? Dum dixiſti, Equidem juſtificatus ſum, & Deus retorſit judicium meum contra me. 5
Quis periit ex hominibus abſque culpa? 6
Et quis eſt vir ſimilis Job, qui ebibit illuſionem quaſi aquam, 7
Eſtque ſocius & amic⁹ operantium iniquitatem? cum hominibus peccatoribus oportet incedat; 8
Cùm dixeris, non juſtificari virum cùm timuerit Deum. 9
Propterea, O(c) præditi judicio, audite me. Abſit à Deo ut operetur iniquitatē: Abſit à Deo ut committat peccatũ, 10
Eò quòd juxta opera hominis retribuat ei De⁹, et vir ſecundùm vias ſuas reperiat. 11
Verè Deus non perpetrat iniquitatem, et De⁹ etiam non(d) impedit viam. 12
(e) Quis creavit terram? & quis condidit totum mundum? 13
Si retraheret ad ſe cor ſuũ, ſpiritus ejus & aura ejus ad illum ſeſe colligerent. 14
Periret omnis caro ſimul, & homo ad pulverem ſuum reverteretur. 15
Si intelligis, audi hoc, & attende voci verborum meorum. 16
Qui odit(f) veritatem, non juſtificabitur: & ſi ſe juſtificaverit, nonne (g) veritate convincetur? 17
Cùm dixerit de rege iniquitatem, rege principum, rege(h) præfectorum, rege regum, 18

INTERP. SYR.

(*i*) me, *CAP. xxxiv.* (*a*) quid optimum ſit. (*b*) Dixiſti O Job quòd juſtus es? Dum (*c*) viri cordati, (*d*) pervertit (*e*) Quis præpoſuit terram? (*f*) judicium, (*g*) meritò condemnabitur? (*h*) præfectorum, Qui non

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Orabit coram Deo & placebit ei, videbit faciem ejus in beneplacito, & reddet *homini* ſecundùm juſtitiam ſuam. Diriget ſe ad filios hominis, & dicet, Peccavi, & rectum perverti, & non prodeſt mihi. Redemit animam ejus ne tranſeat *in foveam*, & anima ejus in luce excelſa videbit. Ecce omnia hæc operatur Deus duabus & tribus vicibus cum filio hominis. Ut revocet animam à corruptione, ut luceat in luce viventium. Auſculta Job, intende mihi: tace, & ego loquar. Si habes verba, reſponde mihi; loquere, quoniam volo juſtificare te. Si autem non habes, ſuſcipe à me: tace, & docebo te ſapientiam. 26 27 28 29 30 31 32 33

CAP. XXXIV.

ET reſpondit Elihu, & ait: Audite ſapientes verba mea, & ſcientes auſcultate ſermones meos. Auris enim verba probat, & palatum ſaporem comedendo. Judicium eligamus nobis, diſpiciamus inter nos quid ſit bonum. Quoniam dixit Job: Juſtus ſum, & Deus abſtulit judicium meum. Propter judicium meum mendacem faciam filium hominis, qui mittit ſagittas abſque peccato. Quis eſt vir ſicut Job qui bibit ſubſannationem ſicut aquam? Et vadit ut conſortium faciat cum operantibus iniquitatem, et ut ambulet cum viris impiis. Quoniam dixit: Non proficiet vir in velle ſuo cum Deo. *Targum aliud*: Quoniam dixit, Non proficiet *filius hominis in curſu ſuo* cum Deo. Ideò viri ſapientes attendite ad me, abſit à Deo impietas, & ab omnipotente *mendacium*. Opera enim filii hominis reddet ei, & juxta viam viri eveniet ei. Veruntamen Deus non condemnabit, & omnipotens non pervertet judicium. Quis mandavit ei ut faceret terram, aut quis poſuit orbem univerſum? Si poſuerit ad eum cor ſuum, ſpiritum & ſpiraculum ejus ad ſe collegerit: Deficiet omnis caro ſimul, & filius hominis in pulvere dormiet. Si enim intelligis, audi hoc, auſculta vocem ſermonum meorum. Num verò odio habens judicium cuſtodietur, & num *purè* juſtum reum peraget? Nunquid congruum eſt *dicere* regi, impius. [*es*?] Sceleratus, principibus? 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18

איוב : לה

facies ad clamor est agnitus non & ,principum *facies accepit* non Qui
19 אשר לא נשא פני שרים ולא נכר שוע לפני
,morientur Subitò .ipsi omnes ejus manuum opus quia *: tenuis*
20 דל כי מעשה ידיו כלם : רגע ימתו
: transibunt & , *populus* commovebuntur *noctis medietatibus* &
וחצות לילה יגעשו עם ויעברו
vias super ejus oculi Quia *.manu in* non fortem removebunt &
21 ויסירו אביר לא ביד : כי עיניו על דרכי
, *obscuritas* Non *.videbit* ejus gressus omnes & : viri
22 איש וכל צעדיו יראה : אין חשך
.iniquitatem operantes ibi *latitandum ad* , mortis umbra nec
ואין צלמות להסתר שם פעלי און :
Deum ad *eundum ad* , ampliùs imponet virum super non Quia
23 כי לא על איש ישים עוד להלך אל אל
faciet stare & : investigatio non *insignes* Conteret .judicium in
24 במשפט : ירע כבירים לא חקר ויעמד
convertet & :eorum opera faciet cognoscere Ideo .eis pro alios
25 אחרים תחתם : לכן יכיר מעבדיהם והפך
loco in *eos* percussit *improbis Pro* .conterentur & , noctem
26 לילה וידכאו : תחת רשעים ספקם במקום
ejus vias omnes & ; *eum post à* recesserunt *ideo* Quòd .videntium
27 ראים : אשר על כן סרו מאחריו וכל דרכיו
: egeni clamorem eum *super adducendum Ad* .intellexerunt non
28 לא השכילו : להביא עליו צעקת דל
,faciet requiescere ipse Et .audiret *afflictorum exclamationem* &
29 וצעקת עניים ישמע : והוא ישקט
super Et ? eū intuebitur quis & ,*facies* abscondet Et *? condemnabit* quis &
ומי ירשע ויסתר פנים ומי ישורנו ועל
,*hypocritam hominem regnando A* .pariter hominem super & ,gentem
30 גוי ועל אדם יחד : ממלך אדם חנף
non , peperci , *dicit qui Deum* ad Quia .populi *offendiculis ab*
31 ממקשי עם : כי אל אל האמר נשאתי לא
iniquitatem Si .me doce tu , video Præter *.corrumpam*
32 אחבל : בלעדי אחזה אתה הרני אם עול
quia , *illam retribuet te cum à An* .addam non , sum operatus
33 פעלתי לא אסיף : המעמך ישלמנה כי
.loquere nôsti quod Et ? ego non & , *eliges* tu quia , renuisti
מאסת כי אתה תבחר ולא אני ומה ידעת דבר :
.me *audiens* sapiens vir & : mihi dicant cordati Viri
34 אנשי לבב יאמרו לי וגבר חכם שמע לי :
.intellectu cum non ejus verba & , loquitur scientia cum non Ijob
35 איוב לא בדעת ידבר ודבריו לא בהשכיל :
viros ad responsiones propter ,seculū in usque Ijob probetur mi Pater
36 אבי יבחן איוב עד נצח על תשבת באנשי
nos inter ,prævaricationem suo peccato super *addet* Quia *.iniquitatis*
37 און : כי יסיף על חטאתו פשע בינינו
.Deum ad suos sermones *multiplicabit &* ,*plaudet*
יספוק וירב אמריו לאל :

CAP. XXXV. לה

? judiciū *in* putâsti hoc Nunquid : dixit & , Elihu respondit Et
1 ויען אליהוא ויאמר : הזאת חשבת למשפט
2 ,tibi proderit Quid *: dicas Ut* .Deo *præ mea justitia* , Dixisti
3 אמרת צדקי מאל : כי תאמר מה יסכן לך
tibi respondebo Ego ? meo peccato de utilitatis accipiam quid
4 מה אעיל מחטאתי : אני אשיבך
,*æthera* intuere & : vide & ,cœlum Suspice .tecum tuis *sociis* & ,sermones
5 מלין ואת רעיך עמך : הבט שמים וראה ושור שחקים
? eū cōtra operaberis quid , peccaveris Si *.te præ sunt excelsa*
6 גבהו ממך : אם חטאת מה תפעל בו
? ei facies quid ,tuæ prævaricationes fuerint multiplicatæ Et
ורבו פשעיך מה תעשה לו :

Versio VULG. LAT.

19 Qui non accipit personas prin-
cipū: nec cognovit tyrannum,
cùm disceptaret contra paupe-
rem : opus enim manuum ejus
20 sunt universi. Subitò morien-
tur, & in media nocte turba-
buntur populi, & pertransi-
bunt, & auferent violentū abs-
21 que manu. Oculi enim ejus
super vias hominum, & omnes
22 gressus eorum considerat. Non
sunt tenebræ, & non est umbra
mortis, ut abscondantur ibi qui
23 operantur iniquitatem. Neque
enim ultrà in hominis potesta-
te est, ut veniat ad Deum in ju-
24 dicium. Conteret multos, &
innumerabiles, & stare faciet
25 alios pro eis. Novit enim o-
pera eorum : & idcircò indu-
cet noctem, & conterentur.
26 Quasi impios percussit eos in
27 loco videntium. Qui quasi
de industria recesserunt ab eo,
& omnes vias ejus intelligere
28 noluerunt : Ut pervenire fa-
cerent ad eum clamorem ege-
ni, & audiret vocem pauperū.
29 Ipso enim concedente pacem,
quis est qui condemnet? ex quo
absconderit vultū, quis est qui
contempletur eum, & sup gen-
tes & super omnes homines?
30 Qui regnare facit hominē hy-
pocritam propter peccata po-
31 puli. Quia ergò ego locutus
sum ad Deum, te quoque non
32 prohibebo. Si erravi, tu doce
me: si iniquitatem locutus sum,
33 ultrà non addam. Numquid à
te Deus expetit eam, quia dis-
plicuit tibi? tu enim cœpisti
loqui, & non ego: quòd si quid
34 nôsti melius, loquere. Viri in-
telligentes loquantur mihi, &
35 vir sapiens audiat me. Job au-
tem stultè locutus est, & verba
illius non sonant disciplinam.
36 Pater mi, probetur Job usque
ad finem : ne desinas ab homi-
37 ne iniquitatis. Quia addit su-
per peccata sua blasphemiam,
inter nos interim constringa-
tur : & tunc ad judicium pro-
vocet sermonibus suis Deum.

CAP. XXXV.

1 IGitur Eliu hæc rursùm locu-
2 tus est; Numquid æqua tibi
videtur tua cogitatio, ut dice-
3 res; Justior sum Deo? Dixisti
enim; Non tibi placet quod
rectum est : vel quid tibi pro-
4 derit, si ego peccavero? Ita-
que ego respondebo sermoni-
bus tuis, & amicis tuis tecum.
5 Suspice cœlum & intuere, &
contemplare æthera quòd alti-
6 or te sit. Si peccaveris, quid
ei nocebis? & si multiplicatæ
fuerint iniquitates tuæ, quid
facies contra eum?

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

19 † Ὃς οὐκ (φ) ἐπαισχυνθῇ πρόσωπον ἐν-
τίμου, † (χ) οὐδὲ οἶδε τιμὴν θέσθαι ἁ-
δροῖς, † θαυμασθῆναι πρόσωπα αὐτῶν.
20 † Κενὰ δὲ αὐτοῖς ἀποβήσεται, τὸ κεκρα-
γέναι καὶ δεῖσθαι ἀνδρός· † ἐχρήσαντο γὰρ
(ψ) παρανόμως, ἐκκλινομένων ἀδυνά-
21 των. † Αὐτὸς γὰρ ὁρατής ἐστι ἔργων
ἀνθρώπων, † λέληθε δὲ αὐτὸν οὐδὲν ὧν
22 πράσσουσιν. † Οὐδὲ ἔσται τόπος τοῦ κρυ-
23 βῆναι τοὺς ποιοῦντας τὰ ἄνομα· † Ὅτι
24 οὐκ ἐπ' ἄνδρα θήσει ἔτι. † Ὁ γὰρ κύ-
ριος (ω) πάντας ἐφορᾷ· † ὁ καταλαμβά-
νων ἀνεξιχνίαστα, † ἔνδοξά τε καὶ ἐξαί-
25 σια, ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός. † (α) Ὁ γνω-
ρίζων αὐτῶν τὰ ἔργα, † καὶ στρέψει νύκτα
26 καὶ ταπεινωθήσονται. † Ἔσβεσε δὲ ἀσε-
27 βεῖς, (β) ὁρατοὶ δὲ ἐναντίον αὐτοῦ. † Ὅ-
τι ἐξέκλιναν ἐκ νόμου Θεοῦ, † δικαιώμα-
28 τα δὲ αὐτοῦ οὐκ ἐπέγνωσαν, † Τοῦ ἐπ-
αγαγεῖν ἐπ' αὐτὸν κραυγὴν (γ) πενή-
των, † καὶ κραυγὴν πτωχῶν εἰσακούσεται.
29 † Καὶ αὐτὸς ἡσυχίαν παρέξει, καὶ τίς
καταδικάσεται; † καὶ κρύψει πρόσωπον, καὶ
τίς ὄψεται αὐτόν; † καὶ κατὰ ἔθνους, καὶ
30 κατὰ ἀνθρώπου ὁμοῦ. † Βασιλεύων ἄν-
θρωπον ὑποκριτὴν ἀπὸ δυσκολίας λαοῦ.
31 † Ὅτι πρὸς τὸν ἰσχυρὸν ὁ λέγων, Εἴλη-
φα, οὐκ (δ) ἐνεχυράσω· ἄνευ ἐμαυτοῦ †
32 ὄψομαι· (ε) Σὺ δεῖξόν μοι, † εἰ ἀδικί-
αν (ζ) εἰργασάμην, οὐ μὴ προσθήσω. †
33 Μὴ ἀπὸ σοῦ ἀποτίσει αὐτήν, (η) ὅτι σὺ
ἀπώσῃ; † ὅτι σὺ (θ) ἐκλέξῃ καὶ οὐκ ἐγώ;
34 καὶ τί ἔγνως, λάλησον. † Διὸ συνετοὶ (ι)
καρδίας ἐροῦσι ταῦτα, † ἀνὴρ δὲ (κ) σο-
35 φὸς ἀκήκοέ μου τὸ ῥῆμα. † (λ) Ἰὼβ δὲ
οὐκ ἐν συνέσει ἐλάλησεν, † τὰ ῥήματα
36 αὐτοῦ οὐκ ἐν ἐπιστήμῃ. † Οὐ μὴν δὲ ἀλ-
λὰ μάθε Ἰώβ, † μὴ δῷς ἔτι (μ) ἀντ-
37 απόκρισιν ὥσπερ οἱ ἄφρονες· † Ἵνα μὴ
προσθῶμεν ἐφ' ἁμαρτίαις ἡμῶν, † ἀνομία
δὲ ἐφ' ἡμῖν (ν) λογισθήσεται, πολλὰ λα-
λούντων ῥήματα ἐναντίον τοῦ κυρίου.

Qui non est veritus faciem (g) honorati, neque novit honorem ponere potentibus, admirari facies eorum. Vana autem eis evadent, clamâsse, & orare virum. Abusi sunt enim iniquè (h) exhonoratis infirmis. Ipse enim inspector est operum hominum: latuit autem eum nihil eorum, quæ agunt: (i) Neque erit locus ut latitent, qui faciunt iniqua: Quoniam (k) non super virum ponet ultrà. Dominus enim omnes inspicit, qui comprehendit non vestigabilia, & gloriosa, & magnifica, quorum non est numerus: Qui cognoscit eorum opera, & evertet noctem, & humiliabuntur. Et extinxit impios: conspicui autem coram eo. Quoniam declinaverunt de lege Dei, & justificationes ejus non cognoverunt; ut perferatur ad eum clamor pauperum: & clamorem mendicorum exaudiet. Et ipse (l) quietem dabit; & quis condemnabit? & abscondet faciem, & quis videbit eum? & contra gentes, & contra hominem simul. Qui regnare facit hominem hypocritam propter perversitatem populi. Quoniam (m) erga fortē qui dicit, Suscepi, non auferam loco pignoris, absque me videbo: Tu ostende mihi, si injustitiam operatus sum: non adjiciam. Nunquid à te reddet eam, quia tu (n) expelles, quoniam tu eliges, & non ego? & quid nôsti, loquere: Quarè intelligentes corde dicent hæc, & vir sapiens audivit verbum meum. Job autem non in intellectu locutus est: verba ejus non in scientia. Veruntamen disce Job, nè dederis ultrà responsionem, sicut insipientes: ut nè adjiciamus super peccata nostra; & iniquitas super nos computabitur, multa loquentibus verba contra Dominum.

ΚΕΦ. λε'.

1 2 † ὙΠολαβὼν δὲ Ἐλιοῦς, λέγει, † Τί τοῦτο
ἡγήσω ἐν κρίσει; † Σὺ τίς εἶ, ὅτι εἶπας,
4 Δίκαιός εἰμι ἔναντι κυρίου; † (α) Ἐγὼ
σοι δώσω ἀπόκρισιν, καὶ τοῖς τρισὶ (β) φί-
5 λοις σου. † Ἀνάβλεψον εἰς τὸν οὐρανόν,
καὶ ἴδε· † κατάμαθε (γ) δὲ νέφη, ὡς ὑ-
6 ψηλὰ ἀπὸ σοῦ. † Εἰ ἥμαρτες, τί πράξεις;
† εἰ δὲ καὶ (δ) πολλὰ ἠνόμησας, τί δύνα-
σαι ποιῆσαι;

CAP. XXXV.

REspondens autem Eliu, ait; Quarè hoc existimâsti in judicio? tu quis es, quia dixisti, Justus sum, ante conspectum Domini? Ego tibi dabo responsionem, & istis tribus amicis tuis. Aspice in cælum, & vide: respice autem in nubes quàm altæ sint à te: Si peccâsti, quid ages? quòd si & multa iniquè egisti, quid potes facere?

MS. A. (φ) αἰσχυνθῇ (χ) οὐκ ἔδωκεν δὲ τιμὴν θέσθαι ἀνδρῶν, τὸ θαυμασθῆναι τὰ πρόσωπα αὐτῶν. (ψ) ἀνόμοις ἐκκλινομένοις καὶ ἀδυνάτοις. (ω) τὰ πάντα (α) Γνωρίζων (β) καὶ ὁρατοὶ ἐγένοντο ἐναντίον τῶν ἐχθρῶν. Ὅτι (γ) πένητος, (δ) ἐνεχυράσω· (ε) Σύ δίδαξόν με, (ζ) ἠργασάμην, οὐ μὴ προσθῶ. Μὴ παρὰ σοῦ (η) ὅτι ἀπώσῃ (θ) ἐκλέξω καὶ * ἐγώ· (ι) καρδία (κ) φρόνιμος (λ) Ἰὼβ, οὐκ ἐν συνέσει ἐλάλησας, τὰ δὲ ῥήματά σου οὐκ ἐν ἐπιστήμῃ. (μ) ἀπόκρισιν (ν) ἔστε πολλὰ λαλοῦσιν ῥήματα ἔναντι κυρίου.

Κεφ. λε'. MS. A. (α) Ἢ ἐρεῖς, τί ποιήσω ἁμαρτών; Ἐγώ σοι (β) σου φίλοις. (γ) τὰ νέφη, καὶ ἴδε ὡς (δ) ἠνόμησας πολλά,

תרגום Targum.

20 19 לא נסיב אפין לרברבנן ולא אשתמודע שועא קדם מסכנא ארום עובדי אידוי כולהון : בשעתא ימותון סרומאי ופלגות ליליא מתרגפין מצראי
22 21 עברון ויעדון דורבני לא בחיל ידא : מטול דעינוי על אורחי בני נשא וכולהון פסעתוי יחמי : לית חשוך ולית טולא דמותא לאטמרא תמן עבדי
25 24 23 שקר : ארום לא על גבר ישוי עוד למיזל לות אלהא בדינא : יתבר גללי ימא דסגיעין בנו מיא ואקים חורונין בתריהון : בגין כן הודע מעבדהון
27 26 הפך ליליא ומדכין : חלף רשיעי ספקנון באתר דחמין : תא באתר רשיעיא פורענותהון בתר דיחמון צדיקיא ויזכון בדינא : דמטול היכנא זרו
29 28 מבתרוהי וכל אורחתיה לא אשכילו : לאיתאה עלוי קבלתא דמסכנא וצעקתהון דעניי ישמע : והוא ישדיך ומן יחיב ויסלק שכנתא ומן יסכניה ומסער
32 31 30 בא על עמא ועל בר נש כחדא : ממני מלכא בר נש דילטור מטול תקליא די בעמא : ארום לאלהא אפשר דאתאמר סוברית לא אחבול : בר מסה
34 33 אחמי אנת אלפנני אין שקרא עבדית לא אוסיף : אפשר די מעמך ישלמנה ארום רחקתא ארום אנת תתרעי ולא אנא ומה דידעתא מלל : אנשי חכימי
36 35 בא יימרון לי וגברא חכימא יקבל מני : איוב לא במנדעא ימלל ופתגמוי לא בשכלא : צבינא דיתבחר איוב עד עלמין מטול תיובתא באנשי שקרא :
37 ארום יוסיף על סורחניה מרד ביננא מספק ומסני מימרוי קדם אלהא :

לה

4 3 2 1 אתיב אליהוא ואמר : הדא חשלתא לדינא מללתא דכיית מן אלהא : ארום תימר מה יהני לך מה צרוך אית מן סורחני : אנא אתיבנך מליא וית חבריך
6 5 ך : אסתכל לשמיא וחמי ואסתכי שחקיא דאתנבהו מנך : אין חבתא מה תעבד ביה וסגיעי מרודך מה תעבד ליה :

Verſio SYRIACA.

19 * ܕܠܐ ܢܣܒ ܒܐܦ̈ܐ ܘܪ̈ܘܪܒܢܐ. ܘܠܐ ܢܣܒ ܒܐܦ̈ܐ ܡܣܟ̈ܢܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܥܒ̈ܕܝ ܐܝܕܘܗܝ ܐܢܘܢ. * ܡܢ ܫܠܝܐ
20 ܢܡܘܬܘܢ. ܘܒܦܠܓܗ ܕܠܠܝܐ ܢܐܒܕܘܢ. ܘܢܥܒܪܘܢ. ܘܢܫܬܘܕܥܘܢ ܠܚܣܝܢܐ. ܕܠܐ ܚܝܠܐ. * ܡܛܠ
21 ܕܥܝܢܘܗܝ ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܗ ܕܒܪܢܫܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܗܠܟܘܗܝ ܚܙܐ. * ܕܠܐ ܚܫܘܟܐ. ܘܕܠܐ ܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ.
22 ܕܢܛܫܘܢ ܬܡܢ ܥܒ̈ܕܝ ܥܘܠܐ. * ܡܛܠ ܕܥܠ ܒܪܢܫܐ ܠܐ ܗܘܐ ܠܐ ܐܣܬܥܪ ܠܡܗܠܟܘ ܥܡ ܐܠܗܐ ܒܬܪܝܨܐ.
23 * ܐܦܢ ܡܚܒܠ ܣܓܝܐܐ ܕܠܐ ܡܢܝܢ. ܘܡܩܝܡ ܐܟܚܕܐ ܚܠܦܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܝܕܥ ܐܢܘܢ ܡܢ ܥܒܕܝܗܘܢ.
24 25 ܘܡܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܠܠܝܐ. * ܘܡܬܡܟܟܝܢ ܐܝܟ ܥܘܠܐ ܕܥܒܕܝܗܘܢ ܒܐܬܪܐ ܕܕܚܠܬܐ. * ܡܛܠ ܕܣܛܘ ܡܢ ܒܬܪܗ.
26 27 ܘܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܗ ܠܐ ܐܣܬܟܠܘ. * ܥܐܠܐ ܩܕܡܘܗܝ ܨܠܘܬܗܘܢ ܕܡܣܟ̈ܢܐ. ܘܩܥܬܐ ܕܙܟܝܐ ܫܡܥ.
28 * ܘܐܢ ܗܘ ܫܒܩ. ܡܢܘ ܡܚܝܒ. ܘܐܢ ܗܘ ܡܗܦܟ ܐܦܘܗܝ. ܡܢܘ ܫܒܩ ܠܥܡܡܐ ܐܘ ܠܒܢܝܢܫܐ ܐܟܚܕܐ.
29 * ܕܠܐ ܢܡܠܟ ܐܢܫܐ ܕܡܣܪܒ ܘܚܛܝܐ ܥܠ ܥܡܐ. * ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܐܡܪ. ܕܟܕ ܫܒܩܬ. ܠܐ ܡܚܒܠ ܐܢܐ ܕܠܐ ܣܟܠܘ.
30 31 * ܚܘܝܢܝ ܐܢܬ. ܐܢ ܥܘܠܐ ܥܒܕܬ. * ܐܘܣܦ ܠܐ ܐܘܣܦ ܕܐܬܠ ܠܟ ܦܬܓܡܐ ܕܐܚܛܝܬ. ܐܢܬ ܓܝܪ
32 33 ܬܬܒܚܪ. ܘܠܐ ܐܢܐ. ܘܡܕܡ ܕܝܕܥ ܐܢܬ ܡܠܠ. * ܐܢܫܐ ܕܠܒܐ ܢܐܡܪܘܢ ܠܝ. ܘܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ ܢܫܡܥܢܝ.
34 * ܐܝܘܒ ܠܐ ܗܘܐ ܒܝܕܥܬܐ ܡܡܠܠ. ܘܡܠܘܗܝ ܠܐ ܗܘܝ ܒܣܘܟܠܐ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܐܬܒܚܪ ܐܝܘܒ. ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܐ. ܘܠܐ
35 36 ܐܬܚܫܒ ܥܡ ܓܒܪ̈ܐ ܥܘܠܐ. * ܘܐܢ ܡܘܣܦ ܥܠ ܚܛܗܘܗܝ. ܣܟܠܘܬܐ ܒܝܢܬܢ ܬܬܒܥܐ. ܘܢܩܪܒܘܢ ܩܕܡ
37 ܠܐܠܗܐ ܡܠܘܗܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܗ *

1 * ܘܥܢܐ ܐܠܝܗܘ ܘܐܡܪ. * ܒܗܕܐ ܐܬܚܒܫܬ ܒܕܝܢܐ.
2 ܕܐܡܪܬ. ܕܙܕܝܩ ܐܢܐ ܡܢ ܐܠܗܐ. * ܐܢ ܐܡܪܬ. ܡܢܐ ܡܘܬܪ ܐܢܬ ܠܢܦܫܟ. ܘܡܢܐ ܝܘܬܪܢܐ ܕܐܬܚܝܒܬ. * ܐܢܐ
3 4 ܐܦܢܐ ܠܟ ܡܠܐ. ܘܠܚܒܪܝܟ ܥܡܟ. * ܚܘܪ ܒܫܡܝܐ. ܘܐܬܒܩܐ ܒܥܢܢܐ ܕܪܡܝܢ ܡܢܟ. * ܐܢ ܚܛܝܬ ܐܢܬ
5 6 ܡܢܐ ܥܒܕ ܐܢܬ ܠܗ. ܘܐܢ ܣܓܝ ܚܛܗܝܟ. ܡܢܐ ܥܒܕ ܐܢܬ ܠܗ.

Verſio ARABICA.

19 20 * الذي لا ياخذ بالوجوه اعني باوجه الكبراء ولا ياخذ باوجه المساكين لان كلهم اعمال يديه * وبسرعة
يموتون وفي نصف الليل يهلكون ويبيدون ويعرفون القوي بلا قوة * من اجل ان عينيه على جميع
21 22 طرايق الرجل وجميع خطواته ينظر * بلا ظلمة وبلا ظلال الموت يستخفي هناك اصحاب الاثم * من اجل
23 24 انه ايضا ليس على رجل جعله ليسلك مع الله بالبر * ان يسي بالكثير الذي لا يحصوا ويقيم ايضا سواهم
25 26 * من اجل هذا عرفهم من اعمالهم ويردهم الى الليل * ويتواضعون تحت اثام اعمالهم * في موضع الخوف * حين
27 اعدلوا وراه وطرايقه لم يفهموها * تدخل بين يديه صلاة المساكين وعجاجة الطاهر يسمعها * فاذا
28 29 هو ترك فمن يدحض وان هو رد وجهه فمن الذي يترك القوم او الانسان جميعا * فلا يملك انسان
30 مخالف وخاطي على القوم * من اجل ان الله قال اني اذا تركت فليس افسد الذي لم يخطوا * فاخبرني
31 32 ان كنت صنعت اثما * حتى لا اعود ايضا ان اعطيك قولا حين خطيت فانت الذي فعلت وليس انا
33 والذي تعرف تتكلم * اناس العقل يقولون لي والرجل الحكيم يسمعني * فان ايوب ليس بالمعرفة يتكلم
34 35 وكلامه ليس بالعقل * حقا ان ايوب قد امتحن بعد زمان فلم يحسب مع القوم المنافقين * وان زاد على
36 37 خطاياه فان السيه بيننا تعرف ويقرب قدام الله قوله *

الفصل الخامس والثلثون *

1 2 * اجاب اليهو وقال * بهذا حبست بالقضا لانك قلت اني ابر من الله * فان قلت فماذا ينفع نفسك
3 وماذا ربحا بدحضك * فانا اجيبك بالقول وايضا لاحبابك معك * انظر الى السماء وتفطن في السحاب
4 5 6 التي هي ارفع منك * فاذا ما اخطيت ماذا تصنع به وان كثر اثمك ماذا تصنع به

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Qui non ſumit (†) perſonas, divitũ aut perſonas magnatũ, nec ſumit perſonas pauperum, quoniã omnes ſunt opera manũ ej⁹, 19
Et ſubitò morientur, & mediâ nocte peribunt, atque interibunt, & agnoſcent Fortem ſine fortitudine: 20
Quoniam oculi ſuper omnes vias hominis, & cunctos greſſus ejus videt. 21
Abſque tenebris, et ſine umbra mortis, ubi abſcondant ſe iniqui; 22
Quia nondum erga hominem factum eſt ut incedat cum Deo in æquitate. 23
Etiamſi lædat multos qui non numerantur, (i) condet et totidem. 24
Propterea novit eos ab operibus eorum, reducetque illos ad noctem, 25
Et humiliabuntur ſub iniquitatibus operum ſuorum in loco timoris, 26
Quòd declinaverint poſt eum, & (k) vias ejus non intellexerint. 27
Ingredietur antè illum oratio pauperum, & vociferationem immaculati audiet. 28
Cùm ipſe dimiſerit, quis condemnabit? & ſi ipſe averterit vultum ſuum, quis eſt qui dimittat? num populus an homines ſimul? 29
Non regnabit homo inobediens, & peccator ſuper populum: 30
Quia Deus dixit, Cùm ego dimiſero, non corrumpam eos qui non deliquerunt. 31
Indica ergò mihi utrùm commiſeris iniquitatem, 32
(l) ut non adjiciam ampliùs, & dem tibi reſponſum. Quando peccâſti, tu egiſti, & non ego: & quod nôſti loquaris. 33
(m) Homines prudentes dicant mihi, & vir ſapiens audiat me: 34
Certè Job abſque ſcientia loquitur, & verba ejus abſque judicio. 35
Verè Job tentatus jam eſt (n) longo tempore, nec computatus eſt cum hominibus impiis. 36
Quòd ſi addiderit ad peccata ſua, delictum inter nos (o) cognoſcetur, & offeretur coram Deo ſermo ipſius. 37

CAP. XXXV.

REſponditque Elihu, 1
ac dixit; In hoc concluſus es in judicio, quia dixiſti quòd ego ſum juſtior Deo. 2
Et ſi dixeris, quid prodes animæ tuæ? & quinam quæſtus in confutando te? 3
Ego reſpondebo tibi ſermone, & quoque amicis tuis tecum. 4
Reſpice cœlum, & conſidera nubes quæ ſunt eminentiores te. 5
Cùm igitur peccaveris, quid facies ei? & ſi ſcelus tuum multiplicatum fuerit, quid facies ei? 6

INTERP. SYRIACA.

(†) perſonas magnatum, (i) et ſimul conſtituat pro illis. (k) omnes vias (l) Non adjiciam ampliùs ut dem tibi reſponſum de quo peccâſti. Tu enim probaberis, et non (m) Viri cordati (n) uſque in finem, (o) requiretur,

PARAPH. CHALD. Verſio Latina,

Qui non accipit faciem principum, nec agnoſcitur magnificus coram paupere: quoniam opera manuum ſuarum ſunt omnes. In momento mortui ſunt Sodomitæ, & me- 19 20
dia nocte commoti ſunt Ægyptii: & pertranſibunt & auferentur præfecti abſque fortitudine manus. Quoniam oculi ejus ſuper vias filiorum hominum, & omnes greſ- 21
ſus eorum videbit. Non ſunt tenebræ nec umbra mortis, ut abſcondantur ibi qui operantur iniquitatem. Quoniam non ponet ultrà ſuper hominem ut vadat ad Deum 22 23
in judicium. *Frangit fluctus maris qui multi* ſunt in *medio aquarum*; & ſtare facit alias ſequentes. Propterea nota faciet opera eorum, & converſa nocte tum con- 24 25
terentur. Pro impiis percuſſit eos in loco in quo videbunt. *Targum aliud: In loco impiorum eſt vindicta eorum, poſtquam viderint juſti & juſtificati fuerint in judicio.* Eò 26 27
quod receſſerunt ab eo, & omnes vias ejus non intellexerunt. Ut adducerent ad eum clamorem pauperis, & vociferationem afflictorum exaudiet. Et ipſe requieſcere 28 29
faciet, & quis condemnabit? & auferet majeſtatem ſuam, & quis contemplabitur eam? & viſitaturus eſt ſcelus ſuper populum & ſuper filium hominis ſimul. Qui con- 30
ſtituit regem filium hominis delatorem propter offendicula quæ ſunt in populo. Num enim poteſt fieri ut *dicatur* de Deo, Suſtinui, non diſperdam? Præter illud quod 31 32
ego vidi doce me: ſi iniquitatem feci, non adjiciam. Num quod tecum eſt reſtituet ei, quia aſpernatus es? eliges enim tu & non ego: & ſi quid ſcis, eloquere. Vi- 33 34
ri ſapientes corde dicant mihi, & vir ſapiens audiat me. Iob non in ſcientia loquitur, & verba illius non ſunt cum intellectu. *Cupio ut* probetur Job uſque in ævum 35 36
propter converſionem in viris iniquitatis. Quoniam addet ſuper peccatum ſuum prævaricationem, inter nos complodit, & multiplicat verba ſua coram Deo. 37

CAP. XXXV.

ET reſpondit Elihu & ait: Nunquid hoc cogitaſti ad judicium, locutus es, Juſtior Deo ſum? Dixiſti enim: Quid proderit tibi, & quid utilitatis erit à peccato meo? 1 2 3
Ego reſpondebo tibi verba & ſociis tuis tecum. Aſpice cælos & vide, & contemplare æthera, quoniam celſiores te ſunt. Si peccaſti, quid facies contra eum? & ſi 4 5
multiplicatæ ſunt prævaricationes tuæ, quid facies ei? 6

איוב : לה

? accipiet tua manu de quid vel : ei dabis quid , es justificatus Si
7 אם־צדקת מה־תתן־לו או מה־מידך יקח:
multitudine Præ .tua justitia hominis filio & ,tua impietas tu sicut Viro
8 לאיש־כמוך רשעך ולבן־אדם צדקתך: מרוב 9
.multorum brachio propter clamabunt ,facient clamare affectorum vi
עשוקים יזעיקו ישועו מזרוע רבים:
? nocte in cantica dans ,meus factor Deus ubi ,dixit non Et
10 ולא־אמר איה אלוה עשי נתן זמרות בלילה:
.nos sapientes faciet cœli volatili præ &,terræ jumentis præ nos Docens
11 מלפנו מבהמות ארץ ומעוף השמים יחכמנו:
.malorum superbiæ jactibus à : exaudiet non & ,clamabunt Ibi
12 שם יצעקו ולא יענה מפני גאון רעים:
non omnipotens & : Deus audiat non mendacium Veruntamen
13 אך־שוא לא־ישמע אל ושדי לא
judicium fac : eum videbis non ,dixeris quod Etiam .illud intueatur
14 ישורנה: אף כי־תאמר לא תשורנו דין
,ejus nasus visitavit nihil quia nunc Et .eum expectabis & ,ejus facies ad
15 לפניו ותחולל לו: ועתה כי־אין פקד אפו
; suum os patefaciet vanè Ijob Et .valde copia in cognovit non &
16 ולא־ידע בפש מאד: ואיוב הבל יפצה־פיהו
.profundet crebro sermones scientia absque
בבלי־דעת מלין יכבר:

CAP. XXXVI. לו

,tibi indicabo &,paululum me circa Sta : dixit & , Elihu addidit Et
1 ויסף אליהוא ויאמר: כתר־לי זעיר ואחוך
2 meam scientiam Tollam .sermones Deo adhuc quia
3 כי־עוד לאלוה מלים: אשא דעי
non verè Nam .justitiam dabo meo operatori & ; longinquo à
4 למרחוק ולפעלי אתן־צדק: כי־אמנם לא־
Deus Ecce .tecum scientiis perfectus ; mei sermones mendacium
5 שקר מלי תמים דעות עמך: הן־אל
vivificabit Non .cordis potentia fortem abjiciet non & ; fortis
6 כביר ולא ימאס כביר כח לב: לא־יחיה
justo à prohibebit Non .tribuet afflictorum judicium & ; impium
7 רשע ומשפט עניים יתן: לא־יגרע מצדיק
.perpetuum in eos collocabit & : solio in regibus cum & , suos oculos
עיניו ואת־מלכים לכסא וישיבם לנצח
capientur , compedibus in vincti si Et .exaltabuntur &
8 ויגבהו: ואם־אסורים בזקים ילכדון
, eorum opus eis indicabit Et .afflictionis funibus in
9 בחבלי־עני: ויגד להם פעלם
eorū aurem revelabit Et .prævalebunt quia ; eorū prævaricationes &
10 ופשעיהם כי יתגברו: ויגל אזנם
,audierint Si .iniquitate ab revertantur quòd ,dicet & : correptionem ad
11 למוסר ויאמר כי־ישובון מאון: אם־ישמעו
.delectationibꝰ in suos annos & ; bono in suos dies finient ,servierint &
ויעבדו יכלו ימיהם בטוב ושניהם בנעימים:
absque ebibent & , transibunt missile per , audierint non si Et
12 ואם־לא ישמעו בשלח יעברו ויגועו בבלי
, clamabunt non : nasum ponent corde hypocritæ Et .cognitione
13 דעת: וחנפי־לב ישימו אף לא ישועו
: eorum anima adolescentia in Morietur .eos alligaverit cùm
14 כי אסרם: תמת בנער נפשם
: sua afflictione in afflictum Eruet .conditos inter eorum vita &
15 וחיתם בקדשים: יחלץ עני בעניו
te removit si etiam Et .eorum aurem oppressione in revelabit &
16 ויגל בלחץ אזנם: ואף הסיתך
requies & : eo pro angustam non latitudinem angustiæ ore ab
מפי־צר רחב לא־מוצק תחתיה ונחת
: implevisti impii judicium Et .pinguedine plena tuæ mensæ
17 שלחנך מלא דשן: ודין־רשע מלאת
.sustentabunt judicium & ,causam
דין ומשפט יתמכו:

Verſio VULG. LAT.

7 Porrò ſi juſtè egeris, quid donabis ei, aut quid de manu tua
8 accipiet? Homini, qui ſimilis tuî eſt, nocebit impietas tua: & filium hominis adjuvabit
9 juſtitia tua. Propter multitudinem calumniatorum clamabunt: & ejulabunt propter
10 vim brachii tyrannorum. Et non dixit; Ubi eſt Deus, qui fecit me: qui dedit carmina
11 in nocte? Qui docet nos ſuper jumenta terræ, & ſuper
12 volucres cœli erudit nos. Ibi clamabunt, & non exaudiet, propter ſuperbiam malorum.
13 Non ergò fruſtrà audiet Deus, & Omnipotens cauſas ſingu-
14 lorum intuebitur. Etiam cùm dixeris; Non conſiderat: judicare coram illo, & expecta
15 eum. Nunc enim non infert furorem ſuum, nec ulciſcitur
16 ſcelus valdé. Ergò Job fruſtrà aperit os ſuum, & abſque ſcientia verba multiplicat.

CAP. XXXVI.

1 ADdens quoque Eliu, hæc
2 locutus eſt; Suſtine me paulùm, & indicabo tibi: adhuc enim habeo quod pro Deo lo-
3 quar. Repetam ſcientiam meam à principio, & operatorem meum probabo juſtum.
4 Verè enim abſque mendacio ſermones mei, & perfecta ſci-
5 entia probabitur tibi. Deus potentes non abjicit, cùm &
6 ipſe ſit potens. Sed non ſalvat impios, & judicium pau-
7 peribus tribuit. Non auferet à juſto oculos ſuos, & reges in ſolio collocat in perpetuum,
8 & illi eriguntur. Et ſi fuerint in catenis, & vinciantur funi-
9 bus paupertatis: Indicabit eis opera eorum, & ſcelera eorum, quia violenti fuerunt.
10 Revelabit quoque aurem eorū ut corripiat: & loquetur, ut
11 revertantur ab iniquitate. Si audierint & obſervaverint, complebunt dies ſuos in bono,
12 & annos ſuos in gloria: Si autē non audierint, tranſibunt per gladium, & conſumentur
13 in ſtultitia. Simulatores & callidi provocant iram Dei, neque clamabunt cùm vincti fue-
14 rint. Morietur in tempeſtate anima eorum, & vita eorum
15 inter effœminatos. Eripiet de anguſtia ſua pauperem, & revelabit in tribulatione aurem
16 ejus. Igitur ſalvabit te de ore anguſto latiſſimè, & non habente fundamentum ſubter ſe: requies autem menſæ tuæ erit
17 plena pinguedine. Cauſa tua quaſi impii judicata eſt, cauſam judiciúmque recipies.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 † (ε) Ἐπεὶ δ᾽ οὖν δίκαιος εἶ, τί δώσεις
αὐτῷ; † ἢ τί ἐκ χειρός σου λήψεται; †
8 Ἀνδρὶ τῷ ὁμοίῳ σου ἡ ἀσέβειά σου,
† ϗ υἱῷ ἀνθρώπου ἡ δικαιοσύνη σου.
9 † Ἀπὸ πλήθους συκοφαντούμενοι κεκράξονται, † βοήσονται ἀπὸ βραχίονος πολλῶν.
10 † Καὶ οὐκ εἶπε, Ποῦ ἐστιν ὁ θεὸς ὁ ποιήσας με, ὁ κατατάσσων φυλακὰς νυκτε-
11 ρινάς, † Ὁ διορίζων με ἀπὸ τετραπόδων γῆς, (ζ) ἀπὸ δὲ πετεινῶν οὐρανοῦ;
12 † Ἐκεῖ (η) κεκράξονται, ϗ οὐ μὴ εἰσακούσῃ, (θ) ϗ ἀπὸ ὕβρεως πονηρῶν.
13 † Ἄτοπα γὰρ (ι) οὐ βούλεται ἰδεῖν ὁ κύριος, † αὐτὸς γὰρ ὁ παντοκράτωρ
14 ὁρατής ἐστι τῶν συντελούντων τὰ ἄνομα, (κ) ϗ σώσει με· † κρίθητι δὲ ἐναντίον αὐτοῦ, εἰ δύνασαι αὐτὸν αἰνέ-
15 σαι, ὡς ἔστι † Καὶ νῦν. ὅτι οὐκ ἔστιν ἐπισκεπτόμενος ὀργὴν αὐτοῦ, † ϗ οὐκ ἔγνω
16 παράπτωμά τι σφόδρα, † Καὶ Ἰὼβ ματαίως ἀνοίγει τὸ στόμα αὐτοῦ, † ἐν ἀγνωσίᾳ ῥήματα βαρύνει.

7 Quoniam igitur juſtus es;
quid dabis ei? aut quid de
8 manu tua accipiet? Viro ſi-
mili tuî impietas tua, & filio
9 hominis juſtitia tua. A mul-
titudine calumniis appetiti vociferabuntur: clamabunt à
10 brachio multorum. Et non
dixit; ubi eſt Deus qui fecit
me, qui diſtribuit cuſtodias
11 nocturnas, Qui (b) ſeparat me
à quadrupedibus terræ, & à
12 volatilibus cœli? * Ibi vociferabuntur; & non exaudies,
13 & ab injuria malorum. Abſurda enim non vult Dominus
videre: ipſe enim Omnipotens
14 (c) perſpector eſt eorum. Qui
conſummant iniqua, & ſalvabit me: judicare autem
coram eo, ſi potes collaudare
15 eum; ſicuti eſt, (d) Et nunc,
quia non eſt viſitans iram
ſuam, neque cognovit delictum aliquod vehementer.
16 Et Job vane aperit os ſuum:
in ignorantia verba (e) aggravat.

ΚΕΦ. λϛ΄.

1 † Προσθεὶς δὲ (α) ἔτι Ἐλιοὺς, λέγει,
2 † Μεῖνόν με μικρὸν ἔτι, ἵνα διδάξω σε·
3 ἔτι (β) γὰρ ἐν ἐμοί ἐστι λέξις. † Ἀναλαβὼν τὴν ἐπιστήμην μου μακρὰν, † ἔρ-
4 γοις δέ μου δίκαια ἐρῶ ἐπ᾽ ἀληθείας, † ϗ οὐκ ἄδικα ῥήματα ἀδίκως συνιεῖς.
5 † (γ) Γίνωσκε δὲ, ὅτι ὁ κύριος οὐ μὴ ἀποποιήσηται τὸν ἄκακον, † δυνατὸς ἰ-
6 σχύϊ καρδίας (δ) Ἀσεβῆ οὐ μὴ ζωοποιή-
7 σῃ, † ϗ κρίμα πτωχῶν δώσει. † Οὐχ ἀφελεῖ ἀπὸ δικαίου (ε) ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, † ϗ μετὰ βασιλέων εἰς θρόνον, (ζ) καὶ καθιεῖ αὐτοὺς (η) εἰς νῖκος, ϗ ὑψωθήσονται.
8 † Καὶ οἱ πεπεδημένοι ἐν χειροπέδαις, (θ) συσχεθήσονται ἐν σχοινίοις πενίας. †
9 Καὶ ἀναγγελεῖ αὐτοῖς τὰ ἔργα αὐτῶν, † ϗ τὰ παραπτώματα αὐτῶν, (ι) ὅτι ἰσχύ-
10 σουσιν. † Ἀλλὰ τοῦ δικαίου εἰσακούσεται· † ϗ εἶπεν ὅτι ἐπιστραφήσονται ἐξ ἀδικί-
11 ας. † Ἐὰν ἀκούσωσι, ϗ δουλεύσωσι, † συντελέσουσι τὰς ἡμέρας αὐτῶν ἐν ἀγαθοῖς, † ϗ τὰ ἔτη αὐτῶν ἐν εὐπρεπείαις.
12 † Ἀσεβεῖς δὲ οὐ διασώζει, παρὰ τὸ μὴ βούλεσθαι αὐτοὺς εἰδέναι τὸν κύριον, † ϗ
13 διότι νουθετούμενοι ἀνήκοοι ἦσαν. † Καὶ ὑποκριταὶ καρδίᾳ τάξουσι θυμὸν, † οὐ
14 βοήσονται, ὅτι ἔδησεν αὐτούς. † (κ) Ἀποθάνοι τοίνυν ἐν νεότητι ἡ ψυχὴ αὐτῶν, † ἡ δὲ ζωὴ αὐτῶν τιτρωσκομένη (λ) ὑπὸ
15 ἀγγέλων, † Ἀνθ᾽ ὧν ἔθλιψαν ἀσθενῆ ϗ ἀδύνατον, † κρίμα δὲ πραέων ἐκθήσει.
16 † Καὶ προσέτι ἠπάτησέ σε ἐκ στόματος ἐχθροῦ, † ἄβυσσος κατάχυσις ὑποκάτω
17 αὐτῆς, † ϗ κατέβη τράπεζά σου πλήρης πιότητος. † (μ) Οὐχ ὑστερήσει δὲ ἀπὸ δικαίων κρίμα,

CAP. XXXVI.

1 Adjiciens autem adhuc Eli-
2 us, ait; Suſtine me puſillum;
adhuc, ut te doceam; adhuc
3 enim eſt in me ſermo. Suſcipiens ſcientiam meam de longe:
4 (a) operibus autem meis,
Quæ juſta ſunt loquar, in
veritate, & non injuſta verba injuſtè (b) intelliges.
5 Cognoſce autem, quia Dominus
non abjiciet innocentem: for-
6 tis (c) robore cordis Non vivificabit impium: & judicium
7 pauperum dabit: Non auferet
à juſto oculos ſuos: & cum
regibus in ſolio: & (d) ſedere eos faciet in (e) victoria,
8 & exaltabuntur. Et qui
compediti ſunt in compedibus,
capientur in funibus paupertatis; Et annuntiabit eis opera
9 eorum, & delicta eorum,
10 (f) quoniam valebunt; Sed
juſtum exaudiet: & dixit,
quia convertentur ab iniqui-
11 tate. Si audierint, & ſervierint; complebunt dies ſuos
in bonis, & annos ſuos (g) in
12 decoribus: Impios verò non
facis ſalvos, eò quòd noluerunt ſcire Dominum; & quòd,
13 cùm monerentur, inobedientes
erant: Et hypocritæ corde
(h) ordinabunt furorem: non
14 clamabunt, quia ligavit eos.
Moriatur ergò in juventute
anima eorum: & vita eorum
15 vulnerata ab angelis, Eò quòd
tribulaverunt infirmum, &
invalidum: judicium vero
16 manſuetorum (i) exponet; (k) Et
ſuperdecepit te ab ore (l) inimici; (m) abyſſus, effuſio ſub
17 ea, & deſcendit menſa tua
plena pinguedine; Non deficiet
autem à juſtis judicium,

MS. A. (ε Καὶ εἰ δίκαιος εἶ, (ζ) ϗ ἀπὸ πετεινῶν (η) κέκραξον, (θ) ἀπὸ ὕβρεως (ι) ἰδεῖν οὐ βούλεται ὁ κύριος, (κ) ὃς σώσει με· Κεφ. λϛ΄. MS. A. (α) Ἐ-
λιοὺς ἔτι, λέγει, Μικρόν με μεῖνον ἔτι, (β) γάρ μοι ἔνεστιν λέξις. (γ) Γινώσκω δὲ ἐγὼ, ὅτι (δ) Ἀσεβῶν οὐ μὴ ζωοποιήσει, (ε) ὀφθαλμὸν αὐτοῦ, (ζ) καθι
(η) ϗ εἰς νῖκος ὑψωθήσονται, (θ) συσχεθήσονται) (ι) ὅταν ἰσχύσωσιν. (κ) Ἀποθάνῃ (λ) εἴη ὑπὸ ἀγγέλων, (μ) Καὶ οὐχ ὑστερήσει ἀπὸ

תרגום TARGUM.

וכית מה תיהב ליה או מה מן אידך יקבל : לגבר דרשיעא דכמך חיובך ולבר נש דכיא צדקתך : מסגעי טלומין מקבלין יבעון מתקוף אדרע דורבניא : 7 8 9
אמר האן אלהא דעבדני דמסדרין אנגלי מרומא קדמוי תושבחן בליליא : דמאלף יתנא מבעירי ארעא ומעופא דשמיא יחכמננא : תמן יקבלון ולא 10 11 12
ני מן קדם גיותנותא דבישיא : ברם שקרא לא ישמע אלהא ושדי לא יסכנה : לחוד ארום תימר לא יסכנה אדין קדמוי ותוריך ליה : וכדון ארום כאלו 13 14 15
אהוה אסער רוגזיה ולא ידע לאפושי לחדא : ואיוב למא פצי פומיה מדלית מנדעא מליא יסני : 16

לו

אוסיף אליהוא ואמר : אמתן לי צבחר ואחונך ארום חוב לאלהא מליא : אטול מנדעי מן רחיק ולעבד יתי אתן צדקתא : ארום בקושטא לא שקרא 1 2 3 4
שלים מנדעתא עמך : הא אלהא רבא לא ירחק צדיקא מטול דהוא רב חילא וחכים לבא : לא יחיי חיבא ודין ענייי יהב : לא ימנע מצדיקיא עיניה ועם 5 6 7
ניא תקניא למיתב על כורסי מלכותא ויותיבנון לעלמא ומתגבהין : ואין אסירין רשיעיא בשושלון מתאחדין באשלי סגופא : ויחוי להון עובדיהון 8 9
דיהון ארום אתגברו : וגלי משמעהון למרדותא ואמר דיתובון מן עובדיהון בישיא : אין ישמעון ויפלחין ליה ישלמון יומיהון בטב 10 11
שניהון בפומוטין : ואין לא שמעין בזיני קרבא יעברון ויתנגדון מדלית מנדעא : ורהיטי לבא ישוון רוגזא לא יבעון רחמיה ארום כפתינון : תמות בטליות 12 13 14
שיהון וחיתהון היך מריזנו : יפצי ענייא בסגופיה ומפרסם בדוחקא משמעהון : ואף פצאנך מפום מעיקא אפתי דלא יתעק באתרה ובניח פתורך מליא 15 16
נא : ודין דחייבא אשלמתא דין והלכתא סעדין : 17

Verſio SYRIACA.

* ܐܢ ܗܘܐ ܐܢܬ ܙܕܝܩ ܡܢܐ ܡܘܬܪ ܐܢܬ ܠܗ. ܐܘ ܡܢܐ ܢܣܒ ܡܢܟ. * ܠܢܦܫܟ ܗܘ ܥܘܠܟ. ܘܠܢܦܫܟ ܗܘ 7
ܙܕܝܩܘܬܟ. * ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܥܠܘܒܝܐ ܢܩܥܘܢ. ܘܢܓܥܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܕܪܥܐ ܕܥܫܝܢܐ. * ܘܠܐ ܐܡܪܘ ܐܝܟܘ ܐܠܗܐ ܕܥܒܕܢ. 8
ܕܝܗܒ ܬܫܒܚܬܐ ܒܠܠܝܐ. * ܡܢ ܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܡܢ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܚܟܡܢ. * ܬܡܢ ܢܩܥܘܢ. ܘܠܐ ܥܢܐ 9 10
ܠܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܫܘܒܗܪܐ ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܣܪܝܩܐܝܬ. ܠܐ ܫܡܥ ܐܠܗܐ. ܘܐܦܠܐ ܐܠܗܐ ܡܫܒܚ ܠܗ. * ܘܐܢ ܬܐܡܪ ܕܠܐ 11 12
ܐܫܒܚܝܘܗܝ. ܕܝܢܐ ܐܡܪ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܨܠܝ ܩܕܡܘܗܝ. * ܕܥܕܡܐ ܠܐ ܦܩܕ ܪܘܓܙܗ. ܘܠܐ ܡܒܐܫ ܠܢܦܫܐ. * ܘܐܝܘܒ ܣܪܝܩܐܝܬ 13 14
ܦܬܚ ܦܘܡܗ. ܘܕܠܐ ܡܕܥܐ ܡܣܓܐ ܡ̈ܠܐ. 15
* ܠܘ * * ܘܐܘܣܦ ܐܠܝܗܘ ܘܐܡܪ. * ܣܟܝ 16
ܠܝ ܙܥܘܪ ܘܐܚܘܝܟ. ܡܛܠ ܕܬܘܒ ܐܝܬ ܠܐܠܗܐ ܡ̈ܠܐ. * ܐܫܩܘܠ ܝܕܥܬܝ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܘܠܥܒܘܕܝ ܐܬܠ ܙܕܩܐ. * ܒܫܪܪ 1 2
ܓܝܪ ܠܐ ܗܘܝ ܕܓܠܐ ܡ̈ܠܝ. ܘܠܐ ܡܫܘܡ ܗܘ ܝܕܥܟ ܥܡܟ. * ܗܐ ܐܠܗܐ ܥܫܝܢܐ. ܠܐ ܡܣܠܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܕܟܝܢ. ܐܝܟ 3 4
ܚܠܒܐ. * ܘܥܘܠܐ ܠܐ ܢܚܐ. ܘܕܝܢܐ ܠܡܣܟܢܐ ܢܥܒܕ. * ܠܐ ܢܦܪܘܩ ܠܙܕܝܩܐ ܡܢ ܩܕܡ ܥܝܢܘܗܝ. ܢܘܬܒ ܡ̈ܠܟܐ 5 6
ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ. ܘܢܬܪܝܡܘܢ ܠܥܠܡ. * ܘܐܢ ܢܬܐܣܪܘܢ ܒܫܫܠܬܐ ܢܬܚܒܠܘܢ ܒܚܒܠܐ ܕܡܣܟܢܘܬܐ. 7
* ܘܢܚܘܐ ܐܢܘܢ ܥܒܕܝܗܘܢ. ܘܣܟܠܘܬܗܘܢ. ܟܕ ܐܬܥܫܢܘ. * ܘܢܓܠܐ ܐܕܢܝܗܘܢ ܠܡܪܬܝܢܘܬܐ. ܘܢܐܡܪ ܕܢܬܘܒܘܢ 8 9
ܡܢ ܥܘܠܐ. * ܐܢ ܢܫܡܥܘܢ ܘܢܦܠܚܘܢ. ܢܫܠܡܘܢ ܝܘܡܝܗܘܢ ܒܛܒܬܐ. ܘܫ̈ܢܝܗܘܢ ܒܒܣܝܡܘܬܐ. * ܘܐܢ 10
ܠܐ ܢܫܡܥܘܢ. ܒܚܪܒܐ ܢܥܒܪܘܢ. ܘܢܐܒܕܘܢ. ܘܠܐ ܡܕܥܐ. * ܘܚܢܦܝ ܠܒܐ. ܢܣܝܡܘܢ ܪܘܓܙܐ. ܘܠܐ ܢܩܥܘܢ. 11 12
ܟܕ ܐܣܪ ܐܢܘܢ. * ܬܡܘܬ ܢܦܫܗܘܢ ܒܛܠܝܘܬܐ. ܘܚܝ̈ܝܗܘܢ ܒܟܦܢܐ. * ܢܦܨܐ 13
ܠܡܣܟܢܐ ܒܡܘܟܟܗ. ܘܢܓܠܐ ܐܕܢܗܘܢ ܒܐܘܠܨܢܐ. * ܘܐܦ ܢܦܨܝܟ ܡܢ ܦܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ. ܘܦܘܬܝܐ ܚܠܦ 14 15
ܐܘܠܨܢܐ. ܘܬܬܩܢ ܦܬܘܪܟ ܡܠܝܐ ܕܘܫܢܐ. * ܘܕܝܢܐ ܕܪܫܝܥܐ ܡܫܠܡܬ ܕܝܢܐ. ܘܕܝܢܐ ܢܬܚܡܘܢ. 16 17

Verſio ARABICA.

* وان كنت صديقا فماذا ينفعه * او ماذا يوجد منك * لنفسك اثمك ولنفسك صلاحك * من كثرة الاثم 7 8
يصرخون * ومن الظلم الكثير يضجون * ولم يقولوا اين الله الذي صنعنا * الذي اعطا الفكر بالليل 9 10
* من قدام حيوانة الارض ومن طاير السماء حكمنا * هنالك يعجون فلا يجيبهم * من اجل ان عظمة 11 12
المنافقين نقصا * ليس يسمع الله * وايضا ليس الله يحمدها * وان انت قلت اني لا احمدك * فاقض قدامه 13 14
واضرع له * فانه حتى الان لم يامر رجزه * ولا يسي الى احد * وايوب باطلا فتح فاه * وبغير معرفة يكثر 15 16
القول *

* الفصل السادس والثلثون *

* فاعاد اليهو وقال * امسك لي قليلا فاخبرك * من اجل ان لله كلاما ايضا * فاني اخذ معرفتي من بعيد * 1 2
ولصانعي اجعل البر * ولكن بالحق كان قولي بغير كذب * ولا عيب معرفتي عندك * فان الله العظيم 3 4
لا يرفض الذي هو نقيا مثل اللبن * والمنافق ليس يحيا * والقضا للبوس جعله * فانه ليس يفارق 5 6
الصديق من قدام عينيه * يقعد الملوك على الكرسي ويرفعون للدهر * وان كانوا ماسورين في السلاسل 7 8
يهبطون بالبواد الى المسكنة * ويريهم اعمالهم واساتهم حين تجبروا * ويظهر اذانهم للموعظة * فيقول ان 9 10
يتوبوا من الاثم * ويسمعون ويعملون ويتمون ايامهم بالخير * وسنيهم بالسرور * وان لم يسمعوا بالهلاك 11 12
يذهبون * ويبادون بلا معرفة * وحلوف القلوب يبيدون * ولا يصرخون بالرجز يعجون اذا ما ربطهم * ويموت 13 14
انفسهم بشبابهم * وحياتهم بالجوع * ينجوا المتواضع بتواضعه * ويظهر طريقهم بالضر * وايضا ينجيك من فم 15 16
الموذي * والسعة بدل الضيقة * وتثبت مايدتك مملوة خيرا * ودين المنافقين بتمام القضاء والقضاء يوجدون 17

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Et ſi juſtus fueris, quid proderit illi? aut quid accipietur à te? 7 *Animæ tuæ ſcelus tuum, et animæ tuæ probitas tua.* 8 *Ob nimiam iniquitatem clamabunt, & propter oppreſſionem vociferabuntur.* 9 *Et non dicent, ubi eſt Deus qui fecit nos, qui dedit cogitationem in nocte?* 10 *Præ beſtia terræ, & volucribus cœli ſapientiores nos fecit.* 11 *Ibi ejulabunt, et non exaudies eos;* 12 *Quia ſuperbia impiorum eſt (a) defectus: non exaudiet Deus, nec etiam Deus eam laudabit:* 13 *Si tu dixeris, Non laudabo eum, judicium dic coram ipſo; & ſupplica ei,* 14 *Quoniam uſque adhuc non præcepit furori ſuo, & (b) non malefacit cuiquã.* 15 *Job autem temerè aperuit os ſuum, & abſque ſcientia multiplicat ſermones.* 16

CAP XXXVI.

Subdens autè Elihu dixit, 1 *Suſtine me parùm, et indicabo tibi. Deo ſupereſt adhuc ſermo,* 2 *Quoniam ſumam ſcientiã meam de longè, & Factori meo faciam juſtitiam;* 3 *At verè (a) fuit ſermo meus abſq; mendacio, & abſque vitio ſcientia mea apud te;* 4 *(b) Quia Deus excelſus non reſpuit eum qui eſt purus ſicut lac,* 5 *Et impius non vivit: & judicium pauperibus facit,* 6 *Quia non (c) ſeparatur juſtus à conſpectu ejus: ſedere facit reges ſuper ſolium, & extollentur in æternum.* 7 *Etiamſi fuerint vincti catenis, cum interitu deſcendent ad paupertatem:* 8 *Et oſtendet eis opera eorũ ac ſcelera eorum, cùm fuerint inſolentes:* 9 *Et revelabit aures eorum ad correptionem, & dicet ut ut convertantur à ſcelere ſuo,* 10 *Et audiant ac faciant, & compleant dies ſuos in bono, & annos ſuos cum lætitia.* 11 *Quòd ſi non audierint, in interitum abibunt, & peribunt abſque ſcientia.* 12 *Perverſi autem cordibus peribunt, & non clamabunt: in furore mugient cùm vincet eos,* 13 *Et morientur animæ ipſorum in juventute ſua, & vita illorum in fame.* 14 *Liberabitur humilis ob ſuam humilitatem, & revelabit viam eorum in tribulatione:* 15 *Et quoque liberabit te ab ore nocentis, & latitudinem pro anguſtia, & permanebit menſa tua plena (d) bonis,* 16 *Judicabit impios pleno judicio, & in judicio deprehendentur.* 17

INTERP. SYRIACA.

(a) in vanum: (b) non nocet animæ. *CAP. xxxvi.* (a) fuerunt ſermones mei mendaces, (b) Ecce Deus (c) recedet (d) pinguedine,

Paraph. Chald. Verſio Latina.

Si juſtus es, quid dabis ei, aut quid de manu tua accipiet? Viro *impio* qui ſimilis eſt tui iniquitas tua eſt, & filio hominis juſto juſtitia tua. Propter multitudinem ca- 7 8 9
lumniatorum clamant: deprecabuntur propter fortitudinem brachii principum. Et non dixit: Ubi eſt Deus qui fecit me, ante cujus conſpectum angeli excelſi ordi- 10
nant laudem in nocte? Qui docet nos præ jumentis terræ, & præ avibus cœli ſapientes nos efficit. Ibi clamant, & non reſpondet propter ſuperbiam malignantium. 11 12
Attamen iniquitatem non audiet Deus, & omnipotens non intuebitur eam. Utique enim dices: Non intuebitur eum: judica coram illo, & ſpera in eo. Et nunc per- 13 14
inde ac ſi non fuiſſet, viſitabit furore ſuo, & neſcivit multiplicare nimis. Job enim in vanum aperit os ſuum, abſque ſcientia verba multiplicat. 15 16

CAP. XXXVI.

ET addidit Elihu, & ait: Expecta me pauliſper, & annunciabo tibi, quoniam adhuc ſunt ſermones pro Deo. Levabo ſcientiam meam à longè, & ei qui fecit me 1 2 3
tribuam juſtitiam. Quoniam revera non ſunt mendacium verba mea, perfectus ſcientiarum eſt apud te. Ecce Deus maximus non aſpernabitur juſtum, eo quòd ipſe 4 5
eſt magnus virtute & ſapiens corde. Non vivificabit ſceleratum, ſed judicium pauperum tribuet. Non auferet à *juſtis* oculos ſuos; & cum regibus rectis ſedebit ſuper 6 7
ſolium regni, & ſedere faciet eos in æternum & exaltabuntur. Et ſi vincti fuerint impii catenis, comprehenſi funibus afflictionis; Tunc indicabit eis opera eorum & 8 9
prævaricationes eorum quoniam invaluerunt. Et revelat auditum eorum ad correctionem, & dicit ut convertantur ab operibus ſuis malis quæ ſimilia ſunt vanitati. 10
Si obedierint & ſervierint ei, conſument dies ſuos in bono, & annos ſuos in deliciis. Quòd ſi non audierint, per *arma belli* tranſibunt, & deficient abſque ſcientia. Et 11 12
ſuperbi corde ponent iram, non deprecabuntur miſerationem ejus, quoniam ligavit eos. Morietur in infantia anima eorum, & vita eorum ſicut ſcortationis mancipia. 13 14
Liberabit pauperem in afflictione ejus, & manifeſtabit in tribulatione auditum eorum. Veruntamen liberavit te de ore anguſtiæ; dilatavit ne eſſet anguſtia in loco 15 16
ejus, & in requie menſam tuam replevit pinguedine. Et judicium impii conſummaſti, jus et conſuetudo auxiliantur, 17

איוב : לו

propitiationis multitudo & : sufficientia in te incitet fortè ne ,ira Quia
18 כי־חמה פן־יסיתך בשפק ורב־כפר
,aurum non ? tuum clamorem æstimabit Nunquid .te faciet declinare non
19 אל־יטך : היערך שועך לא בצר
ascendendum ad nocte anheles Ne ? potentiæ fortitudines omnes nec
20 וכל מאמצי־כח : אל תשאף הלילה לעלות
hoc super quia ,iniquitatem ad aspicias ne Cave .se sub populos
21 עמים תחתם : השמר אל־תפן אל־און כי על־זה
quis ; sua potentia in extollet Deus Ecce .afflictionem propter elegisti
22 בחרת מעני : הן־אל ישגיב בכחו מי
,dixit quis Et ? ejus viam ,illum super visitavit Quis ? docens ipse sicut
23 כמהו מורה : מי־פקד עליו דרכו ומי־אמר
: ejus opus magnifices ut Memento ? iniquitatem es operatus
24 פעלת עולה : זכר כי־תשגיא פעלו
: illud viderunt homines Omnes .homines sunt intuiti quod
25 אשר שררו אנשים : כל־אדם חזו־בו
.sciemus non & ,magnus Deus Ecce .longè à intuebitur homo
26 אנוש יביט מרחוק : הן־אל שגיא ולא נדע
stillas minuet Quia inquisitio non & ejus annorum Numeri
27 מספר שניו ולא־חקר : כי יגרע נטפי־
, nubes stillabunt Quam .ej° vaporē ad pluviam stillabunt : aquarum
28 מים יזקו מטר לאדו : אשר־יזלו שחקים
expansiones intelliget si Insuper .multum hominem super stillabunt
29 ירעפו עלי אדם רב : אף אם־יבין מפרשי־
,suū lumē ipsum super extendit Ecce ? sui tabernaculi fremitus ; nubis
30 עב תשאות סכתו : הן־פרש עליו אורו
escam dabit ,populos judicabit ipsas per Quia .operuit maris radices &
31 ושרשי הים כסה : כי־בם ידין עמים יתן־אכל
.occurrente in ipsam super præcepit & ,lucem operuit devexa Super .copiam ad
32 למכביר : על־כפים כסה־אור ויצו עליה במפגיע :
.ascendente super furoris Acquisitio .ej° amicus eum super Annunciabit
33 יגיד עליו רעו מקנה אף על־עולה :

C A P. XXXVII. לז

Audite .suo loco è luxatur & ,meū cor expavescit hoc ad Etiam
1 אף־לזאת יחרד לבי ויתר ממקומו :
2 שמעו
.egredietur ejus ore ex eloquium & , ejus sonitum tremore cum audiendo
שמוע ברגז קלו והגה מפיו יצא :
.terræ alas super ejus lux & ,ejus directio cælum omne Subter
3 תחת כל־השמים ישרהו ואורו על־כנפות הארץ :
non Et .suæ altitudinis voce in Tonabit .voce rugiet ipsum Post
4 אחריו ישאג־קול ירעם בקול גאונו ולא
sua voce in Deus Tonabit .ej° sonitus fuerit auditus cùm ,ea tardabit
5 יעקבם כי־ישמע קולו : ירעם אל בקולו
, dicet nivi Quia .nesciemus & ,magnalia faciens ; mirabilia
6 נפלאות עשה גדלות ולא נדע : כי לשלג יאמר
.suæ fortitudinis pluviarum imbri & : pluviæ imbri & , terram esto
הוא־ארץ וגשם מטר וגשם מטרות עזו :
.ipsius opus homines omnes sciendum ad : obsignabit homines omnes manu In
7 ביד־כל־אדם יחתום לדעת כל־אנשי מעשהו :
.habitabit suis habitaculis in & ,latibulum ipsum in bestia ingredietur Et
8 ותבוא חיה במו־ארב ובמעונותיה תשכן :
Dei flatu A .frigus dispergentibus à & ,turbo veniet penetrali De
9
10 מן־החדר תבוא סופה וממזרים קרה : מנשמת־אל
defatigabit serenitas Etiam .angusto in aquarū latitudo & : gelu dabit
11 יתן־קרח ורחב מים במוצק : אף־ברי יטריח
se volvens circuitibus ipsa Et .sui luminis nubem faciet spargere : nubē
12 עב יפיץ ענן אורו : והוא מסבות מתהפך
faciei super eis præcipiet quæ omnia eos operandum ad ,ejus consiliis in
בתחבולתו לפעלם כל אשר־יצום על־פני
.terra in orbis
תבל ארצה :

Versio VULG. LAT.

18 Non te ergò superet ira, ut ali-
quem opprimas : nec multitu-
19 do donorum inclinet te. De-
pone magnitudinem tuā abs-
que tribulatione, & omnes
20 robustos fortitudine. Ne pro-
trahas noctem, ut ascendant
21 populi pro eis. Cave ne de-
clines ad iniquitatem : hanc
enim cœpisti sequi post mise-
22 riam. Ecce, Deus excelsus
in fortitudine sua, & nullus ei
23 similis in legislatoribus. Quis
poterit scrutari vias ejus ?
aut quis potest ei dicere, O-
24 peratus es iniquitatem ? Me-
mento quòd ignores opus ej°,
25 de quo cecinerunt viri. Omnes
homines vident eum, unusquis-
26 que intuetur procul. Ecce, De-
us magnus vincens scientiam
nostram : numerus annorum
27 ejus inæstimabilis. Qui aufert
stillas pluviæ, & effundit im-
28 bres ad instar gurgitum. Qui
de nubibus fluunt, quæ præ-
29 texunt cuncta desuper. Si vo-
luerit extendere nubes quasi
30 tentorium suum, Et fulgurare
lumine suo desuper, cardines
31 quoque maris operiet. Per hæc
enim judicat populos, & dat
32 escas multis mortalibus. In
manibus abscondit lucem, &
præcipit ei ut rursus adveniat.
33 Annuntiat de ea amico suo,
quòd possessio ejus sit, & ad
eam possit ascendere.

CAP. XXXVII.

1 Super hoc expavit cor me-
um, & emotum est de loco suo.
2 Audite auditionem in terrore
vocis ejus, & sonum de ore
3 illius procedentem. Subter
omnes cœlos ipse considerat,
& lumen illius super termi-
4 nos terræ. Post eum rugiet
sonitus, tonabit voce magni-
tudinis suæ ; & non investi-
gabitur, cùm audita fuerit vox
5 ejus. Tonabit Deus in voce
sua mirabiliter, qui facit ma-
6 gna & inscrutabilia. Qui
præcipit nivi ut descendat in
terram, & hyemis pluviis, &
7 imbri fortitudinis suæ. Qui in
manu omnium hominum si-
gnat, ut noverint singuli ope-
8 ra sua. Ingredietur bestia lati-
bulum, & in antro suo mora-
9 bitur. Ab interioribus egredi-
etur tempestas, & ab Arcturo
10 frigus. Flante Deo concrescit
gelu, & rursum latissimæ fun-
11 duntur aquæ. Frumentum de-
siderat nubes, & nubes spargūt
12 lumen suum. Quæ lustrant per
circuitum, quocumq; eas vo-
luntas gubernantis duxerit, ad
omne quod præceperit illis su-
per faciem orbis terrarum :

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

18 Θυμὸς δὲ ἐπ' ἀσεβεῖς (ν) ἔσται, † δι' ἀσέ-
βειαν δώρων ὧν ἐδέχοντο (ξ) ἐπ' ἀδικίαις.
19 † Μή σε (ο) ἐκκλινάτω ἑκὼν ὁ νοῦς † δε-
ήσεως (π) ἐν ἀνάγκῃ ὄντων ἀδυνάτων, †
20 ϗ πάντας τοὺς κραταιοῦντας ἰσχύν Μὴ ἐξ-
ελκύσῃς τὴν νύκτα, † τοῦ ἀναβῆναι λαοὺς
21 ἀντ' αὐτῶν· † Ἀλλὰ φύλαξαι μὴ πρά-
ξῃς ἄτοπα· † ἐπὶ τούτων γὰρ ἐξείλω ἀπὸ
22 πτωχείας. † Ἰδοὺ ὁ ἰσχυρὸς κραταιώσει (ρ) ἐν
ἰσχύϊ αὐτοῦ· † τίς γάρ ἐστι κατ' αὐτὸν δυ-
23 νάστης; † Τίς δέ ἐστιν ὁ ἐτάζων αὐτοῦ τὰ ἔρ-
γα; † ἢ τίς ὁ εἰπών, Ἔπραξεν ἄδικα; †
24 Μνήσθητι (σ), † ὅτι μεγάλα (τ) ἐστὶν αὐτοῦ
25 τὰ ἔργα, ὧν ἦρξαν ἄνδρες. † Πᾶς ἄν-
θρωπος εἶδεν ἐν ἑαυτῷ, ὅσοι τιτρωσκό-
26 μενοί εἰσι βροτοί. † Ἰδοὺ ὁ ἰσχυρὸς πολὺς,
ϗ οὐ γνωσόμεθα· † ἀριθμὸς ἐτῶν αὐτοῦ ϗ
27 ἀπέραντος. † Ἀριθμηταὶ δὲ αὐτῷ (υ) στα-
γόνες ὑετοῦ, † ϗ ἐπιχυθήσονται ὑετῷ εἰς
28 νεφέλην. † Ῥυήσονται παλαιώματα, † ἐ-
σκίασε δὲ νέφη ἐπὶ (φ) ἀμυθήτῳ βροτῷ.
† ὥραν ἔθετο κτήνεσιν, (χ) οἴδασι δὲ κοίτης
τάξιν. ἐπὶ τούτοις πᾶσιν οὐκ (ψ) ἐξίσταταί
σου ἡ διάνοια, † οὐδὲ διαλλάσσεταί σου ἡ
29 καρδία ἀπὸ (ω) σώματος. † Καὶ ἐὰν (α)
συνῇ ἀπέκτασιν νεφέλης, ἰσότητα σκηνῆς
30 αὐτοῦ † Ἰδοὺ ἐκτενεῖ (β) ἐπ' αὐτὸν ἠδὼ, †
ϗ ῥιζώματα τῆς θαλάσσης ἐκάλυψεν. †
31 Ἐν γὰρ αὐτοῖς κρινεῖ λαοὺς, † δώσει τροφὴν
32 τῷ ἰσχύοντι. † Ἐπὶ χειρῶν ἐκάλυψε φῶς,
† ϗ ἐνετείλατο περὶ αὐτῆς ἐν ἀπαντῶντι,
33 Ἀναγγελεῖ περὶ αὐτοῦ φίλον (γ) αὐτοῦ κύ-
ριος, κτῆσις ϗ περὶ ἀδικίας.

Et ira super impios erit prop
impietatem munerum, quæ ac
cipiebant super iniquitatibu
Non te avertat voluntaria (
mens à prece infirmorum, cùm
necessitate fuerint : & (o) o
mnes qui tenent fortitudine
Noli extrahere per noctem, u
ascendant populi pro eis : Se
cura, ne facias indecentia : s
per (r) his enim elegisti ab i
opia. Ecce fortis (q) i
borabit in fortitudine sua
quis enim est, sicut ille, p
tens ? Et quis est, qui discu
opera ejus ? aut quis est qui
dicat, Fecit injusta ? Memento
quia magna sunt opera ejus, quo
rum (s) dominati sunt vi
Omnis homo vidit (t) in s
(u) quicunque vulnerati sun
mortales. Ecce fortis (x) mu
tus, & nescimus : Numerus an
norum (y) ejus & infinitum
Numerabiles autem ei stillæ p
viæ : & (z) effundentur
pluviam in nube : Fluent (aa
antiquitates : obumbraverunt au
tem nubes super (bb) innume
rabili homine : (cc) horam con
stituit jumentis : & sciunt cu
bilis ordinem. In his omnibu
non obstupescit animus tu
us, nec mutatur cor tuum
à corpore : Et (dd) si conf
terit extensio nubis, æqualita
tabernaculi ejus, Ecce extend
super eum (ee) Edo, & ra
dices maris contexit. (ff) I
eis enim judicabit populos : da
bit escam (gg) valido : I
manibus contexit lumen, et (h
mandavit de ea in occurrenti : Annuntiabit (ii) de eo amicum suu
(kk) Dominus : possessio, & de injustitia.

ΚΕΦ. λζ'.

1 † Καὶ (α) ἀπὸ ταύτης ἐταράχθη ἡ καρ-
δία μου, † ϗ ἀπερρύη ἐκ τοῦ τόπου αὐ-
2 τῆς. † (β) Ἄκουε ἀκοὴν ἐν ὀργῇ θυμοῦ κυ-
ρίου, † ϗ μελέτη ἐκ στόματος αὐτοῦ (γ)
3 ἐξελεύσεται. † Ὑποκάτω παντὸς τοῦ οὐρα-
νοῦ ἡ ἀρχὴ αὐτοῦ, † ϗ τὸ φῶς αὐτοῦ ἐπὶ
4 πτερύγων (δ) τῆς γῆς. † Ὀπίσω αὐτοῦ
βοήσεται φωνῇ, † βροντήσει ἐν φωνῇ ὕβρε-
ως αὐτοῦ· † ϗ οὐκ ἀνταλλάξει αὐτοὺς, ὅτι
5 (ε) ἀκούσει φωνὴν αὐτοῦ. † Βροντήσει ὁ ἰσχυ-
ρὸς ἐν φωνῇ αὐτοῦ θαυμάσια· † ἐποίησε
6 γὰρ μεγάλα ἃ οὐκ ᾔδειμεν, † Συντάσσων χι-
όνι, (ζ) Γίνου ἐπὶ γῆς, ϗ (η) χειμὼν ὑετὸς, ϗ
7 χειμὼν ὑετῶν (*) δυναστείας αὐτοῦ. † Ἐν χειρὶ
παντὸς ἀνθρώπου κατασφραγίζει, † ἵνα γνῷ
πᾶς ἄνθρωπος τὴν ἑαυτοῦ ἀσθένειαν. † (θ)
8 Εἰσῆλθε δὲ θηρία ὑπὸ τὴν σκέπην, ἡσύχασε
9 δὲ ἐπὶ κοίτης. † Ἐκ ταμιείων ἐπέρχονται ὀ-
10 δύναι, † ἀπὸ δὲ ἀκρωτηρίων ψῦχος. † Καὶ
ἀπὸ πνοῆς ἰσχυροῦ δώσει πάγος. † (*) οἰακίζει δὲ
11 τὸ ὕδωρ ὡς ἐὰν βούληται, † Καὶ ἐκλεκτὸν
(ι) καταπλάσσει νεφέλη. † (κ) διασκορπιεῖ νέ-
12 φος φῶς αὐτοῦ, † Καὶ αὐτὸς κυκλώματα
διαστρέψει † (λ) ἐν θεεβουλαθωθ, εἰς ἔργα
αὐτῶν. † πάντα ὅσα ἂν (μ) ἐντείληται αὐ-
τοῖς, † ταῦτα συντέτακται παρ' αὐτοῦ ἐπὶ τῆς
γῆς,

CAP. XXXVII.

Et ab hac (a) turbatum e
cor meum, & (b) effluxit d
loco suo : Audi auditionem i
ira furoris Domini : & (c) me
ditatio de ore ejus egredietu
Subter universum cœlū prin
pium ejus, & lumen ejus su
per alas terræ. Post (d) eum
clamabit voce, tonabit in (e
voce superbiæ suæ : & non (f
commutabit eos, quoniam audi
et vocem ejus. Tonabit fo
in voce sua (g) mirabiliter. Fe
cit enim magna quæ (h) nesci
ebamus : Præcipiens nivi, Es
super terram : & (i) tempesta
pluvia, & tempestas pluviaru
potestatis ejus : In (k) manu o
mnis hominis signat : ut scia
omnis homo infirmitatem suam.
Introierunt autē bestiæ sub teg
men, & quieverunt super cu
bile. De promptuariis superven
unt (l) dolores, & (m) ab ex
tremis partibus frigus : Et
(n) spiratione fortis dabit ge
gubernat autem aquam, qua
ter illi placuerit ; Et electa
(o) format nubes : disperget nu
bilum lucem ejus, Et ipse (
circuitus transvertet, [pervenia
in (q) Thebulathoth : in opera
orie omnia quæ mandaverit e
Hæc constituta sunt ab eo super terram.

MS.A. (ν) ἥξει, διὰ (ξ) ἐπ' ἀδικείας. (ο) ἐκκλίνῃ ὁ νοῦς ἑκὼν (π) ἀδυνάτων ἐν ἀνάγκῃ ὄντων, Ἀλλὰ φύλαξαι μὴ πράξῃς ἄνομα, ϗ πάντας τοὺς κραταιοῦντας ἰσχὺν μὴ ἐξελκύσῃς
νύκτα, τοῦ ἀναβῆναι * λαοὺς ἀντ' αὐτῶν· ἐπὶ * τοῦτον γὰρ (ρ) σε ἐν ἰσχύϊ αὐτοῦ· (σ) οὖν Ἰὼβ, ὅτι (τ) αὐτοῦ ἐστιν τὰ ἔργα, (υ) ὑετοῦ σταγόνες, (φ) ἀμυθήτων βροτῶν. (χ) ϗ οἴδασιν κοί-
της (ψ) ἐξίσατο (ω) τοῦ σώματος. (α) σκηνῆς ἐπέκτασιν (β) ἐπ' αὐτὴν τὸ τόξον, ϗ ῥίζωμα (γ) αὐτοῦ, κυρίου κτῆσις Κεφ. λζ'. MS. A. (α) ὑπὲρ ταύτης (β) Ἄκουε Ἰὼβ ἀκο
(γ) ἐξελεύσεται. * ϗ τὸ φῶς αὐτοῦ ἐπὶ (δ) γῆς. (ε) ἀκούσῃ (ζ) Ἐπὶ γῆς γείνου, (η) χειμῶνι, ἵνα ἢ ὑετὸς, (*) δυναστείαις (θ) Εἰσῆλθον δὲ θηρία ὑπὸ σκέπης, ϗ ἡσύχασεν ἐπὶ κοίτης. Ἐ
ταμείων ἐξέρχονται ὀδύναι, (*) * Οἰκεία δὲ ὕδωρ (ι) καταπλήσσει (κ) διασκορπίζει (λ) ἐν τοῖς καταπλάτω θεὶς ἔργα αὐτῶν. (μ) ἐντείλῃ

תרגום TARGUM.

19 18 ויסירנו דלמא אטעינך במסת מולא וסני פורקנא דעתרא לא יצלנך : האפשר דמסתדר בעותך וכל דמתאלמין משבחין חילא : תא האפשר דמסדר
20 צלותך לא בעקתא וכל מה דמתקפין כח מדבקין חילא : לא תדחוק בליליא לאסקא עממיא באתריהון : תא לא תגיר אתת חברך בליליא לסלקא עמיא
22 21 לפיהון : אסתמר לא תתפני לשקרא ארום על דא בחרתא מסנופא : הא בלחודוי אלהא תקיף בחיליה מן דכמיה מליף תריצותא : מן יסער עלוי
23 24 ארחיה ומן יימר עבדתא עילותא : אדכר ארום תפיש עובדיה די שבחו גוברין צדיקין : כל בני נשא חמון ביה אנש אסתכל מרחיק : הא אלהא סגיא
26 27 28 ולא נדע סכום שנוי וליה סוף : ארום ימנע טיפי מיא זילפון מטרא לענניה : דזלחין שחקיא דאסי מטול צלותא דבר נש רב : לחוד אין אתבין פרישתא
30 31 דענא כפת עננייה טלליה : הא פרס עלוי מטרא ועקרי ימא חפא : ארום בהון דאן עממיא יהב מיכלא לסוגעא : מטול חטוף ידא מנע מטרא ופקד
32 33 עלוהי למתחת מטול מצלי : דיחוי לישן תליתי בחבריה קנאתא ורוגזא עלוי יסק : תא יחוון באוריתא חד עם חבריה מטנגין ברוגזא ומסלקין ליה לעילא
ויחיי עלוהי וכותא דחבריה קנאתא ורוגזא מעילוהי יסלק :

לז

1 2 אף לדא תווה לבי ויטפס מן אתריה : תא על בני דאהרן אתנבי ואמר לחוד לחדא לבי תוה ושוור מן אתריה : שמעו משמע ברוגזא קליה והגיא דיך
3 4 מפומיה נפק : תחות כל שמיא תריצותיה ונהוריה יקום על סיפי ארעא : בתרוי מכלי קל אכליותיה בקל גותנותיה ולא יעכבנון ארום ישמע קליה :
5 6 יכלי אלהא בקליה פליאן עביד רברבן ולא נדע : ארום לתלגא יימר הוי בארעא ומטרא בתר מטרא בקיטא למבשלא פירי טבשא
7 8 וזעירי מטרא למצמח עסבא בסתוא בעושניה : בידא דכל אנשא ירשום למידע כל בני נשא עובדוי : ותיתי חיתא בכמנא ובמדורהא תשרי : מן אדרון עילא
9 10 תיתי עלעולא ומכוכבי מזרים קורא : ממימר אלהא יתיהב קרחא ופלטיות מיא באתחיתא : ברם בברירותא מטרח עיבא מבדר ענן מטריה : והוא תוסכלא
11 12 מתהפך בחכמתיה לאצלחא פלחי בארעא בעובדיהון ונתתין בכל אתר די פקדנון על אפי ארעא : תא והוא בחמתיה מיא מתנעתא מתהפך באפיכותיה
בשלדיהון דבני נשא מגלי יתהון ושביק יתהון לכל דפקדינון על אפי תבל ארעא :

Verſio SYRIACA.

18 *ܚܡܝܡܘܬܐ ܕܩܪܒܐ ܠܐ ܢܚܦܛܟ ܘܠܐ ܢܚܣܪܟ ܣܘܓܐ ܕܦܘܪܩܢܐ.* ܢܬܥܫܢ ܥܠܝܟ. ܕܢܦܪܩܟ. ܕܠܐ ܐܠܨܘ ܠܟ
19 20 ܡܢ ܟܠ ܐܠܝܨܝ ܚܝܠܐ. *ܘܡܢ ܕܚܦܐ ܕܒܠܠܝܐ. ܘܢܩܝܡ ܥܡܡܐ ܚܠܦܝܟ. ܘܐܡܘܬܐ ܚܠܦ ܢܦܫܟ. *ܐܙܕܗܪ ܕܠܐ
21 ܬܬܦܢܐ ܠܘܬ ܥܘܠܐ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܓܝܪ ܐܬܢܣܝܬ ܡܢ ܡܣܟܢܘܬܐ. *ܐܠܗܐ ܡܣܓܐ ܚܝܠܐ. ܡܢܘ ܕܐܟܘܬܗ
22 ܡܠܦ. *ܡܢܘ ܦܩܕ ܠܗ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܡܢܘ ܐܡܪ ܠܗ ܕܥܒܕܬ ܥܘܠܐ. *ܐܬܕܟܪ ܕܬܫܒܚ ܐܢܘܢ ܠܥܒܕܘܗܝ.
23 24 25 ܕܡܫܒܚܝܢ ܠܗ ܒܢܝܢܫܐ ܟܠܗܘܢ. *ܘܒܢܝܢܫܐ ܚܙܐܘܗܝ. ܘܐܢܫ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. *ܗܐ ܐܠܗܐ ܪܒ ܗܘ. ܘܠܐ ܡܬܝܕܥ.
26 ܘܡܢܝܢܐ ܕܫܢܘܗܝ ܠܝܬ ܣܟܐ. *ܐܢ ܢܡܢܐ ܚܢܢ ܟܘܒܝܗ ܕܫܡܝܐ. ܘܢܟܢܫ ܢܛܦܬܐ ܕܡܛܪܐ ܒܠܚܘܕܘܗܝ. *ܕܢܚܬ
27 28 ܫܡܝܐ ܒܙܒܢܗ. *ܘܪܣܝܢ ܥܢܢܐ ܥܠ ܒܢܝܢܫܐ ܘܚܕܝܢ ܛܒ. *ܘܡܢܘ ܢܣܬܟܠ. ܘܦܪܣ ܥܢܢܐ ܡܢ ܣܘܓܐ
29 30 ܕܡܛܠܠܬܗ. *ܘܦܪܣ ܥܠܝܗ ܢܘܗܪܗ. ܘܥܘܡܩܗ ܕܝܡܐ ܟܣܐ. *ܡܛܠ ܕܒܗܘܢ ܕܐܢ ܥܡܡܐ. ܘܝܗܒ ܡܐܟܘܠܬܐ
31 32 ܠܣܓܝܐܐ. *ܘܥܠ ܐܝܕܝ ܟܣܐ ܢܘܗܪܐ. ܘܕܢܚ ܥܠܝܗܘܢ ܕܢܦܓܥܘܢ ܒܗ. *ܢܚܘܘܢ ܪܚܡܘܗܝ
33 ܩܢܝܢܗ. ܐܦ ܠܥܘܠܐ. *ܩܦܠܐܘܢ *ܠܙ *ܐܦ ܥܠ ܗܕܐ ܢܬܬܙܝܥ ܠܒܗ. ܘܢܫܬܪܐ ܡܢ ܕܘܟܬܗ. *ܫܡܥܘ
1 2 ܫܡܥܐ ܒܪܘܓܙܐ. ܘܕܢܦܩ ܡܢ ܦܘܡܗ. *ܬܚܝܬ ܟܠܗܘܢ ܫܡܝܐ ܡܫܒܚܝܢ ܠܗ. ܘܢܘܗܪܗ ܥܠ
3 ܟܢܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. *ܘܒܐܬܪܗ ܢܪܥܡ ܒܩܠܐ ܕܫܘܒܚܗ ܘܠܐ ܢܩܘܡ ܠܘܩܒܠܗ. *ܡܛܠ ܕܢܫܡܥܘܢ ܩܠܗ. ܘܢܪܥܡ
4 5 ܐܠܗܐ ܒܩܠܗ. ܘܬܕܡܪܬܐ ܥܒܕ ܘܪܘܪܒܬܐ. ܘܠܐ ܡܬܝܕܥ. *ܡܛܠ ܕܠܬܠܓܐ ܐܡܪ. ܗܘܝ ܐܪܥܐ. ܘܡܛܪܐ ܘܥܣܒܐ
6 ܣܓܝ ܒܐܝܕܝ ܟܠ ܒܢܝ ܐܢܫܐ ܚܬܡ. *ܕܢܘܕܥ ܠܟܠܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ ܥܒܕܘܗܝ. *ܘܥܐܠܐ ܚܝܘܬܐ ܒܡܥܪܬܐ. ܘܫܪܝܐ ܒܡܫܪܝܬܗ.
7 8 *ܡܢ ܬܘܢܐ ܐܬܐ ܥܠܥܠܐ. ܘܡܢ ܪܘܚܐ ܩܪܝܪܐ. *ܘܡܢ ܢܫܡܬܗ ܕܐܠܗܐ ܢܬܝܗܒ ܓܠܝܕܐ. ܘܣܘܓܐܐ
9 10 ܕܡܝܐ ܢܦܩ. *ܘܒܫܦܝܪܘܬܐ ܡܬܡܬܚܝܢ ܥܢܢܐ. ܘܦܪܣ ܥܢܢܐ ܢܘܗܪܗ. *ܘܗܘ ܡܬܗܦܟ ܘܡܬܒܥܐ
11 12 ܠܡܥܒܕ ܡܚܫܒܬܗܘܢ. ܟܠ ܕܦܩܕ ܠܗܘܢ ܥܠ ܐܦܝ ܬܒܝܠ ܐܪܥܗ.

Verſio ARABICA.

18 19 *بحمية القتال لا يحرضك ولا يحوجك الي كثير الخلاص *يتعرر عليك ليخلصك لئلا يضيق عليك
20 21 من جميع اشداء القوه *ومن الدفع الذي في الليل *ويجعل الشعوب فداءك والامم فداء نفسك *فاحذر
22 الا تلتفت الي الاثم *فمن اجل هذا امتحنت بالمسكنة *فان الله يعظم القوه من الذي يكون مثله عارفا *
23 24 *من الذي اشرف علي الطريق *ومن الذي قال له صنعت اثما *فاحذر انها كثيرة اعماله *وقد حمدوه
25 26 الناس كلهم *والناس ابصروه فطلعوا من بعيد *فان الله عظيم هو ولا يعرف *ولعدد سنيه ليس منتها
27 28 *ان نحن احصينا اعماق السماء *ونضم قطرات المطر وحده *الذي ينزل السماء في الوقت *وينضح السحاب
29 30 علي الناس فيفرحون كثيرا *فمن الذي يفهم *ويبسط السحاب من كثرة ظلاله *بسط فوقها ضوءه *
31 32 واسفل البحر غطاه *من اجل ان يدين الشعوب *ويعطي ماكلة للكثيرين *وعلي يديه يجللها نورا ويخرج
33 عليهم يلتجون به *فيري احباءه قنيانه *والمنافقين ايضا *

الفصل السابع والثلثون *

1 2 *وعلي هذا ايضا يتزعزع قلبه ويزول من مكانه *اسمعوا سماعا صوته بزجر *فان القضاء الذي يخرج من
3 4 فمه *تحت جميع السماء يسبحونه *ونوره علي اقطار الارض *في مكانه يصدع بصوت جلالته ولا يناظرهم
5 6 *لكي يسمعوا صوته *ويصدع الله بصوته *عجائب يصنع وكبائر ولا يعرف *من اجل انه للثلج يقول كن
7 8 ارضا والمطر والربيع الكثير بيد كل انسان ختم *ليخبر كل انسان اعماله *ويدخل الحيوان في المرصد ويحل في
9 10 مربضها *من المخدع ياتي الدبور ومن الهطل ياتي البرد *ومن نسمة الله يعطي الجليد وكثرة المياه ينزل
11 12 *وباللين تنبسط السحاب *ويمد سحاب نوره *وهو يطوف ويعود ليصنع الفكر *كل شي يامرهم علي وجه الدنيا ارضه *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

*Vehementia pugnæ non ſti- 18
mulabit te, neq; te faciet in-
digere abundantiâ ſalutis: vi
utitur adverſum te ad li-
berandum te, Ne incom- 19
modo afficiatis à quibuſ-
vis robuſtis fortitudine, Et 20
ab impulſu qui eſt in no-
cte; & ſubſtituet populos
pro te, & gentes pro ani-
ma tua. Cave igitur ne 21
convertaris ad ſcelera:
nam propterea tentatus es
paupertate. (e) Etenim ſi 22
Deus augeat vim, quis eſt
qui cum eo comparetur
ſcientiâ? Quis eſt qui pro- 23
ſpectet vias ejus? & quis
eſt qui dicat illi, Tu com-
miſiſti ſcelus? Adverte 24
multa eſſe opera ejus, &
tamen laudari eum ab o-
mnibus hominibus. Et ho- 25
mines vidiſſe illum, et in-
tuitos eum eſſe à longè;
(f) Quoniam Deus magn⁹ 26
eſt, & non cognoſcitur; et
numero annorum ejus non
eſt terminus. Si nos nume- 27
raverimus cardines cœli,
et collegerim⁹ guttas plu-
viæ ſolius, Quas emittit 28
cœlum in tempore, et ſtil-
lant nubes ſuper homines;
quib⁹ lætantur valde: Sed 29
quis eſt qui intelligat? et
extendit nubes ex multi-
plici umbraculo ſuo, Ex- 30
tendit ſuper eas lumen
ſuum, & profundum ma-
ris texit: (g) Judicat 31
enim populos, & dat eſcã
multis. Et per manus meas 32
operit eos lumine, & ori-
tur ſuper eos ut occurrant
ei. (h) Et videbunt amici 33
ejus poſſeſſionem ejus, &
impii quoque.*

CAP. XXXVII.

*Super hæc quoque con- 1
turbabitur cor ejus, & re-
cedet à loco ſuo. Audi- 2
entes audite vocem ejus
(a) increpantem; quo-
niam judicium quod egre-
ditur de ore ejus, Sub 3
ter omnes cœlos laudant
illud, & lumen ejus ſuper
terminos terræ: In lo- 4
co ſuo tonat voce gloriæ
ſuæ, & non opponit ſe eis,
Ut audiant vocẽ ejus. Et 5
tonat Deus voce ſuâ: mi-
racula facit & magnalia,
& non cognoſcitur. Quia 6
nivi dicit; Eſto terra, &
pluviam, & herbam plu-
rimam in manu omnium
hominum concluſit, ut 7
patefeceret (b) omnibus
opera ſua. Et ingreditur 8
beſtia latibulum; & com-
moratur in cubili ſuo:
Et de thalamo venit (c) 9
Boreas, & ab imbre venit
frigus Et ab aura Dei 10
datur gelu, & copiam a-
quarum emittit, Et leni- 11
ter extenduntur nubes,
& protendit nubes lucis
ſuæ, Et ipſæ vagantur, 12
& revertuntur ad exe-
quendam cogitationem,
quidquid præcepit eis ſu-
per faciem orbis terræ ſuæ.*

INTERP SYRIACA.

(e) Deus auget vim, quis eſt qui ſimilis ei docet? (f) Ecce (g) His enim judicat populos, (h) Amicis ejus indicat poſſeſſionẽ ejus, & impiis *Cap. xxxvii.* (a) in ira; (b) mundo (c) tempeſtas,

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Cùm iratus fuerit ne fortè ſeducat te in abundantia ſubſtantiæ, & multitudo redemptionis divitiarum ne inclinet te. Nunquid ordinari poteſt deprecatio tua, & omnes 18
qui robuſti ſunt *inveniunt virtutem? Targum aliud: Nunquid ordinare potes orationem tuam non in anguſtia*, & omnes qui *valent viribus aſſequuntur virtutem.* Ne 20
urgeas in nocte ut aſcendant populi in loca ſua. *Targum aliud: Ne adulteres uxorem proximi tui nocte*, ut aſcendant populi *pro eis*. Cave ne te convertas ad menda- 21
cium, hoc enim elegiſti præ afflictione. Ecce ſolus Deus potens eſt in virtute ſua, quis ſimilis ei docens recti? Quis viſitabit ſuper eum viam ſuam, aut quis dicet ei, 22 23
Operatus es iniquitatem? Recordare ut magnifices opera ejus quæ laudaverunt viri juſti. Omnes homines vident eum, unuſquiſque intuetur à longè. Ecce Deus ma- 24 25
gnus eſt, & neſcimus; & numero annorum ejus non eſt finis. Quia cohibet guttas aquarum: ſtillabunt pluviam nubes ejus. Quæ ab æthere fluunt *ejus qui ſanat*, propter 26 27
orationem filii hominis magni. Veruntamen ſi intellexerit extenſiones nubis; tonitruum nubis ejus umbraculum ipſius. Ecce expandit ſuper eam pluviam, & radices 28 29
maris operit. Quoniam per hæc judicat populos, dat eſcam in multitudinem. Propter rapinam manuum prohibet pluviam, & præcipit ei ut deſcendat propter oran- 30 31
tem. *Qui narrat lingua tertia de proximo ſuo, zelus et indignatio in eum aſcendet. Targum aliud: Cum enarraverint legem quiſquam cum proximo ſuo, æmulantur cum* 32 33
iracundia, et efferunt eam ſurſum. Targum aliud: Annunciat ſuper eum juſtitiam amici ſui, zelum & indignationem aufert ab eo.

CAP. XXXVII.

VEruntamen propter hoc expavit cor meum, & exiliit de loco ſuo. *Targum aliud: De filiis Aharon vaticinatus eſt, ac dixit: Utique valde* expavit cor meum, & ex 1
iliit de loco ſuo. Audite auditu cum tremore vocem ejus, & ſonum qui quaſi ignis de ore illius egreditur. Sub omnibus cœlis directio ejus, & lumen illius *ſtabit* ſuper 2 3
fines terræ. Poſt eum intonat ſonus *vociferationis ejus, cum* voce altitudinis ſuæ, & non remorabitur cùm audita fuerit vox ejus. Quando tonabit Deus voce ſua ſuper 4 5
mirabilia quæ facturus eſt, *fecit* magna quæ ignoramus. Quoniam nivi dicet, Eſto in terra: & pluviæ poſt pluviam in vere ad maturandum fructus, & pluviæ poſt plu- 6
viam ut germinet herbam in hieme in fortitudine ſua. In manu omnium hominum ſignat, ut ſciant omnes filii hominum opus ſuum. Ingredietur autem beſtia latibulum 7 8
ſuum, & in habitaculo ſuo commorabitur. A cœnaculo ſupremo veniet commotio, & à cataractis Arcturi frigus. A verbo Dei dabitur gelu, & dilatatio aquarum in 9 10
infuſionem. Veruntamen in *ſerenitate* defatigat nubem: diſpergit nubes pluviam ſuam. Et ipſe occaſiones vertit in ſapientia ſua, ut proficere faciat colentes terram in 11 12
operibus ſuis, & deſcendunt in *quemcunque locum* præceperit eis ſuper faciem terræ. *Targum aliud: Et ipſe in miſericordiis ſuis aquas reconditas vertit in apothecis ſu-*
is, ad opera filiorum hominis revelat ac mittit eas, quocumque præceperit eis ſuper faciem orbis terræ.

misericordiam ad sive , suam terram ad sive , virgam ad Sive
13 אם־לשבט אם־לארצו אם־לחסד
intellige & , sta : Ijob hoc Ausculta .eam faciet invenire
14 ימצאהו : האזינה זאת איוב עמד והתבונן
, his super Deum ponendo in scies Nunquid .Dei mirabilia
15 נפלאות אל : התדע בשום־אלוה עליהם
libramenta super scies Nunquid ? ejus nubis lucem irradiare &
16 והפיע אור עננו : התדע על־מפלשי
tua vestimenta Quòd ? scientiis perfecti mirabilia , nubis
17 עב מפלאות תמים דעים : אשר־בגדיך
eo cum Expandes ? meridie à terram quietando in , calida
18 חמים בהשקט ארץ מדרום : תרקיע עמו
quid nobis Ostende ? fusum speculum sicut fortia , æthera
19 לשחקים חזקים כראי מוצק : הודיענו מה־
? obscuritatis faciebus à ordinabimus Non : ei dicamus
נאמר לו לא נערך מפני־חשך :
cùm quispiam dixit Si ? fuero locutus cùm ,ei narrabitur Nunquid
20 היספר־לו כי אדבר אם־אמר איש כי
: cœlis in ipsum lucidum lumen viderunt non nunc Et ? est absorptus
21 יבלע : ועתה לא־ראו אור בהיר הוא בשחקים
: veniet aurum Aquilone Ab .eos purificavit & ,transivit ventus &
22 ורוח עברה ותטהרם : מצפון זהב יאתה
,ex invenimus non Omnipotens .decoris terribilem Deum super
23 על־אלוה נורא הוד : שדי לא־מצאנהו
.affliget non justitiæ multitudine & , judicio & ; potentia magnus
שגיא כח ומשפט ורב צדקה לא יענה :
.corde sapientes omnes videbit non : homines eum timebunt Ideo
24 לכן יראוהו אנשים לא־יראה כל־חכמי־לב :

C A P. XXXVIII. לח

iste Quis : dixit & , turbine de Ijob ipsi Dominus respondit Et
1 2 ויען־יהוה את־איוב מן־הסערה ויאמר : מי זה
nunc Accinge ? scientia absque sermonib⁹ in consilium tenebrefaciens
3 מחשיך עצה במלין בלי־דעת : אזר־נא
Ubi .me scire facies & ,te interrogabo & : tuos lumbos vir sicut
4 כגבר חלציך ואשאלך והודיעני : איפה
Quis .intelligentiam nosti si Annuncia ? terram me fundare in fuisti
5 היית ביסדי־ארץ הגד אם־ידעת בינה : מי־
? lineam eam super extenderit quis vel : scias quòd ejus mensuras posuerit
שם ממדיה כי תדע או מי־נטה עליה קו :
.ej⁹ angularē lapidē jecerit quis aut : sunt submersæ ejus bases quo Super
6 על־מה אדניה הטבעו או מי־ירה אבן פנתה :
.Dei filii omnes jubilarent & ,matutinæ stellæ pariter cantando In
7 ברן־יחד כוכבי בקר ויריעו כל־בני אלהים :
me ponendo In .egredietur vulva è ipso emergendo in ?mare ostiis in texit Et
8 9 ויסך בדלתים ים בגיחו מרחם יצא : בשומי
eo super fregi Et .ejus fasciam caliginem & : ejus vestem nubem
10 ענן לבשו וערפל חתלתו : ואשבר עליו
usque Huc ; dixi Et .ostia & , vectem posui & ,meum decretum
11 חקי ואשים בריח ודלתים : ואמר עד־פה
.tuos fluctus elatione in ponet hic Et : addes non & , venies
תבוא ולא תסיף ופא ישית בגאון גליך :
? suū locum aurora fecisti scire :diluculo præcepisti tuis dieb⁹ à Nunquid
12 המימיך צוית בקר ידעתה שחר מקומו :
.ea ex impii excutiantur & , terræ alis in apprehendendum Ad
13 לאחז בכנפות הארץ וינערו רשעים ממנה :
prohibebitur Et .vestimentū sicut stabunt & :sigilli lutum sicut se Vertet
14 15 תתהפך כחמר חותם ויתיצבו כמו לבוש : וימנע
.confringetur excelsum brachium &,eorum lux impiis ab
מרשעים אורם וזרוע רמה תשבר :

Versio VULG. LAT.

13 Sive in una tribu, sive in terra sua, sive in quocunq; loco misericordiæ suæ eas jusserit inveniri. 14 Ausculta hæc Job: sta, & considera mirabilia Dei. 15 Numquid scis quando præceperit Deus pluviis, ut ostenderent lucē nubiū ejus? 16 Numquid nôsti semitas nubium magnas, & perfectas scientias? 17 Nónne vestimenta tua calida sunt, cùm perflata fuerit terra Austro? 18 Tu forsitan cum eo fabricatus es cœlos, qui solidissimi quasi ære fusi sunt. 19 Ostende nobis quid dicamus illi: nos quippè involvimur tenebris. 20 Quis narrabit ei quæ loquor? etiam si locutus fuerit homo, devorabitur. 21 At nunc non vident lucem: subitò aër cogetur in nubes, & ventus transiens fugabit eas. 22 Ab Aquilone aurū venit, & ad Deū formidolosa laudatio. 23 Dignè eum invenire non possumus: magn⁹ fortitudine, & judicio, & justitiâ, et enarrari non potest. 24 Ideò timebunt eum viri, & non audebunt cōtemplari omnes qui sibi videntur esse sapientes.

CAP. XXXVIII.

1 Respondens autem Domin⁹ 2 Job de turbine, dixit: Quis est iste involvens sententias sermonibus imperitis? 3 Accinge sicut vir lumbos tuos: interrogabo te, & responde mihi. 4 Ubi eras quando ponebam fundamenta terræ? indica mihi si habes intelligentiam. 5 Quis posuit mensuras ejus, si nôsti? vel quis tetendit super eam lineam? 6 Super quo bases illius solidatæ sunt? aut quis demisit lapidem angularem ejus, 7 Cùm me laudarent simul astra matutina, & jubilarent omnes filii Dei? 8 Quis conclusit ostiis mare, quando erumpebat quasi de vulva procedens: 9 Cū ponerem nubem vestimentū ejus, et caligine illud quasi pannis infantiæ obvolverem? 10 Circumdedi illud terminis meis, et 11 posui vectem, et ostia: Et dixi; Usque huc venies, et non procedes ampliùs, et hic confringes tumentes fluctus tuos. 12 Numquid post ortū tuū præcepisti diluculo, et ostendisti 13 auroræ locum suum? Et tenuisti concutiens extrema terræ, et excussisti impios ex ea? 14 Restituetur ut lutum signaculum, et stabit sicut vestimentum: 15 Auferetur ab impiis lux sua, et brachium excelsum confringetur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

13 † Ἐάν τε εἰς παιδείαν, (ν) ἐὰν εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ, (ξ) ἐὰν εἰς ἔλεος εὑρήσει αὐτόν. 14 † Ἐνωτίζου (ο) ταῦτα, Ἰώβ· † στῆθι (π) νουθετούμενος δύναμιν κυρίου. † 15 (ρ) Οἴδαμεν ὅτι ὁ θεὸς ἔθετο ἔργα αὐτοῦ, 16 (σ) φῶς ποιήσας ἐκ σκότους. † (τ) Ἐπίσταται δὲ διάκρισιν νεφῶν, † ἐξαίσια δὲ πτώματα πονηρῶν. 17 † Σοῦ δὲ ἡ στολὴ θερμή, ἡσυχάζεται δὲ ἐπὶ τῆς γῆς. 18 † (υ) Στερεώσεις μετ' αὐτοῦ εἰς παλαιώματα, † ἰσχυραὶ ὡς ὅρασις (φ) ἐπιχύσεως. 19 † Διατί, δίδαξόν με, τί ἐροῦμεν αὐτῷ; † καὶ παυσώμεθα πολλὰ λέγοντες. 20 † Μὴ βίβλος ἢ γραμματεύς μοι παρέστηκεν, ἵνα ἄνθρωπον (χ) ἑστηκὼς κατασιωπήσω; † (ψ) 21 Πᾶσι δὲ οὐχ ὁρατὸν τὸ φῶς, † τηλαυγές ἐστιν ἐν τοῖς παλαιώμασιν, † ὥσπερ τὸ παρ' αὐτοῦ ἐπὶ (ω) νεφῶν. 22 Ἀπὸ Βορρᾶ νέφη χρυσαυγοῦντα, † ἐπὶ τούτοις μεγάλη ἡ δόξα καὶ τιμὴ (α) 23 παντοκράτορος, † Καὶ οὐχ εὑρίσκομεν ἄλλον ὅμοιον (β) τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ. † ὁ τὰ δίκαια κρίνων, (γ) 24 οὐκ οἴει ἐπακούειν αὐτόν; † Διὸ φοβηθήσονται δὲ αὐτὸν (δ) οἱ ἄνθρωποι, † φοβηθήσονται δὲ αὐτὸν καὶ οἱ σοφοὶ (ε) καρδίᾳ.

Sive (r) in disciplinam, sive in terram suam; si in misericordia inveniet eum. Auribus percipe hæc Job: Sta (s) commonitus virtutem Domini. (t) Scimus, quia posuit Deus opera sua, cùm faceret lumen de tenebris. Scit autem differentiam nubium: & ingentes lapsus malorum. Tua verò stola est (u) calida: quiescit verò super (x) terram: (y) Firmationes cum eo in antiquitates, validæ, ut visio effusionis. Quarè doce me, quid dicemus ei, & requiescamus multa dicentes. Nunquid liber, & scriba (z) astitit mihi, ut stans faciam hominem tacere? Omnibus autem non est visibile lumen, splendidum est in (aa) antiquitatibus, sicut quod ab eo super nubes. Ab Aquilone nubes coloris auri ei: In his (bb) magna est gloria, & honor Omnipotentis: (cc) Et non invenimus alium similem virtuti ejus. Qui (dd) justa judicat, non putas exaudire eum? Propereà timebunt eum homines: timebunt quoque eum & sapientes corde.

ΚΕΦ. λη'.

1 † Μετὰ δὲ τὸ παύσασθαι Ἐλιοῦν τῆς λέξεως, εἶπεν ὁ κύριος τῷ Ἰὼβ διὰ λαίλαπος 2 καὶ (α) νεφῶν, Τίς οὗτος ὁ κρύπτων με βουλήν, συνέχων δὲ ῥήματα ἐν καρδίᾳ, ἐμὲ δὲ οἴεται 3 κρύπτειν; † Ζῶσαι ὥσπερ ἀνὴρ τὴν ὀσφύν σου· † ἐρωτήσω δέ σε, σὺ δέ μοι ἀποκρίθητι. † 4 (β) Ποῦ ἦς ἐν τῷ θεμελιοῦν με τὴν γῆν; † 5 ἀπάγγειλον δέ μοι εἰ ἐπίστῃ σύνεσιν. † Τίς ἔθετο τὰ μέτρα αὐτῆς, εἰ οἶδας; † ἢ τίς ὁ 6 ἐπαγαγὼν σπαρτίον ἐπ' αὐτῆς; † Ἐπὶ τίνος (γ) οἱ κρίκοι αὐτῆς πεπήγασι; † τίς δέ ἐστιν ὁ βαλὼν λίθον γωνιαῖον ἐπ' αὐτῆς; † 7 Ὅτε (δ) ἐγενήθησαν ἄστρα, ᾔνεσάν με (ε) φωνῇ 8 μεγάλῃ πάντες ἄγγελοί (ϛ) μου. † Ἔφραξα δὲ θάλασσαν πύλαις, ὅτε (ζ) ἐμαίμασσεν † ἐκ κοιλίας μητρὸς αὐτῆς (η) ἐκπορευομένη. 9 † Ἐθέμην δὲ αὐτῇ νέφος ἀμφίασιν, † ὁμί- 10 χλῃ δὲ αὐτὴν ἐσπαργάνωσα. † Ἐθέμην δὲ αὐτῇ ὅρια, περιθεὶς κλεῖθρα καὶ πύλας. † (θ) 11 Εἶπα δὲ αὐτῇ, Μέχρι τούτου ἐλεύσῃ, καὶ (ϛ) οὐχ ὑπερβήσῃ, † ἀλλ' ἐν σεαυτῇ συντριβήσεταί 12 σου τὰ κύματα. † Ἢ ἐπὶ σοῦ συντέταχα φέγγος πρωϊνόν; † Ἑωσφόρος δὲ (ι) εἶδεν 13 τὴν ἑαυτοῦ τάξιν, Ἐπιλαβέσθαι πτερύγων 14 γῆς, (κ) ἐκτινάξαι ἀσεβεῖς ἐξ αὐτῆς; † Ἢ σὺ λαβὼν γῆν πηλόν, ἔπλασας ζῶον, † καὶ 15 λαλητὸν (λ) αὐτὸν ἔθου ἐπὶ γῆς; (μ) † Ἀφεῖλες δὲ ἀπὸ ἀσεβῶν τὸ φῶς, † (ν) βραχίονα δὲ ὑπερηφάνων συνέτριψας;

CAP. XXXVIII.

Et postquàm quievit Elius loqui, dixit Dominus ad Job per (a) turbinem, & nubes; Quis est hic, qui celat me (b) consilium, continens autem sermones in corde, & me putat celare? Accingere tanquàm vir lumbum tuum. Interrogabo autem te: tu autem responde mihi. Ubi eras, cum fundarem terram? indica autem mihi, si nôsti scientiam. Quis posuit mensuras ejus, si nôsti? aut quis est, qui induxit super eam (c) funiculum? Super quo (d) circuli ejus fixi sunt? Quis est autem, qui misit lapidem angularem super eam? Quando facta sunt sydera, laudaverunt me voce magnâ omnes (e) angeli mei. Conclusi autem portis mare, cùm (f) fremeret ex utero matris suæ egrediens. (g) Posui autē ei nubem operimentum; & (h) nebulâ, quasi fasciâ, obvolvi illud: Et posui illi terminos, circumponens claustra & portas. Et dixi ei; Huc usque venies, & non transibis, sed in (i) te ipso comminuentur fluctus tui. Aut nunquid tecum lucem constitui matutinam? & (k) cognovit lucifer ordinem suū, Apprehendere pennas terræ, excutere impios ex ea? Aut tu sumens terram lutum plasmâsti animal, & idoneū ad loquendū eum posuisti super terram? Et abstulisti ab impiis lucem, & brachium superborum comminuisti?

MS. A. (ν) ἐὰν τε εἰς τὴν γῆν (ξ) ἐὰν τε εἰς ἔλεος αὐτοῦ. Ἐνωτίζου (ο) Ἰώβ, ταῦτα· (π) νουθετοῦ (ρ) Οἶδας ὡς ἔθετο ὁ θεὸς ἔργα (σ) ποιήσας φῶς (τ) Ἐπίσταται (υ) Στερεωθεὶς (φ)* ἐπιχύσεως. (χ) ἑστὼς (ψ) Πᾶσιν γὰρ οὐχ ὁρατὸν φῶς, (ω) νεφῶν, ἐξῆλθεν. Ἀπὸ Βορρᾶ (α) τοῦ παντοκράτορος, (β) αὐτῷ, καὶ τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ. (γ) οἴει ὅτι οὐκ εἰσακούει αὐτός. (δ) ἄνθρωποι, (ε) τῇ καρδίᾳ.

Κεφ. λη'. MS. A. (α) νέφους, (β) Ποῦ ἦσθα ὅτε ἐθεμελίωσα τὴν γῆν; ἀνάγγειλόν μοι εἰ ἐπίστασαι σύνεσιν. (γ) δὲ οἱ στῦλοι αὐτῆς (δ) ἐγενήθη (ε) ἐν φωνῇ (ϛ) μου, καὶ ὕμνησ (ζ) ἐμεοῦτο, καὶ ἐκ κοιλίας (η) ἐξεπορεύετο. (θ) Εἶπον (ϛ) οὐκ (ι) ἐπεῖδεν (κ) καὶ ἐκτινάξαι (λ) αὐτὸ (μ) Ἀφεῖλω (ν) καὶ βραχίονα ὑπερηφάνων

תרגום TARGUM.

13 14 אין מטרא דפורענותא בימיא ובמדבריא אין מטרא רויא לאילני טוריא ונלמתא אין מטרא ניחא דחסדא לחקלי דפרי וכרמי יספקניה : אצית דא איוב
15 16 ים ואתבין פרישותא דאלהא : הידעתא כד ישוי אלהא נוירתא עלויהון ואופע ענני מטריה : הידעתא על מבשקרני עבא פרישותא דשלים מנדעא :
17 18 19 ילבושיך משחנין כד משדיך ארעא מן דרומא : תרקע עמיה לשחקיא תקיפין דחזותהון כאספקלריא סנינא : אודע יתנא מה נימר ליה לא נסדר למחמי
20 21 ים חשוכא : אפשר דישתעי ליה ארום אמלל אין ימלל בר נש ארום יקטרג : וכדון לא חמון מטרא בוטט הוא בשחקי ורוחא עברת ודכית יתהון : תא
22 השתא לא אסתכלו באוריתא אתעבידו שמיא בהירי מן לאחתא טלא ומטרא ורוח עברת ודכאנון : מצפונא דהבא ייתי קדם אלהא דחיל שבהורא : תא
23 מן צפונא אסתניא יתי וינהר עלמא קדם אלהא דחיל יודון עללי עלמא : שדי לא אשכחינך דאנת מדבר עם עללי עלמא בסוגי חילא ודינא וסוגי צדקתא
24 איסגף : תא שדי לא ספקנא למשתעי סוגעי חילא ודינא וסוגעי צדקתא לא יסגף : בנין כן דחילו מניה גובריא לא ידחל כל חכימי לבא : תא מטול
דחילו מניה גובריא לא יחמי מבנוהי היך כל חכימי לבא :

לח

1 2 3 4 אתיב ייי ית איוב מן עלעולא דצערא ואמר : מן הוא דין כמחשיך מלכא במליא מדלית מנדעא : זרז כדון היך גברא חרציך ואבענך ותהודעני : האן הויתא
5 6 7 משתסי ארעא חוי אין ידעתא ביונתא : מן שוי משחתהא ארום תנדע או מן מתח עלה מתקולתא : על מה סמכיהא טמיען או מן שדא אבן זויתה : בימן
8 9 משבחין כחדא כוכבי צפר ומיבבין כל כתי מלאכיא : ואגיף בדשיא ימא במגחיה מן תהומא דמן רחמא יפוק : כד שויתי עננא כסותיה ואמטתא לפיפיה :
10 11 12 פסקית עלוי גזרתי ושויתי פריריא היך נגרין ודשין : ואמרית עד כא תיתי ולא תוסיף וכא תשוי בגיותנות גלליך : המן יומך פקדתא צפר ידעתא לקרצתא
13 אתריה : תא הביומי בראשית הויתא ופקדתא למהוי צפר ידעת קריץ הן אתריה : למיחד בגדפי ארעא ויטלטלון חיביא מנה : תא למיחד בסטרא
14 ארעא דישראל ואטלטלו דרא דרשיעיא מנה : טתהפכא היך טינא חותמא דילהון ואתעתדון היך כסו זהים : תא אתהפכת היך טינא חותמא דלהון
15 ואתבריאו כמו נושמהון בלא נשמתהון היך כסו סריק : ואתכסי מן רשיעיא נהורהון ואדרע מרממא תתבר :

Versio SYRIACA.

*ܐܢ ܠܫܘܠܛܢܐ ܐܘ ܠܐܪܥܐ. ܐܘ ܠܡܣܟܢܘܬܐ ܕܡܫܬܟܚܐ ܒܗ. *ܨܘܬ ܗܕܐ ܐܝܘܒ. ܘܩܘܡ ܐܬܒܩܐ ܒܬܕܡܪܬܗ ܕܐܠܗܐ. 13
*ܐܘ ܝܕܥ ܐܢܬ ܡܢܐ ܕܣܡ ܐܠܗܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܐܠܐ ܢܘܗܪܐ ܕܥܢܢܘܗܝ. *ܝܕܥ ܐܢܬ. ܡܦܩܢܐ ܕܥܢܢܐ. ܘܬܕܡܪܬܐ 14 15
ܕܠܐ ܡܘܡ ܥܡ ܝܕܥܬܐ. *ܠܒܘܫܟ ܫܚܝܢ. ܘܫܠܝܐ ܐܪܥܐ ܡܢ ܬܝܡܢܐ. *ܘܬܪܩܥ ܥܡܗ ܪܩܝܥܐ ܥܫܝܢܐ 16 17
ܠܡܬܩܡܘ ܐܟܚܕܐ. *ܘܐܘܕܥܢܝ ܡܢܐ ܐܡܪ ܠܗ. ܘܠܐ ܢܣܬܪ ܡܢ ܩܕܡ ܚܫܘܟܐ. *ܘܐܫܬܥܝ ܠܗ ܡܕܡ ܕܐܡܪ. 18 19
ܐܘ ܢܐܡܪ ܓܒܪܐ ܢܬܒܠܥ. *ܘܗܫܐ ܠܐ ܚܙܘ ܢܘܗܪܐ. ܢܗܝܪ ܗܘ ܒܥܢܢܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܪܘܚܐ ܥܒܪܬ ܘܕܟܬ ܐܢܘܢ. 20 21
*ܡܢ ܓܪܒܝܐ ܕܗܒܐ ܐܬܐ. ܘܡܢ ܐܠܗܐ ܢܘܗܪܐ. *ܚܣܝܢܐ. ܣܓܝ ܚܝܠܐ ܘܕܝܢܐ. ܘܪܒ ܟܐܢܘܬܐ ܠܐ ܢܥܢܐ. *ܡܛܠ ܗܢܐ 22 23
ܢܕܚܠܘܢܗ ܒܢܝܢܫܐ. ܘܢܙܘܥܘܢ ܡܢܗ ܟܠ ܚܟܝܡܝ ܠܒܐ. *ܩܦܠܐܘܢ *ܚܣ *ܘܥܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܐܝܘܒ 24
ܡܢ ܥܠܥܠܐ. *ܡܢܘ ܗܢܐ ܕܡܚܫܒ ܡܚܫܒܬܐ ܒܡܠܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬܐ. *ܐܣܘܪ ܗܫܐ ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܚܨܝܟ. ܐܫܐܠܟ. ܘܐܘܕܥܢܝ. 1 2
*ܐܝܟܐ ܗܘܝܬ ܟܕ ܣܡܬ ܫܬܐܣܘܗܝ ܕܐܪܥܐ. ܚܘܝ ܐܢ ܝܕܥ ܐܢܬ ܣܘܟܠܐ. *ܡܢܘ ܣܡ ܡܫܘܚܬܗ 3 4
ܐܢ ܝܕܥ ܐܢܬ. ܘܡܢܘ ܡܬܚ ܥܠܝܗ ܚܘܛܐ. *ܥܠ ܡܢܐ ܩܒܝܥܝܢ ܐܫܬܐܣܝܗ. ܐܘ ܡܢܘ ܫܕܐ ܟܐܦܐ ܒܙܘܝܬܗ. *ܟܕ 5 6
ܐܟܚܕܐ ܟܘܟܒܐ ܕܨܦܪܐ. ܘܫܒܚܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܡܠܐܟܘܗܝ. *ܘܬܪܥ ܬܪܥܝܗ ܕܝܡܐ. ܘܐܦܩ ܡܢ ܡܪܒܥܐ. ܘܢܦܩ 7 8
ܡܢ ܟܪܣܐ. *ܟܕ ܣܡܬ ܥܢܢܐ ܠܒܘܫܗ. ܘܥܪܦܠܐ ܥܛܦܗ. *ܘܣܡܬ ܥܠܘܗܝ ܚܘܩܐ. ܘܣܡܬ ܠܗ ܬܪܥܐ ܘܡܘܟܠܐ. *ܘܐܡܪܬ. 9 10
ܥܕܡܐ ܠܗܪܟܐ ܬܐܬܐ. ܘܠܐ ܬܘܣܦ. ܘܗܪܟܐ ܬܬܒܪ ܪܡܘܬܐ ܕܓܠܠܝܟ. *ܡܢ ܝܘܡܝܟ ܦܩܕܬ ܠܨܦܪܐ. ܘܚܘܝ 11 12
ܐܢܬ ܠܢܓܗܐ ܕܘܟܬܗ. *ܕܢܐܚܘܕ ܒܟܢܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܬܢܦܨܘܢ ܪܫܝܥܐ ܡܢܗ. *ܘܢܬܗܦܟ ܐܝܟ 13 14
ܛܝܢܐ ܚܬܡܗܘܢ. ܘܢܩܘܡܘܢ ܐܝܟ ܠܒܘܫܐ. *ܘܢܬܟܠܐ ܡܢ ܪܫܝܥܐ ܢܘܗܪܗܘܢ. ܘܕܪܥܐ ܪܡܐ ܢܬܬܒܪ. 15

Versio ARABICA.

* إن كان للسلاطين * أو الأرض * وإن كان للعار الذي يوجد فيها * أنصت هذا يا أيوب واسمع * وتفهم 13 14
عجائب الله * والآن تعرف الذي وضع الله عليهم * واظهر نور غيميه * أتعرف مخرج السحاب والعجائب 15 16
التي بلا عيب بالمعرفة * لبوسك سخن * وتجاور الأرض من التيمن * وتمد معه البسيط الشديد * 17 18
ليتمسك معا * أخبرني ماذا أقول له * ولا نستتر من قدام الظلمة * وأخبره الذي قال * إن قال الرجل 19 20
يؤدب * والآن لم يروا النور * مستنيرا هو في أديم السماء * والروح تجوز فتطهرهم * من الجربيا يأتي الذهب * 21 22
ومن الله نورا * قوي كثير القوة والقضاء وكثير الزاكين لا يجيب * من أجل هذا يفزعون الناس * 23 24
ويرهبون منه كل حكماء القلب *

* الفصل الثامن والثلثون *

* وأجاب الرب وقال لأيوب من الغمام * من هذا الذي يتفكر فكره بكلام بلا معرفة * اربط الآن مثل 1 2
الجبار وسطك * فإني أسألك فأخبرني * أين كنت حين كنت أثبت أواسي الأرض * أريني إن كنت تفهم 3 4
البيان * من الذي ألقى مقدارها إن كنت تعلم * ومن الذي مد عليه خيطا * وعلى ماذا أقام أقطارها * 5 6
أو من الذي ألقى حجرا في زواياها * برأ جميع كواكب الصبح * وجميع بني الملائكة طربوا * وبعر 7 8
أبواب البحر * وأطلق من الرحم وأخرج حين وضع * صنع السحاب لبوسه * والغمام ملحفته * وجعل له 9 10
عهدا * وصنع له الأبواب والأغلاق * وقلت حتى هاهنا تبلغ ولا تعود * وهاهنا تلبث بعظمة أمواجك * من 11 12
أيامك أمرت الصباح * أيما موضع الصباح * لتوجد بأقطار الدنيا * ويلقا منها المنافقون * ويرجع مثل 13 14
الطين أجسامهم * ويقومون مثل لبوس * يمنع من الخطاة نورهم * والذراع الرفيع ينكسر * 15

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

Sive fuerit principibus 13
sive terræ, sive fuerit
dedecori quod reperitur in
ipsa. Ausculta O Job, hæc, 14
& audi, & considera
miracula Dei (d) *jam verò* 15
scis quid imposuerit Deus
istis, ut revelaret lumen
oculorum ejus? Scisne 16
egressum nubium, &
miracula sine vitio cum
scientia? Vestimentum tuū 17
calefiet, & transferes
terram ex Aquilone? Et 18
extendes cum eo (e) *æquor*
solidissimum, ut simul
cohæreat? Expone mihi 19
quid dicam ei, et ne
lateamus à conspectu
tenebrarum, Et nuntiabo ei quæ 20
(f) *dicat; quæ si quis dicat*
castigabitur. Et nunc non 21
viderunt lucē: splendens
est ipsa in (g) *pelle cœli;*
& ventus transiens
purgabit eos. Ab Aquilone 22
aurum venit, & à Deo
lumen. Qui fortis est & 23
copiosus robore, &
judicio, & maximus
innocentium, non respondebit?
Propterea timeant 24
homines, & formident eum
omnes sapientes corde.

CAP. XXXVIII.

RESpondensque 1
Dominus ait Job de (a)
nubibus, Quis est iste qui 2
cogitat cogitationem suam
verbis absq; scientia? 3
Accinge modò sicut gigas
lumbos tuos, & ego
interrogabo te. Nuntia mihi,
ubi eras quando erā 4
confirmans fundamenta
terræ? Ostende mihi, si
percipis intelligentiam. Quis 5
posuit mensuram ejus, si
scis? & quis tetendit
super eam lineam, Et 6
super quo erexit fines ejus,
aut quis jecit lapidem in
angulis ejus? Creavit (b) 7
omnes stellas matutinas, et
omnes filii angelorum
lætati sunt? Et (c) aperuit 8
portas maris? & solvit
de vulva, & eduxit cùm
posuit? Fecit nubes 9
vestimentum ejus, & nebulam
(d) indumentum illius: Et 10
statuit ei pactum, et
fecit ei portas ac seras: Et 11
dixi, Huc pervenies, &
non reverteris, & hîc
manebis in magnitudine
fluctuum tuorum. A 12
diebusne tuis præcepisti
diluculo? (e) quinā est auroræ
locus? ut (f) inveniatur 13
in finibus terræ, &
ejiciantur ex eo impii, Et 14
redigantur corpora eorum
sicut lutum, & stent sicut 15
vestimentum: Cohibebitur
lumen peccatorum,
& brachium excelsum
conteretur.

INTERP. SYRIACA.

(d) Ecce scis (e) firmamentum (f) dixi; (g) firmamento *CAP. xxxviii.* (a) turbine, (b) simul stellas (c) clausit (d) fasciam (e) nôsti tu quinam (f) retineret in alis terræ,

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Sive pluviam ultionis in mare & in deserta, sive imbrem vehementem arboribus montium & collium, sive pluviam quietam misericordiæ agris *frugiferis* & vineis 13 14
suppeditaverit. Ausculta hoc Iob, sta & intellige mirabilia Dei. Nunquid scis cùm poneret Deus eis statutum, & quando illuxit *nubes pluviæ* ejus? Nunquid nôsti 15 16
inquisitiones nubium, & mirabilia perfecti scientia? Quia vestimenta tua sunt calida quando quiescit terra ab Austro. Extendisti cum eo æthera valida, quorum 17 18
aspectus sicut speculum fusile. Ostende nobis quid dicamus illi: non possumus nos componere ad eum videndum propter tenebras. Nunquid narrabitur ei quando loquar, 19 20
si locutus fuerit homo quando accusabit? Nunc autem non viderunt pluviam lucidam in nubibus, & spiritus pertransivit & emundavit eas. *Targum aliud:* Nunc 21
autem non *attendunt ad legem, facti sunt cœli splendidi ne demittant rorem &* pluviam, & spiritus pertransivit & emundavit *eos.* Ab Aquilone aurum veniet coram Deo 22
terribili majestate. *Targum aliud:* Ab Aquilone *Boreas* veniet *& splendebit mundus;* coram Deo terribili *gratias agent excelsi seculi. Omnipotens,* non 23
invenerunt te, quod tu loquereris cum excelsis seculi in multitudine virtutis & judicii, & multa *justitia* non affliget. *Targum aliud: Omnipotens, non sufficimus enarrandæ*
multitudini virtutis & judicii, & multa *justitia* non affliget. Ideò timuerunt ab eo viri: non *timebit* [*sicut*] omnes sapientes corde. *Targum aliud: Quia* timuerunt ab 24
eo viri, non videbit de *filiis ejus* sicut omnes sapientes corde.

CAP. XXXVIII.

ET respondit Dominus ad Iob de turbine doloris, & ait: Quis est iste *quasi obscurans* consilium sermonibus absque scientia? Accinge nunc sicut potens lumbos 1 2 3
tuos; & interrogabo te, tu autem ostendes mihi. Ubi eras quando jeci terræ fundamenta? indica si cognovisti intelligentiam. Quis posuit dimensiones ejus si 4 5
nôsti, aut quis extendit super eam perpendiculum? Super quo bases ejus defixæ sunt, aut quis jecit lapidem angularem ejus? In tempore quo laudant simul astra 6 7
matutina, & jubilant omnes turmæ angelorum. Et conclusit valvis mare; quando erumpit de abysso, quasi de vulva egreditur. Quando posui nubem operimentum ejus, & 8 9
caliginem fasciam ejus. Et conclusi super eo decretum meum, & posui littora quasi pessulos & *jannas.* Et dixi: Huc usque venies, & non procedes amplius; & hîc 10 11
sistes cum tumore *fluctus tuos.* Nunquid à diebus tuis præcepisti *diluculo,* aut ostendisti auroræ locum suum? *Targum aliud: Nunquid in diebus primæ creationis* 12
fuisti, & præcepisti ut esset diluculum, *cognovisti auroram ubi esset locus ejus?* Ut apprehenderet *alas* terræ, & transferantur impii ab ea. *Targum aliud:* Ut 13
apprehenderet extrema terræ *Israel,* & transferantur *generatio impiorum* ab ea. Convertitur ut lutum signaculum eorum, & stabunt sicut vestimentum sordidum. *Targum* 14
aliud: Convertitur ut lutum signaculum eorum, *& non creati sunt quasi corpus illorum absque anima sua,* sicut vestimentum *inane,* Et operietur ab impiis lux 15
justorum, & brachium *elatum* confringetur.

איוב : לט

abyssi investigatione in & , maris fletum ad usque es ingressus Nunquid
16 הֲבָאתָ עַד־נִבְכֵי־יָם וּבְחֵקֶר תְּהוֹם
portas & , mortis portæ tibi sunt detectæ Nunquid ? ambulâsti
17 הִתְהַלָּכְתָּ׃ הֲנִגְלוּ לְךָ שַׁעֲרֵי־מָוֶת וְשַׁעֲרֵי
? terræ latitudines ad usque intellexisti Nunquid ? videbis mortis umbræ
18 צַלְמָוֶת תִּרְאֶה׃ הִתְבֹּנַנְתָּ עַד־רַחֲבֵי־אָרֶץ
: lux habitabit via Ubi .ipsam totam nôsti si Indica
19 הַגֵּד אִם־יָדַעְתָּ כֻלָּהּ׃ אֵי־זֶה הַדֶּרֶךְ יִשְׁכָּן־אוֹר
: suum terminum ad eam capias Quod ? ejus locus ubi tenebræ &
20 וְחֹשֶׁךְ אֵי־זֶה מְקֹמוֹ׃ כִּי תִקָּחֶנּוּ אֶל־גְּבוּלוֹ
,esses nasciturus tunc quod Nôsti ? ejus domus semitas intelliges quia &
21 וְכִי תָבִין נְתִיבוֹת בֵּיתוֹ׃ יָדַעְתָּ כִּי־אָז תִּוָּלֵד
in es ingressus Nunquid ? multorum tuorum dierum numerum &
22 וּמִסְפַּר יָמֶיךָ רַבִּים׃ הֲבָאתָ אֶל־
retinui Quas ? videbis grandinis thesauros & ,nivis thesauros
23 אֹצְרוֹת שָׁלֶג וְאֹצְרוֹת בָּרָד תִּרְאֶה׃ אֲשֶׁר חָשַׂכְתִּי
via Qua .prœlii & conflictus diem ad ,angustiæ tempus ad
24 לְעֶת צָר לְיוֹם קְרָב וּמִלְחָמָה׃ אֵי־זֶה הַדֶּרֶךְ
divisit Quis .terram super Eurus se sparget ,lux dividitur
25 יֵחָלֶק אוֹר יָפֵץ קָדִים עֲלֵי־אָרֶץ׃ מִי־פִלַּג
? tonitruorum coruscationem ad viam & ; aquæductum inundationem ad
לַשֶּׁטֶף תְּעָלָה וְדֶרֶךְ לַחֲזִיז קֹלוֹת׃
.eo in homo non desertum : vir non terram super faciendum pluere Ad
26 לְהַמְטִיר עַל־אֶרֶץ לֹא־אִישׁ מִדְבָּר לֹא־אָדָם בּוֹ׃
egressum faciendum germinare & ; eremum & solitudinem satiandum Ad
27 לְהַשְׂבִּיעַ שֹׁאָה וּמְשֹׁאָה וּלְהַצְמִיחַ מֹצָא
stillas genuit quis vel ? pater pluviæ est Nunquid .germinis
28 דֶשֶׁא׃ הֲיֵשׁ־לַמָּטָר אָב אוֹ מִי־הוֹלִיד אֶגְלֵי־
quis cœli pruinam & , gelu est egressum cujus utero Ab ? roris
29 טָל׃ מִבֶּטֶן מִי יָצָא הַקָּרַח וּכְפֹר שָׁמַיִם מִי
voraginis facies & : seipsas abscondent aquæ lapis Sicut ? eam genuit
30 יְלָדוֹ׃ כָּאֶבֶן מַיִם יִתְחַבָּאוּ וּפְנֵי תְהוֹם
Chesil contractiones aut : Chimah delicias ligabis Nunquid .capientur
31 יִתְלַכָּדוּ׃ הַתְקַשֵּׁר מַעֲדַנּוֹת כִּימָה אוֹ־מֹשְׁכוֹת כְּסִיל
,suo tempore in cœlestia signa facies exire Nunquid ? aperire facies
32 תְּפַתֵּחַ׃ הֲתֹצִיא מַזָּרוֹת בְּעִתּוֹ
cœli statuta nôsti Nunquid ? ea duces suis filiis super Arcturum &
33 וְעַיִשׁ עַל־בָּנֶיהָ תַנְחֵם׃ הֲיָדַעְתָּ חֻקּוֹת שָׁמָיִם
nubem ad elevabis Nunquid ? terra in ejus dominium pones An
34 אִם־תָּשִׂים מִשְׁטָרוֹ בָאָרֶץ׃ הֲתָרִים לָעָב
emittes Nunquid ? te operiat aquarum redundantia & : tuam vocem
35 קוֹלֶךָ וְשִׁפְעַת־מַיִם תְּכַסֶּךָּ׃ הַתְשַׁלַּח
renibus in posuit Quis .nos Ecce ,tibi dicent & ,ibunt & ,fulgura
36 בְּרָקִים וְיֵלֵכוּ וְיֹאמְרוּ לְךָ הִנֵּנוּ׃ מִי־שָׁת בַּטֻּחוֹת
numerabit Quis ? intelligentiam contemplationi dedit quis aut ,sapientiam
37 חָכְמָה אוֹ מִי־נָתַן לַשֶּׂכְוִי בִינָה׃ מִי־יְסַפֵּר
fundendo In ? faciet quiescere quis cœlorum defluxus & ,sapientia in æthera
38 שְׁחָקִים בְּחָכְמָה וְנִבְלֵי שָׁמַיִם מִי יַשְׁכִּיב׃ בְּצֶקֶת
leoni venaberis Nunquid ? cohærerent glebæ & ,concretionem in pulverem
39 עָפָר לַמּוּצָק וּרְגָבִים יְדֻבָּקוּ׃ הֲתָצוּד לְלָבִיא
,habitaculis in se incurvant Cùm ? explebis leunculorum vitam & ,prædam
40 טֶרֶף וְחַיַּת כְּפִירִים תְּמַלֵּא׃ כִּי־יָשֹׁחוּ בַמְּעוֹנוֹת
,ejus venationem corvo parabit Quis .latibulum ipsum ad umbraculo in manent
41 יֵשְׁבוּ בַסֻּכָּה לְמוֹ־אָרֶב׃ מִי יָכִין לָעֹרֵב צֵידוֹ
? escam non ad errant ,vociferant Deum ad ejus nati quando
כִּי־יְלָדָו אֶל־אֵל יְשַׁוֵּעוּ יִתְעוּ לִבְלִי־אֹכֶל׃

CAP. XXXIX. לט

cervas parturire , petræ caprarum parere tempus nôsti Nunquid
1 הֲיָדַעְתָּ עֵת לֶדֶת יַעֲלֵי־סָלַע חֹלֵל אַיָּלוֹת
.earum parere tempus nôsti & , implebunt menses Numerabis ? observabis
2 תִּשְׁמֹר׃ תִּסְפֹּר יְרָחִים תְּמַלֶּאנָה וְיָדַעְתָּ עֵת לִדְתָּנָה׃

Versio VUL. LAT.

16 Numquid ingressus es profunda maris, & in novissimis abys-
17 si deambulâsti? Numquid apertæ sunt tibi portæ mortis, et
18 ostia tenebrosa vidisti? Numquid considerâsti latitudinem
terræ? indica mihi, si nôsti, o-
19 mnia. In qua via lux habitet,
& tenebrarum quis locus sit:
20 Ut ducas unumquodque ad terminos suos, & intelligas semi-
21 tas domûs ejus. Sciebas tunc
quòd nasciturus esses, & numerum dierum tuorum nove-
22 ras? Numquid ingressus es
thesauros nivis, aut thesauros
23 grandinis aspexisti? Quæ
præparavi in tempus hostis, in
24 diem pugnæ & belli? Per
quam viam spargitur lux, dividitur æstus super terram?
25 Quis dedit vehementissimo
imbri cursum, & viam sonan-
26 tis tonitrui, Ut plueret super
terram absque homine in deserto, ubi nullus mortalium
27 commoratur, Ut impleret inviam & desolatam, & produ-
28 ceret herbas virentes? Quis
est pluviæ pater? vel quis ge-
29 nuit stillas roris? De cujus
utero egressa est glacies? &
30 gelu de cœlo quis genuit? In
similitudinem lapidis aquæ durantur, & superficies abyssi
31 constringitur. Numquid conjungere valebis micantes stellas Pleiadas, aut gyrum Ar-
32 cturi poteris dissipare? Numquid producis Luciferum in
tempore suo, & Vesperum super filios terræ consurgere facis?
33 Numquid nôsti ordinem cœli,
& pones rationem ejus in ter-
34 ra? Numquid elevabis in nebula vocem tuam, & impetus
35 aquarum operiet te? Numquid mittes fulgura, & ibunt,
& revertentia dicent tibi; Ad-
36 sumus? Quis posuit in visceribus hominis sapientiam? vel
quis dedit gallo intelligenti-
37 am? Quis enarrabit cœlorum rationem, & concentum
cœli quis dormire faciet?
38 Quando fundebatur pulvis in
terra, & glebæ compingeban-
39 tur? Numquid capies leænæ
prædam, & animam catulo-
40 rum ejus implebis, Quando
cubant in antris, & in specu-
41 bus insidiantur? Quis præparat corvo escam suam, quando
pulli ejus clamant ad Deum,
vagantes, eò quòd non habeant cibos?

CAP. XXXIX.

1 Numquid nôsti tempus partûs ibicum in petris, vel partu-
2 rientes cervas observâsti? Dinumerâsti menses conceptûs
earum, & scîsti tempus partûs earum?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

16 † Ἦλθες δὲ ἐπὶ (ʹ) πηγὴν θαλάσσης, ἐν
17 δὲ ἴχνεσιν ἀβύσσου περιεπάτησας; † Ἀνοίγονται
δέ σοι φόβῳ πύλαι θανάτου, †
πυλωροὶ δὲ ᾅδου ἰδόντες σε ἔπτηξαν; †
18 Νενουθέτησαι δὲ τὸ εὖρος τῆς ὑπ' οὐρανόν;
† ἀνάγγειλον δή μοι, πόση (ξ) τίς
19 ἐστι; † Ποίᾳ δὲ γῇ αὐλίζεται (ο) τὸ φῶς;
20 † Σκότους δὲ (π) ποῖος ὁ τόπος; † Εἰ ἀγάγοις
με εἰς ὅρια αὐτῶν, † εἰ δὲ καὶ ἐπίστασαι
21 τρίβους αὐτῶν· † Οἶδα ἄρα ὅτι (ρ)
τότε γεγέννησαι, † ἀριθμὸς δὲ ἐτῶν σου
22 πολύς. † Ἦλθες δὲ ἐπὶ θησαυροὺς χιόνος,
† θησαυροὺς δὲ χαλάζης (σ) ἑώρακας;
23 † Ἀπόκειται δέ σοι εἰς ὥραν ἐχθρῶν, †
24 εἰς ἡμέραν (τ) πολέμων καὶ μάχης; † Πόθεν
δὲ ἐκπορεύεται πάχνη, † ἢ διασκεδάννυται
25 Νότος εἰς τὴν ὑπ' οὐρανόν; † Τίς
δὲ ἡτοίμασεν ὑετῷ λάβρῳ ῥύσιν, ὁδὸν δὲ
26 κυδοιμῶν, † Τοῦ ὑετίσαι (υ) ἐπὶ γῆν οὗ οὐκ
ἀνήρ, † ἔρημον οὗ (ʹ) οὐχ ὑπάρχει ἄνθρωπος
27 ἐν αὐτῇ, † Τοῦ χορτάσαι ἄβατον καὶ ἀοίκητον,
† καὶ τοῦ ἐκβλαστῆσαι ἔξοδον χλόης;
28 † Τίς ἐστιν ὑετοῦ πατήρ; Τίς δέ ἐστιν
29 ὁ τετοκὼς (φ) βώλους δρόσου; † Ἐκ γαστρὸς
δὲ τίνος ἐκπορεύεται (χ) ὁ κρύσταλλος;
† πάχνην δὲ ἐν οὐρανῷ τίς τέτοκεν,
30 † Ἣ καταβαίνει (ψ) ὥσπερ ὕδωρ ῥέον; †
31 πρόσωπον (ω) ἀσεβοῦς τίς ἔπτηξεν; Συνῆκας
(α) δὲ δεσμὸν Πλειάδος (β), † καὶ
32 φραγμὸν Ὠρίωνος ἤνοιξας; † Ἢ διανοίξεις
μαζουρὼθ ἐν καιρῷ αὐτοῦ, † καὶ ἕσπερον
33 ἐπὶ κόμης αὐτοῦ (γ) ἄξεις αὐτά; † Ἐπίστασαι
δὲ τροπὰς οὐρανοῦ, † ἢ τὰ ὑπ' οὐρανὸν
34 ὁμοθυμαδὸν γινόμενα; † Καλέσεις
δὲ νέφος φωνῇ, καὶ (δ) τρόμῳ ὕδατος λάβρου
35 ὑπακούσεταί σου; † Ἀποστελεῖς δὲ κεραυνοὺς
καὶ πορεύσονται; ἐροῦσι δέ σοι,
36 Τί ἐστι; † (ε) Τίς δὲ ἔδωκε γυναιξὶν ὑφάσματος
σοφίαν, † (ζ) ἢ ποικιλτικὴν ἐπιστήμην;
37 † Τίς δὲ ὁ ἀριθμῶν νέφη σοφίᾳ,
† οὐρανὸν δὲ εἰς γῆν ἔκλινε; † (η)
38 Κέχυται δὲ ὥσπερ γῆ κονία, † κεκόλληκα
39 δὲ αὐτὸν ὥσπερ λίθῳ κύβον. † Θηρεύσεις
δὲ λέουσι βοράν, † ψυχὰς δὲ δρακόντων
40 ἐμπλήσεις; † Δεδοίκασι γὰρ ἐν κοίταις
αὐτῶν, † κάθηνται δὲ ἐν ὕλαις ἐνεδρεύοντες.
41 † Τίς δὲ ἡτοίμασε κόρακι βοράν;
† (θ) νεοσσοὶ γὰρ αὐτοῦ πρὸς κύριον κεκράγασι
πλανώμενοι, τὰ σῖτα ζητοῦντες.

Aut venisti ad fontem maris, aut in vestigiis abyssi ambulasti? Aut tibi aperiuntur metu portæ mortis, aut janitores inferni videntes te timuerunt? Aut (l) cognovisti latitudinem ejus quæ sub cœlo? Narra ergò mihi, quantanam sit: Aut in qua terra (m) habitet lux, aut qui tenebrarum locus. Si duces me in fines eorum? quòd si & nosti (n) semitas eorum? (o) Novi igitur, quia tunc natus es, & numerus annorum tuorum multus. Aut venisti in thesauros nivis, aut thesauros (p) grandinis vidisti? Et reposita sunt tibi in tempus inimicorum, in diem bellorum, & pugnæ? undè autem procedit (q) pruina, aut dispergitur Auster in eam quæ sub cœlo? Quis autem (r) præparavit fluxum validæ pluviæ, & viam (s) tempestatum, ut pluat super terram, ubi non est vir, desertum, ubi non est homo in eo, ut satiet inviam, & inhabitabilem, & ut germinet exitus herbæ virentis? Quis (t) est pluviæ pater? Et quis est, qui peperit glebas roris, Et de cujus utero procedit glacies, aut pruinam in cœlo quis peperit, Quæ descendit sicut aqua fluens? Faciem (u) impii quis exterruit? Aut intellexisti (x) nexum Pleiadis, & septum Orionis aperuisti? Anaperies (y) Mazuroth in tempore suo, & vesperum super (z) comam ejus duces ea? Scis autem (aa) commutationes cœli, aut quæ sub cœlo, simul facta? Vocabis autem nubem voce, & tremore aquæ validæ obediet tibi? Mittes (bb) autem fulmina, & ibunt: aut dicent tibi, Quid (cc) est? Quis autem dedit mulieribus texturæ sapientiam, aut varietgandi scientiam? Aut quis est (dd) qui numeret nubes sapientiâ, (ee) & cœlum in terram inclinavit? (ff) Diffusus est autem, sicut terra, cinis: & agglutinavi eum, sicut lapide cubum. Aut venaberis leonibus escã, aut animas draconũ replebis? Timuerũt enim in cubilibus eorum, & sedent in (gg) sylvis insidiantes. Quis autem præparavit corvo escam? pulli enim ejus ad Dominum clamaverunt errantes, cibaria quærentes.

ΚΕΦ. λθ΄.

1 (α) Εἰ ἔγνως καιρὸν τοκετοῦ τραγελάφων πέτρας, ἐφύλαξας δὲ ὠδῖνας ἐλάφων,
2 † Ἠρίθμησας δὲ μῆνας αὐτῶν πλήρεις τοκετοῦ αὐτῶν, † ὠδῖνας δὲ αὐτῶν ἔλυσας,

CAP. XXXIX.

Si cognovisti tempus pariendi tragelaphorum (a) petræ, aut partus cervarum custodisti, Et (b) numerâsti menses earum plenos partûs earum, & dolores e[redacted] solvisti,

MS. A. (ʹ)* γῆν (ξ) ἢ τίς ἐστιν; Ἐν ποίᾳ δὲ (ο) φῶς; (π) ποῖος ἐστιν τόπος; Εἰ ἄρα ἀγάγοις (ρ) εἰς τοῦτο γεγέννησαι, (σ) ἑώρακας; Ἀπόκειται (τ) πολέμου (υ) ἐπὶ γῆς (ʹ) οὐκ (φ) Συνοχὰς καὶ βώλακας δρόσου; (χ) κρύσταλλος; (ψ) ὡς (ω) δὲ ἀσεβεῖς τίς ἔπτηξεν; (α) δεσμὸν δὲ (β) ἔγνως, ἢ φραγμὸν (γ) καὶ ἄξεις (δ) δρόμῳ (ε) Τίς ἔδωκεν γυναικὶ (ζ) καὶ ποικιλτικὴν σοφίας ἐπιστήμην; (η) Κέχυται γὰρ ὥσπερ γῆς κονία, κεκόλληκεν δὲ αὐτὸν [redacted] (θ) νεοσσοὶ δὲ πρὸς κύριον αὐτοῦ κεκράγασιν

Κεφ. λθ΄. MS. A. (α)* ἐφύλαξας δὲ ὠδῖνας ἐλάφων, Ἠρίθμησας δὲ αὐτῶν μῆνας πλήρεις τοκετοῦ, ὠδῖνας

תרגום TARGUM.

18 16 17 אפשר דעלתא עד מערבלי סנור ימא ובפשפוש תהומא הלכתא : אפשר דאתגליאו לך מעלני מותא ומעלני טולי מותא דנהנם תחמי : אתבינת עד פתיי
20 19 ארעא דגנתא דעדן חוי אין ידעתא כולדה : אידין אורחא ישרי נהורא וחשוכא הידין אתריה : ארום תדברניה לתחומיה וארום תתבין שבילי ביתיה :
23 21 22 הידעתא ארום בכן תתיליד ומנין יומיך סגיעין : אפשר דעלתא לקורטורי תלגא ואפותיקי דברדא תחמי : די גנזית תלגא לעדן עקתא בנהנם וברדא ליום
25 24 קרבא דפרעה ואנחותא דמצראי : הידין אורחא יתפליג נהורא יבדר רוח קדומא על ארעא : מן טיף לשטפא קובתא ואסרטא לענני קליא : תא מן טאף
לשטפא דתהומא חריצי מיא וקצתהון דלא לעילא ואורחא לענני דמחתין מתמן מיא בקליא : תא מן עבד שטפא למרובא דמיא ולעילא ארחא דעננא
28 26 27 דמחת מטרא בקלין : לאחתא מטרא על ארעא דלית בה גבר מדברא דלא בר נש ביה : למסבע רגושא ואתרגושתא ולמרביא מפקנות דתאה : האית
30 29 למטרא אבא או מן אוליד רסיסי טלא : מכריסא דמן נפק קרחא וגלידא דשמיא מן יליד יתיה : היך אבנא מוי קרישין ומטמרין ואפי תהומא מן קורא
33 31 32 מתאחדין : התקטור שירי כימתא או אשלי דנגדין נפלא תשרי : התפק שטרי מוליא בזמניה וזנתא על אפרחהא תדברנון : הידעתא גזירתא דשמיא
35 36 34 אין תשוי שטרי גלגליה בארעא : אפשר דתרים לעבא קלך ורכפת מיא תחפנך : אפשר דתשדר ברקין ויהכון ויימרון לך הא אנן : מן שוי בכלין חוכמתא
37 אויהב ללבא בינתא : תא לתרנגול ברא ביונתא למקלסא למריה : מן ימני שבעתי שמיא בחוכמתא וכילות שמיא מן ישרי : תא מן ימני כוכבי שמיא
39 38 בחוכמתא ועכני דמתילין לזיקיא דשמיא מן ישכיב : כד אשתאם עפרא לשתאסה ורגשתא אדבקו : התצוד לליתא מזונא ופרנסותא דאריותא תספק :
41 40 ארום שחין במדורתא יתבון במטללתא מטול לכמנא : מן יתקן לעורבא מזוניה ארום בנוי לאלהא יבעון תעין מדלית מיכלא :

לט

2 1 אפשר דידעתא עדן מילדיהון דיעלי טינרא כד מצטערין אילתא תנטור : תמני ירחיא דשלמן ותנדע עדני מלדיהון :

Verſio SYRIACA.

15 16 * ܥܠܬ ܠܥܘܡܩܘܗܝ ܕܝܡܐ. ܘܒܫܬܐܣܘܗܝ ܕܬܗܘܡܐ ܗܠܟܬ. * ܐܬܓܠܝܘ ܠܟ ܬܪܥܐ ܕܡܘܬܐ: ܘܬܪܥܐ
17 18 ܕܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ. * ܚܙܝܬ. ܘܐܣܬܟܠܬ ܦܬܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܚܘܝܢܝ ܐܢ ܝܕܥ ܐܢܬ ܒܐܝܢܐ ܐܘܪܚܐ ܥܡܪ ܢܘܗܪܐ. ܘܐܬܪܗ
19 20 ܕܚܫܘܟܐ ܐܝܟܘ. * ܐܢ ܝܕܥ ܐܢܬ ܠܬܚܘܡܗ ܘܡܫܒܝܠ ܒܝܬܗ. * ܘܐܢ ܝܕܥ ܐܢܬ ܕܗܝܕܝܢ ܐܬܝܠܕܬ. ܘܡܢܝܢܐ
21 22 ܕܝܘܡܝܟ ܐܢ ܣܓܝܐܝܢ. * ܥܠܬ ܠܐܘܨܪܐ ܕܬܠܓܐ. ܘܐܘܨܪܐ ܕܒܪܕܐ. ܚܙܝܬ ܐܢܘܢ. * ܕܢܛܝܪܝܢ ܠܥܕܢܐ ܕܐܘܠܨܢܐ.
23 24 ܘܠܝܘܡܐ ܕܟܢܘܫܝܐ ܕܩܪܒܐ. * ܐܘ ܒܐܝܢܐ ܐܘܪܚܐ ܡܬܦܠܓ ܢܘܗܪܐ. ܘܢܦܩܐ ܪܘܚܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܘܗܘܐ ܒܪܩܐ
25 26 ܘܩܠܐ. * ܠܡܚܬܘ ܡܛܪܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܠܐ ܐܢܫ. ܘܥܠ ܡܕܒܪܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܐܢܫ. * ܠܡܣܒܥܘ ܟܠ ܕܒܪܐ. ܘܠܡܦܩܘ
27 28 ܡܦܩܢܐ ܕܬܕܐܐ. * ܐܝܬ ܐܒܐ ܠܡܛܪܐ. ܐܘ ܡܢܘ ܐܘܠܕ ܢܛܦܐ ܕܛܠܐ. * ܘܓܠܝܕܐ ܡܢ ܟܪܣܐ ܕܡܢ ܢܦܩܘ.
29 30 ܘܩܫܝܐ ܕܫܡܝܐ. ܡܢܘ ܐܘܠܕ. * ܐܝܟ ܟܐܦܐ ܡܬܩܫܝܢ ܡܝܐ. ܘܐܦܝ ܬܗܘܡܐ ܐܚܕܝܢ. * ܐܢܬ ܐܝܬ ܡܩܦ
31 ܦܪܨܘܦܐ. ܐܘ ܚܙܘܐ ܕܓܢܒܪܐ ܚܙܝܬ. * ܐܘ ܬܦܩ ܥܓܠܬܐ ܒܙܒܢܗ. ܐܘ ܬܩܘܡ ܐܢܬ ܠܩܘܒܠ ܥܝܘܬܐ. * ܝܕܥ ܐܢܬ
32 33 ܢܡܘܣܐ ܕܫܡܝܐ. ܐܘ ܬܣܝܡ ܐܢܬ ܢܡܘܣܐ ܒܐܪܥܐ. * ܡܪܝܡ ܐܢܬ ܠܥܢܢܐ ܩܠܟ. ܘܡܟܣܝܬ ܐܢܬ ܒܣܘܓܐ
34 35 ܕܡܝܐ. * ܡܫܕܪ ܐܢܬ ܒܪܩܐ ܘܐܙܠܝܢ. ܘܐܡܪܝܢ ܠܟ ܗܐ ܩܝܡܝܢܢ. * ܡܢܘ ܣܡ ܚܟܡܬܐ ܒܟܣܝܐ.
36 37 ܐܘ ܡܢܘ ܝܗܒ ܚܙܘܐ ܠܒܘܝܢܐ. * ܡܢܘ ܡܢܐ ܥܢܢܐ ܒܚܟܡܬܗ. ܘܥܡܘܕܐ ܕܫܡܝܐ ܡܢܘ ܐܩܝܡ. * ܡܢܘ
38 39 ܢܫܕ ܥܦܪܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܫܘܥܐ ܡܢܘ ܐܩܝܡ. * ܡܢܘ ܝܗܒ ܠܐܪܝܐ ܡܐܟܘܠܬܐ. ܘܢܦܫܐ ܕܚܝܘܬܐ ܣܒܥ.
40 41 * ܡܢܘ ܐܣܓܝ ܚܝܘܬܐ ܒܡܕܒܪܐ. * ܘܡܢܘ ܝܗܒ ܠܥܘܪܒܐ ܡܐܟܘܠܬܗ. ܡܛܠ ܕܒܢܘܗܝ ܠܘܬ ܐܠܗܐ
1 ܓܥܝܢ ܘܡܬܢܟܦܝܢ ܡܢ ܕܠܐ ܡܐܟܘܠܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܛ * * ܝܕܥ ܐܢܬ ܙܒܢܐ ܕܝܠܕܝ
2 ܒܫܘܥܐ. ܘܡܬܛܥܢܢ ܐܝܠܐ. * ܡܢܐ ܐܢܬ ܝܪܚܐ ܕܡܫܠܡܢ. ܘܝܕܥ ܐܢܬ ܙܒܢ ܡܘܠܕܗܝܢ.

Verſio ARABICA.

16 17 * هل دخلت الى اعماق البحر * وفي اواسي القرار سلكت * ظهرت لك ابواب الموت وابواب ظلال الموت * رأيت
18 19 كل عرض الارض * خبرني ان كنت تعلم في اي طريق يحل النور * وموضع الظلمة اين هي * ان كنت
20 21 تعلم حدها وسبيل بيتها * وان كنت تعلم متى ولدت * وعدد ايامك ان كانت كثيرة * هل دخلت
22 23 الى خزاين الثلج وخزاين البرد تراات لك * التي هي محفوظة لزمان الضر * وليوم اجتماع القتال * او في
24 25 اي طريق ينقسم النور ويخرج الريح على الارض * فيكون مطرا وصوتا * لينزل مطرا على الارض بلا انسان
26 27 وفي القفر حين ليس احد * ليشبع كل سوق وليثبت خارج العشب * هل يكون ابا للمطر ومن الذي يلد
28 29 القطر * والطل والجليد من بطن من خرجوا * وصلابة السماء من الذي ولدها * مثل الحجارة تقسوا
30 31 المياه * ووجوه القرار تاخذ * هل توجه الثريا او سبيل الجبار ابصرت * هل تخرج العجلة لوقتها وتقوم
32 33 في وجه العيوق * هل تعرف ناموس السماء * او تصنع ناموسا في الارض * هل ترفع على السحاب صوتك
34 35 فتغطيها بكثرة الماء * هل ترسل البروق فتنطلق * ويقولون لك هوذا نحن قيام * من صنع الحكمة في
36 37 الخفي او من الذي اعطى النظر للبيان * من الذي احصا السحاب بحكمته واعمدة السماء من الذي
38 39 اقامها * من الذي افرغ ترابا على الارض والكهوف من الذي اوثقها * من الذي وهب للاسد ماكلة
40 41 وانفس السباع اشبع * من الذي كثر الحيوان في القفر * ومن الذي اعطى الغراب ماكلة من اجل
ان بنيه الى الله يعجون * ويصعقون اذ ليس ياكلون * الفصل التاسع والثلثون
1 2 * هل تعرف وقت ولادة الروايا في الكهوف وتحمل الايايل * اتعرف عدد الشهور وتعرف ميقات ولادها

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Numquid ingreſſus es 16
profunda maris, & per
fundamenta abyſſi ambulâſti? Apparuerúntne ti- 17
bi portæ mortis, & portæ
umbræ mortis? Vidiſtine 18
omnem terræ latitudinē?
Indica mihi ſi ſcis, in qua 19
via habitat lux, & locus
tenebrarum ubi eſt ? Si 20
ſcis terminum ejus, & viam
domûs ejus ? Et ſi 21
ſcis quando natus es, &
numerâſti dies tuos an
ſint multi ? Numquid ingreſſus 22
es theſauros nivis,
& theſauri grandinis apparuerúntne
tibi ; Qui 23
ſunt aſſervati ad tempus
tribulationis, & ad diem
congregationis belli? Aut 24
in qua via ſeparatur
lux ? & egreditur ventus
ſuper terram , Et fit (g) 25
pluvia & imber? Ut ca- 26
dat pluvia ſuper terram
abſque homine, & in deſerto
ubi nullus eſt ? ut 27
ſatientur omnes ſpinæ, &
producat germina herbæ ?
Numquid eſt pater plu- 28
viæ ? & quis gignit ſtillas ?
Et ros, & gelu ex 29
cujuſnam ventre egreſſa
ſunt ? & (h) ſoliditatem
cœli quis generavit? Qua- 30
ſi lapides dureſcunt aquæ,
& facies abyſſorum
occupant. Numquid (i) fa- 31
ciem Pleiadis, & ſemitam
gigantis intuitus es? Numquid 32
educes Plauſtrum
tempore ſuo, an temet ipſum
oppones Arcturo ?
Numquid ſcis legem cœli, 33
aut ponis legem ſuper terram ?
Numquid extolles 34
ſuper nubes vocem tuam,
& eas cooperies aquarum
copiâ? Numquid mittes 35
fulgura & abibunt, &
dicent tibi, Ecce nos ſumus
adſtantes? Quis fecit ſa- 36
pientiam in abſcondito,
aut quis dedit (k) conſideratione
intellectui? Quis 37
numeravit nubes in ſua
ſapientia, & quis erexit
columnas cœli? Quis fu- 38
dit pulverem ſuper terram,
& rupes quis firmavit ?
Quis dedit leoni 39
eſcam, te ferarum animas
ſaturavit ? Quis multi- 40
plicavit animalia in de-
ſerto? Et quis dedit corvo 41
cibum ſuum ? quia filii
ejus ad Deum ejulant, &
infirmantur cùm non
edunt.

CAP. XXXIX.

Numquid ſcis quando 1
parturiunt ibices in
rupibus, & concipiunt
cervæ ? Scisne numerum 2
menſium, & ſcis tempora
partûs earum?

INTERP. SYRIACA.

(g) fulgur & tonitruum ? (h) cœruleum cœli colorem quis (i) conjunges faciem (k) perſpicacitatem

PARAPH. CHALD. Verſio Latina,

Nunquid ingreſſus es ad *perplexa clauſuræ maris*, & in ſcrutatione abyſſi deambulâſti ? Nunquid poſſunt aperiri tibi portæ mortis, & introitus umbræ mortis gehennæ 16 17
conſpicies ? Nunquid intellexiſti uſque ad latitudinem terræ paradiſi voluptatis ? indica ſi noſti hæc univerſa. Qua via lux habitat, & caliginis quis eſt locus? Ut 18 19
ducas eum ad terminum ſuum, & ut intelligas ſemitas domus ejus. *Num* ſciebas quod tunc naſciturus eſſes, & numerum dierum tuorum multorum ? Nunquid introiſti 20 21
in cellaria nivis, & apothecas grandinis aſpexiſti? Quam nivem reſervavi in tempora tribulationis in gehenna, & grandinem in diem belli *Pharaonis* & pugnæ 22 23
Ægyptiorū. Per quā viam *diſpertitur* lux, diſpergit ſe ventus Orientalis ſuper terrā? Quis *fluere fecit inundationem in ciſternam* & viam nubibus *ſonoris*? *Targū aliud:* 24 25
Quis *fecit ut flueret inundatio* abyſſi [*in*] ciſternas aquarū *et partē earū quæ non eſt ſuprà*; & viam nubibus quæ dejiciunt *inde* aquas cum tonitruis? *Targum aliud:* Quis
fecit inundationem in canalem aquarum quæ deſuper viā *nubis, quæ dejicit pluviam* cum tonitruis. Ut diſtillent pluviā ſuper terrā in qua non eſt vir, [*& in*] deſertum in quo 26
non eſt filius hominis ? Ut ſatiet tumultu & ſtrepitu, & ut germinare faciat productionem graminis. Nunquid eſt pluviæ pater, aut quis genuit ſtillas roris? De cujus 27 28
ventre egreſſa eſt glacies, & gelu cœli quis genuit illud ? Sicut lapis, aquæ congelantur & occultantur: & facies abyſſi propter frigus conſtringuntur. Nunquid ligabis 29 30
catenis Oriona, & funes qui trahunt Arcturum ſolves ? Nunquid produces conſtellationes planetarum in tempore ſuo, & *gallinam* ſuper *pullos* ſuos duces ? Nunquid 31 32
noſti ſtatuta cœlorum, aut pones rationem revolutionis ejus ſuper terram ? Nunquid elevabis ad nubem vocem tuam, & multitudo aquarum operiet te? Nunquid mittes 33 34
fulgura, & ibunt, & dicent tibi, Ecce adſumus ? Quis poſuit in renibus ſapientiam, aut quis dedit *cordi* intelligentiam ? *Targum aliud*: Gallo *ſylveſtri* intelligentiam, 35 36
ut laudaret dominum ſuum ? Quis numerabit *ſeptem cœlos* in ſapientia, & *menſuras cœlorum* quis *conſtituet* ? *Targum aliud*: Quis numerabit ſtellas cœli 37
in ſapientia, & nubes cœli quæ comparantur *utribus*, quis collocavit? Quando poſita eſt terra in fundamento, & glebæ compactæ ſunt. Nunquid venaberis leænæ cibum, 38 39
& eſcam leonibus ſuppeditabis ? Quando inclinant ſe in habitaculis, habitant in umbraculis ut inſidientur. Quis præparavit corvo eſcam ſuam, quando filii ejus 40 41
ad Deum vociferantur, errantes eo quod non habeant cibum ?

CAP. XXXIX.

Nunquid noſti tempus partûs ibicum rupium ; aut quando parturiunt cervæ obſervabis ? Numerabis menſes quos perficiunt, & ſcies tempus partus earum ? 1 2

איוב : לט

Convaleſcunt .emittent ſuos dolores : effringent ſuos fœtus ,ſe Incurvabunt
3 4 תִּכְרַעְנָה יַלְדֵיהֶן תְּפַלַּחְנָה חֶבְלֵיהֶם תְּשַׁלַּחְנָה׃ יַחְלְמוּ
.eas ad revertuntur nõ & egrediũtur : frumento in ſe multiplicant ,earũ filii
בְנֵיהֶם יִרְבּוּ בַבָּר יָצְאוּ וְלֹא־שָׁבוּ לָמוֹ׃
? ſolvit quis onagri vincula & , liberum onagrum dimiſit Quis
5 מִי־שִׁלַּח פֶּרֶא חָפְשִׁי וּמֹסְרוֹת עָרוֹד מִי פִתֵּחַ׃
.ſalſuginem ejus habitacula & , ejus domum ſolitudinem poſui Cujus
6 אֲשֶׁר־שַׂמְתִּי עֲרָבָה בֵיתוֹ וּמִשְׁכְּנוֹתָיו מְלֵחָה׃
Exploratio .audiet non exactoris fremitus : civitatis turbam Deridebit
7 8 יִשְׂחַק לַהֲמוֹן קִרְיָה תְּשֻׁאוֹת נוֹגֵשׂ לֹא יִשְׁמָע׃ יְתוּר
volet Nunquid .perquiret virens omne poſtea &,ejus paſcuum montium
9 הָרִים מִרְעֵהוּ וְאַחַר כָּל־יָרוֹק יִדְרוֹשׁ׃ הֲיֹאבֶה
? tuum præſepe ſuper pernoctabit An ? tibi ſervire rhinoceros
רֵּים עָבְדֶךָ אִם־יָלִין עַל־אֲבוּסֶךָ׃
valles agricolabit An ? ſuo fune ,ſulco in rhinocerotẽ ligabis Nunquid
10 הֲתִקְשָׁר־רֵים בְּתֶלֶם עֲבֹתוֹ אִם־יְשַׂדֵּד עֲמָקִים
: ejus robur multum quia , eo in confides Nunquid ? te poſt
11 אַחֲרֶיךָ׃ הֲתִבְטַח־בּוֹ כִּי־רַב כֹּחוֹ
quod eo in credes Nunquid ? tuum laborem eum ad derelinquas &
12 וְתַעֲזֹב אֵלָיו יְגִיעֶךָ׃ הֲתַאֲמִין בּוֹ כִּי־
exultantium Ala ? congreget tuam aream & , tuum ſemen reddat
13 יָשִׁיב זַרְעֶךָ וְגָרְנְךָ יֶאֱסֹף׃ כְּנַף־רְנָנִים
derelinquet Quia ? pluma & ciconia penna An .læta
14 נֶעֱלָסָה אִם־אֶבְרָה חֲסִידָה וְנֹצָה׃ כִּי־תַעֲזֹב
obliviſcitur Et .ea calefaciet pulverem ſuper & , ſua ova terra in
15 לָאָרֶץ בֵּצֶיהָ וְעַל־עָפָר תְּחַמֵּם׃ וַתִּשְׁכַּח
tractat Duriter .ea conculcet agri beſtia & : ea diſpergat pes quod
16 כִּי־רֶגֶל תְּזוּרֶהָ וְחַיַּת הַשָּׂדֶה תְּדוּשֶׁהָ׃ הִקְשִׁיחַ
Quoniam .pavore abſque ejus labor vanum in : ſibi non ,ſuos filios
17 בָּנֶיהָ לְּלֹא־לָהּ לְרִיק יְגִיעָהּ בְּלִי־פָחַד׃ כִּי־
.intelligentiã ei eſt impartitus non & ,ſapientiam Deus eã fecit obliviſci
הִשָּׁהּ אֱלוֹהַּ חָכְמָה וְלֹא־חָלַק לָהּ בַּבִּינָה׃
.ej° aſcenſorẽ & ,equum deridebit ,ſe elevaverit altum in tempus Juxta
18 כָּעֵת בַּמָּרוֹם תַּמְרִיא תִּשְׂחַק לַסּוּס וּלְרֹכְבוֹ׃
ej° collum indues Nunquid ? fortitudinẽ equo præbebis Nunquid
19 הֲתִתֵּן לַסּוּס גְּבוּרָה הֲתַלְבִּישׁ צַוָּארוֹ
ejus naſi Decor ? locuſtam ſicut eum terrebis Nunquid ? tonitru
20 רַעְמָה׃ הֲתַרְעִישֶׁנּוּ כָּאַרְבֶּה הוֹד נַחְרוֹ
egredietur : fortitudine in gaudebit & , valle in Effodient .terror
21 אֵימָה׃ יַחְפְּרוּ בָעֵמֶק וְיָשִׂישׂ בְּכֹחַ יֵצֵא
revertetur nec , conſternabitur nõ &,pavorẽ Deridebit .armaturæ occurſum in
22 לִקְרַאת־נָשֶׁק׃ יִשְׂחַק לְפַחַד וְלֹא יֵחָת וְלֹא־יָשׁוּב
.haſtæ & ,lanceæ lamma : pharetra ſtridebit eum Super .gladii faciebus à
23 מִפְּנֵי־חָרֶב׃ עָלָיו תִּרְנֶה אַשְׁפָּה לַהַב חֲנִית וְכִידוֹן׃
.buccinæ vox quòd credet non & ; terram effodiet ira & , impetu Cum
24 בְּרַעַשׁ וְרֹגֶז יְגַמֶּא־אָרֶץ וְלֹא־יַאֲמִין כִּי־קוֹל שׁוֹפָר׃
, bellum odorabitur longe à & , euge dicet buccinæ ſufficientia In
25 בְּדֵי שֹׁפָר יֹאמַר הֶאָח וּמֵרָחוֹק יָרִיחַ מִלְחָמָה
tuã intelligentiã propter Nunquid .clamorem & ,principum ſtrepitum
26 רַעַם שָׂרִים וּתְרוּעָה׃ הֲמִבִּינָתְךָ
tuum os ad An ? Auſtrum ad ſuas alas extendet ; niſus volabit
27 יַאֲבֶר־נֵץ יִפְרֹשׂ כְּנָפָו לְתֵימָן׃ אִם־עַל־פִּיךָ
,habitabit Petram ? ſuum nidum elevabit quòd & : aquila elevabitur
28 יַגְבִּיהַּ נָשֶׁר וְכִי יָרִים קִנּוֹ׃ סֶלַע יִשְׁכֹּן
, eſcam fodit Indè .munitionem & , petræ dentẽ ſuper morabitur &
29 וְיִתְלֹנָן עַל־שֶׁן־סֶלַע וּמְצוּדָה׃ מִשָּׁם חָפַר־אֹכֶל
abſorbebunt ejus pulli Et .aſpicient ejus oculi longinquum in
30 לְמֵרָחוֹק עֵינָיו יַבִּיטוּ׃ וְאֶפְרֹחוֹ יְעַלְעוּ־
Dominus reſpondit Et .ipſe ibi , occiſi quo in & , ſanguinem
31 דָם וּבַאֲשֶׁר חֲלָלִים שָׁם הוּא׃ וַיַּעַן יְהוָה
? eruditio omnipotente cum contendere Nunquid : dixit & , Ijob
32 אֶת־אִיּוֹב וַיֹּאמַר׃ הֲרֹב עִם־שַׁדַּי יִסּוֹר
.ei reſpondeat , Deum Arguens
מוֹכִיחַ אֱלוֹהַּ יַעֲנֶנָּה׃

Verſio VUL. LAT.

3 Incurvantur ad fœtum, & pa-
4 riunt, & rugitus emittunt. Se-
parantur filii earum, & per-
gunt ad paſtum: egrediuntur, et
5 non revertuntur ad eas. Quis
dimiſit onagrum liberum, &
6 vincula ejus quis ſolvit? Cui
dedi in ſolitudine domum, &
tabernacula ejus in terra ſalſu-
7 ginis. Contemnit multitudi-
nem civitatis, clamorem ex-
8 actoris non audit. Circum-
ſpicit montes paſcuæ ſuæ, &
virentia quæque perquirit.
9 Numquid volet rhinoceros
ſervire tibi, aut morabitur ad
10 præſepe tuum? Numquid al-
ligabis rhinocerota ad aran-
dum loro tuo? aut confringet
11 glebas vallium poſt te? Num-
quid fiduciam habebis in ma-
gna fortitudine ejus, & dere-
12 linques ei labores tuos? Num-
quid credes illi quòd ſemen-
tem reddat tibi, & aream tuam
13 congreget? Penna ſtruthio-
nis ſimilis eſt pennis herodii,
14 & accipitris. Quando dere-
linquit ova ſua in terra, tu for-
ſitan in pulvere calefacies ea?
15 Obliviſcitur quòd pes concul-
cet ea, aut beſtia agri conte-
16 rat. Duratur ad filios ſuos
quaſi non ſint ſui, fruſtrà la-
boravit nullo timore cogente.
17 Privavit enim eam Deus ſapi-
entiâ, nec dedit illi intelligen-
18 tiam. Cùm tempus fuerit, in
altum alas erigit: deridet e-
19 quum & aſcenſorẽ ejus. Num-
quid præbebis equo fortitudi-
nem, aut circumdabis collo e-
10 jus hinnitum? Numquid ſuſci-
tabis eum quaſi locuſtas? glo-
21 ria narium ejus terror. Terrã
ungulâ fodit, exultat audacter:
in occurſum pergit armatis.
22 Contemnit pavorem, nec cedit
23 gladio. Super ipſum ſonabit
pharetra, vibrabit haſta & cly-
24 peus. Fervens & fremens ſor-
bet terram, nec reputat tubæ
25 ſonare clangorem. Ubi audie-
rit buccinam, dicit; Vah, pro-
cul odoratur bellũ, exhortatio-
nem ducum, & ululatum exer-
26 citûs. Numquid per ſapien-
tiam tuam plumeſcit accipiter,
expandens alas ſuas ad Auſtrũ?
27 Numquid ad præceptum tuum
elevabitur aquila, & in arduis
28 ponet nidum ſuum? In petris
manet, & in præruptis ſilicibus
commoratur, atque inacceſſis
29 rupibus. Indè contemplatur
eſcam, & de longè oculi ejus
30 proſpiciunt. Pulli ejus lam-
bent ſanguinem: & ubicumq;
cadaver fuerit, ſtatim adeſt.
31 Et adjecit Dominus, & locu-
32 tus eſt ad Job; Numquid qui
contendit cum Deo, tam facilè
conquieſcit? utique qui arguit
Deum, debet reſpondere ei.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 † Ἐξέθρεψας δὲ αὐτῶν τὰ παιδία (β) ἔ-
ξω φόβου, † ὠδῖνας δὲ αὐτῶν ἐξαποστελεῖς,
4 † Ἀποῤῥήξουσι τὰ τέκνα αὐτῶν, † πλη-
θυνθήσονται ἐν γεννήματι· † ἐξελεύσονται, καὶ
5 οὐ μὴ ἀνακάμψουσιν (¨) αὐτοῖς. † Τίς δέ ἐστιν
ὁ ἀφεὶς ὄνον ἄγριον ἐλεύθερον; † δεσμοὺς
6 δὲ αὐτοῦ τίς ἔλυσεν; † Ἐθέμην δὲ (γ) τὴν
δίαιταν αὐτοῦ ἔρημον, † καὶ τὰ σκηνώματα
7 αὐτοῦ ἁλμυρίδα. † Καταγελῶν πολυο-
χλίας πόλεως, † μέμψιν δὲ φορολόγου οὐκ
8 ἀκούων, † Κατασκέψεται ὄρη νομὴν αὐτοῦ, †
9 καὶ ὀπίσω παντὸς χλωροῦ (δ) ζητεῖ. † Βου-
λήσεται δέ σοι (ε) μονόκερως δουλεῦσαι, †
10 ἢ κοιμηθῆναι ἐπὶ φάτνης σου; † Δήσεις
δὲ (ζ) ἐν ἱμᾶσι ζυγὸν αὐτοῦ, † ἢ ἑλκύσει (¨) σου
11 αὔλακας ἐν πεδίῳ; † Πέποιθας δὲ ἐπ'
αὐτῷ, ὅτι πολλὴ ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ, † (η) ἐπαφή-
12 σεις δὲ αὐτῷ τὰ ἔργα σου; † Πιστεύσεις
δὲ (θ), ὅτι ἀποδώσει σοι τὸν σπόρον, † (ι) εἰσοί-
13 σει δέ σου τὸν ἅλωνα; † Πτέρυξ τερπομέ-
νων (κ) νεέλασσα, † ἐὰν συλλάβῃ ἀσίδα
14 καὶ (λ) νέσσα· † Ὅτι ἀφήσει εἰς γῆν τὰ (¨) ὠὰ
15 αὐτῆς, † καὶ ἐπὶ χοῦν θάλψει, † Καὶ ἐπε-
λάθετο, ὅτι ποὺς σκορπιεῖ, † καὶ θηρία ἀ-
16 γροῦ καταπατήσει. † Ἀπεσκλήρυνε τὰ τέ-
κνα (μ) ἑαυτῆς, ὥστε μὴ ἑαυτήν· † εἰς κε-
17 νὸν ἐκοπίασεν ἄνευ φόβου. † Ὅτι κατεσι-
ώπησεν αὐτῇ ὁ θεὸς σοφίαν, † καὶ οὐκ (ν)
18 ἐπεμέρισεν αὐτῇ ἐν τῇ συνέσει. † (ξ) Κα-
τὰ καιρὸν ἐν ὕψει ὑψώσει, † καταγελάσεται
19 ἵππου, καὶ τοῦ ἐπιβάτου αὐτοῦ. † Ἦ σὺ περιέθηκας
ἵππῳ δύναμιν, † (ο) ἐνέδυσας δὲ τραχήλῳ
20 αὐτοῦ φόβον; † Περιέθηκας δὲ αὐτῷ παν-
οπλίαν; † (π) δόξαν δὲ στηθέων αὐτοῦ
21 τόλμῃ; † Ἀνορύσσων ἐν πεδίῳ γαυριᾷ, ἐκ-
22 πορεύεται δὲ εἰς πεδίον ἐν ἰσχύϊ. † Συναν-
τῶν (ρ) βασιλεῖ καταγελᾷ, † καὶ (¨) οὐ μὴ ἀπο-
23 στραφῇ (σ) ἀπὸ σιδήρου. † Ἐπ' αὐτοῦ γαυριᾷ
24 τόξον καὶ (τ) μάχαιρα, † Καὶ ὀργῇ ἀφα-
νιεῖ τὴν γῆν, † καὶ οὐ μὴ (¨) πιστεύσῃ, ἕως
25 ἂν (υ) σημάνῃ σάλπιγξ. † Σάλπιγγος
δὲ σημαινούσης, (φ) λέγει, Εὖγε· † πόῤῥωθεν
δὲ ὀσφραίνεται πολέμου † (χ) σὺν ἅλματι
26 καὶ κραυγῇ. † Ἐκ δὲ τῆς σῆς ἐπιστήμης ἕ-
στηκεν ἱέραξ, † ἀναπετάσας τὰς πτέρυγας,
ἀκίνητος, καθορῶν τὰ πρὸς Νότον; †
27 (ψ) Ἐπὶ δὲ σῷ προστάγματι ὑψοῦται ἀε-
τός, † γὺψ δὲ ἐπὶ νοσσιᾶς αὐτοῦ καθ-
28 εσθεὶς αὐλίζεται, † Ἐπ' ἐξοχῇ πέτρας, καὶ
29 ἀποκρύφῳ: † Ἐκεῖσε ὢν ζητεῖ τὰ σῖτα,
(ω) πόῤῥωθεν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ σκοπεύ-
30 ουσι. † Νεοσσοὶ δὲ αὐτοῦ φύρονται ἐν αἵματι,
† (α) οὗ δ' ἂν ὦσι τεθνεῶτες, παραχρῆμα
31 εὑρίσκονται. † Καὶ ἀπεκρίθη κύριος ὁ θεὸς
32 τῷ Ἰώβ, καὶ εἶπε, Μὴ κρίσιν μετὰ ἱκανοῦ
ἐκκλινεῖ; (β) ἐλέγχων δὲ θεόν, ἀποκρι-
θήσεται αὐτήν.

Et (c) nutriſti hinnulos earum 3
ſine metu, & partus earum
(d) emittes, (e) Abrumpent 4
filios ſuos, multiplicabuntur in
(f) germine: exibunt & non
revertentur (g) eis. Quis 5
autem eſt, qui dimiſit ona-
grum liberum, & vincula
ejus quis reſolvit? Poſui 6
enim habitationem ejus (h) de-
ſertum, & tabernacula ejus
ſalſuginem: Irridens multas 7
turbas civitatis, & querelam
(i) exactoris non audiens.
Conſiderabit montes paſcuam 8
ſuam, & poſt omne viride
quærit. Volet autem (k) Mo- 9
noceros ſervire tibi? aut dor-
mire ſuper præſepe tuum? Et 10
alligabis in loris jugum ejus,
aut ducet ſulcos tuos in
(l) campo? Confidis autem in 11
eo, quia multa eſt virtus ejus,
& dimittis ei opera tua?
Et credes, quia reddet tibi 12
ſementem, & in aream tuam
inferet? Penna (m) lætan- 13
tium Neelaſſa, ſi conceperit
(n) Aſida, & Niſſa, Quòd 14
relinquet in terra ova ſua, &
in pulvere calefaciet: Et ob- 15
lita eſt, quia pes diſperdet, &
beſtiæ agri conculcabunt:
(o) Obduravit filios ſuos, ut 16
non ſeipſam: fruſtrà laboravit
ſine timore: Quia tacere fecit 17
ei Deus ſapientiam, & non
(p) partitus eſt ei in intellectu.
Cum fuerit tempus, in altum 18
exaltabit: irridebit equum, &
aſcenſorem ejus. An tu cir- 19
cundediſti equo virtutem, &
induiſti collum ejus (q) timore?
Et circumpoſuiſti ei armaturam, 20
& (r) gloriam pectorum ejus
audacia? Fodiens in campo 21
luxuriat, & procedit in
(ſ) campum in virtute. Oc- 22
currens (t) regi deridet, nec
ſe avertet à ferro: Super 23
ipſum gaudet arcus, & gladius,
Et (u) iracundia evertet ter- 24
ram: nec credet, donec ſigni-
ficaverit tuba: Cùm autem tu- 25
ba ſignificaverit, dicit: Euge.
Et procul odoratur pugnam
(x) cum ſaltu, & clamore.
Ex tua (y) verò ſcientia ſtetit 26
accipiter, expanſis pennis, im-
mobilis, reſpiciens quæ ad
Auſtrum? Atque tuo præ- 27
cepto exaltatur aquila? aut
vultur ſuper nidum ſuum
ſedens moratur, In ſummitate 28
petræ, & (z) abſcondito? Cùm 29
ibi fuerit, quærit eſcas: longè
oculi ejus ſpeculantur, Et 30
pulli ejus (aa) conſperguntur
in ſanguine: ubicunque autem
fuerint cadavera, confeſtim re-
periuntur. Et reſpondit Do- 31
minus Deus ad Job, & dixit; Nunquid judicium cum Omni-
potente (bb) declinat? & arguens Deum reſpondebit.

MS.A. (β) ἀντὶ φόβου, ἢ ἔγνως καιρὸν τοκετοῦ τραγελάφων πέτρας, ὠδῖνας (¨) ἑαυταῖς. (γ) αὐτοῦ τὴν δίαιταν (δ) ζητήσει. (ε) ἀτράπηλος
*μονόκερως (ζ) αὐτοῦ ἐν ἱμᾶσιν ζυγόν, (¨) σοι (η) καὶ ἐπαφήσεις αὐτῷ (θ) αὐτῷ, ὅτι (ι) καὶ εἰσοίσει σου τὴν ἅλωνα; (κ) νεέλασα, (λ) νέεσσα ἐλάλησε, Ὅτι (¨) *ὠτι*
(μ) αὐτ, (ν) ἐμέρισεν αὐτῇ ὁ θεὸς ἐν τῇ συνέσει. (ξ) καταχαίρων (ο) καὶ ἐνέδυσας (π) καὶ δόξῃ στηθέων αὐτοῦ τόλμῃ; (ρ) βέλει (¨) οὐ μὴ (σ) σιδήρου. Ἐπ'
*αὐτῷ (τ) ὀξυθηγὴς μάχαιρα, (¨) πιστεύσῃ (υ) *σημανεῖ σάλπιγξ. (φ) ἐρεῖ, (χ) καὶ σὺν ἅλματι καὶ κραυγῇ ἐκπορεύεται. (ψ) Ἢ ἐπὶ τῷ σῷ (ω) πόῤῥωθεν δ'*
οἱ (α) οὐδὲ ἐὰν ὦσιν (β) ἐλέγχων θεόν,

תרגום TARGUM.

שטן בניהון מתפלחן צעריהון משדרין : מתחילן בניהון יסגון בעבורא יפקון ולא תיבין להון : מן פטר מרודא בר חורי ושושלי ערדא מן שרי : די
שויתי משרא ביתיה ומשכנוי ארעא צדיא : יגחך לרגוש קריתא אתרגושתא דרדיא לא ישמע : יאלל טוריא מרעיה ובתר כל ירוקא יבעי : אפשר דיצבי
רימנא למפלחך אין יבית על ארותך : אפשר דתקטור רימנא בתלמא באשליה אין ישדד גלמתא בתרך : אפשר דתתרחיץ ביה ארום סגי חיליה ותשבוק
ליה לעותך : אפשר דתהימן ביה ארום יתיב זרעך ואדרך יכנוש : גדפא דתרנגול ברא דמשבחא ומקלסא אין אברא דחוריתא ונוציצתא : ארום
שבוק לארעא ביעהא ועל ארעא תחמם : ושליא ארום רגלא תבדרנה וחיות ברא תדושנה : שתקא על בניא דלא דילה לריקנותא לעותה מדלית
דחלא : ארום אנשייה אלהא חוכמתא ולא פליג לה בביונתא : בעדן במרומא טיסא מתחכא לסוסא ולרכביה : האפשר דתתן לסוסא גבורתא אפשר
דתלביש צוריה תוקפא : התרגשניה היך גובי שבהור בחילא יתחרון : מחפרין בגלימא ויחדי בחילא יפוק לקדמות קרבא : ויחדי לדלוחא
ולא יתבר ולא יתוב מקדם סיפא : עלוי תשדיי זינא חרבא שננא מורניתא ורומחא : ברגוז ורגוא יעבד גומתא בארעא ולא יהימן ארום קל שופרא
משכת שופרא יימר הדוא ומן רחיק יריח קרבא אכליותא דרברבי ויבבא : אפשר דמביונתך יתאבר בר נצא פרש גדפוי לדרומא : אין על מימרך יתגבה
נשרא וארום ירים קנייה : כיפא ישרי ויבית על כיף טינר ומצדתא : תמן חפר מיכלא למרחיק עינוי מסתכלן : ואפרוחוי ימעון אדמא ובאתר דקטילין
תמן הוא : ואתיב ייי ית איוב ואמר : אפשר דנצי עם שדי יתרדי מכסן אלהא יתיבניה :

Verſio SYRIACA.

3 *ܘܐܡܬܝ ܓܗܢ ܘܝܠܕܢ. *ܘܡܪܒܝܢ ܒܢܝܗܝܢ ܘܡܚܣܠܢ ܠܗܘܢ. *ܡܢܘ ܫܒܩ ܥܪܕܐ ܒܪ ܚܐܪܘܬܐ. ܘܦܫܪ
4 5 ܥܡܗ ܢܝܪܐ. *ܕܣܡ ܒܡܕܒܪܐ ܒܝܬܗ. ܘܒܐܬܪܐ ܡܠܝܚܐ ܡܫܪܝܬܗ. *ܓܚܟ ܥܠ ܣܘܓܐܐ ܕܩܘܪܝܐ. ܘܠܐ ܫܡܥ
6 7 ܩܠܐ ܕܫܠܝܛܢܐ. *ܘܣܘܓܐܐ ܕܛܘܪܐ ܡܪܥܝܬܗ. ܘܒܬܪ ܟܠ ܝܘܪܩܐ ܕܪܫ. *ܕܠܡܐ ܡܫܬܥܒܕ ܠܟ ܪܝܡܐ ܕܢܦܠܚܟ.
8 9 ܐܘ ܕܠܡܐ ܥܠ ܐܘܪܝܐ ܕܝܠܟ ܒܐܬ. *ܕܠܡܐ ܐܣܪ ܐܢܬ ܢܝܪܐ ܥܠ ܨܘܪܗ ܪܝܡܐ. ܐܘ ܕܒܪ ܢܝܪ ܬܘܪܐ ܒܐܬܪܐ ܚܣܢܐ. *ܕܠܡܐ ܬܬܟܠ
10 11 ܐܢܬ ܥܠܘܗܝ ܕܣܓܝ ܚܝܠܗ. ܘܫܒܩ ܐܢܬ ܠܗ ܥܡܠܟ. *ܘܡܗܝܡܢ ܐܢܬ ܠܗ ܕܢܕܪܐ ܐܕܪܟ. ܘܐܪܥܘ
12 13 ܙܪܥܟ. *ܓܦܐ ܕܢܥܡܐ ܡܫܬܒܗܪܐ ܘܦܪܚܐ. ܘܐܬܝܐ ܘܡܩܢܢܐ. *ܘܫܒܩܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܒܢܝܗ ܘܥܠ ܥܦܪܐ
14 15 ܡܫܚܢܐ ܠܗܘܢ. *ܘܡܛܥܝܐ ܐܢܘܢ ܕܪܓܠܐ ܕܦܪܚܬܐ ܩܕܫܢ ܠܗܘܢ. ܘܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܕܝܫܐ ܠܗܘܢ. *ܡܣܓܝܐ
16 17 ܒܢܝܐ ܕܠܐ ܗܘܘ ܕܝܠܗ. ܘܫܪܝܩܐܝܬ ܠܐܝܐ ܕܠܐ ܕܚܠܬܐ. *ܡܛܠ ܕܐܣܓܝ ܐܠܗܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܠܐ ܦܠܓ ܠܗ ܣܘܟܠܐ. *ܒܥܕܢܐ
18 19 ܕܒܪܘܡܐ ܡܬܬܪܝܡܐ. ܓܚܟܐ ܥܠ ܣܘܣܝܐ ܘܥܠ ܪܟܒܗ. *ܕܠܡܐ ܝܗܒ ܐܢܬ ܠܣܘܣܝܐ ܓܢܒܪܘܬܐ. ܐܘ ܠܒܫ
20 21 ܐܢܬ ܨܘܪܗ ܙܝܢܐ. *ܕܠܡܐ ܡܙܝܥ ܐܢܬ ܠܗ ܐܝܟ ܩܡܨܐ. ܐܘ ܡܙܝܥ ܐܢܬ ܠܗ ܒܕܚܠܬܐ. *ܫܒܚܐ ܕܢܚܝܪܘܗܝ ܕܚܠܬܐ. ܘܚܦܪ
22 23 ܒܥܘܡܩܐ. ܘܚܕܐ ܒܚܝܠܗ. ܢܦܩ ܠܐܘܪܚܐ ܥܡ ܙܝܢܐ. *ܘܓܚܟ ܥܠ ܬܗܘܡܐ ܘܠܐ ܕܚܠ. ܘܠܐ ܗܦܟ ܡܢ ܩܕܡ ܣܝܦܐ. *ܥܠܘܗܝ
24 25 ܡܫܬܒܚ ܬܪܣܐ. ܘܫܠܗܒܝܬܐ ܕܪܘܡܚܐ ܘܕܢܝܙܟܐ. *ܒܪܘܓܙܐ ܘܒܚܡܬܐ ܪܗܛ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܕܚܠ ܡܢ
26 27 ܩܠܐ ܕܫܝܦܘܪܐ. *ܒܩܠܐ ܐܡܪ ܢܛܘܪ. ܘܡܢ ܪܘܚܩܐ ܡܪܝܚ ܩܪܒܐ. ܘܪܫܐ ܕܪܘܪܒܢܐ ܒܨܗܠܗ. *ܕܠܡܐ
28 29 ܡܛܠ ܚܟܡܬܟ ܗܘܐ ܕܢܦܪܘܣ ܢܨܐ ܓܦܘܗܝ ܠܬܝܡܢܐ. *ܐܘ ܡܛܠ ܡܠܬ ܦܘܡܟ ܡܬܪܝܡ ܢܫܪܐ. ܘܡܥܠܐ ܩܢܗ ܒܫܘܥܐ. *ܘܥܡܪ ܘܒܐܬ ܥܠ ܫܢܐ ܕܟܐܦܐ. *ܘܡܢ ܨܝܕܗ ܡܬܬܙܝܢ. ܘܠܡܪܚܘܩ
30 31 ܥܝܢܘܗܝ ܚܙܝܢ. *ܘܦܪܘܓܘܗܝ ܡܠܚܟܝܢ ܕܡܐ. ܘܐܝܟܐ ܕܡܬܩܛܠܝܢ ܬܡܢ ܗܘ. *ܘܥܢܐ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪ ܠܐܝܘܒ. *ܣܓܝܐܝܢ
32 ܡܚܫܒܬܗ ܕܐܠܗܐ. ܘܡܢ ܕܡܟܘܣ ܠܐܠܗܐ. ܢܬܠ ܦܬܓܡܐ.

Verſio ARABICA.

3 4 5 * ومتي يبركن ويلدن * ويربون اولادهن ويفطمونها * من الذي ترك حمار الوحش احرارا وافلت منه النير *
6 7 * الذي جعل في الصحراء بيته * وفي المكان المالح محلته * يضحك علي كثرة القري * ولا يخاف
8 9 من صوت السلاطين * في كثرة الجبال مرعاه * وعلي كل خضرة يدوس * العل يطيعك اليحمور ان
10 11 يفلحك * او لعله علي اريك يبيت * العلك تربط نيرا علي عنق اليحمور * او تسوق فدانا مكانا صعبا *
12 13 * وتتكل عليه انه كثير القوة * وتترك عليه تعبك * وتثق به انه ينقي اندرك ويجمل زرعك * كنفي
14 15 النعام يرتفع ويطير * ويأتي ويعشش * ويترك علي الارض بناتها وعلي الارض تسخنهم * وتنسيت من اجل
16 ان ارجل الطير لها * وحيوانة الارض تدوسها * اكثرت بنين مما ليس لها * وباطلا تعبت بلا مخافة *
17 18 * من اجل ان الله اكثر الحكمة * ولم يقسم لها فهما * في العلو ترتفع مثل النخلة * وتضحك علي الفرس
19 20 وعلي راكبه * هل تعطي الفرس جبروت وتلبس عنقه سلاحا * هل تحركه مثل الجراد او تخوفه بالمخافة *
21 22 * يحفر بالعمق ويفرح بالوادي * يخرج الي الطريق بالسلاح * يضحك علي الغور ولا يخاف ولا يرجع من
23 24 وجه السيف * يحمل الترس ولهيب الرمح والنيزك * بالرهبة والزجر يعدو علي الارض * ولا يخاف صوت البوق *
25 26 * بصوت يقول احييني * ومن بعيد يستروح القتال * ويفرح الكثير بصهيله * امن حكمتك كان الفص
27 28 فبسط جناحيه الي التيمن * علي كلمة فمك يرتفع النسر ويرفع وكره في الكهف * ويسكن ويبيت علي
29 30 حرف الكهف * ومن صيدك يتعيش * وعلي البعد تنظر عيناه * وفراخه تلعق الدما * وحيث ما قتل
31 32 قتيلا هنالك هو * اجاب الرب وقال لايوب * كثيرة هي فكر الله والذي يبكت الله يعطي الجواب *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

Et quando incurvantur, et 3
pariunt, Et educant filios 4
ſuos, & ablactant eos?
Quis dimiſit onagrum liberum, 5
& ſolvit cum jugo? Qui ſtatuit in ſolitudine 6
domum ſuam, &
in loco ſalſo habitaculum
ſuum: Subſannat multitudinem 7
oppidorum, nec
timet vocem principum.
In multitudine montium 8
paſcua ejus, & ſuper virentia
quæque calcat. An 9
forte ſubdit ſe tibi (a) rhinoceros,
ut colat te? an forte
ad præſepe tuum cubat?
Num forte ligabis jugum 10
ſuper collo (b) rhinocerotis? an duces jugū boū in
loco aſpero, Et fiduciam 11
habebis in eo? quia eſt multæ
fortitudinis, & relinques
ſuper illud laborem
tuum? Illique confides 12
ut purget aream tuam, &
congreget ſemina tua?
Struthio extollitur et volat, 13
& veniens nidificat,
Et relinquit ſuper terram 14
filias ſuas, & ſuper terra
calefacit eas, Et oblivioni 15
tradit, quia pedes volucris
habet; & beſtiæ terræ
conculcant eas: Multiplicat 16
filios non ſuos, &
fruſtra laborat ſine metu:
Quoniam Deus multiplicavit 17
ſapientiam, & non
impertivit ei prudentiam,
Ad excelſa erigitur ſicut 18
palma, & deridet equum
& aſcenſorem. Numquid 19
das equo fortitudinem, et
induis collum ejus armis?
Numquid moves eū velut 20
locuſtas, aut terres
eum metu? Fodit in 21
profundo, & lætatur in
valle: egreditur ad viam
cum armis: Et deridet 22
abyſſum, nec timet, nec
recedit à facie gladii:
(c) Portat clypeum, & 23
flammam ſagittæ & ſpiculi.
Cum terrore & furore 24
currit ſuper terram,
nec formidat vocem tubæ.
Voce dicit, Serva 25
me: et procul odorat bellum,
& terret (d) multitudinem
hinnitu ſuo.
Numquid per ſapientiam 26
tuam factum eſt ut accipiter
extenderet alas ſuas
ad Auſtrum? Numquid 27
ob oris tui verbum
elevatur aquila, & extollit
nidum ſuum in rupibus?
Et habitat & 28
moratur ſuper (e) extremitates
rupis, Et de ſuo 29
venatu nutritur, & ad
longinquum intuentur oculi
ejus, Et pulli ejus 30
lambunt ſanguinem, &
ubicunque committitur
cædes, ibi adeſt? Reſpondit 31
Dominus, & dixit
ad Job, Multa (f) 32
eſt cogitatio Dei; & qui
arguit Deum, det reſponſum.

INTERP. SYRIACA.

(a) unicornis, (b) unicornis? (c) Super eu laudatur pharetra, et lamina haſtæ (d) principes hinnitu (e) promontorium rupis, (f) ſunt concilia Dei:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Incurvant ſe filii earum, dilacerantur, dolores ſuos emittunt. Confortantur filii earum, creſcunt frumento, egrediuntur & non revertuntur ad eas. Quis dimiſit feram 3 4 5
liberam, & catenas onagri quis diſſolvit? Cujus domum poſui in planitie, & tabernacula ejus in terra deſerta. Ridebit ad tumultum civitatis, & clamorem exactoris 6 7 8
non audiet. Explorabit montes pro paſtu ſuo, & poſt omne viride perquiret. Nunquid volet rhinoceros ſervire tibi; aut manebit ad præſepe tuum? Nunquid alligabis 9 10
rhinocerotem in ſulco fune ſuo, aut proſcindet colles poſt te? Nunquid confidis in eo quoniam magna eſt fortitudo ejus, & relinques ei laborem tuum? Nunquid concredes 11 12
ei ut reddat ſementem tuam, & aream tuam congreget? Ala galli *ſylveſtris* qui cantat & exultat, ſic eſt ala ciconiæ & accipitris. Quoniam relinquit in terra ova 13 14
ſua, & ſuper terram fovet *ea.* Et obliviſcitur quod pes diſpergat ea, & beſtia agri conculcet ea. Calefit ſuper filios qui non ſunt ſui: in vanum laborat abſque timore. 15 16
Quia fecit Deus ut oblivisceretur ſapientiæ, & non dedit illi partem intelligentiæ. In tempore quo in altum volat, deridet equum & aſcenſorem ejus. Nunquid dabis 17 18
equo fortitudinem, aut indues collum ejus furore? Nunquid commovebis eum ſicut locuſtam: ſplendor freni naris ejus terror. Fodit in valle & exultat in fortitudine, 19 20
egreditur ad occurſum *belli*. Gaudet ad pavorem & non conteritur, & non revertitur à facie gladii. Super eum mittuntur arma, gladius acutus, & haſta & lancea. 21 22
In fremitu & in furore facit foveam in terra, & non credit quòd ſit vox tubæ. In abundantia tubæ dicit Euge, & à longè odoratur bellum, clamorem principum 23 24
& ululationem. Nunquid propter intelligentiam tuam filius accipitris plumeſcet, expandet alas ſuas ad Auſtrum? Nunquid propter verbum *tuum* elevabitur aquila, 25 26
& exaltabit nidum ſuum? In rupibus habitabit, & morabitur in munitione ſilicis & arcis. Inde explorat eſcam: de longè oculi ejus aſpiciunt. Et pulli ejus abſorbent 27 28
ſanguinem, & in loco ubi occiſi ſunt, ibi eſt. Et reſpondit Dominus Job & ait: Nunquid qui contendit cum omnipotente, erudietur: qui arguit Deum, 29 30
reſpondebit ei. 31 32

איוב : מ

,ſum contemptibilis Ecce : dixit & ,Domino Ijob reſpondit Et
33 34 ויען איוב את־יהוה ויאמר: הן קלתי
Semel .meo ori ipſi poſui meam Manum ?tibi reſpondebo quid
35 מה אשיבך ידי שמתי למו־פי: אחת
.addam non & ,bis Et .reſpondebo non & ,ſum locutus
דברתי ולא אענה ושתים ולא אוסיף:

CAP. XL. מ

nunc Accinge : dixit & ,turbine de Ijob Dominus reſpondit Et
1 2 ויען יהוה את־איוב מן סערה ויאמר: אזר־נא
etiam Nunquid .me fac ſcire & ,te interrogabo : tuos lumbos vir ſicut
3 כגבר חלציך אשאלך והודיעני: האף
ſi Et ?juſtificeris ut ,me facies impium ,meum judicium diſſipabis
4 תפר משפטי תרשיעני למען תצדק: ואם
nunc te Orna ?tonabis ipſe ſicut voce in & ?tibi Deo ſicut brachium
5 זרוע כאל־לך ובקול כמהו תרעם: עדה־נא
Diſperge .te indues decorem & ,gloriam & : ſublimitate & ,celſitudine
6 גאון וגבה והוד והדר תלבש: הפץ
Vide .eum humilia & ,ſuperbum omnem vide & ,tui naſi iras
7 עברות אפך וראה כל־גאה והשפילהו: ראה
.ſe ſub impios contere & : eum fac incurvare ,ſuperbum omnem
כל־גאה הכניעהו והדך רשעים תחתם:
.abſcondito in alliga eorum facies :ſimul pulvere in eos Abſconde
8 טמנם בעפר יחד פניהם חבש בטמון:
.tua dextera te ſervet quod ,tibi confitebor ego etiam Et
9 וגם־אני אודך כי־תושע לך ימינך:
bos veluti herbam ,tecum feci quem Behemoth nunc Ecce
10 הנה־נא בהמות אשר־עשיתי עמך חציר כבקר
ejus fortitudo & ,ejus lumbis in ejus potentia nunc Ecce .comedet
11 יאכל: הנה־נא כחו במתניו ואונו
nervi cedrus ſicut ,ſuam caudam [illegible] .ejus ventris umbilico in
12 בשרירי בטנו: יחפץ זנבו כמו־ארז גידי
virgæ ſicut ejus oſſa æris fiſtulæ ejus Oſſa .erunt ramificati ejus veretrorum
13 פחדו ישרגו: עצמיו אפיקי נחשה גרמיו כמטיל
applicabit ,eum faciens Dei viarum principium Ipſe .ferrea
14 ברזל: הוא ראשית דרכי־אל העשו יגש
beſtia omnis & ,ei afferent montes germen Quia .ſuum gladium
15 חרבו: כי־בול הרים ישאו־לו וכל־חית
lutulis in ,ſecreto in arboribus umbriferis Sub .ibi ludent agri
16 השדה ישחקו־שם: תחת־צאלים ישכב בסתר
.ejus umbra ,umbriferæ arbores eum Tegent .cœno & calami
17 קנה ובצה: יסכהו צאלים צללו
: feſtinabit non ;flumen comprimet Ecce .torrentis ſalices eum Circundabunt
18 יסבהו ערבי־נחל: הן יעשק נהר לא יחפוז
: eum tollet ſuis oculis In .ſuum os ad Jarden educet quod confidet
19 יבטח כי־יגיח ירדן אל־פיהו: בעיניו יקחנו
,hamo in Leviathan Extrahes .naſum perforabit laqueis in
20 במוקשים ינקב־אף: תמשך לויתן בחכה
,ejus naſo in juncum pones Nunquid ?ejus linguam demerges fune in &
21 ובחבל תשקיע לשנו: התשים אגמן באפו
te ad multiplicabit Nunquid ?ejus maxillam perforabis ſpina in &
22 ובחוח תקב לחיו: הירבה אליך
fœdus ſcindet Nunquid ?mollia te ad loquetur An ?preces
23 תחנונים אם־ידבר אליך רכות: היכרת ברית
eo cum ludes Nunquid ?ſeculi ſervum in eum accipies ,tecum
24 עמך תקחנו לעבד עולם: התשחק־בו
: ſocii eum ſuper Cœnabunt ?tuis puellis eum ligabis & ,ave ſicut
25 כצפור ותקשרנו לנערותיך: יכרו עליו חברים
umbraculis in replebis Nunquid ?negotiatores inter eum dimidiabunt
26 יחצוהו בין כנענים: התמלא בשכות
.tuam volam eum ſuper Pone ?ejus caput piſcium naſſella in & ,ejus pellem
27 עורו ובצלצל דגים ראשו: שים־עליו כפך
.eſt mentita ejus ſpes Ecce .addas ne ,belli Memento
28 זכר מלחמה אל־תוסף: הן־תחלתו נכזבה
?deturbabitur ejus aſpectus ad ,etiam Nonne
הגם אל־מראיו יטל:

Verſio VULG. LAT.

33 Reſpondens autem Job Dño, 34 dixit; Qui leviter locutus ſum, reſpondere quid poſſum? manum meam ponam ſuper os 35 meum? Unum locutus ſum, quod utinam non dixiſſem; & alterum, quib⁹ ultrà non addã.

CAP. XL.

1 RẺſpondens autẽ Dñs Job 2 de turbine, dixit; Accinge ſicut vir lumbos tuos: interro- 3 gabo te, & indica mihi. Numquid irritũ facies judiciũ meũ: & condemnabis me, ut tu ju- 4 ſtificeris? Et ſi habes brachiũ ſicut Deus, & ſi voce ſimili to- 5 nas? Circumda tibi decorem, & in ſublime erigere, & eſto glorioſus, & ſpecioſis induere 6 veſtibus. Diſperge ſuperbos in furore tuo, & reſpiciens omnem arrogantem humilia. 7 Reſpice cunctos ſuperbos, & confunde eos, & contere im- 8 pios in loco ſuo. Abſconde eos in pulvere ſimul, & facies 9 eorum demerge in foveam. Et ego confitebor quod ſalvare 10 te poſſit dextera tua. Ecce, Behemoth, quem feci tecũ, fœnũ 11 quaſi bos comedet: Fortitudo ejus in lumbis ej⁹, & virtus illius in umbilico ventris ejus. 12 Stringit caudam ſuã quaſi cedrum, nervi teſticulorum ejus 13 perplexi ſunt. Oſſa ejus velut fiſtulæ æris, cartilago illi⁹ quaſi 14 laminæ ferreæ. Ipſe eſt principium viarum Dei, qui fecit eũ, 15 applicabit gladiũ ejus. Huic montes herbas ferunt: omnes 16 beſtiæ agri ludent ibi. Sub umbra dormit in ſecreto calami, et 17 in locis humentib⁹. Protegunt umbræ umbrã ejus, circumda- 18 bunt eũ ſalices torrentis. Ecce, abſorbebit fluviũ, & non mirabitur: & habet fiduciã quòd 19 influat Jordanis in os ejus. In oculis ejus quaſi hamo capiet eum, & in ſudibus perforabit 20 nares ejus. An extrahere poteris Leviathan hamo, & fune 21 ligabis linguã ejus? Numquid pones circulũ in naribus ejus, aut armilla perforabis maxil- 22 lam ejus? Numquid multiplicabit ad te preces, aut loque- 23 tur tibi mollia? Numquid feriet tecũ pactũ, & accipies eũ 24 ſervum ſempiternum? Numquid illudes ei quaſi avi, aut ligabis eum ancillis tuis? 25 Concident eum amici, divi- 26 dent illũ negotiatores? Numquid implebis ſagenas pelle ejus, & gurguſtium piſcium ca- 27 pite illius? Pone ſuper eum manum tuam: memento belli, nec ultrà addas loqui. 28 Ecce, ſpes ejus fruſtrabitur eum, & videntibus cunctis præcipitabitur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

33 † Ὑπολαβὼν δὲ Ἰὼβ (γ) λέγει τῷ κυρίῳ, 34 † Τί ἔτι ἐγὼ κρίνομαι, νουθετούμενος καὶ (δ) ἐλέγχων κύριον, † ἀκούων τοιαῦτα (ε) οὐθὲν ὤν; † ἐγὼ δὲ τίνα ἀπόκρισιν δῶ πρὸς ταῦτα; † χεῖρα θήσω ἐπὶ στόματί μου. 35 † Ἅπαξ (ζ) λελάληκα, ἐπὶ δὲ τῷ δευτέρῳ οὐ προσθήσω.

MS.A. (γ) εἶπεν τῷ (δ) ἐλεγχόμενος ὑπὸ κυρίου, (ε) μηδὲν ὢν ἐγώ; ἀπόκρισιν δὲ τίνα δῶ πρὸς ταῦτα; (ζ) ἐλάλησα,

ΚΕΦ. μʹ.

1 † ἜΤι δὲ ὑπολαβὼν ὁ κύριος, εἶπε τῷ 2 Ἰὼβ (α) ἐκ τοῦ νέφους, † Μὴ, ἀλλὰ ζῶσαι ὥσπερ ἀνὴρ τὴν ὀσφύν σου, † ἐρωτήσω δέ σε, 3 σὺ δέ μοι (β) ἀπόκριναι. † Μὴ ἀποποιοῦ μου τὸ κρίμα, † (γ) οἴει δέ με ἄλλως σοι κεχρηματικέναι, (δ) ἢ ἵνα ἀναφανῇς δί- 4 καιος; † Ἢ βραχίων σοί ἐστι (ε) κατὰ τοῦ κυρίου, † ἢ φωνῇ (ζ) κατ' αὐτοῦ βροντᾷς; 5 † Ἀνάλαβε (η) δὴ ὕψος καὶ δύναμιν, † δό- 6 ξαν δὲ καὶ τιμὴν ἀμφίασαι. † Ἀπόστειλον δὲ ἀγγέλους (θ) ὀργῇ, † πάντα δὲ ὑβριστὴν 7 ταπείνωσον. † Ὑπερήφανον δὲ σβέσον, † σῆ- 8 ψον δὲ ἀσεβεῖς παραχρῆμα. † Κρύψον (ι) δὲ εἰς γῆν ὁμοθυμαδὸν, τὰ δὲ πρόσωπα αὐ- 9 τῶν ἀτιμίας ἔμπλησον. † Ὁμολογήσω (κ) 10 ὅτι δύναται ἡ δεξιά σου σῶσαι. † (λ) Ἀλλὰ δὴ ἰδοὺ θηρία παρὰ σοὶ, χόρτον ἴσα 11 βουσὶν ἐσθίουσιν. † Ἰδοὺ δὴ ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ (μ) ἐπ' ὀσφύϊ, † ἡ δὲ δύναμις αὐτοῦ ἐπ' 12 ὀμφαλοῦ (ν) γαστρός. Ἔστησεν (ξ) οὐρὰν ὡς κυπάρισσον, † τὰ δὲ νεῦρα (ο) αὐτοῦ συμπέ- 13 πλεκται. † Αἱ πλευραὶ αὐτοῦ, (π) πλευραὶ χάλκειαι, † ἡ δὲ ῥάχις αὐτοῦ (ρ) σίδηρος 14 χυτός. † Τοῦτ' ἔστιν ἀρχὴ πλάσματος κυρίου· † πεποιημένον (σ) ἐγκαταπαίζεσθαι 15 ὑπὸ τῶν ἀγγέλων αὐτοῦ. † Ἐπελθὼν δὲ ἐπ' ὄρος ἀκρότομον, † ἐποίησε χαρμονὴν τε- 16 τράποσιν ἐν τῷ ταρτάρῳ. † Ὑπὸ παντοδαπὰ δένδρα κοιμᾶται, † (τ) παρὰ πά- 17 πυρον καὶ κάλαμον καὶ βούτομον. † Σκιάζονται (υ) δὲ ἐν αὐτῷ δένδρα μεγάλα † σὺν 18 (*) ῥαδάμνοις, καὶ κλῶνες (φ) ἀγροῦ. † Ἐὰν γένηται πλημμύρα, οὐ μὴ (χ) αἰσθηθῇ· † πέποιθεν, ὅτι προσκρούσει ὁ Ἰορδάνης εἰς τὸ 19 στόμα αὐτοῦ. † Ἐν τῷ ὀφθαλμῷ αὐτοῦ δέξεται αὐτὸν, † ἐνσκολιευόμενος τρήσει 20 ῥῖνα (ψ). † Ἄξεις δὲ δράκοντα ἐν ἀγκίστρῳ, † περιθήσεις δὲ φορβαίαν περὶ ῥῖνα αὐτοῦ; 21 (ω) Ἢ δήσεις κρίκον ἐν τῷ μυκτῆρι αὐτοῦ, † ψελλίῳ δὲ τρυπήσεις τὸ χεῖλος αὐτοῦ; 22 † Λαλήσει δέ σοι (α) δεήσει, ἱκετηρίᾳ μα- 23 λακῶς; † Θήσεται δὲ μετὰ σοῦ διαθήκην; 24 † λήψῃ δὲ αὐτὸν δοῦλον αἰώνιον; † (β) Παίξῃ δὲ ἐν αὐτῷ ὥσπερ ὀρνέῳ; † (γ) ἢ δή- 25 σεις αὐτὸν ὥσπερ στρουθίον παιδίῳ; † Ἐνσιτοῦνται (δ) δὲ ἐν αὐτῷ ἔθνη, † (ε) μερί- 26 ζονται δὲ αὐτὸν Φοινίκων ἔθνη; † Πᾶν δὲ πλωτὸν συνελθὸν οὐ μὴ (ζ) ἐνέγκωσι βύρσαν μίαν οὐρᾶς αὐτοῦ, † καὶ ἐν πλοίοις ἁλιέων 27 κεφαλὴν αὐτοῦ. † Ἐπιθήσεις (*) δὲ αὐτῷ χεῖρα, μνησθεὶς (η) πόλεμον τὸν γινόμενον ἐν σώματι αὐτοῦ· † καὶ μηκέτι γινέσθω.

Reſpondens autem Job dicit Domino; Quid adhuc (ε) ego judicor, commonitus, & arguens Dominum, audiens talia, cum nihil ſim? Ego verò quod reſponſum dabo ad hæc? manum ponam ad os meum. Semel locutus ſum; & iterum non adjiciam.

CAP. XL.

Adhuc autem reſpondens Dominus, dixit ad Job de nube; Nequaquam: ſed accinge, ſicut vir, lumbum tuum: interrogabo autem te, & tu mihi reſponde: (a) Ne rejicias judicium meum: Putas autem me aliter tibi [illegible] diſſe, quàm ut (b) appareas juſtus? Numquid brachium tibi eſt contra Dominum, aut voce (c) contra eum tonas? Aſſume nunc altitudinem, & virtutem; gloriam verò & honorem induere. Mitte autem angelos irâ, & omnem contumelioſum humilia. Et ſuperbum extingue, & deſtrue impios ſtatim. Abſconde autem in terra ſimul, & facies eorum imple ignominia. Confitebor quod poſſit dextera tua ſalvare. Verum tamen ecce beſtiæ apud te: fœnum ſicut boves comedunt. Ecce utique (e) fortitudo ejus in lumbo, & virtus ejus ſuper umbilico ventris. Erexit caudam ſicut (f) cupreſſum, & nervi ejus complicati ſunt. Coſtæ ejus, coſtæ æneæ, & ſpina ejus (g) ferrum fuſile. Hoc eſt (h) principium formationis Domini, factum, ut (i) illuderetur ab angelis ejus. Adveniens autem ad montem præcipitium, fecit lætitiam quadrupedibus in tartaro. Sub omnigenis arboribus dormit juxta papyrum, & calamum, & carectum. Obumbrant autem in eo arbores magnæ cum (k) ramis, et ſarmenta (l) agri. Si fuerit inundatio, non (m) ſentiet: confidit, quia ſubibit Jordanis in os ejus. In oculo ſuo capiet eum: (n) intortus forabit naſum. Duces autem (o) draconem in hamo, & circumpones capiſtrum circa naſum ejus? Aut ligabis circulum in naribus ejus, & (p) armillâ terebrabis labium ejus? Loquetur autem tibi (q) preces, ſupplicatione molliter. Ponet autem tecum teſtamentum? accipies autem eum ſervum ſempiternum? Ludes autem in eo, ſicut avi? aut ligabis eum, ſicut paſſerem puero? Paſcuntur autem in eo gentes. (r) Partiuntur autem eum gentes Phœnicum? Omne (ſ) navigans conveniens non ferent pellem unam caudæ ejus: & (t) in navigiis piſcatorum caput ejus. Impones autem ei manum, (u) recordatus belli, quod fit in corpore ejus: & non (x) ultrà fiat.

MS.A. (α) διὰ τοῦ νέφους, (β) ἀποκρίθητι. (γ) μηδὲ οἴου με (δ) ἀλλ' ἵνα δίκαιος ἀναφανῇς; Εἰ βραχίων (ε) κατὰ κύριον, (ζ) βροντῆς κατ' αὐτοῦ *βροντᾷ ἴσα, (η) δὲ εἰς ὕψος δύναμιν, δόξαν καὶ (θ) ἐν ὀργῇ σου, (ι) δὲ αὐτοὺς εἰς γῆν ἔξω ὁμοθυμαδὸν, (κ) ἄρα ὅτι δύναταί σου ἡ δεξιὰ σῶσαι. (λ) Ἀλλ' ἰδοὺ παρὰ σοὶ θηρία, ἴσα βουσὶν χόρτον ἐσθίει. (μ) ἐπὶ ὀσφύος αὐτοῦ, (ν) γαστρὸς αὐτοῦ. (ξ) οὐρὰν αὐτοῦ ὥσπερ (ο) αὐτοῦ ὥσπερ σχοινία συμπέπλεκται. (π) ὡς πέδαι χαλκαῖ, (ρ) ὡς σίδηρος χυτός. Τοῦτ' ἐστιν (σ) εἰς τὸ ἐγκαταπαίζεσθαι (τ) παρὰ κάλαμον καὶ πάπυρον καὶ (υ) δὲ αὐτῷ (*) *ῥαδάμνοις. (φ) ἀγρου. (χ) [illegible] (ψ) αὐτοῦ. (ω) Καὶ εἰλήσεις κλοιὸν ἐν τῷ μυκτῆρι αὐτοῦ, ψελίῳ (α) δεήσεις καὶ ἱκετηρίας (β) Καὶ ἐμπαίξεις αὐτῷ (γ) δήσεις δὲ (δ) δὲ αὐτὸν ἔθνη, (ε) καὶ μεριτεύονται αὐτὸν Φοινίκων γένη; Πᾶν (ζ) ἐνέγκῃ μίαν βύρσαν (*) δὲ ἐπ' αὐτῷ (η) πολέμου τοῦ γινομένου ἐν τῷ σώματι αὐτοῦ.

תרגום TARGUM.

33 34 35 אתיב איוב ית יי ואמר: הא איתקלית מה אתיבנך אידי שויתי לפומי: חדא ומנא מלילית ולא אתיב ותנינתא ולא אוסיף:

מ

1 2 3 אתיב יי ית איוב מן עלעולא דעלעולא ואמר: זרז כדון היך גברא חרציך אשאלנך ותהודעינני: הברם תשני דיני תחייבנני מן בגלל דתזכי: ואין
4 5 6 אדרע היך אלהא לך ובקל דכמתיה תכלי: אתקן כדון גיותנותא וגבהא זיוא ושבהורא תלבש: בדר רוגיתא דנחיריך וחמי כל גיותן
7 8 9 ומכניעיה: חמי כל גיותן ותברניה ודעיק חייביא באתריהון: טמינון בעפרא כחדא אפיהון כבוש בטומעא: ולחוד אנא אודינך ארום תפרוק
10 11 לך ימינך: הא כדון בעירא די עבדית עמך עסבא היך תורי ייכול: הא כדון לוותן דחיליה בחרצוי ותוקפיה בפרת דכריסיה: כבש
12 13 דנביה היך כארזא ותנינא דפחדוי משבשין: אברוי תקיפין היך פצידי נחשא גרמוי היך מטלנא דפרזלא: הוא שירוא אורחתיה דאלהא
14 15 16 17 עבדיה יקרב סיפיה: ארום עלוי טוריא יסוברון ליה וכל חיות ברא יגחכון תמן: תחות טלליא יגני בטמיר קנא ועיקא: יטללוניה
18 19 20 טלליא נניה יחזורוניה ערבין דנחל: הא שלים נהרא ולא אתבהל יתרחץ ארום נגיד ירדנא לפומיה: בעינוי יסבניה בתוקליא ינקוב נחיריה: הנגיד
21 22 לויתן בחכתא ובאשלא תקדה לישניה: אפשר דתשוי אנקלא בנחירוהי ובסלוא תנקוב ליסתיה: אפשר דיסגי לוותך בעותין אין ימלל לותך רכיכן:
23 24 25 אפשר דיגזר קיים עמך תיסבניה לעבד פלח לעלם: אפשר דתגחך ביה היך צפרא ותקטרניה לטליתך: יעבדון עלוי חבריא שירותא יפלגוניה
26 27 28 בין תגריא: אפשר דתמלא במטלתא משכיה ובנגונא דנוניא רישיה: שוי עלוי אידך אדכר קרבא לא תוסיף: הא אוריתיה מכזבא הברם
למחמי יתיה:

Verſio SYRIACA.

33 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ ܠܡܪܝܐ. * ܙܥܪܬ ܡܢ ܡܢܐ ܐܦܢܐ. ܐܝܕܝ ܣܡܬ ܥܠ ܦܘܡܝ. * ܚܕܐ ܡܠܠܬ ܘܠܐ ܐܬܢܐ
34 ܦܬܓܡܐ. ܘܬܪܬܝܢ ܠܐ ܡܘܣܦ ܐܢܐ ܠܡܡܠܠܘ.
35 * ܩܦܠܐܘܢ * ܡ * * ܘܥܢܐ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪ ܠܐܝܘܒ
1 ܡܢ ܥܠܥܠܐ. * ܐܣܘܪ ܗܫܐ ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܚܨܝܟ. ܐܫܐܠܟ ܘܗܘܕܥܝܢܝ. * ܐܢ ܗܘ ܕܡܒܛܠ ܐܢܬ ܠܝ ܘܡܚܝܒ
2 ܐܢܬ ܠܝ ܘܡܙܕܕܩ ܐܢܬ. * ܐܝܬ ܠܟ ܕܪܥܐ ܐܝܟ ܕܐܝܬ ܠܐܠܗܐ. ܐܘ ܒܩܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܗ ܪܥܡ ܐܢܬ. * ܠܒܫ ܗܫܐ ܐܝܩܪܐ ܘܥܘܫܢܐ.
3 ܘܐܬܥܛܦ ܢܘܗܪܐ ܘܙܠܝܩܐ. * ܘܐܥܒܪ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܟ. ܘܚܙܝ ܟܠ ܪܡܐ ܘܡܟܟܝܗܝ. * ܘܐܪܡܐ ܚܛܝܐ ܒܕܘܟܝܬܗܘܢ.
* ܘܛܡܘܪ ܐܢܘܢ ܒܥܦܪܐ ܐܟܚܕܐ. ܘܐܦܝܗܘܢ ܚܒܘܫ ܒܥܦܪܐ. * ܘܐܦ ܐܢܐ ܐܫܒܚܟ. ܡܐ ܕܦܪܩܬܟ ܝܡܝܢܟ.
* ܗܐ ܒܗܡܘܬ ܕܥܒܕܬ ܥܡܟ. ܥܣܒܐ ܐܝܟ ܬܘܪܐ ܐܟܠ. * ܘܪܒܘܬܗ ܒܓܒܘܗܝ. * ܙܩܦ ܕܘܢܒܗ ܐܝܟ ܐܪܙܐ.
ܘܐܬܩܫܝܘ ܓܝܕܐ ܕܥܛܡܬܗ. * ܓܪܡܘܗܝ ܪܘܪܒܝܢ ܐܝܟ ܢܚܫܐ. ܘܐܝܟ ܦܪܙܠܐ. * ܗܘ ܪܫ ܕܪܟܘܗܝ ܕܐܠܗܐ.
ܕܥܒܕܗ ܕܢܥܒܕ ܩܪܒܐ. * ܘܛܘܪܐ ܣܓܝܐܐ ܛܥܝܢ ܠܗ. ܘܟܠܗ ܚܝܘܬ ܕܒܪܐ ܫܪܝܢ ܬܚܝܬ ܛܠܠܗ.
* ܘܒܛܠܠܐ ܕܩܢܝܐ ܪܒܥ. * ܡܛܠܠ ܥܠܘܗܝ ܛܠܠܐ. ܘܡܚܕܪܝܢ ܠܗ ܥܘܪܒܐ ܕܢܚܠܐ.
* ܐܢ ܢܬܦܩ ܢܗܪܐ ܠܐ ܕܚܠ. ܘܬܟܝܠ ܕܢܫܦܟ ܝܘܪܕܢܢ ܒܦܘܡܗ. * ܒܥܢܢܘܗܝ ܢܐܚܕܝܘܗܝ. ܘܒܡܨܝܕܬܗ
ܡܬܐܚܕ. * ܬܢܝܢܐ ܬܐܚܘܕ ܒܡܨܝܕܬܐ. ܘܒܚܒܠܐ ܬܐܚܘܕ ܠܫܢܗ. * ܐܘ ܬܣܝܡ ܙܡܡܐ ܒܦܘܡܗ.
ܘܬܢܩܘܒ ܦܟܘܗܝ ܒܪܗܛܗ. * ܢܣܓܐ ܒܥܘܬܐ ܠܘܬܟ. ܐܘ ܢܡܠܠ ܥܡܟ ܒܢܝܚܘܬܐ. * ܢܩܝܡ ܥܡܟ ܩܝܡܐ.
ܐܘ ܬܕܒܪܝܘܗܝ ܠܥܒܕܐ ܠܥܠܡ. * ܬܓܚܟ ܒܗ ܐܝܟ ܒܨܦܪܐ. ܘܬܢܛܪܝܘܗܝ ܠܝܘܡܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟ. * ܢܬܟܢܫܘܢ
ܥܠܘܗܝ ܚܒܪܐ. ܘܢܦܠܓܘܢܗ ܒܝܢܬ ܣܓܝܐܐ. * ܬܡܠܐ ܡܫܟܗ ܒܣܪܐ. ܘܪܫܗ ܒܛܠܠܐ ܕܢܘܪܐ. * ܣܝܡ ܥܠܘܗܝ ܐܝܕܟ.
ܘܥܘܗܕܢܐ ܕܩܪܒܐ ܠܐ ܬܬܢܐ. * ܗܐ ܫܒܝܩܐ ܪܓܠܟ. ܘܐܦ ܐܠܗܐ ܡܪܪܬܗ ܢܫܩܘܠ.

Verſio ARABICA.

33 * فأجاب أيوب وقال للرب * صغرت أنا ماذا أجيبك * وضعت يدي على فمي * واحدة تكلمت ولا أرد
34 ولا * والثانية لا أعود أيضا أن أتكلم *
35 * الفصل الأربعون * * أجاب الرب وقال
1 لأيوب من الغمام * شد الآن مثل الجبار وسطك * أسألك فأخبرني * إن كنت ترد علي وتدحضني وتزكوا
2 * هل لك ذراع كالذي لله أو تصدع بالصوت مثله * البس الجلال والجبروت وتعطف البهاء والضياء *
3 * والقي حمية غضبك وانظر كل مستكبر فاهدمه * واطرح الخطاة في مواضعهم * وجميعا في التراب
4 اطمرهم * وفي الغبار تحبس وجوههم * وأنا أيضا أحمدك إذا ما خلصتك يمينك * هذا بهموت الذي
5 صنعت معك * الحشيش مثل الثور يأكل * وعظمته في جوانبه * يرفع ذنبه مثل الأرز * وعصبه
6 عروق أفخاذه * عظامه عظيمة مثل النحاس * ومثل الحديد * هو رأس جميع خلائق الله الذي يجعله
7 يصنع القتال * وكثير الجبال يحمل * وجميع حيوانة القفر تحت ظلاله تنام * وفي أستار القصب يربض *
8 * يطوف به الظلال * ويطوف حواليه غربان الوادي * إن طغى النهر لا يخاف * ويتكل أن يفرغ الأردن
9 في فمه * في سحابة تأخذه * وفي المصادة تمسكه * هل تأخذ التنين بالمصادة * وفي الحبل تأخذ بلسانه *
10 * أو تلقي اللجام في فمه * وتأخذ لحيته في مسيره * وإن كثيرا يطلب منك ويقول لك بالرفق * هل
11 يصدق معك بالعهد * أو تعده عبدا للدهر * هل تضحك عليه مثل العصفور * وتحفظ لأيام
12 شبيبتك * الأشراك يجمعون عليه * ويقسمونه بين الكثير * تملا أنت جلدك لحما * وراسه في ظلال النار
13 * اصنع عليه يدك * وذكر القتال لا تعيده * فهناك مطمعه رجلك * والله أيضا مرارته يرفع *
14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

Reſpondens autem Job dixit Domino, Ego (g) infirmatus ſum, quid reſpondebo tibi? appoſui manum meam ori meo. 33 34 *Semel locutus ſum & non repetam ſermonem, & ſecundò etiam non adjiciã ut loquar.* 35

CAP. XL.

RESpondens Dominus dixit Job de (a) nubibus, 1 (b) Corrobora ſicut gigas lumbos tuos, interrogabo te, enarra mihi. 2 (c) utrùm reſpondeas mihi, et condemnes me, & te juſtifices? 3 Numquid habes brachiũ ſicut id quod habet Deus? aut fragore tonabis ſicut ipſe? 4 Induere gloriâ & fortitudine, & amicire luce & (d) lumine, 5 Et depone furorem iræ tuæ, & reſpice omnem ſuperbum, & everte eum. 6 Et dejice peccatores in locis eorum; 7 Et (e) omnes in pulvere humes, & facies eorum concludas in pulvere; 8 Et ego etiam laudabo te, cùm ſalvabit te dextera tua. 9 (f) Hic Behemot, quem feci tecum, herbam velut bos manducat, 10 Et magnitudo ejus in lateribus ipſius: 11 Extollit caudam ſuam quaſi cedrum, & erecti ſunt nervi coxarum ejus: 12 Oſſa ipſius magna, velut æs, & quaſi ferrum. 13 Ipſe eſt caput creaturarum Dei, qui facit eum gerere bellum, 14 Et (g) multos montes portat, & omnes beſtiæ deſerti jacent ſub umbra ejus. 15 Et ſub tegumento arundinũ cubat, 16 Circumvallat eum umbra, & circundant eũ corvi vallis: 17 Si prorupe-rit flumen, non timet, & habet fiduciam quòd poſſit evacuare Jordanẽ ore ſuo. 18 (h) In hamo capies eum aut reti tenebis eum? 19 Numquid capies dracone reti, aut fune capies ejus linguam? 20 Aut pones frænum in ore ejus, & (i) capies maxillam ejus in curſu ipſius? 21 Et ſi multum petat à te, & dicat tibi cum lenitate; 22 An fortè obſervabit tecum pactum, an aſcribes eum ſervum in æternum? 23 An forte ei illudes quaſi avi, & ſervabis ad dies juventutis tuæ? 24 Sodales congregabuntur ſuper eum, & divident eum inter multos. 25 Implebiſne pellem ejus carne, & caput ejus in umbra ignis? 26 Pone ſuper eum manum tuam, & memoriam belli ne repetas. 27 Ecce dimiſſus eſt pes tuus, & Deus quoque auferet fel ſuum. 28

INTERP. SYRIACA.
(g) imminutus ſum mihi, CAP. xl. (a) turbine, (b) Accinge nunc (c) An irritũ me facies, (d) majeſtate, (e) ſimul eos in (f) Ecce (g) multi montes proferent ei, (h) In nubib⁹ ej⁹ capiet eũ, & reti ſuo apprehendetur? (i) perforabis maxillã ejus in ſaltu ipſius?

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et reſpondit Job Domino & ait: Ecce vilis factus ſum, quid reſpondebo tibi? manum meam pono ori meo. Semel locutus ſum & non reſpondebo, et ſecundò et ultrà non addam. 33 34 35

CAP. XL.

ET reſpondit *Dominus* Job de turbine tribulationis, et ait: Accinge nunc ſicut vir lumbos tuos: interrogabo te, et indica mihi. Nunquid irritum facies judicium meum, condemnabis me ut juſtificeris? Et ſi habes brachium ſicut Deus, et voce ſimili ejus clamabis? Dirige nunc elevationem et altitudinem: ſplendore et pulchritudine [illegible] induere. Diſperge furorem naris tuæ, et vide omnem ſuperbũ et humilia eum. Vide omnem elatum et contere eum, et comminue peccatores in locis ſuis. Abſcon[illegible] eos in pulvere ſimul, facies eorum ſubjice in abſcondito. Ego quoq; confitebor tibi quòd ſalvabit te dextera tua. Ecce nunc animal quod feci, tecum herbam ſicut [illegible] comedet. Ecce nunc *Leviathan cujus* virt⁹ in lumbis ej⁹, et fortitudo illi⁹ in umbilico ventris ej⁹. Contorquet caudã ſuã ſicut cedrus, *nervi teſticulorũ* ej⁹ perplex[illegible] ejus forti: ſunt ſicut fiſtulæ æreæ, oſſa ejus ſicut virga ferrea. Ipſe eſt principiũ viarum Dei, qui fecit eũ, applicavit gladiũ ſuum. Quoniã fructũ montes ferent [illegible] beſtiæ agri ludent ibi. Sub umbris dormiet: in ſecreto calami et cœni. Tegunt umbræ operimentum ejus, circundant eum ſalices torrentium. Ecce vim fa[illegible] et non feſtinabit: confidet quòd influet Jordanis in os ejus. Oculis ſuis capiet eum, laqueis *perforabit narem* ejus. Trahéſne Leviathan hamo, et fu[illegible] linguam ejus? Nunquid pones *uncum* in naribus ejus, aut tribulo perforabis maxillam ejus? Nunquid multiplicabit ad te preces, aut loquetur a[illegible] Nunquid inibit tecum pactum; aut emes eum in ſervum perpetuum? Nunquid ludes cum eo quaſi cum ave, et ligabis eum puellis tuis? Facient [illegible] *ſapientes* prandium: divident eum inter mercatores? Nunquid implebis umbracula pelle ejus, aut ſagenam piſcium capite illius? Pone ſuper eum manu[illegible] mento belli, et non addis. Ecce ſpes ejus fruſtrabitur, et in conſpectu utique ejus ejicietur

איוב : מא מב

CAP. XLI. מא

Quis ſiſtet meas facies ad ipſe quis & : eum ſuſcitet quòd crudelis Non
1 לא־אכזר כי יעורנו ומי הוא לפני יתיצב: מי
2 Non ipſum mihi ,cœlo omni ſub : perficiam & ,me præceſſit
הקדימני ואשלם תחת כל־השמים לי־הוא: לא־ 3
.ejus diſpoſitionis gratiam & ,fortitudinum verbum & ,ejus vectes ſilebo
אחריש בדיו ודבר גבורות וחין ערכו:
? veniet quis ejus freni duplicitate cum ? ejus indumenti facies detexit Quis
מי־גלה פני לבושו בכפל רסנו מי יבוא: 4
.formido ejus dentium circuitus ? aperuit quis ejus faciei Portas
דלתי פניו מי פתח סביבות שניו אימה: 5
unam in Una .arcto ſigillo clauſa ;ſcutorum fortitudines Superbia
6 גאוה אפיקי מגנים סגור חותם צר: אחד באחד 7
ſuo fratre in Vir .eas inter ingredietur non ventus & ,admoventur
יגשו ורוח לא־יבוא ביניהם: איש־באחיהו 8
clarebit ejus Sternutationibus .ſeparabuntur non & ,ſe capient : adhærebunt
ידבקו יתלכדו ולא יתפרדו: עטישתיו תהל־ 9
,ibunt lampades ejus ore De .auroræ palpebræ ut ejus oculi & : lux
אור ועיניו כעפעפי־שחר: מפיו לפידים יהלכו 10
olla ſicut ,fumus egredietur ejus naribus E .ſe eruent ignis ſcintillæ
כידודי אש יתמלטו: מנחיריו יצא עשן כדוד 11
ejus ore de fulgor & : faciet ardere prunas ejus Anima .aheno & ,fervente
נפוח ואגמן: נפשו גחלים תלהט ולהב מפיו 12
exultabit eum ante & ,fortitudo morabitur ejus collo In .egredietur
יצא: בצוארו ילין עז ולפניו תדוץ 13
non ,eo in concreta : cohærent ejus carnis Decidentiæ .dolor
דאבה: מפלי בשרו דבקו יצוק עליו בל־ 14
.inferior mola ſicut ,durum & ,lapis ſicut durum ejus Cor .movebitur
ימוט: לבו יצוק כמו־אבן ויצוק כפלח תחתית: 15
.ſe purgabunt contritionibus à : fortes timebunt ejus altitudine Ab
משתו יגורו אלים משברים יתחטאו: 16
.lorica & ,profectionis lancea : ſtabit non gladius eum Attingentis
משיגהו חרב בלי תקום חנית מסע ושריה: 17
Non .æs putredinis lignum in : ferrum paleam in Reputabit
יחשב לתבן ברזל לעץ רקבון נחושה: לא־ 18
.fundæ lapides ei ſunt verſi ſtipulam in ;arcus filius eum fugabit
יבריחנו בן־קשת לקש נהפכו־לו אבני־קלע: 19
.haſtæ vibrationem deridebit & ;catapulta ſunt reputata ſtipula Sicut
כקש נחשבו תותח וישחק לרעש כידון: 20
faciet Fervere .lutum ſuper acutum ſternet ;teſtæ acumina eo Sub
תחתיו חדודי חרש ירפד חרוץ עלי־טיט: ירתיח 21
eum Poſt .pigmenti ollam ut ponet mare : profundum ollam veluti 22
כסיר מצולה ים ישים כמרקחה: אחריו 23
ſuper Non .canitiem in voraginem reputabit : ſemitam faciet lucere
יאיר נתיב יחשב תהום לשיבה: אין־על־ 24
Omne .conterendum non ad ,eſt factus qui ,ejus comparatio pulverem
עפר משלו העשו לבלי־חת: את־כל־ 25
.ſuperbiæ filios omnes ſuper rex ipſe : videbit ſublime
גבה יראה הוא מלך על־כל־בני־שחץ:

CAP. XLII. מב

omnia quòd Novi : dixit & ,Domino Ijob reſpondit Et
1 ויען איוב את־יהוה ויאמר: ידעת כי־כל
2 occultans iſte Quis .cogitatio te à prohibebitur non & ,poteris
תוכל ולא־יבצר ממך מזמה: מי זה מעלים 3
: intelligam non & ,annunciavi Ideo ? ſcientia abſque conſilium
עצה בלי דעת לכן הגדתי ולא אבין
: loquar ego & ,nunc Audi .ſciam non & ,me præ mirabilia
נפלאות ממני ולא אדע: שמע־נא ואנכי אדבר 4
nunc & : te audivi auris auditum Ad .me ſcire fac & ,te interrogabo
אשאלך והודיעני: לשמע אזן שמעתיך ועתה 5
pulvere in ,reſipiſcam & ,reprobabo Idcirco .te vidit meus oculus
עיני ראתך: על־כן אמאס ונחמתי על־עפר 6
.cinere &
ואפר:

Verſio VUL. LAT.

CAP. XLI.

1 Non quaſi crudelis ſuſcita-
bo eum : quis enim reſiſtere
2 poteſt vultui meo? Quis antè
dedit mihi, ut reddam ei?
omnia quæ ſub cœlo ſunt, mea
3 ſunt. Non parcam ei, & ver-
bis potentibus, & ad depre-
4 candum compoſitis. Quis
revelabit faciem indumenti
ejus? & in medium oris ejus
5 quis intrabit? Portas vultûs
ejus quis aperiet? per gyrum
6 dentium ejus formido. Cor-
pus illius quaſi ſcuta fuſilia,
compactum ſquamis ſe pre-
7 mentibus. Una uni conjun-
gitur, & ne ſpiraculum qui-
8 dem incedit per eas : Una al-
teri adhærebit, & tenentes
ſe nequaquàm ſeparabuntur.
9 Sternutatio ej⁹ ſplendor ignis,
& oculi ejus, ut palpebræ
10 diluculi. De ore ejus lampades
procedunt, ſicut tedæ ignis ac-
11 cenſæ. De naribus ejus pro-
cedit fumus, ſicut ollæ ſuccen-
12 ſæ atque ferventis. Halitus
ejus prunas ardere facit, &
flamma de ore ejus egreditur.
13 In collo ejus morabitur forti-
tudo, & faciem ejus præcedit
14 egeſtas. Membra carniũ ejus
cohærentia ſibi : mittet contra
eum fulmina, & ad locum ali-
15 um non ferentur. Cor ej⁹ indu-
rabitur tanquã lapis, & ſtrin-
getur quaſi malleatoris incus.
16 Cùm ſublat⁹ fuerit, timebunt
angeli, & territi purgabun-
17 tur. Cùm apprehenderit eum
gladius, ſubſiſtere non poterit
18 neq; haſta, neque thorax : Re-
putabit enim quaſi paleas fer-
rum, & quaſi lignũ putridũ, æs.
19 Non fugabit eũ vir ſagittarius,
in ſtipulam verſi ſunt ei lapides
20 fundæ. Quaſi ſtipulã æſtimabit
malleũ, & deridebit vibrantẽ
21 haſtã. Sub ipſo erunt radii ſo-
lis, & ſternet ſibi aurũ quaſi lu-
22 tũ.Ferveſcere faciet quaſi ollã
profundũ mare, & ponet quaſi
23 cùm unguenta bulliunt. Poſt
eum lucebit ſemita, æſtimabit
24 abyſſũ quaſi ſeneſcentẽ. Non
eſt ſuper terram poteſtas, quæ
cõparetur ei, qui fact⁹ eſt ut
25 nullũ timeret. Omne ſublime
videt, ipſe eſt rex ſuper univer-
ſos filios ſuperbiæ.

CAP. XLII.

1 Reſpondens autẽ Job Dño,
2 dixit; Scio quia omnia potes,
& nulla te latet cogitatio.
3 Quis eſt iſte, qui celat conſiliũ
abſq; ſcientia? ideò inſipien-
ter locut⁹ ſũ, & quæ ultra mo-
dũ excederent ſcientiã meam.
4 Audi, & ego loquar : interro-
5 gabo te, & reſponde mihi. Au-
ditu auris audivi te, nunc au-
6 tẽ oculus meus videt te. Idcir-
cò ipſe me reprehendo, & ago
pœnitentiã in favilla et cinere.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. μα'.

† Οὐχ (α) ἑώρακας αὐτόν; οὐδὲ ἐπὶ
τοῖς λεγομένοις τεθαύμακας; † οὐ δέδοι-
1 κας (β), ὅτι ἡτοίμασταί (γ) μοι; † Τίς γάρ
ἐστιν ὁ ἐμοὶ (δ) ἀντιστάς; † ἢ τίς (ε) ἀντι-
2 στήσεταί μοι, καὶ ὑπομενεῖ; † (ζ) Εἰ πᾶσα ἡ
3 ὑπ' οὐρανὸν ἐμή ἐστιν, † Οὐ σιωπήσομαι δι'
αὐτόν. † (η) καὶ λόγον δυνάμεως ἐλεήσει τὸν
4 ἴσον (θ) αὐτῷ. † (ι) Τίς ἀποκαλύψει πρόσ-
ωπον ἐνδύσεως αὐτοῦ, εἰς δὲ πτύξιν θώρα-
5 κος αὐτοῦ τίς ἂν εἰσέλθοι; † (κ) Πύλας
προσώπου αὐτοῦ τίς ἀνοίξει; † κύκλῳ ὀδόν-
6 των αὐτοῦ φόβος. † (λ) Τὰ ἔγκατα αὐτοῦ
ἀσπίδες (μ) χάλκεαι· † Σύνδεσμος δὲ αὐ-
7 τοῦ, ὥσπερ (ν) σμυρίτης λίθος. (ξ) Εἷς τοῦ
ἑνὸς κολλῶνται, † πνεῦμα δὲ οὐ μὴ διέλθῃ
8 αὐτόν. † Ἀνὴρ τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ προσκολ-
ληθήσεται· (ο) Συνέχονται καὶ οὐ μὴ ἀπο-
9 σπασθῶσιν. † Ἐν πταρμῷ αὐτοῦ (π) ἐπι-
φαύσκεται φέγγος, † οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ
10 εἶδος Ἑωσφόρου. † Ἐκ στόματος αὐτοῦ
ἐκπορεύονται (ρ) ὡς λαμπάδες καιόμεναι,
† καὶ (σ) διαρριπτοῦνται ὡς ἐσχάραι πυρός.
11 † Ἐκ μυκτήρων αὐτοῦ ἐκπορεύεται καπνὸς
12 καμίνου καιομένης (τ) πυρὶ ἀνθράκων. † Ἡ
ψυχὴ αὐτοῦ ἄνθρακες, † φλὸξ δὲ ἐκ στόμα-
13 τος αὐτοῦ ἐκπορεύεται. Ἐν δὲ τραχήλῳ αὐ-
τοῦ αὐλίζεται δύναμις, † ἔμπροσθεν αὐτοῦ
14 (υ) τρέχει ἀπώλεια. † Σάρκες δὲ σώματος
αὐτοῦ κεκόλληνται· † καταχέει ἐπ' αὐτόν, οὐ
15 σαλευθήσεται. † Ἡ καρδία αὐτοῦ πέπηγεν
(φ) ὡς λίθος, ἕστηκε δὲ ὥσπερ ἄκμων ἀνήλα-
16 τος. † Στραφέντος (χ) δὲ αὐτοῦ, φόβος
θηρίοις τετράποσιν (ψ) ἐπὶ γῆς ἁλλομέ-
17 νοις. † Ἐὰν συναντήσωσιν (ω) αὐτῷ λόγ-
χαι, (α) οὐδὲν μὴ ποιήσωσι, δόρυ, καὶ θώρα-
18 κα. † Ἥγηται μὲν γὰρ σίδηρον (β) ἄχυρα,
19 † χαλκὸν δὲ ὥσπερ ξύλον σαθρόν. † Οὐ μὴ
τρώσῃ (γ) αὐτὸν τόξον χάλκεον· † ἥγηται
20 μὲν πετροβόλον (δ) χόρτον. † Ὡς καλάμη (ε)
ἐλογίσθησαν σφυραί, † καταγελᾷ δὲ σεισμοῦ πυρ-
21 φόρου. † Ἡ στρωμνὴ αὐτοῦ ὀβελίσκοι ὀξεῖς, † πᾶς
δὲ χρυσὸς θαλάσσης ὑπ' αὐτὸν ὥσπερ πηλὸς
22 ἀμύθητος. † Ἀναζεῖ τὴν ἄβυσσον ὥσπερ
χαλκεῖον· † ἥγηται δὲ τὴν θάλασσαν ὥσπερ
23 ἐξάλειπτρον, † Τὸν δὲ τάρταρον τῆς ἀβύσσου
ὥσπερ αἰχμάλωτον· † ἐλογίσατο ἄβυσσον
24 εἰς περίπατον. † Οὐκ ἔστιν οὐδὲν (ζ) ἐπὶ τῆς
γῆς ὅμοιον αὐτῷ, † πεποιημένον ἐγκατα-
25 παίζεσθαι ὑπὸ τῶν ἀγγέλων μου. † Πᾶν ὑ-
ψηλὸν ὁρᾷ· αὐτὸς δὲ βασιλεὺς πάντων τῶν
ἐν τοῖς ὕδασιν.

ΚΕΦ. μβ'.

1 † Ὑπολαβὼν δὲ Ἰώβ, λέγει τῷ κυρίῳ,
2 † Οἶδα ὅτι (α) πάντα δύνασαι, ἀδυνατεῖ
3 δέ σοι οὐδέν. † Τίς γάρ ἐστιν ὁ κρύπτων σε
βουλήν; † φειδόμενος δὲ ῥημάτων, καὶ σὲ οἴε-
ται κρύπτειν; † (β) τίς δὲ ἀναγγελεῖ μοι
ἃ οὐκ ᾔδειν, † μεγάλα καὶ θαυμαστὰ ἃ οὐκ (ʹ)
4 ἐπιστάμην; † Ἄκουσον δέ μου κύριε, ἵνα
κἀγὼ λαλήσω· † ἐρωτήσω δέ σε, σὺ δέ
5 με δίδαξον. † (γ) Ἀκοὴν μὲν ὠτὸς ἤκουόν
σου τὸ πρότερον, † νυνὶ δὲ ὁ ὀφθαλμός μου (δ)
6 ἑώρακέ σε. † Διὸ ἐφαύλισα ἐμαυτόν, καὶ ἐτά-
κην· † (ξ) ἥγημαι δὲ ἐμαυτὸν γῆν καὶ σποδόν.

CAP. XLI.

Non ne (a) vidiſti eum? non ne ſuper iis, quæ dicuntur, miratus es? Non timuiſti, quia paratus eſt mihi? Quis eſt enim, qui mihi ex adverſo ſteterit? vel quis (b) reſiſtet mihi, & ſuſtinebit? Si univerſa quæ ſub cælo, mea eſt, Non tacebo propter eum: & (c) rationem virtutis miſerebitur æqualem ſibi. Quis revelabit faciem indumenti ejus? & (d) in rugam pectoris ejus quis utique ingrediatur? Portas faciei ejus quis aperiet? (e) in circuitu dentium ejus timor. (f) Interiora ejus, ſcuta ænea, (g) & colligatio ejus, ſicut lapis ſmyrites. Unus uni conglutinantur: ſpiritus autem non tranſibit eum. (h) Vir fratri ſuo agglutinabitur: cohærent, & non divellentur. In (i) ſternutamento ejus effulget lumen: & oculi ejus ſpecies Luciferi. De ore ejus egrediuntur quaſi lampades accenſæ, & projiciuntur, ſicut (k) ſcintillæ ignis. De naribus ejus egreditur fumus camini accenſi igne carbonum. Anima ejus carbones; & flamma de ore ejus procedit. In collo autem ejus habitat potentia; ante eum currit (l) perditio. Carnes autem corporis ejus ſunt agglutinatæ: (m) effundit ſuper eum, non commovebitur. Cor ejus induratum eſt, ut lapis: ſtetit autem, ſicut incus immota. Cùm (n) ſe autem verterit, timor beſtiis quadrupedibus ſuper terram ſaltantibus. Si (o) occurrerint ei lanceæ, nihil facient; haſtam, & thoracem. Nam ferrum quidem putat paleas, æs autem ſicut lignum putridum. Non vulnerabit eum arcus æneus: putat autem (p) machinam petras jacientem fœnum. Sicut calamus, reputati ſunt mallei: & deridet (q) concuſſionem igniferam. Lectus ejus, obeliſci (r) acuti: & omne aurum maris ſub eo, ſicut lutum inenarrabile. (ſ) Fervere facit abyſſum, tanquàm officinam ærariam: putat autem mare, tanquàm vas (t) unguentarium, Et tartarum abyſſi tanquàm captivum: reputavit abyſſum in deambulatorium. Nihil (u) eſt ſuper terram ſimile ei factu, ut illudatur ab angelis meis: Omne (x) ſublime videt: ipſe autem rex (y) omnium quæ in aquis.

CAP. XLII.

Reſpondens autem Job dicit Domino; Novi quòd omnia potes: & nihil (a) tibi eſt impoſſibile. Quis enim eſt, qui celat te conſilium? (b) parcens autem verbis, & te putat celare? quis autem annuntiabit mihi, quæ non novi, magna, & mirabilia, quæ neſcivi? Verùm audi me, Domine, ut & ego loquar: interrogabo autem te, & tu doce me. Auditu enim (c) auris audivi te anteà; nunc autem oculus meus vidit te. Quamobrem ſprevi me ipſum, & extabui: putavi autem (d) me terram, & cinerem.

MS. A. (α) ἑόρακας (β) αὐτόν, ὅτι (γ) σοι; (δ) ἀνθιστάμενος; (ε) ἐστιν ὃς ἀντιστήσεταί μοι, (ζ) Ἢ οὐχὶ πᾶσα (η) καὶ λόγος (θ) αὐτοῦ. (ι) Τίς δὲ ἀνακαλύψει (κ) Πύλας δὲ (λ) Ἔγκατα δὲ αὐτοῦ (μ) χαλκαῖ καὶ σύνδεσμοι αὐτοῦ, (ν) *σμιρίτης λίθος. (ξ) Εἷς ἐκ τοῦ ἑνὸς (ο) Συνέχωνται (π) ἐπιφώσκεται (ρ) λαμπάδες καιόμεναι, (σ) διαριπτοῦνται ἐσχάραι πυρός. (τ) φλογὶ (υ) προτρέχει (φ) ὥσπερ (χ) αὐτοῦ, (ψ) ἀλλομένοις ἐπὶ γῆς. (ω) αὐτῷ (α) οὐδὲν οὐ μὴ ποιήσωσιν αὐτῷ δόρυ καὶ θώραξ. (β) ὥσπερ ἄχυρα, (γ) αὐτόν· ἥγηται γὰρ (δ) ὡς χόρτον. (ε) ἐλογίσατο αὐτῷ σφυρά, (ζ) ἐπὶ γῆς   Κεφ. μβ'.   MS. A. (α) δύνασαι πάντα, (β) ἀναγγελεῖ δέ μοι (ʹ) ἠπιστάμην; Ἄκουσον δή (γ) Ἕως μὲν ὠτὸς ἀκοῆς, ἤκουον (δ) ἑόρακέν σε. (ξ) *ἥγημαι

תרגום TARGUM.

מא

3 2 1 לא אכזראה ארום יעיר ניה ומן הוא קדמוי יתעתד: מן אקדימנני בעובדי בראשית ואשלם הלא כל תחותי שמיא דילי הוא: לא אשתוק כדבוביה
5 4 וממר גבורתא ובעותא דעליה: מן גלי אפי לבושיה בכפלא דפרומביה מן יעול: דשי אפוי מן שרי חזרנות ככוי אימתא: גיותנות
8 7 6 פציא תריסין ליה אחיד בחותם ציר: חד עם חד מקרבין ורוחא לא יעול במצעהון: חד עם חבריה מתאדקין מתאחדין ולא מתפרדין:
11 10 9 זירוי תנהר נהורא ועינוי כתמרי קרצתא: מפומיה בעוריא יהלכון ניצוץ דנור משתזבין: מאפותיה יפוק קטרא היך דודא נפיחא דעבר כיפא
14 13 12 נפשיה גומרין תגלהב ושלהוביתא מפומיה נפק: בצווריה יבית עושנא ולקדמוי תריץ דאבונא: שלדי בסריה מתאדקין יתיסד עלוי דלא
17 16 15 יזיע: לביה מתיסד היך אבנא ואתיך היך פלחא ארעיתא: מסיפייה ידחלון תקיפיא מן תבריא ידון עליוהון: ידבקניה חרבא ולא תקום מורניתא
19 18 קלעא דמטלא אבנא ושריינא: יחשיב לתבנא פרזלא לקיסא בילטיתא כרכומא: לא יערקניה גירא קשתא לגלי אתחשיבו ליה אבני קלעא
22 21 20 היך גלי אתחשיבו ליה גיריא יגחך לרגוש רומחא: תחותוי פרירין דחדדין היך חספא ישויד דהבא סניא עלוי סאן: מרתח היך דודא מצולתא ימא
25 24 23 שוי היך מתבלא: בתריה ינהר שבילא יחשוב תהומא לשיבותא: אין על עפרא שולטניה דאתעביד דלא יתבר: ית כל גוביהא יחמי הוא מליך על כל
בני ...:

מב

3 2 1 ואתיב איוב ית יי ואמר: ידעית ארום כולא תסיבר ולא יתמנע מנך מחשבתא: מן דין דמכסי מלכתא בלא מנדעא מטול דהיכנא חויתי ולא אתבין פרישן
6 5 4 מני ולא אנדע: שמע כדון ואנא אמלל אשאלנך ותהודענני: למשמע אודנא שמעית יתך וכדון עיני חמית יתך: מטול דהיכנא מאסית עתרי
ואתנחמית מן בני דבניי עפרא וקטמא:

Versio SYRIACA.

1 * ܩܦܠܐܘܢ * ܡܐ * ܠܐ ܢܬܪܚܩ ܡܐ ܕܡܬܬܥܝܪ. ܘܡܢܘ ܕܩܐܡ ܩܕܡܝ. * ܘܡܢܘ ܩܕܡܢܝ ܕܐܫܠܡ. ܟܠ
2 3 ܡܕܡ ܕܬܚܝܬ ܫܡܝܐ ܕܝܠܝ ܗܘ. * ܘܠܐ ܐܫܬܘܩ ܥܠ ܚܝܠܗ. ܘܥܠ ܓܢܒܪܘܬܗ. * ܡܢ ܓܠܐ ܐܦܝ ܠܒܘܫܗ. ܘܡܐ
4 5 ܕܢܦܠ ܡܨܝܕܬܐ. * ܡܢܘ ܢܬܩܪܒ ܠܬܪܥܐ ܕܦܘܡܗ. ܡܢܘ ܢܦܬܚ ܚܕܪܐ ܕܫܢܘܗܝ. ܕܚܠܬܐ ܕܒܢܚܠܐ. * ܦܘܡܗ
6 7 ܚܙܝܩ ܘܐܣܝܪ ܘܚܬܝܡ. * ܚܕ ܥܡ ܚܕ ܩܪܝܒܝܢ. ܘܪܘܚܐ ܠܐ ܥܐܠܐ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܚܕ ܥܡ ܚܕ ܢܩܝܦܝܢ ܘܐܚܝܕܝܢ: ܘܠܐ
8 ܡܬܦܪܫܝܢ. * ܘܥܛܫܬܗ ܡܢܗܪܐ ܢܘܗܪܐ. ܘܥܝܢܘܗܝ ܐܝܟ ܥܦܥܦܝ ܨܦܪܐ. * ܘܢܦܩܝܢ ܡܢ ܦܘܡܗ ܠܡܦܐܕܐ.
9 10 ܐܝܟ ܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܐܝܟ ܡܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ ܕܡܫܬܠܗܒܐ. * ܡܢ ܢܚܝܪܘܗܝ ܢܦܩ ܬܢܢܐ. ܐܝܟ ܕܘܕܐ ܕܡܪܬܚ
11 12 ܘܡܫܠܗܒ. * ܢܦܫܗ ܓܘܡܪܐ ܡܘܩܕܐ. ܘܫܠܗܒܝܬܐ ܢܦܩܐ ܡܢ ܦܘܡܗ. * ܒܨܘܪܗ ܒܐܬ ܚܝܠܐ.
13 14 ܘܩܕܡܘܗܝ ܪܗܛ ܕܚܠܬܐ. * ܫܦܝܪ ܦܓܪܗ ܘܫܡܝܢ ܘܫܟܝܒ. * ܘܠܐ ܙܐܥ ܠܒܗ. ܠܒܗ ܐܝܟ ܟܐܦܐ.
15 16 ܘܡܥܒܝܢ ܐܝܟ ܩܘܪܛܐ. * ܡܢ ܕܝܚܠܬܗ ܢܙܘܥܘܢ ܓܢܒܪܐ. ܘܥܫܝܢܐ ܢܬܡܟܟܘܢ. * ܣܝܦܐ ܕܢܩܪܘܒ ܠܗ ܠܐ ܡܩܘܡ
17 18 ܠܡܩܡ. ܘܡܘܪܢܝܬܐ ܕܓܢܒܪܐ ܫܦܩܢ. * ܦܪܙܠܐ ܐܝܟ ܬܒܢܐ ܚܫܝܒ ܠܗ. ܘܢܚܫܐ ܐܝܟ ܩܝܣܐ ܕܢܦܠ ܒܗ
19 20 ܡܘܬܢܐ. * ܠܐ ܥܪܩ ܡܢ ܓܐܪܐ. ܘܐܝܟ ܩܫܐ ܚܫܝܒܝܢ ܠܗ ܟܐܦܐ ܕܩܠܥܐ. * ܓܚܟ ܥܠ ܢܝܙܟܐ. ܘܐܝܟ ܝܒܫܐ
24 25 ܚܫܝܒ ܠܗ ܥܘܡܩܐ. ** ܘܚܝܠܗ ܥܠ ܐܪܥܐ ܗܠܟ. * ܣܡ ܒܬܚܘܬܗ ܟܠ ܪܡ ܕܚܙܐ. ܘܗܘܐ ܡܠܟܐ
ܥܠ ܟܠܗ ܚܝܘܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܡܒ *

1 2 * ܘܥܢܐ ܐܝܘܒ ܘܐܡܪ ܠܡܪܝܐ. * ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܡܫܟܚ ܐܢܬ ܚܝܠܐ ܠܡܥܒܕ. ܘܠܐ ܡܬܛܫܝܐ ܡܢܟ
3 ܡܚܫܒܬܐ. * ܡܢܘ ܗܢܐ ܕܡܛܫܐ ܡܠܟܐ ܒܡܠܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬܐ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܘܝܬܢܝ ܕܐܣܬܟܠ ܘܠܐ ܐܕܥ
4 5 ܕܝܬܝܪܢ ܡܢܝ. * ܫܡܥܢܝ ܗܫܐ ܘܐܢܐ ܐܡܠܠ. ܐܫܐܠܟ ܘܐܘܕܥܢܝ. * ܠܡܫܡܥ ܐܕܢܐ ܗܘܐ ܫܡܥܬܟ: ܗܫܐ
6 ܥܝܢܝ ܚܙܬܟ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܫܬܘܩ. ܘܐܬܒܝܐܬ ܥܠ ܥܦܪܐ ܘܥܠ ܩܛܡܐ.

Versio ARABICA.

1 * الفصل الحادي والاربعون * لا يبعد اذا تيقظ * ومن الذي قدامي يقف *
2 3 * من الذي سبقني فاعلم * فان الذي تحت كل سماء هو لي * ولا اصمت بعزته * وبعروف جبروته *
4 5 * من كشف اوجه لبوسه * واذا وقعت المصادة * من الذي ياتي باب فمه * من الذي يفتح دور اسنانه *
6 7 المخافة التي في الوادي * فمه مصرور ومربوط ومختوم ** واحد الي واحد متقاربة ومتمسكة ولا تفترق *
8 9 10 * وبواطن مملوة نارا * وعيناه مثل كواكب الصبح * ويخرج من فمه مصابيح مثل جمر النار * ومثل
11 12 شبيب النار تلتهب * ومن مناخره يخرج الدخان مثل رغوة المرجل الذي يسجر * نفسه جمرات تلتهب
13 14 والشعل يخرج من فمه * في عنقه تبيت العظمة * وقدامه تفرح المخافة * حسن جسمه وسمين * ويتكي * ولا يفزع *
15 16 * قلبه مسبوكا مثل الحجر * ومثل الصمام مسدد * من رهبته تفزع الاقوياء والمسددون يتواضعون * باب
17 18 السيف لا يستطيع ان يقوم * ومرانات الكبراء يحمل * والحديد مثل التبن يعد * والنحاس مثل الخشب
19 20 التي تقع فيه الدودة * لا يهرب من القوس * ومثل القش يعد الحجارة بالمقلاع * يضحك على
24 25 النيزك * ومثل اليبس تحسب له اللجج *** وقوته على التراب تجري * صنع للهلاك كل رفيع يراه * وكان ملكا
1 2 على جميع الدواب * الفصل الثاني والاربعون * فاجاب ايوب فقال للرب * ان هذه كلها انا اعلم
3 انك قادر ان تصنعها بالقوة * ولا يخفى عليك فكر * من هذا الذي يفكر فكرا بكلام بلا معرفة * من
4 5 اجل هذا اخبرني حتي افهم ولم اعرف الذي هو اكبر مني * اسمعني فاقول * اسالك فاخبرني * بسماع
6 الاذن سمعتك فالان عيني قد ابصرتك * من اجل هذا اسكت واقوم علي التراب وعلي الرماد *

VERS. SYR. & ARAB.
Interp. Lat.

CAP. XLI.

Non elongabitur cum 1
expergiscetur, & quis
ante me stabit? Et quis 2
me prævenit (a) ut sciā?
(nam quicquid sub quocunque
cœlo est, meum
est) Et non tacebo potentiam 3
ejus, & nervos fortitudinis
ejus. Quis revelavit 4
facies indumenti
ejus? & quando ceciderit
rete, Quis accedat ad 5
ostia oris ejus? quis aperiat
gyrum dentium ejus,
terrorem qui est in
valle? Os ejus est strictum, 6
et ligatum, & obsignatum:
Unus alteri 7 8
proximus, & (b) cohærens
est, nec separantur:
Et pupillæ ejus sunt igne 9
plenæ: et oculi ejus sicut,
(c) stellæ matutini: Et 10
egrediuntur ex ore ejus
faces, quasi carbones
ignis, & sicut ardor ignis
ardent: Et de naribus ejus 11
procedit fumus quasi spuma
caldarii quod fervet:
Halitus ejus prunas accendit, 12
& flamma egreditur
ex ore ipsius. In collo 13
ejus (d) commoratur
superbia, & ante eum gestit
timor. Pulchrum est 14
ejus corpus & pingue, &
recumbit, nec timet (e).
Cor ejus est solidū quasi 15
lapis, & quasi durities est
firmū. Præ ejus timore 16
formidant potentes, &
fortes humiliantur. Tota 17
gladii non valet consistere,
& hastas duras
magnatum sufficit: Et 18
ferrum reputat (f) quasi
paleas, & æs quasi lignum
in quod cadit (g)
vermis: Non fugit ab arcu, 19
& velut (h) culmos
reputat lapides in funda.
Deridet hastam, & velut 20
arida reputantur apud
eum voragines, Et 24
fortitudo ejus super terram
currit. Posuit in interitu 25
omne sublime quod
videt: & factus est rex
super omnia animalia.

CAP. XLII.

Respondens autē Job 1
Domino dixit, Certè 2
ego hæc omnia novi te
posse facere cum potentia,
& nulla te latet cogitatio.
Quis est iste, 3
qui cogitat cogitationem
in sermone absque scientia?
propterea indicâsti
mihi ut (a) intelligerem,
& non cognoscerem quæ
majora me sunt. Audi 4
me, & dicam: interrogabo
te, nuntia mihi: Auditu 5
auris audiveram te, jam
verò oculus meus (b) vidit
te: Propterea silebo, 6
& (c) morabor super pulverem
ac cinerem.

INTERP. SYRIACA.

CAP. xli. (a) ut retribuā? (b) ventus non penetrat inter eos. viii. Unꝰ cohæret, & conjungitur alteri, nec separātur, ix. Et aspectꝰ ejꝰ lumine pleni: (c) splendor (d) diversatur fortitudo, (e) cor ejꝰ: xv. Conflatū est instar lapidis, & quasi silex (f) sibi quasi (g) caries: (h) stipulam CAP. xlii. (a) non intelligerem, (b) ecce vidit (c) consolabor

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. XLI.

Nullus est crudelis qui suscitet eum: & quis est qui stabit coram *eo*? Quis prævenit me in operibꝰ ab initio ut reddam: nonne omnia quæ sub cœlo sunt, mea sunt? 1 2
Non tacebo mendacia ejus & verbum fortitudinis & deprecationis quæ juxta eum. Quis revelavit faciem indumenti ejus: in duplicationem fræni ejus quis introibit? 3 4
Portas vultus ejꝰ quis dissolvit? in circuitu dentium ejꝰ terror. Tumores rivorū *scuta sunt ei, clausus est* signaculo stricto. Unꝰ uni conjunguntur dentes ejus, & aer 5 6 7
non ingreditur in mediū eorum. Unus alteri adhæret & tenent se, & non separantur. Sternutatio ejꝰ splendet luce, & oculi ejꝰ quasi palpebræ auroræ. Ab ore ejꝰ 8 9 10
lampades procedunt, & scintillæ ignis evadunt. De naribꝰ ejꝰ egreditur fumus, sicut lebes fervens qui facit fumū. Halitus ejꝰ prunas inflammat, & flamma ex ore ejus procedit. 11 12
In collo ejus manebit fortitudo, & coram eo exultabit dolor. Costæ carnis ejus cohærent, fundata est in eo unaquæque ut non moveatur, Cor ejus fundatur 13 14
sicut petra, & funditur sicut mola inferior. A consumptione ejus timebunt fortes, de contritionibus judicat in eos. Aprehendet eum gladius & non *consistet*; 15 16
lancea & funda quæ projicit lapidem, & lorica. Reputabit in paleas ferrum, & quasi lignum putridum æs. Non fugabit eum sagitta arcus, in stipulam 17 18
reputati sunt *ei* lapides fundæ. Quasi stipula reputata sunt *ei* tormenta, & deridebit strepitum lancearum. Sub eo sunt lapilli acuti quasi testa, 19 20
sternet aurum probatum super cœnum. Fervere facit sicut lebetem profundum, mare ponet quasi unguentum. Post eum lucebit semita, æstimabit 21 22
abyssum in caniciem. Non est super terra potestas ejus, quia factus est ut à nullo terreatur. Omne sublime videt, ipse est rex super omnes filios 23 24
piscium. 25

CAP. XLII.

Et respondit Job ad *Dominum*, & ait: Scio quòd omnia sustines, & non prohibetur à te cogitatio. Quis est iste qui celat consilium absque scientia? ideò annunciavi, 1 2 3
& non intellexi mirabilia quæ excedunt me, & nescio. Audi nunc, & ego loquar: interrogabo te, et ostende mihi. In auditu auris audivi te, et nunc oculus 4 5
meus vidit te. Idcirco abjeci divitias meas, et consolatus sum de filiis meis, qui sunt sicut pulvis & cinis. 6

איוב : מב

Hæc verba Dominus eſt locutus poſtquam fuit Et
7 וַיְהִי אַחַר דִּבֶּר יְהוָה אֶת־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה
eſt iratus : Themanitem Eliphaz ad Dominus dixit & , Ijob ad
אֶל־אִיּוֹב וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־אֱלִיפַז הַתֵּימָנִי חָרָה
me *ad* eſtis locuti non quia ,tuos *ſocios* duos in & , te in meus *naſus*
אַפִּי בְךָ וּבִשְׁנֵי רֵעֶיךָ כִּי לֹא דִבַּרְתֶּם אֵלַי
,vitulos ſeptem vobis ſumite nunc Et .Ijob meus ſervus ſicut , rectum
8 נְכוֹנָה כְּעַבְדִּי אִיּוֹב׃ וְעַתָּה קְחוּ־לָכֶם שִׁבְעָה פָרִים
aſcendere facite & , Ijob meum ſervum ad ite & , arietes ſeptem &
וְשִׁבְעָה אֵילִים וּלְכוּ אֶל־עַבְדִּי אִיּוֹב וְהַעֲלִיתֶם
nam *: vos ſuper* orabit meus ſervus Ijob & ; vobis pro *aſcenſionem*
עוֹלָה בַּעַדְכֶם וְאִיּוֹב עַבְדִּי יִתְפַּלֵּל עֲלֵיכֶם כִּי
,*abjectionem* vobiſcum *faciendum non ad* , ſuſcipiam ejus *facies utique*
אִם־פָּנָיו אֶשָּׂא לְבִלְתִּי עֲשׂוֹת עִמָּכֶם נְבָלָה
abierunt Et .Ijob meus ſervus ſicut , rectum me *ad* eſtis locuti non quia
9 כִּי לֹא דִבַּרְתֶּם אֵלַי נְכוֹנָה כְּעַבְדִּי אִיּוֹב׃ וַיֵּלְכוּ
,Nahamathites Sophar , Suchites Bildad & , Themanites Eliphaz
אֱלִיפַז הַתֵּימָנִי וּבִלְדַּד הַשּׁוּחִי צֹפַר הַנַּעֲמָתִי
Dominus ſuſcepit & ,Dominus eos ad eſt locutus ſicut fecerunt &
וַיַּעֲשׂוּ כַּאֲשֶׁר דִּבֶּר אֲלֵיהֶם יְהוָה וַיִּשָּׂא יְהוָה
Ijob converſionem eſt converſus Dominus Et .Ijob *facies*
10 אֶת־פְּנֵי אִיּוֹב׃ וַיהוָה שָׁב אֶת־שְׁבוּת אִיּוֹב
quæ omnia Dominus auxit & : ſuis *ſociis* pro *ipſum orando in*
בְּהִתְפַּלְלוֹ בְּעַד רֵעֵהוּ וַיֹּסֶף יְהוָה אֶת־כָּל־אֲשֶׁר
omnes & ,ejus fratres omnes eum ad venerunt Et .duplum in Ijob ipſi
11 לְאִיּוֹב לְמִשְׁנֶה׃ וַיָּבֹאוּ אֵלָיו כָּל־אֶחָיו וְכָל־
eo cum comederunt & , priùs eum *cognoſcentes* omnes & ,ejus ſorores
אַחְיֹתָיו וְכָל־יֹדְעָיו לְפָנִים וַיֹּאכְלוּ עִמּוֹ
omne ſuper eum ſunt conſolati & ,ei ſunt commoti & ,ejus domo in panem
לֶחֶם בְּבֵיתוֹ וַיָּנֻדוּ לוֹ וַיְנַחֲמוּ אֹתוֹ עַל כָּל־
unuſquiſque ei dederunt Et .eum ſuper Dominus adduxerat quod malum
הָרָעָה אֲשֶׁר־הֵבִיא יְהוָה עָלָיו וַיִּתְּנוּ־לוֹ אִישׁ
benedixit Dominus Et .unam auream inaure unuſquiſq; & ,*unam nummum*
12 קְשִׂיטָה אֶחָת וְאִישׁ נֶזֶם זָהָב אֶחָד׃ וַיהוָה בֵּרַךְ
decim--quatuor ei fuerunt & ,ejus principio *præ* Ijob noviſſimo
אֶת־אַחֲרִית אִיּוֹב מֵרֵאשִׁתוֹ וַיְהִי־לוֹ אַרְבָּעָה עָשָׂר
mille & ,*bovis* juga mille & ,camelorum millia ſex & ,*pecoris* millia
אֶלֶף צֹאן וְשֵׁשֶׁת אֲלָפִים גְּמַלִּים וְאֶלֶף צֶמֶד בָּקָר וְאֶלֶף
vocavit Et .filiæ tres & ,filii ſeptem ei fuerunt Et .aſinæ
13 14 אֲתוֹנוֹת׃ וַיְהִי־לוֹ שִׁבְעָנָה בָנִים וְשָׁלוֹשׁ בָּנוֹת׃ וַיִּקְרָא
tertiæ nomen & ,Cheſihah ſecundæ nomen & ,Jemimah unius nomen
שֵׁם־הָאַחַת יְמִימָה וְשֵׁם הַשֵּׁנִית קְצִיעָה וְשֵׁם הַשְּׁלִישִׁית
Ijob filiæ ſicut ſpecioſæ mulieres *eſt inventa* non Et .haphuc-Cheren
15 קֶרֶן הַפּוּךְ׃ וְלֹא נִמְצָא נָשִׁים יָפוֹת כִּבְנוֹת אִיּוֹב
medio in hæreditatem earum pater eis dedit & : terra omni in
בְּכָל־הָאָרֶץ וַיִּתֵּן לָהֶם אֲבִיהֶם נַחֲלָה בְּתוֹךְ
quadraginta & centum hoc poſt Ijob vixit Et .ſuorum fratrum
16 אֲחֵיהֶם׃ וַיְחִי אִיּוֹב אַחֲרֵי־זֹאת מֵאָה וְאַרְבָּעִים
quatuor ſuorum filiorum filios & ,ſuos filios vidit & : annos
שָׁנָה וַיִּרְאֶה אֶת־בָּנָיו וְאֶת־בְּנֵי בָנָיו אַרְבָּעָה
.dierum ſaturus & ,ſenex Ijob eſt mortuus Et .generationes
17 דֹּרוֹת׃ וַיָּמָת אִיּוֹב זָקֵן וּשְׂבַע יָמִים׃

Verſio VUL.LAT.

7 Poſtquàm autem locutus eſt
Dominus verba hæc ad Job,
dixit ad Eliphaz Themanitem;
Iratus eſt furor meus in te, &
in duos amicos tuos, quoniam
non eſtis locuti coram me
rectum, ſicut ſervus meus Job.
8 Sumite ergò vobis ſeptem tauros, & ſeptem arietes, & ite
ad ſervum meum Job, & offerte holocauſtum pro vobis:
Job autem ſervus meus orabit
pro vobis: faciem ejus ſuſcipiam ut non vobis imputetur
ſtultitia: neque enim locuti
eſtis ad me recta, ſicut ſervus
9 meus Job. Abierunt ergò, Eliphaz Themanites, & Baldad
Suhites, & Sophar Naamathites, & fecerunt ſicut locutus fuerat Dominus ad eos, &
ſuſcepit Dominus faciem Job.
10 Dominus quoque converſus
eſt ad pœnitentiam Job, cùm
oraret ille pro amicis ſuis. Et
addidit Dominus omnia quæcunque fuerant Job, duplicia.
11 Venerunt autẽ ad eum omnes
fratres ſui, & univerſæ ſorores
ſuæ, & cuncti qui noverant
eum priùs, & comederunt
cum eo panem in domo ejus:
et moverunt ſuper eum caput,
& conſolati ſunt eũ ſup omni
malo quod intulerat Dominus
ſuper eũ: & dederunt ei unuſquiſque ovem unam, et
12 inaurem auream unam. Dñs autem
benedixit noviſſimis Job magis quàm principio ejus. Et
facta ſunt ei quatuordecim
millia ovium, et ſex millia
camelorum, et mille juga
13 boum, et mille aſinæ. Et fuerunt ei ſeptem filii & tres
14 filiæ. Et vocavit nomen
unius Diem, et nomen ſecundæ Caſſiam, et nomen
15 tertiæ Cornuſtibii. Non ſunt
autem inventæ mulieres ſpecioſæ ſicut filiæ Job in univerſa terra: deditque eis pater
ſuus hæreditatem inter
16 fratres earum. Vixit autem Job
poſt hæc, centum quadraginta annis, et vidit filios
ſuos, et filios filiorum ſuorum
uſque ad quartam generationem, et mortuus eſt ſenex et
plenus dierum.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp.

7 † Ἐγένετο δὲ μετὰ τὸ λαλῆσαι τὸν κύριον πάντα
τὰ (ε) ῥήματα ταῦτα τῷ Ἰώβ, † εἶπεν ὁ κύριος
Ἐλιφὰζ τῷ Θαιμανίτῃ, † Ἥμαρτες σὺ,
καὶ οἱ δύο φίλοι σου· οὐ γὰρ ἐλαλήσατε ἐνώπιόν
μου ἀληθὲς οὐδὲν, ὥσπερ ὁ θεράπων μου Ἰώβ.
8 † (ζ) Νῦν δὲ λάβετε ἑπτὰ μόσχους, καὶ ἑπτὰ κριοὺς,
καὶ πορεύθητε πρὸς τὸν (η) θεράποντά μου Ἰώβ,
† καὶ ποιήσει κάρπωσιν ὑπὲρ ὑμῶν. † Ἰὼβ
δὲ ὁ θεράπων μου εὔξεται περὶ ὑμῶν, † ὅτι εἰ μὴ
πρόσωπον αὐτοῦ λήψομαι· † (θ) εἰ μὴ γὰρ δι'
αὐτὸν, ἀπώλεσα ἂν ὑμᾶς· † οὐ γὰρ ἐλαλήσατε (ι)
9 ἀληθὲς κατὰ τοῦ θεράποντός μου Ἰώβ. † (κ) Ἐπορεύθη δὲ Ἐλιφὰζ ὁ Θαιμανίτης, † καὶ Βαλδὰδ
ὁ Σαυχίτης, καὶ Σωφὰρ ὁ Μιναῖος, † καὶ ἐποίησαν (λ) καθὼς συνέταξεν αὐτοῖς ὁ κύριος. †
10 καὶ ἔλυσε τὴν ἁμαρτίαν (μ) αὐτοῖς διὰ Ἰώβ. † Ὁ
δὲ κύριος ηὔξησε τὸν Ἰώβ· εὐξαμένου δὲ (ν)
αὐτοῦ καὶ περὶ τῶν φίλων αὐτοῦ, † ἀφῆκεν αὐτοῖς τὴν
ἁμαρτίαν. † (ξ) ἔδωκεν δὲ ὁ κύριος διπλᾶ, ὅσα
11 ἦν ἔμπροσθεν Ἰὼβ εἰς διπλασιασμόν. † Ἤκουσαν δὲ πάντες οἱ ἀδελφοὶ αὐτοῦ καὶ αἱ ἀδελφαὶ
αὐτοῦ, πάντα τὰ συμβεβηκότα αὐτῷ, καὶ ἦλθον πρὸς αὐτὸν, (ο) καὶ πάντες ὅσοι ᾔδεισαν αὐτὸν
(π) ἐκ πρώτου· † φαγόντες δὲ καὶ πιόντες (ρ) παρ'
αὐτῷ παρεκάλεσαν αὐτὸν, † καὶ ἐθαύμασαν ἐπὶ πᾶσιν οἷς ἐπήγαγεν (σ) ἐπ' αὐτῷ ὁ κύριος· † ἔδωκεν δὲ αὐτῷ ἕκαστος ἀμνάδα μίαν, καὶ
12 τετράδραχμον (τ) χρυσοῦ καὶ ἀσήμου. † Ὁ δὲ κύριος (υ) εὐλόγησε τὰ ἔσχατα Ἰώβ, ἢ τὰ ἔμπροσθεν. † ἦν δὲ τὰ κτήνη αὐτοῦ, πρόβατα
μύρια τετρακισχίλια, † κάμηλοι ἑξακισχίλιαι, † ζεύγη βοῶν χίλια, † ὄνοι θήλειαι
13 νομάδες χίλιαι. † Γεννῶνται δὲ αὐτῷ υἱοὶ ἑπτὰ, καὶ
14 θυγατέρες (φ) τρεῖς. † Καὶ ἐκάλεσε τὴν μὲν πρώτην, Ἡμέραν· † τὴν δὲ δευτέραν, ( ) Κασίαν· † τὴν
15 δὲ τρίτην, (χ) Ἀμαλθαίας κέρας. † Καὶ οὐχ εὑρέθησαν κατὰ (ψ) τὰς θυγατέρας Ἰώβ, † βελτίους
αὐτῶν (ω) ἐν τῇ ὑπ' οὐρανόν. † ἔδωκε δὲ αὐταῖς ὁ
16 πατὴρ κληρονομίαν ἐν τοῖς ἀδελφοῖς. † Ἔζησε δὲ Ἰὼβ μετὰ τὴν πληγὴν ἔτη ἑκατὸν ἑβδομήκοντα· † τὰ δὲ πάντα (α) ἔτη ἔζησεν, διακόσια
(β) τεσσαράκοντα· † καὶ εἶδεν Ἰὼβ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ καὶ τοὺς υἱοὺς τῶν υἱῶν αὐτοῦ, τετάρτην γενεάν.
† Καὶ ἐτελεύτησεν Ἰὼβ πρεσβύτερος, καὶ πλήρης ἡμερῶν· † Γέγραπται (γ) δὲ, αὐτὸν πάλιν
ἀναστήσεσθαι μεθ' ὧν ὁ κύριος ἀνίστησιν. Οὗτος
ἑρμηνεύεται ἐκ τῆς Συριακῆς βίβλου, † ἐν μὲν γῇ
κατοικῶν τῇ Αὐσίτιδι, ἐπὶ τοῖς ὁρίοις τῆς Ἰδουμαίας καὶ Ἀραβίας· † προϋπῆρχε δὲ αὐτῷ ὄνομα Ἰωβάβ. † λαβὼν δὲ γυναῖκα Ἀράβισσαν,
γεννᾷ υἱὸν, ᾧ ὄνομα Ἐννών. † ἦν δὲ αὐτὸς πατρὸς μὲν (δ) Ζαρὲ ἐκ τῶν Ἡσαῦ υἱῶν υἱὸς, † μητρὸς δὲ (ε) Βοσόρρας, ὥστε εἶναι αὐτὸν πέμπτον
ἀπὸ Ἀβραάμ. † καὶ οὗτοι οἱ βασιλεῖς οἱ βασιλεύσαντες ἐν Ἐδὼμ, ἧς καὶ αὐτὸς ἦρξε χώρας· † πρῶτος Βαλὰκ ὁ τοῦ (ζ) Βεώρ, καὶ ὄνομα τῇ πόλει αὐτοῦ Δενναβά. † μετὰ δὲ Βαλὰκ, Ἰωβὰβ ὁ καλούμενος Ἰώβ. †
μετὰ δὲ τοῦτον, (η) Ἀσὼμ ὁ ὑπάρχων ἡγεμὼν ἐκ τῆς Θαιμανίτιδος χώρας. † μετὰ δὲ τοῦτον, Ἀδὰδ υἱὸς Βαράδ, ὁ ἐκκόψας Μαδιὰμ ἐν τῷ πεδίῳ Μωάβ,
† καὶ ὄνομα τῇ πόλει αὐτοῦ (θ) Γεθαίμ. † οἱ δὲ ἐλθόντες πρὸς αὐτὸν φίλοι, † (ι) Ἐλιφὰζ τῶν Ἡσαῦ υἱῶν, Θαιμανῶν βασιλεύς, † (κ) Βαλδὰδ ὁ Σαυχαίων
τύραννος, Σωφὰρ ὁ Μιναίων (λ) βασιλεύς.

Cum Tranſl. LAT.

Factum eſt autem, poſtquam Dominus locutus eſt omnia verba hæc ad Job, dixit **Dominus** *ad Eliphaz Themanitem; (e) Peccaſti tu, & duo amici tui: nõ enim locuti eſtis corã me verũ quippiã, ſicut famulꝰ meꝰ Job. Nunc autẽ ſumite ſeptẽ vitulos, & ſeptẽ arietes, & ite ad famulũ meũ Job, & (f) faciet holocauſtũ pro vobis: & Job famulꝰ meꝰ precabitur pro vobis; quoniam non niſi faciẽ ejus (g) accipiam: nã niſi propter ipſũ, perdidiſſẽ utiq; vos: nõ enim locuti eſtis verũ (h) contra famulũ meũ Job. Ivit autẽ Eliphaz Themanites, & Baldad Sauchites, & Sophar Minæus, & fecerunt, ſicut præcepit eis Dominus: & (i) ſolvit peccatum eis propter Job. Dominus autem auxit Job: & cùm ille precatus etiam eſſet pro amicis ſuis; dimiſit eis peccatũ. Dedit autẽ Dominus (k) dupla, quæcunq; erant anteà Job, in duplicationẽ. Audierunt autẽ omnes fratres ejus, & ſorores ejus, quæcunq; acciderant ei: & venerunt ad eum, & omnes quicunq; noverant eum à principio: comedentes autem & bibentes apud eum conſolati ſunt eum, & mirati ſunt ſuper omnibus, quæ (l) induxit ſuper eum Dominus. Dedit autẽ ei unuſquiſq; agnũ unũ, & (m) tetradrachmũ auri, et nõ ſignati. Et benedixit Dominus noviſſima Job præ iis quæ anteà: & fuerunt pecora ejus, oves decies & quater mille, cameli ſexies mille, juga boum mille, aſinæ fœminæ paſcuales mille. Et naſcuntur ei filii ſeptẽ, & filiæ tres: Et primam quidẽ vocavit (n) Diẽ, & ſecundam (o) Caſiam, & tertiam Cornu (p) Amaltheæ. Et nõ ſunt inventæ juxta filias Job meliores eis in ea quæ ſub cælo. Dedit autẽ eis pater hæreditatẽ inter fratres. Et vixit Job poſt plagã annos centũ ſeptuaginta: omnes autẽ annos vixit ducentos (q) quadraginta. Et vidit Job filios ſuos, & filios filiorum ſuorũ, quartã generationẽ: et mortuꝰ eſt Job ſenior, & (r) plenꝰ dierũ. Scriptũ eſt autẽ ipſũ iterũ reſurrecturũ, cũ quibꝰ reſuſcitat Dominꝰ. Hic interpretatione redditur ex libro (ſ) Syriaco, in terra quidẽ Auſitide habitans, in finibꝰ Idumææ, & Arabiæ: et erat ei nomẽ Jobab. Cũ autẽ accepiſſet uxorẽ Arabiſſã, generat filiũ, cui nomẽ Ennon. Erat autẽ ipſe ex patre quidem Zare, de filiis Eſau filius, matre autẽ Boſorrha: ita ut ipſe ſit quintꝰ ab Abraham. Et hi ſunt reges, qui regnaverunt in Edom: cujus regionis etiã ipſe dominatꝰ eſt: primꝰ Balac filiꝰ Beor: & nomẽ civitatis ejꝰ Dennaba: poſt Balac autẽ Jobab, qui vocatur Job: poſt hunc autẽ Aſom, qui erat dux ex regione Themanitide: poſt hunc autẽ Adad filiꝰ Barad, qui excidit Madiã in campo Moab: & nomen civitatis ejꝰ Gethaim. Amici autẽ, qui ad eũ venerunt, (t) Eliphaz de filiis Eſau Themanorũ rex, (u) Baldad tyrannꝰ Sauchæorũ, Sophar rex Minæorũ.*

MS. A. (ε) ῥήματα τῷ Ἰώβ, (ζ) Καὶ νῦν (η) παῖδά μου Ἰώβ, καὶ ποιήσεις κάρπωμα περὶ ὑμῶν. (θ) καὶ εἰ μὴ δι' (ι) κατὰ τοῦ θεράποντός μου Ἰὼβ οὐδὲν ἀγαθόν. (κ) Ἐπορεύθησαν (λ) ἑαυτοῖς καθὼς (μ) αὐτῶν (ν) αὐτοῦ περὶ τῶν φίλων (ξ) προσέθηκεν δὲ ὁ κύριος τῷ Ἰὼβ τὰ διπλᾶ, ὧν εἶχεν ἔμπροσθεν εἰς διπλασιασμόν. (ο) καὶ πάντες δὲ ὅσοι (π) πρὸ τούτου· (ρ) αὐτῷ (σ) αὐτῷ ὁ κύριος καὶ ἔδωκαν αὐτῷ (τ) χρυσοῦν ἄσημον. (υ) ηὐλόγησεν τὸν Ἰὼβ τὰ ἔσχατα μᾶλλον, ἢ τὰ ἔμπροσθεν. (φ) βῖς. ( ) Κασσίαν (χ) Μαλθέας (ψ) τὰς Ἰὼβ θυγατέρας, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτοῦ, βελτίους (ω) ὑπὸ τὸν οὐρανόν. Ἔδωκεν δὲ Ἰὼβ ταῖς θυγατράσιν αὐτοῦ κληρονομίαν ἐν τοῖς ἀδελφοῖς αὐτοῦ. (α) ζῇ ἔτη, (β) τεσσαράκοντα ὀκτώ. (γ) πάλιν ἀναστήσεσθαι αὐτὸν μεθ' ὧν ἀνίστησιν ὁ κύριος. (δ) Ζαρὲθ τῶν υἱῶν Ἡσαῦ υἱὸς, (ε) Βοσόρρας, (ζ) Σεπφώρ, (η) Ἀσώμ (θ) Γεθθαίμ. (ι) Ἐλιφὰς υἱὸς Σωφὰν τῶν υἱῶν Ἡσαῦ, (κ) Βαλδὰς υἱὸς Ἀμνὼν τοῦ Χόβαρ τοῦ Αὐχείτου τυράννου, (λ) βασιλεύς. † Θαιμὰν υἱὸς Ἐλιφάζ, ἡγεμὼν τῆς Ἰδουμαίας. Οὗτος ἑρμηνεύεται ἐκ τῆς Συριακῆς βίβλου. † Ἐν μὲν γῇ κατοικῶν τῇ Αὐσίτιδι, ἐπὶ τῶν ὁρίων τοῦ Εὐφράτου. † Προϋπῆρχεν δὲ τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἰωβάβ. ἦν δὲ ὁ πατὴρ αὐτοῦ Ζαρὲθ ἐξ ἀνατολῶν ἡλίου.

Ἰώβ.

תרגום TARGUM.

7 וַהֲוָה בָּתַר דְּמַלֵּל יְיָ יָת פִּתְגָּמַיָּא הָאִלֵּין עִם אִיּוֹב וַאֲמַר יְיָ לֶאֱלִיפַז דְּמִן תֵּימָן תְּקִיף רוּגְזִי
8 בָּךְ וּבִתְרֵין חַבְרָךְ אֲרוּם לָא מַלֵּלְתּוּן לְוָתִי כֵּוְנָתָא כְּעַבְדִּי אִיּוֹב׃ וּכְדוּן סִיבוּ לְכוֹן
שִׁבְעָא תּוֹרִין וְשִׁבְעָא דִכְרִין וְאִזִּילוּ לְוַת עַבְדִּי אִיּוֹב וְתַסְּקוּן עֲלָתָא אַמְטוּלְכוֹן וְעַבְדִּי
אִיּוֹב יְצַלֵּי עֲלֵיכוֹן אֲרוּם אֱלָהֵן אַפּוֹי אֶסַּב מִן בִּגְלַל דְּלָא לְמֶעְבַּד עִמְּכוֹן קְלָנָא אֲרוּם
9 לָא מַלֵּלְתּוּן לְוָתִי כֵּוְנָא כְּעַבְדִּי אִיּוֹב׃ וַאֲזַלוּ אֱלִיפַז דְּמִן תֵּימָן וּבִלְדַּד דְּמִן שׁוּחַ
צוֹפַר דְּמִן נַעֲמָה וַעֲבַדוּ הֵיךְ דְּמַלֵּל לְהוֹם מֵימְרָא דַיְיָ וּנְסֵיב מֵימְרָא דַיְיָ יָת אַפֵּי אִיּוֹב׃
10 וּמֵימְרָא דַיְיָ אָתֵיב יָת גָּלוּת אִיּוֹב בִּצְלוֹתֵיהּ מְטוּל דְּחַבְרוֹי וְאוֹסֵיף מֵימְרָא דַיְיָ יָת כָּל דִּי
11 לְאִיּוֹב בְּכוּפְלָא׃ וַאֲתוֹ לְוָתֵיהּ כָּל אֲחוֹי וְכָל אַחְוָתֵיהּ וְכָל חַכִּימוֹי מִן קַדְמַת דְּנָא
וַאֲכַלוּ עִמֵּיהּ לַחְמָא בְּבֵיתֵיהּ וְנִידוּ לֵיהּ וְנַחֲמוּ יָתֵיהּ עַל כָּל בִּישְׁתָא דְּאַיְתִי יְיָ עֲלוֹי
12 וִיהַבוּ לֵיהּ גְּבַר חוּרְפָא חֲדָא וֶאֱנָשׁ קְדָשָׁא דְּדַהֲבָא חַד׃ וּמֵימְרָא דַיְיָ בָּרֵיךְ יָת סוֹפָא
דְּאִיּוֹב מִן קַדְמוּתֵיהּ וַהֲווֹ לֵיהּ אַרְבְּסַר אַלְפִין דְּעָן וְשִׁית אַלְפִין דְּגַמְלִין וְאַלְפָא פַּדָּנִין
13 14 דְּתוֹרִין וְאַלְפָא אַתְנָן׃ וַהֲווֹ לֵיהּ אַרְבְּסַר בְּנִין וּתְלַת בְּנָן׃ וּקְרָא שְׁמָהּ דַּחֲדָא
יְמִימָא וְשׁוּם תִּנְיָתָא קְצִיעָא וְשׁוּם תְּלִיתָאָה קֶרֶן הַפּוּךְ׃ יְמִימָא הֲוָה קָרֵי
לַהּ דַּהֲוָה שׁוּפְרַהָא כִּימְמָא קְצִיעָה הֲוָה קָרֵי לַהּ דַּהֲוַת יַקִּירָא כְּעֵין קְצִיעֲתָא קֶרֶן הַפּוּךְ
15 הֲוָה קָרֵי לַהּ דַּהֲוַת סַגִּי זִיו יְקָר אַפָּהָא הֵיךְ אוּמַרְגְּדָא׃ וְלָא אִשְׁתַּכַּח נְשַׁיָּא שַׁפִּירָתָא הֵיךְ
16 בְּנָתָא דְּאִיּוֹב בְּכָל אַרְעָא וִיהַב לְהוֹם אֲבוּהוֹם אַחְסַנְתָּא בִּמְצִיעַ אֲחוּהוֹן׃ וַחֲיָא אִיּוֹב בָּתַר
17 דְּנָא מְאָה וְאַרְבְּעִין שְׁנִין וַחֲמָא יָת בְּנוֹי וְיָת בְּנֵי בְנוֹי אַרְבְּעָה דָּרִין׃ וּמִית אִיּוֹב
סִיב וּשְׂבַע יוֹמַיָּא

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et factum eſt poſtquàm locutus eſt Dominus ad Job verba hæc, dixit Dominus ad Eliphaz qui erat de Theman: Iratus eſt furor meus in te et in duos ſocios tuos, quoniam non eſtis locuti ad me recta ſicut ſervus meus Job. Et nunc tollite vobis ſeptem boves et ſeptem arietes, et ite ad ſervũ meum Job, et offeretis *holocauſtum* pro vobis et Job ſervus meus orabit pro vobis; faciem enim ejus ſuſcipiam, ut non faciam vobis ignominiam, quia non eſtis locuti ad me rectum ſicut ſervus meus Job. Et abierunt Eliphaz qui erat de Theman, et Baldad qui erat de Sua, et Sophar qui erat de Naama, et fecerunt ſicut locutum fuerat eis verbum Domini: & acceptavit *verbum* Domini faciem Job. Et verbum Domini convertit captivitatem Job cùm oraret pro amicis ſuis: et addidit *verbum* Domini omnia quæ fuerant Job, duplicia. Et venerunt ad eum omnes fratres ejus & omnes ſorores ejus, et omnes qui cognoverant eum antehac, et comederunt cum eo panem in domo ejus: et commoti ſunt ſuper eum, et conſolati ſunt eum ſuper omne malum quod induxerat Dominus ſuper eum: et dederunt ei unuſquiſque ovem unam, et unuſquiſque inaurem auream unam. Verbum autem Domini benedixit noviſſimis Job magis quàm principio: et fuerunt ei quatuordecim millia ovium, et ſex millia camelorum, et mille juga boum, et mille aſinæ. Et fuerunt ei quatuordecim filii & tres filiæ. Et vocavit nomen unius Jamima, & nomen ſecundæ Caſia, & nomen tertiæ Cheren-Hapuch. *Indidit illi nomen Jamima, quod eſſet pulchritudo ejus ſicut diei: Caſiam vocavit alteram, quòd eſſet pretioſa inſtar caſiæ: Cheren-Hapuch appellavit aliam, quòd multus eſſet ſplendor faciei ejꝰ ut ſmaragdi.* Et non ſũt inventæ mulieres pulchræ ſicut filiæ Job in univerſa terra: & dedit eis pater earũ hæreditatẽ in medio fratrũ ſuorũ. Et vixit Job poſt hæc centũ et quadraginta annis: & vidit filios ſuos et filiorum ſuorum filios, quatuor generationes. Et mortuus eſt Job ſenex, et ſatiatus diebus.

Verſio SYRIACA.

7 * ܘܗܘܐ ܡܢ ܒܬܪ ܕܡܠܠ ܡܪܝܐ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܥܡ ܐܝܘܒ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܐܠܝܦܙ ܬܝܡܢܝܐ. ܐܬܚܡܬ
8 ܪܘܓܙܝ ܥܠܝܟ ܘܥܠ ܬܪܝܢ ܚܒܪܝܟ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܡܠܬܘܢ ܩܕܡܝ ܬܪܝܨܬܐ ܐܝܟ ܥܒܕܝ ܐܝܘܒ. * ܘܗܫܐ ܣܒܘ ܠܟܘܢ
ܫܒܥܐ ܬܘܪܝܢ. ܘܫܒܥܐ ܕܟܪܝܢ. ܘܙܠܘ ܠܘܬ ܥܒܕܝ ܐܝܘܒ. ܘܐܣܩܘ ܥܠܘܬܐ ܚܠܦܝܟܘܢ. ܘܥܒܕܝ ܐܝܘܒ
ܢܨܠܐ ܥܠܝܟܘܢ. ܘܐܦܘܗܝ ܐܣܒ. ܕܠܐ ܐܥܒܕ ܥܡܟܘܢ ܣܟܠܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܡܠܬܘܢ ܩܕܡܝ ܬܪܝܨܬܐ ܐܝܟ ܥܒܕܝ
9 ܐܝܘܒ. * ܘܐܙܠܘ ܐܠܝܦܙ ܬܝܡܢܝܐ. ܘܒܠܕܕ ܫܘܚܝܐ. ܘܨܘܦܪ ܢܥܡܬܝܐ. ܘܥܒܕܘ ܐܝܟ ܕܐܡܪ ܠܗܘܢ ܡܪܝܐ. ܘܢܣܒ
10 ܡܪܝܐ ܐܦܘܗܝ ܕܐܝܘܒ. * ܘܡܪܝܐ ܐܗܦܟ ܫܒܝܬܗ ܕܐܝܘܒ. ܟܕ ܡܨܠܐ ܗܘܐ ܚܠܦ ܚܒܪܘܗܝ. ܘܐܘܣܦ ܡܪܝܐ ܥܠ
11 ܟܠ ܡܕܡ ܕܗܘܐ ܠܗ ܠܐܝܘܒ ܥܦܝܦܐܝܬ. * ܘܐܬܘ ܠܘܬܗ ܟܠܗܘܢ ܐܚܘܗܝ ܘܐܚܘܬܗ. ܘܟܠ ܕܝܕܥܝܢ ܗܘܘ ܠܗ ܡܢ
ܩܕܝܡ. ܘܐܟܠܘ ܥܡܗ ܠܚܡܐ ܒܒܝܬܗ. ܘܐܬܥܝܩܘ ܥܠܘܗܝ ܘܒܝܐܘܗܝ. ܥܠ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܐܝܬܝ
12 ܡܪܝܐ ܥܠܘܗܝ. ܘܝܗܒܘ ܠܗ ܟܠ ܓܒܪ ܢܩܝܐ ܚܕܐ. ܘܩܕܫܐ ܚܕ ܕܕܗܒܐ. * ܘܡܪܝܐ ܒܪܟ ܐܚܪܝܬܗ ܕܐܝܘܒ.
ܝܬܝܪ ܡܢ ܩܕܡܝܬܗ. ܘܗܘܘ ܠܗ ܐܪܒܥܣܪ ܐܠܦܝܢ ܥܢܐ. ܘܫܬܐ ܐܠܦܝܢ ܓܡܠܐ. ܘܐܠܦ ܦܕܢܝܢ ܕܬܘܪܐ.
13 ܘܐܠܦ ܐܬܢܝܢ. * ܘܗܘܘ ܠܗ ܫܒܥܐ ܒܢܝܢ ܘܬܠܬ ܒܢܢ. * ܘܩܪܐ ܫܡܐ ܕܚܕܐ ܝܘܡܐ. ܘܫܡܐ
14
15 ܕܬܪܝܢܝܬܐ ܩܨܝܥܐ. ܘܫܡܐ ܕܬܠܝܬܝܬܐ ܩܪܢ ܦܘܟ. * ܘܠܐ ܐܫܬܟܚܘ ܢܫܐ ܕܫܦܝܪܢ ܐܝܟ ܒܢܬܗ ܕܐܝܘܒ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ.
16 ܘܝܗܒ ܠܗܝܢ ܐܒܘܗܝܢ ܝܪܬܘܬܐ ܥܡ ܐܚܝܗܝܢ. * ܘܚܝܐ ܐܝܘܒ ܡܢ ܒܬܪ ܗܠܝܢ. ܡܐܐ ܘܐܪܒܥܝܢ ܫܢܝܢ.
17 ܘܚܙܐ ܒܢܘܗܝ. ܘܒܢܝ ܒܢܘܗܝ. ܠܐܪܒܥܐ ܕܪܝܢ. * ܘܣܒ ܐܝܘܒ ܘܣܒܥ ܝܘܡܬܐ. ܘܡܝܬ.

* ܫܠܡ ܟܬܒܐ ܕܐܝܘܒ ܟܐܢܐ ܘܡܫܒܚܐ. ܐܝܬ ܒܗ: ܦܬܓܡܐ ܘ ܒܢܢ *

Verſio ARABICA.

7 * وكان من بعد ما تكلم الرب مع ايوب * قال الرب لاليفاز التيمي احما رجزي عليك وعلي كلي
8 صاحبيك * حين لم تقولوا قدامي البر علي عبدي ايوب * فالان خذوا لكم سبعة ثيران * وسبعة
كباش * واذهبوا الي عبدي ايوب * فيصعد قربانا بدلكم * وعبدي ايوب يصلي عليكم * واصنع
9 بوجهه فلا اجعلكم للهوان * انكم لم تقولوا قدامي البر مثل عبدي ايوب * وانطلق اليفاز التيمي
10 وبلداد السوحاني * وصوفار النعماتي فصنعوا كالذي قال لهم الرب * فصنع الرب بوجه ايوب * والرب
11 رد سبيه حين كان يصلي علي احبابه * وزاد الرب علي كل شي كان لايوب ضعفا * فاتا اليه جميع
اخوته واخواته * وكل الذين كانوا يعرفونه * واكلوا معه خبزا في بيته الذي كانوا حزنوا عليه * وعزوه
من جميع البلوي الذي اتا الرب عليه * ووهب له كل رجل من واحد واحد شاة واحدة وواحد قرطا
12 من ذهب * والرب بارك اخر ايوب اكثر من اوليته * فكان له اربعة عشر الفا من الغنم * وستة الاف
13 من الجمال * والف فدان من البقر * والف اتانة * وكان له سبع بنين وثلاثة بنات * ودعا اسم الواحدة
14
15 نهارا * واسم الثانية قصوعة * واسم الثالثة قرن نافوخ * ولم يوجد نساء احسن من بنات ايوب في جميع
16 الارض * واعطاهن ايوب ميراثا مع اخوتهن * وعاش ايوب من بعد ذلك مائة واربعين وستة سنين
17 وابصر بنيه وبني بنيه علي اربعة دور * وشاخ ايوب وشبع من ايامه ومات *

VERS. SYR. & ARAB. Interp. Lat.

7 Et factum eſt, poſtquam Dominus locutus eſt (d) cũ Job, dixit Dominus ad Elifaz Temanitem, Accenſus eſt furor meus contra te, & contra utrumq; amicũ tuũ, dum non locuti eſtis coram me de ſervo meo Job rectum. 8 Modò ſumite vobis ſeptem tauros & ſeptem arietes, & ite ad ſervum meũ Job, & elevabit oblationẽ pro vobis: & ſervus meus Job orabit pro vobis, & faciam propter eũ, & non faciam vos in deſpectionem, eò quòd non dixiſtis coram me juſtum ſicut ſervus meus Job. 9 Et abiit Elifaz Temanites, & Beldad Suhites, & Sofar Naamatites, & fecerunt ſicut dixit eis Dominus: & fecit Dominus propter Job. 10 Et Dominus revocavit captivitatem (e) ejus, cum oraret pro amicis ſuis: Et auxit Deus omnia quæcunq; fuerant Job, dupliciter: 11 Veneruntq; ad eũ omnes fratres ejus, & ſorores ejus, & omnes qui (f) eũ cognoſcebãt & comederunt cũ eo panem in domo ejus, qui contriſtati erant de ipſo: & conſolati ſunt eum pro omnibus tribulationibus quas Dominus intulerat ei. Et dederunt ei unuſquiſque vir ovem unam, & unam inaurem auri. 12 Et Dominus benedixit noviſſimis Job magis quàm principio ejus. Et facta ſunt ei quatuordecim millia ovium, & ſex millia camelorum, & mille juga boum, & mille aſinæ. 13 Fueruntque ei ſeptem filii, & tres filiæ: 14 Et vocavit nomen unius Diem, & nomen ſecundæ Caſua, & nomen tertiæ Carnaſuch: 15 Et non inventæ ſunt mulieres pulchriores filiabus Job, in univerſa terra. Deditque eis Job hereditatem inter fratres earũ. 16 Et vixit Job poſt hæc (g) centum quadraginta ſex annis, & vidit filios ſuos, & filios filiorum ſuorum, uſque ad quartam generationem. 17 Et ſenuit Job, & ſaturatus eſt diebus ſuis, & mortuus eſt.

INTERP. SYRIACA.

(d) hoſce ſermones cũ (e) Job, cùm (f) jam olim eum (g) centum & quadraginta annis, Abſolutus eſt Liber Job Juſti et illuſtris; in quo continentur verſus 2553.

* وايوب كان ساكنا في ارض عوص في اخم ادوم وعربيا * ومن قبل كان اسمه يوباب * اخذ هذا
امراة عربية * وولد له غلام كان اسمه انون * وايوب كان ابن زارا ابن بني عيسو * وامه كانت
من بصري * وهو كان السادس من ابراهيم * والملوك الذي ملكوا في ادوم * الذي كان ملك
علي تلك الارض من قبل * بالق ابن باعور * واسم مدينته دنابا * ومن بعد يوباب هذا الذي
يسمي ايوب * وبعد ايوب ايضا اسم هذا الذي كان رئيسا من الارض التيمانية * ومن بعد
ابن باراق هذا الذي قتل وهزم مديام في سهلة مواب * واسم مدينته جاتم * واصدقاء ايوب
الذي جاوه اليفاز من بني عيسو ملك التيمانيين *

Job verò habitabat in terra Us, inter terminos Edom & Arabiæ, & antea vocabatur Jobab. Hic duxit uxorem alienigenam, ipſique natus eſt filius dictus Annon. Job verò erat filius Zaræ, filii filiorum Eſau; & mater ejus erat de Baſra: & ipſe erat ſextus ab Abrahamo. Ex regibus verò qui regnârunt in Edom, regnavit ſuper illam terram primò Balac filius Beor: & nomen urbis iſtius viri, Danaba. Et poſt hunc Jobab, iſte qui vocatur Job: Et poſt Job quoque nomen ejus, qui erat princeps de terra Temanæ: Et poſt eum filius Barac, hic eſt qui occidit & fugavit Madiam in planitie Moab: & nomen urbis ejus Gethem. Et ex amicis Job qui eum convenerunt, erat Eliſaz de filiis Eſau, rex Temanitarum.

* تم بعون الله تعالي * وقد ذكر صاحب النسخة الذي نقلت منها هذه النسخة انه فسر
من السريانية الي العربية * والحمد لواهب العقول *

* Completum eſt, excelſo Deo favente. Commemoravit autem Author exemplaris, à quo hoc deſcriptum eſt, hunc librum à Syriaco ſermone in Arabicum verſum fuiſſe.

Gloria intellectuum datori.

* انقضي سفر ايوب الصديق * وكانت جميع ايام حياة ايوب * مايتين واربعين سنة *

* الحمد لله ابدا *

Perfectus eſt Liber Job. Et fuit ætas ducentorum quadraginta annorum.

Laus Deo ſemper.

ספר תהלים : א ב

PSALMUS I. א

peccatorum via in & ,impiorum consilium in ambulavit non qui viri Beatitudines
1 אַשְׁרֵי הָאִישׁ אֲשֶׁר לֹא הָלַךְ בַּעֲצַת רְשָׁעִים וּבְדֶרֶךְ חַטָּאִים
Domini lege in Quinimo .sedit non derisorum consessu in & ,stetit non
2 לֹא עָמָד וּבְמוֹשַׁב לֵצִים לֹא יָשָׁב: כִּי אִם בְּתוֹרַת יְהוָה
plantatum lignum sicut erit Et .nocte ac die meditabitur ejus lege in & ,ejus voluntas
3 חֶפְצוֹ וּבְתוֹרָתוֹ יֶהְגֶּה יוֹמָם וָלָיְלָה: וְהָיָה כְּעֵץ שָׁתוּל
non ejus folium & ,suo tempore in dabit suum fructum quod ,aquarum rivos super
עַל־פַּלְגֵי מָיִם אֲשֶׁר פִּרְיוֹ יִתֵּן בְּעִתּוֹ וְעָלֵהוּ לֹא־
quinimo ; impii sic Non .faciet prosperare ,faciet quod omne & : decidet
4 יִבּוֹל וְכֹל אֲשֶׁר־יַעֲשֶׂה יַצְלִיחַ: לֹא־כֵן הָרְשָׁעִים כִּי אִם־
, judicio in impii stabunt non Ideo .ventus eam dispellet quam gluma sicut
5 כַּמֹּץ אֲשֶׁר־תִּדְּפֶנּוּ רוּחַ: עַל־כֵּן לֹא־יָקֻמוּ רְשָׁעִים בַּמִּשְׁפָּט
via & : justorum viam Dominus sciens Quoniam .justorum cœtu in peccatores &
6 וְחַטָּאִים בַּעֲדַת צַדִּיקִים: כִּי־יוֹדֵעַ יְהוָה דֶּרֶךְ צַדִּיקִים וְדֶרֶךְ
.peribit impiorum
רְשָׁעִים תֹּאבֵד:

PSAL. II. ב

reges Astabunt ? inane meditabuntur populi & ,gentes sunt tumultuatæ quid Ut
1 לָמָּה רָגְשׁוּ גוֹיִם וּלְאֻמִּים יֶהְגּוּ־רִיק: יִתְיַצְּבוּ מַלְכֵי־
2 .ejus Unctum adversus & ,Dominum adversus ,pariter consultant principes & , terræ
אֶרֶץ וְרוֹזְנִים נוֹסְדוּ־יָחַד עַל־יְהוָה וְעַל־מְשִׁיחוֹ:
Habitans .eorum funes nobis à projiciamus & ; eorum vincula Dirumpamus
3 נְנַתְּקָה אֶת־מוֹסְרוֹתֵימוֹ וְנַשְׁלִיכָה מִמֶּנּוּ עֲבֹתֵימוֹ: יוֹשֵׁב
4 ,suo naso in eos ad loquetur Tunc .eos subsannabit Dominus ,ridebit cœlis in
5 בַּשָּׁמַיִם יִשְׂחָק אֲדֹנָי יִלְעַג־לָמוֹ: אָז יְדַבֵּר אֵלֵימוֹ בְאַפּוֹ
montem ,Sijon super ,meum regem constitui ego Et .eos terrebit sua ira in &
6 וּבַחֲרוֹנוֹ יְבַהֲלֵמוֹ: וַאֲנִי נָסַכְתִּי מַלְכִּי עַל־צִיּוֹן הַר־
, tu meus filius ,me ad dixit Dominus ,statutum ipsum Narrabo .meæ sanctitatis
7 קָדְשִׁי: אֲסַפְּרָה אֶל־חֹק יְהוָה אָמַר אֵלַי בְּנִי אַתָּה
; tuam hæreditatem gentes dabo & , me à Postula .te genui hodie ego
8 אֲנִי הַיּוֹם יְלִדְתִּיךָ: שְׁאַל מִמֶּנִּי וְאֶתְּנָה גוֹיִם נַחֲלָתֶךָ
figuli vas sicut :ferrea virga in eas Conteres .terræ fines tuam possessionem &
9 וַאֲחֻזָּתְךָ אַפְסֵי־אָרֶץ: תְּרֹעֵם בְּשֵׁבֶט בַּרְזֶל כִּכְלִי יוֹצֵר
10 Servite .terræ judices vos castigate ,intelligite reges nunc Et .eos disperges confractos
11 תְּנַפְּצֵם: וְעַתָּה מְלָכִים הַשְׂכִּילוּ הִוָּסְרוּ שֹׁפְטֵי אָרֶץ: עִבְדוּ
fortè ne filium Osculamini .tremore in exultate & ,timore in Domino
12 אֶת־יְהוָה בְּיִרְאָה וְגִילוּ בִּרְעָדָה: נַשְּׁקוּ־בַר פֶּן־
omnes beati : eius nasus paululum vel exarserit cùm , via pereatis & ,irascatur
יֶאֱנַף וְתֹאבְדוּ דֶרֶךְ כִּי־יִבְעַר כִּמְעַט אַפּוֹ אַשְׁרֵי כָּל־
.eo in confidentes
חוֹסֵי בוֹ:

תרגום TARGUM.

א

1 טוביה דגבר דלא הליך במלכת רשיעין
ובאורחת חיבין לא קם ובסיעת ממקני לא
2 אסתחר : אלהן בנימוסא דיי רעותיה
3 ובאוריתיה מרנן יימם ולילי : ויהי כאילן חיי
דנציב על טופי מוי דאנביה מבשל בעדניה
ואטרפוי לא נתרין וכל לבלבוי דמלבלב
4 מנרנר ומצלח : לא מטול היכנא רשיעי אלהן
5 כמוזא די תשקפניה עלעולא : מטול היכנא
לא יזכון רשיעי ביומא רבא וחיבין בסיעת
6 צדיקיא : מטול דגלי קדם יי אורח צדיקיא
ואורחתהון דרשיעי תהובד :

ב

1 למה מתרגשן עממיא ואומיא מרננין סריקותא:
2 קימין מלכי ארעא ושלטוניא יתחברון כחדא
3 למרדא קדם יי ולמנצי על משיחיה : נתרע ית
4 אסרתיהון ונטלוק מננא שלשלותהון : דיתיב
5 בשמיא יגחך מימרא דיי יחדך להון : הידין
ימלל להון בתוקפיה וברוגזיה יבהל אנון :
6 ואני רביתי מלכי ומניתיה על טור מקדשי :
7 אשתעי קימא דיי אמר חביב כבר לאבא לי
8 אנת זכאה כאלו יומא דין בריתך . בעי מני
ואתן נכסי עממיא אחסנתך ואחודתך שלטוני
9 סיפי ארעא : תתברנון היך בחוטרא דפרזלא
10 היך מן דפחר תתרענון : וכדין מלכיא
11 אשכילו קבילו מרדותא נגידי ארעא : פלחו
12 קדם יי בדחלא וצלו ברתיתא : קבילו אולפנא
דלמא ירגיז ותהובדון אורחא מטול
דייחור כזעיר רוגזיה טוביה לכל דסברין
במימריה :

PARAPH. CHALD. Vers. La

LIBER PSALMORUM.

PSAL. I.

BEatitudo viro qui non ivit in consilium impiorum, & in via peccatorum non stetit, & cum societate derisorum non sedit. Sed in institutione Domini voluntas ejus, & in Lege ejus meditatur die ac nocte. Et erit tanquam arbor *vitæ* quæ plantata est super rivos aquarum, cujus fructus maturescit in tempore suo, & folia ejus non defluunt, & omne germen ejus quod germinat, granescit & proficit. Non sic impii, sed sicut stipula quam projicit *turbo*. Propterea non *justificabuntur* impii in die *magno*, neque peccatores in societate justorum. Quoniam manifesta est ante Dominum via justorum, & via impiorum perdetur.

PSAL. II.

QUare fremunt populi, & nationes meditantur vanitatem? Consurgunt reges terræ, & potentes convenerunt in unum, ut deficiant à Domino, & certent *contra Messiam* ejus. Dissolvamus vincula eorum, & projiciamus à nobis funes eorum. Qui sedet in cœlis, ridebit: Verbum Domini subsannabit eos. Tunc loquetur ad eos in fortitudine sua, & in ira sua interturbabit eos. Et ego unxi regem meum, & constitui ipsũ super montem *sanctuarii mei*. Recitabo pactum, *quod* Dominus dixit: Dilecte sicut filius est patri, tu mihi purus es, ac si die isto creavissem te. Postula à me, & dabo divitias populorum hæreditatem tuam, & possessionem tuam *dominia finium* terræ. Confringes ipsos velut in virga ferrea, tanquam vas fictile conteres eos. Et nunc reges intelligite, recipite eruditionem duces terræ. Servite coram Domino in timore, & orate in tremore. Recipite doctrinam, ne fortè irascatur, & amittatis viam. Cùm exarserit paululum furor ejus: bonum omnibus qui sperant in verbo ejus.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܟܬܒܐ ܕܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܘܢܒܝܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܩܕܡܝܐ *

1 * ܬܫܥܝܬܐ ܕܡܟܪܙܘܬܐ ܕܥܠ ܕܘܒܪܐ ܛܒܐ ܕܐܝܬܝܗ ܒܩܢܘܢܐ ܕܬܫܥ ܛܘܒܐ ܕܒܡܬܝ. ܦܬܓܡܐ ܝܕ.
ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܒܐܘܪܚܐ ܕܥܘܠܐ ܠܐ ܗܠܟ. ܘܒܪܥܝܢܐ ܕܚܛܝܐ ܠܐ ܩܡ : ܘܥܠ ܡܘܬܒܐ
2 ܕܡܡܝܩܢܐ ܠܐ ܝܬܒ. * ܐܠܐ ܒܢܡܘܣܗ ܕܡܪܝܐ ܨܒܝܢܗ : ܘܒܢܡܘܣܗ ܢܬܗܓܐ ܐܝܡܡܐ
3 ܘܠܠܝܐ.* ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܐܝܠܢܐ ܕܢܨܝܒ ܥܠ ܬܦܩܐ ܕܡܝܐ : ܕܦܐܪܘܗܝ ܝܗܒ ܒܙܒܢܗ ܘܛܪܦܘܗܝ
4 5 ܠܐ ܢܬܪܘܢ. ܘܟܠ ܕܥܒܕ ܡܨܠܚ :* ܠܐ ܗܟܢܐ ܥܘܠܐ.* ܐܠܐ ܐܝܟ ܥܘܪܐ ܕܡܕܪܝܐ ܪܘܚܐ :* ܡܛܠ ܗܢܐ
6 ܠܐ ܢܩܘܡܘܢ ܥܘܠܐ ܒܕܝܢܐ. ܘܐܦܠܐ ܚܛܝܐ ܒܟܢܘܫܬܐ ܕܙܕܝܩܐ : * ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܗܘ ܡܪܝܐ
ܐܘܪܚܐ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܥܘܠܐ ܬܐܒܕ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܬܪܝܢ *
1 * ܡܛܠ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܪܡܙ ܒܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܚܫܗ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܚ.
2 ܠܡܢܐ ܪܓܫܘ ܥܡܡܐ. ܘܐܡܘܬܐ ܪܢܝ ܣܪܝܩܘܬܐ : * ܩܡܘ ܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ ܘܫܠܝܛܢܘܗܝ.
3 ܘܐܬܡܠܟܘ ܐܟܚܕܐ : ܥܠ ܡܪܝܐ ܘܥܠ ܡܫܝܚܗ. * ܢܦܣܘܩ ܐܣܘܪܝܗܘܢ : ܘܢܫܕܐ ܡܢܢ ܢܝܪܗܘܢ.
4 5 * ܕܝܬܒ ܒܫܡܝܐ ܢܓܚܟ : ܘܡܪܝܐ ܢܡܝܩ ܒܗܘܢ. * ܗܝܕܝܢ ܢܡܠܠ ܥܡܗܘܢ ܒܪܘܓܙܗ :
6 ܘܒܚܡܬܗ ܢܕܠܚ ܐܢܘܢ. * ܐܢܐ ܐܩܝܡܬ ܡܠܟܝ ܥܠ ܨܗܝܘܢ ܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ : ܠܡܫܬܥܝܘ
7 ܠܦܘܩܕܢܝ. * ܡܪܝܐ ܐܡܪ ܠܝ ܕܒܪܝ ܐܢܬ : ܘܐܢܐ ܝܘܡܢܐ ܝܠܕܬܟ. * ܫܐܠ ܡܢܝ ܘܐܬܠ ܠܟ :
8 ܥܡܡܐ ܒܝܪܬܘܬܟ. ܘܐܘܚܕܢܟ ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ : * ܬܪܥܐ ܐܢܘܢ ܒܫܒܛܐ ܕܦܪܙܠܐ. ܘܐܝܟ ܡܐܢܐ
9 10 ܕܦܚܪܐ ܬܫܚܩ ܐܢܘܢ : * ܘܗܫܐ ܡܠܟܐ ܐܣܬܟܠܘ. ܘܐܬܪܕܘ ܕܝܢܝ ܐܪܥܐ : * ܦܠܘܚܘ ܠܡܪܝܐ
11 12 ܒܕܚܠܬܐ. ܘܐܚܘܕܘܗܝ ܒܪܬܝܬܐ : * ܢܫܩܘ ܒܪܐ ܕܠܐ ܢܪܓܙ. ܘܬܐܒܕܘܢ ܡܢ ܐܘܪܚܗ : * ܡܛܠ
13 ܕܩܠܝܠ ܢܐܦ ܪܘܓܙܗ. ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ.

LIBER PSALMORUM DAVIDIS Regis & Prophetæ.

PSALMUS PRIMUS.

Narratio concionis, quæ de bonis moribus (habetur) in canone novem Beatitudinum apud Matthæum, continens vers. 14.

BEatus vir qui in via iniquorum non ambulavit, & in opinione peccatorum non stetit, & super sede irrisorum non sedit: Sed in 1
lege Domini voluntas ejus, & in lege ejus 2
meditabitur die ac nocte. Erit veluti ar- 3
bor quæ est plantata secus rivum aquarum
quæ fructus suos reddit suo tempore, & 4
cujus folia non defluunt, & quodcunque
facit, perficit. Non sic impii, sed tanquam 5
festuca quam dispellit ventus. Idcirco non
surgent impii in judicio, neque peccatores 6
in cœtu justorum. Quoniam novit Dominus viam justorũ, via auté impiorum peribit.

PSAL. II.

De vocatione Gentium. Innuit prophetiam de passione Christi. Vers. 28.

QUare tumultuarunt gentes, & populi et cogitárunt vanitatem? Surrexerunt re-
ges terræ & principes ejus, & consultárunt 1
simul adversùs Dñm & adversùs Christũ ejus 2
(Dicentes,) Rumpamus vincula eorũ, & tollamus à nobis jugum ipsorum. Qui sedet 3
in cœlo ridebit, et Domin⁹ subsannabit eos 4
Tunc loquetur de illis in ira sua, et in furore 5
suo conturbabit eos. Ego constitui Regem 6
meum super Sion montem sanctitatis meæ
Ut ennarraret decretum meum. Dñs dixit 7
mihi; Filius meus es, et ego hodie genui te. 8
Postula à me, daboque tibi gentes in hæreditatem tuam, et possessiones tuas terminos ter-
ræ. Pasces eos virgis ferri, et sicut vasa fi- 9
guli comminues eos. Nunc ergò, Reges, sapite
et erudimini judices terræ. Servite Domino 10
in timore, et tenete eum in tremore: Oscu- 11
lamini filium, ne irascatur, et pereatis à via
ejus: Nam brevi exardescet ira ejus. Beati 12
omnes qui confidunt in eo.

Advertendum, Præter literas Parenthesi ( ) insertas in Versionis Græcæ Interpretatione Latina, quæ ad Nobilii Notas in ultimo Tomo hujus operis Lectoré remittunt; adjici insuper alias hisce notis [ ] inclusas, quæ differentias Æthiopicæ Versionis à Græca, ad finem cujuslibet columnæ appositas, ostendunt: Notas verò numerales, quæ in ipsa Translatione Latina inseruntur, versuum distinctionem juxta Versionem Æthiopicam, cùm à Latina differt, indicare.

Versio VULG. LAT.

LIBER PSALMORUM.

PSALM. I.

1 Beatus vir, qui non abiit in consilio
impiorum, & in via peccatorum non ste-
tit, & in cathedra pestilentiæ non sedit:
2 Sed in lege Dñi voluntas ejus, & in lege
3 ejus meditabitur die ac nocte. Et erit
tanquam lignum, quod plantatum est se-
cus decursus aquarum, quod fructum suũ
dabit in tempore suo: Et folium ejus
non defluet: & omnia quæcumq; faciet
4 prosperabuntur. Non sic impii, non sic:
sed tanquam pulvis, quem projicit ven-
5 tus à facie terræ. Ideò non resurgent
impii in judicio: neque peccatores in
6 concilio justorum. Quoniam novit Do-
minus viam justorum: & iter impio-
rum peribit.

PSALM. II.

1 Quarè fremuerunt gentes, & populi
2 meditati sunt inania? Astiterunt reges
terræ, & principes convenerunt in unũ,
adversùs Dominum, & adversùs Chri-
3 stum ejus. Dirumpamus vincula eorum:
& projiciamus à nobis jugum ipsorum.
4 Qui habitat in cœlis irridebit eos: &
5 Dominus subsannabit eos. Tunc lo-
quetur ad eos in ira sua, & in furore suo
6 conturbabit eos. Ego autem constitutus
sum rex ab eo super Sion montem san-
ctum ejus, prædicans præceptum ejus.
7 Dominus dixit ad me; Filius meus es
8 tu, ego hodiè genui te. Postula à me, &
dabo tibi gentes hæreditatem tuam, &
9 possessionem tuã terminos terræ. Reges
eos in virga ferrea, & tanquam vas fi-
10 guli confringes eos. Et nunc reges intel-
ligite: erudimini qui judicatis terram.
11 Servite Domino in timore: & exul-
12 tate ei cum tremore. Apprehendite
disciplinam, nequando irascatur Do-
13 minus, & pereatis de via justa. Cùm
exarserit in brevi ira ejus, beati omnes,
qui confidunt in eo.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

(α) ΨΑΛΜΟΙ.

Α'.

1 † Μακάριος ἀνήρ, ὃς οὐκ ἐπορεύθη ἐν βουλῇ ἀ-
σεβῶν, † καὶ ἐν ὁδῷ ἁμαρτωλῶν οὐκ ἔστη, † καὶ ἐπὶ
2 καθέδρᾳ λοιμῶν οὐκ ἐκάθισεν. † Ἀλλ' ἢ ἐν τῷ νό-
μῳ κυρίου τὸ θέλημα αὐτοῦ, † καὶ ἐν τῷ νόμῳ αὐτοῦ
3 μελετήσει ἡμέρας καὶ νυκτός. † Καὶ ἔσται ὡς τὸ
ξύλον τὸ πεφυτευμένον παρὰ τὰς διεξόδους τῶν ὑ-
δάτων, † ὃ τὸν καρπὸν αὐτοῦ δώσει ἐν καιρῷ αὐτοῦ.
† καὶ τὸ φύλλον αὐτοῦ οὐκ ἀποῤῥυήσεται, † καὶ πάντα ὅ-
4 σα ἂν (β) ποιῇ, κατευοδωθήσεται. † Οὐχ οὕτως οἱ ἀσεβεῖς,
οὐχ οὕτως, † ἀλλ' ἢ ὡς ὁ χνοῦς ὃν ἐκρίπτει ὁ ἄνεμος
5 ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς. † Διὰ τοῦτο οὐκ ἀναστήσονται (γ) οἱ
ἀσεβεῖς ἐν κρίσει, † οὐδὲ (δ) ἁμαρτωλοὶ ἐν βουλῇ δι-
6 καίων. † Ὅτι γινώσκει κύριος ὁδὸν δικαίων, † καὶ
ὁδὸς ἀσεβῶν ἀπολεῖται.

MS. A. (α) ΨΑΛΤΗΡΙΟΝ. (β) ποιήσῃ, (γ) ἀσεβεῖς (δ) οἱ ἁμαρτωλοὶ

Β'.

1 † Ἱνατί ἐφρύαξαν ἔθνη, καὶ λαοὶ ἐμελέτησαν κενά;
2 † Παρέστησαν οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς, † καὶ οἱ ἄρχοντες
συνήχθησαν ἐπὶ τὸ αὐτὸ † κατὰ τοῦ κυρίου, καὶ κατὰ τοῦ χρι-
3 στοῦ αὐτοῦ. (α) † Διαῤῥήξωμεν τοὺς δεσμοὺς αὐτῶν,
4 † καὶ ἀποῤῥίψωμεν ἀφ' ἡμῶν τὸν ζυγὸν αὐτῶν. † Ὁ
κατοικῶν ἐν οὐρανοῖς (β) ἐκγελάσεται αὐτοὺς, † καὶ ὁ
5 κύριος ἐκμυκτηριεῖ αὐτούς. † Τότε λαλήσει πρὸς
αὐτοὺς ἐν ὀργῇ αὐτοῦ, † καὶ ἐν τῷ θυμῷ αὐτοῦ ταράξει
6 αὐτούς. † Ἐγὼ δὲ κατεστάθην βασιλεὺς ὑπ' αὐτοῦ †
ἐπὶ Σιὼν ὄρος τὸ ἅγιον αὐτοῦ, † (γ) διαγγέλλων
7 τὸ πρόσταγμα κυρίου. † Κύριος εἶπε πρὸς μὲ, Υἱ-
ός μου εἶ σὺ, † ἐγὼ σήμερον γεγέννηκά σε. †
8 Αἴτησαι παρ' ἐμοῦ, καὶ δώσω σοι ἔθνη τὴν κληρο-
νομίαν σου, † καὶ τὴν κατάσχεσίν σου (δ) τὰ πέρατα
9 τῆς γῆς. † Ποιμανεῖς αὐτοὺς ἐν ῥάβδῳ σιδηρᾷ, †
10 (ε) ὡς σκεῦος κεραμέως συντρίψεις αὐτούς. † Καὶ
νῦν βασιλεῖς σύνετε, † παιδεύθητε πάντες οἱ κρί-
11 νοντες τὴν γῆν. † Δουλεύσατε τῷ κυρίῳ ἐν φόβῳ, †
12 καὶ ἀγαλλιᾶσθε αὐτῷ ἐν τρόμῳ. † Δράξασθε παιδείας,
μή ποτε ὀργισθῇ κύριος, † καὶ ἀπολεῖσθε ἐξ ὁδοῦ δι-
13 καίας. † Ὅταν ἐκκαυθῇ ἐν τάχει ὁ θυμὸς αὐτοῦ, †
μακάριοι πάντες οἱ πεποιθότες ἐπ' αὐτῷ.

MS. A. (α) ΔΙΑΨΑΛΜΑ. (β) ἐγγελάσεται (γ) διαγγέλων (δ) τὰ πέρα (ε) καὶ ὡς σκεύη

Ver. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Transl. LAT.

PSALMI.

[a] I.

1 Beatus (a) vir, qui non 1
abiit in consilio impi-
orum: & in via peccatorũ non
stetit: & in cathedra (b) [b]
pestilentiæ non sedit. 2 Sed [c] 2
in lege Domini voluntas ejus:
et in lege ejus meditabitur die
(c) ac nocte. 3 Et erit tanquam 3
lignum, quod (d) plantatum est
secus decursus aquarum: quod
fructum suum dabit in tempo-
re suo. 4 Et folium ejus non de-
fluet: & omnia quæcunque fa-
ciet, (e) [d] prosperabuntur.
5 Non sic [e] impii, non (f) sic: 4
sed tanquam pulvis, quem pro-
jicit ventus à facie terræ. 6 Ideò 5
non resurgẽt impii in judicio,
neque peccatores in (g) consilio
justorũ. 7 Quoniam novit Do- 6
minus viam justorum, [f] et (h)
iter impiorum peribit.

(a) [a] II.

1 Quarè (b) [b] fremue- 1
runt gentes, & populi [c] medi-
tati sunt inania? 2 (c) Astite- 2
runt reges terræ: & principes
convenerũt [d] in unum adver-
sùs Dominum, & adversùs
Christum ejus: 3 * Dirumpamus 3
[e] vincula eorum: et projicia-
mus à nobis jugũ ipsorũ. 4 Qui 4
habitat in cœlis, irridebit eos:
& Dominus subsannabit eos.
5 [f] Tunc loquetur ad eos in 5
ira sua: & in furore suo (d)
conturbabit eos. 6 Ego autẽ (e) 6
constitutus sum rex ab eo, super
Sion montem sanctum ejus, (f)
prædicans præceptum Domini.
7 Dominus dixit ad me, Filius 7
meus es tu: ego hodiè genui te.
8 Postula à me, & dabo tibi 8
gentes hæreditatẽ tuã, & [g]
possessionẽ tuam terminos ter-
ræ. 9 Reges eos in virga ferrea: 9
tanquam vas (g) figuli (h) con-
fringes eos. 10 Et nunc reges (i) 10
intelligite: erudimini omnes
qui judicatis terram. 11 Servite Domino in timore: & exultate ei cum tremore. 12 (k) Apprehendite disciplinam, nequando irascatur Dominus, & pereatis de via justa. 13 Cùm exarserit in brevi 11 12 13
ira ejus; beati omnes qui confidunt in eo.

Versio ÆTHIOPICA.

መዝሙር:ፍርሀተ:እግዚአብሔር:ወአር
ሐቀ:ለመጸርዊ::

፩ ብፁዕ: ብእሲ: ዘኢሖረ: በምክረ: ረሲዓ 1
ን::ወዘኢቆመ: ውስተ: ፍኖተ:ኃጥአን::ወዘ
ኢነበረ:ውስተ:መንበረ:መስተሳልቃን::=: ዘ 2
ዳእሙ:ሕገ:እግዚአብሔር:ሥምረቱ::ወዘ
ሕጎ:የነብብ:መዓልተ:ወሌሊተ::=:ወይከው 3
ን:ከመ:ዕፀ:እንተ: ትክልት: ኀበ:ሙኃዘ:ማ
ይ::እንተ:ትሁብ:ፍሬሃ:በጊዜሃ::=: ወቈ 4
ጽላኒ: ኢይትነገፍ::ወኵሉ: ዘገብረ: ይፌጽ
ም::=: አኮ:ከመዝ:ኃጥአን:አኮ:ከመ 5
ዝ::ዳእሙ:ከመ:መሬት: ዘይግሕፍ::ነፋስ:
እምገጸ:ምድር::=: ወበእንተዝ: ኢይትነ 6
ሥኡ: ረሲዓን : ለምያይን::ወኢኃጥአን:ው
ስተ:ምክረ:ጻድቃን::=:ለስመ : ያአምር : 7
እግዚአብሔር : ፍኖቶሙ: ለጻድቃን :: ወፍ
ኖቶሙሰ : ለኃጥአን : ትጠፍእ::=:

ትንቢት:ዘደዊት:ላዕለ:እግዚአብሔር:ወ
ላዕለ:መሲሁ:እስመ:ሐለዮ:አሕዛብ:
ይዕርግዋ:ለጽዮን:ወይፄውውዋ::

፪ ለምንት:አንገለጉ:አሕዛብ::ወሕዝብኒ: 1
ነበቡ:ከንቶ::=:ወተንሥኡ:ነገሥተ:ምድ 2
ር::ወመላእክትኒ: ተጋብኡ: ምስሌሆሙ: ኅ
ብረ::ላዕለ: እግዚአብሔር : ወላዕለ : መሲ
ሑ::=: ንበትክ:ለምኑና:መአስሪሆሙ::ወ 3
ንገድፍ:እምላዕሌነ:አርዓቶሙ::=: ዘይነ 4
ብር: ውስተ: ሰማይ : ይሥሕቆሙ::ወእግዚ
አብሔር:ይሳለቅ:ላዕሌሆሙ::=: ሶበ:ይነ 5
ብሮሙ: በመዓቱ::ወበመዓቱ : የኀውኮሙ::=:
ወአንሰ:ተሠየምኩ:ንጉሠ:ላዕሌሆሙ::በጽ 6
ዮን: በደብረ: መቅደሱ::ከመ : እንግር: ትእ
ዛዘ:ለእግዚአብሔር::=: እግዚአብሔር: 7
ይቤለኒ:ወልድየ:አንተ::ወአነ: ዮም: ወለድ
ኩከ::=: ሰአል: እምኔየ: ለሁበከ : አሕዛ 8
ብ: ለርስትከ::ወምኵናኒከ: እስከ : አጽና
ፈ:ምድር::=:ወትርዕዮሙ:በበትረ:ኀጺን:: 9
ወከመ: ንዋየ: ለብሐት: ተቀጠቅጦሙ::=:
ወይእዜኒ : ነገሥት : ለብዉ :: ወተገሠጹ: 10
ኵልክሙ:እለ:ትኴንንዋ:ለምድር::=: ተ 11
ቀንዩ : ለእግዚአብሔር : በፍርሃት:: ወተሐ
ሠዩ : ሎቱ : በረዓድ::=: አጽንዕዋ: ለጥ 12
በብ : ከመ: ኢይትመዓዕ : እግዚአብሔር::
ወኢትትሐጐሉ : እምፍኖተ : ጽድቅ::=:
ሶበ:ነደት:ፍጡነ:መዓቱ:: ብፁዓን:ኵሎ 13
ሙ:እለ:ተወከሉ:ቦቱ::

INTERP. ÆTH. [a] Premium timoris Domini, & quòd auferet illud ab adversario. [b] derisorum [c] lex Domini [d] ad exitum perducet. [e] autem [f] sed & PSAL. II. [a] Prophetia Davidis de Deo, & de Messiah ejus, eo quod conjurarent gentes ascendere in Zionem, eamque captivam ducere. [b] convenerunt [c] etiam [d] simul cum illis adversùs [e] à nobis [f] Cùm [g] ditionem tuam etiam usque ad

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* السفر الاول من مزامير داوود النبي ملك بني اسرايل * المزمور الاول *

* حسن عبادة ورجاء الاخرة * وعدة استيخوساته يه *

1 * طوبا للرجل الذي لم يتبع راي المنافقين * ولم يقف في طريق الخاطيين * ولم يجلس مع
2 3 المستهزيين * لكن في ناموس الرب ارادته * وفي سنته يتلوا ليلا ونهارا * فيكون كمثل الشجرة
4 المغروسة علي مجاري المياه * التي تعطي ثمرها في حينها * وورقها لا يتناثر * وكل ما يعمل يتم * ليس
5 كذلك المنافقون ليس كذلك * لكن كالهباء الذي تذريه الرياح عن وجه الارض * فلهذا
6 لا يقوم المنافقون في القضاء * ولا الخطاة في مجمع الصديقين * لان الرب عارف بطريق
الابرار * وطريق الاثمة تبيد *   * المزمور الثاني لداوود *

* نبوة علي السيد المسيح ودعوة الامم * كز * استيخوساته *

1 2 * لماذا ارتجت الشعوب * وهذت الامم بالباطل * قامت ملوك الارض ورؤساوها * وتشاوروا جميعا
3 4 علي الرب وعلي مسيحه * فلنقطع اغلالهم * ولنلق عنا نيرهم * الساكن في السموات يهزو بهم *
5 6 والرب يمقتهم * حينئذ يكلمهم بغضبه * وبسخطه يذهلهم * انا اقامني الرب ملكا منه علي
7 8 صهيون جبل قدسه * لاخبر امر الرب * الرب قال لي انت ابني * وانا اليوم ولدتك * سلني
9 فاعطيك الشعوب ميراثك * وسلطانك علي اقطار الارض * ترعاهم بقضيب من حديد * ومثل
10 11 انية الفخار تسحقهم * من الان تفهموا ايها الملوك * وتادبوا يا جميع قضاة الارض * تعبدوا
12 للرب بخشية * وسبحوه برعدة * الزموا الادب * لئلا يغضب الرب عليكم * فتضلوا عن سبيل
العدل * اذا توقد غضبه سريعا * طوبي للمتوكلين عليه *

Liber primus PSALMORUM
Davidis Prophetæ, Regis filio-
rum Israel.

PSAL. I.

Decus pietatis & spes alterius se-
culi. Et numerus vers. 15.

Beatitudo viro, qui non sectatus est 1
sententiam scelestorũ, & non stetit in
via peccatorũ, et non sedit cum illudenti-
bus; Sed in lege Domini voluntas ejus, 2
et in juribus ejus meditatur noctu diuque.
Erit sanè veluti arbor plantata ad decur- 3
sus aquarũ, quæ dat fructũ suum in tem-
pore suo. Et folia ejus non labentur, &
quicquid operatur, explet: Non sic impii, 4
non sic: sed tanquã pulvis, quem disper-
gunt venti de facie terræ. Et propterea 5
non stabunt impii in judicio, neque pecca-
tores in concilio justorum: Quoniam Do- 6
minus sciens est viam justorum, et via ini-
quorum peribit.

PSAL. II.

Davidis. Prophetia de Christo Do- 1
mino, et vocatione gentium.
Vers. 27.

Quarè conturbati sunt populi, et de-
liârunt gentes vanitatem? Insur- 2
rexerunt reges terræ, & principes ejus, &
consilium inierunt simul adversùs Domi-
nũ, & adversùs Christum ejus. Dirum- 3
pamus vincula eorum, & projiciamus à
nobis jugum ipsorum. Habitans in cœlis 4
illudet eos: & Dominus odio habebit eos.
Tunc alloquetur eos in furore suo, & in 5
ira sua contemnet eos. Constituit me 6
Dominus Regem pro se super Sion, mon-
tem sanctitatis suæ, ut annuntiarem
præceptum Domini. Dominus dixit mi- 7
hi; Tu es filius meus, & ego hodiè
genui te. Postula à me, & dabo tibi 8
populos hæreditatem tuam, & imperium
tuum super terminos terræ; Pasces eos 9
in virga ex ferro, & veluti vasa ar-
gillæ conteres eos. Ex nunc intelligite, 10
O reges, & erudimini, O omnes judices
terræ. Servite Domino cum timore, et lau- 11
date eum cum tremore. Adhærete disci- 12
plinæ, ut ne indignetur Dominus vobis,
et erretis à semita justitiæ, Cùm exarse-
rit furor ejus citò: Beati confidentes in eo.

תהלים : ג ד ה

PSAL. III. ג

quàm Domine .ſui filii Abſalom facie à ipſum fugiendo in ,Davidis Canticum
1 מזמור לדוד בברחו מפני אבשלום בנו: יהוה מה־
2 dicentes Multi .me adverſum inſurgentes multi:mei anguſtiatores ſunt multiplicati
3 רבו צרי רבים קמים עלי: רבים אמרים
: me pro clypeus Domine tu Et .Selah ,Deo in ei ſalus non ,meæ animæ
4 לנפשי אין ישועתה לו באלהים סלה: ואתה יהוה מגן בעדי
me exaudivit & clamabam Dominum ad mea Voce.meum caput exaltans & ,mea gloria
5 כבודי ומרים ראשי: קולי אל־יהוה אקרא ויענני
Dominus quia : evigilavi ,dormivi & , accubui Ego .Selah,ſuæ ſanctitatis monte de
6 מהר קדשו סלה: אני שכבתי ואישנה הקיצותי כי יהוה
ſe poſuerunt circumquaque qui : populi millibus decem à timebo Non .me fulciet
7 יסמכני: לא־אירא מרבבות עם אשר סביב שתו
meos inimicos omnes percuſſiſti quia,mi Deus me ſerva ,Domine Surge .me contra
8 עלי: קומה יהוה הושיעני אלהי כי־הכית את־כל־איבי
tuum populum ſuper : ſalus Domini .confregiſti impiorum dentes : maxilla
9 לחי שני רשעים שברת: ליהוה הישועה על־עמך
.Selah .tua benedictio
ברכתך סלה:

PSAL. IV. ד

,meæ juſtitiæ Deus me exaudi me invocando In.Davidi canticum Neghinoth in Victori
1 למנצח בנגינות מזמור לדוד: בקראי ענני אלהי צדקי
2 viri Filii.meam orationem audi & ,mei miſerere:mihi feciſti dilatationē anguſtia in
3 בצר הרחבת לי חנני ושמע תפלתי: בני־איש
? mendacium quæretis , inane diligetis ? ignominiam in meam gloriam uſquequo
עד־מה כבודי לכלמה תאהבון ריק תבקשו כזב
, exaudiet Dominus : ſibi pium Dominus ſegregavit quod ſcitote Et .Selah
4 סלה: ודעו כי־הפלה יהוה חסיד לו יהוה ישמע
ſuper ,veſtro corde in dicite : peccetis ne & ,Contremiſcite .eum ad me clamando in
5 בקראי אליו: רגזו ואל־תחטאו אמרו בלבבכם על־
.Dominum in ſperate & ;juſtitiæ ſacrificia Sacrificate .Selah ,tacete & ,veſtro cubili
6 משכבכם ודמו סלה: זבחו זבחי־צדק ובטחו אל־יהוה:
tuarum facierum lucem nos ſuper Eleva?bonum nos faciet videre quis : dicentes Multi
7 רבים אמרים מי־יראנו טוב נסה־עלינו אור פניך
eorum novū vinū & eorū frumentū tempore à,meo corde in lætitiam Dediſti .Domine
8 יהוה: נתתה שמחה בלבי מעת דגנם ותירושם
, ſolus Dominus tu quia,dormiam &,accubabo pariter pace In .ſunt multiplicata
9 רבו: בשלום יחדו אשכבה ואישן כי־אתה יהוה לבדד
.me habitare facies fiducia in
לבטח תושיבני:

PSAL. V. ה

:Domine auribus percipe mea Eloquia.David canticum Hannechiloth ſuper Victori
1 למנצח אל־הנחילות מזמור לדוד: אמרי האזינה יהוה
2 : mi Deus & , mi rex mei clamoris voci Attende .meam meditationem intellige
3 בינה הגיגי: הקשיבה לקול שועי מלכי ואלהי
diſponam mane ,meam vocem ,audies mane Domine .orabo te ad quoniam
4 כי־אליך אתפלל: יהוה בקר תשמע קולי בקר אערך־
.malus te habitabit non : tu impietatem volens Deus non Quia .ſpeculabor &,tibi
5 לך ואצפה: כי לא אל־חפץ רשע אתה לא יגרך רע:

תרגום TARGUM.

ג
1 תשבחתא לדוד במערקיה מן קדם אבשלום
2 בריה: יי כמה סגיאין מעיקי סגיאין דקימין עלי:
3 סגיאין אמרין לנפשי לית פורקנא ליה באלהא
4 לעלמין: ואנת יי תריס עלי יקרי ומרים רישי:
5 קלי קדם יי אצלי יקבל צלותי מן טור בית
6 מקדשיה לעלמין: אנא שכיבית ודמכית
7 אתערית מטול דיי סמיד יתי: לא תדחל ממצותא
8 דעם דחזור חזור אתכנשו עלי: קום יי פרוק יתי
אלהי ארום מחית כל בעלי דבבי על ליסתהון
9 ככי רשיעי תברתא: מן קדם יי פורקנא על עמך
ברכתך לעלמין:

ד
1 לשבחא על חנגיתא תושבחתא לדוד: בעדן 2
צלותי קבל מני אלוה צדקותי בעדן עקתא
3 אפתיתא לי חוס עלי וקבל צלותי: בני נשא מטול
מה איקרי לאתכנעותא תרחמון סריקותא
4 תבעון כדיבותה לעלמין: וידעון ארום פריש יי
זכאא ליה יי יקבל צלותיה דדויד במקרי ליתיה:
5 זעו מניה ולא תחטון אמרו בעותכון בפומכון
ושילתכון בלבבכון וצלו על שוויכון ואדכרו יום
6 מיתותא לעלמין: כבשו יצרכון ויתחשיב לכון
7 בנכסת צדקא וסברו על יי: סגיאין דאמרין מן
יחמננא טבא נשא עלנא נהור סבר אפך יי:
8 יהבתא חדותא בלבי מן עדן דעבורהון
9 וחמרהון סגיאו: בשלמא כחדא אשכוב ואדמוך
מן בגלל דאנת הוא יי בלחודוי בסברא
תותבנני:

ה
1 לשבחא על חנגין תושבחתא לדוד: מימרי 2
3 אצית יי אתבין רנוני: צית לקל בעותי מלכי
4 ואלהי ארום קדמך אצלי: יי בצפרא שמע קלי
5 בצפרא אסדר קדמך ואסתכי: מטול דלא אלהא
רעי רשעא אנת לא אתותב עמך בישא:

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Canticum David cùm fugeret à facie Abſalom filii ſui.

PSAL. III.

Domine quā multi ſunt infeſtores mei: multi ſurgunt adverſum me. Multi dicunt animæ meæ: Non eſt redemptio ei in Deo in æternum. Et tu, Domine, ſcutum ſuper me, honor meus, & exaltator capitis mei. Voce mea ad Dominum orabo: & recepit orationem meam de monte domus ſanctuarii ſui in æternum. Ego quievi & dormivi; evigilavi, quoniam Deus ſuſtentavit me. Non *timebis à contentione populi*, qui circumcirca coadunati ſunt adverſum me. Surge Domine, redime me Deus me⁹, quoniam tu percuſſiſti omnes auctores inimicitiæ meæ ſuper genas eorum, dentes impiorum confregiſti. A facie Domini redemptio, ſuper populum tuum benedictio tua in æternum.

Ad canendum ſuper *chorum*, canticum David.

PSAL. IV.

In tempore orationis meæ recipe à me Deus juſtitiæ meæ, in tempore anguſtiæ dilatáſti mihi: miſerere mei, & accipe orationem meam. Filii hominis uſquequo honor me⁹ ad vituperium? amabitis inania, quæretis mendacium in æternum? Et ſcitote quoniā ſeparavit Dñs *juſtū* ſibi: Dñs accipiet orationem Davidis cùm invocaverit eum. Contremiſcite ab illo, & ne peccetis: dicite orationem veſtram in ore veſtro, & petitionem veſtrā in corde veſtro, & orate ſuper cubile veſtrum: & mementote diei mortis ſemper. Domate concupiſcentias veſtras, & reputabitur vobis *in* ſacrificium juſtitiæ: & ſperate in Dño. Plures ſunt qui dicunt: Quis oſtendet nobis bonum? leva ſuper nos lumen aſpect⁹ faciei tuæ Dñe. Dediſti lætitiam in corde meo à tempore quo frumentū eorū & vinum eorū multiplicata ſunt. In pace ſimul accubabo ac dormiam, quoniā tu *ipſe* Dñe ſingulariter *in ſpe* ſedere facies me.

Ad canendum ſuper choros, canticum David.

PSAL. V.

Verbum meum auſculta Dñe, intellige *meditationem meam*. Auſculta vocem petitionis meæ, rex me⁹ & De⁹ meus, quoniam coram te orabo. Dñe manè audi vocem meam; manè ordinabo coram te, & reſpiciam. Quoniam non De⁹ volens improbitatem tu es; & non commorabitur tecum mal⁹

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 ܕܟܬܝܒ ܠܕܘܝܕ ܥܠ ܛܒܬܐ ܕܥܬܝܕܢ. ܦܘܫܩܐ ܝܐ. *   * ܡܙܡܘܪܐ ܕܬܠܬܐ *
2 * ܡܪܝܐ ܡܢܐ ܣܓܝܘ ܐܠܘܨܝ. ܣܓܝܐܐ ܕܩܡܘ ܠܘܩܒܠܝ: * ܣܓܝܐܐ ܕܐܡܪܝܢ ܠܢܦܫܝ. ܕܠܝܬ
3
4 ܠܟ ܦܘܪܩܢܐ ܒܐܠܗܟ: * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܡܥܕܪܢܝ ܐܢܬ. ܘܫܘܒܚܝ ܘܡܪܝܡ ܪܫܝ: * ܒܩܠܝ
5
6 ܠܡܪܝܐ ܩܪܝܬ. ܘܥܢܢܝ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܗ: * ܐܢܐ ܫܟܒܬ ܘܕܡܟܬ ܘܐܬܬܥܝܪܬ. ܡܛܠ
7 ܕܡܪܝܐ ܣܡܟܢܝ: * ܠܐ ܐܕܚܠ ܡܢ ܪܒܘܬܐ ܕܥܡܐ. ܕܚܕܪܘܢܝ ܘܩܡܘ ܠܘܩܒܠܝ: * ܩܘܡ ܡܪܝܐ
8 ܐܠܗܝ ܘܦܪܘܩܝܢܝ: ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܡܚܝܬ ܠܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ ܥܠ ܦܟܝܗܘܢ: ܘܫܢܐ
9 ܕܪܫܝܥܐ ܬܒܪܬ. * ܕܡܪܝܐ ܗܘ ܦܘܪܩܢܐ: ܘܥܠ ܥܡܟ ܒܘܪܟܬܟ ܠܥܠܡ.

1 ܕܕܘܝܕ. ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܕܚܫ. ܦܘܫܩܐ ܝ. *   * ܡܙܡܘܪܐ ܕܐܪܒܥܐ *
2 * ܟܕ ܩܪܝܬܟ ܥܢܝܬܢܝ: ܐܠܗܝ ܘܦܪܘܩܐ ܕܙܕܝܩܘܬܝ. ܒܐܘܠܨܢܝ ܐܪܘܚܬ ܠܝ: ܪܚܡ ܥܠܝ
3 ܘܫܡܥ ܨܠܘܬܝ. * ܒܢܝ ܐܢܫܐ ܥܕܡܐ ܠܐܝܩܪܝ: ܛܫܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܪܚܡܝܢ ܐܢܬܘܢ
4 ܣܪܝܩܘܬܐ: ܘܒܥܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܓܠܘܬܐ ܠܥܠܡܝܢ. * ܕܥܘ ܕܦܪܫ ܠܗ ܡܪܝܐ ܠܓܒܝܐ
5 ܒܬܕܡܘܪܬܐ: ܡܪܝܐ ܢܫܡܥ ܟܕ ܐܩܪܝܘܗܝ. * ܪܓܙܘ ܘܠܐ ܬܚܛܘܢ: ܐܡܪܘ ܒܠܒܘܬܟܘܢ ܘܥܠ
6 ܡܫܟܒܝܟܘܢ ܪܢܘ. * ܕܒܚܘ ܕܒܚܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܘܣܒܪܘ ܒܡܪܝܐ: * ܣܓܝܐܐ ܕܐܡܪܝܢ ܡܢܘ
7
8 ܢܚܘܝܢ ܛܒܬܐ: ܢܕܢܚ ܥܠܝܢ ܢܘܗܪܐ ܕܦܪܨܘܦܗ: * ܡܪܝܐ ܝܗܒܬ ܚܕܘܬܟ ܒܠܒܝ. ܡܢ
ܙܒܢܐ ܕܥܒܘܪܗܘܢ ܘܚܡܪܗܘܢ ܘܡܫܚܗܘܢ: ܣܓܝܘ * ܒܫܠܡܐ ܐܟܚܕܐ. ܐܦ ܐܢܐ ܐܫܟܘܒ
9 ܘܐܕܡܟ: ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܡܪܝܐ ܠܒܠܚܘܕܝ ܒܫܝܢܐ ܐܘܬܒܬܢܝ.   * ܡܙܡܘܪܐ ܕܚܡܫܐ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܨܠܘܬܐ ܡܢ ܦܪܨܘܦܐ ܕܥܕܬܐ: ܟܕ ܡܥܠܝܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܦܘܫܩܐ ܟܙ.
2 * ܡܠܝ ܨܘܬ ܡܪܝܐ ܘܐܣܬܟܠ ܒܗܓܝܓܝ. * ܘܨܘܬ ܠܩܠ ܩܥܬܝ ܡܠܟܝ ܘܐܠܗܝ: * ܡܛܠ
3
4 ܕܠܘܬܟ ܗܘ ܡܨܠܐ ܐܢܐ. ܡܪܝܐ ܒܨܦܪܐ ܫܡܥ ܩܠܝ: ܘܒܨܦܪܐ ܐܛܝܒ ܘܐܬܚܙܐ ܠܟ. * ܡܛܠ
5
ܕܐܠܗܐ ܐܢܬ ܘܠܐ ܨܒܐ ܐܢܬ ܒܥܘܠܐ: ܠܐ ܢܥܡܪ ܥܡܟ ܒܝܫܐ.

PSALMUS. III.

Scriptus à Davide, de bonis futuris. Verſ. 11

Domine, quàm multiplicati ſunt oppreſſores mei? multi ſunt qui inſurrexerunt adverſùs me: Multi qui dicunt animæ meæ, Non eſt tibi ſalus in Deo tuo. At tu, Domine, adjutor meus es, & decus meum, atq; elator capitis mei. Voce meâ Dominum vocavi, & reſpondit mihi de monte ſuo ſancto. Ego cubavi, & dormivi, atq; evigilavi, quoniam Dominus me ſuffulſit. Non metuam à decem millibus populi, qui obſederunt me & poſuerunt contra me. Exurge, Domine Deus meus, & ſalva me: Quoniam tu percuſſiſti omnes hoſtes meos in maxillas eorum, & dentes impiorum confregiſti. Domini eſt ſalus, & ſuper populū tuum benedictio tua in ſæculum.

PSALMUS. IV. Davidis.

De iis quæ perpeſſus eſt. Verſ. 10.

Quando invocavi te, exaudiſti me, Deus meus, & vindex juſtitiæ meæ: in tribulationibus meis dilatáſti mihi. Miſerere mei, & exaudi orationem meam. Filii hominum quouſque gloriam meam celatis, & diligitis vanitatem, & quæritis mendacium in ſæcula? Scitote quòd ſegregavit ſibi Dominus electū cum admiratione: Dominus exaudiet, quum invocavero eum. Iraſcimini & ne peccetis. Dicite in cordibus veſtris, & ſuper cubilibus veſtris meditamini. Sacrificate ſacrificia juſtitiæ, & ſperate in Domino. Multi ſunt qui dicunt, Quis oſtendet nobis Probum? Protendet ſuper nos lumen vultûs ſui. Domine dediſti lætitiam tuam in corde meo, à tempore quo frumentum eorum, & vinum eorum & oleū eorū multiplicata ſunt. In pace ſimul Ego quoque jacebo & dormiam, quoniam tu Domine, me ſolum in quiete habitare facis.

PSAL. V. Davidis.

Oratio ex perſona Eccleſiæ, quum illa adiret domum Domini. Verſ. 27.

Verba mea auſculta, Domine, & intellige meditationem meam: Et auſculta vocem clamoris mei, rex meus & Deus meus: Quoniam ad te oro, Domine, in matutino audi vocem meam. Et in matutino parabo me & apparebo tibi. Quoniam Deus es, & non vis impietatem, neq; habitabit tecum impro

Verſio VULG. LAT.

1 Pſalmus David, cùm fugeret à facie Abſalom filii ſui. (2 Reg. 15.14.) III.

2 DOmine, quid multiplicati ſunt qui tribulãt me? multi inſurgunt adverſũ 3 me. Multi dicunt animæ meæ, Non eſt ſalus ipſi in Deo ejus. 4 Tu autẽ, Domine, ſuſceptor meus es, gloria mea, & exaltans caput meum. 5 Voce meã ad Dominũ clamavi: & exaudivit me de monte ſancto ſuo. 6 Ego dormivi, & ſoporatus ſum: 7 & exurrexi, quia Dñs ſuſcepit me. Non timebo millia populi circumdantis me: exurge, Domine, ſalvũ me fac, Deus meus. 8 Quoniam tu percuſſiſti omnes adverſantes mihi ſine cauſa: dentes peccatorum contriviſti. 9 Domini eſt ſalus: & ſuper populum tuum benedictio tua.

1 In finem in carminibus, Pſalmus David. IV.

2 CUm invocarem, exaudivit me Deus juſtitiæ meæ: in tribulatione dilatàſti mihi. Miſerere mei, & exaudi orationem meam. 3 Filii hominũ uſquequò gravi corde? ut quid diligitis vanitatem, & 4 quæritis mendacium? Et ſcitote quoniã mirificavit Dominus ſanctũ ſuum: Dñs 5 exaudiet me cũ clamavero ad eũ. Iraſcimini, & nolite peccare: quæ dicitis in cordibus veſtris, in cubilibº veſtris com- 6 pungimini. Sacrificate ſacrificiũ juſtitiæ, & ſperate in Dño. Multi dicunt, Quis 7 oſtendit nobis bona? Signatum eſt ſuper nos lumen vultûs tui, Domine: dediſti læ- 8 titiam in corde meo. A fructu frumenti, 9 vini, & olei ſui, multiplicati ſunt. In pace in idipſum dormiã, & requieſcam; 10 Quoniam tu, Domine, ſingulariter in ſpe conſtituiſti me.

1 In finem pro ea, quæ hæreditatẽ conſequitur, Pſalmus David. V.

2 VErba mea auribus percipe, Domine, 3 intellige clamorẽ meum. Intende voci orationis meæ, rex meus & Deº meus. 4 Quoniã ad te orabo: Domine, manè ex- 5 audies vocem meam. Manè aſtabo tibi & videbo: quoniã non Deus volens ini- 6 quitatem tu es. Neque habitabit juxta te malignus:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

1 (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ, ὁπότε ἀπεδίδρασκεν ἀπὸ προσώπου Ἀβεσσαλὼμ τοῦ υἱοῦ αὐτοῦ. γ'.

2 ΚΥ'ριε τί ἐπληθύνθησαν οἱ θλίβοντές με; † πολλοὶ 3 (β) ἐπανέστησαν ἐπ' ἐμέ. † Πολλοὶ λέγουσι τῇ ψυχῇ μου, Οὐκ ἔστι σωτηρία αὐτῷ ἐν τῷ θεῷ αὐτοῦ. ΔΙΑ'- 4 ΨΑΛΜΑ. † (γ) Σὺ δὲ κύριε ἀντιλήπτωρ μου εἶ, † δόξα μου, καὶ 5 ὑψῶν τὴν κεφαλήν μου. † Φωνῇ μου πρὸς κύριον ἐκέκραξα, † καὶ (δ) ἐπήκουσέ μου ἐξ ὄρους ἁγίου αὐτοῦ. ΔΙΑ'ΨΑΛΜΑ. 6 † (ε) Ἐγὼ ἐκοιμήθην καὶ ὕπνωσα, † ἐξηγέρθην, ὅτι κύ- 7 ριος ἀντιλήψεταί μου. † Οὐ φοβηθήσομαι ἀπὸ μυριάδων λαοῦ, † (ζ) τῶν κύκλῳ ἐπιτιθεμένων μοι. † ἀνάστα κύριε, 8 σῶσόν με ὁ θεός μου· † Ὅτι σὺ ἐπάταξας πάντας τοὺς ἐχθραίνοντάς μοι ματαίως, † ὀδόντας ἁμαρτωλῶν 9 συνέτριψας. † Τοῦ κυρίου ἡ σωτηρία, καὶ ἐπὶ τὸν λαόν σου ἡ εὐλογία σου.

1 Εἰς τὸ τέλος, (α) ἐν ψαλμοῖς ᾠδὴ τῷ Δαυίδ. δ'.

2 † ἘΝ τῷ ἐπικαλεῖσθαί με, εἰσήκουσέ μου ὁ θεὸς τῆς δικαιοσύνης μου· † ἐν θλίψει ἐπλάτυνάς μοι. 3 † οἰκτείρησόν με, καὶ εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου. † Υἱοὶ ἀνθρώπων, ἕως πότε βαρυκάρδιοι; † ἱνατί ἀγαπᾶτε (β) 4 ματαιότητα, καὶ ζητεῖτε ψεῦδος; ΔΙΑ'ΨΑΛΜΑ. † Καὶ γνῶτε ὅτι ἐθαυμάστωσε κύριος τὸν ὅσιον αὐτοῦ, † κύριος εἰσακούσεταί μου ἐν τῷ κεκραγέναι με πρὸς αὐτόν. 5 † Ὀργίζεσθε καὶ μὴ ἁμαρτάνετε, † ἃ λέγετε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν, ἐπὶ ταῖς κοίταις ὑμῶν (γ) κατανύγητε. 6 ΔΙΑ'ΨΑΛΜΑ. † Θύσατε θυσίαν δικαιοσύνης, καὶ ἐλπίσατε ἐπὶ κύριον. † πολλοὶ λέγουσι, Τίς δείξει ἡ- 7 μῖν τὰ ἀγαθά; † Ἐσημειώθη ἐφ' ἡμᾶς τὸ φῶς τοῦ προσώπου σου κύριε. † ἔδωκας εὐφροσύνην εἰς τὴν καρδίαν 8 μου. † Ἀπὸ καρποῦ σίτου καὶ οἴνου καὶ ἐλαίου αὐτῶν ἐπληθύν- 9 θησαν. † Ἐν εἰρήνῃ ἐπὶ τὸ αὐτὸ κοιμηθήσομαι, καὶ ὑπνώ- 10 σω. † Ὅτι σὺ κύριε κατὰ μόνας ἐπ' ἐλπίδι κατῴκισάς με.

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῆς κληρονομούσης, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ε'.

2 † ΤΑ' ῥήματά μου ἐνώτισαι κύριε, † σύνες (α) τῆς κραυ- 3 γῆς μου, Πρόσχες τῇ φωνῇ τῆς δεήσεώς μου, † ὁ 4 βασιλεύς μου καὶ ὁ θεός μου. † Ὅτι πρὸς σὲ προσεύ- 5 ξομαι κύριε, † τοπρωῒ εἰσακούσῃ τῆς φωνῆς μου. † Τοπρωῒ παραστήσομαί σοι, καὶ (β) ἐπόψομαι. † ὅτι οὐχὶ θεὸς θέλων 6 ἀνομίαν σὺ εἶ. † Οὐδὲ παροικήσει σοι πονηρευόμενος,

MS.A. (α) Τῷ Δαυὶδ, ὁπότε (β) ἐπανέστησαν (γ) Σὺ δὲ ἀντιλήμπτωρ μου εἶ, (δ) εἰσήκουσεν (ε) Ἐγὼ δὲ (ζ) τῶν* κύκλῳ συνεπιτιθεμένων Ψαλμ. δ'. MS.A. (α) ψαλμὸς τῷ (β) ματαιότητας, (γ) κατανοίγητε. Ψαλμ. ε'. MS.A. (α) τῇ κραυγῇ (β) ἐπόψῃ με.

Ver. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

Pſalmus (a) ipſi David, cùm fugeret à facie Abſalom filii ſui. III. 1

1 DOmine, quid multiplicati ſũt, qui tribulãt me? multi inſurgũt adverſùs me: 2 Multi dicunt animæ meæ. [a] Non eſt ſalus ipſi in Deo ejus. (b) DIAPSALMA. 3 Tu autẽ, Domine, ſuſceptor meus es, gloria mea & exaltans caput meum. 4 Voce meã ad Dominũ clamavi, et exaudivit me de (c) monte ſancto ſuo. DIAPSALMA. 5 Ego dormivi, et (d) ſomnũ cepi: exſurrexi, quoniã Dominus (e) [b] ſuſcipiet me. 6 Non timebo millia populi (f) [c] circumdantis me: exurge, Domine, ſalvum me fac, Deº meus. 7 (h) Quoniã tu percuſſiſti omnes adverſantes mihi ſine cauſa: dentes peccatorũ contriviſti. 8 Domini eſt ſalus; & ſuper populum tuum benedictio tua. 2 3 4 5 6 7 8 9

In (a) finem, [*] in Pſalmis, canticum ipſi David. IV. 1

CUm invocarem [a], (b) exaudivit me [b] Deº juſtitiæ meæ: in tribulatione dilatâſti mihi. 2 Miſerere mei, et exaudi orationẽ meã. 3 Filii hominum uſquequò (c) graves corde [c]? ut quid diligitis vanitatẽ, & [d] quæritis mendaciũ? DIAPSALMA. 4 Et ſcitote, quoniã [e] mirificavit Dominus ſanctũ ſuum: Dominus exaudiet me, cùm clamavero ad eum. 5 (d) Iraſcimini, & nolite peccare: Quæ dicitis in cordibº veſtris, in cubilibus veſtris (e) compungimini. DIAPSALMA. 6 Sacrificate ſacrificiũ juſtitiæ, & (f) ſperate in Domino: multi dicunt, Quis oſtendet nobis bona? 7 (g) Signatum eſt ſuper nos lumen vultº tui, Domine: [f] dediſti lætitiã in cor meũ. 8 A (h) fructu frumenti, et vini, et olei ſui, multiplicati ſunt. 9 In pace in idipſũ dormiã et ſomnũ capiam: Quoniã tu, Domine, ſingulariter in ſpe (i) habitare feciſti me. 2 3 4 5 6 7 8 9 10

In finem, pro ea quæ hæreditatem conſequitur, pſalmus ipſi David. V. 1

1 VErba mea auribus percipe, Domine, [a] intellige clamorem meum. 2 [b] Intende voci orationis meæ, rex meus, & Deus meus. 3 Quoniam ad te (a) orabo, Domine, manè exaudies vocem meam. 4 Manè aſtabo [c] tibi, & (b) videbo: quoniam non [d] Deus volens iniquitatem tu es. 5 Neque (c) [e] habitabit juxta te malignus: 2 3 4 5 6

Verſio ÆTHIOPICA.

መዝሙር:ዘደዊት:ዘአመ:ጐየ:እምገጸ:: 1
አቤሴሎም::

ር እግዚኦ:ሚበዝኁ:እለ:ይሣቅዩኒ::ብዙኃ 1
ን:ቆሙ:ላዕሌየ::=: ብዙኃን:ይቤልዋ:ለነፍ 2
ስየ::ኢያድኅነከ:አምላክከ::=: አንተሰ:እ 3
ግዚኦ:ምስካይየ:አንተ::ክብርየ:ወመልዕለ
ተ:ርእስየ::=: ቃልየ:ኀበ:እግዚአብሔር:ጸ 4
ራኅኩ::ወሰምዓኒ:እምደብረ:መቅደሱ::=:
አንሰ: ሰከብኩ: ወኖምኩ::ወተንሣእኩ : እስ 5
መ:እግዚአብሔር:አንሥአኒ::=: ኢይፈር 6
ሀ:እምአእላፍ: አሕዛብ :: እለ: አገቱኒ:ወ
ቆሙ: ላዕሌየ:: ተንሥእ : እግዚኦ : አምላ
ኪየ:ወአድኅነኒ::=: እስመ:አንተ:ቀሠፍ 7
ኮሙ: ለኵሎሙ : እለ: ይፀርሩኒ: በከንቱ::
ስነኒሆሙ:ለኃጥአን:ሰበርከ::=:ዘእግዚአብ 8
ሔር:አድኅኖ:ላዕለ:ሕዝብከ:በረከትከ::=:
ፍጻሜ:ዘአኰቴት:መዝሙር:ዘደዊት::

O ሶበ:ጸዋዕክዎ: ለእግዚአብሔር : ሰምዐ 1
ኒ : ጽድቅየ :: ወእምንዳቤየ : አርኃበ: ሊ
ተ::=: ተሣሀለኒ:ወስምዓኒ:ጸሎትየ::=: ደ 2
ቂቀ:እጓለ: እመሕያው: እስከ : ማእዜኑ:ታ 3
ክብዱ:ልበክሙ: ለምንት : ታፈቅሩ: ከንቶ:
ወተሐስዉ: ሐሰተ::=: አእምሩ: ከመ:ተሰ 4
ብሐ: እግዚአብሔር: በጻድቁ :: እግዚአብ
ሔር: ይሰምዓኒ: ሶበ: ጸራኅኩ: ኀቤሁ::=:
ተምዑ:ወኢተአብሱ::ወዘትሔልዩ: በልብክ 5
ሙ:ውስተ:ምስካቢክሙ:ይትኀወቅክሙ::=:
ሡዑ: መሥዋዕተ : ጽድቅ : ወተወከሉ:በእ 6
ግዚአብሔር:: ብዙኃን : እለ : ይቤሉ:መኑ:
ያርእየነ ሠናይቶ::=:ተዐውቀ:በላዕሌነ:ብር 7
ሃነ:ገጽከ:እግዚኦ::ወወደይከ:ተፋሥሖተ:
ውስተ:ልብነ::=:እምፍሬ:ስርናይ:ወወይን: 8
ወቅብእ:በዝኃ::=:በሰላም:ቦቱ:እሰክብ:ወ 9
እነውም::=: እስመ:አንተ:እግዚኦ:በተስ 10
ፋ:በሕቲትከ:አኃደርከኒ::=:
ፍጻሜ:በእንተ:ተወርሶ:መዝሙር:ዘደዊት::

ፒ ቃልየ: አጽምእ : እግዚኦ::ወለቡ : ጽራ 1
ኃየ::=: ወአጽምአኒ:ቃለ:ስእለትየ::ንጉ 2
ሥየ:ወአምላኪየ::=: እስመ:ኀቤከ:እ 3
ጸሊ:እግዚኦ::በጽባሕ:ስምዓኒ:ቃልየ::=:
በጽባሕ: እቀውም:ቅድሜከ : ወእሴተርኢ: 4
ለከ::እስመ :ኢኮንከ:አምላክ:ዘዐመፃ: ያፈ
ቅር::=: ወኢይኄድሩ:እኩያን:ምስሌከ:: 5

INTERP. ÆTHIOP. [a] Non ſalvabit te Deus tuus. [b] ſuſcitavit me. [c] qui circundant me & inſurgunt adverſùs me: *PSAL.* IV [ ] laudis, Pſalmus David: [a] Dominum, [b] juſtitia mea [c] veſtro? [d] fallitis mendacio? [e] glorificatur Deus in ſancto ſuo: [f] injeciſti lætitiam in cor noſtrum. *PSAL.* V. [a] & [b] Et auſculta etiam [c] coram te, & innoteſcam tibi [d] es tu Deus qui diligit iniquitatem. [e] habitabunt juxta te maligni:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور الثالث لداوود * قاله لما هرب من ابشالوم ابنه * يه * اسيكوبانه *
2 3 * يا رب لماذا كثر الذين يحزنوني * كثيرون قاموا علي * كثيرون يقولون لنفسي * ليس له خلاصا
4 5 بالهه * وانت يا رب ناصري * مجدي ورافع راسي * بصوتي دعوت الرب * فاستجاب لي من جبل
6 7 قدسه * انا اضطجعت ونمت واستيقظت * لان الرب ناصري * فلا اخاف من ربوات الامم
8 المحيطين بي القايمين علي * قم يا رب وخلصني * لانك اهلكت كل من يعاديني باطلا * اسنان
9 الخطاة سحقتها * للرب الخلاص * وعلي شعبه بركته *

1 * المزمور الرابع * لداوود * يه * اسيكوبانه *
2 3 * اذ دعوت استجاب لي الاهي * وفي الشدة فرجت لي * تراءف علي واسمع صلاتي * يا بني البشر
4 حتى متى ثقل قلوبكم * لماذا تهوون الباطل وتبتغون الكذب * اعلموا ان الرب قد انتخب
5 صفيه بالعجائب * الرب يستجيب لي اذا دعوت اليه * اغضبوا ولا تاثموا * وعلي ما تهمون
6 7 بقلوبكم اندموا عليه * وفي مضاجعكم * اذبحوا لله ذبيحة البر وتوكلوا علي الرب * كثيرون
8 يقولون من يرينا الخيرات * قد اضاء علينا نور وجهك * يا رب اعطيت قلبي فرحا من كثرة
9 ثمرات القمح * والخمر والزيت * وبالسلامة بجميعهم * اضطجع وانام لانك انت وحدك يا رب *
اسكنتني بالرجاء مطمينا *

* المزمور الخامس لداوود *
1 2 * قاله علي الوراثة وهو كم * اسيكوبانه * اسمع يا رب قولي داعيا وكن للدعاي مجيبا *
3 4 * وانصت الي صوت تضرعي * فانك ملكي والهي * واني اليك اصلي يا رب * في غدواتي اسمع
5 يا رب طلبتي * اقف امامك بالغداة وتراني * لانك اله لا ترضي الاثم * ولا يحل في مساكنك شرير *

PSAL. III. Davidis.

Dictus eſt ab eo quum fugit ab Abſalom filio ſuo. Verſ. 15. 1

2 *O Domine mi, quare multiplicati ſunt qui me contriſtant? Multi inſurrexerunt adverſùm me:* 3 *Multi dicunt animæ meæ, Non eſt ei ſalus in Deo ipſius.* 4 *Et tu, O Domine mi, adjutor meº es, gloria mea, & exaltans caput meum.* 5 *Voce meã invocavi Dominum, & exaudivit me de monte ſanctitatis ſuæ.* 6 *Ego cubui et dormivi, & experrectus ſum: Quoniam Dominus adjutor meus eſt,* 7 *Non timebo myriadas gentium circundantium me, inſurgentium in me.* 8 *Exurge, Domine mi, et ſalva me: Quoniam perdidiſti omnes, qui inimicantur mihi fruſtrà, dentes peccatorum contriviſti.* 9 *Domini eſt ſalus, & ſuper populum ejus benedictio ipſius.*

PSAL. IV. Davidis. 1

Verſ. 15.

2 *CUm invocâſſem, exaudivit me Deus juſtitiæ meæ: & in tribulatione dilatâſti mihi. Propitiare mihi, & exaudi orationem meam.* 3 *O filii hominum, quouſque graveſcent corda veſtra? Ad quid ambitis vanitatem, & ſequimini mendacium?* 4 *Scitote quòd Dominus jam elegit electum ſuum cum admiratione. Dominus exaudiet me, cùm invocavero eum.* 5 *Iraſcimini, & ne delinquatis; & ejus, quod cogitatis in cordibus veſtris, pœniteat vos: & in cubilibus veſtris.* 6 *Sacrificate Deo ſacrificium juſtitiæ, & confidite in Domino. Multi dicunt, Quis oſtendat nobis bona?* 7 *Jam illuxit nobis lumen vultûs tui.* 8 *O Domine mi, dediſti cordi meo lætitiam ob multitudinem frugum, frumenti, et vini, & olei:* 9 *Et in pacem ipſorum omnium cubabo, & dormiam; quia tu ſolus, O Domine, habitare me feciſti in ſpe tutum.*

PSAL. V. Davidis.

Dictus eſt ab eo de hæreditate. Verſ. 13. 1

2 *AUdi, O Domine mi, ſermonem mei invocantis, et eſto invocationis meæ exauditor:* 3 *Et auſculta vocem ſupplicationis meæ, quia tu es rex meus, & Deus meus:* 4 *Et quia ego ad te oro, O Domine, in matutinis meis, audi, O Domine mi, petitionem meam, Aſtabo coram te in matutino, & reſpicies me.* 5 *Quoniam tu es Deus, cui non placet iniquitas, & non deget in habitationibus tuis malus*

תהלים : ו ז

Perdes .iniquitate operantes omnes odisti:tuis oculis coram *vesani* *consistent* Non
6 7 לא־יתיצבו הוללים לנגד עיניך שנאת כל־פעלי און: תאבד
ego Et .Dominus abominabitur *doli &* *sanguinum* virum ,mendacium loquentes
8 דברי כזב איש־דמים ומרמה יתעב יהוה: ואני
templo in me incurvabo ,tuam domum introibo,tuæ misericordiæ multitudine in
ברב חסדך אבוא ביתך אשתחוה אל־היכל־
:meos inimicos propter ,tua justitia in me duc Domine .tuo timore in *tuæ sanctitatis*
9 קדשך ביראתך: יהוה נחני בצדקתך למען שוררי
eorum intimum , rectum *ejus* ore in non Quoniam .tuam viam *meas facies ad* dirige
10 הושר לפני דרכך: כי אין בפיהו נכונה קרבם
eos *Desola* .blandiuntur sua lingua ,eorum guttur patens sepulchrum ,pravitates
11 הוות קבר־פתוח גרנם לשונם יחליקון: האשימם
, eos *expelle* eorum prævaricationum *multitudine in* suis consiliis à cadant , Deus
אלהים יפלו ממעצותיהם ברב פשעיהם הדיחמו
seculum in ,te in *confidentes* omnes lætabitur Et .te contra rebellaverunt quoniam
12 כי־מרו בך: וישמחו כל־חוסי בך לעולם
.tuum nomen *diligentes* te in exultabunt & : eos *super* facies operire & ,*canent præconia*
ירננו ותסך עלימו ויעלצו בך אהבי שמך:
.eum coronabis voluntate scuto ut : Domine justo benedices tu Quia
13 כי־אתה תברך צדיק יהוה כצנה רצון תעטרנו:

PSAL. VI. ו

tuo *naso* in ne Domine .Davidis canticum octavam super *Neghinoth* in Victori
1 2 למנצח בנגינות על־השמינית מזמור לדוד: יהוה אל־באפך
quoniam ,Domine mei Miserere .me corripias tua *excandescentia* in neque ,me arguas
3 תוכיחני ואל־בחמתך תיסרני: חנני יהוה כי
est territa mea anima Et.mea ossa sunt territa quoniam ,Domine me sana : *ego* debilis
4 אמלל אני רפאני יהוה כי נבהלו עצמי: ונפשי נבהלה
, meam animam eripe , Domine Revertere ? usquequo , Domine tu & ; valde
5 מאד ואת יהוה עד־מתי: שובה יהוה חלצה נפשי
sepulchro in:tui memoria morte in non Quoniam.tuã misericordiã propter me serva
6 הושיעני למען חסדך: כי אין במות זכרך בשאול
: meũ lectũ nocte omni in *faciam* natare ,meo gemitu in Laboravi?tibi confitebitur quis
7 מי יודה־לך: יגעתי באנחתי אשחה בכל־לילה מטתי
: meus oculus *indignatione* præ *est Erosus* .*liquefaciam* meum stratum *mea lachryma* in
8 בדמעתי ערשי אמסה: עששה מכעס עיני
, iniquitatem operantes omnes me à Recedite .meos *angustiatores* omnes *in* inveteravit
9 עתקה בכל־צוררי: סורו ממני כל־פעלי און
Dñs :meam deprecationem Dñs Audivit.mei fletus vocem Dominus audivit quoniam
10 כי־שמע יהוה קול בכיי: שמע יהוה תחנתי יהוה
:mei inimici omnes valde terrebuntur & ,afficientur Pudore .*accipiet* meam orationem
11 תפלתי יקח: יבשו ויבהלו מאד כל־איבי
.subito afficientur pudore,convertentur
ישבו יבשו רגע:

PSAL. VII. ז

Domine .Jemini filii Chus verba super Domino cecinit quod David Sighajon
1 2 שגיון לדוד אשר־שר ליהוה על־דברי־כוש בן־ימיני: יהוה
.me eripe & , me persequentibus omnibus ab me serva : speravi te in meus Deus
אלהי בך חסיתי הושיעני מכל־רדפי והצילני:
.*liberans* non & ,*lacerans* :meam animam leo ut rapiat forte Ne
3 פן־יטרף כאריה נפשי פרק ואין מציל:

תרגום TARGUM

6 לא יתעתדון מתלעבין קבל עינך סניתא כל
7 עובדי שקר: תאבד ממללי כדבותא אנש שדי
8 דם זכי ונכלא ירחק יי: ואנא בסגיאי טובך איעול
9 לביתך אסגוד להיכלא דקודשך בדחלתך: יי דבר
יתי בצדקתך מן בגלל תושבחי תקין קדמי
10 אורחתך: מטול דלית בפומהון דרשיעי כיונתא
גופיהון מלין אתרגושתא היך שיול פתיח
11 גרונהון לישנהון משעין: חיב להון אלהא
יתבטלון ממלכתהון בסגעא מרדהון אתקל להון
12 ארום מרדו במימרך: ויחדון כל מסברין במימרך
לעלם ישבחון ותטל עלויהון ויבדחון בך רחמי
13 שמך: מטול די אנת תברך לצדיקיא יי היך תריסא
רעוא טבא תכללנה: ו
1 לשבחא בנגינתא על כנרא דתמניא נימיא
2 תושבחתא לדוד: יי לא ברוגזך תכניעני ולא
3 ברתתך תרדי יתי: חוס עלי יי מטול דחלש אנא
4 אסי יתי יי מטול דאתבהילו גרמי: ונפשי
5 אתבהילת לחדא ואנת יי עד אימתי רוח לי: תוב
6 יי פצי נפשי פרק לי בגלל טובך: מטול דלית
7 במותא דכרנך בשאול מן יודי לך: אשתלהית
בתנחתי אמלל בצערי בכל ליליא על שוויי
8 בדמעתי דרגשי אטמש: חשכת מן רוגזי עיני
9 אתבליאת בכל מעיקי: זורו מני כל עבדי שקר
10 ארום שמיע קדם יי קל בכותי: שמיע קדם יי
11 בעותי יי צלותי יקבל: יבהתון ויתבהלון לחדא
כולהון בעלי דבבי יתובון יבהתון כשעא: ז
1 תרגומא דאודיתא לדוד די שבח קדם יי מטול די
אמר שירתא על תבירא דשאול בר קיש דמן
2 שבט בנימן: יי אלהי במימרך סברית פרוק יתי
3 מכל רדפי ופצא יתי: דלמא יתבר היך אריותא
נפשי יפשח ולית דיפצי:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Non permanebunt irriſores corã oculis 6
tuis : odiſti omnes operarios falſitatis.
Perdes loquentes mendaciũ : hominẽ 7
effuſorẽ ſanguinis mundi ,et doloſũ lon-
gè propellet Dñs. Et ego in multitudine 8
bonitatis tuæ ingrediar in domũ tuam,
adorabo ad templũ ſanctũ tuũ in timo-
re tui. Dñe deduc me in juſtitia tua,pro- 9
pter laudẽ meã ; dirige corã me viam
tuã. Quoniam non eſt in ore impiorũ 10
rectũ: corpora eorũ plena ſunt tumul-
tu:ſicut infernꝰ patens guttur eorũ:lin-
guã ſuã lenificant. Condemna illos Deꝰ: 11
deficiant à conſiliis ſuis; in multitudine
rebellationum eorũ ,fac impingere eos,
quoniam rebelles fuerunt Verbo tuo.
Et lætabuntur oẽs qui ſperant in Verbo 12
tuo,in æternũ laudabunt; & obumbra-
bis eos, & lætabuntur in *te* amatores
nominis tui. Quoniam tu benedices ju- 13
ſtis,Dñe: veluti clypeo voluntate bona
coronabis eum.

Ad canendum ſup *neginath ad* citharã 1
octo chordarum, Hymnus Davidi.

PSAL. VI.

DOmine ne in furore tuo *humilies* 2
me,neq; in ira tua caſtiges me. Miſere- 3
re mei Dñe, quoniã debilis ſum ego :
ſana me Dñe, quoniã obſtupuerunt oſſa
mea. Et anima mea conturbata eſt ve- 4
hementer; et tu Dñe uſquequo refrige-
riũ mihi? Revertere Dñe,libera animã 5
meã,redime me propter benignitatem
tuã. Quoniã non eſt in morte memoria 6
tui: in inferno quis laudabit te? Laſſatꝰ 7
ſum ſuſpirio meo,loquar in dolore meo
tota nocte ſup lectũ meũ : lachrymis
meis cubile meum rigabo. Caligavit præ 8
indignatione oculꝰ meꝰ,conſumptus eſt
propter omnes oppreſſores meos. Re- 9
cedite à me omnes operarii falſitatis,
quoniam *exaudita eſt coram Domino*
vox ploratꝰ mei. Exaudita eſt in con- 10
ſpectu Dñi deprecatio mea: Dñs orati-
onem meam accepit. Confundantur & 11
interturbentur valde omnes auctores
inimicitiæ meæ: revertantur et confun-
dantur in momento.

Interpretatio *Odæ* Davidis quam cecinit corã Dño, *quum effatus eſſet carmen* ſup interitu Saulis filii Cis qui erat de tribu Benjamin.

PSAL. VII.

DOmine Deꝰ meꝰ in verbo tuo ſperavi : redime me ab omnibꝰ perſequẽtibus me, et libera me. Ne fortè dilaceret ſicut leo animam meam ; diſcindat, et non ſit qui eruat.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

6 * ܘܠܐ ܢܩܘܡܘܢ ܡܨܚܢܐ ܩܕܡ ܥܝܢܝܟ: ܣܢܝܬ ܠܟܠ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. * ܘܬܘܒܕ ܠܡܡܠܠܝ
7 8 ܕܓܠܘܬܐ: ܠܓܒܪܐ ܐܫܘܕ ܕܡܐ ܘܢܟܘܠܐ ܢܣܠܐ ܡܪܝܐ. * ܘܐܢܐ ܒܣܘܓܐܐ ܕܛܝܒܘܬܟ
9 ܐܥܘܠ ܠܒܝܬܟ: ܘܐܣܓܘܕ ܒܗܝܟܠܐ ܕܩܘܕܫܟ ܒܕܚܠܬܟ * ܡܪܝܐ ܕܒܪܢܝ ܒܙܕܝܩܘܬܟ:
10 ܡܛܠ ܒܥܠܕܒܒܝ ܬܪܘܨ ܩܕܡܝ ܐܘܪܚܟ. * ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܒܦܘܡܗܘܢ ܬܪܝܨܘܬܐ: ܐܠܐ ܥܘܠ
11 ܒܓܘܗܘܢ. ܘܩܒܪܐ ܦܬܝܚܐ ܓܓܪܬܗܘܢ: ܘܠܫܢܝܗܘܢ ܡܥܩܡܢ. * ܚܝܒ ܐܢܘܢ
ܐܠܗܐ: ܘܢܦܠܘܢ ܡܢ ܡܪܥܝܬܗܘܢ. ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܥܘܠܗܘܢ ܛܪܘܕ ܐܢܘܢ: ܡܛܠ
12 ܕܐܡܪܡܪܘܟ. * ܢܚܕܘܢ ܒܟ ܟܠ ܕܡܬܟܠܝܢ ܥܠܝܟ: ܠܥܠܡ ܢܫܒܚܘܢܟ. ܘܬܓܢ ܥܠܝܗܘܢ.
13 ܢܬܥܫܢܘܢ ܒܟ ܟܠ ܪܚܡܝ ܫܡܟ: * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܡܒܪܟ ܠܙܕܝܩܐ. ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܣܟܪܐ
ܕܨܒܝܢܐ ܬܚܕܪܢܝ. *ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ*
1 2 * ܠܕܘܝܕ. ܡܠܦܢܘܬܐ ܘܡܬܪܥܝܢܘܬܐ. ܘܐܦ ܛܝܒܘܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܙ. * ܡܪܝܐ ܠܐ ܒܚܡܬܟ
3 ܬܟܣܢܝ. ܘܠܐ ܒܚܡܬܟ ܬܪܕܝܢܝ: * ܪܚܡ ܥܠܝ ܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܟܪܝܗ ܐܢܐ. ܐܣܝܢܝ ܡܪܝܐ
4 5 ܡܛܠ ܕܐܙܕܥܙܥܘ ܓܪܡܝ: * ܘܢܦܫܝ ܐܬܬܙܝܥܬ ܛܒ. ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ: * ܐܬܦܢܐ ܡܪܝܐ
6 ܘܦܪܘܩ ܠܢܦܫܝ. ܘܦܪܘܩܝܢܝ ܡܛܠ ܛܝܒܘܬܟ: * ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܒܡܘܬܐ ܥܘܗܕܢܟ. ܘܒܫܝܘܠ
7 ܡܢܘ ܡܘܕܐ ܠܟ: * ܠܐܝܬ ܒܬܢܚܬܝ ܘܣܚܝܬ ܒܟܠ ܠܠܝܐ ܥܪܣܝ. ܘܒܕܡܥܝ ܥܪܣܝ ܡܡܣܝܢ
8 9 ܐܡܣܝܬ: * ܥܟܪܬ ܡܢ ܪܘܓܙܐ ܥܝܢܝ. ܘܐܬܥܛܦܬ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ: * ܦܪܘܩܘ ܡܢܝ
10 ܟܠ ܥܒܕܝ ܫܘܩܪܐ. ܡܛܠ ܕܫܡܥ ܡܪܝܐ ܩܠܐ ܕܒܟܝܝ: * ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܒܥܘܬܝ ܡܪܝܐ
11 ܨܠܘܬܝ ܩܒܠ. * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܬܕܠܚܘܢ ܛܒ ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ: ܢܬܗܦܟܘܢ ܘܢܒܗܬܘܢ
1 ܡܢ ܫܠܝ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * ܦܘܢܝܐ ܕܥܡܡܐ ܠܗܝܡܢܘܬܐ ܘܬܘܕܝܬܐ ܕܬܠܝܬܝܘܬܐ
2 ܦܬܓܡܐ ܟܙ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܒܟ ܣܒܪܬ ܦܪܘܩܝܢܝ: ܘܡܢ
3 ܟܠ ܪܕܘܦܝ ܦܨܢܝ. * ܕܠܡܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܢܒܙܘܙ ܢܦܫܝ: ܘܠܝܬ ܕܦܪܩ ܘܡܦܨܐ.

Neque ſtabunt ſuperbi coram oculis tuis. Odiſti omnes operantes falſitatem, Et perdes loquentes mendacium; virum effuſorem ſanguinis & fraudulentum aſpernabitur Dominus. At ego in multitudine bonitatis tuæ ingrediar domum tuam, & adorabo in templo ſanctitatis tuæ. In timore tuo. Domine, dirige me, & in juſtitia tua: propter inimicos meos dirige coram me viam tuam. Quoniam non eſt in ore eorum æquitas, ſed iniquitas in intimo eorum, ſuntque velut ſepulchra aperta eorum guttura, & linguæ eorum perverſæ. Damna eos, Deus, & cadant à conſiliis ſuis : & in multitudine iniquitatis eorum propelle eos, quoniam exacerbaverunt te. Lætentur in te omnes qui ſperant in te : in æternum laudabunt te, & habitabis inter eos. Corroborentur in te omnes diligentes nomen tuum, Quoniam tu benedices juſtis. Domine, ut clypeus opportunus cinges me.

PSAL. VI. Davidis.

Documentum & commonitio, ſimulque & gratia. Verſ. 17.

DOmine, ne in ira tua arguas me, neque in furore tuo me caſtiges. Miſerere mei, Domine, quoniã infirmus ſum : ſana me, Domine, quoniam tremefacta ſunt oſſa mea. Et anima mea territa eſt valdé : et tu Dñe, quouſque? Convertere, Dñe, & libera animã meã, & ſalva me propter bonitatẽ tuã : Quoniam non eſt in morte memoria tui, & in inferno quis confitetur tibi? Defatigatus ſum in gemitibꝰ meis, tinxiq; ſingulis noctibꝰ lectum meũ, & meis lachyrmis ſtratũ meũ tabeſeci. Doluit præ ira oculꝰ meꝰ, & turbatus eſt propter omnes inimicos meos. Recedite à me omnes operantes falſitatem, quoniam audivit Dñs vocem fletũs mei : Audivit Dñs petitionẽ meã, Dñs orationẽ meã ſuſcepit. Pudefiant, et frangãtur valde cuncti hoſtes mei : vertãtur et pereant ſubitò.

PSAL. VII. Davidis.

Converſio gentium ad fidem & confeſſionem Trinitatis. Verſ. 27.

DOmine Deus meꝰ, in te ſperavi, ſerva me & à cunctis perſequutoribus meis eripe me. Ne forte ſicut leo ad deprædandam animam meam, nemine ſalvante atque eripiente

Verſio VULG. LAT.

neque permanebunt injuſti ante oculos
7 tuos. Odiſti omnes, qui operantur iniquitatem: perdes omnes, qui loquuntur mendacium. Virum ſanguinum & dolo-
8 ſum abominabitur Dominus: Ego autem in multitudine miſericordiæ tuæ; Introibo in domum tuam: adorabo ad templum ſanctum tuum in timore tuo.
9 Domine, deduc me in juſtitia tua: propter inimicos meos dirige in conſpectu
10 tuo viam meam. Quoniam non eſt in ore eorum veritas: cor eorum vanum
11 eſt. Sepulchrum patens eſt guttur eorum, linguis ſuis doloſè agebant, judica illos Deus. Decidant à cogitationibus ſuis, ſecundùm multitudinem impietatum eorum expelle eos, quoniam ir-
12 ritaverunt te, Domine. Et lætentur omnes, qui ſperant in te, in æternum exultabunt: & habitabis in eis. Et gloriabũtur in te omnes, qui diligũt nomẽ tuũ,
13 Quoniã tu benedices juſto. Dñe, ut ſcuto bonæ voluntatis tuæ coronâſti nos.

1 In finem in carminibus, Pſalmus David, pro octava. VI.

2 Domine, ne in furore tuo arguas me,
3 neque in ira tua corripias me. Miſerere mei, Domine, quoniam infirmus ſum: ſana me, Domine, quoniam con-
4 turbata ſunt oſſa mea. Et anima mea turbata eſt valdé: ſed tu, Domine, uſ-
5 quequo? Convertere, Domine, & eripe animam meam: ſalvum me fac
6 propter miſericordiam tuam. Quoniam non eſt in morte qui memor ſit tui: in inferno autem quis confitebitur tibi?
7 Laboravi in gemitu meo, lavabo per ſingulas noctes lectum meum: lachrymis
8 meis ſtratum meum rigabo. Turbatus eſt à furore oculus meus: inveteravi in-
9 ter omnes inimicos meos. Diſcedite à me omnes qui operamini iniquitatẽ: quoniã exaudivit Dñs vocẽ fletûs mei. Exaudi-
10 vit Dñs deprecationẽ meã, Dñs orationẽ meã ſuſcepit. Erubeſcãt, et conturben-
11 tur vehementer omnes inimici mei: convertantur & erubeſcant valdè velociter.

1 Pſalmus David, quem cantavit Domino pro verbis Chuſi filii Jemini. (2 *Reg.* 16.) VII.

2 Domine Deus meus, in te ſperavi: ſalvum me fac ex omnibus perſe-
3 quentibus me, & libera me. Nequando rapiat ut leo animam meam, dum non eſt qui redimat, neque qui ſalvum faciat.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

† οὐδὲ διαμενοῦσι παράνομοι κατέναντι τῶν ὀφθαλμῶν
7 σου. † Ἐμίσησας κύριε πάντας τοὺς ἐργαζομένους τὴν ἀνομίαν, † ἀπολεῖς πάντας τοὺς λαλοῦντας τὸ ψεῦδος.
8 † ἄνδρα αἱμάτων καὶ δόλιον βδελύσσεται κύριος. † Ἐγὼ δὲ ἐν τῷ πλήθει τοῦ ἐλέους σου εἰσελεύσομαι εἰς τὸν οἶκόν σου,
9 † προσκυνήσω πρὸς ναὸν ἅγιόν σου ἐν φόβῳ σου. † Κύριε ὁδήγησόν με ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου † ἕνεκα τῶν ἐ-
10 χθρῶν μου, † κατεύθυνον ἐνώπιόν σου τὴν ὁδόν μου. † Ὅτι οὐκ ἔστιν ἐν τῷ στόματι αὐτῶν ἀλήθεια· † ἡ καρδία αὐ-
11 τῶν ματαία· † Τάφος ἀνεῳγμένος ὁ λάρυγξ αὐτῶν· † ταῖς γλώσσαις αὐτῶν ἐδολιοῦσαν. † κρῖνον αὐτοὺς ὁ θεός· † ἀποπεσάτωσαν ἀπὸ τῶν διαβουλιῶν αὐτῶν· † κατὰ τὸ πλῆθος τῶν ἀσεβειῶν αὐτῶν † ἔξωσον αὐτούς, ὅτι παρε-
12 πίκρανάν σε κύριε. † Καὶ εὐφρανθήτωσαν ἐπὶ σοὶ πάντες οἱ ἐλπίζοντες ἐπὶ σέ, † εἰς αἰῶνα ἀγαλλιάσονται, καὶ κατασκηνώσεις ἐν αὐτοῖς· † καὶ καυχήσονται
13 (γ) ἐπὶ σοὶ πάντες οἱ ἀγαπῶντες τὸ ὄνομά σου, † Ὅτι σὺ (δ) εὐλογήσεις δίκαιον. † κύριε, ὡς ὅπλῳ εὐδοκίας ἐστεφάνωσας ἡμᾶς.

MS.A. (γ) ἐν σοὶ (δ) εὐλογεῖς

1 (α) Εἰς τὸ τέλος, ἐν ὕμνοις ὑπὲρ τῆς ὀγδόης, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ς'.

2 † Κύριε μὴ τῷ θυμῷ σου ἐλέγξῃς με, † μηδὲ τῇ ὀρ-
3 γῇ σου παιδεύσῃς με. † Ἐλέησόν με κύριε, ὅτι ἀσθενής εἰμι. † ἴασαί με κύριε, ὅτι ἐταράχθη τὰ ὀστᾶ
4 μου. † Καὶ ἡ ψυχή μου ἐταράχθη σφόδρα· † καὶ σὺ κύ-
5 ριε ἕως πότε; † Ἐπίστρεψον κύριε, ῥῦσαι τὴν ψυχήν μου·
6 † σῶσόν με ἕνεκεν τοῦ ἐλέους σου, † Ὅτι οὐκ ἔστιν ἐν τῷ θανάτῳ ὁ μνημονεύων σου, † ἐν δὲ τῷ ᾅδῃ τίς ἐξομο-
7 λογήσεταί σοι; † Ἐκοπίασα (β) ἐν στεναγμῷ μου, † λούσω καθ' ἑκάστην νύκτα τὴν κλίνην μου, † ἐν δάκρυσί
8 μου τὴν στρωμνήν μου βρέξω. † Ἐταράχθη ἀπὸ θυμοῦ ὁ ὀφθαλμός μου, † ἐπαλαιώθην ἐν πᾶσι τοῖς ἐχθροῖς μου.
9 † Ἀπόστητε ἀπ' ἐμοῦ πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, † ὅτι εἰσήκουσε κύριος τῆς φωνῆς τοῦ κλαυθμοῦ μου. † (γ)
10 Εἰσήκουσε κύριος τῆς δεήσεώς μου, † κύριος τὴν προσευ-
11 χήν μου προσεδέξατο. † Αἰσχυνθείησαν καὶ ταραχθείησαν σφόδρα πάντες οἱ ἐχθροί μου, † (δ) ἐπιστραφείησαν καὶ αἰσχυνθείησαν σφόδρα διὰ τάχους.

MS.A. (α) Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῆς ὀγδόης, (β) ἐν τῷ στεναγμῷ μου, (γ) Ἤκουσεν (δ) ἀποστραφείησαν εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ καταισχυνθείησαν

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, ὃν ᾖσε τῷ κυρίῳ ὑπὲρ τῶν λόγων Χουσὶ υἱοῦ Ἰεμενεί. ζ'.

2 † Κύριε ὁ θεός μου ἐπὶ σοὶ ἤλπισα, † σῶσόν με ἐκ
3 πάντων τῶν διωκόντων με, καὶ ῥῦσαί με, † Μήποτε ἁρπάσῃ ὡς λέων τὴν ψυχήν μου, † μὴ ὄντος λυτρουμένου, μηδὲ σῴζοντος.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

neque permanebunt injuſti ante oculos tuos. 6 *Odiſti, (d) Domine, omnes qui operantur iniquitatem: perdes omnes qui loquuntur mendacium.* 7 *Virũ ſanguinum, et doloſum abominabitur Domin⁹.* 8 *Ego autem in multitudine miſericordiæ tuæ introibo in domum tuam: adorabo [f] ad templum ſanctũ tuum in timore tuo.* 9 *Dñe, deduc me in tua juſtitia propter inimicos meos: dirige in conſpectu (e) tuo viã meã.* 10 *Quoniam non eſt in ore eorũ veritas: [g] cor eorum vanũ eſt.* 11 *[h] Sepulchrũ patens eſt guttur eorum; linguis ſuis doloſè agebant: judica illos, Deus.* 12 *Decidant [i] à cogitationib⁹ ſuis: ſecundũ multitudinẽ [k] impietatũ eorũ expelle eos; quoniã irritaverunt te, Domine.* 13 *Et lætentur (f) in te omnes, qui ſperant in te: in æternum exultabunt; & habitabis in eis.* 14 *Et (g) gloriabuntur in te omnes, qui diligunt nomen tuum: Quoniã tu benedices juſto.* 15 *Domine, ut ſcuto bonæ (h) voluntatis coronâſti nos.*

In finẽ, in hymnis * pro octava, pſalmus ipſi David. VI.

1 *Domine, ne in furore tuo [a] arguas me: neque in irâ tuâ corripias me.* 2 *Miſerere mei, Domine, quoniã infirm⁹ ſum: ſana [b] me, Domine, quoniam conturbata ſunt oſſa mea.* 3 *Et anima mea turbata eſt valdé: ſed tu, Domine, uſquequo?* 4 *Convertere, Domine, eripe animam meam: ſalvũ me fac propter miſericordiã tuã.* 5 *Quoniam non eſt in morte, qui (a) memor ſit tuî: in inferno autẽ quis confitebitur tibi?* 6 *Laboravi in gemitu meo: lavabo per ſingulas noctes lectũ meũ: in lachrymis meis ſtratũ meum rigabo.* 7 *Turbatus (b) eſt à furore oculus meus: (c) inveteravi inter omnes inimicos meos.* 8 *Diſcedite à me [c] omnes qui operamini (d) iniquitatẽ: quoniam exaudivit Domin⁹ vocẽ flet⁹ mei.* 9 *Exaudivit Dñs deprecationem meã: Dñs orationẽ meã ſuſcepit.* 10 *Erubeſcant, & (e) conturbentur vehementer omnes inimici mei: convertantur, & erubeſcant valdè (f) velociter.*

Verſio ÆTHIOPICA.

7 ወኢይነብሩ፡ዐማፅያን፡ቅድመ፡አዕይንቲከ፡፡=
ጸለእከ፡እግዚኦ፡ከኵሎሙ፡ገብርተ፡ዓመፃ፡፡ 6
ወትገድፎሙ፡ለኵሎሙ፡እለ፡ይነቡ፡ሐሰተ፡፡
ብእሴ፡ደም፡ወጕሕላዊ፡ያስቆርር፡እግዚአ 7
8 ብሔር፡፡ወአንሰ፡በብዝኃ፡ምሕረትከ፡፰፡እበ
ውእ፡ቤተከ፡፡ወእሰግድ፡ውስተ፡ጽርሐ፡መቅ
ደስከ፡በፈሪሀትከ፡፡=፡እግዚኦ፡መርሐኒ፡በጽ 9
ድቅከ፡፡ወበእንተ፡ጸላእትየ፡አርትዕ፡ፍናትየ፡
9 ቅድሜከ፡፡=፡ እስመ፡አልቦ፡ጽድቀ፡ውስተ፡ 10
አፉሆሙ፡፡ወልቦሙኒ፡ከንቱ፡፡=፡ከመ፡መቃብ 11
10 ር፡ክሡት፡ጕረዒቶሙ፡፡ወጸልሐዉ፡በልሳናቲ
ሆሙ፡፡ኰንኖሙ፡እግዚኦ፡ 12 ወይደቁ፡በው
11 ዲቶሙ፡፡ወበከመ፡ብዝኃ፡ሐብሎሙ፡ስድዶ
ሙ፡፡እስመ፡አምረሩከ፡እግዚኦ፡፡=፡ ወይትፌ 13
ሥሑ፡ብከ፡ኵሎሙ፡እለ፡ይትዌከሉ፡ከ፡፡ለዓ
ለም፡ይትሐሠዩ፡ወተኀድር፡ላዕሌሆሙ፡፡=፡
ወይትሜክሑ፡ብከ፡ኵሎሙ፡እለ፡ያፈቅሩ፡ስ 14
12 ምከ፡፡እስመ፡አንተ፡ትባርኮ፡ለጻድቅ፡፡=፡
እግዚኦ፡ከመ፡ወልታ፡ሠምር፡ከለልከነ፡፡=፡ 15

ፍጻሜ፡ዘስብሐት፡በእንተ፡ሳምንት፡
መዝሙር፡ዘዳዊት፡፡

13 2 እግዚኦ፡በመዐትከ፡ኢትቅሥፈኒ፡፡ወበመቅ 1
ሠፍትከ፡ኢትገሥጸኒ፡፡=፡ ተሣሀለኒ፡እግዚ 2
1 ኦ፡እስመ፡ድውይ፡አነ፡፡ወፈውሰኒ፡እስመ፡
ተሀውከ፡አዕጽምትየ፡፡=፡ ወነፍስየኒ፡ተሀው 3
2 ከት፡ፈድፋደ፡፡ወአንተኒ፡እግዚኦ፡እስከ፡
ማእዜኑ፡፡=፡ ተመየጥ፡እግዚኦ፡ወባልሐ፡ለነ 4
3 ፍስየ፡፡ወአድኅነኒ፡በእንተ፡ምሕረትከ፡፡=፡እስ 5
መ፡አልቦ፡በውስተ፡ሞት፡ዘይዜክረከ፡፡ወበሲኦ
4 ል፡መኑ፡የአምነከ፡፡=፡ሰራሕኩ፡በምንዳቤየ፡፡ 6
ወእኀፅብ፡ኵሉ፡ሌሊተ፡ዐራትየ፡፡ወበአንብ
5 ዕየ፡አርሐስኩ፡ምስካብየ፡፡=፡ወተሀውከት፡እ 7
መዐተ፡ዐይንየ፡፡ወበለይኩ፡በኀበ፡ኵሎሙ፡
6 ጸላእትየ፡፡=፡ ረሐቁ፡እምኔየ፡ኵልክሙ፡ 8
ገበርተ፡ዐመፃ፡፡እስመ፡ሰምዐኒ፡እግዚአብ
ሔር፡ቃለ፡ብካይየ፡፡=፡ወሰምዐኒ፡እግዚአብ 9
7 ሔር፡ስእለትየ፡፡ወተወክፈ፡እግዚአብሔር፡
ጸሎትየ፡፡=ለይትኀፈሩ፡ወይኀሰሩ፡ኵሎሙ፡ 10
8 ጸላእትየ፡፡ለይግብኡ፡ድኅሬሆሙ፡ወይትኀ
ፈሩ፡ፈድፋደ፡ወፍጡነ፡፡=፡

9 መዝሙር፡ዘዳዊት፡ዘዘመረ፡ለእግዚአብሔር፡
በእንተ፡ነገረ፡ኩዝ፡ወልደ፡አሚናዳብ፡፡

10 ጊ እግዚኦ፡አምላኪየ፡ብከ፡ተወከልኩ፡ወኢት 1
ግድፈኒ፡፡ወአድኅነኒ፡እምኵሎሙ፡እለ፡ሮ
11 ዱኒ፡ወባልሐኒ፡፡=፡ ከመ፡ኢይምስጥዋ፡ከመ፡ 2
አንበሳ፡ለነፍስየ፡፡እንዘ፡አልቦ፡ዘያድኅን፡
ወዘይባልሕ፡፡=፡

Pſalmus (a) ipſi David, quem cantavit Domino pro verbis (b) Chuſi filii [∴] Jemeni. VII. 1

1 *Domine Deus meus, in te ſperavi: [a] ſalvum me fac ex omnibus perſequentibus me, & libera me.* 2 *Nequando rapiat, ut leo, animam meam: dum non eſt qui redimat, neq; e qui ſalvum faciat.* 2 3

INTERP. ÆTHIOP. [f] in templo ſancto tuo [g] & quidem cor [h] Tanquã ſepulchrũ [i] in conſiliis ſuis malis: [k] fraudum eorũ *PSAL. VI.* [a] percutias me: [b] me, quoniã [c] vos omnes *PSAL. VII.* [∴] Aminadab [a] & ne abjicias me, ſed ſalvum

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

6 *ولا يثبت مخالفوا وصاياك بين يديك. يا رب ابغضت جميع فاعلي الاثم *وابدت كل الناطقين
7 8 بالكذب * الرجل السافك الدماء. الغاش الرب يرذله* وانا بكثرة رحمتك ادخل بيتك. واسجد
9 في هيكل قدسك * مستشعرا خشيتك * اهدني يا رب بعدلك. ومن اجل اعداي سهل طريقي
10 امامك * فانه ليس في افواههم صدق. بل الاثم في قلوبهم* حناجرهم قبور مفتحة * والسنتهم
11 غاشة * فدنهم يا الله. وليسقطوا من افكارهم. ومثل كثرة نفاقهم استاصلهم لانهم اسخطوك
12 يا رب * وليفرح بك جميع المتوكلين عليك. يسرون الي الابد. وفيهم تحل بركتك. ويفتخر بك
13 كل محبي اسمك * لانك باركت الصديق. وكمثل سلاح المسرة كللتنا.

1 * المزمور السادس لداود * تضرعا من اجل خطيته وهو كا. اسيكوانه *

2 3 * يا رب لا تبكتني بغضبك. ولا تؤدبني بسخطك * ارحمني يا رب فاني ضعيف. اشفني يا رب
4 فان عظامي وهنت * ونفسي جزعت جدا. وانت يا رب حتى متى * تعطف علي ونج نفسي *
6 وخلصني من اجل رحمتك * فليس في الموتى من يذكرك. ولا في الجحيم من يشكرك.
7 8 * وتعبت في تنهدي. احم في كل ليلة سريري. وبدموعي ابل فراشي * ذبلت من السخط
9 عيناي. وبعثت في جميع اعداي * ابعدوا عني يا جميع فاعلي الاثم. لان الرب قد سمع
10 11 صوت بكاي * الرب سمع تضرعي. الرب قبل صلاتي * يخزا ويقلق جدا جميع اعداي *
ويرتدون الي ورايهم. ويخزون جدا عاجلا. * المزمور السابع لداود * 1
2 * له * اسيكوانه. * توكلت عليك يا ربي والاهي خلصني. ومن ايدي
3 جميع الطاردين لي نجني * لئلا يخطفوا نفسي مثل الاسد. حيث لا منج ولا مخلص.

Et non conſiſtent contradicentes præceptis tuis ante te. O Domine, odiſti omnes operãtes iniquitatẽ. Et perdidiſti omnes proferentes mendaciũ: Virũ effundentem ſanguinẽ, doloſum, Domin⁹ contemnit. Et ego cum multitudine miſericordiæ tuæ ingrediar domũ tuã, et adorabo in templo ſanctitatis tuæ, ſentiens timorem tuum. Dirige me, O Domine mi, æquitate tuâ, & propter inimicos meos complana viã meã in conſpectu tuo. Quia non eſt in oribus eorum veritas, ſed iniquitas in cordibus eorum. Guttura eorum ſepulchra aperta, et linguæ eorum doloſæ: Judica eos, O Deus, Et decidant à cogitationibus ſuis, & ſecundùm multitudinem impietatis eorum eradica eos: quoniam ad indignationem concitârunt te, O Domine. Et lætentur in te omnes confidentes in te: exultabunt in æternũ, & in eis habitabit benedictio tua, & gloriabuntur in te omnes amantes nomen tuum; Quia tu benedixiſti juſto, Et veluti arma lætitiæ coronâſti nos. 6 7 8 9 10 11 12 13

PSAL. VI. Davidis. 1
In ſupplicationem pro peccato ſuo. Verſ. 21.

O Domine mi, ne reprehendas me in ira tua, neque erudias me in furore tuo. Miſerere mei, O Domine mi, quia infirmus ſum: ſana me, O Domine mi, quoniam oſſa mea elanguerunt. Et anima mea contriſtata eſt valdé: & tu, O Domine mi, uſquequò? Propitiare mihi & libera animam meam, & ſalva me ob miſericordiam tuam. Non enim eſt in morte qui recordetur tui, neque in inferis qui tibi gratias agat. Et laboravi in ſuſpirio meo: lavo ſingulis noctibus ſtratum me, & lachrymis meis madefacio lectũ meum. Languerunt propter indignationem oculi mei, & inveteratus ſum inter omnes inimicos meos. Recedite à me omnes operantes iniquitatem, quia Dominus jam audivit vocem fletûs mei: Dominus audivit ſupplicationem meã: Dominus acceptavit orationem meã. Confundantur, et conturbentur vehementer omnes inimici mei, et convertantur retrò, et erubeſcant valdè velociter. 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11

PSAL. VII. Verſ. 35. 1

Confiſus ſum in te, O Domine mi & Deus meus: ſalva me, & è manibus omnium perſequentium me eripe me. Ne rapiant animam meam ut leo, dum non eſt redemptor, neque ſalvator. 2 3

תהלים : ח

4 retribui Si .meis volis in iniquitas est si ,istud feci si meus Deus. Domine
יְהֹוָה אֱלֹהַי אִם־עָשִׂיתִי זֹאת אִם־יֶשׁ־עָוֶל בְּכַפָּי׃ אִם־גָּמַלְתִּי 5
,meū animam inimicus Persequatur.*inaniter meū angustiatorē* erui & ,malum *meo pacifico*
6 שׁוֹלְמִי רָע וָאֲחַלְּצָה צוֹרְרִי רֵיקָם׃ יִרַדֹּף אוֹיֵב נַפְשִׁי
,*habitare faciat* pulverem in meā gloriā &,*meas vitas* terra in conculcet &,comprehēdat &
וְיַשֵּׂג וְיִרְמֹס לָאָרֶץ חַיָּי וּכְבוֹדִי לֶעָפָר יַשְׁכֵּן
: meorū hostium indignationes propter te eleva , tuo *naso* in Domine Surge .Selah
7 סֶלָה׃ קוּמָה יְהֹוָה בְּאַפֶּךָ הִנָּשֵׂא בְּעַבְרוֹת צוֹרְרָי
cum super & : te circumdabit populorum *cœtus* Et .præcepisti *judicium ,me ad* te suscita &
8 וְעוּרָה אֵלַי מִשְׁפָּט צִוִּיתָ׃ וַעֲדַת לְאֻמִּים תְּסוֹבְבֶךָּ וְעָלֶיהָ
,meā justitiā secūdum Dñe me judica :populos judicabit Dominus .revertere altitudinē in
9 לַמָּרוֹם שׁוּבָה׃ יְהֹוָה יָדִין עַמִּים שָׁפְטֵנִי יְהֹוָה כְּצִדְקִי
justus ,stabilies & ,impios malum nunc Consumet .me *super* meam perfectionē secūdum &
10 וּכְתֻמִּי עָלָי׃ יִגְמָר־נָא רַע רְשָׁעִים וּתְכוֹנֵן צַדִּיק
servantem , *Deum super* meus Clypeus .*justus* Deus renes & , corda *probans* &
11 וּבֹחֵן לִבּוֹת וּכְלָיוֹת אֱלֹהִים צַדִּיק׃ מָגִנִּי עַל־אֱלֹהִים מוֹשִׁיעַ
non Si .die omni *indignans* Deus & ,*justus judex* Deus .corde rectos
12 13 יִשְׁרֵי־לֵב׃ אֱלֹהִים שׁוֹפֵט צַדִּיק וְאֵל זֹעֵם בְּכָל־יוֹם׃ אִם־לֹא
fecit parare ei Et.illū paravit & ,tetendit suum arcum.*acuet* suū gladium,fuerit conversus
14 יָשׁוּב חַרְבּוֹ יִלְטוֹשׁ קַשְׁתּוֹ דָרַךְ וַיְכוֹנְנֶהָ׃ וְלוֹ הֵכִין
,*laborem* cōcepit &,iniquitatē *parturiet* Ecce.*operabitur ardentes in*,suas sagittas:mortis vasa
15 כְּלֵי־מָוֶת חִצָּיו לְדֹלְקִים יִפְעָל׃ הִנֵּה יְחַבֶּל־אָוֶן וְהָרָה עָמָל
.*operabitur* foveam in cadet &:eam effodit & ,*excidit* Cisternam .mendacium peperit &
16 וְיָלַד שָׁקֶר׃ בּוֹר כָּרָה וַיַּחְפְּרֵהוּ וַיִּפֹּל בְּשַׁחַת יִפְעָל׃
Confitebor.descendet ejꝰ *violentia*,ejꝰ verticē super &:ejꝰ caput in ejꝰ *labor* Convertetur
17 18 יָשׁוּב עֲמָלוֹ בְרֹאשׁוֹ וְעַל קָדְקֳדוֹ חֲמָסוֹ יֵרֵד׃ אוֹדֶה
.altissimi Domini nomini psallam & : ejus justitiam secundùm Domino
יְהֹוָה כְּצִדְקוֹ וַאֲזַמְּרָה שֵׁם־יְהֹוָה עֶלְיוֹן׃

PSAL. VIII. ח

illustre quàm ,noster Domine Domine .David canticum Hagithith super Vincenti
1 2 לַמְנַצֵּחַ עַל־הַגִּתִּית מִזְמוֹר לְדָוִד׃ יְהֹוָה אֲדֹנֵינוּ מָה־אַדִּיר
ore Ex .cœlos super tuam *laudem des quod* ; terra universa in tuum nomen
3 שִׁמְךָ בְּכָל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר תְּנָה הוֹדְךָ עַל־הַשָּׁמָיִם׃ מִפִּי
faciendū cessare ad:tuos *angustiatores* propter fortitudinē fundâsti *sugentium* &,parvulorum
עוֹלְלִים וְיֹנְקִים יִסַּדְתָּ עֹז לְמַעַן צוֹרְרֶיךָ לְהַשְׁבִּית
: tuorum digitorum opus ,tuos cœlos videbo Quoniam .*se ulciscentem* & , inimicum
4 אוֹיֵב וּמִתְנַקֵּם׃ כִּי־אֶרְאֶה שָׁמֶיךָ מַעֲשֵׂה אֶצְבְּעֹתֶיךָ
filius & : ejus recorderis quòd ,homo Quid .præparasti quas stellas & , lunam
5 יָרֵחַ וְכוֹכָבִים אֲשֶׁר כּוֹנָנְתָּה׃ מָה־אֱנוֹשׁ כִּי־תִזְכְּרֶנּוּ וּבֶן־
,gloria & *Deo à* paululum eum *facies* deficere Et ?eum visites quòd , hominis
6 אָדָם כִּי תִפְקְדֶנּוּ׃ וַתְּחַסְּרֵהוּ מְּעַט מֵאֱלֹהִים וְכָבוֹד
omnia:tuarum manuum operibus *in* eum facies Dominari .eum *redimitum* es decore &
7 וְהָדָר תְּעַטְּרֵהוּ׃ תַּמְשִׁילֵהוּ בְּמַעֲשֵׂי יָדֶיךָ כֹּל
animalia etiam & : ipsa universa *armenta* & , *Pecus* .ejus pedibus sub posuisti
8 שַׁתָּה תַחַת־רַגְלָיו׃ צֹנֶה וַאֲלָפִים כֻּלָּם וְגַם בַּהֲמוֹת
Domine .marium semitas transeuntem : maris pisces & ,*cœlorum Volatile* .*campi*
9 10 שָׂדָי׃ צִפּוֹר שָׁמַיִם וּדְגֵי הַיָּם עֹבֵר אָרְחוֹת יַמִּים׃ יְהֹוָה
! terra universa In tuum nomen *illustre* quàm ,noster Domine
אֲדֹנֵינוּ מָה־אַדִּיר שִׁמְךָ בְּכָל־הָאָרֶץ׃

תרגום TARGUM.

יְיָ אֱלָהִי אִין עֲבָדִית שִׁירְתָא הָדָא בְּכַוָּנְתָא בִישָׁא 4
אִין אִית טְלוּמָא בִּידַי׃ אִין פְּרָעִית לְבַעַל שְׁלָמִי 5
בִּישׁ וּדְחַקִית מְעִיקֵי מַגָּן׃ יְהֵי רָדֵף בְּעֵל דְּבָבָא 6
נַפְשִׁי וְיִדְבֵּק וְיִכְבּוֹשׁ לְאַרְעָא חַיַּי וִיקָרִי לְעַפְרָא
יַשְׁרֵי לְעָלְמִין׃ קוּם יְיָ בְּתוּקְפָּךְ אִתְנַטַּל בְּרוּגְזָא 7
עַל מְעִיקַי וּסְרְהִיב לִי דִּינָא דִּי פַּקֶּדְתָּא׃ וּכְנִישַׁת 8
אֻמַּיָּא תְּחוֹרְנָךְ וְאַמְטוּלְתָהּא לְבֵי שְׁכִנְתָּךְ תּוּב׃
מֵימְרָא דַּייָ יְדִין עַמְמַיָּא דּוּן יָתִי יְיָ כִּזְכוּתִי 9
וּכְשַׁלְמוּתִי פְּרַע עֲלָי׃ יִשְׁתֵּיצֵי כְעַן בִּישָׁא דְּרַשִׁיעֵי 10
וְיִשְׁתַּכְלְלוּן צַדִּיקֵי וּבָחֵן לִבְבֵי וְכָלְיָן אֱלָהָא
זַכָּאָה׃ תְּרִיסִי עַל אֱלָהָא פָּרִיק תְּרִיצֵי לִבָּא׃ אֱלָהָא 11 12
דַּיָּנָא זַכָּאָה וּבִתְקוֹף רְגִיז עַל רַשִׁיעֵי כָּל יוֹמָא׃
אִם לָא יְתוּב לְדַחַלְתֵּיהּ סַיְפֵּיהּ שָׁחֵיז קַשְׁתֵּיהּ 13
מְתִיחָא וּסְדִירָא׃ וּמְטוּלְתֵיהּ תַּקִּין זֵינֵי מוֹתָא 14
גִּירוֹי לְדָלְקֵי צַדִּיקַיָּא יַעְבֵּיד׃ הָא יִצְטַעַר לְשִׁקַר 15
וְיַעְדֵּי עַמְלָא וְיוֹלִיד שִׁקְרָא׃ שׁוּחַ חֲפַר וּנְמַצְיֵהּ 16
וּנְפַל בְּשׁוּחֲתָא דִּי עֲבַד׃ יְתוּב לְעוּתֵיהּ בְּרֵישֵׁיהּ 17
וְעַל מוֹקְדֵיהּ חַטּוּפֵיהּ יֵחוֹת׃ אֲשַׁבַּח יְיָ כְּצִדְקָתֵיהּ 18
וַאֲשַׁבַּח שׁוּם אֱלָהָא עִלָּאָה׃

ח

לְשַׁבָּחָא עַל כִּנּוֹרָא דְּאַיְתִי מִגַּת תּוּשְׁבַּחְתָּא 1
לְדָוִד׃ יְיָ אֱלָהָא רִבּוֹנָנָא כְּמָה תְלִיל שְׁמָךְ וּמְשַׁבַּח 2
בְּכוּלָּא אַרְעָא דִּיהַבְתָּא זִיוָךְ עֵיל מִן שְׁמַיָּא׃ מִפּוּם 3
עוּלְמַיָּא וְיוֹנְקַיָּא אַשְׁתַּסַּתָּא עוּשְׁנָא מִן בִּגְלַל
מְעִיקָךְ לְבַטָּלָא בְּעֵיל דְּבָבָא וְנוּקְמָא׃ מְטוּל 4
דְּאַחְמֵי שְׁמָיךְ עוֹבָדֵי אֶצְבְּעָתָךְ סִיהֲרָא
וְכֹכְבַיָּא דִּי אַתְקֵינְתָּא׃ מָה בַּר נָשָׁא 5
מְטוּל דְּתִדְכַּר עוֹבָדוֹי וּבַר נָשָׁא מְטוּל
דְּתִסְעַר עֲלוֹי׃ וְחַסַּרְתָּא יָתֵיהּ קַלִּיל 6
מִמַּלְאֲכַיָּא וִיקָרָא וְשִׁבְהוֹרָא תְּכַלְלִנֵיהּ׃
אַשְׁלַטְתֵּיהּ בְּעוֹבָדֵי יְדָךְ כּוּלָּא שַׁוִּיתָא 7
תְּחוֹת רִגְלוֹי׃ עָאן וְתוֹרֵי כּוּלְהוֹן וְלָחוֹד 8
בְּעִירֵי חַקְלָא׃ צִפְּרֵי שְׁמַיָּא וְנוּנֵי יַמָּא וְלִוְיָתָן 9
דְּחָלִיף אַסְרָטֵי יַמָּא׃ יְיָ אֱלָהָא רִבּוֹנָנָא כְּמָה 10
תְּלִיל וּמְשַׁבַּח שְׁמָךְ בְּכוּלָּא אַרְעָא׃

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Domine Deus meus si feci *carmen* istud 4
cum intentione mala, si est iniquitas in
manibus meis: Si reddidi auctori pacis 5
meæ malum, & afflixi eos qui me angebant
frustrà: Persequatur auctor inimi- 6
citiæ animam meam & apprehendat, &
prosternat ad terram vitam meam, &
gloriam meam in pulverem ponat in
perpetuum. Surge Domine in fortitudi- 7
ne tua, elevare in furore super oppressores
meos, & accelera mihi judicium
quod mandâsti. Et congregatio genti- 8
um circumdabit te, & propter eam ad
domum majestatis tuæ revertere. Ver- 9
bum Domini judicabit populos: judica
me Domine secundùm meritum meum,
& secundùm perfectionem meam
persolve mihi. Destruatur nunc mali- 10
tia impiorum, & confirmentur justi:
scrutatur verò corda & renes Deus
justus. Clypeus meus in Deo qui redi- 11
mit rectos corde. Deus judex justus, & 12
in fortitudine irascitur adversus impios
tota die. Si non revertatur ad timorem 13
ejus, gladium suum acuit: arcus ejus
extentus & paratus. Et propter ipsum 14
paravit arma mortis: sagittis suis in
persecutores justorum operabitur. Ecce 15
enitetur falsitatem, & concipiet pravitatem,
& pariet mendacium. Foveam 16
fodit & effodit eam; & cecidit in foveam
quam fecit. Recidet pravitas ejus 17
in caput ejus, & super verticem ejus iniquitas
ejus descendet. Laudabo Domi- 18
num secundùm justitiam ejus, & laudabo
nomen Dei altissimi.

Ad canendum super citharam, *quam* 1
attulit de Gath, canticum David.

PSAL. VIII.

DOmine *Deus* præceptor noster, quàm 2
excelsum est nomen tuum, & laudabile
in universa terrra, qui constituisti splendorem
tuum supra cœlos. Ex ore infan- 3
tium & lactentium fundâsti fortitudinē
propter adversarios tuos, ut destruas auctorē
inimicitiarū & *minitantē*. Quo- 4
niā suspiciā cœlos tuos, opera digitorū
tuorum, lunam, & stellas quæ præparâsti.
Quid est filiꝰ hominis quoniā recordaris 5
operationū ejꝰ; & filiꝰ hominis, quoniā
visitas eū? Minuisti autē eum minimo ab 6
angelis: gloria & splendore coronâsti
eū. Dedisti ei potestatē in opera manuū 7
tuarū: omnia posuisti sub pedibus ejus: 8
Oves & boves omnes, & insuper bestias
agri: Aves cœli, & pisces maris, & *Leviathan qui transit* vias maris. Domine *Deus* præ- 9
ceptor noster, quàm excelsum & laudabile est nomen tuum in universa terra!

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

4 * ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܐܢ ܥܒܕܬ ܗܕܐ: ܐܢ ܐܝܬ ܥܘܠܐ ܒܐܝܕܝ. * ܘܐܢ ܦܪܥܬ ܠܡܢ ܕܥܒܕ ܠܝ 5
6 ܒܝܫܬܐ: ܘܐܢ ܐܠܨܬ ܠܒܥܠܕܒܒܝ ܣܪܝܩܐܝܬ. * ܢܪܕܘܦ ܒܥܠܕܒܒܐ ܠܢܦܫܝ ܘܢܕܪܟܝܗ:
7 ܘܢܕܘܫ ܚܝܝ ܒܐܪܥܐ. ܘܐܝܩܪܝ ܒܥܦܪܐ ܢܫܪܐ: * ܩܘܡ ܡܪܝܐ ܒܪܘܓܙܟ. ܘܐܬܬܪܝܡ ܥܠ ܩܕܠ
8 ܒܥܠܕܒܒܝ: ܘܐܬܬܥܝܪ ܠܝ ܒܕܝܢܐ ܕܦܩܕܬ. * ܘܟܢܘܫܬܐ ܕܥܡܡܐ ܬܚܕܪܟ: ܘܡܛܠܬܗ ܠܪܘܡܐ
9 10 ܬܗܦܘܟ. * ܡܪܝܐ ܢܕܘܢ ܥܡܡܐ: ܕܘܢܝ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܙܕܝܩܘܬܝ ܘܐܝܟ ܬܡܝܡܘܬܝ. * ܢܫܠܡ
11 ܒܝܫܘܬܐ ܥܠ ܪܫܝܥܐ: ܘܬܬܪܨ ܠܙܕܝܩܐ. ܒܨܐ ܠܒܐ ܘܟܘܠܝܬܐ: ܐܠܗܐ ܙܕܝܩܐ * ܡܥܕܪܢܝ.
12 ܐܠܗܐ ܕܦܪܩ ܠܬܪܝܨܝ ܠܒܐ: * ܐܠܗܐ ܕܝܢܐ ܕܟܐܢܘܬܐ. ܠܐ ܪܓܙ ܟܠ ܝܘܡ ܐܠܐ ܡܬܦܢܐ:
13 14 * ܣܦܣܪܗ ܠܛܫ ܘܩܫܬܗ ܡܬܚ. ܘܛܝܒܗ * ܘܛܝܒ ܠܗ ܡܐܢܐ ܕܪܘܓܙܐ: ܓܐܪܘܗܝ ܠܕܠܩܝܢ
15 16 ܥܒܕ ܐܢܘܢ. * ܡܛܠ ܕܚܒܠ ܥܘܠܐ ܘܒܛܢ ܥܡܠܐ ܘܝܠܕ ܫܘܩܪܐ: * ܓܘܒܐ ܚܦܪ ܘܥܡܩܗ ܘܢܦܠ
17 18 ܒܦܚܬܐ ܕܥܒܕ. * ܬܗܦܘܟ ܥܘܠܗ ܒܪܫܗ: ܘܥܠ ܩܪܩܦܬܗ ܥܘܠܗ ܢܚܘܬ. * ܐܘܕܐ
ܠܡܪܝܐ ܐܝܟ ܙܕܝܩܘܬܗ. ܘܐܙܡܪ ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܪܝܡܐ. * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܫܒܥܐ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܢܒܝܘܬܐ ܕܫܘܒܚܐ ܕܐܘܫܥܢܐ ܕܥܬܝܕܝܢ ܛܠܝܐ ܘܝܠܘܕܐ ܘܥܠܝܡܐ ܠܡܪܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܚ.
2 3 * ܡܪܝܐ ܡܪܢ، ܡܐ ܡܫܒܚ ܫܡܟ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܕܝܗܒܬ ܫܘܒܚܟ ܥܠ ܫܡܝܐ: * ܡܢ
ܦܘܡܐ ܕܥܠܝܡܐ ܘܕܛܠܝܐ. ܬܩܢܬ ܬܫܒܘܚܬܐ: ܡܛܠ ܒܥܠܕܒܒܝܟ ܕܢܒܛܠ ܒܥܠܕܒܒܐ
4 5 ܘܡܬܒܥܢܐ: * ܡܛܠ ܕܚܙܘ ܫܡܝܟ ܥܒܕܐ ܕܨܒܥܬܟ. ܣܗܪܐ ܘܟܘܟܒܐ ܕܐܢܬ ܬܩܢܬ: * ܡܢܘ
6 ܓܒܪܐ ܕܬܥܗܕܝܘܗܝ. ܘܒܪܢܫܐ ܕܬܣܥܪܝܘܗܝ: * ܒܨܪܬܝܘܗܝ ܩܠܝܠ ܡܢ ܡܠܐܟܐ. ܒܐܝܩܪܐ
7 ܘܒܫܘܒܚܐ ܐܟܠܠܬܝܘܗܝ: * ܘܐܫܠܛܬܝܘܗܝ ܒܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܟ. ܘܟܠ ܫܥܒܕܬ ܬܚܝܬ
8 9 ܪܓܠܘܗܝ: * ܥܢܐ ܘܬܘܪܐ ܟܠܗܘܢ. ܐܦ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ * ܘܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ: ܘܢܘܢܐ ܕܝܡܐ
10 ܕܥܒܪܝܢ ܫܒܝܠܐ ܕܝܡܡܐ. * ܡܪܝܐ ܡܪܢ، ܡܐ ܡܫܒܚ ܫܡܟ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ.

Domine Deus meus, si perpetravi hoc, et si est iniquitas in manibꝰ meis. Et si rependi ei qui intulit mihi malum, siq; oppressi adversarios meos absque causa: Persequatur hostis animā meam, & assequatur illam, & conculcet vitam meā in terrā, & gloriā meam in pulvere habitare faciat. Exurge, Dñe, in ira tua, & exaltare super cervicem hostium meorum. Invigila mihi in judicio quod præcepisti. Et cœtus populorum circumdabit te, & propter ipsum in altum revertêris. Dominus judicabit gentes: judica me, Dñe secundùm justitiā meam, & secundùm innocentiā meam. Compleatur malitia adversùs impios, & diriges justos, scrutans cor & renes, Deus juste, Auxiliator meus Deus qui salvas rectos corde. Deus judex justitiæ, non irascitur singulis diebꝰ, sed convertitur. Gladiū suum expolit, & arcum suum tendit: instruxit, Et paravit sibi vasa furoris, sagittas suas fecit iis qui ardent. Quoniam parturiit iniquus & concepit scelus, ac genuit dolum: Puteum effodit & excavavit eum, & incidit in foveam quam fecit. Recidet iniquitas ejus in caput ipsius, & super verticem ejus iniquitas recumbet. Confitebor Domino secundùm justitiam meam, & psallam nomini Domini altissimi.

PSAL. VIII. *Davidis. Prophetia quòd laudē Osannis dicturi essent infantes, & pueri, atque adolescentes Domino. Vers. 18.*

O Domine Dñs noster, quàm gloriosum est nomen tuum in universa terra, ut dederis laudem tuam super cœlum? Ex ore juvenum, & puerorum confirmâsti gloriam tuam propter inimicos tuos, ut aboleatur hostis vindictā sumens. Quoniam viderunt cœlos tuos opus digitorū tuorū, lunā & stellas quas tu parâsti? Quis est vir, ut memoriā ejꝰ habueris, & filiꝰ hominis ut eum inviseris? Minuisti eum paulò minꝰ ab angelis, honore & gloriâ cinxisti eum, Et præfecisti eum operi manuū tuarū, & omnia posuisti sub pedibꝰ ejus: Oves & armenta universa, etiā bestiā deserti. Et volucres cœli, & pisces maris qui transeūt per semitam marium. Dñe Dñs noster, quàm gloriosum est nomen tuum in universa terra!

Verſio VULG. LAT.

4 Domine Deus meus, ſi feci iſtud, ſi eſt iniquitas
5 in manib⁹ meis: Si reddidi retribuentib⁹
mihi mala, decidam meritò ab
6 inimicis meis inanis: Perſequatur inimicus
animã meã, & comprehendat, et conculcet
in terra vitam meã, & gloriã meã
in pulverem deducat. Exurge, Domine,
7 in irã tuã: & exaltare in finibus inimicorum
meorũ. Et exurge, Domine De⁹ me⁹,
8 in præcepto quod mandâſti: Et ſynagoga
populorũ circundabit te. Et propter
9 hanc in altũ regredere: Dñs judicat populos.
Judica me, Domine, ſecundùm
juſtitiã meam, & ſecundùm innocentiam
10 meam ſuper me. Conſumetur nequitia
peccatorũ, & diriges juſtũ, ſcrutans corda
11 & renes Deus. Juſtum adjutoriũ meũ
à Domino, qui ſalvos facit rectos corde.
12 Deus judex juſt⁹, fortis, & patiens, numquid
13 iraſcitur per ſingulos dies? Niſi
converſi fueritis, gladium ſuum vibrabit:
arcum ſuum tetendit, & paravit
14 illum. Et in eo paravit vaſa mortis, ſagittas
15 ſuas ardentibus effecit. Ecce
parturiit injuſtitiam: concepit dolorem,
16 & peperit iniquitatem. Lacum aperuit,
& effodit eum: & incidit in foveam, quã
17 fecit. Convertetur dolor ejus in caput ejus:
& in verticem ipſius iniquitas ejus
18 deſcendet. Confitebor Dño ſecundùm juſtitiã
ej⁹: & pſallã nomini Dñi altiſſimi.

1 In finem pro torcularibus, Pſalmus David. VIII.

2 Domine Dominus noſter, quàm admirabile
eſt nomen tuum in univerſa terra! Quoniam elevata eſt magnificentia
3 tua ſuper cœlos. Ex ore infantiũ
& lactentium perfeciſti laudem propter
inimicos tuos, ut deſtruas inimicum &
4 ultorem. Quoniam videbo cœlos tuos,
opera digitorum tuorum: lunam & ſtellas,
5 quæ tu fundâſti. Quid eſt homo, quòd
memor es ejus? aut filius hominis, quoniã
6 viſitas eum? Minuiſti eum paulò minùs
ab angelis, gloriã & honore coronâſti
7 eum: Et conſtituiſti eum ſuper opera ma-
8 nuum tuarum. Omnia ſubjeciſti ſub pedibus
ejus, oves & boves univerſas, in-
9 ſuper & pecora campi, Volucres cœli, &
piſces maris, qui perambulant ſemitas
10 maris. Domine Dñs noſter, quàm admirabile
eſt nomen tuum in univerſa terra!

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

4 † Κύριε ὁ θεός μου εἰ ἐποίησα τοῦτο, † εἰ ἔστιν ἀδι-
5 κία ἐν χερσί μου, † Εἰ ἀνταπέδωκα τοῖς
ἀνταποδιδοῦσί μοι κακὰ, † ἀποπέσοιμι ἄρα ἀπὸ
6 τῶν ἐχθρῶν μου κενός· † Καταδιώξαι ἄρα ὁ ἐχθρὸς τὴν
ψυχήν μου ϗ καταλάβοι, † ϗ καταπατήσαι εἰς γῆν
τὴν ζωήν μου, † ϗ τὴν δόξαν μου εἰς χοῦν κατασκη-
7 νώσαι. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἀνάστηθι κύριε ἐν ὀργῇ
σου, † ὑψώθητι ἐν τοῖς πέρασι τῶν ἐχθρῶν μου· † (α)
ἐξεγέρθητι κύριε ὁ θεός μου ἐν προστάγματι ᾧ ἐνε-
8 τείλω, † Καὶ συναγωγὴ λαῶν κυκλώσει σε. † ϗ
9 ὑπὲρ ταύτης εἰς ὕψος ἐπίστρεψον. † Κύριος κρινεῖ
λαούς. † (β) κρῖνόν με κύριε κατὰ τὴν δικαιοσύνην μου,
10 † ϗ κατὰ τὴν ἀκακίαν μου ἐπ' ἐμοί. † Συντελεσθήτω
δὴ πονηρία ἁμαρτωλῶν, † ϗ κατευθυνεῖς δίκαιον,
11 † ἐτάζων καρδίας ϗ νεφροὺς ὁ θεός. † Δικαία ἡ
βοήθειά μου παρὰ τοῦ θεοῦ † τοῦ σώζοντος τοὺς εὐ-
12 θεῖς τῇ καρδίᾳ. † Ὁ θεὸς κριτὴς δίκαιος, ϗ
ἰσχυρὸς, ϗ μακρόθυμος, † μὴ ὀργὴν ἐπάγων καθ'
13 ἑκάστην ἡμέραν. † Ἐὰν μὴ ἐπιστραφῆτε, τὴν ῥομ-
φαίαν αὐτοῦ στιλβώσει, † τὸ τόξον αὐτοῦ ἐνέτεινε, ϗ
14 ἡτοίμασεν αὐτό. † Καὶ ἐν αὐτῷ ἡτοίμασε σκεύη
θανάτου, † τὰ βέλη αὐτοῦ τοῖς καιομένοις ἐξειργά-
15 σατο. † Ἰδοὺ ὠδίνησεν ἀδικίαν, συνέλαβε πόνον,
16 ϗ ἔτεκεν ἀνομίαν. † Λάκκον ὤρυξε ϗ ἀνέσκα-
ψεν αὐτὸν, † ϗ ἐμπεσεῖται εἰς βόθρον ὃν εἰργά-
17 σατο. † Ἐπιστρέψει ὁ πόνος αὐτοῦ εἰς κεφαλὴν αὐ-
τοῦ, † ϗ ἐπὶ κορυφὴν αὐτοῦ ἡ ἀδικία αὐτοῦ καταβή-
18 σεται. † Ἐξομολογήσομαι (γ) κυρίῳ κατὰ τὴν δικαιοσύ-
νην αὐτοῦ, † (δ) ψαλῶ τῷ ὀνόματι κυρίου τοῦ ὑψίστου.

MS. A. (α) ϗ ἐξεγέρθητι (β) κρῖνόν μοι (γ) τῷ κυρίῳ (δ) ϗ ψαλῶ

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ληνῶν, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. η'.

2 † Κύριε ὁ κύριος ἡμῶν, ὡς θαυμαστὸν τὸ ὄνομά
σου ἐν πάσῃ τῇ γῇ; † ὅτι ἐπήρθη ἡ μεγα-
3 λοπρέπειά σου ὑπεράνω τῶν οὐρανῶν. † Ἐκ στόμα-
τος νηπίων ϗ θηλαζόντων κατηρτίσω αἶνον· † ἕ-
νεκα τῶν ἐχθρῶν σου, † τοῦ καταλῦσαι ἐχθρὸν ϗ ἐκ-
4 δικητήν. † Ὅτι ὄψομαι τοὺς οὐρανοὺς ἔργα τῶν δα-
κτύλων σου, † σελήνην ϗ ἀστέρας, ἃ σὺ ἐθεμελίωσας·
5 † (α) Τί ἐστιν ἄνθρωπος, ὅτι μιμνήσκῃ αὐτοῦ;
6 † ἢ υἱὸς ἀνθρώπου, ὅτι ἐπισκέπτῃ αὐτόν; † Ἠλάτ-
τωσας αὐτὸν βραχύ τι παρ' ἀγγέλους, † δόξῃ ϗ
7 τιμῇ ἐστεφάνωσας αὐτόν, † Καὶ κατέστησας αὐτὸν ἐπὶ
8 τὰ ἔργα τῶν χειρῶν σου. † Πάντα ὑπέταξας ὑποκά-
τω τῶν ποδῶν αὐτοῦ, † πρόβατα ϗ βόας (β) πάσας,
9 † ἔτι δὲ ϗ τὰ κτήνη τοῦ πεδίου, † Τὰ πετεινὰ τοῦ οὐ-
10 ρανοῦ, ϗ τοὺς ἰχθύας τῆς θαλάσσης, † τὰ διαπορευόμενα τρίβους θαλασσῶν. † Κύριε ὁ κύριος
ἡμῶν, ὡς θαυμαστὸν (γ) τὸ ὄνομά σου ἐν πάσῃ τῇ γῇ; MS. A. (α) Τίς ἐστιν (β) ἁπάσας (γ) τὸ ὄνομα

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

3 *Domine Deus meus, [b] ſi feci* 4
iſtud, ſi eſt iniquitas in manibus
meis: 4 Si reddidi retribuentibus 5
mihi mala; [c] decidam (c) ergò ab
inimicis meis inanis: 5 Perſequatur 6
ergò inimicus animam meam,
& comprehendat: et conculcet in
terra vitam meam: & gloriam
meam in pulverem [d] deducat.
(d) DIAPSALMA. 6 Exurge, Do- 7
mine, in (e) ira tua: exaltare [e] in
finibus inimicorum (f) meorum.
7 Exurge, Domine De⁹ me⁹, in ( )
præcepto [f] quod mandâſti: Et 8
ſynagoga populorum (h) circundabit
te. 8 Et propter (i) hanc in altum
regredere. Dominus (k) judicabit 9
populos. 9 Judica me, Domine,
ſecundùm juſtitiã [*] meã,
et ſecundũ (l) innocentiam meam
ſuper me. 10 Conſummetur (m) 10
nunc nequitia peccatorum: et (n)
diriges [g] juſtũ, (o) ſcrutans corda,
& renes, Deus. 11 [h] Juſtũ 11
adjutorium meum à Domino; qui
ſalvos facit rectos corde. 12 Deus 12
judex juſtus, & fortis, & longanimis,
(p) non [i] iram adducens
per ſingulos dies. 13 Niſi 13
converſi fueritis, gladium ſuum
(q) vibrabit: arcum [k] ſuum (r)
tetendit, & paravit illum. 14 Et 14
in eo paravit [l] vaſa mortis: ſagittas
ſuas (ſ) ardentibus operatus
eſt. 15 Ecce (t) parturivit in- 15
juſtitiam, (u) concepit laborem, et
peperit (x) iniquitatem. 16 La- 16
cum [m] aperuit, & effodit eũ:
& (y) incidet in foveam, quam
fecit. 17 Convertetur labor ejus 17
in caput ejus: & in verticem ipſi⁹
iniquitas ejus deſcendet. 18 Con- 18
fitebor Dño ſecundũ juſtitiã ejus:
& pſallam nomini Dñi altiſſimi.

In finem pro torcularibus, pſalmus ipſi David. VIII. 1

D*omine Dominus noſter, quã* 2
(a) [a] admirabile eſt nomen
tuum in univerſa terra! (b) Quoniam
elevata eſt magnificentia
[b] tua ſuper cœlos. 3 Ex (c) ore 3
infantium & lactentium [c] perfeciſti
laudem (d) propter inimicos
tuos; ut (e) deſtruas inimicum,
& ultorem. Quoniam [d] videbo 4
(f) cœlos, opera digitorum tuorũ,
lunam, & ſtellas, quæ (g) [e] tu
fundâſti. 5 Quid eſt (h) homo, 5
quod memor es ejus? aut [f] filius
hominis, quoniam viſitas eum?
Minuiſti eum (i) paulò minus ab 6
angelis: gloriâ & honore coronâſti
eum. [illegible] [g] [illegible] manuum tuarum. 8 Omnia ſubjeciſti. [h] ſub pedibus ejus: oves, & boves univerſas, inſuper & pecora (i) campi: Volucres [i] cœli, & piſces 7 8 9
[illegible] 10 Domine Dominus noſter, quàm [k] admirabile eſt nomen [illegible]! 10

Verſio ÆTHIOPICA.

እግዚኦ ፡ አምላክየ ፡ እመሰ፡ ከመዝ ፡ ገበር 3
ኩ፡፡ወእመኒቦ፡ ዐመፃ ፡ ውስተ፡ እደዊየ፡፡=÷
ወእመ፡ፈደይክዎሙ፡ለእለ፡ይፈድዩኒ፡እኩ 4
የ፡፡ለይወድቁ፡ጸላእትየ፡ዕራቅየ፡፡=÷ ወይ 5
ደግና፡ ጸላዊ፡ ለነፍስየ፡ ወይርከቦ፡፡ወይኪድ፡
ውስተ፡ ምድር፡ለሕይወትየ፡፡ወያኅስር፡ውስ
ተ፡መሬት፡ለክብርየ፡፡=÷ ተንሥእ፡እግዚኦ፡ 6
በመዐትከ፡፡ወተለዐል፡ መልዕልቶሙ፡ ለጸላ
እትየ፡፡=÷ ተንሥእ፡ እግዚኦ፡ አምላክየ፡ 7
በሥርዓትከ ፡ ዘአዘዝከ፡፡ወማኅበረ፡ አሕዛ
ብኒ፡የዐውደከ፡፡=÷ ወበእንተዝ፡ተመየጥ፡ 8
ውስተ ፡ አርያም፡፡እግዚአብሔር ፡ ይኴንኖ
ሙ፡ለአሕዛብ፡፡=÷ ፍትሐኒ፡ሊተ፡እግዚኦ፡ 9
በከመ፡ ጽድቅከ፡፡ወይኩነኒ፡ በከመ ፡ የዋሀት
የ፡፡=÷የኀልቅ፡እከዮሙ፡ለኃጥኣን፡፡ወታረትዕ 10
ዎሙ፡ ለጻድቃን፡፡ይፈትን ፡ ልበ፡ወኵልያተ፡
እግዚአብሔር፡፡=÷ አማን፡ይረድአኒ፡እግዚ 11
አብሔር፡፡ዘያድኅኖሙ፡ለርቱዓነ፡ልብ፡፡=÷
እግዚአብሔር፡መኰንን፡ጽድቅ፡፡ኃያል፡ ወመ 12
ስተዐግሥ፡፡ወኢያመጽእ፡ መንሱተ፡ ኵሉ፡ እ
ሚረ፡፡=÷ወእመሰ፡ኢተመየጥክሙ፡ሰይፎ፡ይ 13
መልስሕ፡፡ቀስቶኒ፡ ወተረ፡ ወአስተደለወ፡፡=÷
ወአስተደለወ፡ቦቱ፡ ሕምዘ፡ ዘይቀትል፡፡ወአ 14
ሕጻሁኒ፡ለለ፡ይነዱ፡ገብረ፡፡=÷ ናሁ፡ሐመ፡ 15
በዐመፃ፡፡ወፀንሰ ፡ በጻዕር ፡ ወወለደ ፡ ኃጢአ
ተ፡፡=÷ ግበ፡ከረየ፡ወደሐየ፡፡ወይወድቅ፡ው 16
ስተ፡ግብ፡ዘገብረ፡፡=÷ ወይገብእ፡ጻማሁ፡ 17
ዲበ፡ ርእሱ፡፡ወትወርድ፡ዐመፃሁ፡ዲበ፡ድማ
ሁ፡፡=÷ እገኒ፡ ለእግዚአብሔር፡ በከመ፡ጽ 18
ድቁ፡፡ወእዜምር ፡ ለስመ ፡ እግዚአብሔር፡
ልዑል፡፡=÷

ፍጻሜ፡በእንተ፡መክብብት፡መዝሙር፡
ዘዳዊት፡፡

፰ እግዚኦ፡ እግዚእነ፡ ጥቀ ፡ ተሰብሐ፡ስም 1
ከ፡፡በኵሉ፡ምድር፡፡=÷ እስመ፡ተለዐለ፡ 2
ዕበየ፡ስብሐቲከ፡መልዕልተ፡ሰማያት፡፡=÷ እ 3
ምአፈ፡ ደቂቅ፡ ወሕፃናት፡ አስተደሎከ፡ ስብ
ሐተ፡፡በእንተ፡ ጸላኢ፡፡ከመ፡ ትንሥቶ፡ ለጸ
ላኢ፡ወለገፋኢ፡፡=÷ እስመ፡ነሬኢ፡ሰማያተ፡ 4
ግብረ፡ አጻብዒከ፡፡ወርኀ፡ ወከዋክብተ ፡ ዘለ
ሊከ፡ሣረርከ፡፡=÷ ምንትኑ፡ውእቱ፡ሰብእ፡ 5
ከመ፡ ትዝክሮ፡፡ወምንትኑ፡ ሰብእ ፡ እምሕ
ያው፡ከመ፡ተሐውጾ፡፡=÷ ሐቀ፡ አሕጸጽኮ፡እ 6
መላእክቲከ፡፡ገብረ፡ወሰብሐተ፡ ከለልኮ፡፡ወ
ሠየምኮ፡ዲበ፡ኵሉ፡ግብረ፡እደዊከ፡፡=÷ወኵ 7
ሉ፡አግረርከ፡ሎቱ፡ታሕተ፡እገሪሁ፡፡አባግዐ
ኒ፡ወኵሉ፡አልህምተ፡፡ወዓዲ፡እንስሳ፡ ዘገደ
ም፡፡=÷ አዕዋፈ ፡ ሰማይኒ ፡ ወዓሣተ ፡ ባሕ 8
ር፡፡ወዘኒ ፡ የሐውር፡ ውስተ፡ ፡ ፍኖተ ፡ ባሕ 9
ር፡፡=÷ እግዚኦ፡እግዚእነ፡ ጥቀ ፡ ተሰብሐ፡
ስምከ፡በኵሉ፡ምድር፡፡=÷

INTERP. ÆTH. [b] ſi quidem ita feci, [c] decidam ab [d] deturpet. [e] ſupra inimicos meos. [f] tuo quod [*] tuam [g] juſtos, [h] Certè adjuvabit me Deus, qui [i] adducet tentationem quotidiè. [k] ſuum etiam [l] venenum lethale: [m] effodit & excavavit: & PSAL. VIII. [a] illuſtre [b] gloriæ tuæ [c] præparâſti laudem [d] videbimus cœlos, [e] tibimet ipſi fundâſti. [f] quid filius [g] omnia opera [h] ei ſub [i] etiam cœli [k] celebre

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

4 5 * يا ربي والهي ان كنت فعلت رب هذا * ولابست يدي ظلما * وجازيت الذين صنعوا بي سوا
6 اسقط اذن من اعداي خاويا * ويطلب عدوي نفسي فيدركها ويطاء في الارض حياتي ويحل في
7 التراب مجدي * قم يا رب بغضبك وارتفع علي رقاب اعداي * قم يا رب والاهي للامر الذي
8 9 امرت به * وجميع الشعوب تجتمع اليك * ولاجل هذا ترجع الي العلي * يا رب تدين الشعوب *
10 احكم لي يا رب كمثل بري * وعلي كمثل دعتي * وليفن شر الخطاة ويقوم الصديق * الله العادل
11 12 فاحص القلوب والكلي * معونتي من عند الله حقا * وهو مخلص مستقيمي القلوب * الله
13 حاكم عدل * قوي طويل الاناة * لا يرسل غضبه في كل يوم * ان لم ترجعوا صقل سيفه * واوتر
14 15 قوسه وانعمها * واعد فيها الة الموت * وصنع سهامه للمتحرقين * ان الاثم طلق وحبل وجعا *
16 17 وولد ظلما * وحفر بيرا واعمقها يسقط في الحفر التي صنعها * ويرجع تعبه علي راسه * وعلي
18 هامته ينزل ظلمه * اشكر الرب علي عدله * وارتل اسم الرب العلي *

1 * المزمور الثامن لداود * بير * اسنادوانه *

2 * ايها الرب ربنا ما اعجب اسمك في الارض كلها لانه قد ارتفع عظيم بهايك علي السموات *
3 4 * من افواه الاطفال والرضعان هيات سبحا من اجل اعدايك * لتبطل العدو والمنتقم * لاني
5 رايت السموات صنع انامك * والقمر والنجوم انت اتقنتها * من هو الانسان الذي ذكرته وابن
6 7 الانسان الذي اصطفيته * نقصته يسيرا من الملايكة بالمجد والكرامة حبيته * وعلي اعمال
8 9 يديك اقمته * وكلا اخضعت تحت قدميه * جميع الغنم والبقر وبهايم السهل * وطير السماء
10 وسمك البحر السالكة في عمق البحر * ايها الرب ربنا ما اعجب اسمك في الارض كلها *

O Domine mi et Deus meus, ſi feci unquã 4
hoc, aut indui manus meas iniquitate, Et 5
exhibui iis, qui fecerunt in me malum:
decidam quidem ab inimicis meis inanis.
Et quæret inimicus meus animam meam, 6
& comprehendet eam, & conculcabit in
terra vitam meam, atque habitabit in terra
gloria mea. Surge, O Domine, in ira 7
tua, eleva te ſuper colla inimicorum meorum.
Surge, O Domine mi & Deus meus,
ad mandatum, quod præcepiſti: Et 8
omnes populi congregabuntur ad te. Proptereà
redibis in altum, O Domine, & 9
judicabis populos. Adjudica mihi, O Domine
mi, ſecundum innocentiam meam,
& adverſùm me ſecundùm manſuetudinem
meam. Et finem aſſequatur malitia 10
peccatorum, & ſubſiſtat juſtus. Deus
æquus, ſcrutans corda & renes. Adjutorium 11
meum à conſpectu Dei certè, quum
ipſe ſit liberator rectorum cordibus. Deus 12
judex juſtiſſimus, fortis, longanimis:
haud mittens furorem ſuum ſingulis diebus.
Niſi converſi fueritis, levigavit 13
gladium ſuum, & tetendit arcum ſuum,
& firmavit eum, Et paravit in eo inſtrumenta 14
mortis, & fecit ſagittas ſuas
exuſtis. Sanè ſcelus parturiit, & conce- 15
pit dolorem, & peperit ſcelus: Et fodit 16
puteum, & profundum fecit eum: cadet
in foveam quam fecit. Et recidet labor 17
ejus in caput ejus, et ſuper verticem ipſius
deſcendet ſcelus ejus. Gratias ago Domi- 18
no de ejus æquitate, & pſallo nomini Domini
altiſſimi.

PSAL. VIII. Davidis. 1
Verſ. 17.

O *Domine, Dominus noſter, quàm admirabile* 2
eſt nomen tuum in terra univerſa? quoniam jam elevata eſt magnificentia
ſplendoris tui ſuper cælos: Ab oribus 3
puerorum, & lactentium præparâſti laudem
propter inimicos tuos. Diſſolvatur inimicus,
& ultor. Quoniam vidi cælos o- 4
pus digitorum tuorum, & lunam, atque
ſtellas tu firmâſti. Ecquis eſt homo, cujus 5
recordatus es? & filius hominis, quem
elegiſti? Minorâſti eum paululùm ab an- 6
gelis, gloriâ & honore decorâſti eum: Et 7
ſuper opera manuum tuarum conſtituiſti
eum, & omnia ſubjeciſti ſub pedibus e-
jus: Omnes oves, & boves, & beſtias 8
paſtûs, Et volucres cæli, & piſces maris 9
ambulantes in ſemitis maris. O Domi- 10
ne, Dominus noſter, quàm admirabile eſt
nomen tuum in terra univerſa?

תהלים : ט י

PSAL. IX. ט

: meo corde toto in Dominum *Celebrabo* .David canticum Labben muth-Hal Victori
1 2 למנצח על־מות לבן מזמור לדוד : אודה יהוה בכל־ לבי
tuum nomen canam : te in exultabo & , Lætabor .tua mirabilia omnia narrabo
3 אספרה כל־ נפלאותיך : אשמחה ואעלצה בך אזמרה שמך
.*tuis faciebus à* peribunt & impingent : retrorsum *meos inimicos revertendo In* .altissime
4 עליון : בשוב־ אויבי אחור יכשלו ויאבדו מפניך :
.justitiam *judicans* solio in sedisti : meam causam &,meum judicium fecisti Quoniam
5 כי־ עשית משפטי ודיני ישבת לכסא שופט צדק :
.sempiternum & ,seculum in delesti eorum nomen :impium perdidisti;gentes *Increpâsti*
6 גערת גוים אבדת רשע שמם מחית לעולם ועד :
eorū memoria periit:destruxisti *civitates &,finem* in solitudines sunt *consummatæ* inimice O
7 האויב תמו חרבות לנצח וערים נתשת אבד זכרם
ipse Et .suum solium judicium ad paravit : *sedebit* seculum in Dominus Et .ipsis
8 9 המה : ויהוה לעולם ישב כונן למשפט כסאו : והוא
exaltatio Dominꝰ erit Et .*rectitudinibus in populis dicet jus* :justitia in orbem judicabit
10 ישפט תבל בצדק ידין לאמים במישרים : ויהי יהוה משגב
quia :tuum nomen scientes te in sperabunt Et .angustia in temporibus exaltatio : *tenui*
11 לדך משגב לעתות בצרה : ויבטחו בך יודעי שמך כי
annunciate : Sijon *habitanti* Domino Cantate .Domine te quærentes dereliquisti non
12 לא־ עזבת דרשיך יהוה : זמרו ליהוה ישב ציון הגידו
est oblitus non:est recordatꝰ *corū sanguines* quærens Quoniam .ejus *studia* populis in
13 בעמים עלילותיו : כי־ דרש דמים אותם זכר לא שכח
me *exaltans,me odientibus ab* meā afflictionē vide,Domine mei Miserere .*afflictorum* clamoris
14 צעקת עניים : חננני יהוה [illegible] עניי־ משנאי מרוממי
:Sijon filiæ portis in tuas laudes omnes narrem Ut .mortis portis de
15 משערי מות : למען אספרה כל־ תהלתיך בשערי בת־ ציון
quod reti in : fecerunt foveam in gentes sunt Demersæ .tua salute in exultabo
16 אגילה בישועתך : טבעו גוים בשחת עשו ברשת זו
opere in , fecit judicium , Dominus est Notus .eorum pes est captus,absconderunt
17 טמנו נלכדה רגלם : נודע יהוה משפט עשה בפעל
:sepulchrum ad impii Revertantur .*Sela* meditatio:impius est illaqueatꝰ suarū *volarū*
18 כפיו נוקש רשע הגיון סלה : ישובו רשעים לשאולה
expectatio:*egenum erit oblivioni æternū* in non Quoniam .Dei *immemores* gentes omnes
19 כל־ גוים שכחי אלהים : כי לא לנצח ישכח אביון תקות
judicentur : homo roboretur non Domine Surge .*perpetuum* in peribit pauperum
20 ענוים תאבד לעד : קומה יהוה אל־ יעז אנוש ישפטו
homines gentes sciant , eis timorem Domine Pone .*tuis facies super* gentes
21 גוים על־ פניך : שיתה יהוה מורה להם ידעו גוים אנוש
.Selah , *ipsi*
המה סלה :

PSAL. X. י

superbia In ?angustia in *tempora ad* te abscondes : longinquo in *stabis* Domine quid Ut
1 2 למה יהוה תעמד ברחוק תעלים לעתות בצרה : בגאות
.cogitaverunt quas cogitationibus in capiantur:*afflictum insequetur impius*
רשע ידלק עני יתפשו במזמות זו חשבו :

תרגום TARGUM.

ט
1 לשבחא על מיתותא דגברא די נפק מביני
2 משריתא תושבחתא לדוד : אשבח קדם יי בכל
3 לבי אשתעי כולהון פרישותך : אחדי ואבדח
4 במימרך אשבח שמך עלאה : כד יתוב בעל דבבי
5 לאחורא יתקלון ויהובדון מן קדמך : מטול
דעבדתא פורענותי ודיני יתבתא על כורסי דינא
6 זכאה : נופתא עממי דפלשתאי הובדתא גלית
7 רשיעא שומהון מחיתא לעלמי עלמין : וכד נפל
בעל דבבא אשתציו חילותיה וכרכיהון אצתדיו
לעלמא וקרויהון צדיתא הובדתא דכרנהון
8 מנהון : ומימרא דיי לעלמין מותביה בשמיה
9 מרומא תקין לדינא כורסיה : והוא ידין עמא
10 דארעא בזכותא ידין עממיא בתריצותא : ויהי
מימרא דיי תקוף למסכנא תקוף בעדני עקתא :
11 ויסתכלון בסברותך ידעי שמך מטול דלא
12 שבקתא תבעיך יי : שבחו קדם יי דאשרי
13 שכנתיה בציון תניאו בעממיא עובדוי : מטול
דתבע דמא דזכאה ית צדיקיא דכיר ולא שלי
14 קבלת ענותנין : חוס עלי יי חמי סגופי מבעלי
15 דבבי מרומם לי ממעלני מותא : מן בגלל
דאשתעי לכולהון שבחך במעלני תרעי
16 כנישת ציון אדוץ בפורקנך : טבעו עממיא
בשוחתא דעבדו במצדתא דנא כמנו אתאחדת
17 רגליהון : גלי קדם יי דין דעבד בעובדי אידוי
18 אתקל רשיעא ירננון צדיקיא לעלמין : יתובון
רשיעי לשיול כולהון עממיא דאשליו דחלתא
19 דיי : מטול דלא לעלמיא משתלי חשוכא סוברא
20 דענותני לא תהובד לעלמא : קום יי לא יתעשן
21 בר נשא רשיעא יתדנון עממיא קדמך : שוי יי
דחלתא להון ינדעון עממיא דבר נש הינון
לעלמין :
י
1 למה יי תקום ברחיק תטמר במדור קדישין
2 לעדני עקתא : בגסות רשיעא ידלק עניא
יתאחדון בנכלותא דנא די חשבו למעבד :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Ad canendum ſuper mortem *viri qui exierat de-inter caſtra*, canticum Davidis.

PSAL. IX.

LAudabo coram Domino in toto corde meo: narrabo omnia mirabilia tua. Gaudebo & lætabor in verbo tuo: laudabo nomen tuū altiſſimum. Quando revertetur auctor inimicitiæ meæ retrorſum, ceſpitabunt & peribunt à conſpectu tuo. Quoniā feciſti ultionem mei & judicium meū: ſediſti ſuper ſedē judex juſtꝰ. Increpâſti populos *Paleſtinorū*, perdidiſti *Goliath* impiū: *nomen* eorum deleviſti in ſecula ſeculorū. Dum caderet auctor inimicitiæ, deſtructi ſunt *exercitus ejus*, & arces eorum ſunt dirutæ in ſempiternum, & civitates eorū *devaſtâſti*: deleviſti memoriā eorum ab illis. Verbum autem Dñi in ſecula; habitatio ejus in cœlis altiſſimis; direxit ad judiciū ſedem ſuam. Et ipſe judicabit *populum terræ* in juſtitia: judicabit populos in æquitate. Et erit verbum Dñi fortitudo miſero, fortitudo in temporibꝰ anguſtiæ. Et *reſpicient* in *fiduciam tuam* ſcientes nomen tuū, quoniam non dereliquiſti quærentes te Dñe. Laudate coram Dño qui poſuit majeſtatē ſuā in Sion, annunciate in populis opera ejꝰ. Quoniam requirens ſanguinem *mundi*, juſtorum recordatꝰ eſt: nec oblitꝰ eſt clamoris humilium. Miſerere mei Dñe: vide afflictionem meam ex hoſtibꝰ meis: attolle me ab introitibus mortis. Hujus gratia narrabo *omnes laudes tuas* in ingreſſibꝰ portarum eccleſiæ Sion: lætabor in redemptione tua. Demerſi ſunt populi in foveā quam fecerunt: in rete hoc quo inſidiabantur captus eſt pes eorum. Manifeſtum eſt coram Dño judicium quod fecit; in operibꝰ manuum ſuarum impegit improbꝰ: gaudebunt juſti in æternum. Convertentur impii in infernum; omnes populi qui obliti ſunt timoris *Domini*. Quoniam non ſemper oblivioni tradetur pauper: ſpes humiliū non peribit in æternum. Surge Dñe, ne confortetur homo *impius*: judicentur populi coram te. Incute Dñe timorem eis; ſciant populi ſe eſſe homines in æternum.

PSAL. X.

QUare Dñe ſtabis à longè? abſconderis in habitaculo ſanctorum in temporibus anguſtiæ? *In elatione* impii perſecutionem patietur afflictus; capiantur in verſutia quam moliti ſunt patrare.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܬܫܥܐ * * ܕܕܘܝܕ. ܡܛܠܬܐ ܕܡܫܝܚܐ ܘܢܣܝܒܘܬܐ ܕܡܠܟܘܬܐ
2 ܘܬܒܪܬܗ ܕܒܥܠܕܒܒܐ. ܦܬܓܡ ܡܚ. * ܐܘܕܐ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܝ. ܘܐܫܬܥܐ
3 4 ܟܠܗܝܢ ܬܕܡܪܬܟ: * ܐܚܕܐ ܘܐܬܦܨܚ ܒܟ. ܘܐܙܡܪ ܠܫܡܟ ܡܪܝܡܐ: * ܟܕ ܢܗܦܟܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ
5 ܠܒܣܬܪܗܘܢ. ܢܬܬܩܠܘܢ ܘܢܐܒܕܘܢ ܡܢ ܩܕܡܝܟ: * ܡܛܠ ܕܥܒܕܬ ܦܘܪܥܢܝ ܘܕܝܢܝ.
6 ܘܝܬܒܬ ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܕܝܢܐ ܟܐܢܐ: * ܟܐܪܬ ܠܥܡܡܐ ܘܐܘܒܕܬ ܠܪܫܝܥܐ. ܘܫܡܗܘܢ ܥܛܝܬ
7 ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ: * ܒܥܠܕܒܒܐ ܫܠܡܘ ܒܚܪܒܐ ܠܥܠܡ. ܩܘܪܝܐ ܥܩܪܬ ܘܐܘܒܕܬ
8 9 ܕܘܟܪܢܗܘܢ: * ܘܡܪܝܐ ܠܥܠܡ ܩܐܡ. ܘܡܛܝܒ ܟܘܪܣܝܗ ܠܕܝܢܐ: * ܘܗܘ ܕܐܢ ܠܬܐܒܝܠ
10 ܒܟܐܢܘܬܐ. ܘܕܐܢ ܥܡܡܐ ܒܬܪܝܨܘܬܐ: * ܘܢܗܘܐ ܡܪܝܐ ܓܘܣܐ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܡܥܕܪܢܗܘܢ
11 ܒܥܕܢܐ ܕܐܘܠܨܢܐ: * ܘܢܣܒܪܘܢ ܒܟ ܟܠ ܝܕܥܝ ܫܡܟ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܒܩܬ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ
12 13 ܠܟ ܡܪܝܐ: * ܙܡܪܘ ܠܡܪܝܐ ܕܥܡܪ ܒܨܗܝܘܢ. ܘܚܘܘ ܒܥܡܡܐ ܐܘܡܢܘܬܗ: * ܡܛܠ ܕܐܬܕܟܪ
14 ܠܡܬܒܥ ܕܡܗܘܢ. ܘܠܐ ܛܥܐ ܩܥܬܗ ܕܡܣܟܢܐ: * ܐܬܪܚܡ ܥܠܝ ܡܪܝܐ. ܘܚܙܝ ܫܥܒܕܘܬܝ
15 ܕܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝ: ܡܪܝܡܢܝ ܡܢ ܬܪܥܝܗ ܕܡܘܬܐ.* ܡܛܠ ܕܐܫܬܥܐ ܟܠܗܝܢ ܬܕܡܪܬܟ: ܒܬܪܥܐ
16 ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܐܪܘܙ ܒܦܘܪܩܢܟ: * ܛܒܥܘ ܥܡܡܐ ܒܓܘܡܨܐ ܕܥܒܕܘ. ܘܒܦܚܐ ܕܛܫܘ
17 ܐܬܬܐܚܕܬ ܪܓܠܗܘܢ: * ܡܘܕܥ ܡܪܝܐ ܕܝܢܐ ܕܥܒܕ. ܘܒܥܒܕ ܐܝܕܘܗܝ ܡܬܬܐܚܕ ܪܫܝܥܐ:
18 19 * ܢܗܦܟܘܢ ܪܫܝܥܐ ܠܫܝܘܠ. ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܛܥܝܢ ܠܐܠܗܐ: * ܡܛܠ ܕܠܐ ܠܥܠܡ
20 ܡܬܛܥܐ ܡܣܟܢܐ. ܘܣܒܪܐ ܕܡܣܟܢܐ ܠܐ ܬܘܒܕ ܠܥܠܡ. * ܩܘܡ ܡܪܝܐ ܘܠܐ ܢܬܥܫܢ ܒܪܢܫܐ.
21 ܘܢܬܕܝܢܘܢ ܥܡܡܐ ܩܕܡ ܐܦܝܟ: * ܐܩܝܡ ܠܗܘܢ ܣܐܡ ܢܡܘܣܐ. ܕܢܕܥܘܢ ܥܡܡܐ
ܕܒܢܝܢܫܐ ܐܢܘܢ.
1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܥܣܪܐ * * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܣܘܪܚܢܐ
ܕܒܥܠܕܒܒܐ ܠܘܬ ܐܕܡ ܘܫܪܒܬܗ. ܘܐܝܟܢܐ ܡܟܝܟ ܠܗ ܡܫܝܚܐ ܫܘܒܗܪܗ. ܦܬܓܡ ܠܚ.
2 * ܠܡܢܐ ܡܪܝܐ ܩܡܬ ܒܪܘܚܩܐ. ܘܐܗܦܟܬ ܐܦܝܟ ܒܙܒܢܐ ܕܐܘܠܨܢܐ: * ܒܫܘܒܗܪܗ ܕܪܫܝܥܐ
ܢܩܕ ܡܣܟܢܐ. ܢܬܐܚܕܘܢ ܒܡܪܥܝܬܐ ܗܝ ܕܐܬܚܫܒܘ:

PSAL. IX.

Davidis. De Chriſto ſolium ac regnum ſuſcipiente, hoſtémq; profligante. Verſ. 4

COnfitebor Domino ex toto corde me & narrabo omnia mirabilia tua: Lætabor & exultabo in te, & pſallam nomini tuo Altiſſime. Cùm convertentur hoſtes mei retrorſum, impingent & peribunt à conſpectu tuo. Quoniam feciſti retributionem meam & judicium meū, & ſediſti ſuper tribunal, Judex juſte. Increpâſti gentes, & perdidiſti impios: nomina eorum delêſti in ſecula ſeculorum. Hoſtes mei defecerunt gladio in ſempitern Civitates evulſiſti, & abolêſti memoriā ear At Dñs in æternum manet, & paratum eſt tribunal ejus ad judicium: Ad judicandum orbem in veritate, & populos in æquitate. E Dñs refugium pauperibus, & adjutor eor temporibus anguſtiæ. Et ſperabunt in omnes agnoſcentes nomen tuū, quoniam no derelinquis eos qui quærunt te, Dñe. Can Dño qui habitat in Sion, & oſtendite int gentes artes ejꝰ. Quoniam recordatꝰ eſt vindicare ſanguinem eorū, & non obliviſcitur clamorē pauperis. Miſerere mei, Dñe, & reſpi ſervitutem meā quæ ab hoſtibꝰ meis, exaltans me è portis mortis: Ut enarrem cuncta mirabilia tua: in portis filiæ Sion exultem in ſalute tua. Immerſæ ſunt gentes in foveam quam fecerunt, & in laqueo quem abſconderunt, captus eſt pes eorum. Notum facit Dñs judiciū quod operatur; & in opere manuum ſuarum comprehenditur impius. Revertentur impii ad inferos, & omnes gentes quæ obliviſcuntur Deum. Non enim in perpetuū oblivioni datur pauper, & ſpem pauperum no perdes in ſeculum. Exurge, Domine, & ne prævaleat homo, & judicentur gentes coram facie tua. Conſtitue illis latorem legis, ut ſciant gentes ſe homines eſſe.

PSAL. X.

Davidis. De incurſu hoſtis in Adam ejꝰ generationem: & quomodo depreſſ Chriſtus ejus arrogantiam. Verſ. 38.

QUare, Domine, ſtetiſti procul, & avert aſpectum tuum temporibꝰ tribulation In ſuperbia impii ardet inops. Comprehendantur in conſilio quod excogitârunt:

Versio VULG. LAT.

1 In finem pro occultis filii, Psalmus David. IX.

2 Confitebor tibi, Domine, in toto corde meo: narrabo omnia mirabilia tua.
3 Lætabor & exultabo in te: psallam nomini tuo, Altissime.
4 In convertendo inimicū meum retrorsū: infirmabuntur, & peribunt à facie tua.
5 Quoniā fecisti judicium meum & causam meā: sedisti super thronum qui judicas justitiā.
6 Increpâsti gentes, & periit impius: nomen eorum delêsti in æternum, & in seculū seculi.
7 Inimici defecerunt frameæ in finem: & civitates eorum destruxisti.
8 Periit memoria eorū cum sonitu: Et Domin⁹ in æternū permanet. Paravit in judicio thronum suū:
9 Et ipse judicabit orbē terræ in æquitate, judicabit populos in justitia.
10 Et factus est Dominus refugiū pauperi: adjutor in opportunitatibus, in tribulatione.
11 Et sperent in te qui noverunt nomen tuum: quoniam non dereliquisti quærentes te, Domine.
12 Psallite Domino, qui habitat in Sion: annuntiate inter gentes studia ejus:
13 Quoniam requirens sanguinem eorū recordatus est: non est oblitus clamorem pauperum.
14 Miserere mei, Domine: vide humilitatem meam de inimicis meis.
15 Qui exaltas me de portis mortis, ut annuntiem omnes laudationes tuas in portis filiæ Sion.
16 Exultabo in salutari tuo: infixæ sunt gentes in interitu, quem fecerunt. In laqueo isto, quem absconderunt, comprehensus est pes eorū.
17 Cognoscetur Domin⁹ judicia faciens, in operibus manuū suarum comprehensus est peccator.
18 Convertantur peccatores in infernū, omnes gentes quæ obliviscuntur Deū.
19 Quoniam non in finē oblivio erit pauperis, patientia pauperū non peribit in finē.
20 Exurge, Domine, non confortetur homo, judicentur gentes in conspectu tuo.
21 Constitue, Domine, legislatorem super eos, ut sciant gentes quoniam homines sunt.

Psalm. x. secundum Hebr.

1 Ut quid, Domine, recessisti longè, despicis in opportunitatib⁹, in tribulatione?
2 Dum superbit impius, incenditur pauper: comprehenduntur in consiliis quib⁹ cogitāt.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν κρυφίων τοῦ υἱοῦ, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. θ΄.

2 † Ἐξομολογήσομαί σοι κύριε ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου,
3 † διηγήσομαι πάντα τὰ θαυμάσιά σου. † Εὐφρανθήσομαι καὶ ἀγαλλιάσομαι ἐν σοί, † ψαλῶ τῷ ὀνόματί σου ὕψιστε.
4 † Ἐν τῷ ἀποστραφῆναι τὸν ἐχθρόν μου εἰς τὰ ὀπίσω, † ἀσθενήσουσι καὶ ἀπολοῦνται ἀπὸ προσώπου σου.
5 † Ὅτι ἐποίησας τὴν κρίσιν μου καὶ τὴν δίκην μου, † ἐκάθισας ἐπὶ θρόνου ὁ κρίνων δικαιοσύνην.
6 † Ἐπετίμησας ἔθνεσι, καὶ ἀπώλετο ὁ ἀσεβής, † (α) τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐξήλειψας εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος.
7 † Τοῦ ἐχθροῦ ἐξέλιπον αἱ ῥομφαῖαι εἰς τέλος, καὶ πόλεις καθεῖλες. † ἀπώλετο τὸ μνημόσυνον αὐτοῦ (β) μετ᾽ ἤχου, †
8 Καὶ ὁ κύριος εἰς τὸν αἰῶνα μένει. † ἡτοίμασεν ἐν κρίσει τὸν θρόνον αὐτοῦ,
9 † Καὶ αὐτὸς κρινεῖ τὴν οἰκουμένην ἐν δικαιοσύνῃ,
10 † κρινεῖ λαοὺς ἐν εὐθύτητι. † Καὶ ἐγένετο κύριος καταφυγὴ τῷ πένητι, † βοηθὸς ἐν εὐκαιρίαις, ἐν θλίψει.
11 † Καὶ ἐλπισάτωσαν (γ) ἐπὶ σὲ οἱ γινώσκοντες τὸ ὄνομά σου, † ὅτι οὐκ ἐγκατέλιπες τοὺς ἐκζητοῦντάς σε κύριε.
12 † Ψάλατε τῷ κυρίῳ τῷ κατοικοῦντι ἐν Σιών, † ἀναγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτοῦ.
13 † Ὅτι ἐκζητῶν τὰ αἵματα αὐτῶν ἐμνήσθη, † οὐκ ἐπελάθετο (δ) τῆς δεήσεως τῶν πενήτων.
14 † Ἐλέησόν με κύριε, ἴδε τὴν ταπείνωσίν μου
15 † ἐκ τῶν ἐχθρῶν μου, † Ὁ ὑψῶν με ἐκ τῶν πυλῶν τοῦ θανάτου † ὅπως ἂν ἐξαγγείλω πάσας τὰς αἰνέσεις σου
16 † ἐν ταῖς πύλαις τῆς θυγατρὸς Σιών. † Ἀγαλλιάσομαι (ε) ἐπὶ τῷ σωτηρίῳ σου. ἐνεπάγησαν ἔθνη † ἐν διαφθορᾷ ᾗ ἐποίησαν· † ἐν παγίδι ταύτῃ ᾗ ἔκρυψαν
17 συνελήφθη ὁ ποὺς αὐτῶν. † Γινώσκεται κύριος κρίματα ποιῶν, † ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν αὐτοῦ συνελήφθη ὁ ἁμαρτωλός. ᾨΔΗ ΔΙΑΨΑΛΜΑΤΟΣ.
18 † Ἀποστραφήτωσαν οἱ ἁμαρτωλοὶ εἰς τὸν ᾅδην,
19 † πάντα τὰ ἔθνη τὰ ἐπιλανθανόμενα τοῦ θεοῦ. Ὅτι οὐκ εἰς τέλος ἐπιλησθήσεται ὁ πτωχός, † ἡ ὑπομονὴ
20 τῶν πενήτων οὐκ ἀπολεῖται (ζ) εἰς τὸν αἰῶνα. Ἀνάστηθι κύριε, μὴ κραταιούσθω ἄνθρωπος, † κριθήτωσαν ἔθνη ἐνώπιόν
21 σου. † Κατάστησον κύριε νομοθέτην ἐπ᾽ αὐτούς, † γνώτωσαν ἔθνη ὅτι ἄνθρωποί εἰσιν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.

1 † Ἱνατί κύριε ἀφέστηκας μακρόθεν, † ὑπερορᾷς
2 ἐν εὐκαιρίαις, ἐν θλίψεσι; † Ἐν τῷ ὑπερηφανεύεσθαι τὸν ἀσεβῆ, (η) ἐμπυρίζεται ὁ πτωχός, † συλλαμβάνονται ἐν διαβουλίοις οἷς διαλογίζονται.

MS. A. (α) τὸ ὄνομά * σου (β) μετ᾽ ἤχοις, (γ) ἐπὶ σοὶ πάντες οἱ (δ) τῆς φωνῆς (ε) ἐν τῷ (ζ) εἰς τέλος. (η) ἐκπυρίζεται

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

In finem (a) pro occultis filii, Psalmus ipsi David. IX. 1

1 CONFITEBOR tibi, Domine, in toto corde meo: [a] narrabo omnia mirabilia tua. 2 2 Lætabor, & (b) exultabo in te: (c) psallam nomini tuo, Altissime. 3 3 In convertendo inimicum meū retrorsūm, infirmabuntur, & peribunt à facie tua. 4 4 Quoniam (d) fecisti [b] judicium meū, & [c] causam meā: sedisti super thronū, qui judicas justitiam: 5 5 Increpâsti gentes, & (e) periit impius: nomen eorum delêsti in seculum, & in seculū seculi. 6 6 Inimici defecerunt (f) frameæ in finem, & [d] civitates destruxisti. 7 7 Periit memoria eorum [e] cum (g) sonitu: & Dominus in (h) æternū permanet. 8 8 (i) Paravit in judicio thronū suum, Et ipse judicabit orbem terrarū in justitia, judicabit populos in rectitudine. 9 9 Et factus est Dominus refugium (k) pauperi, [f] adjutor in (l) opportunitatibus, in tribulatione. 10 10 Et (m) sperent in te, qui cognoscunt nomen tuum: quoniā non dereliquisti quærentes te, Domine. 11 11 Psallite Domino, qui (n) habitat in Sion: annuntiate inter gentes (o) studia ejus. 12 12 Quoniā requirens sanguinē eorum recordatus est; nō est oblitus (p) orationis pauperū. 13 13 Miserere meî Domine: [g] vide humilitatem meam de inimicis meis. 14 14 Qui exaltas me de portis mortis: ut annuntiē omnes laudes tuas in portis filiæ Sion. 15 15 (q) [h] Exultabo in salutari tuo: (r) infixæ sunt gentes [i] in interitu, quē fecerunt. 16 16 In laqueo isto, quem absconderunt, comprehensus est pes eorū: (s) Cognoscitur 17 Dominus judicia faciens: in operibus (t) manuū suarum comprehensus est peccator. (u) ODA DIAPSALMATIS. Convertantur peccatores in infernum, omnes gentes quæ obliviscuntur Deum. 18 Quia non in (x) finem oblivio erit pauperis: patientia pauperum non peribit in æternum. 19 Exurge, Domine, non 20 (y) confortetur homo, judicentur gentes in conspectu tuo. (z) Constitue, Domine, legislatorē super eos: (ω) sciant gentes quoniā homines sunt. DIAPSALMA. 21 22 Ut quid, Domine, recessisti longè, [a] despicis in opportunitatibus. (aa) in tribulatione? 23 Dum superbit impius, (bb) incenditur pauper: comprehenduntur in (cc) consiliis, quibus cogitant. 21 1 2

Versio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ:ብእንተ:ኅብእት:ወልድ:መዝሙር:
ዘዳዊት ::
ሀ እገኒ:ለከ : እግዚኦ : በኵሉ : ልብየ :: 1
ወእነግር : ኵሎ: ስብሐቲከ::=፡ እትፌሣ 2
ሐ : ወእትሐሠይ : ብከ:: ወእዜምር : ለ
ስምከ : ልዑል::=፡ ሶበ : ገብኡ ጸላእት 3
የ: ድኅሬሆሙ:: ይደወዩ : ወይትሐጐ
ሉ: እምቅድመ : ገጽከ::=፡ እስመ፡ 4
ገበርከ : ሊተ : ፍትሕየ : ወበቀልየ:: ወነበር
ከ:ዲበ:መንበርከ:መኰንን:ጽድቅ::=፡ ገሠ 5
ጽኮሙ : ለአሕዛብ : ወተሐጕሉ: ረሲዓን::
ወደምሰስከ:ስሞሙ:ለዓለም:ዓለም::=፡ፀር 6
ሰ:ተገምሩ:በኵናት: ለጽሉፋ::ወአህጐርሆ
ሙ፤:ነሠትከ::=፡ ወትስዐር: ዝክሮሙ:ኅቡ 7
ረ:: ወእግዚአብሔር:ይነብር: ለዓለም::=፡
ወአስተደለወ: መንበሮ: ለኰንኖ:: ወውእቱ: 8
ይኴንኖ: ለዓለም: በጽድቅ:: ወይኴንኖሙ:
ለአሕዛብ:በርትዕ::=፡ ወኮኖሙ:እግዚአብ 9
ሔር: መስከዮሙ: ለነዳያን:: ወረዳኢሆሙ:
ውእቱ:በጊዜ: መንደቤሆሙ::=፡ ወይትዌከ 10
ሉ:ብከ: ኵሎሙ:አለ: ያፈቅሩ:ስመከ:: እ
ስመ:ኢተኃደጎሙ: ለእለ : የኃሡከ : እግዚ
ኦ::=፡ዘምሩ:ለእግዚአብሔር: ዘየኃድር: 11
ውስተ:ጽዮን::ወንግርዎሙ:ለአሕዛብ:መግ
ባሮ::=፡ እስመ:ተዘከረ:ዘይትኃሠሥ:ደሞ 12
ሙ:: ወኢረስዓ:አውያቶሙ: ለነዳያን::=፡
ተሣሀለኒ:እግዚኦ:ወርኢ:ዘከመ:የሐምዩኒ:ጸ 13
ላእትየ::=፡ዘያሌዕለኒ:እምአናቅጸ:ሞት:: 14
ከመ:እንግር: ኵሎ: ስብሐቲከ:: በአናቅጸ
ሃ:ለወለተ:ጽዮን::=፡ወንትፌሣሕ:በአድኅና 15
ትከ:: ጠግዑ: አሕዛብ: በጊጋዮሙ: ዘገበ
ሩ::=፡ወበይእቲ:መሠግርት:ዘንተ:ኅብኡ: 16
ተሰግረ: እግሮሙ::=፡ ያእምር: እግዚአብ 17
ሔር:ገቢረ:ፍትሐ:: ወበግብረ:እደዊሁ:ተሰ
ግረ:ኃጥእ::=፡ ይግብኡ:ኃጥአን:ውስተ:ሲ 18
ኦል::ወኵሎሙ:አሕዛብ:እለ:ይረስዕዎ:ለ
እግዚአብሔር::=፡ እስመ:አኮ:ለዝሉፉ: 19
ዘይትረሳዕ: ነዳይ:: ወኢይትሐጐሉ: ትዕግሥ
ቶሙ:ነዳያን: ለዓለም::=፡ ተንሥእ: እግ 20
ዚኦ : ወኢይጽናዕ: እጓለ : እመሕያው::
ወይትኴነኑ : አሕዛብ : በቅድሜከ::=፡
ሢም:እግዚኦ:መምህረ: ሕገ:ላዕሌሆሙ:: 21
ወያእምሩ:አሕዛብ :ከመ:እጓለ : እመሕያ
ው:እሙንቱ::=፡ለምንት:እግዚኦ:ቆምከ: 22
እምርሑቅ:: ወትትዔወር : በጊዜ:መን
ደቤ::=፡ በትዕቢቱ:ለኃጥእ:ይውዒ:ነዳይ:: 23
ወይሰገሩ:በውዴቶሙ:እንተ:ሐለዩ::=፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] Et narrabo omnes laudes tuas. [b] mihi judicium, [c] ultionem meam: & sedisti super thronum tuum, [d] civitates eorum [e] simul: & Dominus [f] et adjutor eorum est tempore tentationis. Et sperent in te omnes qui diligunt [g] et vide quatenus affligunt me inimici mei. [h] Et exultabimus [i] in facinore quod patrârunt, [a] cœcutis tempore afflictionis

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 المزمور التاسع لداود * في اسرار الابن من اجل مجد المسيح وقيامته
ومملكوته وهلاك جميع المخالفين * فيه * استكوانه *
2 3 * اشكرك يا رب من كل قلبي واقص جميع عجائبك * افرح واسر بك وارتل اسمك العالي *
4 5 * حين تولي اعداي علي ادبارهم * ويضعفون ويبيدون من بين يديك * لانك قضيت لي
6 وانتقمت * استويت علي العرش يا ديان الحق * زجرت الشعوب وابدت المنافق تمحو اسمهم الي
7 8 الابد والي ابد الابد * سلاح العدو افنيت الي الابد ابدت مدائنه وازلت ذكرها بصراخ * والرب
9 10 دايم الي الابد اعد كرسيه للقضاء * ليقضي المسكونة بالعدل ويدين الشعوب بالاستقامة * الرب
11 كان ملجا للفقير وعونه في زمن احزانه * فليتوكل عليك جميع العارفين لاسمك لانك لم
12 13 تضيع من يبتغيك يا رب * رتلوا للرب الساكن في صهيون واخبروا في الامم عجائبه * فانه
14 ذكر الطالب دماهم * ولم ينس دعوة المسكين * ارحمني يا رب وانظر الي ذلي من اعداي *
15 يا رافعي من ابواب الموت * لكي اقص جميع تسابيحك * في ابواب ابنة صهيون * اهلل
16 17 بخلاصك * وحلت الامم في الفساد الذي صنعوا والفخ الذي اخفوا علق ارجلهم * يعرف
18 الرب بانه صانع الاحكام * يجازي الخاطي بما صنعت يداه * يرد الخطاة الي الجحيم * وكل الامم
19 الذين نسوا الله * الفقير لا ينساه الرب الي الدهر * صبر ذوي المسكنة لا يضيع الي الابد
20 21 * قم يا رب لئلا يتقوي الانسان * ولتحز الامم امامك * اقم عليهم يا رب معلم ناموس * ولتعلم
1 2 الشعوب انهم بشر * لماذا يا رب بعدت عنا بعيدا * تغافلت في زمن الشدائد * عند تكبر
المنافق يحترق المسكين * يوخذون بالمشورات التي تشاوروا بها *

PSAL. IX. Davidis.

De mysteriis filii quoad gloriam Christi, ejusque resurrectionem ac regnum, atque interitum omnium inobedientium. Ver. 81. 1

Gratias agam tibi, O Domine, ex toto corde meo, & narrabo omnia mirabilia tua. 2 Gaudebo, & exultabo in te, & 3 psallam nomini tuo altissimo. Quando 4 convertentur inimici mei super terga sua, infirmabuntur & peribunt à conspectu tuo. Quoniam tu judicâsti mihi, & vindicâsti: ascendisti super thronū, O Judex 5 veritatis. Increpâsti populos, & perdidisti 6 impium: delêsti nomen eorū in seculū, et in seculum seculi. Arma inimici consumpsisti in æternum: perdidisti civitates ejus, 7 & abolêsti memoriam earum clamore: Et 8 Dominus perpetuus est in æternum. Præparavit sedem suam ad judicium, Ut judicaret habitatam cum æquitate, & decerneret in populos cum rectitudine. Dominus fuit refugium pauperi, & adjutori- 1 um ejus in tempore tristitiarum ejus. Confidant in te omnes cognoscentes nomen tu- 11 um: quia tu non perdidisti eum, qui quærit te, O Domine. Psallite Domino habitanti in Sion: 12 Et annuntiate in gentibus miracula ejus; Quia ipse recordatus est 13 quærentis sanguines eorum, & non est oblitus petitionem pauperis. Miserere mei, O 14 Domine mi, & aspice contemptum meum ab inimicis meis. O qui exaltas me de portis mortis, ut commemorem omnes lauda- 15 tiones tuas in portis filiæ Sion, exultem in salute tua. Infixæ sunt gentes in cor- 16 ruptione quam fecerunt: & laqueus quem absconderunt, detinuit pedes eorum. Cog- 17 noscetur Dominus quod sit actor judiciorū, rependat peccatori quod operatæ sunt manus ejus. Repellet peccatores in infernū, 18 & omnes gentes, quæ obliti sunt Deum. Pauperem non obliviscetur Dominus in 19 æternū: patientiā pauperū non deperdet in æternū. Exurge, O Domine mi, ne corrobo- 20 retur homo: et cōfundātur gentes corā te. Constitue, Domine, super eas Doctorem le- 21 gis, & sciant populi se homines esse.

Quare, O Domine, recessisti à nobis 1 longè? ac neglexisti in tempore tribulationum? Ad superbiam impii incenditur 2 pauper: comprehenduntur consiliis, quæ tractant.

תהלים: יא

, benedixit avaro & : ſuæ animæ *aviditate* ſuper *improbum* laudavit Quoniam
כי־הלל רשע על־תאות נפשו ובצע ברך 3
Deus *non* , quæret non *ſui naſi faſtum ſecundùm* Impius .Dominum fecit iraſci
נאץ יהוה׃ רשע כגבה אפו בל־ידרש אין אלהים 4
tua judicia *altitudo*,tempore omni in ejus viæ *afficient Dolore* .ejus *cogitationes omnes*
כל־מזמותיו׃ יחילו דרכו בכל־עת מרום משפטיך 5
movebor non ,ſuo corde in Dixit *.eos in* ſufflabit ſuos hoſtes omnes *: ejus regione è*
מנגדו כל־צורריו יפיח בהם׃ אמר בלבו בל־אמוט 6
, dolis & ,eſt plenum ej° os *Execratione .malo in non quod*,generationē *& generationē in*
לדר ודר אשר לא־ברע׃ אלה פיהו מלא ומרמות 7
, villarum inſidiis in *Sedebit* .iniquitas & , *labor* ejus lingua *ſub* : fraude &
ותך תחת לשונו עמל ואון׃ ישב במארב חצרים 8
Inſidiabitur *.ſe abſcondent pauperem ad* ejus oculi : innocentem occidet latibulis in
במסתרים יהרג נקי עיניו לחלכה יצפנו׃ יארב 9
afflictum rapiet : *afflictum* rapiendū ad inſidiabitur ſuo *tugurio* in leo ſicut ,latibulo in
במסתר כאריה בסכה יארב לחטוף עני יחטף עני
ejus *robuſta in* cadet & , *humiliabitur* ,*ſe Atteret* .ſuum rete in eum *trahendo in*
במשכו ברשתו׃ ודכה ישח ונפל בעצומיו 10
, *ſuas facies* occultavit : Deus eſt oblitus : ſuo corde in Dixit .*attritorum* cōgregatio
חלכאים׃ אמר בלבו שכח אל הסתיר פניו 11
oblivifcaris ne ,tuam manum eleva , Deus Domine Surge .*æternum in vidit non*
בל־ראה לנצח׃ קומה יהוה אל נשא ידך אל־תשכח 12
ſuo corde in dixit ? Deum impius fecit iraſci quid Propter .*afflictorum*
עניים׃ על־מה נאץ רשע אלהים אמר בלבו 13
,*tua manu in dandum ad* , *reſpicies iram & ,laborem tu quippe Vidiſti* .requires non
לא תדרש׃ ראתה כי־אתה עמל וכעס תביט לתת בידך 14
brachium Contere .adjutor fuiſti tu pupillo : pauper *relinquet te ſuper*
עליך יעזב חלכה יתום אתה היית עוזר׃ שבר זרוע 15
rex Dominus .invenies non ejus impietatem quæres , mali & , impii
רשע ורע תדרוש־רשעו בל־תמצא׃ יהוה מלך 16
manſuetorum Deſiderium .ejus terra de gentes perierunt *: æternitatis & , ſeculi*
עולם ועד אבדו גוים מארצו׃ תאות ענוים 17
.tuam aurem facies intendere , eorum cor facies parare : Domine audies
שמעת יהוה תכין לבם תקשיב אזנך׃
.terra de hominē *conterendū ad* ultrà addat ne ,*tenuem & ,pupillum judicandum Ad*
לשפט יתום ודך בל־יוסיף עוד לערץ אנוש מן־הארץ׃ 18

PSAL. XI. יא

, meæ animæ *dicetis* quomodo , ſperavi DOMINO In .Davidi Victori
למנצח לדוד ביהוה חסיתי איך תאמרו לנפשי 1
, arcum *tendent* impii ecce Quoniam ? *paſſer veſtrum montem Transvola*
נודו הרכם צפור׃ כי הנה הרשעים ידרכון קשת 2
.corde rectos in caligine *ipſa in jaciendum ad,nervum* ſuper ſuam ſagittam paraverunt
כוננו חצם על־יתר לירות במו־אפל לישרי־לב׃
templo in Dominus ? eſt operatus quid juſtus : deſtruentur *fundamenta* Quoniam
כי השתות יהרסון צדיק מה־פעל׃ יהוה בהיכל 3 4
ej° palpebræ ,videbunt ejus oculi ,*ejus* ſolium cœlis in Domini , ſuæ ſanctitatis
קדשו יהוה בשמים כסאו עיניו יחזו עפעפיו
.hominum filios probabunt
יבחנו בני אדם׃

תרגום TARGUM.

מטול דאשתבח רשיעא על רגרוג נפשיה 3
דמברך גברא טלומא מרחק מימרא דיי׃
רשיעא בנסות רוחיה לא יתבע אלהא ויימר 4
בלביה דלא גלין קדם יי כולהון מחשבתוי׃
מצלחין אורחתיה בכל עדן רחיקין דינך מן 5
קבליה בכל מעיקוי יזעוף בהון׃ יימר בלבביה 6
לא אזוע מדר לדר מלמעבד ביש׃ לוטין 7
פומיה מלי נכלי ורמיותא תחות לישניה
לאות ושקר׃ יתיב בכמני דדרתיא בטומריא 8
יקטול זכאה עינוי למסכניא יטשון׃ יכמון 9
בטומריא היך אריא במטליה יכמון למחטף
עניא יחטף עניא במגריה במצדתיה׃ ידכדך 10
וישוח ויפול בתקוף כמנוי עניא׃ יימר בלביה 11
אתנשי אלהא טמר אפוי לא חמי לעלמין׃
קום יי קיים שבועת ידך לא תנשי ענותני׃ 12
מטול מה רחיק רשיעא אלהא יימר בלביה 13
לא תתבע׃ גלי קדמך מטול דאנת לאות ורגיז 14
על רשיעא תסער אסתכל למשלם אגרא טב
לצדיקיא בידך עלך יסוברון ענוך יתם אנת
הוית סעיד׃ תבר אדרעיהון דרשיעי ובישי 15
יתבעון רשעתהון לא ישכחו׃ יי מליך לעלמי 16
עלמיא אבדו עממי מארעיה׃ רינתא דענותני 17
שמיע קדמך יי תתקין לבהון תצלי אודנך׃
למדן יתם ועניא לא יוסיף עוד תוב בני נשא 18
לאתברא מן קדם רשיעי ארעא׃

יא

תושבחתא לדוד במימרא דיי סבירית הכדין 1
אתון אמרין לנפשי אטלטלי לטורא היך
צפרא׃ ארום הא רשיעי נגדין קשתא מתקנין 2
גיריהון על נימא למרמי בקבלא עלוי תקיני
לבא׃ מטול דאין אשיתא יתרעון זכאה 3
מטול עבד טובא׃ יי בהיכלא דקודשיה אלהא 4
בשמי מרומא כורסיה עינוי חמין תמורוי
מבחנן בני נשא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Quoniam jactat ſe improbus ob concupiſcentiam animæ ſuæ : qui autem bene precatur homini perverſo, abominatur verbum Domini. Impius in faſtu ſpiritus ſui non requiret Deum : et dicet in corde ſuo, quòd non ſint manifeſti ante Dominum omnes cogitatus ſui. Proſperantur viæ ejus in omni tempore : longè ſunt judicia tua ex adverſo ejus : omnes oppreſſores ejus iraſcetur in illos. Dicet in corde ſuo: Non movebor de generatione in generationem à malè agendo. Execrationibus os ejus plenum eſt, dolóque & fraude: ſub lingua ejus iniquitas & falſitas. Sedet in inſidiis atriorum : in occultis occidet innocentem : oculi ejus miſerum clàm obſervant. Inſidiabitur in abſconditis quaſi leo in luſtro ſuo : inſidiabitur, ut *perveſtiget* pauperem ; rapiet pauperem cùm traxerit eum in rete ſuum. Conteret & deprimet ſeipſum , ut cadat in fortitudinem inſidiarum ejus pauper. Dicet in corde ſuo: Oblitus eſt Deus, abſcondit faciem ſuam, non videt in perpetuum. Surge Domine Deus, confirma juſjurandum manus tuæ: ne obliviſcaris humilium. Quare execratur impius Deum ? dixit in corde ſuo, te non requiſiturum. Notum eſt apud te quòd tu dolorem & iracundiam ſuper impium immittes : reſpicias ut reddas præmium bonum juſtis manu tua : in te ſperabunt pauperes tui; orphanum tu ſuſtinebis. Contere brachia impiorum & malorum: requirantur impietates eorum, & non inveniantur. Dominus regnat in ſecula ſeculorum : peribunt populi de terra ejus. Deſiderium pauperum auditum eſt coram te Domine : aptabis cor eorum, arrigeſque aurem tuam. Ut judices orphano & pauperi, nec opponant filii hominum ut conterantur à conſpectu impiorum terræ.

Hymnus Davidi.

PSAL. XI.

IN verbo Domini ſperavi : quomodo vos dicitis animæ meæ, Migra ad montem veſtrum ſicut avis ? Quoniam ecce improbi tendunt arcum, dirigunt ſagittas ſuas ſup nervum, ut feriant in obſcuro rectos corde. Quoniam ſi fundamenta deſtruantur, cur operatur juſtus *bonum ? Dominus* in templo ſanctuarii ſui; *Dei* in cœlis altiſſimis ſedes eſt : oculi ejus reſpiciunt, & palpebræ ejus probant filios hominum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܡܛܠ ܕܡܫܬܒܗܪ ܪܫܝܥܐ ܒܪܓܝܓܬܐ ܕܢܦܫܗ. ܘܥܘܠܐ ܡܬܒܪܟ ܘܪܓܙ ܡܪܝܐ: * ܘܪܫܝܥܐ
4
5 ܒܪܡܘܬܗ ܠܐ ܡܬܒܩܐ. ܘܠܝܬ ܐܠܗܐ ܒܟܠܗܘܢ ܡܚܫܒܬܗ: * ܘܫܪܝܢ ܐܘܪܚܬܗ ܒܟܠܙܒܢ.
6 ܘܡܫܬܩܠ ܕܝܢܟ ܡܢ ܩܘܒܠܗ: ܘܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܡܫܝܛ. * ܐܡܪ ܒܠܒܗ ܕܠܐ
7 ܐܙܘܥ ܠܕܪ ܕܪܝܢ: ܪܢܐ ܒܝܫܬܐ. * ܘܠܘܛܬܐ ܡܠܐ ܦܘܡܗ. ܚܒܠܐ ܘܢܟܠܐ ܬܚܝܬ ܠܫܢܗ. ܥܘܠܐ
8 ܘܢܟܠܐ: * ܝܬܒ ܒܟܡܐܢܐ ܒܕܪܬܐ. ܘܒܡܛܫܝܬܐ ܩܛܠ ܠܙܕܝܩܐ: * ܥܝܢܘܗܝ ܠܡܣܟܢܐ ܕܚܝܪܢ.
9
10 ܘܟܡܢ ܠܡܚܛܦ ܠܡܣܟܢܐ ܒܡܢܓܕ ܡܨܝܕܬܗ: * ܗܘ ܢܬܡܟܟ ܘܢܦܠ. ܘܒܓܪܡܘܗܝ
11 ܟܐܒܐ ܘܟܘܪܗܢܐ: * ܐܡܪ ܒܠܒܗ ܕܛܥܐ ܐܠܗܐ. ܘܐܗܦܟ ܐܦܘܗܝ ܘܠܐ ܚܙܐ ܠܥܠܡ: * ܩܘܡ
12
13 ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܟ. ܘܠܐ ܬܛܥܝܘܗܝ ܠܡܣܟܢܐ: * ܠܡܢܐ ܐܪܓܙ ܚܛܝܐ ܠܐܠܗܐ. ܐܡܪ
14 ܒܠܒܗ ܕܠܐ ܬܦܪܘܥ: * ܚܙܐ ܐܢܬ ܕܐܝܬ ܥܘܠܐ ܘܪܘܓܙܐ. ܘܣܟܐ ܐܢܬ ܕܢܫܬܠܡ ܒܐܝܕܝܟ: ܠܟ
15 ܢܫܬܒܩ ܡܣܟܢܐ. ܘܕܝܬܡܐ ܐܢܬ ܗܘܝܬ ܡܥܕܪܢܗ: * ܬܒܪ ܕܪܥܗ ܕܚܛܝܐ. ܘܒܝܫܐ ܢܒܥܐ
16 ܚܛܝܬܗ ܘܠܐ ܬܫܬܟܚ: * ܡܪܝܐ ܡܠܟܐ ܗܘ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. ܐܒܕܘ ܥܡܡܐ ܡܢ ܐܪܥܗ:
17 * ܣܒܪܐ ܕܡܣܟܢܐ ܫܡܥܬ ܐܢܬ ܡܪܝܐ. ܘܬܘܩܢܐ ܕܠܒܗܘܢ ܬܨܘܬ ܐܕܢܟ: ܠܡܕܢ ܠܝܬܡܐ
18 ܘܠܡܣܟܢܐ. ܘܠܐ ܢܘܣܦ ܬܘܒ ܠܡܘܒܕܘ ܒܢܝܢܫܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. * ܕܕܘܝܕ ܟܕ *
1 * ܐܬܟܪܝ. ܟܕ ܐܬܐܣܪ ܥܡܐ ܠܐ ܕܫܒܝܗ ܗܘ ܘܒܢܘܗܝ. ܠܢ ܕܝܢ ܙܟܘܬܐ ܠܐ ܒܒܥܠܕܒܒܢ.
ܦܬܓܡܐ ܝܚ. ܒܡܪܝܐ ܬܟܠܬ ܐܝܟܢܐ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܢܦܫܝ. ܢܘܕܝ ܘܥܡܪܝ ܥܠ ܛܘܪܐ
2 ܐܝܟ ܨܦܪܐ: * ܡܛܠ ܕܗܐ ܚܛܝܐ ܡܠܘ ܩܫܬܐ. ܘܛܝܒܘ ܓܐܪܝܗܘܢ ܠܐ ܝܬܪܐ: ܠܡܫܕܝܘ ܒܥܡܛܢܐ
3 ܠܬܪܝܨܝ ܠܒܐ. * ܡܛܠ ܕܡܕܡ ܕܛܝܒܬ ܣܚܦܘ: ܙܕܝܩܐ ܕܝܢ ܡܢܐ ܥܒܕ. * ܡܪܝܐ ܒܗܝܟܠܐ
4 ܕܩܘܕܫܗ: ܡܪܝܐ ܒܫܡܝܐ ܟܘܪܣܝܗ. ܥܝܢܘܗܝ ܚܙܝܢ ܘܥܝܦܘܗܝ ܒܩܝܢ ܠܒܢܝܢܫܐ:

Quia gloriatur impius in libidinibus animæ ſuæ : iniquus benedicitur, atque iraſcitur Dominus. Et impius in ſuperbia ſua non perpendit, neque eſt Deus in cunctis cogitationibus ſuis. At ſolutæ viæ ejus omni tempore, & ſublatum eſt judicium tuum è conſpectu ejus, omneſque inimicos ſuos deſpicit. Dicit in corde ſuo, Non movebor in generationem generationum : meditatur nequitiam, Et maledictione plenum eſt os ejus : nocumentum ac fraus ſub lingua ejus, & ſcelus atque dolus : Sedet in inſidiis in atrio, & in abſcondito trucîdat juſtum : Oculi ejus ad inopem intenti ſunt, & inſidiatur ad rapiendum pauperé tractu retis ſui. Ipſe humiliabitur & cadet, & in oſſibus ejus morbi doloreſque. Dicit in corde ſuo, Oblitus eſt Deus & avertit faciem ſuam, nec videbit in ſeculum. Exurge, Domine Deus meus, & attolle manum tuam, & ne obliviſcaris inopem. Quare irritavit peccator Deum? dicit in corde ſuo te non retributurū ? Vides adeſſe crimen & indignationem: & expectas ut tradatur in manus tuas? tibi ſe committet inops, & pupilli tu es adiutor. Contere brachium peccatoris : & maligni peccatum quæret eū, nec invenietur. Dn̄s rex eſt in ſeculum ſeculorū : interierunt gentes de terra ejus. Spem pauperum audis tu, Domine, & præparationem cordis eorum attendet auris tua : Ut judices pupillis & inopib°, & ut non adjiciat ultrà perdere homines de terra.

PSAL. XI.

Davidis. Quum contriſtatus eſſet populus quòd captivus ductus eſſet ipſe cum filiis ſuis. Nobis autem modò triumphus de adverſario noſtro. Verſus 18.

IN Domino ſperavi; quomodo dicitis animæ meæ, Tranſmigra & habita ſuper montes ſicut volucris ? Quoniam ecce peccatores impleverunt arcum, et aptârunt ſagittas ſuas ad nervū, ut jaculentur in caligine rectos corde: Quoniā quod paraſti deſtruxerunt; Juſtus autem quid facit? Dn̄s in templo ſanctitatis ſuæ, Dn̄i ſoliū in cœlo: oculi ej° vident, et palpebræ ejus explorant filios hominū.

Verſio VULG. LAT.

3 Quoniam laudatur peccator in deſide-
riis animæ ſuæ: & iniquus benedici-
4 tur. Exacerbavit Dominū peccator, ſecun-
dùm multitudinem iræ ſuæ non quæret.
5 Non eſt Deus in conſpectu ejus: inqui-
natæ ſunt viæ illius in omni tempore.
Auferuntur judicia tua à facie ej°: omni-
um inimicorum ſuorum dominabitur.
6 Dixit enim in corde ſuo; Non move-
bor à generatione in generationem, ſine
7 malo. Cujus maledictione os plenum
eſt, & amaritudine, & dolo: ſub lingua
8 ejus labor & dolor. Sedet in inſidiis
cum divitibus in occultis, ut interficiat
9 innocentem. Oculi ejus in pauperem
reſpiciunt: inſidiatur in abſcondito,
quaſi leo in ſpelunca ſua. Inſidiatur ut
rapiat pauperem: rapere pauperem
10 dum attrahit eum. In laqueo ſuo humi-
liabit eum, inclinabit ſe, & cadet cùm
11 dominatus fuerit pauperum. Dixit enim
in corde ſuo; Oblitus eſt Deus, avertit
12 faciem ſuam ne videat in finem. Exurge,
Dñe De°, exaltetur man° tua: ne oblivi-
13 ſcaris pauperū. Propter quid irritavit
impius Deū? dixit enim in corde ſuo,
14 Non requiret. Vides, quoniā tu laborē
& dolorem conſideras: ut tradas eos in
man° tuas. Tibi derelict° eſt pauper: or-
15 phano tu eris adjutor. Contere brachiū
peccatoris & maligni: quæretur pecca-
16 tū illi°, & non invenietur. Dñs regnabit
in æternū, & in ſeculū ſeculi: peribitis
17 gentes de terra illi°. Deſideriū pauperū
exaudivit Dñs: præparationē cordis eo-
18 rū audivit auris tua. Judicare pupillo
& humili, ut non apponat ultrà magni-
ficare ſe homo ſuper terram.

1 In finem, Pſalmus David. X.

2 IN Domino confido: quomodò dicitis
animæ meæ, Tranſmigra in montē ſicut
3 paſſer? Quoniā ecce peccatores inten-
derunt arcum, paraverunt ſagitas ſuas in
pharetra, ut ſagittent in obſcuro rectos
4 corde. Quoniā quæ perfeciſti, deſtruxe-
5 runt: juſtus autē quid fecit? Dñs in
templo ſancto ſuo: Dñs, in cœlo ſedes
ejus. Oculi ejus in pauperem reſpiciunt:
palpebræ ej° interrogant filios hominū.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

3 † Ὅτι ἐπαινεῖται ὁ ἁμαρτωλὸς ἐν ταῖς ἐπιθυμίαις τῆς
4 ψυχῆς αὐτοῦ, † καὶ ὁ ἀδικῶν ἐνευλογεῖται. † Παρώξυνε τὸν
κύριον ὁ ἁμαρτωλὸς, † κατὰ τὸ πλῆθος τῆς ὀργῆς
5 αὐτοῦ οὐκ ἐκζητήσει. † Οὐκ ἔστιν ὁ θεὸς ἐνώπιον αὐτοῦ.
† βεβηλοῦνται αἱ ὁδοὶ αὐτοῦ ἐν παντὶ καιρῷ. † ἀνταναι-
ρεῖται τὰ κρίματά σου ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, † πάν-
6 των τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ κατακυριεύσει. † Εἶπε γὰρ ἐν καρ-
δίᾳ αὐτοῦ, Οὐ μὴ σαλευθῶ ἀπὸ γενεᾶς εἰς γενεὰν ἄνευ
7 κακοῦ. † Οὗ ἀρᾶς τὸ στόμα αὐτοῦ γέμει καὶ πικρίας καὶ δό-
8 λου, † ὑπὸ τὴν γλῶσσαν αὐτοῦ κόπος καὶ πόνος. † Ἐγκάθη-
ται ἐνέδρᾳ μετὰ πλουσίων † ἐν ἀποκρύφοις, (θ) τοῦ ἀπο-
9 κτεῖναι ἀθῷον. † Οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ εἰς τὸν πένητα ἀπο-
βλέπουσιν. † (ι) ἐνεδρεύει ἐν ἀποκρύφῳ ὡς λέων ἐν
τῇ μάνδρᾳ αὐτοῦ· † ἐνεδρεύει τοῦ ἁρπάσαι πτωχὸν, †
10 ἁρπάσαι πτωχὸν ἐν τῷ ἑλκύσαι αὐτόν. † Ἐν τῇ παγί-
δι αὐτοῦ ταπεινώσει αὐτὸν, † κύψει καὶ πεσεῖται ἐν τῷ
11 αὐτὸν κατακυριεῦσαι τῶν πενήτων. † Εἶπε γὰρ (κ) ἐν τῇ
καρδίᾳ αὐτοῦ, Ἐπιλέλησται ὁ θεὸς, † ἀπέστρεψε τὸ πρόσ-
12 ωπον αὐτοῦ τοῦ μὴ βλέπειν εἰς τέλος. Ἀνάστηθι κύριε
ὁ (ʹ) θεὸς, ὑψωθήτω ἡ χείρ σου, † (λ) μὴ ἐπιλάθῃ τῶν πε-
13 νήτων. † Ἕνεκεν τίνος παρώξυνεν ὁ ἀσεβὴς τὸν θεόν;
14 † εἶπε γὰρ ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ, (μ) Οὐ ζητήσει. † Βλέπεις,
ὅτι σὺ (ν) πόνον καὶ θυμὸν κατανοεῖς, † τοῦ παραδοῦναι
αὐτοὺς εἰς χεῖράς σου. † (ξ) Σοὶ ἐγκαταλέλειπται ὁ πτω-
15 χὸς, † ὀρφανῷ σὺ ἦσθα (ο) βοηθός. † Σύντριψον τὸν
βραχίονα τοῦ ἁμαρτωλοῦ καὶ πονηροῦ, † ζητηθήσεται ἡ ἁμαρ-
16 τία αὐτοῦ καὶ οὐ μὴ εὑρεθῇ (π). † Βασιλεύσει κύριος εἰς
τὸν αἰῶνα, καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, † ἀπολεῖσθε ἔθνη
17 ἐκ τῆς γῆς αὐτοῦ. † Τὴν ἐπιθυμίαν τῶν πενήτων εἰσή-
κουσε κύριος, † τὴν ἑτοιμασίαν τῆς καρδίας αὐτῶν προσ-
18 έσχε τὸ οὖς (ρ) σου· † Κρῖναι ὀρφανῷ καὶ ταπεινῷ, † ἵνα μὴ
προσθῇ ἔτι (σ) μεγαλαυχεῖν ἄνθρωπος ἐπὶ τῆς γῆς.

MS. A. (θ) ἀποκτεῖναι (ι) ἐνεδρεύει * τοῦ ἁρπάσαι πτω-
χὸν, (κ) ἐν καρδίᾳ (ʹ) θεός μου, (λ) μὴ ἐπιλάθῃς (μ)
Οὐκ ἐκζητήσει. (ν) κόπον (ξ) * σὺ οὖν (ο) βοηθῶν.
(π) δι' αὐτήν. Βασιλεύσει (ρ) αὐτοῦ· (σ) τοῦ μεγαλαυχεῖν

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ
Δαυίδ. ι'.

2 † ἘΠὶ τῷ κυρίῳ πέποιθα, πῶς ἐρεῖτε (α) τῇ ψυ-
3 χῇ μου, † Μεταναστεύου ἐπὶ τὰ ὄρη ὡς στρουθίον; † Ὅτι
ἰδοὺ οἱ ἁμαρτωλοὶ ἐνέτειναν τόξον, † ἡτοίμασαν βέλη
εἰς φαρέτραν, † τοῦ κατατοξεῦσαι ἐν σκοτομήνῃ τοὺς εὐ-
4 θεῖς τῇ καρδίᾳ. † Ὅτι ἃ (β) κατηρτίσω καθεῖλον, †
5 ὁ δὲ δίκαιος τί ἐποίησε; † Κύριος ἐν ναῷ ἁγίῳ αὐτοῦ,
† κύριος, ἐν οὐρανῷ ὁ θρόνος αὐτοῦ· † οἱ ὀφθαλμοὶ
αὐτοῦ εἰς τὸν πένητα ἀποβλέπουσι, † τὰ βλέφαρα αὐτοῦ ἐξετάζει τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων.

MS. A. (α) τὴν ψυχήν μου, (β) σὺ κατηρτίσω αὐτοὶ καθεῖλον,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

24 Quoniā (ad) laudatur peccator 3
in deſideriis animæ ſuæ: et qui in-
iqua gerit, benedicitur. 25 Irrita- 4
vit Dominū peccator: ſecundùm
multitudinem iræ ſuæ non exqui-
ret: 26 Non eſt De° in conſpectu 5
*ej°: * [b] contaminantur viæ illius*
in omni tempore. 27 (ee) [c] Au-
feruntur judicia tua à facie ejus;
omniū inimicorū ſuorū domina-
bitur. 28 Dixit enim in corde ſuo, 6
Non (ff) movebor à generatione in
generationē, [d] ſine malo; 29 Cuj° 7
maledictione os ej° plenū eſt, et a-
maritudine, & dolo; ſub cuj° lin-
gua (gg) labor, & dolor: 30 Sedet 8
[e] in (hh) inſidiis cū divitibus in
occultis, ut interficiat innocentē.
31 Oculi ejus in pauperē reſpici- 9
unt: inſidiatur in occulto, velut
leo in (ii) ſpelunca ſua. 32 Inſidi-
atur, ut rapiat pauperem, rapere
pauperem, dum (kk) attrahit eum.
33 In (ll) laqueo ſuo humiliabit 10
eum: (mm) inclinabit ſe, & cadet
cum dominat° fuerit pauperū. 34
Dixit enim in corde ſuo, [f] Obli- 11
tus eſt De°: avertit faciem ſuam,
ne videat in finem. 35 Exurge, 12
Domine Deus; (nn) exaltetur ma-
nus tua; ne obliviſcaris pauperū.
36 Propter quid (oo) irritavit im- 13
pius Deū? dixit enim in corde
ſuo, Non requiret. 37 Vides, (pp) 14
quoniā tu laborem & iram con-
ſideras, ut tradas eos in man° tu-
as. 38 [g] Tibi derelict° eſt pau-
per: orphano tu fuiſti (qq) adjutor.
39 Contere brachium peccatoris, 15
& maligni: (rr) quæretur pecca-
tū illius [h], & non invenietur. 16
40 Dominus regnabit in æternū,
& in ſeculum ſeculi: [i] peribitis
gentes de terra illius. 41 Deſide- 17
rium pauperum exaudivit Domi-
nus: (ſſ) [k] præparationē cordis
eorum attendit [l] auris tua. 42
Judicare (tt) pupillo, & humili: 18
ut non apponat ultrà magnificare
ſe homo ſuper terram.

In finem (a) Pſalmus ipſi 1
David. X.

IN Domino confido: quomodò 2
dicetis animæ meæ, (a) Tranſmi-
gra in montes ſicut paſſer? 2 Quo- 3
niam ecce peccatores intenderunt
arcum: (b) paraverunt ſagittas in
pharetra, ut ſagittent in (c) obſcu-
ra luna rectos corde. 3 Quoniā, [b] quæ (d) perfeciſti deſtruxerūt: juſtus autem (e) quid fecit? 4 Domin° in templo ſancto ſuo: Dominus, in cœlo ſedes e- 4 5
jus. [c] Oculi ejus in (f) pauperem (g) reſpiciunt: palpebræ ejus interrogant filios hominum:

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ:ይትዌደስ: ኃጥእ: በፍትወተ: ነፍሱ:: 24
ወዐማፂ:ይትባረክ::=፡ ወአምዐ : ኃጥእ:በእ 25
ግዚአብሔር:: ወኢይትኃሠሥ : በከመ:
ብዝኃ:መዐቱ::=፡ ወአልቦ: እ፡ዚአብሔር: 26
በቅድሜሁ:: ወርኩስ: ኵሉ: ፍናዊሁ::=፡ 27
ወንሡት : ኵነኔከ: በቅድሜሁ:: ወይቀንዮ
ሙ:ለኵሎሙ:ፀላእቱ::=፡ ወይብል:በልቡ: 28
ኢይትሀወክ:ለትውልደ:ትውልድ : ወኢይረክ
በኒ:እኩይ::=፡ ወመርገመ: አፉሁ:መሪረ: 29
ወጽልሑት:: ወታሕተ: ልሳኑ: ጻማ: ወሕማ
ም::=፡ወይጸንሕ:ወይነዓ:ምስለ:ብዑላን:: 30
ከመ:ይቅትሎ:ለንጹሕ:በጽሚት::=፡ወአ 31
ዕይንቲሁ: ኀበ:ነዳይ : ያስተሐይጽ:: ወይጸ 32
ንሕ: ወይትኃባእ : ከመ : አንበሳ : ውስተ:ግ
ብ::=፡ ወይጸንሕ:ከመ:ይምስጥ: ለነዳይ::
ወይመስጥ: ለነዳይ: ወይስሕቦ:: ወያኀስሮ: 33
በመሥገርቱ:: ወይትቀጸዕ : ወይወድቅ: ሶበ:
ቀነዮ: ለነዳይ::= ወይብል: በልቡ: ኢይረስ 34
ዓኒ:እግዚአብሔር:: ወሜጠ፡ ገጾ: ከመ:
ኢይርአይ:ለግሙራ::=፡ ተንሥእ:እግዚእ: 35
አምላክየ:ወትትሌዐል: እዴከ:: ወኢትርስ
ዖሙ:ለነዳያን::=፡በእንተ:ምንት:አምዐዖ: 36
ኃጥእ: ለእግዚአብሔር:: እስመ : ይብል:
በልቡ፡ ኢይትኃሠሠኒ::=፡ ትሬኢኑ; ከመ: 37
ለሊከ: ትኔጽር: ጻማ: ወመዐተ:: ወከመ: ት
መጥዎ:ውስተ:እዴከ::=፡ላዕሌከኑ: እንከ: 38
ተገድፈ : ነዳይ:: ወአንተኑ : ረዳኢሁ :
ለእጓለ : ማውታ:: ቀጥቅጥ : መዝራዕቶ : 39
ለኃጥእ : ወለእኩይ:: ወትትኃሠሠ : ኃ
ጢአቱ: በእንቲአሁ:ወኢትትረከብ::=፡ይነ 40
ግሥ: እ፡ዚአብሔር: ለዓለም: ወለዓለመ:
ዓለም:: ወይትሐጐሉ : አሕዛብ : እምድ
ር::=፡ ፍትወቶሙ:ለነዳያን:ሰምዓ:እ፡ዚአ 41
ብሔር:: ወሕሊና : ልቦሙ: አጽምአት: እ
ዝኑ::=፡ ፍትሑ:ለነዳይ: ወለእጓለ: ማው 42
ታ:: ከመ: ኢይድግሙ:እንከ:ለጓለ:እመሕ
ያው:አዕበዩ:አፋሆሙ:በዲበ: ምድር::=፡

ፍጻሜ:ሰብሐት:መዝሙር:ዘዳዊት:
በእንተ:ሰማዕት::

1 በእግዝአብሔር : ተወከልኩ : እፎ: 1
ትብልዋ : በነፍስየ:: አዕይል : ውስተ:አ
ድባር:ከመ: ዖፍ::=፡እስመ:ናሁ :ኃጥአን: 2
ወሰቁ : ቀስቶሙ:: ወአስተያለው : አሕጻቲሆ
ሙ:ውስተ : ምጕንጳቲሆሙ: ከመ: ይንድፍ
ዎ: ለርቱዐ : ልብ : በጽሚት::=፡ እስመ: 3
ናሁ : ዘአንተ: ሠራዕከ: እሙንቱ: ነሠቱ::
ወጻድቅሰ:ምንተ:ገብረ::=፡እ፡ዚአብሔር: 4
ውስተ: ጽርሐ: መቅደሱ:: እግዚአብሔር:
ውስተ:ሰማይ:መንበሩ::=፡ ወአዕይንቲሁ: 5
ኀበ : ነዳይ : ይኔጽሩ:: ወቀራንብቲሁ:
የሀትቶ:ለእጓለ : እመሕያው::=፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] et inquinatæ ſunt omnes viæ illi° [c] Dimiſſū eſt judiciū tuū [d] neq; me apprehendet malū. Et maledictione plenū eſt os ejus, & dolo; ſub [e] ut captet cum divitib° & interficiat innocentē in abſconditis. [f] Non, oblitus [g] Nonne ſuper te igitur derelict° [h] per illud, & non [i] et peribunt [k] cogitationē [l] auris ejus. PSA. X. [a] laudis, Pſalmus David pro Octava. [b] ecce, quæ tu ordinâſti, iſti deſtruxerunt, [c] Et oculi etiam ejus

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*يفتخر المنافق بشهوات نفسه * والظالم يباركه * اسخط الرب الخاطي * ككثرة سخطه لا 3 4
يفحص * ليس الله امامه * يدنس طرقه في كل حين * رفع احكامك عن وجهه * يتسلط علي 5
جميع اعدايه * لانه قال في قلبه لا ازول جيلا بعد جيل بغير سو * فمه ممتلي لعنة ومرار 6 7
وغشا * تحت لسانه تعب والم * جلس كامنا مع الاغنيا * ليقتل الزكي في خفية * وعيناه 8
تنظران الي الفقير * كامنا في خفية * كاسد في مكمنه * يكمن ليخطف الفقير * يخطف الفقير اذما 9
جذبه * وفي فخه يذله * يتطاطي ويسقط اذما تسلط علي الفقير * لانه قال في قلبه * ان الله قد 10 11
نسي * صد وجهه فلا ينظر الي الابد * قم يا رب والاهي * ولترتفع يدك ولا تنس الفقير الي 12
الابد * حتي متي يسخط المنافق الله * قال في قلبه انك لا تنتقم * وانت يا رب تري اثمه وسو 13 14
عمله * ليسلم في يديك * بك يعتز الفقير * انت عون اليتيم * احطم ذراع الخاطي والشرير * 15
ستطلب خطيته فلا توجد من اجلها * والرب ملك الي الابد والي ابد الابد * تبيد الشعوب 16
من ارضه * سمع الرب شهوة الفقرا * واصغي لتهيية قلوبهم * يحكم لليتيم والبايس * حتي 17 18
لا يعود الانسان يفتخر علي الارض بالعظايم *

* المزمور العاشر لداوود * في الغلبة لمن يجاهد في الله * ير استيكن * 1

توكلت علي الرب فكيف يقولون لنفسي * انتقلي علي الجبال مثل العصفور * لان الخطاة 2
اوتروا قسيهم واعدوا سهاما في جعابهم ليرموا خفيا مستقيمي القلوب * هم هدموا ما اصلحت * 3
والبار فماذا صنع * ان الرب في هيكل قدسه * الرب في السما كرسيه * عيناه تنظران الي 4
الفقير * حدقاته تفحص بني البشر *

Gloriatur impius in concupiſcentiis ani- 3
mæ ſuæ, & ſceleratus benedicit eum. Ad 4
iram provocavit Dominum peccator, ſe-
cundùm multitudinem indignationis ejus.
Non ſcrutatur: non eſt Deus ante eum:
Maculat vias ſuas omni tempore: Abſtulit 5
judicia tua à facie ſua, dominatur omni-
bus inimicis ſuis. Nam dixit in corde ſuo, 6
Non præteribo generationem poſt genera-
tionem abſque malitia. Os ejus plenum eſt 7
maledictione, & amaritudine, & dolo:
ſub lingua ejus labor, & paſſio. Sedit in- 8
ſidians cum divitibus, ut occidat inno-
centem in abſcondito; & oculi ejus re-
ſpiciunt in pauperem, dum inſidiatur in
latibulo. Tanquam leo in inſidiis ſuis, inſi- 9
diatur ut rapiat pauperem; rapit paupe-
rem, quum traxerit eum, & laqueo ſuo,
humiliaverit eum; Incurvabitur, & ca- 10
det cùm dominatus fuerit pauperi. Nam 11
dixit in corde ſuo, Certè Deus jam obli-
tus eſt: avertit faciem ſuam, nec videbit
in æternum. Surge, O Domine mi, & 12
Deus meus, & exaltetur manus tua: &
ne obliviſcaris pauperis in perpetuum.
Uſquequò irritabit impius Deum? Dixit 13
in corde ſuo, te non ſumpturum vin-
dictam. Et tu, O Domine, vides iniqui- 14
tatem ejus, & obſcœnitatem operis ejus, ut
tradatur in manus tuas. In te conforta-
tur pauper: tu es adjutorium pupilli. Con- 15
fringe brachium peccatoris, & maligni:
Requiretur peccatum ejus, & non inve-
nietur ob illud. Et Dominus regnabit in 16
æternum, & in ſæculum ſæculi: Peribunt
populi de terra ejus. Audivit Domin° de- 17
ſiderium pauperum, & intendit quòd pa-
rârunt corda eorum. Judicabit orphano, 18
& inopi: ut non apponat homo gloriari
ſuper terram in magnificentiis.

PSAL. X. Davidis.

1 De victoria ejus qui pugnat
Σὺν θεῷ. *Verſ.* 17.

COnfiſus ſum in Domino: quomodo di-
cunt animæ meæ, Tranſmigra ad mon-
tes veluti paſſer? Quia peccatores inten- 2
derunt arcus ſuos, & parârunt ſagittas in
pharetris ſuis, ut jacularentur clàm in
rectos cordibus? Ipſi deſtruxerunt quod 3
apparâſti: Innocens autem quid fecit? Et 4
quidem Dominus in templo ſanctitatis
ſuæ, Dominus, in cœlo ſedes ejus: oculi
ejus reſpiciunt in pauperem, ictus oculi
ipſius investigant filios hominum.

תהלים : יב יג

habuit odio ,*rapinam* diligentem & ,impium & ; probabit juſtum DOMINUS
5 יְהוָה צַדִּיק יִבְחָן וְרָשָׁע וְאֹהֵב חָמָס שָׂנְאָה
ſpiritum & ,ſulphur & ,ignem ,laqueos impios ſuper Pluet .ejus anima
6 נַפְשׁוֹ׃ יַמְטֵר עַל־רְשָׁעִים פַּחִים אֵשׁ וְגָפְרִית וְרוּחַ
: dilexit juſtitias Dominus juſtus Quoniam .eorum calicis partem *terrorum*
7 זִלְעָפוֹת מְנָת כּוֹסָם׃ כִּי־צַדִּיק יְהוָה צְדָקוֹת אָהֵב
.ejus facies videbunt rectum
יָשָׁר יֶחֱזוּ פָנֵימוֹ׃

PSAL. XII. יב

defecit quia Domine Serva .Davidi canticum octavam ſuper Victori
1 לַמְנַצֵּחַ עַל־הַשְּׁמִינִית מִזְמוֹר לְדָוִד׃ הוֹשִׁיעָה יְהוָה כִּי־גָמַר 2
loquentur Mendacium .hominum filiis à fideles *defecerunt* quoniam , *pius*
3 חָסִיד כִּי־פַסּוּ אֱמוּנִים מִבְּנֵי אָדָם׃ שָׁוְא יְדַבְּרוּ
.loquentur corde & corde in ,blanditiarum labium ,ſuo *ſocio* unuſquiſque
אִישׁ אֶת־רֵעֵהוּ שְׂפַת חֲלָקוֹת בְּלֵב וָלֵב יְדַבֵּרוּ׃
.magna loquentem linguam ; *blanditiarum* labia univerſa Dominus Succidet
4 יַכְרֵת יְהוָה כָּל־שִׂפְתֵי חֲלָקוֹת לָשׁוֹן מְדַבֶּרֶת גְּדֹלוֹת׃
dominus quis ,nobiſcum noſtra labia ,roboremus *noſtra lingua In* ; dixerunt Qui
5 אֲשֶׁר אָמְרוּ לִלְשֹׁנֵנוּ נַגְבִּיר שְׂפָתֵינוּ אִתָּנוּ מִי אָדוֹן
nunc ,inopum clamorem propter ,*afflictorum* vaſtitatem Propter ? nobis
6 לָנוּ׃ מִשֹּׁד עֲנִיִּים מֵאַנְקַת אֶבְיוֹנִים עַתָּה
Eloquia .*eum illaqueabit* ,ſalute in ponam ,Dominus *dicet* ,ſurgam
7 אָקוּם יֹאמַר יְהוָה אָשִׁית בְּיֵשַׁע יָפִיחַ לוֹ׃ אִמְרוֹת
.*ſepties* *fuſum* ,*terram in clibano in* conflatum argentũ,munda eloquia ,Domini
יְהוָה אֲמָרוֹת טְהֹרוֹת כֶּסֶף צָרוּף בַּעֲלִיל לָאָרֶץ מְזֻקָּק שִׁבְעָתָיִם׃
.ſeculum in hac generatione à eum cuſtodies : eos ſervabis Domine Tu
8 אַתָּה־יְהוָה תִּשְׁמְרֵם תִּצְּרֶנּוּ מִן־הַדּוֹר זוּ לְעוֹלָם׃
.hominum filiis vilitas ,*exaltare ſecundum* ; *ambulabunt* impii *Circumquaque*
9 סָבִיב רְשָׁעִים יִתְהַלָּכוּן כְּרֻם זֻלּוּת לִבְנֵי אָדָם׃

PSAL. XIII. יג

uſquequo : *æternum* mei obliviſceris Domine Uſquequo .Davidi canticum Victori
1 לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ עַד־אָנָה יְהוָה תִּשְׁכָּחֵנִי נֶצַח עַד־אָנָה
2 ,mea anima in conſilia ponam Uſquequo ? me à *tuas facies* abſcondes
3 תַּסְתִּיר אֶת־פָּנֶיךָ מִמֶּנִּי׃ עַד־אָנָה אָשִׁית עֵצוֹת בְּנַפְשִׁי
? me ſuper meus inimicus exaltabitur Uſquequo ? die in meo corde in dolorem
יָגוֹן בִּלְבָבִי יוֹמָם עַד־אָנָה יָרוּם אֹיְבִי עָלָי׃
fortè ne ,meos oculos illumina ,meus Deus Domine me exaudi ,Aſpice
4 הַבִּיטָה עֲנֵנִי יְהוָה אֱלֹהָי הָאִירָה עֵינַי פֶּן
exultabunt mei hoſtes : ei prævalui ,meus inimicus dicat fortè Ne .*mortem* dormiam
5 אִישַׁן הַמָּוֶת׃ פֶּן־יֹאמַר אֹיְבִי יְכָלְתִּיו צָרַי יָגִילוּ
,tua ſalute in meum cor *exultabit* ,ſperavi tua miſericordia in ego Et .nutavero cùm
6 כִּי אֶמּוֹט׃ וַאֲנִי בְּחַסְדְּךָ בָטַחְתִּי יָגֵל לִבִּי בִּישׁוּעָתֶךָ
.*me ſuper* retribuit quoniam : Domino cantabo
אָשִׁירָה לַיהוָה כִּי גָמַל עָלָי׃

תרגום TARGUM.

5 אלהא צדיקיא בחין ורשיעיא ורחמי חטופין
6 סנאת נפשיה: יחית מטרין דפורענו על רשיעי
מפחין דאשתא וכבריתא וזעפא עלעולא
7 יהבת כלידהון: מטול דצדיקא יי צדקתא
רחים תקניא יחמון סבר אפוי:

יב

1 לשבחא על כנרא דתמניא נימי תושבחתא
2 לדויד: פרוק יי מטול דגמירו טביא ספו ארום
3 מהמניא מן בני נשא: שקרא ממללין אנש
עם חבריה ספותא שעיען בלבבהון מנכלין
4 ובלבא שקרא ממללין: ישיצי יי מן עלמא
כל ספון שעיען לישנא דמללא רברבנותא:
5 מן דכפרין בעקרא דאמרין בלישננא נתגבר
6 ספותנא עמנא מן רבון דילנא: מאונסא דעניי
מן צוחת חשיכי השתא אקום אמר יי אשוי
פורקן לעמי ולרשיעי אסהיד בישותא להון:
7 מלין דיי מליא דכין סימא סנינא בכורא על
8 ארעא זקיק שבעתי זמנין: אנת יי תנטרנון
לצדיקיא תנצרנון מן דרא בישא הדין
9 לעלמין: חזור חזור רשיעיא מהלכין כעלוקא
דמצצא דמיהון דבני נשא:

יג

1 2 לשבחא תושבחתא לדוד: עד אן יי תשלינני
3 לעלמין עד אן תטמור זיו אפך מני: עד אן
אשוי מלכא בנפשי דונא בלבבי יומם עד אן
4 יתרם בעל דבבי עלי: אסתכל וקבל צלותי
יי אלהא אנהר עיני באוריתך דלמא אחוב
5 ואדמוך עם חיבי מותא: דלמא יימר יצרא
בישא אשלטתיה מעיקי ירננון מטול אסטי
6 מארחתך: ואנא בטובך אתרחצית ירנן לבבי
בפורקנך אשבח קדם יי מטול דפריע עלי
טבתא:

PARAPH. CHALD. Verſ.La

Deus juſtũ probat : & *improbos & diligentes* rapinas odivit anima ejus. Deſcendere faciet pluvias vindictæ ſup impios,ſpirantes ignẽ ; ſulphur autẽ & turbo & tempeſtas pars calicis eorũ. Quoniã juſtus Dominus juſtitiam diligit : juſti videbunt aſpectum faciei ejus.

Ad laudandum ſuper citharã octo chordarum,Hymnus Davidi.

PSAL. XII.

REdime Dñe, quoniã conſumpti ſunt juſti,quoniam defecerunt fideles à filiis hominũ. Mendaciũ loquuntur unuſquiſque cum proximo ſuo,labiis adulationum in corde ſuo machinantur, & corde mendacium loquuntur. Diſperdat Dñs *de mundo* omnia labia blanditiarũ,linguã loquentẽ magnifica. Qui *abnegantes fundamentũ* dicunt : Linguâ noſtrâ roboremur:labia noſtra nobiſcum; quis Dñs noſter eſt ? Propter violentiam pauperum, & propter clamorẽ miſerorum, nunc exurgam,dicit Dñs: ſtatuámq; redemptionẽ populo meo; in impios verò teſtificabor malum. Eloquia Domini eloquia munda; argentũ repurgatum in fuſorio ſuper terra, perpurgatum ſepties. Tu Dñe conſervabis juſtos, cuſtodies eos à generatione *mala* hac in æternũ. In circuitu improbi ambulant tanquam ſanguiſuga,quæ ſugit ſanguinem filiorum hominum.

Ad laudandum,Hymnus Davidi.

PSAL. XIII.

USquequo Dñe obliviſceris mei ſemper ? uſquequò abſcondes ſplendorem vultus tui à me ? Uſquequò ponam conſilia in anima mea, dolorẽ in corde meo p diem ? uſquequo exaltabitur adverſari⁹ me⁹ ſup me ? Reſpice & accipe orationẽ meã Dñe De⁹ me⁹:illumina oculos meos in lege tua, ne fortè peccem & dormiam cum eis qui rei ſunt mortis. Ne dicat *concupiſcentia mala* ; Dominatus ſum ei : oppreſſores mei exultabunt, ſi declinavero à ſemitis tuis. Et ego in bonitate tua confiſus ſum ; exultabit cor meum in redemptione tua : laudes dicam coram Domino, quoniam retribuit mihi bonum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 ܡܪܝܐ ܒܚܪ ܠܙܕܝܩܐ. ܠܥܘܠܐ ܘܠܪܚܡܝ ܥܘܠܐ ܣܢܝܐ ܢܦܫܗ :* ܢܚܬܘܢ ܥܠ ܪܫܝܥܐ ܦܚܐ
6 ܐܝܟ ܡܛܪܐ. ܢܘܪܐ ܘܟܒܪܝܬܐ : ܘܪܘܚܐ ܕܡܚܘܬܐ ܡܢܬܐ ܕܟܣܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܟܐܢ ܗܘ 7
ܡܪܝܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܪܚܡ : ܘܬܪܝܨܘܬܐ ܚܙܝܢ ܐܦܘܗܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܒ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܩܪܒܐ ܕܒܝܫܐ. ܘܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܡܐܬܝܬܗ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܛ *
2 * ܦܪܘܩ ܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܫܠܡ ܛܒܐ : ܘܚܣܪܬ ܗܝܡܢܘܬܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. * ܒܢܝܢܫܐ
3 ܣܪܝܩܘܬܐ ܡܡܠܠܝܢ : ܘܓܒܪܐ ܥܡ ܚܒܪܗ ܒܣܦܘܬܐ ܡܦܠܓܬܐ. ܒܠܒܐ ܘܒܠܒܐ
4 ܡܡܠܠܝܢ : * ܢܘܒܕ ܡܪܝܐ ܟܠܗܝܢ ܣܦܘܬܐ ܡܦܠܓܬܐ. ܘܠܫܢܐ ܕܡܡܠܠ
5 ܪܘܪܒܬܐ : * ܐܝܠܝܢ ܕܐܡܪܝܢ ܠܫܢܢ ܢܪܘܪܒ. ܣܦܘܬܐ ܕܝܠܢ ܐܢܝܢ ܡܢܘ ܡܪܢ : * ܡܛܠ ܒܙܬܐ
6 ܕܡܣܟܢܐ ܘܐܢܚܬܐ ܕܒܝܫܐ. ܗܫܐ ܐܩܘܡ ܐܡܪ ܡܪܝܐ : ܘܐܥܒܕ ܦܘܪܩܢܐ ܒܓܠܝܐ.
7 * ܡܐܡܪܗ ܕܡܪܝܐ ܡܐܡܪܐ ܗܘ ܕܟܝܐ : ܣܐܡܐ ܓܒܝܐ ܕܒܚܝܪ ܒܐܪܥܐ. ܘܡܨܪܦ ܫܒܥ
8 ܙܒܢܝܢ : * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܛܪ ܐܢܘܢ. ܦܨܝܢܝ ܘܦܪܘܩܝܢܝ ܡܢ ܫܪܒܬܐ ܗܢܐ ܠܥܠܡ : * ܕܒܚܕܪܝܗܘܢ
9 ܪܫܝܥܐ ܘܡܬܗܠܟܝܢ. ܐܝܟ ܪܘܡܐ ܕܥܛܠܐ ܕܒܢܝ ܐܕܡ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܓ *

1 * ܡܘܩܪܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ ܘܣܘܟܝܐ ܕܡܪܝܐ ܘܕܥܘܕܪܢܗ. ܦܬܓܡܐ ܝܒ.
2 * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܪܝܐ ܬܛܥܝܢܢܝ ܠܥܠܡ. ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܬܗܦܟ ܐܦܝܟ ܡܢܝ : * ܥܕܡܐ
3 ܠܐܡܬܝ ܬܣܝܡ ܟܪܝܘܬܐ ܒܢܦܫܝ. ܘܨܦܬܐ ܒܠܒܝ ܟܠܝܘܡ : ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܢܬܬܪܝܡ
4 ܒܥܠܕܒܒܝ ܥܠܝ. * ܚܘܪ ܘܥܢܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ : ܘܐܢܗܪ ܥܝܢܝ ܕܠܐ ܐܕܡܟ ܠܡܘܬܐ.
5 * ܘܠܐ ܢܐܡܪ ܒܥܠܕܒܒܝ ܕܙܟܝܬܗ : ܘܠܐ ܢܚܕܘܢ ܒܝ ܐܠܨܝ ܟܕ ܐܙܘܥ. * ܐܢܐ ܕܝܢ ܥܠ ܛܝܒܘܬܟ 6
ܐܬܬܟܠܬ : ܢܚܕܐ ܠܒܝ ܒܦܘܪܩܢܟ. ܘܐܫܒܚ ܠܡܪܝܐ ܕܦܪܩܢܝ.

Dominus probat juſtos : iniquos & amantes iniquitatis odit anima ejus. Ceciderunt ſuper impios laquei ſicut pluvia : ignis, & ſulphur, & ſpiritus plagæ pars calicis eorum : Quoniam juſtus eſt Dominus, & juſtitiam diligit, & rectitudinem intuetur vultus ejus.

PSAL. XII.

Davidis. Pugna maligni : & Prophetia de adventu Chriſti. Verſ. 19.

SAlva, Domine , quoniam defecit probus, & deſiit fidelitas de terra : Homines vanitatem loquuntur, & vir cum proximo ſuo labiis diverſis, corde & corde loquuntur. Perdat Dominus cuncta labia diverſa, & linguas quæ loquuntur grandia. Qui dixerunt, Linguam noſtram magnificemus : labia,noſtra ſunt : quis Dominus noſter ? Propter vaſtitatem pauperum & gemitum inopum, nunc exurgam, dicit Dominus, & faciam ſalutem palàm. Eloquium Domini eloquium eſt purum, argentum ſelectum probatum terrâ, & expurgatum ſepties : Et tu, Domine, ſervabis eos. Libera me & redime me à generatione hac in æternum. Quia circumeunt impii, & ambulant quaſi altitudo obſcœna filiorum Adum.

PSAL. XIII.

Inſultatio adverſarii ; & Domini, ejuſque ſubſidii expectatio. Verſ. 12.

USquequò obliviſcéris mei, Domine, in ſeculum ? uſquequò avertes faciem tuam à me ? Uſquequò pones mœrorem in anima mea & ſolicitudinem in corde meo quotidie ? Uſquequò exaltabitur inimicus meus ſuper me ? Reſpice & exaudi me, Domine Deus, & illumina oculos meos, ne dormiam ad mortem. Et ne dicat hoſtis meus, Devici eum. Oppreſſores mei geſtient mihi, cùm nutavero. At ego bonitati tuæ confiſus ſum : exultabit cor meum in ſalute tua, & laudabo Dominum qui me ſalvavit.

Verſio VULG. LAT.

6 Dominus interrogat juſtum & impium:
qui autem diligit iniquitatem, odit animam
7 ſuam. Pluet ſuper peccatores laqueos:
ignis, & ſulphur, & ſpiritus procellarum,
8 pars calicis eorum. Quoniam
juſtus Dominus & juſtitias dilexit: æquitatem
vidit vultus ejus.

1 In finem pro octava, Pſalmus David. XI.

2 Salvum me fac, Domine, quoniam defecit
ſanctus: quoniam diminutæ ſunt
3 veritates à filiis hominum. Vana locuti
ſunt unuſquiſq; ad proximum ſuũ: labia
doloſa, in corde & corde locuti ſunt.
4 Diſperdat Dominus univerſa labia doloſa,
5 & linguam magniloquam. Qui
dixerunt; Linguam noſtram magnificabimus,
labia noſtra à nobis ſunt, quis
6 noſter Dñs eſt? Propter miſeriam inopum,
& gemitũ pauperũ, nunc exurgã,
dicit Dominus. Ponam in ſalutari: fiducialiter
7 agam in eo. Eloquia Domini,
eloquia caſta: argentum igne examinatum,
probatum terræ, purgatum
8 ſeptuplúm. Tu, Domine, ſervabis nos: &
cuſtodies nos à generatione hac in æternum.
9 In circuitu impii ambulant: ſecundùm
altitudinem tuam multiplicâſti
filios hominum.

1 In finem, Pſalmus David. XII.

Uſquequò, Domine, obliviſceris me
in finem? Uſquequò avertis faciem tuam
2 à me? Quamdiu ponam conſilia in
anima mea, dolorem in corde meo per
3 diem? Uſquequò exaltabitur inimicus
4 meus ſuper me? Reſpice, & exaudi me,
Domine Deus meus. Illumina oculos
meos, ne unquam obdormiam in morte:
5 Nequando dicat inimicus meus, Prævalui
adverſùs eum. Qui tribulant me,
6 exultabunt ſi motus fuero: Ego autem
in miſericordia tua ſperavi. Exultabit
cor meum in ſalutari tuo: cantabo Domino
qui bona tribuit mihi: & pſallam
nomini Domini altiſſimi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

6 † Κύριος ἐξετάζει τὸν δίκαιον ϗ τὸν ἀσεβῆ, † ὁ
δὲ ἀγαπῶν (γ) ἀδικίαν μισεῖ τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν. †
7 Ἐπιβρέξει ἐπὶ ἁμαρτωλοὺς (δ) παγίδας, † πῦρ ϗ
θεῖον ϗ πνεῦμα καταιγίδος ἡ μερὶς τοῦ ποτηρίου
8 αὐτῶν. † Ὅτι δίκαιος κύριος ϗ δικαιοσύνας ἠγάπησεν,
† (ε) εὐθύτητα εἶδε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ.

MS. A. (γ) τὴν ἀδικίαν (δ) παγίδα, (ε) εὐθύτητας

1 Εἰς τὸ τέλος (α) ὑπὲρ τῆς ὀγδόης, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ιά.

2 † Σῶσόν με κύριε, ὅτι ἐκλέλοιπεν ὅσιος, † ὅτι
ὠλιγώθησαν αἱ ἀλήθειαι ἀπὸ τῶν υἱῶν τῶν ἀνθρώπων.
3 † Μάταια ἐλάλησεν ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ,
† χείλη δόλια, ἐν καρδίᾳ ϗ ἐν καρδίᾳ (β) ἐλάλησε. †
4 Ἐξολοθρεύσαι κύριος πάντα τὰ χείλη τὰ δόλια,
5 † ϗ γλῶσσαν (γ) μεγαλοῤῥήμονα· † Τοὺς εἰπόντας,
Τὴν γλῶσσαν ἡμῶν μεγαλυνοῦμεν, † τὰ χείλη
ἡμῶν παρ᾽ ἡμῶν ἐστι· † τίς ἡμῶν κύριός ἐστιν;
6 Ἀπὸ τῆς ταλαιπωρίας τῶν πτωχῶν, † ϗ ἀπὸ τοῦ
στεναγμοῦ τῶν πενήτων, † νῦν ἀναστήσομαι, λέγει κύριος·
† θήσομαι ἐν σωτηρίῳ, παῤῥησιάσομαι ἐν
7 αὐτῷ. † Τὰ λόγια κυρίου, λόγια ἁγνά· † ἀργύριον
πεπυρωμένον, δοκίμιον τῇ γῇ, † κεκαθαρισμένον
8 ἑπταπλασίως. † Σὺ κύριε φυλάξεις ἡμᾶς· ϗ
(δ) διατηρήσεις ἡμᾶς † ἀπὸ τῆς γενεᾶς ταύτης, ϗ εἰς
9 τὸν αἰῶνα. † Κύκλῳ οἱ ἀσεβεῖς περιπατοῦσι, † κατὰ
τὸ ὕψος σου ἐπολυώρησας (ε) τοὺς υἱοὺς τῶν
ἀνθρώπων.

MS. A. (α) ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, ὑπὲρ τῆς ὀγδόης. (β) ἐλάλησε κακά. Ἐξολεθρεύσει (γ) μεγαλοῤῥήμονα· (δ) διατηρήσῃς (ε) πάντας τοὺς υἱοὺς

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ιβ'.

† Ἕως πότε κύριε ἐπιλήσῃ μου εἰς τέλος; ἕως
πότε (α) ἀποστρέψεις τὸ πρόσωπόν σου ἀπ᾽ ἐμοῦ; †
2 Ἕως τίνος θήσομαι βουλὰς ἐν ψυχῇ μου, † ὀδύνας
3 ἐν καρδίᾳ μου ἡμέρας (β); Ἕως πότε ὑψωθήσεται ὁ
4 ἐχθρός μου ἐπ᾽ ἐμέ; † Ἐπίβλεψον, εἰσάκουσόν μου
κύριε ὁ θεός μου. † φώτισον τοὺς ὀφθαλμούς μου, †
5 μήποτε ὑπνώσω εἰς θάνατον· † Μήποτε (γ) εἴποι
ὁ ἐχθρός μου, Ἴσχυσα πρὸς αὐτόν. † οἱ θλίβοντές
6 με ἀγαλλιάσονται ἐὰν σαλευθῶ· † Ἐγὼ δὲ
ἐπὶ τῷ ἐλέει σου ἤλπισα. † ἀγαλλιάσεται ἡ καρδία
μου (δ) ἐν τῷ σωτηρίῳ σου. † Ἄσω τῷ κυρίῳ τῷ
εὐεργετήσαντί με, † ϗ ψαλῶ τῷ ὀνόματι κυρίου
τοῦ ὑψίστου.

MS. A. (α) ἀποστρέφεις (β) ϗ νυκτός; (γ) εἴπῃ (δ) ἐπὶ τῷ

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

(b) Dominus interrogat juſtũ, & 6
impiũ: qui autem diligit iniquitatem,
odit animã ſuã. (i) Pluet ſuper 7
peccatores laqueos: ignis, &
ſulphur, & ſpiritus procellarũ,
pars calicis eorũ. Quoniã juſtus 8
Domin°, & juſtitias dilexit: (k)
[d] æquitatem vidit facies ejus.

In finem [a] pro octava, pſalmus ipſi David. XI. 1

1 Salvum me fac, Domine, quoniã 2
defecit (a) ſanct°: quoniã (b)
diminutæ ſunt veritates à filiis
hominũ. 2 Vana locuti ſunt unuſquiſq; 3
ad proximum ſuum: labia
doloſa, in corde & corde (c) locuti
ſunt. 3 [b] Diſperdat Dominus 4
univerſa labia doloſa, & [c] linguam
magniloquam. 4 Qui dixerunt, 5
Linguam noſtram (d) magnificabimus:
labia noſtra (e) à nobis
ſunt: quis noſter Dominus eſt?
5 Propter (f) miſeriam inopum, & 6
[d] gemitum pauperum, nunc exurgã,
dicit Domin°. 6 (g) [e] Ponã
in ſalutari, fiducialiter agã in
eo. Eloquia Domini, eloquia caſta: 7
[f] argentum igne examinatũ,
(h) probatũ terrã, purgatũ ſeptuplũ.
Tu, Domine, (i) ſervabis nos, 8
& cuſtodies nos à generatione
(k) hac, & in æternum. In circuitu 9
impii (l) ambulant: ſecundũ
(m) altitudinem tuam [g] multiplicâſti
filios hominum.

In finem, Pſalmus ipſi (a) David. XII. 1

1 Uſquequò, Domine, (b) obliviſcêris
me in finem? uſquequò
(c) avertes faciem tuam à me? 2
2 Quamdiu ponam (d) [a] conſilia
in anima mea, (e) [b] dolores in
corde meo per diem? 3 Uſquequò 3
exaltabitur inimicus meus ſuper
me? Reſpice, exaudi me, Domine 4
Deus meus. 4 Illumina oculos meos,
ne unquam obdormiã in mortẽ:
Nequando dicat inimic° me°, 5
Prævalui adverſùs eũ. 5 Qui tribulant
me, exultabunt, ſi mot° fuero:
Ego autẽ in miſericordia tua 6
ſperavi. 6 Exultabit cor meũ in ſalutari
tuo: (f) cantabo Domino,
qui [c] bona tribuit mihi, & pſallam
nomini Domini altiſſimi.

Verſio ÆTHIOPICA.

እግዚአብሔር ፡ የሀትቶ ፡ ለጻድቅ ፡ ወለኃጥ 6
እ፡፡ወዘሰ፡አፍቀረ፡ለዓመፃ፡ጸልአ፡ነፍሶ፡፡=፡
ይዘንም፡ መሣግር፡ በዕለ ፡ ኃጥአን፡፡ እሳት፡ 7
ወተይ፡ መንፈስ ፡ ዐውሎ ፡ መክፈልተ ፡ ጽዋዓ
ሙ፡፡=፡ እስመ፡ጻድቅ፡እግዚአብሔር፡ ወጽ 8
ድቀ፡አፍቀረ፡፡ወርትዕሰ፡ ትሬእዮ፡ገጾ፡፡=፡

ፍጻሜ፡ሰብሐት፡ መዝሙር፡ዘደዊት፡
በእንተ፡ሰሚእት፡፡

፲፩ እድኅነኒ፡ እግዚኦ፡እስመ፡ኃልቀ፡ ኄር፡፡ 1
ወውሕደ ፡ ሃይማኖት ፡ እምእጓለ ፡ እመሕ
ያው፡፡=፡ ከንቶ፡ይትናገሩ፡ አሐዱ ፡ ምስለ፡ 2
ካልኡ፡፡በከናፍረ፡ ጕሕሉት ፡ በልብ ፡ ወበ
ልብ፡ይትናገሩ፡፡=፡ ይሠርዎን ፡ እግዚአብ 3
ሔር፡ለከናፍረ፡ጕሕሉት፡፡ ወለልሳን፡እንተ፡
ተዐቢ፡ነቢበ፡፡=፡ እለ፡ይብሉ፡ናዐቢ፡ልሳና 4
ቲነ፡፡ ወከናፍሪነኒ ፡ ኀቤነ፡እሙንቱ፡፡መኑ፡
ውእቱ፡እግዚእነ፡፡=፡5በእንተ፡ሕማሞሙ፡
ለነዳያን፡፡ ወበእንተ ፡ ገዓሮሙ ፡ ለሙቁ
ሓን፡፡ ይእዜ ፡ እትነሣእ ፡ ይቤ ፡ እግዚአብ
ሔር፡፡=፡ወእሬሲ፡ መድኀኒተ ፡ ወእገሀድ፡ 6
ቦቱ፡፡=፡ቃለ፡እግዚአብሔር ፡ቃል፡ንጹሕ፡፡ 7
ከመ፡ብሩር፡ጽሩይ፡ወንጡፍ፡ወፍቱን፡ እም
ድር፡፡ዘአጽረይዎ፡ ምስብዒተ፡፡=፡ አንተ፡ 8
እግዚኦ ፡ ዕቀበነ ፡ ወተማኅፀነነ፡፡እምዛቲ ፡
ትውልድ፡ወለዓለም፡፡=፡ዓውደ፡የሐውሩ፡ረ 9
ሲዓን፡፡ ወበከመ፡ልዕልናከ፡ሠራዕኮሙ፡ለደ
ቂቀ፡እጓለ፡እመሕያው፡፡=፡

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፲፪ እስከ፡ማእዜኑ፡እግዚኦ፡ትረስዓኒ፡ለግሙ 1
ራ፡፡ እስከ፡ማእዜኑ፡ትሜይጥ፡ገጸከ፡ እምኔ
የ፡፡=፡እስከ፡ማእዜኑ፡አነብር፡ሐዘነ፡ውስተ፡
ነፍስየ፡፡ወትጼዕረኒ፡ልብየ፡ኵሎ፡እሜረ፡=፡ 2
እስከ፡ማዕዜኑ ፡ ይትዔበዩ፡ጸላእትየ ፡ ላዕሌ 3
የ፡፡=ነጽረኒ ፡ ወስምዓኒ ፡ እግዚኦ ፡ አምላ
ኪየ፡፡=፡ አብርሆን፡ለአዕይንትየ፡ከመ፡ኢይ 4
ኑማ፡ለሞዊት፡፡ወከመ፡ኢይበሉኒ፡ጸላእትየ፡
ሞእናሁ፡፡=፡ወእለሰ፡ይሣቅዩኒ፡ይትፌሥሑ፡ 5
ለእመ፡ተሀወኩ፡፡ወአንሰ ፡ በምሕረትከ ፡ ተወ
ከልኩ፡፡=፡ ይትፌሥሐኒ፡ልብየ፡በአድኅኖት 6
ከ ፡፡ እሴብሖ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ዘረድአ
ኒ፡፡ ወእዜምር ፡ ለስሞ ፡ እግዚአብሔር ፡ል
ዑል፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [d] & æquitatem etiam *PSA. xi.* [a] laudis pro [b] Diſperdet autem Dominus labia [c] linguam etiam [d] gemitũ vinctorũ, [e] Et ponam ſalutare, [f] ſicut argentũ repurgatum, [g] terminũ ſtatuiſti filiis *PSA. xii.* [a] triſtitiam in [b] dolore etiam afficies cor meum quotidie? [c] mihi auxiliatur, &

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

5 6 * الرب يبلو الصديق والمنافق * والذي يهوي الظلم فنفسه ابغض * يمطر على الخطاة
7 فخاخا نارا وكبريتا وريحا عاصفا * هذه نصيب كاسهم * لان الرب عادل والعدل احب * وذووا
1 الاستقامة ينظرون وجهه * المزمور الحادي عشر لداود * عن الاخر في
اليوم الثامن ونبوة على قدوم المسيح * يز * استيخن *
2 3 * خلصني يا رب فقد فني البار وقل الحق من بني البشر * وتكلم كل احد بالباطل في قريبه
4 بشفة غاشة بقلب * وفي القلب تكلموا سوا * الرب يبيد كل الشفاه الغاشة والالسن المعظمة
5 6 * القائلين * نعظم السنتنا وشفاهنا معنا * من هو ربنا * من اجل بؤس الفقراء * وتنهد
7 المساكين قال الرب * الان اقوم واصنع الخلاص علانية * اقوال الرب اقوال زاكية * كفضة
8 مختارة مسبوكة في الارض * قد صفيت الواحد سبعة اضعاف * وانت يا رب تحفظنا وتنجينا من
9 هذا الجيل * والى الابد * لان المنافقين حولنا يمشون * وكمثل ارتفاعك يا رب * اوسعت
1 اعمال بني البشر * المزمور الثاني عشر لداود * في الاخر وفيه ذكر
مقاومة الاعداء ونبوة على حضور المسيح * يج * استيخن *
2 3 * حتى متى تنساني يا رب الى الابد * حتى متى تصرف وجهك عني * حتى متى اضع هذه الافكار
4 في نفسي * والاوجاع في قلبي النهار اجمع * حتى متى يعلوا عدوي علي * انظر لي واستجب
5 لي يا ربي والاهي * انر عيني لئلا انام ميتا * ولئلا يقول عدوي اني عليه قد قدرت *
6 والمضطهدون لي يفرحون اذا انا زللت * وانا على رحمتك توكلت * قلبي بخلاصك يفرح * ارتل
الرب الذي صنع لي حسنا * واسبح اسم الرب العالي *

Dominus tentat juſtum, & impium; qui 5
autem oblectatur ſcelere, animam ſuam
odio habet. Pluet ſuper peccatores laqueos, 6
ignem, & ſulphur, & ventum vehementem.
Hæc eſt pars calicis eorum.
Quoniam Dominus æquus & æquitatem 7
dilexit, & recti videbunt faciem ejus.

PSAL. XI. Davidis.

De fine mundi (qui continget) in die octava. Et prophetia de adventu Chriſti. Verſ. 17. 1

Salva me, O Domine mi, quia jam defecit 2
juſtus, & diminuta eſt veritas à
filiis hominum: Et locutus eſt unuſquiſque 3
falſitatem in proximum ſuum, labio
doloſo, corde vario: *& in corde loquuti*
ſunt malum. Dominus perdet omnia labia 4
doloſa, & linguas ſuperbas Dicentium; 5
Magnificemus linguas noſtras: & Labia
noſtra nobiſcum ſunt: quis eſt Dominus
noſter? Propter inopiam pauperum, & gemitum 6
inopum, dixit Dominus; Nunc
exurgam, & faciam ſalutem palàm. Sermones 7
Domini ſermones puri ſunt, veluti
argentum electum liquatum in terra, quod
jam expurgatum eſt pro uno ſeptuplúm.
Et tu, O Domine mi, ſervabis nos, & 8
redimes nos ab hac generatione, & uſq;
in æternum; Quoniam impii circa nos 9
ambulant, & ſecundùm altitudinem tuam,
O Domine, ampliâſti negotia filiorum
hominum.

PSAL. XII. Davidis.

De fine. Et in eo fit mentio de inſultatione inimicorum. Et prophetia de præſentia Chriſti. Verſ. 13. 1

Uſquequò obliviſcêris mei, O Domine 2
mi uſque in æternum? Uſquequò avertes
faciem tuam à me? Uſquequò reponam 3
has cogitationes in anima mea, &
dolores in corde meo die totâ? Uſquequò
exaltabitur inimicus meus ſuper me?
Reſpice in me & exaudi me, O Domine 4
mi, & Deus meus. Illumina oculos meos
ne dormiam mortuus: Et ne dicat inimicus 5
meus, quòd prævalui adverſùs eum:
& perſequentes me gaudeant, cùm ego
lapſus fuero. Et ego in miſericordia tua 6
confiſus ſum: cor meum in ſalute tua lætabitur.
Pſallam Domino meo, qui fecit
mihi beneficium, & laudabo nomen Domini
altiſſimi.

תהלים : יד טו יז

PSAL. XIV. יד

;corruperunt : Deus non ,ſuo corde in *rudis* Dixit .Davidi Victori
למנצח לדוד אמר נבל בלבו אין אלהים השחיתו 1
proſpexit cœlis è Dominus .bonum *faciens* non ,*facinus* fecerunt abominabile
התעיבו עלילה אין עשה־טוב : יהוה משמים השקיף 2
.Deum quærens ,intelligens ſit an *videndum ad* ,hominum filios ſuper
על־בני־אדם לראות היש משכיל דרש את־אלהים :
.unus etiam non ,bonum faciens non ;*ſunt facti rancidi* pariter ,*receſſit Omnis*
הכל סר יחדו נאלחו אין עשה־טוב אין גם־אחד : 3
,meum populum comedentes ?iniquitatem operantes omnes cognoverunt Nonne
הלוא ידעו כל־פעלי און אכלי עמי 4
,timore timuerunt Ibi .invocaverunt non Dominum : panem comederent
אכלו לחם יהוה לא קראו : שם פחדו פחד 5
: afficietis pudore *afflicti* Conſilium .juſti generatione in Deus quoniam
כי־אלהים בדור צדיק : עצת־עני תבישו 6
convertendo in ?Iſrael ſalutem Sijon ex dabit Quis .ejus ſpes Dominus quoniam
כי יהוה מחסהו : מי יתן מציון ישועת ישראל בשוב 7
.Iſrael lætabitur ,Jahacob exultabit ?ſui populi captivitatem Dominus
יהוה שבות עמו יגל יעקב ישמח ישראל :

PSAL. XV. טו

quis ?tuo tabernaculo in peregrinabitur quis Domine .Davidi Canticum
מזמור לדוד יהוה מי־יגור באהלך מי־ 1
,juſtitiam *operans* & ,*perfectus Ambulans* ?tuæ ſanctitatis monte in habitabit
ישכן בהר קדשך : הולך תמים ופעל צדק 2
non ,ſua lingua *ſuper eſt oblocutus* Non .ſuo corde in veritatem *loquens* &
ודבר אמת בלבבו : לא־רגל על־לשנו לא־ 3
.ſuum propinquum *ſuper detulit* non opprobrium & ,malum ſuo *ſocio* fecit
עשה לרעהו רעה וחרפה לא־נשא על־קרבו :
juravit : *glorificabit* Dominum timentes & ,*rejectus* ,*ejus oculis in* Contemptus
נבזה בעיניו נמאס ואת־יראי יהוה יכבד נשבע 4
munus & ,uſuram ad dedit non ſuam Pecuniam .*mutabit* non & ,ſe affligere
להרע ולא ימר : כספו לא־נתן בנשך ושחד 5
.ſeculum in *mutabit* non , hæc *faciens* : accepit non innocentem *ſuper*
על־נקי לא לקח עשה־אלה לא ימוט לעולם :

PSAL. XVI. יו

Dixiſti .te in ſperavi quoniam ,Deus me Cuſtodi : Davidi Michtam
מכתם לדוד שמרני אל כי־חסיתי בך : אמרת 1
2 qui ſanctis In .te *ſuper* non meum bonum : tu meus *Dominus* : Domino
ליהוה אדני אתה טובתי בל־עליך : לקדושים אשר־ 3
.*eis in* mea voluntas omnis *inclytis &* : *ipſi* terra in
בארץ המה ואדירי כל־חפצי־בם :

תרגום TARGUM.

יד

לשבחא ברוח נבואה על דוד אמר שטיא 1
בלבביה לית שולטנא דאלהא בארעא חבילו
עובדיהון רחקו טבתא ואשכחו עלא לית
דעבד טב : יי משמיא אודיק על בני נשא 2
למחמי אין אית משכיל תבע אולפן מן קדם
יי : כולהון זרו לאחורא כחדא אתרשלו לית 3
דעבד טב אפילו לית חד : הלא ידעו כל עבדי 4
שקר סעדי עמי סעדו לחמא שמא דיי לא
בריכו : תמן דחלו דחלא מטול דמימרא דיי 5
בדרא דצדיקי : מלכת עניא תבהתון מטול 6
דשוי ביי סבריה : מן ירחיש מציון פורקנא 7
דישראל כד יתיב יי גלות עמיה ירנן יעקב
יחדי ישראל :

טו

תושבחתא לדוד יי מן חמי למדר במשכנך מן 1
חמי למשרי בטור בית מקדשך : דמהלך 2
בשלימותא ועבד צדקתא וממלל קושטא
בלבביה : לא אכל קורצין בלישניה לא עבד 3
לחבריה בישותא וכסופא לא סובר על
קריביה : דשט באנפוי ובסיר וית דחליא דיי 4
מוקיר דיומי לאבאשא לגרמיה ולא משלחף :
סימיה לא יהב בחבוליא ושוחדא על זכאה 5
לא קביל דעבד אלין לא יזוע לעלמא :

יו

גליפא תריצא לדוד נטר יתי אלהא מטול 1
דסברית במימרך : מלילת אנת נפשי קדם 2
יי אלהי אנת ברם טיבתי לא מתיהיבא
בר מנך : לקדישיא די בארעא הנון הודעו 3
כח גבורתי מן שרויא וגותנין בעובדיהון טביא
כל רעותי טבא בהון :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Ad laudandum *in ſpiritu prophetiæ* per Davidem.

PSAL. XIV.

DIxit inſipiens in corde ſuo : Non eſt poteſtas Dei in terra : coruperunt opera ſua ; execrati ſunt bonum, & adinvenerunt occaſionem : non eſt qui operetur bonum. Dominus de cœlo aſpicit ſuper filios hominum, ut videat num ſit intelligens, qui quærat doctrinam à conſpectu Domini. Omnes converſi ſunt retrò, ſimul obtorpuerunt : non eſt qui operetur bonum, non eſt ne unus quidem. Numquid ſciunt omnes operatores mendacii, devorantes populum meum [*quaſi*] devorarent panem? nomen Domini non benedixerunt. Ibi timuerunt timore, quoniam verbum Domini in generatione juſtorum. Conſilium pauperis confundetis, quoniam poſuit *in Domino* ſpem ſuam. Quis depromet è Sion redemptionem Iſraelis? cùm converterit Dominus captivitatem populi ſui, exultabit Jacob, lætabitur Iſrael.

Hymnus Davidi.

PSAL. XV.

DOmine, quis dignus eſt ut habitet in tabernaculo tuo? *cui conveniet* hoſpitari in monte domus ſanctitatis tuæ? Qui ambulat in perfectione, & operatur juſtitiam, & loquitur veritatem in corde ſuo : Non detrahit lingua ſua, nec infert proximo ſuo malum : & opprobrium non ſuſtinet ſuper propinquo ſuo. Qui deſpectus eſt in conſpectu ſuo, & contemptus ; atque timentes Dominum glorificat : jurat ut affligat ſeipſum, & non mutabit. Pecuniam ſuam non dedit ad uſuram, & munus ſuper innocentem non accepit. Qui facit hæc, non movebitur in æternum,

Sculptura recta Davidi.

PSAL. XVI.

CUſtodi me *Deus*, quoniam confiſus ſum in verbo tuo. Locuta es tu anima mea coram Domino : Deus meus es tu : veruntamen bonum meum non datum eſt niſi à te. Sanctis qui ſunt in terra, *ipſi notam fecerunt virtutem potentiæ meæ ab initio* : & magnificis in operibus bonis, omnis mea voluntas bona in ipſis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܕ *

* ܕܕܘܝܕ. ܣܘܟܝܐ ܕܡܫܝܚܐ ܦܬܓܡܐ ܝܕ. 1
ܐܡܪ ܒܠܐ ܒܠܒܗ ܕܠܝܬ ܐܠܗܐ. ܐܬܚܒܠܘ ܘܐܬܛܢܦܘ ܒܨܒܝܢܝܗܘܢ: ܘܠܝܬ ܕܥܒܕ ܛܒܬܐ.
* ܡܪܝܐ ܐܕܝܩ ܡܢ ܫܡܝܐ ܥܠ ܒܢܝܢܫܐ : ܕܢܚܙܐ ܐܢ ܐܝܬ ܕܡܣܬܟܠ ܘܒܥܐ ܠܐܠܗܐ. 2
* ܟܠܗܘܢ ܣܛܘ ܐܟܚܕܐ ܘܐܣܬܪܝܘ : ܘܠܝܬ ܕܥܒܕ ܛܒܬܐ ܐܦܠܐ ܚܕ. * ܘܠܐ ܝܕܥܘ ܟܠ 3 4
ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ : ܐܟܠܝ ܥܡܝ ܡܐܟܘܠܬܐ ܕܠܚܡܐ. ܘܠܡܪܝܐ ܠܐ ܩܪܘ : * ܬܡܢ ܙܥܘ ܙܘܥܐ. 5
ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܒܕܪܐ ܕܙܕܝܩܐ: * ܬܪܥܝܬܗ ܕܡܣܟܢܐ ܒܗܬܬܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܗܘ ܬܘܟܠܢܗ: 6
* ܡܢ ܢܬܠ ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܦܘܪܩܢܐ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܡܐ ܕܡܗܦܟ ܡܪܝܐ ܫܒܝܬܐ ܕܥܡܗ : ܢܪܘܙ 7
ܝܥܩܘܒ ܘܢܚܕܐ ܐܝܣܪܝܠ. * ܫܘܒܚܐ ܘܫܘܪܝ ܡܣܩܬܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܗ *

* ܕܕܘܝܕ. ܦܘܢܝܐ ܡܫܡܠܝܐ ܕܠܘܬ ܐܠܗܐ ܦܬܓܡܐ ܝܓ. 1
ܡܪܝܐ ܡܢܘ ܢܥܡܪ ܒܡܫܟܢܟ. ܘܡܢܘ ܢܫܪܐ ܒܛܘܪܟ ܩܕܝܫܐ : * ܐܝܢܐ ܕܡܗܠܟ ܕܠܐ ܡܘܡ 2
ܘܥܒܕ ܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܡܡܠܠ ܫܪܪܐ ܒܠܒܗ. * ܘܠܐ ܢܟܘܠܬܢ ܒܠܫܢܗ : ܘܠܐ ܥܒܕ 3
ܠܚܒܪܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܚܣܕܐ ܠܐ ܩܒܠ ܥܠ ܩܪܝܒܗ : * ܘܡܫܝܛ ܒܥܝܢܘܗܝ ܡܪܓܙܢܐ. 4
ܘܠܕܚܠܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܡܝܩܪ : ܝܡܐ ܠܚܒܪܗ ܘܠܐ ܡܕܓܠ. * ܘܟܣܦܗ ܒܪܒܝܬܐ ܠܐ ܝܗܒ : 5
ܘܫܘܚܕܐ ܠܐ ܢܣܒ ܥܠ ܙܟܝܐ. ܡܢ ܕܥܒܕ ܗܠܝܢ ܙܕܝܩ ܗܘ : ܘܠܐ ܡܬܬܙܝܥ ܠܥܠܡ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܘ *

* ܕܕܘܝܕ. ܓܒܝܬܐ ܕܥܕܬܐ : ܘܩܝܡܬܐ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܓ. 1
ܢܛܪܝܢܝ ܐܠܗܐ ܡܛܠ ܕܥܠܝܟ ܐܬܬܟܠܬ : * ܐܡܪܬ ܠܡܪܝܐ ܕܡܪܝ ܐܢܬ. ܘܛܒܬܝ ܡܢܟ 2
ܠܘܬܟ ܗܝ : * ܠܩܕܝܫܐ ܕܒܐܪܥܐ ܘܡܫܒܚܐ. ܕܟܠܗ ܨܒܝܢܝ ܒܗܘܢ : 3

PSAL. XIV.

Davidis. Expectatio Chriſti. Verſ. 14.

DIcit iniquus in corde ſuo, Non eſt Deus. Corrupti ſunt et contaminati ſunt in verſutiis ſuis, & non eſt qui faciat bonum. Dominus proſpexit de cœlo ſuper filios hominum, ut videret num reperiretur qui ſapiens eſſet, & quærens Deum. Omnes aberrârunt ſimul & abjecti ſunt, & non eſt qui faciat bonum, ne unus quidem. Et non cognoverunt omnes operantes iniquitatem, comedentes populum meum comeſtione panis, & Dominum non invocaverunt. Illic expaverunt pavore, quoniam Deus eſt in generatione juſtorum. Conſilium pauperis confuderunt, quoniam Domin⁹ eſt fiducia illius. Quis dabit ex Sion ſalutem Iſraeli? quando avertet Dominus captivitatem populi ſui, exultabit Iacob, & lætabitur Iſrael.

Laus, & initium gradûs,

PSAL. XV.

Davidis. Converſio perfecta ad Deum. Verſ. 13.

DOmine, quis habitabit in tabernaculo tuo? & quis requieſcet in monte tuo ſancto? Qui ambulat ſine macula, & operatur juſtitiam, & loquitur veritatem in corde ſuo. Neque fraudulentus eſt in lingua ſua, neque facit proximo ſuo malum, & munus adverſùs vicinum ſuum non accipit. Et contemptus eſt in oculis ejus irritator, & timentes Dominum honorat : jurat proximo ſuo, & non mentitur, Pecuniamque ſuam fœnori non tribuit, & munus adverſùs innocentem non accipit. Qui facit hæc, juſtus eſt, & non movebitur in æternum.

PSAL. XVI.

Davidis. Electio Eccleſiæ, & Reſurrectio Chriſti. Verſ. 23.

COnſerva me, Deus, quoniam in te confiſus ſum. Dixi Domino, Dominus meus es tu, & bonum meum à te eſt : Etiam in ſanctorum qui in terra ſunt, & glorioſorum, quibus tota delectatio mea eſt.

Verſio VULG. LAT.

In finem, Pſalmus David.
XIII.

1 Dixit inſipiens in corde ſuo, Non eſt
Deus. Corrupti ſunt, & abominabiles facti
ſunt in ſtudiis ſuis: non eſt qui faciat
2 bonū, non eſt uſque ad unum. Dominus
de cœlo proſpexit ſuper filios hominū,
ut videat ſi eſt intelligens, aut requirens
3 Deum. Omnes declinaverunt, ſimul inutiles
facti ſunt: non eſt qui faciat bonum,
non eſt uſque ad unum. Sepulchrū
patens eſt guttur eorum: linguis ſuis doloſè
agebant, venenum aſpidum ſub labiis
eorum. Quorum os maledictione &
amaritudine plenum eſt: veloces pedes
eorum ad effundendum ſanguinem. Contritio
& infœlicitas in viis eorum, & viā
pacis non cognoverunt: non eſt timor
4 Dei ante oculos eorum. Nónne cognoſcent
omnes qui operantur iniquitatē,
qui devorant plebem meam ſicut eſcam
5 panis? Dominum non invocaverunt, illic
trepidaverunt timore, ubi non erat
6 timor. Quoniam Dominus in generatione
juſta eſt, conſilium inopis confudiſtis:
7 quoniam Dominus ſpes ejus eſt. Quis
dabit ex Sion ſalutare Iſrael? cùm averterit
Dominus captivitatem plebis ſuæ,
exultabit Jacob, & lætabitur Iſrael.

Pſalmus David. XIV.

1 Domine, quis habitabit in tabernaculo
tuo? aut quis requieſcet in monte ſancto
2 tuo? Qui ingreditur ſine macula, &
3 operatur juſtitiam: Qui loquitur veritatem
in corde ſuo, qui non egit dolum in
lingua ſua: Nec fecit proximo ſuo malum,
& opprobrium non accepit adverſus
4 proximos ſuos. Ad nihilum deductus
eſt in conſpectu ejus malignus: timentes
autem Dominum glorificat: Qui jurat
5 proximo ſuo, & non decipit. Qui pecuniam
ſuam non dedit ad uſuram, &
munera ſuper innocentem non accepit.
Qui facit hæc, non movebitur in æternū.

1 Tituli inſcriptio ipſi David.
XV.

Conſerva me, Domine, quoniam ſperavi
2 in te. Dixi Domino; Deus meus es
tu, quoniam bonorum meorū non eges.
3 Sanctis, qui ſunt in terra ejus, mirificavit
omnes voluntates meas in eis.

Verſio GRÆCA. LXX. Interp.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ιγ΄.

† Εἶπεν ἄφρων ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ, Οὐκ ἔστι Θεός. † (α)
διέφθειραν καὶ ἐβδελύχθησαν ἐν ἐπιτηδεύμασιν, † οὐκ ἔστι
2 ποιῶν χρηστότητα, οὐκ ἔστιν ἕως ἑνός. † Κύριος ἐκ
τοῦ οὐρανοῦ διέκυψεν ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων, † τοῦ
3 ἰδεῖν εἰ ἔστι συνιῶν ἢ ἐκζητῶν τὸν Θεόν. † Πάντες
ἐξέκλιναν, ἅμα ἠχρειώθησαν, † οὐκ ἔστι ποιῶν χρηστότητα,
οὐκ ἔστιν ἕως (β) ἑνός. τάφος ἀνεῳγμένος
ὁ λάρυγξ αὐτῶν, ταῖς γλώσσαις αὐτῶν ἐδολιοῦσαν,
ἰὸς ἀσπίδων τὰ χείλη αὐτῶν· ὧν τὸ στόμα ἀρᾶς καὶ
πικρίας γέμει, ὀξεῖς οἱ πόδες αὐτῶν ἐκχέαι αἷμα.
Σύντριμμα καὶ ταλαιπωρία ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν. καὶ ὁδὸν
εἰρήνης οὐκ ἔγνωσαν· οὐκ ἔστι φόβος Θεοῦ ἀπέναντι
4 τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν. † Οὐχὶ γνώσονται πάντες οἱ
ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, † οἱ (γ) κατέσθοντες τὸν λαόν
5 μου (δ) βρώσει ἄρτου; † Τὸν κύριον οὐκ ἐπεκαλέσαντο.
6 † ἐκεῖ ἐδειλίασαν φόβῳ, (ε) οὗ οὐκ ἦν φόβος. † Ὅτι ὁ
Θεὸς ἐν γενεᾷ (ζ) δικαίᾳ. † βουλὴν πτωχοῦ κατῃσχύνατε,
7 † ὅτι κύριος ἐλπὶς αὐτοῦ ἐστι. † Τίς δώσει ἐκ Σιὼν
τὸ σωτήριον τοῦ Ἰσραήλ; † ἐν τῷ ἐπιστρέψαι κύριον
τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, † (η) ἀγαλλιάσθω
Ἰακώβ, καὶ εὐφρανθήτω Ἰσραήλ.

MS. A. (α) διεφθάρησαν (β) αἰνός. ***** Οὐχὶ γνώσονται (γ) κατεσθίοντες (δ) ἐν βρώσει ἄρτου; (ε) ὧ οὐκ ἦν (ζ) δικαίων. (η) ἀγαλλιάσεται Ἰακώβ, καὶ εὐφρανθήσεται Ἰσραήλ.

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ιδ΄.

† Κύριε, τίς παροικήσει ἐν τῷ σκηνώματί σου; †
(α) καὶ τίς κατασκηνώσει (β) ἐν τῷ ὄρει τῷ ἁγίῳ
2 σου; † Πορευόμενος ἄμωμος, καὶ ἐργαζόμενος δικαιοσύνην·
3 † Λαλῶν ἀλήθειαν ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ. †
ὃς οὐκ ἐδόλωσεν ἐν γλώσσῃ αὐτοῦ, † οὐδὲ ἐποίησε
τῷ πλησίον αὐτοῦ κακόν, † καὶ ὀνειδισμὸν οὐκ ἔλαβεν
4 ἐπὶ τοὺς ἔγγιστα αὐτοῦ. † Ἐξουδένωται ἐνώπιον
αὐτοῦ (γ) πονηρευόμενος, † τοὺς δὲ φοβουμένους κύριον
δοξάζει· † ὁ ὀμνύων τῷ πλησίον αὐτοῦ καὶ οὐκ ἀθετῶν·
5 † Τὸ ἀργύριον αὐτοῦ οὐκ ἔδωκεν ἐπὶ τόκῳ, † καὶ δῶρα ἐπ᾽
ἀθῴοις οὐκ ἔλαβεν. † ὁ ποιῶν ταῦτα, οὐ σαλευθήσεται εἰς
τὸν αἰῶνα.

MS. A. (α) ἢ τίς (β) ἐν ὄρει (γ) πᾶς πονηρευόμενος,

1 Στηλογραφία τῷ Δαυίδ. ιε΄.

2 † Φύλαξόν με κύριε, ὅτι ἐπὶ σοὶ ἤλπισα. † Εἶπα
τῷ κυρίῳ, Κύριός μου εἶ σύ, † ὅτι τῶν ἀγαθῶν μου
3 οὐ χρείαν ἔχεις. † Τοῖς ἁγίοις τοῖς ἐν τῇ γῇ αὐτοῦ, ἐθαυμάστωσε
πάντα τὰ θελήματα αὐτοῦ ἐν αὐτοῖς.

[a] Tituli (a) inſcriptio ipſi (b) David. XV.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

In finem, Pſalmus ipſi David. XIII. 1

1 Dixit imprudens in corde
ſuo, Nō eſt Dº. (a) 2 corruperūt,
& abominabiles facti ſunt in (b)
ſtudiis: non eſt qui faciat (c) bonitatē,
non eſt uſque ad unū. 3
Dominº de cœlo proſpexit ſuper 2
filios hominū, ut videat, ſi eſt intelligens
[a] aut requirens Deū. 4
Omnes declinaverūt, ſimul inutiles 3
facti ſunt: non eſt qui faciat bonū,
non eſt uſq; ad unum. 5
(d) [b] Sepulchrum patens eſt
guttur eorum, linguis ſuis doloſè
agebant: venenū aſpidum labia
eorū: 6 quorū os [c] maledictione,
& amaritudine plenum eſt:
veloces pedes eorum ad effundendū
ſanguinē. 7 [d] Contritio
& infœlicitas in viis eorum: &
viā pacis non cognoverunt: non
eſt timor Dei ante oculos eorū.
8 (e) Nónne cognoſcent omnes, 4
qui operantur iniquitatē, qui devorant
populum meū cibo (f) panis?
9 Dominū non invocaverunt: 5
illic trepidaverunt timore,
(g) ubi non erat timor. 10 Quoniā 6
Deº in generatione juſta eſt:
conſilium inopis confudiſtis, quoniam
Dominº [e] ſpes ejus eſt. 11
Quis dabit ex Sion ſalutare Iſrael? 7
cùm (h) converterit Dominus
captivitatem plebis ſuæ, (i)
exultet Jacob, & lætetur Iſrael.

Pſalmus ipſi David. XIV. 1

1 Domine, quis (a) habitabit in
tabernaculo tuo? & quis requieſcet
in monte ſancto tuo? 2 Qui 2
ingreditur [a] ſine macula, & operatur
juſtitiā. 3 Qui loquitur 3
veritatē in corde ſuo, qui non
egit dolū in lingua ſua. 4 Nec
fecit proximo ſuo malum: et opprobrium
non accepit adverſùs
proximos ſuos. 5 Ad nihilū deductº 4
eſt in cōſpectu ejº malignº:
timentes autē Dominū glorificat.
6 Qui (b) jurat proximo ſuo,
& non decipit: [b] Pecuniā ſuā 5
non dedit ad uſurā: & munera
ſuper (c) innocentes non accepit.
7 Qui [c] facit hæc, non commovebitur
in æternum.

1 Conſerva [illegible] (c) Domine, quoniā in te ſperavi. Dixi Domino; Deus meus es tu, quoniā (d) bonorum meorū non eges. 2 Sanctis, qui ſunt in terra ejus, (e) [b] mirificavit omnes voluntates ſuas in eis. 1 2 3

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡ 1
፲፫ ይብል፡አብድ፡በልቡ፡አልቦ፡እግዚአብ 1
ሔር፡፡=፡ ኃስሩ፡ወረኵሱ፡በምግባሪሆሙ፡፡ 2
አልቦ፡ዘይገብራ፡ለሠናይት፡አልቦ፡ወሊ.አሐ
ዱ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ኃወጸ፡እምሰማይ፡ሳ 3
ዕለ፡እጓለ፡ለመሕያው፡፡ከመ፡ይርአይ፡እመ
ቦ፡ጠቢበ፡ዘያኃሥሥ፡ለእግዚአብሔር፡፡=፡
ኵሉ፡ዐረየ፡ወኅቡረ፡ዓለው፡፡ አልቦ፡ ዘይገ 4
ብራ፡ለሠናይት፡አልቦ፡ወሊ.አሐዱ፡፡=፡ከመ፡ 5
መቃብር፡ክሡት፡ጐረዒቶሙ፡፡ ወጸልሐው፡
በልሳናቲሆሙ፡፡ ሕምዘ፡አርዌ፡ምድር፡ታሕ
ተ፡ከናፍሪሆሙ፡፡=፡ መሪር፡አፉሆሙ፡ወም 6
ሉእ፡መርገመ፡፡በሊሕ፡እገሪሆሙ፡ለክዒው፡
ደም፡፡=፡ ኃሳር፡ወቅጥቃጤ፡ውስተ፡ፍኖቶ 7
ሙ፡፡ ወኢያእመርዋ፡ለፍኖተ፡ሰላም፡፡ወአል
ቦ፡ፍርሀተ፡ እግዚአብሔር፡ቅድመ፡አዕይን
ቲሆሙ፡፡=፡ወኢያአምሩ፡ኵሎሙ፡ገበርተ፡ 8
ዓመፃ፡፡ እለ፡ ይውኅጥዎሙ፡ ለሕዝብየ፡
ከመ፡በሊዐ፡እክል፡፡=፡ ወለእግዚአብሔ 9
ርሰ፡ኢጸውዕዎ፡፡ ወበህየ፡ፈርሁ፡ወገረምሙ፡
ዘኢኮነ፡ግሩም፡፡=፡ እስመ፡እግዚአብሔር፡ 10
ውስተ፡ ትውልደ፡ጻድቃን፡፡ ወአስተኃፈርክ
ሙ፡ምክረ፡ነደይ፡፡ እስመ፡ እግዚአብሔር፡
ተስፋሆሙ፡ውእቱ፡፡=፡ መኑ፡ይሁብ፡መድኃ 11
ኒተ፡እምጽዮን፡ለእስራኤል፡፡ አመ፡ሚጠ፡
እግዚአብሔር፡ፄዋ፡ሕዝቡ፡፡ ይትፌሣሕ፡
ያዕቆብ፡ወይትሐሠይ፡እስራኤል፡፡

መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፲፬ እግዚኦ፡መኑ፡የኃድር፡ውስተ፡ጽላሎት 1
ከ፡፡ ወመኑ፡ ያጸልል፡ውስተ፡ደብረ፡መቅድስ
ከ፡፡=፡ ዘየሐውር፡በንጹሕ፡ወይገብር፡ጽድ 2
ቀ፡፡=፡ ወይነብብ፡ ጽድቀ፡ በልቡ፡፡ወዘኢ 3
ጕሕለወ፡በልሳኑ፡፡=፡ ወዘኢገብረ፡እኩየ፡ 4
ዲበ፡ቢጹ፡፡ወዘኢያጽእለ፡ አዝማዲሁ፡፡=፡
ወዘምኑን፡ በቅድሜሁ፡ እኩይ፡፡ ወዘያከብ 5
ሮሙ፡ለፈራህያነ፡እግዚአብሔር፡፡=፡ ዘይ 6
ምሕል፡ ለቢጹ፡ ወኢይሔሱ፡፡ ወዘኢለቅሐ፡
ወርቆ፡ በርዴ፡፡ ወዘኢነሥአ፡ሕልያነ፡ በሳዕ
ለ፡ንጹሕ፡፡=፡ ዘይገብር፡ከመዝ፡ወኢይት 7
ሀወክ ፡ ለዓለም፡፡=፡

ሠርዐተ፡አርአያ፡መጽሐፍ፡ዘደዊት፡፡

፲፭ ዕቀበኒ ፡ እግዚኦ፡እስመ፡ ኪያከ፡ተወከል 1
ኩ፡፡ እቤሎ፡ ለእግዚአብሔር፡ እግዚእየ፡
አንተ፡፡ እስመ፡ኢትፈቅደ፡ ለሠናይትየ፡፡=፡ 2
ለቅዱሳን፡ እለ፡ውስተ፡ ምድር፡፡ ተሰብሐ፡ 3
ኵሉ፡ ሥምረትከ ፡ በላዕሌሆሙ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. xiii. [a] qui requirit [b] Tanquàm ſepulchrum [c] amaritudine, & maledictione plenum eſt: [d] Contemptus & contritio [e] ſpes eorum PSAL. xiv. [a] in puritate, [b] & qui pecuniam [c] ita facit, non PSAL. xv. [a] Fœdus Davidis quod ut maximè peculiare ſibi propoſuit. [b] glorificabis omnes voluntates tuas in eis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * المزمور الثالث عشر لداود * في الأسرار وفيه توبيخ للأشرار * كذ * استيكن *
2 * قال الجاهل في قلبه ليس اله * فسدوا وتنجسوا بأعمالهم * وليس من يعمل صالحا ولا واحد
3 * الرب اطلع من السماء على بني البشر لينظر هل فيهم فهيم طالب لله * زاغ جميعهم وفسدوا
4 في معا * وليس من يعمل صالحا ولا واحد * حناجرهم قبور مفتحة * مكروا بألسنتهم * سم الأفاعي
5 في شفاههم * وهولاء افواههم مملوة لعنة ومرارة * وارجلهم الى سفك الدماء سريعة * والبوس
6 والتعبيس في سبلهم * وطريق السلامة ما عرفوها * وليس خوف الله امام عيونهم * الا يعلم
7 جميع عاملي الاثم * الذين يأكلون شعبي اكل الخبز * والرب لم يدعوا * انهم جازوا هنالك خوفا
8 حيث لا خوف * وان الرب في جيل الابرار سفهوا رأي المسكين * وان الرب لرجاوه * من يعطي
9 من صهيون خلاصا لاسرائيل * اذا رد الرب سبي شعبه * فليهلل يعقوب ويفرح اسرائيل *
10 11
1 * المزمور الرابع عشر لداود * في الآخر ولمن لم يكن بالله تاما * مجد لداود * يح * استيكن *
2 يا رب من يسكن مسكنك * او من يحل في جبل قدسك * الا الذي يمشي بلا عيب ويعمل البر
3 ويتكلم في قلبه بالحق * ولا يغش بلسانه احدا * ولا يصنع بقريبه سوا ولا يلتمس لجيرانه عارا
4 * فاعل الشر مرذول امامه * ويمجد اتقياء الرب * يحلف لصاحبه ولا يكذب * ولا يعطي فضة
5 بالربا * ولا يقبل الرشوة على الازكياء * الذي يفعل هذا لا يزول الى الابد *
1 * المزمور الخامس عشر لداود * فيه اختيار البيعة وقيامة المسيح * كتابة على العهد *
2 * كج * استيكن * احفظني يا رب فاني عليك توكلت * قلت للرب انت هو ربي * وانك
3 غير محتاج الى حسناتي * اظهر بقديسيه عجايبه في ارضه * وصنع فيهم جميع ارادته

PSAL. XIII. Davidis.

De Myſteriis. Item continetur in eo interminatio adverſùs improbos. *Verſ.* 24. 1

Dixit inſipiens in corde ſuo, Non eſt 2
Deus. Corrupti ſunt & contaminati
ſunt in operibus: & non eſt qui faciat bonum,
ne unus quidem. Dominus proſpexit 3
de cœlo ſuper filios hominum, ut videret
utrùm eſſet in eis intelligens, requirens
Deum. Declinaverunt omnes, & corrupti 4
ſunt penitùs: & non eſt qui faciat bonum,
ne ullus quidem. Sepulchra aperta guttura 5
eorum, machinati ſunt linguis: venenum
aſpidum in labiis eorum. Et iſtorum ora 6
plena ſunt maledictione, & amaritudine:
& pedes eorum ad effuſionem ſanguinum
veloces. Et inopia & fraus in ſemitis eorum, 7
& viam pacis non cognoverunt: &
non eſt timor Dei ante oculos eorum.
Nonne cognoſcunt omnes operantes iniquitatem, 8
qui comedunt populum meum comeſtione
panis, Et Dominum non invocaverunt: 9
quòd timuerint ibi timore ubi nullus
timor, Et quòd Dominus in generatione 10
innocentium eſt? Stultam fecerunt ſententiam
pauperis: & verò Dominus ſpes ejus
eſt. Quis dabit ex Sion ſalutem Iſraeli? 11
Cùm revocaverit Dominº captivitatē
populi ſui, exultet Jacob, & lætetur Iſrael.

PSAL. XIV. Davidis.

De fine. Et in eū qui nō eſt in Deo perfectº. Davidis gloria. *Ver.* 13. 1

O Domine, quis inhabitabit habitaculum
tuum? aut quis cōmorabitur in
monte ſanctitatis tuæ? Niſi ille qui ambulat 2
ſine macula, & operatur juſtitiam, &
loquitur in corde ſuo veritatem. Et non 3
decipit linguâ ſuâ ullum, et non facit adverſùs
proximum ſuum malum, & non
quærit vicinis ſuis opprobrium; Operans 4
malum eſt apud eum vilis, honorat autem
timentes Dominum: Jurat proximo ſuo, et
non mentitur, Et non dat argentum ſuum 5
ad uſuram, & non acceptat munus adverſùs
innocentes. Qui fecerit hoc, non
nutabit in æternum.

PSAL. XV. Davidis.

Agitur in eo de electione Eccleſiæ & Reſurrectione Chriſti. Scriptura de fœdere. *Ver.* 23. 1

Conſerva me, O Domine mi, quoniam
ego in te confiſus ſum. Dixi Domino, 2

[illegible] *operatus eſt in eis omnem voluntatem ſuam.* 3

תהלים : יז

ſanguine de eorũ libamina libabo non ,*feſtinarunt alienum* ,eorũ *idola* Multiplicentur
4 ירבו עצבותם אחר מהרו בל־אסיך נסכיהם מדם
,meæ hæreditatis pars Dominus .meis labiis *ſuper* eorũ nomina aſſumam nec
5 ובל־אשא את־שמותם על־שפתי: יהוה מנת־חלקי
mihi ceciderunt *Funes* .meam ſortem *ſuſtentans* tu : mei calicis &
6 וכוסי אתה תומיך גורלי: חבלים נפלו־לי
Domino Benedicam *.me ſuper* ſpecioſa hæreditas etiam : jocundis in
7 בנעמים אף־נחלת שפרה עלי: אברך את־יהוה
Poſui .mei renes me erudierunt noctibus etiam : mihi conſuluit qui
8 אשר יעצני אף־לילות יסרוני כליותי: שויתי
Propterea *.nutabo non* mea dextera à quoniam ; ſemper me coram Dominum
9 יהוה לנגדי תמיד כי מימיני בל־אמוט: לכן
.fiducia in habitabit mea caro *etiam* : mea gloria exultavit & ,meum cor eſt lætatum
שמח לבי ויגל כבודי אף־בשרי ישכן לבטח:
tuum miſericordem *dabis non* : ſepulchro in meã animam relinques non Quoniam
10 כי לא־תעזב נפשי לשאול לא־תתן חסידיך
cum lætitiarum ſaturitas ; *vitarum* ſemitam me facies Scire *.foveam videre*
11 לראות שחת: תודיעני ארח חיים שבע שמחות את־
.perpetuò tua dextera in jocunditates : *tuis faciebus*
פניך נעמות בימינך נצח:

PSAL. XVII. יז

,meo clamori intende ,juſtitiam Domine Audi .Davidi Oratio
1 תפלה לדוד שמעה יהוה צדק הקשיבה רנתי
meũ judicium *tuis faciebus A* .doli labiis *non in* , meam orationem auſculta
2 האזינה תפלתי בלא שפתי מרמה: מלפניך משפטי
viſitâſti ,meum cor Probâſti *.rectitudines* videant tui oculi : egrediatur
3 יצא עיניך תחזינה מישרים: בחנת לבי פקדת
opera *Ad* .meum os *tranſibit* non cogitavi *: invenies* non ,me conflâſti , nocte
4 לילה צרפתני בל־תמצא זמתי בל־יעבר־פי: לפעלות
Suſtentando *.effractoris* ſemitas cuſtodivi ego ,tuorum labiorum *verbo in* hominum
5 אדם בדבר שפתיך אני שמרתי ארחות פריץ: תמך
quoniam ,te invocavi Ego .mei pedes *nutarunt non* , tuis *orbitis* in meos greſſus
6 אשרי במעגלותיך בל־נמוטו פעמי: אני־קראתיך כי־
Segrega .meum eloquium audi ,mihi tuam aurem inclina : Deus me exaudies
7 תענני אל הט־אזנך לי שמע אמרתי: הפלה
.tuam dexteram in inſurgentibus ab : ſperantium ſervator tuas *miſericordias*
חסדיך מושיע חוסים ממתקוממים בימינך:
faciebus A *.me abſcondes* tuarum alarum umbra in ,oculi *filiæ nigredinem* ut me Cuſtodi
8 שמרני כאישון בת־עין בצל כנפיך תסתירני: מפני
9 .me *ſuper circumdabunt anima in* meorũ inimicorum : me vaſtaverunt qui , impiorum
רשעים זו שדוני איבי בנפש יקיפו עלי:
nunc *noſtro Greſſu* *.ſuperbia in* ſunt locuti ſuo ore : clauſerunt ſuo Adipe
10 חלבמו סגרו פימו דברו בגאות: אשרנו עתה
11 ,ejus Similitudo .terram in declinandum ad *ponent* ſuos oculos *nos* circundederunt
12 סבבוני עיניהם ישיתו לנטות בארץ: דמינו
.abditis in manentis leunculi ut & , rapere *appetet* , leonis ut
כאריה יכסוף לטרף וככפיר ישב במסתרים:

תרגום TARGUM.

4 מסגן צלמניהון מן בתר כן מוחן לקרבא
קורבניהון לא אקבל ברעוא נסוכיהון ודם
קורבניהון ולא אדכר שומהון על ספותי:
5 יי מוהבית כלידי וחולקי אנת תסובר עדבי:
6 עדבין נפלו לי בבסימתא אוף אחסנתא
7 שפירא עלי: אבריך יי ית דמלכנני אוף
8 בליליא דראן לי כוליתי: שויתי יי לקובלי
תדירא מטול דשכנתיה שריא עלי לא אזוע:
9 בנין חדא לבי ורנן איקרי אוף בסרי ישרי
10 לרוחצן: מטול דלא תשבוק נפשי לשיול
11 לא תמסור זכאך למחמי בשחיותא: תהודע
לי אורחא דחיי סובעא דחדותא קדם אפך
בסימתא בימינך לעלמין:

יז

1 צלותא לדוד קביל יי פניעתי בצדקה אצית
שבוחי תצלי אודנך לצלותי בדלא ספותי נכל:
2 מן קדמך דיני יפוק עינך תהוין חמין תריצותא:
3 בחנתא לבבי אסערתא עלי בליליא סננתא
לי לא אשכחתא שחיתא חשבית בישותא
4 לא עבר פומי: ברם אכסנתא על עובדיהון
דבני נשא במימר ספותך אנא נטרית ארחות
5 חציפא: סעד אסתורי בהליכתך דלא יזועון
6 רגלי: אנא קריתי יתך מטול תקבל צלותי
7 אלהא צלי אודנך קביל צלותי: פריש
טבותך פריקהון דסברי מן מן דקימין עליהון
8 באידא דימינך: נטר יתי כגלגול די במציעות
9 עינא בטולא דשכנתך תטמור יתי: מן קדם
רשיעיא אלין דמחבלין יתי בעלי דבבי ברעות
10 נפשהון מחזרן עלי: עתרהון סנא שומנהון
11 כסאו פומהון מללו ברברבותא: אסתורנא
השתא חזרו לנא עיניהון משון למפשט
12 בארעא: דמותיה היך אריא דמרגג למתבר
וכשחלא דיתיב בטומריא:

PARAPH. CHALD Verſ. L

Multiplicant idola ſua, & poſtmodum feſtinant, ut offerant munera ſua: non recipiam cum beneplacito libamina eorum, nec ſanguinem oblationum eorum: neque memorabo nomina eorum in labiis meis. Domine pars calicis mei & hæreditatis meæ: tu ſuſtentabis ſortem meam. Sortes ceciderunt mihi in dulcedine: etiam hæreditas præclara ſuper me. Benedicam Domino qui conſuluit mihi; inſuper in nocte caſtigant me renes mei. Poſui *Dominum* in conſpectu meo ſemper, quoniam quieſcit majeſtas ejus *ſuper me*, non movebor. Propterea lætatum eſt cor meum, & exultavit gloria mea: quin & caro mea habitabit in ſecuritate. Quoniam non derelinques animam meam in inferno: non trades juſtum tuum ut videat corruptionem. Docebis me viam vitæ: plenitudo lætitiarum ante faciem tuam, *dulcedines* in dextera tua in æternum.

Oratio Davidis.
PSAL. XVII.

Suſcipe Domine deprecationem meam in juſtitia; attende laudationi meæ; inclina aurem tuam ad orationem meam abſque labiis doli. A conſpectu tuo judicium meum prodibit, oculi tui *videbunt* æquitatem. Probâſti cor meum, viſitâſti ſuper me in nocte, examinâſti me, non inveniſti corruptionem: cogitavi malum, non tranſivit os meum. Verè *arguiſti* opera filiorum hominum in verbo labiorum tuorum, ego obſervavi viam impudentis. Suſtenta greſſus meos in ſemitis tuis, ut non moveantur pedes mei. Ego invocavi te quoniam accipies orationem meam: Deus inclina aurem tuam, audi eloquium meum. Mirandam exhibe puritatem tuam redemptor ſperantium: [*ulciſcere illos*] ab iis qui inſurgunt in ipſos manu dextera tua. Cuſtodi me ſicut pupillam orbicularem quæ eſt in medio oculi: in umbra majeſtatis tuæ abſconde me. A conſpectu impiorum horum qui me perdunt: auctores inimicitiæ meæ deſiderio animarum ſuarum circundederunt me. Opulentia eorum multiplicata eſt; adipe ſuo operti ſunt; ore ſuo locuti ſunt magnifica. Greſſus noſtros nunc circundederunt *nobis*: oculos ſuos ponunt ut ſe diffundant in terram. Similitudo ejus ſicut leonis deſiderantis prædam; & ſicut catuli leonis degentis in luſtris.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

4 * ܢܣܓܘܢ ܟܐܒܝܗܘܢ ܐܚܪܝܐ ܒܥܓܠ. ܘܠܐ ܐܢܣܟ ܢܘܣܟܝܗܘܢ ܡܢ ܕܡܐ: ܘܠܐ ܐܥܗܕ ܫܡܗܝܗܘܢ
5 ܒܣܦܘܬܝ. * ܡܪܝܐ ܡܢܬܐ ܕܝܪܬܘܬܝ ܘܕܟܣܝ: ܐܢܬ ܗܘ ܡܦܢܐ ܠܝ ܝܪܬܘܬܝ. * ܚܒܠܐ ܢܦܠܘ
6
7 ܠܝ ܒܒܣܝܡܬܐ: ܐܦ ܝܪܬܘܬܝ ܫܦܪܬ ܠܝ. * ܐܒܪܟ ܠܡܪܝܐ ܕܡܠܟܢܝ: ܐܦ ܒܠܠܝܐ ܪܕܝܢܝ
8 ܟܘܠܝܬܝ. * ܫܘܝܬ ܠܡܪܝܐ ܩܕܡܝ ܒܟܠܙܒܢ: ܘܗܘܐ ܠܝ ܡܢ ܝܡܝܢܝ ܕܠܐ ܐܙܘܥ. * ܡܛܠ
9
10 ܗܢܐ ܚܕܝ ܠܒܝ ܘܪܘܙ ܐܝܩܪܝ: ܘܐܦ ܒܣܪܝ ܢܫܪܐ ܒܫܠܝܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܒܩܬ ܢܦܫܝ
11 ܒܫܝܘܠ: ܘܠܐ ܝܗܒܬ ܠܚܣܝܕܟ ܕܢܚܙܐ ܚܒܠܐ. * ܘܚܘܝܬܢܝ ܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ: ܘܐܣܒܥ ܡܢ
ܚܕܘܬܐ ܕܦܪܨܘܦܟ. ܘܡܢ ܒܣܝܡܘܬܐ ܕܙܟܘܬܐ ܕܝܡܝܢܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܝܙ *

1 * ܐܬܟܬܒ ܠܕܘܝܕ. ܨܠܘܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܠܕ.
ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܘܚܘܪ ܒܒܥܘܬܝ: ܘܨܘܬ ܠܨܠܘܬܝ ܕܠܐ ܡܢ ܣܦܘܬܐ ܢܟܝܠܬܐ: * ܡܢ
2 ܩܕܡܝܟ ܕܝܢܝ ܢܦܘܩ. ܘܥܝܢܝܟ ܢܚܙܝܢ ܬܪܝܨܘܬܐ: * ܒܚܪܬ ܠܒܝ ܘܣܥܪܬܢܝ ܒܠܠܝܐ.
3 ܘܒܚܪܬܢܝ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ ܒܝ ܥܘܠܐ: ܘܠܐ ܥܒܪܘ ܠܗ ܦܘܡܝ. * ܥܒܕܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܒܡܡܠܠ
4 ܣܦܘܬܐ: ܐܠܐ ܕܢܛܪܬܢܝ ܡܢ ܐܘܪܚܬܐ ܒܝܫܬܐ. * ܘܣܡܟܬ ܗܠܟܬܝ ܒܫܒܝܠܝܟ ܕܠܐ ܢܙܘܥܢ
5 ܦܣܥܬܝ: * ܐܢܐ ܩܪܝܬܟ ܡܛܠ ܕܥܢܝܬܢܝ ܐܠܗܐ. ܨܠܝ ܐܕܢܟ ܠܘܬܝ ܘܫܡܥ ܡܠܝ:
6 * ܘܐܩܝܡ ܩܕܝܫܟ ܒܬܕܡܘܪܬܐ. ܘܦܪܘܩܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܣܒܪܝܢ ܒܟ: ܡܢ ܐܝܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ
7 ܠܘܩܒܠ ܝܡܝܢܟ. * ܢܛܪܝܢܝ ܐܝܟ ܒܒܬܐ ܕܥܝܢܐ: ܘܒܛܠܠܐ ܕܓܦܝܟ ܟܣܝܢܝ. * ܡܢ
8 ܩܕܡ ܚܛܝܐ ܗܠܝܢ ܕܒܙܘܢܝ: ܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܕܢܦܫܝ ܕܚܕܪܘ ܠܝ. * ܣܟܘܪ ܦܘܡܗܘܢ
9
10 ܕܡܠܠܘ ܫܘܒܗܪܐ: * ܫܒܚܘܢܝ ܘܗܫܐ ܚܕܪܘܢܝ. ܘܥܝܢܝܗܘܢ ܣܡܘ ܠܡܪܡܝܘܬܢܝ
11 ܒܐܪܥܐ: * ܕܡܝܢ ܠܐܪܝܐ ܕܒܥܐ ܠܡܛܪܦ. ܘܐܝܟ ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܕܝܬܒ ܒܡܛܫܝܬܐ.
12

Multiplicentur dolores eorum poſtremi citò: nè libem libamina eorum de ſanguine, neque mentionem faciam nominum eorum labiis meis. Domine, portio hæreditatis meæ & calicis mei, tu reſtituis mihi hæreditatem meam. Funes ceciderunt mihi in proſperitatibus, etiam hæreditas mea placuit mihi. Benedicam Dominum, qui conſilium mihi dedit; etiam noctibus caſtigârunt me renes mei. Propoſui Dominum in conſpectu meo omni tempore, & conſtituit ſe ad dexteram meam ne commovear. Propter hoc gaviſum eſt cor meum, & exultavit decus meum; atque etiam caro mea habitabit in quiete: Quoniam non deſtituiſti animam meam in inferno, neque permiſiſti ſancto tuo ut videret corruptionem. Oſtendes mihi viam tuam vitæ, & ſatiabor jucunditate vultûs tui, & ſuavitate victoriæ dexteræ tuæ.

PSAL. XVII.

Scriptus à Davide. Oratio. Verſ. 34.

Audi, Domine ſancte, & conſidera deprecationem meam: auſculta orationem meã, quæ nõ ex labiis doloſis. E conſpectu tuo judicium meum prodeat, & oculi tui videant rectitudinem. Explorâſti cor meum, & viſitâſti me noctu, & examinâſti me, nec inveniſti in me iniquitatem, neque tranſierunt per os meum Opera hominum in ſermone labiorum: ſed me ſervâſti à viis malignis: Et fulſiſti greſſus meos in ſemitis tuis, ne nutarent paſſus mei. Ego vocavi te, quoniam exaudîſti me: Deus, inclina ad me aurẽ tuã, & audi verba mea, Et ſtatue Sanctũ tuũ in prodigiũ, & ſalvatorẽ iis qui ſperant in te, ab inſurgentibus adverſùs dexterã tuã. Cuſtodi me ut pupillam oculi, & umbrâ alarum tuarum protege me. A conſpectu ſceleratorũ horum, qui diripuerunt me: hoſtium animæ meæ, qui me obſederunt. Claude os illorum, quod locutum eſt jactantiam. Laudârunt me, & modò circumvallârunt me: & poſuerunt oculos ſuos ut proſternerent me in terram: Similes ſunt leoni quærenti ad prædandum, & ſicut catulus leonis qui ſedet in latibulo.

Verſio VULG. LAT.

4 Multiplicatæ ſunt infirmitates eorum:
poſtea acceleraverunt. Non congre-
gabo conventicula eorum de ſanguini-
bus: nec memor ero nominum eorum
5 per labia mea. Dominus pars hæredi-
tatis meæ, & calicis mei: tu es, qui re-
6 ſtitues hæreditatem meam mihi. Funes
ceciderunt mihi in præclaris: etenim
7 hæreditas mea præclara eſt mihi. Be-
nedicam Dominum, qui tribuit mihi
intellectũ: inſuper & uſque ad noctem
8 increpuerunt me renes mei. Provi-
debam Dominum in conſpectu meo
ſemper: quoniam à dextris eſt mihi, ne
9 commovear. Propter hoc lætatũ eſt cor
meũ, & exultavit lingua mea: inſuper &
10 caro mea requieſcet in ſpe. Quoniam
non derelinques animã meã in inferno:
nec dabis ſanctũ tuũ videre corruptio-
nem. Notas mihi feciſti vias vitæ, adim-
plebis me lætitiã cũ vultu tuo: delecta-
tiones in dextera tua uſque in finem.

Oratio David. XVI.

1 Exaudi, Domine, juſtitiã meã: inten-
de deprecationem meã. Auribus per-
cipe orationẽ meã, non in labiis doloſis.
2 De vultu tuo judiciũ meũ prodeat: ocu-
3 li tui videant æquitates. Probâſti cor
meũ, & viſitâſti nocte: igne me exami-
nâſti, & non eſt inventa in me iniquitas.
4 Ut non loquatur os meũ opera hominũ:
propter verba labiorũ tuorũ ego cuſto-
5 divi vias duras. Perfice greſſus meos in
ſemitis tuis: ut non moveantur veſtigia
6 mea. Ego clamavi, quoniã exaudîſti me,
Deus: inclina aurẽ tuã mihi, & exaudi
7 verba mea. Mirifica miſericordias tuas,
8 qui ſalvos facis ſperantes in te. A reſi-
ſtentib⁹ dexteræ tuæ cuſtodi me, ut pupil-
lam oculi. Sub umbra alarũ tuarũ pro-
9 tege me: A facie impiorũ qui me af-
flixerunt. Inimici mei animam meam
10 circumdederunt, Adipem ſuum con-
cluſerunt: os eorum locutum eſt ſu-
11 perbiam. Projicientes me nunc cir-
cumdederunt me: oculos ſuos ſtatuerunt
12 declinare in terram. Suſceperunt me
ſicut leo paratus ad prædam: & ſicut
catulus leonis habitans in abditis.

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

4 † Ἐπληθύνθησαν αἱ ἀσθένειαι αὐτῶν, † μετὰ ταῦτα
ἐτάχυναν. † οὐ μὴ συναγάγω τὰς συναγωγὰς
αὐτῶν ἐξ αἱμάτων, † (¹) οὐδὲ μὴ μνησθῶ τῶν ὀνο-
5 μάτων αὐτῶν διὰ χειλέων μου. † Κύριος (α) μερὶς τῆς
κληρονομίας μου καὶ τοῦ ποτηρίου μου, † σὺ εἶ ὁ ἀπο-
6 καθιστῶν τὴν κληρονομίαν μου ἐμοί. † Σχοινία ἐπ-
έπεσάν μοι ἐν τοῖς κρατίστοις, † καὶ γὰρ ἡ κληρονο-
7 μία μου κρατίστη μοί ἐστιν. † Εὐλογήσω τὸν κύριον τὸν
συνετίσαντά με, † ἔτι δὲ καὶ ἕως νυκτὸς ἐπαίδευ-
8 σάν με οἱ νεφροί μου. † (β) Προωρώμην τὸν κύρι-
ον ἐνώπιόν μου διαπαντός, † ὅτι ἐκ δεξιῶν μου ἐστὶν
9 ἵνα μὴ σαλευθῶ. † Διὰ τοῦτο ηὐφράνθη ἡ καρδία
μου, καὶ ἠγαλλιάσατο ἡ γλῶσσά μου, † ἔτι δὲ καὶ ἡ σάρξ
10 μου κατασκηνώσει ἐπ' ἐλπίδι. † Ὅτι οὐκ ἐγκατα-
λείψεις τὴν ψυχήν μου (γ) εἰς ᾅδην, † οὐδὲ δώ-
σεις τὸν ὅσιόν σου ἰδεῖν διαφθοράν. † Ἐγνώρισάς
μοι ὁδοὺς ζωῆς, † πληρώσεις με (δ) εὐφροσύνης
μετὰ τοῦ προσώπου σου, † (ε) τερπνότητες ἐν τῇ δε-
ξιᾷ σου εἰς τέλος.

MS.A. (¹) οὐδ' οὐ μὴ (α) ἡ μερὶς (β) προορώμην (γ) εἰς ᾅδου, (δ) εὐφροσύνην (ε) τερπνότης

Προσευχὴ τοῦ Δαυίδ. ιϛ΄.

1 † Εἰσάκουσον (α) κύριε τῆς δικαιοσύνης μου, †
πρόσχες τῇ δεήσει μου· † ἐνώτισαι τὴν προσευχήν
2 μου οὐκ ἐν χείλεσι δολίοις· † Ἐκ προσώπου σου
τὸ κρίμα μου ἐξέλθοι, † οἱ ὀφθαλμοί μου ἰδέ-
3 τωσαν εὐθύτητας. † Ἐδοκίμασας τὴν καρδίαν
μου, ἐπεσκέψω νυκτός, † ἐπύρωσάς με, καὶ οὐχ
4 εὑρέθη ἐν ἐμοὶ ἀδικία. † Ὅπως ἂν μὴ λαλήσῃ τὸ
στόμα μου τὰ ἔργα τῶν ἀνθρώπων, † διὰ τοὺς
λόγους τῶν χειλέων σου ἐγὼ ἐφύλαξα ὁδοὺς σκληράς. †
5 Κατάρτισαι τὰ διαβήματά μου ἐν ταῖς τρίβοις σου, † ἵνα
6 μὴ (β) σαλευθῇ τὰ διαβήματά μου. † Ἐγὼ ἐκέκρα-
ξα, ὅτι (γ) ἐπήκουσάς μου ὁ θεός· † κλῖνον τὸ οὖς σου
7 ἐμοί, καὶ εἰσάκουσον τῶν ῥημάτων μου. † Θαυμάστωσον
8 τὰ ἐλέη σου, ὁ σώζων τοὺς ἐλπίζοντας ἐπὶ σέ. † Ἐκ
τῶν ἀνθεστηκότων τῇ δεξιᾷ σου, † φύλαξόν με ὡς κό-
ρην ὀφθαλμοῦ· † ἐν σκέπῃ τῶν πτερύγων σου σκεπάσεις
9 με, † Ἀπὸ προσώπου (δ) ἀσεβῶν τῶν ταλαιπωρησάν-
10 των με. † οἱ ἐχθροί μου τὴν ψυχήν μου περιέσχον. † Τὸ
στέαρ αὐτῶν συνέκλεισαν, † τὸ στόμα αὐτῶν ἐλάλησεν
11 ὑπερηφανίαν. † (¹) Ἐκβαλόντες με νυνὶ περιεκύκλωσάν
με, † τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν ἔθεντο ἐκκλῖναι ἐν τῇ γῇ.
12 † Ὑπέλαβόν με ὡσεὶ λέων ἕτοιμος εἰς θήραν, † καὶ
ὡσεὶ σκύμνος οἰκῶν ἐν ἀποκρύφοις.

MS.A. (α) κύριε δικαιοσύνης μου, (β) σαλευθῶσιν (γ) εἰσήκουσέν (δ) ἀσεβῶν, (¹) Ἐκβάλλοντες

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

3 (ſ) Multiplicatæ ſunt infirmi- 4
tates eorũ: poſteà acceleraverũt.
4 Non (g) congregabo [c] conven-
ticula eorum de ſanguinibus: nec
memor ero nominũ eorum per la-
bia mea. 5 Dominus pars hæredi- 5
tatis meæ, & calicis mei: tu es,
qui reſtitues hæreditatem meam
mihi. 6 Funes ceciderunt mihi in 6
præclaris: etenim hæreditas mea
præclara eſt mihi. 7 Benedicã Do- 7
minum, qui tribuit mihi intelle-
ctum: inſuper autem, & uſque ad
noctem erudierunt me renes mei.
8 [d] Providebam Dominum in 8
conſpectu meo [e] ſemper: quoniã
à dextris eſt mihi, ne commove-
ar. 9 Propter hoc lætatum eſt cor 9
meum; & exultavit lingua mea:
inſuper autẽ et caro mea requie-
ſcet in ſpe. 10 Quoniã non dere- 10
linques animã meam in inferno:
neque dabis ſanctũ tuum videre
corruptionem. 11 [f] Notas mihi
feciſti vias vitæ: adimplebis (h)
me lætitiâ (i) cum vultu tuo: (k)
delectationes in dextera tua in
finem.

Oratio ipſius David. XVI. 1

1 Exaudi, Domine, (a) juſtitiã
meã: intende (b) deprecatio-
ni meæ. 2 Auribus percipe oratio-
nem meam; (c) non in labiis dolo-
ſis. 3 A vultu tuo judicium meũ 2
(d) prodeat: (e) oculi mei [a] vide-
ant (f) æquitates. 4 [b] Probâſti 3
cor meũ, viſitâſti nocte: igne me
examinâſti, et non eſt inventa in
me iniquitas. 5 Ut non loquatur 4
os meum opera hominum; propter
verba labiorũ tuorum 6 ego (g)
cuſtodivi vias duras. (h) Perfice 5
greſſ⁹ meos in ſemitis tuis: ut non
moveantur veſtigia mea. 7 Ego 6
clamavi, quoniam exaudîſti me,
Deus: inclina aurẽ tuam mihi, &
exaudi verba mea. 8 Mirifica mi- 7
ſericordias tuas, qui ſalvos facis
ſperantes in te, A reſiſtentibus de- 8
xteræ tuæ, 9 cuſtodi me, ut pupil-
lam oculi. [c] (i) In tegmine ala-
rum tuarũ protege me, A facie impiorũ, qui me [d] afflixerunt. 10 Inimici mei animã meã 9
circundederunt: Adipem (k) ſuum concluſerunt: os eorum loquutũ eſt ſuperbiã. 11 (l) Pro- 10 11
jicientes me nunc circundederunt me: oculos ſuos ſtatuerunt (m) declinare in terram.
12 (n) Suſceperũt me, ſicut leo parat⁹ ad prædã, & ſicut catul⁹ leonis habitans in occultis. 12

Verſio ÆTHIOPICA.

በዝኀ፡ደዌሆሙ፡ወእምዝ፡እስተፋጠኑ፡፡=፡ 3
ወኢይትኀበር፡ውስተ፡ማኅበሮሙ፡ዘደም፡፡ 4
ወኢይዜክር፡አስማቲሆሙ፡በአፉየ፡፡=፡ እ 5
ግዚአብሔር፡መክፈልተ፡ርስትየ፡ወጽዋዕየ፡፡
አንተ፡ውእቱ፡ዘታገብእ፡ሊተ፡ርስትየ፡፡=፡
አሕባለ፡ወረዉ፡ሊተ፡የአኀዙኒ፡፡ወርስትየ 6
ሰ፡እኁዝ፡ውእቱ፡ሊተ፡፡=፡ እባርኮ፡ለእ 7
ግዚአብሔር፡ዘአለበወኒ፡፡ወዓዲ፡ሌሊተ፡
ገሠጸኒ፡ኵልይትየ፡፡=፡ ዘልፈ፡እሬእዮ፡ለእ 8
ግዚአብሔር፡በቅድሜየ፡በኵሉ፡ጊዜ፡፡
እስመ፡በየማንየ፡ውእቱ፡ከመ፡ኢይትሀወ
ክ፡፡=፡ በእንተዝ፡ታፈሥሐ፡ልብየ፡ወተሐ 9
ሠየ፡ልሳንየ፡፡ወዓዲ፡በተስፋሁ፡ኀደረ፡ሥጋ
የ፡፡=፡ እስመ፡ኢተኀድጋ፡ውስተ፡ሲኦል፡ለነ 10
ፍስየ፡፡ወኢትሁብ፡ለጻድቅከ፡ይርአይ፡ሙ
ስና፡፡=፡ ወአርአይከኒ፡ፍኖተ፡ሕይወት፡፡ 11
ወአጽገብከኒ፡ሐሤተ፡ምስለ፡ገጽከ፡፡ወት
ፍሥሕት፡ውስተ፡የማንከ፡ለዝሉፉ፡፡=፡

መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፲፮ እግዚኦ፡ስምዓኒ፡ጽድቅየ፡፡ወአጽምአኒ፡ 1
ስእለትየ፡፡=፡ወአጽምአኒ፡ጸሎትየ፡ዘኢኮነ፡ 2
በከናፍረ፡ጕሕሉት፡፡=፡እምቅድመ፡ገጽከ፡ 3
ይወፅእ፡ፍትሕየ፡፡አዕይንትየኒ፡ርእየ፡ጽድ
ቀከ፡፡=፡ ኀወጽከኒ፡ሌሊተ፡ወፈተንኮ፡ለልብ 4
የ፡፡ወአመከርከኒ፡ወኢተረክበ፡ዓመፃ፡በላዕ
ሌየ፡፡=፡ ከመ፡ኢይንብብ፡አፉየ፡ግብረ፡እጓ 5
ለ፡እመሕያው፡፡በእንተ፡ቃለ፡ከናፍሪከ፡፡=፡
አነ፡ዐቀብኩ፡ፍናወ፡ዕፁባተ፡፡አጽንዖን፡ለመ 6
ካይድየ፡ውስተ፡ፍናትከ፡፡ከመ፡ኢይድኀፅ፡
ሰኰናየ፡፡=፡ አነሰ፡ጸራኅኩ፡እስመ፡ሰማዕ 7
ከ፡እግዚአብሔር፡፡አጽምእ፡እዝነከ፡ኀቤ
የ፡ወስምዓኒ፡ቃልየ፡፡=፡ አሰብሐ፡ለምሕረ 8
ትከ፡፡ዘያድኅኖሙ፡ለእለ፡ይትዌከሉከ፡፡እ
ምእለ፡ይትቃወምዋ፡ለየማንከ፡፡=፡ ዕቀበ 9
ኒ፡ከመ፡ብንተ፡ዓይን፡፡ወበጽላሎተ፡ክነፊከ፡
ክድነኒ፡፡ እምገጸ፡ኃጥአን፡ እለ፡ የኀሰሩ
ኒ፡፡=፡ ጸላእትየሰ፡ እስተሐየጽዋ፡ ለነፍስ 10
የ፡፡ወቆጸሩ፡ እማዑቶሙ፡፡ወነበበ፡ ትዕቢ
ተ፡ አፈሆሙ፡፡=፡ ሰደዱኒ፡ ይእዜኒ፡ ዓገቱ 11
ኒ፡፡ወአትሐቱ፡ አዕይንቲሆሙ፡ ውስተ፡ምድ
ር፡፡=፡ ወተመጠዉኒ፡ከመ፡አንበሳ፡ ዘጽኑ 12
ሕ፡ለመሲጥ፡፡ወከመ፡እጓለ፡አንበሳ፡ ዘይነብ
ር፡ተኀቢኦ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] in conventiculis eorum [d] Semper providebam [e] omni tempore: [f] Et notas etiam *PSAL.* [a] videant æquitatem. [b] Viſitâſti me nocte, & probâſti cor meum: [c] Sub umbra [d] contemnunt:

Verſio *ARABICA*. cum Interpretatione *LATINA*.

* كثرت اوجاعهم وبعد ذلك اسرعوا * انا لا اجمع مع الجموع على الدماء ولا اذكر بفمي اسماءهم * 4
* الرب نصيب ميراثي وكاسي * انت ترد الي ميراثي * حبال المساحة وقعت علي من الاعزاء وان ميراثي 5 6
لثابت لي * اُبارك الرب الذي افهمني * وفي الليالي اوعظتني كليتاي * سبقت الي ربي * الرب امامي 7 8
في كل حين * لانه عن يميني لكيلا ازل * لاجل هذا فرح قلبي وهلل لساني * وحل جسدي 9
مطمئنا على الرجا * لانك لم تخل نفسي في الجحيم * ولم تدع صفيك يرى الفساد * عرفتني 10 11
سبل الحياة * تملاني فرحا بوجهك * ومن نعيم يمينك الى الابد *

* المزمور السادس عشر لداود *

* صلاة عن الرجل التام وعن المسيح نفسه ومن يتخلص على يده * صلاة لداود * استيخا لج * 1
* اسمع يا الله بري * وانظر الي تواضعي * وانصت لصلاتي بشفتين غير غاشتين * من قدامك 2 3
فليخرج قضاي * ولينظر عيناي الاستقامة * جربت قلبي وتعاهدتني ليلا * جربتني فلم تجد في 4
ظلما ولم يتكلم فمي باعمال البشر * من اجل كلام شفتيك حفظت طرقا صعبة * لكيما يشتد 5 6
في سبلك خوصي ولا تزل خطاي * واذا دعوتك استجب لي * اللهم انصت لي بسمعك وتقبل 7
دعاي * وليتعجب من رحمتك يا مخلص المتوكلين عليك * خلصني بيمينك من المضادين 8
لي * احفظني يا رب مثل حدقة العين * وبظل جناحيك ظللني * من وجه المنافقين الذين 9 10
اجهدوني * اعداي الذين اكتنفوا نفسي * تعقدت شحومهم * وتكلمت افواههم بالكبريا * 11
* عند ما اخرجوني احاطوا بي * ونصبوا عيونهم ليضربوا في الارض * استقبلوني مثل الاسد 12 13
المستعد للفريسة * ومثل الشبل الذي ياوي في خفية *

Multiplicati ſunt dolores eorum, ac pro- 4
inde feſtinaverunt. Ego non conveniam
cum turbis ad ſanguines, nec recordabor
labiis meis nominum eorum. Dominus 5
pars hæreditatis meæ, & calix meus: tu
reſtitues mihi hæreditatem meã. Funes 6
menſorii ceciderunt ſuper me ex potentio-
ribus, & hæreditas mea perpetua qui-
dem eſt mihi. Benedicam Dominum 7
qui intelligere fecit me: & in noctibus
commonuerunt me renes mei. Anteverti 8
Dominum: Dominus in conſpectu meo
eſt in omni tempore, quoniam ipſe eſt ad
dexteram meam, ne labar. Propterea læ- 9
tatũ eſt cor meum, & exultavit lingua
mea, & habitavit corpus meum tutum in
ſpe. Quoniam tu degere non feciſti ani- 10
mam meã in inferno, neque permiſiſti
electũ tuũ videre corruptionem. Notifi- 11
câſti mihi ſemitas vitæ. Adimplebis me
lætitiâ vultu tuo, & ſuavitate dexteræ
tuæ in æternum.

PSAL. XVI. Davidis.

Oratio ex perſona viri perfecti, & 1
Chriſti met ipſius, & cujuſlibet
ab eo redempti: Oratio Davi-
dis. Verſ. 33.

Audi, O Deus, juſtitiã meã, & vide 2
humilitatẽ meã, et auſculta oratio-
nẽ meã cũ labiis non doloſis. E conſpectu 3
tuo prodeat judiciũ meũ, & videant ocu-
li mei æquitatẽ. Probâſti cor meũ, & vi- 4
ſitâſti me noctu: tentâſti me, & non inve-
niſti in me ſcelus: nec locutũ eſt os meũ
opera hominũ. Propter verba labiorũ tuo- 5
rum cuſtodivi vias difficiles: ut robora- 6
retur in ſemitis tuis ſurrectio mea, & ne
laberentur greſſ⁹ mei. Et cùm invocavero 7
te, exaudi me: Deus, præbe mihi auditũ
tuũ, & accepta deprecationem meam, Et 8
mirabilis reddatur miſericordia tua. O
Salvator confidentiũ in te, ſalva me dex-
terâ tuâ ab adverſantibus mihi. Cuſtodi 9
me, O Domine, ut pupillã oculi, & um-
brâ alarũ tuarũ obumbra me, A facie im- 10
piorum qui me vexaverunt. Inimicorum
meorum, qui circundederunt animã meã,
Condenſatæ ſunt adipes eorum, & locuta 11
ſunt ora eorũ ſuperbiã. Poſtquã ejecerunt 12
me circundederunt me: & fixerunt oculos
ſuos, ut percuterent me ipſo terrã. Occur- 13
rerũt mihi tanquã leo parat⁹ ad prædã, et
ſicut catul⁹ leonis qui habitat in latibulo.

תהלים : יח

meam animam erue : eum incurva ,ejus *facies* præveni , Domine Surge
13 קומה יהוה קדמה פניו הכריעהו פלטה נפשי
,*tempore* de viris à , Domine *tua manu* viris A ,*tuo gladio* impio ab
14 מרשע חרבך : ממתים ידך יהוה ממתים מחלד
ſaturabuntur ,eorum ventrem implebis tuo abſcondito & : vita in *eorum pars*
חלקם בחיים וצפינך תמלא בטנם ישבעו
: *tuas facies* videbo juſtitia in Ego .ſuis parvulis ſuum reſiduum *reponent* & : filii
15 בנים והניחו יתרם לעולליהם : אני בצדק אחזה פניך
.*tuam imaginem evigilando in* ſatiabor
אשבעה בהקיץ תמונתך :

PSAL. XVIII. יח

verba Domino eſt locutus qui David Domini ſervo Victori
1 למנצח לעבד יהוה לדוד אשר דבר ליהוה את־דברי
omnium *vola* de eum Dominus eripuit die in : hujus cantici
השירה הזאת ביום הציל־יהוה אותו מכף כל־
.mea fortitudo Domine te Diligam : dixit Et .Saul manu de & ,ſuorū inimicorū
2 איביו ומיד שאול : ויאמר ארחמך יהוה חזקי :
mea petra ,meus Deus ,meus erutor & ,mea arx & ,mea petra Dominus
3 יהוה סלעי ומצודתי ומפלטי אלי צורי
Laudatum .mea elevatio ,meæ ſalutis cornu & ,meum ſcutum : eo in ſperabo
4 אחסה־בו מגני וקרן ישעי משגבי : מהלל
funes me Circumdederunt .ſervabor meis inimicis ab & ,Dominum invocabo
5 אקרא יהוה ומן־איבי אושע : אפפוני חבלי־
; me circundederunt inferni *Funes* .me terrebant *belijahal* torrentes & , mortis
6 מות ונחלי בליעל יבעתוני : חבלי שאול סבבוני
ad & ,Dominum invocabo *mihi* anguſtia In .mortis laquei me prævenerunt
7 קדמוני מוקשי מות : בצר־לי אקרא יהוה ואל־
meus clamor & : meam vocem ſuo templo de audiet ; clamabo meum Deum
אלהי אשוע ישמע מהיכלו קולי ושועתי
fundamenta & ,terra contremuit &,ſe movit Et .ejus aures in introibit *ejus facies ad*
8 לפניו תבוא באזניו : ותגעש ותרעש הארץ ומוסדי
fumus Aſcendit .*ei fuit furor* quoniam ,*ſunt commota* & : ſe moverunt montium
9 הרים ירגזו ויתגעשו כי־חרה לו : עלה עשן
inclinavit Et .eo ab ſunt ſuccenſi carbones : *comedet* ejus ore ex ignis & ,ejus *naſo* in
10 באפו ואש־מפיו תאכל גחלים בערו ממנו : ויט
,Cherub ſuper equitavit Et .ejus pedibus ſub caligo & : deſcendit & , cœlos
11 שמים וירד וערפל תחת רגליו : וירכב על־כרוב
,ſuum latibulum *obſcuritatem Ponet* .*venti* pennas ſuper volavitque ,volavit &
12 ויעף וידא על־כנפי־רוח : ישת חשך סתרו
.*æthereum* nubibus aquarum tenebroſitas , ejus tegmen ejus circuitibus in
סביבותיו סכתו חשכת־מים עבי שחקים :
.ignis carbones & ,grando ; tranſierunt ejus nubes eo coram fulgorem Propter
13 מנגה נגדו עביו עברו ברד וגחלי־אש :
grando : ſuam vocem *dabit* altiſſimus & , Dominus cœlis in tonavit Et
14 וירעם בשמים יהוה ועליון יתן קלו ברד
fulgura & : eos *diſſipavit commovit* & , ſuas ſagittas miſit Et .ignis carbones &
15 וגחלי־אש : וישלח חציו ויפיצם וברקים
.eos *conturbavit* & , *multiplicavit*
רב ויהמם :

תרגום TARGUM.

13 קום יי אקדם אפוי חמתיה פצא נפשי מן רשיעא
14 דאתחייב קטול בסיפך : וצדיקיא דמסרין
נפשיהון מטולתך יי למיתותא בארעא חולקהון
בחיי עלמא ובטשיותך טבא יתמלין כריסהון
15 יסבעון בנין וישבקון שיורהון לטליהון : אנא
בקושטא אחמי סבר אפך אשבע בעדן דאתער
מן איקר פרצופך :

יח

1 לשבחא על נסיא דאתרחישו לעבדא דיי לדוד
דשבח בנבואה קדם יי ית פתגמי שירתא הדא
על כל יומיא דשזביה יי מן ידא דכל בעלי דבבוי
2 ומחרבא דשאול : ואמר אחבבנך יי תוקפי : יי
3 תוקפי ורחצני ומשזיב יתי אלהא דאתרעי בי
קרבני לדחלתיה תריסי דמן קדמוי אתיהב לי
4 תקוף ופורקן על בעלי דבבי רחצני : אמר דוד
בתושבחתא אנא מצלי קדם יי ומן בעלי דבבי
5 פריק יתי : אקפתני עקא כאתא דיתבא על
מתברא וחיל לית לה למילד והיא מסכנא
6 לממת וסיעת טלומיא בעתתיני : משרית חייבין
7 אקפוני אקדימו יתי דמזינין במני קטיל : בדעיקא
לי אנא מצלי קדם יי וקדם אלהי אנא מתחנן
ומקבל צלותי מן היכליה ובעותי קדמוי
8 מתקבלא באודנוי ומתעבדא : ואתרגיפת
ואתרגישת ארעא ואשית טוריא זעו ואתרטישו
9 מטול דתקיף ליה : סליק ודוניה דפרעה היך
קוטרא דבכן שלח רוגזיה כאשא בערא דמן
קדמוי משיציא מזופיתיה כגומרין די נור דלקא
10 ממימריה : וארכן שמיא ואתגלי יקריה וענן
11 אמטתא כבש קדמוי : ואתגלי בגבורתיה על
כרובין קלילין ודבר בתקוף על גדפי זעפא :
12 ואשרי שכנתיה בערפלא ואחזר בענני יקריה
היך מטללתא ואחית מטרין דרעוא על עמיה
ומין תקיפין מן רכפת ענניין דקבלא על רשיעיא
13 מן רומיה דעלמא : מן זהור יקריה ענני שמיא
עברו במזופיתא כגומרין דנור וברדא דלקא
14 מן מימריה : ואכלי מן שמיא יי ועלאה
ארים מימריה רמא ברדא וגומרין די נור :
15 ושדר מימריה היך גירין וברדין וברקין
סגיאין ושגשנון :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Surge Domine, præveni faciem ejus, incurva eum: erue animam meam ab impio, qui meretur interfici gladio tuo. Et juſtorum, qui tradiderunt animas ſuas propter te Domine morti *in* terra, eorum pars eſt in vita æterna; & abſconſione boni tui *implebuntur ventres* corū: ſaturabuntur filii, & relinquent reliquias ſuas puerulis ſuis. Ego in veritate videbo aſpectū faciei tuæ: ſatiabor in tempore quo *evigilavero, de gloria* vultus tui.

PSAL. XVIII.

Ad canendū ſuper mirabilib⁹ quæ abunde contigerunt ſervo Domini Davidi, qui cecinit in prophetia coram Dño verba cantici hujus, pro omnib⁹ diebus quib⁹ liberaverat eum Dñs de manu *omniū* inimicorū ſuorū, & de gladio Saulis. Ait itaque:

DIligam te Domine fortitudo mea. Dominus fortitudo mea & fiducia mea, & liberans me, Deus qui complacuit ſibi in me; adjunxit me timori ſuo: ſcutū meū, quoniā à præſentia ejus data eſt mihi fortitudo & ſalus ſuper auctores inimicitiæ meæ, ſpes mea. *Dixit David*; In hymno ego preces fundo coram Dño, & ab inimicis meis redimit me. Circundedit me anguſtia ſicut mulieris quæ ſedet in partu, nec vis eſt ei pariendi; ipſaq; periclitatur ad mortē; *&* caterva perverſorū conturbavit me. Cohors ſceleratorū obſederūt me, prævenerunt me armati armis occiſionis. Quando anguſtia eſt mihi, ego oro coram Dño, & coram Deo meo ego deprecor: & accipit orationē meā de templo *ſuo*; & deprecatio mea coram ipſo recipitur in auribus ejus, & effectui demandatur. Et contremuit & commota eſt terra, & fundamenta montiū commota ſunt & concuſſa ſunt, quoniā iraſcebatur ei. *Aſcendit inſolentia Pharaonis velut* fumus, *ideò* immiſit furorem ſuum ſicut ignem ardentē, *ita ut à præſentia ej⁹ conſumeret increpatio ejus velut* carbones ignis incenſi à verbo ejus. Et inclinavit cœlos & apparuit gloria ejus, & nubē tenebroſā ſuppoſuit coram ſe. Et viſus eſt in robore ſuo ſuper Cherubin leviſſimos, & adduxit potentiā ſuper alas turbinis: *Et* collocavit majeſtatē ſuā in caligine, & circundata eſt nubibus gloria ejus ſicut tabernaculū: & deſcendere fecit *pluvias benevolentiæ* ſuper populū ſuū, & aquas validas à commotione nubiū tenebroſarū ſuper impios ab altitudine mundi. A ſplendore gloriæ ejus nubes cœli tranſierunt, in increpatione ſicut carbones ignis, & grando ardens à verbo ejus. Et intonuit è cœlis Dñs, & Altiſſimus exaltavit verbū ſuū; projecit grandinem & carbones ignis. Et miſit verbum ſuū tanquā ſagittas, *&* *grandines* & fulgura plurima, & interturbavit eos.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

13 ܩܘܡ ܡܪܝܐ ܩܕܡ ܐܦܝܗܘܢ ܘܐܪܡܝ ܐܢܘܢ. ܘܦܪܘܩ ܠܢܦܫܝ ܡܢ ܪܫܝܥܐ ܘܡܢ ܚܪܒܐ : *
14 ܘܡܢ ܡܝܬܐ ܕܡܝܬܝܢ ܡܢ ܐܝܕܝܟ ܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܡܝܬܐ ܕܫܘܚܬܐ : ܦܠܓ ܐܢܘܢ ܒܚܝܐ. *
ܘܡܢ ܓܙܝܟ ܡܠܝ ܟܪܣܗܘܢ : ܢܣܒܥܘܢ ܒܢܝܐ ܘܢܫܒܩܘܢ ܫܪܟܐ ܠܒܢܝܗܘܢ. * ܐܢܐ ܕܝܢ 15
ܒܙܕܝܩܘܬܐ ܐܚܙܐ ܐܦܝܟ : ܘܐܣܒܥ ܡܐ ܕܐܬܬܥܝܪܬ ܗܝܡܢܘܬܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

1 * ܕܘܝܕ. ܡܘܕܝܢܘܬܐ. ܘܥܠ ܡܣܩܬܗ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡܐ ܩܘ.
2 * ܐܪܚܡܟ ܡܪܝܐ ܚܝܠܝ. * ܘܬܘܟܠܢܝ. ܘܓܘܣܝ ܘܡܦܨܝܢܝ : ܐܠܗܐ ܐܥܫܝܢܐ
3 ܕܐܬܟܠ ܐܢܐ ܥܠܘܗܝ. ܡܥܕܪܢܝ ܘܩܪܢܐ ܕܦܘܪܩܢܝ : ܘܓܘܣܝ ܡܫܒܚܐ. * ܐܩܪܐ
4 ܠܡܪܝܐ ܘܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝ ܐܬܦܪܩ. * ܡܛܠ ܕܚܕܪܘܢܝ ܚܒܠܐ ܕܡܘܬܐ. ܘܪܕܝܐ ܕܥܘܠܐ
5 ܫܓܫܘܢܝ : * ܚܒܠܐ ܕܫܝܘܠ ܚܕܪܘܢܝ. ܩܕܡܘܢܝ ܦܚܘܗܝ ܕܡܘܬܐ : * ܒܐܘܠܨܢܝ ܩܪܝܬ
6 ܠܡܪܝܐ ܘܠܐܠܗܝ ܩܪܝܬ. ܘܫܡܥ ܡܢ ܗܝܟܠܗ ܩܠܝ : ܘܩܥܬܝ ܩܕܡܘܗܝ ܥܠܬ ܒܐܕܢܘܗܝ.
7 * ܐܬܬܙܝܥܬ ܘܪܥܠܬ ܐܪܥܐ : ܘܫܬܐܣܐ ܕܛܘܪܐ ܐܬܬܙܝܥܘ. ܘܐܬܬܠܚܘ ܡܛܠ ܕܐܬܚܡܬ ܥܠܝܗܘܢ : * ܣܠܩ
8 ܬܢܢܐ ܒܪܘܓܙܗ. ܘܢܘܪܐ ܡܢ ܦܪܨܘܦܗ ܐܬܝܩܕܬ : ܘܓܘܡܪܐ ܐܬܚܡܝܘ ܡܢܗ. * ܘܐܪܟܢ ܫܡܝܐ
9 ܘܢܚܬ : ܘܥܪܦܠܐ ܬܚܝܬ ܪܓܠܘܗܝ : * ܪܟܒ ܥܠ ܟܪܘܒܐ ܘܦܪܚ : ܘܦܪܚ ܥܠ ܟܢܦܐ ܕܪܘܚܐ.
10 * ܣܡ ܚܫܘܟܐ ܡܛܫܝܬܗ ܘܟܪܟܗ ܡܛܠܠܬܗ : ܚܫܘܟܐ ܕܡܝܐ ܒܥܢܢܝ ܐܐܪ. * ܡܢ ܙܗܪܐ
11 ܕܡܛܠܠܬܗ : ܥܢܢܘܗܝ ܥܒܕ ܒܪܕܐ ܘܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ. * ܘܪܥܡ ܒܫܡܝܐ ܡܪܝܐ : ܘܡܪܝܡܐ ܝܗܒ
12 ܩܠܗ. ܒܪܕܐ ܘܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ : * ܫܕܪ ܓܐܪܘܗܝ ܘܒܕܪ ܐܢܘܢ. ܘܒܪܩܘܗܝ ܐܣܓܝ ܘܫܓܫ ܐܢܘܢ :
13
14
15

Surge, Domine, ante facies eorum, & proſterne illos, & libera animā meam ab impiis, & a gladio, Et à mortuis qui moriuntur de manibus tuis, Dñe, & à mortuis foveæ. Divides eos in vita, & theſauris tuis imple ventrē eorum. Saturabuntur filii, & relinquent reſiduū filiis ſuis. Ego autem in juſtitia videbo vultum tuum, & ſatiabor cùm expergiſcetur fides tua.

PSAL. XVIII.

Davidis. Gratiarum actio : & de Aſcenſione Chriſti. Verſ. 106.

DIligam te, Domine, fortitudo mea, Et ſpes mea, & refugiū meū, & liberator meus: Deus fortiſſime, cui confido, adjutor meus, & cornu ſalutis meæ, & aſylum meū glorioſum. Invocabo Dñm, & ab inimicis meis ſalvabor. Quoniā circundederunt me dolores mortis, & torrentes iniquorum conturbaverunt me: Funes inferni obſederunt me, præceſſerunt me laquei mortis. In tribulatione mea vocavi Dñm, & ad Deum meū clamavi, & audivit de templo ſuo vocē meā, & clamor meus ad eum ingreſſus eſt in aures ejus. Commota eſt & contremuit terra, & fundamenta montiū concuſſa ſunt, & ſciſſa quoniā ſuccenſuit eis, Aſcendit fumus in ira ejus, & ignis à facie ejus exarſit, & carbones incēſi ſunt ab eo. Et inclinavit cœlū atq; deſcēdit, & caligines ſub pedib⁹ ejus. Equitavit ſuper Cherubim & volavit, volavitque ſuper alas venti. Poſuit tenebras pro latibulo ſuo, & vallavit eū tabernaculū ejus: tenebræ aquarū in nubibus aeris. Præ fulgore tabernaculi ſui, nubes ſuas fecit grandinē & carbones ignis: Et intonuit in cœlo Dñs, & Altiſſimus dedit vocē ſuā, grandinē atq; carbones ignis. Miſit ſagittas ſuas, & diſſipavit eos: & fulgura ſua multiplicavit, conturbavitque illos.

Verſio VULG. LAT.

13 Exurge, Domine, præveni eum, & ſup-
planta eum: eripe animam meam ab
14 impio, frameam tuam. Ab inimicis
manûs tuæ. Domine, à paucis de terra
divide eos in vita eorum: de abſcondi-
tis tuis adimpletus eſt venter eorum.
Saturati ſunt filiis: & dimiſerunt reli-
15 quias ſuas parvulis ſuis. Ego autem in
juſtitia apparebo conſpectui tuo: ſatia-
bor cùm apparuerit gloria tua.

1 In finem puero Domini David, qui lo-
cutus eſt Domino verba cantici hu-
jus, in die, quâ eripuit eum Dominus
de manu omnium inimicorum ejus,
& de manu Saul, & dixit; (2 *Reg.*
22. 2.)

XVII.

2 DIligam te, Domine, fortitudo mea:
3 Dominus firmamentum meum, & refu-
gium meum, & liberator meus. Deus
meus adjutor meus, & ſperabo in eum.
Protector meus, & cornu ſalutis meæ,
4 & ſuſceptor meus. Laudans invocabo
Dominum, & ab inimicis meis ſalvus
5 ero. Circumdederunt me dolores mor-
tis: & torrentes iniquitatis conturba-
6 verunt me. Dolores inferni circumde-
derunt me: præoccupaverunt me laquei
7 mortis. In tribulatione mea invocavi
Dominum, & ad Deum meũ clamavi:
Et exaudivit de templo ſancto ſuo vo-
cem meam: et clamor meus in con-
ſpectu ejus, introivit in aures ejus.
8 Commota eſt, & contremuit terra:
fundamenta montium conturbata ſunt,
& commota ſunt, quoniam iratus eſt
9 eis. Aſcendit fumus in ira ejus: &
ignis à facie ejus exarſit: carbones ſuc-
10 cenſi ſunt ab eo. Inclinavit cœlos, &
11 deſcendit: & caligo ſub pedibus ejus. Et
aſcendit ſuper Cherubim, & volavit:
12 volavit ſuper pennas ventorum. Et
poſuit tenebras latibulum ſuum, in cir-
cuitu ejus tabernaculum ejus: tenebro-
13 ſa aqua in nubibus aëris. Præ fulgore
in conſpectu ejus nubes tranſierunt,
14 grando, & carbones ignis. Et into-
nuit de cœlo Dominus, & Altiſſimus de-
dit vocem ſuam: grando et carbones
15 ignis. Et miſit ſagittas ſuas, et diſſi-
pavit eos: fulgura multiplicavit, et con-
turbavit eos.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

13 † Ἀνάστηθι κύριε, πρόφθασον αὐτοὺς, καὶ ὑποσκέλισον αὐτοὺς, † ῥῦσαι τὴν ψυχήν μου ἀπὸ ἀσεβοῦς, † ῥομφαίαν σου 14 ἀπὸ ἐχθρῶν τῆς χειρός σου. † κύριε (ε) ἀπολύων ἀπὸ γῆς, † διαμέρεισον αὐτοὺς ἐν τῇ ζωῇ αὐτῶν, † καὶ τῶν κεκρυμμένων σου ἐπλήσθη ἡ γαστὴρ αὐτῶν. † ἐχορτάσθησαν (ζ) υἱῶν, καὶ ἀφῆκαν τὰ κατάλοιπα τοῖς νηπίοις αὐτῶν. 15 † Ἐγὼ δὲ ἐν δικαιοσύνῃ ὀφθήσομαι τῷ προσώπῳ σου, † χορτασθήσομαι ἐν τῷ (η) ὀφθῆναι τὴν δόξαν σου.

MS. A. (ε) ἀπὸ ὀλίγων (ζ) ὑῶν, (η) ὀφθῆναί μοι τὴν

1 Εἰς τὸ τέλος τῷ παιδὶ κυρίου τῷ Δαυὶδ, ἃ ἐλάλησε τῷ κυρίῳ, τοὺς λόγους τῆς ᾠδῆς ταύτης, ἐν ἡμέρᾳ ᾗ (α) ἐρρύσατο αὐτὸν κύριος ἐκ χειρὸς πάντων τῶν ἐχθρῶν αὐτοῦ, καὶ ἐκ χειρὸς Σαοὺλ, καὶ εἶπεν, ιζ'.

2 3 † ἈΓαπήσω σε κύριε (β) ἰσχύς μου. † Κύριος στερέωμά μου, καὶ καταφυγή μου, καὶ ῥύστης μου † ὁ θεός μου βοηθός μου, (γ) ἐλπιῶ ἐπ' αὐτόν· † ὑπερασπιστής μου, καὶ κέρας σωτηρίας μου, (δ) καὶ ἀντιλήπτωρ μου. 4 † Αἰνῶν ἐπικαλέσομαι κύριον, † καὶ ἐκ τῶν 5 ἐχθρῶν μου σωθήσομαι. † Περιέσχον με ὠδῖνες θανάτου, † καὶ χείμαρροι ἀνομίας ἐξετάραξάν με. † 6 Ὠδῖνες ᾅδου περιεκύκλωσάν με. † προέφθασάν με 7 παγίδες θανάτου. † Καὶ ἐν τῷ θλίβεσθαί με ἐπεκαλεσάμην τὸν κύριον, † καὶ πρὸς τὸν θεόν μου ἐκέκραξα· † ἤκουσεν ἐκ ναοῦ ἁγίου αὐτοῦ φωνῆς μου, † καὶ ἡ κραυγή μου ἐνώπιον αὐτοῦ εἰσελεύσεται εἰς τὰ ὦτα αὐτοῦ. 8 † Καὶ ἐσαλεύθη, καὶ ἔντρομος ἐγενήθη ἡ γῆ, † καὶ τὰ θεμέλια τῶν ὀρέων ἐταράχθησαν, † καὶ ἐσαλεύθησαν, ὅτι ὠργίσθη αὐτοῖς ὁ θεός. 9 † Ἀνέβη καπνὸς ἐν ὀργῇ αὐτοῦ, † καὶ πῦρ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ κατεφλόγισεν, 10 † ἄνθρακες ἀνήφθησαν ἀπ' αὐτοῦ. † Καὶ ἔκλινεν οὐρανὸν καὶ κατέβη, † καὶ γνόφος ὑπὸ τοὺς 11 πόδας αὐτοῦ. † Καὶ ἐπέβη ἐπὶ (λ) χερουβὶμ καὶ ἐπετάσθη, 12 † ἐπετάσθη ἐπὶ πτερύγων ἀνέμων. † Καὶ ἔθετο σκότος ἀποκρυφὴν αὐτοῦ, κύκλῳ αὐτοῦ ἡ σκηνὴ αὐτοῦ, 13 † σκοτεινὸν ὕδωρ ἐν νεφέλαις ἀέρων. † Ἀπὸ τῆς τηλαυγήσεως ἐνώπιον αὐτοῦ αἱ νεφέλαι διῆλθον, † 14 χάλαζα καὶ ἄνθρακες πυρός. † Καὶ ἐβρόντησεν ἐξ οὐρανοῦ (ε) κύριος, † καὶ ὁ ὕψιστος ἔδωκε φωνὴν αὐ- 15 τοῦ. † (ζ) Καὶ ἐξαπέστειλε βέλη καὶ ἐσκόρπισεν αὐτοὺς, † καὶ ἀστραπὰς ἐπλήθυνε καὶ συνετάραξεν αὐτούς.

MS. A. (α) ἐρύσατο (β) ἡ ἰσχύς μου. (γ) καὶ ἐλπιῶ (δ) ἀντιλήμπτωρ. (λ) χερουβεὶν (ε) ὁ κύριος, (ζ) Ἐξαπέστειλε

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

13 Exurge, Domine, (o) præveni eos, & ſupplanta eos: [f] Erue animã meam ab impio, (p) frameam tuã. Ab inimicis manûs tuæ. 14 *14 Domine, (q) [g] perdens de terra, diſpertire eos in vita eorum, et (r) de abſconditis tuis adimpletus eſt venter eorũ. 15 [h] Saturati ſunt (ſ) porcinâ, & dimiſerunt reliquias parvulis ſuis. 16 Ego autem in [i] juſtitia* 15 *apparebo conſpectui tuo: ſatiabor, (t) cùm apparuerit gloria tua.*

In finem puero Domini ipſi David, quæ locutus eſt Domino, verba cantici hujus, in die, quâ eripuit eum Dominus de manu omnium inimicorum ejus, & de manu Saul, & dixit; XVII. 1

1 *DIliga te, Domine, [a] fortitudo mea:* 2 *Dominus firmamentum meum, & refugium meũ, & liberator meus.* 3 *2 Deus meus adjutor meus: ſperabo in eum. 3 Protector meus, & cornu ſalutis meæ, & ſuſceptor meus.* 4 *[b] Laudans invocabo Dñm, & ab inimicis meis ſalvus ero.* 4 *5 Circumdederunt me dolores mortis: & torrentes iniquitatis conturbaverunt me.* 5 *6 Dolores inferni circumdederunt me: [c] prævenerunt me laquei mortis.* 6 *7 Et in tribulatione mea invocavi Dominũ, & ad Deũ meum clamavi.* 7 *8 Audivit [d] de templo ſancto ſuo vocẽ meã: & clamor meus in conſpectu ej⁹, introibit in aures ejus.* 8 *9 Et (a) commota eſt, & contremuit terra: & fundamenta montium conturbata ſunt, & (b) commota ſunt, quoniã iratus eſt eis Deus.* 9 *10 Aſcendit fum⁹ in ira ejus: & ignis à facie ejus (c) exarſit: carbones ſuccenſi ſunt ab eo.* 10 *11 Et inclinavit cœlũ, & deſcendit: & caligo ſub pedib⁹ ej⁹.* 11 *12 Et aſcendit ſuper Cherubim, & volavit: volavit ſuper pennas ventorum.* 12 *13 Et poſuit tenebras latibulũ ſuum: in circuitu ejus tabernaculũ ejus: tenebroſa aqua in nubibus aëris.* 13 *14. [e] Præ fulgore in conſpectu ejus nubes tranſierunt: grando, & carbones ignis.* 14 *15 Et intonuit de cælo Domin⁹, & Altiſſim⁹ dedit vocẽ (d) ſuã.* 15 *16 Et emiſit ſagittas, & diſſipavit eos: & fulgura multiplicavit, & conturbavit eos.*

Verſio ÆTHIOPICA.

ተንሥእ፡ እግዚኦ፡ ብጽሖሙ፡ ወዐዕቅጾሙ፡፡ 13
ወባልሖ፡ እምኵናት፡ ለነፍስየ፡፡ ሰይፍከ፡ ሳ
ዕለ፡ ፀር፡ እዴከ፡፡=፡ እግዚኦ፡ እምውሑዳን፡ 14
ምድር፡፡ ናፍቆሙ፡ በሕይወቶሙ፡፡ እምኅቡ
እቲከ፡ ጸግበት፡ ከርሦሙ፡፡=፡ ጸግቡ፡ ደቂ 15
ቆሙ፡ ወኀደጉ፡ ትራፋቲሆሙ፡ ለሕፃናቲሆ
ሙ፡፡=፡ ወአንሰ፡ በጽድቅከ፡ እሬኢ፡ ገጸከ፡፡ 16
ወእጸግብ፡ በርእየ፡ ስብሐቲከ፡፡=፡

ፍጻሜ፡ ዘገብረ፡ እግዚአብሔር፡ ዘደዊት፡
ዘተናገረ፡ ለእግዚአብሔር፡ በቃለ፡ ማ
ኀሌት፡ በዕለተ፡ አድኀኖ፡ እግዚአብ
ሔር፡ እምእደ፡ ኵሎሙ፡ ጸላእ
ቱ፡ ወእምእደ፡ ሳኦል፡ ወይቤ፡፡

12 አፈቅረከ፡ እግዚኦ፡ በኀይልየ፡፡ እግዚአ 1
ብሔር፡ ኀይልየ፡ ወጸወንየ፡ ወመድኀኒየ፡፡=፡
እምላኪየ፡ ወረዳኢየ፡ ወእትዌከል፡ ቦቱ፡፡=፡ 2
መስመንየ፡ ወቀርነ፡ ሕይወትየ፡ ወምስካይ 3
የ፡፡=፡ እንተ፡ ሶበ፡ ጸዋዕክዎ፡ ለእግዚብሔር፡ 4
እድኅን፡ እምፀርየ፡፡=፡ አኀዛኒ፡ ፃዕረ፡ ሞ 5
ት፡፡ ወውኂዘ፡ ዐመፃ፡ ሆከኒ፡፡=፡ ወዓገተኒ፡ 6
ጻዕረ፡ ሲኦል፡፡ ወበዝሐኒ፡ መሥገረ፡ ሞት፡፡=፡
ወሶበ፡ ተመንደብኩ፡ ጸዋዕክዎ፡ ለእግዚብሔ 7
ር፡፡ ወጸራኅኩ፡ ኀበ፡ አምላኪየ፡፡=፡ ወሰም 8
ዓኒ፡ በጽርሐ፡ መቅደሱ፡ ቃልየ፡፡ ወጽራኅየኒ፡
ቦአ፡ ቅድሜሁ፡ ውስተ፡ እዘኒሁ፡፡=፡ ርዕደት፡ 9
ወአድለቅለቀት፡ ምድር፡፡ ወአንቀልቀሉ፡ መሰ
ረታተ፡ አድባር፡፡ ተሀውኩ፡ እስመ፡ ተምዐ
ሙ፡ እግዚአብሔር፡፡=፡ ወዐርገ፡ ጢስ፡ እመ 10
ዓቱ፡፡ ወነደደ፡ እሳት፡ እምቅድመ፡ ገጹ፡፡ ኀ
ተወ፡ አፍሐመ፡ እምኔሁ፡፡=፡ አጽነነ፡ ሰማ 11
ያተ፡ ወወረደ፡፡ ወቆባር፡ ታሕተ፡ እገሪሁ፡፡=፡
ተጽዕነ፡ ላዕለ፡ ኪሩቤል፡ ወሰረረ፡፡ ወሰረረ፡ 12
በክነፈ፡ ነፋስ፡፡=፡ ወረሰየ፡ ጽልመተ፡ ምስ 13
ዋሮ፡፡ ወአውደ፡ ጽላሎቱ፡፡ ወጽልመ፡ ማያ
ት፡ በውስተ፡ ደመናት፡፡=፡ ወእምብርሃነ፡ ገጹ፡ 14
ኀለፈ፡ ደመናት፡ ቅድሜሁ፡፡ ወበረድ፡ አፍሐ
መ፡ እሳት፡፡=፡ ወአንጐድጐደ፡ እግዚ 15
አብሔር፡ በሰማያት፡፡ ወልዓል፡ ወኀበ፡ ቃ
ሎ፡፡=፡ ፈነወ፡ አሕፃሁ፡ ወዘረዎሙ፡፡ አብ 16
ዝኀ፡ መባርቅቲሁ፡ ወሆኮሙ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [f] Eripe animam meam à lancea, gladius tuus ſuper inimicos manûs tuæ. [g] à paucis de terra, [h] Saturati ſunt filii eorum, & [i] juſtitia tua *PSAL. xvii.* [a] omnibus viribus meis: Dominus fortitudo mea & refugium [b] Cùm invocavero Dominum, ab [c] multiplicati ſunt mihi laquei [d] in templo [e] Et præ fulgore vult⁹ ej⁹, nubes tranſierunt ante eũ.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 * قم يا رب ادركهم وعرقلهم * ونج نفسي من المنافقين * ومن سيفك من اعدايك * يا رب
15 عن قريب سدهم في الارض * اقسمهم في حياتهم من دخايرك * امتلت بطونهم من لحم الخنازير *
16 شبع بنوهم * وتركوا الفضلات لاطفالهم * وانا بالبر اترايي لوجهك * واشبع عند ظهور مجدك
1 * المزمور السابع عشر لداود * في الاخر لفتي الرب داوود وهو ما ذكر للرب على
التسبحة في اليوم الذي خلصه من ايدي اعدايه ومن يد شاول * استيخن قيا *
2 * احبك يا رب قوتي * الرب ثباتي وملجاي ومخلصي * الهي عوني وعليه توكلي * ساتري
3 وقرن خلاصي * اسبح الرب وادعوه * وانجو من اعداي * لان غمرات الموت اكتنفني *
4 واودية الاثم اقلقتني * احاطت بي اهوال الجحيم * فخاخ الموت ادركتني * وعند شدتي دعوت
5 الرب * والي الهي صرخت * سمع من هيكل قدسه صوتي * ودعاي امامه يدخل الي مسامعه *
6 * تزلزلت الارض وارتعدت * وتحركت اساسات الجبال وتزعزعت لان الرب غضب عليها * صعد
7 الدخان من غضبه * والتهبت النار امامه * اشتعل منه جمر النار * طاطا السماء ونزل *
8 والضباب تحت رجليه * ركب على الكروبيم وطار * طار على اجنحة الرياح * جعل الظلمة له
9 حجابا * تحيط مظلته * ماء مظلم في سحب الهواء * من بريق وجهه جازت السحب قدامه *
10 بردا وجمر نار * ارعد الرب من السماء * وابدى العلي صوته * ارسل سهاما وفرقهم *
11 اكثر البرق واقلقهم *
12
13
14
15

Exurge, O Domine, apprehende eos, & illaquea eos: Et libera animam meam ab impiis, & à gladio tuo, nempè *ab inimicis tuis.* 14 *O Domine, mox diſperde illos in terra: ſepara eos in vita eorum à theſauris tuis. Expleti ſunt ventres eorũ carne porcorum: ſaturati ſunt filii eorũ,* 15 *& reliquerunt reliquias parvulis ſuis. Ego autem in juſtitia apparebo vultui tuo, & ſatiabor in apparitione gloriæ tuæ.* 16

PSAL. XVII. Davidis.

De fine: Puero Domini, Davidi. Et eſt *carmen*, quod cecinit Domino, in die quâ eripuit eum de manibus inimicorum ejus, & de manu Saulis, Verſ. 111. 1

DIligo te, O Domine mi, fortitudo mea. 2 *Dominus firmitas mea, & refugium meũ, & Salvator meus: Deus meus, adjutoriũ meũ, & in ipſo fiducia mea: Protector meus, & cornũ ſalutis meæ.* 3 *Laudabo Dominũ, & invocabo eũ, & redimar ab inimicis meis.* 4 *Quoniam anguſtiæ mortis circundederunt me: & torrentes iniquorum conturbaverunt me.* 5 *Circundederunt me tempeſtates inferni: laquei mortis comprehenderunt me.* 6 *Et in mea tribulatione invocavi Dominum, & ad Deum meum clamavi. Audivit de templo ſanctitatis ſuæ vocem meam, & deprecatio mea ante ipſum ingredietur ad aures ejus.* 7 *Tremuit terra, & trepidavit: & mota ſunt fundamenta montium, & tremefacta ſunt, eò quòd Dominus iratus eſt eis.* 8 *Aſcendit fumus ex furore ejus, & inflammatus eſt ignis ante eum, accenſi ſunt ex eo carbones ignis.* 9 *Inclinavit cœlum, & deſcendit, & caligo ſub pedibus ejus.* 10 *Equitavit ſupra Cherubim, & volavit, volavit ſuper alas ventorum.* 11 *Fecit tenebras ſibi latibulum, circundantes tabernaculum ej⁹: aqua tenebroſa in nubibus aëris.* 12 *Ex fulgore vultûs ej⁹ tranſierunt nubes coram eo, in grandinibus, & carbones ignis.* 13 *Intonuit Domin⁹ de cœlo, & edidit Altiſſimus vocem ſuã.* 14 *Miſit ſagittas, & diſſipavit eos: multiplicavit fulgura, & conturbavit eos.* 15

תהלים : יח

orbis fundamenta ſunt diſcooperta & , aquarum *alvei* apparuerunt Et
16 ויראו אפיקי מים ויגלו מוסדות תבל
Mittet *.tui naſi* venti flatum propter : Domine tuam increpationem propter
17 מגערתך יהוה מנשמת רוח אפך : ישלח
meo inimico ab me Eruet .multis aquis de me extrahet ,me capiet ,altitudine de
18 ממרום יקחני ימשני ממים רבים : יצילני מאיבי
.me *præ* robuſtiores fuerunt quoniam , me habentibus odio ab & , forti
עז ומשנאי כי־אמצו ממני :
.mihi *fulcrum in* Dominus fuit & : meæ contritionis die in me Prævenient
19 יקדמוני ביום־אידי ויהי־יהוה למשען לי :
.me in complacuit quoniam , me eruet : latitudinem in me eduxit Et
20 ויוציאני למרחב יחלצני כי חפץ בי :
puritatem ſecundùm , meam juſtitiam ſecundùm Dominus mihi Retribuet
21 יגמלני יהוה כצדקי כבר
non & , Domini vias cuſtodivi Quia .mihi reddet mearum manuum
22 ידי ישיב לי : כי־שמרתי דרכי יהוה ולא
ejus ſtatuta & ,me coram ejus judicia omnia Quoniam .meo Deo à egi impiè
23 רשעתי מאלהי : כי כל־משפטיו לנגדי וחקתיו
.mea iniquitate ab me cuſtodivi & ,eo cum perfectus fui Et .me à *amovebo* non
24 לא־אסיר מני : ואהי תמים עמו ואשתמר מעוני :
puritatem ſecundùm , meam juſtitiam ſecundùm mihi Dominus reddidit Et
25 וישב־יהוה לי כצדקי כבר
cum , eris miſericors miſericorde Cum .ſuis oculis coram mearum manuum
26 ידי לנגד עיניו : עם־חסיד תתחסד עם
perverſo cum & ,eris mundus mundo Cum .eris perfectus perfecto viro
27 גבר תמים תתמם : עם־נבר תתברר ועם־עקש
oculos & ; ſervabis *afflictum* populum tu Quoniam *.te reddes perverſum*
28 תתפתל : כי־אתה עם־עני תושיע ועינים
,Domine meam lucernam illuminabis tu Quoniam .humiliabis excelſos
29 רמות תשפיל : כי־אתה תאיר נרי יהוה
,exercitum *percurram* te in Quoniam *.meam tenebroſitatem* illuminabit meus Deus
30 אלהי יגיה חשכי : כי בך ארץ גדוד
eloquium , *ejus* via perfecta Dei .murum tranſiliam meo Deo in &
31 ובאלהי אדלג־שור : האל תמים דרכו אמרת
Quoniam .eo in ſperantibus omnibus *ipſe* clypeus ; conflatum Domini
32 יהוה צרופה מגן הוא לכל החוסים בו : כי
? noſtrum Deum præter *petra* quis & ? Dominum præter Deus quis
מי אלוה מבלעדי יהוה ומי צור זולתי אלהינו :
Adæquans .meam viam perfectam *dedit* & ,fortitudine me *accingens* Deus
33 האל המאזרני חיל ויתן תמים דרכי : משוה
34 *Docens* .me ſtare faciet mea excelſa ſuper & , cervarum ſicut meos pedes
35 רגלי כאילות ועל במותי יעמידני : מלמד
dediſti Et .meis brachiis æreus arcus *conteritur* & , bellum ad meas manus
36 ידי למלחמה ונחתה קשת־נחושה זרועתי : ותתן
tua manſuetudo & ; me fulciet tua dextera & , tuæ ſalutis ſcutum mihi
לי מגן ישעך וימינך תסעדני וענותך
nutârunt non & : me ſubtus meum greſſum Dilatabis .me multiplicabit
37 תרבני : תרחיב צעדי תחתי ולא מעדו
.mea crura
קרסלי :

תרגום TARGUM.

16 ואתחמיאו עמקי מיא ואתגליאו שתאסיא דתבל
מסופיתא מן קדם יי ממימר תקוף רוגזך. 17 שלח
נביוהי מלך תקיף דיתיב בתקיף רומא דברני
שזבני מעממין סגיאין : 18 שזבני מן סנאי ארום
עשינין הנון ומן בעלי דבבי ארום אתגברו עלי :
19 אקדמו לי ביום טלטולי והוה מימרא דיי סמיך
לי : 20 ואפיק יתי לרוחא שזבני מטול דאתרעי בי :
21 יגמלנני יי כזכותי כברירות ידי יתיב לי : 22 מטול
דנטרית אורחן דתקנן קדם יי ולא הלכית
ברשע קדם יי : 23 מטול דכל דינוי גלו לקבלי
למעבדהון וקימוי לא אעדי מני : 24 והויתי שלים
בדחלתיה והויתי נטיר נפשי מחובין : 25 ופרע יי
לי היך זכותי כברירות אידי קדם מימריה : 26 עם
אברהם דאשתכח חסיד קדמך אסגיתא למעבד
חסדא עם זרעיה דיצחק דהוה שלים בדחלתך
אשלמתא מימר רעותך עמיה : 27 עם יעקב דהוה
בריר קדמך בחרתא בנוי מן כל עממיא
ואפרשתא זרעיה מן כל פסילא ועם פרעה
וזרעיה ומצראי דחשיבו מחשבן בישן על עמך
בלבלתנון במחשבתהון : 28 מטול דאנת ית עמא
בית ישראל דחשיכין בין עממיא בגלותא אנת
עתיד למפרק ובמימרך אומיא תקיפיא
דמתגברין עליהון תמאיך : 29 מטול דאנת תנהר
שרגא דישראל דמטפיא בגלותא דאנת הוא
מריה דנהורא דישראל יי אלהי יפקנני מחשכא
לנהור יחמנני בניחמותיה דעלמא דעתיד
למיתי לצדיקיא : 30 מטול דבמימרך אסגי משרין
ובמימר אלהי אכבוש כרכין תקיפין : 31 אלהא
דכונן ארחתיה אוריתא דיי בחירא תרים הוא
לכל דמתרחצין עלוי : 32 ארום על נסא ופורקנא
דתעביד למשיחך ולשיורי עמך דישתארון יודון
כל עממיא אומיא ולשניא ויימרון לית אלהא
אלא יי ארום לית בר מנך ועמך יימרון לית
דתקיף אלא אלהנא : 33 אלהא דמזרז לי קמור
בחילא ומתקן שלים ארחי : 34 דמשוי רגלי קלילין
היך אילתא ועל בית תוקפי יקימנני : 35 מליף אידי
למעבד קרבא ומתקיף היך קשת כרכומא
דרעי : 36 ויהבת לי תקוף ופורקן וימינך תסיענני
37 ובמימרך אסגעתני : אפתית פסיעתי באתרי
ולא אודעזע רכובתי :

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Et apparuerunt profunditates aquarum, & diſcooperta ſunt fundamenta orbis ab increpatione corā Domino, à verbo vehementiæ iræ tuæ. Miſit *prophetas ſuos rex fortis qui ſedet in robore* excelſo, accepit me, eripuit me de populis plurimis. Eripuit me ab oſoribus meis, quoniam potentes erant ab inimicis meis, quoniam invaluerant ſupra me. Prævenerunt me in die migrationis meæ, & fuit verbum Domini fulcrum mihi. Et eduxit me in latitudinem: liberavit me, quoniam ſibi complacuit in me. Retribuet mihi Dominus ſecundùm juſtitiam meam, ſecundùm munditiam manuum mearum reddet mihi. Quia cuſtodivi vias rectas ante Dominum, & non ambulavi in improbitate coram *Domino*. Quoniam omnia judicia ejus manifeſta ſunt coram me ut faciam ea : & pacta ejus non removebo à me. Et fui perfectus in timore ejus: & fuit ſervator animæ meæ à peccatis. Et retribuit Dominus mihi ſecundùm meritum meum, ſecundùm munditiam manuū mearū coram verbo ſuo. Cùm Abraham qui repertus eſt pius ante te multiplicâſti facere pietatem, cum ſemine Iſaac, qui fuit perfectus in timore tuo, perfeciſti verbum voluntatis tuæ cum eo. Cùm Jaacob qui *fuit purus* coram te, elegiſti filios ejus de cunctis populis, ſegregaſtíque ſtirpem ejus ab omni falſitate ; & cum Pharaone *& ſemine ejus* & Ægyptiis qui cogitaverant cogitationes malas adverſus populum tuum, conturbatos reddidiſti eos in cogitationibus ſuis. Quoniam tu populum *domus Iſrael* egenorum *inter populos in captivitate*, tu, [*inquam*,] ſalvaturus es ; & in verbo tuo gentes fortes, quæ roborantur adverſum eos, deprimes. Quoniam tu illuminabis lucernā *Iſrael quæ extincta eſt in captivitate, tu enim auctor es lucis Iſrael :* Domin' Deus meus *educet me è tenebris in lucem, videre faciet me conſolationem ſeculi venturi juſtis.* Quoniam in verbo tuo multiplicabo exercitus, & in verbo Dei mei ſubjugabo arces munitas. Deus cujus rectæ ſunt viæ, lex Domini electa, clypeus ipſe eſt omnib' qui confidunt in eo. Quoniā propter miraculū & redemptionem quæ edes Chriſto tuo & reliquiis populi tui quæ remanebūt, laudes dicēt omnes populi, nationes & linguæ: dicentq; Non eſt De' niſi DOMINUS ; *quoniā* non eſt niſi tu: popul' autē tu' dicet, Non eſt fortis niſi De' noſter. Deus qui accingit me cingulo in virtute, & dirigit perfectū iter meū. *Qui* ponit pedes meos agiles ſicut cervarū, & in domo fortitudinis meæ ſtare me faciet. Docet manus meas ad belligerandū, & corroborat velut arcū chalybeū brachia mea. Et dediſti mihi fortitudinē *& ſalutē*, & dextera tua auxiliabitur mihi : & verbo tuo adauxiſti me. *Dilatâſti* greſſus meos in loca mea, & non ſunt commoti tali mei.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 [illegible]
17 18 [illegible]
19 [illegible]
20 21 [illegible]
22 [illegible]
23 [illegible]
24 25 [illegible]
26 [illegible]
27 28 [illegible]
29 30 [illegible]
31 [illegible]
32 [illegible]
33 34 [illegible]
35 [illegible]
36 37 [illegible]
[illegible]

Et apparuerunt fontes aquarum, & detecta ſunt fundamenta orbis ab increpatione tua Dñe, & à flatu venti iræ tuæ. Miſit ab alto & extraxit me, atq; excepit me ex aquis multis. Meque liberavit ab hoſtib' meis validis & ab oſorib' meis qui fortiores me erant: Qui prævenerant me in die mœroris mei: Fuitque mihi Dñs Salvator : Et eduxit me in latitudinem, méque ſalvavit, quoniam placui ei. Et retribuit mihi Dñs ſecundùm juſtitiam meam : & ſecundùm puritatem manuum mearum explevit me. Quoniam cuſtodivi vias Dñi, neque defeci à Deo meo. Quoniam omnia judicia ejus coram me ſunt, & leges ejus non averti à me. Et fui ſine macula cum eo & cavi mihi à peccatis. Et rependit mihi Dñs juſtitiam meam, & juxta puritatem manuum mearum coram oculis ejus. Cum puro purus eris, & cum ſimplici ſimpliciter ages. Et cum electo electus eris, & cum obliquo obliquè te geres : Quoniam tu populum miſerum ſervabis, & oculos ſublimes deprimes. Tu illuminabis lucernam meam, Dñs Deus meus illuſtrabit tenebras meas. Quoniam per te curram adverſùs phalangem, & per Deum meum tranſiliam murum. Dei via ſine macula eſt, eloquium Domini probatum, & adjuvans omnes qui confidunt in illo. Quoniam non eſt Deus præter Dominum, neque eſt qui ſit potens ut De' noſter. Deus eſt qui munivit me robore, & dedit immaculatam viam meam. Fecit pedes meos tanquam cervi, & in alto ſtatuit me: Inſtruxit manus meas ad prælium, & corroboravit quaſi arcum æreum brachia mea. Dediſti mihi clypeum ſalutis dextera tua fulciet me, & correptio tua enutriet me. Dilatâſti paſſus meos ſubtus me ne vacillarent vertebræ meæ.

Verſio VULG. LAT.

16 Et apparuerunt fontes aquarum, & revelata
ſunt fundamenta orbis terrarum;
Ab increpatione tua, Domine, ab inſpiratione
17 ſpiritûs iræ tuæ. Miſit de ſummo,
& accepit me: & aſſumpſit me de
18 aquis multis. Eripuit me de inimicis
meis fortiſſimis, & ab his qui oderunt
me: quoniam confortati ſunt ſuper me.
19 Prævenerunt me in die afflictionis meæ:
& factus eſt Dominus protector meus.
20 Et eduxit me in latitudinem: ſalvum me
21 fecit, quoniam voluit me. Et retribuet
mihi Dominus ſecundùm juſtitiam
meam, & ſecundùm puritatem manuum
22 mearum retribuet mihi: Quia
cuſtodivi vias Domini, nec impiè geſſi à
23 Deo meo. Quoniam omnia judicia ejus
in conſpectu meo: & juſtitias ejus non
24 repuli à me. Et ero immaculatus cum
eo: & obſervabo me ab iniquitate mea.
25 Et retribuet mihi Dominus ſecundùm
juſtitiam meam: & ſecundùm puritatem
manuum mearum in conſpectu oculorũ
26 ejus. Cum ſancto ſanctus eris, & cum viro
27 innocente innocens eris: Et cum electo
electus eris, & cum perverſo perverteris.
28 Quoniam tu populum humilem
ſalvum facies: & oculos ſuperborũ
29 humiliabis. Quoniam tu illuminas lucernam
meam, Domine: Deus meus, illumina
30 tenebras meas. Quoniam in te eripiar
à tentatione, & in Deo meo
31 tranſgrediar murum. Deus meus, impolluta
via ejus: eloquia Domini igne
examinata: protector eſt omnium ſperantium
32 in ſe. Quoniam quis Deus præter
Dominum? aut quis Deus præter
33 Deum noſtrum? Deus qui præcinxit me
virtute: & poſuit immaculatam viam
34 meam. Qui perfecit pedes meos tanquam
cervorum, & ſuper excelſa ſtatuens
35 me. Qui docet manus meas ad
prælium: & poſuiſti ut arcum æreum,
36 brachia mea. Et dediſti mihi protectionem
ſalutis tuæ: & dextera tua
ſuſcepit me: Et diſciplina tua correxit
me in finem: & diſciplina tua ipſa me
37 docebit. Dilatâſti greſſus meos ſubtus
me: & non ſunt infirmata veſtigia
mea.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

16 † Καὶ ὤφθησαν αἱ πηγαὶ τῶν ὑδάτων, † ϗ (η) ἀνεκαλύφθη
τὰ θεμέλια τῆς οἰκουμένης· † ἀπὸ ἐπιτιμήσεώς
σου κύριε, † ἀπὸ ἐμπνεύσεως πνεύματος ὀργῆς σου.
17 † Ἐξαπέστειλεν ἐξ ὕψους ϗ ἔλαβέ με, † προσελάβετό
18 με ἐξ ὑδάτων πολλῶν. † Ῥύσεταί με ἐξ ἐχθρῶν μου
δυνατῶν, ϗ ἐκ τῶν μισούντων με, † ὅτι ἐστερεώθησαν
19 ὑπὲρ ἐμέ. † Προέφθασάν με ἐν ἡμέρᾳ κακώσεώς μου,
20 † ϗ ἐγένετο κύριος ἀντιστήριγμά μου. † Καὶ ἐξήγαγέ με
εἰς πλατυσμὸν, † ῥύσεταί με, ὅτι ἠθέλησέ (θ) με.
21 † Καὶ ἀνταποδώσει μοι κύριος κατὰ τὴν δικαιοσύνην
μου, † ϗ κατὰ τὴν καθαριότητα τῶν χειρῶν μου ἀνταποδώσει
22 μοι. † Ὅτι ἐφύλαξα τὰς ὁδοὺς κυρίου,
23 † ϗ οὐκ ἠσέβησα ἀπὸ τοῦ θεοῦ μου. † Ὅτι πάντα τὰ
κρίματα αὐτοῦ ἐνώπιόν μου, † ϗ τὰ δικαιώματα αὐτοῦ
24 οὐκ ἀπέστησαν ἀπ' ἐμοῦ. † Καὶ ἔσομαι ἄμωμος μετ' αὐτοῦ,
25 † ϗ φυλάξομαι ἀπὸ τῆς ἀνομίας μου. † Καὶ ἀνταποδώσει
μοι κύριος κατὰ τὴν δικαιοσύνην μου, † ϗ κατὰ τὴν
καθαριότητα τῶν χειρῶν μου † (ι) ἐνώπιον τῶν ὀφθαλμῶν
26 αὐτοῦ. † Μετὰ ὁσίου ὁσιωθήσῃ, † ϗ μετὰ
27 ἀνδρὸς ἀθῴου ἀθῷος ἔσῃ· † Καὶ μετὰ ἐκλεκτοῦ ἐκλεκτὸς
28 ἔσῃ, † ϗ μετὰ στρεβλοῦ διαστρέψεις. † Ὅτι
σὺ λαὸν ταπεινὸν σώσεις, † καὶ ὀφθαλμοὺς ὑπερηφάνων
29 ταπεινώσεις. † Ὅτι σὺ φωτιεῖς λύχνον
μου κύριε, † ὁ θεός μου φωτιεῖς τὸ σκότος
30 μου. Ὅτι ἐν σοὶ ῥυσθήσομαι ἀπὸ πειρατηρίου,
31 † καὶ ἐν τῷ θεῷ μου ὑπερβήσομαι τεῖχος. † Ὁ
θεός μου, ἄμωμος ἡ ὁδὸς αὐτοῦ, † τὰ λόγια
κυρίου πεπυρωμένα, † ὑπερασπιστής ἐστι πάντων † τῶν
32 ἐλπιζόντων ἐπ' αὐτόν. † Ὅτι τίς θεὸς πλὴν τοῦ κυρίου;
33 † ϗ τίς θεὸς πλὴν τοῦ θεοῦ ἡμῶν; † Ὁ θεὸς
ὁ περιζωννύων με δύναμιν, † ϗ ἔθετο ἄμωμον τὴν
34 ὁδόν μου· † Ὁ (κ) καταρτιζόμενος τοὺς πόδας μου
35 ὡσεὶ (λ) ἐλάφου, † ϗ ἐπὶ τὰ ὑψηλὰ ἱστῶν με· † Διδάσκων
χεῖράς μου εἰς πόλεμον. † ϗ ἔθου τόξον
36 χαλκοῦν τοὺς βραχίονάς μου, † Καὶ ἔδωκάς μοι
ὑπερασπισμὸν σωτηρίας μου· † ϗ ἡ δεξιά σου ἀντελάβετό
μου, † ϗ ἡ παιδεία σου ἀνώρθωσέ με εἰς
37 τέλος, † ϗ ἡ παιδεία σου αὐτή με διδάξει. † Ἐπλάτυνας
τὰ διαβήματά μου ὑποκάτω μου, † ϗ
οὐκ ἠσθένησαν τὰ ἴχνη μου.

MS.A. (η) ἀνεκαλύφθησαν (θ) με. ῥύσεταί με ἐξ ἐχθρῶν μου δυνατῶν, ϗ ἐκ τῶν μισούντων με. Καὶ ἀνταποδώσει (ι) ἀνταποδώσει μοι ἐνώπιον (κ) καταρτίζων (λ) ἐλάφους,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

15 *Et apparuerunt fontes aquarum: & revelata ſunt fundamenta orbis terrarum. 18 Ab increpatione tua, Domine, ab inſpiratione ſpiritꝰ iræ tuæ. 19 Miſit de ſummo, et accepit me: aſſumpſit me de aquis multis. 20 Eruet me de inimicis meis potentibus, & ab his, qui oderunt me: quoniã confortati ſunt ſuper me. 21 Prævenerũt me in die (e) afflictionis meæ: & factus eſt Dominus [e] firmamentum meum. 22 Et eduxit me in latitudinem: (f) eruet me, quoniã voluit me. 23 Et retribuet mihi Dominus ſecundũ juſtitiam meam: & ſecundùm puritatem manuum mearum retribuet mihi. 24 Quia cuſtodivi vias Domini: nec impiè geſſi à Deo meo. 25 Quoniam omnia judicia ejus in conſpectu (g) meo: & juſtitiæ ejus non receſſerunt à me. 26 Et ero immaculatus cum eo: & obſervabo me ab iniquitate mea. 27 Et retribuet mihi Dominus ſecundùm juſtitiam meam, & [†] ſecundùm puritatem manuum mearum in conſpectu oculorum ejus. 28 Cum ſancto (h) [f] ſanctificaberis, & cum viro innocente innocens eris. 29 Et cum electo electus eris, & cum perverſo (i) perverteris. 30 Quoniam [g] tu populum (k) humilem ſalvum facies, & oculos ſuperborum humiliabis. 31 Quoniam tu illuminabis lucernam meam, Domine: Deus meus, [h] illuminabis tenebras meas. 32 Quoniam in te eripiar à tentatione, & in Deo meo tranſgrediar murum. [i] Deus meus, immaculata via ejus: (l) eloquia Domini igne examinata: protector eſt omnium ſperantium in ſe. 34 Quoniam quis Deus præter Dominum? & quis Deus præter Deum noſtrum? 35 Deus qui præcinxit me virtute, & poſuit immaculatam viam meam. 36 Qui perficit pedes meos tanquam (m) cervi: & ſuper excelſa (n) ſtatuit me. 37 Qui docet manus meas ad prælium: [k] & poſuiſti arcum æreum brachia mea. [l] Et dediſti mihi (o) protectionem (p) ſalutis meæ: & dextera tua ſuſcepit me, 39 [m] Et diſciplina tua correxit me in finem: (q) & diſciplina tua ipſa me docebit. 40 Dilatâſti greſſus meos ſubter me: & non ſunt infirmata veſtigia mea.*

Verſio ÆTHIOPICA.

16
አስተርአየ፡አንቅዕተ፡ማያት፡፡ ወተከሠ 17
ተ፡መሰረታተ፡ዓለም፡፡=፡ ወእምተግሣጽ 18
17 ከ፡ እግዚኦ፡፡ ወእምእስትንፋሰ፡መዐት
ከ፡፡=፡ ፈነወ፡እምአርያም፡ወነሥአኒ፡፡ 19
18 ወተመጠወኒ፡እማይ፡ ብዙኅ፡፡=፡ወአድኀ 20
ነኒ፡ እምፀርየ ፡ ጽኑዓን፡፡ ወእምጸላእ
19 ትየ፡እስመ፡ ይኄይሉኒ፡፡=፡ወበጽሑኒ፡በ 21
ዕለተ፡ምንደቤየ፡፡ ወኮነኒ፡እግዚአብሔ
ር፡ምስካይየ፡፡=፡ ወአውፅአኒ፡ ውስተ፡መ 22
20 ርኅብ፡፡ ወአድኀነኒ ፡ እስመ ፡ ይፈቅደ
ኒ፡፡=፡የአስየኒ፡እግዚአብሔር፡በከመ፡ጽ 23
21 ድቅየ፡፡ ወይፈድየኒ፡ በከመ፡ ንጹሐ፡ እደ
ዊየ፡፡=፡ እስመ፡ ዐቀብኩ፡ ፍናዊሁ፡ለእግ 24
ዚአብሔር፡፡ ወኢአበስኩ ፡ ለአምላኪ
22 የ፡፡=፡ እስመ፡ኵሉ፡ ኵነኔሁ፡ቅድሜየ፡ 25
ውእቱ፡፡ ወጽድቁኒ ፡ ኢርሕቀ፡ እምኔ
23 የ፡፡=፡ ወእከውን፡ንጹሐ፡ምስሌሁ፡፡ ወእ 26
ትዓቀብ፡እምኃጢአትየ፡፡=፡የዓስየኒ፡እግ 27
24 ዚአብሔር ፡ በከመ ፡ ጽድቅየ፡፡ ወፈድ
የኒ፡በከመ፡ ንጹሐ፡ እደዊየ፡፡ በቅድመ፡
25 አዕይንቲሁ፡፡=፡ ምስለ ፡ጻድቅ ፡ ትጻድ 28
ቅ፡፡ ወምስለ፡ ብእሲ፡ ንጹሕ ፡ ንጹሐ ፡
ትከውን፡፡=፡ ወምስለ፡ኅሩይ፡ኅሩየ፡ትክ 29
26 ውን፡፡ ወምስለ፡ጠዋይ፡ ትጠዊ፡፡=፡እስ 30
መ፡አንተ፡እግዚኦ ፡ ታድኅኖ ፡ ለሕዝብ፡
27 ትሑት፡፡ወተኀስሮሙ፡ለአዕይንተ፡ ዕቡያ
ን፡፡=፡ እስመ፡ አንተ፡ታበርህ፡ማኅቶትየ፡ 31
28 እግዚኦ፡፡ አምላኪየ፡ ያበርህ ፡ ጽልመ
ትየ፡፡=፡ እስመ፡ብከ፡እድኅን፡እመንሱ 32
ት፡፡ ወበአምላክየ ፡ እትአደዋ፡ ለዐረ
29 ፍት፡፡=፡ ለአምላኪየሰ ፡ ንጹሕ ፡ ፍኖ 33
ቱ፡፡ ቃለ፡እግዚአብሔር ፡ ርሱን፡፡ ወ
30 ምእመናሙ፡ ውእቱ ፡ ለኵሎሙ ፡ እለ፡
ይትዌከሉ ፡ ቦቱ፡፡=፡ መኑ ፡ ውእቱ ፡ 34
31 አምላክ ፡ ዘእንበለ ፡ እግዚአብሔር፡፡
ወመኑ ፡ እግዚአብሔር፡ ዘእንበለ ፡ አም
ላክነ፡፡=፡እግዚአብሔር፡ ዘያቀንተኒ ፡ ኃ 35
32 ይለ፡፡ ወረሰየ፡ ንጹሐ ፡ ለፍኖትየ፡፡=፡
ዘያረትዖን ፡ ከመ፡ ኃየል ፡ ለእገርየ፡፡ 36
ወያቀውመኒ፡ ውስተ ፡ መልዕልት፡=፡
33 ዘይሜህረኒ ፡ ፀብአ ፡ ለእደዊየ ፡፡ 37
34 ወረሰየ፡ቀስተ፡ብርት፡ ለመዝረዕትየ፡፡=፡
ወወሀበኒ ፡ መእመነ ፡ ለመድኀኒትየ፡፡ 38
ወየማንከ፡ ተወክፈኒ፡፡=፡ወትምህርትከ፡ 39
35 ዘያጸንዓኒ ፡ ለዝሉፉ፡፡ ወተግሣጽከ ፡
36 ውእቱ፡ ዘይሜህረኒ፡፡=፡ ወአርኀብከ፡መ 40
ከይደየ ፡ በመትሕቴየ፡፡ ወኢደክማ፡
37 ሰኳንየ ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] protector meus. [†] rependet mihi [f] ſanctus eris, [g] tu, Domine, [h] illuminabit [i] Dei autem mei (.·.) dirigit [k] et poſuit [l] Et dedit [m] Et miſericordia tua quæ me fortior eſt in

Verſio *ARABICA*, cum Interpretatione *LATINA*.

* ظهرت عيون المياه ۔ وانكشفت اساسات المسكونة * من انتهارك يا رب ومن هبوب ريح غضبك ۔ 16
* ارسل من العلي واخذني ۔ نشلني من المياه الغزيرة * وخلصني من اعداي الاشداء ومن 17 18
هبوب يد المبغضين لي * لانهم تقووا اكثر مني * ادركوني في يوم ضري ۔ والرب صار لي سندا * 19
* اخرجني الي السعة وانقذني لانه احبني * تخلصني من اعداي الاشداء * ومن المبغضين 20
لي * جازاني الرب مثل بري ۔ ومثل طهر يدي يعطيني * لاني حفظت سبل الرب ولم انافق علي 21 22
الهي * لان كل احكامه قدامي ۔ وحقوقه لم ابعدها عني * واكون معه بلا عيب ۔ واتحفظ من 23 24
اثمي * يجازيني الرب مثل بري ۔ ومثل طهر يدي امام عينيه * مع البار بارا تكون ۔ ومع العفيف 25 26
عفيفا تكون * ومع المختار مختارا تكون ۔ ومع الملتوي ملتويا تكون * لانك انت يا رب تنجي 27 28
الشعب المتواضع ۔ وتذل اعين المتعظمين * وانت يا رب تضي سراجي الهي انار ظلمتي * 29
* لاني بك انجو من المحن وبالاهي اعبر السور * الهي لا ريب في سبله ۔ كلام الرب مختبر هو ناصر 30 31 32
جميع المتوكلين عليه * لا اله الا الرب ۔ ولا عزيز مثل الاهنا * الله الذي عضدني بقوة ۔ وجعل 33
سبلي بلا عيب * الذي ثبت رجلي مثل الايل ۔ وعلى الاعالي يقيم قدمي * الذي يعلم يدي 34 35 36
القتال ۔ وشدد ذراعي مثل قوس النحاس * اعطيتني نصرة خلاصي ۔ يمينك نصرتي * وادبك 37
قومني الي الانقضاء ۔ وحكمتك تعلمني * اوسعت خطاي تحتي ولم تضعف قوايمي * 38

Apparuerunt fontes aquarum, & detecta 16
ſunt fundamenta habitatæ, ab increpatione
tua, O Domine, & à flatibus venti
indignationis tuæ. Miſit ab alto, & accepit 17
me: extraxit me ex aquis multis. Et 18
liberavit me ab inimicis meis fortiſſimis,
& à flatu manꝰ oſorũ meorũ, quoniã invaluerunt
magis quàm ego: Comprehenderunt 19
me in die penuriæ meæ: at Dominus
factꝰ eſt mihi adminiculũ. Eduxit me 20
in latitudinẽ, & liberavit me, quia amavit
me. Liberes me ab inimicis meis fortiſſimis,
& ab oſoribus meis: Retribuit 21
mihi Dominꝰ ſecundùm innocentiã meã,
& ſecundùm puritatem manuũ mearum
davit mihi; Quoniã ſervavi ſemitas Domini, 22
& non cõmiſi ſcelus contra Deum
meũ. Nam omnia judicia ejus coram me 23
ſunt, & decreta ejus non elongavi à me.
Et ero cum eo ſine macula, & cavebo mihi 24
ab iniquitate mea. Retribuet mihi Dominꝰ 25
ſecundùm innocentiam meã, & ſecundùm
munditiam manuũ mearum ob
oculos ejus. Cum innocente innocens eris, 26
cum & honeſto honeſtus eris: Et cum 27
electo electus eris, & cum perverſo perverſus
eris. Quoniam tu, O Domine, 28
redimes populum humilem, & humilibus
oculos magnificantium ſe. Et tu, 29
O Domine, illuminas lucernam meam:
Deus meus illuminavit tenebras meas.
Quia per te ſalvabor à tentatione, & per 30
Deũ meũ penetrabo murũ. In Dei ſemitis 31
non eſt hæſitatio: Eloquiũ Domini probatũ,
ipſũq; adjuvans omnes confidentes in
eo. Non eſt Deus niſi Dominus, neque eſt 32
fortis ſicut Deꝰ noſter: Deus, qui accinxit 33
me virtute, & reddidit ſemitas meas ſine
macula. Qui ſtabilivit pedes meos tanquã 34
cervorũ, et ſuper excelſa erigit veſtigia
mea. Qui docet manꝰ meas pugnã, et corroboravit 35
brachia mea veluti arcũ æris.
Præbuiſti mihi ſubſidiũ ſalutis meæ: dextera 3
tua adjuvit me. Et diſciplina tua 3
direxit me uſq; ad extremũ, et ſapientia tua docet me. Dilatâſti greſſus meos ſubtus me, et non ſunt debilitata crura mea. 3

תהלים : יח

donec , revertar non & : eos comprehendam & , meos inimicos Persequar
38 ארדוף אויבי ואשיגם ולא־אשוב עד־
subtus cadent : surgere poterunt non & , eos Transfigam .eos consumere
39 כלותם: אמחצם ולא־יכלו קום יפלו תחת
mihi obsistentes incurvabis : bellum ad fortitudine me accinxisti Et .meos pedes
40 רגלי: ותאזרני חיל למלחמה תכריע קמי
me habentes odio & ,cervicem mihi dedisti meorum inimicorum Et .me subtus
41 תחתי: ואיבי נתתה לי ערף ומשנאי
non & , Dominum super ; salvans non & Clamabunt .eos succidam
42 אצמיתם: ישועו ואין מושיע על־יהוה ולא
lutum sicut : venti facies super pulverem ut eos comminuam Et .eos exaudivit
43 ענם: ואשחקם כעפר על־פני־רוח כטיט
me pones , populi contentionibus à me Erues .eos evacuabo platearum
44 חוצות אריקם: תפלטני מריבי עם תשימני
auris auditum Ad .mihi servient cognovi non populus : gentium caput in
45 לראש גוים עם לא־ידעתי יעבדוני: לשמע אזן
,decident extranei Filii .mihi mentientur extranei filii : mihi obtemperabunt
46 ישמעו לי בני־נכר יכחשו־לי: בני־נכר יבלו
,mea petra benedictus & Dominus Vivit .suis carceribus à expavescent &
47 ויחרגו ממסגרותיהם: חי־יהוה וברוך צורי
duxit & ; mihi ultiones dans Deus .meæ salutis Deus se exaltet &
48 וירום אלוהי ישעי: האל הנותן נקמות לי וידבר
mihi obsistentibus ab etiam , meis inimicis ab meus Erutor .me sub populos
49 עמים תחתי: מפלטי מאיבי אף מן־קמי
gentibus in tibi confitebor Propterea .me erues rapinæ viro à ; me exaltabis
50 תרוממני מאיש חמס תצילני: על־כן אודך בגוים
faciens & , sui regis salutes Magnificans .cantabo tuo nomini & ; Domine
51 יהוה ולשמך אזמרה: מגדל ישועות מלכו ועשה
.seculum in usque ejus semini & ,David suo uncto misericordiam
חסד למשיחו לדוד ולזרעו עד־עולם:

תרגום TARGUM.

38 ארדוף סנאי ושיצתנון ולא תבות עד
39 דגמרתנון: אגמרנון ולא יכילו למקם ונפלו
40 קטילין תחות פרסת רגלי: וזרזתא לי חילא
היך קמור למעבד קרבא תברתא עממין דקימין
41 לאבאשא לי תחותי: ובעלי דבבי תברתא
42 קדמי יהבתנון מחורי קדל וסנאי אשיצנון: בען
סעיד ולית להון פריק מצלן קדם יי ולא מקבל
43 צלותהון: ודוששתנון היך גרגשתא דארעא
על אנפי זעפא והיך סין אשקקי בעטית אנון:
44 תשזבנני מפלגת עממיא תנטרינני במיזלי מזין
בריש עממיא עמא דלא חכימת יפלחונני:
45 לשמע אודן ישתמעון לי בני עממיא יכדבון
46 קדמי: בני עממיא יסופון ויטלטלון
47 מבירניתהון: קים הוא יי ובריך תקיפא דמן
קדמוהי מתיהב לי תקוף ופורקן ומרומם
48 אלהא תקוף פורקני: אלהא דעבד פורענותא
לי ומתבר עממיא דקימין לאבאשא לי תחותי:
49 משיזבי מבעלי דבבי לחוד על דקימין
לאבאשא לי תגברנני מן גוג ומשרית עממין
50 דהטופין עמהון תשזבנני: מטול היכנא אודה
קדמך ביני עממיא יי ולשמך אזמר תושבחתא:
51 מסגי למעבד פרקן עם מלכיה ועבד טיבו
למשיחה לדוד ולזרעיה עד עלמא:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Perſequar inimicos meos et *diſperdam* illos: & non convertar donec delevero eos. Delebo eos & non poterunt ſurgere: & cadent occiſi ſubtus plantas pedum meorum. Præcinxiſti me virtute *veluti cingulo* ad belligerandũ, confregiſti populos qui inſurgunt ad malefaciendum mihi ſub me. Et inimicos meos confregiſti coram me: effeciſti ut ipſi terga verterent; oſores autem meos diſperdam. Quærent adjutoré, & non erit eis redemptor: deprecabuntur à Dño, & non recipiet orationem eorũ. Et attrivi eos ut glebam *terræ* ante faciem venti, & ſicut lutum platearum conculcavi eos. Salvabis me à diſſidio populorum: *ſervabis me cùm inceſſero armatus* in *capite* gentium; populus quem non novi, ſerviet mihi. Ad auditum auris obedient mihi: filii *populorum* mentientur in præſentia mea. Filii *populorum* conſumentur, et migrabunt de prætoriis ſuis. Vivit Dominus ipſe & benedictus fortis, à cujus conſpectu datur mihi fortitudo & redemptio: & exaltetur Deus fortitudo redemptionis meæ. Deus qui facit ultionem meam, & conſternit ſub me populos qui inſurgunt ad malefaciendum mihi. Ereptor meus de auctoribus inimicitiæ meæ, atque iis qui inſurgunt ut noceant mihi, valentiorem me facies: à *Gog & caſtris populorũ* cum *quibus* rapina eſt, erues me. Propterea laudabo te inter gentes Domine, & nomini tuo dicam laudes. Magnificans ut faciat redemptionem cum rege ſuo, & beneficentiam præſtans Meſſiæ ſuo Davidi, & ſemini ejus uſque in æternum.

PSALM. XIX. יט

opus & ; Dei gloriam enarrantes Cœli .Davidi canticum Victori
1 למנצח מזמור לדוד: השמים מספרים כבוד־אל ומעשה
2 nocti nox & ; ſermonem eructabit diei Dies .expanſio indicans ejus manuum
3 ידיו מגיד הרקיע: יום ליום יביע אמר ולילה ללילה
.eorum vox ſit audita non ut , verba non & ,ſermo Non .ſcientiam indicabit
4 יחוה־דעת: אין־אמר ואין דברים בלי נשמע קולם:
: eorum eloquia orbis extremum in & ,eorum linea exivit terram omnem In
5 בכל־הארץ יצא קום ובקצה תבל מליהם
egrediens ſponſus tanquam ipſe Et .eis in tabernaculum poſuit Soli
6 לשמש שם־אהל בהם: והוא כחתן יצא
.viam currendum ad potens ut gaudebit ; ſuo thalamo de
מחפתו ישיש כגבור לרוץ ארח:

יט

1 לשבחא תושבחתא לדוד: דמסתכלין בשמיא
2 משתעין יקרא דיי ועובדי ידוי מחוין דמדיקין
3 באוירא: יומא ליומא מוסיף ומביע מימרא
4 ולליליא לליליא פתית ומחוי מנדעא: לית
מימר דתורעמתא ולית מלי דשגושא דלא
5 משתמע קלהון: בכולא ארעא נפק מתח
עניניהון ובסיפי תבל מליהון לשמשא שוי
6 משרוי ויהרא בהון: והוא בצפרא במפקיה
יפוק היך חתנא דנפק מגנוניה ובטיהרא יחדי
היך גברא למרהט בארחא:

Ad laudandum Hymnus Davidi.

PSAL. XIX.

Qui ſuſpiciunt cœlos, enarrant gloriam Domini, & opera manuum ejus annunciant qui ſpeculantur in aëra. Dies diei *pergit & eructat* verbum, & nox nocti *dilatat &* nunciat ſcientiam. Non eſt verbum murmurationis, & non ſunt ſermones tumultus, *quò* non *auditur vox* eorũ. In omnem terram exivit extenſio *ſignificationis* eorum, & in fines orbis verba eorum: Soli poſuit tabernaculum ſplendorem in ipſis. Et ipſe manè *in exortu ſuo prodit* ſicut ſponſus qui egreditur de thalamo ſuo: & in *meridie* lætabitur ut gigas, ut currat in *via*.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

38 *ܐܪܕܘܦ ܒܒܥܠܕܒܒܝ ܘܐܕܪܟ ܐܢܘܢ : ܘܠܐ ܐܬܗܦܟ ܥܕܡܐ ܕܐܫܠܡ ܐܢܘܢ. *ܐܡܚܐ ܐܢܘܢ ܘܠܐ
39 ܢܫܟܚܘܢ ܠܡܩܡ : ܘܢܦܠܘܢ ܬܚܝܬ ܪܓܠܝ. *ܐܣܪܬܢܝ ܚܝܠܐ ܠܩܪܒܐ : ܘܬܟܒܘܫ ܠܕܩܝܡܝܢ 40
41 ܥܠܝ ܬܚܘܬܝ. *ܘܒܥܠܕܒܒܝ ܬܬܒܪ ܩܕܡܝ : ܘܣܢܐܝ ܐܫܬܩ. *ܢܩܥܘܢ ܘܠܐ
42 ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܦܪܘܩܐ : ܢܒܥܘܢ ܡܢ ܡܪܝܐ ܘܠܐ ܢܥܢܐ ܐܢܘܢ. *ܐܫܚܩ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܥܦܪܐ 43
44 ܥܠ ܐܦܝ ܪܘܚܐ : ܘܐܝܟ ܛܝܢܐ ܕܫܘܩܐ ܐܕܘܫ ܐܢܘܢ. *ܬܦܨܝܢܝ ܡܢ ܕܝܢܘܗܝ ܕܥܡܐ :
45 ܘܬܣܝܡܢܝ ܪܫܐ ܠܥܡܡܐ. ܥܡܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܢܦܠܚܘܢܢܝ : *ܘܠܡܫܡܥ ܐܕܢܐ ܢܫܬܡܥܘܢܢܝ.
46 ܒܢܝܐ ܢܘܟܪܝܐ ܢܫܬܥܒܕܘܢ ܠܝ : *ܒܢܝܐ ܢܘܟܪܝܐ ܢܬܡܚܩܘܢ ܘܢܬܚܓܪܘܢ ܡܢ
47 ܫܒܝܠܝܗܘܢ. *ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ ܘܡܒܪܟ ܗܘ ܡܚܝܠܢܝ : ܐܬܪܝܡ ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܝ. *ܐܠܗܐ 48
49 ܕܝܗܒ ܠܝ ܬܒܥܬܐ ܘܡܫܥܒܕ ܥܡܡܐ ܬܚܘܬܝ. *ܘܦܨܝܢܝ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝ : ܘܡܢ ܐܝܠܝܢ
50 ܕܩܝܡܝܢ ܥܠܝ ܬܪܝܡܝܢܝ. ܘܡܢ ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܬܦܨܝܢܝ : *ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܘܕܐ ܠܟ ܒܝܬ ܥܡܡܐ
51 ܡܪܝ. ܘܠܫܡܟ ܐܙܡܪ. *ܡܪܘܡ ܦܘܪܩܢܐ ܕܡܠܟܗ : ܘܥܒܕ ܛܝܒܘܬܐ ܠܡܫܝܚܗ. ܠܕܘܝܕ
ܘܠܙܪܥܗ ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܛ *

1 *ܕܕܘܝܕ. ܦܘܪܩܢܐ ܕܥܡܐ ܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܘܠܢ ܕܝܢ ܬܐܘܠܘ
ܓܝܐ. ܦܬܓܡ ܠܒ.

2 *ܫܡܝܐ ܡܫܬܥܝܢ ܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ. ܘܥܒܕܐ ܕܐܝܕܘܗܝ ܡܚܘܐ ܪܩܝܥܐ : *ܝܘܡܐ 3
4 ܠܝܘܡܐ ܡܒܥ ܡܠܬܐ. ܘܠܠܝܐ ܠܠܠܝܐ ܡܚܘܐ ܝܕܥܬܐ : *ܠܝܬ ܡܠܬܐ ܘܠܐ ܡܠܐ. ܕܠܐ
5 ܡܫܬܡܥ ܩܠܗܘܢ : *ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ ܢܦܩ ܣܘܥܪܢܗܘܢ. ܘܠܣܘܦܝܗ ܕܬܒܝܠ ܡܠܝܗܘܢ.
6 ܘܒܫܡܫܐ ܣܡ ܡܫܟܢܗ ܒܗܘܢ. *ܘܗܘ ܐܝܟ ܚܬܢܐ ܕܢܦܩ ܡܢ ܓܢܘܢܗ : ܢܕܘܨ
ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܠܡܪܗܛ ܒܐܘܪܚܗ.

Perſequar inimicos meos, & aſſequar eos, nec revertar donec abſumam illos. Percutiam eos & non poterunt ſurgere, cadéntq; ſubtus pedes meos. Præcinges me virtute in bello, & proſternes eos qui inſurgunt adverſum me: Et hoſtes meos debellabis coram me, oſoréſque meos ſilere faciam. Clamabunt, & non erit ipſis ſalvator, petent à Domino, & non exaudiet eos, Comminuam illos ut pulverem contra faciem venti, & ſicut lutum plateaũ conculcabo eos. Liberabis me à jurgiis populi, & conſtitues me caput gentium. Populus quem non cognovi, ſervient mihi. Et auditu auris audient me. Filii alieni ſubdent ſe mihi. Filii alieni marceſcent, & claudicabunt à ſemitis ſuis. Vivens eſt Dominus, & benedictus eſt roborator meus. Exaltare, Deus Salvator meus, Deus qui conceſſit mihi vindictam, & ſubdidit gentes ſub me. Et ſalvavit me ab hoſtibus meis; & ab iis qui inſurgunt in me, eripe me, & à viris iniquis liberabis me. Propter hoc confitebor tibi inter gentes, Domine mi, & nomini tuo canam. O exaltans ſalutem Regis ſui, & faciens beneficium chriſto ſuo Davidi, et ſemini ejus uſque in ſeculum.

PSAL. XIX.

Davidis. Liberatio populi ex Ægypto. Nobis autem Theologia. Verſ. 32.

Cœli enarrant gloriam Dei, & opus manuum ejus declarat firmamentum. Dies diei emittit ſermonem, & nox nocti jndicat ſcientiam. Non eſt ſermo neque verba, quorum non audiatur vox; Nam in omnem terram exivit annuntiatio eorum, et in fines orbis verba eorum. Et ſuper ſolem fixit tabernaculum ſuum in eis. Atque is velut ſponſus qui egreditur e thalamo, exultabit ut gigas ad currendam viam ſuam.

Verſio VULG. LAT.

38 Perſequar inimicos meos, & compre-
hendam illos : & non convertar do-
39 nec deficiant. Confringam illos, nec
poterunt ſtare : cadent ſubtus pedes
40 meos. Et præcinxiſti me virtute ad
bellum : & ſupplantaſti inſurgentes in
41 me ſubtus me. Et inimicos meos dediſti
mihi dorſum, & odientes me diſperdi-
42 diſti. Clamaverunt, nec erat qui ſal-
vos faceret ; ad Dñm, nec exaudivit eos.
43 Et comminuam eos, ut pulverem ante
faciem venti : ut lutum platearum de-
44 lebo eos. Eripies me de contradictioni-
bus populi : conſtitues me in caput
45 gentium. Populus, quem non cogno-
vi, ſervivit mihi : in auditu auris obe-
46 divit mihi. Filii alieni mentiti ſunt
mihi, filii alieni inveterati ſunt, &
47 claudicaverunt à ſemitis ſuis. Vivit
Dñs, & benedictus Deus meus, & exal-
48 tetur Deus ſalutis meæ. Deus qui das
vindictas mihi, & ſubdis populos ſub
me, liberator meus de inimicis meis ira-
49 cundis. Et ab inſurgentibus in me ex-
altabis me : a viro iniquo eripies me.
50 Propterea confitebor tibi in nationibus,
Domine : & nomini tuo pſalmum di-
51 cam. Magnificans ſalutes regis ejus, &
faciens miſericordiam chriſto ſuo Da-
vid, & ſemini ejus uſque in ſeculum.

1 In finem, Pſalmus David.

XVIII.

2 COeli enarrant gloriam Dei, & ope-
ra manuum ejus annuntiat firmamen-
3 tum. Dies diei eructat verbum, & nox
4 nocti indicat ſcientiam. Non ſunt lo-
quelæ, neque ſermones, quorum non
5 audiantur voces eorum. In omnem
terram exivit ſonus eorum : & in fines
6 orbis terræ verba eorum. In Sole
poſuit tabernaculum ſuum : et ipſe
tanquam ſponſus procedens de thala-
mo ſuo : Exultavit ut gigas ad cur-
rendam viam,

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

38 † Καταδιώξω τοὺς ἐχθρούς μου, καὶ καταλήψομαι αὐ-
τοὺς, † καὶ οὐκ ἀποστραφήσομαι, ἕως ἂν ἐκλείπω-
39 σιν. † Ἐκθλίψω αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ δύνωνται στῆναι,
40 † πεσοῦνται ὑπὸ τοὺς πόδας μου. † Καὶ περιέζωσάς
με δύναμιν εἰς πόλεμον, † Συνεπόδισας πάντας
41 τοὺς (*) ἐπανισταμένους ἐπ' ἐμὲ ὑποκάτω μου. † Καὶ
τοὺς ἐχθρούς μου ἔδωκάς μοι νῶτον, † καὶ τοὺς μισοῦν-
42 τάς με (μ) ἐξωλόθρευσας. † Ἐκέκραξαν, καὶ οὐκ ἦν
ὁ σώζων· † πρὸς κύριον, καὶ οὐκ (ν) εἰσήκουσεν αὐ-
43 τῶν. † Καὶ λεπτυνῶ αὐτοὺς (ξ) ὡς χοῦν κατὰ πρόσ-
ωπον ἀνέμου, † ὡς πηλὸν πλατειῶν λεανῶ αὐτούς.
44 † (ο) Ῥῦσαί με ἐξ ἀντιλογιῶν λαοῦ, † καταστήσεις
45 με εἰς κεφαλὴν ἐθνῶν· † Λαὸς ὃν οὐκ ἔγνων, ἐδού-
λευσέ μοι, † εἰς ἀκοὴν ὠτίου (π) ὑπήκουσέ μοι.
46 † Υἱοὶ ἀλλότριοι ἐψεύσαντό μοι. † υἱοὶ ἀλλότριοι
ἐπαλαιώθησαν, † καὶ ἐχώλαναν (ρ) ἀπὸ τῶν τρί-
47 βων αὐτῶν. † Ζῇ κύριος, καὶ εὐλογητὸς ὁ θεός
48 μου, † καὶ ὑψωθήτω ὁ θεὸς τῆς σωτηρίας μου. † Ὁ
θεὸς ὁ διδοὺς ἐκδικήσεις ἐμοὶ, † καὶ ὑποτάξας
λαοὺς ὑπ' ἐμὲ, † ὁ ῥύστης μου ἐξ ἐχθρῶν (σ) ὀργί-
49 λων. † Ἀπὸ τῶν ἐπανισταμένων ἐπ' ἐμὲ ὑψώσεις με,
50 † ἀπὸ ἀνδρὸς ἀδίκου (τ) ῥύσῃ με. † Διὰ τοῦτο
ἐξομολογήσομαί σοι ἐν ἔθνεσι κύριε, † καὶ τῷ
51 ὀνόματί σου ψαλῶ. † Μεγαλύνων τὰς σωτηρίας
τοῦ βασιλέως αὐτοῦ, † καὶ ποιῶν ἔλεος τῷ χριστῷ
αὐτοῦ † τῷ Δαυὶδ, καὶ τῷ σπέρματι αὐτοῦ, ἕως
αἰῶνος.

MS.A. (*) ἐπανιστανομένους (μ) ἐξωλέθρευσας. (ν) εἰσήκουσεν (ξ) ὡσεὶ χνοῦν (ο) Ῥῦσαί τε με ἀπὸ ἀντιλογιῶν λαῶν, (π) ἐπήκουσάς μοι. Οἱ υἱοὶ (ρ) ἐκ τῶν (σ) μου ὀργίλων. (τ) ῥῦσαί με.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ιη'.

2 † ΟΙ οὐρανοὶ διηγοῦνται δόξαν θεοῦ, † ποίησιν δὲ
3 χειρῶν αὐτοῦ (*) ἀναγγέλλει τὸ στερέωμα. † (α)
Ἡμέρα τῇ ἡμέρᾳ ἐρεύγεται ῥῆμα, † καὶ νὺξ νυκτὶ (β)
4 ἀναγγέλλει γνῶσιν. † Οὐκ εἰσὶ λαλιαὶ οὐδὲ λόγοι, ὧν
5 οὐχὶ ἀκούονται αἱ φωναὶ αὐτῶν. † Εἰς πᾶσαν τὴν γῆν
ἐξῆλθεν ὁ φθόγγος αὐτῶν, † καὶ εἰς τὰ πέρατα τῆς
6 οἰκουμένης τὰ ῥήματα αὐτῶν. † Ἐν τῷ ἡλίῳ ἔθετο
τὸ σκήνωμα αὐτοῦ, † καὶ αὐτὸς ὡς νυμφίος ἐκ-
πορευόμενος ἐκ παστοῦ αὐτοῦ. † ἀγαλλιάσεται ὡς
γίγας δραμεῖν ὁδὸν αὐτοῦ.

MS.A. (*) ἀναγγελεῖ (α) Ἡ ἡμέρα (β) ἀναγγελεῖ

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

41 Perſequar inimicos meos, & comprehendam illos : & non revertar, [n] donec deficiat. 42 Confringam illos, nec poterunt ſtare : cadent ſubtus pedes meos. 43 Et precinxiſti me virtute ad bellum : ſupplantâſti (r) omnes inſurgentes in me ſubter me : 44 Et inimicos meos dediſti mihi dorſum : et odio habentes me diſperdidiſti. 45 Clamaverunt, nec erat qui ſalvos faceret : ad Dominum, nec exaudivit eos. 46 Et comminuã eos, ut pulverem ante faciẽ venti : ut lutum plateatũ, [o] delebo eos. 47 (ſ) Erue me [p] de contradictionibus populi : conſtitues me in caput gentium. 48 Populus, quem non cognovi, ſervivit mihi : in auditu auris obedivit mihi. 49 Filii alieni mentiti ſunt mihi : filii alieni (t) inveterati ſunt, & claudicaverunt à ſemitis ſuis. 50 Vivit Dominus, & benedictus Deus meus : & exaltetur Deus ſalutis meæ. 51 [q] Deus qui das vindictas mihi : & ſubdis populos ſub me : [r] liberator meus de (u) inimicis iracundis. 52 Ab inſurgentibus in me exaltabis me : à viro iniquo eripies me. 53 Propterea confitebor tibi in gentibus, Domine : et nomini tuo pſallam. 54 Magnificans ſalutes regis ejus ; & faciens miſericordiam chriſto ſuo David, et ſemini ejus in ſeculum.

In finem, Pſalmus ipſi David. 1
XVIII.

1 COEli enarrant gloriã Dei, & opus manuum ejus annuntiat firmamentũ. 2 Dies diei eructat verbum, & nox nocti annuntiat ſcientiam. 3 Non (a) ſunt loquelæ, neque ſermones, quorum non audiantur voces eorum. 4 In omnem terrã exivit ſonus eorum, & in fines orbis terræ [a] verba eorum. 5 In (b) Sole poſuit tabernaculum ſuum : & [b] ipſe tanquam ſponſus procedens de thalamo ſuo. 6 Exultabit ut gigas ad currendam viam (c) ſuam :

Verſio ÆTHIOPICA.

38 እዴግኖሙ : ለፀርየ : ወእኃዝሞሙ :: ወኢይት 41
39 መየጥ : እስከ : አጠፍኦሙ ::=: አመነድ 42
በሙ : ወኢይክሉ : ቀዊመ :: ወይወድቁ : ታ
40 ሕተ : እገርየ ::=: ወታቀንተኒ : ኃይለ : በጸ 43
ብእ :: ወአሰቀጽኮሙ : ለኵሎሙ : እለ :
41 ቆሙ : ላዕሌየ : በመትሕቴየ ::=: ወመጠ 44
ውከኒ : ዘባንሙ : ለፀርየ :: ወሰረውኮሙ :
ለጸላእትየ ::=: ወአውየው : ወኃጥኡ : 45
42 ዘይረድኦሙ :: ወሀበ : እግዚአብሔር :
ወኢሰምዖሙ ::=: አኃርጾሙ : ከመ : 46
43 ጸበል : ዘቅድመ : ገጸ : ነፋስ :: ወእከይደሙ :
ከመ : ጽንጕነ : መርኅብ ::=: አድኅነኒ : እም 47
44 ነቢበ : ሕዝብ :: ወትሠይመኒ : ውስተ : ርእ
ሰ : ሕዝብ ::=: ሕዝብ : ዘኢየአምር : ተቀን 48
45 የ : ሊተ :: ውስተ : ምስማዐ : እዝን : ተሰጥው
ኒ ::=: ውሉደ : ነኪር : ሐሰዉኒ :: ውሉደ : 49
46 ነኪር : በልዩ :: ወሐንከሱ : በፍኖቶሙ ::=:
ሕያው : እግዚአብሔር : ወቡሩክ : አምላኪ 50
47 የ :: ወተለዐለ : አምላክ : መድኃኒትየ ::=:
አምላኪየ : ያገብእ : በቀልየ :: ወአግረረ : 51
ሊተ : አሕዛብ : በመትሕቴየ :: ዘይባልሐ
48 ኒ : እምጸላእትየ : ምንስቃን ::=: ወዘ 52
ያሌዕለኒ : እምእለ : ቆሙ : ላዕሌየ :: እም
49 ብእሲ : ገፋዒ : ባልሐኒ ::=: በእንተዝ : 53
እገኒ : ለከ : በውስተ : አሕዛብ : እግዚኦ ::
50 ወእዜምር : ለስምከ ::=: ዘያዐቢ : 54
51 ለመድኃኒተ : ንጉሥ :: ወይገብር : ምሕ
ረተ : ለመሲሁ :: ለደዊት :: ወለዘርኡ : እስ
ከ : ለዓለም ::

1 ፍጻሜ : መዝሙር : ዘደዊት ::

፲፰ ሰማያት : ይነግሩ : ስብሐተ : እግዚአብሔ 1
ር :: ወግብረ : እደዊሁ : ያየድእ : ሰማያት ::=:
ዕለት : ለዕለት : ትጐሥዕ : ነቢበ :: ወሌሊት : 2
ለሌሊት : ታየድዕ : ጥበበ ::=: አልቦ : ነገረ : 3
ወአልቦ : ነቢበ : ዘኢተሰምዐ : ቃሎሙ ::=:
ውስተ : ኵሉ : ምድር : ወፅአ : ነገሮሙ :: 4
ወእስከ : አጽናፈ : ዓለም : በጽሐ : ነቢቦ
ሙ ::=: ወውስተ : ፀሐይ : ሤመ : ጽላሎቱ :: 5
ወውእቱሰ : ከመ : መርዓዊ : ዘይወፅእ : እም
ጽርሑ ::=: ይትፌሣሕ : ከመ : ይርባሕ : 6
ዘይሜርድ : ፍኖቶ ::

INTERP. ÆTHIOP. [n] donec conſumam eos. [o] conculcabo eos. [p] de ſermone [q] Deus meus [r] & qui liberat me de inimicis meis caſtigatis. PSAL. XVIII. [a] pervenit ſermo eorum. [b] ipſe quidem

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

39 * أطلب أعدائي فأدركهم * ولا أرجع حتى يفنوا * أرميهم فلا يستطيعون القيام * يسقطون
40 41 تحت قدمي * أعضدتني بقوة في الحرب * جعلت كل الذين قاموا علي تحتي * أبدت أعدائي
42 43 واستأصلت الذين شنوني * صرخوا وليس مخلص * والى الرب فلم يستجب لهم * أسحقهم
44 مثل الهباء أمام الريح * ومثل طين الطرق أطأهم * نجني يا رب من مقاومة الشعب * صيرني
45 رأسا للشعوب * الشعب الذي لا أعرفه تعبد لي * بسماع الأذن أطاعني * أبناء الغرباء
46 47 كذبوني * وبنو الغرباء عتقوا وصاروا عرجا في سبلهم * حي هو الرب * ومبارك هو إلهي
48 49 يتعالى إله خلاصي * الله الذي وهب لي الانتقام * أخضع الشعوب تحتي * ونجاني من يد
50 أعدائي المبغضين * ورفعني من الذين قاموا علي * خلصني من إنسان دغل * ومن أجل
51 هذا أعترف لك يا رب في الأمم * وأرتل لاسمك * يا معظم خلاص الملك * وصانع الرحمة
لمسيحه * داود وزرعه إلى الأبد *

1 * المزمور الثامن عشر لداود * قاله في الآخر يوم السبت السابعين * لآ
2 3 * السموات تنطق بمجد الله * والفلك يخبر بصنعة يديه * يوم يبدي كلامه ليوم * وليل
4 5 يبدي علما لليل * ليس بقول ولا بكلمات * الذين لم تكن تسمع أصواتهم * خرجت
6 أصواتهم في الأرض كلها * وبلغ كلامهم أقطار المسكونة * جعل مسكنه في الشمس * وهي
مثل العروس إذا خرج من خدره * تفرح مثل الجبار الذي يسرع في سبيله *

Quærã inimicos meos, & comprehen- 39
dam illos, & non revertar donec abſu-
mantur. Proſternam eos, nec poterunt ſur-
gere : cadent ſubtus pedes meos. Accin- 40
xiſti me fortitudine in bello : poſuiſti
omnes, qui inſurrexerunt adverſum me,
ſubtus me. Perdidiſti inimicos meos, & 41
eradicâſti qui me oderunt. Clamaverunt, 42
nec fuit Salvator : & ad Dominum, &
non exaudivit eos. Comminuã eos veluti 43
glumam ante ventũ, & veluti lutum vi-
arum conculcabo eos. Libera me, O Do- 44
mine, à contradictione populi : conſtitue
me Principem populorum. Populus, quem
non novi, ſervivit mihi. Obedivit mihi 45
per auditum aurium. Filii alienigenarum
abnegaverunt me : Et filii alienorum in- 46
veterati ſunt, & facti ſunt claudi in ſe-
mitis ſuis. Vivus eſt Dominus, & bene- 47
dictus eſt Deus meus : exaltetur Deus ſa-
lutis meæ : Deus qui dedit mihi vindi- 48
ctam, ſubjecit populos mihi. Et libera- 49
vit me de manu inimicorum meorum odi-
entium : & eripuit me ab iis, qui inſur-
rexerunt in me, & ſalvavit me ab ho-
mine doloſo. Propterea confitebor tibi, O 50
Domine, inter populos, & pſallam nomi-
ni tuo, O magnificans ſalutem regis, & 51
faciens miſericordiam erga chriſtum
ſuum David, & ſemen ejus in æternum.

PSAL. XVIII. Davidis.
Dictus eſt ab eo de fine, die 1
Sabbathi. Verſ. 31.

COeli proferunt gloriam Dei, & fir- 2
mamentum narrat artem manuum
ejus. Dies manifeſtat eloquium ejus diei, 3
& nox indicat ſcientiam nocti. Non ſer- 4
mone, neque verbis, quorum non audian-
tur voces. Imò exierunt voces eorum in 5
terram univerſam, & pervenit eloquium
eorum ad terminos habitatæ. Poſuit
habitaculum ſuum in ſole : Et hic veluti 6
ſponſus cùm exit è thalamo ſuo, gaudet
tanquam gigas, qui feſtinat in ſemi-
tis ſuis.

תהלים : כ כא

non & ; eorum extrema ſuper ejus revolutio & ,ejus egreſſio cœlorum extremo Ab
מִקְצֵה הַשָּׁמַיִם מוֹצָאוֹ וּתְקוּפָתוֹ עַל־קְצוֹתָם וְאֵין 7
teſtimoniū ; animam convertens , perfecta Domini Lex .ejus calore à *latens*
נִסְתָּר מֵחַמָּתוֹ׃ תּוֹרַת יְהוָה תְּמִימָה מְשִׁיבַת נָפֶשׁ עֵדוּת 8
l, recta Domini Præcepta .*ſimplicem* efficiens ſapientem , fidele Domini
יְהוָה נֶאֱמָנָה מַחְכִּימַת פֶּתִי׃ פִּקּוּדֵי יְהוָה יְשָׁרִים 9
Domini Timor .oculos illuminans ,purum Domini præceptum : cor lætificantia
מְשַׂמְּחֵי־לֵב מִצְוַת יְהוָה בָּרָה מְאִירַת עֵינָיִם׃ יִרְאַת יְהוָה 10
ſunt juſtificata ; veritas Domini judicia , *perpetuum* in permanens , mundus
טְהוֹרָה עוֹמֶדֶת לָעַד מִשְׁפְּטֵי־יְהוָה אֱמֶת צָדְקוּ
liquore & ,melle *præ dulcia &* ; *multo obrizo præ &* ,*auro præ* Deſiderabilia .pariter
יַחְדָּו׃ הַנֶּחֱמָדִים מִזָּהָב וּמִפַּז רָב וּמְתוּקִים מִדְּבַשׁ וְנֹפֶת 11
.multa merces ea cuſtodiendo in : eis in illuſtratur tuus ſervus Etiam .*favo um*
צוּפִים׃ גַּם־עַבְדְּךָ נִזְהָר בָּהֶם בְּשָׁמְרָם עֵקֶב רָב׃ 12
prohibe *inſolentibus ab* Etiam .me munda occultis ab ? intelliget quis Errores
שְׁגִיאוֹת מִי־יָבִין מִנִּסְתָּרוֹת נַקֵּנִי׃ גַּם מִזֵּדִים חֲשֹׂךְ 13 14
prævaricatione à ero mundus & : ero perfectus tunc ,*me in* dominentur ne,tuū ſervū
עַבְדֶּךָ אַל־יִמְשְׁלוּ־בִי אָז אֵיתָם וְנִקֵּיתִי מִפֶּשַׁע
; *tuas facies ad* mei cordis meditatio & ,mei oris eloquia voluntatē ad Erunt .*multa*
רָב׃ יִהְיוּ לְרָצוֹן אִמְרֵי־פִי וְהֶגְיוֹן לִבִּי לְפָנֶיךָ 15
,mi redemptor & ,mea petra Domine
יְהוָה צוּרִי וְגֹאֲלִי׃

PSAL. XX. כ

te elevet : anguſtiæ die in Dominus te Exaudiat .David canticum Victori
לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ יַעַנְךָ יְהוָה בְּיוֹם צָרָה יְשַׂגֶּבְךָ 1 2
.te fulciat Sijon de & : ſanctitate de *tuum* auxiliū Mittat .Jahacob Dei nomen
שֵׁם אֱלֹהֵי יַעֲקֹב׃ יִשְׁלַח־עֶזְרְךָ מִקֹּדֶשׁ וּמִצִּיּוֹן יִסְעָדֶךָּ׃ 3
tibi Det .Selah ,incineret *tua aſcenſio* & ; tuorum *munerum* omnium Recordetur
יִזְכֹּר כָּל־מִנְחֹתֶךָ וְעוֹלָתְךָ יְדַשְּׁנֶה סֶלָה׃ יִתֶּן־לְךָ 4 5
, tua ſalute in *Ovabimus* .impleat tuum conſilium omne & ; tuum cor ſecundùm
כִלְבָבֶךָ וְכָל־עֲצָתְךָ יְמַלֵּא׃ נְרַנְּנָה בִּישׁוּעָתֶךָ 6
omnes Dominus impleat : elevabimus vexillum noſtri Dei nomine in &
וּבְשֵׁם־אֱלֹהֵינוּ נִדְגֹּל יְמַלֵּא יְהוָה כָּל־
ei reſpondebit ;ſuum *unctum* Dominus fecit ſalv : quòd ſcivi Nunc .tuas petitiones
מִשְׁאֲלוֹתֶיךָ׃ עַתָּה יָדַעְתִּי כִּי הוֹשִׁיעַ יְהוָה מְשִׁיחוֹ יַעֲנֵהוּ 7
hi & ,curru in Hi .ſuæ dexteræ ſalus fortitudinibus in :ſuæ ſanctitatis cœlis de
מִשְּׁמֵי קָדְשׁוֹ בִּגְבֻרוֹת יֵשַׁע יְמִינוֹ׃ אֵלֶּה בָרֶכֶב וְאֵלֶּה 8
,ſe incurvaverunt Hi .memorabimus noſtri Dei Domini *nomine in* nos & ; equis in
בַסּוּסִים וַאֲנַחְנוּ בְּשֵׁם־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ נַזְכִּיר׃ הֵמָּה כָּרְעוּ 9
rex ,ſerva Domine .nos ereximus & ,ſurreximus nos & ; ceciderunt &
וְנָפָלוּ וַאֲנַחְנוּ קַּמְנוּ וַנִּתְעוֹדָד׃ יְהוָה הוֹשִׁיעָה הַמֶּלֶךְ 10
.*nos clamare* die in nos exaudiet
יַעֲנֵנוּ בְיוֹם־קָרְאֵנוּ׃

PSAL. XXI. כא

: rex lætabitur tua fortitudine in Domine .David canticum Victori
לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ יְהוָה בְּעָזְּךָ יִשְׂמַח־מֶלֶךְ 1 2
! vehementer exultabit quàm tua ſalute in &
וּבִישׁוּעָתְךָ מַה־יָּגֶיל מְאֹד׃

תרגום TARGUM.

מְסִיפֵי שְׁמַיָּא מַפְקְנֵיהּ וְתוֹקְפֵיהּ עַל סְטָרֵיהוֹן 7
וְלֵית דְּמִטַּמַּר מִן רְתָחֵיהּ׃ אוֹרָיְתָא דַּייָ שְׁלִימְתָא 8
מְתִיבָא נְפַשׁ סַהֲדוּתָא דַּייָ מְהֵימְנָא מְחַכְּמָא
שַׁבְרָא׃ פִּקּוּדַיָּא דַּייָ תְּרִיצִין מְחַדִּין לִבָּא פִּקּוֹדָא 9
דַּייָ בְּרִירָא מְנַהְרָא עַיְנִין׃ דַּחְלְתָא דַּייָ דַּכְיָא 10
קַיָּמָא לְעָלְמִין דִּינַיָּא דַּייָ הֵימְנוּתָא זַכְיָאוּ כַּחְדָא׃
דִּרְגִּיגִין מִדַּהֲבָא וּמִן אוֹבְרִיזִין סַגִּי וּבְסִימִין 11
יַתִּיר מִן דִּבְשָׁא וּכְבַרְיָתָא חֲלִיאָתָא׃ בְּרַם 12
עַבְדָּךְ אוֹדְהַר בְּהוֹן כְּדִנְטִירִין חִלּוּפֵי הֵיכְנָא
אִתְעֲבֵיד טָבְהוֹן דְּיִשְׂרָאֵל׃ שָׁלְוָתָא מַן יַחְכֵּם 13
וּמִטַּמִּירָתָא זַכֵּי יָתִי׃ בְּרַם מִן זֵידְנַיָּא פְּצָא 14
עַבְדָּךְ דְּלָא יִשְׁלְטוּן בִּי הֵדֵין אֱהֵי בְּלָא
מוּם וְאֱהֵי זַכֵּי מֵחוֹבָא רַבָּא׃ יְהוֹן לְרַעֲוָא 15
מֵימְרֵי פוּמִי וְרִנּוּנַת רַעְיוֹנֵי קֳדָמָךְ יְיָ תּוֹקְפִּי
וּפָרִיקִי׃

כ

לְשַׁבָּחָא תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ יְקַבֵּל צְלוֹתָךְ 1
יְיָ בְּיוֹמָא דְּעָקָא יְשַׁגְבִנָּךְ שְׁמָא דֶּאֱלָהָא 2
דְּיַעֲקֹב׃ יְשַׁדַּר סַעֲדָךְ מִן בֵּית מוּקְדְּשֵׁיהּ 3
וּמִצִּיּוֹן יְסַיְּעִנָּךְ׃ יִדְכַּר כּוּלְהוֹן דּוֹרוֹנָיָתָךְ 4
וַעֲלָוָתָךְ יְדַהֵן לְעָלְמִין׃ יִתֵּן לָךְ כְּרַעְיוֹנָךְ וְכָל 5
מִלְכָּךְ יְשַׁלֵּם׃ יֵימְרוּן עַמָּךְ נְשַׁבַּח בְּפוּרְקָנָךְ 6
וּבְשׁוּם אֱלָהָנָא נִטְקַס יְשַׁלֵּים יְיָ כּוּלְהוֹן
שְׁאֶלָתָךְ׃ הַשְׁתָּא יְדַעִית אֲרוּם פְּרִיק יְיָ 7
מְשִׁיחֵיהּ קַבֵּיל צְלוֹתֵיהּ מִמּוֹתְבֵי דִּשְׁמַיָּא
קַדִּישֵׁיהּ בִּגְבוּרָן פּוּרְקַן יְמִינֵיהּ׃ אִלֵּין 8
בִּרְתִיכִין וְאִלֵּין בְּסוּסָוָן וַאֲנַחְנָא בְּשׁוּם יְיָ
אֱלָהָנָא נִדְכַּר׃ אִנּוּן גְּחַנוּ וּנְפַלוּ וַאֲנַחְנָא 9
אִזְדַּקַּפְנָא וְאִתְחַיַּלְנָא׃ יְיָ פְּרוֹק לָן מַלְכָּא תַּקִּיף 10
קַבֵּל צְלוֹתָן בְּיוֹם מִקְרֵינָא׃

כא

לְשַׁבָּחָא תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ יְיָ בְּעֻשְׁנָךְ יֶחְדֵי 1 2
מַלְכָּא מְשִׁיחָא וּבְפוּרְקָנָךְ כְּמָא יְרַנֵּן לַחְדָא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Ab extremitatibus cœlorum egreſſus ejus, & revolutio ejus uſque ad latera eorū; & non eſt qui ſe abſcondat à fervore ejus. Lex Domini perfecta convertens animam, teſtimonium Domini fidele, præbens ſapientiam inſipienti. Præcepta Domini recta, lætificantia cor: præceptum Domini purum, illuminans oculos. Timor Domini mundus permanet in perpetuum: judicia Domini fidelia pura ſunt ſimul. Deſiderabilia magis quàm aurum & quàm obrizum multum; & ſuavia magis quàm mel & favis dulcis. Sanè ſervus tuus circumſpectus fuit in eis: *prout ſervata fuerint, ſic bene f.* *Iſraeli.* Errores quis noſcat? ſed ab occultis meis munda me. Verùm à ſuperbis libera ſervum tuum, ne dominentur in me: tunc fiam ſine macula, & ero purus à peccato magno. Sint grata verba oris mei, & meditationes mentis meæ apud te Domine fortitudo mea & redemptor meus.

Ad laudandum Hymnus Davidi. PSAL. XX.

Accipiat orationem tuam Dominus in die tribulationis: protegat te nomen Dei Jacob. Mittat auxilium tuum de domo ſanctuarii ſui, & de Sion auxilietur tibi. Recordetur omnium munerum tuorum, & holocauſta tua adoleat ſemper. Tribuat tibi ſecundùm cogitationem tuam, & omne conſilium tuum perficiat. *Dicant populus tuus,* Laudes dicemus in redemptione tua, & in nomine Dei noſtri explicabimus vexillum: impleat Dominus omnes petitiones tuas. Nunc cognovi quòd redemit Dominus Chriſtum ſuum; exaudivit orationem ejus de habitatione cœlorum ejus ſanctorum, virtutibus redemptionis dexteræ ipſius. Illi in curribus & illi in equis, nos autem nomen Domini Dei noſtri in memoriam revocemus. Ipſi incurvati ſunt & ceciderunt: nos autem erecti ſumus, & viribus valuimus. *Domine* redime nos rex fortis ſuſcipe orationem noſtram quo die nos invocamus.

Ad laudandum Hymnus Davidi. PSAL. XXI.

Domine in virtute tua *lætabitur* rex Chriſtus, & in redemptione tua quàm vehementer exultaturus eſt!

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

*ܘܡܢ ܫܘܦܝ ܫܡܝܐ ܡܦܩܗ: ܘܡܫܟܒܗ ܥܠ ܫܘܦܝ ܫܡܝܐ. ܘܠܝܬ ܕܛܐܫ ܡܢ ܒܗܪܗ: 7
*ܢܡܘܣܗ ܕܡܪܝܐ ܕܠܐ ܡܘܡ ܘܡܦܢܐ ܢܦܫܐ. ܣܗܕܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܗܝܡܢܐ ܘܡܚܟܡܐ 8
ܠܫܒܪܐ:*ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܬܪܝܨܝܢ ܘܡܚܕܝܢ ܠܒܐ. ܦܘܩܕܢܗ ܕܡܪܝܐ ܓܒܐ ܘܡܢܗܪ ܠܥܝܢܐ: 9
*ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܕܟܝܐ ܘܩܝܡܐ ܠܥܠܡ. ܕܝܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܒܬܪܝܨܘܬܐ ܘܟܐܢܝܢ ܒܟܠܡܕܡ: 10
*ܘܪܓܝܓܝܢ ܡܢ ܕܗܒܐ ܘܡܢ ܟܐܦܐ ܛܒܬܐ. ܘܒܣܝܡܝܢ ܡܢ ܕܒܫܐ ܘܡܢ ܟܘܪܝܬܐ: *ܐܦ ܥܒܕܟ 11 12
ܢܙܗܪ ܒܗܘܢ. ܘܐܢ ܢܛܪ ܐܢܘܢ ܢܩܒܠ ܦܘܪܥܢܐ ܣܓܝܐܐ: *ܣܟܠܘܬܐ ܡܢܘ ܡܣܬܟܠ. ܘܡܢ ܛܘܫܝܬܐ 13
ܕܟܢܝ:*ܐܦ ܡܢ ܥܘܠܐ ܚܘܣ ܥܠ ܥܒܕܟ. ܕܠܐ ܢܫܬܠܛܘܢ ܒܝ ܒܝܫܐ: ܘܐܙܕܟܐ ܡܢ ܚܛܗܐ. 14
*ܢܗܘܘܢ ܠܨܒܝܢܟ ܡܠܘܗܝ ܕܦܘܡܝ: ܘܪܢܝܐ ܕܠܒܝ ܩܕܡܝܟ ܡܪܝܐ ܥܕܘܪܝ ܘܦܪܘܩܝ. 15

ܡܙܡܘܪܐ ܕܟ

*ܠܕܘܝܕ. ܟܕ ܒܥܐ ܕܢܬܦܨܐ ܡܢ ܩܪܒܐ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܠܢ ܕܝܢ ܗܫܐ ܨܠܘܬܐ ܡܘܬܪܢܝܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܟ. 1
*ܢܥܢܝܟ ܡܪܝܐ ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ: ܘܢܥܕܪܟ ܫܡܗ ܕܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ. *ܢܫܕܪ ܠܟ ܥܘܕܪܢܐ 2 3
ܡܢ ܡܩܕܫܗ: ܘܡܢ ܨܗܝܘܢ ܢܣܡܟܝܟ: *ܢܬܕܟܪ ܠܟ ܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܩܘܪܒܢܝܟ: ܘܥܠܘܬܟ 4
ܗܘ ܢܕܗܢ. *ܢܬܠ ܠܟ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܠܒܟ: ܘܐܝܟ ܟܠܗ ܬܪܥܝܬܟ ܢܫܡܠܐ. *ܘܢܫܒܚ 5 6
ܒܦܘܪܩܢܟ: ܘܒܫܡܗ ܕܐܠܗܢ ܢܬܬܪܝܡ. ܢܫܡܠܐ ܡܪܝܐ ܟܠܗ ܨܒܝܢܟ: *ܗܫܐ 7
ܝܕܥܬ ܕܦܪܩܗ ܐܠܗܐ ܠܡܫܝܚܗ. ܘܥܢܝܗ ܡܢ ܫܡܝܐ ܕܩܘܕܫܗ: ܒܚܝܠܐ ܘܒܦܘܪܩܢܐ
ܕܝܡܝܢܗ. *ܗܠܝܢ ܒܡܪܟܒܬܐ ܘܗܠܝܢ ܒܪܟܫܐ: ܘܚܢܢ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܢܬܪܘܪܒ. 8
*ܗܢܘܢ ܐܬܪܟܢܘ ܘܢܦܠܘ: ܘܚܢܢ ܩܡܢ ܘܐܬܬܩܢܢ. *ܡܪܝܐ ܢܦܪܘܩܢ ܘܡܠܟܢ ܢܥܢܝܢ ܒܝܘܡܐ 9 10
ܕܩܪܝܢ ܠܗ.

ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܐ

*ܠܕܘܝܕ. ܒܥܘܬܐ ܕܐܝܠܝܢ ܕܡܥܕܪܝܢ ܠܓܒܪܐ ܙܕܝܩܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܙ. 1
*ܡܪܝܐ ܒܚܝܠܟ ܢܚܕܐ ܡܠܟܐ. ܘܒܦܘܪܩܢܟ ܣܓܝ ܢܪܘܙ ܛܒ: 2

Et ab extremitatibus cœli exitus ejus, & cubile ejus ſuper extrema cœlorum, nec eſt quod latoat ſplendorem ipſius. Lex Domini ſine macula eſt, & convertens animam. Teſtimonium Domini fidele, & ſapientiā præſtans parvulis. Præcepta Domini recta, & exhilarantia cor: mandatum Domini electū, & illuminans oculos. Timor Domini mundus & permanens in ſeculum; Judicia Domini cum æquitate, & juſta ſunt in omni re, Atque expetibilia magis quàm aurum, & quā lapides optimi, atque dulciora melle & favo. Etiam ſervus tuus cautè ſervavit ea, ſique obſervaverit illa, retributionem conſequetur multam. Lapſus quis intelligat? & ab ocultis munda me; Etiam ab iniquitate cohibe ſervum tuum, nè dominentur mihi maligni, & expurgabor à peccatis. Sint in beneplacitum tuum verba oris mei, meditatio cordis mei in conſpectu tuo, Domine, adjutor meus, & liberator meus.

PSAL. XX.

Davidis: quum rogaret ut ſalvaretur à bello Ammonitarum. Nobis autem modò precatio utilis. Verſ. 20.

Exaudiat te Dñs in die tribulationis, & auxilietur tibi nomen Dei Jacob: Mittat tibi auxiliū è ſanctuario ſuo, atq; è Sion te ſuffulciat: Memor ſit tibi Dñs omniū oblationū tuarū, & holocauſta tua ipſe pinguefaciat. Tribuat tibi Dñs ſecundū cor tuū, & juxta omne conſiliū tuū perficiat; Laudéſq; dicemus in ſalute tua, & in nomine Dei noſtri extollemur: peragat Dñs omnē voluntatē tuā. Nunc notū eſt quòd ſalvârit Deꝰ unctum ſuū, & exaudierit eū de cœlo ſanctitatis ſuæ, virtute ac ſalute dexteræ ſuæ. Hi in curribus, et hi in equis, nos autem in nomine Dñi Dei noſtri magnificabimur. Ipſi ſuccubuerunt et corruerunt, nos autē ſurreximꝰ, et accinximꝰ nos. Dominus liberabit nos, et rex noſter exaudiet nos die quā invocaverimus eum.

PSAL. XXI.

Davidis. Petitio eorum quæ adjumentū viro juſto. Verſ. 27.

Domine, in virtute tua lætabitur rex, & in tua ſalute exultabit vehementer.

Verſio VULG. LAT.

A ſummo cœlo egreſſio ejus: Et occurſus
ejus uſque ad ſummum ejus: nec eſt
8 qui ſe abſcondat à calore ejus. Lex Dñi
immaculata, convertens animas: teſtimonium
Domini fidele, ſapientiam præſtans
9 parvulis. Juſtitiæ Domini rectæ, lætificantes
corda: præceptum Domini lucidum,
10 illuminans oculos. Timor Domini
ſanctus, permanens in ſeculum ſeculi:
judicia Domini vera, juſtificata in ſemetipſa.
11 Deſiderabilia ſuper aurum & lapidem
pretioſum multum: & dulciora ſuper
12 mel & favum. Etenim ſervus tuus
cuſtodit ea, in cuſtodiendis illis retributio
13 multa. Delicta quis intelligit? ab occultis
meis munda me: Et ab alienis parce
14 ſervo tuo. Si mei non fuerint dominati,
tunc immaculatus ero: & emundabor
15 à delicto maximo. Et erunt ut complaceant
eloquia oris mei: & meditatio cordis
mei in conſpectu tuo ſemper. Domine
adjutor meus, & redemptor meus.

1 In finem, Pſalmus David. XIX.

2 Exaudiat te Dominus in die tribulationis:
protegat te nomen Dei Jacob.
3 Mittat tibi auxilium de ſancto: & de Sion
4 tueatur te. Memor ſit omnis ſacrificii
5 tui: & holocauſtum tuũ pingue fiat. Tribuat
tibi ſecundùm cor tuum: & omne
6 conſilium tuum confirmet. Lætabimur in
ſalutari tuo: & in nomine Dei noſtri
7 magnificabimur. Impleat Dñs omnes petitiones
tuas: nunc cognovi quoniã ſalvum
fecit Dominus CHRISTUM ſuum.
Exaudiet illum de cœlo ſancto ſuo: in
8 potentatibus ſalus dexteræ ejus. Hi in
curribꝰ, & hi in equis: nos autem in nomine
Domini Dei noſtri invocabimus.
9 Ipſi obligati ſunt, & ceciderunt: nos autem
10 ſurreximus & erecti ſumus. Domine,
ſalvum fac regem: & exaudi nos in die,
quâ invocaverimus te.

1 In finem, Pſalmus David. XX.

2 Domine, in virtute tua lætabitur rex:
& ſuper ſalutare tuum exultabit vehementer.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

7 Ἀπ' ἄκρου τοῦ οὐρανοῦ ἡ ἔξοδος αὐτοῦ· † καὶ τὸ κατάντημα
αὐτοῦ ἕως ἄκρου τοῦ οὐρανοῦ· † καὶ οὐκ ἔστιν ὃς ἀποκρυβήσεται
8 τὴν θέρμην αὐτοῦ. † Ὁ νόμος (γ) τοῦ
κυρίου ἄμωμος ἐπιστρέφων ψυχάς, † ἡ μαρτυρία
9 κυρίου πιστὴ σοφίζουσα νήπια. † Τὰ δικαιώματα κυρίου
(ᵈ) εὐθέα εὐφραίνοντα καρδίαν, † ἡ ἐντολὴ κυρίου
10 τηλαυγὴς φωτίζουσα ὀφθαλμούς. † Ὁ φόβος κυρίου
ἁγνὸς διαμένων εἰς αἰῶνα αἰῶνος, † τὰ κρίματα
κυρίου ἀληθινὰ δεδικαιωμένα ἐπὶ τὸ αὐτό.
11 † Ἐπιθυμητὰ ὑπὲρ χρυσίον καὶ λίθον τίμιον πολύν,
12 † καὶ γλυκύτερα ὑπὲρ μέλι καὶ κηρίον. † Καὶ
γὰρ ὁ δοῦλός σου φυλάσσει αὐτά, † ἐν τῷ φυλάσσειν
13 αὐτὰ ἀνταπόδοσις πολλή. † Παραπτώματα τίς
14 συνήσει; † ἐκ τῶν κρυφίων μου καθάρισόν με, † Καὶ
ἀπὸ ἀλλοτρίων φεῖσαι τοῦ δούλου σου. † ἐὰν μή μου
(δ) κατακυριεύσωσι, τότε ἄμωμος ἔσομαι, † καὶ
15 καθαρισθήσομαι ἀπὸ ἁμαρτίας μεγάλης. † Καὶ ἔσονται
εἰς εὐδοκίαν τὰ λόγια τοῦ στόματός μου, † καὶ
ἡ μελέτη τῆς καρδίας μου ἐνώπιόν σου (ε) διαπαντός·
† κύριε βοηθέ μου, καὶ λυτρωτά μου.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυΐδ. ιθ'.

2 † Ἐπακούσαι σου κύριος ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως,
† ὑπερασπίσαι σου τὸ ὄνομα τοῦ θεοῦ Ἰακώβ.
3 † Ἐξαποστείλαι σοι βοήθειαν ἐξ ἁγίου, † καὶ ἐκ
4 Σιὼν ἀντιλάβοιτό σου. † Μνησθείη πάσης θυσίας
σου, † καὶ τὸ ὁλοκαύτωμά σου πιανάτω. ΔΙΆ-
5 ΨΑΛΜΑ. † Δῴη (α) σοι κατὰ τὴν καρδίαν σου, † καὶ
6 πᾶσαν τὴν βουλήν σου (ᵈ) πληρώσαι. † Ἀγαλλιασόμεθα
(β) ἐν τῷ σωτηρίῳ σου, † καὶ ἐν ὀνόματι θεοῦ ἡμῶν
7 μεγαλυνθησόμεθα. † Πληρώσαι κύριος πάντα τὰ
αἰτήματά σου. † νῦν ἔγνων ὅτι ἔσωσε κύριος τὸν
χριστὸν αὐτοῦ· † ἐπακούσεται αὐτοῦ ἐξ οὐρανοῦ ἁγίου αὐτοῦ,
† ἐν δυναστείαις ἡ σωτηρία τῆς δεξιᾶς αὐτοῦ.
8 † Οὗτοι ἐν ἅρμασι καὶ οὗτοι ἐν ἵπποις, † ἡμεῖς δὲ ἐν
ὀνόματι (γ) κυρίου θεοῦ ἡμῶν μεγαλυνθησόμεθα.
9 † Αὐτοὶ συνεποδίσθησαν καὶ ἔπεσαν, † ἡμεῖς δὲ ἀνέστημεν
10 καὶ ἀνωρθώθημεν. † Κύριε σῶσον τὸν βασιλέα, † καὶ
ἐπάκουσον ἡμῶν, ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἐπικαλεσώμεθά σε.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυΐδ. κ'.

2 † Κύριε ἐν τῇ δυνάμει σου εὐφρανθήσεται ὁ βασιλεύς,
† καὶ ἐπὶ τῷ σωτηρίῳ σου ἀγαλλιάσεται σφόδρα.

MS.A. (γ) κυρίου (ᵈ) εὐθεῖα (δ) κατακυριεύουσιν, (ε) ἐστὶν διαπαντός.
Ψαλμ. ιθ'. MS. A. (α) σοι κύριος κατὰ (ᵈ) πληρώσει. (β) ἐπὶ τῷ (γ) θεοῦ ἡμῶν

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

A ſummo cœlo egreſſio ejus. 7 Et 7
occurſꝰ ejꝰ uſque ad ſummũ cœli:
nec eſt qui ſe abſcondat à calore
ejꝰ. 8 Lex Domini immaculata, 8
convertens animas: teſtimonium
Domini fidele, ſapientiã præſtans
parvulis. 9 Juſtitiæ Domini rectæ, 9
lætificantes cor: præceptũ Domini
lucidum, illuminans oculos. 10 Timor 10
Domini caſtus, permanens in
[c] ſeculũ ſeculi: judicia Domini
vera, [d] juſtificata in idipſum:
11 Deſiderabilia ſuper aurũ et lapide 11
pretioſũ multũ: et dulciora
ſuper [e] mel et favum. [f] 12 Etenim 12
ſervꝰ tuꝰ cuſtodit ea; in cuſtodiendis
illis retributio multa.
13 (d) Delicta quis intelliget? ab 13
occultis meis munda me: Et ab (e) 14
alienis parce ſervo tuo. 14 Si mei
non fuerint dominati, tunc immaculatus
ero, & mundabor à delicto
magno. 15 Et erunt (f) in beneplacitum 15
eloquia oris mei; et meditatio
cordis mei in conſpectu tuo
ſemper. 16 Domine adjutor meus,
& redemptor meus.

In finem, Pſalmus ipſi David. 1
XIX.

1 Exaudiat te Dominꝰ in die [a] 2
tribulationis: protegat te nomen
Dei Jacob. 2 Mittat tibi auxilium 3
de [b] ſancto: & de Sion tueatur
te. 3 Memor ſit omnis ſacrificii 4
tui, & holocauſtũ tuum (a) pinguefaciat.
DIAPSALMA. 4
(b) Tribuat [c] tibi ſecundùm cor 5
tuum: & omne conſiliũ tuum [d]
compleat. 5 Exultabimus in ſalutari 6
tuo: & in nomine [e] Dei noſtri
magnificabimur. 6 Impleat [f] 7
Dominus omnes petitiones tuas:
nunc cognovi, quoniã ſalvũ fecit
Dominus Chriſtũ ſuum. 7 Exaudiet
illum de cœlo ſancto ſuo: in
potentatibus ſalus dexteræ ejus.
8 [g] Hi in curribꝰ, et hi in equis: 8
nos autem in nomine Domini Dei
noſtri (c) magnificabimur. 9 Ipſi 9
(†) obligati ſunt, et deciderũt: nos
autẽ ſurreximus, & erecti ſumꝰ.
10 Domine, ſalvũ fac regem: & 10
exaudi nos, in (d) [h] quacunque die invocaverimus te.

In finem, Pſalmus ipſi David. XX. 1

Domine, in virtute tua lætabitur rex; & ſuper ſalutare tuum exultabit vehementer. 2

Verſio ÆTHIOPICA.

እምአጽናፈ፡ሰማይ፡ሙፃኡ፡፡=፡ወእስከ፡አ 7
ጽናፈ፡ሰማይ፡ምእታዉ፡፡አልቦ፡ዘይትኀባ
እ፡እምላሕቡ፡፡=፡ሕግ፡ለእግዚአብሔር፡ 8
ንጹሕ፡ወይመይጥ፡ለነፍስ፡፡ስምዑ፡ለእግዚ
አብሔር፡እሙን፡ወያጠብብ፡ሕፃናተ፡፡=፡
ኵነኔሁ፡ለእግዚአብሔር፡ርቱዕ፡ወያስተፌ 9
ሥሕ፡ልበ፡፡ትእዛዙ፡ለእግዚአብሔር፡ብ
ሩህ፡ወያበርህ፡አዕይንተ፡፡=፡ፈሪሀ፡እግዚአ 10
ብሔር፡ንጹሕ፡ወየሐዩ፡ለዓለም፡፡ፍትሑ፡
ለእግዚአብሔር፡ጽድቅ፡ወርትዕ፡ኅቡ
ረ፡፡=፡ወይትፈተው፡እምወርቅ፡ወእምዕን 11
ቍ፡ክቡር፡፡ወይጥዕም፡እመዓር፡ወሰከ
ር፡፡=፡ወገብርከሰ፡ያዐቅቦ፡፡ወበዓቂቦቱ፡ይ 12
ትዓሰይ፡ብዙኀ፡፡=፡ ለስሒት፡መኑ፡ይሌብ 13
ዋ፡፡እምኅቡኣትየ፡አንጽሐኒ፡ወእምነኪር፡
መሐኮ፡ለገብርከ፡፡=፡ ወእመሰ፡ኢቀነዩኒ፡ 14
ውእተ፡ጊዜ፡ንጹሐ፡እከውን፡፡ወእነጽሕ፡እ
ምዐቢይ፡ኃጢአትየ፡፡=፡ወይከውን፡ሥሙረ፡ 15
ቃለ፡አፉየ፡፡ወሕሊና፡ልብየኒ፡ቅድሜየ፡ው
እቱ፡በኵሉ፡ጊዜ፡፡=፡ እግዚእየ፡ረዳኢየ፡ 16
ወመድኀንየ፡፡=፡

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፲፱ ይሰማዕከ፡እግዚአብሔር፡በዕለተ፡ም 1
ንደቤከ፡፡ወይቁም፡ለከ፡ስሙ፡ለአምላከ፡ያ
ዕቆብ፡፡=፡ ወይፈኑ፡ለከ፡ረድኤተ፡እመቅደ 2
ሱ፡፡ወእምጽዮን፡ይትወከፍከ፡፡=፡ ወይዝ 3
ክር፡ለከ፡ኵሎ፡መሥዋዕተከ፡፡ወያጥልል፡
ለከ፡ቍርባነከ፡፡=፡ የሀብከ፡እግዚአብሔ 4
ር፡ዘከመ፡ልብከ፡፡ወይፈጽም፡ለከ፡ኵሎ፡
ሥምረተከ፡፡=፡ ወንትፌሣሕ፡በአድኀኖት 5
ከ፡፡ወነዐቢ፡በስመ፡እግዚአብሔር፡አምላ
ክነ፡፡=፡ ወይፈጽም፡ለከ፡እግዚአብሔር፡ 6
ኵሎ፡ስእለትከ፡፡ይእዜ፡አእመርኩ፡ከመ፡
አድኀኖ፡እግዚአብሔር፡ለመሲሑ፡፡=፡ ወ 7
ይሰጠዎ፡እምሰማይ፡መቅደሱ፡፡በኀይለ፡አ
ድኀኖተ፡የማኑ፡፡=፡ እሙንቱሰ፡በአፍራስ፡ 8
ወበሰረገላት፡፡ወንሕነሰ፡ነዐቢ፡በስመ፡እግዚ
አብሔር፡አምላክነ፡፡=፡ እሙንቱሰ፡ታዐቅ 9
ጹ፡ወወድቁ፡፡ወንሕነሰ፡ተንሣእነ፡ወረታዕ
ነ፡፡=፡ እግዚኦ፡አድኅኖ፡ለንጉሥ፡፡ወሰ 10
ማዓነ፡በዕለተ፡ነጼውዓከ፡፡=፡

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፳ እግዚኦ፡በኀይልከ፡ይትፌሣሕ፡ንጉሥ፡፡ 1
ወብዙኀ፡ይትሐሠይ፡በአድኀኖትከ፡፡=፡ 2

INTERP. ÆTHIOP. [c] ſeculum: judicia [d] & recta ſimul: [e] mel & ſaccharum. [f] Et ſervus etiam tuus *PSAL. XIX.* [a] tribulationis tuæ: & erigat te [b] ſancto ſuo: [c] tibi Deus quicquid eſt ſecundùm [d] tibi compleat. [e] Domini Dei noſtri [f] tibi Dominus [g] Hi quidem in equis, & hi in curribus: [†] irretiti [h] die quâ

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

7 * من اطراف السماء خروجها * والى اطراف السماء منتهاها * وليس من يختفي من حرارتها * ناموس
8 الرب مطهر يرد النفوس * شهادة الرب صادقة تعلم الاطفال * حقوق الرب مستقيمة تفرح
9 القلوب * وصية الرب مضيئة تضيء الابصار من البعد * خشية الرب طاهرة دائمة الى الابد *
10 احكام الرب احكام حق عادلة جميعا * ارادة قلبه مختارة افضل من الذهب والجوهر الثمين *
11 وحلوة افضل من العسل والشهد * وان عبدك يحفظها اذ في حفظها تجارة كثيرة * من
12 13 يقدر ان يفهم الاثام * طهرني يا رب * من خفياتي الذين ليسوا مني * اشفق على عبدك * فاذا
14 لم يتسلطوا علي فحينئذ اكون طاهرا * واطهر من عظم خطيتي * تكون جميع اقوال فمي
15 كمسرتك * وتلاوة قلبي امامك في كل حين * الرب معيني ومخلصي *

1 * المزمور التاسع عشر لداود * ك * استيحن *

2 3 * يستجيب لك الرب في يوم شدتك * ينصرك اسم اله يعقوب * يبعث لك بعون من القدس *
4 5 ومن صهيون يعضدك * يذكر جميع ذبائحك * ومحرقاتك يستدسمها * يعطيك الرب مثل
6 قلبك * وكل امانيك يتمم * نعترف لك يا رب بخلاصك * وباسم الرب الهنا ننمي * يكمل لك
7 الرب جميع سؤالك * الآن علمت ان الرب خلص مسيحه * وهو يستجيب له من سماء قدسه
8 9 بقوة خلاص يمينه * هولاء بالمراكب وهولاء بالخيل * ونحن باسم الهنا ننمي * هم استبكوا
10 وسقطوا * ونحن قمنا وانتصبنا * يا رب خلص الملك * واستجب لنا يوم ندعوك *

1 * المزمور العشرون لداود * استيحن * ك

2 * يا رب بقوتك يفرح الملك * وبخلاصك يبتهج جدا *

A finibus cœli exitus ejus, et ad fines cœli 7
terminus ejus: nec eſt qui ſe abſcondat à
calore ejus. Lex Domini pura, reparans 8
animos: Teſtimonium Domini verax, erudiens
pueros. Statuta Domini recta, exhilarantia 9
corda; mandatum Domini lucidum,
illuminans oculos à longè. Timor 10
Domini caſtus, perſeverans in æternum:
Judicia Domini judicia vera, æqua cuncta;
Voluntas cordis ejus ſelecta, præſtantior 11
auro & gemmis pretioſis: et dulcia
pluſquam mel, & favus: Et quidem 12
ſervus tuus cuſtodit ea: quandoquidem
in obſervatione eorum retributio eſt multa.
Quis poteſt percipere delicta? Munda 13
me, O Domine mi Ab occultis meis, 14
quæ non ſunt à me: & propitiare ſervo
tuo. Quum enim minimè dominata fuerint
mihi, tunc ero mundus: & mundabor
à magnitudine peccati mei. Erunt omnes 15
ſermones oris mei ſecundùm voluntatem
tuam: & meditatio cordis mei ante
te omni tempore. Dominus eſt adjutor
meus, & ſalvator meus.

PSAL. XIX. Davidis. 1
Verſ. 20.

Exaudiat te Dominus in die tribulationis 2
tuæ: adjuvet te nomen Dei Jacob.
Mittat tibi auxilium è ſanctuario, & ex 3
Sion te fulciat. Recordetur omnium ſacrificiorum 4
tuorum, & holocauſtis tuis
oblectetur. Tribuat tibi Dominus ſecundùm 5
cor tuum, & omnia optata tua perficiat.
Confitebimur tibi, O Domine, pro 6
ſalute tua: & in nomine Domini Dei noſtri
multiplicabimur. Compleat tibi Dominus
omnem petitionem tuam. Nunc ſcivi 7
quòd Dominus liberavit chriſtum ſuum,
& ipſe exauditurus eſt eum de cœlo
ſanctitatis ſuæ, potentiâ ſalutis dexteræ
ſuæ. Hi in curribus, & hi in equis: & 8
nos in nomine Dei noſtri multiplicabimur.
Ipſi irretiti ſunt, & ceciderunt: & nos 9
ſurreximus, & erecti ſumus. O Domine, 10
ſalva regem, & exaudi nos in die
quâ invocaverimus te.

PSAL. XX. Davidis. 1
Verſ. 27.

O Domine, in virtute tua lætatur rex, & 2
ſalute tuâ gaudet valdè.

תהלים : כב

non ejus labiorum prolationem & ; ei dedisti ejus cordis Desiderium
3 תאות לבו נתתה לו וארשת שפתיו בל־
appones ; bonitatis benedictionibus eum prævenies Quoniam .Selah , prohibuisti
4 מנעת סלה : כי־תקדמנו ברכות טוב תשית
longitudinem ei dedisti : te à petiit *Vitas .obrizi diadema* ejus capiti
5 לראשו עטרת פז : חיים שאל ממך נתתה לו ארך
decorem & ,gloriam : tua salute in ejus gloria Magna .*perpetuum* & ,seculum dierum
6 ימים עולם ועד : גדול כבודו בישועתך הוד והדר
eum lætificabis ;*perpetuum* in benedictiones eum pones Quoniam .eum super *adæquabis*
7 תשוה עליו : כי־תשיתהו ברכות לעד תחדהו
misericordia in & ; Domino in *sperans* rex Quoniam .*tuis faciebus* cum lætitia in
8 בשמחה את־פניך : כי־המלך בטח ביהוה ובחסד
inveniet tua dextera : *tuos inimicos omnes* tua manus *Inveniet* .nutabit non altissimi
9 עליון בל־ימוט : תמצא ידך לכל־איביך ימינך תמצא
Dominus :*tuarum facierum* tempore in ignis clibanum ut eos Pones .te odio *habentes*
10 שנאיך : תשיתמו כתנור אש לעת פניך יהוה
; perdes terra è eorum Fructum .ignis eos *peredet* & ; eos *deglutiet* suo *naso* in
11 באפו יבלעם ותאכלם אש : פרימו מארץ תאבד
: malum te super declinaverunt Quoniam .*hominis* filiis à eorum semen &
12 וזרעם מבני אדם : כי־נטו עליך רעה
tuis funibus in;humerum eos pones Quoniam.poterunt non,cogitationem cogitaverunt
13 חשבו מזמה בל־יוכלו : כי תשיתמו שכם במיתריך
, cantabimus : tua fortitudine in Domine te Exalta .eorum *facies super* præparabis
14 תכונן על־פניהם : רומה יהוה בעזך נשירה
.tuam fortitudinem psallemus &
ונזמרה גבורתך :

PSAL. XXII. כב

quid ut,meus Deus,meus Deus .David canticum *auroræ* cervam super Victori
1 למנצח על־אילת השחר מזמור לדוד : אלי אלי למה
2 *clamabo* meus Deus .mei rugitus verbis , mea salute à *longinquum*,? me dereliquisti
3 עזבתני רחוק מישועתי דברי שאגתי : אלהי אקרא
sanctus tu Et .mihi silentium non & , nocte & : *respondebis* non & , *interdiu*
4 יומם ולא תענה ולילה ולא־דומיה לי : ואתה קדוש
.eos eruisti &,speraverũt:nostri patres speraverũt te In .Israel laudes *inhabitans*
5 יושב תהלות ישראל : בך בטחו אבתינו בטחו ותפלטמו :
.affecti pudore fuerunt non & , speraverunt te in : evaserunt & ,clamaverunt te Ad
6 אליך זעקו ונמלטו בך בטחו ולא־בושו :
Omnes .populi contemptus &,hominum opprobrium : vir non & , vermis ego Et
7 ואנכי תולעת ולא־איש חרפת אדם ובזוי עם : כל־
8 ad *Volve* : caput movebunt , *labio in* emittent : me subsannabunt me videntes
9 ראי ילעגו לי יפטירו בשפה יניעו ראש : גל אל־
meus eductor tu Quoniam .eo in complacuit quoniã,eum eripiat:eum eruat,Dominũ
10 יהוה יפלטהו יצילהו כי חפץ בו : כי־אתה גחי
.meæ matris ubera super me faciens confidere ; utero ab
מבטן מבטיחי על־שדי אמי :

תרגום TARGUM.

3 רגגת נפשיה יהבת ליה ופירוש ספותיה
4 לא כליתא לעלמין : ארום תקדמניה ברכן
5 טבן תשוי על רישיה כליל דהב סנינא : חיי
עלמא שאל מנך יהבת ליה נגדא דיומיא
6 לעלמי עלמין : סגי יקריה בפורקנך תושבחתא
7 ושבהורה תשוי עלוי : מטול די תשוניה
ברכן לעלמין תחדניה בחדותא די מן קדמך :
8 מטול דמלך משיחא סביר ביי ובחסדא
9 דעלאה לא יזוע : תדבק מחת אידך לכל
בעלי דבבך פורענות ימינך תשכח לכל סנאך :
10 תשוגון היך אתון נורא לעדני רוגזך יי
ברגזיה יסלעמנון ותיכלנון בעור גהנם :
11 בניהון מארעא תהובד וזרעיתהון מבני נשא :
12 מטול דחשילו עלך בישתא חשיבו מחשבן
13 בישן ולא יכילונך : מטול דשויתנון לעמך
כתף חד באטוני משכנך תתקן אורחהון
14 קדמיהון : אזדקף יי בעושנך נשבחא ונדוץ
בגבורתך :

כב

1 לשבחא על תקוף קורבן תדירא דקרצתא
2 תושבחתא לדוד : אלי אלי מטול מה
שבקתני רחיק מן פורקני מלי אכליותי :
3 אלהי אנא קרי בימָמא ולא תקבל ובליליא
4 לא שתיקותא לי : ואנת קדיש דמיתב
5 עלמא על תושבחן ישראל : עלך סברו
6 אבהתנא סברו במימרך ושובתנון : קדמך צלו
7 ואשתזבו ועלך אתרחיצו ולא בהיתו : ואנא
זחיל חלש ולא גבר סבל חסודי בני נשא
8 ומתרמרמותא דעממי : כל דחמין לי ירהבון
עלי מתגרדין בספותהון יטלטלון ברישיהון :
9 שבח קדם יי ושוביה פצא יתיה מטול דאתרעי
10 ביה : מטול דאת אפקתני מכריסא אסברתני
על תדיי אמי :

PARAPH. CHALD. Vers. La

Desiderium animæ ejus tribuisti ei, & prolationem labiorum ejus non prohibuisti in æternum. Quoniam prævenies eum benedictionibus bonis, pones super caput ejus coronam auri puri. Vitam æternam petiit à te, dedisti ei longitudinem dierum in secula seculorum. Multa est gloria ejus in redemptione tua : laudem & decorem pones super eum. Quoniam pones eum benedictiones per secula, lætitia perfundes eum ab aspectu tuo. Propterea quod rex *Christus* confidit in *Domino*, & in misericordia altissimi, non commovebitur. Invadet percussio manus tuæ cunctos hostes tuos, ultio dexteræ tuæ inveniet omnes odio te habentes. Pones eos ut fornacem ignis in temporib⁹ iræ tuæ. Dñs *in furore suo disperdet* eos & consumet eos incendium gehennæ. Filios eorum de terra perdes, & semen eorum à filiis hominum. Quoniam machinati sunt contra te malum, cogitaverunt cogitationes pravas, nec adversum te potuerunt. Quoniam posuisti eos populo tuo humerum unum : in funibus tabernaculi tui ordinabis *vias eorum* coram eis. Exaltare Domine in fortitudine tua : laudabimus & *lætabimur* super virtute tua.

Ad laudandum super potenti oblatione perpetua auroræ, Hymnus Davidi.

PSAL.. XXII.

DEus mi, Deus mi, quare dereliquisti me? longè à redemptione mea verba clamoris mei. Deus mi, ego clamo interdiu, nec *suscipis*; & noctu, nec est silentium mihi. Tu verò sanctus, qui stabilis orbem propter laudes Israel. In *te* confisi sunt patres nostri: confisi sunt in verbo tuo & liberâsti eos. Coram te preces fuderunt & liberati sunt, *&* in *te* confisi sunt, & non sunt confusi. At ego vermis debilis & non homo, portans vituperia hominum, & despectio populorum. Omnes qui vident me deridentme, proscindunt labiis suis, movent capita sua. Laudes *dixit* apud Dominum, & eripuit *eum*; eruit *eum*, quoniam complacuit sibi in *eo*. Quoniam tu extraxisti me ab utero, *fiduciam fecisti mihi* super ubera matris meæ.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 ܪ̈ܓܬܐ ܕܠܒܗ ܝܗܒܬ ܠܗ. ܘܛܘܝܒܐ ܕܣܦܘ̈ܬܗ ܠܐ ܟܠܝܬܝܗܝ: * ܡܛܠ ܕܐܩܕܡܬܝܗܝ *
4 ܒܘܪ̈ܟܬܐ ܛܒ̈ܬܐ. ܘܣܡܬ ܒܪܫܗ ܟܠܝܠܐ ܡܫܒܚܐ: * ܚܝ̈ܐ ܫܐܠܟ ܘܝܗܒܬ ܠܗ. ܐܘܪܟܐ
5 ܕܝܘܡ̈ܬܐ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ: * ܪܒ ܫܘܒܚܗ ܒܦܘܪܩܢܟ. ܫܘܒܚܐ ܘܐܝܩܪܐ ܣܡܬ
6 ܥܠܘܗܝ: * ܡܛܠ ܕܣܡܬܝܗܝ ܒܘܪ̈ܟܬܐ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. ܘܚܕܝܬܝܗܝ ܒܚܕܘܬܐ
7 ܕܐܦܝܟ: * ܡܛܠ ܕܡܠܟܐ ܡܣܒܪ ܒܡܪܝܐ. ܘܒܛܝܒܘܬܗ ܕܡܪܝܡܐ ܠܐ ܢܙܘܥ:
8 * ܬܫܟܚ ܐܝܕܟ ܠܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܟ. ܘܝܡܝܢܟ ܬܫܟܚ ܠܣܢܐܝܟ: * ܬܥܒܕ ܐܢܘܢ
9 10 ܐܝܟ ܬܢܘܪܐ ܕܢܘܪܐ ܠܥܕܢܐ ܕܪܘܓܙܟ. ܡܪܝܐ ܒܪܘܓܙܗ ܢܘܩܕ ܐܢܘܢ: ܘܬܐܟܘܠ ܐܢܘܢ ܢܘܪܐ.
11 12 * ܦܐܪ̈ܝܗܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܬܘܒܕ: ܘܙܪܥܗܘܢ ܡܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ. * ܡܛܠ ܕܐܗܦܟܘ ܥܠܝܟ
13 ܒܝܫܬܐ. ܘܐܬܚܫܒܘ ܡܠܟܐ ܘܠܐ ܐܬܚܝܠܘ: * ܬܣܝܡ ܐܢܘܢ ܒܨܥܪܐ. ܘܛܘܝܒܟ ܬܛܝܒ
14 ܠܘܩܒܠ ܦܪ̈ܨܘܦܝܗܘܢ. * ܐܬܪܝܡ ܡܪܝܐ ܒܚܝܠܟ: ܢܙܡܪ ܘܢܫܒܚ ܠܓܢܒܪܘܬܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܒ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܡܒܙܚܝܢ ܒܗ ܪ̈ܕܘܦܘܗܝ. ܘܥܠ ܚܫܐ ܕܡܫܝܚܐ
ܘܩܪܝܢܐ ܕܥܡ̈ܡܐ. ܦܬܓ̈ܡܐ ܣܙ.

2 * ܐܠܗܝ ܐܠܗܝ ܠܡܢܐ ܫܒܩܬܢܝ. ܘܐܪܚܩܬ ܡܢܝ ܦܘܪܩܢܝ ܒܡܠܐ ܕܣܟܠܘܬܝ:
3 4 * ܐܠܗܝ ܐܩܪܝܟ ܒܐܝܡܡܐ ܘܠܐ ܥܢܝܬܢܝ. ܘܒܠܠܝܐ ܘܠܐ ܐܨܬܘܬܬ ܠܝ: * ܐܢܬ ܩܕܝܫ ܘܝܬܒ
5 6 ܒܬܫܒܘܚܬܟ ܝܣܪܝܠ. * ܒܟ ܣܒܪܘ ܐܒܗ̈ܝ: ܣܒܪܘ ܒܟ ܘܦܨܝܬ ܐܢܘܢ. * ܠܘܬܟ ܩܥܘ
7 ܘܐܬܦܨܝܘ: ܒܟ ܣܒܪܘ ܘܠܐ ܒܗܬܘ. * ܐܢܐ ܕܝܢ ܬܘܠܥܐ ܐܢܐ ܘܠܐ ܒܪܢܫܐ: ܚܣܕܐ ܕܒܢܝܢܫܐ
8 ܘܫܘܝܛܐ ܕܥܡܐ. * ܟܠ ܕܚܙܝܢܝ ܡܒܙܚܝܢ ܒܝ: ܦܪܩܘ ܒܣܦܘ̈ܬܗܘܢ ܘܢܦܨܘ
9 10 ܪ̈ܫܝܗܘܢ. * ܐܬܬܟܠ ܥܠ ܡܪܝܐ ܢܦܨܝܘܗܝ: ܘܢܫܒܩܝܘܗܝ ܐܢ ܨܒܐ ܒܗ. * ܡܛܠ ܕܐܢܬ
ܬܘܟܠܢܝ ܡܢ ܟܪܣܐ. ܘܣܒܪܝ ܡܢ ܬܕ̈ܝܐ ܕܐܡܝ.

Desiderium cordis ejus concessisti ei, & præparationem labiorum ejus non denegâsti illi. Nam prævenisti eum benedictione optimâ, & posuisti in capite ejus coronam gloriosam. Vitam petiit à te, & tribuisti ei longitudinem dierum in seculum seculorum. Magnificata est gloria ejus per salutem tuam: honorem ac decorem posuisti super eum. Quoniam statuisti eum benedictionem in seculum seculorum, & exhilarâsti eum gaudio vultûs tui. Quoniam rex sperat in Domino, & ex gratia Altissimi non commovebitur. Inveniet manus tua cunctos hostes tuos, & dextera tua inveniet osores tuos. Reddes eos quasi clibanum ignis ad tempus iræ: Dominus in ira sua exuret eos, & devorabit eos ignis. Fructúsq; ipsorum è terra perdet, & semen eorum ex hominibus. Quoniam converterunt in te malum, cogitaverunt consilium, & non polluerunt viribus. Pones in eis turpitudinem, & præparationem tuam dispones contra facies eorum. Exaltare, Domine, tuâ virtute : canemus, atque laudabimus potentiam tuam.

PSAL. XXII.

Davidis, quum illuderetur à persecutoribus suis. Et de passione Christi : & vocatione gentium. Vers. 67.

DEus meus, Deus me*, quare dereliquisti me, & longè fecisti à me salutem meam ob verba insipientiarum mearum? Deus, invocabo te per diem, & non exaudies me: & per noctem, nec attendes me. Tu, Sancte, & sedens in gloria tua Israele, In te speraverunt patres mei; speraverunt in te, & liberâsti eos. Ad te clamaverunt, & liberati sunt: in te speraverunt, & non sunt confusi. Ego vermis sum, & non homo : opprobrium hominum, & abjectio plebis. Omnes qui viderunt me, deriserunt me; dimoverunt labia sua, & moverunt capita sua : Confisus est in Domino, liberet eum; & dimittat eum si diligit illum. Quoniam tu es fiducia mea à vulva, & spes mea ab uberibus matris meæ

Versio VULG. LAT.

3 Desiderium cordis ejus tribuisti ei: & voluntate labiorum ejus non fraudâsti eum. 4 Quoniam prævenisti eum in benedictionibus dulcedinis: posuisti in capite 5 ejus coronam de lapide pretioso. Vitam petiit à te: & tribuisti ei longitudinem dierum in seculum, & in seculum seculi. 6 Magna est gloria ejus in salutari tuo: gloriam et magnũ decorẽ impones super 7 eum. Quoniam dabis eum in benedictionem in seculũ seculi: lætificabis eum in 8 gaudio cum vultu tuo. Quoniam rex sperat in Domino: & in misericordia Altissimi non commovebitur. 9 Inveniatur manus tua omnib' inimicis tuis: dextera tua 10 inveniat omnes, qui te oderunt. Pones eos ut clibanũ ignis in tempore vultûs tui: Dñs in ira sua conturbabit eos, & devo-11 rabit eos ignis. Fructum eorum de terra perdes: & semen eorum à filiis hominũ. 12 Quoniam declinaverunt in te mala; cogitaverunt consilia, quæ non potuerunt 13 stabilire. Quoniam pones eos dorsum: in reliquiis tuis præparabis vultum eorum. 14 Exaltare, Domine, in virtute tua: cantabimus & psallemus virtutes tuas.

1 In finem pro susceptione matutina,
Psalmus David. XXI.

2 Deus Deus meus, respice in me: quarè me dereliquisti? longè à salute mea 3 verba delictorũ meorũ. Deus me⁹, clamabo per diem, & non exaudies: & nocte, 4 & non ad insipientiam mihi. Tu autem 5 in sancto habitas, Laus Israel. In te speraverunt patres nostri: speraverunt, & 6 liberâsti eos. Ad te clamaverunt, & salvi facti sunt: in te speraverunt, & non 7 sunt confusi; Ego autem sum vermis, & non homo: opprobrium hominũ, & ab-8 jectio plebis. Omnes videntes me, deriserunt me: locuti sunt labiis, & moverũt 9 caput; Speravit in Domino, eripiat eum: salvum faciat eum, quoniam vult 10 eum. Quoniam tu es, qui extraxisti me de ventre: spes mea ab uberibus matris meæ.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

3 † Τὴν ἐπιθυμίαν τῆς ψυχῆς αὐτοῦ ἔδωκας αὐτῷ, † καὶ τὴν δέησιν τῶν χειλέων αὐτοῦ οὐκ ἐστέρησας αὐ-4 τόν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ὅτι προέφθασας αὐτὸν ἐν εὐλογίαις χρηστότητος, † ἔθηκας ἐπὶ τὴν κε-5 φαλὴν αὐτοῦ στέφανον ἐκ λίθου τιμίου. † Ζωὴν ᾐτήσατό σε, καὶ ἔδωκας αὐτῷ † μακρότητα ἡμερῶν εἰς 6 αἰῶνα αἰῶνος. † Μεγάλη ἡ δόξα αὐτοῦ ἐν τῷ σωτηρίῳ σου, † δόξαν καὶ μεγαλοπρέπειαν ἐπιθήσεις 7 ἐπ' αὐτόν. † Ὅτι δώσεις αὐτῷ εὐλογίαν εἰς αἰῶνα αἰῶνος, † εὐφρανεῖς αὐτὸν ἐν χαρᾷ μετὰ τοῦ προσώ-8 που σου. † Ὅτι ὁ βασιλεὺς ἐλπίζει ἐπὶ κύριον, † καὶ 9 ἐν τῷ ἐλέει τοῦ ὑψίστου οὐ μὴ σαλευθῇ. † Εὑρεθείη ἡ χείρ σου πᾶσι τοῖς ἐχθροῖς σου, † ἡ δεξιά σου εὕ-10 ροι πάντας τοὺς μισοῦντάς σε. † Θήσεις αὐτοὺς ὡς κλίβανον πυρὸς εἰς καιρὸν τοῦ προσώπου σου, † (α) κύριος ἐν ὀργῇ αὐτοῦ συνταράξει αὐτοὺς, καὶ κατα-11 φάγεται αὐτοὺς πῦρ. † Τὸν καρπὸν αὐτῶν ἀπὸ γῆς ἀπολεῖς, † καὶ τὸ σπέρμα αὐτῶν ἀπὸ υἱῶν ἀν-12 θρώπων. Ὅτι ἔκλιναν εἰς σὲ κακὰ, † διελογί-13 σαντο (β) βουλὴν ἣν οὐ μὴ δύνωνται στῆσαι. † Ὅτι θήσεις αὐτοὺς νῶτον † ἐν τοῖς περιλοίποις σου, 14 ἑτοιμάσεις τὸ πρόσωπον αὐτῶν. † Ὑψώθητι κύριε ἐν τῇ δυνάμει σου. † ᾄσομεν καὶ ψαλοῦμεν τὰς δυναστείας σου.

MS. A. (α) κύριε ἐν ὀργῇ σου συνταράξεις αὐτοὺς, (β) βουλὰς ἃς οὐ μὴ δύνωνται στῆναι.

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῆς ἀντιλήψεως τῆς (*) ἑωθινῆς, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. κα'.

2 † Ὁ Θεὸς ὁ θεός μου πρόσχες μοι, ἵνατί ἐγκατέλιπές με; † μακρὰν ἀπὸ τῆς σωτηρίας μου 3 οἱ λόγοι τῶν παραπτωμάτων μου. † Ὁ θεός μου κεκράξομαι ἡμέρας πρὸς σὲ καὶ οὐκ εἰσακούσῃ, † καὶ 4 νυκτὸς καὶ οὐκ εἰς ἄνοιαν ἐμοί. † Σὺ δὲ (α) ἐν ἁγίῳ 5 κατοικεῖς, ὁ ἔπαινος τοῦ Ἰσραήλ. † Ἐπὶ σοὶ ἤλπισαν οἱ πατέρες ἡμῶν, † ἤλπισαν καὶ (β) ἐρρύσω αὐ-6 τούς. † Πρὸς σὲ ἐκέκραξαν καὶ ἐσώθησαν, † ἐπὶ 7 σοὶ ἤλπισαν καὶ οὐ κατῃσχύνθησαν. † Ἐγὼ δέ εἰμι σκώληξ καὶ (γ) οὐκ ἄνθρωπος, † ὄνειδος (δ) ἀν-8 θρώπων καὶ ἐξουθένημα λαοῦ. † Πάντες οἱ θεωροῦντές με ἐξεμυκτήρισάν με, † ἐλάλησαν ἐν χείλε-9 σιν, ἐκίνησαν κεφαλήν, † Ἤλπισεν ἐπὶ κύριον, ῥυσάσθω αὐτὸν, † σωσάτω αὐτὸν, ὅτι θέλει 10 αὐτόν. † Ὅτι σὺ εἶ ὁ ἐκσπάσας με ἐκ γαστρὸς, † ἡ ἐλπίς μου ἀπὸ μαστῶν τῆς μητρός μου,

MS. A. (*) ἑωθινῆς. κα'. Ὁ θεὸς (α) ἐν ἁγίοις κατοικεῖς, ὁ ἔπαινος Ἰσραήλ. (β) ἐρύσω (γ) οὐχὶ (δ) ἀνθρώπου

Ver. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Transl. LAT.

3 Desiderium (a) animæ ejus dedisti ei: & (b) petitione labiorũ ejus non fraudâsti eum. DIAPSALMA. 4 3 Quoniam prævenisti eum in benedictionibus dulcedinis: posuisti super caput ejus coronã de lapide pretioso. 5 4 Vitã petiit à te, & dedisti ei longitudinẽ dierum in (c) seculum seculi. 6 5 Magna est gloria ejus in salutari tuo: gloriã & magnũ decorem impones super eum. 7 6 Quoniã dabis ei benedictionem in seculũ (d) seculi: lætificabis eum in gaudio cum vultu tuo. 8 7 Quoniam rex sperat [a] super Dominũ, et in misericordia Altissimi non commovebitur. 9 8 (e) [b] Inveniatur manus tua omnib⁹ inimicis tuis: dextera tua inveniat omnes, qui te oderunt. 10 9 Pones eos ut clibanũ ignis, in tempore vultûs tui: Dominus in ira sua conturbabit eos, & devorabit eos ignis. 11 10 Fructũ illorũ de terra [c] perdes, & semen eorũ à filiis hominum. 12 11 Quoniam (f) [d] declinaverunt in te mala: cogitaverunt (g) consilium, quod non poterunt stabilire. 13 12 Quoniam (h) pones eos [e] dorsum in (i) reliquiis tuis, [f] præparabis vultũ eorũ. 14 13 Exaltare, Domine, in virtute tua: cantabimus, & psallemus virtutes tuas.

[g] MS. Æthiop. Pocock. Gloria Patri, & Filio, & Spiritui sancto: Et modò, semper erit, & in secula seculorũ, Amen.

1 In finem, pro susceptione [†] matutina, Psalmus ipsi David.
XXI.

[a 2 1 Deus De⁹ me⁹, respice in (a) me: quarè me dereliquisti? longè à salute mea verba (b) delictorum meorum. 3 2 Deus meus, clamabo ad te per diem, & non exaudies; & [b] nocte, & non ad (c) insipientiã mihi. 4 3 Tu autẽ in (d) [c] sancto habitas, (e) Laus Israel. 4 In te speraverunt patres nostri: speraverunt, & eruisti eos. 5
5 Ad te clamaverunt, & salvi facti sunt: in te speraverunt, & non sunt confusi. 6
6 Ego autem sum vermis & non homo: opprobrium hominum, & abjectio plebis. 7
7 Omnes qui conspiciebant me, subsannaverũt me: locuti sunt labiis, moverũt caput: 8
8 Speravit in Dominum, eruat eum: salvum faciat eum; quoniam vult eum. 9
9 Quoniam tu es, qui extraxisti me de ventre, [d] spes mea ab uberibus matris meæ: 10

Versio ÆTHIOPICA.

ፍትወተ፡ ነፍሱ፡ ወሀብኮ። ወስእለተ፡ ከናፍ 2
ሪሁ፡ ኢከልአኮ። ፨ እስመ፡ በጻሕኮ፡ በበረ 3
ከት፡ ሠናይ። ወአንበርከ፡ አክሊለ፡ ዲበ፡ ርእ
ሱ፡ ዘእምዕንቍ፡ ክቡር። ፨ ሐይወ፡ ሰአለ 4
ከ፡ ወሀብኮ። ለነዋኅ፡ መዋዕል፡ ለዓለም፡ ዓለ
ም። ፨ ዐቢይ፡ ክብሩ፡ በአድኅኖትከ። ክ 5
ብረ፡ ወስብሐተ፡ ወሰኮ። ፨ እስመ፡ ወሀብኮ፡ 6
በረከተ፡ ለዓለም፡ ዓለም። ወታስተፌሥሖ፡
በሐሤት፡ ገጽከ። ፨ እስመ፡ ተወከለ፡ ንጉ 7
ሠ፡ በእግዚአብሔር። ወኢይትሀወክ፡ በም
ሕረቱ፡ ለልዑል። ፨ ትርከቦሙ፡ እዴከ፡ ለኵ 8
ሎሙ፡ ፀርከ። ወትረከቦሙ፡ እዴከ፡ ለኵሎ
ሙ፡ ጸላእትከ። ፨ ወትረስዮሙ፡ ከመ፡ 9
እቶነ፡ እሳት፡ ለጊዜ፡ ገጽከ። እግዚእ፡ በመዓ
ትከ፡ ሁከሙ፡ ወትብልዖሙ፡ እሳት። ፨ ወፍ 10
ሬሆሙ፡ ሰዐር፡ እምድር። ወዘርኦሙ፡ እ
ምእጓለ፡ እመሕያው። ፨ እስመ፡ ሜጥዋ፡ 11
ለዐመፃ፡ ላዕሌከ። ወሐለዩ፡ ምክረ፡ እንተ፡
ኢይክሉ፡ ዐቅሞ። ፨ ወታገብኦሙ፡ ድኅሬ 12
ሆሙ። ወታስተደሉ፡ ገጸከ፡ ለጊዜ፡ መዐት
ከ። ፨ ተለዐልከ፡ እግዚኦ፡ በኀይልከ። ንሴ 13
ብሕ፡ ወንዜምር፡ ለጽንዕከ። ፨
ስብሐት፡ ለአብ፡ ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ ቅዱ
ስ። ይእዜኒ፡ ወዘልፈኒ፡ ወለዓለመ፡ ዓለም፡
አሜን። ፨ ፍጻሜ፡ በእንተ፡ ተወክፎ፡ እን
ተ፡ ስብሐት፡ መዝሙር፡ ዘዳዊት።
፳፩ እምላኪየ፡ አምላኪየ፡ ነጽረኒ፡ ወለም 1
ንት፡ ኀደገኒ። ርሑቅ፡ እምአድኅኖትየ፡ ቃ
ለ፡ ኀጢአትየ። ፨ አምላኪየ፡ ጸራኅኩ፡ 2
ኀቤከ፡ ዕለትየ፡ ወኢሰማዕከኒ። ወሌሊትየኒ፡
ቅድሜከ፡ ወኢኀለይከኒ። ፨ ወአንተሰ፡ ው 3
ስተ፡ ቅዱሳኒከ፡ ተኀድር፡ ስቡሕ፡ ለእስራኤ
ል። ፨ ኪያከ፡ ተወከሉ፡ አበዊነ። ተወከሉ 4
ከኒ፡ ወአድኅንኮሙ። ፨ ኀቤከ፡ ጸርኁ፡ ወ 5
ድኅኑ። ኪያከ፡ ተወከሉ፡ ወኢይትኀፈ
ሩ። ፨ አንሰ፡ ዕፄ፡ ወአኮ፡ ሰብእ። ምኑን፡ በ 6
ኀበ፡ ሰብእ፡ ውትሑት፡ በውስተ፡ ሕዝብ። ፨
ኵሎሙ፡ እለ፡ ይሬእዩኒ፡ ይትቀጸቡኒ። ይብ 7
ሉ፡ በከናፍሪሆሙ፡ ወየሐውሱ፡ ርእሶሙ። ፨
ተወከለ፡ በእግዚአብሔር፡ ለያድኅኖ፡ ወ 8
ያድኅኖ፡ ለእመ፡ ይፈቅዶ። ፨ እስመ፡ አንተ፡ 9
አውፃእከኒ፡ እምከርሠ። ወተወከልኩከ፡
እንዘ፡ ሀለውኩ፡ ውስተ፡ አጥባተ፡ እምየ። ፨

INTERP. ÆTHIOP. [a] in Domino, [b] Comprehendat manus tua omnes inimicos tuos: & manus tua inveniat [c] abstulit, [d] iniquitatem in te confecerunt: [e] retrorsum [f] & præparabis vultum tuum in tempus iræ tuæ. [g] Doxologia hæc habetur post decimum quemque Psalmum in MS. Æthiop. D. Pocockii, quæ per inadvertentiam post decimum Psalmum omissa fuit. PSAL. XXI. [†] laudis, [a] Deus meus, Deus [b] nocte etiam coram te adsto, & non attendis mihi. [c] sancto tuo [d] & in te speravi, dum fui super ubera.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 * لانك اعطيته شهوة قلبه * ولم تحرمه سوال شفتيه * ابتداته ببركات صالحة * وضعت على راسه 4
اكليلا من جوهر * سالك حياة فاعطيته طول الايام * الى ابد الابد * مجده عظيم بخلاصك * 5 6
المجد وعظيم البهاء جعلت عليه * لانك تعطيه بركة الى ابد الابد * ابهجته بفرح وجهك * 7
لان الملك توكل على الرب * وبرحمة العلي لا يزول * تظفر يدك بجميع اعدائك * ويمينك 8 9
بجميع مبغضيك * تجعلهم مثل نار التنور لوقت السخط * الرب بسخطه يحرقهم * والنار 10
تاكلهم * وتبيد من الارض ثمارهم * وذريتهم من بني البشر * لانهم امالوا عليك الشرور 11 12
وفكروا في امور لم يستطيعوا اقامتها * تركتهم يولون على ادبارهم * جعلت ذلا على وجوههم * 13
ارتفع يا رب بقوتك * نسبح ونرتل لجبروتك * اللليلويا * المزمور الحادي والعشرون * 14
قاله وقت نصرته على اعدائه ونبوة عن الصلبوت * وهو سد استيخن * 1
الاهي الاهي انظر الي * لماذا يا الهي تركتني * تباعدت عن خلاصي لقول جهلي * 2
الهي اصرخ اليك النهار كله فلم تستجب لي * وفي الليل لم تصغ لي * وانت تحل في 3 4
القديسين * يا فخر اسرائيل * بك امن اباونا * توكلوا عليك فنجيتهم * صرخوا اليك فخلصوا 5 6
رجوك فلم يخزوا * واني انا دودة ولست انسانا * عارا في الناس مرذولا في الشعوب * كل من راني 7 8
مقتني * تكلموا بشفاههم * وحركوا رووسهم * وقالوا * ان كان امن او توكل على الرب 9
فليخلصه * ولينجه ان كان يريده * وانت من البطن اخرجتني * ورجاي منذ كنت 10
ارضع من ثدي امي

Quia tu dedisti eum desiderium cordis sui, & non privâsti eum petitione labiorũ suorum. 3 Prævenisti eum benedictionibus optimis: posuisti super caput ejus coronam gemmeam. 4 Petiit à te vitam, & dedisti ei longitudinem dierum in seculum seculi. 5 Gloria ejus magna est in salute tua: gloriam et magnitudinem splendoris posuisti super eum. 6 Quia concedes ei benedictionem in seculum seculi: exhilarâsti eum gaudio vultûs tui. 7 Quoniam rex confisus est in Domino, & per misericordiam Altissimi non movebitur. 8 Fausta sit manus tua in cunctos inimicos tuos: et dextera tua in omnes osores tuos. 9 Efficies eos veluti ignem clibani ad tempus indignationis: Dominus indignatione suâ comburet eos, & ignis comedet eos. 10 Et perdet de terra fructus eorum, & progeniem eorum à filiis hominum. 11 Quia ipsi inflexerunt in te mala, & excogitârunt res quas non potuerunt sustinere. 12 Reliquisti eos retroverti super dorsa sua: posuisti contemptum super vultus eorum. 13 Exaltare, O Domine, in fortitudine tua. Laudabimus & psallemus potentiæ tuæ. Alleluja. 14

PSAL. XXI.

Dictus ab eo, quando superavit inimicos suos. Et prophetia de Crucifixione. Vers. 64. 1

Deus meus, Deus meus, respice in me; quarè, O Deus meus, dereliquisti me? elongatus es à salute mea ob sermonem stultitiæ meæ? 2 Deus meus, clamo ad te die totâ, et non exaudîsti me: & in nocte non auscultâsti me. 3 Et tamen tu habitas in sanctis, O gloria Israelis. 4 In te crediderunt patres nostri, confisi sunt in te, & liberâsti eos: 5 Clamaverunt ad te, et salvi facti sunt: speraverunt in te, et non sunt confusi. 6 Et verò ego sum vermis, & non homo, opprobrium inter homines, contemptus inter populum. 7 Omnis, qui vidit me, odio habuit me; locuti sunt labiis suis, & moverunt capita sua, et dixerunt; 8 Si credidit, aut confisus est in Domino, liberet eum et salvet eum, si diligit eum. 9 Et tu de ventre eduxisti me, & spes mea es à quo lac sugebam ex uberibus matris meæ. 10

תְּהִלִּים : כב

Ne .tu meus Deus meæ matris ventre de ; vulva ex ſum projectus te Super

11 12 עָלֶיךָ הָשְׁלַכְתִּי מֵרָחֶם מִבֶּטֶן אִמִּי אֵלִי אָתָּה׃ אַל־

me Circūdederūt.auxiliator non quia:propinqua anguſtia quoniam , me à te elonges

13 תִּרְחַק מִמֶּנִּי כִּי־צָרָה קְרוֹבָה כִּי־אֵין עוֹזֵר׃ סְבָבוּנִי

me ſuper *Patefecerunt* .me circundederunt *corona* Baſan *robuſti* : multi vituli

14 פָּרִים רַבִּים אַבִּירֵי בָשָׁן כִּתְּרוּנִי׃ פָּצוּ עָלַי

omnia ſe ſeparaverunt & ;ſum effuſus aqua Sicut .rugiens &,rapiens leo : ſuum os

15 פִּיהֶם אַרְיֵה טֹרֵף וְשֹׁאֵג׃ כַּמַּיִם נִשְׁפַּכְתִּי וְהִתְפָּרְדוּ כָּל־

Aruit .meorum viſcerum medio in ſe liquefecit : cera ſicut meum cor fuit : mea oſſa

16 עַצְמוֹתָי הָיָה לִבִּי כַּדּוֹנָג נָמֵס בְּתוֹךְ מֵעָי׃ יָבֵשׁ

pulverem in & ; meis faucibus *adhærens* mea lingua & , mea fortitudo teſta tanquam

כַּחֶרֶשׂ כֹּחִי וּלְשׁוֹנִי מֻדְבָּק מַלְקוֹחָי וְלַעֲפַר־

malignantium *cœtus* , canes me circundederunt Quoniam .me pones mortis

17 מָוֶת תִּשְׁפְּתֵנִי׃ כִּי סְבָבוּנִי כְּלָבִים עֲדַת מְרֵעִים

: mea oſſa omnia Numerabo .*meos pedes &* , *meas manus leo quaſi* : me circundederunt

18 הִקִּיפוּנִי כָּאֲרִי יָדַי וְרַגְלָי׃ אֲסַפֵּר כָּל־עַצְמוֹתָי

ſuper & , ſibiipſis mea veſtimenta Divident .me in inſpicient ,aſpicient ipſi

19 הֵמָּה יַבִּיטוּ יִרְאוּ־בִי׃ יְחַלְּקוּ בְגָדַי לָהֶם וְעַל־

, mea fortitudo : te elonges ne Domine tu Et .ſortem projicient meam veſtem

20 לְבוּשִׁי יַפִּילוּ גוֹרָל׃ וְאַתָּה יְהוָה אַל־תִּרְחָק אֱיָלוּתִי

canis manu è ;meam animam gladio à Erue .feſtina meum auxilium ad

21 לְעֶזְרָתִי חוּשָׁה׃ הַצִּילָה מֵחֶרֶב נַפְשִׁי מִיַּד־כֶּלֶב

.*mihi reſpondiſti* unicornium cornibus à & ; leonis ore ab me Serva .meam unicam

22 יְחִידָתִי׃ הוֹשִׁיעֵנִי מִפִּי אַרְיֵה וּמִקַּרְנֵי רֵמִים עֲנִיתָנִי׃

Timentes .te laudabo *concionis* medio in ; meis fratribus tuum nomen Narrabo

23 24 אֲסַפְּרָה שִׁמְךָ לְאֶחָי בְּתוֹךְ קָהָל אֲהַלְלֶךָּ׃ יִרְאֵי

eo ab timete &:eum glorificate Jahacob ſemen univerſum , eum laudate Dominum

יְהוָה הַלְלוּהוּ כָּל־זֶרַע יַעֲקֹב כַּבְּדוּהוּ וְגוּרוּ מִמֶּנּוּ

,*afflicti manſuetudinem* eſt abominatus nec , ſprevit non Quia .Iſrael ſemen omne

25 כָּל־זֶרַע יִשְׂרָאֵל׃ כִּי לֹא־בָזָה וְלֹא שִׁקַּץ עֱנוּת עָנִי

te A .audivit , eum ad *ipſum clamando in* & ; *illo ab ſuas facies* abſcondit neque

26 וְלֹא־הִסְתִּיר פָּנָיו מִמֶּנּוּ וּבְשַׁוְּעוֹ אֵלָיו שָׁמֵעַ׃ מֵאִתְּךָ

Edent .*eum* timentibus coram reddam mea vota : multa *concione* in mea laus

27 תְּהִלָּתִי בְּקָהָל רָב נְדָרַי אֲשַׁלֵּם נֶגֶד יְרֵאָיו׃ יֹאכְלוּ

veſtrum cor vivet : eum quærentes Dominum laudabunt ; ſaturabuntur & ,pauperes

עֲנָוִים וְיִשְׂבָּעוּ יְהַלְלוּ יְהוָה דֹּרְשָׁיו יְחִי לְבַבְכֶם

: terræ fines omnes Dominum ad convertentur &,Reminiſcentur .ſeculum in

28 לָעַד׃ יִזְכְּרוּ וְיָשֻׁבוּ אֶל־יְהוָה כָּל־אַפְסֵי־אָרֶץ

Domini Quoniam .gentium familiæ univerſæ *tuas facies ad* ſe inclinabunt &

29 וְיִשְׁתַּחֲווּ לְפָנֶיךָ כָּל־מִשְׁפְּחוֹת גּוֹיִם׃ כִּי לַיהוָה

pingues omnes *ſe incurvaverunt* & , Comederunt .*gentes in dominans* & ; regnum

30 הַמְּלוּכָה וּמֹשֵׁל בַּגּוֹיִם׃ אָכְלוּ וַיִּשְׁתַּחֲווּ כָּל־דִּשְׁנֵי־

non ſuam animam &;pulverem deſcendentes omnes ſe incurvabunt *ejus facies ad* :terræ

אֶרֶץ לְפָנָיו יִכְרְעוּ כָּל־יוֹרְדֵי עָפָר וְנַפְשׁוֹ לֹא

nunciabūt &,Venient.generationem in Domino narrabitur:ei ſerviet Semen .vivificabit

31 32 חִיָּה׃ זֶרַע יַעַבְדֶנּוּ יְסֻפַּר לַאדֹנָי לַדּוֹר׃ יָבֹאוּ וְיַגִּידוּ

.fecit quia ,genito populo ; ejus juſtitiam

צִדְקָתוֹ לְעַם נוֹלָד כִּי עָשָׂה׃

תרגום TARGUM.

11 בסעדך אטלקית ממעינא מכרסת אמי אלי את׃
12 לא תתרחק מני מטול דעקתא קריבא ארום
13 לית פריק׃ אחזרו עלי עממיא דמתילין לתורין
14 סגיאין רברבני מתנן אקפוני׃ פתחו עלי פומהון
15 היך כאריא מכלי ותביר׃ היך כמיא אשתדת
ואתפרפרן כולהון גרמי הוה לבי מתמסי היך
16 שעוא בנו מעי׃ יבש היך פחר חילי ולישני
אדביק למוריני ולבית קבורתא אמטיתני׃
17 מטול דאחזרו עלי רשיעי דמתילין לכלביא
סגיעין כנישת מבאישין אקפוני נכתין היך
18 כאריא אידי ורגלי׃ אחוי כל הלבשושי גרמי
19 אנון מסתכלין מבזן לי׃ מפלגין לבושי להון
20 ועלוי פתגי ירמון עדבין׃ ואנת יי לא תתרחיק
21 תוקפי לסיועי אוחי׃ פצי מקטלין בחרבא נפשי
22 מן אידא דכלבא רוחא דגושמי׃ פרוקני מפום
אריא וממלכין דתקיפין ורמין כרימנא קבלתא
23 צלותי׃ אחוי גבורת שמך לאחי במצע כנשתא
24 אשבחנך׃ דחליא דיי שבחו קדמוי כל זרעא
דיעקב הבו ליה יקר ואזדעזעו מניה כל זרעא
25 דישראל׃ מטול דלא בסר ולא שאט צלותהון
דענייא ולא סליק שכנתיה מביניהון ובצלאיהון
26 קדמוהי מקבל׃ מנך תושבחתי בכנישת סגיעת
27 עמא נדרי אשלם קביל דחלוי׃ ייכלון ענותני
וישבעון ישבחון קדם יי דתבעין ליה ישרי רוח
28 נבואה ברעיוני לבכון לעלמין׃ ידכרון נסוי
ויתובון קדם יי כל סיפי ארעא ויסגדון קדמך
29 כל גניסת עממיא׃ מטול דמן קדם יי מלכותא
30 ושליט בעממיא׃ סעודו וסגידו כל דהיני
ארעא קדמוי יגחנון כל נחתין בית קבורתא
31 ונפש רשיעא לא יחיי׃ זרעיה דאברהם
יפלחון קדמוי ויחוון כח גבורתא דיי לדרא
32 בתראה׃ יתובון בניהון ויתנון צדקתיה לעמיה
דעתיד למלד פרישן דעבד׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

11 *Ope tua* projectꝰ ſum *è viſcerib*ꝰ, *à ventre* matris meæ Deus meus es tu. 12 Ne elongeris à me, quoniā anguſtia prope eſt, quoniam non eſt qui *liberet*. 13 Circundederunt me populi ſimiles tauris multis: principes Baſſan vallaverunt me. 14 Aperuerunt ſuper me os ſuum, ſicut leo rugiens & rapiens. 15 Veluti aqua effuſus ſum, & diſperſa ſunt omnia oſſa mea: fuit cor meū liquefactū ſicut cera in medio viſcerum meorum. 16 Aruit veluti teſta *virtus mea*, & lingua mea adhæſit palato meo; & in domum ſepulchri concluſiſti me. 17 Quoniam vallaverunt me *impii*, qui ſimiles ſunt canibus plurimis: congregatio malignorum circundedit me, mordentes *ſicut leo* manus meas & pedes meos. 18 Dinumerabo omnes cicatrices membrorū meorū: ipſi aſpiciunt & contemnunt me. 19 Dividunt veſtimenta mea ſibi, & ſuper veſtem meā mittent *ſortes*. 20 Et tu Dñe ne elongeris, fortitudo *mea*, ad auxilium meum feſtina. 21 Libera ab his qui occidunt gladio, animā meam; de manu *canis*, ſpiritum corporis mei. 22 Serva me ab ore leonis, & à regibꝰ potentibꝰ & *elatis unicornis* inſtar, accepiſti orationē meā. 23 Narrabo virtutem nominis tui fratribꝰ meis, in medio eccleſiæ laudabo te. 24 Qui timetis Dñm laudate coram eo: omne ſemen Jaacob afferte honorem ei; contremiſcite ab illo omne ſemen Iſrael. 25 Quoniā non deſpexit neq; contempſit orationē *pauperū*, & non amovit majeſtatem ſuā *ab-inter eos*: & dum *precantur* coram eo, acceptat. 26 A te laus mea in congregatione *referta populo*: vota mea reddā in conſpectu timentiū eum. 27 Edent mites & ſaturabuntur: laudabunt Dñm qui quærunt eum; requieſcet ſpiritꝰ prophetiæ in cogitationibꝰ cordis eorum in æternum. 28 Recordabuntur miraculorū ejus, & convertentur coram Dño omnia extrema terræ: & adorabunt coram te omnes familiæ populorū. 29 Quia *à Domino* eſt regnum & poteſtatem habet in populis. 30 Comedite & adorate omnes pingues terræ: coram eo curvabuntur omnes qui deſcendunt in domum ſepulchri: & animam impii non vivificabit. 31 Semen Abraham ſerviet coram eo: *&* annunciabit virtutem fortitudinis Dei generationi venturæ. 32 *Convertentur* filii eorum, & annunciabunt juſtitiam ejus populo *ejus* in futurum naſcituro, miracula quæ edidit.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 12 * ܥܠܝܟ ܐܫܬܕܝܬ ܡܢ ܡܪܒܥܐ: ܘܡܢ ܟܪܣܗ ܕܐܡܝ ܐܠܗܝ ܐܢܬ * ܠܐ ܬܪܚܩ ܡܢܝ. ܡܛܠ
13 ܕܐܘܠܨܢܐ ܩܪܝܒ ܘܠܝܬ ܕܡܥܕܪ: * ܐܚܕܪܘܢܝ ܬܘܪܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܥܓܠܐ ܕܒܬܢ ܚܒܫܘܢܝ: * ܦܬܚܘ
14 15 ܥܠܝ ܦܘܡܗܘܢ. ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܕܢܗܡ ܘܚܛܦ: * ܘܐܝܟ ܡܝܐ ܐܬܐܫܕܬ. ܘܐܬܒܕܪܘ ܟܠܗܘܢ
16 ܓܪܡܝ: ܘܗܘܐ ܠܒܝ ܐܝܟ ܫܥܘܐ. ܘܐܬܡܣܝ ܒܓܘ ܡܥܝ: * ܘܝܒܫ ܐܝܟ ܚܨܦܐ ܕܦܚܪܐ
17 ܚܝܠܝ. ܘܠܫܢܝ ܕܒܩ ܒܫܡܝܐ ܕܚܟܝ. ܘܠܥܦܪܐ ܕܡܘܬܐ ܫܕܝܬܢܝ. * ܡܛܠ ܕܚܕܪܘܢܝ
18 ܟܠܒܐ: ܘܟܢܘܫܬܐ ܕܒܝܫܐ ܚܒܫܘܢܝ. ܚܦܪܘ ܐܝܕܝ ܘܪܓܠܝ: * ܘܐܝܠܠܘ ܟܠܗܘܢ ܓܪܡܝ.
19 ܗܢܘܢ ܚܙܘ ܘܚܪܘ ܒܝ: * ܘܦܠܓܘ ܢܚܬܝ ܒܝܢܬܗܘܢ. ܘܥܠ ܠܒܘܫܝ ܐܪܡܝܘ ܦܣܐ:
20 21 * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܠܐ ܬܪܚܩ ܡܢܝ. ܦܣܘܩܐ. ܐܠܗܝ ܐܠܗܝ ܠܡܥܕܪܢܝ ܚܘܪ: * ܘܦܪܘܩ ܡܢ
22 ܚܪܒܐ ܠܢܦܫܝ. ܘܡܢ ܐܝܕܐ ܕܟܠܒܐ ܝܚܝܕܝܘܬܝ: * ܦܪܘܩܝܢܝ ܡܢ ܦܘܡܗ ܕܐܪܝܐ. ܘܡܢ
23 24 ܩܪܢܐ ܪܡܬܐ ܡܟܝܟܘܬܝ: * ܕܐܫܬܥܐ ܫܡܟ ܠܐܚܝ. ܘܒܓܘ ܟܢܘܫܬܐ ܐܫܒܚܟ: * ܕܕܚܠܝܗ
ܕܡܪܝܐ ܫܒܚܘܗܝ. ܘܟܠܗ ܙܪܥܗ ܕܝܥܩܘܒ ܐܝܩܪܘܗܝ: ܘܙܘܥܘ ܡܢܗ ܟܠܗ ܙܪܥܗ
25 ܕܐܝܣܪܐܝܠ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܛ ܘܠܐ ܐܒܣܝ ܒܥܘܬܗ ܕܡܣܟܢܐ: ܘܠܐ ܐܗܦܟ ܐܦܘܗܝ ܡܢܗ.
26 ܘܟܕ ܩܥܐ ܠܘܬܗ ܫܡܥܗ: * ܡܢ ܩܕܡܝܟ ܗܝ ܬܫܒܘܚܬܝ ܒܥܕܬܐ ܪܒܬܐ. ܢܕܪܝ ܐܫܠܡ
27 ܩܕܡ ܕܚܠܘܗܝ: * ܢܐܟܠܘܢ ܡܣܟܢܐ ܘܢܣܒܥܘܢ. ܘܢܫܒܚܘܢ ܠܡܪܝܐ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ
28 ܠܗ: ܢܚܐ ܠܒܗܘܢ ܠܥܠܡܝܢ. * ܢܬܕܟܪܘܢ ܘܢܬܦܢܘܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܥܒܪܝܗ
29 ܕܐܪܥܐ: ܘܢܣܓܕܘܢ ܩܕܡܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܫܪܒܬܐ ܕܥܡܡܐ. * ܡܛܠ ܕܕܡܪܝܐ ܗܝ ܡܠܟܘܬܐ:
30 ܘܗܘ ܫܠܝܛ ܥܠ ܥܡܡܐ. * ܢܐܟܠܘܢ ܘܢܣܓܕܘܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܟܦܢܝܗ ܕܐܪܥܐ:
31 ܘܩܕܡܘܗܝ ܢܒܪܟܘܢ ܟܠ ܢܚܬܝ ܠܥܦܪܐ. ܢܦܫܝ ܠܗ ܗܝ ܚܝܐ: * ܙܪܥܐ ܕܢܦܠܚܝܘܗܝ
32 ܢܫܬܥܐ ܠܡܪܝܐ. * ܢܐܬܘܢ ܘܢܚܘܘܢ ܙܕܝܩܘܬܗ: ܠܥܡܐ ܕܡܬܝܠܕ ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ.

In te conjectus ſum à ventre, & ab utero matris meæ Deus meus es. Ne abſceſſeris à me: quoniam tribulatio appropinquavit, nec eſt qui adjuvet. Circundederunt me tauri multi, & juvenci Baiſan obſederunt me. Aperuerunt contra me os ſuum, ſicut leo rugiens & rapiens. Et ſicut aqua effuſus ſum, & diſperſa ſunt omnia oſſa mea, & factum eſt cor meum tanquam cera, & emarcuerunt intra me viſcera mea. Et aruit ut teſta figuli virtus mea, & lingua mea adhæſit cœlo palati mei, ſuper pulverem mortis projeciſti me. Quoniam circundederunt me canes, & cœtus malorum cinxerunt me. Foderunt manus meas & pedes meos. Et ululaverunt omnia oſſa mea. Ipſi conſideraverunt & inſpexerunt me. Et diviſerunt veſtimenta mea inter ſe, & ſuper veſtem meam projecerunt ſortes. At tu, Dñe, ne ſis procul à me, *Sectio* Deus meꝰ; Deus meꝰ, ad auxilium meū attende. Et ſerva à gladio animā meā, & de manu canum unitatem meā. Libera me de ore leonis, & à cornu excelſo humilitatē meā: Ut annuntiem nomen tuū fratribus meis, & in medio congregationis te laudem. Timentes Dñm, laudate eum: & omne ſemen Jacob honorate eum, & timete eum omne ſemen Iſraelis. Quoniam non ſprevit neq; deſpexit clamorem pauperis, nec avertit faciem ſuam ab eo: quum clamavit ad eum, audivit illum. E conſpectu tūo eſt laus mea in Eccleſia magna: vota mea perſolvam corā timentibꝰ eum. Edent pauperes & ſaturabuntur, & laudabunt Dñm qui requirunt eum, vivet cor eorum in ſecula. Reminiſcentur, & convertentur ad Dñm univerſi fines terræ, & corā eo proſternent ſe omnes familiæ gentium. Quoniam Dñi eſt regnum, & ipſe dominatur gentibus. Comedent & proſternent ſe corā Dño omnes famelici terræ, & coram eo genua flectent omnes deſcendentes in pulverem. Anima mea ipſi vivit. Semen quod illi ſerviet, generatio annuntiabit Dominum: Venient atque indicabunt juſtitiam ejus populo qui naſcetur, quem faciet Dominus.

Verſio VULG. LAT.

11 In te projectus ſum ex utero: de ventre
12 matris meæ Deus meus es tu. Ne diſceſſeris à me:
Quoniam tribulatio proxima
13 eſt: quoniã non eſt qui adjuvet. Circumdederunt
me vituli multi: tauri pingues
14 obſederunt me: Aperuerunt ſuper me os
15 ſuum, ſicut leo rapiens & rugiens. Sicut
aqua effuſus ſum: & diſperſa ſunt omnia
oſſa mea. Factũ eſt cor meũ tanquã cera
16 liqueſcens in medio ventris mei. Aruit
tanquam teſta virtus mea, & lingua mea
adhæſit faucib⁹ meis: & in pulverẽ mortis
17 deduxiſti me. Quoniã circumdederũt
me canes multi: conſilium malignantium
obſedit me. Foderunt man⁹ meas & pedes
18 meos: Dinumeraverunt omnia oſſa
mea. Ipſi verò conſideraverunt & inſpexerunt
19 me: Diviſerunt ſibi veſtimenta
mea, & ſuper veſtem meam miſerunt ſortem.
20 Tu autem, Domine, ne elongaveris
auxiliũ tuum à me: ad defenſionẽ meam
21 conſpice. Erue à framea, Deus, animam
meam: & de manu canis unicam meam.
22 Salva me ex ore leonis: & à cornib⁹ unicornium
23 humilitatem meam. Narrabo
nomen tuum fratribus meis: in medio
24 eccleſiæ laudabo te. Qui timetis Dominum,
laudate eum: univerſum ſemen
25 Jacob glorificate eum: Timeat eũ omne
ſemen Iſrael: quoniam non ſprevit, neque
deſpexit deprecationem pauperis:
Nec avertit faciem ſuam à me: & cùm
26 clamarem ad eum exaudivit me. Apud
te laus mea in eccleſia magna: vota mea
reddam in conſpectu timentium eum.
27 Edent pauperes, & ſaturabuntur: & laudabunt
Dominum qui requirunt eum: vivent
28 corda eorum in ſeculum ſeculi. Reminiſcentur
et convertentur ad Dominũ
univerſi fines terræ: Et adorabunt in conſpectu
ejus univerſæ familiæ gentium.
29 Quoniam Domini eſt regnum: & ipſe
30 dominabitur gentium. Manducaverunt
& adoraverunt omnes pingues terræ: in
conſpectu ejus cadent omnes qui deſcendunt
31 in terram. Et anima mea illi vivet:
32 & ſemen meum ſerviet ipſi. Annuntiabitur
Domino generatio ventura: & annuntiabunt
cœli juſtitiam ejus populo
qui naſcetur, quem fecit Dominus.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

11 † Ἐπὶ σὲ (ε) ἐπεῤῥίφην ἐκ μήτρας. † ἐκ κοιλίας
12 μητρός μου θεός μου εἶ σύ, † Μὴ ἀποστῇς ἀπ' ἐμοῦ·
13 ὅτι θλίψις ἐγγύς, † ὅτι οὐκ ἔστιν ὁ βοηθῶν. † Περιεκύκλωσάν
με μόσχοι πολλοί, † ταῦροι πίονες περιέσχον
14 με. † Ἤνοιξαν ἐπ' ἐμὲ τὸ στόμα αὐτῶν, † ὡς
15 λέων ὁ ἁρπάζων καὶ ὠρυόμενος. † Ὡσεὶ ὕδωρ ἐξεχύθην,
καὶ διεσκορπίσθη πάντα τὰ ὀστᾶ μου, † ἐγενήθη
ἡ καρδία μου ὡσεὶ κηρὸς τηκόμενος ἐν μέσῳ τῆς
16 κοιλίας μου. † Ἐξηράνθη (ζ) ὡσεὶ ὄστρακον ἡ ἰσχύς
μου, † καὶ ἡ γλῶσσά μου κεκόλληται τῷ λάρυγγί μου,
17 † καὶ εἰς χοῦν θανάτου κατήγαγές με. † Ὅτι ἐκύκλωσάν
με κύνες πολλοί, † συναγωγὴ πονηρευομένων
περιέσχον με. † ὤρυξαν χεῖράς μου, καὶ (η) πόδας,
18 † Ἐξηρίθμησαν πάντα τὰ ὀστᾶ μου· † αὐτοὶ δὲ κατενόησαν
19 καὶ ἐπεῖδόν με. † Διεμερίσαντο τὰ ἱμάτιά μου
ἑαυτοῖς, † καὶ ἐπὶ τὸν ἱματισμόν μου ἔβαλον κλῆρον.
20 † Σὺ δὲ κύριε μὴ μακρύνῃς τὴν βοήθειάν μου, † εἰς τὴν
21 ἀντίληψίν μου πρόσχες. † Ῥῦσαι ἀπὸ ῥομφαίας τὴν
ψυχήν μου, † καὶ ἐκ χειρὸς κυνὸς (θ) τὴν μονογενῆ μου.
22 † Σῶσόν με ἐκ στόματος λέοντος, † καὶ ἀπὸ κεράτων
23 μονοκερώτων τὴν ταπείνωσίν μου. † Διηγήσομαι
τὸ ὄνομά σου τοῖς ἀδελφοῖς μου, † ἐν μέσῳ
24 ἐκκλησίας ὑμνήσω σε. † Οἱ φοβούμενοι κύριον αἰνέσατε
αὐτόν, † ἅπαν τὸ σπέρμα Ἰακὼβ δοξάσατε
25 αὐτόν, † Φοβηθήτωσαν αὐτὸν ἅπαν τὸ σπέρμα Ἰσραήλ.
† ὅτι οὐκ ἐξουδένωσεν οὐδὲ προσώχθισε τῇ
δεήσει τοῦ πτωχοῦ, † οὐδὲ ἀπέστρεψε τὸ πρόσωπον
αὐτοῦ ἀπ' ἐμοῦ· † καὶ ἐν τῷ κεκραγέναι με πρὸς αὐτὸν
26 (ι) εἰσήκουσέ μου. † Παρὰ σοῦ ὁ ἔπαινός μου
ἐν ἐκκλησίᾳ μεγάλῃ, † τὰς εὐχάς μου ἀποδώσω
27 ἐνώπιον (κ) τῶν φοβουμένων αὐτόν. † Φάγονται πένητες
καὶ ἐμπλησθήσονται, † καὶ αἰνέσουσι κύριον οἱ
ἐκζητοῦντες αὐτόν, † ζήσονται αἱ καρδίαι αὐτῶν
28 εἰς αἰῶνα αἰῶνος. † Μνησθήσονται καὶ ἐπιστραφήσονται
πρὸς κύριον πάντα (λ) τὰ πέρατα τῆς γῆς,
† καὶ προσκυνήσουσιν ἐνώπιον αὐτοῦ πᾶσαι αἱ πατριαὶ
29 τῶν ἐθνῶν. † Ὅτι τοῦ κυρίου ἡ βασιλεία, καὶ αὐτὸς
30 δεσπόζει τῶν ἐθνῶν. † Ἔφαγον καὶ προσεκύνησαν πάντες
οἱ πίονες τῆς γῆς· † ἐνώπιον αὐτοῦ προπεσοῦνται
31 πάντες οἱ καταβαίνοντες εἰς τὴν γῆν. † Καὶ ἡ ψυχή
μου αὐτῷ ζῇ, † καὶ τὸ σπέρμα μου δουλεύσει
32 αὐτῷ. † Ἀναγγελήσεται τῷ κυρίῳ γενεὰ ἡ ἐρχομένη·
† καὶ ἀναγγελοῦσι τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ
† λαῷ τῷ τεχθησομένῳ, ὃν ἐποίησεν (μ) ὁ κύριος.

MS. A. (ε) ἐπερίφην (ζ) ὡς (η) πόδας μου, (θ) τὴν μονογενῆν μου. (ι) ἐπήκουσέν (κ) πάντων τῶν (λ) τὰ πέρα (μ) κύριος.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

11 In te projectus ſum ex utero: 10 De ventre matris meæ Deus meus es tu: Ne diſcedas à me. 11 Quoniã [e] tribulatio proxima eſt: quoniam non eſt qui adjuvet. 12 Circundederunt me vituli multi: (f) tauri pingues obſederunt me. 13 Aperuerunt ſuper me os ſuum, ſicut leo [f] rapiens, & rugiens. 14 Sicut aqua (g) effuſus ſum, et diſperſa ſunt omnia oſſa mea. 15 Factum eſt cor meũ, ſicut cera liqueſcens, de medio ventris mei. 16 Exaruit velut teſta, virtus mea: & lingua mea adhæſit faucibus meis, et in pulverem mortis deduxiſti me. 17 Quoniam circundederunt me canes multi: conſiliũ malignantiũ obſedit me. 18 Foderũt man⁹ meas, & (h) pedes: Dinumeraverunt omnia oſſa mea: 19 Ipſi verò conſideraverunt, & inſpexerunt: Diviſerunt ſibi veſtimenta mea, & ſuper veſtẽ meã miſerunt ſortẽ. 20 Tu autem, Domine, ne elongaveris (i) auxilium meũ: in defenſionem meam reſpice. 21 Erue à framea animam meã: et de manu canis (k) unicam meam. 22 Salvũ me fac de ore leonis: & à cornibus unicornium [g] humilitatem meam. 23 Narrabo nomen tuum fratribus meis: in medio Eccleſiæ cantabo te. 24 Qui timetis Dominũ, laudate eum: [h] univerſum ſemen Jacob (l) magnificate eũ. 25 [i] Timeat eum omne ſemẽ Iſrael; quoniam non ſprevit, neque deſpexit deprecationem pauperis: 26 Neque avertit faciem ſuam à me: & cùm clamarẽ ad eũ, exaudivit me. 27 (m) [k] A te laus mea (n) in Eccleſia magna: vota mea reddam in conſpectu timentium eũ. 28 Edent pauperes, & ſaturabuntur, & laudabunt Dominum, qui requirunt eũ: vivent corda eorum in ſeculum ſeculi. 29 Reminiſcentur, & convertentur ad Dominũ univerſi fines terræ: 30 Et adorabunt in conſpectu ejus univerſæ (o) familiæ gentiũ. 31 Quoniam Domini eſt regnũ: & ipſe dominabitur gentium. 32 Manducaverunt, & adoraverunt omnes (p) pingues terræ: in conſpectu ejus (q) procident omnes qui deſcendunt in (r) terram. 33 Et anima (ſ) [l] mea ipſi vivet, & ſemen meum ſerviet illi. 34 Annuntiabitur (t) Domino generatio ventura: & (u) annuntiabunt juſtitiam ejus, populo qui naſcetur, (x) quem fecit Dominus. 31 32

Verſio ÆTHIOPICA.

11 ላዐሊከ፡ተገደፍኩ፡ውስተ፡አሚኅፀን፡፡=፡ አ 10
ምከርሠ፡ እምየ፡ አንተ፡ አምላኪየ፡፡ ኢትር
12 ሐቅ፡ እምኔየ፡ 11. እስመ፡ለልጸቁ፡ አትመ
ንድብ፡፡ እስመ፡አልቦ፡ዘይረድአኒ፡፡=፡ ዓገ 12
13 ቱኒ፡ አልህምት፡ ብዙኃን፡፡ወአኀዙኒ፡ አስዋ
ር፡ስቡሓን፡፡=፡ ወአብቀዉ፡አፈሆሙ፡ ላዕ 13
14 ሌየ፡፡ከመ፡ አንበሳ፡ ዘጸኑዕ፡ ለመሲጥ፡፡=፡
ተክዐውኩ፡ከመ፡ማይ፡ ወተዘርወ፡ኵሉ፡አ 14
15 ዕጽምትየ፡፡=፡ ወኮነ፡ልብየ፡ከመ፡ሰምዕ፡ዘ 15
ይትመሰው፡በማእከለ፡ከርሥየ፡፡=፡ ወየብ 16
ሰ፡ከመ፡ ገልዕ፡ ኃይልየ፡፡ወጠብዓ፡ ልሳንየ፡ በ
16 ጕርዔየ፡፡ወአውረድከኒ፡ ውስተ፡ መሬተ፡ ሞ
ት፡፡=፡ ዓገቱኒ፡ከለባት፡ብዙኃን፡፡ወአኀዙ 17
ኒ፡ማኅበሮሙ፡ለእኩያን፡፡=፡ ቀነዉኒ፡እደ 18
17 ዊየ፡ ወእገርየ፡፡ወኈለቁ፡ ኵሉ፡ አዕጽምት
የ፡፡=፡ እሙንቱሰ፡ጠይቆሙ፡ተዐወሩኒ፡፡ወ 19
ተካፈሉ፡አልባስየ፡ለርእሶሙ፡፡ወተዐጸዉ፡ደ
18 በ፡አራዝየ፡፡=፡ አንተ፡እግዚኦ፡ኢትርሐቅ፡ 20
እምኔየ፡፡ወነጽር፡ውስተ፡ረዲኦትየ፡፡=፡ አ 21
19 ድኅና፡ እምኲናት፡ ለነፍስየ፡፡ወእምእደ፡ከ
ለባት፡ ለብሕቱትየ፡፡=፡ አድኅነኒ፡ እምአ 22
20 ፈ፡ አንበሳ፡፡ወእምአቅርንት፡ ዘአሐዱ፡ ቀር
ኑ፡ ለብሕቱትየ፡፡=፡ እነግሮሙ፡ ስመከ፡ 23
21 ለአኃዊየ፡፡ወበማእከለ፡ ማኅበር፡ እሴብሐ
ከ፡፡=፡ እለ፡ ትፈርህዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ 24
22 ሰብሕዎ፡፡ኵልክሙ፡ዘርአ፡ያዕቆብ፡አክብር
ዎ፡፡=፡ ወፍርህዎ፡ኵልክሙ፡ዘርአ፡እስራ 25
23 ኤል፡፡እስመ፡ኢመነነ፡ወኢተቈጥዓ፡ስእለተ፡
ነዳይ፡፡=፡ ወኢሜጠ፡ገጾ፡እምኔየ፡፡ሶበ፡ጸ 26
24 ራኅኩ፡ኀቤሁ፡ይሰምዓኒ፡፡=፡ እምኀቤከ፡ 27
ክብርየ፡በማኅበረ፡ዐቢይ፡፡ወአሁብ፡ ብፅዓት
25 የ፡በቅድመ፡እለ፡ይፈርህዎ፡፡=፡ ይብልዑ፡ነ 28
ዳያን፡ወይጸግቡ፡፡ወይሴብሕዎ፡ ለእግዚአብ
ሔር፡ ኵሎሙ፡ እለ፡የኀሥሥዎ፡፡ወየሐዩ፡ልበ
ሙ፡ለዓለም፡ዓለም፡፡=፡ ወይዜከሩ፡ወይት 29
26 መየጡ፡ ኀበ፡ እግዚአብሔር፡ ኵሎሙ፡ አጽ
ናፈ፡ምድር፡፡=፡ወይሰግዱ፡ቅድሜሁ፡ኵሎ 30
ሙ፡በሐወርተ፡ አሕዛብ፡፡=፡ እስመ፡ለእ 31
27 ግዚአብሔር፡ መንግሥት፡፡ወውእቱ፡ይኴንኖ
ሙ፡ለአሕዛብ፡፡=፡ ብልዑ፡ወሰገዱ፡ኵልክ 32
ሙ፡ ጥሉላነ፡ ምድር፡፡ቅድሜሁ፡ ይወድቁ፡
28 ኵሎሙ፡እለ፡ይወርዱ፡ውስተ፡ መድር፡፡=፡
ወነፍስየኒ፡ ሎቱ፡ ተሐዩ፡፡ወዘርእየኒ፡ ሎቱ፡
ይትቀነይ፡፡=፡ ትዜንዎ፡ለእግዚአብሔር፡ 33
ትውልድ፡እንተ፡ ትመጽእ፡፡ወይዜንዉ፡ጽድ 34
29 ቀ፡ ዚአሁ፡፡ሕዝብ፡ ዘይትወለድ፡ ዘገብረ፡
30 እግዚአብሔር፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] proximus ſum tribulationi: & non eſt [f] paratus ad prædam. Sicut [g] unicam meam. [h] vos omnes univerſum [i] Timete eum vos omnes ſemen [k] Apud te laus [l] quidem mea

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

11 * ألقيت إليك من الأحشاء ومن بطن أمي أنت إلهي * فلا تبعد عني فإن الشدة قد قربت
12
13 مني * وليس من معين * أحاطت بي عجول كثير * واكتنفتني ثيران سمان * فتحت علي
14
15 أفواهها مثل الأسد الزائر المفترس * اهرقت مثل الماء وتحللت جميع عظامي وصار قلبي
16 مثل الشمع الذائب في بطني * يبست قوتي مثل الفخار والتصق لساني بحنكي * وإلى أبواب
17 الموت أحدرتني * أحاطت بي كلاب كثيرة * اكتنفتني جماعة الأشرار * ثقبوا يدي ورجلي *
18
19 * وأحصوا جميع عظامي * هم تأملوا فأبصروني * واقتسموا بينهم ثيابي * وعلى لباسي اقترعوا *
20
21 * وأنت يا رب لا تبعد من معونتي * انظر في نصرتي * خلص من السيف نفسي * ومن يدي
22 الكلبة التي احتوشتني * خلصني من فم الأسد * وتواضعي من قرن ذي القرن الواحد *
23
24 * سأخبر باسمك إخوتي * وبين الجماعة أسبحك * أيها الخائفون من الرب سبحوه * يا جميع ذرية
25 يعقوب مجدوه * وليخشه كل زرع إسرائيل * لأنه لم يرذل ولم يكن دعوة المساكين * ولا صرف وجهه
26 عني * وعند صراخي إليه أجابني * من عندك مدحي في الجمع العظيم * أشكرك وأوفي نذوري
27 قدام خائفيه * يأكل المساكين ويشبعون * ويسبح الرب الذين يطلبونه * تحيا قلوبهم إلى أبد
28 الأبد * يتذكرون ويرجعون إلى الرب جميع أقطار الأرض * ويسجد قدامه كل قبائل الأمم *
29
30 * لأن الملك للرب وسلطانه على الأمم * يأكل ويسجد قدام الرب كل ملوك الأرض * ويخر
31 قدامه جميع الهابطين إلى التراب * له تحيا نفسي * وذريتي له تتعبد * يخبر بالرب الجيل
32 الآتي * ويحدثون ببره * ليرى الشعب الذي يولد صنع الرب. اللليلويا.

Projectus ſum ad te, à viſceribus & ab 11
utero matris meæ tu es Deus meus. Ne 12
igitur elongẽris à me, quoniam tribulatio
jam obumbravit me, & non eſt adjutor.
Circundederunt me vituli multi: & obſederunt 13
me tauri pingues. Aperuerunt adverſus 14
me ora ſua veluti leo rugiens deprædans.
Effuſus ſum veluti aqua, & 15
diſſoluta ſunt omnia oſſa mea: & factum
eſt cor meum tanquam cera liqueſcens in
ventre meo. Aruit virtus mea veluti teſta, 16
& adhæſit lingua mea palato meo, et
ad portas mortis admoviſti me. Circundederunt 17
me canes multi: obſedit me turba
malorum; foderunt manus meas, &
pedes meos. Et numeraverunt omnia oſſa 18
mea; Ipſi conſideraverunt et inſpexerunt
me. Et diviſerunt inter ſe veſtes meas, 19
& ſuper veſtem meam ſortiti ſunt. Et 20
tu, O Domine mi, ne elongẽris ab auxilio
meo: reſpice in adjutorium meum. Libera 21
à gladio animam meam, & à manibus
canis quæ complexa eſt me; Salva me de 22
ore leonis, & humilitatem meam à cornu
unicornis. Annuntiabo nomen tuum fratribus 23
meis, & inter congregationem te celebrabo.
O timentes Dominum, laudate 24
eum: O omnis progenies Jacob, glorificate
eum. Timeátque eum omne ſemen Iſrael:
Quoniam ipſe non deſpexit, neque abhorruit 25
deprecationem pauperis, neque avertit
faciem ſuam à me; & cùm clamâſſem ad
ipſu, exaudivit me. A conſpectu tuo laudatio 26
mea in Eccleſia magna. Gratias agã
tibi, et reddam vota mea coram timentibus
eum. Comedent pauperes, & ſaturabuntur, 27
& laudabunt Dominum, qui quærunt
eum. Vivent corda eorum in ſeculum ſeculi.
Conſiderabunt et revertentur ad Dominum 28
univerſi fines terræ: & adorabunt
coram ipſo omnes tribus gentium. Quoniam 29
regnum eſt Domino, & imperium ejus
ſuper gentes. Manducabunt, & adorabunt 30
coram Domino omnes reges terræ,
& incurvabuntur ante eum omnes decidentes
in pulverem. Ipſi vivet anima mea,
Et progenies mea ei ſerviet. Annuntiabitur 31
de Domino generatio ventura, Et loquentur 32
juſtitiam ejus: ut videat populus qui
naſcetur beneficia Domini. Alleluia.

תהלים : כג כד כה

PSAL. XXIII. כג

germinis tuguriis In .deficiam non ,me *paſcens* Dominus .Davidi Canticum
1 מזמור לדוד יהוה רעי לא אחסר : בנאות דשא 2
: convertet meam Animam .me ducet requietum aquas *ſuper* : me accubare faciet
ירביצני על־מי מנחות ינהלני : נפשי ישובב 3
vallem *in* ambulavero cùm Etiam.ſuum nomen propter juſtitiæ *orbitas in* me ducet
4 ינחני במעגלי־צדק למען שמו : גם כי־אלך בגיא
, *tuum fulcrum &* ,tua virga :mecum tu quoniam,malum timebo non ,mortis umbræ
צלמות לא־אירא רע כי־אתה עמדי שבטך ומשענתך
impinguâſti :meos hoſtes contra menſam *meas facies ad Diſpones* .me conſolabuntur ipſa
5 המה ינחמני : תערך לפני שלחן נגד צררי דשנת
miſericordia & bonum Veruntamen .*exuberans* meus calix ,meum caput oleo in
6 בשמן ראשי כוסי רויה : אך טוב וחסד
longitudinem in Domini *domum in reverter* &:meæ vitæ diebus omnibus me ſequentur
ירדפוני כל־ימי חיי ושבתי בבית־יהוה לארך
.dierum
ימים :

PSAL. XXIV. כד

habitantes & ,orbis : ejus plenitudo & ,terra Domini .canticum Davidi
1 לדוד מזמור ליהוה הארץ ומלואה תבל וישבי
.eam firmavit flumina ſuper & ; eam fundavit maria ſuper ipſe Quia .eo in
2 בה : כי־הוא על־ימים יסדה ועל־נהרות יכוננה :
Mundus ? ejus ſanctitatis loco in ſtabit quis & ? Domini montem in aſcendet Quis
3 מי־יעלה בהר־יהוה ומי יקום במקום קדשו : נקי
4 juravit nec ; *meam* animam vanum in accepit non qui , corde *purus* & ,*volis*
כפים ובר־לבב אשר לא־נשא לשוא נפשו ולא נשבע
.ſuæ ſalutis Deo à juſtitiam & ; Domino à benedictionem Accipiet .*dolo in*
5 למרמה : ישא ברכה מאת יהוה וצדקה מאלהי ישעו :
Elevate .Selah , Jahacob *tuas facies* quærentium ; eum quærentiũ generatio Hæc
6 זה דור דרשו מבקשי פניך יעקב סלה : שאו
7 .gloriæ rex introibit & ; *ſeculi fores* vos elevate & , veſtra capita portæ
שערים ראשיכם והנשאו פתחי עולם ויבוא מלך הכבוד :
.*belli* potens Dominus :potens &,fortis Dominus ? gloriæ rex iſte Quis
8 מי זה מלך הכבוד יהוה עזוז וגבור יהוה גבור מלחמה :
.gloriæ rex introibit & ; *ſeculi fores* vos elevate &,veſtra capita portæ Elevate
9 שאו שערים ראשיכם ושאו פתחי עולם ויבא מלך הכבוד :
.Selah , gloriæ rex ipſe ,exercituum Dominus ? gloriæ rex iſte *ipſe* Quis
10 מי הוא זה מלך הכבוד יהוה צבאות הוא מלך הכבוד סלה :

PSAL. XXV. כה

.levabo meam animam DOMINE te Ad .Davidi
1 לדוד אליך יהוה נפשי אשא :

תרגום TARGUM.

כג

1 תושבחתא לדוד יי זן ית עמיה במדברא לא
2 חסרו כולא : באתר ציחתא בהנית דתאין
3 ישרנני על מי ניחיא דברני : נפשי יתיב
4 דברני בהלכת צדקא מטול שמיה : ברם כד
אזל בגלותא במישר טולא דמותא לא ארחל
מבישתא מטול דמימרך בסעדי תנדך תריצא
5 ואוריתך הנון ינחמונני : סדרת קדמי פתור
קביל מעיקי דהנתא במשח רבותא ריש כהני
6 כלידי רויחא : ברם טבתא וחסדא ירדפונני
כל יומי חיי כד אתב בבית מקדשא דיי לנגרא
דיומנא :

כד

1 לדוד תושבחתא ליי הא ארעא ובריתהא
2 תבל ודיתבין בה : מטל די הוא על ימיא
3 שוי שתסהא ועל נהרותא אתקנהא : מן יסק
לטור בית מקדשא דיי ומן יקום באתר
4 קודשיא : דכי אידיא ובריר רעיונא דלא אומי
על שקרא לחיבא נפשיה ולא קאם לנכלא :
5 יקבל ברכתא מן קדם יי וצדקתא מאלהא
6 דפורקניה : דנן דרא דתבעין ליה דבעין סבר
7 אפוי יעקב לעלמין : זקפו תרעי בית מקדשא
רישיכון ואזדקפו מעלני עלמא ויעול מלך
8 יקירא : מן הוא דכי מלך יקירא יי עשין וגבר
9 יי מרי גבורתא ועביד קרבא : זקופו תרעי
גנתא דעדן רישיכון ואזדקפו מעלני עלמא
10 ויעול מלכא יקירא : מן הוא דיכי מלכא
יקירא יי צבאות הוא מלך יקירא לעלמין :

כה

1 לדוד קדמך יי נפשי אטול בצלו :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Hymnus Davidi.

PSAL. XXIII.

1 DOminus pavit populum ſuum in deſerto : non defuit quicquam eis. 2 In loco arido in amœnitate herbarum fecit quieſcere me, ſuper aquas quietis deduxit me. 3 Animam meam reſtituet : ducit me per ſemitas *juſtitiæ* propter *nomen ſuum*. 4 Etiam cum ambulavero *in captivitatem* per planitiem umbræ mortis, non timebo malum ; quoniam verbum tuum in auxilio meo : virga tua *recta* & lex tua ipſa me conſolabuntur. 5 Paraſti in conſpectu meo menſam adverſus moleſtatores meos ; impinguâſti oleo unctionis *caput* Sacerdotum *meorum* : calix verò meus amplus. 6 Sed & benignitas & miſericordia ſubſequentur me omnibus diebus vitæ meæ, cùm habitavero in domo ſanctuarii Domini in longitudinem dierum.

Davidi Hymnus.

PSAL. XXIV.

1 DOmini eſt terra, & creaturæ ejus ; orbis, & qui habitant in eo. 2 Quoniam ſuper maria poſuit fundamenta ejus, & ſuper flumina confirmavit eum. 3 Quis *aſcendet* in montem domus ſanctuarii Domini, & quis ſtabit in loco *ſanctitatum* ? 4 Innocens manibus & mundus voluntate, qui non juravit in *falſum* ad damnationem animæ ſuæ, neq; pepigit in fraudem. 5 Accipiet benedictionem à conſpectu Domini, & juſtitiam à Deo redemptionis ſuæ. 6 Hæc eſt generatio quærentium eum, inquirentium aſpectum faciei ejus *Jaacob*, in æternum. 7 Levate portæ domus ſanctuarii capita veſtra, & erigimini valvæ æternæ, ut introeat rex gloriæ. 8 Quis eſt iſte rex glorioſus ? Dominus fortis & potens, Dominus auctor virtutis *&* faciens bellum. 9 Levate portæ horti deliciarum capita veſtra, & erigimini valvæ æternæ, ut introeat rex glorioſus. 10 Quis eſt iſte rex gloriæ ? Dominus exercituum ipſe eſt rex glorioſus in æternum.

Davidi.

PSAL. XXV.

1 COram te Domine animam meam levabo in oratione.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܦܬܘܪܗ ܡܠܟܝܐ. ܠܢ ܕܝܢ ܗܫܐ ܪܘܚܢܐܝܬ ܡܥܠܬܐ ܕܥܡܐ ܚܕܬܐ ܕܟܪ̈ܣܛܝܢܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܝܙ. ܡܪܝܐ ܢܪܥܝܢܝ ܘܡܕܡ ܠܐ ܢܚܣܪܢܝ܀
2 * ܘܒܕܝܪ̈ܐ ܕܥܘܫܢܐ ܢܫܪܝܢܝ. ܘܥܠ ܡ̈ܝܐ ܢܝ̈ܚܐ ܢܕܒܪܢܝ܀ 3 * ܢܦܫܝ ܬܦܢܐ. ܘܬܕܒܪܢܝ ܒܫܒܝ̈ܠܐ ܕܬܪܝܨܘܬܐ ܡܛܠ ܫܡܟ܀
4 * ܐܦ ܐܢ ܐܗܠܟ ܒܓܐܝܘܬܐ ܕܛܠܠܝ̈ ܡܘܬܐ. ܠܐ ܐܕܚܠ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܥܡܝ. ܫܒܛܟ ܘܚܘܛܪܟ ܗܢܘܢ ܒܝܐܘܢܝ܀
5 * ܛܝܒܬ ܩܕܡܝ ܦܬܘܪܐ ܠܘܩܒܠ ܒܥܠܕܒ̈ܒܝ. ܘܡܫܚܬ ܒܡܫܚܐ ܪܝܫܝ. ܘܟܣܝ ܪܘܐ ܐܝܟ ܚܡܪܐ܀
6 * ܛܝܒܘܬܟ ܘܚܢܢܟ ܢܪܕܦܘܢܢܝ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡ̈ܝ ܚܝ̈ܝ. ܘܐܥܡܪ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܐܘܪܟ ܝܘܡ̈ܬܐ܀

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܝܘܡܐ ܩܕܡܝܐ ܕܫܪܝ ܐܠܗܐ ܠܡܥܒܕ ܒܪ̈ܝܬܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܟܕ. ܕܡܪܝܐ ܗܝ ܐܪܥܐ ܒܡܠܐܗ.
2 ܬܒܝܠ ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗ܀ * ܗܘ ܓܝܪ ܒܝܡܐ ܣܡ ܫܬܐܣܝ̈ܗ. ܘܒܢܗܪ̈ܘܬܐ ܬܩܢܗ܀
3 * ܡܢܘ ܢܣܩ ܠܛܘܪܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܢܘ ܢܩܘܡ ܒܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܗ܀
4 * ܗܘ ܕܕܟܝܢ ܐܝ̈ܕܘܗܝ ܘܓܒܐ ܒܠܒܗ. ܘܠܐ ܝܡܐ ܒܢܦܫܗ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܘܠܐ ܝܡܐ ܒܢܟܠܐ܀
5 * ܗܢܐ ܢܩܒܠ ܒܘܪܟܬܐ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܡܢ ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܢ܀
6 * ܗܢܐ ܗܘ ܫܪܒܐ ܕܒܥܐ ܘܡܣܟܐ ܠܚܙܘܐ ܕܐܦܝܟ ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ܀
7 * ܐܪܝܡܘ ܬܪ̈ܥܐ ܪ̈ܝܫܝܟܘܢ. ܘܐܬܬܪܝܡܘ ܬܪ̈ܥܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܘܢܥܘܠ ܡܠܟܐ ܡܫܒܚܐ܀
8 * ܡܢܘ ܗܢܐ ܡܠܟܐ ܡܫܒܚܐ. ܡܪܝܐ ܥܫܝܢܐ ܘܓܢܒܪܐ. ܡܪܝܐ ܓܢܒܪܐ ܘܩܪܒܬܢܐ܀
9 * ܐܪܝܡܘ ܬܪ̈ܥܐ ܪ̈ܝܫܝܟܘܢ. ܘܐܬܬܪܝܡܘ ܬܪ̈ܥܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܘܢܥܘܠ ܡܠܟܐ ܡܫܒܚܐ܀
10 * ܡܢܘ ܗܢܐ ܡܠܟܐ ܡܫܒܚܐ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܗܘ ܡܠܟܐ ܡܫܒܚܐ ܠܥܠܡ܀

* ܫܘܒܚܐ ܘܫܘܪܝ ܡܥܠܬܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܡܚܘܝܢܘܬܐ ܕܬܘܕܝܬܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܡܗ. ܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܢܦܫܝ ܐܪܝܡܬ܀

PSAL. XXIII.

Davidis, de ſua menſa regia. Nobis autem nunc ſpiritualiter, ingreſſus populi Chriſtianorum recens. Verſ. 17.

1 DOminus paſcet me, & quicquam non patietur deeſſe mihi. 2 Et ſuper prata fortitudinis habitare me faciet, & ſuper aquas tranquillas ducet me. 3 Animam meam convertit, & duxit me per ſemitas æquitatis. Ob nomen tuum, 4 Etiamſi ambulavero per valles umbrarum mortis, non timebo malum, nam tu mecum es. Virga tua & baculus tuus, ipſa me conſolata ſunt. 5 Straviſti coram me menſam è regione hoſtium meorum. Impinguâſti caput meum unguento, & calix meus inebriat ut merum. 6 Gratia tua & miſericordiæ tuæ proſecutæ ſunt me omnibus diebus vitæ meæ, ut habitem in domo Domini longitudine dierum.

PSAL. XXIV.

Davidis. De prima die quâ cœpit Deus condere creaturas. Verſ. 24.

1 DOmini eſt terra cum plenitudine ſua : orbis, & omnes habitatores ejus. 2 Quoniam ipſe in mari poſuit fundamenta ejus, & in fluminibus firmavit eam. 3 Quis aſcendet in montem Domini, & quis manebit in monte ejus ſancto ? 4 Is cujus puræ ſunt manus, & electus eſt in corde ſuo : nec jurat in anima ſua cum mendacio, neq; jurat cum dolo. 5 Hic accipiet benedictionem à Domino, & juſtitiam à Deo ſalvatore noſtro. 6 Hæc eſt generatio quærens & expectans ſpeciem vultûs tui, Deus Jacob. 7 Tollite portæ capita veſtra, attollimini portæ quæ à ſeculo eſtis, ingrediatur rex honorum. 8 Quis eſt iſte rex honorum ? Dominus potens & gigas, Dominus gigas & bellator. 9 Tollite portæ capita veſtra, attollimini portæ quæ à ſeculo eſtis, ingrediatur rex honorum. 10 Quis eſt iſte rex honorum ? Dominus fortis, ipſe eſt rex honorandus in æternum.

Gloria, & initium gradûs.

PSAL. XXV. Davidis.

Documentum gratiarum actionis. Verſ. 45.

1 AD te Domine, animam meam levavi

Verſio VULG. LAT.

Pſalmus David. XXII.

1 DOminus regit me, & nihil mihi deerit:
2 In loco paſcuæ ibi me collocavit. Super aquam refectionis educavit
3 me: Animam meam convertit. Deduxit
me ſuper ſemitas juſtitiæ, propter nomen
4 ſuum. Nam, & ſi ambulavero in medio
umbræ mortis, non timebo mala: quoniam tu mecum es. Virga tua, & bacul⁹
5 tuus, ipſa me conſolata ſunt. Paraſti in
conſpectu meo menſam adverſùs eos, qui
tribulant me. Impinguâſti in oleo caput
meũ: & calix meus inebrians quàm præ-
6 clarus eſt! Et miſericordia tua ſubſequetur me omnibus diebus vitæ meæ: Et ut
inhabitem in domo Domini, in longitudinem dierum.

1 Primâ ſabbati, Pſalmus David. XXIII.

DOmini eſt terra, & plenitudo ejus:
orbis terrarum, & univerſi qui habi-
2 tant in eo. Quia ipſe ſuper maria fundavit eũ: & ſuper flumina præparavit eũ.
3 Quis aſcendet in montẽ Dñi? aut quis ſta-
4 bit in loco ſancto ejus? Innocens manibus, & mundo corde, qui non accepit in
vano animã ſuã, nec juravit in dolo pro-
5 ximo ſuo. Hic accipiet benedictionem à
Domino: & miſericordiam à Deo ſalu-
6 tari ſuo. Hæc eſt generatio quærentium
7 eũ, quærentiũ faciẽ Dei Jacob. Attollite
portas principes veſtras, & elevamini
portæ æternales: & introibit rex gloriæ.
8 Quis eſt iſte rex gloriæ? Dominus fortis
& potens: Dominus potens in prælio.
9 Attollite portas principes veſtras, et elevamini portæ æternales: & introibit rex
10 gloriæ. Quis eſt iſte rex gloriæ? Domin⁹ virtutum, ipſe eſt rex gloriæ.

1 In finem, Pſalmus David. XXIV.

ADte, Domine, levavi animam meam:

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. κβ'.

† ΚΥριος (α) ποιμαίνει με, καὶ οὐδέν με ὑστερήσει.
2 † Εἰς τόπον χλόης ἐκεῖ με κατεσκήνωσεν·
3 † ἐπὶ ὕδατος ἀναπαύσεως ἐξέθρεψέ με. † Τὴν
ψυχήν μου ἐπέστρεψεν· † ὡδήγησέν με ἐπὶ τρίβους
4 δικαιοσύνης, † ἕνεκεν τοῦ ὀνόματος αὐτοῦ. † Ἐὰν
γὰρ καὶ πορευθῶ ἐν μέσῳ σκιᾶς θανάτου † οὐ φοβηθήσομαι
κακά, ὅτι σὺ μετ' ἐμοῦ εἶ· † ἡ ῥάβδος σου
5 καὶ ἡ βακτηρία σου, (β) αὗταί με παρεκάλεσαν. † Ἡτοίμασας
ἐνώπιόν μου τράπεζαν, † ἐξ ἐναντίας τῶν
θλιβόντων με· † ἐλίπανας ἐν ἐλαίῳ τὴν κεφαλήν μου,
6 † καὶ τὸ ποτήριόν σου μεθύσκον ὡς κράτιστον. † Καὶ
τὸ ἔλεός σου καταδιώξεταί με πάσας τὰς ἡμέρας
τῆς ζωῆς μου, † καὶ τὸ κατοικεῖν με ἐν οἴκῳ κυρίου εἰς
μακρότητα ἡμερῶν. MS. A. (α) ποιμανεῖ (β) αὐτὰ

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ τῆς μιᾶς σαββάτου. κγ'.

† ΤΟῦ κυρίου ἡ γῆ καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς, † ἡ
οἰκουμένη καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες ἐν αὐτῇ.
2 † Αὐτὸς ἐπὶ θαλασσῶν ἐθεμελίωσεν αὐτήν, † καὶ
3 ἐπὶ ποταμῶν ἡτοίμασεν αὐτήν. † Τίς ἀναβήσεται
εἰς τὸ ὄρος τοῦ κυρίου, † καὶ τίς στήσεται ἐν τόπῳ ἁγίῳ
4 αὐτοῦ; † Ἀθῷος χερσὶ καὶ καθαρὸς τῇ καρδίᾳ,
† ὃς οὐκ ἔλαβεν ἐπὶ ματαίῳ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ,
† καὶ οὐκ ὤμοσεν ἐπὶ δόλῳ τῷ (α) πλησίον αὐτοῦ.
5 † Οὗτος λήψεται εὐλογίαν παρὰ κυρίου, † καὶ
6 ἐλεημοσύνην παρὰ θεοῦ σωτῆρος αὐτοῦ. † Αὕτη
ἡ γενεὰ ζητούντων αὐτόν, † ζητούντων τὸ πρόσωπον
7 τοῦ θεοῦ (β) Ἰακώβ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἄρατε
πύλας οἱ ἄρχοντες ὑμῶν, † καὶ ἐπάρθητε πύλαι αἰώνιοι,
8 † καὶ εἰσελεύσεται ὁ βασιλεὺς τῆς δόξης.
† Τίς ἐστιν οὗτος ὁ βασιλεὺς τῆς δόξης; † κύριος
9 κραταιὸς καὶ δυνατός, † κύριος δυνατὸς ἐν πολέμῳ.
† Ἄρατε πύλας οἱ ἄρχοντες ὑμῶν, † καὶ ἐπάρθητε πύλαι αἰώνιοι, † καὶ εἰσελεύσεται ὁ βασιλεὺς
10 τῆς δόξης. † Τίς ἐστιν οὗτος ὁ βασιλεὺς τῆς δόξης;
† κύριος τῶν δυνάμεων, αὐτός (γ) ἐστιν οὗτος ὁ βασιλεὺς τῆς δόξης.

MS. A. (α) πλησίον. Οὗτος (β) Ἰακώβ. Ἄρατε (γ) ἐστιν ὁ βασιλεὺς

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. κδ'.

† ΠΡὸς σὲ κύριε ἦρα τὴν ψυχήν μου.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

Pſalmus ipſi David. XXII. 1

1 DOminus paſcit me, & nihil mihi deerit: In loco (a) 2
paſcuæ ibi me collocavit. 2 Super aquam refectionis educavit
me: (b) Animam meam convertit. 3
3 Deduxit me ſuper (c) ſemitas
juſtitiæ, propter nomẽ ſuum. 4 Nã 4
et ſi ambulavero in medio umbræ
mortis; non timebo mala: quoniam
tu mecum es. 5 Virga tua, & baculus tuus, ipſa [a] me conſolata
ſunt. 6 Paraſti in conſpectu meo 5
menſam adverſùs eos qui tribulant me. 7 Impinguâſti in oleo
caput meũ, [b] & calix (d) tuus
inebrians quàm præclarus eſt! 8 Et 6
miſericordia tua ſubſequetur me,
omnib⁹ dieb⁹ vitæ meæ. Et ut inhabitem in domo Domini, in longitudinem dierum.

Pſalmus ipſi David *(a)* unâ ſabbati. XXIII. 1

1 DOmini eſt terra, et plenitudo ejus orbis terrarum, &
univerſi qui habitant in eo. 2 (b)
Ipſe ſuper maria fundavit eũ, et 2
ſuper flumina [a] præparavit eũ.
3 Quis aſcendet in montem Domini? aut quis ſtabit in loco (c) 3
ſancto ej⁹? 4 [b] Innocens manib⁹, 4
& mundus corde: qui non accepit
in vano animam ſuam: et non juravit in dolo proximo ſuo. 5 Hic 5
accipiet benedictionẽ à Domino,
et miſericordiam à [c] Deo (d) ſalutari ſuo. 6 Hæc eſt generatio 6
quærentium eum, (e) quærentium
faciem (f) Dei Jacob. DIAPSALMA. 7 (g) Tollite portas 7
principes veſtras, & elevamini
portæ [d] æternales: & introibit
rex gloriæ. 8 Quis eſt (h) iſte rex 8
gloriæ? Dominus fortis, et potens,
Dominus potens in prælio. 9 Tollite portas principes veſtras, & 9
elevamini portæ [e] æternales: et
introibit rex gloriæ. 10 Quis eſt 10
iſte rex gloriæ? Dominus [f] virtutum, ipſe eſt iſte rex gloriæ.

(a) Pſalmus ipſi David. XXIV. 1

ADte, Domine, levavi animam meam:

Verſio ÆTHIOPICA.

1 መዝሙር፡ዘዳዊት፡፡

፳፪ እግዚአብሔር፡ይሬእየኒ፡ወአልቦ፡ዘየ 1
ኀጥአኒ፡፡ውስተ፡ብሔር፡ሥዑር፡ህየ፡የኀ
ድረኒ፡፡፨ ወኀበ፡ማየ፡ዕረፍት፡ሐፀነኒ፡፡ 2
ወሚጠ፡ለነፍስየ፡ 3 ወመርሐኒ፡ፍኖተ፡ጽ
ድቅ፡፡በእንተ፡ስመ፡ዚአሁ፡፡፨ እመኒ፡ሐ 4
ርኩ፡ማእከለ፡ጽላሎተ፡ሞት፡፡ኢይፈርህ፡
እኩይ፡እስመ፡አንተ፡ምስሌየ፡፡፨ በት 5
ርከ፡ወከሰታምከ፡እማንቱ፡ገሠጸኒ፡፡፨ ወ 6
ሠራዕከ፡ማእደ፡በቅድሜየ፡፡በአንጻሪሆ
ሙ፡ለእለ፡ይሣቅዩኒ፡፡፨ ወአጽሐድከ፡በ 7
ቅብእ፡ርእስየ፡፡ጽዋዕከ፡ጽኑዕ፡ወያረ
ዊ፡፡፨ ምሕረትከ፡ይትልወኒ፡በኵሉ፡መ 8
ዋዕለ፡ሕይወትየ፡፡፨ ከመ፡ታንብረኒ፡ቤቶ፡ 9
ለእግዚአብሔር፡ለነዋሕ፡መዋዕል፡፡፨

መዝሙር፡ዘዳዊት፡ዘቀዳሚት፡ሰንበት፡፡

1

፳፫ ለእግዚአብሔር፡ምድር፡በምልአ፡፡ 1
ወዓለምኒ፡ወኵሎሙ፡እለ፡ይነብሩ፡ውስቴ
ታ፡፡፨ ወውእቱ፡በባሕር፡ሣረረ፡፡ወበአፍ 2
ላግኒ፡ውእቱ፡አጽንዓ፡፡፨ መኑ፡ይዐርግ፡ 3
ውስተ፡ደብረ፡እግዚእብሔር፡፡ወመኑ፡ይቀ
ውም፡ውስተ፡መካነ፡መቅደሱ፡፡፨ ዘንጹ 4
ሕ፡ልቡ፡ወንጹሕ፡እደዊሁ፡፡ወዘኢነሥአ፡
ከንቶ፡ላዕለ፡ነፍሱ፡፡ወዘኢመሐለ፡በጕሕሉ
ት፡ለቢጹ፡፡፨ ውእቱ፡ይነሥእ፡በረከተ፡ 5
እምኀበ፡እግዚአብሔር፡፡ወሣህሉኒ፡እም
ኀበ፡እግዚአብሔር፡አምላኩ፡፡፨ ዛቲ፡ 6
ትውልድ፡ተኃሥ፡ሎቱ፡፡ወታኀሥሥ፡ገጾ፡ለ
አምላከ፡ያዕቆብ፡፡፨ አርኅዉ፡፡ኆኅተ፡ 7
መኳንንት፡፡ወይትረኃዋ፡ኆኅት፡እለ፡እምፍ
ጥረት፡፡ወይባእ፡ንጉሠ፡ስብሐት፡፡፨መኑ፡ 8
ውእቱ፡ዝንቱ፡ንጉሠ፡ስብሐት፡፡እግዚአ
ብሔር፡ኃያል፡ወጽኑዕ፡፡እግዚአብሔር፡ኃ
ያል፡በውሰተ፡ፀብዕ፡፡፨ አርኅዉ፡ኆኅተ፡ 9
መኳንንት፡፡ወይትረኃዋ፡ኆኅት፡እለ፡እምፍ
ጥረት፡፡ወይባእ፡ንጉሠ፡ሰብሐት፡፡፨ መ 10
ኑ፡ውእቱ፡ዝንቱ፡ንጉሠ፡ስብሐት፡፡እግዚ
አብሔር፡አምላክ፡ኃያላን፡ውእቱ፡ዝንቱ፡
ንጉሠ፡ስብሐት፡፡፨

1 መዝሙር፡ዘዳዊት፡፡

፳፬ ኀቤከ፡እግዚኦ፡አንቃዕደውኩ፡ነፍስ 1
የ፡አምላኪየ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] me inſtruunt. Et paraſti [b] calix autem tuus durus etiam inebriat. *PSAL. XXIII.* [a] firmavit eum. [b] Qui mundus eſt corde & innocens manibuss & qui non accepit vanum ſuper animam ſuam: [c] Domino Deo ſuo [d] quæ ab ipſa creatione *fuiſtis*: [e] quæ ab ipſa creatione *fuiſtis*: [f] Deus virtutum,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

1 * المزمور الثاني والعشرون * صلاة وتعليم * وهو يب * استيخن *
الرب يرعاني فلا شي يعوزني * وعلى المرج الخصيب احلني وعلى ماء الراحة انشاني * والى سبل 2 3
البر رد نفسي * وهداني لاجل اسمه * ان سلكت وسط ظلال الموت فلا اخشي من الاسواء * لانك 4
انت معي * عصاك وقضيبك هما عزياني * هيأت قدامي مائدة امام اعدائي * دهنت بالدهن 5
راسي * وكاسك اسكرني كالصرف * رحمتك وطيبتك يدركني * كل ايام حياتي * واسكن في 6
بيت الرب طول الايام * اللليلويا * المزمور الثالث والعشرون *

1 * نبوة على دعوة الامم والجسد * وهو كد * استيخن *
للرب الارض بكمالها * المسكونة وجميع سكانها * لانه جعل اساسها على البحار وعلى الانهار 2
اثبتها * من ذا الذي يصعد الى جبل الرب * او من يقف في موضع قدسه * الا الطاهر 3 4
اليدين * النقي القلب * الذي لم ياخذ نفسه بالباطل * ولا حلف لصاحبه بغش * هذا ينال 5
البركة من قبل الرب * والرحمة من الله مخلصه * هذا الجيل الذي يطلب الرب * ويبتغي وجه 6
اله يعقوب * ارفعوا ايها الروساء ابوابكم * وارتفعي ايها الابواب الدهرية فيدخل ملك المجد * 7
* من هو هذا ملك المجد * الرب العزيز القوي * الرب القوي في الحروب * ارفعوا ايها الروساء 8 9
ابوابكم * وارتفعي ايها الابواب الدهرية فيدخل ملك المجد * من هو ذا ملك المجد * رب 10
القوات هو ملك المجد * اللليلويا * المزمور الرابع والعشرون *

1 * تعليم واعتراف * وعدده مب * استيخن *
اليك يا رب رفعت نفسي *

PSAL. XXII.

Oratio & documentum. Verſ. 12. 1

DOminus paſcit me, & nullius rei indigere me ſinet. Et ſuper pratũ fer- 2
tili requieſcere me fecit: et ſuper aquam
requiei educavit me. Et ad ſemitas juſti- 3
tiæ reduxit animam meam, & direxit me
propter nomen ſuum. Si ambulavero per 4
medias umbras mortis, non timebo mala:
quia tu mecum es. Baculus tuus & virga
tua, ipſa conſolata ſunt me. Paraſti ante 5
me menſam è regione inimicorum meorũ.
Unxiſti unguento caput meum, & calix
tuus inebriavit me tanquam merum. Mi- 6
ſericordia tua et bonitas tua aſſequentur
me omnibus diebus vitæ meæ, et inhabitabo in domo Domini longitudine dierum.
Alleluja.

PSAL. XXIII.

Prophetia de vocatione gentium, et incarnatione. Verſ. 24. 1

DOmini eſt terra in integritate ſua, (integra) Habitata, & omnes habi-
tatores ejus: Quia ipſe collocavit fun- 2
damentum ejus ſuper maria, et ſuper flu-
mina ſtabilivit eam. Quis eſt iſte, qui 3
aſcendet in montem Domini? aut quis
ſtabit in loco ſanctitatis ejus? Niſi purus 4
manibus, mundus corde, qui non adhibuit
animam ſuam in vanitate, neque juravit
proximo ſuo cum dolo? Hic aſſequetur 5
benedictionem à conſpectu Domini, &
miſericordiam à Deo Salvatore ſuo. Hæc 6
eſt generatio, quæ quærit Dominum, &
expetit faciem Dei Jacob. Elevate, O 7
principes, portas veſtras: & elevamini,
O portæ æternæ, ut ingrediatur rex glo-
riæ. Quis eſt iſte rex gloriæ? Dominus 8
fortis & potens, Dominus robuſtus in bel-
lis. Elevate, O Principes, portas veſtras: 9
& elevamini, O portæ æternæ, ut ingre-
diatur rex gloriæ. Quis eſt iſte rex 10
gloriæ? Dominus virtutum ipſe eſt rex
gloriæ. Alleluja.

PSAL. XXIV.

Documentum et Confeſſio. Et numerus verſ. 42. 1

ADte, O Domine, levavi animam meam:

תהלים: כו

Etiam .me in mei inimici exultent ne ; afficiar pudore ne , speravi te in meus Deus
2 אלהי בך בטחתי אל־אבושה אל־יעלצו איבי לי׃ גם 3
.inaniter prævaricantes pudore afficientur:pudore afficientur non ,te expectantes omnes
כל־קויך לא יבשו יבשו הבוגדים ריקם׃
me facere iter Fac .me doce tuas semitas ; me scire fac Domine tuas Vias
4 דרכיך יהוה הודיעני ארחותיך למדני׃ הדריכני 5
omni expectavi te ; meæ salutis Deus tu quia , me doce & , *tua veritate in*
באמתך ולמדני כי־אתה אלהי ישעי אותך קויתי כל־
; tuarum misericordiarum & , Domine tuarum miserationum Reminiscere .die
6 היום׃ זכר־רחמיך יהוה וחסדיך
mearum prævaricationum & ,*mearum pueritiarum* Peccatorum .*ipsæ* seculo à quia
7 כי מעולם המה׃ חטאות נעורי ופשעי
tuam bonitatem propter ; tu mei memento tuam misericordiā secūdum,memineris ne
אל־תזכר כחסדך זכר־לי־אתה למען טובך
Deducet .via in peccatores docebit ideo ; Dominus rectus & Bonus .Domine
8 יהוה׃ טוב־וישר יהוה על־כן יורה חטאים בדרך׃ ידרך 9
Domini semitæ Omnes .suam viam humiles docebit & ; judicio in *mansuetos*
10 ענוים במשפט וילמד ענוים דרכו׃ כל־ארחות יהוה
tuum nomen Propter.ejus testimonia &,ejus pactum custodientibus,veritas &,misericordia
11 חסד ואמת לנצרי בריתו ועדתיו׃ למען־שמך
timens vir *hic* Quis .*ipsa* multa quoniam,meæ iniquitati parces & ; Domine
12 יהוה וסלחת לעוני כי רב־הוא׃ מי־זה האיש ירא
ejus semen & ; morabitur bono in ejus Anima .eligat , *via in* eum docebit ? Dominum
13 יהוה יורנו בדרך יבחר׃ נפשו בטוב תלין וזרעו
.*eis notificandū ad* suū pactū &;eū timentibus Domini Secretum.terrā hæreditate accipiet
14 יירש ארץ׃ סוד יהוה ליראיו ובריתו להודיעם׃
Respice .meos pedes reti è educet ipse quoniam ; Dominum ad semper mei Oculi
15 עיני תמיד אל־יהוה כי הוא־יוציא מרשת רגלי׃ פנה 16
:sunt dilatatæ mei cordis Angustiæ .ego *afflictus* & ,unicus quia:mei miserere &,me *ad*
17 אלי וחנני כי־יחיד ועני אני׃ צרות לבבי הרחיבו
omnibus parce & :meū laborē & ,meā afflictionē Vide .me educ meis *coarctationibus* à
18 ממצוקותי הוציאני׃ ראה עניי ועמלי ושא לכל־
iniquitatis odio & : sunt multiplicati quoniam ,meos inimicos Vide .meis peccatis
19 חטאותי׃ ראה־איבי כי־רבו ושנאת חמס
.te in speravi quoniam,confundar ne ;me erue &,meam animam Custodi .me oderunt
20 שנאוני׃ שמרה נפשי והצילני אל־אבוש כי־חסיתי בך׃
, Israelem Deus Redime.te expectavi quoniā;me custodiēt rectitudo &,*Integritas*
21 תם־וישר יצרוני כי קויתיך׃ פדה אלהים את־ישראל 22
.ejus angustiis omnibus ex
מכל צרותיו׃

PSAL. XXVI. כו

Domino in & : ambulavi mea perfectione in ego quoniam,Domine me Judica .Davidi
1 לדוד שפטני יהוה כי אני בתמי הלכתי וביהוה
, meos renes *examina* : me tenta & ,Domine me Proba .*vacillabo* non , sum fisus
2 בטחתי לא אמעד׃ בחנני יהוה ונסני צרופה כליותי
.meum cor &
ולבי׃

תרגום TARGUM.

אלהי בך אתרחצית לא אבהת לא יחדון בעלי 2
3 דבבי עלי׃ ברם כל דסברין לך לא יבהתון
4 יבהתון בזוזין וסריקיא׃ אורחתך יי אודע יתי
5 הלכתך אליף יתי׃ דברני בזכותך ואלפנני
ארום את הוא אלהא דפורקני יתך סברית
6 כל יומא׃ אדכר רחמך יי וטבותך ארום מן
7 עלמא הנון׃ חובי טליותי ומרדי לא תדכר
8 כטובך אדכר לי אנת מטול טיבותך יי׃ טב
ותריץ יי בגין כן מליף חייביא באורחא׃
9 מדריך ענותני בדינא ומליף ענותני אורחיה׃
10 כל הלכתיה דיי טיבו וקשוט לנטרי קימיה
11 וסהדותיה׃ מן בגלל שמך יי ותשבוק לחובי
12 ארום סגי הוא׃ מן הוא דין גברא דדחיל
13 מן קדם יי ילפניה באורחא דאתרעי׃ נפשיה
14 בטיבותא תבית ובנוי יחסנון ארעא׃ רזא דיי
15 גליא לדחלוי וקימיה לאודעותהון׃ עיני
מסתכלין תדירא קדם יי ארום הוא יפיק
16 ממצדתא רגלי׃ אסתכי לותי וחוס עלי מטול
17 דיחידי ועניא אנא׃ עקתין דלבבי פתין
18 משנוקי אפיק יתי׃ חמי סגופי וטרחי ושבוק
19 לכולהון חובי׃ חמי בעלי דבבי ארום סגיעו
20 וסנאתא דחטופין סנו יתי׃ טור נפשי ושיזב
21 יתי לא אבהת מטול דסברית לך׃ שלימותא
ותריצותא יטרונני ארום סברית במימרך׃
22 פרוק יי ית ישראל מכל עקתוי׃

כו

1 לדוד דון יתי יי ארום בשלמותי אנא הלכית
2 ובייי סברית לא אודעזע׃ בחון יתי יי ונסי
יתי סנין כליתי ורעיוני׃

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Deus meus in *te* confisus sum, ne confundar ; 2
ne lætentur hostes mei de me. Etiam 3
universi qui sperant in *te*, non erubescent : erubescent prædatores & vani.
Vias tuas Domine notas fac mihi : semitas 4
tuas instrue me. Deduc me in *justitia* 5
tua & doce me ; quoniam tu es Deus salutis
meæ : te expectavi *tota die*. Recordare 6
misericordiarum tuarum Domine &
beneficiorum tuorum, quoniam ab æterno
sunt. Delictorum adolescentiæ meæ 7
& scelerum meorum ne memineris : secundùm
benignitatem tuam recordare
mei tu, propter bonitatem tuam Domine.
Bonus & rectus est Dominus : 8
propterea docet peccatores in via. Dirigit 9
mansuetos in judicio, & docet mites
viam suam. Omnes viæ Domini bonitas 10
& veritas, custodientibus pactum ejus &
testimonia ejus. Propter nomen tuum 11
Domine etiam remitte peccatum meum,
quoniam multiplex est. Quis est iste homo 12
qui timet à conspectu Domini, docebit
eum in via quam elegerit? Anima ejus 13
in beatitudine *pernoctabit*, & filii ejus
hæreditario jure inibunt possessionem
terræ. Secretum Domini manifestum est 14
his qui timent eum, & pactum ejus ut
doceat eos. Oculi mei respiciunt semper 15
coram Domino, quoniam ipse educet
de laqueo pedes meos. Aspice me & miserere 16
mei, quoniam solus & pauper sum
ego. Angustiæ cordis mei dilatatæ sunt : 17
de angustiis meis libera me. Vide afflictionem 18
meam & laborem meum, & remitte
omnia peccata mea. Vide auctores 19
inimicitiæ meæ, quoniam multiplicati
sunt, & odio rapinæ oderunt me. Custodi 20
animam meam & libera me; non
confundar, quoniam speravi in *te*. Perfectio 21
& rectitudo servabunt me, quia
confisus sum in *verbo tuo*. Libera Domine 22
Israel de omnibus angoribus ejus.

Davidi.

PSAL. XXVI.

1 Iudica me Domine, quoniam in perfectione mea ego ambulavi, & in *Domino* confisus sum, nequaquam labar. Proba me Domine 2
& tenta me ; perpurga renes meos, & *animum* meum.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 ܐܠܗܝ ܒܟ ܣܒܪܬ ܠܐ ܐܒܗܬ܆ ܠܐ ܢܫܬܒܗܪܘܢ ܒܝ ܒܥܠܕܒܒܝ. * ܐܦ ܟܠܗܘܢ ܕܡܣܟܝܢ
3 ܠܟ ܠܐ ܢܒܗܬܘܢ܆ ܢܒܗܬܘܢ ܕܝܢ ܥܘܠܐ ܒܣܪܝܩܘܬܗܘܢ. * ܐܘܪܚܬܟ ܡܪܝܐ ܚܘܝܢܝ܆ ܘܫܒܝܠܝܟ 4
ܐܘܕܥܢܝ. * ܕܒܪܝܢܝ ܒܩܘܫܬܟ ܘܐܠܦܝܢܝ܆ ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܝ ܘܦܪܘܩܝ. ܘܠܟ 5
6 ܣܟܝܬ ܒܟܠܝܘܡ܆ * ܐܬܕܟܪ ܡܪܝܐ ܪܚܡܝܟ ܕܡܢ ܥܠܡ ܘܛܝܒܘܬܟ. * ܘܣܟܠܘܬܐ ܕܛܠܝܘܬܝ
7 ܠܐ ܬܬܕܟܪ ܠܝ܆ ܐܠܐ ܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܪܚܡܝܟ ܐܬܕܟܪܝܢܝ. ܡܛܠ ܛܝܒܘܬܟ ܐܠܗܐ܆ * ܛܒ ܗܘ 8
ܘܬܪܝܨ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܬܪܨ ܠܚܛܝܐ ܒܐܘܪܚܐ܆ * ܘܢܕܒܪ ܠܡܟܝܟܐ ܒܕܝܢܐ. ܘܢܠܦ 9
ܠܡܣܟܢܐ ܐܘܪܚܗ܆ * ܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܗ ܕܡܪܝܐ ܛܝܒܘܬܐ ܘܩܘܫܬܐ. ܠܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ 10
11 ܦܘܩܕܢܗ ܘܣܗܕܘܬܗ܆ * ܡܛܠ ܫܡܟ ܡܪܝܐ ܚܣܝ ܥܠ ܚܛܗܝ ܕܪܒ ܗܘ. * ܡܢܘ ܓܒܪܐ
12 ܕܕܚܠ ܠܡܪܝܐ܆ ܢܠܦܝܘܗܝ ܐܘܪܚܐ ܕܓܒܐ. * ܘܢܦܫܗ ܒܛܒܬܐ ܬܒܘܬ܆ ܘܙܪܥܗ 13
14 ܢܐܪܬ ܐܪܥܐ. * ܬܪܥܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܕܚܠܘܗܝ܆ ܘܩܝܡܗ ܐܘܕܥ ܐܢܘܢ. * ܥܝܢܝ ܒܟܠܙܒܢ
15 ܠܘܬ ܡܪܝܐ܆ ܡܛܠ ܕܗܘ ܡܦܩ ܡܢ ܡܨܝܕܬܐ ܪܓܠܝ. * ܐܬܦܢܐ ܠܘܬܝ ܘܐܪܚܡ ܥܠܝ܆ ܡܛܠ 16
17 ܕܝܚܝܕܐ ܐܢܐ ܘܡܣܟܢܐ. * ܥܩܬܗ ܕܠܒܝ ܣܓܝ܆ ܘܡܢ ܥܩܬܝ ܐܦܩܝܢܝ. * ܚܙܝ ܫܘܥܒܕܝ
18 ܘܥܡܠܝ܆ ܘܫܒܘܩ ܠܝ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝ. * ܘܚܙܝ ܕܣܓܝܘ ܒܥܠܕܒܒܝ܆ ܘܣܢܐܬܐ ܕܥܘܠܐ 19
20 ܣܢܐܘܢܝ. * ܛܪ ܢܦܫܝ ܘܦܪܘܩܝܢܝ܆ ܡܛܠ ܕܒܟ ܣܒܪܬ. * ܬܡܝܡܐ ܘܬܪܝܨܐ ܢܩܦܘ ܒܝ܆ ܡܛܠ
21
22 ܕܠܟ ܣܟܝܬ. * ܦܪܘܩ ܐܠܗܐ ܠܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܠܘܨܘܗܝ܆

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܘ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܦܪܩܘ ܡܢܗ ܝܕܘܥܘܗܝ ܟܕ ܗܘܐ ܥܪܘܩܐ. ܠܢ ܕܝܢ ܦܘܩܕܢܐ ܕܗܘ
ܓܒܪܐ ܕܡܫܬܘܫܛ ܒܐܠܗܐ ܒܚܝܠܐ. ܦܫܩ ܠܢ.
ܕܘܢܝܢܝ ܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܒܬܡܝܡܘܬܝ ܗܠܟܬ. ܒܡܪܝܐ ܣܒܪܬ ܠܐ ܐܙܘܥ܆ * ܒܚܘܪܢܝ 2
ܡܪܝܐ ܘܢܣܝܢܝ. ܘܒܩܝ ܟܘܠܝܬܝ ܘܠܒܝ܆

Deus meus in te speravi, non confundar; non glorientur de me inimici mei. Quin etiā oēs qui sperant in te, non confundentur; confundentur autē iniqui in vanitate sua. Vias tuas, Dñe, demonstra mihi; et semitas tuas fac mihi notas. Rege me in veritate tua, et doce me; quoniam tu es Deus meus, & salvator meus, teq; expectavi singulis diebus. Reminiscere, Domine, misericordiarum tuarū quæ à seculo, & beneficiorum tuorum. Et stultitias adolescentiæ meæ ne memineris mihi; sed secundùm multitudinem miserationum tuarū memor sis mei propter bonitatem tuam, Deus. Bonus est ac rectus Dñs: propter hoc dirigit peccatores in viam. Et regit humiles in judicio, docétque pauperes viam suam. Cunctæ viæ Domini benignitas sunt & veritas, iis qui servant decretum ejus & testimonia ipsius. Propter nomen tuum, Dñe, purga me scelere meo: quia magnum est. Quis est vir, qui timet Dominum? Docebit eum viam quam eligit: Et anima ejus demorabitur in bono, & semen ejus hæreditariò possidebit terram. Cogitatio Domini de timentibus se, & fœdus suum notum fecit illis. Oculi mei omni tempore ad Dñm, quoniam ipse educit è reti pedes meos: Convertere ad me, & miserere mei: quoniā unicus ego sum, & inops. Tristitiæ cordis mei multiplicatæ sunt, & è mœroribus meis educito me. Vide subjectionem meam & laborem meū, & dimitte mihi omne peccatū meum. Et vide ut multiplicati sunt inimici mei, & odio iniquitatis oderunt me. Custodi animam meam, & libera me: quandoquidem in te speravi. Integri & recti adhæserunt mihi, quia te expectavi. Liberavit Deus Israelem ex omnibus oppressoribus ejus.

PSAL. XXVI.

Davidis. Quum recesserūt ab eo familiares illius, dum esset profugus. Nobis autem præceptum ejus viri qui proficit apud Deū virtute.

Judica me Domine, quoniā ego in integritate mea ambulavi; in Domino speravi, non movebor. Explora me, Domine, et tenta me: * proba renes meos et cor meum.

Versio VULG. LAT.

2 Deus meus, in te confido, non erubescam:
3 Neque irrideant me inimici mei: etenim
universi, qui sustinent te, non confunden-
4 tur. Confundantur omnes iniqua agentes
supervacuè. Vias tuas, Domine, demon-
5 stra mihi: & semitas tuas edoce me. Di-
rige me in veritate tua, & doce me: quia
tu es Deus salvator meus, & te sustinui
6 totâ die. Reminiscere miserationum tu-
arum, Domine, & misericordiarum tu-
7 arum, quæ à seculo sunt. Delicta juven-
tutis meæ, & ignorantias meas ne memi-
neris. Secundùm misericordiam tuam
memento mei tu: propter bonitatem tu-
8 am, Domine. Dulcis & rectus Dominus:
propter hoc legem dabit delinquentibus
9 in via. Diriget mansuetos in judicio: do-
10 cebit mites vias suas. Universæ viæ Do-
mini, misericordia & veritas, requiren-
tibus testamentum ejus & testimonia e-
11 jus. Propter nomen tuum, Domine, pro-
pitiaberis peccato meo: multū est enim.
12 Quis est homo qui timet Dominū? legem
13 statuit ei in via, quam elegit. Anima e-
jus in bonis demorabitur: & semen ejus
14 hæreditabit terram. Firmamentum est
Dominus timentibus eum: & testamen-
15 tum ipsius ut manifestetur illis. Oculi
mei semper ad Dominum: quoniam ipse
16 evellet de laqueo pedes meos. Respice in
me, & miserere mei: quia unicus & pau-
17 per sum ego. Tribulationes cordis mei
multiplicatæ sunt: de necessitatibus meis
18 erue me. Vide humilitatem meam, & la-
borem meum: & dimitte universa delicta
19 mea. Respice inimicos meos quoniam
multiplicati sunt, & odio iniquo oderunt
20 me. Custodi animam meam, & erue me:
non erubescam quoniam speravi in te.
21 Innocentes & recti adhæserunt mihi:
22 quia sustinui te. Libera, Deus, Israel, ex
omnibus tribulationibus suis.

1 In finem, Psalmus David. XXV.

Judica me, Domine, quoniam ego in in-
nocentia mea ingressus sum: & in Do-
2 mino sperans non infirmabor. Proba me,
Domine, & tenta me: ure renes meos &
cor meum.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

2 Ὁ θεός μου † ἐπὶ σοὶ πέποιθα, μὴ καταισχυνθείην·
3 † Μηδὲ καταγελασάτωσάν μου οἱ ἐχθροί μου, † καὶ
γὰρ πάντες οἱ ὑπομένοντές σε οὐ μὴ καταισχυνθῶσιν.
4 † Αἰσχυνθήτωσαν (α) οἱ ἀνομοῦντες διακενῆς. † τὰς ὁ-
δούς σου κύριε γνώρισόν μοι, † καὶ τὰς τρίβους σου δί-
5 δαξόν με. † Ὁδήγησόν με (β) ἐπὶ τὴν ἀλήθειάν
σου, † καὶ δίδαξόν με, ὅτι σὺ εἶ ὁ θεὸς ὁ σωτήρ
6 μου, † καὶ σὲ ὑπέμεινα ὅλην τὴν ἡμέραν. † Μνήσθητι
τῶν οἰκτιρμῶν σου κύριε, † καὶ τὰ ἐλέη σου ὅτι ἀπὸ τοῦ
7 αἰῶνός εἰσιν. † Ἁμαρτίας νεότητός μου, καὶ ἀγνοίας μου
μὴ μνησθῇς. † κατὰ τὸ ἔλεός σου μνήσθητί μου, † (γ)
8 ἕνεκεν τῆς χρηστότητός σου κύριε. † Χρηστὸς καὶ εὐ-
θὴς ὁ κύριος, † διὰ τοῦτο νομοθετήσει ἁμαρτάνον-
9 τας ἐν ὁδῷ. † Ὁδηγήσει πραεῖς ἐν κρίσει, † διδάξει
10 πραεῖς ὁδοὺς αὐτοῦ. † Πᾶσαι αἱ ὁδοὶ κυρίου ἔλεος καὶ
ἀλήθεια, † τοῖς ἐκζητοῦσι τὴν διαθήκην αὐτοῦ καὶ τὰ
11 μαρτύρια αὐτοῦ. † Ἕνεκα τοῦ ὀνόματός σου κύριε,
12 † καὶ ἱλάσῃ τῇ ἁμαρτίᾳ μου, πολλὴ γάρ ἐστι. † Τίς ἐστιν
ἄνθρωπος ὁ φοβούμενος τὸν κύριον; † νομοθετήσει
13 αὐτῷ ἐν ὁδῷ, ᾗ ἡρετίσατο. † Ἡ ψυχὴ αὐτοῦ ἐν ἀ-
γαθοῖς αὐλισθήσεται, † καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ κληρο-
14 νομήσει γῆν. † Κραταίωμα κύριος τῶν φοβουμένων
αὐτόν, † (δ) καὶ ἡ διαθήκη αὐτοῦ τοῦ δηλῶσαι αὐτοῖς.
15 † Οἱ ὀφθαλμοί μου διαπαντὸς πρὸς τὸν κύριον, † ὅτι
αὐτὸς ἐκσπάσει ἐκ παγίδος τοὺς πόδας μου.
16 † Ἐπίβλεψον ἐπ᾽ ἐμὲ καὶ ἐλέησόν με, † ὅτι μονο-
17 γενὴς καὶ πτωχός εἰμι ἐγώ. † Αἱ θλίψεις τῆς καρδίας
μου ἐπληθύνθησαν, † ἐκ τῶν ἀναγκῶν μου ἐξάγαγέ με.
18 † Ἴδε τὴν ταπείνωσίν μου καὶ τὸν κόπον μου, † καὶ ἄφες
19 πάσας τὰς ἁμαρτίας μου. † Ἴδε τοὺς ἐχθρούς μου, ὅτι
20 ἐπληθύνθησαν, † καὶ μῖσος ἄδικον ἐμίσησάν με. † Φύ-
λαξον τὴν ψυχήν μου καὶ ῥῦσαί με, † μὴ καταισχυν-
21 θείην, ὅτι ἤλπισα ἐπὶ σέ. † Ἄκακοι καὶ εὐθεῖς ἐκολ-
22 λῶντό μοι, ὅτι ὑπέμεινά σε κύριε. † Λύτρωσαι ὁ
θεὸς τὸν Ἰσραὴλ ἐκ πασῶν τῶν θλίψεων αὐτοῦ.

MS. A. (α) πάντες οἱ (β) ἐν τῇ * ἀλήθειαν, (γ) ἕνεκα (δ) † καὶ τὸ ὄνομα κυρίου τῶν ἐπικαλουμένων αὐτόν, καὶ ἡ διαθήκη

1 Τοῦ Δαυίδ. κε΄.

† Κρῖνόν με κύριε, ὅτι ἐγὼ ἐν ἀκακίᾳ μου ἐπο-
ρεύθην, † καὶ ἐπὶ τῷ κυρίῳ ἐλπίζων οὐ μὴ (α)
2 σαλευθῶ. † Δοκίμασόν με κύριε καὶ πείρασόν με,
† πύρωσον τοὺς νεφρούς μου † καὶ τὴν καρδίαν μου.

MS. A. (α) ἀσθενήσω.

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

Deus meus, in te confidi, non [a] e- 2
rubescam. 2 Neque irrideant me 3
inimici mei: etenim universi qui
sustinent te, non confundentur.
3 Confundantur iniquè (b) [b] a- 4
gentes supervacuè. 4 Vias tuas,
Domine, notas fac mihi, & semitas
tuas edoce me. 5 (c) Deduc me in 5
veritatem tuam, & doce me: quia
tu es Deus salvator meus, & te
sustinui totâ die. 6 Reminiscere 6
miserationū tuarum, Domine: [c]
& (d) quia misericordiæ tuæ à
seculo sunt. 7 Delicta juventutis 7
meæ, & (e) [d] ignorantias meas
ne memineris. 8 Secundùm mise-
ricordiā tuam (f) memor esto mei,
propter bonitatem tuam, Domine.
9 [e] Dulcis, & rectus Dominus: 8
propter hoc [f] legem (g) dabit de-
linquentibus in via. 10 Deducet 9
mansuetos in judicio, [g] docebit
*mites * vias suas. 11 Universæ viæ* 10
Domini misericordia & veritas,
requirentibus testamentum ejus, et
testimonia ejus. 12 Propter nomen 11
tuum, Domine, (h) & [h] propitia-
beris peccato meo: multū est enim.
13 Quis est homo, qui timet Do- 12
minū? [i] legē (i) statuet ei in via,
quam elegit. 14 Anima ejus in bo- 13
nis demorabitur: & semen ejus he-
reditabit terram. 15 (k) [k] Fir- 14
mamentum est Dominus timentiū
eum: & (l) testamentum ipsius ad
manifestandum eis. 16 Oculi mei 15
semper ad Dominum: quoniam
ipse evellet de laqueo pedes meos.
17 Respice in me, et miserere mei: 16
quoniam (m) unicus, et pauper (n)
sum ego. 18 Tribulationes cordis 17
mei (o) multiplicatæ sunt: de ne-
cessitatibus (p) meis erue me. 19 Vi- 18
de humilitatem meam, & laborē
meum: & dimitte omnia peccata
mea. 20 Vide [l] inimicos meos, 19
quoniā multiplicati sunt, & odio
iniquo oderunt me. 21 Custodi ani- 20
mam meam, & erue me: non con-
fundar, quoniam speravi in te.
22 Innocentes & recti adhæse- 21
runt mihi: quoniā sustinui te, Do-
mine. 23 Redime, Deus, Israel ex 22
omnibus tribulationibus ejus.

(a) Ipsius David. XXV. 1

Judica (b) me, Domine, quoniam ego in (c) innocentia mea ambulavi: & in Domino sperans [a] non (d) movebor. 2 Proba me, Domine, & tenta me: [b] ure renes meos, & cor meum. 2

Versio ÆTHIOPICA.

ወኢየከ፡ ተወከልኩ፡ ኢይትኀፈር፡ ለዓለ
ም።=፡ ወኢይስሐቁኒ፡ ጸላእትየ።እስ 2
መ፡ኵሎሙ፡ እለ፡ ይሴፈዉከ፡ ወኢይትኀፈ
ሩ።=፡ ለይትኀፈሩ፡ኵሎሙ፡እለ፡ይኤብ 3
ሱ፡ዘልፈ።=፡ ፍኖተከ፡እግዚኦ፡አምሮኒ። 4
ወአሰረ፡ ዚአከ፡ መሀረኒ።=፡ ወምርሐኒ፡ 5
በጽድቅከ።ወመሀረኒ፡ እስመ፡አንተ፡ አም
ላክየ፡ወመድኃኒየ።ወኪያከ፡እሴፎ፡ኵሎ፡
አሚረ።=፡ ተዘከር፡ሣህለከ፡እግዚኦ።ወ 6
ምሕረትከኒ፡ እስመ፡ ለዓለም፡ውእቱ።=፡
ኃጢአትየ፡ ዘበንእስየ፡ ወአበድየ፡ ኢትዝክ 7
ር፡ሊተ።=፡ ወበከመ፡ሣህልከ፡ተዘከረኒ። 8
በእንተ፡ ምሕረትከ፡ እግዚኦ።=፡ ኄርኒ፡ 9
ወጻድቅኒ፡ እግዚአብሔር።በእንተዝ፡ ይ
መርሖሙ፡ፍኖተ፡ለእለ፡ይስሕቱ።=፡ ወይ 10
ሜህሮሙ፡ ፍትሐ፡ ለየዋሃን።ወይሜህሮ
ሙ፡ፍኖቶ፡ለልቡባን።=፡ ኵሉ፡ፍኖቱ፡ለ 11
እግዚአብሔር፡ሣህል፡ወጽድቅ።ለእለ፡የኀ
ሡ፡ሕጎ፡ወስምዖ።=፡ በእንተ፡ስምከ፡እ 12
ግዚኦ።ወስረይ፡ሊተ፡ ኵሎ፡ ኃጢአትየ፡እ
ስመ፡ብዙኅ፡ ውእቱ።=፡ መኑ፡ ውእቱ፡ 13
ብእሲ፡ ዘይፈርሆ፡ ለእግዚአብሔር።ወይ
መርሖ፡ፍኖተ፡እንተ፡ኀረየ።=፡ ወነፍሱሂ፡ 14
ውስተ፡ሠናይ፡ ተኀድር።ወዘርኡሂ፡ ይወር
ስዋ፡ለምድር።=፡ ኃይሎሙ፡ውእቱ፡እ 15
ግዚአብሔር፡ለእለ፡ ይፈርህዎ፡ወስሙሂ፡ለ
እግዚአብሔር፡ ለእለ፡ ይጼውዕዎ።ወሕጎ
ሂ፡ይሜህሮሙ።=፡ አዕይንትየሰ፡ዘልፈ፡ኀ 16
በ፡እግዚአብሔር።እስመ፡ ውእቱ፡ ይባልሐ
ን፡እመሥገርት፡ለእገሪየ።=፡ነጽር፡ላዕሌየ፡ 17
ወተሣሀለኒ። እስመ፡ ባሕታዊ፡ ወነዳይ፡አ
ነ።=፡ ወብዙኀ፡ሐዘኑ፡ ለልብየ።አድኅነ 18
ኒ፡እምንዳቤየ።=፡ ርኢ፡ሕማምየ፡ወስራ 19
ሕየ።ወኅድግ፡ሊተ፡ኵሎ፡ኃጢአትየ።=፡
ወርኢ፡ከመ፡በዝኁ፡ ጸላእትየ።ጸልኡ፡በዐ 20
መፃ፡ይጸልኡኒ።=፡ ዕቀብ፡ለነፍስየ፡ወአድ 21
ኅነኒ።ወኢይትኀፈር፡ እስመ፡ ኪያከ፡ ተወከ
ልኩ።=፡ የዋሃን፡ወራትዓን፡ተለውኒ።እ 22
ስመ፡ተሰፈውኩከ፡እግዚኦ።=፡ ያድኅኖ፡ 23
እግዚአብሔር፡ ለእስራኤል፡ እምኵሉ፡
ምንዳቤሁ።=፡

መዝሙር፡ዘዳዊት።

፳፭ ፍትሕ፡ሊተ፡ እግዚኦ፡ እስመ፡ አንሰ፡ 1
በየዋሃትየ፡ አሐውር። ወተወከልኩ፡ በእ
ግዚአብሔር፡ ከመ፡ኢይድክም።=፡ ፍት 2
ነኒ፡እግዚኦ፡ ወአመክረኒ።ፍትን፡ ልብየ፡ወ
ኵልያትየ።=፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] erubescam in perpetuum. [b] agentes indesinenter. [c] & misericordiæ etiam tuæ, quoniam à seculo [d] stultitiam meam [e] Bonus quidem, & justus [f] viam demonstrabit aberrantibus. [g] & cordatos docebit [h] dimitte mihi omne peccatum meum: [i] viam ostendet ei quam [k] Virtus eorum est Dominus, qui timent eum, & nomen Domini invocantibus eum, & lex ejus erudiet illos. Oculi autem [l] quantum multiplicati sunt inimici mei, *PSAL.* XXV. [a] non infirmabor. [b] investiga cor meum & renes meos.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

2 * الاهي عليك توكلت فلا اخزا الي الابد * ولا تضحك اعداي بي * لان جميع المتوكلين عليك
3 لا يخزون * وليخز الاثمة بالباطل * اظهر لي يا رب طرقك * وعلمني سبلك * اهدني الي عدلك *
4 وعلمني لانك اله خلاصي * واياك املت كل ايامي * اذكر يا رب رافاتك ورحمتك * لانها ثابتة
5 منذ الابد * لا تذكر خطايا صباي وجهلي * مثل رحمتك اذكرني * من اجل صلاحك يا رب
6 * الرب صالح ومستقيم * من اجل هذا جعل ناموسا للخطاة في السبيل * يهدي اهل الدعة
7 بالحكم * يعلم الودعاء طرقه * جميع سبل الرب رحمة * وعدل للذين يطلبون عهده وشهاداته
8 * من اجل اسمك يا رب * اغفر خطاياي فانها كثيرة * من هو الرجل الخائف من الرب يثبت له
9 ناموسا يهديه طريقا يرضاها * تكون نفسه في الخيرات * وذريته ترث الارض * الرب عز لخائفيه
10 واسم الرب لمتقيه * وهو يفهمهم ميثاقه * عيناي تنظران الي الرب في كل حين * لانه من الفخ
11 اطلق رجلي * انظر الي وارحمني * فاني ابن وحيد فقير * كثرت احزان قلبي * اللهم اخرجني من
12 شدايدي * انظر الي خضوعي وتعبي واغفر لي جميع خطاياي * وانظر فان اعداي قد
13 كثروا * وشنوني ظلما * احفظ نفسي وخلصني * لا تدعني اخزا * لاني عليك توكلت * الابرار
14 والمستقيمون لاحقوني * لاني رجوتك يا رب * اللهم خلص اسرائيل من جميع شدايده * الليلويا
15
16
17
18
19
20
21
22

1 * المزمور الخامس والعشرون * صلاة * وعدده ك استيخن *

2 احكم لي يا رب فاني بالتواضع مشيت * وعلي الرب توكلت * فلا اضعف * جربني يا رب وامتحني
احم قلبي وكليتي *

Deus meus, in te confisus sum, non confun- 2
dar in æternum: & ne irrideant me ini-
mici mei. Quia omnes confidentes in te 3
non confundentur; at confundantur iniqui
in vanitate. Indica mihi, Domine, vias 4
tuas: & doce me semitas tuas. Dirige 5
me ad æquitatem tuam: & doce me, quia
tu es Deus salutis meæ, téque speravi o-
mnibus diebus meis. Memento, O Domi- 6
ne mi, pietatum tuarum, & misericordiæ
tuæ: quoniam constantes sunt ab æterno.
Ne recorderis peccata juventutis meæ, et 7
stultitiæ meæ. Secundùm misericordiam
tuam recordare mei propter bonitatem tu-
am, O Domine. Dominus bonus est et re- 8
ctus: propter hoc statuit legem peccatori-
bus de semita. Regit præditos mansuetu- 9
dine cum judicio: docet mites vias suas.
Universæ semitæ Domini misericordia et 10
æquitas, iis qui quærunt pactum ejus, &
testimonia ejus. Per nomen tuum, O Do- 11
mine, condona peccata mea, quia multa
sunt. Quis est vir timens Dominum? sta- 12
biliet huic legem, diriget eum per viam
sibi gratam. Erit anima ejus in bonis, & 13
progenies ejus hereditabit terram. Domi- 14
nus est fortitudo timentium eum: & no-
men Domini, colentium eum: & ipse in-
telligere facit eos testamentum suum. O- 15
culi mei aspiciunt ad Dominum in omni
momento, quoniam ipse de laqueo dimisit
pedes meos. Intuere me, & miserere mei: 16
quia filius sum unicus, & pauper. Mul- 17
tiplicatæ sunt tristitiæ cordis mei: Deus,
educ me de tribulationibus meis. Respice 18
in subjectionem meam, & laborem meum:
& condona mihi universa peccata mea.
Et considera quòd inimici mei jam mul- 19
tiplicati sunt, & oderunt me injustè. Con- 20
serva animam meam, & libera me: ne
me sinas erubescere, quoniam in te confi-
sus sum. Innocentes, & recti secuti sunt 21
me, eò quòd speraverim in te, O Domine.
Deus libera Israelem ex omnibus tribula- 22
tionibus ejus. Alleluja.

PSAL. XXV.

Oratio. Et num. Vers. 10. 1

Judica mihi, O Domine, quoniam in
humilitate ambulavi, & in Domino
confisus sum, & non turbabor. Tenta me, 2
O Domine, & proba me: ardere fac cor
meum, & renes meos.

תְּהִלִּים : כו

fedi Non .tua veritate in ambulabo & : meis oculis corã tua misericordia Quoniã
3 כִּי־חַסְדְּךָ לְנֶגֶד עֵינָי וְהִתְהַלַּכְתִּי בַּאֲמִתֶּךָ׃ לֹא־יָשַׁבְתִּי 4
: malignantiũ *concionem* Odivi .introibo non *latentibus* cum & : *mendacii* viris cum
5 עִם־מְתֵי־שָׁוְא וְעִם נַעֲלָמִים לֹא אָבוֹא׃ שָׂנֵאתִי קְהַל מְרֵעִים
tuum altare circuibo &,meas *volas munditia* in Lavabo .ſedebo non impiis cum &
6 וְעִם־רְשָׁעִים לֹא אֵשֵׁב׃ אֶרְחַץ בְּנִקָּיוֹן כַּפָּי וַאֲסֹבְבָה אֶת־מִזְבַּחֲךָ
.tua mirabilia omnia *narrandum ad* & ,confeſſionis *voce in faciendum audire Ad* .Domine
7 יְהוָה׃ לַשְׁמִעַ בְּקוֹל תּוֹדָה וּלְסַפֵּר כָּל־נִפְלְאוֹתֶיךָ׃
colligas Ne .tuæ gloriæ tabernaculi locum &,tuæ domus habitaculũ dilexi Domine
8 יְהוָה אָהַבְתִּי מְעוֹן בֵּיתֶךָ וּמְקוֹם מִשְׁכַּן כְּבוֹדֶךָ׃ אַל־תֶּאֱסֹף 9
eorũ manib⁹ in Quorum *meas vitas ſanguinum* viris cum & ;meam animã peccatorib⁹ cum
10 עִם־חַטָּאִים נַפְשִׁי וְעִם־אַנְשֵׁי דָמִים חַיָּי׃ אֲשֶׁר־בִּידֵיהֶם
,me redime:ambulabo mea perfectione in ego Et .*munere* plena eorũ dextera &:*ſcelus*
11 זִמָּה וִימִינָם מָלְאָה שֹּׁחַד׃ וַאֲנִי בְּתֻמִּי אֵלֵךְ פְּדֵנִי
.Domino benedicam *concionibus* in ; rectitudine in ſtetit meus Pes .mei miſerere &
12 וְחָנֵּנִי׃ רַגְלִי עָמְדָה בְמִישׁוֹר בְּמַקְהֵלִים אֲבָרֵךְ יְהוָה׃

PSAL. XXVII. כז

fortitudo Dominus ? timebo quo à , mea ſalus & , mea lux Dominus .Davidi
1 לְדָוִד יְהוָה אוֹרִי וְיִשְׁעִי מִמִּי אִירָא יְהוָה מָעוֹז־
,meam carnem *edendum ad* maligni me *ſuper appropinquando In* ? pavebo quo à,*mearũ vitarũ*
2 חַיַּי מִמִּי אֶפְחָד׃ בִּקְרֹב עָלַי מְרֵעִים לֶאֱכֹל אֶת־בְּשָׂרִי
fuerit caſtrametata Si .ceciderunt & , impegerunt ipſi,mihi mei inimici & mei hoſtes
3 צָרַי וְאֹיְבַי לִי הֵמָּה כָשְׁלוּ וְנָפָלוּ׃ אִם־תַּחֲנֶה
ego *hoc* in , bellum me *ſuper* ſurgat ſi : meum cor timebit non , *turma me ſuper*
עָלַי מַחֲנֶה לֹא־יִירָא לִבִּי אִם־תָּקוּם עָלַי מִלְחָמָה בְּזֹאת אֲנִי
domo in *me ſedere* , quæram *hanc* ;Domino à petii *Unam* .*confidens*
4 בוֹטֵחַ׃ אַחַת שָׁאַלְתִּי מֵאֵת־יְהוָה אוֹתָהּ אֲבַקֵּשׁ שִׁבְתִּי בְּבֵית־
viſitandum ad & ,Domini *amœnitate in videndum ad* ,*mearum vitarũ* diebus omnibus Domini
יְהוָה כָּל־יְמֵי חַיַּי לַחֲזוֹת בְּנֹעַם־יְהוָה וּלְבַקֵּר
me abſcondet : mala die in ſuo tabernaculo in me abſcondet Quia .ejus templo in
5 בְּהֵיכָלוֹ׃ כִּי יִצְפְּנֵנִי בְּסֻכֹּה בְּיוֹם רָעָה יַסְתִּרֵנִי
ſuper meum caput exaltabit nunc Et .me exaltabit petra in ,ſui *tentorii* abſcondito in
6 בְּסֵתֶר אָהֳלוֹ בְּצוּר יְרוֹמְמֵנִי׃ וְעַתָּה יָרוּם רֹאשִׁי עַל־
: vociferationis ſacrificia ejus *tentorio* in ſacrificabo & ,meis circuitibus meos inimicos
אֹיְבַי סְבִיבוֹתַי וְאֶזְבְּחָה בְאָהֳלוֹ זִבְחֵי תְרוּעָה
, clamabo , meam vocem Domine Audi .Domino canam & , cantabo
7 אָשִׁירָה וַאֲזַמְּרָה לַיהוָה׃ שְׁמַע־יְהוָה קוֹלִי אֶקְרָא
Domine *tuas facies* ;*meas facies* quærite:meũ cor dixit Tibi .me exaudi &,mei miſerere &
8 וְחָנֵּנִי וַעֲנֵנִי׃ לְךָ אָמַר לִבִּי בַּקְּשׁוּ פָנָי אֶת־פָּנֶיךָ יְהוָה
, tuum ſervum iram in declines ne , me à *tuas facies* abſcondas Ne .quæram
9 אֲבַקֵּשׁ׃ אַל־תַּסְתֵּר פָּנֶיךָ מִמֶּנִּי אַל־תַּט־בְּאַף עַבְדֶּךָ
Quoniã .meæ ſalutis Deus me dimittas ne &,me derelinquas ne :fuiſti meum auxiliũ
10 עֶזְרָתִי הָיִיתָ אַל־תִּטְּשֵׁנִי וְאַל־תַּעַזְבֵנִי אֱלֹהֵי יִשְׁעִי׃ כִּי־
.me colliget Dominus & ; me dereliquerunt mea mater &,meus pater
אָבִי וְאִמִּי עֲזָבוּנִי וַיהוָה יַאַסְפֵנִי׃

תרגום TARGUM.

3 מטול דטיבך קביל עיני והלכית בקושטך׃
4 לא אסתחרית עם גברי שקרא ועם מטמרין
5 לאבאשא לא איעול׃ סניתי כנישת מבאשין
6 ועם רשיעיא לא אסתחר׃ אקדיש בזכותא אידי
7 ואחזרית ית מדבחך יי׃ לאשמעא בקל שבחא
8 ולאשתעא כל פרישותך׃ יי רחימית מדור
9 בית מקדשך ואתר משכן יקרך׃ לא תכנוש
עם חיביא נפשי ועם אנשי שדין דמא חיי׃
10 די בידיהון עצת חטאין וימינהון מלין שוחדא׃
11 ואנא בשלמותי איזיל פרוק יתי וחוס עלי׃
12 רגלי קם בתריצא בכנישת צדיקין אברך יי׃

כז

1 לדוד יי נהורי ופורקני ממן אדחל יי עושנא
2 דחיי ממן אדלח׃ כד יתקרבון עלי מבאשין
לגרמא ית בסרי מעיקי ובעלי דבבי הנון
3 אתקלו ונפלו׃ אין תשרי עלי משרית רשיעי
לא אדחל לבבי אין תקום עלי קרבא בדא
4 אנא סביר׃ חדא בעיתי מן קדם יי יתה אתבע
דאתב בבית מקדשא דיי כל יומי חיי למחמי
5 בבסימותא דיי ולבקרא בהיכליה׃ ארום
יטשנני בטלליה ביום בישתא יטמרנני בטמור
6 משכניה בכרך תקיף ירומם יתי׃ והשתא
יתרומם רישי על בעלי דבבי חזור חזור ואכוס
במשכניה נכסי רעוא אשבח ואביע קדם יי׃
7 קביל יי צלותי במקראי וחוס עלי ורחם יתי׃
8 לך אמר לבי בעו אפי ית סבר אפך יי אתבע׃
9 לא תסלק שכינתך מני אל תצלי ברוגזא
לעבדך סיועי הויתא לא תטלטל יתי ולא
10 תשבקנני אלהא דפורקני׃ מטול דאבא ואמא
שבקו יתי יי יכנוש לי׃

PARAPH. CHALD. Verſ. L.

Quoniam bonitas tua ante oculos meos eſt, & ambulavi in veritate tua. Non verſatus ſum cum viris mendacibus, & cum occultantibus ſe ut malè agant non introibo. Odi congregationem pravorum, & cum impiis non verſabor. Sanctificabo in munditia manus meas, & circundabo altare tuum Domine: Ut audire faciam in voce laudis, & ut enarrem omnia mirabilia tua. Domine dilexi habitaculum domus ſanctitatis tuæ, & locum *tabernaculi* gloriæ tuæ. Ne colligas cum peccatoribus animam meam, & cum hominibus effundentibus ſanguinem, vitam meam. In quorum manibus eſt conſilium peccati, & *dexteræ* eorum *plenæ ſunt* munere. Et ego in integritate mea ambulabo: redime me, & miſerere mei. Pes meus ſtetit in rectitudine, in congregatione juſtorum benedicam Domino.

Davidi.

PSAL. XXVII.

D*Ominus* illuminatio mea & redemptio mea, à quo timebo? Dominus fortitudo vitæ meæ, à quo formidabo? Dum propinqui fient contra me maligni ad exterminandam carnem meam, oppreſſores mei & inimici mei ipſi impegerunt & ceciderunt. Si caſtrametabitur adverſus me exercitus impiorum, non pavebit cor meum: ſi ſurrexerit contra me bellum, in hoc ego confido. Unam petivi à conſpectu Domini, hanc requiram, ut habitem in domo ſanctuarii Domini omnibus diebus vitæ meæ, ad contemplandum in dulcedine Domini, & ad inquirendum in templo ejus. Quoniam abſcondet me in umbraculo ſuo, in die mala abſcondet me in occulto tabernaculi ſui: in arce fortí exaltabit me. Et nunc exaltabitur caput meum ſuper adverſarios meos undequaque: & ſacrificabo in *tabernaculo* ejus ſacrificia acceptabilia; laudes dicam & exultabo coram Domino. Exaudi Domine *orationem* meam cùm *vocavero*, & miſerere mei, & me amore complectere. Tibi dixit cor meum: *Exquirito* faciem meam, aſpectum faciei tuæ Domine requiram. Ne amoveas majeſtatem tuam à me, ne inclines indignatione ſervum tuum: auxilium meum fuiſti, ne moveas me, & ne deſeras me Deus redemptionis meæ. Quoniam pater meus & mater mea dereliquerunt me: *Dominus* autem colliget me.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 * ܡܛܠ ܕܛܝܒܘܬܟ ܠܘܩܒܠ ܥܝܢܝ. ܘܗܠܟܬ ܒܗܝܡܢܘܬܟ: * ܠܐ ܝܬܒܬ ܥܡ ܒܝܫܐ.
4 ܘܥܡ ܣܟܠܐ ܠܐ ܥܠܬ: * ܣܢܝܬ ܟܢܘܫܬܐ ܕܒܝܫܐ. ܘܥܡ ܪܫܝܥܐ ܠܐ ܝܬܒܬ: 5
6 * ܐܫܝܓ ܒܕܟܝܘܬܐ ܐܝܕܝ. ܘܐܚܕܪܬ ܠܡܕܒܚܟ ܡܪܝܐ: * ܕܐܫܡܥ ܩܠܐ ܕܬܘܕܝܬܟ.
7 ܘܐܫܬܥܐ ܟܠܗܘܢ ܬܕܡܪܬܟ:* ܡܪܝܐ ܪܚܡܬ ܬܫܡܫܬܐ ܕܒܝܬܟ. ܘܐܬܪܐ ܕܡܫܪܝܐ ܕܫܘܒܚܟ: 8
9 * ܠܐ ܬܘܒܕܝܢܝ ܥܡ ܚܛܝܐ. ܘܥܡ ܓܒܪܐ ܕܕܡܐ ܚܝܝ: * ܕܒܐܝܕܝܗܘܢ ܢܟܠܐ ܘܝܡܝܢܗܘܢ 10
11 ܡܠܝܐ ܫܘܚܕܐ. * ܐܢܐ ܕܝܢ ܒܬܡܝܡܘܬܝ ܗܠܟܬ: ܦܪܘܩܝܢܝ ܘܐܬܪܚܡ ܥܠܝ. * ܪܓܠܝ 12
ܩܡܬ ܒܬܪܝܨܘܬܐ: ܘܒܥܕܬܐ ܐܒܪܟ ܠܡܪܝܐ.

Quoniam miſericordiæ tuæ ſunt ob oculos meos, & ambulavi in fide. Non ſedi cum malignis, et cum ſtultis non ſum ingreſſus. Odi congregationem malorum, & cum impiis non ſedi: Lavi purè manus meas, & circundedi altare tuum Domine. Ut audire facerem vocem laudis tuæ, & narrarem cuncta miracula tua. Domine, dilexi miniſterium domûs tuæ, & locum habitationis gloriæ tuæ. Ne perdas me cum peccatoribus, & cum viris ſanguinis vitam meam: In quorum manibus fraus eſt, & dextera eorum plena munere. Ego autem innocentia mea ambulavi, redime me, & miſerere mei. Pes meus ſtetit in rectitudine, & in Eccleſia benedicam Dominc.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܙ *

* ܕܕܘܝܕ. ܡܢ ܡܚܝܠܘܬܐ ܕܢܦܠܬ ܒܗ. ܦܣܘܩܐ ܠܚ.

1 ܡܪܝܐ ܢܘܗܪܝ ܘܦܪܘܩܝ ܡܢ ܡܢ ܐܕܚܠ: ܡܪܝܐ ܚܘܣܢܐ ܕܚܝܝ ܡܢ ܡܢܘ ܐܙܝܥ ܐܢܐ.
2 * ܟܕ ܩܪܒܘ ܠܝ ܒܝܫܐ ܠܡܐܟܠ ܒܣܪܝ: ܒܥܠܕܒܒܝ ܘܣܢܐܝ. ܐܟܚܕܐ ܐܬܬܩܠܘ
3 ܘܢܦܠܘ: * ܐܢ ܢܫܪܐ ܥܠܝ ܡܫܪܝܬܐ ܠܐ ܢܕܚܠ ܠܒܝ. ܘܐܢ ܢܩܘܡ ܥܠܝ ܩܪܒܐ ܒܗܕܐ
4 ܬܟܝܠ ܐܢܐ: * ܚܕܐ ܫܐܠܬ ܡܢ ܡܪܝܐ ܘܠܗ ܗܝ ܒܥܐ ܐܢܐ. ܕܐܬܒ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ
5 ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ ܕܚܝܝ: ܘܐܚܙܐ ܒܒܣܝܡܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܘܐܣܥܘܪ ܗܝܟܠܗ. * ܡܛܠ
ܕܢܛܫܝܢܝ ܒܡܛܠܬܗ ܒܝܘܡܐ ܒܝܫܐ: ܘܢܛܫܝܢܝ ܒܛܠܠܐ ܕܡܫܟܢܗ ܘܥܠ ܫܘܥܐ ܢܪܝܡܢܝ.
6 * ܡܢ ܗܫܐ ܢܬܪܝܡ ܪܫܝ ܥܠ ܒܥܠܕܒܒܝ ܕܚܕܪܘܢܝ: ܐܕܒܚ ܒܡܫܟܢܗ ܕܒܚܐ
7 ܕܬܘܕܝܬܐ. ܐܫܒܚ ܘܐܙܡܪ ܠܡܪܝܐ: * ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܩܠܝ ܡܐ ܕܩܪܝܬܟ. ܘܐܬܪܚܡ ܥܠܝ
8 ܘܥܢܝܢܝ: * ܠܟ ܐܡܪ ܠܒܝ ܘܒܥܝܢ ܐܦܝ ܐܦܝܟ. * ܡܪܝܐ ܠܐ ܬܗܦܘܟ ܐܦܝܟ ܡܢܝ: ܘܠܐ 9
ܬܚܡܣܢܝ ܒܪܘܓܙܐ ܠܥܒܕܟ. ܥܕܘܪܐ ܗܘܝ ܠܝ ܡܪܝܐ: ܠܐ ܬܫܕܝܢܝ ܘܠܐ ܬܫܒܘܩܝܢܝ
10 ܐܠܗܝ ܘܦܪܘܩܝ. * ܡܛܠ ܕܐܒܝ ܘܐܡܝ ܫܒܩܘܢܝ ܘܡܪܝܐ ܢܟܢܫܢܝ:

PSAL. XXVII.

Davidis. Ob infirmitatem quæ cecidit in ipſum. Verſ. 38.

DOminus lux mea eſt, & ſalus mea, quem timebo? Dominus robur vitæ meæ, à quo trepidabo? Dum acciderent ad me mali, ut ederent carnem meam inimici mei, & oſores mei, ſimul dejecti ſunt & corruerunt. Si caſtrametetur adverſùm me exercit', non timebit cor meum: & ſi exurgat in me prælium, huic rei fiſus ſum. Quòd unum quiddam poſtulavi à Dño, idq; requiro: ut habitem in domo Dñi omnibus diebus vitæ meæ, & aſpiciam ſuavitatem Domini, viſitémque templum ejus. Quoniam abſcondet me in protectione ſua, die malo: méque occultabit in umbra habitaculi ſui: & ſuper rupem exaltabit me. Ex nunc attolletur caput meum ſuper inimicos meos qui circundederunt me: & ſacrificabo in tabernaculo ejus ſacrificia laudis: laudabo & pſallam Domino. Audi Domine, vocem meam cùm clamavero ad te: miſerere mei, & exaudi me. Tibi dixit cor meum, & requirit facies mea vultum tuum Domine, ne avertas faciem tuam à me, & ne affligas in ira ſervum tuum. Adjutor eſto mihi Domine: ne projicias me, neque deſtituas, Deus meus, & ſalvator meus: Quoniam pater meus, & mater mea dereliquerunt me, & Dominus collegit me.

Verſio VULG. LAT.

3 Quoniam miſericordia tua ante oculos meos eſt: & complacui in veritate tua. 4 Non ſedi cum concilio vanitatis: & cum iniqua gerentibus non introibo. 5 Odivi eccleſiam malignantium: & cum impiis 6 non ſedebo. Lavabo inter innocentes manus meas: & circumdabo altare tuum, 7 Domine: Ut audiam vocem laudis, & enarrem univerſa mirabilia tua. 8 Domine, dilexi decorem domûs tuæ, & locum habitationis gloriæ tuæ. 9 Ne perdas cũ impiis, Deus, animam meam, & cum viris 10 ſanguinum vitã meã: In quorũ manibus iniquitates ſunt: dextera eorum repleta 11 eſt muneribus. Ego autem in innocentia mea ingreſſus ſum: redime me, & miſerere mei. 12 Pes meus ſtetit in directo: in eccleſiis benedicam te, Domine.

1 Pſalmus David priuſquàm liniretur.

XXVI.

Dominus illuminatio mea, & ſalus mea, quem timebo? Dominus pro- 2 tector vitæ meæ, à quo trepidabo? Dum appropiant ſuper me nocentes, ut edant carnes meas: Qui tribulant me inimici 3 mei, ipſi infirmati ſunt & ceciderunt. Si conſiſtant adverſùm me caſtra, non timebit cor meum. Si exurgat adverſùm me 4 prælium, in hoc ego ſperabo. Unam petii à Domino, hanc requiram, ut inhabitem in domo Dñi omnib᷒ dieb᷒ vitæ meæ: Ut videam voluptatẽ Domini, & viſitem tẽ- 5 plum ejus. Quoniam abſcondit me in tabernaculo ſuo: in die malorum protexit 6 me in abſcondito tabernaculi ſui. In petra exaltavit me: & nunc exaltavit caput meũ ſuper inimicos meos. Circuivi, & immolavi in tabernaculo ejus hoſtiam vociferationis: cantabo, & pſalmũ dicã 7 Domino. Exaudi, Domine, vocem meam, quã clamavi ad te: miſerere mei, & exau- 8 di me. Tibi dixit cor meũ, Exquiſivit te facies mea: faciẽ tuam, Domine, requi- 9 ram. Ne avertas faciem tuam à me: ne declines in ira à ſervo tuo. Adjutor meus eſto: ne derelinquas me, neque deſpicias 10 me, Deus ſalutaris meus. Quoniam pater meus, & mater mea dereliquerunt me: Dominus autem aſſumpſit me.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

3 † Ὅτι τὸ ἔλεός σου κατέναντι τῶν ὀφθαλμῶν (β) μού 4 ἐστι, † καὶ εὐηρέστησα ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου. † Οὐκ ἐκάθισα μετὰ συνεδρίου ματαιότητος, † καὶ μετὰ παρανομούντων 5 οὐ μὴ εἰσέλθω. † Ἐμίσησα ἐκκλησίαν πο- 6 νηρευομένων, † καὶ μετὰ ἀσεβῶν οὐ μὴ καθίσω. † Νίψομαι ἐν ἀθώοις τὰς χεῖράς μου, † καὶ κυκλώσω τὸ 7 θυσιαστήριόν σου κύριε· † Τοῦ ἀκοῦσαι (γ) φωνῆς αἰνέσεως, † καὶ διηγήσασθαι πάντα τὰ θαυμάσιά σου. 8 † Κύριε ἠγάπησα εὐπρέπειαν οἴκου σου, † καὶ τόπον 9 σκηνώματος δόξης σου. † Μὴ συναπολέσῃς μετὰ ἀσεβῶν τὴν ψυχήν μου, † καὶ μετὰ ἀνδρῶν αἱμάτων τὴν 10 ζωήν μου, † Ὧν ἐν χερσὶν (*) ἀνομίαι, † ἡ δεξιὰ 11 αὐτῶν ἐπλήσθη δώρων. † Ἐγὼ δὲ ἐν ἀκακίᾳ μου ἐπο- 12 ρεύθην, † λύτρωσαί (δ) με καὶ ἐλέησόν με. † (ε) Ὁ πούς μου ἔστη ἐν εὐθύτητι, † ἐν ἐκκλησίαις εὐλογήσω σε κύριε.

1 (α) Τοῦ Δαυὶδ, πρὸ τοῦ (β) χρισθῆναι. κϛʹ.

† Κύριος φωτισμός μου καὶ σωτήρ μου, τίνα φοβηθήσομαι; † κύριος ὑπερασπιστὴς τῆς ζωῆς μου, 2 ἀπὸ τίνος δειλιάσω; † Ἐν τῷ ἐγγίζειν ἐπ᾽ ἐμὲ κακοῦντας, τοῦ φαγεῖν τὰς σάρκας μου, † οἱ θλίβοντές με καὶ οἱ ἐχθροί μου, αὐτοὶ ἠσθένησαν καὶ ἔπεσαν. 3 † Ἐὰν παρατάξηται ἐπ᾽ ἐμὲ παρεμβολὴ, οὐ φοβηθήσεται ἡ καρδία μου· † ἐὰν ἐπαναστῇ ἐπ᾽ ἐμὲ 4 πόλεμος, ἐν ταύτῃ ἐγὼ ἐλπίζω. Μίαν ᾐτησάμην παρὰ κυρίου, ταύτην ἐκζητήσω· † (γ) τοῦ κατοικεῖν με ἐν οἴκῳ κυρίου πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς μου, † τοῦ θεωρεῖν με τὴν τερπνότητα κυρίου, † καὶ 5 ἐπισκέπτεσθαι (δ) τὸν ναὸν αὐτοῦ. † Ὅτι ἔκρυψέ με ἐν σκηνῇ αὐτοῦ ἐν ἡμέρᾳ κακῶν μου, † ἐσκέπασέ με ἐν 6 ἀποκρύφῳ τῆς σκηνῆς αὐτοῦ. Ἐν πέτρᾳ ὕψωσέ με, † καὶ νῦν ἰδοὺ (ε) ὕψωσε τὴν κεφαλήν μου ἐπ᾽ ἐχθρούς μου. † ἐκύκλωσα καὶ ἔθυσα ἐν τῇ σκηνῇ αὐτοῦ θυσίαν 7 ἀλαλαγμοῦ, † ᾄσομαι καὶ ψαλῶ τῷ κυρίῳ. † Εἰσάκουσον κύριε τῆς φωνῆς μου ἧς ἐκέκραξα (ζ), † ἐλέη- 8 σόν με, καὶ εἰσάκουσόν μου. † Σοὶ εἶπεν ἡ καρδία μου, † Ἐξεζήτησα τὸ πρόσωπόν σου, † τὸ πρόσωπόν σου 9 κύριε ζητήσω. † Μὴ ἀποστρέψῃς τὸ πρόσωπόν σου ἀπ᾽ ἐμοῦ, † μὴ ἐκκλίνῃς ἐν ὀργῇ ἀπὸ τοῦ δούλου σου. βοηθός μου γενοῦ, μὴ ἐγκαταλίπῃς με, † καὶ μὴ 10 ὑπερίδῃς με ὁ θεὸς ὁ σωτήρ μου. † Ὅτι ὁ πατήρ μου καὶ ἡ μήτηρ μου ἐγκατέλιπόν με, † ὁ δὲ κύριος προσελάβετό με.

MS.A. (β) σου (γ) φωνὴν (*) αἱ ἀνομίαι, (δ) με κύριε καὶ (ε) Ὁ γὰρ πούς μου Ψαλμ. κϛʹ. MS.A. (α) Τῷ Δαυὶδ, (β) χρισθῆ. (γ) τὸ κατοικεῖν (δ) τὸν ναὸν τὸν ἅγιον αὐτοῦ. (ε) ὕψωσεν κύριος τὴν κεφαλήν (ζ) πρὸς σὲ, ἐλέησόν

Verſio GRÆ. LXX Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

3 *Quoniã miſericordia tua ante oculos meos eſt: & [c] complacui in veritate tua.* 4 *Non ſedi cum conſilio vanitatis: et cum iniqua gerentib᷒ non introibo.* 5 *Odio habui eccleſiã malignantium: et cum [d] impiis non ſedebo.* 6 *Lavabo (e) inter innocentes manus meas: & circundabo altare tuũ, Domine.* 7 *Ut audiã vocem (f) [e] laudis, et enarrẽ univerſa mirabilia tua.* 8 *Domine, dilexi (g) decorẽ domûs tuæ, & locum habitationis gloriæ tuæ.* 9 *[f] Ne ſimul perdas cum impiis animã meã, et cum viris ſanguinum vitã meam.* 10 *In quorũ manibus iniquitates ſunt: dextera eorũ repleta eſt munerib᷒.* 11 *Ego autẽ in innocentia mea ambulavi: redime [g] me, et miſerere mei.* 12 *Pes me᷒ ſtetit in (h) rectitudine: in eccleſiis benedicã te, Domine.*

1 (a) Ipſius (b) David, priuſquàm liniretur.

XXVI.

1 *Domin᷒ [a] illuminatio mea, et ſalus mea, quem timebo?* 2 *Dominus protector vitæ meæ, à quo trepidabo?* 3 *Dum appropinquant ſuper me nocentes, ut edant carnes meas.* 4 *[b] Qui tribulant me, & inimici mei, ipſi infirmati ſunt, & ceciderunt.* 5 *Si conſiſtãt adverſùm me caſtra, non timebit cor meum.* 6 *Si inſurgat in me bellum; in (c) hic ego ſpero.* 7 *Unam petii à Domino, hanc requiram: ut inhabitem in domo Domini omnes dies vitæ meæ:* 8 *(d) [c] Ut contempler delectationem Domini, et (e) viſitẽ templũ ejus.* 9 *Quoniã abſcondit me in tabernaculo ſuo in die malorum meorum: protexit me in abſcondito tabernaculi ſui.* 10 *In petra exaltavit me: et nunc (f) ecce exaltavit [d] caput meum ſuper inimicos meos.* 11 *(g) Circuivi, & immolavi in tabernaculo ejus [e] hoſtiam (h) vociferationis: cantabo, & pſallam Domino.* 12 *Exaudi, Domine, vocem meam, quã clamavi ad te: miſerere mei, & exaudi me.* 13 *(i) Tibi dixit cor meũ, (k) Quæſivi vultũ tuũ: vultum tuum, Domine, requiram.* 14 *Ne avertas vultum tuum à me: ne declines in ira [ ] à ſervo tuo.* 15 *Adjutor meus eſto, (l) ne derelinquas me: neque deſpicias me, Deus [f] Salvator meus.* 16 *Quoniam pater me[us], [&] mater mea dereliquerunt me: Dominus autem [a]ſſumpſit me.*

Verſio ÆTHIOPICA.

3 ከመ:ምሕረትከ:ቅድመ:አዕይንትየ:ውእቱ::ወተፈሣሕኩ:በእድኅናትከ::=: 4 ወኢነበርኩ:ውስተ:ውደ:ከንቶ::ወኢቦእኩ:ምስለ:ዐማፂያን::=: 5 ጸላእኩ:ማኅበረ:እኩያን::ወኢይነብር:ምስለ:ጽልሕዋን::=: 6 ወአሐጽብ:በንጹሕ:እደዊየ::ወአዐውድ:ምሥዋዒከ:እግዚኦ::=: 7 ከመ:እስማዕ:ቃለ:ስብሐቲከ::ወከመ:እንግር:ኵሎ:መንክረከ::=: 8 እግዚኦ:አፍቀርኩ:ሠነ:ቤትከ::ወመካነ:ማኅደረ:ስብሐቲከ::=: 9 ኢትግድፋ:ምስለ:ኃጥኣን:ለነፍስየ::ወኢምስለ:ዕደወ:ደም:ለሕይወትየ::=: 10 እለ:ዐመፃ:ውስተ:እደዊሆሙ::ወምልአት:ኅልያን:የማኖሙ::=: 11 ወአንሰ:በየዋሃትየ:አሐውር::አድኅነኒ:እግዚኦ:ተሣሀለኒ::=: 12 እስመ:በርቱዕ:ቆመ:እገሪየ::በማኅበረ:እበርከከ:እግዚኦ::=:

ዘዳዊት:ዘእንበለ:ይትቀባእ::

፳፮ 1 እግዚአብሔር:ያበርህ:ሊተ:ወያድኅነኒ:መንትኑ:ያፈርሃኒ::=: 2 እግዚአብሔር:ምእመና:ለሕይወትየ:ወመንትኑ:ያደነግፀኒ::=: 3 ሶበ:ይቀርቡኒ:እኩያን:ይብልዑኒ:ሥጋየ::=: 4 ጸላእትየሰ:እለ:ይስቅዩኒ:እሙንቱ:ደክሙ:ወወድቁ::=: 5 እመኒ:ጸብአኒ:ተዓይን:ኢይፈርህኒ:ልብየ::=: 6 ወእመኒ:ሮዱኒ:ጸባኢት:አንሰ:ቦቱ:ተወከልኩ::=: 7 አሐተ:ሰአልክዎ:ለእግዚአብሔር:ወኪያሃ:አኀሥሥ::ከመ:እኅድር:ቤቶ:ለእግዚአብሔር:በኵሉ:መዋዕለ:ሕይወትየ::=: 8 ወከመ:ያርእየኒ:ዘየሠምሮ:ለእግዚአብሔር::ወከመ:እጸመድ:ውስተ:ቤተ:መቅደሱ::=: 9 እስመ:ኀብአኒ:ውስተ:ጽላሎቱ:በዕለተ:መንደቤየ::ወሰወረኒ:በምኅባእ:ጽላሎቱ::=: 10 ወዲበ:ኰኵሕ:አልዐለኒ::ናሁ:ይእዜ:አልዐለ:እግዚአብሔር:ዲበ:ጸላእትየ::=: 11 ዖድኩ:ወሦዕኩ:ውስተ:ደብተራሁ::መሥዋዕተ:ወየበብኩ:ሎቱ::እሴብሖ:ወእሴምር:ለእግዚአብሔር::=: 12 ስምዓኒ:እግዚኦ:ቃልየ:ዘሰአልኩ:ኅቤከ::ተሣሀለኒ:ወሰምዓኒ: 13 ለከ:ይብለከ:ልብየ::ወኀሠሥኩ:ገጸከ::ገጸ:ዚአከ:አኀሥሥ:እግዚኦ::=: 14 ወኢትሚጥ:ገጸከ:እምኔየ::ወኢትትገኃስ:እምገብርከ:ተመዓዕከ::=: 15 ረደኤ:ኩነኒ:ወኢትግድፈኒ::ወኢትትሃየየኒ : አምላኪየ : ወመድኃኒየ::=: 16 እስመ:አቡየ:ወእምየ:ገደፉኒ::ወእግዚአብሔር:ተወክፈኒ::=:

INTERP. ÆTHIOP. [c] lætatus ſum in ſalutari tuo. [d] doloſis [e] laudis tuæ; [f] Ne perdas [g] me, Domine, *PSAL. XXVI.* [a] illucet mihi, & liberabit me, [b] Inimici autem mei, qui tribulant me, ipſi [c] Et ut oſtendat mihi quod Deo gratum eſt, & ut ſedulò vacem in domo ſanctitatis ejus. [d] *me* Dominus ſuper [e] hoſtiam, & vociferabor ipſi: cantabo [ ] tua [f] meus, & Liberator

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

3 *لان رحمتك قبالة عيني *وقد ارتضيت بحقك 4 *لم اجلس في محكم باطل ومع مخالفي الناموس
5 لم ادخل *ابغضت مجمع الاشرار ولم اجالس المنافقين 6 *اغسل بالطهارة يدي· واطوف
7 بمذبحك يا رب *لاسمع صوت تسبحتك· وانطق بجميع عجايبك 8 *يا رب احببت حسن بهاء
9 بيتك وبنية موضع محل قدسك *لا تهلك مع المنافقين نفسي· ومع رجال الدماء حياتي·
10 *الذين في ايديهم السيئات· يمينهم امتلات رشوة 11 *وانا بدعتي مشيت· انقذني يا رب وارحمني·
12 *لان رجلي قامتا بالاستقامة· ابارك يا رب في بيعتك· * المزمور السادس والعشرون لداوود·
1 *قاله وفيه شكر على الخيرات واسترادة منها وتوكل بلا تضجيع· استجن· له· قبل ان يمسح·
2 الرب نوري ومخلصي ممن اخاف· الرب ناصر حياتي ممن اجزع *اذا اقترب مني الاشرار لياكلوا
3 لحمي· الذين احزنوني مع اعداي· هم ضعفوا وسقطوا *فان حل جميعهم بي لم يخف قلبي·
4 وان قام علي القتال فبهذا متكل *واحدة سالت الرب وانا لها طالب· ان اسكن في بيت الرب
5 جميع ايام حياتي لانظر فرح الرب· واتعهد هيكله المقدس *لانه اخفاني في يوم شري· سترني
6 في خفية مظلته· وعلى الصفاة رفعني *وها هوذا الان رفع راسي على اعداي· طفت وذبحت في
7 مظلته· ذبيحة التهليل والتعظيم· اسبح الرب وارتل له *اسمع يا رب صوتي· الذي به دعوتك·
8 وترحم علي واستجب لي *فلك يقول قلبي يقول للرب اطلب *واياك طلب وجهي وجهك يا
9 رب اطلب *لا تصرف وجهك عني· ولا تمل عن عبدك بغضب· كن لي معينا لا تقصيني·
10 ولا ترفضني يا الله مخلصي *فان ابي وامي تركاني والرب قبلني·

3 *Quoniam miſericordia tua eſt ante oculos meos: et jam mihi complacita eſt veritas tua.* 4 *Non ſedi in ſenatu vano, & cum refractariis legis non ſum ingreſſus.* 5 *Odivi concilium malorũ, neque conſedi cum impiis.* 6 *Lavo cum puritate manus meas, & perluſtro altare tuum, O Domine mi.* 7 *Ut audiam vocem laudis tuæ et proferam univerſa miracula tua.* 8 *O Domine mi, dilexi pulchritudinẽ ſplendoris domûs tuæ, et ſpeciẽ loci habitationis ſanctitatis tuæ.* 9 *Ne perdas cum facinoroſis animã meam, & cum viris ſanguinum vitam meam.* 10 *In quorum manibus ſunt læſiones, dextera eorum impleta eſt munere;* 11 *Et ego cum manſuetudine mea ambulavi. Redime me, O Domine, & miſerere mei:* 12 *Nam pedes mei perſtiterunt in rectitudine. Benedicam te, O Domine, in eccleſia tua.*

PSAL. XXVI.

1 Quem David dixit. Et continetur in eo gratiarum actio ob beneficia, atque ut augeantur petitio, & fiducia abſque intermiſſione. Ver. 35. Antequam unctus eſſet.

Dominus lux mea, & Salvator meus; quem timebo? Dominus adjutor vitæ 2 *meæ; à quo trepidabo? Cùm appropinquaverint ad me mali, ut comedant carnes meas: qui contriſtârunt me cum inimicis* 3 *meis, ipſi infirmati ſunt et corruerunt. Etiamſi caſtrametati fuerint ipſi omnes in me, non timebit cor meum. Et ſi inſurrexerit adverſùm me prælium, in hoc ſum fretus.* 4 *Unum petii à Domino, & ego ipſum requiro: ut habitarem in domo Domini omnibus diebus vitæ meæ: ut videam hilaritatem Domini, & viſitem templum ejus ſacroſanctum.* 5 *Quoniam abſcondit me in die calamitatis meæ: protexit me in abdito tabernaculi ſui, et ſupra petram exaltavit* 6 *me. Et ecce nunc exaltavit caput meum ſuper inimicos meos. Luſtravi, & mactavi in tabernaculo ejus ſacrificiũ jubilationis et magnificationis. Laudabo Dominum, &* 7 *pſallam ei. Audi, O Domine, vocem meam quâ vocavi te. Et miſerere mei, et ex-* 8 *audi me. Tibi dixit cor meum, Dominum requiro, teque quæſivit facies mea: et fa-* 9 *ciem tuam, O Domine, deſidero. Ne avertas faciem tuam à me, & ne declines à* *[illegible] ſervo tuo cum furore. Eſto mihi adjutor, neque extermines me: & ne reſpuas me, O Deus, Salvator meus. Quoniam pater meus, & mater mea dereliquerunt me, & Dominus ſuſcepit me.* 10

תהלים : כח כט

.meos hoſtes propter ,rectitudinis ſemitam *in* me duc & ,tuam viam Domine me Doce
11 הורני יהוה דרכך ונחני בארח מישור למען שררי:
, *falſitatis* teſtes me in ſurrexerunt quoniam ,meorum hoſtium *voluntate in* me tradas Ne
12 אל־תתנני בנפש צרי כי קמו־בי עדי־שקר
terra in Domini bonitatem in videre crederem Niſi *.rapinam loquens &*
13 ויפח חמס: לולא האמנתי לראות בטוב־יהוה בארץ
expecta & ; tuum cor roborabit & , te robora : Dominum *ad* Expecta .viventium
14 חיים: קוה אל־יהוה חזק ויאמץ לבך וקוה
.Dominum *ad*
אל־יהוה:

PSAL. XXVIII. כח

fortè ne ,me à taceas ne , mea petra clamabo Domine te Ad .Davidi
1 לדוד אליך יהוה אקרא צורי אל־תחרש ממני פן־
vocem Audi *.lacum* deſcendentibus *cum* aſſimiler & ; me à ſileas
2 תחשה ממני ונמשלתי עם־יורדי בור: שמע קול
adytum ad meas manus *me elevando in* , te ad *me clamando in* mearum deprecationum
תחנוני בשועי אליך בנשאי ידי אל־דביר
, iniquitatē operantibus cum & , impiis cum me trahas Ne .tuæ ſanctitatis
3 קדשך: אל־תמשכני עם־רשעים ועם־פעלי און
eis Da .eorum corde in malum & ; ſuis *ſociis* cum pacem loquentibus
4 דברי שלום עם־רעיהם ורעה בלבבם: תן־להם
eorum manuū opus ſecundùm ,eorum *ſtudiorum* malum ſecundū & ,eorū opus ſecundùm
כפעלם וכרע מעלליהם כמעשה ידיהם
opera *ad intelligent* non Quoniam .eis eorum retributionem redde : eis da
5 תן להם השב גמולם להם: כי לא יבינו אל־פעלת
Benedictus .eos ædificabit non & ,eos deſtruet ; ejus manuum opus *ad* & ,Domini
6 יהוה ואל־מעשה ידיו יהרסם ולא יבנם: ברוך
, mea fortitudo Dominus .mearum deprecationum vocem audivit quoniam;Dominus
7 יהוה כי שמע קול תחנוני: יהוה עזי
: meum cor exultavit & , ſum adjutus & ,meum cor ſperavit ipſo in ,meum ſcutum &
ומגני בו בטח לבי ונעזרתי ויעלז לבי
ſalutum fortitudo & *: eis* fortitudo Dominus .ei confitebor meo cantico *de* &
8 ומשירי אהודנו: יהוה עז־למו ומעוז ישועות
: tuæ hæreditati benedic & , tuum populum Serva *.ipſe* ſui *uncti*
9 משיחו הוא: הושיעה את־עמך וברך את־נחלתך
.ſeculum in uſque eos extolle & , eos paſce &
ורעם ונשאם עד־העולם:

PSAL. XXIX. כט

, gloriam Domino *date* : arietum filios Domino Date .Davidi Canticum
1 מזמור לדוד הבו ליהוה בני אלים הבו ליהוה כבוד
Domino vos incurvate :ejus nominis gloriam Domino Date .fortitudinem &
2 ועז: הבו ליהוה כבוד שמו השתחוו ליהוה
Dominus ;fecit tonare gloriæ Deus ,aquas ſuper Domini Vox .ſanctitatis *decore* in
3 בהדרת־קדש: קול יהוה על־המים אל־הכבוד הרעים יהוה
.decore in Domini vox : potentia in Domini Vox .multas aquas ſuper
4 על־מים רבים: קול־יהוה בכח קול יהוה בהדר:

תרגום TARGUM

11 אלפני יי אורחתך ודברני בהלכתא תריצא
12 מטול תושבחתי: לא תמסרנני ברעות מעיקי
ארום קמו עלי סהדי שקרא וממללי חטופא:
13 אלולי די הימנית למחמי בטובא דיי בארעא
14 דחיי עלמא: סביר על יי תקוף ויעלם לבך
וסבור על יי:

כח

1 לדוד לותך יי אנא קרי תקיפי לא תשתוק
מני דלמא תשתוק מני ואתמתלית עם נחתי
2 נובא: קבל בקל בעותי במצליי לותך כד
3 אפרוש ידי בצלו קדם היכל קדשך: לא
תנגדנני עם רשיעיא ועם עבדי עולא די
ממללין שלמא עם חבריהון ובישתא בלבהון:
4 הב להון כעובדיהון וכבישות עובדיהון
כעובדי ידיהון פרע להון אתיב פורענותהון
5 להון: מטול דלא מתבינין לאוריתא דיי
6 ולעובדי אידוי יפגרנון ולא יבננון: בריך
7 יי ארום קבל קל צלותי: יי עושני ותריסי
ביה סבר לבי וסעדני ודאץ לבי ומתושבחתי
8 אודה קדמוי: יי תקוף להון ועושנא פורקנות
9 משיחיה הוא: פרוק ית עמך וברך ית אחסנתך
זון להון וסובר יתהון עד עלמא:

כט

1 תושבחתא לדוד הבו קדם יי תושבחתא
כתי מלאכיא בני אלים הבון קדם יי איקר
2 ועשנא: הבון קדם יי איקר שמיה סגידו
3 קדם יי בשבהורת קודשא: קלא דיי שמיע
על מיא בתקוף איקריה אכלי יי על מיין
4 סגיאן: קלא דיי שמיע בחילא קלא דיי
שמיע בשבהורא:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Doce me Domine viam tuam, & deduc me in ſemitā rectam propter *laudes meas*. Ne tradas me voluntati oppreſſorum meorum, quoniam ſurrexerunt contra me teſtes mendaces & loquentes calumniam. Niſi credidiſſem videre bonitatem Domini in terra vitæ perennis; [*deſpondiſſem animum.*] Confide in Domino, obfirma & robora cor tuum, & ſpera in Domino.

Davidi.

PSAL. XXVIII.

AD te Domine clamo, fortitudo mea, ne ſileas à me: ne fortè ſi taceas à me, tunc ſimilis fiam his qui deſcendunt in puteum. Accipe vocem deprecationis meæ, dum oro ad te, cùm extendero manus meas in oratione coram templo ſancto tuo. Ne traxeris me cum improbis & cum operantibus iniquitatem, qui loquuntur pacem cum proximis ſuis, cùm malum ſit in cordibus eorum. Tribue eis ſecundùm opera ipſorum, & ſecundùm malitiam *operum* eorum, juxta opera manuum eorum repende illis, redde eis retributionem ipſorum. Quoniam non intelligent legem Domini, nec opera manuum ejus: deſtruet eos, & non ædificabit eos. *Benedictus Dominus*, quoniam exaudivit vocem *orationum mearum*. Dominus fortitudo mea & clypeus meus: in *eo* confiſum eſt cor meum, & *adjuvit me*, & gaviſum eſt cor meum: proinde hymno meo gratias agam coram eo. Dominus fortitudo illis & robur, redemptio Chriſti ſui ipſe eſt. Redime populum tuum & benedic hæreditati tuæ: ciba eos, & ſuſtenta eos uſque in æternum.

Hymnus Davidi.

PSAL. XXIX.

TRibuite coram Domino laudem, cœtus angelorum *filii Dei*, tribuite coram Domino gloriam & fortitudinem. Tribuite coram Domino gloriam nomini ipſius: adorate coram Domino in decore ſanctitatis. Vox Domini audita eſt ſuper aquas cum potentia gloriæ *ſuæ*: intonuit Dominus ſuper aquas multas. Vox Domini audita eſt in virtute: vox Domini audita eſt in decore.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

11 * ܐܠܦܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܘܪܚܟ. ܘܕܒܪܝܢܝ ܒܫܒܝܠܝܟ ܬܪܝܨܐ: * ܘܠܐ ܬܫܠܡܝܢܝ ܠܒܥܠܕܒܒܝ.
12 ܡܛܠ ܕܩܡܘ ܥܠܝ ܣܗܕܐ ܕܫܘܩܪܐ ܘܡܠܠܘ ܥܘܠܐ: * ܐܢܐ ܕܝܢ ܗܝܡܢܬ ܕܐܚܙܐ 13
14 ܒܛܒܬܗ ܕܡܪܝܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. * ܣܒܪܘ ܒܡܪܝܐ ܘܢܬܚܝܠ ܠܒܟܘܢ:
ܣܒܪܘ ܒܡܪܝܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܚ *

* ܕܕܘܝܕ. ܐܬܟܫܦܬܐ ܘܨܠܘܬܐ. ܘܢܬܠܐ ܠܥܘܕܪܢܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܚ.

1 ܠܟ ܡܪܝܐ ܩܪܝܬ ܐܠܗܝ ܠܐ ܬܫܬܘܩ ܡܢܝ: ܕܠܡܐ ܬܫܬܘܩ ܡܢܝ ܘܐܬܕܡܐ ܠܢܚܬܝ
2 ܓܘܒܐ. * ܫܡܥ ܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ ܟܕ ܐܩܪܐ ܠܘܬܟ: ܘܟܕ ܐܪܝܡ ܐܝܕܝ ܠܗܝܟܠܟ
3 ܩܕܝܫܐ. * ܠܐ ܬܡܢܝܢܝ ܥܡ ܪܫܝܥܐ ܘܥܡ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ: ܕܡܡܠܠܝܢ ܫܠܡܐ ܥܡ
4 ܚܒܪܝܗܘܢ ܘܒܝܫܬܐ ܒܠܒܗܘܢ. * ܦܪܘܥ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܥܒܕܝܗܘܢ ܘܐܝܟ ܒܝܫܘܬܗܘܢ:
5 * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܣܬܟܠܘ ܒܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܘܒܥܒܕܐ ܕܐܝܕܘܗܝ. ܢܣܬܘܪ ܐܢܘܢ ܘܠܐ
6 ܢܒܢܐ ܐܢܘܢ: * ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܕܫܡܥ ܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ. * ܡܪܝܐ ܡܥܕܪܢܝ 7
ܘܡܣܬܡܟܢܝ: ܕܒܗ ܬܟܝܠ ܠܒܝ ܘܦܪܥ ܒܣܪܝ. ܘܒܫܘܒܚܐ ܐܘܕܐ ܠܗ:
8 * ܡܪܝܐ ܚܝܠܐ ܗܘ ܕܥܡܗ. ܘܡܣܬܪܢܐ ܘܦܪܘܩܐ ܕܡܫܝܚܗ: * ܦܪܘܩ ܠܥܡܟ ܘܒܪܟ 9
ܠܝܪܬܘܬܟ. ܪܥܝ ܐܢܘܢ ܘܕܒܪ ܐܢܘܢ ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܟܛ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܩܘܪܒܢܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܕ.
2 ܐܝܬܘ ܠܡܪܝܐ ܒܢܝ ܕܟܪܐ. ܐܝܬܘ ܠܡܪܝܐ ܫܘܒܚܐ ܘܐܝܩܪܐ: * ܐܝܬܘ ܠܡܪܝܐ ܐܝܩܪܐ ܠܫܡܗ.
3 ܣܓܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܒܕܪܬܐ ܕܩܘܕܫܗ: * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܡܝܐ. ܐܠܗܐ ܡܫܒܚܐ ܪܥܡ:
4 ܡܪܝܐ ܥܠ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܒܚܝܠܐ ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܒܫܘܒܚܐ:

Doce me, Domine, viam tuam, & duc me per ſemitas tuas rectas. Et ne tradas me hoſtibus meis; Quoniam inſurrexerunt adverſus me teſtes falſitatis, & locuti ſunt flagitium. Ego autem credidi me viſurum bona Domini in terra viventium. Sperate in Domino & roboretur cor veſtrum, ſperate in Domino.

PSAL. XXVIII.

Davidis. Supplicatio, & oratio; atque imploremus auxilium. Verſ. 28.

AD te Domine, clamavi: Deus meus, ne ſileas à me; ne fortè obmuteſcas à me, & ſimilis reddar deſcendentibus in foveam. Audi vocem deprecationis meæ quum clamavero ad te, & quum extulero manus meas ad templum tuum ſanctum. Ne me numeres cum impiis, & cum operantibus iniquitatem, qui loquuntur pacem cum proximis ſuis, & malum in cordibus ſuis. Retribue illis ſecundùm opera ſua, & juxta malitiam ſuam. Quia non animadverterunt opera Domini & facturam manuum ejus; deſtruet eos, & non ædificabit eos. Benedictus Dominus qui audivit vocem petitionis meæ. Dominus adjutor meus, & ſuffultor meus, cui nixum eſt cor meum, & germinavit caro mea, & cum gloria confitebor ei. Dominus robur populi ſui, & protector atq; ſalvator Chriſti ſui. Salva populum tuum, & benedic hæreditati tuæ: paſce eos & rege illos uſque in æternum.

PSAL. XXIX.

Davidis. De oblatione. Verſus 24.

AFferte Domino filios arietum, afferte Domino gloriam & honorem. Afferte Domino decus nomini ejus, adorate Dominum in atrio ſanctitatis ejus. Vox Domini ſuper aquas, Deus glorioſus tonuit, Dominus ſuper aquas multas. Vox Domini cum potentia, Vox Domini cum gloria.

Verſio VULG. LAT

11 Legem pone mihi, Domine, in via tua: &
dirige me in ſemitam rectam propter inimicos
12 meos. Ne tradideris me in animas
tribulantium me: quoniam inſurrexerunt
in me teſtes iniqui, & mentita eſt iniquitas
13 ſibi. Credo videre bona Domini in
14 terra viventium. Expecta Dominum, viriliter
age: & confortetur cor tuum, &
ſuſtine Dominum.

Pſalmus ipſi David. XXVII.

1 Ad te, Domine, clamabo; Deꝰ meus, ne
ſileas à me: ne quando taceas à me, et
2 aſſimilabor deſcendētibꝰ in lacū. Exaudi,
Domine, vocē deprecationis meæ dum oro
ad te: dum extollo manꝰ meas ad templū
3 ſanctū tuum. Ne ſimul trahas me cum
peccatoribus: & cum operantibꝰ iniquitatem
ne perdas me: Qui loquuntur pacem
cum proximo ſuo, mala autem in
4 cordibus eorum. Da illis ſecundū opera
eorum, & ſecundùm nequitiam adinventionū
ipſorum. Secundùm opera manuū
eorum tribue illis: redde retributionem
5 eorum ipſis. Quoniā non intellexerunt opera
Domini, & in opera manuū ejꝰ: deſtrues
6 illos, & non ædificabis eos. Benedictus
Dñs: quoniā exaudivit vocem de-
7 precationis meæ. Dñs adjutor meꝰ, &
protector meꝰ: in ipſo ſperavit cor meū,
& adjutus ſum. Et refloruit caro mea:
8 & ex voluntate mea confitebor ei. Dñs
fortitudo plebis ſuæ: & protector ſalva-
9 tionū Chriſti ſui eſt. Salvum fac populū
tuū, Domine, & benedic hæreditati tuæ:
& rege eos, & extolle illos uſq; in æternum.

1 Pſalmus David, In conſummatione tabernaculi. XXVIII.

Afferte Domino, filii Dei: afferte Do-
2 mino filios arietū. Afferte Domino
gloriam & honorem, afferte Domino
gloriam nomini ejus: adorate Dominū
3 in atrio ſancto ejus. Vox Domini ſuper aquas,
Deus majeſtatis intonuit: Domi-
4 nus ſuper aquas multas. Vox Domini
in virtute: vox Domini in magnificentia.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

11 † Νομοθέτησόν με (η) κύριε ἐν τῇ ὁδῷ σου, † καὶ ὁδήγησόν
με ἐν τρίβῳ εὐθείᾳ ἕνεκα τῶν ἐχθρῶν μου.
12 † Μὴ παραδῷς με εἰς ψυχὰς θλιβόντων με, † ὅτι
ἐπανέστησάν μοι μάρτυρες ἄδικοι, † καὶ ἐψεύσατο
13 ἡ ἀδικία ἑαυτῇ. † Πιστεύω τοῦ ἰδεῖν τὰ ἀγαθὰ
14 κυρίου ἐν γῇ ζώντων. † Ὑπόμεινον τὸν κύριον,
† ἀνδρίζου, καὶ κραταιούσθω ἡ καρδία (θ) σου, καὶ
ὑπόμεινον τὸν κύριον. MS.A. (η) κύριε τῇ (θ) μου,

Τοῦ Δαυίδ. κζʹ.

1 † Πρὸς σὲ κύριε (α) ἐκέκραξα, ὁ θεός μου μὴ
παρασιωπήσῃς (β) ἀπ' ἐμοὶ, † μή ποτε παρασιωπήσῃς
(γ) ἀπ' ἐμοὶ, † καὶ ὁμοιωθήσομαι
2 τοῖς καταβαίνουσιν εἰς λάκκον. † Εἰσάκουσον τῆς
φωνῆς τῆς δεήσεώς (δ) μου, ἐν τῷ δέεσθαί με πρὸς
σὲ, † ἐν τῷ αἴρειν με χεῖράς μου (ε) εἰς ναὸν ἅγιόν
3 σου. † Μὴ συνελκύσῃς μετὰ ἁμαρτωλῶν τὴν ψυχήν
μου, † καὶ μετὰ (ζ) ἐργαζομένων ἀδικίαν μὴ συναπολέσῃς
με, † τῶν λαλούντων εἰρήνην μετὰ τῶν πλησίον
4 αὐτῶν, † κακὰ δὲ ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν. † Δὸς
αὐτοῖς κατὰ τὰ ἔργα αὐτῶν, † καὶ κατὰ τὴν πονηρίαν
τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν. † κατὰ τὰ ἔργα
τῶν (η) χειρῶν αὐτῶν δὸς αὐτοῖς, † ἀπόδος τὸ
5 ἀνταπόδομα αὐτῶν αὐτοῖς. † Ὅτι οὐ συνῆκαν
εἰς τὰ ἔργα κυρίου † καὶ εἰς τὰ ἔργα τῶν χειρῶν
αὐτοῦ, † καθελεῖς αὐτοὺς καὶ οὐ μὴ οἰκοδομήσεις
6 αὐτούς. † Εὐλογητὸς κύριος, ὅτι εἰσήκουσε
7 τῆς φωνῆς τῆς δεήσεώς μου. † Κύριος βοηθός
μου καὶ ὑπερασπιστής μου· † ἐπ' αὐτῷ ἤλπισεν ἡ καρδία
μου, καὶ ἐβοηθήθην, † καὶ ἀνέθαλεν ἡ σάρξ μου·
† καὶ ἐκ θελήματός μου ἐξομολογήσομαι αὐτῷ.
8 † Κύριος κραταίωμα τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, † καὶ ὑπερασπι-
9 στὴς τῶν σωτηρίων τοῦ χριστοῦ αὐτοῦ ἐστι. † Σῶσον τὸν
λαόν σου, καὶ εὐλόγησον τὴν κληρονομίαν σου, † καὶ
ποίμανον αὐτοὺς, καὶ ἔπαρον αὐτοὺς ἕως τοῦ αἰῶνος.

MS.A. (α) κεκράξομαι, (β) ἀπ' ἐμοῦ, (γ) ἀπ' ἐμοῦ,
(δ) μου, ἧς ἐκέκραξα πρὸς σὲ, ἐν τῷ αἴρειν με (ε)
πρὸς ναὸν (ζ) ἐργαζομένων τὴν * μὴ συναπολέσῃς
(η) χειρῶν δὸς αὐτοῖς,

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ ἐξοδίου σκηνῆς. κηʹ.

† Ἐνέγκατε τῷ κυρίῳ υἱοὶ θεοῦ, † ἐνέγκατε
2 τῷ κυρίῳ υἱοὺς κριῶν. † Ἐνέγκατε τῷ κυρίῳ
δόξαν καὶ τιμὴν, † ἐνέγκατε τῷ κυρίῳ δόξαν ὀνόματι
αὐτοῦ· † προσκυνήσατε τῷ κυρίῳ ἐν αὐλῇ
3 ἁγίᾳ αὐτοῦ. † Φωνὴ κυρίου ἐπὶ τῶν ὑδάτων, ὁ θεὸς
τῆς δόξης ἐβρόντησε, † κύριος ἐπὶ ὑδάτων πολ-
4 λῶν. † Φωνὴ κυρίου ἐν ἰσχύϊ, † φωνὴ κυρίου ἐν
μεγαλοπρεπείᾳ.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopice, Tranſl. LAT.

17 (m) [g] Legem pone mihi, Domine, in via tua, & dirige me in 11
ſemita recta propter inimicos meos. 18 Ne tradideris me in animas 12
tribulantium me: quoniam
inſurrexerunt in me teſtes (n) iniqui: & mentita eſt iniquitas ſibi.
19 Credo (o) videre bona Domini 13
in terra viventium. 20 Suſtine 14
Dñm, viriliter age: et confortetur
cor tuum, & ſuſtine Dominum.

(a) Ipſius David. XXVII.

Ad te, Domine, (b) clamavi: 1
Deus meus, ne ſileas (c) ſuper me: ne (d) quando ſileas ſuper me, & aſſimilabor deſcendentibus in lacum. 2 (e) Exaudi vocē 2
deprecationis meæ, [a] dum oro
ad te: dum extollo manū meas ad
(f) templū ſanctū tuū. 3 [b] Ne 3
ſimul trahas cum peccatoribus (g)
animam meam, & cum operantibus iniquitatem ne comperdas
me: 4 qui loquuntur pacem
cum proximis ſuis: mala autem in cordibus eorum. 5 Da il- 4
lis ſecundum opera eorū, & ſecundū malignitatem adinventionum
ipſorū: 6 ſecundùm opera
manuum illorum da eis: redde retributionem eorum ipſis.
7 Quoniam non intellexerunt 5
in operibus Domini, & in operibus manuum ejus: deſtrues illos,
& non ædificabis eos. 8 Be- 6
nedictus Dominus, quoniā exaudivit vocem deprecationis meæ:
9 Dominus adjutor meus, et pro- 7
tector meus. In ipſo ſperavit cor
meū, et adjutꝰ ſum. 10 (h) Et refloruit caro mea: et (i) ex voluntate
mea cōfitebor ei. 11 Dñs for- 8
titudo plebis ſuæ, & protector ſalutarium Chriſti ſui eſt. 12 Sal- 9
vū fac populum tuum, & benedic
hereditatē tuam: & paſce illos,
et extolle illos uſque in ſeculum.

Pſalmus ipſi David [a] exodii (a) tabernaculi. XXVIII. 1

Afferte Domino, filii Dei: afferte Domino filios arietū.
2 (b) Afferte Dño (c) gloriā, & 2
honorem: afferte (d) [b] gloriam
nomini ejus: adorate Dominū * in
aula ſancta ejus. 3 Vox Domini 3
ſuper aquas: Deus majeſtatis intonuit: Dominus ſuper aquas multas. 4 Vox Domini in 4
virtute: vox Domini in magnificentia.

Verſio ÆTHIOPICA.

ምርሐኒ፡ እግዚኦ፡ ፍናተከ፡፡ ወምርሐኒ፡ ፍ 17
ኖተ፡ ርትዕከ፡ በእንተ፡ ጸላእትየ፡፡ ፨ ወኢ 18
ትመጥወኒ፡ ለነፍስ፡ ለእለ፡ ይሣቅዩኒ፡፡ እስ
መ፡ ቆሙ፡ ላዕሌየ፡ ሰማዕተ፡ ዓመፃ፡፡ ወሐሰ
ት፡ ርእሳ፡ ዓመፃ፡፡ ፨ እትአመን፡ ከመ፡ እር 19
አይ፡ ሠናይቶ፡ ለእግዚአብሔር፡ በብሔረ፡ ሕ
ያዋን፡፡ ፨ ወተሰፈዎ፡ ለእግዚአብሔር፡፡ 20
ተዐገሥ፡ ወአጽንዕ፡ ልበከ፡፡ ወተሰፈዎ፡ ለእ
ግዚአብሔር፡፡ ፨

መዝሙር፡ ዘዳዊት፡፡

ፒጊ ኀቤከ፡ እግዚኦ፡ ጸራኅኩ፡ አምላኪየ፡ 1
ወኢትጸመመኒ፡፡ ወእመሰ፡ ተጸመምከኒ፡ እከ
ውን፡ ከመ፡ እለ፡ ይወርዱ፡ ውስተ፡ ግብ፡፡ ፨
ስምዐኒ፡ እግዚኦ፡ ቃለ፡ ስእለትየ፡ ዘጸራኅኩ፡ 2
ኀቤከ፡፡ ሶበ፡ አነሥእ፡ እደዊየ፡ በጽርሐ፡ መ
ቅደስከ፡፡ ፨ ኢትስሐብ፡ ምስለ፡ ኃጥኣን፡ ለ 3
ነፍስየ፡፡ ወኢትግድፈኒ፡ ምስለ፡ ገበርተ፡ ዐመ
ፃ፡፡ ፨ እለ፡ ይትናገሩ፡ ሰላመ፡ ምስለ፡ ቢጾ 4
ሙ፡፡ ወእኩይ፡ ውስተ፡ ልቦሙ፡፡ ፨ ሀቦሙ፡ 5
በከመ፡ ምግባሮሙ፡፡ ወበከመ፡ እከየ፡ ሕሊና
ሆሙ፡፡ ፨ ፍድዮሙ፡ በከመ፡ ግብረ፡ እደዊ 6
ሆሙ፡፡ ፍድዮሙ፡ ፍዳሆሙ፡ ላዕለ፡ ርእሶ
ሙ፡፡ ፨ እስመ፡ ኢሐለዩ፡ ውስተ፡ ግብረ፡ 7
እግዚአብሔር፡፡ ወኢ ውስተ፡ ግብረ፡ እደዊ
ሁ፡፡ ንስቶሙ፡ ወኢትሕንጾሙ፡፡ ፨ ይትባ 8
ረክ፡ እግዚአብሔር፡ እስመ፡ ሰምዐኒ፡ ቃለ፡ ስ
እለትየ፡፡ ፨ እግዚአብሔር፡ ረዳኢየ፡ ወም 9
እመንየ፡፡ ወቦቱ፡ ተወከለ፡ ልብየ፡ ወይረድ
አኒ፡፡ ፨ ወሠረጸ፡ ጽጋየ፡፡ ዘእምፈቃድየ፡ 10
አአምኖ፡፡ ፨ እግዚአብሔር፡ ኃይሎሙ፡ 11
ውእቱ፡ ለሕዝብ፡፡ ወምእመኑ፡ መድኀኒተ፡
መሲሁ፡ ውእቱ፡፡ ፨ አድኅን፡ ሕዝበከ፡ ወ 12
ባርክ፡ ርስተከ፡፡ ረአዮሙ፡ ወአልዕሎሙ፡ እ
ስከ፡ ለዓለም፡፡ ፨

መዝሙር፡ ዘዳዊት፡ ዘበፃዓተ፡ ትዕይንት፡፡

ፒፒ አምጽኡ፡ ለእግዚአብሔር፡ ውሉደ፡ 1
አማልክት፡፡ አምጽኡ፡ ለእግዚአብሔር፡ እ
ጐለ፡ ሐራጊት፡፡ ፨ አምጽኡ፡ ለእግዚአብ 2
ሔር፡ ክብረ፡ ወስብሐተ፡፡ አምጽኡ፡ ለእግዚ
አብሔር፡ ስብሐተ፡ ለስሙ፡፡ ስግዱ፡ ለእግዚ
አብሔር፡ በዐጸደ፡ መቅደሱ፡፡ ፨ ቃለ፡ እግዚ 3
አብሔር፡ ላዕለ፡ ማያት፡፡ አምላከ፡ ስብ
ሐት፡ አንጐድጐደ፡፡ እግዚአብሔር፡ ላዕ
ለ፡ ማያት፡ ብዙኃ፡፡ ፨ ቃለ፡ እግዚአብሔ 4
ር፡ በኀይል፡፡ ቃለ፡ እግዚአብሔር፡ በዐቢይ፡
ስብሐት፡፡ ፨

INTERP. ÆTHIOP. [g] Oſtende mihi, Domine, viam tuam, *PSAL. XXVII.* [a] qui clamo [b] Ne trahas *PSAL. XXVIII.* [a] in exitu [b] Domino gloriam nomini

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ثبت لي يا رب في سبلك ناموسا · واهدني الي طريق مستقيمة * من اجل اعداي · لا تسلمني 11 12
الي انفس الذين احزنوني · فان شهادات الظلم قامت علي · والظالم اكذب نفسه * وانا مصدق 13
ان اعاين خيرات الرب في ارض الحياة * وارجوا الرب · يقوي ويعز قلبي اذا امّلت الرب · الليلويا · 14

* المزمور السابع والعشرون * تضرع ونبوة * وعدده كه استيخن · 1

اليك يا رب صرخت · الاهي لا تغفل عني · لئلا تغفل عني فاصير كالهابطين في الجب * اسمع 2
يا رب صوت دعاي عندما ادعوك · وعند رفع يدي الي هيكل قدسك * لا تخطف نفسي 3
مع الخطاة · ولا تهلكني مع فاعلي الاثم · المتكلمين بالسلامة مع اصحابهم · والشرور في قلوبهم ·
* اجزهم كاعمالهم · ومثل شرور صنعهم · واعمال ايديهم اعطهم · اعطهم عوض ما عملوا · 4
* لانهم لم يفهموا اعمال الرب · ولا صنع يديه · تهدمهم ولا تبنيهم * تبارك الرب الله لانه سمع 5 6
صوت تضرعي * الرب عوني وناصري · عليه توكل قلبي · وهو اعانني · وانمي لحمي · وبارادتي 7
اشكر له * الرب قوة شعبه · وناصر خلاص مسيحه * خلص شعبك وبارك ميراثك · ارعهم 8 9
وارفعهم الي الابد · الليلويا ·

* المزمور الثامن والعشرون ·

* نبوة علي التجسد وعن القبة والمظلة · وعدده كب · استيخن · 1

قربوا للرب ابناء الله · قربوا للرب اولاد الكباش * قربوا للرب مجدا وكرامة · قربوا للرب مجدا 2
لاسمه · اسجدوا للرب في ديار المقدسة * صوت الرب علي المياه · اله المجد ارعد · الرب علي 3
مياه غزيرة * صوت الرب بقوة · صوت الرب بعظم البهاء · 4

Stabilito mihi, O Domine, in ſemitis tuis 11
legem: & dirige me in viam rectam. Pro- 12
pter inimicos meos ne tradas me animis
eorum, qui me afflixerunt: Quoniam teſtimonia
iniquitatis inſurrexerunt in me, &
iniquus mentiri fecit ſeipſum. Et ego cre- 13
dens ſum quòd videbo bona Domini in
terra vitæ: Et ſpero Dominum. Corrobo- 14
rabitur & confortabitur cor meum, cùm
expectavero Dominum. Alleluja.

PSAL. XXVII.

Oratio & Prophetia. Num. ver. 25. 1

Ad te, O Domine mi, clamavi; Deus
meus, ne negligas me: ut ne negligas me, & fiam veluti deſcendentes in
lacum. Audi, O Domine mi, vocem cla- 2
moris mei, cùm invocavero te, cùmque
levavero manus meas ad templum ſanctitatis
tuæ. Ne rapias animam meam cum 3
peccatoribus, & ne perdas me cum operantibus
iniquitatem: loquentibus pacem
cum proximis ſuis, quum inſint mala in
cordibus eorum. Retribue eis ſecundùm 4
opera eorum: & ſecundùm nequitiam facinoris
eorum, & opera manuum eorum
tribue eis: tribue illis compenſationem ejus
quod fecerunt. Quia ipſi non intel- 5
lexerunt opera Domini, neque præclara
geſta manuum ejus. Evertat eos, & non
ædificet illos. Benedicatur Dominus De- 6
us, quoniam audivit vocem ſupplicationis
meæ. Dominus auxilium meum, & ad- 7
jutor meus: in ipſo confiſum eſt cor meum,
ipſéque eſt auxilium meum, & nutrivit
carnem meam, & ſponte meâ gratias
agam illi. Dominus virtus populi 8
ſui, & adjutor ſalutis chriſti ſui. Salva 9
populum tuum, et benedic hæreditati tuæ:
paſce eos, & exalta eos in æternum. Alleluja.

PSAL. XXVIII.

Prophetia de Incarnatione. Et de Arca, atq; Tentorio. Num. v. 22. 1

Offerte Domino, filii Dei, offerte Domino
filios arietum. Præbete Domino 2
gloriam, & venerationem, præbete Domino
laudem nomini ejus: adorate Dominū
in habitatione ſancta ejus. Vox Domini 3
ſuper aquas: Deus gloriæ intonuit: Dominus
ſuper aquas multas. Vox Domini 4
cum virtute, vox Domini cum magnitudine
fulgoris.

תהלים : ל לא

.Libani cedros Dominus confregit & cedros confringens Domini Vox
5 קוֹל יְהוָה שֹׁבֵר אֲרָזִים וַיְשַׁבֵּר יְהוָה אֶת־אַרְזֵי הַלְּבָנוֹן׃
Vox .unicornium filium ſicut ,Sirion &,Lebanon:vitulum ſicut eas faciet exilire Et
6 וַיַּרְקִידֵם כְּמוֹ־עֵגֶל לְבָנוֹן וְשִׂרְיוֹן כְּמוֹ בֶן־רְאֵמִים׃ קוֹל־ 7
faciet parturire : deſertum tremefaciet Domini Vox .ignis flammas ſuccidens Domini
8 יְהוָה חֹצֵב לַהֲבוֹת אֵשׁ׃ קוֹל יְהוָה יָחִיל מִדְבָּר יָחִיל
: ſylvas detexit & , cervas faciet parturire Domini Vox .Cades deſertum Dominus
9 יְהוָה מִדְבַּר קָדֵשׁ׃ קוֹל יְהוָה יְחוֹלֵל אַיָּלוֹת וַיֶּחֱשֹׂף יְעָרוֹת
ſedit & : ſedit diluvio in Dominus .gloriam *dicens* ipſe totus , ejus templo in &
10 וּבְהֵיכָלוֹ כֻּלּוֹ אֹמֵר כָּבוֹד׃ יְהוָה לַמַּבּוּל יָשָׁב וַיֵּשֶׁב
Dominus : dabit ſuo populo fortitudinem Dominus .ſeculum in rex Dominus
11 יְהוָה מֶלֶךְ לְעוֹלָם׃ יְהוָה עֹז לְעַמּוֹ יִתֵּן יְהוָה
.pace in ſuo populo benedicet
יְבָרֵךְ אֶת־עַמּוֹ בַשָּׁלוֹם׃

PSAL. XXX. ל

quoniam ,Domine te Exaltabo .David domus dedicationis cantici Pſalmus
1 2 מִזְמוֹר שִׁיר־חֲנֻכַּת הַבַּיִת לְדָוִד׃ אֲרוֹמִמְךָ יְהוָה כִּי
clamavi ,meus Deus Domine .*mihi* meos inimicos lætificâſti non & : me exaltâſti
3 דִלִּיתָנִי וְלֹא־שִׂמַּחְתָּ אֹיְבַי לִי׃ יְהוָה אֱלֹהָי שִׁוַּעְתִּי
me vivificâſti:meam animā inferno ab feciſti aſcendere,Domine .me ſanâſti & , te ad
4 אֵלֶיךָ וַתִּרְפָּאֵנִי׃ יְהוָה הֶעֱלִיתָ מִן־שְׁאוֹל נַפְשִׁי חִיִּיתַנִי
memoriæ confitemini & ,ejus miſericordes Domino Canite *lacum me deſcendendo* à
5 מִיָּרְדִי־בוֹר׃ זַמְּרוּ לַיהוָה חֲסִידָיו וְהוֹדוּ לְזֵכֶר
veſpera in : ejus voluntate in *vitæ* , ejus *naſo* in momentum Quoniam .ejus ſanctitatis
6 קָדְשׁוֹ׃ כִּי רֶגַע בְּאַפּוֹ חַיִּים בִּרְצוֹנוֹ בָּעֶרֶב
mutabo non : mea *quiete* in dixi ego Et .*jubilatio* mane *in* & ,fletus pernoctabit
7 יָלִין בֶּכִי וְלַבֹּקֶר רִנָּה׃ וַאֲנִי אָמַרְתִּי בְשַׁלְוִי בַּל־אֶמּוֹט
: fortitudinem meo monte in feciſti ſtare tua voluntate in Domine .ſeculum in
8 לְעוֹלָם׃ יְהוָה בִּרְצוֹנְךָ הֶעֱמַדְתָּה לְהַרְרִי עֹז
Dominum ad & ,clamabo Domine te Ad .territus fui : *tuas facies* abſcondiſti
9 הִסְתַּרְתָּ פָנֶיךָ הָיִיתִי נִבְהָל׃ אֵלֶיךָ יְהוָה אֶקְרָא וְאֶל־יְהוָה
? foveam *ad me deſcendendo in* ; meo ſanguine in *lucri Quid* .orabo
10 אֶתְחַנָּן׃ מַה־בֶּצַע בְּדָמִי בְּרִדְתִּי אֶל־שָׁחַת
,Domine Audi ? tuā veritatē annunciabit nunquid : pulvis tibi confitebitur Nunquid
11 הֲיוֹדְךָ עָפָר הֲיַגִּיד אֲמִתֶּךָ׃ שְׁמַע־יְהוָה
,mihi chorum in meum planctum Vertiſti .mihi adjutor eſto Domine :mihi miſerere &
12 וְחָנֵּנִי יְהוָה הֱיֵה־עֹזֵר לִי׃ הָפַכְתָּ מִסְפְּדִי לְמָחוֹל לִי
non & , gloria tibi canat Ut .lætitia me accinxiſti & , meum ſaccum ſolviſti
13 פִּתַּחְתָּ שַׂקִּי וַתְּאַזְּרֵנִי שִׂמְחָה׃ לְמַעַן יְזַמֶּרְךָ כָבוֹד וְלֹא
.tibi confitebor ſeculum in mi Deus Domine : taceat
יִדֹּם יְהוָה אֱלֹהַי לְעוֹלָם אוֹדֶךָּ׃

PSAL. XXXI. לא

pudore afficiar non ,ſperavi Domine te In .Davidi canticum Vincenti
1 2 לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ בְּךָ־יְהוָה חָסִיתִי אַל־אֵבוֹשָׁה
.me eripe tua juſtitia in : ſeculum in
לְעוֹלָם בְּצִדְקָתְךָ פַלְּטֵנִי׃

תרגום TARGUM.

5 קָלָא דַיְיָ מְתַבַּר אַרְזַיָּא וְתַבַּר מֵימְרָא דַיְיָ
6 יַת אַרְזֵי לִבְנָן׃ וְשַׁוְרְנוּן הֵיךְ עֵגֶל לִבְנָן וְטוּר
7 מַסְרֵי פֵּירֵי הֵיךְ בַּר רֵימָא׃ קָלָא דַיְיָ מְנַסֵּר
8 שַׁלְהוֹבִין דִּי נוּר׃ קָלָא דַיְיָ מַרְטֵשׁ מַדְבְּרָא
9 מַרְטֵשׁ מֵימְרָא יְיָ מַדְבְּרָא דִּרְקָם׃ קָלָא דַיְיָ
מַבְטִין אַיַּלְתָּא וּמוֹלִיחַ חֵיוַת חוּרְשָׁא וּבְמוּקְדְּשֵׁיהּ
10 דִּלְעֵיל כּוּלְּהוֹן שַׁמָּשׁוֹי אָמְרִין אִיקַר קֳדָמוֹי׃ יְיָ
בְּדָר טוֹפָנָא יְתִיב עַל כּוּרְסֵי דְּדִינָא לְמִתְפְּרַע
מִנְּהוֹן וִיתִיב יְיָ עַל כּוּרְסֵיהּ רַחֲמוּתָא וְשֵׁיזִיב
11 יַת נֹחַ וּמְלַךְ עַל בְּנוֹי לְעָלְמֵי עָלְמִין׃ יְיָ
אוֹרַיְתָא לְעַמֵּיהּ יְהַב יְיָ יְבָרֵךְ יַת עַמֵּיהּ
בִּשְׁלָם׃

ל

1 תּוּשְׁבַּחְתָּא שִׁירָתָא עַל חֲנוּכַּת בֵּית מַקְדְּשָׁא
2 לְדָוִד׃ אֲשַׁבַּחְנָךְ יְיָ אֲרוּם אוֹקַפְתַּנִי וְלָא
3 אַחְדֵּיתָא בְּעֲלֵי דְבָבַי עֲלָי׃ יְיָ אֱלָהִי צַלֵּיתִי
4 קֳדָמָךְ וְאַסֵּיתַנִי׃ יְיָ אַסֵּקְתָּא מִן שְׁיוֹל נַפְשִׁי
5 קַיֵּמְתַּנִי מִן לְמֵיחַת לְגוּבָּא׃ שַׁבַּחוּ קֳדָם יְיָ
6 חֲסִידוֹי וְאוֹדוּ אַדְכָּרוּת קֻדְשֵׁיהּ׃ מְטוּל דְּשַׁעְתָּא
רוּגְזֵיהּ חַיֵּי עָלְמָא בִּרְעוּתֵיהּ טָבָא בְּרַמְשָׁא
מְבִית בִּבְכוּתָא וּלְצַפְרָא מְקִים בְּתֻשְׁבַּחְתָּא׃
7 וַאֲנָא אֲמָרִית בְּמִתְבֵי בְּרוּחְצָנֵיהּ דְּלָא אֶזּוֹעַ
8 לְעָלְמָא׃ יְיָ בִּרְעוּתָךְ אִתְעֲתַדְתָּא לְטוּרַיָּא
עַשִּׁינַיָּא סְלִיקְתָּא שְׁכִנְתָּךְ הֲוֵיתִי מִתְבְּהֵל׃
9 10 קֳדָמָךְ יְיָ אֶקְרֵי וּלְוָתָךְ אֱלָהִי אֲצַלֵּי׃ מַה מָמוֹן
אִית בִּדְמִי בְּמֵיחֲתִי לְבֵי קְבוּרְתָּא אֶפְשַׁר
דִּישַׁבְּחוּנָךְ נַחְתֵי עַפְרָא הַחֲוִיתוּן הֵימְנוּתָךְ׃
11 קַבֵּל יְיָ צְלוֹתִי וְחוּס עֲלַי יְיָ הֲוֵי סָעִיד לִי׃
12 אֲפַכְתָּא אֲלִיַי לְחִנְגִין לִי שְׁרִיתָא סַקִּי וְזָרְזְתַנִי
13 חֶדְוָא׃ מִן בְּגַלַל דִּישַׁבְּחוּן יַקִּירֵי עָלְמָא וְלָא
יִשְׁתְּקוּן יְיָ אֱלָהִי לְעָלְמָא אֲשַׁבְּחִנָּךְ׃

לא

1 2 לְשַׁבָּחָא תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד׃ בְּמֵימְרָךְ יְיָ סַבְּרִית
לָא אֵבְהַת לְעָלְמָא בְּצִדְקָתָךְ שֵׁיזְבְתִי׃

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Vox Domini confringit cedros : & per-
fregit verbum Domini cedros Libani. Et
ſubſaltare fecit eas ſicut vitulum : Liba-
num & montem producentem fructus tan-
quam pullum naricornium. Vox Domini
ſcindit flammas ignis. Vox Domini
concutit deſertum , *concutit* verbum
Domini *deſertum* Recham. Vox Domini
parturire facit cervas,& confluere anima-
lia ſylvæ : ac in *ſanctuario* ejus quod ſur-
ſum eſt, omnes miniſtri ipſius dicunt glo-
riam *coram eo*. Dominus in generatione
diluvii ſedit ſuper ſedem judicii , ut ul-
tionem ſumeret ab eis, ſeditque *Dominus*
ſuper ſedem *miſerationis*, & liberavit
Noah , & regnavit ſuper filios ejus in ſe-
cula ſeculorum. Dominus legem populo
ſuo dedit : Dominus benedicet populo
ſuo in pace.

Laus cantici pro dedicatione domus
ſanctuarii, Davidi.

PSAL. XXX.

C*Ollaudabo* te Domine , quoniam ere-
xiſti me , & non lætificâſti inimicos meos
de me. Domine Deus meus oravi coram
te, & ſanâſti me. Domine eduxiſti de in-
ferno animam meam : confirmâſti me, ne
deſcenderem in *foveam*. Laudate coram
Domino pii ejus, & *celebrate* memoriam
ſanctitatis ipſius. Quoniam momentanea
eſt ira ejus : vita æterna in bona volun-
tate ejus : ad veſperum *demorari facit cum*
fletu, manè verò excitat cum cantico. Et
ego dixi cùm ſederem in *fiducia* , Non
movebor in æternum. Domine in volun-
tate tua aſtitiſti montibus validis : ſub-
duxiſti majeſtatem tuam , & conturbatus
ſum. Coram te Domine clamabo, & an-
te Deum meum orabo. Quod lucrum in
ſanguine meo, ſi deſcendero in locum ſe-
pulchri ? nunquid poſſunt *laudare* te de-
ſcendentes in pulverem ? nunquid *annun-*
ciabunt fidem tuam ? Accipe orationem
meam Domine, & miſerere mei Domine:
ſis adjutor mihi. Convertiſti luctum me-
um in choros mihi : ſolviſti ſaccum
meum, & cinxiſti me lætitia. Ut laudent
honorabiles mundi, & non taceant ; Do-
mine Deus meus in æternum *celebrabo*.

Ad canendum Hymnus Davidi.

PSAL. XXXI.

IN verbum tuum Domine ſperavi; non
confundar in æternum ; in juſtitia tua
libera me.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 6 * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܡܬܒܪ ܐܪ̈ܙܐ. ܘܬܒܪ ܡܪܝܐ ܐܪ̈ܙܐ ܕܠܒܢܢ : * ܘܦܩܥ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܥܓܠܐ.
7 ܠܠܒܢܢ ܘܠܣܢܝܪ ܐܝܟ ܒܢܝ̈ ܪܝܡܐ : * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܦܣܩ ܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ.
8 9 * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܡܙܝܥ ܡܕܒܪܐ : ܘܡܙܝܥ ܡܪܝܐ ܡܕܒܪܐ ܕܪܩܡ. * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܡܙܝܥ
10 ܐܝ̈ܠܬܐ ܘܡܦܫܩ ܥܒ̈ܐ : ܘܒܗܝܟܠܗ ܟܠ ܐܢܫ ܐܡܪ ܫܘܒܚܐ. * ܡܪܝܐ ܠܡܒܘܠܐ
11 ܐܗܦܟ : ܝܬܒ ܡܪܝܐ ܡܠܟܐ ܠܥܠܡ. * ܡܪܝܐ ܢܬܠ ܚܝܠܐ ܠܥܡܗ : ܡܪܝܐ ܢܒܪܟ
ܠܥܡܗ ܒܫܠܡܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܢܒܝܘܬܐ ܘܡܘܕܝܢܘܬܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܟܗ.
2 * ܐܪܘܡܡܟ ܡܪܝܐ ܕܐܪܝܡܬܢܝ : ܘܠܐ ܚܕܝܬ ܒܝ ܒܥܠܕܒܒ̈ܝ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܒܥܝܬ
3 4 ܡܢܟ ܘܐܣܝܬܢܝ : * ܘܐܣܩܬ ܡܢ ܫܝܘܠ ܢܦܫܝ. ܘܐܚܝܬܢܝ ܡܢ ܢܚ̈ܬܝ ܓܘܒܐ :
5 6 * ܙܡܪܘ ܠܡܪܝܐ ܓܒ̈ܘܗܝ. ܘܐܘܕܘ ܠܕܘܟܪܢܐ ܕܩܘܕܫܗ : * ܡܛܠ ܕܟܐܬܐ ܒܪܘܓܙܗ ܘܚܝ̈ܐ
7 ܒܨܒܝܢܗ. ܒܪܡܫܐ ܢܒܘܬ ܒܟܝܐ ܘܒܨܦܪܐ ܚܕܘܬܐ : * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܒܫܝܢܘܬܝ ܕܠܐ ܐܙܘܥ
8 ܠܥܠܡ. * ܐܠܗܐ ܒܨܒܝܢܟ ܐܘܣܦܬ ܠܫܘܒܚܝ ܚܝܠܐ : ܐܗܦܟܬ ܐܦܝܟ ܘܐܬܕܠܚܬ.
9 10 * ܩܪܝܬܟ ܡܪܝܐ ܘܡܪܝ ܒܥܝܬ ܡܢܟ : * ܡܢܐ ܝܘܬܪܢܐ ܐܝܬ ܒܕܡܝ ܕܐܚܘܬ
11 ܠܚܒܠܐ. ܠܐ ܡܘܕܐ ܠܟ ܥܦܪܐ ܘܠܐ ܡܚܘܐ ܗܝܡܢܘܬܟ : * ܫܡܥ ܐܠܗܐ ܘܪܚܡ
12 ܥܠܝ. ܡܪܝܐ ܗܘܝ ܠܝ ܥܕܘܪܐ : * ܐܗܦܟܬ ܡܪ̈ܘܪܝ ܠܚܕܘܬܐ. ܫܪܝܬ ܣܩܝ
13 ܘܐܥܛܦܬܢܝ ܚܕܘܬܐ : * ܡܛܠ ܕܐܙܡܪ ܠܟ ܫܘܒܚܐ ܘܠܐ ܐܫܬܘܩ. ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ
ܠܥܠܡ ܐܘܕܐ ܠܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܐ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܡܘܕܝܢܘܬܐ ܘܬܟܫܦܬܐ ܐܡܝܢܬܐ ܠܘܬ ܐܠܗܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܡܛ.
2 * ܒܟ ܡܪܝܐ ܣܒܪܬ ܠܐ ܐܒܗܬ ܠܥܠܡ. ܘܒܙܕܝܩܘܬܟ ܦܨܐܝܢܝ :

Vox Domini quæ diſrumpit cedros : & co
fregit Dominus cedros Libani. Et commin
eas tanquam vitulum,Libanum & Sonirtu
quam filios monocerotis : Vox Domini qu
diſſecat flammam ignis. Vox Domini qu
concutit deſertum, commovétque Domi
deſertum Cades : Vox Domini quæ agita
mos & evellit ſylvas : & in templo
omnis homo dicit laudem. Dominus dilu
um revocavit : ſedet Dominus rex in æ
num. Dominus dabit fortitudinem po
ſuo : Dominus benedicet populo ſuo in pa

PSAL. XXX.

Davidis. Prophetia, & gratiarum a
Verſus 25.

EXaltabo te,Domine,quoniam extuliſti
nec lætificâſti de me inimicos meos. D
mine Deus meus,poſtulavi à te,& ſanâſti
Et extraxiſti ex inferis animam meam, &
vificâſti me ex deſcendentib⁹ in foveā. C
te Domino electi ejus,& confitemini me
riæ ſanctitatis ejus : Quoniam increpatio
ira ejus, & vita in voluntate ipſius. Veſ
pernoctabit fletus,& manè *redit* lætitia.
dixi in tranquillitate mea, Non movebo
æternum. Deus in beneplacito tuo ere
ſuper gloriam meam robur : avertiſti fac
tuam, & nutavi. Invocavi te, Dñe ; te
Domine mi, deprecatus ſum. Quæ uti
eſt in ſanguine meo, ut deſcendam in
ruptionem ? Non confitetur tibi pulvis,
patefacit fidem tuam. Audi Deus,& miſe
mei : Domine, ſis mihi adjutor. Quia
tiſti mœrores meos in gaudium, ſolviſti
cium meū,& amiciviſti me lætitiâ: Prop
ea canam tibi gloriam, nec ſilebo : Do
Deus meus, in æternum confitebor tibi

PSAL. XXXI.

Davidis. Gratiarum actio, & ſu
tio perpetua ad Deum. Verſ. 49.

IN te Domine, ſperavi, non confun
æternum, & in juſtitia tua libera m

Versio VULG. LAT.

5 Vox Dñi confringentis cedros: & confringet
6 Dominus cedros Libani: Et comminuet
eas tanquam vitulum Libani: &
dilectus quemadmodùm filius unicornium.
7 Vox Domini intercidentis flammam
8 ignis: Vox Domini concutientis desertũ:
& commovebit Dominus desertum Cades.
9 Vox Domini præparantis cervos,
& revelabit condensa: & in templo ejus
10 omnes dicent gloriam. Dominus diluvium
inhabitare facit: & sedebit Dominus
11 rex in æternum. Dominus virtutem
populo suo dabit: Dominus benedicet
populo suo in pace.

Psalmus Cantici
1 In dedicatione domûs David. XXIX.

2 EXaltabo te, Domine, quoniam suscepisti
me: nec delectâsti inimicos meos
3 super me: Domine Deus meus, clamavi
4 ad te, & sanâsti me. Domine, eduxisti
ab inferno animam meam: salvâsti me à
5 descendentib⁹ in lacum. Psallite Domino,
sancti ejus: & confitemini memoriæ
6 sanctitatis ejus. Quoniam ira in indignatione
ejus: & vita in voluntate ejus. Ad
vesperum demorabitur fletus, & ad matutinum
7 lætitia. Ego autem dixi in abundantia
mea. Non movebor in æternum.
8 Domine, in voluntate tua, præstitisti decori
meo virtutem. Avertisti faciem tuam
9 à me, & factus sum conturbatus. Ad te,
Domine, clamabo: & ad Deum meum
10 deprecabor. Quæ utilitas in sanguine
meo, dum descendo in corruptionem?
Numquid confitebitur tibi pulvis, aut
11 annuntiabit veritatem tuam? Audivit
Dominus, & misertus est mei: Dominus
12 factus est adjutor me⁹. Convertisti planctum
meum in gaudium mihi: conscidisti
saccum meum, & circumdedisti me
13 lætitiâ: Ut cantet tibi gloria mea, &
non compungar: Domine Deus meus,
in æternum confitebor tibi.

1 In finem, Psalmus David, pro extasi. XXX.

2 IN te, Domine, speravi, non confundar
in æternum: in justitia tua libera me.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

5 †Φωνὴ κυρίου συντρίβοντος κέδρους, †συντρίψει
6 κύριος τὰς κέδρους τοῦ Λιβάνου. †Καὶ λεπτυνεῖ αὐτὰς
ὡς τὸν μόσχον τὸν Λίβανον, †καὶ ὁ ἠγαπημένος ὡς
7 υἱὸς μονοκερώτων. †Φωνὴ κυρίου διακόπτοντος φλόγα
8 πυρός. †Φωνὴ κυρίου συσσείοντος ἔρημον, †συσσείσει
9 κύριος τὴν ἔρημον Κάδης. †Φωνὴ κυρίου
καταρτιζομένου ἐλάφους, †καὶ ἀποκαλύψει δρυμούς,
10 †καὶ ἐν τῷ ναῷ αὐτοῦ πᾶς τις λέγει δόξαν. †Κύριος
τὸν κατακλυσμὸν κατοικιεῖ· †καὶ καθιεῖται κύριος
11 βασιλεὺς εἰς τὸν αἰῶνα. †Κύριος ἰσχὺν τῷ
λαῷ αὐτοῦ δώσει, †κύριος εὐλογήσει τὸν λαὸν
αὐτοῦ ἐν εἰρήνῃ.

1 (α) Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς ᾠδῆς τοῦ ἐγκαινισμοῦ
τοῦ οἴκου (β) τοῦ Δαυίδ. κθʹ.
2 †ὙΨώσω σε, κύριε, ὅτι ὑπέλαβές με, †καὶ οὐκ (γ)
3 εὔφρανας τοὺς ἐχθρούς μου (δ) ἐπ' ἐμέ. †Κύριε
4 ὁ θεός μου ἐκέκραξα πρὸς σέ, καὶ ἰάσω με. †Κύριε
ἀνήγαγες ἐξ ᾅδου τὴν ψυχήν μου, †ἔσωσάς με ἀπὸ
5 τῶν καταβαινόντων εἰς λάκκον. †Ψάλατε τῷ κυρίῳ
οἱ ὅσιοι αὐτοῦ, †καὶ ἐξομολογεῖσθε τῇ μνήμῃ τῆς
6 ἁγιωσύνης αὐτοῦ. †Ὅτι ὀργὴ ἐν τῷ θυμῷ αὐτοῦ,
καὶ ζωὴ ἐν τῷ θελήματι αὐτοῦ. †τὸ ἑσπέρας αὐλισθήσεται
κλαυθμός, †καὶ εἰς τὸ πρωῒ ἀγαλλίασις.
7 †Ἐγὼ δὲ εἶπα ἐν τῇ εὐθηνίᾳ μου, Οὐ μὴ σαλευθῶ
8 εἰς τὸν αἰῶνα. †Κύριε ἐν τῷ θελήματί (ε)
σου παρέσχου τῷ κάλλει μου δύναμιν· †ἀπέστρεψας
δὲ τὸ πρόσωπόν σου, καὶ ἐγενήθην τεταραγμένος.
9 †Πρὸς σὲ κύριε κεκράξομαι, καὶ πρὸς τὸν θεόν
10 μου δεηθήσομαι. †Τίς ὠφέλεια ἐν τῷ αἵματί
μου, ἐν τῷ καταβῆναί με εἰς διαφθοράν; †μὴ
ἐξομολογήσεταί σοι χοῦς; †ἢ ἀναγγελεῖ τὴν ἀλήθειάν
11 σου; †Ἤκουσε κύριος, καὶ ἠλέησέ με,
12 †κύριος ἐγενήθη βοηθός μου. †Ἔστρεψας τὸν
κοπετόν μου εἰς χαρὰν ἐμοί, †διέρρηξας τὸν
13 σάκκον μου, καὶ περιέζωσάς με εὐφροσύνην· †Ὅπως
ἂν ψάλῃ σοι ἡ δόξα μου, καὶ οὐ μὴ κατανυγῶ.
†κύριε ὁ θεός μου εἰς τὸν αἰῶνα ἐξομολογήσομαί
σοι.

MS.A. Κεφ. κθʹ. (α) ψαλμὸς ᾠδῆς (β) τῷ Δαυίδ. (γ) ηὔφρανας (δ) ἐπ' ἐμοί. (ε) μου παράσχου

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, ἐκστάσεως. λʹ.
2 †ἘΠὶ σοὶ κύριε ἤλπισα, μὴ καταισχυνθείην εἰς
τὸν αἰῶνα, †ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου ῥῦσαί
με καὶ ἐξελοῦ με.

Vers. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Transl. LAT.

5 Vox Domini confringentis 5
cedros: confringet Dominus cedros
Libani: 6 Et (e) comminuet 6
eos tanquam (f) [d] vitulũ, Libanũ:
& dilect⁹, sicut filius unicornium.
7 Vox Domini (g) intercidentis 7
flammam ignis: Vox Domini 8
(h) concutientis desertum: (i)
commovebit Domin⁹ desertum
Cades. 8 Vox Domini (k) [e] perficientis 9
cervos: & revelabit [f]
sylvas: & in templo ejus (l) unusquisq;
dicet gloriam. 9 Dominus 10
[g] diluviũ (m) inhabitare facit:
et sedebit Domin⁹ rex in æternũ.
10 Domin⁹ virtutem populo suo 11
dabit: Dominus benedicet populum suum in pace.

In (a) finem, Psalmus cantici dedicationis domûs ipsius David. 1
XXIX.

1 [a] EXaltabo te, Domine, 2
quoniam (b) suscepisti
me: [b] nec delectâsti inimicos
meos super me. 2 Domine De⁹ me⁹, 3
clamavi ad te, & [c] sanâsti me.
3 Domine, reduxisti ab inferno a- 4
nimã meam: (c) Salvũ fecisti me
à descendentib⁹ in lacum. 4 Psal- 5
lite Domino, sancti ejus: & confitemini
(d) memoriæ sanctitatis
ejus. 5 Quoniam (e) [d] ira in 6
indignatione ejus: & vita in voluntate
ej⁹. 6 Vesperè [†] demorabitur
fletus: et in matutinum exultatio.
7 Ego autem dixi (f) in [*] 7
abundantia mea; Non movebor in
æternũ. 8 Domine, in voluntate tua 8
(g) præstitisti (h) [e] decori meo
virtutem: 9 (i) Avertisti autẽ faciem
tuam, et factus sum conturbatus.
*10 * Ad te, Domine, clamabo,* 9
& ad Deum meum deprecabor.
11 Quæ utilitas in sanguine 10
meo, dum descendo in corruptionem?
12 Nunquid (k) confitebitur
tibi pulvis, aut annuntiabit
veritatẽ tuam? 13 Audivit 11
Dominus, & misertus est mei:
Dominus factus est adjutor me⁹.
14 Convertisti planctũ meum [f] 12
in gaudiũ mihi: conscidisti saccũ
meum: & accinxisti me lætitiâ:
15 ut (l) psallat tibi gloria mea, 13
& non compungar. Domine Deus
meus, in æternum confitebor tibi.

In finem, Psalmus ipsi David, (a) ecstasis. XXX. 1

*IN te, Domine, speravi, non confundar in æternum: * in justitia tua [a] erue me, & exime me.* 2

Versio ÆTHIOPICA.

ቃለ፡ እግዚአብሔር፡ ይቀጠቅጥ፡ አርዘ፡ 5
ወይቀጠቅጦ፡ እግዚአብሔር፡ ለአርዘ፡ ሊባ
ኖስ።=፡ ወያደገድጎ፡ ከመ፡ ላህመ፡ ሊባኖ 6
ስ።ወፍቁርሰ፡ ከመ፡ ወልደ፡ ዘአሐዱ፡ ቀር
ኑ።=፡ ቃለ፡ እግዚአብሔር፡ ይመትር፡ ነደ፡ 7
እሳት።ቃለ፡ እግዚአብሔር፡ ያድለቀልቅ፡
ለገዳም። ወያድለቀልቅ፡ እግዚአብሔር፡
ለሐቅለ፡ቃዴስ።=፡ ቃለ፡እግዚአብሔር፡ 8
ያጸንዖሙ፡ ለኀያላት። ወይከሥት፡ አዕዋ
መ። ወበጽርሑ፡ ኵሉ፡ ይብል፡ ስብሐ
ት።=፡ እግዚአብሔር፡ያስተጋብእ፡ለማ 9
የ፡አይኅ።ይነብር፡ እግዚአብሔር፡ ወይነግ
ሥ፡ለዓለም።=፡ ወይሁቦሙ፡እግዚአብ 10
ሔር፡ኃይለ፡ ለሕዝቡ።እግዚአብሔር፡ይባ
ርኮሙ፡ለሕዝቡ፡በሰላም።=፡

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ማኅሌት፡ለተ
ሐድሶ፡ቤቱ፡ለደዊት።

ቱዐ አአኵተከ፡ እግዚኦ፡ እስመ፡ ተወከፍ 1
ከኒ።ወስላተ፡ጸላኢ፡ ኢረሰይከኒ።=፡ እ 2
ግዚኦ፡አምላኪየ፡ ጸራኅኩ፡ኀቤከ፡ወተሣሀ
ልከኒ።=፡ እግዚኦ፡ አውፃእካ፡ እምሲኦ 3
ል፡ ለነፍስየ።ወአድኀንከኒ፡ እምእለ፡ ይወ
ርዱ፡ውስተ፡ግብ።=፡ ዘምሩ፡ ለእግዚአ 4
ብሔር፡ ጻድቃኑ።ወግነዩ፡ ለዝክረ፡ ቅድሳ
ቱ።=፡ እስመ፡መቅሠፍት፡እምዓቱ፡ሐይ 5
ወ፡እምፈቃዱ።=፡ በምሴት፡ይደምፅ፡በ 6
ከይ፡ወበጽባሕ፡ፍሥሐ።=፡ አንሰ፡ለቤ 7
በተድላየ፡ ኢይትሀወክ፡ ለዓለም።=፡ እ 8
ግዚኦ፡በስምረትከ፡ ሀባ፡ ኃይለ፡ ለሕይወት
የ።=፡ ሜጥከሰ፡ ገጸከ፡ ወኮንኩ፡ ድንጉ 9
ፀ።=፡ ኀቤከ፡ እግዚኦ፡ ጸራኅኩ፡ ኀበ፡ አ 10
ምላኪየ፡እስእል።=፡ ምንተ፡ ያሰልጥ፡ደ 11
ምየ፡ለእመ፡ ወረድኩ፡ ውስተ፡ ሙስና።=፡
መሬትኑ፡ የአምነከ፡ ወይነግር፡ ጽድቀ 12
ከ።=፡ ሰምዓ፡ እግዚአብሔር፡ ወተሣሀለ 13
ኒ።ወኮነኒ፡እግዚአብሔር፡ረዳኢየ።=፡ ሜ 14
ጥከ፡ ላሕየ፡ ወአስተፌሣሕከኒ።ሠጠጥከ፡
ሠቅየ፡ወሐሤተ፡አቅነትከኒ።=፡ ከመ፡ዝ 15
እዜምር፡ ለከ፡ ክብርየ፡ ወኢይደንግፅ።እ
ግዚኦ፡አምላኪየ፡እገኒ፡ለከ፡ለዓለም።=፡

መዝሙር፡ዘደዊት፡ዘበተደሞ፡ከመ
ዘ፡ውእቱ፡በከልእ።

ሀ ኪያከ፡ ተወከልኩ፡ እግዚኦ፡ ወኢይትኀ 1
ፈር፡ ለዓለም።ወበጽድቅከ፡ አንግፈኒ፡ ወባ
ልሐኒ።=፡

INTERP. ÆTHIOP. [d] vitulum Libani: [e] fortes reddentis [f] condensa: [g] aquas diluvii congregabit: *PSAL. XXIX.* [a] Tibi gratias agam, Domine, [b] & postulationem inimicorum meorum non concessisti. [c] misertus es mei. [d] flagellum in [†] sonet [*] præparatione mea; [e] vitæ meæ virtutem: [f] & exhilarâsti me: *PSAL. XXX.* [a] dimitte me, &

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

5 6 * صوت الرب يحطم الارز * الرب يكسر ارز لبنان * ويسحقه مثل عجل لبنان * والمحبوب
7 8 مثل ابن وحيد القرن * صوت الرب يقطع لهيب النار * صوت الرب يزلزل القفر * الرب يزلزل
9 برية قادس * صوت الرب يثبت الايل * ويكشف الغاب * وفي هيكله المقدس كل احد ينطق
10 11 بالمجد * الرب يمسك الطوفان * الرب يجلس ملكا الى الابد * الرب يعطي شعبه قوة * الرب يبارك
شعبه بالسلامة * اللليلويا * المزمور التاسع والعشرون *

1 * قاله على تجديد الهيكل وفيه شكر وتسبيح * وعدده كز استيخن *
2 3 * اعظمك يا رب لانك قبلتني * ولم تسر بي اعدائي * ايها الرب الاهي صرخت اليك فشفيتني *
4 5 * ومن الجحيم اصعدت نفسي يا رب ومن الهابطين في الجب خلصتني * رتلوا للرب يا جميع
6 قديسيه * واعترفوا لذكر قدسه * لان السخط في غضبه * والحياة في مسرته * عشية يكون البكا *
7 8 وباكرا يكون الفرح * انا قلت عند غناي * اني لا ازول الى الابد * يا رب بمشيتك وهبت
9 لبهاي قوة * صرفت وجهك عني فصرت مرعجا * اليك يا رب اصرخ * والى الاهي اتضرع
10 11 * اي منفعة في دمي اذا هبطت الى الجحيم * هل يشكرك التراب او يخبر بحقك * سمع الرب
12 13 فرحمني * الرب صار لي عونا * قلبت نوحي فرحا * مزقت مسحي * البستني سرورا * لكيما يرتل لك
14 مجدي * ولا يحزن قلبي * ايها الرب الاهي اشكرك الى الابد * اللليلويا * المزمور الثلثون *

1 * قاله * شوق وطلبة وشكر * وعدده * له * استيخن *
2 * عليك يا رب توكلت * فلا اخزى ابدا * خلصني ونجني بعدلك *

Vox Domini confringit cedros. Dominus 5
frangit cedros Libani. Et conteret eas ve- 6
luti vitulum Libani, & dilectus tanquam
filius unicornis; Vox Domini dissecat 7
flammam ignis. Vox Domini tremefacit 8
desertum: Dominus tremefacit desertum
Cades. Vox Domini sistit cervos, & de- 9
tegit sylvam, & in templo ejus sancto u-
nusquisque promit laudem. Dominus co-
hibet diluvium. Dominus sedebit rex in 10
æternum. Dominus dabit populo suo vir- 11
tutem. Dominus benedicet populum suum
in pace. Alleluja.

PSAL. XXIX.

Dixit eum de renovatione Templi. Et continetur in eo gratiarum actio atque laudatio. Num. ver. 27. 1

MAgnifico te, O Domine mi, eò quòd 2
susceperis me, & non gavisi sint in
me inimici mei. O Domine, Deus meus, cla- 3
mavi ad te, & sanâsti me: Et ab inferis 4
extraxisti animam meam, O Domine: et à
descendentibus in lacum liberâsti me.
Psallite Domino, O omnes sancti ejus, & 5
confitemini memoriæ sanctitatis ejus;
Quia furor in ira ejus, & vita in volun- 6
tate ejus. Vesperè erit fletus, & manè erit
gaudium. Ego dixi tempore divitiarum 7
mearum, quòd non commovebor in æter-
num. O Domine, in voluntate tua conces- 8
sisti decori meo virtutem: avertisti faciem
tuam à me, & factus sum anxius. Ad te, 9
O Domine mi, clamo, et Deum meum sup-
plico. Quæ utilitas in sanguine meo, cùm 10
cecidero in infernum? An forte gratias
aget tibi pulvis? aut annuntiabit veritatẽ
tuam? Audivit Dominus, et misertus est 11
mei: Dominus factus est mihi adjutorium.
Vertit gemitum meum in gaudium: lace- 12
râsti cilicium meum, induisti me lætitiâ.
ut psallat tibi gloria mea, & non contri- 13
stetur cor meum. O Domine Deus meus, 14
gratias agam tibi in æternum. Alleluja.

PSAL. XXX.

Dixit eum. *Continétque* fervens desiderium, orationem, & gratiarum actionem. Et num. ver. 35. 1

IN te, O Domine, confisus sum, non e- 2
rubescam unquam. Salva me, & redi-
me me justitia tua:

תהלים: לא

domum in fortitudinis petram in mihi eſto , me erue celeriter,tuam aurẽ me ad Inclina
3 הטה אלי אזנך מהרה הצילני היה לי לצור מעוז לבית 3
tuũ nomẽ propter & , *tu* mea munitio &,mea petra Quoniã *.me ſervandum ad* ,*munitionum*
4 מצודות להושיעני: כי־סלעי ומצודתי אתה ולמען שמך
tu quoniam;mihi abſconderũt quod , reti è me Educes .me deduces &,me duces
5 תנחני ותנהלני: תוציאני מרשת זו טמנו לי כי אתה
Deus Domine me redemiſti,meum ſpiritum commendabo tua manu In .mea fortitudo
6 מעוזי: בידך אפקיד רוחי פדיתה אותי יהוה אל
.ſperavi Dominum *ad* ego & ; fruſtra vanitates obſervantes Odivi .veritatis
7 אמת: שנאתי השמרים הבלי־שוא ואני אל־יהוה בטחתי:
cognoviſti ,meam afflictionem vidiſti quia ,tua miſericordia in lætabor & ,Exultabo
8 אגילה ואשמחה בחסדך אשר ראית את־עניי ידעת
feciſti ſtare : inimici manum in me *concluſiſti* non Et .meam animam anguſtiis in
9 בצרות נפשי: ולא הסגרתני ביד אויב העמדת
contabuit : mihi anguſtia quoniam ,Domine mei Miſerere .meos pedes latitudine in
10 במרחב רגלי: חנני יהוה כי צר לי עששה
,*meæ vitæ moleſtia* in *defecerũt* Quoniã .meus venter &,mea anima,meꝰ oculꝰ *indignatione in*
11 בכעס עיני נפשי ובטני: כי כלו ביגון חיי
.*ſunt corroſa* mea oſſa & ; mea fortitudo *mea iniquitate in corruit* : gemitu in mei anni &
ושנותי באנחה כשל בעוני כחי ועצמי עששו:
; meis notis pavor &,valde meis vicinis &,opprobrium fui *meis hoſtibus cunctis De*
12 מכל־צררי הייתי חרפה ולשכני מאד ופחד למידעי
fui , corde à mortuus ſicut fui Oblivioni .me à migraverunt ,foris me videntes
13 ראי בחוץ נדדו ממני: נשכחתי כמת מלב הייתי
undique pavorem ,multorum vituperationem audivi Quoniam .*periens* vas ſicut
14 ככלי אבד: כי שמעתי דבת רבים מגור מסביב
ego Et .*ſunt machinati* meam animam *capiendum ad* : *me ſuper* pariter *eos conſultando in*
15 בהוסדם יחד עלי לקחת נפשי זממו: ואני
; mea tempora tua manu In .tu meus Deus , dixi : Domine ſperavi te *ſuper*
16 עליך בטחתי יהוה אמרתי אלהי אתה: בידך עתתי
ſuper *tuas facies* fac Lucere .me perſequentibus à &,meorum inimicorũ manu de me erue
17 הצילני מיד־אויבי ומרדפי: האירה פניך על־
: te invocavi quoniã,afficiar pudore non Dñe .*tua miſericordia in* me ſerva :tuum ſervum
18 עבדך הושיעני בחסדך: יהוה אל־אבושה כי קראתיך
, *falſitatis* labia Obmuteſcent .ſepulchro in *ſilebunt* ; impii afficientur pudore
19 יבשו רשעים ידמו לשאול: תאלמנה שפתי שקר
,tuum bonum multum Quàm .contemptu & ,ſuperbia *in durum* juſtum *ſuper* *loquentia*
20 הדברות על־צדיק עתק בגאוה ובוז: מה רב טובך
! hominum filiis coram :te in ſperantibus es operatus ,te timentibus abſcondiſti quod
אשר־צפנת ליראיך פעלת לחוסים בך נגד בני אדם:
,*tugurio* in eos abſcondes ,viri elationibus ab *tuarum facierũ* abſcondito in eos Abſcondes
21 תסתירם בסתר פניך מרכסי איש תצפנם בסכה
ſuã miſericordiã fecit mirificare quoniã: Dominus Benedictus .linguarũ contentione à
22 מריב לשנות: ברוך יהוה כי הפליא חסדו
.*munitionis* civitate in mihi
לי בעיר מצור:

תרגום TARGUM.

3 אצלי לותי אודנך בסרהוביא פצי יתי הוי לי
לכרך עשין לחוסנא כריכא למפרק יתי:
4 מטול דתוקפי ורוחצני את ובגלל שמך דבר
5 יתי וזון יתי: אפק יתי ממצדתא דנן דפרסין
6 לי ארום אנת עושני: באידך אמני רוחי
7 פרקתא יתי יי אלהא קשיטא: שנאתי דנטרין
עובדין דדמין ללמא ולשקרא ואנא על יי
8 כליתי: אבוע ואחדי בטיבותך די חמית ית
9 סגופי ידעתא בעקתין דנפשי: ולא מסרתני
באידא דבעיל דבבא אקמתא לרוחא רגלי:
10 חוס עלי יי ארום עיק לי בלאת מרונזא עיני
11 אתעק נפשי וכריסי: ארום שציאו בדונא
חיי ושני בתנחתא תקל בחובי חילי ואברי
12 חשכו: מן כל מעיקי הויתי כסופא ולשבבי
לחדא ודלוחא לידעין לי דחמין לי בשוקא
13 ערקין מן קדמי: אתנשיתי היך שכיבא מן
14 רעיונא הויתי כמן דפחר תביר: מטול די
שמעית טיב ביש דאמרין עלי עממין סגיאין
רתיתא מחזור חזור באתכנשיהון כחדא עלי
15 למסב נפשי חשיבו: ואנא עלך רחיצית יי
16 אמרית אלהי אנת: באידך זמני פורקני פצי
17 יתי מן יד בעלי דבבי ומרדפי: אנהר סבר
18 אפך על עבדך פרוקני בטובך: יי לא אבהת
ארום קריתך יבהתון רשיעי ישתקון ויחתון
19 לשיול: תתפקקן ספות שקרא דמללן על
20 צדיקיא גדופין בגיותנותא ובסרנותא: כמה
סגי טובך דאטשיתא לדחלין מנך עבדת
לסברין עלך למפרע להון אגר טב קביל בני
21 נשא: תטמרנון בטומרא בעדן רוגזך מגרודי
גבריא תטשנון כד במטללתא מתגרת
22 לישניא: בריך יי ארום פרש טיבותיה לי
בקרתא כריכתא:

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Inclina ad me aurem tuam; velociter libera me: eſto mihi in *munitionem* fortem, in robur arcis; ut redimas me. Quoniam fortitudo mea & fiducia mea tu es: & propter nomen tuum duc me, & enutri me. *Educ* me de laqueo iſto quem *tetenderunt mihi*, quia tu es fortitudo mea. In manu tua commendabo ſpiritum meum: redemiſti me Domine Deus verax. Odi conſervantes opera vanitati & mendacio ſimilia: ego autem in Domino confiſus ſum. Gaudebo & exultabo in bonitate tua, quòd reſpexeris afflictionem meam: noviſti anguſtias animæ meæ. Nec tradidiſti me in manu inimicorum meorum; obfirmâſti in latitudine pedes meos. Miſerere mei Domine, quoniam infeſtatio adeſt mihi; *inveteravit* præ ira oculus meus, conſtricta eſt anima mea & venter meus. Quoniam *conſumptæ* ſunt in mœrore *vitæ meæ*, & anni mei in ſuſpirio: corruit in *peccatis* virtus mea, & membra mea denigrata ſunt. Præ omnibus qui angunt me, factꝰ ſum opprobrium, & vicinis meis valdè, & terror iis qui me nôrunt: qui videbant me in platea, fugerunt à conſpectu meo. Oblivioni traditus ſum ſicut jacens *ex animo* [*dimiſſus*:] factus ſum ſicut vas teſtaceum quod frangitur. Quoniam audivi famam malam quam dicunt contra me populi multi; tremor circumquaque: cum convenirent ſimul contra me, de capienda anima mea cogitaverunt. Et ego in *te* confiſus ſum Domine: dixi, Deus meus es tu. In manu tua ſunt tempora redemptionis *meæ*: libera me de manu inimicorum meorum & à perſecutoribus meis. Lucere fac aſpectum faciei tuæ ſuper ſervũ tuũ; redime me bonitate tua. Domine non confundar, quoniam invocavi te: confundantur impii, obmuteſcant & deſcendant in *infernum*. Muta fiant labia *mendacii*, quæ proferunt adverſùs juſtos opprobria in ſuperbia & contemptu. Quàm magna eſt bonitas tua, quam abſcondiſti timentibus te! operatus es ſperantibꝰ in *te*, ut reddas eis præmium bonum coram filiis hominum. Abſcondes eos in occulto in tempore iræ tuæ; *à turmis potentium* occultabis eos veluti in umbraculo à contradictione linguarum. Benedictus Dominus, quoniam mirandam exhibuit bonitatem ſuam mihi in civitate munita.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܐܪܟܢ ܠܘܬܝ ܐܕܢܟ ܘܒܥܓܠ ܥܢܝܢܝ. ܗܘܝ ܠܝ ܐܠܗܐ ܡܥܕܪܢܐ ܘܒܝܬ ܓܘܣܐ 3
ܘܦܪܘܩܝܢܝ: * ܡܛܠ ܕܚܝܠܝ ܘܓܘܣܝ ܐܢܬ ܗܘ. ܡܛܠ ܫܡܟ ܡܪܝܐ ܒܝܐܝܢܝ: 4
* ܘܦܨܝܢܝ ܡܢ ܦܚܐ ܗܢܐ ܕܛܫܝܘ ܠܝ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܣܡܟܢܝ * ܘܠܡܛܪܬܟ ܐܓܥܠ ܪܘܚܝ: 5 6
ܘܦܪܩܬܢܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܩܘܫܬܐ. * ܣܢܝܬ ܠܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ ܣܓܕܬܐ ܣܪܝܩܬܐ: ܘܐܢܐ ܥܠܝܟ 7
ܡܪܝܐ ܣܒܪܬ. * ܐܪܘܙ ܘܐܚܕܐ ܒܛܝܒܘܬܟ: ܕܚܙܝܬ ܡܘܟܟܝ ܘܝܕܥܬ ܐܘܠܨܢܐ ܕܢܦܫܝ. 8
* ܘܠܐ ܐܫܠܡܬܢܝ ܒܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝ: ܐܩܝܡܬ ܒܪܘܝܚܐ ܪܓܠܝ. * ܐܬܪܚܡ ܥܠܝ 9 10
ܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܐܥܩܬ ܠܝ: ܐܬܕܠܚܬ ܒܪܘܓܙܐ ܥܝܢܝ ܘܢܦܫܝ ܘܟܪܣܝ. * ܡܛܠ 11
ܕܫܠܡܘ ܚܝܝ ܒܟܘܪܗܢܐ: ܘܫܢܝ ܒܬܢܚܬܐ. ܐܬܡܚܠ ܚܝܠܝ ܒܡܣܟܢܘܬܐ: ܘܐܬܕܠܚܘ
ܓܪܡܝ * ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ. ܘܗܘܝܬ ܚܣܕܐ ܠܫܒܒܝ: ܘܕܚܠܬܐ ܠܐܝܠܝܢ 12
ܕܝܕܥܝܢ ܠܝ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܚܙܝܢ ܗܘܘ ܠܝ ܒܫܘܩܐ ܥܪܩܝܢ ܗܘܘ ܡܢܝ: * ܐܬܛܥܝܬ 13
ܐܝܟ ܡܝܬܐ ܡܢ ܠܒܐ. ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܐܒܝܕܐ: * ܡܛܠ ܕܫܡܥܬ 14
ܪܢܝܐ ܕܣܓܝܐܐ. ܟܕ ܐܬܟܢܫܘ ܥܠܝ ܐܟܚܕܐ: ܘܐܬܪܥܝܘ ܕܢܣܒܘܢ ܢܦܫܝ.
* ܐܢܐ ܕܝܢ ܥܠܝܟ ܡܪܝܐ ܬܟܠܬ: ܐܡܪܬ ܐܠܗܝ ܐܢܬ ܡܪܝܐ * ܘܒܐܝܕܝܟ ܐܢܘܢ 15 16
ܙܒܢܝ. ܦܪܘܩܝܢܝ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝ ܘܡܢ ܐܝܠܝܢ ܕܪܕܦܝܢ ܠܝ: * ܐܢܗܪ ܐܦܝܟ ܥܠ 17
ܥܒܕܟ ܘܦܪܘܩܝܢܝ ܒܛܝܒܘܬܟ. * ܡܪܝܐ ܠܐ ܐܒܗܬ ܕܩܪܝܬܟ: ܢܒܗܬܘܢ ܪܫܝܥܐ ܘܢܚܬܘܢ 18
ܠܫܝܘܠ. * ܘܢܫܬܟܪܢ ܣܦܘܬܗܘܢ ܕܥܘܠܐ: ܕܡܡܠܠܢ ܥܠ ܙܕܝܩܐ ܥܘܠܐ ܘܫܝܛܘܬܐ. 19
* ܟܡܐ ܣܓܝܐܐ ܛܝܒܘܬܟ ܕܛܫܝܬ ܠܕܚܠܝܟ: ܠܡܣܒܪܝܢ ܒܟ ܩܕܡ ܒܢܝܢܫܐ. 20
* ܬܛܫܐ ܐܢܘܢ ܒܡܛܪܬܐ ܕܦܪܨܘܦܟ: ܡܢ ܕܘܘܕܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܬܛܫܐ ܐܢܘܢ ܒܡܛܠܠܟ ܡܢ 21
ܚܪܝܢܐ. * ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܕܓܒܐ ܠܗ ܓܒܝܐ ܒܡܕܝܢܬܐ ܚܣܝܢܬܐ. 22

Inclina ad me aurem tuã, & citò exaudi me. Eſto mihi Deus auxiliator atque refugium, & redime me. Quoniam fortitudo mea, & refugium meum tu es. Propter nomen tuum Domine, conſolare me. Et erue me è laqueo iſto, quem abſconderunt mihi: quoniam tu es ſuffultor meus. Et cuſtodiæ tuæ commiſi ſpiritum meum, & ſalvâſti me, Domine Deus veritatis. Odiſti eos qui obſervant cultus inanes: at ego in te, Domine ſperavi. Exultabo & lætabor de beneficio tuo, quoniam vidiſti humilitatem meam, & cognoviſti anguſtiam animæ meæ. Nec tradidiſti me in manum inimicorum meorum: ſtatuiſti in amœnitate pedes meos. Miſerere mei, Domine, quia mœrore conficior: conturbatus eſt oculus meus in ira, & anima mea, & venter meus: Quia defecit vita mea in angore, & anni mei in gemitibus: infirmata eſt virtus mea in paupertate, & conturbata ſunt oſſa mea. Ab omnibus inimicis meis: & factus ſum opprobrium vicinis meis, & timor iis qui me nôrunt: & hi qui videbant me in platea recedebant à me. Oblivioni traditus ſum ut mortuus è corde, & factus ſum ſicut veſtimentum perditum: Quoniam audivi cogitationem multorũ, dum conſiliũ inirent adverſùm me ſimul, & contemplarentur ut caperent animã meam. Ego verò in te, Domine, ſum confiſus: dixi, Deus meus es tu, Domine. Et in manibus tuis ſunt tempora. Libera me ab inimicis meis, & ab iis qui perſequuntur me. Lucere fac vultum tuum ſuper ſervum tuum, & ſalva me ob bonitatem tuam. Domine, ne confundar, quoniam invocavi te; confundantur impii, & deſcendant in infernum. Et obturentur labia ſceleſtorum, qui loquuntur adverſùs juſtum falſitatem & delirium. Quàm copioſa ſunt bona tua quæ ſervas timentibus te, iis qui ſperant in te, coram hominibus! Oculcabis eos tegumento vultus tui à conturbatione hominum: teges eos umbrâ tuâ à contentione. Benedictus Dominus qui elegit ſibi electos in civitate munita

PSAL. XXX.

Verſio VULG. LAT.

3 Inclina ad me aurē tuam, accelera ut eruas
me. Eſto mihi in Deum protectorē;
& in domum refugii, ut ſalvum me facias.
4 Quoniā fortitudo mea, & refugiū
meum es tu. & propter nomen tuum deduces
5 me, & enutries me. Educes me
de laqueo hoc, quem abſconderunt mihi:
6 quoniam tu es protector meus. In
manus tuas commendo ſpiritum meum:
7 redemiſti me, Domine Deus veritatis. Odiſti
obſervantes vanitates, ſupervacuè.
8 Ego autem in Domino ſperavi: Exultabo,
& lætabor in miſericordia tua. Quoniam
reſpexiſti humilitatē meā, ſalvaſti
9 de neceſſitatibus animam meā. Nec concluſiſti
me in manibus inimici: ſtatuiſti
10 in loco ſpatioſo pedes meos. Miſerere
mei, Domine, quoniam tribulor: conturbatus
eſt in ira oculus meus, anima mea,
11 & venter meus: Quoniam defecit in dolore
vita mea, & anni mei in gemitibus.
Infirmata eſt in paupertate virtus mea:
12 & oſſa mea conturbata ſunt. Super omnes
inimicos meos factus ſum opprobriū,
& vicinis meis valdè, & timor notis
meis. Qui videbant me, foràs fugerunt
13 à me: Oblivioni datus ſum, tanquàm
mortuus à corde. Factus ſum
14 tanquàm vas perditum: Quoniam audivi
vituperationem multorum commorantium
in circuitu. In eo dum convenirent
ſimul adverſùm me, accipere animā meam
15 conſiliati ſunt. Ego autem in te ſperavi,
16 Domine: dixi, Deus meus es tu: In
manibus tuis ſortes meæ. Eripe me de
manu inimicorū meorū, & à perſequentibus
17 me. Illuſtra faciem tuā ſuper ſervū
tuum, ſalvū me fac in miſericordia tua:
18 Domine non confundar, quoniam invocavi
te. Erubeſcant impii, & deducantur
19 in infernum: Muta fiant labia doloſa.
Quæ loquuntur adverſ⁹ juſtū iniquitatē
20 in ſuperbia, & in abuſione. Quā magna
multitudo dulcedinis tuæ, Dñe, quā abſcondiſti
timentib⁹ te! Perfeciſti eis, qui
ſperāt in te, in conſpectu filiorū hominū.
21 Abſcondes eos in abſcondito faciei tuæ à
conturbatione hominū. Proteges eos in
tabernaculo tuo à contradictione linguarū.
22 Benedict⁹ Dñs: quoniam mirificavit
miſericordiā ſuā mihi in civitate munita.

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

3 † Κλῖνον πρὸς μὲ τὸ οὖς σου, τάχυνον τοῦ ἐξελέσθαι
με· † γενοῦ μοι εἰς Θεὸν ὑπερασπιστὴν, † καὶ εἰς οἶκον
4 καταφυγῆς τοῦ σῶσαί με. † Ὅτι (α) κραταίωμά
μου καὶ καταφυγή μου εἶ σὺ, † καὶ ἕνεκεν τοῦ ὀνόματός
5 σου ὁδηγήσεις με, καὶ διαθρέψεις με. † Ἐξάξεις
με ἐκ παγίδος ταύτης ἧς ἔκρυψάν μοι, † ὅτι σὺ
6 εἶ ὁ ὑπερασπιστής μου κύριε. † Εἰς χεῖράς σου παραθήσομαι
τὸ πνεῦμά μου, † ἐλυτρώσω με κύριε ὁ Θεὸς
7 τῆς ἀληθείας. † Ἐμίσησας τοὺς διαφυλάσσοντας
ματαιότητας διακενῆς. † ἐγὼ δὲ ἐπὶ τῷ κυρίῳ ἤλπισα.
8 † Ἀγαλλιάσομαι καὶ εὐφρανθήσομαι ἐπὶ τῷ
ἐλέει σου· † ὅτι (β) ἐπεῖδες τὴν ταπείνωσίν μου, † ἔσωσας
9 ἐκ τῶν ἀναγκῶν τὴν ψυχήν μου. † Καὶ οὐ συνέκλεισάς
με εἰς χεῖρας ἐχθροῦ, † ἔστησας ἐν εὐρυχώρῳ
10 τοὺς πόδας μου. † Ἐλέησόν με κύριε, ὅτι θλίβομαι·
† ἐταράχθη ἐν θυμῷ ὁ ὀφθαλμός μου, † ἡ
11 ψυχή μου, καὶ ἡ γαστήρ μου. † Ὅτι ἐξέλιπεν ἐν ὀδύνῃ
ἡ ζωή μου, † καὶ τὰ ἔτη μου ἐν στεναγμοῖς· † ἠσθένησεν
ἐν πτωχείᾳ ἡ ἰσχύς μου, † καὶ τὰ ὀστᾶ μου ἐταράχθησαν. †
12 Παρὰ πάντας τοὺς ἐχθρούς μου ἐγενήθην ὄνειδος, † καὶ
τοῖς γείτοσί μου σφόδρα, † καὶ φόβος τοῖς γνωστοῖς
13 μου. † οἱ θεωροῦντές με ἔξω ἔφυγον ἀπ' ἐμοῦ. † Ἐπελήσθην
ὡσεὶ νεκρὸς ἀπὸ καρδίας· † ἐγενήθην ὡσεὶ
14 σκεῦος ἀπολωλός, † Ὅτι ἤκουσα ψόγον πολλῶν
παροικούντων κυκλόθεν. † ἐν τῷ (ˇ) συναχθῆναι αὐτοὺς
ἅμα ἐπ' ἐμὲ, † τοῦ λαβεῖν τὴν ψυχήν μου ἐβουλεύσαντο.
15 † Ἐγὼ δὲ ἐπὶ σοὶ (γ) ἤλπισα κύριε· εἶπα,
16 Σὺ εἶ ὁ Θεός μου, † Ἐν ταῖς χερσί σου οἱ κλῆροί
μου. † ῥῦσαί με ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν μου, † καὶ ἐκ τῶν
17 καταδιωκόντων με. † Ἐπίφανον τὸ πρόσωπόν σου
ἐπὶ τὸν δοῦλόν σου, † σῶσόν με ἐν τῷ ἐλέει σου. †
18 Κύριε μὴ καταισχυνθείην, ὅτι ἐπεκαλεσάμην σε. †
αἰσχυνθείησαν (δ) οἱ ἀσεβεῖς, καὶ καταχθείησαν εἰς ᾅδου.
19 † Ἄλαλα γενηθήτω τὰ χείλη τὰ δόλια, † τὰ
λαλοῦντα κατὰ τοῦ δικαίου ἀνομίαν † ἐν ὑπερηφανίᾳ
20 καὶ ἐξουδενώσει. † Ὡς πολὺ τὸ πλῆθος τῆς χρηστότητός
σου κύριε, † ἧς ἔκρυψας τοῖς φοβουμένοις
σε; † ἐξειργάσω τοῖς ἐλπίζουσιν (ε) ἐπὶ σὲ, † ἐναντίον
21 τῶν υἱῶν τῶν ἀνθρώπων. † (ζ) Κατακρύψεις
αὐτοὺς ἐν ἀποκρύφῳ τοῦ προσώπου σου † ἀπὸ ταραχῆς
ἀνθρώπων, σκεπάσεις αὐτοὺς † ἐν σκηνῇ
22 ἀπὸ ἀντιλογίας γλωσσῶν. † Εὐλογητὸς κύριος,
ὅτι ἐθαυμάστωσε τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἐν πόλει περιοχῆς.

MS. A. (α) κραταίωσίς (β) ἐφεῖδες (ˇ) ἐπισυναχθῆναι (γ) κύριε ἤλπισα· (δ) ἀσεβεῖς, (ε) ἐπὶ σοὶ, (ζ) Καὶ κατακρύψεις

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

2 Inclina ad me aurem tuam, accelera 3
ut eximas me. [b] 3 Eſto
mihi in Deum protectorē, & in
domum refugii, ut ſalvum me facias.
4 Quonia (b) fortitudo mea, 4
& refugium meum es tu: et propter
nomen tuum deduces me, &
(c) enutries me. 5 Educes me de 5
laqueo hoc quem abſconderunt
mihi: quoniā tu es protector meus,
(d) Domine. 6 In manus tuas 6
( ) commendabo ſpiritum meum:
redemiſti me, Domine Deus veritatis.
7 [c] Odiſti obſervātes vanitates 7
ſupervacuè. 8 Ego autem
in Domino ſperavi: Exultabo, & 8
lætabor in miſericordia tua.
9 Quoniam reſpexiſti humilitatē
meam: ſalvā feciſti de neceſſitatibus
animā meam. 10 Nec concluſiſti 9
me in manus inimici: ſtatuiſti
in loco ſpatioſo pedes meos.
11 Miſerere mei, Domine, quoniam 10
(f) tribulor: (g) conturbatus
eſt in ira oculus me⁹, anima mea,
& venter meus. 12 Quoniam 11
(h) defecit in dolore vita mea: et
anni mei in gemitibus. 13 Infirmata
eſt in (i) paupertate virtus
mea: & [d] oſſa mea conturbata
ſunt. 14 Super (k) omnes inimicos 12
meos factus ſum opprobrium, &
[e] vicinis meis valdè, & timor
notis meis. 15 Qui videbant me,
foràs fugerunt à me: [f] Oblivioni 13
datus ſum, tanquam mortuus à
corde. 16 Fact⁹ ſum tanquā vas
perditū: Quoniā [g] audivi vituperationem 14
multorū (l) accolentium
in circuitu. 17 Dum congregarentur
ipſi ſimul adverſū me;
ut [h] acciperent animam meam,
conſiliati ſunt. 18 Ego autem in 15
te ſperavi, Domine: dixi, Tu es
De⁹ me⁹: In manibus tuis (m) [i] 16
ſortes meæ. 19 Erue me de manu
inimicorum meorum, & à perſequentibus
me. 20 Illuſtra faciem 17
tuam ſuper ſervum tuum: ſalvum
me fac in miſericordia tua. Domine, 18
non confundar, quoniam invocavi
te. 21 Erubeſcant impii, &
(n) deducantur in infernum: Muta 19
fiant labia doloſa, 22 quæ loquuntur
adverſùs juſtum iniquitatem
in ſuperbia, & (o) contemptu.
23 (p) Quā magna multitudo 20
[k] dulcedinis tuæ, Domine,
quam abſcondiſti timentibus te! 24 [l] Perfeciſti (q) ſperantibus in te, in conſpectu filiorum hominū. 25 Abſcondes eos in [m] abſcondito faciei tuæ à conturbatione hominum: 26 proteges eos in (r) 21 22
(s) tabernaculo à contradictione linguarum. 27 Benedictus Dominus, [n] quoniam mirificavit miſericordiam ſuam, in civitate circumſtantiæ.

Verſio ÆTHIOPICA.

አጽምእ፡እዝነከ፡ ኀቤየ፡ወፍጡነ፡ አድኅኖ 2
ኒ፡፡ ኩነኒ ፡ አምላክየ ፡ ወመድኅንየ፡፡ 3
ወቤተ፡ጸወንየ፡ከመ፡ታድኅነኒ፡፡ እስመ ፡
ኃይልየ ፡ ወጸወንየ ፡ አንተ፡፡ በእንተ፡ 4
ስምከ ፡ ምርሐኒ ፡ ወሴስየኒ፡፡ ወአውፅ 5
አኒ፡እምዛቲ፡ መሥገርት፡ እንተ፡ ኀብኡ፡ሊ
ተ፡፡ እስመ ፡ አንተ ፡ ረዳኢየ፡እግዚኦ፡፡
ውስተ፡ እዴከ፡አመኅፅን፡ ነፍስየ፡፡ ቤዘውከኒ፡ 6
እግዚአብሔር፡አምላከ፡ጽድቅ፡፡ ጸላ 7
እከ፡ እግዚኦ፡ ኵሉ፡ዘየዐቅብ፡ ከንቶ፡ለዝ
ሉፉ፡፡ ወአንሰ፡በእግዚአብሔር፡ተወከል 8
ኩ፡፡ እትፌሣሕ፡ ወእትሐሠይ ፡ በአድኅኖ
ትከ፡፡ እስመ፡ርኢከኒ፡ በሕማምየ፡፡ ወአ 9
ድኅንከ፡እምንዳቤሃ፡ለነፍስየ፡፡ ወኢዘ 10
ጋሕከኒ፡ ውስተ፡እደ ፡ ፀርየ፡፡ ወአቀምኮን
ውስተ፡መርኅብ፡ለእገሪየ፡፡ ተሣሀለኒ፡ 11
እግዚኦ፡ እስመ ፡ ሐመምኩ፡፡ ወተሀውከት፡
እምዐተ ፡ ዓይንየ፡፡ ነፍስየኒ ፡ ወከርሥየ
ኒ፡፡ እስመ፡ ኀልቀ፡ በሕማም፡ ሕይወት 12
የ፡፡ ወዓመትየኒ ፡ በገዓር፡፡ ወደክመ፡ 13
በተፅናስ ፡ ኃይልየ፡፡ ወአንቀልቀለ፡ ኵሉ፡አ
ዕጽምትየ፡፡ ወተጸአልኩ፡ በኀበ ፡ ኵሉ 14
ሙ ፡ ጸላእትየ፡፡ወፈድፋደሰ ፡ በኀበ፡ጎርየ፡፡
ግሩም፡ኮንኩዎሙ ፡ ለአዝማድየ፡፡ ወእ 15
ለኒ ፡ ይሬእዩኒ ፡ አፍአ፡ይጕዩ ፡ እምኔየ፡፡
ቀብፁኒ፡ እምልብ፡ከመ፡ ዘሞተ፡፡ ወኮ 16
ንኩ፡ ከመ፡ ንዋይ፡ዘተሐጕለ፡፡ እስመ፡ሰማ
ዕኩ ፡ ድምፀ ፡ ብዙኃን፡ እለ፡ዓገቱኒ፡ አው
ድየ፡፡ ሶበ፡ ተጋብኡ፡ ኅቡረ፡ላዕሌየ፡፡ 17
ወተማከሩ፡ይምሥጥዋ፡ለነፍስየ፡፡ ወአ 18
ንሰ፡ ብከ ፡ ተወከልኩ ፡ እግዚኦ፡፡ ወእቤ
ለከ ፡ አምላኪየ ፡ አንተ፡፡ ውስተ፡እዴከ፡
ርስትየ፡፡ አድኅነኒ፡እምእደ፡ፀርየ፡፡ 19
ወእምእለ ፡ ሮዱኒ፡፡ አብርህ ፡ ገጸከ፡ 20
ላዕለ ፡ ገብርከ ፡ ወአድኅነኒ፡ በእንተ፡ ምሕ
ረትከ፡፡ ወኢይትኀፈር ፡ እግዚኦ ፡ እስመ፡
ጸዋዕኩከ፡፡ ለይትኀፈሩ ፡ ጽልሕዋን፡ 21
ወይረዱ፡ውስተ ፡ሲኦል፡፡ ለይኩን ፡ ለከና
ፍረ ፡ ጕሕሉት፡፡ እለ ፡ ይነቡ፡ዐመፃ፡ 22
ላዕለ፡ጻድቅ፡፡ በትዕቢት፡ወበመንኖ፡፡ወ 23
በከመ፡ ብዝኃ፡ ምሕረትከ፡ እግዚኦ፡ ሰወ
ርኮሙ ፡ ለእለ ፡ ይፈርሁከ፡፡ ወአድኀ 24
ንኮሙ፡ለእለ፡ይትዌከሉ፡ ብከ፡፡ በቅድመ፡
ደቂቀ፡እጓለ ፡ እመሕያው፡፡ ወተኀብኦ 25
ሙ፡ በጽላሎትከ ፡ እምሐከከ ፡ሰብእ፡፡
ወትከድኖሙ ፡ በመንጦላዕትከ፡ እምባሕለ፡ 26
ልሳን፡፡ ይትባረክ ፡ እግዚአብሔር፡ 27
ዘተሰብሐ ፡ ምሕረቱ ፡ ላዕሌየ ፡
በብዝኃ፡ መንደቤየ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] Eſto etiā mihi Deus & protector meus & domus refugii, [c] Odiſti, Domine, omnes qui obſervant vanitates in perpetuū. [d] omnia oſſa [e] valdè quidē vicinis, [f] oblivioni dederunt me à corde, ut qui mortuus eſt. [g] audivi rumorē multorū, qui caſtra mea circundederunt. [h] rapiant animā [i] hæreditas mea. [k] miſericordiæ tuæ, [l] Et reſervâſti eis qui ſperant [m] umbraculo tuo, [l] tabernaculo tuo [n] qui celebravit miſericordiam ſuam erga me, in multitudine afflictionis meæ.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*انصت الي بسمعك عاجلا. كن لي الها نصيرا. وملجا لكي تخلصني *لانك انت عزي وملجاي. 3 4
ومن اجل اسمك يا رب تهديني وتعولني * وتخرجني من هذا الفخ الذي اخفي لي. لانك انت 5
ناصري يا رب* وفي يديك اضع روحي. انقذني يا رب اله الحق * ابغضت الذين يحفظون الباطل 6 7
مجانا. وانا عليك توكلت *اهلل وافرح برحمتك. لانك نظرت الي تواضعي. وخلصت نفسي من 8
الشدايد* ولم تسلمني في ايدي الاعداء. اقمت رجلي في السعة* ارحمني يا رب فاني حزين. تعكرت 9 10
عيناي من الغضب ونفسي وقواي *فنيت حياتي بوجع القلب. وسني بالتنهد. ضعفت بالمسكنة 11
قوتي* وقلقت عظامي *صرت عارا في جميع اعداي وجيرتي جدا. ورهبة لمن عرفني. من عاينني 12
هرب مني خارجا* نسوني في قلوبهم مثل الميت. صرت مثل اناء مكسور * لاني سمعت تعيير 13 14
اكثر من حولي عند اجتماعهم جميعا علي. تشاوروا علي اخذ نفسي * وانا عليك يا رب 15
توكلت. قلت انت الاهي * وفي يديك نصيبي. خلصني من ايدي اعداي. والطاردين 16
لي * ليضي وجهك علي عبدك. وخلصني برحمتك * يا رب لا تخزني. لاني صرخت اليك. تخزي 17 18
المنافقون ويهبطون الي الجحيم * ولتبكم السفاه الغاشة. المقولة علي الصديق بالاثم. 19
والكبريا والعار * ما اكثر كثرة صلاحك يا رب. التي اعددتها لجميع خايفيك وعملتها 20
للذين يرجونك امام بني البشر *تخفيهم في ستر وجهك من نجس الناس. تظللهم في 21
ستر من مقاومة الالسن * تبارك الرب لانه صير رحمته علينا. في مدينة حصينة. 22

Præbe mihi auditum tuum velociter. Eſto 3
mihi Deus adjutor, & refugium, ut ſalves
me; Quia tu es fortitudo mea & refugium 4
meum: & propter nomen tuum,
O Domine, diriges me, & enutries me.
Et educes me ex hoc laqueo, qui abſconſus 5
eſt mihi, quia tu es adjutor meus, O
Domine: Et in manibus tuis pono ſpiritum 6
meum. Libera me O Domine mi, Deus veritatis.
Odio habuiſti eos, qui obſervant 7
vanitatem gratis. Et ego in Domino confiſus
ſum: Jubilabo & gaudebo in miſericordia 8
tua, quoniam reſpexiſti ad humilitatem
meam, & ſalvâſti animam meam
de calamitatibus. Et non tradidiſti me 9
in manus inimicorum, ſtatuiſti pedes meos
in latitudine. Miſerere mei, O Domine mi, 10
quia triſtis ſum: turbati ſunt oculi mei ob
indignationem, & anima mea, & virtus
mea. Conſumpta eſt vita mea in dolore 11
cordis, & anni mei in gemitu: infirmata
eſt in paupertate virtus mea, & turbata
ſunt oſſa mea. Factus ſum opprobrium inter 12
omnes inimicos meos, & vicinia mea
valdè, & horror iis qui me noverunt: quis
me intuitus eſt, fugit à me foràs. Obliti 13
ſunt in me cordibus ſuis tanquā mortuū,
factus ſum tanquam vas fractum. Quia 14
audivi contumelias complurium, qui circa
me erant; convenientes ſimul adverſus
me, conſultaverunt de capienda anima
mea. Ego autem in te, O Domine, confiſus 15
ſum: dixi, Tu es Deus meus, Et in manibus 16
tuis ſors mea. Libera me de manibus
inimicorum meorum, & perſequentium
me. Splendeſcat facies tua ſuper ſervum 17
tuum, & ſalva me per miſericordiam tuam.
O Domine mi, ne confundas me, 18
quoniam clamavi ad te. Confundantur
impii, & cadant in infernum. Et obmuteſcant 19
labia doloſa obloquentia adverſus
juſtū cum iniquitate, et ſuperbiā,
& improperio. Quàm copioſa eſt multitudo 20
bonitatis tuæ, O Domine mi, quam
paraſti omnibus timentibus te: quamq; feciſti
iis qui ſperant in te, coram filiis hominum!
Occultas eos intra velum faciei 21
tuæ à ſeditione hominum: obumbras eos
[illegible] ſuam miraculum in civitate munita. 22

תהלים: לב לג

verè : tuorum oculorum opposito ex sum excisus , me festinando in , dixi ego Et
23 ואני אמרתי בחפזי נגרזתי מנגד עיניך אכן
Dominum Diligite .te ad me clamando in ,mearũ deprecationũ vocem audisti
24 שמעת קול תחנוני בשועי אליך: אהבו את־יהוה
facienti residuum super reddens & ,Dominus custodiens fideles ,ejus misericordes omnes
כל־חסידיו אמונים נצר יהוה ומשלם על־יתר עשה
.DOMINO in sperantes omnes ; vestrũ cor roborabit &,vos Roborate .superbiam
25 גאוה: חזקו ויאמץ לבבכם כל־המיחלים ליהוה:

PSAL. XXXII. לב

Felicitates .peccati tecti , prævaricationis condonati Beatitudines .erudiens Davidi
1 לדוד משכיל אשרי נשוי־פשע כסוי חטאה: אשרי 2
.dolus ejus spiritu in nec ; iniquitatem ei Dominus imputabit non hominis
אדם לא יחשב יהוה לו עון ואין ברוחו רמיה:
.die omni meo rugitu in : mea ossa inveteraverunt , tacui Quoniam
3 כי החרשתי בלו עצמי בשאגתי כל־היום:
meus humor est versus : tua manus me super aggravabitur nocte ac die Quoniam
4 כי יומם ולילה תכבד עלי ידך נהפך לשדי
meã iniquitatem & ,te feci cognoscere meum Peccatum .Selah , æstatis siccitates in
5 בחרבני קיץ סלה: חטאתי אודיעך ועוני
tu & : Domino meas prævaricationes super confitebor , Dixi .operui non
לא־כסיתי אמרתי אודה עלי פשעי ליהוה ואתה
misericors omnis orabit hoc Super .Selah ,mei peccati iniquitatem abstulisti
6 נשאת עון חטאתי סלה: על־זאת יתפלל כל־חסיד
non eum ad ,multarũ aquarum inundatione in veruntamen : inveniendi tempore ,te ad
אליך לעת מצא רק לשטף מים רבים אליו לא
liberandi clamoribus : me custodies angustia ab ,mihi absconsio Tu .pertingent
7 יגיעו: אתה סתר לי מצר תצרני רני פלט
: ambules qua via in te docebo &,te faciam Intelligere .Selah ,me circundabis
8 תסובבני סלה: אשכילך ואורך בדרך־זו תלך
non : mulus sicut , equus sicut sitis Ne .meo oculo te super consulam
9 איעצה עליך עיני: אל־תהיו כסוס כפרד אין
.te ad propinquare ne ,stringendũ epistomio ad ejus maxillam freno & ,lupato In .intelligere
הבין במתג־ורסן עדיו לבלום בל קרב אליך:
.eam circundabit misericordia ,Domino in sperantẽ & , impio dolores Multi
10 רבים מכאובים לרשע והבוטח ביהוה חסד יסובבנו:
.corde recti omnes jubilate & ; justi exultate & , Domino in Lætamini
11 שמחו ביהוה וגילו צדיקים והרנינו כל־ישרי־לב:

PSAL. XXXIII. לג

Domino Confitemini .laus decora rectis ; Domino in justi dicite Præconia
1 רננו צדיקים ביהוה לישרים נאוה תהלה: הודו ליהוה 2
; novum canticum ei Cantate .ei canite decachordo , nabel in ; cithara in
3 בכנור בנבל עשור זמרו־לו: שירו לו שיר חדש
.jubilatione in modulando benefacite
היטיבו נגן בתרועה:

תרגום TARGUM.

23 ואנא אמרית באתבעותי למערוק אשתציתי
מקביל יקרך בקושטא שמעת קל צלותי
24 באתחננותי לותך: רחומו ית יי כל חסידוי
מהימניא נטיר מן ביש יי ופריע על דורבני
25 דעבדין גיותנותא: תקופו ויתעלם רעיונכון
כל דכלין למימרא דיי:

לב

1 לדוד שכלא טבא אמר דוד טובוי דמן
דשבקין ליה מרודוי חפין על חטאוי:
2 טובוי דבר נשא דלא חשיב יי ליה עוין ודלא
3 ברוחיה נכלא: מטול דשתקית מן פתגמי
אוריתא בלין גרמי בנהמותי כולא יומא:
4 ארום יימם ולילי תקיפת עלי מחתך אתהפך
5 רוטבי היך שרבא דקיטא לעלמא: חובתי
אודענך ועויתי לא חפירת אמרית אודי על
מרודי קדם יי ואת שבקתא עוית חובי
6 לעלמין: מטול דא יצלי כל חסידא קדמך
לעדן רעותיה לחוד דייתון עממין סגיאין
7 היך מיא לותיה לא ימטון למבאשא: את הוא
יי טמור לי מעיקא תנטרנני ביעת שובותא
8 תחוררנני לעלמא: אשכלנך ואלפנך באורחא
דנן תהך אמלכנך ואשוי עלך לטבא עיני:
9 לא תהוון כסוסיא והיך כודנא דלית להון
ביונא בזממא ובפרומביא תקוניה לאתחסמא
10 כחדא לא יתקרב לותך: סגיאין כיבין
11 לרשיעא ודכלי ביי טיבותא יחזרניה: חדו
במימרא דיי ובועו צדיקיא ושבחו כל תריצי
לבא:

לג

1 שבחו צדיקיא קדם יי לתריצי יאי שבחתא:
2 אודיאו קדם יי בכנרא בנבלא דעסרתי נימין
3 שבחו ליה: שבחו קדם יי שירתא חדתא
אוטיבו לשבחא ביבבא:

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Ego autem dixi cùm quærebam aufugere, Succisus sum à præsentia gloriæ tuæ: in veritate audisti vocem orationis meæ cùm deprecarer ad te. Diligite Dominum omnes pii ejus: fideles custodit à malo Dominus, & retribuit elatis qui operantur superbiam. Confortamini, & roboretur animus vester, omnes qui confiditis in verbo Domini.

Davidi intellectus bonus.

PSAL. XXXII.

DIxit David, beatus cui remissa sunt scelera sua, & cujus obtectum est peccatum. Beatus filius hominis cui non imputabit Dominus iniquitatem, & non est in spiritu ejus dolus. Quoniam tacui à verbis Legis: inveterascunt ossa mea ob rugitum meum tota die. Quoniam die ac nocte invaluit super me percussio tua: conversus est viror meus in siccitatem æstatis semper. Delictum meum notum faciam tibi, & iniquitatem meam non abscondi: dixi, Confitebor scelera mea coram Domino, & tu remisisti impietatem delicti mei in æternum. Propterea orabit omnis pius coram te in tempore acceptabili: verùm cùm venient populi multi veluti aquæ, ad eum non appropinquabunt ut malum inferant. Tu ipse Domine absconsio es mihi; à tribulatione custodies me; canticis redemptionis circundabis me in æternum. Intellectum dabo tibi & docebo te: in via hac incedes; consulam tibi, & ponam super te in bonum oculum meum. Ne fueritis sicut equus & sicut mulus, quibus non est intellectus: in camo & freno erit ornatus eorum ut constringantur simul, ne accedant ad te. Multi dolores sunt impio; qui verò confidit in Domino, benignitas circundabit eum. Lætamini in Verbo Domini & exultate justi, & laudes dicite omnes recti corde.

PSAL. XXXIII.

LAudes dicite justi coram Domino: rectos decet laudatio. Confitemini coram Domino in cithara, in nablo decem chordarum laudate eum. Cantate coram Domino canticum novum: pulchrè agite laudando in jubilo.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

23 * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܒܬܗܝܪܘܬܝ ܐܒܕܬ ܡܢ ܩܕܡ ܥܝܢܝܟ: ܘܫܡܥܬ ܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ ܟܕ ܩܥܝܬ ܠܟ.
24 * ܐܚܒܘ ܠܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘܗܝ: ܠܡܗܝܡܢܐ ܢܛܪ ܡܪܝܐ. ܘܦܪܥ ܥܒܕܐ ܠܡܬܪܘܪܒܢܐ:
25 * ܐܬܚܝܠܘ ܘܢܬܥܫܢ ܠܒܟܘܢ. ܟܠܟܘܢ ܕܡܣܒܪܝܢ ܒܡܪܝܐ:

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܒ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܣܟܠܘܬܐ ܕܐܕܡ ܕܐܡܪܚ ܘܚܛܐ. ܘܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܡܫܝܚܐ ܕܒܗ ܥܬܝܕܝܢ ܗܘܝܢ ܠܡܬܦܪܩܘ
ܡܢ ܓܗܢܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܕ. ܛܘܒܘܗܝ ܠܡܢ ܕܐܫܬܒܩ ܠܗ ܥܘܠܗ. ܘܐܬܟܣܝܘ ܠܗ
2 ܚܛܗܘܗܝ: * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܠܐ ܢܚܫܘܒ ܠܗ ܡܪܝܐ ܚܛܝܬܗ. ܘܠܝܬ ܒܠܒܗ
3 ܢܟܠܐ: * ܡܛܠ ܕܫܬܩܬ ܒܠܝܘ ܓܪܡܝ. ܟܕ ܢܗܡ ܗܘܝܬ ܟܠܗ ܝܘܡܐ: * ܡܛܠ
4
5 ܕܒܠܠܝܐ ܘܒܐܝܡܡܐ ܝܩܪܬ ܥܠܝ ܐܝܕܟ. ܘܐܬܗܦܟܬ ܒܟܐܒܐ ܕܢܩܛܠܢܝ: * ܚܛܗܝ
ܐܘܕܥܬܟ ܘܣܟܠܘܬܝ ܠܐ ܟܣܝܬ ܡܢܟ. ܐܡܪܬ ܐܘܕܐ ܠܡܪܝܐ ܥܠ ܣܟܠܘܬܝ: ܘܐܢܬ ܫܒܘܩ
6 ܐܢܬ ܠܝ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝ. * ܡܛܠ ܗܕܐ ܢܨܠܐ ܠܘܬܟ ܟܠ ܡܢ ܕܓܒܐ ܠܟ: ܒܙܒܢܐ ܡܩܒܠܐ.
7 ܫܘܦܥܐ ܕܝܢ ܕܡܝܐ ܣܓܝܐܐ: ܠܘܬܗ ܠܐ ܢܬܩܪܒܘܢ. * ܐܢܬ ܥܕܪܢܝ ܘܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝ
8 ܦܨܢܝ: ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܦܘܪܩܢܐ ܐܚܕܪܝܢܝ ܕܐܣܬܟܠܟ. * ܐܘܕܥܟ ܐܘܪܚܐ ܕܬܐܙܠ ܒܗ ܘܐܣܝܡ
9 ܥܝܢܝ ܥܠܝܟ: * ܠܐ ܬܗܘܘܢ ܐܝܟ ܣܘܣܝܐ ܘܐܝܟ ܟܘܕܢܝܐ ܕܠܐ ܡܣܬܟܠܝܢ. ܕܒܦܓܘܕܐ ܡܟܒܫܝܢ
10 ܠܗܘܢ ܡܢ ܛܠܝܘܬܗܘܢ: ܘܠܐ ܡܬܩܪܒܝܢ ܠܘܬܗ. * ܣܓܝܐܝܢ ܟܐܒܘܗܝ ܕܥܘܠܐ: ܘܕܡܣܒܪ
11 ܒܡܪܝܐ ܛܝܒܘܬܐ ܬܚܕܪܝܘܗܝ. * ܚܕܘ ܙܕܝܩܐ ܘܐܬܒܣܡܘ ܒܡܪܝܐ: ܘܫܒܚܘܗܝ ܟܠܟܘܢ ܬܪܝܨܝ
ܠܒܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܓ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܡܬܪܓܡܢܘܬܐ. ܥܠ ܗܢܘܢ ܕܐܬܩܝܡܘ ܠܬܫܡܫܬܐ ܕܡܪܝܐ. ܠܢ ܕܝܢ ܪܘܚܢܐܝܬ
ܡܬܐܡܪ: ܡܠܬܐ ܥܠ ܫܘܒܚܐ ܕܐܠܗܘܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܗ.
2 ܫܒܚܘ ܙܕܝܩܐ ܠܡܪܝܐ: ܘܠܬܪܝܨܐ ܝܐܐ ܬܫܒܘܚܬܐ. * ܐܘܕܘ ܠܗ ܒܗܝܡܢܘܬܐ: ܘܒܟܢܪܐ ܕܥܣܪ
3 ܡܢܝܢ ܙܡܪܘ ܠܗ. * ܫܒܚܘ ܠܗ ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ: ܙܡܪܘ ܫܦܝܪ ܒܩܠܐ.

Ego dixi in celeritate mea, Perii à conspectu oculorũ tuorũ; & audîsti vocẽ deprecationis meæ, quũ clamavi ad te. Diligite Dñm justi ejus; fideles tuetur Dñs, & reddit iniquis opera ipsorũ. Roboramini & confortetur cor vestrũ, omnes qui speratis in Dño.

PSAL. XXXII.

Davidis. De culpa Adæ, qui ausus est & peccavit. Et prophetia de Christo, quia per eum liberandi essemus à gehenna. Vers.24.

BEatus ille cui remissa est iniquitas sua, cuique tecta sunt peccata sua. Beatus homo cui Dominus non annumerabit peccatum ejus, & cujus in corde non est dolus. Quoniam tacui, tabuerunt ossa mea, dum rugirem die totâ. Nam nocte dieque gravata est super me manus tua, & volutatus est in pectore meo dolor ad occidendum me. Peccata mea nota feci tibi, & insipientias meas non abscondi à te. Dixi, Confitebor Domino pro deliriis meis, & tu remittis mihi omnia peccata mea. Propterea orabit ad te omnis qui electus est tibi, tempore accepto: impetus autem aquarum multarum ad eum non accedent. Tu, protege me, & ab inimicis meis libera me: Gloriâ & salute complectere me, ut intelligam te: Notam faciam tibi viam per quam abeas, & ponam oculos meos super te. Ne sitis ut equus & ut mulus qui non sapiunt, quos fræno domant à adolescentia eorum, & non accedunt ad eum. Multi sunt dolores scelesti; at qui sperat in Domino, gratia circundabit eum. Lætamini justi, & oblectamini in Domino: & glorificate eum omnes recti corde.

PSAL. XXXIII.

Davidis. Ad literam, de his quos præfecit ministerio Domini. Nobis autem spiritualiter dicitur, sermo de gloria Deitatis. Versus. 45.

LAudate, justi, Dominum, & (quidem) rectos decet laudatio; Confitemini ei cum fide, & cum cithara decem chordarum psallite ei. Dicite illi gloriam novam, canite decenter voce.

Verſio VULG. LAT.

23 Ego autem dixi in exceſſu mentis meæ,
Projectus ſum à facie oculorum tuorum.
Ideò exaudiſti vocẽ orationis meæ: dum
24 clamarem ad te. Diligite Dominũ omnes
ſancti ejus: quoniam veritatem requiret
Domin⁹, & retribuet abundanter facientibus
ſuperbiam. Viriliter agite, & con-
25 fortetur cor veſtrum, omnes qui ſperatis
in Domino.

Ipſi David intellectus. XXXI.

1 BEati, quorum remiſſæ ſunt iniquitates:
2 & quorum tecta ſunt peccata. Beatus
vir, cui non imputavit Domin⁹ peccatum,
3 nec eſt in ſpiritu ejus dolus. Quoniam
tacui, inveteraverunt oſſa mea, dum
4 clamarem tota die. Quoniam die ac nocte
gravata eſt ſuper me man⁹ tua: converſus
ſum in ærumna mea, dum configitur
5 ſpina. Delictum meũ cognitum tibi
feci: & injuſtitiam meam non abſcondi.
Dixi; Confitebor adverſùm me injuſtitiam
meã Domino: & tu remiſiſti impie-
6 tatem peccati mei. Pro hac orabit ad te
omnis ſanctus, in tempore opportuno.
Veruntamen in diluvio aquarum multarum,
7 ad eum non approximabunt. Tu es
refugium meum à tribulatione, quæ circumdedit
me: exultatio mea erue me à
8 circumdantibus me. Intellectum tibi dabo,
& inſtruam te in via hac, quá gradiêris:
9 firmabo ſuper te oculos meos. Nolite
fieri ſicut equus & mulus, quib⁹ non
eſt intellect⁹. In camo, & fræno, maxillas
10 eorũ conſtringe, qui non approximãt
ad te. Multa flagella peccatoris, ſperantẽ
11 autẽ in Domino miſericordia circumdabit.
Lætamini in Domino et exultate juſti,
et gloriamini omnes recti corde.

Pſalmus David. XXXII.

1 EXultate juſti in Domino, rectos decet
2 collaudatio. Confitemini Domino in cithara:
in pſalterio decẽ chordarũ pſallite
3 illi. Cantate ei canticũ novũ: benè pſallite
ei in vociferatione.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

23 † Ἐγὼ δὲ εἶπα ἐν τῇ ἐκστάσει μου, † (η) Ἀπέῤῥιμμαι
ἀπὸ προσώπου τῶν ὀφθαλμῶν σου· † διὰ τοῦτο (θ) εἰσήκουσας
κύριε τῆς φωνῆς τῆς δεήσεώς μου † ἐν τῷ κεκραγέναι
24 με πρὸς σέ. † Ἀγαπήσατε τὸν κύριον πάντες
οἱ ὅσιοι αὐτοῦ, † ὅτι ἀληθείας ἐκζητεῖ (ι) κύριος,
† καὶ ἀνταποδίδωσι τοῖς περισσῶς ποιοῦσιν ὑπερηφανίαν.
25 † Ἀνδρίζεσθε, καὶ κραταιούσθω ἡ καρδία ὑμῶν,
† πάντες οἱ ἐλπίζοντες ἐπὶ κύριον.

MS. A. (η) Ἀπέριμμε (θ) εἰσήκουσεν τῆς φωνῆς (ι) ὁ κύριος,

(α) Συνέσεως τῷ Δαυίδ. λα'.

1 † ΜΑκάριοι ὧν ἀφέθησαν αἱ ἀνομίαι, † καὶ ὧν ἐπε-
2 καλύφθησαν αἱ ἁμαρτίαι. † Μακάριος ἀνὴρ (β) ᾧ
οὐ μὴ λογίσηται κύριος ἁμαρτίαν, † οὐδέ ἐστιν ἐν τῷ
3 στόματι αὐτοῦ δόλος. † Ὅτι ἐσίγησα, ἐπαλαιώθη
τὰ ὀστᾶ μου, † ἀπὸ τοῦ κράζειν με ὅλην τὴν ἡμέραν.
4 † Ὅτι ἡμέρας καὶ νυκτὸς ἐβαρύνθη ἐπ' ἐμὲ ἡ χείρ
σου, † ἐστράφην εἰς ταλαιπωρίαν ἐν τῷ (γ) ἐμπαγῆναι
5 ἄκανθαν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Τὴν ἁμαρτίαν μου
ἐγνώρισα, † καὶ τὴν ἀνομίαν μου οὐκ ἐκάλυψα. † εἶπα,
Ἐξαγορεύσω κατ' ἐμοῦ τὴν ἀνομίαν μου τῷ κυρίῳ, † καὶ
σὺ ἀφῆκας τὴν ἀσέβειαν τῆς καρδίας μου. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
6 † Ὑπὲρ ταύτης προσεύξεται πρὸς σὲ † πᾶς ὅσιος
ἐν καιρῷ εὐθέτῳ· † πλὴν ἐν κατακλυσμῷ ὑδάτων
7 πολλῶν πρὸς αὐτὸν οὐκ ἐγγιοῦσι. † Σύ μου εἶ
καταφυγὴ ἀπὸ θλίψεως τῆς περιεχούσης με, † τὸ ἀγαλλίαμά
μου λύτρωσαί με ἀπὸ τῶν κυκλωσάντων (δ)
8 με. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Συνετιῶ σε καὶ συμβιβῶ σε
ἐν ὁδῷ ταύτῃ ᾗ πορεύσῃ, † ἐπιστηριῶ ἐπὶ σὲ τοὺς ὀφθαλμούς
9 μου. † Μὴ γίνεσθε ὡς ἵππος καὶ ἡμίονος,
οἷς οὐκ ἔστι σύνεσις· † (ε) ἐν χαλινῷ καὶ κημῷ τὰς σιαγόνας
αὐτῶν (ζ) ἄγξαι † τῶν μὴ ἐγγιζόντων πρὸς
10 σέ. † Πολλαὶ αἱ μάστιγες τοῦ ἁμαρτωλοῦ, † τὸν δὲ ἐλ-
11 πίζοντα ἐπὶ κύριον ἔλεος κυκλώσει. † Εὐφράνθητε
ἐπὶ κύριον καὶ ἀγαλλιᾶσθε δίκαιοι, † καὶ καυχᾶσθε
πάντες οἱ εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ.

MS. A. (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) οὗ οὐ μὴ (γ) παγῆναί μοι ἄκανθαν. Τὴν ἀνομίαν μου ἐγνώρισα, καὶ τὴν ἁμαρτίαν (δ) με. Συνετιῶ (ε) ἐν κημῷ καὶ χαλινῷ (ζ) ἄγξις

(α) Τῷ Δαυίδ. λβ'.

1 † ΑΓαλλιᾶσθε δίκαιοι ἐν τῷ κυρίῳ, † τοῖς εὐθέσι
πρέπει (β) αἴνεσις. 2 † Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ ἐν κιθάρᾳ, † ἐν ψαλτηρίῳ δεκαχόρδῳ ψάλατε αὐτῷ. 3 † Ἄσατε αὐτῷ ᾆσμα καινόν, † καλῶς ψάλατε ἐν ἀλαλαγμῷ.

MS. A. (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) ἡ αἴνεσις.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

28 Ego autẽ [k] dixi in [illegible] ecſtaſi mea, Projectus ſũ à facie oculorum tuorum. 29 Ideò exaudiſti, Domine, vocẽ orationis meæ, [l] dũ clamarem ad te. 30 Diligite Dominũ omnes ſancti ej⁹, quoniã (ι) [m] veritates requirit Dominus: & retribuet (κ) [n] iis qui abundanter facient ſuperbiam. 31 Viriliter agite, et confortetur cor veſtrum, omnes qui ſperatis in Domino.

MS. Æthiop. Pocock. Gloria patri, & Filio, & Spiritui ſancto: Eſt modo, ſemper erit, & in ſecula ſeculorum.

Intelligentiæ (a) ipſi David. XXXI.

BEATI, quorum remiſſæ 1
ſunt iniquitates, e [a] quorum
tecta ſunt peccat . 2 Beatus 2
vir, [b] cui non (b) imputabit Dominus
peccatum, nec eſt [c] in (c)
ore ejus dolus. 3 (d) Quoniã tacui, 3
inveteraverunt oſſa mea,* à
clamando me totâ die. 4 Quoniam 4
die ac nocte gravata eſt ſuper
me manus tua: converſus ſum (e)
in ærumna, dũ configeretur mihi
ſpina. DIAPSALMA. 5
Peccatum meum (f) cognovi, & 5
injuſtitiã meam non operui. [d]
Dixi; Pronuntiabo adverſùm me
injuſtitiam meam Domino, & tu
remiſiſti impietatẽ (g) cordis mei.
DIAPSALMA. 7 Pro (h) 6
hac orabit ad te omnis ſanctus, in
tempore opportuno. 8 Veruntamẽ
[e] in diluvio aquarum multarũ
ad eum non appropinquabunt. 9
Tu es [f] refugium meum à tribulatione, 7
quæ circundedit me: exultatio
mea redime me à circundantibus
me. DIAPSALMA. 10
(i) Intellectum dabo tibi, & inſtruam 8
te in via hac, quâ gradiêris;
obfirmabo ſuper te oculos
meos. 11 Nolite fieri ſicut equus, 9
& mulus, quibus non eſt intellectus;
12 In fræno et camo maxillas
eorũ conſtringe, qui nõ appropinquant
ad te. 13 Multa flagella 10
peccatoris: ſperantem autẽ
in Domino miſericordia [g] circundabit.
14 Lætamini in Domino, 11
& exultate juſti: (k) & gloriamini
[h] omnes recti corde.

Verſio ÆTHIOPICA.

23 እንሰ:እቤ: ተገደፍኩ:እንጋ: እምቅድመ: 28
አዕይንቲከ::፡ በእንተዝ:ሰማዕከ:እግዚአብ 29
ሔር:ቃለ:ስእለትየ:ዘጸራኅኩ:ኀቤሁ::፡
24 አፍቅርዎ: ለእግዚአብሔር:ኵልክሙ: ጻ 30
ድቃኑ::እስመ:ጽድቀ:የኀሥሥ:እግዚአብሔ
ር::ወይትቤቀል: ሎሙ:ለእለ: የኀሥሡ:ተ
ዕቢተ:ፈድፋደ::፡ ተዐገሡ:ወእጽንዑ:ል 31
25 በክሙ:: ኵልክሙ:እለ:ተወከልክሙ: በእግ
ዚአብሔር::፡

ስብሐት: ለአብ: ወወልድ : ወመንፈስ:ቅዱስ:
ይእዜኒ:ወዘልፈኒ:ወለዓለመ:ዓለም:አሜን::

መዝሙር:ዘደዊት:ዘበአእምሮ::

ሀል ብፁዓን:ለእለ:ተኀድገ:ሎሙ:ኃጢአ 1
ቶሙ::ወለእለ:ኢኀሰበ:ሎሙ:ኵሎ : ጌጋዮ
ሙ::፡ ብፁዕ : ብእሲ:ዘኢኈለቈ: ሎቱ: 2
እግዚአብሔር:ኃጢአቶ::ወዘአልቦ:ጽልሑ
ት:ውስተ: ልቡ::፡ እስመ : አርመምኩ: 3
በልየ : አዕጽምትየ፤: እምኀቤ : እጸርኅ:
ኵሎ:አሚረ::፡ እስመ:መዐልተ:ወሌሊ 4
ት:ከብደት፡ እዴከ: ላዕሌየ:: ወተመየጥኩ:
ለሕርትምና: ሶበ: ወግዕየ: ሦክ::፡ ኃጢ 5
አትየ : ነገርኩ : ወአበሳየ : ኢኀባእኩ::፡
ወእቤ : እስተዋደ : ርእስየ:ኀበ : እግዚአ 6
ብሔር : በእንተ : ኃጢአትየ::
ወአንተ:ኀደግ፤ጽልሑቶ:ለልብየ::፡ በእ 7
ንተዝ:ይጼሊ:ኀቤከ:ኵሉ: ጻድቅ: በጊዜ:
ርቱዕ::፡ ወባሕቱ:ማየ :አይኅ::ብዙኃ: 8
ኢይቀርብ: ኀቤከ::፡ አንተ: ምስካይየ: 9
እምዛቲ:ምንደቤየ:እንተ: ረከበተኒ::
ወትፍሥሕትየኒ:ከመ: ታድኅነኒ: እምእለ:
ሮደኒ::፡ አሌብወከ:ወእጼንዐከ: በዛቲ: 10
ፍኖት:እንተ: ሖርከ::ወአጸንዕ:አዕይንትየ:
ላዕሌከ::፡ ኢትኩኑ:ከመ:ፈረስ:ወበቅል: 11
እለ:አልቦሙ:ልብ::፡ እለ:በልጓም:ወበል 12
ጓም: ይመይጥዎሙ :መላትሒሆሙ:: ከመ
ኢይቅረቡ: ኀቤከ::፡ ብዙኃ: መቅሠፍቶ 13
ሙ:ለኃጥአን:: ወእለሰ:ይትዌከሉ:በእግዚ
አብሔር:ሣህል : ይዔግቦሙ::፡ ተፈሥ 14
ሑ:በእግዚአብሔር: ወተሠሐዩ: ጻድቃን::
ወተመክሑ: ኵልክሙ: ርቱዓነ:ልብ::፡

መዝሙር : ዘደዊት::

ሀበ ተፈሥሑ: ጻድቃን:በእግዚአብሔር:: 1
ወለርቱዓን: ይደልዎሙ: ክብር::፡ ግነዩ: 2
ለእግዚአብሔር: በመሰንቆ:: ወበመዝሙር:
ዘዐሠርቱ : አውታሪሁ : ዘምሩ : ሎቱ::፡
ወሰብሕዎ:ስብሐተ:ሐዲሰ::ሠናየ: ዘምሩ: 3
ወየብቡ:ሎቱ::፡

(a) Ipſi David. XXXII.

1 EXULTATE (b) juſti in Domino, rectos (c) decet laudatio. 2 Confitemini Domino in cithara; in pſalterio decachordo pſallite ei. 3 Cantate ei canticum novum; bene pſallite [a] in (d) vociferatione. 1 2 3

INTERP. ÆTHIOP. [k] Dixi, Projectus ſum igitur à [l] eò quòd ad eum clamabam. [m] veritatẽ [n] iis qui abundantur quærunt PSAL. xxxi. [a] quorum iniquitates omnes eis non imputat Deus. [b] cuius peccatũ ei non adnumerat De⁹, [c] in corde ej⁹, [d] Et dixi, Accuſabo meipſũ apud Dominũ propter peccata mea, & ipſe remiſit dolum cordis mei. [e] aquæ crebri diluvii [f] ſuſceptor meus ab iſta tribulatione mea, quæ contigit mihi: & exultatio etiã mea, ut me eripias ab inſectantibus me. [g] iis providebit, [h] vos omnes, PSAL. xxxii. [a] et jubilate ei.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

23 * انا قلت في تحيري * اتري سقطت من امام عينيك * فلهذا سمعت يا رب صوت تضرعي لما
24 صرخت اليك * احبوا الرب يا جميع قديسيه * فان الرب يبتغي الحق * ويكافي الذين يتكبرون
25 بفعلهم * تعزوا ولتشتد قلوبكم * يا جميع المتوكلين على الرب * الليلويا *
1 * المزمور الحادي والثلثون * قاله نبوة لاجل الخلاص * وعدده كج * استيخن
2 طوبى للذين تركت لهم سيئاتهم * والذين سترت خطاياهم * طوبى للرجل الذي لم يحسب عليه
3 الرب خطيئة * وليس في فيه غش * انا سكت لان عظامي هرمت من صراخي اليك النهار كله
4 5 * لان في النهار والليل ثقلت يدك على * وردت الي الهموم المقاتلة في قلبي * اعترف بخطيتي
6 ولم اخف اثمي * قلت اعترف باثمي امام الرب * وانت غفرت لي نفاق قلبي * لهذا يصلي لك كل
7 بار في حين اجابة * لا يدنوا اليهم سيل المياه الغزيرة * انت ملجاي من الاحزان المحيطة بي *
8 انت مجدي * انقذني من المحيطين بي * سافهمك واعلمك الطريق التي تسلكها * واثبت نظري
9 اليك * يا بني البشر لا تكونوا مثل الخيل * والبغال التي لا فهم لها * ولا تجذب باللجم في افواهها
10 كذاك اجذب احناك الذين لا يدنون اليك * كثيرة هي ضربات الخطاة * ومن يتوكل على
11 الرب فالرحمة تحيط به * افرحوا بالرب وهللوا * ايها الصديقون وافتخروا * يا جميع مستقيمي
1 القلوب * الليلويا * المزمور الثاني والثلثون * وعدده مد * استيخن *
2 ابتهجوا بالرب ايها الصديقون * وللمستقيمين يليق التسبيح * اشكروا الرب بالقيثار * وبمزمار
ذي عشرة اوتار رتلوا له * سبحوه تسبيحا جديدا * ورتلوا له حسنا بتهليل *

Ego dixi in ſtupore meo, Anne decidi è 23
conſpectu oculorum tuorum? Propterea
exaudiſti, O Domine, vocem ſupplicationis
meæ, quando clamavi ad te. Diligite Do- 24
minum, O omnes ſancti ejus: quia Dominus
quærit veritatem, & retribuit iis
qui ſuperbiunt, pro opere eorum. Corrobora- 25
mini & confirmentur corda veſtra, O
omnes confidentes in Domino. Alleluja.

PSAL. XXXI.

Dixit eum propheticè de Redemptione. 1
Et numerus verſ. 23.

BEatitudo iis, quibus dimiſſæ ſunt malitiæ
ſuæ, & quorum tecta ſunt peccata
ſua. Beatus vir, cui non reputavit 2
Dominus peccatum, & non eſt in ore ejus
dolus. Ego tacui, quoniam oſſa mea tabue- 3
runt præ clamore meo ad te totâ die. Nam 4
diu noctuque gravata eſt manus tua ſuper
me, & reflexiſti in me curas bellantes in
corde meo. Confiteor peccatum meum, & 5
non abſcondi crimen meum. Dixi, Confiteor
culpam meam coram Domino, & tu remiſiſti
mihi iniquitatem cordis mei. Pro- 6
pterea orabit ad te omnis innocens, in
tempore exauditionis. Non accedet ad eos
eluvies aquarum multarum. Tu es refu- 7
gium meum à triſtitiis circundantibus me.
Tu es gloria mea, redime me à circundantib⁹
me; Intellectũ dabo tibi, & docebo te 8
viã per quã ambules, & figam aſpectum
meum in te. O filii hominum, ne ſitis ve- 9
luti equi & muli, qui non habent intellectum,
& minimè trahuntur frænis quæ
ſunt in oribus eorum. Sic reprime maxillas
eorum qui non accedunt ad te. Multa 10
ſunt flagella delinquentium; at qui confidit
in Domino, miſericordia circundabit
eum. Gaudete in Domino & exultate, O 11
juſti: & gloriamini, O omnes recti cordibus.
Alleluja.

PSAL. XXXII.

Et numerus verſ. 44. 1

EXhilaramini, in Domino, juſti: rectos
enim decet laudatio. Gratias agite Do- 2
mino, cum cithara & cum pſalterio habente
decem chordas pſallite ei: Laudate 3
eũ laude novâ, pſallite ei bene cũ jubilo;

תהלים : לד

justitiam Diligens .fide in ejus opus omne & ; Domini verbum rectum Quia

4 כי־ישר דבר־יהוה וכל מעשהו באמונה : אהב צדקה 5

cœli Domini verbo In .terra est plena Domini misericordia ; judicium &

6 ומשפט חסד יהוה מלאה הארץ : בדבר יהוה שמים

acervum sicut Congregans .eorum exercitus omnis ejus oris spiritu in & ; sunt facti

7 נעשו וברוח פיו כל־צבאם : כנס כנד

; terra omnis Domino à Timeant .voragines thesauris in *dans* ; maris aquas

8 מי הים נתן באוצרות תהומות : ייראו מיהוה כל־הארץ

ipse ; fuit & ,dixit ipse Quoniam .orbis habitatores omnes paveant eo ab

9 ממנו יגורו כל־ישבי תבל : כי הוא אמר ויהי הוא

annihilavit ; gentium consilium fecit irritum DOMINUS .stetit & ,præcepit

10 צוה ויעמד : יהוה הפיר עצת־גוים הניא

cogitationes ; stabit seculum in Domini Consilium .populorum cogitationes

11 מחשבות עמים : עצת יהוה לעולם תעמד מחשבות

Dominus cujus , *gentis Beatitudines* .generationem & generatione in ejus cordis

12 לבו לדר ודר : אשרי הגוי אשר־יהוה

; Dominus respexit cœlis E .sibi hæreditatem in elegit *populum* ; ejus Deus

13 אלהיו העם בחר לנחלה לו : משמים הביט יהוה

ad ; prospexit *ejus sedere* habitaculo De .hominum filios omnes vidit

14 ראה את־כל־בני האדם : ממכון־שבתו השגיח אל

omnia *ad* considerans ; eorum cor pariter Formans .terræ habitatores omnes

15 כל־ישבי הארץ : היצר יחד לבם המבין אל־כל־

eructur non potens ; *roboris* multitudine in salvatur rex Non .eorum opera

16 מעשיהם : אין־המלך נושע ברב־חיל גבור לא־ינצל

multitudine in & ; salutem ad equus Mendacium .potentiæ multitudine in

17 ברב־כח : שקר הסוס לתשועה וברב

sperantes ; eum timentes *ad* Domini oculus Ecce .eruet non sui roboris

18 חילו לא ימלט : הנה עין יהוה אל־יראיו למיחלים

eos *vivificandum ad* & ; eorum *animam* morte à *eruendum Ad* .ejus misericordia in

19 לחסדו : להציל ממות נפשם ולחיותם

noster clypeus &,nostrum auxilium ;Dominum expectavit nostra Anima .fame in

20 ברעב : נפשנו חכתה ליהוה עזרנו ומגננו

.speravimus ejus sanctitatis nomine in quia ; nostrum cor lætabitur eo in Quia .*ipse*

21 הוא : כי־בו ישמח לבנו כי בשם קדשו בטחנו :

.te *expectavimus* quemadmodum ; nos super Domine tua misericordia Sit

22 יהי־חסדך יהוה עלינו כאשר יחלנו לך :

PSAL. XXXIV. לד

.abiit & ,eum expulit & ; Abimelech *facies ad* suũ *sensum ipsum mutando in* ,Davidi

1 לדוד בשנותו את־טעמו לפני אבימלך ויגרשהו וילך :

Domino In .meo ore in ejus laus semper ; tempore omni in Domino Benedicam

2 אברכה את־יהוה בכל־עת תמיד תהלתו בפי : ביהוה 3

Dominum Magnificate .lætabuntur & ,*mansueti* audient ; mea anima se laudabit

4 תתהלל נפשי ישמעו ענוים וישמחו : גדלו ליהוה

; me exaudivit & ,Dominum Quæsivi .pariter ejus nomen exaltemus & ; mecum

5 אתי ונרוממה שמו יחדו : דרשתי את־יהוה וענני

;sunt illuminati &,eum ad Aspexerunt .me eripuit meis timoribus omnibus ex &

6 ומכל־מגורותי הצילני : הביטו אליו ונהרו

.sunt affectæ pudore non eorum facies &

ופניהם אל־יחפרו :

תרגום TARGUM.

מטול דתקין פתגמא דיי וכל עובדוי 4
בהימנותא : רחם צדקתא ודינא טובא דיי 5
מליא ארעא : במלא דיי שמיא אתעבידו 6
וברוחא דפומיה כל חילהון : דמכניס היך 7
זיקא מוי דימא יהבנון באפותיקי תהומיא :
ודחלון מן קדם יי כל יתבי ארעא מניה 8
ירתתון כל דירי תבל : מטול דהוא אמר והוי 9
הוא פקד ואתקים : יי תבר מלכת עממיא 10
בטל מחשבת אומיא : מלכתא דיי לעלמא 11
קימא מחשבת לביה לדרי דריא : טובוי 12
דגברא דיי אלהיה עמא די בחר לאחסנא
ליה : מן שמיא אסתכל יי חמא ית כל בני 13
נשא : ממדור בית מותביה אודיק לות כל 14
יתבי ארעא : די ברא יתהון מכון כחדא 15
לבהון ומתבונן לכל עובדיהון : לית מלכא 16
מתפרק בסגעי חילותיה גברא לא מתפצי
בסגעי חיליה : שקרא סוסא לפורקנא ובסגעי 17
תוקפיה לא משתזיב : הא עינא דיי מסתכל 18
לדחלין מניה לסברין לטיבותיה : למפצי 19
ממותא נפשהון ולקימותהון בכפנא : נפשנא 20
מסתכיא לפורקנא דיי סעודנא ותריסנא
הוא : ארום במימריה יחדי לבנא מטול 21
דבשום קודשיה אתרחצנא : יהי טובך יי עלנא 22
היכמה דסברינן עלך :

לד

לדוד כד שני ית מדעיה קדם אבימלך ופטריה 1
ואזל : אברך ית יי בכל עדן תדירא תושבחתיה 2
בפומי : במימרא דיי תושבחת נפשי ישמעון 3
ענותניא ויחדון : הבו רבותא קדם יי עמי 4
ונרומם שמיה כחדא : תבעית אולפן מן קדם 5
יי וענני ומכל דחלתי פצי יתי : אסתכלו לותיה 6
ואתנהרו ואפיהון לא עצבו :

PARAPH. CHALD. Vers. L.

Quoniam rectum est Verbum Domini, & omnia opera ejus in fide. Amat justitiam & judicium : bonitate Domini plena est terra. Verbo Domini cœli facti sunt, & spiritu oris ejus omnis exercitus eorum. Congregans sicut uter aquas maris, posuit eas in apothecis abyssorum. *Timeant itaque* ab aspectu Domini omnes habitatores terræ : ab eo contremiscant omnes orbis incolæ. Quoniam ipse dixit & fuit : ipse mandavit & substitit. Dominus dissipat consilium populorum : irritas facit cogitationes nationum. Consilium Domini in æternum permanet : cogitationes cordis ejus in generationes generationum. Beatus est *vir*, cujus DOMINUS est Deus ejus : populus quem elegit, in hæreditatem sibi. De cœlo respexit Dominus, vidit omnes filios hominum. De habitatione domus hospitii sui respexit super omnes qui habitant terram. Qui creavit eos, unit simul corda eorum, & intelligit omnia opera eorum. Non est rex qui salvetur multitudine exercit⁹ *sui*: gigas quoque non evadit multa fortitudine *sua*. Fallax est equus ad salutem, & propter ingentem fortitudinem suam non salvatur. Ecce oculus Domini *intentus* est sup timentes eum, sperantes in benignitate ejus. Ut eripiat à morte animas eorum, & pascat eos in fame. Anima nostra expectat redemptionem Domini : auxilium enim nostrum & scutum nostrum ipse est. Quoniam in verbo ejus lætabitur cor nostrum, eo quod in nomine sancto ejus speravimus. Sit misericordia tua Domine super nos, quemadmodum speramus in te.

Davidis quando mutavit sensum suum coram Abimelech, & reliquit eum, et abiit.

PSAL. XXXIV.

Benedicam Domino in omni tempore, semper laus ejus in ore meo. In verbo Domini laudabitur anima mea : audient mansueti & lætabuntur. Afferte magnificentiam coram Domino mecum, & exaltemus nomen ejus simul. Quæsivi doctrinam à conspectu Domini & respondit mihi : & de omnibus timoribus meis liberavit me. Respexerunt ad eum & illuminati sunt : & facies eorum non sunt confusæ.

Versio SYRIACA. cum Interpretatione LATINA.

4 * ܡܛܠ ܕܬܪܝܨܐ ܗܝ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ: ܘܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܒܗܝܡܢܘܬܐ. * ܪܚܡ ܙܕܝܩܘܬܐ
5 ܘܕܝܢܐ : ܛܝܒܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܠܝܐ ܐܪܥܐ. * ܒܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܬܥܒܕܘ ܫܡܝܐ : ܘܒܪܘܚܐ 6
ܕܦܘܡܗ ܟܠܗܘܢ ܚܝܠܘܬܗ. * ܟܢܫ ܐܝܟ ܕܒܙܩܐ ܡܝܐ ܕܝܡܡܐ : ܘܣܡ ܒܐܘܨܪܐ ܠܬܗܘܡܐ. 7
* ܢܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ : ܘܢܙܘܥܘܢ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܬܒܝܠ : 8
* ܡܛܠ ܕܗܘ ܐܡܪ ܘܗܘܘ. ܘܗܘ ܦܩܕ ܘܩܡܘ : * ܡܪܝܐ ܡܒܛܠ ܡܠܟܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܡܒܛܠ 9 10
ܡܪܝܐ ܡܚܫܒܬܗܘܢ ܕܥܡܡܐ : * ܬܪܥܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܥܠܡ ܩܝܡܐ. ܘܡܚܫܒܬܐ ܕܠܒܗ 11
ܠܕܪ ܕܪܝܢ : * ܛܘܒܘܗܝ ܠܥܡܐ ܕܡܪܝܐ ܗܘ ܐܠܗܗ. ܥܡܐ ܕܓܒܐ ܠܗ ܠܝܪܬܘܬܐ : * ܡܢ ܫܡܝܐ 12 13
ܚܪ ܡܪܝܐ. ܘܚܙܐ ܠܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܐܢܫܐ : * ܘܡܢ ܡܬܒܬܗ ܚܙܐ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ 14
ܕܐܪܥܐ : * ܕܓܒܠ ܐܟܚܕܐ ܠܒܗܘܢ. ܘܡܣܬܟܠ ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܗܘܢ : * ܡܠܟܐ ܠܐ 15 16
ܡܬܦܪܩ ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܐ. ܘܓܢܒܪܐ ܠܐ ܡܬܦܨܐ ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܗ : * ܕܓܠܐ ܗܘ 17
ܦܘܪܩܢܗ ܕܣܘܣܝܐ. ܕܒܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܗ ܠܐ ܡܦܨܐ ܠܪܟܒܗ : * ܥܝܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬ 18
ܙܕܝܩܐ. ܕܡܣܟܝܢ ܠܛܝܒܘܬܗ : * ܕܢܦܨܐ ܢܦܫܬܗܘܢ ܡܢ ܡܘܬܐ. ܘܢܚܐ ܐܢܘܢ ܒܟܦܢܐ : 19
* ܢܦܫܢ ܕܝܢ ܣܟܝܐ ܠܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܗܘܝܘ ܡܥܕܪܢܢ ܘܡܫܘܙܒܢܢ : * ܘܒܗ ܗܘ ܢܚܕܐ 20 21
ܠܒܢ. ܕܒܫܡܗ ܩܕܝܫܐ ܣܒܪܢ : * ܢܗܘܐ ܛܝܒܘܬܟ ܥܠܝܢ ܡܪܝܐ. ܐܝܟܢܐ ܕܣܟܝܢܢ ܠܟ. 22

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܓ *

* ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܙܠ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܘܡܩܪܒ ܗܘܐ ܪܫܝܬܐ ܠܟܗܢܐ. ܦܫܩ ܡܠܝ. * ܐܒܪܟ 1 2
ܠܡܪܝܐ ܒܟܠܙܒܢ. ܘܒܟܠܙܒܢ ܬܫܒܘܚܬܗ ܒܦܘܡܝ : * ܒܡܪܝܐ ܬܫܬܒܗܪ ܢܦܫܝ. 3
ܢܫܡܥܘܢ ܡܣܟܢܐ ܘܢܚܕܘܢ : * ܐܘܪܒܘ ܠܡܪܝܐ ܥܡܝ. ܘܢܪܝܡ ܫܡܗ ܐܟܚܕܐ : * ܒܥܝܬ 4 5
ܡܢ ܡܪܝܐ ܘܥܢܢܝ. ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܘܠܨܢܝ ܦܪܩܢܝ : * ܚܘܪܘ ܠܘܬܗ ܘܐܬܢܗܪܘ ܒܗ. 6
ܘܐܦܝܟܘܢ ܠܐ ܢܒܗܬܘܢ :

Quoniam rectus est sermo Domini, & omnia opera ejus in fide : Diligit justitiam & judicium : bonitate Domini plena est terra. Verbo Dñi factum est cœlum, & spiritu oris ejus omnes exercitus ejus. Congregavit quasi in utribus aquas marium, & posuit in ærariis abyssos. Timeat Dñm universa terra, & tremefiant à conspectu ejus omnes habitatores orbis. Quoniam ipse dixit, & fuerunt : ipseque præcepit, atque condita. Dominus irritum facit consilium gentium, & abrogat Dominus cogitationes populorum. Mens autem Domini in seculum permanet, & meditatio cordis ejus in generationem generationum. Beatus populus cujus Dominus est Deus : populus, quem elegit sibi in hæreditatem. De cœlo prospexit Dominus & vidit omnes filios hominum. Et de sede sua vidit omnes incolas terræ : Qui compingit simul cor ipsorum ; & considerat cuncta opera eorum. Rex non salvatur multitudine roboris, neque gigas liberatur copiâ virtutis suæ. Fallax est salus equi, nã abundátiâ virium suarum non eripit equitem suum. Oculi Dñi super justos, qui expectant gratiam ejus. Ut liberet animas eorũ à morte, & vivificet illos in fame. Anima autem nostra expectavit Dominum, quia ipse est adjutor noster & tutor noster. Et in eo lætabitur cor nostrum quia in nomine ejus sancto speravimus. Sit gratia tua super nos, Domine, quemadmodum expectavimus te.

PSAL. XXXIV.

Davidis. Quum pergeret ad domum Domini, daretque primitias Sacerdotibus. Vers.

Benedicam Dñm omni tempore, & jugiter laudes ejus in ore meo. In Dño gloriabitur anima mea. Audiant pauperes & lætentur : Magnificate mecum Dñm, & exaltemus nomen ejus simul. Postulavi à Dño & exaudivit me, & ex omnibus angustiis meis liberavit me. Respicite ad eum, & sperate in illo, & facies vestræ non confundentur.

Verſio VULG. LAT.

4 Quia rectū eſt verbū Dñi, et omnia ope-
5 ra ej⁹ in fide. Diligit miſericordiā & ju-
diciū: miſericordiâ Dñi plena eſt terra.
6 Verbo Dñi cœli firmati ſunt: & ſpiri-
7 tu oris ejus omnis virt⁹ eorū. Congre-
gans ſicut in utre aquas maris: ponens
8 in theſauris abyſſos. Timeat Dominum
omnis terra: ab eo autē commovean-
9 tur omnes inhabitantes orbē. Quoniā
ipſe dixit, & facta ſunt: ipſe mandavit,
10 & creata ſunt. Dñs diſſipat conſilia gen-
tium: reprobat autē cogitationes po-
pulorū, & reprobat conſilia principū.
11 Conſiliū autem Dñi in æternū manet:
cogitationes cordis ejus in generatione
12 & generationē. Beata gens, cuj⁹ eſt Dñs,
Deus ejus; populus, quem elegit in hæ-
13 reditatē ſibi. De cœlo reſpexit Dñs:
14 vidit omnes filios hominū. De præpa-
rato habitaculo ſuo reſpexit ſup omnes,
15 qui habitant terrā. Qui finxit ſigillatim
corda eorū: qui intelligit omnia opera
16 eorum. Non ſalvatur rex per multam
virtutem: & gigas non ſalvabitur in
17 multitudine virtutis ſuæ. Fallax equus
ad ſalutem: in abundantia autē virtutis
18 ſuæ non ſalvabitur. Ecce oculi Dñi ſup
metuentes eū: & in eis, qui ſperant ſu-
19 per miſericordia ejus. Ut eruat à mor-
20 te animas eorū: & alat eos in fame. A-
nima noſtra ſuſtinet Dominum: quoniā
21 adjutor & protector noſter eſt. Quia
in eo lætabitur cor noſtrum: & in no-
22 mine ſancto ej⁹ ſperavimus. Fiat miſe-
ricordia tua, Domine, ſup nos: quemad-
modùm ſperavimus in te.

1 Davidi, cùm immutavit vultum ſuum coram Achimelech, & dimiſit eū & abiit. (1 *Reg.* 21.)

XXXIII.

2 BEnedicam Dñm in omni tempore:
3 ſemper laus ejus in ore meo. In Dño
laudabitur anima mea: audiant manſue-
4 ti, & lætentur. Magnificate Dñm mecū:
5 & exaltemus nomen ejus in idipſū. Ex-
quiſivi Dominum, & exaudivit me: &
ex omnibus tribulationibus meis eripuit
6 me. Accedite ad eum, & illuminamini:
& facies veſtræ non confundentur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

4 † Ὅτι εὐθὴς ὁ λόγος τοῦ κυρίου, † καὶ πάντα τὰ ἔρ-
5 γα αὐτοῦ ἐν πίστει. † Ἀγαπᾷ ἐλεημοσύνην καὶ κρί-
6 σιν(γ), † τοῦ ἐλέους κυρίου πλήρης ἡ γῆ. † Τῷ λόγῳ(δ)
τοῦ κυρίου οἱ οὐρανοὶ ἐστερεώθησαν, † καὶ τῷ πνεύματι τοῦ
7 στόματος αὐτοῦ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτῶν. † Συνάγων
ὡσεὶ ἀσκὸν ὕδατα θαλάσσης, † τιθεὶς ἐν θησαυροῖς
8 ἀβύσσους. † Φοβηθήτω τὸν κύριον πᾶσα ἡ γῆ, † ἀπ'
αὐτοῦ δὲ σαλευθήτωσαν πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν οἰ-
9 κουμένην. † Ὅτι αὐτὸς εἶπε καὶ ἐγενήθησαν, † αὐτὸς
10 ἐνετείλατο καὶ ἐκτίσθησαν. † Κύριος διασκεδάζει βου-
λὰς ἐθνῶν, † ἀθετεῖ δὲ λογισμοὺς λαῶν, † καὶ ἀθετεῖ
11 βουλὰς ἀρχόντων. † Ἡ δὲ βουλὴ τοῦ κυρίου εἰς τὸν αἰῶνα
μένει, † λογισμοὶ τῆς καρδίας αὐτοῦ (ε) ἀπὸ γενεῶν
12 εἰς γενεάς. † Μακάριον τὸ ἔθνος οὗ ἐστι κύριος ὁ
θεὸς αὐτοῦ, † λαὸς ὃν ἐξελέξατο εἰς κληρονομίαν
13 ἑαυτῷ. † Ἐξ οὐρανοῦ ἐπέβλεψεν ὁ κύριος, † εἶδε
14 πάντας τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων. † Ἐξ ἑτοίμου
κατοικητηρίου αὐτοῦ † ἐπέβλεψεν ἐπὶ πάντας τοὺς
15 κατοικοῦντας τὴν γῆν. † Ὁ πλάσας κατὰ μόνας τὰς
καρδίας αὐτῶν, † ὁ συνιεὶς πάντα τὰ ἔργα αὐτῶν.
16 † Οὐ σώζεται βασιλεὺς διὰ πολλὴν δύναμιν, † καὶ
17 γίγας οὐ σωθήσεται ἐν πλήθει ἰσχύος αὐτοῦ. † Ψευ-
δὴς ἵππος εἰς σωτηρίαν, † ἐν δὲ πλήθει δυνάμεως
18 αὐτοῦ οὐ σωθήσεται. † Ἰδοὺ οἱ ὀφθαλμοὶ κυρίου ἐπὶ τοὺς
φοβουμένους αὐτὸν, † τοὺς ἐλπίζοντας ἐπὶ τὸ ἔλεος
19 αὐτοῦ, † Ῥύσασθαι ἐκ θανάτου τὰς ψυχὰς αὐτῶν, † καὶ
20 διαθρέψαι αὐτοὺς ἐν λιμῷ. † Ἡ ψυχὴ ἡμῶν ὑπο-
μένει τῷ κυρίῳ, † ὅτι βοηθὸς καὶ ὑπερασπιστὴς ἡμῶν
21 ἐστι. † Ὅτι ἐν αὐτῷ εὐφρανθήσεται ἡ καρδία ἡμῶν, †
22 καὶ ἐν τῷ ὀνόματι τῷ ἁγίῳ αὐτοῦ ἠλπίσαμεν. † Γέ-
νοιτο (ζ) τὸ ἔλεός σου κύριε ἐφ' ἡμᾶς, καθάπερ ἠλ-
πίσαμεν (η) ἐπὶ σέ.

MS.A. (γ) ὁ κύριος, τοῦ (δ) κυρίου (ε) εἰς γενεὰν καὶ γενεάν. (ζ) κύριε τὸ ἔλεός σου ἐφ' ἡμᾶς, (η) ἐπὶ σοί.

1 Τῷ Δαυὶδ, ὁπότε ἠλλοίωσε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐναντίον Ἀβιμέλεχ, καὶ ἀπέλυσεν αὐτὸν, καὶ ἀπῆλθεν. λγ΄.

2 † ΕΥλογήσω τὸν κύριον ἐν παντὶ καιρῷ, † διαπαν-
3 τὸς ἡ αἴνεσις αὐτοῦ ἐν τῷ στόματί μου. † Ἐν τῷ κυρίῳ
(α) ἐπαινεθήσεται ἡ ψυχή μου· † ἀκουσάτωσαν πραεῖς καὶ
4 εὐφρανθήτωσαν. † Μεγαλύνατε τὸν κύριον σὺν ἐμοί,
5 † καὶ (α) ὑψώσωμεν τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐπὶ τὸ αὐτό. † Ἐξ-
εζήτησα τὸν κύριον, καὶ ἐπήκουσέ μου, † καὶ ἐκ πασῶν
6 τῶν (β) παροικιῶν μου ἐρρύσατό με. † Προσέλθατε πρὸς
αὐτὸν καὶ φωτίσθητε, † καὶ τὰ πρόσωπα ὑμῶν οὐ μὴ
καταισχυνθῇ.

MS.A. (α) ἐπαινεσθήσεται (α) ὑψώσωμεν (β) θλίψεων

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

4 *Quia rectū eſt verbū Domini, & omnia opera ejus in fide.* 4
5 [b] *Diligit miſericordiā, & judiciū: miſericordiâ Domini plena eſt terra.* 5
6 *Verbo Domini cæli (e) firmati ſunt: & ſpiritu oris ej⁹ omnis (f) virt⁹ eorū.* 6
7 (g) *Congregans, ſicut utrē, aquas maris: ponens in theſauris abyſſos.* 7
8 *Timeat Dominū omnis terra: ab eo autem (h) commoveantur omnes inhabitantes orbē.* 8
9 *Quoniā ipſe dixit, & facta ſunt: ipſe mandavit, & creata ſunt.* 9
10 *Dominus diſſipat conſilia gentiū: reprobat autē cogitationes populorum, & reprobat conſilia principū.* 10
11 *Cōſiliū verò Domini manet in æternū: cogitationes cordis ej⁹ (i) à generationibus in generationes.* 11
12 *Beata gens, cuj⁹ eſt Domin⁹ De⁹ ej⁹: popul⁹, quē elegit in hereditatē ſibi.* 12
13 *De cælo reſpexit Domin⁹: vidit omnes filios hominū.* 13
14 [c] *De (k) præparato habiculo ſuo, reſpexit ſuper omnes, qui inhabitant terrā.* 14
15 *Qui finxit (l) ſingillatim corda eorū: qui intelligit omnia opera eorū.* 15
16 *Non ſalvatur rex per* [d] *multā virtutē: & gigas non (m) ſalvabitur in multitudine fortitudinis ſuæ.* 16
17 [c] *Fallax equ⁹ ad ſalutē: in abundantia autem virtutis ſuæ non ſalvabitur.* 17
18 *Ecce oculi Domini ſuper metuentes eum, (n) ſperantes ſuper miſericordia ej⁹.* 18
19 *Ut eruat à morte animas eorū, & alat eos in fame.* 19
20 *Anima* [f] *noſtra patiens (o) eſt Domino, quoniā adjutor & protector noſter eſt.* 20
21 *Quia in eo lætabitur cor noſtrū, & in nomine ſancto ejus ſperavimus.* 21
22 *Fiat miſericordia tua, Domine, ſuper nos, quēadmodū ſperavim⁹ in te.* 22

1 (a) Ipſi David, cū mutavit vultū ſuum coram Abimelech, & dimiſit eum, & abiit. XXXIII.

2 *BEnedicā Dominum in omni tempore: ſemper laus ejus in ore meo.* 2
3 *In Domino laudabitur anima mea: audiant manſueti, et lætentur.* 3
4 *Magnificate Dominum mecum, & exaltemus nomē ejus in (b) idipſum.* 4
5 *Exquiſivi Dominum, &* [a] *exaudivit me: & ex omnibus (c)* [b] *parœciis meis eripuit me.* 5
6 *Accedite ad eum, & illuminamini: & facies veſtræ non confundentur.* 6

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ:ጽድቅ:ቃሉ:ለእግዚአብሔር::ወኵ 4
ሉ:ግብሩ:በሃይማኖት::=፦ ያፈቅር:እግዚአ 5
ብሔር: ጽድቀ: ወምጽዋዕተ:: ሣህሉ:ለእ
ግዚአብሔር:መልአ:ምድረ::=፦ ወበቃለ: 6
እግዚአብሔር:ጸንዓ:ሰማያት:: ወበእስትን
ፋሰ:አፉሁ:ኵሉ: ኃይሎሙ::=፦ ዘያስተጋ 7
ብኦ:ከመ:ዝቀ:ለማየ:ባሕር:: ወይሠይሞ
ሙ:ውስተ:መዛግብተ:ቀላያት::=፦ ትፍርሆ: 8
ለእግዚአብሔር : ኵላ: ምድር:: ወእምኔ
ሁ:ይደንግፁ:ኵሎሙ:እለ:ይነብሩ:ውስተ:
ዓለም::=፦እስመ:ውእቱ:ይቤ:ወኮኑ::ወው 9
እቱ:አዘዘ:ወተፈጥሩ::=፦ እግዚአብሔር: 10
ይመይጥ: ምክሮሙ: ለአሕዛብ:: ወይመይ
ጥ:ሕሊናሆሙ:ለሕዝብ::ወያረስዖሙ:ምክ
ሮሙ:ለመላእክት::=፦ ወምክሩሰ:ለእግዚ 11
አብሔር:ይነሉ:ለዓለም::ወሕሊና:ልቡ:
ለትውልደ:ትውልድ::=፦ ብፁዕ:ሕዝብ:ዘ 12
እግዚአብሔር:አምላኩ:: ሕዝብ: ዘኀረየ:
ሎቱ:ለርስቱ::=፦ እምሰማይ: ሐወጸ:እግ 13
ዚአብሔር:: ወርእየ: ኵሎ: ደቂቀ: ሰብእ:
እምሕያው::=፦ ወእምድልው:ጽርሐ:መቅ 14
ደሱ::ወርእየ:ላዕለ:ኵሎሙ:እለ:ኅዱረን:
ዲበ:ምድር::=፦ ዘውእቱ:ባሕቲቱ:ፈጠረ: 15
ልበሙ::ዘያአምር:ኵሎ: ምግባሮሙ::=፦
ኢይድኅን:ንጉሥ: በብዝኃ:ሰራዊቱ:: ወያር 16
ብኃኒ:ኢድኅነ:በብዝኃ:ኃይሉ::=፦ ወፈረ 17
ስኒ:ሐሰተ:ኢያድኅን:: ወኢያምስጥ: በብዝ
ኃ:ጽንዓ::=፦ ናሁ:አዕይንቲሁ: ለእግዚአ 18
ብሔር: ኀበ:እለ: ይፈርህዎ:: ወለለሰ: ይት
ዌከሉ:በምሕረቱ::=፦ ያድኅና:እሞት:ለነ 19
ፍሶሙ::ወይሴስዮሙ:አመ: ረኃብ::=፦ ነፍ 20
ስነሰ: ትሴፈዎ: ለእግዚአብሔር:: እስመ: ረ
ደኢነ:ወምስካይነ:ውእቱ::=፦ እስመ:ቦቱ: 21
ይትፈሣሕ : ልብነ:: ወተከልነ: በስሙ: ቅዱ
ስ::=፦ ለትኩን: እግዚኦ: ምሕረትከ: ላዕ 22
ሌነ::ወበከመ:ሰዐሊከ:ተወከልነ::=፦

ዘደዊት:ዘአመ:በዐደ:ገጾ: እምቅድሜሁ:
ለአቢሜሌክ::

ሀር እባርኮ: ለእግዚአብሔር: በኵሉ:ጊ 1
ዜ::ወዘልፈ: ስብሐቲሁ: ውስተ:አፉየ::=፦
በእግዚአብሔር:ትከብር: ነፍስየ::=፦ ይሰ 2
ምዑ:የዋሃን:ወይትፈሥሑ::=፦ አዕብይዎ: 3
ለእግዚአብሔር:ምስሌየ: : ወናልዕል:ስሞ:
ኅቡረ::=፦ ኃሠሥክዎ: ለእግዚአብሔር: 4
ወተሰጥወኒ:: ወእምኵሉ: መንደቤየ: አድ
ኀነኒ::=፦ ቅረቡ:ኀቤሁ:ወያበርህ:ለክሙ:: 5
ወኢይትኀፈር:ገጽክሙ::=፦

INTERP. ÆTHIOP. [b] Diligit Dominus juſtitiam & eleemoſynam: [c] Et de præparato templo ſanctitatis ſuæ, [d] multitudinē exercitûs ſui: [e] Et equus quidē fallax, non ſalvabit: & in multitudine fortitudinis ſuæ non effugiet. [f] autem noſtra *PSAL. xxxiii.* [a] reſpondit mihi: [b] tribulationibus

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

4 5 * لأنّ كلمة الربّ مستقيمة * وجميع أعماله بالأمانة * يحبّ الربّ الرحمة والعدل * الأرض كلّها مملوءة
6 7 من رحمة الربّ * بكلمة الربّ ثبتت السموات * وبروح فيه جميع جنودها * جامع مياه البحر مثل
8 الزقّ * ترك الأعماق في خزاين * فليخف من الربّ جميع الأرض * وليتزعزع منه كلّ سكّان المسكونة
9 10 * لأنّه قال فكانوا * وأمر فخلقوا * الربّ يبطل آراء الأمم * ويعذر أفكار الشعوب * ويرذل مشورات
11 12 الرؤساء * ومشورة الربّ دائمة إلى الأبد * وأفكار قلبه من جيل إلى جيل * طوبى للأمّة التي الربّ
13 14 إلهها * والشعب الذي اختاره الربّ ميراثا * نظر الربّ من السماء * فرأى جميع بني البشر * من
15 مسكن قدسه * نظر إلى كلّ سكّان الأرض * الذي خلق وحده قلوبهم * ويفهم جميع أعمالهم
16 17 * لا يخلص ملك لكثرة قوّته * ولا ينجو جبّار بكثرة جبروته * كذب هو أن ينجو الفرس
18 19 ولا يخلص بكثرة قوّته * ها عينا الربّ على خائفيه * المتوكّلين على رحمته * يخلّص نفوسهم من
20 21 الموت * ويعولهم من الغلاء * أنفسنا نظرت الربّ في كلّ حين * لأنّه معيننا وناصرنا * وبه تفرح
22 قلوبنا * وعلى اسمه القدّوس توكّلنا * ولتكن رحمتك يا ربّ علينا * كمثل توكّلنا عليك
1 الليلويا * المزمور الثالث والثلثون * قاله عندما غيّر
وجهه قدّام أبيمالخ وأطلقه ومضى * وعدده م استيكن *
2 3 * أبارك الربّ في كلّ حين * وفي كلّ أوان تسبحته في فاي * بالربّ تفتخر نفسي * فليسمع أهل
4 5 الدعة ويفرحون * عظّموا الربّ معي * ولنرفع اسمه أجمعون * أنا طلبت الربّ فأجابني * ومن
6 جميع شدائدي خلّصني * أقبلوا إليه واستنيروا به * فإنّ وجوهكم لا تخزى *

Quoniam verbum Domini rectum, & omnia opera ejus cum fide. 4 *Diligit Dominus miſericordiā, & æquitatē.* 5 *Terra univerſa plena eſt miſericordiâ Domini:* *Verbo Domini ſtabiliti ſunt cœli, & ſpiritu oris ejus univerſæ cohortes eorum.* 6 *Congregans aquas maris quaſi utrem, poſuit abyſſos in horreis:* 7 *Timeat ergò Dominū omnis terra: trepidentq; ab eo omnes habitatores orbis.* 8 *Quia ipſe dixit, & facti ſunt, & præcepit, & creati ſunt.* 9 *Domin⁹ annullat ſententias gentiū, & deſtruit cogitationes populorū, & deſpicit conſilia principū.* 10 *At conſilium Domini perpetuū eſt in æternū, & cogitationes cordis ejus à generatione in generationem.* 11 *Beata gens cujus Dominus eſt Deus ejus, & populus quem elegit Dominus in hereditatem.* 12 *Proſpexit Dominus de cœlo, & vidit omnes filios hominum:* 13 *De habitaculo ſanctitatis ſuæ reſpexit ad omnes habitatores terræ.* 14 *Qui creavit ſolus corda eorum, & intelligit omnia opera eorum.* 15 *Non ſalvabitur rex ullus per multitudinem roboris ſui, neque liberabitur gigas per multitudinem fortitudinis ſuæ.* 16 *Mendax eſt ut evadat equus, neque enim ſalvabitur copiâ virium ſuarum.* 17 *Ecce oculi Domini ſuper timentes eum: confidentium in miſericordia ejus.* 18 *Salvabit animas eorum à morte, & alet eos à penuria.* 19 *Animæ noſtræ intuitæ ſunt Dominum in omni tempore: nam ipſe eſt auxiliator noſter, & adjutor noſter.* 20 *Et in eo lætabuntur corda noſtra, & in nomine ejus ſancto fiducia noſtra.* 21 *Sitque miſericordia tua, O Domine, ſuper nos, ſecundùm fiduciam noſtram in te. Alleluja.* 22

PSAL. XXXIII. Davidis.

Dixit eū quando immutavit vultū ſuū corā Abimelech, & dimiſſus ab eo abiit. Numer⁹ ver. 40. 1

BEnedicā Dominum in omni momento: & in omni tempore laus ejus in ore meo. 2 *In Domino gloriabitur anima mea; audiat gens manſuetudinis, et lætentur.* 3 *Magnificate Dominū mecum: et exaltemus nomen ejus omnes.* 4 *Ego quæſivi Dominum, & exaudivit me, & ex omnibus tribulationibus meis liberavit me.* 5 *Venite ad eum, & illuminamini per eum: facies enim veſtræ non confundentur.* 6

תהלים : לה

.eum ſervavit ej⁹ anguſtiis omnib⁹ ex & ; audivit Dominus & ,clamavit *afflictus* Iſte
זֶה עָנִי קָרָא וַיהוָה שָׁמֵעַ וּמִכָּל־צָרוֹתָיו הוֹשִׁיעוֹ׃ 7
, Guſtate .eos eripit & , eum timentes circum Domini angelus *Caſtrametans*
חֹנֶה מַלְאַךְ־יְהוָה סָבִיב לִירֵאָיו וַיְחַלְּצֵם׃ טַעֲמוּ 8 9
Timete .eo in ſperabit *viri beatitudines* : Dominus bonus quoniam , videte &
וּרְאוּ כִּי־טוֹב יְהוָה אַשְׁרֵי הַגֶּבֶר יֶחֱסֶה־בּוֹ׃ יְראוּ 10
Leunculi .eum timentibus defectus non quoniam ; ejus ſancti Dominum
אֶת־יְהוָה קְדֹשָׁיו כִּי־אֵין מַחְסוֹר לִירֵאָיו׃ כְּפִירִים 11
.bono omni deficient non Dominum quærentes & ; *eſurierunt* & , ſunt depauperati
רָשׁוּ וְרָעֵבוּ וְדֹרְשֵׁי יְהוָה לֹא־יַחְסְרוּ כָל־טוֹב׃
vir Quis .vos docebo Domini timorem ; mihi obedite , filii *Agite*
לְכוּ־בָנִים שִׁמְעוּ־לִי יִרְאַת יְהוָה אֲלַמֶּדְכֶם׃ מִי־הָאִישׁ 12
13 tuâ linguam Cuſtodi ? bonum *videndum ad* dies *diligens* ; *vitas volens*
הֶחָפֵץ חַיִּים אֹהֵב יָמִים לִרְאוֹת טוֹב׃ נְצֹר לְשׁוֹנְךָ 14
; bonum fac & ; malo à Declina .dolum loquendo à tua labia & ; malo à
מֵרָע וּשְׂפָתֶיךָ מִדַּבֵּר מִרְמָה׃ סוּר מֵרָע וַעֲשֵׂה־טוֹב 15
ejus aures & ; juſtos *ad* Domini Oculi .eam ſequere & , pacem quære
בַּקֵּשׁ שָׁלוֹם וְרָדְפֵהוּ׃ עֵינֵי יְהוָה אֶל־צַדִּיקִים וְאָזְנָיו 16
terra è *ſuccidendum ad* ; malum facientes *in* Domini *Facies* .eorum clamorem ad
אֶל־שַׁוְעָתָם׃ פְּנֵי יְהוָה בְּעֹשֵׂי רָע לְהַכְרִית מֵאֶרֶץ 17
omnibus ex & ; audivit Dominus & , Clamaverunt .eorum memoriam
זִכְרָם׃ צָעֲקוּ וַיהוָה שָׁמֵעַ וּמִכָּל־ 18
; corde contritis Dominus Propinquus .eos eruit eorum anguſtiis
צָרוֹתָם הִצִּילָם׃ קָרוֹב יְהוָה לְנִשְׁבְּרֵי־לֵב 19
ipſis cunctis à & ; juſti mala Multa .ſervabit ſpiritu attritos &
וְאֶת־דַּכְּאֵי־רוּחַ יוֹשִׁיעַ׃ רַבּוֹת רָעוֹת צַדִּיק וּמִכֻּלָּם 20
eis ex unum ; ejus oſſa omnia Cuſtodiens .Dominus eum eruet
יַצִּילֶנּוּ יְהוָה׃ שֹׁמֵר כָּל־עַצְמוֹתָיו אַחַת מֵהֵנָּה 21
juſtum odio habentes & ; malitia impium Interimet .eſt contritum non
לֹא נִשְׁבָּרָה׃ תְּמוֹתֵת רָשָׁע רָעָה וְשֹׂנְאֵי צַדִּיק 22
non & ; ſuorum ſervorum animam Dominus *Redimens* .deſolabuntur
יֶאְשָׁמוּ׃ פּוֹדֶה יְהוָה נֶפֶשׁ עֲבָדָיו וְלֹא 23
.eo in ſperantes omnes deſolabuntur
יֶאְשְׁמוּ כָּל־הַחֹסִים בּוֹ׃

PSAL. XXXV. לה

.mecum pugnantibus *cum pugna* ; *mecum litigantibus cum* Domine *Litiga* .Davidi
לְדָוִד רִיבָה יְהוָה אֶת־יְרִיבַי לְחַם אֶת־לֹחֲמָי׃ 1
.meum adjutorium in ſurge & ; ſcutum & , clypeum Apprehende
הַחֲזֵק מָגֵן וְצִנָּה וְקוּמָה בְּעֶזְרָתִי׃ 2
dic ; me perſequentium occurſum in claude & , lanceam *evacua* Et
וְהָרֵק חֲנִית וּסְגֹר לִקְרַאת רֹדְפָי אֱמֹר 3
erubeſcent & , afficientur Pudore *ego* tua Salus : meæ animæ
לְנַפְשִׁי יְשֻׁעָתֵךְ אָנִי׃ יֵבֹשׁוּ וְיִכָּלְמוּ 4
cogitantes *ignominia* afficientur & , retrorſum vertentur : meam animam quærentes
מְבַקְשֵׁי נַפְשִׁי יִסֹּגוּ אָחוֹר וְיַחְפְּרוּ חֹשְׁבֵי
.meum malum
רָעָתִי׃

תרגום TARGUM.

דין ענייא צלי קדם יי שמיע ומכל עקתוי 7
פרקיה׃ שרי מלאכא דיי חזור חזור לדחלין 8
מניה ושזיב הנון׃ אשתמודעון וחמון ארום 9
טב יי טובוי לגבר דאתרחיץ במימריה׃
דחילו מן קדם יי קדישוי ארום לית חוסרנא 10
לדחלוי׃ בני אריון אתמסכנו וכפנו ותבעי 11
אולפנא דיי לא חסרין כל טובא׃ אזילו 12
בניא קבילו מני דחלתא דיי אליף יתכון׃
מן גברא דבעי חיי רחם יומיא למחמי טבא׃ 13
טור לישנך מביש וספותך מלמללא נכלא׃ 14
זור מביש ועבד טב בעי שלמא ורדף בתרוהי׃ 15
עינוי דיי לות צדיקיא ואודנוי לקבלא 16
צלותהון׃ פרצופא דיי רגיז בעבדי בישא 17
לשצאה מן ארעא דכרנהון׃ צלין צדיקיא 18
וקדם יי שמיע ומכל עקתהון פצנון׃ קריב 19
יי לתבירי לבא וית מכיכי רוחא יפרוק׃
סגיאין בישן מטרען לצדיקא ומן כולהון פצא 20
ליה יי׃ נטר לכולהון אברוי חדא מנהון לא 21
מתברא׃ מיתותא דרשיעא בישא וסנאי 22
צדיקא יתחיבון׃ פרוק יי נפשא דעבדוי 23
ולא מתחיבין כל דסברין במימריה׃

לה

לדוד אתגר יי במרי תגרתי סדר קרב קבל 1
בעלי קרבתי׃ אתקיף תריס ועגיל וקום 2
בסעדי׃ ושלוף מורניתא וטרוק לאורעות 3
רדפי אמר לנפשי פריקך אנא׃ יבהתון 4
ויכספון תבעי נפשי ירתעון לאחורא ויתכנעון
חשלי בישותי׃

PARAPH. CHALD. Verſ La

Hic pauper *oravit, à conſpectu Domini exauditus eſt*: & de omnibus tribulationibus ejus liberavit eum. Immoratur angelus Domini in circuitu timentium eum, & liberavit eos. Percipite & videte, quoniam bonus eſt Dominus; beatus homo qui confiſus eſt in verbo ejus. Timete à præſentia Domini ſancti ejus, quoniam non eſt egeſtas timentibus eum. Filii leonum eguerunt & eſurierunt: inquirentes autem doctrinam Domini non carent ullo bono. Ambulate filii, accipite à me: timorem Domini docebo vos. Quis eſt vir qui velit vitam, amans dies quò videat bonum? Cuſtodi linguam tuam à malo, & labia tua ne loquantur dolum. Recede à malo & fac bonum: inquire pacem & ſequere eam. Oculi Domini ſuper juſtos, & aures ejus ad ſuſcipiendam deprecationem eorum. Vultus autem Domini iraſcitur contra facientes malum, ad abolendam de terra memoriam eorum. Orant juſti & à conſpectu Domini exauditi ſunt: & de omnibus tribulationibus eorum liberavit eos. Propè eſt Dominus contritis corde, & humiles ſpiritu ſalvabit. Multa mala eveniunt juſto: & ex omnibus illis liberavit eum Dominus. Cuſtodit omnia membra ejus: unum ex eis non eſt contractum. Mors impii mala; & odio habentes juſtum, damnabuntur. Redimet Dominus animam ſervorum ſuorum; & non condemnantur omnes qui ſperant in verbo ejus.

Davidis.

PSAL. XXXV.

CONcerta Domine contra auctores concertationis meæ; inſtrue bellum adverſus auctores belli mei. Apprehende clypeum & parmulam, & ſurge in adjutorium meum. Evagina lanceam & claude in occurſum perſecutorum meorum: dic animæ meæ; Redemptor tuus ſum ego. Confundantur & erubeſcant, quærentes animam meam: convertantur retrorſum & ignominia afficiantur, qui cogitant malum meum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܗܢܘ ܡܣܟܢܐ ܕܩܪܝܗܝ ܘܫܡܥܗ. ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܘܠܨܢܘܗܝ ܦܪܩܗ : * ܡܫܪܝܬܐ 7
ܕܡܠܐܟܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܚܕܪܐ ܠܕܚܠܘܗܝ ܘܡܦܨܐ ܠܗܘܢ : * ܛܥܡܘ ܘܚܙܘ ܕܛܒ ܗܘ ܡܪܝܐ. 8 9
ܘܛܘܒܝܗܘܢ ܠܟܠ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ : **
* ܥܬܝܪܐ ܐܬܡܣܟܢܘ ܘܟܦܢܘ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܠܡܪܝܐ ܠܐ ܢܚܣܪ ܠܗܘܢ ܛܒܬܐ : 11
* ܕܡܫܒܚܬܐ. * ܬܘ ܒܢܝܐ ܫܡܥܘܢܝ. ܘܐܠܦܟܘܢ ܕܚܠܬܗ ܕܐܠܗܐ : * ܐܝܢܘ ܓܒܪܐ 12 13
ܕܨܒܐ ܚܝܐ. ܘܪܚܡ ܝܘܡܬܐ ܛܒܐ ܠܡܚܙܐ : * ܛܪ ܠܫܢܟ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܣܦܘܬܟ ܠܐ ܢܡܠܠܢ 14
ܢܟܠܐ : * ܥܪܘܩ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܘܥܒܕ ܛܒܬܐ. ܒܥܝ ܫܠܡܐ ܘܪܗܛ ܒܬܪܗ : * ܥܝܢܘܗܝ 15 16
ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܙܕܝܩܐ. ܘܐܕܢܘܗܝ ܠܡܫܡܥܘܢ ܐܢܘܢ : * ܐܦܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܒܝܫܐ. ܕܢܘܒܕ ܡܢ 17
ܐܪܥܐ ܕܘܟܪܢܗܘܢ : * ܩܥܘ ܙܕܝܩܐ ܘܡܪܝܐ ܫܡܥ ܐܢܘܢ. ܘܦܨܝ ܐܢܘܢ. * ܩܪܝܒ ܗܘ ܡܪܝܐ 18 19
ܠܬܒܝܪܝ ܠܒܐ : ܘܠܡܟܝܟܝ ܪܘܚܐ ܦܪܩ. * ܣܓܝܐܢ ܒܝܫܬܗ ܕܙܕܝܩܐ : ܘܡܢ ܟܠܗܝܢ 20
ܡܦܨܐ ܠܗ ܡܪܝܐ. * ܘܢܛܪ ܠܟܠܗܘܢ ܓܪܡܘܗܝ : ܕܚܕ ܡܢܗܘܢ ܠܐ ܢܬܬܒܪ. * ܬܩܛܘܠ 21
ܠܚܛܝܐ ܒܝܫܬܐ : ܘܣܢܐܘܗܝ ܕܙܕܝܩܐ ܢܣܘܦܘܢ. * ܢܦܪܘܩ ܡܪܝܐ ܢܦܫܬܐ ܕܥܒܕܘܗܝ : 22 23
ܘܠܐ ܢܬܚܝܒܘܢ ܟܠ ܕܡܣܬܒܪܝܢ ܒܗ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܗ *

* ܕܘܝܕ. ܡܬܐܡܪܢܝܬܐ ܟܕ ܪܕܦ ܗܘܐ ܠܗ ܐܕܘܡܝܐ. ܘܬܟܫܦܬܐ ܕܙܕܝܩܐ. ܦܬܓܡܐ ܗܘ.
ܕܘܢ ܡܪܝܐ ܕܝܢܝ ܘܐܬܟܬܫ ܥܡ ܐܝܠܝܢ ܕܡܬܟܬܫܝܢ ܥܡܝ : * ܐܚܘܕ ܙܝܢܐ ܘܬܪܣܐ ܘܩܘܡ 1 2
ܒܥܘܕܪܢܝ. * ܫܡܘܛ ܠܟ ܣܦܣܪܐ ܘܒܪܘܩ ܠܘܩܒܠ ܪܕܘܦܝ : ܐܡܪ ܠܢܦܫܝ ܕܦܪܘܩܐ ܐܢܐ ܗܘ 3
ܦܪܘܩܟܝ. * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܬܚܦܪܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܠܢܦܫܝ : ܢܗܦܟܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ 4
ܘܢܬܚܦܪܘܢ. ܐܝܠܝܢ ܕܐܬܚܫܒܘ ܥܠܝ ܒܝܫܬܐ

Iſte eſt pauper qui invocavit eum, & auditus eſt, & ex omnibus tribulationibus ſuis ereptus eſt. Cohors Angelorum Domini circumſepit timentes eum, liberatque illos. Guſtate & videte quòd bonus ſit Dñs, & beati quicunque confidunt in eo. * 10 *Hoc verſiculo Syri carere videntur, quum tribus in codicibus noſtris deſideretur.* * Divites depauperati ſunt & eſurierunt; at iis qui Dominum quærunt, non deerit bonum. * *Diapſalma* * Venite filii, audite me, & docebo vos timorem Dei. Quis eſt vir qui vult vitam, & diligit dies bonos videre? Cuſtodi linguam tuam à malitia, & labia tua ne loquantur dolum; Devita malum, & fac bonum; quære pacem, & curre poſt eam. Oculi Domini ſuper juſtos, & aures ejus ad audiendum illos. Vultus Domini ſuper malos, ut deleat de terra memoriam eorum. Clamaverunt juſti, & Dñs audivit eos, & eripuit illos. Proximus eſt Dñs contritis corde, & humiles ſpiritu ſalvat. Multæ ſunt calamitates juſti, & ex omnibus liberat eum Dominus: Servatque omnia ejus oſſa, ut unum ex iis non frangatur. Interficit impios malignitas, & oſores juſti deficient. Servabit Dominus animas ſervorum ſuorum, nec damnabuntur omnes qui ſperant in eum.

PSAL. XXXV.

Davidis. Ad literam, Quum inſectaretur Idumæos. Et ſupplicatio juſtorum. Verſ.6.

JUdica, Domine, judicium meum, & pugna adverſùs eos qui me impugnant. Arripe arma & ſcutum, & ſta in auxilium meum. Evagina gladiū et fulgere fac eum adverſum perſequutores meos: dic animæ meæ, Ego ſum ſalvator tuus. Pudefiant & confundantur ii qui quærunt animam meam. Agantur retrorſum & afficiantur ignominiâ, qui cogitaverunt in me malum.

Verſio VULG. LAT.

7 Iſte pauper clamavit, & Dominus exaudivit
eum : & de omnibus tribulationibus
8 ejus ſalvavit eum. Immittet angelus
Domini in circuitu timentium
9 eum : & eripiet eos. Guſtate, & videte,
quoniam ſuavis eſt Dominus : beatus
10 vir, qui ſperat in eo. Timete Dominum
omnes Sancti ejus : quoniam
11 non eſt inopia timentibus eum. Divites
eguerunt & eſurierunt : inquirentes
autem Dominum non minuentur omni
12 bono. Venite filii, audite me : timorem
13 Domini docebo vos. Quis eſt
homo qui vult vitam : diligit dies
14 videre bonos ? Prohibe linguam tuam
à malo : & labia tua ne loquantur dolum.
15 Diverte à malo, & fac bonum :
16 inquire pacem, & perſequere eam. Oculi
Domini ſuper juſtos : & aures
17 ejus in preces eorum. Vultus autem
Domini ſuper facientes mala : ut perdat
18 de terra memoriam eorum. Clamaverunt
juſti, & Dominus exaudivit
eos : & ex omnibus tribulationibus
19 eorum liberavit eos. Juxtà eſt Dominus
iis, qui tribulato ſunt corde : &
20 humiles ſpiritu ſalvabit. Multæ tribulationes
juſtorum : & de omnibus his
21 liberabit eos Dominus. Cuſtodit Dominus
omnia oſſa eorum : unum ex his
22 non conteretur. Mors peccatorum peſſima
: & qui oderunt juſtum, delinquent.
23 Redimet Dominus animas ſervorum
ſuorum : & non delinquent
omnes qui ſperant in eo.

1 Ipſi David. XXXIV.

Judica, Domine, nocentes me, expugna
2 impugnantes me. Apprehende arma
& ſcutum : & exurge in adjutorium
3 mihi. Effunde frameam, & conclude
adverſùs eos, qui perſequuntur me :
dic animæ meæ, Salus tua ego ſum.
4 Confundantur & revereantur, quærentes
animam meam. Avertantur retrorſùm
& confundantur, cogitantes
mihi mala.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

7 Οὗτος ὁ πτωχὸς ἐκέκραξε, καὶ ὁ κύριος εἰσήκουσεν
αὐτοῦ, † καὶ ἐκ πασῶν τῶν θλίψεων αὐτοῦ ἔσωσεν
8 αὐτόν. † Παρεμβαλεῖ ἄγγελος κυρίου κύκλῳ
9 τῶν φοβουμένων αὐτὸν, καὶ ῥύσεται αὐτούς. † Γεύσασθε
καὶ ἴδετε ὅτι χρηστὸς ὁ κύριος, † μακάριος
10 ἀνὴρ ὃς ἐλπίζει ἐπ' αὐτόν. † Φοβήθητε τὸν κύριον
πάντες οἱ ἅγιοι αὐτοῦ, † ὅτι οὐκ ἔστιν ὑστέρημα
11 τοῖς φοβουμένοις αὐτόν. † Πλούσιοι ἐπτώχευσαν καὶ
ἐπείνασαν, † οἱ δὲ ἐκζητοῦντες τὸν κύριον οὐκ ἐλαττωθήσονται
12 παντὸς ἀγαθοῦ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Δεῦτε
τέκνα, ἀκούσατέ μου, φόβον κυρίου διδάξω ὑμᾶς. †
13 Τίς ἐστιν ἄνθρωπος ὁ θέλων ζωὴν, † ἀγαπῶν ἡμέρας
14 ἰδεῖν ἀγαθάς ; † Παῦσον τὴν γλῶσσάν σου
ἀπὸ κακοῦ, † καὶ χείλη σου τοῦ μὴ λαλῆσαι δόλον. †
15 Ἔκκλινον ἀπὸ κακοῦ, καὶ ποίησον ἀγαθὸν, † ζήτησον
16 εἰρήνην, καὶ δίωξον αὐτήν. † Ὀφθαλμοὶ κυρίου
17 ἐπὶ δικαίους, † καὶ ὦτα αὐτοῦ εἰς δέησιν αὐτῶν. † Πρόσωπον
δὲ κυρίου ἐπὶ ποιοῦντας κακὰ, † τοῦ ἐξολοθρεῦσαι
18 ἐκ γῆς τὸ μνημόσυνον αὐτῶν. † Ἐκέκραξαν οἱ
δίκαιοι, καὶ ὁ κύριος εἰσήκουσεν αὐτῶν, † καὶ ἐκ πασῶν
19 τῶν θλίψεων αὐτῶν ἐρρύσατο αὐτούς. † Ἐγγὺς
κύριος τοῖς συντετριμμένοις τὴν καρδίαν, † καὶ
20 τοὺς ταπεινοὺς τῷ πνεύματι σώσει. † Πολλαὶ αἱ
θλίψεις τῶν δικαίων, † καὶ ἐκ πασῶν αὐτῶν ῥύσεται
21 αὐτοὺς ὁ κύριος. † (γ) Φυλάσσει πάντα τὰ ὀστᾶ
22 αὐτῶν, † ἓν ἐξ αὐτῶν οὐ συντριβήσεται. † Θάνατος
ἁμαρτωλῶν πονηρὸς, † καὶ οἱ μισοῦντες τὸν δίκαιον
23 πλημμελήσουσι. † Λυτρώσεται κύριος ψυχὰς δούλων
αὐτοῦ, † καὶ οὐ μὴ πλημμελήσουσι πάντες οἱ ἐλπίζοντες
ἐπ' αὐτόν.

MS. A. (γ) Φυλάσσει κύριος πάντα

1 (α) Τῷ Δαυίδ. λδʹ.

Δίκασον κύριε τοὺς ἀδικοῦντάς με, † πολέμησον
2 τοὺς πολεμοῦντάς με. † Ἐπιλαβοῦ ὅπλου καὶ
3 θυρεοῦ, καὶ ἀνάστηθι εἰς βοήθειάν (β) μοι. † Ἔκχεον
(γ) ῥομφαίαν, καὶ σύγκλεισον ἐξεναντίας τῶν καταδιωκόντων
με, † εἰπὸν τῇ ψυχῇ μου, Σωτηρία σου (δ)
4 ἐγώ εἰμι. † Αἰσχυνθείησαν καὶ ἐντραπείησαν οἱ ζητοῦντες
τὴν ψυχήν μου, † (ε) ἀποστραφείησαν εἰς τὰ
ὀπίσω καὶ (ζ) καταισχυνθείησαν † οἱ λογιζόμενοί μοι
κακά.

MS. A. (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) μου. (γ) ῥομφαίαν σου, (δ) εἰμὶ ἐγώ. Αἰσχυνθήτωσαν καὶ ἐνβαπήτωσαν (ε) ἀποστραφήτωσαν (ζ) καταισχυνθήτωσαν

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

7 Iſte pauper clamavit: & Dominus exaudivit eum: & de omnibus tribulationib⁹ ejus ſalvavit eum. 8 [c] Immittet angelus Domini in circuitu timentium eum, & eripiet eos 9 Guſtate, [d] & videte, quoniã ſuavis eſt Domin⁹. Beat⁹ vir, qui ſperat in eũ. 10 Timete Dominum omnes Sancti ejus: quoniã non eſt inopia timentibus eum. 11 [e] Divites eguerunt, & eſurierunt; inquirentes autẽ Dominum, non minuentur omni bono. DIAPSALMA. 12 Venite filii, (d) audite me; timorem Domini docebo vos. 13 Quis eſt homo, qui vult vitã, diligit dies videre bonos? 14 Contine linguã tuã à malo, & labia tua ne loquantur dolum. 15 Declina à malo, & fac bonũ: quære pacẽ, & [f] perſequere eã. 16 [g] Oculi Domini ſuper juſtos, et aures ej⁹ in preces eorũ. 17 Vultus autẽ Domini ſuper facientes mala; ut perdat de terra memoriã eorum. 18 Clamaverunt juſti, & Dominus exaudivit eos: et ex omnibus tribulationibus eorũ liberavit eos. 19 Juxtà eſt Dominus iis qui (e)[h] contrito ſunt corde: & humiles ſpiritu ſalvabit. 20 Multæ tribulationes juſtorum; & de omnibus his liberabit eos Domin⁹. 21 Cuſtodit [i] omnia oſſa eorum: unum ex eis non conteretur. 22 Mors [k] peccatorum peſſima: [l] & qui oderunt juſtum, [m] delinquent. 23 Redimet Dominus animas ſervorum ſuorum: & non [n] delinquent omnes qui (f) ſperant in eum.

(a) Ipſi David. XXXIV.

[a] Judica, Domine, (b) nocẽtes me: impugna (c) impugnantes me. 2 Apprehende arma [b] & ſcutum: & exurge in adjutorium mihi. 3 (d)[c] Effunde frameã, & conclude adverſ⁹ eos qui perſequuntur me. Dic animæ meæ, Sal⁹ tua ego ſũ. 4 Confundantur et revereantur, [d] quærentes animã meã: avertãtur retrorſum et confundantur, cogitantes mihi mala.

Verſio ÆTHIOPICA.

7 ዘንቱ፡ነደይ፡ ጸርኀ፡ ወእግዚአብሔር፡ ሰም 7
ዖ። ወእምኵሉ፡ምንዳቤሁ፡አድኀኖ፨
8 ይትዓየን፡ መልአከ፡ እግዚአብሔር። 8
አውደሞ፡ ለእለ፡ ይፈርህዎ፡ ወያድኅኖ
9 ሙ፨ ጠዐሞ፡ወታእምሩ፡ከመ፡ኄር፡እ
ግዚአብሔር። ብፁዕ፡ ብእሲ፡ ዘተወከለ፡በ 9
ቱ፨ ፍርህዎ፡ለእግዚአብሔር፡ኵልክሙ፡ 10
10 ቅዱሳኑ። እስመ፡ አልቦሙ፡ ተፀንሶ፡ለእለ፡
11 ይፈርህዎ፨ ብዑላንሰ፡ነድዩ፡ወርኅቡ። 11
ወእለሰ፡ የኀሥሥዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ኢተጸ
ንሱ፡እምኵሉ፡ ሠናይ፨ ንዑ፡ደቂቅየ፡ 12
ወስምዑኒ። ፈሪሃ፡ ለእግዚአብሔር፡ እምህርክ
12 ሙ፨ መኑ፡ውእቱ፡ብእሲ፡ዘይፈቅድ፡ 13
13 ሐይወ። ወያፈቅር፡ ይርአይ፡ መዋዕለ፡ ሠናየ
14 ተ፨ ክላእ፡ልሳነከ፡እምእኩይ። ወከናፍ 14
ሪከኒ፡ከመ፡ኢይንብባ፡ጕሕሉተ፨ ተግሕ 15
15 ሥ፡ እምእኩይ፡ ወግበር፡ ሠናየ። ኅሥሥ፡
ለሰላም፡ ወዴግና፨ እስመ፡ አዕይንቲሁ፡ 16
16 ለእግዚአብሔር፡ኀበ፡ ጻድቃኑ። ወእዝ
17 ኑሂ፡ኀበ፡ስእለቶሙ፨ ገጹ፡ለእግዚአብ 17
ሔር፡ ኀበ፡እለ፡ ይገብሩ፡ እኩየ። ከመ፡
ይሠረዉ፡ እምድር፡ ዝክሮሙ፨ ጸር 18
18 ኁ፡ ጻድቃን፡ ወእግዚአብሔር፡ ሰምዖሙ።
ወእምኵሉ፡ምንዳቤሆሙ፡አድኀኖሙ፨
19 ቅሩብ፡ እግዚአብሔር፡ ለየዋሃን፡ ልብ። ወ 19
ያድኅኖሙ፡ለትሑታን፡መንፈስ፨ ብዙኅ፡ 20
ሕማሞሙ፡ ለጻድቃን። ወእምኵሉ፡ ያድ
20 ኅኖሙ፡እግዚአብሔር፨ እግዚአብሔ 21
21 ር፡ ያዓቅብ፡ ኵሎ፡ አዕጽምቲሆሙ።
ወኢይትቀጠቀጥ፡ አሐዱ፡ እምውስቴቶ
22 ሙ፨ ሞቱ፡ለኃጥእ፡ጸዋግ። ወእለሰ፡ይ 22
ጸልእዎ፡ለጻድቅ፡ይነስሑ፨ ይቤዙ፡ 23
23 እግዚአብሔር፡ ነፍሰ፡ አግብርቲሁ። ወኢ
ይኔስሑ፡ኵሎሙ፡ እለ፡ ይትዌከሉ፡በቱ።

ዘደዊት።

1 ሀበ ግፍዖሙ፡ እግዚኦ፡ ለእለ፡ይገፍዑኒ። 1
ፀብኦሙ፡እግዚኦ፡ለእለ፡ይጸብኡኒ፨ ንሣ 2
2 እ፡ ወልታ፡ወኵናተ፡ወተንሥእ፡ ውስተ፡ ረዲኦ
ትየ፨ መሳኀ፡ሰይፈከ፡ወዕግቶሙ፡ለእለ፡ 3
3 ሮዱኒ። በል፡ ለነፍስየ፡ አነ፡ ውእቱ፡ ረዳኢ
ኪ፨ ለይትኃፈሩ፡ወይኅሰሩ፡ኵሎሙ፡እ 4
4 ለ፡የኀሥሡ፡ለነፍስየ፨ ወይግብኡ፡ድኅሬሆ 5
ሙ፡ ወይትኃፈሩ፡ እለ፡ መከሩ፡ እኩየ፡
ላዕሌየ።

INTERP. ÆTHIOP. [c] Vallabit angelus [d] intelligite quàm bonus [e] Divites quidem [f] ſubmitte ei. [g] Quoniam oculi [h] manſueto ſunt [i] Dominus omnia [k] peccatoris [l] & quidẽ qui [m] pigebit eos. [n] pœnitebit omnes   *PSAL. xxxiv.* [a] Opprime eos, Domine, qui me opprimunt: impugna, Domine, [b] et gladium: [c] Evagina frameam, & circumvalla eos qui [d] omnes quærentes

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

7 8 * هذا المسكين صرخ فاستجاب له الرب * ومن جميع احزانه خلصه * ملاك الرب يعسكر حول
9 10 كل خايفيه ويخلصهم * ذوقوا وتيقنوا ان الرب طيب هو * طوبي للانسان المتوكل عليه * اتقوا
11 الرب يا جميع قديسيه فانه لا منقصة لاتقيايه * الاغنياء افتقروا وجاعوا * والذين يطلبون
12 13 الرب لا يعدمون الخيرات * هلموا ايها الابناء واسمعوا مني * لاعلمكم مخافة الرب * من هو الرجل
14 الذي يهوي الحياة * ويحب ان يري اياما صالحة * كف لسانك من الشر * وشفتيك لكيلا
15 16 تتكلما بالغدر * حد عن الشر واصنع الخير * اطلب السلامة واتبعها * فان عيني الرب علي
17 الصديقين واذنيه مصغيتان الي طلبتهم * وجه الرب علي صانعي الشر يمحي ذكرهم من علي
18 19 الارض * الصديقون صرخوا فاستجاب لهم الرب ومن جميع شدايدهم خلصهم * الرب قريب
20 من المنكسري قلوبهم * يخلص المتواضعين بروحهم * كثيرة هي احزان الصديقين * ومن
21 22 جميعها يخلصهم الرب * الرب يحفظ جميع عظامهم وواحدة منها لا تنكسر * موت الخطاة شرير
23 ويبغضوا الصديق يهلكون * الرب يخلص انفس عبيده * ولا يخيب جميع المتوكلين عليه
الليلويا * المزمور الرابع والثلثون *

1 * نبوة علي التجسد وما فعله الشعب بارمياء * وعدده نط * استيخن *

2 3 حاكم يا رب الذين يظلموني * قاتل الذين يقاتلوني * خذ سلاحا وترسا وقم لمعونتي * استل
4 سيفا رد الذين يطردوني * وقل لنفسي انا خلاصك * ليخزي ويبهت جميع طالبي نفسي
وليرجع علي عقبه ويخزي المتفكرون علي بالشر *

Iſte pauper clamavit, & exaudivit eum 7
Dominus, & ex omnibus mœſtitiis ejus
ſalvavit eum. Angelus Domini caſtrametatur 8
circa omnes timentes eum, & liberat
eos. Guſtate, & certi eſtote quòd 9
Dominus ſuavis eſt. Beatus homo qui confidit
in eo. Colite Dominum, omnes 10
Sancti ejus, quia non eſt defectus cultoribus
ejus. Divites depauperati ſunt, & 11
eſurierunt : & ii qui quærunt Dominum,
non privabuntur bonis. Venite, filii, & 12
audite ex me, ut doceam vos timorem Domini.
Quis eſt homo, qui vult vitam, & 13
diligit videre dies bonos? Cohibe linguam 14
tuam à malo, & labia tua, ut ne loquantur
dolum: Declina à malo, & fac bonum; 15
quære pacem, & ſequere eam. Nam oculi 16
Domini ſuper juſtos, & aures ejus intentæ
ad preces eorum; Facies Domini 17
contra operantes malum, delebit memoriam
eorum de terra. Juſti clamaverunt, 18
& exaudivit eos Dominus, & ex omnibus
tribulationibus eorum liberavit eos.
Dominus proximus eſt confractis cordibus, 19
ſalvabit humiles ſpiritu. Multæ ſunt 20
calamitates juſtorũ, & ex omnib⁹ liberabit
eos Dominus. Dominus cuſtodit omnia 21
oſſa eorũ, et unũ ex ipſis non cõfringetur.
Mors peccatorum improba, & oſores juſti
peribunt. Dominus redimet animas ſervorum 22
ſuorum, & non fraudabit omnes
confidentes in ſe. Alleluja.

PSAL. XXXIV.

Prophetia de Incarnatione, et de iis quæ perpetravit populus in Jeremiam. Et numerus ver. 59. 1

Judica, Domine, eos qui opprimunt me:
pugna cum eis qui impugnant me. Sume 2
arma et ſcutum, & ſurge in adjutorium
meum. Evagina gladium, pelle eos qui 3
perſequuntur me : & dic animæ meæ, Ego
ſum Salvator tuus. Et confundantur & 4
obſtupeſcant omnes petentes animam meam
: revertantur ſuper calcaneos ſuos,
& erubeſcant cogitantes mihi malum.

תהלים : לה

eorum via Erit   impellens Domini angelus &   ; venti faciem ad   gluma ſicut Erunt
5 6 יהיו כמץ לפני־רוח ומלאך יהוה דחה : יהי־דרכם
Quoniam   .eos perſequens   Domini   angelus &   ; lubricitates &   , tenebroſitas
7 חשך וחלקלקת ומלאך יהוה רדפם : כי־
eum Invadet   .meæ animæ foderunt gratis   : ſui retis   foveam mihi abſconderunt   gratis
8 חנם טמנו־לי שחת רשתם חנם חפרו לנפשי : תבואהו
deſolationem in   ; eum capiet   ,abſcondit quod   ipſius rete &   ,cognoſcet   non   , deſolatio
שואה לא־ידע ורשתו אשר־טמן תלכדו בשואה
.ejus ſalute in   gaudebit   : Domino in   exultabit   mea anima Et   .eam in   cadet
9 יפל־בה : ונפשי תגיל ביהוה תשיש בישועתו :
forti   à   afflictum   eripiens   ? tu ſicut   quis   Domine   : dicent   mea   oſſa   Omnia
10 כל עצמותי תאמרנה יהוה מי כמוך מציל עני מחזק
: iniquitatis   teſtes   Surgent   ? eum rapiente à   egenum &   ,pauperem &   ; eo præ
11 ממנו ועני ואביון מגזלו : יקומון עדי חמס
, bono   pro   malum   mihi Reddent   .me interrogabunt   cognovi   non   quæ
12 אשר לא־ידעתי ישאלוני : ישלמוני רעה תחת טובה
affligebam   ,ſaccus   mea   veſtis   ,ipſos ægrotando in   ego   Et   .meæ animæ   orbitatem
13 שכול לנפשי : ואני בחלותם לבושי שק עניתי
,ſocius ſi Ac   .revertebatur meum ſinum ſuper   mea oratio &   : meam animam jejunio in
14 בצום נפשי ותפלתי על־חיקי תשוב : כרע־
.me incurvabam   atratus   , matrem   lugens tanquam   , ambulabam   , mihi   frater ſi ac
כאח לי התהלכתי כאבל־אם קדר שחותי :
me ſuper   ſe congregaverunt ,ſe congregaverunt & ,ſunt lætati   mea claudicatione in Et
15 ובצלעי שמחו ונאספו נאספו עלי
ſubſannatoribus hypocritis In   .ſiluerunt non & ,proſciderunt   : cognovi   non & ,percuſſi
16 נכים ולא ידעתי קרעו ולא־דמו : בחנפי לעגי
? videbis   quandiu   Domine   .ſuis dentibus   me ſuper   fremendo   ; ſubſannatione
17 מעוג חרק עלי שנימו : אדני כמה תראה
.meam   unicam   leunculis   à   ; eorum deſolationibus   à   meam animam   reduc
השיבה נפשי משאיהם מכפירים יחידתי :
mihi lætentur   Ne   .te laudabo   forti   populo in   : magno cœtu in tibi Confitebor
18 אודך בקהל רב בעם עצום אהללך : אל־ישמחו־לי
19 ,loquentur   pacem   non Quia   .oculo   annuant   gratis   me odientes   : falſo   mei inimici
20 איבי שקר שנאי חנם יקרצו־עין : כי לא שלום ידברו
fecerunt dilatare Et   .cogitabunt   fraudum   verba   ; terræ   tranquillos   ſuper &
21 ועל רגעי־ארץ דברי מרמות יחשבון : וירחיבו
,Domine Vidiſti   .noſter oculus   vidit   ; euge , Euge   : dixerunt ,ſuum os   me ſuper
22 עלי פיהם אמרו האח האח ראתה עינינו : ראיתה יהוה
evigila &   , te Suſcita   .me à   te elonges   ne   Domine   : taceas   ne
23 אל־תחרש אדני אל־תרחק ממני : העירה והקיצה
me   Judica   .meam   litem   ad   , mi Domine &   , mi Deus   : meum judicium ad
24 למשפטי אלהי ואדני לריבי : שפטני
dicant   Ne   .mihi   lætentur ne &   ,mi Deus   Domine   tuā juſtitiam ſecundùm
25 כצדקך יהוה אלהי ואל־ישמחו־לי : אל־יאמרו
,afficiantur Pudore   .eum Abſorpſimus   : dicant   ne   ; noſtræ animæ Euge   :ſuo corde in
26 בלבם האח נפשנו אל־יאמרו בלענוהו : יבשו
, erubeſcentia &   , pudore   induantur   : meo malo   læti   pariter   erubeſcant &
ויחפרו יחדו שמחי רעתי ילבשו־בשת וכלמה
.me ſuper   ſe   magnificantes
המגדילים עלי :

תרגום TARGUM.

5 יהוין היך מוצא קדם זעפא ומלאכא דיי דחי :
6 יהי אורחתהון חשוכא וחכירא ומלאכא
7 דיי רדיף להון : ארום מגן פרסו ליותי
8 שיח מצדהון מגן כמנו לנפשי : תיתיה שליא
לא יתחכם ומצדתיה די פרס תצידיה בשליא
9 יפול בה : ונפשי תחדי במימרא דיי תדוץ
10 בפורקניה : כולהון אברי תהוין אמרין
יי מן כותך פצי עניא מן תקיף מניה ועניא
11 וחשיכא מן אנסיה : קימין סהדי חטופין
12 מן דלא חכימית שילין לי : פרעין לי בישתא
13 חלף טבתא בען למתכל לנפשי : ואנא
בעדן מרעותהון לבישת סקא סגפית בצומא
14 נפשי וצלותי על עובי תתוב : היך חברא
והיך אחא דילי הלכית היך אבילא דמתאבל
15 על אמיה חכיר שחית : ובתברי חדו
ואתכנשו מתכנשין עלי רשיעיא דמככין לי
במלהון ולא חכימית אלו מבזעין משכי
16 ולא מפקין דמא : במלי שעיותא ומרהביא
17 וממקניא מעסן עלי ככיהון : יי כמה את
חמי אתיב נפשי משליתהון מבני אריויא
18 גושמי : אודי קדמך בכנשתא רבא בעמא
19 תקיפא אשבחנך : לא יחדון עלי בעלי
20 דבבי שקרא סנאי מגן רמזין בעיניהון : ארום
לא שלמא ממללין ועל צדיקי ארעא דניחין
21 בעלמא ההוא מלי נכלין מחשלין : ואפתיאו
עלי פמהון אמרו חדוא חדוא חמת עיננא :
22 חמיתא יי לא תשתוק יי לא תתרחיק מני :
23 אתער ותקיץ לדיני אלהי ומרי נצחני יי
24 לתגרתי : דון יתי כצדקתך יי אלהי ולא יחדון
25 עלי : לא יימרון בלבהון חדיאת נפשנא
26 דלמא יימרון גמרנא יתיה : יבהתון ויתכנעון
כחדא דחדין על בישתי ילבשון בהתא
וכסופא דמתרברבן עלי :

PARAPH. CHALD Verſ. La

Sint ſicut palea coram vento, & angelus Domini impellat. Sit via illorum tenebræ & *caligo* : & angelus Domini perſequatur eos. Quoniam ſine cauſa tetenderunt mihi foveam retis ſui : ſine cauſa inſidiati ſunt animæ meæ. Veniat ei deſolatio & non advertat : & rete ejus quod abſcondit, capiat eum ; in deſolationem ipſam cadat. Et anima mea gaudebit in verbo Domini : exultabit in redemptione ejus. Omnia membra mea dicent, Domine quis ſimilis tibi, eripiens afflictum à fortiori ſe, & pauperem & mendicum à raptore ſuo ? Surgentes teſtes iniqui, quæ neſciebam, interrogabant me. Reddebant mihi malum pro bono, quærentes orbare animam meam. Ego verò in tempore infirmitatis eorum induebar ſacco ; affligebam jejunio animam meam : oratio autem mea ad ſinum meum revertetur. Ac ſi ſocius & frater meus fuiſſet, ita cum eo ambulabam : ſicut lugens, qui luget matrem ſuam, obſcurus humiliabar. Et in tribulatione mea lætati & congregati ſunt: convenerunt adverſum me impii, qui conterunt me verbis ſuis, & neſcivi; etiamſi lacerarent pellem meam, non tamen eliciebant ſanguinem. Verbis autem blanditiarum, ſubſannatoriis, & deriſoriis frendent contra me dentibus ſuis. Domine uſquequo reſpicies ? converte animam meam à deſolationibus eorum, à filiis leonum corpus meum. Confitebor coram te in congregatione magna : in populo valido laudabo te. Non lætentur de me auctores inimicitiæ meæ falſo ; odientes me ſine cauſa, annuentes oculis ſuis. Quoniam non pacem loquuntur : & contra juſtos terræ quieſcentes in ſeculo illo, verba doloſa cogitant. Et dilataverunt ſuper me os ſuum, & dixerunt, Evax evax; vidit oculus noſter. Vidiſti Domine, ne ſileas Domine, ne elongeris à me. Evigila & expergiſcere ad judiciū meū, Deus meus, & auctor victoriæ meæ *Domine* ad litem meam. Judica me ſecundùm juſtitiam tuam Domine, Deus meus, & ne lætentur de me. Non dicant in cordibus ſuis, Lætata eſt anima noſtra: ne fortè dicant, Devoravimus eum. Erubeſcant & confundantur pariter, qui lætantur malo meo : induantur pudore, & confuſione, qui magnificantur ſuper me.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 6 * ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܕܩܐ ܩܕܡ ܪܘܚܐ. ܘܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܢܪܕܘܦ ܐܢܘܢ : * ܢܚܫܟ ܐܘܪܚܗܘܢ
7 ܘܢܗܘܘܢ ܒܗ ܡܫܪܥܢܘܬܐ. ܘܡܠܐܟܗ ܕܐܠܗܐ ܢܪܕܘܦ ܐܢܘܢ : * ܡܛܠ ܕܛܫܘ ܠܝ ܦܚܐ.
8 ܘܡܨܝܕܬܐ ܦܪܣܘ ܠܢܦܫܝ : * ܬܐܬܐ ܥܠܝܗܘܢ ܒܝܫܬܐ ܡܢ ܫܠܝܐ. ܘܡܨܝܕܬܐ ܕܦܪܣܘ ܬܐܚܘܕ
9 ܐܢܘܢ : ܘܒܓܘܡܨܐ ܕܚܦܪܘ ܢܦܠܘܢ ܒܗ. * ܢܦܫܝ ܕܝܢ ܬܪܘܙ ܒܐܠܗܐ : ܘܬܬܒܣܡ ܒܦܘܪܩܢܗ.
10 * ܘܟܠܗܘܢ ܓܪܡܝ ܢܐܡܪܘܢ : ܡܪܝܐ ܡܢܘ ܐܝܟ ܕܐܢܬ. ܕܡܦܨܐ ܐܢܬ ܠܡܣܟܢܐ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܗ :
11 ܘܠܡܣܟܢܐ ܘܠܒܨܝܪܐ ܡܢ ܡܢ ܕܒܐܙ ܠܗ ܒܛܠܘܡܝܐ. * ܩܡܘ ܣܗܕܐ ܕܥܘܠܐ : ܘܡܕܡ
12 ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܗܘܝܬ ܫܐܠܘܢܝ. * ܦܪܥܘܢܝ ܒܝܫܬܐ ܚܠܦ ܛܒܬܐ : ܘܐܘܒܕܘ ܢܦܫܝ ܡܢ ܒܢܝܢܫܐ.
13 * ܘܐܢܐ ܒܟܘܪܗܢܗܘܢ ܠܒܫܬ ܣܩܐ : ܘܡܟܟܬ ܒܨܘܡܐ ܢܦܫܝ. ܘܨܠܘܬܝ ܠܥܘܒܝ
14 15 ܬܗܦܘܟ : * ܐܝܟ ܪܚܡܐ ܘܐܝܟ ܐܚܐ ܡܗܠܟ ܗܘܝܬ. ܘܐܝܟ ܗܘ ܕܝܬܒ ܒܐܒܠܐ ܐܬܟܪܝܬ : * ܒܫܘܚܩܝ
16 ܐܬܟܢܫܘ ܘܚܕܝܘ ܒܝ. ܐܬܟܢܫܘ ܥܠܝ ܡܚܕܐ ܘܠܐ ܝܕܥܬ : * ܒܫܘܒܗܪܗܘܢ ܘܒܡܒܙܚܢܘܬܗܘܢ
17 ܚܪܩܘ ܥܠܝ ܫܢܝܗܘܢ. * ܡܪܝ ܣܓܝ ܚܙܝܬ : ܐܗܦܟ ܢܦܫܝ ܡܢ ܫܓܘܫܝܗܘܢ. ܘܡܢ
18 19 ܐܪܝܘܬܐ ܝܚܝܕܝܘܬܝ : * ܐܘܕܐ ܠܟ ܒܥܕܬܐ ܪܒܬܐ. ܘܒܝܬ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܐܫܒܚܟ : * ܠܐ ܢܚܕܘܢ ܒܝ
20 ܒܥܠܕܒܒܝ ܕܓܠܐ ܕܣܢܝܢ ܠܝ ܡܓܢ. ܘܡܪܡܙܝܢ ܒܥܝܢܝܗܘܢ : * ܘܫܠܡܐ ܠܐ ܡܡܠܠܝܢ.
21 ܘܥܠ ܡܟܝܟܐ ܕܐܪܥܐ ܢܟܠܐ ܡܬܚܫܒܝܢ : * ܦܬܚܘ ܥܠܝ ܦܘܡܗܘܢ. ܘܐܡܪܝܢ ܐܗ ܐܗ ܚܙܬ ܒܗ
22 23 ܥܝܢܢ : * ܚܙܝܬ ܐܠܗܐ ܠܐ ܬܫܬܘܩ. ܡܪܝ ܘܠܐ ܬܪܚܩ ܡܢܝ : * ܐܬܬܥܝܪ ܠܕܝܢܝ ܐܠܗܝ ܘܡܪܝ
24 ܘܚܙܝ ܠܐܘܠܨܢܝ : * ܕܘܢܝܢܝ ܐܝܟ ܙܕܝܩܘܬܟ ܡܪܝܐ : ܘܠܐ ܢܚܕܘܢ ܒܝ. * ܘܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܒܠܒܗܘܢ.
25 26 ܕܐܬܬܢܝܚܬ ܢܦܫܢ ܘܐܛܒܥܢܝܗܝ : * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܚܦܪܘܢ ܐܟܚܕܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܨܒܝܢ ܒܒܝܫܬܝ :
ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܬܪܘܪܒܝܢ ܥܠܝ ܢܠܒܫܘܢ ܒܗܬܬܐ.

Fiant ſicut pulvis corā vento, & angelus Domini impellat eos. Obſcuretur via illorum, ſintq; in ea lubricitates, & angelus Dei perſequatur illos. Quoniā abſconderunt mihi laqueos, & rete tetenderunt animæ meæ. Veniat ſuper eos malum ex improviſo, & rete quod tetenderunt, capiat illos: & in foveam quam foderunt, cadant. Anima autem mea exultabit in Deo, & delectabitur in ſalute ejus: Et omnia oſſa mea dicent ; Domine, quis eſt ut tu, qui eripis inopem ab inimico ſuo, & pauperem atque inopē ab eo qui rapit eū violentèr? Surrexerunt teſtes iniquitatis, & quod minimè ſciebam, rogaverunt me. Retribuerunt mihi malum pro bono, & perdiderunt animam meam ex hominibus. At ego in infirmitate eorum indutus ſum cilicio, & humiliavi animam meam jejunio, & oratio mea in ſinū meum reverſa eſt. Ut amicus & ut frater ambulabam, & velut is qui ſedet in mœrore, afflictus ſum. In paſſione mea convenerunt & gratulati ſunt mihi. Congregati ſunt adverſùm me diu, & ignoravi. Cum gloria eorum, & ludibrio ipſorum frenduerunt contra me dentibus ſuis. Domine mi, ſat vidiſti : reduc animam meam à tumultu eorum, & à leonibus unitatem meam. Confitebor tibi in Eccleſia magna, & inter populos multos laudabo te. Ne quæſo gaudeant mihi hoſtes mei falſidici, qui odio habent me gratis: qui nictant oculis ſuis. Et pacem minimè dicunt ; & adverſùs humilem terræ dolum machinantur. Aperuerunt contra me os ſuum, atque dixerunt ; Ehe, ehe, vidit in eo oculus noſter. Vidiſti Deus, nè ſileas: Domine mi, & ne recedas à me. Expergiſcere ad judicium meum, Deus meus & Dominus meus, & vide oppreſſionem meam. Judica me ſecundùm juſtitiam tuam, Domine : ut ne gaudiant mihi, Nec dicant in corde ſuo, Quievit anima noſtra, & ſubmerſim⁹ eū. Confundantur & pudefiāt ſimul qui volunt malū meū : et qui ſeſe attollunt contra me, induantur ignominia.

Verſio VULG. LAT.

5 Fiant tanquã pulvis ante faciẽ venti: &
6 angelus Dñi coarctans eos. Fiat via illorum
tenebræ & lubricum: & angelus
7 Dñi perſequens eos. Quoniã gratis abſconderunt
mihi interitũ laquei ſui: ſupervacuè
exprobraverunt animã meã.
8 Veniat illi laqueus, quem ignorat: & captio,
quã abſcondit, apprehendat eum:
9 & in laqueũ cadat in ipſum. Anima autẽ
mea exultabit in Dño: & delectabitur
10 ſuper ſalutari ſuo. Omnia oſſa mea dicẽt;
Dñe, quis ſimilis tibi? Eripiens inopẽ
de manu fortiorũ ejus: egenum & paupere
11 à diripientib⁹ eum. Surgentes teſtes
iniqui, quæ ignorabã interrogabant
12 me. Retribuebant mihi mala pro bonis:
13 ſterilitatẽ animæ meæ. Ego autẽ cũ mihi
moleſti eſſent, induebar cilicio. Humiliabam
in jejunio animã meã: & oratio
14 mea in ſinu meo convertetur. Quaſi
proximũ, & quaſi fratrẽ noſtrũ, ſic complacebã:
quaſi lugens & contriſtatus ſic
15 humiliabar. Et adverſũ me lætati ſunt, &
convenerunt: cõgregata ſunt ſup me flagella,
16 & ignoravi. Diſſipati ſunt, nec cõpuncti,
tentaverũt me, ſubſãnaverunt me
ſubſannatione: frẽduerũt ſup me dentib⁹
17 ſuis. Dñe, quãdo reſpicies? reſtitue animã
meam à malignitate eorum, à leonib⁹ unicam
18 meã. Confitebor tibi in eccleſia
19 magna, in populo gravi laudabo te. Non
ſupergaudeant mihi qui adverſantur mihi
inique: qui oderunt me gratis & annuunt
20 oculis. Quoniã mihi quidẽ pacificè
loquebantur: & in iracundia terræ loquentes,
21 dolos cogitabant. Et dilataverũt
ſup me os ſuũ: dixerũt; Eugè, eugè,
22 viderunt oculi noſtri. Vidiſti, Dñe, ne ſileas:
23 Dñe, ne diſcedas à me. Exurge et intende
judicio meo: De⁹ me⁹, & Dñs meus,
24 in cauſã meã. Judica me ſecundũ juſtitiã
tuam, Dñe Deus me⁹, & non ſupergaudeant
25 mihi. Non dicant in cordibus
ſuis; Eugè, eugè, animæ noſtræ: nec dicãt;
26 Devoravim⁹ eũ. Erubeſcant & revereantur
ſimul, qui gratulantur malis
meis. Induantur confuſione & reverentia
qui magna loquuntur ſuper me.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

5 Γεννηθήτωσαν ὡσεὶ (ʹ) χνοῦς κατὰ πρόσωπον ἀνέμου, † καὶ
6 ἄγγελος κυρίου ἐκθλίβων αὐτούς. † Γεννηθήτω ἡ ὁδὸς
αὐτῶν σκότος καὶ ὀλίσθημα, † καὶ ἄγγελος κυρίου
7 καταδιώκων αὐτούς. † Ὅτι δωρεὰν ἔκρυψάν μοι
διαφθορὰν παγίδος αὐτῶν, † μάτην ὠνείδισαν τὴν
8 ψυχήν μου. † (η) Ἐλθέτω αὐτοῖς παγὶς ἣν οὐ γινώσκουσι,
† καὶ ἡ θήρα ἣν ἔκρυψαν, (θ) Συλλαβέτω
αὐτούς, † καὶ ἐν τῇ παγίδι (ι) πεσοῦνται ἐν αὐτῇ.
9 † Ἡ δὲ ψυχή μου ἀγαλλιάσεται ἐπὶ τῷ κυρίῳ, † τερφθήσεται
10 ἐπὶ τῷ σωτηρίῳ αὐτοῦ. † Πάντα τὰ ὀστᾶ
μου ἐροῦσι, (κ) Κύριε τίς ὅμοιός σοι; † ῥυόμενος (λ)
πτωχὸν ἐκ χειρὸς στερεωτέρων αὐτοῦ, † καὶ πτωχὸν καὶ
11 πένητα ἀπὸ τῶν διαρπαζόντων αὐτόν. † Ἀναστάντες
μάρτυρες ἄδικοι, ἃ οὐκ ἐγίνωσκον, (μ) ἐπηρώτων
12 με. † (ν) Ἀνταπεδίδοσάν μοι πονηρὰ (ξ) ἀντὶ καλῶν,
13 † καὶ ἀτεκνίαν τῇ ψυχῇ μου. † Ἐγὼ δὲ ἐν τῷ
αὐτοὺς παρενοχλεῖν μοι, ἐνεδυόμην σάκκον· † καὶ
ἐταπείνουν ἐν νηστείᾳ τὴν ψυχήν μου, † καὶ ἡ προσευχή
14 μου εἰς κόλπον μου (ο) ἀποστραφήσεται. † Ὡς πλησίον
ὡς ἀδελφὸν ἡμέτερον οὕτως εὐηρέστουν, † ὡς
15 πενθῶν καὶ σκυθρωπάζων οὕτως ἐταπεινούμην. † Καὶ
κατ᾽ ἐμοῦ (π) εὐφράνθησαν καὶ συνήχθησαν, † συνήχθησαν
16 ἐπ᾽ ἐμὲ μάστιγες καὶ οὐκ ἔγνων· † Διεσχίσθησαν καὶ οὐ
κατενύγησαν. † ἐπείρασάν με, ἐξεμυκτήρισάν με
μυκτηρισμόν, † ἔβρυξαν ἐπ᾽ ἐμὲ τοὺς ὀδόντας αὐτῶν.
17 Κύριε πότε ἐπόψῃ, † ἀποκατάστησον τὴν ψυχήν
μου ἀπὸ τῆς κακουργίας αὐτῶν, † ἀπὸ λεόντων
18 τὴν (ρ) μονογενῆ μου. † Ἐξομολογήσομαί (σ) σοι καὶ
ἐν ἐκκλησίᾳ πολλῇ, † ἐν λαῷ βαρεῖ αἰνέσω σε.
19 † Μὴ ἐπιχαρείησάν μοι οἱ ἐχθραίνοντές μοι (τ) ματαίως,
† οἱ (υ) μισοῦντές με δωρεάν, καὶ διανεύοντες
20 ὀφθαλμοῖς. † Ὅτι ἐμοὶ μὲν εἰρηνικὰ ἐλάλουν,
21 † καὶ (φ) ἐπ᾽ ὀργῇ δόλους διελογίζοντο. † Καὶ ἐπλάτυναν
ἐπ᾽ ἐμὲ τὸ στόμα αὐτῶν, † (χ) εἶπαν, Εὖγε,
22 εὖγε, εἶδον οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν. † Εἶδες κύριε, μὴ
23 παρασιωπήσῃς, † κύριε μὴ ἀποστῇς ἀπ᾽ ἐμοῦ. † Ἐξεγέρθητι
κύριε, καὶ πρόσχες τῇ κρίσει μου, † ὁ θεός
24 μου, καὶ ὁ κύριός μου εἰς τὴν δίκην μου. † Κρῖνόν (ψ)
με κύριε κατὰ τὴν δικαιοσύνην σου † κύριε ὁ θεός μου,
25 καὶ μὴ ἐπιχαρείησάν μοι. † Μὴ εἴποισαν ἐν καρδίαις
αὐτῶν, Εὖγε, εὖγε τῇ ψυχῇ ἡμῶν· † μηδὲ (ω) εἴποιεν,
26 Κατεπίομεν αὐτόν. † Αἰσχυνθείησαν καὶ ἐντραπείησαν
ἅμα οἱ ἐπιχαίροντες τοῖς κακοῖς μου· † ἐνδυσάσθωσαν
αἰσχύνην καὶ ἐντροπὴν † οἱ (ʹ) μεγαλορρημονοῦντες ἐπ᾽ ἐμέ.

MS.A. (ʹ) χνοῦς (η) Ἐλθάτω (θ) Συλλαβέτω αὐτόν, (ι) πεσεῖται (κ) Κύριε, κύριε τίς (λ) πτωχὸν ἐκ στερεωτέρων αὐτοῦ, (μ) ἠρώτων με. (ν) Ἀνταποδίδοσαν (ξ) ἀντὶ ἀγαθῶν, (ο) ἀποστραφείτω. (π) ηὐφράνθησαν (ρ) μονογενῆ μου. (σ) σοι ἐν ἐκκλησίᾳ (τ) ἀδίκως, (υ) μισοῦντες δωρεάν, (φ) ἐπ᾽ ὀργὴν (χ) εἶπον, (ψ) μοι (ω) εἴποισαν, (ʹ) μεγαλορρημονοῦντες

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

6 Fiant tanquã pulvis ante faciem venti: et angelus Domini [e] tribulans eos. 7 Fiat via eorum tenebræ, & lubricum: & angelus Domini perſequens eos. 8 Quoniam (e) gratìs abſconderunt [f] mihi interitum laquei ſui: (f) ſupervacuè exprobraverunt animam meam. 9 Veniat illis (g) laqueus, quem ignorant: & [g] captio, quam occultaverunt, comprehendat illos: & in laqueum cadant in ipſum. 10 Anima autem mea exultabit in Domino, delectabitur ſuper (h) ſalute ejus: 11 Omnia oſſa mea [h] dicent; Domine, quis ſimilis tibi? 12 Eripiens inopem de manu [i] fortiorum ejus, & egenum, & pauperem à diripientibus eum. 13 [k] Inſurgentes teſtes iniqui, quæ ignorabam, interrogabant me. 14 Retribuebant mihi mala (i) pro bonis, et (k) [l] ſterilitatem animæ meæ. 15 Ego autem, cùm mihi moleſti (l) eſſent, induebar cilicio, 16 et humiliabã in jejunio animam meam: & oratio mea in ſinum meũ (m) convertetur. 17 Quaſi (n) proximũ, quaſi fratrẽ noſtrũ, ita complacebã: (o) quaſi lugens, et contriſtatus, ſic [m] humiliabar. 18 Et [n] adverſùs (p) me lætati ſunt, & convenerunt. [o] Congregata ſunt ſuper me (q) flagella, et ignoravi. 19 [p] Diſſipati (r) ſunt, nec compuncti: (ſ) tentaverunt me, ſubſannaverũt me ſubſannatione; frenduerũt ſuper me dentibus ſuis. 20 Domine, quando [q] reſpicies? reſtitue animam meam à (t) malignitate [r] eorum, à leonib⁹ (u) unicã meã. 21 Confitebor [ſ] tibi, et (x) in eccleſia magna, in populo (y) gravi laudabo te. 22 Non ſupergaudeant mihi, qui adverſantur mihi (z) vanè, qui oderunt me gratìs, & annuũt oculis. 23 Quoniã mihi quidẽ (ω) pacificè loquebantur, et in [t] iracundia (aa) dolos cogitabant. 24 Et dilataverunt ſuper me os ſuum: dixerũt, Eugè, eugè, [v] viderunt oculi noſtri. 25 [x] Vidiſti, Domine, ne (bb) ſileas: Domine, ne diſcedas à me. 26 Exurge, Domine, & intende judicio meo, Deus meus, & Dominus meus, in cauſam (cc) meam. 27 Judica me ſecundùm (dd) juſtitiã tuam [y], Domine Deus meus: & non ſupergaudeant mihi. 28 Non dicant in cordibus ſuis, Eugè, eugè, animæ noſtræ: nec dicant, Devoravimus eum. 29 Erubeſcant, & [z] revereantur ſimul, qui gratulantur malis meis. 30 Induantur confuſione, & verecundiâ, qui (ee) [aa] magna loquuntur ſuper me.

Verſio ÆTHIOPICA.

5 ለይኩኑ፡ከመ፡ጸበል፡ዘቅድመ፡ገጸ፡ነፋስ። ወ 6
መልአከ፡እግዚአብሔር፡ሊይሣቅዮሙ፨
6 ለትኩን፡ፍኖቶሙ፡ ድኅፀ፡ወጽልመተ። ወመ 7
ልአከ፡እግዚአብሔር፡ሊይስድዶሙ፨ እስ 8
7 መ፡በከንቱ፡ ኀብኡ፡ሊተ፡መሥገርተ፡ ሞቶ
ሙ። ወበከንቱ፡ አመንዘዝዋ፡ ለነፍስየ፨
8 ለትምጽኦሙ፡ መሥገርት፡ እንተ፡ ኢያአም 9
ሩ። ወትእኅዞሙ፡ መሥገርት፡ እንተ፡ ኀብ
ኡ። ወይደቁ፡ውስተ፡ይእቲ፡መሥገርት፨
ወነፍስየሰ፡ትትፌሣሕ፡በእግዚአብሔር። ወ 10
9 ትትሐሠይ፡በአድኅኖቱ፨ ኵሉ፡አዕጽም 11
ትየ፡ይብሉከ። እግዚኦ፡ መኑ፡ከማከ፨
10 ታድኅኖ፡ለነዳይ፡እምእደ፡ዘይትዔገሎ። ለ 12
ነዳይ፡ወለምስኪን፡እምእደ፡ዘይመስጦ፨
ተንሥኡ፡ላዕሌየ፡ሰማዕተ፡ዐመፃ። ወዘኢየአ 13
ምር፡ነበቡ፡ላዕሌየ፨ ፈደዩኒ፡እኪተ፡ህየ 14
ንተ፡ሠናይት። ወአኅጥዕዋ፡ውሉደ፡ለነፍስ
11 የ፨ ወአንሰ፡ሶበ፡ አስርሐኒ፡ለበስኩ፡ሠ 15
12 ቀ፨ ወአሕመምክዋ፡በጾም፡ለነፍስየ። 16
ወጸሎትየኒ፡ገብአ፡ውስተ፡ሕፅንየ፨ ከመ 17
13 ዘ፡ለአኅዊየ፡ወለቢጽየ፡ ከማሁ፡አድሎኩ።
ወከመ፡ ዘይላሑ፡ ወይቴክዝ፡ ከማሁ፡አትሐ
ትኩ፡ ርእስየ፨ ተጋብኡ፡ላዕሌየ፡ ወተፈ 18
14 ሥሑ። ተማከሩ፡ ይቀሥፉኒ፡ ወኢያእመር
ኩ፨ ተሰብሩ፡ ወኢይኔስሑ። ፈተኑኒ፡ 19
ወተሳለቁ፡ላዕሌየ፡ወሠሐቁኒ። ወሐቀዩ፡ስነኒ
ሆሙ፡ላዕሌየ፨ እግዚኦ፡ማእዜኑ፡ትፈት 20
15 ሕ፡ሊተ። አድኅና፡ለነፍስየ፡እምእከየ፡ምግ
ባሮሙ። ወእምአናብስት፡ ለብሕቱትየ፨
16 እገኒ፡ለከ፡ እግዚኦ፡በውስተ፡ ማሕበር፡ ዐቢ 21
ይ። ወእሴብሐከ፡በውስተ፡ሕዝብ፡ክቡድ።
ወኢይትፈሥሑ፡ላዕሌየ፡እለ፡ ይጸልኡኒ፡ በ 22
17 ዐመፃ። እለ፡ይፀርሩኒ፡ በከንቱ፡ወይትቀጸቡ
ኒ፡በአዕይንቲሆሙ፨ እስመ፡ሊተሰ፡ሰላመ፡ 23
ይትናገሩኒ። ወይመክሩ፡በቍጥዓ፡ ያመንስው
18 ኒ፨ ወአብቀዉ፡አፉሆሙ፡ላዕሌየ። ወይቤ 24
ሉ፡ እንቋዕ፡ እንቋዕ፡ ርእየነሁ፡ በአዕይንቲ
19 ነ፨ ርኢ፡እግዚኦ፡ወኢትርመም። እግዚ 25
ኦ፡ኢትርሐቅ፡እምኔየ፨ ተንሥእ፡እግ 26
ዚኦ፡ አጽምእ፡ ፍትሕየ። አምላኪየ፡ እግዚ
20 እየ፡ውስተ፡ቀሠትየ፨ ፍታሕ፡ሊተ፡ እ 27
ግዚኦ፡አምላኪየ፡ በከመ፡ጽድቅከ። ወኢይ
21 ትፈሥሑ፡ላዕሌየ፨ ወኢይበሉ፡በልበ 28
ሙ፡ እንቋዕ፡ እንቋዕ፡ላዕለ፡ ነፍስየ። ወኢይ
22 በሉ፡ውሕጥናሁ፨ ወይትኀፈሩ፡ወይኅሰ 29
ሩ፡እለ፡ ይትፌሥሑ፡በሕማምየ፨ ለይል 30
23 በሱ፡ኀፍረተ፡ወኀሳረ፡ እለ፡ የዐቢዩ፡ አፉሆ
ሙ፡ ላዕሌየ።

INTERP. ÆTHIOP. [e] excrucians eos. [f] mihi laqueum *ut* perdant me: [g] laqueus, quẽ [h] dicent tibi; [i] eorum qui opprimunt eum, [k] Inſurgunt adverſus me teſtes, [l] et partu animã meam orbant. [m] humiliabam meipſum. [n] convenerunt adverſus [o] Conſultârunt ut me flagellent, & [p] Confracti ſunt, [q] reddes mihi judiciũ? [r] operum eorũ, [ſ] tibi Domine, [t] doloſè cogitabant & pertentabant me. [u] vidimus eum oculis noſtris. [x] Vide Domine, [y] Domine [z] revereantur qui [aa] magnificant ora ipſorum ſuper

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 6 وليكونوا مثل الغبار امام الريح * وملاك الرب يحرجهم * لتكن طريقهم زلقة ظلمة * وملاك الرب
7 8 يطردهم * لانهم اخفوا لي هلاك فخهم مجانا * وعيروا نفسي باطلا * فلياتِ عليهم الفخ الذي لا
9 يعرفونه * والمصيدة التي اخفوها فلتصطادهم * وفي الفخ يقعون * نفسي تبتهج بالرب وتسر بخلاصه
10 * عظامي كلها تقول يا رب من يشبهك * تخلص المسكين من يدي من هو اقوى منه * والفقير
11 12 والبايس من يد الذين يخطفونهما * قام علي شهود الزور * وعما لم اعلم سايلوني * جازوني بدل
13 الخير شرا * وابادوا نفسي * وانا عند ما قاوموني لبست مسحا * وبالصيام اذللت نفسي * وصلاتي عادت
14 15 الي حضني * مثل صاحب واخ لي * كذلك كنت ارضيه * وكمن ينوح ويقطب كذلك تواضعت * اجتمعوا
16 علي وفرحوا * اجتمع علي الاشرار ولم اعلم * تفرقوا ولم يندموا * جربوني وهزوا بي هزءا * صروا علي اسنانهم
17 18 * يا رب متى تنظر * رد نفسي عن شرهم * ومن الاسد نج وحدتي * اشكرك يا رب في جماعة كثيرة
19 وفي شعب صالح اسبحك * لا تسر بي المعادين لي ظلما * الذين شنوني مجانا * ويتغامزون بعيونهم
20 * لانهم تكلموا معي بالسلامة * وبالغضب فكروا بالدغل * وعلى المتواضعين في الارض يقولون
21 22 الكذب * وسعوا علي افواههم وقالوا نعما نعما رايت عيوننا * قد رايت يا رب ولا تغفل * يا رب لا تبعد
23 24 عني * قم يا رب وانظر سريعا في قضاي * الهي وربي احكم في ظلامتي * احكم لي مثل برك * ربي
25 26 والاهي لا تسرهم بي * ولا يقولون في قلوبهم نعما هنيا لنفوسنا * ولا يقولون قد ابتلعناه * ليخز
ويخجل جميعا الذين يفرحون بشروري * وليلبس الخزي والعار الذين يعظمون علي القول *

*5 Et ſint veluti pulvis ante ventũ, & Angelus
6 Domini affligat eos. Sit via eorum lapſans,
tenebroſa, & Angelus Domini inſectetur
7 eos. Eò quòd abſconderunt mihi exitium
laquei ſui gratìs, & improperârunt
8 animæ meæ injuſtè. Adveniat eis laqueus
quem ignorant: et rete, quod abſconderunt
mihi, capiat eos: & in laqueum cadant.
9 Anima mea exhilarabitur in Domino, &
10 exultabit in ſalute ejus. Oſſa mea cuncta
dicent; O Domine, quis eſt ſimilis tibi? liberator
miſeri de manibus ejus qui potentior
eſt ipſo, & pauperis atque inopis de
11 manu eorũ qui rapiunt eos. Inſurrexerunt
in me teſtes falſitatis, & de eo quod neſcivi,
12 interrogârunt me. Retribuerunt mihi
pro bono malũ, et perdiderunt animã meã,
13 Et ego, quum mihi reſtitiſſent, indutus ſum
cilicio, & jejunio humiliavi animam meã,
& oratio mea reverſa eſt in ſinum meum.
14 Tanquam proximo & fratri meo, ſic obſequebar
ei: & velut is qui gemit & atratus
15 eſt, ſic me humiliavi. Congregati
ſunt adverſùm me, & lætati ſunt: congregati
ſunt adverſùs me mali, & ignoravi.
Diſſipati ſunt, & non pœnituit eos.
16 Tentaverunt me, & illuſerunt mihi illuſione:
17 frenduerunt in me dentibus ſuis. O
Domine, quando reſpicies? Revoca animã
meam à malignitate eorum, & à leone libera
18 ſingularitatem meam. Gratias agam
tibi, Domine, inter cœtum copioſum, & in
19 populo bono te celebrabo. Ne lætifices in
me adverſantes mihi iniquè, qui oderunt
me gratìs, & invicem innuunt oculis ſuis.
20 Nam ipſi locuti ſunt mecum pacem, et cum
iracundia cogitârunt dolum, & de humilib⁹
21 in terra dicũt mendaciũ. Dilataverunt
adversũ me ora ſua, & dixerunt; Euge,
22 euge, viderunt oculi noſtri. Jam vidiſti, O
Domine, ne negligas: O Domine, ne recedas
23 à me. Surge O Domine, et vide citò judiciũ
meum: Deus meus, & Domine mi, judica
24 de oppreſſione mea. Judica mihi ſecundùm
juſtitiam tuam: Domine mi & Deus
25 me⁹, ne lætifices eos in me. Neve dicant in
cordibus ſuis, Euge animabus noſtris, et ne
26 dicant, Jam deglutivimus eum. Confundantur,
et pudefiant ſimul qui gaudent de
malis meis: et induantur confuſione et opprobrio, qui magnificant in me ſermonem.*

תהלים: לו לז

Magnificetur : ſemper dicent & ,meam juſtitiam *volentes* exultabunt & , Laudabunt

27 ירנו וישמחו חפצי צדקי ויאמרו תמיד יגדל

; tuam juſtitiam loquetur mea lingua Et .ſui ſervi pacem *volens* Dominus

28 יהוה החפץ שלום עבדו: ולשוני תהגה צדקך

.tuam laudem die omni

כל־היום תהלתך:

PSAL. XXXVI. לו

interiori in impio prævaricationis Dictum .Davidi Domini ſervo Victori

1 למנצח לעבד־יהוה לדוד: נאם־פשע לרשע בקרב

2 *ſe ad* lenivit Quoniam .ejus *oculorum oppoſito ex* Dei pavor non : mei cordis

לבי אין־פחד אלהים לנגד עיניו: 3 כי־החליק אליו

,iniquitas ejus oris Verba .*odiendum ad* ſuam iniquitatē *inveniendum ad*, ipſius oculis in

בעיניו למצא עונו לשנא: 4 דברי־פיו און

: ſuo cubili *ſuper cogitabit* Iniquitatem .*benefaciendum ad* intelligere deſiit : dolus &

ומרמה חדל להשכיל להיטיב: 5 און יחשב על־משכבו

cœlis in Domine .*reprobabit* non malum ; bonam non viam *ſuper ſe ſtatuet*

יתיצב על־דרך לא־טוב רע לא ימאס: 6 יהוה בהשמים

, *Dei* montes ſicut tua Juſtitia .*æthera* ad uſque tua veritas ; tua miſericordia

חסדך אמונתך עד־שחקים: 7 צדקתך כהררי־אל

precioſa Quàm .Domine ſervabis animal & hominē : multa abyſſus tua judicia

משפטיך תהום רבה אדם ובהמה תושיע יהוה: 8 מה־יקר

.ſperabunt tuarum alarum umbra in hominum filii & ! Deus tua miſericordia

חסדך אלהים ובני אדם בצל כנפיך יחסיון:

.eis dabis potum tuarū deliciarū torrente & ; tuæ domus pinguedine è Inebriabuntur

9 ירוין מדשן ביתך ונחל עדניך תשקם:

.lumen videbimus tuo lumine in : *vitarum* vena tecum Quoniam

10 כי עמך מקור חיים באורך נראה־אור:

.corde rectos ad tuam juſtitiam & ; te ſcientes ad tuam miſericordiam Trahe

11 משך חסדך לידעיך וצדקתך לישרי־לב:

ceciderunt Ibi .me faciat *movere* ne impiorū manus & ; ſuperbiæ pes *me invadat* Ne

12 אל־תבואני רגל גאוה ויד רשעים אל־תנדני: 13 שם נפלו

.ſurgere potuerunt non & ,ſunt expulſi : iniquitatis operarii

פעלי און דחו ולא־יכלו קום:

PSAL. XXXVII. לז

.iniquitatem facientes *in* zelaveris ne ; *malignos in ſuccenſeas* Ne .Davidi

1 לדוד אל־תתחר במרעים אל־תקנא בעשי עולה:

.decident germinis olus ſicut & ; ſuccidentur velociter herba tanquam Quoniam

2 כי כחציר מהרה ימלו וכירק דשא יבולון:

.veritatem paſce & , terram habita : bonum fac & , Domino in Spera

3 בטח ביהוה ועשה־טוב שכן־ארץ ורעה אמונה:

ſuper Devolve .tui cordis petitiones tibi dabit & ; Domino *ſuper* te delecta Et

4 והתענג על־יהוה ויתן־לך משאלת לבך: 5 גול על־

.faciet ipſe & , eo *ſuper* ſpera & ; tuam viam Dominum

יהוה דרכך ובטח עליו והוא יעשה:

תרגום TARGUM.

27 יבועון ויחדון תבעי צדקי ויימרון תדירא
יסגי יקרא דיי דצבי שלמא דעבדיה:
28 ולישני תרנן צדקתך כולי יומא תושבחתך:

לו

1 לשבחא לעבדא דיי לדוד: 2 אמר מרדא
לחיבא במציעות לבבי לית דחלתא דיי
לקבל עינוי: 3 ארום שעיע ליה בעינוי למשכח
חובין למסני אולפנא: 4 מלי פומיה רשעא
ונכילו פסק למשכל לאוטבא: 5 רשעא
חשיל על שויה יתעתד על אורח דלא טב
בישׁ לא ירחק: 6 יי בשמי שמיא טובך הימנותך
עד שחקי: 7 צדקותך רמא היך טוריא תקיפיא
דינך עמיקין היך תהומא רבא בני נשא
ובעירא תפרוק יי: 8 כמה יקיר טובך יי ובני
נשא בטלל שכינתך ישורון לרוחצן: 9 יתרוון
כדהין ברכתא דביתך ומבוע בסימותך
תשקנון: 10 ארום עמך טיפי מין חיין בזיו
יקרך נחמי נהורא: 11 ננוד טובך על ידעך
וצדקתך על תריצי לבא: 12 לא תארעננא
רגלא דגיותנא וידיהון דרשיעיא לא
תטלטלנני: 13 תמן נפלו עבדי שקר ידחין ולא
יוסיפון למקם:

לז

1 לדוד לא תגרג במבאשין למהוי דכוותהון
ולא תטנין בעבדי שלומא למזדוג עמהון:
2 מטול דסופיהון היך עסבא כסרהוביא
יתמוללון והיך ירוק דתאה יגתרון: 3 רחץ
במימרא דיי ועבד טב שרי ארעא וחסן
בהימנותא: 4 ותתפנק על יי ויתן לך משילי
לבך: 5 גלי על יי ארחתך וסבור על מימריה
והוא יעבד:

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Gaudeant & lætentur qui quærunt juſtitia meam : & dicant jugiter , Magnificet gloria Domini, qui vult pacem ſervi ſui. lingua mea meditabitur juſtitiam tuam ; ta die laudem tuam.

Ad canendum ſervo Domini Davidi.

PSAL. XXXVI.

DIcit ſcelus impio in medio cordis m Non eſt timor Domini coram oculis ej Quia blanditur ſibi in oculis ſuis ut in niat *peccata*, & odio proſequatur d ctrinam. Verba oris ejus impietas & d lus : deſtitit intelligere, ut benefacere Impietatem cogitat in cubili ſuo : mane via non bona ; malitiam non execra Domine in cœlis cœlorum bonitas tua des tua uſque ad æthera. Juſtitia tua exc ſa, ſicut montes fortes ; judicia tua p funda ſicut abyſſus magna : homines & menta ſalvabis Domine. Quàm prec eſt miſericordia tua Dñe! homines aute umbra majeſtatis tuæ morabuntur cum f cia. Inebriabuntur *quaſi* pinguedine nedictionis domus tuæ; & de ſcatur dulcedinis tuæ potabis eos. Quoniam a te ſunt ſtillicidia aquæ viventis: *in ſplen* gloriæ tuæ videbimus lumen. Protrahe nitatem tuam ad cognoſcentes te : & j tiam tuam ad eos qui recti ſunt corde. occurrat in me pes ſuperbi ; & manus piorum non *commoveant* me. Ibi cec runt operarii falſitatis; impulſi ſunt, nec dunt ut ſurgant.

Davidi.

PSAL. XXXVII.

NE *exciteris* in malignos ut fias ſi milis ; nec zelaveris in operarios iniq tis ut *conjungaris* cum eis. Quoniā fin rum ſicut herba ; citò ſuccidentur, & quam viriditas herbæ defluent. Conf verbo Domini, & fac bonum : inh terram, & *fortis eſto* in fide. Et dele in Domino ; & dabit tibi petitiones co tui. Manifeſta Domino viam tuam : ra in verbo ejus, & ipſe operabitur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

27 * ܢܫܒܚܘܢ ܘܢܚܕܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܨܒܝܢ ܠܙܕܝܩܘܬܝ : ܘܢܐܡܪܘܢ ܒܟܠܙܒܢ ܪܒ ܗܘ ܡܪܝܐ. ܕܨܒܐ

28 ܒܫܠܡܗ ܕܥܒܕܗ : * ܘܠܫܢܝ ܬܪܢܐ ܙܕܝܩܘܬܟ. ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܬܫܒܘܚܬܟ.

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * * ܟܕ ܪܕܦ ܗܘܐ ܠܗ ܫܐܘܠ. ܘܐܦ ܡܟܣܢܘܬܐ

2 ܕܒܥܠܕܒܒܝܢ. ܘܬܘܒ ܡܡܠܠܐ ܥܠ ܐܠܗܘܬܐ. ܦܬܓܡ ܡܢ. * ܡܬܚܫܒ ܥܘܠܐ ܥܘܠܐ

3 ܒܠܒܗ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܕܚܠܬܗ ܕܐܠܗܐ ܠܘܩܒܠ ܥܝܢܘܗܝ : * ܡܛܠ ܕܣܢܝܐ ܗܘ

4 ܒܥܝܢܘܗܝ ܕܢܫܟܚ ܚܛܗܘܗܝ ܘܢܣܢܐ ܐܢܘܢ. * ܦܬܓܡܐ ܕܦܘܡܗ ܥܘܠܐ ܘܢܟܠܐ : ܘܠܐ ܨܒܐ

5 ܠܡܥܒܕ ܛܒܬܐ. * ܥܘܠܐ ܡܬܚܫܒ ܥܠ ܡܫܟܒܗ : ܘܡܬܢܩܦ ܠܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܫܦܝܪܐ

6 ܕܢܚܛܐ. * ܡܪܝܐ ܒܫܡܝܐ ܛܝܒܘܬܟ : ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܥܕܡܐ ܠܥܢܢܝ ܫܡܝܐ. * ܙܕܝܩܘܬܟ ܐܝܟ ܛܘܪܐ 7

8 ܕܐܠܗܐ : ܘܕܝܢܝܟ ܐܝܟ ܬܗܘܡܐ ܪܒܐ. ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ ܦܪܘܩ ܐܢܬ ܡܪܝܐ : * ܡܐ ܝܩܝܪܝܢ

9 ܚܢܢܝܟ ܐܠܗܐ. ܘܒܢܝ ܐܢܫܐ ܒܛܠܠܐ ܕܟܢܦܝܟ ܢܬܛܫܘܢ : * ܢܪܘܘܢ ܡܢ ܫܘܡܢܐ ܕܒܝܬܟ.

10 ܘܡܢ ܢܚܠܟ ܒܣܝܡܐ ܬܫܩܐ ܐܢܘܢ : * ܡܛܠ ܕܥܡܟ ܡܒܘܥܐ ܕܚܝܐ ܗܘ. ܘܒܢܘܗܪܟ ܢܚܙܐ

11 ܢܘܗܪܐ : * ܛܪ ܚܢܢܟ ܠܫܒܒܝܟ. ܘܙܕܝܩܘܬܟ ܠܬܪܝܨܝ ܠܒܐ : * ܠܐ ܬܝܬܐ ܥܠܝܢ ܪܓܠܐ 12

13 ܥܫܝܢܬܐ : ܘܐܝܕܝܗܘܢ ܕܚܛܝܐ ܠܐ ܢܙܝܥܢ : * ܡܛܠ ܕܬܡܢ ܢܦܠܘ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܫܘܩܪܐ.

ܐܬܕܚܝܘ ܘܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܠܡܩܡ. * ܫܘܒܚܐ ܘܪܫܐ ܕܡܣܩܬܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

1 * ܕܘܝܕ. ܡܛܠ ܗܢܘܢ ܕܐܡܪܝܢ ܕܐܡܬܝ ܬܒܥ ܐܠܗܐ ܡܢ ܡܬܪܡܪܡܢܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܛ.

2 ܠܐ ܬܐܣܢ ܒܒܝܫܐ. ܘܠܐ ܬܛܢ ܒܥܒܕܝ ܥܘܠܐ : * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܥܡܝܪܐ ܡܚܕܐ ܢܝܒܫܘܢ.

3 ܘܐܝܟ ܝܘܪܩܐ ܕܬܕܐܐ ܢܬܝܒܫܘܢ : * ܣܒܪ ܒܐܠܗܐ ܘܥܒܕ ܛܒܬܐ. ܥܡܪ ܒܐܪܥܐ ܘܒܥܝ

4 ܗܝܡܢܘܬܐ : * ܣܒܪ ܒܡܪܝܐ ܘܢܬܠ ܠܟ ܫܐܠܬܐ ܕܠܒܟ. * ܓܠܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܘܪܚܟ 5

ܘܣܒܪ ܒܗ : ܘܗܘ ܢܥܒܕ.

* Laudes canant & gaudeant qui volunt riam meam , dicantque omni tempore magnus eſt Dñs , qui gratam habuit p ſervi ſui. Et lingua mea fatebitur ju tuam, totâque die laudes tuas.

PSAL. XXXVI.

Davidis: Quum ſectaretur eum Saul. autem objurgatio inimicorum noſtr Ac præterea ſermo de Deitate. Verſ.

COntemplatur iniquus flagitium in c ſuo , quia non eſt timor Dei ante o ejus : Quia exoſum eſt in oculis ejus quere peccata ſua, & odiſſe illa. Ser ris ejus dolor eſt atque fraus, nec vult bonum. Dolorem cogitat ſuper cubil um,& incedit per viam quæ nequaqua na eſt, ut delinquat. Domine, in cœl ſericordiæ tuæ , & fides tua uſque ad c cœli. Juſtitia tua ſicut montes, O D judicia tua ſicut abyſſus magna : hom jumenta ſalvas tu , Domine. Quàm miſericordiæ tuæ, Deus. Et filii hom umbrâ alarum tuarum protegentur. briabuntur pinguedine domûs tuæ, torrente tuo ſuavi potabis eos : Quo fons vitæ tecum eſt, & per lumen tuum mus lumen. Cuſtodi miſericordiam vicinis tuis , & juſtitiam tuam rectis c Ne adducas ſuper nos pedem fortem, & nus ſceleratorum ne moveat nos. Quo ibi cadunt omnes operantes falſitatem ruunt,nec valent ſurgere.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. XXXVII.

Dàvidis. De iis qui dicunt , Quando ſumit Deus vindictam de inſolent Verſ. 49.

NE invideas ſceleſtis , neque zeleris entes iniquitatem. Quoniam ſic ſtucæ confeſtim areſcunt, & ſicut olus exiccantur. Spera in Deo & fac bon habita in terra, & quære fidem : Sp Domino, & dabit tibi petitionem cordis Dirige coram Domino viam tuam , & in eo, & ipſe faciet :

Verſio VULG. LAT.

27 Exultent & lætentur qui volunt juſtitiã
meam: & dicant ſemper; Magnificetur
28 Dominus, qui volunt pacẽ ſervi ejus. Et
lingua mea meditabitur juſtitiam tuã, to-
tã die laudem tuam.

1 In finem, ſervo Domini ipſi Da-
vid. XXXV.

2 DIxit injuſtus ut delinquat in ſemet-
ipſo: non eſt timor Dei ante ocu-
3 los ejus. Quoniã doloſè egit in conſpe-
ctu ejus: ut inveniatur iniquitas ejus ad
4 odium. Verba oris ejus iniquitas, & do-
5 lus: noluit intelligere ut benè ageret. In-
iquitatẽ meditatꝰ eſt in cubili ſuo: aſti-
tit omni viæ non bonæ, malitiã autẽ non
6 odivit. Domine, in cœlo miſericordia
7 tua: & veritas tua uſque ad nubes. Ju-
ſtitia tua ſicut montes Dei: judicia tua
abyſſus multa. Homines & jumenta ſal-
8 vabis, Domine: Quemadmodũ multipli-
càſti miſericordiã tuã, Deus. Filii autẽ
hominũ, in tegmine alarũ tuarũ ſpera-
9 bunt. Inebriabuntur ab ubertate do-
mûs tuæ: & torrente voluptatis tuæ po-
10 tabis eos. Quoniã apud te eſt fons vi-
tæ: & in lumine tuo videbimus lumen.
11 Prætende miſericordiã tuã ſcientibus te,
& juſtitiã tuã his, qui recto ſunt corde.
12 Non veniat mihi pes ſuperbiæ: & ma-
13 nus peccatoris non moveat me. Ibi ce-
ciderunt qui operantur iniquitatẽ: ex-
pulſi ſunt, nec potuerunt ſtare.

1 Pſalmus ipſi David.
XXXVI.

NOli æmulari in malignantibus: neq;
2 zelaveris facientes iniquitatẽ. Quoniam
tanquàm fœnum velociter areſcent: &
quemadmodùm olera herbarum citò de-
3 cident. Spera in Domino, & fac bonita-
tem: & inhabita terram, & paſcêris in
4 divitiis ejus. Delectare in Domino: &
5 dabit tibi petitiones cordis tui. Revela
Domino viam tuam, & ſpera in eo: &
ipſe faciet.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

27 †(α) Ἀγαλλιάσαιντο καὶ εὐφρανθείησαν †(β) οἱ θέ-
λοντες τὴν δικαιοσύνην μου, † καὶ εἰπάτωσαν δι-
απαντὸς, (γ) Μεγαλυνθείη ὁ κύριος, † οἱ θέλοντες
28 τὴν εἰρήνην τοῦ δούλου αὐτοῦ. † Καὶ ἡ γλῶσσά
μου μελετήσει τὴν δικαιοσύνην σου, † ὅλην τὴν
ἡμέραν τὸν ἔπαινόν σου.

MS. A. (α) Ἀγαλλιάσοιντο, (β) ἐπὶ σοὶ οἱ θέ-
λοντες (γ) Μεγαλυνθήτω

1 Εἰς τὸ τέλος, τῷ (α) δούλῳ κυρίου τῷ
Δαυίδ. λε'.

2 †ΦΗσὶν ὁ παράνομος τοῦ ἁμαρτάνειν ἐν ἑαυτῷ,
† οὐκ ἔστι φόβος θεοῦ ἀπέναντι τῶν ὀφθαλμῶν αὐ-
3 τοῦ. † Ὅτι ἐδόλωσεν ἐνώπιον αὐτοῦ, † τοῦ εὑρεῖν
4 τὴν ἀνομίαν αὐτοῦ καὶ μισῆσαι. † Τὰ ῥήματα τοῦ
στόματος αὐτοῦ ἀνομία καὶ δόλος, † οὐκ ἠβου-
5 λήθη συνιέναι τοῦ ἀγαθῦναι. † Ἀνομίαν (β) ἐλο-
γίσατο ἐπὶ τῆς κοίτης αὐτοῦ, † παρέστη πάσῃ ὁδῷ
6 οὐκ ἀγαθῇ, †(γ) τῇ δὲ κακίᾳ οὐ προσώχθισε. † Κύ-
ριε ἐν τῷ οὐρανῷ τὸ ἔλεός σου, † καὶ ἡ ἀλήθειά
7 σου ἕως τῶν νεφελῶν. † Ἡ δικαιοσύνη σου ὡς ὄρη
θεοῦ, † τὰ κρίματά σου (δ) ὡσεὶ ἄβυσσος πολ-
8 λή. † ἀνθρώπους καὶ κτήνη σώσεις κύριε, † Ὡς
ἐπλήθυνας τὸ ἔλεός σου ὁ θεός· †(ε) οἱ δὲ υἱοὶ τῶν
ἀνθρώπων ἐν σκέπῃ τῶν πτερύγων σου ἐλπιοῦσι.
9 † Μεθυσθήσονται ἀπὸ πιότητος οἴκου σου, † καὶ τὸν
10 χειμάῤῥουν τῆς τρυφῆς σου ποτιεῖς αὐτούς. † Ὅτι
παρὰ σοὶ πηγὴ ζωῆς, † ἐν τῷ φωτί σου ὀψόμεθα
11 φῶς. † Παράτεινον τὸ ἔλεός σου τοῖς γινώσκου-
σί σε, † καὶ τὴν δικαιοσύνην σου τοῖς εὐθέσι τῇ
12 καρδίᾳ. † Μὴ (ζ) ἐλθέτω μοι ποὺς ὑπερηφανίας,
13 † καὶ χεὶρ (η) ἁμαρτωλῶν μὴ σαλεύσαι με. † Ἐκεῖ
(θ) ἔπεσον πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, †
ἐξώσθησαν καὶ οὐ μὴ δύνωνται στῆναι.

MS. A. (α) Δαυίδ ψαλμός. (β) διελογίσατο
(γ) κακίᾳ δὲ οὐ (δ) ἄβυσσος πολλή. (ε) οἱ δὲ οἱ
(ζ) ἐλθάτω (η) ἁμαρτωλοῦ μὴ σαλεύσει με. (θ) ἔπεσαν

1 (α) Τῷ Δαυίδ. λϛ'.

†ΜΗ παραζήλου ἐν πονηρευομένοις, † μη-
2 δὲ ζήλου τοὺς ποιοῦντας τὴν ἀνομίαν. † Ὅτι ὡσεὶ
χόρτος ταχὺ ἀποξηρανθήσονται, † καὶ ὡσεὶ λά-
3 χανα χλόης ταχὺ ἀποπεσοῦνται. † Ἔλπισον ἐπὶ
κύριον, καὶ ποίει χρηστότητα, † καὶ κατασκήνου τὴν
4 γῆν, καὶ (β) ποιμανθήσῃ ἐπὶ τῷ πλούτῳ αὐτῆς. † Κα-
τατρύφησον τοῦ κυρίου, καὶ (γ) δώσει σοι τὰ αἰτή-
5 ματα τῆς καρδίας σου. † Ἀποκάλυψον πρὸς
κύριον τὴν ὁδόν σου, † καὶ ἔλπισον ἐπ' αὐτὸν, καὶ αὐτὸς ποιήσει.

MS. A. (α) Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) ποιμανθήσει (γ) δώῃ

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

31 *Exultent, & lætentur, qui volunt juſtitiam meam: & dicant ſemper, Magnificetur Dominus, qui volunt pacem ſervi ejus.*
32 *Et lingua mea meditabitur juſtitiam tuam, totâ (ff) die laudem (gg) tuam.*

1 (a) In finem, ſervo Domini Davidi. XXXV.

2 *DIXIT (b) injuſtus, ut delinquat in ſemetipſo: non eſt timor Dei ante oculos ejus.* 3 *2 Quoniam doloſe egit [a] in conſpectu ejus; ut (c) inveniret iniquitatem ſuam, & odiſſet.* 4 *3 Verba oris ejus iniquitas, & dolus: noluit intelligere, ut benè ageret.* 5 *4 Iniquitatem meditatus eſt in cubili ſuo: aſtitit omni viæ non bonæ: (d) [b] malitiam autem non odivit.* 6 *5 Domine, in cœlo miſericordia tua: & veritas [c] tua (e) uſque ad nubes.* 7 *6 Juſtitia (f) tua, ſicut montes Dei; judicia tua (g) ſicut abyſſus multa. 7 Homines & jumenta ſalvabis, Domine: (h)* 8 *Quemadmodũ multiplicâſti miſericordiam tuam, Deus. 8 Filii autem hominum (i) in tegmine alarum tuarum ſperabunt;* 9 *9 Inebriabuntur ab ubertate domûs tuæ: & (k) torrentem voluptatis tuæ potabis eos.* 10 *10 Quoniam apud te eſt fons vitæ: in lumine tuo videbimꝰ lumen.* 11 *11 [d] Prætende miſericordiam tuam ſcientibus te, & juſtitiam (l) tuam iis qui recto ſunt corde.* 12 *12 Non veniat mihi pes ſuperbiæ: & manus peccatorum non moveat me.* 13 *13 Ibi ceciderunt (m) omnes, qui operantur iniquitatem: expulſi ſunt, & non potuerunt ſtare.*

1 Ipſi David. XXXVI.

1 *NOLI (a) æmulari in malignantibus: neque zelaveris facientes iniquitatem.* 2 *2 Quoniam, tanquam fœnum, velociter areſcent: & quemadmodùm [a] olera (b) herbarum, citò decident. 3 Spera in Domino, & fac bonitatem, & [b] inhabita terram: &* 3 *paſcêris in divitiis ejus. 4 Delectare in Domino: & dabit tibi petitiones cordis tui.* 4 *5 Revela ad (d) Dominum viam tuam; & ſpera in eo, & ipſe faciet.* 5

Verſio ÆTHIOPICA.

27 ለይትፌሥሑ ፡ ወይትሐሠዩ ፡ እለ ፡ ይፈቅዱ 31
ዋ ፡ ለጽድቅየ ፡፡ ወይበሉ ፡ በኵሉ ፡ ጊዜ ፡ ለዐቢ
ይ ፡ እግዚአብሔር ፡፡ እለ ፡ ይፈቅዱ ፡ ሰላመ ፡
28 ገብርከ ፡፡=፡ ልሳንየ ፡ ያነብብ ፡ ጽድቀከ ፡ 32
ወኵሎ ፡ እሚረ ፡ ስብሐቲከ ፡፡=፡

ፍጻሜ ፡ ዘገብረ ፡ እግዚአብሔር ፡
ዘዳዊት ፡፡

ሀ፡ ይነብብ ፡ ኃጥእ ፡ በዘ ፡ ያስሕት ፡ ርእሶ ፡፡ 1
ወአልቦ ፡ ፍርሀተ ፡ እግዚአብሔር ፡ ቅድመ ፡
አዕይንቲሁ ፡፡=፡ እስመ ፡ ፀልሐወ ፡ በልሳኑ ፡፡ 2
ሶበ ፡ ትረክቦ ፡ ኃጢአቱ ፡ ይጸልእ ፡፡=፡
ቃለ ፡ አፉሁ ፡ ዐመፃ ፡ ወጕሕሉት ፡፡ ወኢፈ 3
ቀደ ፡ ይለቡ ፡ ከመ ፡ ያሠኒ ፡፡=፡ ወሐለየ ፡ 4
ዐመፃ ፡ በውስተ ፡ ምስካቡ ፡፡ ወቆመ ፡ በፍ
ኖት ፡ እንተ ፡ በኵሉ ፡ ኢኮነት ፡ ሠናይተ ፡፡
ወኢተሀከያ ፡ ለእኪት ፡፡=፡ እግዚኦ ፡ 5
በሰማይ ፡ ሣህልከ ፡፡ ወጽድቅከኒ ፡ እስከ ፡
ደመናት ፡፡=፡ ወርትዕከኒ ፡ ከመ ፡ አድባረ ፡ 6
እግዚአብሔር ፡፡ ኵነኔከ ፡ ዕሙቅ ፡ ጥ
ቀ ፡፡=፡ ሰብአ ፡ ወእንስሳ ፡ ታድኅን ፡ እግ 7
ዚኦ ፡፡ በከመ ፡ አብዛኅከ ፡ ምሕረተከ ፡
እግዚኦ ፡፡=፡ ደቂቀ ፡ ሰብእ ፡ እምሕያ 8
ው ፡ ወይትዌከሉ ፡ በታሕተ ፡ ክነፊከ ፡፡=፡
ወይረውዩ ፡ እምጠለ ፡ ቤትከ ፡፡ ወትሰቅዮ 9
ሙ ፡ እምፈለገ ፡ ትፍሥሕትከ ፡፡=፡ እ 10
ስመ ፡ እምኀቤከ ፡ ነቅዐ ፡ ሕይወት ፡፡ በብ
ርሃንከ ፡ ንሬኢ ፡ ብርሃነ ፡፡=፡ ስፋሕ ፡ ምሕ 11
ረተከ ፡ እግዚኦ ፡ ላዕለ ፡ እለ ፡ ያአምሩከ ፡፡
ወጽድቅከኒ ፡ ለርቱዓነ ፡ ልብ ፡፡=፡ ኢይም 12
ጽአኒ ፡ እግረ ፡ ትዕቢት ፡፡ ወእደ ፡ ኃጥእ ፡ ኢ
ይሁከኒ ፡፡=፡ ህየ ፡ ወድቁ ፡ ኵሎሙ ፡ ገበር 13
ተ ፡ ዐመፃ ፡፡ ይሰደዱ ፡ ወኢይክሉ ፡ ቀዊመ ፡፡

ዘዳዊት ፡፡

ሀ፡ ኢትቅናዕ ፡ ሳዕለ ፡ እኩያን ፡፡ ወኢት 1
ቅናዕ ፡ ሳዕለ ፡ ገበርተ ፡ ዓመፃ ፡፡=፡ እስ 2
መ ፡ ከመ ፡ ሣዕር ፡ ፍጡነ ፡ ይየብሱ ፡፡ ወከመ ፡
ኀመልማለ ፡ ሐምል ፡ ፍጡነ ፡ ይወድቁ ፡፡=፡
ተወከል ፡ በእግዚአብሔር ፡ ወግበር ፡ ሠና 3
የ ፡፡ ወያኀድረከ ፡ ደበ ፡ ምድር ፡፡ ወይሬ
እየከ ፡ ደበ ፡ ብዕሉ ፡፡=፡ ተፈሣሕ ፡ በእግ 4
ዚአብሔር ፡ ወይሁበከ ፡ ስእለተ ፡ ልብከ ፡፡=፡
ክሡት ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ፍኖተከ ፡፡ ወ 5
ተወከል ፡ ቦቱ ፡ ውእቱ ፡ ይገብር ፡ ለከ ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL.* xxxv. [a] linguâ ſuâ; cùm invenitur iniquitas ejus, odit. [b] neque tædet eum malitiæ. [c] etiam tua [d] Extende miſericordiam tuam, Domine, *PSAL.* xxxvi. [a] Olus viride, citò [b] inhabitare te faciet ſuper terram, & paſcet te divitiis

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

27 * يبتهج ويسر الذين يهوون بري * وليقولوا في كل حين ليعظم الرب * الذين يريدون سلامة
28 عبدك * لساني يتلو عدلك وتمجيدك النهار كله * اللليلويا *

1 * المزمور الخامس والثلثون * مسالة طالوت اياه وكيف اعطاه
العهود وفيه تبكيت المنافقين وذكر اللاهوت * وعدده كو * استيخن *

2 * يقول مخالف الناموس انه يخطي في ذاته * وليس خوف الله امام عينيه * لانه صنع الغش 3
4 قدامه * لما وجد خطيته وابغضها * كلام فيه اثم وغش * لم يرد ان يفهم ليعمل الخير * فكر في 5
6 الاثم على مضجعه * وقف في كل طريق غير صالحة * ولم يثقل عليه الشر * يا رب في السماء
7 رحمتك * وبرك ينتهي الى السحاب * عدلك مثل جبال الله * احكامك مثل اللجج العميقة * الناس
8 والبهائم انت تخلصهم * يا رب * مثلما اكثرت رحمتك * يا الله وبنو البشر بظلال كنفك
9 يستترون * ومن دسم بيتك يشبعون * ومن وادي نعيمك يشربون * لان ينبوع الحياة عندك * 10
11 بنورك نعاين النور * ابسط رحمتك على الذين يعرفونك * وعدلك لمستقيمي القلوب * لا 12
13 تاتي ارجل المتعظمين * ولا ترعجني ايدي الخاطيين * لان هناك سقط عاملوا الاثم ابعدوا
ولم يستطيعوا القيام * اللليلويا *

* المزمور السادس والثلثون *
1 * موعظة وتعليم * وعدده كز استيخن * لا تغاير فاعلي الشر ولا تغاير صانعي
2 الاثم * لانهم مثل العشب سريعا يجفون * ومثل البقل الاخضر عاجلا يذبلون * توكل على الرب 3
4 واصنع الخير * واسكن على الارض وارع على غناها * افرح بالرب فيعطيك مطلوبات قلبك
5 * اكشف سبلك للرب وتوكل عليه * وهو يصنع لك *

Exultent et lætentur qui volunt juſtitiam meã: & dicant in omni momento, Magnificetur Dominꝰ, qui cupiunt ſalutẽ ſervi tui. 27
Lingua mea meditatur æquitatem tuã, & glorificationem tuam die totâ. Alleluja. 28

PSAL. XXXV.

Petente eum Saule. Et quomodo inierit cum eo fœdera. Præterea continetur in eo objurgatio in ſceleſtos, & mentio Divinitatis. Et numerus ver. 26. 1

DIcit refractarius legis peccaturum ſe intra ſemetipſum, & non eſt timor Dei ante oculos ejus; 2 *Quia dolum egit in conſpectu ejus, quando invenit peccatum ſuum & odivit illud.* 3 *Sermo oris ejus iniquitas & dolus; noluit intelligere, ut faceret bonum.* 4 *Architectatus eſt iniquitatem ſuper cubili ſuo. Stetit in omni via non bona, & non fuit oneroſum ei flagitium.* 5 *O Domine, in cœlo miſericordia tua,* 6 *& juſtitia tua pervenit ad nubes; Æquitas tua veluti montes Dei: judicia tua veluti abyſſi profundæ.* 7 *Hominum & jumentorum tu es Salvator, O Domine; Quo pacto multiplicâſti miſericordiam tuam, O Deus! Quinetiam filii hominum ſub umbra alæ tuæ protegentur,* 8 *Et delitiis domûs tuæ ſaturabuntur, & de torrente voluptatis tuæ bibent.* 9 *Quoniam fons vitæ apud te eſt, per lumen tuum videbimus lumen.* 10 *Extende miſericordiam tuam in eos, qui te cognoſcunt: & juſtitiam tuam in rectos cordibus.* 11 *Non terrebunt me pedes ſuperborum, neque tremefacient me manus peccatorum.* 12 *Quoniam ibi ceciderunt operantes iniquitatem: amoti ſunt, & non potuerunt ſurgere. Alleluja.* 13

PSAL. XXXVI.

Admonitio, & documentum. Et numerus ver. 27. 1

NE æmuleris operantes malum, & ne invideas facientibus iniquitatem: Quoniam ipſi veluti herba velociter areſcent, & tanquam olus viride citò marceſcent. 2 *Confide in Domino, & fac bonũ: & habita in terra, & paſcere divitiis ejus.* 3 *Lætare in Domino, & largietur tibi optata cordis tui.* 4 *Detege ſemitas tuas Domino, et confide in eo, et ipſe faciet tibi.* 5

תהלים : לז

Tace meridiem ſicut *tuum judicium* & ; tuam juſtitiam lumen ſicut educet Et

6 וְהוֹצִיא כָאוֹר צִדְקֶךָ וּמִשְׁפָּטֶךָ כַּצָּהֳרָיִם׃ דּוֹם ׀ 7

ſacientem virum in ; ſuam viam ſecundantem in ſuccenſeas ne *,eum expecta* & , Domino

לַיהוָה וְהִתְחוֹלֵל לוֹ אַל־תִּתְחַר בְּמַצְלִיחַ דַּרְכּוֹ בְּאִישׁ עֹשֶׂה

,ſuccenſeas ne *; excandeſcentiam* relinque & *, naſo à* Remitte *.verſutias*

8 מְזִמּוֹת׃ הֶרֶף מֵאַף וַעֲזֹב חֵמָה אַל־תִּתְחַר

expectantes & ; excidentur maligni Quoniam .malefaciendum ad veruntamen

9 אַךְ־לְהָרֵעַ׃ כִּי־מְרֵעִים יִכָּרֵתוּן וְקוֵֹי

;impius non &,paululum adhuc Et .terram accipient hæreditate ipſi Dominum

10 יְהוָה הֵמָּה יִירְשׁוּ־אָרֶץ׃ וְעוֹד מְעַט וְאֵין רָשָׁע

,terram capient hæreditate humiles Et .*ipſe* non & ,ejus locum *ſuper advertes* &

11 וְהִתְבּוֹנַנְתָּ עַל־מְקוֹמוֹ וְאֵינֶנּוּ׃ וַעֲנָוִים יִירְשׁוּ־אָרֶץ

; juſtum contra impius *Machinans* .pacis multitudine *ſuper* delectabuntur &

12 וְהִתְעַנְּגוּ עַל־רֹב שָׁלוֹם׃ זֹמֵם רָשָׁע לַצַּדִּיק

quòd vidit quia ;ei ridebit Dominus .ſuis dentibus eum *ſuper frendens* &

13 וְחֹרֵק עָלָיו שִׁנָּיו׃ אֲדֹנָי יִשְׂחַק־לוֹ כִּי־רָאָה כִּי־

projiciendum ad,ſuum arcum tetenderunt & ,impii *ſolverunt* Gladium .ejus dies veniet

14 יָבֹא יוֹמוֹ׃ חֶרֶב ׀ פָּתְחוּ רְשָׁעִים וְדָרְכוּ קַשְׁתָּם לְהַפִּיל

ingredietur eorum Gladius .via rectos *mactandum ad ; egenum & , afflictum*

15 עָנִי וְאֶבְיוֹן לִטְבוֹחַ יִשְׁרֵי־דָרֶךְ׃ חַרְבָּם תָּבוֹא

copia præ juſto paululum *Bonum* .confringentur eorum arcus & ; eorũ cor *in*

16 בְלִבָּם וְקַשְּׁתוֹתָם תִּשָּׁבַרְנָה׃ טוֹב מְעַט לַצַּדִּיק מֵהֲמוֹן

ſuſtentans & ; confringentur impiorum brachia Quia *.magnorum* impiorum

17 רְשָׁעִים רַבִּים׃ כִּי זְרוֹעוֹת רְשָׁעִים תִּשָּׁבַרְנָה וְסוֹמֵךְ

eorũ hæreditas & ; perfectorũ dies Dominus *Sciens* .Dominus juſtos

18 צַדִּיקִים יְהוָה׃ יוֹדֵעַ יְהוָה יְמֵי תְמִימִם וְנַחֲלָתָם

famis diebus in & ; malo tempore in afficientur pudore Non .erit ſeculum in

19 לְעוֹלָם תִּהְיֶה׃ לֹא יֵבֹשׁוּ בְּעֵת רָעָה וּבִימֵי רְעָבוֹן

; *agnorum precioſitas* ſicut Domini inimici &,peribunt impii Quia .ſaturabuntur

20 יִשְׂבָּעוּ׃ כִּי רְשָׁעִים ׀ יֹאבֵדוּ וְאֹיְבֵי יְהוָה כִּיקַר כָּרִים

;*reddet* non & ,impius *accipiens* Mutuum .defecerunt *fumo in* ,defecerunt

21 כָּלוּ בֶעָשָׁן כָּלוּ׃ לֹוֶה רָשָׁע וְלֹא יְשַׁלֵּם

; terram accipient hæreditate *ejus* benedicti Quia *.dans & ,miſereſcens* juſtus *&*

22 וְצַדִּיק חוֹנֵן וְנוֹתֵן׃ כִּי מְבֹרָכָיו יִירְשׁוּ אָרֶץ

ejꝰ viam & , *firmantur* hominis greſſus Domino A .excidentur *ejus* maledicti &

23 וּמְקֻלָּלָיו יִכָּרֵתוּ׃ מֵיְהוָה מִצְעֲדֵי־גֶבֶר כּוֹנָנוּ וְדַרְכּוֹ

.ejus manum *ſuſtentans* Dominus quia ; *protelabitur* non , ceciderit Cùm .volet

24 יֶחְפָּץ׃ כִּי־יִפֹּל לֹא־יוּטָל כִּי־יְהוָה סוֹמֵךְ יָדוֹ׃

ejus ſemen *&* ; derelictum juſtum vidi non& , ſenui etiam , fui Puer

25 נַעַר ׀ הָיִיתִי גַּם־זָקַנְתִּי וְלֹא־רָאִיתִי צַדִּיק נֶעֱזָב וְזַרְעוֹ

.benedictionẽ in ejus ſemẽ & ; *mutuans & miſerans* die Omni .panem quærens

26 מְבַקֶּשׁ־לָחֶם׃ כָּל־הַיּוֹם חוֹנֵן וּמַלְוֶה וְזַרְעוֹ לִבְרָכָה׃

;judicium *diligens* Dominus Quia .ſeculum in *habita* & ; bonum fac & ,malo à Recede

27 28 סוּר מֵרָע וַעֲשֵׂה־טוֹב וּשְׁכֹן לְעוֹלָם׃ כִּי ׀ יְהוָה ׀ אֹהֵב מִשְׁפָּט

impiorum ſemen & ; cuſtodientur ſeculũ in : ſuos miſericordes derelinquet non &

וְלֹא־יַעֲזֹב אֶת־חֲסִידָיו לְעוֹלָם נִשְׁמָרוּ וְזֶרַע רְשָׁעִים

.eam ſuper ſeculum in habitabunt & ; terram accipiẽt hæreditate Juſti .ſuccidetur

29 נִכְרָת׃ צַדִּיקִים יִירְשׁוּ־אָרֶץ וְיִשְׁכְּנוּ לָעַד עָלֶיהָ׃

תרגום TARGUM.

6 ויפוק היך נהורא צדקך ודינך היך טיהרא׃

7 שתוק קדם יי ואוריך ליה לא תתגרג
ברשיעא דמצלח אורחיה בגברא דעבד עיצת

8 חטאין׃ אוריך מרגיז ושבוק רתחא לא

9 תתגרג ברם לאבאשא׃ מטול דמבאשין
ישתיצון ודסברין במימרא דיי הנון ירתון

10 ארעא׃ ותוב כזעיר ולית רשיעא ותתבין על

11 אתריה וליתוי׃ וענותנין ירתון ארעא

12 ויתפנקון על סגיעות שלמא׃ חשב רשיעא

13 ביש על צדיקא ומעסי עלוי ככוי׃ יי יגחך
עלוי ארום חמא ארום על יומא דתבירה׃

14 חרבא שליפו רשיעיא ומתחו קשתהון
למקטול עניי וחשיכי למכוס תריצי אורחא׃

15 16 סיפהון תעול בלבהון וקשתתהון יתברון׃ טב
קדם יי זעירות צדיקיא מרכפת רשיעין

17 סגיעין׃ ארום דרעי דרשיעיא יתברון

18 ותמיך צדיקיא מימרא דיי׃ ידיעין קדם
יי יומיהון דשלמין ואחסנתהון לעלם תהי׃

19 לא יבהתון בעדן בישתא וביומי אולצנא

20 סבעין׃ ארום רשיעיא ייבדון ובעלי דבביא
דיי היך יקר פלגיסין דמן אולא מתפטמין
וסופיהון מתנכסין היכנא רשיעי יסופון

21 ובתנן גהנם יגמרון׃ מוזיף רשיעא ולא

22 פרע וצדיק מחים ויהב׃ מטול דמתברכין
במימרא ירתון ארעא ודמתלטטין במותא

23 ישתיצון׃ מן קדם יי פסיעתוי דגברא

24 מתקנן ואורחתיה יתרעי׃ ארום יפול

25 מרע לא ימות מטול דיי סעד בידיה׃ טלי
הוית ברם סיבית לא חמית צדיקא שביקא

26 ובנוי תבעין לחמא מחוסרנא׃ מן בגלל

27 דכל יומא חיס ומוזיף ודרעיה לברכתא׃ סטי

28 מביש ועבד טיבו ושרי לחיי עלמא׃ ארום
יי רחם דינא ולא ישבוק ית חסידוי לעלם

29 מנטרין ובניהון דרשיעיא ישתצון׃ צדיקיא
יחסנון ארעא וישרון לעלמין עלה׃

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Et *exibit* ſicut *lux juſtitia tua* ; & judicia tua ſicut *meridies.* Tace coram Domino, & expecta eum : ne *excites* [*teipſum*] in impium proſperam viam ſuam reddentem; hominem exequentem conſilium peccatorum. Procul ſis ab iracundia, & miſſum fac furorem : ne *incitatus* fueris ut nequiter facias. Quoniam qui nequiter agunt, exterminabuntur : & qui confidunt in verbo Domini, ipſi hæreditabunt terram. Et adhuc modicum, & non erit impius : & intendes ad locum ejus, & non erit. Et mites hæreditabunt terram, & delectabuntur in multitudine pacis. Cogitat impius malum adverſus juſtum : & frendet ſuper eum dentibus ſuis. Dominus ſubſannabit eum ; quoniam proſpicit, quòd adveniet dies contritionis ipſius. Gladium evaginaverunt impii, & tetenderunt arcum ſuum ut interficiant egenos & obſcuros, ut mactent rectos via. Gladius eorum penetret in cor eorum : & arcus eorum confringantur. Melius eſt coram Domino modicum juſti, quàm divitiæ peccatorum multæ. Quoniam brachia impiorum confringentur : ſuſtentat autem juſtos *Verbum Domini.* *Cogniti ſunt coram Domino* dies perfectorũ, & hæreditas eorum in æternum erit. Non confundentur in tempore malo ; & in diebus famis ſaturabuntur. Quoniam impii peribunt & auctores inimicitiæ Domini, ſicut gloria vervecum, *qui primùm impinguantur, ac* tandem jugulantur ; ſic impii deficient, & in fumo gehennæ conſumentur. Mutuat impius & non reddit ; juſtus verò miſeretur, & donat. Propterea qui benedicuntur in verbo [*ejus,*] hæreditabunt terram: & qui maledicuntur in *morte* excidentur. A præſentia Domini greſſus hominis diriguntur : & via ejus grata erit. Et ſi ceciderit in infirmitatẽ, non morietur: quoniam Dominus ſuſtinet eum manu. Puer fui, nunc autem ſenui, & non vidi juſtum derelictum : nec filios ejus quærentes panem præ inopia. Propterea quod tota die miſeretur, & commodat : et ſemen ejus in benedictione. Recede à *malo,* et operare bonum : ut habites in *vita ſempiterna.* Quoniam Dominus amat judicium ; et non deſeret *miſericordes* ſuos, in æternum cuſtodientur : et filii impiorum exterminabuntur. Juſti hæreditabunt terram, et habitabunt in ſecula ſuper eam.

Verſio *SYRIACA.* cum Interpretatione *LATINA.*

6 ܘܡܦܩ ܐܝܟ ܢܘܗܪܐ ܙܕܝܩܘܬܟ. ܘܕܝܢܟ ܐܝܟ ܛܗܪܐ : * ܒܥܝ ܡܢ ܡܪܝܐ ܘܨܠܝ ܩܕܡܘܗܝ.
7 ܘܠܐ ܬܛܢ ܒܓܒܪܐ ܕܥܒܕ ܥܘܠܐ ܘܡܨܠܚܐ ܐܘܪܚܗ : * ܐܫܬܠܝ ܡܢ ܚܡܬܐ ܘܐܬܬܢܝܚ
8 ܡܢ ܪܘܓܙܐ. ܘܠܐ ܬܛܢ ܠܡܥܒܕ ܒܝܫܬܐ : * ܡܛܠ ܕܒܝܫܐ ܫܠܡܝܢ. ܘܕܡܣܟܝܢ ܠܡܪܝܐ
9 ܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ : * ܒܬܪ ܙܒܢܐ ܩܠܝܠ ܬܒܥܐ ܠܗ ܠܪܫܝܥܐ ܘܠܝܬܘܗܝ. ܘܬܚܪ ܒܐܬܪܗ
10 ܘܠܐ ܡܫܬܟܚ : * ܘܡܣܟܢܐ ܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ. ܘܢܬܦܢܩܘܢ ܒܣܘܓܐܐ ܕܫܠܡܐ :
11 * ܡܬܚܡܬ ܪܫܝܥܐ ܥܠ ܙܕܝܩܐ. ܘܚܪܩ ܫܢܘܗܝ ܥܠܘܗܝ : * ܘܡܪܝܐ ܓܚܟ ܒܗ.
12 13 ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܕܐܬܐ ܝܘܡܗ : * ܣܦܣܪܐ ܫܡܛܘ ܪܫܝܥܐ ܘܡܬܚܘ ܩܫܬܐ. ܕܢܩܛܠܘܢ
14 ܠܡܣܟܢܐ ܘܠܒܝܫܐ : ܘܠܬܪܝܨܝ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. * ܣܦܣܪܗܘܢ ܬܥܘܠ ܒܠܒܗܘܢ :
15 ܘܩܫܬܬܗܘܢ ܢܬܬܒܪܢ. * ܦܩܚ ܩܠܝܠ ܠܙܕܝܩܐ : ܡܢ ܩܢܝܢܐ ܣܓܝܐܐ ܕܪܫܝܥܐ. * ܡܛܠ
16 17 ܕܕܪܥܝܗܘܢ ܕܪܫܝܥܐ ܢܬܬܒܪܘܢ : ܘܣܡܟ ܠܙܕܝܩܐ ܡܪܝܐ. * ܘܝܕܥ ܡܪܝܐ ܝܘܡܬܗܘܢ ܕܬܡܝܡܐ :
18 ܘܝܪܬܘܬܗܘܢ ܠܥܠܡ ܬܗܘܐ. * ܠܐ ܢܒܗܬܘܢ ܒܫܥܬܐ ܒܝܫܬܐ : ܘܒܝܘܡܬܐ ܕܟܦܢܐ ܢܣܒܥܘܢ.
19 * ܡܛܠ ܕܪܫܝܥܐ ܐܒܕܝܢ. ܘܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܡܬܦܛܡܝܢ ܣܦܝܢ : ܘܐܝܟ ܬܢܢܐ ܫܠܡܝܢ :
20 * ܝܙܦ ܪܫܝܥܐ ܘܠܐ ܦܪܥ. ܘܙܕܝܩܐ ܡܪܚܡ ܘܝܗܒ : * ܦܣܘܩܐ * * ܡܛܠ ܕܡܒܪܟܘܗܝ
21 22 ܕܡܪܝܐ ܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ. ܘܡܠܛܘܗܝ ܢܣܬܦܘܢ : * ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܡܬܬܩܢܝܢ ܗܠܟܬܗ ܕܓܒܪܐ.
23 ܘܐܘܪܚܗ ܗܘ ܡܬܩܢ :* ܡܛܠ ܕܐܢ ܢܦܠ ܠܐ ܡܬܬܒܪ. ܕܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܒܐܝܕܗ :* ܛܠܝܐ ܗܘܝܬ ܘܣܒܬ.
24 25 ܘܠܐ ܚܙܝܬ ܠܙܕܝܩܐ ܕܐܫܬܒܩ : ܘܠܐ ܙܪܥܗ ܕܒܥܐ ܠܚܡܐ. * ܐܠܐ ܟܠܗ ܝܘܡܐ ܡܪܚܡ
26 ܘܡܘܙܦ : ܘܙܪܥܗ ܡܬܒܪܟ. * ܥܒܪ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܘܥܒܕ ܛܒܬܐ : ܘܐܬܬܢܝܚ ܠܥܠܡ.
27 * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܕܝܢܐ ܪܚܡ. ܘܠܐ ܫܒܩ ܠܙܕܝܩܘܗܝ : ܐܠܐ ܠܥܠܡ ܢܛܪ ܐܢܘܢ. ܘܙܪܥܗܘܢ
28 ܕܪܫܝܥܐ ܐܘܒܕ : * ܘܙܕܝܩܐ ܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ. ܘܢܥܡܪܘܢ ܥܠܝܗ ܠܥܠܡ :
29

6 Prodétq, ut lumen juſtitiã tuam, & judicia tua ceu meridiem. 7 Pete à Domino, & ora in conſpectu illius, & ne invideas viro facienti iniquitatẽ, cujus proſpera eſt via. 8 Sile à furore, & quieſce ab ira, neque æmuleris ad perpetrandã iniquitatem. Quia maligni de- 9 ficiunt; at qui ſperant in Domino, hæreditate poſſidebunt terram. 10 Poſt tempus breve quæres ſceleſtum, & non erit : & intueberis locũ ejus, nec invenietur. 11 Pauperes autẽ hæreditariò poſſidebunt terrã, & oblectabuntur pace multâ. 12 Succenſet iniquus juſto, ſtridétque dentibus ſuis in eum : 13 At Dominus irridebit eum, quia novit adveniſſe diem ejus. 14 Gladium evaginaverunt ſcelerati, ac tetenderunt arcum ad interficiendos pauperes atque inopes, & eos quorum rectæ ſunt viæ. 15 Gladius eorum intret in cor ipſorum, & arcus eorum confringantur. 16 Præſtantiꝰ eſt modicum juſto, quàm poſſeſſio multa iniquorũ. 17 Quoniam brachia impiorum confringentur: fulcit juſtos Dominus. 18 Et novit Dominus dies innocentium, & hæreditas eorum in æternum erit. 19 Non confundentur in hora mala, & in diebus famis ſaturabuntur. 20 Quoniam impii pereunt, & inimici Domini ſaginati abſumuntur, & velut fumus deficiunt. 21 Mutuatur impius, & non ſolvit : at juſtus miſeretur, & tribuit.

* *Sectio.* *

22 Quoniam benedicti à Domino, hæreditate poſſidebunt terram: 23 & maledicti ab eo, conſumentur. 24 A conſpectu Domini diriguntur greſſus viri, & viam ejus ipſe dirigit. 25 Quoniam ſi cadat, non læditur: nam Dominus tenet manum ejus. 26 Puer eram & ſenui, nec vidi juſtum deſtitutum fuiſſe, neque ſemen ejus petiiſſe panẽ: 27 Imò totâ die miſeretur & cõmodat, et ſemen ejꝰ benedicitur. 28 Devita malũ et fac bonum; quieſce in æternum: Quia Dominus judicium diligit, et non deſtituit juſtos ſuos, 29 ſed in perpetuum ſervat eos : ſemen verò impiorum deperdit. At juſti hæreditariò terram acquirunt, et habitant ſuper 30 eam in ſeculum.

Versio VULG. LAT.

6 Et educet quaſi lumen juſtitiam tuam,
& judicium tuum tanquàm meridiem :
7 Subditus eſto Domino, & ora eum.
Noli æmulari in eo, qui proſperatur
in via ſua; in homine faciente injuſtitias.
8 Deſine ab ira, & derelinque
furorem : noli æmulari ut maligneris.
9 Quoniam qui malignantur, exterminabuntur :
ſuſtinentes autem Dominum,
10 ipſi hæreditabunt terram. Et adhuc
puſillum, & non erit peccator : &
quæres locum ejus, & non invenies.
11 Manſueti autem hæreditabunt terram,
& delectabuntur in multitudine pacis.
12 Obſervabit peccator juſtum : & ſtridebit
13 ſuper eum dentibus ſuis. Dominus
autem irridebit eum : quoniam
14 proſpicit quòd veniet dies ejus. Gladium
evaginaverunt peccatores : intenderunt
arcum ſuum, Ut dejiciant
pauperem & inopem : ut trucident rectos
15 corde. Gladius eorum intret in
corda ipſorum : & arcus eorum confringatur.
16 Melius eſt modicum juſto,
17 ſuper divitias peccatorum multas. Quoniam
brachia peccatorum conterentur
: confirmat autem juſtos Dominus.
18 Novit Dominus dies immaculatorum :
& hæreditas eorum in æternum erit.
19 Non confundentur in tempore malo,
& in diebus famis ſaturabuntur:
20 Quia peccatores peribunt. Inimici
verò Domini mox ut honorificati fuerint
& exaltati : deficientes, quemadmodùm
21 fumus deficient. Mutuabitur
peccator, & non ſolvet : juſtus autem miſeretur
22 et tribuet. Quia benedicentes
ei hæreditabunt terram : maledicentes
23 autem ei diſperibunt. Apud Dominum
greſſus hominis dirigentur : et viam ejus
24 volet. Cùm ceciderit, non collidetur :
25 quia Dominus ſupponit manũ ſuam. Junior
fui, etenim ſenui : et non vidi juſtum
derelictũ, nec ſemen ejus quærens
26 panem. Tota die miſeretur et commodat
: et ſemen illius in benedictione
27 erit. Declina à malo, et fac bonũ : et inhabita
28 in ſeculũ ſeculi. Quia Dñs amat
judiciũ, et non derelinquet ſanctos ſuos:
in æternum conſervabuntur. Injuſti punientur
29 : et ſemen impiorũ peribit. Juſti
autem hæreditabunt terram : et inhabitabunt
in ſeculum ſeculi ſuper eã.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

6 † Καὶ ἐξοίσει ὡς φῶς τὴν δικαιοσύνην σου, † καὶ τὸ
7 κρίμα σου ὡς μεσημβρίαν. † Ὑποτάγηθι τῷ κυρίῳ,
καὶ ἱκέτευσον αὐτόν. † μὴ παραζήλου ἐν τῷ
κατευοδουμένῳ ἐν τῇ ὁδῷ αὐτοῦ, † ἐν ἀνθρώπῳ ποιοῦντι
8 (δ) παρανομίας. † Παῦσαι ἀπὸ ὀργῆς καὶ ἐγκατάλιπε
θυμόν, † μὴ παραζήλου ὥστε πονηρεύεσθαι.
9 † Ὅτι οἱ πονηρευόμενοι (ε) ἐξολοθρευθήσονται, † οἱ
δὲ ὑπομένοντες τὸν κύριον, αὐτοὶ κληρονομήσουσι (ε)
10 τὴν γῆν. † Καὶ ἔτι ὀλίγον καὶ οὐ μὴ (ε) ὑπάρξῃ ἁμαρτωλός,
† καὶ ζητήσεις τὸν τόπον αὐτοῦ, † καὶ οὐ μὴ
11 εὕρῃς. † Οἱ δὲ πραεῖς κληρονομήσουσι γῆν, † καὶ
12 κατατρυφήσουσιν ἐπὶ πλήθει (ζ) εἰρήνης. † Παρατηρήσεται
ὁ ἁμαρτωλὸς τὸν δίκαιον, † καὶ βρύξει ἐπ' αὐτὸν
13 τοὺς ὀδόντας αὐτοῦ. † Ὁ δὲ κύριος ἐκγελάσεται
αὐτόν, † ὅτι προβλέπει ὅτι ἥξει ἡ ἡμέρα αὐτοῦ.
14 † Ῥομφαίαν ἐσπάσαντο οἱ ἁμαρτωλοί, † ἐνέτειναν
τόξον αὐτῶν, τοῦ καταβαλεῖν πτωχὸν καὶ πένητα,
15 † τοῦ σφάξαι τοὺς εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ. † Ἡ ῥομφαία
αὐτῶν εἰσέλθοι εἰς τὴν καρδίαν αὐτῶν, † καὶ
16 τὰ τόξα αὐτῶν συντριβείη. † Κρεῖσσον ὀλίγον τῷ δικαίῳ
17 † ὑπὲρ πλοῦτον ἁμαρτωλῶν πολύν. † Ὅτι βραχίονες
ἁμαρτωλῶν συντριβήσονται, † ὑποστηρίζει δὲ
18 τοὺς δικαίους ὁ κύριος. † Γινώσκει κύριος τὰς ὁδοὺς
τῶν ἀμώμων, † καὶ ἡ κληρονομία αὐτῶν εἰς (η) τὸν
19 αἰῶνα ἔσται. † Οὐ καταισχυνθήσονται ἐν καιρῷ πονηρῷ,
20 † καὶ ἐν ἡμέραις λιμοῦ χορτασθήσονται. † Ὅτι οἱ
ἁμαρτωλοὶ ἀπολοῦνται, † οἱ δὲ ἐχθροὶ τοῦ κυρίου ἅμα
τῷ δοξασθῆναι αὐτοὺς καὶ ὑψωθῆναι, † ἐκλείποντες
21 ὡσεὶ καπνὸς ἐξέλιπον. † Δανείζεται ὁ ἁμαρτωλός,
καὶ οὐκ ἀποτίσει, † ὁ δὲ δίκαιος οἰκτείρει καὶ (θ) δίδωσι.
22 † Ὅτι οἱ εὐλογοῦντες αὐτὸν κληρονομήσουσι γῆν,
23 † οἱ δὲ καταρώμενοι αὐτὸν (ε) ἐξολοθρευθήσονται. † Παρὰ
κυρίου τὰ διαβήματα ἀνθρώπου κατευθύνεται,
24 † καὶ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ (ι) θελήσει. † Ὅταν πέσῃ οὐ καταραχθήσεται,
† ὅτι κύριος ἀντιστηρίζει χεῖρα αὐτοῦ.
25 † Νεώτερος ἐγενόμην, καὶ γὰρ ἐγήρασα, † καὶ οὐκ εἶδον
δίκαιον ἐγκαταλελειμμένον, † οὐδὲ τὸ σπέρμα
26 αὐτοῦ ζητοῦν ἄρτους. † Ὅλην τὴν ἡμέραν ἐλεεῖ καὶ (κ)
δανείζει, † καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ εἰς εὐλογίαν ἔσται. †
27 Ἔκκλινον ἀπὸ κακοῦ, καὶ ποίησον ἀγαθόν, † καὶ κατασκήνου
28 εἰς αἰῶνα αἰῶνος. † Ὅτι κύριος ἀγαπᾷ
κρίσιν, † καὶ οὐκ ἐγκαταλείψει τοὺς ὁσίους αὐτοῦ, † εἰς
τὸν αἰῶνα φυλαχθήσονται· † (λ) ἄμωμοι ἐκδικηθήσονται,
† καὶ σπέρμα ἀσεβῶν (μ) ἐξολοθρευθήσεται.
29 † Δίκαιοι δὲ κληρονομήσουσι γῆν, † καὶ κατασκηνώσουσιν
εἰς αἰῶνα αἰῶνος ἐπ' αὐτῆς.

MS. A. (δ) παρανομίαν. (ε) ἐξολεθρευθήσονται, (ε) γῆν. (ε) ὑπάρξει ὁ ἁμαρτωλός, (ζ) εἰρήνης ἐπ' αὐτῆς. (η) αἰῶνα (θ) δίδωσιν. (ε) ἐξολεθρευθήσονται. (ι) θελήσει σφόδρα. (κ) δανείζει ὁ δίκαιος, καὶ (λ) ἄνομοι δὲ ἐκδιωχθήσονται, (μ) ἐξολεθρευθήσεται.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

6 Et educet quaſi lumen juſtitia 6
tuã, et judicium tuũ tanquã [c]
meridie. (c) Subdit⁹ eſt Domino, 7
& [d] ora eum. 7 Noli æmulari
in eo, qui proſperatur [e] in via
ſua, in homine faciente injuſtitias.
8 Deſine ab ira, & [f] de- 8
relinque furorem. Noli æmulari
ut maligneris: 9 Quoniã qui ma- 9
lignantur, exterminabuntur: ſuſtinentes
autem Dominũ, ipſi hæreditabunt
terram. 10 Et adhuc 10
puſillum, & non erit peccator: et
quæres locum ejus, & non invenies.
11 Manſueti autem hære- 11
ditabũt terrã, & delectabuntur
in multitudine pacis. 12 Obſer- 12
vabit peccator juſtũ: & ſtridebit
ſuper eum dentibus ſuis. 13 Do- 13
minus autem irridebit eum: quoniam
proſpicit, quòd veniet dies
ejus. 14 Gladium evaginave- 14
runt peccatores : intenderunt arcum
ſuum : 15 ut [g] dejiciant
inopem, et pauperem, ut trucident
rectos corde. 16 Gladius eorum 15
intret in cor eorum: & arcus eorum
conterantur. 17 Melius eſt 16
modicum juſto, ſuper divitias
peccatorum multas. 18 Quoni- 17
am [h] brachia peccatorum conterentur
: (f) confirmat autem
juſtos (g) Dominus. 19 (h) No- 18
vit Dominus vias immaculatorum:
& hæreditas eorum in æternum
erit. 20 Non confunden- 19
tur in [i] tempore morbi: & in
diebus famis ſaturabuntur. [k]
Quia peccatores peribunt: 21 In- 20
imici (i) verò Domini ſtatim,
ut honorificati fuerint, & exaltati,
deficientes quemadmodùm
fumus, (k) defecerunt. 22 Mu- 21
tuatur peccator, & non ſolvet :
juſtus autem miſeretur, & [l]
commodat. 23 Quia (l) bene- 22
dicentes eũ hæreditabunt terrã:
maledicentes autẽ (m) eũ, diſperibunt.
24 [m] A Domino greſſus 23
hominis diriguntur : & viam ejus
(n) volet: 25 Cùm ceciderit, non 24
collidetur: quia Dominus (o) [n]
confirmat manum ejus. 26 (p)
Junior fui, etenim ſenui: & nõ 25
vidi juſtum derelictum, nec ſemen
ejus [o] quærens panes. 27
Totâ die miſeretur, & (q) com- 26
modat: & ſemen illius in benedictione
erit. 28 Declina à 27
malo, & fac bonum: & inhabita
in ſeculum (r) ſeculi. 29 Quia Dominus amat judicium, & non derelinquet ſanctos ſuos: 28
æternum conſervabuntur: 30 (s) [p] immaculati vindicabuntur, & ſemen impiorum peribit. 31 Juſti autem hæreditabunt terram: & inhabitabunt in ſeculum ſeculi ſuper eam. 29

Verſio ÆTHIOPICA.

ወያወጽእ፡ከመ፡ብርሃን፡ለጽድቅከ፡፡ ወፍት 6
ሕከኒ፡ከመ፡መዐልት፡፡ ግነይ፡ለእግዚአብሔ
ር፡ወተጸመድ፡፡=፡ ወኢትቅናዕ፡ሳዕለ፡ዘይደ 7
ሉ፡በሕይወቱ፡፡ ወላዕለ፡ሰብእ፡ዘይገብር፡
ዐመፃ፡፡=፡ ኅድጋ፡ለመዐት፡ወግድፋ፡ለቍጥ 8
ዓ፡፡ወኢትቅናዕ፡ከመ፡ታሕሥም፡፡=፡ እስ 9
መ፡እለ፡ያኀሥሙ፡ይሤረዉ፡፡ ወእለሰ፡ይት
ዔገሥዎ፡ለእግዚአብሔር፡እሙንቱ፡ይወርስ
ዋ፡ለምድር፡፡=፡ ወዓዲ፡ኅዳጥ፡ ኢይሄሉ፡ 10
ኃጥእ፡፡ተኀሥሥ፡ወኢትረክብ፡መካኖ፡፡=፡
ወየዋሃንሰ፡ይወርስዋ፡ ለምድር፡፡ ወይትፌሣ 11
ሑ፡በብዙኅ፡ሰላም፡፡=፡ ያስተሐይጾ፡ኃጥ 12
እ፡ለጻድቅ፡፡ ወየሐቂ፡ስነኒሁ፡ላዕሌሁ፡፡=፡
ወእግዚአብሔርሰ፡ይሥሕቆ፡፡ እስመ፡ ያቀድ 13
ሞ፡አእምሮ፡ከመ፡በጽሐ፡ዕለቱ፡፡=፡ሰይፎ 14
ሙ፡መልሑ፡ኃጥአን፡፡ወወሰቁ፡ቀስቶሙ፡፡=፡
ከመ፡ይቅትልዎ፡ለነዳይ፡ወለምስኪን፡፡ ወከ 15
መ፡ይርግዝዎሙ፡ለርቱዓነ፡ልብ፡፡=፡ ሰይፎ 16
ሙ፡ይባእ፡ውስተ፡ልቦሙ፡፡ ወይትቀጥቀጥ፡አ
ቅስቲሆሙ፡፡=፡ ይኄይስ፡ኅዳጥ፡ዘበጻድቅ፡፡ 17
እምብዙኅ፡ብዕለ፡ኃጥአን፡፡=፡ እስመ፡ይ 18
ትቀጠቀጥ፡ ኀይሎሙ፡ ለኃጥአን፡፡ ያጸንዖ
ሙ፡ እግዚአብሔር፡ ለጻድቃን፡፡ወያአምር፡ 19
እግዚአብሔር፡ፍናተ፡ንጹሓን፡፡ ወለዓለም፡
ውእቱ፡ርስቶሙ፡፡=፡ ወኢይትኃፈሩ፡በመዋ 20
ዕለ፡ እኩያት፡፡ ወይጸግቡ፡ በመዋዕለ፡ረኃ
ብ፡፡ወኃጥአንሰ፡ይትሐጐሉ፡፡=፡ ወጸላእቱ 21
ሰ፡ለእግዚአብሔር፡ሶበ፡ከብሩ፡ወተለዓሉ፡፡
የኀልቁ፡ወይጠፍኡ፡ከመ፡ጢስ፡፡=፡ ይትሌ 22
ቃሕ፡ኃጥእ፡ወኢይፈዲ፡፡ ወጻድቅሰ፡ይምሕ
ር፡ወይሁብ፡፡=፡ እስመ፡እለ፡ ይባርክዎ፡ይ 23
ወርስዋ፡ለምድር፡፡ወእለሰ፡ ይረግምዎ፡ይሤ
ረዉ፡፡=፡ እምኀበ፡እግዚአብሔር፡ይጸንዕ፡ 24
ሑረቱ፡ ለሰብእ፡፡ ለዘይፈቅድ፡ ፍናቶ፡ፈድ
ፋደ፡፡=፡ እመኒ፡ወድቀ፡ኢይደነግፅ፡፡እስመ፡ 25
እግዚአብሔር፡ይሰውቆ፡እዴሁ፡፡=፡ ወርዘ 26
ውኩኒ፡ወረሣእኩ፡፡ ወጻድቅሰ፡ዘይትገደፍ፡
ኢርኢኩ፡፡ ወዘርዑኒ፡ኢይዬንስ፡እክለ፡፡=፡
ወኵሎ፡አሚረ፡ይምሕር፡ወይሌቅሕ፡፡ ወዘ 27
ርኡሂ፡ውስተ፡በረከት፡ይሄሉ፡፡=፡ ተገሐስ፡ 28
እምእኩይ፡ ወግበር፡ ሠናየ፡፡ወትነብር፡ ለዓ
ለም፡ዓለም፡፡=፡ እስመ፡ጽድቀ፡ያፈቅር፡ 29
እግዚአብሔር፡፡ ወኢይገድፎሙ፡ለጻድቀ
ን፡፡ ወለዓለም፡ የዐቅቦሙ፡፡=፡ ወይትቀበ 30
ሎሙ፡ ለንጹሓን፡፡ ወይሤሩ፡ ዘርኦሙ፡ ለኃ
ጥአን፡፡=፡ወጻድቃንሰ፡ይወርስዋ፡ለምድር፡፡ 31
ወይነብሩ፡ውስቴታ፡ለዓለም፡ዓለም፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] diem. [d] adhære illi. [e] in vita ſua, [f] amanda faſtidium. [g] occidant pauperem & inopem, & ut confodiant [h] robur peccatorum conteretur: [i] tempore malo: [k] Et peccatores quidẽ [l] donat. [m] A parte Dñi firmantur greſſ⁹ hominis, ut volet viam ei⁹ ſemper: [n] ſupponit [o] pane carens. [p] & ſuſcipiet immaculatos, & ſemen

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

6 7 * ويخرج مثل النور عدلك * ومثل الظهير احكامك * اخضع للرب وتضرع اليه * لا تغاير
8 المنجح في طريقه في حياته بانسان يصنع الاثم * اكفف من السخط ودع الغضب * لا تراي
9 10 الشرير * فان فاعلي الشر يبيدون * والذين يصبرون للرب يرثون الارض * عن قليل لا يوجد
11 الخاطي * تطلب مكانه فلا تجده * واما اهل الدعة فيرثون الارض * ويتنعمون بكثرة السلامة
12 13 * الخاطي يرصد الصديق ويصر عليه اسنانه * والرب يهزا به * لانه سبق فراي ان يومه ياتي
14 * استل الخطاة سيفهم واوتروا قسيهم * ليصرعوا المسكين والبايس * ويذبحوا المستقيم قلبه
15 16 * سيفهم يدخل في قلبهم * وقسيهم تنكسر * الخير اليسير للصديق افضل من كثرة غناء الخطاة
17 18 * لان سواعد الخطاة تنكسر * والرب يثبت الصديق * الرب يعرف طريق الذين بلا عيب * وميراثهم
19 20 يكون الى الابد * لا يخزون في زمان السوء * وفي ايام الغلاء يشبعون * لان الخطاة يهلكون واعداء
21 الرب حين يتماجدون ويرتفعون * يفنون فناء مثل الدخان اذا فني * الخاطي يقترض ولا يوفي
22 واما البار يتراءف ويعطي * لان الذين يباركونه يرثون الارض * والذين يلعنونه يستاصلون
23 24 25 * الرب يقوم خطوات الانسان ويهوى طريقه * فاذا سقط لا ينزعج * لان الرب ممسك بيده * كنت
26 صبيا وشخت * ولم ار صديقا تخلى الرب عنه * ولا ذريته طلبت خبزا * النهار كله يرحم ويقرض
27 28 ونسله يكون مباركا * ابعد عن الشر واصنع الخير * واسكن الى ابد الابد * لان الرب يحب
29 العدل * ولا يضيع اصفياءه * يحفظهم الى ابد الابد * والذين بلا عيب ياخذون انتقامهم
30 ونسل المنافقين يبيد * واما الصديقون يرثون الارض ويسكنون فيها الى الابد

Et educet ut lumen juſtitiam tuam, & ut 6
meridiem judicia tua. Subjice te Domino, 7
& ſupplica ei. Ne æmuleris proſperum in
via ſua, dum vivit : hominem qui perpetrat
ſcelus : Cohibe te ab ira, & omitte fu- 8
rorem ; ne imiteris malignum. Nam ope- 9
rantes malum, peribunt : & qui expectant
Dominum, hæreditabunt terram. Paulò 10
poſt non invenietur peccator : quæres locum
ejus, & non invenies illum. At verò 11
manſueti hæreditabunt terram, & oblectabuntur
in multitudine pacis. Pecca- 12
tor inſidiatur juſto, & frendet contra
eum dentibus ſuis. At Dominus illudit ei: 13
quoniam prævidit diem ejus eſſe venturum.
Evaginaverunt peccatores gladium 14
ſuum, & intenderunt arcus ſuos : ut proſternerent
pauperem, & inopem, & jugularent
rectum corde. Gladius eorum in- 15
tret in cor eorum, & arcus eorum confringantur.
Facultates modicæ juſto, præſtant 16
multitudini divitiarum peccatorum. Quo- 17
niam brachia peccatorum confringentur :
& Dominus confirmat juſtum. Dominus 18
ſcit viam eorum qui ſine labe ſunt, & hæreditas
eorum erit in ſeculum. Non con- 19
fundentur in tempore calamitatis, & in
diebus caritatis ſaturabuntur : Quoniam 20
peccatores peribunt, & inimici Domini,
dum gloriantur & extolluntur, deficiunt
penitùs ut fumus quum evaneſcit. Pecca- 21
tor mutuatur, & non ſolvit: verùm juſtus
miſeretur, & tribuit. Nam qui benedi- 22
cunt ei, hæreditabunt terram; et qui maledicunt
ei, eradicabuntur. Dominus dirigit 23
greſſus hominis : & grata illi erit via ejus ;
Quumque ceciderit, non perturbabi- 24
tur, quia Dominus tenens eſt manum ejus.
Fui puer & ſenui, & non vidi juſtum 25
derelictum à Domino, neque progeniem
ejus petere panem. Die totâ miſeretur & 26
mutuò dat, & generatio ejus erit benedicta.
Recede à malo, & fac bonum, & 27
habita in ſeculum ſeculi. Nam Domi- 28
nus diligit æquitatem, neque perdet electos
ſuos : conſervabit eos in ſeculum
ſeculi. Et qui ſine macula ſunt, ſument 29
vindictam ſuam. Et progenies iniquorum
peribit : At verò juſti hæreditabunt ter- 30
ram, et habitabunt in ea in æternum

תְּהִלִּים : לח

Os justi loquetur sapientiam; & lingua ejus loquetur judicium. Lex
30 פִּי־צַדִּיק יֶהְגֶּה חָכְמָה וּלְשׁוֹנוֹ תְּדַבֵּר מִשְׁפָּט׃ תּוֹרַת 31
Dei ejus in corde ej⁹: non mutabit gressus ejus. Speculans impius justum:
אֱלֹהָיו בְּלִבּוֹ לֹא תִמְעַד אֲשֻׁרָיו׃ צוֹפֶה רָשָׁע לַצַּדִּיק 32
& quærens interimere eum. Dominus non derelinquet eum in manu ejus: nec
וּמְבַקֵּשׁ לַהֲמִיתוֹ׃ יְהוָֹה לֹא־יַעַזְבֶנּוּ בְיָדוֹ וְלֹא 33
condemnabit eum in judicari eum. Expecta ad Dominum, & custodi viam ejus;
יַרְשִׁיעֶנּוּ בְּהִשָּׁפְטוֹ׃ קַוֵּה אֶל־יְהוָֹה וּשְׁמֹר דַּרְכּוֹ 34
& exaltabit te, ad hæreditandum terram: in succidi impios, videbis. Vidi
וִירוֹמִמְךָ לָרֶשֶׁת אָרֶץ בְּהִכָּרֵת רְשָׁעִים תִּרְאֶה׃ רָאִיתִי 35
impium terrificum; & se diffundentem sicut laurus viridis. Et transivit, & ecce non ipse:
רָשָׁע עָרִיץ וּמִתְעָרֶה כְּאֶזְרָח רַעֲנָן׃ וַיַּעֲבֹר וְהִנֵּה אֵינֶנּוּ 36
& quæsivi eum, & non inventus est. Custodi integrum, & vide rectum; quia
וָאֲבַקְשֵׁהוּ וְלֹא נִמְצָא׃ שְׁמָר־תָּם וּרְאֵה יָשָׁר כִּי־ 37
novissimum viro pax. Et prævaricantes delebuntur pariter; novissimum
אַחֲרִית לְאִישׁ שָׁלוֹם׃ וּפֹשְׁעִים נִשְׁמְדוּ יַחְדָּו אַחֲרִית 38
impiorum exciditur. Et salus justorum à Domino; fortitudo eorum
רְשָׁעִים נִכְרָתָה׃ וּתְשׁוּעַת צַדִּיקִים מֵיְהוָֹה מָעוּזָּם 39
in tempore angustiæ. Et adjuvabit eos Dominus, & eruet eos, eruet eos
בְּעֵת צָרָה׃ וַיַּעְזְרֵם יְהוָֹה וַיְפַלְּטֵם יְפַלְּטֵם 40
ab impiis, & servabit eos; quia speraverunt in eo.
מֵרְשָׁעִים וְיוֹשִׁיעֵם כִּי־חָסוּ בוֹ׃

PSAL. XXXVIII. לח

Canticum David ad commemorandum. Domine ne in fervore tuo
1 מִזְמוֹר לְדָוִד לְהַזְכִּיר׃ יְהוָֹה אַל־בְּקֶצְפְּךָ 2
arguas me; & in excandescentia tua corripias me. Quoniam sagittæ tuæ
תוֹכִיחֵנִי וּבַחֲמָתְךָ תְיַסְּרֵנִי׃ כִּי־חִצֶּיךָ 3
defixæ fuit in me; & descendit super me manus tua. Non integritas in carne mea
נִחֲתוּ־בִי וַתִּנְחַת עָלַי יָדֶךָ׃ אֵין־מְתֹם בִּבְשָׂרִי 4
propter iram tuam: non pax in ossibus meis à faciebus peccati mei. Quoniam
מִפְּנֵי זַעְמֶךָ אֵין־שָׁלוֹם בַּעֲצָמַי מִפְּנֵי חַטָּאתִי׃ כִּי 5
iniquitates meæ pertransierunt caput meum; sicut onus grave graves fuerunt præ me.
עֲוֹנֹתַי עָבְרוּ רֹאשִׁי כְּמַשָּׂא כָבֵד יִכְבְּדוּ מִמֶּנִּי׃
Futuerunt, tabuerunt livores mei; à faciebus stultitiæ meæ. Contortus sum,
6 הִבְאִישׁוּ נָמַקּוּ חַבּוּרֹתָי מִפְּנֵי אִוַּלְתִּי׃ נַעֲוֵיתִי
7 depressus sum usque valde: omni die atratus ambulavi. Quoniam ilia mea
8 שַׁחֹתִי עַד־מְאֹד כָּל־הַיּוֹם קֹדֵר הִלָּכְתִּי׃ כִּי־כְסָלַי
plena fuerunt fœdo; & non integritas in carne mea. Debilitatus sum, & attritus sum
9 מָלְאוּ נִקְלֶה וְאֵין מְתֹם בִּבְשָׂרִי׃ נְפוּגוֹתִי וְנִדְכֵּיתִי
usque valde: rugii præ palpitatione cordis mei. Domine coram te omne desideriũ meũ;
10 עַד־מְאֹד שָׁאַגְתִּי מִנַּהֲמַת לִבִּי׃ אֲדֹנָי נֶגְדְּךָ כָל־תַּאֲוָתִי
& suspiriũ meũ à te non est absconditum. Cor meum circuivit, dereliquit me
11 וְאַנְחָתִי מִמְּךָ לֹא־נִסְתָּרָה׃ לִבִּי סְחַרְחַר עֲזָבַנִי
fortitudo mea: & lumen oculorum meorũ, etiam ipsi non mecum. Diligentes me,
12 כֹּחִי וְאוֹר־עֵינַי גַּם־הֵם אֵין אִתִּי׃ אֹהֲבַי
& socii mei è regione plagæ meæ steterunt; & propinqui mei à longinquo steterunt.
וְרֵעַי מִנֶּגֶד נִגְעִי יַעֲמֹדוּ וּקְרוֹבַי מֵרָחֹק עָמָדוּ׃

תרגום TARGUM.

30 פּוּמָא דְצַדִּיקָא רָנֵין חוּכְמְתָא וְלִישָׁנֵיהּ
31 מְמַלְּלָא דִינָא׃ נִימוּסָא דֶאֱלָהֵיהּ בְּלִבֵּיהּ לָא
32 מוּדַעְזְעִין אִסְתְּוָרוֹי׃ מְסַתְּכֵי רַשִׁיעָא לְצַדִּיקָא
33 וּבָעֵי לְמִקְטְלֵיהּ׃ יְיָ לָא יִשְׁבְּקִנֵּיהּ בִּידֵיהּ וְלָא
34 יְחַיְּבִנֵּיהּ בְּמִדַּיְּנֵיהּ׃ סְבַר בְּמֵימְרֵיהּ דַּיְיָ וּטַר
אָרְחֵיהּ וִירוֹמְמִנָּךְ לְמַחְסַן אַרְעָא בְּאִשְׁתֵּצָיוּת
35 רַשִׁיעַיָּא תֶּחְמֵי׃ חֲמֵיתִי רַשִׁיעָא תַקִּיפָא וְחָסִין
36 הֵיךְ אִילָן יַצִּיב וְעָבוּף׃ וּפְסַק מִן עָלְמָא וְהָא
37 לֵיתוֹי וּבְעֵית יָתֵיהּ וְלָא אִשְׁתְּכַח׃ נְטַר
שְׁלִימוּתָא וַחֲמֵי תְרִיצוּתָא אֲרוּם דְסוֹף בַּר
38 נְשָׁא שְׁלָמָא׃ וּמָרוֹדִין יִשְׁתֵּיצוּן כַּחֲדָא
39 סוֹפֵיהוֹן דְּרַשִׁיעַיָּא שֵׁיצָאָה׃ וּפוּרְקָנָא דְצַדִּיקַיָּא
40 מִן קֳדָם יְיָ עוּשְׁנְהוֹן בְּעִדָּן עָקְתָא׃ וְסַיְּעִנּוּן
יְיָ וְשֵׁיזֵב יַתְהוֹן שֵׁיזֵב יַתְהוֹן מִן חַיָּבַיָּא וִיפָרְקִנּוּן
מְטוּל דְּאִתְרְחִיצוּ בְּמֵימְרֵיהּ׃

לח

1 תֻּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד דָּכְרָנָא טָבָא עַל יִשְׂרָאֵל׃
2 יְיָ לָא בְּרוּגְזָךְ תַּכְסַן יָתִי וְלָא בִּרְתְחָךְ
3 תַּרְדֵּי יָתִי׃ מְטוּל דְּגִירָךְ אִתְחַתָּן עֲלַי וּשְׁרַת
4 עֲלַי מְחַת יְדָךְ׃ לֵית אָסוּ בְּגוּשְׁמִי מִן קֳדָם
רוּגְזָךְ לֵית שְׁלָם בְּאֵבָרַי מִן קֳדָם חוֹבַי׃
5 אֲרוּם חוֹבַי עֲבָרוּ רֵישִׁי הֵיךְ מְטוּל יַקִּיר
6 יְקָרוּ מִנִּי׃ סְרִיאוּ מְאִיסוּ הַלְבִּישׁוּשַׁי מִן קֳדָם
7 טַפְשׁוּתִי׃ עֲקִימִית שְׁחִית עַד לַחֲדָא כָּל יוֹמָא
8 חֲכִיר הַלְּכִית׃ אֲרוּם כַּסְלַי אִתְמַלְיָן
9 קְרִיחֲתָא וְלֵית אָסוּ בְּגוּשְׁמִי׃ פְּגִית וְאִתְמַכִּית
10 עַד לַחֲדָא רְגִישִׁית מִנַּהֲמוּתָא דְלִבִּי׃ יְיָ
לְקִבְלָךְ כָּל רְגִיגְתִי וְתִינְחֲתִי מִנָּךְ לָא מִטַּמְּרָא׃
11 לִבִּי צַמַּרְמַר שְׁבַקְנִי חֵילִי וּנְהוֹר עֵינַי בְּרַם
12 הִנּוּן לֵיתֵיהוֹן עִמִּי׃ רְחִימַי וְחַבְרַי מִקֳּבֵל
מַכְתְּשִׁי קָמוּ וְקָרִיבַי מֵרְחִיק קָיְמִין׃

PARAPH. CHALD. Vers L

Os justi eloquitur sapientiam : & lingu ejus profatur judicium. Lex Dei ipsius i corde ejus ; non nutabunt gressus ejus. Insidiatur impius justo, & quærit interficer eum. Dñs non derelinquet eum in manu ejus : & non damnabit eum cum judicium de eo aget. Confide in verbo Domini, & custodi viam ejus : & exaltabit te ut possideas terram : cùm exterminati fuerint impii, conspicies. Vidi impium fortem & validum, sicut arborem indigenam & frondescentem. Et defecit à seculo, & ecce non erat : & quæsivi eum, & non est inventus. Serva integritatem & respice rectum: quoniam finis hominis est pax. Prævaricatores autem excindentur simul : finis impiorun exitium. Redemptio autem justorum à conspectu Domini : fortitudo eorum in tempore angustiæ. Et auxiliatus est eis Dominus & liberavit eos: eruit eos à sceleratis & redemit eos, quoniam speraverunt i verbo ejus.

Canticum Davidis in memoriam bonam super Israel.

PSAL. XXXVIII.

DOmine ne in furore tuo arguas me, neque in ira tua castiges me. Quoniam sagittæ tuæ irruerunt in me, & mansit supe me vulnus manus tuæ. Non est sanitas i corpore meo propter iram tuã: non est pa in membris meis propter peccatum meum Quoniam iniquitates meæ transierunt supe caput meum : quasi onus grave graviore fuerunt meipso. Computruerunt et tabuerunt cicatrices meæ propter stultitiam meam. Recurvus factus sum, et inclinatus majorem in modum : tota die atratus incessi. Quoniam lumbi mei impleti sun combustione : et non est sanitas in corpor meo. *Debilitatus* sum et humiliatus sun vehementer : strepitum edidi præ tumult cordis mei. Domine coram te omne desiderium meum ; et suspirium meum à te no est absconditum. Cor meum horruit ; dereliquit me virtus mea, et lumen oculoru meorum : atque iidem ipsi non sunt mecum. Amici mei et proximi mei è regio vulneris mei steterunt : propinqui verò m procul constiterunt.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

30 * ܚܟܡܬܐ ܪܢܐ ܦܘܡܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܠܫܢܗ ܡܡܠܠ ܕܝܢܐ: * ܢܡܘܣܗ ܕܐܠܗܐ ܒܠܒܗ ܘܠܐ
31 ܢܙܘܥܢ ܗܠܟܬܗ. * ܡܣܟܐ ܪܫܝܥܐ ܠܙܕܝܩܐ ܘܒܥܐ ܠܡܩܛܠܗ: * ܡܪܝܐ ܠܐ ܢܫܒܩܝܘܗܝ 32
33 ܒܐܝܕܘܗܝ. ܘܠܐ ܢܚܝܒܝܘܗܝ ܒܕܝܢܐ: * ܣܒܪ ܒܡܪܝܐ ܘܛܪ ܐܘܪܚܗ. ܘܢܪܝܡܟ ܠܡܐܪܬ ܐܪܥܐ: 34
ܡܐ ܕܫܠܡܘ ܪܫܝܥܐ ܬܚܙܐ. * ܚܙܝܬ ܓܝܪ ܪܫܝܥܐ ܕܡܫܬܒܗܪܝܢ: ܘܡܬܥܠܝܢ ܐܝܟ 35
ܐܝܠܢܐ ܕܥܒܐ. * ܟܕ ܥܒܪܬ ܠܝܬ ܗܘܐ. ܘܒܥܝܬܗ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬܗ: * ܕܩܘܡ * 36
* ܛܪ ܬܡܝܡܘܬܐ ܘܓܒܝ ܬܪܝܨܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܚܪܬܐ ܛܒܬܐ ܠܓܒܪܐ ܕܫܝܢܐ: * ܘܚܛܝܐ 37 38
ܢܐܒܕܘܢ ܐܟܚܕܐ: ܘܚܪܬܐ ܕܪܫܝܥܐ ܠܐܒܕܢܐ. * ܦܪܘܩܐ ܕܙܕܝܩܐ ܡܪܝܐ. ܘܡܥܕܪ ܠܗܘܢ ܒܙܒܢܐ 39
ܕܥܩܬܐ: * ܡܥܕܪ ܠܗܘܢ ܡܪܝܐ ܘܡܦܨܐ ܠܗܘܢ. ܘܡܦܨܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܪܫܝܥܐ: ܘܦܪܩ 40
ܠܗܘܢ ܡܛܠ ܕܣܒܪܘ ܒܗ.
* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

* ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܡܪܘ ܦܠܫܬܝܐ ܠܐܟܝܫ ܡܠܟܐ ܕܗܢܘ ܕܘܝܕ ܕܩܛܠ ܠܓܘܠܝܕ. ܠܐ ܨܒܝܢܢ 1 2
ܕܢܐܙܠ ܥܡܢ ܠܘܩܒܠ ܫܐܘܠ. ܘܠܘܬܢ ܡܢ ܗܫܐ ܡܬܩܢܘܬܐ ܕܬܘܕܝܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܒ.
* ܡܪܝܐ ܠܐ ܒܪܘܓܙܟ ܬܟܣܢܝ. ܘܠܐ ܒܚܡܬܟ ܬܪܕܝܢܝ: * ܡܛܠ ܕܓܐܪܝܟ ܐܬܢܥܨܘ ܒܝ. 3
ܘܐܬܬܢܝܚܬ ܐܝܕܟ ܥܠܝ: * ܠܝܬ ܫܠܝܐ ܒܒܣܪܝ ܡܢ ܩܕܡ ܪܘܓܙܟ. ܘܠܝܬ ܫܝܢܐ 4
ܠܓܪܡܝ ܡܢ ܩܕܡ ܚܛܗܝ: * ܡܛܠ ܕܣܟܠܘܬܝ ܥܒܪ ܪܝܫܝ. ܘܐܝܟ ܡܘܒܠܐ ܝܩܝܪܐ 5
ܝܩܪܘ ܠܝ: * ܣܪܝܘ ܘܐܬܡܣܝ ܫܘܚܢܝ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܣܟܠܘܬܝ * ܕܚܠܬ ܛܒ: ܟܠܗ ܝܘܡܐ 6 7
ܒܟܡܝܪܘܬܐ ܗܠܟܬ. * ܡܛܠ ܕܥܩܒܝ ܐܬܡܠܝܘ ܪܬܝܬܐ: ܘܠܝܬ ܫܠܝܐ ܒܒܣܪܝ. * ܐܬܬܙܥܬ 8 9
ܘܐܬܟܪܝܬ ܛܒ: ܘܢܗܡܬ ܡܢ ܢܘܗܡܗ ܕܠܒܝ. * ܡܪܝܐ ܩܕܡܝܟ ܗܘ ܟܠܗ ܪܓܝܓܬܝ: 10
ܘܬܢܚܬܝ ܡܢܟ ܠܐ ܡܛܫܝܢ. * ܠܒܝ ܐܬܗܦܟ ܘܫܒܩܢܝ ܚܝܠܝ: ܘܢܘܗܪܐ ܕܥܝܢܝ ܠܐ ܗܘܐ 11
ܠܘܬܝ. * ܪܚܡܝ ܘܚܒܪܝ ܠܘܩܒܠ ܟܐܒܝ ܩܡܘ: ܘܩܪܝܒܝ ܡܢ ܪܘܚܩܐ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ. 12

Sapientiam cogitat os justi, & lingua ejus loquitur judicium. Jus Dei in corde ipsius, & non nutabunt gressus ejus. Expectat impi justum, & quærit occidere eum : At Dominus non relinquet eum in manibus illius, ne damnabit eum in judicio. Spera in Domi & custodi viam ejus, teque exaltabit ad possidendum hæreditariò terram : cùm defecerint impii, videbis. Nam vidi impios gloriari, seséq; attollere ut arbores sylvæ ; Quan autem transivi, non erat : & quæsivi eum, nec inveni illum. * *Diapsalma* * Obser simplicitatem, & elige rectitudinem : Quoniam est finis bonus viris pacis. At peccatores peribunt simul, & finis impiorum in interitum. Salvator est justorum Dñs, & adjuvat eos temporibus mœroris. Auxiliatur illi Dominus, & eripit eos, liberátq; eos ab impiis, & servat illos, quia speraverunt in eum.

PSAL. XXXVIII.

Davidis. Quum dixerunt Philistæi Re Achis, Iste est David qui interfecit Golia noluimus eat nobiscum contra Saul. Præter nobis modò institutio confessionis. Vers. 42.

DOmine, ne in ira tua me arguas, neve furore tuo me castiges : Quoniam sagittæ tuæ infixæ sunt in me, & quievit manus tu super me. Non est tranquillitas carni meæ conspectu furoris tui, nec est pax ossibus me à conspectu peccatorum meorũ ; Nam insipientiæ meæ excesserunt caput meum, & sicu onus grave graves mihi redditæ sunt. Putuerunt ac putruerunt ulcera mea, & à conspectu insipientiarũ mearum Timui valde. Toto di cum tristitia ambulavi, Quia calcanei mei impleti sunt tremore, nec est requies carni meæ. Concussus sum & contristat' sum valde, & rugiebam præ fremitu cordis mei. Domine coram te est totũ desideriũ meum, & suspiria mea miminè latent. Cor meum subversum est, & robur meũ destituit me, et lumẽ oculorũ meorum non est apud me. Amici mei & sodales mei ex adverso doloris mei steterunt : & proximi mei à longinquo versabantur.

Versio VULG. LAT.

30 Os justi meditabitur ſapientiam, & lin-
31 gua ejus loquetur judicium. Lex Dei
ejus in corde ipſius : & non ſupplan-
32 tabuntur greſſus ejus. Conſiderat pec-
cator juſtum: & quærit mortificare eum.
33 Dominus autem non derelinquet eum
in manibus ejus : nec damnabit eum
34 cùm judicabitur illi. Expecta Domi-
num, & cuſtodi viam ejus : & exaltabit
te ut hæreditate capias terrã : cùm per-
35 ierint peccatores, videbis. Vidi impiũ
ſuperexaltatum, & elevatũ ſicut cedros
36 Libani. Et tranſivi, & ecce non erat :
& quæſivi eum, & non eſt inventus lo-
37 cus ejus. Cuſtodi innocentiam, & vide
æquitatem : quoniam ſunt reliquiæ ho-
38 mini pacifico. Injuſti autem diſperi-
bunt ſimul : reliquiæ impiorum interi-
39 bunt. Salus autem juſtorum à Domi-
no : & protector eorum in tempore tri-
40 bulationis. Et adjuvabit eos Dominus,
& liberabit eos : & eruet eos à pecca-
toribus, & ſalvabit eos : quia ſperave-
runt in eo.

1 Pſalmus David, in rememoratio-
nem de ſabbato. XXXVII.

2 DOmine, ne in furore tuo arguas me,
3 neque in ira tua corripias me. Quo-
niam ſagittæ tuæ infixæ ſunt mihi : &
4 confirmâſti ſuper me manum tuam. Non
eſt ſanitas in carne mea à facie iræ tuæ :
non eſt pax oſſibus meis à facie pecca-
5 torũ meorũ. Quoniã iniquitates meæ ſu-
pergreſſæ ſunt caput meũ : & ſicut onus
6 grave gravatæ ſunt ſup me. Putruerunt
& corruptæ ſunt cicatrices meæ, à facie
7 inſipientiæ meæ. Miſer factus ſum &
curvatus ſum uſq; in finem : totâ die con-
8 triſtatus ingrediebar. Quoniã lumbi mei
impleti ſunt illuſionibus : & non eſt ſani-
9 tas in carne mea. Afflictus ſum, & humi-
liatus ſum nimis : rugiebã à gemitu cor-
10 dis mei. Dñe, ante te omne deſiderium
meũ : & gemitus meus à te non eſt abſ-
11 conditus. Cor meum conturbatum eſt,
dereliquit me virtus mea : & lumen o-
culorum meorum, & ipſũ non eſt mecũ.
12 Amici mei, & proximi mei adverſũ me
appropinquaverunt, & ſteterunt. Et qui
juxta me erant, de longè ſteterunt :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

30 † Στόμα δικαίου μελετήσει σοφίαν, † καὶ ἡ γλῶσσα
31 αὐτοῦ λαλήσει κρίσιν. † Ὁ νόμος τοῦ Θεοῦ αὐτοῦ ἐν
καρδίᾳ αὐτοῦ, † καὶ οὐχ ὑποσκελισθήσεται τὰ δια-
32 βήματα αὐτοῦ. † Κατανοεῖ ὁ ἁμαρτωλὸς τὸν δίκαι-
33 ον, † καὶ ζητεῖ τοῦ θανατῶσαι αὐτόν. † Ὁ δὲ κύριος οὐ
μὴ ἐγκαταλίπῃ αὐτὸν εἰς τὰς χεῖρας αὐτοῦ, † (υ)
οὐδὲ μὴ καταδικάσαι αὐτόν, ὅταν κρίνηται αὐτῷ. †
34 Ὑπόμεινον τὸν κύριον, καὶ φύλαξον τὴν ὁδὸν αὐτοῦ,
† καὶ ὑψώσει σε τοῦ κατακληρονομῆσαι (ξ) τὴν γῆν·
† ἐν τῷ (ο) ἐξολοθρεύεσθαι ἁμαρτωλούς, (π) ὄψει. †
35 Εἶδον τὸν ἀσεβῆ ὑπερυψούμενον, καὶ ἐπαιρόμενον ὡς
36 τὰς κέδρους τοῦ Λιβάνου· † Καὶ παρῆλθον, καὶ ἰδοὺ οὐκ
ἦν, † καὶ ἐζήτησα αὐτόν, καὶ οὐχ εὑρέθη ὁ τόπος αὐτοῦ.
37 † Φύλασσε ἀκακίαν καὶ ἴδε εὐθύτητα, † ὅτι ἐστὶν ἐγκα-
38 τάλειμμα ἀνθρώπῳ εἰρηνικῷ. † Οἱ δὲ παράνομοι (ρ)
ἐξολοθρευθήσονται ἐπὶ τὸ αὐτό, † τὰ ἐγκαταλείμμα-
39 τα τῶν ἀσεβῶν (σ) ἐξολοθρευθήσονται. † Σωτηρία
δὲ τῶν δικαίων παρὰ κυρίου, † καὶ ὑπερασπιστὴς αὐτῶν
40 ἐστιν ἐν καιρῷ θλίψεως. † Καὶ βοηθήσει αὐτοῖς κύ-
ριος, καὶ ῥύσεται αὐτούς, † καὶ ἐξελεῖται αὐτοὺς ἐξ ἁμαρ-
τωλῶν, † καὶ σώσει αὐτούς, ὅτι ἤλπισαν ἐπ᾽ αὐτόν.

MS. A. (υ) οὐδ᾽ οὐ μὴ καταδικάσηται αὐτόν, κρί-
νεται αὐτῷ. (ξ) γῆν· (ο) ἐξολεθρεύεσθαι (π) ὄψῃ.
(ρ) ἐξολεθρευθήσονται (σ) ἐξολεθρευθήσονται.

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ (α) εἰς ἀνάμνησιν περὶ
σαββάτου. λζʹ.

2 † ΚΥριε μὴ τῷ θυμῷ σου ἐλέγξῃς με, † μηδὲ τῇ
3 ὀργῇ σου παιδεύσῃς με. † Ὅτι τὰ βέλη σου ἐνεπά-
γησάν μοι, † καὶ (β) ἐπεστήριξας ἐπ᾽ ἐμὲ τὴν χεῖρά σου.
4 † Οὐκ ἔστιν ἴασις ἐν τῇ σαρκί μου ἀπὸ προσώπου τῆς
ὀργῆς σου, † οὐκ ἔστιν εἰρήνη (γ) τοῖς ὀστέοις μου ἀπὸ
5 προσώπου τῶν ἁμαρτιῶν μου, † Ὅτι αἱ ἀνομίαι μου
ὑπερῆραν τὴν κεφαλήν μου, † ὡσεὶ (δ) φορτίον βαρὺ ἐ-
6 βαρύνθησαν ἐπ᾽ ἐμέ. † Προσώζεσαν καὶ ἐσάπησαν οἱ μώ-
7 λωπές μου, † ἀπὸ προσώπου τῆς ἀφροσύνης μου. † Ἐ-
ταλαιπώρησα καὶ κατεκάμφθην ἕως τέλους, † ὅλην
8 τὴν ἡμέραν σκυθρωπάζων ἐπορευόμην. † Ὅτι (ε)
ἡ ψυχή μου ἐπλήσθη ἐμπαιγμῶν, † καὶ οὐκ ἔστιν ἴασις ἐν
9 τῇ σαρκί μου. † Ἐκακώθην καὶ ἐταπεινώθην ἕως σφό-
10 δρα, † ὠρυόμην ἀπὸ στεναγμοῦ τῆς καρδίας μου. † (ζ) Καὶ
ἐναντίον σου πᾶσα ἡ ἐπιθυμία μου, † καὶ ὁ στεναγμός μου
11 (η) οὐκ ἀπεκρύβη ἀπὸ σοῦ. † Ἡ καρδία μου ἐταράχθη,
ἐγκατέλιπέ με ἡ ἰσχύς μου, † καὶ τὸ φῶς τῶν ὀφθαλμῶν
12 (θ) μου οὐκ ἔστι μετ᾽ ἐμοῦ. † Οἱ φίλοι μου καὶ οἱ πλησίον
μου † ἐξ ἐναντίας μου ἤγγισαν καὶ ἔστησαν, † καὶ οἱ ἔγγιστά
μου (ι) μακρόθεν ἔστησαν.

MS. A. (α) εἰς * ἀμνησιν περὶ τοῦ σαββάτου. (β)
ἐπεστήρισας (γ) ἐν τοῖς ὀστέοις (δ) φορτίον ἐβαρύν-
θησαν (ε) αἱ ψύαι μου ἐπλήσθησαν ἐμπεγμάτων, καὶ (ζ)
Κύριε, ἐναντίον σου (η) ἀπὸ σοῦ οὐκ ἐκρύβη. (θ) μου, καὶ
αὐτὸ οὐκ ἔστιν (ι) ἀπὸ μακρόθεν

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

32 *Os juſti [q] meditabitur ſa-* 30
pientiam : et lingua ejus loque-
tur judicium. 33 Lex Dei ejus 31
in corde ipſius: et non ſupplanta-
buntur greſſus ejus. 34 (t) Con- 32
ſiderat peccator juſtum, et quæ-
rit mortificare eum. 35 Domi- 33
nus autem non derelinquet eum
in manibus ejus: nec [r] damna-
bit eum , (v) cùm judicabitur
illi. 36 Expecta Dominum, et 34
cuſtodi viam ejus : et exaltabit
te, ut hæreditate capias terram :
cùm pereunt peccatores, videbis.
37 Vidi (x) impium ſuperexal- 35
tatum, et elevatum ſicut cedros
Libani : 38 Et tranſivi et ecce 36
non erat: et quæſivi eum, et non
[ſ] eſt inventus locus ejus. 39 (y)
Cuſtodi innocentiam, et vide æ- 37
quitatem: quoniam ſunt reliquiæ
homini pacifico. 40 Injuſti au- 38
tem diſperibunt (z) in idipſum,
reliquiæ impiorum interibunt.
41 Salus autem juſtorum à Do- 39
mino, et protector eorum eſt in
tempore tribulationis. 42 Et ad- 40
juvabit eos Dominus, et libera-
bit eos: et eruet eos à [t] pec-
catoribus, et ſalvabit eos: quia
ſperaverunt in eum.

Pſalmus ipſi David *(a)* in reme- 1
morationem pro ſabbato.
XXXVII.

1 *DOmine, ne (b) in furore tuo* 2
arguas me: neque in ira tua cor-
ripias me. 2 Quoniam ſagittæ 3
tuæ (c) [a] infixæ ſunt mihi: &
confirmâſti ſuper me manum tu-
am. 3 Non eſt ſanitas in car- 4
ne mea à (d) facie iræ tuæ: non
eſt pax oſſibus meis à (e) facie
peccatorum meorum. 4 Quoni- 5
am iniquitates meæ (f) ſuper-
greſſæ ſunt [b] caput meum: ſic-
ut onus grave, gravatæ ſunt ſu-
per me. 5 (g) Putruerunt & [c] 6
corruptæ ſunt cicatrices meæ, à
facie inſipientiæ meæ. 6 Miſer 7
factus ſum, & curvatus ſum (h) uſ-
que in finem : totâ die contri-
ſtatus (i) ingrediebar. 7 Quoni- 8
am (k) anima mea [d] impleta
eſt illuſionibus : & non eſt ſani-
tas in carne mea. 8 [e] Afflictus 9
ſum, & humiliatus ſum uſque
nimis : (l) rugiebam à gemitu
cordis mei. 9 Et ante te omne 10
deſiderium meum: & [f] gemitus
meus à te non eſt abſconditus.
10 Cor meum conturbatum eſt ; dereliquit me virtus mea: & lumen oculorum meorum non 11
eſt mecum. 11 (m) Amici mei, & [g] proximi mei adverſùm me appropinquaverunt, et ſte- 12
terunt: 12 et qui juxta me erant, de longè ſteterunt :

Verſio ÆTHIOPICA.

31 አፈሁ፡ለጻድቅ፡ ይትሜሀር፡ ጥበበ፡፡ ወልሳ 32
ኑ፡ይነብብ፡ ጽድቀ፡፡=፡ ወሕገ፡አምላኩ፡ 33
32 ውስተ፡ልቡ፡፡ ወኢይድኅፅ፡ዘኰናሁ፡፡=፡
ያስተኀይጾ፡ ኃጥእ፡ ለጻድቅ፡፡ ወይፈ 34
33 ቅድ፡፡ ይቅትሎ፡፡=፡ ወኢያኀድጎ፡ እ 35
ግዚአብሔር፡ ውስተ፡ እደሁ፡፡ ወኢይመ
ውኦ፡ ሶበ፡ ይትዋቀሥ፡፡=፡ ተዐገሥ፡ ለእ 36
34 ግዚአብሔር፡ ወዕቀብ፡ ፍኖቶ፡፡ ወያዐቢ
የከ፡ ከመ፡ ትረሳ፡ ለምድር፡፡ ወትሬኢ፡
ከመ፡ ይሠረዉ፡ ኃጥኣን፡፡=፡ ርኢክዎ፡ 37
35 ለኃጥእ፡ ዐብዮ፡ ወተለዐለ፡ ከመ፡ አርዘ፡
ሊባኖስ፡፡=፡ ወሶበ፡ እገብእ፡ ኀጣእክዎ፡፡ 38
36 ኀሠሥኩ፡ ወኢረከብኩ፡ መካኖ፡፡=፡ ዕቀ 39
ብ፡ የዋሀተ፡ ወትሬኢ፡ ጽድቀ፡፡ እስመ፡
ቦቱ፡ ተረፈ፡ ብእሴ፡ ሰላም፡፡=፡ ወዐማፅያ 40
37 ንሰ፡ ይሠረዉ፡፡ ወይሤረው፡ ትረፈቲሆሙ፡
38 ለኃጥኣን፡፡=፡ መድኃኒቶሙ፡ ለጻድቃን፡ 41
እምኀበ፡ እግዚአብሔር፡፡ ወቀዋሚሆሙ፡
ውእቱ፡ በጊዜ፡ ምንዳቤሆሙ፡፡=፡ ይረድ 42
39 እሙ፡ እግዚአብሔር፡ ወያድኅኖሙ፡፡
ወያነግፎሙ፡ እምእደ፡ ኃጥኣን፡፡ ወያድኅ
40 ኖሙ፡እስመ፡ተወከሉ፡ቦቱ፡፡

መዝሙር፡ ዘዳዊት፡ ለተዝካረ፡
ሰንበት፡፡

ሀጊ እግዚኦ፡ በመዐትከ፡ ኢትቅሥፈኒ፡፡ 1
ወበመቅሠፍትከ፡ ኢትገሥጸኒ፡፡=፡ እስ 2
መ፡ አኀጸከ፡ ደጐጸኒ፡፡ ወአጽናዕከ፡ እዴ
ከ፡ላዕሌየ፡፡=፡ ወአልቦ፡ ፈውስ፡ለሥጋየ፡ 3
እምገጸ፡ መዐትከ፡፡ ወአልቦ፡ሰላም፡ ለአዕ
ጽምትየ፡ እምገጸ፡ ኃጢአትየ፡፡=፡ እስ 4
መ፡ኖኀ፡እምእርእስተ፡ገጋይየ፡፡ ከመ፡ ጾር፡
ክቡድ፡ ከብደ፡ ላዕሌየ፡፡=፡ ጼአ፡ ወበተኑ 5
በኑ፡ አዕጽምትየ፡ እምገጸ፡ አበድየ፡፡=፡
ሐርተሙ፡ ወተቀጽዑ፡ለዝሉፉ፡፡ ወኵ 6
ሎ፡ኣሚረ፡ ትኩዝየ፡ አንሶሱ፡፡=፡ እስመ፡ 7
ጸግበት፡ ፀዕለተ፡ ነፍስየ፡፡ ወኃጠእኩ፡
ፈውስ፡ ለሥጋየ፡፡=፡ ደወይኩ፡ ወሐመም 8
ኩ፡ ፈድፋደ፡፡ ወእጐሥዕ፡ እምሐዘነ፡
ልብየ፡፡=፡ በቅድሜከ፡ኵሉ፡ፍትወትየ፡፡ 9
ወገዓርየኒ፡ ኢይትኀባእ፡ እምኔከ፡፡=፡
ልብየኒ፡ ደንገፀኒ፡ ወኃይልየኒ፡ ኀደገኒ፡፡ 10
ወብርሃነ፡አዕይንትየኒ፡ለከዋኒ፡፡=፡ አዕርክ 11
ትየኒ፡ወቢጽየኒ፡ እድወ፡ኮኑኒ፡ርዱኒ፡ ወደበ
ዩኒ፡፡=፡ ወአዝማድየኒ፡ቀብዑኒ፡ወተናከ 12
ሩኒ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [q] docebit ſapientiã: [r] condemnabit eum, cùm arguerit illum. [ſ] inveni locum ejus. [t] manu peccatorũ, *PSAL. xxxvii.* [a] pupugerunt me: [b] præ capillis meis: [c] debilitata ſunt oſſa mea, à [d] impleta eſt ignominiã : [e] Infirmatus ſum, & [f] gemitus etiam [g] proximi etiã mei homines erant qui inſecuti ſunt me, & me peſſimè tractârunt : & familiares etiam mei oblivioni me dederunt, & alieni facti ſunt mihi:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

31 32 * فم الصديق يتلوا الحكمة ولسانه ينطق بالحكم * ناموس الله في قلبه * فلن تزل قدماه
33 34 * الخاطي ينظر الي الصديق ويريد ان يقتله * والرب لا يسلمه في يده * ولا يطرحه في الحكم
35 اذا تحاكم معه * تمسك بالرب واحفظ طريقه * فسيرفعك لترث الارض * وتري الخطاة عند ما
36 37 يستاصلون * رايت المنافق قد زاد علوا وارتفع متطاولا مثل ارز لبنان * ثم عبرت فاذا
38 هو لم يكن * طلبته فلم اجد مكانه * احفظ الدعة فتري الاستقامة * فان العاقبة تكون لرجل
39 السلامة * واصل بقايا الاشرار يمحقون * خلاص الصديقين من عند الرب وهو ناصرهم في زمان
40 الضيق * الرب يعينهم ويخلصهم * وينجيهم من الخطاة * وينقذهم لانهم توكلوا عليه * الليلويا *

* المزمور السابع والثلثون *

1 * ذكر فيه السبت * وشكر ونبوة * وعدده * مد * استيخن *
2 3 * يا رب لا تبكتني بغضبك * ولا تؤدبني بسخطك * فان سهامك نشبت في * واشتدت يدك علي
4 5 * ليس لجسدي شفا امام غضبك * ولا لعظامي سلامة لاجل خطاياي * لان اثامي علت راسي *
6 7 ومثل الحمل الثقيل ثقلت علي * نتنت ودودت جراحاتي من اجل جهلي * شقيت واكتئبت الي
8 9 الدهر * مشيت يومي كله كئيبا * لان نفسي مملوءة هزوا * وليس لجسدي شفا * شقيت
10 وتضعضعت جدا * صرخت من تنهد قلبي * شهواتي كلها امامك يا رب * وتنهدي عنك لم يخف
11 12 * قلق قلبي وتخلت قوتي * ولم اجد لعيني ضوءا * اصحابي واقاربي اقتربوا مني * ووقفوا مقابلي *

Os juſti meditatur ſapientiam, & lingua 31
ejus profert judicium. Jus Dei in corde 32
ipſius : quapropter non prolabentur pedes
ejus. Peccator intuetur juſtum, & vult 33
interficere eũ. At Dominus non tradet eum 34
in manũ ejus, neq; abjiciet eum in judicio,
quando judiciũ inſtituet cum eo. Inhære 35
Domino, & obſerva viã ejus, et exaltabit
te ut hæredites terrã: & videas peccato-
res quũ extirpabuntur. Vidi impiũ creſce- 36
re in altum, et evehi in longũ ſicuti cedros
Libani. Deinde tranſivi, & ecce ipſe non 37
erat: quæſivi eum, et non inveni locum e-
jus. Cuſtodi manſuetudinem & videbis 38
rectitudinem; Nam finis erit viro pacifico:
& radices reliquiarũ flagitioſorum inter-
ibunt. Salus juſtorum à conſpectu Domini, 39
& ipſe adjutor eſt eorum in tempore tri-
bulationis. Dominus auxiliabitur eis, et li- 40
berabit eos, et redimet illos à peccatoribus, et
ſalvabit eos, quia cõfiſi ſunt in eo. Alleluja.

PSAL. XXXVII.

Mentio fit in eo Sabbathi. Præ- 1
terea eſt gratiarum actio atque
prophetia. Et numerus ver. 44.

O Domine, ne reprehendas me in ira tua, 2
neq; erudias me in indignatione tua.
Quoniam ſagittæ tuæ jam infixæ ſunt in 3
me, et dura facta eſt manus tua ſuper me.
Non eſt corpori meo ſanitas ante indigna- 4
tionem tuam, neq; oſſibus meis requies pro-
pter peccata mea; Quoniã culpæ meæ ſu- 5
peraverunt caput meum, & veluti pondus
grave aggravatæ ſunt ſuper me. Putrue- 6
runt et vermes genuerunt vulnera mea ob
ignorantiam meam. Afflictus ſum, & in- 7
curvatus ſum in ſeculum, ambulavi totâ
die meâ mœrens. Quia anima mea plena 8
eſt ludibrio, & non eſt corpori meo ſani-
tas. Afflictus ſum & humiliatus ſum val- 9
de, clamavi præ gemitu cordis mei. Deſi- 10
deria mea cuncta corã te ſunt, O Domine,
et ſuſpirium meum te non latuit. Contur- 11
batum eſt cor meum, et abſceſſit robur me-
um, & non reperi oculis meis lucem. Ami- 12
ci mei, & proximi me acceſſerunt ad me,
& ſteterunt procul à me.

תְּהִלִּים : לח

meum malum quærentes & , meam animam quærentes tetenderunt laqueos Et

13 וַיְנַקְשׁוּ ׀ מְבַקְשֵׁי נַפְשִׁי וְדֹרְשֵׁי רָעָתִי

ſurdus tanquā ego Et .meditabantur die omni dolos & ; pravitates ſunt locuti

14 דִּבְּרוּ הַוּוֹת וּמִרְמוֹת כָּל־הַיּוֹם יֶהְגּוּ׃ וַאֲנִי כְחֵרֵשׁ

qui vir ſicut fui Et .ſuum os *aperiret* non mutus ſicut & ; audiebam non

15 לֹא אֶשְׁמָע וּכְאִלֵּם לֹא יִפְתַּח־פִּיו׃ וָאֱהִי כְּאִישׁ אֲשֶׁר

; expectavi Domine te Quia .redargutiones ejᵘ ore in non & ; *audiens* non

16 לֹא־שֹׁמֵעַ וְאֵין בְּפִיו תּוֹכָחוֹת׃ כִּי־לְךָ יְהוָה הוֹחָלְתִּי

; *mihi* lætentur fortè Ne : dixi Quia .mi Deus Domine *reſpondebis* tu

17 אַתָּה תַעֲנֶה אֲדֹנָי אֱלֹהָי׃ כִּי־אָמַרְתִּי פֶּן־יִשְׂמְחוּ־לִי

claudicationem ad ego Quoniam .egerunt magnificè me *ſuper* ,meo pede *nutando in*

18 בְּמוֹט רַגְלִי עָלַי הִגְדִּילוּ׃ כִּי־אֲנִי לְצֶלַע

; *indicabo* meam iniquitatem Quoniam .ſemper me coram meus dolor & ; paratus

19 נָכוֹן וּמַכְאוֹבִי נֶגְדִּי תָמִיד׃ כִּי־עֲוֺנִי אַגִּיד

ſunt multiplicati & : ſunt roborati viventes mei inimici Et .*meo peccato à ero ſollicitus*

20 אֶדְאַג מֵחַטָּאתִי׃ וְאֹיְבַי חַיִּים עָצֵמוּ וְרַבּוּ

,mihi adverſabantur bono pro malum reddentes Et .*falſò* me habentes odio

21 שֹׂנְאַי שָׁקֶר׃ וּמְשַׁלְּמֵי רָעָה תַּחַת טוֹבָה יִשְׂטְנוּנִי

.me à te elonges ne mi Deus ; Domine me derelinquas Ne .bonum *me ſequi pro*

22 תַּחַת רָדְפִי־טוֹב׃ אַל־תַּעַזְבֵנִי יְהוָה אֱלֹהַי אַל־תִּרְחַק מִמֶּנִּי׃

.*mea ſalus* Domine ; meum auxilium ad Feſtina

23 חוּשָׁה לְעֶזְרָתִי אֲדֹנָי תְּשׁוּעָתִי׃

PSAL. XXXIX. לט

peccando à meas vias Cuſtodiam : Dixi .David canticum Jeduthun ipſi Victori

1 לַמְנַצֵּחַ לִידִיתוּן מִזְמוֹר לְדָוִד׃ אָמַרְתִּי אֶשְׁמְרָה דְרָכַי מֵחֲטוֹא

2 Obmutui .me juxta *impium adhuc in* , *epiſtomidem* meo ori cuſtodiam ,mea lingua *in*

בִלְשׁוֹנִי אֶשְׁמְרָה לְפִי מַחְסוֹם בְּעֹד רָשָׁע לְנֶגְדִּי׃ נֶאֱלַמְתִּי 3

meum cor Caluit .eſt turbatus meus dolor & ; bono à tacui , ſilentio

4 דוּמִיָּה הֶחֱשֵׁיתִי מִטּוֹב וּכְאֵבִי נֶעְכָּר׃ חַם־לִבִּי

.mea lingua *in* ſum locutus : ignis exarſit mea meditatione in ,meo *interiori* in

בְּקִרְבִּי בַּהֲגִיגִי תִבְעַר־אֵשׁ דִּבַּרְתִּי בִּלְשׁוֹנִי׃

; *ipſa* quæ meorum dierum menſurā & , meum finem Domine me ſcire Fac

5 הוֹדִיעֵנִי יְהוָה ׀ קִצִּי וּמִדַּת יָמַי מַה־הִיא

meum tempus & ,meos dies *dediſti palmos* Ecce .*ego ævi quanti noſcam*

6 אֵדְעָה מֶה־חָדֵל אָנִי׃ הִנֵּה טְפָחוֹת ׀ נָתַתָּה יָמַי וְחֶלְדִּי

.Selah , ſtans homo omnis vanitas univerſa utique : te coram nihil tanquam

כְאַיִן נֶגְדֶּךָ אַךְ כָּל־הֶבֶל כָּל־אָדָם נִצָּב סֶלָה׃

,*coacervabit* :tumultuabūtur *vanè* veruntamē ,vir ambulabit imagine in Veruntamen

7 אַךְ־בְּצֶלֶם ׀ יִתְהַלֶּךְ־אִישׁ אַךְ־הֶבֶל יֶהֱמָיוּן יִצְבֹּר

.*ipſa* te in mea *expectatio* ?Domine expectavi quid nunc Et.ea *colligens quis* neſciet &

8 וְלֹא־יֵדַע מִי־אֹסְפָם׃ וְעַתָּה מַה־קִּוִּיתִי אֲדֹנָי תּוֹחַלְתִּי לְךָ הִיא׃

.me ponas ne ſtulti opprobrium ; me erue meis prævaricationibus omnibus Ex

9 מִכָּל־פְּשָׁעַי הַצִּילֵנִי חֶרְפַּת נָבָל אַל־תְּשִׂימֵנִי׃

me *deſuper* Remove .feciſti tu quia ; meum os aperiam non , Obmutui

10 נֶאֱלַמְתִּי לֹא אֶפְתַּח־פִּי כִּי אַתָּה עָשִׂיתָ׃ 11 הָסֵר מֵעָלַי

.defeci ego tuæ manus *conflictu à* ; tuam plagam

נִגְעֶךָ מִתִּגְרַת יָדְךָ אֲנִי כָלִיתִי׃

תרגום TARGUM.

13 וְעַבְדוּ פַּחִין תָּבְעֵי נַפְשִׁי וּבָעֵי בִּישׁוּתִי מַלִּילוּ
14 שִׁקְרָא וּנְכִלָא כָּל יוֹמָא מְרַנְנִין : וַאֲנָא הֵיךְ
חֵרְשָׁא לָא אֶשְׁמַע וְהֵיךְ אִלְמָנָא דְלָא פְתַח
15 פּוּמֵיהּ : וַהֲוֵיתִי כִּגְבַר דְּלָא שְׁמַע מֵעָלְמָא וְלָא
16 אִית בְּפוּמֵיהּ מַכְסְנוּתָא : אֲרוּם קֳדָמָךְ יְיָ
17 צַלֵּיתִי אַנְתְּ תְּקַבֵּל יְיָ אֱלָהִי : אֲרוּם אֲמָרִית
דִּלְמָא יֶחְדוּן עֲלַי בְּאִזְדַּעְזָעוּת רִגְלַי עֲלַי
18 אִתְרַבְרַבוּ : אֲרוּם אֲנָא לִתְבִירָא מְעַתַּד וְכֵיבִי
19 לָקֳבְלִי תְּדִירָא : אֲרוּם חוֹבִי אֲתַנֵּי אֶתְיְצֵף
20 מִן חֶטְאִי : וּבַעֲלֵי דְבָבַי חַיֵּי עֲלִימוּ וְסַגִּיאִין
21 סָנְאַי עַל שִׁקְרָא : וּפָרְעִין בִּישְׁתָא חֲלַף טָבְתָא
22 מַסְטְנָן לִי חִלּוּפֵי דִּרְדַפִּית טָב : לָא תִשְׁבְּקִנַּנִי
23 יְיָ אֱלָהַי לָא תִרְחִיק מִנִּי : זְרִיז לְסִיּוּעִי יְיָ
פּוּרְקָנִי :

לט

1 לְשַׁבָּחָא עַל מַטְּרַת בֵּית מַקְדְּשָׁא עַל פּוּמֵיהּ
2 דִּידוּתוּן תֻּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד : אֲמָרִית אֶנְטוֹר
אוֹרְחִי מִלְּמֶחְטֵי בְּלִישָׁנִי אֶנְטוֹר לְפוּמִי זְמָמָא
3 בְּרָאִית רַשִׁיעָא לָקֳבְלִי : אִתְאַלְמִית שְׁתִיקִית
בְּטֵלִית מִן פִּתְגָמֵי אוֹרַיְתָא מְטוּל הֵיכְנָא כֵּיבִי
4 מְמַרְטִיט : רְתַח לִבִּי בְּגוּשְׁמִי בְּרִנּוּנִי תִּדְלַק
5 אֶשָּׁתָא מַלֵּלִית בְּלִישָׁנִי : אוֹדַע לִי אוֹרַח סוֹפִי
וּמִשְׁחָתָא דְיוֹמַי מְנָא אִנּוּן אֵידַע אֵימָתַי
6 אֶפְסוֹק מִן עָלְמָא : קְלִילִין סַדַּרְתָּא יוֹמַי
וְגוּשְׁמִי כְּלָמָא לָקֳבְלָךְ בְּרַם כּוּלָּא לְלָמָא
חֲשִׁיבִין בְּרַם כּוּלְהוֹן צַדִּיקַיָּא קַיָּמִין לְחַיֵּי
7 עָלְמָא : בְּרַם בִּדְיוֹקְנָא דַיְיָ יִתְהַלֵּךְ גַּבְרָא
בְּרַם לְלָמָא מִשְׁתַּגְשִׁין כָּנֵישׁ וְלָא חַכִּים מְטוּל
8 מְנָא מַן כַּנְשִׁנּוּן : וּכְדוּן מְנָא סַבְרִית יְיָ
9 אוֹרִיכוּתִי לְוָתָךְ הִיא : מִן כּוּלְהוֹן מְרָדַי פַּצִּי יָתִי
10 חִסּוּדֵי סַכְלָא לָא תְשַׁוֵּי עֲלַי : אִתְאַלְמִית וְלָא
11 אֶפְתַּח פּוּמִי מְטוּל דִּי אַנְתְּ עֲבַדְתָּא : אַעְדֵּי
מֵעֲלַי מַכְתָּשָׁךְ מִמְּחַת גְּבוּרַת יְדָךְ אֲנָא שֵׁיצִיתִי :

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Et fecerunt laqueos quærentes animam meam : & quærentes malum meum locuti ſunt mendacium; & dolum quotidie *meditantur*. Ego verò quaſi *ſurdus*, non audiebam: & ſicut mutus qui non aperuit os ſuum. Et fui ſicut vir qui non audivit à ſeculo; & non habens in ore ſuo redargutiones. Quoniam coram te Domine oravi : tu exaudies Domine Deus meus. Quia dixi, Ne fortè lætentur de me: in commotione pedum meorum ſuper me magnificati ſunt. Quoniam ego ad exitium paratus ſum : & dolor meus coram me jugiter Quoniam ſcelus meum narrabo: ſolicitus ero propter peccatum meum. Et auctores inimicitiæ meæ vivi confortati ſunt: & multiplicati ſunt qui oderunt me falſó. Et qui reddunt malum pro bono, odio me proſequuntur ; eò quòd ſequutus ſum bonitatem. Ne derelinquas me Domine Deus meus: ne elongeris à me. Accinge te ad auxilium meum, Domine redemptio mea.

Ad laudandum pro cuſtodia domus ſanctuarii ore Idutun, Hymnus Davidi.

PSAL. XXXIX.

Dixi, Obſervabo vias meas; ne peccem lingua mea : cuſtodiam os meum freno, quamdiu improbus eſt contra me. Obmutui, tacui, & ceſſavi à verbis Legis; propterea dolor meus conturbatus eſt. Ebullit cor meum in corpore meo ; ob meditationem meam exardeſcet ignis : locutus ſum lingua mea. Notum fac mihi *iter finis mei*, & menſuram dierum meorum quanta erit, ut ſciam quando deficiam à ſeculo. Leves ordinâſti dies meos, & corpus meum tanquam nihil coram te : propterea omnia nihil reputâtur, verùm omnes juſti vivent in *vita æterna*. Tantùm in imagine Domini ambulat homo : verùm perperam conturbantur : congregat, & neſcit cui *quis* collegerit ea. Nunc autem quid expectavi Domine ? ſpes mea in te eſt. Ab omnibus ſceleribus meis libera me; opprobria ſtulti ne poſueris ſuper me. Obmutui, nec aperiam os meum ; quoniam tu feciſti. Amove à me plagam tuam: à percuſſione potentiæ manus tuæ ego conſumptus ſum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 * ܘܐܚܕܘܢܝ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܠܢܦܫܝ ܘܪܓܝܢ ܒܒܝܫܬܝ : ܘܡܠܠܘ ܫܘܩܪܐ ܘܢܟܠܐ. ܘܝܘܡܐ
14 ܟܠܗ ܪܢܝܢ ܗܘܘ : * ܐܢܐ ܕܝܢ ܐܝܟ ܕܚܪܫܐ ܠܐ ܫܡܥܬ ܗܘܝܬ. ܘܐܝܟ ܦܓܡܐ ܠܐ ܦܬܚܬ ܦܘܡܝ :
15 16 * ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܫܡܥ. ܘܕܠܝܬ ܡܟܣܢܘܬܐ ܒܦܘܡܗ : * ܡܛܠ ܕܠܟ ܣܟܝܬ
17 ܡܪܝܐ. ܘܥܢܝܬܢܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ : * ܡܛܠ ܕܐܡܪܬ ܕܠܐ ܢܚܕܘܢ ܒܝ. ܘܠܐ ܢܬܪܘܪܒܘܢ ܥܠܝ
18 ܒܙܘܥܐ ܕܪܓܠܝ : * ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܠܚܫܐ ܡܛܝܒ ܐܢܐ. ܘܟܐܒܝ ܠܘܩܒܠܝ ܗܘ ܒܟܠܙܒܢ :
19 20 * ܡܛܠ ܕܐܚܘܐ ܣܟܠܘܬܝ. ܘܐܬܕܟܐ ܡܢ ܚܛܗܝ : * ܕܝܐܦܣܠܡܐ * * ܒܥܠܕܒܒܝ ܐܬܚܝܠܘ
21 ܘܚܙܘ. ܘܣܓܝܘ ܣܢܐܝ ܕܫܘܩܪܐ : * ܦܪܥܘܢܝ ܒܝܫܬܐ ܚܠܦ ܛܒܬܐ. ܘܣܛܢܘ ܠܝ
22 ܕܪܕܦܬ ܛܒܬܐ : * ܠܐ ܬܫܒܘܩܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܘܠܐ ܬܪܚܩ ܡܢܝ. * ܐܠܐ ܩܘܡ ܠܡܥܕܪܢܝ
ܘܦܪܘܩܝܢܝ : * ܡܙܡܘܪܐ ܕܠܗ *

1 * ܠܐܝܕܝܬܘܢ. ܨܠܘܬܐ ܘܡܬܥܝܪܢܘܬܐ ܕܢܬܟܠܐ ܠܫܢܐ ܡܢ ܡܡܠܠܐ ܣܢܝܐ
ܘܚܙܬܐ ܘܫܪܟܐ ܕܪ̈ܓܫܐ. ܦܬܓܡܐ ܠܒ.
2 * ܐܡܪܬ ܕܐܛܪ ܐܘܪܚܝ. ܘܠܐ ܐܚܛܐ ܒܠܫܢܝ. ܐܐܚܘܕ ܦܘܡܝ ܡܢ ܥܘܠܐ ܡܛܠ ܪܫܝܥܐ ܕܩܝܡܝܢ ܠܘܩܒܠܝ :
3 4 * ܫܬܩܬ ܘܐܬܡܟܟܬ ܘܐܬܟܪܝܬ ܡܢ ܛܒܬܐ ܘܟܐܒܝ ܐܬܕܠܚ. * ܫܚܢ ܠܒܝ ܒܓܘܝ
5 ܘܒܦܓܪܝ ܐܝܩܕ ܢܘܪܐ : ܡܠܠܬ ܒܠܫܢܝ. * ܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ ܚܪܬܝ : ܘܡܫܘܚܬܐ ܕܝܘܡܝ
6 ܡܢܘ ܗܝ. ܕܐܕܥ ܠܡܢܐ ܦܠܛ ܐܢܐ. * ܗܐ ܒܡܫܘܚܬܐ ܝܗܒܬ ܝܘܡܝ : ܘܦܘܫܩܝ ܐܝܟ ܠܐ
7 ܩܕܡܝܟ ܗܘ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ ܐܝܟ ܠܗܓܐ ܩܝܡܝܢ : * * ܕܝܐܦܣܠܡܐ *
ܡܛܠ ܕܒܨܠܡܐ ܡܗܠܟ ܓܒܪܐ ܘܐܝܟ ܠܗܓܐ ܝܒܫ. ܣܐܡ ܣܝܡܬܐ ܘܠܐ ܝܕܥ ܠܡܢܘ
8 ܟܢܫ ܐܢܘܢ : * ܘܗܫܐ ܡܢܘ ܣܒܪܝ ܐܠܐ ܐܢܬ ܡܪܝܐ. * ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܣܟܠܘܬܝ
9 10 ܦܨܢܝ : ܘܚܣܕܐ ܠܥܘܠܐ ܠܐ ܬܥܒܕܢܝ. * ܫܬܩܬ ܘܠܐ ܦܬܚܬ ܦܘܡܝ ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܥܒܕܬ :
11 * ܐܥܒܪ ܡܢܝ ܡܚܘܬܟ ܘܡܢܝ ܡܚܘܬܐ ܕܐܝܕܝܟ.

Tenueruntque me hi qui quærunt animam meam, & exoptant malū meū : & locuti ſunt falſitatem ac dolum, dieque totâ meditabantur. Ego verò tanquam ſurdus non audiebā, & ſicut mutus non aperui os meum : Et eram velut vir qui non audit, & cujus in ore non eſt argutio. Quoniam te expectavi, Domine, & exaudîſti me, Dñe Deus meus : Quoniā dixi quòd non gaudebunt de me, nec ſeſe attollent ſuper me in vacillatione pedum meorum : Quoniam ego ad paſſionem paratus ſum, & dolor meus ante me eſt omni tempore. Quoniam aperiā tibi ſtultitias meas, & mundabor à peccatis meis. * *Diapſalma.* * Hoſtes mei confortati ſunt & viderunt: & multiplicati ſunt oſores mei falſidici. Rependerūt mihi malū pro bono, & adverſati ſunt mihi, quia quæſivi bonū. Ne derelinquas me, Dñe Deus meus, & ne recedas à me; Sed perſiſte ad auxilium meum, & libera me.

PSAL. XXXIX.

Idithum. Oratio, & adhortatio ad cohibendam linguam à ſermone turpi, & viſum, cæteroſq; ſenſus. Verſ. 32.

Dixi, cuſtodiam viam meam, & non peccabo linguâ meâ; continebo os meum ab iniquitate propter impios qui adverſum me ſunt. Obmutui & contriſtatᵘ ſum ac mœrui ob bonū, & dolor meus agitatus eſt : Incaluit cor meum intra me, & in corpore meo accenſus eſt ignis. Locutus ſum linguâ meâ: Oſtende mihi, Dñe, finē meū, & menſuram dierum meorū quænā ſit, ut ſciā ad quid ſuperſum. Nam cū menſura dediſti dies meos, & ſuperſtes vita mea tanquā nihil eſt ante te; quoniā omnes homines ut vapor conſiſtunt. * *Diapſalma.* * Quoniā in imagine incedit homo, & velut exhalatio areſcit; Reponit theſauros, & ignorat cui congregat eos. Nunc quis eſt ſpes mea niſi tu, Dñe? Et ab omnibus inſipientiis meis libera me, & opprobrium iniquis ne conſtituas me. Obmutui & non aperui os meū, quoniā tu feciſti. Transfer à me flagellū tuū, & à me plagam manuum tuarum.

Verſio VULG. LAT.

13 Et vim faciebant qui quærebant animã
meã. Et qui inquirebant mala mihi, lo-
cuti ſunt vanitates : & dolos totá die
14 meditabantur. Ego autem tanquàm ſur-
dus non audiebã : & ſicut mutus non a-
15 periens os ſuum. Et factus ſum ſicut ho-
mo non audiens : & non habens in ore
16 ſuo redargutiones. Quoniã in te, Dñe,
ſperavi : tu exaudies me, Dñe Deus meᵒ.
17 Quia dixi, Nequando ſupergaudeant
mihi inimici mei : & dũ commoventur
pedes mei, ſuper me magna locuti ſunt.
18 Quoniã ego in flagella paratus ſum : &
dolor meus in conſpectu meo ſemper.
19 Quoniã iniquitatem meã annuntiabo :
20 & cogitabo pro peccato meo. Inimici
autem mei vivunt, & confirmati ſunt
ſuper me : & multiplicati ſunt qui ode-
21 runt me iniqué. Qui retribuunt mala pro
bonis, detrahebant mihi : quoniã ſeque-
22 bar bonitaté. Ne derelinquas me, Dñe
23 Deus meus : ne diſceſſeris à me. Intende
in adjutoriũ meũ, Dñe Deus ſalutis meæ.

1 In finem, ipſi Idithun, Canticum David. XXXVIII.

2 DIxi, Cuſtodiã vias meas : ut non
delinquã in lingua mea. Poſui ori
meo cuſtodiã, cùm conſiſteret peccator
3 adverſũ me. Obmutui, & humiliatus ſũ,
& ſilui à bonis : & dolor meus renovatᵒ
4 eſt. Concaluit cor meũ intra me : & in
5 meditatione mea exardeſcet ignis. Locu-
tus ſũ in lingua mea; Notũ fac mihi, Dñe,
finem meũ , Et numerũ dierũ meorum
6 quis eſt : ut ſciã quid deſit mihi. Ecce
menſurabiles poſuiſti dies meos : & ſub-
ſtantia mea tanquã nihilũ ante te. Ve-
runtamen univerſa vanitas, omnis homo
7 vivens. Veruntamẽ in imagine pertranſit
homo : ſed & fruſtrà conturbatur. The-
ſaurizat : & ignorat cui congregabit ea.
8 Et nunc quæ eſt expectatio mea ? nónne
9 Dñs ? & ſubſtantia mea apud te eſt. Ab
omnibus iniquitatibus meis erue me :
10 opprobrium inſipienti dediſti me. Ob-
mutui & non aperui os meum , quoni-
11 am tu feciſti : Amove à me plagas tuas.
12 A fortitudine manûs tuæ ego defeci,

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

13 † Καὶ(ʰ)ἐξεβιάζοντο οἱ ζητοῦντες τὴν ψυχήν μου· † ϗ
οἱ ζητοῦντες τὰ κακά μοι ἐλάλησαν ματαιότητας, †
14 ϗ δολιότητας ὅλην τὴν ἡμέραν ἐμελέτησαν. † Ἐγὼ δὲ
ὡσεὶ κωφὸς οὐκ ἤκουον, † ϗ ὡσεὶ ἄλαλος οὐκ ἀνοίγων
15 τὸ στόμα αὐτοῦ. † Καὶ ἐγενόμην ὡσεὶ ἄνθρωπος
οὐκ ἀκούων, † ϗ οὐκ ἔχων ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ ἐλεγ-
16 μούς. † Ὅτι ἐπὶ σοὶ κύριε ἤλπισα, † σὺ εἰσακούσῃ κύ-
17 ριε ὁ θεός μου. † Ὅτι εἶπα, Μήποτε ἐπιχαρῶσί
μοι οἱ ἐχθροί μου, † ϗ ἐν τῷ σαλευθῆναι πόδας
18 μου, ἐπ' ἐμὲ (κ) ἐμεγαλορρημόνησαν. † Ὅτι ἐγὼ εἰς
μάστιγας ἕτοιμος, † ϗ ἡ ἀλγηδών μου ἐνώπιόν (λ)
19 μου διαπαντός. † Ὅτι τὴν ἀνομίαν μου (μ) ἀναγγε-
20 λῶ, † ϗ μεριμνήσω ὑπὲρ τῆς ἁμαρτίας μου. † Οἱ δὲ
ἐχθροί μου ζῶσι, ϗ κεκραταίωνται ὑπὲρ ἐμέ, † ϗ ἐ-
21 πληθύνθησαν (ν) οἱ μισοῦντές με ἀδίκως. † Οἱ ἀντ-
αποδιδόντες (ξ) κακὰ ἀντὶ ἀγαθῶν, † ἐνδιέβαλλόν
22 με, ἐπεὶ κατεδίωκον δικαιοσύνην. † Μὴ ἐγκαταλί-
πῃς με κύριε ὁ θεός μου, μὴ ἀποστῇς ἀπ' ἐμοῦ. †
23 Πρόσχες εἰς τὴν βοήθειάν μου κύριε τῆς σωτηρίας μου.

MS. A. (ʰ)ἐξεβιάσαντο (κ) ἐμεγαλορημόνησαν. (λ) μου ἐστὶν (μ) ἐγὼ ἀναγγελῶ, (ν) οἱ μισοῦντες ἀδίκως. (ξ) μοι κακὰ

1 Εἰς τὸ τέλος, τῷ (α) Ἰδιθοὺν ᾠδὴ τῷ Δαυίδ. λη΄.

2 † Εἶπα, φυλάξω τὰς ὁδούς μου, τοῦ μὴ ἁμαρτά-
νειν(ʰ)ἐν γλώσσῃ μου. † ἐθέμην τῷ στόματί μου φυλα-
κήν, † ἐν τῷ συστῆναι τὸν ἁμαρτωλὸν ἐναντίον μου.
3 † Ἐκωφώθην ϗ ἐταπεινώθην ϗ ἐσίγησα ἐξ ἀ-
4 γαθῶν, † ϗ τὸ ἄλγημά μου ἀνεκαινίσθη. † Ἐθερ-
μάνθη ἡ καρδία μου ἐντός μου, † ϗ ἐν τῇ μελέτῃ
5 μου ἐκκαυθήσεται πῦρ· † Ἐλάλησα ἐν γλώσσῃ μου,
† Γνώρισόν μοι κύριε τὸ πέρας μου, † ϗ τὸν ἀριθ-
μὸν τῶν (β) ἡμερῶν μου τίς ἐστιν, † ἵνα γνῶ τί ὑστε-
6 ρῶ ἐγώ. † Ἰδοὺ (γ) παλαιὰς ἔθου τὰς ἡμέρας μου, †
(δ) ϗ ἡ ὑπόστασίς μου ὡσεὶ οὐθὲν ἐνώπιόν σου· † πλὴν
τὰ (ε) σύμπαντα ματαιότης, † πᾶς ἄνθρωπος
7 ζῶν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Μέντοιγε ἐν εἰκόνι διαπο-
ρεύεται ἄνθρωπος, † πλὴν μάτην ταράσσεται· † θη-
σαυρίζει, ϗ οὐ γινώσκει τίνι (ζ) συνάξει αὐτά. †
8 Καὶ νῦν τίς ἡ ὑπομονή μου; οὐχὶ ὁ κύριος; † ϗ ἡ
ὑπόστασίς μου (η) παρὰ σοί ἐστιν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †
9 Ἀπὸ πασῶν τῶν ἀνομιῶν μου ῥῦσαί με, † ὄνειδος
10 ἄφρονι ἔδωκάς με. † Ἐκωφώθην ϗ οὐκ ἤνοιξα τὸ
11 στόμα μου, (θ) ὅτι σὺ εἶ ὁ ποιήσας με. † Ἀπόστη-
12 σον ἀπ' ἐμοῦ τὰς μάστιγάς σου· † (ι) Ἀπὸ τῆς ἰσχύος
τῆς χειρός σου ἐγὼ ἐξέλιπον.

Verſ. GRÆ. LXX Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

Et vim faciebant, qui quærebant 13
animã meam. 13 *Et*[h]*qui*(*n*)*in-*
quirebant mala mihi, locuti ſunt
vanitates : et dolos totâ die[i]*me-*
ditabantur. 14 *Ego autem tanquã* 14
ſurdus non audiebã, & ſicut mu-
tus non aperiens os ſuum. 15 *Et* 15
factus ſum, ſicut homo non audi-
ens, et[k]*non habens in ore ſuo re-*
dargutiones. 16 *Quoniã in te, Do-* 16
mine, ſperavi : tu exaudies, Domine
Deᵒ meᵒ. 17 *Quia dixi, Nequando* 17
ſuper gaudeant mihi inimici mei :
& dum commoventur pedes mei,
in me (*o*) *magna locuti ſunt.*
18 *Quoniã* [†] *ego in*(*p*)*flagella* 18
paratᵒ ſum : et[l]*dolor meᵒ in con-*
ſpectu meo ſemper. 19 *Quoniam* 19
iniquitatẽ meam annuntiabo : &
[m]*curam gerã pro peccato meo.*
20 *Inimici autẽ mei*(*q*)*vivunt : et* 20
[n] *confirmati ſunt ſuper me : &*
multiplicati ſunt qui oderunt me
iniqué. 21 *Qui retribuunt mala* 21
pro bonis, (*r*) *detrahebant mihi :*
quoniã(*ſ*) *perſequutus ſum juſti-*
tiam.[o] 22 *Ne derelinquas me,* 22
Domine Deᵒ meus, ne diſceſſeris à
me. (*t*) *Intende in adjutorium* 23
meum, Domine ſalutis meæ.

In finem(*a*)ipſi[a]Idithum, Canticum ipſi David. XXXVIII. 1

1 D*ixi,*(*b*) *Cuſtodiam* [b]*vias* 2
meas ; ut non delinquam in
lingua mea. 2 *Poſui ori meo cuſto-*
diam, cùm conſiſteret peccator ad-
verſùm me. 3 *Obmutui, & humi-* 3
liatus ſum, & ſilui à bonis : & [c]
dolor meus (*c*) *renovatus eſt.*
4(*d*)[d] *Concaluit cor meũ intra* 4
me ; & in meditatione mea exar-
deſcet ignis. 5 *Locutus ſum in lin-* 5
gua mea ; Notũ fac mihi, Domine,
finem meũ : 6 *Et numerũ dierum*
meorũ, qui eſt ; ut ſciã[e]*quid de-*
ſit mihi. 7 *Ecce*(*e*)*veteres poſuiſti* 6
dies meos : & (*f*) *ſubſtantia mea,*
tanquam nihil ante te. 8 *Verun-*
tamen(*g*)*univerſa vanitas, omnis*
homo(*h*)*vivens.* DIAPSALMA.
(*i*) 9 *Veruntamen*[t] *in imagine* 7
pertranſit homo : ſed fruſtrà con-
turbatur. 10 *Theſaurizat, et igno-*
rat(*k*)*cui congregabit ea.* 11 *Et*(*l*) 8
nunc, quæ eſt expectatio mea ? non-
ne Dominᵒ, et[†]*ſubſtantia mea*(*m*)*apud te eſt ?* DIAPSALMA. 12 *Ab omnibus iniqui-* 9
tatibus meis erue me : opprobriũ inſipienti dediſti me : 13 *Obmutui, et non aperui os meũ :* 10
quoniam tu es, qui(*n*)*feciſti me : Amove à me plagas tuas.* 14[g]*A fortitudine manûs* 11 12
tuæ ego defeci :

Verſio ÆTHIOPICA.

13 ወተኀየሉኒ፡እለ፡የኀሥሥዋ፡ለነፍስየ፡፡=፡
ወእለኒ፡ይፈቅዱ፡ሕማምየ፡ነበቡ፡ከንቶ፡፡ 13
ወኵሎ፡አሚረ፡ይመክሩ፡በቍጽር፡ያመንስ
ውኒ፡፡=፡ ወአንሰ፡ ከመ፡ ጽሙም፡ዘኢይሰ 14
ምዕ፡፡ወከመ፡ በሃም፡ ዘኢይከሥት፡ አፉ
ሁ፡፡=፡ ወኮንኩ፡ ከመ፡ ብእሲ፡ዘኢይሰም 15
ዕ፡፡ ወከመ፡ ዘኢይክል፡ ተናግሮ፡ በአፉ
ሁ፡፡=፡ እስመ፡ኪያከ፡ ተወከልኩ፡ እግዚ 16
ኦ፡፡አንተ፡ስምዓኒ፡እግዚኦ፡አምላኪየ፡፡=፡
እስመ፡ እቤ፡ ኢትረስየኒ፡ስላት፡ጸላእየ፡፡ወ 17
እመኒ፡ድኅጸ፡ሰኰናየ፡የዐቢዩ፡ አፈሆሙ፡ላ
ዕሌየ፡፡=፡እስመ፡ሲተሰ፡ያጽንሑኒ፡ይቅስፉ 18
ኒ፡፡ወቍስልየኒ፡ቅድሜየ፡ ውእቱ፡በኵሉ፡
ጊዜ፡፡=፡ ወእነግር፡ጌጋይየ፡፡ወእቴክዝ፡በ 19
እንተ፡ኃጢአትየ፡፡=፡ ፀላእትየሰ፡ሕያዋን፡ 20
ወይኄይሉኒ፡፡ወበዝኁ፡እለ፡ በዐመፃ፡ይጸል
ሉኒ፡፡=፡ እለ፡ ይፈድዩኒ፡ እኪተ፡ ህየንተ፡ 21
ሠናይት፡፡ወያስተዋድዩኒ፡በተሊወ፡ጽድቅ፡፡
ወገደፉ፡እኀዊሆሙ፡ከመ፡በድን፡ርኩስ፡፡=፡
አንተ፡ኢትግድፈኒ፡ እግዚኦ፡ አምላኪየ፡ወ 22
ኢትርሐቅ፡እምኔየ፡፡ወነጽር፡ ውስተ፡ ረድ
ኤትየ፡እግዚኦ፡ አምላከ፡መድኃኒትየ፡፡=፡

ፍጻሜ፡ዘኤደቅም፡ማኅሌብ፡ዘደዊት፡፡

ሀጊ ዐቤ፡አዐቅብ፡አፉየ፡ከመ፡ኢይስሐት፡ 1
በልሳንየ፡፡=፡ ወአንበርኩ፡ዐቃቤ፡ለአፉየ፡፡ 2
ሶበ፡ይትቃወሙኒ፡ኃጥአን፡ቅድሜየ፡፡=፡ተ 3
ጸመምኩ፡ ወአትሐትኩ፡ ርእስየ፡፡ወአርመ
ምኩ፡ ለሠናይ፡፡ወተሐደሰኒ፡ ቍስልየ፡፡=፡
ወሞቀኒ፡ ልብየ፡ በውስጤየ፡፡ወነደደ፡እሳት፡ 4
እመአንብቦትየ፡፡=፡ ወእቤ፡በልሳንየ፡ንገረ 5
ኒ፡ እግዚኦ፡ ደኃሪትየ፡፡=፡ መንት፡ እማን 6
ቱ፡ኍልቈን፡ለመዋዕልየ፡፡ከመ፡ አእምር፡ለ
መንት፡እዴሀር፡አነ፡፡=፡ ናሁ፡ብሉያተ፡ረ 7
ሰይከን፡ለመዋዕልየ፡፡ወአካልየኒ፡ ወኢከመ፡
መንት፡ በቅድሜከ፡፡=፡ ወባሕቱ፡ ከንቱ፡ 8
ኵሉ፡ደቂቀ፡እጓለ፡እመሕያው፡፡=፡ ወከ 9
መ፡ጽላሎት፡ያንሶሱ፡ ኵሉ፡ሰብእ፡፡ወባሕ
ቱ፡ከንቶ፡ይትሀወኩ፡፡=፡ ይዘግቡ፡ወኢያአ 10
ምሩ፡ለዘ፡ያስተጋብኡ፡፡=፡ ወይእዜኒ፡መ 11
ኑ፡ተስፋየ፡ አኮኑ፡እግዚአብሔር፡፡ወትዕግ
ስትየኒ፡እምኀቤከ፡ውእቱ፡፡=፡ ወእምኵ 12
ሉ፡ኃጢአትየ፡አድኅነኒ፡፡ወረሰይከኒ፡ ፅዕለ
ተ፡ለአብደን፡፡=፡ ተፀመምኩ፡ወኢከሠት 13
ኩ፡አፉየ፡፡እስመ፡ አንተ፡ ፈጠርከኒ፡፡አር
ሕቅ፡ እምኔየ፡ መቅሠፍተከ፡፡=፡ እስመ፡ 14
እምጽንዓ፡እዴከ፡ኃለቁ፡አነ፡፡

MS. A. (α) Ἰδιθοὺμ (ʰ) με ἐν (β) ἡμερῶν τίς ἐστιν, (γ) παλαιστὰς (δ) ϗ ἡ ὑπόστασίς (ε) σύνπαντα (ζ) συνάγει (η) παρὰ σοῦ ἐστιν. Ἀπὸ πασῶν (θ) ὅτι σὺ ἐποίησάς με. (ι) Ἀπὸ γὰρ τῆς

INTERP. ÆTHIOP. [h] qui cupiebant etiam afflictionem meam, [i] meditabantur, & pertentabant me. [k] ſicut ille qui loqui nequit ore ſuo. [†] expectare me fecerunt me vapulandum : [l] vulnus meum in [m] anxius ero pro [n] fortiores me ſunt : [o] Et repulerunt fratres ſuos, tanquam cadaver immundum. Ne *PSAL. XXXVIII.* [a] Edakem, [b] os meum ; ut non aberrem [c] vulnus meum renovatum eſt. [d] Et dilatatum eſt cor meum [e] quare ipſe deficiam. [f] tanquam umbra pertranſit omnis [†] patientia mea [g] Quoniam à fortitudine

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

13 * والقريبون الي وقفوا بعيدا مني * ملتمسوا نفسي ظلموا * والطالبون لي الشر تكلموا بالباطل *
14 النهار كله يدرسون الدغل * وانا مثل الاصم لا اسمع * ومثل الاخرس الذي لا يفتح فاه *
15 16 * صرت مثل انسان لا يسمع * ولا تبكيت في فمه * لاني توكلت عليك يا ربي * وانت تستجيب لي
17 18 يا ربي والهي * لاني قلت لكيلا تسر بي اعداي * وعند زلل رجلي عظموا علي القول * وانا
19 استعددت للضرب * ووجعي امامي في كل حين * لاني اعترف باثمي * واهتم لاجل خطيي *
20 21 * اعداي احيا * واعز مني * كثر من يشناني ظلما * الذين جازوني علي الخيرات شرا * مكروا
22 بي لاني طلبت البر * رفضوني انا الحبيب مثل ميت مرذول * وسمروا جسدي * لا تخذلني
23 يا ربي والاهي * ولا تبعد عني * انظر في معونتي يا اله خلاصي * الليلويا *

1 * المزمور الثامن والثلثون * تعليم وشكر لاجل ايديثون * وعدده * كط استيخن *
2 * انا قلت احفظ طرقي لئلا اخطي بلساني * تركت حافظا على فمي * عند قيام الخاطي امامي
3 4 * خرست وتواضعت * وامسكت عن الخير * فتجدد وجعي * حمي قلبي في باطني * وفي تلاوتي
5 اضطرمت النار مني * تكلمت بلساني وقلت * عرفني يا رب منتهاي * وما هي عدة ايامي لاعلم
6 ماذا اعجزها * قد تركت ايامي قصيرة * وقوامي كلا شي امامك * بل كل شي لانسان حي فهو
7 8 باطل * الا ان الانسان يمشي بصورة وكالفي يزول * ويكنز ولا يعلم لمن يجمع * والان من رجاي
9 10 اليس هو الرب * وقوامي هو من عنده * طهرني من جميع اثامي * جعلتني عارا للجاهل * صممت
11 ولم افتح فمي * لانك انت خلقتني * ارفع عني تاديبك * لاني قد فنيت من قوة يديك *

Et qui prope me erant, ſteterunt procul à 13
me. Qui quærunt animã meã , oppreſſe-
runt : & qui exoptant mihi malũ, locuti
ſunt vanitatem, die totâ meditantur dolũ.
Ego verò tanquã ſurdus non audiebã, & 14
tanquã mutᵒ qui non aperit os ſuũ. Factᵒ 15
ſum velut homo non audiens, & carens
redargutione in ore ſuo. Quandoquidem 16
confiſus ſum in te, O Domine mi, etiã tu
exaudies me, O Domine mi, & Deus meus.
Nã ego dixi, ut non gaudeant in me ini- 17
mici mei ; & ad lapſũ pedũ meorũ gran-
dem fecerunt de me ſermonem. Et ego pa- 18
ravi me verberibus, & dolor meus coram
me in omni tempore. Quoniã ego confiteor 19
delictũ meũ, angor propter peccatũ meũ.
Inimici mei vivi ſunt, & fortiores me : 20
multiplicati ſunt qui oderunt me iniqué.
Qui retribuerunt mihi pro beneficiis ma- 21
lum, doloſè egerunt in me quia quæſivi
juſtitiam. Reſpuerunt me dilectum quaſi
mortuũ abominandũ, & clavis confixe-
runt corpus meũ. Ne derelinquas me, O 22
Domine mi, & Deus meus, & ne elonge-
ris à me. Reſpice in adjutoriũ meũ, O 23
Deus ſalutis meæ. Alleluja.

PSAL. XXXVIII.

Documentũm, & gratiarum actio 1
pro Idithun. Et numerus ver. 19.

E*Go dixi , Cuſtodiã vias meas, ut ne* 2
peccem linguâ meâ : Poſui cuſtodem
ori meo, aſtante peccatore corã me. Ob- 3
mutui, & humiliatus ſũ, & retraxi me à
bono : proinde renovatus eſt dolor meus.
Æſtuavit cor meũ in interaneis meis, & 4
in meditatione mea accenſus eſt ignis ex
me. Locutus ſum linguâ meâ, & dixi ; No- 5
tifica mihi , O Domine finem meum, &
quinã ſit numerus dierũ meorũ, ut ſciam
quantũ diſtem ab eis. Jam poſuiſti dies 6
meos breves, & conſiſtentia mea tanquam
nihilũ corã te. Imò quicquid pertinet ad
hominẽ viventẽ, eſt vanũ : Niſi quòd ho- 7
mo incedit in imagine, & velut umbra
præterit : et theſaurizat, et ignorat cui co-
gat. Nunc ergò quis eſt ſpes mea ? nonne 8
eſt Dominus ? Et conſiſtentia mea ab ipſo 9
eſt. Munda me omnibus ſceleribus meis.
Feciſti me opprobriũ ſtulto : Obmutui, & 10
non aperui os meum, quia tu creâſti me.
Tolle à me caſtigationem tuã : jam enim 11
conſumptus ſũ à duritie manuũ tuarũ.

תהלים : מ

tineam ut fecisti liquescere &, virum corripuisti iniquitatem *super* increpationibus In
בתוכחות על עון יסרת איש ותמס כעש 12
meā orationem Audi .Selah ,homo omnis vanitas veruntamen ; ejus desideriū
חמודו אך הבל כל אדם סלה: שמעה תפלתי 13
quia ,*taceas* ne meam lachrymam ad : percipe auribus meā clamorem &, Domine
יהוה ושועתי האזינה אל דמעתי אל תחרש כי
; roborabor & ,me à *Claude* .mei patres omnes ut incola ; *tecum ego* peregrinus
גר אנכי עמך תושב ככל אבותי: השע ממני ואבליגה 14
ego non & ,vadam antequam
בטרם אלך ואינני:

PSAL. XL. מ

declinavit & ; Dominum expectavi Expectando .canticum ,David ipsi Victori
למנצח לדוד מזמור: קוה קויתי יהוה ויט 1 2
luto è ,sonitus cisterna è me fecit ascendere Et .meum clamorem audivit & ,*me ad*
אלי וישמע שועתי: ויעלני מבור שאון מטיט 3
meo ore in *dedit* Et .meos gressus *parans* ,meos pedes petram super statuit & : cœni
היון ויקם על סלע רגלי כונן אשרי: ויתן בפי 4
sperabunt & ; timebunt & ,multi videbunt : nostro Deo laudem ,novum canticum
שיר חדש תהלה לאלהינו יראו רבים וייראו ויבטחו
respexit non & ;suam spem Dominum posuit qui *viri Felicitates* .Domino in
ביהוה: אשרי הגבר אשר שם יהוה מבטחו ולא פנה 5
Domine tu fecisti Multa .mendacium declinantes & ,superbos ad
אל רהבים ושטי כזב: רבות עשית אתה יהוה 6
: te apud *ordinare* non nos erga tuas cogitationes & ,tua mirabilia meus Deus
אלהי נפלאתיך ומחשבתיך אלינו אין ערך אליך
, noluisti *munus* & Sacrificiū .*narrare præ fuêre fortia* ; loquar &, annunciabo
אגידה ואדברה עצמו מספר: זבח ומנחה לא חפצת 7
Tunc .postulâsti non peccato pro sacrificiū & ,holocaustū : mihi fodisti aures
אזנים כרית לי עולה וחטאה לא שאלת: אז 8
faciendum Ad .me super est scriptum libri volumine in ; veni Ecce : dixi
אמרתי הנה באתי במגלת ספר כתוב עלי: לעשות 9
Annunciavi .meorū viscerum medio in tua lex & : volui mi Deus tuā voluntatē
רצונך אלהי חפצתי ותורתך בתוך מעי: בשרתי 10
.scivisti tu Domine ; *prohibebo* non mea labia ecce ,multo cœtu in justitiam
צדק בקהל רב הנה שפתי לא אכלא יהוה אתה ידעת:
tuam salutem & ,tuam veritatem ; mei cordis medio in operui non tuā Justitiam
צדקתך לא כסיתי בתוך לבי אמונתך ותשועתך 11
.multo cœtu in tuam veritatem & ,tuam misericordiam *celavi* non : dixi
אמרתי לא כחדתי חסדך ואמתך לקהל רב:
tua veritas & tua misericordia : me à tuas misericordias *occludas* ne Domine Tu
אתה יהוה לא תכלא רחמיך ממני חסדך ואמתך 12
non ad usque mala me *super* circumdederunt Quoniam .me custodiant semper
תמיד יצרוני: כי אפפו עלי רעות עד אין 13
sunt *fortificatæ* : videre potui non & ,meæ iniquitates me comprehenderūt : *numerum*
מספר השיגוני עונתי ולא יכלתי לראות עצמו
.me dereliquit meum cor & ,mei capitis capillis præ
משערות ראשי ולבי עזבני:

תרגום TARGUM.

במסכנותא על חובא יתרדי בר נשא ומסירת 12
היך עמר דאתנרדים גושמיה ברם למא כל
בר נשא לעלמא: קביל צלותי יי ובעותי 13
אצית ולדמעתי לא תשתוק ארום היך גיורא
אנא נבך תותבא היך כולהון אבהתי:
אשלי מני ואזיל עד לא אהך ולא 14
איתי:

מ

לשבחא לדוד תשבחתא: מסברא סברית יי 1 2
וצלא לותי וקביל בעותי: ואסקני מגוב 3
אתרגושתא מסכן טשטושא ואקים על
כיפא רגלי תקין אתורי: וסדר בפומי שבח 4
חדתא תהי תושבחתא קדם יי אלהנא
יחמון סגיאין וידחלון ויסברון במימרא דיי:
טובוי דגברא דשוי יי רוחצניה ולא אסתכי 5
לות סורבניא וממללי כדיבותא: סגיעי 6
נסיא דעבדתא את יי אלהי פרישותך
ורעותך לותנא לית אפשר לסדרא לותך
תושבחתך אתני ואמלל תקיפו מן לחואה:
נכסא ודורונא לא צביתא אודנין לאצתא 7
פורקנך כריתא לי עלתא וקורבן חטתא
לא שילתא: הידין אמרית הא עלית 8
לחיי עלמא כד אעסוק במגלת ספרא
דאוריתא דאכתיב אמטלתי: למעבד רעותך 9
אלהי רעיתי ואוריתך כלילא במצע מעיני:
בשרית צדקא בכנשתא רבא הא ספותי לא 10
אמנע יי אלהי את חכימת: צדקתך לא טמרית 11
בגו לבי קושטך ופורקנך אמרית לא כסיתי
טיבותך והימנותך בקהלא רבא: בגלל 12
כן את יי לא תמנע רחמך מני טובך וקושטך
תדירא ינטרונני: ארום תקיפין עלי בישן 13
עד דלית מנין אדביקו יתי חובי ולא יכלית
למחמי תקפו מן בינתי רישי ורעיוני
שבקוני:

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Correptione ob scelus *castigatur homo*: & liquefactum est instar *tineæ disrupta corp* ejus: profectò nihil est omnis homo semper. Suscipe orationem meam Domine, & petitionem meam ausculta: & ad lachrymas meas ne sileas; quoniam vel peregrinus ego sum apud te, & advena sicut omnes patres mei. Dimitte me, & abibo, antequam vadam, & non subsistam.

Ad laudandum Davidi Hymnus.

PSAL. XL.

Expectando expectavi Dominum; & inclinavit ad me, & suscepit deprecationem meam. Et eduxit me de lacu strepitus, & luto cœni: & statuit supra petram pedes meos, stabilivit gressus meos. Et ordinavit in ore meo canticum novum, *erit hymnus* coram *Domino* Deo nostro: videbunt multi & timebunt, & sperabunt in verbo Domini. Beatus homo qui posuit Dominum spem suam: & non respexit ad elatos, & loquentes mendacia. Multa signa edidisti tu Domine Deus meus: mirabilia tua & *voluntas tua* nobiscum: impossibile est ordinare ad te laudem tuam: [*si*] narrem & loquar, plures sunt quàm ut indicari possint. Immolationem & oblationem noluisti; aures ad *auscultandam salutem tuam* perforâsti mihi; holocaustum & oblationem peccati non postulâsti. Tunc dixi, Ecce ingrediar ad vitam æternam, quando studuero in volumine libri legis quod scriptum est propter me. Facere voluntatem tuam Deus meus volui; & lex tua *integra est* in medio viscerum meorum. Annunciavi justitiam in congregatione magna: ecce labia mea non prohibebo; Domine *Deus meus* tu nôsti. Justitiam tuam non abscondi in medio cordis mei; veritatem tuam & redemptionem tuam dixi: non occului bonitatem tuam, & fidem tuam in ecclesia magna. Propterea tu Domine ne prohibeas misericordiam tuam à me: benignitas tua & veritas tua continuè custodient me. Quoniam in*valuerunt in* me mala quæ numerari non possunt: comprehenderunt me scelera mea, & non potui videre: multiplicata sunt plusquàm capilli capitis mei, & *cogitationes meæ deseruerunt* me.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܣܦܝܬ ܒܡܟܣܢܘܬܐ ܕܚܠܦ ܚܛܗܝ: ܪܕܝܬ ܓܒܪܐ ܘܐܫܚܠܬ ܐܝܟ ܣܒܠܬܐ ܪܓܝܓܬܗ. 12
ܘܐܝܟ ܠܗܓܐ ܐܢܘܢ ܟܠܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ: * ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܨܠܘܬܝ ܘܒܥܘܬܝ ܘܨܘܬ ܠܕܡܥܬܝ. 13
ܘܠܐ ܬܫܬܘܩ ܡܛܠ ܕܬܘܬܒܐ ܐܢܐ ܥܡܟ: ܘܬܘܬܒܐ ܐܝܟ ܟܠܗܘܢ ܐܒܗܝ. * ܦܪܘܩܝܢܝ: 14
ܘܐܬܬܢܝܚ: ܥܕܠܐ ܐܙܠ ܘܬܘܒ ܠܐ ܐܗܘܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

* ܠܕܘܝܕ. ܡܫܡܥܢܐ ܟܕ ܐܝܬܝ ܫܡܗܝܗܘܢ ܫܡܥܝ ܕܐܢܫܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܗܘܘ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. 1
ܘܪܘܚܢܐ: ܬܘܕܝܬܐ ܠܐܠܗܐ ܡܢ ܦܠܚܘܗܝ ܘܡܢ ܥܕܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܗ.

* ܡܣܟܪܘ ܣܟܪܬ ܠܡܪܝܐ. ܘܐܬܦܢܝ ܠܘܬܝ ܘܫܡܥ ܒܥܘܬܝ: * ܘܐܣܩܢܝ ܡܢ ܓܘܒܐ 2
ܕܕܘܘܢܐ. ܘܡܢ ܣܝܢܐ ܕܚܒܠܐ: ܐܩܝܡ ܥܠ ܫܘܥܐ ܪܓܠܝ ܘܬܩܢ ܗܠܟܬܝ. * ܝܗܒ ܒܦܘܡܝ 3 4
ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܠܐܠܗܐ: ܕܢܚܙܘܢ ܣܓܝܐܐ ܘܢܚܕܘܢ. ܘܢܣܒܪܘܢ ܒܡܪܝܐ:
* ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܬܬܟܠ. ܘܠܐ ܦܢܐ ܠܣܪܝܩܘܬܐ: ܘܐܦܠܐ ܠܡܡܠܠܐ 5
ܕܓܠܐ. * ܣܓܝܐܢ ܐܝܠܝܢ ܕܥܒܕܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ: ܬܕܡܪܬܟ ܘܡܚܫܒܬܟ ܕܥܠܝܢ ܘܠܝܬ ܕܕܐܡܐ ܠܟ. 6
ܚܘܝܬ ܘܐܡܪܬ ܘܣܓܝܐܝܢ ܐܝܠܝܢ ܡܢ ܡܢܝܢܐ: * ܕܒܚܐ ܘܩܘܪܒܢܐ ܠܐ ܨܒܝܬ. ܐܕܢܐ ܕܝܢ 7
ܢܩܒܬ ܠܝ: ܘܥܠܬܐ ܡܫܡܠܝܬܐ ܕܚܠܦ ܚܛܗܐ ܠܐ ܫܐܠܬ. * ܗܝܕܝܢ ܐܡܪܬ ܕܗܐ ܐܬܝܬ: ܕܒܪܝܫ 8
ܟܬܒܐ ܟܬܝܒ ܥܠܝ. * ܠܡܥܒܕ ܨܒܝܢܟ ܐܠܗܐ ܨܒܝܬ: ܘܢܡܘܣܟ ܒܓܘ ܡܥܝܝ. 9
* ܣܒܪܬ ܙܕܝܩܘܬܟ ܒܥܕܬܐ ܪܒܬܐ: ܘܣܦܘܬܝ ܠܐ ܟܠܝܬ. ܡܪܝܐ ܐܢܬ ܝܕܥܬ ܐܢܬ: * ܕܠܐ ܛܫܝܬ 10 11
ܙܕܝܩܘܬܟ ܒܓܘ ܠܒܝ: ܐܠܐ ܦܘܪܩܢܟ ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܐܡܪܬ. ܘܠܐ ܛܫܝܬ ܛܝܒܘܬܟ ܘܗܝܡܢܘܬܟ
ܡܢ ܟܢܘܫܬܐ ܪܒܬܐ: * ܘܐܦ ܐܢܬ ܡܪܝܐ ܠܐ ܬܟܠܐ ܪܚܡܝܟ ܡܢܝ: ܐܠܐ ܚܢܢܝܟ ܘܗܝܡܢܘܬܟ. 12
ܒܟܠܙܒܢ ܢܛܪܘܢܢܝ: * ܡܛܠ ܕܐܚܕܘܢܝ ܒܝܫܬܐ ܕܠܐ ܡܢܝܢ. ܘܐܕܪܟܘܢܝ ܚܛܗܝ ܘܠܐ 13
ܐܫܟܚܬ ܠܡܚܙܐ: ܘܣܓܝܘ ܡܢ ܣܥܪܐ ܕܪܝܫܝ ܘܠܒܝ ܫܒܩܢܝ.

Consumptus sum objurgatione quæ pro peccatis meis. Castigâsti virum, & fluere fecisti sicut festucam desideria ejus: & veluti vapor sunt omnes homines. Audi, Domine, orationem meam & petitionem meam, & ausculta lachrymam meam: & ne sileas, quoniam hospes ego sum tecum, & peregrinus sicut omnes patres mei. Libera me, & quiescam, antequam vadam & amplius non sim futurus.

PSAL. XL.

Davidis. Ad literam: quum attulit ei Samei nomina eorum qui ministrabant in domo Domini. Spirituali verò sensu, gratiarum actio Deo à cultoribus & Ecclesia. Vers. 45.

Sperans speravi in Domino qui conversus est ad me, audivitque deprecationem meam. Et eduxit me de fovea mœroris, & de luto corruptionis: erexit supra petram pedes meos, atque firmavit gressus meos. Dedit in ore meo laudem novam, laudem Deo: ut videant multi ac lætentur, sperentque in Domino. Beatus homo qui nomini Domini fisus est, nec vertit se ad vanitatem, neque ad sermonem mendacem. Multa sunt quæ fecisti, Domine Deus noster, miracula tua & consilia tua erga nos, & non est quisquam similis tibi. Ostendisti, atque dixisti, ac plurima sunt præter numerum. Sacrificia & oblationes noluisti, aures autem perfodisti mihi: & holocausta perfecta quæ pro peccatis, non postulâsti. Tunc dixi, Ecce veni: quia in principio librorum scriptum est de me. Facere voluntatem tuam, Deus, mihi libuit: & lex tua in præcordiis meis. Annuntiavi justitiam tuam in Ecclesia magna, & labia mea non cohibui. Domine, tu nôsti Non abscondisse me justitiam tuam intra cor meum, sed salutem tuam & fidem tuam me dixisse: neque occultâsse me beneficium tuum & fidem tuam à cœtu magno. Et tu quoque, Domine, ne contineas à me misericordiam tuam: sed miserationes tuæ & fides tua omni tempore me custodiant. Quoniam circunderunt me mala absque numero, & apprehenderunt me peccata mea nec videre potui: & multiplicata sunt plusquam pili capitis mei, & cor meum dereliquit me.

Verſio VULG. LAT.

in increpationibus: propter iniquitatē corripuiſti hominē. Et tabeſcere feciſti ſicut araneam animā ejus: veruntamen vanè conturbatur omnis homo.
13 Exaudi orationē meā, Dñe, & deprecationē meam: auribus percipe lachrymas meas. Ne ſileas: quoniā advena ego ſum apud te, & peregrinus, ſicut omnes
14 patres mei. Remitte mihi, ut refrigerer priùs quàm abeā, & ampliùs non ero.

1 In finem, Pſalmus ipſi David.
XXXIX.

2 EXpectans expectavi Dñm, & inten-
3 dit mihi. Et exaudivit preces meas: et eduxit me de lacu miſeriæ, et de luto fæcis. Et ſtatuit ſup petrā pedes meos: & di-
4 rexit greſſus meos. Et immiſit in os meū canticū novū, carmen Deo noſtro. Videbunt multi & timebunt: & ſpera-
5 bunt in Domino. Beatus vir, cuj⁹ eſt nomen Dñi ſpes ej⁹: & non reſpexit in
6 vanitates & inſanias falſas. Multa feciſti tu, Dñe De⁹ me⁹, mirabilia tua: & cogitationib⁹ tuis non eſt qui ſimilis ſit tibi. Annuntiavi & locut⁹ ſum: mul-
7 tiplicati ſunt ſup numerū. Sacrificiū & oblationē noluiſti: aures autē perfeciſti mihi. Holocauſtū & pro peccato non
8 poſtulâſti: Tunc dixi, Ecce venio.
9 In capite libri ſcriptū eſt de me, Ut facerē voluntatē tuā: De⁹ me⁹, volui, &
10 legē tuā in medio cordis mei. Annuntiavi juſtitiā tuā in eccleſia magna, ecce labia mea non prohibebo: Domine, tu
11 ſciſti. Juſtitiam tuam non abſcondi in corde meo: veritatem tuam & ſalutare tuum dixi. Non abſcondi miſericordiam tuam, & veritatem tuam,
12 à concilio multo. Tu autem, Domine, ne longè facias miſerationes tuas à me: miſericordia tua & veritas tua ſemper
13 ſuſceperunt me. Quoniam circumdederunt me mala, quorum non eſt numerus: comprehenderunt me iniquitates meæ, & non potui ut viderem. Multiplicatæ ſunt ſuper capillos capitis mei: & cor meum dereliquit me.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

† ἐν ἐλεγμοῖς ὑπὲρ ἀνομίας ἐπαίδευσας ἄνθρωπον· † καὶ ἐξέτηξας ὡς ἀράχνην τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, † (κ) πλὴν μάτην ταράσσεται πᾶς ἄνθρωπος. ΔΙΑ-
13 ΨΑΛΜΑ. † Εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου κύριε † καὶ τῆς δεήσεώς μου, ἐνώτισαι † τῶν δακρύων μου· μὴ παρασιωπήσῃς, † ὅτι πάροικος ἐγώ εἰμι (λ) ἐν τῇ γῇ † καὶ παρεπίδημος, καθὼς πάντες οἱ πατέ-
14 ρες μου. † Ἄνες μοι ἵνα ἀναψύξω πρὸ τοῦ με ἀπελθεῖν, καὶ (μ) οὐκέτι μὴ ὑπάρξω.

MS. A. (κ) πλὴν μάτην πᾶς ἄνθρωπος. Εἰσάκουσον (λ) παρὰ σοὶ καὶ παρεπίδημος, (μ) οὐκέτι οὐ μὴ ὑπάρξω.

1 Εἰς τὸ τέλος, (α) τῷ Δαυὶδ ψαλμός. λθʹ.

2 † ΥΠομένων ὑπέμεινα τὸν κύριον, καὶ προσ-
3 έσχε μοι, † Καὶ εἰσήκουσε τῆς δεήσεώς μου. † καὶ ἀνήγαγέ με ἐκ λάκκου ταλαιπωρίας, † (β) καὶ ἀπὸ πηλοῦ ἰλύος· † καὶ ἔστησεν ἐπὶ πέτραν τοὺς πόδας μου, †
4 καὶ (γ) κατεύθυνε τὰ διαβήματά μου. † Καὶ ἐνέβαλεν εἰς τὸ στόμα μου ᾆσμα καινόν, ὕμνον τῷ θεῷ ἡμῶν. † ὄψονται πολλοὶ καὶ φοβηθήσονται, † καὶ ἐλπιοῦσιν
5 ἐπὶ κύριον. † Μακάριος ἀνήρ, οὗ ἐστι τὸ ὄνομα κυρίου ἐλπὶς αὐτοῦ, † καὶ οὐκ (δ) ἐπέβλεψεν εἰς ματαιότητας καὶ μανίας ψευδεῖς. † Πολλὰ ἐποίησας σὺ κύ-
6 ριε ὁ θεός μου τὰ θαυμάσιά σου, † καὶ τοῖς διαλογισμοῖς σου οὐκ ἔστι τις (ε) ὁμοιωθήσεταί σοι. † ἀπήγγειλα καὶ ἐλάλησα, ἐπληθύνθησαν ὑπὲρ ἀριθμόν.
7 † Θυσίαν καὶ προσφορὰν οὐκ ἠθέλησας, † σῶμα δὲ κατηρτίσω μοι· † (ζ) ὁλοκαύτωμα καὶ περὶ ἁμαρτί-
8 ας οὐκ (η) ᾔτησας. † Τότε εἶπον, Ἰδοὺ ἥκω· † ἐν κε-
9 φαλίδι βιβλίου γέγραπται περὶ ἐμοῦ, † Τοῦ ποιῆσαι τὸ θέλημά σου ὁ θεός μου ἠβουλήθην, † καὶ τὸν νόμον σου
10 ἐν μέσῳ (θ) τῆς καρδίας μου. † Εὐηγγελισάμην δικαιοσύνην ἐν ἐκκλησίᾳ μεγάλῃ, † ἰδοὺ τὰ χείλη
11 μου οὐ μὴ κωλύσω. † κύριε σὺ ἔγνως † Τὴν δικαιοσύνην (ι) μου, οὐκ ἔκρυψα ἐν τῇ καρδίᾳ μου † τὴν ἀλήθειάν σου, καὶ τὸ σωτήριόν σου εἶπα· † οὐκ ἔκρυψα τὸ ἔλεός σου καὶ τὴν ἀλήθειάν σου † ἀπὸ συναγωγῆς πολ-
12 λῆς. † Σὺ δὲ κύριε μὴ μακρύνῃς τοὺς οἰκτιρμούς σου ἀπ᾽ ἐμοῦ, † τὸ ἔλεός σου καὶ ἡ ἀλήθειά σου διαπαν-
13 τὸς ἀντελάβοντό μου. † Ὅτι περιέσχον με κακά, ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός, † κατέλαβόν με αἱ ἀνομίαι μου, καὶ οὐκ (ι) ἠδυνάσθην τοῦ βλέπειν· † ἐπληθύνθησαν ὑπὲρ τὰς τρίχας τῆς κεφαλῆς μου, † καὶ ἡ καρδία μου ἐγκατέλιπέ με.

MS. A. (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) καὶ ἀπὸ πηλοῦ ὕλεως· (γ) κατηύθυνεν (δ) ἐνέβλεψεν (ε) ὁμοιωθήσεται. ἀπήγγειλα (ζ) ὁλοκαυτώματα (η) ἐζήτησας. (θ) τῆς κοιλίας μου. (ι) σου οὐκ (ι) ἠδυνήθην

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

In increpationibus propter (o) iniquitatem corripuiſti hominem:
14 (p) et tabeſcere feciſti ſicut araneā, animā ejus. Veruntamen vanè (q) conturbatur omnis homo. DIAPSALMA. 15 Exaudi orationem meam, Domine, & deprecationem meā: (r) auribus percipe lachrymas meas. 16 Nè ſileas, quoniam advena ego ſum (ſ) in terra, & peregrinus, ſicut omnes patres mei. 17 (t) Remitte mihi, ut refrigerer, priuſquàm [h] abeam: & amplius jam non ero.

1 In finem, ipſi David, Pſalmus. XXXIX.

1 EXpectans expectavi Dominum, [a] & attendit mihi:
2 Et exaudivit [b] deprecationem meam: & eduxit me de lacu miſeriæ, & de luto fæcis. 3 Et ſtatuit ſuper petram pedes meos, et [c] direxit greſſus meos. 4 Et immiſit in os meum canticū novum, carmen Deo noſtro. 5 Videbunt (a) multi, & timebunt, & ſperabunt in Domino. 6 Beatus vir, cujus eſt nomen Domini ſpes ej⁹, et nō reſpexit [d] in vanitates, & inſanias falſas. 7 (b) Multa feciſti tu, Domine Deus meus, mirabilia tua: & cogitationibus tuis non eſt, qui ſimilis ſit tibi. 8 (c) Annuntiavi, & locutus ſum: multiplicati ſunt ſuper numerum. 9 Sacrificium, et oblationem noluiſti: (d) [e] corpus autem perfeciſti mihi. 10 Holocauſtum, et pro peccato non poſtulâſti: (e) Tunc dixi, Ecce venio. 11 In (f) capite libri ſcriptum eſt de me: ut: (g) (†) facerem voluntatem tuam, Deus meus, volui, et legem tuam in medio (h) cordis mei. 12 (i) Benè nuntiavi juſtitiam in Eccleſia magna: ecce labia mea nō prohibebo. (k) Domine, tu cognoviſti: 13 Juſtitiam meam non abſcondi in corde meo veritatē tuam: et ſalutare tuum dixi. 14 Non abſcondi (l) miſericordiam tuam, et veritatem tuam à (m) congregatione multa. 15 Tu autem, Domine, ne longè facias miſerationes tuas à me: miſericordia tua, et veritas tua ſemper (n) ſuſceperunt me. 16 Quoniam circumdederunt me mala, quorum non eſt numerus: comprehenderunt me iniquitates meæ, & non potui, ut viderem. 17 Multiplicatæ ſunt ſuper capillos capitis mei: & cor meum dereliquit me.

Verſio ÆTHIOPICA.

በተግሣጽከ፡ በእንተ፡ ኃጢአቱ፡ ተዘለፍኮ፡
ለሰብእ፡፡=፡ ወመሰውኮ፡ከመ፡ሰረት፡ ለነፍ 14
ሱ፡፡ወበሕቱ፡ከንቶ፡ ይትሀወኩ፡ ኵሉ፡ ሰብ
እ፡፡=፡ ስምዓኒ፡እግዚኦ፡ጸሎትየ፡ወስእ 15
ለትየ፡፡ወአጽምዓኒ፡ አንብዕየ፡ 16 ወኢት
ጸመመኒ፡፡እስመ፡ፈላሲ፡ አነ፡ ውስተ፡ ምድ
ር፡፡ወነግድ፡ከመ፡ኵሉ፡አበዊየ፡፡=፡ ስሕ 17
ተኒ፡ከመ፡ አዕርፍ፡፡ዘእንበለ፡ እሑር፡ ኀበ፡
ኢይገብእ፡፡=፡

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

ሀሀ ፡ፀኒሐ፡ፀንሕክዎ፡ለእግዚአብሔር፡፡ 1
ሰምዓኒ፡ወታመየጠኒ፡፡=፡ ወሰምዓኒ፡ቃለ፡ 2
ስእለትየ፡፡ወአውፅአኒ፡ እምዐዘቅተ፡ ሕር
ትምና፡፡ወእምጽቡር፡ አምዓም፡፡=፡ ወ 3
አቀሞን፡ውስተ፡ ኰኵሕ፡ ለእገሪየ፡፡ወአጽ
ንዖን፡ለመካይድየ፡፡=፡ ወወደየ፡ውስተ፡አ 4
ፉየ፡ስብሐተ፡ ሐዲሰ፡ ስብሐቲሁ፡ ለአምላ
ክነ፡፡=፡ ይርአዩ፡ ብዙኃን፡ ወይፈርሁ፡፡ወ 5
ይትዌከሉ፡በእግዚአብሔር፡፡=፡ ብፁዕ፡ብ 6
እሲ፡ዘስሙ፡እግዚአብሔር፡ ቱዋክልቱ፡፡ወ
ዘኢነጸረ፡ውስተ፡ ከንቱ፡ ውስተ፡ መዓት፡ወ
ሐሰት፡፡=፡ ብዙኃ፡ገበርከ፡እግዚኦ፡አም 7
ላኪየ፡መንክረከ፡፡ወአልቦ፡ ዘይመስሎ፡ ለሕ
ሊናከ፡፡=፡ አይደአኩ፡ወነገርኩ፡ወበዝኃ፡ 8
እምኍልቈ፡፡=፡ መሥዋዕተ፡ ወቍርባነ፡ 9
ኢፈቀድኮ፡፡ሥጋከ፡ አንጽሕ፡ ሊተ፡፡=፡
መሥዋዕተ፡ ዘበእንተ፡ ኃጢአት፡ ኢሠመር 10
ኮ፡፡ውእቱ፡ጊዜ፡ አቤ፡ ነየ፡ መጻእኩ፡፡=፡
ውስተ፡ርእሰ፡መጽሐፍ፡ተጽሕፈ፡ በእንቲአ 11
የ፡፡ከመ፡እንግር፡ ፈቃደከ፡ መከርኩ፡አምላ
ኪየ፡፡ወሕግከኒ፡ በማእከለ፡ ከርሥየ፡፡=፡
ዜነውኩ፡ጽድቀከ፡ ለመኀበረ፡ ዐቢይ፡፡ወና 12
ሁ፡ኢከላእኩ፡ከናፍርየ፡፡እግዚኦ፡ ለሊከ፡
ታአምር፡ 13 ጽድቅየ፡፡ወኢኅባእኩ ፡ ው
ስተ፡ ልብየ፡ ርትዓይከ፡፡ወነገርኩ፡ አድኅኖ
ተከ፡፡=፡ ወኢሰወርኩ፡ሣህለከ፡ወምሕረተ 14
ከ፡እማኅበር፡ዐቢይ፡፡=፡ አንተ፡እግዚኦ፡ 15
ኢታርሕቅ፡ ሣህለከ፡እምኔየ፡፡ምሕረትከ፡
ወጽድቅከ፡ዘልፈ፡ይርከበኒ፡፡=፡ እስመ፡ረ 16
ከበተኒ፡ እኪት፡ እንተ፡ አልባቲ፡ኍልቍ፡፡ወ
ተረከባኒ፡ኃጣውኢየ፡ወስእንኩ፡ነጽሮ፡፡=፡
ወበዝኃ፡ እምስእርተ፡ ርእስየ፡፡ ልብየኒ፡ 17
ኀደገኒ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [h] abeam, unde non revertar. PSAL. xxxix. [a] & auſcultavit me: [b] etiam vocem ſupplicationis meæ: [c] firmat greſſus [d] in furorem, & falſitatem. [e] carnem autem tuam purificavit mihi. (1) annuntiarē voluntatē tuā, De⁹ me⁹ intent⁹ ſū ei: & lex tua etiā

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 * ادبت الانسان بالتوبيخ من اجل الاثم * ومثل العنكبوت جعلت نفسه تنحل * ومثل المنام
13 تذهب شهواته * ومثل الفي جميع البشر * اسمع صلاتي ودعاي يا رب * ولا تغفل عن دموعي *
14 فاني غريب في الارض * وذاهب مثل اباي * اغفر لي ولا تغفل عن دموعي * لكي استريح قبل
ان اذهب * فلا اعود اكون * الليلويا *
* المزمور التاسع والثلثون *
1 * في الانقضا وذكر الكنيسة * وعدده * لز * استيخن *
2 3 * بالصبر رجوت الرب فنظر الي وسمع تضرعي * واصعدني من جب الهلاك * وطين الفساد *
4 اقام علي الصخرة قدمي وقوم خطواتي * وجعل في فمي تسبيحا جديدا * وتبريكا لالهنا *
5 يري كثيرون فيخافون * ويتوكلون علي الرب * طوبي للرجل الذي اسم الرب رجاوه * ولم
6 ينظر الي الباطل والاقاويل الكاذبة * وانت قد اكثرت عجايبك يا ربي والاهي * اللهم اني
افكر في اعمالك * وليس كمثلك * وليس من يشبهك في افكارك * اخبرت وقلت انها اكثر
7 من العدد * لم تشا ذبيحة وقربانا * واعددت لي جسدا * فتحت مسامعي * وبحرقات لاجل
8 9 الخطية لم تسر بها * حينئذ قلت هاانذا قد جيت * مكتوب في راس الكتاب * ان اعمل
10 مسرتك يا الله * ناموسك داخل قلبي * بشرت بعدلك في بيعة عظيمة * وها انا لم امنع شفتي
11 بعد * وانت يا رب علمت * تري لم اخف برك في قلبي * تكلمت بخلاصك وحقك * ولم اخف
12 رحمتك وعدلك عن جماعة عظيمة * وانت يا ربي والهي لا تبعد عني رافتك * ورحمتك وبرك
13 هما اللذان قبلاني في كل حين * قد احاطت بي شرور لا عدد لها ادركتني اثامي فلم استطع
النظر * كثرت اكثر من شعر راسي * ورفضني قلبي *

Caſtigâſti hominem correptione propter delictum: & velut araneam feciſti ut anima ejus diſſolveretur, ac veluti ſomnium præterirent deſideria ejus, & ſicut umbra omnes homines. 12
13 *Audi orationem meā, & clamorem meū, O Domine: & ne negligas lachrymas meas. Quia ego peregrinus ſum in terra, & abiens veluti patres mei.*
14 *Parce mihi, & ne negligas lachrymas meas: ut quieſcā antequā vadam, & non ſim futur⁹ ampliùs. Alleluja.*

PSAL. XXXIX.

1 De fine. Et agitur de Eccleſia. Et numerus verſ. 37.

2 *CUm patientia ſperavi Dominum, & reſpexit in me, & audivit ſupplicationem meam:*
3 *Et extraxit me de foveā perditionis, & luto corruptionis: ſtatuit ſuper petrā pedes meos, & direxit greſſus meos:*
4 *Et poſuit in ore meo laudē novā, & benedictionem Deo noſtro.*
5 *Videbunt multi, & timebunt, & confident in Domino. Beatus vir, cujus ſpes eſt nomen Domini, & non reſpexit ad vanitatem & fabulas mendaces.*
6 *Et tu jam multiplicâſti miracula tua, O Domine mi, & Deus meus. Deus, equidē meditor opera tua, & non eſt ſimilis tibi: nec eſt qui comparetur tecum in cogitationibus tuis. Narravi & dixi, plura eſſe quàm ut numerentur.*
7 *Noluiſti ſacrificiū & oblationem: & præparâſti mihi corpus: aperuiſti aures meas, & holocauſtis pro peccato non es oblectatus.*
8 *Tunc dixi, Ecce me, jam veni; ſcriptū eſt in capite libri,*
9 *ut faciā voluntatem tuā, O Deus: lex tua intra cor meum.*
10 *Annuntiavi æquitatem tuā in Eccleſia magna, & ecce ego non cohibui labia mea adhuc: & tu, O Domine, nôſti.*
11 *Vides me non abſcondiſſe juſtitiam tuam in corde meo. Protuli ſalutem tuā & veritatem tuā. Et non abſcondi miſericordiā tuā, & æquitatem tuā à cœtu multo.*
12 *Et tu, O Domine mi, & Deus meus, ne elonges à me clementiā tuā: Et quidem miſericordia tua & juſtitia tua ambæ ſunt, quæ me exceperunt omni tempore.*
13 *Jam circumdederunt me mala quibus non eſt numerus; comprehenderunt me ſcelera mea, & non potui videre: multiplicata ſunt magis quàm capilli capitis mei, et reſpuit me cor meum.*

תהלים : מא

14 ,afficiatur Pudore .feſtina mei auxiliū ad Domine ;me eruendū ad Domine Complace
14 רצה יהוה להצילני יהוה לעזרתי חושה : יבשו 15
,retrorſum revertentur : eā abſumendum ad,meā animā quærentes pariter erubeſcent &
ויחפרו יחד מבקשי נפשי לספותה יסגו אחור 15
,ſui pudoris mercedem ſuper Deſolabuntur .meum malum volentes , pudefient &
16 ויכלמו חפצי רעתי : ישמו על־עקב בשתם 16
,te quærentes omnes te in Lætabuntur & ,Gaudebunt .euge ,Euge : mihi dicentes
17 האמרים לי האח האח : ישישו וישמחו בך כל־מבקשיך 17
,afflictus ego Et .tuam ſalutem diligentes ,Dominus Magnificetur ,ſemper dicent
18 יאמרו תמיד יגדל יהוה אהבי תשועתך : ואני עני 18
mi Deus : tu meus liberator & ,meū auxilium : mihi cogitabit Dominus ,egenus &
ואביון אדני יחשב לי עזרתי ומפלטי אתה אלהי
.tardaveris ne
אל־תאחר :

PSAL. XLI. מא

mala die in : tenuem ad intelligentis Beatitudines .David cantus Victori
1 למנצח מזמור לדוד : אשרי משכיל אל־דל ביום רעה 2
beatificetur ,eum vivificet & ,eum cuſtodiat Dominus .Dominus eum liberabit
3 ימלטהו יהוה : יהוה ישמרהו ויחיהו יאשר 3
ſuper eum fulciat Dominus .ejus inimicorum anima in eum tradas ne & : terra in
4 בארץ ואל־תתנהו בנפש איביו : יהוה יסעדנו על־ 4
: dixi Ego .ejus infirmitate in verſiſti ejus cubile omne : languoris lectum
5 ערש דוי כל־משכבו הפכת בחליו : אני־אמרתי 5
dicent mei Inimici .tibi peccavi quia ,meam animam ſana ; mei miſerere Domine
6 יהוה חנני רפאה נפשי כי־חטאתי לך : אויבי יאמרו 6
venerit ſi Et ? ejus nomen peribit & , morietur quando : mihi malum
7 רע לי מתי ימות ואבד שמו : ואם־בא 7
egredietur : ſibi iniquitatem congregabit ,ejus cor loquetur mendacium ,videndū ad
לראות שוא ידבר לבו יקבץ־און לו יצא
me ſuper ;me habentes odio omnes muſſitabunt me ſuper Simul .loquetur , foras
8 לחוץ ידבר : יחד עלי יתלחשו כל־שנאי עלי 8
accubuit qui & ,ipſum in effuſum Belijahal Verbum .mihi malum cogitabunt
9 יחשבו רעה לי : דבר־בליעל יצוק בו ואשר שכב 9
comedens ,eo in fidebam cui ,meæ pacis vir Etiam .ſurgere addet non
10 לא־יוסיף לקום : גם־איש שלומי אשר־בטחתי בו אוכל 10
,mei miſerere Domine tu Et .calcaneum me ſuper magnificavit ,meum panem
11 לחמי הגדיל עלי עקב : ואתה יהוה חנני 11
complacuiſti quoniam ,cognovi hoc In .eis reddam & ,fac me reſuſcitare &
12 והקימני ואשלמה להם : בזאת ידעתי כי־חפצת 12
: mea integritate in ego Et .me ſuper meus inimicus jubilabit non quia ,me in
13 בי כי לא־יריע איבי עלי : ואני בתמי 13
Deus Dominus Benedictus .ſeculum in tuas facies ad me ſtatuiſti & ,me in ſuſtentâſti
14 תמכת בי ותציבני לפניך לעולם : ברוך יהוה אלהי 14
.Amen & ,Amen : ſeculum in uſque & , ſeculo à Iſrael
ישראל מהעולם ועד העולם אמן ואמן :

תרגום TARGUM.

14 אתרעי יי לשזבותני יי לסיועי זריז : יבהתון
15 ויתחסרון כחדא תבעי נפשי למגמרה יזורון
16 לאחורא ויכספון דצבין בישתי : יתבירון
מטול בהתיהון דאמרין לי חדינא על תבריה
17 חדוא על סגופיה : יחדון וידוצון במימרך
כל בעיך ויימרון תדירא יסגי חילא דיי די
18 רחמין פורקנך : ואנא עניא וחשוכא יי יחשב
טב לי עלי סיועי ושיזבותי את אלהי לא
תוחר :

מא

1 לשבחא תושבחתא לדוד : טובוי דמשכיל
2 לעניי מסכנא לרחמותיה ביום בישתא
3 ישזבניה יי : יי ינטרניה ויחיניה ויוטבניה
בארעא ולא תמסרניה ברעות בעלי דבבוי :
4 מימרא דיי יסיעניה בחיוהי ויתגלי ליה על
שווי מרעיה לאחיותיה כל משכביה אפכת
5 בעדן מרעיה ואכסנתיה : אנא אמרית יי חוס
6 עלי אסי נפשי מטול דחבית קדמך : בעלי
דבבי יימרון ביש עלי אימתי ימות ויובד שמיה :
7 ואין אתא למקבל אפי שקרא ימלל ברעיוניה
8 יכנוש עולא ליה יפוק לשוקא ימלל : כחדא
עלי ממללין בחשי כל סנאי עלי חשלין בישתא
9 לי : ממלל טלומא יתיך ביה ויימר דין דמרע
10 לא יוסיף למקם : אוף גבר דתבע שלומי
דאתרחצית עלוי מברי סעודתי אתרברב עלי
11 לחכמא : ואנת יי חוס עלי ואקימני ממרע
12 ואפרע להון : בהדא ידעית ארום אתרעית בי
ארום לא אתגבר עלי בעלי דבבי לאבאשא :
13 ואנא בשלמותי סעדתא בי ואוקמתני קדמך
14 לעלמא : בריך שמיה דיי אלהיא דישראל
מן עלמא הדין ועד עלמא דאתי יימרון
צדיקיא אמן ואמן :

PARAPH. CHALD. Verſ.La

Placeat tibi Dñe ut liberes me: Domine ad auxiliū meū feſtina. Erubeſcant & opprobrio afficiantur ſimul quærentes animā meā ut perdant eam: convertantur retrorſum & pudore offundantur qui deſiderant malum meū. Confundantur propter pudorē ſuum qui dicunt de me: Gaviſi ſumus deſtructione ejus: *lætitia* ſuper afflictionem ejus. Gaudebunt & lætabuntur in verbo tuo omnes qui quærunt te, & dicent ſemper, Magnificetur potentia Dñi, qui diligunt ſalutē tuā. Et ego egenus ſum, & pauper: Dñs cogitabit bonum mihi; *ſuper me* auxilium meum & liberatio mea tu es: Deus meus ne moreris.

Ad laudandum Hymnus Davidi.

PSAL. XLI.

BEat⁹ qui cogitat de [*reb⁹*] *afflictis* pauperis quò miſereatur ej⁹: in die mala liberabit eum Dñs. Dñs cuſtodiet eū & vitā præſtabit ei, & dabit ei beatitudinem in terra: nec trades illū voluntati auctorū inimicitiæ ej⁹. Verbū Dñi adjuvabit eū in vita ejus; & apparebit illi ſuper lectū infirmitatis ejus, *ut vivum conſervet eū*: totū ſtratū ej⁹ invertiſti in tempore ægritudinis ej⁹, & corripuiſti eum. Ego dixi, Dñe miſerere mei; ſana animā meā quia peccavi corā te. Et adverſarii mei dicent malum contra me, Quando morietur, & peribit nomen ej⁹? Et *ſi* venerit ut accipiat faciē, mendaciū loquetur in cogitatione ſua: congregabit iniquitatem ſibi; egredietur in plateam; loquetur. Simul contra me loquuntur clam omnes oſores mei contra me, cogitantes malum mihi. Verbum perverſum effundet in ſeipſum; & dicet, Hic qui infirmatur, non addet ut reſurgat. Sed & homo qui quærere [*deberet*] pacem meā, in quo confidebā, qui comedebat panē meum, magnificavit ſe ſuper me aſtutè. Et tu Domine miſerere mei, & ſuſcita me ab infirmitate; & reddam eis. In hoc novi quòd gratus tibi fuerim, quoniam non invaleſcet ſuper me auctor inimicitiæ meæ, ut malè agat. Me verò in integritate mea adjuviſti; & ſtatuiſti me coram te in perpetuum. Benedictum nomen Domini Dei Iſrael ex hoc ſeculo uſque ad ſeculum venturum; dicant juſti, Amen & Amen.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

14 * ܨܒܝ ܡܪܝܐ ܠܡܦܪܩܘܬܝ : ܡܪܝܐ ܠܡܥܕܪܢܘܬܝ ܣܟܝ. * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܚܦܪܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ 15
ܠܡܩܛܠ ܢܦܫܝ : ܢܗܦܟܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ ܘܢܒܗܬܘܢ. ܐܝܠܝܢ ܕܨܒܝܢ ܒܒܝܫܬܝ :
17 * ܢܬܕܡܗܘܢ ܒܒܗܬܬܐ ܕܥܘܦܦܬܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܐܡܪܝܢ ܠܝ ܐܗ ܐܗ : * ܢܚܕܘܢ ܒܟ ܟܠܗܘܢ ܕܒܥܝܢ 18
ܠܟ. ܘܢܐܡܪܘܢ ܒܟܠܙܒܢ ܪܒ ܗܘ ܡܪܝܐ : ܐܝܠܝܢ ܕܪܚܡܝܢ ܦܘܪܩܢܟ. * ܐܢܐ ܡܣܟܝܢܐ 19
ܘܒܨܝܪܐ : ܡܪܝ ܐܬܚܫܒܘ ܥܠܝ. ܡܥܕܪܢܝ ܐܢܬ ܘܡܦܪܩܢܝ ܐܠܗܝ ܠܐ ܬܘܚܪ :

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܐ *

* ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܩܝܡ ܡܦܪܢܣܢܐ ܕܢܦܪܢܣܘܢ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܡܫܝܚܐ. ܘܥܠ 1
ܐܣܟܪܝܘܛܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܚ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܡܢ ܕܚܪ ܒܡܣܟܢܐ. ܒܝܘܡܐ ܕܒܝܫܬܐ 2
ܢܦܨܝܘܗܝ ܡܪܝܐ : * ܡܪܝܐ ܢܛܪܝܘܗܝ ܘܢܐܚܝܘܗܝ ܘܢܛܘܒ ܠܗ ܒܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܢܫܠܡܝܘܗܝ 3
ܒܐܝܕܝ ܒܥܠܕܒܒܘܗܝ : * ܡܪܝܐ ܢܣܡܟܝܘܗܝ ܥܠ ܥܪܣܐ ܕܟܐܒܘܗܝ. ܘܟܠܗ 4
ܡܫܟܒܗ ܗܦܟ ܒܟܘܪܗܢܗ : * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝ ܚܘܢ ܠܝ. ܘܐܣܐ 5
ܠܢܦܫܝ ܡܛܠ ܕܚܛܝܬ ܠܟ : * ܒܥܠܕܒܒܝ ܐܡܪܘ ܥܠܝ ܒܝܫܬܐ. ܐܡܬܝ ܢܡܘܬ ܘܢܐܒܕ 6
ܫܡܗ : * ܐܡܬܝ ܕܐܬܝܢ ܗܘܘ ܠܡܣܥܪܢܝ. ܕܓܠܐ ܡܡܠܠܝܢ ܗܘܘ : ܘܒܠܒܗܘܢ ܟܢܫܝܢ 7
ܗܘܘ ܒܝܫܬܐ. ܢܦܩܝܢ ܗܘܘ ܠܫܘܩܐ ܘܡܡܠܠܝܢ : * ܐܬܠܚܫܘ ܥܠܝ ܐܟܚܕܐ ܟܠܗܘܢ ܣܢܐܝ. 8
ܘܐܬܚܫܒܘ ܥܠܝ ܒܝܫܬܐ : * ܡܠܬܐ ܕܥܘܠܐ ܚܫܒܝܢ ܗܘܘ. ܡܛܠ ܕܫܟܒ ܠܐ ܢܘܣܦ 9
ܠܡܩܡ : * ܐܦ ܓܒܪܐ ܫܐܠ ܫܠܡܝ ܕܥܠܘܗܝ ܬܟܝܠ ܗܘܝܬ. ܕܐܟܠ ܠܚܡܝ ܐܪܒܝ ܥܠܝ 10
ܢܟܠܐ : ܐܢܬ ܕܝܢ ܡܪܝܐ ܚܘܢ ܠܝ. * ܘܐܩܝܡܢܝ ܘܐܦܪܘܥ ܐܢܘܢ. 11
* ܒܗܕܐ ܝܕܥܬ ܕܐܨܛܒܝܬ ܒܝ : ܡܛܠ ܕܠܐ ܚܕܝ ܒܝ ܒܥܠܕܒܒܝ. * ܐܢܐ ܕܝܢ 12 13
ܒܬܡܝܡܘܬܝ ܬܡܟܬܢܝ : ܘܐܩܝܡܬܢܝ ܩܕܡܝܟ ܠܥܠܡ. * ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ 14
ܕܐܝܣܪܝܠ : ܡܢ ܥܠܡ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ ܐܡܝܢ ܐܡܝܢ.

* ܫܠܡ ܗܘܠܠܐ ܩܕܡܝܐ *

Placeat tibi, Domine, ut liberes me: Domine ad auxilium meum expecta. Confundantur & pudefiant ii qui cupiunt occidere animam meam: convertantur retrorſum & erubeſcant qui volunt malum meum. Obſtupeſcant duplici confuſione qui dixerunt de me, Ehe, ehe. Lætentur in te omnes qui quærunt te: & dicant omni tempore, Magnus eſt Dominus, ii qui diligunt ſalutem tuam. At ego pauper ſum & inops: Domine mi, cogitârunt adverſùm me; auxiliator meus tu es, & liberator meus, ne tardaveris.

PSAL. XLI.

Davidis, quando ſtatuit proviſores ad curandos pauperes. Et prophetia de Chriſto, deq; Iſcariote. Verſ. 28.

BEatus qui intuetur miſerum: quoniam in die calamitatis dimittet eum Dominus. Domin⁹ tuebitur eum, & vivificabit eum, benefaciétque illi in terra, nec tradet eum hoſtibus ejus. Dominus fulciet illum ſuper lectum dolorum ejus, & totum decubitum ejus evolvit in infirmitate illius, Ego dixi Tu es Dominus meus, miſerere mei, & ſana animam meam: nam peccavi in te. Inimici mei dixerunt adverſùm me malum, Quando morietur & peribit nomen ejus? Quum venirent me inviſuri, mendacium loquebantur, & in corde ſuo congerebant malum: egrediebantur in plateam & loquebantur. Suſurrârunt contra me pariter omnes oſores mei, & meditati ſunt in me malum, Verbum iniquitatis cogitabant, *dicentes*; Quandoquidem cubavit, nequaquàm iterum ſurget. Etiam vir deprecans mihi ſalutem, cui confidebam, comedens panem meum, cui confidebam, vehementur fraudavit me. At tu, Domine, miſerere mei: reſuſcita me ut retribuam eis. In hoc agnovi gratum me eſſe tibi, quòd minimè noceat mihi hoſtis meus. Me autem innocentiâ meâ fulſiſti, & ſtatuiſti me coram te in ſempiternum. Benedictus ſit Dominus Deus Iſrael à ſeculo & uſque in ſeculum. Amen, amen.

Finis libri primi.

Verſio VULG. LAT.

14 Complaceat tibi,Domine, ut eruas me:
15 Domine,ad adjuvandū me reſpice. Confundantur
& revereantur ſimul,qui quærunt
animam meā, ut auferant eam.Convertantur
retrorſùm, & revereantur, qui
16 volunt mihi mala. Ferant confeſtim confuſionem
ſuam, qui dicunt mihi; Euge,
17 euge. Exultent & lætentur ſuper te omnes
quærentes te: & dicant ſemper,
Magnificetur Dominus; qui diligunt ſalutare
18 tuum. Ego autem mendicus ſum,
& pauper: Dominus ſolicitus eſt meî.
Adjutor meus, & protector meus tu es:
Deus meus, ne tardaveris.

1 In finem, Pſalmus ipſi David. XL.

2 BEatus qui intelligit ſuper egenum, &
pauperem: in die mala liberabit eum
3 Dominus. Dominus conſervet eum, &
vivificet eum, & beatum faciat eum in
terra: & non tradat eum in animam inimicorum
4 ejus. Dominus opem ferat illi
ſuper lectū doloris ejus: univerſum ſtratum
5 ejus verſaſti in infirmitate ejus. Ego
dixi; Domine,miſerere meî: ſana animam
6 meam, quia peccavi tibi. Inimici
mei dixerunt mala mihi; Quando morietur,
7 & peribit nomen ejus? Et ſi ingrediebatur
ut videret,vana loquebatur, cor
ejus congregavit iniquitatem ſibi. Egrediebatur
8 foràs,& loquebatur In idipſū.
Adverſū me ſuſurrabāt oēs inimici mei:
9 adverſū me cogitabāt mala mihi. Verbū
iniquum conſtituerūt adverſū me; Numquid
qui dormit non adjiciet ut reſurgat?
10 Etenim homo pacis meæ, in quo ſperavi:
qui edebat panes meos, magnificavit
11 ſuper me ſupplantationē. Tu autem,Domine,
miſerere meî, & reſuſcita me: &
12 retribuam eis. In hoc cognovi quoniam
voluiſti me: quoniam non gaudebit
13 inimicus meus ſuper me. Me autem
propter innocentiam ſuſcepiſti: & confirmâſti
me in conſpectu tuo in æternū.
14 Benedictus Dominus Deus Iſrael à ſeculo,
& uſque in ſeculum: fiat, fiat.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

14 † Εὐδόκησον κύριε τοῦ ῥύσασθαί με, † κύριε εἰς τὸ
15 βοηθῆσαί μοι (κ) πρόσχες. † Καταισχυνθείησαν καὶ
ἐντραπείησαν ἅμα οἱ ζητοῦντες τὴν ψυχήν μου, τοῦ ἐξᾶραι
αὐτήν· † ἀποστραφείησαν εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ (λ)
16 ἐντραπείησαν οἱ θέλοντές μοι κακά. † Κομισάσθωσαν
παραχρῆμα αἰσχύνην αὐτῶν, † οἱ λέγοντές μοι, Εὖγε,
17 εὖγε. (μ) Ἀγαλλιάσαιντο καὶ εὐφρανθείησαν † ἐπὶ
σοὶ πάντες οἱ ζητοῦντές σε κύριε, † καὶ εἰπάτωσαν
διὰ παντὸς, Μεγαλυνθήτω ὁ κύριος, † οἱ ἀγαπῶντες
18 τὸ σωτήριόν σου. † Ἐγὼ δὲ (ν) πτωχὸς καὶ πένης
εἰμὶ, κύριος φροντιεῖ μου. † Βοηθός μου καὶ ὑπερασπιστής
μου εἶ σὺ † ὁ θεός μου, μὴ χρονίσῃς.

MS.A. (κ) σπεῦσον. (λ) καταισχυνθείησαν οἱ (μ) Ἀγαλλιάσοιντο (ν) πτωχός εἰμι καὶ πένης, ὁ κύριος

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. μ'.

2 † ΜΑκάριος ὁ συνιῶν ἐπὶ πτωχὸν καὶ πένητα,
† ἐν ἡμέρᾳ πονηρᾷ ῥύσεται αὐτὸν ὁ κύριος.
3 † Κύριος (α) φυλάξαι αὐτὸν καὶ ζήσαι αὐτὸν, καὶ
μακαρίσαι αὐτὸν ἐν τῇ γῇ, † καὶ μὴ (β) παραδοῖ
4 αὐτὸν εἰς χεῖρας (γ) ἐχθροῦ αὐτοῦ. † Κύριος (δ)
βοηθήσαι αὐτῷ ἐπὶ κλίνης ὀδύνης αὐτοῦ, † ὅλην τὴν
5 κοίτην αὐτοῦ ἔστρεψας ἐν τῇ ἀρρωστίᾳ αὐτοῦ. † Ἐγὼ
εἶπα, Κύριε ἐλέησόν με, † ἴασαι τὴν ψυχήν μου,
6 ὅτι ἥμαρτόν σοι. † Οἱ ἐχθροί μου εἶπαν κακά
μοι, † Πότε ἀποθανεῖται καὶ ἀπολεῖται τὸ ὄνομα αὐτοῦ;
7 † (ε) Καὶ εἰ εἰσεπορεύετο τοῦ ἰδεῖν, μάτην ἐλάλει
† ἡ καρδία αὐτοῦ, συνήγαγεν ἀνομίαν ἑαυτῷ, † ἐξεπορεύετο
8 ἔξω, καὶ ἐλάλει † Ἐπὶ τὸ αὐτό. κατ'
ἐμοῦ ἐψιθύριζον πάντες οἱ ἐχθροί μου, † κατ' ἐμοῦ
9 ἐλογίζοντο κακά μοι. † Λόγον παράνομον κατέθεντο
κατ' ἐμοῦ, † Μὴ ὁ κοιμώμενος οὐχὶ προσθήσει
10 τοῦ ἀναστῆναι; † Καὶ γὰρ ὁ ἄνθρωπος τῆς εἰρήνης
μου ἐφ' ὃν ἤλπισα, † ὁ ἐσθίων ἄρτους μου ἐμεγάλυνεν
11 ἐπ' ἐμὲ πτερνισμόν. † Σὺ δὲ κύριε ἐλέησόν
με, καὶ ἀνάστησόν με, † καὶ ἀνταποδώσω αὐτοῖς.
12 † Ἐν τούτῳ ἔγνων, ὅτι τεθέληκάς με,
13 † ὅτι οὐ μὴ ἐπιχαρῇ ὁ ἐχθρός μου ἐπ' ἐμέ. † Ἐμοῦ
δὲ διὰ τὴν ἀκακίαν ἀντελάβου, † καὶ ἐβεβαίωσάς με
14 ἐνώπιόν σου εἰς τὸν αἰῶνα. † Εὐλογητὸς κύριος ὁ
θεὸς Ἰσραὴλ ἀπὸ τοῦ αἰῶνος καὶ εἰς τὸν αἰῶνα.
γένοιτο, γένοιτο.

MS.A. (α) διαφυλάξαι (β) παραδῴη (γ) ἐχθρῶν (δ) βοηθήσει (ε) Καὶ εἰσεπορεύετο

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

18 *Complaceat tibi, Domine, ut* 14
eruas me: Domine,ad adjuvandū
me(o) reſpice. 19 *Confundantur,* 15
& revereantur ſimul, qui[f]
quærunt animam meā, ut auferant
eam. 20 *Convertantur retrorſùm,*
& revereantur, qui volunt
mihi(p)mala. 21 *Ferant(q)* 16
confeſtim confuſionē ſuā,qui dicunt
mihi;(r)Euge,euge. 22 *Exultent,* 17
& lætentur ſuper te omnes
quærentes te,Domine: & dicant
ſemper,Magnificetur Dominus,
qui diligunt ſalutare tuū [g]. 23
Ego autem mendicꝰ ſum,& pauper: 18
Dominus curam habebit meî.
24 *Adjutor meus, & protector*
[h] *meus es tu: Deus meus, ne tardaveris.*

In finem,Pſalmus ipſi David. XL. 1

1 BEATUS *qui intelligit ſuper* 2
egenum,&(a)pauperē:
in die(b)mala liberabit eum Dominꝰ.
2 *Dominꝰ conſervet eū,&* 3
(c)vivificet eum:& beatum faciat eum in terra,& non tradat
eum in (d) manus inimici ejus.
3 *Dominus opem ferat illi ſuper* 4
(e)lectū doloris ejus:univerſum ſtratum ejus verſâſti in infirmitate ejꝰ.
4 *(f)Ego dixi;Domine,* 5
miſerere meî: ſana animā meā,
(g)quia peccavi tibi. 5 [a] *Inimici* 6
mei(h)dixerunt mala mihi;
Quando morietur,& peribit nomen ejus? 6 *Et*[b]*ſi(i) ingrediebatur,* 7
ut videret; vana loquebatur cor ejus: congregavit iniquitatē ſibi.
7 *Egrediebatur foràs,&*
[c] *loquebatur In (k) idipſum:* 8
8 *Adverſùs me ſuſurrabant omnes*
inimici mei, 8 *adverſùm me cogitabant mala mihi.* 9 *Verbum* 9
iniquum conſtituerunt adverſùm
me;[d]*Nunquid (l) qui dormit,*
non adjiciet ut reſurgat? 10 *Etenim(m) homo pacis meæ, in quo* 10
ſperavi, qui edebat panes meos,
[e] *magnificavit (n) ſuper me*
ſupplantationem. 11 *Tu autem,* 11
Domine,miſerere meî,& reſuſcita me,& retribuā illis. 12 *In hoc* 12
(o) cognovi, quoniam voluiſti
me:[f] *quoniam non(p) gaudebit*
inimicus meus ſuper me. 13 *Me* 13
autem propter(q)innocentiā ſuſcepiſti: & (r) confirmâſti me in conſpectu tuo in æternum. 14 *Benedictus Dominus Deus Iſrael à(ſ) ſeculo, et in ſeculum: fiat, fiat.* 14

Verſio ÆTHIOPICA.

14 ስምር: እግዚኦ: ከመ:ታድኅነኒ:: እግዚኦ: 18
ነጽር:ውስተ:ረድኦትየ::=፡ ይትኃፈሩ:ወይ 19
ኀሰሩ : ኅቡረ:እለ : ያስተዋድይዋ : ለነፍስ
15 የ::=፡ ለይግብኡ: ድኅሬሆሙ: ወይትኃፈ 20
ሩ:እለ: ይፈቅዱ: ሊተ:እኩየ::
ወይትፈደዩ : በጊዜሃ: ኀሳሮሙ: እለ: ይብሉ 21
16 ኒ : እንቋዕ : እንቋዕ::=፡ ወይትፈሥሑ: 22
ወይትሐሰዩ: ብከ: ኵሎሙ:እለ: የኃሥሡከ:
17 እግዚኦ:: ወይበሉ:ዘልፈ፡ ዐቢይ : እግዚአ
ብሔር:: እለ: ይፈቅዱ: አድኅኖተከ: በኵ
ሉ:ጊዜ::=፡ እንሰ:ነደይ:ወምስኪን:አነ:: 23
ወእግዚአብሔር:ይኄሊ:ሊተ::=፡ ረደኢየ: 24
18 ወመድኅንየ : አንተ : እግዚኦ : አምላኪየ፡
ወኢትጐንዲ::=፡

ፍጻሜ:መዝሙር:ዘደዊት::

ሣ ብፁዕ: ዘይሌቡ: ሳዕለ: ነደይ: ወምስኪ 1
ን::እምዕለተ:እኪት:ያድኅኖ:እግዚአብሔ
ር::=፡ እግዚአብሔር:ያዐቅቦ:ወያሐይዎ: 2
ወያበጽዖ : ዲበ : ምድር:: ወኢያገብኦ:
ውስተ:እደ:ጸላኢሁ::=፡ እግዚአብሔር: 3
ይረድኦ: ውስተ: ዓራተ:ሕማሙ:: ወይሜይ
ጥ : ሎቱ : ኵሎ : ምስኪቤሁ : እምደዌ
ሁ::=፡ አንሰ : እቤ:እግዚኦ : ተሣሀለኒ:: 4
ወስረይ : ላቲ : ለነፍስየ: እስመ:አበስኩ: ለ
ከ::=፡ ጸላእትየሰ:እኩየ :ይቤሉ:ላዕሌየ:: 5
ማእዜ : ይመውት : ወይሠዓር : ስሙ::=፡
ወይበእ:ወይርአይ: ዘከንቶ : ይነብብ :: ል 6
ቡ: አስተጋብአ: ኃጢአተ: ላዕሌሁ::=፡ ይ 7
ወፅእ:አፍአ:ወይትናገር:ወያኀብር: 8 ላዕ
ሌየ : ወይትቃጸቡ ኒ: ኵሎሙ : ጸላእትየ::
ወይመክሩ : እኩየ: ላዕሌየ::=፡ ነገረ:ጊጋ 9
ይ : አውፅኡ : ላዕሌየ :: ዘኖመሰ : ኢይነቅ
ህ:አንከ::=፡ ብእሲ:ሰላምየ:ዘኪያሁ: 10
ተአመንኩ:: ዘይሴሰይ : እክልየ : አንሥአ:
ሰኰናሁ : ላዕሌየ::=፡ አንተ: እግዚኦ: ተ 11
ሣሀለኒ : ወአንሥአኒ : እፈድዮሙ::=፡
ወበእንተዝ: አእመርኩ: ከመ: ሠመርከኒ:: 12
ወኢተፈሥሑ:ጸላእትየ:ላዕሌየ::=፡ ወሊ 13
ተሰ: በእንተ:የዋሀትየ:ተወከፍከኒ:: ወአጽ
ናዕከኒ:ቅድሜከ:ለዓለም::=፡ ይትባረክ: 14
እግዚአብሔር : አምላከ : እስራኤል:: እ
ምይእዜ : ወእስከ : ለዓለም : ለይኩን:
ለይኩን::=፡

ሰብሐት: ለአብ: ወወልድ: ወመንፈስ: ቅዱስ፡
ይእዜኒ:ወዘልፈኒ:ወለዓለመ:ዓለም:
አሜን::

MS. Æthiop. Pocock. Gloria patri,& Filio et Spiritui Sancto: Eſt modò,ſemper erit, in ſecula ſeculorum, Amen.

INTERP. ÆTHIOP. [f] obtrectant animæ meæ. Convertantur [g] omni tempore. [h] tu es Domine Deus meus: & ne *PSAL. X L.* [a] Inimici quidem [b] ingreditur,& vidit,quod vanum eſt loquitur: cor ejus congregavit [c] loquebatur & conſociabat: Adverſùs [d] Qui dormit quidem,non igitur reſurget? [e] extulit adverſùs me calcaneum ſuum. [f] et non gaviſi ſunt inimici mei ſuper

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

14 * سُرَّ يا رَبُّ بِأَنْ تُخَلِّصَنِي يا رَبُّ أُنْظُرْ فِي مَعُونَتِي * تَخْزَ وَيَعْبُرْ طَالِبُوا نَفْسِي جَمِيعًا ، لِيُبِيدُوهَا
15 يَرْتَدُّونَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ وَيَخْزَوْنَ ، الَّذِينَ يَطْلُبُونَ لِيَ الشَّرَّ * وَلْيَقْبَلِ الخِزْيَ سَرِيعًا ، القَائِلُونَ لِي نَعَمًا
16 نَعَمًا * وَلْيُهَلِّلْ وَيُسَرَّ بِكَ جَمِيعُ طَالِبِيكَ يا رَبُّ ، وَلْيَقُولُوا فِي كُلِّ حِينٍ فَلْيَعْظُمِ الرَّبُّ الَّذِينَ
17 يُحِبُّونَ خَلَاصَكَ فِي كُلِّ حِينٍ * وَإِنِّي أَنَا الفَقِيرُ وَمِسْكِينٌ وَالرَّبُّ يَهْتَمُّ بِي * أَنْتَ مُعِينِي وَنَاصِرِي
18 يا إِلَهِي لَا تُبْطِي * اَللِّيلُويَا
19

1 * المَزْمُورُ الأَرْبَعُونَ * نُبُوَّةٌ عَنِ التَّجَسُّدِ وَسَلَامِ يَهُوذَا ، وَعَدَدُهُ ، كو ، اِسْتِيخُنْ
2 * طُوبَى لِمَنْ يَتَعَطَّفُ عَلَى المِسْكِينِ ، الرَّبُّ يُخَلِّصُهُ فِي اليَوْمِ السُّو * الرَّبُّ يَحْفَظُهُ وَيُحْيِيهِ ، وَيَجْعَلُهُ
3 فِي الأَرْضِ مَغْبُوطًا ، وَلَا يُسْلِمُهُ فِي أَيْدِي أَعْدَائِهِ * الرَّبُّ يُعِينُهُ عَلَى سَرِيرِ وَجَعِهِ ، صَرَفْتَ كُلَّ
4 أَوْجَاعِهِ وَهُوَ عَلَى مَضْجَعِهِ * أَنَا قُلْتُ يا رَبُّ ارْحَمْنِي ، وَنَجِّ نَفْسِي فَإِنِّي أَخْطَأْتُ إِلَيْكَ * أَعْدَائِي
5 قَالُوا فِيَّ شَرًّا ، أَنْ مَتَى مَا يَمُوتُ فَيَبِيدُ اسْمُهُ * كَانَ يَدْخُلُ فَيَنْظُرُ وَيَتَكَلَّمُ بِالبَاطِلِ ، وَقَلْبُهُ
6 جَمَعَ لَهُ إِثْمًا ، وَكَانَ يَخْرُجُ وَيَتَكَلَّمُونَ عَلَيَّ جَمِيعًا * تَكَلَّمَ عَلَيَّ جَمِيعُ أَعْدَائِي ، وَاسْتَوْرُوا عَلَيَّ
7 بِالأَسْوَاءِ * وَقَرَّرُوا عَلَيَّ كَلَامًا مُخَالِفًا لِلنَّامُوسِ ، وَقَالُوا مُنْذُ الآنَ إِذَا مَاتَ لَا يَعُودُ أَنْ يَقُومَ * إِنَّ
8 الرَّجُلَ المُسَالِمَ لِي الَّذِي إِيَّاهُ تَرَجَّيْتُ ، الَّذِي أَكَلَ خُبْزِي رَفَعَ عَقِبَهُ عَلَيَّ * وَأَنْتَ يا رَبُّ ارْحَمْنِي
9 وَأَقِمْنِي ، فَأُجَازِيَهُمْ * فَبِهَذَا عَلِمْتُ أَنَّكَ أَرَدْتَنِي ، إِذْ لَمْ يُسَرَّ فِيَّ عَدُوِّي * وَأَنَا بِعَدَمِي الشَّرَّ
10 قَبِلْتَنِي ، وَثَبَّتَّنِي أَمَامَكَ إِلَى الأَبَدِ * تَبَارَكَ الرَّبُّ إِلَهُ إِسْرَائِيلَ ، مِنَ الأَبَدِ وَإِلَى الأَبَدِ
11 يَكُونُ يَكُونُ ، اَللِّيلُويَا
12
13
14

Placeat tibi, O Domine, ut ſalves me, 14
O Domine, reſpice in adjutorium meum.
Confundantur, & præterfluant quærentes 15
animā meā ſimul ad perdendā eam:
retroagantur ſuper calcaneos ſuos,& pudefiant qui cupiunt mihi malū. Et adipiſcantur 16
confuſionem citò dicentes mihi;
Euge, euge. At jubilent & exultent in te 17
omnes quærentes te, O Domine: & dicant omni momento, Magnificetur Dominus, qui amant ſalutem tuam omni
tempore. Et ego quidem pauper ſum & 18
miſer,& Dominus curā habet mei. Tu es 19
adjutor meus & ſuffultor meus,O Deus, meus, ne morēris. Alleluja.

PSAL. XL.

Prophetia de Incarnatione, et ſalutatione Judæ. Numerus ver. 16. 1

BEatus vir, *qui benignus eſt erga pauperem: Dominus liberabit eum in die* 2
malo. Dominus conſervabit eū,& vivificabit eū, eumq; reddet in terra fœlicem, 3
& non tradet eū in manus inimicorum
ipſius. Dominus opem feret illi ſuper lectum doloris ejus: abegiſti omnes dolores 4
ejus, dum eſſet ſuper cubile ſuum. Ego 5
dixi, O Domine, miſerere mei & libera
animam meam,quia peccavi tibi. Inimici 6
mei dixerunt de me malum, O quando
morietur & peribit nomen ejus! Ingrediebatur 7
& videbat, loquebaturque falſitatem, & cor ejus congeſſit ſibi flagitium:
& egrediebantur ac loquebantur
de me ſimul. Loquuti ſunt de me cuncti 8
inimici mei, & conſilium ceperunt contra me, malo animo: Et aſſeruerunt de 9
me verba contraria legi, & dixerunt;
Ex nunc cùm mortuus fuerit, non reſurget amplius.
Sanè vir pacificus mihi, in quem ſperabam, cujus panem comedebam, 10
elevavit adverſùm me plantam
ſuam. Et tu, O Domine, miſerere mei,& 11
erige me, ac retribuam eis. Per hoc novi 12
me tibi gratum eſſe, quòd non geſtierit
mihi inimicus meus. Me verò, quia 13
ſum expers nequitiæ, ſuſcepiſti: & confirmâſti
me in conſpectu tuo in æternum.
Benedictus ſit Dominus Deus Iſrael ab 14
æterno & in ſeculum ſit, ſit. Alleluja.

ספר שני

PSAL. XLII. מב

decurſus ſuper anhelabit cervus Quemadmodum .Corach *filiis* *erudiens* , Victori
1 למנצח משכיל לבני־קרח : כאיל תערג על־אפיקי 2
, Deum ad mea anima Sitivit .Deus te ad *anhelabit* mea anima ita ,aquarũ
3 מים כן־נפשי תערג אליך אלהים : צמאה נפשי לאלהים
mea lachryma mihi Fuit ? *Dei faciebus* videbor & ,veniã quando :vivũ Deũ ad
4 לאל חי מתי אבוא ואראה פני אלהים : היתה־לי דמעתי
Horum ? tuus Deus Ubi : die omni me ad *dicendo in* ,nocte ac die panis
5 לחם יומם ולילה באמר אלי כל־היום איה אלהיך : אלה
,numerum in tranſibo quoniam ,meam animam me ſuper *effundam &* , *recordabor*
אזכרה ואשפכה עלי נפשי כי אעבר בסך
turba ,confeſſionis & ,*ovationis* voce in Dei domum ad uſque eis cum *me movebo*
אדדם עד־בית אלהים בקול־רנה ותודה המון
expecta ? me *ſuper tumultuaberis* & , mea anima te *deprimes* Cur .tripudians
6 חוגג : מה־תשתוחחי נפשי ותהמי עלי הוחלי
me *ſuper* ,mi Deus .ejus *facierum* ſalutes : ei confitebor adhuc quia ,Deum
7 לאלהים כי־עוד אודנו ישועות פניו : אלהי עלי
Chermonim & ,Jarden terra de tui recordabor idcirco :*ſe deprimet* mea anima
נפשי תשתוחח על־כן אזכרך מארץ ירדן וחרמונים
: tuarum fiſtularum *vocem* ad *clamans* voraginem *ad* Vorago .*puſillo* monte *de*
8 מהר מצער : תהום־אל־תהום קורא לקול צנוריך
Dominus præcipiet *Interdiu* .tranſierunt me ſuper tui fluctus & ,tuæ *illiſiones* omnes
9 כל־משבריך וגליך עלי עברו : יומם יצוה יהוה
.mearum vitarum Deo oratio : mecum ejus canticum nocte *in* & ,ſuam miſericordiam
חסדו ובלילה שירה עמי תפלה לאל חיי :
ambulabo *atratus* quid ut ? mei es oblitus quid Ut : meæ petræ Deo Dicam
10 אומרה לאל סלעי למה שכחתני למה־קדר אלך
,mei *hoſtes* me *probro affecerunt* ,meis oſſibus in *occiſione In* ? inimici oppreſſionem *in*
11 בלחץ אויב : ברצח בעצמותי חרפוני צוררי
,mea anima te *deprimes* Cur ? tuus Deus Ubi : die omni me ad *ipſos dicendo in*
12 באמרם אלי כל־היום איה אלהיך : מה־תשתוחחי נפשי
; ei confitebor adhuc quia ,Deum expecta ? me *ſuper tumultuaberis* cur &
ומה־תהמי עלי הוחילי לאלהים כי־עוד אודנו
.meus Deus & , *mearum facierum* ſalutes
ישועת פני ואלהי :

PSAL. XLIII. מג

viro à : miſericorde non gente de *meam litem* *litiga* & Deus me Judica
1 שפטני אלהים וריבה ריבי מגוי לא־חסיד מאיש
quid ut ,meæ fortitudinis Deus tu Quia .me *eripies* *iniquitatis &* *doli*
2 מרמה ועולה תפלטני : כי־אתה אלהי מעוזי למה
,tuam lucem Mitte ? inimici oppreſſionẽ *in* ambulabo *atratus* quid ut ? me elongiſti
3 זנחתני למה־קדר אתהלך בלחץ אויב : שלח־אורך
,tuæ ſanctitatis montem ad me introducent : me ducent ipſæ : tuam veritatem &
ואמתך המה ינחוני יביאוני אל־הר־קדשך
.tua tabernacula ad &
ואל־משכנותיך :

תרגום TARGUM.

מב

1 לשבחא בשכלא טבא על ידיהון דבני קרח :
2 היך איילא די מרגג על פצידי מיא היכנא נפשי
3 מרגגא לותך יי : צחת לך נפשי לאלהא תקיפא
חיא וקימא אימתי איעול ואחמי זיו שכנתא דיי :
4 הות לי דמעתי למברי יימם ולילי בדיימר לי
5 סנאה כל יומא אן הוא אלהך : אלין נסיא אנא
דכיר ואשוד עלי רעיוני נפשי כד אעבר טללא
בלחודי אתחיל במשרין דצדיקי עד בית
מוקדשא דיי בקל בעותא ותושבחתא
6 אתרגושת עממין דאתין למחג לירושלם : מה
תתמככין נפשי ותרגשי עלי אוריכי לאלהא
ארום תוב אשבחניה בפורקנא דמן קדמוי :
7 אלהי עלי נפשי תתמכך בגין כן ידכרונך יתבי
להלאה בארע ירדנא ויתבי טורי חרמוני
ועמא דקבילו אוריתא בטורא דסיני דמכיך
8 וזעיר : תהומא עלאה לתהומא ארעאה קרי
לקל ולחי מרזביך היכנא כולהון מתבריך
9 ונליך עלי עברו : יימם יפקוד יי טוביה
ובליליא תושבחתיה עמי צלותא לאל די נטיר
10 חיי : אימר לאלהא רוחצני למה אשליתני למה
11 בקבלא איזיל ברחוק בעל דבבא : בדקטלין
גרמי בזמן דמחרפין יתי מעיקי כד אמרין לי כל
12 יומא אן הוא אלהך : מה תתמככין נפשי ומה
תרגשי עלי אוריכי לאלהא ארום תוב
אשבחניה בפורקניה דמן קדמוי די הוא
אלהי :

מג

1 דון יתי יי בדין קשוט ועלך למנצי מצותי מן
עמא דלא זכי מן גבר נכיל וטלומא תשזבנני :
2 ארום אנת הוא אלהא עושני למה שבקתני
3 למה חכיר איזיל ברחוק בעיל דבבא : שדר
נהורך והמנותך הנון ידברונני יעלון יתי לטור
בית מוקדשא ומדרשי בית שכנתך :

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Ad laudandum in intelligentia bona p
manus filiorum Korahh.

PSAL. XLII.

SIcut cervus deſiderat ad decurſus aqua- rum ; ſic anima mea deſiderat ad te *Domine*. Sitivit anima mea ad *te* Deũ fortem vivũ & permanentẽ : quando ingrediar & reſpiciam ſplendorẽ majeſtatis Dñi? Fuit mihi lachry- ma mea in cibũ diu noctúque, dum diceret mihi inimicus tota die, Ubi Deus tuus? Signo- rum illorũ memor ſum, & effundã ſuper me *cogitationes* animæ meæ, quando tranſibo *umbraculũ*, ſolus roborabor in caſtris juſto- rum uſque ad domũ ſanctuarii Dñi in voce exultationis & *laudis*, tumultus populorum venientium, ut feſta celebrent in Jeruſalem. Quare conſternêris anima mea & tumultu- eris adverſum me? ſpera in Deo, quoniã ad- huc *laudabo eum* propter redemptionẽ quæ eſt à conſpectu ejus. Deus meus, ſuprà me anima mea deprimetur: propterea recorda- bũtur tui, qui habitant ad ulteriorẽ ripã ter- ræ Jordanis, & habitatores *montiũ Hermo- niorũ*, & popul⁹ qui acceperũt legẽ in mon- te Sinai, humili & parvo. Abyſſus ſuperior abyſſum inferiorẽ invocat in voce ſtillati- onum canalium tuorũ ; ſic omnes gurgites tui & fluctus tui ſuper me tranſierunt. Per diem mandabit Dominus benignitatẽ ſuam, & per noctẽ canticũ ejus erit mecũ: oratio ad Deum qui cuſtodit vitam meam. Dicam Deo, *Fiducia* mea quare oblitus es mei: quare in tenebris incedam, cùm affligit ini- micus? Dum occidunt membra mea, in tempore quo exprobrant mihi oppreſſores mei, quando dicunt mihi tota die, Ubi eſt ille Deus tuus? Quare conſternêris anima mea, & tumultuêris adverſum me? ſpera in Deo, quoniam adhuc *laudabo eum* propter redemptionem quæ eſt à præſentia ejus, quoniam ipſe eſt Deus meus.

PSAL. XLIII.

JUdica me Deus judicio veritatis: tuum eſt enim agere cauſam meam à gente non *juſta*; ab homine doloſo, & iniquo libera me. Quoniam tu *es* Deus fortitudo mea quare *dereliquiſti me?* quare *atratus* in- cedam dum affligit auctor inimicitiæ. Emitte lucem tuam & veritatem tuam ipſæ deducent me & introducent me ad montem domus ſanctuarii, & in ſcholas domus majeſtatis tuæ.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܟܬܒܐ ܕܬܪܝܢ * * ܡܙܡܘܪܐ * ܕܡܒ *

1 * ܕܒܢܝ ܩܘܪܚ. ܬܟܫܦܬܐ ܕܢܒܝܐ. ܘܗܘ ܕܐܡܪ ܡܙܡܘܪܐ ܕܘܝܕ ܟܕ ܡܬܟܪܟ ܗܘܐ. ܘܒܥܐ ܕܢܦܢܐ
2 ܠܐܘܪܫܠܡ. ܦܬܓܡܐ ܥܣܪ. * ܐܝܟ ܐܝܠܐ ܕܓܥܐ ܥܠ ܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܦ ܢܦܫܝ ܓܥܝܐ
3 ܠܘܬܟ ܡܪܝܐ : * ܨܗܝܬ ܢܦܫܝ ܠܐܠܗܐ ܚܝܐ: ܐܡܬܝ ܐܬܐ ܘܐܚܙܐ ܐܦܝܟ : ܐܠܗܐ.* ܗܘܬ
4 ܠܝ ܕܡܥܬܝ ܡܐܟܘܠܬܐ. ܐܝܡܡܐ ܘܠܠܝܐ : ܟܕ ܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܠܝ ܟܠܝܘܡ ܐܝܟܘ
5 ܐܠܗܟ. * ܗܠܝܢ ܐܬܕܟܪܬ ܘܐܬܬܪܦܬ ܢܦܫܝ : ܡܛܠ ܕܐܥܒܪ ܒܡܛܠܬܟ ܥܫܝܢܬܐ. ܥܕܡܐ
6 ܠܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ : ܒܩܠܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ ܘܕܬܘܕܝܬܐ ܣܓܝܐܐ ܚܕܝܢ. * ܠܡܢܐ ܡܬܬܪܦܐ
ܢܦܫܝ ܘܠܡܢܐ ܐܬܡܗܬܝ : ܣܒܪܝ ܠܐܠܗܐ ܡܛܠ ܕܬܘܒ ܐܘܕܐ ܠܗ. ܠܦܪܘܩܐ ܕܐܦܝ
7 ܘܠܐܠܗܝ : * ܥܠܝ ܢܦܫܝ ܐܬܬܪܦܬ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܕܟܪܬܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܝܘܪܕܢܢ : ܡܢ ܚܪܡܘܢ
8 ܘܡܢ ܛܘܪܐ ܙܥܘܪܐ. * ܬܗܘܡܐ ܠܬܗܘܡܐ ܩܪܐ : ܘܩܠܐ ܠܩܠܐ ܕܡܝܐ ܕܨܢܘܪܝܟ. ܟܠܗܘܢ
9 ܡܫܘܚܠܦܝܟ ܘܓܠܠܝܟ ܥܠܝ ܥܒܪܘ : * ܒܐܝܡܡܐ ܢܦܩܘܕ ܡܪܝܐ ܛܝܒܘܬܗ. ܘܒܠܠܝܐ
10 ܬܫܒܘܚܬܗ : ܥܡܝ ܨܠܘܬܐ ܠܐܠܗܐ ܚܝܐ. * ܐܡܪܬ ܠܐܠܗܐ ܕܡܛܠܡܢܐ ܛܥܝܬܢܝ : ܘܡܛܠܡܢܐ
11 ܟܡܝܪܐܝܬ ܡܗܠܟ ܐܢܐ ܒܐܘܠܨܢܗ ܕܒܥܠܕܒܒܝ :* ܟܕ ܬܒܪܐ ܕܓܪܡܝ ܚܣܕܘܢܝ ܒܥܠܕܒܒܝ.
12 ܟܕ ܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܠܝ ܟܠܝܘܡ ܐܝܟܘ ܐܠܗܟ : * ܠܡܢܐ ܡܬܬܪܦܐ ܢܦܫܝ ܘܠܡܢܐ
ܐܬܡܗܬܝ. ܣܒܪܝ ܠܐܠܗܐ ܡܛܠ ܕܬܘܒ ܐܘܕܐ ܠܗ : ܠܦܪܘܩܐ ܕܐܦܝ ܘܠܐܠܗܝ.

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܓ * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܓܠܐ ܠܗ ܝܘܢܬܢ ܕܨܒܐ ܫܐܘܠ ܠܡܩܛܠܗ.
ܘܬܟܫܦܬܐ ܕܢܒܝܐ. ܘܡܣܠܐ ܠܝܗܘܕܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܕ. ܕܘܢ ܐܠܗܐ ܕܝܢܝ ܘܬܒܘܥ ܬܒܥܬܝ :
2 ܡܢ ܥܡܐ ܕܠܐ ܡܪܚܡܢ. ܘܡܢ ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܘܢܟܝܠܐ ܦܪܘܩܝܢܝ : * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܐ
ܕܚܝܠܝ ܘܠܡܢܐ ܛܥܝܬܢܝ. ܘܠܡܢܐ ܟܡܝܪܐ ܡܗܠܟ ܐܢܐ ܒܐܘܠܨܢܗ : ܕܒܥܠܕܒܒܝ.
3 * ܫܕܪ ܢܘܗܪܟ ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܘܢܒܝܐܘܢܢܝ : ܘܢܕܒܪܘܢܢܝ ܠܛܘܪܐ ܩܕܝܫܐ ܘܠܡܫܟܢܟ.

Sequitur Liber ſecundus.

PSAL. XLII.

Filiorum Corah. Supplicatio Prophetarum. Eſtq; pſalmus quem David canebat dum exularet, cupiens redire Jeroſolymã. Verſ.

UT cervus mugiens ad fontem aquarum, ita etiam anima mea clamat ad te, Dñe. Sitiens eſt tui anima mea, Deus vive: quando veniam & videbo faciem tuam? Deus, Facta eſt mihi lachryma mea cib⁹ diu noctuque, dum dicerent mihi quotidie, Ubi eſt Deus tuus? Hæc recordatus ſum, & conturbata eſt anima mea. Quia tranſibo ſub protectione tua forti uſque ad domum Dei in voce laudis & confeſſionis multi lætantes. Quare conturbaris anima mea, & quare ſtupida es? Expecta Deum, quoniam adhuc gratias agam Salvatori vultûs mei, Et Deo meo. Adverſùm me anima mea conturbata eſt; propterea memor fui tui de terra Jordanis, ab Hermon & à monte exiguo. Abyſſus abyſſum advocat, & vox vocem aquarum canalium tuorum; omnes fluctus tui & procellæ tuæ ſuper me tranſierunt. Interdiu præcipiet Dominus miſericordiæ ſuæ: & noctu laudationes ejus, mecum eſt oratio mea Deo viventi. Dixi Deo, Quare oblitus es mei, & quare incedo triſtè in oppreſſione inimicorum meorum? Cum fractione oſſium meorum exprobraverunt mihi hoſtes mei, dum dicerent mihi quotidie, Ubi eſt Deus tuus? Quare conturbaris, anima mea, & quare ſtupida es? Expecta Deum, quoniam adhuc confitebor Salvatori vultûs mei & Deo meo.

PSAL. XLIII.

Davidis. Quum indicavit illi Jonathan velle Saulem occidere eum. Et ſupplicatio Prophetarum. Contemnit etiam Judæos. Verſ. 14

JUdica, Deus, judiciũ meũ, & ſume vindictam meã à populo haud miſericordi: & à viro impiis atq; fraudulentis eripe me. Quandoquidẽ tu es Deus roboris mei, quare ergò oblitus es mei, & quare incedo triſtè affligentibus inimicis meis? Mitte lucẽ tuã ac fidẽ tuam & conſolabuntur me, deducentq; me ad montem tuum ſanctum, & ad habitaculum tuum

Verſio VULG. LAT.

In finem,
1 Intellectûs filiis Core. XLI.

2 Quemadmodùm deſiderat cervus ad
fontes aquarũ : ita deſiderat anima mea
3 ad te, Deus. Sitivit anima mea ad Deum
fortem vivum : quando veniam & ap-
4 parebo ante faciẽ Dei? Fuerunt mihi
lachrymæ meæ panes die ac nocte : dum
dicitur mihi quotidiè, Ubi eſt Deus
5 tuus? Hæc recordatus ſum, & effudi in
me animam meã : quoniã tranſibo in
locũ tabernaculi admirabilis, uſque ad
domũ Dei : In voce exultationis, &
6 confeſſionis : ſonus epulantis. Quarè
triſtis es anima mea? & quarè con-
turbas me? Spera in Deo, quoniam ad-
huc confitebor illi : ſalutare vultûs mei,
7 Et Deus meus. Ad meipſum anima
mea conturbata eſt : propterea memor
ero tui de terra Jordanis, & Hermoniim
8 à monte modico. Abyſſus abyſſum in-
vocat, in voce cataractarũ tuarũ. Omnia
excelſa tua, & fluctus tui ſuper me tranſ-
9 ierunt. In die mandavit Dominus mi-
ſericordiã ſuam, et nocte canticũ ejus.
10 Apud me oratio Deo vitæ meæ, Dicam
Deo; Suſceptor meus es, Quarè oblitus
es mei? et quarè contriſtatus incedo, dũ
11 affligit me inimicus? Dum confringun-
tur oſſa mea, exprobraverunt mihi qui
tribulant me inimici mei : Dum dicunt
mihi per ſingulos dies, Ubi eſt Deus
12 tuus? Quarè triſtis es anima mea? & quarè
conturbas me? Spera in Deo, quoniam
adhuc confitebor illi : ſalutare vultûs
mei, & Deus meus.

1 Pſalmus David. XLII.
Judica me, Deus, et diſcerne cauſam
meam de gente non ſancta, ab homine
2 iniquo et doloſo erue me. Quia tu es
Deus fortitudo mea: quarè me repuliſti?
& quarè triſtis incedo, dum affligit me
3 inimicus? Emitte lucem tuam et veri-
tatem tuam: ipſa me deduxerunt, et ad-
duxerunt in montem ſanctum tuum, et
in tabernacula tua.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

1 Εἰς τὸ τέλος, εἰς σύνεσιν τοῖς υἱοῖς Κορέ(α). μα΄.
2 † ὋΝ τρόπον ἐπιποθεῖ ἡ ἔλαφος ἐπὶ τὰς πη-
γὰς τῶν ὑδάτων, † οὕτως ἐπιποθεῖ ἡ ψυχή μου
3 πρὸς σὲ ὁ θεός. † Ἐδίψησεν ἡ ψυχή μου
πρὸς τὸν θεὸν (β) τὸν ζῶντα· † πότε ἥξω καὶ ὀφθή-
4 σομαι τῷ προσώπῳ τοῦ θεοῦ; † Ἐγενήθη τὰ δά-
κρυά μου ἐμοὶ ἄρτος ἡμέρας καὶ νυκτός, † ἐν τῷ λέ-
γεσθαί μοι καθ' ἑκάστην ἡμέραν, Ποῦ ἐστιν ὁ θεός
5 σου; † Ταῦτα ἐμνήσθην, καὶ ἐξέχεα ἐπ' ἐμὲ τὴν
ψυχήν μου, † ὅτι διελεύσομαι ἐν τόπῳ σκηνῆς θαυ-
μαστῆς ἕως τοῦ οἴκου τοῦ θεοῦ· † ἐν φωνῇ ἀγαλλιάσεως
6 καὶ ἐξομολογήσεως (γ) ἤχου ἑορταζόντων. † Ἱνατί
περίλυπος εἶ ἡ ψυχή μου, † καὶ ἱνατί συνταράσσεις
με; † ἔλπισον ἐπὶ τὸν θεόν, ὅτι ἐξομολογήσομαι
7 αὐτῷ, † σωτήριον τοῦ προσώπου μου, (δ) Ὁ θεός μου.
† πρὸς ἐμαυτὸν ἡ ψυχή μου ἐταράχθη, † διὰ τοῦ-
το μνησθήσομαί (ε) σου ἐκ γῆς Ἰορδάνου, † καὶ Ἑρ-
8 μωνιεὶμ ἀπὸ ὄρους μικροῦ. † Ἄβυσσος ἄβυσσον ἐπι-
καλεῖται εἰς φωνὴν τῶν (*) καταρρακτῶν σου· † πάντες
οἱ μετεωρισμοί σου, καὶ τὰ κύματά σου ἐπ' ἐμὲ δι-
9 ῆλθον. † Ἡμέρας ἐντελεῖται κύριος τὸ ἔλεος αὐτοῦ,
† καὶ νυκτὸς (ζ) δηλώσει. παρ' ἐμοὶ † προσευχὴ
10 τῷ θεῷ τῆς ζωῆς μου, † Ἐρῶ τῷ θεῷ, Ἀντιλήπτωρ
(η) μου εἶ, διατί μου ἐπελάθου; † (θ) ἱνατί σκυθρω-
πάζων πορεύομαι † ἐν τῷ ἐκθλίβειν τὸν ἐχθρόν μου;
11 † Ἐν τῷ (ι) καταθλᾶσαι τὰ ὀστᾶ μου, (κ) ὠνείδισάν
με οἱ θλίβοντές με· † ἐν τῷ λέγειν αὐτούς μοι καθ'
12 ἑκάστην ἡμέραν, Ποῦ ἐστιν ὁ θεός σου; † Ἱνατί περί-
λυπος εἶ ἡ ψυχή μου, † καὶ ἱνατί συνταράσσεις με;
† ἔλπισον ἐπὶ τὸν θεόν, ὅτι ἐξομολογήσομαι
αὐτῷ, † (λ) ἡ σωτηρία τοῦ προσώπου μου, καὶ ὁ θεός μου.
MS.A. (α) ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) τὸν ἰσχυρὸν
τὸν ζῶντα· (γ) ἤχοις ἑορτάζοντος. (δ) Καὶ ὁ θεός
(ε) σου κύριε ἐκ (*) καταρακτῶν (ζ) ᾠδὴ αὐτοῦ.
παρ' ἐμοὶ (η) μου, διατί (θ) καὶ ἱνατί (ι) κατα-
θλᾶσαι (κ) ὠνείδιζόν με οἱ ἐχθροί μου (λ) σωτήριον

1 (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. μβ΄.
† ΚΡῖνόν (β) με ὁ θεός, καὶ δίκασον τὴν δίκην μου,
ἐξ ἔθνους οὐχ ὁσίου, † ἀπὸ ἀνθρώπου ἀδίκου καὶ
2 δολίου ῥῦσαί με. † Ὅτι (γ) σὺ εἶ ὁ θεὸς κραταί-
ωμά μου, ἱνατί ἀπώσω με; † καὶ ἱνατί σκυθρωπά-
ζων πορεύομαι † ἐν τῷ ἐκθλίβειν τὸν ἐχθρόν μου;
3 † Ἐξαπόστειλον τὸ φῶς σου καὶ τὴν ἀλήθειάν σου,
† αὐτά με ὡδήγησαν καὶ ἤγαγόν με εἰς ὄρος ἅγιόν
σου, † καὶ εἰς τὰ σκηνώματά σου.
MS.A. (α) Εἰς τὸ τέλος συνέσεως τοῖς υἱοῖς
Κορέ, ψαλμὸς (β) μοι (γ) σὺ ὁ θεός

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

In finem,(a)in intellectum filiis 1
Core. XLI.
1 Quemadmodum (b)deſide- 2
rat cervus ad fontes a-
quarum, ita deſiderat anima mea
[a] ad te, Deus. 2 Sitivit anima 3
mea ad(c)[b]Deum vivũ: quan-
do veniam, & apparebo ante fa-
ciem [c]Dei? 3 Fuerunt mihi la- 4
chrymæ meæ (d) panis die ac no-
cte: dum dicitur mihi per ſingu-
los dies, ubi eſt Deus tuus? 4 Hæc 5
(e) recordatus ſum, & [d]effudi
ſuper me animam meam: Quo-
niam tranſibo in (f)locum taber-
naculi [e] admirabilis uſque ad
domum Dei: 5 In voce[†]exulta-
tionis, & confeſſionis ſoni(g)fe-
ſtum celebrantium. 6 Quarè (h) 6
triſtis es anima mea? & quarè
conturbas me? 7 Spera in Deo:(i)
quoniam confitebor illi, ſalutare
vultûs mei, Deus meus. 8 Ad me 7
ipſum(k) anima mea turbata eſt:
propterea memor ero [f] tui
de terra Jordanis, & Hermoniim
à monte parvo. 9 (l) Abyſſus abyſ- 8
ſum invocat in voce cataractarũ
tuarum. 10 (m)[g] Omnes ſuſ-
penſiones tuæ, & fluctus tui ſu-
per me tranſierunt. 11 In die 9
mandabit Dominus miſericordiã
ſuam, & (n) nocte declarabit.
12 Apud me[*] oratio Deo vitæ
meæ: Dicã Deo, (o)[h]Suſceptor 10
meus es: quarè oblitus es mei?
13 [i] Quarè contriſtatus incedo;
dum affligit (p) inimicus meus,
14 Dum confringit oſſa mea? Ex- 11
probraverunt mihi, [k] qui (q) tri-
bulant me: 15 dum dicunt mihi
per ſingulos dies, ubi eſt Deus
tuus? Quarè triſtis es anima mea, 12
& quarè conturbas me? 16 Spera
in Deo: quoniam confitebor illi;
(r) ſalus vultûs mei, & (ſ) Deus
meus.

(a) Pſalmus ipſi(b)David. XLII. 1
1 Judica (c)me, Deus, & [a]
diſcerne cauſam meam : de
gente [b]non ſancta, ab(d)homi-
ne iniquo & doloſo erue me.
2 Quia tu es Deus fortitudo mea; 2
quarè me repuliſti? & quarè tri-
ſtis incedo, dum affligit(e)inimi-
cus meus? 3 Emitte lucem tuam, 3
& veritatem tuam, (f) ipſa me
deduxerunt, & adduxerunt in
montem ſanctum tuum, & in [c] tabernacula tua.

Verſio ÆTHIOPICA.

መዝሙር፡ዘበአእምሮ፡ዘደቂቀ፡ቆሬ፡፡

፵፩ ከመ፡ ያፈቅር፡ ኀየል፡ ኀበ፡አንቅዕተ፡ 1
ማያት፡፡ከማሁ፡ታፈቅር፡ነፍስየ፡ኀበ፡ እግዚ
አብሔር፡፡=፡ ጸምአት፡ነፍስየ፡ኀበ፡አምላ 2
ኪየ፡ሕያው፡፡ ማእዜ፡ እበጽሕ፡ ወእሬኢ፡
ገጾ፡ለአምላኪየ፡፡=፡ሲሳየ፡ኮነኒ፡አንብዕየ፡ 3
መዓልተ፡ወሌሊተ፡፡ እስመ፡ይብሉኒ፡ኵሉ፡
አሚረ፡አይቴ፡ውእቱ፡አምላክ፡፡=፡ ዘንተ፡ 4
ተዘከርየ ፡ ተክዕወት ፡ ነፍስየ ፡ በላዕሌየ፡፡
እስመ፡እበውእ፡ውስተ፡መካነ፡ማኅደረ፡ ስብ
ሐት፡ቤተ፡እግዚአብሔር፡፡
በቃለ፡አሚን፡ወተፈሥሖት፡ደምፁ፡ እለ፡ይ 5
ገብሩ፡በዓለ፡፡=፡ ለምንት፡ትቴክዚ፡ ነፍስ 6
የ፡ወለምንት፡ተሀውከኒ፡፡=፡ እመኒ፡በእግ 7
ዚአብሔር፡ ከመ፡እገኒ ፡ ሎቱ፡፡ መድኀኔ፡
ገጽየ፡አምላኪየ፡፡=፡ ተሀውከት፡ ነፍስየ፡ 8
በላዕሌየ፡፡ በእንተዝ፡እዜከረከ፡እግዚኦ፡፡
በምድረ፡ ዮርደኖስ፡በአርሞንኤም፡በደብር፡
ንኡስ፡፡ ቃላይ፡ለቃላይ፡ትጼውዓ፡ በቃለ፡አስ 9
ራኪከ፡፡=፡ ኵሉ፡ ማዕበልከ፡ ወሞገድከ፡ 10
እንተ፡ላዕሌየ፡ኀለፉ፡፡=፡ መዓልተ፡ይኤዝ 11
ዝ፡ እግዚአብሔር ፡ ሣህሎ ፡ ወሌሊተ፡
ይነግር፡፡
እምኀቤየ፡ ብፅዓተ፡ ሕይወትየ፡ለእግዚአብ 12
ሔር፡፡እብሎ፡ለእግዚአብሔር ፡አምላኪየ፡
አንተ፡ ለምንት፡ ትረስዓኒ፡፡=፡ ለምንት፡ተ 13
ኀድገኒ፡ወለምንት፡ትኩዝየ፡ አንሶሱ፡፡ ሶበ፡
ያመነድቡኒ፡ፀርየ፡፡=፡ ወያጸንጽውኒ፡ አዕ 14
ጽምትየ፡፡ ወይጼእሉኒ፡ ኵሎሙ፡ ጸላእት
የ፡፡=፡ እስመ፡ ይብሉኒ፡ ኵሎ ፡ አሚረ፡አ 15
ይቴ፡ ውእቱ፡ አምላክከ፡፡ ለምንት፡ትቴክ
ዚ፡ነፍስየ፡ወለምንት፡ተሀውከኒ፡፡=፡እመኒ፡ 16
በእግዚአብሔር ፡ ከመ ፡ እገኒ ፡ ሎቱ፡፡
መድኀኔ ፡ ገጽየ ፡ አምላኪየ፡፡

መዝሙር ፡ ዘዳዊት፡፡

፵፪ ፍታሕ፡ሊተ፡እግዚኦ፡ወተበቀል፡ በቀል 1
የ፡፡ እምሕዝብ ፡ ውፁዓን ፡ እምጽድቅ፡፡
እምብእሲ፡ዓማፂ፡ወጽልሕው፡ባልሐኒ፡፡=፡
እስመ ፡ አንተ ፡ አምላኪየ ፡ ወኀይልየ፡፡ 2
ለምንት ፡ ተኀድገኒ፡ ወለምንት ፡ ትኩዝየ፡
አንሶሱ፡፡ ሶበ ፡ ያመነድቡኒ ፡ ፀርየ፡፡=፡
ፈኑ ፡ ብርሃነከ ፡ ወጽድቀከ፡፡ እማንቱ፡ 3
ይምርሐኒ፡ ወይስደኒ፡ ደብረ፡ መቅደስከ፡፡
ወውስተ፡ዐብያቲከ ፡ እግዚኦ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] ad Dominum. [b] Deum meum vivum: [c] Dei mei? [d] effuſa eſt anima mea in me: [e] gloriæ uſq; [†] confeſſionis & exultationis ſonuerunt qui feſtum celebrant. [f] tui Domine de [g] Omnes undæ tuæ, & fluctus [*] votum vitæ meæ Domino: [h] Dominus meus es: [i] Quarè repuliſti me? quarè [k] omnes inimici mei: dum PSAL. XLII. [a] ſume vindictam meam : [b] diſcedente à juſtitia, [c] palatia tua, Domine.

Verſio ARABICA. cum Interpretatione LATINA.

* المزمور الحادي والاربعون * لاجل اليهود الذين سقطوا * وعدده كب استيخن * 1
* مثل ما يتوق الايل الى ان يكون على ينابيع المياه * كذلك تاقت نفسي اليك يا الله * ظميت 2 3
نفسي الى الله الحي * متى اجي فاظهر امام وجه الله * صارت دموعي خبزا لي في النهار والليل * 4
اذ يقولون لي في كل يوم اين الهك * هذه ذكرتها فافضت نفسي * اني ساجوز في موضع مظلة 5
عجيبة الى بيت الله * بصوت التهليل * وشكر صوت المعيد * ماذا تحزنيني يا نفس ولماذا 6
تقلقيني * توكلي على الله فاني اشكره الاهي مخلص وجهي * قلقت نفسي في ذاتي * من 7
اجل هذا اذكرك يا رب من ارض الاردن * وحرمون من الجبل الصغير * الغمر نادي 8
الغمر * بصوت ميازيبك جميع اهوالك * وامواجك اتت على * في النهار يوصي الرب برحمته 9
وفي الليل اسبحه * اصلي لاله حياتي * قلت للاله انت هو ناصري لماذا نسيتني * ثم لماذا 10
تركتني * ولماذا امشي حزينا عند ما اضطهدني عدوي * وعند وهن عظامي عيرني 11
الذين اضطهدوني * اذ يقولون لي في كل يوم اين الهك * لماذا تحزنيني يا نفس ولماذا تقلقيني * 12
توكلي على الله فاني اعترف له مخلص وجهي هو الهي * * المزمور الثاني والاربعون *

* طلبة لاجل اليهود الذين سقطوا * وعدده يب * استيخن * 1
احكم لي يا الله وانتقم لظلامتي من امة غير طاهرة * ومن انسان ظالم ودغل نجني *
* لانك انت الهي وقوتي * لماذا اقصيتني ولماذا امشي عابسا * عندما اضطهدني عدوي * ارسل 2 3
نورك وعدلك فانهما اللذان هدياني * واصعداني الى جبلك المقدس * والى مسكنك *

PSAL. XLI.
Pro Judæis qui lapſi ſunt. Et 1
numerus verſ. 22.
Quemadmodũ avidè petit cervus eſſe 2
ad fontes aquarũ, ſic expetivit ani-
ma mea te, O Deus. Sitivit anima mea 3
Deum vivũ: quando veniã & apparebo
ante faciem Dei? Factæ ſunt lachrymæ 4
meæ panis mihi die ac nocte, dum dice-
rent mihi quotidie, ubi eſt Deus tuus?
Hujus rei memini, & effudi animam 5
meã: quòd ſim tranſiturus per locũ taber-
naculi admirabilis ad domum Dei cum
voce jubilationis, & confeſſione vocis fe-
ſta celebrantis. Quarè affligis me, O ani- 6
ma, & quarè conturbas me? Confide in
Deo, quia gratias agam illi, Deo meo
Salvatori vultûs mei. Turbata eſt anima 7
mea in me, propterea memor ero tui, O
Domine, de terra Jordanis & Hermon,
de monte exiguo. Profundũ advocavit 8
profundũ in voce diſſecationum tuarum.
Omnes tempeſtates tuæ & fluctus tui
venerunt ſuper me. In die illuminat 9
Deus per miſericordiã ſuã, & in nocte
laudo eũ: Oro ad Deũ vitæ meæ. Dixi 10
Deo, Tu es adjutor meus, quarè obli-
tus es mei? etiam cur me deſeruiſti, &
quarè incedo triſtis? Quando perſecutus
eſt me inimicus meus, Quumque debilia 11
eſſent oſſa mea, improperârunt mihi qui
perſequuti ſunt me, dicentes mihi ſin-
gulis diebus; ubi eſt Deus tuus?
Quarè contriſtas me, O anima, & quarè 12
conturbas me? Confide in Deo, quoniam
confitebor ei, Salvatori vultûs mei: ipſe
eſt Deus meus.

PSAL. XLII.
Precatio pro Judæis qui lapſi 1
ſunt. Et numerus verſ. 11.
Adjudica mihi, O Deus, & vindica
oppreſſionem meam à gente impura:
& ab homine ſcelerato & doloſo libera
me. Quia tu es Deus meus & fortitudo 2
mea. Quarè me propulſâſti, & quarè
incedo mœſtus dum perſequitur me ini-
micus meus? Mitte lucem tuam & æ- 3
quitatem tuam: quoniam ipſa ſunt quæ
me duxerunt, & evexerunt ad montem
tuum ſanctum & ad habitaculum tuum.

תהלים : מד

: meæ exultationis lætitiæ Deum ad , Dei altare ad introibo Et
4 ואבואה אל־מזבח אלהים אל־אל שמחת גילי
,mea anima te *deprimes* Cur .mi Deus , Deus ,cithara in tibi confitebor &
5 ואודך בכנור אלהים אלהי : מה־תשתוחחי נפשי
: ei confitebor adhuc quoniam , Deo in ſpera ? me *ſuper tumultuaberis* cur &
ומה־תהמי עלי הוחילי לאלהים כי־עוד אודנו
.meus Deus & ,*mearum facierum* ſalutes
ישועת פני ואלהי :

PSAL. XLIV. מד

noſtri patres,audivim⁹ noſtris aurib⁹ *in* Deus .*erudiens* Corach filiis Victori
1 למנצח לבני־קרח משכיל : אלהים באזנינו שמענו אבותינו 2
Tu .*quondam* diebus in ,eorũ diebus in es operatus opus : nobis narraverunt
3 ספרו־לנו פעל פעלת בימיהם בימי קדם : אתה
.eos emiſiſti & , populis malefeciſti : eos plantaveras & , *expuliſti* gentes tua manu
ידך גוים הורשת ותטעם תרע לאמים ותשלחם :
: eos ſervavit non eorũ brachiũ & ,terram poſſederunt ſuo gladio in non Quia
4 כי לא בחרבם ירשו ארץ וזרועם לא־הושיעה למו
ipſe Tu .*eos voluiſti* quia ,*tuarũ facierum* lux & ,tuũ brachiũ & ,tua dextera ſed
5 כי־ימינך וזרועך ואור פניך כי רציתם : אתה־הוא
:cornupetemus noſtros hoſtes te In .Jahacob ſalutes præcipe , Deus meus rex
6 מלכי אלהים צוה ישועות יעקב : בך צרינו ננגח
; ſperabo meo arcu in non Quia .*nobis obſiſtentes* conculcabimus tuo nomine in
7 בשמך נבוס קמינו : כי לא בקשתי אבטח
: noſtris hoſtibus ab nos feciſti ſervare Quoniam .me ſervabit non meus gladius &
8 וחרבי לא תושיעני : כי הושעתנו מצרינו
tuo nomini & ; die omni *laudavimus* Deo In .pudore affeciſti nos odio habentes &
9 ומשנאינו הבישות : באלהים הללנו כל־היום ושמך
non & : nos feciſti erubeſcere & ,elongâſti Etiam .Selah ,confitebimur ſeculum in
10 לעולם נודה סלה : אף־זנחת ותכלימנו ולא־
nos habẽtes odio &:hoſte ab retrorſũ nos redire *Facies* .noſtris exercitib⁹ *in* egrederis
11 תצא בצבאותינו : תשיבנו אחור מני־צר ומשנאינו
Vendes .nos diſperſiſti gentes in & ; cibi *pecus* ut nos *Dabis* .ſibiipſis diripuerunt
12 13 שסו למו : תתננו כצאן מאכל ובגוים זריתנו : תמכר־
opprobriũ nos *Pones* .eorum *preciis in* multiplicâſti non & ,*lucro* ſine tuũ populũ
14 עמך בלא־הון ולא־רבית במחיריהם : תשימנו חרפה
nos *Pones* .noſtris circuitibus deriſionem & ,ſubſannationem ; noſtris vicinis
15 לשכנינו לעג וקלס לסביבותינו : תשימנו
die Omni .populis in capitis commotionem ; gentibus in proverbium
16 משל בגוים מנוד־ראש בלאמים : כל־היום
voce A .me operuit *mearum facierum* pudor & ; me coram mea verecundia
17 כלמתי נגדי ובשת פני כסתני : מקול
Totum .*ulciſcentis ſe & ,inimici faciebus à* :afficientis contumeliis &,probris afficientis
18 מחרף ומגדף מפני אויב ומתנקם : כל־
Non .tuo pacto in ſumus mentiti nec : tui ſumus obliti nec ,nobis venit hoc
19 זאת באתנו ולא שכחנוך ולא־שקרנו בבריתך : לא־
Quoniam .tua ſemita de noſter pes declinavit *&* ;noſtrum cor retrorſum ſe vertit
20 נסוג אחור לבנו ותט אשרינו מני ארחך : כי
.mortis umbra in nos *ſuper* operuiſti & ; draconis loco in nos contriviſti
דכיתנו במקום תנים ותכס עלינו בצלמות :

תרגום TARGUM.

4 ואעול לקרבא קורבניה למדבח דיי אלהי די
מניה חדות בעותי ואודי קדמך בכנרא יי
5 אלהי : מה חתמככין נפשי ומה תרגשי עלי
אוריכי לאלהא ארום תוב אשבחניה בפורקניה
דמן קדמוי די הוא אלהי :

מד

1 לשבחא לדוד על ידיהון דבני קרח שכלא טבא :
2 יי באודננא שמענא אבהתנא אשתעיו לנא
עובדא דעבדתא ביומיהון ביומיא די מלקדמין :
3 אנת בידא דגבורתך עמיא כנענאי תרכתא
ונצבתנון לבית ישראל בארעהון תברת עמיא
4 ופסדתנון : ארום לא בגבורת סיפיהון ירתו
ארעא ותקוף אדרעיהון לא פרקת להון ארום
ימינך ואדרע גבורתך ונהור זיו יקרך ארום כל
5 זמן דעסיקו באוריתא אתרעיתא בהון : אנת
הוא מלכי אלהא בעדנא הדא פקד פורקנות
6 דבית יעקב : במימרא מעיקנא ננגח בשמך
7 נכבוש כל דקימין עלנא : ארום לא בקשתי
8 אנא רחיץ וסיפי לא תפרוק יתי : ארום פרקתנא
ממעיקנא ומשנאנא איתיתא עלויהון בהתא :
9 במימרא דיי אנן משבחין כל יומא ושמך נודי
10 לעלמי עלמין : לחוד אשליתא ואכספתנא ולא
11 תשרי שכנתך בחילונא : אחזרתנא קדל קדם
12 מעיקא ומשנאנא כבשו לנא : מסרתנא היך ענא
13 למיכלא ובני עממיא בדרתא יתנא : זבנתא
עמך מגן דלא ממונא ולא אסגיתא קנינא
14 בפרוניהון : שויתנא קלנא לשיבבנא ממקנותא
15 ותורפיתא לחזרנותנא : שויתנא למתלא
16 בעממיא טלטול רישא באומיא : כל יומא כסופי
17 לקבלי ובהתת אפי חפתני : מן קלא דמחסד
18 ומגדף מן קדם בעל דבבא ונקים נקמתא : כל דא
ערעת יתנא ולא אשלנך ולא שקרנא בקימך :
19 לא זר פליג וזחוחית לבנא וארח אסטיתא
20 אסתורנא מן תריצת ארחתך : ארום אמכתנא
באתר ירודין וחפיתא עלנא בטולא דמותא :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Et introibo ut offerã ablationẽ *ej⁹* ſup altar Dñi *Dei mei*, à quo eſt gaudiũ exultationis meæ : cõfitebórq; corã te in cithara Dñi De⁹ me⁹. Quare cõſternêris anima mea, & *cur* tumultuêris contra me ? ſpera in Deo, quoniã ·adhuc *laudabo eum* propter redemptionẽ *ipſius* quæ eſt à conſpectu ejus, quoniam ipſe eſt Deus meus.

Ad laudandum *Davidi* per manum filiorum Korahh intelligentia bona.

PSAL. XLIV.

DOmine, auribus noſtris audivim⁹ : patres noſtri nunciaverunt nobis opus quòd operatus es in dieb⁹ eorũ, in dieb⁹ antiquis. Tu in manu fortitudinis tuæ populos Chananæos ejeciſti, & plantâſti eos in domũ Iſrael in terra eorũ ; confregiſti gentes & conſumpſiſti eas. Quoniã nõ ꝑ robur gladiorũ ſuorũ hæreditaverũt terrã; & fortitudo brachii ſui non ſalvavit eos; ſed dextera tua & brachiũ fortitudinis tuæ et lumẽ ſplẽdoris gloriæ tuæ, quoniã *toto tẽpore quo exercuerũt ſe in lege* complacuiſti tibi in eis. Tu es ipſe rex meus: De⁹ *tẽpore hoc* præcipe redemptiones domũ Jaacob. In verbo [*tuo*] oppreſſores noſtros cornu petemus : in nomine tuo ſubjiciemus omnes inſurgentes in nos. Quoniã non in arcu meo ego confido, & gladi⁹ me⁹ nõ ſalvabit me. Quoniã redemiſti nos ab affligentib⁹ et ab odientib⁹ nos ; induxiſti in eos confuſionem. In verbo *Domini* nos laudabim⁹ totâ die : & nomen tuũ confitebimur in ſecula *ſeculorum*. Verùm oblitus es noſtri, & confudiſti nos : & non collocabis majeſtatẽ tuã in exercitib⁹ noſtris. Feciſti ut verteremus cervicẽ corã hoſte : & qui oderunt nos, ſubjecerunt nos. Tradidiſti nos ſicut oves ad devorationẽ; et inter populos diſperſiſti nos. Vendidiſti populũ tuũ gratis abſq; divitiis; & non multiplicâſti lucrũ in commutatione eorũ. Poſuiſti nos in opprobiũ vicinis noſtris; ſubſannationẽ & irriſũ his qui circum nos ſunt. Poſuiſti nos in proverbiũ populis, motionem capitis inter nationes. Totâ die ignominia mea contra me eſt, & confuſio vult⁹ mei operuit me. A voce exprobrantis & calumniantis: ab aſpectu auctoris inimicitiæ & ulciſcentis ultionẽ. Hoc omne evenit nobis ; & non obliti ſum⁹ te : & non fuimus mentiti in pactũ tuũ. Non eſt averſũ, diviſũ *nec elatum*, cor noſtrũ ; & tu inclinâſti greſſus noſtros à rectitudine viæ tuæ. Quoniam humiliâſti nos in loco draconum & cooperuiſti nos umbra mortis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܘܐܥܘܠ ܠܘܬ ܡܕܒܚܗ ܕܐܠܗܐ : ܘܠܘܬ ܐܠܗܐ ܕܡܚܕܐ ܛܠܝܘܬܝ. ܐܘܕܐ ܠܟ ܒܟܢܪܐ ܐܠܗܐ 4
ܐܠܗܝ : *ܠܡܢܐ ܡܬܟܪܝܐ ܢܦܫܝ ܘܡܬܡܘܢܐ ܥܠܝ. ܣܒܪܝ ܠܐܠܗܐ ܡܛܠ ܕܬܘܒ 5
ܐܘܕܐ ܠܗ : ܒܦܘܪܩܢܐ ܕܐܦܘܗܝ ܘܐܠܗܝ. *ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ*
*ܕܒܢܝ ܩܘܪܚ ܕܟܕ ܡܙܡܪ ܗܘ ܥܡܐ ܒܚܘܪܝܒ ܥܡ ܡܘܫܐ. ܘܬܘܒ ܠܬܟܫܦܬܐ ܕܢܒܝܐ 1
ܕܕܘܝܕ ܘܫܪܟܐ. ܠܢ ܕܝܢ ܬܪܘܦܐ ܘܙܟܘܬܐ ܠܘܩܒܠ ܡܩܪܒܢܐ. *ܐܠܗܐ ܒܐܕܢܝܢ 2
ܫܡܥܢ : ܘܐܒܗܝܢ ܐܫܬܥܝܘ ܠܢ. ܥܒܕܐ ܕܥܒܕܬ ܒܝܘܡܝܗܘܢ : ܒܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ.
*ܐܝܕܟ ܐܘܒܕܬ ܥܡܡܐ ܘܢܨܒܬ ܐܢܘܢ : ܐܒܐܫܬ ܠܡܠܟܘܬܐ ܘܫܪܪܬ ܐܢܘܢ. *ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ 3 4
ܒܚܪܒܗܘܢ ܝܪܬܘ ܐܪܥܐ : ܘܕܪܥܗܘܢ ܦܪܩ ܐܢܘܢ. ܐܠܐ ܝܡܝܢܟ ܘܕܪܥܟ : ܘܢܘܗܪܐ ܕܐܦܝܟ
ܕܨܒܝܬ ܒܗܘܢ. *ܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܐ ܡܠܟܝ : ܕܦܩܕܬ ܦܘܪܩܢܗ ܕܝܥܩܘܒ. *ܒܟ ܢܕܩܪ 5 6
ܠܒܥܠܕܒܒܝܢ : ܘܡܛܠ ܫܡܟ ܢܕܘܫ ܠܣܢܐܝܢ. *ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܥܠ ܩܫܬܢ ܬܟܝܠܝܢ : 7
ܘܐܦܠܐ ܙܝܢܢ ܕܢܦܪܩܘܢ. *ܐܢܬ ܗܘ ܦܪܩܬܢ ܡܢ ܣܢܐܝܢ : ܘܒܗܬܬ ܠܒܥܠܕܒܒܝܢ. 8
*ܫܒܚܢܟ ܐܠܗܐ ܟܠܗ ܝܘܡܐ : ܘܠܫܡܟ ܠܥܠܡ ܢܘܕܐ. *ܗܫܐ ܕܝܢ ܛܥܝܬܢ ܘܒܗܬܬܢ : ܘܠܐ 9 10
ܢܦܩܬ ܥܡ ܚܝܠܢ. *ܐܠܐ ܗܦܟܬܢ ܠܒܣܬܪܐ : ܘܒܙܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܢ : *ܝܗܒܬܢ ܐܝܟ ܥܢܐ 11 12
ܠܡܐܟܘܠܬܐ. ܘܒܕܪܬܢ ܒܝܢ ܥܡܡܐ : *ܙܒܢܬ ܥܡܟ ܕܠܐ ܕܡܝܐ. ܘܠܐ ܐܣܓܝܬ ܚܘܠܦܝܗܘܢ : 13
*ܥܒܕܬܢ ܚܣܕܐ ܠܫܒܒܝܢ. ܘܡܘܝܩܐ ܘܡܓܚܟܢܘܬܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܚܕܪܝܢ ܠܢ : *ܥܒܕܬܢ ܡܬܠܐ 14 15
ܒܝܢ ܥܡܡܐ. ܘܢܘܕ ܪܫܐ ܒܝܬ ܐܘܡܘܬܐ : *ܟܠܗ ܝܘܡܐ ܒܗܬܬܝ ܩܕܡܝ ܗܝ. ܘܒܗܬܬܐ ܕܐܦܝ 16
ܟܣܬܢܝ : *ܡܢ ܩܠܐ ܕܡܚܣܕ ܘܡܓܕܦ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܒܥܠܕܒܒܐ ܕܡܬܒܥ : *ܘܗܠܝܢ 17 18
ܟܠܗܝܢ ܡܛܝ ܥܠܝܢ ܘܠܐ ܛܥܝܢܟ. ܘܠܐ ܕܓܠܢ ܒܩܝܡܟ : *ܘܠܐ ܗܦܟܢ ܠܒܣܬܪܐ. ܘܠܐ ܐܣܛܝܢ 19
ܫܒܝܠܝܢ ܡܢ ܐܘܪܚܟ : *ܡܛܠ ܕܡܟܟܬܢ ܒܐܬܪܐ ܠܐܝܐ. ܘܟܣܝܬܢ ܒܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ : 20

Et veniam ad altare Dei, & ad Deum qui lætificat juventutẽ meam : confitebor tibi cum cithara, Deus Deus meus. Quare conturbaris, anima mea, & cur mœres ? Expecta Deũ, quoniã adhuc confitebor Salvatori vult⁹ mei & Deo meo.

PSAL. XLIV.

Filiorum Corah ; quem canebat populus in Hurib unà cum Moſe. Præterea ſupplicatio Prophetarum Davidis & reliquorum. Nobis verò trophæum & victoria adverſùs bellum inferentes. Verſ. 35.

DEus, audivimus auribus noſtris, atq; etiã patres noſtri narraverunt nobis q̃ operatus es diebus eorum, diebus priſtinis. Manus tua perdidit populos, illos autem plantâſti: læſiſti regna, & confirmâſti eos. Non enim gladio ſuo poſſederunt terrã, neque brachiũ ipſorum ſalvavit illos : ſed dextera tua & brachiũ tuũ & lumen vultûs tui, quia placuerũt tibi. Tu es, De⁹, rex me⁹, qui mandâſti ſalutem Jacobi ; Per te impellamus inimicos noſtros, et propter nomẽ tuum conculcemus oſores noſtros. Non enim arcubus noſtris fidim⁹, neq; armis noſtris, ut liberent nos. Tu liberâſti nos ab oſoribus noſtris, & confudiſti hoſtes noſtros. Laudavimus te, Deus, totâ die, & nomini tuo in æternum confitebimur. Nunc autem oblitus es noſtrî, & confudiſti nos, & non egrederis in robur noſtrũ. Sed convertiſti nos retrorſum, & diripuerũt nos inimici noſtri. Tradidiſti nos ut pecudes in cibum, & diſperſiſti nos inter gentes. Vendidiſti populũ tuũ ſine pretio, & non multiplicâſti commutationem eorum. Feciſti nos opprobrium vicinis noſtris, & illuſionẽ atq; ludibriũ iis qui circũ nos ſunt : Feciſti nos fabulã inter gentes, & commotionẽ capitis inter populos. Totâ die confuſio mea corã me eſt, & erubeſcentia vult⁹ mei cooperuit me. Præ voce illudente atq; blaſphemãte, et propter hoſtem ulciſcentẽ. Hæc omnia evenerunt nobis, & non obliti ſumus tui, neque mentiti ſumus in fœdus tuum. Neque retrogreſſi ſumus, neq; deflexímus ſemitas noſtras à via tua. Nam humiliâſti nos in loco calamitoſo, & contexiſti nos umbris mortis.

Versio VULG. LAT.

4 Et introibo ad altare Dei: ad Deum qui
lætificat juventutem meam. Confitebor
5 tibi in cithara, Deus, Deus meus: Quarè
tristis es anima mea? & quarè conturbas
me? Spera in Deo, quoniam adhuc confitebor
illi: salutare vultûs mei, & Deus meus.

1 In finem, Filiis Core ad intellectum.
XLIII.

2 DEus, auribus nostris audivimus, patres
nostri annuntiaverunt nobis,
Opus, quod operatus es in diebus eorum,
3 & in diebus antiquis. Manus tua
gentes disperdidit, & plantâsti eos: afflixisti
4 populos, & expulisti eos: Nec
enim in gladio suo possederunt terram,
& brachium eorum non salvavit eos: Sed
dextera tua, & brachium tuum, & illuminatio
vultûs tui: quoniam complacuisti
5 in eis. Tu es ipse rex meus & Deus
6 meus: qui mandas salutes Jacob. In te
inimicos nostros ventilabimus cornu, &
in nomine tuo spernemus insurgentes in
7 nobis. Non enim in arcu meo sperabo:
8 & gladius meus non salvabit me. Salvâsti
enim nos de affligentibus nos: & o-
9 dientes nos confudisti. In Deo laudabimur
totâ die: & in nomine tuo confite-
10 bimur in seculum. Nunc autem repulisti
& confudisti nos: et nõ egredieris, Deus, in
11 virtutibus nostris. Avertisti nos retrorsum
post inimicos nostros: & qui ode-
12 runt nos, diripiebant sibi. Dedisti nos
tanquam oves escarum: & in gentibus
13 dispersisti nos. Vendidisti populum tuũ
sine pretio: & non fuit multitudo in
14 commutationibus eorum. Posuisti nos
opprobrium vicinis nostris, subsannationem
& derisum his, qui sunt in cir-
15 cuitu nostro. Posuisti nos in similitudinem
gentibus; commotionem capitis in
16 populis. Totâ die verecundia mea contra
me est, & confusio faciei meæ coope-
17 ruit me, A voce exprobrantis & obloquentis,
à facie inimici & persequentis.
18 Hæc omnia venerunt super nos, nec obliti
sumus te: & iniquè non egimus in
19 testamento tuo. Et non recessit retro cor
nostrum: & declinâsti semitas nostras à
20 via tua: Quoniam humiliâsti nos in loco
afflictionis, & cooperuit nos umbra
mortis.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

4 † Καὶ εἰσελεύσομαι πρὸς τὸ θυσιαστήριον τοῦ Θεοῦ, † πρὸς τὸν Θεὸν τὸν εὐφραίνοντα τὴν νεότητά μου, † ἐξομο-
5 λογήσομαί σοι ἐν κιθάρᾳ (δ) ὁ Θεὸς ὁ Θεός μου. † Ἱνατί περίλυπος εἶ ἡ ψυχή μου, καὶ ἱνατί συνταράσσεις με; † ἔλπισον ἐπὶ τὸν Θεὸν, ὅτι ἐξομολογήσομαι αὐτῷ, † σωτήριον τοῦ προσώπου μου, (ε) ὁ Θεός μου.

MS. A. (δ) ὁ Θεός μου. (ε) καὶ ὁ Θεός μου.

1 Εἰς τὸ τέλος, τοῖς υἱοῖς Κορὲ (α) εἰς σύνεσιν ψαλμός. μγʹ.

2 † Ὁ Θεὸς ἐν τοῖς ὠσὶν ἡμῶν ἠκούσαμεν, † οἱ πατέρες ἡμῶν ἀνήγγειλαν ἡμῖν, † ἔργον ὃ εἰργάσω ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτῶν, † ἐν ἡμέραις ἀρχαίαις.
3 † Ἡ χείρ σου ἔθνη (β) ἐξωλόθρευσε, † καὶ κατεφύτευσας αὐτοὺς, † ἐκάκωσας λαοὺς καὶ (γ) ἐξέβαλες αὐ-
4 τούς. † Οὐ γὰρ ἐν τῇ ῥομφαίᾳ αὐτῶν ἐκληρονόμησαν γῆν, † καὶ ὁ βραχίων αὐτῶν οὐκ ἔσωσεν αὐτοὺς, † ἀλλ' ἡ δεξιά σου καὶ ὁ βραχίων σου, † καὶ ὁ φωτισμὸς
5 τοῦ προσώπου σου, ὅτι εὐδόκησας ἐν αὐτοῖς. † Σὺ εἶ αὐτὸς ὁ βασιλεύς μου καὶ ὁ Θεός μου, † ὁ ἐντελλόμε-
6 νος τὰς σωτηρίας Ἰακώβ. † Ἐν σοὶ τοὺς ἐχθροὺς ἡμῶν κερατιοῦμεν, † καὶ ἐν τῷ ὀνόματί σου (δ) ἐξουδε-
7 νώσομεν τοὺς ἐπανισταμένους ἡμῖν. † Οὐ γὰρ ἐπὶ τῷ
8 τόξῳ μου ἐλπιῶ, † καὶ ἡ ῥομφαία μου οὐ σώσει με. † Ἔσωσας γὰρ ἡμᾶς ἐκ τῶν θλιβόντων ἡμᾶς, † καὶ τοὺς μι-
9 σοῦντας ἡμᾶς κατῄσχυνας. † Ἐν τῷ Θεῷ ἐπαινεθησόμεθα ὅλην τὴν ἡμέραν, † καὶ ἐν τῷ ὀνόματί σου ἐξομολογησόμεθα εἰς τὸν αἰῶνα. (ε) ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
10 † Νυνὶ δὲ ἀπώσω καὶ κατῄσχυνας ἡμᾶς, † καὶ οὐκ ἐξ-
11 ελεύσῃ (ζ) ἐν ταῖς δυνάμεσιν ἡμῶν. † Ἀπέστρεψας ἡμᾶς εἰς τὰ ὀπίσω παρὰ τοὺς ἐχθροὺς ἡμῶν, † καὶ οἱ
12 μισοῦντες ἡμᾶς διήρπαζον ἑαυτοῖς. † Ἔδωκας ἡμᾶς ὡς πρόβατα βρώσεως, † καὶ ἐν τοῖς ἔθνεσι
13 διέσπειρας ἡμᾶς. † Ἀπέδου τὸν λαόν σου ἄνευ τιμῆς, † καὶ οὐκ ἦν πλῆθος ἐν τοῖς ἀλαλάγμασιν (η) αὐτῶν.
14 † Ἔθου ἡμᾶς (θ) ὄνειδος τοῖς γείτοσιν ἡμῶν, † μυκτηρισμὸν καὶ (ι) καταγέλωτα τοῖς κύκλῳ ἡμῶν. † (κ)
15 Ἔθου ἡμᾶς εἰς παραβολὴν ἐν τοῖς ἔθνεσι, † κίνησιν
16 κεφαλῆς ἐν τοῖς λαοῖς. † Ὅλην τὴν ἡμέραν ἡ ἐντροπή μου (*) κατεναντίον μου ἐστὶ, † καὶ ἡ αἰσχύνη τοῦ προσ-
17 ώπου μου ἐκάλυψέ με, † Ἀπὸ φωνῆς ὀνειδίζοντος καὶ (λ) παραλαλοῦντος, † ἀπὸ προσώπου ἐχθροῦ καὶ
18 ἐκδιώκοντος. † Ταῦτα πάντα ἦλθεν ἐφ' ἡμᾶς, καὶ οὐκ ἐπελαθόμεθά σου, † καὶ οὐκ ἠδικήσαμεν ἐν διαθή-
19 κῃ σου. † Καὶ οὐκ ἀπέστη εἰς τὰ ὀπίσω ἡ καρδία ἡμῶν, † καὶ ἐξέκλινας τὰς τρίβους ἡμῶν ἀπὸ τῆς ὁδοῦ
20 σου. † Ὅτι ἐταπείνωσας ἡμᾶς ἐν τόπῳ κακώσεως, † καὶ ἐπεκάλυψεν ἡμᾶς σκιὰ θανάτου.

MS. A. (α) ψαλμός. (β) ἐξωλέθρευσεν, (γ) ἐξέβαλας (δ) ἐξουδενώσωμεν τοὺς ἐπανιστανομένους (ε) Νυνὶ δὲ (ζ) ὁ Θεὸς ἐν ταῖς (η) ἡμῶν. (θ) εἰς ὄνειδος (ι) χλευασμὸν (κ) † καὶ οἱ ἐχθροὶ ἡμῶν ἐμυκτήρισαν ἡμᾶς. Ἔθου (*) κατενώπιόν μου (λ) καταλαλοῦντος,

Vers. GRÆ. LXX. Interp & Æthiopicæ, Transl. LAT.

4 Et (a) introibo ad altare Dei, ad 4
Deum, qui lætificat juventutem
meam. 5 Confitebor tibi in cithara, [d] Deus, Deus meus: Quarè 5
(b) tristis es anima mea, & quarè
conturbas me? 6 Spera in Deo;
quoniam confitebor illi: salutare
vultûs mei, (c) Deus meus.

In finem, filiis [a] Core (a) ad 1
intellectum Psalmus. XLIII.

1 DEus, (b) in auribus nostris 2
audivimus: patres nostri
annuntiaverunt nobis, 2 opus quod
operatus es in diebus eorum, (c)
in diebus antiquis. 3 Manus tua 3
[b] gentes disperdidit, et plantâsti
eos: afflixisti populos, & (d) expulisti eos. 4 Non enim in gladio 4
suo possederunt terram; & brachium eorum non salvavit eos:
5 Sed dextera tua, & brachium
tuum, & (e) illuminatio vultûs
tui, quoniam complacuisti in eis.
6 Tu es ipse (f) rex meus, & Deus 5
meus, qui mandas salutes Jacob.
7 In te (g) [c] inimicos nostros 6
ventilabimus cornu: & in nomine
tuo (h) spernemus insurgentes in
nos. 8 Non enim in arcu meo spe- 7
rabo; & gladius meus non salvabit me. 9 Salvâsti enim nos de 8
[d] affligentibus nos; & eos qui
oderunt nos, confudisti. 10 In Deo 9
(i) laudabimur totâ die, & in nomine tuo confitebimur in seculũ.
DIAPSALMA. 11 Nunc (k) autem repulisti, & confudisti nos: 10
& non (l) egredieris [e] in virtutibus nostris. 12 Avertisti (m) 11
nos retrorsum præ inimicis nostris: & qui oderunt nos, [f] diripiebant sibi. 13 [g] Dedisti nos 12
tanquam oves escarum; et in gentibus dispersisti nos. 14 [†] Ven- 13
didisti populum tuum sine pretio;
& non fuit multitudo in (n) jubilationibus [h] eorum. 15 Posui- 14
sti nos opprobrium vicinis nostris:
subsannationem, (o) & derisum
his qui sunt in circuitu nostro.
16 Posuisti nos in similitudinem 15
gentibus, (p) commotionem capitis in populis. 17 Totâ die (q) ve- 16
recundia mea contra me est; & confusio faciei meæ operuit me. 18 A voce exprobran- 17
tis, & (r) obloquentis, à facie inimici, & persequentis. 19 Hæc omnia venerunt super 18
nos: nec obliti sumus te, & iniquè (s) non egimus in testamento tuo. 20 Et non (t) 19
recessit retrò cor nostrum, [†] & (u) declinâsti semitas nostras à via tua. 21 Quoniam 20
(x) humiliâsti nos in loco afflictionis: & cooperuit nos umbra mortis.

INTERP. ÆTHIOP. [d] Deus meus. Quarè *PSAL.* XLIII. [a] Core. Deus [b] inimicos disperdidit, [c] confodiemus omnes inimicos nostros: & [d] persequentibus nos; & omnes osores nostros, [e] Deus noster in [f] spoliabant nos. [g] Et dedisti nos ut nos devorent tanquam oves; [†] Tradidisti populum [h] nostris. [†] neque declinavit semita nostra à

Versio ÆTHIOPICA.

ወእበውእ፡ ኀበ፡ ምሥዋዒሁ፡ ለእግዚአብ 4
ሔር፡፡ ኀበ፡ አምላኪየ፡ ዘአስተፈሥሐ፡ ለ
ውርዙትየ፡፡፦ እገኒ፡ ለከ፡ አምላኪየ፡ በ 5
መሰንቆ፡፡ ለምንት፡ ትቴክዚ፡ ነፍስየ፡ ወለም
ንት፡ ተሀውከኒ፡፡፦ እመኒ፡ በእግዚአብ 6
ሔር፡ ከመ፡ እገኒ፡ ሎቱ፡፡ መድኀኔ፡ ገጽየ፡
አምላኪየ፡፡፦

ፍሳሜ፡ ዘደቂቀ፡ ቆሬ፡፡

ሠናር እግዚኦ፡ ሰማዕነ፡ በእዘኒነ፡፡ ወአበዊ 1
ነ፡ ዜነዉነ፡፡፦ ግብረ፡ ዘገበርከ፡ በመዋዕሊ 2
ሆሙ፡ በመዋዕለ፡ ትካት፡፡፦ እዴከ፡ ሰረወ 3
ቶሙ፡ ለፀር፡ ወተከልኮ፡ ከደሆሙ፡፡ ሣቀይኮ
ሙ፡ ለአሕዛብ፡ ወሰደድኮሙ፡፡፦ ዘአኮ፡ 4
በኲናቶሙ፡ ወረሱ፡ ለምድር፡፡ ወመዝራዕ
ቶሙ፡ ኢያድኀኖሙ፡፡፦ ዘእንበለ፡ የማን 5
ከ፡ ወመዝራዕትከ፡ ወብርሃነ፡ ገጽከ፡፡ እስመ፡
ተሠሀልኮሙ፡፡፦ አንተ፡ ውእቱ፡ ንጉሥየ፡ 6
ወአምላኪየ፡፡ ዘአዘዝከ፡ መድኀኒቶ፡ ለያ
ዕቆብ፡፡፦ ብከ፡ ነወግኦሙ፡ ለኲሎሙ፡ ፀር 7
ነ፡፡ ወበስምከ፡ ናኀስሮሙ፡ ለእለ፡ ቆሙ፡ ላዕ
ሌነ፡፡፦ ዘአኮ፡ በቀስትየ፡ ኣትአመን፡፡ ወኲ 8
ናትየኒ፡ ኢያድኀነኒ፡፡፦ ወአድኀንከነ፡ እ 9
ምእለ፡ ሮዱነ፡፡ ወአስተኀፈርኮሙ፡ ለኲሎ
ሙ፡ ጸላእትነ፡፡፦ በእግዚአብሔር፡ ንከብ 10
ር፡ ኲሎ፡ አሚረ፡፡ ወለስምከ፡ ንገኒ፡ ለዓለ
ም፡፡፦ ይእዜሰ፡ ገደፍከነ፡ ወአስተኀፈርከ 11
ነ፡፡ ወኢትወፅእ፡ አምላክነ፡ ምስለ፡ ኀይል
ነ፡፡፦ ወአግባእከነ፡ ድኅሬነ፡ ኀበ፡ ፀርነ፡፡ ወ 12
ተማሰጡነ፡ ጸላእትነ፡፡፦ ወወሀብከነ፡ ይብ 13
ልዑነ፡ ከመ፡ አባግዕ፡፡ ወዘረውከነ፡ ውስተ፡ አ
ሕዛብ፡፡፦ ወመጦከ፡ ሕዝበከ፡ ዘእንበ 14
ለ፡ ሤጥ፡፡ ወአልቦ፡ ብዝኀ፡ ለይባቤነ፡፡፦ ወ 15
ረሰይከነ፡ ጽዕለተ፡ ለጎርነ፡፡ ሣሕቀ፡ ወሠሓ
ቀ፡ ለአድያሚነ፡፡፦ ወረሰይከነ፡ አምሳለ፡ ለ 16
አሕዛብ፡፡ ወሑሰተ፡ ርእስ፡ ለሕዝብ፡፡፦
ኲሎ፡ አሚረ፡ ቅድሜየ፡ ውእቱ፡ ኀፍረትየ፡፡ 17
ወከደነኒ፡ ኀፍረተ፡ ገጽየ፡፡፦ እምቃል፡ ዘይ 18
ጸእል፡ ወይዘረክ፡፡ እምገጸ፡ ፀራዊ፡ ዘይረው
ድ፡፡፦ ዝንቱ፡ ኲሉ፡ በጽሐ፡ ላዕሌነ፡ ወኢ 19
ረሳዕናከ፡፡ ወ[illegible]ዐመፅነ፡ ኪዳነከ፡፡፦ ወኢ 20
ገብአ፡ ድኅሬሁ፡ ልብነ፡፡ ወኢተግሕሠ፡ አ
ሰርነ፡ እምፍኖትከ፡፡፦ እስመ፡ አሕመምከ 21
ከነ፡ በብሔረ፡ እኩይ፡፡ ወደፈነነ፡ ጽላሎ
ተ፡ ሞት፡፡፦

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

4 * ادخل الى مذبح الله امام وجه الله المنعم شبابي * اذكرك بقيثارتي يا الله الاهي * لماذا تحزنين يا 5
6 نفس ولماذا تقلقيني * توكلي على الله فاني اعترف له خلاص وجهي هو الاهي * الليلويا *

1 * المزمور الثالث والاربعون * لبني قورح فهم * وهو * ن * استيخن *

2 * اللهم انا قد سمعنا باذاننا واخبرنا اباونا * بالعمل الذي عملته في ايامهم الايام الاولى * التي 3
4 ابادت يدك فيها الامم وغرستهم * اذربت شعوبا واخرجتهم * لانهم لم يرثوا الارض بسيفهم * ولا
5 خلصوا بذراعهم * بل بيمينك وذراعك ونور وجهك * لانك سررت بهم * انت ملكي والاهي
6 الذي امرت بخلاص يعقوب * بك نذل اعداءنا وباسمك نعير الذين يقومون علينا * لاني 7
8 لم اتكل على قوسي وسيفي ان يخلصاني * بل انت خلصتنا من الذين يضطهدونا وخزيت
9 شانئينا * النهار كله نفتخر بالاهنا ونشكر اسمك الى الابد * الان نحيت عنا واخزيتنا * ولم 10
11 تصحب جيوشنا * رددتنا على اعقابنا اكثر من اعدائنا واختطفنا مبغضونا * جعلتنا ماكلة 12
13 كالغنم * وبين الامم فرقتنا * بعت شعبك بلا ثمن * واقللت كثرة عددهم * تركتنا عارا في 14
15 جيرتنا وهزوا وضحكا لمن حولنا * تركتنا مثلا في الشعوب * وهزوا للرؤوس في الامم * عاري بين 16
17 يدي النهار كله * والخزي ستر وجهي * من صوت المعير لي والمتكلم علي ومن وجه عدو
18 طارد * اللهم ان هذا كله نالنا * ولم ننساك ولا نكثنا عهدك * ولا صرفنا قلوبنا عنك * 19
20 ميلت خطانا عن سبلك * لانك اذللتنا في كل العذاب وغشيتنا بظلال الموت *

Introibo ad altare Dei, ante faciem Dei 4
jucundantis juventutem meam. Recordabor
tui cum cithara, O Deus, Deus meus.
Quarè contristaris, ô anima, & quarè 5
conturbas me? Confide in Deo, quia con- 6
fitebor ei, salutis faciei meæ: ipse est Deus
meus. Alleluja.

PSAL. XLIII.

Filiis Chore, intellectus. Ver. 50. 1

DEus, jam audivimus auribus nostris, 2
& narraverunt nobis patres nostri, o-
pus quod fecisti in diebus eorum, diebus
prioribus: In quibus perdidit manus tua 3
gentes, & plantâsti eos, afflixisti popu-
los, eosdémque ejecisti. Neque verò hæ- 4
reditârunt terram gladio suo, neque sunt
liberati brachio suo, sed dexterâ tuâ &
brachio tuo, & lumine faciei tuæ, quo-
niam oblectatus es eis. Tu es rex meus et 5
Deus meus, qui mandâsti salutem Jaco-
bi. Per te humiliabimus inimicos no- 6
stros, & in nomine tuo convitiabimur in
eos qui insurgunt in nos. Non enim confi- 7
sus sum arcui meo & gladio meo ut me
salvarent; Sed tu salvâsti nos ab iis qui 8
nos persequuntur, & confudisti osores no-
stros. Die toto gloriabimur in Deo no- 9
stro, et gratias agemus nomini tuo in æter-
num. Nunc dereliquisti nos, et confudisti 10
nos, & non es comitatus exercitus no-
stros. Retrocegisti nos super calcaneos no- 11
stros plusquam inimicos nostros, & diri-
puerunt nos osores nostri. Fecisti nos 12
escam tanquam oves, & inter gentes dis-
sipâsti nos. Vendidisti populum tuum sine 13
pretio, & diminuisti multitudinem nu-
meri eorum. Reliquisti nos opprobrium 14
inter vicinos nostros, & ludibrium ac ri-
sum iis qui circa nos sunt. Posuisti nos 15
proverbium inter populos, & illusionem
principibus inter gentes. Infamia mea co- 16
ram me est die totâ, confusio velavit fa-
ciem meam: Ob vocem vituperantis me 17
& obloquentis in me, & à conspectu ini-
mici persequentis. Deus, hoc quidem to- 18
tum evenit nobis, & non obliti sumus te,
neque defleximus pactum tuum, Et non 19
avertimus corda nostra à te: avertisti
gressus nostros de semitis tuis. Quoniam depressisti nos in loco cruciatûs, & cooperuisti nos umbra mortis. 20

תהלים : מה

.alienum deum ad noſtras palmas expandimus &;noſtri Dei nominis ſumus obliti Si
אִם־שָׁכַחְנוּ שֵׁם אֱלֹהֵינוּ וַנִּפְרֹשׂ כַּפֵּינוּ לְאֵל זָר׃ 21
.cordis abſcondita ſciens ipſe quia ? hoc inveſtigabit Deus Nonne
הֲלֹא אֱלֹהִים יַחֲקָר־זֹאת כִּי־הוּא יֹדֵעַ תַּעֲלֻמוֹת לֵב׃ 22
mactationis pecus ut fuimus æſtimati : die tota occidimur te ſuper Quoniam
כִּי־עָלֶיךָ הֹרַגְנוּ כָל־הַיּוֹם נֶחְשַׁבְנוּ כְּצֹאן טִבְחָה׃ 23
.perpetuum in te elonges ne , expergiſcere ? Domine dormies quid ut , te Suſcita
עוּרָה לָמָּה תִישַׁן אֲדֹנָי הָקִיצָה אַל־תִּזְנַח לָנֶצַח׃ 24
noſtræ oppreſſionis & , noſtræ afflictionis obliviſceris ? abſcondes tuas facies quid Ut
לָמָּה־פָנֶיךָ תַסְתִּיר תִּשְׁכַּח עָנְיֵנוּ וְלַחֲצֵנוּ׃ 25
Surge .noſter venter terræ adhæſit : noſtra anima pulverem ad eſt depreſſa Quia
כִּי שָׁחָה לֶעָפָר נַפְשֵׁנוּ דָּבְקָה לָאָרֶץ בִּטְנֵנוּ׃ קוּמָה 26 27
.tuam miſericordiam propter nos redime & ; nobis auxilium
עֶזְרָתָה לָּנוּ וּפְדֵנוּ לְמַעַן חַסְדֶּךָ׃

PSAL. XLV. מה

.amorum canticum , erudiens Corach filiis Soſannim ſuper Victori
לַמְנַצֵּחַ עַל־שֹׁשַׁנִּים לִבְנֵי־קֹרַח מַשְׂכִּיל שִׁיר יְדִידֹת׃ 1
mea lingua : regi mea opera ego dicens , bonum verbum meum cor Eructavit
רָחַשׁ לִבִּי דָּבָר טוֹב אֹמֵר אָנִי מַעֲשַׂי לְמֶלֶךְ לְשׁוֹנִי 2
gratia eſt diffuſa ; hominum filiis præ Pulchruiſti .velocis ſcribæ ſtylus
עֵט סוֹפֵר מָהִיר׃ יָפְיָפִיתָ מִבְּנֵי אָדָם הוּצַק חֵן 3
te Accinge .ſeculum in Deus tibi benedixit propterea : tuis labiis in
בְּשְׂפְתוֹתֶיךָ עַל־כֵּן בֵּרַכְךָ אֱלֹהִים לְעוֹלָם׃ חֲגוֹר 4
tuo decore Et .tuo decore & , tua gloria : potens , femur ſuper tuo gladio
חַרְבְּךָ עַל־יָרֵךְ גִּבּוֹר הוֹדְךָ וַהֲדָרֶךָ׃ וַהֲדָרְךָ 5
te docebit & : juſtitiæ manſuetudinis &,veritatis verbum ſuper equita , proſperare
צְלַח רְכַב עַל־דְּבַר־אֱמֶת וְעַנְוָה־צֶדֶק וְתוֹרְךָ
cor in : cadent te ſub populi , acutæ tuæ Sagittæ .tua dextera terribilia
נוֹרָאוֹת יְמִינֶךָ׃ חִצֶּיךָ שְׁנוּנִים עַמִּים תַּחְתֶּיךָ יִפְּלוּ בְּלֵב 6
rectitudinis virga :perpetuum &,æternum Deus tuum Solium .regis inimicorum
אוֹיְבֵי הַמֶּלֶךְ׃ כִּסְאֲךָ אֱלֹהִים עוֹלָם וָעֶד שֵׁבֶט מִישֹׁר 7
propterea , impietatem odiſti & , juſtitiam Dilexiſti .tui regni virga
שֵׁבֶט מַלְכוּתֶךָ׃ אָהַבְתָּ צֶּדֶק וַתִּשְׂנָא רֶשַׁע עַל־כֵּן 8
, aloe & ,Myrrha .tuis ſodalibus præ lætitiæ oleo tuus Deus Dominus te unxit
מְשָׁחֲךָ אֱלֹהִים אֱלֹהֶיךָ שֶׁמֶן שָׂשׂוֹן מֵחֲבֵרֶךָ׃ מֹר־וַאֲהָלוֹת 9
.te lætificaverunt unde , dentis palatiis ex : tua veſtimenta omnia , caſſiæ
קְצִיעוֹת כָּל־בִּגְדֹתֶיךָ מִן־הֵיכְלֵי שֵׁן מִנִּי שִׂמְּחוּךָ׃
maſſa in , tuam dexteram ad conjunx adſtitit : tuis precioſitatibus in regum Filiæ
בְּנוֹת מְלָכִים בְּיִקְּרוֹתֶיךָ נִצְּבָה שֵׁגַל לִימִינְךָ בְּכֶתֶם 10
, tui populi obliviſcere &:tuam aurem inclina &,vide & , filia Audi .Ophir auri
אוֹפִיר׃ שִׁמְעִי־בַת וּרְאִי וְהַטִּי אָזְנֵךְ וְשִׁכְחִי עַמֵּךְ 11
,tuus Dominus ipſe quoniam : tuum decorem rex concupiſcet Et.tui patris domus &
וּבֵית אָבִיךְ׃ וְיִתְאָו הַמֶּלֶךְ יָפְיֵךְ כִּי־הוּא אֲדֹנַיִךְ 12
.ei te incurva &
וְהִשְׁתַּחֲוִי־לוֹ׃

תרגום TARGUM.

אין אשלינא שום אלהנא ופרישנא בצלו ידנא 21
לטעותא דעממין נוכראין : הלא אלהא יבשקר 22
דא ארום הוא חכים טמירי לבא: ארום מטולתך 23
אתקטלנא כל יומא אתחשבנא כענא דמסירא
לנכסא : אתנבר למה תהי כגבר דמיך יי אתער 24
אלהנא לא תתנשי לעלמא : למה שכינת יקרך 25
תסלק תשלי סגופנא ודוחקנא : ארום שיחא 26
לעפרא נפשנא דבקת לארעית גובא מעיננא :
קום סיע לנא ופרוק יתנא מטול טובך : 27

מה

לשבחא על יתבי סנהדרין דמשה דאתאמר 1
בנבואה על ידיהון דבני קרח שכלא טבא
ותשבחתא ואודאתא: בעא לבי ממלל טב אימר 2
אני עובדי למלכא ממלל לישני מוחי היך
קולמוס ספרא רגיל : שופרך מלכא משיחא 3
עדיף מבני נשא אתיהיב רוח נבואה בספותך
מטול כן ברכנך יי לעלמא : זרז סיפך על ירכך 4
גברא למקטל מלכין עם שלטונין הודך
ושיבהורך: ושבהורך סגי בנין כן תצלח למרכב 5
על סוסי מלכותא על עסק הימנותא וקשוט
וענותנותא וצדקתא ויליפנך יי למעבד דחילן
ביד ימינך : גררך שליפין למקטל אוכלוסין 6
עממין תחותך יפלון ובני קשתך ישתלחון בלב
סנאי מלכא: כורסי יקרך יי קים לעלמי עלמין 7
חטרא תרצתא חוטרא דמלכותך : מטול די 8
רחמתא צדקתא וסניתא רשעא מטול היכנא
רבינך יי אלהך משחא דחדוא יתיר מן חברך :
מירא דכיא ואקסיל אלואין וקציעתא מתנמרין 9
כל לבושך מן היכליא דמכבשין בשין דפיל
מארע מני יחדונך : פלכי מלכותא אתין למקבל 10
אפך וליקרותך בזמן דמעתד ספר אוריתא
בסטר ימינך ומתכתבא באובריזין דמן אופיר :
שמעי כנשתא דישראל אוריית פומיה וחמי 11
פרישת עובדוי ותצלי אודנך לפתגמי אוריתא
ותתנשי עובדין בישין דרשיעי עמיך ובית טעות
דפלחת בית אבויך : ובכן ירגג מלכא שופרך 12
ארום הוא רבונך ותסגדין ליה :

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Si obliti ſumus nomen Dei noſtri; & ex-
tendimus in oratione manus noſtras ido-
lis populorum alienorum : Nunquid no
Deus inquiret iſta ? quoniam ipſe nov
abſcondita cordis. Quoniam propter te
occiſi ſumus tota die: exiſtimati ſumus ſic
ut oves quæ traduntur occiſioni. Invaleſce,
quare eris ſicut homo qui dormit Dñe ?
expergiſcere De⁹ noſter, ne obliviſcaris in
ſempiternũ. Quare majeſtatẽ tuã glorio-
ſam auferes ? obliviſceris anguſtiæ noſtræ
& oppreſſionis noſtræ ? Quoniam humi-
liata eſt in pulvere anima noſtra : adhæſit
fundo foveæ venter noſter. Exurge,auxi-
liare nobis ; & ſalva nos propter bonita-
tem tuam.

Ad laudem pro aſſeſſoribus Sanhedrin
ipſi⁹ Moſis: quæ dicta eſt in prophetia per
filios Korahh intellect⁹ bonus, & hymnus
& confeſſio. PSAL. XLV.

ERuctavit cor meum eloquium bonum
dicam ego opera mea regi : loque-
linguæ meæ feſtinat, tanquam calam⁹ ſcri-
bæ exercitati. Pulchritudo tua ô re
Chriſte, præſtantior eſt filiorũ hominum
datus eſt ſpirit⁹ prophetiæ in labiis tuis:
propterea benedixit te Deus in æternum
Accinge enſem tuum ſuper femur tuum
fortis : quò interficias reges cum poten-
bus ſplendore tuo & gloria tua. Glori
autem tua magna eſt : propterea proſpe-
rabis,ut equites ſuper equos regni,prop-
negotium fidei & veritatis & manſue-
dinis & juſtitiæ : & docebit te Dñs ope-
rari timenda manu dextera tua. Sagit-
tuæ eductæ ad interficiendas acies:popu-
ſubter te cadent : & filii arcus tui immit-
tentur in cor inimicorũ regis. Sedes glori
tuæ Domine permanet in ſecula ſeculorum
ſceptrũ rectũ, ſceptrũ regni tui. Propte-
ea ꝙ dilexiſti juſtitiam & odiſti improb-
tatem;ideò unxit te Domin⁹ Deus tu⁹ ole
lætitiæ abundantiùs quàm conſortes tuo
Myrrha tenui & ligno aloes, & caſia pe-
ficiuntur omnia indumenta tua: à palati
quæ ſternuntur dente elephantino de A-
menia, lætificabunt te. Regiones regnor
venient ut ſuſcipiant faciem tuam & h
nore te afficiant quo tempore ſtabit lib
legis in latere dexteræ tuæ ; & exarab
obrizo ex Ophir. Audi congregatio Iſr
legem oris ejus, & intuere miranda ope
ej⁹; inclineſq; aurem tuã ad verba legis
obliviſcaris operationes malas impior
populi tui, & domus idolorum quibus
viviſti in domo patris tui. Sic enim cu
tet rex pulchritudinem tuam, quoni
ipſe eſt Dominus tuus ; & adorabis eu

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

21 22 * ܘܠܐ ܛܥܝܢ ܫܡܗ ܕܐܠܗܢ. ܘܠܐ ܦܫܛܢ ܐܝܕܝܢ ܠܘܬ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ: * ܐܠܗܐ ܗܘ ܒܨܐ ܗܕܐ
23 ܡܛܠ ܕܗܘ ܝܕܥ ܟܣܝܬܐ ܕܠܒܐ: * ܡܛܠܬܟ ܐܬܩܛܠܢ ܟܠܝܘܡ. ܘܐܬܚܫܒܢ
24 25 ܐܝܟ ܥܢܐ ܠܢܟܣܬܐ: * ܐܬܬܥܝܪ ܘܠܐ ܬܕܡܟ ܡܪܝܐ. ܐܬܦܢܝ ܘܠܐ ܬܛܥܝܢ: * ܘܠܐ ܬܗܦܘܟ ܐܦܝܟ
26 ܡܢܢ. ܘܠܐ ܬܛܥܐ ܡܘܟܟܢ ܘܐܘܠܨܢ: * ܡܛܠ ܕܡܟܟܬ ܠܥܦܪܐ ܢܦܫܢ ܘܕܒܩܬ ܟܪܣܢ
27 ܠܐܪܥܐ: * ܩܘܡ ܥܕܪܢ ܘܦܪܘܩܝܢ ܡܛܠ ܚܢܢܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܗ * * ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܫܘܪܝ ܡܣܩܬܐ *

1 * ܐܬܟܬܒ ܠܒܢܝ̈ ܩܘܪܚ ܒܙܒܢ ܡܘܫܐ. ܓܠܝܢܐ ܕܡܫܝܚܐ. ܘܥܠ ܥܕܬܐ ܘܥܠ
ܚܝܠܗ ܡܫܒܚܐ ܕܡܪܢ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܡܐ.

2 * ܐܪܬܚ ܠܒܝ ܡܠܬܐ ܛܒܬܐ. ܘܐܡܪ ܐܢܐ ܥܒ̈ܕܝ ܠܡܠܟܐ: ܠܫܢܝ ܩܢܝܐ ܕܣܦܪܐ ܡܗܝܪܐ.
3 * ܫܦܝܪ ܒܚܙܘܗ ܡܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ: ܐܬܐܫܕܘ ܛܝܒܘܬܐ ܥܠ ܣܦܘܬܟ. ܡܛܠܗܢܐ ܒܪܟܟ ܐܠܗܐ
4 5 ܠܥܠܡ: * ܐܣܘܪ ܣܝܦܐ ܥܠ ܚܨܝܟ ܓܢܒܪܐ. * ܗܕܪܟ ܘܫܘܒܚܟ ܙܟܐ: ܪܟܒ ܥܠ ܡܠܬܐ
6 ܕܫܪܪܐ ܘܡܟܝܟܘܬܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܬܚܘܝܟ ܒܕܚܠܬܐ ܝܡܝܢܟ: * ܓܐܪܝܟ ܚܪܝܦܝܢ ܘܥܡ̈ܡܐ
7 ܬܚܬܝܟ ܢܦܠܘܢ. ܒܠܒܐ ܕܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܕܡܠܟܐ: * ܟܘܪܣܝܟ ܐܠܗܐ ܠܥܠܡ
8 ܥܠܡܝܢ. ܫܒܛܐ ܦܫܝܛܐ ܫܒܛܐ ܕܡܠܟܘܬܟ: * ܪܚܡܬ ܙܕܝܩܘܬܐ ܘܣܢܝܬ ܥܘܠܐ. ܡܛܠ
9 ܗܢܐ ܡܫܚܟ ܐܠܗܐ ܐܠܗܟ: ܡܫܚܐ ܕܚܕܘܬܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܚܒܪܝܟ. * ܡܘܪܐ ܘܩܨܝܥܬܐ
ܘܐܣܛܩܛܐ: ܡܒܣܡܝܢ ܠܒܘܫܝܟ ܟܠܗܘܢ. ܡܢ ܗܝܟܠܐ ܕܫܢܐ ܘܡܢ ܒܝܬܝ ܚܕܝܘܟ:
10 * ܒܪܬ ܡܠܟܐ ܒܫܘܒܚܐ ܩܡܬ. ܘܡܠܟܬܐ ܥܠ ܝܡܝܢܟ: ܒܠܒܘܫܐ ܕܕܗܒܐ ܕܐܘܦܝܪ.
11 12 * ܫܡܥܝ ܒܪܬܝ ܘܚܙܝ ܘܐܪܟܢܝ ܐܕܢܝܟܝ: ܘܛܥܝ ܥܡܟܝ ܘܒܝܬ ܐܒܘܟܝ. * ܕܢܪܓܝ
ܡܠܟܐ ܠܫܘܦܪܟܝ: ܡܛܠ ܕܗܘܝܘ ܡܪܟܝ ܣܓܘܕܝ ܠܗ.

* At non obliti ſumus nominis Dei noſtri,
extendimus manus noſtras ad deos alie
Deus ſcrutatur hoc, quoniam ipſe novit c
gitationes cordis. Propter te interfecti ſum
quotidie,& reputati velut agni ad mactat
nem. Evigila, & ne dormias, Domine:
cordare noſtrî, & ne obliviſcaris nos,
avertas faciem tuam à nobis,neque oblivi
ris humilitatis noſtræ & anguſtiæ noſ
Nam dejecta eſt ſuper pulverẽ anima,no
& adhæſit venter noſter terræ. Exurge,a
va nos,& libera nos ob miſericordiam tu

Laus, & initium gradûs.

PSAL. XLV.

Scriptus à filiis Corah tempore M
Apparitio Chriſti. Et de Eccleſia,deq;
tute glorioſa Domini. Verſ. 41.

PRoducito cor meum ſermones bonos
dicam opera mea regi : lingua mea c
mus eſt ſcribæ periti. O pulcher aſpectu
filiis hominum effuſæ ſunt miſericordiæ
per labia tua : propterea benedixit tibi D
in æternum. Cinge gladio femora tua,g
Decor tuus & gloria tua vincit. Equita ſu
verbum veritatis,& humilitatem juſtitiæ
tua in terrore dexteræ tuæ. Sagittæ tuæ a
tæ ſunt, & populi cadent ſub te,in cor in
corum regis. Solium tuum,Deus, in ſecul
ſeculorum : ſceptrum protenſum ſcept
regni tui. Dilexiſti juſtitiam, & odiſti
quitatem ; propterea unxit te Deus,Deu
us unguento lætitiæ pluſquam ſodales t
Myrrham, & caſiam, atque ſtacten redo
omnia veſtimenta tua, ex æde præcipua
prompta, & è domo mea, te lætificave
Filia regis cum ſplendore ſtetit, & reg
dextera tua cum indumento auri Ophir.
di, filia mea, & vide, ac porrige aure
am, atque obliviſcere populum tuum, &
mum patris tui. Ut concupiſcat rex pu
tudinem tuam. Quia ipſe eſt Dominus
adora illum :

Verſio VULG. LAT.

21 Si obliti ſumus nomen Dei noſtri, & ſi
expandimus manus noſtras ad deum alienum:
22 Nónne Deus requiret iſta? ipſe enim
novit abſcondita cordis. Quoniam
propter te mortificamur totâ die : æſtimati
23 ſumus ſicut oves occiſionis. Exurge,
quarè obdormis, Domine? exurge, & ne
24 repellas in finem. Quarè faciem tuam
avertis, oblivíſceris inopiæ noſtræ & tribulationis
25 noſtræ? Quoniam humiliata
eſt in pulvere anima noſtra: conglutinatus
26 eſt in terra venter noſter. Exurge,
Domine, adjuva nos: & redime nos propter
nomen tuum.

1 In finem, pro iis qui commutabuntur, filiis Core, ad intellectum, Canticum pro dilecto. XLIV.

2 ERuctavit cor meum verbum bonum:
dico ego opera mea regi. Lingua
mea calamus ſcribæ, velociter ſcribentis.
3 Speciosus formâ præ filiis hominũ,
diffuſa eſt gratia in labiis tuis: propterea
4 benedixit te Deus in æternum. Accingere
gladio tuo ſuper femur tuum,
5 potentiſſime. Specie tuâ & pulchritudine
tuâ intende, proſperè procede &
regna, Propter veritatem & manſuetudinem,
& juſtitiam: & deducet te mirabiliter
6 dextera tua. Sagittæ tuæ acutæ, populi
ſub te cadent, in corda inimicorum
7 regis. Sedes tua, Deus, in ſeculum
ſeculi: virga directionis, virga regni
8 tui. Dilexiſti juſtitiam, & odiſti
iniquitatem: propterea unxit te Deus,
Deus tuus, oleo lætitiæ præ conſortibus
9 tuis. Myrrha, & gutta, & caſia, à veſtimentis
tuis, à domibus eburneis: ex
10 quibus delectaverunt te Filiæ regum in
honore tuo. Aſtitit regina à dextris tuis
in veſtitu deaurato: circumdata varietate.
11 Audi filia, & vide, & inclina aurem
tuam: & oblivíſcere populum tuum, et
12 domum patris tui. Et concupiſcet rex
decorem tuum: quoniam ipſe eſt Dominus
Deus tuus, & adorabunt eum.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

21 † Εἰ ἐπελαθόμεθα (μ) τοῦ ὀνόματος τοῦ θεοῦ ἡμῶν, † καὶ
εἰ διεπετάσαμεν χεῖρας ἡμῶν πρὸς θεὸν ἀλλότριον,
22 † Οὐχὶ ὁ θεὸς ἐκζητήσει ταῦτα; † αὐτὸς γὰρ
γινώσκει τὰ κρύφια τῆς καρδίας. † Ὅτι (ν) ἕνεκά σου
θανατούμεθα ὅλην τὴν ἡμέραν, † ἐλογίσθημεν ὡς
23 πρόβατα σφαγῆς. † Ἐξεγέρθητι, ἵνα τί ὑπνοῖς
24 κύριε; † ἀνάστηθι, καὶ μὴ ἀπώσῃ εἰς τέλος. † Ἵνα τί
(ξ) τὸ πρόσωπόν σου ἀποστρέφεις; † ἐπιλανθάνῃ τῆς
25 πτωχείας ἡμῶν καὶ τῆς θλίψεως ἡμῶν; † Ὅτι ἐταπεινώθη
εἰς χοῦν ἡ ψυχὴ ἡμῶν, † ἐκολλήθη εἰς
26 γῆν ἡ γαστὴρ ἡμῶν. † Ἀνάστα κύριε, βοήθησον ἡμῖν,
† καὶ λύτρωσαι ἡμᾶς ἕνεκεν τοῦ ὀνόματός σου.

MS.A. (μ) τοῦ θεοῦ ἡμῶν, (ν) ἕνεκεν (ξ) πρόσωπόν

1 (α) Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ἀλλοιωθησομένων τοῖς υἱοῖς Κορὲ εἰς σύνεσιν, ᾠδὴ ὑπὲρ τοῦ ἀγαπητοῦ. μδʹ.

2 † ἘΞηρεύξατο ἡ καρδία μου λόγον ἀγαθόν, † λέγω
ἐγὼ τὰ ἔργα μου τῷ βασιλεῖ· † ἡ γλῶσσά
3 μου κάλαμος γραμματέως ὀξυγράφου. † Ὡραῖος
κάλλει παρὰ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων, † ἐξεχύθη
χάρις ἐν χείλεσί σου, † διὰ τοῦτο εὐλόγησέ σε
4 ὁ θεὸς εἰς τὸν αἰῶνα. † Περίζωσαι τὴν ῥομφαίαν σου
5 ἐπὶ τὸν μηρόν σου δυνατέ. † Τῇ ὡραιότητί σου, καὶ
τῷ κάλλει σου, † καὶ ἔντεινον, καὶ κατευοδοῦ, καὶ βασίλευε·
† ἕνεκεν ἀληθείας καὶ πραΰτητος καὶ δικαιοσύνης,
† καὶ ὁδηγήσει σε θαυμαστῶς ἡ δεξιά σου.
6 † Τὰ βέλη σου ἠκονημένα δυνατέ, † λαοὶ ὑποκάτω
σου πεσοῦνται, † ἐν καρδίᾳ τῶν ἐχθρῶν τοῦ βασιλέως.
7 † Ὁ θρόνος σου ὁ θεὸς (β) εἰς αἰῶνα
(γ) αἰῶνος, † ῥάβδος εὐθύτητος ἡ ῥάβδος τῆς
8 βασιλείας σου. † Ἠγάπησας δικαιοσύνην, καὶ ἐμίσησας
(δ) ἀνομίαν, † διὰ τοῦτο ἔχρισέ σε ὁ
θεὸς ὁ θεός σου † ἔλαιον ἀγαλλιάσεως παρὰ τοὺς
9 μετόχους σου. † Σμύρνα καὶ στακτὴ καὶ κασία ἀπὸ τῶν
ἱματίων σου, † ἀπὸ βάρεων ἐλεφαντίνων, ἐξ ὧν
10 ηὔφρανάν σε † Θυγατέρες (ε) βασιλέων ἐν τῇ
τιμῇ σου. † παρέστη ἡ βασίλισσα ἐκ δεξιῶν σου, † ἐν
ἱματισμῷ διαχρύσῳ περιβεβλημένη, πεποικιλμένη.
11 † Ἄκουσον θύγατερ καὶ ἴδε καὶ κλῖνον τὸ οὖς
σου, † καὶ ἐπιλάθου τοῦ λαοῦ σου, καὶ τοῦ οἴκου τοῦ
12 πατρός σου. † (ζ) Ὅτι ἐπεθύμησεν ὁ βασιλεὺς
τοῦ κάλλους σου, † ὅτι αὐτός ἐστιν ὁ κύριός σου.

MS.A. (α) Τοῦ Δαυὶδ ὑπὲρ τοῦ ἀγαπητοῦ. (β) εἰς τὸν αἰῶνα (γ) τοῦ αἰῶνος, (δ) ἀδικίαν, (ε) βασιλέως (ζ) Καὶ ἐπιθυμήσει

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

21 Si obliti ſumus nomen Dei noſtri; 21
& ſi expandimus manus noſtras
ad Deum alienum: 23 Nonne 22
Deꝰ (y) requiret iſta? ipſe enim
novit occulta cordis. 24 Quoniã
propter [i] te mortificamur totâ
die: æſtimati ſumus, ſicut oves occiſionis.
25 (z) Exurge, quarè 23
(ω) obdormis, Domine? exurge, et
ne repellas in finem. 26 Quarè 24
faciem tuam (aa) avertis? oblivíſceris
inopiæ noſtræ, et tribulationis
noſtræ? 27 Quoniam (bb) humiliata 25
eſt in pulvere anima noſtra
: conglutinatus eſt in terra
venter noſter. 28 Exurge, (cc) Domine, 26
adjuva nos : & redime nos
propter nomen tuum.

In (a) finem, pro iis qui commutabuntur, filiis Core, [a] ad intellectum, Canticum pro dilecto. 1

XLIV.

ERuctavit (b) cor meum verbum 2
bonũ : dico ego (c) opera mea
regi. 2 Lingua mea (d) calamus
ſcribæ velociter ſcribentis.
3 (e) Speciosꝰ formâ præ filiis hominum: 3
(f) diffuſa eſt gratia in labiis
tuis : (g) propterea benedixit
te Deus in æternum. 4 Accingere 4
(h) gladio tuo ſuper femur tuum
potentiſſime. 5 (i) Specie tuâ, & 5
pulchritudine tuâ, (k) & intende,
& (l) proſperè procede, et (m)
regna. 6 Propter veritatem, &
manſuetudinem, & juſtitiam: &
(n) deducet [b] te mirabiliter
dextera tua. 7 Sagittæ tuæ acutæ 6
(o) potentiſſime, populi ſub te cadent,
in (p) corde inimicorum regis.
8 (q) Sedes tua, Deꝰ, in ſeculũ 7
ſeculi: virga directionis, virga
regni tui. 9 Dilexiſti juſtitiã, et odiſti 8
(r) iniquitatem: propterea unxit
te Deꝰ, Deus tuꝰ, oleo (ſ) exultationis
(t) præ participibus tuis.
10 Myrrha, & gutta, & caſia, à 9
(u) veſtimentis tuis : à [c] domibus
(x) eburneis, ex quibus delectaverunt
te Filiæ regum in honore 10
tuo. (y) 11 Aſtitit regina
à dextris tuis, in veſtitu (z) deaurato,
[d] (ω) circumamicta,
variegata. 12 Audi filia, & vide, 11
& inclina aurem tuam : &
oblivíſcere populum tuum, &
domum patris tui. 13 Quoniam (aa) concupivit rex decorem tuum : quia ipſe eſt (bb) Dominus tuus. 12

Verſio ÆTHIOPICA.

ሶቤሁ፡ረሳዕነ፡ስሞ፡ለአምላክነ፡፡ወሶቤሁ፡ 22
እንዛእነ፡እደዊነ፡ኀበ፡አምላክ፡ነኪር፡፡=፡
እኮኑ፡እግዚአብሔር፡እመተኀሠሦ፡ለ 23
ዝንቱ፡፡እስመ፡ውእቱ፡የአምር፡ኅቡአተ፡
ልብ፡፡=፡ አስመ፡በእንቲአሁ፡ይቀትሉነ፡ 24
ኵሎ፡አሚረ፡፡ወኮነ፡ከመ፡አባግዕ፡ዘይ
ጠብሑ፡፡=፡ ንቃሕ፡እግዚኦ፡ለምንት፡ት 25
ነውም፡፡ተንሥእ፡ወኢትግድፈነ፡ለዝሉ
ፉ፡፡=፡ ወለምንት፡ትሜይጥ፡ገጸከ፡እም 26
ኔየ፡፡ወተረስዐነ፡ሕማምነ፡ወተፅናስነ፡፡=፡
እስመ፡ኀስረት፡ውስተ፡መድር፡ነፍስነ፡፡ 27
ወጠግዓት፡በምድር፡ከርሠነ፡፡=፡ ተን 28
ሥእ፡እግዚኦ፡ርድአነ፡፡ወአድኀነነ፡በእ
ንተ፡ስምከ፡፡=፡

ፍጻሜ፡በእንተ፡እለ፡ተበዐዱ፡ዘውሉ
ደ፡ቆሬ፡መዝሙር፡ዘበአእምሮ፡፡

ሠዐ ጐሥዐ፡ልብየ፡ቃለ፡ሠናየ፡፡አነ፡እየ 1
ድእ፡ግብርየ፡ለንጉሥ፡፡=፡ ከመ፡ቀለመ፡ 2
ጸሐፊ፡ዘጠበበጠበ፡ይጽሕፍ፡ልሳንየ፡፡=፡
ይሄኒ፡ሳሕዩ፡እምውሉደ፡እጓለ፡እመሕያ 3
ው፡፡ተክዕወ፡ሞገስ፡እምከናፍሪከ፡፡በእን
ተዝ፡ባረከከ፡እግዚአብሔር፡ለዓለም፡፡=፡
ቅንት፡ሰይፈከ፡ኃያል፡ውስተ፡ሐቌከ፡፡=፡ 4
በስንከ፡ወበሳሕይከ፡፡እርትዕ፡ታሠራኅ፡ወ 5
ንግሥ፡፡=፡ በእንተ፡ጽድቅ፡ወርትዕ፡ወየ 6
ዋሃት፡፡ወይመርሐከ፡ስብሐተ፡የማንከ፡፡=፡
አኅጻከ፡ስሑል፡ኃያል፡፡አሕዛብ፡ይወድቁ፡ 7
ታሕቴከ፡፡ውስተ፡ልቦሙ፡ለጸላእተ፡ንጉ
ሥ፡፡=፡ መንበርከ፡እግዚኦ፡ለዓለም፡ዓለ 8
ም፡፡በትረ፡ጽድቅ፡ወበትረ፡መንግሥት
ከ፡፡=፡ አፍቀርከ፡ጽድቀ፡ወዐመፃ፡ጸላእ 9
ከ፡፡በእንተዝ፡ቀብአከ፡እግዚአብሔር፡አ
ምላክከ፡፡ቅብአ፡ትፍሥሕት፡እምእለ፡
ከማከ፡፡=፡ ከርቤ፡ወቅንአት፡ወሰሊኖት፡ 10
እምነ፡አልባሲከ፡፡እምክቡዳን፡አቅርንት፡
ዘአምኔሆሙ፡አስተፈሥሐከ፡፡አዋልደ፡ንግ
ሥት፡ለክብርከ፡፡=፡ ወትቀውም፡ንግሥ 11
ት፡በየማንከ፡፡በአልባሰ፡ወርቅ፡ዑጽፍት፡ወ
ሑብርት፡፡=፡ ስምዒ፡ወለትየ፡ወርእዪ፡ወ 12
አጽምዒ፡እዝነኪ፡፡ወርስዒ፡ሕዝበኪ፡ወቤ
ተ፡አቡኪ፡፡=፡ እስመ፡ፈተወ፡ንጉሥ፡ሰነ 13
ኪ፡፡እስመ፡ውእቱ፡እግዚእኪ፡፡ወይሰግዱ፡
ሉቱ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [i] illum PSAL. XLIIII. [a] Canticum ad intellectum. [b] te gloriosè [c] palatiis eburneis, ex quibus [d] amicta, & conſociata. Audi filia mea,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* إِنْ كُنَّا نَسِينَا ٱسْمَ إِلَاهِنَا * أَوْ بَسَطْنَا أَيْدِيَنَا إِلَي إِلَهٍ غَرِيبٍ * أَفَلَيْسَ ٱللّٰهُ ٱلْمُطَالِبُ بِهٰذَا * 21 22
لِأَنَّهُ عَارِفٌ خَفَايَا ٱلْقُلُوبِ * إِنَّنَا مِنْ أَجْلِكَ نُقْتَلُ بِٱلنَّهَارِ كُلِّهِ * عُدِدْنَا مِثْلَ ٱلْغَنَمِ لِلذَّبْحِ * قُمْ يَا 23 24
رَبُّ لِمَاذَا تَنَامُ * قُمْ وَلَا تَطْرَحْنَا عَنْكَ إِلَي ٱلِٱنْقِضَاءِ * لِمَاذَا تَصْرِفُ وَجْهَكَ عَنَّا * وَتَنْسَي مَسْكَنَتَنَا 25
وَضِيقَنَا فَإِنَّ نُفُوسَنَا قَدِ ٱتَّضَعَتْ إِلَي ٱلتُّرَابِ * وَٱلْتَصَقَتْ بُطُونُنَا بِٱلْأَرْضِ * قُمْ يَا رَبُّ وَأَعِنَّا * 26
وَأَنْقِذْنَا لِأَجْلِ ٱسْمِكَ ٱلْقُدُّوسِ * ٱللَّيْلُويَا *

* ٱلْمَزْمُورُ ٱلرَّابِعُ وَٱلْأَرْبَعُونَ * لِبَنِي قُورَحَ * وَعَدَدُهُ * مز * أَسْتِيخُن * 1

* فَاضَ قَلْبِي قَوْلًا حَسَنًا * أَنَا أُخْبِرُ ٱلْمَلِكَ بِأَعْمَالِي * لِسَانِي قَلَمُ ٱلْكَاتِبِ ٱلْمَاهِرِ * بَهِيٌّ فِي ٱلْحُسْنِ 2 3
أَفْضَلُ مِنْ بَنِي ٱلْبَشَرِ * فَاضَتِ ٱلنِّعْمَةُ مِنْ شَفَتَيْكَ * لِأَجْلِ هٰذَا بَارَكَكَ ٱللّٰهُ إِلَي ٱلْأَبَدِ * تَقَلَّدْ 4
سَيْفَكَ عَلَي فَخِذِكَ * أَيُّهَا ٱلْجَبَّارُ * بِبَهَائِكَ وَجَمَالِكَ * أَوْتِرْ وَسِرْ وَٱمْلِكْ * مِنْ أَجْلِ ٱلصِّدْقِ 5
وَٱلدَّعَةِ وَٱلْبِرِّ * بِٱلْعَجَبِ تَهْدِيكَ يَمِينُكَ * سِهَامُكَ مَسْنُونَةٌ أَيُّهَا ٱلْجَبَّارُ ٱلشُّعُوبُ تَحْتَكَ يَسْقُطُونَ 6
فِي قَلْبِ أَعْدَاءِ ٱلْمَلِكِ * كُرْسِيُّكَ يَا أَللّٰهُ إِلَي أَبَدِ ٱلْآبِدِ * قَضِيبُ ٱلِٱسْتِقَامَةِ * قَضِيبُ مُلْكِكَ * 7
* لِأَنَّكَ أَحْبَبْتَ ٱلْبِرَّ وَأَبْغَضْتَ ٱلْإِثْمَ * لِهٰذَا مَسَحَكَ ٱللّٰهُ إِلٰهُكَ بِدُهْنِ ٱلْفَرَحِ * أَفْضَلَ مِنْ 8
أَصْحَابِكَ * ٱلْمُرُّ وَٱلْمَيْعَةُ وَٱلسَّلِيخَةُ * مِنْ لِبَاسِكَ * مِنْ مَنَازِلِ شَرِيفِ ٱلْعَاجِ ٱلْآتُ بَهْجَتِكَ * بَنَاتُ 9 10
ٱلْمُلُوكِ فِي كَرَامَتِكَ * وَقَفَتِ ٱلْمَلِكَةُ عَنْ يَمِينِكَ بِثِيَابٍ مُذَهَّبَةٍ مُشْتَمِلَةٌ بِهَا * مُزَيَّنَةٌ بِأَشْكَالٍ كَثِيرَةٍ *
* اِسْمَعِي يَا بِنْتُ وَٱنْظُرِي * وَأَصْغِي بِسَمْعِكِ * وَٱنْسَي شَعْبَكِ وَبَيْتَ أَبِيكِ * فَإِنَّ ٱلْمَلِكَ قَدِ 11 12
ٱشْتَهَي حُسْنَكِ * فَإِنَّهُ هُوَ رَبُّكِ وَلَهُ تَسْجُدِينَ * تَسْجُدُ لَهُ بَنَاتُ صُورٍ *

Si obliti eſſemus nomen Dei noſtri, aut ex- 21
tendiſſemus manus noſtras ad Deum alienum,
Nónne Deus exigeret hoc, quum 22
ſciat abſcondita cordium? Nos quidem 23
propter te trucidamur die totâ, reputati
ſumus tanquam oves ad jugulationem.
Exurge, O Domine : quare dormis? ex- 24
urge, & ne repellas nos à te uſque in finem.
Quarè avertis faciem tuam à no- 25
bis, & oblivíſceris paupertatis noſtræ &
anguſtiæ noſtræ? Nam animæ noſtræ jam
humiliatæ ſunt uſque ad pulverem, &
adhæſerunt ventres noſtri humo. Surge, 26
O Domine, & adjuva nos, & redime nos
propter nomen tuum ſanctum. Alleluja.

PSAL. XLIV.

Filiis Choræ. Et num. Ver. 47. 1

EFfudit cor meum ſermonem optimũ; 2
Ego ſignifico regi opera mea. Lingua
mea calamus ſcriptoris periti. Decorus 3
in pulchritudine magis quàm filii hominum,
emanavit gratia è labiis tuis, propterea
benedixit tibi Deus in æternum. Ac- 4
cinge te gladio tuo ſuper femur tuum, O
Gigas : In nitore tuo, & decore tuo ab- 5
unda, & fruere, & regna. Propter veritatem
& manſuetudinem & juſtitiam,
cum admiratione diriget te dextera tua.
Sagittæ tuæ acuminatæ ſunt O Gigas (po- 6
puli ſub te cadent) in cor inimicorum regis.
Sedes tua O Deus, in ſeculum ſe- 7
culi : ſceptrum æquitatis ſceptrum regni
tui. Quia dilexiſti juſtitiam, & odiſti 8
iniquitatem, propterea unxit te Deus, Deus
tuus unguento lætitiæ præclarius quàm
ſocios tuos. Myrrha & ſtacte & caſia 9
è veſtimento tuo : à domibus nobiliſſimi
eboris inſtrumenta ſplendoris tui. Filiæ 10
regum, in honorem tuum : ſtetit regina
ad dexteram tuam in veſtibus auratis, ipſis
amicta, exornata generibus multis. Audi, 11
O filia, & vide, & præbe auditum tuum
& oblivíſcere populi tui : & domûs patris
tui. Quoniam rex jam concupivit 12
pulchritudinem tuam. Quoniam ipſe eſt
Dominus tuus, eúmque adorabis. Adorabunt
eum filiæ Tyri :

תהלים : מז מו

Tota .populi divites deprecabuntur *tuas facies* , munere *in* *Sor* filia Et
13 וּבַת־צֹר בְּמִנְחָה פָּנַיִךְ יְחַלּוּ עֲשִׁירֵי עָם : כָּל־
14 . *ejus vestimentum* *auri* *occlusuris ex* : intrinsecus regis filia inclyta
כְּבוּדָּה בַת־מֶלֶךְ פְּנִימָה מִמִּשְׁבְּצוֹת זָהָב לְבוּשָׁהּ :
adductæ , *ejus sociæ* eam post virgines : regi adducetur *recamatis In*
15 לִרְקָמוֹת תּוּבַל לַמֶּלֶךְ בְּתוּלוֹת אַחֲרֶיהָ רֵעוֹתֶיהָ מוּבָאוֹת
palatium *in* ingredientur ; exultatione & , lætitiis *in* Ducentur .*tibi*
16 לָךְ : תּוּבַלְנָה בִּשְׂמָחֹת וָגִיל תְּבֹאֶינָה בְּהֵיכַל
universa in principes *in* eos pones : tui filii erunt tuis patribus Pro .regis
17 מֶלֶךְ : תַּחַת אֲבֹתֶיךָ יִהְיוּ בָנֶיךָ תְּשִׁיתֵמוֹ לְשָׂרִים בְּכָל־
:generatione & , generatione omni in tuum nomen faciam Memorare .terra
18 הָאָרֶץ : אַזְכִּירָה שִׁמְךָ בְּכָל־דֹּר וָדֹר
.*perpetuum* & , seculum in tibi confitebuntur populi propterea
עַל־כֵּן עַמִּים יְהוֹדוּךָ לְעֹלָם וָעֶד :

PSAL. XLVI. מו

, spes nobis Deus .canticum Halamoth super ; Corach filiis Victori
1 לַמְנַצֵּחַ לִבְנֵי־קֹרַח עַל־עֲלָמוֹת שִׁיר : אֱלֹהִים לָנוּ מַחֲסֶה
2 timebimus non Propterea .*valde* *inventum* angustiis in auxilium : fortitudo &
3 וָעֹז עֶזְרָה בְצָרוֹת נִמְצָא מְאֹד : עַל־כֵּן לֹא־נִירָא
turbabuntur , Sonabunt .*marium* cor in montes *motando in* & ; terram *mutando in*
4 בְּהָמִיר אָרֶץ וּבְמוֹט הָרִים בְּלֵב יַמִּים : יֶהֱמוּ יֶחְמְרוּ
ejus rivi Fluminis .Selah , ejus *sublimitate in* montes contremiscent : ejus aquæ
5 מֵימָיו יִרְעֲשׁוּ־הָרִים בְּגַאֲוָתוֹ סֶלָה : נָהָר פְּלָגָיו
Deus .altissimi habitaculorum sanctum : Dei civitatem lætificabunt
6 יְשַׂמְּחוּ עִיר־אֱלֹהִים קְדֹשׁ מִשְׁכְּנֵי עֶלְיוֹן : אֱלֹהִים
.manè *respiciendo* , Deus eam adjuvabit : commovebitur non , ejus *interiori* in
בְּקִרְבָּהּ בַּל־תִּמּוֹט יַעְזְרֶהָ אֱלֹהִים לִפְנוֹת בֹּקֶר :
.terra *est liquefacta* , *sua voce in* dedit : regna sunt mota , gentes Sonuerunt
7 הָמוּ גוֹיִם מָטוּ מַמְלָכוֹת נָתַן בְּקוֹלוֹ תָּמוּג אָרֶץ :
.Selah , Jahacob Deus nobis elevatio : nobiscum exercituum Dominus
8 יְהוָה צְבָאוֹת עִמָּנוּ מִשְׂגָּב לָנוּ אֱלֹהֵי יַעֲקֹב סֶלָה :
.terra in solitudines , posuit quæ ; Domini opera videte , *Ite*
9 לְכוּ חֲזוּ מִפְעֲלוֹת יְהוָה אֲשֶׁר־שָׂם שַׁמּוֹת בָּאָרֶץ :
concidet & , conteret arcum , terræ extremum ad usque bella cessare *Faciens*
10 מַשְׁבִּית מִלְחָמוֹת עַד־קְצֵה הָאָרֶץ קֶשֶׁת יְשַׁבֵּר וְקִצֵּץ
; Deus ego quia, scitote &, *Remittite* .igni *in* comburet plaustra : hastam
11 חֲנִית עֲגָלוֹת יִשְׂרֹף בָּאֵשׁ : הַרְפּוּ וּדְעוּ כִּי־אָנֹכִי אֱלֹהִים
: nobiscum exercituum Dominus .terra in exaltabor ; gentibus in exaltabor
12 אָרוּם בַּגּוֹיִם אָרוּם בָּאָרֶץ : יְהוָה צְבָאוֹת עִמָּנוּ
.Selah , Jahacob Deus nobis elevatio
מִשְׂגָּב לָנוּ אֱלֹהֵי יַעֲקֹב סֶלָה :

PSAL. XLVII. מז

.cantus Corach filiis Victori
1 לַמְנַצֵּחַ לִבְנֵי־קֹרַח מִזְמוֹר :

תרגום TARGUM.

13 ויתבי כרכא דצור בתקרובתא ייתון ואפיך
14 ישחרון לבית מקדשיך עתירי עממיא : כל שפר
ארג נכסי פלכי אוצרי מלכיא דמטמרן מלגיו
יקרבון לכהניא דמרמצין בדהבא סנינא
15 לבושיהון : בלבושי ציורין יקרבון קורבניהון
קדם מלכא דעלמא ושאר חבריהון די מתבדרין
ביני עממיא יתיתין בחדוא לותיך לירושלם :
16 יתיתין בחדון ותושבחתא ויעלון בהיכלא דמלך
17 עלמין : באתר אבהתך יהוין צדיקיא בנך תמנון
18 לרברביא בכל ארעא : בעדנא ההיא תימרון
נדכר שמך בכל דר ודר מטול היכנא עמיא
דמתנירין ויהודון שמך לעלם ולעלמי עלמין :

מו

1 לשבחא על ידיהון דבני קרח ברוח נבואה בזמן
דאתכסי אבוהון מנהון והנון אשתזבו ואמרו
2 שירתא : אלהא לנא רוחצנא ועושנא סיעתא
3 בעקתא נשתכח לחדא : מטול היכנא לא
נדחל בעדן דאשתלחיפו אבהן מן ארעא כד
4 מתמוטטין טוריא בפילגוס דימא רבא : מתרגשין
מטשטשין מוהי מן עפרהון מתרגפין טוריא
5 בגיותנותך לעלמין : עמין היך נהרין ומבועיהון
אתין ומחדין קרתא דיי ומצלין בבית מקדשיה
6 דיי משכניה דעלאה : שכנתא דיי בגוה לא תזוע
יסיעניה יי בזכותיה דאברהם דצלי עלה לעדני
7 צפרא : במתן אוריתא לעמיה אתרגשו עמיא
אודעזעו מלכותא כד ארים קליה וכד יהב
8 אוריתא לעמיה אתמוגגו יתבי ארעא : מימרא
דיי צבאות בסעדנא תקיף לנא אלהא דיעקב
9 לעלמין : אזילו חמון עובדיא דיי דשוי צדין
10 ברשעי ארעא : מבטל קרבא עד סיפי ארעא
קשתא יתבר ויתרע מורניתא תריסיא עגילין
11 יוקיד בנורא : פסקו מן קרבא וידעון ארום אנא
12 יי רמא בעמיא רמא על יתבי ארעא : מימרא דיי
צבאות בסעדנא תקיף לנא אלהא דיעקב
לעלמין :

מז

1 לשבחא על ידיהון דבני קרח תושבחתא :

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Habitatores autem arcis Tyri cum munere venturi sunt : & faciem tuam mane quærent ad domum sanctuarii tui divites populorum. Omne pulchrum, & desiderabile ; facultates regionum, & thesauros regum, qui repositi sunt interiùs, offerent sacerdotibꝰ quorum vestes intertextæ sunt auro optimo. In vestibus acupictis offerent oblationes suas corã rege orbis ; & reliqui socii *eorum* qui dispersi sunt inter gentes, ducentur in lætitia ad te in Jerusalem. Adducentur cum gaudio & *hymnis* ; & ingredientur in templũ regis *seculorum*. In loco patrum tuorũ erunt *justi* filii tui : constitues eos principes in universam terram. *In tempore illo dicetis : Memorabimus* nomen tuum in omni generatione et generatione : propterea populi qui peregrinantur, confitebuntur *nomen tuum* in æternũ & in secula seculorũ.

Ad laudandum per manus *filiorum* Korahh : in *spiritu prophetiæ* quo tempore absconditus est ab eis pater eorum ipsi autẽ liberati sunt, & dixerunt cantici

PSAL. XLVI.

DEus nostrum refugium & virtus : auxilium in afflictione *inventus erit* valdè. Propterea non timebimꝰ cum immutati fuerint patres nostri de terra : quando concutientur montes in pelago maris magni. Sonabunt & turbabuntur aquæ *a fundo suo* : commovebuntur montes in magnificentia tua in secula. Populi tanquam flumina & rivi eorum, venient ; & lætificabunt civitatem Dei ; & orabunt in domo sanctuarii Dñi, in tabernaculis Altissimi. Majestas *Domini* in medio ejꝰ, non commovebitur : adjuvabit eã Dñs *justitia Abraham qui oravit pro ea* in tempore matutino. Quando dabat legem populo suo, conturbatæ sunt gentes ; tremuerunt regna : quando exaltavit vocem suam, & *quando dedit legem populo suo*, dissoluti sunt habitatores terræ. Verbum Dñi exercituum in adjutorium nostrum : fortitudo nostra Deus Jaacob in secula. Ambulate videte opera Dei, qui posuit vastationem in impios terræ. Dissipat *bellum* usque ad extrema terræ : arcum confringet & comminuet hastam, scuta rotunda comburet igni. Discedite *à bello*, & *advertant* quoniam ego sum Deus altus inter gentes ; altus supra incolas terræ. Verbum Domini exercituum in auxilio nostro ; fortitudo nostra Deus Jacob in æternum.

Ad laudandum per manus filiorum Korahh. Hymnus. PSAL. XLVII.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 * ܘܒܪܬ ܨܘܪ ܬܣܓܘܕ ܠܗ : ܒܩܘܪܒܢܐ ܐܦܝܟ ܢܒܥܘܢ ܥܬܝܪܘܗܝ ܕܥܡܐ. * ܟܠܗ
14
15 ܫܘܒܚܗ ܕܒܪܬ ܡܠܟܐ ܡܢ ܠܓܘ : ܘܡܨܒܬ ܠܒܘܫܗ ܒܕܗܒܐ ܛܒܐ. * ܒܩܘܪܒܢܐ ܬܐܙܠ
16 ܠܡܠܟܐ : ܘܢܝܬܘܢ ܒܬܘܠܬܐ ܚܒܪܬܗ ܒܬܪܗ : * ܘܢܐܙܠܘܢ ܒܚܕܘܬܐ ܘܒܬܦܢܩܐ. ܘܢܥܠܘܢ
17 ܠܗܝܟܠܗ ܕܡܠܟܐ. * ܚܠܦ ܐܒܗܝܟ ܢܗܘܘܢ ܒܢܝܟ : ܥܒܕ ܐܢܘܢ ܫܠܝܛܢܐ ܒܟܠܗ
18 ܐܪܥܐ. * ܕܢܬܕܟܪ ܫܡܟ ܒܟܠ ܕܪ ܘܕܪ : ܡܛܠܗܢܐ ܢܘܕܘܢ ܠܟ ܥܡܡܐ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ.

* ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܗ *

1 * ܕܒܢܝ ܩܘܪܚ. ܗܘ ܕܙܡܪ ܕܘܝܕ ܥܠ ܐܘܠܨܢܐ ܕܗܘܐ ܠܥܡܐ ܕܝܗܘܕܝܐ :
ܡܬܐܡܪ ܕܝܢ ܡܪܙܢܐܝܬ ܟܪܘܙܘܬܐ ܕܫܠܝܚܐ. ܦܬܓܡ ܟܓ.
2 * ܐܠܗܢ ܡܟܣܝܢܢ ܥܫܝܢܐ : ܘܡܥܕܪܢܢ ܒܙܒܢܐ ܕܐܘܠܨܢܐ. ܐܫܬܟܚܬ ܠܢ ܒܟܠܙܒܢ :
3 * ܡܛܠܗܢܐ ܠܐ ܢܕܚܠ ܟܕ ܬܬܙܝܥ ܐܪܥܐ. ܘܢܬܬܙܝܥܘܢ ܛܘܪܐ ܒܠܒܐ ܕܝܡܡܐ : * ܢܬܕܠܚܘܢ
4
5 ܡܝܗܘܢ ܘܢܬܥܦܦܘܢ. ܘܢܬܕܠܚܘܢ ܛܘܪܐ ܒܥܘܫܢܗ : * ܕܝܩܣ * * ܐܠܐ ܢܗܪܘܬܐ ܢܚܕܘܢ
6 ܠܡܕܝܢܬܗ ܕܐܠܗܢ. ܩܕܝܫ ܗܘ ܡܫܟܢܗ ܕܡܪܝܡܐ : * ܐܠܗܐ ܒܓܘܗ ܠܐ ܬܙܘܥ.
7 ܢܥܕܪܝܗ ܐܠܗܐ ܥܡ ܨܦܪܐ : * ܐܬܕܠܚܘ ܥܡܡܐ ܘܙܥܘ ܡܠܟܘܬܐ. ܐܪܝܡ ܩܠܗ ܘܪܬܬ
8 ܐܪܥܐ : * ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܡܢ. ܘܡܥܕܪܢܢ ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ : * ܬܘ ܚܙܘ ܥܒܕܘܗܝ
9
10 ܕܐܠܗܐ. ܕܥܒܕ ܬܕܡܪܬܐ ܒܐܪܥܐ : * ܘܡܒܛܠ ܩܪܒܐ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܩܫܬܐ ܡܬܒܪ :
11 ܘܡܬܒܪ ܢܝܙܟܐ : ܘܡܪܟܒܬܐ ܡܘܩܕ ܒܢܘܪܐ. * ܐܫܬܠܝܘ ܘܕܥܘ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܐܠܗܐ. ܐܬܬܪܝܡܬ
12 ܒܥܡܡܐ ܘܐܬܬܪܝܡܬ ܒܐܪܥܐ : * ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܡܢ. ܘܡܥܕܪܢܢ ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ.

* ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܘ *

1 * ܕܒܢܝ ܩܘܪܚ. ܥܠ ܫܘܒܚܐ ܕܐܠܗܐ ܕܒܛܘܪ ܣܝܢܝ. ܘܡܬܐܡܪ ܐܦ ܥܠ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܦܬܓܡ ܝ.

Et filia Tyri adorabit eum. Cum oblationibus vultum tuũ petent divites populi. Omnis gloria filiæ regis intus est, & exornatus est vestitus ejus auro optimo. Cum muneribus adibit regem. Et adducent virgines sociæ ejus post ipsam. Ibúntque cum lætitia atque delectatione, & ingredientur templum regis. Pro patribus tuis erunt filii tui. Fac eos dominos in omnem terram. Ut memores simus nominis tui in omni generatione & generatione. Propter hoc confitebuntur tibi gentes in seculum seculorum.

PSAL. XLVI.

Filiorum Corah ; quem David canebat in afflictione quæ evenerat populo. Quòd ad prophetiam, dicitur mysticè prædicatio Apostolorum. Vers. 23.

DEus noster, refugium nostrum munitissimum, & adjutor noster temporibus tribulationis, extitisti nobis omni tempore. Propterea non timebimus quum mota fuerit terra, & contremuerint montes in corde marium : Agitaverint se aquæ eorum seque convolverint, & conturbati fuerint montes in fortitudine ipsius. * *Diapsalma* * At rivi fluviorum exhilarabunt in civitate Dei nostri. Sanctum est habitaculum Altissimi. Deus est in medio ejus, *ipsa* non movebitur : adjuvabit eam Deus tempore matutino. Tumultuârunt gentes, & nutârunt regna : extulit vocem suam, & contremuit terra. Dominus fortis nobiscũ, & auxiliator noster Deus Jacob. Venite, videte opera Dei facientis mirabilia in terra, Et auferentis bella de finibus terræ, arcus frangentis, & comminuentis hastas, & currus exurentis igne. Convertimini & agnoscite quòd ego sum Deus, exaltatus sum in populis, & exaltatus sum in terra. Dominus fortis nobiscũ est, & adjutor noster Deus Jacob.

PSAL. XLVII.

Filiorum Corah. De gloria Dei in monte Sinai. Refertur etiam ad vocationem gentium. Vers. 10.

Verſio VULG. LAT.

13 Et filiæ Tyri in muneribus vultum tuum deprecabuntur, omnes divites plebis.
14 Omnis gloria ejus filiæ regis ab intùs, in
15 fimbriis aureis Circumamicta varietatibus. Adducentur regi virgines poſt eam:
16 proximæ ejus afferentur tibi. Afferentur in lætitia & exultatione: adducentur in
17 templum regis. Pro patribus tuis nati ſunt tibi filii: conſtitues eos principes
18 ſuper omnem terram. Memores erunt nominis tui in omni generatione & generationem. Propterea populi confitebuntur tibi in æternum, & in ſeculum ſeculi.

In finem,
1 Filiis Core, pro arcanis, Pſalmus. XLV.

2 DEus noſter refugium, & virtus: adjutor in tribulationibus, quæ invene-
3 runt nos nimis. Propterea non timebimus dum turbabitur terra: & transfe-
4 rentur montes in cor maris. Sonuerunt & turbatæ ſunt aquæ eorum: conturbati
5 ſunt montes in fortitudine ejus. Fluminis impetus lætificat civitatem Dei: ſanctificavit tabernaculum ſuum Altiſſimus.
6 Deus, in medio ejus, non commovebitur: adjuvabit eam Deus manè diluculó.
7 Conturbatæ ſunt gentes, & inclinata ſunt regna: dedit vocem ſuam, mota eſt
8 terra. Dominus virtutum nobiſcum:
9 ſuſceptor noſter Deus Jacob. Venite, & videte opera Domini, quæ poſuit prodi-
10 gia ſuper terram: Auferens bella uſque ad finem terræ. Arcum conteret, & confringet arma, & ſcuta comburet igni.
11 Vacate, & videte quoniam ego ſum Deus: exaltabor in gentibus, & exaltabor
12 in terra. Dominus virtutum nobiſcum: ſuſceptor noſter Deus Jacob.

1 In finem, pro filiis Core Pſalmus. XLVI.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

13 † Καὶ προσκυνήσουσιν αὐτῷ θυγατέρες Τύρου ἐν δώροις, † τὸ πρόσωπόν σου λιτανεύσουσιν οἱ πλού-
14 σιοι (η) τοῦ λαοῦ τῆς γῆς. † Πᾶσα ἡ δόξα αὐτῆς θυγατρὸς τοῦ βασιλέως (θ) Ἐσεβών, † ἐν κροσσω-
15 τοῖς χρυσοῖς περιβεβλημένη, πεποικιλμένη. † ἀπενεχθήσονται τῷ βασιλεῖ παρθένοι ὀπίσω (ι) αὐτῆς, † αἱ πλησίον αὐτῆς ἀπενεχθήσονταί σοι.
16 † Ἀπενεχθήσονται ἐν εὐφροσύνῃ καὶ ἀγαλλιάσει,
17 † ἀχθήσονται εἰς ναὸν βασιλέως. † Ἀντὶ τῶν πατέρων σου (κ) ἐγεννήθησάν σοι υἱοί, † καταστήσεις αὐ-
18 τοὺς ἄρχοντας ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν. † (λ) Μνησθήσονται τοῦ ὀνόματός σου ἐν πάσῃ γενεᾷ καὶ γενεᾷ. † Διὰ τοῦτο λαοὶ ἐξομολογήσονταί σοι εἰς τὸν αἰῶνα, † καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος.

MS.A. (η) τοῦ λαοῦ. Πᾶσα ἡ δόξα τῆς θυγατρὸς (θ) ἔσωθεν, ἐν κροσσωτοῖς. (ι) αὐτοῦ, οἱ πλησίον αὐτῆς (κ) ἐγεννήθησαν (λ) Καὶ μνησθήσονται

1 (α) Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν υἱῶν Κορέ, ὑπὲρ τῶν κρυφίων ψαλμός. με'.

2 † Ὁ θεὸς ἡμῶν καταφυγὴ καὶ δύναμις, † βοηθὸς ἐν θλίψεσι ταῖς εὑρούσαις ἡμᾶς σφό-
3 δρα. † Διὰ τοῦτο οὐ φοβηθησόμεθα ἐν τῷ ταράσσεσθαι τὴν γῆν, † καὶ μετατίθεσθαι ὄρη ἐν καρδίαις
4 θαλασσῶν. † Ἤχησαν καὶ ἐταράχθησαν τὰ ὕδατα αὐτῶν, † (β) ἐταράχθησαν τὰ ὄρη ἐν τῇ κραται-
5 ότητι αὐτοῦ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Τοῦ ποταμοῦ τὰ ὁρμήματα εὐφραίνουσι τὴν πόλιν τοῦ θεοῦ, † ἡγίασε
6 τὸ σκήνωμα αὐτοῦ ὁ ὕψιστος. † Ὁ θεὸς ἐν μέσῳ αὐτῆς οὐ σαλευθήσεται, † βοηθήσει αὐτῇ ὁ θεὸς
7 (γ) τῷ προσώπῳ. † Ἐταράχθησαν ἔθνη, ἔκλιναν βασιλεῖαι, † ἔδωκε φωνὴν αὐτοῦ (δ), ἐσαλεύ-
8 θη ἡ γῆ. † Κύριος τῶν δυνάμεων μεθ' ἡμῶν, † ἀντιλήπτωρ ἡμῶν ὁ θεὸς Ἰακώβ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
9 † Δεῦτε καὶ (ε) ἴδετε τὰ ἔργα τοῦ κυρίου, † ἃ ἔθετο
10 τέρατα ἐπὶ τῆς γῆς, (ζ) † Ἀνταναιρῶν πολέμους μέχρι τῶν περάτων τῆς γῆς, † τόξον συντρίψει, καὶ συγκλάσει ὅπλον, † καὶ θυρεοὺς κατακαύσει ἐν
11 πυρί. † Σχολάσατε καὶ γνῶτε, ὅτι ἐγώ εἰμι ὁ θεός, † ὑψωθήσομαι ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ὑψωθήσο-
12 μαι ἐν τῇ γῇ. † Κύριος τῶν δυνάμεων μεθ' ἡμῶν, † ἀντιλήπτωρ ἡμῶν ὁ θεὸς Ἰακώβ.

MS.A. (α) Τοῦ Δαυὶδ ψαλμός. (β) ἐταράχθη (γ) τὸ πρὸς πρωΐ, πρωΐ. (δ) ὁ ὕψιστος, ἐσαλεύθη (ε) ἴδετε τὰ ἔργα τοῦ θεοῦ, (ζ) Ἀνταναιρῶν

1 Εἰς τὸ τέλος, (α) ὑπὲρ τῶν υἱῶν Κορὲ ψαλμός. μς'.
MS.A. (α) ψαλμὸς τῷ Δαυίδ.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

Et (cc) adorabunt eum 14 filiæ 13
(dd) Tyri in muneribus: vultum tuum deprecabuntur [e] divites
(ee) plebis terræ. 15 Omnis glo- 14
ria (ff) ejus filiæ regis Eſebon,
in fimbriis (gg) aureis, Circuma- 15
micta, [†] variegata. 16 (hh) Afferentur regi virgines poſt eam: (ii)
proximæ ejus afferentur tibi.
17 Afferentur in lætitia, & ex- 16
ultatione: adducentur in templum
regis. 18 Pro (kk) patribus tuis 17
nati ſunt tibi filii: conſtitues eos principes ſuper omnem terram.
19 Memores (ll) erunt nominis 18
tui in omni generatione, & generatione: 20 Propterea populi confitebuntur [f] tibi in æternum, & in ſeculum ſeculi.

In finem, pro (*a*) filiis Core, pro 1
(*b*) arcanis [a] Pſalmus. *XLV.*

1 DEus noſter refugiu, et vir- 2
tus, adjutor in tribulationibus, quæ (c) invenerunt nos nimis. 2 Propterea non timebimus, 3
dum (d) turbatur terra, [b] & (e) transferuntur montes in (f) corda
marium. 3 (g) Sonuerunt, et [c] 4
turbatæ ſunt aquæ eorum: conturbati ſūt mōtes in fortitudine ej⁹.
4 (h) DIAPSALMA. [d] Flumi- 5
nis impet⁹ (i) lætificant civitatē Dei: (k) ſanctificavit tabernaculum ſuum Altiſſimus. 5 Deus in 6
medio ejus (l) non commovebitur: [e] adjuvabit eam Deus (m)
vultu. 6 (n) Conturbatæ ſunt 7
gentes, (o) inclinata ſunt regna: dedit vocē (p) ſuam [f]: mota eſt
terra. 7 Dominus virtutum no- 8
biſcum: ſuſceptor noſter Deus (q) Jacob. 8 DIAPSALMA. Venite, 9
& videte opera Domini, quæ poſuit prodigia ſuper terrā, (r) Au- 10
ferens bella uſque ad fines terræ. 9 Arcum conteret, & (ſ) confringet arma: & (t) ſcuta comburet in igne. 10 (u) Vacate, [g] 11
& videte, quoniam ego ſum De⁹: exaltabor in gentibus, exaltabor
in terra. 11 Dominus virtutum 12
nobiſcum: ſuſceptor noſter Deus Jacob.

In finem, (*a*) pro filiis Core 1
Pſalmus. *XLVI.*

Verſio ÆTHIOPICA.

14 ኦዋልደ፡ጢሮስ፡በአምኃ፨ 13
ወለገጽኪ፡ይትመሀለሉ፡ኵሎሙ፡አሕዛብ፡
ብዑላነ፡ምድር፨ ኵሉ፡ክብራ፡ለወለ 14 15
ተ፡ንጉሠ፡ሐሴቦን፡፡በዘ፡አዝፋረ፡ወርቅ፡
ዑፁፋት፡ወኍብርት፨ ወይወስዱ፡ለን 16
ጉሠ፡ደናግለ፡ድኅሬሃ።ወቢጻሂ፡ይወስ
ዱ፡ለከ፨ ወይወስድዎን፡በትፍሥሕ 17
ት፡ወበሐሤት።ወያበውእዎን፡ውስተ፡ጽ
ርሐ፡ንጉሥ፨ ህየንተ፡አበዊከ፡ተወ 18
ልዱ፡ለከ፡ደቂቅ።ወትሠይሞሙ፡መላ
እክተ፡ለኵሉ፡ምድር፨ ወይዜክሩ፡ 19
ስመከ፡በኵሉ፡ትውልደ፡ትውልድ፨
በእንተዝ፡ይገንዩ፡ለከ፡አሕዛብ፡እግዚኦ። 20
ለዓለም፡ወለዓለመ፡ዓለም፨

ፍጻሜ፡ዘደቂቀ፡ቆሬ፡በእንተ፡ኅብኣ
ት፡መዝሙር፡ዘደዊት።

ሀሌ አምላክነሰ፡ኃይልነ፡ወጸወንነ።ወረደ 1
ኢነ፡ውእቱ፡ለምንደቤነ፡ዘረከበነ፡ፈድፋ
ደ፨ በእንተዝ፡ኢንፈርህ፡ለእመ፡አድ 2
ለቅለቀት፡ምድር።ወእመ፤ፈለሱ፡አድ
ባር፡ውስተ፡ልበ፡ባሕር፨ ደምፁ፡ወተ 3
ሐውገ፡ማያቲሆሙ።ወአድለቅለቁ፡አድ
ባር፡እምኃይሉ፨ ፈለግ፡ዘይውሕዝ፡ 4
ያስተፈሥሕ፡ሀገረ፡እግዚአብሔር።ቀደ
ሰ፡ማኅደሮ፡ልዑል፨ እግዚአብሔር፡ 5
ውስተ፡ማእከላ፡ኢትትሀወክ።ወይረድኣ፡
እግዚአብሔር፡ፍጽመ፨ ደንገፁ፡አ 6
ሕዛብ፡ወተመይጡ፡ነገሥት።ወሀበ፡ቃ
ሎ፡ልዑል፡ወአድለቅለቀት፡ምድር፨
እግዚኦ፡ኃያላን፡ምስሌነ።ወምስካይነ፡ 7
አምላኩ፡ለያዕቆብ፨ ንዑ፡ወትርአዩ፡ 8
ግብሮ፡ለእግዚአብሔር።ዘገብረ፡መንክረ፡
በዲበ፡ምድር።ይስዕር፡ፀብአ፡እስከ፡አጽ
ናፈ፡ምድር፨ ይሰብር፡ቀስተ፡ወይቀጠ 9
ቅጥ፡ወልታ።ወያውዒ፡በእሳት፡ንዋየ፡ሐቅ
ል፨ አስተርክቡ፡ወአእምሩ፡ከመ፡አ 10
ነ፡ውእቱ፡እግዚአብሔር።ተለዐልኩ፡እ
ምአሕዛብ፡ወተለዐልኩ፡እምድር፨
እግዚኦ፡ኃያላን፡ምስሌነ።ወምሰካይነ፡ 11
አምላኩ፡ለያዕቆብ፨
ፍጻሜ፡ዘበእንተ፡ውሉደ፡ቆሬ፡
መዝሙር።

INTERP. ÆTHIOP. [e] omnes divites [†] & conſociata [f] tibi Domine *PSAL. XLV.* [a] Pſalmus Davidis. [b] & ſi transferentur montes in cor maris. [c] æſtuârunt aquæ [d] Flumen quod rapidè fluit lætificat [e] & adjuvabit eam Deus in finem. [f] Altiſſimus: & mota [g] & intelligite,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* بالهدايا يتلقون وجهك اغنياء شعب الارض * جميع مجد ابنة الملك من داخل ملبسة 13 14
باذيال مذهبة مزينة باشكال كثيرة * يدخلون الي الملك عذاري خلفها * يدخل اليه جميع 15
صواحبها * يدخلوهن بفرح وتهليل * يدخلوهن الي هيكل الملك * عوض ابايك يكونوا 16 17
لك ابناء * يقيمهم روساء علي جميع الارض ويذكرون اسمك في كل جيل جيل * فلهذا 18
تشكرك الشعوب يا الله الي الابد والي ابد الابد * الليلويا *

* المزمور الخامس والاربعون * لبني قورح * نبوة علي سراير الابن وعلي اهل 1
بيت حزقيا لما خلصوا من اهل دمشق * وعدده ك استيخن *

* الهنا هو ملجانا وقوتنا * ومعيننا في شدايدنا التي اصابتنا جدا * من اجل هذا فلسنا 2 3
نخاف اذا اضطربت الارض * وانقلبت الجبال في قلب البحار * عجت المياه وقلقت * الجبال من 4
عزته ترعرعت * مجاري الانهار تفرح مدينة الهنا * قدس العلي مسكنه * والله في وسطها لا 5 6
يزول * الله معيننا في اوان الصباح * قلقت الشعوب * واضطربت المملكات * ابدي صوته 7
فتزلزلت الارض * الرب اله القوات معنا * ناصرنا هو اله يعقوب * تعالوا لتنظروا اعمال الرب * 8 9
العجايب التي صنعها علي الارض * مزيل الحروب من اقاصي الارض * يكسر قسيهم ويرض 10
رماحهم * ويحرق تراسهم بالنار * تيقظوا واعلموا اني انا هو الله * اتعالي في الامم * واتعالي علي 11
الارض * الرب اله القوات معنا * ناصرنا هو اله يعقوب * الليلويا * 12

* المزمور السادس والاربعون * لبني قورح * وعدده * كز استيخن * 1

Cum muneribus occurrent faciei tuæ divites populi terræ. 13 *Omnis gloria filiæ re-* 14
gis intrinſecùs eſt, induta fimbriis auratis, decorata ſpeciebus variis. 15 *Ingrediuntur ad regem virgines poſt eam: ingre-*
dientur ad eum cuncti comites ejus. 16 *Introducent eas cum gaudio & exultatione:*
introducent eas in templum regis. 17 *Pro patribus tuis erunt tibi filii: conſtituet eos principes ſuper univerſam terram, & memores erunt nominis tui in omnem gene-*
rationem generationis. Propterea gratias 18 *agent tibi populi, O Deus, in æternum, & in ſeculum ſeculi. Alleluja.*

PSAL. XLV.
Filiis Choræ Prophetia de ſecretis Filii: & de gente Ezechiæ, 1
quando erepti fuerunt à Damaſcenis. Et num. Ver. 20.

DEus noſter eſt refugium noſtrum & 2
virtus noſtra, & adjutor noſter in tribulationibus noſtris quæ acciderunt nobis vehementer; 3 *Propterea nequaquam timebimus quum turbabitur terra, & ſubvertentur montes in corde marium.* 4 *Mugierunt aquæ, & commotæ ſunt: montes ob majeſtatem ejus contremuerunt.* 5 *Alvei fluminū lætificant in civitate Dei noſtri: Sanctificavit Altiſſimus habitaculū ſuū.*
6 *Et Deus in medio ejus, non recedet: Deus adjutor noſter temporibus matutinis.* 7 *Conturbati ſunt populi, & commota ſunt regna: Edidit vocem ſuam, & tremefacta eſt terra.* 8 *Dominus Deus virtutum nobiſcum eſt: adjutor noſter eſt Deus Jacobi.*
9 *Venite ad videnda opera Domini, miracula quæ poſuit ſuper terram:* 10 *Auferentis bella de finibus terræ. Franget arcus eorum, & contundet haſtas eorum, & comburet ſcuta eorum igne.* 11 *Certi eſtote & ſcitote, quòd ego ſum Deus, exaltabor in gentibus & exaltabor ſuper terram.* 12 *Dominus Deus fortitudinum nobiſcum: adjutor noſter eſt Deus Jacobi. Alleluja.*

PSAL. XLVI.
Filiis Choræ. Et num. Ver. 27. 1

תהלים : מח

.ovationis voce in Deo jubilate : palma plaudite populi Omnes
2 כָּל־הָעַמִּים תִּקְעוּ־כָף הָרִיעוּ לֵאלֹהִים בְּקוֹל רִנָּה׃
.terram omnem super magnus rex ; terribilis altissimus Dominus Quoniam
3 כִּי־יְהוָה עֶלְיוֹן נוֹרָא מֶלֶךְ גָּדוֹל עַל־כָּל־הָאָרֶץ׃
nobis Eliget .nostros pedes subter natio es & ; nos subter populos Ducet
4 5 יַדְבֵּר עַמִּים תַּחְתֵּינוּ וּלְאֻמִּים תַּחַת רַגְלֵינוּ׃ יִבְחַר־לָנוּ
Ascendit .Selah , dilexit quem Jahacob excellentiam : nostram hæreditatē
6 אֶת־נַחֲלָתֵנוּ אֶת־גְּאוֹן יַעֲקֹב אֲשֶׁר־אָהֵב סֶלָה׃ עָלָה
: cantate Deo Cantate .tubæ voce in Dominus ; jubilo in Deus
7 אֱלֹהִים בִּתְרוּעָה יְהוָה בְּקוֹל שׁוֹפָר׃ זַמְּרוּ אֱלֹהִים זַמֵּרוּ
canite , Deus terrræ omnis rex Quoniam .cantate nostro regi , cantate
8 זַמְּרוּ לְמַלְכֵּנוּ זַמֵּרוּ׃ כִּי מֶלֶךְ כָּל־הָאָרֶץ אֱלֹהִים זַמְּרוּ
thronum super sedit Deus : gentes super Deus Regnavit .intelligens
9 מַשְׂכִּיל׃ מָלַךְ אֱלֹהִים עַל־גּוֹיִם אֱלֹהִים יָשַׁב עַל־כִּסֵּא
, Abraham Dei populo sunt aggregati populorum *Magnifici* .suæ sanctitatis
10 קָדְשׁוֹ׃ נְדִיבֵי עַמִּים נֶאֱסָפוּ עַם אֱלֹהֵי אַבְרָהָם
.est elevatus vehementer ,terræ *scuta* Dei ipsius quoniam
כִּי לֵאלֹהִים מָגִנֵּי־אֶרֶץ מְאֹד נַעֲלָה׃

PSAL. XLVIII. מח

: valde laudabilis & , Dominus Magnus .Corach filiis cantus Canticum
1 שִׁיר מִזְמוֹר לִבְנֵי־קֹרַח׃ גָּדוֹל יְהוָה וּמְהֻלָּל מְאֹד
2 , terræ universæ gaudium, *climate* Pulcher .ejus sanctitatis monte ,nostri Dei civitate in
בְּעִיר אֱלֹהֵינוּ הַר־קָדְשׁוֹ׃ יְפֵה נוֹף מְשׂוֹשׂ כָּל־הָאָרֶץ
3 ejus *palatiis* in Deus .magni regis civitas : Aquilonis latera Sijon mons
4 הַר־צִיּוֹן יַרְכְּתֵי צָפוֹן קִרְיַת מֶלֶךְ רָב׃ אֱלֹהִים בְּאַרְמְנוֹתֶיהָ
.pariter transierunt ;*convenerunt* reges ecce Quoniam .elevationem ad est notus
5 נוֹדַע לְמִשְׂגָּב׃ כִּי־הִנֵּה הַמְּלָכִים נוֹעֲדוּ עָבְרוּ יַחְדָּו׃
eos apprehendit Tremor .festinaverunt ,sunt territi :sunt admirati sic ,viderunt Ipsi
6 הֵמָּה רָאוּ כֵּן תָּמָהוּ נִבְהֲלוּ נֶחְפָּזוּ׃ רְעָדָה אֲחָזָתַם
7 .*Tharsis* naves conteres Orientali vento In .parturientis tanquam dolor ; ibi
8 שָׁם חִיל כַּיּוֹלֵדָה׃ בְּרוּחַ קָדִים תְּשַׁבֵּר אֳנִיּוֹת תַּרְשִׁישׁ׃
civitate in , exercituum Domini civitate in vidimus sic ,audivimus Sicut
9 כַּאֲשֶׁר שָׁמַעְנוּ כֵּן רָאִינוּ בְּעִיר־יְהוָה צְבָאוֹת בְּעִיר
Cogitavimus .Selah , seculum in usque eam *firmabit* Deus ; nostri Dei
10 אֱלֹהֵינוּ אֱלֹהִים יְכוֹנְנֶהָ עַד־עוֹלָם סֶלָה׃ דִּמִּינוּ
tuum nomen Secundùm .tui templi *interiori* in , tuam misericordiam Deus
11 אֱלֹהִים חַסְדֶּךָ בְּקֶרֶב הֵיכָלֶךָ׃ כְּשִׁמְךָ
.tua dextera est plena justitia : terræ fines *super* tua laus sic , Deus
אֱלֹהִים כֵּן תְּהִלָּתְךָ עַל־קַצְוֵי־אֶרֶץ צֶדֶק מָלְאָה יְמִינֶךָ׃
.tua judicia propter Jehudah filiæ exultent , Sijon mons Lætetur
12 יִשְׂמַח הַר־צִיּוֹן תָּגֵלְנָה בְּנוֹת יְהוּדָה לְמַעַן מִשְׁפָּטֶיךָ׃
vestrum cor Ponite .ejus turres numerate : eam circuite & ,Sijon Circundate
13 סֹבּוּ צִיּוֹן וְהַקִּיפוּהָ סִפְרוּ מִגְדָּלֶיהָ׃ שִׁיתוּ לִבְּכֶם
14 Quoniā.novissima progenie in enarretis ut : ejus palatia roborate:ej⁹ antemurale ad
15 לַחֵילָה פַּסְּגוּ אַרְמְנוֹתֶיהָ לְמַעַן תְּסַפְּרוּ לְדוֹר אַחֲרוֹן׃ כִּי
.mortem *super* nos ducet ipse : *perpetuum* & ,seculum noster Deus Deus iste
זֶה אֱלֹהִים אֱלֹהֵינוּ עוֹלָם וָעֶד הוּא יְנַהֲגֵנוּ עַל־מוּת׃

תרגום TARGUM.

2 כל עמיא תקעו ידא בחדוא יבבו קדם יי בקל
3 תושבחתא: ארום יי עלאה דחילא מלך רב על
4 כל ארעא: יקטל עממיא במותנא חלופנא ואומיא
5 יכבוש תחות רגלנא: ירעי לנא למירת ית
אחסנתנא ית בית מקדשא דיעקב דרחים
6 לעלמין: יתעלי יי ביבבא יי בקל שופרא: שבחו
7 קדם יי שבחו שבחו למלכנא שבחו: ארום
8 מלך כל יתבי ארעא יי שבחו קדמוי בשכלא
9 טבא: מלך יי על עממיא יי יתב על כורסיה
10 דקודשיה: רבני עממיא אתכנשו עממיא די
מהימנין לאלהא דאברהם ארום קדם יי תריסי
ארעא לחדא אתעלא:

מח

1 שירתא ותשבחתא על ידהון דבני קרח: רב יי
2 ומשבא לחדא בירושלם קרתא דאלהנא ובטור
3 בית מקדשיה: שפיר היך חתנא חדות כל יתבי
ארעא טורא דציון שדא דצפונא קריתא דמלכא
4 5 רבא: יי בברניתהא אתידע לתקוף: ארום הא
6 מלכיא אתחברו עברו כחדא: הנון חמון היכנא
תמהו על נסיא ופרישתא אתבהילו אוף ערקו:
7 זעיא אחדתנון תמן רתיתא היך אתא ילדא:
8 בקדום תקיף כאשא דמן קדם יי תתבר אלפיא
9 דטרסים: ימרון בני ישראל היך מה די שמענא
היכנא חמינא בקרתא דיי צבאות בקרתא
10 דאלהנא יי ישכללנה עד עלמי עלמין: אשוינו
11 יי טובך במציעות היכלך: היך כשמך יי היכדין
תושבחתך על סיפי ארעא צדקתא מליא ימינך:
12 יחדי טור ציון יבוען בתושבחן כנישתא דבית
13 יהודה מטול דינך: אקיפו ציון יבועון וחזרו עלה
14 מנו מגדלהא: שוו לבכון לאוכלוסהא דמן
לעיל ברניתהא מטול דתשתעון לדר אוחרן:
15 ארום דין יי הוא אלהנא שכנתיה בגוה ומדוריה
בשמיא לעלמי עלמין הוא ידברננא ביומי
טליותנא:

PARAPH. CHALD. Vers. La

OMnes populi plaudite manibus cu gaudio; jubilate coram *Domino* in voce laudis. Quoniam Deus altissimus terribilis est, rex magnus super *omnem terram*. Occîdet populos internecione propter nos, & gentes subjiciet pedibus nostris. Complacebit sibi in nobis, ut jure hæreditario possideamus hæreditatem nostram, domum sanctuarii Jaacob, quam amabit semper. Exaltabitur *Dominus* in jubilo, Dominus in voce tubæ. Laudate coram Domino laudate, laudate regem nostrum laudate. Quoniam rex est *omnium habitatorum* terræ *Dominus*: laudes dicite coram eo cum intellectu bono. Regnat *Dominus* super populos: *Dominus* sedet super thronum *sanctitatis* suæ. Principes populorum congregati sunt, *populorum* fidelium Deo ipsius Abraham: quia *coram Domino* sunt clypei terræ, vehementer exaltatus est.

Canticum *&* *laus* per manus filiorum Korahh.

PSAL. XLVIII.

MAgnus est Dominus & laudabilis valdè in Jerusalem, civitate Dei nostri, *& in* monte domus sanctuarii ipsius. Pulcher ut sponsus, gaudium omnium habitatorum terræ, mons Sion *à latere* Aquilonis, civitas regis illi⁹ magni. *Domin⁹* in palatiis suis not⁹s est potentia. Quoniam ecce reges consociati sunt, transierunt simul. Ipsi viderunt, sic admirati sunt, propter signa & miracula conturbati sunt atque fugerunt. Tremor apprehendit eos ibi; tremor sicut mulieris parturientis. Vento Orientali valido velut ignis à conspectu Domini confringes naves Tharsis. Dicent *filii Israel*, Sicut audivimus, sic vidimus in civitate Domini exercituum in civitate Dei nostri, *Dominus* fundabit eam in secula seculorum. *Æstimavimus Domine, benignitatem tuam* in medio templi tui. Ecce sicut nomen tuum Domine, sic ecce laus tua usque ad fines terræ; justitiâ plena est dextera tua. Lætetur mons Sion, *exultent* laudibus *congregationis* domus Jehudæ propter judicia tua. Circundate Sion, *exultent* & circuite eam, numerate turres ejus. Ponite cor vestrum ad *cœt⁹ ejus* qui *sunt* supra palatia ejus ut enarretis in generatione novissima. Quoniam hic *Dominus* est De⁹ noster; majestas ejus intra eam, & habitatio ejus in cœlis in secula seculorum : ipse ducet nos in diebus pueritiæ nostr

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 * ܟܠܟܘܢ ܥܡܡܐ ܩܘܫܘ ܟܦܐ. ܘܫܒܚܘ ܠܐܠܗܐ ܒܩܠܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ : * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ
3 4 ܪܡܐ ܘܕܚܝܠܐ. ܘܗܘܝܘ ܡܠܟܐ ܪܒܐ ܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ : * ܫܥܒܕ ܠܢ ܥܡܡܐ ܬܚܝܬܝܢ.
5 6 ܘܐܡܘܬܐ ܠܬܚܝܬ ܪܓܠܝܢ : * ܐܓܒܝܢ ܝܪܬܘܬܗ ܘܐܝܩܪܗ ܕܝܥܩܘܒ ܕܐܚܒ. * ܣܠܩ ܐܠܗܐ
7 8 ܒܫܘܒܚܐ ܘܡܪܝܐ ܒܩܠܐ ܕܩܪܢܐ : * ܙܡܪܘ ܠܐܠܗܐ ܒܫܘܒܚܐ ܙܡܪܘ ܠܡܠܟܢ. * ܡܛܠ
9 ܕܡܠܟܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ ܐܠܗܐ ܗܘ ܙܡܪܘ ܠܗ ܬܫܒܘܚܬܐ : * ܐܡܠܟ ܐܠܗܐ ܥܠ ܥܡܡܐ.
10 ܐܠܗܐ ܝܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܩܕܝܫܐ : * ܪܫܝܗܘܢ ܕܥܡܡܐ ܐܬܦܢܝܘ ܠܘܬ ܐܠܗܗ ܕܐܒܪܗܡ.
11 ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܐܝܬ ܐܘܚܕܢܐ ܕܐܪܥܐ ܘܛܒ ܐܬܥܠܝ.

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܒܢܝ * ܩܘܪܚ ܐܡܝܪ ܥܠ ܫܝܚܘܬܐ ܕܥܡܡܐ.
2 ܘܬܫܒܘܚܬܐ ܕܥܕܬܐ ܠܐܠܗܐ. ܘܬܒܠܬܐ ܕܪܕܘܦܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܚ. * ܪܒ ܗܘ ܡܪܢ
3 ܘܡܫܒܚ ܛܒ ܒܡܕܝܢܬܗ ܕܐܠܗܢ : ܘܒܛܘܪܗ ܩܕܝܫܐ ܘܡܫܒܚܐ. * ܚܕܘܬܐ ܒܟܠܗ
4 ܐܪܥܐ : ܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܕܒܣܛܪܘܗܝ ܓܪܒܝܐ. ܡܕܝܢܬܗ ܗܝ ܕܡܠܟܐ ܪܒܐ : * ܐܠܗܐ ܒܡܓܕܠܝܗ ܝܕܝܥ
5 6 ܥܘܫܢܗ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܠܟܐ ܐܬܛܝܒܘ ܘܥܒܪܘ ܐܟܚܕܐ : * ܗܢܘܢ ܚܙܘ ܘܐܬܕܡܪܘ
7 8 ܘܐܬܬܙܝܥܘ * ܘܪܬܝܬܐ ܐܚܕܬ ܐܢܘܢ. ܚܒܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ : * ܒܪܘܚܐ ܚܣܝܢܬܐ ܬܬܒܪܢ ܐܠܦܐ
9 ܕܬܪܫܝܫ. * ܐܝܟ ܕܫܡܥܢ ܗܟܢܐ ܚܙܝܢ : ܒܡܕܝܢܬܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܒܡܕܝܢܬܗ ܕܐܠܗܢ :
10 ܐܠܗܐ ܫܪܪܗ ܠܥܠܡ. * ܙܡܪܐ * ܣܟܝܢ ܐܠܗܐ ܠܛܝܒܘܬܟ ܒܓܘ
11 ܗܝܟܠܟ : * ܐܝܟ ܫܡܟ ܐܠܗܐ ܗܟܢܐ ܬܫܒܚܬܟ. ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ ܟܐܢܘܬܐ ܡܠܝܐ
12 13 ܝܡܝܢܟ : * ܢܚܕܐ ܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܘܢܪܘܙܢ ܒܢܬܗ ܕܝܗܘܕܐ. ܡܛܠ ܕܝܢܝܟ ܡܪܝܐ : * ܐܬܟܪܘ
14 ܠܨܗܝܘܢ ܘܐܬܟܪܘܗ̇ ܘܡܢܘ ܡܓܕܠܝܗ̇. * ܣܝܡܘ ܠܒܟܘܢ ܥܠ ܚܝܠܗ̇ ܘܥܩܪܘ
15 ܒܝܬܗ̇ : ܕܬܫܬܥܘܢ ܠܕܪܐ ܐܚܪܢܐ. * ܙܡܪܐ * * ܕܗܢܘ ܐܠܗܐ ܐܠܗܢ : ܠܥܠܡ
ܘܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. ܗܘ ܢܕܒܪܢ ܠܥܠ ܡܢ ܡܘܬܐ.

OMnes gentes, plaudite manibus, & glorificate Deum voce laudis. Quoniam Dominus excelsus atque formidabilis, ipse est rex magnus super omnem terram. Qui subjecit nobis gentes, & nationes sub pedibus nostris. Seligere fecit nos hæreditatem suam, & honorē Jacob quem dilexit. Ascendit Deus cum gloria, & Dominus cum voce cornu. Psallite Deo cum laude, canite Regi nostro. Quoniam rex totius terræ Deus est canite ei laudem. Regnavit Deus super gentes, Deus sedit super solio suo sancto. Principes populorum, revertimini ad Deum Abrahæ : quoniam Dei sunt territoria terræ & summoperè elevatus est.

PSAL. XLVIII.

A filiis Corah compositus, contra superbiam gentium. Tum laus Ecclesiæ ad Deum & destructio persecutorum. Vers. 28.

MAgnus est Dominus noster, & laudabilis plurimùm in civitate Dei nostri & in monte ejus sancto atque glorioso. Gaudium est in universa terra mons Sion qui est in lateribus Aquilonis, civitas est regis magni. Deus in turribus ejus notum facit robur suum. Quoniam ecce reges parârunt se, & transierunt simul. Ipsi considerârunt & obstupuerunt atque trepidârunt, Et terror apprehendit eos, dolores sicut parturientis: Vento vehementi conterentur naves Tharsis. Sicut audivimus, ita vidimus in civitate Domini fortissimi, in urbe Dei nostri : Deus firmavit illam usq; in sempiternū. * *Diapsalma.* * Speravimus Deus, gratiam tuam intra templum tuum. Sicut nomen tuum, Deus, ita laudes tuæ, usque ad extremitates terræ: justitiæ plena est dextera tua. Gaudeat mons Sion, & exultent filiæ Juda propter judicia tua Domine. Circuite Sion, & perlustrate eam, atq; numerate turres ejus. Intendite cor vestrum in fortitudinem ejus & eradicate ædes ejus, ut enarretis generationi alteri. * *Diapsalma.* * Hunc esse Deum, Deum nostrum in æternum & in seculum seculorum ; Ipse ducet nos supra mortem.

Verſio VULG. LAT.

2 OMnes gentes plaudite manibus: jubilate Deo in voce exultationis.
3 Quoniam Dominus excelſus, terribilis:
4 Rex magnus ſuper omnem terram. Subjecit populos nobis, & gentes ſub pedib⁹
5 noſtris. Elegit nobis hæreditatem ſuam,
6 ſpeciem Jacob, quam dilexit. Aſcendit Deus in jubilo, & Dominus in voce tu-
7 bæ. Pſallite Deo noſtro, pſallite: pſalli-
8 te Regi noſtro, pſallite. Quoniam Rex
9 omni terræ Deus: pſallite ſapienter. Regnabit Deus ſuper gentes: Deus ſedet ſu-
10 per ſedem ſanctam ſuam. Principes populorum congregati ſunt cum Deo Abraham: quoniam dii fortes terræ, vehementer elevati ſunt.

1 Pſalmus Cantici filiis Core ſecundâ Sabbati. XLVII.

2 MAgnus Dominus, & laudabilis nimis in civitate Dei noſtri, in monte
3 ſancto ejus. Fundatur exultatione univerſæ terræ mons Sion, latera Aquilonis, ci-
4 vitas Regis magni. Deus in domib⁹ ejus
5 cognoſcetur, cùm ſuſcipiet eam. Quoniã ecce reges terræ congregati ſunt: conve-
6 nerunt in unũ. Ipſi videntes ſic admirati
7 ſunt, conturbati ſunt, commoti ſunt: Tremor apprehendit eos. Ibi dolores ut par-
8 turientis, In ſpiritu vehementi conteres
9 naves Tharſis. Sicut audivim⁹, ſic vidim⁹ in civitate Domini virtutum, in civitate Dei noſtri: Deus fundavit eam in æter-
10 num. Suſcepimus, Deus, miſericordiam
11 tuam, in medio templi tui. Secundùm nomen tuum, Deus, ſic & laus tua in fines
12 terræ: juſtitiâ plena eſt dextera tua. Lætetur mons Sion, & exultent filiæ Judæ,
13 propter judicia tua, Domine. Circumdate Sion, & complectimini eam: narrate
14 in turribus ejus. Ponite corda veſtra in virtute ejus: & diſtribuite domos ejus,
15 ut enarretis in progenie altera. Quoniam hic eſt Deus, Deus noſter in æternum, & in ſeculum ſeculi: ipſe reget nos in ſecula.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

2 †Πάντα τὰ ἔθνη κροτήσατε χεῖρας, †ἀλαλάξατε
3 τῷ θεῷ ἐν φωνῇ ἀγαλλιάσεως. †Ὅτι κύριος ὕψιστος, φοβερὸς, †βασιλεὺς μέγας ἐπὶ πᾶσαν τὴν
4 γῆν. †Ὑπέταξε λαοὺς ἡμῖν, καὶ ἔθνη ὑπὸ τοὺς πό-
5 δας ἡμῶν. †Ἐξελέξατο ἡμῖν τὴν κληρονομίαν (β) αὐτοῦ, †τὴν καλλονὴν Ἰακὼβ, ἣν (γ) ἠγάπησεν. ΔΙ-
6 ΑΨΑΛΜΑ. †Ἀνέβη ὁ θεὸς ἐν ἀλαλαγμῷ, †κύ-
7 ριος ἐν φωνῇ σάλπιγγος. †Ψάλατε τῷ θεῷ ἡμῶν, ψάλατε, †ψάλατε τῷ βασιλεῖ ἡμῶν, ψάλατε.
8 †Ὅτι βασιλεὺς πάσης τῆς γῆς ὁ θεὸς, †ψάλατε
9 συνετῶς. Ἐβασίλευσεν ὁ θεὸς (δ) ἐπὶ τὰ ἔθνη,
10 †ὁ θεὸς κάθηται ἐπὶ θρόνου ἁγίου αὐτοῦ. †Ἄρχοντες λαῶν συνήχθησαν μετὰ τοῦ θεοῦ Ἀβραὰμ, †ὅτι τοῦ θεοῦ οἱ κραταιοὶ τῆς γῆς σφόδρα ἐπήρθησαν.

1 (α) Ψαλμὸς ᾠδῆς τοῖς υἱοῖς Κορὲ δευτέρᾳ σαββάτου. μζʹ.

2 †Μέγας κύριος, καὶ αἰνετὸς σφόδρα †ἐν πόλει
3 τοῦ θεοῦ ἡμῶν, ἐν ὄρει ἁγίῳ αὐτοῦ †Εὐρίζων ἀγαλλιάματι (β) πάσης τῆς γῆς, †ὄρη Σιὼν τὰ πλευρὰ τοῦ Βορρᾶ, †ἡ πόλις τοῦ βασιλέως τοῦ μεγάλου.
4 †Ὁ θεὸς ἐν ταῖς βάρεσιν αὐτῆς γινώσκεται, ὅταν (*)
5 ἀντιλαμβάνηται αὐτῆς. †Ὅτι ἰδοὺ οἱ βασιλεῖς τῆς γῆς
6 συνήχθησαν, (γ) ἦλθοσαν ἐπὶ τὸ αὐτό. †Αὐτοὶ (**) ἰδόντες οὕτως ἐθαύμασαν, †ἐταράχθησαν, ἐσαλεύθησαν,
7 Τρόμος (δ) ἐπελάβετο αὐτῶν· †ἐκεῖ ὠδῖνες ὡς
8 τικτούσης. †Ἐν πνεύματι βιαίῳ (ε) συντρίψεις
9 πλοῖα Θαρσίς. †Καθάπερ ἠκούσαμεν, (ζ) οὕτως καὶ εἴδομεν, †ἐν πόλει κυρίου τῶν δυνάμεων, †ἐν πόλει τοῦ θεοῦ ἡμῶν, †ὁ θεὸς ἐθεμελίωσεν αὐτὴν εἰς τὸν (η)
10 αἰῶνα. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †Ὑπελάβομεν ὁ θεὸς τὸ
11 ἔλεός σου ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ σου. †Κατὰ τὸ ὄνομά σου ὁ θεὸς, οὕτως καὶ ἡ αἴνεσίς σου ἐπὶ τὰ πέρατα
12 τῆς γῆς, †δικαιοσύνης πλήρης ἡ δεξιά σου. †Εὐφρανθήτω τὸ ὄρος Σιὼν, †(θ) ἀγαλλιάσθωσαν αἱ θυγατέρες τῆς Ἰουδαίας †(ι) ἕνεκα τῶν κριμάτων σου κύριε.
13 †Κυκλώσατε Σιὼν, καὶ περιλάβετε αὐτὴν, †διηγή-
14 σασθε ἐν τοῖς πύργοις αὐτῆς. †Θέσθε τὰς καρδίας ὑμῶν εἰς τὴν δύναμιν αὐτῆς, †καὶ καταδιέλεσθε τὰς βάρεις αὐτῆς, †ὅπως ἂν διηγήσησθε εἰς γενεὰν ἑ-
15 τέραν. †Ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ θεὸς ἡμῶν εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, †αὐτὸς ποιμανεῖ ἡμᾶς εἰς τοὺς αἰῶνας.

MS.A. (β) ἑαυτοῦ, (γ) ἠγάπησεν. Ἀνέβη (δ) ἐπὶ πάντα τὰ Ψαλμ. μζʹ. MS.A. (α) Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β)* πᾶσα τῇ γῇ, (*) ἀντιλαμβάνεται (γ) διῆλθον (**) ἰδόντες (δ) ὑπελάβετο (ε) συντρίψει (ζ) οὕτως ἴδαμεν, (η) αἰῶνα. Ὑπελάβομεν (θ) καὶ ἀγαλλιάσθωσαν (ι) ἕνεκεν

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

1 OMnes gentes plaudite (b) [a] manibus: jubilate (c) 2
Deo in voce exultationis. 2 Quoniam Dominus excelſus, terribilis, 3
rex magnus ſuper omnem terram.
3 Subjecit (d) populos nobis, & gentes ſub pedibus noſtris. 4
4 Elegit nobis (e) hæreditatem ſuam: 5
(f) ſpeciem Jacob, quam dilexit.
DIAPSALMA. 5 Aſcendit De⁹ in jubilo, Dominus in voce [b] 6
tubæ. 6 Pſallite Deo noſtro, pſallite: pſallite regi noſtro, pſallite. 7
7 Quoniam rex omnis terræ De⁹: 8
pſallite intelligenter. 8 Regnavit 9
Deus (g) ſuper [c] gentes: Deus ſedet ſuper ſedem ſanctam ſuam.
9 (h) Principes populorum congregati ſunt cum Deo Abraham. 10
10 Quoniam (i) [d] Dei fortes terræ valdè levati ſunt.

Pſalmus (a) Cantici filiis Core ſecundâ Sabbati. XLVII. 1

1 MAgnus Dominus, & [a] 2
laudabilis (b) nimis: in civitate Dei noſtri, in monte ſancto ejus. 2 (c) [b] Benè radicans 3
exultatione univerſæ terræ montes (d) Sion, (e) latera Aquilonis,
civitas regis magni. 3 [c] Deus in 4
(f) domibus ejus cognoſcitur, cũ
ſuſcipiet eam. 4 Quoniam ecce (g) 5
reges terræ congregati ſunt, (h)
venerunt in unum. 5 [d] Ipſi vi- 6
dentes ſic (i) admirati ſunt, conturbati ſunt, [e] commoti ſunt;
Tremor apprehẽdit eos. 6 Ibi dolo- 7
res, ut parturientis: In ſpiritu (k) 8
vehemẽti conteres naves Tharſis.
7 Sicut audivimus, ita (l) & vi- 9
dimus in civitate Domini virtutum; in civitate Dei noſtri: Deus fundavit eam in æternum. DIA-
PSALMA. 8 (m) Suſcepimus, 10
Deus, miſericordiam tuam (n) in
medio populi tui. 9 Secundùm no- 11
men tuum, Deus; ſic & laus tua in [f] fines terræ: juſtitiâ plena eſt dextera tua. 10 (o) Lætetur 12
mons Sion, exultent filiæ Judææ, (p) propter judicia tua, Domine.
11 Circundate Sion, (q) & com- 13
plectimini eam; (r) narrate in turribus ejus. 12 (ſ) Ponite corda 14
veſtra in virtute ejus: & diſtribuite domus ejus, ut enarretis in
(t) progenie altera. 13 Quoniam 15
hic eſt Deus noſter in æternum, & in ſeculum ſeculi: ipſe reget nos in (u) ſecula.

Verſio ÆTHIOPICA.

ሀ፤ ኵልክሙ፡ አሕዛብ ፡ ጥፍሑ፡ እደዊክ 1
ሙ፡፡ወየብቡ፡ ለእግዚአብሔር፡በቃለ፡ትፍ
ሥሕት፡፡=፦ እስመ፡ ልዑል፡ ወግሩም፡ እ 2
ግዚአብሔር፡፡ወንጉሥ፡ ዐቢይ፡ ውእቱ፡ ዲ
በ፡ኵሉ፡ምድር ፡፡=፦ አግረረ፡ ለነ፡አሕዛ 3
ብ፡ወሕዝብ፡ታሕተ፡እገሪነ፡፡=፦ ወኀረየነ፡ 4
ሎቱ ፡ ለርስቱ፡፡ሠና ፡ ለያዕቆብ ፡ ዘአፍቀ
ረ፡፡=፦ ዐርገ፡ እግዚአብሔር ፡ በይበቤ፡፡ 5
ወእግዚእነ፡በቃለ፡ቀርን፡፡=፦ ዘምሩ፡ለአ 6
ምላክነ፡ዘምሩ፡፡ዘምሩ፡ ለንጉሥነ፡ ዘም
ሩ፡፡=፦ እስመ፡ንጉሥ፡እግዚአብሔር፡ለ 7
ኵሉ፡ምድር፡፡ዘምሩ፡ ልብወ፡ 8 ነግሠ፡
እግዚአብሔር፡ላዕለ፡ ኵሉ፡ አሕዛብ፡፡እ
ግዚአብሔርሰ፡ይነብር ፡ ዲበ፡ መንበሩ፡ቅዱ
ስ፡፡=፦ መላእክተ፡አሕዛብ፡ተጋብኡ፡ም 9
ስለ፡አምላከ፡አብርሃም፡፡=፦ እስመ፡ለእ 10
ግዚአብሔር ፡ ጽኑዓን ፡ ምድር፡ ፈድፋደ፡
ተለዓሉ፡፡=፦

ማኅሌት፡መዝሙር፡ዘደቂቀ፡ቆሬ፡በሰ
ኑታ፡ሰንበት፡፡

ሀገ ዐቢይ፡ እግዚአብሔር፡ወብዙኅ፡ ስኡ 1
ቱቱ፡፡በሀገረ ፡ አምላክነ ፡ በደብረ ፡ መቅደ
ሱ፡፡=፦ ዘይሌዝዝ፡ትፍሥሕተ፡ለኵሉ፡ 2
ምድር፡፡አድባረ፡ጽዮን፡ በገቦ፡ መስዕ፡፡ሀገ
ሩ፡ለንጉሥ፡ዐቢይ፡፡=፦ እግዚአብሔር፡ 3
ያአምር፡ክበዲሃ፡ሶበ፡ ተመጠውዋ፡፡=፦ እ 4
ስመ፡ናሁ፡ ነገሥተ፡ ምድር፡ ተጋብኡ፡ወመ
ጽኡ፡ኅቡረ፡፡=፦ እሙንቱሰ፡ዘንተ፡ርእዮ 5
ሙ ፡ አንከሩ፡፡ደንገፁ ፡ ወፈርሁ ፡ ወአኃዞ
ሙ፡ረዐድ፡፡=፦ ወሐሙ፡በህየ፡ከመ፡እንተ፡ 6
ትወልድ፡፡በነፋስ፡ ኃያል፡ ትቀጠቅጦን፡ ለአ
ሕማረ፡ተርሴስ፡፡=፦ በከመ፡ሰማዕነ፡ከማ 7
ሁ፡ርኢነ፡፡በሀገረ፡እግዚአ፡ኃያላን፡በሀገረ፡
አምላክነ ፡፡ እግዚአብሔር ፡ ሣረራ፡ ለዓለ
ም፡፡=፦ ተወከፍነ፡ እግዚኦ፡ ሣህለከ፡በማ 8
እከለ፡ ሕዝብከ፡፡=፦ ወበከመ፡ ስምከ፡ከ 9
ማሁ፡ስብሐቲከ፡በኵሉ፡አጽናፈ፡ምድር፡፡
ጽድቅ፡ ምሉእ፡ የማንከ፡፡=፦ ይትፈሣሕ፡ 10
አድባረ ፡ ጽዮን፡፡ወይትሐሠያ፡ አዋልደ፡ይ
ሁደ፡፡በእንተ፡ፍትሕከ፡እግዚኦ፡፡=፦ አግ 11
ትዋ፡ለጽዮን፡ ወሕቀፍዋ፡፡ወተናገሩ፡ በውስ
ተ፡ማኅፈዲሃ፡፡=፦ ደዩ፡ ልብክሙ፡ ውስተ፡ 12
ኃይላ ፡፡ ወትትካፈልዎ፡ ለክበዲሃ ፡፡ ከመ፡
ትንግሩ፡ለካልእ፡ትውልድ፡፡=፦ ከመ፡ዝን 13
ቱ፡ ውእቱ ፡ አምላክነ፡፡ለዓለም ፡ ወለዓለ
ም፡ዓለም ፡፡ ወውእቱ ፡ ይሬእየነ፡ እስከ፡
ለዓለም፡፡=፦

INTERP. ÆTHIOP. [a] manibus veſtris: [b] cornu. [c] omnes gentes: [d] ipſius Dei fortes terræ valdè PSAL. XLVII. [a] ampliſſima eſt gloria ejus: [b] Qui mandavit lætitiam univerſæ terræ [c] Deus in palatiis ejus [d] Hi quidem ipſi videntes eos [e] timuerunt, & tremor [f] omnes fines

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

2 3 * صَفِّقُوا يَا جَمِيعَ ٱلْأُمَمِ بِأَيْدِيكُمْ هَلِّلُوا لِلّٰهِ بِصَوْتِ ٱلْفَرَحِ * فَإِنَّ ٱلرَّبَّ عَالٍ مَخُوفٌ * هُوَ ٱلْمَلِكُ
4 5 ٱلْعَظِيمُ عَلَى جَمِيعِ ٱلْأَرْضِ * أَخْضَعَ ٱلشُّعُوبَ لَنَا * وَٱلْأُمَمَ تَحْتَ أَرْجُلِنَا * ٱخْتَارَنَا مِيرَاثًا لَهُ * جَمَالَ
6 7 يَعْقُوبَ ٱلَّذِي أَحَبَّ * صَعِدَ ٱللّٰهُ بِٱلتَّهْلِيلِ وَٱلرَّبُّ بِصَوْتِ ٱلْبُوقِ * رَتِّلُوا لِإِلٰهِنَا رَتِّلُوا * رَتِّلُوا
8 9 لِمَلِكِنَا رَتِّلُوا * فَإِنَّ ٱلرَّبَّ مَلِكُ ٱلْأَرْضِ كُلِّهَا * رَتِّلُوهُ بِفَهْمٍ * فَإِنَّ ٱلرَّبَّ قَدْ صَارَ مَلِكًا عَلَى جَمِيعِ
10 ٱلْأُمَمِ * ٱللّٰهُ جَالِسٌ عَلَى كُرْسِيِّهِ ٱلْمُقَدَّسِ * رُؤَسَاءُ ٱلشُّعُوبِ أَقْبَلُوا إِلَى إِلٰهِ إِبْرٰهِيمَ * لِأَنَّ أَعِزَّاءَ ٱللّٰهِ
ٱرْتَفَعُوا جِدًّا عَلَى ٱلْأَرْضِ * ٱللَّيْلُويَا * ٱلْمَزْمُورُ ٱلسَّابِعُ وَٱلْأَرْبَعُونَ *

1 * تَسْبِحَةٌ لِبَنِي قُورَحَ فِي ٱلسَّبْتِ ٱلثَّانِي * وَعَدَدُهُ * كط * ٱسْتِيخُن *

2 3 * عَظِيمٌ هُوَ ٱلرَّبُّ وَمُبَارَكٌ جِدًّا * فِي مَدِينَةِ إِلٰهِنَا عَلَى جَبَلِهِ ٱلْمُقَدَّسِ * يَكُونُ ٱلْفَرَحُ فِي ٱلْأَرْضِ
4 كُلِّهَا * جِبَالُ صَهْيُونَ ٱلشَّامِخَةُ * فِي جَانِبِ ٱلشَّمَالِ مَدِينَةُ ٱلْمَلِكِ ٱلْعَظِيمِ * ٱللّٰهُ يُعْرَفُ فِي قُصُورِهَا
5 6 إِذَا قَبِلَهَا * لِأَنَّ مُلُوكَهَا قَدِ ٱجْتَمَعُوا وَأَتَوْا جَمِيعًا * هُمْ نَظَرُوا وَهٰكَذَا تَعَجَّبُوا * قَلِقُوا وَٱضْطَرَبُوا
7 8 9 * وَأَخَذَتْهُمُ ٱلرِّعْدَةُ وَٱلطَّلَقَاتُ * هُنَاكَ مِثْلَ ٱلَّتِي تَلِدُ * بِرِيحٍ شَدِيدَةٍ تُحَطِّمُ سُفُنَ تَرْسِيسَ * كَمَا
10 سَمِعْنَا كَذٰلِكَ رَأَيْنَا * فِي مَدِينَةِ إِلٰهِنَا * ٱللّٰهُ أَسَّسَهَا إِلَى ٱلْأَبَدِ * ٱللّٰهُمَّ بَشَّرَنَا بِرَحْمَتِكَ فِي وَسَطِ شَعْبِكَ *
11 12 * كَمِثْلِ ٱسْمِكَ يَا ٱللّٰهُ * هٰكَذَا تَسْبِحَتُكَ مِنْ أَقْصَى ٱلْأَرْضِ * يَمِينُكَ مَمْلُوءَةٌ عَدْلًا * لِتَفْرَحْ جِبَالُ
13 صَهْيُونَ * وَلْتَتَهَلَّلْ بَنَاتُ يَهُوذَا لِأَجْلِ أَحْكَامِكَ يَا رَبُّ * أَحِيطُوا بِصَهْيُونَ وَٱكْتَنِفُوهَا * حَدِّثُوا
14 فِي أَبْرَاجِهَا * أَعْدِلُوا بِقُلُوبِكُمْ إِلَى قُوَّتِهَا * وَٱقْسِمُوا عَلَيْكُمْ قُصُورَهَا * لِكَيْمَا تُخْبِرُوا بِهِنَّ جِيلًا
15 آخَرَ * إِنَّ هٰذَا هُوَ إِلٰهُنَا إِلَى ٱلْأَبَدِ * وَهُوَ ٱلَّذِي يَرْعَانَا إِلَى ٱلْأَبَدِ * وَإِلَى أَبَدِ ٱلْأَبَدِ * ٱللَّيْلُويَا *

PLaudite, O omnes gentes, manibus ve- 2
ſtris: jubilate Deo voce lætitiæ. Quia 3
Dominus altiſſimus eſt, terribilis. Ipſe eſt rex magnus ſuper univerſam terram.
Subjecit populos nobis, & gentes ſub pe- 4
dibus noſtris. Elegit nos hæreditatem ſi- 5
bi, decorem Jacob quem dilexit. Aſcen- 6
dit Deus cum jubilatione, et Dominus cum voce buccinæ. Pſallite Deo noſtro, pſalli- 7
te: pſallite regi noſtro, pſallite: Quoniam 8
Dominus rex eſt univerſæ terræ. Pſallite ei cum intellectu: Quia Dominus jam 9
factus eſt rex ſuper omnes gentes, Deus ſedet ſuper thronum ſuum ſanctum. Prin- 10
cipes populorum venerunt ad Deum Abrahæ, quoniam potentes Dei elevati ſunt admodùm ſuper terram. Alleluja.

PSAL. XLVII.

Canticum filiorum Choræ de Sabbatho ſecundo. Et num. ver. 29. 1

MAgnus eſt Dominus & benedictus 2
valdè in civitate Dei noſtri, ſuper montem ejus ſanctum. Erit gaudium in 3
terra tota: montes Sion excelſi, in latere Aquilonis civitas regis magni. Deus no- 4
tus fiet in palatiis ejus cùm ſuſceperit eam. Quoniam reges ejus jam congregati 5
ſunt, & venerunt ſimul. Ipſi vide- 6
runt atque ita admirati ſunt, conturbati ſunt & commoti. Et invaſit eos tremor 7
& dolores ibi, ut ejus quæ parturit. Ven- 8
to vehementi confringes naves Tharſis. Prout audivimus, ſic vidimus in civitate 9
Dei noſtri, Deus fundavit eam in æternum. Deus, narravimus miſericordiam 10
tuam in medio populi tui. Sicut nomen 11
tuum, O Deus, ita laus tua ab extrema terra: dextera tua plena eſt æquitate. Læ- 12
tentur montes Sion, & exultent filiæ Judæ propter judicia tua, O Domine. Cir- 13
cundate Sion, et circunvallate eam, loquimini de turribus ejus. Admovete corda 14
veſtra ad virtutem ejus; & diſtribuite inter vos palatia ejus, ut referatis de his generationi alteri. Nam iſte eſt Deus no- 15
ſter in ſeculum, & ipſe eſt qui paſcet nos in æternum, & in ſeculum ſeculi. Alleluja.

תהלים : מט

PSAL. XLIX. מט

auſcultate : populi omnes hoc Audite .cantus Corach filiis Victori
1 2 למנצח לבני־קרח מזמור: שמעו־זאת כל־העמים האזינו
pariter : viri filii etiam , hominis filii Etiam .orbis habitatores omnes
3 כל־ישבי חלד: גם־בני אדם גם־בני־איש יחד
mei cordis meditatio & : ſapientias loquetur meum Os .indigus & , dives
4 עשיר ואביון: פי ידבר חכמות והגות לבי
cithara *in* aperiam : meam aurem parabolam ad Inclinabo .intelligentias
5 תבונות: אטה למשל אזני אפתח בכנור
meorum calcaneorum iniquitas ?mali diebus in timebo quid Ut .meum ænigma
6 חידתי: למה אירא בימי רע עון עקבי
ſuæ opulentiæ multitudine in & ;*ſua facultate ſuper Fidentes* ? me circundabit
7 יסבני: הבטחים על־חילם וברב עשרם
Deo dabit nec ; *vir* redimet redimendo non Fratrem .*gloriabuntur*
8 יתהללו: אח לא־פדה יפדה איש לא־יתן לאלהים
.ſeculum in *deſinet &* ,eorum animæ redemptio erit precioſa Et .ſuam propitiationẽ
9 כפרו: ויקר פדיון נפשם וחדל לעולם:
ſapientes , videbit *Nam .foveam videbit* non : *æternum* in adhuc vivat Et
10 11 ויחי־עוד לנצח לא יראה השחת: כי יראה חכמים
.*ſuam facultatem* alienis relinquent & ;peribunt inſipiens & ,ſtultus ſimul , *morientur*
ימותו יחד כסיל ובער יאבדו ועזבו לאחרים חילם:
generatione in eorum tabernacula , ſeculum in eorum domus eorum *Intimum*
12 קרבם בתימו לעולם משכנתם לדור
honore in homo Et .terras *ſuper* ſuis nominibus in vocaverunt:generationẽ &
13 ודר קראו בשמותם עלי אדמות: ואדם ביקר
ſtultitia eorum via Hæc .*ſunt exciſi jumenta ſicut* aſſimilatus ; *pernoctabit* non
14 בל־ילין נמשל כבהמות נדמו: זה דרכם כסל
inferno in *pecus* Sicut .Selah , *volent ipſorum ore in* eorum poſteri & , ipſis
15 למו ואחריהם בפיהם ירצו סלה: כצאן לשאול
eorum figura & :mane *in* recti *eos in* dominabuntur &,eos depaſcet mors ,ponentur
שתו מות ירעם וירדו בם ישרים לבקר וצירם
redimet Deus Veruntamen .ſibi habitaculo ab *ſepulchrum veterandum ad*
16 לבלות שאול מזבל לו: אך־אלהים יפדה־
, timueris Ne .Selah ,me ſuſceperit cùm : inferi *manu* de meam animam
17 נפשי מיד שאול כי יקחני סלה: אל־תירא
non Quoniam .ejus domus gloria *fuerit multiplicata* cùm ; vir fuerit ditatus cùm
18 כי־יעשר איש כי־ירבה כבוד ביתו: כי לא
Quoniam .ejus gloria eum poſt deſcendet neque ; omnia accipiet *ipſum moriendo in*
19 במותו יקח הכל לא־ירד אחריו כבודו: כי־
Introibit .tibi benefeceris ſi ,te laudabunt & ; *benedicet vitis ſuis* in ſuæ animæ
20 נפשו בחייו יברך ויודך כי־תיטיב לך: תבוא
.lumen videbunt non *æternum* in uſque ; ſuorum patrum progeniem in uſque
עד־דור אבותיו עד־נצח לא יראו־אור:
, *jumenta ſicut* , eſt aſſimilatus : intelliget non & , honore in Homo
21 אדם ביקר ולא יבין נמשל כבהמות
.*ſunt exciſi*
נדמו:

תרגום TARGUM.

מט

1 2 לשבחא על ידיהון דבני קרח תושבחתא: שמעו
אחויתא דא כל עממיא אציתו כל דירי ארעא:
3 אוף בני אדם קדמאה אוף בנוי דיעקב כחדא
4 זכאה וחיבא: פומי ימלל חוכמתא ורננת לבא
5 בינא: אצלי למתלא אודני אשרי למפתח
6 בכנרא אוחדתי: מטול אדחל ביום אסערות
בישא אלהן דחובת סורחני בסופי יחזרנני:
7 וי לחיביא די מתרחצין על נכסהון ובסניאות
8 עתריהון משתבחין: אחוהי דאשתבא לא מפרק
יפרוק גבר מנכסוי ולא יהב לאלהא פורקניה:
9 ויהי יקיר פורקניה ויפסוק בישותיה ופורענותא
10 לעלם: ויחי תוב לחיי עלמא לא יחמי דין גהנם:
11 ארום יחמון חכימיא רשיעיא בגהנם יתדנון
כחדא כסיליא ושטיא ייבדון וישבקון לצדיקיא
12 ממונהון: בבית קבורתהון ישרון לעלם ולא
יקומון ממשכניהון לדרי דריא מטול
13 דאתרברבו וקנו שום ביש עלוי ארעא: וגברא
חיבא ביקרא לא יבית עם צדיקיא אמתיל היך
14 בעירא אשתוא ללמא: דין ארחתהון גרם
שטותא להון ובסופהון בפומהון יתנון
15 סורחנותהון לעלמא דאתי: היך ענא צדיקיא
שוו למותא וקטלון ותברו צדיקיא ופלחי
אוריתא ותריציא אלקו מטול הכי גופיהון יהון
בלין בגהנם מן בגלל דאושיטו ידהון וחבילו
16 בית מדור שכנתיה דיליה: אמר דוד ברוח
נבואה ברם אלהא יפרוק נפשי מן דין גהנם
17 ארום ילפנני אוריתיה לעלמין: [על קרח
וסיעתיה אתנבי ואמר] לא תדחל [משה] ארום
אתעתר [קרח] גברא [דמצותא] ארום יסגי איקר
18 ביתיה: ארום לא במותיה יסב כולא לא יחות
19 בתרוי איקריה: ארום נפשיה [דמשה] בחיוהי
יברך לך ויודנך צדיקיא ארום תיטיב לפלחין
20 קדמך: תעול דוכרנהון דצדיקיא עד דר
אבהתהון ורשיעיא לעלמי עלמיא לא יחמון
21 נהורא: גברא חיבא בזמן דאיתוהי ביקרא לא
יתבין ובאסתלקות יקריה מניה אמתיל לבעירא ואשתוי ללמא:

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Ad laudandũ per man⁹ filiorum Korahh, Hymnus. PSAL. XLIX.

AUdite nuncium iſtud omnes popul auſcultate omnes habitatores terræ. Tam filii Adam antiqui quàm filii Jaacob, ſimul mundus & prophanus. Os meũ loquetur ſapientiam, & meditatio cordis mei *intellectũ*. Inclinabo ad parabolã aurẽ meam : incipiã aperire in cithara ænigma meum. Quare timebo in die tempeſtatis malæ, niſi quando reatus peccati mei *in fine mea* circundabit mei ? *Væ peccatoribus* qui confidunt in divitiis ſuis, & in multitudine opulentiarũ ſuarũ jactant ſe ſe. Fratrem ſuũ captivũ nequaquã redemptione redimet vir *opib⁹ ſuis*, & non dabit Deo [*pretium*] redemptionis ejus. *Erit* precioſa redemptio *ejus*, & abolebit mal ejus *&* punitionem in ſeculũ. Et vivet adhuc vitã æternã, non videbit judicium gehennæ. Quoniam *videbunt* ſapientes improbos, gehennæ *adjudicabuntur*, una *inſipientes* & ſtultus peribũt, & relinquent juſtis divitias ſuas. In domo ſepulturæ ſu habitabunt in æternum; & non reſurgent de tabernaculis ſuis in generationes generationũ : quoniã ſuperbi facti ſunt, & comparârunt ſibi nomen pravũ ſuper terram. Et *homo* peccator in honore non commorabitur *cum juſtis*: aſſimilatus eſt beſtiæ, *æquiparatur nihilo*. Hanc viã illorum accerſit ſtultitia ipſis, & in fine eorũ ore ſuo palàm facient *peccatum ſuum* ſeculo venturo. Sicut oves, juſtos addicunt morti, & interficiũt eos; & conterũt *juſtos & colentes legem*, & rectos *percuſſerunt*. Propterea corpora eorũ veteraſcent in gehenna; quoniã extẽderũt manũ ſuã, & deſtruxerũt *domũ habitationis* majeſtatis ej⁹. *Dixit David in ſpiritu prophetico*, Utique De⁹ redimet animã meã à *judicio gehennæ*, quoniam docebit me legem ſuam *in æternum. De Korahh & aſſeclis ejus vaticinat⁹ eſt & dixit* : Ne timeas *Moſes*, licet *ditetur Korahh* homo *contentioſus*; licet creſcat gloria dom⁹ ej⁹. Quoniã nequaquã in morte ſua portabit omnia, nec deſcendet poſt eũ gloria ej⁹. Quoniã anima *Moſ* in vita ipſi⁹ *benedicet tibi*, & cõfitebuntur tibi juſti; quia benefacies colentib⁹ corã te. Ingredietur memoria juſtorũ uſq; ad generationẽ patrũ eorũ : improbi verò in ſecula ſeculorũ non videbũt lumen. Homo ſceleratus, in tempore quo ſubſiſtit *in hon non* intelligit : cùm removetur gloria ej⁹ *ab eo*, cõparatur beſtiæ, et redigitur in nihil

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܛ *

PSAL. XLIX.

Filiorum Corah. Prophetia de fortitune gentium ; & documentum judicii divini. Verſ. 46.

AUdite hoc omnes populi, & auſcult omnes incolæ terræ. Filii terræ, & hominum ſimul divites, ac pauperes. Os um loquetur ſapientiam, & meditatio co mei intelligentiam. Intendam aures meas rabolis : & loquar, adhibitâ fide, ænigma mea. Non timeo in diebus malis : iniqu hoſtium meorum circundedit me : Omnes qui fidunt robori ſuo, & gloriantur in co divitiarum ſuarum. Frater non redimet vir non perſolvet Deo redemptionem ſu Cara enim eſt redemptio animæ illorum. bora in æternum, Ut vivas in ſeculũ ſec rum, & non videas corruptionem, Vi tamen ſapientes mori, ſimul ſtultos & exp tes judicio interire, & relinquere opes aliis. Sepulchra eorum ſunt domus illor in æternum, atque habitaculũ ipſorum in nerationem generationum, & tamen voc nomina in terra. Homo gloriam ſuam intellexit, ſed æquavit ſe jumento, & ſimi ſe fecit illi. Hæc eſt ſemita eorum, ſca lum animæ ipſorum : & demum ore ſuo ſcentur Ut pecudes: * *Diapſalma* * feris tradentur, & mors paſcet eos : & do nabuntur in illos recti mané : & formam rum corrumpet fovea : & de faſtibus ſu pellentur. Deus redimet animã meam, manibus inferi accipiet me. Ne timeas ditatur vir, & multiplicatur gloria do ejus; Non enim ſumet quicquam in m ſua, neque deſcendet poſt illũ magnific ipſius. Quoniam animam ſuã ipſe bea in vita ſua, & gratias tibi aget cum ge ris ei. Perducetque illũ uſque ad generat patrum ejus : uſque in æternũ non vide men. Homo gloriam ſuã non intellex quavit ſe animanti, & ſimilis factus eſt

Verſio VULG. LAT.

1 In finem, filiis Core Pſalmus. XLVIII.

2 Audite hæc omnes gentes: aurib⁹
percipite omnes, qui habitatis
3 orbem. Quique terrigenæ, & filii hominum:
ſimul in unũ dives & pauper.
4 Os meum loquetur ſapientiã: & meditatio
5 cordis mei prudentiam. Inclinabo
in parabolã aurem meam: aperiam
in pſalterio propoſitionem meã.
6 Cur timebo in die mala? iniquitas
7 calcanei mei circũdabit me. Qui confidunt
in virtute ſua: & in multitudine
8 divitiarum ſuarum gloriantur. Frater
non redimit, redimet homo: non dabit
9 Deo placationem ſuam. Et pretiũ redemptionis
animæ ſuæ: & laborabit
10 in æternum, Et vivet adhuc in finem.
11 Non videbit interitum, cùm viderit ſapientes
morientes: ſimul inſipiens, &
ſtultus peribunt. Et relinquent alienis
12 divitias ſuas: Et ſepulchra eorum domus
illorum in æternum. Tabernacula
eorum in progenie, & progenie:
13 vocaverunt nomina ſua in terris ſuis. Et
homo, cùm in honore eſſet, non intellexit:
comparatus eſt jumentis inſipientibus,
14 & ſimilis factus eſt illis. Hæc
via illorũ ſcandalum ipſis: & poſteà in
15 ore ſuo complacebunt. Sicut oves in
inferno poſiti ſunt: mors depaſcet eos.
Et dominabuntur eorum juſti in matutino:
& auxilium eorum veteraſcet in
16 inferno à gloria eorum. Veruntamen
Deus redimet animam meam de manu
17 inferi, cùm acceperit me. Ne timueris
cùm dives factus fuerit homo: & cùm
multiplicata fuerit gloria domûs ejus.
18 Quoniã cum interierit, non ſumet omnia:
neq; deſcendet cum eo gloria ejus.
19 Quia anima ejus in vita ipſius benedicetur:
confitebitur tibi cùm benefeceris
20 ei. Introibit uſq; in progenies
patrum ſuorum: & uſque in æternum
21 non videbit lumen. Homo, cùm
in honore eſſet, non intellexit: comparatus
eſt jumentis inſipientibus, &
ſimilis factus eſt illis.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

1 (α) Εἰς τὸ τέλος, τοῖς υἱοῖς Κορὲ ψαλμὸς. μη΄.

2 † Ἀκούσατε ταῦτα πάντα τὰ ἔθνη, † ἐνωτίσασθε
πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν οἰκουμένην,
3 † Οἵ τε γηγενεῖς καὶ οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων, † ἐπὶ
4 τὸ αὐτὸ πλούσιος καὶ πένης. † Τὸ στόμα μου λαλήσει
σοφίαν, † καὶ ἡ μελέτη τῆς καρδίας μου σύνεσιν.
5 † Κλινῶ εἰς παραβολὴν τὸ οὖς μου, † ἀνοίξω ἐν
6 ψαλτηρίῳ τὸ πρόβλημά μου. † Ἱνατί φοβοῦμαι
ἐν ἡμέρᾳ πονηρᾷ; † ἡ ἀνομία τῆς πτέρνης μου κυκλώσει
7 με. † Οἱ πεποιθότες ἐπὶ τῇ δυνάμει αὐτῶν,
† καὶ ἐπὶ τῷ πλήθει τοῦ πλούτου αὐτῶν καυχώμενοι.
8 † Ἀδελφὸς οὐ (β) λυτροῦται, λυτρώσεται ἄνθρωπος;
† οὐ δώσει τῷ θεῷ ἐξίλασμα (γ) ἑαυτοῦ,
9 † Καὶ τὴν τιμὴν τῆς λυτρώσεως τῆς ψυχῆς
10 αὐτοῦ. † καὶ ἐκοπίασεν εἰς τὸν αἰῶνα, Καὶ ζήσεται
11 εἰς τέλος. † Ὅτι οὐκ ὄψεται καταφθοράν,
ὅταν ἴδῃ σοφοὺς ἀποθνήσκοντας, † ἐπὶ τὸ αὐτὸ ἄφρων
καὶ ἄνους ἀπολοῦνται, † καὶ καταλείψουσιν ἀλλοτρίοις
12 τὸν πλοῦτον αὐτῶν. † Καὶ οἱ τάφοι αὐτῶν
οἰκίαι αὐτῶν εἰς τὸν αἰῶνα, † σκηνώματα αὐτῶν
εἰς γενεὰν καὶ γενεάν, † ἐπεκαλέσαντο τὰ ὀνόματα
13 αὐτῶν ἐπὶ τῶν γαιῶν αὐτῶν. † Καὶ ἄνθρωπος
ἐν τιμῇ ὢν, οὐ συνῆκε, † παρασυνεβλήθη
τοῖς κτήνεσι τοῖς ἀνοήτοις, καὶ ὡμοιώθη αὐτοῖς.
14 † Αὕτη ἡ ὁδὸς αὐτῶν σκάνδαλον αὐτοῖς,
† καὶ μετὰ ταῦτα ἐν τῷ στόματι αὐτῶν (δ) εὐλογήσουσιν.
15 ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ὡς πρόβατα ἐν ᾅδῃ
ἔθεντο, † θάνατος ποιμανεῖ αὐτούς· † καὶ (ε) κατακυριεύσουσιν
αὐτῶν οἱ εὐθεῖς τοπρωΐ, † καὶ ἡ βοήθεια
αὐτῶν παλαιωθήσεται ἐν τῷ ᾅδῃ † ἐκ τῆς
16 δόξης αὐτῶν (ζ). † Πλὴν ὁ θεὸς λυτρώσεται
τὴν ψυχήν μου ἐκ χειρὸς ᾅδου, ὅταν λαμβάνῃ
17 (ʺ)με. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Μὴ φοβοῦ ὅταν πλουτήσῃ
ἄνθρωπος, † (η) καὶ ὅταν πληθυνθῇ ἡ δόξα τοῦ οἴκου
18 αὐτοῦ. † Ὅτι οὐκ ἐν τῷ ἀποθνήσκειν αὐτὸν λήψεται
τὰ πάντα, † οὐδὲ συγκαταβήσεται αὐτῷ ἡ δόξα
19 αὐτοῦ. † Ὅτι ἡ ψυχὴ αὐτοῦ ἐν τῇ ζωῇ αὐτοῦ εὐλογηθήσεται,
† ἐξομολογήσεταί σοι ὅταν ἀγαθύνῃς
20 αὐτῷ. † Εἰσελεύσεται ἕως γενεᾶς πατέρων αὐτοῦ,
21 † ἕως αἰῶνος οὐκ ὄψεται φῶς. † (θ) Ἄνθρωπος
ἐν τιμῇ ὢν, οὐ συνῆκε, † παρασυνεβλήθη τοῖς
κτήνεσι τοῖς ἀνοήτοις, καὶ ὡμοιώθη αὐτοῖς.

MS.A. (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. μη΄. (β) λυτρώσεται, (γ) αὐτοῦ, (δ) εὐδοκήσουσιν. (ε) κατακυριεύσουσιν (ζ) ἐξώσθησαν. Πλὴν (ʺ) με. Μὴ φοβοῦ ὅταν πλουτήσει (η) ἢ ὅταν (θ) Καὶ ἄνθρωπος

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

In finem, filiis Core [a] Pſalmus. XLVIII. 1

1 Audite (a) hæc omnes gentes: 2
*auribus percipite [b] omnes
qui habitatis (b) orbem. 2 Quique* 3
*(c) terrigenæ, & filii hominum; in
(d) unum dives, & pauper. 3 Os* 4
*meum loquetur ſapientiam, & meditatio
cordis mei (e) intelligentiam.
4 Inclinabo in (f) parabolam aurem* 5
*meam: aperiam in pſalterio (g) propoſitionem
meam. 5 Cur (h) timebo in* 6
*die (i) mala? iniquitas (k) calcanei
mei circumdabit me. 6 Qui confidunt* 7
*in virtute ſua, & in multitudine divitiarum
ſuarum (l) gloriantur. 7 Frater* 8
*non redimit [c]; redimet homo?
non dabit Deo propitiationem ſuam,
8 [d] Et pretium redemptionis animæ* 9
ſuæ: (m) & laboravit in æternum, Et 10
vivet in finem. 9 Quoniam non videbit 11
*interitum; cùm viderit ſapientes
morientes: 10 *Simul [e] inſipiens,
et ſtultus peribunt. Et relinquent
alienis divitias ſuas: 11 Et (n) ſepulchra* 12
*eorum, domus eorum in æternum,
(o) tabernacula eorum in progeniem,
& progeniem, invocaverunt
nomina ſua [f] in terris ſuis. 12 Et* 13
*homo cùm in honore eſſet, non intellexit:
comparatus eſt jumentis [g] inſipientibus,
& ſimilis factus eſt illis.
13 [h] Hæc via illorum (p) ſcandalum* 14
*ipſis, & poſteà in ore ſuo (q) [i]
benedicet. DIAPSALMA. 14 (r) Sicut* 15
*oves [k] in inferno poſiti ſunt: mors
paſcet eos. 15 Et (ſ) dominabuntur
eis recti mané: & (t) auxilium eorum
veteraſcet in inferno à (u) gloria
eorum. 16 Veruntamen Deus redimet* 16
*animam meam de manu inferni,
cùm acceperit (x) me. DIAPSALMA.
17 Ne timueris, cùm dives* 17
*factus fuerit homo, & cùm (y)
multiplicata fuerit gloria domûs ejus.
18 (z) Quoniam non cùm morietur,* 18
*[l] ſumet omnia: neque deſcendet
cum eo [m] gloria ejus. 19 Quoniam* 19
*anima ejus in vita ipſius [n] benedicetur:
(ω) confitebitur tibi, [o]
cùm benefeceris ei. 20 Introibit (aa)* 20
*uſque in progenies patrum ſuorum:
[p] uſque in æternum non (bb) videbit
lumen. 21 Homo, cùm in honore* 21
*eſſet, non intellexit: comparatus eſt
jumentis inſipientibus: & ſimilis factus
eſt illis.*

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ፡ዘደቂቀ፡ቆሬ፡መዝሙር፡
ዘደዊት፡፡

፵፰ ስምዑ፡ ዘንተ፡ ኵልክሙ፡ አሕዛብ፡፡ 1
ወአጽምኡ፡ ኵልክሙ፡ እለ፡ ትነብሩ፡ ውስ
ተ፡ ዓለም፡፡፨ በበ፡ በሐውርቲክሙ፡ ደ 2
ቂቀ፡ እጓለ፡ እመሕያው፡፡ አብዕልት፡ ወነ
ደይ፡፡፨ አፈየ፡ ይነግር፡ ጥበበ፡፡ ወሕሊ 3
ና፡ ልብየ፡ ምክረ፡፡፨ አጸምእ፡ ምሳሌ፡ 4
በእዝንየ፡፡ ወእከሥት፡ በመዝሙር፡ ነገ
ርየ፡፡፨ ለምንት፡ እፈርህ፡ እምዕለት፡ እ 5
ኪት፡፡ ኃጢአት፡ ሰኰናየ፡ አገተኒ፡፡፨ እለ፡ 6
ይትአመኑ፡ በኀይሎሙ፡፡ ወይዜሀሩ፡ በብዝ
ኃ፡ ብዕሎሙ፡፡፨ እኁኒ፡ ኢያድኅን፡ እጓ 7
ቈሁ፡ ወኢያድኅን፡ ሰብእ፡፡ ወኢይሁብ፡ ለ
እግዚአብሔር፡ ቤዛሁ፡፡፨ ወኢይተወለ 8
ጠ፡ ሤጠ፡ ነፍሱ፡፡ ዘጻመወ፡ በዓለም፡ የሐ
ዩ፡ ለዝሉፉ፡፡፨ እስመ፡ ኢይሬኢ፡ ሙስና፡፡ 9
ሶበ፡ ትሬእዮሙ፡ ለጠቢባን፡ ይመውቱ፡፡፨ 10
ወከማሁ፡ ይትሐጐሉ፡ አብደን፡ እለ፡ አል
ቦሙ፡ ልብ፡፡ ወየኃድጉ፡ ለባዕድ፡ ብዕሎ
ሙ፡፡፨ ወመቃብሪሆሙ፡ ወአብያቲሆሙ፡ 11
ለዓለም፡፡ ወማኅደሪሆሙ፡ ለትውልደ፡ ትው
ልድ፡፡ ወይሰምዩ፡ አስማቲሆሙ፡ በበ፡ በሐ
ውርቲሆሙ፡፡፨ ወሰብእሰ፡ እንዘ፡ ክቡር፡ 12
ውእቱ፡ ኢያእመረ፡፡ ወኮነ፡ ከመ፡ እንስሳ፡ ዘ
አልቦ፡ ልበ፡ ወተመሰሎሙ፡፡፨ ወለሊሃ፡ ፍ 13
ኖቶሙ፡ ወዕቅፋቶሙ፡፡ ወእንዘ፡ ይሠምሩ፡
በአፉሆሙ፡፡፨ ከመ፡ አባግዕ፡ ሞት፡ ይሬ 14
እዮሙ፡ በሲኦል፡፡፨ ወይቀንዮሙ፡ ራት 15
ዓን፡ በጽባሕ፡፡ ወትበሊ፡ ረድኤቶሙ፡ በሲኦ
ል፡ እምክብሮሙ፡፡፨ ወባሕቱ፡ እግዚአ 16
ብሔር፡ ያድኅና፡ ለነፍስየ፡ እመእደ፡ ሲኦ
ል፡ ሶበ፡ ይነሥኡኒ፡፡፨ ኢትፍርሀ፡ ለሰብ 17
እ፡ ሶበ፡ ይብዕል፡፡ ወሶበ፡ ይበዝኅ፡ ክብረ፡ ቤ
ቱ፡፡፨ እስመ፡ ኢይነሥእ፡ ምስሌሁ፡ ኵ 18
ሎ፡ አመ፡ ይመውት፡፡ ወኢይወርድ፡ ምስሌ
ሁ፡ ክብረ፡ ቤቱ፡፡፨ እስመ፡ ፈግአት፡ ነፍ 19
ሱ፡ በሕይወቱ፡፡ የአምነከ፡ ሰብእ፡ ሶበ፡ ታ
ሤኒ፡ ሎቱ፡፡፨ ወይወርድ፡ ውስተ፡ ዓለም፡ 20
አበዊሁ፡፡ ወኢይሬኢ፡ እንከ፡ ብርሃነ፡ እስከ፡
ለዓለም፡፡፨ ወእጓለ፡ እመሕያውሰ፡ እን 21
ዘ፡ ክቡር፡ ውእቱ፡ ኢይእመረ፡፡ ወኮነ፡ ከመ፡
እንስሳ፡ ዘአልቦ፡ ልብ፡ ወተመሰሎሙ፡፡፨

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. XLVIII.* [a] Pſalmus Davidis. [b] vos omnes qui habitatis in orbe. [c] fratrem ejus: nec redimet [d] Nec commutabitur pretium redemptionis animæ ſuæ: qui laboravit [e] ſtulti, & excordes [f] ſinguli in terris [g] quibus non eſt cor, [h] Iſta ipſa via [i] complacebunt. [k] mors depaſcet eos in inferno. [l] ſecum ſumet [m] gloria domûs ejus. [n] delitiis affluet: [o] tantiſper dum benefeceris [p] ac proinde uſque

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 *المزمور الثامن والاربعون * لبني قورح * وعدده * م * استيحن *
2 3 *اسمعوا هذا يا جميع الامم * انصتوا يا جميع سكان الارض * اولاد الارض وابناء البشر الاغنياء
4 5 والفقراء جميعا * فمي ينطق بحكمة * وتلاوة قلبي بفهم * انصت الي المثل بسمعي * واستفتح
6 7 فاتحة كلامي بالمزمار * لماذا اخاف في اليوم السوء * اذا احاط بي اعدائي * الواثقون بقوتهم *
8 9 المفتخرون بكثرة غناهم * اخ لن يفتدي * ايفتدي انسان * ولا يعطي الله له خلاصا * ولا
10 11 ثمن خلاص نفسه * تعب الي الابد * ويحيا الي الانقضاء * لانه لا يري الهلاك * اذا يري حكماء
12 يموتون * جاهل وغبي فهم يهلكان معا * يتركون غناهم لاخرين * وقبورهم تصير لهم بيوتا الي
13 الابد * ومساكنهم من جيل الي جيل * دعوا باسمائهم علي ارضيهم * انسان في كرامة ولا يعرفها *
14 اشبه البهائم التي لا تعلم وماثلها * هذه صارت عثرة لهم * وبعد هذا بافواههم يباركون *
15 * تركوا مثل غنم في الجحيم * والموت هو الذي يرعاهم * ويتسلط عليهم المستقيمون غدوة *
16 معونتهم تبلي في الجحيم * ومن مجدهم يسقطون * بل الله يخلص نفسي من ايدي
17 18 الجحيم * اذا اخذها * لا تخف اذا كان الرجل مستغنيا * ولا اذا كثر مجد بيته * فانه لا ينال
19 عند موته شيا * ولا ينزل معه الي الجحيم ما اقتني * لان نفسه في حياته تبارك * يشكرك اذا
20 21 صنعت له الخير * ويبلغ من اعمار ابائه الي الغاية * ولا يعاين النور الي الابد * انسان في
كرامة ولا يفهمها * اشبه البهائم التي لا تعلم وماثلها * هللويا *

PSAL. XLVIII.
Filiis Choræ. Et num. verſ. 40. 1

Audite hoc, O omnes gentes: auſcultate, O omnes habitatores terræ: Na- 2 3
*ti terræ & filii hominum, divites ac pauperes
ſimul. Os meum loquetur ſapienter,* 4
& meditatio cordis mei prudenter. Ad- 5
*movebo proverbio auditum meum, & aggrediar
exordium ſermonis mei cum pſalterio.
Cur timebo in die malo cùm cir-* 6
cundederint me inimici mei? Confiden- 7
*tes in virtute ſua, glorianteſ in copia divitiarũ
ſuarũ? Frater haudquaquã redimet,* 8
*num redimet homo? neque dabit Deus illi
ſalutem. Neque pretium ſalutis animæ e-* 9
jus. Laboravit in ſeculum, Et vivet in 10
finem: quia non videbit exitium. Quando 11
*videbit ſapientes mori. Stultus & expers
mentis peribunt ſimul. Relinquent divitias
ſuas aliis, Et ſepulchra eorum fient ipſis* 12
*domicilia in æternum, & habitationes eorum
à progenie in progeniem. Vocaverunt
nominibus ſuis terras ſuas. Homo qui in* 13
*honore eſt nec percipit eum, ſimilis eſt jumentis
irrationabilibus, & par illis. Hoc* 14
*factum eſt ſcandalum ipſis, & poſt hoc
oribus ſuis benedicunt. Poſiti ſunt velut* 15
*oves in inferno, & mors eſt quæ paſcetur
eis; & dominabuntur eis recti in matutino:
auxilium eorum emarcuit in inferis,
& è gloria ſua decident. Verùm Deus* 16
*liberabit animam meam de manibus inferni
quum ſuſceperit eam. Ne timeas quan-* 17
*do homo fuerit dives, neque quando aucta
fuerit gloria domûs ejus. Non enim obtinebit* 18
*in morte ſua rem ullam, neque deſcendet
cum eo ad inferos quod poſſedit.
Quia anima ejus in vita ejus benedicit,* 19
*gratias agit tibi quando confers illi beneficium.
Et attinget ætates patrum ſuorum* 20
*ad ſummum: at non videbit lumen in
æternum. Homo qui in honore eſt nec* 21
*percipit eum, ſimilis factus eſt jumentis
quæ non ſapiunt, & exæquatus eſt eis.
Alleluja.*

terram advocavit &, est locut⁹ Domin⁹ Deus Fortis ·Asaph ipsi Cantus
1 מזמור לאסף אל ׀ אלהים יהוה דבר ויקרא־ארץ
Deus decoris universitate Sijon Ex. ej⁹ ingressum ad usq; Solis ortu ab
2 ממזרח־שמש עד־מבאו : מציון מכלל־יפי אלהים
: perdet ejus facies ad ignis, silebit non & , noster Deus Veniet ·effulsit
3 הופיע : יבא אלהינו ואל־יחרש אש־לפניו תאכל
cœlos ad Advocabit. vehementer est excitata tempestas ej⁹ circuitu &
4 וסביביו נשערה מאד : יקרא אל־השמים
: meos pios mihi Congregate. suũ populũ judicandũ ad, terram ad & : desuper
5 מעל ואל־הארץ לדין עמו : אספו־לי חסידי
: ejus justitiam cœli indicabunt Et .sacrificium super meum pactum ferientes
6 כרתי בריתי עלי־זבח : ויגידו שמים צדקו
; loquar & ,mi populus Audi .Selah , ipse judex Deus quod
7 כי־אלהים ׀ שפט הוא סלה : שמעה עמי ואדברה
super Non .ego tuus Deus Deus : te in faciam testificari & , Israel
8 ישראל ואעידה בך אלהים אלהיך אנכי : לא על־
accipiam Non .semper me coram tuæ ascensiones & :te arguam tua sacrificia
9 זבחיך אוכיחך ועולתיך לנגדי תמיד : לא־אקח
omnis mihi Quoniam .hircos tuis septis de ;juvencum tua domo è
10 מביתך פר ממכלאתיך עתודים : כי־לי כל־
volatile omne Cognovi .mille montibus in animalia : sylvæ bestia
11 חיתו־יער בהמות בהררי־אלף : ידעתי כל־עוף
quia ;tibi dicam non ,esuriero Si .me apud agri fera & ; montium
12 הרים וזיז שדי עמדי : אם־ארעב לא־אמר לך כי־
; fortium carnem comedam Nunquid .ejus plenitudo & , orbis mihi
13 לי תבל ומלאה : האוכל בשר אבירים
redde & : confessionem Deo Immola ? bibam hircorum sanguinem &
14 ודם עתודים אשתה : זבח לאלהים תודה ושלם
, te eruam : angustiæ die in me invoca Et .tua vota altissimo
15 לעליון נדריך : וקראני ביום צרה אחלצך
narrandum ad ,tibi Quid : Deus dixit impio Et .me honorificabis &
16 ותכבדני : ולרשע ׀ אמר אלהים מה־לך לספר
odisti tu Et ? tuo ore super meum pactum assumas & : mea statuta
17 חקי ותשא בריתי עלי־פיך : ואתה שנאת
, furem videbas Si .te post mea verba projecisti & , disciplinam
18 מוסר ותשלך דברי אחריך : אם־ראית גנב
mittebas tuum Os .tua portio adulteris cum & ;eo cum complacebas &
19 ותרץ עמו ועם מנאפים חלקך : פיך שלחת
tuum fratrem in ,Sedebas .dolum concinnabat tua lingua & ; malum in
20 ברעה ולשונך תצמיד מרמה : תשב באחיך
, fecisti Hæc .probrum dabas tuæ matris filium in : loquebaris
21 תדבר בבן־אמך תתן־דפי : אלה עשית
ordinabo & , te arguam : tu sicut essem essendo existimasti , tacui &
והחרשתי דמית היות־אהיה כמוך אוכיחך ואערכה
, rapiam fortè ne ; Dei obliviosi hoc nunc Intelligite .tuis oculis in
22 לעיניך : בינו־נא זאת שכחי אלוה פן־אטרף
ponenti & ,me honorificabit ,confessionem Sacrificans .eruens non &
23 ואין מציל : זבח תודה יכבדנני ושם
.Dei salutem in eum faciam videre ,viam
דרך אראנו בישע אלהים :

תרגום TARGUM.

1 תושבחתא על ידוי דאסף תקיפא אלהא יי מלל מן
בראשית שירתא וגזר למעבד ארעא ממדנח שמשא
2 עד מעלניה : ושרוי ברית עלמא מציון ומן תמן גמיר
3 שופריה אלהא יתגלי : יימרון צדיקיא ביום דינא רבא
ייתי אלהנא ולא ישתוק למעבד פורענות עמיה אשתא
קדמוי תצלהב וחזור חזור ליה תועוף עלעולא לחדא:
4 יקרא לאנגלי מרומא מלעיל ולצדיקי ארעא מלרע
5 לממתח דין על עמיה : כנושו לותי חסידי די גזרו קימי
וקימו אוריתי ואתעסקו בצלותא דאמתילא לקורבנא:
6 ויתנון אנגלי מרומא זכותיה ארום אלהא דינא הוא
7 לעלמא : שמע עמי ואמלל ישראל ואסהד בך אלהא
8 אלהך אנא : לא מטול דבחך דלא קרבתא קדמי
בגלותא אנא מוכח לך ארום עלותך דקריבו אבהתך
9 לקבלי תדירא : לא קבלית מן אידך תורא מן עדרך
10 ברחי : ארום דילי כל חיות חורשא [ועתדת לצדיקיא
בגן עדן] בעיריא דכין [ויתור בר דרעי בכל יומא]
11 בטורין אלפא: גלין קדמי כל מיני עופא דפרחין באויר
שמיא ותרנגול ברא [דקרצולי שרין בארעא ורישיה
12 מטי בשמיא] מרנן קדמי : אין ימטי זמן קרבנא תדירא
דקריצתא לא אימר לך ארום דילי ארעא ומליתה :
13 לא קבלית בשר נכסת פטמיא ודמא דברחי לא זריקו
14 כהניא קדמי : כבוש יצרא בישא ויתחשב קדם יי
15 כנכסת תודתא ושלם לעלאה נדריך :וצלי קדמי ביומא
16 דעקתא אשזבנך ארום תיקרנני : ולרשיעא דלא עבד
תתובא ומצלי במרודא אמר יי מה לך למשתעי קימי
17 ותימי בשמי ותדכר קימי עלי פומך : ואנת סניתא
18 מכסנותא דחכימיא וטלקתא פתגמי בתרך : אין
חמיתא גנבא ורהטתא בתרוי ועם גיופי שויתא
19 חולקך : פומך שלחתא למשתעי לישנא בישא ולישנך
20 מדבקא למללא נכלא : תתיב באחוך תמלל כדבותא
21 בבר אמך תשוי דפיא : אלין עובדין בישין עבדתא
ואורכית דתתוב חשבתא למהוי עד עלמין שלים
אמרת בלבבך אהוי תקיף הי כמך אוכחנך בעלמא
22 הדין ואסדר דין גהנם בעלמא דאתי קדמך : אתבוננו
כדון דא רשיעיא דשלין אלהא דלמא אתבר תוקפכון
23 ולית משיב : ודבח יצרא בישא היך קורבן תודתא יתחשב ליה ומוקיר לי ודי יעדי אורחא בישא אחמי ליה בפורקנא דיי :

PARAPH. CHALD. Vers. L

PSAL. L. Hymnus per manum A
FOrtis Deus Dñs locut⁹ est à princip
tiũ: & decrevit, ut faceret terram, ab
ente Solis, usq; ad Occasum ejus. Et
creationis seculi de Sion: & inde perfect
pulchritudo ejus; Deus apparuit. Dic
in die judicii magni : Veniet Deus noste
non silebit ut faciat ultionem populi sui
coram eo inflammabit, & in circuitu ejus
flabit turbo vehementer. Advocabit ang
excelsos supernè, & justos terræ inferne
diffundat judicium super populũ suum. Co
gregate mihi sanctos meos, qui pepigerun
pactum meum, & firmaverunt legem meam
operam navarunt orationi, quæ similis est
lationi. Narrabunt autem angeli excelsi p
tatem ejus; quia Deus judex est in seculum
Audi popule mi, & loquar; Israel, & test
cabor tibi; Deus De⁹ tuus ego sum. Non p
pter sacrificia tua, quæ non sacrificasti m
in captivitate, ego corripiam te; quia hol
caustomata tua, quæ obtulerunt patres tu
ram me sunt jugiter. Non accepi de manu
boves, nec de gregib⁹ tuis hircos. Quon
mea est omnis fera sylvæ, & præparavi
in horto delitiarũ animalia munda & bove
sylvestrem pascentem quotidie in mont
mille. Notæ sunt in conspectu meo cunctæ
cies avium, quæ volant in aëre cœlorum,
gall⁹ sylvestris cuj⁹ pedes stant in terra, C
put ejus attingit cœlum, cantat coram me.
venerit temp⁹ oblationis perpetuæ matu
non dicam tibi; quoniã mea est terra & p
nitudo ej⁹. Non accepi carnem immolatio
pinguium, & sanguinem hircorum non fu
runt sacerdotes coram me. Reprime con
piscentiã pravam, & reputabitur coram D
sicut sacrificium confessionis: & redde A
simo vota tua. Et ora corã me; in die affli
nis liberabo te, ut honorẽ exhibeas mihi.
pio autẽ qui non agit pœnitentiam, & ora
prævaricatione, dixit De⁹, Quid tibi ut enar
præcepta mea, & jures in nomine meo,
masq; fœd⁹ meum in ore tuo? Cùm tu co
castigationem sapientium, & projeceris ve
mea post te. Si quando vidisti furẽ, tum cu
risti post eũ, & cum scortatorib⁹ posuisti
tem tuã. Os tuum disposuisti ut loquatur
gua mala; & lingua tua sese applicat a
quendũ dolum. Sedebis contra fratẽ tuum
quêris mendaciũ : in filium matris tuæ
opprobriũ. Has operationes malas opera
ego verò expectavi quò te converteres:
mâsti permãsurũ te in æternũ incolumẽ
in corde tuo, Ero fortis sicut tu; arguam
hoc mundo, & ordinabo
cium gehennæ in munco

ro coram te. Intelligite quæso hæc impii qui obliviscimini Dei, ne fortè conteram fortitudinem vestram, & non sit qui eripiat. Qui mactaverit fomitem pravum,
oblatio confessionis imputabitur ei : & honoranti me, & ei qui dissipaverit viam pravam, ostendam redemptionem Domini.

Versio SIRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7 [illegible]
8 [illegible]
9
10 [illegible]
11 [illegible]
12
13 [illegible]
14
15 [illegible]
16 [illegible]
17
18 [illegible]
19 [illegible]
20 [illegible]
21 [illegible]
22 [illegible]
23 [illegible]

PSAL. L.

Dictus ab Asaph propheta de sacrifi
galibus testamenti Mosis, deque cessatu
rum. Nos verò commonet, quòd nisi ex
mur ejus mandata, erimus ei abomina
quòd negligamus libros spirituales.

DEus deorũ Dominus locutus est,
cavit terram ab ortu solis usque
casum ejus. De Sion coronã gloriosã,
ostendit. Veniet Deus & non silebit, &
devorabit ante illũ, & circa ipsum infla
bitur valdé. Vocabit cœlum desuper,
ram, ad judicandũ populum suum. Co
gamini ad eum electi ejus, qui initis fœd
de sacrificio. Patefacient cœli justitiam
quoniam Deus est judex. * *Diapsalm.*
Audi popule mi, & dicam tibi, & Isra
contestabor. Ego sum Deus, Deus tuus
de sacrificis tuis reprehendã te, & hosti
in conspectu meo sunt omni tempore.
accipiam de domo tua tauros, neque de
tuo hœdos. Siquidem meum est omne a
deserti, & bellua quæ est in montibus,
ves. Agnosco omne volatile cœli, &
campi mea est. Si esuriã, non dicam t
meus est orbis cum plenitudine ejus.
comedo carnem juvencorum, & sang
hœdorum nequaquam bibo. Sacrifici
gratiarũ actionem, & persolve Altissimo
ta tua. Et invoca me in die tribulationis
corroborabo te, & laudabis me.
* *Diapsal.* * Peccatori dicit Deus,
tibi & libris mandatorum meorum?
enim pactum meum ore tuo: Attamen
odisti disciplinam meam, & abjecisti
mea post te. Si videbas furem, curreba
eo: & cum adultero partem tuã ponebas
tuum loquebatur malignitates, & ling
effabatur dolum. Sedebas & meditaba
fratrem tuum, & filium matris tuæ in
Hæc omnia fecisti, & tacui tibi. Existi
inique me similem tibi fore, Arguam
atq; disponã ista corã te. Intelligite
obliviscimini Deum, ne fortè frangam
non sit qui eripiat. Qui sacrificat
ipse glorificabit me, & illic ostendam
salutis ejus.

Verſio VULG. LAT.

Pſalmus Aſaph. XLIX.

1 DEus deorum Dominus locutus eſt: &
vocavit terram, A Solis ortu uſq; ad
2 occaſum: Ex Sion ſpecies decoris ejus.
3 Deus manifeſtè veniet: Deus noſter, &
non ſilebit. Ignis in conſpectu ejus ex-
ardeſcet: & in circuitu ejus tempeſtas va-
4 lida. Advocabit cœlum deſurſum, & ter-
5 ram diſcernere populum ſuum. Congre-
gate illi ſanctos ejus: qui ordinant
6 teſtamentum ejus ſuper ſacrificia. Et an-
nuntiabunt cœli juſtitiam ejus: quoniam
7 Deus judex eſt. Audi populus meus, &
loquar; Iſrael, & teſtificabor tibi: Deus,
8 Deus tuus ego ſum. Non in ſacrificiis tuis
arguam te: holocauſta autem tua in con-
9 ſpectu meo ſunt ſemper. Non accipiam
de domo tua vitulos, neque de gregibus
10 tuis hircos. Quoniam meæ ſunt omnes
feræ ſylvarum, jumenta in montibus &
11 boves. Cognovi omnia volatilia cœli: &
12 pulchritudo agri mecum eſt. Si eſuriero,
non dicam tibi: meus eſt enim orbis ter-
13 ræ, & plenitudo ejus. Numquid manduca-
bo carnes taurorum? aut ſanguinem hir-
14 corum potabo? Immola Deo ſacrificium
15 laudis: & redde Altiſſimo vota tua. Et in-
voca me in die tribulationis: eruam te,
16 & honorificabis me. Peccatori autem
dixit Deus; Quarè tu enarras juſtitias
meas, & aſſumis teſtamentum meum per
17 os tuum? Tu verò odiſti diſciplinam: &
18 projeciſti ſermones meos retrorſum. Si
videbas furem, currebas cum eo: & cum
19 adulteris portionem tuam ponebas. Os
tuum abundavit malitiâ: & lingua tua
20 concinnabat dolos. Sedens adverſùs fra-
trem tuum loquebaris, & adverſùs fili-
21 um matris tuæ ponebas ſcandalum: Hæc
feciſti, & tacui. Exiſtimâſti iniquè quòd
ero tuî ſimilis: arguam te, & ſtatuam con-
22 tra faciem tuam. Intelligite hæc qui ob-
liviſcimini Deum: nequando rapiat, &
23 non ſit qui eripiat. Sacrificium laudis ho-
norificabit me, & illic iter, quo oſtendam
illi ſalutare Dei.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

(α) Ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. μθ΄.
1 † Θεὸς θεῶν κύριος ἐλάλησε, ϗ ἐκάλεσε τὴν
γῆν. † ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου (β) μέχρι δυ-
2 σμῶν, † Ἐκ Σιὼν ἡ εὐπρέπεια τῆς ὡραιότητος αὐ-
3 τοῦ. † Ὁ θεὸς ἐμφανῶς ἥξει, † ὁ θεὸς ἡμῶν, ϗ οὐ
παρασιωπήσεται· † πῦρ ἐναντίον αὐτοῦ καυθήσεται,
4 † ϗ κύκλῳ αὐτοῦ καταιγὶς σφόδρα. † Προσκαλέ-
σεται τὸν οὐρανὸν ἄνω, † ϗ τὴν γῆν (γ) διακρῖναι
5 τὸν λαὸν αὐτοῦ. † Συναγάγετε αὐτῷ τοὺς ὁσίους αὐτοῦ,
† τοὺς διατιθεμένους τὴν διαθήκην αὐτοῦ ἐπὶ θυσίαις.
6 † Καὶ ἀναγγελοῦσιν οἱ οὐρανοὶ τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ,
7 † ὅτι θεὸς κριτής (δ) ἐστιν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἄκουσον
λαός μου ϗ λαλήσω σοι, † Ἰσραήλ, ϗ διαμαρ-
8 τύρομαί σοι, † ὁ θεὸς ὁ θεός σου εἰμὶ ἐγώ. † Οὐκ
ἐπὶ ταῖς θυσίαις σου ἐλέγξω σε, † τὰ δὲ ὁλοκαυτώ-
9 ματά σου ἐνώπιόν μου ἐστὶ διαπαντός. † Οὐ δέξο-
μαι ἐκ τοῦ οἴκου σου μόσχους, † οὐδὲ ἐκ τῶν ποιμνίων σου
10 (ε) χιμάρους. † Ὅτι ἐμά ἐστι πάντα τὰ θηρία τοῦ
11 (ζ) δρυμοῦ, † κτήνη ἐν τοῖς ὄρεσι, ϗ βόες. † Ἔγνω-
κα πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, † ϗ ὡραιότης ἀ-
12 γροῦ μετ᾽ ἐμοῦ ἐστιν. † Ἐὰν πεινάσω, οὐ μή σοι εἴ-
πω, † ἐμὴ γάρ ἐστιν ἡ οἰκουμένη ϗ τὸ πλήρωμα αὐ-
13 τῆς. † Μὴ φάγομαι κρέα ταύρων, † ἢ αἷμα τράγων
14 πίομαι; † Θῦσον τῷ θεῷ θυσίαν αἰνέσεως, † ϗ
15 ἀπόδος τῷ ὑψίστῳ τὰς εὐχάς σου. † Καὶ ἐπικάλε-
σαί με ἐν ἡμέρᾳ (η) θλίψεως, † ϗ ἐξελοῦμαί σε,
16 ϗ δοξάσεις με. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Τῷ δὲ ἁμαρτω-
λῷ εἶπεν ὁ θεός, † Ἱνατί σὺ (θ) διηγῇ τὰ δικαι-
ώματά μου, † ϗ ἀναλαμβάνεις τὴν διαθήκην μου διὰ
17 στόματός σου; † Σὺ δὲ ἐμίσησας παιδείαν, † ϗ (ι)
18 ἐξέβαλες τοὺς λόγους μου εἰς τὰ ὀπίσω. † Εἰ ἐθε-
ώρεις κλέπτην, συνέτρεχες αὐτῷ, † ϗ μετὰ μοιχῶν
19 τὴν μερίδα σου ἐτίθεις. † Τὸ στόμα σου ἐπλεόνασε
κακίαν, † ϗ ἡ γλῶσσά σου περιέπλεκε δολιότητα.
20 Καθήμενος κατὰ τοῦ ἀδελφοῦ σου κατελάλεις, ϗ κατὰ τοῦ
21 υἱοῦ τῆς μητρός σου ἐτίθεις σκάνδαλον. Ταῦτα ἐποίη-
σας, ϗ ἐσίγησα, ὑπέλαβες ἀνομίαν, ὅτι ἔσομαί
σοι ὅμοιος· ἐλέγξω σε, ϗ παραστήσω κατὰ πρόσω-
22 πόν σου. Σύνετε δὴ ταῦτα οἱ ἐπιλανθανόμενοι τοῦ
23 θεοῦ, μήποτε ἁρπάσῃ, ϗ μὴ ᾖ ὁ ῥυόμενος. Θυσία
αἰνέσεως δοξάσει με, ϗ ἐκεῖ ὁδὸς ἣν δείξω αὐτῷ
τὸ σωτήριον θεοῦ.

MS.A. (α) Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) ϗ μέχρι (γ) τοῦ διακρῖναι (δ) ἐστιν. Ἄκουσον (ε) χειμάρρους. (ζ) ἀγροῦ, (η) θλίψεώς σου, ϗ (θ) ἐκδιηγῇ (ι) ἐξέβαλας Deſunt in MS. A. à verſ. 19. hujus 49. Pſalmi, uſq; ad partem verſ. 12. Pſal. 79. intermedia omnia.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

[a] Pſalmus ipſi Aſaph. XLIX. 1
1 DEus (a) deorum Dominus locutus eſt: et vocavit terram. 2 A Solis ortu, uſque ad occaſum: Ex Sion ſpecies decoris e- 2
jus. 3 Deus manifeſtè veniet, De⁹ noſter, & non ſilebit. 4 Ignis in 3
conſpectu ejus ardebit, & in circuitu ejus (b) tempeſtas valida.
5 Advocabit cœlum ſurſum, & 4
terram diſcernere populum ſuum.
6 Congregate illi (c) ſanctos ejus, 5
qui [b] diſponunt teſtamentum ejus ſuper ſacrificia: 7 Et annun- 6
tiabunt cœli juſtitiam ejus, quoniam Deus judex eſt. DIAPSALMA. 8 Audi populus meus, & 7
loquar tibi: Iſrael, et teſtificabor tibi. Deus, Deus tuus ego ſum.
9 Non in ſacrificiis tuis arguā te: 8
holocauſta autem tua in conſpectu meo ſunt ſemper. 10 Non acci- 9
piam de domo tua vitulos, neque de gregib⁹ tuis (d) hircos. 11 Quo- 10
niam meæ ſunt omnes beſtiæ (e) ſylvæ, pecora in montibus, & boves. 12 Cognovi omnia volatilia 11
cœli: & ſpecies agri mecum eſt.
13 Si eſuriero, non [c] dicam tibi: 12
meus eſt enim [d] orbis terræ, & plenitudo ejus. 14 Nunquid man- 13
ducabo carnes taurorum? aut ſanguinem hircorum potabo? 15 Im- 14
mola Deo ſacrificium laudis: & redde Altiſſimo (f) vota tua. 26 Et 15
invoca me in die (g) [e] tribulationis: & eruam te; & honorificabis me. (h) DIAPSALMA.
17 Peccatori autem dixit Deus; 16
Quarè tu enarras juſtitias meas, et aſſumis teſtamentum meum per os tuum? 18 Tu verò odiſti [f] 17
diſciplinam, & projeciſti ſermones meos retrorſum. 19 Si vide- 18
bas furem; currebas cum eo: & cum (i) adulteris portionem tuam ponebas. 20 Os tuum abundavit 19
malitiâ: & lingua tua (k) concinnabat doloſitatem. 21 Sedens 20
adverſùs fratrem tuum (l) loquebaris: & adverſùs filium matris tuæ ponebas ſcandalum. Hæc fe- 21
ciſti, & [g] tacui: 22 (m) [h] ſuſpicatus es iniquitatem, quòd ero tibi ſimilis. Arguam te, & (n) ſtatuam contra faciem tuam.
23 Intelligite utique hæc [i] qui obliviſcimini Deum: ne quando (o) rapiat, & non 22
ſit, qui eripiat. 24 (p) Sacrificium laudis honorificabit me: & illic iter, quo oſtendam 23
illi ſalutare (q) Dei.

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ፡ዘደቂቀ፡ቆሬ፡መዝሙር፡ዘአሳፍ፡፡
ሀዘ አምላክ፡ አማልክት፡ እግዚአብሔር፡ 1
ነበበ፡ ወጸውዓ፡ ለምድር፡፡፦ እምሠረ 2
ቀ፡ፀሐይ፡እስከ፡ነዐረብ፡፡ወእምጽዮን፡ሥነ፡
ስብሐቲሁ፡፡፦ እግዚአብሔርሰ፡ገሃደ፡ይ 3
መጽእ፡፡ ወአምላክነሂ፡ ኢያረምም፡፡፦
እሳት፡ ይነድድ፡ ቅድሜሁ፡፡ወእውደሂ፡ዓ 4
ውሎ፡ብዙኅ፡፡፦ ይጼውዓ፡ ለሰማይ፡በላ 5
ዕሉ፡፡ወለምድርኒ፡ ከመ፡ ይኰንን፡ ሕዝ
በ፡፡፦ አስተጋብኡ፡ሎቱ፡ጻድቃኑ፡፡እለ፡ 6
ይገብሩ፡ መሥዋዕተ፡ ዘበሕጉ፡፡፦ ይነግ 7
ሩ፡ሰማያት፡ ጽድቀ፡ዚአሁ፡፡እስመ፡ እግዚ
አብሔር፡ መኰንን፡ ውእቱ፡፡፦ ስምዓኒ፡ 8
ሕዝብየ፡ ወእንግርከ፡፡ወእስራኤል፡ አስም
ዕ፡ለከ፡፡አምላክከሰ፡ አምላክ፡ አነ፡ ውእ
ቱ፡፡፦ አኮ፡በእንተ፡ መሥዋዕትከ፡ ዘእዘ 9
ለፋከ፡፡ወቍርባንከኒ፡ ቅድሜየ፡ ውእቱ፡በ
ኵሉ፡ጊዜ፡፡፦ ኢይነሥእ፡እልህምተ፡እ 10
ምቤትከ፡፡ወኢሐራጊተ፡ እምርዔትከ፡፡፦
እስመ፡ዚአየ፡ ውእቱ፡ ኵሉ፡ አራዊት፡ዘገ 11
ደም፡፡እንስሳ፡ገደም፡ወእልህምት፡፡፦ ወ 12
አአምር፡ኵሎ፡ አዕዋፈ፡ ሰማይ፡፡ወሥነ፡
ገደምኒ፡ሀቤየ፡ሀሎ፡፡፦ እመኒ፡ርኅብኩ፡ 13
ወኢይብለከ፡፡እስመ፡ ዚአየ፡ ውእቱ፡ ኵ
ሉ፡ዓለም፡ በምልኡ፡፡፦ ኢይበልዕ፡ ሥ 14
ጋ፡ላህም፡ ወኢይሰቲ፡ ደመ፡ጠሊ፡፡፦ ሡ 15
ዕ፡ለእግዚአብሔር፡መሥዋዕተ፡ስብሐት፡፡
ወሀቦ፡ ለልዑል፡ ጸሎተከ፡፡፦ ትጼውዐኒ፡ 16
በዕለተ፡ ምንደቤከ፡ አድኅነከ፡ ወተአኵተ
ኒ፡፡፦ወለኃጥእሰ፡ይቤሎ፡እግዚአብሔር፡፡ 17
ለምንት፡ ለከ፡ ትነግር፡ሕግየ፡፡ወትነሥእ፡
በአፉከ፡ሥርዐትየ፡፡፦ ወአንተሰ፡ ጸላእ 18
ከ፡ ተግሣጽየ፡፡ወአግባእከ፡ ድኅሬከ፡ ቃል
የ፡፡፦ ወእመኒ፡ ርኢከ፡ ሰራቄ፡ ተረውጽ፡ 19
ምስሌሁ፡፡ወረሰይከ፡ መክፈልተከ፡ ምስለ፡
ዘማውያን፡፡፦ አፉከ፡አብዝኃ፡ለእኪት፡፡ 20
ወልሳንከ፡ ጸፈረ፡ ለኅብል፡፡፦ ትነብር፡ወ 21
ተሐምዮ፡ ለእኁከ፡፡ወአንበርከ፡ ዕቅፍተ፡
ለወልደ፡እምከ፡፡ዘንተ፡ ገቢረከ፡ አርመም
ከ፡ለከ፡፡፦ ኢያምተከኑ፡ ኃጢአተ፡ ሐዘ 22
ብከኑ፡እኩን፡ ከማከ፡፡እዛለፍከኑ፡ ወአቁ
ም፡ቅድመ፡ገጽከ፡፡፦ ለብው፡ዘንተ፡ኵ 23
ልክሙ፡ እለ፡ትረስዕዎ፡ ለእግዚአብሔር፡፡
ወእሙአኮሰ፡ ይመስጥ፡ ወአልቦ፡ ዘያድኅ
ን፡፡፦ መሥዋዕተ፡ክብርት፡ ትሴብሐኒ፡፡ 24
ህየ፡ፍኖተ፡እንተ፡ባቲ፡ አርእዮ፡ አድኅኖቶ፡
ለእግዚአብሔር፡፡፦

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. XLIX. [a] In finem filiis Core, Pſalmus [b] faciunt ſacrificia quæ in lege ejus: [c] te expoſcam: [d] totus orbis: [e] tribulationis tuæ: [f] diſciplinam meam, [g] tacui tibi: [h] Invitaſtine peccatum? an putas, quod ero [i] vos omnes qui

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور التاسع والاربعون * لاصاف * وهو مز * استيكن *
2 اله الالهة الرب يتكلم * ودعا الارض من مشارق الشمس الي مغاربها * في صهيون جمال بهايه *
3 4 * الله ياتي ظاهرا * والهنا لا يغفل * النار تتقد امامه * وحولها عاصف جدا * يدعو السماء من
5 فوق * والارض الي محاكمة شعبه * اجمعوا اليه يا قديسيه * الواضعين عهده علي الذبائح
6 7 * والسموات تخبر بعدله * لان الله هو الديان * اسمع يا شعبي لاتكلم معك * ويا اسرائيل لاشهد
8 9 عليك * انا هو الله الهك * لست اوبخك علي ذبائحك * محرقاتك امامي في كل حين * لا اقبل
10 عجولا من بيتك * ولا جداء من قطعانك * لان لي جميع وحوش البرية * بهائم الجبال والبقر
11 12 * وجميع طيور السماء اعرفها * ومعي بهاء الحقول * ان جعت فلا اقول لك لان لي المسكونة
13 14 عليها * هل اكل لحم الثيران واشرب دم المعز * اذبح لله ذبيحة التسبيح واوف للعلي نذورك *
15 16 * اصرخ الي في يوم شدتك فانقذك وتمجدني * قال الله للخاطي لماذا انت تخبر بعدلي وتاخذ
17 18 بفيك عهدي * وانت ابغضت ادبي واطرحت وراءك كلامي * ان رايت سارقا سعيت معه ومع
19 20 الفاسقين جعلت نصيبك * فمك اكثر في الشر لسانك ينطق بالغش * انت جالس تتكلم
21 في اخيك * وابن امك تركت له معثر * صنعت هذه وكففت عنك * اظننت ايها الاثيم اني
22 اكون مثلك * كلا وساوبخك واقيمهن امام وجهك * افهموا هذه ايها الناسيون الله لئلا
23 تختطفوا وليس من يخلص * ذبيحة التسبيح تمجدني * وهناك اريك سبيل خلاص الله * الليلويا *

PSAL. XLIX.
Aſaphi. Verſ. 47. 1

DEus deorum Dominus loquetur, & advocavit terram ab ortibus ſolis ad
occaſus ejus. In Sion pulchritudo decoris 2
ejus. Deus veniet apertè, & Deus noſter 3
non negliget: ignis exardeſcet ante eum,
circundatus tempeſtate validâ. Vocabit 4
cœlum deſuper, et terram ad judicandum
populum ſuum. Congregamini ad eum, O 5
Sancti ejus, ponentes teſtamentum ejus ſu-
per ſacrificia. Et cœli narrabunt juſtiti- 6
am ejus, quoniam Deus eſt judex. Audi, 7
O popule mi, ut alloquar te, & O Iſrael,
ut obteſter contra te. Ego ſum Deus, De-
us tuus. Non reprehendam te de ſacrifi- 8
ciis tuis, holocauſta tua in conſpectu meo
ſunt in omni tempore. Non accipiabo vi- 9
tulos de domo tua, neque hœdos de gregi-
bus tuis. Quoniam meæ ſunt omnes bel- 10
luæ deſerti, animalia montium, et boves:
Omneſque volucres cœli cognoſco, & me- 11
cum eſt decus agrorum. Si eſuriero, non 12
dicam tibi: quoniam mihi eſt orbis cum
plenitudine ejus. Num manduco carnem 13
taurorum, & bibo ſanguinem caprarum?
Sacrifica Deo ſacrificium laudis, & per- 14
ſolve Altiſſimo vota tua. Clama ad me in 15
die tribulationis tuæ, & redimam te, &
glorificabis me. Dixit Deus peccatori, 16
Quarè tu enarras æquitatem meam, &
accipis ore tuo pactum meum: Et tu odi- 17
ſti diſciplinam meam, & projeciſti retro
te verba mea? Si vidiſti furem, negotia- 18
tus es cum eo, & cum ſceleſtis conſtituiſti
partem tuam: Os tuum profudit malum, 19
lingua tua profert dolum: Tu ſedens ob- 20
loqueris in fratrem tuum, & filio matris
tuæ poſuiſti offendiculum. Feciſti hoc, 21
& contraxi me à te: exiſtimâſti, O ini-
que, fore me tui ſimilem. Haudquaquam,
ſed arguam te, & ſtatuam ea ante faci-
em tuam. Intelligite hæc, O obliviſcentes 22
Deum, ut ne rapiamini & non ſit qui ſal-
vet. Sacrificium laudis glorificabit me, 23
& illic oſtendam tibi viam ſalutis Dei:
Alleluja.

תהלים : נא נב

PSAL. LI. נא

1 quando : prophetam Nathan eum ad veniendo In .David ipsi cantus Victori
2 למנצח מזמור לדוד : בבוא-אליו נתן הנביא כאשר-
: tuam misericordiam secundùm Deus mei Miserere .sebah---Bath ad intravit
3 בא אל-בת-שבע : חנני אלהים כחסדך
Multiplica .meas prævaricationes dele tuarum miserationum multitudinem secundũ
4 כרב רחמיך מחה פשעי : הרבה
meas prævaricationes Quoniam .me munda meo peccato à &;mea iniquitate ab me lava
5 כבסני מעוני ומחטאתי טהרני : כי-פשעי
, peccavi tibi soli , Tibi .semper me coram meum peccatum &;cognoscam ego
6 אני אדע וחטאתי נגדי תמיד : לך לבדך חטאתי
.te judicando in sis mundus ,te loquendo in sis justus ut , feci tuis oculis in malum &
והרע בעיניך עשיתי למען תצדק בדברך תזכה בשפטך :
veritatem Ecce .mea mater me calefecit peccato in & ; sum formatus iniquitate in Ecce
7 8 הן-בעוון חוללתי ובחטא יחמתני אמי : הן-אמת
me peccato à Purificabis .me facies scire sapientiam abstruso in & : renibus in voluisti
9 חפצת בטחות ובסתם חכמה תודיעני : תחטאני
me facies Audire .dealbabor nive præ & , me lavabis : mundabor & , hyssopo in
10 באזוב ואטהר תכבסני ומשלג אלבין : תשמיעני
tuas facies Absconde .contrivisti , ossa exultabunt : lætitiam & ,gaudium
11 ששון ושמחה תגלנה עצמות דכית : הסתר פניך
; Deus mihi crea mundum Cor .dele meas iniquitates omnes &;meis peccatis à
12 מחטאי וכל-עונתי מחה : לב טהור ברא-לי אלהים
spiritum &:tuis faciebus à me projicias Ne .meo interiori in innova rectum spiritum &
13 ורוח נכון חדש בקרבי : אל-תשליכני מלפניך ורוח
spiritu & ; tuæ salutis gaudium mihi Redde .me à capias ne tuæ sanctitatis
14 קדשך אל-תקח ממני : השיבה לי ששון ישעך ורוח
te ad peccatores & : tuas vias prævaricatores Docebo .me fulcies voluntario
15 נדיבה תסמכני : אלמדה פשעים דרכיך וחטאים אליך
laudabit : meæ salutis Deus , Deus sanguinibus de me Erue .convertentur
16 ישובו : הצילני מדמים אלהים אלהי תשועתי תרנן
annunciabit meum os & ; aperies mea labia Domine .tuam justitiam mea lingua
17 לשוני צדקתך : אדני שפתי תפתח ופי יגיד
non ascensionem : darem & ,sacrificium voles non Quoniam .tuam laudem
18 תהלתך : כי לא-תחפץ זבח ואתנה עולה לא
confractum & , contritum cor : contritus spiritus Dei Sacrificia .acceptabis
19 תרצה : זבחי אלהים רוח נשברה לב-נשבר ונדכה
muros ædificabis : Sijon ipsi tua voluntate in fac Bene .despicies non Deus
20 אלהים לא תבזה : היטיבה ברצונך את-ציון תבנה חומות
tunc : holocaustum & , ascensionem , justitiæ sacrificia voles Tunc .Jerusalaim
21 ירושלם : אז תחפץ זבחי-צדק עולה וכליל אז
.juvencos tuum altare super facient ascendere
יעלו על-מזבחך פרים :

PSAL. LII. נב

, Saul ipsi nunciavit & ,Edomæum Doegh veniendo In .David ipsi Mischil Victori
1 2 למנצח משכיל לדוד : בבוא דואג האדמי ויגד לשאול
.Achimelech domum in David Venit : ei dixit &
ויאמר לו בא דוד אל-בית אחימלך :

תרגום TARGUM.

נא

1 2 לשבחא תשבחתא לדוד : כד אתא לותיה נתן
3 נביא כד שמש עם בת שבע : חוס עלי יי היך
טיבותך היך סגיעות רחמיך שבוק מרודי :
4 סוגעא תחוורנני מן עויתי ומן חובי תדכי יתי :
5 ארום מרודי קדמי גלין וחובי לקבלי תדירא :
6 קדמך בלחודך חבית ודביש קדמך עבדית מן
בגלל דתזכי יתי במללותך תברור יתי כד תדין :
7 הא בעויא אתילידית ובחובא עברת מני אמי :
8 הא קושטא רעיתא בכולין ובטמור לבא
9 חוכמתא תהודענני : תדי עלי היך כהנא דמדי
באזובא על מסאבא מוי אדיותא מן קטם תורתא
10 ואדכי תסחנני ומן תלגא אתחור : תבשרנני
חדוא ואריצותא תביען תושבחתא איבריא
11 דשפיתא : סליק אפך מן חובי וכל עויתי מחי :
12 לב בריר ברי לי אלהא ורוח מכון בדחלתך
13 חדית בגוי : לא תטלוק יתי מן קדמך ורוח
14 נבואת קודשך לא תסלק מני : אתיב לי אוריתך
למדוץ בפורקנך ורוח נבואה תסמכנני :
15 אאליף למרודיא ארחתך וחיביא קדמך יתובון :
16 פצי יתי מדין קטול יי אלהי פורקני תביע לישני
17 צדקתך : יי ספותי פתח באוריתא ופומי יתני
18 תושבחתך : ארום לא תצבי נכסת קודשא ואתן
19 עלתא לא תתרעי : נכסת קודשא דאלהא נפשא
מתברא לב תביר ושפי אלהא לא תבסור :
20 אוטיב ברעותך ית ציון תשכלל שורי ירושלם :
21 בכן תצבי דבחין דצדקתא עלתא וגמיר הבכן
יסקון כהניא על מדבחך תורין :

נב

1 2 לשבחא על שכלא טבא על ידוי דדויד : כד
אתי דואג אדומאה ותני לשאול ואמר ליה
אתא דוד לבית אחימלך :

PARAPH. CHALD. Verſ. La

PSAL. LI.

Ad laudandum hymnus Davidi. Quando venit ad eum Nathan propheta quando miſcuit ſe cum Bathſabah.

Miſerere mei Deus ſecundùm benignitatem tuam: ſecundùm multitudinem miſerationum tuarum, remitte prævaricationes meas. Admodum lavabis me ab iniquitatibus meis, & à culpa mea mundabis me. Quoniam ſcelera mea coram me manifeſta ſunt: & peccatum meum in conſpectu meo ſemper. Coram te ſolo peccavi, & malum hoc coram te feci, propterea mundabis me cùm locutus fueris; purum reddes me cùm judicaveris. Ecce in *iniquitate genitus ſum*, & in peccato *impragnata eſt* de me mater mea. Ecce veritatem voluiſti in renibus: & in abſcondito cordis ſapientiam docebis me. Infundes ſuper me ſicut ſacerdos, qui profundit cum hyſſopo ſuper immundum aquas aſperſionis de cinere vaccæ, & mundus ero: lavabis me, & pluſquam nix candidus fiam. *Annunciabis mihi* gaudium & lætitiam, & perſonabunt laudem oſſa quæ confregiſti. Amove faciem tuam à peccatis meis, & cunctas iniquitates meas expunge. Cor mundum crea mihi Deus, & ſpiritum rectum in timore tuo renova in *intimo* meo. Ne projicias me à præſentia tua, & ſpiritum propheticum ſanctitatis tuæ ne auferas à me. Converte ad me legem tuam ut gaudeam in redemptione tua, & ſpiritu *prophetiæ* confortabis me. Docebo ſceleſtos vias tuas, & impii coram te convertentur. Libera me de judicio interfectionis Domine Deus meus *redemptio mea*: & laudabit lingua mea *juſtitiam tuam*. Domine labia mea aperi in lege: & os meum annunciabit laudem tuam. Quoniam non optabis ſacrificia ſancta: holocauſtum quoque ſi dedero, non voles. Sacrificia ſancta Dei anima contrita, cor contritum & concuſſum Deus non deſpicies. Fac benignè in voluntate tua cum Sijon: ædificabis muros Jeruſalem. Tunc acceptabis *ſacrificia* juſtitiæ, oblationem & *holocauſtum*; tunc ponent ſacerdotes ſuper altare tuum vitulos.

PSAL. LII.

Ad laudandum in intellectu bono per manus Davidis: Quando acceſſit Doeg Idumæus & nunciavit Sauli, & dixit ei: Venit David in domum Achimelech.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܢܐ *

1 [illegible]
2
3 [illegible]
4 [illegible]
5 6 [illegible]
[illegible]
7 8 [illegible]
9 [illegible]
10 11 [illegible]
12 [illegible]
13 14 [illegible]
15 [illegible]
16 [illegible]
17 18 [illegible]
19 [illegible]
20 [illegible]
21 [illegible]

PSAL. LI.

Davidis. Quum peccavit & occidit am. Nobis autem ſignificatur documentum & confeſſio. Verſ. 41.

Miſerere mei Deus ſecundùm bonitatem tuam, & ſecundùm multitudinem miſerationum tuarũ dele peccata mea. Multiplica lavare me ab iniquitate mea, & à peccatis meis munda me. Quoniam delicta mea ego novi, & peccata mea ex adverſo mihi ſunt omni tempore. In te ſolum peccavi, & malum coram te feci; quoniam juſtificaberis in verbo tuo, & vinces in judiciis tuis. Quoniam in iniquitate conceptus ſum, & in peccatis concepit me mater mea. Tu autem æquitatem dilexiſti, & abſcondita ſapientiæ tuæ nota feciſti mihi. Aſperge me hyſſopo & mundabor: lava me eâdem, & nive candidior ero. Satia me voluptate tuâ, & lætitiâ tuâ gaudebunt oſſa mea humilia. Averte faciem tuã à peccatis meis, & omnes ſtultitias meas dele. Cor mundũ crea in me Deus, & ſpiritum rectum innova intra me. Ne projicias me à conſpectu tuo, & ſpiritum tuum ſanctum ne ſumas à me. Sed reſtitue mihi ſuavitatem & ſalutem tuã, & ſpiritus tuus glorioſus fulciat me. Ut doceam iniquos viam tuã, & peccatores ad te convertantur. Libera me à ſanguinibus Deus meus, Deus ſalutis meæ: & laudabit lingua mea juſtitiam tuam. Domine aperi labia mea, & os meũ canet laudes tuas. Quoniam non delectaris ſacrificiis, neque holocauſtis perfectis placaris. Sacrificia Deo ſpiritus eſt humilis: cor contritum Deus non deſpicit. Benefac ex beneplacito tuo Sioni: ædifica muros Jeruſalem. Tum oblectaberis ſacrificiis juſtitiæ, holocauſtis perfectis: aſcendent boves ſuper aram tuam.

* ܡܙܡܘܪܐ ܢܒ *

1 2 [illegible]

PSAL. LII.

Davidis. Arguit in omnes malos. Et docet extirpationem eorum. Ver

Verſio VULG. LAT.

1 In finem, Pſalmus David,
2 Cùm venit ad eum Nathan Propheta,
quando intravit ad Bethſabee.
(2. Reg. 12.) L.

3 Miſerere mei, Deus, ſecundùm magnam
miſericordiam tuam: Et ſecundùm multitudinem miſerationum tuarum,
4 dele iniquitatem meam. Amplius
lava me ab iniquitate mea: & à peccato
5 meo munda me. Quoniam iniquitatem
meam ego cognoſco: & peccatum meum
6 contra me eſt ſemper. Tibi ſoli peccavi,
& malum coram te feci: ut juſtificeris in
ſermonibus tuis, & vincas cùm judicaris.
7 Ecce enim in iniquitatibus conceptus
ſum: & in peccatis concepit me mater
8 mea. Ecce enim veritatem dilexiſti: incerta
& occulta ſapientiæ tuæ manifeſtâſti
9 mihi. Aſperges me hyſſopo, & mundabor:
lavabis me, & ſuper nivem dealbabor.
10 Auditui meo dabis gaudium &
lætitiam: & exultabunt oſſa humiliata.
11 Averte faciem tuam à peccatis meis: &
12 omnes iniquitates meas dele. Cor mundum
crea in me, Deus: & ſpiritum rectum
13 innova in viſceribus meis. Ne projicias
me à facie tua: & ſpiritum ſanctum
14 tuum ne auferas à me. Redde mihi lætitiam
ſalutaris tui: & ſpiritu principali
15 confirma me. Docebo iniquos vias tu-
16 as: & impii ad te convertentur. Libera
me de ſanguinibus, Deus, Deus ſalutis
meæ: & exultabit lingua mea juſtitiam
17 tuam. Domine, labia mea aperies: &
os meum annuntiabit laudem tuam.
18 Quoniam ſi voluiſſes ſacrificium, dediſſem
utique: holocauſtis non delectaberis.
19 Sacrificium Deo ſpiritus contribulatus:
cor contritum & humiliatum, Deus,
20 non deſpicies. Benignè fac, Domine,
in bonâ voluntate tua Sion, ut ædificen-
21 tur muri Jeruſalem. Tunc acceptabis
ſacrificium juſtitiæ, oblationes, & holocauſta:
tunc imponent ſuper altare tuum vitulos.

1 In finem, intellectûs David,
2 Cùm venit Döeg Idumæus, & nuntiavit
Sauli; Venit David in domum Achimelech.
(1. Reg. 22. 9.) LI.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, Ἐν τῷ ἐλ-
2 θεῖν πρὸς αὐτὸν Νάθαν τὸν προφήτην,
ἡνίκα εἰσῆλθε πρὸς Βηρσαβεέ. ν΄.

3 Ἐλέησόν με ὁ θεὸς κατὰ τὸ μέγα ἔλεός σου, καὶ κατὰ
τὸ πλῆθος τῶν οἰκτιρμῶν σου ἐξάλειψον τὸ ἀνόμημά
4 μου. Ἐπιπλεῖον πλῦνόν με ἀπὸ τῆς ἀνομίας
5 μου, καὶ ἀπὸ τῆς ἁμαρτίας μου καθάρισόν με. Ὅτι
τὴν ἀνομίαν μου ἐγὼ γινώσκω, καὶ ἡ ἁμαρτία μου ἐνώπιόν
6 μου ἐστὶ διαπαντός. Σοὶ μόνῳ ἥμαρτον, καὶ
τὸ πονηρὸν ἐνώπιόν σου ἐποίησα· ὅπως ἂν δικαιωθῇς
ἐν τοῖς λόγοις σου, καὶ νικήσῃς ἐν τῷ κρίνεσθαί
7 σε. Ἰδοὺ γὰρ ἐν ἀνομίαις συνελήφθην, καὶ ἐν
8 ἁμαρτίαις ἐκίσσησέ με ἡ μήτηρ μου. Ἰδοὺ γὰρ ἀλήθειαν
ἠγάπησας, τὰ ἄδηλα καὶ τὰ κρύφια τῆς σοφίας
9 σου ἐδήλωσάς μοι. Ῥαντιεῖς με ὑσσώπῳ καὶ
καθαρισθήσομαι, πλυνεῖς με καὶ ὑπὲρ χιόνα λευκανθήσομαι.
10 Ἀκουτιεῖς με ἀγαλλίασιν καὶ εὐφροσύνην,
11 ἀγαλλιάσονται ὀστᾶ τεταπεινωμένα. Ἀπόστρεψον
τὸ πρόσωπόν σου ἀπὸ τῶν ἁμαρτιῶν μου, καὶ πάσας
12 τὰς ἀνομίας μου ἐξάλειψον. Καρδίαν καθαρὰν
κτίσον ἐν ἐμοὶ ὁ θεὸς, καὶ πνεῦμα εὐθὲς ἐγκαίνισον
13 ἐν τοῖς ἐγκάτοις μου. Μὴ ἀπορρίψῃς με
ἀπὸ τοῦ προσώπου σου, καὶ τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιόν σου μὴ
14 ἀντανέλῃς ἀπ᾽ ἐμοῦ. Ἀπόδος μοι τὴν ἀγαλλίασιν
τοῦ σωτηρίου σου, καὶ πνεύματι ἡγεμονικῷ στήριξόν
15 με. Διδάξω ἀνόμους τὰς ὁδούς σου, καὶ ἀσεβεῖς
16 ἐπὶ σὲ ἐπιστρέψουσι. Ῥῦσαί με ἐξ αἱμάτων
ὁ θεὸς, ὁ θεὸς τῆς σωτηρίας μου, ἀγαλλιάσεται ἡ
17 γλῶσσά μου τὴν δικαιοσύνην σου. Κύριε τὰ χείλη
μου ἀνοίξεις, καὶ τὸ στόμα μου ἀναγγελεῖ τὴν αἴνεσίν
18 σου. Ὅτι εἰ ἠθέλησας θυσίαν, ἔδωκα ἄν, ὁλοκαυτώματα
19 οὐκ εὐδοκήσεις. Θυσία τῷ θεῷ
πνεῦμα συντετριμμένον, καρδίαν συντετριμμένην
καὶ τεταπεινωμένην ὁ θεὸς οὐκ ἐξουδενώσει.
20 Ἀγάθυνον κύριε ἐν τῇ εὐδοκίᾳ σου τὴν Σιών, καὶ οἰκοδομηθήτω
21 τὰ τείχη Ἱερουσαλήμ. Τότε εὐδοκήσεις
θυσίαν δικαιοσύνης ἀναφορὰν, καὶ ὁλοκαυτώματα,
τότε ἀνοίσουσιν ἐπὶ τὸ θυσιαστήριόν σου μόσχους.

1 Εἰς τὸ τέλος συνέσεως τῷ Δαυίδ, Ἐν τῷ ἐλθεῖν
2 Δωὴκ τὸν Ἰδουμαῖον, καὶ ἀναγγεῖλαι τῷ Σαοὺλ, καὶ εἰπεῖν
αὐτῷ, Ἦλθε Δαυὶδ εἰς τὸν οἶκον Ἀβιμέλεχ. να΄.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

In finem, Pſalmus ipſi David, Cùm 1
venit ad eum Nathan Propheta, 2
quando intravit [a] ad (a) [b]
Berſabee. L.

1 Miſerere (b) mei, Deus, ſecundùm magnam miſericordiam 3
tuam: 2 Et ſecundum
multitudinem miſerationum tuarũ, dele iniquitatẽ meã. 3 [c] Amplius 4
lava me ab iniquitate mea;
& à peccato meo munda me.
4 Quoniam iniquitatẽ meam ego 5
cognoſco: & peccatum meum coram me eſt ſemper. 5 Tibi ſoli peccavi, 6
& malum coram te feci: ut
juſtificeris in ſermonibus tuis, &
(c) vincas, cum judicaris. 6 Ecce 7
enim in iniquitatibus conceptus
ſum: & in peccatis (d) concepit
me mater mea. 7 Ecce enim veritatem 8
(e) dilexiſti: [d] incerta
& occulta ſapientiæ tuæ manifeſtâſti
mihi: 8 Aſperges me hyſſopo, 9
& mundabor. : lavabis
me, & ſuper nivem dealbabor.
9 (f) Audire me facies exultationem 10
& lætitiam: exultabunt
oſſa [e] humiliata. 10 Averte faciem 11
tuam à peccatis meis, & omnes
iniquitates meas [f] dele.
11 Cor mundũ crea in me, Deus, et 12
ſpiritum rectum innova in viſceribus
meis. 12 Ne projicias me 13
à facie tua: & ſpiritum ſanctum
tuum ne (g) auferas à me. 13
Redde mihi exultationem [g] ſalutaris 14
tui: & ſpiritu principali
confirma me. 14 [h] Docebo iniquos 15
vias tuas: & impii ad te
convertentur. 15 Libera me de 16
ſanguinibus, [i] Deus, Deus ſalutis
meæ: (h) exultabit lingua mea
[k] juſtitiam tuam. 16 Domine, 17
labia mea aperies; et os meum annuntiabit
laudem tuam. 17 Quoniam, 18
ſi voluiſſes ſacrificium, dediſſem
utique: holocauſtis non
delectaberis. 18 Sacrificium Deo 19
ſpiritus [l] contribulatus: cor (i)
contritum, et humiliatũ Deus non
deſpiciet. 19 (k) Benignè fac, Domine, 20
in bona voluntate tua Sion:
ut ædificentur muri Hieruſalem. 20 Tunc acceptabis ſacrificiũ juſtitiæ oblationẽ, 21
et holocauſta: tunc imponent ſuper altare tuum vitulos.

MS. Æthiop. Pocock. Gloria Patri, & Filio, & Spiritui ſancto: Amen.

In finem, intellectûs ipſi David, Cùm venit Doec Idumæus, & annuntiavit Sauli, 1 2
& dixit ei; Venit David in domum (a) Abimelech. LI.

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘደዊት፡አመ፡መጽ
አ፡ኀቤሁ፡ናታን፡ነቢይ፡ዘአመ፡ቦ
አ፡ኀቤሁ፡ለአበሰቢ፡፡

ሣ ተሣሀለኒ፡ እግዚኦ፡ በከመ፡ ዐቢየ፡ ሣህል 1
ከ፡፡=፡ ወበከመ፡ብዝኀ፡ምሕረትከ፡ደም 2
ስስ፡ኃጢአትየ፡፡=፡ ሕጽበኒ፡ወአንጽሐኒ፡ 3
እምኃጢአትየ ፡፡ ወእምአበሳየኒ፡ አንጽሐ
ኒ፡፡=፡ እስመ፡ለልየ፡ አአምር፡ ጌጋይየ፡፡ 4
ወኃጢአትየኒ፡ ቅድሜየ፡ ውእቱ፡ በኵሉ፡
ጊዜ፡፡=፡ ለከ፡ለባሕቲትከ፡አበስኩ፡ወእኩ 5
የኒ፡በቅድሜከ፡ገበርኩ፡፡ከመ፡ ትጽድቅ፡በ
ነቢብከ፡ ወትማዕ፡ በኵነኔከ፡፡=፡ እስመ፡ 6
ናሁ፡ በኃጢአት፡ ተፀነስኩ፡፡ወበዓመፃ፡ወለ
ደተኒ፡እምየ፡፡=፡ እስመ፡ ናሁ፡ ጽድቀ፡አ 7
ፍቀርከ፡፡ዘኢይትነበብ፡ ኅቡአ፡ ጥበብከ፡
አይደዐከኒ፡፡=፡ ትነዝኀኒ፡ በአዛብ፡ወእነ 8
ጽሕ፡፡ተኀፅበኒ፡ እምበረድ፡ እጸዐዱ፡፡=፡
ቲሰምዐኒ፡ትፍሥሕተ፡ ወሐሤተ፡፡ወይትፌ 9
ሥሑ፡አዕጽምተ፡ጸድቃን፡፡=፡ሚጥ፡ገጽ 10
ከ፡ እምኃጢአትየ፡፡ወደምስስ፡ ሲተ፡ ኵ
ሎ፡አበሳየ፡፡=፡ ልበ፡ንጹሐ፡ፍጥር፡ሊተ፡ 11
እግዚኦ፡፡መንፈሰ፡ርቱዐ፡ ሐድስ፡ ውስተ፡ከ
ርሥየ፡፡=፡ ሊትግድፈኒ፡ እምቅድመ፡ ገ 12
ጽከ፡፡ወመንፈስከ፡ቅዱስ፡ ሊታውፅእ፡ እም
ላዕሌየ፡፡=፡ ዕስየኒ፡ ፍሥሐ፡ወአድኅኖት 13
ከ፡፡ወበመንፈስ፡አዚዝ፡ አጽንዐኒ፡፡=፡ ከ 14
መ፡እምህርሙ፡ ለኃጥአን፡ ፍኖተከ፡፡ወረሲ
ዓን፡ይትመየጡ፡ ኀቤከ፡፡=፡ አድኅነኒ፡አ 15
ምደም፡እግዚአብሔር፡ አምላከ፡ መድኃኒ
ትየ፡፡ ይትፌሣሕ ፡ ልሳንየ ፡ በጽድቀ ፡ ዚአ
ከ፡16እግዚኦ፡፡ትከሥት፡ከናፍርየ፡ወአፈየ፡ 16
ያየድዕ፡ስብሐቲከ፡፡=፡ ሶበሰ፡ፈቀድከ፡መ 17
ሥዋዕተኒ፡እምወሀብኩ፡፡ወጽንሐሐኒ፡ሊት
ሠምር፡፡=፡ መሥዋዕቱ ፡ ለእግዚአብሔ 18
ር፡መንፈስ፡ የዋህ፡፡ልበ፡ ትሑተ፡ ወየዋሃ፡ሊ
ይሜንን፡እግዚአብሔር፡፡=፡አሠኒ፡እግዚ 19
ኦ፡በሠምረትከ፡ለጽዮን፡፡ወይትሐነጻ፡አረ
ፋቲሃ፡ ለኢየሩሳሌም፡፡=፡ አሜ፡ ትሠም 20
ር ፡ መሥዋዕተ ፡ ጽድቅ፡፡ መባእኒ ፡ ቍርባ
ንኒ፡፡አሚሃ፡ የዐርጉ፡ ውስተ፡ ምሥዋዒከ፡
አልህምተ፡፡=፡
ስብሐት ፡ ለአብ ፡ ወወልድ ፡ ወመንፈስ ፡ ቅ
ዱስ፡አሜን፡፡=፡

ፍጻሜ፡ዘበ፡አእምሮ፡ዘደዊት፡ዘአመ፡
1 2 መጽአ፡ደይቅ፡ኤዶማዊ፡ወነገሮ፡ለሳኦል፡ወ
ይቤሎ፡ማጽአ፡ደዊት፡ቤቶ፡ለአቤሜሌክ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. L. [a] ad eum de [b] Abſabi. [c] Lavans purga me [d] inenarrabilia & occulta [e] rectificata. [f] dele mihi. [g] & ſalutare tuum: & ſpiritu morigero [h] Ut doceam peccatores [i] Domine, [k] in juſtitia tua. [l] ſimplex: cor

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* المزمور الخمسون *

1 *لداود قاله لما قتل اوريا * واتاه ناثان النبي وبكته على ذلك * كب استيخن *
2
3 * ارحمني يا الله كعظيم رحمتك * ومثل كثرة رافتك تمحو ذنبي * واغسلني كثيرا من اثمي *
4
5 وطهرني من خطيتي * لاني عارف اثمي وخطيتي امامي في كل حين * لك وحدك اخطات *
6
7 والشر قدامك صنعت * لكي تصدق في اقوالك وتغلب اذا حوكمت * لاني هانذا بالاثم حبل
8 بي * وبالخطايا ولدتني امي * لانك ها انت هويت العدل * اعلمتني خفايا وبواطن حكمتك *
9
10 * تنضح على بزوفك فانقا * وتغسلني فابيض مثل الثلج * تسمعني سرورا وفرحا * وتبتهج عظامي
11
12 المتواضعة * اصرف وجهك عن خطاياي * وجميع اثامي امحوها يا الله * قلبا طاهرا تخلق
13 في يا الله * وروحا مستقيما جدده في باطني * لا تطرحني من بين يديك * ولا تنزع عني روح
14
15 قدسك * اعطني بهجة خلاصك * وبروح قادر تبتني * لاعلم المخالفين طرقك * واليك يرجع
16
17 المنافقون * خلصني من الدماء يا الله اله خلاصي * ليسبح بعدلك لساني * يا رب تفتح شفتي
18 فينطق فمي بتسبحتك * لانك لو شئت الذبائح لكنت اعطيها وايضا بمحرقات السواء لم تسر
19
20 بها * ذبائح الله ارواح متواضعة قلب منسحق متواضع هذا يا الله لا ترذله * انعم يا رب على
21 صهيون بمسرتك * وابن حصون يروسليم * حينئذ تسر بذبائح العدل والوفود الكاملة * حينئذ
يرفع العجول على مذابحك * اللليلويا * المزمور الحادي والخمسون *
1
2 * فهم لداود حين جاء دويك الادومي واخبر ساوول ان داود قد جاء الي
بيت ابيمالك * استيخن يط *

PSAL. L.

Davidi, quem dixit quum interfecit 1
Uriam, Et venit ad eum Na- 2
than propheta, eúmque ob id corripuit.
Verſ. 22.

Miſerere mei O Deus, ſecundùm 3
magnitudinem miſericordiæ tuæ,
& ſecundùm multitudinem pietatis tuæ
deleas culpam meam. Et laves me mul- 4
tùm ab iniquitate mea, & mundes me à
peccato meo. Quia ego gnarus ſum ini- 5
quitatis meæ, & peccatum meum coram
me eſt omni momento. Tibi ſoli peccavi, 6
& malum coram te commiſi: ut verax ſis
in ſermonibus tuis, & vincas cùm judi-
catus fueris. Nam ecce ego in iniquitate 7
conceptus ſum, & in peccatis genuit me
mater mea. Quoniam ecce tu voluiſti æ- 8
quitatem, docuiſti me ſecreta & interna
ſapientiæ tuæ. Aſpergas me hyſſopo tuâ, 9
& mundabor: lavéſque me, & albeſcam
ut nix. Audire fac me exultationem & 10
gaudium, & exhilarabuntur oſſa mea hu-
miliata. Averte faciem tuam à peccatis 11
meis, & univerſa ſcelera mea deleas, O
Deus. Cor mundum crees in me, O Deus, 12
& ſpiritum rectum innova in præcordiis
meis. Ne abjicias me à conſpectu tuo, & 13
ne ſpolies me Spiritu ſanctitatis tuæ. Da 14
mihi hilaritatem ſalutis tuæ, & ſpiritu
potenti confirma me. Ut doceam inobe- 15
dientes vias tuas, & ad te convertantur
impii. Libera me de ſanguinibus, O Deus, 16
Deus ſalutis meæ: ut celebret æquitatem
tuam lingua mea. O Domine, aperias la- 17
bia mea, & pronuntiabit os meum laudem
tuam. Quoniam ſi velles ſacrificia, ſanè 18
offerrẽ ea: at ne quidẽ holocauſtis aſſatio-
nis oblectaris. Sacrificia Dei, ſpiritus hu- 19
miliati: cor contritũ, humiliatum, hoc Deus
non deſpicies. Benefac, O Domine, Sioni 20
voluntate tuâ, & ædifica arces Jeruſa-
lem. Tunc oblectaberis ſacrificiis æquita- 21
tis, & holocauſtis perfectis: tunc attol-
lentur vituli ſuper altaria tua. Allelujà.

PSAL. LI. 1

Intellectus Davidi. Quum venit 2
Doec Idumæus et retulit Sauli Davidem
veniſſe in domum Abimelech.
Verſ. 19.

תהלים : נג

Pravitates ... .die omni Dei misericordia ? potens ô malitia *in gloriaberis* Cur
3 4 מה־תתהלל ברעה הגבור חסד אל כל־היום: הוות
malum Dilexisti .dolum faciens acuta novacula sicut : tua lingua *cogitabit*
5 תחשב לשונך כתער מלטש עשה רמיה: אהבת רע
verba *omnia* Dilexisti .Selah , justitiam loqui quàm mendacium : *bono præ*
6 מטוב שקר מדבר צדק סלה: אהבת כל־דברי־
, te *conteret æternum* in : te destruet Deus Etiam .dolosa lingua devorationis
7 בלע לשון מרמה: גם־אל יתצך לנצח יחתך
videbunt Et .Selah , viventium terra è te eradicabit & : tabernaculo è te *abradet* &
8 ויסחך מאהל ושרשך מארץ חיים סלה: ויראו
non vir Ecce .ridebunt eum super & ; timebunt & , justi
9 צדיקים וייראו ועליו ישחקו: הנה הגבר לא
est roboratus ; *suæ opulentiæ multitudine in* fidit & , suam fortitudinem Deum posuit
ישים אלהים מעוזו ויבטח ברב עשרו יעז
misericordia in speravi : Dei domo in *frondosa* olea sicut ego Et .sua pravitate in
10 בהותו: ואני כזית רענן בבית אלהים בטחתי בחסד־
: fecisti quoniam , seculum in tibi Confitebor .*perpetuum* & ,seculum Dei
11 אלהים עולם ועד: אודך לעולם כי עשית
.tuis misericordibus coram bonum quoniam , tuum nomen expectabo &
ואקוה שמך כי־טוב נגד חסידיך:

PSAL. LIII. נג

: suo corde in stultus Dixit .David ipsi *Maschil* ,Machalath super Victori
1 למנצח על־מחלת משכיל לדוד: אמר נבל בלבו
2 non , iniquitatem fecerunt abominabilem & , corruperunt : Deus Non
אין אלהים השחיתו והתעיבו עול אין
,hominum filios super prospexit cœlis è Deus .bonum *faciens*
3 עשה־טוב: אלהים משמים השקיף על־בני־אדם
, retrocessit ille *Omnis* .Deum requirens ; intelligens sit an *videndum ad*
4 לראות היש משכיל דרש את־אלהים: כלו סג
cognoverunt Nonne .unus etiam non ; bonum *faciens* non , *fœtuerunt* pariter
5 יחדו נאלחו אין עשה־טוב אין גם־אחד: הלא ידעו
Deum : panem *comederunt* , meum populum *edentes* , iniquitatem operantes
פעלי און אכלי עמי אכלו לחם אלהים
Deus quoniam ,timor fuit non , timore timuerunt Ibi .invocaverunt non
6 לא קראו: שם פחדו־פחד לא־היה פחד כי־אלהים
Quis .eos sprevit Deus quoniam,affecisti pudore:te *obsidentis* ossa dispersit
7 פזר עצמות חנך הבשתה כי־אלהים מאסם: מי
? sui populi captivitatem *Deum convertendo in* , Israel salutes Sijon ex dabit
יתן מציון ישעות ישראל בשוב אלהים שבות עמו
.Israel lætabitur ,Jahacob exultabit
יגל יעקב ישמח ישראל:

תרגום TARGUM.

3 מה תשתבח בלישנא בישא גבר למשדי אדם
4 זכאה חסדא דאלהא כל יומא: אתרנושתא
תחשב בלבבך לישנך היך אזמל חריף עביד
5 מלי מלשינותא: רחמתא ביש מן טב שקרא
6 מלמללא צדקתא לעלמין: רחמתא כל מלי
7 סלעמיתא לישנא דנכילו: לחוד אלהא
יתרענך לעלמין יתברנך ויטלטלנך מלמתב
במשכנא ויתלשנך מן ארע חייא לעלמין:
8 ויחמו צדיקיא בפורענותא דרשיעיא וידחלון
9 מן קדם יי ואמטולתיה יגחכון: ויימרון הא
גברא דלא שוי מימרא דיי עושניה סבר
10 בעתריה עשין בממוניה: ואנא היך אילן זיתא
עבוף בבית מקדש אלהא סברית בחסדא
11 דאלהא לעלמי עלמין: אודה קדמך לעלם
ארום עבדת פורענות דיני ואמתין שמך ארום
טב קבל חסידיך:

נג

1 לשבחא על פורענות דרשיעיא די מפסין שמא
2 דקירים שכלא טבא על יד דוד: אמר נבל
בלביה לית אלהא פרע מטה מטול היכנא
חבילו רשיעיא אורחתהון רחיקו מן טבא
3 דאשתכח בהון עלא לית דעבד טב: ברם
אלהא משמיא אודיק על בני אנשא למחמי
האית די ישכיל באוריתא תבע אולפן מן קדם
4 יי: כולהון זרו כחדא אטנפו לית דעבד טב
5 לית אפילו חד: הלא ידעון כל עבדי שקרא
דמן קדמוי מתיהיב מזונא ומה דין אכלי עמי
6 סעדין לחמא שמא דיי לא ברכו: תמן דלחו
דלוחא מן פסיליהון דלית בהון צרוך למדלח
ארום אלהא מבדר תקוף משרית חיביא
7 בהתתא ארום מימרא דיי רחקנון: מן הוא
דיהב מן ציון פורקניא דישראל אלהן יי כד
יחזר מימרא דיי גלות דעמיה ירנן דבית יעקב
יחדי דבית ישראל:

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Quid gloriaris in lingua iniqua potens ? ad effundendum sanguinem justum ? misericordia Dei adest tota die. Obmurmurationem cogitabis in corde tuo : lingua tua, sicut novacula acuta, verba facit detractionis. Dilexisti malum, magis quàm bonum : mendacium magis, quàm loqui puritatem in perpetuum. Dilexisti omnia verba voracitatis, lingua dolosa. Ideò Deus destruet te in æternum : dissipabit te, & migrare te faciet, ne habites in tabernaculo ; & eradicabit te de terra vitæ in æternum. Et inspicient justi punitionem *improborum*, & timebunt ab aspectu Dñi, & propter eum ridebunt. Et dicent: Hic est homo, qui non posuit verbum Dñi fortitudinem suam; speravit verò in divitiis suis, fortis factus est in opulentia sua. At ego sicut arbor olivæ frondosæ in domo sancta Dei, confisus sum in misericordia Dei in secula seculorum. Confitebor tibi in seculum, quoniam execut⁹ es ultionem judicii mei, & expectabo nomen tuum, quoniam bonum est coram piis tuis.

Ad laudandum, ob retributionem impiorum blasphemantium nomen Domini, intellectus bonus per manum Davidis.

PSAL. LIII.

Dixit nequam in corde suo, Non est Deus; ulciscere de illo, quandoquidem corruperunt impii vias suas, elongati sunt à bono, inventa est in eis iniquitas: non est qui operetur bonum. Veruntamen De⁹ de cœlis prospexit super filios hominum, ut videret an esset intelligens in lege, quærens eruditionem à conspectu Dei. Omnes retrocesserunt, simul inquinati sunt; non est qui faciat bonum, ne unus quidem. Nunquid non cognoscent qui operantur iniquitatem, quod à conspectu ejus datur nutrimentum ? ecquid hoc est ? devorantes populum meum pane manducato, nomen Domini non benedixerunt. Ibi timuerunt timore inter idola sua, in quibus non est causa cur timeantur ; quoniam Deus qui dissipas robur exercituum flagitiosorum ; confudisti [*eos*:] verbum enim Dñi eos execrationi habuit. Quis ille est qui dabit de Sion *redemptionem* Israel, *nisi Dominus?* quando reduxerit *verbum Domini* captivitatem populi sui, exultabit dom⁹ Jaacob, lætabitur dom⁹ Israel.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 * ܠܡܢܐ ܡܫܬܒܗܪܬ ܒܒܝܫܘܬܐ ܓܢܒܪܐ. ܘܥܠ ܙܟܝܐ ܟܠܗ ܝܘܡܐ * ܥܘܠܐ ܡܬܪܢܐ
4 5 ܠܫܢܟ: ܘܐܝܟ ܡܣܦܪܐ ܕܡܚܕܕܐ ܥܒܕܬ ܢܟܠܐ. * ܪܚܡܬ ܒܝܫܬܐ ܡܢ ܛܒܬܐ: * [illegible] *
6 ܘܕܓܠܘܬܐ ܡܢ ܡܡܠܠܐ ܕܟܐܢܘܬܐ. * [illegible] * ܪܚܡܬ ܟܠܗ ܡܡܠܠܝܢ ܥܘܠܐ:
7 ܘܠܫܢܐ ܢܟܝܠܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܥܩܪܟ ܐܠܗܐ: ܘܢܫܚܠܦܟ ܠܥܠܡ ܡܢ ܡܫܟܢܟ.
8 ܘܥܩܪܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܚܝܐ: * [illegible] * ܕܢܚܙܘܢ ܙܕܝܩܐ ܘܢܚܕܘܢ. ܘܢܣܒܪܘܢ ܒܡܪܝܐ:
9 ܘܢܐܡܪܘܢ * ܕܗܢܘ ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܣܡ ܐܠܗܐ ܣܘܒܪܗ. ܐܠܐ ܐܬܬܟܠ ܥܠ ܣܘܓܐܐ ܕܥܘܬܪܗ
10 ܘܐܬܪܘܪܒ ܒܩܢܝܢܗ: * ܘܐܢܐ ܐܝܟ ܙܝܬܐ ܡܫܒܚܐ ܒܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ. ܣܒܪܬ ܒܛܝܒܘܬܗ
11 ܕܐܠܗܐ: ܠܥܠܡ ܘܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. * ܐܘܕܐ ܠܟ ܠܥܠܡܝܢ ܕܥܒܕܬ: ܘܐܟܪܙ ܫܡܟ ܠܕܪ
ܕܪܝܢ ܩܕܡ ܙܕܝܩܝܟ.

AD quid gloriaris in malitia gigas, & adversùs innocentem quotidie Iniquitatem meditatur lingua tua, & perinde ac novacula exacuata fecisti dolum ? Dilexisti malum præ bonis, * *Diapsalma* * & mendacium præ sermone veritatis: * *Diapsalma.* * Amâsti omnes qui loquuntur iniquitatem & linguas dolosas. Propter hoc eradicabit te Deus, téque dejiciet in æternum de tabernaculo tuo, & radicem tuã de terra viventium. * *Diapsalma.* * Ut videant justi, & lætentur, ac sperent in Domino, dicántque; Iste est homo qui non constituit Deum spem suam, sed confisus est in multitudine divitiarum suarum, & superbivit propter opes suas. At ego sicut oliva laudabilis in domo Dei speravi in bonitate Dei in æternum & in seculum seculorum. Confitebor tibi in sempiternum, quoniam fecisti: & prædicabo nomen tuum in generationem generationum coram justis tuis.

* ܡܙܡܘܪܐ ܢܓ *

1 * ܥܠ ܐܚܝܬܘܦܠ ܕܝܗܒ ܡܠܟܐ ܠܐܒܫܠܘܡ ܕܢܪܕܘܦ ܠܕܘܝܕ ܐܒܘܗܝ ܘܢܩܛܠܝܘܗܝ. ܘܗܦܟ
ܥܘܠܗ ܒܪܫܗ ܘܡܝܬ. ܘܥܠܝܢ ܪܡܙ ܠܢ ܓܠܝܢܐ ܕܦܪܘܩܐ ܘܚܐܪܘܬܐ ܕܡܢ ܥܡܡܐ ܕܠܐ
2 ܐܠܗ. ܦܬܓܡ ܝܘ. * ܐܡܪ ܥܘܠܐ ܒܠܒܗ ܕܠܝܬ ܐܠܗܐ: ܐܬܚܒܠܘ ܘܐܬܛܢܦܘ
3 ܒܥܘܠܗܘܢ. ܘܠܝܬ ܕܥܒܕ ܛܒܬܐ: * ܐܠܗܐ ܐܕܝܩ ܡܢ ܫܡܝܐ ܥܠ ܒܢܝ ܐܢܫܐ. ܕܢܚܙܐ
4 ܐܢ ܐܝܬ ܕܡܣܬܟܠ ܘܒܥܐ ܠܐܠܗܐ: * ܟܠܗܘܢ ܣܛܘ ܐܟܚܕܐ ܘܐܬܛܢܦܘ. ܘܠܝܬ ܕܥܒܕ
5 ܛܒܬܐ ܐܦܠܐ ܚܕ: * ܘܠܐ ܝܕܥܘ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. ܕܐܟܠܝܢ ܗܘܘ ܠܥܡܝ
6 ܡܐܟܘܠܬܐ ܕܠܚܡܐ: ܘܠܐܠܗܐ ܠܐ ܩܪܘ. * ܬܡܢ ܕܚܠܘ ܕܚܠܬܐ: ܐܝܟܐ ܕܠܝܬ ܗܘܐ
ܕܚܠܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܒܕܪ ܓܪܡܝܗܘܢ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܫܦܪܝܢ ܠܒܢܝܢܫܐ ܒܗܬܘ. ܡܛܠ
7 ܕܐܠܗܐ ܐܣܠܝ ܐܢܘܢ: * ܡܢܘ ܢܬܠ ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܦܘܪܩܢܐ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܡܐ ܕܐܗܦܟ ܡܪܝܐ
ܫܒܝܬܐ ܕܥܡܗ: ܢܪܘܙ ܝܥܩܘܒ ܘܢܚܕܐ ܐܝܣܪܝܠ.

PSAL. LIII.

De Abitophil, qui consilium dedit Abs-alomi ut insequeretur Davidem patrem suum eúmque interficeret, at recidit scelus ejus in caput suum ac mortuus est. Quòd autem ad nos, innuit nobis revelationem Salvatoris, & libertatem à populis atheis. Vers. 16.

DIcit iniquus in corde suo, non est Deus. Corrupti sunt & contaminati sunt in iniquitate sua, & non est qui faciat bonum. Deus prospexit è cœlo sup filios hominis, ut videret num esset quis intelligens & requirens Deum. Omnes aberrârunt simul ac polluti sunt, & non est qui operatur bonum, ne unus quidem. Et non cognoverunt omnes operantes iniquitatem, qui comedebant populum meum comestione panis, & Deum non invocaverunt. Ibi timuerunt timore ubi non erat timor, quia Deus dissipavit ossa eorum. Nam ii qui placent hominibus, confusi sunt, quoniam Deus aspernatus est eos. O quis dabit de Sion salutem Israeli ? Cum averterit Dominus captivitatem populi sui, exultabit Jacob, & lætabitur Israel.

Verſio VULG. LAT.

3 QUid gloriaris in malitia, qui potens
4 es in iniquitate? Totâ die injuſtitiam cogitavit lingua tua: ſicut novacula
5 acuta, feciſti dolum. Dilexiſti malitiam
ſuper benignitatem; iniquitatem magis
6 quàm loqui æquitatem. Dilexiſti omnia
verba præcipitationis, lingua doloſa.
7 Propterea Deus deſtruet te in finem: evellet te, & emigrabit te de tabernaculo tuo; & radicem tuam de terra viventium.
8 ventium. Videbunt juſti, & timebunt, &
9 ſuper eum ridebunt, & dicent; Ecce homo, qui non poſuit Deum adjutorem ſuum: Sed ſperavit in multitudine divitiarum ſuarũ: & prævaluit in vanitate ſua.
10 Ego autẽ, ſicut oliva fructifera in domo
Dei, ſperavi in miſericordia Dei in æternum, & in ſeculum ſeculi. Confitebor
11 tibi in ſeculum quia feciſti: & expectabo
nomen tuum, quoniam bonum eſt in conſpectu ſanctorum tuorum.

1 In finem, Pro Maeleth intelligentiæ David. LII.

DIxit inſipiens in corde ſuo, Non eſt
2 Deus. Corrupti ſunt, & abominabiles facti ſunt in iniquitatibus: non eſt qui
3 faciat bonum. Deus de cœlo proſpexit
ſuper filios hominum: ut videat ſi eſt in-
4 telligens, aut requirens Deum. Omnes
declinaverunt, ſimul inutiles facti ſunt:
non eſt qui faciat bonum, non eſt uſque
5 ad unum. Nonne ſcient omnes qui operantur iniquitatem, qui devorant plebem
6 meam ut cibum panis? Deum non invocaverunt: illic trepidaverunt timore, ubi
non erat timor. Quoniam Deus diſſipavit oſſa eorum qui hominibus placent:
confuſi ſunt, quoniam Deus ſprevit eos:
7 Quis dabit ex Sion ſalutare Iſrael? cùm
converterit Deus captivitatem plebis
ſuæ, exultabit Jacob, & lætabitur
Iſrael.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

3 ΤΙ' ἐγκαυχᾷ ἐν κακίᾳ ὁ δυνατὸς ἀνομίαν;
4 Ὅλην τὴν ἡμέραν ἀδικίαν ἐλογίσατο ἡ
γλῶσσά σου· ὡσεὶ ξυρὸν ἠκονημένον ἐποίησας δό-
5 λον. Ἠγάπησας κακίαν ὑπὲρ ἀγαθωσύνην, ἀ-
δικίαν ὑπὲρ τὸ λαλῆσαι δικαιοσύνην. ΔΙΑ'ΨΑΛ-
6 ΜΑ. Ἠγάπησας πάντα τὰ ῥήματα καταποντισμοῦ,
7 γλῶσσαν δολίαν. Διὰ τοῦτο ὁ Θεὸς καθέλοι σε εἰς τέλος, ἐκτίλαι σε καὶ μετανάστευσαι
σε ἀπὸ σκηνώματος, καὶ τὸ ῥίζωμά σου ἐκ
8 γῆς ζώντων. ΔΙΑ'ΨΑΛΜΑ. Καὶ ὄψονται δί-
καιοι καὶ φοβηθήσονται, καὶ ἐπ' αὐτὸν γελάσονται, καὶ
9 ἐροῦσιν, Ἰδοὺ ἄνθρωπος, ὃς οὐκ ἔθετο τὸν Θεὸν
βοηθὸν αὐτοῦ, ἀλλ' ἐπήλπισεν ἐπὶ τὸ πλῆθος τοῦ
πλούτου αὐτοῦ, καὶ ἐνεδυναμώθη ἐπὶ τῇ ματαιότητι
10 αὐτοῦ. Ἐγὼ δὲ ὡσεὶ ἐλαία κατάκαρπος ἐν τῷ
οἴκῳ τοῦ Θεοῦ, ἤλπισα ἐπὶ τὸ ἔλεος τοῦ Θεοῦ εἰς τὸν
11 αἰῶνα καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. Ἐξομολογήσομαί
σοι εἰς τὸν αἰῶνα, ὅτι ἐποίησας, καὶ ὑπομενῶ τὸ
ὄνομά σου, ὅτι χρηστὸν ἐναντίον τῶν ὁσίων σου.

1 Εἰς τὸ τέλος, Ὑπὲρ μαελὲθ συνέσεως τῷ Δαυίδ. νβ'.

ΕἾπεν ἄφρων ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ, Οὐκ ἔστι Θεός.
2 Διεφθάρησαν, καὶ ἐβδελύχθησαν ἐν ἀνομίαις·
3 οὐκ ἔστι ποιῶν ἀγαθόν. Ὁ Θεὸς ἐκ τοῦ οὐρανοῦ διέκυψεν ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων, τοῦ ἰδεῖν εἰ ἔστι
4 συνιῶν, ἢ ἐκζητῶν τὸν Θεόν. Πάντες ἐξέκλιναν, ἅμα ἠχρειώθησαν, οὐκ ἔστι ποιῶν ἀγαθόν,
5 οὐκ ἔστιν ἕως ἑνός. Οὐχὶ γνώσονται πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, οἱ κατεσθίοντες τὸν λαόν
6 μου βρώσει ἄρτου; Τὸν Θεὸν οὐκ ἐπεκαλέσαντο. ἐκεῖ ἐφοβήθησαν φόβον, οὗ οὐκ ἦν φόβος.
ὅτι ὁ Θεὸς διεσκόρπισεν ὀστᾶ ἀνθρωπαρέσκων,
κατῃσχύνθησαν, ὅτι ὁ Θεὸς ἐξουδένωσεν αὐ-
7 τούς. Τίς δώσει ἐκ Σιὼν τὸ σωτήριον τοῦ
Ἰσραήλ; ἐν τῷ ἀποστρέψαι κύριον τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, ἀγαλλιάσεται Ἰακώβ, καὶ εὐφρανθήσεται Ἰσραήλ.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

1 [a] QUid (b) gloriaris in
3 malitia, potens iniquitate? 2 Totâ die (b) injuſtitiam
4 cogitavit lingua tua: ſicut nova-
cula acuta, feciſti dolum. 3 Di-
5 lexiſti malitiã ſuper benignitatẽ;
iniquitatẽ magis, quã loqui æquitatem. DIAPSALMA. 4 Dile-
6 xiſti [c] omnia verba (c) præcipitationis; linguam doloſam. 5 Pro-
7 pterea Deus (d) deſtruat te in finem; evellat te, & emigret te de
(e) tabernaculo, & radicem tuam
de terra viventium. DIAPSALMA. 6 Et videbunt juſti, & ti-
8 mebunt: & ſuper eum ridebunt,
& dicent; Ecce homo qui non po-
9 ſuit Deum adjutorem ſuum: 7 ſed
ſperavit in multitudine divitiarum ſuarum: (f) & prævaluit in
vanitate ſua. 8 Ego autem, ſicut
10 [d] oliva fructifera in domo Dei,
ſperavi in miſericordia Dei in æternum, & in ſeculum ſeculi.
9 Confitebor tibi in ſeculum, quia
11 [e] feciſti: & expectabo [f] nomen tuum, quoniam bonum eſt in
conſpectu ſanctorum tuorum.

1 In finem, Pro (a) Maeleth intellectûs ipſi David. LII.

DIXit inſipiens in corde ſuo,
2 Non eſt Deus. 2 (b) Corruperunt, & abominabiles facti
ſunt in iniquitatibus: non eſt qui
3 faciat bonum. 3 Deus de cœlo
proſpexit ſuper filios hominum:
ut videat, ſi eſt intelligens, aut
4 requirens Deum. 4 Omnes [a] declinaverunt, ſimul inutiles facti
ſunt: non eſt qui faciat bonum, non
5 eſt uſque ad unum. 5 Nonne ſcient omnes, qui operantur iniquitatem, qui devorant plebem
6 meam (c) cibo panis? 6 Deum non
invocaverunt: ibi (d) timuerunt
timore, ubi non erat timor. 7 Quoniam Deus diſſipavit oſſa (e) corũ,
qui hominibus placent: confuſi
ſunt, quoniam Deus ſprevit eos.
7 8 Quis dabit ex Sion ſalutare
Iſrael? In (f) avertendo Dominus captivitatem populi ſui, exultabit Jacob, & lætabitur Iſrael.

Verſio ÆTHIOPICA.

ሃሪ ለምንት ፡ ይዜሁር ፡ ኃያል ፡ በእኩይ ፡፡ 1
ወይዔምፅ ፡ 2 ኵሎ ፡ አሚረ ፡፡ ኃጢአተ ፡
ሐለየ ፡ ልብከ ፡፡ ከመ ፡ መላጺ ፡ በሊሕ ፡ ገበር
ከ ፡ ሕብለ ፡፡ ፡፡ አብደርከ ፡ እኪተ ፡ ለምሠ 3
ናይት ፡፡ ወትነግሮ ፡ አመትንብብ ፡ ጽድ
ቀ ፡፡ ፡፡ ወአፍቀርከ ፡ ኵሎ ፡ ነገረ ፡ ልሳነ ፡ መ 4
ስጥም ፡፡ ፡፡ በእንተዝ ፡ ይነሥተከ ፡ እግዚ 5
አብሔር ፡ ለግሙራ ፡፡ ወይምልሐከ ፡ ወያፈል
ስከ ፡ እምቤትከ ፡፡ ወሠረዊከኒ ፡ እምድረ ፡
ሕያዋን ፡፡ ፡፡ ይርአዩ ፡ ጻድቃን ፡ ወይፈር 6
ሑ ፡፡ ወይስሐቁ ፡ ላዕሌሁ ፡ ወይበሉ ፡፡ ነዋ ፡ ብ
እሲ ፡ ዘኢረሰዮ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ረዳኢ
ሁ ፡፡ ፡፡ ወተአመነ ፡ በብዝኃ ፡ ብዕሉ ፡፡ ወተ 7
ኃየለ ፡ በከንቱ ፡፡ ፡፡ አነሰ ፡ ከመ ፡ ዕፀ ፡ ዘይ 8
ት ፡ ሠሙር ፡ ውስተ ፡ ቤተ ፡ እግዚአብሔር ፡፡
ወተወከልኩ ፡ በምሕረቱ ፡ ለእግዚአብሔ
ር ፡፡ ለዓለም ፡ ወለዓለመ ፡ ዓለም ፡፡ ፡፡ እገ 9
ኒ ፡ ለከ ፡ ለዓለም ፡ እስመ ፡ ገበርከ ፡ ሊተ ፡፡ እ
ሴፈወ ፡ ለምሕረትከ ፡ እስመ ፡ ሠናይ ፡ ቅድመ ፡ ኅ
በ ፡ ጻድቃኒከ ፡፡ ፡፡

ፍጻሜ ፡ ዘአመ ፡ መጽአ ፡ ዘበ ፡ አእምሮ ፡ ዘደዊት ፡፡

ሃቨ ይብል ፡ አብድ ፡ በልቡ ፡ አልቦ ፡ እግዚአ 1
ብሔር ፡፡ ፡፡ ኃሰሩ ፡ ወረኵሱ ፡ በገጋዮ 2
ሙ ፡፡ አልቦ ፡ ዘይገብራ ፡ ለሠናይት ፡፡ ፡፡ እ 3
ግዚአብሔር ፡ ኃወጸ ፡ እምሰማይ ፡ ዲበ ፡ እጓ
ለ ፡ እመሕያው ፡፡ ከመ ፡ ይርአይ ፡ እመቦ ፡ ጠ
ቢበ ፡ ዘየኃሥ ፡ ለእግዚአብሔር ፡፡ ፡፡ ኵሎ ፡ 4
አረየ ፡ ወኅቡረ ፡ ዐለዉ ፡፡ አልቦ ፡ ዘይገብራ ፡ ለ
ሠናይት ፡ አልቦ ፡ ወሊአሐዱ ፡፡ ፡፡ ወኢያእ 5
ምሩ ፡ ኵሎሙ ፡ ገበርተ ፡ ዐመፃ ፡፡ እለ ፡ ይው
ሕጥዎሙ ፡ ለሕዝብየ ፡ ከመ ፡ በሊዓ ፡ እክ
ል ፡፡ ፡፡ ወለእግዚአብሔር ፡ ኢጸውዕዎ ፡፡ 6
ወበህየ ፡ ፈርሁ ፡ ወገረምሙ ፡ ዘኢኮነ ፡ ግረ
ም ፡፡ ፡፡ እስመ ፡ እግዚአብሔር ፡ ዘረወ ፡ አ 7
ዕጽምቲሆሙ ፡ ለመደልዋን ፡፡ ወተኃፍሩ ፡ እ
ስመ ፡ እግዚአብሔር ፡ አኅሰሮሙ ፡፡ ፡፡ መ 8
ኑ ፡ ይሁብ ፡ እምጽዮን ፡ መድኃኒተ ፡ ለእስ
ራኤል ፡፡ አመ ፡ ሚጠ ፡ እግዚአብሔር ፡ ፄዋ ፡
ሕዝቡ ፡፡ ይትፌሣሕ ፡ ያዕቆብ ፡ ወይትሐሠ
ይ ፡ እስራኤል ፡፡ ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] Quare gloriatur potens in malitia, & iniquè agit? [b] peccatum meditatur cor tuum: [c] omne verbum linguæ ſubmergentis. Propterea [d] oliva perplacens [e] feciſti mihi: [f] miſericordiam tuam, quoniam bona PSAL. LII. [a] ſimiles facti ſunt, & ſimul prævaricati ſunt: non

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 * لماذا تفتخر ايها القوي بالشر والاثم * جميع النهار لسانك يفكر بالظلم مثل الموسي 4
5 المسنونة * صنعت الغش * احببت الشر اكثر من الخير * والكذب اكثر من كلام
6 الحق * احببت كل كلام التغريق * ولسان الغش * فلذلك يطردك الله الي الانقضاء 7
8 ويقلعك وينفيك من مسكنك واصلك من ارض الحياة * يري الصديقون فيخافون
9 ويضحكون عليه ويقولون * ان هذا هو رجل لم يجعل الله له معينا بل توكل علي
10 وفور غناه وتقوي بباطله * وانا مثل شجرة الزيتون المثمرة في بيت الله توكلت علي
11 رحمة الله الي الابد والي ابد الابد * اشكرك يا رب لانك صنعت لي * واعتصك باسمك
لانه صالح امام قديسيك * اللليلويا *

* المزمور الثاني والخمسون *

1 * لداود نبوة علي بابل ولاجل سنحاريب * استيخن * يه *

2 * قال الجاهل في قلبه انه ليس اله * فسدوا وتنجسوا بالاثام وليس من يعمل صالحا *
3 * اطلع الله من السماء علي بني البشر ليري ان كان ثم فهيم او طالب لله * زاغوا 4
5 جميعا كلهم واضطربوا * وليس من يعمل صالحا ولا واحد * الم يعلم كل عاملي الاثم
6 الاكلين شعبي * وفي اكل الخبز لله لم يسموا * هناك خافوا خوفا حيث لا خوف * لان
7 الله يفرق عظام المرائين للناس * خزوا لان الله رذلهم * من يعطي من صهيون الخلاص
لاسرائيل * اذا رد الرب سبي شعبه فليتهلل يعقوب وليفرح اسرائيل *

QUarè gloriaris, O potens, in malitia 3
& iniquitate Totâ die? Lingua 4
tua cogitat flagitium tanquam novacula
acuta: feciſti dolum: Dilexiſti malignitatem 5
potiùs quàm bonitatem, & mendacium potiùs quàm ſermonem veritatis:
Dilexiſti omnem ſermonem ſubmergentem 6
et linguam fraudulentam. Propterea 7
abjiciet te Deus in exterminium, & evellet te, & extorrem te faciet ex habitaculo tuo, et ſtirpem tuam è terra vitæ. Vi- 8
debunt juſti et timebunt, et ridebunt eum,
ac dicent; Nimirum hic eſt vir qui non 9
propoſuit Deum ſibi adjutorem, ſed confiſus eſt in abundantia divitiarum ſuarum,
& vires ſuas collocavit in vanitate ſua.
Et ego tanquam arbor olivæ fructiferæ in 10
domo Dei, fretus ſum miſericordiâ Dei
in æternum, & uſque in ſeculum ſeculi.
Gratias agam tibi, O Domine, quia fe- 11
ciſti pro me: & inhærebo nomini tuo,
quoniam bonum eſt in conſpectu Sanctorum tuorum. Alleluja.

PSAL. LII.

Davidis. Prophetia de Babel, 1
et de Sennacherib. Verſ. 15.

DIxit ſtultus in corde ſuo, non eſſe 2
Deum. Corrupti ſunt & contaminati ſunt in ſceleribus ſuis, & non eſt qui
faciat bonum. Proſpexit Deus de cœlo 3
ſuper filios hominum, ut videret utrùm
eſſet ibi mentis compos aut requirens Deum. Erraverunt ſimul omnes & turbati 4
ſunt, nec eſt qui faciat bonum, ne unus
quidem. Nonne noverunt omnes operantes 5
iniquitatem, comedentes populum meum, & in comeſtione panis Deum non nominaverunt? Ibi timuerunt timore, ubi 6
ne propè quidem timor erat: quia Deus
diſſipat oſſa hypocritarum apud homines:
Confuſi ſunt, quia Dominus contempſit eos. Quis dabit de Sion ſalutem Iſraeli? 7
cùm revocaverit Deus captivitatem populi ſui, exultet Jacob et lætetur Iſrael.

תהלים : נד נה

PSAL. LIV. נד

dixiſſent & , Ziphim *veniendo In* .David ipſi *Maſchil* ,N'ghinoth in Victori
1 למנצח בנגינות משכיל לדוד: 2 בבוא הזיפים ויאמרו
;fac me ſalvũ tuo nomine in Deus ? *nobiſcum ſe abſcondit* David Nónne : Saul ad
לשאול הלא דוד מסתתר עמנו: 3 אלהים בשמך הושיעני
dicta auſculta;meam oratione audi Deus .me *judicabis* tua fortitudine in &
ובגבורתך תדינני: 4 אלהים שמע תפלתי האזינה לאמרי
:meam animã quæſierunt *terribiles* & , me *ſuper* inſurrexerũt alieni Quoniam .mei oris
פי: 5 כי זרים קמו־עלי ועריצים בקשו נפשי
Domini:mihi *auxilians* Deus Ecce .Selah , *ſui regione è* Deum poſuerunt non
לא שמו אלהים לנגדם סלה: 6 הנה אלהים עזר לי אדני
tua veritate in : meis inimicis malum Reddet .meæ animæ ſuſtentatores inter
בסמכי נפשי: 7 ישוב הרע לשררי באמתך
quoniã,Domine tuo nomini confitebor : tibi ſacrificabo *devotione In* .illos ſuccide
הצמיתם: 8 בנדבה אזבחה־לך אודה שמך יהוה כי־
.meus oculus vidit meis *inimicis* in & : me eripuit anguſtia omni ex Quoniam.bonum
טוב: 9 כי מכל־צרה הצילני ובאיבי ראתה עיני:

PSAL. LV. נה

;meam orationem Deus percipe Auribus .Davidi ipſi *Maſchil* , *modulis* in Victori
1 למנצח בנגינות משכיל לדוד: 2 האזינה אלהים תפלתי
conquerar :me exaudi & ,mihi Intende .mea deprecatione à te abſcondas ne &
ואל־תתעלם מתחנתי: 3 הקשיבה לי ועננו אריד
; impii *conſternationis faciebus* à , inimici voce A .tumultuabor & ,*mea meditatione in*
בשיחי ואהימה: 4 מקול אויב מפני עקת רשע
meum Cor .mihi *adverſabuntur naſo* in & , mendacium me *ſuper facient labi* quoniam
כי־ימיטו עלי און ובאף ישטמוני: 5 לבי
tremor & ,Timor .me ſuper ceciderunt mortis terrores & : *meo interiori in cruciabitur*
יחיל בקרבי ואימות מות נפלו עלי: 6 יראה ורעד
? columba ſicut *pennam mihi dabit Quis* :dixi Et .*horror* me operuit & :me *in veniet*
יבא בי ותכסני פלצות: 7 ואמר מי־יתן־לי אבר כיונה
.Selah , deſerto in *pernoctabo* ; *vagando* me *elongabo* Ecce .*inhabitabo* & , *volabo*
אעופה ואשכנה: 8 הנה ארחיק נדד אלין במדבר סלה:
, Domine *Degluti* .*turbine à* *excitato* vento à ; *mihi evaſionem* *Accelerabo*
9 אחישה מפלט לי מרוח סעה מסער: 10 בלע אדני
nocte ac Die .civitate in *rixam* &,*rapinam* vidi quoniam ; eorum linguam divide
פלג לשונם כי־ראיתי חמס וריב בעיר: 11 יומם ולילה
Pravitates .ejus *interiori in labor* &,iniquitas & ;ejus muros ſuper eam circundederunt
יסובבה על־חומתיה ואון ועמל בקרבה: 12 הוות
inimicus non Quia .dolus & , fraus ejus platea è *recedet* non & ;ejus *interiori in*
בקרבה ולא־ימיש מרחבה תך ומרמה: 13 כי לא־אויב
me abſcondã & ,magnificavit me ſuper me habens odio non ; *feram &* , me *afficiet* probris
יחרפני ואשא לא־משנאי עלי הגדיל ואסתר
.meus notus & ,meus *præceptor* ; *meam comparationem* ſecundùm homo tu *Et* .eo ab
14 ממנו: ואתה אנוש כערכי אלופי ומידעי:

תרגום TARGUM.

נד

1 לשבחא על תושבחתא שכלא טבא על יד
2 דוד: כד אתו אנשי זיף ואמרו לשאול הלא דוד
מטמר גבן: 3 אלהא בשמך פרוק יתי ובכח
4 גבורתך דון יתי: יי יקבל צלותי אצית למימר
5 פומי: ארום זדונין קמו עלי ועלימין תבעו
6 נפשי לא שוו אלהא לקבליהון לעלמין: הא
7 יי סעיד לי יי בסמכי נפשי: יתוב בישא למעיקי
8 בהמנותך אמאך יתהון: בנכסתא ארבח קדמך
9 אודי שמך יי ארום טב: ארום מכל עקא
פצי יתי ובבעלי דבבי חמת עיני נקמתא:

נה

1 לשבחא על מלי תושבחתא שכלא טבא
2 על יד דוד: אצית אלהא לצלותי ולא תתכסי
3 מן צלותי: אצית למימרי וקבל מני אתרעם
4 במלי וארגוש: מקל בעל דבבא מן קדם עקת
רשיעא ארום יגדון עלי שקרא וברוגזא
5 ינטרון לי לדבבו: לבי ירתת בגוי ודחלתא
6 דמותא נפלו עלי: דחלתא ורתיתא אתין
7 לי וחפי יתי תבירא: ואמרית מן יתן לי כנפא
8 היך יונתא אטוס ואשרי: הא ארחיק אתר
9 למנדד אבית במדברא לעלמין: ארחיש
10 שזבותא לי מן זעפא נטלא מעלעולא: סלעם
יי עצתהון פלג לישנהון ארום חמית חטוף
11 ומצו בקרתא: יימם ולילי יחזורונה עלוי
12 שורהא ולאות ושקר במצעה: אתרגושיא
במצעה ולא עדי מן פלטיותה שקר ונכילו:
13 ארום לא בעיל דבבא יקל יתי ואסובר לא
14 מסנאי עלי אתרברב ואטמר מן קדמוי: ואנת
אחיתופל גברא דדמי לי רב דאליפת לי
ומהודע חוכמתא לי:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Ad laudandum in cantico, intellectus bonus per manum Davidis: Quando venerunt viri Ziphæi, & dixerunt Sauli: Nónne David latitat apud nos?

PSAL. LIV.

DEus in nomine tuo redime me, & in *virtute* fortitudinis tuæ judica me. *Dominus accipiet* orationem meam, auſculta *verbum* oris mei. Quoniam ſuperbi inſurrexerunt adverſùm me; & fortes quærentes animam meam, non ponunt Deum in conſpectu ſuo in æternum. Ecce Deus adjuvat me: Dominus inter fulcientes animam meam. *Convertatur* malum in eos qui angunt me: in veritate tua proſterna illos. Sacrificium ſacrificabo coram te: laudabo nomen tuum Domine, quoniam bonum. Quoniam ex omni tribulatione liberavit me, & in hoſtibus meis vidit oculus meus ultionem.

Ad laudandũ ſecundùm eloquia Hymni intellectus bonus per manum Davidis.

PSAL. LV.

AUſculta Deus orationem meam, & ne abſcondaris à precatione mea. Attende ſermoni meo & accipe à me: inquietus ero in ſermonibus meis, & ſtrepitum edam; A voce auctoris inimicitiæ propter infeſtationem improbi: quoniam *inclinabunt* contra me mendacium, & in furore recondent mihi odium. Cor meum contremiſcit intra me, & timores mortis ceciderunt ſuper me. Timor & tremor venerunt in me; & cooperuit me formido. Et dixi, Quis dabit mihi alam ſicut columbæ volarem, & hoſpitio me reciperem. Ecce proriperer *loco* in fugam, habitarem in deſerto ſemper. Accelerarem ſalvationem mihi à vento tempeſtatis ſublatæ, *à turbine.* Diſſipa Domine conſilium eorum, divide linguas eorum; quoniam vidi rapinam & rixam in civitate. Die ac nocte circundabunt eam ſuper muros ejus: iniquitas & falſitas in medio ejus. Tumultus in medio ejus *ſunt*: non diſcedet de platea ejus mendacium & fraus; Quoniam adverſarius meus ignominia non afficiet me, ut ſuſtineam; nec oſor meus per me magnificabit ſeſe, ut abſcondar *à conſpectu ejus.* Et tu Achitophel homo ſimilis mihi, præceptor docuiſti me, ac notam reddis mihi ſapientiam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܢܕ *

1 [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7 [illegible]
8 [illegible]
9 [illegible]

* ܡܙܡܘܪܐ ܢܗ *

1 [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
6 [illegible]
7 [illegible]
9 [illegible]
11 [illegible]
12 [illegible]
13 [illegible]
14 [illegible]

PSAL. LIV.

Davidis. Quum miſiſſet Joab exercitum ſuum ad pugnandum contra Abſalom. Nobis verò eſt trophæum, & oratio ejus à Deo cuſtoditur. Verſ. 13.

1 DEus, per nomen tuum ſalva me, & potentiâ tuâ judica me. 2 Deus audi orationem meam, & auſculta verba oris mei. 3 Nam alieni ſurrexerunt contra me, & fortes quæſiverunt animam meam, & non æſtimârunt Deus. * *Diapſalma* * 4 Deus adjutor Domine ſuffultor animæ meæ. 5 Adduc malum ſuper inimicos meos, & in veritate tua [illegible] fac eos. 6 Et ego maturo cum judicio ſacrificabo tibi, & confitebor nomini tuo Domine quoniam bonum eſt: 7 Quia ex omnibus terroribus liberâſti me, & in hoſtibus meis [illegible] oculus meus.

PSAL. LV.

Davidis. Quum deploraret Abſalom ſuum qui interfectus fuerat. Et Pr[illegible] de iis qui ſævierunt in Chriſtum. Ver[illegible]

1 AUſculta Deus orationi meæ, & ne negligas deprecationem meam: 2 Audi me, reſponde mihi: & convertere ad clamorem meum, & exaudi me. 3 Propter inimicos & propter oppreſſionem ſceleſti. Nam [illegible]dias tetenderunt mihi ſceleſti, & adverſi ſunt mihi, 4 Ceciditque in me pavor, Et operuerunt me umbræ mortis. 5 Dixi, Quis dabit alas velut columbæ? equidem volarem & quieſcerem, 6 Secederémque & avolarem, & habitarem in deſerto, * *Diapſalma* * 7 Expectarémque eum qui eripit me de vento turbinis. 8 Obrue Domine converſationem linguarum illorum, quoniam vidi jurgium & litem in civitate: 9 Diu noctúque circumeunt muros ejus: ſcelus atque falſitas intra eam. 10 Ac dolus: neque recedit de plateis ejus [illegible] & fallacia. 11 Non enim hoſtis meus probro affecit, ut patienter ferrem: neque oſor meus ſuperbivit in me, ut me abſconderem ab eo. 12 Tu homo æqualis mihi, proximus meus & amicus meus.

Versio VULG. LAT.

In finem,

1 2 In Carminibus intellectûs David, Cùm venissent Ziphæi, & dixissent ad Saul; Nónne David absconditus est apud nos? (1. Reg. 23. 19. & 26. 1.)

LIII.

3 Deus, in nomine tuo salvum me fac:
4 & in virtute tua judica me. Deus, exaudi orationem meã: auribus percipe ver-
5 ba oris mei. Quoniã alieni insurrexerũt adversùm me, & fortes quæsierunt animam meam: & non proposuerunt Deum
6 ante conspectum suum. Ecce enim Deus adjuvat me: & Dominus susceptor est a-
7 nimæ meæ. Averte mala inimicis meis:
8 & in veritate tua disperde illos. Voluntariè sacrificabo tibi, & confitebor nomini tuo, Domine: quoniam bonum
9 est. Quoniã ex omni tribulatione eripuisti me: & super inimicos meos despexit oculus meus.

In finem,

1 In Carminibus intellectûs David.

LIV.

2 Exaudi, Deus, orationẽ meã, & ne de-
3 spexeris deprecationẽ meã: Intende mihi, & exaudi me. Contristatus sum in ex-
4 ercitatione mea: & conturbatus sum A voce inimici, & à tribulatione peccatoris. Quoniã declinaverunt in me iniqui-
5 tates: et in ira molesti erãt mihi. Cor meum cõturbatũ est in me: et formido mor-
6 tis cecidit sup me. Timor & tremor venerunt super me: & contexerunt me te-
7 nebræ. Et dixi; Quis dabit mihi pennas sicut columbæ, & volabo, & requiescã?
8 Ecce elongavi fugiens: & mansi in soli-
9 tudine. Expectabã eũ, qui salvũ me fecit à pusillanimitate spiritûs, & tempe-
10 state. Præcipita, Dñe, divide linguas eorũ: quoniã vidi iniquitatẽ, & contradi-
11 ctionẽ in civitate. Die ac nocte circumdabit eã super muros ejus iniquitas: &
12 labor in medio ejus, Et injustitia. Et nõ defecit de plateis ejus usura, & dolus.
13 Quoniam si inimicus meus maledixisset mihi, sustinuissem utiq;. Et si is, qui oderat me, super me magna locutus fuis-
14 set: abscondissem me forsitan ab eo. Tu verò homo unanimis, dux meus, & notus meus:

Versio GRÆCA LXX. Interp.

2 Εἰς τὸ τέλος, ἐν ὕμνοις συνέσεως τῷ Δαυὶδ, Ἐν τῷ ἐλθεῖν τοὺς Ζειφαίους, καὶ εἰπεῖν τῷ Σαοὺλ, Οὐκ ἰδοὺ Δαυὶδ κέκρυπται παρ' ἡμῖν; νγ'.

3 Ὁ Θεὸς ἐν τῷ ὀνόματί σου σῶσόν με, καὶ ἐν
4 τῇ δυνάμει σου κρῖνόν με. Ὁ Θεὸς εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου, ἐνώτισαι τὰ ῥήματα τοῦ
5 στόματός μου. Ὅτι ἀλλότριοι ἐπανέστησαν ἐπ' ἐμὲ, καὶ κραταιοὶ ἐζήτησαν τὴν ψυχήν μου, οὐ προέθεντο τὸν Θεὸν ἐνώπιον αὐτῶν. ΔΙΑΨΑΛ-
6 ΜΑ. Ἰδοὺ γὰρ ὁ Θεὸς βοηθεῖ μοι, καὶ ὁ κύριος
7 ἀντιλήπτωρ τῆς ψυχῆς μου. Ἀποστρέψει τὰ κακὰ τοῖς ἐχθροῖς μου, ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου ἐξολό-
8 θρευσον αὐτούς. Ἑκουσίως θύσω σοι, ἐξομολο-
9 γήσομαι τῷ ὀνόματί σου κύριε, ὅτι ἀγαθόν. Ὅτι ἐκ πάσης θλίψεως ἐρρύσω με, καὶ ἐν τοῖς ἐχθροῖς μου ἐπεῖδεν ὁ ὀφθαλμός μου.

1 Εἰς τὸ τέλος, ἐν ὕμνοις συνέσεως τῷ Δαυίδ. νδ'.

2 Ἐνώτισαι ὁ Θεὸς τὴν προσευχήν μου, καὶ μὴ
3 ὑπερίδῃς τὴν δέησίν μου· Πρόσχες μοι, καὶ εἰσάκουσόν μου. ἐλυπήθην ἐν τῇ ἀδολεσχίᾳ μου, καὶ ἐταρά-
4 χθην Ἀπὸ φωνῆς ἐχθροῦ, καὶ ἀπὸ θλίψεως ἁμαρτωλοῦ· ὅτι ἐξέκλιναν ἐπ' ἐμὲ ἀνομίαν, καὶ ἐν ὀργῇ ἐνε-
5 κότουν μοι. Ἡ καρδία μου ἐταράχθη ἐν ἐμοὶ, καὶ δει-
6 λία θανάτου ἐπέπεσεν ἐπ' ἐμέ. Φόβος καὶ τρόμος
7 ἦλθεν ἐπ' ἐμὲ, καὶ ἐκάλυψέ με σκότος. Καὶ εἶπα, Τίς δώσει μοι πτέρυγας ὡσεὶ περιστερᾶς; καὶ
8 πετασθήσομαι καὶ καταπαύσω. Ἰδοὺ ἐμάκρυνα φυγαδεύων, καὶ ηὐλίσθην ἐν τῇ ἐρήμῳ. ΔΙΑΨΑΛ-
9 ΜΑ. Προσεδεχόμην τὸν σώζοντά με ἀπὸ ὀλι-
10 γοψυχίας καὶ καταιγίδος. Καταπόντισον κύριε καὶ καταδίελε τὰς γλώσσας αὐτῶν, ὅτι εἶδον ἀνο-
11 μίαν καὶ ἀντιλογίαν ἐν τῇ πόλει. Ἡμέρας καὶ νυκτὸς κυκλώσει αὐτὴν ἐπὶ τὰ τείχη αὐτῆς, ἀνο-
12 μία καὶ πόνος ἐν μέσῳ αὐτῆς Καὶ ἀδικία, καὶ οὐκ ἐξέλιπεν ἐκ τῶν πλατειῶν αὐτῆς τόκος καὶ δό-
13 λος. Ὅτι εἰ ἐχθρὸς ὠνείδισέ με, ὑπήνεγκα ἄν, καὶ εἰ ὁ μισῶν ἐπ' ἐμὲ ἐμεγαλορρημόνησεν, ἐ-
14 κρύβην ἂν ἀπ' αὐτοῦ. Σὺ δὲ ἄνθρωπε ἰσόψυχε, ἡγεμών μου καὶ γνωστέ μου,

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

In finem, [a] in hymnis intellectûs 1
David, Cùm venissent Ziphæi, & 2
dixissent ad Saul, Nonne ecce
David absconditus est
apud nos? LIII.

1 *Deus, in nomine tuo sal-* 3
vum me fac; & in virtute
tua (a) judica me. 2 Deus, exaudi 4
orationem meam: auribus percipe
verba oris mei. 3 Quoniam ali- 5
eni insurrexerunt adversùm me:
& fortes quæsiverunt animam
meam; non proposuerunt Deum in
conspectu suo. DIAPSALMA.
4 Ecce enim Deus adjuvat me, et 6
Dominus susceptor est animæ
meæ. 5 (b) Avertet mala inimicis 7
meis: in veritate tua disperde il-
los. 6 [b] Voluntariè sacrificabo 8
tibi: confitebor nomini tuo, Domi-
ne, quoniam bonum est. 7 Quoni- 9
am ex omni tribulatione eripuisti
me: & super inimicos meos [c]
despexit oculus meus.

In finem, (a) in hymnis [a] intelle- 1
ctûs ipsi David. *LIV.*

1 *Exaudi, (b) Deus, orati-* 2
onem meam: & ne despexe-
ris deprecationem meam: Intende 3
mihi, & exaudi me. 2 Contrista-
tus sum [b] in (c) exercitatione
mea: & conturbatus sum, A voce 4
inimici, & à tribulatione pecca-
toris. 3 Quoniam declinaverunt
in me (d) iniquitatem: & [c] in
ira (e) molesti erant mihi. 4 Cor 5
meum conturbatum est in me: et
formido mortis cecidit super me.
5 Timor & tremor venerunt su- 6
per me: & contexerunt me tene-
bræ. 6 Et dixi, Quis dabit mihi 7
pennas sicut columbæ? & vola-
bo, & requiescã: 7 Ecce elonga- 8
vi fugiens, & mansi in solitudi-
ne. DIAPSALMA. 8 Expectabã 9
eum, qui me salvum faceret à (f)
pusillanimitate, [d] et tempestate.
9 (g) [e] Præcipita, Domine, & 10
divide linguas eorum: quoniam
vidi iniquitatem & contradicti-
onem in civitate. 10 [f] Die 11
ac nocte circundabit eam super
muros ejus: (h) iniquitas & la-
bor in medio ejus, Et injustitia: 12
11 & [g] non defecit de plateis
ejus usura, & dolus. 12 Quoniã 13
(i) si inimicus [h] exprobrâsset
mihi; sustinuissem utiq;: 13 & si is, qui (k) oderat, super me magna locutus fuisset; abscondissem me utique ab eo. 14 Tu verò (l) homo [i] unanimis, dux meus, & notus meus: 14

Versio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ፡ ዘበአእምሮ፡ ዘዳዊት፡ ዘአመ፡ መጽ
አ፡ ዚፋውያን፡ ወይቤልዎ፡ ለሳኦል፡ ናሁ፡
ዳዊት፡ ይትኀባእ፡ ኀቤነ፡፡

ሃሮ እግዚኦ፡ በስምከ፡ አድኅነኒ፡፡ ወበኃ 1
ይልከ፡ ፍታሕ፡ ሊተ፡፡፨ እግዚኦ፡ ስምዓኒ፡ 2
ጸሎትየ፡፡ ወአጽምእ፡ ቃለ፡ አፉየ፡፡፨
እስመ፡ ነኪራን፡ ቆሙ፡ ላዕሌየ፡፡ ወኃያላን፡ 3
ኃሠሠዋ፡ ለነፍስየ፡፡ ወኢረሰይዎ፡ ለእግ
ዚአብሔር፡ ቅድሜሆሙ፡፡፨ ናሁ፡ እግዚ 4
አብሔር፡ ይረድአኒ፡፡ ወእግዚእየ፡ ያድኅና፡
ለነፍስየ፡፡፨ ወይሜይጦ፡ ለእኪት፡ ዲበ፡ 5
ጸላእትየ፡፡ ወበጽድቅከ፡ ሠርዎሙ፡፡፨
ዘእምፈቃድየ፡ እሠውዕ፡ ለከ፡፡ እገኒ፡ ለስ 6
ምከ፡ እግዚኦ፡ እስመ፡ ሠናይ፡፡፨ እስመ፡ 7
እምኵሉ፡ ምንዳቤየ፡ አድኅንከኒ፡፡ ወርእ
የት፡ ዐይንየ፡ በጸላእትየ፡፡፨

ፍጻሜ፡ ስብሐት፡ ዘበአእምሮ፡፡

ሃሮ አጽምአኒ፡ እግዚኦ፡ ጸሎትየ፡፡ ወኢ 1
ትትሀየየኒ፡ ስእለትየ፡፡ ነጽረኒ፡ ወስምዓ
ኒ፡፡፨ ተከዝኩ፡ ወደንገፅኩ፡ ወተዛዋዕ 2
ኩ፡፡ እምቃለ፡ ጸላኢ፡ ወእምሥቃየ፡ ኃጥ
እ፡፡፨ እስመ፡ ሜጡ፡ ለዐመፃ፡ ላዕሌየ፡፡ 3
ወቈሙ፡ ላዕሌየ፡ ያመነስውኒ፡፡ ወደንገፀኒ፡ 4
ልብየ፡ በላዕሌየ፡፡ ወመጽአኒ፡ ድንጋፄ፡ ሞ
ት፡፡፨ ፍርሀት፡ ወረዓድ፡፡ አኀዙኒ፡ ወደፈ 5
ኑኒ፡ ጽልመት፡፡፨ ወለቤ፡ መኑ፡ ይሁበኒ፡ 6
ክንፈ፡ ከመ፡ ርግብ፡፡ ለሠርር፡ ወአዕር
ፍ፡፡፨ ናሁ፡ አርሐቁ፡ ተኃሢአ፡ ወቤትኩ፡ 7
ውስተ፡ በድው፡፡፨ ለሴፈዎ፡ ለዘ፡ ያድኅ 8
ነኒ፡፡ እምአንባዘ፡ ነፍስየ፡ ከመ፡ ዐውሎ፡፡፨
እስጥሞሙ፡ እግዚኦ፡ ወምትር፡ ልሳናቲሆ 9
ሙ፡፡ እስመ፡ ርኢኩ፡ ዐመፃ፡ ወቅሠት፡ ውስ
ተ፡ ሀገር፡፡፨ ለስመ፡ መዐልተ፡ ወሌሊተ፡ ዐገ 10
ት፡ ውስተ፡ አረፋቲሃ፡፡ ዐመፃ፡ ወሠራኅ፡
ወኃጢአት፡ ማእከላ፡፡፨ ወኢይርሕቅ፡ 11
እምርኅብ፡ ጕሕሉት፡፡፨ ሶበሰ፡ ጸላኢ፡ 12
ጸአለኒ፡ እምተዐገሥኩ፡፡፨ ወሶበኒ፡ ጸላኢ፡ 13
አዕበየ፡ አፉሁ፡ ላዕሌየ፡ እምተኀባእኩ፡፡፨
ወአንተሰ፡ ብእሲ፡ ዘከመ፡ ነፍስየ፡ መአምርየ፡ 14
ወአዋቅየ፡፡፨

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. LIII.* [a] Qui in intellectu David, [b] sponte meâ [c] vidit oculus meus. *PSAL. LIV.* [a] intellectûs. Exaudi [b] et conturbatus sum & exercitatus sum, A [c] insurgentes contra me pertentârunt me. [d] tanquam procellâ ejus. [e] Submerge eos, Domine, [f] Quoniam die [g] non longè abest à plateis ejus dolus, & [h] infensus fuisset [i] qui tanquam anima mea,

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* المزمور الثالث والخمسون *

1 * كمال تسابيح فهم لداود حين جاء الزيفيون وقالوا لشاول ان
2 داود عندنا مختفي * يد * استيخن *
3 4 * خلصني باسمك يا الاهي * وبقوتك احكم لي * اللهم استجب صلاتي * وانصت الى كلام فمي * فان
5 6 الغرباء قاموا علي * والاقوياء طلبوا نفسي * لم يجعلوا الله امامهم * هاهوذا الله اعانني والرب
7 ناصر نفسي * يرد الشر على اعداي * استاصلهم بعدلك * اذبح لك بارادتي * واشكر اسمك يا رب *
8 لانه صالح * ولانك خلصتني من كل حزن * وعيني رات اعداي *

1 * المزمور الرابع والخمسون * لداود الكمال في تسابيح الفهمين * مج * استيخن *
2 3 * اسمع يا الله صلاتي ولا تغفل عن طلبتي * انصت الي واستجب لي فاني حزنت في كلامي
4 5 * وقلقت من صوت العدو وضيق الخاطي لانهم مالوا علي بالغضب وبالاثم حقدوا علي * جزع
6 7 قلبي في باطني وخوف الموت اتى علي * خوف ورعدة اكتنفاني وظلمة غشيتني * فقلت من ذا
8 9 يعطيني اجنحة مثل حمامة لكي اطير واستريح * هاانذا قد تباعدت هاربا واويت البرية * منتظرا
10 الاله الذي يخلصني من صغر القلب والريح العاصف * غرقهم يا رب وفرق السنتهم فاني رايت
11 12 اثما وشقاقا في هذه المدينة * النهار كله والليل يحيطان بحصونها الاثم والتعب * والظلم في وسطها
13 لم يذهب من اسواقها الربا والغش * فلو كان الذي عيرني عدوا لكنت احتمل ولو كان
14 مبغضي عظم على القول لتواريت عنه * وانت ايها الانسان عديل نفسي ورئيسي الذي اعرفه

PSAL. LIII.

Perfectio laudum mentalium. Da- 1
vidis, quum venissent Ziphæi &
dixissent Sauli, David apud nos 2
latet. Ver. 14.

Libera me in nomine tuo, O Deus me- 3
us, & in potentia tua adjudica mihi.
Deus, exaudi orationem meam, & auscul- 4
ta verba oris mei. Nam alienigenæ insur- 5
rexerunt adversùm me, & fortes quæsi-
erunt animam meam: non constituerunt
Deum ante se. Ecce Deus adjutorium 6
meum est, & Dominus adjutor animæ
meæ: Reflectet malum in hostes meos. 7
Eradica eos æquitate tuâ. Sacrificabo tibi 8
sponte meâ, & gratias agam nomini
tuo, O Domine, quia bonum est; Et quia 9
tu liberâsti me de omni mœstitia, & ocu-
los meus vidit inimicos meos.

PSAL. LIV.

Davidis. Perfectio in laudibus 1
sensatorum. Vers. 43.

Audi, O Deus, orationem meam, & 2
ne negligas supplicationem meam.
Ausculta me & exaudi me, quoniam 3
contristatus sum in sermone meo, Et con- 4
turbatus sum à voce inimici, & depres-
sione peccatoris; Nam deflexerunt ad me
cum furore, & cum scelere servaverunt
in me odium. Expavit cor meum in in- 5
teraneis meis, & timor mortis venit super
me. Timor & tremor occupaverunt me, 6
& tenebræ me contexerunt. Et dixi, O 7
quis det mihi alas veluti columbæ, ut
volem & requiescam! Ecce jam recessi 8
fugiens, & inhabitavi desertum: Ex- 9
pectans Deum qui liberavit me à pusilla-
nimitate & vento vehementi. Submerge 10
eos, O Domine, & divide linguas eorum,
quia iniquitatem & dissidia in ista civi-
tate. Die totâ ac nocte circundant arces 11
ejus iniquitas & labor: Et oppressio in 12
medio ejus est: non recessit à vicis ejus
usura & fraus. Si esset qui improperavit 13
mihi, inimicus, certè tolerarem: & si osor
meus magnificâsset adversùm me sermo-
nem, sanè me abdidissem ab eo. At tu, 14
O homo, æqualis animæ meæ & princeps
meus, quem cognosco.

תהלים : נו

ſtrepitu in ambulabamus Dei domo in ; ſecretum *edulcorabamus* ſimul Qui

15 אֲשֶׁר יַחְדָּו נַמְתִּיק סוֹד בְּבֵית אֱלֹהִים נְהַלֵּךְ בְּרָגֶשׁ׃

,eorũ *habitatione* in mala quia : viventes *ſepulchrum* deſcendant ,eis *ſuper mors Mulctet*

16 יַשִּׁימָוֶת ׀ עָלֵימוֹ יֵרְדוּ שְׁאוֹל חַיִּים כִּי־רָעוֹת בִּמְגוּרָם

.me ſervabit Dominus & ; clamabo Deum ad Ego .eorum *interiori* in

17 בְּקִרְבָּם׃ אֲנִי אֶל־אֱלֹהִים אֶקְרָא וַיהוָה יוֹשִׁיעֵנִי׃

.meam vocem exaudiet & ; tumultuabor & , *meditabor* meridie & ,manè & ,Veſperè

18 עֶרֶב וָבֹקֶר וְצָהֳרַיִם אָשִׂיחָה וְאֶהֱמֶה וַיִּשְׁמַע קוֹלִי׃

.mecum *fuerunt multis in* quoniam :me *in conflictu* à meam animam pace in Redimet

19 פָּדָה בְשָׁלוֹם נַפְשִׁי מִקֲּרָב־לִי כִּי־בְרַבִּים הָיוּ עִמָּדִי׃

non quibus .Selah , *quondam ſedens* & , eos humiliabit & , Deus Audiet

20 יִשְׁמַע ׀ אֵל ׀ וְיַעֲנֵם וְיֹשֵׁב קֶדֶם סֶלָה אֲשֶׁר אֵין

,*ejus pacificos in ſuas manus* Miſit .Deum timuerunt non & : *eis* mutationes

21 חֲלִיפוֹת לָמוֹ וְלֹא יָרְאוּ אֱלֹהִים׃ שָׁלַח יָדָיו בִּשְׁלֹמָיו

fuerunt *mollia*,ejus cor *conflictus* & ,ſuũ os *butyris præ* Lenierunt .ejus pactum polluit

22 חִלֵּל בְּרִיתוֹ׃ חָלְקוּ ׀ מַחְמָאֹת פִּיו וּקְרָב־לִבּוֹ רַכּוּ

,tuũ *donum* Dominum ſuper Projice .*ſtricti* gladii ipſa & , *oleo præ* ejus verba

23 דְבָרָיו מִשֶּׁמֶן וְהֵמָּה פְתִחוֹת׃ הַשְׁלֵךְ עַל־יְהוָה ׀ יְהָבְךָ

tu Et .juſto nutationem ſeculum in dabit non ,te *educabit* ipſe &

24 וְהוּא יְכַלְכְּלֶךָ לֹא־יִתֵּן לְעוֹלָם מוֹט לַצַּדִּיק׃ וְאַתָּה ׀

non *doli* & ,*ſanguinum* viri : foveæ puteum in eos facies deſcendere Deus

אֱלֹהִים ׀ תּוֹרִדֵם ׀ לִבְאֵר שַׁחַת אַנְשֵׁי דָמִים וּמִרְמָה לֹא־

.*te in confidam* ego & : ſuos dies dimidiabunt

יֶחֱצוּ יְמֵיהֶם וַאֲנִי אֶבְטַח־בָּךְ׃

PSAL. LVI. נו

eum *tenendo in* : Mictam David ipſi ,remotis mutam columbam ſuper Victori

1 לַמְנַצֵּחַ ׀ עַל־יוֹנַת אֵלֶם רְחֹקִים לְדָוִד מִכְתָּם בֶּאֱחֹז אֹתוֹ

omni : homo me *abſorbuit* quoniam , Deus mei Miſerere .Gath in Peliſtim

2 פְלִשְׁתִּים בְּגַת׃ חָנֵּנִי אֱלֹהִים כִּי־שְׁאָפַנִי אֱנוֹשׁ כָּל־

quoniam : die omni mei *invidi* me *Abſorbuerunt* .me *opprimet* bellans die

3 הַיּוֹם לֹחֵם יִלְחָצֵנִי׃ שָׁאֲפוּ שׁוֹרְרַי כָּל־הַיּוֹם כִּי־

.fidam *te in* ego : timebo *Interdiu* .*excelſe ô mihi* bellantes multi

4 רַבִּים לֹחֲמִים לִי מָרוֹם׃ יוֹם אִירָא אֲנִי אֵלֶיךָ אֶבְטָח׃

faciat quid ; timebo non , fidi Deo *in* ,ejus verbum laudabo Deo In

5 בֵּאלֹהִים אֲהַלֵּל דְּבָרוֹ בֵּאלֹהִים בָּטַחְתִּי לֹא אִירָא מַה־יַּעֲשֶׂה

omnes me *ſuper* ; *afficient* dolore mea verba die Tota .mihi caro

6 בָשָׂר לִי׃ כָּל־הַיּוֹם דְּבָרַי יְעַצֵּבוּ עָלַי כָּל־

mea veſtigia ipſi ,*ſe abſcondent* , *Commorabuntur* .malum in eorum cogitationes

7 מַחְשְׁבֹתָם לָרָע׃ יָגוּרוּ ׀ יִצְפּוֹנוּ הֵמָּה עֲקֵבַי

? eis evaſio iniquitatem *Super* .meã animã *expectaverunt ut* : *obſervabunt*

8 יִשְׁמֹרוּ כַּאֲשֶׁר קִוּוּ נַפְשִׁי׃ עַל־אָוֶן פַּלֶּט־לָמוֹ

tu ,numerâſti *meam Motionem* .Deus deſcendere fac populos *naſo* in

9 בְּאַף עַמִּים ׀ הוֹרֵד אֱלֹהִים׃ נֹדִי סָפַרְתָּה אָתָּה

? tuo libro in nonne : tuo utre in *meam lachrymam* pone

שִׂימָה דִמְעָתִי בְנֹאדֶךָ הֲלֹא בְּסִפְרָתֶךָ׃

תרגום TARGUM.

15 די כחדא נתרץ רזא בבית מקדשא דאלהא

16 נהלך בסרהוביא : יחיבנון דין קטול וינזור

עליהון בישן לדואג ואחיתופל יחתון לשיול

כד הנון חיין ארום בישן במדוריהון בנופיהון :

17 אנא קדם אלהא אצלי ומימרא דיי יפרוק יתי :

18 ברמשא ובצפרא ובטיהרא אצלי וארגיש

19 ושמע קלי : פרק בשלם נפשי דלא למקרב

ביש לי ארום בסגיען עקן הוה מימריה בסעדי:

20 ישמע אל ויקבל מנהון ויתיב שמיא מלקדמין

לעלמין ורשיעי דלא מלקדמין דלא מהשנין

אורחתהון בישיא ולא דחלו מן קדם אלהא :

21 אושיט ידוי באנשי שלמיה אפס קימיה: שעיען

22 יתיר מן שמן דגובנין מלי פומיה והיך זיני

קרבא לביה רכיכן מלוי יתיר מן משח ואנון

23 מורנין דקטול : טלוק על יי סברך והוא יזון

24 יתך לא יתן לעלמא חוסרנא לצדיקיא : ואנת

אלהא במימרך תוחית יתהון לגהנם עמיקא

גברי מרי קטול ונכילו לא יחמון פלגות

יומיהון ואנא אתרחץ במימרך : נו

1 לשבחא על כנשתא דישראל דמתילא ליונה

שתוקא בעדן די מתרחקין מן קרויהון וחזרין

ומשבחין למרי עלמא היך דוד מכיך ושלים כד

2 אחדו יתיה פלשתאי בגת : חוס עלי יי אלהא

ארום שפיני תחותוי ישבי גבר חיב כל יומא

3 מגיחא ידחקנני : שפין גרמי מעיקי כל יומא

ארום סגיעין מעיקין מגיחין לי אלהא עלאה

4 די כורסיה במרומא : יומא דאדחל אנא עלך

5 אתרחץ: במדת דינא דאלהא אשבח במימריה

באלהא אתרחץ לא אדחל מה יעבד בסרא לי:

6 כל יומא מטולתי טרחן עלי כל מחשבתהון

7 לביש : יכנשון ויטשון בכמנא הנון אסתורי

8 יטמרון היכמה דסתינו עבדו לנפשי : על

שקרא די בידיהון רוקן יתהון ברגיז עמיא

9 תמסכן אלהא : יומי טלטולי מניתא אנת שוי

דמעתי בזיקך יי הלא בחושבנך :

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Simul enim inibimus *rectum* ſecretum : domo ſanctuarii Domini ambulabim cum feſtinatione. Reos paraget eos judic um mortis, & ſententiam feret *malorm* adverſum ipſos Doeg & Achitophel : de ſcendent in infernum viventes, quonia mala [*ſunt*] in tabernaculis eorum, in cor poribus eorum. Ego coram Deo orab & verbum Domini redimet me. Veſpe & manè, & in meridie orabo, & ſtr pitum edam, & exaudiet vocem meam. Re demit in pace animam meam ne acceder ad me malum, quoniam in multis afflictio nibus fuit Verbum ejus in adjutorium me um. *Audiet Deus*, & accipiet ab eis : ac debit in cœlis à principio in ſecula: pecca tores autem *qui non ſunt à principio*, qui no mutãt viã ſuã peſſimã, nec reverentur co ſpectum Dei, [*peribunt*.] Extendit man ſuas in homines pacis ſuæ : prophana pactum ſuum. Leniora quàm pinguedo ſeorum ſunt verba oris ejus, & ſicut ar bellica cor ejus : teneriora verba ejus unctione ; at ipſa ſunt ſpicula occiſio Projice ſuper Dominum ſpem tuam, & ip nutriet te, nec dabit in perpetuum ege tem *juſtis*. Et tu Deus in verbo tuo de babis eos in gehennam profundam : hom nes auctores interfectionis & doli, videbunt dimidium dierum ſuorum : verò ſperabo in verbo tuo.

Ad laudandũ pro Eccleſia *Iſrael*, quæ ſi latur columbæ ſilentii, in tẽpore quo el gati ſunt à civitatibus ſuis : ſed reverſi la dant auctorem mundi, ſicut David contr et perfectus; quando tenuerunt eum Pale ni in Gath.

PSAL. LVI.

MIſerere mei *Domine* Deus, quonia conculcavit me *Iſbi* homo ſceleratus: t die bellator opprimet me. Conculcant mea moleſtatores mei tota die, quoniã m *oppreſſores* pugnãt contra me, Deꝰ altiſſi cujus ſedes eſt in excelſo. Die qua timu ego in te confidam. In menſura judicii laudabo in verbo ejus : in Deo ſpera non timebo quid faciat caro mihi. Tota mei cauſa laborant, contra me omnes rum cogitationes in malum. Congrega tur & abſcondentur *in inſidiis*; ipſi pla meas obſervabunt ; ſicut expectaverun fecerunt animæ meæ. Propter falſita quæ eſt in manibus eorum, evacua eos furore ad paupertatem adiges populos us. Dies vagationis meæ numerâſti tu, lachrymam meam in utre tuo: *Domine*, nónne in rationibus t

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 [illegible]

16 [illegible]

17 [illegible]

18 [illegible]

19 [illegible]

20 [illegible]

21 [illegible]

22 [illegible]

23 [illegible]

24 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1 [illegible]

2 [illegible]

3 [illegible]

4 [illegible]

6 [illegible]

7 [illegible]

8 [illegible]

9 [illegible]

Qui ſimul comedimus paſtum in domo ambulantes cum concordia. Adduc eos mortalitatem, & deſcendant viven infernum : quoniam malum eſt intra Ego verò Deum invocabo, & Deus ſal me. Veſpere & mane ac meridie cog & dicam atque audire faciam vocem Libera animam meam ab iis qui nõ quoniam in diſſidium facti ſunt mecum diet Deus, & humiliabit illos qui eſt ſecula. Non eſt illis mutatio, neque t runt Deum. Extenderunt manum proximum ſuum, & prophanaverunt illius. Conturbati ſunt præ ira vultus & præ furore cordis illius. Leniora ſun ba ejus oleo, at ipſa ſunt cuſpides. curam tuam in Dominum, & ipſe te en nec ſinet perpetuò agitari juſtos ſuos. verò Deus, detrude illos in foveam pe nis, viros effundentes ſanguinem & m nantes dolum : & non compleant dies Ego autem ſperabo in te.

Laus, & initium gradus.

PSAL. LVI.

Davidis. Gratiarum actio juſti, quod tus ſit ab hoſte & de manu Saul de Judæis, & de Chriſto. Verſ. 24.

MIſerere mei Deus, quoniam concu me homo : totâ die bellator vexa Conculcaverunt me hoſtes mei totâ di multitudo pugnantiũ exaltati ſunt ſupe In die non timebo, quia tibi confiſus In Deo gloriabor, in Deo ſperavi, no tuam ; quid faciet in me homo ? To conſilium inibant adverſùm me, & m bantur contra me malũ. Deliteſcent habitabunt, & ipſi calcaneos me ſervabunt. Quemadmodum præſtola animæ meæ, Atque dixerunt, Non eſt vator : ſic in furore gentium judica illos us Laus mea, ſignificavi tibi. Pone la mas meas coram te, & in libro tuo

Verſio VULG. LAT.

15 Qui ſimul mecũ dulces capiebas cibos: in domo Dei ambulavimus cum conſenſu. 16 Veniat mors ſuper illos: & deſcendant in infernum viventes: Quoniam nequitiæ in habitaculis eorũ, in medio eorum. 17 Ego autem ad Deum clamavi: & Domin⁹ ſalvabit me. 18 Veſperè, & manè, & meridiè narrabo & annuntiabo: & exaudiet vocem meã. 19 Redimet in pace animam meã ab his, qui appropinquant mihi: quoniam inter multos erant mecũ. 20 Exaudiet Deus, & humiliabit illos, qui eſt ante ſæcula. Non enim eſt illis cõmutatio, & non timuerunt Deum: 21 Extendit manum ſuam in retribuendo. Contaminaverunt teſtamentum ej⁹. 22 Diviſi ſunt ab ira vultûs ejus: & appropinquavit cor illius. Molliti ſunt ſermones ejus ſuper oleum: & ipſi ſunt jacula. 23 Jacta ſuper Dominũ curam tuam, & ipſe te enutriet: non dabit in æternũ fluctuationem juſto. 24 Tu verò, Deus, deduces eos, in puteum interitûs. Viri ſanguinum, & doloſi non dimidiabunt dies ſuos: ego autem ſperabo in te, Domine.

In finem,

1 Pro populo, qui à Sanctis longè factus eſt, David in tituli inſcriptionem, cùm tenuerunt eũ Allophyli in Geth. (1. *Reg.* 21. 12.) L V.

2 Miſerere meì, Deus, quoniam conculcavit me homo: totâ die impugnans tribulavit me. 3 Conculcaverunt me inimici mei totâ die: quoniam multi bellantes adverſùm me. 4 Ab altitudine diei timebo: ego verò in te ſperabo. 5 In Deo laudabo ſermones meos, in Deo ſperavi: non timebo quid faciat mihi caro. 6 Totâ die verba mea execrabantur: adverſùm me omnes cogitationes eorum, in malũ. 7 Inhabitabunt & abſcondent: ipſi calcaneum meum obſervabunt. Sicut ſuſtinuerunt animam meam, 8 Pro nihilo ſalvos facies illos: in ira populos confringes. 9 Deus, Vitam meam annuntiavi tibi: poſuiſti lacrhymas meas in conſpectu tuo, Sicut & in promiſſione tua:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

15 Ὃς ἐπὶ τὸ αὐτὸ ἐγλύκανας ἐδέσματα, ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ θεοῦ ἐπορεύθημεν ἐν ὁμονοίᾳ. 16 Ἐλθέτω θάνατος ἐπ' αὐτοὺς, καὶ καταβήτωσαν εἰς ᾅδου ζῶντες· ὅτι πονηρία ἐν ταῖς παροικίαις αὐτῶν ἐν μέσῳ αὐτῶν. 17 Ἐγὼ πρὸς τὸν θεὸν ἐκέκραξα, καὶ ὁ κύριος εἰσήκουσέ μου. 18 Ἑσπέρας καὶ πρωῒ καὶ μεσημβρίας διηγήσομαι, καὶ ἀπαγγελῶ, καὶ εἰσακούσεται τῆς φωνῆς μου. 19 Λυτρώσεται ἐν εἰρήνῃ τὴν ψυχήν μου ἀπὸ τῶν ἐγγιζόντων μοι, ὅτι ἐν πολλοῖς ἦσαν σὺν ἐμοί. 20 Εἰσακούσεται ὁ θεὸς καὶ ταπεινώσει αὐτοὺς, ὁ ὑπάρχων πρὸ τῶν αἰώνων. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. οὐ γάρ ἐστιν αὐτοῖς ἀντάλλαγμα, καὶ 21 οὐκ ἐφοβήθησαν τὸν θεόν. Ἐξέτεινε τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐν τῷ ἀποδιδόναι· ἐβεβήλωσαν τὴν διαθήκην αὐτοῦ. 22 Διεμερίσθησαν ἀπὸ ὀργῆς τοῦ προσώπου αὐτοῦ, καὶ ἤγγισεν ἡ καρδία αὐτοῦ. ἡπαλύνθησαν οἱ λόγοι αὐτοῦ ὑπὲρ ἔλαιον, καὶ αὐτοί εἰσι βολίδες. 23 Ἐπίρριψον ἐπὶ κύριον τὴν μέριμνάν σου, καὶ αὐτός σε διαθρέψει, οὐ δώσει εἰς τὸν αἰῶνα σάλον τῷ δικαίῳ. 24 Σὺ δὲ ὁ θεὸς κατάξεις αὐτοὺς εἰς φρέαρ διαφθορᾶς. ἄνδρες αἱμάτων καὶ δολιότητος οὐ μὴ ἡμισεύσωσι τὰς ἡμέρας αὐτῶν. ἐγὼ δὲ ἐλπιῶ ἐπὶ σὲ κύριε.

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τοῦ λαοῦ τοῦ ἀπὸ τῶν ἁγίων μεμακρυμμένου, τῷ Δαυὶδ εἰς στηλογραφίαν, ὁπότε ἐκράτησαν αὐτὸν οἱ ἀλλόφυλοι ἐν Γέθ. νε΄.

2 Ἐλέησόν με ὁ θεὸς, ὅτι κατεπάτησέ με ἄνθρωπος, ὅλην τὴν ἡμέραν πολεμῶν ἔθλιψέ με. 3 Κατεπάτησάν με οἱ ἐχθροί μου ὅλην τὴν ἡμέραν ἀπὸ ὕψους ἡμέρας· ὅτι πολλοὶ οἱ πολεμοῦν-4 τές με φοβηθήσονται, ἐγὼ δὲ ἐλπιῶ ἐπὶ σοί. 5 Ἐν τῷ θεῷ ἐπαινέσω τοὺς λόγους μου, ὅλην τὴν ἡμέραν ἐν τῷ θεῷ ἤλπισα, οὐ φοβηθήσομαι τί ποιήσει μοι σάρξ. 6 Ὅλην τὴν ἡμέραν τοὺς λόγους μου ἐβδελύσσοντο, κατ' ἐμοῦ πάντες οἱ διαλογισμοὶ αὐτῶν 7 εἰς κακόν. Παροικήσουσι καὶ κατακρύψουσιν αὐτοὶ, τὴν πτέρναν μου φυλάξουσι καθάπερ ὑπέμεινα τῇ 8 ψυχῇ μου. Ὑπὲρ τοῦ μηθενὸς σώσεις αὐτοὺς, ἐν 9 ὀργῇ λαοὺς κατάξεις. ὁ θεὸς Τὴν ζωήν μου ἐξήγγειλά σοι, ἔθου τὰ δάκρυά μου ἐνώπιόν σου, ὡς καὶ ἐν τῇ ἐπαγγελίᾳ σου.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

15 *Qui (m) ſimul dulces capiebas cibos: in domo Dei ambulavimus cum* [k] *conſenſu.* 16 *Veniat mors ſuper illos: & deſcendant in infernum viventes?* 17 *Quoniam nequitia* [l] *in (n) hoſpitiis eorum, in medio eorum.* 18 *Ego* [m] *ad Deum clamavi, & Dominus* [n] *exaudivit me.* 19 *Veſperè, & manè, & meridiè narrabo, & annuntiabo:* [o] *& exaudivit vocem meam.* 20 *Redimet in pace animam meam ab his, qui appropinquant mihi: quoniam* [p] *in (o) multis erant mecum.* 21 *Exaudiet Deus, & humiliabit illos, qui eſt* [q] *ante ſecula.* DIAPSALMA. 22 *Non enim eſt illis (p)* [†] *commutatio, & non timuerunt Deum: Extendit (q) manũ ſuam in retribuendo.* 23 *(r) Contaminaverunt teſtamentum ejus: Diviſi ſunt ab (ſ) ira vultûs ejus, & appropinquavit cor illius.* 24 *Molliti ſunt ſermones ejus ſuper oleum: & ipſi ſunt* [r] *jacula.* 25 *(t) Jacta ſuper Dominum curam tuã, et ipſe enutriet te: non dabit in æternũ fluctuationem juſto.* 26 *Tu verò, Deus, deduces eos in puteum interitûs.* 27 *Viri ſanguinum & doloſitatis non dimidiabunt dies ſuos: ego autem ſperabo in te, Domine.*

In finem, *(a)* pro populo, qui à Sanctis longè factus eſt, ipſi David in tituli inſcriptionem, cùm tenuerunt eum Allophyli in Geth. *LV.*

1 *MISERERE meî, Deus, quoniam conculcavit me homo: totâ (b) die pugnans tribulavit me.* 2 *Conculcaverunt me inimici mei, totâ die* [a] *ab (c) altitudine diei: quoniam multi qui debellant me,* 3 [b] *Timebunt: ego verò in te ſperabo.* 4 *In Deo laudabo ſermones meos: totâ die in Deo ſperavi: non timebo, quid faciat mihi caro.* 5 *Totâ die (d)* [c] *verba mea aſpernabantur: adverſùm me omnes cogitationes eorum in malum.* 6 *(e)* [d] *Incolent, & abſcondent, ipſi calcaneum meum obſervabunt,* 7 *ſicut (f) ſuſtinu. animã meã; Pro nihil. (g) ſalvos facies illos: in ira populo (h) deduces:* 8 *(i)* [e] *Deus, Vitam meã annuntiavi tibi: (k)* [f] *poſuiſti lachrymas meas in conſpectu tuo:* 9 *ſicut et* [g] *in promiſſione tua.*

Verſio ÆTHIOPICA.

ዘኀቡረ : እስተጠዐምከ : ሲተ : መበል 15
ዐተ:: ወንሐውር : ቤተ : እግዚአብሔ
ር : በአሐዱ : ልብ::=፥ ይምጽኦሙ፡ 16
ሞት : ወይረዱ : ውስተ : ሲኦል : ሐያዋ
ኒሆሙ::=፥
እስመ:እኩይ: ማእከሎሙ: ወውስተ:ዐብያ 17
ቲሆሙ::=፥ወአንሰ:ጸራኅኩ:ኀበ:እግዚአብ 18
ሔር : ወእግዚእየ : ሰምዐኒ::=፥ ሰርከ : 19
ወናግህ : ወመዐልተ: እነግር:: አየድዕ:ወኢ
ሰምዐኒ : ቃልየ::=፥ አድኅና: በሰላም:ለነ 20
ፍስየ : እምእለ : ይትቃረቡኒ:: እስመ:
ይበዝኁ:እምእለ:ምስሌየ::=፥ ይስማዕ: 21
እግዚአብሔር : ወያኅስሮሙ:: ዘሀሎ:
እምቅድመ:ይትፈጠር:ዓለም::=፥እስመ: 22
አልቦሙ : ቤዛ:: ወኢፈርህዎ : ለእግዚአ
ብሔር:: ወሰፍሐ : እዴሁ : ለፈዲይ::=፥
ወአርኰሱ : ሠርዓቶ:: ወተናፈቁ : እምዐ 23
ተ : ገጹ:: ወቀርበ : ልቡ::=፥ ወፀሐዩ: 24
እምቅብዕ : ነገሩ:: እሙንቱሰ : ማዕበል:
ያስጥሞ::=፥ ግድፍ: ሳዕለ : እግዚአብሔ 25
ር:ሐሊናከ:ወውእቱ:ይሴስየከ::ወኢይሁብ፡
ሁከተ:ለጻድቅ:ለዓለም::=፥ አንተ:እግዚ 26
አ:አጽድፎሙ: ውስተ:ዐዘቅተ: ሞት::=፥
እደወ:ደም:ወጽልሕዋን:ኢያፈቁ:በመዋዕሊ 27
ሆሙ::ወአንሰ: ተወከልኩከ:እግዚኦ::
ፍጻሜ: ዘበእንተ: ሕዝብ:ስለስ : እምቅዱ
ሳን : ርሕቀ : ዘደዊት : አርአያ:
መጽሐፍ : ዘአመ : አኀዝዎ:
ኢሎፍሊ:በጌት::

ሣሮ ተሣሀለኒ:እግዚኦ:እስመ:ኪደኒ:ሰብእ:: 1
ወኵሎ:እሚረ:እስረሐኒ:ቀተል::=፥ ወኪ 2
ዱኒ: ፀርየ: ኵሎ:እሚረ:በኑኃ:ዕለት::እስ
መ:ብዙኃን : እለ:ፀብኡኒ: 3 ወፈራህኩ::
ወአንሰ፥ ኪያከ : ተወከልኩ : እግዚኦ::=፥
በእግዚአብሔር:እሴብሕ:ቃልየ::ወበእግዚ 4
ብሔር: ተወከልኩ: ኢይፈርህ: ምንተ : ይሬ
ስየኒ፡ዘሥጋ::=፥ወኵሎ:እሚረ:ያስቆርሩኒ: 5
ዘነበብኩ:: ወሳዕሌየ : ይመክሩ : ኵሎ:እ
ኩየ::=፥ ወይፀንሑኒ:ወይትኀብኡኒ:: ወእ 6
ሙንቱሰ:ሰኰናየ: ያስተኀይጹኒ::=፥ወዘልፈ: 7
ይፀንሕዋ : ለነፍስየ:: ወኢታድኅኖሙ:ወኢ
በምንትኒ:: ወታጸድፎሙ : ለሕዝብ : በመ
ዐትከ::=፥ እምሳኪየ : እነግረከ:በሕይ 8
ወትየ:: ወአንበርኩ: አንብዕየ: ቅድሜከ:
9 በከመ : አዘዝከ::

INTERP. ÆTHIOP. [k] uno corde. [l] in medio eorũ & in palatiis eorũ. [m] autem ad [n] meus exaudiet me. [o] nec tamen exaudient vocẽ meam. [p] multiplicati ſunt præ illis qui mecũ. [q] antequam conditus erat mundus. [†] placatio, [r] ſubmergentes fluctus. *PSAL. LV.* [a] in longitudine ejus: [b] Et timui: & ipſe etiã in te ſperavi Domine. [c] Execrabantur me eò quòd locutus ſum; & adverſùs me conſultabant omne malum. [d] Clanculũ me præſtolabantur, & mihi abſconditi erant: & ipſi veſtigia mea obſervabant. 7 Et aſſiduè ſuſtinebant animam meam: & non ſalvabis illos ob nil quicquam: & in ira populos dejicies; [e] Deus meus, [f] et poſui lachrymas [g] præcepiſti.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

15 16 * الذي يأكل معي ملذ الأطعمة ومشينا الي بيت الله بقلب واحد * ليأت الموت عليهم *
17 وهبطوا الي الجحيم احياء * لان الشر في وسط مساكنهم * وانا صرخت الي الله والرب اجابني
18 19 * اتكلم وقت المساء * وبالغداة ووسط النهار واقول ويسمع صوتي * ويخلص نفسي سالمة من
20 المقتربين لي * لانهم كانوا معي في اشياء كثيرة * سمع الله ويذلهم الكاين قبل الدهور لانه ليس
21 22 لهم مجازاة الا النار * ولن يخافوا الله * بسط يده ليجازي * عند ما دنسوا عهده * تفرقوا من
23 غضب وجهه واقتربت قلوبهم * اقوالهم الين من الدهن وهي سهام * القِ همك الي الرب
24 وهو يعولك لا يترك الصديق يزول الي الابد * وانت اللهم فاهبطهم الي جب الهلاك * رجال
الدماء والغش لا يكملوا ايامهم * وانا يا رب عليك توكلت * الليلويا *

* المزمور الخامس والخمسون *

1 * لداود قاله على الامة التي بعدت من القدس * وهو * كد * استيكن *
2 3 * ارحمني يا الله فقد وطيني الانسان * احربني مقاتلا النهار كله * اعداي داسوني جميع نهاري
4 5 لان المقاتلين لي من العلو كثيرون * لا اخشي في ساير الايام لاني عليك توكلت يا ربي * بالله
6 افتخر باقوالي النهار كله * الله رجوت فلا اخاف ماذا يصنع بي ذو جسد * رذلوا كلامي النهار
7 8 كله تشاوروا كلهم علي بالشر * يتوارون ويكمنون وهم مترصدون عقبي * كمثل ما احاطوا
9 نفسي لاي شي تخلصهم تحذر الشعوب بالغضب * اللهم اني شكرت حياتي لك جعلت دموعي
امامك * كمثل مواعيدك *

15 *Qui manducat mecum ſuavitatem ciborum, & pervenimus in domum Dei corde eodem.* 16 *Veniat mors ſuper eos, et deſcendant ad inferos vivi: quia ſcelus eſt in medio habitationum eorum.* 17 *At ego clamavi ad Deũ, & Dominus exaudivit me.* 18 *Loquar tempore veſpertino, & mane, ac meridie, & dicã, audietq; clamorem meũ:* 19 *Et redimet animam meam incolumem ab iis qui prope me ſunt; nam erant mecum in rebus multis.* 20 *Audivit Deus, & deprimet eos exiſtens ante ſecula: quia non eſt eis retributio præter ignem, & tamen non timent Deum.* 21 *Extendit manum ſuam ad retribuendum quando contaminaverunt fœdus ejus.* 22 *Diſſipati ſunt ob iram vultûs ejus, & appropinquaverunt corda eorum. Sermones eorum molliores ſunt oleo, at ipſi ſunt ſagittæ.* 23 *Jacta curam tuam in Dominum, & ipſe te enutriet: non permittet juſtum fluctuare in æternum.* 24 *Et tu Deus, præcipita eos in foveam perditionis: viri ſanguinum et fraudis ne expleant dies ſuos; & ego in te O Domine, confiſus ſum. Alleluja.*

PSAL. LV.

1 Davidis. Dictus ab eo de gente quæ receſſerat à Sanctitate. Verſ. 24.

2 *Miſerere mei, O Deus, quoniam jam me conculcavit homo: afflixit me, impugnans die totâ:* 3 *Inimici mei conculcârunt me totâ die meâ, quoniam bellantes mecum ab alto, multi ſunt.* 4 *Non timebo omnibus diebus, quia in te confiſus ſum O Domine mi.* 5 *In Deo gloriabor ſermonibus meis die totâ. Deum ſperavi, iccirco non timeo; quid faciat mihi prædi-ditus corpore?* 6 *Contempſerunt verba mea die totâ, conſultaverunt omnes adverſùm me in malum.* 7 *Abſcondent ſe & inſidiabuntur, obſervantes calcaneum meum.* 8 *Quo pacto obſederunt animam meam! qua de re ſalvabis eos? Commoneto populos cum furore.* 9 *Deus equidem profeſſus ſum vitam meam tibi deberi, propoſui lachrymas meas coram te. Juxta promiſſa tua*

תהלים : נז נח

quòd ,novi hoc :clamabo die in ,retrorſum mei inimici convertentur Tunc
אז ישובו אויבי אחור ביום אקרא זה־ידעתי כי־ 10
.*negotium* laudabo Domino in *:rem* laudabo Deo In *.mihi* Deus
אלהים לי: באלהים אהלל דבר ביהוה אהלל דבר: 11
Deus me Super .mihi homo faciat quid ,timebo non ,fidi Deo In
באלהים בטחתי לא אירא מה־יעשה אדם לי: עלי אלהים 12 13
,morte à meam animam eripuiſti Quoniam .tibi laudes reddam ;tua vota
נדריך אשלם תודות לך: כי הצלת נפשי ממות 14
? viventium lumine in ;*Dei facies ad deambulandum ad ,lapſu* à meos pedes nonne
הלוא רגלי מדחי להתהלך לפני אלהים באור החיים:

PSAL. LVII. נז

.ſpeluncā in Saul facie à *ipſum fugiendo in*, Mictam David ipſi, diſperdas Ne Victori
למנצח אל־תשחת לדוד מכתם בברחו מפני־שאול במערה: 1
umbra in & ,mea anima ſperavit te in quoniā ,mei miſerere ,Deus mei Miſerere
חנני אלהים חנני כי בך חסיה נפשי ובצל־ 2
Deum ad Clamabo .contritiones *tranſeat* donec :ſperabo tuarum alarum
כנפיך אחסה עד־יעבר הוות: אקרא לאלהים 3
me ſervabit & ,cœlis è Mittet *.me ſuper perficientem* Deum ad ;altiſſimum
עליון לאל גמר עלי: ישלח משמים ויושיעני 4
.ſuā veritatem & ,ſuā miſericordiam Deus mittet .Selah ,*me ſorbentis* probro
חרף שאפי סלה ישלח אלהים חסדו ואמתו:
eorum dentes ,hominum filios ,ardentes *jacebo* ,*leonum* *medio in* mea Anima
נפשי בתוך לבאם אשכבה להטים בני־אדם שניהם 5
ſuper te Exalta .acutus gladius eorum lingua & ;ſagittæ & ,lancea
חנית וחצים ולשונם חרב חדה: רומה על־ 6
paraverunt Rete .tuam gloriam terram omnem ſuper ;Deus cœlos
השמים אלהים על כל־הארץ כבודך: רשת הכינו 7
ceciderunt ;foveam *meas facies ad* foderunt ,mea anima ſe *flexit* ,meis greſſibus
לפעמי כפף נפשי כרו לפני שיחה נפלו
: meum cor paratum ,Deus meum cor Paratum .Selah ,ejus medium in
בתוכה סלה: נכון לבי אלהים נכון לבי 8
exurgam ,cithara & ,nebel exurge ,mea gloria Exurge .canam & ,cantabo
אשירה ואזמרה: עורה כבודי עורה הנבל וכנור אעירה 9
Quoniam .gentibus in *te* canam ;Domine populis in tibi Confitebor .diluculo
שחר: אודך בעמים אדני אזמרך בלאמים: כי־ 10 11
.tua veritas *æthera* ad uſque & ;tua miſericordia cœlos ad uſque magna
גדל עד־שמים חסדך ועד־שחקים אמתך:
.tuam gloriam terram omnem ſuper ;Deus cœlos ſuper te Exalta
רומה על־שמים אלהים על כל־הארץ כבודך: 12

PSAL. LVIII. נח

juſtitiam congregatio verè Num .Mictam David ipſi ,diſperdas ne ,Victori
למנצח אל־תשחת לדוד מכתם: האמנם אלם צדק 1 2
.hominum filii judicabitis *rectitudines* ? loquemini
תדברון מישרים תשפטו בני אדם:

תרגום TARGUM.

הבכן יתובון בעלי דבבי מחורי קדל יומא 10
דאצלי דין ידעית ארום אלהא בסעדי: במדת 11
דינא דאלהא אשבח במימריה במדת רחמין
דיי אשבח במימריה: במימרא דאלהא סברית 12
לא אדחל מה יעביד בר נשא לי: עלי קבלית 13
אלהא נדריך אשלם קורבני תודן קדמך: ארום 14
פציתא נפשי מקטול הלא רגלי מן נקופא
למהלכא קדם יי בנהור חייא: נז
לשבחא על עקתא בזמן די אמר דוד לא תחבל 1
אתאמר על יד דדוד מכיך ושלים במערקיה
מן קדם שאול באספלידא: חוס עלי אלהא 2
חוס עלי ארום במימרך אתרחצת נפשי
ובטלל שכנתך אהי רחיץ עד דיעבר
אתרגושא: אצלי קדם אלהא עלאה תקיפא די 3
פקד לעכוביתא דינמר באספלידא [ארום
פציתא נפשי ממותא דמיתין בי חייביא הלא
רגלי מלתקלא בחובא מטול דאטיל קדם יי
בגנתא דעדן למחמי בנהור צדיקיא] עולא
אמטולתי: ישדר מלאכיה משמי מרומא 4
ויפרקנני חסד שיפי לעלמין ישדר אלהא
טוביה וקושטיה: נפשי חירא כד כמצע 5
שלהובין אדמוך בינו גומרין די מלהטין בני
נשא דככיהון היך מורניתא וגררין ולישנהון
היך סיפא חריפא: אתרורם על מלאכי שמיא 6
אלהא על כל יתבי ארעא איקרך: מצדתא 7
אתקינו לאסתורי כיף נפשי כרו קדמי שיחא
נפלו במצעה לעלמין: מכון לבי לאוריתך יי 8
מכון לבי לדחלתך אשבח ואזמר: אתער יקרי 9
אתער לשבחא על פום נבלא וכנרא אתער
לצלותא דקריץ: אודי קדמך בעמיא יי 10
אשבחנך באומיא: ארום רב עד צית שמיא 11
טובך ועד שחקים קושטך: אתרורם יי על 12
מלאכי שמיא אלהא על כל יתבי ארעא
איקרך: נח
חא על עקתא בזמן די אמר דוד לא תחבל על יד דוד מכיך ושלים: הברם 1
שא שתקין צדיקי בעדן מצו חמי לכון דצדקתא מתמללין תריצות תדינון בני נש: 2

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Tunc revertētur hoſtes mihi infenſi, verte
tes cervicem qua die invocavero: hoc no
nempe Deum mihi auxilio futurū. In me
ſura judicii Dei laudabo in verbo ejus,
metro miſerationum Dñi laudabo in ve
ejus. In verbo Dei ſperavi; non timebo q
faciat filiꝰ hominis mihi. In me recepi De
vota tua, reddā ſacrificia confeſſionū cora
te. Quoniā liberāſti animā meam de mor
ſed & pedes meos à lapſu, ut incedam c
ram Domino in lumine vivorum.

Ad laudandū pro moleſtia, tempore q
dixit David, ne deſtruas, dictū eſt p ma
Davidis humilis & perfecti, dum fugeret
aſpectu Saulis in ſpeluncā. PSAL. LVI

Miſerere mei Deus, miſerere mei, quia
verbo tuo ſperavit anima mea, et in u
bra majeſtatis tuæ confidā, donec tranſe
tumultꝰ. Orabo corā Deo altiſſimo et fo
qui *juſſit araneæ*, ut perficeret in *ſpelun*
[quia liberāſti animā meā à morte, qua
ferebant mihi peccatores; nonne pedē mi
lapſu in peccatū, ut ambulē corā Domi
horto deliciarū, ad videndū lucē juſto
telā propter me. *Mittet* angelū ſuū de c
lis altiſſimis, et ſalvū me faciet, opprob
afficiens conculcantē me in æternum: mi
Deus bonitatē ſuā et veritatē ſuā. An
mea *ardet* tanquā in medio flammarū, d
miam inter carbones, quos ſuccendunt f
hominis, quorū dentes ſunt ſicut lancea
ſagittæ, et linguæ eorū ſicut enſis acutꝰ. E
altare ſuper angelos cœlorū Deꝰ; ſup om
habitatores terræ gloria tua. Laqueum pa
verunt greſſibꝰ meis; incurvavit animā m
foderunt ante me foveā; ceciderūt in me
ejus in æternū. Paratū cor meū ad legē t
Dñe, paratū cor meū in *timorē* tui; laude
cam et pſallā. Expergiſcere gloria mea,
pergiſcere ut laudes ore pſalterii et cit
ræ: expergiſcar ad orationē matutinā. C
fitebor corā te in populis Dñe, laudabo t
nationibꝰ. Quoniā magna uſq; ad ſumm
cœlorū benignitas tua, et uſq; ad æthera
ritas tua. Exaltare *Domine*, ſuper ang
cœlorum Deus; ſuper omnes qui habit
terram, gloria tua.

Ad laudandū pro anguſtia in tēpore
dixit David, Ne deſtruas, p manum Da
humilis & perfecti. PSAL. LVIII.

Num revera quia ſiletis juſti in tēpore
tētionis, videtur vobis ꝙ juſtitiā lo
mini? in rectitudine judicate filios hom

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 * ܗܝܕܝܢ ܢܗܦܟܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ ܠܒܣܬܪܗܘܢ : ܘܝܕܥܬ ܕܐܠܗܐ ܐܝܬ ܠܝ. * ܒܡܠܬܗ
11 12 ܕܐܠܗܐ ܐܫܒܚ : * ܒܐܠܗܐ ܐܬܬܟܠܬ ܘܠܐ ܐܕܚܠ. ܡܢܐ ܢܥܒܕ ܒܝ ܒܪܢܫܐ : * ܠܟ ܐܠܗܐ
13 14 ܐܫܠܡ ܢܕܪܝ. ܘܬܘܕܝܬܐ ܐܕܒܚ ܠܟ : * ܡܛܠ ܕܦܪܩܬ ܢܦܫܝ ܡܢ ܡܘܬܐ. ܘܪܓܠܝ
ܡܢ ܬܘܩܠܬܐ : ܕܐܫܦܪ ܩܕܡܝܟ ܐܠܗܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

* ܟܕ ܗܦܟ ܫܐܘܠ ܠܡܪܕܦܗ. ܘܬܘܕܝܬܐ. ܘܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ ܠܗܝܡܢܘܬܐ. 1
ܦܘܫܩܐ ܕܒܗ. * ܪܚܡ ܥܠܝ ܐܠܗܐ ܡܛܠ ܕܒܟ ܗܘ ܡܣܒܪܐ ܢܦܫܝ : ܘܒܛܠܠܐ ܕܟܢܦܝܟ 2
ܐܬܛܫܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܥܒܪ ܫܘܓܫܐ. * ܐܩܪܐ ܠܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ ܘܠܐܠܗܐ ܦܪܘܩܝ : * ܕܝܦܣ * ܫܕܪ 3 4
ܡܢ ܫܡܝܐ ܘܦܪܩܢܝ : ܘܒܣܪ ܠܒܥܠܕܒܒܝ * ܕܝܦܣ * ܫܕܪ ܐܠܗܐ ܛܝܒܘܬܗ ܘܩܘܫܬܗ :
* ܘܦܪܩ ܢܦܫܝ ܡܢ ܟܠܒܐ. ܕܕܡܟܬ ܟܕ ܕܚܝܠ ܐܢܐ : ܒܢܝܢܫܐ ܫܢܝܗܘܢ ܢܝܙܟܐ ܘܓܐܪܐ. 5
ܘܠܫܢܗܘܢ ܐܝܟ ܣܝܦܐ ܚܪܝܦܐ : * ܐܬܪܝܡ ܥܠ ܫܡܝܐ ܐܠܗܐ. ܘܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܬܫܒܘܚܬܟ : 6
* ܡܨܝܕܬܐ ܛܫܘ ܠܪܓܠܝ. ܘܓܘܡܨܐ ܚܦܪܘ ܠܢܦܫܝ ܘܢܦܠܘ ܒܗ : * ܕܝܦܣ * 7
* ܡܬܩܢ ܗܘ ܠܒܝ ܐܠܗܐ ܡܬܩܢ ܗܘ ܠܒܝ. ܐܫܒܚ ܘܐܙܡܪ ܒܐܝܩܪܝ : * ܐܬܬܥܝܪ ܐܝܩܪܝ 8
ܐܬܬܥܝܪܘ ܩܝܬܪܐ ܘܟܢܪܐ. ܘܐܢܐ ܐܬܬܥܝܪܬ ܒܨܦܪܐ : * ܐܘܕܐ ܠܟ ܒܥܡܡܐ ܐܠܗܐ. ܘܐܙܡܪ 9 10
ܠܫܡܟ ܒܐܘܡܘܬܐ : * ܡܛܠ ܕܐܬܪܘܪܒܬ ܥܕܡܐ ܠܫܡܝܐ ܛܝܒܘܬܟ. ܘܥܕܡܐ ܠܫܡܝ ܫܡܝܐ 11
ܗܝܡܢܘܬܟ : * ܐܬܪܝܡ ܥܠ ܫܡܝܐ ܐܠܗܐ. ܘܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܬܫܒܘܚܬܟ. 12

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * ܟܕ ܐܬܚܡܬ ܫܐܘܠ ܥܠ ܙܝܦܝܐ ܕܠܐ ܓܠܘ ܠܗ ܥܠ ܕܘܝܕ 1
ܕܝܕܥܝܢ ܗܘܘ ܐܝܟܐ ܗܘ. ܘܠܢ ܕܝܢ ܣܐܡ ܬܚܘܝܬܐ ܕܕܝܢܐ ܟܐܢܐ ܕܐܠܗܐ. ܦܘܫܩܐ ܒܗ. 2
* ܐܢ ܫܪܝܪܐܝܬ ܙܕܝܩܘܬܐ ܡܡܠܠܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܬܪܝܨܘܬܐ ܕܐܢܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܢܝ ܐܢܫܐ :

* Tunc retrocedent hoſtes mei, & agnoſc
mihi Deum. Verbum Dei laudabo. In
confido, non metuam; quid faciet in m
mo? Tibi Deus perſolvam vota mea, &
gratiarum actione ſacrificabo tibi. Q
eripuiſti animam meam à morte, & p
meos à lapſibus: ut placeam coram te D
in terra vivorum.

PSAL. LVII.

Davidis. Quum reverſus eſt Saul ad
perſequendum. Et gratiarum actio
que vocatio Gentium ad fidem. Verſ.

* Miſerere me Deus, quoniam in te ſp
anima mea: & umbrā alarum tu
me tegam. Quoad tranſeat tumultus. In
cabo Deum excelſum, & Deum ſalvat
meum. * *Diapſal.* * Qui miſit è cœlo l
beravit me, ac deluſit inimicos m
* *Diapſalma* * Miſit Deus gratiam ſuam
veritatem ſuam. Et ſalvavit animam me
canibus: quia dormivi conturbatus. Ho
num dentes lanceæ & ſagittæ, & lingu
rum velut gladius acutus. Exaltare ſ
cœlos Deus, & ſuper omnem terram g
tua. Rete parârunt pedibus meis, fov
que foderunt animæ meæ, & inciderunt
eam. * *Diapſalma* * Paratum eſt cor m
Deus, paratum eſt cor meum, laudab
pſallam in gloria mea. Expergiſcere
mea, expergiſcimini cithara & lyra, e
ego experrectus ſum diluculó. Confit
tibi inter gentes Deus, & nomini tuo
nam inter populos. Quoniam exalta
uſque ad cœlum bonitas tua, & uſque
cœlos cœlorum fides tua. Extolle te ſ
cœlos Deus, & ſuper univerſam terram
ria tua.

PSAL. LVIII.

Davidis. Quum minitatus eſt Saul Zi
tes eò quòd non revelârint ei Da
quem noverant ubi eſſet. Nobis autem
ponit documentū juſti judicii Dei. Ve

Ita certè, juſtitiam loquimini, & r
tem judicatis filii hominum.

Verſio VULG. LAT.

10 Tunc convertentur inimici mei retrorſum : In quacunque die invocavero te : ecce cognovi quoniã Deus meus
11 es. In Deo laudabo verbũ, in Domino laudabo ſermonem : in Deo ſperavi, non timebo quid faciat mihi
12 homo. In me ſunt, Deus, vota tua,
13 quæ reddã, laudationes tibi. Quoniã eripuiſti animã meã de morte, & pedes meos de lapſu : ut placeã corã Deo in lumine viventium.

In finem,
1 Ne diſperdas, David in tituli inſcriptionem, cùm fugeret à facie Saul in ſpeluncam. (2 *Reg*.22.1.& 24.4.)
LVI.

2 Miſerere meì, De⁹, miſerere meì: quoniã in te confidit anima mea. Et in umbra alarũ tuarũ ſperabo, donec
3 tranſeat iniquitas. Clamabo ad Deũ al-
4 tiſſimũ : Deũ qui benefecit mihi. Miſit de cœlo, & liberavit me: dedit in opprobriũ conculcantes me. Miſit Deus miſeri-
5 cordiã ſuã, & veritaté ſuã, Et eripuit animã meã de medio catulorũ leonũ : dormivi conturbatus. Filii hominũ, dentes eorũ arma & ſagittæ: & lingua eorũ
6 gladius acutus. Exaltare ſuper cœlos,
7 Deus : et in omné terrã gloria tua. Laqueũ paraverunt pedibus meis : & incurvaverunt animã meã. Foderunt ante facié meã foveã : et inciderunt in eam.
8 Paratum cor meum, Deus, paratum cor meum : cantabo, & pſalmum di-
9 cam. Exurge gloria mea, exurge pſal-
10 teriũ & cithara : exurgã diluculó. Confitebor tibi in populis, Dñe : & pſal-
11 mum dicã tibi in gentibus : Quoniã magnificata eſt uſque ad cœlos miſericordia tua, & uſque ad nubes veritas
12 tua. Exaltare ſuper cœlos, Deus: & ſuper omné terram gloria tua.

In finem,
1 Ne diſperdas, David in tituli inſcriptionem. LVII.
2 Si verè utique juſtitiam loquimini : recta judicate filii hominum.

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

10 Ἐπιστρέψουσιν οἱ ἐχθροί μου εἰς τὰ ὀπίσω, ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἐπικαλέσωμαί Σε, ἰδοὺ ἔγνων ὅτι Θεός μου
11 εἶ Σύ. Ἐπὶ τῷ Θεῷ αἰνέσω ῥῆμα, ἐπὶ τῷ Κυρίῳ αἰνέσω λόγον. ἐπὶ τῷ Θεῷ ἤλπισα, οὐ φοβηθήσο-
12 μαι τί ποιήσει μοι ἄνθρωπος. Ἐν ἐμοὶ ὁ Θεὸς
13 αἱ εὐχαί, ἃς ἀποδώσω αἰνέσεώς Σου. Ὅτι ἐρρύσω τὴν ψυχήν μου ἐκ θανάτου, καὶ τοὺς πόδας μου ἐξ ὀλισθήματος, τοῦ εὐαρεστῆσαι ἐνώπιον τοῦ Θεοῦ ἐν φωτὶ ζώντων.

1 Εἰς τὸ τέλος, μὴ διαφθείρῃς, τῷ Δαυὶδ εἰς στηλογραφίαν, ἐν τῷ αὐτὸν ἀποδιδράσκειν ἀπὸ προσώπου Σαοὺλ εἰς τὸ σπήλαιον. νϛ'.

2 Ἐλέησόν με ὁ Θεὸς, ἐλέησόν με, ὅτι ἐπὶ Σοὶ πέποιθεν ἡ ψυχή μου· καὶ ἐν τῇ σκιᾷ τῶν πτερύ-
3 γων Σου ἐλπιῶ, ἕως οὗ παρέλθῃ ἡ ἀνομία. Κεκράξομαι πρὸς τὸν Θεὸν τὸν ὕψιστον, τὸν Θεὸν τὸν
4 εὐεργετήσαντά με. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ἐξαπέστειλεν ἐξ οὐρανοῦ καὶ ἔσωσέ με, ἔδωκεν εἰς ὄνειδος τοὺς καταπατοῦντάς με. ἐξαπέστειλεν ὁ Θεὸς τὸ
5 ἔλεος αὐτοῦ καὶ τὴν ἀλήθειαν αὐτοῦ, Καὶ ἐρρύσατο τὴν ψυχήν μου ἐκ μέσου σκύμνων· ἐκοιμήθην τεταραγμένος. υἱοὶ ἀνθρώπων, οἱ ὀδόντες αὐτῶν, ὅπλον καὶ βέλη, καὶ ἡ γλῶσσα αὐτῶν, μάχαιρα
6 ὀξεῖα. Ὑψώθητι ἐπὶ τοὺς οὐρανοὺς ὁ Θεὸς, καὶ ἐπὶ
7 πᾶσαν τὴν γῆν ἡ δόξα Σου. Παγίδας ἡτοίμασαν τοῖς ποσί μου, καὶ κατέκαμψαν τὴν ψυχήν μου. ὤρυξαν πρὸ προσώπου μου βόθρον,
8 καὶ ἐνέπεσαν εἰς αὐτόν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ἑτοίμη ἡ καρδία μου ὁ Θεὸς, ἑτοίμη ἡ καρδία μου, ᾄσο-
9 μαι καὶ ψαλῶ. Ἐξεγέρθητι ἡ δόξα μου, ἐξεγέρθητι ψαλτήριον καὶ κιθάρα, ἐξεγερθήσομαι ὄρ-
10 θρου. Ἐξομολογήσομαί Σοι ἐν λαοῖς Κύριε,
11 ψαλῶ Σοι ἐν ἔθνεσιν. Ὅτι ἐμεγαλύνθη ἕως τῶν οὐρανῶν τὸ ἔλεός Σου, καὶ ἕως τῶν νεφελῶν ἡ ἀλή-
12 θειά Σου. Ὑψώθητι ἐπὶ τοὺς οὐρανοὺς ὁ Θεὸς, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν ἡ δόξα Σου.

1 Εἰς τὸ τέλος, μὴ διαφθείρῃς, τῷ Δαυὶδ εἰς στηλογραφίαν. νζ'.

2 Εἰ ἀληθῶς ἄρα δικαιοσύνην λαλεῖτε, εὐθεῖα κρίνετε οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

(*l*) [h] *Convertentur inimici mei retrorſum :* 10 *in quacunque die invocavero te; ecce cognovi, quoniam Deus meus es tu.* 11 *In Deo laudabo* [i] *verbum, in Domino*[k]*laudabo ſermonem. In Deo ſperavi : non timebo, quid faciat homo.* 12 [l] *In me ſunt, Deus, vota, quæ reddã laudationis tibi.* 13 *Quoniam eripuiſti animam meam de morte,* [m]*& pedes meos de lapſu :, ut placeam coram Deo in* [n]*lumine viventium.*

In finem, ne diſperdas, ipſi David in tituli inſcriptionem, cùm fugeret à facie Saul in ſpeluncam. *LVI.* 1

1 *Miſerere meì, Deus, miſerere meì : quoniam in te confidit anima mea.* 2 *Et in umbra alarum tuarum ſperabo : donec tranſeat* (*a*) *iniquitas.* 3 *Clamabo ad Deum altiſſimum, Deum qui benefecit mihi.* DIAPSALMA. 4 *Miſit de cœlo, [illegible] ſalvum fecit me : dedit in opprobrium conculcantes me.* 5 *Miſit Deus miſericordiam ſuam, & veritatem ſuam : Et eripuit animam meam de medio catulorum leonum:* (*b*) *dormivi conturbatus.* 6 *Filii hominum, dentes eorum* (*c*) [a] *arma, & ſagittæ : & lingua eorum, gladius acutus.* 7 *Exaltare ſuper cœlos, Deus, & ſuper omnem terram gloria tua.* 8(*d*) *Laqueos paraverunt pedibus meis, & incurvaverunt animam meam.* 9 *Foderunt ante faciem meam, foveam, & inciderunt in eã.* DIAPSALMA. 10 (*e*) *Paratum cor meum, Deus, paratum cor meum : Cantabo,* (*f*)*& pſalmum dicam.* 11 *Exurge gloria mea, exurge pſalterium & cithara : exurgam diluculó.* 12 *Confitebor tibi in populis, Domine; pſalmum dicam tibi in gentibus.* 13 *Quoniam magnificata eſt uſque ad cœlos miſericordia tua : & uſque ad nubes veritas tua.* 14 *Exaltare ſuper cœlos, Deus, & ſuper omnem terram gloria tua.*

In finem, ne diſperdas, ipſi David in tituli inſcriptionem. *LVII.* 1

1 *Si verè utiq; juſtitiam loquimini : recta judicate filii hominum.* 2

Verſio ÆTHIOPICA.

10 ለይግብኡ፡ፀርየ፡ድኅሬሆሙ፡፡=፡ አመ፡ዕለ 10
ተ፡ አፀውዕከ፡፡ ናሁ፡ አአመርኩ፡ ከመ፡
አምላኪየ፡ አንተ፡፡=፡ በእግዚአብሔር፡ 11
11 እሴብሕ፡ቃልየ፡፡ በእግዚአብሔር፡ይከብር፡
ዘነበብኩ፡፡ ወበእግዚአብሔር፡ተወከልኩ፡
ኢይፈርህ፡ ምንተ፡ ይሬስየኒ፡ሰብእ፡፡=፡
12 እምኀቤየ፡ እኄብ፡ ብፅአትየ፡ ለስብሐቲ 12
ከ፡፡=፡ እስመ፡አድኀንከ፡ለሞት፡ለነፍስየ፡፡ 13
13 ወለአዕይንትየኒ፡ለመአንብዕ፡፡ ወለእገሪየኒ፡
እምደኀፅ፡፡ ከመ፡ አሠምሮ፡ ለእግዚአብ
ሔር፡በብርሃነ፡ሕያዋን፡፡

1 ፍጻሜ፡ ኢታማስን፡ዘደዊት፡ አርአያ፡ መጽ
ሐፍ፡ ዘአመ፡ ጐየ፡ እምቅድመ፡ ገጸ፡
ሳኦል፡ውስተ፡በአት፡፡

2 ሣህለ ተሣሀለኒ፡እግዚኦ፡ተሣሀለኒ፡፡እስመ፡ ኪ 1
ያከ፡ተወከለት፡ነፍስየ፡፡=፡ ወተወከልኩ፡በ 2
ጽላሎተ፡ክነፊከ፡፡ እስከ፡ ተኃልፍ፡ኃጢአ
3 ት፡፡=፡ እጸርኅ፡ ኀበ፡ እግዚአብሔር፡ልዑ 3
ል፡፡ኀበ፡ እግዚአብሔር፡ ዘረድአኒ፡፡=፡
4 ፈነወ፡እምሰማይ፡ወአድኀነኒ፡፡ ወወሀቦሙ፡ 4
ኀሳረ፡ለእለ፡ኬዱኒ፡፡=፡ ፈነወ፡እግዚአብሔ 5
ር፡ሣህሎ፡ወጽድቆ፡፡ ወአድኀና፡ ለነፍስየ፡
እማእከለ፡ አናብስት፡፡ ወኖምኩ፡ ደንጊፅ
5 የ፡፡=፡ ደቂቀ፡እጓለ፡እመሕያው፡ስነኒሆሙ፡ 6
ሐጽ፡ወኲናት፡፡ ወልሳኖሙኒ፡በሊሕ፡መጥባ
ሕት፡፡=፡ ተለዐል፡ እግዚአብሔር፡ መልዕል 7
ተ፡ ሰማያት፡፡ ወበኲሉ፡ ምድር፡ ስብሐቲ
6 ሁ፡፡=፡መሥገርት፡አስተዳለዉ፡ለእገሪየ፡፡ 8
ወቀጻዕዋ፡ለነፍስየ፡፡=፡ ከረዩ፡ግበ፡ ቅድሜ 9
የ፡ወወድቁ፡ ውስቴቱ፡፡=፡ ጥቡዕ፡ልብየ፡ 10
7 እግዚኦ፡፡ ጥቡዕ፡ልብየ፡ እሴብሕ፡ ወእዜ
ምር፡፡=፡ ወይትነሣእ፡ ክብርየ፡፡ወይትነሣ 11
እ፡ በመዝሙር፡ ወበመሰንቆ፡፡ ወእትነሣእ፡
8 በጽባሕ፡፡=፡ እገኒ፡ለከ፡በውስተ፡አሕዛብ፡ 12
እግዚኦ፡፡ ወእዜምር፡ ለከ፡በውስተ፡ ሕዝ
9 ብ፡፡=፡ እስመ፡ ዐቢየት፡እስከ፡ ሰማያት፡ም 13
ሕረትከ፡፡ ወእስከ፡ደመናት፡ ጽድቅከ፡፡=፡
ተለዐል፡ እግዚአብሔር፡ መልዕልተ፡ ሰማያ 14
10 ት፡፡ ወበኲሉ፡ ምድር፡ ስብሐቲሁ፡፡=፡

ፍጻሜ፡ ኢታማስን፡ ዘደዊት፡ አርአያ፡
መጽሐፍ፡፡

ሣጊ እመሰ፡ አማን፡ ጽድቀ፡ ትነቡ፡፡ 1
ወርትዐ፡ ትኲንኑ፡ ደቂቀ፡ እጓለ፡ እመሕ
ያው፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [h] Convertantur [i] verbum meum, [k]honori erit quod locutus ſum. [l] A meipſo perſolvam vota laudationibus tuis. [m] & oculos meos à lachrymis: [n] regione viventium. *PSAL. lvi.* [a] ſagitta, & enſis :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10 * يرتدون اعداي علی اعقابهم يوم اصرخ اليك* هانذا قد علمت انك الاهي* اسبح الله بالقول*
11
12 وابارك الرب بالكلام* توكلت علی الله فلا اخشي ماذا يفعل بي الانسان* اللهم علی نذورا اوفيها
13
14 لتسبحتك* لانك خلصت نفسي من الموت* وعيني من الدموع* ورجلي من الزلل* لاعمل
برضي الرب* امامه في نور الاحياء* الليلويا* المزمور السادس والخمسون*

1 * لداود حين هرب من قدامه شاول الي المغارة* وهو كه* استيخن*
2 * ارحمني يا الله ثم ارحمني* فان نفسي توكلت عليك* وبظلال كنفك استتر* الي ان يعبر الاثم
3 * اصرخ الي الله العلي* الاله المحسن الي* ارسل من السماء فخلصني* وجعل الذين يطووني عارا*
4
5 بعث الله برحمته وعدله* وخلص نفسي من وسط الاشبال لاني نمت قلقا* اسنان بني البشر سلاح
6 وسهام* والسنتهم سيوف حادة* اللهم ارتفع علی السموات* ومجدك علي الارض كلها* اعدوا فخاخا
7
8 لرجلي واحنوا نفسي* حفروا حفرة امام وجهي فسقطوا فيها* قلبي مستعد بالله* قلبي مستعد*
9 اسبح وارتل في تمجيدي* قم يا مجدي* قم ايها المزمار والقيثار* ساقوم بالغدوات* واشكرك
10
11 يا رب في الشعوب* وارتل لك في الامم* لان رحمتك قد عظمت الي السموات والي السحاب عدلك
12 * ارتفع اللهم علی السموات وعلي كل الارض مجدك* الليلويا*

* المزمور السابع والخمسون*
1 * لداود وعدده* كب* استيخن*
2 * ان كنتم اذن بالصدق تتكلمون حقا* فاحكموا بالاستقامة يا بني البشر

Revertantur inimici mei ſuper calcaneos ſuos, die quã clamabo ad te. Ecce jam novi te eſſe Deum meum. Laudabo Deum ſermone, & benedicam Dominum verbis. Confiſus ſum in Deo, iccirco non timebo : quid faciat mihi homo? Deus, ſunt mihi vota reddenda in glorificationem tuam. Quia tu liberâſti animã meam de morte, & oculos meos de lachrymis, & pedes meos de lapſibus : ut peragam voluntatem Domini in conſpectu ejus, in lumine viventium. Alleluja. 10 11 12 13 14

PSAL. LVI.

Davidis, quando fugit à conſpectu Saulis in ſpeluncam. Ver.25. 1

Miſerere mei, O Deus, iterum miſerere mei, quoniam anima mea confiſa eſt in te, et ſub umbra alarum tuarum protegar quoad tranſeat iniquitas. 2 *Clamabo ad Deum altiſſimum, Deum benefacientem mihi.* 3 *Miſit de cœlo & liberavit me: & fecit eos qui conculcant me, opprobrium.* 4 *Miſit Deus ex miſericordia ſua & æquitate ſua, Et eripuit animam meam è medio catulorum leonum, quia dormivi conturbatus. Dentes filiorum hominum arma & ſagittæ, & linguæ eorum gladii acuti.* 5 *Deus eleva te ſuper cœlos, & gloria tua ſuper terram univerſam.* 6 *Præparârunt laqueos pedibus meis, & incurvaverunt animam meam. Foderunt foveam ante faciem meam, & inciderunt in eam.* 7 *Cor meum paratum eſt in Deo, cor meũ paratum : laudes canam & pſallam in glorificatione mea.* 8 *Surge O gloria mea, ſurge O pſalterium & cithara : ſurgam in matutinis,* 9 *Et gratias agam tibi, O Domine, inter populos, & pſallam tibi inter gentes :* 10 *Quoniam miſericordia tua jam magnificata eſt uſque ad cœlos, & ad nubes juſtitia tua.* 11 *Exaltare Deus, ſuper cœlos, & ſuper univerſam terram gloria tua. Alleluja.* 12

PSAL. LVII.

Davidis. Et numerus verſ. 22. 1

Si ergò veraciter loquimini veritatem, judicate æquè, O filii hominum. 2

תהלים : נט

veſtrarum manuum iniquitatem terra in , operabimini iniquitates corde in Etiam
3 אף־בלב עולת תפעלון בארץ חמס ידיכם
loquentes , utero ab erraverunt : vulva à impii ſunt Alienati ? librabitis
4 תפלסון: זרו רשעים מרחם תעו מבטן דברי
ſicut : ſerpentis veneni ſimilitudinem ſecundum illis Venenum .mendacium
5 כזב: חמת־למו כדמות חמת־נחש כמו־
: muſſitantium vocem ad audiet non Quæ .ſuam aurem obturabit ſurdæ aſpidis
6 פתן חרש יאטם אזנו: אשר לא־ישמע לקול מלחשים
: ipſorū ore in eorū dentes contere Deus .docti conjunctiones jungentis
7 חובר חברים מחכם: אלהים הרס־שנימו בפימו
ambulabunt , aquæ ſicut Liqueſcent .Domine deſtrue leunculorum molas
8 מלתעות כפירים נתץ יהוה: ימאסו כמו־מים יתהלכו־
: ibit liquefactionis limax Sicut .exciderentur ſi ac ſuas ſagittas tendet :ſibiipſis
9 למו ידרך חצו כמו יתמללו: כמו שבלול תמס יהלך
veſtræ ſpinæ intelligant Antequam .Solem videant ne ,mulieris abortivus
10 נפל אשת בל־חזו שמש: בטרם יבינו סירתיכם
viderit cùm , juſtus Lætabitur .eū rapiet turbine ira ſic , viventem ſic ; rhamnum
11 אטד כמו־חי כמו־חרון ישערנו: ישמח צדיק כי־חזה
Verè , homo dicet Et .impii ſanguine in lavabit ſuos pedes : vindictam
12 נקם פעמיו ירחץ בדם הרשע: ויאמר אדם אך־
.terra in judicans Deus eſt utique : juſto fructus
פרי לצדיק אך יש־אלהים שפטים בארץ:

PSAL. LIX. נט

cuſtodierunt & , Saul mittendo in , Mictam David ipſi , corrumpas ne , Victori
1 למנצח אל־תשחת לדוד מכתם בשלח שאול וישמרו
mihi obſiſtentibus ab ; mi Deus meis inimicis ab me Eripe .eū interficiendū ad ,domum
2 את־הבית להמיתו: הצילני מאיבי אלהי ממתקוממי
.me ſerva ſanguinum viris à & ; iniquitatis operariis ab me Eripe .me eleva
3 תשגבני: הצילני מפעלי און ומאנשי דמים הושיעני:
: fortes me ſuper ſunt congregati , meæ animæ ſunt inſidiati ecce Quia
4 כי הנה ארבו לנפשי יגורו עלי עזים
, current iniquitate Abſque .Domine meum peccatum non & ,mea prævaricatio non
5 לא־פשעי ולא־חטאתי יהוה: בלי־עון ירצון
Domine tu Et .vide & , meū occurſum in te ſuſcita : ſe parabunt &
6 ויכוננו עורה לקראתי וראה: ואתה יהוה־
: gentes omnes viſitandum ad evigila , Iſrael Deus , exercituum Deus
אלהים צבאות אלהי ישראל הקיצה לפקד כל־הגוים
,veſperam ad Convertentur .Selah ,iniquitatis prævaricatorum omniū miſerearis ne
7 אל־תחן כל־בגדי און סלה: ישובו לערב
,ſuo ore in ſcaturient Ecce .civitatem circuibunt & ,canis ſicut tumultuabuntur
8 יהמו ככלב ויסובבו עיר: הנה יביעון בפיהם
DOMINE tu Et ? audiens quis quoniam : eorum labiis in gladii
9 חרבות בשפתותיהם כי־מי שמע: ואתה יהוה
.gentes omnes ſubſannabis : eos deridebis
תשחק־למו תלעג לכל־גוים:

תרגום TARGUM.

3 ברם רשיעי מהדין בלבא עילא תעבדון
4 בארעא חטוף אידיכון יתקנון: אתעבידו
נוכראין רשיעיא מן מעין תעין מן כריסא ממללי
5 כדבותא: ארסא להון בגון ארסא דחויא היך
6 חורמנא חרשא דמטמטם אדניה: די לא יקבל
מלי חרשיא אסרי נחשיא ומן רטני רטן הוא
7 חכים: אלהא תרע ככיהון בפומהון וניבי בני
8 אריון תתרע יי: יתמסון בחוביהון היך מיא
יזלון להון ונגיד גררוי אמטולהון ויהון
9 מתגוררין: היך זחיל תבללא די מאס אורחיה
היך נפולא ואשותא די סמין ולא חמון שמשא:
10 עד לא יתעבדון רשיעיא רכיכי אקשון היך
אטדא עד דהנון רטיבין כבוסרא בעלעולא
11 ישצנון: יחדי צדיקא ארום חמא פרענותא
12 מנהון אסתורין ישזוג באדם רשיעא: ויימרון
בני נשא ברם אית אגר טב לצדיקיא ברם אית
אלהא דדינוי מתיחן בארעא:

נט

1 לשבחא על עקתא בזמן די אמר דוד לא
תחבל על יד דוד מכיך ושלים כד שדר שאול
2 ונטרו ית ביתא למקטליה: פצי יתי מבעלי
3 דבבי אלהי מן קימין עלי תשזבנני: פצי יתי
מעבדי שקר ומן גוברין קטולין פרוק יתי:
4 ארום הא כמנו לנפשי מתכנשין עלי עשינין
5 לא על סורחני ולא על חובי יי: עד לא עוין
רהטין ומסדרין קרבא אתגבר לקדמותי
6 וחמי: ואנת יי אלהים צבאות אלהא דישראל
אתער למסער על כל עממיא לא תחוס כל
7 שליטי שקר לעלמין: יתובון לרמשא
8 מתרגשין היך ככלב ויחזרון קרתא: הא
יביעון בפומהון מליא דשנינן היך סיפא
בספותיהון אמרין נתגבר ארום מן הוא די
9 שמע ויתפרע: ואנת יי תגחך להון תתלעב
לכל עממיא:

PARAPH. CHALD. Verſ L

Etiam impii quare in corde iniquitates operabimini in terra? iniquum manus veſtræ *concinnabunt?* Alieni facti ſunt ab utero peccatores; erraverunt à ventre loquentes mendacium. Venenum *eſt ipſis in interiore* eorum [*ſicut*] venenum ſerpentis, ſic ut aſpidis ſurdæ quæ obturat aurem ſuam. Quæ non admittit vocem verborum maleficorum ſerpentes conſtringentium; ſed *incantantibus incantationem* ipſa eſt prudentior. Deus, contere dentes eorum in ore ipſorum, et molares filiorum leonum confringas Domine. Liquefiant in peccatis ſuis ſicut aqua, defluant à ſe: intendit ſagittas ſuas propter eos, et ipſi abſcindentur. Sicut reptile limax qui madefacit viam ſuam, ſicut abortivum et talpa cæca, quæ non videt Solem. Priuſquàm impii fiant teneri, durescunt ſicut rhamnus, quamdiu ſunt virides, ſicut immaturum turbine deſtruet illos. Lætabitur juſtus quando viderit ultionem de illis; plantas ſuas lavabit in ſanguine impii. Et dicent filii hominis, Profectò eſt præmium bonum juſtis: profecto eſt Deus, cujus judicia extenduntur in terra.

Ad laudandum pro anguſtia in tempore quo dixit David, Ne deſtruas, per manum Davidis humilis, et perfecti, quando miſit Saul, & cuſtodierunt domum ut eum interficerent.

PSAL. LIX.

ERipe me de inimicis meis Deus meus: ab inſurgentibus adverſùm me libera me. Libera me ab operariis falſitatis, & à viris homicidis ſalva me. Quoniam ecce inſidiati ſunt animæ meæ: congregantur adverſum me fortes non propter iniquitatem meam, nec propter peccatum meum Domine. Non ob iniquitates noſtras currunt & *ordinant bellum*: roborare in occurſum meum, & vide. Et tu Domine Deus exercituum Deus Iſrael, expergiſcere ut animadvertas in cunctas gentes, ne parcas omnibus principibus mendacii in æternum. Revertentur ad veſperam, tumultum edituri ſunt in morem canis, obſidebúntque civitatem. Et effutient ore ſuo verba acuta ſicut gladius labiis ſuis dicentes, Fortificabimur: quis enim ille eſt qui audiat & puniat? Tu autem Domine deridebis eos; ſubſannabis omnes populos.

Verſio SYRIACA. cum Interpretatione LATINA.

3 * ܗܐ ܟܠܟܘܢ ܥܘܠܐ ܡܡܠܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܐܪܥܐ. ܘܒܥܘܠܐ ܡܬܥܪܩܠܢ ܐܝܕܝܟܘܢ: * ܐܬܦܪܫܘ ܚܛܝܐ
4 ܡܢ ܟܪܣܐ. ܘܛܥܘ ܡܢ ܡܪܒܥܐ ܘܡܡܠܠܝܢ ܕܓܠܐ: * ܚܡܬܗܘܢ ܐܝܟ ܚܡܬܐ ܕܚܘܡܢܐ. ܘܐܝܟ
5 ܐܣܦܣ ܚܪܫܐ: ܕܣܟܪ ܐܕܢܘܗܝ. * ܕܠܐ ܢܫܡܥ. ܩܠܐ ܕܡܠܚܫܢܐ ܘܕܚܪܫܐ ܘܕܚܟܝܡܐ.
6 * ܐܠܗܐ ܢܬܒܪ ܫܢܝܗܘܢ ܒܦܘܡܗܘܢ. ܘܢܝܒܗܘܢ ܕܓܘܪܝܐ ܥܩܪ ܡܪܝܐ: * ܢܬܡܣܝܘܢ
7 ܐܝܟ ܡܝܐ ܕܡܬܐܫܕܝܢ. ܘܢܫܕܐ ܓܐܪܘܗܝ ܥܕܡܐ ܕܢܣܬܝܦܘܢ: * ܐܝܟ ܫܥܘܬܐ ܕܡܬܦܫܪܐ
8 ܘܢܦܠܬ. ܡܢ ܩܕܡ ܢܘܪܐ ܢܬܚܪܒܘܢ: ܢܦܠܬ ܢܘܪܐ ܘܠܐ ܚܙܘ. ܘܫܡܫܐ ܠܐ ܐܪܓܫܘ:
9 * ܢܗܘܘܢ ܟܘܒܝܗܘܢ ܗܝܓܐ. ܘܪܘܓܙܐ ܢܕܠܚ ܐܢܘܢ: * ܢܚܕܐ ܙܕܝܩܐ ܕܢܚܙܐ ܦܘܪܥܢܐ.
10 ܘܐܝܕܘܗܝ ܢܫܝܓ ܒܕܡܗ ܕܪܫܝܥܐ: * ܘܢܐܡܪ ܒܪܢܫܐ ܐܝܬ ܗܘ ܦܐܪܐ ܠܙܕܝܩܐ. ܘܐܝܬ
11
12 ܐܠܗܐ ܕܕܐܢ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܐ:

En omnes iniquitatem loquimini in terra: ſcelere ſunt implicatæ manus veſtræ. Segregati ſunt nefarii ab utero, & erraverunt à vulva qui loquuntur mendacium. Furor eorum ſicut baſiliſci, & ſicut aſpidis ſurdæ obturantis aures ſuas, Ne audiat vocem incantantis & venefici ac ſapientis. Deus conteret dentes eorum in ore ipſorum: & caninos leonum evulſit Dominus. Contemnentur ut aqua effuſa: & jaculabitur ſagittas ſuas donec abſumantur. Sicut cera quæ liquefit ac decidit à conſpectu ignis, deſtruentur. Cecidit ignis, & non viderunt, & ſolem non perceperunt. Fiant ſpinæ illorum, rhamnus & ira conturbet eos. Lætabitur juſtus cum videat retributionem, & manus ſuas lavabit in ſanguine impii. Et dicet homo, Eſt quidem fructus juſto: eſtque Deus ut judicet eos in terra.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܢܛ *

1 * ܐܡܪܗ ܕܘܝܕ ܟܕ ܫܡܥ ܕܩܛܠ ܫܐܘܠ ܠܟܗܢܐ. ܠܢ ܕܝܢ ܡܫܘܕܥ ܦܘܢܝܐ ܕܥܡܡܐ
2 ܠܗܝܡܢܘܬܐ ܘܡܫܬܓܫܢܘܬܐ ܕܝܗܘܕܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܐ. * ܦܨܝܢܝ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝ ܐܠܗܐ.
3 ܘܡܢ ܐܝܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ ܥܠܝ ܐܪܝܡܝܢܝ: * ܦܨܝܢܝ ܡܢ ܥܒܕܝ ܫܘܩܪܐ. ܘܡܢ ܓܒܪܐ ܐܫܕܝ
4 ܕܡܐ ܦܪܘܩܝܢܝ: * ܡܛܠ ܕܗܢܘܢ ܟܡܢܘ ܠܢܦܫܝ. ܘܐܣܓܝܘ ܥܠܝ ܒܝܫܘܬܗܘܢ: * ܠܐ
5 ܡܛܠ ܥܘܠܝ ܘܠܐ ܡܛܠ ܚܛܗܝ ܡܪܝ. ܕܠܐ ܥܘܠܐ ܪܗܛܘ ܥܠܝ ܘܐܬܛܝܒܘ ܠܘܩܒܠܝ: ܐܬܬܥܝܪ
6 ܘܚܙܝ * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܬܬܥܝܪ: ܘܦܩܘܕ ܠܟܠܗܘܢ
7 ܥܡܡܐ. ܘܠܐ ܬܚܘܣ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ: * ܕܡܫܐ * ܢܗܦܟܘܢ ܠܪܡܫܐ ܘܢܢܒܚܘܢ ܐܝܟ
8 ܟܠܒܐ. ܘܢܚܕܪܘܢ ܡܕܝܢܬܐ: * ܡܠܬܐ ܕܦܘܡܗܘܢ ܣܦܣܪܐ ܒܣܦܘܬܗܘܢ. ܘܐܡܪܝܢ
9 ܡܢܘ ܫܡܥ: * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܓܚܟ ܒܗܘܢ. ܘܡܝܩ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ:

PSAL. LIX.

Edidit hunc David quum audivit interfectos à Saule ſacerdotes. Nobis verò declarat converſionem Gentium ad fidem, & conturbationem Judæorum. Verſus 41.

LIbera me ab inimicis meis Deus, & ab his qui inſurgunt in me tolle me. Salva me ab operantibus falſitatem, & à viris fundentibus ſanguinem libera me. Quoniam ipſi inſidiati ſunt animæ meæ. & magnificârunt adverſùm me malitiam ſuam. Non ob ſcelera mea, neque ob peccata mea Domine mi: abſque culpa cucurrerunt adverſùm me, atque inſtruxerunt ſeſe contra me. Expergiſcere & reſpice Tu Domine Deus fortis: Deus Iſraelis evigila, & impera cunctis gentibus, nevè parcas omnibus iniquis. * *Diapſalma* * Revertentur veſpere, & latrabuntque ut canes atque circuibunt urbem. Sermo oris eorum gladius in labiis eorum, & aiunt, Quis audiat? At tu Domine irride illos, & ſubſanna cunctas gentes.

Verſio VULG. LAT.

3 Etenim in corde iniquitates operamini:
in terra injuſtitias manus veſtræ concinnant.
4 Alienati ſunt peccatores à vulva,
erraverunt ab utero: locuti ſunt falſa.
5 Furor illis ſecundùm ſimilitudinem ſerpentis:
ſicut aſpidis ſurdæ, & obturantis
6 aures ſuas, Quæ non exaudiet vocem
incantantium, & venefici incantantis ſapienter.
7 Deus conteret dentes eorum in
ore ipſorum: molas leonum confringet
8 Dñs. Ad nihilũ devenient tanquã aqua
decurrens: intendit arcũ ſuũ donec infirmentur.
9 Sicut cera, quæ fluit, auferentur:
ſupercecidit ignis, & non viderunt
10 Solem. Priuſquã intelligerent ſpinæ veſtræ
rhamnũ: ſicut viventes, ſic in ira
11 abſorbet eos. Lætabitur juſtus cùm viderit
vindictã: man⁹ ſuas lavabit in ſanguine
12 peccatoris. Et dicet homo, Si utiq;
eſt fructus juſto: utique eſt Deus judicans
eos in terra.

In finem,

1 Ne diſperdas, David in tituli inſcriptionem,
quando miſit Saul, & cuſtodivit
domum ejus, ut eum interficeret.
(1 Reg. 19.11.)

LVIII.

2 ERipe me de inimicis meis, De⁹ meus:
& ab inſurgentibus in me libera me.
3 Eripe me de operantibus iniquitatem: &
4 de viris ſanguinum ſalva me. Quia ecce
ceperunt animã meã: irruerunt in me
5 fortes. Neque iniquitas mea, neq; peccatũ
meũ, Dñe: ſine iniquitate cucurri,
6 et direxi. Exurge in occurſũ meũ, et vide:
& tu, Dñe Deus virtutũ, De⁹ Iſrael, Intende
ad viſitandas omnes gentes: non
miſerearis omnibus, qui operantur iniquitatem.
7 Convertentur ad veſperam:
& famem patientur ut canes, & circuibunt
8 civitatem. Ecce loquentur in ore
ſuo, & gladius in labiis eorum: quoniam
9 quis audivit? Et tu, Dñe, deridebis
eos: ad nihilũ deduces omnes gentes.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

3 Καὶ γὰρ ἐν καρδίᾳ ἀνομίας ἐργάζεσθε ἐν τῇ γῇ, ἀδικίαν
4 αἱ χεῖρες ὑμῶν συμπλέκουσιν. Ἀπηλλοτριώθησαν
οἱ ἁμαρτωλοὶ ἀπὸ μήτρας, ἐπλανήθησαν ἀπὸ
5 γαστρὸς, ἐλάλησαν ψευδῆ. Θυμὸς αὐτοῖς κατὰ
τὴν ὁμοίωσιν τοῦ ὄφεως, ὡσεὶ ἀσπίδος κωφῆς, καὶ
6 βυούσης τὰ ὦτα αὐτῆς, Ἥτις οὐκ εἰσακούσεται φωνὴν
ἐπᾳδόντων, φαρμάκου τε φαρμακευομένου παρὰ
7 σοφοῦ. Ὁ θεὸς συνέτριψεν τοὺς ὀδόντας αὐτῶν
ἐν τῷ στόματι αὐτῶν, τὰς μύλας τῶν λεόντων
8 συνέθλασεν ὁ κύριος. Ἐξουδενωθήσονται ὡς ὕδωρ
διαπορευόμενον, ἐντενεῖ τὸ τόξον αὐτοῦ ἕως οὗ ἀσθενήσουσιν.
9 Ὡσεὶ κηρὸς ὁ τακεὶς ἀνταναιρεθήσονται,
10 ἔπεσε πῦρ, καὶ οὐκ εἶδον τὸν ἥλιον. Πρὸ τοῦ
συνιέναι τὰς ἀκάνθας ὑμῶν τὴν ῥάμνον, ὡσεὶ ζῶντας
11 ὡσεὶ ἐν ὀργῇ καταπίεται ὑμᾶς. Εὐφρανθήσεται
δίκαιος, ὅταν ἴδῃ ἐκδίκησιν ἀσεβῶν, τὰς
χεῖρας αὐτοῦ νίψεται ἐν τῷ αἵματι τοῦ ἁμαρτωλοῦ.
12 Καὶ ἐρεῖ ἄνθρωπος, Εἰ ἄρα ἐστὶ καρπὸς τῷ δικαίῳ,
ἄρα ἐστὶν ὁ θεὸς κρίνων αὐτοὺς ἐν τῇ γῇ.

1 Εἰς τὸ τέλος, μὴ διαφθείρῃς, τῷ Δαυὶδ εἰς στηλογραφίαν,
ὁπότε ἀπέστειλε Σαοὺλ, καὶ ἐφύλαξε
τὸν οἶκον αὐτοῦ τοῦ θανατῶσαι αὐτόν. νη΄.

2 ἘΞελοῦ με ἐκ τῶν ἐχθρῶν μου ὁ θεὸς, καὶ ἐκ τῶν
3 ἐπανισταμένων ἐπ᾽ ἐμὲ λύτρωσαί με. Ῥῦσαί με
ἐκ τῶν ἐργαζομένων τὴν ἀνομίαν, καὶ ἐξ ἀνδρῶν
4 αἱμάτων σῶσόν με. Ὅτι ἰδοὺ ἐθήρευσαν
τὴν ψυχήν μου, ἐπέθεντο ἐπ᾽ ἐμὲ κραταιοί·
5 Οὔτε ἡ ἀνομία μου, οὔτε ἡ ἁμαρτία μου
κύριε· ἄνευ ἀνομίας ἔδραμον καὶ κατεύθυνα.
6 Ἐξεγέρθητι εἰς συνάντησίν μου, καὶ ἴδε.
καὶ σὺ κύριε ὁ θεὸς τῶν δυνάμεων ὁ θεὸς τοῦ Ἰσραὴλ,
πρόσχες τοῦ ἐπισκέψασθαι πάντα τὰ ἔθνη, μὴ
οἰκτειρήσῃς πάντας τοὺς ἐργαζομένους τὴν ἀνομίαν.
7 ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ἐπιστρέψουσιν εἰς ἑσπέραν, καὶ
8 λιμώξουσιν ὡς κύων, καὶ κυκλώσουσι πόλιν. Ἰδοὺ
ἀποφθέγξονται ἐν τῷ στόματι αὐτῶν, καὶ ῥομφαία
9 ἐν τοῖς χείλεσιν αὐτῶν, ὅτι τίς ἤκουσε; Καὶ σὺ
κύριε ἐκγελάσῃ αὐτοὺς, ἐξουδενώσεις πάντα τὰ
ἔθνη.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

2 Etenim in [a] corde iniquitates 3
operamini in terra: (a) injuſtitiã
manus veſtræ concinnant. 3 Alienati 4
ſunt peccatores à vulva:
erraverunt ab utero, (b) locuti
ſunt falſa. 4 Furor illis ſecundùm 5
ſimilitudinem ſerpentis, ſicut
aſpidis ſurdæ, & obturantis
aures ſuas. 5 Quæ non exaudiet 6
vocem (c) incantantium,
[b] & (d) medicamenti medicati
à ſapiente: 6 Deus (e) contrivit 7
dentes eorum in ore ipſorum:
molas leonum confregit
Dominus. 7 [c] Ad (f) nihilum 8
devenient, velut aqua decurrens:
intendit arcum ſuũ, donec
infirmentur. 8 [d] Sicut cera (g) 9
liquefacta, auferentur: (h) cecidit
ignis, & [e] non viderunt
Solem. 9 (i) Priuſquàm [f] intelligant 10
ſpinæ veſtræ rhamnum,
ſicut (k) viventes, ſicut in ira
abſorbebit vos. 10 Lætabitur juſtus, 11
cùm viderit vindictam (l) impiorum: manus ſuas lavabit in ſanguine peccatoris.
11 Et dicet homo, Si utique eſt fructus juſto: utique eſt Deus judicans eos in 12
terra.

In finem, ne diſperdas, ipſi David 1
in tituli inſcriptionem, quando
miſit Saul, & cuſtodivit domum
ejus, ut interficeret eum.

LVIII.

ERipe me de inimicis meis, [a] 2
Deus, & ab inſurgentibus in me
libera me. 2 Eripe me de operantibus 3
iniquitatem: & de viris
ſanguinum ſalva me. 3 Quia 4
ecce venati ſunt animam meam:
irruerunt in me fortes. 4 Neque 5
[b] iniquitas mea, neque peccatum
meum, Domine: ſine (a) iniquitate
cucurri, & direxi. 5 Exurge 6
[c] in (b) occurſum meum,
& vide: & tu, Domine Deus
virtutum, Deus Iſrael, 6 [d] intende
ad viſitandas omnes gentes:
ne miſerearis omnibus, qui
operantur iniquitatem. DIAPSALMA.
7 Convertentur ad 7
veſperam, & famem patientur,
ut (c) canis, & circuibunt civitatẽ.
8 Ecce loquentur in ore 8
ſuo, & gladius in labiis eorum:
quoniam quis audivit? 9 Et tu, Domine, deridebis eos: pro (d) nihilo habebis 9
omnes gentes.

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ፡በልብክሙ፡ኃጢአተ፡ትገብሩ፡በዲበ፡ 2
ምድር፡፡ ወጽልሑተ ፡ ይፀፍሩ ፡ እደዊክ
ሙ፡፡=፡ ተነክሩ፡ ኃጥአን ፡ እማኅፀን፡፡ 3
ወእምከርሥ፡ ስሕቱ፡ ወነበቡ፡ ሐሰተ፡፡=፡
ወመዐቶሙ፡ከመ፡ሕመዘ፡አርዌ፡ ምድር፡፡ 4
ወከመ ፡ አርዌ ፡ ምድር ፡ጽምምት ፡ ለዘኒ
ሃ፡፡=፡ እንተ፡ሊትሰምዕ፡ቃለ፡ዘይረቅያ፡፡ 5
እንዘ ፡ ይሠርያ ፡ መሠርይ ፡ ጠቢብ፡፡=፡
እግዚአብሔር፡ይሰብር፡ስነኒሆሙ፡ በውስተ፡ 6
አፉሆሙ፡፡ ወይሰብር፡ እግዚአብሔር፡ጥረ
ሲሆሙ፡ ለአናብስት፡፡=፡ ወየኀስሩ፡ ከመ፡ 7
ማይ፡ ዘይትከዐው፡፡ ወይዌስቁ ፡ ቀስቶ፡ እ
ስከ ፡ ያደክምሙ፡፡=፡ ወየኀልቁ ፡ ከመ፡ 8
ሰምዕ ፡ ዘይትመሰው፡፡ ወድቀት ፡ እሳት፡
ወሊርኢክዋ፡ለፀሐይ፡፡=፡ ዘእንበለ ፡ ይት 9
ዐወቅ፡ሦክክሙ ፡ ሕለተ ፡ ኮነ፡፡ ከመ ፡ ሕ
ያዋን፡በመዐቱ፡ይውኅጠክሙ፡፡=፡ ይትፌ 10
ሣሕ፡ጻድቅ ፡ ሶበ፡ ይሬኢ፡ በቀለ፡፡ ወይትኀ
ፀብ፡ እደዊሁ፡በደመ፡ ኃጥእ፡፡=፡ ወይብል፡ 11
ሰብእ፡ቦኑ፡እንጋ፡ፍሬ፡ለጻድቅ፡፡ወቦኑ ፡ እ
ንጋ ፡ እግዚአብሔር ፡ ይፈትሕ፡ሎሙ፡በዲ
በ፡ ምድር፡፡=፡

ፍጻሜ፡ ሊታማስን፡ ዘደዊት፡ አርአያ፡ መዝ
ሐፍ፡ አመ፡ፈነወ፡ ሳኦል ፡ ይዕቀቡ፡
ቤቶ፡ከመ፡ ይቅትሎ፡፡

፶፰ አድኅነኒ ፡ እግዚኦ ፡ እምፀርየ፡፡ ወ 1
እንግፈኒ ፡ እምእለ ፡ ቆሙ ፡ ላዕሌየ፡፡=፡
ወበልሀኒ ፡ እመገበርተ ፡ ዐመፃ፡፡ ወአድኅ 2
ነኒ፡ እምእደው ፡ ደም፡፡=፡ እስመ፡ ናሁ፡ 3
ነዐውዋ፡ ለነፍስየ፡፡ ወቆሙ ፡ ላዕሌየ፡ኃያ
ላን፡፡=፡ አኮ፡ በአበሳየ ፡ ወአኮ ፡ በጌጋይ 4
የ፡ እግዚኦ፡፡ ዘእንበለ ፡ ዐመፃ ፡ ሮጽኩ፡
ወአርታዕኩ፡፡=፡ ተንሥእ ፡ ተቀበለኒ፡ 5
ወርኢ፡፡ አንተ፡እግዚኦ፡ አምላከ፡ ኃያላን፡
ንጉሠ ፡ እስራኤል፡፡=፡ ኅውጾሙ ፡ ለኵ 6
ሎሙ ፡ አሕዛብ ፡ ወተሣሀሎሙ፡፡ ወኢትሣ
ሀሎሙ ፡ ገበርተ፡ዐመፃ፡፡=፡ ይትመየጡ፡ 7
ሰርከ፡ ወይርኅቡ ፡ ከመ፡ ከልብ ፡ ወይዑዱ፡
ሀገረ፡፡ ወናሁ ፡ ይነቡ ፡ በአፉሆሙ፡፡=፡
ወሰይፍ፡ ውስተ፡ከናፍሪሆሙ፡፡ወዘኒ፡ሰምዖ 8
ሙ፡ 9 ወአንተ ፡ እግዚኦ ፡ ትስሕቆሙ፡
ወመነንኮሙ፡ለኵሎሙ፡አሕዛብ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] corde veſtro [b] & venefici incantantis ſapienter: [c] Et contemnentur tanquam aqua effuſa: [d] Et deficient ſicut cera liqueſcens: [e] non vidiſti [f] innoteſcet ſpinas veſtras auctas ut fiant rhamnus, ſicut viventes in ira

PSAL. lviii. [a] Deus meus, [b] propter delictum meum, neque propter peccatum [c] ſuſcipe me, & [d] Reſpice omnes gentes, & miſerere earum: & ne miſerearis

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* فانكم بقلب تعملون الاثم على الارض * وايديكم تصنع الظلم * الخطاة جعلوا غرباء 3 4
من الرحم * وضلوا منذ كانوا في البطن * وتكلموا بالكذب * لان غضبهم كمثل الحية الجرداء * 5
ومثل الافعي الصماء * التي تسد اذنيها * لئلا تسمع صوت الراقي * تسحر سحرا افضل من الحكيم 6
* الله يرض اسنانهم في افواههم * انياب الاسد حطمها الرب * يرذلون كالماء المهراق * يوتر قوسه 7 8
حتى يضعفوا * ومثل الشمع الذائب يهلكون * سقطت عليهم نار فلم يروا الشمس * قبل ان 9 10
تتبينوا فتفهموا * صار شوككم عوسجا * يبتلعهم بغضبه مثل الاحياء * يفرح البار اذا راى 11
الانتقام * ويغسل يديه بدم الخاطي * فيقول الانسان اترى يكون للصديق ثمر * وهل يدينهم
الله على الارض * الليلويا *

* المزمور الثامن والخمسون *

* لداود قاله لما ارسل شاوول وحفظ بيته ليقتله * وعدده * لز - استيكن * 1
* اللهم خلصني من اعداي * ومن القايمين علي انقذني * ومن عاملي الاثم نجني * ومن رجال 2 3
الدماء خلصني * فها هم قد اقتنصوا نفسي * وطغي على الاقوام الاعزا * لا باثمي ولا بخطيتي 4 5
يا رب * لاني سعيت بغير اثم فاستقمت * انهض الى التقائي وانظر * فانت يا رب اله القوات * اله 6
اسرائيل انتبه * وتعهد جميع الامم * لا تتراءف على كل فاعلي الاثم * فانهم ينقلبون اذا امسوا * 7
يعوون مثل الكلاب * ويطوفون بالمدينة * وها هم ينطقون بافواههم * وسيوف في شفاههم * قايلين 8
من هو ذا الذي يسمع * وانت يا رب تضحك بهم * وترذل وتشهرهم لجميع الشعوب * 9

Nam vos in corde committitis ſcelus ſuper 3
terram, & manus veſtræ operantur
flagitium. Peccatores facti ſunt alieni à 4
vulva, & erraverunt ex quo erant in utero,
& locuti ſunt mendacium. Nam furor 5
eorum eſt veluti ſerpentis degentis in aridis,
& tanquàm aſpidis ſurdæ, quæ obturat
aures ſuas. Nè audiat vocem incantantis, 6
imò ipſa faſcinat faſcinatione meliùs
quàm ſapiens. Deus contundet dentes 7
eorum in oribus ipſorum: caninos leonum
confregit Dominus. Contemnentur tanquã 8
aqua effuſa: tendet arcum ſuum quoad infirmentur.
Et tanquàm cera liqueſcens 9
peribunt; cecidit ſuper eos ignis, & non
viderunt ſolem. Antequã percatis, ſapite: 10
factæ ſunt ſpinæ veſtræ rhamnus: Abſorbebit
eos in ira ſua quaſi vivos. Lætabitur 11
juſtus quum viderit vindictam, &
lavabit manus ſuas ſanguine peccatoris.
Et dicet homo, Num erit juſto fructus, &
num judicabit eos Deus ſuper terram? Alleluja.

PSAL. LVIII.

Davidis. Dixit eum quando miſit 1
Saul, & cuſtodivit domum ejus,
ut interficeret eum. Et numerus
verſ. 37.

DEus, libera me ab inimicis meis, & 2
ab inſultantibus mihi redime me: Et 3
ab operantibus iniquitatem erue me, & à
viris ſanguinum ſalva me. Nam ecce ipſi 4
jam prædati ſunt animam meam, & impiè
tractârunt me cœtus potentiſſimi. Non ob 5
culpam meã, neque propter peccatum meum,
O Domine: quia geſſi me ſine crimine,
& fui rectus. Exurge in occurſum meũ 6
& vide; nam tu O Domine, Deus es exercituum.
Deus Iſraelis, convertere, &
viſita cunctas gentes, ne propitieris omnibus
operantibus iniquitatẽ. Hi enim ſubvertentur 7
quum ad veſperam devenerint:
latrabunt ut canes, & vagabuntur per urbẽ.
Et ecce ipſi loquuntur oribus ſuis, & 8
gladii in labiis eorum, dicentes; Quis eſt
qui audit? At tu O Domine, ridebis eos & 9
contemnes illos, eoſq; divulgabis inter
omnes populos

תהלים : ס

Deus .mea elevatio Deus quoniã :cuſtodiam *te ad* ej' Fortitudinem

10 עֻזּוֹ אֵלֶיךָ אֶשְׁמֹרָה כִּי־אֱלֹהִים מִשְׂגַּבִּי׃ אֱלֹהֵי 11

Ne *.meis invidis in* me faciet videre Deus : me præveniet meæ miſericordiæ

12 חַסְדּוֹ יְקַדְּמֵנִי אֱלֹהִים יַרְאֵנִי בְשֹׁרְרָי׃ אַל־

,tua fortitudine in eos commove : meus populus obliviſcantur fortè ne , eos occidas

תַּהַרְגֵם ׀ פֶּן־יִשְׁכְּחוּ עַמִּי הֲנִיעֵמוֹ בְחֵילְךָ

,eorũ labiorum verbum ,eorũ oris Peccatum .Domine noſter clypeus ; eos *demitte* &

13 וְהוֹרִידֵמוֹ מָגִנֵּנוּ אֲדֹנָי׃ חַטַּאת־פִּימוֹ דְּבַר־שְׂפָתֵימוֹ

,furore in Conſume *.narrabunt macie* de & *,perjurio* de & *: ſua elevatione in* capiantur &

14 וְיִלָּכְדוּ בִגְאוֹנָם וּמֵאָלָה וּמִכַּחַשׁ יְסַפֵּרוּ׃ כַּלֵּה בְחֵמָה

fines ad uſque ,Jahacob in *dominans* Deus quia ,ſciant & , *ipſi* non & ,conſume

כַּלֵּה וְאֵינֵמוֹ וְיֵדְעוּ כִּי־אֱלֹהִים מֹשֵׁל בְּיַעֲקֹב לְאַפְסֵי

circuibunt &,canis ſicut tumultuabuntur,veſperã ad convertentur Et .Selah , terræ

15 הָאָרֶץ סֶלָה׃ וְיָשֻׁבוּ לָעֶרֶב יֶהֱמוּ כַכָּלֶב וִיסוֹבְבוּ

.murmurabunt & ,fuerint ſaturati non ſi *: veſcendum ad* vagabuntur Ipſi .civitatem

16 עִיר׃ הֵמָּה יְנוּעוּן לֶאֱכֹל אִם־לֹא יִשְׂבְּעוּ וַיָּלִינוּ׃

,tuam miſericordiam manè *in prædicabo* & , tuam fortitudinem cantabo ego Et

17 וַאֲנִי ׀ אָשִׁיר עֻזֶּךָ וַאֲרַנֵּן לַבֹּקֶר חַסְדֶּךָ

,mea Fortitudo *.mihi* anguſtiæ die in refugium & ; mihi elevatio fuiſti quia

18 כִּי־הָיִיתָ מִשְׂגָּב לִי וּמָנוֹס בְּיוֹם צַר־לִי׃ עֻזִּי

.meæ miſericordiæ Deus , mea elevatio Deus quia ; cantabo *te ad*

אֵלֶיךָ אֲזַמֵּרָה כִּי־אֱלֹהִים מִשְׂגַּבִּי אֱלֹהֵי חַסְדִּי׃

PSAL. LX. ס

.docendum ad David ipſi Mictam , teſtimonii Suſan ſuper Victori

1 לַמְנַצֵּחַ עַל־שׁוּשַׁן עֵדוּת מִכְתָּם לְדָוִד לְלַמֵּד׃

eſt reverſus & , Sobah Aram cum & , Naharaim Aram cum *ipſum rixando In*

2 בְּהַצּוֹתוֹ ׀ אֶת אֲרַם נַהֲרַיִם וְאֶת־אֲרַם צוֹבָה וַיָּשָׁב

.millia duodecim , Salis valle in Edom percuſſit & , Joab

יוֹאָב וַיַּךְ אֶת־אֱדוֹם בְּגֵיא־מֶלַח שְׁנֵים עָשָׂר אָלֶף׃

.nos ad reverteris , es *exacerbatus* : nos *rupiſti* ,nos elongâſti Deus

3 אֱלֹהִים זְנַחְתָּנוּ פְרַצְתָּנוּ אָנַפְתָּ תְּשׁוֹבֵב לָנוּ׃

.nutat quia ,ejus contritiones ſana : eam ſcidiſti , terram tremere Feciſti

4 הִרְעַשְׁתָּה אֶרֶץ פְּצַמְתָּהּ רְפָה שְׁבָרֶיהָ כִי־מָטָה׃

.perturbationis vinum nobis feciſti propinare *: durum* tuum populum feciſti Videre

5 הִרְאִיתָ עַמְּךָ קָשָׁה הִשְׁקִיתָנוּ יַיִן תַּרְעֵלָה׃

.Selah , *veritatis facie à , ſe elevandum ad ,vexillum* te metuentibus Dediſti

6 נָתַתָּה לִּירֵאֶיךָ נֵּס לְהִתְנוֹסֵס מִפְּנֵי קֹשֶׁט סֶלָה׃

Deus .me exaudi & ,tua dextera fac ſalvum : tui dilecti liberentur Ut

7 לְמַעַן יֵחָלְצוּן יְדִידֶיךָ הוֹשִׁיעָה יְמִינְךָ וַעֲנֵנוּ׃ אֱלֹהִים ׀ 8

.metiar Succoth vallem & : Sechem dividam , lætabor *, ſua ſanctitate in* eſt locutus

דִּבֶּר בְּקָדְשׁוֹ אֶעְלֹזָה אֲחַלְּקָה שְׁכֶם וְעֵמֶק סֻכּוֹת אֲמַדֵּד׃

Jehudah : mei capitis fortitudo Ephraim & ,Menaſſeh *mihi* & ,Ghilhad *Mihi*

9 לִי גִלְעָד ׀ וְלִי מְנַשֶּׁה וְאֶפְרַיִם מָעוֹז רֹאשִׁי יְהוּדָה

.meus legifer

מְחֹקְקִי׃

תרגום TARGUM.

10 עושני לך אנטור ארום אלהא שזבותי : אלהא 11
טובי יקדמנני אלהנא יחמנני נקמתא במעיקי :
12 לא תקטלנון מן יד דלמא יתנשון עמי טלטל
יתהון מן בתיהון בתוקפך ותמסכן יתהון מן
13 ממוניהון תריסנא יי : מטול חובת פומהון
וממלל ספותהון יתאחדן בגיותנותהון ארום
14 מן מומתא ומן שקרא ישתעין : שצי יתהון
בכלו שצי יתהון עד די ליתנון וינדעון ארום
אלהא שליט ביעקב לסיפי ארעא לעלמין :
15 ויתובון לרמשא יתרגשון היך ככלב ויחזרון
16 קרתא : הנון יטלטלון למבז בזתא למיכל ולא
17 יניחון עד די יסבעון ויביתון : ואנא אשבח
עושנך ואבוע לעדן צפרא טובך ארום הויתא
18 משזיב לי ורוחצני ביומא דעיק לי : עושני לותך
אשבח ארום אלהא שזבותי אלהא טובי :

ס

1 לשבחא על עתיק סהדותא די בני יעקב ולבן
2 פרשגן על יד דוד לאלפא : כד כנש דוד משרין
ועבר על איגר סהדותא ואגיח עם ארם די על
פרת ועם ארם די עם צובה ומן בתר כן תב
יואב ומחא ית אדומאי במישור מלחא נפלו מן
3 חיליהון דדוד ויואב תריסר אלפין : אמר דוד
אלהא שבקתנא תקפתא עלנא תקוף רוגזא
4 תוב ביקרך לנא : ארגשתא ארעא דישראל
ועעתא וסדקתא יתה אסי תבריהא ארום
5 אתמוטטת : אחמיתא עמך קשיא אשקיתא
6 לנא חמר דלוט : יהבתא לדחליך נסא
לאתנסארה ביה מן בגלל קושטיה דאברהם
7 לעלמין : מן בגלל זכותיה דיצחק יתפצין
רחימיך פרוק מטול חסידותא דיעקב וקבל
8 צלותי : אלהא ממלל בבית מקדשיה אבוע
ארום יתנברון דבית ישראל אפלג בזתא עם
בני יוסף דיתבין בשכם ובמישר סוכות אמשח
9 משחתא ואפלג עדאה : עמי הוון דבית גלעד
ועמי הוון דבית מנשה ונברין דבית אפרים
עושנא דרישי ומדבית יהודה ספריא דבית אולפני :

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Fortitudinem meam apud te cuſtodiam, quoniam Deus refugium meum eſt. De' bonitatis meæ præveniet me, De' *noſter* oſtendet mihi ultioné in oppreſſores meos. Ne occidas eos ſubitò, ne fortè obliviſcatur populus me': expelle eos à domib' eorũ in virtute tua, & ad paupertatem redigas eos à facultatibus ipſorum, clypeus noſter Dominus. Propter delictum oris eorum, & ſermonem labiorũ ſuorum comprehendentur in ſuperbia ſua, quoniam perjuriũ & mendacium narrant. Dele eos internecione, deſtrue illos, adeò ut non ſint: ut ſciant quoniam Deus dominatur in Jaacob in finibus terræ in ſeculum. Et revertentur ad veſperam; frement ſicut canis, & circuibunt civitatem. Ipſi vagabuntur ut diripiant prædã ad comedendum: & non quieſcent, donec ſaturentur ac pernoctent. Ego verò laudabo fortitudinem tuam, & celebrabo tempore matutino bonitaté tuã, quoniam fuiſti liberator me', & ſpes mea in die quo me afflixit. Fortitudo mea, apud te laudabo, quoniã Deus liberatio mea, Deus beneficentia mea eſt.

Ad laudandũ pro veteri teſtimonio *filiorum Jaacob et Laban*, exemplar per manum Davidis ad docendum. Quando congregavit David exercitus, tranſivítque per *tumulum* teſtimonii, & inſtruxit [*bellum*] adverſus Aram, quæ eſt ſuper Euphraten; & adverſus Aram *quæ eſt apud* Soba: & poſt hæc reverſus eſt Joab, & percuſſit Idumæos in planitie Salis, & ceciderunt de exercitibus David & Joab, duodecim millia.

PSAL. LX.

D*Ixit David*, Deus dereliquiſti nos, irat' es nobis vehementi furore: convertere in gloria tua ad nos. Commoviſti terrã Iſrael, conturbâſti & deſtruxiſti eam: ſana rupti-ones ej', quoniam commota eſt. Oſtendiſti populo tuo dura, potâſti nos *vino* maledictionis. Dediſti metuentibus te vexillum ut exaltentur in illo; propter veritaté Abraham in æternum. Propter meritum Iſaac, redimentur dilecti tui; redime propter miſericordiam Jaacob; & ſuſcipe orationem meam. Deus locutus eſt in domo ſanctuarii ſui, lætabor, quia prævalebit dom' Iſrael: dividam prædam cum filiis Joſeph, habitantibus in Sichem, & in valle tabernaculorum, metiar menſura, & dividam prædam. Mecum erit domus Gilgad, & mecum domus Menaſſe & fortes domus Ephraim, fortitudo capitis mei: à domo autem Jehudæ ſcribæ domus doctrinæ meæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܐܠܗܐ ܠܟ ܐܫܒܚ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܥܫܢܝ: * ܐܠܗܐ ܛܝܒܘܬܟ ܬܩܕܡܢܝ.
11 ܐܠܗܐ ܚܘܢܝ ܒܒܥܠܕܒܒܝ: ܠܐ ܬܩܛܠ ܐܢܘܢ ܕܠܐ ܢܛܥܘܢ ܥܡܝ. ܐܠܐ ܙܘܥ ܐܢܘܢ 12
13 ܒܚܝܠܟ ܘܐܚܬ ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ ܬܘܟܠܢܝ: * ܚܛܗܐ ܕܦܘܡܗܘܢ ܡܠܠܘ ܣܦܘܬܗܘܢ.
14 ܢܬܐܚܕܘܢ ܒܫܘܒܗܪܗܘܢ: ܡܛܠ ܕܠܘܛܬܐ ܘܕܓܠܘܬܐ ܡܫܬܥܝܢ. * ܐܘܒܕ ܐܢܘܢ
ܒܚܡܬܟ ܐܘܒܕ ܐܢܘܢ ܘܠܐ ܢܫܬܟܚܘܢ: ܢܕܥܘܢ ܕܐܠܗܐ ܫܠܝܛ ܒܝܥܩܘܒ ܘܠܣܘܦܝܗ̇
15 ܕܐܪܥܐ. * ܕܢܩܫ * ܢܗܦܟܘܢ ܒܪܡܫܐ ܘܢܒܚܘܢ ܐܝܟ ܟܠܒܐ: ܘܢܚܕܪܘܢ
16 ܡܕܝܢܬܐ. * ܢܒܥܘܢ ܠܡܐܟܠ ܘܠܐ ܢܣܒܥܘܢ ܘܠܐ ܢܒܘܬܘܢ: * ܘܐܢܐ ܐܫܒܚ ܚܝܠܟ.
17 ܘܐܫܒܚ ܒܨܦܪܐ ܠܛܝܒܘܬܟ: ܡܛܠ ܕܗܘܝܬ ܠܝ ܡܥܫܢܐ. ܘܡܦܨܝܢܐ ܒܝܘܡܐ
18 ܕܐܘܠܨܢܐ: * ܐܠܗܐ ܠܟ ܐܙܡܪ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܐ ܕܡܥܘܫܢܝ ܘܐܠܗܐ ܕܛܝܒܘܬܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܣ̈ *

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܐܡܪ ܕܘܝܕ ܐܢ ܢܦܠܬ ܒܐܝܕܝ ܫܐܘܠ ܡܐܬ ܐܢܐ. ܘܝܗܒ ܐܘܪܚܐ ܠܥܪܘܩܝܐ ܗܘ ܘܕܥܡܗ.
ܡܬܩܠܐ ܥܠ ܦܘܢܝܐ ܕܥܡܡܐ ܘܒܘܛܠܐ ܕܝܗܘܕܝܘܬܐ. ܦܬܓܡ ܟܘ.

3 * ܐܠܗܐ ܛܥܝܬܢ ܘܫܕܝܬܢ ܘܪܓܙܬ ܥܠܝܢ. * ܙܝܥܬܗ ܠܐܪܥܐ ܘܦܬܚܬܗ̇: ܚܒܘܫ ܬܒܪܗ̇ 4
5 ܡܛܠ ܕܐܬܪܟܢܬ. * ܚܘܝܬ ܠܥܡܟ ܩܫܝܬܐ: ܘܐܫܩܝܬ ܐܢܘܢ ܚܡܪܐ ܠܬܡܪܐ.
6 * ܝܗܒܬ ܠܕܚܠܝܟ ܐܬܐ: ܕܠܐ ܢܥܪܩܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܩܫܬܐ. * ܡܛܠ ܕܢܬܦܨܘܢ ܚܒܝܒܝܟ: 7
8 ܦܪܘܩ ܒܝܡܝܢܟ ܘܥܢܝܢܝ. * ܐܠܗܐ ܡܠܠ ܒܩܘܕܫܗ: ܐܬܥܫܢ ܐܢܐ ܘܐܦܠܓ
9 ܠܫܟܝܡ. ܘܠܥܘܡܩܐ ܕܣܟܘܬ ܐܡܫܘܚ: * ܕܝܠܝ ܗܘ ܓܠܥܕ ܘܕܝܠܝ ܗܘ ܡܢܫܐ.
ܘܐܦܪܝܡ ܡܥܫܢܢܗ ܕܪܝܫܝ: ܝܗܘܕܐ ܡܠܟܝ.

Deus, te glorificabo, quia tu es refugium meum. Deus, gratia tua præveniat me. Deus oſtende mihi in hoſtibus meis. Ne occidas eos, ut ne obliviſcantur populum meum ſed concute eos potentiâ tuâ, & dimove illos Domine fiducia mea. Peccatum oris eorum locuta ſunt labia ipſorum. Capientur ſuperbia ſua, quoniam maledictionem & mendacium confabulantur. Perde eos in furore tuo, perde eos & non inveniantur: ut ſciant Deum præeſſe Jacobo & finibus terræ * *Diapſalma.* * Revertentur veſpere, & latrabunt ut canes, urbemque circumibunt. Quærent ad manducandum, & non ſaturabuntur, neq; pernoctabunt. Ego verò laudabo fortitudinẽ tuam, & glorificabo mane bonitatem tuam: quia factus es mihi refugium & ſalvator in die afflictionis. Deus tibi pſallam, quia tu es Deus confugii mei, & Deus beneficii mei.

PSAL. LX.

Quem edidit David, dicens; *Si devenero in manus Saulis, interibo; deditque locum fugæ* ipſe *& qui cum eo erant. Nobis autem exprimit converſionem Gentium, & abolitionem Judaiſmi. Verſ. 26.*

DEus, oblitus es noſtrî, & repuliſti nos, atque iratus es nobis. Concuſſiſti terram & aperuiſti eam, Alliga fracturam ejus, quia infirmata eſt. Oſtendiſti populo tuo dura, potâſti eos vino fœcoſo. Dediſti metuentibus te ſignum, ut ne fugiant à conſpectu arcûs. Ad hoc ut arment ſeſe dilecti tui, ſalva me dexterâ tuâ, & exaudi me. Deus locutus eſt per ſanctitatem ſuam, Corroborabor ego, & dividam Sechim, & profundum Sochuth dimetiar. Meus eſt Galaad, & meus eſt Manaſſes, & Aphrem roborator capitis mei: Juda rex meus,

Verſio VULG. LAT.

10 Fortitudinē meā ad te cuſtodiā, quia,
11 Deus, ſuſceptor meus es: Deus meus,
12 miſericordia ejus præveniet me. Deus
oſtendet mihi ſuper inimicos meos, ne
occidas eos: nequando obliviſcantur
populi mei. Diſperge illos in virtute
tua: & depone eos, protector me⁹ Do-
13 mine: Delictum oris eorum, ſermonē
labiorū ipſorū: & comprehendantur
in ſuperbia ſua. Et de execratione &
14 mendacio annuntiabuntur In conſummatione:
in ira conſummationis, & nō
erunt. Et ſcient quia Deus dominabi-
15 tur Jacob, & finiū terræ. Convertentur
ad veſperā, & famem patientur ut ca-
16 nes: & circuibunt civitatem. Ipſi diſpergentur
ad manducandum: ſi verò
non fuerint ſaturati, & murmurabunt.
17 Ego autē cantabo fortitudinē tuam:
& exultabo manè miſericordiam tuā.
Quia factus es ſuſceptor meus, & refugium
meū, in die tribulationis meæ.
18 Adjutor meus, tibi pſallam, quia Deus
ſuſceptor meus es: Deus meus, miſericordia
mea.

In finem,

1 Pro his qui immutabuntur, in tituli
inſcriptionem ipſi David in doctri-
2 nam, Cùm ſuccendit Meſopotamiam
Syriæ, & Sobal, & convertit
Joab, & percuſſit Idumæam in valle
Salinarum duodecim millia.
(2.Reg.8.1.& 10.7.& 1.Par. 18.1.

LIX.

3 DEus, repuliſti nos, & deſtruxiſti
nos: iratus es, & miſertus es nobis.
4 Commoviſti terram, & conturbâſti eam:
ſana contritiones ejus, quia com-
5 mota eſt. Oſtendiſti populo tuo dura:
6 potâſti nos vino compunctionis. Dediſti
metuentibus te ſignificationē: ut fugiant
à facie arcûs: Ut liberentur dile-
7 cti tui: Salvū fac dexterâ tuâ, & exau-
8 di me. Deus locut⁹ eſt in ſancto ſuo;
Lætabor, & partibor Sichimam: & cō-
9 vallē tabernaculorū metibor. Meus eſt
Galaad, & meus eſt Manaſſes: & Ephraim
fortitudo capitis mei. Juda
rex meus:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

10 Τὸ κράτος μου πρὸς σὲ φυλάξω, ὅτι σὺ ὁ Θεὸς
11 ἀντιλήπτωρ μου εἶ. Ὁ Θεός μου, τὸ ἔλεος αὐτοῦ
12 προφθάσει με, Ὁ Θεός μου δείξει μοι ἐν τοῖς ἐχθροῖς
μου. μὴ ἀποκτείνῃς αὐτοὺς, μή ποτε ἐπιλάθωνται
τοῦ νόμου σου. διασκόρπισον αὐτοὺς ἐν
τῇ δυνάμει σου, καὶ κατάγαγε αὐτοὺς ὁ ὑπερασπιστής
13 μου κύριε. Ἁμαρτίαν στόματος αὐτῶν, λόγον χειλέων
αὐτῶν, καὶ συλληφθήτωσαν ἐν τῇ ὑπερηφανίᾳ
14 αὐτῶν. καὶ ἐξ ἀρᾶς καὶ ψεύδους διαγγελήσονται Συντέλεια,
ἐν ὀργῇ συντελείας, καὶ οὐ μὴ ὑπάρξουσι·
καὶ γνώσονται ὅτι ὁ Θεὸς τοῦ Ἰακὼβ δεσπόζει
15 τῶν περάτων τῆς γῆς. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ἐπιστρέψουσιν
εἰς ἑσπέραν, καὶ λιμώξουσιν ὡς κύων, καὶ κυ-
16 κλώσουσι πόλιν. Αὐτοὶ διασκορπισθήσονται τοῦ φα-
17 γεῖν, ἐὰν δὲ μὴ χορτασθῶσι, καὶ γογγύσουσιν. Ἐγὼ
δὲ ᾄσομαι τῇ δυνάμει σου, καὶ ἀγαλλιάσομαι τὸ πρωῒ
τὸ ἔλεός σου, ὅτι ἐγενήθης ἀντιλήπτωρ μου
18 καὶ καταφυγή μου ἐν ἡμέρᾳ θλίψεώς μου. Βοηθός
μου, σοὶ ψαλῶ ὁ Θεός μου, ἀντιλήπτωρ μου εἶ ὁ
Θεός μου, τὸ ἔλεός μου.

1 Εἰς τὸ τέλος, τοῖς ἀλλοιωθησομένοις ἔτι, εἰς στη-
2 λογραφίαν τῷ Δαυὶδ εἰς διδαχὴν, Ὁπότε ἐνεπύρισε
τὴν Μεσοποταμίαν Συρίας, καὶ τὴν Συρίαν Σοβὰλ,
καὶ ἐπέστρεψεν Ἰωὰβ, καὶ ἐπάταξε
τὴν φάραγγα τῶν ἁλῶν, δώδεκα χιλιάδας.

νθʹ.

3 Ὁ Θεὸς ἀπώσω ἡμᾶς καὶ καθεῖλες ἡμᾶς, ὠρ-
4 γίσθης καὶ ᾠκτείρησας ἡμᾶς. Συνέσεισας τὴν γῆν
καὶ συνετάραξας αὐτὴν, ἴασαι τὰ συντρίμματα
5 αὐτῆς, ὅτι ἐσαλεύθη. Ἔδειξας τῷ λαῷ σου σκλη-
6 ρὰ, ἐπότισας ἡμᾶς οἶνον κατανύξεως. Ἔδωκας
τοῖς φοβουμένοις σε σημείωσιν, τοῦ φυγεῖν ἀπὸ
προσώπου τόξου. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. ὅπως ἂν ῥυ-
7 σθῶσιν οἱ ἀγαπητοί σου, Σῶσον τῇ δεξιᾷ σου καὶ
8 ἐπάκουσόν μου. Ὁ Θεὸς ἐλάλησεν ἐν τῷ ἁγίῳ
αὐτοῦ, Ἀγαλλιάσομαι καὶ διαμεριῶ Σίκιμα, καὶ τὴν
9 κοιλάδα τῶν σκηνῶν διαμετρήσω. Ἐμός ἐστι Γαλαὰδ,
καὶ ἐμός ἐστι Μανασσῆ, καὶ Ἐφραὶμ κραταίωσις
τῆς κεφαλῆς μου· Ἰούδας βασιλεύς μου,

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

10 Fortitudinem meam ad te [e] cuſtodiam: quia (e) tu, Deus, ſuſceptor meus es. Deus meus, miſericordia ejus præveniet me: 11 Deus meus (f) oſtendet mihi in inimicis meis. Ne occidas eos; ne quando obliviſcantur (g) legis tuæ. 12 (h) Diſperge illos in virtute tua: & (i) depone eos, protector meus [f] Domine. 13 (k) Delictum oris eorum, ſermonem labiorum ipſorum: & (l) comprehendantur in ſuperbia ſua. 14 Et de execratione, & mendacio (m) [g] annuntiabuntur Conſummationes, in ira conſummationis, & non erunt: 15 & ſcient, quia (n) Deus Jacob dominatur (o) [h] finium terræ. 16 DIAPSALMA. (p) Convertentur ad veſperam, et famem patientur ut canis, & circuibunt civitatem. 17 Ipſi diſpergentur ad manducandum: ſi verò [i] non fuerint ſaturati; & murmurabunt. 18 Ego autem cantabo (q) virtuti tuæ, & exultabo manè [k] miſericordiam tuam. 19 Quia factus es ſuſceptor meus, & refugium meum in die tribulationis meæ. 20 Adjutor meus, tibi pſallam, [l] Deus meus: ſuſceptor meus es, Deus meus, miſericordia mea.

In finē, (a) iis qui immutabuntur, [†] in tituli inſcriptionem ipſi David in doctrinā, Cùm ſuccendit Meſopotamiam Syriæ, & Syriam Sobal, & convertit [a] Joab, & (b) percuſſit vallem Salinarum, duodecim millia. LIX.

1 DEus, repuliſti nos, & deſtruxiſti nos, (c) iratus es, & miſertus es nobis. 2 Commoviſti terram, & conturbâſti eam: ſana contritiones ejus, quia commota eſt. 3 Oſtendiſti populo tuo dura, potâſti nos [b] vino (d) compunctionis. 4 Dediſti metuentibus te ſignificationem, ut fugiant à facie arcûs. DIAPSALMA. 5 Ut liberentur dilecti tui, Salvum fac dexterâ tuâ, & exaudi me. 6 Deus loquutus eſt in ſancto ſuo, Exultabo, & [c] partibor Sicimam; & convallem tabernaculorum dimetiar. 7 Meus eſt Galaad, & meus eſt Manaſſe, & Ephræm (e) [d] fortitudo capitis mei. (f) 8 Judas rex meus: 9

Verſio ÆTHIOPICA.

11 አምሕፀን፡ ኀቤከ፡ ኀይልየ፡፡ እስመ፡ አም 10
ላኪየ፡ ወምስካይየ ፡ አንተ፡፡ ይብጽሐኒ፡ ሣህ
12 ሉ፡ለአምላኪየ፡፡=፡ አምላኪየ፡አርአየኒ፡ 11
በጸላእትየ፡፡ ኢትቅትሎሙ፡ ከመ፡ ኢይር
ስዑ፡ ሕገከ፡፡=፡ ዝርዎሙ፡ በኀይልከ፡፡ 12
ወአጽድፎሙ፡ አምላኪየ፡ ወረዳኢየ፡፡=፡
ኃጢአተ፡ አፉሆሙ፡ ቃለ፡ ከናፍሪሆሙ፡፡ 13
13 ወይሰገሩ፡በትዕቢቶሙ፡፡=፡ወበመርገሞሙ፡ 14
ወአምሐሰቶሙ፡ ይትአወቅ፡ ደኃሪቶሙ፡፡
ወየኀልቁ፡በደኃሪ፡መቅሠፍት፡፡=፡ ወያአም 15
ሩ፡ከመ፡አምላከ፡ያዕቆብ፡፡ ይኴንን፡ለአጽ
14 ናፈ፡ምድር፡፡=፡ይትመየጡ፡ሰርከ፡ወይ 16
ርኅቡ፡ከመ፡ ከልብ፡ ወይዑዱ፡ ሀገረ፡፡=፡
ወእሙንቱሰ፡ ይዘረዉ፡ ለበሊዕ፡፡ ወእመሰ፡ ኢ 17
ጸግቡ፡ ያንጐረጕሩ፡፡=፡ ወአንሰ፡ እሴብሕ፡ 18
15 ለኀይልከ፡፡ ወእትፌሣሕ፡ በጽባሕ፡ በምሕ
ረትከ፡፡=፡ እስመ፡ ኮንከኒ፡ ምስካይየ፡፡ 19
16 ወጸወንየ፡በዕለተ፡መንዳቤየ፡፡=፡ ረዳእየ፡ 20
አንተ፡ ወለከ፡ እዜምር፡ አምላኪየ፡፡ እስ
17 መ፡ አምላኪየ፡ ወምስካይየ፡ አንተ፡፡ አም
ላኪየ፡ወእቱ፡ሣህልየ፡፡

ፍጻሜ፡ ዘለ፡ ተበዓደ፡ ዓዲ፡ አርእያ፡መጽ
18 ሐፈ፡ዘያዊት፡ለትምህርት፡ ዘአመ፡ አውዐየ፡
መስጴጦምያ፡ዘሶርያ፡ ዘሶበል፡ ወተመይ
1 ጠ፡ ዮአብ፡ ወቀተለ፡ በቈላቲሆሙ፡
2 ክልኤተ፡ ዐሠርተ፡ ወፀየ፡፡

ሂሀ እግዚኦ፡ ገደፍከነ፡ ወነሠትከነ፡፡ ቀሰፍ 1
ከነ፡ ወተሣሀልከነ፡፡=፡ አድለቅለቃ፡ ለም 2
ድር፡ ወሀከ፡፡ ወፈወስካ፡ ቍስለ፡ እስመ፡
3 አንቀልቀለት፡፡=፡ ወአርአይኮሙ፡ ዕፁበ፡ 3
4 ለሕዝብከ፡፡ ወአስተይከነ፡ ወይነ፡ መደንግ
ፀ፡፡=፡ ወወሀብኮሙ፡ ትእምርተ፡ ለለ፡ 4
ይፈርሁከ፡፡ ከመ፡ ያምስጡ፡ እምገጸ፡ ቀስ
5 ት፡፡=፡ ወይድኀኑ፡ ፍቁራኒከ፡፡ አድኅነኒ፡ 5
በየማንከ፡ ወስምዐኒ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ 6
6 ነበበ፡በመቅደሱ፡፡ እትፌሣሕ፡ ወእትካፈል፡
ምህርከ፡፡ ወለሳፈር፡ አዐጽደተ፡ ቈላት፡፡=፡
7 ዚአየ፡ ውእቱ፡ ገለአድ፡ ወዚአየ፡ ምናሴ፡፡ 7
8 ወኤፍሬም፡ ምስማከ፡ ርእስየ፡፡=፡ ወይሁ 8
ደ፡ ንጉሥየ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] enutriam: quia tu Deus meus, & ſuſceptor meus. [f] Domine mi. [g] innoteſcet noviſſimum eorum, & deſtruentur in conſummatione plagæ: & ſcient [h] uſque ad fines terræ.
[i] fuerint ſaturati, etiam [k] in miſericordia tua. [l] quia Deus meus & ſuſceptor meus es tu: Deus PSAL. LIX. [†] inſuper in [a] Jaacob, [b] vino ſtuporis. [c] partibor ſpolia, & dimetiar caſtra vallis.
[d] firmamentum

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10
11 * وتحفظني لتسبحتي * لانك يا الله ناصري والهي * رحمته تسبق فتدركني * الله يريني في
12 اعداي * لا تقتلهم لئلا ينسوا ناموسك * لكن فرقهم بقوتك واهبطهم * ايها الرب ناصري
13 * لاجل خطية افواههم وكلام شفاههم * فليوخذوا بكبريايهم * ومن العيب والكذب يتكلمون
14 دايما * اللهم اهلكهم برجسك التام ولا يكونوا * ليعلموا ان السلطان لله * على يعقوب وعلى
15 اقطار الارض * هم يرجعون عند المساء جياعا مثل الكلاب * ويطوفون بالمدينة * ثم يتفرقون
16
17 ليأكلوا * فاذا لم يشبعوا يتمتمون * وانا اسبح قوتك * وابتهج بالغداة رحمتك * لانك
18 صرت لي ناصرا * وملجأ في يوم شدتي * انت معيني ولك ارتل * لانك يا الهي ناصري
واله رحمتي * الليلويا *

* المزمور التاسع والخمسون *

1
2 * لداود حين احرق ما بين نهري سوريا والشام * ورجع يواب فضرب وادي
الملح وعدهم اثنا عشر الفا * وهو كذا استيكن
3 * اللهم انك اقصيتنا واحطتنا * غضبت ثم ترافت علينا * زلزلت الارض وزعزعتها اجبر
4 كسرها * فانها قد اضطربت * اريت شعبك شدايد * سقيتنا خمرا عكرا * جعلت لا
5 علامة * لكي يهربوا من وجه القوس * ليخلص احباوك * خلصني بيمينك واستجب لي * تكلم
6 الله في قدسه * وقال ابتهج واقسم ساحيم * واقيس وادي المظال * لي جلعاد ولي م
7 افرايم هو عز راسي * يهوذا ملكي *

Me autem ſervabis propter laudationem meam, quia tu O Deus adjutor meus es, & Deus meus. 10 Miſericordia ejus præveniet & aſſequetur me: Deus oſtendet mihi in inimicis meis. 11 Ne occidas eos, ne obliviſcantur legem tuam; ſed diſperde eos virtute tuâ, & præcipita eos, O Domine auxiliator mi. 12 Propter peccatum orium eorum, & ſermonem labiorum ipſorum, capiantur in ſuperbia ſua: & ex turpitudine atque mendacio loquentur ſemper. 13 Deus, perde eos in furore tuo perfecto, & ne ſint: ut ſciant quòd poteſtas eſt Deo ſuper Jacob, & ſuper terminos terræ. 14 Ipſi revertentur propè veſperam famelici ut canes, & luſtrabunt civitatem. 15 Tum diſpergentur ad manducandum: quumque non fuerint ſaturati, murmurabunt. 16 At ego laudabo fortitudinem tuam, & exultabo in matutino miſericordiam tuam: 17 quia factus es mihi adjutor & refugium in die tribulationis meæ. Tu es auxiliator meus, & tibi pſallam: 18 quia tu O Deus meus, es adjutor meus, & Deus miſericordiæ meæ. Alleluja.

PSAL. LIX.

Davidis, quum ſuccendit Meſopotamiam Syriæ & Damaſcum: 1 Reverſuſque eſt Joab & percuſſit Vallem Salis, & erat numerus eorum duodecim millia. 2 Verſ. 24.

DEus, tu quidem exterminâſti nos & repuliſti nos: indignatus es, ac tum propitiatus es nobis. 3 Tremefeciſti terram, & concuſſiſti eam; refarci fractionem ejus, quia commota eſt. 4 Vidiſti populum tuum durum, potâſti nos vino turbido. 5 Poſuiſti colentibus te ſignum, ut fugerent à facie arcûs. 6 Ut ſalvarentur amici tui. Salva me dexterâ tuâ, et exaudi me. 7 Locutus eſt Deus per Sanctos ſuos, & dixit; Exultabo, & dividam Sichimam, & dimetiar vallem tabernaculorum. 8 Mihi eſt Galaad, & mihi eſt Manaſſes, Ephraim eſt magnificentia capitis mei, Juda Rex meus, 9

תהלים: סא סב

me ſuper ,meã calceamentũ projiciam Edom ſuper ,meæ lotionis olla Moab
10 מוֹאָב ׀ סִיר רַחְצִי עַל־אֱדוֹם אַשְׁלִיךְ נַעֲלִי עָלַי
me deducet quis ? munitionis civitatem me deducet Quis .jubila Peleſeth
11 פְּלֶשֶׁת הִתְרוֹעָעִי׃ מִי יֹבִלֵנִי עִיר מָצוֹר מִי נָחַנִי
egredieris non & ? nos elongâſti Deus tu Nonne ? Edom ad uſque
12 עַד־אֱדוֹם׃ הֲלֹא־אַתָּה אֱלֹהִים זְנַחְתָּנוּ וְלֹא־תֵצֵא
ſalus mendaciũ & :anguſtia ab auxiliũ nobis Da ? noſtris exercitibᵒ in Deus
13 אֱלֹהִים בְּצִבְאוֹתֵינוּ׃ הָבָה־לָּנוּ עֶזְרָת מִצָּר וְשָׁוְא תְּשׁוּעַת
.noſtros angustiatores conculcabit ipſe & : fortitudinẽ faciemus Deo In .hominis
14 אָדָם׃ בֵּאלֹהִים נַעֲשֶׂה־חָיִל וְהוּא יָבוּס צָרֵינוּ׃

PSAL. LXI. סא

;meum clamorem Deus Audi .David ipſi Neghinoth ſuper Victori
1 לַמְנַצֵּחַ ׀ עַל־נְגִינַת לְדָוִד׃ 2 שִׁמְעָה אֱלֹהִים רִנָּתִי
:meũ cor deficiendo in ,clamabo te ad terræ extremo Ab .meæ orationi intende
3 הַקְשִׁיבָה תְּפִלָּתִי׃ מִקְצֵה הָאָרֶץ ׀ אֵלֶיךָ אֶקְרָא בַּעֲטֹף לִבִּי
turris :mihi ſpes fuiſti Quia .me deduces ,me à exaltabitur petram in
4 בְּצוּר־יָרוּם מִמֶּנִּי תַנְחֵנִי׃ כִּי־הָיִיתָ מַחְסֶה לִי מִגְדַּל־
ſperabo :ſecula tuo tabernaculo in Habitabo .inimici faciebus à fortitudinis
5 עֹז מִפְּנֵי אוֹיֵב׃ אָגוּרָה בְאָהָלְךָ עוֹלָמִים אֶחֱסֶה
: mea vota audiſti Deus tu Quoniam .Selah ,tuarum alarum abſcondito in
6 בְסֵתֶר כְּנָפֶיךָ סֶּלָה׃ כִּי־אַתָּה אֱלֹהִים שָׁמַעְתָּ לִנְדָרָי
: adjicies regis dies ſuper Dies .tuũ nomen timentibus hæreditatem dediſti
7 נָתַתָּ יְרֻשַּׁת יִרְאֵי שְׁמֶךָ׃ יָמִים עַל־יְמֵי־מֶלֶךְ תּוֹסִיף
: Dei facies ad ſeculum Manebit .generatio & generatio ſicut ejus anni
8 שְׁנוֹתָיו כְּמוֹ־דֹר וָדֹר׃ יֵשֵׁב עוֹלָם לִפְנֵי אֱלֹהִים
tuo nomini canam Sic .eum cuſtodient ,præpara veritatem & miſericordiam
9 חֶסֶד וֶאֱמֶת מַן יִנְצְרֻהוּ׃ כֵּן אֲזַמְּרָה שִׁמְךָ
.die die mea vota me reddendum ad : perpetuum in
לָעַד לְשַׁלְּמִי נְדָרַי יוֹם ׀ יוֹם׃

PSAL. LXII. סב

ſilens Deum ad Tantùm .David ipſi cantus Jeduthun ſuper Victori
1 לַמְנַצֵּחַ עַל־יְדוּתוּן מִזְמוֹר לְדָוִד׃ 2 אַךְ אֶל־אֱלֹהִים דּוּמִיָּה
: mea ſalus & ,mea petra ipſe Tantùm .mea ſalus ipſo ab : mea anima
3 נַפְשִׁי מִמֶּנּוּ יְשׁוּעָתִי׃ אַךְ־הוּא צוּרִי וִישׁוּעָתִי
; interficiemini ? virum ſuper detrahetis Uſquequo .multùm labaſcam non,mea elevatio
4 מִשְׂגַּבִּי לֹא־אֶמּוֹט רַבָּה׃ עַד־אָנָה ׀ תְּהוֹתְתוּ עַל־אִישׁ תְּרָצְּחוּ
ejᵒ celſitudine à Veruntamen .impulſa maceria ,inclinatus paries tanquã vos univerſi
5 כֻלְּכֶם כְּקִיר נָטוּי גָּדֵר הַדְּחוּיָה׃ אַךְ מִשְּׂאֵתוֹ
ſuo intimo in & ;benedicebãt ſuo ore in ,mendacium voluerunt,expellere conſuluerunt
יָעֲצוּ לְהַדִּיחַ יִרְצוּ כָזָב בְּפִיו יְבָרֵכוּ וּבְקִרְבָּם
eo ab quoniam : mea anima tace Deo Tantùm .Selah ,maledicebant
6 יְקַלְלוּ־סֶלָה׃ אַךְ לֵאלֹהִים דּוֹמִּי נַפְשִׁי כִּי־מִמֶּנּוּ
.mutabo non ,mea elevatio : mea ſalus & ,mea petra ipſe Tantùm .mea expectatio
7 תִּקְוָתִי׃ אַךְ־הוּא צוּרִי וִישׁוּעָתִי מִשְׂגַּבִּי לֹא אֶמּוֹט׃

תרגום TARGUM.

10 בעטית מואבאי אטמשו רגלי באדום גבריהון
היך דוד שווני על פרקת קדל גברי אדום
טלקית מסני עלוי פלשתאי יביבי כנשתא
11 דישראל : מן הוא דיוביל יתי לקרתא חרובא
12 דצור מן הוא דדברני עד אדום : הלא את הוא
יי שבקתנא ולא תפוק אלהא עם חילותנא :
13 הב לן סערא ממעיקא ומגן הוא פורקנא דבר
14 נשא : במימרא דיי נעבד חילא והוא יכבוש
מעיקנא :

סא

1 לשבחא על תושבחן לדוד : 2 קבל יי בעותי
אצית צלותי : 3 מן סיפי ארעא קדמך אצלי
באשתלהיות לבי בכרך תקיף דמתבני על
4 טינר רם מני דברתי : ארום הויתא רחיץ לי
5 קושטא דעשונא מן קדם בעל דבבא : אדור
במשכנך לעלמיא אתרחץ בטלל שכנתך
6 לעלמין : ארום אנת יי שמעתא נדרי יהבתא
7 ירותא לדחלי שמך : יומין על יומי מלכא
משיחא תוסיף שנוי היך דרי עלמא הדין ודרי
8 עלמא דאתי : יתיב לעלמין קדם יי טיבו וקשוט
9 מן מרי עלמא ינטרון ליה : בכן אשבח שמך
לעלמיא כד אשלים נדרי ביום פורקנא
דישראל וביום דיתרבי מלכא משיחא למהוי
מליך :

סב

1 לשבחא על ידוי דידותון תשבחתא לדוד :
2 ברם לאלהא שתקא נפשי מניה פורקני : ברם
3 הוא תוקפי ופורקני משזבי לא אזוע ביום עקא
4 רבא : עד אן אתון מתרגשין על גבר חסיד
תתעבדון קטולין כולהון היך שור דסטי היך
5 גודא רעיעתא : ברם כד יומון לאוטבא
מתמלכין למנדח יחוון כדבובא בפומהון
6 יברכון ובלבהון ילטטון לעלמין : ברם לאלהא
7 שתוקי נפשי ארום מניה סברי : ברם הוא
תוקפי ופורקני משזבי לא אזדעזע :

PARAPH. CHALD. Verſ.

Conſilio Moabitarum intincti ſunt pe mei in Edom; fortes ejus ſicut olla lotio meæ, ſuper juncturam cervicis fortium maærorum projeci calceum meum: ob Pale nos jubila congregatio Iſrael. Quis deduc me ad civitatem deſtructam Tyri ? quis ducet me uſque ad Idumæam ? Nonne Domine dereliquiſti nos ? et non egredie Deus cum exercitibus noſtris ? Tribue bis auxilium propter hoſtem : fruſtrato enim eſt ſalus hominis. In verbo Dom edemus virtutem : et ipſe conculcabit o preſſores noſtros.

Ad laudandum pro hymnis, *Davidi.*

PSAL. LXI.

ACcipe Domine deprecationem mea intende orationi meæ. Ab extremis terræ conſpectu tuo orabo in anxietate cor mei; ſuper arcem munitam quæ conſtru eſt ſuper *rupem* altiorem me ipſo, de me. Quoniam factus es ſpes mea; ve fortitudinis à facie auctoris inimicitiæ. H bitabo in tabernaculo tuo in ſecula, co dam in umbra majeſtatis tuæ in ætern Quoniam tu Domine exaudiſti vota m dediſti hæreditatem timentibus nomen um. Dies ſuper dies regi Chriſto adde ni ejus ſicut generationes mundi hujus generationes mundi venturi. Sedebit culo coram *Domino* : bonitas & veri Domino mundi ſervabunt eum. Sic lau bo nomen tuum in æternum, cum perſo ro vota mea in die redemptionis Iſrael in die quo ungetur rex Chriſtus ut re

Ad laudandum per *manus* Idutu hymnus Davidi.

PSAL. LXII.

CErtè ſiluiſti Deo anima mea, a redemptio mea. Profectò ipſe eſt for do mea & redemptio mea, redempto us, non movebor in die ærumnæ magn quequò fremitis in virum miſericord cuncti evadetis homicidæ ſicut murus d nans, ſicut maceries rupta. Utique cùm mentum ſe bene facturos interpoſuer conſultant ut impellant : nuntiabunt m dacium, ore ſuo benedicent, at corde m dicent in æternum. Veruntamen Deo t anima mea, quoniam ab ipſo patientia Profectò ipſe eſt fortitudo mea, et re ptio mea, liberator meus, non commov

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

10 [illegible]
11 [illegible]
12 [illegible]
13 [illegible]
1 [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7
8 [illegible]
9 [illegible]
1 [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
2 [illegible]
3
4 [illegible]
[illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7
[illegible]

Et Moab lotio pedum meorum. Super A ſolvã calceamenta mea, & ſuper Pale vociferabo. Quis ducet me uſque in A & quis deducet me ad urbem munitam ecce tu Deus oblitus es noſtrî, & non eg ris inter exercitum noſtrum. Præbe auxilium contra hoſtes noſtros : quoni lax eſt ſalus hominus.

PSAL. LXI.

Davidis. Quum revelavit ei Jonatha filium Saulis machinantis interitum us. Spiritualiter autem innuit orat cum gratiarum actione. Verſ.16.

AUdi Deus, orationẽ meã, & auſcult ci meæ. A finibus terræ ad te clamo anxietate cordis mei: quia ſuper rupem xiſti me, & conſolatus es me. Quia fact mihi aſylum, & turris ſublimis à conſp inimicorum meorũ : Ut habitẽ in dom tuo in ſecula. * *Diapſalma* * Et prot umbrâ alarũ tuarũ : Quia tu Deus audi ta mea, & dediſti hæreditatẽ timentibus men tuũ. Adjeciſti dies diebus regis, & ejus in generationẽ generationũ, Ut pe in æternum coram Deo. Bonitatem & tatem quis ſervabit ? Sic pſallam nomi in ſeculũ ſeculorũ, perſoluturus vota per ſingulos dies.

PSAL. LXII.

Dictus ab Idithum pſalte. Fertur literalis eſſe quum luderent pueri Ab pueri David, ſeque trucidâſſent in occîdit enim quidam ex his qui ad Abn tinebant, fratrem minimum inter na riæ, fratrem ſcilicet *Joab. Atque hoc vit Joab ad longum tempus, & int Abnir gigantem tempore Saulis. Spir verò* ſenſus *indicat nobis nunc docum medens peccato, ſi pœnitentiâ & co utamur. Verſus* 21.

DEum expectat anima mea : nam ab ſalus mea, Ipſeque eſt Deus meus & vator meus, & refugiũ meũ magnũ ut meam. Quouſque concitamini adverſ rum, ut interficiatis velut paries incli & ſicut maceria depulſa ? Imò etiam nore ejus cogitaverunt eum deturbare cucurrerunt cum mendacio : ore ſuo be cunt, corde autẽ ſuo maledicunt. * Dia Deum expecta anima mea, quoniam a eſt ſalus mea. Ipſeque eſt Deus meus vator meus, & refugium meum ne tim

Verſio VULG. LAT.

10 Moab olla ſpei meæ. In Idumæam exten-
dam calceamentum meum : mihi alieni-
11 genæ ſubditi ſunt. Quis deducet me in
civitatem munitam ? quis deducet me
12 uſque in Idumæam ? Nonne tu, Deus,
qui repuliſti nos : & non egredieris, Deus,
13 in virtutibus noſtris ? Da nobis auxiliũ
de tribulatione : quia vana ſalus homi-
14 nis. In Deo faciemus virtutem : & ipſe
ad nihilum deducet tribulantes nos.

In finem,
1 In Hymnis David. LX.

2 Exaudi, Deus, deprecationem meã : in-
3 tende orationi meæ. A finibus terræ ad
te clamavi : dum anxiaretur cor meum, in
4 petra exaltâſti me. Deduxiſti me, Quia
factus es ſpes mea : turris fortitudinis à
5 facie inimici. Inhabitabo in tabernacu-
lo tuo in ſecula : protegar in velamento
6 alarum tuarum. Quoniam tu, Deus meus,
exaudiſti orationem meam : dediſti hære-
7 ditatẽ timentibus nomen tuũ. Dies ſu-
per dies regis adjicies : annos ejus uſq; in
8 diem generationis & generationis. Per-
manet in æternum in conſpectu Dei : mi-
ſericordiam & veritatem ejus quis re-
9 quiret ? Sic pſalmum dicam nomini tuo
in ſeculum ſeculi : ut reddam vota mea de
die in diem.

In finem,
1 Pro Idithun, Pſalmus David,
LXI.

2 Nonne Deo ſubjecta erit anima mea ?
3 ab ipſo enim ſalutare meum. Nam & i-
pſe Deus meus, & ſalutaris meus : ſuſce-
4 ptor meus, non movebor amplius. Quo-
uſque irruitis in hominẽ ? interficitis uni-
verſi vos : tanquã parieti inclinato et ma-
5 ceriæ depulſæ ? Veruntamen pretium me-
um cogitaverunt repellere, cucurri in ſi-
ti : ore ſuo benedicebant, & corde ſuo
6 maledicebant. Veruntamen Deo ſubje-
cta eſto anima mea : quoniam ab ipſo
7 patientia mea. Quia ipſe Deus meus,
& Salvator meus : adjutor meus, non e-
migrabo.

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

10 Μωὰβ λέβης τῆς ἐλπίδος μου, ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν ἐκ-
τενῶ τὸ ὑπόδημά μου, ἐμοὶ ἀλλόφυλοι ὑπετάγη-
11 σαν. Τίς ἀπάξει με εἰς πόλιν περιοχῆς; τίς ὁδη-
12 γήσει με ἕως τῆς Ἰδουμαίας; Οὐχὶ σὺ ὁ θεὸς ὁ
ἀπωσάμενος ἡμᾶς; καὶ οὐκ ἐξελεύσῃ ὁ θεὸς ἐν ταῖς
13 δυνάμεσιν ἡμῶν; Δὸς ἡμῖν βοήθειαν ἐκ θλίψε-
14 ως, καὶ ματαία σωτηρία ἀνθρώπου. Ἐν τῷ θεῷ
ποιήσομεν δύναμιν, καὶ αὐτὸς ἐξουδενώσει τοὺς θλί-
βοντας ἡμᾶς.

1 Εἰς τὸ τέλος, Ἐν ὕμνοις τῷ Δαυίδ.
ξʹ.

2 Εἰσάκουσον ὁ θεὸς τῆς δεήσεώς μου, πρόσχες
3 τῇ προσευχῇ μου. Ἀπὸ τῶν περάτων τῆς γῆς
πρὸς σὲ ἐκέκραξα, ἐν τῷ ἀκηδιάσαι τὴν καρδίαν
4 μου, ἐν πέτρᾳ ὕψωσάς με. ὡδήγησάς με, Ὅτι ἐ-
γενήθης ἐλπίς μου, πύργος ἰσχύος ἀπὸ προσώπου
5 ἐχθροῦ. Παροικήσω ἐν τῷ σκηνώματί σου εἰς τοὺς
αἰῶνας, σκεπασθήσομαι ἐν σκέπῃ τῶν πτερύγων
6 σου. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ὅτι σὺ ὁ θεὸς εἰσήκουσας τῶν
προσευχῶν μου, ἔδωκας κληρονομίαν τοῖς φοβου-
7 μένοις τὸ ὄνομά σου. Ἡμέρας ἐφ᾽ ἡμέρας βασιλέ-
ως προσθήσεις, τὰ ἔτη αὐτοῦ ἕως ἡμέρας γενεᾶς καὶ
8 γενεᾶς. Διαμενεῖ εἰς τὸν αἰῶνα ἐνώπιον τοῦ θεοῦ,
9 ἔλεος καὶ ἀλήθειαν αὐτοῦ τίς ἐκζητήσει αὐτῶν; Οὕ-
τως ψαλῶ τῷ ὀνόματί σου εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶ-
νος, τοῦ ἀποδοῦναί με τὰς εὐχάς μου ἡμέραν ἐξ
ἡμέρας.

1 Εἰς τὸ τέλος, Ὑπὲρ Ἰδιθοὺν ψαλμὸς τῷ Δαυ-
ίδ. ξαʹ.

2 Οὐχὶ τῷ θεῷ ὑποταγήσεται ἡ ψυχή μου;
3 παρ᾽ αὐτοῦ γὰρ τὸ σωτήριόν μου. Καὶ γὰρ αὐτὸς θε-
ός μου καὶ σωτήρ μου, ἀντιλήπτωρ μου, οὐ μὴ σα-
4 λευθῶ ἐπὶ πλεῖον. Ἕως πότε ἐπιτίθεσθε ἐπ᾽ ἄν-
θρωπον; φονεύετε πάντες ὡς τοίχῳ κεκλιμένῳ
5 καὶ φραγμῷ ὠσμένῳ. Πλὴν τὴν τιμήν μου ἐβου-
λεύσαντο ἀπώσασθαι. ἔδραμον ἐν δίψει. τῷ στό-
ματι αὐτῶν εὐλόγουν, καὶ τῇ καρδίᾳ αὐτῶν κατη-
6 ρῶντο. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Πλὴν τῷ θεῷ ὑποτάγη-
7 θι ἡ ψυχή μου, ὅτι παρ᾽ αὐτοῦ ἡ ὑπομονή μου. Ὅτι
αὐτὸς θεός μου καὶ σωτήρ μου, ἀντιλήπτωρ μου, οὐ
μὴ μεταναστεύσω.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

Moab[e] olla ſpei meæ. 9 In 10
Idumæam extendam calceamen-
tum meum : mihi alienigenæ ſub-
diti ſunt. 10 Quis deducet me 11
in civitatem (g) circumſtantiæ?
quis deducet me uſq; in Idumæ-
am? 11 Nonne tu, Deus, qui re- 12
puliſti nos, & non ingredieris, [f]
Deus, in virtutibus noſtris ? 12
Da nobis auxilium de tribulati- 13
one[g] : & (h) vana ſalus homi-
nis. 13 In Deo faciemus virtu- 14
tem : & ipſe[h] ad nihilum de-
ducet tribulantes nos.

In finem, In hymnis ipſi 1
David. LX.

1 Exaudi, [a] Deus, deprecati- 2
onem meam : intende orati-
oni meæ. 2 A finibus terræ ad 3
te clamavi : dum anxiaretur cor
meum ; in petra exaltâſti me : 3
Deduxiſti me, Quia factus es ſpes 4
mea ; turris fortitudinis à facie
inimici. 4 Inhabitabo in taber- 5
naculo tuo in ſecula : protegar in
velamine alarum tuarum. DIA-
PSALMA. 5 Quoniã tu, (a)[b] 6
Deus exaudiſti (b) orationes meas :
dediſti hæreditatem [c] timen-
tibus nomen tuum. 6 Dies ſuper 7
dies regis adjicias, annos ejus uſq;
in diem generationis, & genera-
tionis. 7 Permanebit in æternum 8
in conſpectu Dei : miſericordiam
& veritatem ejus quis requi-
ret eorũ? Sic 8 pſallã nomini tuo 9
in ſeculum ſeculi, ut [d] reddam
vota mea de die in diem. [e]

In (a) finem Pro Idithum, Pſalmus 1
ipſi David. LXI.

1 Nonne Deo ſubjecta erit a- 2
nima mea ? ab ipſo enim
ſalutare meum. 2 Nam & ipſe 3
Deus meus, & (b) Salvator meus :
ſuſceptor meus, non movebor am-
pliùs. 3 Quouſq; (c) appoñitis ſu- 4
per homine (d) (interficitis uni-
verſi :) tanquam parieti inclinato,
& maceriæ impulſæ ? 4 Verun- 5
tamen (e) honorem meum cogita-
verunt repellere. (f) Cucurri in
ſiti : ore ſuo benedicebant, &
corde ſuo maledicebant. DIA-
PSALMA. 5 Veruntamen Deo 6
ſubjecta eſto anima mea : quoniam
ab ipſo[a] patientia mea. 6 Quia ipſe Deus meus, & Salvator meus : [b] ſuſceptor meus, non migrabo. 7

Verſio ÆTHIOPICA.

ወሞአብ፡ ክህን፡ ተስፋየ።=÷ ዲበ፡ ሊደም 9
ያስ፡ እሰፍሕ፡ መካይድየ። ሊተ፡ ይገንዩ፡
ሊሎፍሊ።=÷ መኑ፡ ይወስደኒ፡ ሀገረ፡ ጥ 10
ቅም። ወመኑ፡ ይመርሐኒ፡ እስከ፡ ሊደም
ያስ።=÷ አኮኑ፡ አንተ፡ እግዚኦ፡ ዘገደፍ 11
ከነ።ወኢትወፅእ፡አምላክነ፡ምስለ፡ኃይል 12
ነ።=÷ ሀበነ፡ ረድኤተ፡ ለምንደቤነ።
ወከንቱ፡ ተአምኖ፡ በሰብእ።=÷ በእግዚ 13
አብሔር፡ ንገብር፡ ኃይለ። ወውእቱ፡ያኀስ
ሮሙ፡ለእለ፡ ይሰቅዩነ።

ፍጻሜ፡ማኅሌት፡ዘደዊት።

፷ ስምዓኒ፡ አምላኪየ፡ ስእለትየ። ወአ 1
ጽምአኒ፡ ጸሎትየ።=÷ እምአጽናፈ፡ ም 2
ድር፡ጸራኅኩ፡ ኀቤከ፡ ሶበ፡ቀብጸኒ፡ ልብየ።
ወእምአብን፡ አልዐልከኒ።=÷ ወመራሕከ 3
ኒ፡እስመ፡ ተስፋየ፡ ኮንከኒ። ማኅፈድ፡አን
ዕ፡ቅድመ፡ገጸ፡ጸላኢ።=÷ እነብር፡ቤትከ፡ 4
ለዓለም። ወእትከደን፡ በጽላሎተ፡ ክነፊ
ከ።=÷ እስመ፡አንተ፡ አምላኪየ፡ ሰማዕከ 5
ኒ፡ ጸሎትየ። ወወሀብኮሙ፡ ርስተ፡ለእለ፡
ይፈርሁከ።=÷ እምዕለት፡ዕለት፡ ይወስክ፡ 6
ንጉሠ፡ ዐመቲሁ። እስከ፡መዋዕለ፡ ትው
ልደ፡ ትውልድ።=÷ ወይነብር፡ ለዓለም፡ 7
ቅድመ፡እግዚአብሔር። መኑ፡ያኀሥሥ፡
ሣኅሎ፡ ወጽድቆ።=÷ ከመዝ፡ እዜምር፡ 8
ለስምከ፡ለዓለም።ከመ፡ተሀበኒ፡ተምኔትየ፡
ኵሎ፡አሚረ።
ሰብሐት፡ ለአብ፡ ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ቅዱስ፡
ይእዜኒ፡ወዘልፈኒ፡ወለዓለመ፡ዓለም፡
አሜን።

ፍጻሜ፡ ዘበእንተ፡ ሊደትም፡ መዝሙር፡
ዘደዊት።=÷

፷፩ አኮኑ፡ለእግዚአብሔር፡ትገኒ፡ነፍስየ። 1
እስመ፡ ኀቤሁ፡ መድኃኒትየ።=÷ እስመ፡ 2
ውእቱ፡ አምላኪየ፡ ወመድኃኒየ። ወውእ
ቱ፡ረዳኢየ፡ወኢይትሀወክ፡ለዝሉፉ።=÷ እ 3
ስከ፡ ማእዜኑ፡ትሠውሙ፡ ሳዕለ፡ ብእሲ።
ወትቀትልዎ፡ ኵልክሙ። ከመ፡አረፋት፡
ጽንፅንት፡ወከመ፡ጥቅም፡ንሑል።=÷ ወባ 4
ሕቱ፡ መክሩ፡ይስዐሩ፡ክብርየ። ወረጸኩ፡በ
ጽምእየ። በአፈሆሙ፡ይድኅሩ፡ወበልቦሙ፡
ይረግሙ።=÷ ወባሕቱ፡ለእግዚአብሔር፡ 5
ትገኒ፡ነፍስየ። እስመ፡ኀቤሁ፡ተስፋየ።=÷
እስመ፡ ውእቱ፡ አምላኪየ፡ ወመድኃኒየ። 6
ወረዳኢየ፡ውእቱ፡ኢይትሀወክ።=÷

INTERP. ÆTHIOP. [e] Sacerdos ſpei [f] Deus noſter, [g] noſtra : & vana eſt fiducia in homine. [h] confundet tribulantes nos. *PSAL. LX.* [a] Deus mi, [b] Deus meus, [c] timentibus te. [d] reddas mihi mercedem meam. [e] MS. Æthiop. Po. Gloria Patri & Filio & Spiritui Sancto : Eſt modò, ſemper erit, & in ſecula ſeculorum, Amen. *PSAL. LXI.* [a] expectatio mea. [b] et adjutor meus, non commovebor.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 11 * موآب قوة رجائي * على ادوم امدّ حذائي * لي خضعت القبايل الغريبة * من الذي يبلغني
12 الي مدينة حصينة * او من يرشدني الي ادوم * الست انت هو الله الذي اقصيتنا ولم تصاحب
13 14 يا الله جيوشنا * اعطنا عونا في شدايدنا * فان باطلا هو خلاص الانسان * بالهنا نصنع القوة
وهو يهين كل من يضايقنا * اللليلويا *

1 * المزمور الستون * لداود في التسابيح عن الانقضاء * وهو * كو * استيخن *
2 3 * اللهم استجب طلبتي * وانصت الي صلاتي * فاني من اقاصي الارض صرخت اليك * عند ما
4 5 حزن قلبي رفعتني على الصخرة * هديتني * وصرت لي رجاء * وبرجا قويا في وجه العدو * فاسكن
6 في مسكنك الي الابد * واستتر في ظلال كنفك * لانك انت اللهم استمعت صلاتي * اعطيت
7 8 خايفي اسمك ميراثا * زدت الملك على ايامه اياما * وسنيه الي ايام جيل وجيل * وتدوم امام
9 الله الي الابد * ورحمته وحقه من يبتغيهما * هكذا ارتل اسمك الي الابد * لكي اوفيك
نذوري يوما فيوما * اللليلويا * المزمور الحادي والستون *

1 * لداود على ايدادون * وهو * كا * استيخن *
2 3 * ان لله تخضع نفسي لان من عنده خلاصي * هو الهي ومخلصي وناصري * فلا ازول ابدا
4 5 * الي متى تزيدون وتميلون علي الانسان لتقتلوه كلكم مثل جدار مايل وسياج واقع * لانكم
6 تحبون ان تقصوه من نعمته * يباركون بافواههم * ويلعنون بقلوبهم * بل لله تخضع نفسي * لان
7 من عنده صبري * لانه الاهي ومخلصي وناصري فلا ازل *

Moab virtus ſpei meæ : ſuper Idumeam 10
extendam calceamentum meum, mihi ſub-
jecerunt ſe nationes alienigenæ. Quis eſt 11
qui me perducat in civitatem munitam ?
aut quis me dirigat ad Idumæam? Nonne 12
tu es Deus qui extermináſti nos, & non
comitatus es, O Deus, exercitus noſtros.
Da nobis auxilium in afflictionibus no- 13
ſtris, quia vana eſt ſalus hominis. In Deo 14
noſtro faciemus virtutem, & ipſe deprimet omnes qui vexant nos. Alleluja.

PSAL. LX.
Davidis. In laudationibus, de ul- 1
timo fine. Verſ. 26.

Deus, exaudi precem meam, & au- 2
ſculta orationem meam : Quoniam 3
à finibus terræ clamavi ad te quum mæ-
reret cor meum, exaltâſti me ſupra pe-
tram. Direxiſti me, Et factus es mihi 4
ſpes & turris munita in facie inimici.
Quapropter habitabo in habitaculo tuo in 5
æternum, & protegar ſub umbra tutelæ
tuæ. Quia tu Deus, audîſti orationem 6
meam : Dediſti timentibus nomen tuum
hæreditatem. Addidiſti regi ſuper dies e- 7
jus dies, & annos ejus in dies generatio-
nis & generationis, Et durabunt in con- 8
ſpectu Dei in æternum. Et miſericordiam
ejus, atque veritatem ipſius quis ſectetur?
Ita pſallam nomini tuo in æternum, ut 9
perſolvam tibi vota mea indies. Alleluja.

PSAL. LXI.
Davidis de Idithun. Verſ. 24. 1

Profectò Deo ſubjicietur anima mea, eò 2
quòd à conſpectu ejus ſalus mea. Ipſe 3
eſt Deus meus, & Salvator meus, & ad-
jutor meus, ideo non movebor unquam.
Quouſque tandem addetis, & irruetis in 4
hominem, ut occidatis eum vos omnes, tan-
quam in parietem inclinatum, & ſepem
labentem ? Quoniam vos vultis exter- 5
minare eum à gratia ſua. Benedicunt ori-
bus ſuis, et maledicunt cordibus ſuis ; Ve- 6
rùm Deo ſubjicietur anima mea, quia ab
ipſo patientia mea. Quia ipſe eſt Deus 7
meus & Salvator meus & adjutor me-
us, iccirco non nutabo.

תהלים׃ סג סד

mea ſpes ,meæ fortitudinis *rupes* :mea gloria & ,mea ſalus Deo *Super*
עַל־אֱלֹהִים יִשְׁעִי וּכְבוֹדִי צוּר־עֻזִּי מַחְסִי 8
:veſtrũ cor *ejus facies ad* effundite ,*populus* tempore omni in eo in Sperate .Deo in
בֵּאלֹהִים׃ בִּטְחוּ בוֹ בְכָל־עֵת ׀ עָם שִׁפְכוּ־לְפָנָיו לְבַבְכֶם 9
mendacium ,hominum filii vanitas Tantùm .Selah ,*nobis* ſpes Deus
אֱלֹהִים מַחֲסֶה־לָּנוּ סֶלָה׃ אַךְ ׀ הֶבֶל בְּנֵי־אָדָם כָּזָב 10
fidatis Ne .pariter vanitate *à ipſi* :*aſcendendo bilances in* ,viri filii
בְּנֵי אִישׁ בְּמֹאזְנַיִם לַעֲלוֹת הֵמָּה מֵהֶבֶל יָחַד׃ אַל־תִּבְטְחוּ 11
.cor ponatis ne ,*pullulaverit cum facultas* :evaneſcatis ne *rapina in &* ,*extorſione in*
בְעֹשֶׁק וּבְגָזֵל אַל־תֶּהְבָּלוּ חַיִל ׀ כִּי־יָנוּב אַל־תָּשִׁיתוּ לֵב׃
.Deo fortitudo quia ;audivi hoc bis ,Deus eſt locutus Semel
אַחַת ׀ דִּבֶּר אֱלֹהִים שְׁתַּיִם־זוּ שָׁמָעְתִּי כִּי עֹז לֵאלֹהִים׃ 12
.ſuũ opus ſecundùm *viro* reddes tu quia ;miſericordia Domine tibi Et
וּלְךָ־אֲדֹנָי חָסֶד כִּי־אַתָּה תְשַׁלֵּם לְאִישׁ כְּמַעֲשֵׂהוּ׃ 13

PSAL. LXIII. סג

meus Deus Deus .Jehudah deſerto in *ipſam exiſtendo in* ,David ipſi Cantus
מִזְמוֹר לְדָוִד בִּהְיוֹתוֹ בְּמִדְבַּר יְהוּדָה׃ אֱלֹהִים ׀ אֵלִי 1 2
,*tu* terra in :mea caro te *ad appetiit* ,mea anima te ſitivit ,te quæram diluculò
אַתָּה אֲשַׁחֲרֶךָּ צָמְאָה לְךָ ׀ נַפְשִׁי כָּמַהּ לְךָ בְשָׂרִי בְּאֶרֶץ־
videndum ad ;te vidi ſanctitate in Sic .*aquis* abſque *anhelante &* ,*ſiccitatis*
צִיָּה וְעָיֵף בְּלִי־מָיִם׃ כֵּן בַּקֹּדֶשׁ חֲזִיתִךָ לִרְאוֹת 3
;*vitis præ* tua miſericordia *bona* Quoniam .tuã gloriã & ,tuam fortitudinẽ
עֻזְּךָ וּכְבוֹדֶךָ׃ כִּי־טוֹב חַסְדְּךָ מֵחַיִּים 4
levabo tuo nomine in :*meis vitis* in tibi benedicam Sic .te *celebrabunt* mea labia
שְׂפָתַי יְשַׁבְּחוּנְךָ׃ כֵּן אֲבָרֶכְךָ בְחַיָּי בְּשִׁמְךָ אֶשָּׂא 5
labiis & :mea anima *ſaturabitur* pinguedine & ,adipe Sicut .meas *palmas*
כַפָּי׃ כְּמוֹ חֵלֶב וָדֶשֶׁן תִּשְׂבַּע נַפְשִׁי וְשִׂפְתֵי 6
cuſtodiis in :meis ſtratis *ſuper* tui ſum recordatus Si .meum os *laudabit præconiorum*
רְנָנוֹת יְהַלֶּל־פִּי׃ אִם־זְכַרְתִּיךָ עַל־יְצוּעָי בְּאַשְׁמֻרוֹת 7
.*dicam præconia* tuarũ alarũ umbra in & ;mihi auxilium fuiſti Quia .te *in* meditabor
אֶהְגֶּה־בָּךְ׃ כִּי־הָיִיתָ עֶזְרָתָה לִּי וּבְצֵל כְּנָפֶיךָ אֲרַנֵּן׃ 8
deſolationem ad ipſi Et .tua dextera *ſuffulcit* me *in* :*te poſt* mea anima Adhæſit
דָּבְקָה נַפְשִׁי אַחֲרֶיךָ בִּי תָּמְכָה יְמִינֶךָ׃ וְהֵמָּה לְשׁוֹאָה 9 10
eum facient Fundere .terræ inferiora *in* introibunt :meam animam quærent
יְבַקְשׁוּ נַפְשִׁי יָבֹאוּ ׀ בְּתַחְתִּיּוֹת הָאָרֶץ׃ יַגִּירֻהוּ 11
,Deo in lætabitur rex Et .erunt vulpium pars :*gladii manus ſuper*
עַל־יְדֵי־חָרֶב מְנָת שֻׁעָלִים יִהְיוּ׃ וְהַמֶּלֶךְ יִשְׂמַח בֵּאלֹהִים 12
.mendacium loquentium os obſtruetur quia :*eo in jurans* omnis laudabitur
יִתְהַלֵּל כָּל־הַנִּשְׁבָּע בּוֹ כִּי יִסָּכֵר פִּי דוֹבְרֵי־שָׁקֶר׃

PSAL. LXIV. סד

:*mea loquela* in meam vocem Deus Audi .David ipſi cantus Victori
לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ שְׁמַע־אֱלֹהִים קוֹלִי בְשִׂיחִי 1 2
.*meas vitas cuſtodies* inimici *pavore* à
מִפַּחַד אוֹיֵב תִּצֹּר חַיָּי׃

תרגום TARGUM.

על אלהא פורקני ויקרי תקוף עושני סברי 8
באלהא׃ סברו במימריה בכל עדן עמא דבית 9
ישראל שדו קדמוי וחוחי לבכון אמרו אלהא
סבר לנא לעלמין׃ ברם למא בני נשא כדיבא 10
בני גבר כד יסבון בני נשין במסחתא יתקלון
מולהון הנון גרמיהון מן למא הון כחדא׃
לא תכלון בטלימא ובאונסא לא תקבלון 11
ממונא ארום ישבח לא תשוון לבא׃ אוריתא 12
חדא ממלל אלהא ותרתין זמנין דנן שמעית
מן פום משה ספרא רבא ארום עושנא קדם
אלהא׃ ולך אלהא למעבד טיבו לצדיקיא 13
ארום את משלם לאנש היך עובדוי׃

סג

תושבחתא לדוד בעדן מהוי במדברא די 1
בתחום שבט יהודה׃ אלהא תוקפי אנת אקום 2
בצפרא קדמך צחית לך נפשי רגיג לך בסרי
בארעא צדיא ומשלהי מדלית מוי׃ היכנא 3
באתר קודשא חמיתך זכי יתי למחמי עושנך
ויקרך׃ ארום טב הוא חסדך דתעבד לצדיקיא 4
לעלמא דאתי מן חיי דיהבתא לרשיעיא
בעלמא הדין בגין כן ספותי ישבחונך׃ היכנא 5
אברכנך בחיי בעלמא הדין בשום מימרך
אפרוס ידי בצלו לעלמא דאתי׃ היך תרב ודהן 6
תסבע נפשי וספון דתושבחן ישבח פומי׃ אין 7
אדכרתיך על דרגשי במטרתא ארנן במימרך׃
ארום הויתא סעיד לי ובטלל שכנתך אבוע׃ 8
אדבקת נפשי בתר אוריתך בי סעדית ימינך׃ 9
והנון לקבורתא יתבעון נפשי יעלין בארעית 10
ארעא׃ ירחלוניה מטול מחת סיפא מוהבית 11
תעליא יהוון׃ ומלכא יחדי במימר אלהא 12
ישבח כל די מקים במימריה ארום יסרנק
פומהון כל דמללי שקרא׃

סד

לשבחא תושבחתא לדוד׃ שמע אלהא קלי 1
בעדן צלותי מדלוחא דבעל דבבי תנטור חיי׃ 2

PARAPH. CHALD. Verſ. La

In Deo redemptio mea, et gloria mea: r
bur fortitudinis meæ, ſpes mea in Deo. Sp
rate in verbo ejus omni tempore popule do
mus Iſrael: abjicite coram eo elationes co
dis veſtri, dicite, Deus eſt ſpes noſtra in æt
num. Quippe nihil hominum filii, mendac
um filii viri, ſi acceperint *filii hominum*
ſtateram, *ponderaverint* fata ſua, illi quidem
ipſamet vanitate erunt [*leviores.*] Ne con
fidatis in rapina, et violentia nolite div
tias accipere: cùm laudaverit vos [*aliqu*
ne apponatis cor. Legem unam locutus e
Deus, et *bis* iſtam audivimus *de ore Mo*
ſcribæ magni, quia virtus coram Deo eſt. E
te Deus decet miſericordiam facere juſti
quoniam tu reddes homini ſecundùm ope
ipſius.

Canticum Davidi quo tempore erat
deſerto in finibus tribus Jehudæ.

PSAL. LXIII.

DEus fortitudo mea tu es, ſummo ma
conſurgam coram te: ſitivit te anima mea
deſiderat te caro mea in terra arida, & de
feſſa ubi nullæ ſunt aquæ. Sic in loco ſan
tatis vidi te: purga me ut videam virtutem
tuam & gloriam tuam. Quoniam melior e
miſericordia tua quam facies juſtis in mu
do venturo, vita quam dediſti impiis
mundo iſto: propterea labia mea laudabu
te. Sic benedicam te in vita mea in mun
iſto, in nomine Verbi tui extendam man
meas in oratione in mundo venturo. Q
adipe et pinguedine ſaturabis animam m
am: & labiis laudatoriis laudabit os meu
Si recordatus fuero tui ſuper cubili meo
ter cuſtodias meditabor in verbo tuo. Q
niam fuiſti auxilium mihi, et in umbra m
jeſtatis tuæ exultabo. Adhæſit anima m
poſt *legẽ tuam*: *me* ſuſtentavit dextera
Ipſi verò in *ſepulchrum* inquirent anim
meam: intrabunt in interiora terræ.
mebunt eum propter percuſſionem gla
pars vulpium erunt. Et rex lætabitur
Verbo Dei: laudabit omnis qui jurav
in Verbo ejus, quoniam præfocabi
eorum *omnium* qui loquuntur mendaci

Ad laudandum hymnus Davidi.

PSAL. LXIV.

AUdi Deus vocem meam in tempore
tionis meæ: à terrore inimici mei cuſtod
tam meam.

Verſio *SYRIACA.* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܒܐܠܗܐ ܗܘ ܦܘܪܩܢܝ ܘܫܘܒܚܝ ܘܥܘܫܢܝ : ܘܡܥܕܪܢܝ ܘܣܒܪܝ ܐܠܗܐ ܗܘ. * ܣܒܪܘ ܒܗ 8
ܒܟܠ ܥܕܢ ܥܡܐ : ܐܫܘܕܘ ܩܕܡܘܗܝ ܠܒܘܬܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܥܘܕܪܢ ܕܝܠܢ : 9
* ܕܝܦܣܠܡܐ * * ܘܐܝܟ ܗܠܐ ܐܢܘܢ ܟܠܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ ܕܓܠܐ. ܕܒܡܣܐܬܐ ܡܥܠܒܝܢ ܘܣܪܝܩܝܢ 10
ܐܟܚܕܐ : * ܠܐ ܬܬܟܠܘܢ ܥܠ ܥܘܠܐ. ܘܥܠ ܚܛܘܦܝܐ ܠܐ ܬܪܓܪܓܘܢ : ܥܘܬܪܐ ܟܕ ܢܣܓܐ ܠܐ ܬܚܕܐ 11
ܒܗ ܠܒܘܬܟܘܢ. * ܚܕܐ ܗܝ ܕܡܠܠ ܐܠܗܐ : ܘܬܪܬܝܢ ܗܠܝܢ ܫܡܥܬ. ܡܛܠ ܕܥܘܫܢܐ 12
ܕܐܠܗܐ ܗܘ : * ܘܠܟ ܡܪܝܐ ܛܝܒܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܦܪܥ ܐܢܬ ܠܓܒܪܐ ܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ. 13
* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * * ܠܦܘܫܩܐ. ܟܕ ܐܡܪ ܠܡܘܐܒ. ܥܡܪ ܐܒܝ 1
ܘܐܡܝ ܥܡܟܘܢ ܟܕ ܥܪܩܘ ܡܢ ܩܕܡ ܫܐܘܠ. ܘܐܦ ܐܢܐ ܥܪܩܬ ܠܘܬܟ. ܗܫܐ ܕܝܢ ܡܬܡܣܟܐ
ܬܘܕܝܬܐ ܕܓܒܪܐ ܓܡܝܪܐ ܥܡ ܐܠܗܐ ܒܪܘܚ. ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܟܦܢܝܢ ܘܨܗܝܢ ܠܟܐܢܘܬܐ
ܘܫܪܟܐ. ܦܣܘܩܐ ܟܗ. * ܐܠܗܝ ܐܠܗܝ ܐܢܬ ܘܠܟ ܡܩܕܡ ܐܢܐ. ܨܗܝܐ ܠܟ ܢܦܫܝ ܘܡܣܬܟܝܐ 2
ܠܟ ܒܣܪܝ : * ܐܝܟ ܐܪܥܐ ܨܗܝܬܐ ܘܡܫܠܗܝܬܐ ܕܠܝܬ ܒܗ̇ ܡܝܐ. ܗܟܢܐ ܣܟܝܬܟ ܒܩܘܕܫܐ : ܕܐܚܙܐ 3
ܬܫܒܘܚܬܟ ܘܐܝܩܪܟ. * ܡܛܠ ܕܛܒܝܢ ܚܢܢܝܟ ܡܢ ܚܝܐ : ܘܣܦܘܬܝ ܢܫܒܚܢܟ. * ܗܟܢܐ 4 5
ܐܒܪܟܟ ܒܚܝܝ : ܘܒܫܡܟ ܐܪܝܡ ܐܝܕܝ. * ܐܝܟ ܕܡܢ ܬܪܒܐ ܘܡܢ ܫܘܡܢܐ ܬܣܒܥ ܢܦܫܝ : ܘܒܣܦܘܬܐ 6
ܕܬܫܒܘܚܬܐ ܢܫܒܚܟ ܦܘܡܝ. * ܐܬܕܟܪܬܟ ܥܠ ܡܫܟܒܝ : ܘܒܠܠܝܐ ܬܢܝܬ ܒܟ. * ܡܛܠ ܕ 7 8
ܗܘܝܬ ܠܝ ܡܥܕܪܢܐ : ܘܒܛܠܠܐ ܕܓܦܝܟ ܐܫܬܘܙܒ. * ܢܩܦܬ ܢܦܫܝ ܒܬܪܟ : ܘܠܝ ܣܡܟܬܢܝ 9
ܝܡܝܢܟ. * ܗܢܘܢ ܕܒܥܘ ܠܡܘܒܕܘ ܢܦܫܝ : ܢܥܠܘܢ ܠܬܚܬܝܬܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܢܫܬܠܡܘܢ 10 11
ܠܚܪܒܐ ܘܡܢܬܐ ܠܬܥܠܐ ܢܗܘܘܢ : * ܘܡܠܟܐ ܢܚܕܐ ܒܐܠܗܐ. ܘܢܫܬܒܗܪ ܟܠ ܕܝܡܐ 12
ܒܗ : ܡܛܠ ܕܢܣܟܪ ܦܘܡܗܘܢ ܕܡܡܠܠܝ ܫܘܩܪܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * * ܐܡܝܪ ܠܕܘܝܕ 1
ܟܕ ܐܙܗܪܗ ܓܕ ܢܒܝܐ ܕܠܐ ܬܬܒ ܒܡܕܒܪܐ : ܕܫܐܘܠ ܒܥܐ ܠܡܩܛܠܟ. ܘܒܪܘܚ ܙܟܘܬܐ ܕܐܓܘܢܐ
ܕܐܬܠܝܛܘܬܐ. ܘܡܠܦܢܘܬܐ ܕܕܚܠܝ ܠܐܠܗܐ ܘܕܚܠܬܐ ܒܡܪܕܐ. ܦܣܘܩܐ ܟܕ.
* ܫܡܥ ܐܠܗܐ ܩܠܝ ܟܕ ܐܬܟܫܦ ܠܟ : ܘܡܢ ܕܚܠܬܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝ ܢܛܪܝܗ̇ ܠܢܦܫܝ. 2

* In Deo eſt ſalus mea & gloria mea; fort
mea, & auxiliator meus atque ſpes mea D
eſt. Sperate in illum omni horâ popu
effundite corã eo cor veſtrũ : quia Deu
protectio noſtra : * *Diapſal.* * Et qua
por ſunt omnes filii hominũ, mendaces
in bilance opprimunt, & vani ſunt ſimul
fidatis oppreſſioni, & rapinã ne dilig
opibus, quum abundaverint, ne gaude
veſtrum. Semel dixit Deˀ, & bis hæc au
Quia robur Dei eſt, Et tibi Dñe gratia
tu rependis viro juxta opera ſua.

PSAL. LXIII.

Davidis. Ad literam, Quum dix Moab; Moratus eſt pater meus & m mea apud vos quando fugerunt à con Saulis: & ego pariter confugi ad te. autem modò præſumitur gratiarum act ri perfecti apud Deum in ſpiritu. Bea entes juſtitiam, &c. Verſ.25.

DEus mi, Deˀ meus es tu, præſtolabor
ſitiens eſt tui anima mea, teque exp
caro mea. Sicut terra ſitibunda & con
ta expetens aquam, Ita expectavi te cu
ritate; ut viderẽ magnificentiã tuã, &
ſtatẽ tuã. Quoniã meliores ſunt miſer
diæ tuæ vitâ : & labia mea laudabunt te
riter benedicã te in vita mea, & in no
tuo levabo manˀ meas. Sicut adeps &
pinguedo pingueſcat anima mea, & la
laudis glorificabit te os meum. Memo
tui ſuper ſtratum meũ : & in noctibˀ me
tus ſum de te. Quoniã fuiſti mihi adj
& umbrâ alarum tuarũ protegar. Egreſ
anima mea poſt te, & mihi innixa eſt de
tua. Ipſi voluerunt perdere animã me
ingrediantur in infima terræ : Trad
gladio, & eſca vulpibus fiant. Rex læt
in Deo, & gloriabitur omnis qui jura
ipſum: nam obſtruetur os mendacium.

PSAL. LXIV.

Editus à Davide, quum admon Gad propheta dicens, Ne maneas in quoniam Saul quærit necem tuam. N ro ſpiritualiter, triumphus agoniſ & inſtructio timentium Deum, atq ria in certamine. Verſ. 24.

AUdi Deus vocem meã quum ſuppl
tibi, & à metu hoſtiũ meorum ſer

Versio VULG. LAT.

8 In Deo salutare meum, & gloria mea :
Deus auxilii mei, & spes mea in Deo est.
9 Sperate in eo omnis congregatio populi, effundite coram illo corda vestra : Deus adjutor noster in æternum.
10 Veruntamen vani filii hominum, mendaces filii hominum in stateris : ut decipiant ipsi de vanitate in idipsum. Nolite sperare in iniquitate, & rapinas
11 nolite concupiscere : divitiæ si affluant,
12 nolite cor apponere. Semel locutus est
Deus, duo hæc audivi, Quia potestas
13 Dei est, Et tibi, Domine, misericordia :
quia tu reddes unicuique juxta opera
sua.

1 Psalmus David,
Cùm esset in deserto Idumææ.
(1 Reg. 22. 5.) LXII.

2 Deus Deus meus, ad te de luce vigilo. Sitivit in te anima mea, quàm multi-
3 pliciter tibi caro mea. In terra deserta,
& invia, & inaquosa : sic in Sancto apparui tibi, ut viderem virtutem tuam, & gloriam tuam. Quoniam
4 melior est misericordia tua super vitas : labia mea laudabunt te. Sic be-
5 nedicam te in vita mea : & in nomine
6 tuo levabo manus meas. Sicut adipe &
pinguedine repleatur anima mea : &
labiis exultationis laudabit os meum.
7 Si memor fui tuî super stratum meum,
8 in matutinis meditabor in te : Quia fuisti
adjutor meus. Et in velamento alarum
9 tuarum exultabo, Adhæsit anima mea
10 post te : me suscepit dextera tua. Ipsi
verò in vanum quæsierunt animã meam,
11 introibunt in inferiora terræ : Tradentur in manus gladii, partes vulpiũ erunt.
12 Rex verò lætabitur in Deo, laudabuntur
omnes qui jurant in eo : quia obstructum
est os loquentium iniqua.

1 In finem,
Psalmus David. LXIII.

2 Exaudi, Deus, orationem meam cùm
deprecor : à timore inimici eripe animam
meam.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

8 Ἐπὶ τῷ θεῷ τὸ σωτήριόν μου, καὶ ἡ δόξα μου. ὁ
θεὸς τῆς βοηθείας μου, καὶ ἡ ἐλπίς μου ἐπὶ τῷ θεῷ.
9 Ἐλπίσατε ἐπ' αὐτὸν πᾶσα συναγωγὴ λαοῦ· ἐκχέετε ἐνώπιον αὐτοῦ τὰς καρδίας ὑμῶν, ὅτι ὁ θεὸς
10 βοηθὸς ἡμῶν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Πλὴν μάταιοι οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων, ψευδεῖς οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων ἐν
ζυγοῖς τοῦ ἀδικῆσαι, αὐτοὶ ἐκ ματαιότητος ἐπὶ τὸ
11 αὐτό. Μὴ ἐλπίζετε ἐπ' ἀδικίαν, καὶ ἐπὶ ἁρπάγματα μὴ ἐπιποθεῖτε· πλοῦτος ἐὰν ῥέῃ, μὴ προστίθεσθε
12 καρδίαν. Ἅπαξ ἐλάλησεν ὁ θεός, δύο ταῦτα
13 ἤκουσα, Ὅτι τὸ κράτος τοῦ θεοῦ, Καὶ σοῦ κύριε
τὸ ἔλεος, ὅτι σὺ ἀποδώσεις ἑκάστῳ κατὰ τὰ ἔργα
αὐτοῦ.

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυὶδ, ἐν τῷ εἶναι αὐτὸν ἐν τῇ ἐρήμῳ
τῆς Ἰδουμαίας. ξβʹ.

2 Ὁ Θεὸς ὁ θεός μου πρὸς σὲ ὀρθρίζω, ἐδίψη-
3 σέ σοι ἡ ψυχή μου, ποσαπλῶς σοι ἡ σάρξ μου, Ἐν
γῇ ἐρήμῳ καὶ ἀβάτῳ καὶ ἀνύδρῳ, οὕτως ἐν τῷ ἁγίῳ
ὤφθην σοι, τοῦ ἰδεῖν τὴν δύναμίν σου καὶ τὴν δόξαν
4 σου. Ὅτι κρεῖσσον τὸ ἔλεός σου ὑπὲρ ζωάς, τὰ
5 χείλη μου ἐπαινέσουσί σε. Οὕτως εὐλογήσω σε ἐν
τῇ ζωῇ μου, ἐν τῷ ὀνόματί σου ἀρῶ τὰς χεῖράς
6 μου. Ὡσεὶ στέατος καὶ πιότητος ἐμπλησθείη ἡ ψυ-
χή μου, καὶ χείλη ἀγαλλιάσεως αἰνέσει τὸ ὄνομά σου.
7 Εἰ ἐμνημόνευόν σου ἐπὶ τῆς στρωμνῆς μου, ἐν τοῖς
8 ὄρθροις ἐμελέτων εἰς σέ. Ὅτι ἐγενήθης βοηθός
μου, καὶ ἐν τῇ σκέπῃ τῶν πτερύγων σου ἀγαλλιάσομαι.
9 Ἐκολλήθη ἡ ψυχή μου ὀπίσω σου, ἐμοῦ ἀντε-
10 λάβετο ἡ δεξιά σου. Αὐτοὶ δὲ εἰς μάτην ἐζήτησαν
τὴν ψυχήν μου, εἰσελεύσονται εἰς τὰ κατώτατα τῆς
11 γῆς, Παραδοθήσονται εἰς χεῖρας ῥομφαίας, μερίδες
12 ἀλωπέκων ἔσονται. Ὁ δὲ βασιλεὺς εὐφρανθήσεται
ἐπὶ τῷ θεῷ, ἐπαινεθήσεται πᾶς ὁ ὀμνύων ἐν αὐτῷ,
ὅτι ἐνεφράγη στόμα λαλούντων ἄδικα.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ.
ξγʹ.

2 Εἰσάκουσον ὁ θεὸς τῆς προσευχῆς μου ἐν τῷ δέεσθαί με πρὸς σέ, ἀπὸ φόβου ἐχθροῦ ἐξελοῦ τὴν ψυχήν μου.

Vers. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Transl. LAT.

7 In Deo salutare meum, & [c] 8
gloria mea. Deus auxilii mei, &
spes mea [d] in Deo est. 8 Sperate 9
in eo omnis congregatio (g) populi; effundite coram illo corda
vestra: quia Deus adjutor (h)
noster. DIAPSALMA. 9 (i) Veruntamen [e] vani filii hominũ, 10
mendaces filii hominum [f] in
stateris : ut (k) decipiant (l) ipsi
de vanitate in idipsum. Nolite 11
sperare super iniquitatẽ, 10 &
(m) super rapinas nolite [g] concupiscere: divitiæ si affluant, [h]
nolite cor apponere. 11 Semel 12
locutus est Deus: [i] duo hæc audivi, Quia potestas Dei est, Et 13
(n) tua, Domine, misericordia : quia tu reddes unicuique secundum opera sua.

Psalmus ipsi David, cùm esset in 1
deserto Idumææ. LXII.

1 [a] Deus, Deus meus, ad te 2
de luce vigilo. 2 Sitivit (a) tibi
anima mea, (b) quàm multipliciter tibi (c) caro mea, 3 In terra 3
deserta, [b] & invia, & inaquosa, sic in Sancto apparui tibi ; ut
viderem virtutem tuam, & gloriam tuam. 4 Quoniam melior 4
est misericordia tua super vitas :
labia mea laudabunt te. 5 Sic be- 5
nedicam te in vita mea: in nomine tuo levabo manus meas.
6 (d) Sicut adipe, & pinguedine 6
repleatur anima mea. (e) Et [c] labia exultationis laudabunt nomẽ
tuum. 7 Si (f) memoratus sum 7
tuî super stratum meum, in matutinis meditabor in te; Quia fu- 8
isti adjutor meus: 8 & in [d] velamento alarum tuarum exultabo. Adhæsit anima mea post te : 9
me suscepit dextera tua. 9 Ipsi 10
verò in vanum quæsierunt animam meam: introibunt in inferiora terræ: Tradentur in manus gladii: partes 11
vulpium [c] erunt. 10 Rex verò lætabitur in Deo: [f] laudabitur omnis qui jurat in eo: 12
quia obstructum est os loquentium iniqua.

In finem, psalmus ipsi David. 1
LXIII.

1 Exaudi, Deus, (a) orationem 2
meam, [a] cùm (b) deprecor ad
te: à timore inimici eripe animã
meam.

Versio ÆTHIOPICA.

በእግዚአብሔር ፡ መድኀኒትየ ፡፡ ወበእግዚ 7
አብሔር ፡ ክብርየ ፡፡ አምላክ ፡ ረድኤትየ ፡
ወተስፋየ ፡ እግዚአብሔር ፡፡=፡ ተወከሉ ፡ 8
ቦቱ ፡ ኵልክሙ ፡ ማኅበረ ፡ አሕዛብ ፡፡ ወክዐ
ው ፡ ልበክሙ ፡ ቅድሜሁ ፡፡ ወእግዚአብሔ
ር ፡ ውእቱ ፡ ረድኤትነ ፡፡=፡ ወባሕቱ ፡ ከንቱ ፡ 9
ኵሉ ፡ ደቂቀ ፡ እጓለ ፡ እመሕያው ፡፡ ሐሳውያ
ን ፡ ደቂቀ ፡ እጓለ ፡ እመሕያው ፡ ወይዔምፁ ፡
መያልወ ፡፡ እሙንቱሰ ፡ ለከንቱ ፡ ውስተ ፡ ከን
ቱ ፡ ክመ ፡፡ ክመ ፡ ወኢትሰፈውዋ ፡ ለዐመፃ ፡፡=፡
ወኢትትአመንዎ ፡ ለሀይድ ፡፡ ብዕል ፡ ለእመ ፡ 10
በዝኀ ፡ ኢታዕብዩ ፡ ልበክሙ ፡፡=፡ ምዕረ ፡ 11
ነበበ ፡ እግዚአብሔር ፡ ወዘንተ ፡ ክመ ፡ ሰማዕ
ኩ ፡፡ እስመ ፡ ዘእግዚአብሔር ፡ ሠህል ፡፡
ወዚአከ ፡ እግዚኦ ፡ ኀይል ፡፡ ለከመ ፡ አንተ ፡
ትፈድዮ ፡ ለኵሉ ፡ በከመ ፡ ምግባሩ ፡፡=፡
መዝሙር ፡ ዘደዊት ፡ አመ ፡ ሀሎ ፡ ውስተ ፡
ገዳም ፡ ሊደሚያስ ፡፡

ጀፀ አምላኪየ ፡ አምላኪየ ፡ እገይሥ ፡ ኀቤ 1
ከ ፡፡=፡ ጸምአት ፡ ነፍስየ ፡ ለከ ፡፡ እፎ ፡ 2
እስፈሕ ፡ ለከ ፡ ሥጋየ ፡፡=፡ በምድረ ፡ በድ 3
ው ፡ ኀበ ፡ አልቦ ፡ ዕፀ ፡ ወማይ ፡፡ ከመዝ ፡ በመ
ቅደስከ ፡ አስተርአይኩከ ፡፡ ከመ ፡ አአምር ፡
ኀይለከ ፡ ወስብሐቲከ ፡፡=፡ እስመ ፡ ይኄይስ ፡ 4
እምሐይው ፡ ሣህልከ ፡፡ ከናፍርየ ፡ ይሴብሑ
ከ ፡፡=፡ ከመዝ ፡ ለባርከከ ፡ በሕይወትየ ፡፡ 5
ወበስመ ፡ ዚአከ ፡ አነሥእ ፡ እደዊየ ፡፡=፡
ከመዝ ፡ እምስቡሕ ፡ ወእምእንጕዕ ፡ ጸግበ 6
ት ፡ ነፍስየ ፡፡ ከናፍሪየ ፡ ፍሡሐት ፡ ይሴብሐ ፡
ለስምከ ፡፡=፡ ወበመስከቢየኒ ፡ እዜከረከ ፡፡ 7
በጽባሕ ፡ አነብብ ፡ ለከ ፡ እስመ ፡ ኮንከኒ ፡ ረደ
ኢየ ፡፡=፡ ወአትዌከል ፡ በጽላሎተ ፡ ክነፊ 8
ከ ፡፡ ተለወት ፡ ነፍስየ ፡ ድኅሬከ ፡፡ ሊተሰ ፡
ተወክፈተኒ ፡ የማንከ ፡፡=፡ እሙንቱሰ ፡ ለከ 9
ንቱ ፡ ኀሠሠዋ ፡ ለነፍስየ ፡፡ ለይበኡ ፡ ውስተ ፡
ማዕመቅቲሃ ፡ ለምድር ፡፡ ወይግብኡ ፡ ውስተ ፡
እደ ፡ ሰይፍ ፡፡ ክፋለ ፡ ቈናጽል ፡ ለይኩኑ ፡፡=፡
ወንጉሥሰ ፡ ይትፌሣሕ ፡ በእግዚአብሔር ፡፡ 10
ወይከብር ፡ ኵሉ ፡ ዘይምሕል ፡ ኪያሁ ፡፡ እስ
መ ፡ ይትፈጸም ፡ አፍ ፡ ዘይነብብ ፡ ዐመፃ ፡፡

ፍጻሜ ፡ መዝሙር ፡ ዘደዊት ፡፡

ጀር ስምዓኒ ፡ እግዚኦ ፡ ጸሎትየ ፡ ዘሰአልኩ ፡ 1
ኀቤከ ፡፡ እምትሕዝብተ ፡ ጸላኢ ፡ አድኅና ፡
ለነፍስየ ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] in Deo gloria mea. [d] Deus est. [e] vani omnes [f] & iniquè agit omnis homini placens. Ipsi de vanitate in vanitatem simul. [g] confidere: [h] ne intumescat cor vestrum. [i] & istud simul audivi: quia misericordia Dei est, & tua Domine potentia: PSAL. LXII. Deus meus, Deus meus, [b] ubi nec arbor est nec aqua, [c] labia mea [d] umbra alarum tuarum confidam. [e] sint. [f] benedicet omnis qui PSAL. [a] quam à te postulo:

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

8 9 * خلاصي ومجدي هما بالإله * الله معيني وعلي الله توكلت * توكلوا عليه يا جميع الشعوب * ابتهلوا
10 اليه بقلوبكم فانه اله عونكم * جميع بني البشر كالفي يذهبون * والذين يبخسون بالموازين *
11 كاذبون * وهم باجمعهم خائنون * لا تعتمدوا علي الظلم * ولا تحبوا الخطف * ولا تفرح قلوبكم
12 13 بما تدخرونه * مرة تكلم الله هولاء سمعناهن مرتين * ان العز لله * ولك يا رب الرحمة * وانت
المجازي كل واحد واحد كعمله * الليلويا *

1 * المزمور الثاني والستون * لداود حين كان في برية ادوم * وهو استيكن ك *
2 * اللهم يا الهي اليك ابتكرت * لان نفسي ظمئت اليك * وترجاك جسدي في ارض مقفر *
3 4 وموضع غير مسلوك ومكان عدم الماء * هكذا ظهرت لك في القدس * لاري قوتك ومجدك * لان
5 رحمتك مختارة افضل من الحياة * شفتاي يباركانك * وهكذا اباركك في حياتي * وباسمك ارفع
6 7 يدي * وتشبع نفسي مثل شحم ودسم * شفاه التهليل تبارك اسمك * كنت اذكرك علي
8 9 فراشي * وفي اوقات الاسحار انت فكري * لانك كنت لي معينا * وبظلال كنفك ابتهج * تبعت
10 11 نفسي اثارك * وعضدتني يمينك * هم طلبوا نفسي باطلا * فيهبطون الي اسافل الارض * والي يد
12 السيف يسلمون * وللثعالب طعاما يكونون * والملك يفرح بالله * ويفتخر كل من يحلف به *
لانه سد فم المتكلمين بالظلم * الليلويا *

1 * المزمور الثالث والستون * لداود لما طارده طالوت * وهو كط استيكن *
2 * اللهم تقبل صلاتي اذا طلبت اليك * [illegible] ع العدو انقذ نفسي *

Salus mea & gloria mea sunt in Deo : 8
Deus est adjutor meus, & Deo sum fretus. Confidite in eo, O omnes populi, sup- 9
plicate eum cordibus vestris: quia ipse est
Deus adjutorii vestri. Omnes filii hominum velut umbra prætereunt : & qui 10
fœdant in stateris, mendaces sunt, &
ipsi omnes deceptores sunt. Ne innitamini flagitio, neque diligatis rapinam, & 11
ne gaudeant corda vestra in eo quod thesaurizatis. Semel locutus est Deus, hæc 12
audivimus bis ; Quòd magnificentia Dei 13
est, & tibi O Domine, misericordia : &
tu es retributurus unicuique secundùm
opus ejus. Alleluja.

PSAL. LXII.

Davidis, quum esset in deserto Edom. Vers. 20. 1

Deus, O Deus meus, ad te anteverti 2
manè, quia anima mea sitivit te, téque
speravit corpus meum in terra deserta & 3
loco invio locoque carente aquâ : Sic apparui tibi in sanctuario, ut viderem po- 4
tentiam tuam, & gloriam tuam. Quoniã misericordia tua eligibilior est vitâ,
labia mea te benedicent, Atque ita benedi- 5
cam te in vita mea, & in nomine tuo levabo manus meas. Et saturabitur anima 6
mea quasi adipe & pinguedine: labia exultationis benedicent nomen tuum. Recor- 7
dabar tui super strato meo, & temporibus
matutinis tu es cogitatio mea: Quia fuisti 8
mihi adjutor, & in umbra protectionis
tuæ exhilarabor. Secuta est anima 9
mea vestigia tua, & amplexata est me
dextera tua, Ipsi postulaverunt animam 10
meam iniquè, idcirco ruent in ima terræ,
Et in manum gladii tradentur, & vulpi- 11
bus esca fient. At rex lætabitur in Deo, 12
& gloriabitur omnis qui jurat in eo :
quoniam ipse obturavit os loquentium
scelus. Alleluja.

PSAL. LXIII.

Davidis, quando persecutus est 1
eum Saul. Vers. 29.

Deus, accepta orationem meam cùm 2
supplicavero tibi, & à timore inimici redime animam meam :

תהלים : סה

.iniquitatem operantium tumultu à :malignorum ſecreto à me Abſcondes
תסתירני מסוד מרעים מרגשת פעלי און : 3
.amarum verbum ſuã ſagittam tetenderunt : ſuâ linguâ gladium ut acuerunt Qui
אשר שננו כחרב לשונם דרכו חצם דבר מר : 4
.timebunt non & ,eũ ſagittabunt ſubitò : perfectum abſconditis in ſagittandum Ad
לירות במסתרים תם פתאם ירהו ולא ייראו : 5
, dixerunt : laqueos abdendum ad narrabunt : nequam verbum ſibiipſis Roborabunt
יחזקו־למו ׀ דבר רע יספרו לטמון מוקשים אמרו 6
: perveſtigatum ſcrutiniũ perfecerunt , iniquitates Inveſtigabunt ? eos videbit Quis
מי יראה־למו : יחפשו־עולת תמנו חפש מחפש 7
: ſubitò ſagitta Deus eos ſagittavit Et .profundum cor & , viri intimũ &
וקרב איש ולב עמק : וירם אלהים חץ פתאם 8
: ſuâ linguam ſemetipſis in eam facient impingere Et .eorum percuſſiones fuerunt
היו מכותם : ויכשילהו עלימו לשונם 9
annunciaverunt & ,homines omnes timuerunt Et .eos in videns omnis ſe amovebunt
יתנודדו כל־ראה בם : וייראו כל־אדם ויגידו 10
ſperabit & ,Domino in juſtus Lætabitur .intellexerunt ejus opus & : Dei opus
פעל אלהים ומעשהו השכילו : ישמח צדיק ביהוה וחסה 11
.corde recti omnes gloriabuntur & : eo in
בו ויתהללו כל־ישרי־לב :

PSAL. LXV. סה

Deus laus ſilentium Tibi .canticum , David ipſi cantus Victori
1 למנצח מזמור לדוד שיר : לך דמיה תהלה ׀ אלהים 2
.venient caro omnis te ad uſque ; orationẽ Audiens .votum reddetur tibi & ;Sijon in
בציון ולך ישלם־נדר : שמע תפלה עדיך כל־בשר יבאו : 3
.eis propitiaberis tu noſtris prævaricationibus : mihi prævaluerunt iniquitatum Verba
דברי עונת גברו מני פשעינו אתה תכפרם : 4
bono in ſaturabimur , tu atria habitabit ,facies appropinquare & ,eliges Felicitates
אשרי ׀ תבחר ותקרב ישכן חצריך נשבעה בטוב 5
Deus nobis reſpondebis juſtitia in Terribilia .tui templi ſancti ; tuæ domus
ביתך קדש היכלך : נוראות ׀ בצדק תעננו אלהי 6
Firmans .longinquorum maris & , terræ finium omnium ſpes : noſtræ ſalutis
ישענו מבטח כל־קצוי־ארץ וים רחקים : מכין ׀ 7
ſonitum Compeſcens .fortitudine in accinctus : ſua potentia in montes
הרים בכחו נאזר בגבורה : משביח ׀ שאון 8
timuerunt Et .gentium turbam & , eorum fluctuum ſonitum , marium
ימים שאון גליהם והמון לאמים : וייראו 9
Viſitâſti .facies laudare veſperæ & auroræ exitus : tuis ſignis à finium habitatores
ישבי קצות מאותתיך מוצאי בקר וערב תרנין : פקדת 10
: aquis plenus Dei rivus ;eam ditabis plurimũ ,ei intuliſti deſiderium & ,terram
הארץ ותשקקה רבת תעשרנה פלג אלהים מלא מים
fac deſcendere ,inebria ejus Liras .eam parabis ſic quia ,eorũ frumentũ parabis
תכין דגנם כי־כן תכינה : תלמיה רוה נחת 11
.benedices ejus germini ,eam liquefacies imbribus in : ejus ſulcos
גדודיה ברביבים תמגגנה צמחה ׀ תברך :

תרגום TARGUM.

3 תטמרנני מרזהון דמבאשין מאתרגושת עבדי
4 שקר : די שנינו היך סיפא לישנהון נגדו
קשתהון משחו גרריהון סמא דקטול ומריר :
5 לגראה בטומריא דלא מום בתכף יגרון ליה
6 ולא ידחלון : יתקפון להון פתגם ביש ישתעון
7 למכמן תקלין אמרין מן חמי להון : יבלשון
למשכח עילין לשיצאה זכאין בלושא
דמתבלש בגוף בר נשא והרהורי לבא עמיקא :
8 ויגרי עלויהון אלהא גררא בתכף ויתנון על
9 מחתיהון : ויתקלון להון לישנהון יטלטלון
10 כל דחמי בהון : וידחלון כל בני נשא ויחוון
עובדא דיי אלהים ועובדיה יהוון מתבינין :
11 יחדי צדיקא ביי ויתרחץ במימריה וישתבחון
כל תריצי לבא :

סה

1 לשבחא תושבחתא לדוד שירתא : קדמך 2
מתחשבא היך שתיקותא תושבחתא אלהא
3 די שכנתיה בציון ולך ישתלמון נדריא : מקבל
4 צלותא לותך כל בני בסרא ייתון : פתגמי עוין
5 תקפו מני סורחננא אנת תכפרנון : טובוי
דתבחר ותקרב ישרי דרתך יימרון צדיקי
6 נשבע בטוב ביתך קודשא דהיכלך : דחילן
בצדקתא תקבל צלותהון אלהא פורקנא
סברא דכל סיפי ארעא ונגוות ימא דרחיקין
7 מן יבשתא : דאתקן מזוניא ליעלי טוריא בכח
8 גבורתיה מזרז קמור בגבורתא : ממאך רגוש
9 ימיא ורגוש גליהון ורכפת אומיא : ודחילו יתבי
סיפין מאתיותך מפקני צפר ורמש תסדר
10 בפומהון שבחא : אדכרתא ארעא ואשקיתה
סוגי עללתא תעתרנה מן קובתא דאלהא די
בשמיא מליא מטרא תתקין עבורהון ארום
11 היכנא תשכללנה : מרביני צמחהא רוי אשדך
גיסהא צמחהא תברך :

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Abſcondes me à ſecretis pravorum, à fre
tu operantium iniquitatem. Qui exacu
runt ſicut gladium linguas ſuas; tetenderu
arcus ſuos, unxerunt ſagittas ſuas vene
mortifero et amaro. Ut ſagittarent occu
immaculatum : ſubitò ſagittabunt eum; &
non timebunt. Roborabunt ſibi verbum i
iquum, narrabunt, ut abſcondant laqueo
dicentes niminem eos videre. Perveſtiga
bunt, ut inveniant iniquitates ad diſperde
dum juſtos, machinationem, quæ exquiritu
intra hominem, et cogitationes cordis pro
fundi. Et excutiet in eos Deus ſagittam
repentè, et *narrabunt* plagas eorum. Et of
fendent ſeipſos lingua ſua, & movebu
[*capita ſua*] quicunque conſpexerint eos
Et timebunt omnes filii hominum, et annu
ciabunt opus *Domini* Dei, et opera ejus in
telligent. Lætabitur juſtus in Domino, &
ſperabit in verbo ejus, & laudabunt
omnes recti corde.

Ad laudandum, hymnus Davidis & canticum.

PSAL. LXV.

COram te reputatur ſicut ſilentium lau
Deus cujus Majeſtas [*reſidet*] in Sion ; &
tibi reddentur vota. Receptor orationis a
te omnes filii carnis venient. Verba iniqu
tatũ potentiora me fuerunt: peccata noſt
tu expiabis. Beatus *quem elegeris & ſuſc*
peris, habitabit in atriis tuis: dicentque ju
Saturabimur bonitate domus tuæ, ſanctita
templi tui. Timenda in juſtitia ; *exaud*
orationem *illorũ* Deus redemptio [*noſtra*
ſpes omnium finium terræ, et inſularum m
ris, quæ diſtant ab arida. Qui præparat c
baria ibicibus montium, in virtute fortit
dinis ſuæ : accingens ſe cingulo in robo
Compeſcens ſonitum marium, ſonitum u
darum ejus, & tumultum gentium. Et tim
bunt incolæ finium à ſignis tuis : et ordi
bis laudem in ore egreſſionum matutini
veſperæ. Recordatus es terræ, et potum
diſti ei ; ubertate fructuum ditabis eam,
fonticulo Dei, qui eſt in cœlis, qui ple
eſt imbribus, præparabis ſegetes eorum, c
ſic eam fundaveris. S*ulcos germinum* e
inebria, compeſcas cohortes ejus, germ
ejus benedicas.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 [illegible] 4
5 [illegible] 6
[illegible]
[illegible] 7
8 [illegible]
9 [illegible]
10 [illegible]
11 [illegible]
[illegible]

Protege me à ſcelere maligni, & à conv
tione operantium iniquitatem, Qui acue 3
linguam ſuam ut gladium & ſermonem ſu 4
ut ſagittam, Ad jaculandum in abſcon
innocentem ; ex improviſo jaculabuntu
eum & non videbuntur. Et magnifica 5
ſermonem ſuum peſſimum, & cogitâru
abſcondendis laqueis, ac dixerunt, Quis 6
det nos ? Meditati ſunt ſceleſti, atque 7
ſumpti ſunt in perſcrutanda iniquitate ex
timis hominis & è corde ipſius profu 8
Exaltabitur Deus & jaciet in eos ſagit
repentè. Et infirmabuntur linguæ eo 9
Et timebunt omnes qui videbunt illos. 10
metuent cuncti homines, patefacientque
pera Dei, & opus manuum ejus intuebu
Exultabunt juſti in Domino, & confide 11
eo, & laudabunt eum omnes recti corde.

1 [illegible]
[illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
[illegible]
6 [illegible]
7 [illegible]
8 [illegible]
9 [illegible]
10 [illegible]
[illegible]
11 [illegible]
[illegible]

PSAL. LXV.

Davidis. Ad literam, Quùm aſſump 1
cam Dei ad Sion. Et nobis proinde
tualis ſenſus *innuit in eo prædicatio*
poſtolorum, qui reduxerunt Gentes p 2
nuntiationem Evangelii. Verſ. 3. 3
TE decet laus Deus in Sion, tibique 4
ſolvitur votum. Audi orationem me
ad te omnis caro veniet. Verba iniquo 5
prævaluerunt mihi, & peccata mea tu ex
bis. Beatus is qui placet tibi, & que
provehis, ut habitet in atrio tuo, atque ſa
tur bonis domûs tuæ, & ſanctitate te 6
tui, Ac juſtitiâ tuâ terribili. Exaudi
Deus Servator noſter, ſpes omnium fi 7
terræ & gentium remotarum : Qui fir 8
montes virtute tuâ, & corroboras p
tentiâ tuâ. Qui ſedas undas marium 9
ſonitum fluctuum eorum. Turbabuntur p
puli, Et timebunt habitatores terræ 10
tua & exitus matutini ac veſperæ. Cum
ria Recordatus es terræ, pacâſti eam 11
abundantiâ ditâſti illam : rivi Dei pleni
aquis. Parâſti cibum illorum, quando
ſti eam, Arva ejus inebriâſti, ut educ
tur fructus ejus : pluviis nutrietur g
illius, ac benedicetur.

Verſio VULG. LAT.

3 Protexiſti me à conventu malignantiũ, à
4 multitudine operantiũ iniquitatẽ. Quia
exacuerunt ut gladium linguas ſuas: in-
tenderunt arcum rem amaram, ut ſagit-
5 tent in occultis immaculatum. Subitò
ſagittabunt eum, & non timebunt: fir-
6 maverunt ſibi ſermonem nequã. Narra-
verunt ut abſconderent laqueos: dixe-
7 runt, Quis videbit eos? Scrutati ſunt
iniquitates: defecerunt ſcrutantes ſcru-
8 tinio. Accedet homo ad cor altũ: Et ex-
altabitur Deus. Sagittæ parvulorũ factæ
9 ſunt plagæ eorũ: Et infirmatæ ſunt cõtra
eos linguæ eorũ. Conturbati ſunt omnes
10 qui videbãt eos: Et timuit omnis homo.
Et annuntiaverunt opera Dei: & facta
11 ejus intellexerunt. Lætabitur juſtus in
Domino, & ſperabit in eo, & lauda-
buntur omnes recti corde.

In finem, Pſalmus David,
1 Canticum Ieremiæ & Ezechielis populo
tranſmigrationis, cùm inciperent
exire.

LXIV.

2 TE decet hymnus, Deus, in Sion: &
3 tibi reddetur votũ in Jeruſalẽ. Exaudi
orationẽ meã: ad te omnis caro veniet.
4 Verba iniquorũ prævaluerunt ſup nos:
& impietatibus noſtris tu propitiabe-
5 ris. Beatus, quem elegiſti, & aſſumpſiſti:
inhabitabit in atriis tuis. Replebimur
in bonis dom° tuæ: ſanctum eſt templũ
6 tuũ, Mirabile in æquitate. Exaudi nos,
Deus ſalutaris noſter, ſpes omniũ finiũ
7 terræ, & in mari longè. Præparans mon-
tes in virtute tua, accinctus potentiâ:
8 Qui conturbas profundum maris, ſonum
9 fluctuum ejus. Turbabuntur gentes, Et
timebunt qui habitant terminos à ſignis
tuis: exitus matutini & veſpere de-
10 lectabis. Viſitâſti terram & inebriâſti
eam: multiplicâſti locupletare eam.
Flumen Dei repletum eſt aquis, parâſti
cibum illorum: quoniam ita eſt præ-
11 paratio ejus. Rivos ejus inebria, mul-
tiplica genimina ejus: in ſtillicidiis ejus
lætabitur germinans.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

3 Ἐσκέπασάς με ἀπὸ συστροφῆς πονηρευομένων, ἀπὸ
4 πλήθους ἐργαζομένων ἀδικίαν· Οἵτινες ἠκόνησαν
ὡς ῥομφαίαν τὰς γλώσσας αὐτῶν, ἐνέτειναν τόξον
πρᾶγμα πικρὸν, τοῦ κατατοξεῦσαι ἐν ἀποκρύφοις
5 ἄμωμον, Ἐξάπινα κατατοξεύσουσιν αὐτὸν, καὶ οὐ φο-
βηθήσονται. ἐκραταίωσαν ἑαυτοῖς λόγον πονηρὸν,
6 Διηγήσαντο τοῦ κρύψαι παγίδας εἶπαν, Τίς ὄψεται
7 αὐτούς; Ἐξηρεύνησαν ἀνομίαν, ἐξέλιπον ἐξε-
ρευνῶντες ἐξερευνήσει. προσελεύσεται ἄνθρωπος,
8 καὶ καρδία βαθεῖα, Καὶ ὑψωθήσεται ὁ θεός. βέλος
9 νηπίων ἐγενήθησαν αἱ πληγαὶ αὐτῶν, Καὶ ἐξουθέ-
νησαν αὐτὸν αἱ γλῶσσαι αὐτῶν. ἐταράχθησαν πάν-
10 τες οἱ θεωροῦντες αὐτοὺς, Καὶ ἐφοβήθη πᾶς ἄν-
θρωπος· καὶ ἀνήγγειλαν τὰ ἔργα τοῦ θεοῦ, καὶ τὰ
11 ποιήματα αὐτοῦ συνῆκαν. Εὐφρανθήσεται δίκαιος
ἐν τῷ κυρίῳ, καὶ ἐλπιεῖ ἐπ' αὐτόν· καὶ ἐπαινεθή-
σονται πάντες οἱ εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, ᾠδή.
ξδ'.

2 Σοὶ πρέπει ὕμνος ὁ θεὸς ἐν Σιὼν, καὶ σοὶ ἀπο-
3 δοθήσεται εὐχή. Εἰσάκουσον προσευχῆς μου, πρὸς
4 σὲ πᾶσα σὰρξ ἥξει. Λόγοι ἀνόμων ὑπερεδυνάμω-
5 σαν ἡμᾶς, καὶ τὰς ἀσεβείας ἡμῶν σὺ ἱλάσῃ. Μακά-
ριος, ὃν ἐξελέξω καὶ προσελάβου, κατασκηνώσει
ἐν ταῖς αὐλαῖς σου. πλησθησόμεθα ἐν τοῖς ἀγαθοῖς τοῦ
6 οἴκου σου, ἅγιος ὁ ναός σου, Θαυμαστὸς ἐν δικαιο-
σύνῃ. ἐπάκουσον ἡμῶν ὁ θεὸς ὁ σωτὴρ ἡμῶν, ἡ ἐλ-
πὶς πάντων τῶν περάτων τῆς γῆς, καὶ τῶν ἐν θα-
7 λάσσῃ μακράν· Ἑτοιμάζων ὄρη ἐν τῇ ἰσχύϊ σου,
8 περιεζωσμένος ἐν δυναστείᾳ· Ὁ συνταράσσων τὸ
κύτος τῆς θαλάσσης, ἤχους κυμάτων αὐτῆς. τα-
9 ραχθήσονται τὰ ἔθνη, Καὶ φοβηθήσονται οἱ κατοικοῦν-
τες τὰ πέρατα ἀπὸ τῶν σημείων σου. ἐξόδους πρωΐ-
10 ας καὶ ἑσπέρας τέρψεις. Ἐπεσκέψω τὴν γῆν καὶ ἐ-
μέθυσας αὐτὴν, ἐπλήθυνας τοῦ πλουτίσαι αὐτήν.
ὁ ποταμὸς τοῦ θεοῦ ἐπληρώθη ὑδάτων. ἡτοίμασας
11 τὴν τροφὴν αὐτῶν, ὅτι οὕτως ἡ ἑτοιμασία. Τοὺς αὔ-
λακας αὐτῆς μέθυσον, πλήθυνον τὰ γεννήματα
αὐτῆς, ἐν ταῖς σταγόσιν αὐτῆς εὐφρανθήσεται
ἀνατέλλουσα.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

2 (c) [b] *Protexiſti me à* (d) 3
conventu malignantiũ, à multitudine operantium iniquitatem.
3 *Qui exacuerunt* [c] *ut gladi-* 4
um linguas ſuas: intenderunt arcum rem (e) *amaram, ut* [d]
ſagittent in (f) *occultis immaculatum.* 4 *Subitò ſagittabunt e-* 5
um, & non timebunt: firmaverunt ſibi ſermonem (g) *mali-*
gnum. 5 *Narraverunt, ut abſcon-* 6
derent laqueos: dixerũt, [e] *Quis*
videbit eos? 6 *Perſcrutati ſunt* 7
iniquitatem: defecerunt (h) *ſcrutantes* [f] *ſcrutinio.* 7 *Accedet*
(i) *homo,* [g] *& cor altum, Et* 8
exaltabitur Deus. 8 *Sagittæ infantiũ factæ ſunt plagæ eorũ,* Et 9
[h] *pro* (k) *nihilo habuerunt eum*
linguæ eorum. 9 *Conturbati ſunt*
omnes qui videbant eos. Et ti- 10
muit omnis homo. 10 *Et annuntiaverunt opera Dei; & facta ejus intellexerunt.*
11 *Lætabitur juſtus in Domino, & ſperabit in eo: &* [i] *laudabuntur omnes recti* 11
corde.

In finem, [a] Pſalmus ipſi David, 1
(a) Canticum. *LXIV.*

1 *TE decet hymn°, De°, in* (b) 2
Siõ: et tibi redditu (c) *votũ* [b].
2 [c] *Exaudi orationem meã: ad* 3
te omnis caro veniet: 3 *Verba* (d) 4
impiorũ prævaluerũt ſuper nos;
(e) *&* [d] *impietates noſtras tu*
propitiabis. 4 *Beatus quem elegi-* 5
ſti, & aſſumpſiſti: [e] *inhabita-*
bit in atriis tuis. 5 *Replebimur in*
bonis domûs tuæ: ſanctum eſt
templum tuum, Mirabile in 6
juſtitia. 6 *Exaudi nos,* [f] *De-*
us Salvator noſter, ſpes o-
mnium finium terræ, & [g] *in*
mari longè. 7 (f) [h] *Præparans* 7
montes in fortitudine tua, (g) [i]
circumcinctus in potentatu. Qui 8
(h) [k] *conturbas* (i) *fundum*
maris, (k) *ſonos fluctuum ejus.*
8 *Turbabuntur gentes, Et time-* 9
bunt, qui inhabitant fines, à ſi-
gnis tuis. [l] *Exitus matutini &*
veſperæ delectabis: 9 *Viſitâſti* 10
terram, & inebriâſti eam: (l)
multiplicâſti locupletare eam. 10
Flumen Dei repletum eſt aquis:
(m) *parâſti cibum illorum; quoniam ita* [m] *eſt* (n) *præparatio.* 11 *Rivos ejus* [n] *inebria,* 11
multiplica genimina ejus: in ſtillicidiis ejus lætabitur germinans.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወሰወረኒ : እማዕሌቶሙ : ለእኩያን :: ወ 2
እምብዝኆሙ:ለገበርተ:ዐመፃ::=፡ እለ: 3
አብልሑ: ልሳኖሙ: ከመ: አርዌ: ምድር::
ወወሰቁ:ቀስቶሙ:ለገቢረ:መሪር:: ከመ:ይ
ቅትልዎ:ለንጹሕ:በጽሚሚት::=፡ ግብተ: 4
ይነድፍዎሙ : ወኢይፈርሁ:: ወአጽንዑ:
ሎሙ:ነገረ: እኩየ::=፡ ወተማከሩ : ይሳ 5
ብሉ:ሎሙ:መሠገርተ:: ወይቤሉ:አልቦ:
ዘይሬእየነ::=፡ ወኀሠሠዋ : ለዐመፃ:: 6
ወኀልቁ: እንዘ:ይፈትኑ: ወይወጥኑ::=፡ወይ 7
በውእ:ሰብእ:በልብ:ዕሙቅ::ወይትሌዐል:እ
ግዚአብሔር::=፡ ከመ:ሕጻን:ይቂቅ:ኮነ: 8
መቅሠፍቶሙ:: ወደክመ : ልሳኖሙ : በሰዕ
ሊሆሙ::=፡ ወደንገፁ:ኵሎሙ:እለ:ርእይ 9
ዎሙ::ወፈርሀ:ኵሉ:ሰብእ::=፡ ወነገሩ: 10
ግብረ: እግዚአብሔር:: ወአእመሩ: መግበ
ሮ::=፡ ይትፌሣሕ:ጻድቅ:በእግዚአብሔ 11
ር:: ወይትዌከሉ:ቦቱ:: ወይከብሩ: ኵሎ
ሙ:ርቱዓነ: ልብ::

ፍጻሜ:መዝሙር:ዘደዊት::

፷፬ ለከ:ይደሉ: እግዚኦ: ስብሐት: በጽዮ 1
ን:: ወለከ: ይትፌነው: ጸሎት:በኢየሩሳሌ
ም::=፡ ስማዕ:ጸሎተ:ኵሉ:ዘሥጋ: ዘም 2
ጽአ:ኀቤከ::=፡ ነገረ:ዐመፂያን:ኀየለነ:: 3
ወኀጢአትነሰ: አንተ: ትሰሪ:ለነ::=፡ ብፁ 4
ዕ: ዘኀረይኮ: ወዘተወከፍኮ:: ወዘአኅደር
ኮ:ውስተ : አዕጻዲከ::=፡ ጸገብነ:እምበ 5
ረከተ:ቤትከ:: ቅዱስ:ጽርሕከ: ወመንክር:
በጽድቅ::=፡ስምዓነ:አምላክነ:ወመድኅኒ 6
ነ:: ተስፈሆሙ: ለኵሎሙ: አጽናፈ: ምድ
ር:: ወለእለሂ: ውስተ:ባሕር:ርሑቅ::=፡
አጽናዕኮሙ : ለአድባር: በኀይልከ:: ወቅኑ 7
ታን: እሙንቱ : በኀይል:: ዘየሀውኮ: ለእን
በረ:ባሕር:: ወመኑ : ይትቃወሞ:ለድምፀ:
ማዕበሉ::=፡ ይደነግፁ: አሕዛብ : ወይፈር 8
ሁ:: እለ: ይነብሩ: ውስተ:አጽናፍ: እምተ
አምሪከ:: ይወፅኡ:በጽባሕ:ወ ሰርክ:ይትፌ
ሣሑ::=፡ ኀወጽከ : ለምድር : ወአርወ 9
ይከ:: ወአብዝኃከ : ለብዕላ::=፡ ፈለገ: 10
እግዚአብሔር: ምሉእ: ማያት:: ወአስተ
ደሎከ: ሲሳዮሙ:እስመ: ከማሁ : ታስተደ
ሉ::=፡ አርዊዮ : ለትለሚሃ:: ወአስም 11
ሮ:ለማእረራ:: ወበነጠብጣብከ:ትበቍል:
ተፌሣሕ::=፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] Et protege me à die malignantium, [c] ſicut aſpis [d] interficiant [e] Non eſt qui videbit nos. [f] & quærentes. [g] cum corde profundo, Et [h] infirmatæ ſunt contra eos linguæ [i] glorificabunt *PSAL. LXIV.* [a] Pſalm° David. Te [b] in Hieruſalem. [c] Exaudi orationẽ: omnis qui caro eſt, qui ad te veniet: [d] *quantũ* ad peccata noſtra tu nobis propiti° eris. [e] & quem inhabitare feciſti in [f] De° noſter & Salvator [g] eorũ quidẽ qui in [h] Stabiliens montes [i] & accinct° etiã ille [k] conturbat alveũ maris, & quis reſiſtet ſonitui fluctuũ ej°? [l] Exeunt in matutino, & veſperè delectantur: [m] eã præparabis. [n] inebriant, & gratã reddit meſſem ej°: & in ſtillicidiis tuis germinans lætabitur.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 4 * ومن غل الأشرار استرني * ومن كثرة عاملي الظلم * هؤلاء الذين أرهفوا مثل السيف
5 ألسنتهم * وأوتروا قسيهم عملا مرا * ليرشقوا بالسهام خفية السليمين من العيب * يرشقوهم بغتة
6 7 ولا يخافون * ثبتوا لهم كلمة شر * تواطؤوا على إخفاء فخاخا * وقالوا من الذي يرانا * فحصوا عن
8 الإثم فبادوا وهم فاحصون فحصا * لأن الإنسان يتقدم بقلب عميق * فيتعالى الله * وتصير جراحهم
9 10 من سهام صغار الصبيان * وضعفت ألسنتهم عليهم فاضطرب جميع من يراهم * وجزع كل
11 إنسان * وأظهروا أعمال الله * وفهموا صنايعه * يفرح الصديق بالرب ويتوكل عليه * ويفتخر كل
المستقيمين بقلوبهم * الليلويا * المزمور الرابع والستون *
1 * لداود في جلا الشعب * وهو ل * استيخن *
2 3 * لك يا الله ينبغي التسبيح في صهيون * ولك توفى النذور في اورشليم * اسمع اللهم صلاتي
4 5 فإليك يأتي كل البشر * أقوال الظالمين قويت علينا * وأنت تغفر ذنوبنا * طوبى لمن اخترته
وقبلته فيسكن في ديارك إلى الأبد * سيشبع من خيرات بيتك * هيكلك مقدس وعجيب جدا
6 7 * استجب لنا يا الله وخلصنا يا رجاء أقطار الأرض والبحار البعيدة * المتقن الجبال بقوته
8 9 وجبروته يقرها * الذي يقلق سعة البحر * وعجيج أمواجه من يحتمله * يضطرب الأمم ويخا
10 سكان أقطار الأرض من آياتك * ومن خروج الليل والنهار * تعاهدت الأرض فأرويتها * بالكثر
11 أغنيتها * لأن أنهار الله مملوءة من المياه * أعددت طعامهم * لأن هذا هو استعدادهم * فلترو
أتلامها * ولتكثر أثمارها * وبقطرها تفرح فتنبت *

Et ab invidia malorum protege me, & à 3
multitudine operantium ſcelus, Horum 4
qui exacuerunt ut gladium linguas ſu-
as, tetenderunt arcus ſuos, opus amarum:
ut jacularentur ſagittas clanculùm in li- 5
beros à vitio. Jaculantur in eos ex im-
proviſo, & non timent. Statuerunt ſibi 6
verbum nequitiæ, incurvaverunt ſe ad
abſcondendos laqueos, & dixerunt, Quis
eſt qui videt nos? Inveſtigaverunt ſce- 7
lus, & perierunt dum inveſtigarent in-
veſtigationem; Nam homo accedet cum
corde profundo, Et exaltabitur Deus: 8
ſientque vulnera eorum à ſagittis mini-
morum inter pueros, Et infirmatæ ſunt 9
linguæ eorum contra ipſos; qua de re
conturbati ſunt omnes qui viderant eos:
Et extimuit quilibet homo, & patefece- 10
runt opera Dei, & perceperunt artes
ejus. Lætabitur juſtus in Domino, & 11
gloriabuntur omnes qui recti ſunt in cor-
dibus ſuis. Alleluja.

PSAL. LXIV.

Davidis, de tranſmigratione po- 1
puli. Verſ. 30.

TIbi Deus, convenit laus in Sion, & 2
tibi ſolvemus vota in Jeruſalem.
Audi Deus orationem meam; ad te enim 3
venient omnes homines. Sermones ſcelera- 4
torum invaluerunt adversùm nos, & tu
remittes delicta noſtra. Beatitudo ei quem 5
elegiſti, & ſuſcepiſti: nam habitabit in
atriis tuis in ſeculum, ſatiabitur bonis do-
mûs tuæ. Templum tuum ſanctum eſt &
admirandum verè. Exaudi nos, O Deus, 6
& ſalva nos, O ſpes finium terræ & ma-
rium remotiſſimorum. Condens montes 7
virtute ſuâ, & potentiâ ſuâ ſtabi-
liens eos. Qui agitat amplitudinem 8
maris, & ſonitum fluctuum ejus quis fe-
rat? Turbabuntur gentes, & timebunt 9
incolæ finium terræ à ſignis tuis, & ab
exitu noctis & diei. Viſitâſti terram, & 10
irrigâſti eam, abundantiâ ditâſti eam:
quoniam flumina Dei plena ſunt aquis.
Parâſti cibũ illorum, quoniam hujuſmodi
eſt præparatio eorum. Itaque irrigen- 11
tur ſulci ejus, & multiplicentur fructus
ejus: & ſtillis ſuis fruatur, ac germinet.

תהלים : כו

paſcua Stillabunt .pinguedinem ſtillabunt tuæ orbitæ & : tuo bono annum Coronaſti
12 עטרת שנת טובתך ומעגליך ירעפון דשן : ירעפו נאות 13
, pecore campi ſe Induerunt .ſe accingent colles exultatione & : deſerti
מדבר וגיל גבעות תחגרנה : לבשו כרים הצאן 14
.canent etiam ,clamabunt : frumento ſe operuerunt valles &
ועמקים יעטפו בר יתרועעו אף ישירו :

PSAL. LXVI. סו

gloriam Cantate .terra omnis Deo Jubilate .cantus canticum Victori
1 למנצח שיר מזמור הריעו לאלהים כל הארץ : זמרו כבוד 2
Quàm : Deo Dicite .ejus laudem ,gloriam ponite : ejus nominis
שמו שימו כבוד תהלתו : אמרו לאלהים מה 3
Omnis .tui inimici te in mentientur tuæ fortitudinis multitudine in,tuis operibus terribilis
נורא מעשיך ברב עזך יכחשו לך איביך : כל 4
videte & , Ite .Selah ,tuo nomini canent : tibi canent & ,tibi ſe incurvabunt terra
הארץ ישתחוו לך ויזמרו לך יזמרו שמך סלה : לכו וראו 5
mare Convertit .hominum filios ſuper opere terribilis : Dei opera
מפעלות אלהים נורא עלילה על בני אדם : הפך ים 6
Dominans .ipſo in lætabimur ibi : pede in tranſierunt flumine in : aridam in
ליבשה בנהר יעברו ברגל שם נשמחה בו : משל 7
elevent ne rebelles : ſpeculabuntur gentes in ejus oculi ,ſeculo ſua fortitudine in
בגבורתו עולם עיניו בגוים תצפינה הסוררים אל ירימו
vocem facite audire & : noſtro Domino populi Benedicite .Selah , ſeipſos
למו סלה : ברכו עמים אלהינו והשמיעו קול 8
mutandum ad dedit non & : vitam in noſtram animam Ponens .ejus laudis
תהלתו : השם נפשנו בחיים ולא נתן למוט 9
.argentum excoquere ſecundũ nos excoxiſti : Deus nos probaſti Quoniam .noſtrũ pedem
רגלנו . כי בחנתנו אלהים צרפתנו כצרף כסף : 10
feciſti Equitare .noſtris lumbis in coarctationem poſuiſti : rete in nos Introduxiſti
11 הבאתנו במצודה שמת מועקה במתנינו : הרכבת 12
nos eduxiſti & : aquas in & ,ignem in ſumus ingreſſi ; noſtrum caput in hominem
אנוש לראשנו באנו באש ובמים ותוציאנו
.mea vota tibi reddam : aſcenſionibus in tuam domum Ingrediar .irriguum ad
לרויה : אבוא ביתך בעולות אשלם לך נדרי : 13
Aſcenſiones .mihi anguſtia in meũ os eſt locutũ & : mea labia aperuerunt Quæ
14 אשר פצו שפתי ודבר פי בצר לי : עלות
15 cum bovem faciam : arietum ſuffitu cum tibi aſcendere faciam medullatorum
מחים אעלה לך עם קטרת אילים אעשה בקר עם
fecit quæ , Deum timentes omnes narrabo & ,audite , Ite .Selah , hircis
16 עתודים סלה : לכו שמעו ואספרה כל יראי אלהים אשר עשה
.mea lingua ſub eſt exaltatus & : clamavi meo ore ipſum Ad .meæ animæ
17 לנפשי : אליו פי קראתי ורומם תחת לשוני :
exaudivit Verè .Dominus exaudiet non ,meo corde in vidi ſi Iniquitatem
18 און אם ראיתי בלבי לא ישמע אדני : אכן שמע
19 non qui , Deus Benedictus .meæ orationis voce in attendit : Deus
20 אלהים הקשיב בקול תפלתי : ברוך אלהים אשר לא
.me à ſuam miſericordiam & , meam orationem removit
הסיר תפלתי וחסדו מאתי :

תרגום TARGUM.

12 אכללתא שנת טוב ברכתך וכבשי אורחך
13 יבסמון דיהנא : יבסמון תושבחת מדברא ודיצא
14 גלמתא תקמרן להון : יעלון דכריא עלוי ענא
ומישריא יתחפין עבורא יתיבבון ברם ישבחון :

סו

1 לשבחא שירא תושבחתא יביבו קדם יי כל
2 יתבי ארעא : שבחו איקר שמיה שוו איקר
3 תושבחתיה : אמרו קדם אלהא מה דחילין
הנון עובדך בסגיעי עושנך יכדבון לך בעלי
4 דבבך : כל יתבי ארעא יסגדון קדמך וישבחון
5 לך ישבחון שמך לעלמין : אזילו וחמון עובדי
6 אלהא דחיל מרי תסקופין על בני נשא : הפך
ימא דסוף ליבשתא בנהר יורדנא עברו בני
ישראל ברגליהון אוביל יתהון לטור קודשיה
7 תמן נחדי במימריה : דשליט בכח גבורתיה
על עלמא עינוי בעממיא מסתכלין מסרהבין
8 לא יתרמון להון לעלמין : בריכו עממיא אלהים
9 ואשמיעו קל תושבחתיה : דמני נפשנא בחיי
דעלמא דאתי ולא מסר לאודעזעא רגלנא :
10 ארום בחנתנא אלהא אתכתנא היך קנאה
11 דמתך סימא : אעלתנא במצדתא שויתא
12 שושלתא בחרצנא : אמאכתנא ארכבתא מרי
מזופיתא על רישנא דנתא יתנא כדי בנורא
13 ובמוי ואפקתנא לרוחתא : אעול לביתא בעלון
14 אשלם לך נדרי : די פתחו ספותי ומלל פומי
15 כדעק לי : עלון שמנין אסיק קדמך עם קטורת
בוסמין קרבן דכרין אעבד תורין עם ברחיא
16 לעלמין : אזילו שמעו ואשתעי כל דחליא
17 דאלהא מה דעבד לנפשי : לותיה בפומי קריתי
18 ותושבחתיה תחות לישני : שקר אין חמיתי
19 בלבי האפשר די לא ישמע יי : בקושטא שמע
20 אלהא אצית בקל צלותי : בריך אלהא דלא
אעדי צלותי וטוביה מני :

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Coronaſti annum bonitate benedictionis tuæ, & itinera viæ tuæ ſtillabunt dulcedinem pinguedinis. Dulceſcent laudabilia deſerti, et exultatione colles accingent ſe. Aſcendent arietes ſuper pecora, & valles cooperientur frumento : jubilabunt, etiam laudem dicent.

Ad laudandum canticum [&] hymnus.

PSAL. LXVI.

Jubilate coram Domino omnes habitatores terræ : laudes dicite gloriæ nominis ejus, conſtituite gloriam laudi ejus. Dicite coram Deo, Quàm timenda ſunt illa opera tua ! in multitudine fortitudinis tuæ mentientur *tibi* inimici tui. Omnes habitatores terræ adorabunt coram te, & laudabunt te, laudabunt nomen tuum in æternum. Ite, videte opera Dei terribilis, auctoris adinventionum ſuper filios hominum. Convertit mare Suph in ſiccum : per flumen Jordanis tranſierunt pedibus ſuis filii Iſrael : duxit eos ad montem *ſanctitatis ejus*, ibi lætabimur in verbo ejus. Qui poteſtatem habet virtute fortitudinis ſuæ ſuper orbem, oculi ejus populos reſpiciunt : rebelles non exaltabuntur in ſeipſis in ſecula. Benedicite populi *Deo*, & audiri facite vocem laudis ejus. Qui connumeravit animam noſtram in vita ſeculi venturi, nec tradidit commotioni pedes noſtros. Quoniam probâſti nos Deus : conflâſti nos ſicut argentarius qui conflat argentum. Introduxiſti nos in laqueum, poſuiſti catenam in lumbis noſtris. Humiliâſti nos, juſſiſti equitare auctorem *occupationis* ſuper caput noſtrum, judicaſti nos tanquam *igne* et aqua; et eduxiſti nos in latitudinem. Introibo in domũ [*tuam*] cum holocauſtis, reddam tibi vota mea. Quæ aperuerunt labia mea, et locutum eſt os meum dum anguſtia aderat mihi. Holocauſta pinguia ſacrificabo coram te cum ſuffitu aromatico, ſacrificiáque arietum, faciam boves cum hircis ſemper. Venite audite & narrabo, omnes qui timetis Deum, quid fecerit animæ meæ. Ipſum ore meo invocavi & laus ejus ſub lingua mea. Mendacium ſi vidi in corde meo, nunquid num audiet Dominus? In veritate audivit Deus, exaudivit vocem orationis meæ. Benedictus Dominus qui non amovit orationem meam & benignitatem ſuam à me.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

12 * ܒܪܟ ܟܠܝܠܐ ܕܫܢܬܐ ܒܛܒܘܬܟ : ܘܦܩܥܬܟ ܢܣܒܥܘܢ ܬܕܐܐ. * ܘܢܣܒܥܘܢ ܡܢ
13 ܕܝܪܐ ܕܡܕܒܪܐ : ܒܫܘܒܚܐ ܪܡܬܐ ܢܬܚܙܩܢ. * ܘܢܠܒܫܘܢ ܕܟܪܐ ܕܥܢܐ : ܘܦܩܥܬܐ
14 ܢܬܡܠܝܢ ܥܒܘܪܐ. ܘܢܪܘܙܘܢ ܘܢܫܒܚܘܢ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܣܘ *

1 * ܠܐ ܝܕܝܥ. ܥܠ ܕܒܚܐ ܘܩܘܪܒܢܐ ܘܩܛܪܐ ܕܕܟܪܐ. ܘܪܘܚܢܐܝܬ ܐܟܪܙ ܠܢ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ ܘܟܪܘܙܘܬܐ.
2 ܩܥܘ ܠܗ. * ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܙܡܪܘ ܠܐܝܩܪܐ ܕܫܡܗ ܘܗܒܘ ܐܝܩܪܐ
3 ܠܬܫܒܘܚܬܗ : * ܐܡܪܘ ܠܐܠܗܐ ܡܐ ܕܚܝܠܝܢ ܥܒܕܝܟ. ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܟ ܢܕܓܠܘܢ
4 ܠܟ ܒܥܠܕܒܒܝܟ : * ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ ܢܣܓܕܘܢ ܠܟ ܘܢܙܡܪܘܢ ܠܟ. ܘܢܫܒܚܘܢ ܠܫܡܟ
5 ܠܥܠܡܝܢ : * ܙܡܝܪܬܐ * * ܘܢܐܡܪܘܢ ܬܘ ܚܙܘ ܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ. ܕܣܓܝܐܢ ܬܕܡܪܬܗ ܥܠ
6 ܒܢܝܢܫܐ : * ܕܗܦܟ ܝܡܐ ܠܝܒܫܐ. ܘܢܗܪܘܬܐ ܥܒܪܘܗܝ ܒܪܓܠܐ : ܬܡܢ ܢܚܕܐ ܒܗ * ܕܫܠܝܛ
7 ܒܚܝܠܗ ܠܥܠܡ. ܥܝܢܘܗܝ ܒܥܡܡܐ ܚܝܪܢ : ܘܡܡܪܚܢܐ ܠܐ ܢܬܬܪܝܡܘܢ
8 ܠܥܠܡ. * ܙܡܝܪܬܐ * * ܒܪܟܘ ܥܡܡܐ ܠܐܠܗܐ : ܘܐܫܡܥܘ ܩܠܐ ܕܬܫܒܘܚܬܗ. * ܕܣܡ ܢܦܫܢ
9 ܒܚܝܐ : ܘܠܐ ܝܗܒ ܙܘܥܐ ܠܪܓܠܢ. * ܡܛܠ ܕܒܩܝܬܢ ܐܠܗܐ ܘܨܪܦܬܢ : ܐܝܟ ܕܨܪܦܝܢ
10 ܣܐܡܐ. * ܐܥܠܬܢ ܒܡܨܝܕܬܐ ܘܣܡܬ ܐܘܠܨܢܐ ܒܚܨܝܢ : * ܘܐܪܟܒܬ ܒܪܢܫܐ ܥܠ ܪܫܢ.
11 ܐܥܠܬܢ ܒܢܘܪܐ ܘܒܡܝܐ ܘܐܦܩܬܢ ܠܪܘܚܬܐ. * ܐܥܘܠ ܠܒܝܬܟ ܒܫܘܦܪܐ : ܘܐܦܪܘܥ ܠܟ ܢܕܪܝ. * ܗܘ ܡܕܡ
12 ܕܦܬܚ ܣܦܘܬܝ : ܘܡܠܠܬ ܦܘܡܝ ܒܐܘܠܨܢܝ. * ܥܠܘܬܐ ܦܛܝܡܬܐ ܐܣܩ ܠܟ ܥܡ ܩܛܪܐ
13 ܕܕܟܪܐ : ܘܐܥܒܕ ܬܘܪܐ ܥܡ ܓܕܝܐ. * ܬܘ ܫܡܥܘ ܘܐܫܬܥܐ ܠܟܘܢ : ܟܠܟܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ.
14 ܡܕܡ ܕܥܒܕ ܠܢܦܫܝ : * ܒܦܘܡܝ ܩܪܝܬܗ ܘܥܢܢܝ : ܘܐܪܝܡܬܗ ܒܠܫܢܝ. * ܥܘܠܐ ܐܢ
15 ܚܙܝܬ ܒܠܒܝ ܠܐ ܬܦܪܘܩܝܢܝ ܡܪܝܐ : * ܗܝܕܝܢ ܫܡܥ ܐܠܗܐ ܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ. * ܒܪܝܟ ܗܘ
16 ܡܪܝܐ : ܕܠܐ ܐܥܒܪ ܨܠܘܬܝ ܘܛܝܒܘܬܗ ܡܢܝ.

Benedic coronæ anni bonitate tuâ, & campi tui ſaturabuntur herbâ : Et ſaturabuntur pluſquam habitacula, hi qui ſunt in deſerto. Gloriâ colles accingentur, Et induentur pingues ovium ; valleſque implebuntur frumento, & exultabunt atque laudabunt.

PSAL. LXVI.

Incertus. De Sacrificiis, & holocauſtis, que ſuffitu arietum. Spiritualis ſenſus annuit nobis vocationem Gentium, & prædicationem. Verſ. 42.

Laudate Dñm univerſa terra, pſallite gloriæ nominis ejus, canite honori laudis ejus. Dicite Deo, Quàm terribilia ſunt opera tua! Ob multitudinẽ roboris tui mentientur tibi fient inimici tui : In tota terra adorabũt te, & pſallent tibi, atque laudabunt nomen tuũ in ſecula. * *Diapſal.* * Dicentque, Venite, videte opera Dei ; plurima namque ſunt miracula ejus erga filios hominum : Qui convertit mare in aridam, & flumen tranſierunt pede. Ibi lætabimur in eo, Qui dominatur potentiâ ſuâ in æternum. Oculi ejus gentes contemplantur : & rebelles non ſuperbient in ſeculum. * *Diapſal.* * Benedicite gentes Deo, & audire facite vocem laudis ejus. Qui collocavit animam noſtram in vita, & non dedit pedem noſtrum vacillationi. Quia tentâſti nos Deus, & probâſti nos ut probatur argentũ. Induxiſti nos in rete, atque poſuiſti afflictionem in dorſis noſtris, Et inequitare feciſti filium hominis ſuper caput noſtrum : induxiſti nos in ignem & in aquam, atque eduxiſti nos in refrigerium. Veniam ad domum tuã cum decore, ac perſolvam tibi vota mea : Id quod aperuére labia mea, & ſermone oris mei in tribulatione. Holocauſta pinguia attollam tibi cum ſuffitu arietum, faciamque boves & hœdos. Venite, audite, & narrabo vobis, omnes ſervi Dei, quod fecit animæ meæ. Ore meo vocavi eum, & reſpondit mihi : & exaltavi eum linguâ meâ. Iniquitatem ſi videris in corde meo, ne ſalves Domine. Tunc audivit Deus vocem petitionis meæ. Benedictus Dñs qui non repulit orationẽ meam & gratiam ſuam.

Verſio VULG. LAT.

12 Benedices coronæ anni benignitatis
tuæ : & campi tui replebuntur uber-
13 tate. Pingueſcent ſpecioſa deſerti : &
14 exultatione colles accingentur. Indu-
ti ſunt arietes oviũ, & valles abunda-
bunt frumento : clamabunt, etenim
hymnum dicent.

In finem,
1 Canticum Pſalmi reſurrectionis.
LXV.

2 Jubilate Deo omnis terra, Pſalmum
dicite nomini ej⁹: date gloriam laudi
3 ej⁹. Dicite Deo, Quàm terribilia ſunt
opera tua, Dñe! in multitudine virtutis
4 tuæ mentientur tibi inimici tui. Omnis
terra adoret te, & pſallat tibi: pſalmũ
5 dicat nomini tuo. Venite, & videte
opera Dei : terribilis in conſiliis ſup
6 filios hominũ. Qui convertit mare in
aridã, in flumine pertranſibunt pede:
7 ibi lætabimur in ipſo. Qui dominatur
in virtute ſua in æternũ, oculi ej⁹ ſup
gentes reſpiciunt : qui exaſperant,
8 non exaltentur in ſemetipſis. Bene-
dicite gentes Deum noſtrum : & au-
9 ditam facite vocem laudis ejus, Qui
poſuit animã meã ad vitã: & non dedit
10 in commotionẽ pedes meos. Quoniã
probâſti nos, De⁹: igne nos examinâſti,
11 ſicut examinatur argentum. Induxiſti
nos in laqueum, poſuiſti tribulationes
12 in dorſo noſtro : Impoſuiſti homines
ſup capita noſtra. Tranſivim⁹ ꝑ ignem
& aquã : & eduxiſti nos in refrigeriũ.
13 Introibo in domũ tuã in holocauſtis :
14 reddã tibi vota mea, Quæ diſtinxerunt
labia mea. Et locutum eſt os meum, in
15 tribulatione mea. Holocauſta medul-
lata offeram tibi cum incenſo arietum:
16 offerã tibi boves cum hircis. Venite,
audite, & narrabo, omnes qui timetis
17 Deum, quanta fecit animæ meæ. Ad
ipſũ ore meo clamavi, & exaltavi ſub
18 lingua mea. Iniquitatẽ ſi aſpexi in cor-
19 de meo, non exaudiet Dñs. Propterea
exaudivit Deus, & attendit voci de-
20 precationis meæ. Benedictus Deus,
qui non amovit orationem meam, &
miſericordiam ſuam à me.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

12 Εὐλογήσεις τὸν στέφανον τοῦ ἐνιαυτοῦ τῆς χρηστότη-
τός σου, καὶ τὰ πεδία σου πλησθήσονται πιότητος.
13 Πιανθήσονται τὰ ὄρη τῆς ἐρήμου, καὶ ἀγαλλίασιν οἱ
14 βουνοὶ περιζώσονται. Ἐνεδύσαντο οἱ κριοὶ τῶν προ-
βάτων, καὶ αἱ κοιλάδες πληθυνοῦσι σῖτον, κε-
κράξονται, καὶ γὰρ ὑμνήσουσιν.

1 Εἰς τὸ τέλος, Ὠδὴ ψαλμοῦ ἀναστάσεως.
ξε΄.

2 Ἀλαλάξατε τῷ θεῷ πᾶσα ἡ γῆ, Ψάλατε
δὴ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ. δότε δόξαν αἰνέσει αὐτοῦ.
3 Εἴπατε τῷ θεῷ, Ὡς φοβερὰ τὰ ἔργα σου; ἐν τῷ
πλήθει τῆς δυνάμεώς σου ψεύσονταί σε οἱ ἐχθροὶ
4 σου. Πᾶσα ἡ γῆ προσκυνησάτωσάν σοι, καὶ ψα-
λάτωσάν σοι, ψαλάτωσαν τῷ ὀνόματί σου. ΔΙΑ-
5 ΨΑΛΜΑ. Δεῦτε καὶ ἴδετε τὰ ἔργα τοῦ θεοῦ, φο-
βερὸς ἐν βουλαῖς ὑπὲρ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων.
6 Ὁ μεταστρέφων τὴν θάλασσαν εἰς ξηράν, ἐν πο-
ταμῷ διελεύσονται ποδί. ἐκεῖ εὐφρανθησόμεθα
7 ἐπ᾽ αὐτῷ, Τῷ δεσπόζοντι ἐν τῇ δυναστείᾳ αὐτοῦ
τοῦ αἰῶνος. οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ἐπὶ τὰ ἔθνη ἐπι-
βλέπουσιν, οἱ παραπικραίνοντες μὴ ὑψούσθωσαν
8 ἐν ἑαυτοῖς. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Εὐλογεῖτε ἔθνη τὸν
θεὸν ἡμῶν, καὶ ἀκουτίσατε τὴν φωνὴν τῆς αἰνέσεως
9 αὐτοῦ, Τοῦ θεμένου τὴν ψυχήν μου εἰς ζωήν, καὶ μὴ
10 δόντος εἰς σάλον τοὺς πόδας μου. Ὅτι ἐδοκί-
μασας ἡμᾶς ὁ θεός, ἐπύρωσας ἡμᾶς ὡς πυροῦται
11 τὸ ἀργύριον. Εἰσήγαγες ἡμᾶς εἰς τὴν παγίδα, ἔθου
12 θλίψεις ἐπὶ τὸν νῶτον ἡμῶν, Ἐπεβίβασας ἀνθρώ-
πους ἐπὶ τὰς κεφαλὰς ἡμῶν. διήλθομεν διὰ
πυρὸς καὶ ὕδατος, καὶ ἐξήγαγες ἡμᾶς εἰς ἀναψυ-
13 χήν. Εἰσελεύσομαι εἰς τὸν οἶκόν σου ἐν ὁλοκαυ-
14 τώμασιν, ἀποδώσω σοι τὰς εὐχάς μου, Ἃς διέ-
στειλε τὰ χείλη μου, καὶ ἐλάλησε τὸ στόμα μου ἐν
15 τῇ θλίψει μου. Ὁλοκαυτώματα μεμυελωμένα
ἀνοίσω σοι μετὰ θυμιάματος καὶ κριῶν, ποιήσω
16 σοι βόας μετὰ χιμάρων. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Δεῦτε
ἀκούσατε, καὶ διηγήσομαι, πάντες οἱ φοβούμενοι τὸν
17 θεόν, ὅσα ἐποίησε τῇ ψυχῇ μου. Πρὸς αὐτὸν τῷ
στόματί μου ἐκέκραξα, καὶ ὕψωσα ὑπὸ τὴν γλῶσ-
18 σάν μου. Ἀδικίαν εἰ ἐθεώρουν ἐν καρδίᾳ μου, μὴ
19 εἰσακουσάτω κύριος. Διὰ τοῦτο εἰσήκουσέ μου ὁ θε-
20 ός, προσέσχε τῇ φωνῇ τῆς προσευχῆς μου. Εὐλο-
γητὸς ὁ θεός, ὃς οὐκ ἀπέστησε τὴν προσευχήν
μου, καὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἀπ᾽ ἐμοῦ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

12 Benedices coronam anni benigni- 12
tatis tuæ : & campi tui replebuntur
ubertate. 13 (o) [o] Pingueſcent (p) 13
montes deſerti, & exultatione col-
les accingentur. 14 Induti ſunt ari- 14
etes ovium, & valles (q) abunda-
bunt frumento : clamabunt, etenim
hymnum dicent.

In finem, Canticum pſalmi (a) re- 1
ſurrectionis.

LXV.

Jubilate Deo (b) [a] omnis terra :
Pſalmum dicite nomini ejus : date 2
gloriam laudi ejus : 2 Dicite Deo, 3
[b] Quàm terribilia ſunt opera
tua ! In multitudine virtutis tuæ
mentientur tibi inimici tui. 3 Omnis 4
terra adoret te, & [c] pſallat tibi :
pſalmum dicat nomini (c) tuo.
4 DIAPSALMA. Venite, & vide- 5
te opera Dei : (d) terribilis in con-
ſiliis ſuper filios hominum. 5 Qui 6
(e) convertit mare in aridam : in
flumine pertranſibunt pede. Ibi læ-
tabimur [d] in ipſo, 6 Qui domina- 7
tur in virtute ſua (f) [e] ſeculo.
Oculi ejus ſuper gentes reſpiciunt :
qui (g) exaſperant, [f] non exalten-
tur in ſemetipſis. 7 DIAPSALMA.
Benedicite gentes Deum noſtrum: & 8
(h) auditam facite vocem laudis e-
jus. 8 Qui poſuit animam meam ad 9
vitam : & non dedit in commotio-
nem pedes meos. 9 Quoniam pro- 10
bâſti nos, Deus: [g] ignîſti nos, ſicut
ignitur argentum. 10 Induxiſti nos 11
in laqueum, poſuiſti tribulationes
[h] in dorſo noſtro : [i] Impoſui- 12
ſti homines ſuper capita noſtra.
11 Tranſivimus per ignem, & a-
quam : & eduxiſti nos in refrige-
rium. 12 Introibo in domum tuam in 13
holocauſtis : reddam tibi vota mea,
Quæ [k] diſtinxerunt labia mea ; 14
13 et loquutum eſt os meum in tri-
bulatione mea. 14 Holocauſta [l] me- 15
dullata offeram tibi [m] cum (i) in-
cenſo, & arietibus, (k) faciam tibi
boves cum hircis. 15 DIAPSALMA.
Venite, audite, & narrabo, omnes 16
qui timetis Deum, quanta fecit ani-
mæ meæ. 16 Ad (l) ipſum ore meo clamavi, et exaltavi ſub lingua mea. 17 Iniquitatem 17 18
ſi [n] aſpexi in corde meo ; non (m) exaudiat Dominus. 18 Propterea exaudivit (n) me 19
Deus: attendit voci orationis meæ. 19 Benedictus Deus, qui non [o] amovit orationem 20
meam, [p] & miſericordiam ſuam à me.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወትባርክ፡ አክሊለ፡ ዓመተ፡ ምሕረትከ፡፡ ወ 12
ይጸግቡ፡ብሳተ፡ ገደም፡፡=፦ ወይረውዩ፡አድ 13
ባረ፡ በድው፡ ወይትሐሠዩ፡ አውግር፡ ወይቀን
ቱ፡፡=፦ ወይለብሱ፡ አብሐኰ፡ አባግዕ፡፡ ወ 14
ቈላትኒ፡ ይመልእ፡ ሥርናየ፡፡ ይጸርኁ፡ እን
ዘ፡ይሴብሑ፡፡=፦

ፍጻሜ፡ማኅሌት፡መዝሙር፡ዘትንሣኤ፡፡

፷፭ የብቡ፡ ለእግዚአብሔር፡ በኵሉ፡ ምድ 1
ር፡፡ወዘምሩ፡ለስሙ፡፡ሀቡ፡ አኰቴተ፡ለስብሐ
ቲሁ፡፡=፦ በልዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ግሩም፡ 2
ግብርከ፡፡እንዘ፡ብዙኅ፡ ኃይልከ፡ ሐሰውከ፡ጸ
ላእትከ፡፡=፦ ኵሉ፡ ምድር፡ ትሰግድ፡ ወትገ 3
ኒ፡ ለከ፡፡ወትዜምር፡ለስምከ፡፡=፦ ንዑ፡ወት 4
ርአዩ፡ ግብሮ፡ ለእግዚአብሔር፡፡ግሩም፡ምክ
ሩ፡ እምእጓለ፡ እመሕያው፡፡=፦ ዘይረስዮ፡ 5
ለባሕር፡ የብሰ፡፡ወበተከዚ፡ የኃልፍ፡ በእግር፡፡
ወበህየ፡ ንትፌሣሕ፡ ላዕሌሁ፡፡=፦ ዘይኴንን፡በ 6
ኃይሉ፡ ዘለዓለም፡፡ወአዕይንቲሁኒ፡ ኀበ፡ አሕ
ዛብ፡ይኔፅሩ፡፡እለ፡ ያአምሩ፡ ሊያዕብዩ፡ ርእ
ሰክሙ፡፡=፦ ባርክዎ፡ አሕዛብ፡ለአምላክነ፡፡ 7
ወአጽምኡ፡ ቃለ፡ ስብሐቲሁ፡፡=፦ ዘአንበራ፡ 8
ለነፍስየ፡ ውስተ፡ ሕይወት፡፡ወኢይሁቦን፡ ሁከ
ተ፡ ለእገሪየ፡፡=፦ እስመ፡ አመከርከነ፡ እግዚ 9
ኦ፡፡ወፈተንከነ፡ከመ፡ ይፈትንዎ፡ ለብሩር፡፡=፦
ወአባእከነ፡ ውስተ፡ መሠገርት፡፡ ወአምጻእ 10
ከ፡ ሕማመ፡ ቅድሜነ፡፡ወአጽአንከ፡ ሰብአ፡ዲ
በ፡አርእስቲነ፡፡=፦ አኅለፍከነ፡ ማእከለ፡ እ 11
ሳት፡ ወማይ፡፡ ወአውፃእከነ፡ ውስተ፡ ዕረፍ
ት፡፡=፦ እበውእ፡ ቤተከ፡ ምስለ፡መባእየ፡፡ወ 12
እሁብ፡ብፅአትየ፡ ዘነበብኩ፡ በአፉየ፡፡=፦ ዘ 13
እቤ፡በከናፍርየ፡እም፡መንደቤየ፡፡=፦ መሥዋ 14
ዕተ፡ ንጹሐ፡ ዘአልቦ፡ ነውረ፡፡አበውእ፡ ለከ፡ዕ
ጣነ፡ ምስለ፡ ሐራጊት፡፡እሠውዕ፡ ለከ፡ አልህ
ምተ፡ ወአጣሊ፡፡=፦ ንዑ፡ ስምዑኒ፡ ወእንግ 15
ርክሙ፡፡ኵልክሙ፡ እለ፡ ተፈርህዎ፡ ለእግዚአ
ብሔር፡፡መጠነ፡ገብረ፡ላቲ፡ ለነፍስየ፡፡=፦ ዘ 16
ጸራኅኩ፡ ኀቤሁ፡ በአፉየ፡፡ወከለሕኩ፡በልሳን
የ፡፡=፦ እመሰ፡ ዐመፃ፡ይሬኢ፡ውስተ፡ልብየ፡፡ 17
ኢይሰምዐኒ፡ እግዚአብሔር፡፡=፦ ወበእንተ 18
ዝ፡ ሰምዐኒ፡ እግዚአብሔር፡፡ ወአጽምአኒ፡
ቃለ፡ ስእለትየ፡፡=፦ ይትባረክ፡ እግዚአብሔ 19
ር፡ ዘኢከልአኒ፡ ጸሎትየ፡፡ ወኢያርሐቀ፡ ሣህ
ሎ፡እምኔየ፡፡=፦

INTERP. ÆTH. [o] Et irrigabuntur montes *PSAL. LXV.* [a] in omni terra : [b] Terribile eſt opus tuum: Ad multitudinem [c] confitebitur tibi : [d] ſimul. Qui [e] qui in æternum. [f] ne exaltetis vosmetipſos. [g] & nos examinâſti, ſicut examinatur argentum. [h] in conſpectu noſtro : [i] Equitare feciſti homines [k] locutus ſum ore meo ; quæ dixi labiis meis in [l] pura & quæ ſine macula [m] incenſum cum arietibus, offeram tibi [n] aſpexit in corde meo ; non exaudiet [o] repulit [p] nec amovit miſericordiam

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

12 13 * باركت اكليل السنة بصلاحك * وتملي بقاعك من الدسم * وتدسم جبال البرية * وتنطق
14 الاكام بالقوة * وتكتسي كباش الغنم شحما * والاودية تكثر القمح فيصرخون ويباركون * الليلويا *
1 * المزمور الخامس والستون * لداود تسبحة وعن القيامة * وهو لط * استيخن *
2 3 * هللوا لله يا جميع الارض * رتلوا اسمه واعطوا مجدا لتسبحته * قولوا لله ما ارهب اعمالك من
4 كثرة اياتك تجحدها اعداءك * فلتسجد لك الارض جميعها * وليرتلوا لك وليرتلوا اسمك *
5 6 * تعالوا فانظروا اعمال الله * المرهوب في ارايه اكثر من بني البشر * الذي قلب البحر يبسا *
7 يعبرون النهر بارجلهم * هناك سيفرح به * الذي يسود الدهر بقدرته * عيناه الي الامم
8 تنظران * المغضبون لا يرتفعون في ذاتهم * باركوا الاهنا ايها الامم * واسمعوا صوت تسبحته *
9 10 * الذي وضع نفسي في الحياة * ومنع من الزلل رجلي * لانك امتحنتنا يا الله وسبكتنا كما
11 12 تسبك الفضة * ادخلتنا في الفخ * جعلت الشدايد على ظهورنا * اركبت الناس على روسنا
13 اجزتنا في النار والماء * واخرجتنا الي الراحة * سادخل الي بيتك بمحرقات * واوفيك نذوري
14 15 * التي نطقت بها شفتاي * وتكلم بها فمي في شدتي * اقدم لك محرقات شحم بغير عظم * مع
16 بخور وكباش * اقدم لك بقرا وجديا * تعالوا اسمعوا فاخبركم يا كل من يخاف من الله جميع ما
17 18 صنع بنفسي * صرخت اليه بفمي * ورفعت لساني كثيرا * ان كنت رايت في قلبي
19 20 ظلما * فلا يسمع الرب مني * لذلك استجاب الله لي * والتفت الي صوت طلبتي * تبارك الله
الذي لم يبعد صلاتي ولا رحمته عني * الليلويا *

Benedixiſti coronæ anni ex bonitate tua, 12
& implebuntur campi tui fertilitate, Et 13
pingueſcent montes deſerti, & proferent
colles fortitudinem. Et induentur arie- 14
tes ovium pinguedine, & valles abundè
producent frumentum ; quapropter cla-
mabunt ac benedicent. Alleluja.

PSAL. LXV.

**Davidis. Laudatio, & de Reſur- 1
rectione. Verſus 39.**

Canite Deo, O univerſa terra : canite 2
nomini ejus, & referte gloriam laudi
ejus. Dicite Deo, Quàm terribilia ſunt 3
opera tua propter multitudinem prodigio-
rum tuorum ! nihilominus negant ea
inimici tui. Adoret te terra univerſa, & 4
pſallant tibi, & pſallant nomini tuo. Ve- 5
nite, & videte opera Dei: terribilis in ſen-
tentiis ſuis pluſquam filii hominum : Qui 6
convertit mare in aridam. Tranſibunt
flumen pedibus ſuis ; ibi lætabitur in eo.
Qui dominatur ſeculo in potentia ſua : 7
oculi ejus in gentes reſpiciunt. Irritatores
non extollentur in ſemetipſis. Benedicite 8
Deum noſtrum, O gentes, & audire fa-
cite vocem laudis ejus. Qui poſuit ani- 9
mam meam in vita, & prohibuit lapſu
pedes meos. Quoniam probâſti nos, O 10
Deus, & fudiſti nos quemadmodum fun-
ditur argentum. Introduxiſti nos in la- 11
queum, poſuiſti tribulationes ſuper terga
noſtra. Equitare feciſti homines ſuper ca- 12
pita noſtra : Traduxiſti nos per ignem,
& aquam, & eduxiſti nos ad requiem.
Introibo in domum tuam cum holocau- 13
ſtis, & reddam tibi vota mea. Quæ pro- 14
nuntiaverunt labia mea, & locutum eſt os
meum in anguſtia mea : Offeram tibi ho-
locauſta pinguedinis ſine oſſe, cum thure 15
& arietibus : offeram tibi boves & hæ-
dos. Venite, audite, & narrabo vobis, O 16
quicunque timetis Deum, quicquid fecit
in anima mea. Clamavi ad ipſum ore meo, 17
& exaltavi linguam meam admodum. Si 18
aſpexi in corde meo ſcelus, non audiet me
Dominus. Propterea exaudivit Deus 19
me, converſus eſt ad vocem petitionis
meæ. Benedicatur Deus qui non amovit 20
orationem meam, neque miſericordiam
ſuam à me. Alleluja.

תהלים : סז סח

PSAL. LXVII. סז

:nobis benedicat &,nostri misereatur Deus .cantici cantus Neghinoth in Victori
1 2 למנצח בנגינת מזמור שיר: אלהים יחננו ויברכנו
omnibus in : tuam viam terra in *sciendum Ad* .Selah ,nobiscum *suas facies illuminet*
3 יאר פניו אתנו סלה: לדעת בארץ דרכך בכל־
tibi confiteantur : Deus populi tibi Confiteantur .tuam salutem gentibus
4 גוים ישועתך: יודוך עמים אלהים יודוך
populos judicabis quoniam , gentes *ovent* & ,Lætentur .ipsi omnes populi
5 עמים כלם: ישמחו וירננו לאמים כי־תשפט עמים
populi tibi Confiteantur .Selah , *eas* duces terram in gentes & : æquitate
6 מישר ולאמים בארץ תנחם סלה: יודוך עמים
: suum *germen* dedit Terra .ipsi omnes populi tibi confiteantur : Deus
7 אלהים יודוך עמים כלם: ארץ נתנה יבולה
eum metuant & : Deus nobis Benedicat .noster Deus , Deus nobis benedicat
8 יברכנו אלהים אלהינו: יברכנו אלהים וייראו אותו
.terræ fines omnes
כל־אפסי־ארץ:

PSAL. LXVIII. סח

dispergantur , Deus Exurgat .cantici cantus David ipsi Victori
1 2 למנצח לדוד מזמור שיר: יקום אלהים יפוצו
; propelles ,*fumum propelli Ut* .ejus *faciebus* à eum *habentes odio* fugiant & :ejus inimici
3 אויביו וינוסו משנאיו מפניו: כהנדף עשן תנדף
.Dei *faciebus* à impii peribunt ; ignis *faciebus* à *ceram liquefieri ut*
כהמס דונג מפני־אש יאבדו רשעים מפני אלהים:
.lætitia in gaudebunt & , *Dei facies ad* exultabunt ,lætabuntur justi Et
4 וצדיקים ישמחו יעלצו לפני אלהים וישישו בשמחה:
Jah in ,*cœlis supremis in equitantem* exaltate ;ejus nomini canite , Deo Cantate
5 שירו לאלהים זמרו שמו סלו לרכב בערבות ביה
: viduarum judex & ,pupillorum Pater .*ejus facies ad* exultate & ,ejus *nomen*
6 שמו ועלזו לפניו: אבי יתומים ודין אלמנות
, domo in unicos habitare *faciens* Deus .suæ sanctitatis habitaculo in Deus
7 אלהים במעון קדשו: אלהים מושיב יחידים ביתה
.*siccum* habitaverunt rebelles veruntamen : compedibus in vinctos educens
מוציא אסירים בכושרות אך־סוררים שכנו צחיחה:
.Selah ,*solitudine in te incedere in* : *tui populi facies ad te egrediendo in* , Deus
8 אלהים בצאתך לפני עמך בצעדך בישימון סלה:
; Sinai hic Dei *faciebus* à distillaverunt cœli etiam ,tremuit Terra
9 ארץ רעשה אף־שמים נטפו מפני אלהים זה סיני
fecisti elevare *munificentiarum* Pluviam .Israel *Dei* , Dei *faciebus* à
10 מפני אלהים אלהי ישראל: גשם נדבות תניף
tua *Societas* .eam confirmâsti tu ,*confectam labore* & ,tuam hæreditatem ; Deus
11 אלהים נחלתך ונלאה אתה כוננתה: חיתך
dabit Dominus .Deus pauperi *tua bonitate in parabis* : ea in habitaverunt
12 ישבו־בה תכין בטובתך לעני אלהים: אדני יתן־
, fugiebant exercituum Reges .*multus* exercitus *annunciatricum* : sermonem
13 אמר המבשרות צבא רב: מלכי צבאות ידדון
.*spolium* dividebat domus *habitatio* & : fugiebant
ידדון ונות בית תחלק שלל:

תרגום TARGUM.

סז

1 2 לשבחא בנגינתא תושבחתא ושירתא: אלהא
יחום עלנא ויברכננא ינהר זיו אנפוי עמנא
3 לעלמין: להודעא בארעא אורחך בכל עממיא
4 פורקנך: יודון קדמך עממיא אלהא יודון קדמך
5 עממיא כולהון: יחדון וידוצון אומיא ארום תדין
עמיא בתירוצא ואומיא בארעא תדברנון
6 לעלמין: יודון קדמך עמיא אלהא יודון קדמך
7 עמיא כולהון: ארעא יהבת אבה יברך יתן
8 אלהא אלהנא: יברך יתן אלהא וידחלון יתיה
כל סיפי ארעא:

סח

1 2 לשבחא לדוד תושבחא ושירא: יקום אלהא
יתבדרון בעלי דבבוי ויערקון סנאוי מן קדמוי:
3 היכמה דשקיף תננא ישקפון היכמה די יתמסי
שעוא מן קדם אשא יהובדון רשיעיא מן קדם
4 אלהא: וצדיקיא יחדון וידוצון קדם יי ויחדון
5 בחדוא: שבחו קדם אלהא שבחו שום יקריה
קלסון ליתב על כורסיה יקריה בערבות יה
6 שמיה וביעו קדמוי: אבוהון דיתמי ודינהון
דארמלן אלהא במדור בית שכינת קודשיה:
7 אלהא די מזוג זוגים יחידאין לבר זוגא כחדא
דאפיק בית ישראל דהוון אסירין במצרים על
עובדיהון דאבהתהון כשרין בפומבי ברם פרעה
ומשריתיה דסרבו לשלחותהון שרון צחיחין:
8 אלהא כד נפקתא בעמודא דעננא ובעמודא
דאשתא קדם עמך כד טילתא במדברא דישימון
9 לעלמין: כד יהבתא אוריתא לעמך ארעא
אתרגישת לחוד שמיא אטיפו טלא מן קדם יי
דין סיני סליק תנניה כתננא דאתונא מן קדם
10 דאתגלי עלוי יי אלהא דישראל: כד שמעו בית
ישראל ית קל גבורתך פרחו נפשיהון מן יד
אחתתא עלויהון טלין דתחיותא ומטרין דרעוא
ארימתא אלהא על אחסנתך וכנשתא
11 דאשתלהית את אתקינתא: חיתך אתיבתא בה
אתקינתא משרית מלאכיא לאוטבא לענייא
12 דאלהא: יי יהב פתגמי אוריתא לעמיה ברם משה ואהרן מבשרן מימר אלהא לחילות רבא דישראל: מלכותא
13 עם חיליהון אטלטלו מן פלטריהון וחכימיא אטלטלו מן מדעיהון וכנשתא דישראל מפלגא עדאה מן שמיא:

PARAPH. CHALD. Vers. La

Ad laudandum in fidium pulsatione hym & canticum.

PSAL. LXVII.

Deus misereatur nostri, & benedicat nobis: lucere faciat splendoré faciei suæ nobiscum semper. Ut innotescat in terra via tu in omnibus populis redemptio tua. Confitebuntur coram te populi Deus; confitebuntur coram te gentes omnes. Lætabuntur & gaudebunt gentes, quoniã judicabis populos in *rectitudine*, & gentes in terra duces in æternũ. Confitebuntur corã te populi Deus, confitebuntur coram te gentes omnes. Terra dedit fructum suum: benedicat nobis Deus, Deus noster. Benedicat nobis Deus, & timeant eum omnes fines terræ.

Ad laudandũ *Davidi* hymnus & canticũ.

PSAL. LXVIII.

Exurgat Deus, dispergantur inimici ejus, & fugiant odientes eum à facie ipsius. Sicut propellitur fumus, propellantur; & sicut liquescit cera ab aspectu ignis, sic pereant improbi ab aspectu Dei. Et justi lætabuntur & exultabunt corã Deo, & lætabũtur in lætitia. Laudate corã Deo, laudes dicite nomini gloriæ ejꝰ: extollite sedenté sup sedé gloriæ suæ in nono cœlo, JAH est nomen ejus, & lætamini corã eo. Pater est orphanorũ & judex viduarum, Deus in habitaculo domus sanctæ suæ majestatis. Deus est qui copulat conjuges unica cum filio legitimo simul; qui eduxit *domũ* Israel qui erant ligati in Ægypto; propter opera patrũ suorũ recta in pompa: Pharao auté & exercitus ejus, qui pertinaces fuerunt ad dimittendos illos, inhabitant siccum. Deus cùm egredereris in columna nubis, & in columna ignis ante populũ tuũ, cùm perambulares in deserto solitudinis in æternum. Quando dabas legem populo tuo, terra mota est, insuper *cœli* stillaverunt *roré* à conspectu Dñi; hic est Sinai: ascendebat fumus ejꝰ sicut fumus fornacis, propterea quòd *manifestatus* est super illũ *Dominus Deus* Israel. *Quando audiverunt domus Israel vocem potentiæ tuæ defecerũt animi ipsorũ; statim demisisti super eos* rores vivificationis, & pluvias spontaneas projecisti Deꝰ super hæreditaté tuã, & Ecclesiam laboranté tu erexisti. Vivificationé tu collocâsti in ea, præparâsti exercitꝰ *angelorum* ut benefaceres pauperibꝰ Dei. *Dominꝰ* dedit verba legis populo suo; verùm Mosseh & Aharon evangelizabant verbũ Dei *exercitui magno* Israelis. Reges cum exercitibus suis migraverunt de prætoriis suis, & sapientes dimoti sunt à scientia sua; & congregatio Israelis dividebat prædam de cœlis.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * ܠܐ ܝܕܝܥ ܡܢ ܐܡܪܗ. ܡܙܡܪ ܗܘܐ ܥܡܐ ܟܕ ܡܥܒܪܝܢ ܠܗ ܠܕܘܝܕ ܒܝܪܕܢܢ
ܠܢ ܕܝܢ ܪܡܙ ܒܗ ܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܩܪܝܢܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܟܪܘܙܘܬܐ ܕܫܠܝܚܐ. ܘܥܠ
ܕܝܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܗ. * ܐܠܗܐ ܢܪܚܡ ܥܠܝܢ: ܘܢܒܪܟܢ ܘܢܢܗܪ ܐܦܘܗܝ ܥܠܝܢ. * ܙܘܥܐ * 2
3 ܕܢܕܥ ܒܐܪܥܐ ܐܘܪܚܬܗ: ܘܒܝܬ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܦܘܪܩܢܗ. * ܢܘܕܘܢ ܠܟ ܥܡܡܐ ܐܠܗܐ: ܢܘܕܘܢ
4
5 ܠܟ ܥܡܡܐ ܟܠܗܘܢ. * ܢܚܕܘܢ ܘܢܫܒܚܘܢ ܡܠܟܘܬܐ : ܕܕܐܢ ܐܢܬ ܥܡܡܐ ܒܬܪܝܨܘܬܐ.
6 ܘܡܠܟܘܬܐ ܡܕܒܪ ܐܢܬ ܒܐܪܥܐ : * ܙܘܥܐ * ܢܘܕܘܢ ܠܟ ܥܡܡܐ ܐܠܗܐ. ܢܘܕܘܢ ܠܟ ܥܡܡܐ
7
8 ܟܠܗܘܢ : * ܐܪܥܐ ܝܗܒܬ ܦܐܪܝܗ. ܢܒܪܟܢ ܐܠܗܐ ܐܠܗܢ * ܘܢܒܪܟܢ ܐܠܗܐ : ܘܢܕܚܠܘܢ
ܡܢܗ ܟܠܗܘܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܪܫ ܡܣܩܬܐ * * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

1 * ܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܬܛܝܒܘ ܡܠܟܐ ܕܢܩܪܒܘܢ ܠܗ. ܘܢܒܝܘܬܐ ܬܘܒ ܥܠ ܡܕܒܪܢܘܬܐ ܕܡܫܝܚܐ ܘܥܠ
2 ܩܪܝܢܐ ܕܥܡܡܐ ܠܗܝܡܢܘܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܒ. * ܢܩܘܡ ܐܠܗܐ ܘܢܬܒܕܪܘܢ ܟܠܗܘܢ
3 ܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. ܘܢܥܪܩܘܢ ܣܢܐܘܗܝ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ : * ܐܝܟ ܕܡܫܬܪܐ ܬܢܢܐ ܢܫܬܪܘܢ.
4 ܘܐܝܟ ܕܡܬܦܫܪ ܫܥܘܬܐ ܡܢ ܩܕܡ ܢܘܪܐ: ܢܐܒܕܘܢ ܪܫܝܥܐ ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. * ܘܙܕܝܩܐ ܢܚܕܘܢ
5 ܘܢܬܥܫܢܘܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ: ܘܢܒܣܡܘܢ ܒܒܣܝܡܘܬܗ. * ܙܡܪܘ ܠܐܠܗܐ ܘܫܒܚܘ ܠܫܡܗ: ܫܒܚܘ
6 ܠܕܪܟܒ ܠܡܥܪܒܐ ܡܪܝܐ ܗܘ ܫܡܗ. ܐܬܥܫܢܘ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ * ܐܒܐ ܕܝܬܡܐ: ܘܕܝܢܐ ܕܐܪܡܠܬܐ.
7 ܐܠܗܐ ܒܡܥܡܪܗ ܩܕܝܫܐ: * ܐܠܗܐ ܡܘܬܒ ܝܚܝܕܝܐ ܒܒܝܬܐ. ܘܡܦܩ ܐܣܝܪܐ ܒܡܫܪܝܘܬܐ:
8 ܘܡܪܘܕܐ ܢܥܡܪܘܢ ܒܩܒܪܐ. * ܐܠܗܐ ܟܕ ܢܦܩܬ ܡܢ ܩܕܡ ܥܡܟ: ܘܟܕ ܥܒܪܬ ܒܐܫܝܡܘܢ * ܐܪܥܐ
9 ܐܬܬܙܝܥܬ. * ܙܘܥܐ * ܐܦ ܫܡܝܐ ܢܛܦܘ : ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ ܗܢܐ ܛܘܪܐ ܕܣܝܢܝ. ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ
10 ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ : * ܡܛܪܐ ܕܨܒܝܢܐ ܦܪܫ ܐܠܗܐ ܠܝܪܬܘܬܟ. ܐܬܟܪܗܬ ܘܐܢܬ ܬܩܢܬܗ :
11 12 * ܚܝܘܬܟ ܥܡܪܘ ܒܗ. ܛܝܒܬ ܒܛܝܒܘܬܟ ܠܡܣܟܢܐ ܐܠܗܐ: * ܡܪܝܐ ܢܬܠ ܡܠܬܐ ܕܣܒܪܬܐ
13 ܒܚܝܠܐ ܪܒܐ. * ܡܠܟܐ ܕܚܝܠܘܬܐ ܢܬܟܢܫܘܢ: ܘܫܘܦܪܗ ܕܒܝܬܟ ܢܦܠܓ ܒܙܬܐ.

PSAL. LXVII.

Incertum quis eum ediderit. Canebat illũ populus quũ traducerent Davidem per flum. Jordanẽ. Nobis autẽ innuit in eo prophetia vocatione Gentium, & prædicatione Apostolorum, deque judiciis Domini. Vers. 15.

Deus noster misereatur nostrì, benedicat nobis, & illustret vultũ suũ erga nos * *Diapsal.* * Ut cognoscamꝰ in terra vias ejus & inter omnes gentes saluté ipsius. Confiteantur tibi populi Deꝰ, confiteantur tibi populi omnes. Lætentur & laudé dicãt regna quòd judices populos rectè, & regna gubernes in terra. * *Diapsalma.* * Confiteantur tibi populi Deus, confiteantur tibi populi omnes. Terra dedit fructus suos. Benedicat nos Deus, Deus noster; Etiam benedicat nos Deus noster: ac metuant eũ omnes fines terræ. *Laus, & initium gradûs.*

PSAL. LXVIII.

Davidis. Quum parârunt se reges ad landum contra eum. Item Prophetia de dispensatione Christi, deque vocatione Gentium ad fidem. Vers. 42.

Exurgat Deꝰ & dissipentur omnes inimici ejus, & fugiãt osores ejꝰ à conspectu ipsius. Quemadmodũ evanescit fumꝰ, evanescant; & sicut liquefit cera à conspectu ignis, pereant impii à conspectu Dei. Justi auté gaudeant & confortentur corã Deo, atq; lætentur in suavitate ejus. Canite Deo, & laudate nomen ejus: glorificate eum qui inequitat occasum, Dñs est nomé ejus. Corroboramini corã Patre orphanorũ et judice viduarũ. Deus in habitaculo suo sancto: Deus sedere facit unicũ in domo: & educit vinctos cum prosperitate; rebelles auté habitabunt in sepulchris. Deus quando egressus es ante populũ tuũ, & quũ transivisti per Asimun, Terra tremuit, * *Diapsal.* * etiã cœli distillaverunt à conspectu Dei: iste mons Sinai à conspectu Dei, Dei Israel. Pluviam voti concessit Deus hæreditati tuæ: ægrotavit, at tu confirmâsti eam: At animalia tua habitârunt in ea. Roborâsti gratiã tuã pauperes Deus. Dominus suppeditabit verbum Evangelii virtute magnã. Reges exercituum congregabuntur: pulchritudo domûs tuæ dividet spolia

Versio VULG. LAT.

In finem,
1 In hymnis, Psalmus cantici
David. LXVI.
2 Deus misereatur nostri, & benedi-
cat nobis: illuminet vultum suum sup
3 nos, & misereatur nostri. Ut cognosca-
mus in terra viã tuã, in omnibus gen-
4 tibus salutare tuum. Confiteantur tibi
populi, Deus: confiteantur tibi populi
5 omnes. Lætentur & exultent gentes:
quoniam judicas populos in æquitate, &
6 gentes in terra dirigis. Confiteantur
tibi populi, Deus: confiteantur tibi po-
7 puli omnes: Terra dedit fructum suum.
8 Benedicat nos Deus, Deus noster, Be-
nedicat nos Deus: & metuant eum
omnes fines terræ.

In finem,
1 Psalmus Cantici ipsi David.
LXVII.
2 Exurgat Deus, & dissipentur ini-
mici ejus: & fugiant qui oderunt eum,
3 à facie ejus. Sicut deficit fumus, defici-
ant: sicut fluit cera à facie ignis, sic per-
4 eant peccatores à facie Dei. Et justi
epulentur, & exultent in conspectu Dei:
5 & delectentur in lætitia. Cantate Deo,
psalmum dicite nomini ejus: iter facite
ei, qui ascendit super occasum: Dñs no-
men illi. Exultate in conspectu ejus,
6 turbabuntur à facie ejus, Patris orpha-
norum, & judicis viduarum. Deus in
7 loco sancto suo: Deus qui inhabitare
facit unius moris in domo: Qui educit
vinctos in fortitudine, similiter eos qui
exasperant, qui habitant in sepulchris.
8 Deus, cùm egredereris in conspectu po-
9 puli tui, cùm pertrãsires in deserto: Ter-
ra mota est, etenim cœli distillaverunt
à facie Dei Sinai, à facie Dei Israel.
10 Pluviam voluntariam segregabis, Deus,
hæreditati tuæ: & infirmata est, tu ve-
11 rò perfecisti eam. Animalia tua habi-
tabunt in ea: parâsti in dulcedine tua
12 pauperi, Deus. Dominus dabit verbum
13 evangelizantibus, virtute multâ. Rex
virtutũ dilecti dilecti: & speciei domûs
dividere spolia.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

1 Εἰς τὸ τέλος, Ἐν ὕμνοις ψαλμὸς τῷ Δαυίδ.
ξς΄.
2 Ὁ Θεὸς οἰκτειρήσαι ἡμᾶς, καὶ εὐλογήσαι ἡμᾶς,
ἐπιφάναι τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐφ᾽ ἡμᾶς. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
3 Τοῦ γνῶναι ἐν τῇ γῇ τὴν ὁδόν σου, ἐν πᾶσιν ἔ-
4 θνεσι τὸ σωτήριόν σου. Ἐξομολογησάσθωσάν σοι
λαοὶ ὁ Θεὸς, ἐξομολογησάσθωσάν σοι λαοὶ πάν-
5 τες. Εὐφρανθήτωσαν καὶ ἀγαλλιάσθωσαν ἔθνη, ὅτι κρι-
νεῖς λαοὺς ἐν εὐθύτητι, καὶ ἔθνη ἐν τῇ γῇ ὁδηγή-
6 σεις. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ἐξομολογησάσθωσάν σοι λα-
οὶ ὁ Θεὸς, ἐξομολογησάσθωσάν σοι λαοὶ πάντες.
7 Γῆ ἔδωκε τὸν καρπὸν αὐτῆς. εὐλογήσαι ἡμᾶς ὁ
8 Θεὸς, ὁ Θεὸς ἡμῶν, Εὐλογήσαι ἡμᾶς ὁ Θεὸς, καὶ
φοβηθήτωσαν αὐτὸν πάντα τὰ πέρατα τῆς γῆς.

1 Εἰς τὸ τέλος, Τῷ Δαυὶδ ψαλμὸς ᾠδῆς.
ξζ΄.
2 Ἀναστήτω ὁ Θεὸς, καὶ διασκορπισθήτωσαν οἱ ἐ-
χθροὶ αὐτοῦ, καὶ φυγέτωσαν οἱ μισοῦντες αὐτὸν ἀπὸ
3 προσώπου αὐτοῦ. Ὡς ἐκλείπει καπνὸς, ἐκλιπέτω-
σαν· ὡς τήκεται κηρὸς ἀπὸ προσώπου πυρὸς, οὕτως
ἀπόλοιντο οἱ ἁμαρτωλοὶ ἀπὸ προσώπου τοῦ Θεοῦ.
4 Καὶ οἱ δίκαιοι εὐφρανθήτωσαν· ἀγαλλιάσθωσαν ἐν-
5 ώπιον τοῦ Θεοῦ, τερφθήτωσαν ἐν εὐφροσύνῃ. Ἄσατε
τῷ Θεῷ, ψάλατε τῷ ὀνόματι αὐτοῦ, ὁδοποιήσατε
τῷ ἐπιβεβηκότι ἐπὶ δυσμῶν, Κύριος ὄνομα αὐτῷ,
καὶ ἀγαλλιᾶσθε ἐνώπιον αὐτοῦ. ταραχθήσονται ἀπὸ
6 προσώπου αὐτοῦ, Τοῦ πατρὸς τῶν ὀρφανῶν, καὶ κρι-
7 τοῦ τῶν χηρῶν, ὁ Θεὸς ἐν τόπῳ ἁγίῳ αὐτοῦ. Ὁ Θε-
ὸς κατοικίζει μονοτρόπους ἐν οἴκῳ, ἐξάγων πεπε-
δημένους ἐν ἀνδρείᾳ· ὁμοίως τοὺς παραπικραίνον-
8 τας, τοὺς κατοικοῦντας ἐν τάφοις. Ὁ Θεὸς, ἐν τῷ
ἐκπορεύεσθαί σε ἐνώπιον τοῦ λαοῦ σου, ἐν τῷ δια-
9 βαίνειν σε τὴν ἔρημον· ΔΙΑΨΑΛΜΑ· Γῆ ἐσεί-
σθη, καὶ γὰρ οἱ οὐρανοὶ ἔσταξαν ἀπὸ προσώπου τοῦ Θεοῦ
10 τοῦ Σινὰ, ἀπὸ προσώπου τοῦ Θεοῦ Ἰσραήλ. Βροχὴν
ἑκούσιον ἀφοριεῖς ὁ Θεὸς τῇ κληρονομίᾳ σου, καὶ ἠσθέ-
11 νησε, σὺ δὲ κατηρτίσω αὐτήν. Τὰ ζῶά σου κατοι-
κοῦσιν ἐν αὐτῇ, ἡτοίμασας ἐν τῇ χρηστότητί σου τῷ
12 πτωχῷ. Ὁ Θεὸς Κύριος δώσει ῥῆμα τοῖς εὐαγ-
13 γελιζομένοις δυνάμει πολλῇ, Ὁ Βασιλεὺς τῶν δυνά-
μεων τοῦ ἀγαπητοῦ, τοῦ ἀγαπητοῦ, καὶ ὡραιότητι τοῦ οἴ-
κου διελέσθαι σκῦλα.

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

In finem, In hymnis (a) [a] Psal- 1
mus ipsi David. LXVI.
1 Deus misereatur nostri, & 2
benedicat nos: illuminet vultum
suum (b) super nos. [b]. DIA-
PSALMA. 2 [c] Ad (c) cogno- 3
scendum in terra viam tuam, in
omnibus gentibus salutare tuum.
3 Confiteantur tibi populi, Deus: 4
confiteantur tibi populi omnes.
4 Letentur & exultent gentes: 5
quoniam (d) judicabis populos in
æquitate, & gentes in terra di-
riges. DIAPSALMA. 5 Confi- 6
teantur tibi populi, Deus: confite-
antur tibi populi omnes: Terra 7
dedit fructum suum. 6 Benedi-
cat nos Deus, Deus noster, Be- 8
nedicat nos Deus: & metuant eum omnes fines terræ.

In finem, Ipsi David Psalmus can- 1
tici. LXVII.
1 Exurgat (a) Deus, & dissi- 2
pentur inimici ejus: & fugiant,
qui oderunt eum, à facie ejus.
2 Sicut deficit fumus, deficiant: 3
sicut liquefit cera à facie ignis;
sic pereant (b) peccatores à facie
Dei. 3 Et justi (c) lætentur, ex- 4
ultent in conspectu Dei: delecten-
tur in lætitia. 4 Cantate Deo, 5
psallite nomini ejus: (d) iter fa-
cite ei, qui ascendit super occa-
sum: (e) Dominus nomen illi.
5 Et exultate in conspectu ejus:
turbabuntur à facie ejus, Patris 6
orphanorum, & judicis vidua-
rum. 6 (f) Deus in loco sancto
suo. Deus inhabitare facit [a] u- 7
nius (g) moris in domo. 7 Qui
educit vinctos in fortitudine. Si-
militer eos qui (h) exasperant,
qui habitant in sepulchris. 8 De- 8
us, (i) cùm egredereris in con-
spectu [b] populi tui, cùm (k)
pertransires desertum: DIA-
PSALMA. 9 Terra mota est: et- 9
enim cœli distillaverunt à facie
Dei (l) Sinai, à facie Dei Isra-
el. 10 Pluviam voluntariam se- 10
gregabis, Deus, hæreditati tuæ: &
infirmata (m) est: tu verò [c] per-
fecisti eam. 11 Animalia tua in- 11
habitabunt in ea: parâsti in dul-
cedine tua (n) pauperi. 12 Deus (o) Dominus dabit verbum evangelizantibus virtute 12
multâ: 13 Rex virtutum (p) dilecti, dilecti, & [d] speciei domûs dividere spolia. 13

Versio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ፡ስብሐት፡መዝሙር፡ማኅሌት፡፡
፷፮ እግዚአብሔር፡ ይበርከነ፡ ወይሣሀለ 1
ነ፡፡ወያርኢ፡ገጾ፡ላዕሌነ፡ወንሕዮ፡፡=፡ ከ 2
መ፡ ናእምር፡ በምድር፡ ፍኖተከ፡፡ወበኵ
ሉ፡አሕዛብ፡አድኅኖተከ፡፡=፡ ይገንዩ፡ለ 3
ከ፡አሕዛብ፡እግዚኦ፡፡ይገንዩ፡ ለከ፡ አሕዛ
ብ፡ኵሉሙ፡፡=፡ ይትፈሥሑ፡ወይትሐሠ 4
ዩ፡ አሕዛብ፡፡እስመ፡ ትኴንኖሙ፡ ለአሕዛ
ብ፡ በርትዕ፡፡ወትመርሖሙ፡ ለአሕዛብ፡ በ
ምድር፡፡=፡ ይገንዩ፡ለከ፡አሕዛብ፡እግዚ 5
አ፡፡ይገንዩ፡ ለከ፡ አሕዛብ፡ ኵሉሙ፡፡ም
ድርኒ፡ ወሀበት፡ ፍሬሃ፡፡=፡ ወይበርከነ፡እ 6
ግዚአብሔር፡ አምላክነ፡፡ ወይበርከነ፡ እ
ግዚአብሔር፡፡ ወይፍርህዎ፡ ኵሉሙ፡ አ
ጽናፈ፡ምድር፡፡=፡

ፍጻሜ፡ዘዳዊት፡መዝሙር፡ማኅሌት፡፡
፷፯ ይትነሣእ፡እግዚአብሔር፡ወይዘረው፡ 1
ፀሩ፡፡ወይጕየ፡ ጸላእቱ፡ እምቅድመ፡ ገ
ጹ፡፡=፡ ከመ፡የኀልቅ፡ጢስ፡ከማሁ፡የኀል 2
ቁ፡፡ወከመ፡ይትመሰው፡ሰምዕ፡እምቅድመ፡
ገጸ፡እሳት፡፡ከማሁ፡ ይትሐጐሉ፡ ኃጥአን፡
እምቅድመ፡ገጹ፡ለእግዚአብሔር፡፡=፡ ወ 3
ጻድቃንሰ፡ ይትፈሥሑ፡፡ወይትሐሠዩ፡ በቅ
ድመ፡ እግዚአብሔር፡፡ወይትፌሥሑ፡ በሐ
ሤት፡፡=፡ ሰብሕዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ወ 4
ዘምሩ፡ለስሙ፡፡ፍኖተ፡ ግበሩ፡ ለዘ፡ዐርገ፡
እንተ፡ዐረብ፡እግዚአብሔር፡ስሙ፡፡=፡ ወ 5
ተፈሥሑ፡ በቅድሜሁ፡፡ወይደንግፁ፡ እም
ቅድመ፡ገጹ፡፡አብ፡ለእጓለ፡ ማውታ፡ መኰ
ንንኒ፡ ለአበራት፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ ው 6
ስተ፡ ቤተ፡ መቅደሱ፡፡እግዚአብሔር፡የኀድ
ሮሙ፡ለባሕታውያን፡ውስተ፡ቤቱ፡፡=፡ ወያ 7
ወፅኦሙ፡ ለሙቁሐን፡ በኀይሉ፡፡ከማሁ፡ ለ
መረርን፡ እለ፡ ይነብሩ፡ ውስተ፡ መቃብ
ር፡፡=፡ እግዚኦ፡ አመ፡ ወፃእከ፡ቅድመ፡ 8
ኵሉ፡ ሕዝብከ፡፡ወአመ፡ እንተ፡ ገደም፡
ኀለፍከ፡፡=፡ ምድርኒ፡ አድለቅለቀት፡ወ 9
ሰማያትኒ፡ አንጠብጠቡ፡፡እምቅድመ፡ ገጹ፡
ለአምላከ፡ሲና፡፡እምቅድመ፡ ገጹ፡ ለአም
ላከ፡እስራኤል፡፡=፡ ዝናመ፡ፈቃዱ፡ዘፈለ 10
ጠ፡እግዚአብሔር፡ ለርስትከ፡፡አመ፡ ደከ
መ፡አንተ፡ታጸንዖ፡፡=፡ እንስሳከ፡የኀድር፡ 11
ውስቴቱ፡፡ወአስተደሎከ፡ ለነዳያን፡በኂሩት
ከ፡ እግዚኦ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ ይሁብ 12
ሙ፡ቃለ፡ለእለ፡ይዜንዉ፡ኀይለ፡ብዙኀ፡፡=፡
ንጉሠ፡ ኀያላን፡ ለፍቁሩ፡፡ለፍቁሩ፡ወለስነ፡ 13
ቤትከ፡ተካፈልነ፡ምህርከ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. LXVI. [a] Psalmus cantici. [b] & vivamus. [c] Ut cognoscamus in PSAL. LXVII. [a] solitarios in domo. [b] omnis populi [c] confirmasti eam. [d] decori domus tuæ divides nobis spolia.

Versio ARABICA. cum Interpretatione LATINA.

1 * المزمور السادس والستون * لداود في التسابيح * وعدده يه * استيكن *
2 3 * الله يتراف علينا ويباركنا * يجلي وجهه علينا ويرحمنا * لنعرف في الارض سبلك * وفي
4 5 جميع الامم خلاصك * فلتعترف لك الشعوب يا الله * ولتشكرك جميع الشعوب * ولتفرح
6 الامم ويبتهجوا * لانك تحكم في الشعوب بالاستقامة * وتهدي الامم في الارض * فلتعترف
7 8 لك الشعوب يا الله * ولتشكرك الشعوب جميعها * الارض اعطت ثمرها * باركنا الله * الله الهنا
يباركنا فلتخشاه جميع اقطار الارض * اللالويا * المزمور السابع والستون *
1 * لداود تسبحة * وعدده * ف * استيكن *
2 3 * يقوم الله وليتفرق اعداوه وليهرب من وجهه كل مبغضيه * وليضمحلوا كما يضمحل
4 الدخان * وكما يذوب الشمع قدام النار * كذلك تهلك الخطاة من قدام الله * وليفرح
5 الصديقون * ويستبشروا امام الله وليفرحوا فرحا * سبحوا الله ورتلوا اسمه * يسروا طريق
6 الرب الراكب على المغارب الرب اسمه * وليبتهجوا امامه وليضطربوا من وجهه * لانه ابو
7 الايتام * وقاضي الارامل * الله في مكان قدسه * الله يسكن ذوي الخلق الواحد في بيت * ويطلق
8 المقيدين بقوة * كذلك المردة الساكنين في القبور * اللهم حين جزت امام شعبك * اذ عبرت في
9 البرية * تزلزلت الارض * والسموات قطرت من عند الله * في جبل سينا * من وجه اله اسرايل *
10 11 * سقيت يا الله لميراثك مطر الرضي * مرضت وانت جبرتها * اسكنت فيها حيوانك * اعددت
12 13 للمساكين بصلاحك يا الله * الرب يعطي المبشرين كلاما بقوة عظيمة * ملك القوات هو
الحبوب * وفي بهاء بيت الحبيب يقسم الغنايم *

PSAL. LXVI.
Davidis, de laudationibus. Et numerus vers. 15. 1
Deus propitietur nobis, & benedicat 2
nos: oriri faciat vultũ suũ super
nos, & misereatur nostri. Ut cognoscamus 3
in terra semitas tuas, & in omnibus gen-
tibus salutem tuã. Confiteantur tibi po- 4
puli, O Deus, & gratias agant tibi omnes
populi: Et lætentur gentes ac jubilent; 5
quia tu judicas inter populos cum æqui-
tate, & dirigis gentes in terra. Confitean- 6
tur tibi populi, O Deus, & gratias agant
tibi populi omnes. Terra dedit fructum 7
suum: benedixit nos Deus. Deus, Deus 8
noster benedicet nobis: quare formident
eum universi fines terræ. Alleluja.

PSAL. LXVII.
Davidis, laudatio. Et numerus 1
vers. 80.
Exurgat Deus, & dissipentur inimici 2
ejus, & fugiant à facie ejus omnes
osores ipsius. Et evanescant quemadmo- 3
dum evanescit fumus, & quemadmodum
liquescit cera corã igne, sic pereant pec-
catores à conspectu Dei. At gaudeant ju- 4
sti & exhilarentur ante Deum, & exul-
tent exultatione. Laudate Deum & psal- 5
lite nomini ejus, facilem reddite viã Do-
mini equitantis super occasus, Dominus
nomen ejus. Itaque exhilarentur coram
eo, & conturbentur à facie ipsius: Quo- 6
niam ipse est pater orphanorum, & judex
viduarũ. Deus est in loco sanctitatis suæ:
Deus inhabitare facit habentes morem 7
eundem in domo, & dimittit vinctos cũ
potentia, similiter rebelles habitantes in
sepulchris. Deus, quando transîsti ante 8
populum tuum, quum præivisti per de-
sertum, Tremefacta est terra, & cœli 9
distillaverunt à conspectu Dei in mon-
tem Sinai, à conspectu Dei Israel. Po- 10
tâsti O Deus, hæreditatem tuam pluviâ
oblectationis: infirmata est, & tu resar-
sisti eam. Habitare fecisti in ea animalia 11
tua: disposuisti pauperibus ex bonitate
tua, O Deus. Dominus dabit evangeli- 12
zantibus sermonem cum virtute magna.
Rex virtutum ipse est dilectus, & in 13
splendore domûs dilecti dividet spolia.

תְּהִלִּים : סח

: argento in tectæ columbæ pennæ ,tripodes inter accubueritis Si
14 אִם־תִּשְׁכְּבוּן בֵּין שְׁפַתָּיִם כַּנְפֵי יוֹנָה נֶחְפָּה בַכֶּסֶף
reges Saddai diffingendo In .auro flavo in ejus alæ &
15 וְאֶבְרוֹתֶיהָ בִּירַקְרַק חָרוּץ׃ בְּפָרֵשׂ שַׁדַּי מְלָכִים
: Basan mons Dei Mons .Salmon in nix ut albescebas ,ea in
16 בָּהּ תַּשְׁלֵג בְּצַלְמוֹן׃ הַר־אֱלֹהִים הַר־בָּשָׁן
montes despicitis quid Ut .Basan mons gibborum mons
17 הַר גַּבְנֻנִּים הַר־בָּשָׁן׃ לָמָּה תְּרַצְּדוּן הָרִים
Dominus etiam ? eum inhabitare Deus desideravit montem ,gibbosi
גַּבְנֻנִּים הָהָר חָמַד אֱלֹהִים לְשִׁבְתּוֹ אַף־יְהוָה
: duplicata millia myriades duæ Dei Currus .æternum in inhabitabit
18 יִשְׁכֹּן לָנֶצַח׃ רֶכֶב אֱלֹהִים רִבֹּתַיִם אַלְפֵי שִׁנְאָן
,altitudinem in Ascendisti .sanctitate in Sinai ,eis in Dominus
19 אֲדֹנָי בָם סִינַי בַּקֹּדֶשׁ׃ עָלִיתָ לַמָּרוֹם
etiam & : homine in dona accepisti ,captivitatem captivam duxisti
שָׁבִיתָ שֶּׁבִי לָקַחְתָּ מַתָּנוֹת בָּאָדָם וְאַף
Dominus Benedictus .Deum Jah inhabitandum ad ,rebelles
20 סוֹרְרִים לִשְׁכֹּן יָהּ אֱלֹהִים׃ בָּרוּךְ אֲדֹנָי
.Selah ,nostram salutem Deus nobis onus imponet ,die die
יוֹם יוֹם יַעֲמָס־לָנוּ הָאֵל יְשׁוּעָתֵנוּ סֶלָה׃
mortem ad Adonai Domino & ,salutes ad Deus nobis Deus
21 הָאֵל לָנוּ אֵל לְמוֹשָׁעוֹת וְלֵיהוִה אֲדֹנָי לַמָּוֶת
,suorum inimicorum caput transfiget Deus Veruntamen .exitus
22 תּוֹצָאוֹת׃ אַךְ־אֱלֹהִים יִמְחַץ רֹאשׁ אֹיְבָיו
,Dominus Dixit .suis delictis in ambulantis ;crinis verticem
23 קָדְקֹד שֵׂעָר מִתְהַלֵּךְ בַּאֲשָׁמָיו׃ אָמַר אֲדֹנָי
.maris profundis de redire faciam : faciam redire Basan ex
מִבָּשָׁן אָשִׁיב אָשִׁיב מִמְּצֻלוֹת יָם׃
tuorum canum lingua ,sanguine in tuum pedem figas Ut
24 לְמַעַן תִּמְחַץ רַגְלְךָ בְּדָם לְשׁוֹן כְּלָבֶיךָ
itinera ;Deus tua itinera Viderunt .ipso ex inimicis ex
25 מֵאֹיְבִים מִנֵּהוּ׃ רָאוּ הֲלִיכוֹתֶיךָ אֱלֹהִים הֲלִיכוֹת
cantores Prævenerunt .sanctitate in mei regis ,mei Dei
26 אֵלִי מַלְכִּי בַקֹּדֶשׁ׃ קִדְּמוּ שָׁרִים
.tympanizantium puellarum medio in ;modulatores post
אַחַר נֹגְנִים בְּתוֹךְ עֲלָמוֹת תּוֹפֵפוֹת׃
vena ex Domino ;Deo benedicite ecclesiis In
27 בְּמַקְהֵלוֹת בָּרְכוּ אֱלֹהִים אֲדֹנָי מִמְּקוֹר
principes ,eis dominans pusillus Binjamin Ibi .Israel
28 יִשְׂרָאֵל׃ שָׁם בִּנְיָמִן צָעִיר רֹדֵם שָׂרֵי
.Naphthali principes ,Zebulun principes : eorum lapis ,Jehudah
יְהוּדָה רִגְמָתָם שָׂרֵי זְבֻלוּן שָׂרֵי נַפְתָּלִי׃
hoc Deus fortifica ,tuæ fortitudini tuus Deus Præcepit
29 צִוָּה אֱלֹהֶיךָ עֻזֶּךָ עוּזָּה אֱלֹהִים זוּ
offerent tibi Jerusalaim super tuo templo A .nobis es operatus
30 פָּעַלְתָּ לָּנוּ׃ מֵהֵיכָלֶךָ עַל־יְרוּשָׁלָ͏ִם לְךָ יוֹבִילוּ
.munus reges
מְלָכִים שָׁי׃

תרגום TARGUM.

14 אין אתון מלכיא רשיעיא שכבין ביני קלקלתא כנשתא דישראל דדמיא ליונתא מטללא בענני יקרא מפלגא בזת מצראי סימא דזקיק וטספריהא מלין אובריזין סנין: 15 כד פרסת אידהא על ימא בצלו שדי אמאך מלכין ואמטולתה ענן גהנם היך תלגא פצא יתה מטולא דמותא: 16 טור מוריה אתר די פלחו אבהת עלמא קדם יי אתבחר לבנין בית מקדשא וטור סיני למוהבית אוריתא טור מתנן טור תבור וכרמל אתפסילו אתעבד להון גבבא היך טור מתנן: 17 אמר אלהא למה אתון טפזין טוריא לית רעותי למתן אוריתא על טוריא גיותנין מבסרניא הא טור סיני דמכיך רגג מימרא דיי לאשראה עלוי שכנתיה לחוד בשמי שמיא יי ישרי לעלמא: 18 ארתיכין דאלהא תרין רבבן דנור דליק תרין אלפין דאנגליא מדברין להון שכנתא דיי שרת עליהון על טורא דסיני בקדושה: 19 סלקתא לרקיע [משה נביא] שביתא שביתא [אלפתא פתגמי אוריתא] יהבתא להון מתנן לבני נשא וברם סרבניא די מתגיירין ותיבין בתתובא שרת עליהון שכינת יקרא דיי אלהים: 20 בריך יי כל יומא ויומא טען לנא מוסיף פקודיא עלוי פקודיא תקיפא די הוא פורקננא וסעידנא לעלמין: 21 אלהא לנא תקוף ופורקן ומן קדם יי מתגרין ברשיעיא מותא ומפקנות נשמתא בסרנוקא: 22 ברם אלהא יתבר ריש בעלי דבבוי ינתר שער גבר די מתהלך בחובוי: 23 צדיקיא דמיתו ואתאכלו מן חיות ברא אמר יי מבותנן אתיב אתיב צדיקיא די ישתניקו במצולתיה דימא: 24 מן בגלל דיחמון פורענות רשיעא יטמשון רגליהון בדם קטילין לישן חיות ברא מן תרבהון ידהנון מן בעלי דבבא מנהון יסבעון: 25 חמון בית ישראל הליכות שכנתך על ימא אלהא אמרין הליכת אלהא מלך כל עלמא בקודשא: 26 אקדימו ואמרו שירתא בתר משה ואהרן דמנגנין קדמיהון במצע נשיא צדיקתא די עם מרים מתופפן: 27 ביני כנישיא בריכו אלהא רוממו יי עובריא במעי אמהון זרעא דישראל: 28 תמן בנימן זעיר בשבטיא דמן שירויא נחת לימא מטול היכנא קבל מלכותא מן שירויא ובתריהון נחתי רברבי יהודה רגמי יתהון שבטיא אבנין וקבילו רבנותא בתרהון רבני זבולן הוון תגרידהון רבני נפתלי הוון גבריהון: 29 פקד אלהא עושנך אתעשן אלהא שרי בבית מקדשא דנן דעבדת לנא: 30 מן היכלך תקבל קורבניא על ירושלם שכנתך שריא מפנקטיהון לך ייתון מלכיא קורבניא:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Si vos reges *impii* dormitis inter aulæa, Ecclesiæ Iſraelis quæ ſimilis eſt columbæ, cooperta nubibus gloriæ, dividit prædam Ægyptiorū, argentum repurgatum & arculas plenas obrizo puriſſimo. Quando extendit manus ſuas in oratione ſuper mare, Omnipotens proſtravit regna; *& propter eam refrixit* gehenna ſicut nix; eripuit eam ab umbra mortis. Mons *Moria, locus ubi adoraverunt patres antiqui coram Domino, electus eſt ad ædificationem domus ſanctuarii, & mons Sinai ad dandam legem*; mons Baſan, *mons Tabor et Carmel repudiati ſunt, factus eſt ipſis collis ſicut* mons Baſan. Dixit Deus, Quare ſubſilitis montes excelſi? *haud placitū eſt mihi dare legem ſuper montibus altis & ſuperciliosis*; ecce mons Sinai humilis eſt: deſideravit Verbum Dei collocare *ſuper eum* majeſtatē ſuam, quinetiam *Dominus in* cœlis cœlorū habitabit in perpetuum. Currus Dei binæ myriades ignis ardentis, duo millia angelorū ducunt illos: majeſtas Dñi quieſcit ſuper illos ſuper montem Sinai in ſanctitate. Aſcendiſti firmamentum *Moſſeh propheta*: captivam duxiſti captivitatem: docuiſti verba Legis dediſti dona filiis hominum: at ſuper rebelles proſelytos qui revertuntur *reſipiſcentia* quieſcit majeſtas gloriæ Domini. Benedictus Dominus qui ſingulis diebus onerat nos; addens præcepta ſuper præcepta; fortis qui eſt redemptio noſtra & auxilium noſtrum in æternum. Deus noſtra fortitudo, & redemptio, & in conſpectu Domini concertant in impios mors & exitus animæ in ſuffocationē. Verùm Deus confringet caput inimicorum ſuorū, evellet capillos viri ambulantis in flagitiis ſuis. [*De*] juſtis qui mortui ſunt & devorati à feris ſylveſtribus, dixit Dñs; De Baſan reducam, reducā juſtos qui ſunt ſuffocati in profundo maris. Ut videant vindictam *improbi*: intingant pedes ſuos in ſanguine occiſorum; linguæ ferarum ſylveſtriū ex pinguescant de adipe illorū: de inimicis ſuis eidem ſatientur. Viderunt domus Iſrael inceſſus Majeſtatis tuæ ſuper mare Deus, dicentes; inceſſus Dei regnantis ſuper univerſum orbem in ſanctitate. Prævenerunt & dixerunt canticum poſt Moſſeh, & Aharon qui modulabantur ante eos, in medio mulierum juſtarum cum Maria tympana pulſantium. In medio eccleſiarum benedicite Deum, exaltate Dominum fœtus in viſceribus matrum ſuarum de ſemine Iſrael. Ibi erat Binjamin minor inter tribus *qui primò deſcendit in mare, propterea accepit regnum* ab initio: & poſt eos deſcenderunt principes Jehuda, *obruerunt ipſos* tribus lapidibus; *& acceperunt principatum poſt eos*: principes Zabulon fuerunt negotiatores *eorum*, principes Neptali *fuerunt robuſti eorum*. Præcipe Deus fortitudine tua; fortis eſto Deus, habita in hac domo ſanctuarii, quam feciſti nobis. E templo tuo accipies ſacrificia ſuper Jeruſalem, [*ubi*] majeſtas tua quieſcit, *ex palatiis ſuis* tibi offerent reges munera.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

14 ܐܢ ܬܕܡܟܘܢ ܒܝܬ ܣܦܬܐ: ܓܦܐ ܕܝܘܢܐ ܕܡܚܦܝܢ ܒܣܐܡܐ. ܘܐܒܪܝܗ ܒܝܘܪܩܐ ܕܕܗܒܐ ܡܫܒܚܐ:
15 * ܕܝܦܣ * ܟܕ ܦܪܫ ܐܠܗܐ ܡܠܟܐ ܒܗ ܐܬܠܓ ܒܨܠܡܘܢ. * ܛܘܪܗ ܕܐܠܗܐ: ܛܘܪܐ
16
17 ܕܒܝܫܢ ܛܘܪܐ ܕܓܒܢܝܐ. ܛܘܪܐ ܕܒܝܫܢ * ܡܢܐ ܪܓܝܢ ܐܢܬܘܢ ܛܘܪܐ ܕܓܒܢܝܐ: ܛܘܪܐ ܕܓܒܐ
18 ܠܗ ܐܠܗܐ ܠܡܥܡܪ ܒܗ. ܡܪܝܐ ܢܫܪܐ ܒܗ ܠܥܠܡ: * ܪܟܒ ܐܠܗܐ ܒܪܒܘܬܐ ܘܒܐܠܦܐ
19 ܕܚܝܠܐ. ܡܪܝܐ ܒܗܘܢ ܣܝܢܝ ܒܩܘܕܫܗ: * ܦܣܘܩܐ * ܣܠܩܬ ܠܡܪܘܡܐ ܘܫܒܝܬ
20 ܫܒܝܬܐ. ܘܢܣܒܬ ܡܘܗܒܬܐ ܠܒܢܝܢܫܐ: ܘܡܪܘܕܐ ܠܐ ܢܥܡܪܘܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. * ܒܪܝܟ
21 ܗܘ ܡܪܝܐ ܒܟܠ ܝܘܡ ܕܐܘܪܬܢ ܝܪܬܘܬܗ: * ܕܝܦܣ * ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܢ ܐܠܗܐ ܡܚܝܢܢ.
22 ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܡܪܝܐ ܕܡܘܬܐ ܘܡܦܩܢܘܬܐ: * ܒܪܡ ܐܠܗܐ ܢܦܣܘܩ ܪܫܐ ܕܒܥܠܕܒܒܘܗܝ.
23 ܘܩܘܕܩܕܐ ܕܣܥܪܐ ܕܐܝܠܝܢ ܕܡܗܠܟܝܢ ܒܣܟܠܘܬܗܘܢ: * ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܕܡܢ ܒܝܬ ܫܢܐ ܐܦܩ.
24 ܘܐܗܦܘܟ ܡܢ ܥܘܡܩܝܗܘܢ ܕܝܡܐ: * ܡܛܠ ܕܢܨܛܒܥ ܪܓܠܟ ܒܕܡܐ. ܘܠܫܢܐ ܕܟܠܒܝܟ
25 ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝܟ: * ܚܙܘ ܗܠܟܬܟ ܐܠܗܐ. ܗܠܟܬܗ ܕܐܠܗܝ ܘܡܠܟܝ ܩܕܝܫܐ:
26 ܩܕܡܘ ܪܘܪܒܢܐ ܒܬܪܗܘܢ ܡܫܒܚܢܐ. ܒܝܬ ܒܬܘܠܬܐ ܕܢܩܫܢ ܒܦܠܓܐ * ܒܟܢܘܫܝܐ:
27
28 ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܡܢ ܡܒܘܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܬܡܢ ܒܢܝܡܝܢ ܙܥܘܪܐ ܒܫܠܝܐ:
29 ܪܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܫܠܝܛܢܝܗܘܢ. ܪܘܪܒܢܐ ܕܙܒܘܠܘܢ. ܪܘܪܒܢܐ ܕܢܦܬܠܝ: * ܦܩܘܕ
30 ܐܠܗܐ ܠܚܝܠܟ. ܘܐܬܩܢ ܐܠܗܐ ܗܢܐ ܕܥܒܕܬ ܠܢ: ܡܢ ܗܝܟܠܟ ܠܐܘܪܫܠܡ ܢܝܬܘܢ
ܠܟ ܡܠܟܐ ܩܘܪܒܢܐ:

* Si dormieritis inter ſcobes, alæ columbæ contectæ argento, plumæque ejus auro puriſſimo. * *Diapſal.* * Cùm ſegregat Deus Regem: ninxit ipſo in Selmon. Mons Dei. Montes Baiſan, montes Ghebenjá, Montes Baiſan: Quid cupitis montes Ghebenja, montem quem elegit ſibi Deus ad degendum in eo, Dominus inhabitabit in ſeculum. Equitavit Deus cum myriadibus & cum millibus exercitûs: Dominus cum eis eſt, Sinai in ſanctitate ejus.

* *Sectio* *

Aſcendiſti in altum, & cepiſti captivitatem, & largitus es dona hominibus: atque etiam rebelles non habitabunt coram Deo. Benedictus Dominus per ſingulos dies, qui dedit nos hæreditatem ſuam: * *Diapſalma* * Deus redemptor noſter, Deus ſervator noſter, Dominus Deus, Dominus mortis & evaſionis. Veruntamen Deus abſcindet caput hoſtium ſuorum, & vertices capilli eorum qui ambulant in peccatis ſuis. Dixit Dominus, Ex dentibus educam, & reducam ex profundis maris; Nam intingetur pes tuus ſanguine, lingua canum tuorum ex inimicis tuis. Viderunt greſſus tuos Deus, greſſus Dei mei, Regiſque mei ſancti. Præceſſerunt magnates, deinde pſallentes, inter puellas pulſantes tympana. Turmatim. Benedictus Dominus Deus de fontibus Iſraelis. Ibi Benjamin parvulus in tranquillitate, proceres Judha & principes eorum, proceres Zabolon, magnates Nephtali. Impera Deus robori tuo, & conforta Deus hoc quod paráſti nobis. De templo tuo ad Hieruſalem tibi afferent reges munera.

Verſio VULG. LAT.

14 Si dormiatis inter medios cleros, pennæ
columbæ deargentatæ, & poſteriora
15 dorſi ejus in pallore auri. Dum diſcernit
Cœleſtis reges ſuper eam, nive dealbabuntur
16 in Selmon: Mons Dei, mons
pinguis. Mons coagulatus, mons pinguis:
17 Ut quid ſuſpicamini montes
coagulatos? Mons, in quo beneplacitum
eſt Deo habitare in eo: etenim
18 Dominus habitabit in finem. Currus
Dei decem millibus multiplex,
millia lætantium: Dominus in eis in
19 Sina in Sancto. Aſcendiſti in altum,
cepiſti captivitatem: accepiſti dona in
hominibus: Etenim non credentes, inhabitare
20 Dominum Deum. Benedictus
Dominus die quotidié: proſperum
iter faciet nobis Deus ſalutarium
21 noſtrorum. Deus noſter, Deus ſalvos
faciendi: & Domini Domini exitus
22 mortis. Veruntamen Deus confringet
capita inimicorum ſuorum: verticem
capilli perambulantium in delictis ſuis.
23 Dixit Dominus; Ex Baſan convertam,
24 convertã in profundũ maris: Ut intingatur
pes tuus in ſanguine: lingua canũ
25 tuorum ex inimicis, ab ipſo. Viderunt
ingreſſus tuos, Deus, ingreſſus Dei mei;
26 regis mei qui eſt in Sancto. Prævenerunt
principes conjuncti pſallentibus,
in medio juvencularum tympaniſtriarũ.
27 In eccleſiis benedicite Deo Domino,
28 de fontibus Iſrael. Ibi Benjamin adoleſcentulus,
in mentis exceſſu. Principes
Juda, duces eorum: principes
29 Zabulon, principes Nephthali. Manda,
Deus, virtuti tuæ: confirma hoc,
Deus, quod operatus es in nobis.
30 A templo tuo in Jeruſalem, tibi offerent
reges munera.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

14 Ἐὰν κοιμηθῆτε ἀναμέσον τῶν κλήρων, πτέρυγες
περιστερᾶς περιηργυρωμέναι, καὶ τὰ μετάφρενα
15 αὐτῆς ἐν χλωρότητι χρυσίου. Ἐν τῷ διαστέλλειν
τὸν ἐπουράνιον βασιλεῖς ἐπ' αὐτῆς, χιονωθήσονται
16 ἐν Σελμών. Ὄρος τοῦ θεοῦ ὄρος πῖον,
17 ὄρος τετυρωμένον, ὄρος πῖον. Ἱνατί ὑπολαμβάνετε
ὄρη τετυρωμένα; τὸ ὄρος ὃ εὐδόκησεν ὁ
θεὸς κατοικεῖν ἐν αὐτῷ· καὶ γὰρ ὁ κύριος κατασκηνώσει
18 εἰς τέλος. Τὸ ἅρμα τοῦ θεοῦ μυριοπλάσιον,
χιλιάδες εὐθηνούντων, κύριος ἐν αὐτοῖς
19 ἐν Σινᾷ ἐν τῷ ἁγίῳ. Ἀναβὰς εἰς ὕψος, ᾐχμαλώτευσας
αἰχμαλωσίαν· ἔλαβες δόματα ἐν
ἀνθρώπῳ, καὶ γὰρ ἀπειθοῦντες τοῦ κατασκηνῶσαι.
20 Κύριος ὁ θεὸς εὐλογητὸς, εὐλογητὸς κύριος
ἡμέραν καθ' ἡμέραν, καὶ κατευοδώσει ἡμῖν
ὁ θεὸς τῶν σωτηρίων ἡμῶν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
21 Ὁ θεὸς ἡμῶν, ὁ θεὸς τοῦ σώζειν, καὶ τοῦ κυρίου
22 αἱ διέξοδοι τοῦ θανάτου. Πλὴν ὁ θεὸς συνθλάσει
κεφαλὰς ἐχθρῶν αὐτοῦ, κορυφὴν τριχὸς
23 διαπορευομένων ἐν πλημμελείαις αὐτῶν. Εἶπε
κύριος, Ἐκ Βασὰν ἐπιστρέψω, ἐπιστρέψω ἐν βυθοῖς
24 θαλάσσης. Ὅπως ἂν βαφῇ ὁ πούς σου
ἐν αἵματι, ἡ γλῶσσα τῶν κυνῶν σου ἐξ ἐχθρῶν
25 παρ' αὐτοῦ. Ἐθεωρήθησαν αἱ πορεῖαί σου
ὁ θεὸς, αἱ πορεῖαι τοῦ θεοῦ μου τοῦ βασιλέως
26 τοῦ ἐν τῷ ἁγίῳ. Προέφθασαν ἄρχοντες ἐχόμενοι
ψαλλόντων, ἐν μέσῳ νεανίδων τυμπανιστριῶν.
27 Ἐν ἐκκλησίαις εὐλογεῖτε τὸν θεὸν,
28 τὸν κύριον ἐκ πηγῶν Ἰσραήλ. Ἐκεῖ Βενιαμὶν
νεώτερος ἐν ἐκστάσει, ἄρχοντες Ἰούδα ἡγεμόνες
αὐτῶν, ἄρχοντες Ζαβουλὼν, ἄρχοντες
29 Νεφθαλί. Ἔντειλαι ὁ θεὸς τῇ δυνάμει
σου, δυνάμωσον ὁ θεὸς τοῦτο, ὃ κατηρτίσω
30 ἐν ἡμῖν. Ἀπὸ τοῦ ναοῦ σου ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ,
σοὶ οἴσουσι βασιλεῖς δῶρα.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

14 Si [e] dormiatis inter medios cleros, pennæ columbæ deargentatæ, & (q) poſteriora dorſi ejus [f] in (r) viriditate auri. 15 Dum [g] diſcernit (ſ) Cœleſtis reges ſuper eam, [h] nive dealbabuntur in (t) Selmon. Mons Dei, mons pinguis; 16 mons (u) coagulatus, mons pinguis: Ut quid (x) [i] ſuſpicamini montes coagulatos? 17 Mons, in quo beneplacitum eſt Deo habitare in eo: etenim Dominus inhabitabit in finem. 18 Currus Dei decem millibus multiplex, millia lætantium: Dominus in eis, in Sina, in Sancto. 19 (y) [k] Aſcendens in altũ captivâſti captivitatem, [l] accepiſti dona in homine: 20 [m] etenim (z) non credentes inhabitare. Dominus Deus benedictus, 21 benedictus Dñs de die in diem: proſperum iter faciet nobis Deus ſalutarium noſtrorum. 22 DIAPSALMA. Deus noſter, Deus ſalvos faciendi, & Domini exitus mortis. 23 Veruntamen Deus confringet capita inimicorum ſuorum, (aa) verticem capilli perambulantium in delictis ſuis. 24 Dixit Dominus, [n] Ex Baſan (bb) convertam: convertam in (cc) profundis maris. 25 Ut (dd) intingatur pes tuus in ſanguine, lingua canum tuorum [o] ex inimicis ab ipſo. 26 Viſi (ee) ſunt ingreſſus tui, Deus: ingreſſus Dei mei, regis, qui eſt in Sancto. 27 Prævenerunt principes (ff) conjuncti pſallentibus in medio juvencularum tympaniſtriarum. 28 In eccleſiis benedicite Deum, [p] Dominum de fontibus Iſrael. 29 Ibi Benjamin adoleſcentior [q] in (gg) ecſtaſi: 30 principes Juda, duces eorum: principes Zabulon, principes Nephthali. 31 Manda, Deus, (hh) virtuti tuæ; confirma hoc Deus, (ii) quod [r] perfeciſti in nobis. 32 [ſ] A templo tuo in Hieruſalem, tibi offerent reges munera. 30

Verſio ÆTHIOPICA.

እመ፡ ቤትክሙ ፡ ማእከለ ፡ መዋርስ 14
14 ት፡፡ ክነፊ ፡ ርግብ ፡ በብሩር ፡ ዘግቡ
ር፡፡ ወገበዋቲሃ ፡ በኀመልማለ ፡ ወር
ቅ፡፡=፡ እመ ፡ አዘዘ ፡ ሰማያዊ ፡ ንጉ 15
15 ሠ፡ሳዕሌሃ፡፡ በረድ ፡ ይዘንም ፡ ላዕለ፡
ሰልሞን፡፡ ደብረ ፡ እግዚአብሔር ፡ ደብር፡
ጥሉል፡፡=፡ ደብረ ፡ ርጉዕ፡ ወደብር ፡ ጥሉ 16
16 ል፡፡ ለምንት ፡ ይትኔሠኡ ፡ አድባር ፡ ርጉ
17 ዓን፡፡=፡ ደብረ ፡ ዘሠምረ ፡ እግዚአብሔ 17
ር ፡ የኀድር ፡ ውስቴታ፡፡ እስመ ፡ የኀድሮ፡
እግዚአብሔር ፡ ለዝሉፉ፡፡=፡ ሰረገላቲ 18
ሁ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ እምእልፊተ ፡ አእ
18 ላፍ ፡ ፍሡሐን፡፡ እግዚአብሔር ፡ ውስቴቶ
ሙ ፡ በሲና ፡ መቅደሱ፡፡=፡ ዐረገ ፡ ውስተ፡ 19
አርያም ፡ ፂዊወከ ፡ ፂዋ፡፡ ወወሀብከ፡
19 ጸጋከ ፡ ለእጓለ ፡ እምሕያው፡፡=፡ እስመ፡ 20
ይክሕዱ ፡ ከመ ፡ ይኅድሩ፡፡ እግዚአብሔ
20 ር ፡ አምላክ ፡ ቡሩክ፡፡=፡ ይትባረክ፡ እ 21
ግዚአብሔር ፡ በኵሉ ፡ መዋዕል፡፡ ይረድ
ኦነ ፡ አምላክነ ፡ ወመድኀኒነ፡፡=፡ አም 22
ላክነሰ ፡ አምላክ ፡ አድኀኖ፡፡ ወፍናዊ
21 ሁኒ ፡ ለሞት፡ ዘእግዚአብሔር፡ውእቱ፡፡=፡
ወባሕቱ ፡ እግዚአብሔር ፡ ይሰብር ፡ አርእ 23
22 ስተ ፡ ጸላእቱ፡፡ ወበከተማ ፡ ሥዕርቶሙ፡
የሐውር ፡ ጌጋዮሙ፡፡=፡ ይቤ ፡ እግዚአብ 24
ሔር ፡ ወፂእየ ፡ እገብእ፡፡ ወእትመየጥ ፡ እ
ንተ ፡ ቀላየ ፡ ባሕር፡፡=፡ ከመ ፡ ይሠረይ፡ 25
23 እገሪከ ፡ በደም፡፡ ልሳነ ፡ ከለባቲከ ፡ ላዕ
24 ለ ፡ ጸላእቱ፡፡=፡ አስተርአየ ፡ ፍናዊከ፡ 26
እግዚኦ፡፡ ፍናዊሁ፡ ለአምላኪየ፡ ለንጉሠ፡
ዘውስተ ፡ መቅደስ፡፡=፡ በጽሑ ፡ መላእክ 27
25 ት ፡ ወበሙ ፡ መዘምራን፡፡ ማእከለ፡ ደናግ
ል፡ ዘባጥያተ ፡ ከበሮ፡፡=፡ በማኅበ 28
26 ር ፡ ባርክዎ ፡ ለእግዚአብሔር፡፡ ወ
ለአምላክነ ፡ በአንቅዕተ ፡ እስራኤል፡፡=፡ 29
ህየ ፡ ብንያም ፡ ወሬዛ ፡ በኀይሉ፡፡=፡ መ 30
27 ላእክተ ፡ ይሁዳ ፡ ወመሳፍንቲሆሙ፡፡
መላእክተ ፡ ዛቢሎን ፡ መላእክተ ፡ ንፍታ
28 ሌም፡፡=፡ አዝዝ፡እግዚኦ፡በኀይልከ፡፡ ወአ 31
ጽንዖ፡እግዚኦ፡ለዝንቱ፡ ዘሠራዕከ፡ለነ፡፡=፡
ውስተ፡ጽርሕከ፡ዘኢየሩሳሌም፡፡ ለከ፡ያመ 32
29 ጽኡ፡ነገሥት፡አምኃ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] manſeritis in medio hæredum, [f] in pallore [g] ordinavit [h] nivem pluet ſuper Salmon. [i] elevamini montes coagulati? [k] Aſcendit in [l] dediſti dona tua [m] quoniã abnegabunt ut inhabitent Dominũ Deũ benedictum. Benedictus ſit Deus per ſingulos dies: auxiliabitur nobis Deus noſter & Salvator noſter. [n] Emigrationem meã reſtituã: & convertã per abyſſum maris. [o] adverſus inimicos ejus. [p] et Dominum noſtrum [q] in fortitudine ſua: [r] ordinâſti nobis. [ſ] In templo tuo quod Hieroſolymis eſt,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

14 * إِنْ نِمْتُمْ فِي وَسَطِ ٱلسَّهْلِ فَثَمَّ أَجْنِحَةُ حَمَامَةٍ مُفَضَّضَةٍ * وَمَنْكِبَاهَا بِصُفْرَةِ ٱلذَّهَبِ ٱلْخَالِصِ
15
16 * عِنْدَ مَا قَسَمَ ٱلسَّمَاوِيُّ عَلَيْهَا مُلُوكًا * يَبْيَضُّونَ مِثْلَ ٱلثَّلْجِ فِي صَلْمُونَ * جَبَلُ ٱللَّهِ
17 ٱلْجَبَلُ ٱلدَّسِمُ * ٱلْجَبَلُ ٱلْمُجَبَّنُ ٱلسَّمِينُ * لِمَاذَا تَظُنُّونَ جِبَالًا مُجَبَّنَةً * ٱلْجَبَلُ ٱلَّذِي شَاءَ ٱللَّهُ
18 يَسْكُنُهُ * وَإِنَّ ٱلرَّبَّ لَيَحُلُّ فِيهِ إِلَى ٱلِٱنْقِضَاءِ * مَرَاكِبُ ٱللَّهِ مُضَاعَفَةُ ٱلرُّبْوَاتِ مُخْصِبَةُ ٱلْأُلُوفِ
19 ٱللَّهُ فِيهِمْ فِي سِينَا قُدْسُهُ * صَعِدَ إِلَى ٱلْعُلَا وَسَبَى سَبْيًا * وَأَعْطَى ٱلنَّاسَ مَوَاهِبَ * وَٱلْمَرَدَةُ لَا
20 تَثْبُتُ أَمَامَ ٱلرَّبِّ * ٱلرَّبُّ مُبَارَكٌ ٱلرَّبُّ ٱلْإِلَاهُ مُبَارَكٌ * ٱلرَّبُّ يَوْمًا فَيَوْمًا * ٱلْإِلَاهُ خَلَاصُنَا يُسَهِّلُ
21 سَبِيلَنَا لَنَا * إِلَهُنَا هُوَ ٱلْإِلَاهُ ٱلْمُخَلِّصُ * رَبُّنَا مُنَجِّينَا * ٱللَّهُ رَبُّنَا * وَلِلرَّبِّ ٱلرَّبِّ مَخَارِجُ ٱلْمَوْتِ
22
23 * لَكِنَّ ٱللَّهَ يَرُضُّ رُؤُوسَ أَعْدَائِهِ * وَهَامَ ٱلرُّؤُوسِ ٱلَّذِينَ يَمْشُونَ فِي خَطَايَاهُمْ * قَالَ ٱلرَّبُّ
24 أَنَا أُخْرِجُ مِنْ بَيْنِ ٱلْأَسِنَّةِ * وَأُرْجِعُ مِنْ عُمْقِ ٱلْبِحَارِ * لِكَيْ تَصْطَبِغَ رِجْلَاكَ بِٱلدَّمِ * وَأَلْسُنُ
25
26 كِلَابِكَ مِنْ أَعْدَائِكَ * رَأَوْا آثَارَكَ يَا إِلَهِي * آثَارَ إِلَهِي ٱلْمَلِكِ ٱلْقُدُّوسِ * بَكَّرَتِ ٱلرُّؤَسَاءُ
27 مُقْتَرِنِينَ إِلَى ٱلْمُرَتِّلِينَ بَيْنَ ٱلْفَتَيَاتِ ٱلْمُدَفِّفَاتِ * بَارِكُوا ٱللَّهَ فِي ٱلْكَنَائِسِ * ٱلرَّبَّ فِي
28 يَنَابِيعِ إِسْرَائِيلَ * هُنَاكَ بِنْيَامِينُ ٱلصَّغِيرُ فِي طُمَأْنِينَتِهِ * رُؤَسَاءُ يَهُودَا وَمُدَبِّرُوهُمْ * رُؤَسَاءُ
29
30 زَابُلُونَ * رُؤَسَاءُ نَفْتَالِيمَ * اَللَّهُمَّ مُرْ بِقُوَّتِكَ وَأَعْضِدِ ٱللَّهُمَّ هَذَا ٱلَّذِي صَنَعْتَهُ لَنَا * فِي هَيْكَلِكَ
ٱلْمُقَدَّسِ بِيرُوشَلِيمَ * تَأْتِيكَ ٱلْمُلُوكُ بِٱلْقَرَابِينِ *

Si dormieritis in medio planitiei, illic 14
alæ columbæ deargentatæ, & humeri
ejus in pallore auri puriſſimi. Quando 15
diviſit Cœleſtis ſuper eam reges,
albeſcent inſtar nivis in Selmon. Mons 16
Dei, mons eſt ille *pinguis, mons*
inquam *condenſus, uber. Quarè imaginamini* 17
montes condenſos? montem,
quem voluit Deus, inhabitabit: &
quidem Dominus requieſcet in eo ad
finem uſque. Currus Dei multiplices 18
ſunt myriadibus, abundantes millibus:
Deus in ipſis, in Sinai ſanctitas ejus.
Aſcendit in altum, & captivavit captivitatem, 19
& dedit hominibus dona;
& rebelles non perſiſtent coram Domino.
Dominus ſit benedictus, Dominus 20
Deus benedictus, Dominus per
ſingulos dies. Deus ſalutis noſtræ
complanabit viam noſtram nobis. Deus 21
noſter eſt Deus ſalvator, Deus noſter
eſt redemptor noſter, Deus Dominus
noſter: & Domini, Domini
inquam *exitus mortis. Verùm Deus* 22
contundet capita inimicorum ſuorum,
& vertices capitum eorum qui ambulant
in peccatis ſuis. Dixit Dominus, 23
Ego educam è medio cuſpidum,
& reducam de profunditate
marium. Quatenus intingantur pedes 24
tui ſanguine, & linguæ canum
tuorum ex inimicis tuis. Viderunt 25
veſtigia tua, O Deus meus, veſtigia
Dei mei Regis ſancti. Prævenerunt 26
diluculò principes comitati pſallentibus
inter puellas tympanizantes. Benedicite 27
Deum in Eccleſiis, Dominum in
fontibus Iſrael. Ibi Benjamin exiguus 28
in ſecuritate ſua, principes Judæ &
gubernatores eorum, principes Zabulon,
principes Nephthalim. Deus, præcipe per 29
potentiam tuam: & confirma Deus, hoc
quod feciſti nobis. In templo tuo ſancto, 30
in Jeroſolyma: venient ad te reges cum
muneribus.

תהלים : סט

se glorantem populorum vitulis *in robuſtorum* congregationem ,*carnæ* feram Increpa
31 גער חית קנה עדת אבירים בעגלי עמים מתרפס
principes magni Venient .*volent conflictus* ,populos diſperſit *: argenti fragmentis in*
32 ברצי־כסף בזר עמים קרבות יחפצו: יאתיו חשמנים
Regna .Deo ſuas manus faciet currere Æthiopia : Ægypto ex
33 מני מצרים כוש תריץ ידיו לאלהים: ממלכות
cœlis in Equitanti .Selah ,Domino cantate : Deo cantate terræ
34 הארץ שירו לאלהים זמרו אדני סלה: לרכב בשמי
fortitudinem Date .fortitudinis vocem ſua voce in dabit En *: quondam* cœlorum
35 שמי־קדם הן יתן בקולו קול עז: תנו עז
Terribilis .*ætheribus* in ejus fortitudo & : ejus *celſitudo* Iſrael ſuper ,Deo
36 לאלהים על־ישראל גאותו ועזו בשחקים: נורא
robora & ,fortitudinẽ *dans* ipſe Iſrael Deus *: tuis* ſanctuariis à Deus
אלהים ממקדשיך אל ישראל הוא נתן עז ותעצמות
.Deus benedictus : populo
לעם ברוך אלהים:

PSAL. LXIX. סט

intraverunt quoniam ; Deus me Serva .David ipſi Soſannim ſuper Victori
1 2 למנצח על־שושנים לדוד: הושיעני אלהים כי באו
: ſtatus non & , profundi *cœno* in ſum Demerſus .animam ad uſque aquæ
3 מים עד־נפש: טבעתי ביון מצולה ואין מעמד
,*me* clamando *in* Laboravi .me *mundavit alveus* & ,aquarum profunda in veni
באתי במעמקי־מים ושבלת שטפתני: יגעתי בקראי
ſunt Plures .meo Deo in *ſperans* : mei oculi defecerunt ,meum guttur eſt *aduſtum*
4 נחר גרוני כלו עיני מיחל לאלהי: רבו
mei inimici me *conterentes* ſunt roborati :gratis me *habentes odio*,mei capitis *capillis præ*
5 משערות ראשי שנאי חנם עצמו מצמיתי איבי
nôſti tu Deus .*reddam* tunc ,rapui non quæ *: falsò*
6 שקר אשר לא־גזלתי אז אשיב: אלהים אתה ידעת
afficiantur pudore Ne .ſunt *celata* non te à mea delicta & ; meam ſtultitiam
7 לאולתי ואשמותי ממך לא־נכחדו: אל־יבשו
me *in* erubeſcant ne exercituum DOMINE ,Domine te *expectantes me in*
בי קויך אדני יהוה צבאות אל־יכלמו בי
operuit : opprobrium ſuſtinui te *ſuper* Quoniam .Iſrael Deus ,te *quærentes*
8 מבקשיך אלהי ישראל: כי־עליך נשאתי חרפה כסתה
.meæ matris filiis extraneus & ;meis fratribus fui Alienus .*meas facies* confuſio
9 כלמה פני: מוזר הייתי לאחי ונכרי לבני אמי:
ceciderunt *tibi exprobrantium* probra & ; me comedit tuæ domus zelus Quoniam
10 כי־קנאת ביתך אכלתני וחרפות חורפיך נפלו
.mihi opprobria in fuit & ; *meæ animæ* jejunio in flevi Et .me ſuper
11 עלי: ואבכה בצום נפשי ותהי לחרפות לי:
Eloquentur .parabolam in eis fui & ; ſaccum meum veſtimentum *dedi* Et
12 13 ואתנה לבושי שק ואהי להם למשל: ישיחו
mea oratione ego Et .ſechar *bibentium moduli* & ; porta ſedentes me *in*
14 בי ישבי שער ונגינות שותי שכר: ואני תפלתי־
; tuæ miſericordiæ *multitudine in* Deus beneplaciti tempus : Domine te ad
לך יהוה עת רצון אלהים ברב־חסדך
.tuæ ſalutis *veritate in* ,me exaudi
ענני באמת ישעך:

תרגום TARGUM.

31 נזוף במשרית חיבין תרע יתהון היך קניא
כנישת גברין דמתרחצין בעגליא טעות עמיא
רעותיה בעמא די מתעסקין ברעותא באוריתא
דוקיקא מן סימא בדר עמיא דלאנחא קרבא
32 צבין: ייתון בנוי דחם חוסמניא ממצרים
לאתגיירא בנוי דכוש ירהטון למפרש ידיהון
33 בצלו קדם אלהא: מלכות ארעא שבחו קדם יי
34 שבחו יי לעלמין: ליתיב על כורסיה בשמי
שמיא מן לקדמין הוא במימריה יהב בקליה קל
35 רוח נבואתא לנביא: הבו יקר עושנא לאלהא
36 די על ישראל גיותנותיה ועושניה בשמיא: דחיל
אלהא מן בית מקדשך תקיפא דישראל הוא יהב
עושנא ותוקפא לעמיה בריך אלהא: סט
1 2 לשבחא על גלות סנהדרין על יד דויד: פרוק יתי
אלהא ארום מטו משרית חיבין עד די אעיקון לי
3 היך מיא דמטו עד נפשא: טמעית בגלותא היך
במיא דמצולתא ולית אתר למקום מטית בעמקי
תקוף סיעת רשיעיא ומלכא רשיעא אגלי יתי:
4 אשתלהית במקרי אתחרחר ענקי כלו עיני
5 מלאורכא לאלהי: סגיען מן סערן דרישי סנאי
מגן תקפו מקטיני בעלי דבבי סהדי שקרא דלא
6 אנסית על סהדותכון הבכן אשלם: אלהא את
ידעתא לטפשותי וסורחנותי מן קדמך לא
7 אתכסיאו: לא יבהתון בי דסברין עלך ולא
יכספון בי דתבעין אולפן מנך אלהא דישראל:
8 ארום אמטולתך סוברית חסודא חפת בסופא
9 אפי: נוכרי אתחשיבית לאחי והיך בר עמין לבני
10 אמי: ארום טננא דבית מקדשא גמרת יתי
וחסודי רשיעיא דמחסדין לך במשתפהון
11 טעותהון לאיקרך נפלו עלי: ובכית בצומא
12 דנפשי והות חסודתי לקלנא לי: ויהבית תחות
13 כסותי סקא והוית להון למתלא: ימללון עלי
יתבי תרעא בית קרנתא וזמריהון דאזלין
14 למשתי מרות בבית קרקסין: ואנא צלותי
קדמך יי בעדן רעוא אלהא בסגיעי טובך עני
יתי בקשוט פורקנך:

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Increpa exercitꝰ peccatorũ; confringe ill ſicut cannã, congregationẽ *fortiũ*, qui con fidunt in vitulis idolis gentiũ: beneplaci ejꝰ eſt in populis, qui ſtudent mente [*ſua*] lege multò puriori argẽto: diſſipavit gentes quæ præliũ committere volunt. Venient fi Cham *magnates* de Ægypto ut fiant proſe lyti; filii Chus current ut expandant manu ſuas in oratione coram *Deo*. Regna *terræ* laudate coram *Domino*, cantate Dño in æter nũ: Sedenti ſup thronũ *ſuum* in cœlis cœ lorũ à principio: ipſe in verbo ſuo dat voce ſua vocem ſpiritus prophetiæ *prophetis*. Date gloriam *fortitudinis* Deo, qui eſt ſuper Iſrael: celſitudo & fortitudo ejus in cœlis. Terribilis es tu Deus à domo ſanctuarii tu fortis Iſrael: ipſe dat fortitudinem & ro bur populo ſuo. Benedictus Deus.

Ad laudandum ſuper *captivitate Sanhe drin* per manum Davidis.

PSAL. LXIX.

REdime me Deus, quia prævenerunt ca ſtra peccatorum, adeò ut coarctârint me ſi ut aquæ, quæ uſq; ad animã pertigerunt. De merſus ſum *in captivitate* tanquam in aqua profundi, nec fuit conſiſtendi locus: perven ad profunda fortitudinis cohortis impior et rex *impi*ꝰ captivũ me abduxit. Laſſatꝰ ſum dum clamarẽ, ſiccatũ eſt guttur meũ, conſum pti ſunt oculi mei *ab expectando* Deo meo. Multiplicati ſunt pluſquã capilli capitis mei inimici mei ſine cauſa; roborati ſunt truc datores mei, inimici mei teſtes mendaces quæ non rapui, ob teſtimoniũ *veſtrũ* tu reſtituã. Deꝰ tu nôſti ſtultitiã meã; & flag tia mea à cõſpectu tuo non ſunt abſcond Non erubeſcant in me qui ſperant in te, non confundantur in me, qui quærunt do ctrinam à te, Deus Iſrael. Quoniam prop te ſuſtinui opprobrium; cooperuit pudor fa ciẽ meam. Extraneus reputatus ſum ap fratres meos, & veluti filius populorum liis matris meæ. Quoniam zelus domus ſa ctitatis [*tuæ*] conſumpſit me, & vituper impiorum qui vituperant te, dum partic faciunt idola ſua gloriæ tuæ, ceciderun per me. Et deflevi in jejunio *anima* m & fuit pietas mea in opprobrium m Et poſui pro veſtimento meo ſaccos, & illis in proverbiũ. Loquẽtur adverſũ me dẽtes in porta in domo anguli, & cant eorũ ero, qui vadunt bibitum ſiceram i mo cauponaria. Et ego orationem me coram te[*effundo*]Dñe in tempore bene citi: Deus propter multitudinẽ bonitatis exaudi me in veritate redemptionis tu

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

31 * ܟܐܐ ܒܚܝܘܬܐ ܕܩܢܝܐ. ܟܢܘܫܬܐ ܕܥܠܝܡܐ: ܥܓܠܐ ܕܥܡܡܐ ܕܡܚܦܝܢ ܒܣܐܡܐ. ܒܕܪ ܥܡܡܐ
32 ܕܨܒܝܢ ܩܪܒܐ: * ܢܐܬܘܢ ܐܫܬܪܝܪܐ ܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܘܟܘܫ ܬܫܠܡ ܐܝܕܐ ܠܐܠܗܐ: * [illegible] *
33 34 * ܡܠܟܘܬܐ ܕܐܪܥܐ ܫܒܚܘ ܠܐܠܗܐ. ܘܙܡܪܘ ܠܡܪܝܐ * ܕܪܟܝܒ ܒܫܡܝ ܫܡܝܐ: ܡܢ ܡܕܢܚܐ
35 ܝܗܒ ܩܠܗ ܩܠܐ ܕܚܝܠܬܢܐ. * ܗܒܘ ܬܫܒܘܚܬܐ ܠܐܠܗܐ: ܘܠܐܝܣܪܝܠ ܪܒ ܬܫܒܘܚܬܐ. ܕܚܝܠܗ
36 ܒܫܡܝ ܫܡܝܐ: * ܕܚܝܠ ܐܢܬ ܐܠܗܐ ܡܢ ܡܩܕܫܟ. ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ: ܗܘ ܢܬܠ ܚܝܠܐ
1 ܘܥܘܫܢܐ ܠܥܡܗ. ܒܪܝܟ ܗܘ ܐܠܗܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * * ܟܕ ܩܥܐ. ܫܒܥ ܒܪ ܒܟܪܝ
ܒܫܝܦܘܪܐ. ܘܦܫ ܥܡܐ ܡܢ ܕܢܐܙܠ ܒܬܪ ܕܘܝܕ. ܘܡܬܐܡܪܐ ܒܢܒܝܘܬܐ ܥܠ
2 ܚܫܘܗܝ ܕܡܫܝܚܐ. ܘܥܠ ܣܘܚܦܢܐ ܕܝܗܘܕܝܐ. [illegible] * ܦܪܘܩܝܢܝ ܐܠܗܐ ܡܛܠ
3 ܕܥܠܘ ܡܝܐ ܥܕܡܐ ܠܢܦܫܝ: * ܛܒܥܬ ܒܥܘܡܩܐ ܕܬܗܘܡܐ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܡܩܡܐ: ܥܠܠܬ
4 ܠܥܘܡܩܐ ܕܡܝܐ ܘܫܩܝܥܐ ܛܒܥܢܝ. * ܠܐܝܬ ܒܡܩܥܝܘ ܘܚܪ ܓܪܓܪܝ: ܘܚܫܟ ܥܝܢܝ ܡܢ ܡܣܟܝܘ
5 ܬܐ ܠܐܠܗܝ. * ܣܓܝܘ ܡܢ ܣܥܪܐ ܕܪܫܝ ܣܢܐܝ ܡܓܢ: ܘܥܫܢܘ ܡܢ ܓܪܡܝ
6 ܒܥܠܕܒܒܝ ܕܓܠܐ. ܡܕܡ ܕܠܐ ܐܢܣܬ ܦܪܥܬ ܗܘܝܬ: * ܐܠܗܐ ܐܢܬ ܝܕܥܬ ܫܛܝܘܬܝ.
7 ܘܣܟܠܘܬܝ. ܡܢܟ ܠܐ ܐܬܟܣܝܘ: * ܠܐ ܢܒܗܬܘܢ ܒܝ ܐܝܠܝܢ ܕܡܣܟܝܢ ܠܟ. ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ
8 ܚܝܠܬܢܐ: ܘܠܐ ܢܒܗܬܘܢ ܒܝ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܠܟ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ: * ܡܛܠܬܟ ܩܒܠܬ
9 ܚܣܕܐ: ܘܟܣܝܬ ܒܗܬܬܐ ܐܦܝ. * ܘܢܘܟܪܝܐ ܗܘܝܬ ܠܐܚܝ: ܘܐܟܣܢܝܐ ܠܒܢܝ ܐܡܝ. * ܡܛܠ
10 11 ܕܛܢܢܐ ܕܒܝܬܟ ܐܟܠܢܝ: ܘܚܣܕܐ ܕܡܚܣܕܝܢ ܠܟ ܢܦܠ ܥܠܝ. * ܘܐܡܟܬ ܒܨܘܡܐ ܢܦܫܝ
12 ܘܗܘܝܬ ܠܗܘܢ ܠܓܘܚܟܐ: * ܥܒܕܬ ܠܒܘܫܝ ܣܩܐ ܘܗܘܝܬ ܠܗܘܢ ܠܡܬܠܐ. * ܘܪܢܘ
13 14 ܥܠܝ ܝܬܒܝ ܬܪܥܐ: ܘܪܢܘ ܥܠܝ ܐܝܠܝܢ ܕܫܬܝܢ ܫܟܪܐ. * ܐܢܐ ܕܝܢ ܨܠܝܬ ܩܕܡܝܟ ܡܪܝܐ
ܒܙܒܢܐ ܡܩܒܠܐ: ܐܠܗܐ ܒܣܘܓܐܐ ܕܛܝܒܘܬܟ ܥܢܝܢܝ. ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܦܘܪܩܢܟ

Increpa feram arundinis, cœtum juve rum, vitulos populorum obductos arge Diſſipa gentes quæ volunt bella. Vene gati ex Ægypto, & Æthiopia dabit ma Deo. * *Diapſal.* * Regna terræ glorificate D canite Dño. Qui equitat in cœlis cœl Oriente edidit vocẽ ſuã, vocẽ validã. D laudem Deo, & Iſraeli ſummũ decꝰ: nam titudo ejus in cœlis cœli. Formidabi Deus de ſanctuario tuo: Deus Iſraelis dabit vires & robur populo ſuo. Bened Deus.

PSAL. LXIX.

Davidis. Ad literam Quum clanxit S filius Bochri buccinâ, & deſtitit popu eundo poſt Davidem. Diciturq; Prop de his quæ paſſus eſt Chriſtus: & rep tione Judæorum. Verſ. 42.

LIbera me Deus, quoniã devenerunt a uſque ad animã: Demerſus ſum in cipitium profundiſſimũ, in quo non eſt lo conſiſtendi. Ingreſſus ſum profundũ aqu & vorago demerſit me. Feſſus ſum ob cla rem meũ, et raucedine laboravit guttur & defecerunt oculi mei expectãdo Deũ Multiplicati ſunt pluſquã capilli capitis hoſtes mei gratuiti, & creverunt præ o meis inimici mei falſiloqui; id quod n extorſerã reddebã. Deus tu nôſti delirias & peccata mea te non latuerunt. No fundantur in me qui ſperant in te Dñe potentiſſime: & ne erubeſcãt in me qu runt te Deus Iſrael. Propter te accep riã, & operuit pudor vultũ meũ: Et neus factus ſum fratribꝰ meis, atq; pe filiis matris meæ; Quoniã zelus dom comedit me, & probrũ improperant recidit in me. Et humiliavi animã m junio, & factus ſum illis ludibrio. Fe ſtimentũ meũ ciliciũ, & factus ſum bula. Et cogitaverunt de me qui ſe porta, cogitãrunt etiam de me qui bi ceram; Ego verò oravi coram te D pore accepto. Deꝰ pro multitudine b tuæ exaudi me: et pro multitudine fa

Verſio VULG. LAT.

31 Increpa feras arundinis, congregatio
taurorum in vaccis populorũ : ut ex-
cludant eos, qui probati ſunt argento.
32 Diſſipa gentes, quæ bella volunt : Ve-
nient legati ex Ægypto : Æthiopia
33 præveniet man⁹ ejus Deo. Regna ter-
ræ, cantate Deo : pſallite Dño : pſal-
34 lite Deo, Qui aſcendit ſuꝑ cœlũ cœli,
ad Orientẽ. Ecce dabit voci ſuæ vo-
35 cem virtutis, Date gloriã Deo ſuper
Iſrael, magnificentia ejus, & virt⁹ ejus
36 in nubibus. Mirabilis De⁹ in ſanctis
ſuis, Deus Iſrael ipſe dabit virtutem
& fortitudinem plebi ſuæ : Benedi-
ctus Deus.
1 In finem, pro iis qui commutabuntur,
David. LXVIII.
2 SAlvũ me fac, Deus : quoniã intra-
verunt aquæ uſque ad animam meam.
3 Infixus ſum in limo profundi : & non
eſt ſubſtantia. Veni in altitudinẽ ma-
4 ris : & tempeſtas demerſit me. Labora-
vi clamans, raucæ factæ ſunt fauces
meæ : defecerunt oculi mei, dum ſpe-
5 ro in Deũ meũ. Multiplicati ſunt ſuper
capillos capitis mei, qui oderunt me
gratis. Confortati ſunt qui perſecuti
ſunt me inimici mei injuſtè : quæ non
6 rapui, tunc exolvebã. Deus, tu ſcis in-
ſipientiã meã : & delicta mea à te non
7 ſunt abſcondita. Non erubeſcant in me
qui exſpectant te, Dñe, Dñe virtutum.
Non confundantur ſuꝑ me qui quærũt
8 te, De⁹ Iſrael. Quoniã propter te ſu-
ſtinui opprobriũ : operuit confuſio fa-
9 ciem meã. Extraneus fact⁹ ſum fratrib⁹
meis, & peregrin⁹ filiis matris meæ.
10 Quoniã zel⁹ dom⁹ tuæ comẽdit me : &
opprobria exprobrantiũ tibi, cecide-
11 runt ſuꝑ me. Et operui in jejunio ani-
mam meã ; & factũ eſt in opprobrium
12 mihi. Et poſui veſtimentũ meũ ciliciũ :
13 & fact⁹ ſum illis in parabolã. Adver-
ſum me loquebantur qui ſedebant in
porta : & in me pſallebant qui bibe-
14 bant vinũ. Ego verò orationẽ meã ad
te, Dñe : temp⁹ beneplaciti, Deus. In
multitudine miſericordiæ tuæ exaudi
me, in veritate ſalutis tuæ.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

31 Ἐπιτίμησον τοῖς θηρίοις τοῦ καλάμου· ἡ συναγω-
γὴ τῶν ταύρων ἐν ταῖς δαμάλεσι τῶν λαῶν, τοῦ μὴ ἀπο-
κλεισθῆναι τοὺς δεδοκιμασμένους τῷ ἀργυρίῳ. δια-
σκόρπισον ἔθνη τὰ τοὺς πολέμους θέλοντα.
32 Ἥξουσι πρέσβεις ἐξ Αἰγύπτου, Αἰθιοπία προ-
33 φθάσει χεῖρα αὐτῆς τῷ θεῷ. Αἱ βασιλεῖαι τῆς
γῆς ᾄσατε τῷ θεῷ, ψάλατε τῷ κυρίῳ. ΔΙΑ-
34 ΨΑΛΜΑ. ψάλατε τῷ θεῷ τῷ ἐπιβεβηκότι ἐπὶ
τὸν οὐρανὸν τοῦ οὐρανοῦ κατὰ ἀνατολάς, ἰδοὺ δώσει
35 ἐν τῇ φωνῇ αὐτοῦ φωνὴν δυνάμεως. Δότε δόξαν
τῷ θεῷ, ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ ἡ μεγαλοπρέπεια αὐτοῦ,
36 καὶ ἡ δύναμις αὐτοῦ ἐν ταῖς νεφέλαις. Θαυμαστὸς ὁ
θεὸς ἐν τοῖς ὁσίοις αὐτοῦ, ὁ θεὸς Ἰσραήλ,
αὐτὸς δώσει δύναμιν καὶ κραταίωσιν τῷ λαῷ αὐ-
τοῦ. εὐλογητὸς ὁ θεός.
1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ἀλλοιωθησομένων,
τῷ Δαυίδ. ξη΄.
2 Σῶσόν με ὁ θεός, ὅτι εἰσήλθοσαν ὕδατα ἕως
3 ψυχῆς μου. Ἐνεπάγην εἰς ἰλὺν βυθοῦ, καὶ
οὐκ ἔστιν ὑπόστασις· ἦλθον εἰς τὰ βάθη τῆς θα-
4 λάσσης, καὶ καταιγὶς κατεπόντισέ με. Ἐκοπία-
σα κράζων, ἐβραγχίασεν ὁ λάρυγξ μου, ἐξέ-
λιπον οἱ ὀφθαλμοί μου ἀπὸ τοῦ ἐλπίζειν με ἐπὶ
5 τὸν θεόν μου. Ἐπληθύνθησαν ὑπὲρ τὰς τρίχας
τῆς κεφαλῆς μου οἱ μισοῦντές με δωρεάν· ἐκρα-
ταιώθησαν οἱ ἐχθροί μου οἱ ἐκδιώκοντές με
6 ἀδίκως. ἃ οὐκ ἥρπασα, τότε ἀπετίννυον. Ὁ
θεὸς σὺ ἔγνως τὴν ἀφροσύνην μου, καὶ αἱ πλημ-
7 μέλειαί μου ἀπὸ σοῦ οὐκ ἐκρύβησαν. Μὴ αἰ-
σχυνθείησαν ἐπ' ἐμὲ οἱ ὑπομένοντές σε κύριε
τῶν δυνάμεων, μὴ ἐντραπείησαν ἐπ' ἐμὲ οἱ
8 ζητοῦντές σε ὁ θεὸς τοῦ Ἰσραήλ. Ὅτι ἕνεκα
σοῦ ὑπήνεγκα ὀνειδισμόν, ἐκάλυψεν ἐντροπὴ
9 τὸ πρόσωπόν μου. Ἀπηλλοτριωμένος ἐγενήθην
τοῖς ἀδελφοῖς μου, καὶ ξένος τοῖς υἱοῖς τῆς μη-
10 τρός μου. Ὅτι ὁ ζῆλος τοῦ οἴκου σου κατέφαγέ με,
καὶ οἱ ὀνειδισμοὶ τῶν ὀνειδιζόντων σε ἐπέπεσον
11 ἐπ' ἐμέ. Καὶ συνέκαμψα ἐν νηστείᾳ τὴν ψυ-
χήν μου, καὶ ἐγενήθη εἰς ὀνειδισμοὺς ἐμοί.
12 Καὶ ἐθέμην τὸ ἔνδυμά μου σάκκον, καὶ ἐγενό-
13 μην αὐτοῖς εἰς παραβολήν. Κατ' ἐμοῦ ἠδολέ-
σχουν οἱ καθήμενοι ἐν πύλῃ, καὶ εἰς ἐμὲ ἔψαλλον
14 οἱ πίνοντες τὸν οἶνον. Ἐγὼ δὲ τῇ προσευχῇ
μου πρὸς σὲ κύριε, καιρὸς εὐδοκίας ὁ θεός· ἐν
τῷ πλήθει τοῦ ἐλέους σου ἐπάκουσόν μου, ἐν ἀλη-
θείᾳ τῆς σωτηρίας σου

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

Increpa feras (kk) [t] calami: (ll) 31
congregatio taurorũ in vaccis popu-
lorũ: ut (mm) non excludantur ii qui
probati ſunt [v] argento. 34 Diſſipa
gentes quæ bella volunt: Venient le- 32
gati ex Ægypto: Æthiopia (nn) præ-
veniet manum ſuam Deo. 35 Regna 33
terræ cantate Deo, pſallite [x] Domi-
no. 36 DIAPSALMA. Pſallite (oo)
Deo, Qui aſcendit ſuper cœlum cœli 34
ad Orientem. 37 Ecce dabit [y] in
(pp) voce ſua vocem virtutis : Date 35
gloriã Deo: ſuper Iſrael magnificen-
tia [z] ejus, et virtus ejus [aa] in nu-
bibus. 38 Mirabilis Deus in ſanctis 36
ſuis: Deus Iſrael ipſe dabit virtutem,
& fortitudinem plebi ſuæ : Benedi-
ctus Deus.
In finem, pro his qui commutabuntur, 1
ipſi David. LXVIII.
1 *SAlvum me fac, Deus : quoniam* 2
intraverunt aquæ uſque ad a-
nimam meam. 2 (a) Infixus ſum in 3
[a] limo profundi; & non eſt ſubſtan-
tia. 3 Veni in altitudinem maris: &
tempeſtas demerſit me. 4 Laboravi 4
clamans: raucæ factæ ſunt fauces
meæ: defecerunt oculi mei, ab (b)
ſperando me in Deum meum. 5 Mul- 5
tiplicati ſunt ſuper capillos capitis
mei, qui oderunt me gratis. 6 Con-
fortati ſunt (c) inimici mei, qui per-
ſequuntur me injuſtè: quæ non rapui,
[b] tunc (d) exolvebam. 7 Deus, tu 6
ſcis inſipientiam meam, & delicta
mea à te non ſunt abſcondita. 8 Non 7
erubeſcant in me, qui [c] expectant
te, (e) Domine virtutum. Non
confundantur ſuper me, qui [d] quæ-
runt te, De⁹ Iſrael. 10 Quoniam pro- 8
pter te ſuſtinui (f) exprobrationem :
operuit (g) confuſio faciem meam.
11 (h) [e] Alienatus factus ſum fra- 9
tribus meis, & hoſpes filiis [f] matris
meæ. 12 Quoniam zelus domûs tuæ 10
(i) comẽdit me: & opprobria expro-
brantium tibi ceciderunt ſuper me.
13 Et (k) incurvavi in jejunio ani- 11
mam meam: & factum eſt mihi in
opprobrium. 14 Et poſui veſtimen- 12
tum meum ſaccum : & factus ſum
illis in parabolã. 15 Adverſus me (l) 13
[g] loquebantur, qui ſedebant in por-
ta: Et in me pſallebant, qui bibebant
vinum. 16 Ego verò (m) [h] oratio- 14
ne meâ ad te, Domine: tempus (n) be-
neplaciti, Deus. 17 In multitudine
miſericordiæ tuæ exaudi me: [i] in veritate ſalutis tuæ.

Verſio ÆTHIOPICA.

ገሠጾሙ፡ ለአራዊተ፡ ሓለት፡፡ ማኅበረ፡ አ 33
ልህምት፡ ውስተ፡ እጕላተ፡ ሕዝብ፡፡ ከመ፡
ሊይትዐጸው፡ እለ፡ ፍቱናን፡ ከመ፡ ብሩር፡፡=፡
ዝርዎሙ፡ ለአሕዛብ፡ እለ፡ ይፈቅዱ፡ ቀተለ፡፡ 34
ይምጽኡ፡ ተናብልት፡ እምግብፅ፡፡ ኢትዮ
ጵያ፡ ታበጽሕ፡ እደዊሃ፡ ኀበ፡ እግዚአብሔ
ር፡፡=፡ ነገሥተ፡ ምድር፡ ሰብሕዎ፡ ለእግ 35
ዚአብሔር፡፡ ወዘምሩ፡ ለአምላክነ፡፡=፡
ዘምሩ፡ ለእግዚአብሔር፡ ዘዐርገ፡ ውስተ፡ 36
ሰማይ፡፡ ሰማይ፡ ዘመንገለ፡ ጽባሕ፡፡=፡ ናሁ፡ 37
ይሁብ፡ ቃሎ፡ ቃለ፡ ኀይል፡፡ ሀቡ፡ አኰቴተ፡
ለእግዚአብሔር፡፡ ላዕለ፡ እስራኤል፡ ዐቢ
ይ፡ ስብሐቲሁ፡፡ ወኀይሉሂ፡ እስከ፡ ደመና
ት፡፡=፡ መንክር፡ እግዚአብሔር፡ በላዕለ፡ 38
ቅዱሳኒሁ፡፡ አምላክ፡ እስራኤል፡ ውእቱ፡
ይሁብ፡ ኀይለ፡ ወጽንዐ፡ ለሕዝቡ፡፡ ወይት
ባረክ፡ እግዚአብሔር፡፡=፡
ፍጻሜ፡ በእንተ፡ እለ፡ ተበዐዱ፡ ዘደዊት፡፡
ኟኟ አድኅነኒ፡ እግዚኦ፡ እስመ፡ በጽሐኒ፡ 1
ማይ፡ እስከ፡ ነፍስየ፡፡
ወጠጋእኩ፡ ውስተ፡ ዕሙቅ፡ ቀለይ፡ ወኀይል፡ 2
አልብየ፡፡=፡ በጻሕኩ፡ ውስተ፡ ማዕምቀ፡ 3
ባሕር፡ ወዐውሎ፡ አስጠመኒ፡፡=፡ ሠራኅኩ፡ 4
በከልሖ፡ ወስሀከኒ፡ ጕርዔየ፡፡ ደክመ፡ አዕ
ይንትየ፡ እንዘ፡ እሴፎ፡ ለአምላኪየ፡፡=፡
በዝኁ፡ እምስዕርተ፡ ርእስየ፡ እለ፡ ይጸልኡኒ፡ 5
በከንቱ፡፡=፡ ጸንዑ፡ ፀርየ፡ እለ፡ ይረውዱኒ፡ 6
በዐመፃ፡፡ ወዘኢነሣእኩ፡ ይትፈደዩኒ፡፡=፡
ለሊከ፡ እግዚኦ፡ ተአምር፡ ዕበድየ፡፡ ወኢይ 7
ትኀባእ፡ አምኔከ፡ ኀጢአትየ፡፡=፡ ወኢይት 8
ኀፈሩ፡ ብየ፡ እለ፡ የኀሡከ፡ እግዚኦ፡ እግዚኦ፡
ኀያልን፡፡=፡ ወኢይኅሰሩ፡ ብየ፡ እለ፡ ይሴፈ 9
ዉከ፡ አምላክ፡ እስራኤል፡፡=፡ እስመ፡ በእ 10
ንቲአከ፡ ተዐገሥኩ፡ ፅእለተ፡፡ ወከደነኒ፡
ኀፍረተ፡ ገጽየ፡፡=፡ ከመ፡ ነኪር፡ ኮንክዎሙ፡ 11
ለአኀዊየ፡፡ ወነግደ፡ ለደቂቀ፡ እሙየ፡ ወእም
የ፡፡=፡ እስመ፡ ቅንአተ፡ ቤትከ፡ በልዐኒ፡፡ 12
ትዕይርቶሙ፡ ለእለ፡ ይትዔየሩከ፡ ወድቀ፡
ላዕሌየ፡፡=፡ ወቀጻእክዋ፡ በጾም፡ ለነፍስየ፡፡ 13
ወኮነኒ፡ ፅእለተ፡፡=፡ ወለበስኩ፡ ሠቀ፡ ወኮንክ 14
ዎሙ፡ ነገረ፡፡=፡ ላዕሌየ፡ ይዘውዑ፡ እለ፡ ይነ 15
ብሩ፡ ውስተ፡ አናቅጽ፡፡ ወኪየየ፡ የኀልዩ፡ እለ፡
ይሰትዩ፡ ወይነ፡፡=፡ ወአንሰ፡ በጸሎትየ፡ ኀበ፡ 16
እግዚአብሔር፡፡ ሣህሉ፡ ለእግዚአብሔር፡
በጊዜሁ፡፡=፡ እንዘ፡ ብዙኅ፡ ሣህልከ፡፡ 17
ስምዐኒ፡ ዘበአሚን፡ መድኀኒየ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [t] rhamni: [v] tanquam aurum. [x] Domino noſtro. [y] vocem ſuam [z] gloriæ ejus, [aa] uſq; ad nubes. *PSAL. LXVIII.* [a] imo voraginis; & non eſt mihi robur. [b] retribuerunt mihi. [c] quærunt te Domine, Domine [d] expectant te, [e] Tanquam extraneus [f] patris mei & matris meæ. [g] exercebant te, [h] cum oratione mea ad Dominum : Miſericordia Domini in tempore ſuo. In [i] qui in confeſſione es ſalutaris mei.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* انتهر يا الله وحوش الغاب الذي افنت الثيران * وعجول الشعب لكي يحبسوا المجربين بالفضة *
مزق الامم الذين يريدون القتال * تاتي الرسل من مصر * الحبش تسبق وتسلم يدها لله * يا
جميع ممالك الارض سبحي الله ورتلي الرب * رتلوا الله الذي صعد الي سماء السماء جهة
المشارق * ها هوذا اسمع صوته بصوت قوة * اعطوا مجدا لله * فان عظمة بهائه علي اسرائيل *
وقوته في السحاب * عجيب هو الله في قديسيه * اله اسرائيل هو يعطي قوة وعزا لشعبه *
تبارك هو الاله * الليلويا * المزمور الثامن والستون *
* لداود علي المغيرين ونبوة * وعدده * عه * استيخن *
* اللهم احيني فان المياه قد بلغت الي نفسي * وحلت في حماة الموت فلا استطاعة بعد *
وصلت الي عمق البحر * وغرقتني اهواله * اعييت صارخا وبح حنجرتي * فنيت عيناي راجيا
الاهي * كثر الذين يبغضونني مجانا اكثر من شعر راسي * واعتزوا اعداي الطاردين
لي ظلما * فرددت حينئذ ما لم اخطف * اللهم انت عالم جهلي * ولم تخف عنك خطاياي *
* لا تخزي راجوك يا اله الجنود * ولا تخيب الراغبون اليك يا اله اسرائيل * فان من اجلك احتملت
عارا * وغشي الخزي وجهي * صرت اجنبيا من اخوتي * ومن بني امي غريبا * لان غيرة بيتك
اكلتني * وعار معيريك وقع علي * اذللت نفسي بالصيام * فصار لي تعييرات * جعلت لباسي
مسحا * فصرت لهم مثلا * تكلموا علي الجالسون علي الابواب * وترنم في شاربوا الخمر * وانا
صعدت صلاتي اليك يا رب وقت المسرة * اللهم فاستجب لي بكثرة رحمتك * بحق خلاصك

Increpa O Deus, feras ſylvæ quã vaſtave- 31
runt tauri & vituli populi, ut cohibeant
tentatos argento. Diſcerpe gentes, quæ vo-
lunt pugnã. Venient legati ab Ægypto : 32
Æthiopes prævenient, & tradẽt manum
ſuã Deo. O cuncta regna terræ laudate 33
Deũ, et pſallite Domino. Pſallite Deo qui 34
aſcendit ſuper cœlũ cœli, verſùs Orientẽ.
Ecce audire fecit vocẽ ſuã cum ſono va-
lido. Date gloriam Deo, quia magnitudo 35
majeſtatis ejus eſt ſuper Iſrael, & virtus
ejus in nubibus. Admirandus eſt Deus in 36
ſanctis ſuis : Deus Iſrael ipſe dabit virtu-
tem, & fortitudinem populo ſuo. Benedi-
ctus ſit, ipſe eſt Deus. Alleluja.

PSAL. LXVIII.

Davidis. De commutandis : & 1
prophetia. Et numerus ver. 75.

DEus vivifica me, quoniã aquæ jam 2
pervenerunt ad animã meã. Obrutus 3
ſum luto mortis, & nequeo illud ampliùs
ſuſtinere : perveni uſque ad imum maris,
& ſubmerſerunt me tempeſtates ejus. De- 4
feci clamans, & raucũ factũ eſt guttur
meũ : conſumpti ſunt oculi mei in expe-
ctando Deũ meũ. Multiplicati ſunt qui 5
me oderunt gratìs pluſquã capilli capitis
mei, & invaluerũt inimici mei perſequen-
tes me iniquè : & reddidi tunc quod non
rapuerã. Deus, tu nôſti inſipientiã meam, 6
& non latent te peccata mea. Ne confun- 7
dantur ſperantes te, O Deus exercituum :
nevè fruſtrentur ſupplicantes ad te, O
Deus Iſrael. Quoniã propter te ſuſtinui 8
opprobriũ, & velavit confuſio faciẽ meã.
Factus ſum alienus à fratribus meis, & 9
à filiis matris meæ peregrinus. Quoniam 10
zelus domûs tuæ comedit me, & impro-
periũ improperantium tibi, cecidit ſuper
me. Humiliavi animã meam jejunio, & 11
factũ eſt mihi convitia. Feci indumen- 12
tum meum cilicium, & factus ſum eis
parabola. Obloquuti ſunt de me ſedentes 13
ad portas, & cecinerunt de me bibaces
vini. Mea verò oratio aſcendit ad te O 14
Domine, tempore placito. Deus exaudi me
per multitudinem miſericordiæ tuæ. Per
veritatem ſalutis tuæ

תהלים : סט

profundis è &, me habentibus odio ab eripiar : infigar non & , luto è me Eripe

15 הצילני מטיט ואל־אטבעה אנצלה משנאי וממעמקי־

: profundum me abſorbeat nec ,aquarum alveus me inundet Ne .aquarum

16 מים : אל־תשטפני שבלת מים ואל־תבלעני מצולה

bona quoniam ,Domine me Exaudi .ſuum os puteus me ſuper obturet neque

17 ואל־תאטר־עלי באר פיה : ענני יהוה כי־טוב

ne Et .me ad reſpice tuarũ miſerationũ multitudinẽ ſecundùm : tua miſericordia

18 חסדך כרב רחמיך פנה אלי : ואל

.me exaudi , feſtina , mihi anguſtia quoniam : tuo ſervo à tuas facies abſcondas

תסתר פניך מעבדך כי־צר־לי מהר ענני :

.me redime meos inimicos propter : eam redime ,meam animam ad Appropinqua

19 קרבה אל־נפשי גאלה למען איבי פדני :

omnes te coram : meã ignominiã & ,meũ pudorẽ & ,meũ probrum noſti Tu

20 אתה ידעת חרפתי ובשתי וכלמתי נגדך כל־

,condolendum ad expectavi & ,fui anxius & ,meũ cor contrivit Probrum .mei hoſtes

21 צוררי : חרפה שברה לבי ואנושה ואקוה לנוד

: fel meam eſcam in dederunt Et .inveni non & ,conſolantes & : non &

22 ואין ולמנחמים ולא מצאתי : ויתנו בברותי ראש

: laqueum in ſuas facies ad eorum menſa Erit .acetum mihi propinaverũt mea ſiti in &

23 ולצמאי ישקוני חמץ : יהי־שלחנם לפניהם לפח

eorũ lumbos & : videndo à eorum oculi Obſcurabuntur .offendiculũ in ,paces ad &

24 ולשלומים למוקש : תחשכנה עיניהם מראות ומתניהם

.eos comprehendat tui naſi furor & :tuã iram eos ſuper Effunde .facies nutare ſemper

25 תמיד המעד : שפך־עליהם זעמך וחרון אפך ישיגם :

Quoniam .habitans ſit ne eorum tentoriis in : deſolatum eorum palatium Sit

26 27 תהי־טירתם נשמה באהליהם אל־יהי ישב : כי־

.narrabunt tuorũ vulneratorũ dolorem ad & : ſunt perſecuti ,percuſſiſti quem tu

אתה אשר־הכית רדפו ואל־מכאוב חלליך יספרו :

Deleantur .tuã juſtitiã in ingrediantur non & :eorũ iniquitatem ſuper iniquitatem Da

28 29 תנה־עון על־עונם ואל־יבאו בצדקתך : ימחו

: dolens & ,afflictus ego Et .ſcribantur non juſtis cum & : viventiũ libro è

30 מספר חיים ועם צדיקים אל־יכתבו : ואני עני וכואב

: cantico in Dei nomen Laudabo .me elevabit Deus tua ſalus

31 ישועתך אלהים תשגבני : אהללה שם־אלהים בשיר

vitulus ,bos quàm ,Domino erit melior Et .confeſſione in eum magnificabo &

32 ואגדלנו בתודה : ותיטב ליהוה משור פר

, Deum quærentes ; gaudebunt ,humiles Viderunt .ungulificans ,cornificans

33 מקרן מפרים : ראו ענוים ישמחו דרשי אלהים

& ; Dominus egenos ad audiens Quoniam .veſtrum cor vivet &

34 ויחי לבבכם : כי־שמע אל־אביונים יהוה ואת־

omne & , maria : terra & , cœli eum Laudent .deſpexit non ſuos vinctos

35 אסיריו לא בזה : יהללוהו שמים וארץ ימים וכל־

: Jehudah civitates ædificabit & ,Sijon ſervabit Deus Quoniam .eis in repens

36 רמש בם : כי אלהים יושיע ציון ויבנה ערי יהודה

: eã hæreditabunt ejus ſervorum ſemen Et .eã accipient hæreditate & ,ibi habitabunt &

37 וישבו שם וירשוה : וזרע עבדיו ינחלוה

.ea in habitabunt ejus nomen diligentes &

ואהבי שמו ישכנו־בה :

תרגום TARGUM.

15 פצא יתי מן גלותא דמתילא לטינא ולא
אטמוע אתפצי מן סנאי דדמין לעומקי מוי :
16 לא ינלי יתי מליך תקיף ולא יסלעם למחפי
עלי מצולתא חסין ולא תפתח עלי גהנם
17 פומה : עני יתי יי ארום טב חסדך היך כסגיעות
18 רחמך תסתכל לותי : ואל תסתלק שכנתך
19 מעבדך ארום עיק לי סרהב עני יתי : קרב
לות נפשי פרוק יתה מטול דלא אתרברבו
20 עלי בעלי דבבי פרוק יתי : את ידעתא קלני
21 ובהתי וכסופי לקבלך קימין כל מעיקי : קלנא
תברת לבי והא היא תקיפא ואמתנית למרי
מספדיא וליתהון ולמרי תנחומין ולא
22 אשכחית : ויהבו בסעודתי מרירת רישי
23 חורמני ולצחותי אשקיאו יתי חלא : יהי
פתורהון דסדרו קדמי באכלי קדמיהון לקולא
24 ונכסתהון לתקלא : יתחשכן עיניהון מן למחמי
25 וחרציהון תדירא תזעזע : שדי עלויהון רוגזך
26 ותקוף רוגזך ידבקנון : תהי משכנותהון צדיא
27 במשכניהון לא יהי יתיב : ארום די אנת
מחיתא רדפו ומן דכאיב על קטולך ישתעין :
28 הב עוית על עויתהון ולא ידכון למעל
29 בכנישת צדיקיך : יתמחון מספר דכרן חייא
30 ועם צדיקיא לא יתכתבון : ואנא עניא וכאבא
31 פורקנך אלהא תשזבנני : אשבח שום אלהי
32 בשירא ואדבריניה בתודתא : ותשפר צלותי קדם
יי מן תור פטים ובחיר דקריב אדם קדמי
33 דקדימו קרנוי לטלפוהי : חמון ענותניא ויחדון
תבעי אולפן מן קדם אלהא ויחי לבכון :
34 ארום מקבל צלותהון דחשיכי יי ולאסירוי
35 לא בסר : ישבחוניה מלאכי שמיא ויתבי
36 ארעא ימיא וכל דרחשין בהון : ארום
אלהא יפרוק ציון וישכלל קרוין דיהודה
37 ויתובון תמן וירתונה : ובני עבדוי יחסנון
יתה ורחמי שמיה ישרון בגוה :

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Libera me de captivitate quæ ſimilis eſt lu
et non ſubmergar:eripiar ab oſorib⁹ meis,q
comparantur profunditatibus aquarũ. N
captivum abducat me rex fortis, nec abſo
beat, ut claudat ſuper me *profundum, ſo-*
lidus : & non *aperiat* adverſùm me gehen
na os ſuum. Exaudi me Domine quonia
bona eſt miſericordia tua, ſecundùm mu
titudinem miſerationum tuarum reſpice a
me. Neque *auferatur majeſtas tua* à ſerv
tuo, quoniam anguſtia eſt mihi : feſtin
exaudi me. Appropinqua animæ meæ,redi
illam,ut non ſeſe efferant in me inimici me
redime me. Tu nôſti opprobrium meum
confuſionem meam & ignominiam meam:
conſpectu tuo ſtant omnes qui moleſtant m
Ignominia fregit cor meum, & ecce ipſa
lida : porrò expectavi præfectos *luctũ*,
non ſubſiſtunt;et conſolatores,& non inve
Et dederunt in eſcam meã fel capitũ baſi
ſcorum, & in ſiti mea potaverunt me ace
Sit menſa eorũ,quã paraverunt coram me
comederem, coram eis in laqueum, & faci
cia eorum in ſcandalum. Obtenebrentur ocu
li corũ ne videant,et lumbos eorum conti
fac nutare. Effunde ſuper eos furorẽ tuum
violentia furoris tui apprehendat eos. Sit ha
bitatio eorum deſerta,et in tabernaculis eo
non ſit qui habitet. Quoniam quem tu vul
râſti,perſecuti ſunt,et de eo qui dolorem
fert propter interfectos tuos , obloquen
Adde iniquitatem ſuper iniquitatem eor
& non mereantur intrare in Eccleſiam
ſtorum tuorum. Deleantur de libro me
riæ vivorum , et cum juſtis non ſcriban
Et ego pauper & mœſtus ſum : rede
ptio tua Deus *liberet* me. Laudabo nom
Dei mei in cantico, & magnificabo eum
confeſſione. Et placebit oratio mea corã D
magis quàm bos pinguis & electus,*quem*
ferebat Adam primus, cujus cornua præ
bant ungularum *fiſſiones*. Viſuri ſunt hu
les, & lætaturi quærentes doctrinam à co
ſpectu Dei; & vivet cor veſtrum. Quon
ſuſcipit orationem pauperum Dominus,
vinctos ſuos non deſpexit. Laudent eum a
geli cœlorum, & habitatores terræ; ma
et omnia reptantia in eis. Quoniam D
redimet Sion, et fundabit civitates Ju
& *revertentur* ibi, & poſſidebunt e
Et filii ſervorum ejus poſſidebunt eam
qui diligunt nomen ejus, habitabunt in
dio illius.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

15 * ܦܨܢܝ : ܡܢ ܣܝܢܐ ܕܠܐ ܐܛܒܥ. ܘܐܬܦܨܐ ܡܢ ܣܢܐܝ ܘܡܢ ܥܘܡܩܐ ܕܡܝܐ : * ܕܠܐ
16 ܢܓܪܦܢܝ ܥܠܥܠܐ ܕܡܝܐ. ܘܠܐ ܢܒܠܥܢܝ ܥܘܡܩܐ : ܘܠܐ ܢܐܚܘܕ ܥܠܝ ܒܐܪܐ ܦܘܡܗ.
17 * ܥܢܝܢܝ ܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܛܒܐ ܛܝܒܘܬܟ : ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܪܚܡܝܟ ܐܬܦܢܐ ܠܘܬܝ.
18 * ܘܠܐ ܬܗܦܘܟ ܐܦܝܟ ܡܢ ܥܒܕܟ : ܡܛܠ ܕܥܩܬ ܠܝ ܥܓܠ ܥܢܝܢܝ. * ܩܪܒ
19 20 ܠܢܦܫܝ ܠܦܘܪܩܢܟ : ܡܛܠ ܒܥܠܕܒܒܝ ܦܪܘܩܝܢܝ. * ܐܢܬ ܝܕܥ ܐܢܬ ܚܣܕܝ : ܘܒܗܬܬܝ
21 ܩܕܡܝܟ ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ. * ܦܣܘܩܐ * ܐܣܐ ܠܬܒܪܗ ܕܠܒܝ ܘܟܪܝܬ : ܘܣܟܝܬ
22 ܠܡܢ ܕܢܬܟܪܐ ܥܡܝ ܘܠܝܬ. ܘܠܡܒܝܐܢܐ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ * ܘܝܗܒܘ ܒܡܐܟܘܠܬܝ ܡܪܪܬܐ.
23 ܘܠܨܗܝ ܐܫܩܝܘܢܝ ܚܠܐ : * ܢܗܘܐ ܦܬܘܪܗܘܢ ܩܕܡܝܗܘܢ ܦܚܐ. ܘܦܘܪܥܢܗܘܢ
24 25 ܠܡܬܩܠܐ : * ܢܚܫܟܢ ܥܝܢܝܗܘܢ ܕܠܐ ܢܚܙܘܢ. ܘܚܨܗܘܢ ܒܟܠܙܒܢ ܢܗܘܐ ܟܦܝܦ : * ܐܫܘܕ
26 ܥܠܝܗܘܢ ܪܘܓܙܟ. ܘܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܟ ܬܕܪܟ ܐܢܘܢ : * ܬܗܘܐ ܕܝܪܬܗܘܢ ܚܪܒܐ.
27 ܘܒܡܫܟܢܝܗܘܢ ܠܐ ܢܗܘܐ ܕܥܡܪ : * ܡܛܠ ܕܠܡܢ ܕܐܢܬ ܡܚܝܬ ܪܕܦܘ. ܘܐܘܣܦܘ ܥܠ
28 29 ܟܐܒܐ ܕܩܛܝܠܐ : * ܗܒ ܥܘܠܐ ܥܠ ܥܘܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܥܠܘܢ ܒܙܕܝܩܘܬܟ : * ܢܬܛܠܩܘܢ ܡܢ
30 ܣܦܪܐ ܕܚܝܐ. ܘܥܡ ܙܕܝܩܐ ܠܐ ܢܬܟܬܒܘܢ : * ܘܐܢܐ ܡܣܟܝܢܐ ܐܢܐ ܘܟܐܒܐ.
31 ܦܘܪܩܢܟ ܐܠܗܐ ܥܕܪܢܝ : * ܐܫܒܚ ܫܡܗ ܕܐܠܗܐ ܒܬܫܒܘܚܬܐ. ܘܐܪܘܪܒܝܘܗܝ
32 33 ܒܬܘܕܝܬܐ : * ܘܐܫܦܪ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܬܘܪܐ ܡܦܛܡܐ. ܩܪܢܬܢܐ ܘܡܦܪܣܢܐ : * ܚܙܘ ܡܣܟܢܐ
34 ܘܚܕܘ ܘܢܚܐ ܠܒܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܫܡܥ ܡܪܝܐ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܠܐܣܝܪܘܗܝ ܠܐ ܫܛܐ :
35 36 * ܢܫܒܚܘܢܝܗܝ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ : ܘܝܡܡܐ ܘܟܠ ܕܪܚܫ ܒܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܦܪܩ
37 ܠܨܗܝܘܢ : ܘܒܢܐ ܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܢܬܒܘܢ ܬܡܢ ܘܢܐܪܬܘܢܗ * ܘܙܪܥܐ ܕܥܒܕܘܗܝ ܢܐܪܬܘܢܗ : ܘܪܚܡܝ
ܫܡܗ ܢܫܪܘܢ ܒܗ.

Eripe me de luto, ne demergar. Et li
fiam de oſoribus meis, & de profun
quarum. Ut ne obruat me vorago aqu
neque abſorbeat me præcipitium,neve
dat ſuper me puteus os ſuum. Exau
Domine, quoniam benigna eſt bonitas
& in abundantia miſerationum tuarum
vertere ad me. Et ne avertas faciem
à ſervo tuo. Quia triſtis ſum, citò
me : Admove animam meam ad ſa
tuam : propter inimicos meos libe
Tu nôſti opprobrium meum : & ign
mea eſt in conſpectu omniũ hoſtium m

* *Sectio* *

Cura fracturam cordis mei, & allig
pectavi aliquem qui contriſtaretur, &
fuit : conſolatorem, & non inveni.
runt in cibo meo fel, & ad ſitim me
ceto potaverunt me. Sit menſa eoru
ipſos laqueus , & retributio illorum
fendiculum. Obtenebrentur oculi
ne videant, & dorſum eorum omni
re ſit curvum. Effunde ſuper eos ir
am, & furor iræ tuæ apprehendat illos
at habitatio eorum diruta , & in tab
culis eorum non ſit qui habitet :
niam quem tu percuſſiſti perſecuti
addiderunt ſuper dolorem occiſi. D
iquitatem ad iniquitatem eorum, &
trent in juſtitiam tuam. Deleantur de
tuo vitæ, & cum juſtis tuis non ſcrib
Ego verò pauper ſum & dolens : ſal
Deus adjuvit me. Laudabo nom
cum cantico, & magnificabo eum
rũ actione. Placebo Dño magis qu
ſaginati, cornibus atq; ungulis inſtru
dete pauperes ac lætamini, & vivat
ſtrũ; Nã audit Dñs pauperes, & vin
non deſpicit. Laudẽt eũ cœlũ ac te
maria & quicquid reptat in eis; Quo
ſervat Sion, et ædificat urbes Judhæ
tẽt in ea ſervi ej⁹, Illáq; hæreditario
ant : et diligentes nomen ej⁹ cõmo
ipſa

Verſio VULG. LAT.

Eripe me de luto, ut non infigar: libera me ab iis qui oderunt me, & de profundis aquarum. Non me demergat tempeſtas aquæ, neque abſorbeat me profundum: neque urgeat ſuper me puteus os ſuum. Exaudi me, Domine, quoniam benigna eſt miſericordia tua: ſecundùm multitudinem miſerationum tuarum reſpice in me. Et ne avertas faciem tuam à puero tuo: quoniam tribulor, velociter exaudi me. Intende animæ meæ, & libera eam: propter inimicos meos eripe me. Tu ſcis improperium meum, & confuſionem meam, & reverentiam meam. In conſpectu tuo ſunt omnes qui tribulant me: improperium exſpectavit cor meum, & miſeriam. Et ſuſtinui qui ſimul contriſtaretur, & non fuit: & qui conſolaretur, & non inveni. Et dederunt in eſcam meam fel: & in ſiti mea potaverunt me aceto. Fiat menſa eorum coram ipſis in laqueum, & in retributiones, & in ſcandalum. Obſcurentur oculi eorum ne videant: & dorſum eorum ſemper incurva. Effunde ſuper eos iram tuam: & furor iræ tuæ comprehendat eos. Fiat habitatio eorum deſerta: et in tabernaculis eorum non ſit qui inhabitet. Quoniã quẽ tu percuſſiſti, perſecuti ſunt: & ſuper dolorem vulnerum meorum addiderunt. Appone iniquitatem ſuper iniquitatem eorum: & non intrent in juſtitiam tuam. Deleantur de libro Viventium: et cum juſtis non ſcribantur. Ego ſum pauper & dolens: ſalus tua, De', ſuſcepit me. Laudabo nomen Dei cum cantico: & magnificabo eum in laude: Et placebit Deo ſuper vitulum novellum, cornua producentem & ungulas. Videant pauperes & lætentur: quærite Deum, & vivet anima veſtra: Quoniam exaudivit pauperes Dominus: & vinctos ſuos non deſpexit. Laudent illum cœli & terra, mare, & omnia reptilia in eis. Quoniam Deus ſalvam faciet Sion: & ædificabuntur civitates Juda. Et inhabitabunt ibi, & hæreditate acquirent eam. Et ſemen ſervorum ejus poſſidebit eam; & qui diligunt nomen ejus, habitabunt in ea.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

15 Σῶσόν με ἀπὸ πηλοῦ, ἵνα μὴ ἐμπαγῶ· ῥυσθείην
ἐκ τῶν μισούντων με, καὶ ἐκ τοῦ βάθους τῶν ὑδάτων.
16 Μή με καταποντισάτω καταιγὶς ὕδατος, μηδὲ
καταπιέτω με βυθός, μηδὲ συσχέτω ἐπ' ἐμὲ φρέ-
17 αρ τὸ στόμα αὐτοῦ. Εἰσάκουσόν μου κύριε, ὅτι χρη-
στὸν τὸ ἔλεός σου, κατὰ τὸ πλῆθος τῶν οἰκτιρμῶν
18 σου ἐπίβλεψον ἐπ' ἐμέ. Καὶ μὴ ἀποστρέψῃς τὸ
πρόσωπόν σου ἀπὸ τοῦ παιδός σου· ὅτι θλίβομαι,
19 ταχὺ ἐπάκουσόν μου. Πρόσχες τῇ ψυχῇ μου, καὶ
λύτρωσαι αὐτήν, ἕνεκα τῶν ἐχθρῶν μου ῥῦσαί με.
20 Σὺ γὰρ γινώσκεις τὸν ὀνειδισμόν μου, καὶ τὴν αἰσχύνην
21 μου, καὶ τὴν ἐντροπήν μου· Ἐναντίον σου πάντες οἱ
θλίβοντές με. ὀνειδισμὸν προσεδόκησεν ἡ ψυχή
μου καὶ ταλαιπωρίαν. καὶ ὑπέμεινα συλλυπούμενον,
καὶ οὐχ ὑπῆρξε, καὶ παρακαλοῦντα, καὶ οὐχ εὗρον.
22 Καὶ ἔδωκαν εἰς τὸ βρῶμά μου χολήν, καὶ εἰς τὴν δί-
23 ψαν μου ἐπότισάν με ὄξος. Γενηθήτω ἡ τράπεζα
αὐτῶν ἐνώπιον αὐτῶν εἰς παγίδα, καὶ εἰς ἀνταπόδοσιν,
24 καὶ εἰς σκάνδαλον. Σκοτισθήτωσαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν
τοῦ μὴ βλέπειν, καὶ τὸν νῶτον αὐτῶν διαπαντὸς σύγ-
25 καμψον. Ἔκχεον ἐπ' αὐτοὺς τὴν ὀργήν σου, καὶ ὁ
26 θυμὸς τῆς ὀργῆς σου καταλάβοι αὐτούς. Γενηθήτω
ἡ ἔπαυλις αὐτῶν ἠρημωμένη, καὶ ἐν τοῖς σκη-
27 νώμασιν αὐτῶν μὴ ἔστω ὁ κατοικῶν. Ὅτι ὃν σὺ
ἐπάταξας, αὐτοὶ κατεδίωξαν, καὶ ἐπὶ τὸ ἄλγος
28 τῶν τραυμάτων μου προσέθηκαν. Πρόσθες ἀνομίαν
ἐπὶ τὴν ἀνομίαν αὐτῶν, καὶ μὴ εἰσελθέτωσαν ἐν δι-
29 καιοσύνῃ σου. Ἐξαλειφθήτωσαν ἐκ βίβλου ζώντων,
30 καὶ μετὰ δικαίων μὴ γραφήτωσαν. Πτωχὸς καὶ ἀλ-
γῶν εἰμι ἐγώ, καὶ ἡ σωτηρία τοῦ προσώπου σου ἀντ-
31 ελάβετό μου. Αἰνέσω τὸ ὄνομα τοῦ θεοῦ μου μετ'
32 ᾠδῆς, μεγαλυνῶ αὐτὸν ἐν αἰνέσει. Καὶ ἀρέσει
τῷ θεῷ ὑπὲρ μόσχον νέον κέρατα ἐκφέροντα καὶ
33 ὁπλάς. Ἰδέτωσαν πτωχοὶ καὶ εὐφρανθήτωσαν. ἐκ-
34 ζητήσατε τὸν θεόν, καὶ ζήσεσθε. Ὅτι εἰσήκουσε τῶν
πενήτων ὁ κύριος, καὶ τοὺς πεπεδημένους αὐτοῦ οὐκ
35 ἐξουδένωσεν. Αἰνεσάτωσαν αὐτὸν οἱ οὐρανοὶ καὶ
ἡ γῆ, θάλασσα καὶ πάντα τὰ ἕρποντα ἐν αὐτοῖς.
36 Ὅτι ὁ θεὸς σώσει τὴν Σιών, καὶ οἰκοδομηθήσονται
αἱ πόλεις τῆς Ἰουδαίας, καὶ κατοικήσουσιν ἐκεῖ, καὶ
37 κληρονομήσουσιν αὐτήν. Καὶ τὸ σπέρμα τῶν δού-
λων αὐτοῦ καθέξουσιν αὐτήν, καὶ οἱ ἀγαπῶντες τὸ
ὄνομα αὐτοῦ κατασκηνώσουσιν ἐν αὐτῇ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

18 *Salvum me fac de luto, ut non* 15
infigar: eruar ex iis qui oderunt me,
& de profundo aquarum. 19 *Non* 16
me demergat tempeſtas aquæ: neque
abſorbeat me profundum: neque co-
arctet ſuper me puteus os ſuũ. 20 *Ex-* 17
audi me, Domine, quoniam ſuavis eſt
miſericordia tua: ſecundùm multi-
tudinem miſerationum tuarum re-
ſpice in me. 21 *Et ne avertas faciem* 18
tuam à puero tuo. Quoniam tribu-
lor, velociter exaudi me: 22 *Inten-* 19
de animæ meæ, & redime eam: pro-
pter inimicos meos eripe me. 23 *Tu* 20
enim agnoſcis opprobrium meum, &
confuſionem meam, & [k] *verecun-*
diã meã. 24 *In conſpectu tuo ſunt* 21
omnes qui tribulant me: opprobrium
expectavit(o)anima mea, et miſeriã.
25 *Et* [l] *ſuſtinui, qui ſimul contriſta-*
retur, & non fuit: & qui conſolaretur;
& non inveni. 26 *Et dederunt in* 22
eſcam meam fel: & in ſiti mea po-
taverunt me aceto. 27 *Fiat menſa* 23
eorum coram ipſis in(p)laqueum, &
[m] *in retributionem, & in ſcanda-*
lum. 28 *Obſcurentur oculi eorum,* 24
ne videant: & dorſum eorum ſemper
incurva. 29 *Effunde ſuper eos iram* 25
tuam: & furor iræ tuæ comprehen-
dat eos. 30 *Fiat habitatio eorum de-* 26
ſerta: & in tabernaculis eorum non
ſit qui inhabitet. 31 *Quoniam quem* 27
tu percuſſiſti, ipſi perſequuti ſunt: &
ſuper [n] *dolorem vulnerum meorũ*
addiderunt. 32 *Appone iniquitatem* 28
ſuper iniquitatem ipſorum: & non
intrent in tua juſtitia. 33 *Deleantur* 29
de libro Viventium: & cum juſtis
non ſcribantur. 34 *Pauper & dolens* 30
ego ſum: &(q)[o] *ſalus vultûs tui*
ſuſcepit me. 35 *Laudabo nomen Dei* 31
mei cum cantico: magnificabo eum
in laude. 36 *Et placebit Deo ſuper vi-* 32
tulum novellum, [p] *cornua produ-*
centem et ungulas. 37 *Videant pau-* 33
peres, & lætentur: quærite Deum,
[q] *& (r) vivetis.* 38 *Quoniam* 34
exaudivit pauperes Dominus, & com-
peditos ſuos non ſprevit. 39 *Lau-* 35
dent illum cœli, & terra, mare, &
omnia repentia in eis. 40 *Quoniam* 36
Deus ſalvam faciet Sion, & ædifi-
cabuntur civitates Judææ: 41 *Et*
inhabitabunt ibi, & hereditate ac-
quirent eam. 42 *Et ſemen ſervorum* 37
[r] *ejus obtinebunt eam: & qui diligunt* [ſ] *nomen ejus, inhabitabunt in ea.*

Verſio ÆTHIOPICA.

ወአድኅነኒ፡እምዕምዓም፡ከመ፡ኢይጠመኒ፡፡ 18
ወአንግፈኒ ፡ እምጸላእትየ ፡፡ ወእምቀላየ፡ ማ
ይ፡፡ወኢያስጥመኒ፡ ዐውሎ፡ ማይ፡፡፦ ወኢ 19
ይኅጠኒ፡ ቀላይ፡፡ወኢያብቊ፡ አፈሁ ፡ ዐዘቅት፡
ላዕሌየ፡፡፦ ስምዓኒ ፡ እግዚኦ ፡ እስመ፡ሠና 20
ይ፡ምሕረትከ፡፡ወበከመ፡ ብዙኀ፡ ሣህልከ፡ነጽ
ር፡ላዕሌየ፡፡፦ ወኢትሚጥ፡ገጸከ፡ እምገብ 21
ርከ፡፡እስመ፡ተመንደብኩ፡ፍጡነ፡ስምዐኒ፡፦
ነጽራ፡ ለነፍስየ ፡ ወአድኅና፡፡ወአድኅነኒ፡ በእ 22
ንተ፡ ጸላእትየ፡፡፦ ለሊከ፡ ተአምር ፡ ፅእለ 23
ትየ፡፡ኃፍረትየ ፡ ወኀሳርየ፡፡፦ በቅድመ፡ኵ 24
ሎሙ፡ እለ፡ ይሣቅዩኒ፡፡ተዐገሠት፡ ነፍስየ፡ፅእ
ለተ፡ ወኀሳረ፡፡፦ ወነበርኩ፡ ተኩዝየ፡ ወኃጣ 25
እኩ፡ ዘይናዝዘኒ፡፡፦ ወወደዩ ፡ ሐሞተ፡ ውስ 26
ተ፡መብልዕየ፡፡ወአስተዩኒ ፡ ብሒአ ፡ ለጽምእ
የ፡፡፦ ለትኩኖሙ፡ ማእደሙ ፡ መሠገርተ፡ 27
በቅድሜሆሙ፡፡ወማዕገተ ፡ ዕቅፍተ ፡ ለፍደሆ
ሙ፡፡፦ ወይጽለማ፡ አዕይንቲሆሙ ፡ ወኢይ 28
ርአዩ፡፡ወይትቀጻዕ ፡ ዘባናቲሆሙ ፡ በኵሉ፡ ጊ
ዜ፡፡፦ ከዐው፡ መዐተከ፡ ላዕሌሆሙ፡፡ወይር 29
ከቦሙ ፡ መቅሠፍተ ፡ መዐትከ፡፡፦ ለትኩን፡ 30
ሀገሮሙ ፡ በድወ፡፡ወአልቦ ፡ ዘይነብር ፡ ውስተ፡
አቢያቲሆሙ፡፡፦ እስመ፡ ዘአንተ፡ቀሠፍከ፡ 31
እሙንቱ ፡ ተለው፡፡ወወሰኩኒ ፡ ዲበ ፡ ጸልእየ፡
ቍስለ፡፡፦ ወስኮሙ ፡ ጌጋየ ፡ በዲበ ፡ ጌጋዮ 32
ሙ፡፡ ወኢይባኡ፡በጽድቅከ፡፡፦ ወይደምሰ 33
ሱ፡እመጽሐፈ፡ ሕያዋን ፡፡ ወኢይጸሐፉ ፡ ምስ
ለ፡ጻድቃን፡፡፦ ነዳይ፡ ወቍሱል፡ አነ፡፡መድ 34
ኃኒ፡ገጽየ፡ እግዚአብሔር፡ ተወክፈኒ፡፡፦ እ 35
ሴብሕ፡ ለስመ ፡ አምላኪየ፡ በማሕሌት፡፡ ወአ
ዐቢዮ፡በስብሐት፡፡፦ ወአሠምሮ፡ ለእግዚ 36
አብሔር ፡ እምላህም ፡ ባዕዋ ፡፡ ዘኢያብቍ
ለ፡ቀርነ፡ ወጽፍረ፡፡፦ ይርአዩ፡ ነዳያን ፡ ወ 37
ይትፈሥሑ፡፡ ኅሥዎ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ወተ
ሐዩ ፡ ነፍስክሙ፡፡፦ እስመ ፡ ሰምዖሙ ፡ እ 38
ግዚአብሔር ፡ ለነዳያን፡፡ ወኢመነኖሙ ፡ ለሙ
ቁሓን፡፡፦ ይሴብሕዎ ፡ ሰማያት ፡ ወምድ 39
ር፡፡ ወባሕርኒ ፡ ወኵሉ ፡ ዘይትኀወሠ ፡ ውስ
ቴታ፡፡፦ እስመ፡ አድኅና ፡ እግዚአብሔር፡ 40
ለጽዮን ፡፡ ወይትሐነጻ፡ አሕጉረ፡ ይሁደ፡፡፦
ይነብሩ ፡ ህየ ፡ ወይወርስዋ፡፡፦ ወዘርአ፡ 41
አግብርቲከ፡ ይነብርዋ ፡፡ ወእለ፡ ያፈቅሩ፡ስመ 42
ከ፡የኀድሩ፡ውስቴታ፡፡፦

INTERP. ÆTHIOP. [k] deſpectum meum. [l] contriſtatus ipſe permanſi: & defuit qui me conſolaretur. Et [m] circuitus offenſionis, in retributionem eis. [n] inimicitiam meam etiam vulnus addiderunt. [o] ſalus vultûs mei Deus [p] qui nondum produxit cornua & ungulas. [q] & vivet anima veſtra. [r] tuorum poſſidebunt [ſ] nomen tuum,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* خلصني من هذا الطين فلا اوحل * نجني من المبغضين لي * ومن عمق المياه * فلا تغرقني
امواج الماء * ولا يبتلعني العمق * ولا يطبق الجب على فاه * استجب لي يا رب فان رحمتك
صالحة * انظر علي بكثرة رافتك * لا تصرف وجهك عن عبدك اجبني عاجلا فاني في شدة *
* انظر الي نفسي ونجها * من اجل اعداي خلصني * لانك عارف تعييري * وخزي
واستحياي * امامك جميع الذين يحزنوني * انتظرت نفسي عارا وشقوة * املت من يكون
معي فلم اصب * ومن يعزيني فلم اجده * جعلوا في طعامي مرارة * وعند عطشي سقوني
خلا * فلتكن مايدتهم امامهم فخا * ومجازاة وعثرا * ولتظلم عيونهم فلا يبصرون * ولتكن
ظهورهم في كل حين * افض عليهم سخطك * وغضب سخطك يدركهم * ولتكن منازلهم
خرابا * ولا يكون من يسكن في مساكنهم * لانهم طردوا الذي ضربته * وزادوا علي جراحي
اوجاعا * زدهم على اثمهم اثما * لا يدخلون في عدلك * يمحون من سفر الاحياء * ولا
يكتبون مع الصديقين * مسكين انا وجع * خلاصك اللهم عضدني * اسبح اسم الله
تسبيحا * وارفعه بتبريكا * فيرضى الله افضل من عجل فتي يخرج قرونا واظلافا * فلينظروا
المساكين وليفرحوا * اطلبوا الله تحيا نفوسكم * فقد اجاب الرب الفقراء * ولم يرذل اسراءه *
* فلتسبحه السموات والارض * والبحر وكلما يسعى فيه * لان الله يخلص صهيون * ويبنون
مداين اليهودية * ويسكنون هناك ويرثوها * وذرية عبيدك يستولون عليها * ومحبوا اسمك
يسكنون فيها * الليلويا *

Libera me ab hoc luto, neve infigar in il- 15
lud. Salves me ab oſoribus meis, et ab imo
aquarum: Neve immergant me fluctus 16
aquæ, neq; abſorbeat me profundum, neq;
claudat puteus ſuper me os ſuum. Exaudi 17
me, O Domine, quoniam miſericordia tua
bona eſt; reſpice in me per multitudinem
benignitatis tuæ. Ne avertas faciem tu- 18
am à ſervo tuo, reſponde mihi velociter,
quia verſor in anguſtia. Reſpice in animã 19
meam, et ſalva illam: propter inimicos me-
os libera me. Quia tu ſcis improperium 20
meum et afflictionem meam et verecundi-
am meam: coram te ſunt omnes qui me af-
fligunt. Expectavit anima mea impropе- 21
rium et miſeriam: ſperavi qui contriſtare-
tur mecum, et non inveni: & qui me con-
ſolaretur, et non reperi eum; Poſuerunt in 22
cibo meo amaritudinem, et ad ſitim meam
potaverunt me aceto. Sit menſa eorum 23
ante eos laqueus, et retributio, & offenſio.
Et tenebreſcant oculi eorum neque vide- 24
ant: & curva ſint dorſa eorum in omni
tempore. Effunde ſuper eos iram tuam, et 25
furor iræ tuæ apprehendat eos. Sintque 26
habitationes eorum vaſtatæ, et non ſit qui
habitet in domiciliis eorum. Quia inſe- 27
ctati ſunt quem percuſſiſti, et addiderunt
vulneribus meis dolores. Appone eis ſuper 28
iniquitatem eorum iniquitatem, ne intrent
in æquitatem tuam: Deleantur de libro 29
viventium, & non ſcribantur cum juſtis.
Pauper ego ſum, dolens: Salus tua Deus, 30
confortavit me, Celebrabo nomen Dei 31
laude, et extollam illud benedictione: Et 32
placebit Deo pluſquam vitulus tener emit-
tens cornua & ungulas. Videant ergò 33
pauperes & lætentur: quærite Deum, vi-
vent animæ veſtræ. Jam enim exaudivit 34
Dominus pauperes, et non deſpexit vinctos
ſuos. Laudent illum cœli ac terra, & 35
mare ac quicquid motatur in eo. Quoni- 36
am Deus ſalvabit Sionem, & ædificabunt
civitates Judææ, & habitabunt ibi, &
hæreditario poſſidebunt eas. Et progenies 37
ſervorum tuorum dominabuntur in eas, et
amantes nomen tuum habitabunt in eis.
Alleluja.

תהלים : ע עא

PSAL. LXX. ע

1 mei auxiliū ad Domine.me *liberandum ad* Deus .recordandum ad David ipsi Victori
2 לַמְנַצֵּחַ לְדָוִד לְהַזְכִּיר׃ אֱלֹהִים לְהַצִּילֵנִי יְהוָה לְעֶזְרָתִי
Convertantur .meam animam quærentes erubescant & afficiantur Pudore .festina
3 חוּשָׁה׃ יֵבֹשׁוּ וְיַחְפְּרוּ מְבַקְשֵׁי נַפְשִׁי יִסֹּגוּ
,sui pudoris mercede *super* Convertantur.meum malū volentes:erubescant & ,retrorsum
4 אָחוֹר וְיִכָּלְמוּ חֲפֵצֵי רָעָתִי׃ יָשׁוּבוּ עַל־עֵקֶב בָּשְׁתָּם
, te quærentes omnes te in lætentur & , Gaudeant .euge , Euge , *dicentes*
5 הָאֹמְרִים הֶאָח הֶאָח׃ יָשִׂישׂוּ וְיִשְׂמְחוּ בְּךָ כָּל־מְבַקְשֶׁיךָ
,*indigus & ,afflictus* ego Et.tuā salutem *diligentes* , Deus magnificetur : semper dicent &
6 וְיֹאמְרוּ תָמִיד יִגְדַּל אֱלֹהִים אֹהֲבֵי יְשׁוּעָתֶךָ׃ וַאֲנִי עָנִי וְאֶבְיוֹן
.tardaveris ne Domine : *tu* meus erutor & ,meum auxilium,*mihi* festina Deus
אֱלֹהִים חוּשָׁה־לִּי עֶזְרִי וּמְפַלְטִי אַתָּה יְהוָה אַל־תְּאַחַר׃

PSAL. LXXI. עא

, me *eripies tua justitia In* .seculum in afficiar pudore ne : speravi Domine te In
1 בְּךָ־יְהוָה חָסִיתִי אַל־אֵבוֹשָׁה לְעוֹלָם׃ בְּצִדְקָתְךָ תַּצִּילֵנִי
2 *habitaculi petram in* mihi Esto .me serva & ,tuam aurem me ad inclina : me *erues* &
וּתְפַלְּטֵנִי הַטֵּה־אֵלַי אָזְנְךָ וְהוֹשִׁיעֵנִי׃ הֱיֵה לִי לְצוּר מָעוֹן
3 .tu mea munitio & ,mea petra quia : me servare præcepisti ,jugiter *ingrediendū ad*
לָבוֹא תָּמִיד צִוִּיתָ לְהוֹשִׁיעֵנִי כִּי־סַלְעִי וּמְצוּדָתִי אָתָּה׃
tu Quoniam .*violenti* & ,pervertentis *vola* è : impii manu è me erue mi Deus
4 אֱלֹהַי פַּלְּטֵנִי מִיַּד רָשָׁע מִכַּף מְעַוֵּל וְחוֹמֵץ׃ כִּי־אַתָּה
5 sum innixus *te Super .meis pueritiis* à mea fiducia Dominus ,Domine : mea expectatio
6 תִקְוָתִי אֲדֹנָי יְהוִה מִבְטַחִי מִנְּעוּרָי׃ עָלֶיךָ נִסְמַכְתִּי
portent Tanquā.semper mea laus te in:me eductor tu meæ matris *visceribus à ventre de*
מִבֶּטֶן מִמְּעֵי אִמִּי אַתָּה גוֹזִי בְּךָ תְהִלָּתִי תָמִיד׃ כְּמוֹפֵת
7 die tota : tua laude meum os Repleatur .fortis mea spes tu & : multis fui
8 הָיִיתִי לְרַבִּים וְאַתָּה מַחֲסִי־עֹז׃ יִמָּלֵא פִי תְּהִלָּתֶךָ כָּל־הַיּוֹם
,*meā fortitudinē deficere secundū* : senectutis tempore in me projicias Ne .tua gloria
9 תִּפְאַרְתֶּךָ׃ אַל־תַּשְׁלִיכֵנִי לְעֵת זִקְנָה כִּכְלוֹת כֹּחִי
meam animam custodientes & : *mihi* mei inimici *dixerunt* Quia .me derelinquas ne
10 אַל־תַּעַזְבֵנִי׃ כִּי־אָמְרוּ אוֹיְבַי לִי וְשֹׁמְרֵי נַפְשִׁי
,eū comprehendite &,persequimini:eū dereliquit Deus:Dicendo.pariter sunt consiliati
11 נוֹעֲצוּ יַחְדָּו׃ לֵאמֹר אֱלֹהִים עֲזָבוֹ רִדְפוּ וְתִפְשׂוּהוּ
meum auxilium ad mi Deus : me à elongeris ne Deus .*eruens* non quia
12 כִּי־אֵין מַצִּיל׃ אֱלֹהִים אַל־תִּרְחַק מִמֶּנִּי אֱלֹהַי לְעֶזְרָתִי
, probro operiantur , meæ animæ adversarii deficiant , afficiantur Pudore .festina
13 חוּשָׁה׃ יֵבֹשׁוּ יִכְלוּ שֹׂטְנֵי נַפְשִׁי יַעֲטוּ חֶרְפָּה
adjiciam & , expectabo semper ego Et .meum malum quærentes ; pudore &
14 וּכְלִמָּה מְבַקְשֵׁי רָעָתִי׃ וַאֲנִי תָּמִיד אֲיַחֵל וְהוֹסַפְתִּי
die tota , tuam justitiam narrabit meum Os .tuam laudem omnem super
15 עַל־כָּל־תְּהִלָּתֶךָ׃ פִּי יְסַפֵּר צִדְקָתֶךָ כָּל־הַיּוֹם
.numeros cognovi non quoniam : tuam salutem
תְּשׁוּעָתֶךָ כִּי לֹא יָדַעְתִּי סְפֹרוֹת׃

תרגום TARGUM.

ע

1 לְשַׁבָּחָא עַל יַד דָּוִד לְמִדְכַּר עַל צְרוֹד לְבוֹנְתָא׃
2 אֱלָהָא לְפַצָּאָה יָתָנָא יְיָ לְסַעֲדִי זְרִיז׃ 3 יִבְהֲתוּן
וְיִתְחַסְּדוּן תָּבְעֵי נַפְשִׁי יְזוּרוּן לַאֲחוֹרָא וְיִכְסְפוּן
דִּצְבַיִן בִּישְׁתִּי׃ 4 יְתוּבוּן לַאֲחוֹרָא מְטוּל דִּי כְמַנּוּ
עֲלַי יִתְפַּרְעוּן הֵיךְ בְּהִיתְהוֹן דְּאָמְרִין עֲלַי חֲדִינָא
חֲדִינָא׃ 5 יֶחְדוּן וְיִדְוְצוּן בְּמֵימְרָךְ כָּל תָּבְעֵי אוּלְפָּן
מִנָּךְ וְיֵימְרוּן תְּדִירָא יִסְגֵּי יְקָרֵיהּ דַּיְיָ רָחְמֵי
6 פוּרְקָנָךְ׃ וַאֲנָא עַנְיָא וַחֲשִׁיכָא אֱלָהָא זְרִיז לִי סַעְדִּי
וְשֵׁיזְבוּתִי אַתְּ הוּא יְיָ לָא תּוֹחַר׃

עא

1 בְּמֵימְרָךְ יְיָ רְחִיצִית לָא אֵבְהַת לְעָלַם׃ בְּצִדְקָתָךְ
2 פְּצִי יָתִי וְשֵׁיזְבַנַּנִי אַצְלֵי לְוָתִי אוּדְנָךְ וּפְרוֹק
3 יָתִי׃ הֱוֵי לִי לְטִינָר תַּקִּיף עֲשִׁין לְמֵעַל תְּדִירָא
פַּקֶּדְתָּא לְמִפְרַק יָתִי אֲרֵי תוּקְפִּי וּכְרַךְ חוּסְנָא
4 אַתְּ׃ אֱלָהָא שֵׁיזֵיב יָתִי מִן יַד רַשִּׁיעָא מִן יְדָא דְמָרֵי
5 עֵילְלָא וַחֲטוֹף׃ אֲרוּם אַתְּ הוּא סוֹבְרִי יְיָ אֱלָהַי
6 רוּחְצָנִי מִן טַלְיוּתִי׃ עֲלָךְ סַמְּכִית מִן כְּרִיסָא מִן
מְעַיָּא דְאִמִּי אַנְתְּ מַפֵּיק בְּמֵימְרָךְ תּוּשְׁבַּחְתִּי
7 תְּדִירָא׃ הֵיךְ תִּמְהָא הֲוֵיתִי לְסַגִּיעִין וְאַנְתְּ רוּחְצָנִי
8 וְעוּשְׁנָא דִּילִי׃ יִתְמְלֵי פּוּמִי תּוּשְׁבַּחְתָּךְ כָּל יוֹמָא
9 שִׁבְהוֹרָךְ׃ לָא תִּטְלוֹק יָתִי לְעִדָּן סִיבוּ כַּד יִפְסוֹק
10 חֵילִי לָא תִּשְׁבְּקִנַּנִי׃ אֲרוּם אָמְרוּ בַּעֲלֵי דְבָבַי עֲלַי
11 בִּישׁ וְנָטְרֵי נַפְשִׁי יִתְמַלִּיכוּ כַחֲדָא׃ לְמֵימַר אֱלָהָא
שַׁבְקֵיהּ רְדוֹפוּ וַאֲחִידוּ יָתֵיהּ אֲרוּם לֵית דְּפָצֵי׃
12 אֱלָהָא לָא תִּרְחִיק מִנִּי אֱלָהַי לְסַעֲדִי זְרִיז׃
13 יִבְהֲתוּן יִשְׁתֵּיצוּן סָטְנֵי נַפְשִׁי יִתְעַטְּפוּן קְלָנָא
14 וּכְסוּפָא תָּבְעֵי בִּישׁוּתִי׃ וַאֲנָא תְּדִירָא אוֹרִיךְ
15 וְאוֹסִיף עַל כָּל תּוּשְׁבַּחְתָּךְ׃ פּוּמִי יִשְׁתָּעֵי צִדְקוּתָךְ
כָּל יוֹמָא פּוּרְקָנָךְ אֲרוּם לָא יַדְעִית מִנְיָנְהוֹן׃

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Ad laudandum per manum Davidis, ad *recordandum usum* thuris.

PSAL. LXX.

DEus ad liberandum *nos*; Domine ad adjuvandum me accinctus esto. Confundantur & opprobrio afficiantur quærentes animam meam; convertantur retrorsum, & erubescant volentes malum meum. *Revertantur retrorsum, quoniam insidiati sunt mihi; puniantur* juxta confusionem suam, qui dicunt adversum me, Gavisi sumus, gavisi sumus. Exultent & lætentur in Verbo tuo, omnes quærentes eruditionem à te: & dicant continuè, Magnificetur gloria Domini, diligentes redemptionem tuam. Ego autem egenus sum & pauper: Deus festina ad me: auxilium meum, & redemptio mea tu es, Domine ne moreris.

PSAL. LXXI.

IN verbo tuo Domine confisus sum: non confundar in seculum. In justitia tua erue me & libera me: inclina ad me aurem tuam, & redime me. Esto mihi rupes fortis *valdè* ad quā ingrediar jugiter: jussisti redimi me, quoniam firmitas mea, & arx fortitudinis meæ tu es. Deus libera me de manu impii, de manu auctoris iniquitatis & violentiæ. Quoniam tu es spes mea Domine Deus meus, fiducia mea à pueritia mea. Super te confirmatus sum ab utero, à ventre matris meæ tu extraxisti me: in verbo tuo laus mea jugiter. Sicut prodigium fui plurimis, & tu fiducia mea, & fortitudo mea. Replebitur os meum laude tua, tota die gloria tua. Ne projicias me in tempore senectutis; cùm defecerit virtus mea, ne deseras me. Quoniam dixerunt inimici mei adversùm me malum, & observatores animæ meæ consultant simul. Dicendo: Deus dereliquit eum, persequimini & apprehendite eum, quoniam non est qui redimat. Deus ne elongeris à me: Dñe ad auxilium meū festina. Confundantur & deleantur adversarii animæ meæ: amiciantur ignominia, & opprobrio quærentes malum meum. Ego autem jugiter expectabo, & adjiciam super omnem laudem tuam. Os meum annunciabit justitiam tuam, tota die redemptionem tuam, quoniam nescivi numerum earum.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 ܕܕܘܝܕ. ܡܫܬܥܝܢܘܬܐ. ܟܕ ܫܕܪ ܗܘܐ ܝܘܐܒ ܠܡܐܚܕ * ܕܥ ܡܙܡܘܪܐ *
ܠܫܡܥܝ ܡܪܕܐ. ܐܦ ܒܥܘܬܐ ܕܙܕܝܩܐ ܘܕܡܫܝܚܐ ܡܘܕܥܝܢܐ. ܦܘܫ ܡܢܗ.
2 * ܐܠܗܐ ܦܪܘܩ ܡܪܝܐ ܠܡܥܕܪܢܝ ܩܘܡ: * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܚܦܪܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܠܢܦܫܝ.
3 ܢܗܦܟܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ ܘܢܒܗܬܘܢ: ܐܝܠܝܢ ܕܨܒܝܢ ܒܒܝܫܬܝ. * ܢܬܕܘܕܘܢ ܒܬܪܬܝܢ
4 ܒܗܬܬܐ ܐܝܠܝܢ ܕܐܡܪܝܢ ܥܠܝ ܐܗ ܐܗ. * ܢܚܕܘܢ ܒܟ ܘܢܬܒܣܡܘܢ ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܠܟ: ܘܢܐܡܪܘܢ
5 ܒܟܠܙܒܢ ܕܪܒ ܗܘ ܐܠܗܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܪܚܡܝܢ ܦܘܪܩܢܟ: ܘܐܢܐ ܡܣܟܢܐ ܐܢܐ ܘܒܨܝܪܐ. ܐܠܗܐ
6 ܥܕܪܝܢܝ: ܡܥܕܪܢܝ ܐܢܬ ܘܦܪܘܩܝ ܐܠܗܝ ܠܐ ܬܘܚܪ. * ܕܥܐ ܡܙܡܘܪܐ *
ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܗܘܐ ܫܐܘܠ ܡܬܚܪܐ ܥܡ ܒܝܬܗ ܕܕܘܝܕ. ܘܡܬܢܒܐ ܥܠ ܚܫܗ ܘܩܝܡܬܗ
1 ܕܡܫܝܚܐ. ܦܘܫ ܡܢܗ. * ܒܟ ܡܪܝܐ ܣܒܪܬ ܠܐ ܐܒܗܬ ܠܥܠܡ. * ܘܒܙܕܝܩܘܬܟ
2 ܦܨܝܢܝ: ܐܪܟܢ ܠܘܬܝ ܐܕܢܟ ܘܦܪܘܩܝܢܝ. * ܗܘܝ ܠܝ ܒܝܬ ܡܥܡܪܐ ܕܐܥܘܠ ܠܗ ܒܟܠܙܒܢ:
3 ܘܦܩܘܕ ܕܢܦܪܩܘܢܢܝ ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܒܝܬ ܓܘܣܝ ܘܚܝܠܝ ܡܪܝܐ: * ܐܠܗܐ ܦܨܝܢܝ ܡܢ
4 ܐܝܕܗ ܕܚܛܝܐ. ܘܡܢ ܐܝܕܗ ܕܥܘܠܐ ܒܝܫܐ: * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܣܒܪܝ ܡܪܝܐ. ܐܠܗܐ ܬܘܟܠܢܝ
5 ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ: * ܐܬܬܟܠܬ ܥܠܝܟ ܡܢ ܡܪܒܥܐ. ܘܡܢ ܟܪܣܗ ܕܐܡܝ ܐܢܬ ܗܘ ܬܘܟܠܢܝ:
6 ܘܠܟ ܫܒܚܬ ܒܟܠܙܒܢ. * ܠܬܡܗܐ ܗܘܝܬ ܠܣܓܝܐܐ ܕܐܢܬ ܗܘ ܬܘܟܠܢܝ ܚܣܝܢܐ.
7 * ܢܬܡܠܐ ܦܘܡܝ ܬܫܒܘܚܬܟ: ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܪܒܘܬܟ. * ܠܐ ܬܫܕܝܢܝ ܒܙܒܢܐ ܕܣܝܒܘܬܐ:
8 9 ܘܡܐ ܕܫܠܡ ܚܝܠܝ ܠܐ ܬܫܒܩܢܝ. * ܡܛܠ ܕܐܡܪܘ ܥܠܝ ܒܥܠܕܒܒܝ: ܘܢܛܪܝܢ ܕܢܦܫܝ
10 ܐܬܡܠܟܘ ܐܟܚܕܐ. * ܘܐܡܪܘ: ܐܠܗܐ ܫܒܩܗ ܪܕܘܦܘܗܝ ܘܐܚܘܕܘܗܝ. ܡܛܠ
11 ܕܠܝܬ ܠܗ ܡܦܨܝܢܐ: * ܐܠܗܐ ܠܐ ܬܪܚܩ ܡܢܝ. ܐܠܗܐ ܠܡܥܕܪܢܝ ܩܘܡ: * ܢܒܗܬܘܢ
12 13 ܘܢܣܦܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ ܠܘܩܒܠ ܢܦܫܝ. ܢܬܥܛܦܘܢ ܒܗܬܬܐ ܘܚܣܕܐ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܒܝܫܬܝ:
14 15 * ܐܢܐ ܕܝܢ ܒܟܠܙܒܢ ܐܨܠܐ ܘܐܘܣܦ ܥܠ ܬܫܒܘܚܬܟ. * ܘܦܘܡܝ ܢܫܬܥܐ ܙܕܝܩܘܬܟ:
ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܬܫܒܘܚܬܟ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܣܦܪܐ:

PSAL. LXX

Davidis. Ad literam quum misit Joab ad capiendum Semi qui rebellaverat. Tum quoque supplicatio justorum, imo ipsius Christi. Vers. 42.

DEus libera me, Domine in adjutorium meum persiste. Confundantur & erubescant qui quærunt animam meam: agantur retro & pudefiant qui volunt malum meum: Obstupescant duplici cum ignominia qui dixerunt de me, Ehe, ehe, Lætentur in te omnes qui quærunt te: dicant omni tempore Magnus est Deus, qui diligunt salutem tuam. Ego autem pauper sum & inops, Deus adsis mihi: auxiliator meus es, & salvator meus Deus mi ne moreris.

PSAL. LXXI.

Compositus à Davide. Quum Saul bellaret adversùs domum David. Et prophetia de passione ac resurrectione Christi. Vers.

IN te Domine speravi, non confundar unquam: Et in justitia tua libera me. Inclina ad me aurem tuam, & salva me. Esto mihi domicilium quod ingrediar omni tempore & mandes ut server, quia tu es refugium meum, & arx mea. Deus eripe me de manu impii, & de manu flagitiosi maligni. Quia tu es spes mea Domine, Deus fiducia mea à pueritia mea: Quia tibi innixus sum à vulva, & à visceribus matris meæ tu es spes mea: teque laudavi omni tempore. Admiratio factus sum multis, quia tu es fiducia mea prævalida. Repleatur os meum laude tuâ, & totâ die magnificentiâ tuâ. Ne projicias me tempore senectutis, & cum defecerint vires meæ, ne me deseras. Quia dixerunt de me hostes mei: & qui observant animam meam, consultârunt simul. Ac dixerunt; Deus dereliquit eum, persequimini eum & apprehendite illum: non enim est illi salvator. Deus ne longè sis à me: Deus in adjutorium meum persiste. Confundantur & erubescant qui adversantur animæ meæ: induantur ignominia & opprobrio qui quærunt malum meum. Ego verò jugiter orabo, & adjiciam ad laudes tuas: Et os meum narrabit justitiam tuam, totaque die glorificationem tuam. Non enim novi scripturam.

Verſio VULG. LAT.

1 In finē, Pſalm⁹ David, In rememorationē,
ꝙ ſalvū fecerit eū Dñs. LXIX.
2 DEus, in adjutorium meum intende:
Domine, ad adjuvandum me feſtina.
3 Confundantur, & revereantur,
4 qui quærunt animam meam: Avertantur
retrorſum, & erubeſcant,
qui volunt mihi mala: Avertantur
ſtatim erubeſcentes, qui dicunt
5 mihi; Eugè, eugè. Exultent & lætentur
in te omnes qui quærunt te, &
dicant ſemper; Magnificetur Domin⁹:
6 qui diligunt ſalutare tuum. Ego verò
egenus, & pauper ſum: Deus, adjuva
me. Adjutor meus, & liberator meus
es tu: Domine, ne moreris.
1 Pſalmus David, Filiorum Jonadab,
& priorum captivorum. LXX.
IN te, Domine, ſperavi, non confundar
2 in æternum: In juſtitia tua libera
me, & eripe me. Inclina ad me aurem
3 tuam, & ſalva me. Eſto mihi in
Deum protectorē, & in locū munitū:
ut ſalvum me facias: Quoniā firmamē-
tum meum, & refugium meum es tu.
4 Deus meus, eripe me de manu peccatoris,
& de manu contra legem agentis
& iniqui: Quoniam tu es patientia
mea, Domine: Domine, ſpes mea à juventute
6 mea. In te confirmatus ſum ex
utero: de ventre matris meæ tu es protector
me⁹. In te cantatio mea ſemper:
7 Tanquā prodigium fact⁹ ſum multis: &
8 tu adjutor fortis. Repleatur os meum
laude, ut cantē gloriā tuā, totâ die magnitudinē
9 tuā. Ne projicias me in tēpore
ſenectutis: cùm defecerit virtus
10 mea, ne derelinquas me. Quia dixerunt
inimici mei mihi: & qui cuſtodiebant
animā meā, conſilium fecerunt in unū,
11 Dicētes; De⁹ dereliquit eum, perſequimini,
& comprehēdite eum: quia non
12 eſt qui eripiat. Deus, ne elongeris à me:
Deus me⁹, in auxilium meum reſpice.
13 Confundātur, & deficiant detrahētes
animæ meæ: operiantur confuſione &
14 pudore qui quærunt mala mihi. Ego
autē ſemper ſperabo: & adjiciā ſuper
15 omnē laudē tuā. Os meum annuntiabit
juſtitiam tuam; totâ die ſalutare tuum.
Quoniam non cognovi literaturam,

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

1 Εἰς τὸ τέλος, τῷ Δαυὶδ εἰς ἀνάμνησιν, εἰς
τὸ σῶσαί με κύριον. ξθ΄.
2 Ὁ θεὸς εἰς τὴν βοήθειάν μου πρόσχες. Αἰ-
3 σχυνθείησαν καὶ ἐντραπείησαν οἱ ζητοῦντες
4 τὴν ψυχήν μου· Ἀποστραφείησαν εἰς τὰ ὀπίσω,
καὶ καταισχυνθείησαν οἱ βουλόμενοί μοι κακά.
ἀποστραφείησαν παραυτίκα αἰσχυνόμενοι οἱ λέγοντές
5 μοι, Εὖγε, εὖγε. Ἀγαλλιάσθωσαν καὶ εὐφρανθήτωσαν
ἐπὶ σοὶ πάντες οἱ ζητοῦντές σε,
καὶ λεγέτωσαν διαπαντὸς, Μεγαλυνθήτω ὁ θεὸς,
6 οἱ ἀγαπῶντες τὸ σωτήριόν σου. Ἐγὼ δὲ πτωχὸς
καὶ πένης, ὁ θεὸς βοήθησόν μοι. βοηθός μου,
καὶ ῥύστης μου εἶ σὺ, κύριε μὴ χρονίσῃς.
1 Τῷ Δαυὶδ, Υἱῶν Ἰωναδὰβ, καὶ τῶν πρώτων
αἰχμαλωτισθέντων. ο΄.
ἘΠὶ σοὶ κύριε ἤλπισα, μὴ καταισχυνθείην
2 εἰς τὸν αἰῶνα. Ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου ῥῦσαί
με καὶ ἐξελοῦ με, κλῖνον πρός με τὸ οὖς σου καὶ σῶσόν
3 με. Γενοῦ μοι εἰς θεὸν ὑπερασπιστὴν, καὶ εἰς
τόπον ὀχυρὸν τοῦ σῶσαί με, ὅτι στερέωμά μου
4 καὶ καταφυγή μου εἶ σύ. Ὁ θεός μου ῥῦσαί με ἐκ
χειρὸς ἁμαρτωλοῦ, ἐκ χειρὸς παρανομοῦντος καὶ
5 ἀδικοῦντος. Ὅτι σὺ εἶ ἡ ὑπομονή μου κύριε,
6 κύριε ἡ ἐλπίς μου ἐκ νεότητός μου. Ἐπὶ σὲ ἐπεστηρίχθην
ἀπὸ γαστρὸς, ἐκ κοιλίας μητρός μου σύ
μου εἶ σκεπαστής. ἐν σοὶ ἡ ὕμνησίς μου διαπαν-
7 τός. Ὡσεὶ τέρας ἐγενήθην τοῖς πολλοῖς, καὶ
8 σὺ βοηθὸς κραταιός. Πληρωθήτω τὸ στόμα μου
αἰνέσεως, ὅπως ὑμνήσω τὴν δόξαν σου, ὅλην τὴν
9 ἡμέραν τὴν μεγαλοπρέπειάν σου. Μὴ ἀπορρίψῃς
με εἰς καιρὸν γήρους, ἐν τῷ ἐκλείπειν τὴν ἰσχύν
10 μου μὴ ἐγκαταλίπῃς με. Ὅτι εἶπαν οἱ ἐχθροί
μου ἐμοὶ, καὶ οἱ φυλάσσοντες τὴν ψυχήν μου ἐβουλεύσαντο
11 ἐπὶ τὸ αὐτὸ, Λέγοντες, Ὁ θεὸς ἐγκατέλιπεν
αὐτὸν, καταδιώξατε καὶ καταλάβετε αὐτὸν,
12 ὅτι οὐκ ἔστιν ὁ ῥυόμενος. Ὁ θεὸς μὴ μακρύνῃς
ἀπ' ἐμοῦ, ὁ θεός μου εἰς τὴν βοήθειάν μου
13 πρόσχες. Αἰσχυνθήτωσαν καὶ ἐκλιπέτωσαν οἱ ἐνδιαβάλλοντες
τὴν ψυχήν μου, περιβαλέσθωσαν
αἰσχύνην καὶ ἐντροπὴν οἱ ζητοῦντες τὰ κακά μοι.
14 Ἐγὼ δὲ διαπαντὸς ἐλπιῶ, καὶ προσθήσω ἐπὶ
15 πᾶσαν τὴν αἴνεσίν σου. Τὸ στόμα μου ἐξαγγελεῖ
τὴν δικαιοσύνην σου, ὅλην τὴν ἡμέραν τὴν
σωτηρίαν σου. ὅτι οὐκ ἔγνων πραγματείας,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

In finem, ipſi David, In rememorationem, eo (a) quòd ſalvū me fecit Dñs. 1
LXIX.
1 DEus, in adjutoriū meum (b) in- 2
tend: [a] 2 Confundantur, et revere- 3
antur, qui quærunt animā meā. 3 A- 4
vertantur retrorſum, & erube-
ſcant, qui volunt mihi mala. 4 Aver-
tantur ſtatim erubeſcentes, qui dicunt
mihi, Eugè, eugè. 5 Exultent, & læ- 5
tentur in te omnes, qui quærunt [b]
te: & dicant ſemper, Magnificetur
Dns, qui diligunt ſalutare tuū [c].
6 Ego verò egenus, & pauper ſum: 6
Deus, adjuva me. 7 Adjutor meus,
& liberator meus es tu: Domine, [d]
ne tardaveris.

Ipſi David, (a) Filiorum [a] Jonadab, & eorū qui primi captivi ducti ſunt. 1
LXX.
1 IN te, Domine, ſperavi; non con-
fundar in æternum. In juſtitia tua 2
erue me, & exime me. 2 Inclina ad
me aurē tuam, & ſalva [b] me. 3 Eſto 3
mihi [c] in Deum protectorem, & in
locum munitū; ut ſalvum me facias.
4 Quoniam firmamentum meum, &
refugium meum es tu. 5 Deus meus, 4
erue me de manu [d] peccatoris: de
manu contra legem agentis, & ini-
qui. 6 Quoniam tu es patientia mea, 5
Domine: Domine [e], ſpes mea à ju-
ventute mea. 7 In te confirmatus ſum 6
ex [f] utero: de ventre matris meæ tu
[g] es protector meus. 8 [h] In te can-
tatio mea ſemper: Tanquam [i] pro- 7
digium factus ſum multis: & tu [k]
adjutor fortis. 9 Repleatur os meum 8
laude [l]; ut (b) cantē gloriam tuam,
totâ die (c) magnificentiam tuam.
10 Ne projicias me tempore ſenectu- 9
tis: cùm deficiet virtus mea, ne dere-
linquas me [m]. 11 Quia dixerunt 10
inimici mei mihi: & qui [n] cuſtodie-
bant animam meam, conſilium fece-
runt in unum: 12 Dicentes, Deus de- 11
reliquit eum: perſequimini, & com-
prehendite eum, quia non eſt qui eri-
piat. 13 Deus [o], ne elongeris à me: 12
Deus meus, in auxilium meum reſpi-
ce. 14 Confundantur, & deficiant 13
(d) detrahentes animæ meæ: indu-
antur confuſione, & verecundiâ,
qui quærunt [p] mala mihi. 15 Ego 14
autem ſemper [q] ſperabo, & adjiciā ſuper omnē laudem tuam. 16 Os meum annunti- 15
abit juſtitiam tuam, totâ die ſalutem tuam. 17 Quoniam non cognovi (e) negotiationes;

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ፡ዘደዊት፡በእንተ፡ተዝከረ፡
አድኀነኒ፡እግዚእ፡፡
ጓሀ እግዚእ፡ነጽር፡ ውስተ፡ረድኤትየ፡፡እግዚ 1
እ፡አፍጥንኒ፡ረድኤትየ፡፡=፡ ይትኀፈሩ፡ወይኅሰ 2
ሩ፡እለ፡የኀሥሡ፡ለነፍስየ፡፡=፡ ወይግብኡ፡ድ 3
ኅሬሆሙ፡ወይትኀፈሩ፡እለ፡መከሩ፡ እኩየ፡ላዕ
ልየ፡፡=፡ ለይግብኡ፡ድኅሬሆሙ፡በጊዜሃ፡ተኀ 4
ፊሮሙ፡ እለ፡ ይብሉኒ፡ እንቋዕ ፡ እንቋዕ፡፡=፡
ለይትፌሥሑ፡ ወይትሐሠዩ፡ ኵሎሙ፡ እለ፡የ 5
ኀሥሡከ፡ እግዚእ፡፡ወይበሉ፡ ዘልፈ ፡ ዐቢ፡እ
ግዚአብሔር፡፡እለ ፡ ይፈቅዱ ፡ አድኅኖተከ፡በ
ኵሉ ፡ ጊዜ፡፡=፡ አንሰ፡ነዳይ ፡ ወምስኪን፡አ 6
ነ ፡፡ ወእግዚአብሔር ፡ ይረድአኒ፡፡=፡ ረደኢ 7
የ፡ወምስካይየ ፡ አንተ ፡ እግዚእ፡ አምላኪየ፡
ወኢትጕንዲ፡፡=፡
ዘደዊት፡ዘወልደ፡አሚናደብ፡ለእለ፡
አቅደሙ፡ተፄውዎ፡፡
ኮ ኪያከ፡ ተወከልኩ፡ እግዚእ፡ ወኢትኀፈር፡ 1
ለዓለም ፡፡ ወበጽድቅከ ፡ አንግፈኒ ፡ ወበልሐ
ኒ፡፡=፡ አጽምእ፡ እዝነከ፡ ኀቤየ፡ ወፍጡነ፡ 2
አድኅነኒ፡፡=፡ ኩነኒ፡ አምላኪየ፡ወመድኀኒ 3
የ፡፡ውስተ፡ብሔር፡ጽኑዕ፡ከመ፡ታድኅነኒ፡፡=፡
እስመ፡ኀይልየ፡ ወጸወንየ፡ አንተ፡፡=፡ አምላ 4
ኪየ፡ አድኅነኒ ፡ እመእደ፡ ኃጥአን፡፡ወእምእ 5
ደ፡ ዐማፂ፡ ወገፋዒ፡፡=፡ እስመ፡ አንተ፡ ተስፋ 6
የ፡እግዚእ፡፡እግዚእየ፡ ተሰፈውኩከ፡ እምንእ
ሰየ፡፡=፡ ወብከ፡ ጸናዕኩ፡ በውስተ፡ከርሠ፡እ 7
ምየ ፡፡ ወበውስተ ፡ ማኅፀን፡ አንተ ፡ ከደንከ
ኒ፡፡=፡ ወአንተ፡ዝክርየ፡በኵሉ፡ጊዜ፡፡ከመ፡ 8
ኳሂላ፡ ኮንኩዎሙ ፡ ለብዙኃን፡፡ወአንተ፡ረደኢ
የ፡ወኀይልየ፡፡=፡ መልአ፡አፉየ፡ስብሐቲከ፡፡ 9
ከመ፡ እሴብሕ፡ አኰቴተከ፡፡ወኵሎ፡ አሚረ፡
ዕበየ፡ስብሐቲከ፡፡=፡ ኢትግድፈኒ፡በመዋዕለ፡ 10
ርስእየ፡፡ወአመ፡ ኀልቀ፡ ኀይልየ ፡ ኢትኅድገ
ኒ፡አምላኪየ፡፡=፡ እስመ፡ ነበቡ፡ላዕሌየ፡ጸላ 11
እትየ፡፡ወእለሂ ፡ የኀሥሡ ፡ ለነፍስየ፡፡ ተማከ
ሩ፡ኅቡረ፡ 12 ወይቤሉ፡፡ኀደጎ፡እግዚአብሔ 12
ር፡፡ደግንዎ፡ ወትእኅዝዎ፡፡እስመ፡ አልቦ፡ዘያ
ድኅኖ፡፡=፡ አምላኪየ ፡ ኢትርሐቅ ፡ እምኔ 13
የ፡፡አምላኪየ፡ ነጽር ፡ ውስተ፡ ረድኤትየ፡፡=፡
ይትኀፈሩ፡ ወይኅሰሩ፡ እለ፡ ያስተዋድይዋ፡ለነ 14
ፍስየ፡፡ወይልበሱ፡ ኀፍረተ፡ ወኀሳረ፡ እለ፡ ይፈ
ቅዱ፡ሊተ፡ሕማመ፡፡=፡ ወአንሰ፡ዘልፈ፡እሴፈ 15
ወከ፡እግዚእ፡፡ወእዌስክ፡ደበ፡ ኵሉ፡ ስብሐቲ
ከ፡፡=፡ አፉየ ፡ ይነግር ፡ ጽድቀከ፡፡ወኵሎ፡ 16
አሚረ ፡ አድኅኖተከ፡፡=፡ እስመ ፡ ኢየአም 17
ር፡ተግባረ፡፡=፡

INTERP. ÆTH. *PSAL. LXIX.* [a] Domine ad adjuvandum me feſtina. [b] te Domine: [c] continuó. [d] Deus mi, ne *PSAL. LXX.* [a] Aminadab, [b] me citó. [c] Deus meus & protector meus, [d] peccatorum: [e] mi, ſperavi in te à [f] ipſo matris meæ utero; [g] operuiſti me. [h] Et tu es recordatio mea jugiter: [i] globus factus [k] adjutor es meus, & fortitudo mea. [l] tuâ; [m] Domine mi. [n] quærebant animam [o] mi, ne [p] cruciatum mihi. [q] expectabo te Domine; & adjiciam

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

1 * المزمور التاسع والستون * لداوود ذكر ما خلصه الرب * وعدده * ي * استيخانات *
2 3 * اللهم انتبه الي معونتي * اعني يا رب عاجلا * وليخز وليعثر ملتمسوا نفسي * وليرتدوا على
4 اعقابهم خزي * الذين يريدون ان يصنعوا بي شرا * وليرجعوا لوقتهم مفتضحين * القائلون لي
5 نعما نعما * وليبتهج فرحا بك كل الراغبين اليك يا الله وليقولوا في كل حين * فليعظم الرب
6 7 الذين يحبون خلاصك * انا فقير ومسكين * اللهم اعني * انت معيني ومخلصي يا رب لا
تبطي * الليلويا * المزمور السبعون * لداوود لابناء يوناداب الاولين الذين سبوهم *
1 2 وعدده * ق * استيخن * عليك يا رب توكلت فلا اخزى ابدا * بعدلك نجني
3 وانقذني * اصغ الي بسمعك وخلصني * كن لي الاها نصيرا * وحصنا لخلاصي لانك قوتي
4 5 وملجاي * اللهم خلصني من يد الخاطي * ومن يد مخالف الناموس والظالم * فانت هو
6 صبري يا رب * الرب هو رجاي منذ صباي * عليك اعتمادي من الاحشاء * ومنذ كنت في
7 بطن امي انت هو ناصري * وتسبحتي لك في كل حين * صرت مثل عجب للكثيرين وانت
8 9 لي ناصر ومعين * فيمتلي فمي بركة * لكي ابارك مجدك * وعظم بهايك النهار كله * لا
10 تطرحني زمن الشيخوخة * ولا ترفضني عند نفاد قوتي * لان اعداي تكلموا في * والذين
11 يرصدون نفسي اشتوروا جميعا قايلين * قد رفضه الله فاطلبوه وادركوه فانه ليس من
12 13 يخلصه * فلا تبعد عني يا الهي * الاهي انتبه لمعونتي * ليخز وليبد الثالبون نفسي * وليلبس
14 15 العار والخزى الطالبون لي الشر * وانا رجوتك في كل حين * وازيد على كل تسابيحك * فمي
يخبر بعدلك وخلاصك النهار كله * لاني لم اعلم الكتاب *

PSAL. LXIX.

Davidis. Rememoratio quòd ſalvum fecerit eum Dominus. Et num. verſ. 10. 1

DEus, convertere ad auxilium meum: 2
adjuva me, O Domine citò. Et confundantur 3
atque impingant quærentes animam
meam. Et retrocedant ſuper calcaneos 4
ſuos affligentes me, qui volunt perpetrare
in me malum, & revertantur illico
ignominiâ ſuffuſi qui dicunt mihi, Euge,
euge. Et geſtiant lætitiâ in te omnes ſupplicantes 5
te, O Deus, et dicant omni tempore,
Magnificetur Dominus, qui diligunt
ſalutem tuam. Ego pauper ſum et egenus, 6
Deus adjuva me. Tu es auxiliator meus 7
& redemptor meus, O Domine, ne tardaveris.
Alleluja.

PSAL. LXX.

Davidis, filiis Jonadab primis quos duxerunt captivos. Et num. ver. 100.

IN te, O Domine, ſum confiſus, non confundar 1
unquam. Ex juſtitia tua ſalva 2
me, et redime me; admove ad me auditum
tuum, & ſalva me. Eſto mihi Deus adjutor, 3
& arx pro ſalute mea: quoniam tu es
robur meum et refugium meum. Deus, libera 4
me de manu peccatoris & de manu
prævaricantis legem & impii. Nam tu es 5
expectatio mea, O Domine: Dominus eſt
ſpes mea à pueritia mea. In te firmitas 6
mea à viſceribus: et ex quo eram in ventre
matris meæ, tu es adjutor meus: et laus
mea ad te eſt omni momento. Factus ſum 7
quaſi portentū compluribus, te mihi adjutore
et fautore. Repleatur os meum benedictione, 8
ut benedicam gloriā tuā, et magnificentiam
majeſtatis tuæ die totâ. Ne 9
projicias me tempore ſenectutis, & ne reſpuas
me deficientibus viribus meis. Nam 10
hoſtes mei locuti ſunt de me: & qui inſidiantur
animæ meæ, conſultaverunt ſimul,
dicentes; Jam rejecit illū Deus; quapropter 11
petite eum et aſſequimini illū, quia nemo
eſt qui liberet eum. Ne igitur elongeris à 12
me, O Deus meus: Deus mi, convertere ad
auxilium meum. Confundantur et pereant 13
accuſantes animā meam, et induantur opprobrio
et confuſione optantes mihi malū.
Et ego ſperavi i te omni momento, et addam 14
omni laudationi tuæ. Os meum narrabit 15
æquitatem tuam et ſalutem tuam die totâ.
Quia non novi Scripturam,

תהלים : עב

ſolius tuæ juſtitiæ recordabor : *Domini* domini fortitudines *in* Introibo
16 אבוא בגברות אדני יהוה אזכיר צדקתך לבדך׃
.tua mirabilia annunciabo hactenus & *: meis pueritiis* à me docuiſti Deus
17 אלהים למדתני מנעורי ועד־הנה אגיד נפלאותיך׃
donec , me derelinquas ne Deus : caniciem & , ſenium ad uſque etiam Et
18 וגם עד־זקנה ושיבה אלהים אל־תעזבני עד־
.tuam fortitudinem eſt venturus omni : generationi tuum brachium annunciem
אגיד זרועך לדור לכל־יבוא גבורתך׃
quis Deus : magna feciſti quæ , excelſum in uſque Deus tua juſtitia Et
19 וצדקתך אלהים עד־מרום אשר־עשית גדלות אלהים מי
: me *vivificabis reverteris* ,malas & , multas anguſtias mihi oſtendiſti Qui ? tu ſicut
20 כמוך׃ אשר הראיתנו צרות רבות ורעות תשוב תחיינו
Multiplicabis .me *facies* aſcendere *reverteris* terræ voraginibus ex &
21 ומתהמות הארץ תשוב תעלני׃ תרב
inſtrumento in tibi confitebor ego Etiam .me *conſolaberis circuibis* & : meā magnitudinē
22 גדלתי ותסב תנחמני׃ גם־אני אודך בכלי־
Prædicabunt .Iſrael ſancte :cithara in tibi cantabo mi Deus tuam veritatē ,Nebel
23 נבל אמתך אלהי אזמרה לך בכנור קדוש ישראל׃ תרננה
tota mea lingua Inſuper .redemiſti quam mea anima &:tibi cantavero cùm , mea labia
24 שפתי כי אזמרה־לך ונפשי אשר פדית׃ גם־לשוני כל־
quærentes erubuerunt quia,ſunt affecti pudore quia : tuam juſtitiam loquetur die
היום תהגה צדקתך כי־בשו כי־חפרו מבקשי
.meum malum
רעתי׃

PSAL. LXXII. עב

.regis filio tuam juſtitiam & : da regi tua judicia Deus .Selomoh Ipſi
1 לשלמה אלהים משפטיך למלך תן וצדקתך לבן־מלך׃
montes Deferent .judicio in tuos *afflictos* & :juſtitia in tuum populum Judicabit
2 3 ידין עמך בצדק ועניך במשפט׃ ישאו הרים
filios ſervabit ,populi *afflictos* Judicabit *.juſtitia in* colles & : populo pacem
4 שלום לעם וגבעות בצדקה׃ ישפט עניי־עם יושיע לבני
generatio , *lunæ facies ad* & : ſole cum te Timebunt *.oppreſſorem contundet &* : *egeni*
5 אביון וידכא עושק׃ ייראוך עם־שמש ולפני ירח דור
.terræ ſtillicidium imbres ſicut ,vellus ſuper pluvia ſicut Deſcendet .generationum
6 דורים׃ ירד כמטר על־גז כרביבים זרזיף ארץ׃
Dominabiturq; *.luna* non *ad uſque* , pacis multitudo & :juſtus ejus diebus in Florebit
7 8 יפרח־בימיו צדיק ורב שלום עד־בלי ירח׃ וירד
ſe incurvabunt ejus facies Ad.terræ terminos ad uſque flumine à & ,mare ad uſque mari à
9 מים עד־ים ומנהר עד־אפסי־ארץ׃ לפניו יכרעו
munus inſularum & , *Tharſis* Reges .lingent *pulverem* ejus inimici & ,*ſolitudinicolæ*
10 ציים ואיביו עפר ילחכו׃ מלכי תרשיש ואיים מנחה
omnes ei ſe incurvabunt Et .offerent *honorarium* Seba & ,*Scheba* reges :reddent
11 ישיבו מלכי שבא וסבא אשכר יקריבו׃ וישתחוו־לו כל־
.ei ſervient gentes omnes : reges
מלכים כל־גוים יעבדוהו׃

תרגום TARGUM

16 איעול בגבורתא דיי אלהים אדכר צדקותך
17 בלחודך׃ אלהי אליפתני בנסיא מן טליותי
18 ועד העדנא אשני פרישתך׃ ולחוד עד זקנתא
וסיבותא אלהא לא תשבוק יתי עד דאתני תקוף
אדרעך לדר דרי לכל די ייתי כח גבורתך׃
19 וצדקתך אלהא עד שמי מרומא די עבדתא
20 רברבן אלהא מן כותך׃ די אחמתני עקן
סגיען וביש תתוב תחיי יתנא ומתהומא
21 ארעיתא תתוב תסק יתנא׃ תסגי רביותי
22 ותחזור תנחמנני׃ לחוד אנא אודי קדמך
בזיני זמר ונבלא אתני קושטך אלהי אשבח
23 קדמך בכנרא קדישא ישראל׃ תבועין ספותי
24 ארום אשבח קדמך ונפשי די פרקתא׃ לחוד
לישני כל יומא תרנן צדקתך ארום בהיתו
ארום אתחסרו תבעי בישותי׃

עב

1 על ידוי דשלמה אתאמר בנבואה אלהא
הלכת דינך למלכא משיחא הב וצדקתך
2 לבריה דדוד מלכא׃ ידין עמך בצדקה ועניך
3 בהלכת דינא׃ יטלון יתבי טוריא שלמא
4 לבית ישראל וגלמתא בזכותא׃ ידין עניי
עמא יפרוק לבני חשיכא וישוף גברא טלומא׃
5 ידחלון מנך עם מפק שמשא ויצלון קדמך
6 קדם מנהר סיהרא דרי דריא׃ יחות היך
מטרא דרעוא על עסבא דגזיז מן גובאי היך
רסיסי מלקושא דנטפין על עסבא דארעא׃
7 יסגון ביומוהי צדיקיא וסגיעי שלמא עד די
8 ישתיצון פלחי סהרא׃ וישלוט מן סטר ימא
רבא לסטר ימא רבא ומן פרת עד סיפי
9 ארעא׃ קדמוי יגחנון איפרכיא ובעלי דבבוי
10 עפרא ילחכון׃ מלכיא דטרסים וניסי ימא
דאוקינוס תקרובתא יתיבון מלכיא דשבא
11 וסבא דורון יקרבון׃ ויסגדון ליה כל מלכיא
כל עממיא ישתעבדון ליה׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Ingrediar in fortitudinem Dñi: Deus recordabor juſtitiæ tuæ tantummodò. Deus *mihi* docuiſti me in portentis ab adoleſcentia mea ; ad hoc uſq; momentum annunciabo mirabilia tua. Sed etiam uſq; in ſenectutem, & canitiem Deus ne derelinquas me, donec annunciem fortitudinem brachii tui generationi *generationum*, cuilibet venturo virtutem fortitudinis tuæ. Et juſtitia tua Deus uſq; ad cœlos excelſos, quos feciſti maximos : Deus, quis eſt ſicut tu ? Qui oſtendiſti nobis afflictiones multas & malas ; redeas, vivifica nos ; & de abyſſo inferiori revertens, educas nos. Multiplicabis magnificentiam meam & reverſus conſolaberis me. Sed & ego confitebor coram te inſtrumentis muſices, & nablo annunciabo veritatem tuam Deus meus : laudabo coram te in cithara Sancte Iſraelis. Exultabunt labia mea cùm laudes dixero coram te, & anima mea quam redemiſti. Inſuper lingua mea tota die annunciabit juſtitiam tuam, quoniā confuſi ſunt, quoniam opprobrio affecti ſunt quærentes malum meum.

Per manum Salomonis dictus prophetice. 1

PSAL. LXXII.

Deus ſententiam judiciorum tuorum regi Chriſto dato, & juſtitiam tuam filio Davidis regis. Judicabit populum tuum in juſtitia, & pauperes tuos in ſententia judicii. Afferent habitatores montium pacem *ani-mui* Iſrael, & colles juſtitiam. Judicabit pauperes populi, redimet filios miſerorum, & conteret virū raptorem. Timebunt à te cum aſcenſu Solis, & orabunt corā *te ante lumen* Lunæ in generationes generationum. Deſcendet ſicut pluvia ſpontanea ſuper herbam corroſam à locuſtis; ſicut ſtillæ pluviæ ſerotinæ ſtillantes ſuper *herbam terræ*. Multiplicabuntur in diebus ejus juſti ; & abundantia pacis, donec deſtruantur ſervi Lunæ. Et dominabitur ab angulo maris magni uſque ad angulum *maris magni*, & ab Euphrate uſque ad fines terræ. Coram eo humiliabuntur proceres; & inimici ejus pulverem lingent. Reges Tharſis & inſulæ maris Oceani oblationem adducent : reges Seba, & Saba dona offerent. Et adorabunt eum omnes reges, omnes populi ſubditi erunt ei.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 * ܐܥܘܠ ܒܓܢܒܪܘܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܥܗܕ ܙܕܝܩܘܬܟ ܠܚܘܕܝ: * ܐܠܗܐ ܝܘܠܦܢܝ ܡܢ
17 ܛܠܝܘܬܝ ܘܥܕܡܐ ܠܗܫܐ. ܕܐܚܘܐ ܬܕܡܪܬܟ: * ܘܥܕܡܐ ܠܣܝܒܘܬܐ ܘܠܩܫܝܫܘܬܐ ܠܐ
18 ܬܫܒܩܢܝ. ܥܕܡܐ ܕܐܚܘܐ ܕܪܥܟ ܘܓܢܒܪܘܬܟ ܠܕܪܐ ܕܐܬܐ: * ܙܕܝܩܘܬܟ ܐܠܗܐ ܥܕܡܐ
19 ܠܡܪܘܡܐ. ܘܪܘܪܒܬܐ ܕܥܒܕܬ ܐܠܗܐ ܡܢܘ ܕܕܡܐ ܠܟ: * ܕܚܘܝܬܢܝ ܐܘܠܨܢܐ ܣܓܝܐܐ ܘܒܝܫܬܐ.
20 ܘܗܦܟܬ ܘܐܚܝܬܢܝ: ܘܡܢ ܬܗܘܡܐ ܕܐܪܥܐ ܗܦܟܬ ܐܣܩܬܢܝ. * ܐܣܓܝܬ ܪܒܘܬܝ
21 ܘܗܦܟܬ ܘܒܝܐܬܢܝ: * ܐܦ ܐܢܐ ܐܘܕܐ ܠܟ ܒܟܢܪܐ ܘܐܫܒܚ ܫܪܪܟ. ܐܠܗܐ ܐܙܡܪ ܠܟ
22 ܒܟܢܪܐ ܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܝܠ: * ܘܢܫܒܚܢ ܣܦܘܬܝ ܟܕ ܐܙܡܪ ܠܟ ܘܢܦܫܝ ܕܦܪܩܬ. * ܘܠܫܢܝ
23 ܟܠܗ ܝܘܡܐ ܢܗܓܐ ܒܙܕܝܩܘܬܟ: ܡܛܠ ܕܢܒܗܬܘܢ ܘܢܚܦܪܘܢ. ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܒܝܫܬܝ.
24

* ܫܘܠܡܐ ܕܥܒ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܡܠܟܗ ܠܫܠܝܡܘܢ. ܘܒܡܬܢܒܝܢܘܬܐ ܥܠ ܡܐܬܝܬܗ
ܕܡܫܝܚܐ. ܘܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ ܟܠܗܘܢ:

2 ܐܠܗܐ ܗܒ ܕܝܢܟ ܠܡܠܟܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܟ ܠܒܪܗ ܕܡܠܟܐ: * ܕܢܕܘܢ ܠܥܡܟ ܒܙܕܝܩܘܬܐ.
3 ܘܠܡܣܟܢܝܟ ܒܕܝܢܐ: * ܢܫܩܠܘܢ ܛܘܪܐ ܫܠܡܐ ܠܥܡܟ. ܘܪܡܬܐ ܙܕܝܩܘܬܟ:
4 * ܕܢܕܘܢ ܠܡܣܟܢܐ ܕܥܡܐ. ܘܢܦܪܘܩ ܠܒܢܝ ܒܝܫܐ: ܘܢܡܟܟ ܠܛܠܘܡܐ
5 * ܢܕܚܠܘܢܟ ܥܡ ܫܡܫܐ: ܘܩܕܡ ܣܗܪܐ ܠܕܪܕܪܝܢ. * ܢܚܘܬ ܐܝܟ ܡܛܪܐ ܥܠ
6
7 ܓܙܬܐ: ܘܐܝܟ ܢܛܦܐ ܕܢܛܦܝܢ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܢܦܪܥ ܒܝܘܡܘܗܝ ܙܕܝܩܘܬܐ: ܘܣܘܓܐܐ ܕܫܠܡܐ
8 ܥܕܡܐ ܕܢܫܠܡ ܣܗܪܐ. * ܢܐܚܘܕ ܡܢ ܝܡܐ ܠܝܡܐ: ܘܡܢ ܢܗܪܘܬܐ ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ
9 ܕܐܪܥܐ. * ܩܕܡܘܗܝ ܢܒܪܟܘܢ ܓܙܪܬܐ: ܘܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܥܦܪܐ ܢܠܚܟܘܢ. * ܡܠܟܐ
10 ܕܬܪܫܝܫ ܘܓܙܪܬܐ: ܩܘܪܒܢܐ ܢܝܬܘܢ ܠܗ. ܡܠܟܐ ܕܫܒܐ ܘܣܒܐ: ܩܘܪܒܢܐ ܢܩܪܒܘܢ
11 ܠܗ: * ܢܣܓܕܘܢ ܠܗ ܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ: ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܢܦܠܚܘܢܝܗܝ.

Ut penetrem fortitudinem Domini, & commemorem æquitatem tuam ego ſolus. Deus doctrina mea à pueritia & uſque modò, ut oſtendam prodigia tua. Uſque ad ſenectam & grandævam ætatem ne deſeras me : quoad patefaciam brachium tuum & fortitudinem tuam generationi venturæ : juſtitiam tuam Deus uſque ad excelſum, & ingentia quæ patrâſti : Deus quis tibi ſimilis ? Tu qui oſtendiſti mihi tribulationem multam atque miſeriam, & reverſus es ac vivificâſti me, tu idem etiam de abyſſis terræ reduces & extrahes me : Auxiſti magnificentiam meam, & converſus es atque conſolatus es me. Ego quoque confitebor tibi cum cithara & veritati tuæ canam : Deus pſallam tibi cum cithara, Sancte Iſraelis : Et laudabunt labia mea quum pſallam tibi, & anima mea quam redemiſti : Et lingua mea totâ die confitebitur æquitatem tuam, quoniam erubeſcent & confundentur qui volunt malum meum.

PSAL. LXXII.

Davidis. Quum regem conſtituiſſet Salomonem. Et prophetia de adventu Chriſti & vocatione gentium. Verſ. 45.

Deus, da judicium tuum regi, & juſtitiam tuam filio regis : Ut judicet populum tuum in juſtitia, & pauperes tuos in judicio. Ferent montes pacem populo tuo, & colles æquitatem tuam. Ut judicet pauperes populi, & ſalvet filios inopum, humiliabitque tyrannos. Adorabunt te cum ſole & ante lunam in generationē generationū. Deſcendet ſicut pluvia ſuper vellus, & ceu ſtillæ cadentes ſuper terram. Germinabit in diebus ejus juſtitia & multitudo pacis, donec deficiat luna. Poſſidebit à mari ad mare, & à flumine uſque ad extremitates terræ. Corā illo procident Inſulæ, & inimici ejus pulverem lingent. Reges Tharſis & Inſularum munera offerent ei : Reges Sceba & Saba oblationes offerent illi : Adorabunt eum omnes reges, & omnes gentes colent eum ;

Verſio VULG. LAT.

Introibo in potentias Dñi: Domine, memorabor juſtitiæ tuæ ſolius. Deus, docuiſti me à juventute mea: & uſque nunc pronuntiabo mirabilia tua: Et uſque in ſenectam & ſenium: Deus, ne derelinquas me, Donec annuntiē brachium tuum generationi omni, quæ ventura eſt. Potentiam tuam, Et juſtitiam tuam Deus, uſque in altiſſima, quæ feciſti magnalia: Deus, quis ſimilis tibi? Quantas oſtendiſti mihi tribulationes multas, & malas? & converſus vivificaſti me: & de abyſſis terræ iterùm reduxiſti me: Multiplicaſti magnificentiam tuam, & converſus conſolatus es me. Nam & ego confitebor tibi in vaſis Pſalmi veritatem tuam: Deus, pſallam tibi in cithara, Sanctus Iſrael. Exultabunt labia mea cùm cantavero tibi, & anima mea, quam redemiſti. Sed & lingua mea tota die meditabitur juſtitiam tuam: cùm confuſi & reveriti fuerint qui quærunt mala mihi.

Pſalmus, In Salomonem. LXXI.

Deus, judicium tuū regi da: & juſtitiam tuam filio regis: Judicare populū tuum in juſtitia, & pauperes tuos in judicio. Suſcipiant montes pacem populo, & colles juſtitiam. Judicabit pauperes populi, & ſalvos faciet filios pauperum: & humiliabit calumniatorem. Et permanebit cum Sole, & ante Lunam, in generatione & generationem. Deſcendet ſicut pluvia in vellus: & ſicut ſtillicidia ſtillantia ſuper terrā. Orietur in diebus ejus juſtitia, & abundantia pacis: donec auferatur luna. Et dominabitur à mari uſq; ad mare; & à flumine uſq; ad terminos orbis terrarū. Corā illo procident Æthiopes: & inimici ejꝰ terram lingent. Reges Tharſis et inſulæ munera offerēt: reges Arabū & Saba dona adducent: Et adorabunt eum omnes reges terræ: omnes gentes ſervient ei.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

16 Εἰσελεύσομαι ἐν δυναστείᾳ κυρίου, κύριε μνησθή-
17 σομαι τῆς δικαιοσύνης σου μόνου. Ἐδίδαξάς με ὁ
θεὸς ἐκ νεότητός μου, καὶ μέχρι νῦν ἀπαγγελῶ τὰ
18 θαυμάσιά σου, Καὶ ἕως γήρους καὶ πρεσβείου. ὁ
θεὸς μὴ ἐγκαταλίπῃς με, ἕως ἂν ἀπαγγεί-
λω τὸν βραχίονά σου πάσῃ τῇ γενεᾷ τῇ ἐρ-
19 χομένῃ. τὴν δυναστείαν σου, Καὶ τὴν δικαιοσύ-
νην σου ὁ θεὸς ἕως ὑψίστων, ἃ ἐποίησας μεγα-
20 λεῖα. ὁ θεὸς τίς ὅμοιός σοι; Ὅσας ἔδειξάς
μοι θλίψεις πολλὰς καὶ κακάς; καὶ ἐπιστρέψας ἐ-
ζωοποίησάς με, καὶ ἐκ τῶν ἀβύσσων τῆς γῆς πάλιν
21 ἀνήγαγές με. Ἐπλεόνασας τὴν δικαιοσύνην σου,
καὶ ἐπιστρέψας παρεκάλεσάς με, καὶ ἐκ τῶν ἀ-
22 βύσσων τῆς γῆς πάλιν ἀνήγαγές με. Καὶ γὰρ
ἐγὼ ἐξομολογήσομαί σοι ἐν σκεύει ψαλμοῦ
τὴν ἀλήθειάν σου ὁ θεός, ψαλῶ σοι ἐν κιθά-
23 ρᾳ ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραήλ. Ἀγαλλιάσονται τὰ
χείλη μου ὅταν ψάλω σοι, καὶ ἡ ψυχή μου ἣν ἐ-
24 λυτρώσω. Ἔτι δὲ καὶ ἡ γλῶσσά μου ὅλην τὴν ἡμέ-
ραν μελετήσει τὴν δικαιοσύνην σου, ὅταν αἰ-
σχυνθῶσι καὶ ἐντραπῶσιν οἱ ζητοῦντές τὰ κακά
μοι.

1 Εἰς Σαλωμών. οα΄.

2 Ὁ θεὸς τὸ κρίμα σου τῷ βασιλεῖ δός, καὶ
τὴν δικαιοσύνην σου τῷ υἱῷ τοῦ βασιλέως·
κρίνειν τὸν λαόν σου ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ τοὺς πτω-
3 χούς σου ἐν κρίσει. Ἀναλαβέτω τὰ ὄρη εἰρήνην
4 τῷ λαῷ σου, καὶ οἱ βουνοὶ ἐν δικαιοσύνῃ Κρινεῖ τοὺς
πτωχοὺς τοῦ λαοῦ, καὶ σώσει τοὺς υἱοὺς τῶν πενή-
5 των· καὶ ταπεινώσει συκοφάντην, Καὶ συμ-
παραμενεῖ τῷ ἡλίῳ, καὶ πρὸ τῆς σελήνης γενε-
6 ὰς γενεῶν. Καταβήσεται ὡς ὑετὸς ἐπὶ πό-
7 κον, καὶ ὡσεὶ σταγόνες στάζουσαι ἐπὶ τὴν γῆν. Ἀ-
νατελεῖ ἐν ταῖς ἡμέραις αὐτοῦ δικαιοσύνη, καὶ
πλῆθος εἰρήνης ἕως οὗ ἀνταναιρεθῇ ἡ σελήνη.
8 Καὶ κατακυριεύσει ἀπὸ θαλάσσης ἕως θα-
λάσσης, καὶ ἀπὸ ποταμοῦ ἕως περάτων τῆς
9 οἰκουμένης. Ἐνώπιον αὐτοῦ προπεσοῦνται Αἰ-
10 θίοπες, καὶ οἱ ἐχθροὶ αὐτοῦ χοῦν λείξουσι. Βα-
σιλεῖς Θαρσὶς καὶ αἱ νῆσοι δῶρα προσοίσουσι,
βασιλεῖς Ἀράβων καὶ Σαβὰ δῶρα προσάξουσι.
11 Καὶ προσκυνήσουσιν αὐτῷ πάντες οἱ βασι-
λεῖς, πάντα τὰ ἔθνη δουλεύσουσιν αὐτῷ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

16 Introibo in potentia Domini: Dñe, memorabor juſtitiæ tuæ ſolius. 18 (f) Docuiſti [r] me, Deus, ex juventute mea: & uſq; nunc annuntiabo mirabilia tua, 19 Et uſque [ſ] in ſenectā, & ſenium. Deus, ne derelinquas me; 20 donec annuntiem brachium tuū omni generationi, quæ ventura eſt. 21 Potentiam [t] tuam, Et juſtitiam tuam, Deꝰ, (g) uſq; in altiſſima, quæ feciſti magnalia: Deꝰ, quis ſimilis tibi? 22 [u] Quātas oſtendiſti mihi tribulationes multas, & (h) malas? & converſus vivificâſti me: & de abyſſis terræ iterum reduxiſti me. 23 Multiplicâſti (i) juſtitiam tuam: & converſus conſolatus es me: & (k) de abyſſis terræ iterum reduxiſti me. 24 Nam & ego confitebor tibi in (l) vaſe pſalmi veritatē tuā, Deus: pſallā tibi in cithara, ſanctus Iſrael. 25 Exultabunt labia mea, cùm pſallam tibi, & anima mea, quā redemiſti. 26 Adhuc autem & lingua mea tota die meditabitur juſtitiam tuam: cum confuſi fuerint, & erubuerint, qui quærunt mala mihi.

MS. Æth. Poc. Gloria Patri, & Filio, et Spiritui Sācto: eſt modò, ſemper erit, & in ſecula ſeculorum, Amen.

In Salomonem. LXXI.

1 Deus, judicium tuum regi da, & juſtitiam tuam filio regis. 2 [a] Judicare populum tuum in juſtitia, & pauperes tuos in judicio. 3 Suſcipiant montes pacem populo tuo, & colles. 4 (a In juſtitia judicabit pauperes populi, & ſalvos faciet filios b] pauperum: & humiliabit [c] calumniatorem: 5 Et (b) permanebit cum Sole, & ante Lunā (c) generationes generationū. 6 Deſcendet, ſicut pluvia in vellus: & ſicut ſtillicidia ſtillantia ſuper terram. 7 Orietur in diebus ejus juſtitia, & abundātia pacis; donec auferatur Luna. 8 Et dominabitur à mari uſque ad mare, & à (d) flumine uſque ad terminos orbis terrarum. 9 Coram illo procident Æthiopes: & inimici ejus [d] terram lingent. 10 Reges Tharſis, & inſulæ munera offerent: reges Arabum & Saba dona adducent. 11 Et adorabunt eum omnes (e) [e] reges: omnes gentes ſervient ei.

Verſio ÆTHIOPICA.

16 እበውእ፡ በኃይለ፡ እግዚአብሔር፡፡ እግዚኦ፡
እዜክር፡ ጽድቀከ፡ በሕቲቶ፡፡ ፨ ወመሀርከ 18
17 ኒ፡ እምሳኪየ፡ እምንእስየ፡፡ እስከ፡ ይእዜ፡
እነግር፡ ስብሐቲከ፡፡ ፨ እስከ፡ እልህቅ፡ ወእ 19
18 ረሥእ፡ ኢትኅድገኒ፡ እምሳኪየ፡፡ ፨ እስከ፡ 20
እነግር፡ መዝራዕተከ፡ ለትውልድ፡ ዘይመጽ
እ፡፡ ፨ ኃይለከኒ፡ ወጽድቀከኒ፡፡ እግዚ 21
19 ኦ፡ እስከ፡ አርያም፡ ገበርከ፡ ዐቢያተ፡፡
እግዚኦ፡ መኑ፡ ከማከ፡፡ ፨ እስመ፡ አር 22
አይከኒ፡ ሕማመ፡ ወመንደቤ፡ ብዙኀ፡፡ ወተመ
20 ይጥከኒ፡ ወአሕየውከኒ፡፡ ወእምቀላየ፡ ምድ
ር፡ ካዕበ፡ አውፃእከኒ፡፡ ፨ ወአብዛኅከ፡ ለ 23
ጽድቅከ፡፡ ወገባእከ፡ ታስተፈሥሐኒ፡፡ ወእም
21 ቀላየ፡ ምድር፡ ካዕበ፡ አውፃእከኒ፡፡ ፨ ወእ 24
ነሂ፡ እገኒ፡ ለከ፡ በንዋየ፡ መዝሙር፡ ለጽድቅ
ከ፡፡ እዜምር፡ ለከ፡ እምሳኪየ፡ በመሰንቆ፡ ቅዱ
22 ስ፡ እስራኤል፡፡ ፨ ይትፌሥሓኒ፡ ከናፍርየ፡ 25
ሶበ፡ እዜምር፡ ለከ፡፡ ወለነፍስየኒ፡ እንተ፡ አድ
23 ኃንካ፡፡ ፨ ወዓዲ፡ ልሳንየ፡ ያነብብ፡ ጽድቀ 26
ከ፡ ኵሎ፡ አሚረ፡፡ ሶበ፡ ተኃፍሩ፡ ወኃስሩ፡ እ
24 ለ፡ የኃሥሡ፡ ሊተ፡ እኩየ፡፡ ፨
ስብሐት፡ ለአብ፡ ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ ቅዱ
ስ፡፡ ይእዜኒ፡ ወዘልፈኒ፡ ወለዓለመ፡ ዓለም፡ አ
ሜን፡፡ ፨

1 በእንተ፡ ሰሎሞን፡፡

2 ርዕ እግዚኦ፡ ኵነኔከ፡ ሀበ፡ ለንጉሥ፡፡ ወጽ 1
ድቅከኒ፡ ለወልደ፡ ንጉሥ፡፡ ፨ ከመ፡ ይኰንኖ 2
ሙ፡ ለሕዝብከ፡ በጽድቅ፡፡ ወለነዳያኒከ፡ በፍ
3 ትሕ፡፡ ፨ ይትወከፉ፡ አድባር፡ ወአውግር፡ 3
4 ሰላመ፡ ሕዝብከ፡፡ ፨ ኰንኖ፡ በጽድቅ፡ ነዳያ 4
ነ፡ ሕዝብከ፡፡ ወአድኅኖሙ፡ ለደቂቀ፡ ምስኪና
ኒከ፡፡ ወአኅስሮ፡ ለዐቡይ፡፡ ፨ ወይፀንሕ፡ 5
5 ምስለ፡ ፀሐይ፡፡ እምቅድመ፡ ወርኅ፡ ለትውል
6 ደ፡ ትውልድ፡፡ ፨ ወይወርድ፡ ከመ፡ ጠል፡ ው 6
ስተ፡ ፀምር፡፡ ወከመ፡ ነጠብጣብ፡ ዘያንጠበ
ጥብ፡ ዲበ፡ ምድር፡፡ ፨ ወይሠርጽ፡ ጽድቅ፡ 7
7 በመዋዕሊሁ፡፡ ወብዙኀ፡ ሰላም፡ እስከ፡ የኃል
8 ፍ፡ ወርኅ፡፡ ፨ ወይኴንን፡ እምባሕር፡ እስ 8
ከ፡ ባሕር፡፡ ወእም፡ አፍላግ፡ እስከ፡ አጽናፈ፡
9 ዓለም፡፡ ፨ ይገንዩ፡ ቅድሜሁ፡ ኢትዮጵያ፡፡ 9
ወጸላእቱሂ፡ ሐመደ፡ ይቀምሑ፡፡ ፨ ነገሥተ፡ 10
10 ተርሴስ፡ ወደሰያት፡ አምኃ፡ ያበውኡ፡፡ ነገሥ
ተ፡ ሳባ፡ ወዐረብ፡ ገጸ፡ ያመጽኡ፡፡ ፨ ወ 11
11 ይሰግዱ፡ ሎቱ፡ ኵሎሙ፡ ነገሥተ፡ ምድር፡፡
ወይትቀነዩ፡ ሎቱ፡ ኵሎሙ፡ አሕዛብ፡፡ ፨

INTERP. ÆTHIOP. [r] me, Deus meus, ex [ſ] dum ſenuero & canuero Deus meus, ne [t] etiam tuam, [u] Quoniam oſtendiſti mihi tribulationem & tentationem multam: & converſus [a] Ut judicet [b] pauperum tuorum: [c] ſuperbum: [d] cinerem manducabunt. [e] reges terræ: & omnes

PSAL. LXXI.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 17 فادخل في قوة الرب. يا رب انا اذكر عدلك وحدك * الذي علمتني منذ صباي يا الاهي.
18 والي الان اخبر بعجايبك * والي الشيخوخة والهرم. اللهم لا تطرحني الي ان اخبر بذراعك
19 كل الجيل الاتي * قوتك وعدلك يا الله الي العلي والعظايم التي صنعتها معي. يا الله فمن
20 اشبه بك * لانك اريتني شدايد كثيرة وشرورا ثم عدت فاحييتني. وايضا من اعماق الارض
21 22 اصعدتني * اكثرت علي برك ثم عدت فعزيتني. وايضا اصعدتني من العمق * واني لاشكرك
23 يا ربي في الشعوب. بآلة مزمور حقك. يا الله ارتل لك بقيثارة. يا قدوس اسراييل * تبتهج
24 شفتاي اذا ارتل لك. ونفسي التي خلصتها * ولساني ايضا يدرس عدلك. وطول النهار كله
اذا ما خزي وافتضح الذين يطلبون لي الشر. اللليلويا *

1 * المزمور الحادي والسبعون * لسليمان بن داوود * وعدده . مب . اسطيخن *

2 اللهم اعط الملك حكمك. وابن الملك عدلك * ليقضي لشعبك بالعدل. ولمساكينك
3 4 بالحق * فلتاخذ الجبال سلامة للشعب. والاكام عدلا * ويحكم لمساكين الشعب بعدل
5 ويخلص بني المساكين. ويذل الباغي * ويدوم مع الشمس. وهو قبل القمر. لاجيال
6 7 الاجيال * ينزل مثل المطر علي الصوف. وكالقطر علي الارض * يكثر العدل في ايامه
8 وكثرة السلامة حتي يبيد القمر * ويملك من البحر الي البحر. ومن النهر الي اقاصي المسكونة
9 10 * تسبق الحبش فيخرون قدامه. وجميع اعداءه يلحسون التراب * ويقبل اليه ملوك
11 ترسيس والجزاير بالهدايا. وملوك العرب ارابيا وسابا يقدمون اليه القرابين * ويسجد له جميع
ملوك الارض. وجميع الامم تتعبد له.

16 Introibo in potentiam Domini: O Domine, ego recordabor juſtitiæ tui ſolius, 17 Qui docuiſti me à pueritia mea, O Deus meus; & hucuſque narro miracula tua, 18 Et uſque ad ſenectutem & decrepitam ætatem. Deus, ne me projicias quoad enarrem brachium tuum omni poſteritati venturæ. 19 Juſtitiam tuam & potentiam tuam, O Deus, uſque in excelſum: & magnalia quæ feciſti erga me. O Deus, ecquis eſt ſimilis tibi? 20 Tu enim oſtendiſti mihi anguſtias multas & ærumnas: deinde reverſus es & vivificâſti me, atque iterum ex imis terræ elevâſti me. 21 Multiplicâſti ſuper me juſtitiam tuam, deinde reverſus es et conſolatus es me: imò etiam extraxiſti me de profundo. 22 Et ego quidem gratias agam tibi, O Domine mi, inter populos: cum inſtrumento pſalmi, veritati tuæ. O Deus, pſallam tibi cithara, O Sancte Iſraelis. 23 Exultabunt labia mea quum celebravero te, & anima mea quam liberâſti. 24 Et lingua mea quoque repetet juſtitiam tuam & magnificentiam tuam die totâ, quum rubore & ignominiâ ſuffuſi fuerint qui petunt mihi malum. Alleluja.

PSAL. LXXI.

1 Salomoni filio Davidis. Et num. verſ. 41.

Deus, da Regi judicium tuum, & filio regis æquitatem tuam: 2 ut judicium decernat populo tuo cum æquitate, & pauperibus tuis cum veritate. 3 Aſſumant montes pacem populo, & colles juſtitiam. 4 Et judicium dicet pauperibus populi cum æquitate, & ſalvabit filios pauperum, deprimetque ſceleſtum. 5 Et perdurabit cum Sole, quum ſit ipſe ante lunam, in generationem generationum. 6 Deſcendet ſicut pluvia ſuper vellus, & ſicut ſtillæ ſuper terram. 7 Multiplicabitur juſtitia in diebus ejus, et abundantia pacis, donec pereat luna. 8 Et regnabit à mari ad mare, & à flumine uſque ad terminos habitatæ. 9 Prævenient Æthiopes & procident ante eum, & omnes inimici ejus lingent terram. 10 Et venient ad eum reges Tarſis & Inſularū cum muneribus; & reges Arabum, Arabia, & Saba offerent ei munera. 11 Et adorabunt eum omnes Reges terræ, & cunctæ gentes ſe ſubdent ei.

תהלים : עג

Parcet .ei auxiliator non & , afflictum & : clamantem egenum eruet Quia
12 כי־יציל אביון משוע ועני ואין־עזר לו : יחס
excursione ab & , dolo A .servabit egenorum animas & : egeno & , tenui super
13 14 על־דל ואביון ונפשות אביונים יושיע : מתוך ומחמס
, vivet Et .ejus oculis in eorum sanguis erit pretiosus & : eorum animam redimet
15 יגאל נפשם וייקר דמם בעיניו : ויחי
die tota : semper eo pro orabit & , *Scheba* auro de ei dabit &
ויתן־לו מזהב שבא ויתפלל בעדו תמיד כל־היום
perstrepet , montium capite in terra in , frumenti *particula* Erit .ei benedicet
16 יברכנהו : יהי פסת־בר בארץ בראש הרים ירעש
Erit .terræ herba sicut civitate *à* florebunt & : ejus fructus Lebanon sicut
17 כלבנון פריו ויציצו מעיר כעשב הארץ : יהי
eo in benedicentur & , ejus nomen *filiabitur* *Solis* *facies ad* : seculum in ejus nomen
שמו לעולם לפני־שמש ינין שמו ויתברכו בו
Deus Deus Dominus Benedictus .eum beatificabunt , gentes omnes
18 כל־גוים יאשרוהו : ברוך יהוה אלהים אלהי
ejus gloriæ nomen benedictum Et .*ipse* solus mirabilia *faciens* : Israel
19 ישראל עשה נפלאות לבדו : וברוך שם כבודו
.amen & , Amen , terra omnis ejus gloria replebitur & , seculum in
לעולם וימלא כבודו את־כל הארץ אמן ואמן :
.Isai filii David orationes sunt Consummatæ
20 כלו תפלות דוד בן־ישי :

ספר שלישי

PSAL. LXXIII. עג

ego Et .corde mundis Deus Israeli bonus Profectò .Asaph ipsi Cantus
1 2 מזמור לאסף אך טוב לישראל אלהים לברי לבב : ואני
zelavi Quia .mei gressus sunt effusi *nihil quasi* : mei pedes declinaverunt *parum quasi*
3 כמעט נטוי רגלי כאין שפכה אשרי : כי קנאתי
,eorum morte in ligamenta non Quia .*videbo* impiorum pacem : insanos in
4 בהוללים שלום רשעים אראה : כי אין חרצבות למותם
hominibus cum & : *ipsi* non hominis labore In .eorum fortitudo sana &
5 ובריא אולם : בעמל אנוש אינמו ועם־אדם
iniquitas ornamento involvet : superbia eos *ligavit torque* Ideo .flagellabuntur non
6 לא ינגעו : לכן ענקתמו גאוה יעטף־שית חמס
.cordis *imaginationes* transierunt : eorum *oculus* adipe præ *Exiit* .*eos*
7 למו : יצא מחלב עינמו עברו משכיות לבב :
Potuerunt .*loquentur* excelso de : calumniam *malo in loquentur & ,dissolutos se Reddent*
8 ימיקו וידברו ברע עשק ממרום ידברו : שתו
ejus populus revertetur Ideo .terra in *ambulabit* eorum lingua & : suum os cœlos in
9 10 בשמים פיהם ולשונם תהלך בארץ : לכן ישיב עמו
est & : Deus scivit quomodo ,dixerunt Et .eis exprimentur pleni aquæ & : huc
11 הלם ומי מלא ימצו למו : ואמרו איכה ידע־אל ויש
.*facultatē* apprehenderūt seculi *tranquilli* & ; impii isti Ecce ? excelso in scientia
12 דעה בעליון : הנה־אלה רשעים ושלוי עולם השגו־חיל :

תרגום TARGUM.

12 ארום יפצי חשיכא דבעי מטו ועניא ולית סעיד
13 ליה : יחוס על מסכנא וחשוכא ונפשת חשיכיא
14 יפרוק : מאונסא ומחטופין יפרוק נפשהון ויהי
15 יקיר אדמהון קדומי : ויחי ויתן ליה מדהב
דאיתיאו ליה משבא ויצלי מטולתיה תדירא כל
16 יומא יברכניה : יהי סעיד לחמא בארעא בריש
טוריא ירגיש היך כלבנן אביה וינצצון מן קרתא
17 דירושלם היך עסבא דארעא : יהי שמיה
מדכר לעלם וקדם מהוי שמשא מזמן הוה
שמיה ויתברכון בזכותיה כל עמיא וימרון טב
18 ליה : בריך יי אלהים אלהא דישראל דעביד
19 פרישן רברבן בלחודוהי : ובריך שום יקריה
לעלמא ויתמלי מזיו יקריה כל ארעא אמן ואמן :
20 גמירין צלותיא דדוד בר ישי :

עג

1 תושבחתא על ידוי דאסף ברם טב לישראל
2 אלהא לברירי לבא : ואנא כזעיר אתמוטטא
3 רגלי כלמא דאודעזעא אסתורי : ארום טננית
4 במתלעביא בעדן די שלם רשיעיא אחמי : ארום
ליתיהון תוהין ומצטערין מטול יום מיתתהון
אתבעין מחשבתהון ופטים ואלים לבהון :
5 בלעות גברין דמתעסקין באוריתא ליתיהון
לעין ועם בני נשא צדיקי דסבלין יסורי לא
6 מתכתשין : לכדכן עטרתנון גיותנותא כלילא
7 דמשוין ברישיהון היא מן חטוף דילהון : שנא
מן שומנא פרצופהון עברו חוטביהון חפורת
8 לבא : יתמקמקון מן פטמא וימללון לאבאשא
9 ולטלומא מן רום לבהון ימללון : שויאו בקדישי
שמיא פומהון ולישנהון מצלהבא בקדישי
10 ארעא : בכן תבו על עמיא דיי לאלקיותהון
וימחונון במרזופין ודמעין סגיעין מחתין להון :
11 וימרון הכדין ידע אלהא ואית מנדעא בעלאה :
12 הא אלין רשיעיא דיתבין בשלותא בעלמא
הדין ארביקו נכסין קנו חילא :

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Quoniam liberabit miserum qui quærit inclinationem; & pauperem cui non est adjutor. Miserabitur misero & inopi: & animas inopum redimet. Ab oppressione & injuriis liberabit *animã* eorum, & erit car⁹ sanguis eorũ coram eo. Et vivet & dabit ei de auro ꝙ attulerunt *ei* de Seba, & orabit pro eo continuè, omni die benedicet ei. Erit substantific⁹ panis in terra in capite montium; strepitum edet sicut Liban' fructus ejus; & germinabunt de civitate Jerusalem sicut herba terræ. Erit nomen ejus semper memorabile, & antequam esset Sol, præparatum erat nomen ejus: & benedicentur in merito ejus omnes populi, *&* dicent bonum illi. Benedictus Dñs Deus Deus Israel, qui facit miracula magna solus. Et benedictum nomen gloriæ ejus in æternum: ac repleatur splendore gloriæ ejus omnis terra, Amen & amen.

Completæ sunt orationes Davidis filii Issai.

Canticum per manus Asaph.

PSAL. LXXIII.

PRofectò bonus Israeli Deus, iis qui mundi sunt corde. Mei autem penè moti sunt pedes, penè vacillaverunt gressus mei. Quoniam æmulatus sum derisores; in tempore *pacis* improbos videbo. Quoniam non terrentur nec conturbantur propter diem mortis ipsorum; *accelerantur* cogitatus eorum: & pingue, & forte est cor eorum. Labori virorum Legi operam navantium non compatiuntur; & cum hominibus justis, qui patiuntur martyria, non vulnerantur. Ideò circundedit eos superbia: corona quam imponunt capiti suo de *rapina* illorum est. *Mutatus est* ob pinguedinem *vultus* eorum: *transierunt decisiones* eorum *fossam* cordis. Liquefient præ *pinguedine*, & loquentur ut noceant, & ad violentiam de celsitudine cordis sui loquentur. Posuerunt in sanctos cœlorum os suum, & lingua eorum ardet in *sanctos* terræ. Propterea *convertuntur adversùs populos* Dñi, ut *cædant eos*, & *percutiant* eos malleis, & lachrymæ multæ defluent illis. Et dicent, Hæccine cognovit Deus, & est scientia in Altissimo? Ecce ipsi impii permanentes in tranquillitate in mundo *hoc*, adepti sunt divitias, acquisierunt substantiam.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

12 * ܡܛܠ ܕܦܪܩܗ ܠܡܣܟܢܐ ܡܢ ܡܢ ܕܥܫܝܢ ܡܢܗ : ܘܠܡܣܟܢܐ ܕܠܝܬ ܠܗ ܡܥܕܪܢܐ.
13 14 * ܢܚܘܣ ܥܠ ܡܣܟܢܐ ܘܥܠ ܒܨܝܪܐ : ܘܢܦܫܬܐ ܕܡܣܟܢܐ ܢܦܪܘܩ. * ܡܢ ܢܟܠܐ ܘܡܢ ܥܘܠܐ ܢܦܪܘܩ
15 ܢܦܫܬܗܘܢ : ܝܩܝܪ ܗܘ ܕܡܗܘܢ ܒܥܝܢܘܗܝ. * ܢܚܐ ܘܢܬܠ ܠܗ ܡܢ ܕܗܒܐ ܕܫܒܐ : ܘܢܨܠܐ
16 ܚܠܦܘܗܝ ܒܟܠܙܒܢ. ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܢܒܪܟܝܘܗܝ : * ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܥܒܘܪܐ ܒܐܪܥܐ.
ܘܒܪܝܫܐ ܕܛܘܪܐ ܢܥܒܕ ܦܐܪܘܗܝ ܐܝܟ ܕܠܒܢܢ : ܘܢܘܥܐ ܡܢ ܡܕܝܢܬܗ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܕܐܪܥܐ.
17 * ܘܢܗܘܐ ܫܡܗ ܠܥܠܡ : ܘܩܕܡ ܫܡܫܐ ܐܝܬܘܗܝ ܫܡܗ. ܢܬܒܪܟܘܢ ܒܗ ܟܠܗܘܢ
18 ܥܡܡܐ : ܘܟܠܗܘܢ ܢܫܒܚܘܢܝܗܝ. * ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ : ܕܥܒܕ ܬܕܡܪܬܐ
19 ܪܘܪܒܬܐ ܠܒܠܚܘܕܘܗܝ. * ܘܒܪܝܟ ܗܘ ܫܡܐ ܕܫܘܒܚܗ ܠܥܠܡ : ܘܢܬܡܠܐ ܫܘܒܚܗ ܟܠܗ
ܐܪܥܐ. ܐܡܝܢ ܐܡܝܢ.

* ܫܠܡ ܣܦܪܐ ܕܬܪܝܢ *

* ܣܦܪܐ ܕܬܠܬܐ * ܡܙܡܘܪܐ ܕܥܓ *

1 * ܐܬܟܬܒ ܠܐܣܦ ܡܥܗܕܢܐ ܥܠ ܡܘܬܗ ܕܐܒܫܠܘܡ. ܘܬܘܒ ܡܘܕܝܢܘܬܐ ܕܡܣܟܢܘܬܐ
ܐܢܫܝܬܐ. ܘܥܠ ܫܝܢܐ ܕܪܫܝܥܐ ܘܥܠ ܢܓܝܪܘܬ ܪܘܚܗ ܕܐܠܗܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܐ.
2 ܐܠܗܐ ܛܒ ܠܐܝܣܪܝܠ ܘܠܬܪܝܨܝ ܠܒܐ. * ܘܐܢܐ ܩܠܝܠ ܕܠܐ ܐܬܡܛܝܢ ܗܘܝ ܪܓܠܝ : ܘܩܠܝܠ ܠܐ
3 ܐܫܬܦܟܘ ܗܘܘ ܗܠܟܝ. * ܡܛܠ ܕܛܢܬ ܒܥܘܠܐ : ܟܕ ܚܙܝܬ ܫܝܢܐ ܕ
4 5 ܪܫܝܥܐ. * ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܣܟܐ ܠܡܘܬܗܘܢ : ܘܣܓܝܐܐ ܗܝ ܫܛܝܘܬܗܘܢ. * ܒܥܡܠܐ ܕܒܢܝܢܫܐ
6 ܠܝܬ ܐܢܘܢ : ܘܥܡ ܒܢܝܢܫܐ ܠܐ ܡܬܢܓܕܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܚܕܬ ܐܢܘܢ ܫܘܒܗܪܬܐ :
7 ܘܐܬܥܛܦܘ ܥܘܠܗܘܢ ܘܪܫܝܥܘܬܗܘܢ. * ܘܢܦܩ ܐܝܟ ܬܪܒܐ ܥܘܠܗܘܢ : ܘܥܒܕܘ ܐܝܟ ܬܪܥܝܬܐ
8 9 ܕܠܒܐ. * ܐܬܚܫܒܘ ܘܡܠܠܘ ܒܝܫܬܐ : ܘܥܠܘܒܝܐ ܠܘܬ ܡܪܝܡܐ ܡܠܠܘ. * ܣܡܘ ܦܘܡܗܘܢ
10 ܒܫܡܝܐ : ܘܠܫܢܗܘܢ ܡܗܠܟ ܒܐܪܥܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܬܦܢܐ ܥܡܝ ܠܗܪܟܐ :
11 ܘܡܠܝܐܝܬ ܢܫܟܚܘܢ ܠܗܘܢ. * ܘܐܡܪܝܢ ܐܝܟܢܐ ܝܕܥ ܐܠܗܐ : ܘܐܝܬ ܝܕܥܬܐ ܒܥܠܝܐ.
12 * ܕܗܐ ܗܠܝܢ ܪܫܝܥܐ ܫܠܝܢ ܒܥܠܡܐ : ܘܥܫܝܢܝܢ ܒܚܝܠܐ.

Quia liberavit inopem ab eo qui fortior est ipso, & pauperem cui non est adjutor. Miserebitur pauperum & egenorum, & animas pauperum salvabit. A fraude & ab iniquitate salvabit animas eorum: pretiosus enim est sanguis eorum in oculis ejus. Vivit & dabitur ei de auro Sceba: & orabimus pro eo omni tempore, & totâ die benedicemus illi. Erit velut copia frumenti in terra, & in cacumine montium germinare faciet fructus suos, ut Libani: & pullulare faciet è civitate sua sicut herbam terræ. Eritque nomen ejus in sempiternum, & ante solem est nomen ejus. Benedicentur in ipso omnes gentes, & omnes laudabunt eum. Benedictus Dominus Deus Israel qui edit miracula grandia solus, Et benedictum nomen majestatis ejus in seculum: & impleatur majestate ejus tota terra. Amen, amen.

Finis Liberi secundi.

LIBER TERTIUS.

PSAL. LXXIII.

Compositus ab Asaph memoratore, de morte Absalomi. Præterea confessio infirmitatis humanæ. Et de prosperitate impiorum; de que longanimitate Dei. Vers. 21.

DEus bonus est Israeli, & sinceris corde. Mei autem paulò minùs inclinati sunt pedes, & ferè nil abfuit quin effunderentur gressus mei: Quia æmulatus sum iniquos cùm viderem pacem impiorum. Non enim est terminus morti eorum, quum plurima sit stultitia illorum. In labore hominum non sunt, & cum filiis hominum haud flagellantur; Ideò cepit eos audacia, & induti sunt iniquitate suâ, & impietate suâ. Et prodiit velut pinguedo scelus eorum, operatique sunt pro cogitatione cordis. Meditati sunt & locuti sunt malum, & oppressionem adversus Altissimum locuti sunt: Posuerunt os suum in cœlum, & lingua eorum perambulat terram. Propterea vertat se populus meus huc, & abundanter invenient sibi, Dicentque: Quomodo scit Deus, & est scientia in Excelso? Nam ecce isti quum sint impii, abundantes sunt in mundo & potentes robore.

Verſio VULG. LAT.

12 Quia liberabit pauperem à potente; &
13 pauperem, cui non erat adjutor. Parcet
pauperi & inopi: & animas pauperum
14 ſalvas faciet. Ex uſuris & iniquitate
redimet animas eorum: & honorabile
nomen eorum coram illo.
15 Et vivet, & dabitur ei de auro Arabiæ,
& adorabunt de ipſo ſemper: tota
16 die benedicent ei. Et erit firmamentum
in terra in ſummis montium, ſuperextolletur
ſuper Libanum fructus
ejus: & florebunt de civitate ſicut fœnum
17 terræ. Sit nomen ejus benedictum
in ſecula: ante Solem permanet nomē
ejus. Et benedicentur in ipſo omnes
tribus terræ: omnes gentes magnificabunt
18 eum. Benedictus Dominus Deus
19 Iſrael, qui facit mirabilia ſolus: Et benedictum
nomen majeſtatis ejus in æternum:
& replebitur majeſtate ejus
omnis terra: fiat, fiat.
20 Defecerunt laudes David
filii Jeſſe.
Pſalmus Aſaph. LXXII.
1 Quàm bonus Iſrael Deus his, qui
2 recto ſunt corde? Mei autem pene
moti ſunt pedes: penè effuſi ſunt
3 greſſus mei. Quia zelavi ſuper iniquos,
4 pacem peccatorum videns. Quia non
eſt reſpectus morti eorum; & firmamentum
5 in plaga eorum. In labore
hominum non ſunt, & cum hominib⁹
6 non flagellabuntur: Ideò tenuit eos
ſuperbia, operti ſunt iniquitate & impietate
7 ſuâ. Prodiit quaſi ex adipe iniquitas
eorum: tranſierunt in affectum
8 cordis. Cogitaverunt, & locuti ſunt
nequitiam: iniquitatem in excelſo locuti
9 ſunt. Poſuerunt in cœlum os ſuum:
& lingua eorum tranſivit in terra.
10 Ideò convertetur populus meus
hic: & dies pleni invenientur in eis.
11 Et dixerunt; Quomodò ſcit Deus, &
12 ſi eſt ſcientia in Excelſo? Ecce ipſi peccatores,
& abundantes in ſeculo, obtinuerunt
divitias.

Verſ GRÆC. LXX. Interp.

12 Ὅτι ἐῤῥύσατο πτωχὸν ἐκ δυνάστου, καὶ πένητα ᾧ
13 οὐχ ὑπῆρχε βοηθός. Φείσεται πτωχοῦ καὶ πένητος,
14 καὶ ψυχὰς πενήτων σώσει. Ἐκ τόκου καὶ ἐξ ἀδικίας
λυτρώσεται τὰς ψυχὰς αὐτῶν, καὶ ἔντιμον
15 τὸ ὄνομα αὐτῶν ἐνώπιον αὐτοῦ. Καὶ ζήσεται,
καὶ δοθήσεται αὐτῷ ἐκ τοῦ χρυσίου τῆς
Ἀραβίας, καὶ προσεύξονται περὶ αὐτοῦ διαπαντός·
ὅλην τὴν ἡμέραν εὐλογήσουσιν αὐτόν.
16 Ἔσται στήριγμα ἐν τῇ γῇ ἐπ᾽ ἄκρων τῶν ὀρέων·
ὑπεραρθήσεται ὑπὲρ τὸν Λίβανον ὁ καρπὸς αὐτοῦ,
καὶ ἐξανθήσουσιν ἐκ πόλεως ὡσεὶ χόρτος
17 τῆς γῆς. Ἔστω τὸ ὄνομα αὐτοῦ εὐλογημένον εἰς
τοὺς αἰῶνας, πρὸ τοῦ ἡλίου διαμενεῖ τὸ ὄνομα
αὐτοῦ, καὶ εὐλογηθήσονται ἐν αὐτῷ πᾶσαι αἱ
φυλαὶ τῆς γῆς· πάντα τὰ ἔθνη μακαριοῦσιν αὐτόν.
18 Εὐλογητὸς κύριος ὁ θεὸς τοῦ Ἰσραήλ, ὁ
19 ποιῶν θαυμάσια μόνος, Καὶ εὐλογητὸν τὸ ὄνομα
τῆς δόξης αὐτοῦ εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς αἰῶνα τοῦ
αἰῶνος· καὶ πληρωθήσεται τῆς δόξης αὐτοῦ πᾶσα ἡ
γῆ. γένοιτο, γένοιτο.
20 Ἐξέλιπον οἱ ὕμνοι Δαυὶδ τοῦ υἱοῦ Ἰεσσαί.
1 Ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. οβʹ.
Ὡς ἀγαθὸς ὁ θεὸς τῷ Ἰσραὴλ, τοῖς εὐθέσι
2 καρδίᾳ. Ἐμοῦ δὲ παρὰ μικρὸν ἐσαλεύθησαν
οἱ πόδες, παρ᾽ ὀλίγον ἐξεχύθη τὰ
3 διαβήματά μου. Ὅτι ἐζήλωσα ἐπὶ τοῖς ἀνόμοις,
4 εἰρήνην ἁμαρτωλῶν θεωρῶν. Ὅτι οὐκ ἔστιν
ἀνάνευσις ἐν τῷ θανάτῳ αὐτῶν, καὶ στερέωμα
5 ἐν τῇ μάστιγι αὐτῶν. Ἐν κόποις ἀνθρώπων οὐκ
6 εἰσὶ, καὶ μετὰ ἀνθρώπων οὐ μαστιγωθήσονται. Διὰ
τοῦτο ἐκράτησεν αὐτοὺς ἡ ὑπερηφανία, περιεβάλοντο
7 ἀδικίαν καὶ ἀσέβειαν αὐτῶν. Ἐξελεύσεται
ὡς ἐκ στέατος ἡ ἀδικία αὐτῶν· διῆλθον εἰς
8 διάθεσιν καρδίας. Διενοήθησαν, καὶ ἐλάλησαν
ἐν πονηρίᾳ, ἀδικίαν εἰς τὸ ὕψος ἐλάλησαν.
9 Ἔθεντο εἰς οὐρανὸν τὸ στόμα αὐτῶν, καὶ ἡ γλῶσσα
10 αὐτῶν διῆλθεν ἐπὶ τῆς γῆς. Διὰ τοῦτο ἐπιστρέψει
ὁ λαός μου ἐνταῦθα, καὶ ἡμέραι πλήρεις εὑρεθήσονται
11 ἐν αὐτοῖς. Καὶ εἶπαν, Πῶς ἔγνω
12 ὁ θεὸς, καὶ εἰ ἔστι γνῶσις ἐν τῷ ὑψίστῳ; Ἰδοὺ οὗτοι
οἱ ἁμαρτωλοὶ καὶ εὐθηνοῦντες εἰς τὸν αἰῶνα,
κατέσχον πλούτου.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

12 Quia liberavit egenum [f] à potente; & pauperem, cui non erat adjutor. 12
13 Parcet inopi, & pauperi: & animas pauperum ſalvas faciet. 13
14 Ex uſura & iniquitate redimet animas eorum: & (f) honorabile nomen eorum coram [g] illo. 14
15 Et vivet, & dabitur ei de auro (g) Arabiæ: & (h) orabunt de ipſo ſemper: totâ die benedicent ei. 15
16 Erit firmamentum in [h] terra in ſummis montium: [i] ſuper extolletur ſuper Libanum fructus ejus: & florebunt de civitate ſicut fœnum terræ. 16
17 (i) Sit nomen ej⁹ benedictum in ſecula: ante Solem (k) permanebit nomen ejus, 17
18 & benedicentur in ipſo omnes tribus terræ: omnes gentes [k] magnificabunt eum. 18
19 Benedictus Dominus (l) Deus Iſrael, qui facit mirabilia ſolus. 19
20 Et benedictum nomen gloriæ ejus in æternum, & in ſeculum ſeculi: & replebitur gloriâ ejus omnis terra: Fiat, Fiat.

Defecerunt (a) hymni David filii Jeſſe, Pſalm⁹ ipſi Aſaph. LXXII. 20

1 Quàm (b) bonus (c) Deus Iſrael rectis corde. 1
2 Mei autem penè commoti ſunt pedes: (d) paulominùs effuſi ſunt greſſus mei. 2
3 Quia zelavi ſuper iniquos, pacem peccatorum intuens. 3
4 Quia [a] non eſt (e) declinatio in morte eorum, [b] & firmamentum in flagello (f) eorum. 4
5 In (g) laboribus hominum non ſunt: & cum hominibus non flagellabuntur. 5
6 Ideò (h) obtinuit eos ſuperbia: circumamicti ſunt iniquitate, & impietate ſuâ. 6
7 (i) Prodibit quaſi ex adipe iniquitas eorū: tranſierunt [c] in (k) diſpoſitionem cordis. 7
8 Cogitaverunt, & loquuti ſunt (l) [d] in malignitate: iniquitatem in altum loquuti ſunt. 8
9 Poſuerunt in cœlum os ſuum: & lingua eorum tranſivit ſuper terram. 9
10 Ideò (m) revertetur populus meus huc: (n) & dies pleni invenientur in eis. 10
11 Et (o) dixerunt, Quomodò ſcivit De⁹? & ſi eſt ſcientia in Altiſſimo? 11
12 Ecce [e] ipſi peccatores, & abundantes in ſeculo, obtinuerunt divitias. 12

Verſio ÆTHIOPICA.

12 እስመ፡ አድኅኖ፡ ለነደይ፡ እምእደ፡ ዘይትዔገ
ሎ።ለምስኪን፡ ዘአልቦ፡ ረዳኢ።፨ 13 ወይም
ሕክ፡ነደየ፡ወምስኪነ።ወያድኅን፡ ነፍሰ፡ ነደያ
ን።፨ 14 እምርደ፡ወእምትእግልት፡ያድኅኖ፡
ለነፍሶሙ።ወክቡር፡ስሙ፡በቅድሜሆሙ።፨
15 ወየሐዩ፡ ወይሁብዎ፡ እምወርቀ፡ አረብ።ወዘ
ልፈ፡ ይጼልዩ፡በእንቲአሁ።ወኵሎ፡ አሚረ፡
ይድኅርዎ።፨ 16 ወይከውን፡ ምስማክ፡ ለኵ
ሉ፡ምድር።ውስተ፡ አርእስተ፡ አድባር።ወይ
ነውኅ፡ እምአርዝ፡ ፍሬሁ።ወይበቍል፡ ውስ
ተ፡ሀገር፡ከመ፡ ሣዕረ፡ ምድር።፨ 17 ወይከው
ን፡ ቡሩከ፡ ስሙ፡ ለዓለም።እምቅድመ፡ ፀሐ
ይ፡ ሀሎ፡ ስሙ።፨ 18 ወይትባረኩ፡ ቦቱ፡ ኵሎ
ሙ፡ አሕዛበ፡ ምድር።ወያስተበፅዕዎ፡ ኵሎ
ሙ፡ሕዝብ።፨ 19 ይትባረክ፡ እግዚአብሔር፡
አምላከ፡ እስራኤል።ዘገብረ፡ መንክረ፡ በሕቲ
ቱ።፨ 20 ወይትባረክ፡ ስም፡ ስብሐቲሁ።ለዓለ
ም፡ ወለዓለመ፡ ዓለም።ወይመልእ፡ ስብሐቲ
ሁ፡ኵሎ፡ ምድረ፡ ለይኩን፡ ለይኩን።፨

ኀልቀ፡ዘደዊት፡መኃልይ፡ዘወልደ፡ሌሴይ፡
መዝሙር፡ዘደዊት፡ዘአሳፍ።

1 ሮበ ጥቀ፡ ኄር፡ እግዚአብሔር፡ ለእስራኤል፡
ለርቱዓነ፡ልብ።፨ 2 ሊተሰ፡ ሕቀ፡ከመ፡ዘለም
ተንተና፡ እገሪየ።ወሕቀ፡ ከመ፡ ዘእምድኅፀ፡
ሰኰናየ።፨ 3 እስመ፡ ቀናዕኩ፡ ላዕለ፡ ኃጥአ
ን።ሰላሞሙ፡ ርእይየ፡ ለሀጣኢያን።፨ 4 እስ
መ፡ አልቦሙ፡ ሣሕተ፡ ለሞቶሙ።ወሊኃይለ፡
ለመቅሠፍቶሙ።፨ 5 ወበጻማሂ፡ ሊኮኑ፡ ዕድ
ወ።ወሊተቀሥፉ፡ ምስለ፡ሰብእ።፨ 6 ወበእን
ተዝ፡ አኃዞሙ፡ ትዕቢት።ወተዐፀፉ፡ ለኃጢ
አቶሙ፡ወለዐመፃሆሙ።፨ 7 ወይወፅእ፡ከመ፡
እምእንጕዕ፡ ኃጢአቶሙ።ወኃለፉ፡ እምት
ዕቢት፡ልቦሙ።፨ 8 ወሐለዩ፡ወነበቡ፡ከንቶ።
ወነበቡ፡ ዐመፃ፡ ውስተ፡ አርያም።፨ 9 ወአን
በሩ፡ ውስተ፡ ሰማይ፡ አፈሆሙ።ወአንሶሰወ፡
ውስተ፡ ምድር፡ ልሳኖሙ።፨ 10 ወበእንተዝ፡
ይትመየጡ፡ ሕዝብየ፡ እምዝየ።ወይትረከ
ብ፡ፍጹም፡ መዋዕል፡ በላዕሌሆሙ።፨ 11 ወይ
ብሉ፡ እፎ፡ ያአምር፡ እግዚአብሔር።ወ
ቦኑ፡ ዘየአምር፡ በአርያም።፨ 12 ነሁ፡ እ
ሉ፡ ኃጥአን፡ ይትፈግዑ።ወለዓለም፡ ያጸንዕ
ዋ፡ለብዕሎሙ።፨

INTERP. ÆTHIOP. [f] à manu ejus qui opprimeret eum; & [g] illis. [h] omni terra [i] & extendetur præ cedro fructus ejus: [k] beatum prædicabunt eum. *PSAL. LXXII.* [a] non eſt remiſſio [b] neque virtus eſt in [c] ex ſuperbia cordis eorum. [d] inane: iniquitatem [e] qui peccatores ſunt delitiis affluunt; & in ſeculo obtinuerunt divitias ſuas.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

12 13 *لانه خلص المسكين من يد القوي والضعيف الذي لا معين له* يشفق علي المسكين
14 والضعيف* ويخلص انفس المساكين* ومن الربا والظلم ينقذ نفوسهم* اسمه كريم لديهم*
15 16 *يحيا ويعطي من ذهب ارابيا* ويصلون من اجله في كل حين* النهار جميعه يباركونه* يكون
قوة علي الارض* وعلي اركان الجبال ترتفع ثمرته افضل من لبنان* ويزهر من المدينة مثل
17 عشب الارض* فليكن اسمه مباركا الي الابد* وقبل الشمس دايما اسمه* ويتبارك به جميع
18 قبايل الارض* وكل الامم تمجده* مبارك الرب اله اسراييل* الذي صنع العجايب وحده*
19 *ومبارك اسم مجده القدوس* الي الابد والي ابد الابد* تمتلي الارض جميعها من مجده
يكون يكون* الليلويا*

Quoniam ipſe liberavit pauperem de manu potentis, et debilem cui nullus erat adjutor. 12
Parcet pauperi & imbecilli, & ſalvabit animas pauperum, 13
Et ab uſura & tyrannide redimet animas eorum; nomen ejus venerabile apud eos. 14
Vivet, & dabitur ei de auro Arabiæ, et orabunt pro eo omni tempore, die totâ benedicent ei. 15
Erit in robur ſuper terram, & ſuper baſes montium elevabitur fructus ejus magis quàm Libani, & florebit de civitate ſicut herba terræ. 16
Sit nomen ejus benedictum in ſeculum: & ante ſolem, ſempiternum nomen ejus. Et benedicentur in ipſo omnes tribus terræ, et omnes gentes glorificabunt eum. 17
Benedictus Dominus Deus Iſrael, qui fecit miracula ſolus. 18
Et benedictum nomen gloriæ ejus ſacroſanctum, in æternum & in ſeculum ſeculi: Impleatur univerſa terra gloriâ ejus. Sit, ſit. Alleluja. 19

1 *المزمور الثاني والسبعون* لاصاف* وعدده* ن* استيخن*
2 صالح هو اله اسراييل لمستقيمي القلوب* وانا كدت عن قليل تزل قدماي* والا يسيرا
3 4 ترجف خطواتي* لاني غرت علي الذين لا ناموس لهم لما رايت سلامة الخطاة* لانهم لا راحة
5 6 في موتهم* وشديدة ضرباتهم* اذ ليس هم في تعب الناس* ولا يودبون مع البشر* من اجل
7 هذا استولت عليهم الكبرياء الى المنتهي* لبسوا ظلما ونفاقا* يخرج مثل الشحم ظلمهم
8 9 دخلوا في قلوبهم* تفكروا وتكلموا بالشر* وقالوا ظلما الى العلي* ووضعوا الي السماء
10 افواههم* ولسانهم انبسط علي الارض* لاجل هذا يرجع شعبي الي هاهنا واياما كاملة توجد
11 12 فيهم* فقالوا كيف علم الله* وهل عند العلي علم* فما هولاء خطاة وهم مخصبون* وقد
حازوا الغنى الي الابد*

PSAL. LXXII.

Aſapho. Et num. ver. 50. 1

Optimus eſt Deus Iſraelis iis qui recti ſunt cordibus.
Mei autem penè lapſi ſunt pedes, & paulò minùs mutârunt greſſus mei. 2
Quia zelavi ſuper eos quibus nulla lex eſt, cùm vidiſſem pacem peccatorum. 3
Non eſt enim requies in morte eorum; & dura ſunt flagella eorum: 4
Quum non ſint in labore hominum, neque corripiantur cum hominibus. 5
Propterea hoc dominata eſt in eos ſuperbia uſque ad extremum: induti ſunt ſcelere & impietate. 6
Prodit quaſi adipe ſcelus eorum: introierunt in corda ſua. 7
Cogitaverunt & locuti ſunt malum, & dixerunt ſcelus uſque in excelſum. 8
Et poſuerunt uſque ad cœlum ora ſua, & lingua eorum protenſa eſt ſuper terram. 9
Propterea convertetur populus meus huc, & dies integri invenientur in eis. 10
Dixerunt, Quomodò ſcivit Deus? & num eſt apud Excelſum ſcientia? 11
Nonne iſti peccatores ſunt? & tamen ipſi ſunt locupletes, & jam poſſederunt divitias in æternum. 12

flagellatus fui Et .meas *tota munditia* in lavi & : meum cor mundavi fruſtra Verè
13 אַךְ־רִיק זִכִּיתִי לְבָבִי וָאֶרְחַץ בְּנִקָּיוֹן כַּפָּי׃ וָאֱהִי נָגוּעַ
14 : hoc ſicut narrabo , dicebam Si *.matutinis in* mea increpatio & : die omni
כָּל־הַיּוֹם וְתוֹכַחְתִּי לַבְּקָרִים׃ אִם־אָמַרְתִּי אֲסַפְּרָה כְמוֹ 15
labor : hoc ſcire putabam Et .ſum prævaricatus tuorum filiorum generatio ecce
16 הִנֵּה דוֹר בָּנֶיךָ בָגָדְתִּי׃ וָאֲחַשְּׁבָה לָדַעַת זֹאת עָמָל
.eorum noviſſimum intelligam : Dei ſanctuaria *ad* intrem Donec .meis oculis in *ipſum*
17 הִיא בְעֵינָי׃ עַד־אָבוֹא אֶל־מִקְדְּשֵׁי־אֵל אָבִינָה לְאַחֲרִיתָם׃
Quomodo .deſolationes in eos feciſti cadere : eos poſuiſti lubricis in Profectò
18 אַךְ בַּחֲלָקוֹת תָּשִׁית לָמוֹ הִפַּלְתָּם לְמַשּׁוּאוֹת׃ אֵיךְ 19
.terroribus à ſunt conſumpti ,defecerunt ? ſubitò ferè deſolationem in fuerunt
הָיוּ לְשַׁמָּה כְרָגַע סָפוּ תַמּוּ מִן־בַּלָּהוֹת׃
Quia .ſpernes eorum imaginem *,ſuſcitando in* Domine *:expergiſcendo* ab ſomnium Velut
20 כַּחֲלוֹם מֵהָקִיץ אֲדֹנָי בָּעִיר צַלְמָם תִּבְזֶה׃ כִּי 21
: cognoſcebam non & ,inſipiens ego Et *.acuar meis renibus* & : meum cor *aceſcet*
22 יִתְחַמֵּץ לְבָבִי וְכִלְיוֹתַי אֶשְׁתּוֹנָן׃ וַאֲנִי־בַעַר וְלֹא אֵדָע
.meam dexterâ manum *in* tenuiſti : tecum ſemper ego Et .te apud eram jumenta
23 בְּהֵמוֹת הָיִיתִי עִמָּךְ׃ וַאֲנִי תָּמִיד עִמָּךְ אָחַזְתָּ בְּיַד יְמִינִי׃
tecum & ? cœlo in mihi Quis .me accipies gloriam poſtea & :me duces tuo conſilio In
24 בַּעֲצָתְךָ תַנְחֵנִי וְאַחַר כָּבוֹד תִּקָּחֵנִי׃ מִי־לִי בַשָּׁמָיִם וְעִמְּךָ 25
mea pars & , mei cordis *rupes* ,meum cor & ,mea caro Defecit .terra in nolui
26 לֹא־חָפַצְתִּי בָאָרֶץ׃ כָּלָה שְׁאֵרִי וּלְבָבִי צוּר־לְבָבִי וְחֶלְקִי
feciſti ſuccidere : peribunt ,te à *ſe elongantes* ecce Quoniam .ſeculum in Deus
27 אֱלֹהִים לְעוֹלָם׃ כִּי־הִנֵּה רְחֵקֶיךָ יֹאבֵדוּ הִצְמַתָּה
poſui *: bona mihi* Dei *appropinquatio* ego Et .te à fornicantem omnem
28 כָּל־זוֹנֶה מִמֶּךָּ׃ וַאֲנִי קִרֲבַת אֱלֹהִים לִי טוֹב שַׁתִּי
.tua opera omnia *narrandum ad* : meam ſpem *Domino* Domino in
בַּאדֹנָי יְהוִה מַחְסִי לְסַפֵּר כָּל־מַלְאֲכוֹתֶיךָ׃

PSAL. LXXIV. עד

tuus naſus fumabit : finem in te elongâſti Deus quid Ut .Aſaph ipſi *Eruditio*
1 מַשְׂכִּיל לְאָסָף לָמָה אֱלֹהִים זָנַחְתָּ לָנֶצַח יֶעְשַׁן אַפְּךָ
virgam redemiſti , *quondam* acquiſiviſti *,tui cœtus* Recordare ? tuæ paſcuæ *pecus in*
2 בְּצֹאן מַרְעִיתֶךָ׃ זְכֹר עֲדָתְךָ קָנִיתָ קֶּדֶם גָּאַלְתָּ שֵׁבֶט
tuos pedes Leva *.eo in* habitâſti , iſtum Sijon montem : tuæ hæreditatis
3 נַחֲלָתֶךָ הַר־צִיּוֹן זֶה שָׁכַנְתָּ בּוֹ׃ הָרִימָה פְעָמֶיךָ
tui hoſtes Rugierunt .ſanctitate in *inimicus malefecit omnia : perpetuitatis* deſolationes ad
4 לְמַשֻּׁאוֹת נֶצַח כָּל־הֵרַע אוֹיֵב בַּקֹּדֶשׁ׃ שָׁאֲגוּ צֹרְרֶיךָ
adducens *velut Cognoſcetur* .ſigna ſua ſigna poſuerunt : tui *conventus intimo* in
5 בְּקֶרֶב מוֹעֲדֶךָ שָׂמוּ אוֹתֹתָם אֹתוֹת׃ יִוָּדַע כְּמֵבִיא
,bipenni *in*;pariter ejus *apertiones* nunc Et .ſecures ligni perplexitate in *ſublime in*
6 לְמָעְלָה בִּסֲבָךְ־עֵץ קַרְדֻּמּוֹת׃ וְעַת פִּתּוּחֶיהָ יָּחַד בְּכַשִּׁיל
.conquaſſabunt malleis &
וְכֵילַפֹּת יַהֲלֹמוּן׃

תרגום TARGUM.

13 ברם לסריקותא זכית לבבי ושזגית בברירו ידי׃
14 והויתי כתיש כל יומא ומכסנותי לצפריי׃ אין 15
אמירית אשתעי דכמתהון הא על דר בניך
16 ארשעית׃ וחשיבית למדע ית דא לעות הוא
17 בעיני׃ עד זמן פורקנא דאיתי לות מקדשי אלהא
18 אתבין לסופהון׃ ברם בקבליא שויתא להון
19 רמיתנון לשהותא׃ הכדין הוו לצדו כשעתא
20 כלו אשתיצון מן אתרגשון׃ היך חלמא מן גבר
דמתער יי ליום דינא רבא באתער יתהון מן בית
21 קבורתהון ברגז דמותהון תבסר׃ ארום יחוש
22 לבי וכוליתי בערן כאשא׃ ואנא שטיא ולא
23 אידע היך בעירי אתחשבית גבך׃ ואנא תדירא
24 עמך אוחדתא ביד ימיני׃ במלכתך תדברנני
ובתר דשלים איקרא דאמרת עלי לאיתאה
25 תסבנני׃ מן כותך דילי בשמיא אלא את ועמך
26 חברא לא צביתי בארעא׃ אשתיצא גושמי
ולבבי תקיפא דבחין לבבי וחולקי אלהא
27 לעלמא׃ ארום הא רשיעיא די מתרחקין מנך
28 יאבדון שיציתא כל דטעי מן בתר דחלתך׃ ואנא
למקרב ביי לי טב שוית ביי אלהים רוחצני
לאשתעיא לצדיקיא כולהון פקידי שליחותך׃

עד

1 שכלא טבא על ידוי דאסף למה אלהא רחקתא
2 לעלמין יתקף רוגזך בעאן רעיתך׃ אדכר כנשתך
דקנית מלקדמין פרקת ממצרים שבטי אחסנתך
3 טור דציון דנן די שריתא שכנתך ביה׃ ארים
אסתורך למשיק אומיא לעלמין דבכל חיליה
4 אבאיש בעל דבבא בקודשא׃ אכלין מעיקך
5 במצע זמניך שוון אתותהון אתיא׃ יצלף
בקורנסא היך גבר דמרים ידיה בסביך קיסיא
6 למקטע בכולביא׃ וכדין גליפיהא נררין כחדא
בקופיץ ובמפסלת דיוסטר מחין כבמרזופין׃

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Ergo inaniter purificavi cor meum, & la in munditie manus meas. Et fui flagella tota die, & caſtigatio mea in matutinis. S dixi, Narrabo qualitates eorum: ecce ſupe generatione filiorum tuorum improbè eg Et cogitavi ut ſcirem iſtud : labor hoc i oculis meis. Uſq; ad tempus redemp onis, quo veniam ad *ſanctuaria* Dei, in telligam finem eorū. Profectò in teneb poſuiſti eos, projeciſti eos in *vaſtitat* Quomodo facti ſunt in deſolationem i momento, conſumpti ſunt & vaſtati à com motionibus ? Sicut ſomnium ab homin qui expergeſcit [*evaneſcit*,] Dn̄e in die judi cii magni cū fuerint ſuſcitati de ſepulchr ſuis, in furore imaginem eorū ſpernes. E enim compungetur cor meū, & renes me ardent ſicut ignis. Et ego ſtult⁹ qui neſciam quaſi beſtia reputat⁹ ſum apud te. Ego aut continuè ſum apud te: tenuiſti manū dexte ram meā. In conſilio tuo deduces me : & poſtquā completa fuerit gloria, quā dixiſ te adducturū eſſe ſup me, accipias me. Qu ſimilis tui qui me⁹ es in cœlo, niſi tu? pro inde tecum ſocium non volui in terr Conſumptum eſt corpus meum & cor me um : fortis eſt qui probat cor meum, & pars mea Deus in æternū. Quia ecce imp qui abhorrent à *te*, peribunt : perdidiſ omnes qui aberrarunt à timore tui. Mih verò accedere ad *Dominum*, bonū eſt : po ſui in *Domino Deo* fiduciam meam, ut enar rem juſtis præcepta omnia apoſtolatus tu

Intellectus bonus per manus Aſaph.

PSAL. LXXIV.

QUare Deus repuliſti in æternum, fla grabit furor tuus in oves paſcuæ tuæ Recordare congregationis tuæ, quam ac quiſiviſti ab initio, redemiſti ab Ægypto trib⁹ hæreditatis tuæ, montis Sion huj⁹ in quo requievit *majeſtas tua*. Leva greſſu tuos ad deſolandas nationes in perpetuū, quia pro virib⁹ ſuis detrimenta *intulit ini micus* in ſanctuariū. Clamant moleſtato res tui in medio temporum tuorum; po nunt ſigna ſua, ſigna. Contundent malle ſicut vir qui levat manū ſuā in perplexita tem *lignorū*, ut incîdat ſecurib⁹. Et ſic ſcul pturas ejus excîdunt ſimul bipenni & do labro devaſtario, percutientes malleis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 [illegible]
14
15 [illegible]
16
17 [illegible]
18
19 [illegible]
20 [illegible]
21
22 [illegible]
24 [illegible]
25
26 [illegible]
27 [illegible]
28 [illegible]
[illegible]

1 [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
2 [illegible]
[illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5
6 [illegible]
[illegible]

Et ego ſolus mundavi cor meum, & lavi ma nus meas puritate, Et tamen *expoſitus* flagello totâ die, & caſtigatio mea ad matutinum uſque. Si dixero, Faciam ut ipſi, Sce lus eſt in oculis meis : Donec intrem in ſan ctuarium Dei, & conſiderem finem illorum. Juxta fraudem eorum conſtitues illis, & de jicies eos cum ſeſe extulerint. Quomodo fa cti ſunt in admirationem repentè : defece runt, & conſumpti ſunt perturbatione. Velut is qui evigilat poſtquam vidit ſomnium, Do mine in civitate imaginem ipſorū deſpicies. Meî autem conturbatum eſt cor, & renes mei abſceſſerunt ; Et ego ſimplex eram & igna rus: jumentum eram tecum. Conſilio tuo conſolare me, & poſt decus tuum rege me. Quid eſt mihi in cœlo tecum, & quid optavi in terra, ut apprehenderis manum meā dexte ram, Et conſumptū ſit cor meū, & caro mea ac robur cordis mei? Portio mea in Deo eſt in ſempiternum; Quoniam ecce remoti a te peribunt : & perdes omnes qui aberrant a te in æternū. Mihi placuit accedere ad Deum pergratum eſt mihi nomen tuum, Domine fi ducia mea, ut enarrem cuncta mirabilia tua.

PSAL. LXXIV.

Aſaphi. Quum vidit David angelum ſ imentem populum, & flevit ac dixit : In me & in progeniem meam, non in has oves innoxi as. Præterea prædictio obſidionis urbis Jud orum, quadraginta poſt Aſcenſionem an per Veſpaſianum ſenem, & Titum ejus fi um: qui occiderunt ex Judæis myriad & deſtruxerunt Jeruſalem, indeq; diſperſi ſu Judæi uſque in præſentem diem. Verſ. 4

DEus, quare oblitus es noſtri in æter num, & auxiſti iram tuam in oves gre gis tui? Recordare Eccleſiæ tuæ, quam poſſe diſti jampridem, & liberâſti tribum hære ditatis tuæ : montem Sion iſtum, in quo habi tâſti. Eleva ſervos tuos ſuper eos qui ſuper biunt in nos cum fortitudine, omnem qui malum infert, inimicum ſanctuarii tui. Glo riati ſunt hoſtes tui in medio feſtivitatis tuæ fecerunt ſigna ſua, ſigna : Et cognoviſti excelſus qui ſupernè es. Non ſecus ac ſylvam lignorum ſecuribus Fiderunt januas : ſim bipennibus atque malleis proſtraverunt.

Versio VULG. LAT.

13 Et dixi ; Ergò sine causa justificavi
cor meum, & lavi inter innocentes
14 manus meas : Et fui flagellat⁹ totâ die,
15 & castigatio mea in matutinis. Si di-
cebam, Narrabo sic : ecce nationem
16 filiorū tuorum reprobavi. Existima-
bam ut cognoscerem hoc,labor est an-
17 te me: Donec intrem in Sanctuarium
Dei: & intelligam in novissimis eorū.
18 Veruntamen propter dolos posuisti
eis: dejecisti eos dum allevarentur.
19 Quomodò facti sunt in desolationem,
subitò defecerunt : perierunt propter
20 iniquitatem suam. Velut somnium sur-
gentium,Domine,in civitate tua ima-
21 ginem ipsorū ad nihilū rediges. Quia
inflammatum est cor meum , & renes
22 mei commutati sunt : Et ego ad nihi-
23 lum redactus sum, & nescivi. Ut ju-
mentum factus sum apud te : & ego
24 semper tecum. Tenuisti manum dexte-
ram meā: & in voluntate tua deduxi-
25 sti me,& cū gloria suscepisti me. Quid
enim mihi est in cœlo?& à te quid vo-
26 lui super terrā ? Defecit caro mea, &
cor meum : Deus cordis mei, & pars
27 mea Deus in æternū. Quia ecce, qui
elongant se à te, peribunt: perdidisti
28 omnes,qui fornicantur abs te.Mihi au-
tem adhærere Deo bonum est: ponere
in Domino Deo spem meam : Ut an-
nuntiem omnes prædicationes tuas,in
portis filiæ Sion.

1 Intellectûs Asaph. LXXIII.

UT quid,De⁹, repulisti in finem: ira-
tus est furor tuus super oves pa-
2 scuæ tuæ? Memor esto congregationis
tuæ,quā possedisti ab initio. Redemisti
virgam hæreditatis tuæ:mons Sion, in
3 quo habitâsti in eo.Leva manus tuas in
superbias eorū in finē:quāta maligna-
4 tus est inimicus in Sancto! Et gloriati
sunt qui oderunt te, in medio solenni-
5 tatis tuæ.Posuerunt signa sua,signa: Et
non cognoverunt sicut in exitu super
summum.Quasi in sylva lignorū secu-
6 ribus Exciderunt januas ej⁹ in idipsū:
in securi & asciâ dejecerunt eam.

Verſ. GRÆC. LXX.Interp.

13 Καὶ εἶπα, Ἄρα ματαίως ἐδικαίωσα τὴν καρδίαν
14 μου, καὶ ἐνιψάμην ἐν ἀθώοις τὰς χεῖράς μου. Καὶ
ἐγενόμην μεμαστιγωμένος ὅλην τὴν ἡμέραν, καὶ
15 ὁ ἔλεγχός μου εἰς τὰς πρωΐας. Εἰ ἔλεγον, Δι-
ηγήσομαι οὕτως, ἰδοὺ τῇ γενεᾷ τῶν υἱῶν σου
16 ἠσυνθέτηκα. Καὶ ὑπέλαβον τοῦ γνῶναι, τοῦτο
17 κόπος ἐστὶν ἐναντίον μου, Ἕως εἰσέλθω εἰς τὸ
18 ἁγιαστήριον τοῦ θεοῦ, συνῶ εἰς τὰ ἔσχατα. Πλὴν
διὰ τὰς δολιότητας ἔθου αὐτοῖς, κατέβαλες αὐ-
19 τοὺς ἐν τῷ ἐπαρθῆναι. Πῶς ἐγένοντο εἰς ἐρήμω-
σιν; ἐξάπινα ἐξέλιπον, ἀπώλοντο διὰ τὴν ἀνο-
20 μίαν αὐτῶν. Ὡσεὶ ἐνύπνιον ἐξεγειρομένου, κύ-
ριε ἐν τῇ πόλει σου τὴν εἰκόνα αὐτῶν ἐξουδενώσεις.
21 Ὅτι ηὐφράνθη ἡ καρδία μου, καὶ οἱ νεφροί μου
22 ἠλλοιώθησαν. Κἀγὼ ἐξουδενωμένος, καὶ οὐκ ἔγνων,
23 Κτηνώδης ἐγενόμην παρὰ σοί, κἀγὼ διαπαν-
24 τὸς μετὰ σοῦ. Ἐκράτησας τῆς χειρὸς τῆς δεξιᾶς μου, ἐν
τῇ βουλῇ σου ὡδήγησάς με, καὶ μετὰ δόξης προσ-
25 ελάβου με. Τί γάρ μοι ὑπάρχει ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ
26 παρὰ σοῦ τί ἠθέλησα ἐπὶ τῆς γῆς; Ἐξέλιπεν ἡ
καρδία μου καὶ ἡ σάρξ μου, ὁ θεὸς τῆς καρδίας μου,
27 καὶ ἡ μερίς μου ὁ θεὸς εἰς τὸν αἰῶνα. Ὅτι ἰδοὺ οἱ
μακρύνοντες ἑαυτοὺς ἀπὸ σοῦ, ἀπολοῦνται· ἐξω-
28 λόθρευσας πάντα τὸν πορνεύοντα ἀπὸ σοῦ. Ἐμοὶ
δὲ τὸ προσκολλᾶσθαι τῷ θεῷ ἀγαθόν ἐστι, τίθεσθαι
ἐν τῷ κυρίῳ τὴν ἐλπίδα μου· τοῦ ἐξαγγεῖλαι πά-
σας τὰς αἰνέσεις σου ἐν ταῖς πύλαις τῆς θυγατρὸς
Σιών.

Συνέσεως τῷ Ἀσάφ. ογʹ.

1 Ἵνα τί ἀπώσω ὁ θεὸς εἰς τέλος; ὠργίσθη ὁ θυ-
2 μός σου ἐπὶ πρόβατα νομῆς σου; Μνήσθητι
τῆς συναγωγῆς σου ἧς ἐκτήσω ἀπ᾽ ἀρχῆς· ἐλυ-
τρώσω ῥάβδον κληρονομίας σου· ὄρος Σιὼν τοῦ-
3 το ὃ κατεσκήνωσας ἐν αὐτῷ. Ἔπαρον τὰς χεῖ-
ρας σου ἐπὶ τὰς ὑπερηφανίας αὐτῶν εἰς τέλος·
ὅσα ἐπονηρεύσατο ὁ ἐχθρὸς ἐν τοῖς ἁγίοις σου,
4 Καὶ ἐνεκαυχήσαντο οἱ μισοῦντές σε ἐν μέσῳ τῆς
ἑορτῆς σου. Ἔθεντο τὰ σημεῖα αὐτῶν σημεῖα,
5 Καὶ οὐκ ἔγνωσαν, ὡς εἰς τὴν εἴσοδον ὑπεράνω. ὡς
6 ἐν δρυμῷ ξύλων ἀξίναις Ἐξέκοψαν τὰς θύρας
αὐτῆς ἐπὶ τὸ αὐτὸ, ἐν πελέκει καὶ λαξευτηρίῳ
κατέρραξαν αὐτήν.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

13Et dixi;(p)Ergò ſine cauſa(q)ju- 13
ſtificavi cor meum:& lavi inter in-
nocentes manus meas. 14 Et fui fla- 14
gellatus totâ die:& caſtigatio mea in
matutinis. 15 Si dicebam,Narrabo 15
ſic; ecce (r) generationem filiorum
tuorum[f]reprobavi. 16 Et(ſ) ſuſce- 16
pi cognoſcere; hoc labor eſt ante me.
17Donec intrem in Sanctuariū Dei, 17
intelligam [g]in(t)noviſſima.18Ve- 18
runtamen propter [h] doloſitates(u)
poſuiſti eis:(x) dejeciſti eos, dum
extollerentur. 19 Quomodò facti 19
ſunt in deſolationem? ſubitò defece-
runt: perierunt propter iniquitatem
ſuam. 20 Velut [i] ſomnium (y)ex- 20
urgentis,Domine,in civitate tua;ima-
ginem ipſorum ad nihilum rediges.
21 Quia (z)[k] delectatum eſt cor 21
meum, & renes mei [l] mutati ſunt:
Et ego ad(aa)nihilum redactus ſum, 22
& non cognovi. 22 ut (bb) jumen- 23
tum factus ſum apud te:& ego ſem-
per tecum. 23 Tenuiſti manum dex- 24
teram meam:in (cc) conſilio tuo de-
duxiſti me: & cum gloria aſſumpſi-
ſti me. 24 Quid enim (dd) mihi eſt 25
in cœlo?& à te quid volui ſuper ter-
ram? 25 Defecit (ee) cor meum,& 26
caro mea: [m] Deus cordis mei,&
pars mea Deus in æternum. 26 Quia 27
ecce, qui elongant ſe à te, peribunt:
perdidiſti [n] omnem,qui fornicatur
abs te. 27 Mihi autem adhærere Deo 28
bonum eſt: ponere in Domino ſpem
meam. 28 Ut annuntiem omnes(ff)
[o] laudes tuas in (gg) portis filiæ
Sion.

Intellectûs ipſi Aſaph. LXXIII. 1

1 UT (a)quid repuliſti,Deus,in fi-
nem? iratus eſt furor tuus ſuper
oves paſcuæ tuæ. 2 Memento congre- 2
gationis tuæ, quam poſſediſti ab ini-
tio. 3 Redemiſti (b) virgam hære-
ditatis tuæ, montem (c) Sion hunc,
in quo habitâſti in eo. 4 Leva ma- 3
nus tuas in ſuperbias eorum in finē.
Quanta malignè operatus eſt inimi-
cus in (d) Sanctis tuis! 5 Et gloriati 4
ſunt, qui oderunt te, in medio(e)ſo-
lennitatis tuæ. 6 Poſuerunt ſigna ſua
ſigna, Et non cognoverunt, ſicut [a] 5
in (f) ingreſſu deſuper. 7 [b]Quaſi
in ſylva lignorum, ſecuribus Exci- 6
derunt januas ejus in idipſum:in ſecuri, & aſciâ dejecerunt eam.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወእቤ፡ከንቶሁ፡ እንጋ፡ አጽደቅዋ፡ለልብየ፡፡ወ 13
ኃፀብኩ፡በንጹሕ፡ እደዊየ፡፡=፡ ወኮንኩ፡ቅሡ 14
ፉ፡ ኵሎ፡ ሰሚረ፡፡ወዘለፈየኒ፡ በጽባሕ፡፡=፡
ሶበ፡ እቤሁ፡ ነበብኩ፡ ከመዝ፡፡ናሁ፡ሠራዕኩ፡ 15
ለትውልደ፡ ደቂቅከ፡፡=፡ ወተወከፍኩ፡ ከመ፡ 16
አእምር፡፡ወዝንቱሰ፡ ጻማ፡ ውእቱ፡ በቅድሜ
የ፡፡=፡ እስከ፡ እበውእ፡ ውስተ፡ መቅደሱ፡ለ 17
እግዚአብሔር ፡፡ ከመ፡ ኣእምር፡ ደኃሪቶ
ሙ፡፡=፡ ወባሕቱ፡ በእንተ፡ ጽልሑቶሙ፡ አ 18
ጽናሕኮሙ፡፡ወነጻሕኮሙ፡ በተንሥኦቶሙ፡፡=
እፎ፡ ኮኑ፡ ለሙስና፡፡ግብተ፡ ኀልቁ፡ ወተሐጕ 19
ሉ፡ በእንተ፡ ኃጢአቶሙ፡፡=፡ ከመ፡ ዘንቃህ፡ 20
እምንዋም፡፡እግዚኦ፡ በሀገርከ፡ አኅስሮሙ፡
ራእዮሙ፡፡=፡ እስመ፡ ውዕየ፡ ልብየ፡ ወተመ 21
ስወ፡ ኵልያትየ፡፡ወአንሰ፡ መኑን፡ ኢያእመር
ኩ፡፡=፡ ወኮንኩ፡ ከመ፡ እንስሳ፡ በኀቤከ፡፡ 22
ወአንሰ፡ ዘልፈ፡ ምስሌከ፡፡=፡ አኀዝከኒ፡እዴ 23
የ፡ ዘየማን፡፡ወበምክረ፡ ዚአከ፡ መራሕከኒ፡፡
ወምስለ፡ ስብሐት፡ ተወከፍከኒ፡፡=፡ ምንተ፡ 24
ብከ፡ ተሀሉ፡ ውስተ፡ ሰማይ፡፡ወምንት፡ እፈቅ
ድ፡ ኀቤከ፡ ውስተ፡ ምድር፡፡=፡ ኀልቀ፡ልብ 25
የ፡ ወሥጋየ፡ በአምላከ፡ መድኃኒትየ፡፡እግዚ
አብሔር፡ መክፈልትየ፡ ለዓለም፡፡=፡ እስ 26
መ፡ናሁ፡ እለ፡ ይርሕቁ፡ እምኔከ፡ ይትሐጐ
ሉ፡፡ወሠረውኮሙ፡ ለኵሎሙ፡ እለ፡ ይዜም
ው፡ እምኔከ፡፡=፡ ሊተሰ፡ ተሲወ፡ እግዚአ 27
ብሔር፡ይኄይሰኒ፡፡ወትክልትየኒ፡ ለዕለ፡ እግዚ
አብሔር፡፡=፡ ከመ፡ እንግር፡ ኵሎ፡ ስብሐ 28
ታሁ፡፡በአናቅጺሃ፡ለወለተ፡ጽዮን፡፡=፡

ዘበአእምሮ፡ዘአሳፍ፡፡

ሮር ለምንት፡ ገደፍከነ፡እግዚኦ፡ ለዝሉፉ፡፡ 1
ወተማዕከ፡ መዐትከ፡ ላዕለ፡ አባግዐ፡ መርዔት
ከ፡፡=፡ ተዘከር፡ ማኅበረከ፡ ዘአቅደምከ፡ 2
ፈጢረ፡፡=፡ ወአድኀንከ፡ በትረ፡ ርስትከ፡፡ 3
ደብረ፡ ጽዮን፡ ዘኀደርከ፡ ውስቴታ፡፡=፡ አን 4
ሥእ፡ እዴከ፡ ደበ፡ ትዕቢቶሙ፡ ለዝሉፉ፡፡
መጠነ፡ አሕሰሙ፡ ጸላዒ፡ ደበ፡ቅዱሳኒከ፡፡=፡
ወተዘሀሩ፡ጸላእትከ፡ በማእከለ፡ በዐልከ፡፡=፡ 5
ወረሰዩ፡ ትእምርቶሙ፡ ትእምርተ፡ ዘኢየአ 6
ምሩ፡፡ከመዘ፡ ውስተ፡ ላዕለይ፡ ፍኖት፡፡=፡
ወከመ፡ ዕፀወ፡ ገደም፡ በጕድብ፡ ሰበሩ፡ ኆኅ 7
ቲሃ፡፡ ወከማሁ፡ በማሕጼ፡ ወበመፍጽሕ፡
ሰበርዋ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [f] determinavi. [g] noviſſima eorum. [h] doloſitates eorum pati feciſti eos : [i] ille qui vigilat à ſomno, [k] inflammatum eſt [l] tabuerunt : [m] in Deo ſalus mea, & pars [n] omnes, qui fornicantur [o] laudes ejus *PSAL.LXXIII.* [a] in via ſupra me. [b] Et ſicut ligna ſylvæ, ſecuribus exciderunt januas ejus ; ſic in ſecuri,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* فقلت أتري بالباطل زكيت قلبي وغسلت بالطهارة يدي * وضربت مضروبا النهار أجمع 13 14
وتوبيخي إلى وقت الغداة * إن كنت قلت فإني هكذا أقول * هاأنذا قد فرزت مع جيل بنيك 15
* وجعلته في قلبي لكي أعلم وهذا هو تعب قدامي * إلى أن أدخل إلى موضع قدس الله 16 17
وأفهم الأواخر * بل من أجل غشهم وضعت لهم المساوي وحططتهم لما استعلوا * وللخراب 18 19
بغتة أسلمتهم * بادوا وهلكوا لأجل إثمهم * مثل رؤيا المستيقظ يا رب في مدينتك ترذل 20
أشخاصهم * لأن قلبي قد احترق وذابت كليتاي * وأنا مرذول ولم أعلم * صرت مثل بهيمة 21 22
عندك * وأنا معك في كل حين * أمسكت بيدي اليمنى * وبمسرتك هديتني * وبمجد قبلتني 23 24
* لأن ماذا لي في السماء * وما هو الذي أريده منك على الأرض * فني قلبي وجسدي * إله 25 26
قلبي ونصيبي هو الله إلى الأبد * ها هوذا المتباعدون منك يهلكون * وكل الزناة استأصلتهم 27
عنك * وأنا الأصلح لي أن ألتصق بالله لأنه صالح * وأجعل توكلي على الله * لكي أخبر 28
بجميع تسابيحك * في أبواب ابنة صهيون * الليلويا *

* المزمور الثالث والسبعون * لآساف فهم * وعدده مه * استيحن * 1
لماذا أقصيتنا يا الله إلى الغاية * واشتد سخطك على غنم رعيتك * اذكر جماعتك التي 2
اقتنيتها منذ الابتداء * خلصت قضيب ميراثك جبل صهيون * هذا الذي سبلك فيه
* ارفع يديك على تعاظمهم إلى التمام * كثيرة هي الشرور التي صنعها العدو في قدسك 3
* وقد افتخر مبغضوك في وسط عيدك * وجعلوا علاماتهم آيات بجهلهم * ومثلوها بما يأتي 4 5
من العلو * ومثل غيضة خشب قطعوا بالفؤوس أبوابها وبالفأس والمعول معا حطموها 6

Et dixi ; An fortè fruſtrà juſtificavi cor 13
meum, & lavi in puritate manus meas ?
Et factus ſum flagellatus die totâ, & ca- 14
ſtigatio mea uſque ad tempus matutinum?
Si dixero, Ita dicam ; ecce jam ſegrega- 15
tus ſum cum progenie filiorum tuorum. Et 16
poſui illud in corde meo, ut ſcirem, & hoc
eſt labor ante me, Quoad intrem in lo- 17
cum ſanctitatis Dei, & intelligam noviſ-
ſima. Verùm propter dolum eorum po- 18
ſuiſti eis lubrica, & depreſſiſti eos quum
elevati eſſent. Et vaſtationi repentè tra- 19
didiſti eos, perierunt & conſumpti ſunt
propter iniquitatem ſuam. Velut ſomnium 20
expergiſcentis O Domine, in civitate tua
contemnes imagines eorum. Nam cor 21
meum jam exuſtum eſt, & liquati ſunt
renes mei. Et ego vilis ſum, & ignora- 22
vi: factus ſum ut jumentum apud te, Et 23
ego tecum in omni tempore. Tenuiſti ma-
num meā dexterā, Et in beneplacito tuo 24
direxiſti me, et cum gloria ſuſcepiſti me.
Nam quid mihi eſt in cœlo, & quid eſt 25
quod volo à te ſuper terram ? Jam con- 26
ſumptum eſt cor meum & corpus meum :
Deus cordis mei & pars mea, eſt Deus in
æternum. Ecce remoti à te, peribunt : & 27
omnes fornicarios extirpâſti à te. Et mi- 28
hi quidem optimum eſt adhærere Deo, quia
bonus eſt : & collocare fiduciam meam in
Deo: ut annuntiem omnes laudes tuas in
portis filiæ Sion. Alleluja.

PSAL. LXXIII.

Aſapho intellectus. Et num. 1
verſ. 45.

Quarè extermināſti nos, O Deus in
finem, & invaluit ira tua adverſus
oves paſcuæ tuæ? Memento cœtûs tui 2
quem poſſediſti ab initio, liberâſti virgam
hereditatis tuæ, montem Sion hunc in
quo ſunt ſemitæ tuæ. Leva manus tuas 3
contra ſuperbiam eorum uſque ad con-
ſummationem: multa enim ſunt mala quæ
commiſit inimicus in ſanctos tuos. Et jam 4
gloriati ſunt oſores tui in medio feſtivi-
tatis tuæ: & poſuerunt vexilla ſua pro
ſignis in ſtultitia ſua. Et comparaverunt 5
carci quæ venit ab alto. Et quaſi nemus
lignorum exciderunt ſecuribus januas e-
jus : Et ſecuri atque bipenni ſimul per- 6
fregerunt eas.

תהלים : עה

.tui nominis taberraculum polluerunt terra in : tua ſanctuaria *igne in* Miſerunt
7 שלחו באש מקדשך לארץ חללו משכן שמך :
Dei *conventicula* omnia incenderunt : pariter *eorum poſteri* , ſuo corde in Dixerunt
8 אמרו בלבם נינם יחד שרפו כל־מועדי־אל
nobiſcum non & : propheta ultrà non , videmus non noſtra Signa .terra in
9 בארץ: אותתינו לא־ראינו אין־עוד נביא ולא־אתנו
blaſphemabit:hoſtis afficiet probris , Deus Uſquequo .quo uſque *cognoſcens*
10 יודע עד־מה: עד־מתי אלהים יחרף צר ינאץ
? tuam dexteram &,tuam manum *reduces* quid Ut ? *æternum* in tuum nomen inimicus
11 אויב שמך לנצח: למה תשיב ידך וימינך
operans : initio ab meus rex Deus Et *.conſume* tui ſinus *interiori ex*
12 מקרב חוקך כלה: ואלהים מלכי מקדם פעל
confregiſti:mare tua fortitudine *in* contriviſti Tu .terræ *interiori* in ſalutes
13 ישועות בקרב הארץ: אתה פוררת בעזך ים שברת
: Leviathan capita confregiſti Tu .aquis *ſuper* cetorum capita
14 ראשי תנינים על־המים: אתה רצצת ראשי לויתן
: torrentem & , fontem *rupiſti* Tu *.ſolitudinicolis* populo eſcam eum *dabis*
15 תתננו מאכל לעם לציים: אתה בקעת מעין ונחל
tu : nox *tibi* etiam ,dies *Tibi .fortitudinis* fluvios ſiccâſti tu
16 אתה הובשת נהרות איתן: לך יום אף־לך לילה אתה
: terræ terminos omnes ſtatuiſti Tu .ſolem & luminare præparâſti
17 הכינות מאור ושמש: אתה הצבת כל־גבולות ארץ
affecit probris inimicus:hujus Memento *.ea* plaſmâſti tu hyemem & , æſtatem
18 קיץ וחרף אתה יצרתם: זכר־זאת אויב חרף
tradas Ne .tuum nomen *blaſphemaverunt* ſtultus populus & : Dominum
19 יהוה ועם־נבל נאצו שמך: אל־תתן
.æternum in obliviſcaris ne tuorum *afflictorum cætus* : tuæ turturis animam *feræ*
לחית נפש תורך חית עניך אל־תשכח לנצח:
Ne *.rapinæ habitaculis* terræ tenebroſa loca ſunt repleta quia :pactum ad Reſpice
20 הבט לברית כי־מלאו מחשכי־ארץ נאות חמס: אל־
21 Surge .tuum nomen laudabunt *egenus & afflictus* : affectus pudore *tenuis* recedat
22 ישב דך נכלם עני ואביון יהללו שמך: קומה
Ne .die omni ſtulto à , tui probri memento :tuam *litem litiga* Deus
23 אלהים ריבה ריבך זכר חרפתך מני־נבל כל־היום: אל־
.ſemper *aſcendens tibi obſiſtentium* ſonitus : tuorum hoſtium vocis obliviſcaris
תשכח קול צרריך שאון קמיך עלה תמיד:

PSAL. LXXV. עה

tibi *ſumus Confeſſi* .canticum Aſaph ipſi cantus , *corrumpas* ne , Victori
1 2 למנצח אל־תשחת מזמור לאסף שיר: הודינו לך
Cùm .tua mirabilia *narrant* : tuum nomen propinquum & ,*ſumus confeſſi* , Deus
3 אלהים הודינו וקרוב שמך ספרו נפלאותיך: כי
omnes & , terra *Liquefacti* .judicabo *rectitudines* ego : *ſtatutum* tempus accepero
4 אקח מועד אני מישרים אשפט: נמגים־ארץ וכל־
.Selah , ejus columnas *æquilibrio* direxi ego : ejus habitatores
ישביה אנכי תכנתי עמודיה סלה:

תרגום TARGUM.

אדליקו בנורא בית מקדשא לארעא אפיסו 7
משכן דאתקרי ביה שמך: אמרו בלבהון בניהון 8
כחדא אוקידו אבהתהון כל מערעיא אלהא
בארעא: אתותנא דיהבו לנא נבייא לא חמינא 9
לית תוב נביא ולית עמנא דידע עד אימתי:
עד אימתי אלהא יחסד מעיקא ירחיק בעל דבבא 10
שמך לעלמא: למה תתיב ידך וימינך למפרוק 11
מן גו עטפך אפיק ושיצי עקתא: ואלהא מלכא 12
דשכינת קודשיה מלקדמין עביד פורקנא בגו
ארעא: אנת גזרתא בעושנך מוי דימא אנת 13
תברתא רישי תניניא ושנקת מצראי על ימא:
אנת תרעתא רישי גברי פרעה יהבתנון לנמרא 14
לעם בית ישראל ונושמיהון לירודי: אנת 15
בזעתא מעינא מן כיפא והוי לנחלא אנת יבשת
מניזת נחלי ארנונא ומניזת יובקא ויורדנא דהון
תקיפין: די לך יממא לחוד די לך ליליא את 16
אתקנתא סיהרא ושמשא: את אקמתא כל 17
תחומא דארעא קיטא וסתוא אנת בראתנון:
אדכר דא בעל דבבא מנדף יי ועמא טפשא 18
דרחיקו שמך: לא תמסור לעמיא דמתילין 19
לחיות ברא נפשת מאלפי אוריתך חיידון
דעניך לא תתנשי לעלמין: אסתכל לקימא 20
דגזרתא לאבהתן ארום אתמליאו בניהון
חשוכא פריס על ארעא ואונאותא וחטופין:
לא יתוב מסכן מכסיף עניא וחשוכא ישבחון 21
שמך: קום אלהא נצי מצותך אדכר קלנא 22
דעמך מן מלכא טפשא כל יומא: לא 23
תתנשי קל מעיקך אתרגושת דקימין לקבלך
דסלקא תדירא: עה
לשבחא בזמן די אמר דוד לא תחבל עמך 1
תושבחתא על ידוי דאסף ושירא: אודינא 2
לך יי אודינא וקריב שמך אשתעיו פרישותך:
ארום אידע ומנא אנא תריצן אדון: מתמסמסין 3
דיירי ארעא וכל יתבהא אנא אתקנית 4
עמודהא לעלמין:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Incenderunt igni domum ſanctuarii; ad terram proſtraverunt tabernaculum in quo invocatũ eſt nomen tuũ. *Dixerunt* in corde ſuo filii eorũ ſimul, incenderunt patres *eorum* omnes feſtivitates Dei in terra. Signa noſtra quæ dederunt nobis prophetæ, non vidimus: non eſt ampliùs propheta, & non eſt apud nos qui ſciat quouſq;. Uſquequo Deus improperabit moleſtator; abominabitur auctor inimicitiæ nomen tuum in æternũ? Quare avertes manum tuã & dexteram tuam quò minus redimas? de medio ſinus tui educ eam, & dele afflictioně. Et Deus rex cujᵒ majeſtas ſancta eſt ab æterno, operatur *redemptionem* in medio terræ. Tu diviſiſti in fortitudine tua aquas maris: tu contriviſti capita draconum, & ſuffocâſti Ægyptios in *mari*. Tu confregiſti capita fortium Pharaonis; dediſti eos ad internecionem populo domus Iſrael, corpora verò eorũ *draconibus*. Tu erumpere feciſti fontem de rupe, & fuit in flumen: tu ſiccâſti vada torrentium Arnon, & vada Joubecha, & Jordanis, quæ erant valida. Tuus eſt dies, inſuper tua eſt nox, tu præparâſti Lunam & Solem. Tu ſtatuiſti omnes terminos terræ: æſtatẽ & hyemẽ tu creâſti. Hoc in memoriam revoca: inimicus exprobravit, Domine; & populus inſipiens execratus eſt nomen tuum. Ne tradas populis, ſimilibus beſtiæ ſylveſtri, animas docentium Legem tuam: vitam pauperum tuorum ne obliviſcaris in perpetuum. Reſpice ad pactũ quod pepigiſti patribᵒ noſtris: quoniam impleti ſunt filii eorum obſcuritate ſeſe diffundẽte ſuper terrã, & violentia & rapinis. Non revertatur miſer confuſus: pauper & egenus laudabunt nomẽ tuũ. Surge Deus, age cauſam tuam: memento improperii *populi tui*, [*illati*] à rege ſtulto tota die. Ne obliviſcaris vocis moleſtantium te, fremitûs inſurgentium adverſum te, qui aſcendit jugiter.

Ad laudandum quo tempore dixit David, Ne deſtruas populum tuum, hymnus per manus Aſaph & canticum.

PSAL. LXXV.

CONfitemur tibi Deus, confitemur; & appropinquante *nomine tuo*, narraverunt miracula tua. Cùm *ſcivero* tempus, ego recta judicabo. Liquefacti ſunt incolæ terræ, & omnis habitator ejus, ego firmavi columnas ejus in perpetuum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

7 * ܘܐܘܩܕܘ ܒܢܘܪܐ ܡܩܕܫܟ: ܘܛܢܦܘ ܒܐܪܥܐ ܡܫܟܢܐ ܕܫܡܟ. * ܘܐܡܪܘ ܒܠܒܗܘܢ ܢܣܘܦ
8 ܐܟܚܕܐ: ܘܢܒܛܠ ܟܠܗܘܢ ܥܐܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. * ܐܬܘܬܗܘܢ ܠܐ ܚܙܘ: ܠܝܬ 9
10 ܬܘܒ ܢܒܝܐ. ܘܠܝܬ ܥܡܢ ܚܟܝܡܐ: * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܐܠܗܐ. ܢܚܣܕ ܒܥܠܕܒܒܐ
11 ܘܢܡܪܚ ܒܫܡܟ ܠܥܠܡ: * ܠܡܢܐ ܐܗܦܟܬ ܐܝܕܟ ܘܝܡܝܢܟ ܡܢ ܓܘ ܥܐܕܟ. * ܐܠܗܢ
12 ܡܠܟܐ ܗܘ: ܕܦܩܕ ܡܢ ܥܠܡ ܥܠ ܦܘܪܩܢܗ ܕܝܥܩܘܒ. * ܐܢܬ ܒܥܘܫܢܟ ܦܠܓܬ ܝܡܡܐ:
13 ܘܬܒܪܬ ܪܫܝܗܘܢ ܕܬܢܝܢܐ ܒܡܝܐ. * ܐܢܬ ܬܪܥܬ ܪܫܘܗܝ ܕܠܘܝܬܢ: ܘܝܗܒܬܝܗܝ ܡܐܟܘܠܬܐ 14
15 ܠܥܡܐ ܥܫܝܢܐ. * ܐܢܬ ܒܙܥܬ ܡܒܘܥܐ ܒܢܚܠܐ: ܐܢܬ ܐܘܒܫܬ ܢܗܪܘܬܐ ܥܫܝܢܬܐ.
16 * ܕܝܠܟ ܗܘ ܐܝܡܡܐ ܘܕܝܠܟ ܗܘ ܠܠܝܐ: ܐܢܬ ܐܬܩܢܬ ܢܘܗܪܐ ܘܫܡܫܐ. * ܐܢܬ ܐܩܝܡܬ
17 ܟܠܗܘܢ ܬܚܘܡܝܗ ܕܐܪܥܐ: ܩܝܛܐ ܘܣܬܘܐ ܐܢܬ ܒܪܝܬ. * ܐܬܕܟܪ ܡܪܝܐ ܚܣܕܗ 18
19 ܕܒܥܠܕܒܒܐ: ܥܡܐ ܣܟܠܐ ܐܪܓܙ ܠܫܡܟ. * ܠܐ ܬܬܠ ܠܬܒܪܐ ܢܦܫܐ ܕܡܘܕܝܐ ܠܟ: ܘܢܦܫܬܐ
20 ܕܡܣܟܢܝܟ ܠܐ ܬܛܥܐ ܠܥܠܡ. * ܚܘܪ ܡܪܝܐ ܒܩܝܡܟ: ܡܛܠ ܕܐܬܡܠܝ ܕܝܪܘܬܗ ܕܐܪܥܐ
21 ܚܫܘܟܐ ܘܥܘܠܐ. * ܠܐ ܢܬܒ ܡܣܟܢܐ ܟܕ ܒܗܝܬ: ܥܢܝܐ ܘܡܣܟܢܐ ܢܫܒܚܘܢ ܫܡܟ:
22 * ܩܘܡ ܐܠܗܐ ܘܕܘܢ ܕܝܢܟ: ܘܐܬܕܟܪ ܚܣܕܟ ܕܡܢ ܣܟܠܐ ܟܠܗ ܝܘܡܐ. * ܘܠܐ ܬܛܥܐ ܩܠܐ
23 ܕܒܥܠܕܒܒܝܟ: ܘܫܓܘܫܝܐ ܕܐܝܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ ܥܠܝܟ. ܕܣܠܩ ܒܟܠܙܒܢ.

* ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܪܫܐ ܕܡܣܩܬܐ *   * ܡܙܡܘܪܐ ܕܐܣܦ *

1 * ܕܐܣܦ ܢܒܝܐ. ܡܡܠܠܐ ܐܠܗܝܐ ܕܡܫܝܚܐ. ܘܡܥܗܕܢܘܬܐ ܕܕܝܢܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܒ.
2 * ܐܘܕܝܢܢ ܠܟ ܐܠܗܐ. ܐܘܕܝܢܢ ܠܟ ܘܩܪܝܢ ܫܡܟ: ܘܐܫܬܥܝܢ ܟܠܗܘܢ ܬܕܡܪܬܟ.
3 * ܡܛܠ ܕܐܫܟܚ ܙܒܢܐ ܘܐܢܐ ܒܬܪܝܨܘܬܐ ܐܕܘܢ: * ܬܬܡܟܟ ܐܪܥܐ ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ.
4 ܐܢܬ ܐܬܩܢܬ ܥܡܘܪܝܗ:

Et combuſſerunt igni ſanctuarium tuum: & polluerunt in terra habitaculum nominis tui. Dixerúntque in corde ſuo, Conſumamus eos ſimul, & perdamus omnes feſtivitates Dei in terra. Prodigia illarum non viderunt: non eſt ampliùs propheta, neque eſt nobiſcum ſapiens. Quouſque, Deus, improperabit inimicus, & irritabit nomen tuum in æternum? Quare retraxiſti manum tuam & dexteram tuam de medio feſtivitatis tuæ? Deus noſter rex eſt, qui mandâſti ab æterno de ſalute Jacob. Tu potentiâ tuâ diviſiſti maria, & fregiſti capita draconum in aquis. Tu contriviſti capita Leviathan, & dediſti eum eſcã populo forti. Tu perforâſti fontes in vallibus. Tu arefeciſti fluvios magnos. Tuus eſt dies, & tua eſt nox. Tu præparâſti lucem & ſolem. Tu ſtatuiſti omnes fines terræ. Æſtatem atque hyemem tu creâſti. Memento Domine improperii hoſtis: populus ſtolidus ad iram provocavit nomen tuũ. Ne des fracturæ animam confitentem tibi, & animas pauperum tuorum ne obliviſcaris in æternum. Reſpice Domine ad fœdus tuum, quoniam impletæ ſunt habitationes terræ tenebris & iniquitate. Ne ſedeat pauper confuſus; inopes ac pauperes laudabunt nomen tuum. Exurge Deus, & judica judicia tua: memórque ſis probri quotidiani quod à ſtultis: Et ne obliviſcaris vocem inimicorum tuorum, atque tumultum eorum qui ſurgunt adverſùm te: nam aſcendit omni tempore.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. LXXV.

Aſaphi prophetæ. Theologia de Chriſto: & memoratio judicii. Verſ. 22.

GRatias egimus tibi Deus, gratias egimus tibi, & invocavimus nomen tuũ, & narravimus univerſa miracula tua. Quia nanciſcar tempus & ego cum rectitudine judicabo, Humilietur terra & omnes habitatores ejus: tu diſpoſuiſti incolas ejus.

Verſio VULG. LAT.

7 Incenderunt igni Sanctuarium tuum :
in terra polluerunt tabernaculum nominis
8 tui. Dixerunt in corde ſuo, cognatio
eorum ſimul ; Quieſcere faciamus
omnes dies feſtos Dei à terra.
9 Signa noſtra non vidimus , jam non
eſt propheta : & nos non cognoſcet
10 amplius. Uſquequò, Deus, improperabit
inimicus : irritat adverſarius nomen
11 tuum in finem? Ut quid avertis
manum tuam, & dexteram tuam, de
12 medio ſinu tuo in finem? Deꝰ autē rex
noſter ante ſecula, operatus eſt ſalutem
13 in medio terræ. Tu confirmâſti in virtute
tua mare : contribulâſti capita
14 draconum in aquis. Tu confregiſti
capita draconis : dediſti eum eſcam
15 populis Æthiopum. Tu dirupiſti fontes,
& torrentes : tu ſiccâſti fluvios
16 Ethan. Tuus eſt dies, & tua eſt nox :
tu fabricatus es auroram & Solem.
17 Tu feciſti omnes terminos terræ: æſtatem
18 & ver tu plaſmâſti ea. Memor eſto
hujus, inimicus improperavit Domino:
& populus inſipiens incitavit nomen
19 tuum. Ne tradas beſtiis animas
confitentes tibi, & animas pauperum
20 tuorum ne obliviſcaris in finem. Reſpice
in teſtamentum tuum : quia repleti
ſunt, qui obſcurati ſunt terræ, domibus
21 iniquitatum. Ne avertatur humilis
factus confuſus: pauper & inops
22 laudabunt nomen tuum. Exurge, Deus,
judica cauſam tuam : memor eſto improperiorum
tuorum, eorum quæ ab
23 inſipiente ſunt totâ die. Ne obliviſcaris
voces inimicorum tuorum: ſuperbia
eorum , qui te oderunt, aſcendit
ſemper.

1 In finem, Ne corrumpas, Pſalmus
Cantici Aſaph. LXXIV.

2 Confitebimur tibi, Deus : confitebimur
, & invocabimus nomen
3 tuum. Narrabimus mirabilia tua: Cùm
accepero tempus, ego juſtitias judicabo.
4 Liquefacta eſt terra, & omnes qui
habitant in ea : ego confirmavi columnas
ejus.

Verſ GRÆC. LXX. Interp.

7 Ἐνεπύρισαν ἐν πυρὶ τὸ ἁγιαστήριόν σου εἰς τὴν
γῆν, ἐβεβήλωσαν τὸ σκήνωμα τοῦ ὀνόματός
8 σου. Εἶπαν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῶν, ἡ συγγένεια
αὐτῶν ἐπὶ τὸ αὐτὸ, Δεῦτε, καταπαύσωμεν τὰς
9 ἑορτὰς κυρίου ἀπὸ τῆς γῆς. Τὰ σημεῖα ἡμῶν
οὐκ εἴδομεν, οὐκ ἔστιν ἔτι προφήτης, καὶ ἡμᾶς οὐ
10 γνώσεται ἔτι. Ἕως πότε ὁ Θεὸς, ὀνειδιεῖ ὁ ἐχθρὸς,
παροξυνεῖ ὁ ὑπεναντίος τὸ ὄνομά σου εἰς τέλος;
11 Ἱνατί ἀποστρέφεις τὴν χεῖρά σου, καὶ τὴν δεξιάν
12 σου ἐκ μέσου τοῦ κόλπου σου εἰς τέλος; Ὁ δὲ
Θεὸς βασιλεὺς ἡμῶν πρὸ αἰῶνος, εἰργάσατο
13 σωτηρίαν ἐν μέσῳ τῆς γῆς. Σὺ ἐκραταίωσας ἐν
τῇ δυνάμει σου τὴν θάλασσαν, σὺ συνέτριψας
14 τὰς κεφαλὰς τῶν δρακόντων ἐπὶ τοῦ ὕδατος. Σὺ
συνέτριψας τὰς κεφαλὰς τοῦ δράκοντος, ἔδωκας
15 αὐτὸν βρῶμα λαοῖς τοῖς Αἰθίοψι. Σὺ διέῤῥηξας
πηγὰς καὶ χειμάῤῥους, σὺ ἐξήρανας ποταμοὺς
16 Ἠθάμ. Σή ἐστιν ἡ ἡμέρα, καὶ σή ἐστιν ἡ
17 νύξ, σὺ κατηρτίσω ἥλιον καὶ σελήνην. Σὺ ἐποίησας
πάντα τὰ ὅρια τῆς γῆς, θέρος καὶ ἔαρ σὺ
18 ἐποίησας. Μνήσθητι ταύτης τῆς κτίσεώς σου· ἐχθρὸς
ὠνείδισε τὸν κύριον, καὶ λαὸς ἄφρων παρώξυνε
19 τὸ ὄνομά σου. Μὴ παραδῷς τοῖς θηρίοις
ψυχὴν ἐξομολογουμένην σοι, τῶν ψυχῶν
20 τῶν πενήτων σου μὴ ἐπιλάθῃ εἰς τέλος. Ἐπίβλεψον
εἰς τὴν διαθήκην σου, ὅτι ἐπληρώθησαν
21 οἱ ἐσκοτωμένοι τῆς γῆς οἴκων ἀνομιῶν. Μὴ
ἀποστραφήτω τεταπεινωμένος καὶ κατῃσχυμμένος,
πτωχὸς καὶ πένης αἰνέσουσι τὸ ὄνομά σου.
22 Ἀνάστα ὁ Θεὸς, δίκασον τὴν δίκην σου, μνήσθητι
τῶν ὀνειδισμῶν σου τῶν ὑπὸ ἄφρονος ὅλην τὴν ἡμέραν.
23 Μὴ ἐπιλάθῃ τῆς φωνῆς τῶν ἱκετῶν σου,
ἡ ὑπερηφανία τῶν μισούντων σε ἀναβαίη διὰ
παντὸς πρὸς σέ.

1 Εἰς τὸ τέλος, μὴ διαφθείρῃς, ψαλμὸς ᾠδῆς
τῷ Ἀσάφ. οδʹ.

2 Ἐξομολογησόμεθά σοι ὁ Θεὸς, ἐξομολογησόμεθα,
καὶ ἐπικαλεσόμεθα τὸ ὄνομά σου. διηγήσομαι
3 πάντα τὰ θαυμάσιά σου. Ὅταν
4 λάβω καιρὸν, ἐγὼ εὐθύτητας κρινῶ. Ἐτάκη
ἡ γῆ, καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες αὐτὴν, ἐγὼ
ἐστερέωσα τοὺς στύλους αὐτῆς. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

8 Incenderunt in igne Sanctuarium 7
tuum : In terra polluerunt tabernaculum
nominis tui. 9 Dixerunt in corde 8
ſuo, cognatio eorum ſimul; (g) Heus,
quieſcere faciamus ſolennitates Domini
à terra. 10 (h) Signa noſtra 9
non vidimus : jam non eſt amplius
propheta, [c] & nos non cognoſcet
(i) ampliùs. 11 Uſquequò, Deus, 10
improperabit inimicus? irritabit adverſarius
nomen tuum in finem?
12 Ut quid [d] avertis manum tuam, 11
et dexteram tuam de medio ſinu tuo
in finem? 13 Deus autem rex noſter 12
ante ſeculum : operatus eſt ſalutem
in medio terræ. 14 Tu confirmâſti 13
in virtute tua mare : tu contriviſti
capita (k) draconum in (l) aqua. 15 Tu 14
(m) contriviſti capita (n) draconis:
dediſti eum eſcam populis Æthiopibus.
16 Tu dirupiſti (o) fontes, & 15
[e] torrentes : tu ſiccâſti fluvios (p)
Etham. 17 Tuus eſt dies, & tua eſt 16
nox : tu perfeciſti (q) Solem, & Lunam.
18 Tu (r) feciſti [f] omnes (ſ) 17
terminos terræ : æſtatem & ver tu
feciſti. 19 Memor eſto hujus (t) creaturæ 18
tuæ : inimicus improperavit
Domino : & populus impudens exacerbavit
nomen tuum: 20 Ne tradideris 19
beſtiis animam confitentem
tibi : animas pauperum tuorum ne
obliviſcaris in finem. 21 Reſpice in 20
teſtamentum tuum : quoniam repleti
ſunt, qui obſcurati ſunt terræ, domibus
(u) iniquitatum. 22 Ne avertatur 21
(x) [g] humilis factus, & confuſus
: egenus & pauper laudabunt
nomen tuum. 23 Exurge, Deus, [h] 22
judica cauſam (y) tuam : memento
opprobriorum tuorum , eorum quæ
ab imprudente ſunt totâ die. 24 Ne 23
obliviſcaris vocem (z) [i] deprecantium
te : ſuperbia eorum, qui te oderunt,
(aa) aſcendat ſemper ad te.

In finem, Ne (a) corrumpas, (b) [a] 1
Pſalmus Cantici ipſi Aſaph.

LXXIV.

1 [b] Confitebimur tibi, Deus, (c) 2
[c] confitebimur, & invocabimus
nomen tuum. 2 (d) [d] Enarrabo omnia
mirabilia tua : (e) Cùm accepero 3
[e] tempus, [f] ego juſtitias
judicabo. 3 Liquefacta eſt terra, & 4
omnes inhabitantes in ea : ego confirmavi
columnas ejꝰ. DIAPSALMA.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወአውዐዩ ፡ በእሳት ፡ መቅደሰከ፡፡ወአርኰሱ፡ 8
ማኅደረ፡ ስምከ፡ ውስተ፡ ምድር፡፡=፡ ወይ 9
ቤሉ፡ በልቦሙ፡ ኅቢሮሙ፡ በበሕዘቢሆሙ፡፡ ን
ዑ፡ ንሠዐር፡ኵሎ፡ በዓላቲሁ፡ ለእግዚአብሔ
ር፡ እምድር፡፡=፡ ወትእምርቶሂ፡ ኢናእም 10
ር፡፡ ወአልቦ ፡ እንከ፡ነቢይ ፡፡ ወኒሕነሂ፡ ኢናአ
ምር፡ እንከ፡፡=፡ እስከ፡ ማእዜኑ፡ እንከ፡ እ 11
ግዚኦ፡ ይጼእል፡ ፀሩዊ፡፡ወዘልፈ፡ ያምዕዖ ፡ ለ
ስምከ፡ ጸላኢ፡፡=፡ ለምንት፡ እግዚኦ፡ ትሜ 12
ይጥ፡ እዴከ፡፡ወየማንከ፡ ማእከለ፡ ሕፅንከ፡ ለ
ግሙራ፡፡=፡ ወእግዚአብሔር፡ ንጉሥ፡ ውእ 13
ቱ፡እምቅድመ፡ ዓለም፡፡ ወገብረ፡ መድኀኒተ፡
በማእከለ ፡ ምድር፡፡=፡ አንተ ፡ አጽናዕከ፡ 14
ለባሕር ፡ በኀይልከ፡፡ወአንተ ፡ ሰበርከ፡ ርእሰ፡
ከይሲ ፡ በውስተ ፡ ማይ፡፡ ወአንተ ፡ ቀጥቀጥ 15
ከ፡ አርእስቲሁ ፡ ለከይሲ፡፡ ወወሀብኮሙ፡ ሲሰ
ዮሙ፡ ለሕዝበ፡ ኢትዮጵያ፡፡=፡ አንተ፡ሰጠ 16
ቀ፡ አፍላገ፡ ወአንቅዕተ፡፡=፡ ለከ፡ውእቱ፡መ 17
ዓልት፡ወዚአከ፡ ሌሊት፡፡አንተ፡ ፈጠርከ፡ ፀሐ
የ፡ ወወርኃ፡፡=፡ ወአንተ፡ ገበርከ ፡ አድባረ፡ 18
ወምድረ ፡ ኵሎ፡፡ክረምተ ፡ ወሐጋየ ፡ አንተ፡
ፈጠርከ፡፡=፡ ወተዘከር ፡ ዘንተ፡ ተግብረከ፡፡ 19
ፀሩዊ ፡ ተዐየሮ፡ ለእግዚአብሔር፡፡ወሕዝብ፡
አብድ ፡ አምዕዖ ፡ ለስሙ፡፡=፡ ወኢትመጥ 20
ዋ፡ለአራዊት፡ነፍሰ፡ እንተ፡ ተገኒ፡ለከ፡፡ ወኢት
ርሳዕ ፡ ነፍሰ፡ ነዳያኒከ፡ ለዝሉፉ፡፡=፡ ወነጽ 21
ር፡ውስተ፡ሠርዓትከ፡፡እስመ፡ በዝኁ፡ ጽሉማ
ነ፡ ምድር ፡ እብያተ ፡ ኃጥአን፡፡=፡ ኢይግባ 22
ዕ፡ ነደይ ፡ ተኀፊሮ፡፡ነዳይ ፡ ወምስኪን፡ ይሴብ
ሑ፡ ለስምከ፡፡=፡ ተንሥእ፡ እግዚኦ፡ ወተበ 23
ቀል፡በቀልየ፡፡ወተዘከር፡ ዘተዐየሩከ፡ አብዳን፡
ኵሎ ፡ አሚረ፡፡=፡ ኢትርሳዕ ፡ ቃለ፡ አግብ 24
ርቲከ፡፡ትዝኅርቶሙ ፡ ለጸላእትከ ፡ ይዐርግ፡
ኀቤከ፡በኵሉ፡ጊዜ፡፡=፡

ፍጻሜ፡ኢታማስን፡ዘአሳፍ፡
መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

ሮዐ እገኒ ፡ ለከ ፡ እግዚኦ፡፡እገኒ፡ ለከ ፡ ወእ 1
ጼውዕ ፡ ስምከ፡፡=፡ ወእነግር ፡ ኵሎ ፡ ስብ 2
ሐቲከ፡፡ ሶበ፡ ረከብኩ ፡ ጊዜሁ ፡፡ ወአንሰ፡ ጽ
ድቀ ፡ እኴንን፡፡=፡ ወተመስወት ፡ ምድር ፡ 3
ወኵሎሙ፡ እለ፡ይነብሩ፡ ውስቴታ፡፡ወአነ፡ አ
ጽናዕኩ ፡ አዕማዲሃ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] ac proinde nos non cognoſcemus [d] Domine avertis [e] torrentes : Tuus eſt dies [f] montes & univerſam terram : hyemem & æſtatem tu [g] humilis factus confuſus : [h] ſume vindictam meam: [i] ſervorum tuorum : *PSAL. LXXIV.* [a] ipſi Aſaph, Pſalmus David. [b] Confitebor [c] confitebor tibi, & invocabo [d] Et enarrabo omnem laudem tuam : [e] tempus ejus, [f] ego etiam

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* أحرقوا موضعك المقدس بالنار * نجسوا مسكن اسمك على الأرض * قال كل جنسهم في 7 8
قلوبهم جميعا * هلموا فلنبطل جميع أعياد الله من على الأرض * آياتنا لم نرها وليس 9
نبي موجود * ولا من يعرفنا بعد * إلى متى يا الله يعير العدو المقاوم لنا * يغضب اسمك 10
إلى الغاية * لماذا تردد يدك ويمينك من وسط حضنك إلى الانقضاء * والله هو ملكنا قبل 11 12
الدهور * صنع خلاصا في وسط الأرض * أنت ثبت البحر بقوتك * أنت حطمت رؤوس التنين 13 14
في المياه * أنت سحقت رأس التنين * وأعطيته طعاما لشعب الحبش * أنت فجرت العيون 15
والأودية * أنت جففت أنهارا جارية * النهار هو لك * الليل أيضا هو لك * أنت أتقنت الشمس 16
والقمر * أنت خلقت جميع حدود الأرض * الصيف والربيع أنت خلقتهما * فاذكر خليقتك 17 18
هذه * فإن العدو عير الرب * والشعب الجاهل أسخط اسمك * لا تسلم للسباع نفسا عارفة بك 19
لا تنس نفوس مساكينك إلى الغاية * انظر إلى عهدك * فإن مظلمي الأرض قد ملؤوا البيوت 20
إثما * لا يرجع المتواضع خازيا * المسكين والبائس يعبدون اسمك * قم يا الله فاحكم 21 22
لظلامتي * واذكر ما صنعه الجاهل من تعييراتك النهار أجمع * لا تنس صوت الذين 23
يدعونك * فقد ارتفع إليك تعاظم مبغضيك في كل حين * الليلويا *

* المزمور الرابع والسبعون * تسبحة لآساف * وعدده ك استيخن 1
* نشكرك يا الله * ونعترف لك وندعو اسمك ونخبر بجميع عجائبك * إذا أعطيت أجلا * فأنا 2 3
أحكم بالاستقامة * انحلت الأرض وكل سكانها * أنا ثبت عمدها * 4

Incenderunt locum tuum ſanctum igne : 7
polluerunt habitaculum nominis tui ſuper
terram. Dixit totum genus eorum in cordibus 8
ſuis ſimul, Venite, abrogemus omnes
dies feſtos Dei de terra. Signa noſtra non 9
vidimus, & non eſt propheta exiſtens, nec
qui agnoſcat nos ampliùs. Quouſque, O 10
Deus, improperabit inimicus adverſarius
nobis? irritabit nomen tuum ad extremum?
Quarè avertis manum tuam & 11
dexteram tuam de medio ſinu tuo uſque
ad conſummationem? Et Deus eſt rex noſter 12
ante ſecula, operatus eſt ſalutem in
medio terræ. Tu ſtitiſti mare virtute tuâ: 13
tu confregiſti capita draconis in aquis. Tu 14
contriviſti caput draconis, & dediſti eum
eſcam populo Æthiopum. Tu diſrupiſti 15
fontes & torrentes : tu ſiccâſti fluvios
decurrentes. Dies, eſt tuus : nox etiam, 16
tua eſt : tu condidiſti ſolem & lunam. Tu 17
creâſti omnes terminos terræ : æſtatem &
ver tu creâſti. Igitur memento creaturæ 18
tuæ hujus : quandoquidem inimicus improperavit
Domino, & populus inſipiens
ad iram provocavit nomen tuum. Ne tradas 19
feris animam cognoſcentem te: ne obliviſcaris
animarum pauperum tuorum in
finem. Reſpice in pactum tuum : quoniam 20
obſcuriſſimi terræ jam impleverunt domos
iniquitate. Ne revertatur humilis 21
confuſus : pauper & inops adorabunt nomen
tuum. Exurge, O Deus, & judica 22
oppreſſionem meam : & in memoriam revoca
quales fecerit inſanus tibi injurias
die totâ. Ne obliviſcaris vocem eorum 23
qui te invocant , jam enim aſcendit ad te
ſuperbia oſorum tuorum in omni momento.
Alleluja.

PSAL. LXXIV.

Canticū Aſapho. Et num. ver. 20. 1

Gratias agemus tibi, O Deus, & confitebimur 2
tibi, & invocabimus nomen
tuum, & annuntiabimus cuncta miracula
tua. Quum naciſcar tempus, ego judicabo 3
cum rectitudine. Diſſoluta eſt terra 4
& omnes habitatores ejus, ego confirmavi
columnas ejus.

תהלים : עו עז

exaltetis Ne , impiis & : infaniatis Ne , infanis Dixi
5 אָמַרְתִּי לַהוֹלְלִים אַל־תָּהֹלּוּ וְלָרְשָׁעִים אַל־תָּרִימוּ
collo in loquamini: vestrum cornu excelsum in extollatis Ne .cornu
6 קָרֶן׃ אַל־תָּרִימוּ לַמָּרוֹם קַרְנְכֶם תְּדַבְּרוּ בְצַוָּאר
deserto à nec : Occidente ab & , exitu ab non Quia .*præfracto*
7 עָתָק׃ כִּי לֹא מִמּוֹצָא וּמִמַּעֲרָב וְלֹא מִמִּדְבַּר
hunc & ,humiliabit hunc : judicans Deus Quoniam .*montium*
8 הָרִים׃ כִּי־אֱלֹהִים שֹׁפֵט זֶה יַשְׁפִּיל וְזֶה
,mixto plenus,rubuit vinum &,Domini manu in calix Quia.exaltabit
9 יָרִים׃ כִּי כוֹס בְּיַד־יְהוָה וְיַיִן חָמַר ׀ מָלֵא מֶסֶךְ
omnes bibent , expriment ejus fæces Veruntamen .hoc ex effudit &
וַיַּגֵּר מִזֶּה אַךְ־שְׁמָרֶיהָ יִמְצוּ יִשְׁתּוּ כֹּל
Deo cantabo : seculum in annunciabo ego Et .terræ impii
10 רִשְׁעֵי־אָרֶץ׃ וַאֲנִי אַגִּיד לְעֹלָם אֲזַמְּרָה לֵאלֹהֵי
exaltabuntur : *concidam* impiorum cornua omnia Et .Jahacob
11 יַעֲקֹב׃ וְכָל־קַרְנֵי רְשָׁעִים אֲגַדֵּעַ תְּרוֹמַמְנָה
.justi cornua
קַרְנוֹת צַדִּיק׃

PSAL. LXXVI עו

Jehudah in Notus .canticum Asaph ipsi cantus ,*modulis* in Victori
1 2 לַמְנַצֵּחַ בִּנְגִינֹת מִזְמוֹר לְאָסָף שִׁיר׃ נוֹדָע בִּיהוּדָה
Salem in fuit Et .ejus nomen magnum Israel in : Deus
3 אֱלֹהִים בְּיִשְׂרָאֵל גָּדוֹל שְׁמוֹ׃ וַיְהִי בְשָׁלֵם
confregit Ibi .Sijon in ejus habitatio & : ejus tabernaculum
4 סֻכּוֹ וּמְעוֹנָתוֹ בְצִיּוֹן׃ שָׁמָּה שִׁבַּר
Illustris .Selah , bellum ac ,gladium &,scutum :arcus *ignita jacula*
5 רִשְׁפֵי־קָשֶׁת מָגֵן וְחֶרֶב וּמִלְחָמָה סֶלָה׃ נָאוֹר
fortes fuerunt Spoliati .*prædæ* montibus præ potens : tu
6 אַתָּה אַדִּיר מֵהַרְרֵי־טָרֶף׃ אֶשְׁתּוֹלְלוּ ׀ אַבִּירֵי
roboris viri omnes invenerũt non &:*suum somnum* dormitaverũt,corde
לֵב נָמוּ שְׁנָתָם וְלֹא־מָצְאוּ כָל־אַנְשֵׁי־חַיִל
,currus &,est soporatus:Jahacob Deus *tua increpatione Ab* .*suas manus*
7 יְדֵיהֶם׃ מִגַּעֲרָתְךָ אֱלֹהֵי יַעֲקֹב נִרְדָּם וְרֶכֶב
tunc ex ,*tuas facies ad* stabit quis & : *tu* terribilis Tu .equus &
8 וָסוּס׃ אַתָּה ׀ נוֹרָא אַתָּה וּמִי־יַעֲמֹד לְפָנֶיךָ מֵאָז
.quievit & timuit terra :judicium fecisti audire cœlis E ? tua *naris*
9 אַפֶּךָ׃ מִשָּׁמַיִם הִשְׁמַעְתָּ דִּין אֶרֶץ יָרְאָה וְשָׁקָטָה׃
,terræ *mansuetos* omnes *servandum ad* ,Deus judicium ad *surgendo In*
10 בְּקוּם־לַמִּשְׁפָּט אֱלֹהִים לְהוֹשִׁיעַ כָּל־עַנְוֵי־אֶרֶץ
irarum residuum :tibi confitebitur hominis *fervor* Quoniam .Selah
11 סֶלָה׃ כִּי־חֲמַת אָדָם תּוֹדֶךָּ שְׁאֵרִית חֵמֹת
:ejus *circuitu* omnes vestro Deo Domino reddite &,Vovete .accinges
12 תַּחְגֹּר׃ נִדְרוּ וְשַׁלְּמוּ לַיהוָה אֱלֹהֵיכֶם כָּל־סְבִיבָיו
terribilis : ducum spiritum *Amputabit* .terribili munus afferant
13 יוֹבִילוּ שַׁי לַמּוֹרָא׃ יִבְצֹר רוּחַ נְגִידִים נוֹרָא
.terræ regibus
לְמַלְכֵי־אָרֶץ׃

PSAL. LXXVII. עז

.cantus Asaph ipsi , Iduthun *super* Victori
1 לַמְנַצֵּחַ עַל־יְדִיתוּן לְאָסָף מִזְמוֹר׃

תרגום TARGUM.

5 אמרית למתלעבין לא תתלעבון ורשיעיא לא תרימון
6 איקר : לא תרימון למרומא איקרכון אתון די ממללין
7 בתוקפא ובנדופין : ארום לית בר מני ממדנחא ועד
מערבא ולא מן צפונא דמדבריא ומן דרומא אתר טוריא :
8 9 ארום אלהא דין זכי דנן ימאיך ודנן ירומם : ארום כס
דלוט ביד יי וחמר עשין מלי מזיגת מררתא לטלטלא
מדעת די רשיעיא ומה דשדי מניה קשי מן דין קדמאין
ברם דורדיהא ופקטיהא ימצון ישתין כל רשיעי ארעא :
10 11 ואנא אתני לעלם נסיא אשבח לאלהא דיעקב : וכל
תקוף רום רשיעיא אמאיך אתלשנון מתוקפהון יתרומם
תקוף רומהון דצדיקיא :

עו

1 לשבחא בתשבחתא תשבחא על ידא דאסף שירא :
2 אתידע בדבית יהודה אלהא בדבית ישראל רב שמיה :
3 והוה בירושלם בית מקדשיה ומדור בית שכינת קודשיה
4 בציון : כד עבדו בית ישראל רעותיה אשרי שכנתיה
ביניהון תמן תבר גררין וקשתין דעמיא מגיחי קרבא
5 תריסא וסדרי קרבא בטל לעלמין : נהיר דחיל את אלהא
משבח מן בית מקדשך יזוען מן קדמך מלכיא דיתבין
6 בכרכי טוריא אתר בית כנישות בותהון : אשלחון
מעלויהון זיני קרבא גברי לבא אתנמנמו בשנתהון ולא
7 ספיקו כל גברי חילא למיחד זיניהון בידיהון : ממזופתך
8 אלהא דיעקב דמכון ארתיכין ופרשין אתעקרו : את דחיל
9 את הוא אלהא ומן יקום קדמך מעדן דיתקיף רוגזך : מן
שמיא אשמעתא דין ארעא דעממי דחילת וארעא דישראל
10 שדוכת : אמרין צדיקיא יקום לדינא עם רשיעיא אלהא
11 למפרק מן ידהון כל עינותני ארעא לעלמין : כד אנת
רגז על עמך אנת מרחם עליהון והנון יודון לשמך ושארא
דרתחא דאשתאר לך מן רוגזא די רגזתא תזריז לחבלא
עמיא : [תא ארום כד יתקוף רוגזך על עמך יתובון ויודון
לשמך ואנת תאב מן רוגזא ברם על שאר עמיא מני רוגזא
12 תזריז] : נדרו נדרין ושלימו קדם יי אלהכון כל דיתבין
חזור חזור למקדשיה ייתון קורבניא לבית מוקדש דחיל :
13 יזער נסות רוחהון דרברבניא דחילא על כל מלכי
ארעא :

עז

1 לשבחא על יד ידותון לאסף תושבחא :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Dixi ſubſannatorib⁹, Ne derideatis : & im
ne extollatis cornu. Ne extollatis in excel
gloriam veſtram, vos loquentes in fortitu
& opprobriis. Quoniam non eſt ali⁹ præter
ab Oriente uſq; ad Occidentem, à Septentrio-
ne *deſertorũ* & ab Auſtro loco montium. Quo-
niam Deus eſt judex juſtus; hunc humiliabit, &
illum exaltabit. Quoniam calix maledictio-
eſt in manu Dñi, & vinum forte, plenum mix-
one amaritudinis ad tollendam ſcientiam im
orum: quod verò projecit ab illo, *durius eſt*
priorum: fæces autem & amurcas ej⁹ fugent &
epotabunt omnes impii terræ. Ego autem na
rabo in æternum miracula illa, laudabo Deum
Jaacob. Et *omnem* fortitudinem excelſam im-
piorũ humiliabo: *evellam eos* à fortitudine ſua
exaltabitur robur ſublimitatis *juſtorum.*

Ad laudandum in laude, Pſalmus per manum
Aſaph, [&] canticum. PSAL. LXXVI.

NOtus eſt in domo Jehudah Deus; in domo
Iſraelis magnum nomen ej⁹. Et fuit in Je
ruſalem domus ſanctuarii ejus, & habitaculum
majeſtatis *ſancta* ej⁹ in Sion. Quando fecit do
mus Iſrael voluntatem ejus, locavit majeſtatem
ſuam inter eos : ibi confregit ſagittas & arcu
populorum præliantium: *ſcutũ*, aciéſq; belli de
ſtruxit in perpetuum. *Splendidus*, timendus tu
Deus, laudatus à domo ſanctuarii tui ; contre
miſcant ab aſpectu tuo reges, habitantes in ar
cib⁹ montium, loco dom⁹ congregationis præ
dæ ipſorum. Abjecerunt à ſe arma bellica for
tes corde , dormitarunt in *ſomno ſuo*, & non
valuerunt omnes *viri roboris* apprehendere ar
ma ſua manib⁹ ſuis. Ab increpatione tua Deus
Jaacob dormierunt, currus & equites ſunt ſub
verſi. Tu timend⁹ es, *tu ipſe Deus*, & quis ſtabit
coram te *ex* tempore quo exarſerit furor tuus
De cœlis audiri feciſti judiciũ: terra nationum
timuit; [*ſed*] terra Iſrael quievit. Dicunt juſt
Exurgat ad judiciũ cum impiis De⁹, ut redimat
de manib⁹ eorũ omnes mites terræ in perpetuũ
Cum tu iraſceris in populũ tuũ, tu ej⁹ miſereris
ipſi verò confitebuntur nomini tuo ; at reliqu
furoris quod remanſit tibi ab ira qua irat⁹ fuiſt
præparabis ad diſperdendas gentes. *Targũ a*
ud: Nã cùm excanduerit ira tua in populũ tuũ
convertentur & confitebuntur nomini tuo ;
quoq; pœnitebit iræ: at in reliquos populos arma
furoris apparabis. Vovete vota & reddite co
rã Dño Deo veſtro: oẽs qui habitant in circu
tu ſanctuarii ej⁹ adducant oblationem in dom
ſanctuarii terribilis. Comprimet tumoré ſpirit
magnatũ, [*Deus*] timend⁹ ſuper oẽs reges terræ.

Ad laudandum per manum Idutun ipſi Aſaph
hymnus PSAL. LXXVII.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

*ܐܡܪܬ ܠܣܟܠܐ ܠܐ ܬܣܟܠܘܢ. ܘܠܥܘܠܐ ܠܐ ܬܪܝܡܘܢ ܩܪܢܐ: *ܘܠܐ ܬܪܝܡܘܢ ܠܡܪܘܡܐ 5
ܩܪܢܟܘܢ. ܘܠܐ ܬܡܠܠܘܢ ܒܨܘܪܐ ܙܩܝܦܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܦܩܐ ܡܢ ܡܥܪܒܐ. ܘܐܦܠܐ ܡܢ ܡܕܒܪܐ 6 7
ܕܛܘܪܐ: * ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܕܝܢܐ. ܠܗܢܐ ܡܡܟܟ ܘܠܗܢܐ ܡܪܝܡ: * ܡܛܠ ܕܟܣܐ ܒܐܝܕܗ 8 9
ܕܡܪܝܐ. ܘܡܠܐ ܡܙܓܐ ܕܚܡܪܐ ܥܟܝܪܐ: ܘܐܨܠܝ ܡܢ ܗܢܐ ܠܗܢܐ. ܒܪܡ ܫܘܡܪܘܗܝ ܢܡܨܘܢ ܘܢܫܬܘܢ
ܟܠܗܘܢ ܪܫܝܥܐ ܕܐܪܥܐ: * ܘܐܢܐ ܐܚܐ ܠܥܠܡ. ܘܐܙܡܪ ܠܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ: * ܘܟܠܗܘܢ ܩܪܢܬܐ 10 11
ܕܪܫܝܥܐ ܐܦܣܘܩ. ܘܢܬܬܪܝܡܢ ܩܪܢܬܗܘܢ ܕܙܕܝܩܐ. * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܥܗ *

*ܕܐܣܦ. ܟܕ ܐܬܚܪܒܬ ܪܒܬ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܘܡܘܕܥ ܬܘܒ ܠܬܒܥܬܐ ܕܥܠ ܪܫܝܥܐ ܕܕܝܢܐ 1
ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܒ. * ܝܕܝܥ ܒܝܗܘܕܐ ܐܠܗܐ. ܘܒܐܝܣܪܐܝܠ ܪܒ ܫܡܗ: 2
* ܘܗܘܐ ܒܫܠܝܡ ܡܛܠܠܗ. ܘܡܥܡܪܗ ܒܨܗܝܘܢ: * ܬܡܢ ܬܒܪ ܕܪܥܐ ܕܩܫܬܐ. ܙܝܢܐ 3 4
ܘܣܝܦܐ ܒܩܪܒܐ: * ܫܘܒܚܐ * ܢܗܝܪ ܐܢܬ ܘܡܫܝܚ ܡܢ ܛܘܪܟ ܚܝܠܬܢܐ. 5
* ܐܬܕܠܚܘ ܟܠܗܘܢ ܣܟܠܝ ܠܒܐ: ܘܕܡܟܘ ܫܢܬܗܘܢ ܓܒܪܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ 6
ܐܝܕܝܗܘܢ. * ܡܢ ܟܐܪܟ ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ: ܢܡܘ ܪܟܒܝ ܪܟܫܐ * ܘܐܢܬ ܕܚܝܠ ܐܢܬ. ܡܢܘ 7 8
ܢܩܘܡ ܩܕܡܝܟ ܒܗܢܐ ܪܘܓܙܐ: * ܡܢ ܫܡܝܐ ܐܫܡܥܬ ܕܝܢܐ. ܐܪܥܐ ܚܙܬ ܘܐܬܬܙܝܥܬ: * ܡܐ 9 10
ܕܩܡ ܐܠܗܐ ܠܕܝܢ. ܘܠܡܦܪܩܘ ܠܟܠܗܘܢ ܡܣܟܢܝ ܐܪܥܐ: * ܡܛܠ ܕܬܪܥܝܬܗ ܕܒܪܢܫܐ 11
ܬܘܕܐ ܠܟ. ܘܫܪܟܐ ܕܚܡܬܗ ܢܥܒܪ ܪܘܓܙܐ: * ܢܕܪܘ ܘܫܠܡܘ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܟܠ 12
ܕܚܕܪܝܢ ܠܗ ܢܝܬܘܢ ܩܘܪܒܢܐ ܠܕܚܝܠܐ: * ܘܡܡܟܟ ܪܘܚܐ ܕܫܠܝܛܢܐ ܘܕܚܝܠ 13
ܠܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ: * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܥܘ *

*ܕܐܣܦ. ܥܠ ܡܓܪܬ ܪܘܚܗ ܕܐܠܗܐ ܘܥܠ ܬܕܡܪܬܗ. ܘܐܝܟܢܐ ܙܟܐ 1
ܕܘܝܕ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܡܒ.

Tu dixiſti ſtultis, Ne deſipiatis: & impiis, Ne
attollatis cornu, Et ne attollatis in ſublime
cornu veſtrum, neve loquamini collo erecto.
Nam non eſt evaſio ab Occidente, neq; à de-
ſerto montium : Siquidem Deus eſt judex
hunc deprimit, illum autem extollit. Nam
calix in manu Domini, & plenus eſt miſtione
vini fæculenti : inclinavit ab hoc ad illum
fæcem ejus exugent ac bibent omnes impii
terræ. Ego verò vivam in æternum, & can-
tabo Deo Jacob. Et omnia cornua impiorum
præcidam, & extollentur cornua juſtorum.

PSAL. LXXVI.

Aſaphi. Quum vaſtata fuit Rabbath filio-
rum Amnon. Præterea indicat ultionem ju-
dicii Chriſti adverſus impios. Verſ. 12.

NOtus eſt in Judha Deus, & in Iſrael ma-
gnum nomen ejus. Erit in Salim taber-
naculum ejus, & habitatio illius in Sion. Ibi
confregit brachia arcuum, arma, & gladium in
bello. * *Diapſalma.* * Splendens es &
unguentis delibutus de monte tuo Potentiſ-
ſime; Conturbati ſunt omnes inſipientes cor-
de, & dormierunt ſomnum ſuum viri ma-
gnanimi, & non potuerunt manus eorum. Ob
increpationem tuam Deus Jacob. Conſopiti
ſunt conſcendentes equos : Et tu terribilis es:
quis conſiſtat coram te in tali iracundia? De
cœlo audire feciſti judicium : terra vidit &
expavit, Cùm exurget Deus ad judicandum,
& ad ſalvandos omnes pauperes terræ. Nam
conſilium hominis confitebitur tibi, & reſi-
duum furoris ejus amovebit iram. Vovete &
perſolvite Domino Deo veſtro ; omnes qui
circumaſſiſtunt illi, afferant munera terribi-
Deprimenti ſpiritum principum, & metuen-
do regibus terræ.

PSAL. LXXVII.

Aſaphi. De longanimitate Dei, & mirabi-
lis ejus. Et quomodo vicerit David inimicos
Domini. Verſus 42.

Verſio VULG. LAT.

5 Dixi iniquis, Nolite iniquè agere: &
delinquentib⁹, Nolite exaltare cornu.
6 Nolite extollere in altũ cornu veſtrũ:
nolite loqui adverſùs Deũ iniquitatẽ.
7 Quia neq; ab Oriente, neq; ab Occi-
8 dente, neq; à deſertis mõtib⁹: Quoniã
De⁹ judex eſt. Hunc humiliat, & hunc
9 exaltat: Quia calix in manu Dñi vini
meri plenus miſto. Et inclinavit ex hoc
in hoc: veruntamen fæx ejus non eſt
exinanita: bibent omnes peccatores
10 terræ. Ego autem annuntiabo in ſecu-
11 lum: cantabo Deo Jacob. Et omnia
cornua peccatorum confringam: &
exaltabuntur cornua juſti.

1 In finem, in Laudibus, Pſalmus Aſaph, Canticum ad Aſſyrios. LXXV.

2 NOtus in Judæa Deus: in Iſrael ma-
3 gnum nomen ejus. Et factus eſt in
pace locus ejus: & habitatio ejus in
4 Sion. Ibi confregit potentias arcuum,
5 ſcutum, gladium, & bellum. Illumi-
nans tu mirabiliter à montibus æter-
6 nis: Turbati ſunt omnes inſipientes
corde. Dormierunt ſomnum ſuum: &
nihil invenerunt omnes viri divitia-
7 rum in manibus ſuis. Ab increpatione
tua, Deus Jacob, dormitaverunt qui a-
8 ſcenderunt equos. Tu terribilis es, &
9 quis reſiſtet tibi? ex tunc ira tua. De
cœlo auditum feciſti judicium: terra
10 tremuit & quievit, Cùm exurgeret in
judicium De⁹, ut ſalvos faceret omnes
11 manſuetos terræ. Quoniam cogitatio
hominis confitebitur tibi: & reliquiæ
cogitationis diem feſtum agent tibi.
12 Vovete, & reddite Domino Deo ve-
ſtro, omnes qui in circuitu ejus af-
13 fertis munera, Terribili Et ei qui au-
fert ſpiritum principum, terribili apud
reges terræ.

In finem, pro Idithun, Pſalmus Aſaph. LXXVI.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

5 Εἶπα τοῖς παρανομοῦσι, μὴ παρανομεῖν, καὶ τοῖς
6 ἁμαρτάνουσι, Μὴ ὑψοῦτε κέρας. Μὴ ἐπαίρετε
εἰς ὕψος τὸ κέρας ὑμῶν, μὴ λαλεῖτε κατὰ τοῦ Θεοῦ
7 ἀδικίαν. Ὅτι οὔτε ἀπὸ ἐξόδων, οὔτε ἀπὸ δυ-
8 σμῶν, οὔτε ἀπὸ ἐρήμων ὀρέων, Ὅτι ὁ Θεὸς κρι-
9 τής ἐστι· τοῦτον ταπεινοῖ, καὶ τοῦτον ὑψοῖ. Ὅτι
ποτήριον ἐν χειρὶ κυρίου, οἴνου ἀκράτου πλῆρες κε-
ράσματος· καὶ ἔκλινεν ἐκ τούτου εἰς τοῦτο, πλὴν
ὁ τρυγίας αὐτοῦ οὐκ ἐξεκενώθη· πίονται πάντες
10 οἱ ἁμαρτωλοὶ τῆς γῆς. Ἐγὼ δὲ ἀγαλλιάσομαι
11 εἰς τὸν αἰῶνα, ψαλῶ τῷ Θεῷ Ἰακώβ. Καὶ πάν-
τα τὰ κέρατα τῶν ἁμαρτωλῶν συγκλάσω, καὶ ὑψω-
θήσεται τὰ κέρατα τοῦ δικαίου.

1 Εἰς τὸ τέλος ἐν ὕμνοις, ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ· ᾠδὴ πρὸς τὸν Ἀσσύριον. οε´.

2 ΓΝωστὸς ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ ὁ Θεὸς, ἐν τῷ Ἰσραὴλ
3 μέγα τὸ ὄνομα αὐτοῦ. Καὶ ἐγενήθη ἐν εἰρή-
νῃ ὁ τόπος αὐτοῦ, καὶ τὸ κατοικητήριον αὐτοῦ ἐν
4 Σιών. Ἐκεῖ συνέτριψε τὰ κράτη τῶν τόξων, ὅ-
πλον καὶ ῥομφαίαν καὶ πόλεμον. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
5 Φωτίζεις σὺ θαυμαστῶς ἀπὸ ὀρέων αἰωνίων,
6 Ἐταράχθησαν πάντες οἱ ἀσύνετοι τῇ καρδίᾳ·
ὕπνωσαν ὕπνον αὐτῶν, καὶ οὐχ εὗρον οὐδὲν πάντες
7 οἱ ἄνδρες τοῦ πλούτου ταῖς χερσὶν αὐτῶν. Ἀπὸ ἐπι-
τιμήσεώς σου ὁ Θεὸς Ἰακώβ, ἐνύσταξαν οἱ ἐπι-
8 βεβηκότες τοὺς ἵππους. Σὺ φοβερὸς εἶ, καὶ τίς
9 ἀντιστήσεταί σοι ἀπὸ τῆς ὀργῆς σου; Ἐκ τοῦ
οὐρανοῦ ἠκούτισας κρίσιν, γῆ ἐφοβήθη καὶ ἡσύ-
10 χασεν, Ἐν τῷ ἀναστῆναι εἰς κρίσιν τὸν Θεὸν,
τοῦ σῶσαι πάντας τοὺς πραεῖς τῇ καρδίᾳ.
11 ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ὅτι ἐνθύμιον ἀνθρώπου ἐξ-
ομολογήσεταί σοι, καὶ ἐγκατάλειμμα ἐνθυμίου
12 ἑορτάσει σοι. Εὔξασθε καὶ ἀπόδοτε κυρίῳ τῷ
Θεῷ ἡμῶν, πάντες οἱ κύκλῳ αὐτοῦ οἴσουσι δῶρα
13 τῷ φοβερῷ Καὶ ἀφαιρουμένῳ πνεύματα ἀρ-
χόντων, φοβερῷ παρὰ τοῖς βασιλεῦσι τῆς
γῆς.

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ Ἰδιθοὺν ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. ος´.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

4 Dixi iniquis, Nolite iniquè agere: 5
& delinquentibus, Nolite exaltare
cornu [g]. 5 Nolite (f) extollere in 6
altum cornu veſtrum: Nolite loqui
adverſùs Deum iniquitatẽ. 6 Quo- 7
niam neque ab Oriente, neq; ab Oc-
cidente, neque à deſertis montium.
Quoniam Deus judex eſt: 7 Hunc 8
humiliat, & hunc exaltat: Quia ca- 9
lix in manu Domini [h] vini meri
plenus miſto. 8 Et [i] inclinavit ex
hoc in (g) hunc: Veruntamen (h) [k]
fæx ejus non eſt exinanita: bibent o-
mnes peccatores terræ. 9 Ego autem 10
in ſeculum (i) gaudebo: pſallam Deo
Jacob. 10 Et omnia cornua peccato- 11
rum (k) confringam: & exaltabun-
tur cornua (l) juſti.

In finem, [a] in hymnis, Pſalmus ipſi Aſaph, Canticum ad (a) Aſſyrium. LXXV. 1

1 NOtus in Judæa De⁹, in Iſrael 2
magnum nomen ejus. 2 Et 3
factus eſt in pace locus ejus: & ha-
bitatio ejus in Sion. 3 Ibi confregit 4
(**) potentias arcuũ, ſcutũ, et gladi-
um, & [b] bellum. DIAPSALMA.
4 (b) Illuminas tu mirabiliter à mõ- 5
tibus æternis: Turbati ſunt omnes 6
inſipientes corde. 5 Dormierunt ſo-
mnũ ſuũ, et nihil invenerunt omnes
viri divitiarum (c) manibus ſuis.
6 (d) Ab increpatione tua, Deus Ja- 7
cob, dormitaverunt [c], qui aſcende-
runt equos. 7 Tu terribilis es: et quis 8
(e) [d] reſiſtet tibi ab ira tua? 8 De 9
cœlo (f) auditum feciſti judicium:
terra timuit, & quievit: 9 Cùm ex- 10
urgeret in judicium Deus; ut ſalvos
faceret omnes (g) mites corde. DIA-
PSALMA. 10 (b) Quoniam [e] 11
cogitatio hominis confitebitur tibi:
& reliquiæ cogitationis diem feſtum
agent tibi. 11 Vovete, & reddite 12
Domino Deo (i) noſtro. Omnes qui
in circuitu ejus, afferent munera:
Terribili, Et ei, qui aufert (k) ſpi- 13
ritus principum: terribili apud re-
ges terræ.

In finem, pro (a) Idithum, Pſalmus ipſi Aſaph. LXXVI. 1

Verſio ÆTHIOPICA.

ወእቤሎሙ፡ ለኃጥአን፡ ኢይሌብሱ፡፡ወእለሂ፡ 4
ይሌብሱ፡ ኢያንሥኡ፡ ቀርኖሙ፡፡=፡ ወኢያን 5
ሥኡ፡ ቀርኖሙ፡ ውስተ፡ አርያም፡፡ወኢይንብ
ቡ፡ዐመፃ፡ላዕለ፡እግዚአብሔር፡፡=፡ እስመ፡ 6
ኢእምጽባሕ፡ወኢእምዐረብ፡ ወኢእምአድብ
ረ፡ገዳም፡እስመ፡እግዚአብሔር፡መኰንን፡ውእ
ቱ፡፡=፡ ዘንተ፡ ያኀስር፡ ወዘንተ፡ ያከብር፡፡እ 7
ስመ፡ ጽዋዕ፡ ውስተ፡ እደ፡ እግዚአብሔር፡፡ወ
ይን፡ዘኢኮነ፡ቱሱሕ፡ዘምሉእ፡ ቅድሐቱ፡፡=፡
ወሶጦ፡እምዝንቱ፡ውስተ፡ዝንቱ፡፡ወባሕቱ፡ጣ 8
ሕሉ፤፡ኢይትከዐው፡፡ወይሰትይዎ፡ኵሎሙ፡ኃ
ጥአን፡ ምድር፡፡=፡ ወአንሰ፡እትፌሣሕ፡ለዓለ 9
ም፡፡ወእዜምር፡ለአምላከ፡ያዕቆብ፡፡=፡ ወ 10
እሰብር፡ አቅርንተ፡ ኃጥአን፡፡ወይትሌዐል፡ አ
ቅርንተ፡ጻድቃን፡፡=፡

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘአሳፍ፡ማኅሌት፡
ዘበእንተ፡አሶርዮን፡፡

ርኢ ተዐውቀ፡ እግዚአብሔር ፡ በይሁዳ፡፡ወዐ 1
ቢይ ፡ ስሙ ፡ በእስራኤል፡፡=፡ ወኀበረ ፡ በሰላ 2
ም፡ብሔሮ፡፡ወማኅደሩሂ፡ ውስተ፡ጽዮን፡፡=፡
ወበህየ፡ ሰበረ፡ ኃይለ፡ ቀስት፡፡ወልታ፡ወኵናተ፡ 3
ወፀባዓት፡፡ወበህየ ፡ ሰበረ፡ አቅርንተ፡፡=፡ አ 4
ንተ፡ ታበርህ ፡ መንክረ፡፡እምአድባር ፡ ዘለዓለ
ም፡፡ደንገፁ፡ኵሎሙ፡ አብደን፡ ልብ፡፡=፡ ወ 5
ሐለሙ፡ ሕልመ ፡ ወአልቦ ፡ ዘረከቡ፡፡ኵሉ፡ሰ
ብእ ፡ ለብዕለ ፡ እደዊሁ፡፡=፡ እምተግሣጽ 6
ከ፡ አምላከ፡ ያዕቆብ፡፡ደቀሱ፡ ኵሎሙ፡እለ፡
ይጼአኑ ፡ አፍራሰ፡፡=፡ ወአንተሰ ፡ ግሩም፡ 7
አንተ ፡፡ ወመኑ ፡ ይትቃወም ፡ ለመዐትከ፡፡=፡
እምሰማይ ፡ ታጸምእ፡ ፍትሐ፡፡ምድርኒ፡ፈር 8
ሀት፡ ወአርመመት፡፡=፡ ሶበ፡ ተንሥአ፡እግዚ 9
አብሔር ፡ ለኰንኖ፡፡ከመ ፡ ያድኅኖሙ ፡ ለኵ
ሎ ፡ የዋሃነ ፡ ልብ፡፡=፡ እስመ ፡ እምፈቃደ፡ 10
የአምነከ ፡ ሰብእ ፡፡ ወእምተረፈ ፡ ሕሊናሆ
ሙ፡ ይገብር ፡ በዓለከ፡፡=፡ ብፅዑ ፡ ወሀቡ፡ለ 11
እግዚአብሔር ፡ አምላክነ፡፡ ወኵሎሙ፡እለ፡
አውዱ፡ ያበውኡ ፡ አምኃ፡፡=፡ ለግሩም፡ ዘ 12
ያወፅእ ፡ ነፍሶሙ ፡ ለመሳፍንት ፡፡ ወይገርም፡
እምነገሥተ፡ምድር፡፡

ፍጻሜ፡ዘበእንተ፡ኢዶትም፡መዝሙ
ር፡ዘአሳፍ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [g] veſtrum. [h] vini nequaquam mixti, & plenus hauſtus ejus. [i] effundit illud ex [k] turbidum vinum ejus non eſt effuſum: & bibent illud omnes PSAL. LXXV. [a] Pſalmus ipſi Aſaph, [b] bellum: & ibi confregit cornua. [c] omnes, qui [d] reſiſtet iræ tuæ? [e] cùm cogitaverit homo confitebitur

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 * قلت لمخالفي الناموس لا تخالفوا الناموس * وللخطاة لا ترفعوا قرنكم * ولا تقيموا قرنكم 6
الي العلو * ولا تتكلموا علي الله ظلما * فانه لا من المخارج ولا من المغارب * ولا من الجبال 7
البرية * بل هو الله الديان * يضع من يشاء ويرفع من يشاء * وان بيد الرب كاسا * مملوءة خمرا 8 9
صرفا ممزوجة * ويميل من هذا الي هذا * لكن عكرها لم يهرق * يشربه جميع خطاة الارض * وانا 10
ابتهج الي الابد * وارتل لاله يعقوب * واحطم جميع قرون الخطاة * ويرتفع قرن الصديق * 11
الليلويا *

* Dixi prævaricatoribus, Ne prævaricemini legem: & peccatoribus, Ne attollatis cornu veſtrum. Et ne erigatis cornu ve- 5 6
ſtrum in altum: & ne loquamini de Deo ſceleſté. Nam non ab Oriente, neque ab 7
Occidente, neque à montibus deſertis,
Sed ipſe eſt Deus judex: humiliat quem 8
vult, & exaltat quem vult. Et verò in 9
manu Domini calix plenus vino puro temperato, & inclinatur ab hoc ad hunc: verùm fæx ejus non eſt effuſa: bibent eam
omnes peccatores terræ. At ego exultabo 10
in æternum, & pſallam Deo Jacob. Et 11
confringam omnia cornua peccatorum, et exaltabitur cornu juſti. Alleluja.

1 * المزمور الخامس والسبعون * لاصاف تسبحة لاجل الحبيب *
* وعدده * كد * استيخن *

PSAL. LXXV.

Aſapho canticum pro dilecto. 1
Et num. ver. 24.

2 * الله ظاهر في اليهودية * وعظيم اسمه في اسرائيل * صار موضعه في السلامة * وفي صهيون 3
مسكنه * هناك كسر عز القسي والسلاح والسيوف والحرب * انت تضيء عجيبا من الجبال 4 5
الدهرية * اضطرب جميع الذين لا يفهمون بقلوبهم * ونام الرجال الاشداء * ولم يقدروا علي 6
تحدل ايديهم * من سخطك يا اله يعقوب * نعس ركاب الخيل * انت مرهوب فمن يقدر ان 7 8
يقاومك * منذ الزمان غضبك كاين * سمعت حكما من السماء * فزعت الارض وسكنت * عند 9 10
ما يقوم الله للحكم * ولخلاص جميع ودعاء الارض * لان ضمير الانسان يعترف لك * ويتعبد 11
لك في سر * انذروا واوفوا الرب الهنا كل الطالبين له * ياتون بالقرابين الحسني * وازع ارواح 12 13
السلاطين * المرهوب عند جميع ملوك الارض * الليلويا *

DEus manifeſtus eſt in Judæa, et ma- 2
gnum eſt nomen ejus in Iſraele. Fa- 3
ctus eſt locus ejus in pace, & in Sion habitaculum ejus. Ibi confregit fortitudi- 4
nem arcuum, & armorum, & gladiorum,
& belli. Tu ſplendes mirabiliter è mon- 5
tibus æternis. Conturbati ſunt omnes qui 6
non intelligunt cordibus ſuis, & dormierunt viri fortes, nec potuerunt implere
manus ſuas. Ob furorem tuum, O Deus 7
Jacob, dormitaverunt aſcenſores equorum. Tu es terribilis, & quis poteſt reſi- 8
ſtere tibi? ab intervallo ira tua viget.
Audire feciſti judicium de cœlo: & ex- 9
pavit terra, & quievit; Quando exur- 10
get Deus ad judicium & ad ſalutem omnium manſuetorum terræ. Quoniam 11
mens hominis confitebitur tibi, & ſubjicietur tibi in ſecreto ſuo. Vovete & ſol- 12
vite Domino Deo noſtro omnes quærentes
eum: afferant ſacrificia Tremendo, Et eripienti ſpiritus Imperatorum, metuendo 13
apud omnes reges terræ. Alleluja.

1 * المزمور السادس والسبعون * لاصاف * وعدده * مج * استيخن *

PSAL. LXXVI.

Aſapho. Et num ver. 43 1

תהלים : עח

.me ad auſcultando & ,Deum ad mea vox :clamabo & ,Deum ad mea Vox
2 קולי אל־אלהים ואצעקה קולי אל־אלהים והאזין אלי :
non & ,defluxit nocte mea manus ,quæſivi Dominum meæ anguſtiæ die In
3 ביום צרתי אדני דרשתי ידי לילה נגרה ולא
: tumultuabor & ,Dei Recordabor .mea anima conſolari renuit : ſe remiſit
4 תפוג מאנה הנחם נפשי : אזכרה אלהים ואהמיה
vigilias Tenuiſti .Selah ,meus ſpiritus involvetur & ;meditabor
5 אשיחה ותתעטף רוחי סלה : אחזת שמרות
: principio à dies Supputavi .loquar non & ,ſum quaſſatus;meorum oculorum
6 עיני נפעמתי ולא אדבר : חשבתי ימים מקדם
meo corde cum nocte in ,mei moduli Recordabor .ſeculorum annos
7 שנות עולמים : אזכרה נגינתי בלילה עם־לבבי
: Dominus ſe elongabit ſecula in Nunquid .meus ſpiritus perveſtigabit & ,meditabor
8 אשיחה ויחפש רוחי : הלעולמים יזנח אדני
: ejus miſericordia æternum in deſiit Nunquid ?ultrà velle addet non &
9 ולא־יסיף לרצות עוד : האפס לנצח חסדו
eſt oblitus Nunquid ?generationem & ,generatione in ,eloquium eſt conſumptum
10 גמר אמר לדר ודר : השכח
meum infirmari dixi Et .Selah ?ſuas miſericordias naſo in clauſit num : Deus miſereri
11 חנות אל אם־קפץ באף רחמיו סלה : ואמר חלותי
quondam à recordabor quia : Jah ſtudiorum Recordabor .excelſi dexteræ anni : ipſum
12 היא שנות ימין עליון : אזכיר מעללי־יה כי־אזכרה מקדם
.fabor tuis ſtudiis in & : tuis operibus omnibus in meditabor Et .tui miraculi
13 פלאך : והגיתי בכל־פעלך ובעלילותיך אשיחה :
Deus Tu ?Deus ſicut ,magnus Deus Quis .tua via ſanctitate in Deus
14 אלהים בקדש דרכך מי־אל גדול כאלהים : אתה האל
15 brachio in Redemiſti .tuam fortitudinem populis in feciſti ſcire : mirabile faciens
16 עשה פלא הודעת בעמים עזך : גאלת בזרוע
,Deus aquæ te Viderunt .Selah ,Joſeph & ,Jahacob filios :tuum populum
17 עמך בני־יעקב ויוסף סלה : ראוך מים אלהים
aquas Inundaverunt .voragines ſunt commotæ etiam : parturierunt,aquæ te viderunt
18 ראוך מים יחילו אף ירגזו תהמות : זרמו מים
tui tonitrui Sonitus .ibunt tuæ ſagittæ etiam : ætheres dederunt vocem ,nubes
19 עבות קול נתנו שחקים אף־חצציך יתהלכו : קול רעמך
mari In .terra contremuit &,eſt commota : orbem fulgura illuminârunt,rotunditate in
20 בגלגל האירו ברקים תבל רגזה ותרעש הארץ : בים
Duxiſti .agnita ſunt non tua veſtigia & : multis aquis in tuæ ſemitæ & ,tua via
21 דרכך ושביליך במים רבים ועקבותיך לא נדעו : נחית
.Aharon & ,Moſeh manu in : tuum populum pecus ſicut
כצאן עמך ביד־משה ואהרן :

PSAL. LXXVIII. עח

eloquia ad veſtram aurē inclinate:meā legē mi populꝰ Auſculta .Aſaph ipſi Eruditio
1 משכיל לאסף האזינה עמי תורתי הטו אזנכם לאמרי־
Quæ .quondam à ænigmata ſcaturiam : meum os parabola in Aperiam .mei oris
2 3 פי : אפתחה במשל פי אביעה חידות מני־קדם : אשר
.nobis narraverunt noſtri patres & : ea cognovimus &,audivimus
שמענו ונדעם ואבתינו ספרו־לנו :

תרגום TARGUM.

2 קלי קדם יי ואקבל קלי קדם אלהא ואצית
3 מימרי : ביום עקתי אולפן מן קדם יי תבעית שרת
עלי נבואה בליליא זלגת עיני דמעתא ולא
4 תפוג סריבת לאתנחמא נפשי : אדכר אלהא
וארגוש קדם יי אמלל ותשתלהי רוחי לעלמין :
5 אחדתא תימורתא דעיני אטרפית ולא אמלל :
6 מניתי יומין טבין דמן לקדמין שניא טביא דמן
7 עלמין : אדכר תושבחתי בליליא עם הרהורי
8 לבבי אמלל ויבלש נסיא מנדע דרוחי : האפשר
די לעלמין ירחק יי ולא יוסיף לאתרעיא תוב :
9 האפשר די פסק לעלמין טוביה שלים פתגם
10 דביש על כל דר ודר : האפשר דאתנשי לחיסא
אלהא אין סליק ברוגזיה מן למכמר רחמוי
11 לעלמין : ואמרית מרעותי היא אשתניו גבורת
ימין עלאה : [תא ואמרית בעותי היא שנין דקץ
12 מימין] : אדכר עובדי אלהא ארום אדכר מן
13 לקדמין פרשותך : ורננית בכל עובדך טביא
14 ובתסקופי נסיך אמלל : אלהא דקדושין אורחתך
15 מן אלהא רבא כאלהא דישראל : את הוא
אלהא עביד פרישן הודעת בעמיא עושנך :
16 פרקתא בגבורת אדרעך עמך בניא דאוליד יעקב
17 וזן יוסף לעלמין : חמון שכנתך בגו ימא אלהא
חמון גבורתך על ימא רתתון עמיא לחוד
18 אתרגזון תהומיא : אחיתו מיא ענני שמיא קלין
יהבו שחקי לחוד כפי גררך אזלין ומשתלהבין :
19 קל אכליותך בגלגלא אשתמע אנהירו ברקין
20 תבל רנזת ואתרגיפת ארעא : בימא דסוף אורחך
וכבשך במין סגיען ורושמת פסיעתך לא
21 אתידעו : דברתא היך ענא עמך ביד משה
ואהרן :

עח

1 שכלא דרוח קדשא על ידוי דאסף אציתו עמי
2 אוריתי אצלון אודניכון למימרי פומי : אפתח
3 במתל פומי אביע חדון דמן לקדמין : די שמענן
וידענן להון ואבהתן תניאו לנא :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Vox mea coram *Domino*, & clamabo: voce mea coram Deo, & *attendit* verbo meo. In die afflictionis meæ eruditionem ab aſpectu Domini quæſivi: habitavit autem ſuper me *prophetia*; nocte ſtillavit oculus meꝰ lachrymas, nec ceſſabit; renuit conſolationem accipere anima mea. Recordabor Dei & tumultum edam: coram Dn̄o *loquar*, & laſſabitur ſpiritꝰ meus in æternum. Apprehendiſti palpebras oculorum meorum: correptꝰ ſum, & non loquar. Numeravi dies bonos à principio, annos felicitatis à ſeculis. Recordabor laudis meæ in nocte; cùm cogitationibꝰ cordis mei loquar, & inquiret res mirandas ſcientia ſpiritus mei. Nunquid poſſibile eſt ut in æternum aſpernetur Dn̄s; ut non apponat ut bene velit ulteriùs? Nunquid poſſibile eſt, ut defecerit in æternum ſua benignitas: atq; completum fuerit verbū malum ſuper omnem generationem & generationem? Nunquid eſt poſſibile ut oblitꝰ ſit miſereri Deus; ſi ira percitus eſt, ut non incaleſcant miſericordiæ ejus in æternum? Et dixi, Infirmitas mea hæc: mutatio potentis dexteræ excelſi. *Targum aliud*: Et dixi, *Petitio* mea hæc: *anni finis à dextera*. Recordabor operum *Dei*, quapropter memor ero ab initio mirabilium tuorum. Meditatus autem ſum in omnibꝰ operibus tuis optimis, & de adinventionibꝰ miraculorum tuorū loquar. Deꝰ quàm ſanctæ ſunt viæ tuæ! quis Deus magnꝰ ſicut Deus Iſrael? Tu es ipſe Deꝰ faciens miranda: notā feciſti in populis fortitudinē tuā. Redemiſti potentia brachii tui populū tuum; filios quos genuit Jaacob, & enutrivit Joſeph in ſecula. Viderunt majeſtatem tuam *in* medio maris Deus, viderunt virtutem tuam ſuper mare; contremiſcentibus populis, nec non interturbatis abyſſis. Effuderunt aquas nubes cœlorum, voces dederunt æthera, ſed & ſpicula ſagittarum tuarū diſcurrebant & accendebantur. Vox tonitrui tui in rota audita eſt: illuminaverūt coruſcationes orbē: infremuit, et commota eſt terra. In mari Suph via tua, & ſemitæ tuæ in aquis multis, & veſtigia greſſuū tuorum non ſunt agnita. Deduxiſti ſicut oves populū tuum per manū Moſſeh & Aharon.

Intellectꝰ Spiritꝰ ſancti per manū Aſaph.

PSAL. LXXVIII.

Auſculta populе mi legem meam, inclinate aures veſtras ad verba oris mei. Aperiā in parabola os meū; eloquar ænigmata quæ fuerūt à principio. Quæ audivimꝰ & quæ cognovimꝰ, & patres noſtri nunciaverūt nobis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 * ܒܩܠܝ ܠܘܬ ܐܠܗܐ ܩܥܝܬ ܘܫܡܥܢܝ. ܘܐܪܝܡܬ ܩܠܝ ܠܘܬܗ ܘܥܢܢܝ : * ܒܝܘܡܐ
3 ܕܐܘܠܨܢܝ ܠܡܪܝܐ ܒܥܝܬ. ܘܐܝܕܗ ܒܠܠܝܐ ܢܓܕܬܢܝ ܘܠܐ ܫܠܝܬ : ܘܠܐ ܗܘܐ ܡܒܝܐܢܐ ܠܢܦܫܝ.
4 5 * ܐܬܕܟܪܬ ܠܐܠܗܐ ܘܐܬܕܠܚܬ : ܘܪܢܝܬ ܘܐܬܬܥܝܩܬ ܪܘܚܝ. * ܘܐܚܕܘܢܝ ܕܘܘܢܐ ܒܥܝܢܝ : ܫܬܩܬ
6 ܘܠܐ ܡܠܠܬ. * ܚܫܒܬ ܝܘܡܬܐ ܕܡܢ ܩܕܝܡ : ܘܫܢܝܐ ܕܡܢ ܥܠܡ ܐܬܕܟܪܬ. * ܪܢܝܬ ܒܠܠܝܐ
7 8 ܘܒܠܒܝ ܪܢܝܬ : ܘܒܨܝܬ ܪܘܚܝ ܘܐܡܪܬ. * ܕܠܥܠܡ ܢܛܥܝܢܝ ܡܪܝܐ : ܘܠܐ ܢܘܣܦ ܬܘܒ
9 ܠܡܬܪܥܝܘ ܒܗ. * ܐܘ ܕܠܥܠܡ ܥܒܪ ܛܒܘܬܗ ܡܢܝ : ܐܘ ܢܫܠܡ ܡܠܬܗ
10 11 ܠܕܪ ܕܪܝܢ. * ܐܘ ܛܥܐ ܐܠܗܐ ܠܡܪܚܡܘ : ܐܘ ܢܟܠܐ ܪܚܡܘܗܝ ܒܪܘܓܙܗ. * ܘܐܡܪܬ ܟܘܪܗܢܝ
12 13 ܗܘ : ܘܬܢܝܢ ܕܡܚܘܬܐ ܕܝܡܝܢܗ ܕܡܪܝܡܐ. * ܥܗܕܬ ܓܝܪ ܬܕܡܪܬܟ ܡܢ ܩܕܝܡ : * ܘܪܢܝܬ ܒܥܒܕܝܟ
14 ܟܠܗܘܢ. ܘܒܨܢܝܥܘܬܟ ܐܬܒܩܝܬ : * ܐܠܗܐ ܐܘܪܚܟ ܩܕܝܫܐ ܗܝ. ܘܠܝܬ ܕܪܒ ܐܝܟ ܐܠܗܢ : * ܐܢܬ ܗܘ
15 16 ܐܠܗܐ ܕܥܒܕܬ ܬܕܡܪܬܐ. ܘܚܘܝܬ ܒܥܡܡܐ ܚܝܠܟ : * ܘܦܪܩܬ ܒܕܪܥܟ ܠܥܡܟ. ܠܒܢܝ
17 ܝܥܩܘܒ ܘܝܘܣܦ : * ܙܡܝܪܬܐ * ܚܙܘܟ ܡܝܐ ܐܠܗܐ. ܚܙܘܟ ܡܪܝ ܡܝܐ ܘܕܚܠܘ : ܐܦ
18 19 ܬܗܘܡܐ ܐܬܬܙܝܥܘ. * ܘܫܕܘ ܥܢܢܐ ܡܝܐ. ܩܠܐ ܝܗܒܘ ܫܡܝܐ ܕܫܡܝܐ : ܐܦ ܓܐܪܝܟ ܦܪܚܝܢ. * ܘܩܠܐ
20 ܕܪܥܡܝܟ ܒܓܝܓܠܐ : ܐܢܗܪܘ ܒܪܩܝܟ ܠܬܒܝܠ. ܐܬܕܠܚܬ ܘܙܥܬ ܐܪܥܐ : * ܒܝܡܐ ܐܘܪܚܟ
21 ܘܫܒܝܠܝܟ ܒܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܥܩܒܬܟ ܠܐ ܐܬܝܕܥܘ : ܕܒܪܬ ܠܥܡܟ ܐܝܟ ܥܢܐ. ܒܐܝܕܐ
ܕܡܘܫܐ ܘܕܐܗܪܘܢ.

* ܡܙܡܘܪܐ [illegible] *

1 * ܕܐܣܦ. ܐܡܪ ܒܗ ܕܢܛܪܘܢ ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܐܒܗܝܗܘܢ. ܫܡܥܘ ܥܡܝ
2 ܢܡܘܣܝ ܘܨܘܬܘ ܘܐܬܦܝܣܘ. ܘܐܪܟܢܘ ܐܕܢܝܟܘܢ ܠܡܠܘܗܝ ܕܦܘܡܝ : * ܗܐ ܓܝܪ
3 ܐܦܬܚ ܦܘܡܝ ܒܡܬܠܐ. ܘܐܡܪ ܦܠܐܬܐ ܕܡܢ ܩܕܝܡ : * ܐܝܠܝܢ ܕܫܡܥܢ ܘܝܕܥܢ
ܐܢܝܢ. ܘܐܦ ܐܒܗܝܢ ܐܫܬܥܝܘ ܠܢ.

Voce meâ ad Deum clamavi, & exaudivit me: & extuli vocem meam ad eum, & reſpondit mihi. In die anguſtiæ meæ Dominum quæſivi, & manus ejus nocte flagellavit me, & non quievi, nec erat conſolator animæ meæ. Memoriâ recolui Deum, & conturbatus ſum: & meditatus ſum, & exagitatus eſt ſpiritus meus, Atque occupaverunt me vertigines in oculis meis: obmutui, & non ſum locutus. Recenſui dies meos priſtinos, & annos æternos memoriâ repetii: Cogitavi noctu, & in corde meo cogitavi, & perſcrutatus ſum ſpiritum meum ac dixi, In æternum oblitus eſt mei Dominus, nec addet ultrà eſſe mihi placidus: Aut fortè in æternum amovebit bonitatem ſuam à me: aut complebit verbum ſuum in generationem generationū: Aut obliviſcitur Deus miſereri, vel contrahit miſericordias ſuas in ira ſua. Dixi, Infirmitas mea eſt; & repetita plaga ſunt hæc dexteræ Excelſi; Nam recordatꝰ ſum olim mirabilium tuorum: Et meditatus ſum cuncta opera tua, & artes tuas ſum cōtemplatꝰ. Deus via tua ſancta eſt, nec eſt qui magnus ſit ſicut Deus noſter. Tu es Deus qui edidiſti miracula, & declarâſti in populis virtutem tuam, Et ſalvâſti brachio tuo populum tuum, filios Jacob & Joſeph. * *Diapſal.* * Viderunt te Deus aquæ, viderunt te Domine mi aquæ, & timuerunt: etiam abyſſi conterritæ ſunt, Et nubes profuderunt aquas: ediderunt fragorem cœli cœlorum, ſagittæ quoque tuæ evolant, Et vox tonitruorum tuorum in rotis: illuminârunt fulgura tua orbem; conturbata eſt & contremuit terra. In mari via tua, & ſemitæ tuæ in aquis multis, & veſtigia tua minimè deprehenſa ſunt. Duxiſti populum tuum ſicut oves per manum Moſis & Aharon.

PSAL. LXXVIII.

Aſaphi. Innuit in eo ut ſervent mandata Domini, & ne ſint ut patres eorum.

Populе mi, auſcultate legem meam, & quieſcite, & inclinate aures veſtras ad ſermones oris mei. Ecce enim aperiam os meum ad proverbia, referámq; parabolas antiquas, Quas audivimus, cognovimꝰ eas, quas etiam patres noſtri narraverunt nobis.

Verſio VULG. LAT.

2 VOce meâ ad Dominum clamavi :
voce meâ ad Deum, & intendit
3 mihi. In die tribulationis meæ Deum
exquiſivi, manibus meis nocte contra
eum : & non ſum deceptus. Renuit
4 conſolari anima mea, Memor fui Dei,
& delectatus ſum, & exercitatus ſum :
5 & defecit ſpiritus meus. Anticipave-
runt vigilias oculi mei : turbatus ſum,
6 & non ſum locutus. Cogitavi dies an-
tiquos : & annos æternos in mente
7 habui. Et meditatus ſum nocte cum
corde meo, & exercitabar, & ſcope-
8 bam ſpiritum meum. Numquid in æ-
ternum projiciet Deus : aut non ap-
9 ponet ut complacitior ſit adhuc? Aut
in finem miſericordiam ſuã abſcindet,
10 a generatione in generationem? Aut
obliviſcetur miſereri Deus? aut con-
tinebit in ira ſua miſericordias ſuas?
11 Et dixi, Nunc cœpi : hæc mutatio
12 dexteræ Excelſi. Memor fui operum
Domini : quia memor ero ab initio
13 mirabilium tuorum. Et meditabor in
omnibus operib⁹ tuis : & in adinven-
14 tionibus tuis exercebor. Deus, in San-
cto via tua : quis Deus magnus ſicut
15 Deus noſter? Tu es Deus qui facis mi-
rabilia. Notam feciſti in populis vir-
16 tutem tuam : Redemiſti in brachio tuo
populum tuum, filios Jacob, & Joſeph.
17 Viderunt te aquæ, Deus, viderunt te
aquæ : & timuerunt, & turbatæ ſunt
18 abyſſi. Multitudo ſonitûs aquarum :
vocem dederunt nubes. Etenim ſagit-
19 tæ tuæ tranſeunt : Vox tonitrui tui in
rota. Illuxerunt coruſcationes tuæ or-
bi terræ : commota eſt & contremuit
20 terra. In mari via tua, & ſemitæ tuæ
in aquis multis : & veſtigia tua non
21 cognoſcentur. Deduxiſti ſicut oves
populum tuum, in manu Moyſi &
Aaron.

1 Intellectûs Aſaph. LXXVII.

ATtendite, popule me⁹, legem meã :
inclinate aurem veſtram in verba
2 oris mei. Aperiã in parabolis os meũ :
3 loquar propoſitiones ab initio. Quan-
ta audivimus & cognovimus ea : &
patres noſtri narraverunt nobis.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

2 ΦΩνή μου πρὸς κύριον ἐκέκραξα, καὶ ἡ
3 φωνή μου πρὸς τὸν θεόν, καὶ προσέσχε μοι. Ἐν
ἡμέρᾳ θλίψεώς μου τὸν θεὸν ἐξεζήτησα, ταῖς χερσί
μου νυκτὸς ἐναντίον αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἠπατήθην.
4 ἀπηνήνατο παρακληθῆναι ἡ ψυχή μου· Ἐμνή-
σθην τοῦ θεοῦ, καὶ εὐφράνθην, ἠδολέσχησα, καὶ ὠλι-
γοψύχησε τὸ πνεῦμά μου. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
5 Προκατελάβοντο φυλακὰς πάντες οἱ ἐχθροί μου,
6 ἐταράχθην καὶ οὐκ ἐλάλησα. Διελογισάμην ἡμέ-
7 ρας ἀρχαίας, καὶ ἔτη αἰώνια ἐμνήσθην, Καὶ ἐμε-
λέτησα· νυκτὸς μετὰ τῆς καρδίας μου ἠδολέσχουν,
8 καὶ ἔσκαλλον τὸ πνεῦμά μου. Μὴ εἰς τοὺς αἰῶ-
νας ἀπώσεται κύριος, καὶ οὐ προσθήσει τοῦ εὐδο-
9 κῆσαι ἔτι; Ἢ εἰς τέλος ἀποκόψει τὸ ἔλεος
10 ἀπὸ γενεᾶς καὶ γενεᾶς; Ἢ ἐπιλήσεται τοῦ οἰ-
κτειρῆσαι ὁ θεός, ἢ συνέξει ἐν τῇ ὀργῇ αὐτοῦ
11 τοὺς οἰκτιρμοὺς αὐτοῦ; ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Καὶ
εἶπα, Νῦν ἠρξάμην, αὕτη ἡ ἀλλοίωσις τῆς δε-
12 ξιᾶς τοῦ ὑψίστου. Ἐμνήσθην τῶν ἔργων κυρίου, ὅτι
μνησθήσομαι ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τῶν θαυμασίων σου,
13 Καὶ μελετήσω ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις σου, καὶ ἐν
14 τοῖς ἐπιτηδεύμασί σου ἀδολεσχήσω. Ὁ θεὸς ἐν
τῷ ἁγίῳ ἡ ὁδός σου, τίς θεὸς μέγας ὡς ὁ θε-
15 ὸς ἡμῶν; Σὺ εἶ ὁ θεὸς ὁ ποιῶν θαυμάσια, ἐ-
γνώρισας ἐν τοῖς λαοῖς τὴν δύναμίν σου,
16 Ἐλυτρώσω ἐν τῷ βραχίονί σου τὸν λαόν
σου, τοὺς υἱοὺς Ἰακὼβ καὶ Ἰωσήφ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
17 Εἴδοσάν σε ὕδατα ὁ θεός, εἴδοσάν σε ὕδατα
18 καὶ ἐφοβήθησαν, καὶ ἐταράχθησαν ἄβυσσοι. Πλῆ-
θος ἤχους ὑδάτων, φωνὴν ἔδωκαν αἱ νεφέλαι·
19 καὶ γὰρ τὰ βέλη σου διαπορεύονται, Φωνὴ τῆς
βροντῆς σου ἐν τῷ τροχῷ. ἔφαναν αἱ ἀστρα-
παί σου τῇ οἰκουμένῃ, ἐσαλεύθη καὶ ἔντρομος
20 ἐγενήθη ἡ γῆ. Ἐν τῇ θαλάσσῃ ἡ ὁδός σου, καὶ
αἱ τρίβοι σου ἐν ὕδασι πολλοῖς, καὶ τὰ ἴχνη
21 σου οὐ γνωσθήσονται. Ὡδήγησας ὡς πρόβατα
τὸν λαόν σου ἐν χειρὶ Μωσῆ καὶ Ἀαρών.

1 Συνέσεως τῷ Ἀσάφ. οζʹ.

ΠΡοσέχετε λαός μου τὸν νόμον μου, κλίνατε
τὸ οὖς ὑμῶν εἰς τὰ ῥήματα τοῦ στόματός
2 μου. Ἀνοίξω ἐν παραβολαῖς τὸ στόμα μου,
3 φθέγξομαι προβλήματα ἀπ' ἀρχῆς. Ὅσα
ἠκούσαμεν καὶ ἔγνωμεν αὐτά, καὶ οἱ πατέρες ἡ-
μῶν διηγήσαντο ἡμῖν.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopice, Tranſl. LAT.

1 VOce meâ ad (a) Dominum 2
clamavi, & (b) voce mea ad
Deum : & attendit mihi. 2 In die 3
tribulationis meæ Deum exquiſivi,
manibus meis nocte (d) coram eo, &
[a] non ſum decep. 3 Renuit (e) con-
ſolari anima mea : Memor fui Dei, 4
& delectatus ſum : (f) [b] garrivi,
& defecit ſpiritus meus. DIA-
PSALMA. 4 [c] Anticipaverunt 5
vigilias (g) omnes inimici mei : tur-
batus ſum, & non ſum loquutus.
5 Cogitavi dies antiquos : & annorũ 6
æternorum memor fui. 6 [d] Et me- 7
ditatus ſum nocte, cum corde meo
garriebam, & (h) ſarriebam ſpiritũ
meum. 7 Numquid in (i) ſecula pro- 8
jiciet Deus? & non (k) apponet, ut
beneplaceat ei adhuc? 8 Aut in fi- 9
nem abſcindet (l) miſericordiam à ge-
neratione, & (m) generatione? 9 Aut 10
obliviſcetur miſereri Deus, aut con-
tinebit in ira miſerationes ſuas?
DIAPSALMA. 10 Et dixi, (n) Nũc 11
cœpi : (o) [e] hæc immutatio dexteræ
Excelſi. 11 Memor (p) fui operũ Do- 12
mini : quia memor ero ab initio [f]
mirabiliũ tuorũ. 12 Et meditabor in 13
omnibus operibus tuis : & in (q) ad-
inventionibus tuis [g] garriam.
13 Deus, in (r) Sancto via tua : quis 14
Deus magnus, ſicut Deus noſter? Tu 15
es [h] Deus, qui facis (ſ) mirabilia.
14 Notam feciſti in populis virtu-
tem tuam ; Redemiſti in brachio tuo 16
populum tuum, filios Jacob, & (t)
Joſeph. DIAPSALMA. 15 Viderũt 17
te aquæ, Deus, viderunt te aquæ, &
timuerunt : & turbatæ ſunt abyſſi.
16 [i] Multitudo ſonitûs aquarum : 18
(u) vocẽ dederunt nubes. 17 Etenim
ſagittæ tuæ tranſeunt : Vox tonitrui 19
tui in (x) rota. 18 Apparuerunt [k]
fulgura tua orbi terrarum ; commota
eſt, & contremebunda facta eſt ter-
ra. 19 In mari via tua : & ſemitæ 20
tuæ in aquis multis : & veſtigia tua
non cognoſcentur. 20 Deduxiſti ſicut 21
oves, populum tuum in manu (y)
Moyſi & Aaron.

Intellectûs ipſi Aſaph. LXXVII. 1

1 ATtendite, populus meus, legem
meam : inclinate aurem ve-
ſtram in verba oris mei. 2 Aperiam 2
in parabolis os meum : loquar propo-
ſitiones ab (a) initio. 3 Quanta audivimus, & cognovimus ea : & patres noſtri narraverunt nobis. 3

Verſio ÆTHIOPICA.

፸፮ ቃልየ፡ኀበ፡ እግዚአብሔር ፡ ጸራኅኩ፡፡ቃ 1
ልየ፡ኀበ፡እግዚአብሔር፡ ወአጽምአኒ፡፡፨ በ 2
ዕለተ ፡ ምንዳቤየ ፡ ኀሠሥክዎ ፡ ለእግዚአብ
ሔር፡፡እደዊየ ፡ ሌሊተ ፡ ቅድሜሁ ፡ ወኢኬደ
ኒ፡፡፨ ቀብጸት ፡ ነፍስየ ፡ ትፍሥሕተ፡፡ተዘ 3
ከርክዎ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ወተፈሣሕኩ፡፡ተ
ዘዋዕኩኒ፡ ወአንበዝት ፡ ነፍስየ፡፡፨ ተራከብ 4
ክዎኒ፡ ለሰዓታተ፡ ኵሎሙ፡ ጸላእትየ፡፡ደንገፅ
ኩኒ፡ ወኢነበብኩ፡፡፨ ወሐለይኩ፡ መዋዕለ፡ 5
ትካት፡፡ወተዘከርኩ ፡ ዓመተ ፡ ዓለም ፡ ወአንበ
ብኩ፡፡፨ ሌሊተ፡ ተዘዋዕኩ፡ ምስለ፡ ልብየ፡ 6
ወአንቃህክዋ ፡ ለነፍስየ፡፡፨ ቦኑ ፡ ለዓለም፡ 7
ይገድፍ ፡ እግዚአብሔር፡፡ወኢይደግሞኑ፡ እ
ንከ፡ ተሣህሎ፡፡፨ ቦኑ፡ ለግሙራ፡ ይመትር ፡ 8
ምሕረቶ፡ ለትውልደ፡ ትውልድ፡፡፨ ወይረስ 9
ዖኑ ፡ እግዚአብሔር ፡ ተሣህሎ፡፡ ወይደፍኖኑ፡
ምሕረቶ፡ በመዐቱ፡፡፨ ወእቤ ፡ እምይእዜ፡ 10
ወጠንኩ ፡፡ ከመዝ ፡ ያስተባሪ ፡ የማኖ ፡ ልዑ
ል፡፡፨ ወተዘከርኩ ፡ ግብሮ ፡ ለእግዚአብሔ 11
ር፡፡እስመ፡እዜክር፡ዘትካት፡ መንክረትከ፡፡፨
ወአነብብ፡ በኵሉ፡ ምግባሪከ ፡፡ ወእዛዋዕ፡ በ 12
ግብርከ፡፡፨ እግዚኦ ፡ ውስተ ፡ መቅደስ፡ ፍ 13
ኖትከ፡፡መኑ፡አምላክ፡ ዐቢይ፡ ከመ፡ አምላክ
ነ፡፡አንተ፡ እግዚአብሔር፡ ባሕቲትከ፡ ዘትገብ
ር ፡ መንክረ፡፡፨ አርአይኮሙ ፡ ለሕዝብከ፡ 14
ኀይለከ፡፡ወአድኀንኮሙ ፡ ለሕዝብከ ፡ በመዝ
ራዕትከ፡፡ለደቂቀ፡ ያዕቆብ ፡ ወዮሴፍ፡፡፨ ር 15
እዩከ ፡ ማያት ፡ እግዚኦ ፡ ርእዩከ፡፡ማያት፡ወ
ፈርሁ፡፡ደንገፁ፡ ቀላያተ፡ 16 ማያት፡ ወደም
ፀ፡ማያቲሆሙ፡፡ቃለ፡ ወሀበ ፡ ደመና፡ 17 አሕ
ፃከ ፡ ይወፅኡ፡፡ ቃለ ፡ ነጐድጓድከ ፡ በሰረገላ
ት፡፡፨ አስተርአየ፡ መባርቅቲሁ፡ ለዓለም፡፡ 18
ርዕደት ፡ ወአድለቅለቀት ፡ ምድር ፡፡፨ ው 19
ስተ፡ ባሕር ፡ ፍኖትከ፡፡ወአሰርከኒ፡ ውስተ፡ማ
ይ፡ ብዙኅ፡፡ወኢይትዐወቅ ፡ አሰርከ፡፡፨ ወ 20
መራሕኮሙ፡ ከመ ፡ አባግዕ ፡ ለሕዝብከ፡፡በእ
ደ፡ሙሴ፡ወአሮን፡፡፨

ዘበአእምሮ፡ዘአሳፍ፡፡

፸፯ አጽምኡ ፡ ሕዝብየ፡ ሕግየ፡፡ወጽልው፡ 1
እዝንክሙ፡ ኀበ፡ ቃለ፡ አፉየ፡፡፨ እከሥት፡ 2
በምስሌ ፡ አፉየ፡፡ወእነግር ፡ አምሳለ ፡ ዘእም
ትካት፡፡፨ ኵሎ ፡ ዘሰማዕነ፡ ወዘርአይነ፡፡ወ 3
ዘነገሩነ፡አበዊነ፡፡፨

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. LXXVI. [a] non conculcârunt me. [b] exercitatus ſum, [c] Deprehendiſti vigilias omnium inimicorum meorum : [d] Et meditatus ſum. Nocte exercitabar cum corde meo, & excitabam animam meam. [e] ita innovatur dextera Excelſi. [f] miſericordiæ tuæ. [g] exercebor. [h] Deus ſolus, [i] Aquæ & ſonitus aquarum ſuarum : [k] fulgura ejus

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

2 3 * بصوتي أعلنت إلى الرب * ورفعت إلى الله ابتهالي فنظر إلي * في يوم شدتي رغبت إلى الله *
4 بسطت يدي في الليل قدامه فزال جزعي * وحيث لم يكن لقلبي معزي * ذكرت الله
5 فتعزيت * وعند همي صغرت نفسي * شغبت جميع أعدائي فأدركت محارسي * فلقت ولم
6 7 أنطق * فكرت في الأيام السالفة * وتذكرت السنين الدهرية * وتلوت في الليل * وفرغت قلبي *
8 9 وكنت أفحص بروحي * هل يقصيني الرب إلى الأبد * ولا يعود إلى الرضا أيضا * أو يقطع رحمته
10 إلى الانقضاء * أو كمل قوله من جيل إلى جيل * وهل ينسى الله أن يتراءف * وهل يمنع
11 12 بسخطه رأفته عني * فقلت الآن ابتديت * هذا هو تغيير يمين العلي * تذكرت أعمال
13 الرب * لأني أذكر منذ الأزل عجائبك * وأقرأ في جميع أعمالك * وأكون دائما في أعمالك *
14 15 * اللهم في القدس طريقك * من إله عظيم مثل إلهنا * أنت الله هو صانع العجائب * أظهرت
16 17 في الشعوب قوتك * خلصت شعبك بذراعك بني يعقوب ويوسف * اللهم رأتك المياه رأتك
18 المياه فخافت * اضطربت الأعماق * وكثر عجيج المياه * أبدت السحب أصواتها * وإن
19 سهامك لنافذة * صوت رعدك في الفلك * أضاءت بروقك المسكونة * اضطربت الأرض
20 21 وارتعدت * اللهم إن في البحر طريقك وفي المياه الكثيرة * مسالكك وآثارك لا تعرف * هديت
شعبك مثل الغنم بيد موسى وهرون * الليلويا *

1 * المزمور السابع والسبعون * لآصاف * موعظة للشعب * وعدده * قنز * استيكن *
2 أنصت يا شعبي لوصاياي * أصغوا آذانكم إلى كلام فمي * فإني أفتح فاي بالأمثال * وأنطق
3 بالخفيات الأزلية * التي سمعناها وعلمناها * وخبرنا آباؤنا بها *

VOce meâ revelavi Domino, & eleva- 2
vi ad Deum ſupplicationem meam,
& reſpexit in me. In die tribulationis 3
meæ deprecatus ſum Deum : extendi ma-
nus meas in nocte coram ipſo, & præter-
iit timor meus. Et cùm non eſſet cordi
meo conſolator, Recordatus ſum Dei, & 4
conſolatus ſum ; & in ſolicitudine mea
puſilla facta eſt anima mea. Conjuncti 5
ſunt omnes inimici mei, & occupave-
runt præſidia mea : turbatus ſum & non
protuli verbum. Mente revolvi dies e- 6
lapſos, & in memoriam revocavi annos
æternos. Et meditatus ſum noctu, & 7
evacuavi cor meum. Et perpendebam 8
ſpiritu meo, utrùm propulſaret me Domi-
nus in æternum, nec rediret ad placabili-
tatem ampliùs. Aut revocaret miſericor- 9
diam ſuam uſque in finem, aut expletus
ſit ſermo ejus à generatione in generatio-
nem. Et utrùm obliviſcatur Deus propi- 10
tiari, & num cohibeat in ira ſua clemen-
tiam ſuam à me. Et dixi, Nunc cœpi, 11
hæc eſt mutatio dexteræ Excelſi. Recor- 12
datus ſum operum Domini ; nam memor
ero ab æterno mirabilium tuorum, Et le- 13
ctitabo omnia facta tua, & ero ſemper in
operibus tuis. Deus, in ſanctitate via tua 14
eſt : quis Deus fortis ſicut Deus noſter?
Tu Deus, es factor miraculorum : patefe- 15
ciſti inter populos virtutem tuam : Sal- 16
vâſti populum tuum brachio tuo, filios
Jacob & Joſeph. Deus viderunt te aquæ : 17
viderunt te aquæ & timuerunt : contur-
batæ ſunt abyſſi, Et multiplicatum eſt 18
murmur aquarum. Ediderunt nubes voces
ſuas : & quidem ſagittæ tuæ ſunt pene-
trantes. Fragor tonitrui tui in ſphæra : 19
illuſtrârunt fulgura tua Habitatam : com-
mota eſt terra atque concuſſa. Deus, pro- 20
fectò in mari eſt via tua, & in aquis mul-
tis : ſemitæ tuæ & veſtigia tua non cogno-
ſcuntur. Duxiſti populum tuum ſicut oves 21
per manum Moyſis, & Aharon. Alleluja.

PSAL. LXXVII.
Aſapho. Concio ad populum. 1
Et num. ver. 157.

AUſculta, O popule me⁹, præcepta mea,
præbete aures veſtras ſermoni oris
mei : Quoniam aperiam os meum in pro- 2
verbiis & proferã myſteria æterna, Quæ 3
audivimus & cognovimus, quæque ſigni-
ficârunt nobis patres noſtri,

תהלים ׃ עח

laudes narrantes noviſſimæ generationi ,eorum filiis à *celabimus* Non
לא נכחד מבניהם לדור אחרון מספרים תהלות 4
ſuſcitavit Et .fecit quæ ejus mirabilia & ,ejus fortitudinem & ,Domini
יהוה ועזוזו ונפלאתיו אשר עשה : ויקם 5
præcepit quæ , Iſrael in poſuit legem & , Jahacob in teſtimonium
עדות ביעקב ותורה שם בישראל אשר צוה את־
generatio cognoſcant Ut .ſuis filiis ea *notificandum ad* noſtris patribus
אבותינו להודיעם לבניהם : למען ידעו דור 6
Deo in ponant *Et* .ſuis filiis narrabunt &,ſurgent:naſcentur filii noviſſima
אחרון בנים יולדו יקמו ויספרו לבניהם : וישימו באלהים 7
non Et .cuſtodiant ejus mandata &:Dei *ſtudiorum* obliviſcantur non & , ſuam ſpem
כסלם ולא ישכחו מעללי־אל ומצותיו ינצרו : ולא 8
non generatio , rebellis & , declinans generatio , eorum patres ſicut ſint
יהיו כאבותם דור סורר ומרה דור לא־
Ephraim Filii .ejus ſpiritus Deo cum fuit fidelis nec : ſuum cor præparavit
הכין לבו ולא־נאמנה את־אל רוחו : בני־אפרים 9
cuſtodierunt Non .*conflictus* die in ſe verterunt : arcu jacientes ,armati
נושקי רומי־קשת הפכו ביום קרב : לא שמרו 10
: ejus *ſtudiorum* ſunt obliti Et .ambulare *renuerunt* ejus lege in & ;Dei pactum
ברית אלהים ובתורתו מאנו ללכת : וישכחו עלילותיו 11
fecit eorum patribus Coram .eis oſtendit quæ ejus mirabilium &
ונפלאתיו אשר הראם : נגד אבותם עשה 12
: eos fecit tranſire & , mare Rupit .Sohan agro Ægypti terra in : *miraculum*
פלא בארץ מצרים שדה־צען : בקע ים ויעבירם 13
tota & *: interdiu* nube in eos duxit Et .acervum veluti aquas fecit ſtare &
ויצב־מים כמו־נד : וינחם בענן יומם וכל־ 14
dedit potum & : deſerto in petras Scidit .ignis lumine in nocte
הלילה באור אש : יבקע צרים במדבר וישק 15
fecit deſcendere & : petra de fluenta eduxit Et .*multum* voraginibus *ut*
כתהמות רבה : ויוצא נוזלים מסלע ויורד 16
exacerbandum ad ,ei *peccandum ad* adhuc addiderunt Et .aquas flumina tanquam
כנהרות מים : ויוסיפו עוד לחטא־לו למרות 17
cibum petendo : ſuo corde in Deum tentaverunt Et .ſolitudine in excelſum
עליון בציה : וינסו־אל בלבבם לשאל־אכל 18
Deus poterit Nunquid : dixerunt , Deum *in* ſunt locuti Et .ſuæ animæ
לנפשם : וידברו באלהים אמרו היוכל אל 19
,aquæ fluxerunt & ,petram percuſſit *En* ? deſerto in menſam *diſponere*
לערך שלחן במדבר : הן הכה־צור ויזובו מים 20
parabit num ? dare poterit panem etiam Nunquid .inundaverunt torrentes &
ונחלים ישטפו הגם־לחם יוכל תת אם־יכין
eſt ſuccenſus ignis & ; eſt iratus & , Dominus audivit Ideo ? ſuo populo carnem
שאר לעמו : לכן שמע יהוה ויתעבר ואש נשקה 21
crediderunt non Quia .Iſrael *in* aſcendit *naſus* etiam & : Jahacob in
ביעקב וגם־אף עלה בישראל : כי לא האמינו 22
: deſuper *ætheribus* mandavit Et .ejus ſalute in ſperaverunt nec , Deo *in*
באלהים ולא בטחו בישועתו : ויצו שחקים ממעל 23
.aperuit cœlorum januas &
ודלתי שמים פתח :

תרגום Targum.

לא נכסי מבניהון לדר בתרי משתעין תשבחתא 4
דיי ועשניה ופרישותיה די עבד : ואקים סהדותא 5
בדבית יעקב ואוריתא גזר בדבית ישראל די
פקד לאבהתן להודעותהון לבניהון : מן בגלל 6
די ידעון דר בתרי בנין דמתילדין יקומון ויתנון
לבניהון : וישוון באלהא סברהון ולא יתנשון 7
עובדי אלהא ופקודוי ינטרון : ולא יהוון היך 8
אבהתהון דר מסרבן ומרגיז דר דלא מתקן
ליביה למריה ולא הות מהימנא באלהא רוחיה :
כד הוו יתבין במצרים אתרברבו בני אפרים מנו 9
קצא וטעו ונפקו תלתין שנין קדם קצא בזיני
קרבא וגברין נטלי קשתא אפיכו קדל ואתקטלו
ביום סדרי קרבא : מטול דלא נטרו קים אלהא 10
ובאוריתיה סרבו להלכא : ואתנשיאו עובדוי 11
עמא בית ישראל ופרישותיה די אחמי יתהון :
קבל אברהם יצחק ויעקב ושבטיא דאבהתהון 12
עבד פרישן בארעא דמצרים חקל טאניס : בזע 13
ימא בחוטרא דמשה רבהון ואעברנון ואוקים
מיא צרירין היך זיקא : ודברנון בעננא בימָמָא 14
וכל ליליא בנהור אשא : בזע טורין בחוטריה 15
דמשה רבהון במדברא ואשקי כד בתהומיא
רברבן : ואפיק נוזליא דמיא מן כיפא 16
ואחית היך נהרין דנגדין מיא : ואוסיפו תוב 17
למחטי קדמוי למרגז קדם עלאה במדברא
צחי : ונסיאו אלהא בלבהון למשאל אוכלא 18
לנפשיהון : ואתרעמו קדם יי אמרו האית 19
יוכלא קדם אלהא לסדרא פתורא במדברא :
הא כבר מחא בטינר ודיבו מיא ונחליא 20
הלחוד לחמא יכיל למתן אם יתקן מוונא
לעמיה : בכן שמיע קדם אלהא ורגיז 21
ואשתא אתסקת בדבית יעקב ולחוד תקוף
רוגזא סליק בישראל : ארום לא הימינו 22
באלהא ולא אתרחיצו בפורקניה : ופקיד 23
שחקי מלעיל ודשי שמיא פתח :

Paraph. Chald. Verſ. La

Non abſcondemus à filiis eorum, generationi ultimæ narrantes laudes Domini, & fortitudinem ejus & mirabilia ejus facta, quæ edidit. Et firmavit teſtamentum in domo Jacob, & legem ſtatuit in domo Iſrael, quæ præcepit patribus noſtris, ut docerent filios ſuos. Ut cognoſceret generatio ultima; filii qui naſcituri ſunt, ſurgent & narrabunt filiis ſuis. Et collocabunt in Deo ſpem ſuam, & non obliviſcentur operum Dei, & mandata ejus cuſtodient. Et non erunt ſicut patres eorum generatio rebellis, & provocans ad iracundiam, generatio quæ non direxit cor ſuum ad Dominum ſuum, nec fuit fidelis in Deum ſpiritus ejus. *Cùm habitarent in Ægypto ſuperbierunt* filii Ephraim *ſtatuerunt terminum*, *& errantes egreſſi ſunt triginta annis ante terminum* cum armis bellicis, & fortes geſtantes arcum verterunt cervicem *& occiſi ſunt* in die acierum bellicarum. Eò quod non obſervaſſent fœdus Dei, & in lege ejus ambulare renuiſſent. Et obliti ſunt operationum ejus populus domus Iſrael; & mirabilium ejus facinorum quæ oſtendit eis. Coram Abraham, Iſaac & Jaacob, atque tribubus *patrum eorum* miranda edidit in terra Ægypti in campo Tanes. Scidit mare virgâ Moſſeh præceptoris eorum, & tranſmiſit eos; & ſtare fecit aquas coadunatas ſicut in *utrem*. Et duxit eos in nube per diem, & tota nocte in illuminatione ignis. Rupit *montes* virgâ Moſſeh præceptoris eorum in deſerto, & potum dedit eis veluti ex abyſſis magnis. Et eduxit aquarum fluenta de petra, & deduxit tanquam flumina currentia aquas. Et addiderunt ultrà peccare in eum, ut provocarent ad iram Altiſſimum in deſerto arido. Et tentaverunt Deum in corde ſuo, petentes cibum animabus ſuis. Et infremuerunt coram *Domino*: dixerunt: Ergóne poterit Deus inſtruere menſam in deſerto? Ecce jam percuſſit petram; & fluxerunt aquæ torrentéſque: nunquid & panem poterit dare? an præparabit nutrimentum populo ſuo? Ideo auditum fuit coram Domino qui iratus eſt, & ignis accenſus eſt in domû Jaacob, & inſuper furor validus aſcendit in Iſrael. Quoniam non crediderunt Deo, & non confiſi ſunt in redemptione ejus. Et præcepit nubibus supernè; & januas cœli aperuit.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕܠܐ ܢܟܣܐ ܡܢ ܒܢܝܗܘܢ. ܐܠܐ ܠܕܪܐ ܐܚܪܢܐ ܢܫܬܥܐ : ܬܫܒܚܬܗ ܕܡܪܝܐ 4
ܘܚܝܠܗ. ܘܬܕܡܪܬܗ ܕܥܒܕ : * ܘܐܩܝܡ ܣܗܕܘܬܗ ܒܝܥܩܘܒ. ܘܢܡܘܣܗ ܣܡ 5
ܒܐܝܣܪܝܠ : ܐܝܟ ܕܦܩܕ ܠܐܒܗܝܢ. * ܕܢܘܕܥܘܢ ܠܒܢܝܗܘܢ : ܕܢܕܥܘܢ ܕܪܐ ܐܚܪܢܐ 6
ܒܢܝܐ ܕܡܬܝܠܕܝܢ ܘܩܝܡܝܢ : ܕܢܫܬܥܘܢ ܠܒܢܝܗܘܢ. * ܕܢܗܘܐ ܣܒܪܗܘܢ ܒܐܠܗܐ : ܘܠܐ 7
ܢܛܥܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ. ܘܦܘܩܕܢܘܗܝ ܢܛܪܘܢ : * ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܐܒܗܝܗܘܢ. ܕܪܐ 8
ܥܩܡܐ ܘܡܡܪܡܪܢܐ : ܕܪܐ ܕܠܐ ܬܩܢ ܠܒܗ. ܘܠܐ ܗܝܡܢ ܒܐܠܗܐ ܪܘܚܗ : * ܒܢܘܗܝ ܕܐܦܪܝܡ 9
ܕܡܬܚܝܢ ܝܬܪܐ ܘܫܕܝܢ ܒܩܫܬܐ. ܘܗܦܟܘ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ : * ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܛܪܘ ܩܝܡܗ ܕܐܠܗܐ. 10
ܘܒܢܡܘܣܗ ܠܐ ܨܒܘ ܠܡܗܠܟܘ : * ܘܛܥܘ ܥܒܕܘܗܝ ܘܬܕܡܪܬܗ. ܕܚܘܝ ܐܢܘܢ * ܩܕܡ 11 12
ܐܒܗܝܗܘܢ : ܕܥܒܕ ܬܕܡܪܬܐ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܒܚܩܠܐ ܕܨܘܥܢ : * ܨܪܐ ܝܡܐ ܘܐܥܒܪ ܐܢܘܢ. 13
ܘܐܩܝܡ ܡܝܐ ܐܝܟ ܕܒܙܩܐ : * ܘܕܒܪ ܐܢܘܢ ܒܐܝܡܡܐ ܒܥܢܢܐ. ܘܟܠܗ ܠܠܝܐ ܒܢܘܗܪܐ ܕܢܘܪܐ : 14
* ܨܪܐ ܫܘܥܐ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܐܫܩܝ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܕܡܢ ܬܗܘܡܐ ܪܒܐ : * ܐܦܩ ܢܒܥܐ ܡܢ ܟܐܦܐ. ܘܪܕܘ 15 16
ܡܝܐ ܐܝܟ ܢܗܪܘܬܐ : * ܘܐܘܣܦܘ ܬܘܒ ܥܡܐ ܠܡܚܛܐ. ܘܠܡܡܪܡܪܘ ܠܥܠܝܐ ܒܡܕܒܪܐ 17
ܨܗܝܐ : * ܘܢܣܝܘ ܠܐܠܗܐ ܒܠܒܗܘܢ. ܟܕ ܫܐܠܝܢ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܢܦܫܗܘܢ : * ܘܪܛܢܘ 18 19
ܥܠ ܐܠܗܐ ܘܐܡܪܘ. ܕܠܡܐ ܡܫܟܚ ܐܠܗܐ ܠܡܣܕܪܘ ܠܢ ܦܬܘܪܐ ܒܡܕܒܪܐ : * ܗܐ ܡܚܐ 20
ܠܫܘܥܐ ܘܪܕܘ ܡܝܐ ܘܢܚܠܐ ܐܫܬܦܥܘ. ܕܠܡܐ ܐܦ ܠܚܡܐ ܡܫܟܚ ܠܡܬܠ ܠܢ : ܐܘ ܡܛܝܒ
ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܥܡܗ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܘܪܓܙ : ܘܢܘܪܐ ܐܝܩܕܬ ܒܝܥܩܘܒ. ܘܐܦ 21
ܪܘܓܙܐ ܣܠܩ ܒܐܝܣܪܝܠ : * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܝܡܢܘ ܒܐܠܗܐ ܘܠܐ ܣܒܪܘ ܒܦܘܪܩܢܗ : 22
* ܘܦܩܕ ܠܥܢܢܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܘܬܪܥܐ ܕܫܡܝܐ ܐܬܦܬܚܘ : 23

* Ut ne celemus eas filios eorum, ſed generationi alteri narremus laudes Domini, & potentiam ejus, ac miracula ipſius quæ edidit. Conſtituit enim conteſtationem ſuam in Jacob, & legem ſuam poſuit in Iſraele: ſicuti monuerat patres noſtros, Ut notum facerent filiis ſuis: quatenus ſcirent in generationem alteram filii naſcituri & exurrecturi: ut narrarent filiis ſuis. Ut eſſet ſpes eorum in Deo, & non obliviſcerentur operum Dei, ejuſque mandata obſervarent: Et ne fierent ſimiles patribus ſuis generationi pravæ & exacerbanti, generationi quæ non direxit cor ſuum, neque credidit in Deum ſpiritûs ſui. Filii Afrem, qui tetenderunt chordam, & jaculati ſunt arcu, attamen verterunt ſe in die belli: Eo quòd non obſervaverint pactû Dei, & in lege ejus noluerint ambulare, Et obliti ſint operum ejus atque miraculorum ipſius quæ oſtenderat eis Coram patribus eorum. Fecit enim prodigia in terra Ægypti, & in agris Soon. Fidit mare & traduxit illos, & conſiſtere fecit aquas quaſi in utribus: Et deduxit eos interdiu nube, & totâ nocte ſplendore ignis. Secuit rupem in deſerto, & potavit illos ut ex abyſſo magna: Eduxit fluenta è petra, & fluxerunt aquæ ceu flumina. Nihilominus appoſuerunt adhuc populus peccare, & exaſperare Altiſſimum in ſitibundo; Et tentaverunt Deum in corde ſuo, petendo cibum animæ ſuæ: Et muſſitârunt de Deo ac dixerunt, Nunquid poteſt Deus ſternere nobis menſam in deſerto? Quandoquidem percuſſit rupem & fluxerunt aquæ, & torrentes profuderunt: num etiam panem poterit dare nobis, aut parabit cibum populo ſuo? Ideo audivit Dominus & iratus eſt, & ignis accenſus eſt in Jacob, atque etiam furor aſcendit in Iſrael. Quia non crediderunt in Deum, neque ſperaverunt ſalutem ejus. Et mandavit nubibus deſuper, januæque cœli apertæ ſunt.

Verſio VULG. LAT.

4 Non ſunt occultata à filiis eorum, in
generatione altera. Narrantes laudes
Domini, & virtutes ejus, & mirabilia
5 ejus quæ fecit. Et ſuſcitavit teſtimoniũ
in Jacob : & legem poſuit in Iſrael.
Quanta mandavit patribus noſtris no-
6 ta facere ea filiis ſuis : Ut cognoſcat
generatio altera. Filii qui naſcentur, &
7 exurgent, et narrabunt filiis ſuis, Ut po-
nant in Deo ſpem ſuam, & non obli-
viſcantur operum Dei : & mandata e-
8 jus exquirant. Ne fiant ſicut patres e-
orum generatio prava & exaſperans ;
Generatio, quæ non direxit cor ſuum :
& non eſt creditus cum Deo ſpiritus
9 ejus. Filii Ephrem intendentes & mit-
tentes arcum, converſi ſunt in die bel-
10 li. Non cuſtodierunt teſtamentum Dei :
11 & in lege ejus noluerunt ambulare. Et
obliti ſunt benefactorum ejus, & mi-
12 rabilium ejus quæ oſtendit eis. Coram
patribus eorum fecit mirabilia in ter-
13 ra Ægypti, in campo Taneos. Interru-
pit mare, & perduxit eos : & ſtatuit a-
14 quas quaſi in utre. Et deduxit eos in
nube diei : & totâ nocte in illuminati-
15 one ignis. Interrupit petrã in eremo :
& adaquavit eos velut in abyſſo mul-
16 ta. Et eduxit aquam de petra : & dedu-
17 xit tanquam flumina aquas. Et appo-
ſuerunt adhuc peccare ei : in iram ex-
18 citaverunt Excelſum in inaquoſo. Et
tentaverunt Deũ in cordibus ſuis : ut
19 peterent eſcas animabus ſuis. Et malè
locuti ſunt de Deo : dixerunt ; Num-
quid poterit Deus parare menſam in
20 deſerto ? Quoniam percuſſit petram,
& fluxerunt aquæ, & torrentes inun-
daverunt. Numquid & panem poterit
dare, aut parare menſam populo ſuo ?
21 Ideò audivit Dominus, & diſtulit : &
ignis accenſus eſt in Jacob, & ira a-
22 ſcendit in Iſrael : Quia non credide-
runt in Deo, nec ſperaverunt in ſalu-
23 tari ejus. Et mandavit nubibus deſu-
pèr, & januas cœli aperuit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

4 Οὐκ ἐκρύβη ἀπὸ τῶν τέκνων αὐτῶν εἰς γενεὰν ἑτέ-
ραν, ἀπαγγέλλοντες τὰς αἰνέσεις κυρίου ϗ τὰς
δυναστείας αὐτοῦ, ϗ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ ἃ ἐποίησε.
5 Καὶ ἀνέστησε μαρτύριον ἐν Ἰακὼβ, ϗ νόμον ἔθετο
ἐν Ἰσραήλ· ὃν ἐνετείλατο τοῖς πατράσιν ἡμῶν,
6 γνωρίσαι αὐτὸν τοῖς υἱοῖς αὐτῶν, Ὅπως ἂν γνῷ
γενεὰ ἑτέρα, υἱοὶ οἱ τεχθησόμενοι, ϗ ἀναστήσον-
7 ται καὶ ἀπαγγελοῦσιν αὐτὰ τοῖς υἱοῖς αὐτῶν· Ἵ-
να θῶνται ἐπὶ τὸν θεὸν τὴν ἐλπίδα αὐτῶν, ϗ
μὴ ἐπιλάθωνται τῶν ἔργων τοῦ θεοῦ, ϗ τὰς ἐντο-
8 λὰς αὐτοῦ ἐκζητήσωσιν· Ἵνα μὴ γένωνται ὡς οἱ
πατέρες αὐτῶν, γενεὰ σκολιὰ ϗ παραπικραίνου-
σα, γενεὰ ἥτις οὐ κατεύθυνεν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐ-
τῆς, ϗ οὐκ ἐπιστώθη μετὰ τοῦ θεοῦ τὸ πνεῦμα αὐτῆς.
9 Υἱοὶ Ἐφραὶμ ἐντείνοντες καὶ βάλλοντες τόξον,
10 ἐστράφησαν ἐν ἡμέρᾳ πολέμου. Οὐκ ἐφύλαξαν τὴν
διαθήκην τοῦ θεοῦ, ϗ ἐν τῷ νόμῳ αὐτοῦ οὐκ ἤθελον
11 πορεύεσθαι. Καὶ ἐπελάθοντο τῶν εὐεργεσιῶν αὐτοῦ
ϗ τῶν θαυμασίων αὐτοῦ, ὧν ἔδειξεν αὐτοῖς·
12 Ἐναντίον τῶν πατέρων αὐτῶν ἃ ἐποίησε θαυμά-
13 σια, ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἐν πεδίῳ Τάνεως. Διέῤῥηξε
θάλασσαν, ϗ διήγαγεν αὐτοὺς, ἔστησεν ὕδατα ὡσεὶ
14 ἀσκόν. Καὶ ὡδήγησεν αὐτοὺς ἐν νεφέλῃ ἡμέρας,
15 ϗ ὅλην τὴν νύκτα ἐν φωτισμῷ πυρός. Διέῤῥηξε
πέτραν ἐν ἐρήμῳ, ϗ ἐπότισεν αὐτοὺς ὡς ἐν ἀβύσσῳ
16 πολλῇ. Καὶ ἐξήγαγεν ὕδωρ ἐκ πέτρας, ϗ κατήγα-
17 γεν ὡς ποταμοὺς ὕδατα. Καὶ προσέθεντο ἔτι τοῦ ἁ-
μαρτάνειν αὐτῷ· παρεπίκραναν τὸν ὕψιστον ἐν ἀν-
18 ύδρῳ, Καὶ ἐξεπείρασαν τὸν θεὸν ἐν ταῖς καρδί-
αις αὐτῶν, τοῦ αἰτῆσαι βρώματα ταῖς ψυχαῖς αὐ-
19 τῶν. Καὶ κατελάλησαν τοῦ θεοῦ, ϗ εἶπαν, Μὴ δυ-
20 νήσεται ὁ θεὸς ἑτοιμάσαι τράπεζαν ἐν ἐρήμῳ; Ἐ-
πεὶ ἐπάταξε πέτραν, ϗ ἐῤῥύησαν ὕδατα, ϗ χείμαῤ-
ῥοι κατεκλύσθησαν· μὴ ϗ ἄρτον δυνήσεται δοῦναι;
21 ἢ ἑτοιμάσαι τράπεζαν τῷ λαῷ αὐτοῦ; Διὰ τοῦτο
ἤκουσε κύριος ϗ ἀνεβάλετο, ϗ πῦρ ἀνήφθη ἐν Ἰ-
22 ακὼβ, ϗ ὀργὴ ἀνέβη ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ. Ὅτι οὐκ
ἐπίστευσαν ἐν τῷ θεῷ, οὐδὲ ἤλπισαν ἐπὶ τὸ σωτήρι-
23 ον αὐτοῦ. Καὶ ἐνετείλατο νεφέλαις ὑπεράνωθεν, ϗ
θύρας οὐρανοῦ ἀνέῳξε·

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

4 Non ſunt occultata à filiis eo 4
rum in (b) generationem alteram.
Annuntiantes laudes Domini, &
potentias ejus, & mirabilia ejus,
quæ fecit. 6 Et (c) ſuſcitavit te- 5
ſtimonium in Jacob : & legem
poſuit in Iſrael. (d) Quam man
davit patribus noſtris, ut notam fa-
cerent eam filiis ſuis, ut cogno 6
ſcat generatio altera, 8 filii qui
naſcentur. Et exurgent, & (e)
annuntiabunt ea filiis ſuis. 9 ut 7
ponant in Deo ſpem ſuam, & non
obliviſcantur operum Dei, & man-
data ejus exquirant. 10 Nè fi 8
ant ſicut patres eorum, (f) ge-
neratio prava, & exaſperans : 11
Generatio quæ non direxit in cor-
de ſuo : & non eſt creditus cum
Deo ſpiritus ejus. 12 Filii Ephræm 9
intendentes, & mittentes (g)
arcum, converſi ſunt in die belli.
13 [a] Non cuſtodierunt teſta- 10
mentum Dei ; & in lege ejus no-
luerunt ambulare. 14 Et obliti ſunt 11
[b] beneficiorum ejus, & mirabi-
lium ejus, quæ oſtendit eis. 15
Coram patribus eorum quæ (h) fe- 12
cit mirabilia in terra Ægypti, in
campo Taneos. 16 Dirupit mare, 13
& perduxit eos : ſtatuit aquas,
(i) quaſi utrem. 17 Et deduxit eos 14
in nube die, (k) & totâ nocte in
illuminatione ignis. 18 Dirupit 15
petram in eremo, & potavit eos,
velut in abyſſo multa. 19 Et edu- 16
xit aquam [c] de petra, & deduxit
tanquam flumina aquas. 20 Et ap- 17
poſuerunt adhuc peccare ei : exa-
cerbaverunt Altiſſimum [d] in (l)
inaquoſo. 21 Et tentaverunt De- 18
um in cordibus ſuis, ut peterent
eſcas animabus ſuis. 22 Et de- 19
traxerunt de Deo, & dixerunt ;
Nunquid poterit Deus parare men-
ſam in deſerto ? 23 Quoniam 20
percuſſit petram, & fluxerunt
[e] aquæ : & torrentes inunda-
verunt. 24 Numquid & panem
poterit dare, aut parare menſam
populo ſuo ? 25 [f] Propter 21
hoc audivit Dominus, (m) &
diſtulit, & ignis accenſus eſt in Jacob : & ira (n) aſcendit in Iſrael. 26 Quia non crediderunt in Deo : nec ſperaverunt in 22
ſalutare ejus. 27 Et mandavit nubibus deſupèr, & januas cœli aperuit. 23

Verſio ÆTHIOPICA.

ወኢኀብኡ፡እምደቂቆሙ፡ ለካልእ፡ ትውል 4
ድ።፨ ወነገሩ፡ስብሐቲሁ፡ለእግዚአብሔ 5
ር። ኀይሉኒ፡ ወመንክሮኒ፡ ዘገብረ።፨
ዘአቀመ፡ስምዐ፡ለያዕቆብ። ወሠርዐ፡ሕገ፡ 6
ለእስራኤል።፨ ዘአዘዞሙ፡ለአበዊነ። 7
ከመ፡ ይንግሩ፡ ለደቂቆሙ። ወከመ፡ ያእም
ር፡ካልእ፡ትውልድ።፨ ደቂቅ፡ለለ፡ ይት 8
ወለዱ፡ ወይትነሥኡ። ወይዜንዉ፡ ለደቂቆ
ሙ።፨ ከመ፡ይረስዩ፡ትውክልቶሙ፡ላዕለ፡ 9
እግዚአብሔር። ወከመ፡ ኢይርስዑ፡ ግብረ፡
እግዚአብሔር። ወይኅሥሡ፡ትእዛዞ።፨
ከመ፡ ኢይኩኑ፡ከመ፡አበዊሆሙ። ትውልድ፡ 10
እኩት፡ወመራር።፨ ትውልድ፡እንተ፡ኢያርት 11
ዐት፡ልባ። ወኢተአመነት፡መንፈሳ፡በእግዚ
አብሔር።፨ ደቂቀ፡ ኤፍሬም፡ ይወስቁ፡ 12
ወይነድፉ። ወተገፍትኡ፡ አመ፡ ዕለተ፡ቀት
ል።፨ እስመ፡ ኢዐቀቡ፡ ኪዳኖ፡ለእግዚአ 13
ብሔር። ወአበዩ፡ ሐዊረ፡ በሕጉ።፨ ወረ 14
ስዑ፡ረድኤቶሙ። ወመንክሮሂ፡ ዘአርአዮ
ሙ።፨ ዘገብረ፡መንክረ፡በቅድመ፡አበዊሆ 15
ሙ። በምድረ፡ ግብጽ ፡ ወበሐቅለ ፡ ጣኔዎ
ስ።፨ ሰጠቀ፡ባሕረ፡ወአኅለፎሙ። ወአቀ 16
መ፡ማየ፡ከመ፡ዝቅ።፨ መርሖሙ፡ መዐልተ፡ 17
በደመና። ወኵሉ ፡ ሌሊተ ፡ በብርሃነ ፡ እሳ
ት።፨ ወአንቅዐ፡ኰኵሐ፡በበድው። ወአ 18
ስተዮሙ፡ ከመ ፡ ዘእምቀላይ፡ ብዙኅ።፨
ወአውሐዘ፡ ማየ፡ከመ፡ ዘእምአፍላግ። ወ 19
አውፅአ፡ ማየ፡ እምኰኵሕ።፨ ወደገሙ፡ኣ 20
ደ፡ ወአበሱ፡ሎቱ። ወአምረርዎ፡ለልዑል፡
በበድው።፨ ወአመከርዎ፡ለእግዚአብሔ 21
ር፡በልቦሙ። ከመ፡ይስአሉ፡ መብልዐ፡ ለነፍ
ሶሙ።፨ሐመይዎ፡ለእግዚአብሔር፡ወይቤ 22
ሉ። ይክልኑ፡ እግዚአብሔር፡ ሠሪዐ፡ ማእ
ደ፡በገዳም።፨ ወይዘብጥ፡ኰኵሐ፡ወየ 23
ውኅዝ፡ማየ።፨ ወይክልኑ፡ወሂበ፡ኅብስ 24
ተ። ወይሠርዕ፡ ማእደ፡ለሕዝቡ።፨ ወሰ 25
ምዐ፡ ዘንተ፡ እግዚአብሔር ፡ ወአናሕሰየ።
ወነደደ፡እሳት ፡ ላዕለ፡ ያዕቆብ። ወመጽአ፡
መቅሠፍት ፡ ላዕለ ፡ እስራኤል።፨ እ 26
ስመ ፡ ኢተአመንዎ ፡ ለእግዚአብሔር። ወ
ኢተወከሉ ፡ በአድኅኖቱ።፨ ወአዘዘ ፡ ደ 27
መና ፡ በላዕሉ። ወአርኃወ ፡ ኆኅተ፡ሰማ
ይ።፨

INTERP. ÆTHIOP. [a] Quoniam non [b] auxiliorum ſuorum, [c] tanquam de flumine, & deduxit aquam de petra. [d] in deſerto. [e] aquæ : Nunquid & panem [f] Et audivit hoc Dominus,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ولم يخفوا عن بنيهم الي جيل اخر * يخبرون تسابيح الرب وقواته * والعجايب التي صنعها 4
* اقام شهاداته في يعقوب * ورتب ناموسا في اسراييل * كالذي امر به اباءنا لكي يعلموا 5
ابناءهم * لكيما يعلم الجيل الاخر البنين المولودين * فيقومون ويعلمون بنيهم * لكي 6 7
يجعلوا توكلهم علي الله * ولا ينسوا اعمال الله * ويتبعوا وصاياه * لكيلا يكونوا كابايهم 8
جيلا معوجا معصيا * الجيل الذي لم يستقم قلبه * ولم تومن روحه بالله * بنوا افرام 9
اوتروا قسيهم ورموا عنها * وانهزموا في يوم الحرب * ولم يحفظوا عهد الله * ولم يشاوا 10
ان يسلكوا في ناموسه * وتناسوا اعماله الحسنة * وعجايبه التي اراهم * العجايب التي 11 12
صنعها قدام ابايهم * بارض مصر وفي مزارع صاغان * فلق البحر الاحمر واجازهم فيه 13
واقام المياه كانها في ازقاق * وهداهم في النهار بالغمامة * وفي الليل اجمع بضياء النار 14
* فجر الصخر في البرية * وسقاهم كمن عمق كثير * واخرج الماء من الصخر تجري المياه 15 16
كالانهار * ثم عادوا ايضا فاخطوا اليه * واغضبوا العلي حيث ليس ماء * وجربوا الله في 17 18
قلوبهم * بمسلة طعام لنفوسهم * وتكلموا في الله قايلين * هل يقدر الله ان يعد لنا مايدة 19
في البرية * لانه ضرب الصخر فجرت المياه وغرقت الاودية * فهل يمكنه ان يعطي خبزا ايضا 20
او يعد مايدة لشعبه * لاجل هذا سمع الله وطردهم الي خلف * واشتعلت نار في يعقوب 21
واتي الغضب علي اسراييل * لانهم لم يومنوا بالله ولم يرجوا خلاصه * فامر السحاب من 22 23
فوق * وفتح ابواب السماء *

Et non abſconderunt à filiis ſuis in gene- 4
rationem alteram. Narrabunt laudationes
Domini & virtutes ejus & miracula
quæ fecit. Conſtituit teſtimonia ſua in 5
Jacob, & ordinavit legem in Iſrael, pro-
ut præcepit Patribus noſtris ut docerent
filios ſuos ; Quatenus doceret generatio 6
altera filios progenitos, ut ſurgerent ac
docerent filios ſuos : ut collocent fidu 7
ciam ſuam in Deo, nec obliviſcantur o-
perum Dei, & ſectentur mandata ejus ;
ut ne ſint ſicut patres ſui generatio 8
perverſa, exaſperans : generatio cujus
cor non fuit rectum, neque credidit ſpi-
ritus ejus in Deum. Filii Ephrem inten- 9
derunt arcus ſuos, & jaculati ſunt :
& profligati ſunt in die belli : Et non 10
cuſtodierunt pactum Dei, nec volue-
runt ambulare in lege ejus. Et obliti 11
ſunt opera ejus optima, & mirabilia
ejus quæ oſtendit ipſis : Mirabilia quæ 12
fecit coram patribus eorum in terra
Ægypti & in arvis Sagan. Diviſit ma- 13
re rubrum, & traduxit eos per illud :
& ſtare fecit aquas ac ſi eſſent in u-
tribus. Et duxit eos interdiu in nube, 14
& nocte totâ in luce ignis. Scidit pe- 15
tram in deſerto, & potavit eos quaſi ex
abyſſo multa. Et eduxit aquam è pe- 16
tra, & fluxerunt aquæ tanquam flu-
mina. Deinde reverſi ſunt iterum & 17
peccaverunt in eum, & irritaverunt
Excelſum ubi non erat aqua. Et ten- 18
taverunt Deum in cordibus ſuis, petendo
cibum animabus ſuis. Et obloquuti ſunt 19
de Deo, dicentes : Anne poterit De-
us parare nobis menſam in deſerto ?
Quoniam ipſe percuſſit petram, & 20
fluxerunt aquæ & obruerunt valles,
nunquid poterit dare panem etiam, aut
parare menſam populo ſuo ? Propterea 21
audivit Deus, & abjecit eos retrò, &
accenſus eſt ignis in Jacob, & venit
furor adverſus Iſrael. Quia non cre- 22
diderunt in Deum, neque ſperaverunt
ſalutem ejus. Præcepit nubibus deſuper, 23
et aperuit portas cœli.

תהלים: עח

.eis dedit cœleſte triticum & : comedendum ad Man eos ſuper pluit Et
24 וַיַּמְטֵר עֲלֵיהֶם מָן לֶאֱכֹל וּדְגַן־שָׁמַיִם נָתַן לָֽמוֹ׃
.ſaturitatem ad eis miſit *venationem* : vir comedit fortium Panem
25 לֶחֶם אַבִּירִים אָכַל אִישׁ צֵידָה שָׁלַח לָהֶם לָשֹֽׂבַע׃
.Auſtrum ſua fortitudine in induxit & : cœlis in Eurum fecit Proficiſci
26 יַסַּע קָדִים בַּשָּׁמָיִם וַיְנַהֵג בְּעֻזּוֹ תֵימָֽן׃
.alatum volatile marium arenam ſicut & : carnem pulverem ſicut eos ſuper pluit Et
27 וַיַּמְטֵר עֲלֵיהֶם כֶּעָפָר שְׁאֵר וּֽכְחוֹל יַמִּים עוֹף כָּנָֽף׃
,comederunt Et .ejus habitacula circa : ejꝰ *caſtrametationis interim* in fecit cadere Et
28 29 וַיַּפֵּל בְּקֶרֶב מַחֲנֵהוּ סָבִיב לְמִשְׁכְּנֹתָֽיו׃ וַיֹּאכְלוּ
:ſuo deſiderio à ſunt alienati Non .eis attulit eorū deſideriū & :valde ſunt ſaturati &
30 וַיִּשְׂבְּעוּ מְאֹד וְתַאֲוָתָם יָבִא לָהֶֽם׃ לֹא־זָרוּ מִתַּאֲוָתָם
occidit & ,eos in aſcendit Dei *naſus* Et .eorum ore in eorum eſca adhuc
31 עוֹד אָכְלָם בְּפִיהֶֽם׃ וְאַף אֱלֹהִים עָלָה בָהֶם וַֽיַּהֲרֹג
peccaverunt hoc omni In .incurvavit Iſrael electos & : eorum pingues *in*
32 בְּמִשְׁמַנֵּיהֶם וּבַחוּרֵי יִשְׂרָאֵל הִכְרִֽיעַ׃ בְּכָל־זֹאת חָֽטְאוּ־
vanitate in conſumpſit Et .ejus mirabilibus *in* crediderunt non & : adhuc
33 עוֹד וְלֹא הֶאֱמִינוּ בְּנִפְלְאוֹתָֽיו׃ וַיְכַל־בַּהֶבֶל
: eum quærebant & ,eos occidebat Si .*terrore in* eorum annos & : eorum dies
34 יְמֵיהֶם וּשְׁנוֹתָם בַּבֶּהָלָֽה׃ אִם־הֲרָגָם וּדְרָשׁוּהוּ
Deus quia ,ſunt recordati Et .Deum *manè* quærebant & ,revertebantur &
35 וְשָׁבוּ וְשִֽׁחֲרוּ־אֵֽל׃ וַֽיִּזְכְּרוּ כִּֽי־אֱלֹהִים
.eſt eorum redemptor ,excelſus Deus & : eorum *petra*
צוּרָם וְאֵל עֶלְיוֹן גֹּאֲלָֽם׃ חצי הספר
eorum cor Et .ei ſunt mentiti ſua lingua in & : ſuo ore in *eum allexerunt* Et
36 37 וַֽיְפַתּוּהוּ בְּפִיהֶם וּבִלְשׁוֹנָם יְכַזְּבוּ־לֽוֹ׃ וְלִבָּם
miſericors ipſe Et .ejus pacto in *fuerunt fideles* nec ,eo cum rectum erat non
38 לֹא־נָכוֹן עִמּוֹ וְלֹא נֶאֶמְנוּ בִּבְרִיתֽוֹ׃ וְה֣וּא רַח֨וּם
,*ſuum naſum avertendum ad*,multiplicabit & : diſperdet non & ,iniquitati *propitiabitur*
יְכַפֵּ֣ר עָוֹן֮ וְֽלֹא־יַ֫שְׁחִ֥ית וְ֭הִרְבָּה לְהָשִׁ֣יב אַפּ֑וֹ
: *ipſi* caro quòd eſt recordatus Et .ſuam iram omnem ſuſcitabit non &
39 וְלֹא־יָעִיר כָּל־חֲמָתֽוֹ׃ וַיִּזְכֹּר כִּי־בָשָׂר הֵמָּה
,deſerto in eum exacerbaverunt Quoties .*redibit* non & ,*vadens* ſpiritus
40 רוּחַ הוֹלֵךְ וְלֹא יָשֽׁוּב׃ כַּמָּה יַמְרוּהוּ בַמִּדְבָּר
ſanctum & : Deum tentaverunt & ,ſunt reverſi Et ! ſolitudine in eū *affecerunt dolore*
41 יַעֲצִיבוּהוּ בִּישִׁימֽוֹן׃ וַיָּשׁוּבוּ וַיְנַסּוּ אֵל וּקְדוֹשׁ
eos redemit qua diei : ejus manus ſunt recordati Non .*limitaverunt* Iſrael
42 יִשְׂרָאֵל הִתְווּ׃ לֹא־זָכְרוּ אֶת־יָדוֹ יוֹם אֲשֶׁר־פָּדָם
.Sohan *campo* in ſua *portenta* & : ſua ſigna Ægypto in poſuit Qui .anguſtia de
43 מִנִּי־צָֽר׃ אֲשֶׁר־שָׂם בְּמִצְרַיִם אֹתוֹתָיו וּמוֹפְתָיו בִּשְׂדֵה־צֹֽעַן׃
Miſit .biberent ne ,eorum fluenta & : eorum *rivos* ſanguinem in convertit Et
44 וַיַּהֲפֹךְ לְדָם יְאֹרֵיהֶם וְנֹזְלֵיהֶם בַּל־יִשְׁתָּיֽוּן׃ יְשַׁלַּח
45 brucho dedit Et .eos *corrupit* & ,ranam & : eos comedit & ,*mixtionem* eos in
46 בָּהֶם עָרֹב וַיֹּאכְלֵם וּצְפַרְדֵּעַ וַתַּשְׁחִיתֵֽם׃ וַיִּתֵּן לֶחָסִיל
:eorū *vineam* grandine in Occidit .locuſtæ eorum laborem & : eorum *germen*
47 יְבוּלָם וִיגִיעָם לָאַרְבֶּֽה׃ יַהֲרֹג בַּבָּרָד גַּפְנָם
: eorum *jumentum* grandini *concluſit* Et .*glaciato lapide in* eorum ſycomoros &
48 וְשִׁקְמוֹתָם בַּחֲנָמַֽל׃ וַיַּסְגֵּר לַבָּרָד בְּעִירָם
.carbonibus eorum poſſeſſiones &
וּמִקְנֵיהֶם לָרְשָׁפִֽים׃

תרגום TARGUM.

24 ואחית עליהון מנא למיכל ועבור שמיא יהב
25 להון׃ מזון דנחת ממדור מלאכיא אכלו בני
26 נשא זודין שלח להון לשבעא׃ אטיל רוח
קדומא בשמיא ודבר בעושניה רוח דרומא׃
27 ואחית עליהון היך כעפרא בסרא והיך חלא
28 דימא עופא דפרח׃ ואפיל במצע משריתיה
29 חזור חזור למשכנוי׃ ואכלו ושבעו לחדא
30 ורגוגיהון איתי להון׃ לא זרו מן רגוגיהון עד
31 כדין מיכלהון בפומהון׃ ורוגזא דאלהא סליקת
בהון וקטיל בגבריהון ועולימי ישראל
32 אחמיט׃ בכל דא חבו תוב ולא הימינו
33 בפרישותוי׃ ושיצי בלמא יומיהון ושנתיהון
34 בבהולתא׃ בזמן דקטלנון תיבין ותבעו יתיה
35 ויתובון ויצלון קדם אלהא׃ ואדכרו ארום
אלהא תקיפהון ואלהא עלאה פרקנון׃
36 ושרגינון ליה בפומהון ובלישנהון מכדבין
37 ליה׃ מטול דלבהון לא מהימן עמיה ולא
38 הימינו בקימיה׃ והוא רחמנא מכפר עויתהון
ולא מחבל יתהון ומסגי למתב מן רוגזיה ולא
39 יוחי בהון כל חמתיה׃ ודכיר ארום בני בסרא
40 הנון רוחא דאזל ולא תאב׃ כמה יסרבון
41 ליה במדברא ירגזון קדמוי באתר צדיא׃ ותבו
ונסיאו אלהא וקדישא דישראל אתוו תוהא׃
42 לא אדכרו ית נסא דידיה ויומא דפרקנון מן
43 מעיקא׃ דשוי במצרים אתוהי ותמהוי בחקל
44 טניס׃ והפך לדמא אריתהון ונוזליהון לא
45 שתן מנהון׃ יגרי בהון ערבובי חיות ברא
46 וגמר יתהון ועורדעניא וחבל יתהון׃ ויהב
ומסר לזחלא עבורהון ולעותהון לגובאי׃
47 וקלף בברדא גופניהון ושקמתהון בכרזובא׃
48 ומסר לברדא בעיריהון וגיתיהון לרשפין
די נור׃

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Et deſcendere fecit ſuper illos manna, ut manducarent; & triticum cœli dedit eis. Cibum qui deſcendit de habitaculo angelorum comederunt homines: cibaria *miſit* eis ad ſaturitatem. Intulit ventum vehementem in cœlos, & induxit virtute ſua Auſtrum. Et pluit ſuper eos ſicut pulverem carnem, & ſicut arenam maris avē volantem. Et *dejecit* in medio caſtrorum ejus, in circuitu tabernaculi ejus. Et comederunt & ſaturati ſunt nimis, & deſiderium ipſorum adduxit eis. Non fuerunt alieni à cupiditate ſua, cùm adhuc cibus eorum eſſet in ore ipſorum. Et furor Dei aſcendit in eos, & occidit robuſtos eorum, & juvenes Iſrael proſtravit. In omnibus his peccaverunt adhuc, & non crediderunt miraculis ejus. Et conſumpſit in vanitate dies eorum, & annos eorum in obſtupefactione. In tempore quo interficiebat eos reſipiſcebant & quærebant eum, ac revertebantur, precéſque fundebant coram Deo. Et recordati ſunt, quòd Deus erat fortis eorum, & quòd Deus excelſus redemerat eos. Sed nugati ſunt ei ore ſuo atque lingua, mentientes ei. Quoniam cor eorum non erat *fidum* cum eo, & non fuerunt fideles in pacto ejus. Et ipſe miſericors expiat peccatum eorum; & non exterminat eos, ſed multiplicat ut revertatur ab ira ſua, & non accelerat in eos omnem furorem ſuum. Et recordatus eſt quòd filii carnis ſunt ſpiritus vadens & non rediens. Quoties defecerunt ab illo in deſerto, excanduerunt coram eo in loco deſolato! Et converſi ſunt & tentaverunt Deum, & ſanctum Iſraelis ſignaverunt ſigno. Non ſunt recordati *miraculi* manus ejus, & diei quo redemit eos ab infeſtatore. Qui poſuit in Ægypto ſigna ſua, & portenta ſua in agro Tanis. Et convertit in ſanguinem flumina eorum & ſtillationes eorum, ne biberent ex illis. Miſit in eos mixtiones beſtiarum ſylveſtrium, & conſummavit eos; & ranas, & diſſipavit eos. Et dedit brucho frumenta eorum & labores eorum locuſtis. Et decorticavit grandine vineas eorum, & ſycomoros eorum pruina. Et tradidit grandini beſtias eorum, & armenta eorum carbonibus ignis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

24 25 * ܐܚܬ ܠܗܘܢ ܡܢܢܐ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. ܘܠܚܡܐ ܕܫܡܝܐ ܝܗܒ ܠܗܘܢ: * ܠܚܡܐ ܕܡܠܐܟܐ ܐܟܠ
26 ܒܪܢܫܐ. ܘܨܝܕܐ ܫܕܪ ܠܗܘܢ ܠܡܣܒܥ: * ܐܫܒ ܪܘܚܐ ܒܫܡܝܐ. ܘܐܝܬܝ ܒܚܝܠܗ ܬܝܡܢܐ:
27 28 * ܐܚܬ ܠܗܘܢ ܒܣܪܐ ܐܝܟ ܥܦܪܐ. ܘܐܝܟ ܚܠܐ ܕܝܡܐ ܦܪܚܬܐ ܕܓܦܐ: * ܘܢܦܠ ܒܓܘ ܡܫܪܝܬܗܘܢ
29 30 ܚܕܪܝ ܡܫܟܢܝܗܘܢ. * ܘܐܟܠܘ ܘܣܒܥܘ ܛܒ: ܘܪܓܬܗܘܢ ܝܗܒ ܠܗܘܢ. * ܘܠܐ
31 ܦܪܩܘ ܡܢ ܪܓܬܗܘܢ: ܘܥܕ ܡܐܟܘܠܬܗܘܢ ܒܦܘܡܗܘܢ. * ܪܘܓܙܗ ܕܐܠܗܐ ܣܠܩ
32 ܒܗܘܢ: ܘܩܛܠ ܡܢ ܥܬܝܪܝܗܘܢ. ܘܠܓܒܝܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܟܪܥ: * ܒܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܚܛܘ.
33 ܘܬܘܒ ܠܐ ܗܝܡܢܘ ܒܬܕܡܪܬܗ: * ܘܫܠܡܘ ܒܣܪܝܩܘܬܐ ܝܘܡܝܗܘܢ. ܘܫܢܝܗܘܢ ܡܣܪܗܒܐܝܬ:
34 35 * ܟܕ ܩܛܠ ܗܘܐ ܠܗܘܢ. ܒܥܝܢ ܗܘܘ ܠܗ. ܘܗܦܟܝܢ ܗܘܘ ܘܡܩܕܡܝܢ ܠܘܬܗ: * ܘܐܬܕܟܪܘ
36 ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܡܥܕܪܢܗܘܢ. ܘܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ ܦܪܘܩܗܘܢ: * ܘܐܚܒܘܗܝ ܒܦܘܡܗܘܢ. ܘܒܠܫܢܗܘܢ
37 38 ܕܓܠܘ ܒܗ. * ܠܒܗܘܢ ܠܐ ܬܪܨܘ ܥܡܗ ܘܠܐ ܗܝܡܢܘ ܒܩܝܡܗ: * ܘܗܘ ܡܪܚܡܢ
ܘܫܒܩ ܚܛܗܝܗܘܢ ܘܠܐ ܡܚܒܠ. ܘܡܣܓܐ ܠܡܦܢܝܘ ܪܘܓܙܗ ܘܠܐ ܡܥܝܪ ܟܠܗ ܚܡܬܗ:
39 40 * ܘܐܬܕܟܪ ܕܒܣܪܐ ܐܢܘܢ. ܪܘܚܐ ܕܐܙܠܐ ܘܠܐ ܗܦܟܐ: * ܟܡܐ ܡܪܡܪܘܗܝ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܐܪܓܙܘܗܝ
41 42 ܒܐܫܝܡܘܢ: * ܘܗܦܟܘ ܘܢܣܝܘ ܠܐܠܗܐ. ܘܠܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܪܓܙܘ: * ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܘ
43 ܐܝܕܗ ܕܝܘܡܐ ܕܦܪܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܐܠܘܨܐ. * ܕܥܒܕ ܒܡܨܪܝܢ ܐܬܘܬܗ: ܘܬܕܡܪܬܗ
44 45 ܒܚܩܠܐ ܕܨܘܥܢ. * ܘܗܦܟ ܠܕܡܐ ܢܗܪܘܬܗܘܢ: ܘܪܕܝܐܝܗܘܢ ܕܠܐ ܢܫܬܘܢ ܡܝܐ. * ܫܕܪ
46 ܒܗܘܢ ܥܪܘܒܝܐ ܘܐܟܠܘ ܐܢܘܢ: ܘܐܘܪܕܥܐ ܘܚܒܠܘ ܐܢܘܢ. * ܝܗܒ ܠܩܡܨܐ ܥܠܠܬܗܘܢ:
47 48 ܘܠܥܡܠܗܘܢ ܠܓܘܒܐ. * ܬܒܪ ܒܒܪܕܐ ܓܦܬܗܘܢ. ܘܬܐܢܝܗܘܢ ܒܓܠܝܕܐ: * ܐܫܠܡ ܠܒܪܕܐ
ܒܥܝܪܗܘܢ: ܘܩܢܝܢܗܘܢ ܠܒܥܘܪܐ.

Demiſit eis manna ad manducandum, & panem cœli dedit illis; Panē Angelorum manducavit homo. Et venationem miſit eis, ut ſatiarentur; Concitavit enim ventos in cælo, & adduxit virtute ſuâ Auſtrum: Demiſit illis carnem ſicut pulverem, & velut arenam maris volucre alatum. Ceciditque intra caſtra illorum, & circum tabernacula eorum. Et comederunt atque ſaturati ſunt abundè, & optatis eorum ſatisfecit. Non tamen deſtiterunt à concupiſcentiis ſuis: ſed dum adhuc cibus eorum eſſet in ore ipſorum, Ira Dei aſcendit in eos, interfecitque ex divitibus illorum, & ſelectiores in Iſraele proſtravit. In his omnibus peccaverunt, & iterum non crediderunt mirabilibus ejus. Finierunt in vanitate dies ſuos, & annos ſuos celeriter. Quando interficiebat illos, quærebant eum, & revertebantur, ac mature veniebant ad eum. Recordati ſunt Deum eſſe adjutorē eorum, & Deum altiſſimū redemptorem ipſorum. Dilexerunt eum ore ſuo, linguâ autē ſuâ mentiti ſunt in illum. Cor ſuum non direxerunt erga eū, neq; crediderūt fœderi ipſiꝰ. At ipſe miſericors eſt, & condonat peccata, nec deſtruit. Sæpè revocat irā ſuā & non excitat totum furorē ſuum. Et recordatus eſt carnē eſſe illos, ventum qui abit & non redit. Iidē exacerbaverunt eum in deſerto, & ad indignationē concitaverunt illum in Aſimon. Et reverſi ſunt ac tentaverunt Deum, & Sanctū Iſraelis provocaverunt. Non ſunt recordati manꝰ ejus die quâ redemit eos de manu affligētis: Quòd geſſerit in Ægypto ſigna ſua & prodigia ſua in campis Soan: Quòd verterit flumina eorum in ſanguinē & fluenta eorum ne biberent aquā: Miſerit adversùm illos muſcas caninas, & comederint eos: & ranas, corruperintq; illos: Dederit locuſtæ proventus eorum, & laborē eorum brucho: Fregerit grandine vites eorum, ac ficus eorum glacie: Tradiderit grandini pecora illorum, & poſſeſſionē eorum combuſſerit

Verſio VULG. LAT.

24 Et pluit illis manna ad manducandū,
25 & panē cœli dedit eis. Panē angelorū
manducavit homo: cibaria miſit eis
26 in abundantia. Tranſtulit Auſtrum de
cœlo: & induxit in virtute ſua Africū.
27 Et pluit ſuper eos ſicut pulverem
carnes: & ſicut arenam maris volatilia
28 pennata. Et ceciderunt in medio caſtrorū
29 eorū, circa tabernacula eorū. Et
manducaverunt & ſaturati ſunt nimis,
30 & deſideriū eorum attulit eis: Non
ſunt fraudati à deſiderio ſuo. Adhuc
31 escæ eorum erant in ore ipſorū: Et ira
Dei aſcendit ſup eos. Et occidit pingues
eorū, & electos Iſrael impedivit.
32 In omnib⁹ his peccaverunt adhuc: &
33 non crediderunt in mirabilib⁹ ej⁹. Et
defecerunt in vanitate dies eorum, &
34 anni eorum cum feſtinatione. Cùm occideret
eos, quærebāt eum: & revertebantur,
& diluculò veniebant ad eum.
35 Et rememorati ſunt quia De⁹ adjutor
eſt eorum: & De⁹ excelſus redemptor
36 eorū eſt. Et dilexerunt eum in ore ſuo,
37 & lingua ſuā mentiti ſunt ei: Cor autē
eorum non erat rectum cum eo: nec fideles
38 habiti ſunt in teſtamento ej⁹. Ipſe
autē eſt miſericors, & propiti⁹ fiet
peccatis eorum: & non diſperdet eos.
Et abundavit ut averteret irā ſuā: &
39 non accendit omnē irā ſuā: Et recordat⁹
eſt quia caro ſunt: ſpirit⁹ vadens,
40 & non rediens. Quoties exacerbaverunt
eū in deſerto, in irā concitaverunt
41 eum in inaquoſo? Et converſi ſunt, &
tentaverunt Deum: & ſanctum Iſrael
42 exacerbaverunt. Non ſunt recordati
man⁹ ej⁹, die quâ redemit eos de manu
43 tribulantis, Sicut poſuit in Ægypto
ſigna ſua, & prodigia ſua in campo
44 Taneos. Et convertit in ſanguinē flumina
eorum, & imbres eorum, nè biberēt.
45 Miſit in eos cœnomyiā, & comedit
eos; et ranā, & diſperdidit eos.
46 Et dedit ærugini fructus eorum, & labores
47 eorū locuſtæ. Et occîdit in grandine
vineas eorum, & moros eorum in
48 pruina. Et tradidit grandini jumenta
eorum, & poſſeſſionem eorum igni.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

24 Καὶ ἔβρεξεν αὐτοῖς μάννα φαγεῖν, καὶ ἄρτον οὐρανοῦ
25 ἔδωκεν αὐτοῖς. Ἄρτον ἀγγέλων ἔφαγεν ἄνθρωπος,
ἐπισιτισμὸν ἀπέστειλεν αὐτοῖς εἰς πλησμονήν.
26 Ἀπῆρεν Νότον ἐξ οὐρανοῦ, καὶ ἐπήγαγεν ἐν τῇ
27 δυναστείᾳ αὐτοῦ Λίβα. Καὶ ἔβρεξεν ἐπ' αὐτοὺς ὡσεὶ
χοῦν σάρκας, καὶ ὡσεὶ ἄμμον θαλασσῶν πετεινὰ πτερωτά.
28 Καὶ ἐπέπεσον εἰς μέσον τῆς παρεμβολῆς αὐτῶν,
29 κύκλῳ τῶν σκηνωμάτων αὐτῶν. Καὶ ἔφαγον
καὶ ἐνεπλήσθησαν σφόδρα, καὶ τὴν ἐπιθυμίαν αὐτῶν
30 ἤνεγκεν αὐτοῖς. Οὐκ ἐστερήθησαν ἀπὸ τῆς ἐπιθυμίας
αὐτῶν· ἔτι τῆς βρώσεως αὐτῶν οὔσης ἐν τῷ
31 στόματι αὐτῶν, Καὶ ὀργὴ τοῦ θεοῦ ἀνέβη ἐπ' αὐτοὺς,
καὶ ἀπέκτεινεν ἐν τοῖς πίοσιν αὐτῶν, καὶ τοὺς
32 ἐκλεκτοὺς τοῦ Ἰσραὴλ συνεπόδισεν. Ἐν πᾶσι τούτοις
ἥμαρτον ἔτι, καὶ οὐκ ἐπίστευσαν τοῖς θαυμασίοις
33 αὐτοῦ. Καὶ ἐξέλιπον ἐν ματαιότητι αἱ ἡμέραι
34 αὐτῶν, καὶ τὰ ἔτη αὐτῶν μετὰ σπουδῆς. Ὅταν ἀπέκτεινεν
αὐτοὺς, ἐζήτουν αὐτὸν, καὶ ἐπέστρεφον καὶ ὤρθριζον
35 πρὸς τὸν θεόν. Καὶ ἐμνήσθησαν, ὅτι ὁ θεὸς βοηθὸς
αὐτῶν ἐστι, καὶ ὁ θεὸς ὁ ὕψιστος λυτρωτὴς αὐτῶν ἐστι.
36 Καὶ ἠγάπησαν αὐτὸν ἐν τῷ στόματι αὐτῶν, καὶ τῇ γλώσσῃ
37 αὐτῶν ἐψεύσαντο αὐτῷ. Ἡ δὲ καρδία αὐτῶν οὐκ εὐθεῖα
μετ' αὐτοῦ, οὐδὲ ἐπιστώθησαν ἐν τῇ διαθήκῃ αὐτοῦ.
38 Αὐτὸς δέ ἐστιν οἰκτίρμων, καὶ ἱλάσεται τὰς ἁμαρτίας
αὐτῶν, καὶ οὐ διαφθερεῖ· καὶ πληθυνεῖ τοῦ ἀποστρέψαι
τὸν θυμὸν αὐτοῦ, καὶ οὐχὶ ἐκκαύσει πᾶσαν τὴν
39 ὀργὴν αὐτοῦ. Καὶ ἐμνήσθη ὅτι σάρξ εἰσι, πνεῦμα
40 πορευόμενον καὶ οὐκ ἐπιστρέφον. Ποσάκις παρεπίκραναν
αὐτὸν ἐν τῇ ἐρήμῳ, παρώργισαν αὐτὸν ἐν γῇ ἀνύδρῳ;
41 Καὶ ἐπέστρεψαν καὶ ἐπείρασαν τὸν θεὸν, καὶ
42 τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ παρώξυναν. Οὐκ ἐμνήσθησαν
τῆς χειρὸς αὐτοῦ ἡμέρας, ἧς ἐλυτρώσατο αὐτοὺς ἐκ
43 χειρὸς θλίβοντος. Ὡς ἔθετο ἐν Αἰγύπτῳ τὰ σημεῖα
αὐτοῦ, καὶ τὰ τέρατα αὐτοῦ ἐν πεδίῳ Τάνεως.
44 Καὶ μετέστρεψεν εἰς αἷμα τοὺς ποταμοὺς αὐτῶν, καὶ
45 τὰ ὀμβρήματα αὐτῶν ὅπως μὴ πίωσιν. Ἐξαπέστειλεν
εἰς αὐτοὺς κυνόμυιαν, καὶ κατέφαγεν αὐτοὺς,
46 καὶ βάτραχον, καὶ διέφθειρεν αὐτούς. Καὶ ἔδωκε τῇ
ἐρυσίβῃ τὸν καρπὸν αὐτῶν, καὶ τοὺς πόνους αὐτῶν
47 τῇ ἀκρίδι. Ἀπέκτεινεν ἐν χαλάζῃ τὴν ἄμπελον
48 αὐτῶν, καὶ τὰς συκαμίνους αὐτῶν ἐν τῇ πάχνῃ. Καὶ
παρέδωκεν ἐν χαλάζῃ τὰ κτήνη αὐτῶν, καὶ τὴν ὕπαρξιν
αὐτῶν τῷ πυρί.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

28 *Et pluit illis manna ad manducandū: & panem cœli dedit eis.* 24
29 Panē Angelorū manducavit homo: 25
cibaria miſit eis [g] in abundantia.
30 [h] Tranſtulit (o) Auſtrū de cœlo: 26
et induxit in virtute ſua Africū.
31 Et pluit ſuper eos, ſicut pulverē, 27
carnes: & ſicut arenam marium, volatilia
pennata. 32 Et ceciderunt in 28
medio caſtrorū eorum, circa tabernacula
eorum. 33 Et manducaverunt, 29
& ſaturati ſunt nimis; & deſiderium
eorū attulit eis: Non ſunt 30
privati à deſiderio ſuo. 34 Adhuc
eſca eorum erat in ore ipſorum: Et 31
ira Dei aſcendit ſuper eos. 35 Et occîdit (p) [i] in pinguibus eorum: &
electos Iſrael compedivit. 36 [k] In 32
omnibus his peccaverunt adhuc: &
non crediderunt mirabilibus ejus.
37 Et defecerunt in vanitate dies 33
eorum: & [l] anni eorum cum feſtinatione.
38 Cùm occideret eos; [m] 34
quærebant eum, & revertebantur:
& diluculò veniebant ad Deum. 39
Et rememorati ſunt, quoniam Deus 35
adjutor eſt eorum: & Deus (q) excelſus redemptor eorum eſt. 40 Et 36
dilexerunt eum in ore ſuo, et linguâ
ſuâ mentiti ſunt ei. 41 Cor autem ipſorum 37
non erat rectum [n] cum eo:
nec fideles (r) habiti ſūt in teſtamento
ejus. 42 Ipſe autē eſt miſericors, 38
& propitius fiet [o] peccatis eorum:
& non (ſ) diſperdet [p]. 43 Et (t)
multiplicabit ad avertendam iram
ſuam, & non accendet omnem iram
ſuā. 44 Et recordatus eſt, quia caro 39
ſunt, ſpirit⁹ [q] vadens, et non rediens. 45 Quoties exacerbaverunt 40
eum in deſerto; in iram concitaverunt eū in (u) [r] terra ſine aqua. 46
Et converſi ſunt, et tentaverunt Deum: et ſanctum Iſrael exacerbaverunt. 41
47 Non ſunt recordati manûs 42
ej⁹, diei, (x) quâ redemit eos de manu
tribulantis. 48 Sicut poſuit in 43
Ægypto ſigna ſua, & prodigia ſua
in campo Taneos. 49 Et convertit 44
in ſanguinem flumina eorum, et (y)
[ſ] imbres eorum; nè biberent. 50
Miſit in eos (z) cynomyam, et comêdit 45
eos: et ranam, et diſperdidit eos.
51 Et dedit (aa) ærugini fructum 46
eorum: et labores eorū (bb) locuſtæ.
52 Occîdit in grandine (cc) vineam 47
eorum, & (dd) moros eorum in (ee)
pruina. 53 Et tradidit in (ff) grandine jumenta eorum, et ſubſtantiam eorum igni. 48

Verſio ÆTHIOPICA.

ወአዝነመ፡ሎሙ፡መና፡ይብልዑ። ወወሀቦሙ፡ 28
ኅብስተ፡ሰማይ።፨ ወኅብስተ፡መላእክቲ 29
ሁ፡በልዑ፡ሰብእ፡እምሕያው። ወፈነወ፡ሎ
ሙ፡ስንቆሙ፡ዘየአክሎሙ።፨ ወአንሥአ፡ 30
አዜብ፡እምሰማይ። ወአምጽአ፡መስዐ፡በኀ
ይሉ።፨ ወአዝነመ፡ላዕሌሆሙ፡ሥጋ፡ከ 31
መ፡መሬት። ወከመ፡ኆጻ፡ባሕር፡አዕዋፈ፡
ዘይሠርር።፨ ወወድቀ፡ማእከለ፡ተዓይኒ 32
ሆሙ። ወአውደ፡ደብተራሆሙ።፨ በልዑ፡ወ 33
ጸግቡ፡ጥቀ። ወወሀቦሙ፡ለፍትወቶሙ። ወ
ኢያኅጥኦሙ፡እመዘ፡ፈቀዱ።፨ ወእንዘ፡ 34
ዓዲ፡መብልዖሙ፡ውስተ፡አፉሆሙ። ወመጽ
አ፡መቅሠፍተ፡እግዚአብሔር፡ላዕሌሆ
ሙ።፨ ወቀተሎሙ፡መብዝኅቶሙ። ወአ 35
ዕቀጾሙ፡ለኅሩያኒ፡እስራኤል።፨ ወምስ 36
ለ፡ዝኒ፡ዓዲ፡አበሱ፡ሎቱ። ወኢተአመንዎ፡
በተአምሪሁ።፨ ወኀልቀ፡በከንቱ፡መዋዕ 37
ሊሆሙ። ወኃለፈ፡በጕጕአ፡ዓመቲሆ
ሙ።፨ ወአመ፡ይቀትሎሙ፡ውስተ፡አሚረ፡ 38
የኃሥሥዎ። ወይትመየጡ፡ወይገይሱ፡ኀበ፡
እግዚአብሔር።፨ ወተዘከሩ፡ከመ፡እግዚ 39
አብሔር፡ውእቱ፡ረዳኢሆሙ። ወእግዚአ
ብሔር፡ልዑል፡መድኃኒሆሙ።፨ ወአፍቀር 40
ዎ፡በአፉሆሙ። ወሐሰውዎ፡በልሳኖሙ።፨
ወኢኮነ፡ርቱዐ፡ልቦሙ፡በላዕሌሆሙ፡ ወኢ 41
ተአመንዎ፡በኪዳኑ።፨ ወውእቱሰ፡መሐሪ፡ 42
ውእቱ። ወይሰሪ፡ሎሙ፡ኵሎ፡ኃጢአቶሙ፡
ወኢያጠፍኦሙ።፨ ወያበዝኅ፡መይጠ፡ 43
መዐቱ። ወኢያነድድ፡በኵሉ፡መቅሠፍ
ቱ።፨ ወተዘከረ፡ከመ፡ሥጋ፡እሙንቱ። 44
መንፈስ፡እምከመ፡ወፅአ፡ኢይገብእ።፨ ሚ 45
መጠነ፡አምዕዕዎ፡በገዳም። ወወሀክዎ፡
በበድው።፨ ወተመይጡ፡ወአመከርዎ፡ለ 46
እግዚአብሔር። ወወሐክዎ፡ለቅዱስ፡እስ
ራኤል።፨ ወኢተዘከሩ፡እዴሁ። ዘአድ 47
ኀኖሙ፡እምእደ፡ፀሮሙ።፨ ዘገብረ፡ተአ 48
ምረ፡በግብጽ። ወመንከረ፡በሐቅለ፡ጣኔዎ
ስ።፨ ወረሰየ፡ደመ፡ለአፍላጊሆሙ። ወለ 49
አንቅዕቲሆሙኒ፡ከመ፡ኢይስተዩ።፨ ወፈነ 50
ወ፡ላዕሌሆሙ፡አኮተ፡ወበልዖሙ። ወቈርነ
ናዓተ፡ወአርኰሶሙ።፨ ወወሀበ፡ለአናኵ 51
ዕ፡ፍሬሆሙ። ወተግባሮሙኒ፡ለአንበጣ።፨
ወቀተለ፡ወይኖሙ፡በበረድ። ወበለሶሙኒ፡በ 52
አስሐትያ።፨ ወወሀበ፡ለበረድ፡እንስሳሆ 53
ሙ። ወንዋዮሙኒ፡ለእሳት።፨

INTERP. ÆTHIOP. [g] quæ ſufficerent illis. [h] Et excitavit Auſtrum [i] plurimos eorum: [k] Et cum iſthoc etiam in eum peccaverunt: et [l] tranſierunt annī [m] illo diē quærebant [n] apud eos: nec [o] omnibus peccatis [p] eos. Et [q] quandocumque vadens [r] ſolitudine; et [ſ] fontes eorum; ut non

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* وامطر لهم منا ليأكلوا * اعطاهم خبز السماء * خبز الملائكة اكله الانسان * وبعث 24 25
اليهم بطعام مشبع * واثار ريحا قبلية من السماء * واحضر بقوة العاصف * فامطر عليهم 26 27
لحوما مثل التراب * وطيرا ذات اجنحة مثل رمل البحر * وسقطت وسط معسكرهم حول منازلهم 28
* فاكلوا وشبعوا جدا * واتاهم بشهوتهم * ولم يعدمهم ارادتهم * فبينما الطعام في افواههم 29 30
* اتي عليهم غضب الله * فقتل خياريهم * وصرع خياري اسرائيل * وفي هذا كله اخطوا 31 32
اليه ايضا * ولم يؤمنوا بعجائبه * ففنيت في الباطل ايامهم * وسنوهم بسرعة تصرمت 33
* ولما قتلهم حينئذ طلبوه * وعادوا فابتكروا الي الله * وذكروا ان الله معينهم * والله 34 35
العلي مخلصهم * فاحبوه بافواههم وكذبوه بالسنتهم * ولم تستقم معه قلوبهم * ولم 36 37
يؤمنوا بعهده * وهو رؤف رحيم يغفر لهم خطاياهم ولا يهلكهم * ويرد كثير 38
سخطه * ولا يشعل كل غضبه * ذكر انهم لحم وروح اذا خرج لم يعد بعد * مرار كثيرة 39 40
اغضبوه في البرية * واغضبوه في مكان عديم الماء * وعادوا جربوا الله واغضبوا قدوس 41
اسرائيل * ولم يذكروا يده في اليوم الذي خلصهم من يد مضطهديهم * ولما جعل 42 43
اياته بمصر * وعجائبه في مزارع صاعان * اذ حول انهارهم دماء * وصهاريجهم لكيلا 44
يشربوا * ارسل عليهم ذباب الكلب فاكلهم * والضفادع فافسدتهم * اطعم القمل 45 46
ثمارهم * والجراد كدهم * كسر بالبرد كرومهم * وبالجليد تينهم * اسلم للبرد مواشيهم 47 48
وللنار كل مالهم

Et pluit illis manna ut manducarent: dedit 24
illis panem cœli: panem Angelorum manducavit 25
homo: miſitque eis cibū ſaturantem.
Et excitavit ventum Auſtralem de 26
de cœlo, & induxit vehementiam turbinis:
Et pluit ſuper eos carnes ut pulverem, 27
& volatilia alata ut arenam maris.
Et ceciderunt in medium caſtrorum eorum 28
circa manſiones eorum. Et comederunt 29
ac ſaturati ſunt valde & dedit eis
deſiderium eorum. Et non privavit eos 30
voluntate eorum. Dum autem eſſet eſca in
oribus eorum, Venit ſuper eos ira Dei, & 31
occîdit ſelectiores eorum, et proſtravit electos
Iſrael. Attamen peccaverunt in eum 32
iterum, & non crediderunt miraculis
ejus. Conſumptique ſunt in vanitate 33
dies eorum, & anni eorum cum celeritate
ſecti fuerunt. Quum autem occidiſſet 34
eos, tunc quæſierunt illum: & reverſi,
diluculò venerunt ad Deum. Et recordati 35
ſunt quòd Deus adjutor eorum eſt, & Deus
altiſſimus, Salvator eorum. Nam dilexerunt 36
eum oribus ſuis, & mentiti ſunt
ei linguis ſuis, Et recta non fuerunt cum 37
eo corda eorum, neque crediderunt pacto
ejus. Ipſe verò eſt clemens, miſericors, remittens 38
eis delicta eorū, et non perdet eos:
& retrahet multitudinem iræ ſuæ, &
non accendetur totus furor illius. Recordatus 39
eſt eſſe eos carnem, & ſpiritum qui
quum exierit, non redit ampliùs. Multoties 40
concitaverunt eum ad indignationem
in deſerto, & ad iram commoverunt eum
in loco carente aquâ; Et reverſi ſunt, ac 41
tentaverunt Deū, et excitaverunt ad iram
Sanctum Iſrael. Et non ſunt recordati manûs 42
ej⁹ in die quâ liberavit eos de manu
perſequentium illos. Et quando fecit prodigia 43
ſua in Ægypto & miracula ſua in
arvis Sagan. Quando convertit flumina 44
eorum in ſanguinem, & ciſternas eorum,
ut ne biberent. Miſit adverſùs eos muſcas 45
caninas, & comederunt eos: & ranas, &
corruperunt eos. Cibavit pediculos fructibus 46
eorum, & locuſtas labore eorum: Confregit 47
grandinibus vineas eorum, et glacie
ficus eorum. Tradidit grandini armenta 48
eorum, et igni cunctas facultates eorum.

תהלים : עח

immiſſionem : anguſtiam & ,furorem & ,iram ,ſuæ *naris* iram eos in Miſit
49 יְשַׁלַּח־בָּם ׀ חֲרוֹן אַפּוֹ עֶבְרָה וָזַעַם וְצָרָה מִשְׁלַחַת
morte à prohibuit non .ſuo *naſo* ſemitam Ponderavit .malorum angelorum
50 מַלְאֲכֵי רָעִים : יְפַלֵּס נָתִיב לְאַפּוֹ לֹא־חָשַׂךְ מִמָּוֶת
primogenitum omne percuſſit Et .*concluſit peſti* eorum *beſtiam* & : eorum animam
51 נַפְשָׁם וְחַיָּתָם לַדֶּבֶר הִסְגִּיר : וַיַּךְ כָּל־בְּכוֹר
fecit proficiſci Et .Cham tabernaculis in fortitudinum principium : Ægypto in
52 בְּמִצְרָיִם רֵאשִׁית אוֹנִים בְּאָהֳלֵי־חָם : וַיַּסַּע
eos duxit Et .deſerto in gregem ſicut eos duxit & ; ſuum populum oves ſicut
53 כַּצֹּאן עַמּוֹ וַיְנַהֲגֵם כַּעֵדֶר בַּמִּדְבָּר : וַיַּנְחֵם
eos adduxit Et .mare operuit eorum inimicos & : *expaverunt* non & ,*fiducia in*
54 לָבֶטַח וְלֹא פָחָדוּ וְאֶת אוֹיְבֵיהֶם כִּסָּה הַיָּם : וַיְבִיאֵם
ejecit Et .ejus dextera acquiſivit ,iſtum montem : ſuæ ſanctitatis terminum ad
55 אֶל־גְּבוּל קָדְשׁוֹ הַר־זֶה קָנְתָה יְמִינוֹ : וַיְגָרֶשׁ
fecit habitare & : hæreditatis *fune* in eas fecit cadere & ,gentes eorum *faciebus* à
מִפְּנֵיהֶם ׀ גּוֹיִם וַיַּפִּילֵם בְּחֶבֶל נַחֲלָה וַיַּשְׁכֵּן
Deum exacerbaverunt & ,tentaverunt Et .Iſrael tribus eorũ tabernaculis in
56 בְּאָהֳלֵיהֶם שִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל : וַיְנַסּוּ וַיַּמְרוּ אֶת־אֱלֹהִים
,ſunt prævaricati &,ſe averterunt Et .cuſtodierunt non ejus teſtimonia & : excelſum
57 עֶלְיוֹן וְעֵדוֹתָיו לֹא שָׁמָרוּ : וַיִּסֹּגוּ וַיִּבְגְּדוּ
:ſuis excelſis in eũ irritaverunt Et .*doli* arcus ut ſunt verſi : eorũ patres ſicut
58 כַּאֲבוֹתָם נֶהְפְּכוּ כְּקֶשֶׁת רְמִיָּה : וַיַּכְעִיסוּהוּ בְּבָמוֹתָם
: eſt iratus & ,Deus Audivit .eum fecerunt æmulari ſuis ſculptilibus in &
59 וּבִפְסִילֵיהֶם יַקְנִיאוּהוּ : שָׁמַע אֱלֹהִים וַיִּתְעַבָּר
collocavit tentorium : Siloh tabernaculum reliquit Et .Iſrael in valde *reprobavit* &
60 וַיִּמְאַס מְאֹד בְּיִשְׂרָאֵל : וַיִּטֹּשׁ מִשְׁכַּן שִׁלוֹ אֹהֶל שִׁכֵּן
manũ in ſuã gloriam & : ſuã fortitudinem captivitatem in tradidit Et .*homine in*
61 בָּאָדָם : וַיִּתֵּן לַשְּׁבִי עֻזּוֹ וְתִפְאַרְתּוֹ בְיַד־
.eſt iratus ſuam hæreditatem in & : ſuum populum gladio *concluſit* Et .*anguſtiatoris*
62 צָר : וַיַּסְגֵּר לַחֶרֶב עַמּוֹ וּבְנַחֲלָתוֹ הִתְעַבָּר :
.*ſunt celebratæ epithalamio* non ejus virgines & : ignis comedit ejus *Electos*
63 בַּחוּרָיו אָכְלָה־אֵשׁ וּבְתוּלֹתָיו לֹא הוּלָּלוּ :
eſt excitatus Et .fleverunt non ejus viduæ & : ceciderunt gladio in ejꝰ Sacerdotes
64 65 כֹּהֲנָיו בַּחֶרֶב נָפָלוּ וְאַלְמְנֹתָיו לֹא תִבְכֶּינָה : וַיִּקַץ
percuſſit Et .*vino præ exclamans* potens tanquam : Dominus dormiens tanquam
66 כְּיָשֵׁן ׀ אֲדֹנָי כְּגִבּוֹר מִתְרוֹנֵן מִיָּיִן : וַיַּךְ־
tentorium *in reprobavit* Et .eis dedit *ſeculi* opprobrium : retrorſum ſuos hoſtes
67 צָרָיו אָחוֹר חֶרְפַּת עוֹלָם נָתַן לָמוֹ : וַיִּמְאַס בְּאֹהֶל
:Jehudah tribum elegit Et .elegit non Ephraim tribum *in* & : Joſeph
68 יוֹסֵף וּבְשֵׁבֶט אֶפְרַיִם לֹא בָחָר : וַיִּבְחַר אֶת־שֵׁבֶט יְהוּדָה
:ſuũ ſanctuarium excelſa ſicut ædificavit Et .dilexit quem ,Sijon montem
69 אֶת־הַר צִיּוֹן אֲשֶׁר אָהֵב : וַיִּבֶן כְּמוֹ־רָמִים מִקְדָּשׁוֹ
eum tulit & : ſuum ſervum David *in* elegit Et .ſeculum in *eam* fundavit terram ſicut
70 כְּאֶרֶץ יְסָדָהּ לְעוֹלָם : וַיִּבְחַר בְּדָוִד עַבְדּוֹ וַיִּקָּחֵהוּ
Jahacob *in paſcendum ad* ,eum adduxit ,fœtas *poſt* De .*pecoris* caulis de
71 מִמִּכְלְאֹת צֹאן : מֵאַחַר עָלוֹת הֱבִיאוֹ לִרְעוֹת בְּיַעֲקֹב
ſimplicitatẽ ſecundum eos pavit Et .ſuam hæreditatem Iſrael in & : ſuum populum
72 עַמּוֹ וּבְיִשְׂרָאֵל נַחֲלָתוֹ : וַיִּרְעֵם כְּתֹם
.eos duxit ſuarum *volarum* intelligentiis *in* & : ſui cordis
לְבָבוֹ וּבִתְבוּנוֹת כַּפָּיו יַנְחֵם :

תרגום TARGUM.

49 יגרי בהון מאתן וחמשין מחן בתקוף רוגזיה
ברתחא ובתריכותא ובעקא דמשתלחן בעדן
50 בידיהון דאזגדין בישין : יטיל בכביש תוקפיה
לא מנע ממותא נפשהון ובעיריהון לממותא
51 מסר : וקטל כל בוכרא במצרים שרוי צעריהון
52 במשכנהון דחם : ואטיל היך ענא עמיה
53 ודברנון היך ענא עדרא במדברא : ואשרנון
לרוחצן ולא דחלין וית בעלי דבביהון חפא
54 ימא : ואעלנון לתחום אתר בית מקדשיה
55 טור דין קנת ימיניה : ותריך מן קדמיהון עממיא
ואשרי יתהון בעדב אחסנתיה ואשרי
56 במשכנהון שבטיא דישראל : ואנסיאו וארגיזו
57 קדם אלהא עלאה וסהדותיה לא נטרו : וזורו
וארשיעו היך אבהתהון אתהפיכו היך קשתא
58 דרמיא גררין : וארגיזו קדמוי בנסכיהון
59 ובפסיליהון ובצלמניהון אקנון יתיה : שמיע
קדם אלהא ורגז ורחקת נפשיה לחדא
60 בישראל : ושבק משכנא דשילו משכן די שרת
61 תמן שכנתיה בגו בני נשא : ומסר לשביתא
62 אוריתיה ושבהוריה ביד מעיקא: ומסר לקטלין
63 בחרבא עמיה ובאחסנתיה ארגיז : עולימוהי
64 אכלת אשתא ובתולתיה לא אשתבחן : כהנוי
בקטלא דחרבא יפלון וארמלתוי לא ספיקן
דתבכין : [תא בעדן דשבו פלשתאי ארונא דיי
בחרבא נפלו כהני שילו חפני ופנחס ובעדן
דבשרו נשוהי לא בכין ארום מיתו אוף אנון
65 בהדא יומא] : ואתער היך דמיך יי היך גברא
66 דמתפקח מן חמרא : ומחא מעיקוי בטחוריא
67 באחוריהון קלנא בעלמא יהב להון : ורחק
במשכנא דפרס על תחומיה דיוסף ובשבט
68 אפרים לא רעא : ואתרעי ית שבט יהודה ית
69 טורא דציון די רחים : ובנא היך קרנא דרימנא
מקדשיה מעתד היך ארעא דיסדה לעלמי
70 עלמין : ואתרעי בדוד עבדיה ודבריה מן עדרי
71 דענא : ומן בתר מינקן איתיה למשלט ביעקב
72 יה ובישראל אחסנתיה: ומלך עליהון בשלימות לבביה ובסוכלתנות אידוי ידברנון:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Immiſit in eos *ducentas et quinquaginta* plagas in ira furoris ſui, in iracũdia et expulſione et in anguſtia quæ immiſſa *ſũt eo tẽpore* p *manꝰ angelorũ malorũ*. Movit in via fortitudinẽ ſuã; non prohibuit à morte animas eorũ, et jumenta eorũ morti tradidit. Et occîdit omne primogenitũ in Ægypto; primitias laboris eorũ in tabernaculis Cham. Et movere juſſit velut oves populum ſuum, & perduxit eos ſicut *oves gregis* in deſerto. Et habitare eos fecit ſecure, et nõ timuerũt, cùm inimicos eorum cooperuiſſet mare. Et adduxit eos ad terminũ *loci* domꝰ ſanctuarii ſui, montẽ quẽ acquiſivit dextera ejꝰ. Et ejecit à facie eorũ gentes; et induxit ipſos ſorte in hæreditatem *ſuam*, et habitare fecit in tabernaculis eorũ tribꝰ Iſrael. Et tentaverunt, et ad iracundiã concitaverunt Deũ altiſſimum, ac teſtimonia ejꝰ non ſervaverunt. Sed averſi ſunt, et impie egerunt ſicut patres eorũ; ſeſe converterunt ſicut arcꝰ excutiens ſagittas. Et ad iram concitaverunt eum *libaminibus* ſuis, et ſculptilibꝰ idoliſq; ſuis ad æmulationẽ eum provocaverunt. Auditũ eſt corã Deo, et iratꝰ eſt, et abominata eſt anima ejus valdè Iſraelem. Et reliquit tabernaculũ Silo, *tabernaculũ* in quo habitaverat majeſtas ejꝰ inter homines. Et tradidit captivitati legẽ ſuã, et pulchritudinẽ ſuã in manu moleſtantis. Et tradidit occidentibꝰ gladio populũ ſuũ, et hæreditati ſuæ iratꝰ eſt. Juvenes eorũ devoravit ignis, & virgines eorum non fuerunt laudatæ. Sacerdotes ejꝰ *occiſione gladii* ceciderunt, et viduæ ejus non ſuffecerunt luctui. *Targum aliud: Quo tempore captivã duxerunt Paleſtini arcam Domini*, gladio ceciderunt ſacerdotes *Silo Hophni et Phineas; quo vero tempore nuntia attulerunt, uxores ejus non luxerunt, mortuæ ſunt enim ipſæ quoq; eodem die.* Et evigilavit acſi dormiſſet Dñs, ſicut vir qui reſipiſcit à vino. Et percuſſit moleſtantes eos hæmorrhoidibꝰ in poſteriora eorũ: opprobriũ ſempiternũ dedit eis. Et reprobavit tabernaculũ ꝙ tetenderat in termino Joſeph, et in tribu Ephraim non complacuit ſibi. Sed elegit tribũ Jehudæ, montẽ Sion quẽ dilexit. Et ædificavit ſicut cornu naricornis ſanctuariũ ſuũ, [*quod*] permanet ſicut terra quã fundavit in *ſecula ſeculorũ*. Et complacuit ſibi in Davide ſervo ſuo, et tulit eũ de gregibꝰ oviũ. *Et* à veſtigiis lactantiũ aſcivit eũ, ut dominaretur in Jaacob populo ſuo, et in Iſrael hæreditate ſua. Et regnavit ſup eos in integritate cordis ſui, et per prudentiã manuum ſuarum deduxit illos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

49 * ܫܕܪ ܒܗܘܢ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ : ܚܡܬܐ ܘܪܘܓܙܐ : ܘܐܘܠܨܢܐ. ܫܕܪ ܒܝܕ ܡܠܐܟܐ ܒܝܫܐ :
50 * ܘܦܬܚ ܫܒܝܠܐ ܒܝܫܐ. ܘܠܐ ܚܣܟ ܡܢ ܡܘܬܐ ܢܦܫܬܗܘܢ : ܘܚܝܘܬܗܘܢ ܠܡܘܬܐ ܐܫܠܡ.
51 * ܘܩܛܠ ܟܠ ܒܘܟܪܐ ܕܡܨܪܝܢ : ܪܫ ܟܠܗ ܡܘܠܕܗܘܢ ܒܡܫܟܢܐ ܕܚܡ. * ܦܣܘܩܐ *
52 53 * ܐܫܩܠ ܠܥܡܗ ܐܝܟ ܥܢܐ. ܘܕܒܪ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܓܙܪܐ ܒܡܕܒܪܐ : * ܐܫܪܝ ܐܢܘܢ ܒܣܒܪܐ ܘܠܐ
54 ܙܥܘ. ܘܠܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ ܟܣܐ ܝܡܐ : * ܐܥܠ ܐܢܘܢ ܠܬܚܘܡܐ ܕܩܘܕܫܗ. ܠܛܘܪܐ ܗܢܐ
55 ܕܩܢܬ ܝܡܝܢܗ : * ܘܐܘܒܕ ܡܢ ܩܕܡܝܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܐܪܡܝ ܐܢܘܢ ܒܚܒܠܐ ܕܝܪܬܘܬܗ : ܘܐܫܪܝ
56 ܒܡܫܟܢܝܗܘܢ ܫܒܛܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܢܣܝܘ ܘܐܡܪܪܘ ܠܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ : ܘܣܗܕܘܬܗ ܠܐ ܢܛܪܘ.
57 58 * ܘܗܦܟܘ ܘܕܓܠܘ ܐܝܟ ܐܒܗܝܗܘܢ : ܘܐܬܗܦܟܘ ܐܝܟ ܩܫܬܐ ܢܟܝܠܬܐ. * ܘܐܪܓܙܘܗܝ
59 ܒܕܒܚܝܗܘܢ : ܘܒܦܬܟܪܝܗܘܢ ܐܚܡܬܘܗܝ. * ܫܡܥ ܐܠܗܐ ܘܐܬܚܡܬ : ܘܪܓܙ ܛܒ ܠܐ
60 61 ܝܣܪܝܠ. * ܘܫܒܩ ܠܡܫܟܢܐ ܕܫܝܠܘ : ܡܫܟܢܐ ܕܐܫܪܝ ܒܗ ܒܒܢܝܢܫܐ. * ܝܗܒ ܠܫܒܝܬܐ
62 ܥܡܗ ܘܫܘܒܚܗ ܒܐܝܕܐ ܕܐܠܘܨܐ : * ܐܫܠܡ ܠܥܡܗ ܠܚܪܒܐ. ܘܐܣܬܠܝ ܡܢ ܝܪܬܘܬܗ.
63 64 * ܠܥܠܝܡܝܗܘܢ ܐܟܠܬ ܢܘܪܐ : ܘܒܬܘܠܬܗܘܢ ܐܬܕܘܕܝ. * ܘܟܗܢܝܗܘܢ ܢܦܠܘ ܒܚܪܒܐ.
65 66 ܘܐܪܡܠܬܗܘܢ ܠܐ ܐܬܒܟܝ. * ܐܬܬܥܝܪ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܕܡܟܐ : ܘܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܢܦܨܗ ܚܡܪܗ. * ܘܡܚܐ
67 ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܠܒܣܬܪܗ : ܘܚܣܕܐ ܕܥܠܡܐ ܝܗܒ ܠܗܘܢ. * ܐܣܠܝ ܠܡܫܟܢܐ
68 ܕܝܘܣܦ : ܘܒܫܒܛܗ ܕܐܦܪܝܡ ܠܐ ܐܬܪܥܝ. * ܓܒܐ ܠܫܪܒܬܐ ܕܝܗܘܕܐ : ܠܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܕܐܚܒ.
69 70 * ܒܢܐ ܒܪܘܡܐ ܡܩܕܫܗ : ܘܫܬܐܣܗ ܒܐܪܥܐ ܠܥܠܡ. * ܓܒܐ ܠܕܘܝܕ ܥܒܕܗ : ܘܕܒܪܗ
71 ܡܢ ܓܙܪܐ ܕܥܢܐ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܡܝܢܩܬܐ : ܐܝܬܝܗ ܠܡܪܥܝܘ ܠܝܥܩܘܒ ܥܡܗ ܘܠܐܝܣܪܝܠ
72 ܝܪܬܘܬܗ. * ܘܕܒܪ ܐܢܘܢ ܒܬܡܝܡܘܬܐ ܕܠܒܗ : ܘܒܣܘܟܠܐ ܕܐܝܕܘܗܝ ܕܒܪ ܐܢܘܢ.

Miſerit in eos æſtum indignationis ſuæ, furorem, & irã, atque angorẽ: miſerit per Angelum malũ. Aperuitq; ſemitas malas, & non continuerit à morte animas eorũ: & animantia illorũ morti tradiderit: Occiderit omnia primogenita Ægypti, primũ quemq; fœtum illorũ in tabernaculo Ham: * *Sectio* * Tranſtulerit populũ ſuũ ſicut oves, et duxerit eos ut gregẽ per deſertũ: Caſtrametari fecerit illos cum ſpe, & non timuerint; hoſtes autẽ illorũ obtexerit mare: Adduxerit eos ad terminũ ſanctitatis ſuæ, ad iſtũ montẽ quem poſſedit dextera ipſius. Perdiderit è conſpectu eorũ gentes, jeceritque illas fune hæreditatis ſuæ, habitaverintque in tabernaculis earũ tribus Iſraelis. Tentaverunt, & exaſperaverunt Deum excelſum, & teſtimonia ejus non obſervaverunt. Et averterunt ſe, ac mentiti ſunt ſicut patres ſui, & retroacti ſunt inſtar arcûs fallacis. Et ad iracundiam provocaverũt eum ſacrificiis ſuis, & ſimulachris ſuis ad æmulationẽ accenderunt illũ. Audivitq; Deꝰ & excanduit, iratuſq; eſt valde Iſraeli: Et oblitꝰ eſt tabernaculi Silo, tabernaculi ꝙ inhabitaverat inter homines: Dedit prædæ populũ ſuũ, & gloriã ejus in manu tribulantis: Tradidit populũ ſuũ gladio, & neglexit hæreditatẽ ſuã: Juvenes eorũ voravit ignis, & virgines eorũ exagitatæ ſunt: Sacerdoteſque eorũ ceciderunt gladio, & viduæ illorũ non fuerunt deploratæ. Experrectus eſt Dñs tanquã dormiens, & quaſi vir quem excuſſit vinum ſuum: Percuſſit inimicos ſuos à tergo ſuo, & opprobrium mundi dedit illis. Sprevit tentorium Joſeph, & tribus Afrem ei non placuit: Elegit familiam Judhæ, montẽ Sion quem dilexit: Ædificavit in ſublimi ſanctuarium ſuum, & in terra firmavit illud in æternum: Elegit David ſervum ſuum, & abduxit eum de grege ovium, Et de poſt pecudes lactantes: ad paſcendum Jacob populum ſuum, & Iſraelem hæreditatem ſuam. Pavit illos in innocentia cordis ſui, & intell manuum ſuarum gubernavit co

Psal. LXXVII.

Versio VULG. LAT.

49 Misit in eos irã indignationis suæ, in-
dignationẽ, & irã, & tribulationem,
50 immissiones per angelos malos. Viam
fecit semitæ iræ suæ, non pepercit à
morte animab⁹ eorũ: & jumenta eorũ
51 in morte conclusit. Et percussit omne
primogenitum in terra Ægypti, pri-
mitias omnis laboris eorũ in taber-
52 naculis Cham. Et abstulit sicut oves
populũ suũ: & perduxit eos tanquam
53 gregem in deserto. Et eduxit eos in
spe, & non timuerunt: & inimicos
54 eorũ operuit mare. Et induxit eos in
montem sanctificationis suæ, montẽ,
quem acquisivit dextera ejus. Et ejecit
à facie eorũ gentes; & sorte divisit
55 eis terrã in funiculo distributionis. Et
habitare fecit in tabernaculis eorũ tri-
56 bus Israel. Et tentaverunt, & exacer-
baverunt Deũ excelsũ: & testimonia
57 ej⁹ non custodierunt. Et averterunt
se, & non servaverunt pactũ: quem-
admodùm patres eorum, conversi
58 sunt in arcum pravum. In irã concita-
verunt eum in collibus suis: & in
sculptilibus suis ad æmulationem eũ
59 provocaverunt. Audivit Deus, &
sprevit: & ad nihilum redegit valdè
60 Israel. Et repulit tabernaculũ Silo,
tabernaculũ suũ, ubi habitavit in ho-
61 minib⁹. Et tradidit in captivitatẽ vir-
tutẽ eorũ: & pulchritudinẽ eorũ in
62 man⁹ inimici. Et conclusit in gladio
populũ suũ: & hæreditatẽ suã sprevit.
63 Juvenes eorũ comédit ignis: & vir-
64 gines eorũ non sunt lamentatæ. Sa-
cerdotes eorũ in gladio ceciderunt:
65 & viduæ eorũ non plorabantur. Et
excitatus est tanquam dormiens Dñs,
66 tanquã potens crapulatus à vino. Et
percussit inimicos suos in posteriora:
67 opprobriũ sempiternũ dedit illis. Et
repulit tabernaculũ Joseph: & tribũ
68 Ephraim non elegit: Sed elegit tribũ
69 Juda, montẽ Sion quem dilexit. Et æ-
dificavit sicut unicorniũ sanctificium
70 suũ in terra, quã fundavit in secula. Et
elegit David servũ suũ, & sustulit eũ
de gregibus oviũ: de post fœtantes ac-
71 cepit eũ, Pascere Jacob servũ suũ, &
72 Israel hæreditatẽ suã. Et pavit eos in
innocentia cordis sui: & in intellecti-
bus manuum suarum deduxit eos.

Vers. GRÆCA. LXX. Interp.

49 Ἐξαπέστειλεν εἰς αὐτοὺς ὀργὴν θυμοῦ αὐτοῦ, θυμὸν
καὶ ὀργὴν καὶ θλῖψιν, ἀποστολὴν δι' ἀγγέλων πονη-
50 ρῶν. Ὡδοποίησε τρίβον τῇ ὀργῇ αὐτοῦ, οὐκ ἐφείσα-
το ἀπὸ θανάτου τῶν ψυχῶν αὐτῶν, καὶ τὰ κτήνη αὐ-
51 τῶν εἰς θάνατον συνέκλεισε. Καὶ ἐπάταξε πᾶν
πρωτότοκον ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἀπαρχὴν πόνων αὐ-
52 τῶν ἐν τοῖς σκηνώμασι Χάμ. Καὶ ἀπῆρεν ὡς
πρόβατα τὸν λαὸν αὐτοῦ, ἤγαγεν αὐτοὺς ὡσεὶ ποί-
53 μνιον ἐν ἐρήμῳ. Καὶ ὡδήγησεν αὐτοὺς ἐν ἐλπίδι,
καὶ οὐκ ἐδειλίασαν, καὶ τοὺς ἐχθροὺς αὐτῶν ἐκάλυψε θά-
54 λασσα. Καὶ εἰσήγαγεν αὐτοὺς εἰς ὄρος ἁγιάσματος
αὐτοῦ, ὄρος τοῦτο ὃ ἐκτήσατο ἡ δεξιὰ αὐτοῦ. καὶ
ἐξέβαλεν ἀπὸ προσώπου αὐτῶν ἔθνη, καὶ ἐκληρο-
55 δότησεν αὐτοὺς ἐν σχοινίῳ κληροδοσίας, Καὶ κατεσκή-
νωσεν ἐν τοῖς σκηνώμασιν αὐτῶν τὰς φυλὰς τοῦ Ἰσ-
56 ραήλ. Καὶ ἐπείρασαν καὶ παρεπίκραναν τὸν Θεὸν
τὸν ὕψιστον, καὶ τὰ μαρτύρια αὐτοῦ οὐκ ἐφυλάξαντο.
57 Καὶ ἀπέστρεψαν, καὶ ἠσυνθέτησαν καθὼς καὶ οἱ πα-
58 τέρες αὐτῶν, μετεστράφησαν εἰς τόξον στρεβλόν. Καὶ
παρώργισαν αὐτὸν ἐπὶ τοῖς βουνοῖς αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς
59 γλυπτοῖς αὐτῶν παρεζήλωσαν αὐτόν. Ἤκουσεν ὁ Θεὸς
60 καὶ ὑπερεῖδε, καὶ ἐξουδένωσε σφόδρα τὸν Ἰσραήλ. Καὶ
ἀπώσατο τὴν σκηνὴν Σηλώμ, σκήνωμα αὐτοῦ οὗ κατε-
61 σκήνωσεν ἐν ἀνθρώποις. Καὶ παρέδωκεν εἰς αἰχμα-
λωσίαν τὴν ἰσχὺν αὐτῶν, καὶ τὴν καλλονὴν αὐτῶν εἰς χεῖρα
62 ἐχθροῦ. Καὶ συνέκλεισεν εἰς ῥομφαίαν τὸν λαὸν αὐτοῦ,
63 καὶ τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ ὑπερεῖδε. Τοὺς νεανίσκους
αὐτῶν κατέφαγε πῦρ, καὶ αἱ παρθένοι αὐτῶν οὐκ ἐ-
64 πενθήθησαν. Οἱ ἱερεῖς αὐτῶν ἐν ῥομφαίᾳ ἔπεσον, καὶ αἱ
65 χῆραι αὐτῶν οὐ κλαυθήσονται. Καὶ ἐξηγέρθη ὡς ὁ ὑ-
πνῶν κύριος, ὡς δυνατὸς κεκραιπαληκὼς ἐξ οἴνου.
66 Καὶ ἐπάταξε τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ εἰς τὰ ὀπίσω, ὄνει-
67 δος αἰώνιον ἔδωκεν αὐτοῖς. Καὶ ἀπώσατο τὸ σκή-
νωμα Ἰωσήφ, καὶ τὴν φυλὴν Ἐφραὶμ οὐκ ἐξελέξατο.
68 Καὶ ἐξελέξατο τὴν φυλὴν Ἰούδα, τὸ ὄρος τὸ Σιὼν ὃ
69 ἠγάπησε. Καὶ ᾠκοδόμησεν ὡς μονοκερώτων τὸ ἁ-
γίασμα αὐτοῦ, ἐν τῇ γῇ ἐθεμελίωσεν αὐτὴν εἰς τὸν
70 αἰῶνα. Καὶ ἐξελέξατο Δαυὶδ τὸν δοῦλον αὐτοῦ, καὶ ἀν-
έλαβεν αὐτὸν ἐκ τῶν ποιμνίων τῶν προβάτων. Ἐξόπι-
71 σθεν τῶν λοχευομένων ἔλαβεν αὐτόν Ποιμαίνειν Ἰα-
κὼβ τὸν δοῦλον αὐτοῦ, καὶ Ἰσραὴλ τὴν κληρονομίαν αὐ-
72 τοῦ. Καὶ ἐποίμανεν αὐτοὺς ἐν τῇ ἀκακίᾳ τῆς καρ-
δίας αὐτοῦ, καὶ ἐν τῇ συνέσει τῶν χειρῶν αὐτοῦ ὡδήγη-
σεν αὐτούς.

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

54 Misit in eos irã indignationis 49
suæ: indignationem, & iram, & tri-
bulationem, immissionem per (gg)
angelos malos. 55 Viã (†) fecit semi- 50
te iræ suæ: non pepercit à mor-
te animabus eorum: & jumenta
eorũ in morte conclusit. 56 Et per- 51
cussit omne primogenitum in terra
Ægypti: primitias (hh) [t] laborũ
eorum in tabernaculis Cham. 57 Et 52
abstulit, sicut oves, populum suum:
et perduxit eos tanquã gregem in
deserto. 58 Et deduxit eos in spe, 53
& non timuerunt: & inimicos eo-
rum operuit mare. 59 Et induxit e- 54
os in montem sanctificationis suæ,
(ii) montem hunc, quem acquisivit
dextera ejus. 60 Et ejecit à facie
eorũ gentes: & sorte divisit eis ter-
rã in funiculo distributionis. 61 Et 55
habitare fecit in tabernaculis eorũ
trib⁹ Israel. 62 Et tentaverunt, & 56
exacerbaverunt Deũ excelsum. Et
testimonia ejus non custodierunt.
63 (kk) Et averterunt se, & [v] nõ 57
(ll) servaverunt pactum, quemad-
modũ & patres eorũ: conversi sunt
in arcum pravũ. 64 Et in irã con- 58
citaverunt eũ in collib⁹ suis: & in
sculptilib⁹ suis ad æmulationẽ eum
provocaverunt. 65 Audivit De⁹, & 59
[x] sprevit: & ad nihilum redegit
valdè Israel. 66 Et repulit taberna- 60
culũ Selõ, tabernaculũ suũ, ubi ha-
bitavit in hominib⁹. 64 Et tradidit 61
in captivitatẽ virtutẽ eorũ, & pul-
chritudinẽ eorum in manum inimi-
ci. 68 Et conclusit in gladio popu- 62
lum suum: & hæreditatẽ suã spre-
vit. 69 Juvenes eorũ comẽdit ignis, 63
& virgines eorum non sunt (mm)
lamentatæ. 70 Sacerdotes eorum in 64
gladio ceciderunt: & viduæ eorum
non (nn) plorabuntur. 71 Et excita- 65
tus est, [y] tanquã dormiens, Do-
minus; tanquã potens crapulat⁹ à
vino. 72 Et percussit inimicos suos 66
in posteriora: 73 Opprobrium sem-
piternum dedit illis. 74 Et repulit 67
tabernaculum Joseph: & tribum
Ephræm non elegit. 75 Et elegit tri- 68
bum Juda, montẽ Sion, quem dile-
xit. 76 [z] Et ædificavit sicut (oo) 69
unicorniũ (pp) sanctificationẽ suã:
in (qq) terra fundavit eã in æternum. 77 Et elegit David servũ suũ: et assumpsit eũ de gregi- 70
bus ovium. De post (rr) fœtantes accepit eũ, 78 Pascere Jacob servũ suũ, et Israel hæreditatẽ 71
suã. 79 Et pavit eos in innocentia cordis sui: & in (ss) intellectu manuũ suarũ deduxit eos. 72

Versio ÆTHIOPICA.

ወፈነወ፡ ላዕሌሆሙ፡ መቅሠፍተ፡ መዐቱ፡፡ መ 54
ቅሠፍተ፡ ወመንሱተ፡ ወሕማመ፡፡ ወፈነወ፡
ምስለ፡መላእክት፡እኩያን፡፡=፡ ወጺሐ፡ፍ 55
ኖተ፡ለመዓቱ፡፡ ወኢምሕከ፡ እሞት፡ለነፍ
ሶሙ፡፡ ወአጸወ፡ ውስተ፡ ሞት፡ እንስሳሆ
ሙ፡፡=፡ ወቀተለ፡ኵሉ፡በኵሮሙ፡በምድረ፡ 56
ግብጽ፡፡ወቀደሜ፡ኵሉ፡ጻማሆሙ፡በውስተ፡
አብያቲሆሙ፡፡=፡ ወአውፈሮሙ፡ከመ፡ አ 57
ባግዕ፡ለሕዝቡ፡፡ወአውፅኦሙ፡ገዳመ፡ከመ፡
መርዔት፡፡=፡ ወመርሖሙ፡ በተስፋሁ፡ወኢ 58
ፈርሁ፡፡ ወደፈኖሙ፡ ባሕር፡ ለፀሮሙ፡፡=፡
ወወሰዶሙ፡ ደብረ፡ መቅደሱ፡፡ ደብረ፡ዘፈጠ 59
ረት፡ የማኑ፡፡=፡ ወሰደደ፡ አሕዛበ፡ እምቅ 60
ድመ፡ ገጾሙ፡፡ ወአውረሶሙ፡ በሐብለ፡ር
ስቱ፡፡=፡ ወአንበረ፡ውስተ፡ አብያቲሆሙ፡ 61
ሕዝበ፡እስራኤል፡፡=፡ ወአምከርዎ፡ ወአ 62
ምዕዕዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ልዑል፡፡ወኢዐ
ቀቡ፡ ስምዖ፡፡=፡ ወተመይጡ፡ ወዐለዉ፡ 63
ከመ፡አበዊሆሙ፡፡ ወኮኑ፡ ከመ፡ ቀስተ፡በ
ዋይ፡፡=፡ ወአምዕዕዎ፡ በአውግሪሆሙ፡፡ 64
ወአቅንዕዎ፡በግልፎሆሙ፡፡=፡ ወሰምዐ፡እ 65
ግዚአብሔር፡ ወአናሕሰየ፡፡ ወመነኖሙ፡ለእ
ስራኤል፡ፈድፋደ፡፡=፡ ወኀደገ፡ለደብተራ፡ 66
ሴሎም፡፡ ደብተራሁ፡ እንተ፡ባቲ፡ ኀደረ፡
ምስለ፡ሰብእ፡፡=፡ ወወሀበ፡ ኀይሎሙ፡ለተ 67
ፄውዎ፡፡ወስነሙ፡ውስተ፡እደ፡ፀሮሙ፡፡=፡
ወአፀወሙ፡ ውስተ፡ኲናት፡ ለሕዝቡ፡፡ ወ 68
ተሀየዮሙ፡ለርስቱ፡፡=፡ ወበልዖቶሙ፡እሳ 69
ት፡ ለወራዙቶሙ፡፡ ወኢለሐዋ፡ ደናግሊሆ
ሙ፡፡=፡ ወካህናቲሆሙኒ፡ ወድቁ፡ በኲና 70
ት፡፡ ወኢበከያ፡ አቤራቲሆሙ፡፡=፡ ወተን 71
ሥአ፡ እግዚአብሔር፡ ከመ፡ ዘንቃህ፡ እም
ንዋም፡፡ ወከመ፡ኀያል፡ወኀደገ፡ወይን፡፡=፡ 72
ወቀተለ፡ፀሮሙ፡በድኅሬሆሙ፡፡ ወወሀቦሙ፡ 73
ኀሳረ፡ ዘለዓለም፡፡=፡ ወኀደገ፡ ለደብ 74
ተራ፡ ዮሴፍ፡፡ ወኢኀረዮ፡ ለሕዝበ፡
ኤፍሬም፡፡=፡ ወኀረዮሙ፡ ለሕዝበ፡ 75
ይሁደ፡፡ ደብረ፡ ጽዮን፡ ዘአፍቀረ፡፡=፡ ሐ 76
ነጸ፡ መቅደሰ፡ በአርያም፡፡ ወሳረረ፡ ውስ
ተ፡ ምድር፡ ለዓለም፡፡=፡ ወኀረዮ፡ ለዳዊ 77
ት፡ገብሩ፡፡ ወነሥኦ፡ እመርዔተ፡ አባግዓ
ሁ፡፡ ወተመጠዎ፡እምድኅረ፡ሓረሰት፡፡=፡
ከመ፡ ይርዓዮ፡ ለያዕቆብ፡ ገብሩ፡፡ ወለእ 78
ስራኤል፡ ርስቱ፡፡=፡ ወይሬእዮሙ፡ በየዋ 79
ሃት፡ልቡ፡፡ ወመርሆሙ፡ በጥበበ፡ እደ
ዊሁ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. (†) paravit iræ suæ: [t] omnis laboris eorum in tabernaculis illorum. [v] prævaricati sunt, quemadmodùm [x] frustravit: & [y] Domin⁹, sicut qui evigilat à somno; & tanquàm potens, qui rejecit vinũ [z] Ædificavit sanctuarium in excelso: & in terra

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

49 *ارسل عليهم غضب سخطه سخطا وغضبا * وشدة بغتة على يد ملائكة اشرار * صنع طريقا
50 لغضبه ولم يشفق على نفوسهم من الموت * اسلم للموت دوابهم * واهلك كل بكر في مصر *
51 واول اولادهم في مساكن حام * وساق شعبه كالغنم * واخرجهم كالرعية الى البرية * وهداهم
52 بالرجاء فلم يجزعوا * والبحر غرق اعداءهم * وادخلهم الى طور قدسه * هذا الجبل الذي
53 اقتناه يمينه * واخرج الامم من قدام وجههم * واعطاهم ميراثا بحبل ميراث العطية * واسكن
54 في مساكنهم قبائل اسرائيل * ثم جربوا واغضبوا الله العلي * ولم يحفظوا شهاداته * وعادوا
55 وغدروا مثل ابائهم * وانقلبوا كاعوجاج القوس * واغضبوه باصنامهم * واغاروه بمنحوتات اليد
56 *سمع الله واهملهم * ورذل اسرائيل جدا * ورفض مظلة شيلوم القبة التي نصبها للناس
57 * واسلم قوتهم للسبي * وجمالهم في ايدي اعدائهم * واسلم شعبه للسيف * وتغافل عن ميراثه
58 * فاكلت النار شبانهم * وعذاراهم لم يحزن * وسقطت كهنتهم بالسيف * ولم تبك ارامله
59 عليهم * واستيقظ الرب كالنائم * وكالجبار السكران من الخمر * فرد اعداءهم الى ورائهم
60 واعطاهم عارا مؤبدا * واقصى مسكن يوسف * ولم ينتخب قبيلة افرايم * وانتخب قبيلة
61 يهوذا جبل صهيون هو الذي احبه * وبنى موضع المقدس مثل ذي القرن الواحد * واسسه
62 على الارض الى الابد * واصطفى داود عبده واخذه من قطيع الغنم * ومن خلف المرضعات
63 اخذه • ليرعى يعقوب عبده * واسرائيل ميراثه * فرعاهم بسلامة قلبه * وبفهم يديه
64 هداهم • الليلويا
65
66
67
68
69
70
71
72

Misit in eos iram indignationis suæ, in- 49
dignationem & furorem, & tribulatio-
nem subitam per manum angelorum ma-
lorum. Fecit viam furori suo, & non pe- 50
percit animabus eorum à morte: tradidit
morti jumenta eorum. Et perdidit omne 51
primogenitum in Ægypto, & primitias
filiorum eorum in habitaculis Cham. Et 52
duxit populũ suum velut oves, et eduxit
eos tanquam gregem in desertum. Et rexit 53
eos cum spe, & non timuerunt. Et mare
obruit inimicos eorum. Et introduxit eos 54
in montem sanctitatis suæ, montem istum
quem possedit dextera ejus, Et ejecit gen- 55
tes è conspectu eorum, & dedit illis hæ-
reditatem funiculo quo hæreditas assigna-
tur, & habitare fecit in habitationibus eo-
rum tribus Israel. Rursus tentaverunt & 56
ad iracundiam provocaverunt Deum ex-
celsum, & non custodierunt testimonia e-
jus. Et reversi deceperunt sicut patres 57
eorum, & recurvati sunt instar curvita-
tis arcûs. Et irritaverunt eum idolis suis, 58
& ad æmulationem provocaverunt eum
sculpturis manufactis. Audivit Deus, & 59
neglexit eos, sprevitque Israelem magno-
pere. Et respuit tabernaculum Silom, te- 60
studinem quam erexerat pro hominibus. Et 61
tradidit potentiam eorum captivitati, &
pulchritudinem eorũ manibus inimicorum
eorum. Et tradidit populum suum gladio, 62
& neglexit hæreditatem suam. Comedit 63
ignis juvenes eorum, & virgines eorum
non planxerunt. Et ceciderunt sacerdo- 64
tes eorum gladio, & non defleverunt eos
viduæ eorum. Et expergefactus est Dominus 65
tanquam dormiens, & tanquam gigas e-
brius vino. Egit inimicos eorum retrò, & 66
affecit eos opprobrio sempiterno. Et pro- 67
cul amovit habitationem Josephi, & non
elegit familiam Ephræmi. Elegit autem 68
familiam Judæ: Mons Sion est quem di-
lexit. Et ædificavit locum suum sanctum, 69
ut habentis cornu unicũ: et fundavit illũ
super terram in perpetuum. Et elegit Da- 70
vid servũ suum, et sumpsit eum ex grege
ovium: Et de post lactantes sumpsit eum, 71
ut pasceret Jacob servũ suũ: et Israel hæ-
reditatem suam. [illegible] 72
[illegible]

תהלים : עט פ

PSAL. LXXIX. עט

polluerunt ,tuam hæreditatem in gentes venerunt Deus .Aſaph ipſi Cantus
מזמור לאסף אלהים באו גוים בנחלתך טמאו את 1
cadaver Dederunt .acervos in Jeruſalaim poſuerunt :tuæ ſanctitatis templum
היכל קדשך שמו את ירושלם לעיים: נתנו את נבלת 2
.terræ *ipſius feræ* tuorum *piorum* carnem : cœlorum *volatili* eſcam tuorum ſervorum
עבדיך מאכל לעוף השמים בשר חסידיך לחיתו ארץ:
.*ſepeliens* non & : Jeruſalaim circuitibus aquam tanquam eorum ſanguinem Effuderunt
שפכו דמם כמים סביבות ירושלם ואין קובר: 3
.noſtris *circumvicinis* deriſio & , ſubſannatio : noſtris vicinis probrum Fuimus
היינו חרפה לשכנינו לעג וקלס לסביבותינו: 4
? tuus zelus ignis velut ardebit , *æternum* in iraſceris DOMINE Uſquequo
עד מה יהוה תאנף לנצח תבער כמו אש קנאתך: 5
: regna ſuper & ,te cognoverunt non quæ , gentes *ad* tuam iram Effunde
שפך חמתך אל הגוים אשר לא ידעוך ועל ממלכות 6
ej° habitaculum & : Jahacob *comedit* Quia .invocaverunt non *tuo nomine in* quæ
אשר בשמך לא קראו: כי אכל את יעקב ואת נוהו 7
nos præveniant ,feſtina : priorum iniquitatum *nobis* memineris Ne .deſolaverunt
השמו: אל תזכר לנו עונת ראשנים מהר יקדמונו 8
noſtræ ſalutis Deus nos Adjuva .valde ſumus attenuati quia : tuæ miſericordiæ
רחמיך כי דלונו מאד: עזרנו אלהי ישענו 9
noſtris peccatis *ſuper* propitiare & , nos erue & : tui nominis *gloriæ verbum* ſuper
על דבר כבוד שמך והצילנו וכפר על חטאתינו
cognoſcatur ? eorum Deus Ubi : gentes dicent quid Ut .tuum nomen propter
למען שמך: למה יאמרו הגוים איה אלהיהם יודע 10
.*effuſi* tuorum ſervorum ſanguinis ultio : noſtris oculis in , gentibus in
בגיים לעינינו נקמת דם עבדיך השפוך:
reſiduos fac : tui brachii magnitudinem ſecundùm ,*vincti* clamor *tuas facies ad* Introeat
תבוא לפניך אנקת אסיר כגדל זרועך הותר 11
eorũ probrum : eorum *ſinum ad* ſeptuplum noſtris vicinis redde Et .*mortis* filios
בני תמותה: והשב לשכנינו שבעתים אל חיקם חרפתם 12
tuæ paſcuæ *pecus* & ,tuus populus nos Et .Domine te probris affecerunt qui
אשר חרפוך אדני: ואנחנו עמך וצאן מרעיתך 13
.tuam laudem narrabimus : generationẽ & ,generatione in ,ſeculum in tibi cõfitebimur
נודה לך לעולם לדור ודור נספר תהלתך:

PSAL. LXXX. פ

Iſrael *Paſcens* .cantus Aſaph ipſi , teſtimonium Soſannim *ad* Victori
למנצח אל ששנים עדות לאסף מזמור: רעה ישראל 1 2
facies Ad .*irradia* Cherubim *inſidens* : Joſeph *pecus* tanquam *ducens* , auſculta
האזינה נהג כצאן יוסף ישב הכרבים הופיעה: לפני 3
ito & : tuam fortitudinem ſuſcita Menaſſeh & , Binjamin & , Ephraim
אפרים ובנימן ומנשה עוררה את גבורתך ולכה
.ſervabimur & ,*tuas facies* illuſtra & : nos converte Deus .nobis ſalutem ad
לישעתה לנו: אלהים השיבנו והאר פניך ונושעה: 4
? tui populi oratione in *fumâſti* uſquequo :exercituum Deus DOMINE
יהוה אלהים צבאות עד מתי עשנת בתפלת עמך: 5
lachrymis in eis feciſti propinare & : lachrymæ panem eos feciſti Comedere
האכלתם לחם דמעה ותשקמו בדמעות 6
.*magna menſura*
שליש:

תרגום TARGUM.

עט

תושבחא על ידוי דאסף על חורבן בית מקדשא 1
אמר ברוח נבואה אלהים עלין עמיא באחסנתך
סאיבו ית היכל קדשך שויאו ית ירושלם לצדו:
יהבו ית גושמי עבדך למיכלא לעופא דשמיא 2
בסר חסידך לחיות ארעא: שדון אדמהון היך 3
מיא חזרנות דירושלם ולית דקבר: הוינא 4
קלנא לשכננא תולעבא וגוחכא לחזרנותנא:
עד אימתי יי תתקוף לעלמין תבער היך אשא 5
טננותך: שדי חמתך על עממיא דלא חכימו 6
יתך ועל מלכותא די בשמך לא צליאו: ארום 7
גמרו בית יעקב וית בית מקדשיה אצדיאו: לא 8
תדכר לנא עוין דמן שרויא בסרהוביא יקדמון
לך טבותך ארום אתמסכננא לחדא: סעד 9
יתנא אלהא פורקננא מטול איקר שמך ופרוק
יתנא וכפר על חובנא בגלל שמך: למה יימרון 10
עמיא אן אלההון יתגלי בעמיא למחמינא
פורענות אדם עבדך דאשתפך: תעול קדמך 11
אנקתא דאסירי היך סגי תקוף אדרעך שרי
בניא דמתמסרין למיתותא: ואתיב לשכננא 12
על חד שבעה נומלא על פורענות קימהון
וחסודן די חסדו יתך יי: ואנחנא עמך ועאן 13
רעיתך נודי קדמך לעלם דרי לדרי דריא נתני
תושבחתך:

פ

לשבחא על יתבי סנהדרין די מתעסקין 1
בסהדות אוריתא על ידוי דאסף תושבחתא:
פרנסא דישראל אצית דמדבר היך ענא ארונא 2
דיוסף דשכנתיה שריא ביני כרוביא הופע:
קדם אפרים ובנימן ומנשה עורר ית כח 3
גבורתך עלנא ועלך מן דינא למפרוק לנא:
אלהא אתיב יתנא מגלותנא ואנהר זיו סבר 4
אפך עלנא ונתפרק: יי אלהים צבאות עד 5
אימתי לא קבלתא צלותא דעמך: אוכלתא 6
להון לחם טמיש בדמעתא ואשקיתן חמר
דמעא תלתי:

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Canticum per *manus* Aſaph, *de deſtructione domus ſanctuarii, dixit ſpiritu prophetico* :

PSAL. LXXIX.

DEus ingreſſi ſunt populi in hæreditatem tuam; polluerunt templum ſanctum tuum, poſuerunt Jeruſalem in deſolationẽ. Dederunt cadavera ſervorum tuorum eſcam volatilibus cœli, carnem ſanctorum tuorum beſtiæ terræ. Effuderunt ſanguinem eorum ſicut aquam in circuitu Jeruſalem, et non erat qui ſepeliret. Facti ſumus opprobrium vicinis noſtris; ſubſannatio, et deriſio his qui in circuitu noſtro ſunt. Uſquequo Dñe iraſcêris in perpetuum, accendetur ſicut ignis zelus tuus? Effunde iram tuam ſuper populos qui te non noverunt, et ſuper regna, *qui* in nomine tuo precati non ſunt. Quoniam diſſipaverunt domum Jacob, et domum ſanctuarii ejus vaſtaverunt. Ne reminiſcaris iniquitatum noſtrarum priorum: celeriter præveniant nos bonitates tuæ, quoniam miſerabiles facti ſumus nimis. Adjuva nos Deus redemptionis noſtræ propter gloriam nominis tui, et libera nos, & propitiare peccatis noſtris propter nomen tuum. Quare dicent populi, Ubi eſt Deus eorum? manifeſtetur in populis ut videamus ultionem ſanguinis ſervorum tuorum qui effuſus eſt. Introeat coram te gemitus vinctorum ſecundùm multitudinem fortitudinis brachii tui, ſolve filios qui traditi ſunt internecioni. Et redde vicinis noſtris pro una ſeptupli retributionem, pro punitione fœderis eorũ, & improperii quo exprobrarunt tibi Dñe. Nos autem populus tuus, et oves paſcuæ tuæ confitebimur coram te in ſeculum *generationum*; in generationem generationum annunciabimus laudem tuam.

Ad laudandum pro ſedentibus judicibus ordinariis, qui incumbunt teſtimonio Legis per manus Aſaph canticum.

PSAL. LXXX.

PAſtor Iſrael intellige, qui ducis velut oves arcam Joſeph; [ô] cujus majeſtas quieſcit inter Cherubim, manifeſtare. *Coram* Ephraim et Binjamin, et Menaſſeh, exuſcita virtutem fortitudinis tuæ *ſuper nos*: tuum eſt enim à judicio nos redimere. Deus reduc nos à captivitate noſtra, et ſplendeſcere fac ſplendorẽ aſpectus faciei tuæ ſup nos, et redimemur. Dñe De° exercituũ uſquequo non recipies orationem populi tui? Paviſti eos pane intincto lachrymis, et potum dediſti eis vinum lachrymarum tripliciter.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܐܣܦ *

ܐܠܗܐ ܥܠܘ ܥܡܡܐ ܠܝܪܬܘܬܟ. ܘܛܢܦܘ ܗܝܟܠܐ ܕܩܘܕܫܟ. ܘܥܒܕܘܗ ܠܐܘܪܫܠܡ ܚܪܒܐ: 1
ܘܝܗܒܘ ܫܠܕܐ ܕܥܒܕܝܟ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܒܣܪܐ ܕܙܕܝܩܝܟ ܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ: 2
ܐܫܕܘ ܕܡܗܘܢ ܐܝܟ ܡܝܐ ܚܕܪܝܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܠܝܬ ܕܩܒܪ: 3
ܗܘܝܢ ܚܣܕܐ ܠܫܒܒܝܢ. ܘܡܘܝܩܐ ܘܒܙܚܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܚܕܪܝܢ: 4
ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܪܝܐ ܬܪܓܙ ܠܥܠܡ. ܘܬܝܩܕ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܚܡܬܟ: 5
ܐܫܕ ܚܡܬܟ ܥܠ ܥܡܡܐ ܕܠܐ ܝܕܥܘܟ. ܘܥܠ ܡܠܟܘܬܐ ܕܒܫܡܟ ܠܐ ܩܪܘ: 6
ܡܛܠ ܕܐܟܠܘܗܝ ܠܝܥܩܘܒ ܘܠܥܘܡܪܗ ܐܚܪܒܘ: 7
ܠܐ ܬܥܗܕ ܠܢ ܚܛܗܝܢ ܩܕܡܝܐ. ܘܥܓܠ ܢܩܕܡܘܢܢ ܪܚܡܝܟ. ܡܛܠ ܕܐܬܡܟܟܢ ܛܒ: 8
ܥܕܪܝܢ ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܢ ܡܛܠ ܐܝܩܪܐ ܕܫܡܟ. ܘܚܣܐ ܥܠ ܚܛܗܝܢ ܘܦܨܢ ܡܛܠ ܫܡܟ: 9
ܕܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܥܡܡܐ ܐܝܟܘ ܐܠܗܟܘܢ. ܘܢܬܝܕܥ ܒܥܡܡܐ ܩܕܡ ܥܝܢܝܢ ܬܒܥܬܐ ܕܕܡܐ ܕܥܒܕܝܟ ܕܐܫܬܕ: 10
ܬܥܘܠ ܩܕܡܝܟ ܬܢܚܬܐ ܕܐܣܝܪܐ. ܘܒܪܒܘܬܐ ܕܕܪܥܟ ܫܪܝ ܠܒܢܝ ܡܘܬܐ: 11
ܘܦܪܘܥ ܠܫܒܒܝܢ ܫܒܥܐ ܒܥܘܒܗܘܢ. ܚܣܕܐ ܕܚܣܕܘܟ ܡܪܝܐ: 12
ܘܚܢܢ ܥܡܟ ܘܥܢܐ ܕܡܪܥܝܬܟ ܢܘܕܐ ܠܟ ܠܥܠܡ. ܘܠܕܪ ܕܪܝܢ ܢܫܬܥܐ ܬܕܡܪܬܟ: 13

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܐܣܦ * 1
ܪܥܝܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܨܘܬ. ܘܕܒܪ ܐܝܟ ܥܢܐ ܠܝܘܣܦ. ܝܬܒ ܥܠ ܟܪܘܒܐ ܐܬܓܠܝ: 2
ܩܕܡ ܐܦܪܝܡ ܘܒܢܝܡܝܢ ܘܡܢܫܐ. ܐܬܥܝܪ ܓܢܒܪܘܬܟ ܘܬܐ ܠܦܘܪܩܢܢ: 3
ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܦܢܝܢ. ܘܐܢܗܪ ܐܦܝܟ ܘܢܬܦܪܩ: 4
ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܪܓܝܙ ܐܢܬ ܥܠ ܨܠܘܬܗ ܕܥܒܕܟ: 5
ܐܘܟܠܬܢ ܠܚܡܐ ܒܕܡܥܐ. ܘܐܫܩܝܬܢ ܒܕܡܥܐ: 6

PSAL. LXXIX.

Ab Aſapho dictus de deſtructione Jeruſalem Verſ.29.

DEus ingreſſæ ſunt gentes in hæreditatem tuam, & polluerunt templum tuum ſanctum, feceruntque Jeruſalem deſolatam. Dederunt cadavera ſervorũ tuorũ eſcã volucri cœli, & carnẽ juſtorũ tuorũ beſtiæ terræ. Effuderunt ſanguinẽ eorũ velut aquã circum Jeruſalẽ, & non eſt qui ſepeliat. Et facti ſum° opprobriũ vicinis noſtris, & ſubſannatio atque illuſio his qui circũ nos ſunt. Uſquequo iraſceris Dñe in ſempiternũ, & ardebit ſicut ignis ira tua? Effunde irã tuã in gentes quæ non te noverunt, & in regna quæ nomen tuum non invocaverunt; Quia comederunt Jacob & domiciliũ ej° vaſtaverunt. Ne memineris nobis peccatorũ noſtrorũ veterũ; citò præveniant nos miſericordiæ tuæ, quia humiliati ſum° vehementer. Adjuva nos Deus ſalvator noſter ob honorẽ nominis tui: propitiare nobis, & libera nos à peccatis noſtris propter nomen tuũ; Ut ne dicant gentes, Ubi eſt Deus veſter? Nota fiat inter gentes corã nobis ultio ſanguinis ſervorũ tuorũ qui effuſus eſt. Intret in conſpectum tuum ſuſpirium vinctorum. Magnitudine brachii tui ſolve filios à morte. Et repende vicinis noſtris ſeptuplũ in ſinum eorũ, ignominiã quâ te vituperârunt Dñe. Et nos populus tuus & oves paſcuæ tuæ, confitebimur tibi in ſeculum: & in generationem generationum narrabimus miracula tua.

PSAL. LXXX.

Editus ab Aſapho, Verſ.51.

PAſtor Iſraelis auſculta, & rege velut oves Joſephũ. Qui ſedes ſup Cherubim incede. Coram Aphrem Benjamin & Manaſſe, oſtende potentiã tuã, & veni in ſalutẽ noſtram. De° fortiſſime reduc nos, & lucere fac vultum tuũ, & ſalvabimur. Dñe De° fortiſſime, uſque iraſceris orationi ſervi tui? Cibaſti eos pane cũ lachryma, et potâſti eos cũ lachrymis.

Verſio VULG. LAT.

Pſalmus Aſaph. LXXVIII.

1 DEus, venerunt gentes in hæreditatē
tuā, polluerūt tēplū ſanctū tuū: poſuerunt
Jeruſalē in pomorū cuſtodiā.
2 Poſuerunt morticina ſervorū tuorū,
eſcas volatilib⁹ cœli; carnes Sanctorū
3 tuorū, beſtiis terræ. Effuderūt ſanguinē
eorū tāquā aquā in circuitu Jeruſalē:
4 & non erat qui ſepeliret. Facti ſum⁹
opprobriū vicinis noſtris, ſubſannatio
et illuſio his, qui in circuitu noſtro ſūt.
5 Uſquequò, Dñe, iraſcêris in finē: accēdetur
6 velut ignis zel⁹ tu⁹? Effunde irā
tuā in gentes, quæ te non noverūt; &
in regna, quæ nomen tuū non invocaverunt
7 : Quia comederunt Jacob: et
8 locū ej⁹ deſolaverunt. Ne memineris
iniquitatū noſtrarū antiquarū, citò anticipent
nos miſericordiæ tuæ: quia
9 pauperes facti ſum⁹ nimis. Adjuva nos,
De⁹ ſalutaris noſter: & propter gloriā
nominis tui, Dñe, libera nos: & propitius
eſto peccatis noſtris, propter nomen
10 tuū: Ne fortè dicant in gentib⁹,
Ubi eſt De⁹ eorū? & innoteſcat in nationib⁹
corā oculis noſtris, Ultio ſanguinis
11 ſervorū tuorū, qui effuſ⁹ eſt: Introeat
in conſpectu tuo gemit⁹ compeditorū.
Secundùm magnitudinē brachii
12 tui, poſſide filios mortificatorū. Et
redde vicinis noſtris ſeptuplū in ſinu
eorū: improperiū ipſorū ꝙ exprobraverunt
13 tibi, Dñe. Nos autē popul⁹ tu⁹,
& oves paſcuæ tuæ, confitebimur tibi
in ſeculum: In generationem & generatione
anuntiabimus laudē tuam.

1 In finem, Pro iis qui commutabuntur,
teſtimonium Aſaph, Pſalmus.
LXXIX.

2 QUi regis Iſrael, intende: qui deducis
velut ovē Joſeph. Qui ſedes
3 ſup Cherubim, manifeſtare Coram Ephraim,
Benjamin, & Manaſſe. Excita
potentiā tuā, & veni, ut ſalvos facias
4 nos. De⁹, converte nos: et oſtende faciē
5 tuā, et ſalvi erim⁹. Dñe Deus virtutū,
quouſq; iraſcêris ſup orationē
6 ſervi tui? Cibabis nos pane lachrymarum:
et potum dabis nobis in lachrymis
in menſura?

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

Ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. οη΄.

1 Ὁ Θεὸς ἤλθοσαν ἔθνη εἰς τὴν κληρονομίαν σου,
ἐμίαναν τὸν ναὸν τὸν ἅγιόν σου· ἔθεντο Ἱερουσαλὴμ
2 εἰς ὀπωροφυλάκιον. Ἔθεντο τὰ θνησιμαῖα τῶν δούλων
σου βρώματα τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, τὰς
3 σάρκας τῶν ὁσίων σου τοῖς θηρίοις τῆς γῆς. Ἐξέχεαν
τὸ αἷμα αὐτῶν ὡς ὕδωρ, κύκλῳ Ἱερουσαλὴμ,
4 καὶ οὐκ ἦν ὁ θάπτων. Ἐγενήθημεν εἰς ὄνειδος τοῖς
γείτοσιν ἡμῶν, μυκτηρισμὸς καὶ χλευασμὸς τοῖς
5 κύκλῳ ἡμῶν. Ἕως πότε κύριε ὀργισθήσῃ εἰς τέλος;
6 ἐκκαυθήσεται ὡς πῦρ ὁ ζῆλός σου; Ἔκχεον τὴν ὀργήν
σου ἐπὶ ἔθνη τὰ μὴ ἐπεγνωκότα σε, καὶ ἐπὶ βασιλείας
7 αἳ τὸ ὄνομά σου οὐκ ἐπεκαλέσαντο. Ὅτι κατέφαγον
8 τὸν Ἰακὼβ, καὶ τὸν τόπον αὐτοῦ ἠρήμωσαν. Μὴ
μνησθῇς ἡμῶν ἀνομιῶν ἀρχαίων, ταχὺ προκαταλαβέτωσαν
ἡμᾶς οἱ οἰκτιρμοί σου, ὅτι ἐπτωχεύσαμεν
9 σφόδρα. Βοήθησον ἡμῖν ὁ Θεὸς ὁ σωτὴρ ἡμῶν, ἕνεκα
τῆς δόξης τοῦ ὀνόματός σου κύριε ῥῦσαι ἡμᾶς, καὶ
ἱλάσθητι ταῖς ἁμαρτίαις ἡμῶν ἕνεκα τοῦ ὀνόματός σου.
10 Μή ποτε εἴπωσι ἐν τοῖς ἔθνεσι, Ποῦ ἐστιν ὁ Θεὸς
αὐτῶν; καὶ γνωσθήτω ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἐνώπιον τῶν ὀφθαλμῶν
ἡμῶν ἡ ἐκδίκησις τοῦ αἵματος τῶν δούλων
11 σου τοῦ ἐκκεχυμένου. Εἰσελθέτω ἐνώπιόν σου
ὁ στεναγμὸς τῶν πεπεδημένων, κατὰ τὴν μεγαλωσύνην
τοῦ βραχίονός σου περιποίησαι τοὺς υἱοὺς τῶν τεθανατωμένων.
12 Ἀπόδος τοῖς γείτοσιν ἡμῶν ἑπταπλάσια
εἰς τὸν κόλπον αὐτῶν, τὸν ὀνειδισμὸν αὐτῶν ὃν ὠνείδισάν
13 σε κύριε. Ἡμεῖς γὰρ λαός σου καὶ πρόβατα
νομῆς σου, ἀνθομολογησόμεθά σοι εἰς τὸν αἰῶνα, εἰς
γενεὰν καὶ γενεὰν ἐξαγγελοῦμεν τὴν αἴνεσίν σου.

1 Εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ τῶν ἀλλοιωθησομένων, μαρτύριον τῷ Ἀσάφ, ψαλμὸς ὑπὲρ τοῦ Ἀσσυρίου.
οθ΄.

2 Ὁ Ποιμαίνων τὸν Ἰσραὴλ πρόσχες, ὁ ὁδηγῶν ὡσεὶ
πρόβατα τὸν Ἰωσήφ· ὁ καθήμενος ἐπὶ τῶν χερουβὶμ
3 ἐμφάνηθι, Ἐναντίον Ἐφραὶμ καὶ Βενιαμὶν καὶ
Μανασσῆ· ἐξέγειρον τὴν δυναστείαν σου, καὶ ἐλθὲ εἰς
4 τὸ σῶσαι ἡμᾶς. Ὁ Θεὸς ἐπίστρεψον ἡμᾶς, καὶ ἐπίφανον
5 τὸ πρόσωπόν σου, καὶ σωθησόμεθα. Κύριε ὁ
Θεὸς τῶν δυνάμεων, ἕως πότε ὀργίζῃ ἐπὶ τὴν προσευχὴν
6 τοῦ δούλου σου; Ψωμιεῖς ἡμᾶς ἄρτον δακρύων,
καὶ ποτιεῖς ἡμᾶς ἐν δάκρυσιν ἐν μέτρῳ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

[a] Pſalmus ipſi Aſaph. LXXVIII.

1 DEus, venerunt gentes in hæreditatē tuā: polluerunt templum ſanctum tuum: poſuerunt Hieruſalē [b] in (a) pomorum cuſtodiam. 2 Poſuerunt morticina ſervorū tuorum eſcas volatilib⁹ cœli: carnes ſanctorum tuorum [c] beſtiis terræ. 3 Effuderunt ſanguinē eorum, ſicut aquā, in circuitu Hieruſalē: & non erat qui ſepeliret. 4 Facti ſum⁹ (b) in opprobrium vicinis noſtris: (c) ſubſannatio & irriſio iis qui in circuitu noſtro ſunt. 5 Uſquequò, Domine, iraſcêris in finē? exardeſcet, velut ignis, zel⁹ tu⁹? 6 Effunde irā tuā in gentes, quæ te non noverunt; & in regna, quæ nomen tuum non invocaverunt. 7 Quia comederunt Jacob, & (d) locum ejus deſolaverunt. 8 Ne memineris [d] iniquitatum noſtrarum antiquarum: citò anticipient nos miſericordiæ [e] tuæ: quia [f] pauperes facti ſumus nimis. 9 Adjuva nos, De⁹ [g] ſalutaris noſter: propter gloriā nominis tui, Domine, libera nos: & propiti⁹ eſto peccatis noſtris propter nomen tuum: 10 Nequando dicant (e) in gentib⁹, ubi eſt De⁹ eorum? Et [h] innoteſcat in nationibus corā oculis noſtris 11 ultio ſanguinis ſervorum tuorum, qui effuſ⁹ eſt: Intret in cōſpectum tuum gemit⁹ compeditorū. 12 Secundùm magnitudinē brachii tui (f) [i] poſſide filios mortificatorum. 13 Redde vicinis noſtris ſeptuplum in ſinum eorum: opprobrium ipſorum, quod exprobraverunt tibi, Domine. 14 Nos autē populus tuus, & oves paſcuæ tuæ, confitebimur tibi in ſeculum: 15 in generationem & generationem annuntiabimus laudem tuam.

In finem, Pro iis qui immutabuntur, teſtimoniū *(a)* ipſi Aſaph, *Pſalmus* pro Aſſyrio. LXXIX. 1

1 [a] QUi paſcis Iſrael, intende: qui [b] adducis, velut (b) oves, (c) Joſeph. 2 Qui ſedes ſuper Cherubim, appare Corā (d) Ephræm, & Benjamin, & Manaſſe. 3 Excita potentiā tuā, & veni: ut ſalvos facias nos. 4 De⁹ [c], converte nos: & (e) oſtende faciē tuā: & ſalvi erim⁹. 5 Domine De⁹ virtutū, quouſq; iraſcêris ſuper (f) orationē ſervi tui? 6 (g) Cibabis nos pane lachrymarū, et potabis nos in lachrymis in (h) menſura?

Verſio ÆTHIOPICA.

ፍጻሜ፡ መዝሙር፡ ዘአሳፍ፡፡
፸፰ እግዚኦ፡ ቦኡ፡ አሕዛብ፡ ውስተ፡ ርስትከ፡፡ 1
ወአርኰሱ፡ ጽርሐ፡ መቅደስከ፡፡ ወረሰዩ፡
ለኢየሩሳሌም፡ ከመ፡ ልጐተ፡ ዐቃቤ፡ ቀምሕ፡፡፨
ወረሰዩ፡ አብድንቲሆሙ፡ ለአግብርቲከ፡ 2
መብልዖሙ፡ ለአዕዋፈ፡ ሰማይ፡፡
ወሥጋሆሙኒ፡ ለጻድቃኒከ፡ ለአራዊተ፡ ገዳም፡፡፨
ወክዐው፡ ደሞሙ፡ ከመ፡ ማይ፡ አውደ፡ 3
ለኢየሩሳሌም፡፡ ወኀጥኡ፡ ዘይቀብሮሙ፡፡፨
ወኮነ፡ ፅእለተ፡ ለጎርና፡፡ ሥሐቀ፡ 4
ወስላቀ፡ ለአድያሚነ፡፡፨ እስከ፡ ማእዜኑ፡ 5
እግዚኦ፡ ትትመዓዕ፡ ለዝሉፉ፡፡ ወይነድድ፡
ከመ፡ እሳት፡ ቅንዐትከ፡፡፨ ክዐው፡ መዐትከ፡ 6
ላዕለ፡ አሕዛብ፡ እለ፡ ኢየአምሩከ፡፡
ወላዕለ፡ መንግሥት፡ እንተ፡ ኢጸውዐት፡ ስመከ፡፡፨
እስመ፡ በልዕዎ፡ ለያዕቆብ፡ ወአማሰኑ፡ 7
ብሔሮ፡፡፨ ኢትዝክር፡ ለነ፡ አበሳነ፡ 8
ዘትካት፡፡ ፍጡነ፡ ይርከበነ፡ ሣህልከ፡
እግዚኦ፡፡ እስመ፡ ተመንደብነ፡ ፈድፋደ፡፡፨
ርድአነ፡ አምላክነ፡ ወመድኃኒነ፡፡ በእንተ፡ 9
ስብሐተ፡ ስምከ፡ እግዚኦ፡ በልሐነ፡፡ ወስረይ፡
ኃጢአተነ፡ በእንተ፡ ስምከ፡፡፨ ከመ፡ 10
ኢይበሉነ፡ አሕዛብ፡ አይቴ፡ ውእቱ፡ አምላኮሙ፡፡
ወይርአዩ፡ አሕዛብ፡ በቅድመ፡ አዕይንቲነ፡፡፨
በቀለ፡ ደሞሙ፡ ለአግብርቲከ፡ 11
ዘተክዕወ፡፡ ይበእ፡ ቅድሜከ፡ ገዓሮሙ፡
ለሙቁሓን፡፡፨ ወበከመ፡ ዕበየ፡ መዝራዕትከ፡፡ 12
ተዛሀሉሙ፡ ለደቂቀ፡ ቅቱላን፡፡፨ 13
ፍድዮሙ፡ ለጎርና፡ ምስብዒተ፡ ውስተ፡ ሕፅናሙ፡፡
ትዕይርቶሙ፡ ዘተዐየሩከ፡ እግዚእ፡፡፨
ወንሕነሰ፡ ሕዝብከ፡ አባግዐ፡ መርዓትከ፡፡ 14
ወንገኒ፡ ለከ፡ ለዓለም፡፡፨ ወንነግር፡ 15
ስብሐቲከ፡ ለትውልደ፡ ትውልድ፡፡
ፍጻሜ፡ ዘበእንተ፡ እለ፡ ተበዐዱ፡ ስምዕ፡
ዘአሳፍ፡ መዝሙር፡ ዘበእንተ፡
አሶርዮን፡፡

፸፱ ኖላዊሆሙ፡ ለእስራኤል፡ አጽምእ፡፡ 1
ዘይርዕዮሙ፡ ከመ፡ አባግዐ፡ ዮሴፍ፡፡፨ ዘይነብር፡፡ 2
ላዕለ፡ ኪሩቤል፡ አስተርአየ፡፡ በቅድመ፡
ኤፍሬም፡ ወብንያም፡ ወምናሴ፡፡፨
አንሥእ፡ ኀይለከ፡ ወነዐ፡ አድኅነነ፡፡፨ 3
አምላክ፡ ኃያላን፡ ሚጠነ፡ አብርህ፡ ገጸከ፡ 4
ላዕሌነ፡ ወንድኅን፡፡፨ እግዚኦ፡ አምላከ፡ 5
ኃያላን፡፡ እስከ፡ ማእዜኑ፡ ትትመዐዕ፡
ላዕለ፡ ጸሎተ፡ ገብርከ፡፡፨ ወትሴስየነ፡ 6
እክለ፡ አንብዕነ፡፡ ወታሰትየነ፡ አንብዐነ፡
በመስፈርት፡፡፨

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. LXXVIII.* [a] In finē, Pſalm⁹ ipſi Aſaph. [b] tanquā profundā pomorū cuſtodiā. [c] beſtiis deſerti. [d] contra nos [e] tuæ Dñe: [f] afflicti ſum⁹ [g] noſter & ſalutaris [h] videant nationes corā oculis noſtris ultionē [i] propiti⁹ eſto filiis *PSAL. LXXIX.* [a] Paſtor Iſraelitarū [b] paſcis [c] virtutū, converte

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور الثامن والسبعون * لآصاف * وعدده * كط * استيخن
اللهم إن الأمم دخلت ميراثك * ونجست هيكلك المقدس * جعلت يروسليم كالحرس الخراب *
2 * جعلت جثث عبيدك طعاما لطير السماء ولحوم قديسيك لوحوش الصحاري * هراقوا 3
4 دماءهم كالماء حول يروسليم * وليس لهم من يدفنهم * صرنا عارا لجيراننا وهزوا وضحكة لمن
5 حولنا * فالى متى يا رب تغضب الى الغاية * تشتعل غيرتك مثل النار * أفض غضبك على هؤلاء 6
7 الأمم الذين لا يعرفونك * وعلى الممالك التي لم تدع اسمك * لأنهم قد أكلوا يعقوب وأخربوا
8 موضعه * لا تذكر آثامنا الأولى * ولتدركنا رحمتك يا رب سريعا * لأنا قد افتقرنا جدا * أعنا اللهم 9
10 مخلصنا * لأجل مجد اسمك يا رب تخلصنا * واغفر خطايانا من أجل اسمك * لئلا يقال في الأمم
11 أين إلههم * وليعلم في الأمم قدام عيوننا انتقام دماء عبيدك المسفوكة * وليدخل أمامك تنهد
12 الأسراء * كعظمة ذراعك انقذ بني المقتولين * عوض جيراننا سبعة أضعاف في أحضانهم
13 بالعار الذي عيروك به يا رب * فإنا نحن شعبك وغنم رعيتك نشكرك الى الأبد * من جيل الى
جيل نخبر بتسابيحك * الليلويا * * المزمور التاسع والسبعون *
1 * شهادة لآصاف على المتغيرين * وعدده * لح * استيخن *
2 * يا راعي اسرائيل انصت الهادي يوسف كالخروف * أيها الجالس على الكاروبين أظهر
3 * قدام افرايم وبنيامين ومنسا * انهض قوتك وهلم لخلاصنا * اللهم اردنا * وأنر وجهك علينا 4
5 فنخلص * أيها الرب إله القوات * إلى متى تغضب على صلاة عبيدك * أطعمتنا خبز الدموع 6
وسقيتنا العبرات بالكيل *

PSAL. LXXVIII.

Aſapho. Et numerus verſ. 29. 1

PRofectò, Deus, gentes ingreſſæ ſunt hæreditatem tuam, & polluerunt templum tuum ſanctum: fecerunt Jeruſalem quaſi carcerem dirutum: 2 *Fecerunt cadavera ſervorum tuorum eſcam volatilibus cœli, & carnes ſanctorum tuorum beſtiis camporum.* 3 *Fuderunt ſanguinem eorum ſicut aquam circa Jeruſalem, & non eſt eis qui ſepeliat illos.* 4 *Facti ſumus opprobrium vicinis noſtris, & deriſus atque contemptus iis, qui circa nos ſunt.* 5 *Quouſque O Domine, indignaberis in finem?* 6 *exardeſcet zelus tuus velut ignis? Effunde iram tuam in has gentes quæ non cognoſcunt te, et in regna quæ non invocaverunt nomen tuum;* 7 *Quia jam comederunt Jacob, & vaſtaverunt locum ejus.* 8 *Ne memineris iniquitatum noſtrarum præcedentium: ſed aſſequatur nos miſericordia tua O Domine, quamprimùm, quia in paupertatem redacti ſumus maximam.* 9 *Adjuva nos igitur Deus ſalvator noſter, propter gloriam nominis tui O Domine, liberes nos, & remittas peccata noſtra propter nomen tuum:* 10 *ut ne dicatur inter gentes, Ubi eſt Deus eorū? Et nota fiat inter gentes corā oculis noſtris ultio ſanguinum ſervorum tuorum, qui effuſi ſunt:* 11 *Et introeat coram te gemitus captivorum: ſecundùm magnitudinem brachii tui redime filios occiſorum:* 12 *Compenſa vicinos noſtros ſeptuplicĭter in ſinus eorum opprobrio quo te vituperaverunt, O Domine.* 13 *Nos enim popul⁹ tu⁹, et oves paſcuæ tuæ gratias agemus tibi in æternum, de generatione in generationem narrabimus laudationes tuas. Alleluja.*

PSAL. LXXIX.

Teſtimonium Aſapho de immutandis. Et numerus ver. 38. 1

2 *O Paſtor Iſrael, auſculta: ductor Joſephi velut agni: O ſedens ſuper Cherubim, manifeſtare* 3 *Coram Ephraim, & Benjamin, & Manaſſe: excita potentiā tuam, & veni in ſalutem noſtram.* 4 *Deus, reduc nos, & illuſtra faciem tuam ſuper nos, & ſalvabimur.* 5 *O Domine Deus virtutum, quouſque indignaberis orationi ſervorū tuorū?* 6 *Cibâſti nos pane lachrymarū & potâſti nos ſingultibus cum menſura.*

תהלים : פא

.ſibi ſubſannabunt noſtri inimici & : noſtris vicinis *contentionem* nos Poſuiſti
תשימנו מדון לשכנינו ואיבינו ילעגו־למו : 7
.ſervabimur & , *tuas facies* illumina & : nos converte exercituum Deus
אלהים צבאות השיבנו והאר פניך ונושעה : 8
Scopâſti .eam plantâſti & , gentes *expuliſti* : feciſti proficiſci Ægypto ex Vitem
9 נפן ממצרים תסיע תגרש גוים ותטעה : פנית 10
montes ſunt Operti .terram implevit & ,ejus radices feciſti radicare & : *ejus facies ad*
לפניה ותשרש שרשיה ותמלא־ארץ : כסו הרים 11
: mare ad uſque ejus *palmites Mittes* .*fortis* cedri ejus rami & : ejus umbra
צלה וענפיה ארזי־אל : תשלח קציריה עד־ים 12
eam *decerpſerunt* & : ejus macerias dirupiſti quid Ut .ejus *ramulos* flumen ad &
ואל־נהר יונקותיה : למה פרצת גדריה וארוה 13
agreſtis *fera* & *ſylva de* aper eam Conſumpſit ? viam tranſeuntes omnes
כל־עברי דרך : יכרסמנה חזיר מיער וזיז שדי 14
: vide & , cœlis è reſpice , obſecro revertere exercituum Deus .eâ eſt depaſta
ירענה : אלהים צבאות שוב־נא הבט משמים וראה 15
filium ſuper & : tua dextera plantavit *quod* , *viridarium* Et .iſtam vitem viſita &
ופקד גפן זאת : וכנה אשר־נטעה ימינך ועל־בן 16
.peribunt *tuarum facierum increpatione præ* : ſuccifa , igne *in* Incenſa .tibi roborâſti
אמצתה לך : שרפה באש כסוחה מגערת פניך יאבדו : 17
.tibi roborâſti hominis filium ſuper : tuæ dexteræ virum ſuper tua manus Sit
תהי־ידך על־איש ימינך על־בן־אדם אמצת לך : 18
.invocabimus *tuo nomine in* & , nos vivificabis : te à retrocedemus non Et
ולא־נסוג ממך תחיינו ובשמך נקרא : 19
, tuam faciem illumina : nos converte exercituum Deus DOMINE
יהוה אלהים צבאות השיבנו האר פניך 20
.ſervabimur &
ונושעה :

PSAL. LXXXI. פא

: noſtræ fortitudini Deo Vociferate .Aſaph ipſi Haghitith ſuper Victori
1 למנצח על־הגתית לאסף : הרנינו לאלהים עוזנו 2
citharam : tympanum date & ,pſalmum Sumite .Jahacob Deo jubilate
הריעו לאלהי יעקב : שאו־זמרה ותנו־תף כנור 3
ſtatuto tempore in : tuba *novilunio* in Clangite .Nebel cum jucundam
נעים עם־נבל : תקעו בחדש שופר בכסה 4
Deo judicium : *iſtud* Iſraeli ſtatutum Quia .noſtræ ſolennitatis die in
ליום חגנו : כי חק לישראל הוא משפט לאלהי 5
terram ſuper *ipſum exeundo in* , illud poſuit Joſeph in Teſtimonium .Jahacob
יעקב : עדות ביהוסף שמו בצאתו על־ארץ 6
: ejus humerum onere ab Subduxi .*audiam* noveram non *labium* : Ægypti
מצרים שפת לא־ידעתי אשמע : הסירותי מסבל שכמו 7
, te erui & , invocâſti anguſtia In .*tranſibunt* aheno ab ejus manus
כפיו מדוד תעברנה : בצרה קראת ואחלצך 8
, *litigii* *aquas ſuper* *te probabo* : tonitrui abſcondito in te *exaudiam*
אענך בסתר רעם אבחנך על־מי מריבה
ſi , Iſrael : te in faciam teſtificari & , mi populus Audi Selah
סלה : שמע עמי ואעידה בך ישראל אם־ 9
.mihi audieris
תשמע־לי :

תרגום TARGUM.

7 שויתנא למדנא לשיבבנא ובעלי דבבנא
8 יתלעבון להון : אלהים צבאות אתיב יתנא
מגלותנא ואנהר זיו סבר אפך עלנא ונתפרק :
9 בית ישראל דמתילין לגופנא ממצרים אטלתא
תרכתא מעמיא מארעא דישראל ונצבתנון :
10 פניתא מן קדמיהון כנענאי ושרשתא שורשיהון
11 ומלאת ארעא : חפין טוריא דירושלם טול
בית מקדשא ובתי מדרשיא רבנין אמרין
12 אלימין דמתילין לארזין תקיפין : שבשת שבשין
[שדרת תלמידהא] עד ימא רבא ולנהר פרת
13 יניקהא : למא תקפתא גודרהא ומכסחין יתה
14 כל עברי אורחא : ינוברנה חזיר דמן חורשא
15 ותרנגול ברא יתפרנס מנה : אלהים צבאות
תוב כדון אסתכל מן שמיא וחמי ואדכר ברחמי
16 גופנא הדא : ועוברא די נציבת ימינך ועל מלכא
17 משיחא דחילתא לך : מתוקדא בנורא ומפרכא
18 מסופיתא דמן קדמך ייבדון : תהי אידך על
גבר דקימתא ליה בידימינך על בר נש דחילתא
19 לך : לא נזור מבתר דחלתך תקימננא ובשמך
20 נקרי : יי אלהים צבאות אתיב יתנא מגלותא
אנהר זיו סבר אפך עלנא ונתפרק : פא
1 לשבחא על כנרא דאתיא מן גת על ידא
2 דאסף : שבחו קדם אלהים עושננא יבבו קדם
3 אלהא דיעקב : ארימו קלא בתושבחתא וסדרו
4 תופיא כנרא דקליה בסים עם נבלין : תקעו
בירחא דתשרי שופרא בירחא דמתכסי יומי
5 חגיא דילנא : ארום קים גזר ישראל הוא הלכת
6 דינא לאלהא דיעקב : סהדותא על יהוסף שויה
דלא קרב לאתת רבוניה ביה ביומא נפק מבית
אסירי ושליט בכל ארעא דמצרים ספתא דלא
7 חכימית אליפית שמעית : אעדיתי משעבודא
כתפיה אידוי מן למרמי טינא לקדרא אסתלקן
8 : בעדן עקתא דמצרים קרית ופצית יתך ענית
יתך באתר טמיר בית שכנתי דאכלין קדמוי
גלגלין די נור בחנתך על מי מצותא לעלמין :
9 שמעו עמי ואסהיד בכון ישראל אם תקבל למימרי :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Poſuiſti nos contradictionẽ vicinis noſ- et inimici noſtri ludibrio[*nos*]habuerũt De⁹ exercituũ reducito nos de captivita- et illumina ſplendorẽ aſpect⁹ faciei tuæ nos,et ſalvi erim⁹. Domũ Iſraelis quæ a- milatur vineæ,de Ægypto tranſtuliſti;expu- liſti populos de terra Iſrael,et plantâſti eos Scopâſti à conſpectu ej⁹ Cananæos,et plan- tâſti radices ej⁹, et implevit terrã.Cooper- ſunt montes Jeruſalem umbra dom⁹ ſanctu- arii, et dom⁹ doctrinæ : præceptores *ſermo- cinantes* fortes qui aſſimilati ſunt cedris for- tiſſimis. *Expandit* propagines,*miſit* diſci- pulos ej⁹ uſq; ad mare magnũ,et uſq; ad flu- men Euphratẽ ſugentes eam. Quare deſtru- xiſti ſepẽ ejus,et excidunt eam omnes tranſ- euntes viam? *Suffodiet* eam aper de ſylva, gall⁹ ſylveſtris paſcetur ex ea. De⁹ exerci- tuũ convertere nunc, aſpice de cœlo et vi- de,et recordare in miſerationib⁹ vitis hu- Et propaginis quam plantavit dextera tua idq; propter regẽ Chriſtũ quẽ confirmaſti tibi. Succenſa eſt igne et exciſa : ab incre- patione quæ à conſpectu tuo[*prodibit*,]pe- eant. Sit man⁹ tua ſup virũ cui juraſti in ma- nu dextera tua,ſup hominẽ quẽ confirmaſti tibi.Non diſcedem⁹ à timore tui : vivifica- bis nos;et in nomine tuo invocabim⁹. Do- Deus exercituum reducito nos de captivi- tate : illuſtra ſplendorẽ aſpectus faciei tuæ ſuper nos,et ſalvi erimus.

Ad laudandum cithara allata de Gath
per manum Aſaph.
PSAL. LXXXI.

LAudes dicite corã Deo fortitudini no- ſtra, jubilate corã Deo Jaacob. Erigite vo- cẽ in laude, et *diſponite* tympana, cithara vocis dulcis cum *nablis*. Clangite in men- Tiſri cornu,in menſe qui coopert⁹ eſt,*in ſolemnitatũ noſtrarũ*. Quoniã præceptũ ſta- tuit Iſraeli, et ſententiã judicii Dei Jaacob Teſtimoniũ ſup Joſeph poſuit eum, *ut non accederet ad uxorẽ Domini ſui*, eo die quo egreſſ⁹ eſt de domo vinctorũ,et dominat⁹ eſt ſuper *totam* terrã Ægypti : labiũ ꝙ non no- vi, didici et audivi. Amovi à ſervitute hu- merũ ej⁹ : man⁹ ej⁹ à projiciendo luto ad ol- las ſeſe ſubduxerunt, In tempore tribulatio- nis Ægypti invocâſti,et liberavi te : reſpon- di tibi in loco abſcondito domus majeſtatis meæ ;perſonãtib⁹ corã me rotis igneis : pro- bavi te apud aquas contradictionis in per- petuum. Audite popule mi & teſtificabor in *vos*; Iſrael, ſi admiſeris verbum meum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

7 [illegible]
8 [illegible]
9 [illegible]
10 [illegible]
11 [illegible]
12 [illegible]
13 [illegible]
14 [illegible]
15 [illegible]
16 [illegible]
17 [illegible]
18 [illegible]
19 [illegible]
20 [illegible]

[illegible]

1 [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7 [illegible]
8 [illegible]
9 [illegible]

Feciſti nos meditationem vicinis noſtris, & hoſtes noſtri ſubſannaverunt nos. Deus for- tiſſime reduc nos, & ſplendere fac vultum tu- um, & ſalvabimur. * *Diapſal.* * Vitem edu- xiſti ex Ægypto, perdidiſti gentes & planta- eam. Intuitus es illam, & plantâſti radices ejus : & impletus eſt orbis illâ. Et oper- ſunt montes umbrâ ejus, & pampini ejus ſu- pra cedros Dei. Jecit palmites ſuos uſque ad mare, & ſuper flumina ramos ſuos. Quare rupiſti ſepem ejus, & conculcaverunt illam omnes tranſeuntes viam? Et comedit eam porcus ſylvæ, beſtiæque campi depaſtæ ſunt eam? Deus potentiſſime convertere, & in- tuere de cœlo, ac vide, atque viſita vitem hanc, Et propaginem quam plantavit dextera tua, & filium hominis quem roborâſti tibi. Ure igni ſarmenta ejus : ob increpationem vul- tûs tui pereant. Sit manus tua dextera ſuper virum & ſuper filium hominis quem robo- râſti tibi ; Ut non retrocedamus à te. Imo vi- vifica nos, & nomen tuum invocabimus. Do- mine Deus fortiſſime reduc nos, & eluceſcere fac vultum tuum, & ſalvabimur.

PSAL. LXXXI.

Aſaphi. Quum David per eum ſe pararet ad ſolennitates. Verſ. 35.

LAudate Deum corroboratorem noſtrum & clamitate Deo Jacob. Sumite tym- pana & fides jucundas cum citharis : Clan- gite cornibus initio menſium, & in novilu- niis, diebus feſtis. Nam lex eſt Iſraeli, & ju- dicium Deo Jacob. Teſtimonium hoc illi in Joſeph poſuit, quum egreſſus eſt è terra Ægypti : linguam quam non noverat audi- vit. Averti jugum ab humero ejus, & manus illius vinculo ſolvi. In anguſtia vocavit me & eripui eum, atque operui illum velamen- to meo glorioſo. Et tentavi eum aquis jur- gii. * *Diapſal.* * Audi popule mi, & loquar, et ô Iſrael atteſtabor contra te. Si me au-

Verſio VULG. LAT.

7 Poſuiſti nos in contradictionē vicinis
nostris: & inimici noſtri ſubſannave-
8 runt nos. Deus virtutū, converte nos:
& oſtende faciem tuam: & ſalvi eri-
9 mus. Vineam de Ægypto tranſtuliſti:
10 ejeciſti gentes, & plantaſti eam. Dux
itineris fuiſti in conſpectu ejus: plan-
taſti radices ejus, & implevit terram.
11 Operuit montes umbra ejus: & ar-
12 buſta ejus cedros Dei. Extendit pal-
mites ſuos uſque ad mare: & uſque ad
13 flumen propagines ejus. Ut quid de-
ſtruxiſti maceriam ejus: & vindemiant
eam omnes, qui prætergrediuntur vi-
14 am? Exterminavit eam aper de ſyl-
va: & ſingularis ferus depaſtus eſt e-
15 am. Deus virtutum, convertere: reſpi-
ce de cœlo, & vide, & viſita vineam
16 iſtam. Et perfice eam, quam plantavit
dextera tua: & ſuper filium hominis,
17 quem confirmaſti tibi. Incenſa igni, et
ſuffoſſa: ab increpatione vultûs tui
18 peribunt. Fiat manus tua ſuper virum
dexteræ tuæ; & ſuper filium hominis,
19 quem confirmaſti tibi. Et non diſce-
dimus à te, vivificabis nos: & nomen
20 tuum invocabimus. Domine Deus vir-
tutum, converte nos: & oſtende faciem
tuam, & ſalvi erimus.

In finem,
1 Pro torcularibus, Pſalmus ipſi Aſaph.
LXXX.

2 Exultate Deo adjutori noſtro: jubi-
3 late Deo Jacob. Sumite pſalmum, &
date tympanum; pſalterium jucundum
4 cum cithara. Buccinate in Neomenia
tubâ, in inſigni die ſolennitatis veſtræ:
5 Quia præceptum in Iſrael eſt: & judi-
6 cium Deo Jacob. Teſtimonium in Jo-
ſeph poſuit illud, cùm exiret de terra
Ægypti: linguam, quam non noverat,
7 audivit. Divertit ab oneribus dorſum
ejus: manus ejus in cophino ſervie-
8 runt. In tribulatione invocâſti me, &
liberavi te: exaudivi te in abſcondi-
to tempeſtatis: Probavi te apud aquā
9 Contradictionis. Audi, populus meus,
& conteſtabor te: Iſrael, ſi audieris
me,

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

7 Ἔθου ἡμᾶς εἰς ἀντιλογίαν τοῖς γείτοσιν ἡμῶν, καὶ
8 οἱ ἐχθροὶ ἡμῶν ἐμυκτήρισαν ἡμᾶς. Κύριε ὁ θεὸς τῶν
δυνάμεων ἐπίστρεψον ἡμᾶς, καὶ ἐπίφανον τὸ πρόσω-
9 πόν σου, καὶ σωθησόμεθα. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Ἄμπελον
ἐξ Αἰγύπτου μετῆρας, ἐξέβαλες ἔθνη καὶ κατεφύ-
10 τευσας αὐτήν. Ὡδοποίησας ἔμπροσθεν αὐτῆς, καὶ
11 κατεφύτευσας τὰς ῥίζας αὐτῆς, καὶ ἐπλήσθη ἡ γῆ. Ἐ-
κάλυψεν ὄρη ἡ σκιὰ αὐτῆς, καὶ αἱ ἀναδενδράδες
12 αὐτῆς τὰς κέδρους τοῦ θεοῦ. † Ἐξέτεινε τὰ κλήμα-
τα αὐτῆς ἕως θαλάσσης, † καὶ ἕως (α) ποταμοῦ τὰς πα-
13 ραφυάδας αὐτῆς. † Ἱνατί καθεῖλες τὸν φραγμὸν
αὐτῆς, † καὶ τρυγῶσιν αὐτὴν πάντες οἱ παραπορευό-
14 μενοι τὴν ὁδόν; † Ἐλυμήνατο αὐτὴν (β) σῦς ἐκ
δρυμοῦ, † καὶ μονιὸς ἄγριος κατενεμήσατο αὐτήν. †
15 Ὁ θεὸς τῶν δυνάμεων ἐπίστρεψον δή, † (γ) ἐπίβλε-
ψον ἐξ οὐρανοῦ καὶ ἴδε, † καὶ ἐπίσκεψαι τὴν ἄμπελον
16 ταύτην. † Καὶ κατάρτισαι αὐτήν, ἣν ἐφύτευσεν ἡ
δεξιά σου, † καὶ ἐπὶ υἱὸν ἀνθρώπου ὃν ἐκραταίω-
17 σας σεαυτῷ. † Ἐμπεπυρισμένη πυρὶ καὶ ἀνεσκαμ-
μένη· † ἀπὸ ἐπιτιμήσεως τοῦ προσώπου σου ἀπολοῦν-
18 ται. † Γενηθήτω ἡ χείρ σου ἐπ' ἄνδρα δεξιᾶς
σου, † καὶ ἐπὶ υἱὸν ἀνθρώπου, ὃν ἐκραταίωσας σεαυ-
19 τῷ. † Καὶ οὐ μὴ ἀποστῶμεν ἀπὸ σοῦ, † ζωώσεις ἡμᾶς,
20 καὶ τὸ ὄνομά σου (δ) ἐπικαλεσόμεθα. † Κύριε ὁ θεὸς
τῶν δυνάμεων ἐπίστρεψον ἡμᾶς, † καὶ ἐπίφανον τὸ
πρόσωπόν σου, καὶ σωθησόμεθα.

MS. A. (α) ποταμῶν (β) ὗς (γ) καὶ ἐπίβλεψον
(δ) ἐπικαλεσώμεθα.

1 Εἰς τὸ τέλος, Ὑπὲρ τῶν (α) ληνῶν, ψαλμὸς τῷ
Ἀσάφ. π'.

2 † Ἀγαλλιᾶσθε τῷ θεῷ τῷ βοηθῷ ἡμῶν, † ἀλαλάξατε
3 τῷ θεῷ Ἰακώβ. † Λάβετε ψαλμὸν καὶ δότε τύμ-
4 πανον, † ψαλτήριον τερπνὸν μετὰ κιθάρας. † Σαλ-
πίσατε ἐν νεομηνίᾳ σάλπιγγι, † ἐν εὐσήμῳ (β) ἡ-
5 μέρᾳ ἑορτῆς ὑμῶν. † Ὅτι πρόσταγμα τῷ Ἰσραήλ
6 ἐστι, † καὶ κρίμα τῷ θεῷ Ἰακώβ. † Μαρτύριον ἐν τῷ
Ἰωσὴφ ἔθετο αὐτόν, † ἐν τῷ ἐξελθεῖν αὐτὸν ἐκ
7 γῆς Αἰγύπτου· † γλῶσσαν ἣν οὐκ ἔγνω, ἤκουσεν. † Ἀπ-
έστησεν ἀπὸ ἄρσεων τὸν νῶτον (*) αὐτοῦ· † αἱ χεῖρες αὐτοῦ
8 ἐν τῷ κοφίνῳ ἐδούλευσαν. † Ἐν θλίψει ἐπεκαλέσω
με καὶ ἐρρυσάμην σε· † ἐπήκουσά σου ἐν ἀποκρύφῳ
καταιγίδος, † ἐδοκίμασά σε ἐπὶ ὕδατος (γ) ἀντιλο-
9 γίας. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἄκουσον λαός μου καὶ λα-
λήσω σοι, Ἰσραήλ, καὶ διαμαρτύρομαί σοι. ἐὰν
ἀκούσῃς μου,

MS. A. (α) ἀλλοιωθησομένων, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. (β) ἡμέρας ἑορτῆς ἡμῶν. (*) αὐτοῦ· (γ) ἀντιλογίας. Ἄκουσον λαός μου καὶ διαμαρτύρομαί σοι · Ἰσραήλ, ἐὰν

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

7 Poſuiſti nos in (i) contradictionem 7
vicinis noſtris: et inimici noſtri ſub-
ſannaverunt nos. 8 Domine Deus vir- 8
tutum, converte nos: & oſtende fa-
ciem tuam, & ſalvi erimus. DIA-
PSALMA. 9 Vineā de (k) Ægypto 9
tranſtuliſti: ejeciſti gentes, et plan-
tâſti eam. 10 Viā (l) feciſti in con- 10
ſpectu ejus: & plantâſti radices e-
jus: [d] & (m) repleta eſt terra. 11
Operuit montes umbra ejus, & (n) 11
arbuſta ejus cedros Dei. 12 (o) Ex- 12
tendit palmites ejus uſq; ad mare,
& uſq; ad flumen propagines ejus.
13 Ut quid deſtruxiſti maceriam e- 13
jus? & [e] vindemiant eam omnes,
qui prætergrediuntur viam? 14 (p)
Devaſtavit eam (q) aper de ſylva: et 14
[f] ſingularis ferus depaſtus eſt eā.
15 Deus virtutū, (r) convertere ve- 15
rò: reſpice de cœlo, & vide, & [g]
viſita vineam iſtam. 16 Et [h] perfi- 16
ce eam, quā plantavit dextera tua:
[i] & ſuper filium hominis, quem
confirmâſti tibi. 17 (ſ) Incenſa igni, 17
et effoſſa: ab increpatione vultûs tui
peribunt. 18 Fiat manus tua ſuper 18
virum dexteræ tuæ, & ſuper filiū
hominis, quem confirmâſti tibi. 19
Et non diſcedemus à te: vivificabis 19
nos, & nomen tuum invocabimus.
20 Domine Deus virtutum, conver- 20
te nos: & oſtende faciem tuam [k],
& ſalvi erimus.

In finem, Pro torcularibus, Pſalmus 1
(a) ipſi Aſaph [a]. LXXX.

1 EXULTATE (b) Deo adjutori 2
noſtro: jubilate Deo Jacob. 2
Sumite Pſalmum, & date tympa- 3
num: (c) pſalterium jucundum cum
cithara. 3 (d) Buccinate in Neome- 4
nia tubâ, in inſigni die ſolen-
nitatis veſtræ. 4 Quia præce- 5
ptum ipſi Iſrael eſt, et judicium Deo
Jacob. 5 Teſtimonium in Joſeph po- 6
ſuit (e) ipſum, cùm exiret de terra
Ægypti; linguam, quam non nove-
rat, audivit. 6 Avertit [b] ab oneribus 7
dorſum ejus: manus ejus in cophino
ſervierunt. 7 In tribulatione [c] in- 8
vocâſti me, & liberavi te. Exau-
divi te in abſcondito tempeſtatis:
probavi te ſuper aquam Contra-
dictionis. DIAPSALMA. 8
Audi, populus meus, (f) & loquar 9
tibi: Iſrael, & teſtificabor tibi. Si
audieris me;

Verſio ÆTHIOPICA.

ወረሰይከነ፡ነገረ፡ለጎርነ፡፡ ወተሳለቁ፡ላዕሌነ፡ 7
ጸላእትነ፡፡ እግዚኦ፡አምላከ፡ኃያላን፡ሚጠ 8
ነ፡፡ አብርህ፡ገጸከ፡ላዕሌነ፡ወንድኅን፡፡ ፨
ዐጸደ፡ወይን፡አፍለስከ፡እምግብጽ፡፡ ወሰደ 9
ድከ፡አሕዛበ፡ወተከልከ፡ኪያሃ፡፡ ፨ ወጺሕ 10
ከ፡ፍኖተ፡ቅድሜሃ፡፡ወተከልከ፡ሥረዊሃ፡ወመ
ልአት፡ምድረ፡፡ ፨ ወከደነ፡አድባረ፡ጽላሎ 11
ታ፡፡ወአዕጹቂሃ፡ከመ፡አርዘ፡እ° ዚአብሔ
ር፡፡ ፨ ወሰፍሐ፡አዕጹቂሃ፡እስከ፡ባሕር፡፡ 12
ወእስከ፡አፍላግ፡ሠርፃ፡፡ ፨ ለምንት፡ተነ 13
ሠት፡ ጸቆና፡፡ ወይበልዕ፡ ኵሉ፡ ኃላፈ፡
ፍኖት፡፡ ፨ ወአርኰሳ፡ ሐራዊያ፡ ሐቅል፡፡ ወ 14
ተረዐያ፡አንበሳ፡ገዳም፡፡ ፨ አምላከ፡ኃያላ 15
ን፡ተመየጥ፡፡ኅሠሥ፡እምሰማይ፡ወርኢ፡፡
ወተሠሀላ፡ለዛ፡ዐጸደ፡ወይን፡፡ ፨ ወአስተ 16
ናሥኣ፡ወአጽንዓ፡ዘተከለት፡የማንከ፡፡ በወል
ደ፡እጓለ፡እመሕያው፡ዘአጽናዕከ፡ለከ፡፡ ፨
ለውዓት፡ እሳት፡ወመልሕቅት፡፡ወእምተግሣ 17
ጸ፡ገጽከ፡ይትሐጐሉ፡፡ ፨ ለይኩን፡እዴከ፡ 18
ላዕለ፡ብእሲ፡ የማንከ፡፡ በወልደ፡እጓለ፡እ
መሕያው፡ ዘአጽናዕከ፡ለከ፡፡ ፨ ወኢንርሐ 19
ቅ፡ እምኔከ፡፡ አሕይወነ፡ ወንጼውዕ፡ ስመ
ከ፡፡ ፨ እግዚኦ፡አምላከ፡ኃያላን፡ ሚጠ 20
ነ፡፡አብርህ፡ገጸከ፡ላዕሌነ፡ወንድኅን፡፡

ፍጻሜ፡ዘበእንተ፡ማኅበብት፡ዘአሳፍ፡መዝ
ሙር፡ዘኃምስቱ፡ሰንበት፡፡

፹ ተፈሥሑ፡በእግዚአብሔር፡ዘረድአነ፡፡ 1
ወየብቡ፡ለአምላከ፡ያዕቆብ፡፡ ፨ ንሥኡ፡ 2
መዝሙረ፡ ወሀቡ፡ ከበሮ፡፡ መዝሙረ፡ ሐዋ
ዝ፡ ምስለ፡ ሰንቆ፡፡ ፨ ንፍኁ፡ቀርነ፡ በዕለ 3
ተ፡ሠርቅ፡፡ በዕምርት፡ ዕለት፡ በዓልነ፡፡ ፨
እስመ፡ሠርዓቱ፡ለእስራኤል፡ውእቱ፡፡ ወፍ 4
ትሑ፡ ለአምላከ፡ ያዕቆብ፡፡ ፨ ወአቀመ፡ 5
ስምዐ፡ለዮሴፍ፡፡ እመ፡የሐውር፡ ብሔረ፡ ግ
ብጽ፡፡ ወሰምዐ፡ ልሳነ፡ ዘኢያአምር፡፡ ፨
ወሚጠ፡ ዘበኖ፡ እምሕራማቲሆሙ፡፡ ወ 6
ተቀንያ፡ እደዊሁ፡ ውስተ፡ አክፋር፡፡ ፨ በ 7
ምንዳቤከ፡ ጸዋዕከኒ፡ ወአድኃንኩከ፡፡ ወተ
ሰጠውኩከ፡ በዐውሎ፡ ኃቡእ፡፡ ወአመከርኩ
ከ፡ በኀበ፡ ማየ፡ ቅስት፡፡ ፨ ስምዑኒ፡ 8
ሕዝብየ፡ ወእንግርከ፡፡ እስራኤል፡ወአስም
ዕ፡ለከ፡፡ እመሰ፡ሰማዕከኒ፡

INTERP. ÆTHIOP. [d] & implevit terram. [e] comedunt eam [f] depaſcit eam beſtia deſerti. [g] propitius eſto iſti vineæ tuæ. [h] eleva, & confirma eam, [i] & filium hominis, [k] ſuper nos, &
PSAL. LXXX. [a] qui quintâ Sabbathi. [b] ab interdictis eorum dorſum [c] tua invocâſti

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* جَعَلْتَنَا مُنَاظَرَةً لِجِيرَانِنَا. وَٱسْتَهْزَيَ بِنَا أَعْدَاوُنَا * أَيُّهَا ٱلرَّبُّ إِلَهُ ٱلْجُنُودِ أَعِدْنَا وَأَضِي وَجْهَكَ 8
عَلَيْنَا فَنَخْلُصَ * نَقَلْتَ ٱلْكَرْمَةَ مِنْ مِصْرَ. أَخْرَجْتَ أُمَمًا وَغَرَسْتَهَا * أَصْلَحْتَ ٱلطَّرِيقَ أَمَامَهَا. 9 10
وَغَرَسْتَ أُصُولَهَا فَمَلَأَتِ ٱلْأَرْضَ * ظَلَّلَ ٱلْجِبَالَ ظِلُّهَا. وَأَغْصَانُهَا عَلَى أَرْزِ ٱللهِ * أَمَدَّتْ أَغْصَانَهَا 11 12
إِلَى ٱلْبَحْرِ. وَإِلَى ٱلْأَنْهَارِ فُرُوعُهَا * فَلَمَّا هَدَمْتَ سِيَاجَهَا قَطَفَهَا كُلُّ ٱلْعَابِرِينَ فِي ٱلطَّرِيقِ * وَأَفْسَدَهَا 13 14
خِنْزِيرُ ٱلْجَبَلِ مِنَ ٱلْغَابِ وَرَعَاهَا حِمَارُ ٱلْوَحْشِ * يَا رَبَّ إِلَهَ ٱلْقُوَّاتِ تَعَطَّفْ عَلَيْنَا وَٱطَّلِعْ مِنَ 15
ٱلسَّمَاءِ. وَٱنْظُرْ وَتَعَاهَدْ هَذِهِ ٱلْكَرْمَةَ * وَأَصْلِحْهَا وَثَبِّتْهَا. هَذِهِ ٱلَّتِي غَرَسَتْهَا يَمِينُكَ. وَٱبْنَ 16
ٱلْإِنْسَانِ ٱلَّذِي ثَبَّتَّهُ لَكَ * ٱلَّذِينَ أَحْرَقُوهَا بِٱلنَّارِ وَهَدَمُوهَا. مِنْ ٱنْتِهَارِ وَجْهِكَ يَهْلِكُونَ 17
* وَلْتَكُنْ يَدُكَ عَلَى ٱلْإِنْسَانِ. وَعَيْنُكَ عَلَى ٱبْنِ ٱلْإِنْسَانِ ٱلَّذِي ثَبَّتَّهُ لَكَ * وَلَا نَبْتَعِدُ عَنْكَ. 18 19
وَتُحْيِينَا وَنَدْعُوا بِٱسْمِكَ * أَيُّهَا ٱلرَّبُّ إِلَهُ ٱلْقُوَّاتِ ٱرْدُدْنَا. وَأَنِرْ وَجْهَكَ عَلَيْنَا فَنَخْلُصَ. ٱللَّلِيلُويَا. 20

* ٱلْمَزْمُورُ ٱلثَّمَانُونَ.
* لِآصَافَ عَلَى ٱلْمَعَاصِرِ. وَعَدَدُهُ. لَهُ. ٱسْتِيخُن. 1

* ٱبْتَهِجُوا بِٱللهِ مُعِينِنَا. هَلِّلُوا لِإِلَهِ يَعْقُوبَ * خُذُوا مِزْمَارًا وَٱضْرِبُوا دُفًّا. مِزْمَارًا حَسَنًا مَعَ 3
قِيثَارٍ * بُوقُوا فِي رُؤُسِ ٱلشُّهُورِ بِٱلْبُوقِ فِي يَوْمِ عِيدِنَا ٱلْمَشْهُورِ * لِأَنَّهَا وَصِيَّةٌ لِإِسْرَائِيلَ. وَحُكْمٌ 4 5
لِإِلَهِ يَعْقُوبَ * جَعَلَ شَهَادَتَهُ فِي يُوسُفَ. عِنْدَ خُرُوجِهِ مِنْ أَرْضِ مِصْرَ. سَمِعَ لِسَانًا لَمْ يَكُنْ 6
يَعْرِفُهُ * نَحَّى ٱلثِّقْلَ عَنْ ظَهْرِهِ. وَأَطْلَقَ مِنْ وَثَاقِ ٱلْعُبُودِيَّةِ يَدَهُ * دَعَانِي فِي ٱلضُّرِّ فَنَجَّيْتُهُ 7 8
وَفِي خَفَا ٱبْتِهَالِهِ أَجَبْتُهُ. وَعَلَى مَاءِ ٱلْخِصَامِ جَرَّبْتُهُ * إِسْمَعْ يَا شَعْبِي فَأَقُولَ لَكَ. وَيَا إِسْرَائِيلُ لِأَشْهَدَ 9
لَكَ. إِنْ أَطَعْتَنِي.

Poſuiſti nos rixam vicinis noſtris, & il- 7
luſerunt nos inimici noſtri. O Domine De- 8
us exercituum, reduc nos, & lucere fac
vultum tuum ſuper nos, & ſalvabimur.
Tranſtuliſti vitem de Ægypto, expuliſti 9
populos & plantâſti eam. Parâſti viam 10
ante eam, & plantâſti radices ejus, imple-
vitque terram: Obumbravit montes um- 11
bra ejus: & rami ejus ſuper cedros Dei.
Protenderunt ſe rami ejus uſque ad mare, 12
et uſque ad flumina germina ejus. Quare 13
ergò deſtruxiſti ſepem ejus, vindemiâ-
runt eam omnes prætereuntes per viam?
Et corrupit eam porcus montanus de ſyl- 14
va, & depavit eam aſinus ſylveſter? O 15
Domine Deus virtutum, propitiare nobis,
& proſpice de cœlo, & vide, & viſita
hanc vitem, Et redintegra eam, & con- 16
firma illam: hanc, inquam, quam planta-
vit dextera tua, & filium hominis quem
corroborâſti tibi: Qui eam combuſſerunt 17
igne, & deſtruxerunt eam, ab increpati-
one vultûs tui peribunt. Et ſit manus tua 18
ſuper hominem, & oculus tuus ſuper fi-
lium hominis quem confirmâſti tibi. Et 19
non recedemus à te, imò vivificabis nos, et
invocabimus nomen tuum. O Domine 20
Deus virtutum, reduc nos, & luce fac
vultum tuum ſuper nos, & ſalvabimur.
Alleluja.

PSAL. LXXX.

Aſapho, de torcularibus. Et nu- 1
merus ver. 35.

Exultate in Deo adjutore noſtro: ju- 2
bilate Deo Jacob: Sumite pſalterium, 3
et pulſate tympanum, pſalterium optimum
cum cythara. Clangite initiis menſium 4
buccinâ, in die ſolennitatis noſtræ cele-
berrimo. Id enim præceptum eſt Iſraeli, 5
& judicium Dei Jacob. Poſuit teſtimo- 6
nium ſuum in Joſeph, cùm exiret de terra
Ægypti, audivit linguam quam ignora-
bat. Amovit onus à dorſo ejus, & dimi- 7
ſit de vinculo ſervitutis manum ejus. In- 8
vocavit me in neceſſitate, & liberavi e-
um: & in abſcondito ſupplicationis ejus
exaudivi eum: & ſuper aquam conten-
tionis tentavi eum. Audi O popule meus, et 9
dicam tibi: et O Iſrael, [illegible] tibi.
Si audieris mihi.

תהלים : פב פג

Dominus Ego .extraneo Deo te incurvabis nec : alienus Deus te in erit Non
10 לא־יהיה בך אל זר ולא תשתחוה לאל נכר : אנכי יהוה 10
11 .illud implebo & ,tuū os dilata : Ægypti terra à te *faciens aſcendere* tuus Deus 11
אלהיך המעלך מארץ מצרים הרחב־פיך ואמלאהו :
eum dimiſi Et .mihi *acquievit non* Iſrael & : meæ voci meus populus paruit non Et
12 ולא־שמע עמי לקולי וישראל לא־אבה לי : ואשלחהו 12
13 *audiens* meus populus Utinam .ſuis conſiliis in *ibunt* : ſui cordis *pertinacia* in 13
14 בשרירות לבם ילכו במועצותיהם : לו עמי שמע 14
:humiliâſſem eorum inimicos *parum Quaſi* .*ambulâſſent* meis viis in Iſrael : mihi
15 לי ישראל בדרכי יהלכו : כמעט אויביהם אכניע 15
Dominum odio Habentes .meam manum vertiſſem eorum hoſtes *ſuper* &
16 ועל־צריהם אשיב ידי : משנאי יהוה
:frumenti adipe *ex* eum cibavit Et .ſeculum in eorum tempus erit & : *ei mentientur* 16
17 יכחשו־לו ויהי עתם לעולם : ויאכילהו מחלב חטה 17
.te *ſaturabo* melle petra de &
ומצור דבש אשביעך :

PSAL. LXXXII. פב

.judicabit *divorum interiori* in : *fortis cœtu in ſtans* Deus .Aſaph ipſi *Cantus*
1 מזמור לאסף אלהים נצב בעדת־אל בקרב אלהים ישפט : 1
.Selah ? ſuſcipietis impiorum facies & : iniquitatem judicabitis Uſquequo 2
2 עד־מתי תשפטו־עול ופני רשעים תשאו־סלה : 3
,*exhauſtum* Eripite .juſtificate *pauperem &* ,*afflictum* : pupillo & ,*tenui* Judicate 4
3 שפטו־דל ויתום עני ורש הצדיקו : פלטו־דל
4 *tenebroſitate* in,intellexerunt nec , Neſciverunt .eruite impiorum manu de :egenum &
5 ואביון מיד רשעים הצילו : לא ידעו ולא יבינו בחשכה 5
: *vos* Dii , dixi Ego .terræ fundamenta omnia *nutabunt* : *ambulabunt*
6 יתהלכו ימוטו כל־מוסדי ארץ : אני־אמרתי אלהים אתם
principum unus ſicut & : moriemini *homo* ſicut Verè .vos omnes excelſi filii & 6
7 ובני עליון כלכם : אכן כאדם תמותון וכאחד השרים
hæreditabis tu quoniam : terram judica ,Deus Surge .cadetis 7
8 תפלו : קומה אלהים שפטה הארץ כי־אתה תנחל 8
.gentes omnes *in*
בכל־הגוים :

PSAL. LXXXIII. פג

ne & , taceas ne : tibi *ſilentium* ne Deus .Aſaph ipſi Cantus .Canticum 1
1
2 שיר מזמור לאסף : אלהים אל־דמי־לך אל־תחרש ואל־ 2
extulerunt te habētes odio & :*tumultuabuntur* tui inimici ecce Quoniam .Deus quieſcas 3
3 תשקט אל : כי־הנה אויביך יהמיון ומשנאיך נשאו
.tuos abſconditos ſuper *cōſiliabuntur* &,*ſecretum inibunt* callidè tuū populū Super .caput 4
4 ראש : על־עמך יערימו סוד ויתיעצו על־צפוניך :
nomen memoretur non & : gente de eos ſuccidamus & , Venite , Dixerunt 5
5 אמרו לכו ונכחידם מגוי ולא־יזכר שם־
.*excident* fœdus te *ſuper* : pariter corde ſunt conſiliati Quoniam .ultrà Iſrael 6
6 ישראל עוד : כי נועצו לב יחדו עליך ברית יכרתו :
.Hagharim & ,Moab , Iſmahelim & ,Edom Tabernacula
7 אהלי אדום וישמעאלים מואב והגרים :

תרגום TARGUM.

לא יהי ביניכון פלחי טעותא נוכראה ולא 10
תסגדון לטעות חילוני : אנא יי אלהך דאסקית 11
יתכון מארעא דמצרים אפתי פומך בפתגמי
אוריתא ואמלי יתיה מכל טבתא : ולא קבילו 12
עמי לקלי וישראל לא צבו למימרי : ותרכתיה 13
בהרהורי לבהון אזלו במלכת רשיעהון : הלואי 14
עמי שמע לי ישראל באורחתי יהלכון : כזער 15
בעלי דבביהון אמאך ועל בעלי דבבהון אתיב
מחת גבורתי : סנאי יי יכדבון ליה ויהי תוקפהון 16
לעלם : ויאכלניה מן טוב לחם חטין ומן 17
טינרא דובשא אשבענך :

פב

תושבחתא על ידא דאסף אלהים שכנתיה 1
שריא בכנישת צדיקין דתקיפין באוריתא
במצע דינין דקשוט ידן : עד אימתי רשיעיא 2
תדונון שקר ואפי רשיעיא תסבון לעלמין : דונו 3
מסכנא ויתמא עניא ומסכנא אצדיקו : שיזבו 4
מסכן וחשוכא מן ידיהון דרשיעיא פצו יתהון :
לא חכימו לאוטבא ולא אתבינן באוריתא 5
בחשוכא מהלכין מטול היכנא מתמוטטין
רגליהון די בסיסי ארעא : אנא אמרית הי 6
כמלאכיא אתון חשיבין והיך אנגלי מרומא
כולכון : ברם בקושטא היך בני נשא תמותון 7
והיך חד מן רברבניא תפלון : קום יי דון ית כל 8
יתבי ארעא ארום את תחסין בכל עממיא :

פג

שיר ושבחא על ידא דאסף : אלהים לא תשתוק 1 2
לך לא תתרשל ולא תשדוך אלהא : ארום 3
הא בעלי דבבך מתרגשין וסנאך זקיפו רישא :
על עמך נכילו רזא ומתמלכין על דמטשין 4
באוצריך : אמרין אתו ונכסנון מלמהוי עם ולא 5
אדכר שמא דישראל תוב : ארום אתמלכון 6
בכל לבא עלך כחדא ואמטולתך קימא גזרין :
משכני אדומאי וערבאי מואבאי והונגראי : 7

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Non erunt *inter vos* ſervientes idolis alienigenarum, nec adorabitis idola profana. Ego ſum Dñs Deus *tuus* qui eduxi vos de terra Ægypti : aperi os tuum ad verba Legis, et implebo illud omni bono. Sed non recepit popul⁹ meus vocem meā, et Iſrael non acquievit verbo meo. Proinde expuli eos in cogitationibus cordis eorum : ambulaverunt in conſiliis impietatum ſuarum. Utinam populus meus audiſſet me ; Iſrael in viis meis ambulâſſet Brevi inimicos eorum humiliâſſem, et adverſus hoſtes illorum convertiſſem percuſſionem potentiæ meæ. Odientes Dñm mentientur ei, et erit furor eorum in æternū. At cibâſſet illos de optimo pane tritici, & de rupe melle ſaturâſſem te.

Canticum per manum Aſaph.
PSAL. LXXXII.

DEus cujus majeſtas commoratur in congregatione juſtorum qui potentes ſunt in Lege ; in medio judicum *veritatis* judicat. Uſquequo impii judicabitis falſitatem et facies impiorum ſuſcipietis in æternum. Judicate miſerabili et pupillo, egeno et miſero juſtitiam facite. Salvate miſerum et egenum, de manibus impiorum liberate eos. Neſcierunt bonum operari et non intellexerunt legem, in tenebris ambulant, propterea moventur *pedes baſium* terræ. Ego dixi, Veluti angeli vos eſtis reputati, et tanquam angeli excelſi vos omnes. Attamen in veritate ſicut homines moriemini, et tanquam unus de principibus cadetis. Surge Dñe judica *omnes* habitatores terræ, quoniam tu hæreditabis omnes populos.

Canticum *et laus* per manum Aſaph.
PSAL, LXXXIII.

DEus ne taceas tibi ; et ne ceſſes, neque quieſcas Deus. Quoniam ecce inimici tui fremunt, et odientes te extulerunt caput. Super populum tuum ſecretas machinati ſunt fraudes, & conſulunt adverſus abſcondita in theſauris tuis. Dicentes, Venite & trucidemus eos ne ſint populus, et non commemoretur nomen Iſrael amplius. Quoniam conſilium ineunt in toto corde adverſum te pariter, & propter te pactum feriunt. Tabernacula Idumæorum et Arabum Moabitæ et Hungari ;

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 *ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܟ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܣܓܘܕ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ:*ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܕܐܣܩܬܟ
11
12 ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ : ܦܬܚ ܦܘܡܟ ܘܐܡܠܝܘܗܝ. * ܘܥܡܝ ܠܐ ܫܡܥ ܒܩܠܝ : ܘܐܝܣܪܝܠ
13 ܠܐ ܐܬܛܦܝܣ ܡܢܝ. *ܐܠܐ ܐܙܠܘ ܒܪܓܝܓܬܐ ܕܠܒܗܘܢ : ܘܒܡܠܟܐ ܕܢܦܫܗܘܢ. * ܠܘ
14
15 ܥܡܝ ܫܡܥ ܗܘܐ ܠܝ ܘܐܝܣܪܝܠ ܒܐܘܪܚܬܝ ܗܠܟ ܗܘܐ:*ܒܩܠܝܠ ܡܘܒܕ ܗܘܝܬ ܠܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ.
16 ܘܥܠ ܣܢܐܝܗܘܢ ܡܗܦܟ ܗܘܝܬ ܐܝܕܝ : * ܣܢܐܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܕܓܠܘ ܒܗ. ܘܗܘܐ ܙܒܢܗܘܢ
17 ܠܥܠܡ : * ܘܐܘܟܠܗ ܡܢ ܫܘܡܢܐ ܕܚܛܐ. ܘܡܢ ܟܐܦܐ ܕܒܫܐ ܣܒܥܗ.

ܡܙܡܘܪܐ ܕܦܒ

1 *ܠܐܣܦ. ܡܟܣܢܘܬܐ ܕܝܗܘܕܝܐ ܥܘܠܐ. ܦܬܓܡܐ ܗ. ܐܠܗܐ ܩܡ ܒܟܢܫܐ ܕܡܠܐܟܐ. ܘܒܓܘ
2 ܡܠܐܟܐ ܕܐܢ:*ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܕܝܢܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܘܠܐ. ܘܦܪܨܘܦܐ ܕܪܫܝܥܐ ܢܣܒܝܢ ܐܢܬܘܢ:*ܕܘܢܘ
3
4 ܠܝܬܡܐ ܘܠܡܣܟܢܐ. ܘܠܡܣܟܢܐ ܘܠܡܟܝܟܐ ܙܕܩܘ : * ܦܨܘ ܠܡܣܟܢܐ ܘܠܒܨܝܪܐ ܡܢ ܐܝܕܐ
5 ܕܪܫܝܥܐ. * ܠܐ ܝܕܥܘ ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܘ: ܕܒܚܫܘܟܐ ܡܗܠܟܝܢ ܗܘܘ. ܘܐܬܬܙܝܥܘ ܟܠܗܘܢ ܫܬܐܣܘܗܝ
6 ܕܐܪܥܐ : * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܕܐܠܗܐ ܐܢܬܘܢ. ܘܒܢܘܗܝ ܕܡܪܝܡܐ ܟܠܟܘܢ : * ܡܟܝܠ ܐܝܟ ܒܪܢܫܐ
7
8 ܡܐܬܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܐܝܟ ܚܕ ܡܢ ܪܘܪܒܢܐ ܢܦܠܝܢ ܐܢܬܘܢ.*ܩܘܡ ܐܠܗܐ ܘܕܘܢ ܠܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܝܪܬ
ܐܢܬ ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. *ܫܘܒܚܐ ܘܫܘܪܝܐ ܕܡܣܩܬܐ. *ܡܙܡܘܪܐ ܕܦܓ *ܠܐܣܦ. 1
[illegible]
2 ܐܠܗܐ ܡܢܘ ܕܕܡܐ ܠܟ. ܠܐ ܬܫܬܘܩ ܘܠܐ ܬܫܠܐ ܐܠܗܐ:*ܡܛܠ ܕܗܐ ܒܥܠܕܒܒܝܟ ܐܬܪܓܫܘ
3
4 ܘܣܢܐܝܟ ܐܪܝܡܘ ܪܫܗܘܢ : * ܥܠ ܥܡܟ ܐܪܥܡܘ ܨܢܥܬܐ. ܘܐܬܡܠܟܘ ܥܠ ܩܕܝܫܝܟ
5 ܘܐܡܪܘ ܬܘ ܢܘܒܕ ܐܢܘܢ ܡܢ ܥܡܐ. ܘܠܐ ܢܬܕܟܪ ܬܘܒ ܫܡܗ ܕܐܝܣܪܝܠ : *ܡܛܠ
6
7 ܕܐܬܡܠܟܘ ܒܠܒܗܘܢ ܐܟܚܕܐ. ܘܥܠܝܟ ܩܝܡܐ ܓܙܪܘ : * ܡܫܟܢܐ ܕܐܕܘܡ ܘܕܛܝܝܐ
ܘܕܡܘܐܒ ܘܕܓܕܪܝܐ :

Non ſit tibi Deus peregrinus, & ne adores deum alienum; Ego ſum Dñs Deus tuus qui eduxi te de terra Ægypti : aperi os tuum & implebo illud. At populus meus non audivit vocem meam, & Iſrael non accepit ſuſcionem à me ; Sed ambulaverunt pro libidine cordis ſui, & juxta conſilium animæ ſuæ. Si populus meus audiret me, & Iſrael per vias meas ambularet, Brevi perderem hoſtes eorum, & in oſores eorum converterem manum meam. Oſores Dñi mentiti ſunt in ipſum, & facta eſt nutatio illorum in ſeculum. Cibavit eū adipe frumēti, & de petra melle ſaturavit eum.

PSAL. LXXXII.

Aſaphi. Invectio in Judæos impios, Verſ.

DEus ſtetit inter cœtum Angelorum, & in medio Angelorum judicabit. Quouſque judicabitis iniquitatem, et facies impiorum ſumetis ? Judicate pupillis et egenis, et pauperes humileſque juſtificate : Eripite pauperes et inopes de manu impiorum, Qui nôrunt neque intellexerunt ; nam in tenebris ambulabant : et vacillârunt omnia fundamenta terræ. Ego dixerā deos eſſe vos, et filios Excelſi omnes ; Nunc autem ſicut homines moriemini, et ſicut unus è magnatibus cadetis. Surge Deus, et judica terram : nam tu hæreditate poſſidebis cunctas gentes.

Laus, & initium gradus.

PSAL. LXXXIII.

Aſaphi. Precatio ad Deum pro populo qui pertulerat afflictionem. Et prophetia de diſſipatione hoſtium Domini. Verſ. 3

DEus, quis eſt qui ſimilis ſit tibi? Ne taceas, neque ſileas Deus : Quoniā ecce inimici tui concitantur, et oſores tui extulerunt caput. Super populum tuum : verſutiam aſtruxerunt ſecretum, et conſultârunt adverſus ſanctos tuos. Ac dixerunt ; Venite, perdamus eos de populo, et non ſit amplius mentio nominis Iſraelis. Quoniam meditati ſunt corde ſuo ſimul, et contra te inierunt fœdus Tentoriorum Adum, et Arabum, & Moabi, atque Godaræorum :

Verſio VULG. LAT.

10 Non erit in te deus recens, neque adorabis
11 deũ alienum. Ego enim ſum
Dominus Deus tuus, qui eduxi te de
terra Ægypti: dilata os tuum, & implebo
12 illud. Et non audivit populus
meus vocem meam: & Iſrael non intendit
13 mihi. Et dimiſi eos ſecundùm
deſideria cordis eorum, ibunt in adinventionibus
14 ſuis. Si populꝰ meus audiſſet
me: Iſrael ſi in viis meis ambulaſſet:
15 Pro nihilo forſitan inimicos
eorum humiliaſſem: & ſuper tribulantes
16 eos miſiſſem manum meam. Inimici
Domini mentiti ſunt ei: & erit
17 tempus eorum in ſecula. Et cibavit
eos ex adipe frumenti: & de petra,
melle ſaturavit eos.

1 Pſalmus Aſaph. LXXXI.

DEus ſtetit in ſynagoga deorum: in
2 medio autem deos dijudicat. Uſquequo
judicatis iniquitatem: & facies
3 peccatorum ſumitis? Judicate egeno,
& pupillo: humilem, & pauperem
4 juſtificate. Eripite pauperẽ: & egenũ
5 de manu peccatoris liberate. Neſcierunt,
neque intellexerunt, in tenebris
ambulant: movebuntur omnia fundamenta
6 terræ. Ego dixi; Dii eſtis, et filii
7 Excelſi omnes. Vos autem ſicut homines
moriemini: et ſicut unꝰ de principibus
8 cadetis. Surge, Deus, judica terram:
quoniam tu hæreditabis in omnibus
gentibus.

1 Canticum Pſalmi Aſaph. LXXXII.

2 DEus, quis ſimilis erit tibi? ne taceas,
3 neque compeſcaris, Deus: Quoniam
ecce inimici tui ſonuerunt: et
4 qui oderunt te, extulerunt caput. Super
populum tuum malignaverunt cõſilium;
et cogitaverunt adverſùs ſanctos
5 tuos. Dixerunt; Venite, et diſperdamus
eos de gente, et non memoretur
6 nomen Iſrael ultra. Quoniam
cogitaverunt unanimiter, ſimul adverſum
7 te teſtamentum diſpoſuerunt, Tabernacula
Idumæorum et Iſmahelitæ:
Moab, et Agareni,

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

10 † Οὐκ ἔσται ἐν σοὶ θεὸς πρόσφατος, † οὐδὲ προσκυνήσεις
11 θεῷ ἀλλοτρίῳ. † Ἐγὼ γάρ εἰμι κύριος
ὁ θεός σου, † ὁ ἀναγαγών σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, †
12 πλάτυνον τὸ στόμα σου καὶ πληρώσω αὐτό. † Καὶ οὐκ
ἤκουσεν ὁ λαός μου τῆς φωνῆς μου, † καὶ Ἰσραὴλ οὐ προσέσχε
13 μοι. † Καὶ ἐξαπέστειλα αὐτοὺς κατὰ τὰ ἐπιτηδεύματα
τῶν καρδιῶν αὐτῶν; † πορεύσονται ἐν
14 τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν. † Εἰ ὁ λαός μου ἤκουσέ
15 μου, † Ἰσραὴλ ταῖς ὁδοῖς μου εἰ ἐπορεύθη, † Ἐν τῷ
μηδενὶ ἂν τοὺς ἐχθροὺς αὐτῶν ἐταπείνωσα, † καὶ ἐπὶ
τοὺς θλίβοντας αὐτοὺς ἐπέβαλον ἂν τὴν χεῖρά μου.
16 † Οἱ ἐχθροὶ κυρίου ἐψεύσαντο αὐτῷ, † καὶ ἔσται ὁ καιρὸς
17 αὐτῶν εἰς τὸν αἰῶνα. † Καὶ ἐψώμισεν αὐτοὺς
ἐκ στέατος πυροῦ, † καὶ ἐκ πέτρας μέλι ἐχόρτασεν
αὐτούς.

1 Ψαλμὸς τῷ Ἀσάφ. πα΄.

† Ὁ Θεὸς ἔστη ἐν συναγωγῇ θεῶν, † ἐν μέσῳ δὲ
2 θεοὺς διακρινεῖ. † Ἕως πότε κρίνετε ἀδικίαν, †
καὶ πρόσωπα ἁμαρτωλῶν λαμβάνετε; ΔΙΑΨΑΛΜΑ.
3 † (α) Κρίνατε ὀρφανὸν καὶ πτωχόν, † ταπεινὸν
4 καὶ πένητα δικαιώσατε. † Ἐξέλεσθε πένητα, καὶ πτωχὸν
5 † ἐκ χειρὸς ἁμαρτωλοῦ (β) ῥύσασθε. † Οὐκ ἔγνωσαν
οὐδὲ συνῆκαν, ἐν σκότει διαπορεύονται, † σαλευθήσονται
6 πάντα τὰ θεμέλια τῆς γῆς. † Ἐγὼ εἶπα,
7 Θεοί ἐστε, καὶ υἱοὶ ὑψίστου πάντες. † Ὑμεῖς δὲ ὡς ἄνθρωποι
ἀποθνήσκετε, † καὶ ὡς εἷς τῶν ἀρχόντων πίπτετε.
8 † Ἀνάστα ὁ θεός, κρῖνον τὴν γῆν, † ὅτι σὺ κατακληρονομήσεις
(γ) ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν.

MS. A. (α) Κρίνετε ὀρφανῷ καὶ πτωχῷ, (β) ῥύσασθαι αὐτούς. Οὐκ (γ) αὐτοὺς ἐν πᾶσιν

1 Ὠδὴ ψαλμοῦ τῷ Ἀσάφ. πβ΄.

2 † Ὁ Θεὸς τίς ὁμοιωθήσεταί σοι; † μὴ σιγήσῃς,
3 μηδὲ καταπραΰνῃς ὁ θεός. † Ὅτι ἰδοὺ οἱ ἐχθροί
σου ἤχησαν· † καὶ οἱ μισοῦντές σε ἦραν κεφαλήν. †
4 Ἐπὶ τὸν λαόν (α) σου κατεπανουργεύσαντο γνώμην,
5 † καὶ ἐβουλεύσαντο κατὰ τῶν ἁγίων σου. † Εἶπαν, Δεῦτε
καὶ (β) ἐξολοθρεύσωμεν αὐτοὺς ἐξ ἔθνους, † καὶ οὐ
6 μὴ μνησθῇ τὸ ὄνομα Ἰσραὴλ ἔτι. † Ὅτι ἐβουλεύσαντο
ἐν ὁμονοίᾳ ἐπὶ τὸ αὐτό, † κατὰ σοῦ διαθήκην διέθεντο.
7 † Τὰ σκηνώματα τῶν Ἰδουμαίων † καὶ οἱ
Ἰσμαηλῖται, † Μωὰβ καὶ οἱ (γ) Ἀγαρηνοί,

MS. A. (α) Σου κύριε κατεπανουργεύσαντο (β) ἐξολεθρεύσωμεν (γ) Ἀγγαρηνοί,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Non erit in te [d] deus recens: neq; 10
adorabis deum alienum. 9 Ego enim 11
ſum Dominus Deus tuus, qui eduxi
te de terra Ægypti: dilata os tuum,
& adimplebo [e] illud. 10 Et non 12
audivit populus meus vocem meã:
& Iſrael [f] non attendit mihi. 11
Et dimiſi eos ſecundùm (g) [g] affectiones 13
cordium eorũ: ibunt in affectionibus
ſuis. 12 Si populꝰ meus 14
audiſſet me, Iſrael ſi in viis meis
ambulâſſet; 13 [h] In (h) nihilo utiq; 15
inimicos eorum humiliâſſem: & ſuper
tribulantes eos miſiſſem manum
[i] meam. 14 (i) Inimici Domini 16
mentiti ſunt ei: & erit tempus eorum
in æternum. 15 Et cibavit eos 17
ex adipe frumenti: et de petra, melle
ſaturavit eos.

MS. Æthiop. Po. Gloria Patri, & Filio, & Spiritui Sancto: Eſt modò, ſemper erit, & in ſecula ſeculorum, Amen.

Pſalmus ipſi Aſaph. LXXXI. 1

1 DEUS ſtetit in ſynagoga deorũ: in (a) medio autem deos
diſcernet. 2 Uſquequò judicatis ini- 2
quitatem; & facies peccatorum ſumitis? DIAPSALMA. 3 Judicate 3
(b) pupillum, & egenum: humilem
& pauperem juſtificate. 4 Eripite 4
[a] pauperem: & egenum de manu
peccatoris liberate. 5 Neſcierunt, ne- 5
que intellexerunt: in tenebris ambulant:
movebuntur omnia [b] fundamenta terræ. 6 Ego dixi, Dii e- 6
ſtis, & filii Excelſi omnes. 7 (c) Vos 7
autem ſicut homines, morimini; &
ſicut unus de principibus, caditis.
8 Surge, Deus, judica terram: quo- 8
niam tu (d) hereditabis in omnibus
gentibus.

Canticum Pſalmi ipſi Aſaph. LXXXII. 1

1 DEUS, quis ſimilis erit tibi? 2
ne taceas, neq; (a) compeſcaris, Deus. 2 Quoniam ecce inimici 3
tui (b) ſonuerunt: & qui oderunt te,
extulerunt caput. 3 Super populum 4
tuum (c) aſtutè cogitaverunt conſilium,
& cogitaverunt adverſùs ſanctos tuos. 4 Dixerunt; Venite, & 5
diſperdamus eos de gente: et non memoretur
nomen Iſrael ultrà. 5 Quoniam cogitaverunt unanimiter [a] 6
ſimul: adverſùs te teſtamentum diſpoſuerunt. Tabernacula Idumæorũ, 7
& Iſmaelitæ, Moab, & Agareni,

Verſio ÆTHIOPICA.

ኢይከውንከ፡ አምላክ፡ ግብት፡፡
ወኢትስግድ፡ ለአምላክ፡ ነኪር፡፡ ፨
እስመ፡ አነ፡ ውእቱ፡ እግዚአብሔር፡ አምላ 9
ክከ፡፡ ዘአውፃእኩከ፡ እምድረ፡ ግብጽ፡፡
አርኅብ፡ አፉከ፡ ወእመልኦ፡ ለከ፡፡ ፨ ወኢ 10
ሰምዑኒ፡ ሕዝብየ፡ ቃልየ፡፡ ወእስራኤልኒ፡፡
ኢያጽምኡኒ፡፡ ፨ ፈነውኩ፡ ሎሙ፡ በከ 11
መ፡ መግባሮሙ፡፡ ወሖሩ፡ በሕሊና፡ ልቦሙ፡፡ ፨
ሶበሰ፡ ሰምዑኒ፡ ሕዝብየ፡ ቃልየ፡፡ ወእስራኤ 12
ልኒ፡ ሶበ፡ ሖሩ፡ በፍኖትየ፡፡ ፨ እምአስሰር 13
ክዎሙ፡ በኵሉ፡ ለጸላእቶሙ፡፡ ወእምወደይ
ኩ፡ እዴየ፡ ዲበ፡ እለ፡ ይሣቅይዎሙ፡፡ ፨
ጸላእቱሰ፡ ለእግዚአብሔር፡ ሐሰውዎ፡ ወይከ 14
ውን፡ ጊዜሆሙ፡ እስከ፡ ለዓለም፡፡ ፨ ወሴሰ 15
ዮሙ፡ ሥብሐ፡ ስርናይ፡፡ ወአጽገቦሙ፡ መዓረ፡
እምኰኵሕ፡፡
ሰብሐት፡ ለአብ፡ ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ ቅዱስ፡
ይእዜኒ፡ ወዘልፈኒ፡ ወለዓለመ፡ ዓለም፡
አሜን፡፡ ፨

መዝሙር፡ ዘአሳፍ፡፡

፹፩ እግዚአብሔር፡ ቆመ፡ ውስተ፡ ማኅበረ፡ 1
አማልክት፡፡ ወኳንን፡ በማእከለ፡ አማልክ
ት፡፡ ፨ እስከ፡ ማእዜኑ፡ ትኴንኑ፡ ዐመፃ፡፡ ወ 2
ታደልው፡ ለገጸ፡ ኃጥአን፡፡ ፨ ፍትሑ፡ ለነደ 3
ይ፡ ወለእጓለ፡ ማውታ፡፡ ወአጽድቁ፡ ግፉዐ፡
ወምስኪነ፡፡ ፨ ወአድኅኑ፡ በሕተዌ፡ ወጽኑ 4
ሰ፡፡ ወእንግፍዎሙ፡ እምእደ፡ ኃጥአን፡፡ ፨
ኢያእመሩ፡ ወኢለበዉ፡ ውስተ፡ ጽልመት፡ የሐ 5
ውሩ፡፡ ወያድለቀልቅ፡ ኵሉ፡ መሰረታተ፡ አድ
ባር፡፡ ፨ አንሰ፡ እቤ፡ አማልክት፡ አንትሙ፡፡ 6
ወደቂቀ፡ ልዑል፡ ኵልክሙ፡፡ ፨ አንትሙሰ፡ 7
ከመ፡ ሰብእ፡ ትመውቱ፡፡ ወከመ፡ አሐዱ፡ እመ
ላእክት፡ ትወድቁ፡፡ ፨ ተንሥእ፡ እግዚኦ፡ 8
ወኰንና፡ ለምድር፡፡ እስመ፡ አንተ፡ ትወርስ፡
በኵሉ፡ አሕዛብ፡፡

ማኅሌት፡ መዝሙር፡ ዘአሳፍ፡፡

፹፪ እግዚኦ፡ መኑ፡ ከማከ፡፡ ኢታርምም፡ 1
ወኢትጸመም፡ እግዚኦ፡፡ ፨ እስመ፡ ናሁ፡ ወ 2
ውዑ፡ ፀርከ፡፡ ወአንሥኡ፡ ርእሶሙ፡ ጸላእት
ከ፡፡ ፨ ወተጓሕለውዎሙ፡ ምክረ፡ ለሕዝብ 3
ከ፡፡ ወተማከሩ፡ ዲበ፡ ቅዱሳኒከ፡፡ ፨ ወይ 4
ቤሉ፡ ነዑ፡ ንሰርዎሙ፡ እምአሕዛብ፡፡ ወኢ
ይዝክሩ፡ ሰነከ፡ ስመ፡ እስራኤል፡፡ ፨ እስ 5
መ፡ ተማከሩ፡ ኅቡረ፡ ወዐለው፡፡ ላዕሌከ፡ ተ
ሰካተዩ፡ ወተካየዱ፡፡ ተዐይኒሆሙ፡ ለኢደም
ያስ፡ ወለእስማዔላዊያን፡፡ ፨ ሞአብ፡ ወአ 6
ጋሬዊያን፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [d] deus repentinus: [e] illud tibi. [f] etiam non [g] opera eorum: & ambulabunt in imaginationibus cordis eorum. [h] Inimicos eorum omnes contempſiſſem: [i] tuam, PSAL. LXXXI. [a] ſolitarium & egenum: et de [b] fundamenta montium. PSAL. LXXXII. [a] et prævaricati ſunt; adverſùs te concluſerunt & conculcârunt. Tabernacula

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 11 *فلا يكون فيك الاه جديد ولا تسجد لاله غريب * اني انا هو الرب الهك. الذي اخرجتك
12 13 من ارض مصر * اوسع فاك فاملاه * فلم يسمع شعبي صوتي * واسرائيل لم يصغ لي * فتركتهم
14 15 ومراد قلوبهم يذهبون في اعمالهم * فلو ان شعبي اطاعني واسرائيل سلك في سبلي * اذن
16 في لا شي كنت اذل اعداءهم * واجعل يدي على محزنيهم * الان ان اعداء الرب كذبوه في ان
17 يكون زمانهم الى الابد * وقد اطعمهم من الحنطة شحما * واشبعهم من الصخر عسلا. الليلويا

1 * المزمور الحادي والثمانون * لاساف * وهو * كو استيخن *

2 قام الله في مجمع الالهة * وفي الوسط يدين الالهة * الى متى تحكمون الظلم * ووجه الخطاة
3 4 تاخذون * احكموا لليتيم والمسكين * زكوا الذليل والفقير * استنقذوا مسكينا وضعيفا ومن يد
5 الخاطي خلصوهم * لم يعلموا ولم يفهموا انهم في الظلمة يسلكون * تتزعزع جميع اساسات
6 7 الارض * انا قلت انكم الهة وبنو العلي جميعكم * فانكم مثل البشر تموتون * ومثل احد
8 الرؤساء تسقطون * قم يا الله ودن الارض فانك انت وارث جميع الامم * الليلويا.

1 * المزمور الثاني والثمانون * تسبحة لاساف * وعدده * لد * استيخن *

2 3 * اللهم من يشبهك * اللهم لا تهمل ولا تمهل * لان هاهوذا اعداءك قد صرخوا * ومبغضوك قد
4 5 رفعوا رؤوسهم * تشاوروا بالمكر على شعبك * وتآمروا على قديسيك * وقالوا تعالوا لنبيدهم
6 من الامم ولا يذكر بعد اسم اسرائيل * واشتوروا جميعا بقلب واحد * وتعاهدوا عليك عهدا
* مساكن الادوميين والاسماعيليين مواب والهاجرين

Nec fuerit in te deus novus, neque adoraveris 10
deum peregrinum; (Nam ego ſum 11
Dominus Deus tuus qui eduxi te de terra
Ægypti) dilata os tuum & implebo illud.
Verùm non audivit populus meus 12
vocem meam, & Iſrael non intendit mihi.
Ideo dereliqui eos & voluntatem cor- 13
dium eorum: abibunt in operibus ſuis.
Quòd ſi populus meus audiret me, & Iſ- 14
rael ambularet in ſemitis meis, Equidem 15
nullo negotio deprimerem inimicos eorum,
& ponerem manum meam ſuper affligentes
illos, Nunc autem inimici Domini 16
negaverunt ei fore tempus eorum in ſeculum.
Et tamen jam cibaverat eos de fru- 17
mento, adipe: & ſaturaverat eos de petra,
melle. Alleluja.

PSAL. LXXXI.

Aſapho. Verſ. 26. 1

STetit Deus in congregatione deorum, et
in medio judicat deos. Uſquequò judi- 2
cabitis iniquitatem, & faciem peccatorũ
ſumetis? Judicate pupillo & pauperi: 3
juſtificate vilem & egenũ. Redimite pau- 4
perem ac debilem, & de manu peccatoris
liberate eos. Neſcierunt, neque intellexe- 5
runt ſe in tenebris ambulare; tremeſcent
omnia fundamenta terræ. Ego dixi, quòd 6
eſtis dii, & filii Altiſſimi omnes. Vos au- 7
tem ſicut homines moriemini, & ſicut u-
nus principum cadetis. Surge O Deus, 8
& judica terram, quoniam tu es hæres
omnium gentium. Alleluja.

PSAL. LXXXII.

Canticum Aſapho. Et numerus ver. 34. 1

DEus, quis aſſimilatur tibi? Deus, ne 2
negligas, neq; procraſtines. Nam ecce 3
inimici tui jam exclamaverunt, & oſores
tui jam elevârunt capita ſua: Conſultâ- 4
runt de dejiciendo populo tuo, et conſilium
inierunt adverſùs ſanctos tuos, Et dixe- 5
runt; Venite, ut perdamꝰ eos de gentibus,
et non memoretur ampliùs nomen Iſrae-
lis. Et conſultârunt ſimul corde uno, et 6
pacti ſunt adverſùm te pactum. Habita-
tiones Idumæorum, et Iſmaelitarum, Mo-
ab, et Agarenorum,

תהלים : פג

.Sor habitatoribus cum Peleſeth : Hamalech & , Hammon & , Ghebal
8 גבל ועמון ועמלק פלשת עם־ישבי צור : 8
.Selah , Loth filiis brachium fuerunt ; eis *cum* eſt copulatus Aſſur Etiam
9 גם־אשור נלוה עמם היו זרוע לבני־לוט סלה : 9
.Ciſſon torrente in Jabin ſicut , Siſera ſicut : Midian ſicut illis Fac
10 עשה־להם כמדין כסיסרא כיבין בנחל קישון : 10
,eorum *magnificos* eos Pone .terræ ſtercus fuerunt : Dor-Hen in *ſunt* Deleti
11 נשמדו בעין־דאר היו דמן לאדמה : שיתמו נדיבמו 12
.eorũ principes omnes Salmunnah ſicut & ,Zebach ſicut & : Zeeb ſicut & ,Horeb ſicut
כערב וכזאב וכזבח וכצלמנע כל־נסיכמו :
eos pone mi Deus .Dei habitacula ,nobis Poſſideamus ,dixerunt Qui
13 אשר אמרו נירשה־לנו את נאות אלהים : אלהי שיתמו 14
: *ſylvam comburet* ignis Sicut .*venti facies ad* ſtipulam ſicut : rotam ſicut
15 כגלגל כקש לפני־רוח : כאש תבער־יער 15
: tua tempeſtate in eos perſequêris Ita .montes *conflagrabit* flamma ſicut &
16 וכלהבה תלהט הרים : כן תרדפם בסערך 16
tuũ nomen quærent & : ignominia eorum facies Imple .eos terrebis tuo turbine *in* &
17 ובסופתך תבהלם : מלא פניהם קלון ויבקשו שמך 17
,erubeſcant & : *perpetuum in uſque* terreantur & ,afficiantur Pudore .DOMINE
18 יהוה : יבשו ויבהלו עדי־עד ויחפרו 18
: tu ſolus ,DOMINE tuum nomen tu quod cognoſcant Et .pereant &
19 ויאבדו : וידעו כי־אתה שמך יהוה לבדך 19
.terram omnem ſuper altiſſimus
עליון על־כל־הארץ :

PSAL. LXXXIV. פד

tua tabernacula dilecta Quam .cantus Corach filiis Haghithith ſuper Victori
1 למנצח על־הגתית לבני־קרח מזמור : מה־ידידות משכנותיך 1
2 atria *ad* mea anima deſideravit etiam & ,Concupivit ! exercituum Domine
3 יהוה צבאות : נכספה וגם־כלתה נפשי לחצרות 3
paſſer Etiam .vivum Deum ad exultabunt : mea caro & ,meum cor ,DOMINI
4 יהוה לבי ובשרי ירננו אל אל־חי : גם־צפור 4
tua altaria : ſuos pullos poneret quo ,ſibi nidum hirundo & ,domũ invenit
מצאה בית ודרור קן לה אשר־שתה אפרחיה את מזבחותיך
: tuæ domus habitatores Beati .mi Deus & ,mi rex ,exercituum DOMINE
5 יהוה צבאות מלכי ואלהי : אשרי יושבי ביתך 5
ſtratæ viæ : te in ei fortitudo *hominis Beatitudines* .Selah , te laudabunt *adhuc*
6 עוד יהללוך סלה : אשרי אדם עוז־לו בך מסלות 6
benedictionib⁹ etiam : eũ ponent fontem Habbacha vallem *in* Tranſeuntes .eorũ corde in
7 בלבבם : עברי בעמק הבכא מעין ישיתוהו גם־ברכות 7
.Sijon in Deorum Deus videbitur : *virtutem ad virtute* de Ibunt .*docens operietur*
8 יעטה מורה : ילכו מחיל אל־חיל יראה אל־אלהים בציון : 8
,Jahacob Deus auſculta : meam orationem exaudi exercituum Deus Domine
9 יהוה אלהים צבאות שמעה תפלתי האזינה אלהי יעקב 9
.tui *uncti facies* aſpice & : Deus vide *noſter Clypeus* .Selah
10 סלה : מגננו ראה אלהים והבט פני משיחך : 10

תרגום TARGUM.

8 גובלאי ועמונאי ועמלקאי פלשתאי עם יתבי
9 צור : לחוד סנחריב מלכא דאתור אתחבר
10 עמהון הוון לסעיד לבני לוט לעלמין : עבד
להון היך עבדתא למדין ולסיסרא והיך
11 עבדתא ליבין בנחל דקישון : אשתציו בעינא
12 דדאר הוון היך רעי דרמים לארעא : שוי יתהון
ורבניהון היך עורב והיך זאב היך זבח והיך
13 צלמונע וכל מלכיהון : די אמרו נירת לנא ית
14 כל עידית אלהים : אלהי שוי יתהון היך גלגלא
דמתנלגל ואזיל ולא ניח במדרון והיך קשא
15 קדם זעפא : היך אשא דבערא בחורשא והיך
16 שלהוביתא דמצלהבא זרזי טוריא : הכנא
17 תרדפנון בעלעולך ובזעפך תבהלנון : מליא
18 אפיהון קלנא ויבעון שמך יי : יבהתון ויבהלון
19 לעלמי עלמין ויתחסרון ויהובדון : ונדעון
ארום את שמך יי בלחוד עלאה על כל יתבי
ארעא :

פד

1 לשבחא על כנרא דאתיא מגת על ידיהון
2 דבני קרח תושבחתא : מה הנון רחימין
3 משכניך יי צבאות : רגנת ולחוד תאיבת נפשי
4 לדרת יי לבי ובסרי מרננן לאלהא קים : לחוד
יונתא אשכחת ביתא ושפנינא שרכפא ליה די
כשרין גוזליה לאתקרבא על מדבחתך יי
5 צבאות מלכי ואלהי : טוביהון דצדיקין דיתבין
6 בבית מקדשך תוב ישבחונך לעלמין : טוביה
דגבר דעושנא ליה במימרך רוחצנותא
7 בלבביהון : רשיעיא דעברין על עומקי נהנם
בכין בכיתא היך מעינא ישוניה לחוד ברכן
8 יעטוף לדתיבין לאולפן אוריתיה : אזלין
צדיקיא מן בית מקדשא לבית מדרשא יתחמי
לעות אוריתא דילהון קדם יי דשכנתיה שריא
9 בציון : אמר דויד יי אלהים צבאות קבל צלותי
10 אצירת אלהא דיעקב לעלמין : זכות אבהתנא
חמי אלהים ואסתכל אנפי משיחך :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Gabalitæ & Ammonitæ et Amalechitæ Palæſtini cum habitatoribus Tyri. Sed et Sennacherib rex Aſſyriæ aſſociatus eſt illis, fuerunt adjutorio filiis Lot in perpetuum. Fac illis ſicut feciſti Madianitis et Siſaræ, atque *feciſti* Jabin in torrente Kiſſon. Exterminati ſunt ad fontem Dor; facti ſunt ſicut ſtercus conculcatum in *terra*. Pone eos & principes eorum ſicut Oreb & ſicut Zeeb & ſicut Zebach et *ſicut* Salmunah, et omnes reges eorum. Qui dixerunt, Hæreditabimus nobis omne mundum Dei. Deus meus pone eos ſicut rotam, *quæ volvitur & movetur & non conſiſtit in declivi*, & ſicut ſtipulam coram turbine. Sicut ignis qui comburit ſylvam, & tanquam flamma quæ inflammat peripherias montium. Sic perſequêris eos in tempeſtate tua, & furore tuo interturbabis eos. Imple facies eorum ignominia, et quærent nomen tuum Domine. Confundantur & interturbentur in ſecula ſeculorum, et ſint opprobrio atque pereant. Et ſciant quoniam tu es nomen tuum DOMINE, ſolus altiſſimus ſuper omnes habitatores terræ.

Ad laudandum citharâ allatâ de Gath per manus filiorum Korach hymnus.

PSAL. LXXXIV.

Quàm dilecta ſunt tabernacula tua Domine exercituum! Concupivit atque vehementer deſideravit anima mea atria *Domini*: cor meum atque caro mea exultant in Deo viventi. Equidem columba invenit domum, et turtur nidum habet, quia legitimi ſint pulli ejus ut offerantur *ſuper altaria tua* Domine exercituum, rex meus & Deus meus. Beati juſti qui habitant in domo ſanctuarii tui: rurſus laudabunt te in ſecula. Beatus vir cujus eſt fortitudo in Verbo tuo; fiducia in corde ſuo. Peccatores qui tranſeunt per profundum gehennæ flentes fletu, ſicut fontem ponent illud: & qui benedictionibus operiet [*Deus*] eos qui *revertuntur ad doctrinam* Legis ſuæ. Progredientibus juſtis de domo ſanctuarii in domum doctrinæ apparebit labor legis ab ipſis [*ſuſceptus*] coram Domino, cujus majeſtas reſidet in Sion. *Dixit David*, Domine Deus exercituum accipe orationem meam, auſculta Deus Jacob ſemper. Merita patrum noſtrorum reſpice Deus, et attende faciei Chriſti tui.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

8 ܬܚܘܡܗܘܢ ܕܥܡܘܢ ܘܕܥܡܠܩ. ܘܦܠܫܬܝܐ ܥܡ ܥܡܘܪܝ ܨܘܪ܀ ܐܦ ܐܬܘܪܝܐ ܐܬܢܩܦ ܥܡܗܘܢ.
9 ܘܗܘܘ ܥܘܕܪܢܐ ܠܒܢܝ ܠܘܛ܀ ܥܒܕ ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܕܠܡܕܝܢ ܘܐܝܟ ܕܠܣܝܣܪܐ. ܘܐܝܟ
10 ܕܠܝܒܝܢ ܒܢܚܠܐ ܕܩܝܫܘܢ܀ ܕܐܬܚܪܒܘ ܒܥܝܢܕܘܪ ܘܗܘܘ ܙܒܠܐ ܠܐܪܥܐ. * ܣܚܘܦ ܐܢܘܢ
11 12 ܘܐܘܒܕ ܐܢܘܢ : ܐܝܟ ܕܠܥܘܪܒ ܘܐܝܟ ܕܠܙܐܒ ܘܐܝܟ ܕܠܙܒܚ ܘܐܝܟ ܕܠܨܠܡܢܥ. ܠܟܠܗܘܢ
13 14 ܫܠܝܛܢܝܗܘܢ * ܕܐܡܪܘ : ܢܐܪܬ ܠܢ ܡܕܝܢܬܗ ܕܐܠܗܐ. * ܐܠܗܐ ܣܝܡ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܓܝܓܠܐ
15 ܘܐܝܟ ܩܠܐ ܩܕܡ ܪܘܚܐ : * ܘܐܝܟ ܢܘܪܐ ܕܫܠܝܚܐ ܒܥܒܐ. ܘܐܝܟ ܫܠܗܒܝܬܐ ܕܡܘܩܕܐ ܠܛܘܪܐ:
16 17 * ܗܟܢܐ ܪܕܘܦ ܐܢܘܢ ܒܥܠܥܠܟ. ܘܒܡܫܘܚܬܟ ܕܠܚ ܐܢܘܢ : * ܡܠܝ ܐܦܝܗܘܢ ܨܥܪܐ.
18 ܘܢܒܥܘܢ ܫܡܟ ܡܪܝܐ : * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܬܕܠܚܘܢ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. ܢܬܚܦܪܘܢ ܘܢܐܒܕܘܢ:
19 * ܘܢܕܥܘܢ ܕܫܡܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܒܠܚܘܕܘܗܝ. ܪܡ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܡܫܠܡܐ ܕܦܓ *
1 * ܕܒܢܝ ܩܘܪܚ. ܕܡܢ ܕܘܝܕ ܡܬܐܡܪܐ ܟܕ ܐܙܠ ܗܘܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܠܡܣܓܕ ܒܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ.
2 ܘܡܬܐܡܪܐ ܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܡܫܝܚܐ ܘܥܠ ܥܕܬܗ. ܦܣܘܩܐ ܟܛ. * ܡܐ ܚܒܝܒܝܢ
3 ܡܫܟܢܝܟ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܣܟܬ ܢܦܫܝ ܘܐܬܪܓܪܓܬ ܠܕܪܬܗ ܕܡܪܝܐ : ܠܒܝ ܘܒܣܪܝ
4 ܫܒܚܘ ܠܐܠܗܐ ܚܝܐ. * ܐܦ ܨܦܪܐ ܐܫܟܚܬ ܒܝܬܐ ܠܗ ܘܫܘܦܢܢܝܬܐ ܩܢܐ : ܪܒܝܘ ܦܪܘܓܝܗ
5 ܠܘܬ ܡܕܒܚܟ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܡܠܟܝ ܘܐܠܗܝ. * ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܕܝܬܒܝܢ
6 ܒܒܝܬܟ : ܘܡܫܒܚܝܢ ܠܟ ܠܥܠܡ. * ܕܝܦܣ * * ܛܘܒܘܗܝ ܠܒܪܢܫܐ ܕܐܢܬ ܗܘ
7 ܣܡܘܟܗ : ܘܫܒܝܠܝܟ ܒܠܒܗ. * ܥܒܪܘ ܒܥܘܡܩܐ ܕܒܟܝܐ ܘܥܒܕܘܗܝ ܒܝܬ ܥܡܪܐ
8 ܡܥܡܪܐ : ܐܦ ܒܘܪܟܬܐ ܢܬܥܛܦ ܣܐܡ ܢܡܘܣܐ. * ܢܐܙܠܘܢ ܡܢ ܚܝܠ ܠܚܝܠ :
9 ܘܢܬܚܙܐ ܐܠܗܐ ܕܐܠܗܐ ܒܨܗܝܘܢ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܥ ܨܠܘܬܝ : ܘܨܘܬ
10 ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ. * ܘܚܙܝ ܐܢܬ ܐܠܗܐ ܡܣܬܡܟܢܢ : ܘܚܘܪ ܒܐܦܐ ܕܡܫܝܚܟ.

Terminus Ammon, & Amalec, & Palæſtinæ, cum incolis Tyri: Etiam Aſſyrius conſpiravit cum eis, et facti ſunt adjutorium filiis Lot. Fac illis ut Madian, & ut Siſaræ, & ut Nabin in torrente Ciſon, Qui interfecti ſunt in Endor, & facti ſtercus in terra. Trucida illos, & perde eos ut Oreb & ut Zeeb, ut Zabah & ut Salmana: cunctos illorum præfectos, Qui dixerunt, Hæreditate acquiramus nobis civitatem Dei. Deus ſtatue illos ut rotam, & velut feſtucam coram vento. Et ſicut ignis dimiſſus in ſylvâ, & quaſi flamma comburens montes, Ita propulſa eos procellis tuis, & turbinibus tuis exagita eos. Imple facies eorum ignominiâ, ut quærant nomen tuum Domine: Confundantur & conturbentur in ſeculum ſeculorum: & fiant ac pereant; Ut cognoſcant nomen tuum ſolius Dñe, excelſum eſſe in univerſa terra.

PSAL. LXXXIV.

Filiorum Corah. Quem David modulatus eſt tur quum iret de Sion, adoraturus in domo Dei. Dicitur etiam Prophetia de Chriſto & de Eccleſia ejus. Verſ. 29.

Quam dilecta ſunt tabernacula tua Dñe potentiſſime. Expectavit anima mea & expetivit atria Dñi. Cor meum & caro mea laudate Deû vivû. Etiam paſſer invenit domum, & turtur nidũ: educaverunt pullos ad latus altaris tui Dñe fortiſſime. Rex meus & Deus meus, Beati qui habitant in domo tua, teque laudabunt in ſeculum. *Diapſalma.* Beatus homo, cujus tu es ſuffultor, & in cor ſemitæ tuæ Penetrârunt cum proclivi fletu, & fecerunt illud habitationem. Nam etiam benedictione amicietur Ponens legem. Ibũt de fortitudine in fortitudinẽ, & apparebit Deus deorum in Sion. Dñe Deus virtutum me, audi orationem meam, & auſculta Deus Jacob, Ac vide tu Deus ſuffultor noſter, & intuere faciem Uncti tui.

Verſio VULG. LAT.

8 Gebal, & Ammon, & Amalec : alie-
9 nigenæ cum habitantib⁹ Tyrum. Ete-
nim Aſſur venit cum illis : facti ſunt
10 in adjutorium filiis Lot. Fac illis ſicut
Madian, & Siſaræ, ſicut Jabin in tor-
11 rente Ciſſon. Diſperierunt in Endor :
12 facti ſunt ut ſtercus terræ. Pone prin-
cipes eorum, ſicut Oreb, & Zeb, &
Zebee, & Salmana. Omnes princi-
13 pes eorum, Qui dixerunt, Hæreditate
14 poſſideamus Sanctuarium Dei. Deus
meus, pone illos ut rotam : & ſicut
15 ſtipulam ante faciem venti. Sicut
ignis, qui comburit ſylvam : & ſicut
16 flamma comburens montes : Ita per-
ſequeris illos in tempeſtate tua : &
17 in ira tua turbabis eos. Imple facies
eorum ignominiâ : & quærent nomen
18 tuum, Domine. Erubeſcant, & con-
turbentur in ſeculum ſeculi : & con-
19 fundantur, & pereant. Et cognoſcant
quia nomen tibi Dominus : tu ſolus
Altiſſimus in omni terra.

In finem,
1 Pro torcularibus filiis Core, Pſalmus.
LXXXIII.

2 Quam dilecta tabernacula tua, Do-
3 mine virtutũ : Concupiſcit, & deficit
anima mea in atria Domini. Cor me-
um, & caro mea, exultaverunt in De-
4 um vivum. Etenim paſſer invenit ſibi
domum, & turtur nidum ſibi, ubi po-
nat pullos ſuos. Altaria tua, Domine
virtutum : rex meus, & Deus meus.
5 Beati, qui habitant in domo tua, Do-
mine : in ſecula ſeculorũ laudabunt te.
6 Beatus vir, cujus eſt auxilium abs te :
7 aſcenſiones in corde ſuo diſpoſuit, In
valle lachrymarum in loco, quem po-
8 ſuit. Etenim benedictionem dabit le-
giſlator, ibunt de virtute in virtutem :
9 videbitur Deus deorum in Sion. Do-
mine Deus virtutum, exaudi oratio-
nem meam : auribus percipe, Deus
10 Jacob. Protector noſter, aſpice Deus :
& reſpice in faciem Chriſti tui :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

8 † Γεβὰλ ϗ Ἀμμὼν ϗ Ἀμαλὴκ, † ϗ ἀλλόφυλοι με-
9 τὰ τῶν κατοικούντων Τύρον. † Καὶ γὰρ ϗ Ἀσσοὺρ συμ-
παρεγένετο μετ᾽ αὐτῶν, † ἐγενήθησαν εἰς ἀντίληψιν
10 τοῖς υἱοῖς (δ) Λώτ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ποίησον αὐ-
τοῖς ὡς τῇ Μαδιὰμ ϗ τῷ Σισάρᾳ, † ὡς (ε) τῷ Ἰ-
11 αβεὶν ἐν τῷ χειμάῤῥῳ (ζ) Κεισῶν. † Ἐξωλοθρεύ-
θησαν ἐν Ἀενδὼρ, † ἐγενήθησαν ὡσεὶ κόπρος τῇ γῇ.
12 † Θοῦ τοὺς ἄρχοντας αὐτῶν ὡς τὸν Ὠρὴβ † ϗ Ζὴβ,
ϗ Ζεβεὲ ϗ Σαλμανὰ, πάντας τοὺς ἄρχοντας αὐτῶν
13 † Οἵτινες εἶπαν, Κληρονομήσωμεν ἑαυτοῖς τὸ (η)
14 θυσιαστήριον τοῦ θεοῦ. † Ὁ θεός μου θοῦ αὐτοὺς ὡς
τροχὸν, † ὡς καλάμην κατὰ πρόσωπον ἀνέμου. †
15 Ὡσεὶ πῦρ ὃ διαφλέξει δρυμὸν, † ὡσεὶ φλὸξ κατα-
16 καύσαι ὄρη· † Οὕτως καταδιώξεις αὐτοὺς ἐν τῇ κα-
ταιγίδι σου, † ϗ ἐν τῇ ὀργῇ σου ταράξεις αὐτούς. †
17 Πλήρωσον τὰ πρόσωπα αὐτῶν ἀτιμίας, † ϗ ζητήσουσι
18 τὸ (θ) ὄνομά σου κύριε. † Αἰσχυνθήτωσαν ϗ ταραχθή-
τωσαν εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, † ϗ ἐντραπήτωσαν ϗ ἀπο-
19 λέσθωσαν. † Καὶ γνώτωσαν ὅτι ὄνομά σοι Κύριος· † σὺ
μόνος ὕψιστος ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν.

MS. A. (δ) Λώτ. Ποίησον (ε) ὁ Ἰαβεὶν (ζ) Κισσῶν. Ἐξωλεθρεύθησαν (η) ἁγιαστήριον (θ) πρόσωπόν σου

1 Εἰς τὸ τέλος, Ὑπὲρ τῶν ληνῶν τοῖς υἱοῖς Κορὲ
ψαλμός. πγ´.

2 † Ὡς ἀγαπητὰ τὰ σκηνώματά σου κύριε τῶν δυ-
3 νάμεων. † Ἐπιποθεῖ ϗ ἐκλείπει ἡ ψυχή μου εἰς
τὰς αὐλὰς τοῦ κυρίου· † ἡ καρδία μου ϗ ἡ σάρξ
4 μου ἠγαλλιάσαντο ἐπὶ θεὸν ζῶντα. † Καὶ γὰρ στρουθί-
ον εὗρεν ἑαυτῷ οἰκίαν, † ϗ τρυγὼν νοσσιὰν ἑαυτῇ, οὗ
θήσει τὰ νοσσία ἑαυτῆς· † τὰ θυσιαστήριά σου κύριε
5 τῶν δυνάμεων, † ὁ βασιλεύς μου ϗ ὁ θεός μου. † Μακά-
ριοι (α) οἱ κατοικοῦντες ἐν τῷ οἴκῳ σου, † εἰς τοὺς αἰ-
ῶνας τῶν αἰώνων αἰνέσουσί (β) σε. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †
6 Μακάριος ἀνὴρ οὗ ἐστιν (γ) ἡ ἀντίληψις αὐτοῦ παρὰ
σοῦ κύριε· † ἀναβάσεις ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ διέθε-
7 το, † Εἰς τὴν κοιλάδα τοῦ κλαυθμῶνος, (δ) εἰς
8 τὸν τόπον ὃν ἔθετο. † Καὶ γὰρ εὐλογίας δώσει ὁ
νομοθετῶν, † πορεύσονται ἐκ δυνάμεως εἰς δύ-
ναμιν, ὀφθήσεται ὁ θεὸς τῶν θεῶν ἐν Σιών. †
9 Κύριε ὁ θεὸς τῶν δυνάμεων εἰσάκουσον τῆς προσ-
ευχῆς μου, † ἐνώτισαι ὁ θεὸς (ε) Ἰακώβ. ΔΙΑ-
10 ΨΑΛΜΑ. † Ὑπερασπιστὰ ἡμῶν ἴδε ὁ θεὸς, † ϗ ἐ-
πίβλεψον ἐπὶ τὸ πρόσωπον τοῦ χριστοῦ σου.

MS. A. (α) πάντες οἱ (β) σε. Μακάριος (γ) ἀντιλήμψεις αὐτοῦ (δ) εἰς τόπον (ε) Ἰακώβ. Ὑπερασπιστά

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

[b] Gebal, & Ammon, & Amalec, 8
& (d) alienigenæ cum habitantibus
Tyrum. 7 Etenim & (e) Aſſur [c] ſi- 9
mul venit cum illis. Facti ſunt in
(f [d] ſuſceptionem filiis (g) Lot.
DIAPSALMA. 8 Fac illis, ſicut 10
Madiã, & Siſaræ, ſicut [e] Jabin in
torrente Ciſon. 9 (h) Diſperierunt [f] 11
in Aendor, facti ſunt ut ſterc⁹ terræ.
10 Pone principes eorũ, ſicut Oreb, 12
& Zeb, 11 & [g] Zebee, & Salma
na, Omnes principes eorũ Qui dixe- 13
runt, (i) Hæreditate poſſideam⁹ no-
bis (k) altare Dei. 12 Deus meus, po- 14
ne illos, ut rotam, ſicut ſtipulã ante
[h] faciẽ venti. 13 Sicut ignis, qui 15
combureret ſylvam, velut ſi flamma
(l) incendat montes: 14 Ita perſe- 16
queris illos in tempeſtate tua: & in
ira tua turbabis eos. 15 Imple (m) 17
facies eorum ignominiâ : & [i]
quærent nomen tuum, Domine.
16 Erubeſcant, & conturbentur in 18
ſeculum ſeculi, & confundantur, et
pereant. 17 Et cognoſcant, quia no- 19
men (n) tibi Dominus : [k] tu ſolus
Altiſſimus ſuper omnem terram.

In finẽ, Pro torcularibus filiis Core, 1
Pſalmus. LXXXIII.

1 Quàm (a) amabilia ſunt ta- 2
bernacula tua, Domine virtutum :
[a] Concupiſcit, & deficit anima 3
mea in atria Domini. 2 Cor meum, et
caro mea exultaverunt in Deum vi-
vum. 3 Nam & paſſer invenit ſibi 4
domum, & turtur [b] nidum ſibi, ubi
(b) ponet pullos ſuos. 4 Altaria tua,
Domine virtutum, rex meus, & De-
us meus. 5 Beati [c], qui habitant in 5
domo tua: in ſecula ſeculorum lau-
dabunt te. DIAPSALMA. 6 Beatus 6
vir, cujus eſt (c) [d] ſuſceptio ejus
abs te, Domine : [e] aſcenſiones in
corde (d) ſuo diſpoſuit, In convalle 7
plorationis, in (e) loco quem poſuit.
7 Etenim benedictiones dabit legiſ 8
lator: ibunt de virtute in virtutem;
videbitur Deus deorũ in Sion. 8 Do- 9
mine Deus virtutũ, exaudi orationẽ
meam: auribus percipe, Deus Jacob.
DIAPSALMA. 9 [†] Protector no- 10
ſter, aſpice Deus: & reſpice in faciẽ
Chriſti tui.

Verſio ÆTHIOPICA.

ጌባል፡ወአሞን፡ወአማሌቅ፡፡ ወኢሎፍሊ፡
ምስለ፡ሰብአ፡በርሰ፡፡=፡ ወአሶርሂ፡ኅብረ፡ 7
ምስሌሆሙ፡፡ ወኮንዎሙ፡ረድኤተ፡ለደቂ
ቀ፡ሎጥ፡፡=፡ ረሰዮሙ፡ከመ፡ምድያም፡ 8
ወሲሳራ፡፡ ወገም፡ኢያቢስ፡በፈለገ፡ቂሶ
ን፡፡=፡ ወይሰረው፡ከመ፡ሰለ፡ኤንዶር፡፡ ወ 9
ይኩኑ፡ከመ፡መሬተ፡ምድር፡፡=፡ ረሰዮሙ፡ 10
ለመላእክቲሆሙ፡ ከመ፡ ሄሬብ፡ወዜብ፡፡=፡
ወዜብሄል፡ወስልማና፡ወኵሎሙ፡መላእክ 11
ቲሆሙ፡፡ እለ፡ይብሉ፡ ንኩርስ፡ምሥዋዒ
ሁ፡ለእግዚአብሔር፡፡=፡ አምላኪየ፡ረስዮ 12
ሙ፡ከመ፡መንኰራኵር፡፡ ወከመ፡ሣዕር፡
ቅድመ፡ገጸ፡እሳት፡፡=፡ ወከመ፡እሳት፡ዘያ 13
ውዒ፡ገዳመ፡፡ ወከመ፡ነበልባል፡ዘያነድድ፡
አድባረ፡፡=፡ ከማሁ፡ሳድዶሙ፡በሀውሎ 14
ክ፡፡ ወሁኮሙ፡በመቅሠፍትከ፡፡=፡ ምላ 15
እ፡ውስተ፡ገጾሙ፡ኀሳረ፡፡ ወያስምሩ፡ስመ
ከ፡እግዚኦ፡፡=፡ ወይትኀፈሩ፡ወይትሀወኩ፡ 16
ለዓለመ፡ዓለም፡፡ ወይኅሰሩ፡ወይትሐጐ
ሉ፡፡=፡ ወያእምሩ፡ስመከ፡እግዚኦ፡፡ ከመ፡ 17
አንተ፡ ባሕቲትከ፡ ልዑል፡ ዲበ፡ ኵሉ፡
ምድር፡፡

ፍጻሜ፡ ዘበእንተ፡ ማሕበብት፡ ዘደቂቀ፡
ቆሬ፡መዝሙር፡፡

፹፫ ጥቀ፡ፍቁራ፡አብያቲከ፡እግዚኦ፡ኃያላ 1
ን፡፡ ተፈሥሐት፡ነፍስየ፡በአፍቅሮ፡አዕጻደ
ከ፡እግዚኦ፡፡=፡ ልብየ፡ ወሥጋየ፡ ተፈ 2
ሥሐ፡በእግዚአብሔር፡ሕያው፡፡=፡ ዖፍ 3
፡ ረከበት፡ ሳቲ፡ቤተ፡፡ ወማዕነቅ፡ ኅበ፡
ትንብር፡ ለጕሎሃ፡፡=፡ ምሥዋዒከ፡ እግዚ 4
ኦ፡ኃያላን፡፡ ንጉሥየ፡ ወአምላኪየ፡፡=፡
ብፁዓን፡ ኵሎሙ፡ እለ፡ ይነብሩ፡ ውስተ፡ቤ 5
ትከ፡፡ ወለዓለመ፡ዓለም፡ይሴብሑከ፡፡=፡
ብፁዕ፡ ብእሲ፡ ዘእምኀቤከ፡ ረድኤቱ፡እግ 6
ዚኦ፡፡ ወዘይሄሊ፡ በልቡ፡ ዘበሰላሉ፡፡ ውስ
ተ፡ ቀላት፡ ብካይ፡ ብሔር፡ ኅበ፡ ሠርዐከ
ሙ፡፡=፡ እስመ፡ መምህረ፡ ሕግ፡ ይሁብ፡በ 7
ረከተ፡፡ ወየሐውሩ፡ እምኃይል፡ ውስተ፡
ኃይል፡፡ ወያስተርእዩ፡ አምላከ፡አማልክት፡
በጽዮን፡፡=፡ እግዚኦ፡ አምላከ፡ ኃያላን፡ 8
ስምዐኒ፡ ጸሎትየ፡፡ ወአጽምአኒ፡ አምላ
ኩ፡ ለያዕቆብ፡፡=፡ ወርእየኒ፡ እግዚኦ፡ 9
ትአምኖትየ፡፡ ወነጽር፡ ኅበ፡ ገጸ፡ መሲ
ሕከ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] Nebal, [c] aſſociavit *ſe* cum [d] adjutorium [e] Jabes [f] ſicut illi qui in Aendor, [g] Zebhel, & [h] faciem ignis. [i] cognoſcent nomen [k] quòd tu *PSAL. LXXXIII.* [a] lætata eſt anima mea amore atriorum tuorum Domine. [b] ubi ponet [c] omnes illi qui [d] auxilium [e] cujus in corde ſunt aſcenſiones ejus, in convalle [†] Et aſpice me De⁹ protector me⁹:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* جابال وعمان وعماليق الغرباء القبائل مع سكان صور * وان اسور ايضا اتي معهم ٠ وصاروا 8 9
انصارا لبني لوط * اجعلهم مثل مدين وسيسرا ٠ ومثل اوبيم في وادي قيسون * الذين كملوا 10 11
في عين دور ٠ وكانوا مثل تراب الارض * اجعل رؤوساءهم مثل عوريب وزيب وزابح وصلمونا ٠ 12
جميع رؤوساءهم * الذين قالوا فلنرث لنا مذبح الله * الهي اجعلهم كالبكرة وكالقصب امام 13 14
وجه الريح * ومثل النار اذا احرقت الغياض ٠ ومثل اللهيب الذي يحرق الجبال * كذلك 15 16
تطردهم بعاصفك وبغضبك تقلقهم * واملأ وجوههم هوانا ليتبعوا اسمك يا رب * فليخزوا 17 18
ويقلقوا الى ابد الابد وليعيروا وليهلكوا * وليعلموا ان الرب هو اسمك ٠ وانت وحدك العالي 19
على جميع الارض ٠ اللليلويا ٠

٠ المزمور الثالث والثمنون ٠ * لبني قورح ٠ وعدده ٠ كو ٠ استيخن ٠ 1

* مساكنك محبوبة ايها الرب اله القوات * نفسي تشتاق وتذوب الى ان ادخل ديار الرب 2 3
قلبي وجسمي يفرحان بالله الحي * لان العصفور وجد له بيتا ٠ واليمام عشا حيث يضعن فراخهن 4
الى جانب مذابحك يا رب اله القوات ٠ انت ملكي والهي * طوبا لكل الساكنين في بيتك 5
يباركونك الى ابد الابد * طوبى للانسان الذي نصرته من عندك يا رب ٠ ذاك الذي جعل 6
في قلبه سننك * وحل في عمق البكاء ٠ في المكان الذي اخذه مسكنا لان واضع الناموس يعطي 7
البركات * يسيرون من قوة الى قوة ٠ تظهر في صهيون * ايها الرب اله القوات ٠ استجب صلاتي 8 9
وانصت يا اله يعقوب * وانظر ايها الاله المقاتل عنا ٠ واطلع على وجه مسيحك 10

Gebal, & Amman, & Amalec, alieni- 8
genæ nationes cum habitantibus Tyrum.
Et quidem Aſſur quoque venit cum illis, 9
& facti ſunt adjutores filiis Lot. Fac eos 10
ſicut Madian & Siſaram, & ſicut O-
bim in torrente Ciſſon : Qui conſumpti 11
ſunt in fonte Dor, & fuerunt ſicut pul
vis terræ. Fac principes eorum ſicut O- 12
reb & Zeb & Zebeh & Salmona: omnes
principes eorum, Qui dixerunt, Hære- 13
ditate poſſideamus nobis altare Dei. Deus 14
mi, fac eos ut rotam, & velut arundines
ante faciem venti. Et ſicut ignis quando 15
comburit ſylvas, & ſicut flamma quæ
comburit montes : Ita perſequeris eos 16
turbine tuo, & irâ tuâ vexabis illos. Et 17
implebis facies eorum contemptu, ut ſe-
quantur nomen tuum, O Domine. Con- 18
fundantur & conturbentur in æternum
æternitatis, & opprobrio afficiantur ac
pereant. Et ſciant Dominum eſſe nomen 19
tuum & te ſolum Altiſſimum ſuper uni-
verſam terram. Alleluja.

PSAL. LXXXIII.

Filiis Coræ. Et numerus ver. 26. 1

Habitationes tuæ amabiles ſunt, 2
O Domine Deus virtutum; Anima 3
mea flagrat & liqueſit deſiderio ingredi-
endi atria Domini. Cor meum, & cor-
pus meum gaudebunt in Deo vivo; Quo- 4
niam paſſer invenit ſibi domum & turtur
nidum ubi ponant pullos ſuos ad latus al-
tarium tuorum, O Domine Deus virtu-
tum : tu es Rex meus, & Deus meus.
Beati omnes commorantes in domo tua : 5
benedicent te in ſeculum ſeculorum. Bea- 6
titudo homini cujus adjutorium à con-
ſpectu tuo, O Domine : ei, qui poſuit in
corde ſuo jura tua, Et habitavit in a- 7
byſſo luctus, in loco quem accepit in ha-
bitaculum. Quia Legiſlator dabit bene-
dictiones, Incedent de virtute in virtu- 8
tem : apparebis in Sion. O Domine Deus 9
virtutum, exaudi orationem meam, &
auſculta, O Deus Jacob : Et conſidera 10
O Deus propugnator noſter, & aſpice fa-
ciem Chriſti tui :

תהלים : פה פו

; mei Dei domo in limine in esse elegi , mille *præ* tuis atriis in dies *bonus* Quia
11 כִּי טוֹב־יוֹם בַּחֲצֵרֶיךָ מֵאָלֶף בָּחַרְתִּי הִסְתּוֹפֵף בְּבֵית אֱלֹהַי
, Deus Dominus scutū & Sol Quia .impietatis tabernaculis in habitare *præ*
12 מִדּוּר בְּאָהֳלֵי־רֶשַׁע׃ כִּי שֶׁמֶשׁ וּמָגֵן יְהוָה אֱלֹהִים
.*integritate in* ambulantibus bonum prohibebit non : Dominus dabit gloriam &,gratiam
חֵן וְכָבוֹד יִתֵּן יְהוָה לֹא יִמְנַע־טוֹב לַהֹלְכִים בְּתָמִים׃
.te in *sperantis hominis beatitudines* : exercituum Domine
13 יְהוָה צְבָאוֹת אַשְׁרֵי אָדָם בֹּטֵחַ בָּךְ׃

PSAL. LXXXV. פה

reduxisti : tuæ terræ Domine Complacuisti .cantus Corach filiis Victori
1 2 לַמְנַצֵּחַ לִבְנֵי־קֹרַח מִזְמוֹר׃ רָצִיתָ יְהוָה אַרְצֶךָ שַׁבְתָּ
omne operuisti : tui populi iniquitatem *Sustulisti* .Jahacob captivitatem
3 שְׁבוּת יַעֲקֹב׃ נָשָׂאתָ עֲוֹן עַמֶּךָ כִּסִּיתָ כָל־
.*tuū nasum ira ab* reduxisti : tuam iram omnem *Collegisti* .Selah,eorū peccatum
4 חַטָּאתָם סֶלָה׃ אָסַפְתָּ כָל־עֶבְרָתֶךָ הֱשִׁיבוֹתָ מֵחֲרוֹן אַפֶּךָ׃
.*nobiscum tuam indignationem irritum* fac & : nostræ salutis Deus nos Converte
5 שׁוּבֵנוּ אֱלֹהֵי יִשְׁעֵנוּ וְהָפֵר כַּעַסְךָ עִמָּנוּ׃
?generationē &,generationē in *tuū nasum protrahes :nos in exacerbaberis* seculū in Nunquid
6 הַלְעוֹלָם תֶּאֱנַף־בָּנוּ תִּמְשֹׁךְ אַפְּךָ לְדֹר וָדוֹר׃
nobis Ostende ? te in *lætabuntur* tuus populus & :nos vivificabis,convertêris tu Nonne
7 8 הֲלֹא אַתָּה תָּשׁוּב תְּחַיֵּנוּ וְעַמְּךָ יִשְׂמְחוּ־בָךְ׃ הַרְאֵנוּ
quid Audiam .nobis *dabis* tuam salutem & : tuam misericordiam Domine
9 יְהוָה חַסְדֶּךָ וְיֶשְׁעֲךָ תִּתֶּן־לָנוּ׃ אֶשְׁמְעָה מַה־
ad & ,suum populum ad pacem loquetur quoniam , Dominus Deus loquetur
יְדַבֵּר הָאֵל יְהוָה כִּי יְדַבֵּר שָׁלוֹם אֶל־עַמּוֹ וְאֶל־
eū timentibus *propinqua* Verè .stultitiā ad convertentur non & : suos misericordes
10 חֲסִידָיו וְאַל־יָשׁוּבוּ לְכִסְלָה׃ אַךְ קָרוֹב לִירֵאָיו
:sibi obviaverunt veritas & Misericordia .nostra terra in *gloriam habitandū ad* : ejꝰ salus
11 יִשְׁעוֹ לִשְׁכֹּן כָּבוֹד בְּאַרְצֵנוּ׃ חֶסֶד־וֶאֱמֶת נִפְגָּשׁוּ
.prospexit *cælis* è justitia & *:germinabit* terra è Veritas.sunt osculatæ pax & justitia
12 צֶדֶק וְשָׁלוֹם נָשָׁקוּ׃ אֱמֶת מֵאֶרֶץ תִּצְמָח וְצֶדֶק מִשָּׁמַיִם נִשְׁקָף׃
Justitia .suum *germen* dabit nostra terra & : bonum dabit DOMINUS Etiam
13 14 גַּם־יְהוָה יִתֵּן הַטּוֹב וְאַרְצֵנוּ תִּתֵּן יְבוּלָהּ׃ צֶדֶק
.suos pedes via in ponet & : ambulabit *ejus facies ad*
לְפָנָיו יְהַלֵּךְ וְיָשֵׂם לְדֶרֶךְ פְּעָמָיו׃

PSAL. LXXXVI. פו

afflictus quoniam : me exaudi ,tuam aurem Domine Inclina .Davidi ipsi Oratio
1 תְּפִלָּה לְדָוִד הַטֵּה־יְהוָה אָזְנְךָ עֲנֵנִי כִּי־עָנִי
tuū servū serva *: ego* misericors quoniam ,meam animam Custodi *.ego* egenus &
2 וְאֶבְיוֹן אָנִי׃ שָׁמְרָה נַפְשִׁי כִּי־חָסִיד אָנִי הוֹשַׁע עַבְדְּךָ
clamabo te ad quoniam : Domine mei Miserere .te *ad* sperantem mi Deus tu
3 אַתָּה אֱלֹהַי הַבּוֹטֵחַ אֵלֶיךָ׃ חָנֵּנִי אֲדֹנָי כִּי־אֵלֶיךָ אֶקְרָא
Quoniā *levabo* meā animā Domine te ad quoniā:tui servi animā Lætifica die omni
4 5 כָּל־הַיּוֹם׃ שַׂמֵּחַ נֶפֶשׁ עַבְדֶּךָ כִּי אֵלֶיךָ אֲדֹנָי נַפְשִׁי אֶשָּׂא׃ כִּי־
.te invocantibꝰ omnibus misericordia multus & *: parcens* & ,bonus Domine tu
אַתָּה אֲדֹנָי טוֹב וְסַלָּח וְרַב־חֶסֶד לְכָל־קֹרְאֶיךָ׃
.mearū deprecationum *voce in* intende & : meam orationem Domine Ausculta
6 הַאֲזִינָה יְהוָה תְּפִלָּתִי וְהַקְשִׁיבָה בְּקוֹל תַּחֲנוּנוֹתָי׃

תרגום TARGUM.

11 ארום טב למתב יומא חד בדרת מקדשך מן
אלף בגלותא בחרית לאדבקא בבית מקדש
12 אלהא מן למדר במשכני רשיעא׃ ארום היך
שור רם ותריס תקיף יי אלהים חנא ויקרא יתן
13 יי לא יכסי טבא מן דאזלין בשלימותא׃ יי
צבאות טב לבר נשא דמתרחיץ במימרך׃

פה

1 לשבחא על ידיהון דבני קרח תושבחא׃
2 רעיתא יי ארעך אתבתא שביתא דבית יעקב׃
3 שבקתא חוביהון דעמך כסיתא כל חטאיהון
4 לעלמין׃ כנשתא כל רוגזך תבתא מן תקוף
5 רוגזך׃ תוב לותנא אלהא פורקנא ובטל רוגזך
6 עמנא׃ האפשר די לעלמיא תתקף בנא תנגיד
7 תוקפך לדר ודר׃ הלא את תתוב תחיי יתנא
8 ועמך ייחדון במימרך׃ אחמי יתנא יי טובך
9 ופורקנך תתיהב לנא׃ אשמע מה ימלל אלהא
יי ארום ימלל שלם לעמיה ולחסידוי ולא
10 יחזרון לסכלא׃ ברם קריב לדחלין מניה
11 פורקניה לאשראה יקרא בארענא׃ טבון
12 וקשוט ארעין צדיקא ושלמא אדבקו׃ קשוט
מן ארעא ארבית וצדקא מן שמיא אודיק׃
13 14 לחוד יי יתן טבא וארענא תתן אבה׃ צדקא
קדמוי יהלך וישוי לאורח טב אסתורוי׃

פו

1 צלותא דצלי דוד אצלי יי אודנך עני יתי ארום
2 עניא וחשיכא אנא׃ נטור נפשי ארום חסידא
אנא פרוק עבדך את אלהי די אנא מתרחיץ
3 עלך׃ חוס עלי יי ארום קדמך אצלי כל יומא׃
4 אחדי נפשא דעבדך ארום לותך יי נפשי אזקוף
5 בצלו׃ ארום את הוא יי טב לצדיקיא ושבק
לדתיבין לאוריתיה ומסגי טיבו לכל דמצלין
6 קדמך׃ אצית יי צלותי וקבל לקל תחנוני׃

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Quia meliùs est habitare die uno in atrio sanctuarii tui, quàm mille *in exilio*: elegi adhærere domui *sanctuarii* Dei magis, quàm habitare in tabernaculis *impii*. Quoniam sicut murus excelsus & clypeus fortis est Dominus Deus: gratiam & gloriam dabit Dominus, non privabit beatitudine ambulantes in perfectione. Domine exercituum, beatitudo erit homini qui fiduciam suam collocat in Verbo tuo.

Ad laudandum per manus filiorum Korah hymnus. PSAL. LXXXV.

BEnevolentia prosequutꝰ es Domine terram tuam: convertisti captivitatem domus Jacob. Remisisti iniquitates populo tuo, operuisti omnia peccata eorum in æternum. Continuisti omnem iram tuam, conversus es à fortitudine iræ tuæ. Convertere ad nos Deꝰ salutis nostræ, & irritam fac iram tuam *nobiscum*. Nunquid possibile est quòd in perpetuum irascaris nobis? protrahes furorem tuum in generationē & generationem? Nónne tu conversus vitam præstabis nobis, & populus tuus lætabitur in verbo tuo? Ostende nobis Domine bonitatem tuam, & *salus tua detur* nobis. Audiam quid loquatur Deus Dominus, quoniam loquetur pacem populo suo & piis suis, & non convertentur ad insipientiam. Siquidem propè est timentibus ab illo, redemptio ejus, ut habitet gloria in terra nostra. Benignitas & veritas obviaverunt invicem: justitia & pax conjunctæ sunt. Veritas de terra pullulavit, & justitia de cœlo prospexit. Prætereà *Dominus* dabit beatitudinem, & terra nostra dabit germen suum. Justitia ante eum ibit, & ponet in via bona gressus suos.

Oratio qua orabat David. PSAL. LXXXVI.

INclina Domine aurem tuam, responde mihi, quoniam pauper & egenus sum ego. Custodi animam meam, quoniam misericors sum; redime servum tuum, tu Deus meus, quandoquidem confido in te. Miserere mei Domine, quoniam coram te orabo tota die. Lætifica animam servi tui, quoniam ad te Domine animam meam levabo in oratione. Quoniam tu *ipse* Domine bonus es justis & parcens iis qui convertuntur ad Legem, atque multiplicas bonitatem omnibus orantibus coram te. Exaudi Domine orationem meam, & suscipe vocem deprecationum mearum.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 * ܡܛܠ ܕܛܒ ܗܘ ܚܕ ܝܘܡ ܒܕܪܬܟ ܡܢ ܐܠܦ : ܨܒܝܬ ܠܡܥܡܪ ܒܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ. ܝܬܝܪ
12 ܡܢ ܕܐܥܡܪ ܒܡܫܟܢܐ ܕܪܫܝܥܐ : * ܡܛܠ ܕܡܪܒܝܢܢ ܘܡܥܕܪܢܢ ܡܪܝܐ ܗܘ ܐܠܗܐ. ܪܚܡܐ
13 ܘܐܝܩܪܐ ܢܬܠ ܡܪܝܐ : ܘܠܐ ܢܟܠܐ ܛܒܬܗ. ܡܢ ܐܝܠܝܢ ܕܡܗܠܟܝܢ ܒܬܡܝܡܘܬܐ : * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ
ܚܝܠܬܢܐ. ܛܘܒܘܗܝ ܠܒܪܢܫܐ ܕܣܒܪ ܒܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܦܗ *

1 * ܠܒܢܝ ܩܘܪܚ. ܦܘܪܥܢܐ ܘܦܘܪܩܢܐ ܕܗܘܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܐܠܗܐ. ܘܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܡܫܝܚܐ.
2 3 ܦܣܘ̈ܩܐ ܟܗ. * ܪܥܝܬ ܡܪܝܐ ܒܐܪܥܟ. ܘܐܦܢܝܬ ܫܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ : * ܫܒܩܬ ܥܘܠܗ ܠܥܡܟ
4 ܘܟܣܝܬ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝܗܘܢ : * ܐܥܒܪܬ ܟܠܗ ܚܡܬܟ. ܘܐܦܢܝܬ ܡܢ ܚܡܬܐ
5 6 ܕܪܘܓܙܟ : * ܐܦܢܝܢ ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܢ. ܘܒܛܠ ܪܘܓܙܟ ܡܢܢ : * ܘܠܐ ܠܥܠܡ ܬܪܓܙ ܥܠܝܢ. ܘܠܐ
7 8 ܬܛܪ ܪܘܓܙܟ ܠܕܪܕܪܝܢ : * ܐܠܐ ܐܢܬ ܐܦܢܝܢ ܘܐܚܝܢ ܘܥܡܟ ܢܚܕܘܢ ܒܟ. * ܚܘܝܢ ܡܪܝܐ ܛܝܒܘܬܟ
9 ܘܦܘܪܩܢܟ ܗܒ ܠܢ : * ܕܢܫܡܥ ܡܢܐ ܡܡܠܠ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܕܡܡܠܠ ܫܠܡܐ ܥܡ ܥܡܗ
10 ܘܥܡ ܙܕܝܩܘܗܝ : ܕܠܐ ܢܗܦܟܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ. * ܩܪܝܒ ܗܘ ܦܘܪܩܢܗ ܠܕܚܠܘܗܝ : ܢܫܪܐ
11 12 ܐܝܩܪܗ ܒܐܪܥܢ. * ܛܝܒܘܬܐ ܘܩܘܫܬܐ ܐܪܥܘ ܠܢ : ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܘܫܠܡܐ ܢܫܩܘܢ. * ܗܝܡܢܘܬܐ
13 ܬܕܢܚ ܡܢ ܐܪܥܐ : ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܡܢ ܫܡܝܐ ܐܕܝܩܬ. * ܐܦ ܡܪܝܐ ܢܬܠ ܛܒܬܗ : ܘܐܪܥܢ ܬܬܠ
14 ܥܠܠܬܗ. * ܘܙܕܝܩܐ ܩܕܡܘܗܝ ܢܗܠܟ : ܘܢܣܝܡ ܒܐܪܥܐ ܗܘܠܟܬܗ.

1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܦܘ * ܠܕܘܝܕ ܟܕ ܒܢܐ ܒܝܬܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܢܒܝܘܬܐ ܕܩܪܝܢܐ ܕܥܡܡܐ
ܘܬܘܒ ܨܠܘܬܐ ܕܦܪܝܫܐ ܕܙܕܝܩܐ. ܦܣܘ̈ܩܐ ܠܓ. ܪܟܢ ܡܪܝܐ ܐܕܢܟ ܘܥܢܝܢܝ. ܡܛܠ
2 ܕܡܣܟܢܐ ܐܢܐ ܘܒܨܝܪܐ : * ܛܪ ܢܦܫܝ ܡܛܠ ܕܛܒ ܐܢܬ. ܦܪܘܩ ܠܥܒܕܟ ܐܢܬ ܐܠܗܐ
3 4 ܕܡܣܒܪ ܒܟ : * ܪܚܡ ܥܠܝ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܠܘܬܟ ܐܩܪܐ ܒܟܠܝܘܡ : * ܚܕܝ ܢܦܫܗ ܕܥܒܕܟ.
5 ܡܛܠ ܕܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܐܪܝܡܬ ܢܦܫܝ : * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܡܪܝܐ ܛܒ ܐܢܬ. ܘܚܣܝܐ ܐܢܬ
6 ܘܣܓܝܐܐ ܛܝܒܘܬܟ ܠܟܠ ܕܩܪܝܢ ܠܟ : * ܨܘܬ ܡܪܝܐ ܨܠܘܬܝ. ܘܐܫܡܥ ܒܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ :

Quia melior est una dies in atrio tuo quam mille: optavi degere in domo Dei potius quàm degere in tabernaculo impiorū. Quia educator noster et adjutor noster Dñs est Deus, misericordiā & honorē dabit Dñs: et non cohibebit beneficia sua ab his qui ambulant in innocentia. Dñe Deus fortissime, beatꝰ homo qui sperat in te.

PSAL. LXXXV.

Filiorum Corah. De compensatione & salute factâ ipsis à Deo. Et Prophetia de Christo. Vers. 25.

OBlectâsti te Domine terrâ tuâ, & reduxisti captivitatem Jacob: Remisisti iniquitatem populo tuo, & operuisti omnia peccata eorum: Transtulisti omnē furorē tuū, & avertisti æstū iræ tuæ. Reduc nos Deus Servator noster, & cessare fac indignationē tuam à nobis, Et ne in perpetuū irascaris nobis, & ne serves iram tuam in generationē generationū; Sed tu restitue nos, & vivifica nos & populus tuꝰ lætabuntur in te. Ostende nobis Dñe bonitatē tuā, & salutē tuam concede nobis: Ut audiamus quid loquatur Dñus Deus noster. Loquitur enim pacem cum populo suo & cum justis suis, ne vertāt se retro. Proxima est salus ejus timentibus eum: habitare faciet gloriam suam in terra nostra. Gratia & veritas occurrerunt nobis: & justitia & pax osculabuntur nos. Fides germinabit è terra, & justitia prospexit è cœlo. Etiam Dominus largietur beneficia sua, & terra proferet proventus suos; Et justus coram eo ambulabit, ponetque in terra gressus suos.

PSAL. LXXXVI.

Davidis. Quum ædificavit domum Domini. Et prophetia de vocatione Gentium. Prætereà oratio peculiaris justi. Vers. 33.

INclina Dñe aurē tuam, & exaudi me, quia pauper sum ac inops. Custodi animam meam, quia bonꝰ tu es. Libera servū tuū, tu Deus sperantem in te. Miserere mei Dñe, quoniam ad te clamabo singulis diebus. Exhilara animā servi tui, quoniā ad te Dñe levavi animam meam. Quoniam tu Domine bonus es, & copiosa est bonitas tua in omnes invocantes te: Ausculta Domine orationem meam, & audi vocem clamoris mei;

Verſio VULG. LAT.

11 Quia melior eſt dies una in atriis tuis
ſuper millia. Elegi abjectus eſſe in domo
Dei mei, magis quàm habitare in
12 tabernaculis peccatorũ. Quia miſericordiam, & veritatẽ diligit Deus: gratiam,
13 & gloriã dabit Dñs. Non privabit bonis eos, qui ambulant in innocentia: Dñe virtutũ, Beatus homo, qui
ſperat in te.

1 In finem, filiis Core, Pſalmus.
LXXXIV.

2 Benedixiſti, Domine, terram tuam:
3 avertiſti captivitatem Jacob. Remiſiſti
iniquitatem plebis tuæ: operuiſti
4 omnia peccata eorum. Mitigaſti
omnem iram tuam: avertiſti ab ira
5 indignationis tuæ. Converte nos, De⁹
ſalutaris noſter: & averte iram tuam
6 a nobis. Numquid in æternũ iraſceris
nobis? aut extendes iram tuam à generatione
7 in generationem? Deus, tu
converſus vivificabis nos: & plebs
8 tua lætabitur in te. Oſtende nobis, Domine,
miſericordiã tuã: & ſalutare tuũ
9 da nobis. Audiã quid loquatur in me
Dñs Deus: quoniã loquetur pacẽ in
plebẽ ſuã; Et ſuper ſanctos ſuos, & in
10 eos qui convertuntur ad cor. Veruntamen
prope timentes eũ ſalutare ipſi⁹:
11 ut inhabitet gloria in terra noſtra. Miſericordia
& veritas obviaverunt ſibi:
12 juſtitia & pax oſculatæ ſunt. Veritas de
terra orta eſt: & juſtitia de cœlo
13 proſpexit. Etenim Dñs dabit benignitatem:
& terra noſtra dabit fructũ
14 ſuum. Juſtitia ante eũ ambulabit: &
ponet in via greſſus ſuos.

Oratio ipſi David. LXXXV.

1 Inclina, Dñe, aurẽ tuã, & exaudi me:
2 quoniã inops & pauper ſum ego. Cuſtodi
animã meã, quoniã ſanctus ſũ:
ſalvũ fac ſervũ tuũ, Deus me⁹, ſperan-
3 tem in te. Miſerere mei, Dñe, quoniam
4 ad te clamavi totã die: Lætifica animã
ſervi tui, quoniã ad te, Dñe, animam
5 meã levavi. Quoniã tu, Dñe, ſuavis, &
mitis, & multæ miſericordiæ omnib⁹
6 invocantibus te. Aurib⁹ percipe, Dñe,
orationem meã: & intende voci deprecationis
meæ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

11 †Ὅτι κρείσσων ἡμέρα μία ἐν ταῖς αὐλαῖς σου,
ὑπὲρ χιλιάδας. †Ἐξελεξάμην (ζ) παραῤῥιπτεῖσθαι ἐν
τῷ οἴκῳ τοῦ (η) θεοῦ μᾶλλον †ἢ οἰκεῖν με ἐν σκηνώμασιν
12 ἁμαρτωλῶν. †Ὅτι ἔλεον καὶ ἀλήθειαν ἀγαπᾷ
†κύριος, ὁ θεὸς †χάριν καὶ δόξαν δώσει. †κύ-
13 ριος Οὐχ ὑστερήσει τὰ ἀγαθὰ (θ) τοῖς πορευομένοις
ἐν ἀκακίᾳ. †κύριε τῶν δυνάμεων, μακάριος ἄν-
θρωπος ὁ ἐλπίζων ἐπὶ σέ.

MS. A. (ζ) παραριπτεῖσθαι (η) θεοῦ μου μᾶλλον ἢ οἰκεῖν ἐν (θ) τοὺς πορευομένους

1 Εἰς τὸ τέλος, τοῖς υἱοῖς Κορὲ ψαλμός.
πδʹ.

2 †Εὐδόκησας κύριε τὴν γῆν σου, †(ʹ) ἀπέστρεψας τὴν
3 αἰχμαλωσίαν Ἰακώβ. †Ἀφῆκας τὰς ἀνομίας τῷ
λαῷ σου, †ἐκάλυψας πάσας τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν.
4 ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †Κατέπαυσας πᾶσαν τὴν ὀργήν σου,
5 †ἀπέστρεψας ἀπὸ ὀργῆς θυμοῦ σου. †Ἐπίστρεψον
ἡμᾶς ὁ θεὸς τῶν σωτηρίων ἡμῶν, †καὶ ἀπόστρεψον τὸν
6 θυμόν σου ἀφ' ἡμῶν. †Μὴ εἰς (α) τὸν αἰῶνα ὀργισθῇς
ἡμῖν; †ἢ διατενεῖς τὴν ὀργήν σου ἀπὸ γενεᾶς εἰς
7 γενεάν; †Ὁ θεὸς, σὺ ἐπιστρέψας ζωώσεις ἡμᾶς, †
8 καὶ ὁ λαός σου εὐφρανθήσεται ἐπὶ σοί. †Δεῖξον ἡμῖν
κύριε τὸ ἔλεός σου, †καὶ τὸ σωτήριόν (β) σου δῴης
9 ἡμῖν. †Ἀκούσομαι τί λαλήσει ἐν ἐμοὶ κύριος ὁ θεὸς,
ὅτι λαλήσει εἰρήνην ἐπὶ τὸν λαὸν αὐτοῦ, †καὶ ἐπὶ
τοὺς ὁσίους αὐτοῦ, †καὶ ἐπὶ τοὺς ἐπιστρέφοντας πρὸς αὐ-
10 τὸν καρδίαν. †Πλὴν ἐγγὺς τῶν φοβουμένων αὐτὸν τὸ σωτήριον
αὐτοῦ, †τοῦ κατασκηνῶσαι δόξαν ἐν τῇ γῇ ἡ-
11 μῶν. †Ἔλεος καὶ ἀλήθεια συνήντησαν, †δικαιοσύ-
12 νη καὶ εἰρήνη κατεφίλησαν. †Ἀλήθεια ἐκ τῆς γῆς ἀνέτειλε,
†(γ) καὶ δικαιοσύνη ἐκ τοῦ οὐρανοῦ διέκυψε. †
13 Καὶ γὰρ ὁ κύριος δώσει χρηστότητα, †καὶ ἡ γῆ ἡμῶν
δώσει τὸν καρπὸν αὐτῆς. †Δικαιοσύνη (δ) ἐναντίον
14 αὐτοῦ προπορεύσεται, †καὶ θήσει εἰς ὁδὸν τὰ διαβήματα
αὐτοῦ.

MS. A. (ʹ) ἐπέστρεψας (α) τοὺς αἰῶνας (β) σου κύριε δῴης (γ) δικαιοσύνη (δ) ἐνώπιον αὐτοῦ

(α) Προσευχὴ τῷ Δαυΐδ. πεʹ.

1 †Κλῖνον κύριε τὸ οὖς σου, καὶ (β) εἰσάκουσόν μου, †ὅτι
2 πτωχὸς καὶ πένης εἰμὶ ἐγώ. †Φύλαξον τὴν ψυχήν μου
ὅτι ὅσιός εἰμι, †σῶσον τὸν δοῦλόν σου (γ) ὁ θεὸς, τὸν ἐλ-
3 πίζοντα ἐπὶ σέ. †Ἐλέησόν με κύριε, ὅτι πρὸς σὲ κε-
4 κράξομαι ὅλην τὴν ἡμέραν. †Εὔφρανον τὴν ψυχὴν τοῦ
5 δούλου σου, †ὅτι πρὸς σὲ κύριε ἦρα τὴν ψυχήν μου. †Ὅτι
σὺ κύριε χρηστὸς καὶ ἐπιεικὴς, †καὶ πολυέλεος πᾶσι
6 τοῖς ἐπικαλουμένοις σε. †Ἐνώτισαι κύριε τὴν προσευχήν μου,
†καὶ πρόσχες τῇ φωνῇ τῆς δεήσεώς μου.

MS. A. (α) Τῷ Δαυΐδ. (β) ἐπάκουσόν (γ) ὁ θεός μου,

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

10 Quia melior eſt dies una in atriis 11
tuis, ſuper (f) millia. 11 Elegi
abjici in domo (g) Dei magis quã
habitare in tabernaculis peccatorũ.
12 Quia (h) miſericordiã & [f] veritatẽ 12
diligit Domin⁹ Deus: [g] gratiã
& gloriã dabit Dominus. 13 (i)
[h] Nõ prohibebit bona ambulãtib⁹ 13
in innocentia: Domine virtutũ, Beatus
homo, qui ſperat in te.

In finem, filiis Core Pſalmus [a]. 1
LXXXIV.

1 [b] Benedixiſti, (a) Domine, terram 2
tuã: avertiſti captivitatem Jacob.
2 Remiſiſti iniquitates (b) plebi 3
tuæ; operuiſti omnia peccata eorum.
DIAPSALMA. 3 Sedâſti omnem 4
iram tuam: (c) avertiſti ab ira indignationis
tuæ. 4 Converte nos, [c] 5
De⁹ (d) ſanitatum noſtrarum: & averte
iracundiam tuã à nobis. 5 (e)
[d] Numquid in æternum iraſcêris 6
nobis? aut intendes iram tuam à
generatione in generationem? 6 [e]
Deus, tu (f) convertens vivificabis 7
nos: & plebs tua lætabitur in te. 7 Oſtende 8
nobis, Domine, miſericordiam
tuam: & ſalutare tuum da nobis
[f]. 8 (g) Audiam quid loquetur in 9
me Dominus [g] Deus: quoniam loquetur
pacem in plebem ſuam: 9
Et ſuper ſanctos ſuos, & in eos qui
(h) convertunt [h] cor ad ipſum. 10
Veruntamen prope timentes eum ſalutare 10
ipſius: ut inhabitet gloria in
terra noſtra. 11 Miſericordia, et veritas 11
(i) occurrerunt: juſtitia, et pax
oſculatæ ſunt. 12 Veritas de terra 12
orta eſt: & juſtitia de cœlo proſpexit.
13 Etenim Domin⁹ dabit benignitatẽ: 13
& terra [†] noſtra dabit fructũ
ſuum: 14 Juſtitia ante eũ præibit, 14
& [i] ponet in via greſſ⁹ (k) ei⁹.

Oratio ipſi David. LXXXV.

1 Inclina, Domine, aurẽ tuã, et exaudi 1
me: quoniã egen⁹ & pauper
ſum ego. 2 Cuſtodi animã meã, quoniã 2
ſanctus ſum: ſalvũ fac ſervum
tuũ, [a] Deus, ſperantẽ in te. 3 Miſerere 3
mei, Domine, quoniam ad te
(a) clamabo (b) totâ die. Lætifica 4
animam ſervi tui: quoniã ad te, Domine,
levavi animã meã. 4 Quoniã 5
tu, Domine, [b] ſuavis, (c) ac mitis,
(d) et multæ miſericordiæ omnibus
invocantibus te. 5 Auribus percipe, 6
Domine, orationem meam: & intende
voci deprecationis meæ.

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ:ትኄይስ: ዕለቲ:ዕለት: ውስተ:አዕጻ 10
ደከ:እምአእላፍ::=: አብደርኩ:እትገደፋ: 11
ውስተ:ቤተ:እግዚአብሔር:: እምእንበር:
ውስተ:ቤተ: ኃጥኣን::=: እስመ:ጽድቀ:ወ 12
ምጽዋተ:ያበድር : እግዚአብሔር:: እግዚ
አብሔር:ይሁብ:ክብረ:ወሞገሰ::=: እግዚ 13
አብሔር:ኢያስተቴጽኖሙ:እምበረከቱ:እለ:
የሐውሩ:በየዋሃት:: እግዚኦ:አምላከ:ኃያ
ላን:ብፁዕ:ብእሲ:ዘተወከለ:ኪያከ::
ፍጻሜ:ዘደቂቀ:ቆሬ:መዝሙር:ጸሎት:
ዘዳዊት::

ፐ፬ ተሣሀልከ: እግዚኦ:ምድረከ:: ወሚጥ 1
ከ : ፄዋሁ:ለያዕቆብ::=: ወኃደገ:ኃጢአ 2
ቶሙ : ለሕዝብከ:: ወከደንከ : ኵሎ:አበ
ሳሆሙ::=: ወኃደገ : ኵሎ : መዐተከ:: 3
ወሚጥከ:መቅሠፍተ: መዐትከ::=: ሚጠ 4
ነ:አምላክነ : ወመድኃኒነ:: ወሚጥ:መዐተ
ከ : እምኔነ::=: ወለዓለም : ኢትትመዐ 5
ዐነ:: ወኢታኑኃ:መዐተከ:ለዐለ:ትውልደ:
ትውልድ::=: አንተ: አምላክነ : ተመየጠ 6
ነ:ወአሕይወነ:: ወሕዝብከኒ:ይትፌሥሑ:
ብከ::=: አርእየነ : እግዚኦ : ሣህለከ:: 7
ወሀበነ:አምላክነ:አድኅኖተከ::=: እጸም 8
አ: ዘይነበኒ : እግዚአብሔር : አምላኪየ::
እስመ : ይነብብ : ሰላመ : ላዕለ : ሕዝቡ:: 9
ላዕለ: ጻድቃኑ:ወላዕለ: እለ:ይመይጡ:ልቦ
ሙ : ኀቤሁ::=: ወባሕቱ:ቅሩብ: አድኅኖ 10
ቱ:ለእለ:ይፈርህዎ:: ከመ:ይኅድር:ስብሐ
ቲሁ:ውስተ: ምድርነ::=: ሣህል : ወርት 11
ዕ:ተራከባ:: ጽድቅ:ወሰላም:ተሰዐማ::=:
ርትዕሰ : እምድር : ሠረጸት:: ወጽድቅኒ: 12
እምሰማይ:ሐወጸ::=: ወእግዚአብሔርኒ: 13
ይሁብ: ምሕረቶ:: ወምድርኒ : ትሁብ:
ፍሬሃ::=:ጽድቅ:የሐውር:ቅድሜሁ:: 14
ወየኃድግ : ውስተ : ፍኖተ : አሰሮ::=:
ጸሎተ:ዘዳዊት::

ፐ፭ አጽምእ:እግዚኦ:እዝነከ:ኀቤየ:ወስ 1
ምዐኒ:: እስመ:ነዳይ: ወምስኪን:አነ::=:
ዕቀበ:ለነፍስየ:እስመ:የዋህ:አነ:: አድኅኖ: 2
ለገብርከ:አምላኪየ:ዘተወከለ:ኪያከ::=:
ተሣሀለኒ:እግዚኦ: እስመ: ኀቤከ: እጸርኅ: 3
ኵሎ : እሚረ:: ወአስተፈሥሓ : ለነፍሰ:
ገብርከ:: እስመ:ኀቤከ: አንቃዕደውኩ:ነፍ
ስየ::=: እስመ:መሐሪ:አንተ:እግዚኦ:ወመ 4
ስተሣህል:: ወብዙኅ: ሣህልከ: ለኵሎሙ:
እለ:ይጼውዑከ::=: አጽምእ: እግዚኦ: 5
ጸሎትየ::ወነጽር:ቃለ:ስእለትየ::=:

INTERP. ÆTHIOP. [f] eleemoſynam diligit [g] gloriam & gratiam [h] Dominus benedictione ejus non privabit eos, qui ambulant PSAL. lxxxiv. [a] Oratio Davidis. [b] Propiti⁹ fuiſti Dñe, terræ tuæ: [c] Deus [illegible] & Redemptor noſter, & averte [d] Et ne iraſcaris nobis in æternum, neque extendas [e] Tu Deus noſter convertes nos, & vivificabis [f] Deus noſter. [g] Deus meus: [h] cor ſuum [†] etiam dabit [i] remittet in PSAL. lxxxv. [a] Deus meus [b] miſericors es, ac miſerator,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

*فان يوما واحدا في ديارك افضل من الالوف. لذلك اخترت ان القى في بيت الاهي افضل من 11
ان اسكن في مظال الخطاة * لان الرب يحب الرحمة والعدل * الله يعطي المجد والنعمة. الذين 12
يسلكون بالدعة لا يعدمهم الرب الخيرات * الرب اله القوات طوبى للانسان المتوكل عليه. الليلويا. 13
* المزمور الرابع والثمنون. * لبني قورح. وهو لحن استيخن. * سررت يا رب 1 2
بارضك. رددت سبي يعقوب * غفرت لشعبك اثامهم. سترت جميع خطاياهم * سكنت جميع غضبك 3 4
رجعت عن غضب سخطك * اردنا يا اله خلاصنا. واصرف سخطك عنا * ولا تغضب علينا الى 5 6
الابد. ولا تمد غضبك من جيل الى جيل انت يا الله * وترجع تحيينا وشعبك يفرح بك * اظهر لنا يا 7 8
رب رحمتك. واعطنا خلاصك * سأسمع ما يتكلم به الرب الاله في. لانه يتكلم بالسلامة على شعبه 9
وعلى قديسيه. وعلى المنصرفين اليه بكل قلوبهم * بل خلاصه قريب من كل الذين يتقونه ليسكن 10
المجد في ارضنا * الرحمة والعدل تلاقيا. العدل والسلامة تقابلا. الحق من الارض اشرق والعدل 11 12
من السماء اطلع * لان الرب يعطي الخيرات. وارضنا تعطي ثمرها * العدل يسبق سائرا امامه 13 14
ويضع في السبيل خطواته. الليلويا. * المزمور الخامس والثمنون *
* لداود صلاة. وهو لحن استيخن. * انصت الي يا رب بسمعك. واستجب لي فاني مسكين وبائس 1
* احفظ نفسي لاجل صلاحك. الهي خلص عبدك الراجي لك * ارحمني يا رب فاني صرخت اليك 2 3
النهار كله * فرح نفس عبدك فاني قد رفعت نفسي اليك يا رب * لانك انت يا رب صالح ووديع 4 5
ويكثر الرحمة لكل الصارخين اليك * انصت يا رب الى صلاتي. واصغ الى صوت طلبتي. 6

Nam dies una in atriis tuis, melior eſt 11
millibus. Propterea elegi abjici in domum
Dei mei, potiùs quàm habitare in tabernaculis
peccatorum. Quia Dominus diligit 12
miſericordiam & æquitatem, Deus
dabit gloriam & gratiam; eos qui ambulant
cum manſuetudine, non privabit
Dominus bonis. Dominus eſt Deus virtutum; 13
beatitudo homini qui confidit in eo.
Alleluja.

PSAL. LXXXIV.
Filiis Coræ. Verſ. 17. 1

Oblectatus es, O Domine, terrâ tuâ: 2
reduxiſti captivitatem Jacob: Re- 3
miſiſti populo tuo iniquitates eorum: operuiſti
omnia peccata eorum: Sedâſti o- 4
mnem furorem tuum, retraxiſti te ab ira
indignationis tuæ. Reduc nos O Deus 5
ſalutis noſtræ, & averte iram tuam à
nobis. Et ne iraſcaris nobis in perpetuum, 6
& ne extendas iram tuam à generatione
in generationem, O Deus. Et reverſus li- 7
beres nos, & populus tuus lætabitur in te.
Manifeſta nobis, O Domine, miſericor- 8
diam tuam, & da nobis ſalutem tuam
Audiam quod loquetur Dominus De- 9
us in me; Nam loquetur pacem de
populo ſuo, & de ſanctis ſuis, &
de tendentibus ad eum ex totis cordibus
ſuis. Imò ſalus ejus proxima eſt omni- 10
bus qui colunt eum, ut habitet gloria in
terra noſtra. Miſericordia, & æquitas ſibi 11
invicem occurrerunt: juſtitia & pax viderunt
ſe facie ad faciem. Veritas de terra 12
emicuit, & æquitas de cœlo proſpexit.
Quia Dominus dabit bona, & terra no- 13
ſtra dabit fructus ſuos: Juſtitia præcedet
protegens ante eum, & ponet in via greſ- 14
ſus ſuos. Alleluja.

Davidi, Oratio. Verſ. 34 1

Intende ad me, O Domine, auditũ tuum,
& exaudi me, quia pauper ſum et egenus.
Cuſtodi animã meã propter bonitatem 2
tuã. De⁹ mi, ſalva famulũ tuũ ſperantem
te. Miſerere mei, O Domine quia clamavi 3
ad te die totâ. Lætifica animam ſervi tui, 4
quia jã levavi animã meã ad te, O Domine.
Quoniã tu O Domine, bon⁹ es ac mi- 5
tis, et affluis miſericordiâ in omnes clamãtes
ad te. Auſculta O Domine orationẽ 6
meam, et intende voci deprecationis meæ

תהלים : פז פח

deos inter tu ſicut Non .me exaudies quia : te invocabo meæ anguſtiæ die In
7 8 בְּיוֹם צָרָתִי אֶקְרָאֶךָּ כִּי תַעֲנֵנִי׃ אֵין־כָּמוֹךָ בָאֱלֹהִים
,venient feciſti quas gentes Omnes .tua opera ſecundũ nec ,Domine
9 אֲדֹנָי וְאֵין כְּמַעֲשֶׂיךָ׃ כָּל־גּוֹיִם ׀ אֲשֶׁר עָשִׂיתָ יָבוֹאוּ ׀
magnus Quoniam .tuum nomen glorificabunt &,Domine *tuas facies ad ſe incurvabunt* &
10 וְיִשְׁתַּחֲווּ לְפָנֶיךָ אֲדֹנָי וִיכַבְּדוּ לִשְׁמֶךָ׃ כִּי־גָדוֹל
,tuam viam Domine me Doce .*tu* ſolus Deus tu ,mirabilia *faciens* & ,tu
11 אַתָּה וְעֹשֵׂה נִפְלָאוֹת אַתָּה אֱלֹהִים לְבַדֶּךָ׃ הוֹרֵנִי יְהוָה ׀ דַּרְכֶּךָ
tibi Confitebor .tuum nomen *timendum ad* meum cor uni : tua veritate in ambulabo
12 אֲהַלֵּךְ בַּאֲמִתֶּךָ יַחֵד לְבָבִי לְיִרְאָה שְׁמֶךָ׃ אוֹדְךָ ׀
.ſeculum in tuum nomen glorificabo & : meo corde toto in mi Deus Domine
אֲדֹנָי אֱלֹהַי בְּכָל־לְבָבִי וַאֲכַבְּדָה שִׁמְךָ לְעוֹלָם׃
.inferiori *fovea* ex meã animam eruiſti & : me ſuper magna tua miſericordia Nam
13 כִּי־חַסְדְּךָ גָּדוֹל עָלָי וְהִצַּלְתָּ נַפְשִׁי מִשְּׁאוֹל תַּחְתִּיָּה׃
quæſierunt *terribilium cœtus* & ,me adverſum ſurrexerunt ſuperbi Deus
14 אֱלֹהִים ׀ זֵדִים קָמוּ עָלַי וַעֲדַת עָרִיצִים בִּקְשׁוּ
,miſericors Deus Domine tu Et .ſe coram te poſuerunt non & : meam animam
15 נַפְשִׁי וְלֹא שָׂמוּךָ לְנֶגְדָּם׃ וְאַתָּה אֲדֹנָי אֵל־רַחוּם
,me ad Reſpice .veritate & ,miſericordia multus & ,*narium* longus : *gratioſus* &
16 וְחַנּוּן אֶרֶךְ אַפַּיִם וְרַב־חֶסֶד וֶאֱמֶת׃ פְּנֵה אֵלַי
.tuæ ancillæ filium ſerva & : tuo ſervo tuam fortitudinem da ,mei miſerere &
וְחָנֵּנִי תְּנָה־עֻזְּךָ לְעַבְדֶּךָ וְהוֹשִׁיעָה לְבֶן־אֲמָתֶךָ׃
: afficiantur pudore & ,me habentes odio videant & ,bonitate in ſignum mecum Fac
17 עֲשֵׂה־עִמִּי אוֹת לְטוֹבָה וְיִרְאוּ שֹׂנְאַי וְיֵבֹשׁוּ
.me es conſolatus & ,me adjuviſti Domine tu quoniam
כִּי־אַתָּה יְהוָה עֲזַרְתַּנִי וְנִחַמְתָּנִי׃

PSAL. LXXXVII. פז

Diligens *ſanctitatis* montibus in ejus *Fundamentum* .cantici cantus Corach Filiis
1 2 לִבְנֵי־קֹרַח מִזְמוֹר שִׁיר יְסוּדָתוֹ בְּהַרְרֵי־קֹדֶשׁ׃ אֹהֵב
dicta Glorioſa .Jahacob *habitaculis omnibus præ* : Sijon portas Dominus
3 יְהוָה שַׁעֲרֵי צִיּוֹן מִכֹּל מִשְׁכְּנוֹת יַעֲקֹב׃ נִכְבָּדוֹת מְדֻבָּר
,me ſcientibus Babel & ,*Rahab* faciam Memorare Selah Dei civitas : te *in*
4 בָּךְ עִיר הָאֱלֹהִים סֶלָה׃ אַזְכִּיר ׀ רַהַב וּבָבֶל לְיֹדְעָי
Sijon *ipſi* Et .ibi eſt natus iſte : Æthiopia cum Tyrus & ,Peleſtina ecce
5 הִנֵּה פְלֶשֶׁת וְצוֹר עִם־כּוּשׁ זֶה יֻלַּד־שָׁם׃ וּלְצִיּוֹן ׀
Dominus .altiſſimus eam *firmabit* ipſe & : ea in eſt natus vir & Vir ,dicetur
6 יֵאָמַר אִישׁ וְאִישׁ יֻלַּד־בָּהּ וְהוּא יְכוֹנְנֶהָ עֶלְיוֹן׃ יְהוָה
cantores Et .Selah ,ibi eſt natus iſte : populos *ſcribendo in* numerabit
7 יִסְפֹּר בִּכְתוֹב עַמִּים זֶה יֻלַּד־שָׁם סֶלָה׃ וְשָׁרִים
.te in mei fontes omnes : tibicines ſicut
כְּחֹלְלִים כָּל־מַעְיָנַי בָּךְ׃

PSAL. LXXXVIII. פח

reſpondendum ad ,Machalath ſuper victori Corach filiis cantus Canticum
1 שִׁיר מִזְמוֹר לִבְנֵי־קֹרַח לַמְנַצֵּחַ עַל־מָחֲלַת לְעַנּוֹת
,clamavi *interdiu* meæ ſalutis Deus Domine .Ezrachitæ Heman ipſi *Maſchil*
2 מַשְׂכִּיל לְהֵימָן הָאֶזְרָחִי׃ יְהוָה אֱלֹהֵי יְשׁוּעָתִי יוֹם־צָעַקְתִּי
.meũ clamorẽ ad tuã aurem inclina : mea oratio *tuas facies ad* Intret .te coram nocte in
3 בַלַּיְלָה נֶגְדֶּךָ׃ תָּבוֹא לְפָנֶיךָ תְּפִלָּתִי הַטֵּה אָזְנְךָ לְרִנָּתִי׃
.*pertigerunt* ſepulchrum ad *meæ vitæ* & : mea anima malis in eſt ſaturata Quia
4 כִּי־שָׂבְעָה בְרָעוֹת נַפְשִׁי וְחַיַּי לִשְׁאוֹל הִגִּיעוּ׃

תרגום TARGUM.

7 בְּיוֹמָא דְעָקְתִי אֶקְרֵי לְוָתָךְ אֲרוּם אַתְּ עָנֵי יָתִי׃
8 לֵית בַּר מִנָּךְ בְּאִנְגְּלֵי מְרוֹמָא יְיָ וְלֵית כְּעוֹבָדָךְ׃
9 כָּל עַמְמַיָּא דִי עֲבַדְתָּ יֵיתוּן וְיִסְגְּדוּן קֳדָמָךְ יְיָ
10 וְיִתְּנוּן אִיקָר לִשְׁמָךְ׃ אֲרוּם רַבָּא אַתְּ אֱלָהָא וְעָבֵד
11 פְּרִישָׁן אַתְּ הוּא אֱלָהָא בִּלְחוֹדָךְ׃ אַלֵּף יָתִי יְיָ
אוֹרְחָתָךְ אֶתְהַלֵּךְ בְּקוּשְׁטָךְ יַחַד לִבְּבִי לְמִדְחַל
12 שְׁמָךְ׃ אוֹדֵה קֳדָמָךְ יְיָ אֱלָהִי בְּכָל לִבְּבִי וְאֵיקַר
13 שְׁמָךְ לְעָלַם׃ אֲרוּם טוּבָךְ רַב עֲלַי וּפְצֵיתָא נַפְשִׁי
14 מִשְּׁיוֹל אַרְעִיתָא׃ אֱלָהָא זֵדוֹנִין קָמוּן עֲלַי
וְתַקִּיפִין תְּבַעוּ נַפְשִׁי וְלָא שַׁוִּיאוּ יָתָךְ לְקִבְלְהוֹן׃
15 וְאַתְּ יְיָ אֱלָהָא רַחֲמָנָא וְחַנָּנָא מְרַחֵק רְגַז וּמַסְגֵּי
16 לְמֶעְבַּד טָבְוָן וְקוּשְׁט׃ אִתְפְּנֵי לְוָתִי וְחוּס עֲלַי
17 הַב עוּשְׁנָךְ לְעַבְדָּךְ וּפְרוֹק לְבַר אַמְתָךְ׃ עֲבֵד
עִמִּי אָת לְטָבָא בִּזְמַן דְעָיֵל שְׁלֹמֹה בְרֵיהּ יָת
אֲרוֹנָא בְּבֵית מַקְדְּשָׁא יִתְפַּתְּחָן תַּרְעַיָּא
אַמְטוּלָתִי וְיֶחֱמוּן סָנְאַי אֲרוּם שְׁבַקְתָּא לִי
וְיִבְהֲתוּן וְיוֹדוּן אֲרוּם אַתְּ יְיָ סַיַּעְתַּנִי וְנַחֶמְתַּנִי׃

פז

1 עַל יְדֵיהוֹן דִּבְנֵי קֹרַח אִתְאֲמַר שִׁירְתָא דְמִתְיַסַּד
2 עַל פּוּם אֲבָהָתָא דְמִן לְקַדְמִין׃ רָחֵם יְיָ מַעֲלָנֵי
בָּתֵּי מִדְרְשַׁיָּא דִקְבִיעָן בְּצִיּוֹן מִכָּל בָּתֵּי כְּנִישַׁיָּא
3 דְבֵית יַעֲקֹב׃ מִלִּין דִּיקָר אִתְמַלַּל עֲלָךְ קַרְתָּא
4 דֶאֱלָהָא לְעָלְמִין׃ אַדְכָּרוּ תוּשְׁבַּחְתָּךְ מִצְרָאֵי
וּבַבְלָאֵי לְיָדְעֵי יָתָךְ הָא פְלִישְׁתָּאֵי וְצוֹרָאֵי עִם
5 כּוּשָׁאֵי דֵין מַלְכָּא אִתְרַבָּא תַמָּן׃ וּלְצִיּוֹן יִתְאֲמַר
דָּוִד מַלְכָּא וּשְׁלֹמֹה בְרֵיהּ אִתְרַבָּא בְגַוָּהּ וֶאֱלָהָא
6 הוּא יְשַׁכְלְלִנַּהּ לְעֵילָא׃ יְיָ עַל סִפְרָא דִי מִכְתְּבִין
בֵּיהּ חוּשְׁבַּן כָּל עַמְמַיָּא דֵין מַלְכָּא אִתְרַבָּא תַמָּן
7 לְעָלְמִין׃ וְאָמְרֵי שִׁירִין עַל חִנְגַּיָּא כָּל מִינֵי
תוּשְׁבְּחָן עַל קוּרְבָּנָא מִתְאַמְרִין בְּגַוִּיךְ׃

פח

1 שִׁירָא וְתוּשְׁבַּחְתָּא עַל יְדֵיהוֹן דִּבְנֵי קֹרַח עַל
צְלוֹתָא לְשַׁבָּחָא שְׂכָלָא טָבָא עַל יְדוֹי דְהֵימָן
2 יַצִּיבָא׃ יְיָ אֱלָהָא פּוּרְקָנִי יֵימָם קַבְּלִית בְּלֵילְיָא
3 צְלוֹתִי לְקִבְלָךְ׃ תֵּיעוֹל קֳדָמָךְ צְלוֹתִי אַצְלֵי אוּדְנָךְ
לְבָעוּתִי׃ [תָּא יֵיתֵי קֳדָמָךְ צְלוֹתִי עַל עַמָּךְ בֵּית
יִשְׂרָאֵל וְהַט אוּדְנָךְ לְתוּשְׁבַּחְתִּי דְשַׁבַּחִית
4 לִיקָרָךְ׃] אֲרוּם שְׂבַעַת בְּבִישָׁן נַפְשִׁי וְחַיַּי לִשְׁיוֹל מְטוֹ׃

PARAPH. CHALD Verſ. Lat.

In die afflictionis meæ clamabo ad te, quoniã tu reſpondebis mihi. Non eſt præter te in angelis *excelſis* Dñe, nec quicquam ſicut opera tua. Omnes populi quos feciſti venient, et adorabunt coram te Dñe, et dabunt gloriã nomini tuo. Quoniam magn⁹ es tu De⁹, et faciens mirabilia, tu *ipſe* De⁹ ſolus. Doce me Dñe viã tuã, ambulabo in veritate tua: uni cor meũ ut timeat nomen tuum. Confitebor *coram te* Dñe Deus me⁹ in toto corde meo, et honorificabo nomen tuum in æternum. Quoniã benignitas tua magna eſt ſup me, et liberaſti animã meã de inferno inferiori. De⁹ ſuperbi inſurrexerunt adverſùm me, et *fortes* quæſiverunt animã meam, & non poſuerunt te in conſpectu ſuo. Et tu Dñe De⁹ miſerator et miſericors, alienus ab ira, et multiplicia conferens beneficia et veritatẽ. Reſpice in me et miſerere mei, da fortitudinẽ tuam ſervo tuo, et redime filiũ ancillæ tuæ. Fac mecum ſignũ ad bonũ, *tempore quo introducturus fuerit Selomoh filius me⁹ arcam in domũ ſanctuarii, aperiant portæ mei gratia*, ut videant odio habentes me ꝙ ignoveris mihi: et erubeſcant et confiteantur quoniam tu es Dominus qui auxiliatus es mihi, et conſolatus es me.

Per manus filiorum Korach *dictũ* eſt canticum fundatum in ore patrum priſcorum.

PSAL. LXXXVII.

Diligit Dñs portas *ſcholarum* ſtructas in Sion, pluſquàm omnes domos eccleſiarum dom⁹ Jacob. Verba honorifica dicta ſunt de te civitas Dei in æternum. Commemorant laudes tuas Ægyptii et Babylonii his qui noverunt te, ecce Paleſtini et Tyrii cum Æthiopibus, ubi rex iſte *educatus* eſt. Proinde Sion dictum eſt, David rex & Selomoh fili⁹ ejus educatus eſt intra eam, & Deus *ipſe* fundabit eam in ſublimitatẽ. Dñe in libro in quo ſcriptæ ſunt computationes omniũ populorum, hic rex *educatus* eſt ibi in æternum. Et dicunt cantica in choris, omnes ſpecies laudis ſup ſacrificia dicuntur in medio tui.

Canticum et hymnus per manus filiorum Korach ad laudandum intellectu bono per manus Heman indigenæ.

PSAL. LXXXVIII.

Domine De⁹ redemptionis meæ, p diem clamavi; in nocte [*verò*] oratio mea coram te. Ingrediatur corã te oratio mea: inclina aurẽ tuã ad precẽ meã. *Targũ aliud*: Veniat coram te oratio mea *pro populo tuo domo Iſrael: et* inclina aurẽ tuã ad *hymnũ mei quo laudes dixi gloriæ tuæ.* Quoniã ſaturata eſt malis anima mea, et vita mea ad infernum proximè acceſſit.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

7 8 * ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܝ ܩܪܝܬܟ ܘܥܢܝܬܢܝ. * ܠܝܬ ܕܕܡܐ ܠܟ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܘܠܝܬ ܐܝܟ ܥܒܕܝܟ:
9 * ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܥܒܕܬ. ܢܐܬܘܢ ܘܢܣܓܕܘܢ ܩܕܡܝܟ ܡܪܝܐ: ܘܢܫܒܚܘܢ ܠܫܡܟ * ܡܛܠ
10 11 ܕܪܒ ܐܢܬ. ܘܥܒܕ ܐܢܬ ܬܕܡܪܬܐ ܐܢܬ ܐܠܗܐ ܒܠܚܘܕܝܟ: * ܚܘܢܝ ܡܪܝܐ ܐܘܪܚܟ ܘܐܗܠܟ
12 ܒܩܘܫܬܟ. ܢܚܕܐ ܠܒܝ ܒܐܝܠܝܢ ܕܕܚܠܝܢ ܠܫܡܟ : * ܐܘܕܐ ܠܟ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܒܟܠܗ
13 ܠܒܝ. ܘܐܫܒܚ ܫܡܟ ܠܥܠܡ : * ܡܛܠ ܕܐܣܓܝܬ ܛܝܒܘܬܟ ܥܠܝ. ܘܦܨܝܬ ܢܦܫܝ
14 ܡܢ ܫܝܘܠ ܬܚܬܝܬܐ: * ܐܠܗܐ ܥܘܠܐ ܩܡܘ ܥܠܝ. ܘܟܢܘܫܬܐ ܕܥܫܝܢܐ ܒܥܘ ܢܦܫܝ
15 ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܘܟ: * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܡܪܚܡܢܐ ܘܡܪܚܦܢܐ. ܢܓܝܪ ܪܘܚܐ ܘܣܓܝ ܛܝܒܘܬܐ
16 17 ܘܩܘܫܬܐ: * ܐܬܦܢܝ ܠܘܬܝ ܘܐܬܪܚܡ ܥܠܝ. ܗܒ ܚܝܠܐ ܠܥܒܕܟ ܘܦܪܘܩ ܠܒܪ ܐܡܬܟ: * ܘܥܒܕ
ܥܡܝ ܐܬܐ ܠܛܒܬܐ. ܘܢܚܙܘܢ ܣܢܐܝ ܘܢܒܗܬܘܢ : ܕܐܢܬ ܡܪܝܐ ܥܕܪܬܢܝ ܘܒܝܐܬܢܝ.

1 * ܡܙܡܘܪܐ * ܕܩܘܪܚ * ܡܛܠ ܦܘܪܩܢܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܦܬܓܡܐ ܝܓ.
2 ܫܬܐܣܘܗܝ ܒܛܘܪܐ ܩܕܝܫܐ : * ܪܚܡ ܡܪܝܐ ܠܬܪܥܝܗ ܕܨܗܝܘܢ. ܝܬܝܪ ܡܢ ܟܠܗܘܢ
3 4 ܡܫܟܢܘܗܝ ܕܝܥܩܘܒ : * ܫܒܝܚܬܐ ܐܬܡܠܠ ܥܠܝܟܝ ܡܕܝܢܬܗ ܕܐܠܗܐ. * ܕܝܐܦܣܠܡܐ * ܐܬܕܟܪ
ܠܪܗܒ ܘܠܒܒܠ ܕܝܕܥܝܢ ܠܝ : ܗܐ ܦܠܫܬܝܐ ܘܨܘܪ ܘܥܡܐ ܕܟܘܫܝܐ. ܗܢܐ ܐܬܝܠܕ ܬܡܢ :
5 6 * ܘܠܨܗܝܘܢ ܐܬܐܡܪ. ܓܒܪܐ ܓܢܒܪܐ ܐܬܝܠܕ ܒܗ ܘܗܘ ܐܫܪܗ : * ܡܪܝܐ ܢܡܢܐ ܒܟܬܒܐ
7 ܠܥܡܡܐ. ܗܢܐ ܐܬܝܠܕ ܬܡܢ : * ܪܘܪܒܢܐ ܕܥܡܪܝܢ ܒܟܝ ܢܚܕܘܢ. ܘܟܠ ܕܐܬܡܟܟܘ ܒܟܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܗܝܡܢ * ܡܛܠ ܥܡܐ ܕܒܒܒܠ. ܦܬܓܡܐ ܡ.
1 2 * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܦܘܪܩܢܝ. ܒܐܝܡܡܐ ܩܥܝܬ ܘܒܠܠܝܐ ܩܕܡܝܟ :* ܬܥܘܠ ܩܕܡܝܟ ܨܠܘܬܝ.
3 ܘܐܪܟܢ ܐܕܢܟ ܠܒܥܘܬܝ : * ܡܛܠ ܕܣܒܥܬ ܢܦܫܝ ܒܝܫܬܐ. ܘܚܝܝ ܠܫܝܘܠ ܡܛܝܘ :

In die anguſtiæ meæ vocavi te, & reſpondiſti mihi. Non eſt ſimilis tibi Dñe De⁹, & non eſt quid ſimile operibus tuis. Cunctæ gentes quas feciſti, venient & adorabunt te Dñe, & glorificabunt nomen tuum: Quia magnus es tu: edis miracula tu Deus ſolus. Præbe mihi Dñe viam tuam, & ambulabo in veritate: lætabitur cor meum in his qui timent nomen tuum. Confitebor tibi Dñe Deus meus toto corde meo, & laudabo nomen tuum in ſeculum: Quia bonitas tua abundavit erga me, & eripuiſti animam meam ex fovea infima. Deus, iniqui inſurrexerunt adverſum me, & cœtus potentium quæſierunt animam meam, nec recordati ſunt tui. At tu Domine Deus miſericors & benignus, longanimis & copioſus bonitate ac veritate, Convertere ad me & miſerere mei: da robur ſervo tuo, & libera filium ancillæ tuæ: Exhibe erga me ſignum bonum, ut videant oſores mei & confundantur, quòd tu Domine juveris me, ſiſque me conſolatus.

PSAL. LXXXVII.

De liberatione Jeruſalem. Verſ. 13.

Fundamenta ejus in monte ſuo ſancto. Dilexit Dñs portas Sion magis quàm cuncta tabernacula Jacob. Præclara dicta ſunt in te civitas Dei noſtri. **Diapſal.** Memorem Rahab & Babylonis agnoſcentium me. Ecce Palæſthini & Tyrus, ac populus Æthiopum: iſte natus eſt ibi. Et Sioni dictum eſt, Vir gigas natus eſt in ea: & ipſe firmavit illam. Dñs recenſebit in libro populos: iſte natus eſt ibi. Magnates qui commorantur in te, gaudebunt: & omnes qui humiliati ſunt in te.

PSAL. LXXXVIII.

De populo qui erat in Babel. Verſ. 40.

Domine Deus ſalutis meæ, die clamavi & nocte coram te. Intret in conſpectum tuum oratio mea, & inclina aurem tuam precationi meæ; Quoniã ſaturata eſt anima mea malis & vita mea ad foveam devenit.

Verſio VULG. LAT.

In die tribulationis meæ clamavi ad
8 te: quia exaudiſti me. Non eſt ſimilis
tui in diis, Dñe: & non eſt ſecundùm
9 opera tua. Omnes gentes quaſcunq;
feciſti, venient, & adorabunt corã te,
Dñe: & glorificabunt nomen tuum.
10 Quoniã magn⁹ es tu, & faciens mira-
11 bilia: tu es Deus ſol⁹. Deduc me, Dñe,
in via tua, et ingrediar in veritate tua:
lætetur cor meum ut timeat nomen
12 tuũ. Confitebor tibi, Dñe De⁹ me⁹, in
toto corde meo, & glorificabo nomen
13 tuũ in æternũ: Quia miſericordia tua
magna eſt ſup me: & eruiſti animam
meã ex inferno inferiori. Deus, iniqui
14 inſurrexerũt ſup me, & ſynagoga po-
tentiũ quæſierũt animã meam: & non
15 propoſuerũt te in cõſpectu ſuo. Et tu,
Dñe De⁹, miſerator et miſericors, pati-
ens, & multæ miſericordiæ, & verax,
16 Reſpice in me, & miſerere mei, da im-
periũ tuũ puero tuo: & ſalvũ fac filiũ
17 ancillæ tuæ. Fac mecũ ſignũ in bonũ,
ut videant qui oderunt me, et confun-
dantur: quoniã tu, Dñe, adjuviſti me,
& conſolatus es me.

1 Filiis Core, Pſalm⁹ Cantici. LXXXVI.
Fundamenta ej⁹ in montib⁹ ſanctis:
2 Diligit Dñs portas Sion ſup omnia
3 tabernacula Jacob. Glorioſa dicta ſunt
4 de te, Civitas Dei. Memor ero Rahab et
Babylonis ſcientiũ me. Ecce alienige-
næ, & Tyrus, & popul⁹ Æthiopũ, hi fu-
5 erũt illic. Numquid Sion dicet; Homo,
& homo nat⁹ eſt in ea: & ipſe fũdavit
6 eã Altiſſim⁹? Dñs narrabit in ſcripturis
populorũ, et principũ; horũ, qui fuerũt
7 in ea. Sicut lætantiũ omniũ habitatio
eſt in te. Canticum Pſalmi,

1 Filiis Core, in finem, pro Maheleth ad
reſpondendum, intellectûs Eman
Ezrahitæ. LXXXVII.
2 Domine De⁹ ſalutis meæ, in die cla-
3 mavi, & nocte coram te. Intret in
cõſpectu tuo oratio mea: inclina aurẽ
4 tuam ad precem meam: Quia repleta
eſt malis anima mea: & vita mea in-
ferno appropin quavit.

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

7 † Ἐν ἡμέρᾳ θλίψεώς μου ἐκέκραξα πρὸς σὲ, ὅτι
8 (δ) εἰσήκουσάς μου. † Οὐκ ἔστιν ὅμοιός σοι ἐν θεοῖς
9 κύριε, † καὶ οὐκ ἔστι κατὰ τὰ ἔργα σου. † Πάντα τὰ ἔθνη
ὅσα ἐποίησας ἥξουσι, † καὶ προσκυνήσουσιν ἐνώπιόν σου
κύριε, † καὶ δοξάσουσι τὸ ὄνομά σου, Ὅτι μέγας εἶ σὺ,
10 † καὶ ποιῶν θαυμάσια, σὺ εἶ ὁ θεὸς (ε) μόνος ὁ μέ-
11 γας. † Ὁδήγησόν με κύριε ἐν τῇ ὁδῷ σου, † καὶ πορεύ-
σομαι (ζ) ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου, † εὐφρανθήτω ἡ καρδία
12 μου, τοῦ φοβεῖσθαι τὸ ὄνομά σου. † Ἐξομολογήσομαί σοι
κύριε ὁ θεός μου ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου, † καὶ δοξάσω τὸ
13 ὄνομά σου εἰς τὸν αἰῶνα. † Ὅτι τὸ ἔλεός σου μέγα ἐπ᾽
ἐμὲ, † καὶ ἐρρύσω τὴν ψυχήν μου ἐξ ᾅδου κατωτάτου. †
14 Ὁ θεὸς, παράνομοι ἐπανέστησαν ἐπ᾽ ἐμὲ, † καὶ συνα-
γωγὴ κραταιῶν ἐζήτησαν τὴν ψυχήν μου, † καὶ οὐ προέ-
15 θεντό σε ἐνώπιον αὐτῶν. † Καὶ σὺ κύριε ὁ θεὸς οἰ-
κτίρμων καὶ ἐλεήμων, † μακρόθυμος καὶ πολυέλεος
16 καὶ ἀληθινός. † Ἐπίβλεψον ἐπ᾽ ἐμὲ, καὶ ἐλέησόν με,
† δὸς τὸ κράτος σου τῷ παιδί σου, † καὶ σῶσον τὸν υἱ-
17 ὸν τῆς παιδίσκης σου. † Ποίησον μετ᾽ ἐμοῦ σημεῖον εἰς
ἀγαθὸν, † καὶ ἰδέτωσαν οἱ μισοῦντές με, καὶ αἰσχυνθή-
τωσαν· † ὅτι σὺ κύριε ἐβοήθησάς μοι, καὶ παρεκάλε-
σάς με.

1 Τοῖς υἱοῖς Κορὲ ψαλμὸς ᾠδῆς. πϛʹ.
† ΟΙ θεμέλιοι αὐτοῦ ἐν τοῖς ὄρεσι τοῖς ἁγίοις. †
2 Ἀγαπᾷ κύριος τὰς πύλας Σιὼν, † ὑπὲρ πάντα τὰ
3 σκηνώματα Ἰακώβ. † Δεδοξασμένα ἐλαλήθη περὶ
4 σοῦ ἡ πόλις τοῦ θεοῦ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. Μνησθήσομαι
Ῥαὰβ, καὶ Βαβυλῶνος, τοῖς γινώσκουσί με· † καὶ ἰδοὺ
ἀλλόφυλοι καὶ Τύρος καὶ λαὸς Αἰθιόπων, οὗτοι (α) ἐγεν-
5 νήθησαν ἐκεῖ. † Μήτηρ Σιὼν ἐρεῖ, Ἄνθρωπος, καὶ ἄν-
θρωπος ἐγεννήθη ἐν αὐτῇ, † καὶ αὐτὸς ἐθεμελίωσεν
6 αὐτὴν ὁ ὕψιστος. † Κύριος διηγήσεται ἐν γραφῇ λαῶν,
καὶ ἀρχόντων † τούτων τῶν γεγενημένων ἐν (β) αὐτῇ.
7 ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ὡς εὐφραινομένων πάντων ἡ
κατοικία ἐν σοί.

1 Ὠδὴ ψαλμοῦ Τοῖς υἱοῖς Κορὲ, εἰς τὸ τέλος, ὑπὲρ
μαελὲθ τοῦ ἀποκριθῆναι, συνέσεως (α) Αἰ-
μὰν τῷ Ἰσραηλίτῃ. πζʹ.
2 † ΚΥριε ὁ θεὸς τῆς σωτηρίας μου, † ἡμέρας (β) ἐκέκρα-
3 ξα καὶ ἐν νυκτὶ ἐναντίον σου, † (γ) Εἰσελθέτω ἐν-
ώπιόν σου ἡ προσευχή μου, † κλῖνον τὸ οὖς σου εἰς τὴν
4 δέησίν μου κύριε. † Ὅτι ἐπλήσθη κακῶν ἡ ψυχή μου,
† καὶ ἡ ζωή μου τῷ ᾅδῃ ἤγγισε.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

In die tribulationis meæ (c) clamavi 7
ad te: quoniã exaudiſti me. 7 Non eſt 8
ſimilis tui in diis, Domine: & non eſt
ſecundùm opera tua. 8 Omnes gentes, 9
quaſcunque feciſti, venient, & ado-
rabunt coram te, Domine: et glorifica-
bunt nomen tuum. 9 Quoniam magn⁹ 10
es [c] tu, & faciens mirabilia: tu es
Deus ſolus (f) magnus. 10 Deduc me, 11
Domine, in via tua; & ambulabo in
veritate tua. (g) Lætetur cor meũ, ut
timeat nomen tuum. 11 Confitebor 12
tibi, Domine Deus meus, in toto corde
meo, & glorificabo nomen tuum in
æternum. 12 Quoniam miſericordia 13
tua magna eſt ſuper me: & eruiſti a-
nimam meam ex inferno inferiore.
13 [d] Deus, iniqui (h) inſurrexerunt 14
ſuper me: & ſynagoga potentiũ quæ-
ſierunt animam meam: & non propo-
ſuerunt te in conſpectu ſuo. 14 Et tu, 15
Domine Deus, miſerator, & miſeri-
cors: longanimis, et multæ miſericor-
diæ, & verax: 15 Reſpice in me, & 16
miſerere mei: da (i) poteſtatem tuam
puero tuo; & ſalvum fac filium an-
cillæ tuæ. 16 Fac [e] mecum ſignũ in 17
bono: et videant, qui oderunt [f] me, et
cõfundãtur. Quoniã tu, Domine, ad-
juviſti [g] me: et conſolatus es [h] me.

Filiis (a) Core, Pſalmus Cantici. 1
LXXXVI.
1 Fundamenta (b) ejus in montibus
ſanctis: Diligit Dñs portas Sion ſuper 2
omnia tabernacula Jacob. 2 [a] Glori- 3
oſa dicta ſũt de te, Civitas Dei. DIA-
PSALMA. 3 Memor ero Raab, et Ba- 4
bylonis, (c) ſcientib⁹ me. 4 Et ecce ali-
enigenæ, & Tyrus, & popul⁹ Æthio-
pũ, [b] hi fuerũt illic. 5 (d) [c] Mater 5
Sion dicet, Homo, et homo (e) fact⁹ eſt
in ea: et ipſe fundavit eam Altiſſim⁹.
6 Domin⁹ narrabit [d] in (f) ſcriptura 6
populorũ, et principum horũ, qui fue-
rũt in ea. DIAPSALMA. [e] Sicut 7
lætantiũ (g) omnium habitatio in te.

(a) Canticum Pſalmi, Filiis Core in 1
finem, [a] pro (b) Maeleth ad reſpon-
dendũ, intellect⁹ Æman (c) Iſraelitæ.
LXXXVII.
Domine Deus ſalutis meæ, in [b] 2
die clamavi, & in [c] nocte coram te.
2 Intret in conſpectu tuo oratio mea: 3
inclina aurẽ tuam ad precem meam,
(d) Domine. 3 Quia repleta eſt ma- 4
lis anima mea: & vita mea [†] in-
ferno appropinquavit.

Verſio ÆTHIOPICA.

በዕለተ፡ምንዳቤየ፡ጸራኅኩ፡ ኀቤከ፡ እስመ፡ 6
ሰማዕከኒ፡፡ ፨ አልቦ፡ዘይመስለከ፡ እምነ፡ 7
አማልክት፡እግዚኦ፡፡ወአልቦ፡ዘከመ፡ ምግበ
ሪከ፡፡ ፨ ኵሎሙ፡ አሕዛብ፡ እለ፡ገበርከ፡ 8
ይመጽኡ፡፡ወይሰግዱ፡ቅድሜከ፡ እግዚኦ፡፡
ወይሴብሑ፡ ለስምከ፡፡ ፨ እስመ፡ዐቢይ፡አ 9
ንተ፡ እግዚኦ፡ ወትገብር፡ መንክረ፡፡አንተ፡እ
ግዚአብሔር፡ባሕቲትከ፡ ዐቢይ፡፡ ፨ ምር 10
ሐኒ፡ እግዚኦ፡ ፍናተከ፡፡ወአሐሪ፡ በጽድቅ
ከ፡፡ይትፌሣሕ፡ልብየ፡ለፈሪሃ፡ስምከ፡፡ ፨
እገኒ፡ለከ፡እግዚኦ፡በኵሉ፡ልብየ፡ አምላኪ 11
የ፡፡ወእሴብሕ፡ ለስምከ፡ ለዓለም፡፡ ፨ እስ 12
መ፡ዐቢየት፡ ምሕረትከ፡ ላዕሌየ፡፡ወአድኀን
ካ፡ለነፍስየ፡እመሲኦል፡ታሕቲት፡፡ ፨ አም 13
ላኪየ፡ዐማፅያን፡ ቆሙ፡ ላዕሌየ፡፡ወማኅበረ፡
እኩያን፡ ኀሠሠዋ፡ ለነፍስየ፡፡ወኢረሰዩከ፡
ቅድሜሆሙ፡፡ ፨ ወአንተሰ፡ እግዚኦ፡ መሐ 14
ሪ፡ወመስተሣህል፡፡ርሑቀ፡ መዐት፡ ወብዙኅ፡
ምሕረት፡ወጻድቅ፡፡ ፨ ነጽር፡ ላዕሌየ፡ወተ 15
ሣሀለኒ፡፡ሀብ፡ኀይለ፡ ለገብርከ፡፡ወአድኅኖ፡
ለወልደ፡ አመትከ፡፡ ፨ ግበር፡ ምስሌነ፡ትእ 16
ምርተ፡ለሠናይ፡፡ወይርአዩ፡ጸላእትነ፡ወይት
ኀፈሩ፡፡ከመ፡ አንተ፡ እግዚኦ፡ ረዳእከነ፡ ወ
አስተፈሣሕከነ፡፡ ፨

ዘደቂቀ፡ቆሬ፡መዝሙር፡ማኅሌት፡፡
፹፮ መሰረታቲሃ፡ውስተ፡አድባር፡ ቅዱሳን፡፡ 1
ያበድሮን፡እግዚአብሔር፡ለአናቅጸ፡ጽዮን፡፡
እምኵሉ፡ተዐይኒሁ፡ለያዕቆብ፡፡ ፨ ነኪር፡ 2
ነገሩ፡በእንቲአኪ፡ሀገረ፡እግዚአብሔር፡፡ ፨
እዜክሮን፡ለራዐብ፡ ወለባቢሎን፡እለ፡ያአም 3
ሩኒ፡፡ ፨ ወናሁ፡ሊሎፍሊ፡ወጢሮስ፡ወሕዝ 4
ብ፡ኢትዮጵያ፡፡እለ፡ ተወልዱ፡ በህየ፡፡ ፨ እ 5
ምነ፡ ጽዮን፡ ይብል፡ሰብእ፡፡ወብእሲ፡ ተወል
ደ፡በውስቴታ፡፡ወውእቱ፡ ልዑል፡ ሣረራ፡፡ ፨
እግዚአብሔር፡ ይነግሮሙ፡ ለሕዝቡ፡ በመ 6
ጽሐፍ፡፡ወለመላእክቲሆሙ፡ እለ፡ ተወልዱ፡በ
ውስቴታ፡፡ ፨ ከመ፡ ፍሡሓን፡ኵሎሙ፡ እ 7
ለ፡ይነብሩ፡ውስቴትከ፡፡ ፨

ማኅሌት፡መዝሙር፡ዘደቂቀ፡ቆሬ፡ፍጻ
ሜ፡ዘአመ፡መጽአ፡ዘበአእምሮ፡አ
ማን፡እስራኤላዊ፡፡
፹፯ እግዚአብሔር፡አምላከ፡መድኀኒትየ፡፡ 1
ዕለትየ፡ ጸራኅኩ፡ ኀቤከ፡ ወሌሊትየኒ፡ ቅድ
ሜከ፡፡ ፨ ለትባእ፡ ጸሎትየ፡ቅድሜከ፡፡አ 2
ጽምእ፡ እዝነከ፡ ኀበ፡ ስእለትየ፡፡ ፨ እስ 3
መ፡ ጸግበት፡ ነፍስየ፡ ሕማመ፡፡ወአልጸቀት፡
ለሞት፡ሕይወትየ፡፡ ፨

MS.A. (δ) ἐπήκουσάς (ε) μόνος. Ὁδήγησόν με κύριε τῇ ὁδῷ σου, (ζ) τῇ ἀληθείᾳ σου, MS.A. πϛʹ. (α) ἐγεννήθησαν (β) αὐτῇ. Ὡς εὐφραινομένων MS.A. πζʹ. (α) Αἰθὰμ (β) κεκέκραξα (γ) Εἰσελθάτω

INTERP. ÆTHIOP. [c] tu Domine, [d] Deus meus, [e] nobiſcum ſignum [f] nos, [g] nos: [h] nos. PSAL. LXXXVI. [a] Extranei locuti ſunt de te, [b] hi nati fuerunt [c] De Sion [d] populo ſuo in ſcriptura, & principibus etiam ejus qui nati fuerunt in ea. [e] Ut læti ſint omnes qui in te habitant. PSAL. LXXXVII. [a] cùm advenit, intellectus [b] die meo [c] nocte mea [†] morti

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

7 * صرخت اليك في يوم شدتي * فاستجبت لي * ليس مثلك يا رب في الالهة * ولا مثل اعمالك * وجميع 8
9 الامم الذين خلقتهم * ياتون ويسجدون امامك يا رب * ويمجدون اسمك * لانك عظيم وصانع 10
العجايب * انت وحدك الاله العظيم * اهدني يا رب الى طرقك فاسلك في عدلك * فليفرح قلبي حين 11
12 يخشى اسمك * اشكرك يا ربي والهي من جميع قلبي * وامجد اسمك الى الابد * لان رحمتك عظيمة 13
علي * وخلصت نفسي من الجحيم السفلي * اللهم ان مخالفي الناموس قاموا علي * وجماعة الاقوياء 14
طلبت نفسي * ولم يسبقوا فيجعلوك امامهم * وانت ايها الرب * الله رووف رحيم * انت عظيم الاناة 15
16 وكثير الرحمة والعدل * انظر الي وارحمني * اعط عبدك قوة * وخلص ابن امتك * اصنع معي اية 17
صالحة * وليرى الذين يبغضوني فيخزون * لانك انت يا رب اعنتني وعزيتني * اللليلويا *

1 المزمور السادس والثمون * لبني قورح * وعدده ي * استيخن

اساساته في الجبال المقدسة * احب الرب ابواب صهيون افضل من جميع مساكن يعقوب * 2
3 * اعمال كريمة قيلت من اجلك يا مدينة الله * اذكر راحاب وبابل اللذين يعرفاني * وها القبايل 4
5 الغريبة * وصور وشعب الحبش * هاولاء كانوا هناك * الام صهيون تقول ان انسانا وانسان ولد فيها
6 وهو العلي اسسها الى الابد * الرب يخبر في كتاب الشعوب * والروساء المولودين فيها * ان سكنى 7
الفرحين جميعهم فيك * اللليلويا * المزمور السابع والثمون *

* تسبحة لبني قورح لاجل مالات عندما صرخ * وهو لح استيخن *
2 * يا رب اله القوات اله خلاصي * صرخت النهار والليل امامك * فلتدخل امامك صلاتي * يا رب 3
4 امل سمعك الى طلبتي * فقد امتلات نفسي من الشر * ودنت من الجحيم حياتي *

Clamavi ad te in die tribulationis meæ, 7
& exaudiſti me. Non eſt ſimilis tui O 8
Domine, inter deos: neque ſicut opera tua:
Et omnes gentes, quas creâſti venient, & 9
adorabunt corã te, O Domine, & glori-
ficabunt nomen tuũ. Quia tu es magnus 10
& factor miraculorum: tu ſolus Deus
maximus. Dirige me O Domine, per vias 11
tuas, & incedã in æquitate tua: lætetur
cor meum cùm timuerit nomen tuum.
Gratias agam tibi, O Domine mi & Deus 12
meus, ex toto corde meo, & glorificabo
nomen tuum in æternum. Quoniam mi- 13
ſericordia tua magna eſt ſuper me, & ſal-
vâſti animã meã ex inferno infimo. Deus, 14
profectò refragantes legi adorti ſunt me,
& ſynagoga potentium quæſivit animã
meã, & non præpoſuerunt te in conſpectu
ſuo. Et tu O Domine, Deus es clemens, 15
miſericors: tu patientiſſimus, & abundans
miſericordiâ & æquitate. Reſpice in me, 16
& miſerere mei: da ſervo tuo virtutem,
& ſalva filium ancillæ tuæ. Fac mecum 17
ſignum optimum, & videant qui me o-
derunt, & confundantur: quia tu, O
Domine adjuviſti me, & conſolatus es
me. Alleluia.

PSAL. LXXXVI. 1
Filiis Coræ. Et numerus verſ. 10.
Fundamenta ejus in montibus ſanctis.
Dilexit Dominus portas Sion pluſquã 2
omnes habitationes Jacob. Geſta præclara 3
dicta ſunt de te, O civitas Dei. Recorda- 4
bor Rahab & Babel quæ cognoſcunt me:
& ecce tribus alienigenæ, & Tyrus, &
populus Æthiopum, hi erant illic. Mater 5
Sion dicit, Si homo; & quidem Homo
natus eſt in ea, & ipſe Altiſſimus funda-
vit eã in æternum. Dominus commemo- 6
rabit in libro populorum & principum
qui nati ſunt in ea. Habitationem lætorum 7
omnium in te eſſe. Alleluja.

PSAL. LXXXVII.
Canticum filiis Coræ pro Malath 1
quando exclamavit, verſ. 38.
O Domine Deus virtutum, Deus ſa- 2
lutis meæ, clamavi diu noctuque
coram te. Ingrediatur ante te oratio mea: 3
O Domine, inclina auditum tuum ad
precem meam. Quia jam repleta eſt ani- 4
ma mea miſeriis, & propè acceſſit ad in-
[illegible]

תהלים : פט

.fortitudo non vir ſicut fui : ciſternam deſcendentibus cum ſum Reputatus
נחשבתי עם־יורדי בור הייתי כגבר אין־איל׃ 5
non quorum ,ſepulchro *jacentes* vulnerati ſicut , liber mortuos Inter
במתים חפשי כמו חללים ׀ שכבי קבר אשר לא־ 6
lacu in me Poſuiſti .ſunt abſciſſi tua manu à ipſi & : amplius *eorum* es recordatus
זכרתם עוד והמה מידך נגזרו׃ שתני בבור 7
cunctis & :tua *excandeſcentia eſt fulta me Super* .profundis in ,tenebris in : *inferorum*
תחתיות במחשכים במצלות׃ עלי סמכה חמתך וכל־ 8
me poſuiſti ,me à meos notos feciſti Elongare .Selah ,affixiſti tuis *procellis*
משבריך ענית סלה׃ הרחקת מידעי ממני שתני 9
propter doluit meus Oculus .egrediar non & clauſus : eis abominationes
תועבות למו כלא ולא אצא׃ עיני דאבה מני־ 10
.meas *volas* te ad *diſtendi* : die omni in Domine te invocavi ,meā affictionē
עני קראתיך יהוה בכל־יום שטחתי אליך כפי׃
.Selah ? tibi confitebūtur ,reſurgent *manes ſi* ? mirabile facies mortuis Nunquid
הלמתים תעשה־פלא אם־רפאים יקומו יודוך סלה׃ 11
? perditione in tua veritas : tua miſericordia ſepulchro in narrabitur Nunquid
היספר בקבר חסדך אמונתך באבדון׃ 12
? oblivionis terra in tua juſtitia & :tui mirabile *tenebroſitate* in cognoſcetur Nunquid
היודע בחשך פלאך וצדקתך בארץ נשיה׃ 13
quid Ut .te præveniet mea oratio mane in & : clamavi Domine te ad ego Et
ואני אליך יהוה שועתי ובבקר תפלתי תקדמך׃ למה 14
15 *moribundus* & ,ego *Afflictus* ? me à *tuas facies* abſcondes :meā animā elongabis Domine
יהוה תזנח נפשי תסתיר פניך ממני׃ עני אני וגוע 16
: tuæ iræ tranſierunt me Super *addubitabo* tuos *terrores* portavi : adoleſcentia ab
מנער נשאתי אמיך אפונה׃ עלי עברו חרוניך 17
ambierunt die tota ,aqua ſicut me Circundederunt .me ſucciderunt tui terrores
בעותיך צמתתוני׃ סבוני כמים כל־היום הקיפו 18
.*obſcuritas meis notis* ,*ſocium* & ,amantem me à Elongâſti .pariter me *ſuper*
עלי יחד׃ הרחקת ממני אהב ורע מידעי מחשך׃ 19

PSAL. LXXXIX. פט

: cantabo ſeculum Domini Miſericordias .Ezrachitæ Ethan ipſi *Maſkil*
משכיל לאיתן האזרחי׃ חסדי יהוה עולם אשירה 1 2
Quoniam .meo ore in tuam veritatem faciam ſcire generatione & generatione in
לדר ודר ׀ אודיע אמונתך בפי׃ כי־ 3
.*eis in* tuā veritatem firmabis cœlis : ædificabitur miſericordia ſeculum dixi
אמרתי עולם חסד יבנה שמים ׀ תכן אמונתך בהם׃
ſtabiliam ſeculum in Uſque .meo ſervo David juravi : meo electo fœdus *Excidi*
כרתי ברית לבחירי נשבעתי לדוד עבדי׃ עד־עולם אכין 4 5
.Selah ,tuum thronum generatione & generatione in ædificabo & : tuum ſemen
זרעך ובניתי לדר־ודור כסאך סלה׃
eccleſia in tuam veritatem etiam : Domine tuum mirabile cœli confitebuntur Et
ויודו שמים פלאך יהוה אף־אמונתך בקהל 6
Domino aſſimilabitur : Domino æquabitur *æthere* in quis Quoniam .ſanctorum
קדשים׃ כי מי בשחק יערך ליהוה ידמה ליהוה 7
terribilis & : multo ſanctorum ſecreto in *formidandus* Deus ? Deorum filiis in
בבני אלים׃ אל נערץ בסוד־קדשים רבה ונורא 8
.eius *circuitus omnes ſuper*
על־כל־סביביו׃

תרגום TARGUM.

5 אתחשבית עם נחתי בית אסירי הויתי היך בר
6 נש דלית ליה חילא׃ היך רשיעיא דמיתו ולא
תבו יתעבדו בני חורין מן מצותא היך קטילין
דחרבא שכבי בית קבורתא דלא דברתנון תוב
7 והנון מאפי שכנתך אתפלגון׃ שויתא יתי
בגלותא דמתילא לגובא ארעיתא בחשוכיא
8 במצולתא׃ עלי סמכת חימתך וכל גזירן בישן
9 תברו יתי סגפתא לעלמין׃ ארחקתא מיודעי מני
שויתא יתי ריחוקין להון כלוא בבית אסירי ולא
10 אפיק׃ עיני זלגת דמעין מן עניתא קריתך יי
11 בכל יומא פרסית לותך בצלו ידי׃ האפשר די
למיתיא תעביד פרישן אין גושמיא דאתמסיאו
12 בעפרא יקומון יודון קדמך לעלמין׃ האפשר די
יתחוי בבית קבורתא טובך קושטך בבית
13 אבדנא׃ האפשר די תודעו בחשך גהנם
פרישותך וצדקתך בארעא דצחותא וצדיא׃
14 ואנא קדמך יי צליתי ובצפרא צלותי תקדמנך׃
15 למה יי שבקתא נפשי תעלים אפך מני דלא
16 אחמי בנהורך נהורא׃ עניא אנא ונגיד מן טליא
17 סוברית רחימתך טעינא עלי׃ עלי עברו רוגזיך
18 בעתיך שיציאו יתי׃ אחזרו יתי היך מוי כל־
19 יומא אקיפון עלי כחדא׃ ארחקתא מני רחימא
וחברא ולידעי חשיך אנא בפומהון׃

פט

1 שכלא טבא דאתאמר על ידא דאברהם דאתא
2 מן מדינחאה׃ חסדא דיי לעלם אשבח לדר ודר
3 אהודע קושטך בפומי׃ ארום אמרית עלמא
בחסדא יתבני שמיא תתקן קושטך בהון׃
4 גזרית קים לאברהם בחירי קימית לדוד עבדי׃
5 עד עלמא אתקין בניך ואבני לדר ודר כורסי
6 מלכותך לעלמין׃ ויודון שמיא פרישותך יי
7 לחוד קושטך בכנישת קדישין׃ ארום מן הוא
בשחקי דמשתוי ליי דדמי ליי באוכלוסי
8 מלאכיא׃ אלהא תקיפא ברזיהון דקדישין יתיב
על כורסי יקרא ורבא ודחיל על כל מלאכיא
דקימין חזור חזור ליה׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Reputatus ſum cum deſcendentib⁹ in domum vinctorũ; fui ſicut homo cui nullæ ſunt vires. Sicut impii qui mortui ſunt quiq; non repuerũt, fient liberi à *contentione*, ſicut interfecti gladio dormientes in domo ſepulchri, quorum non *recepturus* es ampli⁹, ſed ipſi à facie majeſtatis tuæ ſeparati ſunt. Poſuiſti me in captivitatem quæ ſimilis eſt foveæ inferiori inter tenebras in profundo. Super me confirmatus eſt furor tuus, & omnes procellæ malæ attriverũt me, afflixiſti in æternũ. Elongâſti notos meos à me, poſuiſti me in execrationes illis, clauſum in domo vinctorũ ut non egrediar. Oculus meus ſtillavit lacrymas ob calamitatem: invocavi te Dñe omnibus dieb⁹: extendi ad te in oratione manus meas. Nunquid in mortuos edes miracula? an corpora quæ *diſſoluta* ſunt *in pulvere*, reſurgent [*ut*] confiteantur corā te in perpetuũ? Nũquid narrabitur in ſepulchro bonitas tua, & veritas tua in domo perditionis? Nunquid cognoſcentur in tenebris gehennæ miracula tua, & juſtitia tua in terra ſiccitatis & deſolationis? At ego in conſpectu tuo Domine oravi, & manè oratio mea præveniet te. Quare Domine *dereliquiſti animam meam*, abſcondes aſpectũ faciei tuæ à me, *ne videam in lumine tuo lumen?* Pauper ſum ego & expirans ab adoleſcentia: ſuſtinui *amorem* tui onus ſuper me. Super me tranſierunt iræ tuæ: terrores tui conciderunt me. Circundederunt me ſicut aquæ tota die: vallaverunt me ſimul. Elongâſti à me amicum & ſocium, & in *ore* notorum meorum obſcurus ſum.

Intellectus bonus dictus per manum Abrahæ qui venit de Oriente.

PSAL. LXXXIX.

M*Iſericordiam* Dñi in perpetuũ laudibus efferã, generationi et generationi annunciabo veritatē tuā ore meo. Quoniā dixi, Mundus miſericordiâ ædificatus eſt, in cœlis præparabis veritatem tuam. Diſpoſui fœdus Abraham electo meo, juravi Davidi ſervo meo: Vſq; in æternum firmabo filios tuos, & ædificabo in generationem & generationem ſedem regni tui in æternũ. Et confitebuntur cœli ſtupenda opera tua Dñe, inſuper veritatē tuam in eccleſia ſanctorum. Quoniā quis ille in æthere qui æquatur Domino, qui comparetur Domino inter choros angelorum? Deus fortis in ſecreto ſanctorum ſedens ſuper thronum gloriæ, & magnus timendúſque pluſquam omnes angeli qui aſſiſtunt circa eum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܐܬܚܫܒܬ ܥܡ ܢܚ̈ܬܝ ܓܘܒܐ. ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܠܝܬ ܠܗ ܡܥܕܪܢܐ: * ܒܝܬ ܡܝ̈ܬܐ 5 6
ܚܐܪܐ. ܐܝܟ ܩܛܝ̈ܠܐ ܕܫܟܝܒܝܢ ܒܩܒܪ̈ܐ: ܕܠܐ ܬܘܒ ܥܗܕܬ ܐܢܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܡܢ ܐܝܕܝܟ
ܐܒܕܘ: * ܐܪܡܝܬܢܝ ܠܓܘܒܐ ܬܚܬܝܐ. ܒܚܫܘܟܐ ܘܒܛܠܠܝ ܡܘܬܐ: * ܘܥܠܝ ܣܡܟ ܚܡܬܟ. 7 8
ܘܟܠܗܘܢ ܡܚܫܘܠܝܟ ܐܝܬܝܬ ܥܠܝ: * ܐܪܚܩܬ ܡܢܝ ܝܕ̈ܘܥܝ ܘܥܒܕܬܢܝ ܛܢܦܐ ܠܗܘܢ. 9
ܐܬܟܠܝܬ ܕܠܐ ܐܦܘܩ * ܘܥܝܢܝ ܚܫܟܬ ܡܢ ܡܘܟܟܝ: ܩܪܝܬܟ ܡܪܝܐ ܒܟܠ ܝܘܡ. ܘܦܫܛܬ ܠܟ 10
ܐܝܕ̈ܝ ܠܘܬܟ: * ܗܐ ܠܡܝ̈ܬܐ ܥܒܕ ܐܢܬ ܬܕܡܪ̈ܬܐ. ܘܓܢܒܪ̈ܐ ܢܩܘܡܘܢ ܘܢܘܕܘܢ ܠܟ: * ܕܝܐܦܣܠܡܐ * 11
* ܘܢܫܬܥܘܢ ܕܒܩܒܪ̈ܐ ܛܝܒܘܬܟ. ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܒܐܒܕܢܐ: * ܬܬܝܕܥ ܒܚܫܘܟܐ ܬܕܡܘܪܬܟ. 12 13
ܘܙܕܝܩܘܬܟ ܒܐܪܥܐ ܕܛܥܝܝܐ * ܘܐܢܐ ܠܟ ܡܪܝܐ ܩܥܝܬ. ܘܒܨܦܪܐ ܨܠܘܬܝ ܬܩܕܘܡ ܩܕܡܝܟ: 14
* ܠܐ ܬܬܛܥܐ ܢܦܫܝ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܗܦܟ ܐܦܝܟ ܡܢܝ: * ܡܣܟܢܐ ܐܢܐ ܘܠܐܐ ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ. 15 16
ܐܬܬܪܝܡܬ ܘܐܬܡܟܟܬ ܘܬܘܗܪܬ: * ܘܥܠܝ ܥܒܪ ܪܘܓܙܟ. ܘܫܓܘܫܝܟ ܫܬܩܘܢܝ: * ܐܚܕܪܘܢܝ 17 18
ܐܝܟ ܡܝ̈ܐ ܟܠܗ ܝܘܡܐ. ܘܣܡܘ ܥܠܝ ܐܟܚܕܐ: * ܐܪܚܩܬ ܡܢܝ ܪ̈ܚܡܝ ܘܚܒܪ̈ܝ. ܘܝܕ̈ܘܥܝ 19
ܥܒܪܬ ܡܢܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܦܚ *

* ܥܠ ܥܡܐ ܕܒܒܒܠ ܗܘܐ ܒܗ. 1

* ܛܝܒܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܥܠܡ ܐܙܡܪ. ܘܠܕܪ ܕܪ̈ܝܢ ܐܘܕܥ ܗܝܡܢܘܬܗ ܒܦܘܡܝ: * ܡܛܠ ܕܐܡܪܬ 2 3
ܥܠܡܐ ܒܛܝܒܘܬܐ ܢܬܒܢܐ. ܘܫܡܝܐ ܬܫܪܪ ܗܝܡܢܘܬܟ: * ܩܝܡܬ ܩܝܡܐ ܠܓܒܝܝ. 4
ܘܝܡܝܬ ܠܕܘܝܕ ܥܒܕܝ: * ܕܥܕܡܐ ܠܥܠܡ ܐܩܝܡ ܙܪܥܟ. ܘܐܒܢܐ ܠܕܪ ܕܪ̈ܝܢ ܟܘܪܣܝܟ: 5
* ܕܝܐܦܣܠܡܐ * ܢܘܕܘܢ ܫܡܝܐ ܬܕܡܪ̈ܬܟ ܡܪܝܐ. ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܒܥܕܬܐ ܕܩܕܝ̈ܫܐ: * ܡܢܘ 6 7
ܕܦܚܡ ܠܡܪܝܐ ܒܫܡܝ ܫܡܝܐ. ܘܕܡܐ ܠܡܪܝܐ ܒܒܢܝ̈ ܡܠܐܟܐ: * ܐܠܗܐ ܫܒܝܚ ܒܥܕܬܐ 8
ܕܩܕܝ̈ܫܐ. ܪܒ ܘܕܚܝܠ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܕܚܕܪ̈ܘܗܝ:

Reputatus ſum cum deſcendentibus in foveam & fact⁹ ſum ut vir cui non eſt adjumentũ; Inter mortuos liber, velut interfecti decumbentes in ſepulchris, quorũ ampliùs non meminiſti, quiq; è manib⁹ tuis perierunt. Demiſiſti me in foveā infimā, in tenebras & in umbras mortis: Et mihi incubuit ira tua, omneſque fluct⁹ tuos adduxiſti contra me: Abegiſti à me notos meos, & feciſti me illis pollutū: detentus fui quin egrederer, Et ocul⁹ me⁹ elanguit præ humilitate mea. Invocavi te Dñe ſingulis dieb⁹, & extendi manus meas ad te. En ergo mortuos facis admiranda, et gigantes ſurgent atq; confitebūtur tibi: * *Diapſal.* * Et narrabunt qui ſunt in ſepulchris bonitatē tuam, fidemque tuā in interitu. Notũ fiet in tenebris miraculũ tuũ, et juſtitia tua in terra quæ oblivioni data eſt. Et ego ad te Dñe clamavi, & matutino oratio mea maturè veniet ad te. Ne obliviſcaris animæ meæ Dñe, & ne avertas faciē tuā à me. Inops ego ſum, et fatigat⁹ à pueritia mea: exaltat⁹ ſũ, ac tũ depreſſus, & obſtupui: Et ſup me tranſiit indignatio tua, & conturbatio tua ſilere me fecit. Obſederunt me ſicut aquæ totā die, et poſuerũt contra me ſimul. Elongâſti à me amicos & ſodales meos: & notos meos abegiſti à me.

PSAL. LXXXIX.

De populo qui erat in Babel. Verſ.

BOnitatē Dñi perpetuò canā, & in generatione generationũ patefaciā fidē ejus ore meo. Quoniā dixiſti, Mund⁹ bonitate ædificabitur, & cœlũ confirmabit fides tua: Fœdus pepigi cũ electo meo, & juravi Davidi ſervo meo, Me uſq; in æternũ confirmaturũ ſemen tuũ, & ædificaturũ in generatione generationũ thronũ tuũ. * *Diapſal.* * Confitebuntur cœli mirabilia tua Dñe, et fidē tuā in cœtu ſanctorum. Quis eſt qui comparatur Domino in cœlis cœli, quique ſimilis Domino inter filios Angelorum? Deus in cœtu Sanctorum, magnus & formidabilis omnibus qui circa eum ſunt.

Verſio VULG. LAT.

Æſtimatus ſum cum deſcendentib⁹ in
lacum: factus ſum ſicut homo ſine ad-
jutorio, Inter mortuos liber, Sicut
vulnerati dormientes in ſepulchris,
quorum non es memor ampliùs: Et
7 ipſi de manu tua repulſi ſunt. Poſue-
runt me in lacu inferiori: in tene-
8 broſis, & in umbra mortis. Super me
confirmatus eſt furor tuus: & omnes
fluctus tuos induxiſti ſuper me. Longè
feciſti notos meos à me: poſuerunt
me abominationem ſibi. Traditus ſũ,
10 & non egrediebar: oculi mei lan-
guerunt præ inopiâ. Clamavi ad te,
Dñe, tota die: expandi ad te manus
11 meas. Numquid mortuis facies mira-
bilia: aut medici ſuſcitabunt, & con-
12 fitebuntur tibi? Numquid narrabit
aliquis in ſepulchro miſericordiam
tuam, & veritatem tuam in perdi-
13 tione? Numquid cognoſcentur in te-
nebris mirabilia tua, & juſtitia tua in
14 terra oblivionis? Et ego ad te, Dñe,
clamavi: & manè oratio mea præve-
15 niet te. Ut quid, Dñe, repellis oratio-
16 nem meã: avertis faciẽ tuã à me? Pau-
per ſũ ego, & in laborib⁹ à juventute
mea: exaltat⁹ autẽ, humiliatus ſum &
17 conturbatus. In me tranſierũt iræ tuæ:
18 & terrores tui conturbaverũt me. Cir-
cumdederunt me ſicut aqua totâ die:
19 circumdederunt me ſimul. Elongaſti à
me amicũ, & proximũ, & notos meos
à miſeria.

1 Intellect⁹ Ethan Ezrahitæ. LXXXVIII.

2 MIſericordias Dñi in æternũ can-
tabo. In generationẽ & genera-
tionẽ annuntiabo veritatẽ tuã in ore
3 meo. Quoniã dixiſti, In æternũ mi-
ſericordia ædificabitur in cœlis: præ-
4 parabitur veritas tua in eis. Diſpoſui
teſtamentũ electis meis, juravi David
5 ſervo meo: Uſq; in æternũ præparabo
ſemen tuũ. Et ædificabo in generatio-
6 nem et generationẽ ſedẽ tuã. Confite-
bũtur cœli mirabilia tua, Dñe: etenim
7 veritatẽ tuã in eccleſia ſanctorũ. Quoniã
quis in nubib⁹ æquabitur Dño: ſimilis
8 erit Deo in filiis Dei? De⁹, qui glorifi-
catur in cõſilio ſanctorũ: magn⁹ et terri-
bilis ſup omnes qui in circuitu ej⁹ ſũt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

5 † Προσελογίσθην μετὰ τῶν καταβαινόντων εἰς λάκκον,
6 † ἐγενήθην (δ) ὡς ἄνθρωπος ἀβοήθητος, Ἐν νε-
κροῖς ἐλεύθερος, † ὡσεὶ (ε) τραυματίαι ἐρριμμένοι
καθεύδοντες ἐν τάφῳ, ὧν οὐκ ἐμνήσθης ἔτι, † ϗ αὐτοὶ
7 ἐκ τῆς χειρός σου ἀπώσθησαν. † Ἔθεντό με ἐν λάκκῳ
8 κατωτάτῳ, † ἐν σκοτεινοῖς ϗ ἐν σκιᾷ θανάτου. † Ἐπ'
ἐμὲ ἐπεστηρίχθη ὁ θυμός σου, † ϗ πάντας τοὺς μετεω-
9 ρισμούς σου ἐπήγαγες ἐπ' ἐμέ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἐ-
μάκρυνας τοὺς γνωστούς μου ἀπ' ἐμοῦ, † ἔθεντό με βδέ-
λυγμα ἑαυτοῖς. † παρεδόθην ϗ οὐκ ἐξεπορευόμην.
10 † Οἱ ὀφθαλμοί μου ἠσθένησαν ἀπὸ πτωχείας· † (ϛ) ϗ ἐκέ-
κραξα πρὸς σὲ κύριε ὅλην τὴν ἡμέραν, † διεπέτασα
11 πρὸς σὲ τὰς χεῖράς μου. † Μὴ τοῖς νεκροῖς ποιή-
σεις θαυμάσια, † ἢ ἰατροὶ ἀναστήσουσι ϗ ἐξομολογή-
12 σονταί σοι; † Μὴ διηγήσεταί τις ἐν τάφῳ τὸ ἔλεός
13 σου, † ϗ τὴν ἀλήθειάν σου ἐν τῇ ἀπωλείᾳ; † Μὴ γνω-
σθήσεται ἐν τῷ σκότει τὰ θαυμάσιά σου, † ϗ ἡ δικαι-
14 οσύνη σου ἐν γῇ ἐπιλελησμένῃ; † (ζ) Κἀγὼ πρὸς σὲ
κύριε ἐκέκραξα, † ϗ τὸ πρωῒ ἡ προσευχή μου προφθά-
15 σει σε. † Ἵνα τί κύριε ἀπωθεῖς (η) τὴν προσευχήν μου,
16 ἀποστρέφεις τὸ πρόσωπόν σου ἀπ' ἐμοῦ; † Πτωχός εἰμι
ἐγὼ ϗ ἐν κόποις ἐκ νεότητός μου, † ὑψωθεὶς δὲ ἐτα-
17 πεινώθην ϗ ἐξηπορήθην. † Ἐπ' ἐμὲ διῆλθον αἱ
ὀργαί σου, † ϗ οἱ φοβερισμοί σου ἐξετάραξάν με· †
18 Ἐκύκλωσάν με ὡς ὕδωρ, ὅλην τὴν ἡμέραν † περιέσχον
19 με ἅμα. † Ἐμάκρυνας ἀπ' ἐμοῦ φίλον, † (θ) ϗ τοὺς
γνωστούς μου ἀπὸ ταλαιπωρίας.

MS. A. (δ) ὡσεὶ (ε) τραυματίαι καθεύδοντες (ϛ) ἐκέκρα-
ξα πρὸς (ζ) Καὶ ἐγὼ (η) τὴν ψυχήν (θ) ϗ πλησίον, ϗ τοὺς

Συνέσεως (α) Αἰθὰμ τῷ Ἰσραηλίτῃ. πη´.

1
2 † ΤΑ' ἐλέη σου κύριε εἰς τὸν αἰῶνα ᾄσομαι, † εἰς γε-
νεὰν ϗ γενεὰν ἀπαγγελῶ τὴν ἀλήθειάν σου ἐν τῷ στό-
3 ματί μου. † Ὅτι εἶπας, Εἰς τὸν αἰῶνα ἔλεος οἰκοδομη-
θήσεται, † ἐν τοῖς οὐρανοῖς ἑτοιμασθήσεται ἡ ἀλήθειά
4 σου. † Διεθέμην διαθήκην τοῖς ἐκλεκτοῖς μου, † ὤμο-
5 σα Δαυὶδ τῷ δούλῳ μου. † Ἕως τοῦ αἰῶνος ἑτοιμάσω
τὸ σπέρμα σου, † ϗ οἰκοδομήσω εἰς γενεὰν ϗ γενεὰν τὸν
6 θρόνον (β) σου. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἐξομολογήσονται οἱ οὐ-
ρανοὶ τὰ θαυμάσιά σου κύριε, † (γ) ϗ τὴν ἀλήθειάν σου ἐν
7 ἐκκλησίᾳ ἁγίων. † Ὅτι τίς ἐν νεφέλαις ἰσωθήσεται
τῷ κυρίῳ; † (δ) ϗ τίς ὁμοιωθήσεται τῷ κυρίῳ ἐν υἱοῖς
8 θεοῦ; Ὁ θεὸς ἐνδοξαζόμενος ἐν βουλῇ ἁγίων, † μέ-
γας † ϗ (ε) φοβερὸς ἐπὶ πάντας τοὺς περικύκλῳ αὐτοῦ.

MS. A. (α) Αἰθὰν (β) σου. Ἐξομολογήσονται (γ) ϗ
τὸ (δ) ὁμοιωθήσεται τῷ (ε) φοβερός ἐστιν ἐπὶ

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

4 Æſtimat⁹ ſum cũ deſcendentib⁹ in 5
lacum: factus ſum ſicut homo ſine ad-
jutorio, Inter mortuos liber. 5 Sicut 6
vulnerati (c) projecti dormientes in
ſepulchro, quorum nõ memoriſti am-
plius: [d] & ipſi de manu tua expul-
ſi ſunt. 6 Poſuerunt me in lacu (f) in- 7
fimo, in tenebroſis, & in umbra mor-
tis. 7 Super me confirmatus eſt (g) fu- 8
ror tuus, & [e] omnes (h) elationes
tuas induxiſti ſuper me. DIAPSAL-
MA. 8 Longè feciſti notos meos à 9
(i) me: (f) poſuerunt me abominati-
onẽ ſibi. 9 Traditus ſum, & non egre-
diebar: Oculi (k) mei infirmati ſunt 10
præ inopia. 10 Et (l) clamavi ad te,
Domine, totâ die: [g] expandi ad te
manus meas. 11 Numquid mortuis 11
facies [h] mirabilia? aut medici [i]
ſuſcitabunt, & confitebuntur tibi?
12 Numquid narrabit aliquis in ſe- 12
pulchro miſericordiã tuã, & veri-
tatẽ tuã [k] in perditione? 13 Num- 13
quid cognoſcentur in tenebris mira-
bilia tua, & juſtitia tua in terra ob-
litâ? 14 (m) Et [l] ego ad te, Dñe, cla- 14
mavi: et manè oratio mea præveniet
te. 15 Ut quid, Domine, repellis orati- 15
onẽ (n) meã: avertis faciem tuã à
me? 16 Inops ſum ego, & in labori- 16
b⁹ à juventute mea: exaltatus autẽ,
humiliatus ſum, & [m] confuſus. 17
In me tranſierunt iræ tuæ: & terro- 17
res tui conturbaverunt me. 18 Cir- 18
cumdederũt me, ſicut aqua totâ die
[n] circumdederunt me ſimul. 19 E- 19
longaſti à me amicum [o], (o) &
notos meos à miſeria.

Intellectûs [a] Æthan (a) Iſraelitæ. 1
LXXXVIII.

1 MIſericordias (b) tuas, Domine, 2
in æternũ cantabo: 2 in generationẽ
et generationẽ annuntiabo veritatẽ
tuã in ore meo. 3 Quoniã dixiſti, In 3
æternũ [b] miſericordia (c) ædifica-
bitur in cœlis [c] præparabitur veri-
tas (d) tua. 4 [d] Diſpoſui teſtamen- 4
tũ electis meis: juravi David [e]
ſervo meo, Uſq; in æternũ præpara- 5
bo ſemen tuũ: 5 et ædificabo in ge-
neratione et generationẽ ſedẽ tuã.
DIAPSALMA. 6 Confitebuntur 6
cœli [f] mirabilia tua, Domine, (e) et
veritatẽ tuam in eccleſia ſanctorũ. 7
7 Quoniam quis in (f) nubibus æ-
quabitur Domino? et quis ſimilis erit Domino inter filios Dei? 8 Deus, qui glorificatur in (g) con- 8
ſilio ſanctorũ magnus. (h) terribilis ſuper omnes qui in circuitu ejus ſunt.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወተኈለቍኩ፡ ምስለ፡ እለ፡ ይወርዱ፡ ውስተ፡ ዐ
ዘቅት፡፡ ወኮንኩ፡ ከመ፡ ብእሲ፡ ዘአልቦ፡ ረዳ
ኢ፡፡ ግዑዝ፡ ውስተ፡ ምውታን፡፡=፡ ከመ፡ ቅ
ቱላን፡ ወግዱፋን፡ እለ፡ ይሰክቡ፡ ውስተ፡ መቃ
ብር፡፡ እለ፡ ኢዘከርኮሙ፡ ለግሙራ፡፡ እስመ፡
እሙንቱሂ፡ ርሕቁ፡ እምእዴከ፡፡=፡ ወአንበ 6
ሩኒ፡ ውስተ፡ ዐዘቅት፡ ታሕተ፡፡ ውስተ፡ ጽል
መት፡ ወጽላሎተ፡ ሞት፡፡=፡ ላዕሌየ፡ ጸንዐ፡ 7
መዐትከ፡፡ ወኵሉ፡ መቅሠፍትከ፡ አምጻእ
ከ፡ ላዕሌየ፡፡=፡ አርሐቅ፡ እምኔየ፡ እለ፡ ይ 8
አምሩኒ፡፡ ወረሰይከኒ፡ ርኩሰ፡ በኀቤሆ
ሙ፡፡=፡ ተአኀዝኩ፡ አልብየ፡ ሙፃእ፡፡ አዕይ 9
ንትየኒ፡ ደከማ፡ በተጸንሶ፡፡=፡ ወጸራኅኩ፡ 10
ኀቤከ፡ እግዚኦ፡፡ ኵሎ፡ አሚረ፡ አንሥእኩ፡
እደዊየ፡ ኀቤከ፡=፡ ቦኑ፡ ለምውታን፡ ትገብ 11
ር፡ መንክረከ፡፡ ወዐቀብት፡ ሠራይት፡ ያነሥ
ኡ፡፡=፡ ወይነግሩ፡ እለ፡ ውስተ፡ መቃብ 12
ር፡ ሣህለከ፡፡ ወጽድቅከኒ፡ ውስተ፡ ሞት
ኑ፡፡=፡ ወይትዐወቁኑ፡ ውስተ፡ ጽልመት፡ 13
መንክርከ፡፡ ወርትዕከኒ፡ በምድርኑ፡ ተረስ
ዐ፡፡=፡ ወአንሰ፡ እግዚኦ፡ ኀቤከ፡ ጸራኅኩ፡፡ 14
በጽባሕ፡ ትበጽሐከ፡ ጸሎትየ፡ ቅድሜከ፡፡=፡
ለምንት፡ እግዚኦ፡ ትገድፋ፡ ጸሎትየ፡፡ ወት 15
መይጥ፡ ገጸከ፡ እምኔየ፡፡=፡ ነዳይ፡ አነ፡ ወሰራ 16
ኅ፡ እምንእስየ፡፡ ተልዒልየ፡ ተተሐትኩ፡ ወተ
መነንኩ፡፡=፡ ላዕሌየ፡ ኀለፈ፡ መቅሠፍት 17
ከ፡፡ ወግርማከ፡ አደንገፀኒ፡፡=፡ ዐገቱኒ፡ ኵ 18
ሎ፡ አሚረ፡ ከመ፡ ማይ፡፡ ወአኀዙኒ፡ ኅቡ
ረ፡፡=፡ አርሐቅ፡ እምኔየ፡ አዕርክትየ፡ ወ 19
ቢጽየ፡፡ ወአዝማድየ፡ እምተጸንሶየ፡፡=፡

ዘበአእምሮ፡ ኤማን፡ እስራኤላዊ፡፡

፹፰ ምሕረተከ፡ እሴብሕ፡ እግዚኦ፡ ለዓለ 1
ም፡፡=፡ ወአዜኑ፡ ጽድቀከ፡ በአፉየ፡ ለትው 2
ልድ፡ ትውልድ፡፡=፡ እስመ፡ ትቤ፡ ለዓለ 3
ም፡ እሐንጽ፡ ምሕረተ፡፡ በሰማይ፡ ጸንዓ፡ ጽ
ድቅከ፡፡=፡ ኪዳን፡ ተካየድኩ፡ ምስለ፡ ኅ 4
ሩያንየ፡፡ ወመሐልኩ፡ ለዳዊት፡ ገብርከ፡፡
ለዓለም፡ አስተዳሉ፡ ዘርአከ፡፡=፡ ወአሐን 5
ጽ፡ ለትውልደ፡ ትውልድ፡ መንበረከ፡፡=፡ ይ 6
ገንዩ፡ ሰማያት፡ ለስብሐቲከ፡ እግዚኦ፡፡ ወጽ
ድቅከኒ፡ በማኅበረ፡ ቅዱሳን፡፡=፡ መኑ፡ ይት 7
ዐረይ፡ ለእግዚአብሔር፡ በደመናት፡፡ ወመ
ኑ፡ ይመስሎ፡ ለእግዚአብሔር፡ እምደቂቀ፡
አማልክት፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ ስቡሕ፡ በ 8
ምክረ፡ ቅዱሳን፡፡ ዐቢይ፡ ወግሩም፡ ዲበ፡ ኵ
ሎሙ፡ እለ፡ አውዱ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [d] quoniã ipſi [e] omnẽ plagam tuam [f] & poſuiſti me abominationẽ apud eos. Apprehenderunt me, neq; erat mihi egreſſio: [g] levavi ad [h] mirabilia tua? [i] ſuſcitabunt? Nunquid [k] in morte? [l] ego quidem [m] contempt⁹. In me [n] detinuerunt me [o] meũ & proximũ meũ, & cognatos meos ab inopia mea. PSAL. LXXXVIII. [a] Aeman Iſraelitæ. [b] miſericordiam ædificabo: [c] ſtabilitur juſtitia tua. [d] Teſtamentum cum electis meis diſpoſui firmiter: [e] ſervo tuo; [f] gloriam tuam;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

5 * عدوني من الهابطين في الجب · صرت مثل انسان لا معين له * معدا في الاموات مثل قتلى 6
7 طريحين راقدين في القبور الذين لم تذكرهم بعد · وهم من يدك مقصيون * وضعوني في جب
8 سفلي في مواضع مظلمة · وظلال الموت * اشتد علي سخطك · وعشيتني جميع اهوالك * ابعدت 9
10 عني معارفي · تركوني لهم رذالا · دفعت فلم انطق * عيناي من المسكنة ضعفتا · وصرخت اليك
11 يا رب · النهار كله بسطت يدي نحوك * هل تصنع في الموتى عجائبك · او الفلاسفة يقومون
12 ويعترفون لك * وهل يخبر احد في القبر برحمتك · او عند الهالكة امانتك * وهل تعرف في الظلمة 13
14 عجائبك · او عدلك في الارض المنسية * وانا اليك يا رب صرخت · وصلاتي تسبق فتبلغ اليك
15 في الغدوات * لماذا يا رب تقصي نفسي · وصرفت وجهك عني * فاني المسكين وفي الاتعاب منذ 16
17 صباي · وحين ارتفعت اتضعت وتحيرت * وجاء علي غضبك · واقلقني تخويفك * واحاطت بي 18
19 مثل الماء · واستولت علي جميعا النهار كله * ابعدت عني الصديق والقريب ومعارفي من المسكنة
الليلويا · المزمور الثامن والثمانون ·
1 * فهم لناثان الاسرائيلي وعدده قب استيخن
2 * مراحمك يا رب اسبحها الى الابد · اخبر بعدلك بفمي من جيل الى جيل * لانك قلت ان 3
4 الرحمة تبنى الى الابد · انصب في السموات امانتك * قررت عهدا مع مختاري · حلفت لداود
5 عبدي * اني مصلح زرعك الى الابد · وبيت كرسيك من جيل الى جيل * السموات معترفة 6
7 بعجائبك يا رب · وحقك في مجمع القديسين * لانه من في السحاب سيشبه الرب · ومن يشبه الرب
8 في ابناء الله * الله ممجد في مشورة القديسين · هو عظيم ومرهوب عند كل من حوله ·

Annumeraverunt me inter deſcendentes in 5
foveã: factus ſum ſicut homo cui nullus eſt
adjutor: Computat⁹ inter mortuos inſtar 6
occiſũ abjectorũ, jacentiũ in ſepulchris,
quorũ non meminiſti ampliùs, quiq; ſunt è
manu tua propulſati. Poſuerunt me in fo- 7
vea profunda, in locis tenebroſis, & umbrâ
mortis. Invaluit adverſũ me furor tu⁹, & 8
operuerunt me omnes fluct⁹ tui. Elongâ- 9
ſti à me notos meos, reliquerunt me ſibi
cõtemptioni: traditus ſum, et non ſum lo-
cutus. Oculi mei propter paupertatẽ infir- 10
mati ſunt; quapropter clamavi ad te, O Do-
mine: totâ die extendi manus meas ad te.
Num facturus es erga mortuos miracula 11
tua, aut Philoſophi ſurgent, & confitebun-
tur tibi? Et num enarrabit quis in ſepul- 12
chro miſericordiã tuã, aut apud perditos
fidẽ tuã? Et nũ cognoſcentur in tenebris 13
mirabilia tua, aut juſtitia tua in terra ob-
livionis traditâ? Et ego ad te, O Domine, 14
clamavi: & oratio mea maturè perveniet
ad te in matutinis. Quare, O Domine, ex- 15
terminas animã meã, & avertiſti faciem
tuã à me? Ego enim ſũ pauper ille, & in 16
laboribus à pueritia meâ: & quando ex-
altatus ſũ, humiliatus ſũ, & obſtupui; Et 17
invaſit me furor tuus, & conturbaverunt
me terrores tui. Et circumdederunt me ſicut 18
aqua, & ſuperemicuerunt mihi ſimul die
totâ. Elongaſti à me amicũ & proximũ, 19
& notos meos præ paupertate. Alleluja.

PSAL. LXXXVIII.

Intellectus Nathan Iſraelitæ. Et 1
numerus verſ. 102.

MIſericordias tuas, O Domine, cele- 2
brabo in æternũ: enarrabo fidem
tuam ore meo ab ævo in ævum. Quia enim 3
dixiſti, quod miſericordia ædificabitur in
æternum, [illegible] in cœlis fidem tuam. Pepigi
fœdus cum electis meis, juravi Davidi 4
ſervo meo. Quod ego diſponam ſemen 5
tuum in æternum, & [illegible] ſedem tuam
a generatione in generationem. Cœli 6
confitebuntur miracula tua, O Domine,
[illegible] ſanctorum. Nam 7
quis in nubibus ſimilis Domino? [illegible]
Deus [illegible] in conſilio ſanctorum, 8
magnus [illegible]

תהלים : פט

[illegible] circuitu tua veritas & Jah fortis tu sicut quis ,exercituū Deus Domine
9 יהוה אלהי צבאות מי־כמוך חסין יה ואמונתך סביבותיך׃
Tu .eos compesces tu ,ejus fluctus elevando in : maris elatione in dominans Tu
10 אתה מושל בגאות הים בשוא גליו אתה תשבחם׃ אתה 11
dispersisti tuæ fortitudinis brachio in : Rahab vulneratum tanquam confregisti
דכאת כחלל רהב בזרוע עזך פזרת
tu ejus plenitudinē & orbem : terra tibi etiam ,cœli Tibi .tuos inimicos
12 אויביך׃ לך שמים אף־לך ארץ תבל ומלאה אתה
tuo nomine in Chermon & Tabor .ea creâsti tu dexteram & ,Aquilonē .ea fundâsti
13 יסדתם׃ צפון וימין אתה בראתם תבור וחרמון בשמך
.tua dextera exaltetur,tua man⁹ roboretur:fortitudine cum brachiū Tibi .personabunt
14 ירננו׃ לך זרוע עם־גבורה תעז ידך תרום ימינך׃
.tuas facies præcedent veritas & misericordia :tui solii paratus locus judiciū & Justitia
15 צדק ומשפט מכון כסאך חסד ואמת יקדמו פניך׃
.ambulabunt tuarū facierum lumine in Domine :jubilationē scientium populi Beatitudines
16 אשרי העם יודעי תרועה יהוה באור־פניך יהלכון׃
gloria Quoniā .se exaltabūt tua justitia in & : die omni exultabūt tuo nomine In
17 18 בשמך יגילון כל־היום ובצדקתך ירומו׃ כי־תפארת
Domino Quia .nostrum cornu exaltabis tua voluntate in & : tu eorū fortitudinis
19 עזמו אתה וברצונך תרים קרננו׃ כי ליהוה
visione in es locutus Tunc .noster Rex Israelis sancto & : noster clypeus
20 מגננו ולקדוש ישראל מלכנו׃ אז דברת־בחזון
electum exaltavi : potentem super adjutorium Posui ,dixisti & ,tuo misericordi
לחסידיך ותאמר שויתי עזר על־גבור הרימותי בחור
.eum unxi meæ sanctitatis oleo in : meum servum David Inveni .populo de
21 מעם׃ מצאתי דוד עבדי בשמן קדשי משחתיו׃
Non .eum roborabit meū brachium etiam : eo cum erit firma mea manus Quo
22 23 אשר ידי תכון עמו אף־זרועי תאמצנו׃ לא
contundam Et .eum affliget non iniquitatis filius & : eo in inimicus exiget
24 ישא אויב בו ובן־עולה לא יעננו׃ וכתותי
,mea veritas Et .percutiam eum habentes odio & : ejus hostes ejus faciebus à
25 מפניו צריו ומשנאיו אגוף׃ ואמונתי
ponam Et .ejus cornu exaltabitur meo nomine in & : ipso cum mea misericordia &
26 וחסדי עמו ובשמי תרום קרנו׃ ושמתי
meus Pater ,me invocabit Ipse .ejus dexteram fluminibus in & :ejus manū mari in
27 בים ידו ובנהרות ימינו׃ הוא יקראני אבי
: eum dabo primogenitum ego Etiam .meæ salutis rupes & ,meus Deus : tu
28 אתה אלי וצור ישועתי׃ אף־אני בכור אתנהו
: meam misericordiam ei custodiam seculum In .terræ regibus excelsum
29 עליון למלכי־ארץ׃ לעולם אשמור־לו חסדי
ejus thronum & : ejus semen perpetuum in ponam Et .ipsi erit fidele meū pactum &
30 ובריתי נאמנת לו׃ ושמתי לעד זרעו וכסאו
meis judiciis in & : meam legem ejus filii dereliquerint Si .cælorum dies sicut
31 כימי שמים׃ אם־יעזבו בניו תורתי ובמשפטי
non mea præcepta & : prophanaverint mea statuta Si .ambulaverint non
32 לא ילכון׃ אם־חקתי יחללו ומצותי לא
.eorū iniquitatē plagis in & :eorū prævaricationē virga in visitabo Et .custodierint
33 ישמרו׃ ופקדתי בשבט פשעם ובנגעים עונם׃
.mea veritate in fallam neque : eo cum à infringam non meam misericordiam At
34 וחסדי לא־אפיר מעמו ולא אשקר באמונתי׃

תרגום TARGUM.

9 יי אלהא על כל חילי מרומא מן דכותך חסינא
יי וקושטך חזור לך׃ את שליט בגיותנותא דימא 10
כד מתרבא מתנטלין גלוי אנת תמאיכנון׃ את 11
שפית היך קטיל דחרבא רהבא הוא פרעה
רשיעא בתקוף אדרע עושנך בדרתא בעלי
דבבך׃ די לך שמיא לחוד די לך ארעא תבל 12
ומליה את יסדתנון׃ מדבריא די בצפונא ויתבין 13
די בדרומא וחרמון די במדנחא בשמך משבחין׃
די לך אדרעא עם גבורתא תעשן ידך למפרק 14
עמך תרום ימינך לשכללא בית מקדשך׃ צדקתא 15
ודינא מדור כורסי יקרך טיבו וקשוט מקדמין
אפך׃ טוביהון דעמא דידעין לרצויי בריהון 16
ביבבא יי בנהור זיו אפך יהלכון ויזכון בדינא׃
בשמך ירננון כל יומא ובצדקתך יתרוממון׃ 17
ארום שבהור עושנהון את וברעותך תרים 18
קרנהון׃ ארום דיי הנון תריסנא ודיי קדיש 19
ישראל מלכנא׃ כהדין מללתא בחזונא 20
לחסידיך ואמרת שויתי סעיד לעמי על ידיה
דמתגבר באוריתא אפרשית עולים מן בני
עמא׃ אשכחית דוד עבדי במשח קודשא רביתי 21
יתיה׃ די אידי מתקנן בסעדיה ברם אדרעי 22
תחילניה׃ לא יטעי בעל דבבא ביה ובר רשיעא 23
לא יסגפניה׃ ואשוף מן קדמוי מעיקוי ומסנאוי 24
אגוף׃ וקושטי וטובי עמיה ובשום מימרי 25
תרומם יקריה׃ ואשוי במחוזי ימא שולטניה 26
וביתבי על נהרותא גבורת ימיניה׃ הוא יקרי 27
לי אבא את אלהא ותקוף פורקני׃ לחוד אנא 28
בוכרא למלכיא דבית יהודה אתנניה עלאה על
מלכי ארעא׃ לעלם אטור ליה טובי וקימי 29
מהימנא ליה׃ ואשוי לעלמין בנוי וכורסיה 30
כיומיא דיקומון שמיא׃ אין ישבקון בנוי אוריתי 31
ובדיני לא יהלכון׃ אין קימי יפסו ופקודי 32
לא ינטרון׃ ואסער על ידיהון דשבטא 33
דרשיעין מרדיהון ובמויקיא במכתשין להון
עויתהון׃ וטובי לא אבטל מניה ולא אשקר 34
בהמנותי׃

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Domine Deus super omnes virtutes excelsas, quis sicut tu fortissime Domine? & veritas tua circundat te. Tu potestatem habes in elationem maris: quando excrescit [et] intumescunt fluctus ejus, tu deprimis eos. Tu contrivisti veluti interfectum gladio, superbum, hic est Pharao impius in fortitudine brachii roboris tui dispersisti inimicos tuos. Tui sunt cœli, & insuper tua est terra; orbē & plenitudinē ej⁹ tu fundasti. *Deserta* Aquilonis habitatorésque Austri, & Hermon ab Oriente in nomine tuo laudes dicunt. Tuū est brachiū cum fortitudine: roborabis manū tuā ut redimas populū tuū, exaltabis dexterā tuā ut ædifices domū sanctuarii tui. Justitia & judiciū habitatio sedis gloriæ tuæ, benignitas & veritas præcedunt faciem tuā. Beatus popul⁹ qui novit complacére creatori suo cum jubilo: Dñe in lumine splendoris faciei tuæ ambulabunt, & justificabuntur in judicio. In nomine tuo exultabūt tota die, & in justitia tua exaltabuntur. Quoniā gloria fortitudinis eorū tu es: & in beneplacito tuo extolles *cornu eorū*. Quoniā Dñi sunt protectiones *nostræ*, & *Domini* sancti Israel regis nostri. Tunc locutus es in visione piis tuis, & dixisti: Posui adjutoriū populo meo, per manum ejus qui valet in lege, secrevi juvenē de populo. Inveni Davidē servū meū: unctione sanctitatis meæ unxi eū. Quoniā manus meæ paratæ sunt in adjutorio ejus: sed & brachiū meū virtutē dabit ei. Non decipiet eū auctor inimicitiæ, & filius impietatis non affliget eum. Conteram enim à conspectu ejus qui angunt eum; & qui odio prosequuntur eum feriam. Et veritas mea & bonitas mea cum ipso, & in nomine Verbi mei exaltabitur gloria ejus. Et statuam in regionibus maris imperium ejus, & in his qui habitant juxta flumina robur dexteræ ejus. Ipse invocabit me, Pater meus es tu, Deus meus & fortitudo redemptionis meæ. Sed ego primogenitum regum domus Judæ ponam eum, sublimem super reges terræ. In æternum servabo illi benignitatem meam, & pactum meum fidele ipsi erit. Et ponam in perpetuum filios ejus, & sedem ejus juxta dies quibus steterint cœli. Si dereliquerint filii ejus Legem meam, & in judiciis meis non ambulaverint: Si præcepta mea polluerint, & mandata mea non custodierint: Visitabo per manum tribus impiorum scelera eorum, & nocumentis plagarum *ipsis* iniquitates eorum. Bonitatem autem meam non auferam ab eo, & non mentiar in fide mea.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

9 ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܡܢܘ ܐܟܘܬܟ ܚܣܝܢܐ : ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܚܕܪܝܟ. * ܐܢܬ ܫܠܝܛ ܐܢܬ
10 11 ܒܫܘܒܗܪܗ ܕܝܡܐ : ܘܙܘܥܐ ܕܓܠܠܘܗܝ ܐܢܬ ܡܫܬܩ ܐܢܬ. * ܐܢܬ ܡܟܟܬ ܐܢܬ ܠܫܒܗܪܢܐ ܐܝܟ
12 ܩܛܝܠܐ : ܒܕܪܥܐ ܕܚܝܠܟ ܒܕܪܬ ܒܥܠܕܒܒܝܟ. * ܕܝܠܟ ܐܢܘܢ ܫܡܝܐ ܘܕܝܠܟ ܗܝ ܐܪܥܐ :
13 ܬܒܝܠ ܘܡܠܐܗ̇ ܐܢܬ ܛܝܒܬ : ܓܪܒܝܐ ܘܬܝܡܢܐ ܐܢܬ ܒܪܝܬ. * ܬܒܘܪ ܘܚܪܡܘܢ ܒܫܡܟ
14 ܡܫܒܚܝܢ. * ܕܝܠܟ ܗܘ ܕܪܥܐ ܘܕܝܠܟ ܗܝ ܓܢܒܪܘܬܐ : ܬܬܥܫܢ ܐܝܕܟ ܘܬܬܪܝܡ ܝܡܝܢܟ.
15 16 * ܒܙܕܝܩܘܬܐ ܘܒܕܝܢܐ ܡܬܩܢ ܟܘܪܣܝܟ : ܒܛܝܒܘܬܐ ܘܒܩܘܫܬܐ ܡܩܕܡܝܢ ܐܦܝܟ. * ܛܘܒܘܗܝ
17 ܠܥܡܐ ܕܝܕܥ ܬܫܒܘܚܬܟ : ܡܪܝܐ ܒܢܘܗܪܐ ܕܐܦܝܟ ܢܗܠܟܘܢ. * ܘܒܫܡܟ ܢܬܦܨܚܘܢ ܟܠܝܘܡ :
18 ܘܒܙܕܝܩܘܬܟ ܢܬܬܪܝܡܘܢ. * ܡܛܠ ܕܫܘܒܚܐ ܕܥܘܫܢܢ ܐܢܬ ܗܘ : ܘܒܨܒܝܢܟ ܬܬܪܝܡ
19 20 ܩܪܢܢ. * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܗܘ ܬܘܟܠܢ : ܘܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܠܟܢ. * ܗܝܕܝܢ ܡܠܠܬ ܒܚܙܘܐ
21 ܠܙܕܝܩܝܟ : ܘܐܡܪܬ ܣܡܬ ܥܘܕܪܢܐ ܥܠ ܓܢܒܪܐ. ܘܐܪܝܡܬ ܓܒܝܐ ܡܢ ܥܡܐ : * ܘܐܫܟܚܬ
22 23 ܠܕܘܝܕ ܥܒܕܝ. ܘܒܡܫܚܐ ܕܩܘܕܫܝ ܡܫܚܬܗ : * ܐܝܕܝ ܬܣܥܘܕܝܘܗܝ ܘܐܦ ܕܪܥܝ ܬܚܝܠܝܘܗܝ. * ܘܠܐ ܐܘܬܪ ܒܗ
24 ܒܥܠܕܒܒܐ : ܘܒܪܗ ܕܥܘܠܐ ܠܐ ܡܟܟܗ. * ܘܐܬܒܪ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܒܥܠܕܒܒܘܗܝ :
25 ܘܠܣܢܐܘܗܝ ܐܬܒܪ. * ܗܝܡܢܘܬܝ ܘܛܝܒܘܬܝ ܥܡܗ : ܘܒܫܡܝ ܬܬܪܝܡ ܩܪܢܗ. * ܘܐܣܝܡ
26 27 * ܒܝܡܐ * * ܐܝܕܗ ܘܒܢܗܪܘܬܐ ܝܡܝܢܗ. * ܗܘ ܢܩܪܝܢܝ ܐܒܝ ܐܢܬ : ܐܠܗܝ
28 29 ܘܦܪܘܩܝ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܐܦ ܐܢܐ ܒܘܟܪܐ ܐܣܝܡܝܘܗܝ : ܘܐܪܝܡܝܘܗܝ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܠܥܠܡ
30 ܐܛܪ ܠܗ ܛܝܒܘܬܝ : ܘܩܝܡܝ ܢܗܘܐ ܡܗܝܡܢ ܠܗ. * ܐܣܝܡ ܠܥܠܡ ܙܪܥܗ : ܘܟܘܪܣܝܗ ܐܝܟ
31 33 ܝܘܡܬܐ ܕܫܡܝܐ. * ܐܢ ܢܫܒܩܘܢ ܒܢܘܗܝ ܢܡܘܣܝ : ܘܒܦܘܩܕܢܝ ܠܐ ܢܗܠܟܘܢ. ** * ܐܦܩܘܕ
34 ܒܫܒܛܐ ܥܘܠܗܘܢ : ܘܒܡܚܘܬܐ ܚܛܗܝܗܘܢ. * ܛܝܒܘܬܝ ܠܐ ܐܥܒܪ ܡܢܗ : ܘܠܐ ܐܫܩܪ ܒܗܝܡܢܘܬܝ.

Dñe Deus fortissime, quis ut tu potens, fide tuâ circum te existente? Tu præes nitori maris, & agitationem fluctuum ejus tu sedas. Tu humilias superbos tanquā occisos: brachio tuo valido dissipâsti inimicos tuos. Tui sunt cœli, & tua est terra: orbē cum plenitudine ipsius tu præparâsti: Aquilonem & Austrum tu creâsti. Tabor & Hermon nomē tuū glorificant. Tibi est brachiū, & tibi est potentia; magnificetur man⁹ tua, & exaltetur dextera tua. Justitiâ & judicio firmū est solium tuū: bonitate & veritate præoccupatur vultus tuus. Beat⁹ popul⁹ qui scit laudationes tuas: Dñe in lumine faciei tuæ ambulabunt, Et in nomine tuo exhilarabuntur quotidie, & in justitia tua sese attollent. Quoniam gloria roboris nostri tu es, teq; volente exaltabitur cornu nostrū. Quoniā Dñs est fiducia nostra & Sanctus Israelis Rex noster: Tunc locut⁹ est per visiones cum justis suis, ac dixit, Statui pro adjutorio virum, et extuli selectū è populo: Et inveni Davidem servum meū, & oleo sanctitatis meæ unxi eum: Manus mea auxiliata est ei, etiā brachiū meū roboravit illū. Et non profecit quidquā inimicus ej⁹, & filius iniqui non humiliavit illū. Perdā è conspectu ej⁹ hostes ipsi⁹, & osores ej⁹ conterā. Fides mea & gratia mea cū ipso, & in nomine meo exaltabitur cornu ej⁹. **Diapsal.* *Siste* Ponam manum ejus in mari, & in fluminibus dexterā ejus. Ipse vocabit me, dicens, Pater me⁹ tu es, Deus me⁹ & liberator meus potentissimus. Et ego quoque primogenitū constituā illū, & elevabo eum super reges terræ: Et in æternū servabo illi bonitatem meā, & fœdus meū fidele erit erga ipsum: Ponam in seculū semen ej⁹, & soliū ej⁹ sicut dies cœli. Si deseruerint filii ej⁹ legē meā, & in præceptis meis non ambulaverint: Visitabo virga iniquitatē eorum, & flagello peccata eorum. Bonitatem meam non avertam ab illo, & non mentiar in fide mea,

Versio VULG. LAT.

Domine Deus virtutũ, quis similis tibi?
potens es, Dñe, & veritas tua in cir-
cuitu tuo. Tu dominaris potestati ma-
ris: motum autem fluctuũ ejus tu mi-
tigas. Tu humiliâsti sicut vulneratum,
superbum: in brachio virtutis tuæ di-
spersisti inimicos tuos. Tui sunt cœli,
& tua est terra, orbẽ terræ & plenitu-
dinem ejus tu fundâsti: Aquilonem &
mare tu creâsti. Thabor & Hermon in
14 nomine tuo exultabunt: Tuũ brachiũ
cum potentia. Firmetur man⁹ tua, &
15 exaltetur dextera tua: Justitia & judi-
ciũ preparatio sedis tuæ. Misericordia
16 & veritas præcedent faciẽ tuã: Beatus
popul⁹, qui scit jubilationẽ. Dñe, in
17 lumine vult⁹ tui ambulabunt, Et in
nomine tuo exultabunt totâ die: & in
18 justitia tua exaltabuntur. Quoniã glo-
ria virtutis eorũ tu es: et in beneplaci-
19 to tuo exaltabitur cornu nostrũ. Quia
Domini est assumptio nostra, & sancti
20 Israel regis nostri. Tunc locutus es in
visione sanctis tuis, & dixisti; Posui
adjutoriũ in potente: & exaltavi e-
21 lectum de plebe mea. Inveni David
servum meum: oleo sancto meo unxi
22 eum. Manus enim mea auxiliabitur
ei: & brachium meum confortabit
23 eum. Nihil proficiet inimicus in eo,
& filius iniquitatis non apponet no-
24 cere ei. Et concîdam à facie ipsius
inimicos ejus: & odientes eum in fu-
25 gam convertam. Et veritas mea,
& misericordia mea cum ipso: et
in nomine meo exaltabitur cornu e-
26 jus. Et ponam in mari manum ejus,
27 & in fluminibus dexteram ejus. Ipse
invocabit me, Pater meus es tu: De-
us meus, & susceptor salutis meæ:
28 Et ego primogenitum ponam illum
29 excelsum præ regibus terræ. In æter-
num servabo illi misericordiam me-
am: & testamentum meum fidele ipsi.
30 Et ponam in seculum seculi semen
ejus, & thronum ejus sicut dies cœli.
31 Si autem dereliquerint filii ejus legem
meam: & in judiciis meis non ambu-
32 laverint: Si justitias meas profana-
verint: et mandata mea non custodi-
33 erint: Visitabo in virga iniquitates
eorum: & in verberibus peccata eo-
34 rum. Misericordiam autem meam non
dispergam ab eo: neque nocebo in
veritate mea:

Versio GRÆC. LXX. Interp.

9 † Κύριε ὁ Θεὸς τῶν δυνάμεων, τίς ὅμοιός σοι; † Δυ-
10 νατὸς εἶ κύριε, καὶ ἡ ἀλήθειά σου κύκλῳ σου. † Σὺ
δεσπόζεις τοῦ κράτους τῆς θαλάσσης, † τὸν δὲ σάλον τῶν
11 κυμάτων αὐτῆς σὺ (ˉ) καταπραΰνεις. † Σὺ ἐταπεί-
νωσας ὡς τραυματίαν, ὑπερήφανον, † (ε) καὶ ἐν τῷ βρα-
χίονι τῆς δυνάμεώς σου διεσκόρπισας τοὺς ἐχθρούς σου.
12 † Σοί εἰσιν οἱ οὐρανοί, καὶ σή ἐστιν ἡ γῆ, † τὴν οἰκουμέ-
13 νην καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς σὺ ἐθεμελίωσας. † Τὸν
Βοῤῥᾶν (ζ) καὶ θάλασσαν σὺ ἔκτισας, † Θαβὼρ καὶ
14 (η) Ἑρμὼν ἐν τῷ ὀνόματί σου ἀγαλλιάσονται. † Σὸς
ὁ βραχίων μετὰ δυναστείας· † κραταιωθήτω ἡ χείρ
15 σου, ὑψωθήτω ἡ δεξιά σου. † Δικαιοσύνη καὶ κρίμα
ἑτοιμασία τοῦ θρόνου σου· † ἔλεος καὶ ἀλήθεια προ-
16 πορεύσονται πρὸ προσώπου σου. † Μακάριος ὁ λαὸς
ὁ γινώσκων ἀλαλαγμόν· † κύριε ἐν τῷ φωτὶ τοῦ
προσώπου σου πορεύσονται, † Καὶ ἐν τῷ ὀνόματί σου
17 ἀγαλλιάσονται ὅλην τὴν ἡμέραν, † καὶ ἐν τῇ δικαιοσύ-
νῃ σου ὑψωθήσονται. † (θ) Ὅτι τὸ καύχημα τῆς δυ-
18 νάμεως αὐτῶν (ι) σὺ εἶ, † καὶ ἐν τῇ εὐδοκίᾳ σου
ὑψωθήσεται τὸ κέρας ἡμῶν. † Ὅτι τοῦ κυρίου ἡ ἀντί-
19 ληψις, † καὶ τοῦ ἁγίου Ἰσραὴλ βασιλέως ἡμῶν. † Τό-
20 τε ἐλάλησας ἐν ὁράσει τοῖς υἱοῖς σου, † καὶ εἶπας,
Ἐθέμην βοήθειαν ἐπὶ δυνατόν, † ὕψωσα ἐκλε-
κτὸν ἐκ τοῦ λαοῦ μου. † Εὗρον Δαυὶδ τὸν δοῦλόν μου,
21 † (κ) ἐν ἐλέει ἁγίῳ ἔχρισα αὐτόν. † Ἡ γὰρ χείρ
22 μου συναντιλήψεται αὐτῷ, † καὶ ὁ βραχίων μου κατι-
23 σχύσει αὐτόν. † Οὐκ ὠφελήσει ἐχθρὸς ἐν αὐτῷ, † καὶ
24 υἱὸς ἀνομίας οὐ προσθήσει τοῦ κακῶσαι αὐτόν. † Καὶ
συγκόψω (λ) ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ τοὺς ἐχθροὺς αὐ-
25 τοῦ, † καὶ τοὺς μισοῦντας αὐτὸν τροπώσομαι. † Καὶ ἡ
ἀλήθειά μου καὶ τὸ ἔλεός μου μετ᾽ αὐτοῦ, † καὶ ἐν τῷ
26 ὀνόματί μου ὑψωθήσεται τὸ κέρας αὐτοῦ. † Καὶ
θήσομαι ἐν θαλάσσῃ χεῖρα αὐτοῦ, † καὶ ἐν ποτα-
27 μοῖς δεξιὰν αὐτοῦ. † Αὐτὸς ἐπικαλέσεταί με,
Πατήρ μου εἶ σύ, † (ˉ) Θεός μου καὶ ἀντιλήπτωρ τῆς σω-
28 τηρίας μου. † (μ) Κἀγὼ πρωτότοκον θήσομαι αὐ-
29 τόν, † ὑψηλὸν παρὰ τοῖς βασιλεῦσι τῆς γῆς. † Εἰς
τὸν αἰῶνα φυλάξω αὐτῷ τὸ ἔλεός μου, † καὶ ἡ διαθή-
30 κη μου πιστὴ αὐτῷ. † Καὶ θήσομαι εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ
αἰῶνος τὸ σπέρμα αὐτοῦ, † καὶ τὸν θρόνον αὐτοῦ ὡς
31 τὰς ἡμέρας τοῦ οὐρανοῦ. † Ἐὰν ἐγκαταλίπωσιν οἱ
υἱοὶ αὐτοῦ τὸν νόμον μου, † καὶ τοῖς κρίμασί μου μὴ
32 πορευθῶσιν· † Ἐὰν τὰ δικαιώματά μου (ν) βεβη-
33 λώσωσι, † καὶ τὰς ἐντολάς μου μὴ φυλάξωσιν· † Ἐπι-
σκέψομαι ἐν ῥάβδῳ τὰς ἀνομίας αὐτῶν, † καὶ ἐν
34 μάστιξι τὰς (ξ) ἁμαρτίας αὐτῶν. † Τὸ δὲ ἔλεός μου
οὐ μὴ διασκεδάσω ἀπ᾽ αὐτοῦ, † (ο) οὐδὲ μὴ ἀδική-
σω ἐν τῇ ἀληθείᾳ μου,

MS.A. (ˉ) καταπραΰνῃς. (ε) ἐν τῷ (ζ) καὶ τὴν θάλασσαν
(η) Ἑρμωνιεὶμ τῷ ὀνόματί (θ) Ὅτι καύχημα (ι) εἶ σύ,
(κ) ἐν ἐλαίῳ ἁγίῳ μου ἔχρισα (λ) τοὺς ἐχθρούς μου ἀπὸ
προσώπου αὐτοῦ, (ˉ) ὁ Θεός (μ) Καὶ ἐγὼ (ν) βεβηλώσουσιν, (ξ) ἀδικίας (ο) οὐδ᾽ οὐ μὴ ἀδικήσω

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

9 Domine Deus virtutum, quis similis tibi? potens es, Domine, & veritas tua in circuitu tuo. 10 Tu dominaris potestati maris: [g] motum autem fluctuum ejus tu mitigas. 11 Tu humiliâsti sicut vulneratum, superbum: & in brachio virtutis tuæ dispersisti inimicos tuos. 12 Tui sunt cœli, & tua est terra: orbem terrarum, & plenitudinem ejus tu fundâsti. (i) Aquilonem & mare tu creâsti: 13 Thabor & Hermon in nomine tuo (k) exultabunt: [h] Tuũ brachium cum (l) potentia: 14 (m) firmetur manus tua: exaltetur dextera tua. Justitia, & judicium præparatio sedis tuæ: 15 misericordia et veritas præibunt ante faciem tuam. Beatus populus, qui scit jubilationem. 16 Domine, in lumine vultûs tui ambulabunt: Et in nomine tuo exultabunt totâ die: & in tua justitia exaltabuntur. 17 Quoniã gloria virtutis eorum tu es: & in beneplacito tuo exaltabitur cornu nostrum. 18 Quoniã [i] Domini est (n) susceptio, & sancti Israel regis nostri. 19 [k] Tunc loquut⁹ es in (o) visione filiis tuis, & dixisti; Posui adjutorium super potentem: exaltavi electum de populo meo. 20 Inveni David servum meum: [l] in (p) misericordia sancta unxi eum. 21 Manus enim mea auxiliabitur ei: & brachium meum confortabit eum. 22 Non proficiet inimicus in eo: & filius iniquitatis (q) non apponet nocere ei. 23 Et concîdam à facie ipsius inimicos ejus, & odientes eum, [m] in fugam convertam. 24 Et veritas mea, & misericordia mea cum ipso: & in nomine meo exaltabitur cornu ejus. 25 Et ponam in mari manum ejus, et in fluminibus dexteram ejus. 26 Ipse invocabit me; Pater meus es tu: Deus meus, [n] et susceptor salutis meæ. 27 Et ego primogenitum ponam illum, excelsum (r) apud reges terræ. 28 In æternum servabo illi misericordiam meam: [o] et testamentum meum fidele ipsi. 29 Et ponam in seculum seculi semen ejus, 30 & thronum ejus, sicut dies cœli. 31 Si dereliquerint filii ejus legem meam, & in judiciis meis non ambulaverint: 32 [p] Si justificationes meas prophanaverint, & mandata mea non custodierint; 33 Visitabo in virga iniquitates eorum, & in flagellis peccata eorum. 34 Misericordiam verò meam non [q] dispergam ab eo: non (s) nocebo in veritate mea.

Versio ÆTHIOPICA.

10 እግዚኦ ፡ አምላከ፡ ኃያላን፡መኑ፡ ከማከ። 9
ኃያል ፡ አንተ ፡ እግዚኦ ፡ ወጽድቅ ፡ የዐው
ደከ።=፦ አንተ ፡ ትኴንን ፡ ኃይለ፡ባሕር። 10
11 ወአንተ ፡ ታረምም ፡ ለኃይለ ፡ ማዕበ
12 ሉ።=፦ ወአንተ ፡ አኅሰርከ ፡ ለዕቡይ ፡ ከ 11
መ ፡ ቅቱል። ወበመዝራዕተ ፡ ኃይልከ ፡ ዘ
ረወኮሙ ፡ ለፀርከ።=፦ ዚአከ ፡ ውእቱ፡ 12
13 ሰማያት ፡ ወእንቲአከ ፡ ይእቲ ፡ ምድር።
ወለዓለምኒ ፡ በምልኡ ፡ አንተ ፡ ሳረርከ።
14 ባሕረ ፡ ወመስዐ ፡ አንተ ፡ ፈጠርከ።=፦
ታቦር ፡ ወአርሞንኤም ፡ በስመ ፡ ዚአከ፡ 13
15 ይትፌሥሑ። ወይሴብሑ ፡ ለስምከ። መ
ዝራዕትከ ፡ ምስለ ፡ ኃይል።=፦ ጽንዓት፡ 14
እዴከ ፡ ወተለዐለት ፡ የማንከ። ፍትሕ፡
16 ወርትዕ ፡ ተድላ ፡ መንበርከ።=፦ ሣህል፡ 15
17 ወጽድቅ ፡ የሐውር ፡ ቅድመ ፡ ገጽከ። ብ
ፁዕ ፡ ሕዝብ ፡ ዘያአምር ፡ የብቦ።=፦ እ 16
18 ግዚኦ ፡ በብርሃነ ፡ ገጽከ ፡ የሐውሩ። ወ
በስምከ ፡ ይትፌሥሑ ፡ ኵሎ ፡ አሚረ።
19 ወበጽድቅከ ፡ ይትሌዐሉ።=፦ እስመ ፡ መ 17
ክሐ ፡ ኃይሎሙ ፡ አንተ። ወበሣህልከ ፡ ይ
20 ትሌዐል ፡ ቀርንነ።=፦ እስመ ፡ እግዚአብ 18
ሔር ፡ ረድኤትነ። ወለቅዱሰ ፡ እስራኤ
ል፡ንጉሠነ።=፦ ወውእቱ፡አሚረ፡ተናገርከ 19
21 ሙ፡በራእይ፡ለደቂቅከ። ወትቤ፡እሬሲ፡ ረድ
22 ኤተ፡ በላዕለ፡ኃይል። ወአልዐልኩ፡ኅሩየ፡እ
ምሕዝብየ።=፦ ወረከብክዎ፡ለዳዊት፡ገብ 20
23 ርየ። ወቀባዕክዎ፡ቅብአ፡ቅዱስ።=፦እስመ፡ 21
እዴየ ፡ ትረድኦ። ወመዝራዕትየ ፡ ታጸን
ዖ።=፦ ወኢይበቍዕ፡ጸላኢ፡በላዕሌሁ።ወ 22
24 ውሉደ፡ዐመፃ፡ኢይደግም፡አሕምሞቶ።=፦
25 ወእመትሮሙ፡ለፀሩ፡እምቅድመ፡ገጹ። ወ 23
አኅስሮሙ ፡ ለጸላእቱ።=፦ ወሣህልየሰ፡ 24
ወጽድቅየ ፡ ምስሌሁ። ወበስምየ ፡ ይትሌ
26 ዐል ፡ ቀርኑ።=፦ ወእሠይም ፡ ውስተ፡ ባ 25
ሕር ፡ እዴሁ። ወውስተ ፡ አፍላግ ፡ የማ
27 ኑ።=፦ ወውእቱ ፡ ይብለኒ ፡ አቡየ ፡ አን 26
28 ተ። አምላኪየ ፡ ወረዳኢየ ፡ ወመድኃኒ
የ።=፦ ወአነሂ ፡ በኵርየ ፡ እሬስዮ። 27
29 ወልዑል፡እምነገሥተ፡ምድር።=፦ ወለዓ 28
ለም፡ አዐቅብ፡ ሎቱ፡ ሣህልየ። ወምእመን፡
30 ውእቱ፡ለኪዳንየ።=፦ ወእሬሲ፡ዘርአ፡ለዓለ 29
ም፡ ዓለም።=፦ ወመንበርሂ፡ከመ፡መዋዕለ፡ 30
31 ሰማይ።=፦ወእመሰ፡ኃደጉ፡ደቂቁ ፡ ሕግየ። 31
ወኢሖሩ፡ በኵነኔየ።=፦ ወእመሂ ፡ አርኰ 32
32 ሱ፡ሥርዓትየ። ወኢዐቀቡ፡ ትእዛዝየ።=፦
እሔውጽ፡ በበትር ፡ ለኃጢአቶሙ። ወበመቅ 33
33 ሠፍት ፡ ለአበሳሆሙ።=፦ ወሣህልየሰ ፡ ኢ 34
ይከልእ ፡ እምኔሆሙ። ወኢይዔምፅ፡ በጽ
34 ድቅየ።=፦

INTERP. ÆTHIOP. [g] et vim fluctuum ejus tu sedas. [h] et laudabunt nomen tuum. Tuum [i] Dominus est adjutorium nostrum, [k] Et illo die loquutus [l] et oleo sancto unxi eum. [m] contemnam. Et [n] et adjutor meus, & Salvator meus. Et ego quidem primogenitum meum ponam [o] & testamento meo ille fidelis erit. [p] Et si quidem statuta mea [q] retinebo ab eis: neque injustè agam in

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* أيها الرب اله القوات من يشبهك * قوي أنت يا رب وعدلك يحيط بك * أنت مالك عز البحر 9
أنت تسكن حركات امواجه * أنت اذللت المتكبر كالجريح بذراع قوتك بددت اعداءك * لك 10 11
هي السموات ولك هي الارض * أنت اسست المسكونة بكمالها * أنت خلقت البر والبحر 12
تابور وحرمون يبتهجان باسمك * لك القوة والجبروت * فلتعتز يدك ولتعل يمينك * بالعدل 13 14
والحكم اتقنت كرسيك * الرحمة والعدل يتقدمان · سالكين امام وجهك * طوبى 15 16
للشعب الذي يعرف تسبحتك يا رب * في نور وجهك يسلكون * وباسمك جميع النهار يبتهجون 17
وبعدلك يرتفعون * لانك انت فخر قوتهم * وبحقك يعلو قرننا * لان النصر هو للرب * وقدوس 18 19
اسرائيل هو ملكنا * حينئذ بالوحي كلمت بنيك * وقلت اني جعلت معونة على الجبار رفعت 20
مختارا من شعبي * وجدت داود عبدي مسحته بدهن مقدس * لان يدي تنصره وذراعي 21 22
تقويه * لا يربح العدو منه · وابن الاثم لا يعود يضره * اعداءه قطعتهم من قدام وجهه · ولمبغضيه 23 24
هزمت * حقي ورحمتي معه · وباسمي يعلو قرنه * اجعل في البحر يده · وفي الانهار يمينه * هو يدعوني 25 26
قائلا انت هو ابي · الهي وناصر خلاصي * انا اجعله بكرا عاليا على جميع ملوك الارض * احفظ له 27 28
رحمتي الى الابد · وعهدي صادق له * اثبت ذريته الى ابد الابد · وكرسيه مثل ايام السماء * فان رفض 29 30
بنوه ناموسي · ولم يسيروا في احكامي * وان نجسوا حقوقي · ولم يحفظوا وصاياي * فانا افتقد بالعصا 31 32
اثامهم وبالسوط خطاياهم * واما رحمتي فلا انزعها عنه · ولا اظلم في حقي * 33 34

O Domine Deus virtutũ, quis comparatur 9
tecũ? Fortis es O Domine, & æquitas tua
circunstat tibi. Tu regis potentiã maris, tu 10
mitigas agitationes fluctuũ ejus. Tu hu- 11
miliâsti superbũ quasi vulneratũ: brachio
fortitudinis tuæ dispersisti inimicos tuos.
Tibi sunt cœli & tibi est terra: tu fundâ- 12
sti Habitatã integrã. Tu creâsti terrã 13
& mare: Thabor & Hermon exultant in
nomine tuo. Tibi est fortitudo & poten- 14
tia; corroboretur igitur manus tua, &
extollatur dextera tua: Justitiã, & ju- 15
dicio parâsti sedem tuã: misericordia &
justitia præcedent ambulantes ante faciem
tuã. Fœlix popul⁹ qui scit laudationẽ tuã 16
Domine: in lumine vultûs tui ambulabunt,
Et in nomine tuo die totâ exultabunt, & 17
in justitia tua exaltabuntur: Quoniam 18
tu es gloria virtutis eorũ, & in veritate
tua extolletur cornu nostrũ. Quoniã au- 19
xiliũ est Domini, & Sanctus Israelis est
Rex noster. Tunc in visione allocutus es 20
filios tuos & dixisti, Ego posui adjutoriũ
super potentem, exaltavi electũ è populo
meo: Inveni David servũ meũ, unxi eũ 21
unguento sancto. Nam man⁹ mea auxilia- 22
bitur ei, & brachiũ meũ fortificabit illũ.
Non proficiet inimicus contra eum, & 23
filius iniquitatis non malignabitur ulte-
rius in eũ. Inimicos ejus præcîdi è con- 24
spectu ipsi⁹, & osores ejus profligavi. Ve- 25
ritas mea & misericordia mea cũ ipso, et
in nomine meo extolletur cornu ejus. Po- 26
nam in mari manũ ejus, & in fluminibus
dexteram ejus. Ipse vocabit me, dicens, Tu 27
es Pater meus, Deus meus, & adjutor sa-
lutis meæ. Ego constituã eũ primogenitũ 28
excelsũ super omnes reges terræ. Servabo 29
ei misericordiã meã usque in æternũ, &
pactũ meũ verax ipsi. Stabiliã progeniem 30
ejus in seculũ seculi, & sedem ejus sicut
dies cœli. Quòd si respuerint filii ejus 31
legẽ meã, et non ambulaverint in judiciis
meis: Siq; coinquinaverint statuta mea, & 32
non custodierint præcepta mea: Ego visi- 33
tabo cũ fusti scelera eorũ, et cũ loris pec-
cata eorũ; Verũ misericordiã meã nõ au- 34
feram ab eo, neq; opprimã in veritate mea.

תהלים : צ

Semel .mutabo non meo labio egreſſum & : meum pactum prophanabo Non
35 לֹא־אֲחַלֵּל בְּרִיתִי וּמוֹצָא שְׂפָתַי לֹא אֲשַׁנֶּה: אַחַת 36
: erit ſeculum in ejus Semen .mentiar Davidi Si : meā ſanctitatē per juravi
37 נִשְׁבַּעְתִּי בְקָדְשִׁי אִם־לְדָוִד אֲכַזֵּב: זַרְעוֹ לְעוֹלָם יִהְיֶה
teſtis & : ſeculum ſtabilietur luna Sicut .me coram ſol ſicut ejus thronus &
38 וְכִסְאוֹ כַשֶּׁמֶשׁ נֶגְדִּי: כְּיָרֵחַ יִכּוֹן עוֹלָם וְעֵד
cum es iratus : reprobaſti & ,elongaſti tu At .Selah ,fidelis æthere in
39 בַּשַּׁחַק נֶאֱמָן סֶלָה: וְאַתָּה זָנַחְתָּ וַתִּמְאָס הִתְעַבַּרְתָּ עִם־
.ejus diadema terra in prophanaſti : tui ſervi pactum Aboleviſti .tuo uncto
40 מְשִׁיחֶךָ: נֵאַרְתָּה בְּרִית עַבְדֶּךָ חִלַּלְתָּ לָאָרֶץ נִזְרוֹ:
eā Diripuerunt .contritionem ejus munitiones poſuiſti :ejus macerias omnes Rupiſti
41 פָּרַצְתָּ כָל־גְּדֵרֹתָיו שַׂמְתָּ מִבְצָרָיו מְחִתָּה: שַׁסֻּהוּ 42
dexteram Exaltaſti .ſuis vicinis opprobrium fuit .viæ tranſeuntes omnes
43 כָּל־עֹבְרֵי דָרֶךְ הָיָה חֶרְפָּה לִשְׁכֵנָיו: הֲרִימוֹתָ יְמִין
: ejus gladii aciem obtundes Etiam .ejus inimicos omnes lætificaſti : ejus hoſtium
44 צָרָיו הִשְׂמַחְתָּ כָּל־אוֹיְבָיו: אַף־תָּשִׁיב צוּר חַרְבּוֹ
ejus ſolium & : ejus puritatem feciſti Ceſſare .prælio in eum ſtatuiſti non &
45 וְלֹא הֲקֵמֹתוֹ בַּמִּלְחָמָה: הִשְׁבַּתָּ מִטְּהָרוֹ וְכִסְאוֹ
eum ſuper operuiſti : ejus adoleſcentiarum dies Abbreviaſti .feciſti cadere terram in
46 לָאָרֶץ מִגַּרְתָּה: הִקְצַרְתָּ יְמֵי עֲלוּמָיו הֶעֱטִיתָ עָלָיו
ſicut exardeſcet ? æternum in te abſcondes Domine Uſquequo .Selah ,pudore
47 בּוּשָׁה סֶלָה: עַד־מָה יְהוָה תִּסָּתֵר לָנֶצַח תִּבְעַר כְּמוֹ־
creaſti vane quid ut ? ævi quanti ego Memento ? tua excandeſcentia ignis
48 אֵשׁ חֲמָתֶךָ: זְכָר־אֲנִי מֶה־חָלֶד עַל־מַה־שָּׁוְא בָּרָאתָ
eruet ? mortem videbit non & ,vivet vir Quis ? hominum filios omnes
49 כָל־בְּנֵי־אָדָם: מִי גֶבֶר יִחְיֶה וְלֹא יִרְאֶה־מָּוֶת יְמַלֵּט
priſcæ tuæ miſericordiæ Ubi .Selah ? inferi manu de ſuam animam
50 נַפְשׁוֹ מִיַּד־שְׁאוֹל סֶלָה: אַיֵּה חֲסָדֶיךָ הָרִאשֹׁנִים
opprobrii Domine Recordare ? tua veritate in Davidi juraſti : Domine
51 אֲדֹנָי נִשְׁבַּעְתָּ לְדָוִד בֶּאֱמוּנָתֶךָ: זְכֹר אֲדֹנָי חֶרְפַּת
affecerint probris Quod .populos multos omnes meo ſinu in me ferre : tuorū ſervorū
52 עֲבָדֶיךָ שְׂאֵתִי בְחֵיקִי כָּל־רַבִּים עַמִּים: אֲשֶׁר חֵרְפוּ
Benedictus .tui uncti veſtigia affecerint probris quod ; Domine tui inimici
53 אוֹיְבֶיךָ יְהוָה אֲשֶׁר חֵרְפוּ עִקְּבוֹת מְשִׁיחֶךָ: בָּרוּךְ
.Amen & ,Amen ,ſeculum in Dominus
יְהוָה לְעוֹלָם אָמֵן וְאָמֵן:

ספר רביעי

PSAL. XC. צ

nobis fuiſti tu habitaculum Domine .Dei viri Moſeh ipſius Oratio
1 תְּפִלָּה לְמֹשֶׁה אִישׁ־הָאֱלֹהִים אֲדֹנָי מָעוֹן אַתָּה הָיִיתָ לָּנוּ
,terram formares & ,naſcerentur montes Priuſquam .generatione & .generatione in
2 בְּדֹר וָדֹר: בְּטֶרֶם הָרִים יֻלָּדוּ וַתְּחוֹלֵל אֶרֶץ
ad uſque hominem Convertes .Deus tu ſeculum ad uſque ſeculo à & : orbem &
3 וְתֵבֵל וּמֵעוֹלָם עַד־עוֹלָם אַתָּה אֵל: תָּשֵׁב אֱנוֹשׁ עַד־
anni mille Quoniam .hominum filii Convertimini , dices & : contritionem
4 דַּכָּא וַתֹּאמֶר שׁוּבוּ בְנֵי־אָדָם: כִּי אֶלֶף שָׁנִים
.nocte in cuſtodia & : tranſierit cùm heſterna dies ſicut ,tuis oculis in
בְּעֵינֶיךָ כְּיוֹם אֶתְמוֹל כִּי יַעֲבֹר וְאַשְׁמוּרָה בַלָּיְלָה:

תרגום TARGUM.

35 לא אפס קימי ומפקנות ספותי לא אשני: חדא
36 ומנא קיימית בשום קודשי אם לדוד אכדיב: בנוי 37
לעלם יהוון וכורסיה נהיר היך שמשא לקבלי:
38 היך סיהרא דמתקן לאת לעלם וסהיד בשחקא
39 מהימן לעלמין: ואת שבקתא ורחקתא ארגזתא
40 עם משיחך: אשניתא קים דעם עבדך אפסתא
41 לארעא כליליה: תקפתא כל כרכוי שויתא
42 פציחוי תבירא: רמסין יתיה כל עברי אורחא
43 הוה קלנא לשבבוי: ארמתא ימינא דמעיקוי
44 אחדיתא כל בעלי דבבוי: לחוד תתיב לאחורא
45 סיפיה ולא אקמתא יתיה בקרבא: בטלתא
כהניא דמדין על מדבחא ומדכין עמיה וכורסי
46 מלכותיה לארעא מגרתא: קצרתא יומי עלימוי
47 עטפתא עלוי בהתא וכסופא לעלמין: עד אימתי
יי תסלק שכנתך לעלמין תדליק היך אשתא
48 חמתך: אדכר די אנא אתבריתי מן עפרא מטול
49 מה לבטלא בריתא כל בני נשא: מן הוא גברא
דיחי ולא יחמי מלאכא דמותא וישיזב נפשיה מן
50 ידיה ולא יחות לבית קבורתיה לעלמין: אן הנון
טבותך דמן שרויא יי דקימתא לדוד בהימנותך:
51 אדכר יי חסודא דעבדך סוברית בעטפי כל
52 גדופיהון דסגיעין עממין: די חסידו בעלי דבבך
יי די חסידו איחור רושמת רגלי משיחך יי:
53 בריך שמא דיי בעלמא הדין אמן ואמן בריך
שמא דיי לעלמא דאתי אמן ואמן: צ
1 צלותא דצלי משה נביא דיי כד חבו עמא בית
ישראל במדברא עני וכן אמר יי דמדור בית
שכנתך בשמיא את הויתא לנא סעיד בכל דר
2 ודר: כד אתגלי קדמך דעמך עתידין למחוב
אתקנתא תתובא עד דלא טוריא אתנטלו
ואתבריאת ארעא ויתבי תבל ומן עלמא הדין
3 עד עלמא דאתי את הוא אלהא: תתיב בר נש על
4 חוביה עד מותא ואמרת תובו בני נשא: ארום
אלף שנין בעינך מתחשבין קדמך היך יומא
דאתמלי ארום יעבר והיך מטרת ליליא:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Non prophanabo pactum meum & quod promptū eſt ex labiis meis, non mutabo. Semel juravi in nomine ſancto meo, neque quā Davidi mentiar. Filii ejus in æternū erunt, & thronus ejus lucidus ſicut Sol in conſpectu meo. Sicut Luna firmata ad ſignum æternū, & teſtis in æthere fidelis in perpetuum. Tu autem deſeruiſti & abominatus es; iratus es cum Chriſto tuo. Irritum feciſti pactum cum ſervo tuo: prophanaſti ad terram coronā ejus. Deſtruxiſti omnia caſtra ejus: poſuiſti oppida ejus deſtructionem. Conculcant eum omnes tranſeuntes viam: fuit opprobrio vicinis ſuis. Exaltaſti dexterā moleſtantiū eū: lætificaſti omnes inimicos ejus. Siquidē vertiſti retrorſum gladium ejus, & non confirmaſti *eum* in prælio. Abſtuliſti ſacerdotes qui conſperſionem faciebant ſuper altari, & purificabant populū ejus, & ſedem regnorum ejus ad terram colliſiſti. Breviaſti dies juventutis ejus: operuiſti eum pudore & confuſione in perpetuū. Uſquequo Dñe auferes majeſtatē tuā in æternum? accendes in modum ignis iram tuā? Recordare quòd creatus ſum de pulvere: quare ut aboleātur creaſti omnes filios hominū? Quis eſt ille vir qui vivet, & non videbit angelū mortis? liberabit animā ſuam de manu ejus, & non deſcendet in domum ſepulchri *ſui* in perpetuū? Ubi illæ benignitates tuæ primordiales Dñe, quas pactus es Davidi in veritate tua? Recordare Dñe opprobrii ſervorum tuorum: ſuſtinui in ſinu meo cuncta opprobria multorum populorū. Quoniam exprobraverunt hoſtes tui, exprobraverunt tarditatē veſtigiorū pedū Chriſti tui *Domine*. Benedictū nomen Dñi in ſeculo iſto, *Amen & Amen: benedictum nomen Domini* in ſeculo venturo; Amen & Amen.

Oratio qua oravit Moſſeh propheta Domini, quando peccavit populus domus Iſrael in deſerto, *elocutus eſt & ſic dixit:*

PSAL. XC.

DOmine cujus habitatio domus majeſtatis tuæ eſt in cœlis, tu fuiſti nobis adjutor in omni generatione & generatione. Quando manifeſtum fuit coram te, quod populus tuus eſſet peccaturus, diſpoſuiſti converſionē. Antequam montes erigerentur, et creata eſſet terra & habitatores orbis, à ſeculo hoc, & uſq; ad ſeculū venturū, tu ipſe es Deus. Rediges hominē propter peccatū ejꝰ uſq; ad mortem: & dixiſti, Convertimini filii hominū. Quoniā mille anni *in oculis tuis* computantur apud te ſicut dies heſterna quando præterierit, & ſicut vigilia noctis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

35 * ܘܠܐ ܐܛܠܡ ܩܝܡܝ : ܘܡܕܡ ܕܢܦܩ ܡܢ ܣܦܘܬܝ ܠܐ ܐܫܚܠܦ . * ܚܕܐ ܝܡܝܬ ܒܩܘܕܫܝ
36 37 ܘܠܐ ܐܕܓܠ : * ܙܪܥܗ ܠܥܠܡ ܢܗܘܐ . ܘܟܘܪܣܝܗ ܐܝܟ ܫܡܫܐ ܩܕܡܝ * ܘܐܝܟ ܣܗܪܐ
38 39 [illegible]
40 41 [illegible]
42 [illegible]
43 [illegible]
44 45 [illegible]
46 [illegible]
47 48 [illegible]
49 [illegible]
50 [illegible]
51 [illegible]
52 53 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1 [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]

Neque contemnam pactum meum: quod egreſſum eſt è labiis meis non mutabo. Unum juravi per ſanctitatem meam Davidi, & non retractabo: Semen ejus in æternum erit, & thronus ejus ſicut ſol in conſpectu meo, Et ut luna firmus erit in perpetuum: teſtis in cœlo fidelis. Et tamen tu oblitus es mei, & deſpexiſti me, atque avertiſti faciem Uncti tui: Aſpernatuſq; es fœdus ſervi tui, & dejeciſti in terram diadema ipſius: Diruiſti ſepes ejus, atque deſtruxiſti arces illius: Et conculcaverunt eum omnes tranſeuntes viā, factus eſt opprobrium vicinis ſuis: Et elevaſti dexterā inimicorum ejus, atque lætificaſti omnes oſores illius: Et deflexiſti adjutorium gladii ejus, neque fulſiſti eum in prælio: Et ceſſare feciſti victores ipſius, & ſolium ejus in terram evertiſti: Minuiſti dies juventutis ejus, & amiciviſti eum confuſione. Uſquequo iraſceris Domine in æternum, & ardebit velut ignis indignatio tua? Memento mei à fovea, non enim fruſtrà condidiſti omnes homines. Quis eſt vir qui vivet & non videbit mortem, eripietque animā ſuam de manu foveæ? Ubi ſunt beneficia tua Dñe priſtina, quæ juraſti Davidi cum fide? Memento Dñe opprobrii ſervi tui: quòd portaverim in ſinu mea cunctam ſolicitudinē populorū: Ignominia me affecerint hoſtes tui Dñe, & vituperârint calcaneos Chriſti tui. Benedictꝰ Dñs in æternū. Amen, amen.

Finis Libri Tertii.

Initium Libri Quarti.

PSAL. XC.

Moſis. Verſus 37.

DOmine, habitaculum factꝰ es nobis in generationē generationū. Priuſquā conciperentur montes, & antequā parturiret terra & priuſquā conderetur orbis, à ſeculo et uſq; in ſeculum tu es Deus: Qui reduxiſti hominē uſque ad humilitatem, ac tum dixiſti, Pœnitentiam agite filii hominum. Nam mille anni in oculis tuis ſunt tanquam dies heſterna quæ præteriit, ut vigilia noctis.

Verſio VULG. LAT.

35 Neque profanabo teſtamentum meū : & quæ procedunt de labiis meis, non
36 faciam irrita. Semel juravi in Sancto
37 meo, ſi David mentiar : Semen ejus in
38 æternū manebit. Et thronus ejus ſicut
Sol in conſpectu meo, & ſicut Luna
perfecta in æternū : & teſtis in cœlo
39 fidelis. Tu verò repuliſti & deſpexiſti:
40 diſtuliſti Chriſtum tuum. Evertiſti teſtamentum
ſervi tui: profanaſti in terra
41 Sanctuariū ejus. Deſtruxiſti omnes
ſepes ejus : poſuiſti firmamentum ejꝰ
42 formidinem. Diripuerunt eum omnes
tranſeuntes viā : factus eſt opprobriū
43 vicinis ſuis. Exaltaſti dexteram deprimentiū
eum : lætificaſti omnes inimi-
44 cos ejus. Avertiſti adjutoriū gladii
ejus : & non es auxiliatus ei in bello.
45 Deſtruxiſti eum ab emundatione : &
46 ſedem ejus in terram colliſiſti. Minoraſti
dies temporis ejus : perfudiſti eū
47 confuſione. Uſquequo, Domine, avertis
in finem : exardeſcet ſicut ignis ira
48 tua? Memorare quæ mea ſubſtantia :
numquid enim vanè cōſtituiſti omnes
49 filios hominū? Quis eſt homo, qui
vivet, & non videbit mortem : eruet
50 animam ſuam de manu inferi? Ubi
ſunt miſericordiæ tuæ antiquæ, Domine,
ſicut juraſti David in veritate
51 tua? Memor eſto Domine, opprobrii
ſervorū tuorū (quod continui in ſinu
52 meo) multarū gentiū. Quod exprobraverunt
inimici tui, Dñe, ꝙ exprobraverunt
commutationē Chriſti tui.
53 Benedictus Dominus in æternū : Fiat,
fiat.

1 Oratio Moyſi hominis Dei.
LXXXIX.

Domine, refugiū factus es nobis, à
2 generatione in generationē. Priuſquā
montes fierent, aut formaretur terra,
& orbis; à ſeculo & uſque in ſeculum
3 tu es Deus. Ne avertas hominē
in humilitatem : & dixiſti, Conver-
4 timini filii hominum. Quoniam mille
anni ante oculos tuos, tanquam dies
heſterna, quæ præteriit, Et cuſtodia
in nocte,

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

35 † Οὐδὲ μὴ βεβηλώσω τὴν διαθήκην μου, † καὶ τὰ ἐκπορευόμενα διὰ τῶν χειλέων μου οὐ μὴ ἀθετήσω.
36 † Ἅπαξ ὤμοσα ἐν τῷ ἁγίῳ μου, εἰ τῷ Δαυὶδ
37 ψεύσομαι. † Τὸ σπέρμα αὐτοῦ εἰς τὸν αἰῶνα μενεῖ,
38 † Καὶ ὁ θρόνος αὐτοῦ ὡς ὁ ἥλιος ἐναντίον μου, † καὶ
ὡς ἡ σελήνη κατηρτισμένη εἰς τὸν αἰῶνα, † καὶ ὁ
39 μάρτυς ἐν οὐρανῷ πιστός. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Σὺ δὲ
ἀπώσω καὶ ἐξουδένωσας, ἀνεβάλου τὸν χριστόν σου.
40 † Κατέστρεψας τὴν διαθήκην τοῦ δούλου σου, † ἐβεβή-
41 λωσας εἰς τὴν γῆν τὸ ἁγίασμα αὐτοῦ. † Καθεῖλες
πάντας τοὺς φραγμοὺς αὐτοῦ, † ἔθου τὰ ὀχυρώματα
42 αὐτοῦ δειλίαν. † Διήρπασαν αὐτὸν πάντες οἱ (π)
διοδεύοντες ὁδόν, † ἐγενήθη ὄνειδος τοῖς γείτο-
43 σιν αὐτοῦ. † Ὕψωσας τὴν δεξιὰν τῶν (ρ) ἐχθρῶν αὐτοῦ,
44 † εὔφρανας πάντας τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. † Ἀπέστρεψας
τὴν βοήθειαν τῆς ῥομφαίας αὐτοῦ, † καὶ οὐκ ἀντελάβου
45 αὐτοῦ ἐν τῷ πολέμῳ. † Κατέλυσας ἀπὸ καθαρισμοῦ
αὐτόν, † τὸν θρόνον αὐτοῦ εἰς τὴν γῆν κατέρραξας.
46 † Ἐσμίκρυνας τὰς ἡμέρας τοῦ (σ) θρόνου αὐτοῦ,
47 † κατέχεας αὐτοῦ αἰσχύνην. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ἕως
πότε κύριε (τ) ἀποστρέφῃ εἰς τέλος; † ἐκκαυθή-
48 σεται ὡς πῦρ ἡ ὀργή σου; † Μνήσθητι τίς (υ) ἡ
ὑπόστασίς μου· † μὴ γὰρ ματαίως ἔκτισας πάντας
49 τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων; † Τίς ἐστιν ἄνθρωπος, ὃς
ζήσεται καὶ οὐκ ὄψεται θάνατον; † ῥύσεται τὴν ψυ-
50 χὴν αὐτοῦ ἐκ χειρὸς ᾅδου; ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Ποῦ
(φ) ἐστιν τὰ ἐλέη σου τὰ ἀρχαῖα κύριε, † ἃ ὤμοσας
51 τῷ Δαυὶδ ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου; † Μνήσθητι κύριε τοῦ
ὀνειδισμοῦ τῶν δούλων σου, † οὗ ὑπέσχον ἐν τῷ κόλπῳ
52 μου πολλῶν ἐθνῶν· † Οὗ ὠνείδισαν οἱ ἐχθροί σου
κύριε, † οὗ ὠνείδισαν τὸ ἀντάλλαγμα τοῦ χριστοῦ σου.
53 † Εὐλογητὸς κύριος εἰς τὸν αἰῶνα. γένοιτο, γένοιτο.

MS.A. (π) παραπορευόμενοι τὴν ὁδόν, (ρ) θλιβόντων αὐτόν, (σ) χρόνου αὐτοῦ, (τ) ἀποστρέψεις (υ) μου ἡ ὑπόστασις· (φ) εἰσιν

Προσευχὴ (α) τῷ Μωυσῇ ἀνθρώπῳ τοῦ θεοῦ. πθʹ.

1 † Κύριε καταφυγὴ ἐγενήθης ἡμῖν ἐν γενεᾷ καὶ γε-
2 νεᾷ. † Πρὸ τοῦ ὄρη γενηθῆναι καὶ πλασθῆναι (β)
τὴν γῆν καὶ τὴν οἰκουμένην, † καὶ ἀπὸ τοῦ αἰῶνος (γ) ἕως
3 τοῦ αἰῶνος σὺ εἶ. † Μὴ ἀποστρέψῃς ἄνθρωπον εἰς ταπείνωσιν,
† καὶ εἶπας, Ἐπιστρέψατε (δ) υἱοὶ ἀνθρώπων;
4 † Ὅτι χίλια ἔτη ἐν ὀφθαλμοῖς (ε) σου, † ὡς ἡ ἡμέ-
ρα ἡ ἐχθὲς ἥτις διῆλθε, καὶ φυλακὴ ἐν νυκτί.

MS.A. (α) τῷ Μωσῇ (β) γῆν (γ) καὶ ἕως (δ) οἱ υἱοὶ (ε) σου κύριε, ὡς

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

35 Neque profanabo teſtamentum 35
meum : & quæ procedunt de labiis
meis, non faciam irrita. 36 Semel 36
juravi in Sancto meo, [n] ſi David
mentiar; Semen ejus in æternū ma- 37
nebit. 37 Et ſedes ejus, ſicut Sol, in 38
conſpectu meo, & [o] ſicut Luna perfecta
in æternum, & (t) teſtis in cœ-
lo fidelis. DIAPSALMA. 38 Tu ve- 39
rò repuliſti, & (u) ſpreviſti: diſtuli-
ſti Chriſtum tuum. 39 (x) [p] Ever- 40
tiſti teſtamentum ſervi tui : propha-
nâſti in terra (y) ſanctitatem ejus.
40 Deſtruxiſti omnes macerias ejus: 41
poſuiſti munitiones ejus formidinem.
41 Diripuerunt eum omnes tranſe- 42
untes viam: factus eſt opprobrium
vicinis ſuis. 42 Exâltaſti dexteram 43
(z) inimicorum ejus : lætificâſti o-
mnes inimicos ejus. 43 Avertiſti 44
adjutorium gladii ejus : & non es
auxiliatus ei in bello. 44 Diſſolviſti 45
(ω) eum ab emundatione: [q] ſedem
ejus in terram colliſiſti. 45 Minuiſti 46
dies (aa) ſedis ejus: perfudiſti eum
confuſione. DIAPSALMA. 46 Quo- 47
uſq;, Domine, (bb) avertêris in finem?
exardeſcet, ſicut ignis, ira tua?
47 Memento, [r] quæ eſt ſubſtantia 48
mea: numquid enim vanè (cc) conſti-
tuiſti omnes filios hominum? 48 Quis 49
eſt homo, qui vivet, & non videbit
mortē? [ſ] eruet animā ſuam de ma-
nu inferi? DIAPSALMA. 49 Ubi 50
ſunt miſericordiæ tuæ antiquæ, Do-
mine, quas jurâſti David [t] in ve-
ritate tua? 50 Memento, Domine, op- 51
probrii ſervorum tuorum, (dd) quod
continui in ſinu meo multarum gen-
tium. 51 Quod exprobraverunt ini- 52
mici tui, Domine, quod exprobrave-
runt, (ee) commutationem Chriſti tui.
52 Benedictus Dominus in æternum: 53
(ff) Fiat, fiat.

Oratio (a) [a] Moyſi homini Dei.
LXXXIX.

Domine, refugium factus es nobis 1
in generatione & (b) generati-
one. 2 Priuſquàm (c) montes fierent, 2
& formaretur terra, & orbis terræ,
& à ſeculo uſque in ſeculum tu es.
3 Ne avertas hominem in humilita- 3
tem: & dixiſti, (d) Convertimini fi-
lii hominum. 4 Quoniam mille anni 4
in (e) oculis tuis, tanquam dies heſter-
ni, quæ præteriit, 5 & (f) cuſto-
dia in nocte.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወኢያረኩስ:ኪዳንየ:: ወኢይኄሱ:ዘወፅአ: 35
እምአፉየ::=፡ ምዕረ : መሐልኩ : በቅዱ 36
ስየ:: ከመ:ለዳዊት:ኢይሔስዎ:: ወዘር
ኡሂ: ለዓለም: ይሄሉ::=፡ ወመንበርኒ: 37
ከመ: ፀሐይ : በቅድሜየ:: ወሠረዐ:ከመ:
ወርኅ:ለዓለም:: ወስምዑሂ:መእመን:በሰ
ማይ::=፡ ወአንተሰ : መነንከ : ወገደፍከ:: 38
ወአናሕስይከ : ለመሲሕከ::=፡ ወሜጥከ: 39
ሥርዓቶ:ለገብርከ:: ወአርኰስከ: ውስተ:
ምድር:መቅደሶ::=፡ ወነሠትከ : ኵሎ: 40
ጥቅሞ:: ወረሰይከ : አጽዋኒሁ : መፍር
ሀ::=፡ ወተማሰጡ: ኵሉ: ኅላፊ:ፍኖት:: 41
ወኮነ : ጽእለተ : ለጎሩ::=፡ ወአልዐልከ: 42
የማነ : ፀሩ:: ወአስተፈሣሕከ : ኵሎ: ጸላ
እቶ::=፡ ወሜጥከ : ረድኤተ : ኵናቱ:: 43
ወኢተወከፍኮ : በውስተ: ፀብእ::=፡ ወሰዐ 44
ርኮ:እምንጽሒሁ:: ወነፃሕከ:ውስተ:ምድ
ር:መቅደሶ::=፡ ወአውሐድከ:መዋዕለ: 45
መንበሩ:: ወሶጥከ: ላዕሌሁ: ኅፍረተ::=፡
እስከ:ማእዜኑ: እግዚኦ: ትመይጥ: ለግሙ 46
ራ:: ወይነድድ: ከመ: እሳት:መዐትከ::=፡
ተዘከር : ምንት : ውእቱ : ኅይልየ:: ቦኑ: 47
ለከንቱ: ፈጠርከ: ለኵሉ : እጓለ : እመሕ
ያው::=፡ መኑ: ሰብእ:ዘየሐዩ:ወኢይሬእ 48
ዮ : ለሞት:: ወመኑ : ዘያድኅና : ለነፍሱ:
እምእደ: ሲኦል::=፡ አይቴ: ውእቱ: ዘት 49
ካት: ሣህልከ: እግዚኦ:: ዘመሐልከ : ለደዊ
ት:ገብርከ:በጽድቅ::=፡ ተዘከር:እግዚ 50
ኦ : ዘጸአልዎሙ : ለአግብርቲከ:: ዘተወከ
ፍኩ: በሕፅንየ : ብዙኃ: አሕዛበ::=፡ ዘፀ 51
አሉ:ጸላእትከ:እግዚኦ:: ወፀአሉ: እቤራ
ተ:መሲሕከ::=፡ ይትባረክ:እግዚአብሔር : 52
ለዓለም:ለይኩን: ለይኩን::

ጸሎት:ዘሙሴ:ዘብእሴ:እግዚአብሔር::

፹፱ እግዚኦ: ጸወነ: ኮንከነ: ለትውልደ:ት 1
ውልድ::=፡ ዘእንበለ : ይቁም : አድባር: 2
ወይትፈጠር:ዓለም:ወምድር::
እምቀድሙ: ዓለም : ወእስከ : ለዓለም: አ
ንተ:ክሙ::=፡ ኢትሚጦ : ለሰብእ : ለኅሳ
ር:: ወትቤ:ተመየጡ:ደቂቀ:እጓለ:እመሕ 3
ያው::=፡ እስመ: ዐሠርቱ : ምእት : ዓመ 4
ት:: በቅድሜከ: ከመ:ዕለት : እንተ : ትማ
ልም:ኃለፈት::=፡ወሰዓተ:ለሊት:: 5

INTERP. ÆTHIOP. [n] quòd Davidi non mentiar: & ſemen quidem ejus in æternum prævalebit. [o] poſita ſicut Luna in [p] Avertiſti teſtamentum [q] & ſanctuarium ejus [r] quod eſt robur meum: [ſ] & quis eſt qui eruet [t] ſervo tuo in PSAL. LXXXIX. [a] Moyſis, qui homo fuit Dei.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولا ادنس عهدي . ولا اجحد ما خرج من فمي * دفعة حلفت بقدسي اني لا اخلف 35 36
لداود * وان يكون زرعه الى الابد . وكرسيه مثل الشمس قدامي * وكالقمر الثابت الى الابد . 37 38
الشاهد في السموات صادق * وانت اقصيت وذللت وطرحت مسيحك * ونقضت عهد عبدك 39 40
ونجست موضعه المقدس على الارض * هدمت جميع سياجاته . تركت حصونه خاوية * اخطفه كل 41 42
السالكين في الطريق . صار عارا لجيرانه * اعليت يمين مضطهديه . افرحت جميع اعدائه . 43
* رددت معونة سيفه . ولم تنصره في الحرب * ابطلت شجاعته . اقلبت على الارض كرسيه . 44 45
* صغرت ايام سنيه . افضت عليه الخزي * فالى متى يا رب تعرض الى الانقضاء . يتوقد مثل 46 47
النار غضبك * اذكر ما هو قوامي . هل باطلا خلقت جميع بني البشر * من هو الانسان الذي 48 49
يعيش ولا يرى الموت . ويخلص نفسه من الجحيم * اين هي مراحمك السابقة يا رب . اللواتي 50
حلفت بحقك لداود عليها * اذكر يا رب عار عبيدك الذي وعدت به في حضن امم كثيرين 51
* اللهم ان اعداءك عيروا . وعيروا اثار مسيحك * مبارك الرب الى الابد . يكون يكون . الليلويا . 52 53

. المزمور التاسع والثمانون .

* صلاة موسى رجل الله . وهو لح * استيخن . 1
يا رب صرت لنا ملجا من جيل الى جيل * قبل ان تكون الجبال . وقبل ان تخلق الارض 2
والمسكونة . وانت هو منذ الازل والى الابد * فلا ترد الانسان الى الذل . وقد قلت ارجعوا يا 3
بني البشر * لان الف سنة امام عينيك يا رب مثل نهار امس الماضي . ومثل هجعة من الليل . 4

Neque profanabo pactum meum, neque in- 35
ficiabor quod exivit è labiis meis. Semel 36
juravi per ſanctitatem meam, me non ab-
jecturum poſt tergum meū Davidem : Et 37
fore ſemen ejus in æternū, & thronum
ejus ſicut ſol corā me. Et ſicut luna per- 38
manes in ſeculum. Qui teſtis eſt in cœ-
lis, verax eſt. Tu verò extermināſti & 39
humiliâſti atque abjeciſti unctum tuum:
Et ſolviſti pactum ſervi tui, & polluiſti 40
locū ejus ſanctum in terra. Deſtruxiſti 41
omnes ſepes ejus, reliquiſti arces ejus nu-
das. Diripuerunt eum omnes prætereuntes 42
viam : factus eſt opprobrium vicinis ſuis:
Exaltâſti dexteram perſequutorū ejus : 43
lætificâſti omnes inimicos ipſius. Et aver- 44
tiſti adjutorium gladii ejus, & non auxi-
liatus es ei in bello : Ceſſare feciſti ma- 45
gnanimitatem ejus : devolviſti ſuper ter-
ram ſedem ejus: Minorâſti dies annorum 46
ejus : effudiſti ſuper eum ruborem. Quo- 47
uſque indignaberis, O Domine, in finem?
exardeſcet velut ignis furor tuus? Me- 48
mento qualis ſit ſtatus meus. Num fruſtrà
creâſti omnes filios hominum? Quis eſt 49
homo qui vivet, & non videbit mortem?
& liberabit animam ſuam de inferno?
ubi ſunt miſericordiæ tuæ priſtinæ, O 50
Domine, de quibus jurâſti per veritatem
tuam Davidi? Memento, O Domine, im- 51
properii ſervorum tuorum, quod minitatus
es in ſinu gentium multarum. Deus 52
inimici tui improperârunt, & mutârunt
veſtigia Chriſti tui. Benedictus Dominus 53
in æternum. Sit, ſit. Alleluja.

PSAL. LXXXIX.

Oratio Moſis viri Dei. Verſ. 38. 1

O Domine, factus es nobis refugium ab
ævo in ævum : Antequam eſſent 2
montes, & antequam crearetur terra &
habitata; & tu es ab æterno & uſque in
æternum. Ne ergò reducas hominem in 3
humiliationem : quum jam dixeris, Revertimini
O filii hominum. Quoniam 4
mille anni ante oculos tuos O Domine,
tanquam dies heſterna præterita; & ve-
lut particula noctis,

תהלים : צא

,florebit matutino In .mutabitur herba ſicut mane in : erunt ſomnus ,eos Inundaſti
5 זרמתם שנה יהיו בבקר כחציר יחלף: בבקר יציץ
6 : tuo naſo in fumus conſumpti Quia .ſiccabitur & ,excidetur veſpera in : tranſibit &
7 וחלף לערב ימולל ויבש: כי־כלינו באפך
: te coram noſtras iniquitates Poſuiſti .ſumus territi tua excandeſcentia in &
8 ובחמתך נבהלנו: שתה עונתינו לנגדך
declinaverunt noſtri dies omnes Quoniã .tuarũ facierum luminare ad noſtrũ abſconditum
9 עלמנו למאור פניך: כי כל־ימינו פנו
noſtrorũ annorũ Dies .ſermonẽ tanquam noſtros annos conſumpſimus : tua ira in
10 בעברתך כלינו שנינו כמו־הגה: ימי־שנותינו
eorũ amplitudo & ,anni octoginta fortitudinibus in ſi & ,anni ſeptuaginta ipſis in
בהם שבעים שנה ואם בגבורת שמונים שנה ורהבם
fortitudinẽ cognoſcens Quis .avolavimus & ,citò reſecatur quia : iniquitas & , labor
11 עמל ואון כי־גז חיש ונעפה: מי־יודע עז
: fac ſcire ſic ,noſtros dies numerandum Ad .tua ira ,tuus timor ſicut & : tuæ naris
12 אפך וכיראתך עברתך: למנות ימינו כן הודע
ſuper conſolare & : uſquequo Domine Convertere .ſapientiam cor adducemus &
13 ונבא לבב חכמה: שובה יהוה עד־מתי והנחם על־
lætabimur & ,ovabimus & : tua miſericordia matutino in nos Satura .tuos ſervos
14 עבדיך: שבענו בבקר חסדך ונרננה ונשמחה
vidimus annos : nos afflixiſti dies juxta nos Lætifica .noſtris diebus omnibus in
15 בכל־ימינו: שמחנו כימות עניתנו שנות ראינו
.eorum filiis in tuus decor & : tuum opus tuis ſervis in Conſpiciatur .malum
16 רעה: יראה אל־עבדיך פעלך והדרך על־בניהם:
noſtrarum manuum opus & ,nos ſuper noſtri Dei Domini jucunditas ſit Et
17 ויהי נעם יהוה אלהינו עלינו ומעשה ידינו
.illud confirma noſtrarum manuum opus & : nos ſuper ſtabile fac
כוננה עלינו ומעשה ידינו כוננהו:

PSAL. XCI. צא

Dicam .commorabitur Sadai umbra in : altiſſimi abſcondito in Habitans
2 ישב בסתר עליון בצל שדי יתלונן: אמר
ipſe Quoniam .eo in ſperabo meus Deus : mea munitio & ,mea ſpes , Domino
3 ליהוה מחסי ומצודתי אלהי אבטח־בו: כי הוא
,tibi obumbrabit ſua ala In .contritionum peſte à : venatoris laqueo à te liberabit
4 יצילך מפח יקוש מדבר הוות: באברתו יסך לך
timebis Non .ejus veritas parma & ſcutum : ſperabis ejus pennis ſub &
5 ותחת־כנפיו תחסה צנה וסחרה אמתו: לא תירא
: ambulabit caligine in peſte A .diem per volaverit ſagitta à : noctis pavore à
6 מפחד לילה מחץ יעוף יומם: מדבר באפל יהלך
: tua dextera à millia decem & ,mille tuo latere à Cadet .meridie vaſtabit excidio ab
7 מקטב ישוד צהרים: יפל מצדך אלף ורבבה מימינך
impiorum retributionẽ & : aſpicies tuis oculis in Veruntamen .accedet non te ad
8 אליך לא יגש: רק בעיניך תביט ושלמת רשעים
.tuũ habitaculũ poſuiſti excelſum : mea ſpes Domine tu Quoniam .videbis
9 תראה: כי־אתה יהוה מחסי עליון שמת מעונך:

תרגום TARGUM.

5 ואין לא תיבין תיתי עליהון מותא היך דמכין
יהון ולעלמא דאתי היך עסבא דמתפרכא
6 יתחלפון: דמין עובדיהון היך עסבא די בצפרא
יניץ ויסני לרמשא מתמולל ומתיבש מן חורבא:
7 ארום אשתיצנא מן תוקפך ומן רגזך אתבהלנא:
8 שויתא חובנא לקובלך עוית טליותנא קבל
9 נהור אפך: ארום כל יומנא אתפניאו קדמך
ברוגזך שיצינא יומי חיינא היך הבל פומא
10 דסתוא: יומי שנותנא בעלמא הדין שובעין שנין
מתאלמין ואין בגבורתא תמנן שנין וסוגעיהון
ליאות ושקר לחיביא ארום עדו בסרהוביא
11 וטיסין לצפרא: מן הוא דידע לאתבא עושנא
דתוקפך אלהן צדיקיא דדחלין מנך משדכין
12 רוגזך: לממני יומנא כן יתכון להודע ברם נביא
13 דלביה מבע חוכמתא: תוב יי עד אימתי
תסגפננא ותוב מן בישתא די מללתא למעבד
14 לעבדך: שבע יתנא לעלמא דמתיל לצפרא
15 טובך ונרנן ונחדי בכולהון יומנא: שמח יתנא
היך יומין דסגפתנא היך שניא דחמינא בישתא:
16 יתחמי לעבדך עובדי נסך ושבהורך על בניהון:
17 ויהי בסימותא דגן עדן מן קדם יי עלנא ועובדי
ידנא מניה יתקנון: צא
1 דאשרי שכנתיה ברזא עלאה בטלל ענני יקרא
2 דשדי יבית: אמר דוד אימר ליי רוחצני וכרך
3 תוקפי אלהי אכלי במימריה: ארום הוא יפצנך
שלמה ברי מפחא ותקלא ממותא ואתרגושתא:
4 בטלל שכנתיה יטלל עלך ותחות טלל יקריה
5 תתרחץ תריסא ועגילא הימנותיה: לא תדחל
מן דלוחא דמזיקי דאזלין בליליא מן גירא
6 דמלאך מותא דשדי בימָמא: מן מותא די
בקבלא מהלך מסיעת שידין דמחבלין
7 בטיהרא: תדכר שמא דקודשא יפלון מן סטר
שמאלך אלפא ורבבותא מן ימינך לותך לא
8 יקרבון למנזק: לחוד בעינך תהי מסתכל
9 והיך מתנמרין רשיעי תחמי: עני שלמה
וכן אמר ארום אנת הוא יי רוחצני במדור עלאה שויתא בית שכנתך:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Et ſi non convertantur, induces in eos mortem; ſicut ſomniantes erunt: & in mundo venturo ſicut herba quæ exciditur, permutabuntur. Similes ſunt operationes eorum herbæ quæ manè florebit atq; creſcet; veſpere excisa ſiccatur propter æſtum. Quoniã conſumpti ſumus à furore tuo, & ab indignatione tua conturbati ſumus. Poſuiſti peccata noſtra in conſpectu tuo, iniquitates juventutis noſtræ coram luce vultus tui. Quoniam omnes dies noſtri receſſerunt ante te in ira tua, conſumpſimus dies vitæ noſtræ tanquam vaporẽ oris in hyeme. Dies annorũ noſtrorũ in mundo hoc ſeptuaginta anni robuſtiorũ & ſi in fortitudine octoginta anni: at multiplicatio eorũ labor & falſitas peccatoribus, quoniã tranſierũt velociter, et volãt ad mane. Quis eſt ille qui ſciet avertere fortitudinẽ iræ tuæ, niſi juſti qui timẽt te, ſedãtes furorẽ tuũ? Ad numerandos dies noſtros, [quis] ſic diriget ut ſcire faciat? certè propheta cujus cor profundit ſapientiã. Convertere Dñe, uſquequo affliges nos? convertere, inquam, à malo quod locutus es facere ſervis tuis. Satura nos in mundo, qui ſimilis eſt matutino benignitate tua; & lætabimur & exultabimus omnibus diebus noſtris. Lætifica nos ſecundum dies quibus afflixiſti nos, ſicut anni quibus vidimus mala. Manifeſtæ fiant ſervis tuis operationes ſignorum tuorũ, & decor tuus ſuper filios eorũ. Et ſit dulcedo horti deliciarum à conſpectu Dñi ſuper nos, & opera manuum noſtrarum ab ipſo præparentur.

PSAL. XCI.

Qui poſuit majeſtatem ſuam in ſecreto altiſſimo, in umbra nubiũ gloriæ omnipotentis commorabitur. Dixit David; Dicã Domino: Fiducia mea et arx fortitudinis meæ, Deus meus confidam in verbo ejus. Quoniã ipſe liberabit te, Selomoh fili mi, de laqueo & offendiculo, de morte atque tumultu. In umbra majeſtatis ſuæ obumbrabit tibi, & ſub umbra gloriæ ejus ſecurus conſiſtes: clypeus & parmula veritas ejus. Non timebis à timore dæmonũ qui ambulant in nocte, à ſagitta angeli mortis, quam emittit interdiu. A morte in tenebris ambulante, à caterva dæmonum qui graſſantur in meridie. Recordaberis nominis ſancti: & cadent à latere ſiniſtro tuo mille, & decem millia à dextera tua; tibi autem non appropinquabunt ut noceant. Veruntamen oculis tuis conſiderabis: & quemadmodum conſumantur impii videbis. Reſpondit Selomoh & ſic dixit, Quoniam tu ipſe Domine fiducia mea, in habitaculo excelſo poſuiſti domum majeſtatis tuæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 6 * ܥܠܡ̈ܝܗܘܢ ܫܢܬܐ ܢܗܘܘܢ. ܘܒܨܦܪܐ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܢܫܬܚܠܦ : * ܕܒܨܦܪܐ ܢܦܪܥ ܘܢܫܘܚ.
7 8 ܘܒܪܡܫܐ ܢܬܡܘܟ ܘܢܝܒܫ : * ܡܛܠ ܕܣܦܢ ܒܪܘܓܙܟ. ܘܒܚܡܬܟ ܐܬܕܠܚܢ :* ܣܡܬ ܚܛܗ̈ܝܢ
9 ܠܘܩܒܠܟ. ܠܡܛܠ ܗܕܐ ܚܕܬ ܠܢ ܒܢܘܗܪܐ ܕܐܦ̈ܝܟ :* ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܝܘܡ̈ܬܢ ܫܠܡܘ ܒܪܘܓܙܟ. ܘܣܦܘ ܫܢ̈ܝܢ
10 ܐܝܟ ܥܟܒܝܬܐ : * ܝܘܡ̈ܝ ܫܢ̈ܝܢ ܕܝܠܢ ܫܒܥܝܢ ܫܢ̈ܝܢ. ܘܡܣܟܝܢܐܝܬ ܬܡܢܝܢ ܫܢ̈ܝܢ :
11 ܘܣܘܓܐܗܘܢ ܥܡܠܐ ܘܟܐܒܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܬ ܥܠܝܢ ܡܘܟܟܐ ܘܐܬܪܕܝܢ : * ܡܢ ܝܕܥ ܥܘܫܢܐ
12 13 ܕܪܘܓܙܟ. ܘܕܚܠܬܐ ܕܚܡܬܟ :* ܚܘܝܢ ܡܢܝܢܐ ܕܝܘܡ̈ܬܢ. ܕܢܥܘܠ ܒܠܒܐ ܕܚܟܡܬܐ :* ܬܘܒ
14 ܡܪܝܐ ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ. ܘܠܐ ܬܒܝܐ ܠܥܒ̈ܕܝܟ :* ܣܒܥܢ ܒܨܦܪܐ ܛܝܒܘܬܟ. ܘܢܫܒܚ ܘܢܚܕܐ
15 16 ܒܟܠܗܘܢ ܝܘܡ̈ܬܢ :* ܚܕܝܢ ܕܡܝܬܬ ܚܘܒܬܢ. ܘܫܢ̈ܝܐ ܕܚܙܝܢ ܒܝ̈ܫܬܐ :* ܢܬܚܙܘܢ
17 ܠܥܒ̈ܕܝܟ ܥܒ̈ܕܝܟ. ܘܫܘܒܚܟ ܥܠ ܒܢ̈ܝܗܘܢ :* ܘܬܗܘܐ ܒܣܝܡܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܥܠܝܢ :
ܘܥܒܕܐ ܕܐܝ̈ܕܘܗܝ ܬܩܢ ܥܠܝܢ. ܘܥܒܕܐ ܕܐܝ̈ܕܘܗܝ ܣܥܪܢ *
1 * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܐܬܝܠܕ ܗܘܐ ܒܪ ܕܘܝܕ. ܘܒܪܘܚ ܥܠ ܙܟܘܬܗ ܕܡܫܝܚܐ ܘܡܬܓܡܪܐ
ܒܗ. * ܕܝܬܒ ܒܣܬܪܐ ܕܡܪܝܡܐ. ܘܒܛܠܠܐ ܕܐܠܗܐ ܡܫܬܒܗܪ. ܐܡܪ ܠܡܪܝܐ
2 3 ܬܘܟܠܢܝ ܘܓܘܘܣܝ ܐܠܗܝ ܕܥܠܘܗܝ ܬܟܝܠ ܐܢܐ :* ܗܘ ܓܝܪ ܢܦܨܝܟ ܡܢ ܦܚܐ ܕܬܘܩܠܬܐ
4 * ܘܡܢ ܡܠܬܐ ܕܣܪܝܩܘܬܐ. ܒܐܒܪܘܗܝ ܢܦܨܝܟ ܘܬܚܝܬ ܓܦܘܗܝ ܬܬܛܫܐ :* ܙܝܢܐ ܢܛܘܪܟ ܒܩܘܫܬܗ :
5 6 ܘܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܕܚܠܬܐ ܕܠܠܝܐ. ܘܠܐ ܡܢ ܓܐܪܐ ܕܦܪܚ ܒܐܝܡܡܐ :* ܘܠܐ ܡܢ ܡܠܬܐ ܕܡܗܠܟܐ
7 ܒܚܫܘܟܐ. ܘܠܐ ܡܢ ܪܘܚܐ ܕܢܫܒܐ ܒܛܗܪܐ :* ܢܦܠܘܢ ܡܢ ܣܛܪܟ ܐܠܦܐ ܘܪܒܘܬܐ
8 ܡܢ ܝܡܝܢܟ. ܘܠܘܬܟ ܠܐ ܢܬܩܪܒܘܢ :* ܐܠܐ ܒܥܝ̈ܢܝܟ ܒܠܚܘܕ ܬܚܙܐ. ܘܦܘܪܥܢܐ
9 ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܬܚܙܐ :* ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܡܪܝܐ ܬܘܟܠܢܝ. ܕܒܪܘܡܐ ܣܡܬ ܡܥܡܪܟ.

Æva illorum annus erunt; et mane ſicut herba germinabit, Quæ matutino tempore pullulat ac germinat: veſpere autẽ languet & areſcit. Quoniam defecimus in ira tua, & in furore tuo turbati ſumus. Poſuiſti peccata noſtra è regione tui: ideo juveneſcere fac nos lumine vultûs tui. Nam cuncti dies noſtri confecti ſunt indignatione tuâ, & defecerunt anni noſtri ſicut aranea. In dieb⁹ noſtris anni noſtri ſunt ſeptuaginta anni, & vix octoginta anni, & plerique ipſorum labor doloreſque; nam venit adverſùm nos humiliatio, & territi ſumus. Quis noſcit vim iræ tuæ, & terrorem indignationis tuæ? Indica nobis numerum dierum noſtrorũ, ut ingrediamur in cor ſapientiæ. Revertere Dñe: quouſque? Nonne conſolaberis ſervos tuos? Satia nos manè gratiâ tuâ: laudabimus & exultabim⁹ omnibus diebus noſtris. Lætifica nos, quia mortua eſt iniquitas noſtra, & anni quib⁹ vidim⁹ mala. Appareant ſervis tuis opera tua, & decor tuus ſuper filios eorũ. Sit benignitas Dñi Dei noſtri ſuper nos, qui opus manuũ ſuarũ confirmavit ſup nos, & operâ manuũ ſuarũ condit nos.

PSAL. XCI.

Davidis. De Ezechia Rege, quod appellatus erat filius Davidis. Spiritualiter autem dicitur victoria Chriſti, & omnia per eum perficitur. Verſ. 35.

Qui ſedet in protectione Altiſſimi, & umbra Dei gloriatur, Dixit Dño, Fiducia mea, refugium meum Deus, cui ſum confiſus. Ipſe enim te eripiet è laqueo offenſaculi & ſermone vanitatis. Pennis ſuis liberabit te, & ſub alis ejus protegéris. Pro armis, te muniet veritate ſuâ: Non timebis terrorem noctis, neq; ſagittam volantẽ in die. Neq; verbum incedit per tenebras, neq; ventũ flante meridie. Cadent à latere tuo millia, & myriades à dextera tua, & ad te non accedẽt. Sed oculis tuis tantùm ſpectabis, & retributionem impiorum videbis: Quoniã tu es Dñe, Fiducia mea, qui in excelſis collocaſti domicilium

Versio VULG. LAT.

5 Quæ pro nihilo habentur, eorum anni
erunt. Manè sicut herba transeat, manè
floreat, & transeat: vesperè decidat, in-
duret, & arescat. Quia defecimus in ira
tua, & in furore tuo turbati sumus.
8 Posuisti iniquitates nostras in conspe-
ctu tuo, seculum nostrum in illumina-
9 tione vultûs tui. Quoniam omnes
dies nostri defecerunt: & in ira
tua defecimus. Anni nostri sicut
10 aranea meditabuntur: Dies anno-
rum nostrorum in ipsis, septuagin-
ta anni. Si autem in potentatibus,
octoginta anni: & amplius eorum,
labor & dolor. Quoniam supervênit
11 mansuetudo, & corripiemur. Quis no-
vit potestatẽ iræ tuæ, & præ timore tuo
12 iram tuã Dinumerare? Dexteram tuam
sic notam fac, & eruditos corde in sa-
13 pientia. Convertere, Dñe, usquequò? et
deprecabilis esto super servos tuos.
14 Repleti sumus manè misericordiâ tuâ:
& exultavim⁹, & delectati sum⁹ omni-
15 b⁹ diebus nostris. Lætati sumus pro di-
ebus, quib⁹ nos humiliâsti; annis, quib⁹
16 vidim⁹ mala. Respice in servos tuos, et
17 in opera tua: et dirige filios eorũ. Et sit
splẽdor Dñi Dei nostri sup nos, et ope-
ra manuũ nostrarũ dirige super nos:
& opus manuum nostrarum dirige.

Laus Cantici David. XC.

1 Qui habitat in adjutorio Altissimi,
in protectione Dei cœli commo-
2 rabitur. Dicet Dño; Susceptor meus
es tu, et refugium meum: Deus meus,
3 sperabo in eum. Quoniã ipse liberavit
me de laqueo venantiũ, et à verbo a-
4 spero. Scapulis suis obumbrabit tibi:
5 et sub pennis ejus sperabis. Scuto cir-
cumdabit te veritas ejus: non timebis
6 à timore nocturno, A sagitta volante
in die, à negotio perambulante in te-
nebris, ab incursu, et dæmonio meri-
7 diano. Cadent à latere tuo mille, et de-
cem millia à dextris tuis: ad te autem
8 nõ appropinquabit. Verũtamẽ oculis
tuis considerabis: et retributionẽ pec-
9 catorũ videbis. Quoniam tu es, Dñe,
spes mea: Altissimum posuisti refu-
gium tuum.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

5 †Τὰ ἐξουδενώματα αὐτῶν ἔτη ἔσονται, †Τὸ πρωῒ ὡ-
6 σεὶ χλόη παρέλθοι, †τὸ πρωῒ ἀνθήσαι καὶ παρέλ-
θοι, †τὸ ἑσπέρας ἀποπέσοι, σκληρυνθείη καὶ ξηραν-
7 θείη. †Ὅτι ἐξελίπομεν ἐν τῇ ὀργῇ σου, †καὶ ἐν τῷ
8 θυμῷ σου ἐταράχθημεν. †Ἔθου τὰς ἀνομίας ἡμῶν
ἐνώπιόν σου, †ὁ αἰὼν ἡμῶν εἰς φωτισμὸν τοῦ προσ-
9 ώπου σου. †Ὅτι πᾶσαι αἱ ἡμέραι ἡμῶν ἐξέλιπον,
†καὶ ἐν τῇ ὀργῇ σου ἐξελίπομεν. †τὰ ἔτη ἡμῶν (ζ)
10 ὡς ἀράχνη ἐμελέτων. †Αἱ ἡμέραι τῶν ἐτῶν ἡμῶν ἐν
αὐτοῖς ἑβδομήκοντα ἔτη, †ἐὰν δὲ ἐν δυναστείαις,
ὀγδοήκοντα ἔτη, †καὶ τὸ πλεῖον αὐτῶν κόπος καὶ
πόνος· †ὅτι ἐπῆλθε (η) πραότης ἐφ' ἡμᾶς, καὶ
11 παιδευθησόμεθα. †Τίς (θ) γινώσκει τὸ κράτος τῆς
12 ὀργῆς σου, †καὶ ἀπὸ τοῦ (ι) φόβου τοῦ θυμοῦ σου Ἐξ-
αριθμήσασθαι; †τὴν δεξιάν σου οὕτως (κ) γνώρισον, †
13 καὶ τοὺς πεπαιδευμένους τῇ καρδίᾳ ἐν σοφίᾳ. †Ἐ-
πίστρεψον κύριε· ἕως πότε; †καὶ παρακλήθητι ἐπὶ
14 τοῖς δούλοις σου. †Ἐνεπλήσθημεν τὸ πρωῒ τοῦ ἐλέους
σου, †καὶ ἠγαλλιασάμεθα καὶ (′) εὐφράνθημεν. †ἐν πά-
15 σαις ταῖς ἡμέραις ἡμῶν (″) Εὐφρανθείημεν, †ἀνθ' ὧν
ἡμερῶν ἐταπείνωσας ἡμᾶς, †ἐτῶν ὧν εἴδομεν κα-
16 κά. †Καὶ ἴδε ἐπὶ τοὺς δούλους σου καὶ ἐπὶ τὰ ἔργα
17 σου, †καὶ (λ) ὁδήγησον τοὺς υἱοὺς αὐτῶν. †Καὶ ἔστω
ἡ λαμπρότης κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν ἐφ' ἡμᾶς, †καὶ τὰ
ἔργα τῶν χειρῶν ἡμῶν κατεύθυνον ἐφ' (μ) ἡμᾶς.

MS. A. (ζ) ὡσεὶ (η) πραΰτης (θ) γιγνώσκει (ι) φόβου
σου τὸν θυμόν σου (κ) γνώρισόν μοι, καὶ τοὺς πεπεδημένους
(′) ηὐφράνθημεν. (″) Εὐφράνθημεν (λ) ὡδήγησον (μ)
ἡμᾶς, †καὶ τὸ ἔργον τῶν χειρῶν ἡμῶν κατεύθυνον.

Αἶνος ᾠδῆς τῷ Δαυΐδ. ϟ.

1 †Ὁ κατοικῶν ἐν βοηθείᾳ τοῦ ὑψίστου, †ἐν σκέπῃ
2 τοῦ θεοῦ τοῦ οὐρανοῦ αὐλισθήσεται. †Ἐρεῖ τῷ
κυρίῳ, Ἀντιλήπτωρ μου εἶ καὶ καταφυγή μου, †ὁ
3 θεός μου, ἐλπιῶ ἐπ' αὐτόν. †Ὅτι αὐτὸς ῥύσεταί (α)
σε ἐκ παγίδος θηρευτῶν, †καὶ ἀπὸ λόγου ταρα-
4 χώδους. †Ἐν τοῖς μεταφρένοις αὐτοῦ ἐπισκιάσει
σοι, †καὶ ὑπὸ τὰς πτέρυγας αὐτοῦ ἐλπιεῖς. †ὅπλῳ
5 κυκλώσει σε ἡ ἀλήθεια αὐτοῦ. †Οὐ φοβηθήσῃ ἀπὸ
6 φόβου νυκτερινοῦ, †Ἀπὸ βέλους πετομένου ἡμέρας,
†ἀπὸ πράγματος διαπορευομένου ἐν σκότει, †ἀπὸ
7 συμπτώματος καὶ δαιμονίου μεσημβρινοῦ. †Πεσεῖ-
ται ἐκ τοῦ κλίτους σου χιλιάς, †καὶ μυριὰς ἐκ δεξι-
8 ῶν σου, πρὸς σὲ δὲ οὐκ ἐγγιεῖ. †Πλὴν τοῖς ὀφθαλ-
μοῖς σου κατανοήσεις, †καὶ ἀνταπόδοσιν ἁμαρτω-
9 λῶν (′) ὄψῃ. †Ὅτι σὺ κύριε ἡ ἐλπίς μου, †τὸν
ὕψιστον ἔθου καταφυγήν σου.

MS. A. (α) με (′) ὄψη

Vers. GRÆ. LXX Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

[b] Quæ pro nihilo habentur, eorum 5
anni erunt: 6 Manè, sicut herba transe- 6
at: manè floreat, & transeat: ve-
sperè decidat, indurescat, & are-
scat. 7 Quia defecimus in ira tua: 7
& in furore tuo (g) turbati sumus.
8 Posuisti (h) iniquitates nostras in 8
conspectu tuo: (i) [c] seculum no-
strum in illuminatione vultûs tui.
9 Quoniam omnes dies nostri defe- 9
cerunt: & in ira tua defecimus.
10 Anni nostri, sicut aranea (k) me-
ditati sunt: Dies annorum nostrorum 10
in (l) ipsis septuaginta anni. 11 [d] Si
autem in (m) potentatibus octoginta
anni; & amplius eorum, labor, & do-
lor. 12 Quoniam supervênit mansue-
tudo (n) super nos; & corripiemur.
13 Quis (o) noscit potestatẽ iræ tuæ, 11
et præ timore (p) iræ tuæ [e] Dinume- 12
rare? 14 Dexteram tuam sic notam
fac, (q) et eruditos corde in sapientia.
15 Convertere, Domine: (r) usque- 13
quo? et deprecabilis esto super servos
tuos. 16 (s) [f] Repleti sumus manè 14
misericordiâ tuâ: & exultavimus,
& delectati sumus, in omnibus die-
bus (t) nostris. 17 Lætati sumus pro 15
diebus, quibus nos humiliâsti; [g] an-
nis, quibus vidimus mala. 18 Et re- 15
spice in servos tuos, & in opera [h]
tua: & dirige filios eorum. 19 Et sit 17
splẽdor Domini Dei nostri super nos:
& opera manuum nostrarum dirige
super (u) nos.

(a) Laus Cantici ipsi David. XC.

Qui habitat in adjutorio Altissi- 1
mi; in protectione Dei cæli
commorabitur. 2 Dicet Domino, Su- 2
sceptor meus es, & refugium meum,
Deus meus [a]: sperabo in eum.
3 Quoniam ipse (b) liberabit [b] te 3
de laqueo venantium, & à (c) verbo
aspero. 4 (d) Inter scapulas suas ob- 4
umbrabit tibi: & sub alis ejus spera-
bis. 5 Scuto circundabit te veritas 5
ejus: non timebis à timore nocturno,
6 A sagitta volante per diem, à nego- 6
tio perambulante in tenebris: à (e)
ruina, & dæmonio meridiano. 7 Ca- 7
dent à (f) latere tuo mille, & decem
millia à dextris tuis: ad te autem
non appropinquabunt. 8 Veruntamen 8
oculis tuis considerabis, & retribu-
tionem peccatorũ videbis. 9 (g) Quo- 9
niam tu, Domine, spes mea: Altissi-
mum posuisti refugium tuum.

Versio ÆTHIOPICA.

ምኑን፡ ዓመታት፡ በቅድሜሆሙ፡፡=፡ በጽባ 6
ሕ፡ ከመ፡ ሣዕር፡ የኀልፍ፡፡ በጽባሕ፡ ይሠር
ፅ፡ ወየኀልፍ፡፡ ወሰርክሰ፡ ይወድቅ፡ የቢስ፡ ወ
ሰንፀቀ፡፡=፡ እስመ፡ ኀለቅነ፡ በመዓትከ፡፡ 7
ወደንገፅነ፡ በመቅሠፍትከ፡፡=፡ ወሤምከ፡ 8
ኃጢአተነ፡ ቅድሜከ፡፡ ወዓለምነሂ፡ ውስተ፡
ብርሃነ፡ ገጽከ፡፡=፡ እስመ፡ ኀልቀ፡ ኵሉን፡ 9
መዋዕሊነ፡፡ ወኀለቅነ፡ በመቅሠፍትከ፡፡=፡
ወዓመቲነኒ፡ ከመ፡ ሣሬት፡ ይከውና፡፡ ወመዋዕ 10
ለ፡ ዓመቲነ፡ ሰብአ፡ ክረምት፡፡=፡ ወእመ 11
ሰ፡ በገዘኃ፡ ሰማንየ፡ ዓም፡፡ ወፈድፋደንሰ፡ አ
ምሕሳ፡ ጻማ፡ ወሕማም፡፡=፡ እስመ፡ ኀለፈ 12
ት፡ የዋሃት፡ እምኔነ፡ ወተገሠጽነ፡፡=፡ መ 13
ኑ፡ ያአምር፡ ኀይለ፡ መቅሠፍትከ፡፡ ወእም
ግርማ፡ መዐትከ፡ ኀልቈ፡፡=፡ ከመዝ፡ አር 14
ኢ፡ የማንከ፡፡ ለመሁራነ፡ ልብ፡ በጥበብ፡፡=፡
ተመየጥ፡ እግዚኦ፡ እስከ፡ ማእዜኑ፡፡ ወተና 15
በብ፡ በእንተ፡ አግብርቲከ፡፡=፡ እስመ፡ ጸገ 16
ብነ፡ በጽባሕ፡ ምሕረትከ፡፡ ወተፈሣሕነ፡ ወ
ተሐሠይነ፡ በኵሉ፡ መዋዕሊነ፡፡=፡ ወተፈ 17
ሣሕነ፡ ህየንተ፡ መዋዕል፡ ዘአሕመምከነ፡፡ ወ
ህየንተ፡ ዓመት፡ እንተ፡ ርኢናሃ፡ ለእኪት፡፡=፡
ርኢ፡ ላዕለ፡ አግብርቲከ፡ ወላዕለ፡ ተግበር 18
ከ፡ እግዚኦ፡፡ ወምርሖሙ፡ ለደቂቆሙ፡፡=፡
ለይኩን፡ ብርሃኑ፡ ለእግዚአብሔር፡ አምላ 19
ክነ፡ ላዕሌነ፡፡ ወይሠርሕ፡ ለነ፡ ተግባረ፡ እደ
ዊነ፡፡=፡

ስብሐተ፡ ማኅሌት፡ ዘዳዊት፡፡

ን ዘየኀድር፡ በረድኤተ፡ ልዑል፡፡ ወይነብር፡ 1
ውስተ፡ ጽላሎቱ፡ ለአምላከ፡ ሰማይ፡፡=፡ ይ 2
ብሎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ምስካይየ፡ ወጸወን
የ፡ አንተ፡፡ አምላኪየ፡ ወረዳኢየ፡ ወእትዌክ
ል፡ ቦቱ፡፡=፡ እስመ፡ ውእቱ፡ ይባልሐኒ፡ እ 3
መሠገርት፡ ናዓዊት፡፡ ወእምነገር፡ መደንግ
ፅ፡፡=፡ ይጸልለከ፡ በገበዋቲሁ፡፡ ወትትዌከ 4
ል፡ በታሕተ፡ ክንፊሁ፡፡=፡ ጽድቅ፡ በወልታ፡ 5
የዐውደከ፡፡ ወኢትፈርሀ፡ እምግርማ፡ ሌሊ
ት፡፡=፡ ወእምሐፅ፡ ዘይሠርር፡ በመዓልት፡፡ 6
እምግብር፡ ዘየሐውር፡ በጽልመት፡፡ እምድ
ድቅ፡ ወእምጋኔነ፡ ቀትር፡፡=፡ ይወድቁ፡ በ 7
ገቦከ፡ ዐሠርቱ፡ ምእት፡፡ አእላፍ፡ በየማን
ከ፡ ወኀቤከሰ፡ ኢይቀርቡ፡፡=፡ ወበሕቱ፡ ት 8
ሬኢ፡ በአዕይንቲከ፡፡ ወትሬኢ፡ ፍደሆሙ፡ ለ
ኃጥአን፡፡=፡ እስመ፡ አንተ፡ እግዚኦ፡ ተስፋ 9
የ፡፡ ልዑለ፡ ረሰይከ፡ ጸወንከ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] Res contemnenda anni in conspectu eorum: [c] & seculum quidem nostrum [d] Et si multum quidem, octoginta [e] deficiunt. [f] Quoniam repleti [g] & pro annis, [h] tua Domine: *PSAL.* XC. [a] & auxiliator meus: & sperabo [b] me de

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 6 * سنوهم تكون مرذولة ٭ بالغدوات يزول مثل العشب * يزهر في الغدوات ويزول ٭ وفي العشيات يسقط
7 8 ويذبل وييبس * لأنا فنينا في غضبك ٭ واضطربنا في سخطك * جعلت آثامنا قدامك ٭ ودهرنا
9 في نور وجهك * لأن جميع أيامنا فنيت ٭ وفي غضبك فنينا ٭ سنونا مثل نسج العنكبوت
10 ماضية * وأيام حياتنا سبعون سنة ٭ وإن زادت فثمانون ٭ والأكثر تعب ووجع ٭ ولكن الآن في
11 12 دعتك متأدبون * لأنا لا نقدر على شدة سخطك وخشية زجرك * فاهدنا بيمينك لنكون
13 مع المؤدبين القلب بالحكمة * حتى متى يا رب تتعطف علينا ٭ واقبل السؤال في عبيدك ٭
14 15 * امتلأنا وقت الغدوات من رحمتك ٭ وابتهجنا وفرحنا وسررنا جميع أيامنا * عوض الأيام التي
16 أذللتنا فيها ٭ والسنين التي رأينا فيها الرزايا * وانظر إلى عبيدك وإلى أعمالك واهد بنيهم
17 * وليكن نور الرب إلهنا علينا ٭ كما أصلح فينا عمله ٭ وسهل أعمال أيدينا الليلويا ٭

1 ٭ المزمور التسعون * لداود ٭ بركة التسبحة ٭ وعدده لد ٭ استيخن ٭

2 الساكن في عون العلي ٭ يستريح في ظلال إله السماء * يقول للرب أنت هو ناصري وملجأي
3 4 إلهي أتوكل عليه * لأنه ينجيني من فخ الصيادين ٭ ومن كلام المضطهدين * في وسط
5 منكبيه يظللك ٭ وتحت جناحيه يسترك ٭ يحوط بك عدله سلاحا * لا تخاف من خشية الليل ٭
6 ولا من سهم طائر في النهار * ولا من أمر جائر في الظلمة ٭ ولا من سقطة وشيطان الظهيرة ٭
7 8 * تسقط عن يسارك الألوف ٭ والربوات عن يمينك ٭ وأنت لا يقتربون إليك * بل بعينيك تتأمل ٭
9 ومجازاة الخطاة تبصر * لأنك أنت يا رب رجائي ٭ جعلت العلو مسكنك ٭

Anni eorum erunt despecti. In matutinis 5
præteribit sicut herba, Quæ floret in ma- 6
tutinis & præterit, & in vespere decidit
ac languet atque arescit. Nos enim con- 7
sumpti sumus in ira tua, et turbati in fu-
rore tuo. Posuisti dies nostros coram te, et 8
ævum nostrum in lumine vultûs tui. Nam 9
cuncti dies nostri finierunt, & in ira tua
consumpti sumus: anni nostri ceu textu-
ra araneæ sunt labentes. Et dies vitæ no- 10
stræ, septuaginta sunt anni: et si excedant,
octoginta: & complures labor sunt ac do-
lor. Et nos modò in mansuetudine tua
corripimur, Non enim valemus contra vim 11
indignationis tuæ, & timorem furoris tui.
Dirige nos ergò dexterâ tuâ, ut simus 12
cum eruditis corde in sapientia. Quo- 13
usque tandem, O Domine, propitiaberis no-
bis? & admitte deprecationem pro servis
tuis. Repleti sumus temporibus matutinis 14
misericordiâ tuâ, & exaltavimus & ga-
visi ac lætati sumus omnibus diebus no-
stris, Pro diebus in quibus depressisti nos, 15
& annis in quibus vidimus calamitates.
Et respice in servos tuos & in opera tua, 16
& dirige filios eorum. Et sit lumen Do- 17
mini Dei nostri super nos, quemadmodum
disposuit in nobis opus suũ, et facilia red-
didit opera manuum nostrarum. Alleluja.

PSAL. XC.

Davidis, benedictio cantici. Et 1
num. vers. 34.

Habitans in adjutorio Altissimi, requi-
escet in umbra Dei cœli. Dicet Do- 2
mino, Tu es adjutor meus, & refugium
meum, Deus meus cui confido. Quoniam 3
ipse liberabit me à laqueo venatorũ, et à
sermone persequutorũ. In mediis humeris 4
suis te proteget, & sub alis ejus te tuebi-
tur: Circundabit te justitia ejus armis:
Haud metues terrorem noctis neque sagit- 5
tam volantem in die: Neque negotium 6
transiens per tenebras, neque casum &
dæmonium meridiei. Cadent ad sinistram 7
tuam millia, & myriades ad dexteram
tuam; ad te autem non accedent. Sed o- 8
culis tuis considerabis, & retributionem
peccatorum videbis. Quoniam tu es O 9
Domine, spes mea, fecisti altitudinem ha-
bitaculum tuum:

תהלים : צב

Quoniam.tuo tentorio in: appropinquabit non plaga &:malum *te ad fortuitò accidet* Non

10 לֹא־תְאֻנֶּה אֵלֶיךָ רָעָה וְנֶגַע לֹא־יִקְרַב בְּאָהֳלֶךָ : כִּי

11 *volis* In .tuis viis omnibus in te *cuſtodiendum ad* : tibi mandabit ſuis angelis

12 מַלְאָכָיו יְצַוֶּה־לָּךְ לִשְׁמָרְךָ בְּכָל־דְּרָכֶיךָ : עַל־כַּפַּיִם

:calcabis *aſpidem* & leonem Super .tuus pes lapidem *in percutiatur* forte ne ,te portabunt

13 יִשָּׂאוּנְךָ פֶּן־תִּגֹּף בָּאֶבֶן רַגְלֶךָ : עַל־שַׁחַל וָפֶתֶן תִּדְרֹךְ

,eum exaltabo:eũ eruam &,*eſt amplexus* me *in* Quoniã.draconem &,*leunculum* conculcabis

14 תִּרְמֹס כְּפִיר וְתַנִּין : כִּי בִי חָשַׁק וַאֲפַלְּטֵהוּ אֲשַׂגְּבֵהוּ

ego ipſo cum ; eum exaudiam & ,me *Invocabit* .meum nomen cognovit quoniam

15 כִּי־יָדַע שְׁמִי : יִקְרָאֵנִי וְאֶעֱנֵהוּ עִמּוֹ אָנֹכִי

: eum ſaturabo dierum Longitudine .eum glorificabo & ,eum eruam : anguſtia in

16 בְצָרָה אֲחַלְּצֵהוּ וַאֲכַבְּדֵהוּ : אֹרֶךְ יָמִים אַשְׂבִּיעֵהוּ

.mea ſalute in eum videre faciam &

וְאַרְאֵהוּ בִּישׁוּעָתִי :

PSAL. XCII. צב

tuo nomini pſallere & :Domino confiteri Bonum .Sabbathi die in cantici Cantus

1 2 מִזְמוֹר שִׁיר לְיוֹם הַשַּׁבָּת : טוֹב לְהֹדוֹת לַיהוָה וּלְזַמֵּר לְשִׁמְךָ

tuam *fidem* & : tuam miſericordiam mane in annunciandum Ad .Altiſſime

3 עֶלְיוֹן : לְהַגִּיד בַּבֹּקֶר חַסְדֶּךָ וֶאֱמוּנָתְךָ

Quia .cithara cum Highajon ſuper ; nebel ſuper &,decachordo Super .noctibus in

4 בַּלֵּילוֹת : עֲלֵי־עָשׂוֹר וַעֲלֵי־נָבֶל עֲלֵי הִגָּיוֹן בְּכִנּוֹר : כִּי

5 Quàm *.ovabo* tuarum manuum *factis* in *: tuo opere* in Domine me lætificâſti

6 שִׂמַּחְתַּנִי יְהוָה בְּפָעֳלֶךָ בְּמַעֲשֵׂי יָדֶיךָ אֲרַנֵּן : מַה־

.tuæ cogitationes ſunt profundæ valde : Domine tua opera ſunt magnificata

גָּדְלוּ מַעֲשֶׂיךָ יְהוָה מְאֹד עָמְקוּ מַחְשְׁבֹתֶיךָ :

florendo In .illud intelliget non ſtultus & : cognoſcet non *ſtupidus* Vir

7 אִישׁ־בַּעַר לֹא יֵדָע וּכְסִיל לֹא־יָבִין אֶת־זֹאת : בִּפְרֹחַ

8 *eos exterminari ad*:iniquitatis operarii omnes germinaverint & ,herba ſicut *impios*

רְשָׁעִים כְּמוֹ עֵשֶׂב וַיָּצִיצוּ כָּל־פֹּעֲלֵי אָוֶן לְהִשָּׁמְדָם

tui inimici ecce Quoniam .Domine ſeculum in excelſus tu Sed *.pepetuum* in uſq;

9 עֲדֵי־עַד : וְאַתָּה מָרוֹם לְעֹלָם יְהוָה : כִּי הִנֵּה אֹיְבֶיךָ

10 .iniquitatis operarii omnes *ſegregabuntur* : peribunt tui inimici ecce quoniam;Domine

יְהוָה כִּי־הִנֵּה אֹיְבֶיךָ יֹאבֵדוּ יִתְפָּרְדוּ כָּל־פֹּעֲלֵי אָוֶן :

reſpexit Et .viridi oleo *in* ſum *delibutus* : meum cornu monocerotis ſicut *exaltabis* Et

11 וַתָּרֶם כִּרְאֵים קַרְנִי בַּלֹּתִי בְּשֶׁמֶן רַעֲנָן : וַתַּבֵּט

12 audient malignis me adverſum conſurgentibus in ,meis *invidis* in meus oculus

עֵינִי בְּשׁוּרָי בַּקָּמִים עָלַי מְרֵעִים תִּשְׁמַעְנָה

.multiplicabitur Lebanon in cedrus ſicut : florebit palma ut Juſtus .meæ aures

13 אָזְנָי : צַדִּיק כַּתָּמָר יִפְרָח כְּאֶרֶז בַּלְּבָנוֹן יִשְׂגֶּה :

germinabunt Adhuc .florebunt noſtri Dei atriis in ; Domini domo in Plantati

14 15 שְׁתוּלִים בְּבֵית יְהוָה בְּחַצְרוֹת אֱלֹהֵינוּ יַפְרִיחוּ : עוֹד יְנוּבוּן

: Dominus rectus quòd annunciandum Ad .erunt virides & , pingues *: canitie in*

16 בְּשֵׂיבָה דְּשֵׁנִים וְרַעֲנַנִּים יִהְיוּ : לְהַגִּיד כִּי־יָשָׁר יְהוָה

.eo in iniquitas non & ,mea *rupes*

צוּרִי וְלֹא־עַוְלָתָה בּוֹ :

תרגום TARGUM.

10 אתיב מרי עלמא וכן אמר לא תארע לך בישתא
11 ומכתשא ומזיקיא לא יקרבון במשכניך : ארום
12 מלאכוי יפקד עלך למטרנך בכל אורחתך : על
תוקפיהון יטלונך דלמא תתקל ביצרא בישא
13 דמתיל לאבני רגלך : על גור בר אריון ופתנא
14 תבעוץ תרמוס אריא וחורמנא : מטול די
במימרי אתרעי ואשזבניה אשגבניה מטול דידע
15 שמי : יצלי קדמי ואנא עני יתיה עמיה אנא
16 בעקתא אפצניה ואיקרניה : אוריכות יומין
אסבעניה ואחמניה בפורקני :

צב

1 שבחא ושירא די אמר אדם קדמאה על יומא
2 דשבתא : טב לאודאה קדם יי ולשבחא
3 שמך עלאה : לתנאה בצפרא טובך וקושטך
4 בלילון : על פום כנרא דעשרתי נימין ועל פום
5 נבלא עלי רננת כנריא : ארום אחדיתני יי
6 בעובדך בעובדי אידך אבוע : כמה רברבין
7 עובדך יי לחדא עמיקין מחשבתך : בר נש שטיא
8 לא ידע וכסילא לא יתבין ית דא : כד מתלבלבין
רשיעיא היך עסבא ונצצין כל עבדי שקר ועתיד
9 דישיצנון אלהא עד עלמא : ואת רמא ועלאה
בעלמא הדין יי ואת רמא ועלאה לעלמא דאתי :
10 ארום הא בעלי דבבך יי ארום הא בעלי דבבך
יהובדון לעלמא דאתי ומתפרשין מן סיעתהון
11 דצדיקיא כל עבדי שקר : וזקפתא היך רימנא
תוקפי רביתא יתי במשח רבותא רטיבא דזית
12 עבוף : ואסתכלת עיני באובדנא דמעיקי בקימין
13 עלי לאבאשא שמען אודני קל תבירהון : צדיקא
היך דקלא ילבלב פרין היך ארזא בלבנן יסגא
14 ויעביד שרשין : בנוי יהוון שתילין בבית מקדשא
15 דיי בדרת בית אלהנא ילבלבון : תוב
כאבהתהון יעברון בנין בשיבו דהנין ורטיבין
16 יהון : מטול דיחוון דירי ארעא ארום תריץ יי
תקפי ולית עולתא ביה :

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Reſpondit Domin' mundi & ſic dixit, Non eveniet tibi malũ ; & plaga atq; *nocumenta* non accedent ad tabernacula tua. Quoniam angelis ſuis præcipiet de te, ut cuſtodiant te in omnib' viis tuis. Fortitudine ſua portabunt te, ne fortè impingat ad cupiditatem pravam ſimilem lapidi, pes tuus. Catulum filium leonum & baſiliſcum calcabis, conculcabis leonem & draconem. Quoniam in verbo meo ſibi complacuit, & liberabo eum: protegam eum quoniam ſcivit nomen meum. Orabit coram me, & *ego* reſpondebo ei, cum ipſo ego [*adero*] in afflictione: eruam eum, & glorificabo eum. Longitudine dierum ſatiabo illum, & faciam eum intueri in ſalutem meam.

Laus & canticum quod dixit homo primus pro die Sabbati.

PSAL. XCII.

BOnum eſt confiteri coram Dño, & laudare nomen tuum Altiſſime. Ad annunciandum manè benignitatem tuam, & veritatem tuam in noctibus. Super os citharæ decem chordarum, & ſuper os nabli, & in exultatione citharæ. Quoniam lætificâſti me Dñe in operibus *tuis*, in operibus manuum tuarum exultabo. Quàm magnifica opera tua Domine, multum profundæ ſunt cogitationes tuæ. Homo inſipiens non cognoſcet, & ſtultus non intelliget hæc. Quando germinãt impii ſicut herba, & florent omnes operarii falſitatis, tunc futurum eſt quòd deſtruat eos De' uſq; in æternum. Tu autem excelſus ſublimiſq; in ſeculo iſto Dñe, quinimò excelſus & ſublimis in ſeculo venturo. Quoniam ecce inimici tui Dñe, quoniam ecce inimici tui diſſipabuntur in ſeculo venturo, et ſeparabuntur à congregatione juſtorũ omnes qui operantur iniquitatem. Exaltâſti autem quaſi naricornis fortitudinẽ meã : unxiſti me oleo *unctionis* recenti olivæ frondoſæ. Et intuit' eſt ocul' me' in interitũ moleſtantiũ me; in inſurgentes contra me ad malè agendũ, audiunt aures meæ vocem confractionũ eorum. Juſtus tanquàm palma producet germina: ſicut cedr' in Libano multiplicabitur & aget radices. Filii ej' plantati erũt in domo ſanctuarii Dñi, in atriis *dom'* Dei noſtri florebunt. Adhuc veluti patres eorũ procreabũt filios in ſenectute pingues & virides erũt. Ut annuncient habitantes terram, ꝗ rect' eſt Dñs fortitudo mea, & non eſt iniquitas in eo.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 * ܠܐ ܬܬܩܪܒ ܠܟ ܒܝܫܬܐ: ܘܡܚܘܬܐ ܠܐ ܬܬܩܪܒ ܠܡܫܟܢܟ. * ܡܛܠ ܕܠܡܠܐܟܘܗܝ ܢܦܩܕ
11 12 ܥܠܝܟ: ܕܢܛܪܘܢܟ ܒܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܟ. * ܘܥܠ ܕܪ̈ܥܝܗܘܢ ܢܫܩܠܘܢܟ: ܕܠܐ ܬܬܬܩܠ ܒܟܐܦܐ ܪܓܠܟ.
13 14 * ܥܠ ܚܘܪܡܐ ܘܥܠ ܐܟܕܢܐ ܬܕܘܫ: ܘܬܕܝܫ ܐܪܝܐ ܘܬܢܝܢܐ. * ܡܛܠ ܕܒܝ ܨܒܐ ܐܦܨܝܘܗܝ
15 ܘܐܪܘܪܒܝܘܗܝ: ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܫܡܝ * ܢܩܪܝܢܝ ܘܐܥܢܝܘܗܝ. ܘܥܡܗ ܐܢܐ ܒܐܘܠܨܢܗ:
16 ܐܥܫܢܝܘܗܝ ܘܐܝܩܪܝܘܗܝ. * ܢܘܓܪܐ ܕܝܘܡܬܐ ܐܣܒܥܝܘܗܝ: ܘܐܚܘܝܘܗܝ ܦܘܪܩܢܝ.

* ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܫܘܪܝ ܡܣܩܬܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

1 * ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܥܠ ܬܫܡܫܬܐ ܕܟܗܢܐ ܘܥܠ ܩܘܪܒܢܝܗܘܢ ܕܨܦܪܐ. ܘܡܬܢܒܐ
ܥܠ ܡܬܢܝܚܢܘܬܐ ܕܒܐܠܗܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܠܒ.

2 3 * ܛܒ ܠܡܘܕܝܘ ܠܡܪܝܐ. ܘܠܡܙܡܪܘ ܠܫܡܟ ܡܪܝܡܐ: * ܘܠܡܚܘܝܘ ܒܨܦܪܐ ܛܝܒܘܬܟ.
4 5 ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܒܠܠܝܘܬܐ: * ܐܢܐ ܐܢܩܘܫ ܒܩܝܬܪܐ ܕܥܣܪ. ܘܐܢܩܘܫ ܒܟܢܪܐ: * ܡܛܠ ܕܚܕܝܬܢܝ
6 ܡܪܝܐ ܒܥܒܕܝܟ. ܘܒܥܒܕ ܐܝܕܝܟ ܐܫܬܒܚ: * ܡܐ ܪܘܪܒܝܢ ܥܒܕܝܟ ܡܪܝܐ. ܘܛܒ ܥܡܝܩܝܢ
7 8 ܡܚܫܒܬܟ: * ܘܓܒܪܐ ܫܛܝܐ ܠܐ ܝܕܥ. ܘܣܟܠܐ ܠܐ ܡܣܬܟܠ ܒܗܕܐ: * ܡܐ ܕܦܪܥܝܢ ܪܫܝܥܐ
9 ܐܝܟ ܥܣܒܐ. ܘܡܘܥܝܢ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ: ܢܐܒܕܘܢ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ
10 ܡܪܝܡܐ ܠܥܠܡ: * ܡܛܠ ܕܗܐ ܒܥܠܕܒܒܝܟ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܗܐ ܒܥܠܕܒܒܝܟ ܢܐܒܕܘܢ:
11 ܘܢܬܒܕܪܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. * ܐܪܝܡܬ ܩܪܢܝ ܐܝܟ ܕܪܝܡܐ: ܘܡܫܚܬܢܝ ܒܡܫܚܐ
12 ܒܣܝܡܐ. * ܘܚܙܬ ܥܝܢܝ ܒܒܥܠܕܒܒܝ: ܘܒܒܝܫܐ ܕܩܝܡܝܢ ܥܠܝ ܢܫܡܥܢ ܐܕܢܝ.
13 14 * ܙܕܝܩܐ ܐܝܟ ܕܩܠܐ ܢܦܪܥ: ܘܐܝܟ ܐܪܙܐ ܕܠܒܢܢ ܢܫܓܐ. * ܕܢܨܝܒܝܢ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ:
15 ܘܒܕܪ̈ܬܐ ܕܐܠܗܢ. ܢܦܪܥܘܢ ܬܘܒ * ܘܢܬܪܒܘܢ ܒܣܝܒܘܬܐ: ܫܡܝܢܐ ܘܡܒܣܡܢܐ ܢܗܘܘܢ.
16 * ܘܢܚܘܘܢ ܕܬܪܝܨ ܗܘ ܡܪܝܐ: ܚܣܝܢ ܘܠܝܬ ܥܘܠܐ ܒܗ.

* Non tanget te malum, & flagellum non appropinquabit tabernaculo tuo ; Nam angelos ſuos monebit de te, ut cuſtodiant te in omnibus viis tuis : Et ſuper brachia ſua te geſtent, ne offendas pede tuo. Super aſpidem & ſuper baſiliſcum gradiêris, conculcabiſque leonem atque draconem. Quandoquidem me quæſivit, eripiam eum & magnificabo eum. Quia cognovit nomen meum, Vocabit me & reſpondebo illi, & cum ipſo ſum in tribulatione: extollam eum & honorificabo illum Longitudine dierum ſatiabo eum, & oſtendam illi ſalutem meam.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. XCII.

Anonymus. De miniſterio Sacerdotum, & de ſacrificiis eorũ matutinis. Prædicit etiam quietem in Deo. Verſ. 32.

BOnum eſt confiteri Domino, & pſallere nomini tuo, Altiſſime, Et patefacere mane bonitatem tuam, fidémque tuam noctibus. Ego pulſabo lyram decem, & pulſabo citharam : Quoniam exhilarâſti me, Domine, operibus tuis, & in opera manuum tuarum gloriabor. Quàm magna ſunt facta tua, Domine, & valdè profundæ cogitationes tuæ ! At vir ſtolidus non agnoſcit, & ſtultus haud percipit hoc. Quum germinabunt impii ſicut herba, & pullulabunt omnes operantes iniquitatem, peribunt in ſeculum ſeculorum ; Tu verò, Domine Altiſſime, in æternum eris. Nam ecce hoſtes tui, Domine, nam ecce hoſtes tui peribunt, & diſpergentur omnes operantes iniquitatem. Extuliſti cornua mea ut Rhinocerotis, & tinxiſti me unguento ſuavi ; Et viderunt oculi mei in hoſtibus meis, & in malignis inſurgentibus adverſùm me audient aures meæ. Juſtus ut palma germinabit, & ſicut cedri Libani pullulabit. Plantati in domo Domini & in atriis Dei noſtri, germina emittent adhuc, Et creſcent in ſenectute; pingues atque ſuaves reddentur. Et manifeſtabunt rectum eſſe Dominum, fortem, & nullam eſſe in ipſo iniquitatem.

Verſio VULG. LAT.

10 Non accedet ad te malum: & flagellū non appropinquabit tabernaculo tuo. 11 Quoniam angelis ſuis mandavit de te: ut cuſtodiant te in omnibus viis tuis. 12 In manib' portabunt te: ne fortè offendas 13 ad lapidem pedem tuum. Super aſpidem & baſiliſcum ambulabis: & conculcabis leonem & draconem. 14 Quoniam in me ſperavit, liberabo eum: protegam eum, quoniam cognovit 15 nomen meum. Clamabit ad me, & ego exaudiam eum: cum ipſo ſum in tribulatione: eripiam eum & glorifi- 16 cabo eum. Longitudine dierum replebo eum: & oſtendā illi ſalutare meum.

1 Pſalmus Cantici, In die Sabbati. XCI.

2 BOnum eſt confiteri Dn̄o, & pſallere nomini tuo, Altiſſime; 3 Ad annuntiandum manè miſericordiam tuam, et 4 veritatem tuam per noctem; In decachordo, pſalterio, cum cantico, in ci- 5 thara. Quia delectâſti me, Domine, in factura tua: & in operibus manuum 6 tuarum exultabo. Quàm magnificata ſunt opera tua, Domine: nimis profun- 7 dæ factæ ſunt cogitationes tuæ. Vir inſipiens non cognoſcet: & ſtultus non 8 intelliget hæc. Cùm exorti fuerint peccatores ſicut fœnum: & apparuerint omnes, qui operantur iniquitatē: 9 Ut intereant in ſeculum ſeculi: Tu autem Altiſſimus in æternum, Domine. 10 Quoniam ecce inimici tui, Domine, quoniam ecce inimici tui peribunt: & diſpergentur omnes, qui operantur 11 iniquitatem. Et exaltabitur ſicut unicornis cornu meum: & ſenectus mea 12 in miſericordia uberi. Et deſpexit oculus meus inimicos meos: & in inſurgentibus in me malignantibus au- 13 diet auris mea. Juſtus, ut palma florebit: ſicut cedrus Libani multiplicabi- 14 tur. Plantati in domo Domini, in a- 15 triis domûs Dei noſtri florebunt. Adhuc multiplicabuntur in ſenecta ube- 16 ri: & benè patientes erunt, Ut annuntient: Quoniam rectus Dominus De' noſter: & non eſt iniquitas in eo.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

10 † Οὐ προσελεύσεται πρὸς σὲ κακὰ, † καὶ μάστιξ οὐκ 11 ἐγγιεῖ τῷ σκηνώματί σου. † Ὅτι τοῖς ἀγγέλοις αὐτοῦ ἐντελεῖται περὶ σοῦ, † τοῦ διαφυλάξαι σε ἐν πά- 12 σαις ταῖς ὁδοῖς σου. † Ἐπὶ χειρῶν ἀροῦσί σε, † μή- 13 ποτε προσκόψῃς πρὸς λίθον τὸν πόδα σου. † Ἐπ' ἀσπίδα καὶ βασιλίσκον ἐπιβήσῃ, † καὶ καταπατήσεις 14 λέοντα καὶ δράκοντα. † Ὅτι ἐπ' ἐμὲ ἤλπισε, καὶ ῥύσομαι αὐτόν· † σκεπάσω αὐτὸν, ὅτι ἔγνω τὸ 15 ὄνομά μου. † (β) Ἐπικαλέσεταί με, καὶ εἰσακούσομαι αὐτοῦ, † μετ' αὐτοῦ εἰμι ἐν θλίψει, καὶ ἐξ- 16 ελοῦμαι αὐτὸν, καὶ δοξάσω αὐτόν. † (γ) Μακρότητι ἡμερῶν ἐμπλήσω αὐτὸν, † καὶ δείξω αὐτῷ τὸ σωτήριόν μου.

MS.A. (β) Καὶ κράξεται πρὸς μὲ, καὶ (γ) Μακρότητα

1 Ψαλμὸς ᾠδῆς Εἰς τὴν ἡμέραν τοῦ σαββάτου. ϟα'.

2 † ἈΓαθὸν τὸ ἐξομολογεῖσθαι τῷ κυρίῳ, † καὶ 3 ψάλλειν τῷ ὀνόματί σου ὕψιστε. † Τοῦ ἀναγγέλλειν τὸ πρωῒ τὸ ἔλεός σου, † καὶ τὴν ἀλήθειάν σου 4 κατὰ νύκτα, † Ἐν δεκαχόρδῳ ψαλτηρίῳ, μετ' ᾠδῆς 5 ἐν κιθάρᾳ. † Ὅτι εὔφρανάς με κύριε ἐν τῷ ποιήματί σου, † καὶ ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν σου ἀγαλλι- 6 άσομαι. † Ὡς ἐμεγαλύνθη τὰ ἔργα σου κύριε; 7 † Σφόδρα ἐβαθύνθησαν οἱ διαλογισμοί σου. † Ἀνὴρ ἄφρων οὐ γνώσεται, † καὶ ἀσύνετος οὐ συνήσει 8 ταῦτα. † Ἐν τῷ ἀνατεῖλαι (ʹ) τοὺς ἁμαρτωλοὺς ὡσεὶ χόρτον, † καὶ διέκυψαν πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, † ὅπως ἂν (α) ἐξολοθρευθῶσιν εἰς τὸν αἰ- 9 ῶνα τοῦ αἰῶνος. † Σὺ δὲ ὕψιστος εἰς τὸν αἰῶνα κύριε. 10 † (β) Ὅτι ἰδοὺ οἱ ἐχθροί σου ἀπολοῦνται, † καὶ διασκορπισθήσονται πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομί- 11 αν. † Καὶ ὑψωθήσεται ὡς μονοκέρωτος τὸ κέρας 12 μου, † καὶ τὸ γῆράς μου ἐν ἐλαίῳ πίονι. † Καὶ (γ) ἐπεῖδεν ὁ ὀφθαλμός μου ἐν τοῖς ἐχθροῖς μου, † καὶ ἐν τοῖς (δ) ἐπανισταμένοις ἐπ' ἐμὲ πονηρευομένοις ἀκού- 13 σεται τὸ οὖς μου. † Δίκαιος ὡς φοῖνιξ ἀνθήσει, † ὡς 14 ἡ κέδρος ἡ ἐν τῷ Λιβάνῳ πληθυνθήσεται. † Πεφυτευμένοι ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου, † ἐν ταῖς αὐλαῖς τοῦ 15 θεοῦ ἡμῶν ἐξανθήσουσιν. † (ε) Τότε πληθυνθήσον- 16 ται ἐν γήρει πίονι, καὶ εὐπαθοῦντες ἔσονται τοῦ ἀναγγεῖλαι· † ὅτι εὐθὴς κύριος ὁ (ζ) θεός μου, † καὶ οὐκ ἔστιν ἀδικία ἐν αὐτῷ.

MS.A. (ʹ) ἁμαρτωλοὺς (α) ἐξολεθρευθῶσιν (β) Ὅτι ἰδοὺ οἱ ἐχθροί σου κύριε, ὅτι ἰδοὺ (γ) ἐφεῖδεν (δ) ἐπανιστανομένους (ε) Ἔτι πληθυνθήσονται (ζ) θεὸς ἡμῶν,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

10 [c] *Non accedent ad te mala: & flagellum non appropinquabit tabernaculo tuo.* 11 *Quoniam angelis ſuis mandabit de te, ut cuſtodiant te in omnibus viis tuis.* 12 *In manibus tollent te: ne (h) quando offendas ad lapidem pedem tuum.* 13 *Super* [d] *aſpidem, & baſiliſcum (i) ambulabis: & conculcabis leonem, & draconem.* 14 *Quoniam in me ſperavit; et eruam eum: protegam eum, quoniam cognovit nomen meum.* 15 *(k) Invocabit me, & ego* [e] *exaudiam eum: cum ipſo ſum in* [f] *tribulatione: & eximam eum, & glorificabo eum.* 16 *Longitudine dierum replebo eum: & oſtendam illi ſalutare meum.*

M.S. Æthiop. Pock. Gloria Patri, & Filio, & Spiritui Sancto: In ſeculum ſeculorum. Amen & Amen.

Pſalmus Cantici In die Sabbati. XCI. 1

1 B*Onum eſt confiteri Domino, & pſallere (a) nomini tuo Altiſſime.* 2 *Ad annuntiandum manè miſericordiam tuam, & veritatem tuam per noctem.* 3 *In decachordo pſalterio, cum cantico in cithara.* 4 *Quia delectâſti me, Domine, in factura tua: & in operibus manuum tuarum exultabo.* 5 *Quàm magnificata ſunt opera tua, Domine: nimis (b) profundæ factæ ſunt cogitationes tuæ.* 6 *Vir imprudens non cognoſcet: &* [a] *ſtultus non intelliget hæc.* 7 *Cùm exorti fuerint peccatores ſicut fœnum, & (c) apparuerint omnes, qui operantur iniquitatem:* 8 *ut intereant in ſeculum ſeculi: Tu autem Altiſſimus in æternū, Dom̄ine.* 9 *(d) Quoniā ecce inimici tui peribunt: & diſpergentur omnes qui operantur iniquitatem.* 10 *Et exaltabitur, ſicut unicornis, cornu meum: &* [b] *ſenectus mea in (e) miſericordia pingui.* 11 *Et (f) reſpexit oculus meus in inimicis meis: & in eis qui inſurgunt in me malignantibus, audiet auris mea.* 12 *Juſtus ſicut palma, florebit: velut cedrus, quæ in Libano eſt, multiplicabitur.* 13 *(g) Plantati in domo Domini, in atriis Dei noſtri florebunt.* 14 *(h)* [c] *Tunc multiplicabuntur in ſenecta uberi: & (i) tranquilli erunt,* 15 *ut annuntient: Quoniam rectus Dominus* [d] *Deus (k) meus: & non eſt iniquitas in eo.*

Verſio ÆTHIOPICA.

10 ወይቀርብ፡ እኩይ፡ ኀቤከ፡፡ ወኢይበውእ፡ መቅሠፍት ፡ ቤተከ፡፡=፡ 11 እስመ፡ ለመላእክቲሁ፡ ይኤዝዞሙ፡ በእንቲአከ፡፡ ከመ፡ ይዕቀቡከ፡ በኵሉ ፡ ፍናዊከ፡፡=፡ 12 ወበእደው፡ ያንሥኡከ፡፡ ከመ፡ ኢትትዐቀፍ፡ በእብን፡ እግረከ፡፡=፡ 13 ላዕለ፡ ተኵላ፡ ወከይሲ፡ ትጼዓን፡፡ ወትከይድ ፡ አንበሳ ፡ ወከይሴ፡፡=፡ 14 እስመ፡ ብየ፡ ተወከለ፡ አድኅኖ፡፡ ወእከድኖ፡ እስመ፡ አእመረ ፡ ስምየ፡፡=፡ 15 ይጼውዐኒ ፡ ወእሰጠዎ፡፡ ሀሎኩ ፡ ምስሌሁ፡ ሶበ፡ ምንዳቤሁ፡፡ አድኅኖ ፡ ወእሴብሖ፡፡=፡ 16 ለነዋኅ ፡ መዋዕል፡ እጸግቦ፡፡ ወአርእዮ፡ አድኅኖትየ፡፡=፡ ስብሐት፡ ለአብ ፡ ወወልድ ፡ ወመንፈስ፡ ቅዱስ፡፡ ለዓለም፡ ዓለም፡ አሜን፡ ወአሜን፡፡=፡

መዝሙር፡ መሓሊት፡ በዕለተ፡ ሰንበት፡፡

1 ሠናይ ይኔይስ፡ ተአምኖ፡ በእግዚአብሔር፡፡ 2 ወዘምሮ፡ ለስምከ ፡ ልዑል፡፡=፡ ወነጊር ፡ በጽባሕ ፡ ምሕረትከ ፡፡ ወጽድቅከኒ ፡ በሌሊት፡፡=፡ 3 በዘ፡ ዐሠርቱ፡ አውታሪሁ፡ መዝሙር፡ ማኅሌት፡ ወመሰንቆ፡፡=፡ 4 እስመ ፡ አስተፈሣሕከኒ፡ እግዚኦ፡ በምግባሪከ፡፡ ወእትሐሠይ፡ በግብረ ፡ እደዊከ፡፡=፡ 5 ጥቀ፡ ዐቢይ፡ ግብርከ ፡ እግዚኦ፡፡ ወፈድፋደ ፡ ዕሙቅ ፡ ሐሊናከ፡፡=፡ 6 ብእሲ፡ አብድ፡ ኢያእምር፡፡ ወዘአልቦ፡ ልበ፡ ኢይሌብዎ ፡ ለዝንቱ፡፡ 7 ሶበ፡ ይበቍሉ ፡ ኃጥአን ፡ ከመ ፡ ሣዕር፡፡ ወይሠርጹ፡ ኵሎሙ፡ ገበርተ፡ ዐመፃ፡፡=፡ 8 ከመ፡ ይሠርረው፡ ለዓለም፡ ዓለም፡፡ ወአንተሰ፡ ልዑል፡ ለዓለም፡ እግዚኦ፡፡=፡ 9 እስመ ፡ ናሁ ፡ ጸላእትከ፡ ይትሐጐሉ፡፡ ወይዘረው፡ ኵሎሙ፡ ገበርተ፡ ዐመፃ፡፡=፡ 10 ወይትሌዐል፡ ቀርንየ፡ ከመ፡ ዘአሐዱ ፡ ቀርኑ፡፡ ወይጠልል ፡ በቅብአ፡ ሲበትየ፡፡=፡ 11 ወርእየት ፡ ዐይንየ፡ በጸላእትየ፡፡ ወሰምዐት፡ እዝንየ፡ ዲበሆሙ፡ ለእኩያን፡ እለ፡ ቆሙ፡ ላዕሌየ፡፡=፡ 12 ጻድቅሰ፡ ከመ፡ በቀልት፡ ይፈሪ፡፡ ወይበዝኅ ፡ ከመ፡ ዘግባ፡ ዘሊባኖስ፡፡=፡ 13 ትኩላን፡ ለሙንቱ፡ ውስተ፡ ቤተ፡ እግዚአብሔር፡፡ ወይበቍሉ ፡ ውስተ፡ ዐጸዱ፡ ለአምላክነ፡፡=፡ 14 ውእተ ፡ አሚረ፡ ይበዝኁ ፡ በርሥአን ፡ ጥሉል፡፡ ወይከውኑ፡ ዕሩፋነ፡፡=፡ 15 ወይነግሩ፡ ከመ፡ ጻድቅ፡ እግዚአብሔር ፡ አምላክነ ፡፡ ወአልቦ ፡ ዐመፃ ፡ በኀቤሁ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] Et accedet ad te malum: ſed [d] lupum & draconem equitabis: [e] reſpondebo ei: [f] tribulatione ejus: *PSAL. XCI.* [a] excors non [b] impinguabitur in oleo quietis meæ. [c] In illo die multiplicabuntur [d] Deus noſter:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 * لا ياتي عليك الشر * ولا تدنوا ضربة من مسكنك * لانه يوصي ملايكته من اجلك
11
12 لكي يحفظوك في جميع طرقك * وعلي ايديهم يحملونك * ليلا تعثر بحجر رجلك * تطا
13 علي الافعي والحية الخرساء * وتدوس الاسد والتنين * لانه اياي رجا فاخلصه واستره لانه
14
15 عرف اسمي * يدعوني فاجيبه * انا اكون معه في الشدة * انقذه واكرمه * واشبعه طول
16 الايام واريه خلاصي * اللليلويا *

1 * المزمور الحادي والتسعون * لداود * تسبحة يوم السبت * وعدده * يط * استيخن *
2 * جيد هو الشكر للرب * والترتيل لاسمك ايها العالي * لكي نخبر في الغدوات برحمتك * وفي
3
4 الليالي بحقك * بمزمار ذي عشرة اوتار مع تسبيح وقيثارة * لانك افرحتني يا رب بصنعك
5
6 وباعمال يديك استبشر * يا رب ما اعظم اعمالك * وافكارك عمقت جدا * الرجل الجاهل لا يعلم
7
8 وعديم الفهم لا يفهم هذه * عندما تشرق الخطاة مثل العشب وتشرق عاملوا الاثم * هناك
9 يستاصلون الي الابد * انت الرب المتعالي الي ابد الابد * انه ها هوذا اعداوك يا رب
10
11 انه ها هوذا اعداوك يهلكون * وجميع عاملي الاثم يتبددون * ويعلو قرني كوحيد القرن
12 وشيخوختي في دهن دسم * وتقر عيناي باعداي * وتسمع اذني في القايمين علي صانعي الشر
13 * البار يعلو مثل النخلة * ويكثر مثل ارز لبنان * مغروسون في بيت الرب * ويزهرون في ديار
14
15 بيت الهنا * حينيذ يكثرون في شيخوخة دسمة * ويكون اجتهادهم نعما * ليخبروا ان الرب
16 الهنا عادل * وليس عنده ظلم * اللليلويا *

Non eveniet tibi malum, & non accedet 10 *flagellum ad habitationem tuam. Quoniā* 11 *ipſe mandabit angelis ſuis de te, ut cuſtodiant te in omnibus viis tuis;* 12 *Et ſuper manus ſuas portabunt te, ut non offendat in lapide pes tuus.* 13 *Calcabis aſpidem & baſiliſcum, et comprimes leonem et draconem.* 14 *Quoniam ipſe me ſperavit, liberabo eum: et protegam eum, quoniam ipſe cognovit nomen meum.* 15 *Invocabit me, et exaudiam eum: ego ero cum ipſo in tribulatione: Liberabo eum, & glorificabo eum.* 16 *Et ſaturabo eum longitudine dierum, & oſtendam illi ſalutem meam. Alleluja.*

PSAL. XCI.

Davidis. Canticum diei Sabbathi. 1
Et num. ver. 19.

B*Ona eſt gratiarum actio Domino, &* 2 *pſalmodia nomini tuo, O Altiſſime.* 3 *Ut enarremus in matutinis miſericordiam tuam, & in noctibus veritatem tuam,* 4 *Cum pſalterio decem chordarum, cum laude & cithara.* 5 *Quoniam lætificâſti me, O Domine, præclaris operibus tuis, & factis manuum tuarum gaudebo.* 6 *O Domine, quàm magna ſunt opera tua! & cogitationes tuæ profundæ factæ ſunt nimis.* 7 *Vir ignorans non cognoſcit, et expers judicio non intelligit hæc.* 8 *Quum exorti fuerint peccatores tanquam herba, et apparuerint operantes iniquitatem, illico eradicabuntur in æternum.* 9 *Tu es Dominus exaltatus in ſeculum ſeculi.* 10 *Nam ecce inimici tui, O Domine, nam ecce inimici tui diſpergentur, & omnes operantes iniquitatem interibunt:* 11 *Et extolletur cornu meum ſicut unicornis, & ſenectus mea in unguento ſuavi.* 12 *Et quieſcent oculi mei in hoſtibus meis, & audiet auris mea de inſultantibus mihi, auctoribus ſceleris.* 13 *Juſtus evehetur in altum ſicut palma, et multiplicabitur ſicut cedri Libani.* 14 *Plantati in domo Domini, & florentes in atriis domûs Dei noſtri,* 15 *Tunc creſcent in ſenectute jucunda, eritque ſedulitas eorū optima.* 16 *Ut annuntient Dominum Deum noſtrum eſſe juſtum, & nullam eſſe apud eum iniquitatem. Alleluja.*

תהלים : צג צד

PSAL. XCIII. צג

:ſe accinxit,fortitudinem Dominus induit , induit *celſitudinem* ; regnavit Dominus
1 יְהוָה מָלָךְ גֵּאוּת לָבֵשׁ לָבֵשׁ יְהוָה עֹז הִתְאַזָּר
ſeculo à : *tunc* ex tuum ſolium Paratum .*nutet* ne *orbis* *firmabitur* etiam
2 אַף־תִּכּוֹן תֵּבֵל בַּל־תִּמּוֹט: נָכוֹן כִּסְאֲךָ מֵאָז מֵעוֹלָם
:*ſuam vocem* flumina elevaverunt ; Domine flumina Elevaverunt .tu
3 אָתָּה: נָשְׂאוּ נְהָרוֹת יְהוָה נָשְׂאוּ נְהָרוֹת קוֹלָם
potentium , multarum aquarum *vocibus Præ* .ſuam illiſionem flumina elevabunt
4 יִשְׂאוּ נְהָרוֹת דָּכְיָם: מִקֹּלוֹת מַיִם רַבִּים אַדִּירִים
,valde ſunt fidelia tua Teſtimonia .Dominus excelſo in *potens* : maris *procellarum*
5 מִשְׁבְּרֵי־יָם אַדִּיר בַּמָּרוֹם יְהוָה: עֵדֹתֶיךָ נֶאֶמְנוּ מְאֹד
.dierum longitudinem in Domine : ſanctitas eſt decora tuæ domui
לְבֵיתְךָ נַאֲוָה־קֹדֶשׁ יְהוָה לְאֹרֶךְ יָמִים:

PSAL. XCIV. צד

: terram judicans te Eleva .*irradia* ultionum Deus , Domine ultionum Deus
1 2 אֵל־נְקָמוֹת יְהוָה אֵל נְקָמוֹת הוֹפִיַע: הִנָּשֵׂא שֹׁפֵט הָאָרֶץ
-uſque ? Domine impii quo---Uſque .ſuperbis *ſuper* retributionem redde
3 הָשֵׁב גְּמוּל עַל־גֵּאִים: עַד־מָתַי רְשָׁעִים יְהוָה עַד־
omnes ſe *prædicabunt : durum* loquentur *Effutient* ?exultabunt impii quo
4 מָתַי רְשָׁעִים יַעֲלֹזוּ: יַבִּיעוּ יְדַבְּרוּ עָתָק יִתְאַמְּרוּ כָּל־
tuam hæreditatem & : conterent Domine tuum Populum .*iniquitatis* operarii
5 פֹּעֲלֵי אָוֶן: עַמְּךָ יְהוָה יְדַכְּאוּ וְנַחֲלָתְךָ
.occident pupillos & : interficient peregrinum & Viduam .affligent
6 יְעַנּוּ: אַלְמָנָה וְגֵר יַהֲרֹגוּ וִיתוֹמִים יְרַצֵּחוּ:
Intelligite .Jahacob Deus intelliget non & :*Jah* videbit non , dixerunt Et
7 8 וַיֹּאמְרוּ לֹא יִרְאֶה־יָּהּ וְלֹא יָבִין אֱלֹהֵי יַעֲקֹב: בִּינוּ
aurem plantans Nónne *? intelligetis quando* fatui & : populo in ſtulti
9 בֹּעֲרִים בָּעָם וּכְסִילִים מָתַי תַּשְׂכִּילוּ: הֲנֹטַע אֹזֶן
nónne gentes corripiens Nónne ?aſpiciet non oculum formans an : audiet non
הֲלֹא יִשְׁמָע אִם־יֹצֵר עַיִן הֲלֹא יַבִּיט: הֲיֹסֵר גּוֹיִם הֲלֹא
cogitationes *ſciens* Dominus ?ſcientiam hominem *docens* ipſe ? arguet
יוֹכִיחַ הַמְלַמֵּד אָדָם דָּעַת: יְהוָה יֹדֵעַ מַחְשְׁבוֹת
Jah cum erudieris quem *viri Felicitates* .vanitas *ipſæ* quoniam : hominum
אָדָם כִּי־הֵמָּה הָבֶל: אַשְׁרֵי הַגֶּבֶר אֲשֶׁר־תְּיַסְּרֶנּוּ יָּהּ
fodiatur donec : mali diebus à ,ei *præſtandum* quietem *Ad* .eum docueris *tua lege è &*
וּמִתּוֹרָתְךָ תְלַמְּדֶנּוּ: לְהַשְׁקִיט לוֹ מִימֵי רָע עַד יִכָּרֶה
ſuam hæreditatẽ & :ſuum populũ Dominus derelinquet non Quia .fovea impio
4 לָרָשָׁע שָׁחַת: כִּי לֹא־יִטֹּשׁ יְהוָה עַמּוֹ וְנַחֲלָתוֹ
omnes illud poſt &:judicium revertetur juſtitiam ad uſque Quia .derelinquet non
15 לֹא יַעֲזֹב: כִּי־עַד־צֶדֶק יָשׁוּב מִשְׁפָּט וְאַחֲרָיו כָּל־
cum mihi ſtabit quis?malignantibus cum mihi conſurget Quis .corde recti
16 יִשְׁרֵי־לֵב: מִי־יָקוּם לִי עִם־מְרֵעִים מִי־יִתְיַצֵּב לִי עִם־
habitâſſet *parum quaſi* : mihi *auxilium* Dominus Niſi *? iniquitatis* operariis
17 פֹּעֲלֵי אָוֶן: לוּלֵי יְהוָה עֶזְרָתָה לִּי כִּמְעַט שָׁכְנָה
.mea anima *ſilentium*
דוּמָה נַפְשִׁי:

תרגום TARGUM

צג

1 יְיָ מְלִיךְ גֵּיוּתָנוּתָא אַלְבֵּשׁ אַלְבֵּשׁ יְיָ עוּשְׁנָא
2 וְאִזְדָרֵז לְחוּד תַּקִּיף תֵּבֵל דְלָא תְזַדַעְזַע: מְתַקַּן
כּוּרְסְיָךְ מִן לְקַדְמִין מִן עַלְמָא אַתְּ אֱלָהָא:
3 וְקִיפִין נַהֲרָוָתָא יְיָ וְקִיפִין נַהֲרָוָתָא קָלְהוֹן
4 בְּשִׁירָתָא יְקַבְּלוּן נַהֲרָוָתָא אַגַר שְׁבָחֵיהוֹן: מִן
קָלָן דְּמַיִין סַגִּיעִין מְשַׁבְּחַיָא תְּבִירֵי יַמָּא רַבָּא
5 מְשַׁבַּח בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא דַייָ: סַהֲדְוָתָךְ קְשִׁיטִין
לַחֲדָא לְבֵית מַקְדְשָׁךְ יָאִין וְקַדִּישִׁין יְיָ לְאוֹרִיכוּת
יוֹמִין:

צד

1 אֱלָהָא מָרֵי פּוּרְעָנוּתָא יְיָ אֱלָהָא מָרֵי פּוּרְעָנוּתָא
2 הוֹפַע: אִתְנַטַּל דַּיָּן אַרְעָא אָתֵיב גּוּמְלָא בִישָׁא
3 עַל גֵּיוּתְנַיָא: עַד אֵימָתַי רַשִׁיעַיָא יְיָ עַד אֵימָתַי
4 רַשִׁיעַיָא יִתְבּוּן בְּשַׁלְוְתָא: יַבְעוּן וִימַלְּלוּן
גְּדוּפִין אָמְרִין מִלִּין דְּקָלְנָא כָּל עָבְדֵי שְׁקַר:
5 6 עַמָּךְ יְיָ יְשׁוּפוּן וְאַחְסַנְתָּךְ יְמַסְכְּנוּן: אַרְמַלְתָּא
7 וְגִיּוֹרָא יִקְטְלוּן וְיַתְמֵי יְרַצְחוּן: וַאֲמַרוּ לָא
8 יֶחְמֵי יָהּ וְלָא יִתְבַּיַּן אֱלָהָא דְיַעֲקֹב: אִתְבּוֹנְנוּ
דִּשְׁטַיָּן בְּעַמָּא וּכְסִילַיָא אֵימָתַי תַּשְׂכִּילוּן:
9 הַאֶפְשַׁר דִּי נְצִיב אוּדְנָא הֲלָא שְׁמִיעַ אוּלְפָּנָא
אִין אֶפְשַׁר דִּי בְרָא עֵינָא וְלָא אִסְתַּכַּל
10 בְּאוֹרַיְתָא: הַאֶפְשַׁר דִּיהַב אוֹרַיְתָא לְעַמֵּיהּ
וְכַד יְחוּבוּן הֲלָא יִתּוֹכְחוּן הֲלָא יְיָ אַלִּיף
11 לְאָדָם קַדְמֵי מַנְדְּעָא: קֳדָם יְיָ יְדִיעָן מַחְשְׁבָת
12 בְּנֵי נְשָׁא אֲרוּם הִנּוּן לְמָא: טַב לְגַבְרָא
13 דִי תְכַסְנְנֵיהּ יָהּ וּמִן אוֹרַיְתָךְ תְּאַלְפִנֵּיהּ: לְשַׁדְּכָא
לֵיהּ מִן יוֹמֵי בִישָׁא עַד דְּיִתְכְּרֵי לְרַשִׁיעָא שׁוּחָה:
14 אֲרוּם לָא יִנְטוֹשׁ יְיָ עַמֵּיהּ וְאַחְסַנְתֵּיהּ לָא
15 יִשְׁבּוֹק: אֲרוּם עַד צִדְקָתָא יְתוּב דִּינָא וּבַתְרוֹי
16 יִתְפָּרְקוּן כָּל תְּרִיצֵי לִבָּא: מַן יְקוּם לִי לְאַגָּחָא
קְרָבָא עִם מַבְאֲשִׁין מַן יִתְעַתַּד לִי לְמִנְצֵי עִם
17 עָבְדֵי שְׁקַר: אִלּוּלֵי יְיָ סָעִיד לִי כִּזְעֵר שָׁרַת
בִּשְׁתִיקוּתָא נַפְשִׁי:

Paraph. Chald. Verſ. La

PSAL. XCIII.

Dominus regnavit, celſitudinem indu eſt, indutus eſt Dominus fortitudine, & ac- cinxit ſe : inſuper ſtabilivit orbem ut non commoveatur. Parata eſt ſedes tua à prin- cipio : à ſeculo tu ipſe es Deus. Elevave- runt flumina Domine,elevaverunt flumina vocem ſuam in cantico : recipient flumina præmium laudum ſuarum. A vocibus aqua- rum multarum, à laudibus fluctuum maris magni laudatus eſt in cœlis ſuperioribus Dominus. Teſtimonia tua vera ſunt admo- dum ; domo ſanctuarii tui pulchrè conve- niunt : ſancta ſunt Domine in longitudine dierum.

PSAL. XCIV.

Deus auctor ultionis Domine, Deus au- ctor ultionis ſplendidum te exhibe. Ele- vare judex terræ, redde retributionem ma- lam ſuperbis. Uſquequo improbi Domine, uſquequo improbi ſedebunt in tranquilli- tate ? Effutient & loquentur calumnias, dicentes verba opprobrii, omnes qui ope- rantur falſitatem. Populum tuum Domine conterent, & hæreditatem tuam vexabunt. Viduam & advenam interficient,& pupil- los occident. Et dixerunt : Non videbit Dominus, & non intelliget Deus Jacob. Intelligite inſipientes in populo : & ſtulti quando eritis intelligentes ? Nunquid poſ- ſibile eſt ut is per quem plantata eſt auris, non audiat doctrinam ? num poſſibile eſt ut creaverit oculum, & non reſpiciat in Legem ? An poſſibile eſt ut dederit Legem populo ſuo, & cùm peccaverint,non argu- antur ? nonne Dominus docuit hominem primum ſcientiam ? Coram Dño non ſunt cogitationes filiorum hominis, quo- niam vanæ ſunt. Beatus vir quem corripie Domine, & quem de Lege tua docebis Ut des quietem illi à diebus malis, donec fodiatur impio fovea. Quoniam non de- relinquet Dominus populum ſuum, & hæreditatem ſuam non deſeret. Quoniam uſque ad juſtitiam convertetur judicium, & poſt eum redimentur omnes recti corde. Quis conſurget pro me ad gerendum bel- lum adverſum ſceleratos ? quis ſtabit pro me ad certandum contra operantes iniqui- tatem ? Niſi Dominus ſuſtentâſſet me, pa- rum [*abſuiſſet quin*] commoraretur in ſi- lentio anima mea.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܨܓ * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܬܫܡܫܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܝܕ.
1 * ܡܪܝܐ ܐܡܠܟ ܘܫܘܒܚܐ ܠܒܫ: ܠܒܫ ܡܪܝܐ ܒܥܘܫܢܐ ܘܐܬܚܝܠ. ܘܐܬܩܢܗ ܠܬܒܝܠ ܕܠܐ
2 ܬܙܘܥ: * ܡܬܩܢ ܗܘ ܟܘܪܣܝܟ ܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܡܢ ܥܠܡ ܐܢܬ ܗܘ: * ܐܪܝܡܘ ܢܗܪܘܬܐ
4 ܡܪܝܐ. ܐܪܝܡܘ ܢܗܪܘܬܐ ܩܠܗܘܢ: ܐܪܝܡܘ ܢܗܪܘܬܐ ܒܕܘܟܝܘܬܐ. * ܡܢ ܩܠܐ ܕܡܝܐ ܣܓܝܐܐ
ܬܡܝܗܝܢ ܡܫܒܪܘܗܝ ܕܝܡܐ. ܡܫܒܚ ܒܡܪܘܡܐ ܡܪܝܐ: * ܘܣܗܕܘܬܟ ܗܝ ܡܗܝܡܢܐ ܛܒ
ܘܠܒܝܬܟ ܝܐܝܐ ܩܕܝܫܘܬܐ: ܡܪܝܐ ܠܐܘܪܟܐ ܕܝܘܡܬܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܨܕ *
* ܕܕܘܝܕ ܥܠ ܟܢܘܫܬܐ ܕܩܘܪܚ ܘܕܬܢ ܘܐܒܝܪܘܢ. ܘܪܘܚܢܐܝܬ ܥܠ ܪܕܘܦܝܐ ܕܥܕܬܐ
ܕܠܘܩܒܠ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܡܙ. ܐܠܗܐ ܦܪܘܥܐ ܡܪܝܐ: ܐܠܗܐ ܦܪܘܥܐ ܐܬܓܠܝ.
2 * ܐܬܬܪܝܡ ܕܝܢܗ ܕܐܪܥܐ: ܘܦܪܘܥ ܦܘܪܥܢܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܬܪܘܪܒܝܢ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ
3
4 ܚܛܝܐ ܡܪܝܐ: ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܚܛܝܐ ܡܫܬܒܗܪܝܢ. * ܢܒܥܘܢ ܘܢܡܠܠܘܢ ܥܘܠܐ: ܘܢܐܡܪܘܢ
5 ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. * ܥܡܟ ܡܟܟܘ ܡܪܝܐ: ܘܝܪܬܘܬܟ ܫܥܒܕܘ. * ܐܪܡܠܬܐ ܘܬܘܬܒܐ
6
7 ܩܛܠܘ: ܘܝܬܡܐ ܚܢܩܘ. * ܘܐܡܪܘ ܕܠܐ ܚܙܐ ܡܪܝܐ: ܘܠܐ ܡܣܬܟܠ ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ.
8 * ܐܣܬܟܠܘ ܫܛܝܐ ܕܒܥܡܐ: ܣܟܠܐ ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܠܐ ܡܣܬܟܠܝܢ ܐܢܬܘܢ. * ܗܘ ܕܢܨܒ
9
10 ܐܕܢܐ ܕܠܡܐ ܠܐ ܫܡܥ: ܗܘ ܕܒܪܐ ܥܝܢܐ ܕܠܡܐ ܠܐ ܡܣܬܟܠ. * ܗܘ ܕܪܕܐ ܥܡܡܐ ܕܠܡܐ ܠܐ
11 ܡܟܣ: ܗܘ ܕܡܠܦ ܠܒܪܢܫܐ ܝܕܥܬܐ. * ܡܪܝܐ ܝܕܥ ܡܚܫܒܬܗܘܢ ܕܒܢܝܢܫܐ: ܡܛܠ
12 ܕܐܝܬܝܗܘܢ ܗܒܠܐ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܬܪܕܝܘܗܝ ܐܢܬ ܡܪܝܐ: ܘܡܢ ܢܡܘܣܟ ܬܠܦܝܘܗܝ.
13
14 * ܘܬܢܝܚܝܘܗܝ ܡܢ ܝܘܡܬܐ ܒܝܫܬܐ: ܥܕܡܐ ܕܢܬܚܦܪ ܠܪܫܝܥܐ ܫܘܚܬܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ
15 ܢܫܒܘܩ ܡܪܝܐ ܠܥܡܗ: ܘܝܪܬܘܬܗ ܠܐ ܢܫܒܘܩ. * ܡܛܠ ܕܥܕܡܐ ܠܙܕܝܩܘܬܐ ܗܦܟ ܕܝܢܐ: ܘܒܬܪܗ
16 ܟܠܗܘܢ ܬܪܝܨܝ ܠܒܐ. * ܡܢܘ ܢܩܘܡ ܥܡܝ ܥܡ ܒܝܫܐ: ܘܡܢܘ ܢܬܥܬܕ ܥܡܝ ܥܡ ܥܒܕܝ
17 ܥܘܠܐ. * ܐܠܘ ܠܐ ܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܠܝ ܡܥܕܪܢܐ: ܟܡ ܩܠܝܠ ܫܪܬ ܗܘܬ ܢܦܫܝ ܒܫܝܘܠ.

PSAL. XCIII.

Davidis. De miniſterio Domini. Verſ. 14

Dominus regnavit, & decorem indu eſt : indutus eſt Dominus fortitudi & corroboratus eſt : firmavítque orbem moveatur. Stabile eſt ſolium tuum ab an quo, & ab æterno tu es. Extulerunt ſe flu mina Domine, extulerunt flumina ſtrepitu ſuum, extulerunt ſe flumina cum purita Pluſquam ſonitus aquarum multarum. In menſi quidem ſunt fluctus maris : at glorio ſiſſimus in excelſis Dominus. Et teſtimon tua maximè fidelia : domúmque tuam dec ſanctitas,Domine, in longitudinem dieru

PSAL. XCIV.

Davidis. De cœtu Corah & Dathan Abirom. Spiritualiter verò de perſequutio adverſùs Eccleſiam. Verſus 47.

Deus ultor Domine,Deus ultor appar Effer te judex terræ, & redde retribu tionem his qui ſe oſtentant. Uſquequò im Domine, uſquequò impii gloriabuntur. eructabunt ac loquentur ſcelus, dicéntq omnes operantes iniquitatem ? Qui humili verunt populum tuum Domine, & hæredi tem tuam in ſervitutem redegerunt : Vidua & incolas interfecerunt, atq; pupillos tru dârunt : Dixerúntque, Non videt Domin' ne intelligit Deus Jacob. Intelligite ſtolidi populo : ſtulti, quouſque demũ non ſapietis Is qui plantavit aures, an non audit ? ille q creavit oculos, nónne percipit ? Is qui caſti gat gentes, an non arguet, is qui docet hom nem ſcientiam ? Dñs ſcit cogitationes hom num, quoniam vapor ipſi ſunt. Beatus hom quem corripies tu Dñe, & de lege tua doce bis, Tranquillúmq; reddes à diebus malis, do nec fodiatur impiis fovea. Non enim deſere Dominus populũ ſuum, & hæreditatem ſua minimè deſtituet. Nam poſt juſtum redit ju diciũ, & poſt ipſum omnes recti corde. Q conſurget mihi contra malos, & quis ſe p rabit mihi adverſùs operantes flagitium? Ab que Domino qui fuit mihi adjutor, brevi biraſſet anima mea in afflictione.

Verſio VULG. LAT.

Laus Cantici ipſi David in die ante
Sabbatum, quando fundata eſt terra.
XCII.

1 Dominus regnavit, decorem indutus
eſt: indutus eſt Dñs fortitudinem,
& præcinxit ſe. Etenim firmavit orbem
terræ, qui non commovebitur.
2 Parata ſedes tua ex tunc: à ſeculo tu
3 es. Elevaverunt flumina, Domine: elevaverunt
flumina vocem ſuam. Elevaverunt
4 flumina fluctus ſuos, A vocibus
aquarum multarum. Mirabiles elationes
maris, mirabilis in altis Dominus.
5 Teſtimonia tua credibilia facta
ſunt nimis: domum tuam decet ſanctitudo,
Domine, in longitudinem dierũ.

Pſalmus ipſi David,
Quartâ Sabbati. XCIII.

1 Deus ultionum Dominus: Deus ultionum
2 liberè egit. Exaltare qui
judicas terram: redde retributionem
3 ſuperbis. Uſquequò peccatores, Domine,
uſquequò peccatores gloriabũtur:
4 Effabuntur, & loquentur iniquitatem:
loquentur omnes, qui operantur injuſtitiam?
5 Populũ tuum, Domine, humiliaverunt:
& hæreditatem tuam vexaverunt.
6 Viduam & advenam interfecerunt:
7 & pupillos occiderunt. Et dixerunt;
Non videbit Dominus, nec intelliget
8 Deus Jacob. Intelligite inſipientes
in populo: & ſtulti aliquando
9 ſapite. Qui plantavit aurem, non audiet?
aut qui finxit oculum, non conſiderat?
10 Qui corripit gentes, non arguet:
11 qui docet hominem ſcientiam? Dominus
ſcit cogitationes hominum, quoniã
12 vanæ ſunt. Beatus homo, quem tu erudieris,
Domine, & de lege tua docueris
13 eum: Ut mitiges ei à diebus malis: donec
14 fodiatur peccatori fovea. Quia
non repellet Dominus plebem ſuam:
& hæreditatẽ ſuam non derelinquet.
15 Quoaduſque juſtitia convertatur in judiciũ:
et qui juxta illã omnes qui recto
16 ſunt corde. Quis conſurget mihi adverſùs
malignantes? aut quis ſtabit mecũ
17 adverſùs operantes iniquitatẽ? Niſi
quia Dominus adjuvit me: paulominùs
habitâſſet in inferno anima mea.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Εἰς τὴν ἡμέραν τοῦ (α) προσαββάτου, ὅτε κατῴκισται
ἡ γῆ, αἶνος ᾠδῆς τῷ Δαυίδ. ϟβ΄.

1 † Ὁ κύριος ἐβασίλευσεν, εὐπρέπειαν ἐνεδύσατο,
† ἐνεδύσατο κύριος δύναμιν καὶ περιεζώσατο·
† καὶ γὰρ ἐστερέωσε τὴν οἰκουμένην, ἥτις οὐ σαλευθήσεται.
2 † Ἕτοιμος ὁ θρόνος σου ἀπὸ τότε,
3 † ἀπὸ τοῦ αἰῶνος σὺ εἶ. † Ἐπῆραν οἱ ποταμοὶ
4 κύριε, † ἐπῆραν οἱ ποταμοὶ † φωνὰς αὐτῶν, † (β) Ἀπὸ
φωνῶν ὑδάτων πολλῶν. † Θαυμαστοὶ οἱ μετεωρισμοὶ
τῆς θαλάσσης· † θαυμαστὸς ἐν ὑψηλοῖς ὁ κύριος.
5 † Τὰ μαρτύριά σου ἐπιστώθησαν σφόδρα.
† τῷ οἴκῳ σου πρέπει ἁγίασμα κύριε, † εἰς μακρότητα ἡμερῶν.

MS.A. (α) σαββάτου, (β) † ἀροῦσιν οἱ ποταμοὶ ἐπιτρίψεις αὐτῶν, Ἀπὸ φωνῶν

Ψαλμὸς (α) τῷ Δαυὶδ τετράδι σαββάτου. ϟγ΄.

1 † Θεὸς ἐκδικήσεων κύριος, † (′) ὁ θεὸς ἐκδικήσεων
2 ἐπαῤῥησιάσατο. † Ὑψώθητι ὁ κρίνων τὴν
γῆν, † ἀπόδος ἀνταπόδοσιν τοῖς ὑπερηφάνοις.
3 † Ἕως πότε ἁμαρτωλοὶ κύριε, † ἕως πότε ἁμαρτωλοὶ
4 καυχήσονται; † Φθέγξονται καὶ λαλήσουσιν ἀδικίαν,
† λαλήσουσι πάντες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν.
5 † Τὸν λαόν σου κύριε ἐταπείνωσαν, † καὶ
6 τὴν κληρονομίαν σου ἐκάκωσαν. † Χήραν καὶ ὀρφανὸν
7 ἀπέκτειναν, † καὶ προσήλυτον ἐφόνευσαν. † Καὶ
εἶπαν, Οὐκ ὄψεται κύριος, † οὐδὲ συνήσει ὁ θεὸς
8 τοῦ Ἰακώβ. † Σύνετε δὴ ἄφρονες ἐν τῷ λαῷ,
9 † καὶ μωροί, ποτὲ φρονήσατε. † Ὁ φυτεύσας τὸ
οὖς, οὐχὶ ἀκούει; † ἢ ὁ πλάσας τὸν ὀφθαλμόν, οὐχὶ
10 κατανοεῖ; † Ὁ παιδεύων ἔθνη, οὐχὶ ἐλέγξει;
11 † ὁ διδάσκων ἄνθρωπον γνῶσιν; † Κύριος γινώσκει
τοὺς διαλογισμοὺς τῶν ἀνθρώπων, ὅτι εἰσὶ μάταιοι.
12 † Μακάριος (″) ὁ ἄνθρωπος ὃν ἂν σὺ παιδεύσῃς
κύριε, καὶ ἐκ τοῦ νόμου σου διδάξῃς αὐτόν·
13 † Τοῦ πραῦναι αὐτῷ ἀφ᾽ ἡμερῶν πονηρῶν, † ἕως
14 οὗ ὀρυγῇ τῷ ἁμαρτωλῷ βόθρος. † Ὅτι οὐκ ἀπώσεται
κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, † καὶ τὴν κληρονομίαν
15 αὐτοῦ οὐκ ἐγκαταλείψει, † Ἕως οὗ δικαιοσύνη
(″) ἐπιστρέψῃ εἰς κρίσιν, † καὶ ἐχόμενοι αὐτῆς πάντες
16 οἱ εὐθεῖς τῇ καρδίᾳ. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † Τίς ἀναστήσεταί
μοι ἐπὶ (β) πονηρευομένους, † ἢ τίς
συμπαραστήσεταί μοι ἐπὶ τοὺς ἐργαζομένους τὴν ἀνομίαν;
17 † Εἰ μὴ ὅτι κύριος ἐβοήθησέ μοι, † παραβραχὺ
παρῴκησε τῷ ᾅδῃ ἡ ψυχή μου.

MS.A. (α) ᾠδῆς τῷ Δαυίδ (′) θεὸς (″) ἄνθρωπος ὃν ἂν παιδεύσῃς (″) ἐπιστρέψῃ (β) πονηρευομένοις,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

In die (a)[a] ante Sabbatum, quando fundata eſt terra, laus Cantici ipſi David. XCII.

1 Dominus regnavit, decorem induit: induit Dominus fortitu- 1
dinem, & præcinxit ſe. 2 Etenim firmavit orbem terræ, qui non commo-
vebitur. 3 Parata ſedes tua [b] ex 2
tunc: à ſeculo tu es. 4 Elevaverunt 3
flumina, Domine: elevaverunt flumina voces (b) ſuas: 5 A vocibus a- 4
quarum multarum. 6 Mirabiles elationes maris, (c) mirabilis in excelſis
Dominus. 7 Teſtimonia tua (d) credita facta ſunt nimis: domum tuam 5
decet [c] ſanctificatio, Domine, in longitudinem dierum.

Pſalmus (a) ipſi David quartâ Sabbati. XCIII.

1 Deus ultionum Dominus, Deus ultionum (b) fidentèr egit. 1
2 Exaltare, qui judicas terrã, redde 2
retributionem ſuperbis. 3 Uſquequò 3
peccatores, Dñe, uſquequò peccatores
gloriabuntur? 4 (c) Effabuntur, & lo- 4
quentur iniquitatẽ: loquẽtur omnes,
qui operantur injuſtitiam. 5 Populum 5
tuum, Domine, humiliaverunt: & hæ-
reditatem tuam vexaverunt. 6 (d)
Viduam & pupillum interfecerunt, 6
& proſelytum occiderunt. 7 Et di- 7
xerunt, Non videbit Dominus: ne-
que intelliget Deus Jacob. 8 [a]
Intelligite nunc inſipientes in populo: 8
& ſtulti aliquando ſapite. 9 Qui 9
plantavit aurem, non audit? aut qui
finxit oculũ, non conſiderat? 10 Qui 10
erudit gentes, non arguet: qui docet
hominem ſcientiam? 11 Dominus 11
ſcit [b] cogitationes hominum, quo-
niam vanæ ſunt. 12 Beatus homo, 12
quem tu erudieris, Domine, & ex
lege tua docueris [c] eum. 13 ut mi- 13
tiges eum à diebus malis: donec fo-
diatur [d] peccatori fovea. 14 Quia 14
non repellet Dominus plebem ſuam:
& hæreditatem ſuam non derelin-
quet. 15 (e) Quoaduſque juſtitia 15
convertatur [e] in judicium, & [f]
juxta illam, omnes qui recto ſunt
corde. DIAPSALMA. 16 Quis (f) 16
exurget mihi adverſùs malignantes?
aut quis ſtabit mecum adverſùs o-
perantes iniquitatem? 17 Niſi, quia 17
Dominus adjuvit me; paulominùs
habitâſſet in inferno anima mea.

Verſio ÆTHIOPICA.

በዕለተ፡ሰንበት፡አመ፡ሳድረተ፡ምድር፡
ስብሐተ፡ማኅሌት፡ዘዳዊት፡፡

፺፪ እግዚአብሔር፡ ነግሠ፡ ስብሐቲሁ፡ ለብ 1
ሰ፡፡ ለብሰ፡ እግዚአብሔር፡ ኃይሎ፡ ወቀነ
ተ፡፡=፡ ወአጽንዓ፡ ለዓለም፡ ከመ፡ ኢታንቀ 2
ልቅል፡፡=፡ ድልው፡ መንበርከ፡ እግዚኦ፡፡ እ 3
ምትካት፡ ወእስከ፡ ለዓለም፡ አንተ፡ ክሙ፡፡=፡
አልዐሉ፡ አፍላግ፡ እግዚኦ፡፡ አልዐሉ፡ አፍላ 4
ግ፡ ቃላቲሆሙ፡፡=፡ እምቃለ፡ ማያት፡ ብዙ 5
ኃ፡፡=፡ መንክር፡ ተላህያ፡ ለባሕር፡፡ መንከ 6
ርሰ፡ እግዚአብሔር፡ በአርያም፡፡=፡ ስም 7
ዐ፡ ዚአከ፡ እሙን፡ ፈድፋደ፡፡ ለቤትከ፡ ይደሉ፡
ስብሐት፡ እግዚኦ፡ ለነዋኃ፡ መዋዕል፡፡=፡
መዝሙር፡ ዘዳዊት፡ ዘበረቡዕ፡ ሰንበት፡፡
፺፫ እግዚአብሔር፡ እግዚኦ፡ መስተበቅል፡፡ 1
እግዚአብሔር፡ መስተበቅል፡ ገሃደ፡፡=፡ ተ 2
ለዐለ፡ ዘይኴንና፡ ለምድር፡፡ ፍድዮሙ፡ ፍ
ደሆሙ፡ ለዕቡያን፡፡=፡ እስከ፡ ማእዜኑ፡ ኃ 3
ጥአን፡ እግዚኦ፡፡ እስከ፡ ማእዜኑ፡ ይዜሀሩ፡
ኃጥአን፡፡=፡ ወይትዋሥኡ፡ ወይነቡ፡ ዐመ 4
ፃ፡፡ ወይነቡ፡ ኵሎሙ፡ ገበርተ፡ ዐመፃ፡፡=፡
ወአሳሰሩ፡ ሕዝበከ፡ እግዚኦ፡፡ ወሣቀዩ፡ ርስ 5
ተከ፡፡=፡ ወቀተሉ፡ እቤረተ፡ ወእጓለ፡ መው 6
ታ፡፡ ወቀተሉ፡ ፈላሴ፡፡=፡ ወይቤሉ፡ ኢይሬ 7
ኢ፡ እግዚአብሔር፡፡ ወኢያአምር፡ አምላ
ከ፡ ያዕቆብ፡፡=፡ ለብዉ፡ አብደን፡ ሕዝብ፡፡ 8
አብደንኬ፡ ማእዜኑ፡ ይጠቡ፡፡=፡ ዘተከለ 9
ሙ፡ ለእዝን፡ ኢይሰምዕ፡፡ ወዘፈጠረሁ፡ ለዐ
ይን፡ ኢይሬኢ፡፡=፡ ዘይጌሥጾሙ፡ ለአሕዛ 10
ብ፡ ወኢይዛለፎኑ፡፡ ዘይሜሕሮሙ፡ ለሰብ
እ፡ ጥበበ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ ያአምር፡ 11
ሕሊናሆሙ፡ ለጠቢባን፡ ከመ፡ ከንቱ፡ ውእ
ቱ፡፡=፡ ብፁዕ፡ ብእሲ፡ ዘአንተ፡ ገሠጽኮ፡ 12
እግዚኦ፡፡ ወዘመሀርኮ፡ ሕገከ፡ እግዚኦ፡፡=፡
ከመ፡ ይትገኅሥ፡ እመዋዕለ፡ እኩያት፡፡ እስ 13
ከ፡ ይትከረይ፡ ግብ፡ ለኃጥአን፡፡=፡ እስመ፡ 14
ኢይገድፎሙ፡ እግዚአብሔር፡ ለሕዝቡ፡፡
ወኢያኀድጎሙ፡ ለርስቱ፡፡=፡ እስከ፡ ይገ 15
ብእ፡ ፍትሕ፡ ለዘ፡ ይጸድቅ፡፡ ወኵሎሙ፡ ር
ቱዓነ፡ ልብ፡ እለ፡ ከያሃ፡ ቦሙ፡፡=፡ መኑ፡ ይ 16
ትናሥአኒ፡ በአንተ፡ እኩያት፡፡ ወመኑ፡ ይትቃ
ወመኒ፡ በእንተ፡ ገበርተ፡ ዐመፃ፡፡=፡ ሶበ፡ አ 17
ኮ፡ እግዚአብሔር፡ ዘረድአኒ፡፡ ሕቀ፡ ክመ፡
ዘእምኀደረት፡ ነፍስየ፡ ውስተ፡ሲኦል፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [a] Sabbati, quando [b] Domine: ab initio, & uſque in æternum tu idem es. [c] glorificatio Domine, *PSAL. XCIII.* [a] Intelligite inſipientes [b] cogitationes prudentum, [c] eum Domine. Ut divertas eum à diebus [d] peccatoribus [e] illi qui judicabit, [f] omnes recto ſunt corde qui illam habent.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

1 * المزمور الثاني والتسعون * لداود قاله في يوم السبت تمجيدا حين سكنت الارض *
* وهو * يج * استيخن *
ملك الرب ولبس البهاء * لبس الرب القدرة وتمنطق بها * وايضا ثبت المسكونة هذه فلن
2 3 تتحرك * كرسيك مستعد منذ البدء * وانت هو منذ الازل * ارتفعت الانهار يا رب * رفعت الانهار
4 اصواتها * ترفع الانهار تكسيرها * من خرير مياه كثيرة * عجيبة هي اهوال البحر * وعجيب هو
5 الرب في الاعالي * شهاداتك صدقت جدا * ينبغي لبيتك التقديس طول الايام * اللّلويا *
1 * المزمور الثالث والتسعون * لداود * رابع السبت * وعدده * مه * استيخن * اله الانتقام الرب
2 3 اله الانتقام ظهر * تعال يا ديان الارض * اعط مجازاة المتعظمين * الى متى الخاطئون يا رب * الى متى
4 5 الخاطئون يفتخرون * يجيبون ويتكلمون بالظلم * ويتكلم جميع عاملي الاثم * شعبك يا رب
6 7 اذلوه * وميراثك اضروه * هتكوا الارملة * واهلكوا اليتيم * وقتلوا الغريب * وقالوا ان الرب لا
8 يرى * واله يعقوب لا يفهم * افهموا ايها الجهال الذين في الشعب * ويا ايها الحمقى متى تعقلون *
9 10 * هل الذي خلق الاذن لا يسمع * والذي كون العين لا يرى * والذي ادب الامم لا
11 12 يبكت * الذي عرف الانسان العلم * الرب يعرف افكار الناس انها باطل * طوبى للانسان الذي
13 انت تؤدبه يا رب * ومن ناموسك تعلمه * لكي تعطيه دعة في ايام شرير * الى ان تحفر للخاطي
14 15 حفرة * لان الرب لا يقصي شعبه * ولا يخذل ميراثه * حتى يرجع الحق الى الحكم * مع جميع
16 القريبين منه * المستقيمين بقلوبهم * من الذي يقوم معي على الاشرار * ومن يساعدني على
17 فاعلي الاثم * فلولا ان الرب اعانني * لكادت نفسي عن قليل تسكن الجحيم *

PSAL. XCII.

Davidis. Dixit eum die Sabbathi 1
pro encomio quando quievit
terra. Verſ. 13.

Regnavit Dominus, & indutus eſt decore: indutus eſt Dominus fortitudine,
eâque ſe præcinxit. Et ipſe quidem
firmavit Habitatam hanc, & nequaquam
movebitur. Sedes tua parata eſt ab ini- 2
tio, & tu es ab æterno. Extulerunt ſe 3
flumina, O Domine: elevaverunt flumi-
na voces ſuas: elevant flumina rupturas
ſuas Præ murmure aquarum multarum. 4
Mirabiles ſunt tempeſtates maris, et mira-
bilis eſt Dominus in excelſis. Teſtimonia 5
tua verificata ſunt valdè. Decet domum
tuam ſanctificatio longitudine dierum.
Alleluja.

PSAL. XCIII.

Davidis. Quartâ Sabbathi. Et 1
num. ver. 45.

Deus ultionis Dominus, Deus ultionis
apparuit. Exaltare, O judex terræ, 2
da retributionem ſuperborum. Quouſque 3
peccatores, O Domine, quouſque peccatores
gloriabuntur? Reſpondebunt ac loquentur 4
oppreſſionem, et effabuntur omnes operan-
tes flagitium? Populum tuum, O Domi- 5
ne, depreſſerunt, et hæreditatem tuam an-
guſtiaverunt. Stuprârunt viduam, et per- 6
emerunt pupillum, et occiderunt peregri-
num. Et dixerunt, Certè Dominus non 7
videt, et Deus Jacobi non intelligit. In- 8
telligite O ſtulti qui eſtis inter populum:
& O heus ſtolidi, quandonam ſapietis?
Num qui creavit aurem non audit? & 9
qui condidit oculum non videt? Et qui e- 10
rudivit gentes non arguit? qui notam fe-
cit hominibus ſcientiam? Dominus ſcit 11
cogitationes hominum eſſe vanitatem.
Beatus homo quem tu erudis, O Domine, et 12
quem de lege tua doces. Ut concedas ei 13
manſuetudinem in diebus malis, quoad
fodiatur peccatori fovea. Nam Dominus 14
non exterminabit populum ſuum, neque
auxilio deſtituet hæreditatem ſuam. Do- 15
nec redeat veritas ad judicium, cum o-
mnibus qui proximi ſunt ei, qui recti ſunt
cordibus ſuis. Quis eſt qui ſurgat mecum 16
adverſùs improbos? et quis auxilietur mi-
hi adverſùs operantes iniquitatem? Niſi 17
Dominus adjuviſſet me, certè parum ab-
fuiſſet quin anima mea habitâſſet in in-
ferno.

תהלים : צה צו

me sustentabat Domine tua misericordia : meus pes est Motus , dicebam Si
18 אם־אמרתי מטה רגלי חסדך יהוה יסעדני׃
delectabunt tuæ consolationes : meo intimo in mearum cogitationum multitudine In
19 ברב שרעפי בקרבי תנחומיך ישעשעו
super laborem formans *? confractionum* thronus *tibi* jungetur Nunquid .meam animam
20 נפשי׃ היחברך כסא הוות יצר עמל עלי־
.condemnabunt innocentem sanguinem &:justi animam contra *excurrent Turmatim? statuto*
21 חק׃ יגודו על־נפש צדיק ודם נקי ירשיעו׃
reddet Et .meæ fiduciæ *petram in* meus Deus & *:elevationem in* mihi Dominus fuit Et
22 23 ויהי יהוה לי למשגב ואלהי לצור מחסי׃ וישב
Dominus eos succidet : eos succidet eorum *malitia in* & ,eorum iniquitatem eis *super*
עליהם את־אונם וברעתם יצמיתם יצמיתם יהוה
.noster Deus
אלהינו׃

PSAL. XCV. צה

Præoccupemus.nostræ salutis fortitudini jubilemus *: Domino dicamus præconium, Adeste*
1 לכו נרננה ליהוה נריעה לצור ישענו׃ נקדמה
2 :Dominus magnus Deus Quoniam .ei jubilemus *cantilenis* in :confessione in ejus *facies*
3 פניו בתודה בזמרות נריע לו׃ כי אל גדול יהוה
: terræ investigationes *ejus* manu *in Quod* .deos omnes super magnus rex &
4 ומלך גדול על־כל־אלהים׃ אשר בידו מחקרי־ארץ
ejus manus siccam &:illud fecit ipse &,mare *ei Quod* .ei montium *cacumina* &
5 ותועפות הרים לו׃ אשר־לו הים והוא עשהו ויבשת ידיו
Domini facies ad genuflectamus : nos incurvemus &,adoremus Venite .formaverunt
6 יצרו׃ באו נשתחוה ונכרעה נברכה לפני־יהוה
:ejꝰ manus pecus &,ejus pascuæ populus nos & , noster Deus ipse Quia *.nostri factoris*
7 עשנו׃ כי הוא אלהינו ואנחנו עם מרעיתו וצאן ידו
:Meribah sicut vestrum cor obduretis Ne *: audieritis ejus voce in* si hodie
8 היום אם־בקלו תשמעו׃ אל־תקשו לבבכם כמריבה
;me probaverunt :vestri patres me tentaverunt Quo .deserto in *Massah* die sicut
9 כיום מסה במדבר׃ אשר נסוני אבותיכם בחנוני
; dixi &,generatione *in habui fastidio* annis Quadraginta .meum opus viderunt etiam
10 גם־ראו פעלי׃ ארבעים שנה אקוט בדור ואמר
Quod .meas vias cognoverunt non ipsi & *: ipsi* corde errantium populus
11 עם תעי לבב הם והם לא־ידעו דרכי׃ אשר־
.meam requiem in introibunt *si* : mea *nare* in juravi
נשבעתי באפי אם־יבאון אל־מנוחתי׃

PSAL. XCVI. צו

,Domino Cantate .terra omnis Domino cantate:novum canticum Domino Cantate
1 שירו ליהוה שיר חדש שירו ליהוה כל־הארץ׃ שירו ליהוה
2 gentibus *in* Narrate .ejus salutem diem in die de *evangelizate*:ejꝰ nomini benedicite
3 ברכו שמו בשרו מיום־ליום ישועתו׃ ספרו בגוים
,Dominus magnus Quoniã .ejus mirabilia populis omnibus *in*:ejus gloriam
4 כבודו בכל־העמים נפלאותיו׃ כי־גדול יהוה
.deos omnes super *ipse* terribilis : valde *laudatus* &
ומהלל מאד נורא הוא על־כל־אלהים׃

תרגום TARGUM.

18 אין אמרית אתמוטטא רגלי טובך יי יסעיד
19 יתי׃ בסגעי מחשבתא בגוי ניחומתך יפרנקון
20 נפשי׃ האפשר דיתחבר עמך כורסי שקרא
12 ברית לעותא היתעתד עלי קים׃ יכנשון
ביש על נפשא דצדיקא ואדמא זכי יחיבון
22 דין דקטול׃ ויהי יי לי לסעיד ואלהי לתקוף
23 רוחצני׃ ואתיב עליהון ית שקריהון ובבישתהון
ינמרינון ינמרנון יי אלהנא׃

צה

1 אתון נשבח קדם יי ניבב קדם תקיף פורקנא׃
2 נקדם אפוי בתודתא בתושבחיא ניבב קדמוי׃
3 ארום אלהא רבא יי ומלכא רבא על כל
4 אלהא׃ די בידיה תלין פשפושין דארעא
5 ותוקפי רום טוריא די ליה׃ די ליה ימא והוא
6 עבד יתיה ויבשתא אידוי בריאו׃ אתון נסגוד
7 ונגחן נחמוט קדם יי דעביד יתנא׃ ארום
הוא אלהנא ואנחנא עמיה ועאן רעית אידיה
8 יומא דין אם במימריה תקבלון׃ לא תקשון
לבכון היך במצותא היך יומא דנסיתון אלהא
9 במדברא׃ די נסיאו יתי אבהתכון בחנו
10 יתי לחוד חמון עובדי׃ ארבעין שנין מאסית
בדרא במדברא ואמרית עמא דטעותא
11 בלבהון הנון ואנון לא ידעו ארחי׃ דקימית
בתקוף רוגזי אם יעלון לניח בית מקדשי׃

צו

1 שבחו קדם יי תושבחתא חדתא שבחו
אנגלי מרומא שבחו קדם יי כל צדיקי
2 ארעא׃ שבחו קדם יי בריכו שמיה בשרון
3 מיומא ליומא פורקניה׃ אשתעיו בעממיא
4 איקריה בכל עמיא פרישותיה׃ ארום
רב יי ומשבח לחדא דדחיל הוא על כל
אלהיא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Si dixi : Motus eſt pes meus, miſericordia tua Domine adjuvabit me. In multitudine cogitationum quæ intra me ſunt, conſolationes tuæ oblectabunt animam meam. An poſſibile eſt ut adhæreat tibi ſedes mendacii : figmentum pravitatis num ſtabit in ſtatuto? Coacervabunt mala adverſus animam juſti, & ſanguinem innocentem condemnabunt *judicio mortis.* Et erit Dominus auxiliator mihi, & Deus meꝰ in fortitudinem fiduciæ meæ. Et reddet illis mendacia eorum, & in malignitate eorum perdet eos; perdet eos Dominus Deus noſter.

PSAL. XCV.

VEnite, laudes dicamus coram Domino, jubilemus coram fortiſſimo redemptionis noſtræ. Præveniamus faciem ejus in confeſſione, in canticis jubilemus coram eo. Quoniam Deus magnus Dominus, & rex magnus ſuper *omnem deum.* Quoniam in manu ejus pendent penetralia terræ, & robora ſublimitatis montium ipſius ſunt. Quoniam ipſiꝰ eſt mare & ipſe fecit illud: & aridam manus ejus creaverunt. Venite, adoremus & procidamꝰ : genu flectamus coram Dño qui fecit nos. Quoniam ipſe eſt Deus noſter, & nos populꝰ ejus, & oves paſcuæ manus ejus. Die iſto ſi Verbum ejus receperitis, Ne induretis corda veſtra ſicut in contentione, ſicut die qua tentâſtis Deum in deſerto : Quoniam tentaverunt me patres veſtri; probaverunt me, etiam vi*derunt* opera mea. Quadraginta annis aſpernatus ſum generationem deſerti : & dixi; Populus eſt quorum idola ſunt in corde eorum, & ipſi non cognoverunt vias meas. Quibus juravi in vehementia furoris mei, ſi introibunt in requiem domus ſanctuarii mei.

PSAL. XCVI.

CAntate coram Dño canticum novum, *cantate* angeli excelſi : laudate coram Domino omnes juſti terræ. Laudate coram Domino, benedicite nomini ejus, annunciate de die in diem redemptionem ejus. Narrate in populis gloriam ejus, in omnibus populis mirabilia ejus. Quoniam magnus Dominus & laudabilis valde, & timendus ſuper omnes deos.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

18 * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܕܙܠܥܝ ܪ̈ܓܠܝ: ܘܛܝܒܘܬܟ ܡܪܝܐ ܣܡܟܬܢܝ. * ܒܣܘܓܐܐ ܕܟܐܒ̈ܘܗܝ ܕܠܒܝ:
19 20 ܒܘܝܐܝܟ ܦܨܝܘܗ ܠܢܦܫܝ. * ܠܐ ܢܫܬܘܬܦ ܠܟ ܟܘܪܣܝܐ ܕܥܘܠܐ: ܕܓܒܠܝܢ ܥܘܠܐ ܥܠ
21 22 ܢܡܘܣܟ. * ܘܟܡܢܝܢ ܠܡܨܕ ܢܦܫܗ ܕܙܕܝܩܐ: ܘܕܡܐ ܕܙܟܝܐ ܡܚܝܒܝܢ. * ܘܗܘܐ ܠܝ ܡܪܝܐ
23 ܡܥܫܢܢܐ: ܐܠܗܐ ܥܫܝܢܐ ܘܡܥܕܪܢܐ. * ܘܐܗܦܟ ܥܠܝܗܘܢ ܥܘܠܗܘܢ: ܘܒܒܝܫܘܬܗܘܢ ܫܬܩ
ܐܢܘܢ. ܫܬܩ ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܨܗ *

* ܕܕܘܝܕ. ܡܬܦܪܫܢܘܬܐ ܕܝܢ ܟܕ ܥܒܪ ܥܡܐ ܒܝܘܪܕܢܢ. ܘܪܡܙ ܒܗ ܥܠ ܦܘܢܝܐ ܕܝܗܘܕܝܐ. ܡܐܢܐ 1
ܠܝ ܥܡ ܫܪܒܬܐ ܗܕܐ. ܐܝܟ ܕܝܡܝܬ ܒܪܘܓܙܝ. ܦܬܓܡܐ ܗܘ. ܬܘ ܢܫܒܚ ܠܡܪܝܐ.
2 3 ܘܢܙܡܪ ܠܐܠܗܢ ܦܪܘܩܢ: * ܢܩܕܡ ܐܦܘܗܝ ܒܬܘܕܝܬܐ. ܘܒܡܙܡܘܪ̈ܐ ܢܫܒܚܝܘܗܝ: * ܡܛܠ
4 ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܪܒܐ ܡܪܝܐ. ܘܡܠܟܐ ܪܒܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܠܗ̈ܐ: * ܕܒܐܝܕܘܗܝ ܐܢܘܢ ܫܬܐܣܝܗ
5 6 ܕܐܪܥܐ ܘܪܘܡܐ ܕܛܘܪ̈ܐ. * ܕܕܝܠܗ ܗܘ ܝܡܐ ܘܗܘ ܥܒܕܗ: ܘܝܒܝܫܬܐ ܐܝܕܘܗܝ ܓܒܠ. * ܬܘ
7 ܢܣܓܘܕ ܘܢܬܟܪܥ ܠܗ: ܘܢܒܪܟܝܘܗܝ ܠܡܪܝܐ ܕܥܒܕܢ. * ܡܛܠ ܕܗܘܝܘ ܐܠܗܢ: ܘܚܢܢ
8 ܥܡܐ ܕܝܠܗ ܘܥܢܐ ܕܡܪܥܝܬܗ. ܝܘܡܢܐ ܐܢ ܒܩܠܗ ܬܫܡܥܘܢ: * ܠܐ ܬܩܫܘܢ ܠܒܘܬܟܘܢ
9 ܠܡܪܓܙܘܬܗ ܐܝܟ ܡܡܪܡܪܢܐ ܘܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܢܣܝܘܢܐ ܕܒܡܕܒܪܐ: * ܕܢܣܝܘܢܝ ܐܒܗܬܟܘܢ.
10 ܘܒܩܘ ܘܚܙܘ ܥܒܕܝ * ܐܪܒܥܝܢ ܫܢܝܢ: ܡܐܢܬ ܠܝ ܒܗ ܒܫܪܒܬܐ ܗܝ. ܘܐܡܪܬ ܕܥܡܐ ܗܘ ܕܛܥܐ
11 ܠܒܗܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܠܐ ܝܕܥܘ ܐܘܪܚܬܝ. * ܐܝܟ ܕܝܡܝܬ ܒܪܘܓܙܝ ܕܠܐ ܢܥܠܘܢ ܠܡܢܝܚܬܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܨܘ *

* ܕܕܘܝܕ. ܢܒܝܘܬܐ ܥܠ ܡܐܬܝܬܗ ܕܡܫܝܚܐ. ܘܥܠ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡ̈ܡܐ ܕܡܗܝܡܢܝܢ ܒܗ. 1
ܦܬܓܡܐ ܗܘ. ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ. ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ
2 ܟܠܗ ܐܪܥܐ: * ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܘܒܪܟܘ ܠܫܡܗ. ܣܒܪܘ ܡܢ ܝܘܡ ܠܝܘܡ ܦܘܪܩܢܗ:
3 4 * ܐܫܬܥܘ ܒܥܡ̈ܡܐ ܐܝܩܪܗ. ܘܒܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܬܕܡܪ̈ܬܗ: * ܡܛܠ ܕܪܒ ܗܘ ܡܪܝܐ
ܘܡܫܒܚ ܛܒ. ܘܕܚܝܠ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܠܗ̈ܐ:

Ego dixeram, Lapſi ſunt pedes mei: at bonitas tua Domine ſuffulſit me; In multitudine dolorum cordis mei, conſolationes tuæ liberaverunt animam meam. Non aſſociabitur tibi ſolium ſceleratorum, qui compegerunt iniquitatem contra legem tuam : Et tendunt ad capiendam animam juſti; & ſanguinem innocentis condemnant. Et factus eſt mihi Dominus roborator, Deus fortiſſimus, atq; adjutor. Retorſit in eos iniquitatem ipſorum, & in malitiis illorum ſilere fecit illos : ſilere fecit eos Dominus Deus.

PSAL. XCV.

Davidis. Ad literam. Quum tranſiret populus per Jordanem: & innuit in eo de [illegible]tionem Judæorum. Tædet me generationis hujus. Sicut juravi in ira mea. Verſ.

VEnite, laudemus Dominum, & cantemus Deo noſtro ſervatori : Præveniamus faciem ejus gratiarum actione, & pſalmis glorificemus eum; Quoniam Deus eſt magnus Dominus, rex maximus ſuper omnes Deos: Cujus in manibus ſunt fundamenta terræ & vertex montium: Ipſius eſt mare, & ipſe fecit illud, & aridam manus ejus finxerunt. Venite procumbamus & adoremus eum, atq; benedicamus Dominum qui fecit nos. Nam ipſe Deus noſter, & nos populus ejus, & oves paſcuæ illius. Hodie ſi vocem ejus audieritis, Ne obduretis corda veſtra ad provocandam iram ipſius ut exaſperatores: & ſicut die tentationis quæ in deſerto, Quâ tentaverunt me patres veſtri, & explorârunt, viderunt opera mea Quadraginta annis. Tædio mihi fuit generatio illa : & dixi, Populꝰ eſt quorū aberrat cor, & iſti non cognoverunt vias meas. Ut juravi in ira mea, non ingredientur in requiem meam.

PSAL. XCVI.

Davidis. Prophetia de adventu Chriſti, & vocatione gentium credentium in eo. Verſ.

CAnite Dño canticum novum, canite Domino omnis terra : Canite Dño & benedicite nomini ejus, prædicate de die in diem ſalutem ejus : Narrate inter gentes gloriam ejus, & inter omnes populos facta ipſius; Quoniam magnus eſt Dominus noſter & glorioſus valde, atque tremendus præ omnibus diis.

Versio VULG. LAT.

18 Si dicebam, Motus est pes meus: mi-
19 sericordia tua, Dñe, adjuvabat me. Se-
cundũ multitudinẽ dolorũ meorum in
corde meo, consolationes tuæ lætifica-
20 verunt animã meã. Numquid adhæret
tibi sedes iniquitatis: qui fingis labo-
21 rem in præcepto? Captabunt in animã
justi: & sanguinẽ innocentẽ condem-
22 nabunt. Et factus est mihi Dominus in
refugiũ, & Deus me⁹ in adjutoriũ spei
23 meæ. Et reddet illis iniquitatem ipso-
rum: & in malitia eorũ disperdet eos:
disperdet illos Dominus Deus noster.

Laus Cantici ipsi David. XCIV.

1 Venite, exultemus Dño: jubilemus
2 Deo salutari nostro. Præoccupem⁹
faciẽ ejus in confessione: & in psalmis
3 jubilemus ei. Quoniã De⁹ magn⁹ Dñs:
4 & rex magn⁹ super omnes deos. Quia
in manu ej⁹ sunt omnes fines terræ: &
5 altitudines montium ipsi⁹ sunt. Quo-
niam ipsi⁹ est mare, & ipse fecit illud:
6 & siccam man⁹ ejus formaverunt. Ve-
nite, adorem⁹, & procidam⁹: & plore-
7 m⁹ ante Dñm, qui fecit nos. Quia ipse
est Dñs De⁹ noster: & nos popul⁹ pa-
8 scuæ ej⁹, & oves man⁹ ejus. Hodiè si
vocem ej⁹ audieritis, nolite obdurare
9 corda vestra, Sicut in irritatione secũ-
dùm diem tentationis in deserto: ubi
tentaverũt me patres vestri, probave-
10 rũt me, & viderũt opera mea. Quadra-
ginta annis offensus fui generationi illi,
11 & dixi; Semper hi errãt corde. Et isti
non cognoverunt vias meas: ut juravi
in ira mea; Si introibũt in requiẽ meã.

Canticum ipsi David.

1 Quando domus ædificabatur post captivitatem. (1 *Par.* 16.) XCV.

Cantate Dño canticũ novũ: canta-
2 te Dño oĩs terra. Cãtate Dño, &
benedicite nomini ej⁹: annuntiate de
3 die in diẽ salutare ej⁹. Annũtiate inter
gẽtes gloriã ej⁹, in omnib⁹ populis mi-
4 rabilia ej⁹. Quoniã magn⁹ Dñs, & lau-
dabilis nimis: terribilis est sup̃ oẽs deos.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

18 † Εἰ ἔλεγον, Σεσάλευται ὁ πούς μου, τὸ ἔλεός σου κύ-
19 ριε ἐβοήθει μοι. † (γ) Κύριε κατὰ τὸ πλῆθος τῶν ὀ-
δυνῶν μου ἐν τῇ καρδίᾳ μου, † αἱ παρακλήσεις σου
20 (δ) ἠγάπησαν τὴν ψυχήν μου. † Μὴ (ε) συμπροσέσται
σοι θρόνος ἀνομίας, † ὁ πλάσσων κόπον (ζ) ἐπὶ
21 προστάγματι. † Θηρεύσουσιν ἐπὶ ψυχὴν δικαίου, † καὶ
22 αἷμα ἀθῷον καταδικάσονται. † Καὶ ἐγένετό μοι κύρι-
ος εἰς καταφυγήν, † καὶ ὁ Θεός μου εἰς βοηθὸν ἐλπίδος
23 μου. † Καὶ ἀποδώσει αὐτοῖς (η) τὴν ἀνομίαν αὐτῶν, † καὶ τὴν
πονηρίαν αὐτῶν ἀφανιεῖ αὐτοὺς κύριος ὁ Θεὸς ἡμῶν.

Αἶνος ᾠδῆς τῷ Δαυίδ. ϟδ΄.

1 † Δεῦτε ἀγαλλιασώμεθα τῷ κυρίῳ, † ἀλαλάξω-
μεν τῷ Θεῷ τῷ σωτῆρι ἡμῶν. † Προφθά-
2 σωμεν τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἐν ἐξομολογήσει, † καὶ
3 ἐν ψαλμοῖς ἀλαλάξωμεν αὐτῷ. † Ὅτι Θεὸς μέγας
κύριος, καὶ βασιλεὺς μέγας (α) ἐπὶ πάντας τοὺς θεούς.
4 ὅτι οὐκ ἀπώσεται κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, † Ὅτι ἐν τῇ
χειρὶ αὐτοῦ τὰ πέρατα τῆς γῆς, † καὶ τὰ ὕψη τῶν ὀρέων
5 αὐτοῦ (β) ἐστιν. Ὅτι αὐτοῦ ἐστιν ἡ θάλασσα καὶ αὐτὸς ἐ-
ποίησεν αὐτήν, † καὶ τὴν ξηρὰν αἱ χεῖρες αὐτοῦ ἔπλασαν.
6 † Δεῦτε προσκυνήσωμεν καὶ προσπέσωμεν αὐτῷ, † καὶ
(ᵈ) κλαύσωμεν ἐναντίον κυρίου τοῦ ποιήσαντος ἡμᾶς.
7 † Ὅτι αὐτός ἐστιν ὁ Θεὸς ἡμῶν, † καὶ ἡμεῖς λαὸς νο-
8 μῆς αὐτοῦ, † καὶ πρόβατα (") χειρὸς αὐτοῦ. † Σήμερον
ἐὰν τῆς φωνῆς αὐτοῦ ἀκούσητε, † Μὴ σκληρύνητε
9 τὰς καρδίας ὑμῶν, Ὡς ἐν τῷ παραπικρασμῷ,
† κατὰ τὴν ἡμέραν τοῦ πειρασμοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ,
† Οὗ (γ) ἐπείρασάν με οἱ πατέρες ὑμῶν (δ) † ἐ-
10 δοκίμασαν, καὶ εἶδον τὰ ἔργα μου. (ε) Τεσσαράκον-
τα ἔτη προσώχθισα τῇ γενεᾷ ἐκείνῃ, † (ζ) καὶ εἶπα,
11 Ἀεὶ πλανῶνται τῇ καρδίᾳ, † (η) Καὶ αὐτοὶ οὐκ ἔγνω-
σαν τὰς ὁδούς μου. † Ὡς ὤμοσα ἐν τῇ ὀργῇ μου,
(θ) † Εἰ εἰσελεύσονται εἰς τὴν κατάπαυσίν μου.

1 (α) Ὅτε ὁ οἶκος (β) ᾠκοδόμηται μετὰ τὴν αἰχμα-
λωσίαν, ᾠδὴ τῷ Δαυίδ. ϟε΄.

† Ἄσατε τῷ κυρίῳ † ᾆσμα καινόν, † ᾄσατε τῷ
2 κυρίῳ πᾶσα ἡ γῆ, † Ἄσατε τῷ κυρίῳ, εὐλο-
γήσατε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, † εὐαγγελίζεσθε ἡμέραν ἐξ
3 ἡμέρας τὸ σωτήριον αὐτοῦ. † Ἀναγγείλατε ἐν τοῖς
ἔθνεσι τὴν δόξαν αὐτοῦ, † ἐν πᾶσι τοῖς λαοῖς τὰ
4 θαυμάσια αὐτοῦ. † Ὅτι μέγας κύριος καὶ αἰνετὸς
σφόδρα, † φοβερός ἐστιν ἐπὶ πάντας τοὺς θεούς.

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

18 *Si dicebam; Motus est pes meus:* 18
misericordia tua, Domine, adjuvabat
me. 19 *Domine, secundùm multitu-* 19
dinem dolorum meorũ in corde meo,
consolationes tuæ (g) [g] *dilexerũt*
animam meam. 20 [h] *Numquid* 20
adhærebit tibi sedes iniquitatis,
(b) *formans laborem in præcepto?*
21 *Captabunt in animam justi: &* 21
sanguinem innocentem condemna-
bunt. 22 *Et factus est mihi Domi-* 22
nus in refugium: & Deus meus
[i] *in adjutorium spei meæ.* 23 *Et* 23
reddet illis [k] *iniquitatem ipsorum,*
(i) *et malitiam eorum: disperdet illos*
Dominus Deus noster.

Laus Cantici ipsi (*a*) David. *XCIV.*

1 *Venite, exultemus Domino: ju-* 1
bilemus [a] *Deo salutari no-*
stro. 2 *Præveniamus faciem ejus in* 2
confessione: & in psalmis jubilemus
ei. 3 *Quoniã Deus magn⁹* [b] *Do-* 3
minus, & rex magnus super omnes
(b) *deos: quoniam non repellet*
Dominus plebem suam: 4 *Quoniam* 4
in manu ejus fines terræ: & alti-
tudines montium ipsius sunt. 5 *Quo-* 5
niam ipsius est mare, & ipse fecit
illud: & aridam manus ejus for-
maverunt. 6 *Venite, adoremus, &* 6
[c] *procidamus ei: & ploremus an-*
te Dominum, qui fecit nos. Quoni- 7
am ipse est Deus noster: 7 *nos autem*
[d] *populus* (c) *pascuæ ejus, &*
oves manũs ejus. Hodiè si vocem e- 8
jus audieritis, nolite obdurare corda
vestra, 8 *Sicut* [e] *in exacerbatione* 9
secundùm diem tentationis in deser-
to: 9 *ubi tentaverunt me patres ve-*
stri: (d) *probaverunt, & viderunt*
opera mea: 10 (e) *Quadraginta an-* 10
nis (f) [f] *offensus fui generationi il-*
li, & dixi; Semper errãt corde: 11 *Et* 11
ipsi non cognoverunt vias meas. (g)
Sicut juravi in ira mea, [g] *Si intro-*
ibunt in (h) *requiem meam.*

(*a*) Quando domus ædificabatur post 1
captivitatem, (*b*) Canticum ipsi
David. *XCV.*

1 *Cantate Domino canticum no-*
vum: Cantate Domino omnis
terra. 2 *Cantate Domino, benedicite* 2
nomen ejus: benè nuntiate de die in
diem salutare ejus. 3 *Annuntiate in* 3
gentibus gloriam ej⁹, in omnibus po-
pulis mirabilia ejus. 4 *Quoniã ma-* 4
gnus Dominus, & [a] *laudabilis ni-*
mis: terribilis est super omnes deos.

Versio ÆTHIOPICA.

18 ወሶበ: እቤ: ድኅጸ: እገሪየ::በምሕረትከ: 18
እግዚኦ: ረድአኒ::=: እግዚኦ: በበመ:ብ 19
19 ዝኃ: ሕማማ: ለልብየ::ናዝዞትከ: አስተፈ
ሥሐ: ለነፍስየ::=: ወኢይትቃወመከ: መ 20
20 ንበረ: ርሙ::ዘይፈጥር: ጻማ: ደበ: ትእዛ
ዝ::=: ወይነዕዉዋ: ለነፍሰ: ጻድቅ::ወይ 21
ኴንኑ: ደመ: ንጹሐ::=: ወኮነኒ: እግዚአ 22
21 ብሔር: ጸወንየ::አምላኪየ: ወረድኤተ:ተ
22 ስፋየ::=: ወይፈድዮሙ: እግዚአብሔር: 23
በከመ: እከዮሙ::ወያጠፍኦሙ: እግዚአ
23 ብሔር:አምላክነ::=:

ስብሐት:ማኅሌት:ዘደዊት::

ንዑ ንዑ: ንትፈሣሕ: በእግዚአብሔር::ወን 1
የብብ:ለአምላክነ:ወመድኃኒነ::=: ወንብ 2
1 ጽሕ:ቅድመ: ገጹ: በአሚን::ወበመዝሙር:
ንየብብ:ሎቱ::=: እስመ: አቢይ: ውእቱ: 3
2 እግዚአብሔር : አምላክነ::ወንጉሥ : ዐቢ
ይ: ውእቱ: ላዕለ : ኵሉ : አማልክት::እስ
3 መ: ኢይገድፎሙ: እግዚአብሔር: ለሕዝ
ቡ::=: እስመ:ውስተ: እዴሁ:አጽናፈ:ም 4
4 ድር::አድባር:ነዋኃት: ዚአሁ:ውእቱ::=:
እስመ: እንቲአሁ: ይእቲ: ባሕር: ወውእቱ: 5
5 ፈጠራ::ወለየብስኒ: እደዊሁ:ገብሩ::=: ን 6
ዑ:ንስግድ: ወንግነይ: ሎቱ::ወንብኪ : ቅድ
6 መ: እግዚአብሔር: ዘውእቱ: ፈጠረነ::እስ
መ:ውእቱ: አምላክነ::=: ወንሕነሰ:ሕዝ 7
7 ቡ: አባግዐ: መርዔቱ::ዮም: ለእመ: ሰማዕ
ክሙ: ቃሎ::ኢታጽንዑ : ልበክሙ::=: ከ 8
8 መ:አመ: አምረርዎ: በገደም::ወከመ:አመ
ከርዎ::=: ዘአመከሩኒ : አበዊክሙ::ወፈ 9
9 ተኑኒ: ወርእዩ: ምግባርየ::=: ወአርብዐ: 10
ዓመተ : ተቈጥዕክዎሙ : ለይእቲ : ትውል
ድ::ወአቤ:ዘልፈ:ይስሕቱ: ልቦሙ::=: ወ 11
10 እሙንቱሰ : ኢያእመሩ : ፍናዊየ::በከመ:መ
ሐልኩ: በመዐትየ::ከመ : ኢይበውኡ: ውስ
11 ተ:ዕረፍትየ::=:

ዘአመ:ተሐንጸ:ቤት:ዘእምድኅረ:
ፄዋዌ:ማኅሌት:ዘደዊት::

1 ንሮ ሰብሕዎ : ለእግዚአብሔር : ስብሐተ: 1
ሐዲስ::ሰብሕዎ : ለእግዚአብሔር : ኵላ:
ምድር::=: ሰብሕዎ : ለእግዚአብሔር: 2
ወባርክዎ : ለስሙ::ወተዜነው: እምዕለት:እ
2 ድኅኖቶ::=: ወንግርዎሙ: ለአሕዛብ: ስ 3
ብሐቲሁ::ወለኵሎሙ: አሕዛብ: ተአምሪ
3 ሁ::=: እስመ: ዐቢይ: እግዚአብሔር: ወ 4
ብዙኅ:አኰቴቱ::ወግሩም: ውእቱ: ላዕለ:
4 ኵሉ : አማልክት::=:

Ψαλ. ϟγ΄. MS. A. (γ) Κατὰ τὸ πλῆθος (δ) ηὔφραναν (ε) συμπροσέσω (ζ) ἐπὶ πρόσταγμα. (η) κύριος κατὰ
τὴν ἀνομίαν αὐτῶν, καὶ κατὰ τὴν πονηρίαν αὐτῶν Ψαλ. ϟδ΄. MS. A. (α) ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν. Ὅτι ἐν τῇ χειρὶ (β)
ἐστιν. (ᵈ) κλαύσωμεν (") τῆς χειρὸς (γ) ἐπείρασαν οἱ πατέρες (δ) ἐδοκίμασάν με, (ε) Τεσσεράκοντα (ζ) καὶ
εἶπον, (η) Αὐτοὶ δὲ οὐκ (θ) Ἢ εἰσελεύσονται Ψαλ. ϟε΄. MS. A. (α) Ὠδὴ τῷ Δαυὶδ ὅτε (β) ᾠκοδομεῖτο
μετὰ τὴν αἰχμαλωσίαν.

INTERP. ÆTHIOP. [g] lætificaverunt [h] Neque apud te constituta erit sedes [i] & auxiliator spei meæ. [k] Deus secundùm malitiam eorum: & disperdet *PSAL. XCIV.* [a] Deo nostro, & salutari nostro. [b] Dominus noster, [c] confiteamur ei: [d] populus ejus, & oves pascuæ ejus. [e] cùm exacerbaverunt eum in deserto, & cùm tentaverunt eum: ubi [f] fastidivi generationem illam, [g] quòd non introibunt *PSAL. XCV.* [a] gloria ejus ampla:

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* كنت اقول انه قد زلت قدماي * فرحمتك يا رب اعانتني * كثيرين احزان قلبي يا رب * كان 18 19
عزاءك يفرح نفسي * هل يكون معك كرسي الاثم * الذين يختلقون الكذب على شريعتك 20
* ويتصيدون نفس الصديق * ويستحلون دما زكيا * والرب صار لي ملجاء * والاهي معونة 21 22
رجائي * والرب يجازيهم على اثمهم * وكشرهم يبيدهم الرب الهنا * الليلويا 23
* المزمور الرابع والتسعون * لداود * بركة وتسبحة * وهو كد * استيخن 1
تعالوا فلنبتهج بالرب * ولنهلل لله مخلصنا * ولنسبق الى وجهه بالشكر ولنهلل له بالمزامير 2
* لانك يا رب اعظم الالهة * وملك عظيم على جميع الالهة * لان في يديه اقطار الارض 3 4
جميعها * واعالي الجبال هي له * والبحر هو له وهو الذي خلقه * يداه صنعتا الارض * هلموا 5 6
فلنسجد ونخر له * ونبكي امام الرب الذي صنعنا * لانه هو الهنا * ونحن شعب رعيته * واغنام 7
يديه * اليوم اذا سمعتم صوته * فلا تقسوا قلوبكم مثل ما في التمرمر * كيوم الامتحان في 8
البرية * حيث جربني اباوكم * اختبروني ونظروا اعمالي * اربعين سنة * من اجل هذا بغضت 9 10
ذلك الجيل * وقلت انهم ضالون بقلوبهم دايما * وهم لم يعرفوا سبلي * كما حلفت في غضبي 11
انهم لا يدخلون في موضع راحتي * الليلويا *
* المزمور الخامس والتسعون * لداود تسبحة عند بني البيت بعد السبي * وهو كط * استيخن 1
سبحوا الرب تسبيحا جديدا * سبحوا الرب يا جميع الارض * وسبحوا الرب وباركوا اسمه 2
بشروا بخلاصه يوما فيوما * اخبروا في الامم بمجده * وفي جميع الشعوب بعجائبه * لان الرب 3 4
عظيم ومبارك جدا * مرهوب على جميع الالهة *

Dicebam jam lapsos esse pedes meos, at 18
misericordia tua, O Domine, adjuvit me.
Multi erant mœrores cordis mei, O Domi- 19
ne: at consolatio tua recreabit animam
meam. Nunquid erit tecum sedes iniqui- 20
tatis, eorum qui architectantur mendaci-
um contra legem tuam, Et venantur ani- 21
mam justi, & licitum faciunt sanguinem
innocentem? Et Dominus factus est mihi 22
refugium, & Deus meus adjutorium spei
meæ. Et Dominus rependet eis pro scelere 23
eorum, et juxta malitiam ipsorum perdet
eos Dominus Deus noster. Alleluja.

PSAL. XCIV.

Davidis, benedictio & canticum. 1
Vers. 24.

Venite, exultemus in Domino, & ju-
bilemus Deo salvatori nostro: Et an- 2
tevertamus ad faciem ejus cum gratiarum
actione, et canamus ei cum psalmis. Quia 3
tu, O Domine, maximus deorum es, et rex
summus præ omnibus diis. Quia in ma- 4
nibus ejus sunt fines terræ universæ, &
cacumina montium ipsius sunt. Et mare 5
ipsius est, & ipse est qui creavit illud:
manus ejus fecerunt terram. Venite, ad- 6
oremus, & procidamus ante eum, & plo-
remus coram Domino qui fecit nos. Nam 7
ipse est Deus noster, et nos populus pascuæ
ejus, & oves manuum ejus. Hodiè cùm
audiveritis vocem ejus, Ne obdurentur 8
corda vestra prout egistis in irritatione,
juxta diem tentationis in deserto. Ubi 9
tentaverunt me patres vestri, probaverunt
me, et viderunt opera mea. Quadraginta 10
annis. Propterea odi illam generationem, et
dixi; Sanè isti falluntur in cordibus suis
semper, & ipsi non nôrunt vias meas.
Quemadmodum juravi in ira mea, certè 11
non ingredientur in locum requiei meæ.
Alleluja.

PSAL. XCV.

Davidis. Canticum quando extru- 1
ebatur domus post captivita-
tem. Vers. 29.

Laudate Dominum laudatione novâ:
laudate Dominum, O universa terra.
Etiam laudate Dominum, et benedicite no- 2
mini ejus, prædicate salutem ejus singulis
diebus. Narrate inter gentes glorificatio- 3
nem ejus, et inter omnes populos, miracula
ejus: Quoniam Dominus magnus est ac 4
benedicendus magnoperè, formidabilis
præ omnibus diis.

תְּהִלִּים : צו

.fecit cœlos Dominus Et : *vana* populorum dii omnes Quoniam
5 כִּי כָּל־אֱלֹהֵי הָעַמִּים אֱלִילִים וַיהוָה שָׁמַיִם עָשָׂה: 5
Domino *Tribuite* .ejus sanctuario in *pulchritudo* & fortitudo: *ejus facies ad* decor & Gloria
6 הוֹד־וְהָדָר לְפָנָיו עֹז וְתִפְאֶרֶת בְּמִקְדָּשׁוֹ: הָבוּ לַיהוָה 7
Domino *Tribuite* .fortitudinem & gloriam Domino *tribuite* : populorum familiæ
משְׁפְּחוֹת עַמִּים הָבוּ לַיהוָה כָּבוֹד וָעֹז: הָבוּ לַיהוָה 8
Domino vos Incurvate .ejus atria in introite & , *munus* ferte :ejus nominis gloriam
כְּבוֹד שְׁמוֹ שְׂאוּ־מִנְחָה וּבֹאוּ לְחַצְרוֹתָיו: הִשְׁתַּחֲווּ לַיהוָה 9
;gentibus in Dicite .terra universa ejus *faciebus* à pavete : sanctitatis decore in
בְּהַדְרַת־קֹדֶשׁ חִילוּ מִפָּנָיו כָּל־הָאָרֶץ: אִמְרוּ בַגּוֹיִם 10
populos judicabit : *mutet* ne , orbis firmabitur etiam , regnavit Dominus
יְהוָה מָלָךְ אַף־תִּכּוֹן תֵּבֵל בַּל־תִּמּוֹט יָדִין עַמִּים
.ej° plenitudo &,mare tonabit : terra exultabit & , cœli Lætabuntur *rectitudinibus in*
בְּמֵישָׁרִים: יִשְׂמְחוּ הַשָּׁמַיִם וְתָגֵל הָאָרֶץ יִרְעַם הַיָּם וּמְלֹאוֹ: 11
.sylvæ ligna omnia *dicent præconia* tunc : eo in quod omne & , ager Exultabit
יַעֲלֹז שָׂדַי וְכָל־אֲשֶׁר־בּוֹ אָז יְרַנְּנוּ כָּל־עֲצֵי־יָעַר: 12
orbem judicabit ; terram judicare venit quoniam : venit quia *Domini facies Ad*
לִפְנֵי יְהוָה כִּי בָא כִּי בָא לִשְׁפֹּט הָאָרֶץ יִשְׁפֹּט־תֵּבֵל 13
.sua veritate in populos & ,justitia in
בְּצֶדֶק וְעַמִּים בֶּאֱמוּנָתוֹ:

PSAL. XCVII. צז

caligo & , Nubes .multæ insulæ lætentur : terra exultet ,regnavit Dominus
1 יְהוָה מָלָךְ תָּגֵל הָאָרֶץ יִשְׂמְחוּ אִיִּים רַבִּים: עָנָן וַעֲרָפֶל 2
ejus facies ad Ignis .ejus solii *paratus locus* judicium & justitia : ejus *circuitus*
סְבִיבָיו צֶדֶק וּמִשְׁפָּט מְכוֹן כִּסְאוֹ: אֵשׁ לְפָנָיו 3
, vidit : orbem ejus fulgura Illuminaverunt .ejus hostes *circum* exuret & : ibit
תֵּלֵךְ וּתְלַהֵט סָבִיב צָרָיו: הֵאִירוּ בְרָקָיו תֵּבֵל רָאֲתָה 4
: Domini *faciebus* à sunt dissoluti cera sicut Montes .terra contremuit &
וַתָּחֵל הָאָרֶץ: הָרִים כַּדּוֹנַג נָמַסּוּ מִלִּפְנֵי יְהוָה 5
viderunt &:ejus justitiam cœli Annunciaverunt .*terræ omnis* Domini *faciebus* à
מִלִּפְנֵי אֲדוֹן כָּל־הָאָרֶץ: הִגִּידוּ הַשָּׁמַיִם צִדְקוֹ וְרָאוּ 6
se glorificantes , *sculptili servientes* omnes afficiantur Pudore.ej° gloriā populi omnes
כָל־הָעַמִּים כְּבוֹדוֹ: יֵבֹשׁוּ כָּל־עֹבְדֵי פֶסֶל הַמִּתְהַלְלִים 7
, Sijon est lætata & , Audivit .*Divi* omnes ei vos incurvate : *vanis in*
בָּאֱלִילִים הִשְׁתַּחֲווּ־לוֹ כָּל־אֱלֹהִים: שָׁמְעָה וַתִּשְׂמַח צִיּוֹן 8
tu Quoniam .Domine tua judicia propter : Jehudah filiæ exultaverunt &
וַתָּגֵלְנָה בְּנוֹת יְהוּדָה לְמַעַן מִשְׁפָּטֶיךָ יְהוָה: כִּי־אַתָּה 9
.*Dives* omnes super es elevatus valde :terram omnem super excelsus Dominus
יְהוָה עֶלְיוֹן עַל־כָּל־הָאָרֶץ מְאֹד נַעֲלֵיתָ עַל־כָּל־אֱלֹהִים:
manu è : suorum *piorum* animas *custodiens* , malum habete odio Dominum *Diligentes*
אֹהֲבֵי יְהוָה שִׂנְאוּ רָע שֹׁמֵר נַפְשׁוֹת חֲסִידָיו מִיַּד 10
Lætamini .lætitia corde rectis & : justo est sata Lux .eos eruet impiorum
רְשָׁעִים יַצִּילֵם: אוֹר זָרֻעַ לַצַּדִּיק וּלְיִשְׁרֵי־לֵב שִׂמְחָה: שִׂמְחוּ 11 12
.ejus sanctitatis memoriæ confitemini & : Domino in justi
צַדִּיקִים בַּיהוָה וְהוֹדוּ לְזֵכֶר קָדְשׁוֹ:

תרגום TARGUM.

5 ארום כל דחלת עממיא טעותא ויי שמיא
6 עבד: שבחא ושבהורא קדמוי עושנא
7 ותושבחא בבית מקדשיה: הבו זמר קדם יי
8 יחוסי עמיא הבו קדם יי איקר ועושנא: הבו
קדם יי איקר ורוממו שמיה אובלו וסוברו
9 תקרובתא ועולו לקדמוי לדרתוי: סגודו קדם
יי בשבהורת קודשא רתתו מן קדמיה כל
10 יתבי ארעא: אמרו בעמיא יי מלך לחוד
תקין תבל דלא תתמוטט ידין עמיא בתירוצא:
11 יחדון חילי דשמיא וידוצון צדיקי ארעא יכלי
12 ימא ומליה: יבוע תושבחא חקל וכל די
13 ביה הבכן ישבחון כל אילני חורשא: קדם יי
ארום אתא ארום אתא למדן ארעא ידון
תבל בצדקתא ועמיא בהימנותיה:

צז

1 יי מלך תרוז ארעא יחדון נגון סגיעין: ענני
2 יקרא ואמטתא חזור חזור די ליה צדקתא
3 ודינא אתר די מכון כורסיה: אשא קדמוי
4 תהלך ומצלהבא חזור וזוור מעיקוי: מנהרין
5 ברקוי תבל חמת ואתחלחלת ארעא: טוריא
היך שעוא יתמסון מן קדם יי מן קדם רבון
6 כל ארעא: יתנון אנגלי מרומא צדקתיה
7 ויחמון כל עמיא איקריה: יבהתון כל פלחי
פסלא דמשתבחין בטעותא ויסגדון קדמוי
8 כל עמיא פלחי טעותא: שמעת וחדת כנשתא
דציון ודיצן בנתא דבית יהודה מן בגלל
9 דינך יי: ארום את הוא יי עלאה על כל
יתבי ארעא לחדא אתעלית על כל דחליא:
10 רחימיא דיי סנו ביש מטול דקירים נטר
נפשת חסידוי מן אידיהון דרשיעי יפצי אנון:
11 נהור דנח ומטמר לצדיקיא ולתריצי לבא
12 חדוא: חדון צדיקיא במימרא דיי ואודון
לדכרן שום קודשיה:

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Quoniam omnes dii gentium idola sunt, Dominus autem cœlos fecit. Laus & gloria coram eo, fortitudo & exultatio in domo sanctuarii ejus. Adferte canticum coram Domino familiæ populorum, afferte coram Domino honorem & fortitudinem. Afferte coram Domino gloriam *& celsitudinem* nomini ejus, *adducite & portate* munus & intrate *coram eo* in atria ejus. Adorate coram Dño in decore sanctitatis: contremiscite à conspectu ejus omnes habitatores terræ. Dicite in gentibus: Dominus regnavit, insuper firmavit orbem ne moveatur: judicabit populos in æquitate. Lætentur exercitus cœlorum, & exultent justi terræ; tonet mare & plenitudo ejus. Promat laudem ager, & omnia quæ sunt in eo: tunc laudabunt omnes arbores sylvæ. Coram Domino quoniam venit, siquidem venit judicare terram: judicabit orbem in justitia, & populos in veritate sua.

PSAL. XCVII.

Dominus regnavit, exultet terra, lætentur insulæ multæ. Nubes gloriæ & caligo in circuitu ejus: justitia & judicium locus paratus sedi ejus. Ignis ante eum *ibit*, concremans per circuitum molestatores ejus. Collustrant fulgura ejus orbem: vidit & commota est terra. Montes tanquam cera liquescent à præsentia Domini dominatoris omnis terræ. Annunciabunt angeli *excelsi* justitiam ejus, & videbunt omnes populi gloriam ejus. Confundentur omnes qui serviunt sculptili, qui gloriantur in idolis, & adorabunt coram eo omnes gentes quæ serviunt idolis. Audivit & læta est ecclesia Sion; & exultent filiæ domus Jehudæ propter judicia tua Domine. Quoniam tu Domine altissimus super omnes habitatores terræ; valdè exaltatus es super omnes deos. Amatores Domini odio habete malum, quoniam Dominus custodit animas misericordium suorum, de manibus impiorum eruet eos. Lux orta & *conservata* est justis, & rectis corde lætitia. Lætamini justi in Verbo Domini, & confitemini memoriæ nominis sanctitatis ejus.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 * ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܐܠܗܐ ܕܥܡܡܐ ܦܬܟܪܐ ܐܢܘܢ. ܘܡܪܝܐ ܫܡܝܐ ܥܒܕ: * ܢܘܗܪܐ ܘܫܘܒܚܐ
6 ܩܕܡܘܗܝ. ܥܫܝܢܐ ܘܬܫܒܘܚܬܐ ܒܡܩܕܫܗ: * ܗܒܘ ܠܡܪܝܐ ܫܪܒܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܗܒܘ 7
8 ܠܡܪܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܐܝܩܪܐ: * ܗܒܘ ܠܡܪܝܐ ܐܝܩܪܐ ܠܫܡܗ. ܐܣܩܘ ܩܘܪܒܢܐ ܘܥܘܠܘ
9 ܠܕܪܬܗ: * ܣܓܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܒܕܪܬܐ ܕܩܘܕܫܗ. ܢܙܘܥ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܟܠܗ ܐܪܥܐ: * ܐܡܪܘ 10
ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܕܡܪܝܐ ܐܡܠܟ. ܘܐܬܩܢܗ ܠܬܐܒܝܠ ܕܠܐ ܬܙܘܥ: ܢܕܘܢ ܠܥܡܡܐ ܒܬܪܝܨܘܬܐ.
11 * ܢܚܕܘܢ ܫܡܝܐ ܘܬܪܘܙ ܐܪܥܐ: ܢܪܥܡ ܝܡܐ ܒܡܠܘܐܗ. * ܢܬܥܫܢܘܢ ܚܩܠܬܐ ܘܟܠ ܕܐܝܬ 12
ܒܗܘܢ: ܗܝܕܝܢ ܢܫܒܚܘܢ ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܥܒܐ. * ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܕܐܬܐ ܠܡܕܢܗ ܠܐܪܥܐ: 13
ܕܢܐ ܬܐܒܝܠ ܒܟܐܢܘܬܐ. ܘܠܥܡܡܐ ܒܗܝܡܢܘܬܐ.

Nam cuncti dii gentium vani sunt, Dominus autem cœlum condidit. Splendor & gloria coram ipso, robur atque laus in Sanctuario ejus. Date Domino, familiæ populorum, date Domino gloriam & honorem: Date Domino, honorem nomini ejus. Ferte oblationes & intrate in atria ejus: Adorate Dominum in atrio sanctitatis ejus: tremat à conspectu ipsius universa terra. Dicite inter gentes Dominus regnavit, & firmavit orbem ne moveatur: judicabit populos cum æquitate. Lætabuntur cœli, & gestiet terra, exultabit mare cum plenitudine sua: Confortabuntur agri & quidquid est in eis: tunc laudē dicent omnes arbores sylvæ Coram Domino, quia venturus est ad judicandam terram; judicabit orbem cum justitia, & populos cum fide.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

PSAL. XCVII.

1 * ܕܕܘܝܕ. ܡܬܢܒܐ ܒܗ ܥܠ ܡܐܬܝܬܗ ܕܡܫܝܚܐ. ܘܪܡܙ ܒܗ ܥܠ ܓܠܝܢܗ
ܐܚܪܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܙ. ܡܪܝܐ ܐܡܠܟ ܬܪܘܙ ܐܪܥܐ. ܢܚܕܘܢ ܓܙܪܬܐ ܣܓܝܐܬܐ:
2 * ܥܢܢܐ ܘܥܪܦܠܐ ܚܕܪܘܗܝ. ܒܬܪܝܨܘܬܐ ܘܒܕܝܢܐ ܡܬܩܢ ܟܘܪܣܝܗ: * ܢܘܪܐ ܬܐܟܘܠ
3 ܩܕܡܘܗܝ. ܘܬܘܩܕ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ: * ܢܢܗܪܘܢ ܒܪܩܘܗܝ ܠܬܐܒܝܠ. ܚܙܬ ܘܐܬܬܙܝܥܬ 4
5 ܐܪܥܐ: * ܘܛܘܪܐ ܐܝܟ ܫܥܘܬܐ ܐܬܦܫܪܘ. ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ: * ܚܘܝܘ ܫܡܝܐ 6
7 ܙܕܝܩܘܬܗ. ܘܚܙܘ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܐܝܩܪܗ: * ܢܒܗܬܘܢ ܟܠ ܕܥܒܕܝܢ ܦܬܟܪܐ.
8 ܘܡܫܬܒܗܪܝܢ ܒܓܠܝܦܐ: ܣܓܘܕܘ ܠܗ ܟܠܗܘܢ ܡܠܐܟܘܗܝ. * ܫܡܥܬ ܘܚܕܝܬ
9 ܨܗܝܘܢ: ܘܪܘܙ ܒܢܬܗ ܕܝܗܘܕܐ. ܡܛܠ ܕܝܢܝܟ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ ܡܪܝܡܐ
10 ܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܛܒ ܐܬܬܪܝܡܬ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܠܗܐ: * ܪܚܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܣܢܝܢ
11 ܠܒܝܫܬܐ. ܘܢܛܪ ܢܦܫܬܐ ܕܙܕܝܩܘܗܝ: ܘܡܢ ܐܝܕܐ ܕܚܛܝܐ ܢܦܨܐ ܐܢܘܢ. * ܢܘܗܪܐ ܕܢܚ
12 ܠܙܕܝܩܐ: ܘܠܬܪܝܨܝ ܠܒܐ ܚܕܘܬܐ. * ܚܕܘ ܙܕܝܩܐ ܒܡܪܝܐ: ܘܐܘܕܘ ܠܕܘܟܪܢܐ ܕܩܘܕܫܗ.

Davidis. Prædicit in eo adventum Christi. Itémque innuit in ipso apparitionem ejus extremam. Vers. 27.

Dominus regnavit, exultet terra, gaudeant insulæ multæ. Nubes & caligines circa eum sunt: in æquitate & in judicio est firmatum solium ejus. Ignis vorabit ante ipsum, & amburet inimicos ejus. Illustrabunt fulgura ejus orbem: vidit & turbata est terra, Montésque ut cera liquefacti sunt à conspectu Domini dominatoris universi orbis. Indicārunt cœli justitiam ejus, & viderunt omnes populi gloriam ejus. Confundantur omnes qui componunt idola, & gloriantur in sculptis. Adorate eum omnes angeli ejus. Audiet & gaudebit Sion, & gestient filiæ Judhæ propter judicia tua Domine: Quia tu es Dominus Altissimus super universam terram, & summopere exaltatus es super omnes deos. Amici Domini detestantur malum: & custodit animas justorum suorum, déque manu impiorum liberabit eos. Quia lux effulsit justis, & rectis corde lætitia. Exhilaramini justi in Domino, & gratias agite memoriæ sanctitatis ejus.

Verſio VULG. LAT.

5 Quoniam omnes dii gentium dæmo-
6 nia: Domin⁹ autem cœlos fecit. Confeſſio
& pulchritudo in conſpectu ej⁹:
ſanctimonia et magnificentia in ſancti-
7 ficatione ejus. Afferte Domino patriæ
gentiū, afferte Dño gloriam & hono-
8 rem: Afferte Domino gloriā nomini
ejus. Tollite hoſtias, & introite in a-
9 tria ejus: Adorate Dominum in atrio
ſancto ejus. Commoveatur à facie ejus
10 univerſa terra: Dicite in gentib⁹, quia
Dñs regnavit: Etenim correxit orbem
terræ qui non commovebitur: judica-
11 bit populos in æquitate. Lætentur cæli,
& exultet terra: commoveatur mare, et
12 plenitudo ejus: Gaudebunt campi, &
omnia quæ in eis ſunt. Tunc exulta-
13 bunt omnia ligna ſylvarū A facie Domini,
quia venit: quoniam venit judicare
terram. Judicabit orbem terræ in
æquitate, & populos in veritate ſua.

1 Huic David, Quando terra ejus reſtituta eſt. XCVI.

Dominus regnavit, exultet terra:
2 Lætentur inſulæ multæ. Nubes, &
caligo in circuitu ejus: juſtitia, & ju-
3 dicium correctio ſedis ejus. Ignis ante
ipſum præcedet, & inflammabit in cir-
4 cuitu inimicos ejus. Illuxerunt fulgura
ejus orbi terræ: vidit, & commota eſt
5 terra. Montes, ſicut cera, fluxerūt à facie
6 Dñi, à facie Dñi omnis terra. Annūtiaverūt
cœli juſtitiā ejus: et viderunt o-
7 mnes populi gloriā ejus. Confundantur
omnes, qui adorant ſculptilia: &
qui gloriantur in ſimulachris ſuis. Ad-
8 orate eum omnes angeli ejus: Audivit,
et lætata eſt Sion. Et exultaverunt filiæ
9 Judæ, propter judicia tua, Dñe: Quo-
niā tu Dominus altiſſimus ſuper omnē
terram: nimis exaltat⁹ es ſuper omnes
10 deos. Qui diligitis Dñm, odite malū:
cuſtodit Dominus animas ſanctorum
ſuorum, de manu peccatoris liberabit
11 eos. Lux orta eſt juſto, et rectis corde
12 lætitia. Lætamini juſti in Domino: et
confitemini memoriæ ſanctificationis
ejus.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

5 † Ὅτι πάντες οἱ θεοὶ τῶν ἐθνῶν δαιμόνια, † ὁ δὲ κύ-
6 ριος τοὺς οὐρανοὺς ἐποίησεν. † Ἐξομολόγησις καὶ ὡ-
ραιότης ἐνώπιον αὐτοῦ, † ἁγιωσύνη καὶ μεγαλοπρέ-
7 πεια ἐν τῷ ἁγιάσματι αὐτοῦ. † Ἐνέγκατε τῷ κυρίῳ
αἱ πατριαὶ τῶν ἐθνῶν, † ἐνέγκατε τῷ κυρίῳ δόξαν καὶ
8 τιμήν, † Ἐνέγκατε τῷ κυρίῳ δόξαν ὀνόματι αὐτοῦ,
† ἄρατε θυσίας καὶ εἰσπορεύεσθε εἰς τὰς αὐλὰς αὐτοῦ.
9 † Προσκυνήσατε τῷ κυρίῳ ἐν αὐλῇ ἁγίᾳ αὐτοῦ, † σα-
10 λευθήτω ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ πᾶσα ἡ γῆ. † Εἴπατε
ἐν τοῖς ἔθνεσιν, (β) Ὁ κύριος ἐβασίλευσε· † καὶ γὰρ
κατώρθωσε τὴν οἰκουμένην, ἥτις οὐ σαλευθήσεται, † κρι-
11 νεῖ λαοὺς ἐν εὐθύτητι. † Εὐφραινέσθωσαν οἱ οὐρανοὶ καὶ
ἀγαλλιάσθω ἡ γῆ, † σαλευθήτω ἡ θάλασσα καὶ τὸ
12 πλήρωμα αὐτῆς. † Χαρήσεται τὰ πεδία, καὶ πάντα
τὰ ἐν αὐτοῖς· † τότε ἀγαλλιάσονται πάντα τὰ ξύλα
13 τοῦ δρυμοῦ † (γ) Πρὸ προσώπου τοῦ κυρίου, ὅτι ἔρχεται,
† ὅτι ἔρχεται κρῖναι τὴν γῆν. † κρινεῖ τὴν οἰκουμένην ἐν
δικαιοσύνῃ, † καὶ λαοὺς ἐν τῇ ἀληθείᾳ αὐτοῦ.

MS. A. (β) ὅτι κύριος (γ) Ἀπὸ προσώπου κυρίου,

1 Τῷ Δαυίδ, ὅτε ἡ γῆ αὐτοῦ καθίσταται. ϟϛʹ.

† Ὁ κύριος ἐβασίλευσεν, ἀγαλλιάσθω ἡ γῆ, † εὐ-
2 φρανθήτωσαν νῆσοι πολλαί. † Νεφέλη καὶ γνόφος
κύκλῳ αὐτοῦ, † δικαιοσύνη καὶ κρίμα κατόρθωσις τοῦ
3 θρόνου αὐτοῦ. † Πῦρ ἐναντίον αὐτοῦ προπορεύσεται, † καὶ
4 φλογιεῖ κύκλῳ τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. † Ἔφαναν αἱ ἀστρα-
5 παὶ αὐτοῦ τῇ οἰκουμένῃ, † εἶδε καὶ ἐσαλεύθη ἡ γῆ. † Τὰ
ὄρη (α) ὡσεὶ κηρὸς ἐτάκησαν ἀπὸ προσώπου κυρίου, † ἀ-
6 πὸ προσώπου κυρίου πάσης τῆς γῆς. † Ἀνήγγειλαν οἱ
οὐρανοὶ τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ, † καὶ εἴδοσαν πάντες οἱ
7 λαοὶ τὴν δόξαν αὐτοῦ. † Αἰσχυνθήτωσαν πάντες οἱ
προσκυνοῦντες τοῖς γλυπτοῖς, † οἱ (β) ἐγκαυχώ-
μενοι ἐν τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν. † προσκυνήσατε αὐ-
8 τῷ πάντες (γ) ἄγγελοι αὐτοῦ. † Ἤκουσε καὶ εὐφράν-
θη Σιών, † καὶ ἠγαλλιάσαντο αἱ θυγατέρες τῆς Ἰουδαί-
9 ας, † ἕνεκεν τῶν κριμάτων σου κύριε. † Ὅτι (δ) σὺ
εἶ κύριος ὁ ὕψιστος ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν, † σφόδρα
10 ὑπερυψώθης ὑπὲρ πάντας τοὺς θεούς. † Οἱ ἀγαπῶν-
τες τὸν κύριον, μισεῖτε (ε) πονηρόν. † φυλάσσει κύ-
ριος τὰς ψυχὰς τῶν ὁσίων αὐτοῦ, † ἐκ χειρὸς (ζ)
11 ἁμαρτωλῶν ῥύσεται αὐτούς. † Φῶς ἀνέτειλε τῷ
δικαίῳ, † καὶ τοῖς εὐθέσι τῇ καρδίᾳ εὐφροσύνη.
12 † Εὐφράνθητε δίκαιοι ἐν τῷ κυρίῳ, † καὶ ἐξομο-
λογεῖσθε τῇ μνήμῃ τῆς ἁγιωσύνης αὐτοῦ.

MS. A. (α) ἐτάκησαν ὡσεὶ κηρὸς (β) ἐνκαυχώμενοι (γ) οἱ ἄγγελοι (δ) σὺ κύριος ὕψιστος (ε) πονηρά. (ζ) ἁμαρτωλοῦ

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

5 [b] *Quoniam omnes dii gentium,* 5
(c) dæmonia: Dominus autem cœlos
fecit. 6 Confeſſio & pulchritudo in 6
conſpectu ejus: ſanctitas & magnificentia
in ſanctificatione ejus. 7 Afferte 7
Domino patriæ gentium: afferte
Domino gloriam, & honorem:
Afferte Domino gloriam nomini e- 8
jus. 8 Tollite hoſtias, & introite in a-
tria ejus: Adorate Dominum in a- 9
trio ſancto ejus. 9 (d) Commoveatur
à facie ejus univerſa terra: Dicite 10
in gentibus, Dominus (e) regnavit.
10 [c] Etenim correxit orbem terræ,
qui non commovebitur: judicabit po-
pulos in æquitate. 11 Lætentur cœli, 11
& exultet terra: (f) commoveatur
mare, & plenitudo ejus. (g) Gau- 12
debunt campi, & omnia quæ in eis
ſunt: 12 Tunc (h) exultabunt omnia
ligna ſylvæ Ante faciem Domini: 13
quoniam venit: quoniam venit judi-
care terram. 13 Judicabit orbem
terræ in æquitate, & populos in veritate
ſua.

Ipſi David, cum terra ejus conſti- 1
tuta eſt. XCVI.

Dominus regnavit, exultet terra:
Lætentur inſulæ multæ. 2 Nubes, 2
& caligo in circuitu ejus: juſtitia,
& judicium [a] directio ſedis ejus.
3 Ignis ante ipſum præibit, & [b] in- 3
flammabit in circuitu inimicos ejus.
4 Illuxerunt fulgura ejus orbi terræ: 4
vidit, et cōmota eſt terra. 5 [c] Mon- 5
tes, ſicut cera, fluxerunt à facie Do-
mini: à facie Domini omnis (a) ter-
ræ. 6 Annuntiaverunt cœli juſtitiam 6
ejus: & viderunt omnes populi glo-
riam ejus. 7 Confundantur omnes, qui 7
adorant ſculptilia: qui gloriantur in
ſimulachris ſuis. 8 Adorate eum o-
mnes angeli ejus. Audivit, & læta- 8
ta eſt Sion: 9 et exultaverunt filiæ
Judææ, propter judicia tua, Domine.
10 Quoniam tu es Dominus altiſſi- 9
mus ſuper omnem terram: nimis ex
altatus es ſuper omnes deos: 11 Qui 10
diligitis Dominum; odite (b) [d]
malignum: cuſtodit Dominus ani-
mas (c) ſanctorum ſuorum: de ma-
nu (d) peccatorum liberabit eos.
12 Lux orta eſt [e] juſto: & rectis 11
corde lætitia. 13 Lætamini juſti in 12
Domino: & confitemini memoriæ
ſanctitatis ejus.

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ፡ አማልክተ፡ አሕዛብ፡ አጋንንት፡፡ወእ 5
ግዚአብሔርሰ ፡ ሰማያተ ፡ ገብረ፡፡=፥ አሚ 6
ን፡ወሠናይት ፡ ቅድሜሁ፡፡ቅድሳት፡ ወዕበየ፡
ስብሐት፡ውስተ፡ መቅደሱ፡፡=፥ አምጽኡ፡ 7
ለእግዚአብሔር ፡ በሐውርተ ፡ አሕዛብ፡፡አ
ምጽኡ፡ ለእግዚአብሔር፡ ክብረ ፡ ወስብሐ
ተ፡፡አምጽኡ ፡ ለእግዚአብሔር፡ ስብሐተ፡
ለስሙ፡፡=፥ ንሥኡ፡መሥዋዕተ፡ወባኡ፡ው 8
ስተ፡አዕጻዲሁ፡፡ስግዱ፡ ለእግዚአብሔር፡ በ
ዐጸደ፡ መቅደሱ፡፡=፥ ታድለቀልቅ፡ እምቅ 9
ድመ፡ገጹ፡ ኵሉ፡ ምድር፡፡በሉዎሙ፡ ለአሕ
ዛብ፡ከመ፡እግዚአብሔር፡ ነግሠ፡፡=፥ ወአ 10
ጽንዐ፡ለዓለም፡ ከመ፡ ኢታንቀልቅል፡፡ወይኴ
ንኖሙ፡ለአሕዛብ፡በርትዕ፡፡=፥ ይትፈሣሕ፡ 11
ሰማያት፡ ወትትሐሠይ ፡ ምድር፡፡ወትትከወ
ስ፡ባሕር ፡ በምልኡ፡፡ይትሐሠይ ፡ ገዳም፡ወ
ኵሉ፡ዘውስቴታ፡፡=፥ ውእተ፡አሚረ፡ ይት 12
ፈሣሕ፡ ኵሉ፡ ዕጸወ፡ ገዳም፡፡እምቅድመ፡
ገጹ፡ለእግዚአብሔር ፡ እስመ፡ ይመጽ፡፡ወይ
መጽእ፡ወይኴንና፡ለምድር፡፡=፥ወይኴንና፡ለ 13
ዓለም፡በጽድቅ፡፡ወለአሕዛብኒ፡በርትዕ፡፡=፥

ዘደዊት፡ዘአመ፡ገብአ፡ምድሩ፡፡

ንጉ እግዚአብሔር፡ነግሠ፡ትትሐሠይ፡ምድ 1
ር፡፡ወይትሐሠያ፡ ደሰያት፡ብዙኃት፡፡=፥ ደ 2
መና፡ ወቆባር፡ አውደ፡፡ ፍትሕ፡ ወርትዕ፡ ተ
ድላ፡መንበሩ፡፡=፥ እሳት፡የሐውር፡ ቅድሜ 3
ሁ፡፡ወነደ፡ የዐገቶሙ፡ ለጸላእቱ፡፡=፥ አስ 4
ተርአዩ፡ መባርቅቲሁ፡ ለዓለም፡፡ርእየት፡ ወ
አድለቅለቀት፡ምድር፡፡=፥ ወአድባርኒ፡ ተ 5
መሰው፡ ከመ፡ሰምዕ፡፡እምቅድመ፡ገጹ፡ ለእ
ግዚአብሔር፡፡እምቅድመ ፡ ገጹ፡ ለእግዚአ
ብሔር ፡ኵሉ፡ምድር፡፡=፥ ይነግሩ፡ ሰማያ 6
ት፡ጽድቀ፡ ዚአሁ፡፡ወለኵሎሙ፡ አሕዛብ፡
ርእዩ ፡ ስብሐቲሁ፡፡=፥ ይትሐፈሩ ፡ ኵሎ 7
ሙ፡ እለ፡ ይሰግዱ፡ ለግልፎ፡፡እለ፡ ይትሜክ
ሁ፡በአማልክቲሆሙ፡፡=፥ ወይስግዱ፡ ሎቱ፡ 8
ኵሎሙ፡መላእክቲሁ፡፡ሰምዐት፡ ወተፈሥሐ
ት፡ጽዮን፡፡=፥ ወታሐሠያ፡አዋልደ፡ይሁደ፡፡ 9
በእንተ፡ፍትሕከ፡እግዚኦ፡፡=፥ እስመ፡ አን 10
ተ፡እግዚአብሔር፡ ልዑል፡በኵሉ፡ምድር፡፡
ፈድፋደ ፡ ተለዐልከ ፡ እምኵሉ ፡ አማልክ
ት፡፡=፥ እለ፡ታፈቅርዎ፡ ለእግዚአብሔር ፡ 11
ጽልእዋ ፡ ለእኪት፡፡ የዐቅብ ፡ እግዚአብሔ
ር ፡ ነፍሰ ፡ ጻድቃኑ፡፡ወያድኅኖሙ ፡ እምእ
ደ፡ኃጥአን፡፡=፥ በርህ፡ሠረቀ፡ለጻድቃን፡፡ወ 12
ለርቱዓነ፡ ልብ፡ ትፍሥሕት፡፡=፥ ይትፈሥ 13
ሑ፡ ጻድቃን ፡ በእግዚአብሔር፡፡ ወይገንዩ፡
ለዝክረ፡ቅድሳቱ፡፡=፥

INTERP. ÆTHIOP. [b] Quoniam dii [c] Et ſtabilivit orbem *PSAL. XCVI.* [a] præparatio ſedis [b] flamma circundabit [c] Et montes etiam, [d] malum: [e] juſtis:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 6 * لان جميع الهة الامم شياطين. والرب هو خلق السموات * الشكر والبهاء امامه. الطهر وعظم
7 8 البهاء في قدسه * قربوا للرب يا جميع قبايل الامم * قربوا للرب مجدا وكرامة * قربوا للرب مجدا
9 لاسمه. احملوا الذبايح وانطلقوا فادخلوا دياره * اسجدوا للرب في ديار قدسه. وليتزلزل قدام
10 وجهه جميع الارض * قولوا في الامم ان الرب قد ملك. وانه اثبت المسكونة هذه فلن تتحرك.
11 12 يدين الشعوب بالاستقامة * فلتفرح السموات ولتبتهج الارض. وليتحرك البحر وجميع ملئه * تفرح
13 البقاع وكلما فيها. حينيذ يبتهج جميع شجر الغياض 13 من وجه الرب. لانه ات انه ات ليدين
الارض. يدين المسكونة بالعدل. والشعوب بالاستقامة. باحق الرب ربنا الاه القوات. اللليلويا.

1 * المزمور السادس والتسعون * لداود. لما استقامت ارضه. وعدده كز استيخن *

2 ملك الرب فلتهلل الارض. ولتفرح جزاير كثيرة * سحاب وضباب حوله. العدل والحكم
3 4 قوام كرسيه * النار سابقة في السير قدامه. وبلهب يحرق اعداءه حوله * اضاءت بروقه المسكونة.
5 راءت الارض فتزلزلت * الجبال مثل الشمع ذابت من وجه الرب. ومن قدام وجه رب الارض
6 7 جميعها * السموات تكلمت بعدله. وراي جميع الشعوب مجده * يخزي جميع الساجدين لصنعة
8 الايادي المفتخرون باصنامهم. اسجدوا لله يا جميع ملايكته * سمعت صهيون وفرحت.
9 وهللت بنات اليهودية لاجل احكامك يا رب * لانك انت هو الرب العالي على جميع الارض.
10 علوت جدا اكثر من جميع الالهة * يا محبي الرب ابغضوا الشر. فان الرب يحفظ نفوس
11 قديسيه. ومن يد الخطاة يخلصهم * نور اشرق للصديقين. والفرح للمستقيمين بقلوبهم.
12 * افرحوا ايها الصديقون بالرب. اشكروا لذكر قدسه. اللليلويا.

Nam omnes dii gentium, dæmonia ſunt: at 5
Dominus, ipſe creavit cœlos. Gratiarum 6
actio & nitor, ante illum ſunt: puritas &
ſummum decus, in Sanctuario ejus. Offer- 7
te Domino, O omnes familiæ gentium, of-
ferte Domino gloriam & honorē. Offerte 8
Domino gloriam nomini ejus: ferte ſacrifi-
cia, & abeuntes ingredimini atria ejus.
Adorate Dominum in atriis Sanctuarii i- 9
pſius: & contremiſcat ante faciem ejus u-
niverſa terra. Dicite in gentibus, Domi- 10
nus jam regnavit, ipſéque ſtabilivit Ha-
bitatam iſtam, & haudquaquam movebi-
tur: judicabit populos cum æquitate. Ita- 11
que lætentur cœli, & exhilaretur terra:
& concutiatur mare, totáque plenitudo e-
jus. Gaudeant campi & quicquid in eis 12
eſt. Tunc exultabunt omnes arbores ſylva-
rum A conſpectu Domini. Quoniam ipſe 13
venturus eſt, venturus inquam *ad judicandam*
terram. Judicabit orbem terrarum
cum juſtitia, & populos cum æquitate.
Verè Dominus, Dominus inquam *noſter,*
Deus virtutum eſt. Alleluja.

PSAL. XCVI.

Davidis, quando ſtabilita eſt terra 1
ejus. Et num. verſ. 27.

Regnavit Dominus: quapropter exultet
terra, et gaudeant inſulæ multæ. Nu- 2
bes et nebula circa eum: æquitas & judi-
cium firmitas ſedis ejus. Ignis prævius in- 3
cedit ante eum, et flammâ comburit ini-
micos ejus circa illum. Illuminârunt ful- 4
gura ejus Habitatam: vidit terra et con-
tremuit. Montes quaſi cera liquefacti ſunt 5
à facie Domini, et à conſpectu faciei Do-
mini terræ totius. Cœli locuti ſunt juſtitiā 6
ejus, et viderunt omnes populi gloriā ejus.
Confundantur omnes adorantes opus ma- 7
nuum, gloriantes de idolis ſuis. Adorate
Deum omnes angeli ejus. Audivit Sion, 8
& lætata eſt: et jubilârunt filiæ Judææ,
propter judicia tua O Domine: Quoniam 9
tu es Dominus excelſus ſuper univerſam
terram, exaltatus es vehementer pluſquā
omnes dii. O diligentes Dominum, odio 10
habete malum; nam Dominus cuſtodit a-
nimas ſanctorum ſuorum, & de manu
peccatorum liberat eos. Lux orta eſt ju- 11
ſtis, et lætitia iis qui recti ſunt in cordibus
ſuis. Gaudete, O juſti, in Domino: grati- 12 13
as agite memoriæ ſanctitatis ejus. Alle-
luja.

תהלים : צח צט

PSAL. XCVIII. צח

ei fecit ſalutem : fecit mirabilia quia ,novum canticum Domino Cantate .Cantus
1 מִזְמוֹר שִׁירוּ לַיהוָה שִׁיר חָדָשׁ כִּי־נִפְלָאוֹת עָשָׂה הוֹשִׁיעָה־לּוֹ
oculis in : ſuam ſalutem Dominus fecit Notam.ej⁹ ſanctitatis brachium &,ej⁹ dextera
2 יְמִינוֹ וּזְרוֹעַ קָדְשׁוֹ׃ הוֹדִיעַ יְהוָה יְשׁוּעָתוֹ לְעֵינֵי
ſuæ veritatis & , ſuæ miſericordiæ eſt Recordatus .ſuam juſtitiam revelavit gentium
3 הַגּוֹיִם גִּלָּה צִדְקָתוֹ׃ זָכַר חַסְדּוֹ וֶאֱמוּנָתוֹ
Jubilate .noſtri Dei ſalutem terræ fines omnes viderunt : Iſrael domum erga
4 לְבֵית יִשְׂרָאֵל רָאוּ כָל־אַפְסֵי־אָרֶץ אֵת יְשׁוּעַת אֱלֹהֵינוּ׃ הָרִיעוּ
Domino Canite .canite & , *dicite præconia* & ,vociferate :terra omnis Domino
5 לַיהוָה כָּל־הָאָרֶץ פִּצְחוּ וְרַנְּנוּ וְזַמֵּרוּ׃ זַמְּרוּ לַיהוָה
facies ad jubilate : cornu *voce* & ,claſſicis tubis In .cantus voce &,cithara in;cithara in
6 בְּכִנּוֹר בְּכִנּוֹר וְקוֹל זִמְרָה׃ בַּחֲצֹצְרוֹת וְקוֹל שׁוֹפָר הָרִיעוּ לִפְנֵי
Flumina .eo in habitantes & ,orbis :ejus plenitudo &,mare Tonet .*Domini regis*
7 8 הַמֶּלֶךְ יְהוָה׃ יִרְעַם הַיָּם וּמְלֹאוֹ תֵּבֵל וְיֹשְׁבֵי בָהּ׃ נְהָרוֹת
; terram judicare venit quia *Domini facies Ad* .*ovabunt* montes ſimul : *vola* plaudent
9 יִמְחֲאוּ־כָף יַחַד הָרִים יְרַנֵּנוּ׃ לִפְנֵי־יְהוָה כִּי בָא לִשְׁפֹּט הָאָרֶץ
.*rectitudinibus* in populos & ,juſtitia in orbem judicabit
יִשְׁפֹּט־תֵּבֵל בְּצֶדֶק וְעַמִּים בְּמֵישָׁרִים׃

PSAL. XCIX. צט

.terra *nutet* ,Cherubim *inſidens* : populi contremiſcant ,regnavit Dominus
1 יְהוָה מָלָךְ יִרְגְּזוּ עַמִּים יֹשֵׁב כְּרוּבִים תָּנוּט הָאָרֶץ׃
.populos omnes ſuper *ipſe* excelſus & : magnus Sijon in Dominus
2 יְהוָה בְּצִיּוֹן גָּדוֹל וְרָם הוּא עַל־כָּל־הָעַמִּים׃
fortitudo Et .*ipſum* ſanctum terribili & , magno tuo nomini Confitebuntur
3 4 יוֹדוּ שִׁמְךָ גָּדוֹל וְנוֹרָא קָדוֹשׁ הוּא׃ וְעֹז
juſtitiam & judicium : *rectitudines* paraſti tu : dilexit judicium regis
מֶלֶךְ מִשְׁפָּט אָהֵב אַתָּה כּוֹנַנְתָּ מֵישָׁרִים מִשְׁפָּט וּצְדָקָה
vos incurvate & , noſtrum Deum Dominum Exaltate .feciſti tu Jahacob in
5 בְּיַעֲקֹב אַתָּה עָשִׂיתָ׃ רוֹמְמוּ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ וְהִשְׁתַּחֲווּ
, ejus ſacerdotes inter Aharon & Moſeh .*ipſum* ſanctum ejus pedum ſcabello
6 לַהֲדֹם רַגְלָיו קָדוֹשׁ הוּא׃ מֹשֶׁה וְאַהֲרֹן בְּכֹהֲנָיו
ipſe & : Dominum *ad clamantes* : ejus nomen invocantes inter Semuel &
וּשְׁמוּאֵל בְּקֹרְאֵי שְׁמוֹ קֹרְאִים אֶל־יְהוָה וְהוּא
,ejus teſtimonia cuſtodiebant : eos ad loquebatur nubis columna In .eos exaudiebat
7 יַעֲנֵם׃ בְּעַמּוּד עָנָן יְדַבֵּר אֲלֵיהֶם שָׁמְרוּ עֵדֹתָיו
fuiſti parcens Deus ,eos exaudiſti tu , noſter Deus Domine .eis dedit ſtatutum &
8 וְחֹק נָתַן־לָמוֹ׃ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ אַתָּה עֲנִיתָם אֵל נֹשֵׂא הָיִיתָ
, noſtrum Deum Dominum Exaltate .*illorum ſtudia ſuper vindicans &* : *eis*
9 לָהֶם וְנֹקֵם עַל־עֲלִילוֹתָם׃ רוֹמְמוּ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ
.noſter Deus Dominus ſanctus quoniam : ejus ſanctitatis monti vos incurvate &
וְהִשְׁתַּחֲווּ לְהַר קָדְשׁוֹ כִּי־קָדוֹשׁ יְהוָה אֱלֹהֵינוּ׃

תרגום · TARGUM.

צח

1 תושבחת נבואה שבחו קדם יי שבח חדת
ארום פרישן עבד פריקת ליה ימיניה ואדרע
2 שכינת קודשיה׃ הודע יי פורקניה למחמיהון
3 דעממיא גלי צדקתיה׃ דכר טוביה וקושטיה
לבית ישראל וחמון כל סיפי ארעא ית
4 פורקנא דאלהא׃ יביבו קדם יי כל יתבי
5 ארעא בועו ושבחו וזמרו׃ זמרו קדם יי בכנרין
6 בכנרין וקל זמריא׃ בחצוצרתא וקל שופרא
7 יביבו קדם מלכא יי׃ יכלי ימא ומליה תבל
8 וכל דירין עלה׃ נהרותא ימחון כפיא
9 כחדא טוריא ירננון׃ קדם יי ארום אתא
למדן ארעא ידון תבל בצדקתא ועמיא
בתרוצתא׃

צט

1 יי מלך זועון עממיא די שכנתיה שריא ביני
2 כרוביא יזוע ארעא׃ יי בציון רבא ורמא
3 הוא על כל עממיא׃ יהודון שמך רבא
4 ודחילא קדישא הוא׃ ועושניה דמלכא דדינא
רחים את אתקינתא תריצותא דינא וצדקתא
5 ביעקב את עבדתא׃ שבחו קדם יי אלהנא
6 וסגידו לבית מקדשיה קדיש הוא׃ משה
ואהרן בכהנוי דמסרו נפשהון מטול עמא דיי
ושמואל אמטולהון צלי קדם יי היך אבהת
עלמא דצלו בשמיה מצלין קדם יי והוא
7 עני יתהון׃ בעמוד ענני יקרא ממלל עמהון
8 נטרו סהדותיה וקים דיהב להון׃ יי אלהנא
את ענית יתהון אלהא שביק הויתא לעמך
9 אמטולהון ומתפרע על עובדיהון׃ שבחו קדם
יי אלהנא וסגידו לטור בית מקדשיה ארום
קדיש יי אלהנא׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Pſalmus propheticus.

PSAL. XCVIII.

CElebrate coram Domino canticum novum, quoniam edidit miranda: ſalvavit eum dextera ejus, & brachium ſanctæ majeſtatis ejus. Manifeſtavit Dominus redemptionem ſuam, ad aſpectum populorum revelavit juſtitiam ſuam. Recordatus eſt benignitatis ſuæ & veritatis ſuæ domui Iſrael, & viderunt omnes fines terræ redemptionem Dei. Jubilate coram Dño omnes habitatores terræ; perſonate, & laudes dicite & pſallite. Pſallite coram Domino in citharis,in *citharis* & voce pſalmorum. In tubis & voce cornu, jubilate coram illo rege Domino. Tonet mare & plenitudo ejus; orbis, & omnes habitantes in eo. Flumina complodant manibus; pariter montes exultēt Coram Domino,quoniam venit judicare terram : judicabit orbem in juſtitia, & populos in æquitate.

PSAL. XCIX.

DOminus regnavit, contremiſcant populi, quoniam ejus majeſtas habitat inter Cherubim;concutiatur terra. Dominus in Sion magnus & excelſus eſt ſuper omnes populos. Confitebuntur nomini tuo magno & timendo, ſanctum [*ſiquidem*] eſt. Et fortitudo regis judicium dilexit : tu præparâſti rectitudinem, judicium & juſtitiam in Jacob tu feciſti. Laudate coram Dño Deo noſtro, & adorate in domo ſanctuarii ejus : ſanctus [*ſiquidem*] eſt. Moſſeh & Aharon in Sacerdotibus ejus, qui tradiderunt animas ſuas propter populum Domini; & Samuel propter illos oravit Dominum, ſicut patres ſeculi qui oraverunt in nomine ejus : precabantur coram Dño, & ipſe reſpondebat eis. In columna nubium gloriæ loquebatur cum illis : obſervaverunt teſtimonia ejus, & pactum quod dedit eis. Domine Deus noſter tu reſpondiſti eis : Deus peperciſti populo tuo propter eos, & ultus es opera ipſorum. Laudes dicite coram Domino Deo noſtro, & adorate in monte domus ſanctuarii ejus. quoniam ſanctus eſt Dominus Deus noſter.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * ܥܠ ܦܘܪܩܢܐ ܕܥܡܐ ܡܢ ܡܨܪܝܢ ܟܕ ܙܟܘ ܘܢܨܚܘ. 1
ܪܘܚܢܐܝܬ ܕܝܢ ܥܠ ܡܐܬܝܬܗ ܕܡܫܝܚܐ ܘܩܪܝܢܐ ܕܥܡܡܐ ܠܗܝܡܢܘܬܐ. ܦܣܘܩܐ ܟܓ.
ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ. ܡܛܠ ܕܬܕܡܘܪܬܐ ܥܒܕ: ܦܪܩܬܗ ܝܡܝܢܗ ܘܕܪܥܗ
2 3 ܩܕܝܫܐ. * ܚܘܝ ܡܪܝܐ ܦܘܪܩܢܗ: ܘܩܕܡ ܥܡܡܐ ܓܠܐ ܙܕܝܩܘܬܗ. * ܐܬܕܟܪ ܛܝܒܘܬܗ
ܘܗܝܡܢܘܬܗ ܠܒܢܝ ܒܝܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ: ܘܚܙܘ ܟܠܗܘܢ ܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ ܦܘܪܩܢܗ ܕܐܠܗܢ.
4 5 * ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܟܠܗ̇ ܐܪܥܐ: ܐܬܦܨܚܘ ܘܫܒܚܘ ܘܙܡܪܘ. * ܙܡܪܘ ܠܡܪܝܐ ܒܟܢܪܐ ܘܒܩܠ
6 7 ܙܡܪܐ: * ܘܒܩܠܐ ܕܩܪܢܬܐ ܫܒܚܘ ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܡܪܝܐ. * ܢܙܘܥ ܝܡܐ ܒܡܠܘܬܗ: ܬܒܝܠ
8 9 ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ̇. * ܢܗܪܘܬܐ ܢܢܩܫܘܢ ܟܦܐ ܐܟܚܕܐ: ܘܛܘܪܐ ܢܫܒܚܘܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ.
ܕܐܬܐ ܠܡܕܢܗ ܠܐܪܥܐ: ܢܕܘܢ ܬܒܝܠ ܒܟܐܢܘܬܐ. ܘܠܥܡܡܐ ܒܬܪܝܨܘܬܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

1 * ܥܠ ܩܛܠܐ ܕܡܕܝܢܝܐ ܕܫܒܐ ܐܢܘܢ ܡܘܫܐ ܘܥܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܒܝܘܬܐ
ܕܫܘܒܚܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܣܘܩܐ ܟܕ.
2 ܡܪܝܐ ܐܡܠܟ ܢܙܘܥܘܢ ܥܡܡܐ. ܝܬܒ ܥܠ ܟܪܘܒܐ ܬܬܙܝܥ ܐܪܥܐ: * ܡܪܝܐ ܪܒ ܒܨܗܝܘܢ.
3 4 ܘܪܡ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ: * ܢܘܕܘܢ ܠܫܡܟ ܪܒܐ ܘܕܚܝܠܐ ܕܩܕܝܫ ܗܘ. * ܘܥܘܫܢܗ
ܕܡܠܟܐ ܕܝܢܐ ܪܚܡ: ܐܢܬ ܬܩܢܬ ܬܪܝܨܘܬܐ ܘܕܝܢܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܝܥܩܘܒ ܐܢܬ ܥܒܕܬ:
5 6 * ܪܘܡܡܘܗܝ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܘܣܓܘܕܘ ܠܟܘܒܫܐ ܕܪܓܠܘܗܝ: ܩܕܝܫ ܗܘ * ܡܘܫܐ
ܘܐܗܪܘܢ ܒܟܘܡܪܘܗܝ. ܘܫܡܘܐܝܠ ܒܩܪܝ ܫܡܗ: ܩܪܘ ܠܡܪܝܐ ܘܥܢܐ ܐܢܘܢ.
7 * ܘܒܥܡܘܕܐ ܕܥܢܢܐ ܡܡܠܠ ܥܡܗܘܢ: ܢܛܪܘ ܣܗܕܘܬܗ ܘܦܘܩܕܢܐ ܕܝܗܒ ܠܗܘܢ.
8 * ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܐܢܬ ܥܢܝܬ ܐܢܘܢ: ܐܠܗܐ ܡܦܪܥܢܐ ܗܘܝܬ ܠܗܘܢ. ܦܪܘܥ ܐܢܘܢ
9 ܐܝܟ ܥܒܕܝܗܘܢ: * ܪܘܡܡܘܗܝ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܘܣܓܘܕܘ ܠܛܘܪܐ ܩܕܝܫܐ: ܡܛܠ
ܕܩܕܝܫ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ.

PSAL. XCVIII.

Davidis. De libertate populi ex Ægypto, quum vicerunt atq; triumphaverunt. Spiritualiter autem prophetia de adventu Christi & vocatione gentium ad fidem. Verſ. 23.

CAnite Domino canticum novum, quia prodigium fecit : ſalvavit eum dextera ipſius & brachium ejus ſanctum. Manifeſtavit Dominus ſalutem ſuam, & coram gentibus revelavit juſtitiam ſuam. Recordatus eſt bonitatis ſuæ & fidei ſuæ erga domeſticos Iſraelis : & viderunt omnes termini terræ ſalutem Dei noſtri. Laudate Dominum univerſa terra: exhilaramini, & canite ac laudem dicite. Pſallite Domino lyrâ & voce cantûs, Sonitúque cornuum laudem dicite coram rege Domino. Moveatur mare cum plenitudine ſua, orbis & cuncti habitatores ejus. Flumina pulſent volam ſimul, & montes cantent Coram Domino, qui venturus eſt ad judicandam terram; judicabit orbem cum æquitate, & populos cum rectitudine.

PSAL. XCIX.

Davidis. De cæde Madianitarum, quos captivos duxit Moſes ac populus Iſrael. Et prophetia de gloria regni Chriſti. Verſ. 24.

DOminus regnavit, contremiſcant populi ſedet ſuper Cherubim, tremet terra. Dominus magn⁹ eſt in Sion, & ſublimis ſuper omnes populos. Confiteantur nomini tuo magno atque tremendo, quia ſanctum eſt. Fortitudo regis diligit judicium : tu præparâſti rectitudinem, & judicium, & æquitatem in Jacob tu feciſti. Exaltate Dominum Deum noſtrum, & adorate ſcabellum pedum ejus: Sanctus eſt Moſes & Ahron inter pontifices ipſius, & Samuel inter invocantes nomen ejus : qui vocaverunt Dominum, & reſpondit eis : Et in columna nubis allocutus eſt eos: obſervaverunt teſtimonium ejus, & ſtatutum quod dedit illis. Domine Deus noſter, tu audîſti eos : Deus, ultor fuiſti pro eis: repende illis juxta opara eorum. Exaltate Dominum Deum noſtrum, & adorate montem ejus ſanctum : quoniam ſanctus Dominus Deus noſter.

Verſio VULG. LAT.

Pſalmus ipſi David. XCVII.

1 CAntate Dño canticũ novum: quia
mirabilia fecit. Salvavit ſibi dex-
2 tera ejus, & brachiũ ſanctũ ej⁹. Notũ
fecit Dominus ſalutare ſuũ: in conſpe-
3 ctu gentiũ revelavit juſtitiã ſuã. Recor-
dat⁹ eſt miſericordiæ ſuæ, & veritatis
ſuæ domui Iſrael. Viderunt omnes ter-
4 mini terræ ſalutare Dei noſtri. Jubila-
te Deo omnis terra: cãtate, & exultate,
5 et pſallite. Pſallite Domino in cithara,
6 in cithara & voce pſalmi: In tubis du-
ctilibus & voce tubæ corneæ. Jubilate
7 in conſpectu regis Domini: Moveatur
mare, & plenitudo ejus; orbis terra-
8 rum, & qui habitant in eo. Flumina
plaudent manu, ſimul montes exulta-
9 bunt A conſpectu Domini: quoniam
venit judicare terram. Judicabit or-
bem terrarum in juſtitia, & populos
in æquitate.

Pſalmus ipſi David. XCVIII.

DOminus regnavit, iraſcantur po-
puli: qui ſedet ſuper Cherubim,
2 moveatur terra. Dominus in Sion ma-
gnus: et excelſus ſuper omnes populos.
3 Confiteantur nomini tuo magno: quo-
4 niam terribile, et ſanctum eſt: Et honor
regis judicium diligit. Tu paráſti dire-
ctiones: judicium & juſtitiam in Jacob
5 tu feciſti. Exaltate Dominũ Deum no-
ſtrum, & adorate ſcabellũ pedum ej⁹:
6 quoniam ſanctum eſt. Moyſes & Aa-
ron in ſacerdotibus ejus: & Sa-
muel inter eos, qui invocant nomen
ej⁹: Invocabant Dominum, & ipſe
7 exaudiebat eos: In columna nubis lo-
quebatur ad eos. Cuſtodiebant teſti-
monia ejus, & præceptũ quod dedit
8 illis. Domine Deus noſter, tu exaudie-
bas eos: Deus, tu propitius fuiſti eis,
& ulciſcens in omnes adinventiones
9 eorum. Exaltate Dominum Deum no-
ſtrum, & adorate in monte ſancto ej⁹:
quoniam ſanctus Domin⁹ Deus noſter.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ϟζʹ.

† Ἄσατε τῷ κυρίῳ ᾆσμα καινὸν, † ὅτι θαυμα-
στὰ ἐποίησεν ὁ κύριος· † ἔσωσεν αὐτῷ ἡ
2 δεξιὰ αὐτοῦ, † καὶ ὁ βραχίων ὁ ἅγιος αὐτοῦ. † Ἐγνώ-
ρισε κύριος τὸ σωτήριον αὐτοῦ, † ἐναντίον τῶν ἐθνῶν
3 ἀπεκάλυψε τὴν δικαιοσύνην αὐτοῦ. † Ἐμνήσθη τοῦ ἐ-
λέους αὐτοῦ τῷ Ἰακὼβ, † καὶ τῆς ἀληθείας αὐτοῦ τῷ οἴκῳ
Ἰσραήλ. † εἴδοσαν πάντα τὰ πέρατα τῆς γῆς τὸ σωτή-
4 ριον τοῦ θεοῦ ἡμῶν. † Ἀλαλάξατε (α) τῷ θεῷ πᾶσα ἡ
5 γῆ, † ᾄσατε καὶ ἀγαλλιᾶσθε καὶ ψάλατε. † Ψάλατε τῷ
6 κυρίῳ ἐν κιθάρᾳ, † ἐν κιθάρᾳ καὶ φωνῇ ψαλμοῦ, † Ἐν
σάλπιγξιν ἐλαταῖς, † καὶ (γ) φωνῇ σάλπιγγος κερα-
τίνης. † ἀλαλάξατε ἐνώπιον τοῦ βασιλέως (β) κυρίῳ.
7 † Σαλευθήτω ἡ θάλασσα καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς, † ἡ
8 οἰκουμένη καὶ (ϛ) οἱ κατοικοῦντες αὐτήν. † Ποταμοὶ κρο-
τήσουσι χειρὶ ἐπὶ τὸ αὐτὸ, † τὰ ὄρη ἀγαλλιάσονται (δ)·
9 † Ὅτι ἥκει κρῖναι τὴν γῆν. † κρινεῖ τὴν οἰκουμένην ἐν
δικαιοσύνῃ, † καὶ λαοὺς ἐν εὐθύτητι.

MS.A. (α) τῷ κυρίῳ πᾶσα (γ) φωνῆς (β) κυρίου. (ϛ) πάντες οἱ κατοικοῦντες ἐν αὐτῇ. (δ) Ἀπὸ προσώπου κυρίου ὅτι ἔρχεται, ὅτι ἥκει

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ϟηʹ.

† Ὁ κύριος ἐβασίλευσεν, ὀργιζέσθωσαν λαοί· † ὁ
καθήμενος ἐπὶ τῶν (α) χερουβὶμ, σαλευθήτω
2 ἡ γῆ. † Κύριος ἐν Σιὼν μέγας, † καὶ ὑψηλός ἐστιν
3 ἐπὶ πάντας τοὺς λαούς. † Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ
ὀνόματί σου τῷ μεγάλῳ, † ὅτι φοβερὸν καὶ ἅγιόν ἐστιν·
4 † Καὶ τιμὴ βασιλέως κρίσιν ἀγαπᾷ. † Σὺ ἡτοί-
μασας εὐθύτητας, † κρίσιν καὶ δικαιοσύνην ἐν Ἰα-
5 κὼβ σὺ ἐποίησας. † Ὑψοῦτε κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν,
† καὶ προσκυνεῖτε τῷ ὑποποδίῳ τῶν ποδῶν αὐτοῦ, † ὅτι
6 (β) ἅγιός ἐστι. † Μωυσῆς καὶ Ἀαρὼν ἐν τοῖς ἱερεῦ-
σιν αὐτοῦ, † καὶ Σαμουὴλ ἐν τοῖς ἐπικαλουμένοις τὸ
ὄνομα αὐτοῦ· † ἐπεκαλοῦντο τὸν κύριον, καὶ αὐτὸς (γ)
7 εἰσήκουεν, † Ἐν στύλῳ νεφέλης ἐλάλει πρὸς αὐτούς.
† (δ) ἐφύλασσον τὰ μαρτύρια αὐτοῦ, † καὶ τὰ προσ-
8 τάγματα (ε) ἃ ἔδωκεν αὐτοῖς. † Κύριε ὁ θεὸς ἡ-
μῶν, σὺ ἐπήκουες αὐτῶν· † (ζ) ὁ θεὸς εὐίλατος
ἐγίνου αὐτοῖς,, † καὶ ἐκδικῶν ἐπὶ πάντα τὰ ἐπιτη-
9 δεύματα αὐτῶν. † Ὑψοῦτε κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν,
† καὶ προσκυνεῖτε εἰς ὄρος ἅγιον αὐτοῦ, † ὅτι ἅ-
γιος κύριος ὁ θεὸς ἡμῶν.

MS.A. (α) χερουβεὶν, (β) ἅγιόν ἐστιν. (γ) εἰσήκουεν αὐτῶν, (δ) ὅτι ἐφύλασσον (ε) αὐτοῦ ἃ ἔδωκεν (ζ) ὁ θεὸς σὺ εὐίλατος

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Pſalmus Ipſi David. XCVII.

CAntate Domino canticum no- 1
vum: quia mirabilia fecit Domi-
nus. 2 (a) [a] Salvavit ſibi dextera
ejus, & brachiũ ſanctum ejus. 3 No- 2
tum fecit Dominus ſalutare ſuum:
ante conſpectum gentium revelavit
[b] juſtitiam ſuam. 4 Memor fuit 3
miſericordiæ ſuæ (b) Jacob, & veri-
tatis ſuæ domui Iſrael. 5 [c] Vide-
runt omnes fines terræ ſalutare Dei
noſtri. 6 Jubilate Deo [d] omnis ter- 4
ra: cantate, & exultate, & pſallite.
7 Pſallite Domino in cithara, in ci- 5
thara, & voce pſalmi: In tubis 6
ductilibus, & voce tubæ corneæ.
8 Jubilate in conſpectu regis (c) Do-
mino: (d) Commoveatur mare, & 7
plenitudo ejus: [e] orbis terrarum,
& qui habitant in eo. 9 [f] Flumi- 8
na plaudent manu in idipſum: mon-
tes (e) exultabunt: Quoniam [g] 9
venit judicare terram. 10 Judicabit
orbem terrarum in juſtitia, & popu-
los in æquitate.

Pſalmus ipſi David. XCVIII. 1

DOminus regnavit, iraſcantur po-
puli: qui ſedet ſuper Cherubim;
commoveatur terra. 2 Dominus in 2
Sion magnus, & excelſus eſt ſuper
omnes populos. 3 [a] Confiteantur no- 3
mini tuo (a) magno: quoniam ter-
ribile, & ſanctum eſt: Et (b) honor 4
regis judicium diligit. 4 Tu [b] pa-
ráſti (c) directiones: judicium &
juſtitiam in Jacob tu feciſti. 5 Ex- 5
altate Dominum [c] Deum noſtrum:
& adorate [d] ſcabellum pedum e-
jus, 6 quoniam (d) ſanctus eſt.
Moyſes, & (e) Aaron in ſacerdoti- 6
bus ejus: & Samuel inter eos, qui
invocant nomen ejus: 7 Invoca-
bant Dominum: & ipſe (f) ex-
audiebat: In columna nubis loque- 7
batur ad eos. 8 (g) Cuſtodiebant te-
ſtimonia ejus, & (h) præcepta, quæ
dedit illis. 9 Domine Deus noſter, tu 8
exaudiebas eos: Deus, tu propitius
fuiſti eis, et (i) ulciſcens in omnes ad-
inventiones eorum. 10 [e] Exaltate 9
Dominum Deum noſtrum, & ado-
rate in monte ſancto ejus: quoniam
ſanctus Dominus Deus noſter.

Verſio ÆTHIOPICA.

መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፺፯ ሰብሕዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ስብሐተ፡ 1
ሐዲሰ፡፡ እስመ፡ መንክረ፡ ገብረ፡ እግዚአብ
ሔር፡፡=፡ ወአድኃኖተ፡ የማኑ፡፡ ወመዝራዕ 2
ቱሂ፡ ቅዱስ፡፡=፡ አርአየ፡ እግዚአብሔ 3
ር፡ አድኃኖቶ፡፡ ወበቅድመ፡ አሕዛብ፡ ከሠ
ተ፡ ኪዳኖ፡፡=፡ ወተዘከረ፡ ሣህሎ፡ ለያዕቆ 4
ብ፡፡ ወጽድቆሂ፡ ለቤተ፡ እስራኤል፡፡=፡ ርእ 5
ዩ፡ ኵሎሙ፡ አጽናፈ፡ ምድር፡ አድኃኖተ፡
ለአምላክነ፡፡=፡ የብቡ፡ ለእግዚአብሔር፡ 6
በኵሉ፡ ምድር፡፡ ሰብሑ፡ ተፈሥሑ፡ ወዘም
ሩ፡፡=፡ ዘምሩ፡ ለእግዚአብሔር፡ በመሰን 7
ቆ፡፡ በመሰንቆ፡ ወበቃለ፡ መዝሙር፡፡ በቀርን፡
ዝብጥ፡ ወበቃለ፡ ቀርን፡፡=፡ የብቡ፡ በቅድ 8
መ፡ እግዚአብሔር፡ ንጉሥ፡፡ ወትትከወስ፡ ባ
ሕር፡ በምልኡ፡፡ ወዓለምኒ፡ ወኵሎሙ፡ እለ፡
ይነብሩ፡ ውስቴታ፡፡=፡ ወአፍላግኒ፡ ይጠፍ 9
ሑ፡ እደ፡ ኅቡረ፡፡ አድባርኒ፡ ይትሐሠዩ፡ እስ
መ፡ በህየ፡ ይኴንና፡ ለምድር፡፡=፡ ወይኴን 10
ና፡ ለዓለም፡ በጽድቅ፡፡ ወለአሕዛብኒ፡ በር
ትዕ፡፡=፡

መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

፺፰ እግዚአብሔር፡ ነግሠ፡ ይንገፁ፡ አሕዛ 1
ብ፡፡ ዘይነብር፡ ዲበ፡ ኪሩቤል፡ አድለቅለቃ፡
ለምድር፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ ዐቢይ፡ በጽ 2
ዮን፡፡ ወልዑል፡ ውእቱ፡ ላዕለ፡ ኵሉ፡ አሕዛ
ብ፡፡=፡ ኵሉ፡ ይገኒ፡ ለስምከ፡ ዐቢይ፡፡ እ 3
ስመ፡ ግሩም፡ ወቅዱስ፡ ውእቱ፡፡ ክብረ፡ ንጉ
ሠ፡ ፍትሐ፡ ያፈቅር፡፡=፡ አንተ፡ አጽናዕከ፡ 4
ለጽድቅ፡፡ ፍትሐ፡ ወጽድቀ፡ ለያዕቆብ፡ አን
ተ፡ ገበርከ፡፡=፡ ተለዐለ፡ እግዚአብሔር፡ 5
ፈጣሪነ፡፡ ወይሰግዱ፡ ሎቱ፡ ታሕተ፡ መከየደ፡
እገሪሁ፡፡=፡ እስመ፡ ቅዱሳን፡ እሙንቱ፡ ሙ 6
ሴ፡ ወአሮን፡ በክህነቶሙ፡፡ ወሰሙኤልኒ፡ ምስ
ለ፡ እለ፡ ይጼውዑ፡ ስሞ፡፡=፡ ይጼውዕዎ፡ ለ 7
እግዚአብሔር፡ ወውእቱኒ፡ ይሰጠዎሙ፡፡ ወ
ይትናገሮሙ፡ በአምደ፡ ደመና፡፡=፡ ወያዐቅ 8
ቡ፡ ስምዖ፡ ወትእዛዞ፡ ዘወሀቦሙ፡፡=፡ እ 9
ግዚኦ፡ አምላክነ፡ አንተ፡ ሰማዕኮሙ፡፡ እግዚ
ኦ፡ አንተ፡ ተሣህልኮሙ፡፡ ወትትቤቀል፡ በኵ
ሉ፡ ምግባሮሙ፡፡=፡ ተለዐለ፡ እግዚአብሔ 10
ር፡ አምላክነ፡፡ ወይሰግዱ፡ ሎቱ፡ ውስተ፡ ደብ
ረ፡ መቅደሱ፡፡ እስመ፡ ቅዱስ፡ ውእቱ፡ እግዚአ
ብሔር፡ አምላክነ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. XCVII.* [a] Salvavit dextera [b] teſtamentum ſuum. [c] Videte vos omnes [d] in omni terra: [e] & orbis etiam [f] Et flumina etiam [g] ibi judicabit terram.
PSAL. XCVIII. [a] Confiteatur unuſquiſque [b] confirmâſti veritatem: [c] creatorem noſtrum: [d] ei ſubter ſcabellum pedum ejus, quoniam ſancti ſunt iſti: [e] Exaltatus eſt Dominus Deus noſter, & adorate ei in

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور السابع والتسعون * لداود * وهو * كب * استيكن *

سبحوا الرب تسبيحا جديدا * لان الرب قد صنع اعمالا عجيبة * احيت له يمينه * وقدس ذراعه *
2 * اظهر الرب خلاصه قدام الامم * كشف لهم عدله * ذكر رحمته ليعقوب * وحقه لبيت
3 اسرائيل * رات اقطار الارض جميعها خلاص الاهنا * فهللوا للرب يا جميع الارض * سبحوا
4 وهللوا ورمروا * ورتلوا للرب بالقيثار بالقيثار وصوت المزمور * بابواق خافقة وبصوت بوق
5 القرن * هللوا قدام الملك الرب * فليضطرب البحر وجميع ما فيه * والمسكونة وكل سكانها *
6 * الانهار تصفق بايديها جميعا * الجبال تبتهج 9 قدام وجه الرب لانه جاء يدين الارض * يدين
7 المسكونة بالعدل * والشعوب بالاستقامة * الليلويا *
8
9

1 * المزمور الثامن والتسعون * لداود * وعدده * كب * استيكن *

2 ملك الرب فلتغضب الشعوب * الجالس على الكروبيم فلتهتز الارض * عظيم هو الرب في
3 صهيون * وعال على جميع الشعوب * فليشكروا لاسمك العظيم * لانه مخوف وقدوس * وكرامة
4 الملك ان يحب العدل * انت اعددت الاستقامة * انت صنعت الحكم والعدل في يعقوب * علوا
5 الرب الهنا * واسجدوا لموطي قدميه فانه قدوس * لانه جعل موسي وهرون في كهنته *
6 وصموئيل في الذين يدعون اسمه * كانوا يدعون الرب وهو كان يستجيب لهم 7 في عمود
7 الغمام * وهو كان يكلمهم * لانهم حفظوا شهاداته والاوامر التي اعطاهم * ايها الرب الاهنا انت
8 استجبت لهم * صرت لهم اللهم غفارا * ومنتقما على جميع اعمالهم * علوا الرب الاهنا * واسجدوا
9 في جبله المقدس * فان الرب الاهنا قدوس * الليلويا *

PSAL. XCVII.

Davidis. Ver. 22. 1

LAudate Dominum laudatione novâ:
quia Dominus jam fecit opera admi-
randa. Vivificavit ei dextera ſua, & ſan-
ctitas brachii ſui. Manifeſtavit Dominus 2
ſalutem ſuam coram gentibus, revelavit
eis juſtitiam ſuam. Recordatus eſt miſeri- 3
cordiæ ſuæ erga Jacobum, & veritatis
ſuæ erga domum Iſraelis. Viderunt extre-
ma terræ totius ſalutem Dei noſtri. Ita- 4
que canite Domino, O univerſa terra: lau-
date, & canite, & pſallite, Ac modula- 5
mini Domino cum cithara, cum cithara et
voce pſalmi: Cum buccinis crepitantibus, 6
& voce tubæ corneæ, jubilate coram rege
Domino. Concitetur mare & quicquid 7
in eo continetur, & Habitata omneſque
habitatores ejus. Flumina plaudant ma- 8
nibus ſuis ſimul: montes exultent Ante 9
faciem Domini: quia venit judicare ter-
ram. Judicabit Habitatam cum juſtitia, et
populos cum rectitudine. Alleluja.

PSAL. XCVIII.

Davidis. Et num. ver. 22. 1

REgnavit Dominus, quapropter iraſcan-
tur populi: ſedens ſuper Cherubim,
tremeſcat terra. Maximus eſt Dominus in 2
Sion, & excelſus ſuper omnes populos.
Gratias agant nomini tuo magno, quoniam 3
terribile & ſanctum eſt: Et honor Regis 4
eſt diligere æquitatem. Tu paráſti rectitu-
dinem, tu feciſti judicium & juſtitiam in
Jacob. Exaltate Dominum Deum no- 5
ſtrum, & adorate ſcabellum pedum ejus,
quoniam ſanctum eſt. Quia ipſe conſtituit 6
Moyſem & Aaronem inter Sacerdotes
ſuos, & Samuelem inter eos qui invocant
nomen ejus. Invocabant Dominum, & ipſe
exaudiebat eos In columna nubis, & i- 7
pſemet alloquebatur eos: eò quòd ſerva-
verint teſtimonia ejus & præcepta quæ
dederat illis. O Domine Deus noſter, tu 8
exaudiſti eos: fuiſti erga eos, O Deus, pro-
pitius, & ultor adverſùs omnia opera eo-
rum. Exaltate Dominum Deum noſtrum, 9
& adorate in monte ejus ſancto: quia
Dominus Deus noſter ſanctus eſt. Alle-
luja.

תהלים : ק קא קב

PSAL. C. ק

Domino Servite .terra omnis Domino Jubilate .confeſſione pro Cantus
1 מזמור לתודה הריעו ליהוה כל־הארץ : עבדו את־יהוה 2
ipſe : Deus ipſe DOMINUS ꝗ Scitote.*ovatione in ej° facies ad* ingredimini:lætitia in
3 בשמחה באו לפניו ברננה : דעו כי־יהוה הוא אלהים הוא
ejus portas Ingredimini .ejus paſcuæ pecus & ,ejus populus : nos non & ,nos fecit
4 עשנו ולא אנחנו עמו וצאן מרעיתו : באו שעריו
Quoniã.ej° nomini benedicite,ei confitemini : laude cum ejus atria , confeſſione cum
5 בתודה חצרתיו בתהלה הודו לו ברכו שמו : כי־
generationẽ & generationẽ in uſq; & : ejus miſericordia ſeculum in ,Dominus bonus
טוב יהוה לעולם חסדו ועד־דר ודר
.ejus veritas
אמונתו :

PSAL. CI. קא

.canam Domine tibi : cantabo judicium & Miſericordiam .cantus David *Ipſius*
1 לדוד מזמור חסד־ומשפט אשירה לך יהוה אזמרה :
perfectione in ambulabo : me ad veniet quando , perfecta via in Intelligam
2 אשכילה בדרך תמים מתי תבוא אלי אתהלך בתם־
facere ,*Belijahal verbum* meis oculis coram ponam Non.meæ dom° *interiori* in,mei cordis
3 לבבי בקרב ביתי : לא־אשית לנגד עיני דבר־בליעל עשה־
non malum : me à recedet pravum Cor .*me in* adhærebit non : odivi *declinantium*
4 סטים שנאתי לא ידבק בי : לבב עקש יסור ממני רע לא
vaſtum & ,oculis elatum : ſuccidam hunc ſuo *ſocio* ſecreto in *Obloquentem* .cognoſcam
5 אדע : מלושני בסתר רעהו אותו אצמית גבה־עינים ורחב
: mecum *ſedendum ad* terræ fideles ad mei Oculi .potero non ipſum corde
6 לבב אתו לא אוכל : עיני בנאמני־ארץ לשבת עמדי
,meæ dom° *interiori* in habitabit Non.mihi miniſtrabit ipſe ,perfecta via in ambulans
7 הלך בדרך תמים הוא ישרתני : לא ישב בקרב ביתי
matutinis in.meis oculis coram firmabitur nequaquam :mendacia loquens ,dolum faciens
8 עשה רמיה דבר שקרים לא־יכון לנגד עיני : לבקרים
operarios omnes Domini civitate à *excindendum ad* : terræ impios omnes ſuccidam
אצמית כל־רשעי־ארץ להכרית מעיר־יהוה כל־פעלי
.iniquitatis
און :

PSAL. CII. קב

Domine .ſuum eloquium *effundet Domini facies ad & angore deficiet cùm afflicti* Oratio
1 2 תפלה לעני כי־יעטף ולפני יהוה ישפך שיחו : יהוה
tuas faciei abſcondas Ne .veniat te ad meus clamor &:meam orationem exaudi
3 שמעה תפלתי ושועתי אליך תבוא : אל־תסתר פניך
.me exaudi,feſtina,invocavero die in:tuã aurẽ me ad inclina mihi anguſtiæ die in,me à
ממני ביום צר לי הטה־אלי אזנך ביום אקרא מהר ענני :
eſt Percuſſum .ſunt exuſta focus tanquam mea oſſa &:mei dies *fumo in* defecerunt Quia
4 כי־כלו בעשן ימי ועצמותי כמוקד נחרו : הוכה
5 voce A .meum panem *edendo ab* ſum oblitus quia : meum cor aruit & ,herba ſicut
6 כעשב ויבש לבי כי־שכחתי מאכל לחמי : מקול
.meæ carni meum os adhæſit , mei gemitus
אנחתי דבקה עצמי לבשרי :

תרגום TARGUM

ק
שבחא על קורבן תודתא יביבו קדם יי כל יתבי 1
ארעא : פלחו קדם יי בחדוה אתו קדמוי 2
בתושבחתא : אודיעו ארום יי הוא אלהים הוא 3
עבד יתנא ודיליה אנחנא עמיה ועאן רעיתיה :
עולו בתרעוי באודותא דרתוי בתושבחתא 4
אודון קדמוי בריכו שמיה : ארום טב יי לעלם 5
טוביה ועד דר ודר הימנותיה :

קא
על יד דוד תושבחתא אין חסדא את גמל עמי 1
אין דינא את עבד עמי על כולא אשבח קדמך יי
אומר : אשכלנך באורח שלים אימתי תעול 2
לותי אתהלך בשלימות לבבי בגו בית אולפני :
לא אשוי ללבי מלתא דרשיעא עבדי בישין 3
ושטין מן פקודיא סניתי לא ידבקון בי : לבא 4
עוקמנא יעדי מני יצרא בישא לא אדע : דמשתעי 5
לישן תליתי על חבריה יתיה אמגר [וילקי
בצרעתא] דאזיל בנסות עינין עמיה לא אדור
בעלמא : עיני בקשיטי ארעא למתב במחיצת 6
צדיקי דאזיל באורחא שלים הוא יקום עם
שמשי : לא יתב במצע בית מוקדשי עבד 7
נכילו די ממלל שקרין לית ליה רשו לאתכונא
קבל עיני : לעלמא דאתי דאמתיל לנהור 8
צפרא אמגר כל רשיעי ארעא לשיצאה מן
ירושלם קרתא דיי כל עבדי שקר :

קב
צלותא על מסכנא ארום משתלהי וקדם יי יימר 1
צלותיה : יי קבל צלותי ופגינותי לקדמך תעול 2
לא תסלק שכנתך מני ביום עקתי אצלי לותי 3
אודנך ביומא דאקרי סרהיב עני יתי : ארום 4
אשתיציאו היך תננא יומי ואברי היך תפיא חררן :
לקא היך עסבא לבי ארום אתנשיתי אורית 5
אולפני : מן קל תנחתי ארבק גרמי לבסרי : 6

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Canticum pro ſacrificio confeſſionis.

PSAL. C.

JUbilate coram Domino omnes habitatores terræ: Servite coram Domino in lætitia, venite coram eo cum hymno. Notum facite quoniã DOMINUS ipſe eſt Deus; ipſe fecit nos, & ipſius ſumus; populus ejus & oves paſcuæ ejus. Ingredimini portas ejus in confeſſione, porticus ejus cum laude: confitemini coram eo, benedicite nomini ejus. Quoniam bonus eſt Dominus, in æternum benignitas ejus; & uſque in generationem & generationem fides ej°.

Per manum Davidis Canticum.

PSAL. CI.

SI miſericordiam tu rependis mecum, ſi judicium mecum facis, pro omnibus hymnos dicam coram te Domine, & pſallam. Faciam te intelligere viã perfectam, quando venies ad me: ambulabo in perfectione cordis mei in medio domus doctrinæ meæ. Non *apponam cordi meo* verbum impietatis: operantes mala, & recedentes à mandatis odio habui; nequaquam adhærebunt mihi. Cor pravum recedet à me; concupiſcentiam malã non cognoſcã. Loquentem lingua triplici adverſus proximum ſuũ; hunc diſperdam, *& percutietur leprâ*: gradientem in ſuperbia oculorũ, cum eo non habitabo in æternũ. Oculi mei ſunt ad veraces terræ, ut inhabitem in thalamo juſtorũ: ambulans in via perfecta, hic ſtabit cum ſervis meis. Non habitabit in medio domus ſanctuarii mei faciens dolum: qui loquitur mendaciũ, non erit ei facultas comparendi coram oculis meis. *In mundo venturo, qui aſſimulatur luci matutinæ*, perdam omnes impios terræ, ut diſperdam de Jeruſalem civitate Domini omnes operarios falſitatis.

Oratio pro miſero cùm deficiet, & coram Domino dicet orationem ſuam.

PSAL. CII.

DOmine accipe orationem meam: & clamor me° coram te ingrediatur. Ne auferas majeſtatem tuam à me: in die afflictionis meæ inclina ad me aurem tuam; in die qua invocavero, feſtina exaudi me. Quoniam defecerunt ſicut fumus dies mei, & membra mea ſicut *chytrop°*, *adusta*. Percuſſum eſt ſicut fœnum cor meum, quoniam oblitus ſum legem doctrinæ meæ. A voce ſuſpirii mei adhæſit os meum carni meæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܥܠ ܝܫܘܥ ܒܪ ܢܘܢ ܟܕ ܫܠܡ ܩܪܒܐ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. * ܡܙܡܘܪܐ ܩ *
ܒܕܝܬܝܩܝ ܕܝܢ ܚܕܬܐ. ܥܠ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ ܠܗܝܡܢܘܬܐ. ܦܬܓ̈ ܝܕ.
2 ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܟܠܗ̇ ܐܪܥܐ: * ܦܠܘܚܘ ܠܡܪܝܐ ܒܚܕܘܬܐ. ܥܘܠܘ ܩܕܡܘܗܝ
3 ܒܬܫܒܘܚܬܐ: * ܕܥܘ ܕܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܘܗܘ ܥܒܕܢ، ܘܠܐ ܗܘ ܚܢܢ: ܥܡܗ ܚܢܢ
4 ܘܥܢܐ ܕܡܪܥܝܬܗ. * ܥܘܠܘ ܠܬܪ̈ܥܘܗܝ ܒܬܘܕܝܬܐ: ܘܠܕܪ̈ܬܗ ܒܬܫܒܘܚܬܐ: ܐܘܕܘ ܠܗ
5 ܘܒܪܟܘ ܠܫܡܗ. * ܡܛܠ ܕܛܒ ܗܘ ܡܪܝܐ ܘܠܥܠܡ ܛܝܒܘܬܗ: ܘܥܕܡܐ ܠܕܪ ܕܪ̈ܝܢ ܗܝܡܢܘܬܗ.
1 ܕܐܣܦ. ܡܠܟܘܬܐ ܕܕܘܝܕ ܥܠ ܗܢܘܢ ܕܡܫܡܫܝܢ ܠܡܫܡܫܢܘܬܐ * ܡܙܡܘܪܐ ܩܐ *
ܕܒܝܬ ܡܪܝܐ. ܘܡܬܢܒܝܢܘܬܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ ܕܙܟܘܬܐ ܘܕܓܡܝܪܘܬܐ ܕܒܐܠܗܐ. ܦܬܓ̈ ܝܚ.
2 ܛܝܒܘܬܐ ܘܕܝܢܐ ܐܫܒܚ: ܘܠܟ ܐܙܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܗܠܟ ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܡܘܡ: ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ
3 ܬܐܬܐ ܠܘܬܝ: * ܗܠܟܬ ܒܬܡܝܡܘܬ ܠܒܝ ܒܓܘ ܒܝܬܝ. ܘܠܐ ܣܡܬ ܩܕܡ ܥܝܢ̈ܝ
4 ܡܠܬܐ ܕܥܘܠܐ: * ܠܥܒܕܐ ܕܒܝܫܬܐ ܣܢܝܬ ܘܠܐ ܩܪܒ ܠܝ. * ܠܒܐ ܥܩܡܐ ܥܒܪ ܡܢܝ
5 ܘܒܝܫܬܐ ܠܐ ܝܕܥܬ. * ܠܕܐܟܠ ܩܪܨܐ ܕܚܒܪܗ ܒܛܘܫܝܐ ܐܘܒܕ ܗܘܝܬ. ܘܠܕܪܡܢ ܥܝܢ̈ܘܗܝ
6 ܘܦܬܝܚ ܠܒܗ ܠܐ ܐܟܠ ܗܘܝܬ ܥܡܗ. * ܥܝܢ̈ܝ ܠܘܬ ܡܗܝܡܢ̈ܐ ܕܐܪܥܐ ܕܢܬܒܘܢ ܥܡܝ:
7 ܘܕܡܗܠܟ ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܡܘܡ ܗܘ ܢܫܡܫܢܝ. * ܠܐ ܢܥܡܪ ܒܓܘ ܒܝܬܝ ܕܥܒܕ ܢܟܠܐ: ܘܡܡܠܠ
8 ܕܓܠܘܬܐ ܠܐ ܢܩܘܡ ܩܕܡ ܥܝܢ̈ܝ. * ܒܨܦܪܐ ܐܫܬܩ ܠܟܠܗܘܢ ܪ̈ܫܝܥܐ ܕܐܪܥܐ: ܘܐܘܒܕ ܡܢ
ܡܕܝܢܬܗ ܕܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܥܒ̈ܕܝ ܥܘܠܐ: * ܡܙܡܘܪܐ ܩܒ *
1 ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܟܐܒܐ ܠܝܗܘܕܝܐ. ܘܡܬܢܒܝܢܘܬܐ ܥܠ ܥܡܐ ܚܕܬܐ ܕܗܘ ܥܡܡܐ ܕܒܗܝܡܢܘܬܐ. ܦܬܓ̈ ܟܚ.
2 * ܡܪܝܐ ܫܡܥ ܨܠܘܬܝ: ܘܩܥܬܝ ܩܕܡܝܟ ܬܥܘܠ. * ܠܐ ܬܗܦܟ ܐܦܝܟ ܡܢܝ ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܝ:
3 * ܐܪܟܢ ܠܘܬܝ ܐܕܢܟ: ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܝܬܟ ܥܢܝܢܝ ܡܚܕܐ. * ܡܛܠ ܕܫܠܡܘ ܐܝܟ ܬܢܢܐ
4 ܝܘܡ̈ܝ: ܘܓܪ̈ܡܝ ܐܝܟ ܓܘܡܪܐ ܝܩܕܘ. * ܐܬܡܚܝ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܘܝܒܫ ܠܒܝ:
5 ܡܛܠ ܕܛܥܝܬ ܡܢ ܠܡܐܟܠ ܠܚܡܝ: * ܡܢ ܩܠ ܬܢܚܬܝ ܕܒܩ ܓܪܡܝ
6 ܠܒܣܪܝ.

PSAL. C.

Anonymus. De Joſue filio Nun, cum quieviſſet bellum Ammonitarum. In Teſtamento autem novo, de converſione gentium ad fidem. Verſ. 14.

LAudate Dominum univerſa terra, Colite Dominum cum gaudio: ingredimini in conſpectu ejus cum laudatione. Scitote ipſum eſſe Dominum Deum noſtrum, & ab ipſo nos conditos eſſe, non autem à nobis: populum ejus nos eſſe, & oves paſcuæ illius. Ingredimini portas ejus cum gratiarum actione, & atria ejus cum laude. Confitemini illi, & benedicite nomini ejus: Quoniam bonus Dominus, & in æternum bonitas ejus, & in generationem generationum fides ipſius.

PSAL. CI.

Aſaphi. Hortatio Davidis de iis qui verſantur in miniſterio dom° Domini. Et prophetia de laude victoris atq; perfecti in Deo. Ver.

BOnitatem & judicium canam, téque laudabo Domine, Et incedam per viam tuam abſq; macula. Quouſque venies ad me: ambulavi cum ſinceritate cordis mei in medio domûs meæ, Et non propoſui ante oculos meos verbum iniquitatis: eum qui operatur malum, deteſtatus ſum, & non adhæſit mihi. Cor perverſum tranſiit à me, & malitiam non agnovi: Eum qui obtrectat ſocio ſuo clam perdebam: cum eo, cujus elati ſunt oculi & amplum cor, non edebam. Oculi mei ad fideles terræ, ut ſedeant mecum: qui ambulat in via ſine vitio, ipſe miniſtrabit mihi. Non commorabitur domi meæ qui facit dolum: ſermo mendax non erit firmus coram oculis meis. In matutino ſilere faciam cunctos impios terræ, perdámque de civitate Domini omnes perpetrantes flagitium.

PSAL. CII.

Anonymus. Dolor Judæis. Et prophetia de populo novo, nempè gentib°, per fidem. Ver.

DOmine, audi orationem meam, & clamor meus ad te ingrediatur. Ne flectas vultum tuũ à me in die anguſtiæ meæ: ſed inclina ad me aurẽ tuã die quâ invocavero te, & illicò reſponde mihi. Nam finierunt ſicut fumũ dies mei, & oſſa mea facta ſunt ſicut cremium foci: Elanguit cor meũ ut fœnum, & aruit: quia oblitus ſum eſûs panis mei: Et præ voce ſuſpiriorum meorum adhæſit caro mea oſſibus meis:

Versio VULG. LAT.

1 Psalmus in Confessione. XCIX.
2 Jubilate Deo omnis terra : servite
Dño in lætitia. Introite in conspectu
3 ejus, in exultatione. Scitote quoniam
Dñs ipse est Deus : ipse fecit nos,
& non ipsi nos: Populus ejus, & oves
4 pascuæ ejus : Introite portas ejus in
confessione, atria ejus in hymnis: confitemini
illi. Laudate nomen ejus.
5 Quoniam suavis est Dominus, in æternum
misericordia ejus, & usq; in generatione
& generationem veritas ej⁹.

1 Psalmus ipsi David. C.

2 Misericordiam, & judicium cantabo
tibi, Dñe: Psallam, Et intelligam
in via immaculata, quando venies
ad me. Perambulabam in innocentia
cordis mei, in medio dom⁹ meæ.
3 Non proponebam ante oculos meos
rem injustam : facientes prævaricationes
4 odivi. Non adhæsit mihi Cor pravum:
declinantẽ à me malignum non
5 cognoscebam. Detrahentem secretò
proximo suo, hunc persequebar. Superbo
oculo, & insatiabili corde, cum
6 hoc non edebam. Oculi mei ad fideles
terræ ut sedeant mecum: ambulans
in via immaculata, hic mihi ministrabat.
7 Non habitabit in medio domûs
meæ, qui facit superbiam: qui loquitur
iniqua, non direxit in conspectu oculorum
8 meorum. In matutino interficiebam
omnes peccatores terræ : ut disperderem
de civitate Domini omnes
operantes iniquitatem.

1 Oratio pauperis, Cùm anxius fuerit,
& in conspectu Domini effuderit
precem suam. CI.

2 Domine, exaudi orationem meam :
3 & clamor meus ad te veniat. Non
avertas faciem tuam à me: in quacunque
die tribulor, inclina ad me aurem
tuam. In quacunque die invocavero
4 te, velociter exaudi me : Quia defecerunt
sicut fumus dies mei: & ossa mea
5 sicut cremium aruerunt. Percussus
sum ut fœnum, & aruit cor meum :
quia oblitus sum comedere panem
6 meum. A voce gemitûs mei adhæsit
os meum carni meæ.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

1 Ψαλμὸς εἰς ἐξομολόγησιν. ϟθʹ.
2 †' Ἀλαλάξατε τῷ κυρίῳ πᾶσα ἡ γῆ. † δουλεύσατε τῷ κυρίῳ ἐν εὐφροσύνῃ. † εἰσέλθατε
3 ἐνώπιον αὐτοῦ ἐν ἀγαλλιάσει. † Γνῶτε ὅτι κύριος
αὐτός ἐστιν ὁ (α) θεός· αὐτὸς ἐποίησεν ἡμᾶς, καὶ οὐχ
ἡμεῖς, † (β) λαὸς αὐτοῦ καὶ πρόβατα τῆς νομῆς αὐτοῦ.
4 † Εἰσέλθατε εἰς τὰς πύλας αὐτοῦ ἐν ἐξομολογήσει,
† (γ) τὰς αὐλὰς αὐτοῦ ἐν ὕμνοις. ἐξομολογεῖσθε
5 αὐτῷ, † αἰνεῖτε τὸ ὄνομα αὐτοῦ. † Ὅτι χρηστὸς
κύριος, (δ) εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ, † καὶ ἕως
γενεᾶς καὶ γενεᾶς ἡ ἀλήθεια αὐτοῦ.

MS.A. (α) θεὸς ἡμῶν· (β) ἡμεῖς δὲ λαὸς αὐτοῦ
(γ) εἰς τὰς αὐλὰς (δ) ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα

1 (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ρʹ.

†' Ἔλεος καὶ κρίσιν ᾄσομαί σοι κύριε· † ψαλῶ
2 καὶ συνήσω ἐν ὁδῷ ἀμώμῳ. πότε ἥξεις
πρός με; † διεπορευόμην ἐν ἀκακίᾳ καρδίας μου,
3 ἐν μέσῳ τοῦ οἴκου μου. † Οὐ προεθέμην πρὸ ὀφθαλμῶν
μου πρᾶγμα παράνομον, † ποιοῦντας παραβάσεις
4 ἐμίσησα· † οὐκ ἐκολλήθη μοι καρδία σκαμβή,
† ἐκκλίνοντος ἀπ' ἐμοῦ τοῦ πονηροῦ, οὐκ ἐγίνωσκον.
5 † Τὸν καταλαλοῦντα λάθρα τοῦ πλησίον αὐτοῦ,
τοῦτον ἐξεδίωκον. † ὑπερηφάνῳ ὀφθαλμῷ καὶ ἀπλήστῳ
6 καρδίᾳ, † τούτῳ οὐ συνήσθιον. † Οἱ ὀφθαλμοί μου
ἐπὶ τοὺς πιστοὺς τῆς γῆς, † τοῦ συγκαθῆσθαι αὐτοὺς μετ'
ἐμοῦ· † πορευόμενος ἐν ὁδῷ ἀμώμῳ, οὗτός μοι ἐλειτούργει.
7 † Οὐ κατῴκει ἐν μέσῳ τῆς οἰκίας μου ποιῶν
ὑπερηφανίαν· † λαλῶν ἄδικα οὐ (β) κατεύθυνεν
8 ἐναντίον τῶν ὀφθαλμῶν μου. † Εἰς τὰς πρωΐας ἀπέκτενον
πάντας τοὺς ἁμαρτωλοὺς τῆς γῆς, † τοῦ (γ) ἐξολοθρεῦσαι
ἐκ πόλεως κυρίου πάντας τοὺς ἐργαζομένους
τὴν (δ) ἀδικίαν.

MS.A. (α) Τῷ Δαυίδ. (β) κατεύθυνεν ἐνώπιον
(γ) ἐξολεθρεῦσαι (δ) ἀνομίαν.

1 Προσευχὴ τῷ πτωχῷ, ὅταν ἀκηδιάσῃ, καὶ (α)
ἐναντίον κυρίου ἐκχέῃ τὴν δέησιν αὐτοῦ. ραʹ.

2 † Κύριε εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου, † καὶ ἡ κραυγή
3 μου πρὸς σὲ (β) ἐλθέτω. † Μὴ ἀποστρέψῃς
τὸ πρόσωπόν σου ἀπ' ἐμοῦ· † ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ
θλίβομαι, κλῖνον πρός με τὸ οὖς σου· † ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ
4 (γ) ἐπικαλέσωμαί σε, ταχὺ εἰσάκουσόν μου. † Ὅτι
ἐξέλιπον ὡσεὶ καπνὸς αἱ ἡμέραι μου, † καὶ τὰ
5 ὀστᾶ μου ὡσεὶ φρύγιον συνεφρύγησαν. † Ἐπλήγην
ὡσεὶ χόρτος, καὶ ἐξηράνθη ἡ καρδία μου, † ὅτι ἐπελαθόμην
6 τοῦ φαγεῖν τὸν ἄρτον μου. † Ἀπὸ φωνῆς τοῦ
στεναγμοῦ μου, ἐκολλήθη τὸ ὀστοῦν μου τῇ σαρκί μου.

MS.A. (α) ἔναντι (β) ἐλθάτω. (γ) ἐπικαλέσομαι

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

Psalmus in Confessionem. XCIX. 1
1 Jubilate Domino [a] omnis terra : 2
servite Domino in lætitia. 2 Introite
in conspectu ejus in (a) exultatione.
3 Scitote, quòd Dominus ipse 3
est [b] Deus: ipse fecit (b) nos, & non
nos. 4 (c) [c] Populus ejus, & oves
pascuæ ejus, Introite portas ejus in 4
cõfessione, [d] atria ej⁹ in (d) hymnis.
Confitemini illi: 5 laudate nomen ejus.
Quoniam suavis est Dominus: 5
[e] in æternum misericordia ejus: &
usque in generationem & generationem
veritas ejus.

(a) Psalmus ipsi David. C. 1

1 Misericordia, et judiciũ cantabo
[†] tibi, Domine: 2 (b) psallam,
Et intelligã [a] in via immaculata: 2
quando venies (c) ad me? 3 Deambulabam
in innocentia cordis mei,
in medio domûs meæ. 4 Non proponebã 3
ante oculos meos rem injustam:
[b] facientes prævaricationes odivi:
5 Non adhæsit mihi Cor pravũ: (d) 4
cũ declinaret à me malign⁹, nõ cognoscebã.
6 Detrahentẽ occultè proximo 5
suo, hunc persequebar. 7 Superbo
oculo, e [c] insatiabili corde, huic
non convescebar. 8 Oculi mei ad fideles 6
terræ, ut sedeant mecũ: ambulãs
in via immaculata, hic mihi ministrabat.
9 Non habitavit in medio domûs 7
meæ faciens superbiã : loquens
iniqua non direxit in conspectu oculorum
meorum. 10 In matutinus interficiebam 8
omnes peccatores terræ;
ut disperderẽ de civitate Domini [d]
omnes operantes iniquitatem.

MS. Æth. Poc. Davidis, cujus filius est Christ⁹ Sacerdos : Gloria Patri, & Filio, & Spiritui Sancto: omni tẽpore, nunc etiam, & semper, & in secula seculorum, Amen.

Oratio (a) [a] pauperi, cùm anxius fuerit, & corã Domino effuderit [b] precem suam. CI. 1

1 Domine, exaudi orationẽ meã: 2
& (b) clamor meus ad te veniat. 2 Ne avertas faciem tuã à me: 3
in quacunq; die tribulor; inclina ad
me aurẽ tuã. 4 In quacunque die invocavero
te; velociter exaudi me.
4 Quia defecerunt sicut fumus, dies 4
mei: & ossa mea, sicut (c) cremium,
[c] confrixa sunt. 5 (d) Percussus 5
sum, sicut fœnũ, & aruit cor meum:
quia oblitus sum comedere panẽ meũ. 6 A voce gemitûs mei, (e) adhæsit os meum carni meæ. 6

Versio ÆTHIOPICA.

መዝሙር፡ዘተጋንዮ፡፡ 1
ንሁ ዮብቡ፡ለእግዚአብሔር፡በኵሉ፡ምድ 1
ር፡፡ ተቀንዩ፡ለእግዚአብሔር፡በትፍሥሕ
ት፡፡፨ ወባኡ፡ቅድሜሁ፡በሐሤት፡፡፨ 2
አእምሩ፡ከመ፡እግዚአብሔር፡ውእቱ፡አ 3
ምላክነ፡፡ ወውእቱ፡ፈጠረነ፡ወአኮ፡ንሕ
ነ፡፡፨ ወንሕነሰ፡ሕዝቡ፡አባግዐ፡መርዔ 4
ቱ፡፡ባኡ፡ውስተ፡አናቅጺሁ፡በተጋንዮ፡፡ወ
ውስተ፡አዐጻዲሁ፡በስብሐት፡አመንዎ፡፡፨
ወሰብሑ፡ለስሙ፡እስመ፡ኄር፡እግዚአብሔ 5
ር፡፡እስመ፡ለዓለም፡ምሕረቱ፡፡ወለትውል
ደ፡ትውልድ፡ጽድቁ፡፡፨

መዝሙር፡ዘዳዊት፡፡

የ ምሕረተ፡ወፍትሐ፡አሐሊ፡ለከ፡፡፨ 1
እዜምር፡ወለቡ፡ፍኖተ፡ንጹሐ፡፡ማእዜ፡ 2
ትመጽእ፡ኀቤየ፡፡፨ ወአሐውር፡በየዋሃት፡ 3
ልብየ፡ማእከለ፡ቤትየ፡፡፨ ወኢረሰይኩ፡ቅ 4
ድመ፡አዕይንትየ፡ግብረ፡እኩየ፡፡ጸላእኩ፡
ገበርተ፡ዐመፃ፡፡፨ ወኢተለወኒ፡ልብ፡ጠዋ 5
ይ፡፡ሶበ፡ተግሕሠ፡እኩይ፡እምኔየ፡ኢያእም
ርኩ፡፡፨ ዘያሐሚ፡ቢጾ፡በጽሚት፡ኪ 6
ያሁ፡ሰደድኩ፡፡፨ ዕቡየ፡ዐይን፡ወፅሡ 7
ዐ፡ልብ፡ኢይትሀወል፡ምስሌየ፡፡፨ አዕይን 8
ትየሰ፡ኀበ፡መሃይምናን፡ምድር፡፡ከመ፡አንብ
ሮ፡ምስሌየ፡፡ዘየሐውር፡በፍኖት፡ንጹሕ፡
ውእቱ፡ይትለአከኒ፡፡፨ ወኢይነብር፡ማእ 9
ከለ፡ቤትየ፡ዘይገብር፡ትዕቢት፡፡ወኢያረት
ዕ፡ቅድሜየ፡ዘይነብብ፡ዐመፃ፡፡፨ በጽባ 10
ሕ፡እቀትሎሙ፡ለኵሎሙ፡ኃጥአነ፡ምድር፡፡
ከመ፡እሠርዎሙ፡እምሀገረ፡እግዚአብሔ
ር፡ኵሎሙ፡ገበርተ፡ዐመፃ፡፡፨
ዘዳዊት፡ዘወልደ፡ክርስቶስ፡ካህን፡፡ሰብሐት፡
ለአብ፡ወወልድ፡ወመንፈስ፡ቅዱስ፡ኵሉ፡ጊ
ዜ፡፡ይእዜኒ፡ወዘልፈኒ፡ወለዓለመ፡ዓለም
አሜን፡፡፨

ጸሎተ፡ብሑታዊ፡ሶበ፡ይቴክዝ፡ወይክዑ፡ቅድ 1
መ፡እግዚአብሔር፡ኵሎ፡ስእለቶ፡፡

የአ ስምዓኒ፡እግዚኦ፡ጸሎትየ፡፡ወይብጻሕ፡ 1
ቅድሜከ፡ገዓርየ፡፡፨ ወኢትሚጥ፡ገጸከ፡ 2
እምኔየ፡፡በዕለተ፡ምንደቤየ፡አጽምእ፡እዝ
ነከ፡ኀቤየ፡፡፨ አመ፡ዕለተ፡እጼውዐከ፡ፍ 3
ጡነ፡ስምዐኒ፡፡፨ እስመ፡ኃልቀ፡ከመ፡ጢስ፡ 4
መዋዕልየ፡፡ወነቅጸ፡ከመ፡ሣዕር፡አዕጽምት
የ፡፡፨ ተቀሠፍኩ፡ወየብሰ፡ከመ፡ሣዕር፡ል 5
ብየ፡፡እስመ፡ተረስዓኒ፡በሊዐ፡እክልየ፡፡፨

INTERP. ÆTHIOP. [a] in omni terra : [b] Deus noster : [c] Et nos quidem populus [d] & in atriis ejus cum hymnis confitemini illi: [e] quoniam in æternum PSAL. C. [†] tibi: psallam [a] viam immaculatam: [b] opera iniqua [c] duplici [d] omnia eorum opera iniqua. PSAL. CI. [a] solitarii, [b] omnem precem suam. [c] arescunt.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* المزمور التاسع والتسعون * لداود * وهو ـيـ * استيكن * 1

هللوا للرب يا جميع الارض * تعبدوا للرب بفرح · ادخلوا امامه بابتهاج * اعلموا ان الرب هو 2 3
الله * هو خلقنا ولم نكن · وانا نحن شعبه وغنم رعيته * ادخلوا ابوابه بالشكر وديارة بالتسبيح * 4
اعترفوا له وباركوا اسمه * فان الرب صالح هو · وان رحمته الكاينة الي الابد * وحقه من جيل 5
الي جيل * اللليلويا * المزمور المايه * لداود * وهو يو * استيكن * 1

يا رب اني بالرحمة والعدل اسبحك · ارتل 2 والتمس طريقا لا ريب فيها · الي متي تاتي الي · مشيت 2
في وسط بيتي بلا شر في قلبي * لم اجعل امام عيني شيا يخالف الناموس · ابغضت عاملي 3
المعاصي * لم يلصق في قلب معوج · عند ميل الشرير علي لم اعلم * والذي يستغيب 4 5
صاحبه هذا كنت اطرده · لم اواكل المتعالي العين الشره القلب * عيناي علي مومني الارض 6
ليجالسوني · السالك طريقا بلا عيب هذا كان يخدمني * المستكبر لم يكن في وسط بيتي * 7
المتكلم بالظلم لم يستقم امام عيني * في اوقات الغدوات كنت اقتل جميع خطاة الارض 8
لكي ابيد من مدينة الرب جميع عاملي الاثم الليلويا * المزمور المايه وواحد *

* صلاة للمسكين اذا حزن وافرغ دعاءه الي الرب * وهو نه * استيكن * 1

* يا رب استجب صلاتي وليصعد امامك ابتهالي * لا تصرف وجهك عني في اليوم الذي 2 3
اضيق فيه · اصغ الي بسمعك في اليوم الذي اصرخ اليك فيه اسرع واجبني * فان ايامي 4
اضمحلت مثل الدخان · وعظامي في مثل مقلي قد انقلت * ذبلت مثل العشب ويبس 5
قلبي لاني نسيت اكل خبزي * من صوت تنهدي عظمي التصق بلحمي * 6

PSAL. XCIX.

Davidis. Vers. 10. 1

Jubilate Domino O universa terra: Subjicite 2
vos Domino hilariter : introite
ante eum exultanter. Scitote Dominum 3
esse Deum, ipsum creâsse nos dum nil essemus
: nos autem populum ejus esse et oves
pascuæ ejus. Introite portas ejus cum 4
gratiarum actione, & atria ejus cum laudatione
: confitemini ei, & benedicite nomini
ejus. Nam Dominus bonus est : & 5
verò misericordia ejus permanens est in
æternum, & veritas ejus à generatione
in generationem. Alleluja.

PSAL. C.

Davidis. Vers. 16. 1

O Domine, equidem cum misericordia
& æquitate laudabo te, psallam, Et 2
quæram viam in qua nullum sit crimen.
Quando venies ad me? ambulavi in medio
domûs meæ sine malitia in corde meo:
Non posui ante oculos meos quicquã con- 3
tradicens legi : odivi facientes prævaricationes.
Non adhæsit mihi cor perversum. 4
Quum deflecteret quis improbus in me,
non cognoscebam. Et eum qui detractat 5
de proximo suo, hunc ipsum persequebar.
Non comedi cum elato supercilio & avido
corde. Oculi mei super fideles terræ, ut 6
considerent mecum. Ambulans in via irreprehensibili,
hic mihi ministrabit. Superbus 7
non fuit in domo mea. Loquens perversè,
non erexit se corã oculis meis. Temporibus 8
matutinis interficiebam omnes peccatores
terræ, ut perderem de civitate Domini
omnes operantes iniquitatem. Alleluja.

PSAL. CI.

Oratio pauperis quum tristis est, & effundit precem suam ad Dominum. Vers. 55. 1

O Domine, exaudi orationem meam, et 2
ascendat coram te supplicatio mea.
Ne avertas faciem tuam à me in die quâ 3
angustiabar. Inclina ad me auditum tuum
in die quâ clamabo ad te. Propera & exaudi
me, Quoniam dies mei evanuerunt 4
veluti fumus : & ossa mea quasi in sartagine
frixa sunt. Elangui instar herbæ, & 5
aruit cor meum : quia oblitus sum comestionem
panis mei. Ob vocem gemitûs mei 6
os meum adhæsit carni meæ.

תהלים : קג

fui & ,Vigilavi .ſolitudinum *falco* ſicut fui : deſerti pellicano ſum Aſſimilatus

7 8 דמיתי לקאת מדבר הייתי ככוס חרבות׃ שקדתי ואהיה

: mei inimici me afficiebant probris die Tota .tectum ſuper ſolitarius paſſer ſicut

9 כצפור בודד על־גג׃ כל־היום חרפוני אויבי

: manducavi panem tanquam cinerem Quia .jurabant me adverſum,me inſanientes

10 מהוללי בי נשבעו׃ כי־אפר כלחם אכלתי

,me elevâſti quia:tuæ iræ &,tuæ indignationis *facieb*ᵒ A .miſcui fletu cum meũ potum &

11 ושקוי בבכי מסכתי׃ מפני־זעמך וקצפך כי נשאתני

tu & .arui herba ſicut ego & : inclinata umbra ſicut mei Dies .me projeciſti &

12 13 ותשליכני׃ ימי כצל נטוי ואני כעשב איבש׃ ואתה

,exurges Tu .generatione &,generatione in tui memoria & *ſedebis* ſeculum in Domine

14 יהוה לעולם תשב וזכרך לדר ודר׃ אתה תקום

bene voluerũt Quia .*ſtatutũ* tempᵒ venit quia,ejᵒ miſerendi tempᵒ quia :Sijon miſereberis

15 תרחם ציון כי־עת לחננה כי־בא מועד׃ כי־רצו

gentes timebunt Et .ſunt miſerti ejus pulveris & : ejus lapidibus tui ſervi

16 עבדיך את־אבניה ואת־עפרה יחננו׃ וייראו גוים

ædificavit Quia .tuam gloriam terræ reges omnes & :Domini nomen

17 את־שם יהוה וכל־מלכי הארץ את־כבודך׃ כי־בנה

non & *: ſolitarii* orationem ad Reſpexit .ſua gloria in videbitur:Sijon Dominus

18 יהוה ציון נראה בכבודו׃ פנה אל־תפלת הערער ולא

creatus populus & : *noviſſimæ generationi* hoc Scribatur .eorum orationem ſprevit

19 בזה את־תפלתם׃ תכתב זאת לדור אחרון ועם נברא

in cœlis de Dominus:ſuæ ſanctitatis excelſo de proſpexit Quia .*Jah* laudabit

20 יהלל־יה׃ כי־השקיף ממרום קדשו יהוה משמים אל־

narrandũ Ad .*mortis* filios *ſolvendum ad* : *vincti* gemitum *audiendum Ad* .aſpexit terram

21 22 ארץ הביט׃ לשמע אנקת אסיר לפתח בני תמותה׃ לספר

;ſimul *populos congregari In* .Jeruſalaim in ejus laudem & : Domini nomen Sijon in

23 בציון שם יהוה ותהלתו בירושלם׃ בהקבץ עמים יחדו

.meos dies abbreviavit,meã fortitudinẽ via in Afflixit.Domino *ſerviendum ad* regna &

24 וממלכות לעבד את־יהוה׃ ענה בדרך כחי קצר ימי׃

generationũ generationẽ in:meorũ dierũ dimidio in me *facias aſcendere* ne mi Deᵒ,*Dicam*

25 אמר אלי אל־תעלני בחצי ימי בדור דורים

Ipſi .cœli tuarum manuum opus & : fundâſti terram Antea .tui anni

26 27 שנותיך׃ לפנים הארץ יסדת ומעשה ידיך שמים׃ המה

veſtimentum ſicut : veteraſcent veſtis ſicut ipſi omnes & ,ſtabis tu & ,peribunt

יאבדו ואתה תעמד וכלם כבגד יבלו כלבוש

Filii .conſumentur non tui anni & ,ipſe tu Et .mutabuntur & ,eos mutabis

28 29 תחליפם ויחלפו׃ ואתה־הוא ושנותיך לא יתמו׃ בני־

.ſtabilietur *tuas facies ad* eorum ſemen & :habitabunt tuorum ſervorum

עבדיך ישכונו וזרעם לפניך יכון׃

PSAL. CIII. קג

nomini .mea interiora omnia & : Domino mea anima Benedic .David Ipſi

1 לדוד ברכי נפשי את־יהוה וכל־קרבי את־שם

.ejus ſanctitatis

קדשו׃

תרגום TARGUM.

7 אדמית לקקתא דמדברא הוית היך קופפא די
8 בארעא נגיבתא : שקדית כל ליליא והויתי היך
9 צפר דפרח וניד בלחודיה על אגרא : כל יומא
יחסדון לי בעלי דבבי מתלעבי במימרי קימו
10 מגן : ארום אפרא היך מזונא סעדית ושקיותי
11 בבכותא מזגית : מן קדם רוגזך וקצפך ארום
12 נטלתני וטלקתני : יומי היך טולא דיצלי ואנא
13 היך עסבא איבש : ואת יי מדורך לעלם בשמיא
14 תתב ודכרנך לדר ודר : את תקום תרחם ציון
ארום עדן למחוס עלה ארום אתא זמנא :
15 ארום רעו עבדך ית אבנהא וית עפרהא יחיסון :
16 וידחלון עמיא ית שמא דיי וכל מלכיא דארעא
17 ית יקרך : ארום אתבני במימרא דיי קרתא
18 דציון אתגלי ביקריה : אתפני לות צלותיה
19 דמצטדין ולא בסר ית צלותהון : תתכתב
צלותא דא לדר בתרי ועמא דעתיד לאתבראה
20 ישבח יה : ארום אודיק משמי מרומא דקודשיה
21 יי מן שמיא לארעא אסתכל : למשמע אניקותא
דאסיריא למשרי בניא דמסירין למיתותא :
22 למשתעי בציון שמא דיי ותושבחיה בירושלם :
23 באתכנשות עמין כחדא ומלכותא למפלח
24 קדם יי : אסתנף מן טורח דאורח גלותא חילי
25 אתקצרון יומי : אימר קדם אלהי לא תסלקנני
מן עלמא בפלגות יומי איתי יתי לעלמא דאתי
26 מטול די בדרי דריא שנתך : מן שרויא דאתברי
כל בריתא ארעא יסדתא ועובדי ידך שמיא :
27 הנון יהובדון ואת תקום וכולהון היך לבושא
יתבלין היך אצטלי תחליפנון ויתחלפון :
28 ואת הוא די בריתנון ושנתך לא משתלמן :
29 בני עבדך ישרון בארעא וזרעיתהון קדמך
יתקנון :

קג

1 על יד דוד אתאמר בנבואה בריכי נפשי ית שמא
דיי וכל בני גויי ית שמא דקודשיה :

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Similis factᵒ ſum pellicano deſerti : fa
ſum ſicut noctua quæ eſt in terra torre
Vigilavi tota nocte, & fui ſicut paſſer
volatu movetur, ſolitarius in tecto.
die exprobrant mihi inimici mei, irri
mei in verbo meo juraverunt in van
Quoniam cinerem tanquam cibum com
& potus meos fletu temperavi. Pro
indignationem tuã & iram tuam, quon
elevâſti me & projeciſti me. Dies mei
umbra quæ declinavit, & ego ſicut fœ
areſcam. Tua autem Domine habitati
æternũ in cœlis permanet, & memoria
in generationem & generationem. Tu
urgens miſereberis Sion, quoniam tem
eſt ut miſerearis ejus, quoniam venit te
pus. Quoniam placuerunt ſervis tuis la
des ejus, & pulveris ejus miſerebunt
Et timebunt populi nomen Dñi, & om
reges terræ gloriam tuam. Quoniam *æd*
cata eſt verbo Domini urbs Sion, mani
ſtatus eſt in gloria ſua. Reſpexit ad or
tionem deſolatorum, & non ſprevit pr
cationem eorum. Scribetur *oratio iſta* p
generatione noviſſima, & populus qu
futurum creandus eſt, laudabit Deum. Qu
niam proſpexit de cœlis excelſis ſanctita
ſuæ, Dominus de cœlis in terram aſpex
Ut audiret gemitum compeditorum, & ſo
veret filios qui morti traditi ſunt. Ut a
nuncietur in Sion nomen Domini, & lau
ejus in Jeruſalem. Dum congregabun
populi in unum, & regna, ut ſerviant co
ram Domino. Afflicta eſt ob laborem
neris *exilii* virtus mea : abbreviati ſu
dies mei. Dicam coram Deo meo : N
tollas me de mundo in dimidio dier
meorum : adduc me ad mundum ven
rum, quoniam in generationes genera
num ſunt anni tui. A principio cùm cr
rentur omnes creaturæ, terram fundâſti, &
opera manuum tuarum ſunt cœli. Ipſi pe
bunt, & tu permanebis; & omnes ſicut v
ſtimentum veteraſcent : tanquam ſtolã m
tabis eos, & mutabuntur. Et tu idem q
creâſti eos, & anni tui non deficiunt. F
lii ſervorum tuorum inhabitabunt terra
& ſemen eorum coram te dirigetur.

Per manum David, dictᵒ *per propheti*

SSAL. CIII.

BEnedic anima mea nomini Domini, &
omnes filii viſcerum meorum nomini ſa
ctitatis ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

7 8 * ܘܐܬܕܡܝܬ ܠܩܩܐ ܕܒܡܕܒܪܐ: ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܩܘܦܐ ܕܒܚܘܪ̈ܒܐ. * ܫܗܪܬ ܘܗܘܝܬ ܒܠܚܘܕܝ:
9 ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܕܡܦܪܚܐ ܥܠ ܐܓܪܐ. * ܟܠܗ ܝܘܡܐ ܚܣܕܘܢܝ ܒܥܠܕܒܒ̈ܝ: ܘܡܫܒܚܢ̈ܝ ܒܝ
10 11 ܝܡܘ. * ܡܛܠ ܕܩܛܡܐ ܐܝܟ ܠܚܡܐ ܐܟܠܬ: ܘܡܫܬܝ ܒܒܟܝܐ ܡܙܓܬ. * ܡܢ ܩܕܡ
12 ܪܘܓܙܟ ܘܚܡܬܟ: ܕܐܪܝܡܬܢܝ ܘܫܕܝܬܢܝ. * ܘܝܘܡܝ ܐܝܟ ܛܠܠܐ ܐܙܕܩܦܘ: ܘܐܢܐ ܐܝܟ ܥܣܒܐ
13 14 ܝܒܫܬ. * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܠܥܠܡ ܩܐܡ ܐܢܬ: ܘܕܘܟܪܢܟ ܠܕܪܕܪܝܢ. * ܐܢܬ ܩܘܡ ܘܪܚܡ ܥܠ
15 ܨܗܝܘܢ: ܡܛܠ ܕܡܛܐ ܙܒܢܐ ܠܡܪܚܡܘ ܥܠܝܗ. * ܡܛܠ ܕܨܒܘ ܥܒܕ̈ܝܟ ܒܟܐܦ̈ܝܗ
16 ܘܒܥܦܪܗ ܪܚܡܘ: * ܢܕܚܠܘܢ ܥܡܡܐ ܠܫܡܟ ܡܪܝܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܡܠܟ̈ܐ ܕܐܪܥܐ ܠܐܝܩܪܟ:
17 18 * ܡܛܠ ܕܒܢܐ ܡܪܝܐ ܠܨܗܝܘܢ. ܘܐܬܚܙܝ ܒܫܘܒܚܗ: * ܘܐܬܦܢܝ ܥܠ ܨܠܘܬܐ ܕܡܣܟ̈ܢܐ.
19 ܘܠܐ ܫܛ ܒܒܥܘܬܗܘܢ: * ܬܬܟܬܒ ܗܕܐ ܠܕܪܐ ܐܚܪܢܐ. ܘܥܡܐ ܕܡܬܒܪܐ ܢܫܒܚ ܠܡܪܝܐ:
20 21 * ܡܛܠ ܕܐܕܝܩ ܡܢ ܡܪܘܡܐ ܕܩܘܕܫܗ. ܡܪܝܐ ܡܢ ܫܡܝܐ ܠܐܪܥܐ ܐܕܝܩ: * ܠܡܫܡܥ ܐܢܚܬܗ
22 ܕܐܣܝܪܐ. ܘܠܡܫܪܐ ܒܢ̈ܝ ܡܘܬܐ: * ܕܢܫܬܥܘܢ ܒܨܗܝܘܢ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܬܫܒܘܚܬܗ
23 24 ܒܐܘܪܫܠܡ: * ܡܐ ܕܐܬܟܢܫܘ ܥܡܡܐ ܐܟܚܕܐ ܘܡܠܟܘܬܐ ܠܡܦܠܚܘ ܠܡܪܝܐ: * ܡܟܟܘ
25 ܚܝܠܝ ܒܐܘܪܚܐ. ܘܒܨܝܪܘܬܐ ܕܝܘܡܝ * ܐܡܪܬ ܠܗ: ܠܐ ܬܫܩܠܢܝ ܒܦܠܓܘܬ ܝܘܡܝ. ܠܕܪܕܪܝܢ
26 27 ܫܢܝܟ: * ܡܢ ܠܩܘܕܡܝܢ ܐܪܥܐ ܫܬܐܣܬ. ܘܥܒܕܐ ܐܝܕܝܟ ܫܡܝܐ: * ܗܢܘܢ ܢܥܒܪܘܢ ܘܐܢܬ
28 ܩܐܡ ܐܢܬ. ܘܟܠܗܘܢ ܐܝܟ ܠܒܘܫܐ ܢܒܠܘܢ: ܘܐܝܟ ܡܪܛܘܛܐ ܬܚܠܦ ܐܢܘܢ. * ܘܐܢܬ ܐܝܟ
29 ܕܐܝܬܝܟ ܐܢܬ ܘܫܢܝܟ ܠܐ ܢܫܠܡܘܢ: * ܘܒܢ̈ܝ ܥܒܕ̈ܝܟ ܢܥܡܪܘܢ ܒܐܪܥܐ. ܘܙܪܥܗܘܢ ܩܕܡܝܟ ܢܬܩܢ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܓ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܩܪܝܪܘܬܐ ܕܫܠܛܬ ܒܗ ܒܣܝܒܘܬܐ. ܘܐܦ ܡܬܒܥܝܢܘܬܐ
ܘܬܘܕܝܬܐ ܡܢ ܥܕܬܐ ܕܐܠܗܐ. ܦܬܓܡ ܡܙ.
ܒܪܟܝ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܪ̈ܡܝ ܠܫܡܗ ܩܕܝܫܐ:

* Et ſimilis factus ſum pellicano qui eſt in
tudine, factúſque ſum velut noctua in
Seceſſi, & fui ſolus inſtar paſſeris vol
ſuper tecto : Totâ die conviciati ſunt
hoſtes mei, & commendatores mei pe
jurârunt. Nam cinerem ut panem come
potum meum fletu miſcui: Præ furore tu
indignatione tuâ, quia ſublimâſti me, tu
jeciſti me. Diéſque mei velut umbra dec
ti ſunt, & ego arui ſicut fœnum. Tu au
Domine, in æternum permanens es, & me
ria tua in æva. Tu exurge & miſerere Si
quia advenit tempus miſerendi illius; N
oblectati ſunt ſervi tui lapidibus ejus, &
verem ejus dilexerunt. Timebunt gentes
men tuum Domine, & omnes reges terræ
jeſtatem tuam. Ædificat enim Dominus Si
& apparet cum gloria. Convertiturque
precem pauperum, & non deſpicit ora
eorum. Scribetur hoc generationi alte
populus qui creabitur, laudabit Dom
Quia proſpexit de excelſo ſanctitatis ſu
minus de cœlo in terram aſpexit, Au
endum gemitum vincti, & ad ſolvendos
à morte: Ut enarrent in Sion nomen Do
& laudes ejus in Jeruſalem, Quando con
gabuntur gentes ſimul, ac regna ad col
Dominum. Humiliaverunt vires meas
ra: & paucitatem dierum meorum, Dic
Ne me tollas in medio dierũ meorũ qu
quidem in generationem generationum
anni tui. Ab antiquo terram firmâſti, &
manuum tuarum ſunt cœli; Ipſi præter
& tu permanens es : omnéſque ſicut
conſumentur, & ut pallium mutabun
verò es ut es, & anni tui nequaquam
tur. Et filii ſervorum tuorum cõmora
in terra, & ſemen eorum coram te pe

PSAL. CIII.

Davidis. De frigiditate quæ d
in eum tempore ſenectutis. Item
tum : & gratiarum actio a
lata. Verſ. 47.

1 BEnedic anima mea Domino, &
oſſa mea nomini ejus ſancto

Verſio VULG. LAT.

7 Similis factus ſum pellicano ſolitudi-
nis: factus ſum ſicut nycticorax in domi-
8 cilio. Vigilavi, & factus ſum ſicut paſ-
ſer ſolitarius in tecto. Totâ die expro-
9 brabât mihi inimici mei: & qui lauda-
10 bant me adverſùm me jurabant. Quia
cinerem tanquã panem manducabam,
11 & potum meũ cum fletu miſcebam, A
facie iræ & indignationis tuæ: quia
12 elevans alliſiſti me. Dies mei ſicut um-
bra declinaverunt: & ego ſicut fœnũ
13 arui. Tu autem, Domine, in æternum
permanes: et memoriale tuum in gene-
14 rationem & generationẽ. Tu exurgens
miſereberis Sion: quia tempus miſe-
15 rendi ejus, quia venit tempus. Quoniã
placuerunt ſervis tuis lapides ejus: &
16 terræ ejus miſerebuntur. Et timebunt
gentes nomẽ tuũ, Domine, & omnes
17 reges terræ gloriam tuam. Quia ædifi-
cavit Dominus Sion: & videbitur in
18 gloria ſua. Reſpexit in orationem hu-
milium: & non ſprevit precem eorum.
19 Scribantur hæc in generatione altera:
& populus, qui creabitur, laudabit
20 Dominum: Quia proſpexit de excelſo
ſancto ſuo: Dominus de cœlo in ter-
21 ram aſpexit: Ut audiret gemitus com-
peditorum: ut ſolveret filios interem-
22 ptorum: Ut annuntient in Sion no-
men Dñi: & laudem ejus in Jeruſalẽ.
23 In conveniendo populos in unũ, et re-
24 ges ut ſerviant Domino. Reſpondit ei
in via virtutis ſuæ: Paucitatem die-
25 rum meorum nuntia mihi. Ne revoces
me in dimidio dierum meorum: in ge-
nerationem & generationem anni tui.
26 Initio tu, Domine, terram fundâſti: &
27 opera manuum tuarum ſunt cœli. Ipſi
peribunt, tu autem permanes: & o-
mnes ſicut veſtimentũ veteraſcent. Et
ſicut opertorium mutabis eos, & mu-
28 tabuntur: Tu autem idem ipſe es, &
29 anni tui non deficient. Filii ſervorum
tuorum habitabunt: et ſemen eorum
in ſeculum dirigetur.

Ipſi David. CII.

1 Benedic anima mea Domino: et omnia, quæ intra me ſunt, nomini ſancto ejus.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

7 † Ὡμοιώθην πελεκᾶνι ἐρημικῷ, † ἐγενήθην ὡσεὶ
8 νυκτικόραξ ἐν οἰκοπέδῳ. † Ἠγρύπνησα, καὶ (δ)
ἐγενήθην ὡσεὶ στρουθίον (ε) μονάζον ἐπὶ δώματι.
9 † Ὅλην τὴν ἡμέραν ὠνείδιζόν με οἱ ἐχθροί μου, † καὶ
10 οἱ ἐπαινοῦντές με κατ᾽ ἐμοῦ ὤμνυον. † Ὅτι σποδὸν
ὡσεὶ ἄρτον ἔφαγον, † καὶ τὸ πόμα μου μετὰ κλαυθμοῦ
11 ἐκίρνων, † Ἀπὸ προσώπου τῆς ὀργῆς σου καὶ τοῦ θυ-
12 μοῦ σου, | ὅτι ἐπάρας κατέῤῥαξάς με. † Αἱ ἡμέραι
μου ὡσεὶ σκιὰ ἐκλίθησαν, † (ζ) κἀγὼ ὡσεὶ χόρτος
13 ἐξηράνθην. † Σὺ δὲ κύριε εἰς τὸν αἰῶνα μένεις, † καὶ
14 τὸ μνημόσυνόν σου εἰς γενεὰν καὶ γενεάν. † Σὺ ἀνα-
στὰς οἰκτειρήσεις τὴν Σιών, † ὅτι καιρὸς τοῦ οἰκτειρῆ-
15 σαι αὐτήν, ὅτι ἥκει καιρός. † Ὅτι εὐδόκησαν οἱ
δοῦλοί σου τοὺς λίθους αὐτῆς, † καὶ τὸν χοῦν αὐτῆς οἰ-
16 κτειρήσουσι. † Καὶ φοβηθήσονται τὰ ἔθνη τὸ ὄνομά
σου κύριε, † καὶ πάντες οἱ βασιλεῖς (η) τὴν δόξαν σου.
17 † Ὅτι οἰκοδομήσει κύριος τὴν Σιών, † καὶ ὀφθήσεται
18 ἐν τῇ δόξῃ αὐτοῦ. † Ἐπέβλεψεν ἐπὶ τὴν προσευ-
χὴν τῶν ταπεινῶν, † καὶ οὐκ ἐξουδένωσε τὴν δέησιν αὐ-
19 τῶν. † Γραφήτω αὕτη εἰς γενεὰν ἑτέραν, † καὶ λαὸς
20 ὁ κτιζόμενος αἰνέσει τὸν κύριον. | Ὅτι ἐξέκυψεν ἐξ
ὕψους ἁγίου αὐτοῦ, † κύριος ἐξ οὐρανοῦ ἐπὶ τὴν γῆν
21 ἐπέβλεψε, † Τοῦ ἀκοῦσαι (θ) τοῦ στεναγμοῦ τῶν πεπεδη-
22 μένων, † τοῦ λῦσαι τοὺς υἱοὺς τῶν τεθανατωμένων, † Τοῦ
ἀναγγεῖλαι ἐν Σιὼν τὸ ὄνομα κυρίου, † καὶ τὴν αἴνεσιν
23 αὐτοῦ ἐν Ἱερουσαλήμ· † Ἐν τῷ (ι) συναχθῆναι λαοὺς
ἐπὶ τὸ αὐτό, † καὶ βασιλεῖς τοῦ δουλεύειν τῷ κυρίῳ.
24 † Ἀπεκρίθη αὐτῷ ἐν ὁδῷ ἰσχύος αὐτοῦ, † τὴν ὀλι-
25 γότητα τῶν ἡμερῶν μου ἀνάγγειλόν μοι. † Μὴ ἀνα-
γάγῃς με ἐν ἡμίσει ἡμερῶν μου, † ἐν γενεᾷ γενεῶν
26 τὰ ἔτη σου. † Κατ᾽ ἀρχὰς (κ) τὴν γῆν σὺ κύριε ἐθε-
μελίωσας, † καὶ ἔργα τῶν χειρῶν σου εἰσὶν οἱ οὐρανοί.
27 † Αὐτοὶ ἀπολοῦνται, σὺ δὲ διαμένεις· † καὶ πάντες
ὡς ἱμάτιον παλαιωθήσονται, † καὶ ὡσεὶ περιβόλαιον ἑ-
28 λίξεις αὐτούς, καὶ ἀλλαγήσονται. † Σὺ δὲ ὁ αὐτὸς εἶ,
29 καὶ τὰ ἔτη σου οὐκ ἐκλείψουσιν. † (λ) Οἱ υἱοὶ τῶν δούλων
σου κατασκηνώσουσι, † καὶ τὸ σπέρμα αὐτῶν εἰς τὸν
αἰῶνα κατευθυνθήσεται.

MS.A. (δ) ἐγενόμην ὡς (ε) μονάζων (ζ) καὶ ἐγὼ (η) τῆς γῆς τὴν (θ) τὸν στεναγμὸν (ι) ἐπισυναχθῆναι (κ) σὺ κύριε τὴν γῆν (λ) Υἱοὶ

Τῷ Δαυίδ. ρβ΄.

1 † Εὐλόγει ἡ ψυχή μου τὸν κύριον, † καὶ πάντα τὰ ἐντός μου τὸ ὄνομα τὸ ἅγιον αὐτοῦ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

7 Similis factus ſum Pelicano, (f) qui 7
habitat in ſolitudine: factus ſum ſicut
Nycticorax in (g)[d] parietinis: 8 Vi- 8
gilavi, & factus ſum, ſicut paſſer (h)
ſolitarius in tecto. 9 Totâ die expro- 9
brabant me inimici mei: & (i) qui [e]
laudabant me, adverſùs me jurabãt.
10 Quia cinerem tanquã panẽ man- 10
ducabã, & potum meũ cũ fletu [f]
miſcebam. 11 A facie iræ tuæ, & 11
indignationis tuæ, quia elevans alli-
ſiſti me. 12 Dies mei, ſicut umbra de- 12
clinaverunt: & ego, ſicut fœnũ, arui.
13 Tu autẽ, Domine, in æternũ per- 13
manes: & memoriale tuum in gene-
rationẽ, & generationẽ. 14 Tu [g] 14
exurgens miſereberis (k) Sion, quia
tempus [h] miſerendi ejus, quia venit
tempus. 15 Quoniã beneplacitũ (l) 15
habuerunt ſervi tui in lapides ejus:
& [i] pulveris ejus miſerebuntur.
16 Et timebunt gentes nomen tuum, 16
Domine, & omnes reges gloriã tuã.
17 Quoniã ædificabit Dominus Si- 17
on: et videbitur in gloria ſua. 18 Re- 18
ſpexit in orationem [k] humiliũ: &
non ſprevit preces eorũ. 19 (m) Scri- 19
batur hæc in generatione alterã: &
populus, qui creatur, laudabit Domi-
nũ. 20 Quoniã proſpexit de [l] ex- 20
celſo ſancto ſuo: Dominus de cœlo in
terram aſpexit: 21 ut audiret gemi- 21
tũ compeditorũ: ut [m] ſolvat filios
mortificatorũ. 22 ut annuntient in 22
Sion nomẽ Domini: & laudẽ ejus in
Hieruſalem. 23 In conveniendo po- 23
pulos in unum; & (n) reges, ut ſer-
viant Domino. 24 Reſpondit ei in 24
via (o) fortitudinis ſuæ: exiguitatem
dierũ meorum annuntia mihi. 25 Ne 25
[n] revoces me in dimidio dierũ me-
orum: in (p) generatione generationũ
anni tui. 26 In principio terrã tu, Do- 26
mine, fundâſti: & opera manuũ tu-
arum ſunt cœli. 27 Ipſi peribunt: tu 27
autẽ permanes. Et omnes, ſicut veſti-
mentum, veteraſcent: 28 & ſicut o-
pertoriũ, (q)[o] volves eos, et muta-
buntur. Tu autem idẽ ipſe es: & anni 28
tui non deficient. 29 Filii ſervorum 29
tuorum habitabunt [p]: & ſemen eo-
rum in ſeculũ [q] dirigetur.

(a) Ipſi David. CII.

1 *Benedic anima mea Dominum: & [a] omnia interiora mea nomen ſanctum ejus.*

Verſio ÆTHIOPICA.

እምቃለ፡ገዓርየ፡ጠግአ፡ሥጋየ፡ ዲበ፡ አዕጽ 6
ምትየ፡፡ ወኮንኩ፡ከመ፡ አድገ፡ መረብ፡ 7
ዘገዳም፡፡ወኮንኩ፡ከመ፡ ጉጓ፡ ውስተ፡ቤተ፡
ሊሊት፡፡ ተጋሕኩ፡ወኮንኩ፡ ከመ፡ ዖፍ፡ 8
ባሕታዊ፡ውስተ፡ናሕስ፡፡ ወኵሎ፡ ዕለ 9
ተ፡ ይዘርኡኒ፡ጸላእትየ፡፡ወእለሂ፡ ይሴድዱኒ፡ይ
ሰግተዩ፡ላዕሌየ፡፡ እስመ፡ሐመደ፡ ከመ፡ 10
እክል፡ ቀምሐኩ፡፡ወስቴየኒ፡ ምስለ፡ አንብዕ
የ፡ሰተይኩ፡፡ እምገጸ፡ መቅሠፍተ፡መዐ 11
ትከ፡፡እስመ፡ አንሣእከኒ፡ ወነጸሕከኒ፡፡
ወመዋዕልየኒ፡ ከመ፡ ጽላሎት፡ ኃለፉ፡፡ወአነ 12
ሂ፡ከመ፡ሣዕር፡የበስኩ፡፡ ወአንተሰ፡እግዚ 13
ኦ፡ለዓለም፡ ትነብር፡፡ወዝክርከኒ፡ለትውል
ደ፡ትውልድ፡፡ ተንሥእ፡እግዚኦ፡ወተሣ 14
ሀሎ፡ለጽዮን፡፡እስመ፡ ጊዜሃ፡ ውእቱ፡ ከመ፡
ትሣሀላ፡ወበጽሐ፡ እድሜሃ፡፡ እስመ፡ሠ 15
ምሩ፡ አግብርቲከ፡ እበኒሃ፡፡ወአክበርዋ፡ ለ
መሬታ፡፡ ወይፈርሁ፡አሕዛብ፡ስመከ፡እ 16
ግዚኦ፡፡ ወኵሎሙ፡ ነገሥት፡ ለስብሐቲ
ከ፡፡ እስመ፡ ይሐንጻ፡ እግዚአብሔር፡ለ 17
ጽዮን፡፡ወያስተርኢ፡ በስብሐቲሁ፡፡ ወነ 18
ጸረ፡ ሳዕለ፡ ጸሎተ፡ ነዳይ፡፡ወኢተቈጥዐ፡ስ
እለቶሙ፡፡ ወተጽሕፈት፡ዛቲ፡ ለካልእ፡ 19
ትውልድ፡፡ወሕዝብ ፡ ዘይትፈጠር ፡ ይሴብ
ሖ፡ለእግዚአብሔር፡፡ እስመ፡ኀወጸ፡ እ 20
ምሰማይ፡መቅደሱ፡፡እግዚአብሔር፡ ኀወጸ፡
እምሰማይ፡ዲበ፡ምድር፡፡ ከመ፡ ይስማ 21
ዕ፡ ገዐሮሙ ፡ ለሙቁሓን፡፡ወከመ ፡ ያሕይዎ
ሙ፡ለደቂቀ፡ ቅቱላን፡፡ ከመ፡ ይነግሩ፡በ 22
ጽዮን፡ስመ፡ እግዚአብሔር፡፡ወስብሐቲሁኒ፡
በኢየሩሳሌም፡፡ ሶበ፡ ተጋብኡ ፡ አሕዛ 23
ብ፡ኅቡረ፡፡ወነገሥትኒ፡ከመ፡ይትቀነዩ፡ ለእ
ግዚአብሔር፡፡ ወተሰጥዎሙ ፡ በፍኖተ፡ 24
ኀይሉ፡፡ንግረኒ ፡ ውሕደ፡ ለመዋዕልየ፡፡
ወኢትስደኒ፡በመንፈቀ፡ ዓመትየ፡፡ለትውልደ፡ 25
ትውልድ፡ዓመቲከ፡፡ አንተ፡ እግዚኦ፡ አ 26
ቅደምከ፡ሣረርከ፡ ምድረ፡፡ወግብረ፡ እደዊ
ከ፡ እማንቱ፡ ሰማያት፡፡ እማንቱሰ፡ ይት 27
ሐጐላ ፡ ወአንተሰ፡ ትሄሉ፡፡ወኵሉ፡ ከመ፡ል
ብስ፡ ይበሊ፡፡ ወከመ፡ ሞጣሕት፡ ተዌል 28
ጦሙ ፡ ወይትዌለጡ፡፡ወአንተሰ ፡ አንተ ፡ ክ
መ፡፡ወዐመቲከኒ፡ ዘኢይኀልቅ፡፡ ወደቂ 29
ቀ፡ አግብርቲከ፡ ይነብርዋ፡፡ወዘርአሙኒ ፡ ለ
ዓለም፡ይጸንዕ፡፡

ዘዳዊት፡፡

፻፪ ትባርኮ፡ነፍስየ፡ለእግዚአብሔር፡፡ወኵ 1
ሉ፡አዕጽምትየ፡ለስሙ፡ቅዱስ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [d] domicilio nocturno. [e] perſequebantur me, pacti ſunt contra me. [f] bibebam. [g] exurges Domine, & [h] ejus eſt quaſi miſerendi ejus, [i] pulverem ejus honorabunt. [k] pauperis: [l] cœlo ſancto [m] vivificaret filios [n] rejicias me in dimidio annorum meorum: [o] mutabis eos, [p] eam: & [q] ſtabilietur. *PSAL. CII.* [a] omnia oſſa mea

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

7 * اشبهت العيهب البري * صرت مثل البوم في منزل خرب * سهرت وصرت مثل عصفور باق 8
9 على السطح وحده * عيرني اعداي النهار اجمع * والذين مدحوني كانوا يحالفوا علي * اكلت 10
11 الرماد مثل الخبز * وشرابي مزج لي بدموع * من وجه سخطك وغضبك * لانك رفعتني ثم
12 طرحتني * وكالفي زالت ايامي * وانا يبست مثل الحشيش * وانت يا رب تدوم الى الابد وذكرك 13
14 الى جيل الاجيال * انت تقوم وتتراف على صهيون * لانه زمان ان يتراف عليها * لان الزمان
15 قد حضر * ان عبيدك سروا بحجارتها * وعلى ترابها يتحننون * الامم تخاف من اسمك يا رب 16
17 وجميع الممالك من مجدك * لان الرب يبني صهيون * ويظهر في مجده * لانه نظر الى صلاة 18
19 المساكين * ولم يرذل طلبتهم * فليكتب هذا الى جيل آخر * والشعب الذي يخلق يبارك
20 الرب * لانه نظر من علو قدسه * الرب نظر من السماء على الارض * لسماع تنهد الاساري 21
22 لكي يفك بني المقتولين * لكي يخبروا باسم الرب في صهيون * وتسابيحه في يروسليم * عند 23
24 اجتماع الشعوب جميعا * والملوك ليعبدوا الرب * ويذعنوا الى جبروته * اللهم اعلمني قصر
25 ايامي * ولا تدعني في نصف عمري * فان سنيك الى جيل الاجيال * انت يا رب اسست الارض 26
27 منذ البدء * والسموات اعمال يديك * هي تهلك وانت تدوم * والجميع يبلى مثل الثوب
28 ومثل الردي تطويها وتتغير * وانت هو انت وسنوك لا تفنى * بنو عبيدك يسكنون الارض 29
بهدو وزرعهم الى الابد يستقيم * اللليلويا *

Similis factus ſum pellicano ſylveſtri: factus ſum velut noctua in domicilio diruto. 7
Vigilavi & factus ſum ſicut paſſer manens ſuper tecto ſolus. 8
Convitiati ſunt in me hoſtes mei die totâ: & qui laudaverant me, conjuraverant in me. 9
Manducavi cinerem tanquam panem, & potus meus temperatus eſt mihi lachrymis, 10
A facie iræ tuæ & indignationis tuæ, quoniam elevâſti me, deinde projeciſti me. 11
Et velut umbra præterierunt dies mei, & ego arui velut herba. 12
Et tu, O Domine perſeveras in æternum & memoria tua in generationem generationum. 13
Tu ſurges & propitiaberis Sioni, quia tempus eſt propitiandi illi: nam tempus jam adeſt. 14
Quoniam ſervis tuis placuerunt lapides ejus, & pulveris ejus miſerentur. 15
Gentes timebunt nomen tuum O Domine, & omnia regna gloriam tuam. 16
Quia Dominus ædificabit Sionem, & apparebit in majeſtate ſua. 17
Nam reſpexit in orationem pauperum, & non deſpexit deprecationem eorum. 18
Scribatur hoc generationi aliæ, et populus qui creabitur, benedicet Domino. 19
Quia proſpexit è celſitudine Sanctuarii ſui, Dominus proſpexit è cœlo in terram: 20
Ad audiendum ſuſpirium vinctorum, ut ſolveret filios interfectorum: 21
Quatenus enarrent nomen Domini in Sione, & laudem ejus in Jeroſolyma, 22
Convenientibus populis ſimul, ac regibus ad ſerviendum Domino, 23
Et obediendum potentiæ ejus. Deus, notam fac mihi brevitatem dierum meorum: 24
Et ne me tollas in medio ætatis meæ quandoquidem anni tui ſunt in generationem generationum. 25
Tu, O Domine, fundâſti terram ab initio: & cœli ſunt opera manuum tuarum. 26
Ipſi peribunt, & tu perdurabis: & omnes atterentur ut veſtis, & ut pallium complicabis eos, & mutabuntur; 27
Tu verò es tu, & anni tui non deficient. 28
Filii ſervorum tuorum inhabitabunt terram pacatè, & ſemen eorum in æternum erigetur. Allelu ja. 29

المزمور المائة واثنان * لداود * وهو من استيخن

PSAL. CII.

Davidis. Verſ.46.

1 يا نفسي باركي الرب * ويا جميع احواسي باركي اسمه القدوس

O Anima mea benedic Domino, & O cuncti ſenſus mei nomini ejus ſancto.

תהלים : קד

omni Parcens.ej⁹ retributionũ omniũ obliviſcaris ne & : Domino mea anima Benedic

2 ברכי נפשי את־יהוה ואל־תשכחי כל־גמוליו: הסלח לכל־ 3

te redimiens :tuam vitã fovea de Redimens.tuas infirmitates omnes ſanans:tuæ iniquitati

4 עונכי הרפא לכל־תחלואיכי: הגואל משחת חייכי המעטרכי 4

aquilæ ut renovabitur :tuum os bono in Saturans .miſerationibus &,miſericordia

5 חסד ורחמים: המשביע בטוב עדיך תתחדש כנשר 5

Notificavit .oppreſſis omnibus judicia & :Dominus juſtitias Faciens .tua adoleſcentia

6 נעוריכי: עשה צדקות יהוה ומשפטים לכל־עשוקים: יודיע 7

longus ,Dñs gratioſus &,Miſericors .ſua ſtudia Iſrael filiis ,Moſeh ſuas vias

8 דרכיו למשה לבני ישראל עלילותיו: רחום וחנון יהוה ארך 8

.cuſtodiet ſeculum in nec : contendet ſeculum in Non.miſericordia multus &,naribus

9 אפים ורב־חסד: לא־לנצח יריב ולא לעולם יטור: 9

retribuit noſtras iniquitates ſecundùm neque,nobis fecit noſtra peccata ſecundùm Non

10 לא כחטאינו עשה לנו ולא כעונתינו גמל־ 10

ſuper ej⁹ miſericordia eſt roborata:terram ſuper cœli altitudinē ſecdm Quoniã.nobis ſuper

11 עלינו: כי כגבה שמים על־הארץ גבר חסדו על־ 11

nobis à fecit diſtare : occidente ab orientem diſtare Secundùm .eum timentes

12 יראיו: כרחק מזרח ממערב הרחיק ממנו את־ 12

ſuper Dominus eſt miſertus :filiis ſuper patrem miſereri Secundùm.noſtras prævaricationes

13 פשעינו: כרחם אב על־בנים רחם יהוה על־ 13

.nos pulvis quòd recordatus:noſtrũ figmentũ cognovit ipſe Quia.ipſum timentibus

14 יראיו: כי־הוא ידע יצרנו זכור כי־עפר אנחנו: 14

tranſivit ventus Quoniam .florebit ſic agri flos ſicut:ejus dies herba ſicut Hominis

15 אנוש כחציר ימיו כציץ השדה כן יציץ: כי רוח עברה־ 16

Domini miſericordia Et .ejus locus amplius eum cognoſcet non & : ipſe non &,eum in

16 בו ואיננו ולא־יכירנו עוד מקומו: וחסד יהוה 17

Cuſtodientibus .filiorum filiis ej⁹ juſtitia &:eũ timentes ſup ſeculum in uſq; & ſeculo à

17 מעולם ועד־עולם על־יראיו וצדקתו לבני בנים: לשמרי 18

paravit cœlis in Dominus.ea faciendũ ad,ej⁹ præceptorum recordantibus & :ejus pactum

18 בריתו ולזכרי פקדיו לעשותם: יהוה בשמים הכין 19

, ejus angeli Domino Benedicite .dominatum eſt omnes in ipſius regnum &:ſuum thronum

19 כסאו ומלכותו בכל משלה: ברכו יהוה מלאכיו 20

Domino Benedicite .ejus verbi voce in audiendum ad :ej⁹ verbum facientes robore fortes

20 גברי כח עשי דברו לשמע בקול דברו: ברכו יהוה 21

omnia Domino Benedicite .ej⁹ voluntatem facientes,ej⁹ miniſtri:ej⁹ exercit⁹ omnes

21 כל־צבאיו משרתיו עשי רצונו: ברכו יהוה כל־ 22

.Domino mea anima benedic :ejus dominationis locis omnibus in ,ejus opera

22 מעשיו בכל־מקמות ממשלתו ברכי נפשי את־יהוה:

תרגום TARGUM.

2 בריכי נפשי ית שמא דיי ולא תתנשי ית

3 כל חסולוי: דשבק לכל עוייכי דמסי לכל

4 מרעיכי: דפרק מגהנם חייכי דאכלל יתיכי

5 חסדא ורחמי: דמסבע בטובא יומי סבותיכי

ולעלמא דאתי תחדת היך נשרא טליותיכי:

6 עבד צדקתא יי ודינין לכל טלומין: גלי 7

ארחתיה למשה לבני ישראל עובדוי:

8 רחמנא וחננא יי מרחיק רגז ומסגי למעבד

9 טבון וקשוט: לא לעלמין ינצי ולא לעלם

10 ינטור דבבו: לא כחובנא עבד לנא ולא

11 כעויתנא שלם לנא: ארום היך גביהין שמיא

מעלוי ארעא הכדין גבר טוביה על דחלוי:

12 היך דרחיק מדנחא מן מערבא הכדין ארחיק

13 מננא ית סורחננא: היך די רחם אבא על

14 בניא הכדין רחם יי על דחלוי: ארום

הוא ידע יצרנא בישא דמחטי יתנא דכיר

15 קדמוי ארום מן עפרא אנחנא: בר נש היך

עסבא יומיה היך נצא דחקלא הכדין יניץ:

16 ארום ועפא נתבת ביה וליתוי ולא אשתמודעיה

17 תוב אתריה: וחסדא דיי מן עלמא ועד

עלמא דאתי על דחלוי וצדקתיה לבני בנין:

18 לנטרי קימיה ולדכרי פקודוי למעבדהון: יי 19

בשמי מרומא אתקין כורסיה ומלכותיה בכולא

20 שלטא: בריכו שמא דיי מלאכוי דמתגברין

בחילא עבדי מלוליה למשמע קל מלוליה:

21 בריכו שמא דיי כל חילוי משמשנוי דעבדי

22 רעותיה: בריכו שמא דיי כל עובדוי בכל אתר

שולטניה בריכי נפשא ית שמא דיי:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Benedic anima mea nomini Domini,& non obliviſcaris omnium retributionum ejus. Qui remittit omnes iniquitates tuas, qui ſanat omnes infirmitates tuas. Qui redimit à gehenna vitam tuam : qui coronavit te miſericordia & miſerationibus. Qui ſatiat bonis dies ſenectutis tuæ, & in mundo venturo renovabis ſicut aquila juventutem tuam. Faciet juſtitiam Dominus, & judicia omnibus injuriam patientibus. Revelavit vias ſuas Moſſeh; filiis Iſrael opera ſua. Miſericors & clemens Dñs, alienus ab ira, & multiplicans facere miſericordias, & veritatem. Non in perpetuum concertabit, neque in æternum reſervabit odium. Non ſecundùm peccata noſtra fecit nobis, neque ſecundùm iniquitates noſtras retribuit nobis. Quoniam quanto celſiores ſunt cœli terra,tanto prævaluit benignitas ejus ſuper timentes eum. Quantum longè eſt Oriens ab Occidente, tantum longè fecit à nobis iniquitates noſtras. Sicut miſeretur pater filiorum,ſic miſeretur Domin⁹ timentiũ ſe. Quoniam *ipſe novit concupiſcentiã noſtri pravam*,quæ in *peccatum* abripit nos : memoratur coram eo quòd ex pulvere ſumus. Filii hominis ſicut herba ſunt dies; ſicut flos agri ſic efflorebit. Quoniam ventus impetuoſus ſpiravit in eum : & non ſubſiſtit ; neque notus eſt amplius locus ejus. Miſericordia autem Dñi à ſeculo,& uſque ad ſeculum venturum ſuper timentes eum, & juſtitia ejus in filios filiorum, Servantibus pactum ejus, & his qui recordantur mandatorum ej⁹ ut faciant ea. *Domin⁹ in cœlis excelſis* paravit ſedem ſuam : & regnum ejus in omnia poteſtatem habet. Benedicite nomini Dñi angeli ejus,qui valetis viribus exequentes eloquium ejus, ut audiatur vox ſermonis ejus. Benedicite nomini Domini omnes exercitus ejus, miniſtri ej⁹ facientes voluntatem ipſi⁹. Benedicite nomini Dñi omnia opera ej⁹, in omni loco principatus ejus eſt : benedic anima mea nomini Dñi.

PSAL. CIV. קד

glor'am :vehementer es magnificatus mi Deus Domine ; Domino mea anima Benedic

1 ברכי נפשי את־יהוה יהוה אלהי גדלת מאד הוד 1

.cortinã ſicut cœlos extendens:veſtimento ſicut lumine te Amiciens .es indutus decorē &

2 והדר לבשת: עטה אור כשלמה נוטה שמים כיריעה: 2

קד

1 בריכי נפשי ית שמא דיי אלהי אתגדלתא

2 לחדא שבחא ושבהורא אלבישתא: דמתעטף

נהורא היך סדינא דמתח שמיא היך יריעתא:

PSAL. CIV.

BEnedic anima mea nomini Dñi : Deus meus magnificatus es valdè,laudem & pulchritudinem induiſti. Qui amicitur lumine ſicut linteo,qui extẽdit cœlos ſicut cortinam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 ܒܪܟܝ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܛܥܝܢ ܟܠܗܘܢ ܦܘܪܥܢܘܗܝ: * ܕܫܒܩ ܠܟܝ ܟܠܗ ܚܘܒܝܟܝ. *

3 ܘܡܐܣܐ ܟܠܗܘܢ ܟܘܪܗܢܝܟܝ: * ܦܪܩ ܠܟܝ ܡܢ ܚܒܠܐ. ܘܡܥܛܪ ܠܟܝ ܒܛܝܒܘܬܐ ܘܒܪܚܡܐ: 4

5 * ܘܡܣܒܥ ܒܛܒܬܐ ܓܘܫܡܟܝ. ܘܡܚܕܬ ܐܝܟ ܢܫܪܐ ܛܠܝܘܬܟܝ: * ܥܒܕ ܙܕܝܩܘܬܐ ܡܪܝܐ. 6

ܘܕܝܢܐ ܠܟܠܗܘܢ ܕܥܠܝܒܝܢ: * ܘܚܘܝ ܐܘܪܚܬܗ ܠܡܘܫܐ. ܘܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܥܒܕܘܗܝ: 7

8 * ܡܪܚܡܢ ܗܘ ܘܚܢܢ ܡܪܝܐ. ܢܓܝܪ ܪܘܚܐ ܘܣܓܝ ܛܝܒܘܬܗ: * ܡܛܠ ܕܠܐ ܠܥܠܡ

9 ܠܥܠܡܝܢ. ܘܠܐ ܠܥܠܡ ܢܛܪ ܪܘܓܙܗ: * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܐܝܟ ܚܛܗܝܢ ܥܒܕ ܥܡܢ. ܘܠܐ ܐܝܟ 10

ܥܘܠܢ ܦܪܥܢ: * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܕܪܡܝܢ ܫܡܝܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܗܟܢܐ ܥܫܢܬ ܛܝܒܘܬܗ ܥܠ 11

12 ܕܚܠܘܗܝ: * ܘܐܝܟ ܕܪܚܝܩ ܡܕܢܚܐ ܡܢ ܡܥܪܒܐ. ܐܪܚܩ ܡܢܢ ܥܘܠܢ: * ܘܐܝܟ ܕܡܪܚܡ 13

ܐܒܐ ܥܠ ܒܢܝܐ. ܡܪܚܡ ܡܪܝܐ ܥܠ ܕܚܠܘܗܝ: * ܡܛܠ ܕܗܘ ܝܕܥ ܓܒܠܢ. ܘܐܬܕܟܪ ܕܥܦܪܐ 14

ܚܢܢ: * ܒܪܢܫܐ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܝܘܡܘܗܝ. ܘܐܝܟ ܗܘܝܐ ܕܚܩܠܐ ܗܟܢܐ ܢܦܪܥ: * ܕܟܕ ܢܫܒܬ 15 16

ܒܗ ܪܘܚܐ ܠܝܬܘܗܝ. ܘܠܐ ܡܫܬܘܕܥ ܐܬܪܗ: * ܛܝܒܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܢ ܥܠܡ ܗܝ. 17

ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ ܥܠ ܕܚܠܘܗܝ: ܘܙܕܝܩܘܬܗ ܥܠ ܒܢܝ ܒܢܝܗܘܢ. * ܠܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ ܩܝܡܗ: 18

ܘܥܗܕܝܢ ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܘܥܒܕܝܢ ܠܗܘܢ. * ܡܪܝܐ ܒܫܡܝܐ ܡܬܩܢ ܟܘܪܣܝܗ: 19

ܘܡܠܟܘܬܗ ܒܟܠ ܫܠܝܛܐ. * ܒܪܟܘ ܠܡܪܝܐ ܡܠܐܟܘܗܝ: ܕܥܫܝܢ ܒܚܝܠܐ ܘܥܒܕܝܢ 20

ܦܘܩܕܢܘܗܝ. * ܒܪܟܘ ܠܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܚܝܠܘܗܝ: ܘܡܫܡܫܢܘܗܝ ܕܥܒܕܝܢ ܨܒܝܢܗ. 21

* ܒܪܟܘ ܠܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ: ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ ܫܘܠܛܢܗ. ܒܪܟܝ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ. 22

* ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܪܫ ܡܥܠܬܐ *   * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܕ *

* ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܙܠ ܕܢܣܓܘܕ ܩܕܡ ܐܪܘܢܐ ܕܡܪܝܐ ܥܡ ܟܗܢܐ. ܘܥܠܝܢ ܡܠܦ ܠܢ 1

ܬܘܕܝܬܐ ܘܬܫܡܫܬܐ. ܘܪܡܙ ܠܢ ܥܠ ܬܘܩܢܐ ܕܒܪܝܬܐ. ܘܥܠ ܡܠܐܟܐ ܡܚܘܐ.

ܦܐܝܘܬܐ ܠܒܫܬ: ܒܪܟܝ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ. ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܪܒܬ ܠܚܕ: ܘܗܕܪܐ

ܘܥܛܦܬ ܢܘܗܪܐ ܐܝܟ ܡܪܛܘܛܐ: ܘܡܬܚ ܫܡܝܐ ܐܝܟ ܝܪܝܥܬܐ. * ܘܗܕܪܐ ܠܒܫܬ. 2

Benedic anima mea Dño, & ne obliviſcaris omnium retributionum ejus;Siquidem remittit tibi omne crimen tuũ,et ſanat cunctos languores tuos:Liberat te à corruptione,fulcit te bonitate ac miſericordiâ : Satiat bonis corpus tuũ,& renovat ſicut aquilæ juventutem tuam. Reddit juſtitiam Dñs & judiciũ omnibus oppreſſis. Oſtendit vias ſuas Moſi,& filiis Iſrael opera ſua. Miſericors eſt ac benignus Dñs longanimis,& copioſæ bonitatis. Non enim retinet odium in æternum, neque in perpetuũ ſervat irã ſuam ; Quoniam haud quidem juxta peccata noſtra tractavit nos, neque ſecundum ſcelus noſtrũ retribuit nobis. Nam prout altiores ſunt cœli terrâ, ſic magna bonitas ejus erga timentes eum : Et quam longè diſtat ortus ab occaſu,tam longè fecit à nobis iniquitatē noſtram : Utque miſeretur pater filiorũ ,miſeretur Dñs timentiũ eum. Ipſe enim novit maſſam noſtrã, & recordatus eſt pulverem nos eſſe. Hominis ætas fœno ſimilis:& ſicut herba campi,ſic germinat : Quæ cùm perflaverit in eam ventus, haud exſtat, nec cognoſcitur locus ejus. Benignitas Dñi ab æterno eſt,& uſq; in ſempiternũ ſuper timentes ipſum; & juſtitia ejus erga filios filiorum eorum : Erga illos qui ſervant pactũ ejus & memores ſunt mandatorũ ipſius & peragunt illa. Domini ſolium eſt in cœlo firmatum & regnum ipſius in omnia dominans. Benedicite Dño angeli ejus, qui polletis viribus atque exequimini mandata ejus, Benedicite Domino cuncti exercitus ejus & miniſtri ipſius,qui perficitis voluntatem ejus. Benedicite Dño omnia opera ejus;quoniam in tota terrã dominiũ ejus. Benedic anima mea Dño.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. CIV.

Davidis. Quum iret ad adorandum coram arca Domini unà cum ſacerdotibus. Super autem ad nos, docet nos confeſſionem & orationem. Et innuit nobis conſtitutionem creaturarũ. Déque angelis inſinuat.

BEnedic anima mea Domino : nam Dominus Deus meus magnificatus eſt vehementer;ſplendorem atque decus induit, Tegit ſe luce tanquam veſtimento:extendit cœlos quaſi tentorium :

Versio VULG. LAT.

2 Benedic anima mea Domino: & noli
3 oblivisci omnes retributiones ej⁹. Qui
propitiatur omnibus iniquitatibus tu-
is: qui sanat omnes infirmitates tuas.
4 Qui redimit de interitu vitam tuam:
qui coronat te in misericordia & mi-
5 serationibus. Qui replet in bonis de-
siderium tuum: renovabitur ut aquilæ
6 juventus tua. Faciēs misericordias Do-
minus, & judicium omnibus injuriam
7 patientibus. Notas fecit vias suas Moy-
8 si, filiis Israel voluntates suas. Misera-
tor, & misericors Dominus: longani-
9 mis, & multùm misericors. Nō in per-
petuum irascetur: neque in æternum
10 comminabitur. Non secundùm pecca-
ta nostra fecit nobis: neque secundùm
iniquitates nostras retribuit nobis.
11 Quoniam secundùm altitudinem cœli
à terra, corroboravit misericordiam
12 suam super timentes se. Quantum di-
stat Ortus ab Occidente: longè fecit
13 a nobis iniquitates nostras. Quomodò
miseretur pater filiorum, misertus est
14 Dominus timentibus se: Quoniā ipse
cognovit figmentū nostrū. Recordat⁹
15 est quoniam pulvis sumus: Homo, sicut
fœnum dies ejus, tanquàm flos agri sic
16 efflorebit. Quoniam spiritus pertrans-
ibit in illo, & non subsistet: & nō cog-
17 noscet ampliùs locum suum: Miseri-
cordia autē Domini ab æterno, & us-
que in æternum super timentes eum.
18 Et justitia illius in filios filiorum, His
qui servant testamentum ejus: Et me-
mores sunt mādatorū ipsi⁹, ad facien-
19 dum ea. Dñs in cœlo paravit sedē su-
am: & regnum ipsius omnibus domi-
20 nabitur. Benedicite Dño omnes an-
geli ejus: potentes virtute, facientes
verbū illius, ad audiendam vocē ser-
21 monū ejus. Benedicite Dño omnes
virtutes ej⁹: ministri ej⁹, qui facitis vo-
22 luntatē ej⁹. Benedicite Dño omnia o-
pera ejus: in omni loco dominationis
ejus. Benedic anima mea Domino.

Ipsi David. CIII.

1 BEnedic anima mea Domino. Dñe
Deus meus, magnificatus es vehemen-
ter. Confessionē, & decorē induisti:
2 Amictus lumine sicut vestimento: Ex-
tendens cœlum sicut pellem:

Versio GRÆCA LXX. Interp.

2 † Εὐλόγει ἡ ψυχή μου τὸν κύριον, † καὶ μὴ ἐπιλανθά-
3 νου πάσας τὰς (α) αἰνέσεις αὐτοῦ· † Τὸν εὐιλατεύ-
οντα πάσαις ταῖς ἀνομίαις σου, † τὸν ἰώμενον πάσας
4 τὰς νόσους σου, † Τὸν λυτρούμενον ἐκ φθορᾶς τὴν ζω-
ήν σου, † τὸν στεφανοῦντά σε ἐν ἐλέει καὶ οἰκτιρμοῖς, †
5 Τὸν ἐμπιπλῶντα ἐν ἀγαθοῖς τὴν ἐπιθυμίαν σου· †
6 ἀνακαινισθήσεται ὡς ἀετοῦ ἡ νεότης σου. † Ποιῶν ἐ-
λεημοσύνας ὁ κύριος, † καὶ κρίμα πᾶσι τοῖς ἀδικου-
7 μένοις. † Ἐγνώρισε τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ τῷ Μωυσῇ, †
8 τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ τὰ θελήματα αὐτοῦ· † Οἰκτίρμων
9 καὶ ἐλεήμων ὁ κύριος, † μακρόθυμος καὶ πολυέλεος (β).
† Οὐκ εἰς τέλος ὀργισθήσεται, † οὐδὲ εἰς τὸν αἰῶνα
10 μηνιεῖ. † Οὐ κατὰ τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν ἐποίησεν ἡμῖν, †
οὐδὲ κατὰ τὰς ἀνομίας ἡμῶν ἀνταπέδωκεν ἡμῖν. †
11 † Ὅτι κατὰ τὸ ὕψος τοῦ οὐρανοῦ ἀπὸ τῆς γῆς, † ἐ-
κραταίωσε κύριος τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἐπὶ τοὺς φοβουμέ-
12 νους αὐτόν. † Καθόσον ἀπέχουσιν ἀνατολαὶ ἀπὸ δυ-
σμῶν, † ἐμάκρυνεν ἀφ' ἡμῶν τὰς ἀνομίας ἡμῶν. †
13 Καθὼς οἰκτείρει πατὴρ υἱούς, † (γ) ᾠκτείρησε κύρι-
14 ος τοὺς φοβουμένους αὐτόν. † Ὅτι αὐτὸς ἔγνω τὸ
15 πλάσμα ἡμῶν, † (δ) μνήσθητι ὅτι χοῦς ἐσμεν. † Ἄν-
θρωπος, ὡσεὶ χόρτος αἱ ἡμέραι αὐτοῦ, † ὡσεὶ ἄν-
16 θος τοῦ ἀγροῦ οὕτως ἐξανθήσει. † Ὅτι πνεῦμα δι-
ῆλθεν ἐν αὐτῷ, καὶ οὐχ ὑπάρξει, † καὶ οὐκ ἐπιγνώσεται
17 ἔτι τὸν τόπον αὐτοῦ. † Τὸ δὲ ἔλεος τοῦ κυρίου ἀπὸ
τοῦ αἰῶνος † καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος ἐπὶ τοὺς φοβουμένους
18 αὐτόν· † καὶ ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ ἐπὶ υἱοὺς υἱῶν, † Τοῖς
φυλάσσουσι τὴν διαθήκην αὐτοῦ, † καὶ μεμνημένοις τῶν
19 ἐντολῶν αὐτοῦ τοῦ ποιῆσαι αὐτάς. † Κύριος ἐν τῷ
οὐρανῷ ἡτοίμασε τὸν θρόνον αὐτοῦ, † καὶ ἡ βασιλεία
20 αὐτοῦ πάντων δεσπόζει. † Εὐλογεῖτε τὸν κύριον
πάντες ἄγγελοι αὐτοῦ, † δυνατοὶ ἰσχύϊ ποιοῦντες
τὸν λόγον αὐτοῦ, † τοῦ ἀκοῦσαι τῆς φωνῆς τῶν λόγων αὐ-
21 τοῦ. † Εὐλογεῖτε τὸν κύριον πᾶσαι αἱ δυνάμεις αὐ-
τοῦ, † λειτουργοὶ αὐτοῦ ποιοῦντες (ε) τὰ θελήματα
22 αὐτοῦ. † Εὐλογεῖτε τὸν κύριον πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ,
† ἐν παντὶ τόπῳ τῆς (ζ) δυναστείας αὐτοῦ· † εὐλόγει
ἡ ψυχή μου τὸν κύριον.

MS. A. (α) ἀνταποδόσεις (β) καὶ ἀληθινός. Οὐκ (γ) οἰκτείρησεν (δ) ἐμνήσθη (ε) τὸ θέλημα (ζ) δεσποτίας

(*) Τῷ Δαυίδ. ργ΄.

1 † ΕὐΛόγει ἡ ψυχή μου τὸν κύριον. † κύριε ὁ Θεός
μου ἐμεγαλύνθης σφόδρα· † ἐξομολόγησιν καὶ (α)
2 εὐπρέπειαν ἐνεδύσω, † Ἀναβαλλόμενος φῶς ὡς ἱ-
μάτιον, † ἐκτείνων τὸν οὐρανὸν ὡσεὶ δέρριν.

MS. A. (*) Τοῦ (α) μεγαλοπρέπειαν

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

Benedic anima mea Dominum: et no- 2
li oblivisci omnes (b) laudationes ej⁹.
3 Qui [b] propitius fit omnibus ini- 3
quitatibus tuis: qui sanat [c] omnes
infirmitates tuas. 4 Qui redimit de 4
corruptione vitam tuam: qui coro-
nat te in misericordia et (c) misera-
tionibus: 5 Qui satiat [d] in bonis 5
desiderium tuum. Renovabitur, sicut
aquilæ juventus tua. 6 Faciens mi- 6
sericordias Dominus, et judicium
omnibus injuriam patientibus. 7 No- 7
tas fecit vias suas Moysi, filiis Is-
raël voluntates suas. 8 Miserator, 8
et misericors Dominus: longanimis,
et multæ misericordiæ [e]. 9 Non 9
in finem irascetur: neq; in æternum
(d) indignabitur. 10 Non secundùm 10
peccata nostra fecit nobis; neque se-
cundū iniquitates nostras retribuit
nobis. 11 Quoniam secundùm alti- 11
tudinem cœli à terra, corroboravit
Dominus misericordiā suam super
timentes eum. 12 Quantum distat 12
Ortus ab Occidente, longè fecit à no-
bis iniquitates nostras. 13 Quomo- 13
dò miseretur pater filiorū, misertus
est Dominus timentibus eum: Quo- 14
niam ipse cognovit figmentum no-
strum. 14 (e) Memento [f] quòd pul-
vis sumus: Homo, sicut fœnum, dies 15
ejus: sicut flos agri, ita efflorebit. 15
Quoniam (f) spiritus pertransibit in 16
eo, & [g] non subsistet: & non cog-
noscet amplius locum suum. 16 Mi- 17
sericordia autem Domini à seculo,
& in seculum super timentes eum:
17 & justitia ejus super filios filio-
rum, Custodientib⁹ testamentum ej⁹, 18
18 & memoriâ retinentibus man-
data ejus, ut faciant ea. 19 Domi- 19
nus in cœlo paravit sedem suam: et
[h] regnum ejus omnium (g) domi-
natur. 20 Benedicite Dominum [i] 20
omnes angeli ejus, [k] potentes for-
titudine, facientes verbum ejus [l]
ad audiendam vocem sermonum e-
jus. 21 Benedicite Dominum omnes 21
virtutes ejus, ministri ejus, qui fa-
citis [m] voluntates ejus. 22 Bene- 22
dicite Dominum omnia opera ejus,
in omni loco dominationis ejus. Be-
nedic anima mea Dominum.

Ipsi David CIII.

1 BENEDIC anima mea Domi- 1
num: Domine Deus meus, (a)
magnificatus es vehementer. 2 Confessionem, & (b [a] decorem induisti, Amictus lumine, 2
sicut vestimento, 3 [b] extendens cœlum, sicut pellem.

Versio ÆTHIOPICA.

ትባርክ፡ነፍስየ፡ለእግዚአብሔር፡፡ ወኢትረ 2
ሳዕ፡ኵሎ፡ሰብሐቲሁ፡፡=፡ ዘይሰሪ፡ለከ፡ኵ 3
ሎ፡ኃጢአተከ፡፡ ዘይፌውሰከ፡ለኵሉ፡ደ
ዌከ፡፡=፡ ዘያድኅና፡እሞስና፡ለሕይወትከ፡፡ 4
ዘይኬልለከ፡በሣህሉ፡ ወበምሕረቱ፡፡=፡ ዘ 5
ያጸግብ፡እምበረከቱ፡ለፍትወትከ፡፡ ዘይሔድ
ሳ፡ከመ፡ንስር፡ ለውርዙትከ፡፡=፡ ገባሬ፡ሣህ 6
ል፡እግዚአብሔር፡፡ ወይፈትሕ፡ለኵሉ፡ግፉ
ዓን፡፡=፡ አርአየ፡ፍናዊሁ፡ለሙሴ፡፡ ወለደ 7
ቂቀ፡እስራኤል፡ሥምረቶ፡፡=፡ መሐሪ፡ወመስ 8
ተሣህል፡እግዚአብሔር፡፡ ርሑቀ፡መዐት፡ ወ
ብዙኃ፡ምሕረት፡ወጻድቅ፡፡=፡ ኢይቀስፍ፡ 9
ወትረ፡ወኢይትመዐዕ፡ዘልፈ፡፡=፡ ወአኮ፡በከ 10
መ፡ኃጢአትነ፡ዘገብረ፡ለነ፡፡ ወኢፈደየነ፡በከ
መ፡አበሳነ፡፡=፡ ወበከመ፡ልዑል፡ሰማይ፡እመ 11
ድር፡፡ አጽንዓ፡ምሕረቶ፡እግዚአብሔር፡ላ
ዕለ፡እለ፡ይፈርህዎ፡፡=፡ ወበከመ፡ይርሕቅ፡ 12
ሠርቅ፡እምዐረብ፡፡ አርሐቀ፡እምኔነ፡ኃጢ
አተነ፡፡=፡ ወበከመ፡ይምህር፡አብ፡ውሉደ፡፡ 13
ከማሁ፡ ይምሕሮሙ፡ እግዚአብሔር፡ ለእ
ለ፡ይፈርህዎ፡፡ እስመ፡ውእቱ፡ያአምር፡ፍ 14
ጥረተነ፡፡=፡ ተዘከር፡እግዚኦ፡ከመ፡መሬት፡
ንሕነ፡፡ ወሰብእሰ፡ከመ፡ሣዕር፡መዋዕሊሁ፡፡
ወከመ፡ጽጌ፡ገዳም፡ከማሁ፡ይፈሪ፡፡=፡ እ 15
ስመ፡ መንፈስ፡ ይወፅእ፡ እምኔሁ፡ ወኢይሄ
ሉ፡እንከ፡፡ ወኢያአምር፡እንከ፡መካኖ፡፡=፡
ወሣህሉሰ፡ለእግዚአብሔር፡እምዓለም፡ ወ 16
እስከ፡ለዓለም፡፡ ዲበ፡እለ፡ይፈርህዎ፡፡=፡
ወጽድቁኒ፡ዲበ፡ትውልደ፡ትውልድ፡፡ ለእለ፡ 17
የዐቅቡ፡ሕጎ፡፡=፡ ወይዜክሩ፡ትእዛዞ፡ከመ፡ 18
ይግበሩ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡አስተደለወ፡ 19
መንበሮ፡በሰማያት፡፡ ወኵሉ፡ይኴንን፡በመን
ግሥቱ፡፡=፡ ባርክዎ፡ለእግዚአብሔር፡ኵል 20
ክሙ፡ መላእክቲሁ፡፡ ጽኑዓን፡ ወኃያላን፡ እ
ለ፡ትገብሩ፡ቃሎ፡፡ ወእለ፡ትሰምዑ፡ ቃለ፡
ነገሩ፡፡=፡ ይባርክዎ፡ለእግዚአብሔር፡ኵ 21
ሉ፡ኃይሉ፡፡ ላእኩ፡እለ፡ይገብሩ፡ፈቃዶ፡፡=፡
ይባርክዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ ኵሉ፡ ተግባ 22
ሩ፡፡ ውስተ፡ኵሉ፡በሐውርት፡መለኮቱ፡፡ ት
ባርክ፡ነፍስየ፡ለእግዚአብሔር፡፡=፡

ዘደዊት፡፡

፻፫ ትባርክ፡ነፍስየ፡ለእግዚአብሔር፡፡ እግ 1
ዚኦ፡አምላኪየ፡ጥቀ፡ዐቢይከ፡ፈድፋደ፡፡=፡
አሚን፡ ወዕበየ፡ስብሐት፡ ለበስከ፡፡ ወለበስ 2
ከ፡ ብርሃነ፡ ከመ፡ ልብስ፡፡=፡ ወረበብከ፡ 3
ለሰማይ፡ከመ፡ሠቅ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] condonat tibi omnes iniquitates tuas: [c] te de omnibus infirmitatibus tuis. [d] benedictionibus ejus desiderium tuum. [e] & justus. Non [f] Domine, quòd [g] proinde non subsistet: neque [h] omnibus dominabitur in regno suo. [i] vos omnes [k] potentes & fortes, qui facitis [l] & qui auditis [m] voluntatem PSAL. CIII. [a] magnificentiam gloriæ [b] concinnâsti cœlum,

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

2 * يا نفسي باركي الرب * ولا تنسي جميع مجازاته * الغافر لك جميع اثامك * الشافي جميع اسقامك 3
4 * المنقذ من الفساد حياتك * الذي يتوجك بالمراحم والرافة * المشبع من الخيرات شهواتك * 5
6 يتجدد شبابك مثل النسر * الرب هو الذي يصنع المراحم * والعدل لكل المظلومين * اظهر 7
8 لموسي طرقه * ولبني اسرايل ارادته * الرب هو رووف رحيم كثير الاناة والرحمة * لا يغضب 9
10 الي الغاية * ولا يسخط الي الابد * لم يصنع الينا كخطايانا * ولا كاثامنا نحن جازانا * بل كعلو 11
12 السماء من الارض * قوي الرب رحمته علي خائفيه * وكبعد المشارق من المغارب * ابعد عنا اثامنا
13 * وكما يتراف الاب علي بنيه * كذلك يتراف علي خائفيه * لانه عارف جبلتنا * اذكر يا رب انا تراب 14
15 * وان ايام الانسان مثل عشب الحقل * وكزهر الحقل هكذا يجف * فاذا هبت فيه الريح لا يوجد 16
17 ولا يعرف موضعه ايضا * فاما رحمة الرب فمنذ الازل * والي الابد علي خائفيه * وعدله علي بني
18 البنين * الحافظين عهده * الذاكرين وصاياه * العاملين بها * الرب اتقن كرسيه في السماء 19
20 ومملكته تسود الكل * باركوا الرب يا جميع ملايكته المقتدرين بقوتهم الصانعين كلمته عند
21 سماع صوت كلامه * باركوا الرب يا جميع قواته وخدمه الصانعين مشيته * باركوا الرب يا 22
جميع اعماله في كل موضع قوته * يا نفسي باركي الرب * اللليلويا *

1 المزمور المائة وثلاثة * لداود * وعدده * عح * استيخن *
2 يا نفسي باركي الرب * ايها الرب الاله لقد عظمت جدا * لبست الشكر وعظم البهاء اشتملت
بالنور كالرداء * الذي مد السماء مثل الخيمة

O anima mea benedic Domino, & ne obli- 2
viscaris omnes retributiones ejus: Condo- 3
nantis tibi omnes iniquitates tuas, sanan-
tis omnes morbos tuos: Redimentis de cor- 4
ruptione vitam tuam: qui te coronat mise-
rationibus & clementiâ: Satiat bonis de- 5
sideria tua: Renovabitur juventus tua ut
aquilæ. Dominus est qui facit misericor- 6
dias & justitiam omnibus oppressis. Os- 7
tendit Mosi vias suas, & filiis Israel vo-
luntatem suam. Dominus est clemens, mi- 8
sericors, abundans patientiâ & misericor-
diâ. Non irascetur usque ad extremum, 9
neque excandescet in perpetuū. Non fecit 10
nobis secundùm peccata nostra, neque se-
cundùm delicta nostra retribuit nobis, Sed 11
prout altum est cœlum à terra, corrobora-
vit Dominus misericordiam suam erga ti-
mentes se. Et prout distant Orientales pla- 12
gæ ab Occidentalibus, elongavit à nobis ini-
quitates nostras. Et quemadmodum pro- 13
pitiatur pater filiis suis, ita propitius est
erga timentes se: Quoniā ipse cognoscens 14
est figmentum nostrum. Memento, O Do-
mine, nos pulverem esse, Et quòd dies ho- 15
minis similes sunt herbæ campi: & ut flos
agri, sic arescat: Quumq; flaverit in eum 16
ventus, non inveniatur, neque agnoscatur
locus ejus ampliùs. At verò misericordia 17
Domini est ab æterno & usq; in æternum
erga timentes eum, & justitia illius erga
filios filiorum Custodientiū pactū ipsius, 18
memoriæ mādatorū ipsius, operantiū illa.
Dominus firmavit sedem suā in cœlo, & 19
regnum ejus dominatur in omnia. Bene- 20
dicite Dominū, O omnes Angeli ejus, poten-
tes in fortitudine sua, facientes verbum il-
lius statim atque audiunt vocem sermonis
ejus. Benedicite Dominū O omnes virtutes 21
ejus, et ministri ejus facientes voluntatem
ipsius. Benedicite Dominū O omnia opera 22
ejus in omni loco potentiæ illius. O anima
mea, benedic Dominum. Alleluja.

PSAL. CIII.

Davidis. Et numerus ver. 78.

O Anima mea, benedic Domino. O Domi- 1
ne Deus, jā magnificatus es vehemēter.
Indutus es confessione et summo decore: ami- 2
ctus es lumine quasi pallio: qui extendis
cœlum sicut tentorium:

תהלים: קד

alas super ambulans : suum currum nubes ponens ,sua cœnacula aquis in Contignans
המקרה במים עליותיו השם עבים רכובו המהלך על־כנפי 3
Fundavit .flagrantem ignem suos ministros : spiritus suos angelos Faciens .venti
4 רוח: עשה מלאכיו רוחות משרתיו אש להט: יסד־ 5
vestimento sicut Abysso .perpetuò & ,seculum nutet ne : ejus bases super terram
ארץ על־מכוניה בל־תמוט עולם ועד: תהום כלבוש 6
voce à : fugient tua increpatione Ab .aquæ stabunt montes super : eam operuisti
כסיתו על־הרים יעמדו מים: מן־גערתך ינוסון מן־קול 7
quem locum ad : valles descendent ,montes Ascendent .præcipites ferentur tui tonitrui
רעמך יחפזון: יעלו הרים ירדו בקעות אל־מקום זה 8
operiendū ad revertantur ne : transeant ne posuisti Terminum .eis fundasti
יסדת להם: גבול־שמת בל־יעברון בל־ישובון לכסות 9
omni Propinabunt .ibunt montes inter :convallib⁹ in fontes Mittens .terram
10 הארץ: המשלח מעינים בנחלים בין הרים יהלכון: ישקו כל־ 11
cœli volatile eos Super .suam sitim onagri frangent : agri bestiæ
חיתו שדי ישברו פראים צמאם: עליהם עוף־השמים 12
:suis cœnaculis de montes Adaquans .vocem dabunt frondes inter ex : habitabit
ישכון מבין עפאים יתנו־קול: משקה הרים מעליותיו 13
,jumento herbam faciens Germinare .terra satiabitur tuorū operum fructu de
מפרי מעשיך תשבע הארץ: מצמיח חציר לבהמה 14
.terra de panem educendum ad : hominum obsequium ad herbam &
ועשב לעבדת האדם להוציא לחם מן־הארץ:
hominis cor panem & :oleo ab facies faciendū nitere ad,hominis cor exhilarabit vinum Et
ויין ישמח לבב־אנוש להצהיל פנים משמן ולחם לבב־אנוש 15
.plantavit quas Lebanon cedri : DOMINI ligna Saturabuntur .sustentabit
יסעד: ישבעו עצי יהוה ארזי לבנון אשר נטע: 16
excelsi Montes .ejus domus abietes ciconia : nidificent aves ibi Ut
17 אשר־שם צפרים יקננו חסידה ברושים ביתה: הרים הגבהים 18
: tempora stata in lunam Fecit .cuniculis refugium petræ : ibicibus
ליעלים סלעים מחסה לשפנים: עשה ירח למועדים 19
repet ipsa in : nox fuit & ,tenebrositatem Pones .suū occasum cognovit sol
שמש ידע מבואו: תשת־חשך ויהי לילה בו־תרמש 20
quærendū ad & : prædam ad rugientes Leunculi .sylvestris bestia omnis
כל־חיתו־יער: הכפירים שאגים לטרף ולבקש 21
suis habitaculis in & : se congregabunt ,sol Orietur .suam escam Deo à
מאל אכלם: תזרח השמש יאספון ואל־מעונתם 22
.vesperam ad usque suā culturam ad & : suū opus ad homo Egredietur .accubabunt
ירבצון: יצא אדם לפעלו ולעבדתו עדי־ערב: 23
: fecisti sapientia in ipsa omnia ,DOMINE tua opera sunt multiplicata Quàm
מה־רבו מעשיך יהוה כלם בחכמה עשית 24
;manibus latum & magnum mare Hoc .tua possessione terra est impleta
מלאה הארץ קנינך: זה הים גדול ורחב ידים 25
naves Ibi .magnis cum pusillæ bestiæ : numerus non & ,reptile ibi
שם־רמש ואין מספר חיות קטנות עם־גדלות: שם אניות 26
.eo in ludendum ad formâsti iste Leviathan ; ambulabunt
יהלכון לויתן זה־יצרת לשחק־בו:

תרגום TARGUM.

3 דטלל במיא היך בנינא דכשורי אכסדרוי
דשוי עננין ארתיכיה על עננין קלילין היך
4 כנפי נשרא: דעבד אזגדוי סרהובין היך רוחא
5 שמשוי תקיפין היך אשא מצלהבא: די מיסד
ארעא עלוי בסיסה דלא תזוע לעלמי עלמין:
6 תהומא כד בלבושא חפיתה ומבועין על טוריא
7 וקימין מיא: מן מזופיתך יערקון למנד מן קל
8 אכליותך יתבהלון למשפך: יסלקון מן תהומא
לטוריא ונחתין בבקעתא לאתר דנן דיסדתא
9 להון: תחום שויתא לגללי ימא די לא
10 יעברון די לא יתובון למחפי ארעא: די משלח
11 מעיני בנהרותא ביני טוריא מהלכין: משקין
כל חיות ברא יתברון ערודיא צחותהון:
12 עלויהון צפרי שמיא ישרון מביני אוזיא יתנון
13 קל ומר: דמשקי טוריא מן בירת גנזי עלאי די
14 לידיה מן עובדיך תשבע ארעא: דמרבי עסבא
לבעירי וירקי לפולחנא דבר נשא למפק
15 לחמא מן ארעא: וחמרא דמחדי לבא דבר
נשא לאנהרא אפיא מן משחא ולחמא לבא
16 דבר נשא יסעד: שבעין אילניא די ברא יי ארזי
17 לבנן די נציב: די תמן צפריא עבדין שרכפי
18 ותאבראתי בית מדורה: טוריא רמיא ליעלי
19 כיפי רוחצן לטפויא: עבד סיהרא לממני
20 ביה זמניא שמשא ידע עידן טמועיה: תשוי
חשוך והוי ליליא ביה רחשן כל חיות חורשא:
21 בני אריון אכלין למשכח מזונא ולמבעי מן
22 אלהא מיכלהון: תדנח שמשא מתכנשין
23 ולבית מדורהון רבעין: יפוק בר נשא לעובדיה
24 ולפולחניה עד עדובי רמשא: מה סגיעין הנון
עובדך יי כולהון בחכמתא עבדתא מליא
25 ארעא קנינך: דנן ימא רבא ופתי תחומין תמן
ריחשא ולית מנין חיותא זעירתא עם רברבתא:
26 תמן אלפיא אזלין לויתן דין בריתא למנחך
ביה לצדיקיא בסעודת בית מדוריה:

PARAPH. CHALD. Vers. L

Qui operit aquis veluti contignatione trab
um *atria* sua : qui ponit *nubes* vehiculum
suum : [*qui obambulat*] super nubes velo
ces instar alarum aquilæ. Qui facit nuncio
suos veloces sicut spiritus , ministros suo
fortes sicut ignis flammicans. Qui funda
terram super basim suam, ne commoveat
in secula seculorum. Abyssum veluti v
stimento operuisti, & erumpunt supe
montes, stantque aquæ. Ab increpatio
ne tua fugient ut sese contrahant : à voc
tonitrui tui conturbabuntur ut diffunda
tur. Ascendunt de abyssis ad montes,
descendunt in valles ad locum istum que
fundâsti eis. Terminum posuisti fluctib
maris, quem non transgredientur, ne reve
tantur ut operiant terram. Qui emittit fo
tes in fluvios, qui inter montes commean
Potum suppeditant omnibus animalib
agri : infringent onagri sitim suam.
xta eos volucres cœli habitabunt : de me
dio ramusculorum edent vocem cantus. Q
irrigat montes de domo thesaurorum su
riorum suiipsius : de *operibus tuis satiabitur*
terra. Multiplicans fœnum jumentis,
herbas servituti hominum, ad producen
alimentum de terra. Et vinum quod læt
cat cor hominum , ad illuminandas fac
oleo: & panis cor filiorum hominum fulc
tabit. Saturantur arbores quas creavit D
minus ; cedri Libani quas plantavit. I
enim aves faciunt nidos : ciconiæ abietes d
mus habitationis ipsius sunt. Montes exc
ibicibus : petræ refugium cuniculis. Fe
Lunam ut numerentur in ea tempora : S
novit tempus occasus sui. Posuisti teneb
& fuit nox : in ipsa moventur omnes be
sylvæ. Catuli leonum rugiunt ut invena
nutrimentum, et ut requirant à Deo cib
suum. Oriente Sole congregabuntur, &
domo latibulorum suorum accubab
Egredietur homo ad opus suum, & ad c
turam suam usque ad *mixturas vesper*
nas. Quàm multa sunt opera tua Domi
illa omnia in sapientia fecisti : plena
terra possessione tua. Hoc mare magn
& spatiosum terminis : illic sunt rept
innumera, animalia parva cum magnis. I
naves pertranseunt, [*ibi*] Leviathan
quem creâsti ut ludat in eo, *pro justis in co*
vivium domus habitaculi sui.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 : ܕܒܢܐ ܒܡܝܐ ܡܥܡܪܘܗܝ: ܘܣܡ ܥܠ ܥܢܢܐ ܡܪܟܒܬܗ. ܘܡܗܠܟ ܥܠ ܟܢܦܝ ܪܘܚܐ: *
4 * ܕܥܒܕ ܡܠܐܟܘܗܝ ܪܘܚܐ. ܘܡܫܡܫܢܘܗܝ ܢܘܪܐ ܝܩܕܐ: * ܫܬܐܣ ܐܪܥܐ ܥܠ ܫܬܐܣܝܗ. ܕܠܐ
5
6 ܬܙܘܥ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ: * ܬܗܘܡܐ ܐܝܟ ܡܪܛܘܛܐ ܟܣܝܬܝܗ. ܘܥܠ ܛܘܪܐ ܩܡܘ ܡܝܐ:
7 * ܡܢ ܟܐܬܟ ܥܪܩܝܢ. ܘܡܢ ܩܠܐ ܕܪܥܡܟ ܡܬܕܠܘܚܝܢ: * ܣܠܩܘ ܛܘܪܐ ܘܢܚܬܘ ܦܩܥܬܐ.
8
9 ܠܐܬܪܐ ܕܐܬܩܢܬ ܠܗܘܢ: * ܬܚܘܡܐ ܣܡܬ ܠܗܘܢ. ܕܠܐ ܢܥܒܪܘܢ. ܘܢܬܟܣܘܢ ܠܐܪܥܐ: * ܫܕܪܬ
10
11 ܡܒܘܥܐ ܒܢܚܠܐ. ܘܒܝܢܬ ܛܘܪܐ ܢܗܠܟܘܢ: * ܢܫܬܘܢ ܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. ܘܡܣܬܒܥܝܢ
12 ܚܡܪܐ ܕܨܗܝܢ: * ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܥܠܝܗܘܢ ܫܪܝܐ. ܡܢ ܡܨܥܬ ܛܘܪܐ ܢܬܠܘܢ ܩܠܐ: * ܡܫܩܐ
13
14 ܛܘܪܐ ܡܢ ܡܫܪܝܘܗܝ. ܘܡܢ ܦܐܪܐ ܕܥܒܕܝܟ ܬܣܒܥ ܐܪܥܐ: * ܡܦܩ ܥܣܒܐ ܠܒܥܝܪܐ.
15 ܘܝܪܩܐ ܠܦܘܠܚܢܗ ܕܒܪܢܫܐ: ܠܡܦܩܘ ܠܚܡܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. * ܘܚܡܪܐ ܡܚܕܐ ܠܒܗ ܕܒܪܢܫܐ.
16 ܘܡܢܗܪ ܐܦܘܗܝ ܒܡܫܚܐ. ܘܠܚܡܐ ܣܡܟ ܠܒܗ ܕܒܪܢܫܐ: * ܢܣܒܥܘܢ ܐܝܠܢܘܗܝ
17 ܕܡܪܝܐ. ܘܐܪܙܐ ܕܠܒܢܢ ܕܢܨܒ: * ܕܬܡܢ ܨܦܪܐ ܡܩܢܢܝܢ. ܘܚܘܪܕܐ ܩܢܗ ܒܒܪܘܬܐ: * ܛܘܪܐ ܪܡܐ
18
ܠܝܥܠܐ. ܘܫܘܥܐ ܡܥܫܢܐ ܠܚܓܠܐ:

* ܦܣܘܩܐ *

19 * ܥܒܕ ܣܗܪܐ ܠܙܒܢܐ. ܘܫܡܫܐ ܝܕܥ ܙܒܢܐ ܕܡܥܪܒܗ: * ܥܒܕ ܚܫܘܟܐ ܘܗܘܐ ܠܠܝܐ.
20
21 ܘܒܗ ܢܗܠܟܘܢ ܟܠܗܘܢ ܚܝܘܬܐ ܕܥܒܐ: * ܓܘܪܝ ܐܪܝܘܬܐ ܢܗܡܘܢ ܠܡܚܛܦ. ܘܠܡܒܥܐ ܡܢ ܐܠܗܐ
22 ܡܐܟܘܠܬܗܘܢ: * ܟܕ ܕܢܚ ܫܡܫܐ ܡܬܟܢܫܝܢ. ܘܒܡܥܡܪܝܗܘܢ ܪܒܥܝܢ: * ܢܦܩ
23
24 ܒܪܢܫܐ ܠܥܒܕܗ. ܘܠܦܘܠܚܢܗ ܥܕܡܐ ܠܪܡܫܐ: * ܡܢܐ ܣܓܝܐܝܢ ܥܒܕܝܟ ܡܪܝܐ.
25 ܘܟܠܗܘܢ ܒܚܟܡܬܐ ܥܒܕܬ: ܘܡܠܝܐ ܐܪܥܐ ܩܢܝܢܟ. * ܗܢܐ ܝܡܐ ܪܒܐ ܘܪܘܝܚܐ ܕܐܝܕܝܐ:
26 ܕܒܗ ܪܚܫܐ ܕܠܐ ܡܢܝܢ. ܚܝܘܬܐ ܙܥܘܪܬܐ ܥܡ ܪܘܪܒܬܐ: * ܘܒܗ ܗܘ ܡܗܠܟܢ ܐܠܦܐ.
ܘܠܘܝܬܢ ܗܢܐ ܕܒܪܝܬ ܠܡܓܚܟ ܒܗ:

Constituit in aquis mansiones suas, & co
cavit super nubes currum suum, graditur
super alas venti. Fecit Angelos suos spi
& ministros suos ignem ardentem. Firma
terrā super firmamentis suis, ne moveat
seculum seculorum. Abyssum quasi pallio
cultâsti, & super montes exurrexerunt aq
Ab increpatione tua fugiunt, & voce to
truum tuorum deterrentur : Scandunt mo
tes, & decurrunt in planities in locum q
præparâsti eis : Terminum præscripsisti
ne transgrediantur & operiant terram.
misisti fontes in valles, interq; montes
dunt, Potant omne animal deserti, &
rantur onagri sitientes, Volatile cœli
det : de medio montium edunt murmur
gat montes ex habitaculis suis, & de fru
operum tuorum satiabitur terra. Pro
fœnum jumentis, & olus ad usum homin
eliciendum pané è terra. Vinum lætifica
hominis, & exhilarat facié suā oleo, &
nis fulcit cor hominis. Saturabuntur ar
Dñi, & cedri Libani quas plantavit : I
dificârunt aves, & ciconiæ nidus est in a
tibus. Montes sublimes ibicibus, &
defensio leporibus.

* *Sectio* *

Fecit Lunam in tempora, & Sol novit te
pus occasûs sui. Constituit tenebras, &
cta est nox : atque in ipsa abeunt omnes be
saltûs. Leones rugiunt ad prædandum, &
petendam à Deo escam suā : Ad ortum S
recipiunt sese, & in cubilibus suis cu
Exit homo ad opus suum, & ad nego
suum, usque ad vesperam. Quàm m
sunt opera tua Domine ? & quidem om
cum sapientia fecisti, & impleta est terra
bus tuis. Istud mare vastū & amplitud
nuum in quo continentur reptilia absque
mero, animalia magna cum parvis, E
quod ambulant naves ; & Leviathan
quem creâsti ad ridendum illud :

Verſio VULG. LAT.

3 Qui tegis aquis ſuperiora ejus. Qui ponis nubem aſcenſum tuum: qui ambulas ſuper pennas ventorum. 4 Qui facis angelos tuos, ſpiritus; & miniſtros tuos, ignem urentem. 5 Qui fundaſti terram ſuper ſtabilitatem ſuam: non inclinabitur in ſeculum ſeculi. 6 Abyſſus, ſicut veſtimentum, amictus ejus: ſuper montes ſtabunt aquæ. 7 Ab increpatione tua fugient: à voce tonitrui tui formidabunt. 8 Aſcendunt montes, & deſcendunt campi, in locum quem fundaſti eis. 9 Terminum poſuiſti, quem nō tranſgredientur: neque convertentur 10 operire terram. Qui emittis fontes in convallibus: inter medium montium 11 pertranſibunt aquæ. Potabunt omnes beſtiæ agri: exſpectabunt onagri in ſiti ſua. 12 Super ea volucres cœli habitabunt: de medio petrarum dabunt voces. 13 Rigans montes de ſuperioribus ſuis: de fructu operum tuorum ſatiabitur terra: 14 Producens fœnum jumentis, & herbam ſervituti hominum: Ut 15 educas panem de terra: Et vinum lætificet cor hominis: Ut exhilaret faciē in oleo: & panis cor hominis confirmet. 16 Saturabuntur ligna campi, & cedri Libani, quas plantavit: 17 Illic paſſeres nidificabunt. Herodii dom⁹ dux eſt eorū: 18 Montes excelſi cervis: petra refugiū herinaciis. 19 Fecit Lunā in tempora: Sol cognovit occaſū ſuū. 20 Poſuiſti tenebras, & facta eſt nox: in ipſa 21 pertranſibunt omnes beſtiæ ſylvæ. Catuli leonū rugientes, ut rapiant, & quærant a Deo eſcam ſibi. 22 Ortus eſt Sol, & congregati ſunt: & in cubilibus ſuis collocabuntur. 23 Exibit homo ad op⁹ ſuum: & ad operationem ſuam uſque 24 ad veſperum. Quàm magnificata ſunt opera tua, Domine! omnia in ſapientia feciſti: impleta eſt terra poſſeſſione 25 tua. Hoc mare magnum, & ſpatioſum manibus: illic reptilia, quorum non eſt numerus. Animalia puſilla cū magnis: 26 Illic naves pertranſibunt. Draco iſte, quem formaſti ad illudendum ei:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

3 † Ὁ στεγάζων ἐν ὕδασι τὰ ὑπερῷα αὐτοῦ, † ὁ τιθεὶς νέφη τὴν ἐπίβασιν αὐτοῦ· † ὁ περιπατῶν ἐπὶ πτερύγων ἀνέμων· 4 † Ὁ ποιῶν τοὺς ἀγγέλους αὐτοῦ πνεύματα, † καὶ τοὺς λειτουργοὺς αὐτοῦ (α) πῦρ φλέγον· 5 † Ὁ θεμελιῶν τὴν γῆν ἐπὶ τὴν ἀσφάλειαν αὐτῆς, † οὐ (β) κλιθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. 6 † Ἄβυσσος ὡς ἱμάτιον τὸ περιβόλαιον αὐτοῦ, † ἐπὶ τῶν ὀρέων στήσονται ὕδατα. 7 † Ἀπὸ ἐπιτιμήσεώς σου φεύξονται, 8 † ἀπὸ φωνῆς βροντῆς σου δειλιάσουσιν. † Ἀναβαίνουσιν ὄρη, καὶ καταβαίνουσι πεδία· † εἰς τόπον ὃν 9 ἐθεμελίωσας αὐτοῖς. † Ὅριον ἔθου ὃ οὐ παρελεύσονται, 10 † οὐδὲ ἐπιστρέψουσι καλύψαι τὴν γῆν. † Ὁ ἐξαποστέλλων πηγὰς ἐν φάραγξιν, † ἀναμέσον τῶν 11 ὀρέων διελεύσονται ὕδατα. † Ποτιοῦσι πάντα τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ, † προσδέξονται ὄναγροι εἰς δίψαν αὐτῶν. 12 † Ἐπ' αὐτὰ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ κατασκηνώσει, 13 † ἐκ μέσου τῶν πετρῶν δώσουσι φωνήν. † Ποτίζων ὄρη ἐκ τῶν ὑπερῴων αὐτοῦ, † ἀπὸ καρποῦ τῶν ἔργων σου χορτασθήσεται ἡ γῆ. 14 † Ὁ ἐξανατέλλων χόρτον τοῖς κτήνεσι, † καὶ χλόην τῇ δουλείᾳ τῶν ἀνθρώπων· † τοῦ 15 ἐξαγαγεῖν ἄρτον ἐκ τῆς γῆς, † Καὶ οἶνος εὐφραίνει καρδίαν ἀνθρώπου· † τοῦ ἱλαρῦναι πρόσωπον ἐν ἐλαίῳ, † καὶ ἄρτος καρδίαν ἀνθρώπου στηρίζει. † (γ) 16 Χορτασθήσεται τὰ ξύλα τοῦ πεδίου, † αἱ κέδροι τοῦ Λιβάνου ἃς (δ) ἐφύτευσεν. 17 † Ἐκεῖ στρουθία ἐννοσσεύσουσι, † τοῦ (ε) ἐρωδιοῦ ἡ οἰκία ἡγεῖται αὐτῶν. 18 † Ὄρη τὰ ὑψηλὰ ταῖς ἐλάφοις, † πέτρα καταφυγὴ τοῖς 19 (ε) χοιρογρυλλίοις. † Ἐποίησε σελήνην εἰς καιρούς, 20 † ὁ ἥλιος ἔγνω τὴν δύσιν αὐτοῦ. † Ἔθου σκότος καὶ ἐγένετο νύξ, † ἐν αὐτῇ διελεύσονται πάντα τὰ θηρία 21 τοῦ δρυμοῦ. † Σκύμνοι ὠρυόμενοι (ϛ) ἁρπάσαι, † καὶ ζητῆσαι 22 παρὰ τοῦ θεοῦ βρῶσιν αὐτοῖς. † Ἀνέτειλεν ὁ ἥλιος καὶ (ζ) συνήχθησαν, † καὶ ἐν ταῖς μάνδραις αὐτῶν 23 κοιτασθήσονται. † Ἐξελεύσεται ἄνθρωπος ἐπὶ τὸ ἔργον αὐτοῦ, † καὶ ἐπὶ τὴν ἐργασίαν αὐτοῦ ἕως ἑσπέρας. 24 † Ὡς ἐμεγαλύνθη τὰ ἔργα σου κύριε, † πάντα ἐν σοφίᾳ ἐποίησας. † ἐπληρώθη ἡ γῆ τῆς κτίσεώς σου. 25 † Αὕτη ἡ θάλασσα ἡ μεγάλη καὶ εὐρύχωρος· † ἐκεῖ ἑρπετὰ ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός, † ζῶα μικρὰ μετὰ μεγάλων. 26 † Ἐκεῖ πλοῖα διαπορεύονται, † δράκων οὗτος ὃν ἔπλασας ἐμπαίζειν αὐτῷ.

MS. A. (α) * πυρὸς * φλόγα· (β) κινηθήσεται (γ) Χορτασθήσονται (δ) ἐφύτευσας. (ε) * ἀρωδιοῦ (ε) λαγωοῖς. (ϛ) τοῦ ἁρπάσαι (ζ) συνήχθησαν, καὶ εἰς τὰς μάνδρας

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

Qui (c) tegit in aquis ſuperiora ejꝰ: 4 qui ponit [c] nubes aſcenſū (d) ſuū. Qui ambulat ſuper pennas ventorū: 5 Qui facit angelos ſuos ſpiritus, & [d] miniſtros ſuos ignē (e) flagrantem. 6 Qui fundat terram [e] ſuper (f) ſtabilitatē ejus: non inclinabitur in ſeculū ſeculi. 7 Abyſſus, ſicut veſtimentū, (g) amictꝰ ejus: ſuper montes ſtabunt aquæ. 8 Ab increpatione tua fugient: à voce tonitrui tui formidabunt. 9 Aſcendunt montes, & deſcendunt campi in locū, quē fundaſti eis. 10 Terminū poſuiſti, quem non tranſgredientur: neq; revertentur operire terram. 11 Qui emittis fontes in convallibus: inter medium montiū pertranſibunt aquæ. 12 Potabunt omnes beſtiæ agri: (h) ſuſcipient onagri in ſitim ſuā. 13 [f] Super (i) ea volucres cœli habitabunt: de medio petrarum dabunt vocem. 14 Rigans montes de ſuperioribus ſuis: de fructu operū tuorum ſatiabitur terra. 15 Producens fœnū jumentis, & herbā ſervituti hominū. 16 Ut educat panē de terra: Et vinum (k) lætificat cor hominis. 17 [g] Ut exhilaret faciē in oleo: & panis [h] cor hominis confirmat. 18 Saturabuntur ligna (l) campi, cedri libani, quas [i] plantavit. Illic (m) [k] paſſeres nidificabunt: 19 (n) erodii domus dux eſt eorum. Montes excelſi cervis, petra refugium (o) herinaciis. 20 Fecit Lunā in tempora: Sol cognovit occaſum ſuum. 21 Poſuiſti tenebras, et facta eſt nox: in ipſa pertranſibunt omnes beſtiæ ſylvæ. 22 Catuli leonum rugientes, ut rapiant, et quærāt à Deo eſcam ſibi. 23 [l] Ortus eſt Sol, & (p) congregabuntur: & in cubilibus ſuis cubabunt. 24 Exibit homo ad opus ſuum, & [m] ad operationem ſuam uſque ad veſperam. 25 Quàm magnificata ſunt opera tua, Domine? omnia in ſapientia feciſti. Repleta eſt terra (q) creaturâ tuâ: 26 Hoc mare magnum, & (r) ſpatioſum: illic reptilia, quorum non eſt numerus: 27 animalia puſilla cum magnis: Illic naves (ſ) pertranſeunt. 28 Draco hic, quem finxiſti, ad (t) illudendum [n] ei.

Verſio ÆTHIOPICA.

3 ዘይጠፍር፡በማይ፡ጽርሑ፡፡፦ ወረሰየ፡ደመ 4
ና፡ምክየደ፡፡ ዘየሐውር፡በክንፈ፡ነፋስ፡፡፦
ዘይሬስዮሙ፡ለመላእክቲሁ፡መንፈሰ፡፡ ወለ 5
4 እለ፡ይትለአክዎ፡ነደ፡እሳት፡፡፦ ሳረራ፡ለ 6
ምድር፡ወአጽንዓ፡፡ ከመ፡ኢትትንቀልቀል፡ለ
5 ዓለም፡ዓለም፡፡፦ ወቀላይኒ፡ከመ፡ልብሱ፡ 7
6 እጽፋ፡፡ ውስተ፡አድባር፡ይቀውም፡ማያ
ት፡፡፦ ወእምተግሣጽከ፡ይጐዩ፡፡ ወእም 8
7 ድምፀ፡ነጐድጓድከ፡ይደነግፁ፡፡፦ የዐር 9
ጉ፡አድባረ፡ወይወርዱ፡ገዳም፡፡ ውስተ፡ብ
8 ሔር፡ኀበ፡ሳረርኮሙ፡፡፦ ወሠራዕኮሙ፡ ወ 10
ሰኖሙ፡እምኀበ፡ኢይኀልፉ፡፡ ከመ፡ኢይትመ
9 የጡ፡ወኢይክድንዋ፡ለምድር፡፡፦ ዘይፈ 11
10 ኑ፡ለንቅዐተ፡ውስተ፡ቈላት፡፡ ወማእከለ፡
አድባር፡የኀልፉ፡ማያት፡፡፦ ወየሰትዩ፡ለኵ 12
11 ሉ፡አርዌ፡ገዳም፡፡ ወይትወከፉ፡ሐለስትዮ
12 ታት፡ለጽምዖሙ፡፡፦ ወየጽሉ፡ህየ፡አዕዋ 13
ፈ፡ሰማይ፡፡ ወይነቅው፡በማእከለ፡ጾላዓ
ት፡፡፦ ዘይሠቅዮሙ፡ለአድባር፡እምውሳ 14
13 ጢያቲሆሙ፡፡ እምፍሬ፡ተግባርከ፡ትጸግብ፡
ምድር፡፡፦ ዘያበቍል፡ሣዕረ፡ለእንስሳ፡፡ወ 15
14 ኀመልማለ፡ለቅኔ፡እጓለ፡እመሕያው፡፡ ከ 16
15 መ፡ያውፅእ፡እክለ፡እምድር፡፡ ወይን፡ያስተ
ፈሥሕ፡ልበ፡ሰብእ፡፡፦ ወቀብእ፡ለአብርሆ 17
ሙ፡ገጾ፡፡ ወእክል፡ያጸንዕ፡ኀይለ፡ሰብእ፡፡፦
16 ወይጸግቡ፡ዕፀወ፡ገዳም፡፡ አርዘ፡ሊባኖስ፡ 18
ዘተከልከ፡፡ ወበህየ፡ይትዋለደ፡አዕዋፍ፡፡፦
17 ወይትጋወሮን፡ቤተ፡ሄሮድያኖስ፡፡ አድባር፡ 19
18 ነዋኃት፡ለኃየለት፡፡ ወጸሳዓት፡ምጉያዮን፡
19 ለጊሐ፡፡፦ ወገበርከ፡ወርኀ፡በአድማ 20
ሁ፡፡፦ወፀሐይኒ፡አእመረ፡ምዕራቢሁ፡፡፦ 21
20 ታመጽእ፡ጽልመተ፡ወይከውን፡ሌሊት፡፡
ወይወጽኡ፡ቦቱ፡ኵሉ፡አርዌ፡ገዳም፡፡፦
21 ወእጐለ፡አናብስት፡ይጥሕሩ፡ወይመስጡ፡፡ 22
22 ወይስእሉ፡ኀበ፡እግዚአብሔር፡ሲሳዮ
ሙ፡፡፦ ወእምከመ፡ሠረቀ፡ፀሐይ፡የአት 23
23 ው፡፡ ወይውዕሉ፡ውስተ፡ግበቢሆሙ፡፡፦
ወይወፍር፡ሰብእ፡ውስተ፡ተግባሩ፡፡ ወይው 24
24 ዕል፡ወይትቀነይ፡እስከ፡ይመሲ፡፡፦ ጥቀ፡ 25
ዐቢይ፡ግብርከ፡እግዚኦ፡፡ ወኵሎ፡በጥበ
25 ብ፡ገበርከ፡፡መልአ፡ምድረ፡ዘፈጠርከ፡፡፦
ዛቲ፡ባሕር፡ዐባይ፡ ወረሓብ፡፡ ህየ፡ዘይት 26
ሀወስ፡ዘአልቦ፡ኍልቈ፡፡፦ እንስሳ፡ዐቢይ 27
26 ት፡ምስለ፡ደቂቅ፡፡ ወህየ፡የሐውሩ፡አሕማ
ር፡፡፦ ከይሲ፡ዘፈጠርከ፡ይሣለቅ፡ላዕ 28
ሊሆሙ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] nubem ſcabellum ſuum. [d] eos qui miniſtrant ei flammam ignis. [e] et ſtabilem reddit eam: [f] Et illic volucres [g] Et oleum ad illuſtrandum faciem ejus: [h] robur hominis [i] plantaſti. [k] aves parient: [l] Et quando Sol oritur conveniunt: [m] pergit inſervire donec veſperaſcit. [n] eis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 * الذي سقف علاليه بالمياه * الذي جعل مسالكه على السحاب الذي مشي علي اجنحة
4 5 الرياح * الذي خلق ملايكته ارواحا * وخدامه لهيب نار * الذي اسس الارض علي ثباتها • ولا
6 7 تتحرك الي الابد * اشتملت بالعمق مثل الثوب • وعلي الجبال تقف المياه * من انتهارك يهربون •
8 ومن صوت رعدك يجزعون * الجبال ارتفعت والبقاع انخفضت الي الموضع الذي اسسته لهن
9 10 * جعلت لها حدا لا تتجاوزه ولن تعود هي فتغطي الارض * الذي ارسل ينابيع في الاودية •
11 في وسط الجبال تجري المياه * تشرب جميع وحوش الارض • وتقبل حمير الوحش عند عطشها
12 13 * وتحل عليها طيور السماء • وتعطي اصواتها من وسط الصخور * الذي يسقي الجبال من علاليه •
14 ومن ثمر اعمالك تشبع الارض * الذي ينبت العشب للدواب • وانواع الخضر لاستعباد البشر •
15 لكي يخرج من الارض خبزا * وخمرا يفرح قلب الانسان • ولكي يهلل وجهه بالدهن • الخبز
16 17 يسند قلب الانسان * يشبع شجر الحقل وارز لبنان • التي غرسها * هناك حيث تفرخ العصافير • بيت
18 19 البلشوم ماش قدامه * الجبال العالية للايايل • الصخور ملجاء الارانب * خلق القمر للازمان •
20 21 والشمس تعرف اوان غروبها * وضع ظلمة فصارت ليلا • يعبر فيه جميع وحوش الغياض * زئير
22 الاسد لطلب فريستها • وتطلب من الله طعامها * عند طلوع الشمس ينتشرون • والي مساكنهم
23 24 يرجعون * ويرجع الانسان الي عمله • والي صناعته الي الليل * ما اعظم اعمالك يا رب • خلقت كل
25 شي بحكمتك • امتلات الارض من خليقتك * هذا البحر العظيم السعة • فيه دبابات لا تحصى
26 صغار وكبار الحيوان * حيث تعبر فيه السفن • هناك هذا التنين الذي خلقته ليتعجب منه

3 Qui tectum poſuit ſuperioribus ejus aquas: qui fecit ambulacra ſua ſuper nubes: qui ambulavit ſuper alas ventorum: 4 Qui creavit Angelos ſuos ſpiritus, & miniſtros ſuos flammam ignis: 5 Qui fundavit terram ſuper ſtabilitatem ejus, nec movebitur in æternum: 6 Amictus es abyſſo quaſi veſte: et ſuper montes ſtabunt aquæ. 7 Ab increpatione tua fugient, & à voce tonitrui tui formidabunt. 8 Montes extulerunt ſeſe, & valles ſeſe demiſerunt ad locum quem fundâſti eis. 9 Poſuiſti eis terminum quem non præteribunt, nec ampliùs ipſæ operient terram. 10 Qui emiſit fontes in valles, intérque montes decurrunt aquæ. 11 Bibunt omnes beſtiæ terræ, & accedunt aſini ſylveſtres in ſiti ſua. 12 Et commorantur ſuper eas volucres cœli, eduntque voces ſuas è mediis rupibus. 13 Qui rigat montes è ſuperioribus habitaculis ſuis, & de fructu operum tuorum ſatias terram. 14 Qui producit herbam jumentis, & genera olerum virentium in ſervitutem hominis. 15 Quatenus eliciat è terra panem Et vinum lætificans cor hominis: atque ut exhilaretur facies ejus oleo: panis corroboret cor hominis. 16 Satiat arbores campi & cedros Libani quas plantavit. 17 Illic eſt ubi pullos gignunt aves, domus ciconiæ gradiens eſt ante ipſum. 18 Montes excelſi cervis, petræ refugium leporibus. 19 Creavit lunam pro temporibus, & ſol novit tempus occaſûs ſui. 20 Poſuit tenebras, factæque ſunt nox, in qua pertranſeunt omnes beſtiæ ſylvarum. 21 Rugiunt leones ad quærendam prædam ſuam, & petunt à Deo eſcam ſuam. 22 Oriente ſole diſperguntur, & ad habitacula ſua ſe recipiunt. 23 Et revertitur homo ad operam ſuam, & ad artem ſuam uſque ad noctem. 24 Quam magna ſunt opera tua O Domine: creâſti ſingulas res ſapientiâ tuâ: impleta eſt terra creaturis tuis. 25 In hoc mari ſummè amplo extant reptilia haud numeranda, minima & maxima animantium: 26 Ubi tranſeunt in illud naves, ibi eſt ille draco quem creâſti ut eſſet admirationi.

תהלים : קה

, eis Dabis .ſuo tempore in corũ eſcam *dandam ad* ſperabunt te ad ipſa Univerſa

27 כלם אליך ישברון לתת אכלם בעתו : תתן להם 28

, *tuam facies* Abſcondes .bono ſaturabuntur ,tuam manum aperies : colligent

29 ילקטון תפתח ידך ישבעון טוב : תסתיר פניך

.revertentur ſuum pulverem in & : *expirabunt* ,eorum ſpiritum *colliges* ; terrebuntur

יבהלון תסף רוחם יגועון ואל עפרם ישובון :

Domini gloria Erit .terræ *faciem* innovabis & : creabuntur ,tuũ ſpiritũ Emittes

30 תשלח רוחך יבראון ותחדש פני אדמה : יהי כבוד יהוה 31

, terram *ad* Aſpiciens .ſuis operibus in DOMINUS lætabitur : ſeculum in

32 לעולם ישמח יהוה במעשיו : המביט לארץ

: *meis vitis* in DOMINO Cantabo .*fumabunt* & , montes *in tanget* : *tremet* &

33 ותרעד יגע בהרים ויעשנו : אשירה ליהוה בחיי

lætabor ego : meum eloquium eo ſuper *Dulceſcet* .*me adhuc in* meo Deo canam

34 אזמרה לאלהי בעודי : יערב עליו שיחי אנכי אשמח

.*ipſi* non ultrà impii & :terra de peccatores Conſumentur .DOMINO in

35 ביהוה : יתמו חטאים מן הארץ ורשעים עוד אינם

.Hallelujah : Domino mea anima Benedic

ברכי נפשי את יהוה הללו יה :

PSAL. CV. קה

.ejus *ſtudia* populis in facite nota : ej⁹ nomen *in* invocate ,Domino Confitemini

1 הודו ליהוה קראו בשמו הודיעו בעמים עלילותיו :

vos Laudate .ejus mirabilibus univerſis *in* loquimini : ei pſallite ,ei Cantate

2 שירו לו זמרו לו שיחו בכל נפלאותיו : התהללו 3

Dominum Quærite .Dominum quærentiũ cor lætetur : ej⁹ *ſanctitatis* nomine in

4 בשם קדשו ישמח לב מבקשי יהוה : דרשו יהוה

quæ ej⁹ mirabilium Mementote .ſemper ej⁹ *facies* quærite : ejus fortitudinẽ &

5 ועזו בקשו פניו תמיד : זכרו נפלאותיו אשר

: ejus ſervi Abraham Semen .ejus oris judiciorum & ,ejus prodigiorum : fecit

6 עשה מפתיו ומשפטי פיו : זרע אברהם עבדו

.ejus judicia terra univerſa in : noſter Deus Dominus Ipſe .ejus electi Jahacob filii

7 בני יעקב בחיריו : הוא יהוה אלהינו בכל הארץ משפטיו :

Quod .*generationes* mille *ad* præcepit verbi : ſui pacti ſeculum in fuit Memor

8 זכר לעולם בריתו דבר צוה לאלף דור : אשר

9 Jahacob ipſi illud ſtatuit Et .Iſchac ad ſuũ juramentũ & : Abraham cum *excidit*

10 כרת את אברהם ושבועתו לישחק : ויעמידה ליעקב

;Chenahan terram dabo Tibi ,Dicendo .*ſeculi* pactum Iſraeli ; ſtatutũ in

11 לחק לישראל ברית עולם : לאמר לך אתן את ארץ כנען

.ea in peregrini *& parum ſicut:numeri viros ipſos exiſtendo In* .veſtræ hæreditatis funiculũ

12 חבל נחלתכם : בהיותם מתי מספר כמעט וגרים בה :

Non .alterũ populum ad regno de : gentem ad gente de ambulaverunt Et

13 ויתהלכו מגוי אל גוי מממלכה אל עם אחר : לא 14

attingatis Ne .reges eos propter corripuit & : *eos opprimere* hominem permiſit

15 הניח אדם לעשקם ויוכח עליהם מלכים : אל תגעו

: terram ſuper famem vocavit Et .malefaciatis ne meis prophetis & : meos *unctos in*

16 במשיחי ולנביאי אל תרעו : ויקרא רעב על הארץ

.contrivit panis virgam omnem

כל מטה לחם שבר :

תרגום TARGUM.

27 כולהון עלך סבירין למתן מזונהון בזמניה :
28 תתן להון וכנשין תפתח אידך ושבעין טבא :
29 תסלק שכנתך מתבהלין תכנוש רוחהון
30 ומתנגדין ולות עפרהון תיבין : תשלח רוח
31 קודשך ומתברין ותחדת אפי ארעא : יהי
32 איקר יי לעלם יחדי יי בעובדוי : דמסתכל
לארעא ומתרגפא מקרב בטוריא ומסקין
33 תננא : אשבח קדם יי בחיי אזמר לאלהי
34 בעוד איתי : יבסם קדמוי שותי אנא אחדי
35 במימרא דיי : ישתצון חטאיא מן ארעא
ורשיעיא תוב ליתיהון בריכי נפשי ית שמא
דיי הללויה :

קה

1 שבחו קדם יי קרון בשמיה הודעון בעממיא
2 עובדוי : שבחו קדמוי זמרו קדמוי מלילו בכל
3 פרישותיה : שבחו בשום קודשיה יחדי לבהון
4 דתבעי אולפן מן קדם יי : תבעו אולפנא
5 דיי ואוריתיה אקבילו אפוי תדירא : אדכרו
6 פרישותיה די עבד תמהוי ודיני פומיה : זרעא
7 דאברהם עבדיה בני יעקב בחירוי : הוא יי
8 אלהנא בכל ארעא מתיחין דינוי : דכיר לעלם
9 קימיה פתגם פקד לאלפי דרין : די גזר עם
10 אברהם וקימיה ליצחק : וקימנה ליעקב
11 לגזירא לישראל קים עלם : למימר לך אתן
12 ית ארעא דכנען עדב אחסנתכון : כד הויתון
13 עם דמנין כזעירין ויתבין בה : והליכו
מן עמא לעמא ממלכותא לעמא אחורן :
14 לא שבק אנש לטלומהון ואוכח בנינהון
15 מלכיא : לא תקרבון במשיחי ובנביאי לא
16 תבאישון : ואכלי כפנא על ארעא כל סעיד
לחמא תבר :

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Omnia illa in te ſperant, ut des eſcam eis in tempore ſuo. Dabis illis, & colligent: aperies manum tuam, & ſaturabuntur bonitate. Auferes majeſtem tuam, conturbabuntur: congregabis ſpiritum eorum, & deficient, ac in pulverem ſuum revertentur. Mittes ſpiritum ſanctum tuum, & creabuntur, & renovabis faciem terræ. Sit gloria Domini in ſeculum, lætetur Dominus in operibus ſuis. Qui reſpicit terram & tremit: tangit montes, & fumum in altum emittunt. Laudabo coram Domino in vita mea, pſallam Deo meo quamdiu ſum. Jucunda ſit coram eo meditatio mea: ego lætabor in verbo Domini. Deficiant peccatores à terra, & improbi ultrà non ſint: benedic anima mea nomini Domini, Halelujah.

PSAL. CV.

LAudes dicite coram Domino, invocate nomen ejus, notas facite in populis operationes ejus. Laudes dicite coram eo, pſallite coram eo, narrate omnia miranda ejus facinora. Laudate in nomine ſancto ejus lætetur cor illorum qui quærunt doctrinam à conſpectu Domini. Quærite doctrinam Domini & Legem ejus: accipite faciem ejus ſemper. Recordamini miraculorum ejus quæ edidit; portentorum ejus, & judiciorum oris ejus. Semen Abraham ſervi ejus, filii Jacob electi ejus. Ipſe eſt Dominus Deus noſter, in omni terra protenſa ſunt judicia ejus. Recordatus eſt in æternum pacti ſui, verbi quod præcepit in mille generationes. Quod pepigit cum Abraham, & jusjurandum ſuum ad Iſaac. Et ſtatuit illud Jacob pro decreto, Iſraeli pro fœdere æterno. Dicendo: Tibi dabo terram Chanaan ſortem hæreditatis veſtræ. Cùm eſſetis populus numero modicus, & incolæ in ea. Et tranſierunt de populo in populum, de regno ad populum alterum. Non permiſit hominem injuriam inferre illis, & corripuit propter eos reges. Nolite tangere chriſtos meos, & prophetis meis ne malefeceritis. Et vocavit famem ſuper terram, omnem ſuſtentamentum panis contrivit.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

27 * ܟܠܗܘܢ ܠܟ ܗܘܘ ܡܣܟܝܢ. ܕܬܬܠ ܠܗܘܢ ܣܝܒܪܬܐ ܒܙܒܢܗܘܢ : * ܝܗܒ ܐܢܬ ܠܗܘܢ
28 ܘܡܠܩܛܝܢ. ܦܬܚ ܐܢܬ ܐܝܕܟ ܘܣܒܥܝܢ ܛܒܬܐ :* ܡܗܦܟ ܐܢܬ ܐܦܝܟ ܘܡܬܬܙܝܥܝܢ. ܫܩܠ ܐܢܬ 29
30 ܪܘܚܗܘܢ، ܘܡܝܬܝܢ، ܘܠܥܦܪܗܘܢ ܗܦܟܝܢ. * ܡܫܕܪ ܐܢܬ ܪܘܚܟ ܘܡܬܒܪܝܢ : ܘܡܚܕܬ ܐܢܬ
31 ܦܐܝܘܗ̇ ܕܐܪܥܐ : * ܢܗܘܐ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ ܠܥܠܡ : ܢܚܕܐ ܡܪܝܐ ܒܥܒܕܘܗܝ. * ܕܚܐܪ ܒܐܪܥܐ 32
33 ܘܙܝܥܐ : ܘܟܐܐ ܠܛܘܪܐ ܘܡܬܢܢܝܢ. * ܐܫܒܚ ܠܡܪܝܐ ܒܚܝܝ : ܘܐܙܡܪ ܠܐܠܗܝ ܥܕ ܕܩܐܡ ܐܢܐ.
34 * ܢܫܦܪ ܠܗ ܬܫܒܘܚܬܝ : ܘܐܢܐ ܐܚܕܐ ܒܡܪܝܐ. * ܘܢܣܦܘܢ ܚܛܝܐ ܡܢ ܐܪܥܐ : ܘܥܘܠܐ 35
ܠܐ ܢܫܟܚܘܢ ܒܗ̇. ܒܪܟܝ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ. * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܕ *

1 * ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܡܦܠܦܠ ܒܗ ܥܠ ܬܫܥܝܬܐ ܕܢܚܬܬܗ ܕܝܥܩܘܒ ܠܡܨܪܝܢ. ܐܦ ܚܢܢ
ܠܘܬ ܪܘܚܢܝܘܬܐ ܡܠܦ ܕܠܐ ܢܕܚܠ ܟܕ ܢܦܩ ܐܢܫ ܠܩܪܒܐ. ܠܘܩܒܠ ܫܐܕܐ. ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܗܘ ܡܥܕܪܢܢ
ܘܡܬܟܬܫ ܚܠܦܝܢ. ܦܬܓܡ̈ܐ ܨܐ. ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܘܩܪܘ ܒܫܡܗ. ܘܚܘܘ ܒܥܡܡܐ ܥܒܕܘܗܝ :
2 * ܫܒܚܘܗܝ ܘܙܡܪܘ ܠܗ. ܘܐܫܬܥܘ ܟܠܗܘܢ ܬܕܡܪܬܗ : * ܫܒܚܘ ܠܫܡܐ ܕܩܘܕܫܗ.
3 ܢܚܕܐ ܠܒܗܘܢ ܕܒܥܝܢ ܠܡܪܝܐ : * ܒܥܘ ܠܡܪܝܐ ܘܐܬܚܝܠܘ. ܘܒܥܘ ܐܦܘܗܝ 4
5 ܒܟܠܙܒܢ : * ܐܬܕܟܪܘ ܬܕܡܪܬܗ ܕܥܒܕ. ܐܬܘܬܗ ܘܕܝܢܐ ܕܦܘܡܗ :* ܙܪܥܗ ܕܐܒܪܗܡ ܥܒܕܗ. 6
7 ܘܒܢܝ̈ܐ ܕܝܥܩܘܒ ܓܒܝܘܗܝ : * ܗܘܝܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܕܒܟܠܗ̇ ܐܪܥܐ ܕܝܢܘܗܝ : * ܐܬܕܟܪ 8
9 ܠܥܠܡ ܩܝܡܗ. ܘܡܠܬܐ ܕܦܩܕ ܠܐܠܦ ܕܪ̈ܝܢ : * ܕܩܝܡ ܩܝܡܗ ܥܡ ܐܒܪܗܡ. ܘܡܘܡܬܗ
10 ܠܐܝܣܚܩ : * ܘܐܩܝܡܗ̇ ܠܝܥܩܘܒ ܣܗܕܘܬܐ. ܩܝܡܐ ܠܐܝܣܪܝܠ ܠܥܠܡ : * ܘܐܡܪ ܕܠܟ 11
12 ܐܬܠ ܐܪܥܐ ܕܟܢܥܢ. ܚܒܠܐ ܕܝܪܬܘܬܟܘܢ : * ܟܕ ܗܘܝܬܘܢ ܩܠܝܠܝܢ ܒܡܢܝܢܐ. ܩܠܝܠܝܢ
13 ܗܘܝܬܘܢ، ܘܬܘܬܒܐ ܗܘܝܬܘܢ ܒܗ̇ : * ܘܥܒܪܘ ܡܢ ܥܡܐ ܠܥܡܐ. ܘܡܢ ܡܠܟܘܬܐ ܠܥܡܐ ܐܚܪܢܐ :
14 * ܘܠܐ ܫܒܩ ܐܢܫ ܕܢܛܠܡ ܐܢܘܢ. ܘܟܣ ܡܠܟܐ ܥܠ ܐܦܝ̈ܗܘܢ : * ܕܠܐ ܬܬܩܪܒܘܢ ܠܡܫܝܚܝ̈. 15
16 ܘܠܢܒܝ̈ܝ ܠܐ ܬܒܐܫܘܢ : * ܘܩܪܐ ܟܦܢܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܟܠܗ ܣܡܟܐ ܕܠܚܡܐ ܬܒܪ.

Omnia te expectant, ut ſuppedites eis cibum ſuo tempore. Das illis, & veſcuntur: aperis manum tuam, & ſaturantur; Avertis faciem tuam, & turbantur: tollis ſpiritum eorum, & moriuntur, inque pulverem ſuum revertuntur; Mittis ſpiritum tuum, & creantur, atque renovas faciem terræ. Sit gloria Domini in ſeculum: gaudeat Dominus operibus ſuis: Qui reſpicit humum, ac tremit: & increpat montes, ac fumant. Laudabo Dominum in vita mea, & canam Deo meo quamdiu ſuperſtes ero. Grata ſit ei laudatio mea, & ego lætabor in Domino. Et conſumentur peccatores de terra, & ſcelerati non moram facient in ea. Benedic anima mea Domino.

PSAL. CV.

Anonymus. Differit in eo de hiſtoria, N tuas Jacob deſcendere in Ægyptum. Sed etiam nos ſpiritualiter docet non eſſe pertimeſcendum quum exit quis ad decertandum contra dæmones; quia Deus eſt auxilium noſtrum & pugnat pro nobis. Verſus 91.

COnfitemini Dño, & invocate nomen ejus, et declarate inter populos opera ej⁹. Glorificate eum, & canite illi, & enarrate cuncta mirabilia ejus: Laudate nomen ſanctum ejus: lætetur cor eorum qui quærunt Dñm. Quærite Dñm & corroboramini, & expetite faciem ejus omni tempore. Memoria repetite prodigia ejus quæ patravit, miracula ejus & judicium oris ejus. O ſemen Abrahæ ſervi ejus, & filii Jacob electi ejus, Ipſe eſt Dominus Deus noſter, cujus judicia in univerſa terra. Meminit in perpetuum fœderis ſui, verbi de quo monuit in mille æva. Sanxit enim pactum ſuum cum Abraham, & juramentum ſua cum Iſaac. Et teſtimonium ſuum cum Jacob, fœdus Iſraeli in ſempiternũ; Dixitque Tibi dabo terram Canaan funes hæreditatis veſtræ. Cùm igitur exigui eſſetis numero, pauci eſſetis, & advenæ eſſetis in ea: Proceſſerunt de gente ad gentem, & de regno ad populum alium: Et non permiſit hominem opprimere eos. Corripuit reges propter illos *dicens*, Ne accedatis ad unctos meos & prophetas meos ne lædatis. Et advocavit famem ſuper terram, & omnem culmum panis eorum contrivit.

Verſio VULG. LAT.

27 Omnia à te expectant ut des illis eſcã in tempore. 28 Dante te illis, colligent: aperiente te manũ tuã, omnia implebuntur bonitate. 29 Avertente autem te faciem, turbabuntur: auferes ſpiritũ eorũ, & deficient, & in pulverem ſuũ revertentur. 30 Emittes ſpiritũ tuũ, & creabuntur: & renovabis faciẽ terræ. 31 Sit gloria Dñi in ſeculũ: lætabitur Dominus in operibus ſuis: 32 Qui reſpicit terrã, & facit eã tremere: qui tangit montes, & fumigant. 33 Cantabo Domino in vita mea: pſallam Deo meo 34 quamdiu ſum. Jucundũ ſit ei eloquiũ meũ: ego verò delectabor in Domino. 35 Deficiant peccatores à terra, & iniqui ita ut non ſint: Benedic anima mea Domino.

Alleluja. (1 Par. 16. 8.)

CIV.

1 Confitemini Domino, & invocate nomen ejus: annuntiate inter gentes 2 opera ejus. Cantate ei, & pſallite ei: narrate omnia mirabilia ejus. 3 Laudamini in nomine ſancto ejus: lætetur 4 cor quærentiũ Dominũ. Quærite Dominũ, & confirmamini: quærite faciẽ 5 ejus ſemp. Mementote mirabiliũ ejus, quæ fecit: prodigia ejus, & judicia 6 oris ejus, Semen Abraham, ſervi ejus: 7 filii Jacob electi ejus. Ipſe Dominus Deus noſter: in univerſa terra judicia 8 ejus. Memor fuit in ſeculum teſtamenti ſui: verbi, quod mandavit in mille 9 generationes: Quod diſpoſuit ad Abraham: & juramenti ſui ad Iſaac: 10 Et ſtatuit illud Jacob in præceptum: & Iſrael in teſtamentum æternum: 11 Dicens; Tibi dabo terrã Chanaan, 12 funiculum hereditatis veſtræ. Cùm eſſent numero brevi, pauciſſimi & in13colæ ejus: Et pertranſierunt de gente in gentem, et de regno ad populum 14 alterum: Non reliquit hominem nocere eis: et corripuit pro eis reges. 15 Nolite tangere chriſtos meos: et in 16 prophetis meis nolite malignari. Et vocavit famem ſuper teram: et omne firmamentum panis contrivit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

27 Πάντα πρὸς σὲ προσδοκῶσι, † δοῦναι τὴν τροφὴν 28 (η) αὐτοῖς εὔκαιρον. † Δόντος σου αὐτοῖς, συλλέξουσιν· † ἀνοίξαντος δέ σου τὴν χεῖρα, τὰ 29 σύμπαντα πλησθήσονται (θ) χρηστότητος. † Ἀποστρέψαντος δέ σου τὸ πρόσωπον, ταραχθήσονται· † ἀντανελεῖς τὸ πνεῦμα αὐτῶν, καὶ ἐκλείψουσι, † καὶ 30 εἰς τὸν χοῦν αὐτῶν ἐπιστρέψουσιν. † Ἐξαποστελεῖς τὸ πνεῦμά σου καὶ κτισθήσονται, † καὶ ἀνακαινιεῖς τὸ 31 πρόσωπον τῆς γῆς. † Ἤτω ἡ δόξα κυρίου εἰς (ι) τὸν αἰῶνα, † εὐφρανθήσεται κύριος ἐπὶ τοῖς ἔρ32γοις αὐτοῦ. † Ὁ ἐπιβλέπων ἐπὶ τὴν γῆν καὶ ποιῶν αὐτὴν τρέμειν, † ὁ ἁπτόμενος τῶν ὀρέων καὶ καπνί33ζονται. † Ἄσω τῷ κυρίῳ ἐν τῇ ζωῇ μου, † ψαλῶ τῷ 34 θεῷ μου ἕως ὑπάρχω. † Ἡδυνθείη αὐτῷ ἡ διαλογή μου, † ἐγὼ δὲ εὐφρανθήσομαι ἐπὶ τῷ κυρίῳ. † 35 Ἐκλείποισαν ἁμαρτωλοὶ ἀπὸ τῆς γῆς, † καὶ ἄνομοι, ὥστε μὴ ὑπάρχειν αὐτούς. † Εὐλόγει ἡ ψυχή μου τὸν κύριον.

MS. A. (η) αὐτῶν εἰς καιρόν. (θ) πιότητος. (ι) τοὺς αἰῶνας;

Ἀλληλούϊα. ρδʹ.

1 † Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ, καὶ ἐπικαλεῖσθε τὸ ὄνομα αὐτοῦ· † ἀπαγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι τὰ ἔργα 2 αὐτοῦ. † Ἄσατε αὐτῷ καὶ ψάλατε αὐτῷ· † διηγήσα3σθε πάντα τὰ θαυμάσια αὐτοῦ. † Ἐπαινεῖσθε ἐν τῷ ὀνόματι τῷ ἁγίῳ αὐτοῦ· † εὐφρανθήτω καρδία ζη4τούντων τὸν κύριον. † Ζητήσατε τὸν κύριον καὶ κραταιώθητε· † ζητήσατε τὸ πρόσωπον αὐτοῦ διαπαντός. 5 † Μνήσθητε τῶν θαυμασίων αὐτοῦ ὧν ἐποίησε, † τὰ τέρατα αὐτοῦ, καὶ τὰ κρίματα τοῦ στόματος αὐτοῦ. † 6 Σπέρμα Ἀβραὰμ δοῦλοι αὐτοῦ, † υἱοὶ Ἰακὼβ ἐκ7λεκτοὶ αὐτοῦ. † Αὐτὸς κύριος ὁ θεὸς ἡμῶν, † ἐν 8 πάσῃ τῇ γῇ τὰ κρίματα αὐτοῦ. † Ἐμνήσθη εἰς τὸν αἰῶνα διαθήκης αὐτοῦ. † λόγου οὗ ἐνετείλατο εἰς χι9λίας γενεάς, † Ὃν διέθετο τῷ Ἀβραάμ, καὶ (α) τοῦ 10 ὅρκου αὐτοῦ τῷ Ἰσαάκ. † Καὶ ἔστησεν αὐτὴν τῷ Ἰακὼβ εἰς πρόσταγμα, † καὶ τῷ Ἰσραὴλ εἰς 11 διαθήκην αἰώνιον, † Λέγων, Σοὶ δώσω τὴν γῆν 12 Χαναάν, † σχοίνισμα κληρονομίας ὑμῶν. † Ἐν τῷ εἶναι αὐτοὺς ἀριθμῷ βραχεῖς, † ὀλιγοστοὺς καὶ 13 παροίκους ἐν αὐτῇ, † Καὶ διῆλθον ἐξ ἔθνους εἰς 14 ἔθνος, † καὶ ἐκ βασιλείας εἰς λαὸν ἕτερον, † Οὐκ ἀφῆκεν ἄνθρωπον ἀδικῆσαι αὐτούς, † καὶ ἤλεγξεν 15 ὑπὲρ αὐτῶν βασιλεῖς· † Μὴ (β) ἅψησθε τῶν χριστῶν μου, † καὶ ἐν τοῖς προφήταις μου μὴ πονηρεύεσθε. 16 † Καὶ ἐκάλεσε λιμὸν ἐπὶ τὴν γῆν, † πᾶν στήριγμα ἄρτου συνέτριψεν.

MS. A. (α) τῷ ὅρκῳ (β) ἅπτεσθαι

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Omnia (u) ad te expectant, ut des illis eſcam in [†] tempore. 28 Dante te illis, colligent: aperiente autem te manum, (x) univerſa [†] implebuntur bonitate: 29 Avertente autem te faciem, turbabuntur. Auferes ſpiritum eorum, & deficient: & in pulverem ſuum revertentur. 30 Emittes ſpiritum tuum, & creabuntur: & renovabis faciem terræ. 31 Sit gloria Domini in ſeculum: lætabitur Dominus in operibus ſuis. 32 Qui reſpicit ſuper terram, & facit eam tremere: qui tangit montes, & fumigant. 33 Cantabo Domino in vita mea: pſallam Deo meo, quamdiu ſum. 34 (y) Jocundum ſit ei eloquium meum: ego verò lætabor in Domino. 35 Deficiant peccatores à terra, & iniqui, ita ut non ſint [†]: Benedic anima mea Dominum.

(a) Alleluja. CIV.

1 Confitemini Domino, & (b) invocate nomen ejus: annuntiate inter gentes opera ejus. 2 Cantate ei, & pſallite ei: narrate omnia mirabilia ejus. (c) Laudamini in nomine ſancto ejus. 3 lætetur cor quærentium Dominum. 4 Quærite Dominum, & (d) confortamini: quærite faciem ejus ſemper. 5 Mementote mirabilium ejus, quæ fecit: prodigia ejus, & judicia oris ejus. 6 Semen Abraham ſervi ejus, filii Jacob electi ejus. 7 Ipſe Dominus Deus noſter: in omni terra judicia ejus. 8 Memor fuit in ſeculũ teſtamenti ſui: verbi, quod mandavit in mille generationes, 9 Quod diſpoſuit ad Abraham, & juramenti ſui ad Iſaac. 10 Et ſtatuit illud Jacob in præceptum, & Iſrael in teſtamentum æternum: 11 Dicens, Tibi dabo terram Chanaan, funiculum hereditatis veſtræ. 12 [a] Cum eſſent numero breves, pauciſſimi, & incolæ in ea. 13 Et tranſierũt de gente in gentem, & de regno ad populum alterum. 14 Non permiſit hominem nocere eis: & corripuit pro eis reges. 15 Nolite tangere chriſtos meos: & in prophetis meis nolite malignari. 16 Et vocavit famem ſuper terram: et omne firmamentum panis contrivit.

Verſio ÆTHIOPICA.

28 ወኵሉ፡ይሴፎ፡ኀቤከ፡፡ እንተ፡ትሁቦሙ፡ሲሳዮሙ፡በጊዜሁ፡፡፨ 29 ወእመ፡ወሀብኮሙ፡ያስተጋብኡ፡፡ ወፈቲሐከ፡እዴከ፡ታጸግብ፡ለኵሉ፡ለምሕረትከ፡፡፨ 30 ወሚመሰ፡ሜጥከ፡ገጸከ፡ይደነግፁ፡፡ ታወፅእ፡መንፈሶሙ፡ወየኀልቁ፡፡ ወይገብኡ፡ውስተ፡መሬቶሙ፡፡፨ 31 ወትፌኑ፡መንፈሰከ፡ወይትፈጠሩ፡፡ ወትሐድስ፡ገጸ፡ለምድር፡፡፨ 32 ለይኩን፡ስብሐቲሁ፡ለእግዚአብሔር፡ለዓለም፡፡ ይትፌሣሕ፡እግዚአብሔር፡በተግባሩ፡፡፨ 33 ዘይኔጽራ፡ለምድር፡ወይሬስያ፡ከመ፡ትርዓድ፡፡ ዘይገሥሦሙ፡ለአድባር፡ወይጠይሱ፡፡፨ 34 እሴብሖ፡ለእግዚአብሔር፡በሕይወትየ፡፡ ወእዜምር፡ለአምላኪየ፡በአምጣነ፡ሀሎኩ፡፡፨ 35 ወአሠምሮ፡ቃልየ፡፡ ወአንሰ፡ለትፌሥሕ፡በእግዚአብሔር፡፡፨ 36 ወየኀልቁ፡ኃጥኣን፡እምድር፡፡ ወአማፂያንኒ፡ኢይሄሉ፡እንከ፡፡ ትባርኮ፡ነፍስየ፡ለእግዚአብሔር፡፡

ሃሌ ሉያ፡፡

1 የዐ ግንዩ፡ለእግዚአብሔር፡ወጸውዑ፡ስሞ፡፡ 2 ወንግርዎሙ፡ለአሕዛብ፡ምግባሮ፡፡፨ ሰብሕዎ፡ወዘምሩ፡ሎቱ፡፡ ወንግሩ፡ኵሎ፡መንክሮ፡፡ 3 ወትከበሩ፡በስሙ፡ቅዱስ፡፡፨ ለይትፈሣሕ፡ልብ፡ዘየኀሥሥ፡ለእግዚአብሔር፡፡ ኅሥሥዎ፡ለእግዚአብሔር፡ወትጸንዑ፡፡ ወኅሥሡ፡ገጾ፡በኵሉ፡ጊዜ፡፡፨ 4 ወተዘከሩ፡መንክሮ፡ዘገብረ፡፡ ተኣምሪሁ፡ወኵነኔ፡አፉሁ፡፡፨ 5 ዘርአ፡አብርሃም፡አግብርቲሁ፡፡ ወደቂቀ፡ያዕቆብ፡ኅሩያኒሁ፡፡፨ 6 ውእቱ፡እግዚአብሔር፡አምላክነ፡፡ ውስተ፡ኵሉ፡ምድር፡ኵነኔሁ፡፡፨ 7 ወተዘከረ፡ሥርዓቶ፡ዘለዓለም፡፡ ቃሎ፡ ዘአዘዘ፡ለዐሠርቱ፡ ምእት፡ ትውልድ፡፡፨ 8 ዘሀረዐ፡ለአብርሃም፡፡ ወመሐለ፡ለይስሐቅ፡፡ ወአቀሞ፡ስምዐ፡ለያዕቆብ፡፡ ወለእስራኤል፡ኪዳነ፡ዘለዓለም፡፡፨ 9 ወይቤሎ፡ለከ፡እሁበከ፡ምድረ፡ከናአን፡፡ ትእኪሙ፡ሀብለ፡ርስትክሙ፡፡፨ 10 እንዘ፡ውሑዳን፡ንቁ፡ አኃዛቲቱ፡፡ ወፈላሲያን፡ውስቴታ፡፡፨ 11 ወኃለፉ፡ እምሕዝብ፡ ውስተ፡ሕዝብ፡፡ ወእምነገሥት፡ውስተ፡ካልእ፡ሕዝብ፡፡፨ 12 ወኢኃደገ፡ይስሐጦሙ፡ሰብእ፡፡ ወገሠጸ፡ነገሥት፡በእንቲአሆሙ፡፡፨ 13 ወኢትግስሱ፡መሲሐንየ፡፡ ወኢታሕስሙ፡ ዲበ፡ ነቢያትየ፡፡፨ 14 ወአምጽአ፡ ረኀብ፡ ለብሔር፡፡ ወአጥፍአ፡ኵሎ፡ኃይለ፡እክል፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [†] tempore ſuo. [†] adimplebis bonitate tuâ: [†] amplius: PSAL. CIV. [a] Cùm pauci admodum eſſent, & advenæ in ea.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

27 28 * والكل ينتظرونك لتعطي طعامهم في حينه* فاذا اعطيتهم اياه يجمعون. فاذا تبسط يديك
29 امتلاء الكل من نعمتك * واذا صرفت وجهك يقلقون. وتنزع ارواحهم فيموتون. والي ترابهم
30 31 يرجعون* ترسل روحك فيخلقون. وتجدد وجه الارض دفعة اخري* فليكن مجد الرب الي الابد.
32 يفرح الرب بجميع اعماله * الذي ينظر الي الارض فيجعلها مرتعدة. الذي يلمس الجبال
33 34 35 فيدخن * اسبح الرب في حياتي. ارتل الهي ما دمت* وليلذ له تسبيحي. وانا ابتهج بالرب* وتفني
الخطاة من الارض. وخالفو الناموس كانهم لم يكونوا. يا نفس باركي الرب. الليلويا.

1 * المزمور المائة واربعة * موسوم بالليلويا * وهو فصح. استيكن
2 3 اشكروا الرب وادعوا اسمه. نادوا في الامم باعماله* سبحوه ورتلوه. حدثوا بجميع عجائبه* افتخروا
4 باسمه القدوس. وليفرح قلب طالبي الرب* اطلبوا الرب واعتزوا به. اطلبوا وجهه في كل حين.
5 6 * اذكروا العجائب التي صنع * اياته واحكام فيه * ذرية ابرهيم عبيده. بنو يعقوب مختاروه.
7 8 * وهو الرب الاهنا. واحكامه علي جميع الارض * ذكر عهده الي الابد. القول الذي امر به الي
9 10 الف اجيال * وميثاقه الذي عهد لابرهيم عبده. وقسمه لاسحاق * ووصيته ليعقوب
11 12 لاسرائيل عهدا موبدا * قائلا اني اعطيك ارض كنعان بحبل القياس ميراثك * لما كانوا قليلا
13 14 في عددهم. قليلين غرباء فيها * فعبروا من امة الي امة ومن مملكة الي شعب اخر* لم يدع
15 انسانا يظلمهم * وبكت ملوكا لاجلهم * قائلا لا تلمسوا مسحائي ولا تصنعوا شرا بانبيائي
16 * ودعا غلاء علي الارض. وحطم قوة الخبز.

Et omnia expectant ut des illis eſcã tempore ſuo. 27 Quumq; dederis eis illam, contrahunt ſeſe; 28 & quum protenderis manus tuas, implentur omnia gratiâ tuâ. At quũ 29 avertis faciem tuã, conturbantur: & eripis ſpiritus eorum atque moriuntur, & in pulverem ſuum revertuntur. Mittis ſpiritum tuum, 30 & creantur: & renovas faciẽ terræ vice alterâ. Sit igitur gloria Domini 31 in perpetuum: fruetur Dominus cunctis operibus ſuis Qui intuetur terram, & 32 facit eam tremebundam: qui tangit montes, & fumigant. Laudabo Dominum in 33 vita mea, pſallam Deo meo quandiu durabo. Et jucunda erit ei laudatio mea, & 34 ego delectabor in Domino. Et deficient 35 peccatores de terra atq; prævaricatores legis ac ſi non extitiſſent. O anima, benedic Domino. Alleluja.

PSAL. CIV.

Notatus titulo Alleluja. verſ. 88. 1

GRatias agite Domino, & invocate nomen ejus, prædicate in gentibus opera ejus. Laudate eum & pſallite ei, nar2rate omnia miracula ejus. Gloriamini in 3 nomine ejus ſancto, et lætetur cor quærentium Dominum. Petite Dominum, & pro4fitemini illum: petite faciem ejus in omni tempore. Mementote mirabilium quæ fe5cit, prodigiorũ ejus, & judiciorum oris ejus. Progenies Abraham, ſervi ejus: filii Ja6cob, electi ejus. Et quidem ipſe eſt Domi7nus Deus noſter, & judicia ejus ſuper univerſam terrã. Recordatus eſt teſtamen8ti ſui in æternũ, ſermonis quem mandavit in mille generationes, Et beneficii ſui quod 9 pactus eſt cum Abraham, ſervo ſuo, & juramenti ſui ad Iſaac, Et præcepti ſui ad 10 Jacobum, in fœdus Iſraeli, teſtamentum æternum. Dicens, Equidem dabo tibi ter11ram Canaan funiculo menſoriæ in hereditatem tuam. Quum eſſent pauci numero, 12 pauci inquam & advenæ in ipſa, Tamen 13 tranſierunt de gente ad gentem, & de regno ad populum alium. Non permiſit cuiquã 14 opprimere eos, & corripuit reges pro eis, Dicens; Ne tangite [illegible] meos, et ne 15 committatis malum [illegible] 16 vocavit ca[illegible]

תהלים : קה

compede in Afflixerunt .Joseph est venditus *servum in* : virum *eorum facies ad* Misit
17 18 שלח לפניהם איש לעבד נמכר יוסף: ענו בכבל
:ejus verbã *venire* tempus ad Usque .ejus animã est ingressum ferrum : ejus pedem
19 רגליו ברזל באה נפשו: עד־עת בא־דברו
,populorum dominator : eum solvit & ,rex Misit .eum *examinavit* Domini eloquiũ
20 אמרת יהוה צרפתהו: שלח מלך ויתירהו משל עמים
.sua possessione omni in dominatorẽ & : suæ domus dominũ eũ Posuit .eum solvit &
21 ויפתחהו: שמו אדון לביתו ומשל בכל־קנינו:
est ingressus Et .efficeret sapientes ejꝰ senes & *: sua anima in* ejꝰ principes *alligandũ Ad*
22 23 לאסר שריו בנפשו וזקניו יחכם: ויבא
fecit fructificare Et .Cham terra in est peregrinatus Jahacob & : Ægyptum Israel
24 ישראל מצרים ויעקב גר בארץ־חם: ויפר
eorũ cor Convertit .suis hostibus præ eum roboravit & : valde suũ populum
25 את־עמו מאד ויעצמהו מצריו: הפך לבם
Moseh Misit .ipsius servos in *agendum callidè ad* ; ipsius populum *odiendum ad*
26 לשנא עמו להתנכל בעבדיו: שלח משה
:suorum signorum verba eis in Posuerunt .*eo in* elegit quem Aharon :suũ servum
27 עבדו אהרן אשר בחר־בו: שמו בם דברי אתותיו
exacerbaverũt non & :fecit obtenebrare &,*tenebrositatẽ* Misit .Cham terra in prodigia &
28 ומפתים בארץ חם: שלח חשך ויחשך ולא מרו
.eorũ *piscem* *interfecit* & :sanguinẽ in eorũ aquas Convertit .ejꝰ verbum
29 את־דבריו: הפך את־מימיהם לדם וימת את־דגתם:
venit & , Dixit .eorum regum cubicula in : ranas eorum terra *Produxit*
30 שרץ ארצם צפרדעים בחדרי מלכיהם: אמר ויבא
31 ,eorũ pluvias Dedit .eorum termino omni in pediculi : insectorum mixtura
32 ערב כנים בכל־גבולם: נתן גשמיהם
: eorũ *ficulneam* & ,eorũ *vineam* percussit Et .eorũ terra in flammarũ ignem :grandinem
33 ברד אש להבות בארצם: ויך גפנם ותאנתם
.numerus non &,bruchus & :locusta venit & ,Dixit .eorũ termini *lignum* contrivit &
34 וישבר עץ גבולם: אמר ויבא ארבה וילק ואין מספר:
percussit Et .eorũ terræ fructum comedit &:eorum terra in herbam omnem comedit Et
35 36 ויאכל כל־עשב בארצם ויאכל פרי אדמתם: ויך
eos eduxit Et .eorũ *roboris* omnis primitivum : eorũ terra in primogenitũ omnem
37 כל־בכור בארצם ראשית לכל־אונם: ויוציאם
:*eos egrediendo in* Ægyptus est Lætata .*corruens* ejꝰ tribubꝰ in non &:auro & argento cum
38 בכסף וזהב ואין בשבטיו כושל: שמח מצרים בצאתם
ignem & : operimentum in nubem Expandit .eos super eorum pavor *ceciderat* quia
39 כי־נפל פחדם עליהם: פרש ענן למסך ואש
.eos saturavit cœli pane & *: coturnicem* adduxit *&* ,*Petiit* .noctem illuminandũ ad
40 להאיר לילה: שאל ויבא שלו ולחם שמים ישביעם:
Quoniam .fluminis *siticulosis* in abierunt : aquæ fluxerunt & , petram Aperuit
41 42 פתח צור ויזובו מים הלכו בציות נהר: כי
suũ populum eduxit Et .sui servi Abraham *: suæ sanctitatis* verbi est recordatus
43 זכר את־דבר קדשו את־אברהם עבדו: ויוצא עמו
: gentium terras eis dedit Et .suos electos *ovatione* in : gaudio in
44 בששון ברנה את־בחיריו: ויתן להם ארצות גוים
eius leges & ,ejus statuta custodirent Ut .possiderent *nationum laborem &*
45 ועמל לאמים יירשו: בעבור ישמרו חקיו ותורתיו
.jah-Hallelu : conservarent
ינצרו הללו־יה:

תרגום TARGUM.

17 שדר קדמיהון גבר חכים לעבדא אזדבן יוסף:
18 עניאו בשושלתא רגלוי שיר דפרזל עלת
19 בנפשיה: עד עדן דאתא פתגמיה מימרא דיי
20 סנן יתיה: שדר מלך ושריה שולטן בעמיא
21 ופתח ליה: שויה רבון על ביתיה ושליט בכל
22 קניניה: למיסר רברבנוי היך בנפשיה ומן סבוי
23 אתחכם: ואתא ישראל למצרים ויעקב דר
24 בארעא דחם: ואפיש ית עמיה לחדא
25 ואתקפיה מן מעיקוי: אתהפיך לבהון למסני
26 עמיה לחשבא בישן על עבדוי: שלח
27 משה עבדיה אהרן דאתרעי ביה: שוו בהון
28 פתגמי אתותוהי ותמהוי בארעא דחם: שדר
חשוכא וחשכנון ולא סריבו על פתגמיה:
29 הפך לארמא מימיהון וקטל כל נוניהון;
30 רחיש ארעתהון עורדעניא בקטוני מלכיהון;
31 אמר ואיתי ערבובין קלמתא בכל תחומיהון;
32 יהב מטרהון ברדא אשא מצלהבא בארעהון;
33 ומחא נופניהון ותיניהון ותבר אילני תחומהון:
34 35 אמר ואיתי גובאי ורשונא לית מנין: ונמר
כל עסבא בארעהון ואכל פרי ארעהון:
36 ומחא כל בוכרא במצרים שרוי לכל
37 תוקפיהון: ואפקנון בסימא ובדהבא ולא
38 אתרנו עם מצראי למתקלא: חדון מצראי
39 במפקהון ארום נפל דחלהון עליהון: פרסיה
לעננא היך וילתא ואשתא לאנהרא
40 בליליא: שאילו בסרא ואיתי פסיונין
41 ולחמא דשמיא ישביענון: פתח טינרא
ודאיבו מיא הליכו בצחותא היך נהרא:
42 ארום דכר ית ממלל קודשיה די עם
43 אברהם עבדיה: ואפיק עמיה בחדוה
44 בתושבחתא ית בחירוי: ויהב להון ארעת
45 עממין ולעות אומיא ירתון: מן בגלל דיטרון
קימוי ואוריתיה ינטרון הללויה:

PARAPH. CHALD. Vers. La

Misit ante eos virum sapientem, in servum venditus est Joseph. Afflixerunt compede pedes ejus, *catena ferrea* intravit *in animam* ejus. Quousque tempus veniret sermonis ejus, Verbum Domini repurgavit eum. Misit rex & solvit eum; princeps populorum, & dimisit eum. Constituit eum dominum super domum suam, *et* principem in omni acquisitione sua. Ut devinciret proceres ejus tanquam ad animam suam: & senioribus ejus sapientia præcelluit. Et venit Israel in Ægyptum, & Jacob habitavit in terra Cham. Et crescere fecit populum suum valdè, & fortiorem eum fecit molestatoribus ejus. Conversum est cor eorum ut odio haberent populum ejus, ut excogitarent mala contra servos ejus. Misit Mosseh servum suum, [&] Aharon, quoniam complacuit sibi in eo. Posuerunt in eis verba signorum ejus, & prodigia ejus in terra Cham. Misit tenebras & obtenebravit eos: & non restiterunt verbo ejus. Convertit aquas eorum in sanguinem, & occidit *omnes* pisces eorum. Ebulliit terra eorum ranas in cubilibus regum eorum. Dixit, ut venirent insectorum commixtiones, pediculi in omnibus finibus eorum. *Dedit* pluvias eorum grandinem, ignem urentem in terra eorum. Et percussit vineas eorum, & ficus eorum & confregit arbores finium eorum. Dixit & adduxit locustam & bruchum innumeros. Et consumpsit omnem herbam in terra eorum, et comedit fructus terræ eorum. Et *percussit* omne primogenitum in *Ægypto*, primitias omnis fortitudinis eorum. Et eduxit eos cum argento & auro & non adjudicati sunt cum Ægyptiis ad offendiculum. Lætati sunt Ægyptii cum egrederentur, quoniam ceciderat timor eorum super ipsos. Expandit tentorium suum in nubibus tanquam velamen, & ignem ut luceret in nocte. Petierunt carnes, & adduxit coturnices, ac pane cœlesti saturabit eos. Aperuit petram & fluxerunt aquæ, ambulaverunt in aridis [*locis*] fluminis instar. Quoniam memor fuit eloquii sancti sui quod [*habuit*] cum Abraham servo suo. Et eduxit populum suum in lætitia, in laude electos suos. Et dedit eis terras populorum, & laborem gentium possederunt hæreditatis jure. Ut observent præcepta ejus, & Legem ejus custodiant: *Hallelu*

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

17 18 * ܫܕܪ ܩܕܡܝܗܘܢ ܓܒܪܐ. ܘܠܥܒܕܘܬܐ ܐܙܕܒܢ ܝܘܣܦ : * ܐܣܪܘ ܒܟܒ̈ܠܐ ܪ̈ܓܠܘܗܝ.
19 20 ܘܒܦܪܙܠܐ ܥܒܪܬ ܢܦܫܗ : * ܥܕܡܐ ܕܢܐܬܐ ܡܠܬܗ. ܡܐܡܪܗ ܕܡܪܝܐ ܒܚܢܗ : * ܫܕܪ ܡܠܟܐ
21 ܘܫܪܝܗܝ. ܘܐܩܝܡܗ ܫܠܝܛܐ ܥܠ ܥܡܗ : * ܡܪܐ ܥܠ ܒܝܬܗ ܘܫܠܝܛܐ ܥܠ ܟܠܗ ܩܢܝܢܗ.
22 23 * ܕܢܐܣܘܪ ܫܠܝܛ̈ܢܐ ܐܝܟ ܕܨܒܐ: ܘܣܒ̈ܐ ܢܚܟܡ. *ܦܣܘܩܐ* * ܘܥܠ ܐܝܣܪܝܠ ܠܡܨܪܝܢ:
24 ܘܝܥܩܘܒ ܥܡܪ ܒܡܫܟܢܐ ܕܚܡ. * ܐܣܓܝ ܛܒ ܠܥܡܗ : ܘܐܥܫܢܗ ܡܢ
25 ܒܥܠܕܒ̈ܒܘܗܝ. * ܘܗܦܟ ܠܒܗܘܢ ܠܡܣܢܐ ܠܥܡܗ: ܘܠܡܬܢܟܠܘ ܥܠ ܥܒܕܘܗܝ.
26 27 * ܫܕܪ ܠܡܘܫܐ ܥܒܕܗ ܘܠܐܗܪܘܢ ܕܓܒܐ : * ܣܡ ܒܗܘܢ ܐܬܘܬܗ ܘܬܕܡܪ̈ܬܗ ܒܐܪܥܐ ܕܚܡ.
28 29 * ܫܕܪ ܚܫܘܟܐ ܘܐܚܫܟ ܘܡܪܡܪܘ ܡܠܬܗ : * ܘܗܦܟ ܡ̈ܝܗܘܢ ܠܕܡܐ ܘܐܡܝܬ ܢܘ̈ܢܝܗܘܢ.
30 31 * ܐܪܚܫܬ ܐܪܥܗܘܢ ܐܩܪ̈ܩܥܐ ܘܒܬܘ̈ܢܐ ܕܡܠܟ̈ܝܗܘܢ : * ܐܡܪ ܘܐܬܐ ܚܠܛܐ. ܘܩܠܡܐ
32 ܒܟܠܗ ܬܚܘܡܗܘܢ : * ܥܒܕ ܡܛܪܗܘܢ ܒܪܕܐ. ܘܢܘܪܐ ܐܬܝܩܕܬ ܒܐܪܥܗܘܢ * ܡܚܐ
33 34 ܓܘܦܢܝܗܘܢ ܘܬܐܢܝܗܘܢ. ܘܬܒܪ ܐܝܠܢܐ ܕܬܚܘܡܗܘܢ : * ܐܡܪ ܘܐܬܐ ܩܡܨܐ. ܘܙܚܠܐ ܕܠܐ ܡܢܝܢ
35 36 ܒܟܠܗ ܐܪܥܗܘܢ : * ܐܟܠܘ ܟܠܗ ܥܣܒܐ ܘܦܐܪܐ ܕܐܪܥܗܘܢ. * ܘܩܛܠ ܟܠ ܒܘܟܪܐ ܕܡܨܪܝܢ:
37 38 ܘܪܫ ܟܠܗ ܚܝܠܗܘܢ. * ܐܦܩ ܐܢܘܢ ܒܣܐܡܐ ܘܒܕܗܒܐ : ܘܠܐ ܗܘܐ ܒܫܒܛܝܗܘܢ ܟܪܝܗܐ. * ܚܕܝܬ
39 ܡܨܪܝܢ ܒܡܦܩܢܗܘܢ : ܡܛܠ ܕܢܦܠܬ ܕܚܠܬܗܘܢ ܥܠܝܗܘܢ. * ܦܪܣ ܥܠܝܗܘܢ ܥܢܢܐ
40 ܘܛܠܠ ܐܢܘܢ : ܘܢܘܪܐ ܠܡܢܗܪܘ ܒܠܠܝܐ. * ܫܐܠܘ ܘܐܝܬܝ ܠܗܘܢ ܣܘܒܥܐ : ܘܠܚܡܐ
41 42 ܕܫܡܝܐ ܣܒܥ ܐܢܘܢ. * ܦܬܚ ܟܐܦܐ ܘܪܕܘ ܡܝܐ : ܘܐܙܠܘ ܡܝܐ ܒܐܬܪܐ ܨܗܝܐ. * ܡܛܠ ܕܐܬܕܟܪ
43 ܡܠܬܐ ܕܩܘܕܫܗ ܕܐܒܪܗܡ ܥܒܕܗ :* ܐܦܩ ܠܥܡܗ ܒܚܕܘܬܐ. ܘܒܬܫܒܘܚܬܐ ܠܓܒ̈ܝܘܗܝ:
44 45 * ܘܝܗܒ ܠܗܘܢ ܐܪ̈ܥܬܐ ܕܥܡ̈ܡܐ. ܘܥܡܠܐ ܕܐܡܘܬܐ ܝܪܬܘ. * ܕܢܛܪܘܢ ܦܘܩܕ̈ܢܘܗܝ :
ܘܢܡܘܣܗ ܢܛܪܘܢ.

Misit ante illos virum, & in servitutem venditus fuit Joseph : Strinxerunt compedibus pedes ejus, & per ferrum transiit anima ipsius, Quoadusq; eventu comprobaretur verbum illius. Sermo Dñi exploravit eum. Misit Rex & solvit eũ, & constituit illũ principẽ super populũ suũ, dñm super domũ suam, & præfectũ super omnẽ possessionẽ suam: Ut castigaret principes prout vellet, & seniores sapientes redderet. * *Sectio* *

Et ingressus est Israel Ægyptum, & Jacob habitavit in tabernaculo Ham. Auxit vehementer populũ suũ, & potentiorẽ fecit eum inimicis suis. Versúmq; est cor eorũ ad provoquendũ odio populũ ejus, & ad machinandum in servos ipsiꝰ. Misit Mosen servũ suũ, & Aharon quem elegerat : Edidit per eos prodigia sua, & portenta sua in terra Ham. Misit tenebras et obscuravit: & exacerbaverũt verbum ejꝰ. Vertit aquas eorũ in sanguinẽ, & mortificavit pisces eorum. Reptare fecit terrã illorũ ranas, & in arcana regum eorum. Dixit, & venerunt insecta atque pediculi in omnem finem ipsorum. Fecit pluviam eorum grandinem, & ignis accensus est in terra eorum. Percussit vites eorum, & ficus eorum & confregit arbores finium ipsorum. Dixit & venit locusta, atq; bruchꝰ absq; numero in universam terrã eorũ, Vorãrunt omnem herbam ac fructus agrorũ eorum, Occidit primogenitos quosq; Ægypti, primum quemque fœtũ eorum. Eduxit illos cum argento & auro, & non erat in familiis eorũ, infirmus. Lætata est Ægyptus de egressu eorum, quia ceciderat formido ipsorum in illos. Expandit super eos nubẽ, & obumbravit illos : ignem ad illuminandũ noctu. Petierunt, & adduxit eis cibum, & pane cœli satiavit illos. Aperuit petram, & fluxerunt aquæ, & decurrerunt aquæ per regionem sitibundam, Quia recordatus est verbi sanctitatis suæ, Abraham servum suum. Eduxit populũ suum cum gaudio, & cum gloria adolescentes suos. Deditque illis terras populorum, & laborem gentium possederunt : Ut caverent præcepta & legem ipsius observarent.

Verſio VULG. LAT.

17 Miſit ante eos virū: in ſervū venundatus
18 eſt Joſeph. Humiliaverunt in
compedibus pedes ejus, ferrum pertranſiit
19 animam ejus. Donec veniret
verbū ej⁹. Eloquium Domini inflammavit
20 eū: Miſit rex, & ſolvit eū; princeps
21 populorū, & dimiſit eū. Cōſtituit
eum dominū domûs ſuæ: & principem
22 omnis poſſeſſionis ſuæ. Ut erudiret
principes ejus ſicut ſemetipſum:
23 & ſenes ejus prudentiā doceret. Et
intravit Iſrael in Ægyptum: & Jacob
24 accola fuit in terra Cham. Et auxit
populū ſuū vehementer: & firmavit
25 eum ſuper inimicos ejus. Convertit
cor eorū ut odirent populum ejus: &
26 dolum facerent in ſervos ejus. Miſit
Moyſen ſervum ſuum; Aaron, quem
27 elegit ipſū. Poſuit in eis verba ſignorum
ſuorum, & prodigiorum in terra
28 Cham. Miſit tenebras, & obſcuravit:
& non exacerbavit ſermones ſuos.
29 Convertit aquas eorū in ſanguinem:
30 & occidit piſces eorum. Edidit terra
eorū ranas in penetralib⁹ regū ipſorum.
31 Dixit, & venit cœnomyia: & cinifes
32 in omnib⁹ finib⁹ eorū. Poſuit
pluvias eorū grandinē, ignē cōburentē
33 in terra ipſorū. Et percuſſit vineas
eorū, & ficulneas eorū: & contrivit
34 lignum finium eorum. Dixit, & venit
locuſta, & bruch⁹, cuj⁹ non erat numerus:
35 Et comedit omne fœnum in
terra eorum: & comēdit omnem fructum
36 terræ eorum. Et percuſſit omne
primogenitū in terra eorū: primitias
37 omnis laboris eorum. Et eduxit eos
cum argento & auro: & non erat in
38 tribubus eorum infirmus. Lætata eſt
Ægyptus in profectione eorum: quia
39 incubuit timor eorū ſup eos. Expandit
nubē in protectionē eorum, & ignē ut
40 luceret eis p noctē. Petierunt, & venit
coturnix: & pane cœli ſaturavit eos.
41 Dirupit petrā, & fluxerunt aquæ: abierunt
42 in ſicco flumina. Quoniā memor
fuit verbi ſancti ſui, q̄ habuit ad
43 Abraham puerū ſuū. Et eduxit populum
ſuū in exultatione, & electos ſuos
44 in lætitia. Et dedit illis regiones
gentium: & labores populorum poſſederunt:
45 Ut cuſtodiant juſtificationes
ejus, & legem ejus requirant.

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

17 † (ε) Ἀπέστειλεν ἔμπροσθεν αὐτῶν ἄνθρωπον, † εἰς
18 δοῦλον ἐπράθη Ἰωσήφ. † Ἐταπείνωσαν ἐν πέδαις
τοὺς πόδας αὐτοῦ, † σίδηρον διῆλθεν ἡ ψυχὴ αὐτοῦ·
19 † Μέχρι τοῦ ἐλθεῖν τὸν λόγον αὐτοῦ. † τὸ λόγιον (ζ) τοῦ
20 κυρίου ἐπύρωσεν αὐτόν. † Ἀπέστειλεν βασιλεὺς καὶ ἔλυσεν
21 αὐτὸν, † ἄρχων λαῶν καὶ ἀφῆκεν αὐτόν. † Κατέστησεν
αὐτὸν κύριον τοῦ οἴκου αὐτοῦ, † καὶ ἄρχοντα πάσης
22 τῆς κτήσεως αὐτοῦ, † Τοῦ παιδεῦσαι τοὺς ἄρχοντας
αὐτοῦ ὡς ἑαυτὸν, † καὶ τοὺς πρεσβυτέρους αὐτοῦ
23 σοφίσαι. † Καὶ εἰσῆλθεν Ἰσραὴλ εἰς Αἴγυπτον, † καὶ
24 Ἰακὼβ παρῴκησεν ἐν γῇ Χάμ. † Καὶ ηὔξησε τὸν
λαὸν αὐτοῦ σφόδρα, † καὶ ἐκραταίωσεν αὐτὸν ὑπὲρ
25 τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. † (η) Καὶ μετέστρεψε τὴν καρδίαν
(°) αὐτῶν τοῦ μισῆσαι τὸν λαὸν αὐτοῦ, † τοῦ δολιοῦσθαι
26 ἐν τοῖς δούλοις αὐτοῦ. † Ἐξαπέστειλεν Μωυσῆν τὸν
δοῦλον αὐτοῦ, † Ἀαρὼν ὃν ἐξελέξατο (θ) αὐτόν. †
27 Ἔθετο ἐν αὐτοῖς τοὺς λόγους τῶν σημείων αὐτοῦ, † καὶ
28 τῶν τεράτων (ι) ἐν γῇ Χάμ. † Ἐξαπέστειλε σκότος καὶ
ἐσκότασε, † (κ) καὶ παρεπίκραναν τοὺς λόγους αὐτοῦ.
29 † Μετέστρεψε τὰ ὕδατα αὐτῶν εἰς αἷμα, † καὶ ἀπέκτεινε
30 τοὺς ἰχθύας αὐτῶν. † Ἐξῆρψεν ἡ γῆ αὐτῶν
βατράχους, † ἐν τοῖς ταμείοις τῶν βασιλέων αὐτῶν.
31 † Εἶπε καὶ ἦλθε κυνόμυια, † καὶ (λ) σκνῖπες ἐν
32 πᾶσι τοῖς ὁρίοις αὐτῶν. † Ἔθετο τὰς βροχὰς αὐτῶν
χάλαζαν, † πῦρ καταφλέγον ἐν τῇ γῇ αὐτῶν.
33 † Καὶ ἐπάταξε τὰς ἀμπέλους αὐτῶν † καὶ τὰς συκᾶς
αὐτῶν, † καὶ συνέτριψε πᾶν ξύλον ὁρίου αὐτῶν. †
34 Εἶπε καὶ ἦλθεν ἀκρὶς, καὶ βροῦχος οὗ οὐκ ἦν ἀριθμὸς,
35 † Καὶ κατέφαγε (μ) πάντα τὸν χόρτον ἐν τῇ γῇ αὐτῶν,
† καὶ κατέφαγε (ν) τὸν καρπὸν τῆς γῆς αὐτῶν. †
36 Καὶ ἐπάταξε πᾶν πρωτότοκον (ξ) ἐκ τῆς γῆς
37 αὐτῶν, † ἀπαρχὴν παντὸς πόνου αὐτῶν. † Καὶ ἐξήγαγεν
αὐτοὺς ἐν ἀργυρίῳ καὶ χρυσίῳ, † καὶ οὐκ ἦν ἐν ταῖς
38 φυλαῖς αὐτῶν (ο) ὁ ἀσθενῶν. † Εὐφράνθη Αἴγυπτος ἐν
τῇ ἐξόδῳ αὐτῶν, † ὅτι ἐπέπεσεν ὁ φόβος αὐτῶν
39 ἐπ᾽ αὐτούς. † Διεπέτασε νεφέλην εἰς σκέπην αὐτοῖς,
40 † καὶ πῦρ τοῦ φωτίσαι αὐτοῖς τὴν νύκτα. † Ἤτησαν,
καὶ ἦλθεν ὀρτυγομήτρα, † καὶ ἄρτον οὐρανοῦ ἐνέπλησεν
41 αὐτούς. † Διέρρηξε πέτραν, καὶ ἐρρύησαν
ὕδατα, † ἐπορεύθησαν ἐν ἀνύδροις ποταμοί. †
42 Ὅτι ἐμνήσθη τοῦ λόγου τοῦ ἁγίου αὐτοῦ, † τοῦ πρὸς
43 Ἀβραὰμ τὸν δοῦλον αὐτοῦ. † Καὶ ἐξήγαγε τὸν λαὸν
αὐτοῦ ἐν ἀγαλλιάσει, † καὶ τοὺς (π) ἐκλεκτοὺς αὐτοῦ
44 ἐν εὐφροσύνῃ. † Καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς χώρας ἐθνῶν,
45 † καὶ πόνους λαῶν (ρ) ἐκληρονόμησαν. † Ὅπως ἂν φυλάξωσι
τὰ δικαιώματα αὐτοῦ, † καὶ τὸν νόμον αὐτοῦ
(σ) ἐκζητήσωσιν.

MS. A. Ἐξαπέστειλεν (ζ) κυρίου (η) Μετέστρεψεν (°) αὐτοῦ (θ) ἑαυτῷ. (ι) αὐτοῦ ἐν γῇ (κ) ὅτι παρεπίκραναν (λ) σκνῖφες (μ) πάντα χόρτον (ν) πάντα (ξ) ἐν τῇ γῇ αὐτῶν, (ο) ἀσθενῶν. (π) ἐκλεκτοὺς ἐν (ρ) κατεκληρονόμησαν. (σ) ἐκζητήσωσιν.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

16 Miſit ante eos hominem: [b] in ſervū venundatus eſt Joſeph. 17
Humiliaverunt in compedib⁹ pedes ejus: [c] ferrum pertranſivit (e) anima
ejus: Donec veniret verbum ejus. 18 Eloquium Domini [d] inflammavit
eū: Miſit rex, & ſolvit eū: [e] princeps (f) populorū, & dimiſit
eum. 19 Conſtituit eū dominū domûs ſuæ, & [f] principem omnis
poſſeſſionis ſuæ. 20 Ut erudiret principes ejus, ſicut ſemetipſum, & [g]
ſeniores ejus ſapientiam doceret. 21
Et intravit Iſrael in [h] Ægyptū: & Jacob accola fuit in terra Cham.
22 Et auxit populum ſuum vehementer: & firmavit eum ſuper inimicos
ejus. 23 Et convertit cor eorum, ut odirent populum ejus, &
dolum facerent in ſervis ejus. 24
Miſit Moyſem ſervum ſuum, Aarō, quem elegit ipſum. 25 Poſuit [i] in eis
verba ſignorum ſuorum, & prodigiorum in terra Cham. 26 Miſit
tenebras, & obſcuravit: & (g) exacerbaverunt [k] ſermones ejus. 27
Convertit aquas eorum in ſanguinem: (h) & occîdit piſces eorum:
28 Edidit (i) terra eorum ranas, in [l] penetralibus regum ipſorum. 29
Dixit, & venit cynomya, & cyniphes in [m] omnibus finibus eorum.
30 Poſuit pluvias eorum grandinē, ignē comburentem in terra ipſorū.
31 Et percuſſit vites eorum, & ficus eorum: & contrivit omne lignum
finis eorū. 32 Dixit, & venit locuſta: & bruchus, cujus non erat
numerus. 33 Et comêdit omne fœnum in terra eorum: & (k) comêdit
[n] fructum terræ eorum. 34
Et percuſſit omne primogenitum (l) de terra eorum, primitias omnis laboris
eorum. 35 Et eduxit eos in argento, & auro: & non erat in tribubus
eorum infirmus. 36 Lætata eſt Ægyptus in profectione eorum, quia
incubuit timor eorum ſuper eos. 37
Expandit nubem in protectionem eorum: & ignē, ut luceret eis per noctem.
38 (m) Petierunt, et venit coturnix: et pane cœli ſaturavit eos.
39 Dirupit petram, et fluxerunt aquæ: (n) iverunt [o] in ſiccis flumina.
40 Quoniam memor fuit verbi ſancti ſui, quod habuit ad Abraham ſervum ſuum. 42
41 Et eduxit populum ſuum in exultatione, et electos ſuos in lætitia. 42 Et dedit 43 44
eis regiones gentium, et labores [p] populorum poſſederunt. 43 Ut cuſtodiant [q] juſtificationes 45
ejus, et legem ejus exquirant.

Verſio ÆTHIOPICA.

17 ወፈነወ፡ብእሴ፡ቅድሜሆሙ፡፡ወተሰይጠ፡ዮ 16
ሴፍ፡ወኮነ፡ከመ፡ገብረ፡፡=፡ወሐመ፡እገሪሁ፡ 17
18 በመዋቅሕት፡፡ወእምሰጠት፡ነፍሱ፡እምኃፂ
ን፡፡ ዘእንበለ፡ይብጽሕ፡ቃሉ፡፡=፡ ቃለ፡እ 18
19 ግዚአብሔር፡አመከሮ፡፡ ወፈነወ፡ንጉሠ፡ወ
20 ፈትሖ፡፡ወሠየሞ፡መልአከ፡አሕዛብ፡፡=፡ ወረ 19
ሰዮ፡እግዚአ፡ለቤቱ፡፡ ወእኮንኖ፡ለኵሉ፡ጥ
21 ሪቱ፡፡=፡ ከመ፡ይገሥጾሙ፡ለመላእክቲሁ፡ 20
ከማሁ፡፡ ወከመ፡ያጥብቦሙ፡ለሊቃውንቲሆ
22 ሙ፡ከማሁ፡፡=፡ወቦአ፡እስራኤል፡ብሔረ፡ግ 21
ብጽ፡፡ ወያዕቆብኒ፡ኃደረ፡ምድረ፡ካም፡፡=፡
23 ወአብዝኆሙ፡ለሕዝቡ፡ፈድፋደ፡፡ ወአጽን 22
ዖሙ፡እምፀሮሙ፡፡=፡ ወሜጠ፡ልቦሙ፡ከ 23
24 መ፡ይጽልኡ፡ሕዝቦ፡፡ ወከመ፡ያሐብልዩ
25 ሙ፡ለአግብርቲሁ፡፡=፡ ወፈነወ፡ሙሴሃ፡ገ 24
ብሮ፡፡ ወአሮንሃ፡ኅሩዮ፡፡=፡ወሠመ፡ቃለ፡ት 25
እምርት፡ ላዕሌሆሙ፡፡ ወመንክሮሂ፡በምድ
26 ረ፡ካም፡፡=፡ ወፈነወ፡ጽልመተ፡ ወአጽለሞ 26
27 ሙ፡፡ወአምረሮ፡ለቃሉ፡፡=፡ ወረሰዮ፡ማዮ 27
28 ሙ፡ደመ፡፡ወቀተለ፡ ዓሣቲሆሙ፡፡=፡ ወአ 28
ውፅአት፡ምድሮሙ፡ቈርነናዓተ፡፡ወውስተ፡
ዐቢያተ፡ነገሥቶሙ፡፡=፡ ይቤ፡ወመጽአ፡ 29
29 አኮት፡፡ ወትንንያ፡ውስተ፡ ኵሉ፡ ምድሮ
ሙ፡፡=፡ ወረሰየ፡ዝናሞሙ፡በረደ፡፡ ወነደደ፡ 30
30 እሳት፡ውስተ፡ምድሮሙ፡፡=፡ወቀተለ፡ ወይኖ 31
31 ሙ፡ወበለሶሙ፡፡ወቀጥቀጠ፡ኵሎ፡ ዕፀወ፡ብ
ሔሮሙ፡፡=፡ወይቤ፡ወመጽአ፡አንበጣ፡፡ወያ 32
32 ገብያ፡ዘአልቦ፡ኍልቍ፡፡=፡ወበልዐ፡ኵሎ፡ሣ 33
ዕረ፡ምድሮሙ፡፡=፡ ወቀያሔ፡ኵሎ፡ ተ፡ብሮ 34
33 ሙ፡፡ወቀተለ፡ኵሎ፡በኵረ፡ብሔሮሙ፡፡=፡
34 ወአውፅኦሙ፡በወርቅ፡ወብሩር፡፡ ወአልቦ፡ደ 35
ዌ፡ውስተ፡ሕዝቦሙ፡፡=፡ወተፈሥሐ፡ግብጽ፡ 36
35 በፀአቶሙ፡፡ እስመ፡ፈርሀዎሙ፡፡=፡ ወአንጦ 37
ልዐ፡ደመና፡ ወሰወሮሙ፡፡ወእሳትኒ፡ከመ፡ያብ
ርህ፡ሎሙ፡በሌሊት፡፡=፡ወሰአሉ፡ወመጽአ፡ 38
36 ፍርፍርት፡፡ ወአጽገቦሙ፡ኅብስተ፡ሰማ
37 ይ፡፡=፡ ወአንቅዐ፡ኰኵሐ፡ ወአውሐዘ፡ማ 39
የ፡፡ወሖሩ፡ውስተ፡አፍላገ፡በደው፡፡=፡ እስ 40
38 መ፡ተዘከረ፡ቃሎ፡ቅዱስ፡፡ዘኀበ፡አብርሃም፡
ገብሩ፡፡=፡ ወአውፅኦሙ፡ለሕዝቡ፡በትፍ 41
39 ሥሕት፡፡ወለኅሩያኒሁ፡በሐሤት፡፡=፡ ወወ 42
ሀቦሙ፡በሐውርተ፡አሕዛብ፡፡ ወወረሱ፡ጻ
40 ማ፡በዕድ፡፡=፡ ከመ፡ይዕቀቡ፡ሕጎ፡፡ወይኃ 43
ሥሡ፡ሥርዓቶ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] & emptus eſt Joſeph & factus tanquā ſervus, [c] & evolavit anima ejus à ferro: [d] probavit eum [e] & poſuit eum principē populorum. [f] & poteſtatem dedit ei in omnē poſſeſſionē ſuam. [g] ut ſeniores eorum prudentes redderet, ſicut ipſi. [h] terram Ægypti: & Jacob etiam inhabitabat [i] in eis vocē ignorā, & [k] verbū ejus. [l] palatiis [m] omni terra eorū. [n] omnē fructū [o] in flumina ſolitudines. [p] aliorum poſſederūt [q] legē ejus, & teſtamentum ejus

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

17 18 ارسل امامهم رجلا فبيع يوسف كعبد * واذلوا رجليه بقيود الحديد * عبرت نفسه * حتي جاء
19 20 كلمته. وكلمة الرب طرحت فيه النار * ارسل الملك فاطلقه. وجعله رئيس شعوب * وتركه سيدا
21 22 علي منزله. ورئيسا علي جميع ماله * لكي يؤدب رؤساءه كمثله ويفقه مشايخه * ثم دخل اسرائيل
23 24 25 الي مصر * وانتجع يعقوب الي ارض حام * فاكثر شعبه جدا واعزه اكثر من اعدائه * فانصرف
26 27 قلبهم ليبغض شعبه ليمكروا بعبيده * فارسل موسي عبده وهرون الذي اختاره * ووضع فيهما
28 29 اقوال اياته * وعجائبه في ارض حام * بعث ظلمة فاظلمت * فاغضبوا اقواله * فقلب مياههم دما
30 31 وقتل اسماكهم * وبعثت الارض ضفادع في بواطن ملوكهم * قال فجاء ذباب الكلب. والقمل في
32 33 جميع تخومهم * جعل امطارهم بردا. واشتعلت النار في ارضهم * ضرب شجر كرومهم وشجر تينهم
34 35 وحطم جميع شجر تخومهم * قال فاتي جراد وجندب لا يحصي * فاكل جميع عشب ارضهم. واكل
36 37 جميع ثمر ارضهم * وضرب كل بكر في ارضهم. واول نعمهم جميعه * واخرجهم بالفضة والذهب.
38 39 وليس مريضا في اسباطهم * وفرحت مصر بخروجهم. لان خوفهم اتي عليهم * بسط سحابا فظللهم
40 41 ونارا في الليل ليضي لهم * سالوا طعاما فجاءهم السلوي. وخبز السماء اشبعهم به * شق
42 الصخر فسالت المياه. وسلكت في المعاطش انهارا * لانه ذكر كلامه المقدس الذي من
43 44 لابرهيم عبده * واخرج شعبه بالفرح ومختاريه بالسرور * واعطاهم كور الامم * وورثوا اتعاب
45 الشعوب * لكي يحفظوا حقوقه * ويطلبوا ناموسه * اللليلويا.

Miſit ante eos virū, et vendit⁹ eſt Joſeph 17
ut ſerv⁹: Et humiliaverunt pedes ej⁹ compedibus 18
ferreis. Pertranſiit anima ejus
Quoad veniſſet verbū ejus, & verbū Domini 19
injeciſſet in eū ignem. Miſit rex & 20
dimiſit illū, et conſtituit eū principem populorū.
Et poſuit eū dominū ſuper domū 21
ſuā, & præfectū ſuper omnes facultates
ſuas. Ut erudiret principes ejus inſtar ſui 22
ipſius, et doceret ſenes ejus. Deinde ingreſſus 23
eſt Iſrael in Ægyptū, & migravit Jacob
in terrā Hā. Multiplicavit autem populū 24
ejus vehementer, & corroboravit eū
præ inimicis ipſi⁹. Et converſū eſt cor eorū 25
ad odium populi ejus, ut doloſè agerent in
ſervos illius. Quare miſit Moſem ſervum 26
ſuū, & Aaronem quem elegerat. Et poſuit 27
in utroque verba ſignorū ſuorum, & miracula
ſua in terra Hā. Miſit obſcuritatē, 28
& factæ ſunt tenebræ: & ad iram concitaverunt
ſermones ejus. Et cōvertit aquas 29
eorū in ſanguinem, et occidit piſces eorū.
Et ſcatuit terra ranis, in cubilibus regum 30
eorum. Dixit, & venerunt muſcæ canū et 31
pediculi in omnes terminos eorum. Fecit 32
pluvias eorum grandinem, et accenſus eſt
ignis in terra eorum. Percuſſit arbores vinearū 33
illorū, et arbores ficuū eorū, et confregit
omnes arbores finium eorū. Dixit, et 34
venerunt locuſtæ et bruchus innumerabilis.
Et comedit omnem herbam terræ eorū, 35
voravitque omnem fructum terræ eorum.
Et percuſſit omne primogenitum in terra 36
eorū, & primitias laboris eorū cujuſcunque.
Et eduxit eos cum argento et auro, & 37
non erat ægrotus in tribubus eorum: Et 38
gaviſa eſt Ægyptus de exitu illorū: quia
timor eorū venit ſuper eos. Extendit nubem, 39
& obumbravit eos: et ignem in nocte,
ut luceret eis. Petierunt cibū, & venerunt 40
eis coturnices, et pane cœli ſaturavit illos.
Fidit petrā, et effluxerunt aquæ et excurrerunt 41
per ſitibunda in fluvios. Quoniam 42
recordatus eſt ſermonis ſui ſancti, quem
aſſeruit Abrahæ ſervo ſuo. Et eduxit populū 43
ſuum cum lætitia, & electos ſuos cum
gaudio. Et dedit illis provincias gentium, 44
et hæreditariò poſſederunt labores populorum.
Ut cuſtodirēt ſtatuta ejus, & requirant legem ipſius. Alleluja. 45

תהלים : קו

PSAL. CVI. קו

.ejꝰ miſericordia ſeculum in quoniã :bonus quoniã,Domino Confitemini .*Jah* Laudate

הללו יה ׀ הודו ליהוה כי־טוב כי לעולם חסדו׃ 1

Beati ? ejus laudem omnem evulgabit : DOMINI fortitudines eloquetur Quis

2 מי ימלל גבורות יהוה ישמיע כל־תהלתו׃ אשרי

3 Domine mei Memento .tempore omni in juſtitiam *faciens* : judicium *cuſtodientes*

4 שמרי משפט עשה צדקה בכל־עת׃ זכרני יהוה

bonitate in videndum Ad .tua ſalute in me viſita : tui populi voluntate in

5 ברצון עמך פקדני בישועתך׃ לראות בטובת

.tua hæreditate cum *gloriandum ad* : tuæ gentis lætitia in *lætandum ad* ,tuorũ electorũ

בחיריך לשמח בשמחת גויך להתהלל עם־נחלתך׃

Ægypto in noſtri Patres .fecimus impia,fecimus prava,noſtris patribꝰ cum Peccavimus

6 7 חטאנו עם־אבותינו העוינו הרשענו׃ אבותינו במצרים

multitudinis fuerunt memores non , tua mirabilia intellexerunt non

לא־השכילו נפלאותיך לא זכרו את־רב

eos ſervavit Et .*carecti* mari in ,mare juxta rebellaverunt ſed : tuarũ miſericordiarũ

8 חסדיך וימרו על־ים בים־סוף׃ ויושיעם

mare *in* increpavit Et .ſuã fortitudinẽ *notificandum ad* : ſuum nomen propter

9 למען שמו להודיע את־גבורתו׃ ויגער בים־

eos ſervavit Et .deſerto *ſicut* ,abyſſos per eos fecit ambulare & : eſt ſiccatum & ,Suph

10 סוף ויחרב ויוליכם בתהמות כמדבר׃ ויושיעם

aquæ operuerunt Et .inimici manu de eos redemit & : habentis odio manu de

11 מיד שונא ויגאלם מיד אויב׃ ויכסו־מים

cantaverunt :ejꝰ verbis in crediderunt Et .remanſit non eis ex unus : eorum hoſtes

12 צריהם אחד מהם לא נותר׃ ויאמינו בדבריו ישירו

ejꝰ conſilium expectaverunt non :ejꝰ operum ſunt obliti ,Feſtinaverunt .ejus laudem

13 תהלתו׃ מהרו שכחו מעשיו לא־חכו לעצתו׃

eis dedit Et .ſolitudine in Deum tẽtaverũt & : deſerto in cõcupiſcẽtiã cõcupierũt Et

14 15 ויתאוו תאוה במדבר וינסו־אל בישימון׃ ויתן להם

:*caſtrametatione* in Moſeh in ſunt zelati Et .eorũ anima in *maciem* miſit &:eorũ petitionẽ

16 שאלתם וישלח רזון בנפשם׃ ויקנאו למשה במחנה

cœtum ſuper operuit &:Dathan deglutivit & ,terra Aperuit .Domini ſanctũ Aharon in

17 לאהרן קדוש יהוה׃ תפתח־ארץ ותבלע דתן ותכס על־עדת

vitulum Fecerunt .impios combuſſit flamma :eorũ *cœtum* in ignis exarſit Et .Abiram

18 19 אבירם׃ ותבער־אש בעדתם להבה תלהט רשעים׃ יעשו־עגל

bovis *exemplar* in :ſuã gloriã mutaverũt Et .conflatili ſe incurvaverunt & :Choreb in

20 בחרב וישתחוו למסכה׃ וימירו את־כבודם בתבנית שור

.Ægypto in magna *facientis* : ſui ſervatoris Dei ſunt Obliti .herbam comedentis

21 אכל עשב׃ שכחו אל מושיעם עשה גדלות במצרים׃

,eos *delendos ad* ,dixit Et .Suph mari ſuper terribilia : Cham terra in Mirabilia

22 23 נפלאות בארץ חם נוראות על־ים־סוף׃ ויאמר להשמידם

ejꝰ *excandeſcentiam avertendum ad* :*ejus facies ad ruptura* in ſtetiſſet ejꝰ electꝰ Moſeh niſi

לולי משה בחירו עמד בפרץ לפניו להשיב חמתו

.ejus verbo crediderunt non : *deſiderii terra in reprobaverunt* Et .*corrumpendo* à

24 מהשחית׃ וימאסו בארץ חמדה לא־האמינו לדברו׃

תרגום TARGUM.

קו

1 הללויה אודו קדם יי ארום טב ארום לעלם
2 טיביה׃ מן ייכול למללא גבורתא דיי ירשי
3 לאשמעא לכולהון תושבחתיה׃ טוביהון
4 דנטרי דינא עבדי צדקתא בכל עדן׃ דכר יתי
יי ברעוא טבא עם עמך אדכר לי בפורקנך׃
5 למחמי בטובת בחיריך למחדי בחדות עמך
6 לאשתבחא עם אחסנתך׃ חבנא עם
7 אבהתנא אעוינא ארשענא׃ אבהתנא
במצרים לא אשכילו פרשותך לא דכרו
ית סוגעי טובך וסריבו על מימרך על ימא
8 בימא דסוף׃ ופרקנון בגלל שמיה לאודעא
9 ית גבורתיה׃ ונזף בימא דסוף ואתנגיב
10 והלכנון בתהומיא היך כבמדברא׃ ופרקנון
מיד סנאה ופרק יתהון מן יד בעלי דבבא׃
11 וחפון מיא מעיקיהון חד מנהון לא אשתאר׃
12 והימינו בשום מימריה שבחו תושבחתיה׃
13 סרהיבו אתנשיאו עובדוי לא אסתכרו
14 למלכתיה׃ ושיילו שאלתא במדברא ונסיאו
15 אלהא באתר צדו׃ ויהב להון שילותהון
16 ושדר פתרנותא בנפשהון׃ וטננו למשה
17 במשריתא לאהרן קדישא דיי׃ אתפתחת
ארעא ובלעת דתן וחפת על סיעת אבירם׃
18 ודלקת אשתא בסיעתהון להבותא תשלהב
19 רשיעיא׃ עבדו עגלא בחורב וסגידו למתכא׃
20 ופרגון ית איקר רבונהון בדמות תור דאכיל
21 עסבא ומודהם׃ אתנשיאו אלהא פרקהון
22 דעבד רברבן במצרים׃ פרישן בארעא דחם
23 דחילן על ימא דסוף׃ ואמר במימריה
לשציותהון אלמלי משה בחיריה דקם ואתקף
בצלו קדמוי לאתבא חמתיה מלחבלא׃
24 ואתרחיקת נפשהון בארעא רגינא לא המינו
בפתגמיה׃

PARAPH. CHALD Verſ. La

Hallelujah.

PSAL. CVI.

Confitemini coram Dño,quoniam bo quoniam in æternum benignitas ejus. Qu poterit eloqui fortitudines Domini, vale bit notas facere omnes laudes ejus? Bea cuſtodientes judicium, facientéſque juſti am in omni tempore. Recordare mei Do mine in voluntate bona cum populo tuo recordare mei in redemptione tuâ. Ut vide am in bonitate electorum tuorum, ut gau deam in lætitia populi tui , & laudes d cam cum hæreditate tua. Peccavimus cu patribus noſtris, iniquè fecimus, & imp egimus. Patres noſtri in Ægypto non inte lexerunt facta mirabilia tua, nec fuerun memores multitudinis miſericordiæ tua ſed fuerunt rebelles in Verbum tuum ju xta mare in mari rubro. Et redemit eo propter nomen ſuum, ut notam faceret po tentiam ſuam. Et comminatus eſt mari r bro, ac ſiccatum eſt ; & deduxit eos pe abyſſos ſicut per deſertum. Et redemit eo de manu oſoris,& eruit eos *è manu* au *rum* inimicitiæ. Et operuerunt aquæ op preſſores ipſorum ; unus ex eis non ſuper fuit. Et crediderunt in nomine Verbi ejus cecinerunt laudem ejus. Citò obliti ſun operũ ejus, nec converſi ſunt ad conſilium ejus. Et *petierunt petitionem* in deſerto, tentaverunt Deum in loco *deſolato*. Et de dit eis petitionem eorum, & miſit macien in animas ipſorum. Et invidia commo ſunt contra Moſſeh in caſtris, & in Aharo ſanctum Domini. Aperta eſt terra & deglu tivit Dathan, & operuit congregationem Abiram. Et ſucceníus eſt ignis in con gregationem eorum flamma depaſta eſt im pios. Fecerunt vitulum in Choreb,& ado raverũt conflatile. Et mutaverũt gloriã Do mini ſui in ſimilitudinem vituli comedentis herbam & mugientis. Obliti ſunt Dei re demptoris eorum, qui grandia edidit ope in Ægypto. Mirabilia in terra Cham, ter bilia in mari rubro. Et dixit in verbo ſe exterminaturum eos, niſi Moſſeh electu ejus ſurrexiſſet, & ſeſe roboraſſet orando conſpectu ejus, ut averteret iram illius, destrueret. Et *abominata eſt anima* eor terram deſiderabilem, neque crediderun *verbo* ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܘ * *ܠܐ ܡܫܬܡܗܐ. ܡܥܝܪ ܠܗܘܢ ܠܘܬ ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܠܦ
1 ܠܢ. ܕܟܡܐ ܕܝܬܝܪ ܣܟܠܘ ܝܗܘܕܝܐ ܚܢܢ ܢܬܕܚܠ. ܠܐ ܢܬܚܪܐ ܒܥܕܬܐ ܘܠܐ ܢܬܚܪܐ ܥܡ ܐܚܝܢ ܟܠܗ ܡܕܡ:
ܘܟܕ ܩܝܡܝܢܢ ܒܙܒܢܐ ܕܐܪ̈ܙܐ ܘܕܨܠܘܬܐ. ܘܟܕ ܚܛܝܢܢ ܢܬܬܘܐ. ܦܬܓܡܐ ܩܕ. ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ
ܡܛܠ ܕܛܒ ܘܠܥܠܡ ܛܝܒܘܬܗ. * ܡܢܘ ܢܡܠܠ ܓܒܪܘܬܗ ܕܡܪܝܐ: ܘܢܫܡܥ ܟܠܗܝܢ
2 ܬܫܒܚܬܗ. * ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ ܕܝܢܗ: ܘܥܒܕܝܢ ܙܕܝܩܘܬܗ ܒܟܠ ܙܒܢ.
3 *ܐܬܕܟܪܢ ܡܪܝܐ ܒܪܥܝܢܟ ܕܥܡܟ: ܣܥܘܪܝܢ ܒܦܘܪܩܢܟ. * ܕܐܚܙܐ ܒܛܒܬܐ ܕܓܒܝܟ :4
5 6 ܘܐܚܕܐ ܒܚܕܘܬܗ ܘܐܫܬܒܗܪ ܒܝܪܬܘܬܟ. * ܚܛܝܢ ܥܡ ܐܒܗܝܢ ܘܐܥܘܝܢ ܘܐܪܫܥܢ: * ܐܒܗܝܢ
7 ܒܡܨܪܝܢ ܠܐ ܐܣܬܟܠܘ ܬܕܡܪ̈ܬܟ: ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܘ ܣܘܓܐܐ ܕܛܝܒܘܬܟ: ܘܐܡܪܘ ܥܠ ܡܝܐ ܒܝܡܐ
8 ܕܣܘܦ. * ܘܦܪܩ ܐܢܘܢ ܡܛܠ ܫܡܗ: ܕܢܘܕܥ ܓܒܪܘܬܗ. * ܘܟܐܐ ܒܝܡܐ ܕܣܘܦ ܘܝܒܫ:
9 10 ܘܗܠܟ ܐܢܘܢ ܒܬܗܘܡܐ ܐܝܟ ܕܒܡܕܒܪܐ. * ܘܦܪܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ: ܘܦܪܩ ܐܢܘܢ
11 ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܣܢܐܐ. * ܘܚܦܘ ܡܝܐ ܠܐܠܘܨܝܗܘܢ: ܘܚܕ ܡܢܗܘܢ ܠܐ ܐܫܬܚܪ. * ܘܗܝܡܢܘ
12 13 ܒܡ̈ܠܘܗܝ ܘܫܒܚܘ ܬܫܒܘܚܬܗ. * ܐܣܪܗܒܘ ܘܛܥܘ ܠܐܠܗܐ. ܘܠܐ ܣܟܝܘ ܠܡܠܟܗ:
14 * ܘܪܓܘ ܪܓܬܐ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܢܣܝܘ ܠܐܠܗܐ ܒܬܚܘܡܐ: * ܘܝܗܒ ܠܗܘܢ ܫܐܠܬܗܘܢ. ܘܫܕܪ
15 16 ܣܒܥܐ ܠܢܦܫܬܗܘܢ: * ܘܛܢܘ ܒܡܘܫܐ ܒܡܫܪܝܬܐ. ܘܒܐܗܪܘܢ ܩܕܝܫܗ ܕܡܪܝܐ:
17 * ܐܬܦܬܚܬ ܐܪܥܐ ܘܒܠܥܬ ܠܕܬܢ. ܘܟܣܬ ܥܠ ܟܢܘܫܬܗ ܕܐܒܝܪܘܡ. * ܘܝܩܕܬ ܢܘܪܐ
18 19 ܒܟܢܘܫܬܗܘܢ. ܘܫܠܗܒܝܬܐ ܐܘܩܕܬ ܠܪ̈ܫܝܥܐ: * ܥܒܕܘ ܥܓܠܐ ܒܚܘܪܝܒ. ܘܣܓܕܘ
20 21 ܠܦܬܟܪܐ. * ܘܫܚܠܦܘ ܐܝܩܪܗܘܢ ܒܕܡܘܬܐ ܕܬܘܪܐ ܕܐܟܠ ܥܣܒܐ: * ܘܛܥܘ ܠܐܠܗܐ
22 ܕܦܪܩ ܐܢܘܢ. ܕܥܒܕ ܪ̈ܘܪܒܬܐ ܒܡܨܪܝܢ: * ܘܬܕܡܪ̈ܬܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܡ. ܘܕܚܝܠ̈ܬܐ ܒܝܡܐ
23 ܕܣܘܦ : * ܘܐܡܪ ܕܢܘܒܕ ܐܢܘܢ. * ܦܣܘܩܐ * ܐܠܘܠܐ ܡܘܫܐ ܓܒܝܗ : ܩܡ
24 ܒܬܒܪܐ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܐܗܦܟ ܚܡܬܗ ܕܠܐ ܢܚܒܠ ܐܢܘܢ : * ܘܐܣܠܝܘ ܠܐܪܥܐ
ܪܓܝܓܬܐ. ܘܠܐ ܗܝܡܢܘ ܒܡܠܬܗ :

PSAL. CVI.

Anonymus. Excitat eos ad præcepta Dñi ſervanda. Docetq; nos ut quò magis de runt Judæi, nos extimeſcamus : ne con lemur in Eccleſia, neve contendamus cu tribus noſtris ullo unquam pacto : & præ tim quum aſtamus tempore Myſteriorum orationis. Quum peccamus, ut pœnitentia agamus. Verſus 104.

Confitemini Dño,quia,bonus eſt,& ſæ culum benignitas ejus. Quis recenſeat racula Dñi, & referat cunctas laudes e Beati ii qui ſervãt judicia ejus, & exeq tur juſtitiam illius omni tempore. Memen noſtri Dñe cum beneplacito erga popul um, viſita nos cum ſalute tua. Ut videam bona electorum tuorũ,gaudeamꝰ gaudio & gloriemur hæreditate tuâ. Peccavi cum patribus noſtris, & deliravimꝰ, impie temq; commiſimus. Patres noſtri in Ægy non deprehenderunt miracula tua, neque cordati ſunt multitudinis beneficiorũ tu & altercati ſunt prope aquas, in mari S Attamen liberavit eos propter nomẽ ſu oſtenderet potentiã ſuã : Increpuitque Suph, & exaruit:fecitq; eos ambulare p byſſum quaſi p deſertum: Et ſalvavit il manu hoſtis, eripuitq; eos de manu urge Et obruerunt aquæ anguſtiantes illos, unus quidẽ ex iis fuit ſuperſtes. Credi verbis ejus,& cecinerunt laudes ejꝰ. Fe runt atq; obliti ſunt Deum,& non expe runt conſilium ipſius. Concupiſcentia e runt in ſolitudine,& tentaverunt De ſimun. Satisfecit illorum petitionibꝰ, ſatietatẽ animabꝰ eorũ. Et inviderunt exercitꝰ, atq; Ahroni ſancto Dñi. Ape terra,& deglutivit Dathan, & operu gregationẽ Abirom, Exarſit ignis in c eorum, & flamma combuſſit nefarios. runt vitulum in Horib, et adoraverunt Ac permutaverunt gloriam ſuã effigie comedentis herbam. Et obliti ſunt Deu ſalvavit eos, qui patravit magna in Æg Et mira in terra Ham, atq; terribilia Suph. Dixitque ſe perditurum eos, Niſi Moſes electus ejus ſtetiſſet in rupt ram illo,divertiſſetq; irã ipſius ne co eos. Et aſpernati ſunt terrã deſider crediderunt verbo ejus :

Verſio VULG. LAT.

Alleluja. (Judith 13.21.) CV.
1 Confitemini Dño, quoniã bonus:
quoniam in ſeculum miſericordia ej⁹,
2 Quis loquetur potentias Domini,
3 auditas faciet omnes laudes ejus? Beati,
qui cuſtodiunt judicium, & faciunt
4 juſtitiã in omni tempore. Memento
noſtri, Dñe, in beneplacito populi tui:
5 viſita nos in ſalutari tuo: Ad videndũ in
bonitate electorũ tuorũ, ad lætandũ in
lætitia gentis tuæ: ut lauderis cum
6 hæreditate tua. Peccavimus cũ patribus
noſtris: injuſtè egim⁹, iniquitatẽ
7 fecimus. Patres noſtri in Ægypto non
intellexerunt mirabilia tua: non fuerunt
memores multitudinis miſericordiæ
tuæ. Et irritaverunt aſcendentes in
8 mare, Mare rubrũ. Et ſalvavit eos
propter nomen ſuum: ut notã faceret
9 potentiã ſuam: Et increpuit Mare rubrũ,
& exiccatum eſt: & deduxit eos in
10 abyſſis ſicut in deſerto. Et ſalvavit eos
de manu odientium: & redemit eos
11 de manu inimici. Et operuit aqua
tribulantes eos: un⁹ ex eis non remanſit.
12 Et crediderunt verbis ejus: & lauda-
13 verunt laudẽ ejus. Citò fecerunt,
obliti ſunt operum ejus: & nõ ſuſtinuerunt
14 conſilium ej⁹. Et concupierunt
concupiſcentiã in deſerto: & tentaverunt
15 Deum in inaquoſo. Et dedit eis
petitionẽ ipſorum: & miſit ſaturitatẽ in
16 animas eorũ. Et irritaverunt Moyſen in
17 caſtris, Aaron Sanctũ Domini. Aperta
eſt terra, & deglutivit Dathan: &
18 operuit ſuper congregationem Abiron. Et
exarſit ignis in ſynagoga eorum:
19 flamma combuſſit peccatores. Et fecerunt
vitulũ in Horeb: & adoraverunt
20 ſculptile. Et mutaverunt gloriã ſuã in
ſimilitudinẽ vituli comedentis fœnum.
21 Obliti ſunt Deum, qui ſalvavit eos, qui
22 fecit magnalia in Ægypto, Mirabilia
in terra Cham: terribilia in Mari
23 rubro. Et dixit ut diſperderet eos: ſi non
Moyſes elect⁹ ej⁹ ſtetiſſet in
confractione in conſpectu ejus: Ut averteret
24 iram ejus ne diſperderet eos: Et pro
nihilo habuerunt terram deſiderabilem:
Non crediderunt verbo ejus,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Ἀλληλούϊα. ρε΄.
1 † Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ, ὅτι χρηστός, † ὅτι
2 εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. † Τίς λαλήσει τὰς
δυναστείας τοῦ κυρίου, † ἀκουστὰς ποιήσει πάσας τὰς
3 αἰνέσεις αὐτοῦ; † Μακάριοι οἱ φυλάσσοντες κρίσιν,
4 † καὶ ποιοῦντες δικαιοσύνην ἐν παντὶ καιρῷ. † Μνήσθητι
ἡμῶν κύριε ἐν τῇ εὐδοκίᾳ τοῦ λαοῦ σου, † ἐπίσκεψαι
5 ἡμᾶς ἐν τῷ σωτηρίῳ σου, † Τοῦ ἰδεῖν ἐν τῇ
χρηστότητι τῶν ἐκλεκτῶν σου, † τοῦ εὐφρανθῆναι
ἐν τῇ εὐφροσύνῃ τοῦ ἔθνους σου, † τοῦ ἐπ-
6 αινεῖσθαι μετὰ τῆς κληρονομίας σου. † Ἡμάρτομεν
μετὰ τῶν πατέρων ἡμῶν, † ἠνομήσαμεν, ἠδικήσαμεν.
7 † Οἱ πατέρες ἡμῶν ἐν Αἰγύπτῳ οὐ συνῆκαν τὰ θαυμάσιά
σου, † (α) καὶ οὐκ ἐμνήσθησαν τοῦ πλήθους τοῦ ἐλέους
σου· † καὶ παρεπίκραναν ἀναβαίνοντες ἐν τῇ ἐρυθρᾷ
8 θαλάσσῃ. † Καὶ ἔσωσεν αὐτοὺς ἕνεκεν τοῦ ὀνόματος
αὐτοῦ, † τοῦ γνωρίσαι τὴν δυναστείαν αὐτοῦ. †
9 Καὶ ἐπετίμησε τῇ ἐρυθρᾷ θαλάσσῃ, καὶ ἐξηράνθη·
10 † καὶ ὡδήγησεν αὐτοὺς ἐν ἀβύσσῳ ὡς ἐν ἐρήμῳ. † Καὶ
ἔσωσεν αὐτοὺς ἐκ χειρὸς (β) μισούντων, † καὶ ἐλυτρώσατο
11 αὐτοὺς ἐκ χειρὸς ἐχθροῦ. † Ἐκάλυψεν ὕδωρ τοὺς
θλίβοντας αὐτούς, † εἷς ἐξ αὐτῶν οὐχ ὑπελείφθη.
12 † Καὶ ἐπίστευσαν (ϛ) τοῖς λόγοις αὐτοῦ, † καὶ ᾔνεσαν τὴν
13 αἴνεσιν αὐτοῦ. † Ἐτάχυναν, ἐπελάθοντο τῶν ἔργων
14 αὐτοῦ, † οὐχ ὑπέμειναν τὴν βουλὴν αὐτοῦ. † Καὶ ἐπεθύμησαν
ἐπιθυμίαν ἐν τῇ ἐρήμῳ, † καὶ ἐπείρασαν τὸν
15 θεὸν ἐν ἀνύδρῳ. † Καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς τὸ αἴτημα
αὐτῶν, † (δ) καὶ ἐξαπέστειλε πλησμονὴν εἰς (˙˙) τὴν ψυχὴν
16 αὐτῶν. † Καὶ παρώργισαν (ε) Μωυσῆν ἐν τῇ παρεμβολῇ,
17 † (ζ) καὶ Ἀαρὼν τὸν ἅγιον κυρίου. † Ἠνοίχθη ἡ
γῆ καὶ κατέπιε Δαθάν, † καὶ ἐκάλυψεν ἐπὶ τὴν συναγωγὴν
18 Ἀβειρών. † Καὶ ἐξεκαύθη πῦρ ἐν τῇ συναγωγῇ
αὐτῶν, † (η) καὶ φλὸξ κατέφλεξεν ἁμαρτωλούς.
19 † Καὶ ἐποίησαν μόσχον ἐν Χωρήβ, † καὶ προσεκύνησαν
20 τῷ γλυπτῷ. † Καὶ ἠλλάξαντο τὴν δόξαν (θ)
αὐτῶν † ἐν ὁμοιώματι μόσχου ἔσθοντος χόρτον. †
21 Ἐπελάθοντο (ι) τοῦ θεοῦ τοῦ σώζοντος αὐτούς, † τοῦ
22 ποιήσαντος (κ) μεγάλα ἐν Αἰγύπτῳ, † Θαυμαστὰ
ἐν γῇ Χάμ, † (λ) καὶ φοβερὰ ἐπὶ θαλάσσης ἐρυθρᾶς. †
23 Καὶ εἶπε τοῦ (μ) ἐξολοθρεῦσαι αὐτούς, † εἰ μὴ Μωυσῆς
ὁ ἐκλεκτὸς αὐτοῦ † ἔστη ἐν τῇ θραύσει ἐνώπιον
αὐτοῦ, † τοῦ ἀποστρέψαι (ν) ἀπὸ θυμοῦ ὀργῆς αὐτοῦ, † τοῦ
24 μὴ (ξ) ἐξολοθρεῦσαι. † Καὶ ἐξουδένωσαν γῆν ἐπιθυμητήν,
† (ο) καὶ οὐκ ἐπίστευσαν τῷ λόγῳ αὐτοῦ.

MS. A. (α) οὐκ ἐμνήσθη (β) μισοῦντος, (ϛ) ἐν τοῖς (δ) ἐξαπόστειλεν (˙˙) τὰς ψυχὰς (ε) τὸν Μωυσῆν (ζ) τὸν Ἀαρὼν (η) φλὸξ κατέφλεξεν (θ) αὐτοῦ (ι) θεοῦ (κ) μεγάλα (λ) φοβερὰ (μ) ἐξολεθρεῦσαι (ν) τὸν θυμὸν αὐτοῦ, (ξ) ἐξολεθρεῦσαι αὐτούς. (ο) οὐκ ἐπίστευσαν

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Alleluja. CV.

1 CONFITEMINI Domino, quoniam (a) bonus: quoniam 1
in ſeculum miſericordia ejus. 2
Quis loquetur potentias Domini, 2
auditas faciet omnes laudes ejus?
3 Beati qui cuſtodiunt judicium, et 3
faciunt juſtitiam in omni tempore.
4 (b) Memento noſtri, Domine, in beneplacito 4
populi tui: viſita nos in
ſalutari tuo: 5 [a] Ad videndum in 5
bonitate electorum tuorum, [b] ad
lætandum in lætitia gentis tuæ, [c]
ad (c) laudandum cum hæreditate
tua. 6 Peccavim⁹ cum patribus noſtris, 6
injuſtè egimus, iniquitatem fecimus.
7 Patres noſtri in Ægypto 7
non intellexerunt mirabilia tua &
non fuerunt memores multitudinis
miſericordiæ tuæ. 8 Et irritaverunt
aſcendentes in (d) rubrum mare: 9
Et ſalvavit eos propter nomen ſuũ: 8
ut notam faceret potentiã ſuam. 10
Et increpavit mare rubrum, & 9
exiccatum eſt: & deduxit eos in
abyſſo, ſicut in deſerto. 11 Et ſalvavit 10
eos de manu odientium: & redemit
eos de manu inimici. 12 Operuit 11
aqua tribulantes eos: unus ex
eis non remanſit. 13 Et crediderunt 12
(e) verba ejus, & (f) laudaverunt
laudem ejus. 14 (g) Feſtinaverunt, 13
obliti ſunt operũ ejus: non ſuſtinuerunt
conſilium ejus. 15 Et concupierunt 14
concupiſcentiam in deſerto:
& [d] tentaverunt Deum in inaquoſo.
16 Et dedit eis petitionem ipſorum: 15
et miſit ſaturitatem in (h) animam
eorum. 17 Et irritaverunt 16
Moyſem in caſtris, & Aaron Sanctũ
Domini. 18 Aperta eſt terra, & 17
deglutivit Dathan: & operuit ſuper
ſynagogam Abiron. 19 Et exarſit ignis 18
in ſynagoga eorum: & flamma
combuſſit peccatores. 20 Et fecerunt 19
vitulum in Choreb: & adoraverunt
ſculptile: 21 Et mutaverunt gloriam 20
ſuã (i) in ſimilitudine vituli comedentis
fœnum. 22 Obliti ſunt Deum, 21
qui ſalvavit eos, qui fecit magna
in Ægypto, Mirabilia in terra 21
Cham, (k) & terribilia ſuper mare
rubrum. 23 Et dixit ut diſperderet 23
eos; ſi non Moyſes electus ejus ſtetiſſet
in (l) confractione in conſpectu ejus: 24 ut averteret (m) ab indignatione iræ ejus, ne diſperderet [e]. Et pro nihilo 24
habuerunt terram deſiderabilem, 25, & non crediderunt verbo ejus.

Verſio ÆTHIOPICA.

ሃሌሉያ::
የቲ ግነዩ : ለእግዚአብሔር: እስመ:ኄር
እስመ:ለዓለም:ምሕረቱ::=፡ መኑ:
ረ:ኃይለ : እግዚአብሔር:: ወይገብር
መ:ይስማዕ:ኵሎ:ስብሐቲሁ::=፡ ብፁ
ን:ለሰ:የዐቅቡ:ፍትሐ:: ወይገብሩ:ጽድ
በኵሉ:ጊዜ::=፡ ተዘከረነ:እግዚኦ:በሠ
ሀልከ: ሕዝብከ:: ወተሣሀለነ : በአድኅኖተ
ከ::=፡ ከመ:ንርአይ: ሠናይቶሙ:ለኅሩያ
ኒከ:: ወከመ:ንትፌሣሕ:በፍሥሓ:ሕዝብ
ከ:: ወከመ: ንክበር:ምስለ:ርስትከ::=፡
አበስነ:ምስለ:አበዊነ::ዐመፅነ:ወገፍዐነ:
ወአበዊነሂ: በብሔረ: ግብጽ: ኢያእመሩ:መ
ንክረከ:: ወኢተዘከሩ: ብዝኃ : ምሕረ
ከ::=፡ ወአምረሩከ:አመ:የዐርጉ:ባሕረ
ኤርትራ::=፡ ወአድኃኖሙ:በእንተ:ስ
ከመ: ያርእዮሙ:ኃይሎ::=፡ ወገሠጾ:
ባሕረ:ኤርትራ:ወየብሰ:: ወመርሖሙ : በ
ቀላይ:ከመዘ:በገዳም::=፡ ወአድኃኖሙ: 11
እምእደ: ጸላእቶሙ:: ወአንገፎሙ:እም
እደ:ፀሮሙ::=፡ ወደፈኖሙ:ማይ:ለእለ: 12
ሮድዎሙ:: ወኢተርፈ:አሐዱ:እምኔሆ
ቱቶሙ::=፡ ወተአምኑ:በቃሉ::ወሰብሕዎ: 13
በስብሐቲሁ::=፡ ወአፍጠኑ:ረሲዖ:ምግ 14
ባሮ::ወኢተዓገሡ:በምክሩ::=፡ ወፈተዉ: 15
ፍትወተ:በገዳም:: ወአምረርዎ:ለእግዚአ
ብሔር:በበድው::=፡ ወወሀቦሙ:ዘሰአሉ:: 16
ወፈነወ:ጽጋበ:ለነፍሶሙ::=፡ ወአምዕዕዎ: 17
ለሙሴ:በትዕይንት:: ወለአሮን:ቅዱሰ:እግ
ዚአብሔር::=፡ ወአብቀወት:ምድር: ወወ 18
ኃጠቶ: ለዳታን:: ወደፈነቶሙ : ለተአይን:
አቤሮን::=፡ ወነደደ:እሳት:ውስተ:ተዓይኒሆ 19
ሙ:: ወአውዐዮሙ:ነበልባል:ለኃጥአን::=፡
ወገብሩ : ላህመ : በኮሬብ:: ወሰገዱ:ለግል 20
ፎ::=፡ ወወለጡ:ክብሮሙ::በአምሳለ: 21
ላህም:ዘይትረዐይ:ሣዕረ::=፡ ወረስዕዎ: 22
ለእግዚአብሔር:ዘአድኃኖሙ:: ዘገብረ:
ዐቢያተ:በግብጽ:: ወመንክረ: በምድረ: ካ
ም:: ወግሩመ: በባሕረ: ኤርትራ::=፡ ወ 23
ይቤ:ከመ: ይሠርዎሙ:: ሶበ:አኮ: ሙሴ:
ኅሩዮ::ቆመ:ቅድሜሁ:አመ:ብድብድ::=፡
ከመ: ይሚጥ : መቅሠፍተ : መዐቱ:: ወከ 24
መ : ኢይሠርዎሙ:: ወመነኑ : ምድረ:
መፍትወ ::=፡ ወኢተአመንዎ:በቃሉ:: 25

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. CV.* [a] ut videamus [b] & lætemur [c] & ut glorificemus [d] exacerbaverunt Deum [e] eos. Et

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

1 * المزمور المائة وخمسة * مرسوم بالليلويا * وهو صك * استيكين *
2 اشكروا الرب فانه صالح وان رحمته الى الابد * من الذي يقدر ان يصف جميع جبروت الرب *
3 ويسمع كل تسابيحه * طوبا للذين يحفظون الحكم * ويعملون العدل في كل زمان * اذكرنا يا رب
4 في مسرة شعبك * وتعاهدنا بخلاصك * لنري صلاح مختاريك * ونفرح بفرح امتك * ونفتخر مع
5 ميراثك * فانا اخطانا مع ابائنا * واثمنا وظلمنا * اباونا وهم بمصر لم يفهموا عجايبك * ولم
6 يذكروا كثرة رحمتك * واغضبوا وهم صاعدون في البحر الاحمر * خلصهم من اجل اسمه لكي
7 يعرفوا بقدرته * زجر البحر الاحمر فجف * وهداهم في العمق مثل القفر * وخلصهم من ايدي
8 مبغضيهم * ونجاهم من ايدي اعدايهم * وغرق في الماء مضطهديهم * فلم يبق واحد منهم
9 * فامنوا بقوله * وسبحوا تسابحته * ثم اسرعوا فنسوا اعماله * ولم يتمسكوا بمشورته * اشتهوا شهوة في
10 البرية * وجربوا الله حيث لا ماء * فاعطاهم الذي سالوه * وارسل شبعا على نفوسهم * اغضبوا
11 موسي في المعسكر * وهرون قديس الرب * فانفتحت الارض وابتلعت داثان * وانطبقت على
12 جماعة ابيرون * واشتعلت نار في محافلهم * واحرق اللهيب الخطاة * وصنعوا عجلا في حوريب
13 وسجدوا لصنائع اليد * وبدلوا مجدهم بمثل عجل اكل حشيش * ونسوا الله الذي خلصهم
14 الذي صنع العظايم بمصر * والعجايب بارض حام * والاعمال الهائلة في البحر الاحمر * فقال لكي
15 يبيدهم * لولا ان موسي صفيه وقف قدامه في وقت النكبة * لكي يرد سخط غضبه ولا
16 يبيدهم * رذلوا ارضا مشتهاة * ولم يومنوا بقوله *

PSAL. CV.

Notatus titulo, Alleluja. Verſ. 94. 1
Gratias agite Domino quoniam bonus
eſt, & quidẽ miſericordia ejus eſt in
æternum. Quis eſt qui poſſit cõmemorare 2
totã potentiã Domini? & auditas facere
omnes laudes ejus? Beati qui cuſtodiunt 3
judiciũ, & faciunt juſtitiã in omni tempore.
Memento noſtri O Domine, ut oblecteris 4
populo tuo: et viſita nos cum ſalute
tua, ut videamus bonitatem electorũ tuorum, 5
et gaudeamus cũ gaudio gentis tuæ,
et gloriemur cum hæreditate tua: Nã peccavimus 6
cum patrib⁹ noſtris, et iniquitatẽ
cõmiſimus, et perverſè egimus. Patres noſtri 7
dum eſſent in Ægypto, non intellexerunt
miracula tua, & non ſunt recordati
multitudinis miſericordiæ tuæ: et irritaverunt
dũ aſcenderent per mare rubrum.
Et ſalvavit eos propter nomen ſuum, ut faterentur 8
potentiam ejus. Increpavit mare 9
rubrum, et exſiccatum eſt, et duxit eos per
abyſſum quaſi per deſertũ. Et liberavit eos 10
de manibus odientiũ illos, et ſalvavit eos
è manibus hoſtiũ eorũ. Et immerſit in 11
aquas perſequutores eorũ, & non remanſit
ullus ex eis. Et crediderũt ſermoni ipſius, 12
et cecinerunt laudẽ ejus. Tum feſtinârunt 13
et obliti ſunt operum ejus, nec adhæſerunt
cõſilio ej⁹. Cupierũt cupiditatẽ in deſerto, 14
et tentaverunt Deũ ubi non erat aqua. Et 15
dedit eis quod petierunt ab eo, et miſit
ſaturitatem ſuper animas eorum. Irritaverunt 16
Moyſem in caſtris, et Aaronẽ ſanctum
Domini. Quare aperta eſt terra et deglutivit 17
Dathan, & concluſa eſt ſuper congregationem
Abiron. Et accenſus eſt ignis 18
in cœtibus eorum, et combuſſit flamma
peccatores. Et fecerunt vitulum in Horeb, 19
& adoraverunt opera manûs. Et mutaverunt 20
gloriã ſuã pro ſimulacro vituli comedentis
herbam: Et obliti ſunt Deũ, qui liberavit 21
eos, qui fecit magnalia in Ægypto,
Et mirabilia in terra Ham, & facta 22
formidanda in mari rubro. Dixit ergò ut 23
perderet eos, niſi Moyſes electus ejus ſtetiſſet
ante ipſum in tempore infortunii, ut
averteret iram indignationis ejus & non
perderet illos. Contempſerunt terram optabilem, 24
& non crediderunt ſermoni ipſius.

elevavit Et .Domini *voce in* audierunt non : ſuis *tentoriis* in murmuraverunt Et
וירגנו באהליהם לא שמעו
25 בקול יהוה: וישא
ſuã manũ : *eis* *ad* cadere *faciendũ* eos in deſerto. Et *ad* cadere *faciendũ* ſemen eorũ 26
ידו להם להפיל אותם במדבר: ולהפיל זרעם 27
comederũt & :pehor-Bahal ipſi *ſunt adjuncti* Et .terras in eos *ſpargendũ ad* &:gentib⁹ in
בגוים ולזרותם בארצות: ויצמדו לבעל פעור ויאכלו 28
.plaga eis in *erupit* & : ſuis *ſtudiis in* irritaverunt Et .mortuorum ſacrificia
זבחי מתים: ויכעיסו במעלליהם ותפרץ בם מגפה: 29
ei eſt reputatum Et .plaga eſt *reſtricta* & : dijudicavit & , Pinechas ſtetit Et
ויעמד פינחס ויפלל ותעצר המגפה: ותחשב לו 30
31 *ſuper* irritaverunt Et .ſeculum in uſque generationẽ & generationẽ in : juſtitiam ad
לצדקה לדר ודר עד־עולם: ויקציפו על־ 32
exacerbaverunt Quia .eos propter Moſeh ipſi fuit malum & : *Meribah* aquas
מי מריבה וירע למשה בעבורם: כי־המרו את־ 33
dixit quos ,populos diſperdiderunt Non .ſuis labiis *in effutiit* & : ej⁹ ſpiritum
רוחו ויבטא בשפתיו: לא־השמידו את העמים אשר אמר 34
ſervierunt Et .eorũ opera didicerunt & :gentib⁹ cum ſe miſcuerunt Et .eis Dominus
יהוה להם: ויתערבו בגוים וילמדו מעשיהם: ויעבדו 35
36 & ,ſuos filios ſacrificaverunt Et .*laqueum in* eis fuerunt & : eorum *doloribus*
את־עצביהם ויהיו להם למוקש: ויזבחו את־בניהם ואת־ 37
,ſuorũ filiorũ ſanguinem,*innocuum* ſanguinem effuderunt Et .dæmoniis ſuas filias
בנותיהם לשדים: וישפכו דם נקי דם־בניהם 38
ſanguinib⁹ in terra eſt infecta & :Chenahan *doloribus* ſacrificaverũt quos ,ſuarũ filiarũ &
ובנותיהם אשר זבחו לעצבי כנען ותחנף הארץ בדמים:
naſus eſt iratus Et .ſuis *adinventionibus* in ſunt fornicati & :ſuis operib⁹ in polluerũt Et
39 ויטמאו במעשיהם ויזנו במעלליהם: ויחר־אף
40 manu in eos dedit Et .ſuam hæreditatem eſt abominatus & :ſuũ populum in Domini
יהוה בעמו ויתעב את נחלתו: ויתנם ביד־ 41
,eorũ inimici eos oppreſſerũt Et .eos habentes odio *eos in* ſunt dominati & :gentium
גוים וימשלו בהם שנאיהם: וילחצום אויביהם 42
exacerbaverunt ipſi & ,eos eruit multis Vicibus .eorum manu ſub ſunt humiliati &
ויכנעו תחת ידם: פעמים רבות יצילם והמה ימרו 43
: eis anguſtia *in*,vidit Et .ſuã iniquitatẽ propter ſunt humiliati & : ſuo cõſilio in
בעצתם וימכו בעונם: וירא בצר להם 44
eũ pœnituit & : ſui pacti eos erga eſt recordatus Et .eorũ clamorem *ipſum audiendo in*
בשמעו את־רנתם: ויזכר להם בריתו וינחם 45
omnium facies ad,miſericordias in eos dedit Et .ſuarũ miſerationũ multitudinẽ ſecũdũ
כרב חסדו: ויתן אותם לרחמים לפני כל־ 46
, gentibus de nos cõgrega & , noſter Deus Domine nos Serva .eos *captivantium*
שוביהם: הושיענו יהוה אלהינו וקבצנו מן־הגוים 47
Benedictus .tua laude in *glorificandum ad* : tuæ ſanctitatis nomini *confitendum ad*
להודות לשם קדשך להשתבח בתהלתך: ברוך 48
:populus omnis *dixit* & : ſeculũ in uſque & , ſeculo à Iſrael Deus Dominus
יהוה אלהי ישראל מן־העולם ועד העולם ואמר כל־העם
jah-Hallelu ,Amen
אמן הללו־יה:

ספר חמישי

PSAL. CVII. קז

ejus miſericordia ſeculum in quoniam : bonus quoniam DOMINO Confitemini
הדו ליהוה כי־טוב כי לעולם חסדו: 1

תרגום TARGUM.

25 ואתרעמו במשכנהון לא קבילו במימרא דיי:
26 וארים ידיה בשבועה מטולהון למרמי יתהון
27 קטילין במדברא: ולאנלאה זרעהון בעממיא
28 ולבדרותהון בארעתא: ואדביקו בטעות פעור
29 ואכלו נכסי מיתיא: וארגיזו קדמוי בעובדיהון
30 ותקפת בהון מותנא: וקם פנחס וצלי
31 ואתכלית מותנא: ואתחשבת ליה לזכו לדר
32 ודר עד עלמא: וארגיזו על מי מצותא ובאיש
33 למשה בגללהון: ארום סרבו על רוח קודשיה
34 ופריש בספותיה: לא שיציאו ית עממיא די אמר
35 יי להון: ואתערבו בעממיא ואליפו ית
36 עובדיהון: ופלחו ית טעותהון והוו להון
37 לתקלא: ודבחו ית בניהון וית בנתיהון
38 למזיקיא: ושדו אדם זכי דמי בניהון ובנתיהון
די דבחו לטעוות דכנענאי ואטנפת ארעא
39 בחובין דקטול: וטמיאו בעובדיהון וטעו
40 במעלליהון: ותקיף רוגזא דיי בעמיה ורחק ית
41 אחסנתיה: ומסרנון ביד עממיא ושליטו בהון
42 סנאיהון: ודחקנון בעלי דבביהון ואתכניעו
43 תחות ידהון: זמנין סגיעין שיזיב אנון והנון
יסרבון ליה במלכתהון ואתמכיאו בחוביהון:
44 וחמא כד עיק להון כד שמע ית צלותהון:
45 ודכיר להון קימיה ותב מן רוגזיה כסוגעי
46 חסדוי: ויהב יתהון לרחמין באנפי כל דשבי
47 יתהון: פרוק יתנא יי אלהנא וכנוש יתן מבני
עממיא לאודאה בשום קודשך לאשתבחא
48 בתושבחתך: בריך שמא דיי אלהא דישראל
מן עלמא הדין ועד עלמא דאתי ויימר כל
עמא אמן הללויה:

קז

1 שבחו קדם יי ארום טב ארום לעלם
טוביה:

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Et murmuraverunt in tabernaculis ſuis; non admiſerunt verbum Domini. Et levavit manum ſuam cum juramento propter illos, ut projiceret eos interfectos in deſerto. Et ut migrare faceret ſemen eorum in populos, & diſpergeret eos in terram. Et adjunxerunt ſe idolo Peor, & comederunt ſacrificia mortuorum. Et provocaverunt eum in operibus ſuis, & invaluit in eos peſtis. Et ſurrexit Pinchas & oravit, & reſtincta eſt mors. Et reputatum eſt ei ad meritum, in generationem & generationem uſque in ſempiternum. Et provocaverunt eum ſuper aquas contradictionis, & malum evenit Moſſeh propter eos. Quoniam reſtiterunt ſpiritui ſancto ejus, & explicavit labiis ſuis. Non deſtruxerunt populos, quos dixerat Dominus illis: Sed commixti ſunt populis, & didicerunt opera eorum. Et ſervierunt idolis eorum, & fuerunt illis in offendiculum. Et ſacrificaverunt filios ſuos & filias ſuas dæmoniis. Et effuderunt ſanguinem innocentem, ſanguinem filiorum ſuorum & filiarum ſuarum, quos ſacrificaverunt idolis Chananæorum, et maculata eſt terra peccatis homicidii. Et polluti ſunt in operibus ſuis, & fornicati ſunt in adinventionibus ſuis. Proindè exarſit furor Dñi in populum ſuum, & *abominatus* eſt hæreditatem ſuam. Et tradidit eos in manum populorum, & dominati ſunt eis ipſorum oſores. Et oppreſſerunt eos ipſorum inimici, et humiliati ſunt ſub manibus eorum. Sæpiſſime liberavit eos, ſed ipſi provocabant eum in conſiliis ſuis, et *attenuati* ſunt in peccatis ſuis. Et vidit cùm anguſtia ineſſet eis, dum *audiret orationem* eorum. Et memor fuit erga illos fœderis ſui: & converſus eſt ab ira ſua juxta multitudinem miſericordiarum ſuarum. Et dedit eos in miſerationes in conſpectu omnium qui captivos abduxerant eos. Redime nos Domine Deus noſter, et congrega nos de medio populorum, ut confiteamur nomini ſancto tuo, & laudemus laude tua. Benedictum nomen Domini Dei Iſrael à mundo hoc uſque in mundum venturum: et dicet omnis populus: Amen, *Hallelujah*.

PSAL. CVII.

LAudate Dominum quoniam bonus, quoniam in æternum miſericordia ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

25 * ܘܪܛܢܘ ܒܡܫܟܢܝܗܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܗ ܥܠܝܗܘܢ ܕܢܩܛܘܠ
26 ܐܢܘܢ ܒܡܕܒܪܐ: * ܘܢܒܕܪ ܙܪܥܗܘܢ ܒܥܡܡܐ. ܘܢܘܒܕ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܬܐ: * ܠܐ ܐܬܢܩܦܘ 27
28 ܠܦܬܟܪܐ ܕܦܥܘܪ: ܘܐܟܠܘ ܕܒܚܐ ܕܡܝܬܐ: * ܘܐܪܓܙܘܗܝ ܒܥܒܕܝܗܘܢ. ܘܒܦܬܟܪܝܗܘܢ
29 ܐܛܢܘܗܝ: ܘܐܝܩܪ ܒܗܘܢ ܡܘܬܢܐ ܡܢ ܫܠܝܐ. * ܩܡ ܦܝܢܚܤ ܘܨܠܝ ܘܐܬܟܠܝ ܡܘܬܢܐ: 30
* ܘܐܬܚܫܒܬ ܠܗ ܙܕܝܩܘܬܐ ܠܕܪܕܪܝܢ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܘܐܪܓܙܘܗܝ ܥܠ ܡܝܐ ܕܚܪܝܢܐ: 31
32 ܘܒܐܫ ܠܡܘܫܐ ܡܛܠܬܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܡܪܡܪܘ ܪܘܚܗ ܘܡܠܠ ܒܣܦܘܬܗ: * ܘܠܐ ܐܘܒܕܘ 33
34 ܠܥܡܡܐ ܕܐܡܪ ܠܗܘܢ ܡܪܝܐ. * ܐܠܐ ܐܬܚܠܛܘ ܒܥܡܡܐ ܘܝܠܦܘ ܥܒܕܝܗܘܢ: * ܘܦܠܚܘ 35
36 ܠܦܬܟܪܝܗܘܢ ܘܗܘܘ ܠܗܘܢ ܠܬܘܩܠܬܐ: * ܘܕܒܚܘ ܒܢܝܗܘܢ ܘܒܢܬܗܘܢ ܠܫܐܕܐ: * ܘܐܫܕܘ 37
38 ܕܡܐ ܙܟܝܐ ܕܡܐ ܕܒܢܝܗܘܢ ܘܕܒܢܬܗܘܢ: ܕܕܒܚܘ ܠܦܬܟܪܐ ܕܟܢܥܢ. ܘܐܬܛܠܫܬ ܐܪܥܐ ܒܕܡܐ:
* ܘܐܬܛܘܫܘ ܒܥܒܕܝܗܘܢ ܘܙܢܝܘ ܒܨܒܝܢܝܗܘܢ. * ܘܐܬܚܡܬ ܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܥܡܗ: 39
40 ܘܣܠܐ ܝܪܬܘܬܗ. * ܘܐܫܠܡ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܝܐ ܕܥܡܡܐ: ܘܐܫܬܠܛܘ ܒܗܘܢ ܣܢܐܝܗܘܢ. 41
42 * ܘܐܠܨܘ ܐܢܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ: ܘܐܬܡܟܟܘ ܬܚܝܬ ܐܝܕܝܗܘܢ. * ܙܒܢܐ ܣܓܝܐܐ ܦܨܝ
43 ܐܢܘܢ: ܘܗܢܘܢ ܡܪܡܪܘܗܝ ܒܡܬܪܥܝܬܗܘܢ. ܘܐܬܡܟܟܘ ܒܚܘܒܝܗܘܢ: * ܘܚܙܐ ܐܘܠܨܢܗܘܢ 44
ܟܕ ܫܡܥ ܒܥܘܬܗܘܢ. * ܘܐܬܕܟܪ ܩܝܡܗ ܘܪܚܡ ܥܠܝܗܘܢ: ܘܕܒܪ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܛܝܒܘܬܗ. 45
46 * ܘܝܗܒ ܐܢܘܢ ܠܪܚܡܐ ܩܕܡ ܟܠ ܫܒܘܝܗܘܢ. * ܦܪܘܩܝܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܘܟܢܫܝܢ ܡܢ ܥܡܡܐ.
47 ܕܢܘܕܐ ܠܫܡܟ ܩܕܝܫܐ ܘܢܫܬܒܚ ܒܝܪܬܘܬܟ: * ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܢ ܥܠܡ 48
ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ: ܘܢܐܡܪ ܟܠܗ ܥܡܐ ܐܡܝܢ ܐܡܝܢ. * ܫܠܡ ܣܦܪܐ ܪܒܝܥܝܐ *

* ܡܐܐ ܘܫܒܥܐ * ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܠܗ * ܠܐ ܡܬܝܕܥܐ. ܡܬܐܡܪ ܥܠ ܝܘܐܝܠ ܘܥܠ ܫܡܘܐܝܠ 1
ܕܩܪܝܢ ܗܘܘ ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܟܢܫ ܐܢܘܢ ܐܠܗܐ ܠܝܗܘܕܝܐ ܡܢ ܫܒܝܬܐ ܘܐܦܩ
ܐܢܘܢ ܡܢ ܒܒܠ. ܘܟܢܫ ܐܦ ܒܪܗ ܕܐܠܗܐ ܝܫܘܥ ܡܫܝܚܐ ܠܥܡܡܐ ܡܢ ܐܪܒܥ ܦܢܝܢ
ܒܝܕ ܟܪܘܙܘܬܐ ܠܡܥܡܘܕܝܬܐ. ܦܘܫܩܗ. ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܡܛܠ ܕܛܒ ܘܠܥܠܡ ܛܝܒܘܬܗ.

Et murmuraverunt in tabernaculis ſuis, & non acquieverunt voci Dñi. Quapropter levavit manũ ſuã in illos, ad enecandos eos in deſerto, Et diſſipandum ſemen eorũ inter gentes, atq; perdendos illos in terris, Quia adhæſerunt ſimulachris Peor, et comederunt ſacrificia mortuorũ: Et irritaverunt eũ operibus ſuis, & idolis ſuis ad æmulationem provocarunt eum. Et gravavit in eos mortalitas repenté. Stetit Phinhes & oravit, ac prohibita eſt mortalitas: Et reputata eſt ei juſtitia in generationẽ generationũ, & uſq; in ſempiternũ. Et irritaverunt eũ ob aquã jurgii, & malum intulit Moſi propter eos: Quia exacerbaverunt ſpiritũ ej⁹, & locut⁹ eſt labiis ſuis. Et nõ perdiderunt gentes quas dixerat eis Dñs. Imò miſcuerunt ſe inter gentes, & didicerunt opera earũ, Coluerúntq; idola ipſarum, factáq; ſunt eis ſcandalũ. Immolaverunt filios ſuos, & filias ſuas dæmoniis, Et effuderunt ſanguiné innocenté, ſanguiné filiorũ ſuorũ & filiarum ſuarum. Sacrificaverunt ſimulachris Canaan, et contaminata eſt terra ſanguine. Et polluerunt ſe operibus ſuis, et fornicati ſunt in artib⁹ ſuis, Et efferbuit ira Dñi in populum ſuum, contempſitq; hæreditaté ſuã. Ac tradidit illos in manũ gentiũ, & dominati ſunt ipſos oſores eorũ, Et ſubjugaverunt illos inimici eorũ, atq; ſubacti ſunt manib⁹ eorum. Vicib⁹ multis liberavit illos, ipſi tamen exacerbaverunt eum cogitationib⁹ ſuis, & humiliati ſunt ob iniquitaté ſuã. Nihilomin⁹ reſpexit in anguſtiis eorũ, & audivit precẽ illorum. Et recordat⁹ eſt fœderis ſui, ac miſertus eſt eorũ: & gubernavit eos ſecundũ abundantiam bonitatũ ſuarũ, Dedítq; illos in miſericordiam corã omnibus qui in captivitaté abduxerant eos. Redime nos Dñe Deus, & collige nos ex gentib⁹: ut confiteamur nomini tuo ſancto, & gloriemur in hæreditate tua. Benedict⁹ ſit Dñs De⁹ Iſraelis à ſeculo & uſq; in ſeculũ: & dicat univerſ⁹ popul⁹, Amen amen. *Finis Libri quarti. Sequitur Liber quintus.*

PSAL. CVII.

Anonymus. Dicitur de Joele & de Samuel qui recitabant mandata Domini. Collegit Deus Judæos de captivitate, & eduxit illos ex Babel. Collegit quoq; filius Dei Jeſus Chriſtus gentes è quatuor plagis per prædicationem ad baptiſmum.

COnfitemini Dño, quoniam bonus, & in æternum bonitas ejus:

Versio VULG. LAT.

25 Et murmuraverunt in tabernaculis su-
26 is: non exaudierunt vocē Domini. Et
elevavit manum suam super eos: ut
27 prosterneret eos in deserto: Et ut deji-
ceret semen eorum in nationibus: &
28 dispergeret eos in regionibus. Et ini-
tiati sunt Beelphegor: & comederunt
29 sacrificia mortuorũ. Et irritaverũt eũ
in adinventionibus suis: & multipli-
30 cata est in eis ruina. Et stetit Phinees,
31 & placavit: & cessavit quassatio. Et
reputatũ est ei in justitiam, in genera-
tioné & generationem usque in sem-
32 piternum. Et irritaverunt eum ad a-
quas Contradictionis: & vexatus est
33 Moyses propter eos: Quia exacerba-
verunt spiritum ejus. Et distinxit in la-
34 biis suis: Non disperdiderunt gentes,
35 quas dixit Dominus illis. Et commisti
sunt inter gentes, & didicerunt opera
36 eorum: Et servierunt sculptilibus eo-
37 rum: & factũ est illis in scandalum. Et
immolaverunt filios suos, & filias suas
38 dæmoniis, Et effuderunt sanguiné in-
nocentem: sanguinem filiorum suorũ
& filiarum suarũ, quas sacrificaverũt
sculptilib⁹ Chanaan. Et infecta est ter-
39 ra in sanguinib⁹, Et contaminata est in
operibus eorũ: & fornicati sunt in ad-
40 inventionibus suis. Et iratus est furore
Dñs in populum suum: & abominat⁹
41 est hæreditatem suã. Et tradidit eos in
manus gentiũ: & dominati sunt eorũ
42 qui oderunt eos. Et tribulaverunt eos
inimici eorum, & humiliati sunt sub
43 manibus eorum: Sæpè liberavit e-
os. Ipsi auté exacerbaverunt eũ in con-
silio suo: & humiliati sunt in iniquita-
44 tibus suis. Et vidit cùm tribularentur:
45 & audivit orationé eorum. Et memor
fuit testamenti sui: & pœnituit eum se-
cundũ multitudiné misericordiæ suæ.
46 Et dedit eos in misericordias in cõspe-
47 ctu omniũ qui ceperãt eos. Salvos nos
fac, Dñe Deus noster: & congrega nos
de nationib⁹: Ut confiteamur nomini
48 sancto tuo: & gloriemur in laude tua.
Benedict⁹ Dñs De⁹ Israel à seculo et
usq; in seculum: & dicet omnis po-
pulus; Fiat, fiat.

Alleluja. (*Judith* 13. 21.) CVI.

1 COnfitemini Dño quoniam bonus:
quoniã in seculum misericordia ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

25 † Καὶ ἐγόγγυσαν ἐν τοῖς σκηνώμασιν αὐτῶν, † οὐκ εἰσ-
26 ήκουσαν τῆς φωνῆς κυρίου. † Καὶ ἐπῆρε τὴν χεῖρα
αὐτοῦ ἐπ' αὐτούς, † τοῦ καταβαλεῖν αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρή-
27 μῳ, † Καὶ τοῦ καταβαλεῖν τὸ σπέρμα αὐτῶν ἐν τοῖς
ἔθνεσι, † καὶ διασκορπίσαι αὐτοὺς ἐν ταῖς χώραις. †
28 Καὶ ἐτελέσθησαν τῷ Βεελφεγώρ, † καὶ ἔφαγον θυ-
29 σίας νεκρῶν. † Καὶ παρώξυναν αὐτὸν ἐν τοῖς ἐπιτη-
δεύμασιν αὐτῶν, † καὶ ἐπληθύνθη ἐν αὐτοῖς ἡ πτῶ-
30 σις. † Καὶ ἔστη Φινεὲς καὶ ἐξιλάσατο, † καὶ ἐκόπα-
31 σεν ἡ θραῦσις. † Καὶ ἐλογίσθη αὐτῷ εἰς δικαιοσύ-
32 νην, † εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν ἕως τοῦ αἰῶνος. † Καὶ
παρώργισαν αὐτὸν ἐπὶ ὕδατος ἀντιλογίας, † καὶ ἐκα-
33 κώθη Μωυσῆς δι' αὐτούς. † Ὅτι παρεπίκραναν
τὸ πνεῦμα αὐτοῦ, † καὶ διέστειλεν ἐν τοῖς χείλεσιν αὐ-
34 τοῦ. † Οὐκ (π) ἐξωλόθρευσαν τὰ ἔθνη ἃ εἶπε κύρι-
35 ος αὐτοῖς. † Καὶ ἐμίγησαν ἐν τοῖς ἔθνεσι, † καὶ
36 ἔμαθον τὰ ἔργα αὐτῶν. † Καὶ ἐδούλευσαν τοῖς γλυ-
πτοῖς αὐτῶν, † καὶ ἐγενήθη αὐτοῖς εἰς σκάνδαλον. †
37 Καὶ ἔθυσαν τοὺς υἱοὺς αὐτῶν † καὶ τὰς θυγατέρας αὐ-
38 τῶν τοῖς δαιμονίοις, † Καὶ ἐξέχεαν αἷμα ἀθῶον, †
αἷμα υἱῶν αὐτῶν καὶ θυγατέρων, † ὧν ἔθυσαν τοῖς
γλυπτοῖς Χαναάν. † καὶ ἐφονοκτονήθη ἡ γῆ ἐν τοῖς
39 (ρ) αἵμασι, Καὶ ἐμιάνθη ἐν τοῖς ἔργοις αὐτῶν· καὶ
40 ἐπόρνευσαν ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν. † Καὶ ὠρ-
γίσθη θυμῷ κύριος ἐπὶ τὸν λαὸν αὐτοῦ, † καὶ ἐβδελύ-
41 ξατο τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ. † Καὶ παρέδωκεν αὐτοὺς
εἰς χεῖρας ἐχθρῶν, † καὶ ἐκυρίευσαν αὐτῶν οἱ μισοῦν-
42 τες αὐτούς. † Καὶ ἔθλιψαν αὐτοὺς οἱ ἐχθροὶ αὐτῶν,
43 † καὶ ἐταπεινώθησαν ὑπὸ τὰς χεῖρας αὐτῶν. † Πλε-
ονάκις ἐρρύσατο αὐτούς, † αὐτοὶ δὲ παρεπίκραναν
αὐτὸν ἐν τῇ βουλῇ αὐτῶν· † καὶ ἐταπεινώθησαν ἐν
44 ταῖς ἀνομίαις αὐτῶν. † Καὶ εἶδε κύριος ἐν τῷ θλί-
βεσθαι αὐτούς, † ἐν τῷ αὐτὸν εἰσακοῦσαι τῆς δεήσεως
45 αὐτῶν. † Καὶ ἐμνήσθη τῆς διαθήκης αὐτοῦ, † καὶ μετε-
46 μελήθη κατὰ τὸ πλῆθος τοῦ ἐλέους αὐτοῦ. † Καὶ ἔδω-
κεν αὐτοὺς εἰς οἰκτιρμοὺς † ἐναντίον πάντων τῶν (σ)
47 αἰχμαλωτευσάντων αὐτούς. † Σῶσον ἡμᾶς κύριε
ὁ θεὸς ἡμῶν, † καὶ ἐπισυνάγαγε ἡμᾶς ἐκ τῶν ἐθνῶν,
† τοῦ ἐξομολογήσασθαι τῷ ὀνόματί σου τῷ ἁγίῳ,
48 † τοῦ ἐγκαυχᾶσθαι ἐν τῇ αἰνέσει σου. † Εὐλογητὸς
κύριος ὁ θεὸς Ἰσραήλ, † ἀπὸ τοῦ αἰῶνος καὶ ἕως
τοῦ αἰῶνος· † καὶ ἐρεῖ πᾶς ὁ λαός, Γένοιτο, γένοιτο.

MS. A. (π) ἐξωλέθρευσαν (ρ) αἵμασι. ** αὐ-
τῶν. Καὶ ὠργίσθη θυμῷ (σ) αἰχμαλωτισάντων

Ἀλληλούϊα. ρϛʹ.

1 † Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ, ὅτι χρηστός, † ὅτι εἰς
τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ.

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

Et murmuraverunt in tabernaculis 25
suis: non exaudierunt vocē Domi-
ni. 26 Et elevavit manum suam su 26
per eos, ut prosterneret eos in deser-
to: 27 Et ut dejiceret semen eorum 27
in gentibus, & [f] dispergeret eos in
regionibus. 28 Et [g] initiati sunt 28
Beelphegor, et comederunt sacrificia
mortuorum. 29 Et irritaverunt eum 29
in adinventionibus suis: & multi-
plicata est in eis ruina. 30 Et [h] ste- 30
tit Phinees, & placavit: & cessavit
(n) quassatio. 31 Et reputatum est ei 31
in justitiam, in generationem &
generationem usque in seculum. 32
Et irritaverunt eum super aquam 32
Contradictionis: et vexatus est Moy
ses propter eos. Quia exacerbave- 33
runt spiritum ejus: 33 & (o) [i] di-
stinxit in labiis suis. Non disperdi- 34
derunt gentes, quas dixit Dominus
illis: 34 Et commisti sunt in genti- 35
bus: & didicerunt opera eorum. Et 36
servierunt sculptilibus eorum: &
[k] factum est illis in scandalum. 35
Et immolaverunt filios suos, & fili- 37
as suas dæmoniis: 36 Et effuderunt 38
sanguinem innocentē, sanguinē fili-
orū suorū & filiarū, quos sacrifica-
verunt sculptilibus Chanaan. 37 Et
(p) interfecta est terra in sanguini-
bus: Et contaminata est [l] in ope- 39
ribus eorum: & fornicati sunt [m]
in (q) adinuentionibus suis. 38 Et 40
iratus est (r) furore Dominus in po-
pulum suum: & abominatus est hæ-
reditatem suam. 39 Et tradidit eos 41
in manus inimicorum: & dominati
sunt eorum, qui oderunt eos. 40 Et 42
tribulaverunt eos inimici eorum: &
humiliati sunt sub manibus eorum.
[n] Sæpe liberavit eos: 41 ipsi au- 43
tem exacerbaverunt eum in consilio
suo: & humiliati sunt in iniquita-
tibus suis. 42 Et [o] vidit Dominus, 44
cùm tribularentur, (s) cùm exaudi-
ret orationem eorum. 43 Et memor 45
fuit testamenti sui: & pœnituit eum
secundum multitudinem misericor-
diæ suæ. 44 Et dedit [p] eos in mi- 46
sericordias in conspectu omnium
qui [q] ceperant eos. 45 Salvos nos 47
fac, Domine Deus noster, & congre-
ga nos de gentibus: 46 Ut confitea-
mur nomini sancto tuo, ut glorie-
mur in laude tua. 47 Benedictus Do- 48
minus Deus Israel à seculo, & usq; in seculum: & [r] dicet omnis populus; Fiat, Fiat. 48

Alleluja. CVI.

C*ONFITEMINI Domino, quoniam bonus: quoniam in seculum misericordia ejus.* 1

Versio ÆTHIOPICA.

ወአንጐርጐሩ:በውስተ:ተዐይኒሆሙ:: ወኢ
ሰምዑ:ቃለ:እግዚአብሔር::=: ወአንሥ 26
አ:እዴሁ : ላዕሌሆሙ::ከመ : ይንጽሖሙ:
በገዳም::=: ወከመ:ይንጽሕ:ዘርኦሙ:ው 27
ስተ:አሕዛብ:: ወከመ:ይዝርዎሙ:ውስተ:
በሐውርት::=:ወተፈጸሙ:በብዔል:ፌጎር:: 28
ወበልዑ:መሥዋዕተ:ምዉተ::=: ወአምዕ 29
ዕዎ:በምግባሪሆሙ:: ወበዝኃ:ብድብድ:ላ
ዕሌሆሙ::=: ወተንሥአ:ፊንሐስ:ወአድ 30
ኃኖሙ::ወኃደገ:ብድብድ: 31 ወተሐሰ
ቦ:ጽድቀ:: ለትውልደ:ትውልድ:ወእስከ:
ለዓለም::=: ወአምዕዕዎ:በኀበ:ማየ: ቅ 32
ሠት:: ወሐመ:ሙሴ:በእንቲአሆሙ:: እስ
መ:አመረርዎ: ለነፍሱ::=: ወአዘዘ:በከና 33
ፍሪሆሙ:: ወኢያጥፍኡ : አሕዛበ : ዘይቤ
ሎሙ:እግዚአብሔር::=: ወተደመሩ:ም 34
ስለ : አሕዛብ:: ወተመሀሩ : ምግባሮሙ::
ወተቀንዩ:ለግልፎሙ:: ወኮኖሙ:ገጋየ::=:
ወዘብሑ:ደቂቆሙ: ወአዋልዲሆሙ:ለአጋንን 35
ት::=: ወከዐው: ደመ:ንጹሐ:: ደመ:ደቂ 36
ቆሙ : ወአዋልዲሆሙ:: ወሦዑ : ለግልፎ:
ከናአን::=: ወተቀትለት:ምድር:በደም:: 37
ወረኵሰት:ምድር:በምግባሪሆሙ:: ወዘ
መው :በፍኖቶሙ::=: ወተምዐ:እግዚአብ 38
ሔር:መዐተ:ላዕለ:ሕዝቡ::ወአስቆረሮሙ:
ለርስቱ::=: ወአግብኦሙ : ውስተ : እደ: 39
ፀሮሙ::ወቀነዩሞሙ:ጸላእቶሙ::=: ወ 40
አሕመምዎሙ:ፀሮሙ:: ወኃሰሩ:በታሕተ:
እደዊሆሙ:: ወዘልፈ:ያድኅኖሙ::=: ወ 41
እሙንቱሰ: አምረርዎ: በምክሮሙ:: ወሐ
ሙ:በኃጢአቶሙ::::=: ወርእዮሙ: ከ 42
መ:ተመንደቡ:: ወሰምዖሙ:ጸሎቶሙ::=:
ወተዘከረ:ኪዳኖ:: ወነስሐ :በከመ:ብዝኃ: 43
ምሕረቱ::=: ወወሀቦሙ : ሣህሎ:: በ 44
ቅድመ : ኵሎሙ : እለ : ፄወውዎሙ::=:
አድኅነነ: እግዚኦ:አምላክነ:: ወአስተጋ 45
ብአነ : እምአሕዛብ::=: ከመ : ንግነይ: 46
በስምከ : ቅዱስ:: ወከመ : ንትመካሕ:
በስብሐቲከ::=: ይትባረክ : እግዚአ 47
ብሔር :አምላከ: እስራኤል:: እምቅድመ:
ዓለም:ወእስከ:ለዓለም:: ለይበሉ: ኵሉ:
ሕዝብ:ለይኩን:ለይኩን::=:

ሃሌሉያ::

፻፯ ግነዩ: ለእግዚአብሔር: እስመ: ኄር::
እስመ:ለዓለም:ምሕረቱ::=:

INTERP. ÆTHIOP. [f] ut dissiparet eos [g] completi sunt in Beel-phegor, [h] excitavit se Phinees, & liberavit eos: [i] præcepit in [k] facta est illis iniquitas. [l] terra in [m] in idolis suis. [n] Indemnenter liberavit [o] vidit eos, cùm [p] eis misericordiam ejus in [q] captivos ceperant [r] dicat

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

25 26 * وتمقمقوا في مساكنهم * ولم يسمعوا صوت الرب * ورفع يده عليهم لكي يطرحهم في البرية *
27 28 * ويطرح ذريتهم في الامم * ويبددهم في البلدان * لانهم قربوا لاوثان فاغور واكلوا ذبائح الاموات *
29 30 * واغضبوه باعمالهم فكثر فيهم السقطة * فوقف فنحاس خلصهم * وسكنت الكسر * وحسب
31 32 له ذلك برا * منذ جيل والي جيل والي الابد * واغضبوه على ماء المقاومة * وتعذب موسى من
33 34 اجلهم * لانهم اغضبوا روحه * افرز بشفتيه * ولم يهلكوا الامم الذين قال لهم الرب * واختلطوا
35 36 37 بالامم * وتعلموا اعمالهم * وعبدوا لمصنوعات ايديهم * فصارت لهم عثرة * وانهم ذبحوا بنيهم وبناتهم
38 للشياطين * وسفكوا دما زكيا * دم بنيهم وبناتهم المذبوحين لمنحوتات كنعان * وفسدت الارض
39 40 بالقتل والدماء * وتنجست الارض باعمالهم * وزنوا بافعالهم * فغضب الرب بسخطه على شعبه *
41 42 ورجس ميراثه * واسلمهم في ايدي الامم * وسلط عليهم مبغضوهم * واضطهدهم اعداؤهم *
43 44 وذلوا تحت ايديهم * مرارا كثيرة خلصهم * وهم اغضبوه بافكارهم * وذلوا باثامهم * فراى الرب
45 46 عند ضيقهم * لما استجاب طلبتهم * وذكر عهده وندم بحسب كثرة رحمته * وجعلهم للرافة
47 قدام الذين سبوهم * خلصنا ايها الرب الهنا واجمعنا من الامم لكي نشكر اسمك القدوس
48 ولكي نفتخر بتسبحتك * مبارك الرب اله اسرائيل منذ الازل والي الابد * وجميع الشعوب
يقول يكون يكون * الليلويا *

المزمور المائة وسته * مرسوم بالليلويا * وهو قه استيكن

1 اشكروا الرب فانه صالح * وان رحمته لكاينة الي الابد *

Et murmuraverunt in habitaculis suis, & 25
non audierunt vocem Domini. Quapropter 26
elevavit manũ suã super eos, ut prosterne-
ret eos in deserto, Et projiceret sobolem eo- 27
rum inter gentes, et dispergeret eos per re-
giones: Eò quòd sacrificâverint idolis Pha- 28
gor, et mãducârint sacrificia mortuorũ. Et 29
irritaverunt eũ operib⁹ suis, et multiplica-
ta est in eis ruina. Stetit autem Phinees, & 30
salvavit eos, & sedata fuit fractio. Et an- 31
numeratũ ei fuit hoc in justitiam ab ævo
in ævum & usque ad æternitatem. Rursus 32
irritaverunt eũ ad aquã cõtradictionis, et
cruciatus est Moyses propter eos: Quia 33
concitaverunt spiritũ ejus. Definierat la-
biis suis, Et non peremerunt gentes quas 34
dixerat eis Dominus. Et immiscuerunt se 35
gentibus, et didicerunt opera earũ, Et ser- 36
vierunt manufactis, et factũ est illis scan-
dalum. Et verò jugulaverunt filios suos et 37
filias suas dæmoniis. Et effuderũt sãguinẽ 38
innocentem, sanguinẽ filiorũ suorũ ac fili-
arũ suarũ jugulatorũ, sculptilib⁹ Canaan.
Putrefacta est terra cæde et sãguinib⁹, Et 39
contaminata est terra actionibus eorũ, &
fornicati sunt operibus suis. Idcirco iratus 40
est Dominus furore suo in populum suũ, et
polluit hæreditatem suã. Et tradidit eos in 41
manu⁹ gentium, et dominati sunt in eos oso-
res eorũ: Et persequuti sunt illos inimici 42
eorũ, et subacti fuerunt sub manibus illo-
rũ. Vicibus multis liberavit eos, et ipsi ad 43
iracundiã provocaverunt eũ cogitationib⁹
suis, & humiliati sunt in iniquitatib⁹ suis.
Vidit autem Dominus in angustia eorum, 44
quando exaudivit petitionem ipsorum. Et 45
recordatus est pacti sui, et pœnituit eũ pro
mensura multitudinis misericordiæ suæ. Et 46
concessit eis clementia apud eos qui capti-
vos duxerant illos. Salva nos O Domine 47
Deus noster, & collige nos ex gentibus: ut
gratias agamus nomini tuo sancto, & ut
gloriemur in laude tua. Benedict⁹ Domin⁹ 48
Deus Israelis ab æterno & in perpetuum.
Et omnes populi dicant; Sit, sit. Alleluja.

PSAL. CVI.

Titulus, Alleluja. Vers. 85. 1

GRatias agite Domino, quoniã bon⁹ est,
& quia misericordia ejus perseverans
in æternum.

תהלים : קז

terris de Et .hostis manu de *eos* redemit quos : DOMINI redempti Dicant
2 יאמרו גאולי יהוה אשר גאלם מיד־צר׃ ומארצות
3 Erraverunt .mari à & ,aquilone ab : occidente ab & , oriente ab ,eos congregavit
4 קבצם ממזרח וממערב מצפון ומים׃ תעו
,Famelici .invenerunt non habitationis civitatem : *viæ* solitudine in deserto in
5 במדבר בישימון דרך עיר מושב לא מצאו׃ רעבים
DOMINUM ad clamaverunt Et .defecit ipsis in eorum anima : sitibundi etiam
6 גם־צמאים נפשם בהם תתעטף׃ ויצעקו אל־יהוה
eos fecit ambulare Et .eos eruit suis *coarctationibus* de : *eis* angustia in
7 בצר להם ממצוקותיהם יצילם׃ וידריכם
Domino Confiteantur .habitationis civitatem ad *eundum ad* : rectam viam per
8 בדרך ישרה ללכת אל־עיר מושב׃ יודו ליהוה
fecit saturare Quia .hominum filiis ejus mirabilia & : ejus misericordiam
9 חסדו ונפלאותיו לבני אדם׃ כי־השביע
,*tenebrositatem* Habitantes .bono implevit famelicam animam & : *cupidam* animam
10 נפש שקקה ונפש רעבה מלא־טוב׃ ישבי חשך
eloquia mutaverunt Quia .ferro & , *afflictione* vinctos : *mortis umbram &*
11 וצלמות אסירי עני וברזל׃ כי־המרו אמרי
: eorum cor labore in humiliavit Et .despexerunt altissimi consilium & : Dei
12 אל ועצת עליון נאצו׃ ויכנע בעמל לבם
angustia in DOMINUM ad clamaverunt Et .auxiliator non & , impegerunt
13 כשלו ואין עזר׃ ויזעקו אל־יהוה בצר
: mortis umbra & ,*tenebrositate* de eos Eduxit .eos servavit eorũ *coarctationibus* de ,*eis*
14 להם ממצוקותיהם יושיעם׃ יוציאם מחשך וצלמות
: ejus misericordiam DOMINO Confiteantur .disrupit eorum vincula &
15 ומוסרותיהם ינתק׃ יודו ליהוה חסדו
ferri vectes & , æreas portas contrivit Quia .hominum filiis ejus mirabilia &
16 ונפלאותיו לבני אדם׃ כי־שבר דלתות נחשת ובריחי ברזל
eorũ iniquitates propter & : eorum prævaricationis viam propter Stulti .*concidit*
17 גדע׃ אולים מדרך פשעם ומעונתיהם
pervenerunt & : eorum anima est abominata escam Omnem .fuerunt afflicti
18 יתענו׃ כל־אכל תתעב נפשם ויגיעו
: *eis* angustia in DOMINUM ad clamaverunt Et .mortis portas ad usque
19 עד־שערי מות׃ ויזעקו אל־יהוה בצר להם
: eos sanavit & , suum verbum Misit .eos servavit suis *coarctationibus* à
20 ממצוקותיהם יושיעם׃ ישלח דברו וירפאם
:ejꝰ misericordiam DOMINO Confiteantur .eorum *corruptionibus* de eruit &
21 וימלט משחיתותם׃ יודו ליהוה חסדו
, laudis sacrificia sacrificent Et .hominum filiis ejus mirabilia &
22 ונפלאותיו לבני אדם׃ ויזבחו זבחי תודה
: navibus in mare ad Descendentes .*præconio* in ejus opera narrent &
23 ויספרו מעשיו ברנה׃ יורדי הים באניות
: DOMINI opera viderunt Ipsi .multis aquis in opus facientes
24 עשי מלאכה במים רבים׃ המה ראו מעשי יהוה
: turbinis *spiritum fecit stare* & , dixit Et .profundo in ejus mirabilia &
25 ונפלאותיו במצולה׃ ויאמר ויעמד רוח סערה
.ejus fluctus *elevavit* &
ותרומם גליו׃

תרגום TARGUM.

2 ימרון פריקיא דיי די פרקנון מן יד מעיקא׃
3 ומארעתא כנשנון ממדנחא וממערבא מצפונא
4 ומן ימא דרומא׃ על עמא דבית ישראל אתנבי
ואמר עמא בית ישראל טעו במדברא בצדי
5 ארחא קרתא דמיתבא לא אשכחו׃ כפנים
6 לחוד צהין נפשתהון תשתלהיא׃ וצלו קדם
יי כד עיק להון ממעקתהון פצא יתהון׃
7 ודברנון באורח תריצתא למיזל לירושלם
8 קרתא דמיתבא׃ יהודון קדם יי מטול
9 חסדיה ומשתען פרישותיה לבני נשא׃ ארום
אשבע נפש סריקא ונפשא כפינא מלי טובא׃
10 על צדקיהו ורברבני ישראל אתנבי ואמר
צדקיהו ורברבני ישראל דגלו בבבל ויתיבו
בחשוכא וטולו דמותא והוו אסירין בסגוף שרי
11 פרזלא׃ ארום סריבו על מימריה דאלהא
12 ומלכת עלאה רחיקו׃ ותבר בלעותא לבהון
13 אתקילו ולית דסעיד׃ וצלו קדם יי בדעיק
14 להון ממעיקתהון פרקנון׃ אפקנון מחשוכא
1 וטולא דמותא ושלשלותהון יתרע׃ יהודון
קדם יי מטול חסדיה ומשתען פרישותיה
16 לבני נשא׃ ארום תבר דשי נחשא ועברי
17 פרזלא קצץ׃ שטין מאורח מרדיהון ומעויתהון
18 מסתגפין׃ כל מיכלא תרחיק נפשהון ומטין
19 עד מעלני מותא׃ וצלו קדם יי כד עיק להון
20 ממעיקתהון יפרקנון׃ ישדר פתגמי אסותיה
21 ויסי יתהון וישזיב מלחבלותהון׃ יהודון קדם
יי מטול חסדיה ומשתען פרישותיה לבני
22 נשא׃ ויכסון נכסי תודתא וישתעון עובדוי
23 בריצתא׃ מלחיא נחותי ימא באלפיא עבדי
24 פולחנא במיין סגיעין׃ הנון חמון עובדיא דיי
25 ופרישותיה במצולתא׃ ואמר במימריה
ואקים זעפא ועלעולא ואתרוממו גללוי׃

PARAPH. CHALD. Vers. L

Dicant redempti Domini, quos redemit d
manu molestantis. Et de terris congregav
eos ab Oriente et ab Occidente, ab Aqu
lone, & de mari Australi. *De populo dom*
Israel vaticinatus est et dixit, Populus d
mus Israel erraverunt in deserto in desola
ta via, civitatem habitabilem non inve
runt; Esurientes, simul sitientes: anim
eorum defecit. Et oraverunt Domin
dum afflictione premerentur: de ang
stia ipsorum liberavit eos. Et duxit e
per viam rectam, ut ambularent ad Jeru
lem civitatem habitabilem. Confitebun
coram Domino propter misericordi
ejus, & narrabunt mirabilia ejus oper
liis hominum. Quoniam satiavit anim
vacuam, & animā famelicā implevit bon
De Sedechia & principibꝰ Israel vaticin
est & dixit; Sedechias & principes Isra
qui exulârunt in Babel & habitâr
tenebris & umbra mortis, & *fuerunt*
in afflictione vinculorum ferri. Quia rebe
les fuerunt verbo Dei, & consilium Alti
mi execrati sunt. Et perfregit labore cor
rum; impegerunt & non fuit qui adjuva
Et oraverunt Dominum cum afficeren
angustia, de afflictionibus ipsorum re
mit eos. Eduxit eos de tenebris & umb
mortis, & catenas eorum dirupit. Co
tebuntur coram Domino propter mise
cordiam ejus, & narrabunt mirabilia e
facta filiis hominum. Quoniam confr
portas chalybeas, & pessulos ferreos co
trivit. Stulti propter viam flagitiorum
orum, & propter iniquitates suas affliga
tur. Omnem cibum abominabitur an
eorum, & appropinquant ad introitus m
tis. At si oraverint coram Domino cum
est eis angustia, de afflictionibus ipso
redimet eos. Mittet *verba* sanatio
suæ, & sanabit eos, liberabitque ab eo
corruptione. Confitebuntur coram D
mino propter misericordiam ejus, & na
bunt mirabilia ejus facta filiis homin
Et sacrificabunt sacrificia confessionis,
narrabunt opera ejus in lætitia. Na
descendentes in mare navibꝰ, facientes o
in aquis multis: Ipsi viderunt opera D
mini, & miracula ejus in profundo.
dixit in verbo suo, & suscitavit tem
statem & turbinem, & exaltati sunt fluctus e

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 3 * ܢܐܡܪܘܢ ܦܪ̈ܝܩܘܗܝ ܕܡܪܝܐ : ܕܦܪܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܐܠܘܨܐ. * ܘܡܢ ܟܠܗܝܢ ܐܬܪ̈ܘܬܐ
4 ܟܢܫ ܐܢܘܢ : ܡܢ ܡܕܢܚܐ ܘܡܢ ܡܥܪܒܐ. ܘܡܢ ܓܪܒܝܐ ܘܡܢ ܝܡܐ : * ܛܥܘ ܒܡܕܒܪܐ
5 ܕܐܫܝܡܘܢ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܕܝܬܒܐ ܠܐ ܐܫܟܚܘ : * ܟܦܢܘ ܘܨܗܝܘ ܘܢܦܫܗܘܢ ܐܬܬܪܝܦܬ.
6 7 * ܩܪܘ ܠܡܪܝܐ ܒܐܘܠܨܢܗܘܢ : ܘܡܢ ܐܘܠܨ̈ܢܝܗܘܢ ܦܪܩ ܐܢܘܢ. * ܘܕܒܪ ܐܢܘܢ
8 ܒܐܘܪܚܐ ܕܩܘܫܬܐ : ܠܡܐܙܠ ܠܡܕܝܢܬܐ ܕܝܬܒܐ. * ܢܘܕܘܢ ܠܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘ̈ܗܝ : ܕܪ̈ܚܡܘܗܝ
9 10 ܠܒܢܝ̈ ܐܢܫܐ. * ܡܛܠ ܕܐܣܒܥ ܢܦܫܬܐ ܡܬܬܪ̈ܦܬܐ : ܘܢܦܫܐ ܟܦܢܬܐ ܡܠܐ. * ܕܝܬܒܝܢ
11 ܒܚܫܘܟܐ ܘܒܛܠܠܝ ܡܘܬܐ : ܘܐܣܝܪܝܢ ܒܡܣܟܢܘܬܐ ܘܒܦܪ̈ܙܠܐ. * ܡܛܠ ܕܡܪܡܪܘ
12 ܡܠܬܗ ܕܐܠܗܐ : ܘܬܪܥܝܬܗ ܕܡܪܝܡܐ ܐܣܠܝܘ. * ܐܬܒܪ ܒܥܡܠܐ ܠܒܗܘܢ : ܐܬܟܪܗܘ
13 ܘܠܝܬ ܕܥܕܪ ܠܗܘܢ. * ܩܪܘ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܒܐܘܠܨܢܗܘܢ : ܘܡܢ ܐܘܠܨ̈ܢܝܗܘܢ ܦܪܩ ܐܢܘܢ.
14 15 * ܘܐܦܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܚܫܘܟܐ ܘܡܢ ܛܠܠܝ ܡܘܬܐ : ܘܐܣܘܪ̈ܝܗܘܢ ܦܣܩ. * ܢܘܕܘܢ ܠܡܪܝܐ
16 ܙܕܝܩܘ̈ܗܝ : ܕܪ̈ܚܡܘܗܝ ܠܒܢܝ̈ ܐܢܫܐ. * ܡܛܠ ܕܬܒܪ ܬܪ̈ܥܐ ܕܢܚܫܐ : ܘܡܘ̈ܟܠܐ ܕܦܪ̈ܙܠܐ
17 18 ܩܨܨ. * ܥܕܪ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܘܪܚܐ ܕܚܛܗ̈ܝܗܘܢ : ܘܡܢ ܚܘ̈ܒܝܗܘܢ ܐܬܡܟܟܘ. * ܘܟܠ
19 ܡܐܟܘܠܬܐ ܣܠܝܬ ܢܦܫܗܘܢ : ܘܡܛܝܘ ܥܕܡܐ ܠܬܪ̈ܥܝ ܡܘܬܐ. * ܩܥܘ ܩܕܡ ܡܪܝܐ
20 ܒܐܘܠܨܢܗܘܢ : ܘܡܢ ܐܘܠܨ̈ܢܝܗܘܢ ܦܪܩ ܐܢܘܢ. * ܫܕܪ ܡܠܬܗ ܘܐܣܝ ܐܢܘܢ : ܘܦܨܝ ܐܢܘܢ
21 ܡܢ ܚܒܠܐ. * ܢܘܕܘܢ ܠܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘ̈ܗܝ : ܕܪ̈ܚܡܘܗܝ ܠܒܢܝ̈ ܐܢܫܐ.

* ܦܣܘܩܐ *

22 23 * ܕܒܚܘ ܠܗ ܕܒ̈ܚܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ : ܫܒܚܘ ܥܒܕ̈ܘܗܝ ܒܬܕܡܪ̈ܬܗ. * ܢܚܬܝ ܝܡܐ ܒܐܠܦܐ :
24 ܘܥܒܕܝ ܥܒܕܐ ܒܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. * ܗܢܘܢ ܚܙܘ ܥܒܕ̈ܘܗܝ ܕܡܪܝܐ : ܘܬܕܡܪ̈ܬܗ ܒܥܘܡܩ̈ܝܗܘܢ
25 ܕܝܡܐ. * ܐܩܝܡ ܪܘܚܐ ܕܥܠܥܠܐ : ܘܐܬܬܪܝܡܘ ܓ̈ܠܠܘܗܝ ܕܝܡܐ.

Dicant liberti Domini, quos liberavit de
nu tyranni, Quosq; ex universis region
congregavit, ex Oriente & Occidente, e
quilone & ex mari: Erraverunt in de
Asimon, & viam civitatis cultæ non inve
runt: Esurierunt, atq; sitierunt: & qu
anima perculsa fuerat: Rogaverunt Do
num in angoribus suis, & ex mœroribus
rum eduxit eos: Et quos deduxit per v
veritatis, quatenus irent ad oppida habi
Confiteantur Domino justi ejus, quoniam
serationes ejus erga filios hominum: Q
satiavit animas exagitatas, & animam fa
licam explevit Eorum qui sedebant in te
bris umbrísq; mortis, & constricti erant
opiâ & ferris. Quia enim exasperârũt ve
Dei, & consilium Altissimi despexerunt:
eò contrivit labore cor eorum: ægrota
runt, & non fuit qui adjuvaret eos. Ora
ad Dominum in tribulationibus suis, & e
rumnis eorum liberavit illos, Eduxitque
os è tenebris atque ex umbris mortis, &
ra eorum disrupit. Confiteantur Dom
justi ejus, quia misericordiæ ejus erga
hominum: Quia confregit portas æris, &
ctes ferri concidit: Adjuvit eos de via s
rum eorum. At pro crimine suo dejecti
Omnémque cibum respuit anima ipsor
atque devenerunt usque ad portas mo
Deprecati sunt Dominum in angustiis su
ex afflictionibus eorum eduxit illos. M
verbum suum & sanavit eos, & eripuit ex
corruptione. Confiteantur Domino ju
jus, quoniam miserationes ejus in filios
minum:

* *Sectio* *

Immolate illi victimas laudis, glorificate o
ra ejus in portentis ipsius. Qui descen
in mare navibus, quíque gerunt negotium
aquis vastissimis, Ipsi viderunt oper
mini, & ejus miracula in profundita
maris: Qui suscitavit ventum procell
& intumuerunt fluctus maris.

Versio VULG. LAT.

2 Dicant qui redempti sunt à Domino,
quos redemit de manu inimici: & de
3 regionibus congregavit eos, A Solis
Ortu, & Occasu: ab Aquilone, & mari.
4 Erraverunt in solitudine in inaquoso:
viam civitatis habitaculi non invenerunt.
5 Esurientes, & sitientes: anima
6 eorum in ipsis defecit. Et clamaverunt
ad Dominū cùm tribularentur: & de
7 necessitatibus eorum eripuit eos. Et
deduxit eos in viam rectam: ut irent
8 in civitatem habitationis. Confiteantur
Dño misericordiæ ejus: & mirabilia
9 ejus filiis hominū. Quia satiavit
animam inané: & animā esurientem
10 satiavit bonis. Sedentes in tenebris, &
umbrâ mortis: vinctos in mendicitate,
11 & ferro. Quia exacerbaverunt eloquia
Dei: & consilium Altissimi irritaverunt.
12 Et humiliatū est in laborib⁹ cor
eorum: infirmati sunt, nec fuit qui
13 adjuvaret. Et clamaverunt ad Dominum
cùm tribularentur: & de necessitatib⁹
14 eorū liberavit eos. Et eduxit
eos de tenebris, & umbrâ mortis:
15 & vincula eorum disrupit. Confiteantur
Dño misericordiæ ejus: & mirabilia
16 ejus filiis hominū. Quia contrivit portas
æreas: & vectes ferreos
17 confregit. Suscepit eos de via iniquitatis
eorum: propter injustitias enim
18 suas humiliati sunt. Omnem escam
abominata est anima eorum: & appropinquaverunt
usq; ad portas mortis.
19 Et clamaverunt ad Dominum cùm
tribularentur: & de necessitatibus
20 eorum liberavit eos. Misit verbum
suum, & sanavit eos: & eripuit eos
21 de interitionibus eorum. Confiteantur
Domino misericordiæ ejus: &
22 mirabilia ejus filiis hominum: Et sacrificent
sacrificium laudis: & annuntient
opera ejus in exultatione.
23 Qui descendunt mare in navibus,
facientes operationem in aquis multis.
24 Ipsi viderunt opera Domini, &
25 mirabilia ejus in profundo. Dixit, &
stetit spiritus procellæ: & exaltati
sunt fluctus ejus.

Vers. GRÆC. LXX. Interp.

2 †Εἰπάτωσαν οἱ λελυτρωμένοι ὑπὸ κυρίου, †οὓς ἐλυτρώσατο
ἐκ χειρὸς ἐχθροῦ, †(α) καὶ ἐκ τῶν χωρῶν
3 συνήγαγεν αὐτούς· †Ἀπὸ ἀνατολῶν, καὶ δυσμῶν,
4 καὶ βοῤῥᾶ, καὶ θαλάσσης. †Ἐπλανήθησαν ἐν
τῇ ἐρήμῳ ἐν ἀνύδρῳ· †ὁδὸν πόλεως κατοικητηρίου
5 οὐχ εὗρον †Πεινῶντες καὶ διψῶντες, †ἡ ψυχὴ
6 αὐτῶν ἐν αὐτοῖς ἐξέλιπεν. †Καὶ ἐκέκραξαν πρὸς
κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτοὺς, †καὶ ἐκ τῶν ἀναγκῶν
7 αὐτῶν (β) ἐῤῥύσατο αὐτούς. †Καὶ ὡδήγησεν
αὐτοὺς εἰς ὁδὸν εὐθεῖαν, †τοῦ πορευθῆναι εἰς
8 πόλιν κατοικητηρίου. †Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ
κυρίῳ τὰ ἐλέη αὐτοῦ, †καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ τοῖς
9 υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων. †Ὅτι ἐχόρτασε ψυχὴν κενὴν,
10 †(γ) καὶ πεινῶσαν ἐνέπλησεν ἀγαθῶν. †Καθημένους
ἐν σκότει καὶ σκιᾷ θανάτου, †πεπεδημένους
11 ἐν πτωχείᾳ καὶ σιδήρῳ· †Ὅτι παρεπίκραναν τὰ λόγια
τοῦ θεοῦ, †καὶ τὴν βουλὴν τοῦ ὑψίστου παρώξυναν·
12 †Καὶ ἐταπεινώθη ἐν κόποις ἡ καρδία αὐτῶν,
13 †(δ) ἠσθένησαν καὶ οὐκ ἦν ὁ βοηθῶν. †Καὶ ἐκέκραξαν
πρὸς κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτοὺς, †καὶ ἐκ
14 τῶν ἀναγκῶν αὐτῶν ἔσωσεν αὐτούς. †Καὶ ἐξήγαγεν
αὐτοὺς ἐκ σκότους καὶ σκιᾶς θανάτου, †καὶ τοὺς δεσμοὺς
15 αὐτῶν διέῤῥηξεν. †Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ
κυρίῳ τὰ ἐλέη αὐτοῦ, †καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ τοῖς υἱοῖς
16 τῶν ἀνθρώπων. †Ὅτι συνέτριψε πύλας χαλκᾶς,
17 †καὶ μοχλοὺς σιδηροῦς συνέθλασεν. †Ἀντελάβετο
αὐτῶν ἐξ ὁδοῦ ἀνομίας αὐτῶν, †διὰ γὰρ
18 τὰς ἀνομίας αὐτῶν ἐταπεινώθησαν. †Πᾶν βρῶμα
ἐβδελύξατο ἡ ψυχὴ αὐτῶν, †καὶ ἤγγισαν ἕως τῶν
19 πυλῶν τοῦ θανάτου. †Καὶ ἐκέκραξαν πρὸς κύριον
ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτοὺς, †καὶ ἐκ τῶν ἀναγκῶν
20 αὐτῶν ἔσωσεν αὐτούς. †Ἀπέστειλε τὸν λόγον αὐτοῦ,
καὶ ἰάσατο αὐτοὺς, †καὶ ἐῤῥύσατο αὐτοὺς ἐκ τῶν
21 διαφθορῶν αὐτῶν. †Ἐξομολογησάσθωσαν τῷ κυρίῳ
τὰ ἐλέη αὐτοῦ, †καὶ τὰ θαυμάσια αὐτοῦ τοῖς υἱοῖς
22 τῶν ἀνθρώπων. †Καὶ θυσάτωσαν αὐτῷ θυσίαν
αἰνέσεως, †καὶ ἐξαγγειλάτωσαν τὰ ἔργα αὐτοῦ
23 ἐν ἀγαλλιάσει. †Οἱ καταβαίνοντες εἰς (ε) θάλασσαν
ἐν πλοίοις, †(ε) ποιοῦντες ἐργασίαν ἐν ὕδασι πολλοῖς.
24 †Αὐτοὶ εἶδον τὰ ἔργα κυρίου, †καὶ τὰ θαυμάσια
25 αὐτοῦ ἐν τῷ βυθῷ. †Εἶπε, καὶ ἔστη πνεῦμα καταιγίδος,
†καὶ ὑψώθη τὰ κύματα αὐτῆς.

MS. A. (α) ἐκ τῶν χωρῶν (β) ἐρύσατο (γ) καὶ ψυχὴν πεινῶσαν (δ) καὶ ἠσθένησαν (ε) τὴν θάλασσαν (ε) οἱ ποιοῦντες

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transf. LAT.

2 *Dicant, qui redempti sunt à Domino, quos redemit de manu inimici: & de regionibus congregavit eos: 3 Ab Oriente, & Occasu, & Aquilone, & mari. 4 [a] Erraverunt in solitudine in inaquoso: viam civitatis habitaculi non invenerunt. 5 Esurientes, & sitientes: anima eorum in ipsis defecit. 6 Et clamaverunt ad Dominum, cùm tribularentur: & de necessitatibus eorum eripuit eos. 7 Et deduxit eos in viam rectam, ut irent in [b] civitatem habitationis. 8 Confiteantur Domino misericordiæ ejus, & (b) mirabilia ejus filiis hominum. 9 Quoniam satiavit animam inanem: [c] & (c) esurientem implevit bonis. 10 Sedentes in tenebris, & umbrâ mortis, compeditos in mendicitate, & ferro. 11 Quia exacerbaverunt eloquia Dei: & consilium Altissimi irritaverunt. 12 Et humiliatum est in laborib⁹ cor eorū: infirmati sunt, nec fuit, qui [d] adjuvaret. 13 Et clamaverunt ad Dominū, cū tribularentur: & de necessitatibus eorū salvos fecit eos. 14 Et eduxit eos de tenebris, & umbrâ mortis: & vincula eorum disrupit. 15 Confiteantur Domino misericordiæ ejus, & mirabilia ejus filiis hominum. 16 Quia contrivit portas æreas: & vectes ferreos confregit. 17 Suscepit eos de via iniquitatis eorum: propter injustitias enim suas humiliati sunt. 18 Omnem escam abominata est anima eorum: & appropinquaverunt usq; ad portas mortis. 19 Et clamaverunt ad Dominum, cùm tribularentur: & de necessitatibus eorum salvos fecit eos. 20 Misit verbum suum, & [e] sanavit eos: & eripuit eos de (d) [f] corruptelis eorum. 21 Confiteantur Domino misericordiæ ejus, & mirabilia ejus filiis hominum. 22 Et sacrificent ei (e) sacrificium laudis: & annuntient opera ej⁹ in exultatione. 23 Qui descendunt in mare in navibus, facientes operationem in aquis multis. 24 Ipsi viderunt opera Domini, & mirabilia ejus in profundo. 25 Dixit, et [g] stetit spiritus procellæ: et exaltati sunt fluctus ejus.*

Versio ÆTHIOPICA.

2 ለይበሉ ፡ እለ ፡ አድኅኖሙ ፡ እግዚአብሔ 2
ር። እለ ፡ አድኅኖሙ ፡ እምእደ ፡ ፀሮ
3 ሙ፨ ወአስተጋብኦሙ፡እምበሐውርት፨
4 እምጽባሕ ፡ ወእምዐረብ ፡ ወመስዕ ፡ ወ 3
ባሕር፨ ወስሕቱ ፡ ውስተ ፡ በድው፡ 4
5 ዘአልቦ ፡ ማይ። ወኢረከቡ ፡ ፍኖተ ፡ ሀገ
6 ረ ፡ ብሔሮሙ፨ ጸምኡ ፡ ወርኅቡ ፡ 5
ወኅልቀት ፡ ነፍሶሙ ፡ በላዕሌሆሙ፨
ወአውየው ፡ ኀበ ፡ እግዚአብሔር ፡ ሶበ ፡ 6
7 ተመንደቡ። ወአድኅኖሙ ፡ እምንዳቤሆ
8 ሙ፨ ወመርሖሙ፡ ፍኖተ ፡ ርቱዐ። ከ 7
መ፡ይሖሩ፡ፍኖተ፡ሀገሮሙ፨ ነገሩ፡ለእ 8
9 ግዚአብሔር፡ምሕረቶ። ወመንክሮሂ ፡ ለእ
ጓለ፡እመሕያው፨ እስመ፡አጽገበ፡ነፍ 9
10 ሰ፡ርኅብተ። ወመልአ፡ ነፍሰ፡ዕሩቀ፡ በረከ
ተ፨ ለእለ ፡ ይነብሩ ፡ ውስተ፡ጽልመት፡ 10
11 ወጽላሎተ፡ሞት። ወሙቁሓን፡በንዴት ፡ ወ
በኀጺን፨ እስመ፡አምረሩ፡ቃለ፡እግዚ 11
12 አብሔር። ወአምዕዑ፡ምክረ፡ልዑል፨
ወሠርሐ ፡ በሕማም ፡ ልቦሙ። ወደወዩ፡ 12
13 ወኀጥኡ፡ ዘይቀብሮሙ፨ ወአውየው፡ 13
ኀበ፡እግዚአብሔር፡ሶበ ፡ ተመንደቡ። ወአ
14 ድኅኖሙ፡እምንዳቤሆሙ፨ ወአውፅኦ 14
ሙ፡እምጽልመት፡ወጽላሎተ፡ሞት። ወሰ
15 በረ፡መዋቅሕቲሆሙ፨ ነገሩ፡ለእግዚአ 15
ብሔር ፡ ምሕረቶ። ወመንክሮሂ፡ ለእጓለ፡
16 እመሕያው፨ እስመ፡ ሰበረ፡ ኆኅተ፡ብ 16
17 ርት። ወቀጥቀጠ፡ መናስግተ፡ ዘኀጺን፨
ወተወክፎሙ፡እምፍኖተ፡ገጋዮሙ።እስመ፡ 17
ሐሙ፡በኀጢአቶሙ፨ ወኵሉ፡መብል 18
18 ዐ፡አስቆረረት ፡ ነፍሶሙ። ወቀርቡ ፡ ኀበ፡
19 አናቅጸ፡ሞት፨ ወአውየው፡ኀበ፡እግዚአ 19
ብሔር፡ሶበ፡ተመንደቡ። ወአድኅኖሙ፡እም
ንዳቤሆሙ፨ ወፈነወ፡ቃሎ፡ ወአሕየወ 20
20 ሙ።ወአድኅኖሙ፡እሞቶሙ፨ ነገሩ፡ 21
ለእግዚአብሔር፡ምሕረቶ። ወመንክሮሂ፡
ለእጓለ፡እመሕያው፨ ወይሠውዑ፡ሎቱ፡ 22
21 መሥዋዕተ፡ ስብሐት። ወይንግሩ ፡ ግብሮ፡
22 በትፍሥሕት፨ እለ ፡ ይወርዱ ፡ ውስ 23
ተ ፡ ባሕር ፡ በአሕማር። ወይትገበሩ ፡
23 ተግባሮሙ ፡ ውስተ ፡ ማይ ፡ ብዙኅ፨
እሙንቱ ፡ ይእምሩ ፡ ግብረ ፡ እግዚአብ 24
24 ሔር። ወመንክሮሂ ፡ በውስተ ፡ ልጐ
25 ት፨ ይቤ ፡ ወመጽአ ፡ መንፈስ ፡ ዐው 25
ሎ። ወተለዐለ ፡ ማዕበል፨

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. CVI.* [a] Et anxiati sunt in [b] viam civitatis eorum. [c] & animam vacuam implevit benedictione. [d] sepeliret eos. Et [e] vivificavit eos: [f] interitionibus eorum. [g] advenit spiritus

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* فليقل المخلصون من قبل الرب الذي انقذهم من ايدي اعدائهم * ومن البلدان 2 3
جمعهم * من المشارق ومن المغارب والشمال والبحر * ضلوا في القفر في مكان عديم الماء ۔ لم 4
يجدوا طريقا الي مدينة تسكن * جياعا عطاشا فغشيت نفوسهم فيهم * فصرخوا الي الرب عند 5 6
ضيقهم * خلصهم من شدائدهم * وهداهم الي طريق مستقيمة * ليدخلوا الي مدينة 7 8
مسكونة * فليشكر الرب على مراحمه وعجائبه لبني البشر * لانه اشبع نفوسا خاوية 9
وملأ من الخيرات قلوبا جائعة * جالسين في الظلمة وظلال الموت ومقيدين بالمسكنة والحديد 10
* لانهم اغضبوا اقوال الله * واغضبوا مشورة العلي * فذلت بالكد قلوبهم * ومرضوا فلم 11 12
يكن لهم من يعين * صرخوا الي الرب عند ضيقهم * خلصهم من شدائدهم * واخرجهم 13 14
من الظلمة وظلال الموت * وقطع رباطاتهم * فليشكر الرب مراحمه وعجائبه عند بني البشر 15
* لانه كسر ابواب النحاس * ورضض اغلاق الحديد * واحادهم عن طريق اثامهم 16 17 18
لانهم ذلوا من اجل اثامهم * مقتت نفوسهم كل طعام * واقتربوا الي ابواب الموت * وصحوا 19
الي الرب عند ضيقهم * خلصهم من شدائدهم * ارسل كلمته فشفاهم * وخلصهم من 20
فسادهم * فليشكر الرب مراحمه وعجائبه لبني البشر * وليذبح له ذبيحة التسبيح 21 22
وليعترف باعماله بالتهليل * النازلون في البحر في السفن * الصانعون اعمالهم في مياه 23
كثيرة * لانهم راوا اعمال الرب * وعجائبه في العمق * قال فثارت ريح عاصفة * وارتفع
امواجها *

Et dicant redempti à Domino, quos liberavit è manibus hostium ipsorum, Quosque è regionibus congregavit, ex Orientalibus atque Occidentalibus plagis, Septentrione, ac mari. Erraverunt in solitudine, in loco experte aquis, non invenerunt iter ad civitatem habitabilem, Famelici ac sitibundi adeo ut defecissent animæ eorum in ipsis. Clamaverunt ad Dominum in angustia sua, & liberavit eos de tribulationibus eorum. Et direxit eos ad viam rectam, ut introirent in civitatem habitatam. Gratiæ igitur agantur Domino de miserationibus ejus, & miraculis ejus erga filios hominum. Quia ipse satiavit animas vacuas, & implevit bonis corda esurientia Sedentium in tenebris & umbra mortis, & vinctorum in paupertate ac ferro. Quia irritaverunt eloquia Dei, & ad iram provocaverunt consilium Altissimi, Humiliata sunt labore corda eorum, & infirmati sunt, nec fuit eis qui adjuvaret. Clamaverunt ad Dominum in angustia sua, et liberavit eos de tribulationibus eorum, Et eduxit eos de tenebris & umbrâ mortis, & disrupit vincula eorum. Gratias agant Domino miserationes ejus & miracula ejus apud filios hominum. Nam ipse fregit portas æneas, & contudit vectes ferreos. Et avertit eos à via iniquitatū eorum, quia humiliati fuerant ob iniquitates suas. Oderunt animæ eorū omnem escam, & accesserunt ad portas mortis. Et vociferati sunt ad Dominum in angustia sua, & liberavit eos de tribulationibus eorum. Misit verbum suum, & sanavit illos, & salvavit eos de tabe eorum. Itaque gratias agant Domino misericordiæ ejus, & miracula ejus erga filios hominum. Et sacrificent ei sacrificium laudis, & fateantur opera ejus cum psalmodia Descendentes in mare navibus, agentes negotia sua in aquis multis. Nam ipsi viderunt opera Domini, & miracula ejus in abysso. Dixit, & excitatus est ventus turbinis, & extulerunt se fluctus earum. 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25

תהלים : קח

.se liquefecit malo in eorum anima : abyssos descenderunt ,cœlum Ascenderunt
26 יעלו שמים ירדו תהומות נפשם ברעה תתמוגג:
.est absorpta eorum sapientia omnis & : ebrius sicut se moverunt & ,*orbem in Iverunt*
27 יחוגו וינועו כשכור וכל־חכמתם תתבלע:
.eos eduxit eorum *coarctationibus* de & *: eis* angustia in Dominum ad clamaverunt Et
28 ויצעקו אל־יהוה בצר להם וממצוקתיהם יוציאם:
sunt lætati Et .eorum fluctus siluerunt & : silentium in turbinem fecit Stare
29 30 יקם סערה לדממה ויחשו גליהם: וישמחו
Confiteantur .eorum voluntatis *portum* ad eos duxit & : siluerunt quoniam
31 כי־ישתקו וינחם אל־מחוז חפצם: יודו
eum exaltent Et .hominum filiis ejus mirabilia & : ejus misericordiã Domino
32 ליהוה חסדו ונפלאותיו לבני אדם: וירוממוהו
flumina Posuit .eum laudent seniorum cathedra in & : populi ecclesia in
33 בקהל עם ובמושב זקנים יהללוהו: ישם נהרות
:salsuginem in *fructus* Terram .sitis locum in aquarum exitus & : desertum in
34 למדבר ומצאי מים לצמאון: ארץ פרי למלחה
: aquarum stagnum in desertum Posuit .ea in habitantium malitiam propter
35 מרעת יושבי בה: ישם מדבר לאגם־מים
præparaverũt &,famelicos ibi *fecit habitare* Et.aquarum exitus in *siticulosam* terram &
36 וארץ ציה למצאי מים: ויושב שם רעבים ויכוננו
: vineas plantaverunt & , agros seminaverunt Et .habitationis civitatem
37 עיר מושב: ויזרעו שדות ויטעו כרמים
: valde sunt multiplicati & ,eis benedixit Et *.proventus* fructum fecerunt &
38 ויעשו פרי תבואה: ויברכם וירבו מאד
,mala *tyrannide* à sunt humiliati & ,sunt diminuti Et .minuit non eorum *animal* &
39 ובהמתם לא ימעיט: וימעטו וישחו מעצר רעה
inani in eos fecit errare & *: magnificos* super despectionem *Effundens .anxietate* &
40 ויגון: שפך בוז על־נדיבים ויתעם בתהו
.familias *pecus* sicut posuit & *: afflictione ab egenum* sublevavit Et .via absque
41 לא־דרך: וישגב אביון מעוני וישם כצאן משפחות:
Quis .suum os *compescunt* iniquitas omnis & : lætabuntur & , recti Videbunt
42 43 יראו ישרים וישמחו וכל־עולה קפצה פיה: מי־
? DOMINI misericordias *intelligent* & : hæc custodiet & , sapiens
חכם וישמר־אלה ויתבוננו חסדי יהוה:

PSAL. CVIII.

canam & cantabo : Deus meum cor Paratum .David ipsi cantus Canticum
1 2 שיר מזמור לדוד: נכון לבי אלהים אשירה ואזמרה
.diluculo me suscitabo : cithara & , *nablum Evigila* .meam gloriam etiam
3 אף־כבודי: עורה הנבל וכנור אעירה שחר:
magna Quia .nationibus in tibi canam & : Domine populis in tibi Confitebor
4 5 אודך בעמים יהוה ואזמרך בלאמים: כי־גדול
super Exaltare .tua veritas *æthera* ad usque & : tua misericordia cœlos *desuper*
6 מעל־שמים חסדך ועד־שחקים אמתך: רומה על־
liberentur Ut .tua gloria terram omnem super & : Deus cœlos
7 שמים אלהים ועל כל־הארץ כבודך: למען יחלצון
est locutus Deus .me exaudi & , tua dextera serva : tui dilecti
8 ידידיך הושיעה ימינך ועננו: אלהים דבר
.metiar Succoth vallem & : Sechem *partiar* exultabo : suam sanctitatem per
בקדשו אעלזה אחלקה שכם ועמק סכות אמדד:

תרגום TARGUM.

26 סלקין צית שמיא נחתין עמקי תהומיא
27 נפשתהון בבישא תתמוגג: ירתתון
ינועון היך רויה דחמר וכל חוכמתהון
28 מסתלעמא: וצלו קדם יי כד עיק להון
29 וממעיקתהון יפיק יתהון: יקים עלעולא
30 לשתיקותא וישתקון גליהון: וחדון ארום
31 שתקין ודברנון למחוז רעיתהון: יהודון קדם
יי מטול חסדיה ומשתען פרישותיה לבני נשא:
32 ומרוממין יתיה בכנישת עמא בית ישראל
33 ובסנהדרין דחכימיא ישבחון יתיה: שוי
נהרותא היך מדברא ומפקנות מיא היך
34 צחותא: ארעא דישראל דעבדא פרי צדא
היך סדום דאתהפכת מן בישות יתבין בה:
35 כד תבו לאוריתא שוי מדברא היך אריתא
36 דמיא וארע ציהיא למפקנות מיא: ואשרי תמן
37 כפנים ואתקינו קרתא מיתבא: וזרעו חקלין
38 ונציבו כרמיא ועבדו פרי אבא: וברכנון ויסגון
39 לחדא ובעירהון לא יזער: וכד חבו אזערו
40 ואתמסכנו מן אניק בישתא ודוונא: שדי
בסרנותא על רברבניא ואטעיאונון בלמא
41 דלא אורחא: וכד תבו לאוריתא שגב חשיכא
42 ממסכינותא ושוי היך ענא גניסיא: חמון
תריציא ויחדון וכל מרי שקרא שור פומא
43 ואתחסם: מן חכימא וינטור אלין ויתבוננון
חסדיא דיי:

קח

1 2 שירא ושבחא על ידא דדוד: תקין לבי
3 אלהים אשבח ואזמר לחוד איקרי: שבח נבלא
4 וכנרא אשבח בקריצתא: אודה קדמך
5 בעמיא יי ואשבחנך באומיא: ארום רב מעלוי
6 שמיא טובך ועד שחקי מטי קושטך: אתרומם
עלוי שמיא אלהים ועל כל יתבי ארעא איקרך:
7 מן בגלל דישתזבון רחימך פרוק ימינך ועני
8 יתי: אלהא ממלל מאתר בית שכנתיה אבוע
אפלג בותא עם יתבי שכם ועם יתבי מישר
סכות אמשח תחומא:

PARAPH. CHALD. Vers La

Ascendunt ad summitatem cœlorum, descen-
dúntque ad profunda abyssorum, anima eo-
rum in malo liquefiet. Trement et agita-
buntur sicut ebrius *vino*, & omnis sa-
pientia eorum absorbebitur. At si ora-
verint coram Domino cùm adest eis angu-
stia, tum de afflictionibus ipsorum edu-
cet eos. Stare faciet tempestatem in
tranquillitatem, & silebunt fluctus ejus.
Tum lætati sunt quia silent, & duxit eos ad
portum voluntatis ipsorum. Confitebuntur
coram Domino propter benignitatem ejus,
& narrabunt mirabilia ejus opera filiis ho-
minum. Et exaltant eum in congregatio-
ne populi domus Israel, & in conseſſu
sapientium laudant eum. Posuit flumina ve-
lut desertum, et egressus aquarum sicut si-
citates. Terram Israel facientem fructus de-
vastavit sicut Sodomam, quæ subversa et
propter malitiam habitantium in ea. *Quan-*
do conversi sunt ad Legem posuit dese-
tum sicut stagnum aquarum, & terram ar
dam in exitus aquarum. Et habitare fec
ibi esurientes, & constituerunt civitatem
habitabilem. Et seminaverunt agros, &
plantaverunt vineas, & fecerunt fruct
germinis. Et benedixit eis, & multiplica
sunt valdè, & jumenta eorum non diminu
Sed cum peccaverunt, imminuti sunt et a
tenuati ab oppressione mali et doloris. M
sit contemptum super principes, & erra
fecit eos per inane ubi non erat via. A
quando conversi sunt ad Legem sublevav
pauperem de miseria, et posuit sicut ov
familias. Videbunt recti & lætentur, & c
jusvis auctoris mendacii os insolens fuit, &
obturatum est. Quis sapiens & custod-
hæc, ac intelligent misericordias Domi

Canticum & hymnus per manum Dav

PSAL. CVIII.

PAratum cor meum Deus, canam et psa
lam; etiam gloria mea. Canta nablum &
cithara; laudabo in aurora. Confitebor c
ram te in populis Domine, & laudabo
in gentibus. Quoniam magna est super cœ
los benignitas tua, et usque ad nubes per
git veritas tua. Exaltare super cœlos D
et super omnes habitatores terræ gloria t
Ut liberentur dilecti tui, redime dexter
tuam, et responde mihi. Deus locutus
de loco domus majestatis suæ: Lætab
dividam prædam cum habitatoribus
chem, et cum habitatoribus planitiei S
coth mensurabo terminum.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

26 27 * ܣܠܩܝܢ ܠܫܡܝܐ ܘܢܚܬܝܢ ܠܬܗܘܡܐ: ܘܢܦܫܗܘܢ ܒܓܘܗܘܢ ܡܬܬܪܦܐ. * ܙܥܘ ܘܢܕܘ ܐܝܟ
28 ܪܘܝܐ: ܘܟܠܗ ܚܟܡܬܗܘܢ ܐܬܒܠܥܬ. * ܘܩܥܘ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܒܐܘܠܨܢܗܘܢ ܘܡܢ ܥܩܬܗܘܢ ܐܦܩ
29 30 ܐܢܘܢ. * ܐܫܠܝ ܥܠܥܠܐ ܘܫܠܐ: ܘܫܠܝܘ ܓܠܠܘܗܝ ܕܝܡܐ. * ܘܚܕܝܘ ܟܕ ܫܠܝܘ: ܘܕܒ
31 32 ܐܢܘܢ ܠܠܡܐܢܐ ܕܨܒܘ. * ܢܘܕܘܢ ܠܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘܗܝ: ܘܛܝܒܘܬܗ ܥܠ ܒܢܝܢܫܐ. * ܢܥܠܘܢܝܗܝ
33 ܒܟܢܫܐ ܕܥܡܡܐ: ܘܥܠ ܡܘܬܒܐ ܕܩܫܝܫܐ ܢܫܒܚܘܢܝܗܝ. * ܕܥܒܕ ܢܗܪܘܬܐ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ: ܘܡܒܘܥܐ
34 35 ܕܡܝܐ ܠܨܗܝܐ. * ܐܪܥܐ ܕܝܗܒܐ ܦܐܪܝܗ ܠܡܠܚܘܬܐ: ܡܢ ܒܝܫܘܬܗܘܢ ܕܥܡܘܪܝܗ. * ܕܥܒܕ
36 ܡܕܒܪܐ ܠܐܓܡܐ ܕܡܝܐ: ܘܐܪܥܐ ܨܗܝܬܐ ܠܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. * ܘܐܘܬܒ ܬܡܢ ܟܦܢܐ: ܘܒܢܘ ܡܕܝܢܬܐ
37 38 ܘܝܬܒܘ ܒܗܝܢ. * ܘܙܪܥܘ ܚܩܠܐ ܘܢܨܒܘ ܟܪܡܐ: ܘܐܟܠܘ ܡܢ ܦܐܪܐ ܕܥܠܠܬܗܘܢ. * ܒܪܟ
39 ܐܢܘܢ ܘܣܓܝܘ ܛܒ: ܘܒܥܝܪܗܘܢ ܠܐ ܙܥܪ. * ܘܐܙܥܪܘ ܘܐܬܡܟܟܘ: ܒܣܘܓܐܐ ܕܒܝܫܬܐ ܘܐܘܠܨܢܐ.
40 41 * ܐܫܕ ܒܘܣܪܢܐ ܥܠ ܫܠܝܛܢܐ: ܘܐܛܥܝ ܐܢܘܢ ܒܕܘܟܬܐ ܕܠܐ ܐܘܪܚܐ. * ܘܥܫܢ ܠܡܣܟܢܐ ܘܥܒܕ
42 ܐܝܟ ܥܢܐ ܫܪܒܬܗܘܢ: * ܢܚܙܘܢ ܬܪܝܨܐ ܘܢܚܕܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܥܘܠܐ ܢܣܟܪܘܢ ܦܘܡܗܘܢ:
43 * ܡܢ ܕܚܟܝܡ ܢܛܪ ܗܠܝܢ. ܘܢܣܬܟܠ ܚܣܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. * ܫܘܒܚܐ ܘܫܘܪܝܐ ܕܡܣܩܬܐ *
1 * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * * ܟܕ ܗܘܐ ܡܛܝܒ ܒܬܫܡܫܬܐ ܘܙܡܝܪܬܐ
2 ܕܡܪܝܐ. ܘܥܠ ܩܪܝܢܐ ܕܥܡܡܐ. ܦܘܫܩܐ ܠܗ. * ܡܛܝܒ ܗܘ ܠܒܝ ܐܠܗܐ ܡܛܝܒ
3 ܗܘ ܠܒܝ. ܐܫܒܚ ܘܐܙܡܪ ܒܐܝܩܪܝ: * ܐܬܬܥܝܪܝ ܩܝܬܪܝ: ܐܬܬܥܝܪܝ ܟܢܪܐ ܘܩܝܬܪܐ. ܐܦ ܐܢܐ ܐܬܬܥܝܪ
4 5 ܒܨܦܪܐ: * ܐܘܕܐ ܠܟ ܒܥܡܡܐ ܐܠܗܐ. ܘܐܙܡܪ ܠܟ ܒܐܡܘܬܐ: * ܡܛܠ ܕܪܒܐ ܗܝ ܛܝܒܘܬܟ
6 ܥܕܡܐ ܠܫܡܝܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܫܡܝܐ ܗܝܡܢܘܬܟ: * ܐܬܪܘܡ ܥܠ ܫܡܝܐ ܐܠܗܐ.
7 ܘܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܫܘܒܚܟ: * ܡܛܠ ܕܢܬܦܨܘܢ ܚܒܝܒܝܟ. ܦܪܘܩ ܒܝܡܝܢܟ ܘܥܢܝܢܝ:
8 * ܐܠܗܐ ܡܠܠ ܒܩܘܕܫܗ. ܐܫܬܒܗܪ ܐܢܐ ܘܐܦܠܓ ܫܟܝܡ: ܘܥܘܡܩܐ ܕܡܛܠܠܬܐ ܐܡܫܘܚ.

Attolluntur ad cœlum, & deprimuntur a
byssum, unde anima eorũ intra ipsos pe
batur: Contremuerunt atq; titubârunt
ebrii, & omnis illorũ sapientia evanu
maverunt ad Dñm in tribulationibus su
è mœroribus eorũ eduxit eos. Sedavit
pestatem, & tranquillum factum est, & q
verunt fluctus maris: Lætatique sunt
siluissent; duxit illos ad portum quem
verunt. Confiteantur Dño justi ejus, qu
sericordiæ ejus erga filios hominũ. La
eum in cœtu populorũ, & sup sedile se
rũ attollite illũ: Qui redegit flumina qu
desertum, fontes aquarũ in locũ sitibu
Tellurẽ proferentẽ fructus suos in sal
propter facinora prava incolarum ejus.
vertit desertũ in stagna aquarũ, & ter
bundã in scatebras aquarum: Commor
cit ibi famelicos & ædificârunt oppida,
habitârunt in illis: Seminârunt agros
plantârunt vineas, comederuntq; de fru
proventuũ earũ. Benedixit eis & mult
ti sunt valdè, & pecora eorũ haud imm
sunt. At diminuti sunt etiã, atque hu
multis malis & calamitatib⁹. Injecit m
in præstantiores, & vagari fecit eos e
non habente viam; Magnificavit autẽ pa
res, fecitq; sicut oves familias eorũ. Li
ant justi ac lætentur, omnesq; scelerati o
rent fauces suas. Qui sapiens est, obs
hæc, deprehendetque misericordiam D

Laus, & initium gradus.

PSAL. CVIII.

Davidis. Quum esset paratus cum glo
ministerium & psalmodiam domi
ni. Et de vocatione Gentium. Ver

PAratum est cor meum Deus, paratũ e
meũ: laudabo & canã cũ gloria mea
pergiscere lyra mea, expergiscere cit
lyra: etiã ego experrect⁹ sum mane: Co
bor tibi inter populos Deus, & nom
psallam inter gentes; Quoniam ma
bonitas tua usq; ad cœlũ, & usque a
cœli fides tua. Attollere sup cœlũ De
super universam terrã gloria tua. Q
quidem salvandi sunt dilecti tui, salva me dexterâ tuâ, et exaudi me. Deus locutus est in sanctitate sua, Glorificabo ego dividamq; Sechim,& profundum Sochuth

l.CVII.

Verſio VULG. LAT.

ſcendunt uſque ad cœlos, & de-
endunt uſq; ad abyſſos: anima eorū
malis tabeſcebat. Turbati ſunt, &
oti ſunt ſicut ebrius : & omnis ſapi-
ntia eorum devorata eſt. Et clamave-
unt ad Dñm cùm tribularentur, & de
neceſſitatibus eorum eduxit eos. Et
ſtatuit procellam ejus in auram : &
ſiluerunt fluctus ejus. Et lætati ſunt
quia ſiluerunt : & deduxit eos in
portum voluntatis eorum. Confitean-
tur Dño miſericordiæ ejus : & mira-
bilia ejus filiis hominum. Et exaltent
eum in eccleſia plebis : & in cathedra
33 ſeniorum laudent eum. Poſuit flumina
in deſertum, & exitus aquarum in ſi-
34 tim ; Terram fructiferam in ſalſugi-
nem, à malitia inhabitantium in ea.
35 Poſuit deſertum in ſtagna aquarum :
& terram ſine aqua in exitus aquarum.
36 Et collocavit illic eſurientes : et conſti-
37 tuerunt civitatem habitationis. Et
ſeminaverunt agros, & plantaverunt
vineas : & fecerunt fructū nativitatis.
38 Et benedixit eis, & multiplicati ſunt
nimis : & jumenta eorū non minora-
39 vit. Et pauci facti ſunt : & vexati ſunt
à tribulatione malorum, & dolore.
40 Effuſa eſt contemptio ſup principes :
& errare fecit eos in invio, & non in
41 via. Et adjuvit pauperem de inopia :
42 & poſuit ſicut oves familias. Videbunt
recti, & lætabuntur : & omnis iniqui-
43 tas oppilabit os ſuum. Quis ſapiens
& cuſtodiet hæc : & intelliget miſe-
ricordias Dñi ?

1 Canticum Pſalmi ipſi David.
(Sup. 56. 8.) CVII.

2 PAratum cor meum, Deus, paratum
cor meum : cantabo, & pſallam in
3 gloria mea. Exurge gloria mea, exurge
pſalteriū, & cithara : exurgam dilucu-
4 lo. Confitebor tibi in populis, Dñe : &
5 pſallā tibi in nationibus. Quia magna
eſt ſup cœlos miſericordia tua : & uſq;
6 ad nubes veritas tua. Exaltare ſuper
cœlos, Deus, & ſuper omnem terram
7 gloria tua : Ut liberentur dilecti tui.
Salvum fac dexterâ tuâ, & exaudi me :
8 Deus locutus eſt in Sancto ſuo, Exul-
tabo, & dividam Sichimam, et con-
vallem tabernaculorum dimetiar.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

26 † Ἀναβαίνουσιν ἕως τῶν οὐρανῶν, † καὶ καταβαίνουσιν
ἕως τῶν ἀβύσσων. † ἡ ψυχὴ αὐτῶν ἐν κακοῖς ἐτήκετο,
27 † Ἐταράχθησαν, ἐσαλεύθησαν ὡς ὁ μεθύων, † καὶ πᾶ-
28 σα ἡ σοφία αὐτῶν κατεπόθη. † Καὶ ἐκέκραξαν πρὸς
κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαι αὐτούς, † καὶ ἐκ τῶν ἀναγκῶν
29 αὐτῶν ἐξήγαγεν αὐτούς. † Καὶ ἐπέταξε τῇ καται-
γίδι, καὶ ἔστη εἰς αὔραν, † καὶ ἐσίγησαν τὰ κύματα αὐ-
30 τῶν. † Καὶ (ζ) εὐφράνθησαν, ὅτι ἡσύχασαν, † καὶ ὡδήγη-
31 σεν αὐτοὺς ἐπὶ λιμένα θελήματος (*) αὐτῶν. † Ἐξο-
μολογησάσθωσαν τῷ κυρίῳ τὰ ἐλέη αὐτοῦ, † καὶ τὰ
32 θαυμάσια αὐτοῦ τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων. † Ὑψωσά-
τωσαν αὐτὸν ἐν ἐκκλησίᾳ λαοῦ, † καὶ (η) ἐν καθέδρᾳ
33 πρεσβυτέρων αἰνεσάτωσαν αὐτόν. † Ἔθετο ποταμοὺς
34 εἰς ἔρημον, † καὶ διεξόδους ὑδάτων εἰς δίψαν· † Γῆν
καρποφόρον εἰς ἅλμην, † ἀπὸ κακίας τῶν κατοικούν-
35 των ἐν αὐτῇ. † Ἔθετο ἔρημον εἰς λίμνας ὑδάτων,
36 † καὶ γῆν ἄνυδρον εἰς διεξόδους ὑδάτων. † Καὶ κατ-
ῴκισεν ἐκεῖ πεινῶντας, † καὶ συνεστήσαντο πόλεις
37 κατοικεσίας. † Καὶ ἔσπειραν ἀγρούς, καὶ ἐφύτευσαν ἀμ-
38 πελῶνας, † καὶ ἐποίησαν καρπὸν (θ) γεννήματος. † Καὶ
εὐλόγησεν αὐτούς, καὶ ἐπληθύνθησαν σφόδρα, † καὶ
39 τὰ κτήνη αὐτῶν οὐκ ἐσμίκρυνε. Καὶ ὠλιγώθησαν καὶ
40 ἐκακώθησαν † ἀπὸ θλίψεως κακῶν καὶ ὀδύνης. † Ἐξ-
εχύθη ἐξουδένωσις ἐπ' ἄρχοντας αὐτῶν, † καὶ ἐπλά-
41 νησεν αὐτοὺς ἐν ἀβάτῳ καὶ οὐχ ὁδῷ. † Καὶ ἐβοήθησε
πένητι ἐκ πτωχείας, † καὶ ἔθετο ὡς πρόβατα πατρι-
42 άς. Ὄψονται εὐθεῖς καὶ εὐφρανθήσονται, † καὶ πᾶσα
43 ἀνομία ἐμφράξει (ι) τὸ στόμα αὐτῆς. † Τίς σοφὸς καὶ
φυλάξει ταῦτα, † καὶ (κ) συνήσει τὰ ἐλέη τοῦ κυρίου;

MS. A. (ζ) ηὐφράνθησαν, (*) αὐτοῦ. (η) ἐν καθέδραις (θ) γενήματος. (ι) στόμα (κ) συνήσουσιν

1 (α) Ὠδὴ ψαλμοῦ τῷ Δαυίδ. ρζ'.
2 † ΕΤοίμη ἡ καρδία μου ὁ θεός, ἑτοίμη ἡ καρ-
3 δία μου, † ᾄσομαι καὶ ψαλῶ ἐν τῇ δόξῃ μου. † Ἐξ-
εγέρθητι ψαλτήριον καὶ κιθάρα, † ἐξεγερθήσομαι
4 ὄρθρου. † Ἐξομολογήσομαί σοι ἐν λαοῖς κύριε, †
5 ψαλῶ σοι ἐν ἔθνεσιν. † Ὅτι μέγα ἐπάνω τῶν οὐρα-
νῶν τὸ ἔλεός σου, † καὶ ἕως τῶν νεφελῶν ἡ ἀλήθειά
6 σου. Ὑψώθητι ἐπὶ τοὺς οὐρανοὺς ὁ θεός, † καὶ ἐπὶ πᾶ-
7 σαν τὴν γῆν ἡ δόξα σου. † Ὅπως ἂν ῥυσθῶσιν οἱ ἀ-
γαπητοί σου, † σῶσον τῇ δεξιᾷ, καὶ ἐπάκουσόν
8 μου. † Ὁ θεὸς ἐλάλησεν ἐν τῷ ἁγίῳ αὐτοῦ, † ὑψω-
θήσομαι καὶ διαμεριῶ Σίκιμα, † καὶ τὴν κοιλάδα τῶν
σκηνῶν διαμετρήσω.

MS. A. (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

26 *Aſcendunt uſq; ad cœlos : & 26*
deſcendunt uſq; ad abyſſos. Ani-
ma eorum in malis tabeſcebat : 27
Turbati ſunt, moti ſunt, ſicut ebri- 27
us : & omnis ſapientia eorum ab-
ſorpta eſt. 28 Et clamaverunt ad 28
Dominum, cùm tribularentur : &
de neceſſitatibus eorum eduxit eos.
29 Et (f) [h] imperavit procellæ : 29
& ſtetit in auram : & ſiluerunt flu-
ctus ejus. 30 Et lætati ſunt, quia ſi- 30
luerunt : & deduxit eos in portum
voluntatis (g) eorum. 31 Confite- 31
antur Domino miſericordiæ ejus, &
mirabilia ejus filiis hominum. 32 E- 32
xaltent eum in eccleſia populi, &
in cathedra ſeniorum laudent eum.
33 Poſuit flumina in deſertum ; 33
& exitus aquarum in ſitim. 34 [i]
Terram fructiferam in ſalſuginem, 34
à malitia inhabitantium in ea. 35
Poſuit deſertum in ſtagna aquarum, 35
& terram ſine aqua [k] in exitus
aquarum. 36 Et collocavit illîc eſu- 36
rientes : & [l] conſtituerunt (h) ci-
vitates habitationis. 37 Et ſemina- 37
verunt agros, & plantaverunt vi-
neas : & fecerunt [m] fructum (i)
geniminis. 38 Et benedixit eos, & 38
multiplicati ſunt nimis : & jumen-
ta eorum non (k) minoravit. 39 Et 39
(l) [n] pauci facti ſunt : & vexa-
ti ſunt à tribulatione malorum,
& dolore. 40 Effuſus eſt (m) contem- 40
ptus ſuper principes eorum, & erra-
re (n) fecit eos in invio, & non in
via. 41 Et adjuvit pauperē à (o) 41
mendicitate, & [o] poſuit ſicut oves,
familias. 42 Videbunt recti, & læ- 42
tabuntur : et omnis iniquitas oppila-
bit os ſuum. 43 Quis ſapiens, et cu- 43
ſtodiet hæc, et intelliget miſericordi-
as Domini ?

Canticum pſalmi ipſi David. *CVII.* 1

P*Aratum cor meū, De⁹, paratum 2*
cor meū : cantabo, [a] et pſallā in
gloria (a) mea. 2 Exurge pſalteriū, 3
et cithara : exurgam diluculò. 3 Con- 4
fitebor tibi in populis, Domi-
ne : pſallam tibi in gentibus. 4
Quia magna eſt ſuper cœlos miſe- 5
ricordia tua, et uſq; ad nubes
veritas tua. 5 Exaltare ſuper cœ- 6
los, Deus : et ſuper omnē terram glo-
ria tua. ut liberentur dilecti tui, 6 7
ſalvum fac dexterâ, (b) et exaudi
me : De⁹ loquutus eſt in Sancto ſuo ; 8
7 (c) [b] Exaltabor, et dividā Sicima, et vallem tabernaculorum dimetiar.

Verſio ÆTHIOPICA.

የዐርጉ፡እስከ፡ሰማይ፡፡ ወይወርዱ፡እስከ፡ 26
ቀላይ፡፡ ወተመስወት፡ ነፍሶሙ፡ በሐማ
ም፡፡=፡ወደንገፁ፡ወተሀውኩ፡ከመ፡ስኩር፡፡ 27
ወተሰጥመ፡ ኵሉ፡ ጥበቦሙ፡፡=፡ ወአውየ 28
ዉ፡ ኀበ፡ እግዚአብሔር፡ሶበ፡ተመንደቡ፡፡
ወአድኀኖሙ፡እምንዳቤሆሙ፡፡=፡ ወለጎ 29
ፍሉ፡ለዐውሎ፡ወአርመመ፡ባሕር፡፡ ወአርመ
መ፡ማዕበል፡፡=፡ ወተፈሥሑ፡እስመ፡አዕረ 30
ፉ፡፡ ወመርሖሙ፡ ውስተ፡መርሶ፡ኀበ፡ ፈቀ
ዱ፡፡=፡ንግሩ፡ለእግዚአብሔር፡ምሕረቶ፡፡ 31
ወመንክሮሂ፡ ለእጓለ፡እመሕያው፡፡=፡ ወያ 32
ዐቢዮ፡በማኅበረ፡ አሕዛብ፡፡ ወይሴብሕ
ዎ፡በመንበረ፡ሊቃውንት፡፡=፡ ወረሰዮሙ፡ 33
ለአፍላግ፡በድው፡፡ ወረሰየ፡ምጽማእ፡ሙሐ
ዘ፡ማይ፡፡=፡ ወረሰያ፡ፄወ፡ለምድር፡እንተ፡ 34
ትፈሪ፡፡ በእከዮሙ፡ ለእለ፡ ይነብርዋ፡፡=፡
ወረሰዮ፡ለበድው፡ሙሐዘ፡ማይ፡፡ ወምድረ፡ 35
በድው፡ቀላያተ፡ማያት፡፡=፡ ወአንበረ፡ህ 36
የ፡ርኁባነ፡፡ ወሐነጹ፡ አህጉረ፡ ኀበ፡ ይነብ
ሩ፡፡=፡ ወተከሉ፡ ወይነ፡ ወዘርኡ፡ገራው 37
ሀ፡፡ወገብሩ፡ ማእረረ፡እክል፡፡=፡ ወበረኮ 38
ሙ፡ ወበዝኁ፡ ፈድፋደ፡፡ ወኢያውኀደ፡ሎ
ሙ፡እንስሳሆሙ፡፡=፡ ወደወዩ፡ ወውሕዱ፡፡ 39
በሕማም፡ እኩይ፡ ወበጻዕር፡፡=፡ ወተክዐ 40
ወ፡ኀሳር፡ዲበ፡ መላእክት፡፡ ወአስሐቶሙ፡
ውስተ፡በድው፡ዘኢኮነ፡ፍኖተ፡፡=፡ ወረድ 41
ኦ፡ለነዳይ፡ በተፅናሱ፡፡ ወረሰዮ፡ ከመ፡ አበ
ግዐ፡ ብሔር፡፡=፡ ወይርእዩ፡ ራትዕን፡ ወይ 42
ትፈሥሑ፡፡ ወትትፈጸም፡ አፈሁ፡ ኵሉ፡ዐ
መፃ፡፡=፡ መኑ፡ጠቢብ፡ዘየዐቅቦ፡ለዝ፡፡ወ 43
ያእምር፡ከመ፡መሐሪ፡እግዚአብሔር፡፡

መዝሙር፡ማኅሌት፡ዘዳዊት፡፡

የጊ ጥቡዕ፡ልብየ፡እግዚኦ፡ ጥቡዕ፡ ልብየ፡፡ 1
እሴብሕ፡ ወእዜምር፡፡ ወይትነሣእ፡ ክብ
ርየ፡፡=፡ ወእትነሣእ፡ በመዝሙር፡ወበመሰ 2
ንቆ፡፡ ወእትነሣእ፡በጽባሕ፡፡=፡ እገኒ፡ለ 3
ከ፡በውስተ፡አሕዛብ፡እግዚኦ፡፡ወእዜምር፡
ለከ፡በውስተ፡ ሕዝብ፡፡=፡ እስመ ፡ አቢየ 4
ት፡እስከ፡ሰማያት፡ምሕረትከ፡፡ ወእስከ፡
ደመናት፡ጽድቅከ፡፡=፡ ተለዐል፡ እግዚአ 5
ብሔር፡ መልዕልተ፡ሰማያት፡፡ ወበኵሉ፡ም
ድር፡ስብሐቲሁ፡፡ ከመ፡ ይድኀኑ ፡ ፍቁራኒ
ከ፡፡=፡ አድኅነ፡ በየማንከ፡ ወስምዐኒ፡፡ 6
እግዚአብሔር፡ ነበበ፡ በመቅደሱ፡፡=፡ እት 7
ሐሠይ፡ ወእትከፈል፡ ሰቂማ፡፡ ወእሳፈር፡አዕ
ጻደተ፡ቀላት

INTERP. ÆTHIOP. [h] abegit procellam ejus, & ſiluit mare : & ſiluerunt [i] Et poſuit ſalſuginem terram frugiferam, [k] in abyſſos aquarum. [l] ædificârunt [m] meſſem frumenti. [n] infirmi, & pauci facti ſunt à [o] poſuit ei

PSAL. CVII. [a] & extolletur gloria mea. Et exurgam cum pſalterio, [b] Exultabo, &

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* طالعة الي السموات * ونازلة الي الاعماق * ذابت نفوسهم من الشرور * اضطربوا ومادوا مثل 26 27
السكران * ضلت عنهم حكمتهم * صرخوا الي الرب عند كربهم * فاخرجهم من شدايدهم * وازال 28 29
العاصف فسكنت وكفت امواجها * ففرحوا بسكونها * وهداهم الي المينا الذي شاوا * فليشكروا 30 31
الرب مراحمه وعجايبه في بني البشر * وليرفعوه في جمع الشعوب * وليباركوه في مجالس الشيوخ * 32
* لانه جعل الانهار قفارا * ومخارج المياه عطشا * وارضا ذات ثمار جعلها سبخا * من سو اعمال 33 34
ساكنيها * وجعل القفر بحيرة ما * وارضا عديمة الماء لينابيع المياه * واسكن هناك الجياع * 35 36
فاقاموا مدنا للسكنا * وزرعوا حقولا * وغرسوا كروما * واكلوا من ثمار غلاتها * وباركهم فكثروا 37 38
جدا ولم تقل ماشيتهم * قلوا وبادوا من ضغطة الشرور والحزن * انصب الهوان على روسايهم * 39 40
اضلهم في البيد في غير طريق * اعان المسكين من المسكنة * وجعل القبايل مثل الاغنام * ترى 41 42
المستقيمون ويفرحون * ويسد افواه جميع الاثمة * من هو حكيم ليحفظ هذا * ويفهم رحمة الرب * 43
الليلويا *

المزمور المائة وسبعة *   * تسبحة لداود * وهو كح * استيكن *

* مستعد قلبي اللهم * مستعد قلبي * اسبح وارتل في تمجيدي * قم يا تمجيدي * قم ايها 1 2
المزمار والقيثار * اقوم سحرا * واشكرك يا رب في الشعوب * وارتل لك في الامم * لان عظمة 3 4
هي رحمتك على السموات * وحقك الي السحاب * اعل اللهم على السموات * ومجدك على الارض 5
جميعها * لكيما تخلص احباوك * خلصني بيمينك واستجب لي * الله تكلم في قدسه * اني 6 7
ارتفع واقسم شاكيم * واقيس وادي المظال * 8

Aſcendentes ad cœlos, et deſcendentes in 26
ima. Liquefactæ ſunt animæ eorum ob mi-
ſerias : Turbati ſunt & titubârunt ſicut e- 27
brius : periit ab eis ſapientia eorū. Clamave- 28
runt ad Dominū in mœrore ſuo, et eduxit
eos de tribulationib⁹ eorū. Et amovit tur- 29
binē, ac ſedatæ ſunt, et ceſſaverūt fluctus
earū. Et lætati ſunt de quiete earum. Di- 30
rexitq; eos ad portū quē voluerūt. Igitur 31
gratias agant Domino miſerationes ejus, et
miracula ipſi⁹ in filiis hominū. Et exaltent 32
eū in congregatione populorū, & benedi-
cant ei in conſeſſu ſenū. Quoniā ipſe fecit 33
flumina, ſolitudines : et ſcatebras aquarū,
ſitibunda. Et terram frugiferam redegit in 34
ſalſuginē, ob turpitudinē operū incolarum
ejus. Et redegit deſertū in lacū aquæ, & 35
terrā carentē aquâ in fontes aquarum. Et 36
habitare fecit ibi eſurientes, et erexerunt
urbes ad habitandum. Et ſeminaverunt a- 37
gros, & plantaverunt vineas, & comede-
runt de fructib⁹ proventuū illorū. Et be- 38
nedixit eis ac multiplicati ſunt valdè, &
nō ſunt imminuta armēta eorū. Imminuti 39
ſunt et perierunt præ ſuffocatione malorū
& mœroris. Effuſa eſt contemptio ſuper 40
principes eorū, errare fecit eos per ſolitu-
dinē ſine via. Sublevavit pauperē de pau- 41
pertate, fecitque familias inſtar ovium.
Videbunt recti & lætabuntur, & obtura- 42
buntur ora omnium iniquorum. Qui eſt 43
ſapiens, obſervet hoc, & intelliget mi-
ſericordiam Domini. Alleluja.

P S A L. C V I I.

Canticum David. Verſ. 28. 1

P*Aratum cor meus Deus, paratum cor* 2
meū : laudabo et pſallā in glorificati-
one mea. Surge O glorificatio mea, ſurge O 3
pſalterium et cithara. Surgā diluculò, Et 4
gratias agā tibi O Domine, inter populos,
et pſallā tibi inter gentes. Quia magna eſt 5
miſericordia tua ſuper cœlos, & veritas
tua uſq; ad nubes. Eleva te De⁹, ſuper cœ- 6
los, et gloria tua ſuper terrā univerſam.
Ad hoc ut ſalventur amici tui, ſalva me 7
dexterâ tuâ, & exaudi me. Deus loqui- 8
tur per ſanctos ſuos : Equidem eleva-
bor, & dividam Sechim, & metibor val-
lem tabernaculorum.

תהלים : קט

.meus legifer Jehudah:mei capitis fortitudo Ephraim & ,Menaſſeh *mihi* ,Ghilhad *Mihi*
9 לי גלעד לי מנשה ואפרים מעוז ראשי יהודה מחקקי :
Peleſeth ſuper :meũ calceamentũ projiciam Edom ſuper ,meæ lotionis olla Moab
10 מואב סיר רחצי על־אדום אשליך נעלי עלי פלשת
? Edom ad uſque me educet quis ? *munitionis* civitatẽ me deducet Quis .taratantarizabo
11 אתרועע : מי יבלני עיר מבצר מי נחני עד־אדום :
Da ? noſtris exercitib⁹ cũ Deus egredieris non &:nos elongâſti Deus Nonne
12 הלא־אלהים זנחתנו ולא־תצא אלהים בצבאתנו : הבה־
13 : *virtute* faciemus Deo in .hominis ſalus *mendacium* & :anguſtia ab auxiliũ nobis
14 לנו עזרת מצר ושוא תשועת אדם : באלהים נעשה־חיל
.noſtros hoſtes conculcabit ipſe &
והוא יבוס צרינו :

PSAL. CIX. קט

, impii os Quia .taceas ne meæ laudis Deus .cantus David ipſi Victori
1 למנצח לדוד מזמור אלהי תהלתי אל־תחרש : כי פי רשע
2 verbis Et .*falſitatis* lingua mecum ſunt locuti : aperuerunt me ſuper doloſi os &
3 ופי־מרמה עלי פתחו דברו אתי לשון שקר : ודברי
mea dilectione Pro .gratis me impugnaverunt & : me circundederunt *odii*
4 שנאה סבבוני וילחמוני חנם : תחת־אהבתי
, bono pro malum me adverſum poſuerunt Et .*oratio* ego & ,mihi ſunt adverſati
5 ישטנוני ואני תפלה : וישימו עלי רעה תחת טובה
ad ſtet Satan & : impium eum ſuper Conſtitue .mea dilectione pro odium &
6 ושנאה תחת אהבתי : הפקד עליו רשע ושטן יעמד על־
Sint peccatum in ſit ejus oratio & : impius exeat *ipſum judicari In* .ejus dexterã
7 ימינו : בהשפטו יצא רשע ותפלתו תהיה לחטאה : יהיו־
8 : pupilli ej⁹ filii Sint .alter accipiat ejus præfecturam : pauci ejus dies
9 ימיו מעטים פקדתו יקח אחר : יהיו־בניו יתומים
quærant & : poſtulent & , ejus filii ſe moveant movendo Et .vidua ej⁹ uxor &
10 ואשתו אלמנה : ונוע ינועו בניו ושאלו ודרשו
.ej⁹ laborẽ alieni diripiant & :ei quæ omnia fœnerator Illaqueet ſuis *deſolationib⁹* de
11 מחרבותיהם : ינקש נושה לכל־אשר־לו ויבזו זרים יגיעו :
Sit .ejus pupillis *miſereſcens* ſit ne & : miſericordiã *protrahens* ei ſit Ne
12 אל־יהי־לו משך חסד ואל־יהי חונן ליתומיו : יהי־
13 .eorum nomen deleatur altera generatione in : *ſuccidendum ad* ejus *noviſſimum*
אחריתו להכרית בדור אחר ימח שמם :
.deleatur ne ej⁹ matris peccatũ & ,*Dominum ad* eorum patrum iniquitas Memoretur
14 יזכר עון אבתיו אל־יהוה וחטאת אמו אל־תמח :
quòd eo Pro .eorũ memoriam terra è ſuccidat & : ſemper Domino coram Sint
15 יהיו נגד־יהוה תמיד ויכרת מארץ זכרם : יען אשר
16 : *egenum* & ,*afflictum* virum eſt perſecutus & ,miſericordiam facere eſt recordatus non
לא־זכר עשות חסד וירדף איש־עני ואביון
non & .*eum invaſit* & ,maledictionem dilexit Et .interficiendum ad corde contritũ &
17 ונכאה לבב למותת : ויאהב קללה ותבואהו ולא־
,ſuũ *amictum* ſicut maledictionẽ induit Et .eo ab ſe elõgavit & ,benedictionẽ *in* voluit
18 חפץ בברכה ותרחק ממנו : וילבש קללה כמדו
ei Sit .ejus oſſa in oleum ſicut & : ejus *interius in* aqua ſicut intravit &
19 ותבא כמים בקרבו וכשמן בעצמותיו : תהי־לו
.*illud accinget* ſemper cingulum *in* & : ſe *operiet* veſtimentum ſicut
כבגד יעטה ולמזח תמיד יחגרה :

תרגום TARGUM.

9 דילי גלעד דילי מנשה גברין דבית אפרים
10 עושנא דרישי ומדבית יהודה ספרי : דוששית
מואבאי היך דודי שווני על מלכות אדום
אטלוק סנדלי על מלכות פלשתאי אתיבב :
11 וכדון מן אוביל יתי עד כרכא תקיפא מן
12 דברני עד אדום : הלא על דחבנא קדם יי
שבקתנא ולא נפקא שכנתיה בחילותנא :
13 הב לן סעדא מן מעיקא דמגן פורקנא
14 דבר נשא : באלהא נעביד חילא והוא ידושש
מעיקנא :

קט

1 לשבחא על יד דוד תושבחא אלהים שבחתי
2 לא תשתוק : ארום פומא דרשיעא ופומא
דנכלא עלי פתחין מלילו עמי לישן דשקר :
3 וממללי סנותא חזרו יתי ואגיחו עמי מגן :
4 חלף די רחמית סטנו לי ואנא אצלי :
5 ושוון עלי בישתא חלף טבא וסנאתא חלף
6 דרחימית : אסער עלוי רשיעא וסטנא יקום על
7 ימיניה : באדיניה יפוק חיב וצלותיה תהי
8 לחובתא : יהון יומוי קלילין מנין שנוי יירת
9 אוחרן : יהון בנוי יתמי ואתתיה ארמלתא :
10 ואטלטלא יטלטלון בנוי ושאלון ותבעון
11 מדהות צרתהון : ינבב מוזפא לכל דיליה ויבזון
12 נוכראין ליעותיה : לא יהי ליה נגיד חסדא ולא
13 יהי ליה חיס על יתמוי : יהי סופיה לאשתציא
14 בדר אוחרן יתמחי שמהון : ידכיר עוית אבהתוי
15 קדם יי וחובת אמיה לא תתמחי : יהוין קביל
מימרא דיי תדירא וישצי מארעא דכרנהון :
16 מטול דלא אדכר למעבד טיבו ורדיף גבר עניא
17 וחשיכא ומכיך לבא לאתקטלא : ורחים לוטיא
ואתית ליה ולא אתרעי בברכתא ואתרחקת
18 מניה : ולבש לוטא היך לבושא ועלת היך מיא
19 בנושמיה והיך משחא באברוי : תהוי ליה היך
לבושא יתעטף ולקמור תדירא יזרזניה :

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Meus eſt Gilhad, meus eſt Menaſſeh: ro ſti domus Ephraim fortitudo capitis me & de domo Jehuda ſcriba meus. Conſte Moabitas tanquam ollas lotionis meæ; ſu per *regnum* Edom projiciam calciamentu meum : ſuper regnum Paleſtinorum jubi labo. *Et nunc* quis deducet me ad *arcem* munitam? quis ducet me uſque ad Edom? Nonne *quia peccavimus coram Domino de ſeruiſti* nos, & nequaquam egreſſa eſt ma jeſtas ejus cum exercitibus noſtris? Da no bis auxilium ob infeſtatorem, quoniam va na eſt redemptio hominis. In Deo edem virtutem, & ipſe calcabit oppreſſores no ſtros.

Ad laudandum per manum Davi hymnus.

PSAL. CIX.

DEus laus mea, ne taceas. Quoniam o impium & os doloſum ſuper me aperu runt: locuti ſunt adverſum me lingua me daci. Et verbis odii circundederunt me et pugnaverunt adverſum me ſine cau Pro eo quòd dilexi, adverſantur mihi: eg verò precabor. Et ponunt adverſum me malum pro bono, & odium pro eo quo dilexi. Conſtitue ſuper eum impium, & Sa tanas ſtet ad dexteram ejus. Cùm judicia ſubibit, exeat condemnatus, & oratio ej ſit ad condemnationem. Sint dies ejus ve loces; numerum annorum ejus hæredita acquirat alius. Sint filii ejus pupilli, & uxor ejus vidua. Vagando vagentur fil ejus; & petant & inquirant *poſtquam* fu rit deſolatio eorum. Colligat fœnerato omnia quæ ipſius ſunt, & diripiant alie laborem ejus. Non ſit illi qui concilietm ſericordiam, & non ſit qui miſereatur pu pillis ejus. Sit finis ejus ad interitum, in g neratione altera deleatur nomen eoru Commemoretur iniquitas patrum ejus conſpectu Domini, et peccatum matris ej non deleatur. Sint in conſpectu Verbi Do mini ſemper, & deleat de terra memori am eorum. Quoniam non meminit face benignitatem, & perſequitur homine pauperem & mendicum, & compunct corde ad internecionem. Et dilexit male ctionem, & obvenit ei; & noluit benig tatem, & elongata eſt ab eo. Et induit ma ledictionem ſicut veſtimentum, & intra quaſi aqua in corpus ejus, et ſicut oleum membra ejus. Sit ei ſicut veſtimentum operiatur, & pro cingulo ſemp accinga

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

9 * ܕܝܠܝ ܗܘ ܓܠܥܕ ܘܕܝܠܝ ܗܘ ܡܢܫܐ: ܐܦܪܝܡ ܡܫܒܚܢܘܬܗ ܕܪܫܝ. ܝܗܘܕܐ ܡܚܟܡܢܝ *ܡܘܐܒ
10 ܩܕܪܐ ܕܫܘܝܓܝ: ܥܠ ܐܕܘܡ ܐܫܪܐ ܡܣܢܝ ܘܥܠ ܦܠܣܛܝܢܐ ܐܩܥܐ.* ܡܢܘ ܢܕܒܪܢܝ ܠܡܕܝܢܬܐ
11 ܪܒܬܐ: ܘܡܢܘ ܢܕܒܪܢܝ ܥܕܡܐ ܠܐܕܘܡ.* ܗܐ ܐܢܬ ܐܠܗܐ ܛܥܝܬܢ. ܘܠܐ ܢܦܩܬ ܐܢܬ ܒܚܝܠܢ:
12 * ܗܒ ܠܢ ܥܘܕܪܢܐ ܥܠ ܒܥܠܕܒܒܝܢ. ܡܛܠ ܕܣܪܝܩ ܗܘ ܦܘܪܩܢܗ ܕܒܪܢܫܐ: * ܐܠܗܐ 13
14 ܢܬܠ ܠܢ ܚܝܠܐ. ܘܗܘ ܢܕܘܫ ܠܒܥܠܕܒܒܝܢ. *ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܐܐ ܘܬܫܥܐ* *ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܐܡܠܟܘܗܝ 1
ܠܐܒܫܠܘܡ ܟܕ ܠܐ ܝܕܥ: ܘܡܛܠ ܗܕܐ ܐܬܩܛܠ. ܠܢ ܕܝܢ ܡܚܘܐ ܚܫܘܗܝ ܕܡܫܝܚܐ ܐܠܗܐ.
2 ܦܬܓܡܐ ܗܘ. ܐܠܗܐ ܕܫܘܒܚܝ ܠܐ ܬܫܬܘܩ. * ܡܛܠ ܕܦܘܡܗ ܕܥܘܠܐ ܘܦܘܡܗ
3 ܕܢܟܠܐ ܐܬܦܬܚܘ ܥܠܝ: ܡܠܠܘ ܥܡܝ ܒܠܫܢܐ ܕܓܠܐ * ܘܡܠܐ ܕܣܢܐܬܐ. ܐܚܕܘܢܝ ܘܐܬܟܬܫܘ
4 ܥܡܝ ܡܓܢ: * ܚܠܦ ܕܪܚܡܬܝ ܣܛܢܘ ܠܝ. ܘܐܢܐ ܡܨܠܐ ܗܘܝܬ ܥܠܝܗܘܢ: *ܘܦܪܥܘܢܝ 5
6 ܒܝܫܬܐ ܚܠܦ ܛܒܬܐ. ܘܣܢܐܬܐ ܚܠܦ ܪܚܡܬܝ: * ܦܩܘܕ ܥܠܝܗܘܢ ܥܘܠܐ. ܘܣܛܢܐ ܢܩܘܡ
7 ܡܢ ܝܡܝܢܗܘܢ: * ܘܡܐ ܕܡܬܕܝܢܝܢ ܢܦܩܘܢ ܟܕ ܚܝܒܝܢ. ܘܨܠܘܬܗܘܢ ܬܗܘܐ ܠܚܛܝܬܐ:
8 * ܢܗܘܘܢ ܝܘܡܝܗܘܢ ܙܥܘܪܝܢ. ܘܡܕܡ ܕܢܛܝܪ ܠܗܘܢ ܐܚܪܢܐ ܢܣܒܘܢ: * ܢܗܘܘܢ 9
ܒܢܝܗܘܢ ܝܬܡܐ. ܘܢܫܝܗܘܢ ܐܪܡܠܬܐ: * ܢܦܫܘܩ ܡܪܐ ܚܘܒܐ ܥܠ ܟܠ ܕܐܝܬ ܠܗܘܢ. 11
12 ܘܢܒܙܘܢ ܢܘܟܪܝܐ ܚܝܠܗܘܢ: * ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܡܪܚܡܢܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܕܢܪܚܡ ܥܠ
13 14 [illegible]
15 [illegible]
16 [illegible]
17 [illegible]
18 [illegible]
19 [illegible]

Meus eſt Ghelaad, & meus eſt Manaſſe, phrem magnificator capitis mei, Judha meus, Moab cacabus ablutionis meæ, Adum ſolvam calceos meos, & ſuper Pa ſtinam clamabo, Quis perducat me ad magnam ? quis ducat me uſque in Adu Nam ecce tu Deus oblitus es noſtri, & egrederis in robur noſtrum. Fer nobis op in hoſtes noſtros, ſiquidem vana eſt ſalus minis. Deus ſuppeditet nobis vires, & conculcet inimicos noſtros.

PSAL. CIX.

Davidis. Quum Regem creaverunt A lom, eo inſcio : & hac de cauſa inter fuit. Nobis autem exponit paſſiones C ſti Dei. Verſus. 64.

DEus gloriæ meæ, ne taceas; Quia os & os doloſi aperuerunt ſeſe contra m allocuti ſunt me linguâ mendaci Et voc dii, & impugnaverunt me gratis; Et pro re meo adverſati ſunt mihi: ego tamen ora pro eis; Rependerunt mihi malũ pro bo & odiũ pro dilectione. Præcipe adverſus iniquo, & diabol⁹ ſtet à dextera eorũ: Et judicabũtur, exeãt condemnati, et oratio fiat peccatum. Sint illorũ dies pauci, quo aſſervatum eſt eis, alii accipiant : Sint li eorũ pupilli, & uxores illorũ viduæ : P Dñs debiti omnib⁹ quæ poſſidẽt : & ſcru tur alieni vires illorum : Non ſit erga miſericors, neque ſit qui miſereatur pu lis eorũ : Sit finis eorum in interitum, & generationem ſequentem deleatur nome rum; Memoriæ mandetur iniquitas pa illorum, & peccata matrum ipſorum min deleantur : Sed ſint Domino omni temp abrogetque de terra memoriam illoru Quia non fuerunt memores operandi bo & infectati ſunt pauperem atque inopem dolentem corde, ad mortem. Dilexer maledictiones, & non ſunt oblectati be dictionibus; Imò induerunt maledictio ut arma, & ingreſſæ ſunt in eos ut aqua que oleum in oſſa eorum. Fiat illis ſicut ſtis quâ operiuntur, & ſicut cingulum omni tempore.

Verſio VULG. LAT.

9 Meus eſt Galaad, & meꝰ eſt Manaſſes :
& Ephraim ſuſceptio capitis mei.
10 Judæ rex meus : Moab lebes ſpei meæ :
In Idumæam extendã calceamentum
meum : mihi alienigenæ amici facti
11 ſunt. Quis deducet me in civitatẽ
munitã ? quis deducet me uſque in
12 Idumæam ? Nonne tu, Deus, qui repuliſti
nos, & non exibis, Deus, in virtutibus
13 noſtris ? Da nobis auxiliũ de
14 tribulatione : quia vana ſalus hominis. In Deo
faciemus virtutem : & ipſe ad nihilum
deducet inimicos noſtros.

1 In finem, Pſalmus David. CVIII.

2 DEus, laudẽ meã ne tacueris : quia
os peccatoris, & os doloſi ſuper
3 me apertũ eſt. Locuti ſunt adverſũ me
linguâ doloſâ, & ſermonibus odii
circumdederunt me : & expugnaverunt
4 me gratis. Pro eo ut me diligerent,
detrahebant mihi : ego autem orabam.
5 Et poſuerunt adverſum me mala pro
bonis : & odium pro dilectione mea.
6 Conſtitue ſup eũ peccatorẽ : &
7 diabolus ſtet a dextris ejꝰ. Cùm judicatur,
exeat condemnatus : & oratio ejus fiat
8 in peccatũ. Fiant dies ejꝰ pauci : &
9 epiſcopatũ ejꝰ accipiat alter. Fiant filii
10 ejus orphani : & uxor ejus vidua.
Nutantes transferantur filii ejꝰ, &
mendicent : & ejiciantur de habitationibus
11 ſuis. Scrutetur fœnerator omnem
ſubſtantiã ejꝰ : & diripiãt alieni labores
12 ejꝰ. Non ſit illi adjutor : nec ſit qui
13 miſereatur pupillis ejus. Fiant nati ejus
in interitũ : in generatione una
14 deleatur nomen ejꝰ. In memoriã redeat
iniquitas patrũ ejꝰ in conſpectu Dñi : &
15 peccatũ matris ejꝰ non deleatur. Fiant
contra Dñm ſemper, & diſperat de
16 terra memoria eorũ : Pro eo quòd non
eſt recordatus facere miſericordiam.
17 Et perſecutus eſt hominẽ inopem, &
mendicũ, & compunctũ corde
18 mortificare. Et dilexit maledictionẽ, &
veniet ei : & noluit benedictionẽ, &
elongabitur ab eo. Et induit maledictionẽ
ſicut veſtimentũ, & intravit ſicut aqua
in interiora ejꝰ, & ſicut oleũ in oſſibꝰ
19 ejꝰ. Fiat ei ſicut veſtimentũ, quo
operitur ; & ſicut zona, quâ ſemper
præcingitur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

9 † Ἐμός ἐστι Γαλαὰδ, καὶ ἐμός ἐστι Μανασσῆς, † καὶ
Ἐφραὶμ ἀντίληψις τῆς κεφαλῆς μου· † Ἰούδας
10 βασιλεύς μου, † Μωὰβ λέβης τῆς ἐλπίδος μου· † ἐπὶ τὴν
Ἰδουμαίαν ἐπιβαλῶ τὸ ὑπόδημά μου, † ἐμοὶ
11 ἀλλόφυλοι ὑπετάγησαν. † Τίς ἀπάξει με εἰς πόλιν
12 περιοχῆς; † ἢ τίς ὁδηγήσει με ἕως τῆς Ἰδουμαίας; †
Οὐχὶ σὺ ὁ Θεὸς ὁ ἀπωσάμενος ἡμᾶς; † καὶ οὐκ
13 ἐξελεύσῃ ὁ Θεὸς ἐν ταῖς δυνάμεσιν ἡμῶν; † Δὸς ἡμῖν
βοήθειαν ἐκ θλίψεως, † καὶ ματαία σωτηρία
14 ἀνθρώπου. † Ἐν τῷ Θεῷ (β) ποιήσομεν δύναμιν, † καὶ
αὐτὸς ἐξουδενώσει τοὺς (γ) ἐχθροὺς ἡμῶν.

1 Εἰς τὸ τέλος, ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ρη΄.

2 † Ὁ Θεὸς τὴν αἴνεσίν μου μὴ παρασιωπήσῃς, † ὅτι
στόμα ἁμαρτωλοῦ καὶ στόμα δολίου ἐπ᾽ ἐμὲ
3 ἠνοίχθη. † Ἐλάλησαν κατ᾽ ἐμοῦ γλώσσῃ δολίᾳ, † καὶ
λόγοις μίσους ἐκύκλωσάν με, † καὶ ἐπολέμησάν με
4 δωρεάν. † Ἀντὶ τοῦ ἀγαπᾶν με, ἐνδιέβαλλόν με, † ἐγὼ
5 δὲ προσηυχόμην. † Καὶ ἔθεντο κατ᾽ ἐμοῦ κακὰ ἀντὶ
6 ἀγαθῶν, † καὶ μῖσος ἀντὶ τῆς ἀγαπήσεώς μου. †
Κατάστησον ἐπ᾽ αὐτὸν ἁμαρτωλὸν, † καὶ διάβολος στήτω
7 ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ. † Ἐν τῷ κρίνεσθαι αὐτὸν, ἐξέλθοι
καταδεδικασμένος, † καὶ ἡ προσευχὴ αὐτοῦ γενέσθω
8 εἰς ἁμαρτίαν. † Γενηθήτωσαν αἱ ἡμέραι αὐτοῦ ὀλίγαι,
9 † καὶ τὴν ἐπισκοπὴν αὐτοῦ λάβοι ἕτερος. †
Γενηθήτωσαν οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ὀρφανοὶ, † καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ χήρα. †
10 Σαλευόμενοι μεταναστήτωσαν οἱ υἱοὶ αὐτοῦ, καὶ
ἐπαιτησάτωσαν, † ἐκβληθήτωσαν ἐκ τῶν οἰκοπέδων αὐτῶν. †
11 (α) Ἐξερευνησάτω δανειστὴς πάντα ὅσα ὑπάρχει
αὐτῷ, † καὶ διαρπασάτωσαν ἀλλότριοι τοὺς πόνους
12 αὐτοῦ. † Μὴ ὑπαρξάτω αὐτῷ ἀντιλήπτωρ, † μηδὲ
13 γενηθήτω οἰκτίρμων τοῖς ὀρφανοῖς αὐτοῦ. † Γενηθήτω
τὰ τέκνα αὐτοῦ εἰς (β) ἐξολόθρευσιν, † ἐν γενεᾷ μιᾷ
14 (γ) ἐξαλειφθείη τὸ ὄνομα αὐτοῦ. † Ἀναμνησθείη ἡ
ἀνομία τῶν πατέρων αὐτοῦ ἔναντι κυρίου, † καὶ ἡ
15 ἁμαρτία τῆς μητρὸς αὐτοῦ μὴ ἐξαλειφθείη. † Γενηθήτωσαν
ἐναντίον κυρίου διαπαντὸς, † καὶ (δ) ἐξολοθρευθείη
16 ἐκ γῆς τὸ μνημόσυνον (ε) αὐτῶν· † Ἀνθ᾽ ὧν οὐκ
17 ἐμνήσθη (ζ) ποιῆσαι ἔλεος, † Καὶ κατεδίωξεν
ἄνθρωπον πένητα καὶ πτωχὸν, † καὶ κατανενυγμένον τῇ
18 καρδίᾳ τοῦ θανατῶσαι. † Καὶ ἠγάπησε κατάραν, καὶ
ἥξει αὐτῷ, † καὶ οὐκ ἠθέλησεν εὐλογίαν, καὶ
μακρυνθήσεται ἀπ᾽ αὐτοῦ. καὶ ἐνεδύσατο κατάραν ὡς ἱμάτιον, †
καὶ εἰσῆλθεν ὡσεὶ ὕδωρ εἰς τὰ ἔγκατα αὐτοῦ, † καὶ ὡσεὶ
19 ἔλαιον ἐν τοῖς ὀστέοις αὐτοῦ. † Γενηθήτω αὐτῷ ὡς
ἱμάτιον ὃ περιβάλλεται, † καὶ ὡσεὶ ζώνη ἣν διαπαντὸς
περιζώννυται.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

Meus eſt Galaad, et meus eſt Manaſſes : et Ephraim ſuſceptio capitis mei : 9
9 Judas rex meus. Moab [c] lebes 10
ſpei (d) meæ : 10 ſuper Idumæam projiciam calceamentũ meum : mihi
alienigenæ (e) ſubditi ſunt. 11 Quis 11
adducet me in civitatem (f) [d] circumſtantiæ ? aut quis deducet me uſque in
Idumæam ? 12 (g) Nonne tu, Deus, 12
qui repuliſti nos, et nõ (h) exibis, Deꝰ,
in virtutibus noſtris ? 13 Da nobis 13
auxilium de tribulatione : & vana
ſalus hominis. 14 In Deo faciemus 14
virtutem : & ipſe [e] ad nihilum
deducet inimicos noſtros.

In finem, Pſalmus ipſi David. CVIII. 1

1 DEus, (a) [a] laude meam ne 2
tacueris : quia os peccatoris, et os
doloſi ſuper me apertum eſt. 2 Loquuti 3
ſunt adverſum me linguâ [b]
doloſâ : & [c] ſermonibus odii
circumdederunt me : et expugnaverũt me
gratis. 3 Pro eo, ut diligerent me, 4
detrahebant mihi : ego autem orabam. 4 Et 5
[d] poſuerunt adverſum me mala pro
bonis : & odium pro dilectione mea.
5 Conſtitue ſuper eum peccatorem : & 6
diabolꝰ ſtet à dextris ejus : 6 Cùm 7
judicatur, exeat condemnatus : &
oratio ejus fiat in peccatum. 7 Fiant dies 8
ejus pauci : & epiſcopatum ejus
accipiat alter. Fiant filii ejus orphani, 9
& uxor ejus vidua. 9 [e] 10
Nutantes transferantur filii ejus, &
mendicent : ejiciantur de (b) [f] p[illegible]
nis ſuis. 10 (c) [g] Scrutetur 11
fœnerator omnem ſubſtantiam ejus : & [h]
diripiant alieni labores ejus. 11 Non 12
ſit illi adjutor : nec ſit qui miſereatur
pupillis ejus. 12 Fiant nati ejus in 13
interitum : in generatione una deleatur
nomen ejus : 13 In memoriam redeat 14
iniquitas patrum ejus in conſpectu
Domini ; & peccatum matris ejus non
deleatur. 14 Fiant contra Dominum 15
ſemper : & diſpereat de terra
memoriale eorum : Pro eo, quod non eſt 16
recordatus facere [i] miſericordiam :
15 Et perſequutus eſt hominem 17
inopem, & mendicum, & [k]
compunctum corde mortificare. 16 Et 18
dilexit maledictionem, & veniet ei : &
noluit benedictionem, & elongabitur
ab eo. 17 Et induit maledictionem, ſicut veſtimentum : & intravit, ſicut aqua, in 19
interiora ejus, & ſicut oleum in oſſibus ejus. 18 Fiat ei, ſicut veſtimentum, quo operitur : &
ſicut zona, quâ ſemper præcingitur.

Verſio ÆTHIOPICA.

ዚአየ፡ውእቱ፡ገላዓድ፡ ወዚአየ፡ ምናሴ፡፡ወ 8
ኤፍሬም፡ስሃቀ፡ ርእስየ፡፡=፡ ወይሁዳ፡ንጉ 9
ሠየ፡፡ወሞአብ፡ካህን፡ተስፋየ፡፡=፡ ዲበ፡ኤ 10
ዶምያስ፡ እሰፍሕ፡ ሙኪደየ፡፡ሊተ፡ ይገን
ዩ፡ኢሎፍሊ፡፡=፡ መኑ፡ይወስደኒ፡ሀገረ፡ ጥቅ 11
ም፡፡ወመኑ፡ ይመርሐኒ፡ እስከ፡ ኢዶምያ
ስ፡፡=፡ አኮኑ፡አንተ፡ዘገደፍከነ፡ እግዚኦ፡፡ 12
ወኢትወፅእ፡ ምስሌነ፡ ምስለ፡ኃይልነ፡፡=፡
ሀበነ፡ ረድኤተ፡ ለምንደቤነ፡፡ወከንቱ፡ ተአ 13
ምኖ፡ በሰብእ፡፡=፡ በእግዚአብሔር፡ ንገብ 14
ር፡ ኃይለ፡፡ወውእቱ፡ ያኀስሮሙ፡ ለእለ፡ ይ
ሣቅዩነ፡፡=፡

ፍጻሜ፡መዝሙር፡ዘዳዊት፡፡

፻፰ እግዚኦ፡ ኢትጸመመኒ፡ ስእለትየ፡፡እስ 1
መ፡አፈ፡ዓማፂ፡ ወአፈ፡ ኃጕእ፡ አብቀወ፡ላዕ 2
ሌየ፡፡=፡ ወነበቡ፡ላዕሌየ፡በልሳነ፡ዐመፃ፡፡ወ 3
አገቱኒ፡በጽልእ፡፡ወጸብኡኒ፡በከንቱ፡፡=፡ ወ
ዘእምአፍቀሩኒ፡ አስተዋደዩኒ፡፡ወአነሰ፡ እጼ
ሊ፡፡=፡ ፈደዩኒ፡እኪተ፡ህየንተ፡ሠናይት፡፡ወ 4
ጽልኡኒ፡ህየንተ፡ዘአፍቀርክዎሙ፡፡=፡ሢም፡ 5
ላዕሌሁ፡ ኃጥአ፡፡ወሰይጣን፡ ይቁም፡ በየማ
ኑ፡፡=፡ ወሶበሂ፡ ይትዋቀሥ፡ ይጻእ፡ ተመዊ 6
አ፡፡ወጸሎቱሂ፡ትኩን፡ጌጋየ፡፡=፡ ወይኩና፡ 7
መዋዕሊሁ፡ሓደጠ፡፡ወሢመቱሂ፡ ይንሣእ፡በዕ
ድ፡፡=፡ ወይኩኑ፡ ደቂቁ፡እጓለ፡ሙውታ፡፡ወ 8
ብእሲቱሂ፡ ትኩን ፡ መበለተ፡፡=፡ ወይትሀወ 9
ኩ፡ደቂቁ፡ ወይፍልሱ፡ ወያስተፍእሙ፡፡ወይስ
ድድዎሙ፡እምአቢያቲሆሙ፡፡=፡ ወይበር 10
ብሮ፡ባዕለ፡እደ፡ኵሉ፡ንዋዮ፡፡ወያሐብልዎ፡
ነኪር፡ ኵሉ፡ ተግባሮ፡፡=፡ ወኢይርከብ፡ዘ 11
ይረድኦ፡፡ወኢይምሐርዎሙ፡ ለእጓለ፡ሙው
ታሁ፡፡=፡ ወይሠረው፡ ደቂቁ፡፡ወበአሐቲ፡ት 12
ውልድ፡ ትደምሰስ፡ ስሙ፡፡=፡ ወትዘከር፡ኃ 13
ጢአተ፡አቡሁ፡ በቅድመ፡ እግዚአብሔር፡፡
ወኢይደምሰስ፡ጌጋይ፡ለእሙ፡፡=፡ ወየሀሉ፡ 14
ቅድመ፡እግዚአብሔር፡በኵሉ፡ጊዜ፡፡ወይጥ
ፋእ፡እምድር፡ዝክሩ፡፡እስመ፡ ኢተዘከረ፡ይ
ግበር፡ምጽዋተ፡፡=፡ ወሰደደ፡ብእሴ፡ ነደየ፡ 15
ወምስኪነ፡፡ወጽቡዕ፡ ልቡ፡ ለቀቲል፡፡=፡ ወ 16
አብደረ፡መርገመ፡ወትመጽኦ፡፡ወአበየ፡ለበረ
ከተ፡ ወትርሕቅ፡ እምኔሁ፡፡=፡ ወለብሳ፡ለ 17
መርገም፡ከመ፡ልብስ፡፡ወቦአ፡ከመ፡ማይ፡ው
ስተ፡አማዑቱ፡፡ወከመ፡ቅብእ፡ውስተ፡ አዕጽ
ምቲሁ፡፡=፡ ወትኩኖ፡ከመ፡ልብስ፡ዘይትዐጸ 18
ፍ፡፡ወከመ፡ቅናት፡ዘይቀንት፡ዘልፈ፡፡=፡

MS. A. (β) ποιήσωμεν (γ) θλίβοντας ἡμᾶς. MS. A. ρη΄. (α) Καὶ ἐξερευνησάτω (β) ἐξολέθρευσιν, (γ) ἐξαλειφθήτω (δ) ἐξολεθρευθείη (ε) αὐτοῦ· (ζ) τοῦ ποιῆσαι

INTERP. ÆTHIOP. [c] ſacerdos ſpei meæ : [d] munitam ? aut [e] ſpernet eos qui affligunt me. *PSAL.* XCVIII. [a] orationem meam ne [b] iniquâ: & [c] odio circumdederunt [d] reddiderunt mihi [e] Et conturbati filii ejus transferantur, & [f] habitationibus ſuis. [g] Diripiat dominus manûs omnem [h] fraudent eum alieni omni negotiatione ejus. [i] eleemoſynas: [k] cujus paratum erat cor

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

9 10 * لي جلعاد ولي منسا * افرام هو عز راسي * يهودا هو ملكي * مواب انية رجاي * علي ادوم
11 امد حذاي * ان القبايل الغريبة لي خضعت * من يبلغني الي مدينة حصينة * او من
12 13 يهديني الي الادومية * اليس انت هو الله الذي اقصيتنا ولم تخرج معنا يا الله في قواتنا * اعطنا
14 معونة في الشدة * فباطل هو خلاص الانسان * بالهنا نصنع القوة * وهو يرذل اعداءنا * الليلويا
1 * المزمور المائة وثمانية * وهو * سا * استيخن *
2 اللهم لا تغفل عن تسبحتي * فانه قد انفتح علي فم الخاطي وفم الغاش * تاجروني بلسان
3 4 غاش * واكتنفوني باقوال بغض * وحاربوني مجانا * بدل ان يحبوني سعوا بي * وانا كنت اصلي
5 6 * وقرروا علي الشر عوض الخير * والبغض عوض حبي * اقم عليه خاطيا * وليقف ابليس
7 8 عن يمينه * اذا حوكم يخرج مخصوما * صلاته تخرج خطية * وتصير ايامه قليلة وليأخذ
9 10 رياسته واحد اخر * تصير بنوه ايتاما * وتصير امراته ارملة * وليتحرك بنوه مستقلين في
11 طلب الصدقة * ينفون من مساكنهم * يفتش الغريم كل شي له * تخطف الغرباء جميع كده
12 13 * ولا يكون له ناصر * ولا متراف يكون علي ايتامه * وليستاصل بنوه * وليمح اسمه في جيل واحد
14 15 * يذكر اثم اباءه قدام الرب * ولا تمحا خطية امه * وتكون امام الرب في كل زمان * وليباد
16 ذكرهم من الارض * حيث انه لم يتذكر ان يصنع رحمة * طرد انسانا فقيرا ضعيفا * وواحدا خاشع
17 18 القلب ليقتله * احب اللعنة فهي تاتيه * ولم يشاء البركة فهي تبعد عنه * لبس اللعنة كالثوب
19 ودخلت في احشايه كالماء * وفي عظامه كالزيت * ويكون له كالثوب اذا لبسه * وكالمنطقة يتمنطقها كل زمان

Mihi eſt Galaad, & mihi Manaſſes, 9
Ephraim eſt magnificentia capitis mei, Juda
eſt rex meus, Moab vaſa ſpei meæ, ſuper 10
Edom extendã calceamentũ meũ : ſanè
nationes alienæ mihi ſe ſubjecerunt. Quis 11
perducat me ad urbem munitã ? aut quis
dirigat me ad **Idumæam** *? Nonne tu es* 12
Deus qui exterminâſti nos, & non
egrederis nobiſcũ O Deus, inter virtutes noſtras?
Fer nobis opem in tribulatione, quia vana 13
eſt ſalus hominis. In Deo noſtro faciemus 14
virtutem, & ipſe contemnet inimicos
noſtros. Alleluja. PSAL. CVIII.

Verſ. 61. 1

DEus, ne negligas laudationẽ meam :
Nam jam apertum eſt contra me os 2
peccatoris & os doloſi : colloquuti ſunt
mecũ linguâ fraudulentâ. Et 3
circumdederunt me ſermonibus odii, &
oppugnaverunt me gratis. Pro eo quòd me diligerent, 4
detraxerunt mihi dũ ego orarem : Et 5
decreverunt contra me malũ pro bono, &
odiũ pro dilectione mea. Præfice illi 6
peccatorem, ſtetque diabolꝰ à dextera ipſius.
Quum judicabitur exeat reus, & oratio 7
illius evadat peccatũ. Et fiant dies ejus 8
pauci, et occupet principatũ ejus alius. 9
Fiant filii ejꝰ orphani, & fiat uxor ejus
vidua. Et dimoveantur filii ejꝰ ſatagentes in 10
petenda eleemoſyna, expellantur ex
habitationibꝰ ſuis. Diſcutiat creditor quicquid 11
ad illũ pertinet, diripiant alieni omnem
laborem ipſius. Et non ſit illi adjutor, 12
neclemens ſit illius erga pupillos ejus. Et 13
extirpentur filii ejus, & deleatur nomen ejꝰ
in generatione una. Memoretur iniquitas 14
patrũ ejus ante Dominum, neque deleatur
peccatũ matris ejus: Sed ſit coram Domino 15
in omni tempore, & pereat memoria
illorum de terra. Eò quòd non ſit recordatus 16
facere miſericordiã, perſequutꝰ ſit
hominem pauperẽ imbecillem, & quendã
humilem corde ad interficiendũ illũ. Dilexit 17
maledictionẽ, et ipſa adveniet ei: et
noluit benedictionẽ, et ipſa recedet ab illo. 18
Indutꝰ eſt maledictione ut veſtimento, et
intravit in inteſtina ejꝰ velut aqua, et in
oſſa ipſius ſicut oleũ. Eritque ei ceu veſtis 19
quã induerit illam, & quaſi amictu
inmicietur eâ quocunque tempore.

תהלים : קי קיא

contra malum loquentium & : Domino *eum* à meorum adverſariorum opus Hoc
20 ואתי פעלת שטני מאת יהוה והדברים רע על־
: tuum nomen propter mecum fac ,Domine Domine tu Et .meam animam
21 נפשי : ואתה יהוה אדני עשה־אתי למען שמך
me i cor & : ego egenus & *afflictus* Quia .me erue ,tua miſericordia bona quia
22 כי־טוב חסדך הצילני : כי־עני ואביון אנכי ולבי
excuſſus ſum : ambulavi *ipſam declinare circa* umbra Sicut .meo interiori in eſt *vulneratum*
23 חלל בקרבי : כצל־ כנטותו נהלכתי ננערתי
.pinguedine à macruit mea caro & : jejunio à *labarunt mei Poplites* .locuſta ſicut
24 כארבה : ברכי כשלו מצום ובשרי כחש משמן :
me Adjuva .ſuum caput moverunt me *viderunt* : eis opprobrium fui ego Et
25 ואני היתי חרפה להם יראוני יניעון ראשם : עזרני
26 quia ſciant Et .tuâ miſericordiam ſecundùm me ſerva : meus Deus Domine
27 יהוה אלהי הושיעני כחסדך : וידעו כי־
,benedices tu & , ipſi Maledicent .hoc feciſti Domine tu : hoc tua manus
28 ידך זאת אתה יהוה עשיתה : יקללו המה ואתה תברך
ſe Induent .lætabitur tuus ſervus & ,afficientur pudore & ,inſurrexerunt
29 קמו ויבשו ועבדך ישמח : ילבשו
Confitebor .ſuo pudore *pallium* tanquam operientur & : pudorem mei adverſarii
30 שוטני כלמה ויעטו כמעיל בשתם : אודה
Quoniam .eum laudabo multorum medio in & : meo ore in valde Domino
31 יהוה מאד בפי ובתוך רבים אהללנו : כי־
.ejus animæ judicibus à *ſalvandum ad* egeni dexteram ad ſtabit
יעמד לימין אביון להושיע משפטי נפשו :

PSAL. CX. קי

donec : meâ dexteram ad ſede ,meo domino Dominus Dixit .cantus Davidis
1 לדוד מזמור נאם יהוה לאדני שב לימיני עד־
mittet tuæ fortitudinis Virgam .tuis pedibus ſcabellum tuos inimicos ponam
2 אשית איביך הדם לרגליך : מטה עזך ישלח
tuus Populus .tuorum inimicorum *interiori* in dominare : Sijon ex Dominus
3 יהוה מציון רדה בקרב איביך : עמך
tibi : aurora ab *vulva à* ,ſanctitatis *decoribus* in tuæ fortitudinis die in *devotionum*
נדבת ביום חילך בהדרי־קדש מרחם משחר לך
ſacerdos tu , pœnitebit non & .Dominus Juravit .tuæ nativitatis ros
4 טל ילדתיך : נשבע יהוה ולא ינחם אתה־כהן
: tuam dexteram ad Dominus .Sedech-Malchi *meum verbum ſuper* : ſeculum in
5 לעולם על־דברתי מלכי־צדק : אדני על־ימינך
: *corporibus* implevit ,gentibus in Judicavit .reges *ſui naſi* die in tranſfixit
6 מחץ ביום־אפו מלכים : ידין בגוים מלא גויות
propterea : bibet via in torrente De .multam terram ſuper caput tranſfixit
7 מחץ ראש על־ארץ רבה : מנחל בדרך ישתה על־כן
.caput exaltabit
ירים ראש :

PSAL. CXI. קיא

.cœtu & ,rectorum ſecreto in : corde toto *in* Domino Confitebor .Jah-Hallelu
1 הללו יה אודה יהוה בכל־לבב בסוד ישרים ועדה :

תרגום TARGUM.

20 דא עובדא דשטני מן יי ודמללין בישתא על
21 נפשי : ואת אלהים יי עבד עמי מן בגלל שמך
22 היך טובך וחסדך פצי יתי : ארום עניא וחשכא
23 אנא ולבי שפי בגוי : היך טולא בצליותיה
24 אתנמרית אטלטלית היך גובאי : רכובי אתקלו
25 מצומא ובסרי פתרן מלהוי פטים : ואנא הויתי
26 קלנא להון יחמון יתי יטלטלון רישיהון : סעוד
27 לי יי אלהי פרוק יתי היך חסדך : וידעון ארום
28 מחתך דא אנת יי עבדתה : ילטטון הנון ואת
29 תברך יקומון ויבהתון ועבדך יחדי : ילבשון
30 סטני כסופא ויעטפון היך מעילא בהתתהון : אודי
יי לחדא בפומי ובמצע חכימיא אשבחניה :
31 ארום יקום מן ימינא דחשיכא למפרק ממדיני
נפשיה :

קי

1 על יד דוד תושבחתא אמר יי במימריה לשואה
יתי רבון על כל ישראל ברם אמר לי תוב ואורך
לשאול דמן שבטא דבנימן עד דימות ארום לית
מלכותא מקרבא אחברתה ובתר כן אשוי בעלי
דבבך כביש לרגלך : [תא] אמר יי במימריה
למתן לי רבנותא חלף דיתבית לאולפן אוריתא
דימיני אורך עד דאשוי בעלי דבבך כביש
2 לרגלך : חוטרא דעושנך ישדר יי מציון ותהי
3 רדי במצע בעלי דבבך : עמך דבית ישראל
דמתנדבין לאוריתא ביום אגחותא קרבא
תסתיע עמהון בשבהורי קודשא רחמין דאלהא
יסתרהבון לך היך נחתת טלא יתבון לרוחצן
4 תולדתך : קים יי ולא יתוב דאנת מתמני לרבא
לעלמא דאתי בגין זכותא דהויתא מלך זכי :
5 שכנתא דיי על ימינך מחא ביום רוגזיה מלכיא :
6 אתמנא לדין על עממיא מלי ארעא גושמי
רשיעין קטילין מחא רישי מלכיא על ארעא
7 סניעין לחדא : מפום נביא באורחא אולפן יקבל
מטול היכנא יזקיף רישא :

קיא

1 הללויה אשבח קדם יי בכל לבא ברזהון
דתריציא וכנשתא :

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Hoc eſt opus adverſantium mihi, à Dñ eorum qui locuti ſunt malum advers mam meam. Tu verò Deus Dñe age me propter nomen tuum: juxta benignitat miſericordiam tuam libera me. Quoniã nus & pauper ego, & cor meum contri intra me. Sicut umbra cùm declinat, co ptus ſum; vagatus ſum ſicut locuſta. G mea collapſa ſunt præ jejunio, & caro macilenta eſt abſque pinguedine. Et ego opprobriũ eis; viderunt me, et moveru pita ſua. Adjuva me Dñe Deus meus, ſ me ſecundùm miſericordiam tuã. Et ſc quia percuſſio tua hæc eſt; tu Dñe feciſt Maledicent illi, & tu benedices; inſurgen confundentur; ſervus autẽ tuus lætabitur duantur oſores mei pudore, & cooperian ſicut chlamyde confuſione ſua. Confite Dño multũ in ore meo, & in medio ſap laudabo eũ. Quoniã ſtabit ad dexterã pa ris, ut redimat à judicibus animam ejus.

Per manum Davidis canticum.

PSAL. CX.

DIxit Dñs in verbo ſuo, ſe *conſtitutur me dominum totius Iſraelis: ſed dixit m denuo, Opperire verò Saulem, qui eſt tribu Benjamin, donec moriatur, quia convenit regno cum ſocio; & poſtea p* inimicos tuos ſuppedaneum pedum rum. *Targum aliud.* Dixit Dñs in verbo ſe daturum mihi dominationẽ, eò quod buerim doctrinæ Legis dexteræ ejus: E donec ponam *inimicum tuum* ſuppeda pedum tuorũ. Virgam fortitudinis tuæ tet *Dominus* de Sion, & dominaberis dio inimicorum tuorũ. Populus tuus Iſrael qui lubenter incumbunt Legi, quo præliũ commiſeris, adjuvaberis in ſplendoribꝰ ſanctitatis miſericordi ad te properabunt tanquam deſcenſio ſedebunt confidenter proſapiæ tuæ. Dominus *nec pœnitebit eum, te* præfect magnum [*Sacerdotem*] in mundo pro merito quòd *fueris* rex immacu Majeſtas Dñi ad dexteram tuam perc die iræ ſuæ reges. Conſtitutus eſt judex populos: implevit terram cadaveribus orum qui interfecti fuerunt: percuſſit c regum ſuper terra multorum admodun ore prophetæ in via doctrinam acc propterea exaltabit caput.

Hallelujah. PSAL. CX

LAudabo coram Domino in toto c in ſecreto rectorum & congregation

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

20 *ܗܢܘ ܕܒܪܐ ܕܐܝܠܝܢ ܕܐܟܠܝܢ ܩܪܨܝ ܠܡܪܝܐ. ܘܕܐܝܠܝܢ ܕܡܡܠܠܝܢ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܢܦܫܝ:
21 *ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܥܒܕ ܥܡܝ ܡܛܠ ܫܡܟ. ܡܛܠ ܕܛܒܐ ܗܝ ܛܝܒܘܬܟ ܦܨܢܝ: *ܡܛܠ
22 ܕܡܣܟܢܐ ܐܢܐ ܘܒܝܫܐ. ܘܠܒܝ ܐܬܕܠܚ ܒܓܘܝ: *ܘܐܝܟ ܛܠܠܐ ܐܬܪܟܢܘ ܗܠܟܬܝ.
23
24 ܘܐܬܢܦܨܬ ܐܝܟ ܩܡܨܐ: *ܘܒܘܪܟܝ ܐܬܪܦܝܘ ܡܢ ܨܘܡܐ. ܘܒܣܪܝ ܢܚܒ ܡܢ ܡܫܚܐ: *ܘܐܢܐ
25
26 ܗܘܝܬ ܠܗܘܢ ܚܣܕܐ. ܚܙܘܢܝ ܘܐܢܝܕܘ ܒܪܝܫܝܗܘܢ: *ܥܕܪܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܘܦܪܘܩܝܢܝ
27 ܐܝܟ ܛܝܒܘܬܟ. *ܕܢܕܥܘܢ ܕܐܝܕܟ ܗܝ ܗܕܐ ܘܐܢܬ ܥܒܕܬܝܗ: *ܢܠܘܛܘܢ ܗܢܘܢ. ܘܐܢܬ ܒܪܟ
28
29 ܢܩܘܡܘܢ ܘܢܒܗܬܘܢ ܘܥܒܕܟ ܢܚܕܐ: *ܢܠܒܫܘܢ ܒܗܬܬܐ ܐܝܠܝܢ ܕܩܪܝܒܝܢ ܗܘܘ ܠܝ. ܘܢܬܥܛܦܘܢ
30 ܐܝܟ ܦܪܝܣܐ: ܐܘܕܐ ܠܡܪܝܐ ܒܦܘܡܝ. ܘܒܝܢܬ ܣܓܝܐܐ ܐܫܒܚܝܘܗܝ: *ܡܛܠ ܕܩܡ ܡܢ
ܝܡܝܢܐ ܕܡܣܟܢܐ ܠܡܦܪܩܘ ܢܦܫܗ ܡܢ ܕܝܢܐ.

ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܝ

1 [illegible] ܘܙܟܘܬܗ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܡܪܝ ܕܬܒ ܠܟ ܡܢ ܝܡܝܢܝ. ܥܕܡܐ ܕܐܣܝܡ
2 ܒܥܠܕܒܒܝܟ ܟܘܒܫܐ ܠܪܓܠܝܟ: *ܫܒܛܐ ܕܥܘܫܢܐ ܢܫܕܪ ܠܟ ܡܪܝܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ.
3 ܘܐܚܘܕ ܒܓܘ ܒܥܠܕܒܒܝܟ: *ܥܡܟ ܫܒܝܚܐ ܒܝܘܡܐ ܕܚܝܠܟ. ܒܙܗܝܐ ܕܩܘܕܫܐ ܡܢ
4 ܟܪܣܐ ܡܢ ܩܕܝܡ ܝܠܕܬܟ. *ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܘܠܐ ܢܕܓܠ: ܕܐܢܬ ܗܘ ܟܘܡܪܐ
5 ܠܥܠܡ ܒܕܡܘܬܗ ܕܡܠܟܝܙܕܩ: *ܡܪܝܐ ܥܠ ܝܡܝܢܟ ܬܒܪ ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܗ ܡܠܟܐ:
6 *ܢܕܘܢ ܒܥܡܡܐ ܘܢܡܠܐ ܫܠܕܐ. ܘܢܬܒܪ ܪܝܫܐ ܕܣܓܝܐܐ ܒܐܪܥܐ: *ܡܢ ܢܚܠܐ ܒܐܘܪܚܐ
7 ܢܫܬܐ: ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܬܪܝܡ ܪܝܫܐ:

ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܝܐ

1 [illegible]
[illegible]
ܐܘܕܐ ܠܡܪܝܐ ܒܟܠܗ ܠܒܝ ܒܡܘܬܒܐ ܕܬܪܝܨܐ ܘܒܟܢܘܫܬܐ:

Iſte eſt eventus eorum qui adverſant Domino, & eorum qui loquuntur malum a fùs animã meã. Verùm tu Domine, a cum propter nomen tuũ: quia optima nignitas tua, libera me. Nam pauper inops, & cor meum exagitatũ eſt int Et velut umbra declinaverunt greſſus m excuſſus ſum ut locuſta: Genuaque mea mata ſunt præ jejunio, & caro mea præ oleo: Et ego factus ſum illis in opp um, inſpexerunt me, dimoveruntq; cap Præſto ſis mihi Domine, & ſerva m dùm bonitatem tuam: Ut cognoſca tuam eſſe hanc, téque id feciſſe. Male ipſi, tu autem benedicaris, & ſervus hilaretur. Induant confuſionem ii q verſabantur mihi, eâque amiciantur lio. Confitebor Domino ore meo, & multos laudabo eum: Quia ſtetit à inopis ad eripiendam animam ejus e

PSAL. CX.

Davidis. De ſolio Domini, deque ejus glorioſa. Et Prophetia de Chr victoria contra hoſtem. Verſ. 15.

DIxit Dominus Domino meo, Se tera mea, donec ponam inimi ſcabellum tuis pedibus. Sceptrum fo nis mittet tibi Dñs è Sion, & dom in hoſtes tuos Populus tuus laudabi roboris. Cum nitoribus ſanctitatis e ab antiquo te filium genui. Juravit D & non mentietur, quòd tu es Pon ternum ſicut Melchizedec. Domi per dextera tua: fregit in die iræ ſu Judicabit populos, & implebit c præcidetq; caput multorũ in terra. tẽte in via bibet, idcircò attolletur

PSAL. CXI.

Anonymus. De virtutibus g rum Dñi. Nos autem hortatur gratias Chriſto: & ex perſona refertur. Verſ. 21.

COnfitebor Domino ex toto in conſilio rectorum, in cœt

Verſio VULG. LAT.

20 Hoc opus eorum, qui detrahunt mihi
apud Dominum: & qui loquuntur ma-
21 la adverſùs animam meam. Et tu, Do-
mine, Domine, fac mecum propter
nomen tuum: quia ſuavis eſt miſeri-
22 cordia tua. Libera me, Quia egenus
& pauper ego ſum, & cor meum con-
23 turbatum eſt intra me. Sicut umbra
cum declinat, ablatus ſum: & excuſ-
24 ſus ſum ſicut locuſtæ. Genua mea in-
firmata ſunt a jejunio: & caro mea
25 immutata eſt propter oleum. Et ego
factus ſum opprobriũ illis: viderunt
26 me, & moverunt capita ſua. Adjuva
me, Domine Deus meus: ſalvum me
fac ſecundùm miſericordiam tuam.
27 Et ſciant quia manus tua hæc: & tu,
28 Domine, feciſti eam. Maledicent illi,
& tu benedices: qui inſurgunt in me,
confundantur: ſervus autem tuus læ-
29 tabitur. Induantur qui detrahunt mi-
hi, pudore: & operiantur ſicut di-
30 ploide confuſione ſua. Confitebor
Domino nimis in ore meo: & in me-
31 dio multorum laudabo eum. Quia
aſtitit a dextris pauperis, ut ſalvã fa-
ceret à perſequentibus animã meam.

Pſalmus David. CIX.

1 Dixit Dominus Domino meo, Sede
à dextris meis: Donec ponam ini-
2 micos tuos, ſcabellũ pedũ tuorũ. Vir-
gam virtutis tuæ emittet Dominus ex
Sion: dominare in medio inimicorum
3 tuorum. Tecum principium in die vir-
tutis tuæ in ſplendoribus ſanctorum:
4 ex utero ante Luciferum genui te. Ju-
ravit Dominus, & non pœnitebit
eum; Tu es ſacerdos in æternum ſe-
5 cundùm ordinem Melchiſedech. Do-
minus à dextris tuis, confregit in die
6 iræ ſuæ reges. Judicabit in nationibus,
implebit ruinas: conquaſſabit capita
7 in terra multorum. De torrente in
via bibet: propterea exaltabit caput.

Alleluja. CX.

1 Confitebor tibi, Domine, in toto
corde meo; in conſilio juſtorum,
& congregatione.

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

20 † Τοῦτο τὸ ἔργον τῶν ἐνδιαβαλλόντων με (η) παρὰ κυ-
ρίου, † καὶ τῶν λαλούντων πονηρὰ κατὰ τῆς ψυχῆς μου.
21 † Καὶ σὺ κύριε κύριε ποίησον μετ' ἐμοῦ (θ) ἕνεκεν
22 τοῦ ὀνόματός σου, † ὅτι χρηστὸν τὸ ἔλεός σου. † Ῥῦσαί
με ὅτι πτωχὸς καὶ πένης εἰμὶ ἐγώ, † καὶ ἡ καρδία μου
23 τετάρακται ἐντός μου. † Ὡσεὶ σκιὰ ἐν τῷ ἐκκλῖναι
αὐτὴν (ι) ἀντανῃρέθην, † ἐξετινάχθην ὡσεὶ ἀκρί-
24 δες. † Τὰ γόνατά μου ἠσθένησαν ἀπὸ νηστείας, † καὶ ἡ σάρξ
25 μου ἠλλοιώθη δι' ἔλαιον. † (κ) Κἀγὼ ἐγενήθην ὄ-
νειδος αὐτοῖς· † εἴδοσάν με, ἐσάλευσαν κεφαλὰς αὐ-
26 τῶν. † Βοήθησόν μοι κύριε ὁ θεός μου, † καὶ σῶσόν
27 με κατὰ τὸ ἔλεός σου. † Καὶ γνώτωσαν ὅτι ἡ χείρ σου
28 αὕτη, † καὶ σὺ κύριε ἐποίησας αὐτήν. † Καταράσον-
ται αὐτοί, καὶ σὺ εὐλογήσεις· † οἱ (λ) ἐπανιστάμενοί
μοι αἰσχυνθήτωσαν, † ὁ δὲ δοῦλός σου εὐφρανθήσεται.
29 † Ἐνδυσάσθωσαν οἱ ἐνδιαβάλλοντές με, ἐντροπήν· † καὶ
30 περιβαλέσθωσαν ὡς διπλοΐδα, αἰσχύνην αὐτῶν. † Ἐξ-
ομολογήσομαι τῷ κυρίῳ σφόδρα ἐν τῷ στόματί
31 μου, † καὶ ἐν μέσῳ πολλῶν αἰνέσω αὐτόν· † Ὅτι παρ-
έστη ἐκ δεξιῶν πένητος, † τοῦ σῶσαι ἐκ τῶν κατα-
διωκόντων τὴν ψυχήν μου.

MS. A. (η) παρὰ κυρίῳ, (θ) ἔλεος ἕνεκεν (ι) ἀντανῃρέθην, (κ) Καὶ ἐγὼ (λ) ἐπανιστανόμενοί

(α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ρθ'.

1 † Εἶπεν ὁ κύριος τῷ κυρίῳ μου, Κάθου ἐκ δε-
ξιῶν μου, † ἕως ἂν θῶ τοὺς ἐχθρούς σου ὑποπόδιον
2 τῶν ποδῶν σου. † Ῥάβδον δυνάμεως (β) ἐξαποστε-
λεῖ σοι κύριος ἐκ Σιών, † κατακυρίευε ἐν μέσῳ
3 τῶν ἐχθρῶν σου. † Μετὰ σοῦ ἡ ἀρχὴ ἐν ἡμέρᾳ τῆς
δυνάμεώς σου, † ἐν ταῖς λαμπρότησι τῶν ἁγίων σου·
4 † ἐκ γαστρὸς πρὸ Ἑωσφόρου ἐγέννησά σε. † Ὤμο-
σε κύριος καὶ οὐ μεταμεληθήσεται, † Σὺ ἱερεὺς εἰς τὸν
5 αἰῶνα, † κατὰ τὴν τάξιν Μελχισεδέκ. † Κύριος ἐκ
δεξιῶν σου συνέθλασεν ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς αὐτοῦ βα-
6 σιλεῖς. † Κρινεῖ ἐν τοῖς ἔθνεσι, πληρώσει πτώματα,
7 † συνθλάσει κεφαλὰς ἐπὶ γῆς πολλῶν. † Ἐκ χει-
μάρρου ἐν ὁδῷ (γ) πίεται, † διὰ τοῦτο ὑψώσει κεφα-
λήν.

MS. A. (α) Τῷ Δαυὶδ ψαλμός. (β) ἐξαπο-
στελεῖ κύριος ἐκ Σιών, καὶ κατακυρίευε (γ) πίεται
ὕδωρ, διὰ τοῦτο

Ἀλληλούϊα. ρι'.

1 † Ἐξομολογήσομαί σοι κύριε ἐν ὅλῃ καρδίᾳ
μου, † ἐν βουλῇ εὐθέων καὶ συναγωγῇ.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

*19 Hoc opus eorum, qui (d) detra-
hunt mihi apud Dominum, & qui
loquuntur mala adverſùs animam
meam. 20 Et tu, Domine, [l] Domi-
ne, fac mecum propter nomen tu-
um; quia ſuavis eſt miſericordia
tua. 21 Libera me, quia egenus &
pauper ſum ego: & cor meum con-
turbatum eſt intra me. 22 [m] Sicut
umbra cùm declinat, ablatus ſum: ex-
cuſſus ſum ſicut locuſtæ. 23 Genua
mea infirmata ſunt à jejunio: (e) &
caro mea immutata eſt propter [n]
oleum. 24 Et ego factus ſum oppro-
brium illis: viderunt me, moverũt
capita ſua. 25 Adjuva me, Domine
Deus meus: & ſalvum me fac ſe-
cundùm miſericordiam tuam. 26 Et
ſciant, quia manus tua hæc: & tu,
Domine, feciſti eam. 27 Maledicent
illi, & tu benedices: qui inſurgunt
adverſùs me, confundantur: ſer-
vus autem tuus lætabitur. 28 In-
duantur, qui detrahunt mihi, pudo-
re: & operiantur, ſicut diploide,
[o] confuſione ſuâ. 29 Confitebor Do-
mino (f) nimis in ore meo: & in
medio multorum laudabo eum. 30
Quia aſtitit à dextris pauperis, ut ſalvam faceret (g) à perſequentibus animam meam.*

Pſalmus ipſi David. CIX.

*1 Dixit Dominus Domino meo;
Sede à dextris meis: 2 donec ponam
inimicos tuos ſcabellũ pedũ tuorũ.
3 Virgam virtutis tuæ (a) emittet
tibi Dominus ex Siõ: (b) [a] dominare
in medio inimicorum tuorũ. 4 Te-
cum principium in die [b] virtutis
tuæ, in (c) ſplendoribus ſanctorum
tuorum: (d) ex utero ante Lucife-
rum genui te. 5 Juravit Dominus, &
non pœnitebit eũ, Tu es ſacerdos [†]
in æternum ſecundùm ordinẽ Mel-
chiſedech. 6 Dominus à dextris
tuis: confregit in die iræ ſuæ reges.
7 Judicabit in gentibus, [c] im-
plebit ruinas: conquaſſabit capita
(e) [d] ſuper terram multorum. 8 De
torrente in via bibit: propterea ex-
altabit caput.*

Alleluja. CX.

*1 Confitebor tibi, Domine, in toto
corde (a) meo; in conſilio juſtorum,
& congregatione.*

Verſio ÆTHIOPICA.

20 ዝግብር፡ለእለ፡ ያስተዋድዩኒ፡ ኀበ፡ እግዚአ 19
ብሔር፡፡ ወለእለ፡ ይነቡ፡ እኩየ፡ ላዕለ፡ ነፍ
21 ስየ፡፡=፡ ወአንተሰ፡እግዚኦ፡ እግዚእየ፡ግበ 20
ር፡ ሣህለከ፡ ላዕሌየ፡ በእንተ፡ ስምከ፡፡ እስ
መ፡ሠናይ፡ ምሕረትከ፡፡=፡ አድኅነኒ፡ እስ 21
22 መ፡ ነዳይ፡ ወምስኪን፡ አነ፡፡ልብየኒ፡ ደንገፀ
ኒ፡በውስጥየ፡፡=፡ ወኀለቁ፡ከመ፡ ጽላሎት፡ 22
23 ዘኀለፈ፡፡ወተነገፍኩ፡ከመ፡አንበጣ፡፡=፡ ወ 23
24 ደክሙ፡ ብረክየ፡ በጾም፡፡ወሰለከ፡ ሥጋየ፡
በኀጢአ፡ ቅብዕ፡፡=፡ ወአነሰ፡ ተፀአልኩ፡ 24
በኀቤሆሙ፡፡ሶበ፡ ይሬእዩኒ፡ የሐውሱ፡ ርእሶ
25 ሙ፡፡=፡ ርድአኒ፡ እግዚኦ፡ አምላኪየ፡፡ወ 25
26 አድኅነኒ፡ በእንተ፡ ምሕረትከ፡፡=፡ ወያእ 26
ምሩ፡ ከመ፡ እዴከ፡ ይእቲ፡ ዛቲ፡፡ወአንተ፡
27 እግዚኦ፡ ገበርከ፡፡=፡ ወእሙንቱሰ፡ ይረግ 27
ሙኒ፡ወአንተ፡ባርክ፡፡ይትኀፈሩ፡ እለ፡ ይትነ
28 ሥኡ፡ላዕሌየ፡፡ወገብርከሰ፡ይትፌሣሕ፡፡=፡
ለይልበሱ፡ ኀፍረተ፡ እለ፡ ያስተዋድዩኒ፡፡ወይ 28
ትአጸፍዋ፡ከመ፡ አጽፍ፡ ለኀጢአቶሙ፡፡=፡
29 እገኒ፡ በአፉየ፡ ለእግዚአብሔር፡ ፈድፋደ፡፡ 29
ወእሴብሖ፡በማእከለ፡ብዙኃ፡፡=፡ እስመ፡ 30
30 ቆመ፡ በየማነ፡ ነዳይ፡፡ከመ፡ ያድኅና፡ ለነፍ
ስየ፡እምእለ፡ሮድዋ፡፡=፡
31

መዝሙር፡ዘዳዊት፡፡

1 ፻፱ ይቤሎ፡እግዚእ፡ለእግዚእየ፡ ንበር፡ በየ 1
ማንየ፡፡=፡ እስከ፡እገብኦሙ፡ለጸላእትከ፡ 2
ታሕተ፡ መከየደ፡ እገሪከ፡፡=፡ በትረ፡ ኀይ 3
2 ል፡ይፌኑ፡ እግዚአብሔር፡ እምጽዮን፡፡ወኰ
ንን፡በማእከለ፡ ጸላእትከ፡፡=፡ ምስሌከ፡ቀ 4
3 ደማዊ፡ በዕለተ፡ ኀይል፡፡በብርሃናቲሆሙ፡ ለቅዱ
ሳን፡፡ወለድኩከ፡ እምከርሥ፡ እምቅድመ፡
ኮከበ፡ ጽባሕ፡፡=፡ መሐለ፡ እግዚአብሔ 5
4 ር፡ ወኢይኔስሕ፡፡=፡ አንተ፡ ካህኑ፡ ለዓለ
ም፡በከመ፡ሢመቱ፡ለመልከ፡ ጼዴቅ፡፡=፡ እ 6
5 ግዚአብሔር፡ በየማንከ፡፡ይቀጠቅጦሙ፡ ለ
ነገሥት፡በዕለተ፡መዐቱ፡፡=፡ ወይኴንኖሙ፡ 7
6 ለአሕዛብ፡ ወያበዝኃ፡ አብድንተ፡፡ወይሰብ
7 ር፡ አርእስተ፡ ብዙኃን፡ በዲበ፡ ምድር፡፡=፡
እምውኂዝ፡ሰትዩ፡ ማየ፡ በፍኖት፡፡ወበእንተ 8
ዝ፡ይትሌዐል፡ርእስ፡፡=፡

ሃሌሉያ፡፡

፻፲ እገኒ፡ለከ፡ እግዚኦ፡ በኵሉ፡ ልብየ፡፡በ 1
1 ምክረ፡ራትዓን፡ወበማኅበረ፡

INTERP. ÆTHIOP. [l] Domine mi, exhibe miſericordiam tuam in me, propter [m] Deficio ipſe ſicut umbra quæ tranſit: [n] defectum olei. [o] peccatis ſuis. PSAL. CIX. [a] judicato in [b] virtutis, in ſplendoribus ſanctorum: ex [†] ejus in [c] multiplicabuntur cadavera: [d] multa ſuper terram. De

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* هذا هو عمل الذين يسعون بي عند الرب · والمتكلمين بالشر علي نفسي * وانت يا ربي والاهي 20 21
فاصنع معي رحمة من اجل اسمك · فان رحمتك يا رب هي سابغة * خلصني 22 فاني انا فقير 22
ضعيف · وقد جزع قلبي في باطني * انحنيت مثل الظل اذا مال · انتفضت مثل الجراد * وضعفتا 23 24
ركبتاي من الصوم * وتغير جسدي من عدم الدهن * صرت انا لهم معيرا · راوني حركوا 25
روسهم * اعني يا ربي والاهي * وخلصني بقدرتك ورحمتك * وليعلموا ان هذه هي يدك · 26 27
وانت يا رب صنعتها * هم يلعنون وانت تبارك · وليخز القايمون علي · وعبدك يفرح * وليلبس 28 29
الذين يثلبوني العار · وليشتملوا بالخزي مثل الجبة * اشكرك يا رب جدا بفمي · اسبحك 30
في وسط كثيرين * لانه وقف عن يمين الفقير · لكي يخلص نفسي من الطاردين لي · الليلويا 31

* المزمور التاسع والماية * وهو يد * استيخن *

قال الرب لربي · اجلس عن يميني حتي اضع اعداءك تحت موطي قدميك * يرسل لك الرب 1 2
من صهيون قضيب القوة · وتسلط وسط اعدائك * الرياسة كاينة معك في يوم قوتك · في 3
نور القديسين من البطن قبل كوكب الصبح ولدتك * حلف الرب ولن يندم · انك انت 4
هو الكاهن الي الابد كشبه طقس ملكيصادق * الرب عن يمينك حطم ملوكا في يوم غضبه · 5 6
* يحكم في الامم · ويملاهم جثثا * ويرض راس كثيرين علي الارض * يشرب الماء في الطريق من 7 8
الوادي · لاجل هذا يرفع راسا · الليلويا

* المزمور العاشر والماية * الليلويا · ك * استيخن 1

اشكرك يا رب من كل قلبي في مشورة المستقيمين وجماعتهم

*Hoc fiet his qui detrahunt mihi, apud Do- 20
minum: & loquentibus malum de ani-
ma mea. Et tu O Domine mi & Deus 21
meus, utere mecũ miſericordiâ propter
nomen tuum, quandoquidem miſericordia
tua O Domine, copioſiſſima eſt. Libera me,
Quia ego pauper ſum debilis, & jam tre- 22
pidavit cor meũ in meis inteſtinis. Deletus 23
ſum velut umbra quum declinaverit, ex-
cuſſus ſum ut locuſtæ. Et infirmata ſunt 24
genua mea præ jejunio, & immutatum eſt
corpus meũ ob defectum unguenti. Factus 25
ſum ego illis opprobriũ: viderunt me &
moverunt capita ſua. Adjuva me O Do- 26
mine mi, & Deus meus, & ſalva me po-
tentiâ tuâ & miſericordiâ tuâ. Et ſciant 27
hanc eſſe manum tuam, teque O Domine
id egiſſe. Ipſi maledicunt, at tu bene- 28
dices: & confundantur inſurgentes in
me, & ſervus tuus lætabitur. Et induan- 29
tur qui me vituperant, ignominiâ: &
amiciantur pudore ut thorace. Gratias 30
agam tibi O Domine maximas ore meo,
laudabo te in medio multorũ. Quoniam 31
ſtetit à dextera pauperis ut ſalvaret ani-
mã meã à perſequentibus me. Alleluja.*

PSAL. CIX.
Verſ. 14.

*1 Dixit Dominus Domino meo, Sede ad
dexteram meam, donec ponam ini-
micos tuos ſub ſcabello pedum tuorum.
Mittet tibi Dominus de Sion baculum 2
fortitudinis, & dominaberis in medio ini-
micorum tuorum. Principatus extat tecũ 3
in die roboris tui: in lumine ſanctorum
ex utero ante ſtellam matutinam genui te.
Juravit Dominus, & haudquaquam 4
pœnitebit eum; Tu es ſacerdos in æternũ
juxta formam ordinis Melchiſedec. Do- 5
minus à dextera tua confregit reges in
die iræ ſuæ: Judicabit inter gentes, & 6
implebit eas cadaveribus: Et contundet 7
caput multorũ ſuper terram. Bibet aquam 8
in via de torrente: propterea exaltabit
caput. Alleluja.*

PSAL. CX.
Alleluja. Verſ. 21.

*1 Gratias agam tibi, O Domine mi, ex
toto corde meo, in conſilio rectorum,
eorumque congregatione.*

תהלים : קיב קיג

decor & ,Gloria .ea volentibus omnibus quæſita :Domini opera Magna

2 3 גדלים מעשי יהוה דרושים לכל־חפציהם: הוד־והדר

gratioſus :ſuorū mirabiliū fecit Memoriā .perpetuum in ſtans ejus juſtitia &:ejus opus

4 פעלו וצדקתו עמדת לעד: זכר עשה לנפלאתיו חנון

ſeculum in erit memor : ſe timentibus dedit *Prædam* .Dominus miſericors &

5 ורחום יהוה: טרף נתן ליראיו יזכר לעולם

eis *dandum ad* ,ſuo populo annunciavit ſuorū operum Fortitudinem .ſui pacti

6 בריתו: כח מעשיו הגיד לעמו לתת להם

fidelia :judicium & ,veritas ejus manuum Opera .gentium hæreditatem

7 נחלת גוים: מעשי ידיו אמת ומשפט נאמנים

,veritate in facta :ſeculum in *perpetuum* in *Fulta* .ejus præcepta omnia

8 כל־פקודיו: סמוכים לעד לעולם עשוים באמת

: ſuum pactum ſeculum in præcepit ,ſuo populo miſit Redemptionem .rectitudine &

9 וישר: פדות שלח לעמו צוה לעולם בריתו

intellectus ,Domini timor ſapientiæ Principium .ejus nomen terribile & ſanctum

10 קדוש ונורא שמו: ראשית חכמה יראת יהוה שכל

.*perpetuum in ſtans* ejus laus :ea facientibus omnibus bonus

טוב לכל־עשיהם תהלתו עמדת לעד:

PSAL. CXII. קיב

.valde *voluit* ejus *mandatis in* :Dominum *timentis viri Beatitudines* .Jah-Hallelu

1 הללו יה אשרי־איש ירא את־יהוה במצותיו חפץ מאד:

opulentia & Ubertas .benedicetur rectorum generatio :ejus ſemen erit terra in Potens

2 3 גבור בארץ יהיה זרעו דור ישרים יברך: הון־ועשר

Lumen *tenebroſitate* in eſt Ortum .*perpetuum* in *ſtans* ejus juſtitia & : ejus domo in

4 בביתו וצדקתו עומדת לעד: זרח בחשך אור

: *commodans & ,miſereſcens* vir Bonus .juſtus & miſericors & *gratioſus* :rectis

5 לישרים חנון ורחום וצדיק: טוב־איש חונן ומלוה

memoria in :*nutabit* non ſeculum in Quia .judicio in ſua verba *moderabitur*

6 יכלכל דבריו במשפט: כי־לעולם לא־ימוט לזכר

ejus cor firmum :timebit non mala auditione Ab .juſtus erit *ſeculi*

7 עולם יהיה צדיק: משמועה רעה לא יירא נכון לבו

videbit donec :timebit non ejus cor *Suffultum* .Domino *in* fidens

8 בטח ביהוה: סמוך לבו לא יירא עד אשר־יראה

: *perpetuum* in *ſtans* ejus juſtitia ,*egenis* dedit Diſperſit .*ſuos anguſtiatores in*

9 בצריו: פזר נתן לאביונים צדקתו עמדת לעד

ſuis dentibus ,iraſcetur & ,videbit Impius .gloria in exaltabitur ejus cornu

10 קרנו תרום בכבוד: רשע יראה וכעס שניו

peribit impiorum deſiderium :*liqueſiet* & frendet

יחרק ונמס תאות רשעים תאבד:

PSAL. CXIII. קיג

Sit .Domini nomen laudate :Domini ſervi Laudate .Jah-Hallelu

1 2 הללו יה הללו עבדי יהוה הללו את־שם יהוה: יהי

ſolis ortu Ab .ſeculum in uſque & *nunc* ex :benedictum Domini nomen

3 שם יהוה מברך מעתה ועד־עולם: ממזרח־שמש

.Domini nomen *laudatum* :ejus occaſum ad uſque

עד־מבואו מהלל שם יהוה:

תרגום TARGUM.

2 רברבין עובדיא דיי מתבעין לכל דצבין להון:
3 שבחא ושבהורא עובדיה וזכותיה קימא
4 לעלמין: דכרן טב עבד לפרשותיה חננא
5 ורחמנא יי: מזונא יהב לדחלוי ידכר לעלם
6 קימיה: חיל עובדוי חוי לעמיה למתן להון
7 אחסנת עממיא: עובדי ידוי קושטא ודינא
8 מהימנין כל פקודוי: סמוכין לעלמי עלמא
9 מתעבדין בקושטא ותירוצא: פורקנא שלח
לעמיה פקד לעלם קימיה קדישא ודחילא
10 שמיה: שרוי חוכמתא דחלתא דיי סכלא
טבא לכל עובדיהון תושבחתיה קימא
לעלמין:

קיב

1 הללויה טוביה דגברא דחל ית יי בפקודוי
2 צבי לחדא: גבר באוריתא יהוין בנוי בדר
3 תריציא יתברך: מולא ועתרא בביתיה
4 וזכותיה קימא לעלמין: דנח בחשוכא
נהור לתריציא חננא ורחמנא וצדיקא:
5 גברא טבא חים על עניי ומוזיף יסובר
6 מלוי כהלכתא: ארום לעלם לא יזוע
7 לדכרן עלם יהי זכי: משמועתא בישא
לא ידחל תקין לביה רחץ במימרא דיי:
8 סמיך לביה לא ידחל עד דיחמי פורקנא
9 בעקתא: בדר ממוניה יהב לחשיכי זכותיה
10 קימא לעלמא תוקפיה תרום באיקרא: רשיעא
יחמי ויכעוס עלוי שנוי יעסי ואתמסא רגוג
רשיעי תיביד:

קיג

1 הללויה שבחו עבדיא דיי שבחו ית שמא
2 דיי: יהוי שמא דיי מברך מהשתא ועד
3 עלמא: ממדנח שמשא עד מטמעיה משבח
שמא דיי:

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Magna opera Domini exquiſita omni
qui volunt illa. Laus & decus opus e
& meritum ejus perſtat in ſecula. Mem
riam bonam fecit mirabilibus ſuis ope
bus; clemens & miſericors Dominus. C
bum dedit timentibus ſe, memor erit
æternum pacti ſui. Virtutem operum ſu
rum annunciavit populo ſuo, ut det il
hæreditatem populorum. Opera manuu
ejus veritas & judicium, fidelia om
mandata ejus: Confirmata in ſecula
culi, facta in veritate & æquitate. Rede
ptionem miſit populo ſuo: præcepit
æternum pactum ſuum, ſanctum & time
dum nomen ipſius. Principium ſapienti
eſt *timor* Domini: intellectus bonus om
bus facientibus ea: laus ejus manet
æternum.

Hallelujah.

PSAL. CXII.

Beatus vir qui timet *Dominum*, manda
ejus expetit vehementer. Fortes in Le
erunt filii ejus, in generatione rector
benedicetur. Felicitas & divitiæ in d
mo ejus, & juſtitia ejus manet in ætern
Ortum eſt in tenebris lumen rectis, c
mens & miſericors & juſtus. Beatus v
qui miſeretur *pauperum* & commodat; ſu
nebit verba ſua quaſi ſententiam. Q
niam in æternum non commovebitur,
memoriam perpetuum erit juſtus. Ab a
ditu malo non timebit: paravit cor ſ
confidens in verbo Domini. Firmatum
cor ejus, non timebit donec videat rede
ptionem in anguſtia. Diſperſit pecun
ſuam, dedit pauperibus; juſtitia ejus m
net in æternum: fortitudo ejus exaltab
in gloria. Impius videbit & iraſcetur ſup
eum, dentibus ſuis frendebit & contabeſc
deſiderium impiorum peribit.

Hallelujah.

PSAL. CXIII.

Laudate ſervi Domini, laudate nom
Domini. Sit nomen Domini benedict
ex hoc momento & uſque in ſeculum.
ortu Solis uſque ad occaſum ejus, lauda
eſt nomen Domini.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA

2 3 * ܪܘܪܒܝܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܬܒܥܝܢ ܠܟܠ ܕܨܒܝܢ ܒܗܘܢ: * ܡܫܒܚܝܢ ܘܪܘܪܒܝܢ
4 ܥܒܕܘܗܝ. ܘܙܕܝܩܘܬܗ ܩܝܡܐ ܠܥܠܡ: * ܥܘܗܕܢܐ ܝܗܒ ܠܬܕܡܪܬܗ. ܡܪܚܡܢ ܗܘ
5 6 ܘܡܪܚܦ ܡܪܝܐ: * ܡܐܟܘܠܬܐ ܝܗܒ ܠܕܚܠܘܗܝ. ܘܡܬܥܗܕ ܠܥܠܡ ܩܝܡܗ: * ܚܝܠܐ
7 ܕܥܒܕܘܗܝ ܚܘܝ ܠܥܡܗ. ܕܢܬܠ ܠܗܘܢ ܝܪܬܘܬܐ ܕܥܡܡܐ: * ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܘܗܝ ܩܘܫܬܐ
8 ܘܕܝܢܐ. * ܘܡܗܝܡܢܝܢ ܟܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܘܗܝ: ܡܫܪܪܝܢ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. ܥܒܝܕܝܢ ܒܩܘܫܬܐ
9 ܘܒܬܪܝܨܘܬܐ: * ܦܘܪܩܢܐ ܫܕܪ ܡܪܝܐ ܠܥܡܗ. ܘܡܬܥܗܕ ܠܥܠܡ ܩܝܡܗ: ܩܕܝܫ ܗܘ
10 ܘܕܚܝܠ ܫܡܗ. * ܪܫܐ ܕܚܟܡܬܐ ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ: ܘܣܘܟܠܐ ܛܒܐ ܠܥܒܘܕܗ. ܘܬܫܒܘܚܬܗ
ܩܝܡܐ ܠܥܠܡ. *ܡܙܡܘܪܐ ܩܝܒ* ܠܐ ܡܬܝܕܥ. ܟܕ ܕܘܝܕ ܗܘ ܡܦܝܣ 1
ܠܫܠܝܡܘܢ ܒܪܗ: ܛܪ ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܦܠܘܚܝܘܗܝ. ܘܬܘܒ [illegible] ܕܥܡܡܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܗ
2 ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓܡܐ ܝ. ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܕܚܠ ܠܡܪܝܐ. ܘܨܒܐ ܒܦܘܩܕܢܘܗܝ ܛܒ: * ܚܝܠܬܢ
3 ܢܗܘܐ ܙܪܥܗ ܒܐܪܥܐ. ܘܢܬܒܪܟ ܕܪܐ ܕܬܪܝܨܐ: * ܩܢܝܢܐ ܘܥܘܬܪܐ ܒܒܝܬܗ. ܘܙܕܝܩܘܬܗ
4 5 ܩܝܡܐ ܠܥܠܡ: * ܕܢܚ ܢܘܗܪܐ ܒܚܫܘܟܐ ܠܬܪܝܨܐ. ܡܪܚܡܢ ܘܚܢܢ ܕܙܕܝܩܐ: * ܛܒ ܗܘ ܓܒܪܐ
6 ܕܡܪܚܡ ܘܡܘܙܦ. ܘܡܣܝܒܪ ܡܠܘܗܝ ܒܕܝܢܐ: * ܠܥܠܡ ܠܐ ܢܙܘܥ. ܘܕܘܟܪܢܐ ܠܥܠܡ ܢܗܘܐ
7 8 ܠܙܕܝܩܐ: * ܘܡܢ ܫܡܥܐ ܒܝܫܐ ܠܐ ܢܕܚܠ. ܕܡܛܝܒ ܠܒܗ ܠܡܬܬܟܠܘ ܥܠ ܐܠܗܐ: * ܘܡܣܬܡܟ ܠܒܗ ܘܠܐ
9 ܕܚܠ. ܥܕܡܐ ܕܢܚܙܐ ܒܒܥܠܕܒܒܘܗܝ: * ܒܕܪ ܘܝܗܒ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܗ ܩܝܡܐ ܠܥܠܡ
10 ܠܥܠܡܝܢ: ܘܩܪܢܗ ܬܬܪܝܡ ܒܫܘܒܚܐ. * ܘܚܛܝܐ ܢܚܙܐ ܘܢܬܚܡܬ: ܘܫܢܘܗܝ ܢܚܪܘܩ ܘܢܬܡܣܐ.
ܘܪܓܬܐ ܕܪܫܝܥܐ ܬܐܒܕ. *ܡܙܡܘܪܐ ܩܝܓ* ܠܐ ܡܬܝܕܥ. ܡܬܐܡܪ ܥܠ [illegible] 1
[illegible]
[illegible]
2 ܫܒܚܘ ܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܫܒܚܘ ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ: * ܢܗܘܐ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܒܪܟ. ܡܢ ܗܫܐ
3 ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ: * ܡܢ ܡܕܢܚܝܗ ܕܫܡܫܐ ܥܕܡܐ ܠܡܥܪܒܘܗܝ. ܪܒ ܗܘ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ:

Maxima ſunt facta Dñi, & quæſita ab o
b⁹ qui delectantur illis. Glorioſa ſunt ac m
gna opera ej⁹, & juſtitia ipſius perſtans i
æternum. Memoriā dedit miraculorū ſu
miſericors eſt ac benign⁹ Domin⁹. Eſcā d
timentibus eum, & memor eſt perpetuò
deris ſui, Potentiæ quam ſuis operibus oſt
dit populo ſuo, ut concederet eis hæred
gentium. Opus manuū ejus veritas ac jud
um, Súntq; permanentia in ſeculū ſecul
firma ſunt omnia præcepta ejus, & facta c
juſtitia & veritate. Salutem miſit Dom
populo ſuo, & memor eſt in perpetuum
deris ſui: Sanctū eſt ac formidabile nome
j⁹. Initiū ſapiētiæ timor Dñi, & intellect
n⁹ facienti illud, & laus ej⁹ manet in æter

PSAL. CXII.

Anonymus. Quum David in eo hortar
Salomonem filium ſuum dicens, Serva m
data Domini, eumq; cole. Præterea
Gentium, & juſtitia Chriſti. Verſ.

Beatus vir qui timet Dominū, & cu
in mandatis ejus. Erit potens ſeme
in terra, & benedicetur in generatione
rum. Facultates & divitiæ abundabun
mo ejus, & æquitas ipſius perſtabit in
num. Effulſit lumen in caligine rectis,
feretur juſtorū. Probus eſt vir qui mi
& dat mutuò, ſuſtinétq; verba ſua in ju
In ſeculum non movebitur. Memoria in
piternū erit juſto, Et famam malam no
mebit; Nam conſtans eſt cor ejus, fretū D
Firmumq; cor illius & non formidat, d
ſpectet in hoſtibus ſuis. Diſperſit ac d
genis, & juſtitia ejus perſtans eſt in ſ
ſeculorum, cornúq; ipſi⁹ attolletur cum
ria. Iniquus verò cernet ac indignabit
ſuis dentibus frendebit, deſtruetúrque
deſiderium impiorum peribit.

PSAL. CXIII.

Anonymus. Dicitur ſolicitatio circa
ſterium Domini tempore matutino, a
tibus peragendum. Nos autem hortat
populum novum ex aqua & ſpiritu
tum, ut præmaturi ſimus ad miniſt
ſperſis cordibus noſtris ac lotis ſpirit
ménteq; pura. Verſ. 10.

Laudate ſervi Dñi, laudate nomen D
nomē Dñi benedictū à ſeculo &
ſeculū, Ab ortu ſolis uſque ad occa
Magnum eſt nomen Domini,

Verſio VULG. LAT.

2 Magna opera Domini : exquiſita in
3 omnes voluntates ejus. Confeſſio &
magnificentia opus ejus : & juſtitia
4 ejus manet in ſeculum ſeculi. Memoriam
fecit mirabilium ſuorum , miſericors
5 & miſerator Dominus : Eſcam
dedit timentibus ſe. Memor erit in ſeculum
6 teſtamenti ſui : Virtutem operum
ſuorum annuntiabit populo ſuo:
7 ut det illis hæreditatem gentium :
opera manuum ejus, veritas & judicium.
8 Fidelia omnia mandata ejus: confirmata in ſeculum ſeculi, facta in veritate
9 & æquitate. Redemptionem
miſit populo ſuo: mandavit in æternũ
teſtamentum ſuum. Sanctum, & terribile
10 nomen ejus : Initium ſapientiæ
timor Dñi. Intellectus bonus omnibus
facientibus eum : laudatio ejus manet
in ſeculum ſeculi.

Alleluja, Reverſionis Aggæi, & Zachariæ. CXI.

1 Beatus vir, qui timet Dominum : in
2 mandatis ejus volet nimis. Potens
in terra erit ſemen ejus : generatio
3 rectorum benedicetur. Gloria, & divitiæ
in domo ejus : & juſtitia ejus
4 manet in ſeculum ſeculi. Exortum eſt
in tenebris lumen rectis : miſericors,
5 & miſerator, & juſtus. Jucundus homo
qui miſeretur & commodat, diſponet
6 ſermones ſuos in judicio: Quia
7 in æternum non commovebitur. In
memoria æterna erit juſtus : ab auditione
mala non timebit. Paratum cor
8 ejus ſperare in Domino, Confirmatum
eſt cor ejus: non commovebitur donec
9 deſpiciat inimicos ſuos. Diſperſit, dedit
pauperibus : juſtitia ejus manet
in ſeculum ſeculi, cornu ejus exaltabitur
10 in gloria. Peccator videbit, & iraſcetur,
dentibus ſuis fremet & tabeſcet : deſiderium peccatorum peribit.

Alleluja. CXII.

1 Laudate pueri Dominum : laudate
2 nomen Domini. Sit nomen Domini
benedictum, ex hoc nunc, & uſque
3 in ſeculum. A ſolis Ortu uſque ad Occaſum
laudabile nomen Domini.

Verſio GRÆC LXX. Interp.

2 Μεγάλα τὰ ἔργα κυρίου, † ἐξεζητημένα εἰς πάντα
3 τὰ θελήματα αὐτοῦ. † Ἐξομολόγησις καὶ μεγαλοπρέπεια
τὸ ἔργον αὐτοῦ, † καὶ ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ
4 μένει εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. † Μνείαν ἐποιήσατο
τῶν θαυμασίων αὐτοῦ, † ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων ὁ
5 κύριος. † Τροφὴν ἔδωκε τοῖς φοβουμένοις αὐτόν·
6 † μνησθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα διαθήκης αὐτοῦ. Ἰσχὺν
7 ἔργων αὐτοῦ ἀνήγγειλε τῷ λαῷ αὐτοῦ, † Τοῦ δοῦναι
αὐτοῖς κληρονομίαν ἐθνῶν. † ἔργα χειρῶν αὐτοῦ,
8 ἀλήθεια καὶ κρίσις. † Πισταὶ πᾶσαι αἱ ἐντολαὶ αὐτοῦ,
† ἐστηριγμέναι εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, † πεποιημέναι
9 ἐν ἀληθείᾳ καὶ εὐθύτητι. † Λύτρωσιν ἀπέστειλε
τῷ λαῷ αὐτοῦ· † ἐνετείλατο εἰς τὸν αἰῶνα
διαθήκην αὐτοῦ. † ἅγιον καὶ φοβερὸν τὸ ὄνομα
10 αὐτοῦ. † Ἀρχὴ σοφίας φόβος κυρίου, † σύνεσις δὲ
ἀγαθὴ πᾶσι τοῖς ποιοῦσιν αὐτήν· † ἡ αἴνεσις αὐτοῦ
μένει εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος.

Ἀλληλούϊα. ρια΄.

1 † Μακάριος ἀνὴρ ὁ φοβούμενος τὸν κύριον, † ἐν
2 ταῖς ἐντολαῖς αὐτοῦ θελήσει σφόδρα. † Δυνατὸν
ἐν τῇ γῇ ἔσται τὸ σπέρμα αὐτοῦ, † γενεὰ εὐθέων
3 εὐλογηθήσεται. † Δόξα καὶ πλοῦτος ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ,
† καὶ ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ μένει εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ
4 αἰῶνος. † Ἐξανέτειλεν ἐν σκότει φῶς τοῖς εὐθέσιν·
5 † ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων καὶ δίκαιος (α). † Χρηστὸς
ἀνὴρ ὁ οἰκτείρων καὶ κιχρῶν, † οἰκονομήσει τοὺς
6 λόγους αὐτοῦ ἐν κρίσει, † Ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα οὐ σαλευθήσεται.
7 † Εἰς μνημόσυνον αἰώνιον ἔσται δίκαιος.
† ἀπὸ ἀκοῆς πονηρᾶς οὐ φοβηθήσεται. † ἑτοίμη ἡ
8 καρδία αὐτοῦ ἐλπίζειν ἐπὶ κύριον. † Ἐστήρικται ἡ
καρδία αὐτοῦ, (β) οὐ φοβηθῇ, † ἕως οὗ ἐπίδῃ ἐπὶ
9 τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. † Ἐσκόρπισεν, ἔδωκε τοῖς πένησιν,
† ἡ δικαιοσύνη αὐτοῦ μένει εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ
10 αἰῶνος. † τὸ κέρας αὐτοῦ ὑψωθήσεται ἐν δόξῃ. † Ἁμαρτωλὸς
ὄψεται καὶ ὀργισθήσεται, † τοὺς ὀδόντας
αὐτοῦ βρύξει καὶ τακήσεται. † ἐπιθυμία (γ) ἁμαρτωλοῦ ἀπολεῖται.

MS. A. (α) κύριος ὁ θεός. Χρηστὸς (β) οὐ μὴ φοβηθῇ, (γ) ἁμαρτωλῶν

Ἀλληλούϊα. ριβ΄.

1 † Αἰνεῖτε παῖδες (α) κύριον, † αἰνεῖτε τὸ ὄνομα
2 κυρίου. † Εἴη τὸ ὄνομα κυρίου εὐλογημένον
3 † ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος. † Ἀπὸ ἀνατολῶν
ἡλίου (β) μέχρι δυσμῶν, † αἰνετὸν τὸ ὄνομα κυρίου.

MS. A. (α) τὸν κύριον, (β) καὶ μέχρι

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

2 Magna opera Domini, (a) exquiſita in omnes voluntates ejus. 3 (c) Confeſſio, & magnificentia [a] opus ejus: & juſtitia ejus manet in [b] ſeculum ſeculi. 4 Memoriam fecit [c] mirabilium ſuorum miſericors, et miſerator Dominus : (d) Eſcam dedit timentibus ſe. 5 Memor erit in ſeculum teſtamenti ſui: Fortitudinem operum ſuorum annuntiavit populo ſuo. 6 Ut det illis hæreditatem gentium: opera manuum ejus (e) veritas, & judicium. 7 Fidelia omnia mandata ejꝰ, confirmata in ſeculũ ſeculi, facta in veritate, et æquitate. 9 Redemptionem miſit [d] populo ſuo: mandavit in æternum teſtamentum ſuum. 9 Sanctum & terribile nomen ejus: Initium ſapientiæ timor Domini. 10 [e] Intellectꝰ autẽ bonꝰ omnibꝰ (f) facientibꝰ eum: laudatio ejus manet in ſeculum ſeculi.

MS. Æthiop. Po. Gloria Patri, & Filio, & Spiritui Sancto: omni tempore, nunc, & ſemper, & in ſecula ſeculorum, Amen.

Alleluja. CXI.

1 Beatus vir qui timet Dominum: [a] in mandatis ejus volet nimis. 2 [b] Potens in terra erit ſemen ejus : generatio rectorum benedicetur. 3 Gloria, & divitiæ in domo ejus : & (a) juſtitia ejus manet in ſeculum ſeculi. 4 Exortum eſt in tenebris lumen (b) rectis: miſericors, & miſerator [c], & juſtus. 5 (c) Suavis vir, qui miſeretur, & commodat : (d) ſponet ſermones ſuos in judicio: Quoniam in æternum non commovebitur. 6 In memoria æterna erit juſtus : ab (d) auditione mala non timebit. 7 (e) Paratum cor ejus ſperare in Domino: Confirmatum eſt cor ejus: (f) non [d] timebit, (g) donec videat ſuper inimicos ſuos. 8 Diſperſit, dedit pauperibus : juſtitia ejus manet in ſeculum ſeculi: cornu ejus exaltabitur in gloria. 9 Peccator videbit, & iraſcetur : dentibus ſuis fremet, & tabeſcet: deſiderium peccatoris peribit.

Alleluja. CXII.

1 Laudate (a) [a] pueri Dominum: laudate nomen Domini. 2 Sit nomen Domini benedictum, ex hoc nunc & uſque in ſeculum. 3 A Solis Ortu uſque ad Occaſum, laudabile nomen Domini.

Verſio ÆTHIOPICA.

2 ዐቢይ፡ግብረ፡እግዚአብሔር፡፡ ወኅ
ሡሥ፡ውስተ፡ኵሉ፡ፈቃዱ፡፡ አሚን፡ ወዕ 3
በየ፡ስብሐት፡ምግባሩ፡፡ ወጽድቁኒ፡ይነብር፡
ለዓለም፡፡፨ ተዘከረ፡ገብረ፡ስብሐቲሁ፡፡ 4
መሐሪ፡ወመስተሣህል፡እግዚአብሔር፡፡ ወወ
ሀቦሙ፡ሲሳዮሙ፡ለእለ፡ይፈርህዎ፡፡፨ ወተ 5
ዘከረ፡ኪዳኖ፡ዘለዓለም፡፡ወአርአዮሙ፡ለሕ
ዝቡ፡ኀይለ፡ምግባሩ፡፡፨ ከመ፡የሀቦሙ፡ር 6
ስተ፡ለአሕዛብ፡፡ግብረ፡እደዊሁ፡ጽድቅ፡ወር
ትዕ፡፡፨ ወእሙን፡ኵሉ፡ትእዛዙ፡ወጽኑዕ፡ 7
ለዓለመ፡ ዓለም፡፡ ወግቡር፡በጽድቅ ፡ ወበር
ትዕ፡፡፨ መድኀኒተ፡ፈነወ፡እግዚአብሔር፡ 8
ለሕዝቡ፡፡ ወአዘዘ ፡ ሥርዓተ ፡ ዘለዓለ
ም፡፡፨ ቅዱስ፡ወግሩም፡ስሙ፡ዚአሁ፡፡ቀደ 9
ሚሃ፡ለጥበብ፡ፈሪሃ፡እግዚአብሔር፡፡፨ ወ 10
ምክር፡ ሠናይት፡ ለኵሉ፡ዘይገብሩ፡፡ ወስ
ብሐቲሁኒ፡ይነብር ፡ለዓለም፡፡፨
ስብሐት፡ ለአብ፡ ወወልድ፡ወመንፈስ፡ ቅዱስ፡
ኵሉ፡ጊዜ፡ይእዜኒ፡ወዘልፈኒ፡ወለዓለመ፡
ዓለም ፡ አሜን፡፡

ሃሌሉያ፡፡

፻፲፩ ብፁዕ፡ብእሲ፡ዘይፈርሆ፡ለእግዚአብ 1
ሔር፡፡ ወዘይፈቅድ፡ትእዛዞ፡ፈድፋደ፡፡፨
ወይከውን፡ ጽኑዓ፡ ዘርኡ፡ ውስተ፡ምድር፡፡ 2
ትውልደ፡ጻድቃን፡ይትባረኩ፡፡፨ ክብር፡ ወ 3
ብዕል፡ውስተ፡ቤቱ፡፡ ወ ጽድቁኒ፡ይነብር ፡ለ
ዓለመ፡ዓለም፡፡፨ሠረቀ፡ብርሃን፡ለራትዓን፡ 4
በውስተ፡ጽልመት፡፡ መሐሪ፡ ወመስተሣህል፡
እግዚአብሔር፡ወጻድቅ፡አምላክነ፡፡፨ ብ 5
እሲ፡መሐሪ፡ወመስተሣህል፡ወኄር፡፡ ወይሬ
ቅም፡ቃሎ፡በውስተ፡ፍትሕ፡፡ ወኢይትሀወ
ክ፡ለዓለም፡፡፨ ዝክረ፡ጻድቅ፡ለዓለም፡ይ 6
ሄሉ፡፡ ወኢይፈርህ፡ እምነገር፡እኩይ፡፡፨
ጥቡዕ፡ ልቡ፡ ለተወክሎ፡በእግዚአብሔር፡፡ 7
ጽኑዕ፡ልቡ፡ወኢይትሀወክ፡ ለዓለም፡፡ እስ
ከ፡ይሬኢ፡በጸላእቱ፡፡፨ ዘረወ፡ወወሀበ፡ለ 8
ነዳይ፡፡ወጽድቁኒ፡ይነብር ፡ለዓለመ፡ዓለም፡፡
ወይትሌዐል፡ቀርኑ፡በክብር ፡፡፨ ይሬኢ፡ኃ 9
ጥእ፡ወይትመዐዕ፡፡ ወየሐቂ፡ስነኒሁ፡ወይትመ
ሰው፡፡ወተኀልቅ፡ፍትወቶሙ፡ ለኃጥኣን፡፡፨

ሃሌሉያ፡፡

፻፲፪ ሰብሕዎ፡አግብርቲሁ፡ለእግዚአብሔ 1
ር፡፡ ወሰብሑ፡ ለስመ፡እግዚአብሔር ፡፡፨
ወይኩን፡ቡሩክ፡ስሙ፡ለእግዚአብሔር ፡፡ እ 2
ምይእዜ፡ወእስከ፡ለዓለም፡፡፨ እምሠረ 3
ቀ ፡ ፀሐይ ፡ ወእስከ ፡ ዐረብ ፡ ይትአኰት፡
ስሙ፡ ለእግዚአብሔር ፡፡

INTERP. ÆTHIOP [a] gloriæ, opus [b] ſeculum. Memoriam [c] gloriæ ejus, [d] Dominus populo [e] Et conſilium bonum PSAL. CXI. [a] & qui mandata ejus volet [b] Et erit firmum in terra [c] Dominus, & juſtus eſt rex noſter. Homo miſericors, miſerator & bonus : [d] commovebitur in æternum, donec PSAL. CXII. [a] ſervi ejus Dominum :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

2 3 * عظيمة هي اعمال الرب جميع ارادته مطلوبة * الشكر وعظيم البهاء هو عمله • وعدله دايم
4 5 الي ابد الابد * ذكر جميع عجايبه • الرب رحيم روف * اعطي اتقياءه طعاما • يذكر
6 7 عهده الي الابد * اعلم شعبه قوة اعماله • لكي يعطيهم ميراث الامم * اعمال يديه حق
8 9 وحكم • وجميع وصاياه صادقة * ثابتة الي الابد • مصنوعة بالحق والاستقامة * ارسل
10 خلاصا لشعبه • امر بعهده الي الابد • قدوس اسمه مخوف * راس الحكمة هي مخافة الرب
والفهم صالح لكل من عمل به • وبركته دايمة الي الابد • اللليلويا *

1 • المزمور المايه وحادي عشر * اللليلويا • وهو كب • استيخن *

2 طوبي للرجل الخايف من الرب • المتمسك بوصاياه جدا * زرعه يجد قوة علي الارض • جيل المستقيمين
3 4 يبارك * يكون المجد والغني في بيته وبره دايم الي الابد * نور اشرق في الظلمة للمستقيمين • الرب
5 6 الله رحيم روف * صالح هو الرجل الذي يتراف • ويقرض • ويدبر اقواله بالحكم * وانه
7 8 لا يزول الي الابد • ذكر الصديق يكون ابدا * ومن سماع شرير لا يخشي • مستعد قلبه للتوكل
9 علي الرب * ثابت قلبه فلا يرجف حتي ينظر علي اعدايه * بدد واعطي المساكين • وبره
10 دايم الي ابد الابد • قرنه يعلو بالمجد * يري الخاطي فيغتاظ • ويصر باسنانه ويذوب • شهوة
الخاطي تبيد • اللليلويا • المزمور المايه والثاني عشر • * اللليلويا • وهو يو استيخن *

1 سبحوا الرب ايها الفتيان • سبحوا اسم الرب * وليكن اسم الرب مباركا • منذ الان والي
الابد * من مشارق الشمس الي المغارب اسم الرب مبارك •

2 *Magna ſunt opera Domini, omnis voluntas ejus expetibilis.* 3 *Gratiarum actio & magnitudo decoris eſt opus ejus, & æquitas ejus perſeverans uſque in ſeculum ſeculi.* 4 *Recordatus eſt omniũ miraculorũ ſuorũ : Dominus miſericors eſt & clemens :* 5 *Dedit cultoribus ſuis cibũ : recordabitur fœderis ſui in æternũ :* 6 *Notã fecit populo ſuo virtutem operũ ſuorũ, ut det illis hæreditatem gentiũ.* 7 *Opera manuum ejus veritas & judiciũ, & cuncta mandata ejus veridica,* 8 *Firma in perpetuum, facta cum veritate & æquitate.* 9 *Miſit ſalutem populo ſuo, præcepit pactum ſuum in æternum. Sanctum nomen ejus ac terribile.* 10 *Initium ſapientiæ eſt timor Domini : & intelligentia bona eſt cuilibet agenti per eam : & benedictio illius perpetua eſt in æternum. Alleluja.*

PSAL. CXI.

1 Alleluja. Verſ. 22.

Beatitudo viro timenti Dominũ, amplectenti præcepta ejus vehementer. 2 *Semen ejus inveniet fortitudinem ſuper terrã : generatio rectorũ benedicetur.* 3 *Erit gloria & magnificentia in domo ejus, & juſtitia ejus perſeverans in æternum.* 4 *Lumen exortũ eſt inter tenebras rectis : Dominus Deus miſericors eſt ac benignus.* 5 *Bonus eſt vir qui miſeretur & commodat, & moderatur ſermones ſuos in judicio :* 6 *Quia non deficiet in æternum.* 7 *Memoria juſti erit perpetua, Et auditionem malam non timebit. Paratũ eſt cor ejus ad fidendum Domino,* 8 *Firmum cor ejꝰ, nec trepidabit donec videat ſuper inimicos ſuos.* 9 *Diſperſit ac dedit pauperibꝰ, & juſtitia ejus permanens eſt in ſeculum ſeculi : cornu ejus attolletur cum gloria.* 10 *Videbit peccator, & iraſcetur, ſtridebitq; dentibus ſuis, ac liqueſcet : deſiderium peccatoris peribit. Alleluja.*

PSAL. CXII.

1 Alleluja. Verſ. 16.

Laudate Dominum O pueri, laudate nomen Domini. 2 *Sitque nomen Domini benedictum ex nunc & uſque in ſeculum.* 3 *Ab ortibus ſolis uſque ad occaſus ſit nomen Domini benedictum.*

תהלים : קיד קטו

Quis .ejus gloria cœlos ſuper : Dominus gentes omnes ſuper Excelſus
4 רָם עַל־כָּל־גּוֹיִם יְהוָה עַל הַשָּׁמַיִם כְּבוֹדוֹ : מִי 5
videndum ad ſe *Humilians* .habitandum ad *ſe ſublimans* : noſter Deus Dominus ſicut
6 כַּיהוָה אֱלֹהֵינוּ הַמַּגְבִּיהִי לָשָׁבֶת : הַמַּשְׁפִּילִי לִרְאוֹת
? *egenum elevabit ſterquilinio* de : *tenuem* pulvere de *Erigens* .terra in & *cœlis* in
7 בַּשָּׁמַיִם וּבָאָרֶץ : מְקִימִי מֵעָפָר דָּל מֵאַשְׁפֹּת יָרִים אֶבְיוֹן :
faciens Sedere .ſui populi *magnificis* cum : *magnificis* cum *faciendum* ſedere *Ad*
8 9 לְהוֹשִׁיבִי עִם־נְדִיבִים עִם נְדִיבֵי עַמּוֹ : מוֹשִׁיבִי
.Hallelujah .lætantem *filiorum* matrem : *domum* ſterilem
עֲקֶרֶת הַבַּיִת אֵם־הַבָּנִים שְׂמֵחָה הַלְלוּיָהּ :

PSAL. CXIV. קיד

Jehudah Fuit .barbaro populo è Jahacob *domus* : Ægypto ex Iſrael *egrediendo In*
1 2 בְּצֵאת יִשְׂרָאֵל מִמִּצְרָיִם בֵּית יַעֲקֹב מֵעַם לֹעֵז : הָיְתָה יְהוּדָה
circuivit Jarden : fugit & vidit Mare .ejus *dominia* Iſrael : ejus *ſanctitatem in*
3 לְקָדְשׁוֹ יִשְׂרָאֵל מַמְשְׁלוֹתָיו : הַיָּם רָאָה וַיָּנֹס הַיַּרְדֵּן יִסֹּב
tibi Quid .*pecoris* filii ſicut colles : arietes ſicut exilierunt Montes .retrorſum
4 5 לְאָחוֹר : הֶהָרִים רָקְדוּ כְאֵילִים גְּבָעוֹת כִּבְנֵי־צֹאן : מַה־לְּךָ
: arietes ſicut *ſaltaſtis* Montes .retrorſum *circuiviſti* Jarden ô : fugiſti quod mare
6 הַיָּם כִּי תָנוּס הַיַּרְדֵּן תִּסֹּב לְאָחוֹר : הֶהָרִים תִּרְקְדוּ כְאֵילִים
Dei *faciebus à* : terra contremiſce Domini *faciebus* A ?*pecoris* filii ſicut colles
7 גְּבָעוֹת כִּבְנֵי־צֹאן : מִלִּפְנֵי אָדוֹן חוּלִי אָרֶץ מִלִּפְנֵי אֱלוֹהַּ
.aquarum fontem in ſilicem : aquarum ſtagnum petram *Convertens* .Jahacob
8 יַעֲקֹב : הַהֹפְכִי הַצּוּר אֲגַם־מָיִם חַלָּמִישׁ לְמַעְיְנוֹ־מָיִם :

PSAL. CXV. קטו

propter : gloriam da tuo nomini ſed ,nobis *non* ,Domine nobis Non
1 לֹא לָנוּ יְהוָה לֹא־לָנוּ כִּי־לְשִׁמְךָ תֵּן־כָּבוֹד עַל־
nunc Ubi : gentes dicent quid Ut .tuã veritatem propter ,tuã miſericordiam
2 חַסְדְּךָ עַל־אֲמִתֶּךָ : לָמָּה יֹאמְרוּ הַגּוֹיִם אַיֵּה־נָא
eorũ *Dolores* .fecit voluit quæ omnia : cœlis in noſter Deus Et ? eorum Deus
3 4 אֱלֹהֵיהֶם : וֵאלֹהֵינוּ בַשָּׁמָיִם כֹּל אֲשֶׁר־חָפֵץ עָשָׂה : עֲצַבֵּיהֶם
oculi : loquentur non & ,eis Os .hominum manuũ opus : *aurum* & ,*argentum*
5 כֶּסֶף וְזָהָב מַעֲשֵׂה יְדֵי אָדָם : פֶּה־לָהֶם וְלֹא יְדַבֵּרוּ עֵינַיִם
.odorabunt non & ,eis *naris* : audient non & ,eis Aures .videbunt non & ,eis
6 לָהֶם וְלֹא יִרְאוּ : אָזְנַיִם לָהֶם וְלֹא יִשְׁמָעוּ אַף לָהֶם וְלֹא יְרִיחוּן :
immurmurabunt non ,ambulabunt non & ,*eorum* pedes :palpabunt non & ,*eorum* Manus
7 יְדֵיהֶם וְלֹא יְמִישׁוּן רַגְלֵיהֶם וְלֹא יְהַלֵּכוּ לֹא־יֶהְגּוּ
Iſrael .eis in *fidens* qui omnis : ea *facientes* ſint ipſa Sicut .ſuo gutture in
8 9 בִּגְרוֹנָם : כְּמוֹהֶם יִהְיוּ עֹשֵׂיהֶם כֹּל אֲשֶׁר־בֹּטֵחַ בָּהֶם : יִשְׂרָאֵל
fidite Aharon Domus .ipſe eorũ clypeus & ,eorũ auxilium : Domino *in* fide
10 בְּטַח בַּיהוָה עֶזְרָם וּמָגִנָּם הוּא : בֵּית אַהֲרֹן בִּטְחוּ
fidite ,Dominum Timentes .ipſe eorũ clypeus & ,eorũ auxilium : Domino *in*
11 בַיהוָה עֶזְרָם וּמָגִנָּם הוּא : יִרְאֵי יְהוָה בִּטְחוּ
; noſtri fuit memor Dominus .ipſe eorũ clypeus & ,eorũ auxilium : Domino in
12 בַיהוָה עֶזְרָם וּמָגִנָּם הוּא : יְהוָה זְכָרָנוּ
.Aharon domui benedicet : Iſrael domui benedicet ,benedicet
יְבָרֵךְ יְבָרֵךְ אֶת־בֵּית יִשְׂרָאֵל יְבָרֵךְ אֶת־בֵּית אַהֲרֹן :

תרגום TARGUM.

4 רמא על כל עממיא יי עלוי שמיא איקריה :
5 מן כותיה דיי אלהנא דגביה מותביה למתב :
6 דממיך עיניה למחמי בשמיא ובארעא : מקים
7 מעפרא מסכינא מקלקלתא ירים חשיכא :
8 לאותבא עם רברביא עם רברבי עמיה : מיתב
9 כנשתא דישראל דמתילא לעקרא דיתבא
מוריקא לאנשי ביתה מליא אוכלוסין היך אמא
די על בניא חדיא הללויה : קיד
1 במפק ישראל ממצרים בירת יעקב מעמי
2 ברבראי : הות כנשתא דבית יהודה אחידא
3 לקודשיה ישראל לשליטוי : ימא אסתכל
4 ואפך יורדנא חזר לאחור : טוריא טפזו היך
5 דכרין גלמתא היך בנין דעאן : מה לך ימא
6 ארום תאפך יורדנא תחזור לאחורא : טוריא
7 טפזו היך דכרין גלמתא היך בנין דעאן : מן
קדם קירים אתחלחלי ארעא מן קדם אלהא
8 דיעקב : דהפך טינרא לאריתא דמיא שמיר
למעין דמין : קטו
1 לא מטולתנא יי לא מטול זכותנא ארום לשמך
2 הב איקרא מטול טובך ומטול קושטך : למא
3 יימרון עממיא אן השתא אלההון : ואלהנא
4 מדוריה בשמיא כל די יצבי עבד : טעותהון
5 דכספא ודהבא עובד ידוי בר נש : פומא להון
6 ולא ממללין עינין להון ולא חמיין : אודנין להון
7 ולא שמעין נחירי להון ולא מריחין : ידיהון ולא
ממשמשין רגליהון ולא מהלכין לא מרננין
8 בענקהון : דכמתהון יהון עובדיהון כל די
9 מתרחץ עליהון : ישראל רחיץ במימרא דיי
10 סעדהון ותריסהון הוא : דבית אהרן רחיצו
11 במימרא דיי סעדהון ותריסהון הוא : דחליא
דיי רחיצו במימרא דיי סעדהון ותריסהון הוא :
12 מימרא דיי דכר יתנא לטב יברך ית בית
ישראל יברך ית בית אהרן :

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Excelſus eſt ſuper omnes populos Domi ſuper cœlos gloria ejus. Quis ſicut Do nus Deus noſter, qui exaltavit habitation ſuam ut ſedeat? Qui demittit oculos ſuo ut videat in cœlis & in terra. Erige de pulvere miſerum, de ſtercore exalta egenum: Ut ſedere eum faciat cum pr cipibus, cum principibus populi ſui. Q collocat *eccleſiam Iſraelis, quæ ſimili ſterili ſedenti mœſtæ pro domeſticis ſuis fre quentem turbis*, tanquam matrem ob fili lætantem. *Hallelujah.*

PSAL. CXIV.

Dum exiret Iſrael ex Ægypto, dom Jaacob ex populo Barbaro: Fuit eccle domus Jehudæ unita ſanctitati ejus: Iſra poteſtatibus ejus. Mare vidit & erup Jordanis converſus eſt retrorſum. Mont ſubſilierunt ſicut arietes, colles ſicut fi ovium. Quid tibi erat mare cur erumpere Jordanis, ut converteteris retrorſum? Mont ſubſilirent ſicut arietes, colles ſicut filii o um? A facie Domini contremiſce terra; a aſpectu Dei Jaacob. Qui convertit petr in rivum; rupem in *fontem* aquarum.

PSAL. CXV.

Non propter nos Domine, non prop meritum noſtrum: verùm nomini tuo gloriam, propter benignitatem tuam & pro pter veritatem tuam. Quare dicturi ſunt po puli: Ubi *nunc* [*eſt*] Deus eorum? Deus tem noſtri habitatio in cœlis eſt; quicqu voluit, fecit. Idola *eorum* argentea & aure *opus* manuum hominis. Os ineſt eis, & non loquuntur; oculi inſunt eis, & non vide Aures inſunt eis, & non audiunt, nares i ſunt eis, & non odorant. Manus habent, non palpant; pedes habent, & non ambula & non clamant gutture ſuo. Similes illis qui faciunt ea, omnis qui confidit in e Iſrael *confidit* in Verbo Domini: adjutori eorum & ſcutum eorum eſt ipſum. Dom Aharon confidite in Verbo Domini: adjut rium eorum & ſcutum eorum ipſum eſt. Q timent Dominum confidite in Verbo D mini; auxilium eorum & ſcutum eorum eſt. Verbum Domini recordatum eſt no in bonum, *benedicet*: benedicet domu rael, benedicet domui Aharon.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

4 5 * ܘܪܡ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܡܪܝܐ. ܘܥܠ ܫܡܝܐ ܐܝܩܪܗ : * ܡܢܘ ܐܝܟ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ.
6 ܕܝܬܒ ܒܡܪܘܡܐ * ܘܚܙܐ ܒܥܘܡܩܐ : ܒܫܡܝܐ ܘܒܐܪܥܐ. * ܡܩܝܡ ܡܢ ܩܩܠܬܐ ܠܡܣܟܢܐ :
7 8 * ܕܢܘܬܒܝܘܗܝ ܥܡ ܪܘܪܒܢܐ ܕܥܡܐ. * ܡܘܬܒ ܠܥܩܪܬܐ ܒܒܝܬܐ : ܘܐܡܐ ܕܒܢܝܐ ܟܕ ܚܕܝܐ.
9 * ܡܫܠܡܢܘܬܐ ܕܩܕܡ *

1 * ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܡܢ ܟܬܒܐ ܥܬܝܩܐ ܥܠ ܡܘܫܐ ܕܫܒܚ ܗܘܐ ܥܠ ܝܡܐ. ܠܢ ܕܝܢ ܩܪܝܬܐ
ܕܣܒܪܬܐ ܕܒܗ ܥܡܐ ܚܕܬܐ ܗܘܝܢ ܠܩܕܡ ܒܪܒܪܝܐ: ܗܫܐ ܕܝܢ ܪܘܚܢܝܐ ܕܡܬܒܣܪ ܝܫܘܥ ܡܫܝܚܐ ܕܒܕܡܗ
ܡܢ ܠܘܛܬܗ ܕܟܬܒܐ. ܘܕܟܝܢ ܡܢ ܚܛܝܬܐ ܒܪܘܚܐ. ܦܬܓܡܐ ܢܒ. ܟܕ ܢܦܩ ܐܝܣܪܐܝܠ ܡܢ
2 ܡܨܪܝܢ: ܘܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ ܡܢ ܥܡܐ ܒܪܒܪܝܐ. * ܗܘܐ ܝܗܘܕܐ ܩܘܕܫܗ ܘܐܝܣܪܐܝܠ ܫܘܠܛܢܗ :
3 4 * ܝܡܐ ܚܙܝܗܝ ܘܥܪܩ. ܘܝܘܪܕܢܢ ܗܦܟ ܠܒܣܬܪܗ : * ܛܘܪܐ ܪܩܕܘ ܐܝܟ ܐܝܠܐ. ܘܪܡܬܐ ܐܝܟ
5 6 ܐܡܪܐ ܕܥܢܐ: * ܡܐ ܠܟܝ ܝܡܐ ܕܥܪܩܬܝ. ܘܝܘܪܕܢܢ ܕܗܦܟܬ ܠܒܣܬܪܟ : * ܛܘܪܐ ܕܪܩܕܬܘܢ ܐܝܟ
7 ܐܝܠܐ. ܘܪܡܬܐ ܐܝܟ ܐܡܪܐ ܕܥܢܐ : * ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܙܥܬ ܐܪܥܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ :
8 1 * ܕܗܦܟ ܫܘܥܐ ܠܐܓܡܐ ܕܡܝܐ. ܘܟܐܦܐ ܩܫܝܬܐ ܠܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. * ܠܐ ܠܢ ܡܪܝܐ ܠܐ ܠܢ. ܐܠܐ
2 ܠܫܡܟ ܗܒ ܐܝܩܪܐ: ܥܠ ܛܝܒܘܬܟ ܘܥܠ ܩܘܫܬܟ. * ܕܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܥܡܡܐ ܐܝܟܘ ܐܠܗܗܘܢ :
3 4 * ܐܠܗܢ ܒܫܡܝܐ ܗܘ ܘܟܠ ܕܨܒܐ ܥܒܕ. * ܦܬܟܪܐ ܕܥܡܡܐ ܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ: ܥܒܕ ܐܝܕܝܐ
5 6 ܕܒܢܝܢܫܐ. * ܦܘܡܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܡܡܠܠܝܢ: ܥܝܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܚܙܝܢ. * ܐܕܢܐ ܐܝܬ
7 ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ: ܢܚܝܪܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܡܪܝܚܝܢ. * ܘܒܐܝܕܝܗܘܢ ܠܐ ܡܓܫܫܝܢ:
8 ܘܒܪܓܠܝܗܘܢ ܠܐ ܡܗܠܟܝܢ. ܘܠܐ ܡܡܠܠܝܢ ܒܓܓܪܬܗܘܢ: * ܐܝܟܘܬܗܘܢ ܢܗܘܘܢ ܥܒܕܝܗܘܢ
9 ܘܟܠ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܝܗܘܢ: * ܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ ܬܟܝܠܝܢ ܥܠ ܡܪܝܐ. ܘܗܘܝܘ
10 ܡܥܕܪܢܗܘܢ ܘܬܪܝܣܗܘܢ : * ܒܝܬ ܐܗܪܘܢ ܬܟܝܠܝܢ ܥܠ ܡܪܝܐ. ܘܗܘܝܘ ܡܥܕܪܢܗܘܢ
11 ܘܬܪܝܣܗܘܢ : * ܕܚܠܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܬܟܝܠܝܢ ܥܠ ܡܪܝܐ. ܘܗܘܝܘ ܡܥܕܪܢܗܘܢ
12 ܘܬܪܝܣܗܘܢ :* ܡܪܝܐ ܥܗܕܢ ܘܒܪܟܢ. ܢܒܪܟ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ : ܢܒܪܟ ܠܒܝܬ ܐܗܪܘܢ.

Et excelſus ſuper omnes populos Dom & ſuper cœlũ majeſtas ejus? Quis ut D minus Deus noſter, qui ſedet in alto, E ſpicit profundũ, cœlum, ac terram? Erg ſterquilinio pauperem, Ut eum ſedere fa cum proceribus populi? Habitare facit ſte lem in domo, & matrem filiorũ gaudente

PSAL. CXIV.

Anonymus. Ex ſcriptura veteri. De M qui laudem dixerat ſecus mare. Nobis a vocatio Evangelii per quã popul' novu ſumus, antehac barbarus, nunc ſpiritua qui incarnatus eſt, Jeſu Chriſto qui n nos ſanguine ſuo à maledicto ſcriptur emundavit nos peccato per Spiritum Verſus 52.

Cum exiret Iſrael ex Ægypto, & Jacobi de populo barbaro: Fact Ihuda ſanctitas ejus, & Iſrael gloria Mare vidit eum ac refugit, & Jorda troverſus eſt. Montes proſilierunt ta cervi, & colles ut agni ovium. Quid ti mare quòd refugiſti, & tibi Jordanis, es retroverſus? Montes, quòd proſiluit quam cervi, & colles ut agni oviũ? A ſpectu Domini tremuit terra, à conſpe Jacobi: Qui vertit rupem in ſtagna aq & ſaxum durum in ſcatebras aquarum.

Non nobis Dñe, non nobis, ſed no tuo defer honorem ob bonitatem & ob veritatem tuam: Ut ne dicant g Ubi eſt Deus eorum? Deus noſter in eſt, & quicquid vult operatur. Idola g argentum ſunt atque aurũ, ſtructura ma hominis. Ora habent, & non loquu culos habent, & non vident: Aures h & non audiunt: nares habent, et n rantur: Et manibus ſuis non palpa ſuis pedibus gradiuntur: neq; loqu turib⁹ ſuis. Sicut ipſa evadant op & omnes qui fidunt illis. Domeſtic fidunt Dño, & ipſe adjutor eſt eoru ſuffultor ipſorũ. Domeſtici Aharo Dño, ipſeq; eſt adjutor eorũ et ſuf rum. Metuentes Dominum freti ſu no, et ipſe eſt adjutor eorum et ſuff rum. Dominus recordatus eſt noſtri nedixit nobis. Benedicat domeſtic benedicat familiæ Aharonis:

Pſal. CXIII.
Verſio VULG. LAT.

4 Excelſus ſup omnes gentes Dominus,
5 & ſuper cœlos gloria ejus. Quis ſicut
Dñs Deus noſter, qui in altis habitat,
6 Et humilia reſpicit in cœlo & in ter-
7 ra? Suſcitans à terra inopem, & de
8 ſtercore erigens pauperem: Ut collo-
cet eum cũ principibus, cum princi-
9 pibus populi ſui. Qui habitare facit
ſterilem in domo, matrem filiorum læ-
tantem.

Alleluja. CXIII.

1 IN exitu Iſrael de Ægypto, domûs
2 Jacob de populo barbaro: Facta eſt
Judæa ſanctificatio ejus, Iſrael pote-
3 ſtas ejus. Mare vidit, & fugit: Jorda-
4 nis converſus eſt retrorſum. Montes
exultaverunt ut arietes: & colles ſicut
5 agni ovium. Quid eſt tibi mare quod
fugiſti: & tu Jordanis, quia conver-
6 ſus es retrorſũ? Montes exultaſtis ſic-
ut arietes, & colles ſicut agni oviũ.
7 A facie Dñi mota eſt terra, à facie Dei
8 Jacob. Qui convertit petram in ſtagna
aquarũ, & rupem in fontes aquarum.
1 NON NOBIS, DOMINE, NON
NOBIS; ſed nomini tuo da gloriam.
2 Sup miſericordia tua, & veritate tua:
nequando dicant gentes, Ubi eſt Deus
3 eorum? Deus autem noſter in cœlo:
4 omnia quæcunque voluit, fecit. Si-
mulachra gentium argentum & au-
5 rum, opera manuũ hominum. Os ha-
bent, & non loquentur: oculos ha-
6 bent, & non videbunt. Aures habent,
& non audient: nares habent, & non
7 odorabunt. Manus habent, & non
palpabunt: pedes habent, & non am-
bulabunt: non clamabunt in gutture
8 ſuo. Similes illis fiant qui faciunt ea:
9 & omnes qui confidunt in eis. Domus
Iſrael ſperavit in Dño: adjutor eorũ
10 & protector eorum eſt. Domus Aaron
ſperavit in Domino: adjutor eorum &
11 protector eorum eſt. Qui timent Do-
minum, ſperaverunt in Domino: ad-
jutor eorum & protector eorum eſt.
12 Dominus memor fuit noſtri: & be-
nedixit nobis. Benedixit domui Iſrael,
benedixit domui Aaron.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

4 † Ὑψηλὸς ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη ὁ κύριος, † ἐπὶ τοὺς
5 οὐρανοὺς ἡ δόξα αὐτοῦ. † Τίς ὡς κύριος ὁ θεὸς ἡμῶν;
6 † ὁ ἐν ὑψηλοῖς κατοικῶν, Καὶ τὰ ταπεινὰ ἐφορῶν
7 † ἐν τῷ οὐρανῷ, καὶ ἐν τῇ γῇ; † Ὁ ἐγείρων ἀπὸ γῆς
8 πτωχὸν, † καὶ ἀπὸ κοπρίας ἀνυψῶν πένητα, † Τοῦ κα-
θίσαι αὐτὸν μετὰ ἀρχόντων, † μετὰ ἀρχόντων λαοῦ αὐτοῦ.
9 † Ὁ κατοικίζων στεῖραν ἐν οἴκῳ, † μητέρα ἐπὶ τέ-
κνοις εὐφραινομένην.

Ἀλληλούϊα. ριγ΄.

1 † ΕΝ ἐξόδῳ Ἰσραὴλ ἐξ Αἰγύπτου, † οἴκου Ἰα-
2 κὼβ ἐκ λαοῦ βαρβάρου, † Ἐγενήθη Ἰουδαία ἁ-
3 γίασμα αὐτοῦ, † Ἰσραὴλ ἐξουσία αὐτοῦ. † Ἡ θάλασ-
σα εἶδε καὶ ἔφυγεν, † ὁ Ἰορδάνης ἐστράφη εἰς τὰ ὀπί-
4 σω. † Τὰ ὄρη ἐσκίρτησαν ὡσεὶ κριοὶ, † καὶ οἱ βουνοὶ
5 ὡς ἀρνία προβάτων. † Τί σοί ἐστι θάλασσα ὅτι ἔ-
φυγες; † (α) καὶ σὺ Ἰορδάνη ὅτι ἐστράφης εἰς τὰ ὀπί-
6 σω; † Τὰ ὄρη ὅτι (β) ἐσκιρτήσατε ὡσεὶ κριοί; † καὶ
7 οἱ βουνοὶ ὡς ἀρνία προβάτων; † Ἀπὸ προσώπου κυ-
ρίου ἐσαλεύθη ἡ γῆ, † ἀπὸ προσώπου τοῦ θεοῦ Ἰακὼβ,
8 † Τοῦ στρέψαντος τὴν πέτραν εἰς λίμνας ὑδάτων, † καὶ
1 τὴν ἀκρότομον εἰς πηγὰς ὑδάτων. † Μὴ ἡμῖν κύ-
ριε, μὴ ἡμῖν, † ἀλλ' ἢ τῷ ὀνόματί σου δὸς δόξαν,
2 † Ἐπὶ τῷ ἐλέει σου καὶ τῇ ἀληθείᾳ σου. † μή ποτε εἴ-
3 πωσι τὰ ἔθνη, Ποῦ ἐστιν ὁ θεὸς αὐτῶν; † Ὁ δὲ θεὸς
ἡμῶν ἐν τῷ οὐρανῷ καὶ ἐν τῇ γῇ, † πάντα ὅσα ἠθέ-
4 λησεν, ἐποίησε. † Τὰ εἴδωλα τῶν ἐθνῶν, ἀργύριον
5 καὶ χρυσίον, † ἔργα χειρῶν ἀνθρώπων. † Στόμα ἔ-
χουσι καὶ οὐ λαλήσουσιν, † ὀφθαλμοὺς ἔχουσι καὶ οὐκ ὄ-
6 ψονται, † Ὦτα ἔχουσι καὶ οὐκ ἀκούσονται, † ῥῖνας ἔ-
7 χουσι καὶ οὐκ ὀσφρανθήσονται, † Χεῖρας ἔχουσι καὶ οὐ
ψηλαφήσουσι, † πόδας ἔχουσι καὶ οὐ περιπατήσουσιν,
8 † οὐ φωνήσουσιν ἐν τῷ λάρυγγι αὐτῶν. † Ὅμοιοι (γ)
αὐτοῖς γένοιντο οἱ ποιοῦντες αὐτὰ, † καὶ πάντες οἱ
9 πεποιθότες ἐπ' αὐτοῖς. † Οἶκος Ἰσραὴλ ἤλπισεν
ἐπὶ κύριον, † βοηθὸς καὶ ὑπερασπιστὴς αὐτῶν ἐστιν.
10 † Οἶκος Ἀαρὼν ἤλπισεν ἐπὶ κύριον, † βοη-
θὸς καὶ ὑπερασπιστὴς αὐτῶν ἐστιν. † Οἱ φοβούμε-
11 νοι (δ) τὸν κύριον ἤλπισαν ἐπὶ κύριον, † βοη-
12 θὸς καὶ ὑπερασπιστὴς αὐτῶν ἐστιν. † Κύριος μνη-
σθεὶς ἡμῶν εὐλόγησεν ἡμᾶς, † εὐλόγησε τὸν οἶκον
Ἰσραὴλ, † εὐλόγησε τὸν οἶκον Ἀαρών.
MS. A. (α) καὶ σοὶ (β) ἐσκιρτήσατε (γ) αὐ-
τῶν (δ) κύριον

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopice, Tranſl. LAT.

4 Excelſus ſuper omnes gentes Do- 4
minus, ſuper cœlos gloria ejus.
5 Quis ſicut Dominus Deus noſter, 5
qui in altis habitat, Et humilia reſpi- 6
cit [b] in cœlo, & in terra? 6 Qui 7
ſuſcitat à terra inopem, & de ſter-
core erigit pauperem. 7 Ut collocet 8
eum cum [c] principibus, cum princi-
pibus populi ſui. 8 Qui habitare fa- 9
cit ſterilem in domo, matrem (b) ſu-
per filiis lætantem.

Alleluia. CXIII.

1 IN exitu Iſrael de (a) Ægypto, 1
domûs Jacob de populo barbaro:
2 Facta eſt Judæa ſanctificatio ejus: 2
[a] Iſrael poteſtas ejus. 3 Mare vidit, 3
& fugit: Jordanis converſus eſt re-
trorſum. 4 Montes (b) geſtierunt vel- 4
ut arietes, & colles velut agni o-
vium. 5 Quid eſt tibi mare, quòd fu- 5
giſti? & tu Jordanis, quia conver-
ſus es retrorſum? 6 Montes (c) quia 6
geſtiiſtis, velut arietes? et colles vel-
ut agni oviũ? 7 A facie Domini (d) 7
commota eſt terra, à facie Dei Jacob.
8 Qui (e) convertit petram in [b] 8
ſtagna aquarũ, & (f) rupẽ in [c] fon-
tes aquarũ. 9 Non nobis, Do 1
mine, non nobis: ſed nomini tuo [d]
da gloriam. 10 (g) Super miſericor- 2
dia tua, & veritate tua: nequando
dicant gentes, Ubi eſt Deus eorum?
11 Deus autẽ noſter in cœlo [e], et 3
(h) in terra: omnia, quæ voluit, fecit
[f]. 12 (i) Simulachra gentium argẽ- 4
tum, & aurum, opera manuum homi-
num. 13 Os habent, & non loquen- 5
tur: oculos habent, & non videbunt.
14 Aures habent, & non audient: na- 6
res habent, & non odorabũt. 15 Ma- 7
nus habent, & non contrectabunt: pe-
des habent, & non ambulabunt: non
[g] clamabũt in gutture ſuo. 16 Si- 8
miles illis fiant [h], qui faciunt ea,
& omnes qui confidunt in eis. 17 Do- 9
mus Iſrael ſperavit in Domino: adju-
tor [i] & protector eorum eſt. 18 Do- 10
mus Aaron ſperavit in Domino: ad-
jutor & protector eorũ eſt. 19 Qui 11
[k] timent Dominũ, ſperaverunt in
Domino: adjutor [l] & protector eo-
rũ eſt. 20 Dominus (k) recordatus 12
noſtri benedixit nos: 21 benedixit
domũ Iſrael benedixit domũ Aarõ.

INTERP. ÆTHIOP. [b] cùm in cœlo, tum & in [c] principibus ſuis, PSAL. CXIII. [a] & Iſrael etiam [b] fontes aquarũ, [c] puteos aquarum. [d] dabimus gloriam. [e] ſuper, in cœlo quidẽ, & in terra etiam: omnia [f] Deus. Dii gentiũ [g] loquuntur in faucibus ſuis: neq; eſt ſpiritus in oribus eorum. [h] omnes qui [i] eorum, & [k] timetis Dominum, ſperate [l] eorum, &

Verſio ÆTHIOPICA.

ልዑል፡እግዚአብሔር፡መልዕልተ፡ኵሉ፡አሕ 4
ዛብ። ወውስተ፡ሰማያት፡ስብሐቲሁ።፨ መኑ፡ 5
ከመ፡እግዚአብሔር፡አምላክነ። ዘይነብር፡
ውስተ፡አርያም፡ወይሬኢ፡ዘበታሕቱ። በሰማ 6
ይ፡ወበምድር።፨ ዘያነሥኦ፡ለነዳይ፡እ 7
ምድር። ወያሌዕሎ፡እመሬት፡ለምስኪን።፨
ከመ፡ያንብሮ፡ምስለ፡መላእክቲሁ። ወምስ 8
ለ፡መላእክተ፡ሕዝቡ።፨ ዘያነብራ፡ለመካን፡
ውስተ፡ቤቱ። ወያስተፌሥሓ፡ለእመ፡ውሉ
ሃሌሉያ። ድ።፨
የዐ አመ፡ይወጽኡ፡እስራኤል፡እምግብጽ። 1
ወቤተ፡ያዕቆብ፡እምሕዝበ፡ፀር።፨ ወኮነ፡ 2
ይሁዳ፡መቅደሶ፡ወእስራኤልኒ፡ምኵናኖ።፨
ባሕርኒ፡ርእየት፡ወጐየት። ወዮርዳኖስኒ፡ 3
ገብአ፡ድኅሬሁ።፨ ወአድባር፡አንፈርዐጹ፡ 4
ከመ፡ሐራጊት። ወአውግርኒ፡ከመ፡መሐስአ፡
አባግዕ።፨ ምንተ፡ኮነከ፡ባሕር፡ዘጐየይ 5
ከ። ወአንተኒ፡ዮርዳኖስ፡ዘገባእከ፡ድኅሬ
ከ።፨ ወአድባር፡ዘአንፈርዓጽክሙ፡ከመ፡ 6
ሐራጊት። ወአውግርኒ፡ከመ፡መሐስአ፡አባግ
ዕ።፨ እምቅድመ፡ገጹ፡ለእግዚአብሔር፡ 7
አድለቅለቀት፡ምድር፡እምቅድመ፡ገጹ፡ለአ
ምላከ፡ያዕቆብ።፨ ዘይሬስያ፡ለኰኵሕ፡አ 8
ንቅዐተ፡ማያት። ወለእዝሓ፡አዘቃተ፡ማያ
ት።፨ አኮ፡ለነ፡እግዚኦ፡አኮ፡ለነ፡ለስመ፡ 9
ዚአከ፡ሀብ፡ስብሐተ።፨ በምሕረትከ፡ወ 10
በጽድቅከ። ከመ፡ኢይበሉነ፡አሕዛብ፡አይ
ቴ፡ውእቱ፡አምላኮሙ።፨ አምላክነሰ፡ 11
ውስተ፡ሰማይ፡ሰዐለ። በሰማይኒ፡ወበምድር
ኒ። ኵሎ፡ዘፈቀደ፡ገብረ፡እግዚአብሔ
ር።፨ አማልክቲሆሙ፡ለአሕዛብ፡ዘወርቅ፡ 12
ወብሩር። ግብረ፡እደ፡እጓለ፡እመሕያ
ው።፨ አፈ፡ቦሙ፡ወኢይነቡ። ዐይነ፡ቦሙ፡ 13
ወኢይሬእዩ።፨ እዝነ፡ቦሙ፡ወኢይሰምዑ። 14
አንፈ፡ቦሙ፡ወኢያጼንዉ።፨ እደ፡ቦሙ፡ወ 15
ኢይገሡ። እግረ፡ቦሙ፡ወኢየሐውሩ። ወኢ
ይነቡ። በጕርዔቶሙ። ወአልቦሙ፡መንፈስ፡
ውስተ፡አፉሆሙ።፨ ከማሆሙ፡ለይኩኑ፡ 16
ኵሎሙ፡እለ፡ገብርዎሙ። ወኵሎሙ፡እ
ለ፡ይትዌከሉ፡ቦሙ።፨ ቤተ፡እስራኤል፡ተ 17
ወከሉ፡በእግዚአብሔር። ረዳኢሆሙ፡ውእ
ቱ፡ወምእመናሆሙ።፨ ቤተ፡አሮን፡ተወከሉ፡ 18
በእግዚአብሔር። ረዳኢሆሙ፡ውእቱ፡ወም
እመናሆሙ።፨ እለ፡ትፈርህዎ፡ለእግዚአብ 19
ሔር፡ተወከሉ፡በእግዚአብሔር። ረዳኢሆ
ሙ፡ውእቱ፡ወምእመናሆሙ።፨ እግዚአብ 20
ሔር፡ተዘከረነ፡ወባረከነ።፨ ባረከ፡ቤተ፡ 21
እስራኤል። ወባረከ፡ቤተ፡አሮን።፨

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

4 * الرّبّ عالٍ علي جميع الامم * وعلي السموات مجده * من مثل الربّ الهنا . الساكن في
5 6 العاليات * والناظر علي المتخفضات . في السماء وعلي الارض * الذي يقيم علي الارض مسكينا
7 8 والرافع من المزبلة فقيرا * لكي يجلسه مع الروساء . مع روساء شعبه * الذي يجعل العاقر
9 ساكنة في بيتٍ * أمّ اولادٍ فرحة . اللليلويا *

* المزمور المائة وثلاثة عشر *

1 * اللليلويا . وهو * نك . استيكن *
2 في خروج اسرائيل من مصر . وبيت يعقوب من شعب البربري * صارت اليهودية له مكان
3 قدس . واسرائيل هو سلطانه * البحر رأى فهرب . الاردن رجع الي خلف * ابتهجت الجبال
4 مثل الكباش . والاكام مثل حملان الضان * فما لك ايها البحر هربت . وانت ايها الاردن حتي رجعت
5 الي خلف * ويا جبال حتي رقصت كالكباش . ويا اكام مثل حملان الضان * الارض تزلزلت من
6 7 قدام وجه الربّ * ومن وجه اله يعقوب * الذي حول الصخور بحيرات ماء . والحجر الاصم
8 لينابيع الماء .
1 * ليس لنا يا ربّ ليس لنا لكن مجّد اسمك . لاجل رحمتك
2 3 وبرك * لئلا تقول الامم اين الههم * والهنا في السماء والارض وكل شيء اراد عمله * اوثان الامم
4 5 ذهب وفضة . وهي عمل ايدي الناس * لها افواه ولا تتكلم . لها اعين ولا ترى * لها اذان
6 7 ولا تسمع . لها اناف ولا تشمّ * لها ايدٍ ولا تلمس لها ارجل ولا تمشي ولا تقدر ان تدعوا بصوت
8 9 من حناجرها * يشبهها جميع صانعيها . وكل من يتوكل عليها * بيت اسرائيل توكلوا علي الرب . وهو
10 11 معينهم وناصرهم * بيت هرون توكلوا علي الرب . هو معينهم وناصرهم * الخائفون من الرب توكلوا علي
12 الرب . هو معينهم وناصرهم * الرب ذكرنا وباركنا . بارك بيت اسرائيل . بارك بيت هرون

Dominus altiſſimus eſt ſuper omnes gen- 4
tes, & ſuper cœlos gloria ejus. Quis ſi- 5
milis eſt Domino Deo noſtro, habitanti in
altiſſimis, Et proſpicienti ima, in cœlo 6
& ſuper terram? Qui erigit ſuper ter- 7
ram, inopem, & elevat è ſterquilinio
pauperem, ut ſedere faciat eum cum 8
principibus, cum principibus populi ſui.
Qui facit ſterilem, degentem in domo: 9
matrem filiorum, lætantem. Alleluja.

PSAL. CXIII.

Alleluja. Verſ. 54. 1

IN exitu Iſrael ex Ægypto, & domûs
Jacob de populo barbaro, Facta eſt Ju- 2
dæa ipſi locus ſanctitatis, & Iſrael eſt
princeps ejus. Mare vidit refugitque, 3
Jordanis reverſus eſt retrorſum. Exul- 4
taverunt montes ut arietes, & colles ut
agni ovium. Quid eſt tibi O mare quòd 5
fugeris? & tibi, O Jordanis, ut reverſus
ſis retrorſum. Et O montes, ut ſaltetis 6
ſicut arietes? & O colles ſicut agni
ovium? Terra tremuit à conſpectu vul- 7
tûs Domini, & à facie Dei Jacob. Qui 8
convertit petram in ſtagna aquæ, & ſa-
xum durum in fontes aquæ.

NOn nobis O Domine, non nobis: ſed 1
glorifica nomen tuum propter mi-
ſericordiam tuam & juſtitiam tuam.
ut ne dicant gentes, ubi eſt Deus eorum? 2
Et verò Deus noſter in cœlo eſt & in ter- 3
ra, & quamcunque rem voluit, fecit.
Simulacra gentium argentum & aurum, 4
& ſunt opus manuum hominum. Habent 5
ora, & non loquuntur: habent oculos, &
non vident: Habent aures, & non au- 6
diunt: habent nares, & non odorantur:
Habent manus, & non palpant: habent 7
pedes, & non ambulant: nec poſſunt
edere vocem è gutture ſuo. Similes ſint 8
eis omnes opifices eorum & quiſquis con-
fidit in eis. Domus Iſrael confiſi ſunt in 9
Domino, & ipſe adjutor eorum & auxi-
liator eorum eſt. Domus Aaron confiſi 10
ſunt in Domino, ipſe adjutor eſt eorum
& auxiliator illorum. Timentes Domi- 11
num confiſi ſunt in Domino, ipſe adjutor
eſt eorum & auxiliator eorum. [illegible] 12
recordatus eſt noſtri, & [illegible]
[illegible] domui Iſrael, [illegible]

תהלים : קיו קיז

Dominus Adjiciat .magnis cum puſillis : Dominum timentibus Benedicet
13 יברך יראי יהוה הקטנים עם־הגדלים: יסף יהוה
14 facienti : Domino vos Benedicti .veſtros filios ſuper & ,vos ſuper ; vos ſuper
15 עליכם עליכם ועל־בניכם: ברוכים אתם ליהוה עשה
.Dominum filiis dedit terram & : Domino cæli Cæli .terram & cœlos
16 שמים וארץ: השמים שמים ליהוה והארץ נתן לבני־אדם:
nos Et .ſilentium deſcendentes omnes nec : Jah laudabunt mortui Non
17 18 לא המתים יהללו־יה ולא כל־ירדי דומה: ואנחנו
.Jah-Hallelu .ſeculum in uſque & ,nunc ex Jah benedicemus
נברך יה מעתה ועד־עולם הללו־יה:

PSAL. CXVI. קיו

inclinavit Quia .meas deprecationes ,meã vocem Dominus exaudiet quoniã , Dilexi
1 אהבתי כי־ישמע יהוה את־קולי תחנוני: כי־הטה
2 ,mortis funes me Circumdederunt .invocabo meis diebus in & : mihi ſuam aurem
3 אזנו לי ובימי אקרא: אפפוני חבלי־מות
Domini nomine in Et .inveniam moleſtiam & anguſtiã:me invenerũt inferni anguſtiæ &
4 ומצרי שאול מצאוני צרה ויגון אמצא: ובשם־יהוה
: juſtus & ,Dominus Gratioſus .meã animam erue Domine quæſo : invocabo
5 אקרא אנה יהוה מלטה נפשי: חנון יהוה וצדיק
.ſervabit me & ,ſum attenuatꝰ :Dñs ſimplices Cuſtodiens .miſerans noſter Deꝰ &
6 ואלהינו מרחם: שמר פתאים יהוה דלותי ולי יהושיע:
eripuiſti Quia .te ſuper retribuit Dominus quia :tuã requiẽ ad mea anima Revertere
7 8 שובי נפשי למנוחיכי כי־יהוה גמל עליכי: כי חלצת
Ambulabo .impulſu ab meũ pedem : lachryma à meũ oculum ; morte à meã animã
9 נפשי ממות את־עיני מן־דמעה את־רגלי מדחי: אתהלך
ſum afflictus ego : loquar quia , Credidi .viventium terris in ,Domini facies ad
10 לפני יהוה בארצות החיים: האמנתי כי אדבר אני עניתי
reddam Quid .mendax homo omnis : mea feſtinatione in dixi Ego .valde
11 12 מאד: אני אמרתי בחפזי כל־האדם כזב: מה־אשיב
nomine in & : levabo ſalutum Calicem ? me ſuper ejus retributiones omnes : Domino
13 ליהוה כל־תגמולוהי עלי: כוס־ישועות אשא ובשם
.ejus populo omni nunc coram : reddam Domino mea Vota .invocabo Domini
14 יהוה אקרא: נדרי ליהוה אשלם נגדה־נא לכל־עמו:
ego quia ,Domine Obſecro .ejus miſericordium mors ,Domini oculis in Precioſa
15 16 יקר בעיני יהוה המותה לחסידיו: אנה יהוה כי־אני
ſacrificabo Tibi .mea vincula ſolviſti : tuæ ancillæ filius tuus ſervus ego ,tuꝰ ſervus
17 עבדך אני עבדך בן־אמתך פתחת למוסרי: לך אזבח
, reddam Domino mea Vota .invocabo Domini nomine in & : laudis ſacrificium
18 זבח תודה ובשם יהוה אקרא: נדרי ליהוה אשלם
tui medio in ,Domini domus atriis In .ejus populo omni nunc coram
19 נגדה־נא לכל־עמו: בחצרות בית יהוה בתוככי
.Jah-Hallelu .Jeruſalaim
ירושלם הללו־יה:

PSAL. CXVII. קיז

Quoniam .populi omnes eum laudate : gentes omnes Dominum Laudate
1 הללו את־יהוה כל־גוים שבחוהו כל־האמים: כי
2 .Jah-Hallelu .ſeculum in Domini veritas &,ejꝰ miſericordia nos ſuper eſt roborata
גבר עלינו חסדו ואמת־יהוה לעולם הללו־יה:

תרגום TARGUM.

13 יברך דחליא דיי זעיריא עם רברביא: יוסף
14 מימרא דיי עליכון עליכון ועלוי בניכון:
15 16 בריכין אתון מן קדם יי עבד שמיא וארעא: שמי
שמיא לשכינת יקרא דיי וארעא יהב לבני נשא:
17 לא מיתיא משבחין שמא דיי ולא כל נחתי בית
18 קבורת אדמתא: ואנחנא נברך יה מן השתא
ועד עלמא הללויה:

קיו

1 2 רחימית ארום ישמע יי ית קלי בעותי: ארום
3 אצלי אודניה לי וביומי אנא קרי: אקיפו יתי
מרעי מותא ועיקתין דשיול אשכחוני עיקתא
4 ודבונא אשכח: ובשמא דיי אקרי בבעו יי שיזב
5 6 נפשי: חננא יי וזכאה ואלהנא מרחם: נטר
7 שרגוגיא יי אתמסכנית ולי חמי למפרוק: תובי
נפשי לבית מנחיכי ארום מימרא דיי גמל טובא
8 עליכי: ארום פציתא נפשי מקטול ית עיני מן
9 דמעתא ית רגלי מן לאדחיא: אתהלך קדם יי
10 בארעת חייא: הימנית ארום אמלל בכנישת
11 צדיקי אנא שבחית לחדא. אנא אמרית במערקי
12 כל בני נשא מכדבין: מה אתיב קדם יי כל גמלין
13 טבן דיליה גמילין הנון עלי: כסא דפורקניא
אסובר לעלמא דאתי ובשמא דיי אקרי:
14 נדרי קדם יי אשלם אתני כדון נסוי לכל עמיה:
15 יקיר קדם יי מיתותא דמשתלחא לחסידוי:
16 בבעו יי ארום אנא עבדך אנא עבדך בר אמתך
17 שריתא לשולשלותי: לך אדבח דבח נכסתא
18 ובשמא דיי אקרי: נדרי קדם יי אשלם אתני
19 כדון נסוי לכל עמיה: בדרתא די בבית מקדש
אלהנא במציעי ירושלם הללויה:

קיז

1 שבחו ית יי כל עממיא שבחו ליה כל אומיא:
2 ארום אגבר עלנא טוביה וקושטיה דיי לעלמא
הללויה:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Benedicet timentibus Dominum, parvis cum magnis. Apponat Dominus ſuper vos, ſuper vos & ſuper filios veſtros. Benedicti vos a præſentia Domini, qui fecit cœlum & terrã. Cœli cœlorum majeſtati gloriæ Domini: terram autem dedit filiis hominum. Non mortui laudant *nomen Domini*, neque omnes qui deſcendunt in domum ſepulturæ terreſtris. Sed nos benedicemus Deo, ex hoc tempore & uſque in æternum. *Hallelujah.*

PSAL. CXVI.

DIlexi, quoniam audiet Dominus vocem meam [&] deprecationes meas. Quoniam inclinavit aurem ſuam mihi, & in diebus meis ego invocabo. Circumdederunt me ægritudines mortis, & moleſtiæ inferni invenerunt me, afflictionem & dolorem inveniam. In nomine autem Domini invocabo: obſecro Domine libera animam meam. Clemens Dominus & juſtus, & Deus noſter miſericors. Cuſtodit ſimplices Dominus: humiliatus ſum, ſed reſpexit me ad redemptionem. Convertere anima mea in requiem tuam, quoniam verbum Domini reddit bonum tibi. Quoniam eripuiſti animam meam ab occiſione, oculum meum à lachrymis, pedem meum à lapſu. Incedam coram Domino in terra vivorum. Credidi, propterea loquar, *in congregatione juſtorum* ego laudavi majorem in modum. Ego dixi inter fugiendum, Omnes filii hominum mendaces. Quid reddam coram Domino? omnes retributiones ejus bonæ repenſæ ſunt ſuper me. Calicem *redemptionũ* portabo *in ſeculo venturo*, & in nomine Domini invocabo. Vota mea coram Domino reddam: narrabo tunc ſigna ejus omni populo ejus. Honorifica coram Domino mors eſt quæ infertur ſanctis ejus. Obſecro Domine, quia ego ſervus tuus, ego ſervus tuus filius ancillæ tuæ; ſolviſti catenas *meas*. *Tibi* ſacrificabo ſacrificium oblationis, & in nomine Domini invocabo. Vota mea coram Domino reddam: narrabo tunc miracula ejus omni populo ipſius. In atriis domus ſanctuarii *Dei noſtri*, in medio tui Jeruſalem. *Hallelujah.*

PSAL. CXVII.

LAudate Dominum omnes populi, laudate eum omnes nationes. Quoniam roboravit ſuper nos beneficentiam ſuam, & veritas Domini in æternum. *Hallelujah.*

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

13 14 * ܢܒܪܟ ܡܪܝܐ ܠܕܚܠܘܗܝ: ܙܥܘܪܐ ܥܡ ܪܘܪܒܐ. * ܢܘܣܦ ܥܠܝܟܘܢ ܡܪܝܐ: ܥܠܝܟܘܢ ܘܥܠ
15 16 ܒܢܝܟܘܢ. * ܒܪܝܟܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܡܪܝܐ: ܗܘ ܕܥܒܕ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. * ܫܡܝܐ ܫܡܝܐ ܕܡܪܝܐ ܗܘ:
17 18 ܘܐܪܥܐ ܝܗܒ ܠܒܢܝܢܫܐ. * ܠܐ ܡܝܬܐ ܢܫܒܚܘܢ ܠܡܪܝܐ: ܘܠܐ ܟܠ ܢܚܬܝ ܫܬܩܘܬܐ. * ܚܢܢ
ܕܝܢ ܢܒܪܟ ܠܡܪܝܐ: ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܠܗ * ܠܐ ܡܫܡܗܢܐ. 1
ܡܦܩܢܗ ܕܥܡܐ ܚܕܬܐ ܕܐܬܐ ܠܬܫܡܫܬܐ ܡܫܝܚܝܬܐ ܐܝܟ ܛܠܝܐ ܠܩܪܝܢܐ. ܘܡܬܐܡܪ:
ܣܘܟܠܐܝܬ ܟܕ ܐܬܐ ܫܐܘܠ ܘܩܡ ܥܠ ܬܪܥܐ ܕܡܥܪܬܐ ܗܝ ܕܒܗ ܛܫܐ ܗܘܐ ܕܘܝܕ ܘܓܒܪܘܗܝ.
ܦܓܥ ܣܝ. ܪܓܬ ܕܢܫܡܥ ܡܪܝܐ ܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ. * ܘܢܪܟܢ ܐܕܢܗ ܠܘܬܝ ܒܝܘܡܐ ܕܐܩܪܝܬܗ: 2
* ܡܛܠ ܕܐܚܕܘܢܝ ܚܒܠܐ ܕܡܘܬܐ. ܘܐܘܠܨܢܐ ܕܫܝܘܠ ܡܛܝܘܢܝ: ܐܘܠܨܢܐ ܘܥܩܬܐ ܐܫܟܚܬ. 3
4 5 * ܘܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܩܪܝܬ: ܐܘ ܡܪܝܐ ܦܨܝ ܠܢܦܫܝ. * ܡܪܚܡܢ ܐܢܬ ܡܪܝܐ ܘܙܕܝܩ: ܘܐܠܗܐ
6 7 ܐܢܬ ܡܪܚܡܢܐ. * ܢܛܪ ܠܛܠܝܐ ܡܪܝܐ: ܡܟܟܢܝ ܘܦܪܩܢܝ. * ܬܘܒܝ ܢܦܫܝ ܠܢܝܚܟܝ:
8 9 ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܦܪܥܟܝ. * ܡܛܠ ܕܦܪܩܬ ܢܦܫܝ ܡܢ ܡܘܬܐ: ܘܥܝܢܝ ܡܢ ܕܡܥܬܐ. * ܘܪܓܠܝ
10 ܡܢ ܬܘܩܠܬܐ. ܐܬܗܠܟ ܩܕܡܝܟ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. * ܗܝܡܢܬ ܘܡܠܠܬ ܘܐܬܡܟܟܬ ܛܒ. * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܒܪܬܝܬܝ
11 12 ܕܟܠ ܒܪܢܫ ܕܓܠ: * ܡܢܐ ܐܦܪܘܥ ܠܡܪܝܐ ܕܟܠܗܘܢ ܦܘܪܥܢܘܗܝ ܥܠܝ. * ܟܣܐ ܕܦܘܪܩܢܐ
13 14 ܐܫܩܘܠ. ܘܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܩܪܐ. * ܘܢܕܪܝ ܠܡܪܝܐ ܐܦܪܘܥ: ܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܗ. * ܝܩܝܪ ܗܘ
15 16 ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܡܘܬܐ ܕܙܕܝܩܘܗܝ: * ܐܘ ܡܪܝܐ ܐܢܐ ܥܒܕܟ. ܥܒܕܟ ܐܢܐ ܘܒܪܗ ܕܐܡܬܟ: ܫܪܝܬ
17 18 ܐܣܘܪܝ. * ܠܟ ܐܕܒܚ ܕܒܚܐ ܕܬܘܕܝܬܐ: ܘܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܩܪܐ. * ܘܢܕܪܝ ܠܡܪܝܐ ܐܦܪܘܥ:
19 ܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܗ. * ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ: ܘܒܓܘܝܟܝ ܐܘܪܫܠܡ.
* ܡܙܡܘܪܐ ܕܝܠܗ * ܠܐ ܡܫܡܗܢܐ. ܡܬܐܡܪ ܥܠ ܓܘܕܐ ܕܚܢܢܝܐ ܟܕ ܢܦܩܘ 1
ܡܢ ܐܬܘܢܐ. ܘܡܬܢܒܝܐ ܥܠ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ ܒܟܪܘܙܘܬܐ ܕܐܘܢܓܠܝܘܢ. ܦܓܥ ܝܘ.
ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܟܠܟܘܢ ܥܡܡܐ: ܫܒܚܘܗܝ ܟܠܟܘܢ ܐܡܘܬܐ. * ܡܛܠ ܕܥܫܢܬ 2
ܥܠܝܢ ܛܝܒܘܬܗ: ܘܫܪܝܪܗ ܕܡܪܝܐ ܗܘ ܠܥܠܡ.

Benedicat Dominus metuentibus eum, parvis cum magnis. Addat vobis Dominꝰ, vobis ac liberis veſtris. Benedicti vos eſtis Domino, ei qui condidit cœlũ ac terrã. Cœli cœli Domini eſt, terram autem dedit hominibus. Non mortui laudabunt Dominum, neque omnes deſcendẽtes in tenebras. Nos autem benedicemꝰ Domino ex nunc et uſq; in ſeculum.

PSAL. CXV.

Anonymus. Progreſſus populi novi venientis ad cultũ Chriſtianũ velut puer ad lectũ. Diciturque, quoad literã, quum Saul atq; moratus eſt ad januam ſpeluncæ qua delitescebat David & viri ejus.

EXoptavi ut audiret Dominus vocem deprecationis meæ, Inclinaretq; aurẽ ad me die quã vocavero eum. Nam circumdederunt me dolores mortis, & angores inferni aſſecuti ſunt me: anguſtiã & inveni, Et nomen Domini invocavi, Ah Domine libera animã meã. Miſericors tu Domine atq; juſtus, & Deus es tu clementiſſimꝰ. Tuetur adoleſcentulos Dominus: humiliavit me, ac liberavit me. Revertere anima mea ad quietẽ tuã, quia Dominus cit tibi; Nam eripuiſti animã meam te, & pedes meos è lapſibus: Ut gratus corã te, Deus, in terra vivorũ. Credidi cutꝰ ſum, mẽque vehementer humiliavi dixi cum tremore meo, Omnis homo eſt: Ecquid ergo referam Domino omnia beneficia ſunt erga me? Calicẽ accipiã, & nomẽ Domini invocabo. vota Domino perſolvã corã univerſo lo. Pretioſa eſt enim in oculis Domini juſtorum ejus. O Domine, ego ſervus ſervus tuus ſum, & filius ancillæ tuæ ſti à me vincula mea. Tibi ſacrificabo ctimas laudis, et nomen Domini invocabo. Votaq; mea Domino exolvam coram lo populo, Et in atrio domũs Domini tra te Jeruſalem.

PSAL. CXVI.

Anonymus. Dicitur de cætu Ana exirent è camino. Item prædicit Gentiũ per annuntiationẽ Evan

LAudate Dñm omnes gentes, omnes populi: Nam invaluit benignitas ejus. Verò Domin

Verſio VULG. LAT.

13 Benedixit omnibus, qui timent Dñm,
14 puſillis cum majoribus. Adjiciat Dñs
ſup vos; ſup vos, & ſup filios veſtros.
15 Benedicti vos à Domino, qui fecit cœ-
16 lum, & terrã. Cœlum cœli Domino:
17 terram autẽ dedit filiis hominum. Non
mortui laudabunt te, Domine: neq; o-
18 mnes, qui deſcendunt in infernũ. Sed
nos qui vivim⁹, benedicim⁹ Domino,
ex hoc nunc & uſque in ſeculum.

Alleluja. CXIV.

1 DIlexi, quoniam exaudiet Dñs vocẽ
2 orationis meæ. Quia inclinavit
aurem ſuam mihi: & in dieb⁹ meis in-
3 vocabo. Circumdederunt me dolores
mortis: & pericula inferni invenerũt
me. Tribulationem & dolorẽ inveni:
4 Et nomen Dñi invocavi. O Domine,
5 libera animã meam: Miſericors Domi-
nus, & juſt⁹, & Deus noſter miſeretur.
6 Cuſtodiens parvulos Dominus: humi-
7 miliatus ſum, & liberavit me. Conver-
tere, anima mea, in requiem tuam: quia
8 Domin⁹ benefecit tibi. Quia eripuit a-
nimã meam de morte, oculos meos à
9 lachrymis, pedes meos à lapſu. Placebo
Domino in regione vivorum.

Alleluja. CXV.

10 CRedidi, propter quod locut⁹ ſum: ego
11 autem humiliat⁹ ſum nimis. Ego
dixi in exceſſu meo, Omnis homo mẽ-
12 dax. Quid retribuam Domino, pro o-
13 mnibus, quæ retribuit mihi? Calicem
ſalutaris accipiam: & nomen Domini
14 invocabo. Vota mea Domino reddam
15 coram omni populo ejus: Pretioſa in
conſpectu Dñi mors Sanctorum ejus.
16 O Domine, quia ego ſerv⁹ tuus: ego
ſervus tuus, & filius ancillæ tuæ. Diri-
17 puiſti vincula mea: Tibi ſacrificabo
hoſtiam laudis, & nomẽ Domini invo-
18 cabo. Vota mea Domino reddam in
19 conſpectu omnis populi ejus; In atriis
domûs Domini, in medio tui Jeruſalẽ.

Alleluja. CXVI.

1 LAudate Dominum omnes gentes:
2 laudate eum omnes populi: Quoniã
confirmata eſt ſuper nos miſericordia
ejus: & veritas Dñi manet in æternũ.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

13 † Εὐλόγησε τοὺς φοβουμένους τὸν κύριον, † τοὺς μικροὺς
14 μετὰ τῶν μεγάλων. † Προσθείη κύριος (ε) ἐφ' ὑμᾶς, † ἐφ'
15 ὑμᾶς καὶ ἐπὶ τοὺς υἱοὺς ὑμῶν. † Εὐλογημένοι ὑμεῖς
16 τῷ κυρίῳ, † τῷ ποιήσαντι τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν. † Ὁ
οὐρανὸς (ζ) τοῦ οὐρανοῦ τῷ κυρίῳ, † τὴν δὲ γῆν ἔδωκε
17 τοῖς υἱοῖς τῶν ἀνθρώπων. † Οὐχ οἱ νεκροὶ αἰνέσουσί
σε κύριε, † οὐδὲ πάντες οἱ καταβαίνοντες εἰς ᾅδου.
18 † Ἀλλ' ἡμεῖς οἱ ζῶντες (η) εὐλογήσομεν τὸν κύριον,
† ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος.

Ἀλληλούϊα. ριδ'.

1 † ΗΓάπησα, ὅτι εἰσακούσεται κύριος τῆς φωνῆς τῆς
2 δεήσεώς μου. † Ὅτι ἔκλινε τὸ οὖς αὐτοῦ ἐμοί,
3 † καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις μου ἐπικαλέσομαι. † Περιέσχον με
ὠδῖνες θανάτου, † κίνδυνοι ᾅδου εὕροσάν με. † Θλῖ-
4 ψιν καὶ ὀδύνην εὗρον, † Καὶ τὸ ὄνομα κυρίου ἐπεκα-
5 λεσάμην, † Ὦ κύριε ῥῦσαι τὴν ψυχήν μου. † Ἐλεή-
μων ὁ κύριος καὶ δίκαιος, † καὶ ὁ θεὸς ἡμῶν ἐλεεῖ.
6 † Φυλάσσων τὰ νήπια ὁ κύριος, † ἐταπεινώθην καὶ
7 ἔσωσέ με. † Ἐπίστρεψον ψυχή μου εἰς τὴν ἀνάπαυσίν
8 σου, † ὅτι κύριος εὐηργέτησέ (α) σε. † Ὅτι (β) ἐξεί-
λετο τὴν ψυχήν μου ἐκ θανάτου, † τοὺς ὀφθαλμούς μου
ἀπὸ δακρύων, † καὶ τοὺς πόδας μου ἀπὸ ὀλισθήματος.
9 † Εὐαρεστήσω ἐνώπιον κυρίου ἐν χώρᾳ ζώντων.

Ἀλληλούϊα. ριε'.

10 † ἘΠίστευσα, διὸ ἐλάλησα, † ἐγὼ δὲ ἐταπεινώ-
11 θην σφόδρα. † (α) Ἐγὼ δὲ εἶπα ἐν τῇ ἐκστάσει
12 μου, Πᾶς ἄνθρωπος ψεύστης. † Τί ἀνταποδώσω τῷ
13 κυρίῳ περὶ πάντων ὧν ἀνταπέδωκέ μοι; † Ποτήρι-
ον σωτηρίου λήψομαι, † καὶ τὸ ὄνομα κυρίου (β) ἐπι-
14 καλέσομαι. Τὰς εὐχάς μου τῷ κυρίῳ ἀποδώσω, ἐν-
15 αντίον παντὸς τοῦ λαοῦ αὐτοῦ. † Τίμιος ἐναντίον κυ-
16 ρίου † ὁ θάνατος τῶν ὁσίων (γ) αὐτοῦ. † Ὦ κύριε ἐγὼ
δοῦλος σός, ἐγὼ δοῦλος σός, καὶ υἱὸς τῆς παιδίσκης
17 σου, † διέρρηξας τοὺς δεσμούς μου. † Σοὶ θύσω θυ-
σίαν αἰνέσεως, † καὶ ἐν ὀνόματι κυρίου ἐπικαλέσο-
18 μαι. † Τὰς εὐχάς μου τῷ κυρίῳ ἀποδώσω, † ἐναν-
19 τίον παντὸς τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, † Ἐν αὐλαῖς οἴκου κυ-
ρίου, † ἐν μέσῳ σου Ἱερουσαλήμ.

Ἀλληλούϊα. ρις'.

1 † ΑΙνεῖτε τὸν κύριον πάντα τὰ ἔθνη, † (α) ἐπαι-
2 νέσατε αὐτὸν πάντες οἱ λαοί. † Ὅτι ἐκραται-
ώθη (β) τὸ ἔλεος αὐτοῦ ἐφ' ἡμᾶς, † καὶ ἡ ἀλήθεια
τοῦ κυρίου μένει εἰς τὸν αἰῶνα.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

22 Benedixit eos, qui timent Domi- 13
num: puſillos cum magnis. 23 Adji- 14
ciat Domin⁹ ſuper vos: ſuper vos, et
ſuper filios veſtros. 24 Benedicti vos 15
(l) Domino, qui fecit cœlũ, et terrã.
25 Cœlum cœli Domino: terrã autem 16
dedit filiis hominum. 26 [m] Non 17
mortui laudabunt te, Domine: neq; o-
mnes qui deſcendunt in [n] infernũ.
27 Sed nos, qui vivimus, benedi- 18
cemus Dominum, ex hoc nunc &
uſque in ſeculum.

Alleluja. CXIV.

DIlexi; quoniam exaudiet Do- 1
minus vocẽ deprecationis meæ.
2 Quia inclinavit aurẽ ſuã mihi: et 2
in dieb⁹ meis [a] invocabo. 3 Circum 3
dederunt me dolores mortis: pericula
inferni invenerunt me. 4 [b] Tribula-
tionem & dolorem inveni: Et nomen 4
Domini invocavi. 5 O (a) Domine, e-
rue animam meam: Miſericors Domi- 5
nus, & juſtus: & Deus noſter [c] mi-
ſeretur. 6 Cuſtodiens parvulos Do- 6
minus: (b) humiliatus ſum, & ſalvũ
me fecit. 7 Convertere, anima mea, in 7
requiem tuam: quia Dominus benefe-
cit tibi. 8 Quoniam exemit animam 8
meã de morte, oculos meos à lachry-
mis, & pedes meos à lapſu. 9 [d] Pla- 9
cebo in (c) conſpectu Domini, in re-
gione vivorum.

Alleluja. CXV.

CRedidi, (a) propter quod locutus 10
ſum: ego autem (b) humiliatus
ſum nimis. 2 Ego (c) autem dixi [a] 11
in ecſtaſi mea, Omnis homo mendax.
3 Quid retribuam Domino, pro omni- 12
bus quæ retribuit mihi? 4 Calicem [b] 13
ſalutaris accipiam: & nomen Domini
invocabo. 5 (d) Vota mea Domino 14
reddã coram omni populo ejus: Pre- 15
tioſa in conſpectu Domini mors San-
ctorum ejus. 6 O Domine, ego ſerv⁹ 16
tuus: ego ſervus tuus, & filius ancil-
læ tuæ. 7 Dirupiſti vincula mea: Tibi 17
ſacrificabo ſacrificium [c] laudis: &
in nomine Domini invocabo. 8 Vota 18
mea Domino reddam in conſpectu o-
mnis [d] populi ejus: In atriis domûs 19
Domini, in medio tuî Hieruſalem.

Alleluja. CXVI.

LAudate Dominum [a] omnes gen- 1
tes: laudate eum omnes populi.
2 Quoniam confirmata eſt ſuper nos 2
miſericordia ejus: & veritas Domini
manet in æternum.

Verſio ÆTHIOPICA.

ብርክሙ፡ለኵሎሙ፡ለእለ፡ይፈርህዎ፡ለእግ 22
ዚአብሔር፡፡ለንኡሶሙ፡ ወለዐቢዮሙ፡፡፨
ይዌስክ፡እግዚአብሔር፡ላዕሌክሙ፡፡ላዕሌክ 23
ሙ፡ወላዕለ፡ ውሉድክሙ፡፡፨ ቡሩካን፡አ 24
ንትሙ፡ለእግዚአብሔር፡፡ዘገብረ፡ ሰማየ፡ወ
ምድረ፡፡፨ ሰማይ ፡ ሰማያት ፡ ለእግዚአብ 25
ሔር፡፡ወምድርሰ፡ ወሀበ፡ ለእጓለ፡ እምሕያ
ው፡፡፨ ዘአኮ፡ ምዉታን ፡ ይሴብሑከ፡ እ 26
ግዚኦ፡፡ወኢኵሎሙ፡እለ፡ይወርዱ፡ ውስተ፡
ሲኦል፡፡፨ ንሕነ፡ሕያዋን፡ንባርኮ፡ለእግዚአ 27
ብሔር፡፡እምይእዜ፡ወእስከ፡ለዓለም፡፡፨

ሃሌሉያ፡፡

፻፲፬ አፍቀርኩ፡እስመ ፡ ሰምዓኒ፡ እግዚአብ 1
ሔር፡ቃለ፡ስእለትየ፡፡፨ ወአጽምአ፡ እዝ 2
ኖ፡ ኀቤየ፡፡ወጸዋዕክዎ፡ በመዋዕልየ፡፡፨ አ 3
ኀዘኒ ፡ ፃዕረ፡ሞት፡፡ወረከበኒ፡ ሕማም ፡ ሲኦ
ል፡፡፨ ሕማመ፡ ወምንደቤ፡ ረከብኩ፡፡ወጸዋ 4
ዕኩ፡ ስመ፡ እግዚአብሔር፡፡፨ እግዚኦ፡በ 5
ልሖ፡ ለነፍስየ፡፡መሓሪ፡ እግዚአብሔር፡ወጻ
ድቅ፡፡ወአምላክነኒ፡ መስተሣህል፡፡፨ የዐ 6
ቅብ፡ ሕፃናተ፡ እግዚአብሔር፡፡ተመንደብኩ
ኒ፡ወአድኀነኒ፡፡፨ ግብኢ፡ ነፍስየ፡ ውስተ፡ 7
ዕረፍትኪ፡፡ እስመ ፡ እግዚአብሔር ፡ ረደኣ
ኪ፡፡፨ እስመ፡አድኀና፡ ለነፍስየ፡ እሞት፡፡ 8
ወለአዕይንትየኒ፡ እምአንብዕ፡፡ወለእገሪየኒ፡
እምደሊፅ፡፡፨ ከመ፡ እሥምሮ፡ ለእግዚአ 9
ብሔር፡በብሔረ፡ሕያዋን፡፡፨

ሃሌሉያ፡፡

፻፲፭ አመንኩ ፡ በዘ፡ ነበብኩ፡፡ወአንሰ፡ ብዙ 1
ኀ፡ሕመምኩ፡፡፨ ወአንሰ፡ እቤ፡ እመግዐዝ 2
የ፡ኵሉ፡ሰብእ፡ሐሳዊ፡ ውእቱ፡፡፨ ምንተ 3
ኑ፡አዐስዮ፡ለእግዚአብሔር፡በእንተ፡ኵሉ፡
ዘገብረ፡ሊተ፡፡፨ ጽዋዐ፡ ሕይወት፡ እትሜ 4
ጦ፡፡ወሰመ፡ እግዚአብሔር ፡ እጼውዕ፡፡፨
ክቡር፡ ሞቱ፡ ለጻድቅ፡ በቅድመ፡ እግዚአብ 5
ሔር ፡፡፨ እግዚኦ፡አነ፡ ገብርከ፡፡ገብርከ፡ 6
ወልደ፡ አመትከ፡፡፨ ወሰበርከ፡ መዋቅሕት 7
የ ፡፡ ለከ ፡ እሠውዕ ፡ መሥዋዕተ ፡ ስብሐ
ት፡፡፨ ወእሁብ፡ብፅአትየ፡ለእግዚአብሔ 8
ር፡፡በቅድመ ፡ ኵሉ ፡ ሕዝብ፡፡በዐጸደ ፡ ቤ
ት፡ እግዚአብሔር፡፡ ወበማእከሊኪ ፡ ኢየሩ
ሳሌም፡፡፨ ሃሌሉያ፡፡

፻፲፮ ሰብሕዎ ፡ ለእግዚአብሔር ፡ ኵልክ 1
ሙ፡ አሕዛብ፡፡ ወይሴብሕዎ፡ ኵሎሙ፡ ሕ
ዝብ፡፡፨ እስመ፡ጸንዓት፡ ምሕረቱ፡ ላዕሌ 2
ነ፡፡ ወጽድቁሰ፡ ለእግዚአብሔር፡ ይሄሉ፡ ለ
ዓለም፡፡፨

Ψαλ. ριγ'. MS. A. (ε) ἐφ' * ἡμᾶς, (ζ) * τῷ οὐρανῷ (η) εὐλογήσωμεν Ψαλ. ριδ'. MS. A. (α) με. (β) ἐξείλατο Ψαλ. ριε'. MS. A. (α) Ἐγὼ εἶπα (β) ἐπικαλέσομαι. Τίμιος (γ) αὐτοῦ Ψαλ. ρις'. MS. A. (α) ἐπαινέσατε αὐτὸν (β) ἐφ' ἡμᾶς τὸ ἔλαιος αὐτοῦ,

INTERP. ÆTHIOP. [m] Eo quod non mortui [n] infernum. Nos PSAL. CXIV. [a] invocabo eum. Apprehendit me dolor [b] Tribulatio & dolor invenit me: [c] miſerator. [d] Ut placeam in PSAL. CXV. [a] de mea indole [b] vitæ circumferam: & nomen Domini invocabo. Pretioſa in [c] laudis: Vota [d] populi: In atriis PSAL. CXVI. [a] vos omnes gentes: &

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 14 * بارك اتقياء الرب الصغار والكبار * يزيد الرب فينا وفي اولادنا * نحن مباركون من الرب الذي
15 16 خلق السماء والارض * سماء السماء للرب والارض اعطاها لبني البشر * ليس الموتى يباركونك يا
17 18 رب ولا كل الهابطين الى الجحيم * لكن نحن الاحياء الذين نباركك يا رب منذ الان والى الابد
1 الليلويا * المزمور المايه واربعه عشر * مرسوم الليلويا * وهو يو * استيخن *
2 3 احببت ان يسمع الرب صوت تضرعي * لانه اصغى الي بسمعه وفي ايامي دعوته * لان غمرات
4 الموت احاطت بي * وشدايد الجحيم اصابتني * وجدت ضيقا وحزنا * فدعوت اسم الرب * يا رب
5 6 خلص نفسي * الرب هو رووف وهو بار والاهنا يرحم * الذي يحفظ الاطفال هو الرب * اتضعت
7 8 فخلصني * ارجعي يا نفسي الى موضع راحتك * لان الرب قد احسن الي * وخلص نفسي من
9 الموت * وعيني من الدموع * ورجلي من الزلل * ارضي الله امامه في كورة الاحياء * الليلويا *
10 * المزمور المايه وخمسه عشر * الليلويا * وهو يب * استيخن * امنت لاجل *
11 12 هذا تكلمت * وانا تواضعت جدا * ان قلت في تحيري ان كل الناس كذابون * ماذا اعطي
13 14 الرب مكافاة * لاجل كل شي اعطاني * اخذ كاس الخلاص * وادعو اسم الرب * اوفي الرب نذوري
15 16 قدام جميع شعبه * كريم امام الرب موت قديسيه * يا رب انا عبدك * انا عبدك وابن امتك
17 18 قطعت وثاقي * اذبح لك ذبيحة التسبيح * وادعو اسم الرب * اوفي الرب نذوري * قدام جميع
شعبه * في ديار بيت الرب في وسط يروسليم * الليلويا * المزمور المايه وسته عشر
1 * الليلويا * وهو د * استيخانات * سبحوا الرب يا جميع الامم * وليباركه جميع
2 الشعوب * فان رحمته سابغة علينا * وحق الرب يدوم الى الابد والى ابد الابد * الليلويا *

Benedixit timentibus Dominum, minoribus 13
ac majoribus. Accreſcat Dominus nos et fi- 14
lios noſtros. Nos benedicti ſumus à Do- 15
mino qui creavit cœlum et terram. Cœlum 16
cœli Domino, terram autem dedit filiis ho-
minum. Non mortui benedicent te, O Do- 17
mine, neque omnes deſcendentes in infer-
num. Sed nos vivi, ſumus qui benedicimus 18
tibi, O Domine, ex nunc & uſque in ſecu-
lum. Alleluja.

PSAL. CXIV.

Titulus, Alleluja. Verſ. 16.

OPtavi ut audiret Dominus vocem de- 1
precationis meæ: Quoniam intendit ad 2
me auditum ſuum, et in diebus meis invoca-
vi eum. Quoniam aſperitates mortis cir- 3
cundederunt me, & tribulationes inferni
contigerunt mihi: inveni anguſtiam & mœ-
rorem. Quapropter invocavi nomen Do- 4
mini: O Domine, libera animam meam. Do- 5
minus eſt clemens et eſt juſtus, et Deus noſter
miſeretur. Qui cuſtodit parvulos, eſt Do- 6
minus: humiliatus ſum, & liberavit me.
Revertere, O anima mea, ad locum requiei 7
tuæ: quia Dominus jam benefecit mihi,
Et ſalvavit animam meam à morte, & o- 8
culos meos à lachrymis, & pedes meos à
lapſu. Placebo Domino coram ipſo, in re- 9
gione vivorum. Alleluja.

PSAL. CXV.

Alleluja. Verſ. 12.

CRedidi, propterea locutus ſum, & ego 10
humiliatus ſum valdè. Quandoqui- 11
dem dixi in ſtupore meo, omnes homines
eſſe mendaces, Quid dabo Domino in re- 12
tributionem pro omni re quam dedit mihi?
Accipiam calicẽ ſalutis, et invocabo nomen 13
Domini. Perſolvam Domino vota mea co- 14
ram toto ipſius populo. Pretioſa eſt ante 15
Dominum mors ſanctorum ejus. O Domine, 16
ego ſervus tuus ſum, ego ſervus tuus, et fi-
lius ancillæ tuæ: ſcidiſti ligamina mea. Sa- 17
crificabo tibi ſacrificium laudis, et invocabo
nomen Domini. Solvam Domino vota mea 18
coram univerſo ejus populo, in atriis domûs
Domini, in medio Jeroſolymæ. Alleluja.

PSAL. CXVI.

Alleluja. Verſ. 4.

LAudate Dominum, O omnes gentes, & 1
benedicant eum omnes populi: Quoni- 2
am miſericordia ejus ampla eſt ſuper nos, et
veritas Domini perſeverat in æternum, &
in ſeculum ſeculi. Alleluja.

תהלים : קיח

PSAL. CXVIII. קיח

Dicat.ejus miſericordia ſeculum in quoniam : bonus quoniam Domino Confitemini
1 2 הודו ליהוה כי־טוב כי לעולם חסדו: יאמר
: Aharon *domus* nunc Dicant .ejus miſericordia ſeculum in quoniam :Iſrael nunc
3 נא ישראל כי לעולם חסדו: יאמרו־נא בית־אהרן
quoniam:Dominum *timentes* nunc Dicant .ejus miſericordia ſeculum in quoniam
4 כי לעולם חסדו: יאמרו־נא יראי יהוה כי
latitudine in me exaudivit :*Jah* invocavi anguſtia De .ejus miſericordia ſeculum in
5 לעולם חסדו: מן־המצר קראתי יה ענני במרחב
mihi Dominus .homo mihi faciat quid : timebo non ,*mihi* Dominus .*Jah*
6 7 יה: יהוה לי לא אירא מה־יעשה לי אדם: יהוה לי
fidere Melius .me habentibus odio *in* videbo ego & :meos auxiliatores inter
8 בעזרי ואני אראה בשנאי: טוב לחסות
ſperare quàm : Domino in *confidere* Melius .homine in ſperare quàm : Domino in
9 ביהוה מבטח באדם: טוב לחסות ביהוה מבטח
quoniam , Domini nomine in:me circundederunt gentes Omnes .*munificis* in
10 בנדיבים: כל־גוים סבבוני בשם יהוה כי
quoniam , Domini nomine in:me circundederunt etiam,me Circundederũt .eas ſuccidã
11 אמילם: סבוני גם־סבבוני בשם יהוה כי
: ſpinarum ignis ſicut ſunt extinctæ , apes ſicut me Circundederunt .eas ſuccidam
12 אמילם: סבוני כדבורים דעכו כאש קוצים
: *cadendum ad* me impuliſti Impellendo .eas ſuccidam quoniam ,Domini nomine in
13 בשם יהוה כי אמילם: דחה דחיתני לנפל
.ſalutem in mihi fuit & : *Jah* *cantio* & , mea Fortitudo .me adjuvit Dominus &
14 ויהוה עזרני: עזי וזמרת יה ויהי־לי לישועה:
.fortitudinem *faciens* Domini dextera : juſtorum *tentoriis* in ſalutis & , *præconii* Vox
15 קול רנה וישועה באהלי צדיקים ימין יהוה עשה חיל:
ſed , moriar Non .fortitudinem *faciens* Domini dextera:excelſa Domini Dextera
16 17 ימין יהוה רוממה ימין יהוה עשה חיל: לא־אמות כי־
non morti & : *Jah* me corripuit Corripiendo .*Jah* opera narrabo & : vivam
18 אחיה ואספר מעשי יה: יסר יסרני יה ולמות לא
Hæc .*Jah* confitebor , eas *in* ingrediar :juſtitiæ portas mihi Aperite .me tradidit
19 20 נתנני: פתחו־לי שערי־צדק אבא־בם אודה יה: זה־
:me exaudiſti quoniam,tibi Confitebor.eam per intrabunt juſti : Domini porta
21 השער ליהוה צדיקים יבאו בו: אודך כי עניתני
caput *in* fuit ; ædificantes reprobaverunt *Lapidem* .ſalutem in mihi fuiſti &
22 ותהי־לי לישועה: אבן מאסו הבונים היתה לראש
Hæc .noſtris oculis in mirabile *ipſum* : iſtud fuit Domino A .anguli
23 24 פנה: מאת יהוה היתה זאת היא נפלאת בעינינו: זה־
Domine Obſecro .ea in lætemur & , exultemus : Dominus fecit dies
25 היום עשה יהוה נגילה ונשמחה בו: אנא יהוה
veniens Benedictus .nunc fac proſperare , Domine obſecro : nunc ſalvifica
26 הושיעה נא אנא יהוה הצליחה נא: ברוך הבא
.Domini domo de vobis benediximus : Domini nomine in
בשם יהוה ברכנוכם מבית יהוה:

תרגום TARGUM.

קיח

1 שבחו קדם יי ארום טב ארום לעלם
2 טוביה: יימרון כדון ישראל ארום לעלם
3 טוביה: יימרון כדון בית אהרן ארום לעלם
4 טוביה: יימרון כדון דחליא דיי ארום לעלם
5 טוביה: מן עקתא קריתי יה קבל צלותי
6 בפתיא יה: מימרא דיי בסעדי לא ארחל
7 מה יעבד לי בר נש: מימרא דיי למסעדא יתי
8 ואנא אחמי פורענותא בסנאי: טב למתרחצא
9 במימרא דיי מן למרחץ בבר נש: טב
למתרחצא במימרא דיי מן למרחץ ברברביא:
10 כל עממיא חזרו יתי בשום מימרא דיי רחצית
11 ארום אתשנון: אקיפון לי אף חזרו יתי בשום
12 מימרא דיי רחצית ארום אתשנון: אקיפון
לי היך זבוריתא דלקין היך אשתא בכובין
בשום מימרא דיי רחצית ארום אתשנון:
13 מדחי דחית יתי למנפל ומימרא דיי סיעני:
14 תוקפי ותושבחתי דחיל על כל עלמא יי
15 אמר במימריה והוה לי לפריק: קל תושבחתא
ופורקנא במשכנהון דצדיקי ימינא דיי עבדת
16 חילא: ימינא דיי מרממא ימינא דיי עבדת
17 חילא: לא אמות ארום אחי ואשתעי עובדי
18 אלהא: מכסנא אכסנני יה ולמותא לא מסר
19 יתי: פתחו לי מעלני קרתא דצדקא אעול
20 בהון אשבח יה: דין מעלנא דבית מקדשא
21 דיי צדיקיא יעלון ביה: אהודי קדמך ארום
22 קבלתא צלותי והוית לי לפריק: טליא
שביקו ארדיכליא הוה ביני בניא דישי וזכאה
23 לאתמנאה למליך ושולטן: מן קדם יי הות
דא אמרו ארדכליא היא פרישא קדמנא
24 אמרו בנוי דישי: דין יומא עבד יי אמרו
ארדיכליא נדוץ ונחדי ביה אמרו בנוי דישי:
25 בבעו מנך יי כדון אמרו ארדכליא בבעו מנך יי
26 אצלח כדון אמרו ישי ואנתתיה: בריך דאתי
בשום מימרא דיי אמרו ארדכלי יברכון יתכון
מן בית מקדשא דיי אמר דוד:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

PSAL. CXVIII.

LAudate Dominum, quoniam bonus, quoniam in æternum benignitas ejus. Dicant nunc Iſrael, quoniam in æternum benignitas ejus. Dicant nunc domus Aharon, quoniam in æternum benignitas ejus. Dicant nunc qui timent Dominum, quoniam in æternum benignitas ejus. De anguſtia invocavi Deum, exaudivit orationem meam in latitudine Deus. Verbum Domini in adjutorium meum: non timebo quid mihi faciat homo. Verbum Domini ad adjuvandum me, & ego videbo ultionem in oſores meos. Melius eſt confidere in Verbo Domini, quam confidere in homine. Melius eſt confidere in Verbo Domini, quam confidere in principibus. Omnes populi circundederint me: in nomine Verbi Domini *confiſus ſum*, propterea abſcindam eos. Circundederint me, etiam circuierint me: in nomine Verbi Domini confiſus ſum, ideò abſcindam eos. Circundederint me ſicut apes, arſerint ſicut ignis in ſpinis: in nomine Verbi Domini confiſus ſum, ideò abſcindam eos. Impulſione *impuliſti* me ut caderem: ſed Verbum Domini adjuvit me. Fortitudo mea & laus mea, qui timendus eſt ſuper *omnem mundum* Dominus; dixit in verbo ſuo, & fuit mihi redemptor. Vox laudis & redemptionis in tabernaculis juſtorum: dextera Domini edidit virtutem. Dextera Domini exaltata; dextera Domini edidit virtutem. Non moriar, ſed vivam, & narrabo opera Domini. Corripendo corripuit me Dominus, & morti non tradidit me. Aperite mihi portas *urbis* juſtitiæ, ingrediar illas, & laudabo Deum. Hæc eſt porta domus ſanctuarii Domini, juſti intrabunt in eam. Confitebor coram te, quoniam accepiſti orationem meam, & factus es mihi redemptor. Puerum deſpexerunt ædificatores, qui ſuit inter filios Iſſai & meruit conſtitui rex & dominator. A conſpectu Domini hoc extitit, *dixerunt ædificatores*: hoc mirabile eſt in conſpectu noſtro, *dixerunt filii Iſſai.* Hanc diem fecit Dominus, *dixerunt ædificatores*: exultemus & lætemur in ea, *dixerunt filii Iſſai. Obſecramus* te Dñe [*confer ſalutem*] *nunc, dixerunt ædificatores*: *obſecramus* te Domine proſperare nunc, *dixerunt Iſſai & uxor ejus*. Benedictus qui venit in nomine Verbi Domini, *dixerunt ædificatores*: *benedicant* vobis de domo ſanctuarii Domini, *dixit David*.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܝܚ *

[illegible]

2 [illegible]
3 4 [illegible]
5 6 [illegible]
7 8 [illegible]
9 [illegible]
10 11 [illegible]
12 [illegible]
13 14 [illegible]
15 [illegible]
16 [illegible]
17 18 [illegible]
19 20 [illegible]
21 22 [illegible]
23 24 [illegible]
25 [illegible]
26 [illegible]

PSAL. CXVII.

Anonymus. Dicitur ad literam de Aſaph memoratore, & de Sacerdotibus miniſtrantibus Domino. Item vaticinatur de agonis triumphatoribus, & de Chriſto. Verſ. 64.

COnfitemini Domino quoniam bonus eſt, & in æternum miſerationes ejus. Dicat Iſrael, In æternum miſerationes ejus. Dicant qui ſunt de domo Aharonis, In æternum miſerationes ejus. Dicant metuentes Dominum, In æternum miſerationes ejus. Ab anguſtia vocavi Dominum, & reſpondit mihi Dominus cum relaxatione, Dominus adjutor meus eſt, non timebo. Quid faciat in me homo? Dominus auxiliator meus eſt, & ego ſpectabo in hoſtibus meis. Bonum eſt fidere Domino, melius quàm fidere homini. Bonum eſt fidere Dño, melius quàm fidere principi. Omnes gentes obſederunt me, & per nomen Domini exterminavi eas: Cinxerunt me atque circundederunt, & per nomen Dñi abſumpſi eas. Obſederunt me ſicut apes, & extinctæ ſunt velut ignis palearum, & per nomen Dñi confeci eas. Impulſus fui ut everterer & corruerem, at Dominus adjuvat me. Robur meum & gloria mea Dñs eſt, & ipſe factus eſt mihi Salvator: Vox gloriæ & ſalutis in tabernaculo juſtorum. Dextera Domini geſſit fortitudinem, Dextera Dñi extulit me, dextera Dñi præſtitit fortitudinem, Ut non morerer: ſed viverem & narrarem opera Domini. Caſtigando quidē caſtigavit me Dominus, at morti non tradidit me. Aperuit mihi portas juſtitiæ, ut ingrederer per eas, & confiterer Domino; Hæc eſt porta Domini, per quam juſti ingrediũtur. Gratias tibi agã quòd me exaudieris, & fueris mihi Salvator. Lapis quem aſpernati ſunt ædificatores, ipſe factus eſt in caput ædificii. A Domino factum eſt id, eſtque prodigiũ in oculis noſtris Hæc eſt dies quam fecit Dominus venite, exultemus & lætemur in ea. O Domine ſerva me, ô Domine libera me. Benedictus ſit qui veniet in nomine Domini, benediximus vobis de domo Domini.

Verſio VULG. LAT.

Alleluja. CXVII.

1 COnfitemini Domino, quoniã bo-
nus : quoniam in ſeculum miſeri-
2 cordia ej⁹. Dicat nunc Iſrael, quoniam
bon⁹: quoniam in ſeculum miſericor-
3 dia ej⁹. Dicat nunc dom⁹ Aaron: quo-
niam in ſeculum miſericordia ej⁹. Di-
4 cant nunc qui timent Dominum: quo-
niam in ſeculum miſericordia ejus. De
5 tribulatione invocavi Dominum : &
exaudivit me in latitudine Dominus.
6 Dñs mihi adjutor : non timebo quid
7 faciat mihi homo. Dominus mihi adju-
tor: & ego deſpiciam inimicos meos.
8 Bonum eſt confidere in Domino, quã
9 confidere in homine: Bonũ eſt ſperare
in Domino, quàm ſperare in princi-
10 pibus. Omnes gentes circuierunt me:
& in nomine Domini quia ultus ſum
11 in eos. Circumdantes circumdederunt
me: et in nomine Domini quia ult⁹ ſũ
12 in eos. Circumdederunt me ſicut apes,
& exarſerunt ſicut ignis in ſpinis : &
in nomine Domini quia ultus ſum in
13 eos. Impulſus everſus ſum ut caderem:
14 & Dominus ſuſcepit me. Fortitudo
mea, & laus mea Dominus: & fact⁹ eſt
15 mihi in ſalutẽ. Vox exultationis & ſa-
16 lutis, in tabernaculis juſtorum. Dexte-
ra Domini fecit virtutem: dextera Do-
mini exaltavit me , dextera Domini
17 fecit virtutem Non moriar, ſed vivam:
18 & narrabo opera Domini. Caſtigans
caſtigavit me Dominus: & morti non
19 tradidit me. Aperite mihi portas juſti-
tiæ, ingreſſus in eas confitebor Do-
20 mino: Hæc porta Domini, juſti intra-
21 bunt in eam. Confitebor tibi, quoniam
exaudiſti me: & factus es mihi in ſalu-
22 tem. Lapidem, quem reprobaverunt æ-
dificantes, hic fact⁹ eſt in caput anguli.
23 A Domino factum eſt iſtud: & eſt mi-
24 rabile in oculis noſtris. Hæc eſt dies,
quam fecit Dominus: exultemus, & læ-
25 temur in ea. O Domine, ſalvũ me fac,
26 ô Domine, benè proſperare : Benedi-
ctus qui venit in nomine Domini.
Benediximus vobis de domo Domini:

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Ἀλληλούϊα. ριζʹ.

1 † Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ, ὅτι ἀγαθὸς, † ὅτι
2 εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. † Εἰπάτω δὴ
οἶκος Ἰσραὴλ, ὅτι ἀγαθὸς, † ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα
3 τὸ ἔλεος αὐτοῦ. † Εἰπάτω δὴ οἶκος Ἀαρὼν, ὅτι
4 ἀγαθὸς, † ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. † Εἰ-
πάτωσαν δὴ πάντες οἱ φοβούμενοι τὸν (α) κύριον, ὅ-
5 τι ἀγαθὸς, † ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. † Ἐκ
θλίψεως ἐπεκαλεσάμην τὸν κύριον, † καὶ ἐπήκουσέ μου
6 εἰς πλατυσμόν. † Κύριος ἐμοὶ βοηθὸς, καὶ οὐ φοβη-
7 θήσομαι τί ποιήσει μοι ἄνθρωπος. † Κύριος ἐμοὶ
8 βοηθὸς, (β) κἀγὼ ἐπόψομαι τοὺς ἐχθρούς μου. † Ἀ-
γαθὸν πεποιθέναι ἐπὶ κύριον, † ἢ πεποιθέναι ἐπ' ἄν-
9 θρωπον. † Ἀγαθὸν ἐλπίζειν ἐπὶ κύριον, † ἢ ἐλπί-
10 ζειν (γ) ἐπ' ἄρχουσι. † Πάντα τὰ ἔθνη ἐκύκλω-
σάν με, † καὶ τῷ ὀνόματι κυρίου ἠμυνάμην αὐτούς.
11 † Κυκλώσαντες ἐκύκλωσάν με, † καὶ τῷ ὀνόματι
12 κυρίου ἠμυνάμην αὐτούς. † Ἐκύκλωσάν με ὡσεὶ
μέλισσαι κηρίον, † καὶ ἐξεκαύθησαν (δ) ὡς πῦρ ἐν ἀ-
κάνθαις, † καὶ τῷ ὀνόματι κυρίου ἠμυνάμην αὐτούς.
13 † Ὠσθεὶς ἀνετράπην τοῦ πεσεῖν, † καὶ ὁ κύριος ἀν-
14 τελάβετό μου. † Ἰσχύς μου καὶ ὕμνησίς μου ὁ κύριος,
15 † καὶ ἐγένετό μοι εἰς σωτηρίαν. † Φωνὴ ἀγαλλιάσεως
16 καὶ σωτηρίας † ἐν σκηναῖς δικαίων. † Δεξιὰ κυρίου
ἐποίησε δύναμιν, † δεξιὰ κυρίου ὕψωσέ με· † δεξιὰ
17 κυρίου ἐποίησε δύναμιν. † Οὐκ ἀποθανοῦμαι, ἀλλὰ
18 ζήσομαι, † καὶ (ε) διηγήσομαι τὰ ἔργα κυρίου. † Παι-
δεύων ἐπαίδευσέ με ὁ κύριος, † καὶ τῷ θανάτῳ οὐ
19 παρέδωκέ με. † Ἀνοίξατέ μοι πύλας δικαιοσύνης,
† εἰσελθὼν ἐν αὐταῖς ἐξομολογήσομαι τῷ κυρίῳ.
20 † Αὕτη ἡ πύλη τοῦ κυρίου, δίκαιοι εἰσελεύσονται ἐν
21 αὐτῇ. † Ἐξομολογήσομαί σοι ὅτι ἐπήκουσάς μου,
22 καὶ ἐγένου μοι εἰς σωτηρίαν. † Λίθον ὃν ἀπεδοκί-
μασαν οἱ οἰκοδομοῦντες, † οὗτος ἐγενήθη εἰς κεφαλὴν
23 γωνίας. † Παρὰ κυρίου ἐγένετο αὕτη, † καὶ ἔστι θαυμα-
24 στὴ ἐν ὀφθαλμοῖς ἡμῶν. † Αὕτη ἡ ἡμέρα ἣν ἐποίη-
σεν ὁ κύριος, † ἀγαλλιασώμεθα καὶ εὐφρανθῶμεν ἐν
25 αὐτῇ. † Ὦ κύριε σῶσον δὴ, † ὦ κύριε εὐόδωσον
26 δή. † Εὐλογημένος ὁ ἐρχόμενος ἐν ὀνόματι κυ-
ρίου· † εὐλογήκαμεν ὑμᾶς ἐξ οἴκου κυρίου.

MS.A. (α) κύριον, ὅτι εἰς αἰῶνα (β) καὶ ἐγὼ (γ) ἐπ' ἄρχοντας. (δ) ὡσεὶ πῦρ (ε) ἐκδιηγήσομαι

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Alleluja. CXVII.

1 COnfitemini Domino, quoniam 1
bonus: quoniã in ſeculum mi-
ſericordia ejus. 2 Dicat nunc domus 2
Iſrael, (a) quoniam bonus : quoniam
in ſeculum miſericordia ejus. 3 Dicat 3
nunc domus Aaron, quoniam bonus :
quoniam in ſeculum miſericordia e-
jus. 4 Dicant nunc [a] omnes, qui ti- 4
ment Dominum, quoniam bonus: quo-
niam in ſeculum miſericordia ejus.
5 [b] De tribulatione invocavi Do- 5
minum: & exaudivit me [c] in lati-
tudinem. 6 [d] Dominus mihi adju- 6
tor : & non timebo, quid faciet mihi
homo. 7 Dominus mihi adjutor, & ego 7
deſpiciam inimicos meos. 8 Bonum eſt 8
confidere in Domino, quàm confidere
in homine. 9 Bonum eſt ſperare in Do- 9
mino, quàm ſperare in principibus.
10 Omnes gentes circumdederunt 10
me: & (b) nomine Domini [e] ultus
ſum eos. 11 (c) Circumdantes circum- 11
dederunt me, & nomine Domini [f]
ultus ſum eos. 12 Circumdederunt me, 12
ſicut apes (d) favum: & (e) exarſe-
runt, ſicut ignis in ſpinis : & nomine
Domini [g] ultus ſum eos. 13 (f) Im- 13
pulſus, everſus ſum, ut caderem : et
Dominus ſuſcepit me. 14 Fortitudo 14
mea, & [h] laudatio mea Dominus :
& factus eſt [i] mihi in ſalutem.
15 Vox exultationis, & ſalutis in [k] 15
tabernaculis juſtorum. 16 Dextera 16
Domini fecit virtutem: dextera Do-
mini exaltavit me : dextera Domini
fecit virtutem. 17 Non moriar, [l] 17
ſed vivam : & enarrabo opera Do-
mini. 18 (g) Caſtigans caſtigavit me 18
Dominus : [m] & morti non tradi-
dit me. 19 Aperite mihi portas juſti- 19
tiæ, ingreſſus in eas confitebor Domi-
no. (h) Hæc porta Domini, juſti in- 20
trabunt in eã. 20 Confitebor tibi [n], 21
quoniam exaudiſti me : & factus
es mihi in ſalutem. 21 Lapidem, 22
quem reprobaverunt ædificantes, hic
factus eſt in (i) caput anguli. 22 A 23
Domino (k) facta eſt hæc: & eſt mi-
rabilis in oculis noſtris. 23 Hæc eſt 24
dies, quam fecit Domin⁹ : exultemus,
& lætemur in ea. 24 O Domine, ſal- 25
va (l) nunc : O Domine, benè (m)
proſperare nunc : Benedictus, qui 26
venit in nomine Domini : 25 bene-
diximus vos de domo Domini.

Verſio ÆTHIOPICA.

ሃሌሉያ ::
የገኒ ግነዩ: ለእግዚአብሔር: እስመ:ኄር:: 1
እስመ:ለዓለም:ምሕረቱ::=: ንግሩ:ቤተ: 2
እስራኤል:ከመ:ኄር::ከመ: ለዓለም: ምሕ
ረቱ::=: ንግሩ:ቤተ: አሮን: ከመ:ኄር::ከ 3
መ:ለዓለም: ምሕረቱ::=: ንግሩ: ኵልክ 4
ሙ:እለ:ተፈርህዎ: ለእግዚአብሔር: ከመ:
ኄር::ከመ:ለዓለም:ምሕረቱ::=: ሶበ:ተ 5
መንደብኩ: ጸዋዕክዎ: ለእግዚአብሔር:: ወ
ሰምዐኒ:ወአርሐበ:ሊተ::=: ወእግዚአብሔ 6
ር:ይረድአኒ:ኢይፈርህ:እጓለ: እመሕያው:
መኑ:ይሬስየኒ::=: እግዚአብሔር:ይረድ 7
አኒ:ወአነ: እሬእዮሙ: ለጸላእትየ::=: ይ 8
ኄይስ: ተአምኖ: በእግዚአብሔር: እምተአ
ምኖ:በእጓለ: እመሕያው::=: ይኄይስ:ተ 9
ሰፈዎ: በእግዚአብሔር: እምተሰፈዎ:በመ
ላእክት::=: ኵሎሙ : አሕዛብ : ዖዱኒ 10
ኒ :: ወበስመ : እግዚአብሔር : ሞእክዎ
ሙ::=: ዐጊተሰ : ዐገቱኒ::ወበስመ: እግዚ 11
አብሔር: ሞእክዎሙ::=: ዐገቱኒ:ከመ:ን 12
ህብ : መዓረ::ወነደዱ: ከመ: እሳት: ውስተ:
አስዋክ::ወበስመ: እግዚአብሔር : ሞእክዎ
ሙ::=: ተንተንኩ:ለወዲቅ:ወእግዚአብሔ 13
ር: አንሥአኒ::=: ኃይልየኒ: ወዝክርየኒ: 14
እግዚአብሔር::ወውእቱ : ኮነኒ : መድኃኒ
የ::=: ቃለ:ትፍሥሕት:ውስተ:ዓቢያቲሆ 15
ሙ:ለጻድቃን::=: የማኑ: ለእግዚአብሔር: 16
ገብረት: ኃይለ::የማኑ: እግዚአብሔር:አል
ዐለኒ::የማኑ: እግዚአብሔር: ገብረት: ኃይ
ለ::=: ኢይመውት : ዘእንበለ: ዘአሐዩ:: 17
ወእነግር :ግብሮ: ለእግዚአብሔር ::=: ገ 18
ሠጸ : ገሠጸኒ : እግዚአብሔር::ወለሞት
ሰ:ባሕቱ:ኢመጠወኒ::=: አርኅዉ: ሊተ: 19
አናቅጸ: ጽድቅ::እባእ: ውስቴቶን: ወእገኒ
ይ: ለእግዚአብሔር::ዝአንቀጽ : እንተ፡ እ
ግዚአብሔር :: ጻድቃን : ይበውኡ : ውስቴ
ታ::=: እገኒ: ለከ: እግዚኦ: እስመ:ሰማዕ 20
ከኒ::ወኮንከኒ: መድኃኒየ::=: እብን:ዘመ 21
ነንዎ:ነደቅት::ወውእቱ:ኮነ: ውስተ:ርእሰ:
ማእዘንት::=: እምኀበ : እግዚአብሔር: 22
ኮነት : ዛቲ :: ወነካር : ይእቲ : ለአዕይንቲ
ነ::=: ዛቲ:ዕለት:እንተ:ገብረ: እግዚአብ 23
ሔር:: ንትፈሣሕ : ወንትሐሠይ : ባቲ::=:
እእግዚኦ : አድኅነነ:: እእግዚኦ : ሠርሖ 24
ሰ::ቡሩክ: ዘይመጽእ: በስመ: እግዚአብሔ
ር::=: ባረክናክሙ: እምቤተ : እግዚአብ 25
ሔር ::=:

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. CXVII. [a] vos omnes, qui timetis Dominum, [b] Cùm afflictus eſſem invocavi [c] & dilatavit mihi. [d] Et Dominus adjuvabit me: [e] ſuperavi eos. [f] devici eos. [g] expugnavi eos. [h] recordatio etiam mea [i] ille ſalvator meus. [k] palatiis [l] ita ut non vivam : & enarrem [m] & tamen morti [n] Domine, quoniam

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

المزمور المائة وسبعة عشر * الليلويا * وهو له * استيخن

1 اشكروا الرب فانه صالح وان رحمته لدايمة الي الابد * فليقل بيت اسرايل انه صالح وان
2 رحمته لدايمة الي الابد * وليقل بيت هرون انه صالح وان رحمته لثابتة الي الابد * وليقل
3 جميع الخايفين من الرب انه صالح وان رحمته لكاينة الي الابد * في ضيقي صرخت الي الرب
4 فاستجاب لي واخرجني الي السعة * الرب هو عوني ولا اخاف ماذا يصنع بي الانسان * الرب هو
5 عوني وانا اظفر باعداي * التوكل علي الرب حسن وخير من التوكل علي البشر * الرجاء للرب
6 جيد وافضل من الرجاء للروساء * احاط بي جميع الامم وباسم الرب انتقمت منهم * احاطوا بي
7 احتياطا وباسم الرب انتقمت منهم * احاطوا بي كاحتياط النحل بالشمع والتهبوا كنار في شوك
8 وباسم الرب افنيتهم * دفعوني لكي اسقط والرب عضدني * قوتي وبركتي هو الرب صار لي مخلصا
9 * صوت تهليل الخلاص في مساكن الصديقين * يمين الرب صنعت القوة يمين الرب رفعتني
10 يمين الرب صنعت قوة * لا اموت بل احيا واخبر باعمال الرب * ان ادبا ادبني الرب والي الموت
11 لم يسلمني * فتحوا لي ابواب العدل لكي ادخل فيها واشكر الرب * هذا باب الرب والابرار
12 يدخلون فيه * اشكرك يا رب لانك استجبت لي وصرت لي مخلصا * الحجر الذي رذله
13 البناوون هذا صار راس الزاوية * هذا كان من قبل الرب وهو عجيب في عيوننا * هذا
14 اليوم الذي صنعه الرب هلموا فلنبتهج ونفرح فيه * يا رب خلصنا يا رب سهل طريقنا
15 * مبارك الاتي باسم الرب باركناكم في بيت الرب
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26

PSAL. CXVII.
Alleluja. Verſ. 34. 1

GRatias agite Domino, quoniam bonus
eſt, & quia miſericordia ejus perpe- 2
tua eſt in æternum. Dicat ergò domus Iſ-
rael, Sanè bonus eſt, & quid in miſericor-
dia ejus perpetua eſt in æternum. Et dicat 3
domus Aaron, Sanè bonus eſt, & quidem
miſericordia ejus conſtans eſt in æternum.
Et dicant omnes timentes Dominum, Sanè 4
bonus eſt, & quidẽ miſericordia ejus per-
ſiſtens eſt in æternum. In tribulatione mea 5
clamavi ad Dominum, & exaudivit me,
eduxitque me ad latitudinem. Dominus 6
eſt auxilium meum, ideò non timeo quid
faciat in me homo. Dominus eſt adjutori- 7
um meum, et ego ſuperabo inimicos meos.
Fidere Domino bonũ eſt, & melius quàm 8
fidere hominibus. Sperare in Domino bo- 9
num eſt, ac præſtantius quàm ſperare in
principibus. Circundederunt me omnes gen 10
tes, & in nomine Domine ſumpſi vindi-
ctam ab eis. Obſederunt me obſidione, & 11
in nomine Domini ſumpſi vindictã ab eis.
Circundederunt me quemadmodum cir- 12
cundant apes ceram, & inflammati ſunt
ſicut ignis in ſpinis : & in nomine Domini
conſumpſi eos. Impulerunt me ut caderẽ, 13
et Dominus amplexus eſt me. Fortitudo 14
mea et benedictio mea Dominus eſt, factus
eſt mihi ſalvator. Vox exultationis ſalu- 15
tis in habitaculis juſtorum eſt. Dextera 16
Domini fecit virtutem , dextera Domini
exaltavit me, dextera Domini fecit virtu-
tem. Non moriar, ſed vivam, et narrabo 17
opera Domini. Eruditione erudivit me Do- 18
minus, et morti non tradidit me. Aperite 19
mihi portas juſtitiæ, ut ingrediar per illas
& gratias agam Domino. Hæc eſt porta 20
Domini, & juſti ingrediuntur per eam.
Gratias ago tibi, O Domine, quoniam tu 21
exaudiſti me, & factus es mihi ſalvator.
Lapis, quem contempſerunt ædificantes, 22
hic factus eſt caput anguli. Hoc factum 23
eſt à conſpectu Domini, et eſt mirabile in
oculis noſtris. Hæc eſt dies quam fecit Do- 24
minus : venite exultemus & lætemur in
ea. O Domine, ſalvos nos , O Domine, 25
complana viam noſtram. Benedictus ven- 26
turus in nomine Domini. Benediximus vo-
bis in domo Domini.

תהלים : קיט

cornua ad usque ; *implexationibus in* agnum Ligate : nobis illuxit & ,Dominus Deus
27 אֵל יְהוָה וַיָּאֶר לָנוּ אִסְרוּ־חַג בַּעֲבֹתִים עַד־קַרְנוֹת
28 Confitemini .te exaltabo ,meus Deus : tibi confitebor & , tu meus Deus .altaris
29 הַמִּזְבֵּחַ׃ אֵלִי אַתָּה וְאוֹדֶךָּ אֱלֹהַי אֲרוֹמְמֶךָּ׃ הוֹדוּ
.ejus misericordia seculum in quoniam : bonus quoniam , Domino
לַיהוָה כִּי־טוֹב כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃

PSAL. CXIX. קיט

:ejꝰ testimonia *custodientes* Beati .Domini lege in *euntes* : via perfecti Beati
1 אַשְׁרֵי תְמִימֵי־דָרֶךְ הַהֹלְכִים בְּתוֹרַת יְהוָה׃ אַשְׁרֵי נֹצְרֵי עֵדֹתָיו
2 .ambulaverūt ejꝰ viis in *pravitatem* sunt operati non Etiam .eum *quærent* corde toto in
בְּכָל־לֵב יִדְרְשׁוּהוּ׃ אַף לֹא־פָעֲלוּ עַוְלָה בִּדְרָכָיו הָלָכוּ׃ 3
, meæ viæ firmentur Utinam .valde *custodiendum ad*,tua mandata præcepisti Tu
4 אַתָּה צִוִּיתָה פִקֻּדֶיךָ לִשְׁמֹר מְאֹד׃ אַחֲלַי יִכֹּנוּ דְרָכָי
5 omnia ad *me respiciendo in*,afficiar pudore non Tunc .tua statuta custodiendum ad
6 לִשְׁמֹר חֻקֶּיךָ׃ אָז לֹא־אֵבוֹשׁ בְּהַבִּיטִי אֶל־כָּל־
.tuæ justitiæ judicia *me discendo in* : cordis rectitudine in tibi Confitebor .tua præcepta
7 מִצְוֺתֶיךָ׃ אוֹדְךָ בְּיֹשֶׁר לֵבָב בְּלָמְדִי מִשְׁפְּטֵי צִדְקֶךָ׃
adolescens mundabit quo In .*valde usque* me derelinquas ne : custodiam tua Statuta
8 אֶת־חֻקֶּיךָ אֶשְׁמֹר אַל־תַּעַזְבֵנִי עַד־מְאֹד׃ בַּמֶּה יְזַכֶּה־נַּעַר
9 :te exquisivi meo corde toto In ?tuum verbum juxta custodiendum ad :suam semitam
10 אֶת־אָרְחוֹ לִשְׁמֹר כִּדְבָרֶךָ׃ בְּכָל־לִבִּי דְרַשְׁתִּיךָ
non ut : tua eloquia abscondi meo corde In .tuis mandatis à me facias errare ne
11 אַל־תַּשְׁגֵּנִי מִמִּצְוֺתֶיךָ׃ בְּלִבִּי צָפַנְתִּי אִמְרָתֶךָ לְמַעַן לֹא
narravi meis labiis In .tua statuta me doce;Domine *tu* Benedictus .tibi peccem
12 אֶחֱטָא־לָךְ׃ בָּרוּךְ אַתָּה יְהוָה לַמְּדֵנִי חֻקֶּיךָ׃ בִּשְׂפָתַי סִפַּרְתִּי
13 *omni* super sicut sum gavisus tuorū testimoniorum via In .tui oris judicia omnia
14 כֹּל מִשְׁפְּטֵי־פִיךָ׃ בְּדֶרֶךְ עֵדְוֺתֶיךָ שַׂשְׂתִּי כְּעַל כָּל־
tuis statutis In .tuas semitas aspiciam & : meditabor tuis præceptis In .*ubertate*
15 הוֹן׃ בְּפִקֻּדֶיךָ אָשִׂיחָה וְאַבִּיטָה אֹרְחֹתֶיךָ׃ בְּחֻקֹּתֶיךָ
16 ; vivam tuo servo *super* Retribue .tuorum verborum obliviscar non : *delectabor*
17 אֶשְׁתַּעֲשָׁע לֹא אֶשְׁכַּח דְּבָרֶךָ׃ גְּמֹל עַל־עַבְדְּךָ אֶחְיֶה
.tua lege de mirabilia aspiciam & : meos oculos Revela .tua verba custodiam &
18 וְאֶשְׁמְרָה דְבָרֶךָ׃ גַּל־עֵינַי וְאַבִּיטָה נִפְלָאוֹת מִתּוֹרָתֶךָ׃
est Confracta .tua præcepta me à abscondas ne : terra in ego *Peregrinus*
19 גֵּר אָנֹכִי בָאָרֶץ אַל־תַּסְתֵּר מִמֶּנִּי מִצְוֺתֶיךָ׃ גָּרְסָה
20 superbos *Increpasti* .tempore omni in tua judicia ad : desiderium ob mea anima
21 נַפְשִׁי לְתַאֲבָה אֶל־מִשְׁפָּטֶיךָ בְכָל־עֵת׃ גָּעַרְתָּ זֵדִים
:contemptum &,opprobrium me à Devolve .tuis præceptis à errantes : maledictos
22 אֲרוּרִים הַשֹּׁגִים מִמִּצְוֺתֶיךָ׃ גַּל מֵעָלַי חֶרְפָּה וָבוּז
: sunt locuti me contra , principes sederunt Etiam .custodivi tua testimonia quia
23 כִּי עֵדֹתֶיךָ נָצָרְתִּי׃ גַּם יָשְׁבוּ שָׂרִים בִּי נִדְבָּרוּ
viri meæ *deliciæ* tua testimonia Etiam .tuis statutis in meditabitur tuus servus
24 עַבְדְּךָ יָשִׂיחַ בְּחֻקֶּיךָ׃ גַּם־עֵדֹתֶיךָ שַׁעֲשֻׁעַי אַנְשֵׁי
.tuum verbum secundùm me vivifica ; mea anima pulveri Adhæsit .mei consilii
25 עֲצָתִי׃ דָּבְקָה לֶעָפָר נַפְשִׁי חַיֵּנִי כִּדְבָרֶךָ׃

תרגום TARGUM

27 אֱלָהָא יְיָ אַנְהַר לָנָא אֲמַרוּ שִׁבְטַיָא דְבֵית יְהוּדָה
כַּפִּיתוּ טַלְיָא לְנִכְסַת חַגָּא בְּשַׁלְשְׁלָון עַד דִּי
תְּקַרְבוּנֵיהּ וְתַשְׁדּוּן אַדְמֵיהּ בְּקַרְנַת מַדְבְּחָא
28 אֲמַר שְׁמוּאֵל נְבִיָּא׃ אֱלָהִי אַתְּ וְאוֹדֵי קֳדָמָךְ
29 אֱלָהִי אֲשַׁבְּחִנָּךְ אֲמַר דָּוִד׃ מָתִיב שְׁמוּאֵל וַאֲמַר
שַׁבַּחוּ כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל אוֹדוּ קֳדָם יְיָ אֲרוּם טָב
אֲרוּם לְעָלַם טוּבֵיהּ׃

קיט

1 טוּבֵיהוֹן דִשְׁלִימֵי אוֹרְחֵיהּ דִמְהַלְּכִין בְּאוֹרַיְתָא
2 דַיְיָ׃ טוּבֵיהוֹן דְנָטְרֵי סַהֲדוּתֵיהּ בְּכָל לִבָּא
3 יִתְבְּעוּן אוּלְפָנֵיהּ׃ בְּרַם לָא עֲבַדוּ שִׁקְרָא
4 בְּאוֹרְחָתֵיהּ תַּקְנַיָא הֲלִיכוּ׃ אַנְתְּ פַּקֵּדְתָּא פִּקּוּדָךְ
5 לְמִטַּר לַחֲדָא׃ טַב לִי דְתִתַּקְנָן אוֹרְחָתִי לְמִטַּר
6 גְּזֵירָתָךְ׃ הֲדֵין לָא אֶבְהֵית בְּאִסְתַּכָּלוּתִי לְכָל
7 פִּקּוּדָךְ׃ אוֹדֵי קֳדָמָךְ בִּתְרִיצוּת לִבָּא בְּמַלְּפֵי דִינֵי
8 זַכְוָתָךְ׃ יָת גְּזֵירָתָךְ אֶטַּר לָא תִשְׁבּוֹק יָתִי עַד
9 לַחֲדָא׃ בְּמָא יְדַכֵּי טַלְיָא יָת אוֹרְחָתֵיהּ לְמִטַּר
10 הֵיךְ דְבִירָךְ׃ בְּכָל לִבִּי תְּבָעֵית אוּלְפָּנָךְ לָא
11 תַשְׁלְנַנִי מִפִּקּוּדָךְ׃ בְּלִבִּי אַטְמֵירִית מֵימְרָךְ מִן
12 בְּגַלַל דְלָא אֶחוֹב קֳדָמָךְ׃ בְּרִיךְ אַתְּ יְיָ אַלֵּף יָתִי
13 גְּזֵירָתָךְ׃ בְּסִפְוָתִי אִשְׁתָּעֵיתִי כָּל דִּינֵי פוּמָךְ׃
14 בְּאוֹרַח סַהֲדוּתָךְ חֲדֵיתִי כְּעַלְוֵי כָל מָוֹלָא׃
15 בְּפִקּוּדָךְ אֲמַלֵּל וְאֶסְתַּכַּל אוֹרְחָתָךְ׃ בִּגְזֵירָתָךְ
16
17 אֶתְפַּרְנַק לָא אֶתְנְשֵׁי דְבוּרָךְ׃ שַׁלֵּם טַב עַל
18 עַבְדָּךְ אֶחֵי וְאֶטַּר דְבוּרָךְ׃ גְּלִי עֵינַי וְאֶסְתַּכַּל
19 פְּרִישָׁן מֵאוֹרַיְתָךְ׃ דַּיָּר אֲנָא בְּאַרְעָא לָא
20 תִסְלֵיק מִנִּי פִּקּוּדָךְ׃ רְגִנַת נַפְשִׁי לְרִגְנָתָא
21 לְפִקּוּדָךְ בְּכָל עִדָּן׃ נְזַפְתָּא זֵידָנִין לִיטִין
22 דְאִשְׁתַּלְיוּ מִפִּקּוּדָךְ׃ אַעְדִּי מֵעִלָּוַי קְלָנָא
23 וּבוּזְתָא אֲרוּם סַהֲדוּתָךְ נְטַרִית׃ אֲרוּם יָתְבִין
רַבְרְבִין מִנִּי מְמַלְּלִין עַבְדָּךְ עָסֵיק בְּאַחֲוָיַת
24 גְּזֵירָתָךְ׃ לְחוּד סַהֲדוּתָךְ פַּרְנוּקֵי מָרֵי עֵצָתִי׃
25 אִדְבַּקַת לְעַפְרָא נַפְשִׁי אַסֵּי יָתִי כְּדִבְרָךְ׃

PARAPH. CHALD. Vers.

Deus Dñs illuxit nobis, *dixerunt tribꝰ domus Jehudæ*: ligate puerum ad sacrificium solennitatis catenis, donec *sacrificaveritis eum* & effuderitis sanguinem *ejus* in cornua altaris, *dixit Semuel propheta*. Deus meus es tu, & confitebor coram te: Deus meus, laudabo te, *dixit David*. *Respondit Semuel & dixit*: *Laudate, Ecclesia Israel*, confitemini coram Domino, quoniam bonus, quoniam in æternum benignitas ejus.

PSAL. CXIX. ALEPH.

BEati qui perfecti sunt via, qui ambulant in Lege Domini. Beati qui observant testimonia ejus, in toto corde quærunt doctrinam ejus. Etenim non operati sunt iniquitatem, in viis ejus rectis ambulaverunt. Tu præcepisti mandata tua custodiri multum. Bonum fuit mihi quòd *præparatæ fuerint viæ meæ* ad custodienda decreta tua. Tunc non confundar, cùm prospexero ad omnia mandata tua. Confitebor coram te in directione cordis, cùm didicero judicia justitiæ tuæ. Decreta tua custodiam, ne derelinquas me prorsus. BETH. In quo purificabit puer viam suam, ut observet juxta verba tua? In toto corde meo quæsivi doctrinam tuam: ne aberrare me facias à mandatis tuis. In corde meo abscondi verbum tuum, ut non peccarem coram te. Benedictus tu Domine, doce me decreta tua. Labiis meis narravi omnia judicia oris tui. In via testimoniorum tuorum gavisus sum, sicut in omni opulentia. De præceptis tuis loquar, & speculabor vias tuas. In decretis tuis delectabor, non obliviscar verbi tui. GIMEL. Retribue bonum servo tuo; vivam & custodiam verbum tuum. Revela oculos meos, & considerabo miranda de Lege tua. Peregrinus ego sum in terra: ne auferas à me mandata tua. Desideravit anima mea desiderium *præceptorum* tuorū in omni tempore. Increpasti superbos: maledicti qui aberrant à præceptis tuis. Aufer à me opprobrium & contemptum, quoniam testimonia tua custodivi. Quinetiam sedentes principes de me loquuntur: servus verò tuus intentus est in annuntiationibus decretorum tuorum. Etiam testimonia tua delectatio mea, auctores consilii mei. DALETH. Adhæsit pulveri anima mea: *sana* me secundùm verbum tuum.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

27 28 * ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܐܢܗܪ ܠܢ. ܘܐܣܘ ܚܓܝܢ ܒܫܫܠܬܐ: ܥܕܡܐ ܠܩܪܢܬܗ ܕܡܕܒܚܐ.
29 * ܐܠܗܝ ܐܢܬ ܘܐܘܕܐ ܠܟ ܐܠܗܝ ܐܢܬ ܘܐܫܒܚܟ: * ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܕܛܒ ܗܘ. ܘܠܥܠܡ
ܛܝܒܘܬܗ.

* ܫܘܒܚܐ ܘܪܫ ܡܣܩܬܐ *

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܝܚ *

1 * ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܪܫ ܗܘܢܝܐ ܕܡܬܒܝܢܘܬܐ ܕܒܐܠܗܐ. ܦܬܓܡܐ ܫܡܗ.
* ܐ * ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܕܠܐ ܡܘܡ ܐܢܘܢ ܒܐܘܪܚܐ. ܘܡܗܠܟܝܢ ܒܢܡܘܣܗ ܕܡܪܝܐ:
2 3 * ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ ܣܗܕܘܬܗ. ܘܒܟܠܗ ܠܒܗܘܢ ܒܥܝܢ ܠܗ: * ܠܐ ܥܒܕܘ ܥܘܠܐ
4 5 ܘܗܠܟܘ ܒܐܘܪܚܬܗ. * ܐܢܬ ܦܩܕܬ ܕܢܛܪܘܢ ܦܘܩܕܢܝܟ ܙܗܝܪܐܝܬ: * ܐܘܟܝܠ ܕܝܢ ܢܬܬܩܢܢ
6 ܐܘܪܚܬܝ ܠܡܛܪ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܘܠܐ ܐܒܗܬ ܡܐ ܕܚܪܬ ܒܟܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܝܟ: * ܐܘܕܐ ܠܟ
7 8 ܒܬܪܝܨܘܬܗ ܕܠܒܝ. ܡܐ ܕܝܠܦܬ ܕܝܢܐ ܕܙܕܝܩܘܬܟ: * ܦܘܩܕܢܝܟ ܐܛܪ ܠܐ ܬܫܒܩܝܢܝ ܠܥܠܡ.
9 10 * ܒ * * ܒܡܢܐ ܡܕܟܐ ܛܠܝܐ ܐܘܪܚܗ: ܕܢܛܪ ܦܘܩܕܢܝܟ: * ܒܟܠܗ ܠܒܝ ܒܥܝܬܟ
11 12 ܠܐ ܬܛܥܝܢܝ ܡܢ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܒܠܒܝ ܛܫܝܬ ܡܠܝܟ ܕܠܐ ܐܚܛܐ ܠܟ: * ܒܪܝܟ ܐܢܬ ܡܪܝܐ
13 14 ܐܠܦܝܢܝ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܒܣܦܘܬܝ ܬܢܝܬ ܟܠܗܘܢ ܕܝܢܐ ܕܙܕܝܩܘܬܟ * ܠܐܘܪܚܐ ܕܣܗܕܘܬܟ
15 16 ܪܚܡܬ ܝܬܝܪ ܡܢ ܟܠܗ ܥܘܬܪܐ. * ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܚܪܝܬ ܘܝܕܥܬ ܐܘܪܚܬܟ: * ܒܢܡܘܣܟ
17 ܪܢܝܬ ܕܠܐ ܐܛܥܐ ܡܠܝܟ. * ܓ * * ܥܢܝ ܠܥܒܕܟ ܕܐܚܐ ܘܐܛܪ ܡܠܝܟ: * ܓܠܝ ܥܝܢܝ
18 19 ܕܐܚܙܐ ܬܕܡܪܬܐ ܕܒܢܡܘܣܟ. * ܬܘܬܒܐ ܐܢܐ ܥܡܟ ܠܐ ܬܛܫܐ ܡܢܝ ܦܘܩܕܢܝܟ.
20 21 * ܪܓܬ ܢܦܫܝ ܘܐܬܪܓܪܓܬ ܠܕܝܢܝܟ ܒܟܠܙܒܢ. * ܟܐܪܬ ܠܥܡܡܐ ܘܠܝܛܝܢ ܐܝܠܝܢ
22 23 ܕܛܥܝܢ ܡܢ ܦܘܩܕܢܝܟ: * ܐܥܒܪ ܡܢܝ ܚܣܕܐ ܡܛܠ ܕܣܗܕܘܬܟ ܢܛܪܬ. * ܝܬܒܝܢ
24 ܗܘܘ ܥܘܠܐ ܘܪܢܝܢ ܗܘܘ ܒܝ: ܘܐܢܐ ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܪܢܐ ܗܘܝܬ. * ܣܗܕܘܬܟ ܪܢܝܬ ܘܬܪܥܝܬܐ
24 ܛܒܬܐ: * ܕ * * ܕܒܩܬ ܠܥܦܪܐ ܢܦܫܝ ܐܚܝܢܝ ܐܝܟ ܡܠܬܟ.

Domine Deus noster lucem nobis infer; liga solennitates nostras catenis usq; ad cornua altaris. Deus meꝰ tu es, gratias agam tibi: Deus meus tu es, glorificabo te. Confitemini Domino quoniam bonus est, & in æternum benignitas ejus.

Laus, & initium gradûs.

PSAL. CXVIII.

Anonymus. Initium meditationis [illegible]*nis quæ in Deo est. Vers. 345.*

* *Olaph.* *

BEati illi qui sine macula sunt in via, & gradiuntur in lege Domini. O beatos qui observant testimonium ejus, & ex toto corde suo quærunt eum: Non commiserunt scelus, & incesserunt per vias ejus. Tu mandâsti ut custodirent tua præcepta summoperè; Utinam ergò rectæ sint viæ meæ, ut custodiā mandata tua, Et non confundar ubi respexero cuncta decreta tua. Confitebor tibi in rectitudine cordis mei, quum didicero judicia justitiæ tuæ. Præceptiones tuas custodiam: ne deseras me in æternum. * *Beth* * Quo pacto mundabit adolescens viam suam, ut custodiat mandata tua? Toto corde meo quæsivi te: ne me sinas aberrare à præceptis tuis. In corde meo reposui verba tua, ne peccem in te. Benedictus sis tu Domine, doce me decreta tua. Labiis meis repetii cuncta judicia justitiæ tuæ. Viam testimonii tui amavi plusquàm omnes divitiās. Mandata tua contemplatꝰ, & cognovi vias tuas. Legem tuam meditatus sum, ut ne obliviscar verborum tuorum. * *Gomal* * Exaudi servum tuum ut vivam, & custodiā verba tua. Detege oculos meos, ut videam mira quæ sunt in lege tua. Hospes sum tecum, ne me celes tua præcepta. Expetivit anima mea, & exoptavit judicia tua omni tempore. Increpâsti gentes; maledicti sunt ii qui aberrant à mandatis tuis. Repelle à me ignominiam, quia testimonium tuū custodivi. Sedebant nefarii & cogitabant de me: ego verò de præceptis tuis cogitabam; Testimonium tuum meditatus sum, mentem bonā. * *Dolath* * Adhæsit anima mea pulveri, vivifica me secundùm verbum tuum.

Verſio VULG. LAT.

27 Deus Domin⁹, & illuxit nobis. Con-
ſtituite diem ſolennem in condenſis,
28 uſq; ad cornu altaris. Deus me⁹ es tu,
& confitebor tibi : Deus meus es tu,
& exaltabo te. Confitebor tibi quoniã
exaudiſti me : & factus es mihi in ſa-
29 lutẽ. Confitemini Dño, quoniã bon⁹:
quoniam in ſeculũ miſericordia ejus.
Alleluja. CXVIII.

ALEPH.

1 Beati immaculati in via: qui ambulãt
2 in lege Domini. Beati, qui ſcrutãtur
teſtimonia ejus: in toto corde exqui-
3 runt eũ. Non enim qui operantur ini-
4 quitatẽ, in viis ejus ambulaverũt. Tu
mandaſti mandata tua cuſtodiri nimis.
5 Utinã dirigãtur viæ meæ, ad cuſtodien-
6 das juſtificationes tuas. Tunc non con-
fundar, cùm perſpexero in omnib⁹ mã-
7 datis tuis. Confitebor tibi in directio-
ne cordis, in eo quòd didici judicia ju-
8 ſtitiæ tuæ. Juſtificationes tuas cuſtodiã:
non me derelinquas uſquequaque.
9 BETH. In quo corrigit adoleſcen-
tior viã ſuã? in cuſtodiendo ſermones
10 tuos. In toto corde meo exquiſivi te :
11 ne repellas me à mandatis tuis. In cor-
de meo abſcõdi eloquia tua: ut nõ pec-
12 cẽ tibi. Benedict⁹ es, Dñe: doce me ju-
13 ſtificationes tuas. In labiis meis, pro-
14 nuntiavi omnia judicia oris tui. In via
teſtimoniorũ tuorũ delectatus ſũ, ſicut
15 in omnib⁹ divitiis. In mãdatis tuis ex-
16 ercebor: & conſiderabo vias tuas. In
juſtificationib⁹ tuis meditabor : non
obliviſcar ſermones tuos.
17 GIMEL. Retribue ſervo tuo, vivi-
18 fica me: & cuſtodiã ſermones tuos. Re-
vela oculos meos: & conſiderabo mira-
19 bilia de lege tua. Incola ego ſum in ter-
ra : non abſcondas à me mandata tua.
20 Concupivit anima mea deſiderare ju-
21 ſtificationes tuas, in omni tempore. In-
crepâſti ſuperbos: maledicti qui decli-
22 nant à mãdatis tuis. Aufer à me oppro-
briũ, & contemptũ : quia teſtimonia
23 tua exquiſivi. Etenim ſederunt princi-
pes, & adverſũ me loquebantur: ſerv⁹
autẽ tu⁹ exercebatur in juſtificationib⁹
24 tuis. Nam & teſtimonia tua meditatio
mea eſt: & conſilium meum juſtifi-
cationes tuæ. DALETH.
25 Adhæſit pavimento anima mea : vi-
vifica me ſecundùm verbum tuum.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

17 † Θεὸς κύριος, καὶ ἐπέφανεν ἡμῖν· † συστήσασθε ἑορτὴν
ἐν τοῖς πυκάζουσιν, † ἕως τῶν κεράτων τοῦ θυσιαστη-
28 ρίου. † Θεός μου εἶ σύ, καὶ ἐξομολογήσομαί σοι· † Θεός
μου εἶ σύ, καὶ ὑψώσω σε. † Ἐξομολογήσομαί σοι, ὅτι
29 ἐπήκουσάς μου, † καὶ ἐγένου μοι εἰς σωτηρίαν. † Ἐξομο-
λογεῖσθε τῷ κυρίῳ, ὅτι ἀγαθός, † ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ
ἔλεος αὐτοῦ. Ἀλληλούϊα. ριη´.
1 † Μακάριοι (α) ἄμωμοι ἐν ὁδῷ, † οἱ πορευόμενοι
2 ἐν νόμῳ κυρίου. † Μακάριοι οἱ (β) ἐξερευνῶν-
τες τὰ μαρτύρια αὐτοῦ, † ἐν ὅλῃ καρδίᾳ ἐκζητήσου-
3 σιν αὐτόν. † Οὐ γὰρ οἱ ἐργαζόμενοι τὴν ἀνομίαν, ἐν ταῖς
4 ὁδοῖς αὐτοῦ ἐπορεύθησαν. † Σὺ ἐνετείλω τὰς ἐντολάς
5 σου, (γ) τοῦ φυλάξασθαι σφόδρα. † Ὄφελον κατευθυν-
θείησαν αἱ ὁδοί μου, † τοῦ φυλάξασθαι τὰ δικαιώματά
6 σου. † Τότε οὐ μὴ (δ) αἰσχυνθῶ, † ἐν τῷ με ἐπιβλέ-
7 πειν ἐπὶ πάσας τὰς ἐντολάς σου. † Ἐξομολογή-
σομαί (ε) σοι ἐν εὐθύτητι καρδίας, † ἐν τῷ μεμα-
8 θηκέναι με τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου. † Τὰ
δικαιώματά σου φυλάξω, † μή με ἐγκαταλίπῃς ἕ-
9 ως σφόδρα. † Ἐν τίνι κατορθώσει νεώτερος τὴν
ὁδὸν αὐτοῦ; † ἐν τῷ (ζ) φυλάξασθαι τοὺς λόγους σου.
10 † Ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου ἐξεζήτησά σε, † μὴ ἀπώ-
11 σῃ με ἀπὸ τῶν ἐντολῶν σου. † Ἐν τῇ καρδίᾳ μου ἔ-
12 κρυψα τὰ λόγιά σου, ὅπως ἂν μὴ ἁμάρτω σοι. † Εὐ-
λογητὸς εἶ κύριε, δίδαξόν με τὰ δικαιώματά σου.
13 † Ἐν τοῖς χείλεσί μου ἐξήγγειλα πάντα τὰ κρίμα-
14 τα τοῦ στόματός σου. † Ἐν τῇ ὁδῷ τῶν μαρτυρίων σου
15 ἐτέρφθην, † ὡς ἐπὶ παντὶ πλούτῳ. † Ἐν ταῖς ἐντολαῖς
16 σου ἀδολεσχήσω, † καὶ κατανοήσω τὰς ὁδούς σου. † Ἐν
τοῖς δικαιώμασί σου μελετήσω, † οὐκ ἐπιλήσομαι τῶν
17 λόγων σου. † Ἀνταπόδος τῷ δούλῳ σου, † ζή-
18 σομαι καὶ φυλάξω τοὺς λόγους σου. † Ἀποκάλυψον τοὺς
ὀφθαλμούς μου, καὶ κατανοήσω † τὰ (η) θαυμάσια ἐκ
19 τοῦ νόμου σου. † Πάροικος ἐγώ εἰμι ἐν τῇ γῇ, † μὴ
20 ἀποκρύψῃς ἀπ' ἐμοῦ τὰς ἐντολάς σου. † Ἐπεπό-
θησεν ἡ ψυχή μου τοῦ ἐπιθυμῆσαι † τὰ κρίματά
21 σου ἐν παντὶ καιρῷ. † Ἐπετίμησας ὑπερηφάνοις,
† ἐπικατάρατοι οἱ ἐκκλίνοντες ἀπὸ τῶν ἐντολῶν σου.
22 † Περίελε ἀπ' ἐμοῦ ὄνειδος καὶ ἐξουδένωσιν, † ὅτι τὰ
23 μαρτύριά σου ἐξεζήτησα. † Καὶ γὰρ ἐκάθισαν ἄρχον-
τες, καὶ κατ' ἐμοῦ κατελάλουν, † ὁ δὲ δοῦλός σου ἠδο-
24 λέσχει ἐν τοῖς δικαιώμασί σου. † Καὶ γὰρ τὰ μαρτύ-
ριά σου μελέτη μου ἐστί, † καὶ (θ) αἱ συμβουλίαι μου
25 τὰ δικαιώματά σου. † Ἐκολλήθη τῷ ἐδάφει
ἡ ψυχή μου, † ζῆσόν με (ι) κατὰ τὸν λόγον σου.

MS.A. (α) οἱ ἄμωμοι (β) ἐξερευνῶντες (γ) φυ-
λάσσεσθαι (δ) ἐπαισχυνθῶ, (ε) σοι κύριε ἐν (ζ)
φυλάσσεσθαι (η) θαυμάσιά σου ἐκ (θ) ἡ συμβου-
λία (ι) κατὰ τὸ λόγιόν σου.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

Deº Domin⁹, & illuxit nobis: 26 (n) 27
conſtituite [o] diẽ ſolenne in conden-
ſis, uſq; ad cornua altaris. 27 De⁹ me⁹ 28
es tu, & confitebor tibi: De⁹ me⁹ es
tu, & exaltabo te. 28 (o) Confitebor
tibi [p], quoniã exaudîſti me: & fa-
ctus es mihi (q) in ſalutẽ. 29 Confi- 29
temini Domino, quoniã bon⁹: quoniã
in ſeculum miſericordia ejus.
Alleluja. CXVIII.
1 Beati (a) immaculati in [a] via, 1
qui ambulant in lege Domini.
2 Beati qui ſcrutantur teſtimonia e- 2
jus, in toto [b] corde exquirunt eum.
3 [c] Non enim qui operantur iniqui- 3
tatem, in viis ej⁹ [d] ambulaverunt.
4 Tu mandâſti mandata tua cuſtodi- 4
ri nimis. 5 [e] Utinã dirigantur viæ 5
meæ, ad cuſtodiendas juſtificationes
tuas. 6 Tunc non confundar, dum (b) 6
inſpicio in omnia mãdata tua. 7 Con- 7
fitebor [f] tibi in directione cordis, in
eo quod didici judicia juſtitiæ tuæ. 8
Juſtificationes tuas cuſtodiã: ne dere-
linquas me uſque (c) valdè. 9 In 9
quo (d) corriget adoleſcentior vias
ſuas? in cuſtodiendo ſermones tuos.
10 In toto corde meo exquiſivi te: ne 10
me repellas à mandatis tuis. 11 In 11
corde meo abſcondi eloquia tua ; ut
non peccem tibi. 12 Benedict⁹ es, Do- 12
mine : doce me juſtificationes tuas.
13 In labiis meis pronuntiavi omnia 13
judicia oris tui. 14 In via teſtimoni- 14
orũ tuorũ delectat⁹ ſum, ſicut in o-
mnibus divitiis. 15 In mandatis tuis 15
(e) exercebor, & conſiderabo vias
tuas. 16 In juſtificationib⁹ tuis me- 16
ditabor: nõ obliviſcar ſermones tuos.
17 Retribue ſervo tuo: (f) [g] vi- 17
vam, & cuſtodiam ſermones tuos.
18 Revela oculos meos: & conſide- 18
rabo (g) [h] mirabilia de lege tua.
19 (h) Incola ego ſum in terra: ne 19
abſcondas à me mandata tua. 20 (i)
Concupivit anima mea [i] deſiderare 20
judicia tua, in omni tempore. 21 In- 21
crepâſti ſuperbos: maledicti qui de-
clinãt à mandatis tuis. 22 Aufer à 22
me opprobriũ, et contemptũ: quia te-
ſtimonia tua exquiſivi. 23 Etenim 23
ſederunt principes, & adverſùs me
obloquebantur: ſerv⁹ autẽ tuus ex-
ercebatur in juſtificationibus tuis.
24 Nam & teſtimonia tua [k] medi- 24
tatio mea eſt: & (k) conſilia mea juſtificationes tuæ. 25 Adhæſit pavimento anima mea: 25
vivifica me ſecundùm verbum tuum.

Verſio ÆTHIOPICA.

27 እግዚአብሔር፡እግዚእ አስተርአየ፡ለነ፡፡=፡
ግበሩ፡በዐለ፡በትፍሥሕት፡በኀበ፡እለ፡ያስተ 26
ሐምምዎ፡፡እስከ፡አቅርንቲሁ፡ለመሠዊ
ዕ፡፡=፡ አምላክየ፡አንተ፡አገኒ፡ለከ፡፡አም 27
ላክየ፡አንተ፡ወአሌዕለከ፡፡=፡ አገኒ፡ለከ፡ 28
እግዚኦ፡እስመ፡ሰማዕከኒ፡፡ወኮንከኒ፡መድ
ኀኒየ፡፡=፡ ግነዩ፡ለእግዚአብሔር፡እስመ፡ኄ 29
ር፡፡እስመ፡ለዓለም፡ምሕረቱ፡፡=፡

ሃሌሉያ፡፡

፻፲፰ አሌፍ፡ ብፁዓን፡እለ፡ንጹሐን፡በፍኖቶ 1
ሙ፡፡እለ፡የሐውሩ፡በሕገ፡እግዚአብሔ
ር፡፡=፡ ብፁዓን፡እለ፡የኀሥሡ፡ስምዖ፡፡ወበ 2
ኵሉ፡ልቦሙ፡የኀሥሥዎ፡፡=፡ ወእለሰ፡ይገብ 3
ሩ፡ዐመፃ፡ፍኖተ፡ዚአሁ፡ኢሖሩ፡፡=፡ አንተ፡ 4
አዘዝከ፡ይዕቀቡ፡ትእዛዘከ፡ፈድፋደ፡፡=፡
ይረትዕሰ፡ይርታዕ፡ፍኖትየ፡፡ከመ፡ለዐቅብ፡ 5
ኵነኔከ፡፡=፡ ውእተ፡ጊዜ፡ኢይትኀፈር፡፡በ 6
ርዕየ፡ኵሉ፡ትእዛዝከ፡፡=፡ አገኒ፡ለከ፡እ 7
ግዚኦ፡በልብ፡ርቱዕ፡፡ሶበ፡ተመሀርኩ፡ኵነ
ኔ፡ጽድቅከ፡፡=፡ ወዐቀብኩ፡ኵነኔከ፡፡ወኢ 8
ትግድፈኒ፡ለዝሉፉ፡፡=፡ ፪ ቤት፡ በምን 9
ት፡ ያረትዕ፡ ወሬዛ፡ ፍኖቶ፡፡በዐቂበ፡ ነቢብ
ከ፡፡=፡ ወበኵሉ፡ ልብየ፡ ኀሠሥኩከ፡፡ኢ 10
ታርሕቀኒ፡ እምትእዛዝከ፡፡=፡ ውስተ፡ልብ 11
የ፡ ኀባእኩ፡ ነቢበከ፡፡ከመ፡ ኢየአብስ፡ ለ
ከ፡፡=፡ ቡሩክ፡አንተ፡እግዚኦ፡ወመሀረኒ፡ 12
ኵነኔከ፡፡=፡ በከናፍሪየ፡ነገርኩ፡ኵሎ፡ኵ 13
ነኔ፡አፉከ፡፡=፡ በፍኖተ፡ ስምዐከ፡ተፈሣሕ 14
ኩ፡፡ከመ፡ዘበኵሉ፡ብዕል፡፡=፡ ወለዘቀዐ፡በ 15
ትእዛዝከ፡፡ወአኀሠሥ፡ፍናዊከ፡፡=፡ ወአ 16
ነብብ፡ትእዛዚከ፡፡ወኢይረስዕ፡ቃለከ፡፡=፡
፫ ጋሜል፡ ዕስዮ፡ለገብርከ፡፡ከመ፡ ሐዩ፡ 17
ወእዕቀብ፡ ነቢበከ፡፡=፡ ክሥቶን፡ ለአዕይን 18
ትየ፡ ወእርአይ፡፡ መድምመ፡ እምሕግ
ከ፡፡=፡ ፈላሲ፡አነ፡ውስተ፡ምድር፡፡ኢትኅ 19
ብእ፡ እምኔየ፡ ትእዛዝከ፡፡=፡ አፍቀረት፡ነ 20
ፍስየ፡ ወፈተወት፡፡ ኵነኔከ፡ በኵሉ፡ ጊ
ዜ፡፡=፡ ገሠጽኮሙ፡ለዕቡያን፡፡ርጉማን፡ እ 21
ለ፡ ይትገሐሡ፡ እምትእዛዝከ፡፡=፡ አለት 22
ት፡ እምኔየ፡ጽእለተ፡ወኀሳረ፡፡እስመ፡ትእዛ
ዝከ፡ኀሠሥኩ፡፡=፡ እስመ፡ነበሩ፡መላእክ 23
ት፡ወኪያየ፡ ሐመዩ፡፡ወገብርከሰ፡ ይዜዊዕ፡በ
ኵነኔከ፡፡=፡ እስመ፡ ስምዕከ፡ ተመሀርየ፡ 24
ውእቱ፡ ወመክርየኒ፡ ኵነኔ፡ ዚአከ፡፡=፡
፬ ደሌት፡ ጠግዐት፡ ነፍስየ፡ በምድር፡፡አ 25
ሕየወኒ፡በከመ፡ነቢብከ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [o] diem feſtum cum lætitia pro iis, qui res *Dei* ſolicitè curant. [p] Domine, quoniam [q] Salvator meus. *PSAL. CXVIII.* [a] viis ſuis, [b] corde ſuo [c] Qui autem [d] non [e] Expedit quidem ut dirigeret vias meas [f] Domine cum recto corde, [g] ut vivam, [h] mirabilia tua [i] & exoptavit judicia [k] inſtitutio mea

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* الله الرب اضاء علينا رتبوا عيدا في الواصلين الى قرون المذبح * انت هو الاهي اشكرك 27 28
انت هو الهي ربي احمدك • اشكرك يا رب لانك استجبت لي وصرت لي مخلصا * اعترفوا للرب 29
فانه صالح وان رحمته لكاينة الى الابد • الليلويا * المزمور الماية وثمانية عشر
* لداود وهو قع * استيخن • الفصل الاول • وهو ح * طوبا للذين بلا عيب في 1
السبيل السالكين في ناموس الرب * طوبى للفاحصين عن شهاداته الطالبين له بجميع قلوبهم 2
* لان عاملي الاثم لم يسلكوا في سبله * انت امرت بحفظ وصاياك جدا * فليت طرقي تيسر 3 4
بحفظ حقوقك * حينيذ لا اخزى اذا اطلعت على جميع وصاياك * اشكرك يا رب باستقامة قلبي 5 6 7
عندما علمت احكام عدلك * وحقوقك احفظها فلا ترفضني جدا الى الغاية • 8
* الفصل الثاني • وهو ح * بماذا يقوم الشباب طريقه عند حفظ وصاياك * طلبتك 9 10
بجميع قلبي فلا تقصيني من وصاياك * وضعت قولك في قلبي لكيلا اخطي اليك * مبارك انت 11 12
يا رب فعلمني عدلك * اظهرت بسمعي جميع احكام فيك * فرحت في طريق شهاداتك مثل كل 13 14
غنى * اتكلم بوصاياك وافهم طرقك * ادرس حقوقك ولا انسى اكرامك * الفصل الثالث وهو ح 15 16
* استجب لعبدك لاحيي واحفظ قولك * اكشف عيني فاتامل عجايبك من ناموسك * غريب 17 18
انا في الارض فلا تخف عني وصاياك * اشتاقت نفسي ان اشتهي احكامك في كل حين * زجرت 19 20
المتعظمين ملعون كل من يحيد عن وصاياك * انزع عني العار والخزي فاني طلبت شهاداتك • 21 22
* ان الروساء جلسوا وتقولوا علي وعبدك يدرس في عدلك * وان شهاداتك لدرسي وحقوقك 23 24
لافكاري * • الفصل الرابع • وهو ح • * لصقت نفسي بالتراب فاحيني كقولك • 25

Deus Dominus fulſit ſuper nos. Inſtituite ſo- 27
lennitatem in iis qui attingunt cornua alta-
ris. Tu es Deus meus, gratias agam tibi: tu 28
es Deus meus Dominus meus, glorificabo te.
Gratias ago tibi O Domine, quia exaudîſti
me, & factus es mihi ſalvator. Confitemini 29
Domino, quia bonus eſt, & quidem miſericor-
dia ejus perduratura eſt in æternũ. Alleluja.

PSAL. CXVIII.
Davidis. Verſ. 170. 1
Sectio prima. Verſ. 8.

Beati qui ſunt ſine macula in via, ambu-
lantes in lege Domini. Beati ſcrutantes 2
teſtimonia ejus, quærentes eum ex totis cor-
dibus ſuis. Nam operantes ſcelus non ambu- 3
laverunt in ſemitis ejus. Tu mandâſti ob- 4
ſervantiã præceptorum tuorum vehementer.
Utinam ergò viæ meæ reddantur faciles ad 5
obſervantiam ſtatutorum tuorum. Tunc non 6
confundar, quũ perſpexero omnia mandata
tua. Gratias agam tibi O Domine cum recti- 7
tudine cordis mei, quum novero judicia ju-
ſtitiæ tuæ: Et ſtatuta tua cuſtodiam. Ne 8
quæſo, me reſpuas nimium ad extremum.
Sectio ſecunda. Verſ. 8. *Per quid diriget ju-* 9
ventus viam ſuam poſt obſervata præcepta
tua? Expetivi te ex toto corde meo, ne igi- 10
tur me repellas à mandatis tuis. Repoſui 11
ſermonem tuum in corde meo, ut ne peccem
in te. Benedictus es tu O Domine, doce me 12
æquitatem tuam. Patefeci labiis meis omnia 13
judicia oris tui. Gaviſus ſum de via teſti- 14
moniorum tuorum æquè ac omnibus divi-
tiis. Loquor de præceptis tuis, & perpendo 15
vias tuas. Recito ſtatuta tua, & non obli- 16
viſcor venerationẽ tuã. Sect. tertia. Ver. 8
Exaudi ſervum tuum, ut vivat & obſervet 17
ſermonem tuum. Detege oculos meos, & 18
contemplabor miracula tua ex lege tua. Pe- 19
regrinus ego ſum in terra, ne abſcondas à
me mandata tua. Concupivit anima mea ut 20
exoptem judicia tua in omni tempore. In- 21
crepâſti ſuperbos, maledictus quicunque di-
greditur à judiciis tuis. Exue me oppro- 22
brio & ignominiâ, quia perquiſivi teſtimonia
tua. Sanè principes ſederunt & obloquuti 23
ſunt de me, & ſervus tuus exercet ſe in æ-
quitate tua. Et quidem teſtimonia tua ſunt 24
mihi pro exercitio, & ſtatuta tua pro cogi-
tationibus meis. Sectio quarta. Verſ. 8 *Ad-* 25
hæſit anima mea pulveri, vivifica me ſecun-
dum ſermonem tuum.

תהלים : קיט

tuorum præceptorum Viam .tua statuta me doce:me exaudisti &,narravi meas Vias
26 דרכי ספרתי ותענני למדני חקיך: דרך־פקודיך
27 anxietate præ mea anima Stillavit .tuis mirabilibus in meditabor & :me fac intelligere
28 הבינני ואשיחה בנפלאותיך: דלפה נפשי מתוגה
.mihi *largire* tuam legem & :me à amove mendacii Viam .tuũ verbum juxta me confirma
29 קימני כדברך: דרך שקר הסר ממני ותורתך חנני:
Domine:tuis testimoniis *in* Adhæsi .*proposui* tua judicia :elegi veritatis Viam
30 31 דרך אמונה בחרתי משפטיך שויתי: דבקתי בעדותיך יהוה
.meũ cor dilataveris cum : curram tuorum mandatorũ Viam .me afficias pudore ne
32 אל־תבישני: דרך־מצותיך ארוץ כי תרחיב לבי:
,me fac Intelligere .*mercede* eam custodiam &,tuorũ statutorum viam Domine me Doce
33 34 הורני יהוה דרך חקיך ואצרנה עקב: הבינני
semitam per me fac *Calcare* .corde toto in illam custodiam &,tuam legem custodiã &
35 ואצרה תורתך ואשמרנה בכל־לב: הדריכני בנתיב
non &,tua testimonia ad meum cor Inclina .volui ipsam *in* quia:tuorum mandatorũ
36 מצותיך כי־בו חפצתי: הט־לבי אל־עדותיך ואל
.me vivifica tuis viis in:*mendaciũ videndo* à,meos oculos fac Transire .*concupiscentiam* ad
37 אל־בצע: העבר עיני מראות שוא בדרכך חיני:
me ã opprobriũ fac Transire .tuũ timorẽ ad quod : tuum eloquium tuo servo Confirma
38 39 הקם לעבדך אמרתך אשר ליראתך: העבר חרפתי
tua justitia in:tua mãdata ad concupivi Ecce .bona tua judicia quia :timui quod
40 אשר יגרתי כי משפטיך טובים: הנה תאבתי לפקדיך בצדקתך
.tuũ eloquiũ secundum tua salus:Domine tuæ misericordiæ mihi veniãt Et.me vivifica
41 חיני: ויבאני חסדך יהוה תשועתך כאמרתך:
auferas ne Et .tuo verbo in *speravi* quod ,verbum *mihi exprobranti* respondebo Et
42 43 ואענה חרפי דבר כי־בטחתי בדברך: ואל־תצל
custodiam Et .expectavi tua judicia ad quia :valde usque veritatis verbũ meo ore de
44 מפי דבר־אמת עד־מאד כי למשפטך יחלתי: ואשמרה
tua mandata quia:latitudine in ambulabo Et.*perpetuum* & seculũ in semper tuam legem
45 תורתך תמיד לעולם ועד: ואתהלכה ברחבה כי פקדיך
.afficiar pudore non & ,regibus coram tuis testimoniis *in* loquar Et .quæsivi
46 דרשתי: ואדברה בעדתיך נגד מלכים ולא אבוש:
tua præcepta ad meas palmas levabo Et .dilexi quæ ,tuis mandatis in *deliciabor* Et
47 48 ואשתעשע במצותיך אשר אהבתי: ואשא־כפי אל־מצותיך
in : *tuum servum erga* verbi Memento .tuis statutis in meditabor & , dilexi quæ
49 אשר אהבתי ואשיחה בחקיך: זכר־דבר לעבדך על
tuum *dictum* quia :mea afflictione in mea consolatio Hæc .me fecisti *expectare* quo
50 אשר יחלתני: זאת נחמתי בעניי כי אמרתך
.declinavi non tua lege à : valde usque me deriserunt Superbi .me vivificavit
51 חיתני: זדים הליצני עד־מאד מתורתך לא נטיתי:
me tenuit Terror .sum consolatus &,Domine seculo à tuorũ judiciorũ sum Recordat⁹
52 53 זכרתי משפטיך מעולם יהוה ואתנחם: זלעפה אחזתני
domo in tua statuta mihi fuerunt Cantus .tuam legem *deserentibus* , *impiis* ab
54 מרשעים עזבי תורתך: זמרות היו־לי חקיך בבית
custodivi & :Domine tui nominis nocte in sum Recordatus .mearũ peregrinationũ
55 מגורי: זכרתי בלילה שמך יהוה ואשמרה
.custodivi tua præcepta quod :mihi fuit *Hæc* .tuam legem
56 תורתך: זאת היתה־לי כי פקדיך נצרתי:

תרגום TARGUM.

אורחי מניתי וקבלתא צלותי אליף יתי גזרתך: 26
אורח פקודיך תבינני ואמלל בפרישותך: 27
אנמת נפשי מדבונא קיים יתי כדברך: 28
אורח דשקרא אעדי מני ואוריתך חוס לי: 29
אורח הימנותא בחרית דיניך שוית: אדבקית 30
31
בסהדותך יי לא תבהתנני: אורח פקודיך 32
ארהוט ארום תפתי לבי: אליף יתי יי אורח 33
גזרתך ואנטרנה עד גמירא: תבינני ואנטור 34
אוריתך יי ואנטרנה בכל לבא: תדרכנני 35
בשביל פקודיך ארום ביה צביתי: אצלי 36
לבי לסהדותך ולא לות ממונא: אעבר 37
עיני מלמחמי שקרא בדבריך אסי יתי:
אקים לעבדך מימרך די לדחלתך: אעבר 38
39
חסודי די דחילית ארום דיניך טבין: הא 40
רגגית לפקודיך בצדקתך אסי יתי: וייתון 41
עלי חסדיך יי פורקנך היך מימרך: ואתיב 42
מחסדי פתגם ארום סברית בדברך: ולא 43
תסלק מפומי פתגם דקשוט עד לחדא ארום
לדינך אוריכית: ואטור אוריתך תדירא 44
לעלמי עלמין: ואהך בפתיות אוריתא 45
ארום פקודיך תבעית: ואמלל בסהדותך 46
קבל מלכיא ולא אבהית: ואתפרנק בפקודיך 47
די רחימית: ואזקוף ידי לפקודיך דרחימית 48
ואמלל בגזרתך: אדכר פתגמא לעבדך די 49
אורכתני: דא היא תנחומתי בסגופי ארום 50
מימרך קיים יתי: זידונין ממיקנין לי עד 51
לחדא מאוריתך לא אצליתי: אדכרית 52
דיניך מן עלמא יי ואתנחמית: רתיתא 53
אחידת יתי מרשיעי דשבקין אוריתך: תושבחן 54
הוו לי גזרתך בבית מדורי: אדכרית בליליא 55
שמך יי ונטרית אוריתך: דא הות לי לזכותא 56
ארום פקודיך נטרית:

PARAPH CHALD. Verſ. Lat.

Vias meas *recensui*, & accepisti orationem meam: doce me statuta tua. Viam mandatorum tuorum fac me intelligere, & loquar de mirabilibus factis tuis. In angore fu anima mea præ dolore: vivifica me secundùm verbum tuum. Viam mendacii aufer à me, & Lex tua misereatur mei. Viam fidei elegi, judicia tua posui. Adhæsi testimoniis tuis, Domine: ne me confundas. Viam mandatorum tuorum percurram, cum dilataveris cor meum. HE. Doce me Domine viam decretorum tuorum, & servabo eam usque ad complementum. Da mihi intellectum, & servabo Legem tuam *Domine*, & custodiam illam in toto corde. Deduc me in semitam præceptorum tuorum, quoniam in illa complacui mihi. Inclina cor meum in testimonia tua, & non in pecuniam. Averte oculos meos à videnda falsitate, secundùm verbum tuum sana me. Confirma servo tuo verbum tuum quod fi ad timorem tuum. Amove opprobrium meum quod timui, quoniam judicia tua bona sunt. Ecce desideravi præcepta tua, justitiâ tuâ *sana* me. VAU. Et veniant super me misericordiæ tuæ Domine, redemptio tua secundùm verbum tuum. Et respondebo exprobranti mihi verbum, quoniam speravi in verbo tuo. Et ne auferas de ore meo verbum veritatis penitus, quoniam judicia tua expectavi. Et servabo Legem tuam semper in secula seculorum. Et ambulabo in latitudine *legis*, quoniam præcepta tua quæsivi. Et loquar de testimoniis tuis coram regibus, & non confundar. Et delectabor in mandatis tuis quæ dilexi. Et levabo manus meas ad mandata tua quæ dilexi, & loquar de præceptis tuis. ZAIN. Memento verbi erga servum tuum, quod expectare me fecisti. Hæc fuit consolatio mea in afflictione mea, quoniam Verbum tuum vivificavit me. Superbis illudentibus mihi nimis, de Lege tua non declinavi. Recordatus sum judiciorum tuorum à seculo Domine, & consolationem accepi. Tremor invasit me ab impiis qui derelinquunt Legem tuam. Hymni fuerunt mihi decreta tua in domo habitaculi mei. Recordatus sum nocte nominis tui Domine, & servavi Legem tuam. Hæc fuit mihi in meritum, quoniam mandata tua servavi.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

26 * ܐܘܪܚܬܝ ܚܘܝܬܟ ܘܥܢܝܬܢܝ ܐܠܦܝܢܝ ܢܡܘܣܟ: * ܐܘܪܚܐ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܚܘܝܢܝ ܘܐܬܒܩܐ
27
28 ܒܬܕܡܪܬܟ. * ܐܬܕܠܚܬ ܢܦܫܝ ܒܬܘܟܝܬܐ ܐܚܝܢܝ ܐܝܟ ܡܠܬܟ: * ܐܘܪܚܐ ܕܥܘܠܐ ܐܥܒܪ ܡܢܝ
29
30 ܘܢܡܘܣܟ ܐܠܦܝܢܝ. * ܐܘܪܚܐ ܕܗܝܡܢܘܬܟ ܓܒܝܬ ܘܕܝܢܝܟ ܨܒܝܬ: * ܢܩܦܬ
31
32 ܠܣܗܕܘܬܟ ܡܪܝܐ ܠܐ ܬܒܗܬܢܝ. * ܒܐܘܪܚܐ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܪܗܛܬ ܡܛܠ ܕܐܪܘܝܬܢܝ: * ܗ *
33 * ܐܠܦܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܘܪܚܐ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܘܐܛܪܝܗ ܐܢܝܢ. * ܣܟܠܝܢܝ ܘܐܛܪ ܢܡܘܣܟ ܘܐܢܛܪܝܗܝ
34
35 ܒܟܠܗ ܠܒܝ: * ܘܕܒܪܝܢܝ ܒܫܒܝܠܐ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܡܛܠ ܕܒܗ ܨܒܝܬ. * ܐܪܟܢ ܠܒܝ
36
37 ܠܣܗܕܘܬܟ ܘܠܐ ܠܥܘܠܐ: * ܐܥܒܪ ܥܝܢܝ ܕܠܐ ܢܚܙܝܢ ܣܪܝܩܘܬܐ ܘܒܐܘܪܚܬܟ ܐܚܝܢܝ.
38 * ܐܩܝܡ ܡܠܬܟ ܠܥܒܕܟ ܕܕܚܠ ܠܟ: * ܐܥܒܪ ܡܢܝ ܚܣܕܐ ܕܕܚܠܬ ܡܛܠ ܕܕܝܢܝܟ ܫܦܝܪܝܢ ܐܢܘܢ.
39
40 * ܨܒܝܬ ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܘܒܙܕܝܩܘܬܟ ܐܚܝܢܝ: * ܘ * ܢܐܬܘܢ ܥܠܝ ܪܚܡܝܟ ܡܪܝܐ ܘܦܘܪܩܢܟ
41
42 ܐܝܟ ܕܐܡܪܬ. * ܘܐܬܠ ܦܬܓܡܐ ܠܡܚܣܕܢܝ ܡܛܠ ܕܐܬܬܟܠܬ ܥܠ ܡܠܝܟ: * ܠܐ ܬܥܒܪ ܡܢ
43
44 ܦܘܡܝ ܡܠܬܐ ܕܩܘܫܬܐ ܡܛܠ ܕܠܕܝܢܝܟ ܣܟܝܬ. * ܐܛܪ ܢܡܘܣܟ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ
45
46 * ܘܐܗܠܟ ܒܪܘܝܚܘܬܐ: ܡܛܠ ܕܒܦܘܩܕܢܝܟ ܨܒܝܬ. * ܐܡܠܠ ܒܣܗܕܘܬܟ ܩܕܡ ܡܠܟܐ
47 ܘܠܐ ܐܒܗܬ: * ܘܐܬܦܪܓ ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܕܪܚܡܬ. * ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ ܠܘܬ ܦܘܩܕܢܝܟ ܕܪܚܡܬ: ܘܐܪܢܐ
48
49 ܒܗܘܢ ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܘܐܫܬܒܗܪ ܒܢܡܘܣܟ. * ܙ * * ܐܬܕܟܪ ܡܠܬܟ ܠܥܒܕܟ ܗܝ
50 ܕܐܠܒܒܬܢܝ: * ܘܗܝ ܒܝܐܬܢܝ ܒܡܘܟܟܝ. ܡܛܠ ܕܡܐܡܪܟ ܐܚܝܢܝ: * ܥܘܠܐ ܐܠܨܘܢܝ
51
52 ܛܒ ܢܡܘܣܟ ܠܐ ܣܛܝܬ. * ܐܬܕܟܪܬ ܕܝܢܝܟ ܡܪܝܐ ܕܡܢ ܥܠܡ: ܘܐܬܒܝܐܬ ܘܗܘܘ ܠܝ ܠܡܪܕܘܬܐ.
53
54 * ܚܝܠܬܐ ܐܚܕܬܢܝ ܡܢ ܚܛܝܐ ܕܫܒܩܘ ܢܡܘܣܟ: * ܙܡܝܪܬܐ ܗܘܘ ܠܝ ܦܘܩܕܢܝܟ ܒܒܝܬ
55 ܬܘܬܒܘܬܝ. * ܐܬܕܟܪܬ ܒܠܠܝܐ ܫܡܟ ܡܪܝܐ ܘܢܛܪܬ ܢܡܘܣܟ: * ܘܐܬܒܝܐܬ ܡܛܠ
56
ܕܢܛܪܬ ܦܘܩܕܢܝܟ.

Vias meas exposui tibi, & exaudisti me: doce me legem tuam. Viam mandatorum tuorum ostende mihi, & contemplabor miracula tu Turbata est anima mea in contemplatione: vivifica me secundùm verbum tuum. Viam iniquorum averte à me, & legem tuam edoce me. Viam fidei tuæ selegi, & judiciis tuis sum delectatus. Adhæsi testimonio tuo Domine ne confundas me. Per viam præceptorũ tuorũ incessi, quoniam exhilarâsti me. * *He* * Doce me Dñe viã mandatorũ tuorum, & servabo illa. Erudi me, ut custodiã legem tuam eámq; observẽ ex toto corde meo. Duc me per semitã decretorum tuorum, quia mihi jucunda est. Converte cor meũ ad testimonia tuũ, & non ad fabulas. Averte oculos meos ne cernant falsitatẽ, & in viis tuis vivifica me. Confirma verbũ tuũ servo tuo te colenti. Aufer à me probrum, quoniam judicia tua pulchra sunt. Placuerunt mihi præcepta tua in æquitate tua vivifica me. * *Vau* * Adveniant mihi miserationes tuæ Dñe, & salus tua quam dixisti. Daboq; responsum exprobrantib⁹ mihi: fisus enim sum verbis tuis. Non recedat ab ore meo sermo veritatis: nam judicia tua expectavi. Custodiã legẽ tuã in seculũ seculorũ, Et ambulabo in latitudine: quia mandatis tuis sum oblectatus. Loquar cum coram regib⁹ & non erubescam. Et meditabor præcepta tua quæ dilexi. Atq; levabo manus meas ad mandata tua quæ amavi: & commemorabo eadẽ præcepta tua, & gloriabor in tua. * *Zain* * Memor sis verbi tui ad servum tuum, quod ei pollicitus es, Et quo consolatus sum in humilitate mea; nam sermo tuus vivificavit me. Scelesti oppresserunt me, tamen à lege tua non deflexi. Memoria tenens judicia tua Dñe quæ à seculo sunt, ac solatium percepi, fueruntq; mihi eruditioni. Moeror occupavit me propter peccatores qui destituerunt legem tuã. Cantus fuerunt mihi præcepta in peregrinatione mea. Recordatus sum noctu nominis tui Domine, & servavi legem tuam: Sumq; consolatus quod custodierim mandata tua

Verſio VULG. LAT.

26 Vias meas enuntiavi, & exaudiſti me:
27 doce me juſtificationes tuas. Viam ju-
ſtificationum tuarũ inſtrue me: & exercebor
28 in mirabilibus tuis. Dormita-
vit anima mea præ tædio: confirma me
29 in verbis tuis. Viam iniquitatis amo-
ve a me: & de lege tua miſerere mei.
30 Viam veritatis elegi: judicia tua non
31 ſũ oblit⁹. Adhæſi teſtimoniis tuis, Dñe:
32 noli me confundere. Viã mandatorum
tuorũ cucurri, cùm dilatáſti cor meũ.
33 HE. Legem pone mihi, Dñe, viam
juſtificationũ tuarum: & exquirã eã
34 ſemper. Da mihi intellectum, & ſcrutabor
legem tuam: & cuſtodiã illam in
35 toto corde meo. Deduc me in ſemitam
mandatorum tuorum: quia ipſam volui.
36 Inclina cor meũ in teſtimonia tua,
37 & non in avaritiã. Averte oculos meos
ne videant vanitatẽ: in via tua vivifica
38 me. Statue ſervo tuo eloquiũ tuũ in timore
39 tuo. Amputa opprobriũ meũ, ꝙ
ſuſpicat⁹ ſũ: quia judicia tua jucunda.
40 Ecce concupivi mandata tua: in æquitate
41 tua vivifica me. VAU. Et
veniat ſup me miſericordia tua, Dñe:
ſalutare tuum ſecundùm eloquiũ tuũ.
42 Et reſpondebo exprobrantibus mihi
verbũ: quia ſperavi in ſermonib⁹ tuis.
43 Et ne auferas de ore meo verbũ veritatis
uſquequaque: quia in judiciis tuis
44 ſuperſperavi. Et cuſtodiam legẽ tuam
45 ſemp, in ſeculũ & in ſeculũ ſeculi. Et
ambulabã in latitudine: quia mandata
46 tua exquiſivi. Et loquebar de teſtimoniis
tuis in conſpectu regũ: et non confundebar.
47 Et meditabar in mandatis
48 tuis, quæ dilexi. Et levavi manus meas
ad mandata tua, quæ dilexi: & exercebar
in juſtificationib⁹ tuis. ZAIN.
49 Memor eſto verbi tui ſervo tuo, in quo
50 mihi ſpem dediſti. Hæc me conſolata
eſt in humilitate mea: quia eloquiũ tuũ
51 vivificavit me. Superbi iniquè agebant
uſquequaq;: à lege autẽ tua nõ declinavi.
52 Memor fui judiciorũ tuorũ à ſeculo,
53 Dñe: & conſolat⁹ ſum. Defectio tenuit
me, pro peccatoribus derelinquentib⁹
54 legẽ tuã. Cantabiles mihi erãt juſtificationes
tuæ, in loco peregrinationis
55 meæ. Memor fui nocte nominis tui,
56 Dñe: & cuſtodivi legẽ tuam. Hæc facta eſt
mihi: quia juſtificationes tuas exquiſivi.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

26 † Τὰς ὁδούς (κ) μου ἐξήγγειλα, καὶ ἐπήκουσάς μου, † δίδαξόν
27 με τὰ δικαιώματά σου. † Ὁδὸν δικαιωμάτων
σου συνέτισόν με, † καὶ ἀδολεσχήσω ἐν τοῖς θαυμασίοις
28 σου. † Ἐνύσταξεν ἡ ψυχή μου ἀπὸ ἀκηδίας, † βεβαίωσόν
29 με ἐν τοῖς λόγοις σου. † Ὁδὸν ἀδικίας ἀπόστησον
30 ἀπ' ἐμοῦ, † καὶ τῷ νόμῳ σου ἐλέησόν με. † Ὁδὸν
ἀληθείας ᾑρετισάμην, † (λ) καὶ τὰ κρίματά σου οὐκ
31 ἐπελαθόμην. † Ἐκολλήθην τοῖς μαρτυρίοις σου κύριε,
32 μή με καταισχύνῃς. † Ὁδὸν ἐντολῶν σου ἔδραμον,
33 ὅταν ἐπλάτυνας τὴν καρδίαν μου. † Νομοθέτησόν
με κύριε τὴν ὁδὸν τῶν δικαιωμάτων σου, † καὶ
34 ἐκζητήσω αὐτὴν διαπαντός. † Συνέτισόν με, καὶ (μ)
ἐξερευνήσω τὸν νόμον σου, † καὶ φυλάξω αὐτὸν ἐν ὅλῃ
35 καρδίᾳ μου. † Ὁδήγησόν με (ν) ἐν τῇ τρίβῳ τῶν ἐντολῶν
36 σου, † ὅτι αὐτὴν ἠθέλησα. † Κλῖνον τὴν καρδίαν
μου εἰς τὰ μαρτύριά σου, † καὶ μὴ εἰς πλεονεξίαν.
37 † Ἀπόστρεψον τοὺς ὀφθαλμούς μου τοῦ μὴ ἰδεῖν
38 ματαιότητα, † ἐν τῇ ὁδῷ σου ζῆσόν με. † Στῆσον τῷ
39 δούλῳ σου τὸ λόγιόν σου εἰς τὸν φόβον σου. † Περίελε τὸν
ὀνειδισμόν μου ὃν ὑπώπτευσα, † ὅτι τὰ κρίματά σου
40 χρηστά. † Ἰδοὺ ἐπεθύμησα τὰς ἐντολάς σου, ἐν τῇ
41 δικαιοσύνῃ σου ζῆσόν με. † Καὶ ἔλθοι ἐπ' ἐμὲ
τὸ ἔλεός σου, κύριε † τὸ σωτήριόν σου (ξ) κατὰ τὸν
42 λόγον σου. † Καὶ ἀποκριθήσομαι τοῖς ὀνειδίζουσί
(ο) μοι λόγον, † ὅτι ἤλπισα (π) ἐπὶ τοῖς λόγοις σου.
43 † Καὶ μὴ περιέλῃς ἐκ τοῦ στόματός μου λόγον ἀληθείας
ἕως σφόδρα, † ὅτι ἐπὶ τοῖς κρίμασί σου (ρ) ἐπήλπισα.
44 † Καὶ φυλάξω τὸν νόμον σου διαπαντός, εἰς τὸν
45 αἰῶνα † καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος. † Καὶ ἐπορευόμην
ἐν πλατυσμῷ, † ὅτι τὰς ἐντολάς σου ἐξεζήτησα.
46 † Καὶ ἐλάλουν ἐν τοῖς μαρτυρίοις σου ἐναντίον
47 βασιλέων, καὶ οὐκ ᾐσχυνόμην. † Καὶ ἐμελέτων ἐν ταῖς
48 ἐντολαῖς σου, αἷς ἠγάπησα σφόδρα. † Καὶ ἦρα τὰς
χεῖράς μου πρὸς τὰς ἐντολάς σου ἃς (σ) ἠγάπησα,
49 † καὶ ἠδολέσχουν ἐν τοῖς δικαιώμασί σου. † Μνήσθητι
(τ) τῶν λόγων σου τῷ δούλῳ σου (υ) ὧν ἐπήλπισάς
50 με. † Αὕτη με παρεκάλεσεν ἐν τῇ ταπεινώσει μου,
51 † ὅτι τὸ λόγιόν σου ἔζησέ με. † Ὑπερήφανοι παρηνόμουν
ἕως σφόδρα, † ἀπὸ δὲ τοῦ νόμου σου οὐκ ἐξέκλινα.
52 † Ἐμνήσθην τῶν κριμάτων σου ἀπ' αἰῶνος
53 κύριε, καὶ παρεκλήθην. † Ἀθυμία κατέσχε με ἀπὸ
ἁμαρτωλῶν τῶν ἐγκαταλιμπανόντων τὸν νόμον σου.
54 † Ψαλτὰ ἦσάν μοι τὰ δικαιώματά σου, ἐν τόπῳ
55 παροικίας μου. † Ἐμνήσθην ἐν νυκτὶ τοῦ ὀνόματός
56 σου κύριε, † καὶ ἐφύλαξα τὸν νόμον σου. † Αὕτη ἐγενήθη
μοι, ὅτι τὰ δικαιώματά σου ἐξεζήτησα.

MS.A. (κ) σου (λ) τὰ κρίματά (μ) ἐξερευνήσω (ν) ἐν τρίβῳ (ξ) κατὰ λόγιόν σου. (ο) με (π) ἐπὶ τοῖς λόγοις σου. (ρ) ἐφήλπισα. (σ) ἠγάπησα σφόδρα, καὶ (τ) τὸν λόγον (υ) ᾧ ἐφήλπισάς με.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

26 † Vias meas enuntiavi, & exaudiſti
me: doce me juſtificationes
27 tuas. 27 Viam juſtificationum tuarũ
(l) fac me intelligere: et exercebor in
28 mirabilib⁹ tuis. 28 (m) Dormitavit
anima mea præ tædio: confirma me in
29 verbis tuis. 29 Viã iniquitatis amove
à me, & lege tuâ miſerere mei.
30 30 Viam [m] veritatis elegi: & judicia
31 tua non ſum oblitus. 31 Adhæſi
teſtimoniis tuis, Domine: noli me
32 confundere. 32 Viã mandatorũ tuorũ
cucurri, cùm dilatáſti cor meũ.
33 33 (n) [n] Legẽ pone mihi, Dñe, viã
juſtificationũ tuarum: et exquirã eã
34 ſemper. 34 Da mihi intellectum, &
ſcrutabor legem tuam: & cuſtodiam
35 illã in toto corde meo. 35 Deduc me
in ſemita mandatorum tuorum, (o)
36 quia ipſam volui. 36 Inclina cor
meũ in teſtimonia tua, & non in avaritiam.
37 37 Averte oculos meos ne
38 videãt vanitatẽ: in via tua vivifica
me. 38 Statue ſervo tuo [o] eloquiũ
39 tuum, (p) in timorẽ tuum. 39 Amputa
opprobriũ meũ, quod (q) ſuſpicatus
ſum, quia judicia tua jocunda.
40 40 Ecce concupivi mandata tua: in
41 tua juſtitia vivifica me. 41 Et veniat
ſuper me miſericordia tua, Dñe,
[p] ſalutare tuum (r) ſecundùm verbum
42 tuum. 42 Et reſpondebo exprobrantib⁹
mihi verbũ, quia ſperavi in
43 ſermonibus tuis. 43 Et ne auferas de
ore meo verbum veritatis uſque valdè:
quia in judiciis tuis ſuperſperavi.
44 44 Et cuſtodiã legem tuam ſemper,
in ſeculum, & in ſeculũ ſeculi.
45 45 Et ambulabã in latitudine; quia
46 mandata tua exquiſivi. 46 Et loquebar
in teſtimonus tuis in conſpectu
47 regũ, & non confundebar. 47 Et meditabar
in mandatis tuis, quæ dilexi
48 (ſ) nimis. 48 Et levavi manus meas
ad mandata (t) tua, quæ dilexi: &
(u) [q] exercebar in juſtificationibus
49 tuis. 49 Memento (x) [r] verborum
tuorũ ſervo tuo, in quib⁹ mihi
50 ſpem dediſti. 50 Hæc me conſolata
eſt in humilitate mea, quia eloquium
51 tuũ vivificavit me. 51 Superbi
iniquè agebant uſque valdè: à lege
52 autem tua non declinavi. 52 Memor
fui judiciorũ tuorum à ſeculo, Domine:
& (y) conſolatus ſum. 53 (z) [ſ] Tædiũ tenuit me à peccatoribus derelinquentibus 53
legẽ tuam. 54 Cantabiles mihi erant juſtificationes tuæ, in loco (ω) incolatûs mei. 55 Memor 54 55
fui in nocte nominis tui, Domine: & cuſtodivi legem tuam. 56 (aa) Hæc facta 56
eſt mihi, quia juſtificationes tuas exquiſivi.

INTERP. ÆTHIOP. [l] Vias tuas [m] veritatis tuæ [n] Inſtrue me Domine, [o] quæ dixiſti in verbo tuo. [p] Domine ſalutare [q] exercebor in præceptis tuis. [r] verbi tui, in quo ſperare feciſti ſervum tuum. [ſ] Mœſtitia tenuit

Verſio ÆTHIOPICA.

ነገርኩ ፡ ፍናዊከ ፡ ወሰማዕከኒ ፡፡ ወመሀረኒ ፡ 26
ኵነኔከ ፡፡ ÷ ፍናተ ፡ ጽድቅከ ፡ አለብወኒ ፡፡ 27
ወእዛዋዕ ፡ በመንክርከ ፡፡ ÷ ደቀሰት ፡ ነፍስየ ፡ 28
እምሐዘን ፡፡ አጽንዐኒ ፡ በነቢብከ ፡፡ ÷ ፍኖ 29
ተ ፡ ዐመፃ ፡ አርሕቅ ፡ እምኔየ ፡፡ ወበሕግከ ፡ ተሣ
ሀለኒ ፡፡ ÷ ፍናተ ፡ ጽድቅከ ፡ አብደርኩ ፡፡ ወ 30
ኵነኔከሰ ፡ ኢረሳዕኩ ፡፡ ÷ ተለውኩ ፡ ስምዐ 31
ከ ፡ እግዚኦ ፡ ኢታስተኀፍረኒ ፡፡ ÷ ፍናተ ፡ ት 32
እዛዝከ ፡ ሮጽኩ ፡፡ ሰበ ፡ አርኀብከ ፡ ለልብ
የ ፡፡ ÷ ሄ ሃ ፡ መሀረኒ ፡ እግዚኦ ፡ ፍናተ ፡ 33
ጽድቅከ ፡፡ ወእኃሥሥ ፡ በኵሉ ፡ ጊዜ ፡፡ ÷
አለብወኒ ፡ ወእኀሥሥ ፡ ሕግከ ፡፡ ወዕቀብ ፡ በ 34
ኵሉ ፡ ልብየ ፡፡ ÷ መርሐኒ ፡ ፍናተ ፡ ትእዛዝ 35
ከ ፡፡ እስመ ፡ ኪያሃ ፡ ፈቀድኩ ፡፡ ÷ ሚጥ ፡ ልብ 36
የ ፡ ውስተ ፡ ስምዕከ ፡፡ ወአኮ ፡ ውስተ ፡ ትዕግል
ት ፡፡ ÷ ሚጦን ፡ ለአዕይንትየ ፡ ከመ ፡ ኢይርአ 37
ያ ፡ ከንቶ ፡፡ ወአሕይወኒ ፡ በፍናትከ ፡፡ ÷ አቅ 38
ም ፡ ለገብርከ ፡ ዘነበብከ ፡ ውስተ ፡ ነቢብከ ፡፡ ÷
አእትት ፡ እምኔየ ፡ ፅእለተ ፡ ዘተሐዘብኩ ፡፡ እ 39
ስመ ፡ ሠናይ ፡ ኵነኔከ ፡፡ ÷ ናሁ ፡ ፈተውኩ ፡ 40
ትእዛዘከ ፡፡ ወአሕይወኒ ፡ በጽድቅከ ፡፡ ÷
ጓ ዋው ፡ ወይምጻእ ፡ ሳዕሌየ ፡ ምሕረትከ ፡ 41
እግዚኦ ፡፡ እግዚኦ ፡ አድኅኖትከ ፡ በከመ ፡ ነ
ቢብከ ፡፡ ÷ አውሥኦሙ ፡ ቃለ ፡ ለእለ ፡ ይፄ 42
እሉኒ ፡፡ እስመ ፡ ተወከልኩ ፡ በቃልከ ፡፡ ÷ ኢ 43
ታእትት ፡ ቃለ ፡ ጽድቅ ፡ እምአፈየ ፡ ለግሙራ ፡፡
እስመ ፡ ተወከልኩ ፡ በኵነኔከ ፡፡ ÷ ወእዐቅ 44
ብ ፡ ሕግከ ፡ በኵሉ ፡ ጊዜ ፡፡ ለዓለም ፡ ወለዓለ
ም ፡ ዓለም ፡፡ ÷ ወእሖውር ፡ ሰፊሐ ፡፡ እስመ ፡ 45
ትእዛዘከ ፡ ኃሠሥኩ ፡፡ ÷ ወእነግር ፡ ስምዐ 46
ከ ፡ በቅድመ ፡ ነገሥት ፡ ወኢይትኃፈር ፡፡ ÷
ወአነብብ ፡ ትእዛዘከ ፡ ዘአፍቀርኩ ፡ ጥቀ ፡፡ ÷ 47
ወአነሥእ ፡ እደዊየ ፡ ኀበ ፡ ትእዛዘከ ፡ ዘአፍቀ 48
ርኩ ፡፡ ወእዛዋዕ ፡ በትእዛዝከ ፡፡ ÷ ጊ ዛይ ፡ 49
ተዘከር ፡ ቃለከ ፡ ዘአሰፈውኮ ፡ ለገብር
ከ ፡፡ ÷ ወይእቲ ፡ አስተፈሥሐተኒ ፡ በሕማም 50
የ ፡፡ እስመ ፡ ቃልከ ፡ አሕየወኒ ፡፡ ÷ ዕቡያን ፡ 51
ዐመፁ ፡ ፈድፋደ ፡፡ ወእምሕግከሰ ፡ ኢተገኀ
ሠኩ ፡፡ ÷ ወተዘከርኩ ፡ ፍትሐከ ፡ ዘእምዓ 52
ለም ፡፡ ወተፈሣሕኩ ፡ እግዚኦ ፡፡ ÷ ሐዘን ፡ አ 53
ኀዘኒ ፡ እምኃጥአን ፡፡ እለ ፡ ኀደጉ ፡ ሕገከ ፡፡ ÷
መዝሙር ፡ ኮነኒ ፡ ኵነኔከ ፡፡ በብሔር ፡ ኀበ ፡ ፈለ 54
ስኩ ፡፡ ÷ ተዘከርኩ ፡ በሌሊት ፡ ስመከ ፡ እግዚ 55
ኦ ፡፡ ወዐቀብኩ ፡ ሕገከ ፡፡ ÷ ወይእቲ ፡ ኮነት 56
ኒ ፡፡ እስመ ፡ ኵነኔከ ፡ ኃሠሥኩ ፡፡ ÷

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* أخبرت بحقوقك فاستجب لي وعلمني حقوقك * افهمني سبيل فرايضك فاتلو في عجايبك . 26 27
* نعست نفسي من الحزن فثبتني في اقوالك * ابعد عني طريق الظلم وارحمني بشرعك . 28 29
* اخترت لي طريق العدل ولم انس احكامك * لزمت شهاداتك يا رب فلا تخزني * سعيت في طريق 30 31
وصاياك لما وسعت قلبي * الفصل الخامس وهو ه * يا رب ضع لي ناموسا في سبيل فرايضك 32 33
فاطلبه في كل حين * فهمني فافحص ناموسك واحفظها بجميع قلبي * اهدني الي طريق وصاياك 34 35
فان هذا هو الذي اردته * امل قلبي الي شهاداتك لا الي الظلم * اصرف عيني لئلا تنظر 36 37
الباطل واحيني في سبلك * ثبت كلامك مع عبدك الداخل في مخافتك * وانزع عني الخزي 38 39
الذي تشككت فيه فان احكامك شهية * هانذا قد اشتهيت وصاياك فاحيني بعدلك . 40
* الفصل السادس وهو و * فلتغشني رحمتك يا رب وخلاصك كمثل كلمتك * فاجيب قول 41 42
الذين يعيروني لاني توكلت علي اقوالك * ولا تنزع من فمي كلام فرايضك الي الغاية جدا فاني 43
عليك توكلت * واحفظ ناموسك كل حين الي الابد والي ابد الابد * قد سلكت في سعة لاني 44 45
طلبت وصاياك * وانطق بشهاداتك امام الملوك ولا اخزي * درست وصاياك هذه التي 46 47
احببتها جدا * ورفعت ذراعي الي وصاياك هولاء اللواتي احببتهن جدا وتلوت فرايضك . 48
الفصل السابع وهو ز * اذكر كلامك لعبدك الذي عليه اتكلتني * هذا الذي عزاني 49 50
في ذلي لان قولك يا رب هو احياني * المتعظمون خالفوا الناموس جدا الي الغاية وانا لم اميل 51 52
عن ناموسك * ذكرت احكامك يا رب منذ الازل فتعزيت * لزمني الكابة من الخطاة الذين 53
يرفضون شرعك * فرايضك هي مزاميري في موضع غربتي * في الليل ذكرت اسمك يا رب 54 55
وحفظت ناموسك * هذا صار لي لاني طلبت فرايضك . 56

Annuntiavi ſtatuta tua; igitur exaudi me, et 26
doce me conſtitutiones tuas. Intelligere fac 27
me ſemitam præceptorũ tuorum, et meditabor
miracula tua. Dormitavit anima mea 28
præ mœrore, confirma me ſermonibus tuis.
Amove à me viam perverſitatis, et miſerere 29
mei ſecundùm legẽ tuam. Selegi mihi viam 30
æquitatis, & non ſum oblitus judicia tua.
Adhæſi teſtimoniis tuis, O Domine, ne quæſo, 31
me confundas. Cucurri in via mandatorum 32
tuorum, ubi dilatâſti cor meum. Sect. v.
Ver. 7. O Domine, pone mihi legem in via 33
decretorum tuorum, et quæram illã in omni
tempore. Da mihi intellectum, et ſcrutabor 34
legem tuam, et cuſtodiam illã ex toto corde
meo. Dirige me ad viam mandatorum tuorum, 35
quia hoc eſt quod volui. Inclina cor 36
meum ad teſtimonia tua, non ad perverſitatem.
Averte oculos meos ne videant vanitatem, 37
et vivifica me in ſemitis tuis. Confirma 38
ſermonem tuum cum ſervo tuo ingrediente
in timorẽ tuum. Et aufer à me opprobrium 39
quod ſum ſuſpicatus, quia judicia tua ſunt
optabilia. Ecce jam expetivi mandata tua, 40
me igitur vivifica ex juſtitia tua. Sect. vi.
Ver. 7. Cooperiat me miſericordia tua, O 41
Domine, et ſalus tua, ſecundùm verbum tuum:
Et reſpondebo ſermoni eorum qui me 42
vituperant, quia fretus ſum ſermonibus tuis,
Et ne auferas de ore meo ſermonẽ decretorũ 43
tuorum uſque in finẽ penitùs, quia tibi ſum
fiſus. Et cuſtodiam legem tuam omni tempore, 44
in æternum et in ſeculum ſeculi. Jam 45
ambulavi in latitudine, quia quæſivi mandata
tua. Et proferam teſtimonia tua corã 46
regibus, et non erubeſcam. Recitavi præcepta 47
tua hæc quæ dilexi valdè. Et extuli brachia 48
mea ad mandata tua iſta quæ dilexi vehementer,
& contemplatus ſum decreta tua.
Sect. vii. Ver. 7. Memento ſermonis tui ad 49
ſervum tuum, cui me fidere juſſiſti. Hoc 50
eſt quod me conſolatum eſt in depreſſione
mea: nam ſermo tuus, O Domine, ipſe me
vivificavit. Superbi adverſati ſunt legi nimis 51
præter terminum, & ego non declinavi
à lege tua. Recordatus ſum judicia tua, O 52
Domine, ab æterno, & conſolatus ſum. Inhæſit 53
mihi mœror à peccatoribus qui averſantur
legem tuam. Decreta tua ſunt cantica 54
mea in loco peregrinationis meæ. In 55
nocte recordatus ſum nominis tui, O Domine,
& cuſtodivi legem tuam. Hoc contigit 56
mihi, quia petivi decreta tua.

תהלים : קיט

57 toto in tua facie sum Deprecatus .tua verba custodiendum ad , dixi,Domine mea Portio
58 חֶלְקִי יְהוָה אָמַרְתִּי לִשְׁמֹר דְּבָרֶיךָ׃ חִלִּיתִי פָנֶיךָ בְכָל־
meos pedes converti &:meas vias Cogitavi .tuum eloquium secundũ mei miserere:corde
59 לֵב חָנֵּנִי כְּאִמְרָתֶךָ׃ חִשַּׁבְתִּי דְרָכָי וָאָשִׁיבָה רַגְלַי
Funes .tua mandata custodiendum ad : tardavi non &,Festinavi.tua testimonia ad
60
61 אֶל־עֵדֹתֶיךָ׃ חַשְׁתִּי וְלֹא הִתְמַהְמָהְתִּי לִשְׁמֹר מִצְוֺתֶיךָ׃ חֶבְלֵי
surgam noctem Mediando .sum oblitus non tuæ legis : me sunt prædati impiorum
62 רְשָׁעִים עִוְּדֻנִי תּוֹרָתְךָ לֹא שָׁכָחְתִּי׃ חֲצוֹת־לַיְלָה אָקוּם
: te timent qui omnibus ego Socius .tuæ justitiæ judicia super :tibi confitendum ad
63 לְהוֹדוֹת לָךְ עַל מִשְׁפְּטֵי צִדְקֶךָ׃ חָבֵר אָנִי לְכָל־אֲשֶׁר יְרֵאוּךָ
64 tua statuta : terra est plena,Domine,tuæ Misericordiæ .tua præcepta custodientibus &
65 וּלְשֹׁמְרֵי פִּקּוּדֶיךָ׃ חַסְדְּךָ יְהוָה מָלְאָה הָאָרֶץ חֻקֶּיךָ
Bonitatem .tuum verbum secundũ,Domine tuo servo cum fecisti Bonum .me doce
66 לַמְּדֵנִי׃ טוֹב עָשִׂיתָ עִם־עַבְדְּךָ יְהוָה כִּדְבָרֶךָ׃ טוּב
humiliarer Priusquam .credidi tuis præceptis in quia : me doce scientiam & sensus
67 טַעַם וָדַעַת לַמְּדֵנִי כִּי בְמִצְוֺתֶיךָ הֶאֱמָנְתִּי׃ טֶרֶם אֶעֱנֶה
me doce : beneficus & , tu Bonus .custodivi tuum eloquium nunc & : errans ego
68 אֲנִי שֹׁגֵג וְעַתָּה אִמְרָתְךָ שָׁמָרְתִּי׃ טוֹב־אַתָּה וּמֵטִיב לַמְּדֵנִי
custodiam corde toto in ego : superbi mendacium me super, Concinnârunt .tua statuta
69 חֻקֶּיךָ׃ טָפְלוּ עָלַי שֶׁקֶר זֵדִים אֲנִי בְּכָל־לֵב אֶצֹּר
70 Bonum .sum delectatus tua lege ego:eorũ cor adeps sicut se Impinguavit .tua præcepta
71 פִּקּוּדֶיךָ׃ טָפַשׁ כַּחֵלֶב לִבָּם אֲנִי תּוֹרָתְךָ שִׁעֲשָׁעְתִּי׃ טוֹב־
millia quàm,tui oris lex mihi Melior.tua statuta discam ut : fui afflictus quòd mihi
72 לִי כִי־עֻנֵּיתִי לְמַעַן אֶלְמַד חֻקֶּיךָ׃ טוֹב־לִי תוֹרַת־פִּיךָ מֵאַלְפֵי
discam &,me fac intelligere:me plasmaverunt &,me fecerunt tuæ Manus .argenti & auri
73 זָהָב וָכָסֶף׃ יָדֶיךָ עָשׂוּנִי וַיְכוֹנְנוּנִי הֲבִינֵנִי וְאֶלְמְדָה
Novi .expectavi tuum verbũ quia:lætabũtur &,me videbunt,te Timentes .tua præcepta
74
75 מִצְוֺתֶיךָ׃ יְרֵאֶיךָ יִרְאוּנִי וְיִשְׂמָחוּ כִּי לִדְבָרְךָ יִחָלְתִּי׃ יָדַעְתִּי
tua misericordia nunc Sit .me afflixisti veritate & : tua judicia justitia quod Domine
76 יְהוָה כִּי־צֶדֶק מִשְׁפָּטֶיךָ וֶאֱמוּנָה עִנִּיתָנִי׃ יְהִי־נָא חַסְדְּךָ
,tuæ misericordiæ mihi Veniãt.tuo servo tuum eloquium secundùm,me consolandum ad
77 לְנַחֲמֵנִי כְּאִמְרָתְךָ לְעַבְדֶּךָ׃ יְבֹאוּנִי רַחֲמֶיךָ
:me perverterũt falsò quoniã,superbi afficiãtur Pudore .meæ deliciæ tua lex quia :vivam &
78 וְאֶחְיֶה כִּי־תוֹרָתְךָ שַׁעֲשֻׁעָי׃ יֵבֹשׁוּ זֵדִים כִּי־שֶׁקֶר עִוְּתוּנִי
.tua testimonia scientes &:te timẽtes me ad Convertãtur .tuis præceptis in meditabor ego
79 אֲנִי אָשִׂיחַ בְּפִקּוּדֶיךָ׃ יָשׁוּבוּ לִי יְרֵאֶיךָ וְיֹדְעֵי עֵדֹתֶיךָ׃
80 Defecit .afficiar pudore non ut : tuis statutis in perfectum meum cor Sit
81 יְהִי־לִבִּי תָמִים בְּחֻקֶּיךָ לְמַעַן לֹא אֵבוֹשׁ׃ כָּלְתָה
:tuum dictũ ad mei oculi Defecerunt .expectavi tuũ verbũ ad:mea anima tuam salutem ad
82 לִתְשׁוּעָתְךָ נַפְשִׁי לִדְבָרְךָ יִחָלְתִּי׃ כָּלוּ עֵינַי לְאִמְרָתֶךָ
tuorum statutorũ : fumario in uter sicut fui Quia ? me consolaberis quando,dicendo
83 לֵאמֹר מָתַי תְּנַחֲמֵנִי׃ כִּי־הָיִיתִי כְּנֹאד בְּקִיטוֹר חֻקֶּיךָ
me persequentes in facies quando : tui servi dies Quot .sum oblitus non
84 לֹא שָׁכָחְתִּי׃ כַּמָּה יְמֵי־עַבְדֶּךָ מָתַי תַּעֲשֶׂה בְרֹדְפַי
.tuam legem secundùm non quod : foveas superbi mihi Foderunt ? judicium
85 מִשְׁפָּט׃ כָּרוּ־לִי זֵדִים שִׁיחוֹת אֲשֶׁר לֹא כְתוֹרָתֶךָ׃
.me adjuva ,me sunt persecuti falsò : veritas tua mandata Omnia
86 כָּל־מִצְוֺתֶיךָ אֱמוּנָה שֶׁקֶר רְדָפוּנִי עָזְרֵנִי׃

תרגום TARGUM.

57 חוּלְקִי יְיָ אֲמַרִית לְמִטַּר דִּבְרָיךְ : צַלִּיתִי קֳדָמָךְ
58 בְּכָל לִבָּא חוּס עֲלַי הֵיךְ מֵימְרָךְ : חֲשִׁיבִית
59 לְאוֹטָבָא אוֹרְחִי וַאֲתִיב רִגְלַי לְסַהֲדְוָתָךְ :
60 זְרִיזִית וְלָא אִתְעַכְּבִית לְמִטַּר פִּקּוֹדָיךְ : סִיעַת
61 רַשִׁיעַיָא אִתְכַּנַּשׁוּ עֲלַי אוֹרַיְתָךְ לָא אִתְנְשֵׁיתִי :
62 בְּפַלְגוּת לֵילְיָא אֵקוּם לְשַׁבָּחָא קֳדָמָךְ מְטוּל
63 דִּינֵי צִדְקָךְ : חַבְרָא אֲנָא לְכָל דְּדַחֲלִין מִנָּךְ
64 וּלְנָטְרֵי פִּקּוֹדָיךְ : טוּבָךְ יְיָ מַלְיָא אַרְעָא גְּזֵרָתָךְ
65 אַלֵּף יָתִי : טָבָא עֲבַדְתָּ עִם עַבְדָּךְ יְיָ הֵיךְ
66 דִּבְרָךְ : שַׁפִּיר טַעַם וּמַנְדְּעָא אַלֵּף יָתִי אֲרוּם
67 בְּפִקּוֹדָיךְ הֵימְנֵית : עַד לָא אִסְתְּנִיף אֲנָא
68 שָׁלֵי וּכְדוּן מֵימְרָךְ נַטְרֵית : טָב אַתְּ וּמְטִיב
69 אַלֵּף יָתִי גְּזֵרָתָךְ : חַבַּרוּ עֲלַי שִׁקְרָא זֵידוֹנִין
70 אֲנָא בְּכָל לִבָּא אֶטּוֹר פִּקּוֹדָיךְ : אִטְפַּשׁ הֵיךְ
תְּרַב יִצְרָא דְלִבְּהוֹן אֲנָא אוֹרַיְתָךְ פַּרְנוּקִי :
71 טָב לִי אֲרוּם אִתְעַנֵּיִית מִן בְּגַלַל דְּאֵילַף
72 גְּזֵרָתָךְ : טָב לִי אוֹרַיְת פּוּמָךְ מִן אֲלַף כִּכְּרִין
73 דְּהַב וְסֵימָא : אִידָךְ עֲבַדוּ יָתִי וְאַתְקִינוּ יָתִי
74 הַתְבִּינַנִי וְאֵילַף פִּקּוֹדָיךְ : דְּחַלָיךְ יֶחֱמוֹן יָתִי
75 וְיֶחְדּוֹן אֲרוּם לְפִתְגָּמָךְ אוֹרִיכֵית : יְדַעִית יְיָ
76 אֲרוּם וְכָאֵין דִּינָיךְ וּבְקוּשְׁטָא סַגַּפְתַּנִי : יְהֵי
כְּדוּן חִסְדָּךְ לְנַחֲמוּתִי הֵיךְ מֵימְרָךְ לְעַבְדָּךְ :
77 יֵיתוּן עֲלַי רַחֲמָךְ וְאֵחֵי אֲרוּם אוֹרַיְתָךְ פַּרְנוּקִי :
78 יִבַּהֲתוּן זֵידוֹנִין אֲרוּם עַל שִׁקְרָא עַוִּיתוּ יָתִי
79 אֲנָא אֲמַלֵּל בְּפִקּוֹדָיךְ : יְתוּבוּן לְאוּלְפָּנִי
80 דַּחֲלָיךְ וְיָדְעִין סַהֲדְוָתָךְ : יְהֵי לִבִּי דְּלָא מוּם
81 בִּגְזֵרָתָךְ מִן בְּגַלַל דְּלָא אֶבְהֵית : רְגִינַת
82 לְפוּרְקָנָךְ נַפְשִׁי לְפִתְגָּמָךְ אוֹרִיכֵית : סָפוּ עֵינַי
83 לְמֵימְרָךְ לְמֵימַר אֵימְתַי תְּנַחֵם יָתִי : אֲרוּם
הֲוֵיתִי הֵיךְ זַרְנוּקָא דְּתָלֵי בִּקְטָרָא גְּזֵרָתָךְ לָא
84 אִתְנְשֵׁיתִי : כְּמָה יוֹמֵי עַבְדָּךְ אֵימְתַי תַּעְבֵּיד
85 בְּרוֹדְפַי דִּינָא : כְּרוֹ לִי זֵידוֹנִין שׁוּחִין דְּלָא
86 פַּקֵּדְתָּנוּן בְּאוֹרַיְתָךְ : כָּל פִּקּוֹדָיךְ קוּשְׁטָא
עַל שִׁקְרָא רַדְפוּ יָתִי סַעֲדְנִי :

PARAPH. CHALD. Verſ. La

HETH. Pars mea Domine: dix custodiam verbum tuum. Oravi coram in toto corde: miſerere mei ſecundùm ve bum tuum. Cogitavi bonas facere vias me as, ut convertam pedes meos ad teſtimon tua. Feſtinavi,& non diſtuli obſervare ma data tua. Cohors impiorum congregata e contra me, Legem tuam non ſum oblitus. I medio noctis ſurgam ut laudes dicam cora te, propter judicia juſtitiæ tuæ. Socius eg ſum omnium timentium te,& cuſtodientiu mandata tua. Benignitate tua Dñe plena e terra, decreta tua doce me. TETH. Bonitatem feciſti cum ſervo tuo Domi ſecundùm verbum tuum. Congruam ratio nem, & ſcientiam doce me, quia præce ptis tuis credidi. Priúſquam affligerer, ego in errore: nunc autem verbum tuu obſervavi. Bonus es & beneficus, doce ſtatuta tua. Concinnârunt contra me me dacium ſuperbi: ego [*autem*] in toto cor ſervabo mandata tua. *Incraſſatus* eſt qu adipe fomes cordis eorum; mihi verò tua oblectationi fuit. Bonum mihi eſt qu humiliatus fuerim,ut diſcam ſtatuta tua. lior eſt mihi lex oris tui, quam millia tale auri & argenti. JOD. Manus tuæ fe runt me & concinnaverunt me: da m intellectum, & diſcam mandata tua. timent te, videbunt me & lætabuntur: q Verbum tuum expectavi. Novi Domine qu niam juſta ſunt judicia tua, & in ver afflixiſti me. *Sit* quæſo *pietas tua* ad co ſolationem meam, juxta verbum tuum [*ctum*] ſervo tuo. Obveniant mihi mi cordiæ tuæ, & vivam, quoniam Lex tua lectationes meæ ſunt. Confundantur ſupe bi, quoniam iniquè ſubverterunt me: loquar de mandatis tuis. Revertantur doctrinam meam timentes te, & qui ſci teſtimonia tua. Fiat cor meum immacu tum in præceptis tuis, ut non confun CAPH. Deſideravit redemptionem tu anima mea,verbúmq; tuum expectavi. De cerunt oculi mei in verbum tuum,dicen Quando conſolaberis me? Quoniam fa ſum ſicut uter *qui pendet* ad fumum: ſta tua non ſum oblitus. Quot ſunt dies ſe tui? quando facies in perſecutores meo dicium? Foderunt mihi ſuperbi foveas, non præcepiſti in Lege tua. Omnia man tua veritas: falſò perſecuti ſunt me, a va me.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

57
58 * ܚ * * ܒܦܠܓܗ ܕܠܠܝܐ ܪܢܝܬ ܢܛܘܪܬܐ ܕܦܘܩܕܢܝܟ: * ܣܒܪܬ ܠܐܦܝܟ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܝ
59
60 ܐܚܝܢܝ ܐܝܟ ܡܠܬܟ * ܐܬܚܫܒܬ ܐܘܪܚܬܝ ܘܐܦܢܝܬ ܪܓܠܝ ܠܫܒܝܠܝܟ: * ܐܬܛܝܒܬ ܘܠܐ
61 ܐܬܡܗܡܗܬ ܠܡܛܪ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܚܒܠܐ ܕܥܘܠܐ ܚܪܟܘܢܝ ܘܡܢ ܢܡܘܣܟ ܠܐ ܣܛܝܬ:
62
63 * ܒܦܠܓܗ ܕܠܠܝܐ ܩܡܬ ܠܡܘܕܝܘ ܠܟ ܥܠ ܕܝܢܝ ܙܕܝܩܘܬܟ. * ܚܒܪܐ ܐܢܐ ܠܟܠܗܘܢ ܕܕܚܠܝܢ
64 ܠܟ ܘܕܢܛܪܝܢ ܦܘܩܕܢܝܟ: * ܘܒܪܚܡܝܟ ܡܪܝܐ ܡܠܝܐ ܐܪܥܐ ܦܘܩܕܢܝܟ ܐܠܦܢܝ. * ܛ *
65
66 * ܛܒܬܐ ܥܒܕܬ ܥܡ ܥܒܕܟ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܕܐܡܪܬ: * ܛܥܡܐ ܘܛܝܒܘܬܐ ܘܝܕܥܬܐ ܐܠܦܢܝ.
67
68 ܡܛܠ ܕܒܦܘܩܕܢܝܟ ܗܝܡܢܬ: * ܥܕܠܐ ܐܬܡܟܟ ܐܢܐ ܛܥܝܬ ܘܡܟܝܠ ܡܠܬܟ ܢܛܪܬ. * ܛܒ ܐܢܬ
69 ܡܪܝܐ ܘܡܛܝܒ ܐܠܦܢܝ ܦܘܩܕܢܝܟ: * ܣܓܝ ܥܘܠܐ ܕܝܗܝܪܐ ܘܐܢܐ ܒܟܠܗ ܠܒܝ ܢܛܪܬ
70
71 ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܐܬܥܒܝ ܠܒܗܘܢ ܐܝܟ ܚܠܒܐ ܘܐܢܐ ܢܡܘܣܟ ܢܛܪܬ: * ܛܒ ܠܝ ܕܐܬܡܟܟܬ
72 ܕܐܠܦ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܫܦܪ ܠܝ ܢܡܘܣܐ ܕܦܘܡܟ ܡܢ ܐܠܦܐ ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ:
73
74 * ܝ * * ܐܝܕܝܟ ܥܒܕܢܝ ܘܐܬܩܢܘܢܝ ܐܠܦܢܝ ܢܡܘܣܟ. * ܕܢܚܙܘܢ ܕܕܚܠܝܟ ܘܢܚܕܘܢ
75
76 ܕܠܡܠܬܟ ܣܒܪܬ: * ܝܕܥܬ ܕܬܪܝܨܝܢ ܐܢܘܢ ܕܝܢܝܟ ܡܪܝܐ ܘܗܝܡܢܘܬܟ ܡܟܟܬܢܝ. * ܢܗܘܘܢ
77 ܪܚܡܝܟ ܠܒܘܝܐܐ ܐܝܟ ܕܐܡܪܬ ܠܥܒܕܟ: * ܢܐܬܘܢ ܠܝ ܪܚܡܝܟ ܘܐܚܐ ܡܛܠ ܕܢܡܘܣܟ
78
79 ܐܠܦܬ. * ܢܒܗܬܘܢ ܥܘܠܐ ܕܒܥܘܠ ܡܟܟܘܢܝ ܘܐܢܐ ܪܢܝܬ ܒܦܘܩܕܢܝܟ: * ܢܬܦܢܘܢ
80 ܠܘܬܝ ܕܚܠܝܟ ܘܗܢܘܢ ܕܝܕܥܝܢ ܣܗܕܘܬܟ. * ܢܚܙܐ ܠܒܝ ܒܦܘܩܕܢܝܟ ܘܠܐ ܐܒܗܬ: * ܟ *
81
82 * ܪܓܬ ܢܦܫܝ ܠܦܘܪܩܢܟ ܘܠܡܠܬܟ ܣܟܝܬ. * ܣܟܝ ܥܝܢܝ ܠܡܐܡܪܟ ܕܐܡܪܝܢ
83
84 ܐܡܬܝ: * ܡܛܠ ܕܗܘܝܬ ܐܝܟ ܙܩܐ ܒܓܠܝܕܐ ܘܦܘܩܕܢܝܟ ܠܐ ܛܥܝܬ. * ܟܡܐ ܐܢܘܢ ܝܘܡܬܗ
85 ܕܥܒܕܟ ܘܐܡܬܝ ܬܥܒܕ ܠܝ ܕܝܢܐ ܡܢ ܪܕܘܦܝ: * ܚܦܪܘ ܠܝ ܥܘܠܐ ܓܘܡܨܐ ܕܠܐ ܐܝܟ
86 ܢܡܘܣܟ. * ܟܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܝܟ ܡܗܝܡܢܝܢ ܘܒܥܘܠ ܪܕܦܘܢܝ:

* *Heth* * Mediâ nocte meditatus ſum o vantiâ præceptorum tuorum. Expecta tũ tuum ex toto corde meo: vivifica me verbũ tuum. Perpendi vias meas, & pedes meos ad ſemitas tuas. Paravi me moram interpoſui, ad cuſtodienda ma tua. Funes iniquorum impediverunt me lege tua non deflexi. Mediâ nocte ſur agendas tibi gratias ob judicia tua, ſine. Amicus ſum omnium timentiu eorum qui cuſtodiunt præcepta tua. Mi onibus tuis Dñe plena eſt terra, doce mandata. * *Teth* * Beneficium co ſervum tuum Dñe,ut dixiſti. Saporem nignitatẽ atq; ſcientiam doce me: quia di mandatis tuis. Antequam humiliatus ſem,credideram, & ſermonem tuum c eram. Bonus es tu Dñe atque beneficus me tua præcepta. Crevit iniquitas ja at ego toto corde meo ſervavi manda Condenſatum eſt cor eorũ inſtar lactis tamen cuſtodivi legem tuam. Bonum e quòd humiliatus ſim,ut diſcerẽ manda Placuit mihi lex oris tui pluſquàm milli & argenti. * *Jud* * Manus tuæ me fe méq; condiderunt,doce me legem tua videant metuentes te, ac ſciant verbu ſperâſſe me. Novi æqua eſſe judicia tu & fides tua humiliavit me. Sint miſer tuæ ad conſolationẽ meã,uti dixiſti ſer Adveniant mihi miſerationes tuæ, ac quoniam legem tuam ſum edoctus. Pu ſceleſti, qui ſcelere me humiliaverunt ego meditatus ſum tua præcepta. Co tur ad me timentes te, & hi qui nor moniũ tuum. Contemplabitur cor me cepta tua,& non confundar. * *Caph* deravit anima mea ſalutem tuam, & tuum ſperavi. Expectaverunt ocul quium tuum, quando demùm ſis me turus; Nam factus ſum ſicut uter tua tamen mandata non ſum oblitus. ſunt dies ſervi tui? & quando vendica judicium à perſequutoribus meis? F mihi foveam ſcelerati præter leg Omnia tua præcepta ſunt fidelia, & iniqui perſequu

Verſio VULG. LAT.

57 HETH. Portio mea Dñe, dixi, cuſto-
58 dire legem tuam. Deprecatꝰ ſum faciem
tuā in toto corde meo: miſerere mei ſe-
59 cundū eloquiū tuū. Cogitavi vias meas:
& converti pedes meos in teſtimonia
60 tua. Paratus ſum, & non ſum turbatus:
61 ut cuſtodiā mandata tua. Funes peccato-
rū circumplexi ſunt me: & legē tuā non
62 ſum oblitus. Mediâ nocte ſurgebam ad
confitendū tibi, ſuper judicia juſtificati-
63 onis tuæ. Particeps ego ſum omniū ti-
mentiū te, & cuſtodientiū mandata tua.
64 Miſericordiâ tuâ Domine, plena eſt ter-
ra: juſtificationes tuas doce me.
65 TETH Bonitatē feciſti cum ſervo tuo,
66 Dñe, ſecundùm verbū tuū. Bonitatē, &
diſciplinā, & ſcientiā doce me: quia mā-
67 datis tuis credidi. Priuſquā humiliarer
ego deliqui: propterea eloquiū tuū cu-
68 ſtodivi. Bonus es tu: & in bonitate tua
69 doce me juſtificationes tuas. Multipli-
cata eſt ſup me iniquitas ſuperborū: ego
autē in toto corde meo ſcrutabor man-
70 data tua. Coagulatū eſt ſicut lac cor eo-
71 rū: ego verò legē tuā meditatus ſum. Bo-
nū mihi quia humiliaſti me: ut diſcā ju-
72 ſtificationes tuas. Bonum mihi lex oris
tui, ſup millia auri & argenti. JOD.
73 Manꝰ tuæ fecerunt me, & plaſmaverūt
me: da mihi intellectum, & diſcam mā-
74 data tua. Qui timent te videbunt me, &
lætabuntur: quia in verba tua ſuperſpe-
75 ravi. Cognovi, Dñe, quia æquitas judicia
76 tua: & in veritate tua humiliaſti me. Fiat
miſericordia tua ut conſoletur me, ſe-
77 cundùm eloquiū tuū ſervo tuo. Veniant
mihi miſerationes tuæ, & vivā: quia lex
78 tua meditatio mea eſt. Confundantur ſu-
perbi, quia injuſtè iniquitatē fecerūt in
me: ego autem exercebor in mandatis
79 tuis. Convertātur mihi timētes te, et qui
80 noverūt teſtimonia tua. Fiat cor meum
immaculatū in juſtificationibus tuis, ut
81 non confundar. CAPH. Defecit in
ſalutare tuū anima mea: & in verbū tuū
82 ſuperſperavi. Defecerunt oculi mei in
eloquiū tuū, dicentes; Quando conſo-
83 laberis me? Quia factus ſum ſicut uter in
pruina: juſtificationes tuas non ſum ob-
84 litꝰ. Quot ſunt dies ſervi tui: quando fa-
85 cies de perſequentibus me judiciū? Nar-
raverunt mihi iniqui fabulationes: ſed
86 non ut lex tua. Omnia mandata tua veri-
tas: iniquè perſecuti ſūt me, adjuva me.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

57 †Μερίς μου εἶ κύριε, εἶπα (φ) τοῦ φυλάξασθαι τὸν νόμον
58 σου. †Ἐδεήθην τοῦ προσώπου σου ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου,
59 †ἐλέησόν με (χ) κατὰ τὸ λόγιόν σου. †Διελογισάμην
(ψ) τὰς ὁδούς σου, καὶ ἐπέστρεψα τοὺς πόδας μου εἰς τὰ
60 μαρτύριά σου. †Ἡτοιμάσθην καὶ οὐκ ἐταράχθην, †τοῦ
61 φυλάξασθαι τὰς ἐντολάς σου. †Σχοινία ἁμαρτωλῶν
περιεπλάκησάν μοι, †καὶ τοῦ νόμου σου οὐκ ἐπελαθόμην.
62 †Μεσονύκτιον ἐξεγειρόμην, τοῦ (ω) ἐξομολογεῖσθαί
63 σοι †ἐπὶ τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου. †Μέτοχος
ἐγώ εἰμι πάντων τῶν φοβουμένων σε, †καὶ τῶν φυλασσό-
64 ντων τὰς ἐντολάς σου. †(α) Τοῦ ἐλέους σου κύριε πλήρης
65 ἡ γῆ, †τὰ δικαιώματά σου δίδαξόν με. †Χρη-
στότητα ἐποίησας μετὰ τοῦ δούλου σου †κύριε (β) κατὰ τὸν
66 λόγον σου. †Χρηστότητα καὶ παιδείαν καὶ γνῶσιν δίδα-
67 ξόν με, †ὅτι ταῖς ἐντολαῖς σου ἐπίστευσα. †Πρὸ τοῦ
με ταπεινωθῆναι, ἐγὼ ἐπλημμέλησα, †διὰ τοῦτο τὸ
68 λόγιόν σου ἐφύλαξα. †Χρηστὸς εἶ σὺ κύριε· καὶ ἐν τῇ
69 χρηστότητί σου δίδαξόν με τὰ δικαιώματά σου. †Ἐ-
πληθύνθη ἐπ' ἐμὲ ἀδικία ὑπερηφάνων, †ἐγὼ δὲ ἐν ὅ-
70 λῃ καρδίᾳ μου (γ) ἐξερευνήσω τὰς ἐντολάς σου. †Ἐ-
τυρώθη ὡς γάλα ἡ καρδία αὐτῶν, †ἐγὼ δὲ τὸν νόμον
71 σου ἐμελέτησα. †Ἀγαθόν μοι ὅτι ἐταπείνωσάς με, †ὅ-
72 πως ἂν μάθω τὰ δικαιώματά σου. †(δ) Ἀγαθός μοι
ὁ νόμος τοῦ στόματός σου, †ὑπὲρ χιλιάδας χρυσίου καὶ
73 ἀργυρίου. †Αἱ χεῖρές σου ἐποίησάν με καὶ ἔπλασάν με,
74 †συνέτισόν με καὶ μαθήσομαι τὰς ἐντολάς σου. †Οἱ
φοβούμενοί σε ὄψονταί με καὶ εὐφρανθήσονται, †ὅτι εἰς
75 τοὺς λόγους σου (ε) ἐπήλπισα. †Ἔγνων κύριε ὅτι δι-
καιοσύνη τὰ κρίματά σου, †καὶ ἀληθείᾳ ἐταπείνωσάς
76 με. †Γενηθήτω δὴ τὸ ἔλεός σου τοῦ παρακαλέσαι με,
77 †κατὰ τὸ λόγιόν σου τῷ δούλῳ σου. †(ζ) Ἐλθέτωσάν μοι
οἱ οἰκτιρμοί σου, (η) καὶ ζήσομαι, †ὅτι ὁ νόμος σου με-
78 λέτη μού ἐστιν. †Αἰσχυνθήτωσαν ὑπερήφανοι, †ὅτι ἀδί-
κως ἠνόμησαν εἰς ἐμέ, †ἐγὼ δὲ ἀδολεσχήσω ἐν ταῖς ἐντο-
79 λαῖς σου. †Ἐπιστρεψάτωσάν με οἱ φοβούμενοί σε, †καὶ
80 οἱ γινώσκοντες τὰ μαρτύριά σου. †Γενηθήτω ἡ καρ-
δία μου ἄμωμος †ἐν τοῖς δικαιώμασί σου, ὅπως ἂν
81 μὴ αἰσχυνθῶ. †Ἐκλείπει εἰς τὸ σωτήριόν σου ἡ
82 ψυχή μου, †(θ) εἰς τοὺς λόγους σου ἐπήλπισα. †Ἐξέλι-
πον οἱ ὀφθαλμοί μου εἰς τὸ (ι) λόγιόν σου, λέγοντες,
83 Πότε παρακαλέσεις με; †Ὅτι ἐγενήθην ὡς ἀσκὸς ἐν
84 πάχνῃ· †τὰ δικαιώματά σου οὐκ ἐπελαθόμην. †Πό-
σαι εἰσὶν αἱ ἡμέραι τοῦ δούλου σου; †πότε ποιήσεις μοι
85 ἐκ τῶν καταδιωκόντων με κρίσιν; †Διηγήσαντό μοι
παράνομοι ἀδολεσχίας, †ἀλλ' οὐχ ὡς ὁ νόμος σου κύ-
86 ριε. †Πᾶσαι αἱ ἐντολαί σου ἀλήθεια· †ἀδίκως κατε-
δίωξάν με, βοήθησόν μοι.

MS.A. (φ) φυλάξασθαι (χ) κατὰ λόγιόν σου. (ψ) κατὰ τὰς ὁδούς σου, (ω) ἐξομολογήσασθαί σοι (α) Τοῦ ἐλέους σου κύριε πλήρης (β) κατὰ τὸ λόγιόν σου. (γ) ἐξεραυνήσω (δ) Ἀγαθόν μοι (ε) ἐφήλπισα. (ζ) Ἐλθάτωσάν μοι (η) καὶ ζήσομαι, (θ) εἰς τὸν λόγον σου ἐφήλπισα. (ι) λόγιόν σου, * Ὅτι ἐγενήθην ὡσεὶ ἀσκὸς

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

57 Portio mea es, Dñe: dixi [†] cuſto- 57
dire legē tuam. 58 Deprecatus ſum fa- 58
ciem tuam [t] in toto corde meo: miſe-
rere mei ſecundùm eloquium tuum.
59 Cogitavi vias (b) tuas & converti 59
pedes meos in teſtimonia tua. 60 Paratus 60
ſum, et non [u] ſum turbatus, ad (c) cuſto-
diendū mandata tua. 61 Funes pecca- 61
torum (d) circumplexi ſunt me: & le-
gem tuam non ſum oblitus. 62 Mediâ 62
nocte ſurgebā ad confitendum tibi, ſu-
per judicia juſtitiæ tuæ. 63 (e) Particeps 63
ego ſum omnium timentium te, & cu-
ſtodientiū mandata tua. 64 Miſericor- 64
diâ tuâ, Domine, plena eſt terra: juſtifi-
cationes tuas doce me. 65 [ſ] Bonitatem 65
feciſti cum ſervo tuo, Dominꝰ, ſecun-
dùm verbū tuum. 66 Bonitatem, et di- 66
ſciplinam, & ſcientiam doce me: quia
mandatis tuis credidi. 67 Priuſquàm 67
humiliarer, ego [x] deliqui: propterea e-
loquiū tuum cuſtodivi. 68 Bonus es tu, 68
Domine: et in bonitate tua doce me ju-
ſtificationes tuas. 69 Multiplicata eſt 69
ſuper me iniquitas ſuperborū: ego autē
in toto corde meo ſcrutabor mandata
tua. 70 (g) Coagulatum eſt ſicut lac, cor 70
eorum: ego verò legem tuam meditatus
ſum. 71 (h) [y] Bonū mihi, quia humi- 71
liâſti me: ut diſcā juſtificationes tuas.
72 Bona mihi lex oris tui ſuper millia 72
auri, & argenti. 73 Manus tuæ fece- 73
runt me, & (i) plaſmaverunt me: da
mihi intellectum, & diſcam mandata
tua. 74 Qui timent te videbunt me, & 74
lætabuntur: quia in verba tua ſuper-
ſperavi. 75 Cognovi, Domine, quia juſti- 75
tia judicia tua: & (k) [z] veritate hu-
miliâſti me. 76 Fiat (l) nunc miſericor- 76
dia tua, ut conſoletur me: [ω] ſecun-
dùm eloquium tuum ſervo tuo. 77 Ve- 77
niant mihi miſerationes tuæ, & vi-
vam: quia lex tua [aa] meditatio mea
eſt. 78 Confundantur ſuperbi, quoniam 78
[b] injuſtè iniquitatē fecerunt in me:
ego autem exercebor in mandatis tuis.
79 (m) Convertantur ad me, qui timent 79
te, & qui cognoſcunt [c] teſtimonia
tua. 80 Fiat cor meum immaculatum in 80
juſtificationibꝰ tuis, ut non confundar.
81 Defecit in ſalutare tuū anima mea: 81
in verba tua ſuperſperavi. 82 Defece- 82
runt oculi mei in [d] eloquium tuum,
dicentes; Quando conſolaberis me?
83 Quia factus ſum ſicut uter in prui- 83
na: juſtificationes tuas non ſum oblitꝰ.
84 Quot ſunt dies ſervi tui? quando 84
facies mihi de perſequentibus me judi-
cium? 85 Narraverunt mihi iniqui (n) 85
fabulationes, ſed non ut lex tua, Domine. 86 Omnia mandata tua veritas: (o) injuſte perſe- 86
quuti ſunt me, adjuva me.

Verſio ÆTHIOPICA.

፰ ሄት፡ ክፍልየ፡ እግዚአብሔር፡፡ ወእቤ፡ ደ 57
ዐቀቡ፡ ሕግከ፡፡ ፨ ሰአልኩ፡ ገጸከ፡ እግዚ 58
እ፡ በኵሉ፡ ልብየ፡፡ ተሣሀለኒ፡ በከመ፡ ነቢብ
ከ፡፡ ፨ ወሐለይኩ፡ በእንተ፡ ፍናዊከ፡፡ ሜጥ 59
ኩ፡ እግርየ፡ ውስተ፡ ስምዕከ፡፡ ፨ እንበዕ 60
ኩ፡ ወኢናፈቁ፡፡ ለዓቂበ፡ ትእዛዝከ፡፡ ፨ እ 61
ሣበለ፡ ኃጥአን፡ ተጸፍሩ፡ ላዕሌየ፡፡ ወሕግከ
ሰ፡ ኢረሳዕኩ፡፡ ፨ መንፈቀ፡ ሌሊት፡ እትነሣ 62
እ፡፡ ከመ፡ እግነይ፡ ለከ፡ በእንተ፡ ኵነኔ፡ ጽድ
ቅከ፡፡ ፨ ከማሆሙ፡ አነ፡ ለኵሎሙ፡ እለ፡ ይ 63
ፈርሁከ፡፡ ወለእለ፡ ያዐቅቡ፡ ትእዛዘከ፡፡ ፨
ሣህልከ፡ እግዚእ፡ መልአ፡ ምድረ፡፡ ወምህረ 64
ኒ፡ ኵነኔከ፡፡ ፨ ፱ ጤት ሠናይተ፡ ገበር 65
ከ፡ ላዕለ፡ ገብርከ፡፡ እግዚእ፡ በከመ፡ ቃል
ከ፡፡ ፨ ሠናይተ፡ ምክረ፡ ወጥበበ፡ ምህረኒ፡፡ 66
እስመ፡ ተአመንኩ፡ በትእዛዝከ፡፡ ፨ ወእን 67
ሰ፡ ዘእንበለ፡ እትሐመም፡ ነሰሐኩ፡፡ ወበእንተ
ዝ፡ አነ፡ ዐቀብኩ፡ ነቢበከ፡፡ ፨ ኄር፡ አን 68
ተ፡ እግዚእ፡፡ ወበኂሩትከ፡ ምህረኒ፡ ኵነኔ
ከ፡፡ ፨ በዝኃ፡ ላዕሌየ፡ ዐመፃሆሙ፡ ለዕቡያ 69
ን፡፡ ወአንሰ፡ በኵሉ፡ ልብየ፡ ኃሠሥኩ፡ ትእዛ
ዘከ፡፡ ፨ ረግዐ፡ ከመ፡ ሐሊብ፡ ልቦሙ፡፡ ወአ 70
ንሰ፡ አነበብኩ፡ በሕግከ፡፡ ፨ ይበቍዐኒ፡ ዘአሕመ 71
ምከኒ፡፡ ከመ፡ አእምር፡ ኵነኔከ፡፡ ፨ ይኄ 72
ይሰኒ፡ ሕገ፡ አፉከ፡፡ እምአእላፍ፡ ወርቅ፡ ወ
ብሩር፡፡ ፨ ፲ ዮድ እደዊከ፡ ገብራኒ፡ ወ 73
ለሐኳኒ፡፡ አለብወኒ፡ ወእትመሀር፡ ትእዛዘ
ከ፡፡ ፨ እለ፡ ይፈርሁከ፡ ይርአዩኒ፡ ወይትፈ 74
ሥሑ፡፡ እስመ፡ ተወከልኩ፡ በነቢብከ፡፡ ፨ አ 75
እመርኩ፡ እግዚእ፡ ከመ፡ ጽድቅ፡ ኵነኔከ፡፡
ወበርቱዕ፡ አሕመምከኒ፡፡ ፨ ይኩነኒ፡ ም 76
ሕረትከ፡ ከመ፡ ያስተፈሥሐኒ፡፡ ወበከመ፡ ነቢ
ብከ፡ ይኩኖ፡ ለገብርከ፡፡ ፨ ይምጽአኒ፡ ሣ 77
ህልከ፡ ወእሕየው፡፡ እስመ፡ ተመሀርየ፡ ውእ
ቱ፡ ሕግከ፡፡ ፨ ይትኃፈሩ፡ ዕቡያን፡ እስመ፡ ዐ 78
መፃ፡ መከሩ፡ ላዕሌየ፡፡ ወአንሰ፡ እዛዋዕ፡ በትእ
ዛዝከ፡፡ ፨ ይግብኡኒ፡ እለ፡ ይፈርሁከ፡፡ ወእ 79
ለ፡ የአምሩ፡ ስመከ፡፡ ፨ ለይኩን፡ ልብየ፡ ን 80
ጹሐ፡ በኵነኔከ፡ ከመ፡ ኢይትኃፈር፡፡ ፨
፲፩ ካፍ ኀለፈት፡ ነፍስየ፡ ውስተ፡ አድኅኖት 81
ከ፡፡ ወተወከልኩ፡ በቃልከ፡፡ ፨ ደክማ፡ ለዕይ 82
ንትየ፡ ለመድኃኒትከ፡፡ እንዘ፡ ይብላ፡ መኣዜ፡
ታስተፈሥሐኒ፡፡ ፨ እስመ፡ ኮንኩ፡ ከመ፡ ዝ 83
ቅ፡ ውስተ፡ አስሐትያ፡፡ ወኵነኔከሰ፡ ኢረሳዕ
ኩ፡፡ ፨ ሚመጠኑ፡ እማንቱ፡ መዋዕሊሁ፡ ለገ 84
ብርከ፡፡ ወማእዜ፡ ትፈትሕ፡ ሊተ፡ እምእለ፡
ይሰዱኒ፡፡ ፨ ነገሩኒ፡ ኃጥአን፡ ዘውዐ፡፡ ወአ 85
ኮሰ፡ ከመ፡ ሕግከ፡ እግዚእ፡፡ ፨ ኵሉ፡ ትእዛ 86
ዝከ፡ ጽድቅ፡፡ በዐመፃ፡ ሰደዱኒ፡ ርድአኒ፡፡ ፨

INTERP. ÆTHIOP. [†] cuſtodient [t] Domine in toto [u] hæſitavi, ad [x] pœnitentiam egi: [y] expedit mihi, [z] in æquitate [ω] et ſecundùm eloquium tuum fiat [aa] eruditio mea. [b] iniquè conſultârunt adversùs [c] nomen tuum. [d] ſalutare tuum, dicentes;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

57 58 * الفصل الثامن وهو ح * انت هو حظي يا رب اذا حفظت وصاياك * طلبت وجهك بجميع
59 60 قلبي فارحمني كنحو قولك * اني تفكرت في طرقك فرددت قدمي الي شهاداتك * استعددت ولم
61 62 اضطرب لحفظ وصاياك * عقلتني مصايد الخطاة ولم انس ناموسك * كنت اقوم في نصف الليل
63 64 واسبحك علي احكام عدلك * انا شريك اتقيائك وحافظي وصاياك * الارض امتلت من رحمتك
65 يا رب فعلمني عدلك * * الفصل التاسع وهو ط * صنعت صلاحا مع عبدك يا رب كنحو قولك
66 67 * علمني صلاحا وادبا وعلما فاني صدقت وصاياك * قبل ان اتواضع انا تكاسلت لذلك حفظت
68 69 انا كلامك * انك انت يا رب لصالح فبصلاحك علمني حقوقك * كثر علي ظلم المتعظمين وانا
70 71 بجميع قلبي افحص عن وصاياك * تجبنت قلوبهم مثل اللبن وانا اتلو ناموسك * ان اذلالك اياي
72 خيري لكي اعلم حقوقك * وناموس فمك هو خير لي ايضا افضل من الاف الذهب والفضة
73 74 * الفصل العاشر وهو ي * يداك صنعتاني وجبلتاني افهمني فاعلم وصاياك * يراني خائفوك
75 76 ويسرون لاني وثقت باقوالك * علمت يا رب ان احكامك عادلة هي وبحق اذللتني * فلتات علي رحمتك
77 78 لتعزيني كمثل قولك لعبدك * ولتات علي رافتك فاحيا فان ناموسك هو تلاوتي * وليخز المستكبرين
79 80 فانهم خالفوا الشرع في ظلما وانا اهتم بوصاياك * فليرجع الي اتقياؤك وعارفوا شهاداتك * وليكن
81 قلبي بلا عيب في حقوقك لكيلا اخزى * الفصل الحادي عشر وهو ك * تاقت نفسي الي خلاصك
82 83 ورجوت قولك * فنيت عيناي الي قولك قائلتين متي تعزيني * صرت مثل زق في جليد ولم انس
84 85 حقوقك * كم هي ايام عبدك متي تصنع لي حكما علي الذين يطردونني * تكلموا معي كلاما
86 الناموس بكلام هذيان لكن ليس كناموسك * يا رب جميع وصاياك هي حق وظلما طردوني فاعني

Sectio viii. Ver. 8. *Tu es portio mea O Dñe,* 57
quum ſervavero mandata tua. Quæſivi fa- 58
ciem tuā in toto corde meo, miſerere mei ſe-
cundùm ſermonem tuum. Equidem conſide- 59
ravi vias tuas, et reduxi pedes meos ad te-
ſtimonia tua. Paravi me (nec ſum turbatus) 60
ad cuſtodiā mandatorum tuorum. Implica- 61
verunt me retia peccatorū, et non ſum obli-
tus legē tuam. Surgebam media in nocte, et 62
laudabam te de judiciis æquitatis tuæ. Ego 63
particeps ſum timentiū te et cuſtodientium
mandata tua. Terra impleta eſt miſericor- 64
diâ tuâ O Domine: doce me æquitatē tuā.
Sectio ix. Ver. 8. *Feciſti beneficium erga ſer-* 65
vum tuum O Domine, juxta ſermonē tuum.
Doce me bonitatem et diſciplinam & ſcien- 66
tiam, quia ego credidi mandatis tuis. Pri- 67
uſquam humiliarer, ego piger fui: propterea
ſervavi ego ſermonem tuum. Tu quidem, 68
O Domine, bonus es: quapropter ex bonitate
tua doce me decreta tua. Multiplicata eſt 69
ſuper me iniquitas ſuperborum, et ego in to-
to corde meo ſcrutabor de mandatis tuis.
Condenſata ſunt corda eorum veluti lac, et 70
ego meditabar legē tuam. Quòd autē hu- 71
miliaveris me, in bonum meum ceſſit, ut de-
prehendam decreta tua. Et lex oris tui me- 72
lior eſt mihi, etiam præſtantior millibus auri
& argenti. Sect. x. Ver. 8. *Manus tuæ fe-* 73
cerunt me & coagulârunt me: intellectum
dediſti mihi, ideo diſcam mandata tua. Vi- 74
debunt me timentes tui et exultabunt, quia
tutam præſtiti fidem ſermonibus tuis. Cog- 75
novi, O Domine, quod judicia tua juſta ſint,
& cum veritate humiliaveris me. Veniat 76
ergò ſuper me miſericordia tua, ut conſole-
tur me ſecundùm ſermonē tuum ſervo tuo.
Et veniat ſuper me clementia tua et vivam, 77
quia lex tua eſt meditatio mea. Confundan- 78
tur autē ſuperbi, quia prævaricati ſunt le-
gem in me iniquè, & ego ſolicitus ero in
mandatis tuis. Revertantur ad me cultores 79
tui, et agnoſcentes teſtimonia tua. Sitque cor 80
meum ſine macula in decretis tuis, ut non
confundar. Sect. xi V. 8. *Expetivit anima* 81
mea ſalutem tuam, et ſperavi ſermonē tuū.
Defecerunt oculi mei intenti ad ſermonem 82
tuum dicentes, Quando conſolaberis me?
Factus ſum veluti uter in glacie, et non ſum 83
oblitus veritatis tuas. Quot ſunt dies ſervi 84
tui? quando facies mihi judiciū contra eos
qui perſequuntur me? Collocuti ſunt mecū 85
infractores legis verbis deliris, ſed non juxta
legē tuā O Dñe, univerſa mandata tua ſunt 86
veraces: injuſtè perſecuti ſūt me, adjuva me.

תהלים : קיט

.tua præcepta dereliqui non ego & : terra in me conſumpſerunt penè Quaſi
87 כִּמְעַט כִּלּוּנִי בָאָרֶץ וַאֲנִי לֹא־עָזַבְתִּי פִקֻּדֶיךָ׃
ſeculum In .tui oris teſtimonium cuſtodiam & :me vivifica tuam miſericordiã Secundũ
88 89 כְּחַסְדְּךָ חַיֵּנִי וְאֶשְׁמְרָה עֵדוּת פִּיךָ׃ לְעוֹלָם
fundaſti:tua veritas generationẽ & generatione In .cœlis in ſtans tuum verbũ Domine
90 יְהוָה דְּבָרְךָ נִצָּב בַּשָּׁמָיִם׃ לְדֹר וָדֹר אֱמוּנָתֶךָ כּוֹנַנְתָּ
Niſi .tui ſervi omnes quia : hodie ſteterunt tua judicia Ad .ſtabit & ,terram
91 92 אֶרֶץ וַתַּעֲמֹד׃ לְמִשְׁפָּטֶיךָ עָמְדוּ הַיּוֹם כִּי הַכֹּל עֲבָדֶיךָ׃ לוּלֵי
obliviſcar non ſeculum In .mea afflictione in periiſſem tunc : meæ delitiæ tua lex
93 תוֹרָתְךָ שַׁעֲשֻׁעָי אָז אָבַדְתִּי בְעָנְיִי׃ לְעוֹלָם לֹא־אֶשְׁכַּח
tua præcepta quoniã : me ſerva ,ego Tibi .me vivificâſti ipſis in quia:tuorũ præceptorũ
94 פִּקּוּדֶיךָ כִּי־בָם חִיִּיתָנִי׃ לְךָ־אֲנִי הוֹשִׁיעֵנִי כִּי פִקּוּדֶיךָ
.intelligam tua teſtimonia:me perdendum ad impii expectaverunt Me .quæſivi
95 דָרָשְׁתִּי׃ לִי קִוּוּ רְשָׁעִים לְאַבְּדֵנִי עֵדֹתֶיךָ אֶתְבּוֹנָן׃
Quàm .valde tuum præceptum latum : finem vidi conſummationis Omnis
96 97 לְכָל־תִּכְלָה רָאִיתִי קֵץ רְחָבָה מִצְוָתְךָ מְאֹד׃ מָה־
me facies ſapientẽ meis inimicis Præ.mea meditatio ipſa die omni:tuam legem dilexi
98 אָהַבְתִּי תוֹרָתֶךָ כָּל־הַיּוֹם הִיא שִׂיחָתִי׃ מֵאֹיְבַי תְּחַכְּמֵנִי
: intellexi me docentibus omnibus Præ .mihi ipſa ſeculum in quia : tuis præceptis
99 מִצְוֺתֶךָ כִּי לְעוֹלָם הִיא־לִי׃ מִכָּל־מְלַמְּדַי הִשְׂכַּלְתִּי
.cuſtodivi tua præcepta quia:ero prudens ſenibus Præ.mihi meditatio tua teſtimonia quia
100 כִּי עֵדְוֺתֶיךָ שִׂיחָה לִי׃ מִזְּקֵנִים אֶתְבּוֹנָן כִּי פִקּוּדֶיךָ נָצָרְתִּי׃
tuis judiciis A .tuũ verbũ cuſtodiam ut : meos pedes arcui mala ſemita omni Ab
101 102 מִכָּל־אֹרַח רָע כָּלִאתִי רַגְלָי לְמַעַן אֶשְׁמֹר דְּבָרֶךָ׃ מִמִּשְׁפָּטֶיךָ
: tua eloquia meo palato dulcuerunt Quàm .me docuiſti tu quia : receſſi non
103 לֹא־סָרְתִּי כִּי־אַתָּה הוֹרֵתָנִי׃ מַה־נִּמְלְצוּ לְחִכִּי אִמְרָתֶךָ
ſemitam omnem odivi propterea : fiam prudens tuis præceptis A .meo ori melle præ
104 מִדְּבַשׁ לְפִי׃ מִפִּקּוּדֶיךָ אֶתְבּוֹנָן עַל־כֵּן שָׂנֵאתִי כָּל־אֹרַח
, Juravi .meæ ſemitæ lumen & : tuum verbum meo pedi Lucerna .falſitatis
105 106 שָׁקֶר׃ נֵר־לְרַגְלִי דְבָרֶךָ וְאוֹר לִנְתִיבָתִי׃ נִשְׁבַּעְתִּי
: valde uſque ſum Afflictus .tuæ juſtitiæ judicia cuſtodiendum ad : faciam ratum &
107 וָאֲקַיֵּמָה לִשְׁמֹר מִשְׁפְּטֵי צִדְקֶךָ׃ נַעֲנֵיתִי עַד־מְאֹד
quæſo velis mei oris Voluntaria .tuum verbum ſecundùm me vivifica Domine
108 יְהוָה חַיֵּנִי כִדְבָרֶךָ׃ נִדְבוֹת פִּי רְצֵה־נָא
tuæ legis & : ſemper mea vola in mea Anima .me doce tua judicia & : Domine
109 יְהוָה וּמִשְׁפָּטֶיךָ לַמְּדֵנִי׃ נַפְשִׁי בְכַפִּי תָמִיד וְתוֹרָתְךָ
non tuis præceptis à & ; mihi laqueum impii Dederunt .ſum oblitus non
110 לֹא שָׁכָחְתִּי׃ נָתְנוּ רְשָׁעִים פַּח לִי וּמִפִּקּוּדֶיךָ לֹא
mei cordis gaudium quia : ſeculum in tua teſtimonia accepi Hæreditate .erravi
111 תָעִיתִי׃ נָחַלְתִּי עֵדְוֺתֶיךָ לְעוֹלָם כִּי־שְׂשׂוֹן לִבִּי
.calcem , ſeculum in tua ſtatuta faciendum ad meum cor Inclinavi .ipſa
112 הֵמָּה׃ נָטִיתִי לִבִּי לַעֲשׂוֹת חֻקֶּיךָ לְעוֹלָם עֵקֶב׃
meum ſcutum & , meum Latibulum .dilexi tuam legem & :habui odio Excogitata
113 114 סֵעֲפִים שָׂנֵאתִי וְתוֹרָתְךָ אָהָבְתִּי׃ סִתְרִי וּמָגִנִּי
cuſtodiam & : maligni me à Recedite .expectavi tuum verbum in : tu
115 אַתָּה לִדְבָרְךָ יִחָלְתִּי׃ סוּרוּ מִמֶּנִּי מְרֵעִים וְאֶצְּרָה
.mei Dei præcepta
מִצְוֺת אֱלֹהָי׃

תרגום TARGUM.

87 כוער שציאו יתי בארעא ואנא לא שבקית
88 פקודיך׃ היך חסדך קים יתי ואטור סהדות
89 פומך׃ לעלמא יי פתגמך קים בשמיא׃
90 לדר ודר הימנותך אתקנתא ארעא וקימא׃
91 לדינך קמו יומנא ארום כולהון עבדך׃
92 אלולי אוריתך פרנוקי הידין אובדית
93 בסנופי׃ לעלם לא אתנשי פקודיך ארום
94 בהון קימתני׃ די לך אנא פרוק יתי ארום
95 פקודיך תבעית׃ לותי אמתינו רשיעיא
96 להובדא יתי סהדותך אתבין׃ לכל מה
דאשתדל ואשתכל חמיתי סיפא פתיא
97 תפקדתך לחדא׃ מה רחימית אוריתך
98 כל יומא היא שותי׃ יתיר מבעלי דבבי
מחכמה יתי פקודיך ארום לעלם היא דילי׃
99 מכל מאלפי אסכלית ארום סהדותך
100 שותא לי׃ מן חכימיא אתבין ארום פקודיך
101 נטרית׃ מכל אורח בישא מנעית רגלי מן
102 בגלל אטור דבריך׃ מן דינך לא עדית
103 ארום את אלפתני׃ מה חלין למוריני מימרך
104 בסימן יתיר מן דובשא לפומי׃ מפקודך
אתבין מטול היכנא סניתי כל בר נש
105 דמשקר׃ היך שרגא די מנהרא לרגלי
106 דבריך ונהורא לכבשי׃ אומיתי וקימית
107 למטר פקודי זכותך׃ אסתגפית עד לחדא
108 יי אסי יתי היך דברך׃ נכסתא דפומי אתרעי
109 כדון יי ודינך אליף יתי׃ נפשי מסתכנא
על גב ידי תדירא ואוריתך לא אתנשיתי׃
110 סדרו רשיעיא פחא לי ומפקודיך לא תעיתי׃
111 אחסנית סהדותך לעלם ארום חדות לבי
112 הנון׃ אצליתי לבי למעבד גזרתך לעלם
113 עד סופא׃ דחשבין מחשבן סריקן סניתי
114 ואוריתך רחימית׃ טומרי ותריסי את
115 לפתגמך אורכית׃ זורו מני מבאשין ואטור
פקודי אלהי׃

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Parum abfuit quin conſumpſerint me in terra, ego vero non obmiſi præcepta tua. Secundum miſericordiam tuam vivifica me, & cuſtodiam teſtimonia oris tui. LAMED. In æternum Domine verbum tuum firmum eſt in cœlo. In generatione & generationem veritas tua: præparâſti terram & firma [eſt.] Judiciis tuis permanent hodie, quoniam cuncta ſerviunt tibi. Niſi Lex tua deliciæ meæ [fuiſſent,] tunc periiſſem in afflictione mea. In æternum non obliviſcar præceptorum tuorum, quoniam in ipſis vivificâſti me. Tuus ego ſum, ſalva me, quoniam mandata tua quæſivi. Me expectaverunt impii ut perderent me, teſtimonia tua intelligam. Omnium in quibus fui ſollicitus atque proſpexi, vidi finem: latum eſt mandatum tuum valdè. MEM. Quàm dilexi Legem tuam! tota die ipſa eſt locutio mea. Abundantiùs quam inimicos meos docet me mandata tua, quoniam in æternum ipſa apud me eſt. Pluſquàm omnes doctores mei intellexi, quoniam meditatio mea teſtimonia tua ſunt. Pluſquàm ſapientes intelligam, quoniam præcepta tua ſervavi. Ab omni via mala prohibui pedes meos, ut cuſtodiam verbum tuum. A judiciis tuis non declinavi, quoniam tu docuiſti me. Quàm dulcia palato meo verba tua! dulciora ſunt quàm mel ori meo. A præceptis tuis erudiar, propterea odi omnem virum mendacem. NUN. Sicut lucerna illucens pedi meo verbum tuum, & lumen ſemitæ meæ. Juravi & conſtitui cuſtodire præcepta juſtitiæ tuæ. Afflictus ſum vehementer Domine, ſana me ſecundùm verbum tuum. Oblationes oris mei velis obſecro Domine, & judicia tua doce me. Anima mea periclitatur in ſuperficie manus meæ ſemper, at Legem tuam non ſum oblitus. Tetenderunt impii laqueum mihi, & à præceptis tuis non aberravi. Hæreditatis poſſedi teſtimonia tua in æternum, quoniam gaudium cordis mei ſunt. Inclinavi cor meum ut faciat mandata tua in æternum uſque ad finem. SAMECH. Cogitantes cogitationes vanas odio habui, & Legem tuam dilexi. Abſconſio mea & ſcutum meum tu es: in verbum tuum ſperavi. Recedite à me ſcelerati, & cuſtodiam mandata Dei mei.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

87 88 * ܟܡ ܩܠܝܠ ܫܠܡܘܢܝ ܗܘܘ ܒܐܪܥܐ ܘܐܢܐ ܠܐ ܫܒܩܬ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܐܝܟ ܪܚܡܝܟ ܐܚܝܢܝ
89 ܘܐܛܪ ܣܗܕܘܬܐ ܕܦܘܡܟ: * ܠ * ܠܥܠܡ ܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ. ܘܡܠܬܟ ܡܩܝܡܐ ܒܫܡܝܐ:
90 92 * ܠܕܪܕܪܝܢ ܗܝܡܢܘܬܟ. ܫܬܐܣܬ ܐܪܥܐ ܘܐܩܝܡܬܗ: ** ܐܠܘܠܐ ܢܡܘܣܟ ܗܘܐ ܠܝ ܪܢܝܐ
93 ܐܒܕ ܗܘܝܬ ܒܡܘܟܟܝ. * ܠܥܠܡ ܠܐ ܐܛܥܐ ܦܘܩܕܢܝܟ. ܡܛܠ ܕܒܗܘܢ ܐܝܬ ܚܝܝ: * ܕܝܠܟ ܐܢܐ
94 95 ܦܪܘܩܝܢܝ ܡܛܠ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܢܛܪܬ. * ܠܝ ܣܟܝܘ ܚܛܝܐ ܕܢܘܒܕܘܢܢܝ ܘܣܗܕܘܬܟ ܐܣܬܟܠܬ:
96 * ܠܟܠ ܫܘܠܡܐ ܚܙܝܬ ܣܟܐ ܘܦܬܝܐ ܛܒ ܦܘܩܕܢܟ. * ܡ * ܟܡܐ ܪܚܡܬ ܢܡܘܣܟ
97 98 ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܗܘ ܪܢܝܝ: * ܚܟܡܢܝ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝ ܡܛܠ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܢܛܪܬ.
99 100 * ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܡܠܦܢܝ ܚܟܡܢܝ ܡܛܠ ܕܣܗܕܘܬܟ ܗܘܬ ܠܝ ܪܢܝܐ: * ܝܬܝܪ ܡܢ ܣܒܐ
101 ܐܣܬܟܠܬ ܡܛܠ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܢܛܪܬ. * ܡܢ ܟܠܗ ܐܘܪܚܐ ܒܝܫܬܐ ܟܠܝܬ ܪܓܠܝ:
102 103 ܕܐܛܪ ܦܘܩܕܢܝܟ. * ܡܢ ܕܝܢܝܟ ܠܐ ܣܛܝܬ ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܐܠܦܬܢܝ. * ܚܠܝܢ ܡܠܝܟ ܠܚܟܝ
104 ܝܬܝܪ ܡܢ ܕܒܫܐ ܠܦܘܡܝ: * ܡܢ ܦܘܩܕܢܝܟ ܙܗܝܬ ܡܛܠ ܗܢܐ ܣܢܝܬ ܟܠܗ ܐܘܪܚܐ
105 106 ܕܥܘܠܐ. * ܢ * ܫܪܓܐ ܗܘ ܡܠܬܟ ܠܪܓܠܝ ܘܢܘܗܪܐ ܠܫܒܝܠܝ: * ܝܡܝܬ ܘܐܫܪܪܬ
107 108 ܠܡܛܪ ܕܝܢܐ ܕܟܐܢܘܬܟ. * ܐܬܡܟܟܬ ܛܒ ܡܪܝܐ ܐܚܝܢܝ ܐܝܟ ܡܠܬܟ: * ܨܒܝܢܘܗܝ
109 ܕܦܘܡܝ ܪܥܝ ܡܪܝܐ ܘܕܝܢܝܟ ܐܠܦܢܝ. * ܢܦܫܝ ܒܐܝܕܝܟ ܗܝ ܒܟܠܙܒܢ
110 ܘܢܡܘܣܟ ܠܐ ܛܥܝܬ: * ܣܡܘ ܠܝ ܚܛܝܐ ܦܚܐ ܘܡܢ ܦܘܩܕܢܝܟ ܠܐ ܣܛܝܬ.
111 112 * ܝܪܬ ܣܗܕܘܬܟ ܠܥܠܡ ܡܛܠ ܕܚܕܘܬܐ ܗܝ ܕܠܒܝ: * ܐܪܟܢܬ ܠܒܝ
113 ܠܡܥܒܕ ܦܘܩܕܢܝܟ ܠܥܠܡ ܒܫܪܪܐ. * ܣ * * ܣܢܝܬ ܠܥܘܠܐ ܘܢܡܘܣܟ ܪܚܡܬ:
114 115 * ܡܥܕܪܢܝ ܘܡܓܢܝ ܐܢܬ ܗܘ ܘܠܡܠܬܟ ܣܟܝܬ. * ܥܪܘܩܘ ܡܢܝ ܒܝܫܐ ܕܐܛܪ
ܦܘܩܕܢܘܗܝ ܕܐܠܗܝ:

Paulò minùs perdiderunt me in terra, egomen non deſerui mandata tua. Juxta miſerationes tuas vivifica me. et cuſtodiam teſtimonium oris tui. * *Lomad* * In ſeculum tu Dñe, & verbum tuum perſiſtens in cœlo. In generationẽ generationũ fides tua: firmaſti terrã, & erexiſti eam. Niſi lex tua fuiſſet mea meditatio, periiſſẽ in humilitate mea. In æternũ non obliviſcar mandatorũ tuorũ, quoniam in ipſis conſiſtit vita mea. Tuus ego, libera me: quia tua præcepta ſervavi. Me præſtolati ſunt ſceleſti, ut perderent me: teſtimonium verò tuum perpendi. Omni rei vidi finem haberi, at ſummè patens eſt mandatum tuum. * *Mim* * Quantùm dilexi legem tuam? & quidem totâ die ipſa eſt meditatio mea. Redde me ſapientiorẽ hoſtib' meis, quia præcepta tua cuſtodivi. Præ omnibus præceptorib' meis fac me ſapientẽ, quia teſtimonium tuum fuit mihi ſolicitudo. Præ ſenes intellexi, quoniam tua mandata cuſtodivi. Ab omni via mala cohibui pedes meos, ut cuſtodirem tua præcepta. A judiciis tuis minimè deflexi, quia tu me erudiſti. Dulcia ſunt verba tua palato meo pluſquam mel. Mandata tua ſolicitè contemplatus ſum, propterea odi omnem viam ſceleſtorũ. * Nun * Lucerna eſt verbũ tuũ pedibus meis, & lumen ſemitis meis. Juravi & aſſeveravi ſervare me judicia juſtitiæ tuæ. Humiliatus ſum magnopere, Dñe vivifica me ſecundùm verbum tuum. Sermones oris mei accepta Dñe, & tuis judiciis me doceto. Anima mea in manibus eſt omni tempore, & legẽ tuam non ſum oblitus. Poſuerunt mihi peccatores laqueos, à tuis tamen præceptis non erravi. Hæreditariò poſſedi teſtimoniũ tuum in æternum, quoniam hilaritas eſt cordis mei. Induxi cor meum ad exequenda mandata tua in perpetuum cum veritate. * *Semcath* * Perſequutus ſum iniquos, legemque tuam dilexi. Defenſio mea & refugiũ meum tu es, in verbum tuum ſperavi. Abſcedite à me ſcelerati, ut cuſtodiam præcepta Dei mei.

Verſio VULG. LAT.

87 Paulominùs conſummaverunt me in
terra: ego autē non dereliqui mandata
88 tua. Secundū miſericordiā tuā vivifica
me: & cuſtodiam teſtimonia oris tui.
89 LAMED. In æternū, Dñe, verbum
90 tuū permanet in cœlo. In generationē
et generationē veritas tua: fundâſti terrā,
91 & permanet. Ordinatione tuâ perſeverat
dies: quoniam omnia ſerviunt
92 tibi. Niſi quòd lex tua meditatio mea
eſt: tunc fortè periiſſem in humilitate
93 mea. In æternū non obliviſcar juſtificationes
tuas: quia in ipſis vivificâſti
94 me. Tuus ſum ego, ſalvū me fac: quoniā
95 juſtificationes tuas exquiſivi. Me
expectaverunt peccatores ut perderēt
96 me: teſtimonia tua intellexi. Omnis
conſummationis vidi finē: latum mandatū
97 tuū nimis. MEM. Quomodò
dilexi legē tuā, Dñe? totâ die meditatio
98 mea eſt. Sup inimicos meos prudentē
me feciſti mandato tuo: quia in
99 æternū mihi eſt. Super omnes docentes
me intellexi: quia teſtimonia tua meditatio
100 mea eſt. Super ſenes intellexi:
101 quia mandata tua quæſivi. Ab omni via
mala prohibui pedes meos: ut cuſtodiam
102 verba tua. A judiciis tuis non declinavi:
103 quia tu legē poſuiſti mihi. Quā
dulcia faucibus meis eloquia tua, ſuper
104 mel ori meo! A mandatis tuis intellexi,
propterea odivi omnē viā iniquitatis.
105 NUN. Lucerna pedib⁹ meis verbū
106 tuū, & lumen ſemitis meis. Juravi, &
107 ſtatui cuſtodire judicia juſtitiæ tuæ. Humiliat⁹
ſū uſquequaque, Dñe: vivifica
108 me ſecundùm verbū tuū. Voluntaria
oris mei beneplacita fac, Domine: et judicia
109 tua doce me. Anima mea in manibus
meis ſemper: & legem tuā non
110 ſum oblitus. Poſuerunt peccatores laqueum
mihi: & de mandatis tuis non
111 erravi. Hæreditate acquiſivi teſtimonia
tua in æternum: quia exultatio cordis
112 mei ſunt. Inclinavi cor meum ad
faciendas juſtificationes tuas in æternum,
propter retributionem.
113 SAMECH. Iniquos odio habui: &
114 legem tuam dilexi. Adjutor, & ſuſceptor
meus es tu: & in verbum tuum
115 ſuperſperavi. Declinate à me maligni:
& ſcrutabor mandata Dei mei.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

87 † Παρὰ βραχὺ συνετέλεσάν με ἐν τῇ γῇ, † ἐγὼ δὲ
88 οὐκ ἐγκατέλιπον τὰς ἐντολάς σου. † Κατὰ τὸ ἔλεός
σου ζῆσόν με, † καὶ φυλάξω τὰ μαρτύρια τοῦ στόματός
89 σου. † Εἰς τὸν αἰῶνα κύριε ὁ λόγος σου διαμένει
90 ἐν τῷ οὐρανῷ, † Εἰς γενεὰν καὶ γενεὰν ἡ ἀλήθειά
91 σου. † ἐθεμελίωσας τὴν γῆν καὶ διαμένει. † Τῇ διατάξει
σου διαμένει (κ) ἡμέρα, † ὅτι τὰ (λ) σύμπαντα
92 δοῦλα σά. † Εἰ μὴ ὅτι ὁ νόμος σου μελέτη
μου ἐστὶ, † τότε ἂν ἀπωλόμην ἐν τῇ ταπεινώσει μου.
93 † Εἰς τὸν αἰῶνα οὐ μὴ ἐπιλάθωμαι τῶν δικαιωμάτων
94 σου, † ὅτι ἐν αὐτοῖς ἔζησάς με. † Σός εἰμι ἐγὼ, σῶσόν
95 με, † ὅτι τὰ δικαιώματά σου ἐξεζήτησα. † Ἐμὲ
ὑπέμειναν ἁμαρτωλοὶ τοῦ ἀπολέσαι με, † τὰ
96 μαρτύριά σου συνῆκα. † Πάσης συντελείας εἶδον
97 πέρας, † πλατεῖα ἡ ἐντολή σου σφόδρα. † Ὡς ἠγάπησα
τὸν νόμον σου κύριε, † ὅλην τὴν ἡμέραν μελέτη μου
98 ἐστί. † Ὑπὲρ τοὺς ἐχθρούς μου ἐσόφισάς με τὴν ἐντολήν
99 σου, † ὅτι εἰς τὸν (μ) αἰῶνα ἐμή ἐστιν. † Ὑπὲρ πάντας
τοὺς διδάσκοντάς με συνῆκα, † ὅτι τὰ μαρτύριά σου
100 μελέτη μου ἐστίν. † Ὑπὲρ πρεσβυτέρους συνῆκα, † ὅτι
101 τὰς ἐντολάς σου ἐξεζήτησα. † Ἐκ πάσης ὁδοῦ πονηρᾶς
ἐκώλυσα τοὺς πόδας μου, † ὅπως ἂν φυλάξω
102 τοὺς λόγους σου. † Ἀπὸ τῶν κριμάτων σου οὐκ ἐξέκλινα,
103 † ὅτι σὺ ἐνομοθέτησάς με. † Ὡς (ν) γλυκέα τῷ
λάρυγγί μου τὰ λόγιά σου, † ὑπὲρ μέλι τῷ στόματί
104 μου. † Ἀπὸ τῶν ἐντολῶν σου συνῆκα, † διὰ τοῦτο ἐμίσησα
105 πᾶσαν ὁδὸν ἀδικίας (ξ). † Λύχνος τοῖς
106 ποσί μου ὁ νόμος σου, † καὶ φῶς ταῖς τρίβοις μου. † Ὤμοσα
καὶ ἔστησα τοῦ φυλάξασθαι τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης
107 σου. † Ἐταπεινώθην ἕως σφόδρα † κύριε,
108 ζῆσόν με κατὰ τὸν λόγον σου. † Τὰ ἑκούσια τοῦ στόματός
μου εὐδόκησον δὴ κύριε, † καὶ τὰ κρίματά σου δίδαξόν
109 με. † Ἡ ψυχή μου ἐν ταῖς χερσί σου διαπαντὸς,
110 † καὶ τοῦ νόμου σου οὐκ ἐπελαθόμην. † Ἔθεντο ἁμαρτωλοὶ
παγίδα μοι, † καὶ ἐκ τῶν ἐντολῶν σου οὐκ ἐπλανήθην.
111 † Ἐκληρονόμησα τὰ μαρτύριά σου εἰς τὸν αἰῶνα,
112 † ὅτι ἀγαλλίαμα τῆς καρδίας μου εἰσίν. † Ἔκλινα
τὴν καρδίαν μου τοῦ ποιῆσαι τὰ δικαιώματά
113 σου † εἰς τὸν αἰῶνα (ο) δι᾽ ἀντάμειψιν. † Παρανόμους
114 ἐμίσησα, τὸν δὲ νόμον σου ἠγάπησα. † Βοηθός
μου, καὶ ἀντιλήπτωρ μου εἶ σύ, † εἰς τοὺς λόγους σου
115 (π) ἐπήλπισα. † Ἐκκλίνατε ἀπ᾽ ἐμοῦ πονηρευόμενοι,
† καὶ (ρ) ἐξερευνήσω τὰς ἐντολὰς τοῦ θεοῦ μου.

MS.A. (κ) ἡ ἡμέρα, (λ) σύμπαντα (μ) αἰῶνά μοι ἐστίν. (ν) γλυκῖα (ξ) † ὅτι σὺ ἐνομοθέτησάς με. Λύχνος (ο) δι᾽ ἀντάμιμψιν. (π) ἐφήλπισα (ρ) ἐξεραυνήσω.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

87 *Paulominus conſummaverunt me in terra: ego autē non dereliqui mandata tua.* 88 *Secundùm miſericordiā tuam vivifica me: & cuſtodiam teſtimonia oris tui.* 89 *In æternū, Dñe, verbū tuum permanet in cœlo:* 90 *In generationem & generationem veritas tua. Fundâſti terram, & permanet:* 91 *Ordinatione tuâ perſeverat dies: quoniam (p) omnia ſerviunt tibi.* 92 *Niſi quòd lex tua [e] meditatio mea eſt, tunc (b) utique periiſſē in humilitate mea.* 93 *In æternum non obliviſcar juſtificationes tuas: quia in ipſis vivificâſti me.* 94 *Tuus ſum ego: ſalvū me fac: quoniā juſtificationes tuas exquiſivi.* 95 *(r) Me ſuſtinuerūt peccatores, ut perderēt me: [f] teſtimonia tua intellexi.* 96 *[g] Omnis (ſ) conſummationis vidi finem: latū mandatū tuū valdè.* 97 *(t) Quomodò dilexi legē tuā, Domine? totâ die [h] meditatio mea eſt.* 98 *Super inimicos meos (u) ſapere me feciſti mandatum tuum: quoniā in æternū, (x) meū eſt.* 99 *Super omnes docentes me intellexi: quia teſtimonia tua meditatio mea eſt.* 100 *Super [i] ſeniores intellexi: quia mandata tua exquiſivi.* 101 *Ab omni via mala (y) prohibui pedes meos: ut cuſtodiam verba tua.* 102 *A judiciis tuis nō declinavi, quia tu legem [k] poſuiſti mihi.* 103 *Quàm dulcia faucib⁹ meis eloquia tua, ſuper mel [l] ori meo!* 104 *A mandatis tuis intellexi: proptereà odio habui omnē viā iniquitatis.* 105 *Lucerna pedib⁹ meis (z) lex tua, & lumen ſemitis meis.* 106 *Juravi, et ſtatui cuſtodire judicia juſtitiæ tuæ.* 107 *Humiliatus ſum uſq; valdè, Domine: vivifica me ſecundùm verbū tuum.* 108 *[m] Voluntaria oris mei beneplacita fac, Domine: & judicia tua doce me.* 109 *Anima mea in manibus (ω) tuis ſemper: et legis tuæ non ſum oblitus.* 110 *Poſuerunt peccatores laqueū mihi: et à mandatis tuis non erravi.* 111 *Hæreditate acquiſivi teſtimonia tua in æternū: quia exultatio cordis mei ſūt.* 112 *Inclinavi cor meū ad faciendas juſtificationes tuas in æternum, [n] propter retributionem.* 113 *Iniquos odio habui, et legē tuam dilexi.* 114 *Adjutor meus, et ſuſceptor meus es tu: in verba tua ſuperſperavi.* 115 *Declinate à me maligni, et ſcrutabor mandata Dei mei.*

Verſio ÆTHIOPICA.

ሕቀ፡ከመ፡ ዘእምደምሰሱኒ፡ ውስተ፡ ምድ 87
ር፡፡ወአንሰ፡ኢኀደጉ፡ትእዛዝከ፡፡ ፨ በከ 88
መ፡ ምሕረትከ፡ አሕይወኒ፡፡ ወእዐቀብ፡ ስ
ምዐ፡ አፉከ፡፡ ፨ ፲፪ ላሜድ እግዚ 89
አ፡ ለዓለም፡ ይነብር፡ ቃልከ፡ ውስተ፡ ሰማ
ይ፡፡ ፨ ወለትውልደ፡ትውልድ፡ጽድቅከ፡፡ 90
ሳረርከ፡ ለምድር፡ ወትነብር፡፡ ፨ ወበትእ 91
ዛዝከ፡ ይቀውም፡ ዕለት፡፡እስመ፡ኵሉ፡ቀ
ነየከ፡፡ ፨ ሶበ፡አኮ፡ሕግከ፡ተምህርየ፡ው 92
እቱ፡፡ ትካት፡ እምተሐጕልኩ፡ በኀሳር
የ፡፡ ፨ ለዓለም፡ ኢየረስዕ፡ ኵነኔከ፡፡እስ 93
መ፡ቦቱ፡አሕየውከኒ፡፡ ፨ ዘዚአከ፡አነ፡አ 94
ድኅነኒ፡፡እስመ፡ ኵነኔከ፡ ኀሠሥኩ፡፡ ፨
ኪያየ፡ይፀንሑ፡ኃጥአን፡ይቅትሉኒ፡፡እስመ፡ 95
ስምዐከ፡ለበውኩ፡፡ ፨ ለኵሉ፡ግብር፡ ረ 96
ኢኩ፡ ማኅለቅቶ፡፡ወትእዛዝከሰ፡ ረኀብ፡
ፈድፋደ፡፡ ፨ ፲፫ ሜም፡ ጥቀ፡አፍቀ 97
ርኩ፡ሕገከ፡እግዚኦ፡፡ኵሎ፡ ዕሚረ፡ ተመ
ሐርየ፡ ውእቱ፡፡ ፨ እምጸላእትየ፡ አጥበ 98
በኒ፡ትእዛዝከ፡፡እስመ፡ለዓለም፡ ሊተ፡ ው
እቱ፡፡ ፨ እምኵሎሙ፡ እለ፡ መሀሩኒ፡ጠ 99
በብኩ፡፡እስመ፡ተምሃርየ፡ ውእቱ፡ ትእዛዝ
ከ፡፡ ፨ ወእምአዕሩግኒ፡ ጠበብኩ፡፡ እስ 100
መ፡ትእዛዘከ፡ኀሠሥኩ፡፡ ፨ እምኵሉ፡ 101
ፍኖት፡ዐመፃ፡ከላእኩ፡ እግርየ፡፡ከመ፡ እዐ
ቅብ፡ ነቢብከ፡፡ ፨ ወኢተግሐስኩ፡ እም 102
ኵነኔከ፡፡እስመ፡ አንተ፡ መሀርከኒ፡፡ ፨ ጥ 103
ዑም፡ለጕርዔየ፡ ነቢብከ፡፡እምዐር፡ ወሶከ
ር፡ ጥዑምኒ፡ ለአፉየ፡፡ ፨ ወእምትእዛዝ 104
ከ፡ለበውኩ፡፡በእንተዝ፡ኵሎ፡ ፍኖተ፡ዐመ
ፃ፡ ጸላእኩ፡፡ ፨ ፲፬ ኖን ማኅቶት፡ለ 105
እግርየ፡ሕግከ፡፡ብርሃን፡ለፍኖትየ፡፡ ፨ መ 106
ሐልኩ፡ወአጽንዖኩ፡ከመ፡ እዐቀብ፡ ኵነኔ፡
ጽድቅከ፡፡ ፨ ሐመምኩ፡ ፈድፋደ ፡፡ እ 107
ግዚኦ፡አሕይወኒ፡በከመ፡ነቢብኩ፡፡ ፨ ሠ 108
ምር፡እግዚኦ፡ ቃለ፡ አፉየ፡፡ወምህረኒ፡ኵነ
ኔከ፡፡ ፨ ነፍስየ፡ ውስተ፡ እዴከ፡ በኵሉ፡ 109
ጊዜ፡፡ወኢረሳዕኩ፡ ሕገከ፡፡ ፨ ሠርዑ፡ሊ 110
ተ፡ኃጥአን፡መሥገርተ፡፡ወኢስሕትኩ፡እም
ትእዛዝከ፡፡ ፨ ወረስኩ፡ ስምዐከ፡ ለዓለ 111
ም፡፡እስመ፡ ሐሤቱ፡ ለልብየ፡ ውእቱ፡፡ ፨
ሚጥኩ፡ልብየ፡ ከመ፡ እግበር፡ ትእዛዘከ፡፡ 112
ለዓለም፡ዘእንበለ፡ሐኪስ፡፡ ፨ ፲፭ ሳም 113
ኬት፡ ዓማፂያነ፡ ጸላእኩ፡ ወሕግከሰ፡አፍ
ቀርኩ፡፡ ፨ ረዳኢየ፡ ወምስካይየ፡አንተ፡፡ 114
ወበቃልከ፡ ተወከልኩ፡፡ ፨ ተገሐሱ፡ እም 115
ኔየ፡ ዐማፂያን፡፡ ወእኅሥሥ፡ ትእዛዘ፡ ለ
እምላኪየ፡፡ ፨

INTERP. ÆTHIOP. [e] inſtitutio mea; jam olim in contemptu meo periiſſem. [f] quoniam teſtimonia [g] Omnium rerum vidi [h] inſtitutio mea [i] ductores [k] docuiſti me. [l] & ſaccharum ſapiunt mihi in ore meo. [m] Gratus ſit Domine ſermo oris mei, [n] non propter beneficium.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

87 88 * الا قليلا ابادوني علي الارض وانا لم اهمل وصاياك * نظير رحمتك احيني يا رب فاحفظ شهادات
89 90 فمك * الفصل الثاني عشر وهو ز * كلمتك يا رب دائمة في السموات الي الابد * وعدلك ثابت
91 من جيل الي جيل اسست الارض فهي ثابتة * وبامرك والنهار ايضا ثابت لان كل الاشياء متعبدة
92 93 لك * لولا ان ناموسك درسي لهلكت في مذلتي * فالي الدهر لا انسي حقوقك لان بها احييتني
94 95 يا رب * خلصني يا رب فاني انا لك اني طلبت حقوقك * وقف لي الخطاة لاهلاكي وشهاداتك
96 فهمتها * رايت لكل تمام انقضا ووصاياك واسعة جدا * الفصل الثالث عشر وهو ح
97 98 * محبوب هو اسمك يا رب فهو جميع النهار درسي * علمني وصاياك افضل من اعداي لانها
99 100 ثابتة لي الي الابد * فهمت اكثر من جميع الذين يعلموني لان شهاداتك هي تلاوتي * فهمت
101 افضل من الشيوخ لاني طلبت وصاياك * منعت رجلي من كل طريق سو لكيما احفظ كلامك
102 103 * لم احد عن احكامك لانك انت وضعت لي شرعا * كلامك حلو في حنجرتي افضل من الشهد
104 في فمي * فهمت من وصاياك فلهذا ابغضت كل طرق الظلم لانك وضعت لي ناموسا
105 106 * الفصل الرابع عشر وهو ح * ناموسك هو مصباح لرجلي ونور لسبلي * اقسمت وثبت
107 108 لحفظ احكام فرايضك * ذللت جدا الي الغاية فاحيني يا رب نظير قولك * اقسام فمي بباركها يا رب
109 110 علمني احكامك * نفسي بيدك في كل حين * وناموسك لم انسه * نصب لي الخطاة فخا ولم اعدل
111 112 عن وصاياك * ورثت شهاداتك الي الابد لان بها بهجة نفسي * املت قلبي لاصنع شهاداتك
113 من اجل مجازاة موبدة * الفصل الخامس عشر وهو ح * ابغضت مخالفي الناموس
114 115 واحببت ناموسك * لانك انت معيني وناصري وعلي كلامك توكلت * حيدوا عني ايها الاشرار
وافحص عن وصايا الاهي *

** Parum abſuit quin perderent me ſuper terram,* 87
attamen ego nunquam neglexi mandata
tua. Secundùm miſericordiā tuam vivifica 88
me, O Domine, et cuſtodiam teſtimonia oris
tui. Sect.xii.Ver.7. *Verbum tuum, O Domine,* 89
perpetuum eſt in cœlis ad æternitatem,
Et juſtitia tua firma à generatione in generationem: 90
fundâſti terram, eſtque ſtabilis
Imperio tuo. et dies quoq; perſtans eſt: quia 91
res omnes ſubjectæ ſunt tibi. Niſi lex tua 92
meum eſſet exercitiū, ſanè periiſſem in humilitate
mea. In æternum non obliviſcar 93
decreta tua, quia per ipſa vivificâſti me, O
Domine. Salva me, O Domine, quia ego ſum 94
tuus, ſiquidē quæſivi decreta tua. Steterunt 95
mihi peccatores ad perdendum me, et teſtimonia
tua intellexi. Vidi omni perfectioni 96
finē, at præcepta tua ſunt ampla ſupra modum.
Sect.xiii V.8. *Amabile eſt nomen tuū,* 97
O Dñe, ideò ipſum totâ die meditatio mea
eſt. Doce me mandata tua meliùs quàm 98
inimicos meos, quoniā ipſa ſunt firma mihi
in æternum. Intellexi pluſquam omnes qui 99
me docent, quia teſtimonia tua ſunt meditatio
mea. Intellexi pluſquam ſenes, quia 100
quæſivi mandata tua. Prohibui pedes meos 101
ab omni via mala, ut cuſtodiā eloquiū tuū;
Non declinavi à judiciis tuis, quia tu poſuiſti 102
mihi legē. Eloquium tuum dulce eſt in 103
gutture meo, pluſquā favus in ore meo. Intellectum 104
acquiſivi à mandatis tuis, & proptereà
odi omnes vias perverſitatis, quia poſuiſti
mihi legem. Sect.xiv.Ver.8. *Lex tua* 105
eſt fax pedibus meis, & lumen ſemitis meis.
Juravi et perſtiti in obſervantia judiciorū 106
conſtitutionum tuarum. Humiliatus ſum 107
valdè ad ſupremum uſque terminum,
vivifica me, O Domine, ſecundùm ſermonē
tuum. Juramenta oris mei benedicas, O 108
Domine, doce me judicia tua. Anima mea 109
in manu tua eſt in omni tempore, & legem
tuam non ſum oblitus. Erexerunt mihi peccatores 110
laqueum, et non declinavi à præceptis
tuis. Hæreditariò poſſedi teſtimonia tua 111
in æternum, quia in ipſis eſt hilaritas animæ
meæ. Inclinavi cor meum ad perficienda 112
teſtimonia tua propter retributionem æternam.
Sectio xv. Ver.8. *Odio habui refractarios* 113
legis, & dilexi legem tuam:
Quia tu es adjutor meus & auxiliator 114
meus, & ſermoni tuo ſum fretus. Declinate 115
à me, O maligni, & ſcrutabor mandata Dei mei.

תהלים : קיט

,me Suſtenta .mea ſpe à me afficias pudore ne & :vivam & ,tuũ dictum ſecundùm me Fulcito
116 סמכני כאמרתך ואחיה ואל־תבישני משברי : סעדני
117 errantes omnes Conculcaſti .ſemper tuis ſtatutis in ſolatiabor & : ſervabor & 116
ואושעה ואשעה בחקיך תמיד : סלית כל־שוגים 117
118 impios omnes feciſti ceſſare Scorias .eorum dolus falſitas quia :tuis ſtatutis à 118
מחקיך כי־שקר תרמיתם : סגים השבת כל־רשעי־
119 tuis judiciis à & : mea caro tuo pavore à Horruit .tua teſtimonia dilexi ideo : terræ 119
120 ארץ לכן אהבתי עדתיך : סמר מפחדך בשרי וממשפטיך
Fidejube .me opprimentibus me permittas ne : juſtitiam &,judicium Feci .timui
121 יראתי : עשיתי משפט וצדק בל־תניחני לעשקי : ערב 120
122 : tuam ſalutem ad defecerunt mei Oculi .ſuperbi me opprimant ne : bonum in tuo ſervo 121
123 עבדך לטוב אל־יעשקני זדים : עיני כלו לישועתך 112
, tuam miſericordiam ſecundùm tuo ſervo cum Fac .tuæ juſtitiæ eloquium ad &
124 ולאמרת צדקך : עשה עם־עבדך כחסדך 123
.tua teſtimonia ſciam &:me intelligere fac ,ego tuus Servus .me doce tua ſtatuta & 124
125 וחקיך למדני : עבדך־אני הבינני ואדעה עדתיך : 125
tua præcepta dilexi Ideo .tuam legem diſſipaverunt :Domino faciendi Tempus
126 עת לעשות ליהוה הפרו תורתך : על־כן אהבתי מצותיך 126
127 ſemitam omnem : direxi omnia , præcepta omnia Propterea .obrizo præ & ,auro præ 127
128 מזהב ומפז : על־כן כל־פקודי כל ישרתי כל־ארח 128
.mea anima ea cuſtodivit ideo : tua teſtimonia Mirabilia .habui odio falſitatis
129 שקר שנאתי : פלאות עדותיך על־כן נצרתם נפשי :
: reſpiravi & ,patefeci meum Os .ſimplices erudiens ,illuminabit tuorum verborũ Apertio 129
130 פתח דבריך יאיר מבין פתיים : פי פערתי ואשאפה 130
131 jus ſecundùm : mei miſerere & me ad Aſpice .deſideravi tua præcepta ad quia
132 כי למצותיך יאבתי : פנה־אלי וחנני כמשפט 131
non & : tuo eloquio in firma meos Greſſus .tuum nomen diligentes erga 132
133 לאהבי שמך : פעמי הכן באמרתך ואל־ 133
: hominis oppreſſione ab me Redime .iniquitas omnis me in imperium exercebit
134 תשלט־בי כל־און : פדני מעשק אדם 134
me doce & , tuo ſervo in lucere fac tuas Facies .tua præcepta cuſtodiam & 135
135 ואשמרה פקודיך : פניך האר בעבדך ולמדני את־
non quod propterea : meis oculis deſcenderunt aquarum Pelagi .tua ſtatuta 136
136 חקיך : פלגי־מים ירדו עיני על לא־
.tua judicia rectum & : Domine tu Juſtus .tuam legem cuſtodierunt 137
137 שמרו תורתך : צדיק אתה יהוה וישר משפטיך : 138
: meus zelus me Succidit .valde veritatem & : tua teſtimonia juſtitiam Præcepiſti 139
138 צוית צדק עדתיך ואמונה מאד : צמתתני קנאתי
139 , valde tuum dictum Purificatum .mei hoſtes tuorum verborum ſunt obliti quia 140
140 כי־שכחו דבריך צרי : צרופה אמרתך מאד 141
non tuorum præceptorum : deſpectus & , ego Parvulus .illud dilexit tuus ſervus & 142
141 ועבדך אהבה : צעיר אנכי ונבזה פקדיך לא
Afflictio .veritas tua lex & : ſeculum in juſtitia tua juſtitia .ſum oblitus 143
142 שכחתי : צדקתך צדק לעולם ותורתך אמת : צר־ 144
143 tuorũ teſtimoniorũ Juſtitia.meæ delectationes tua præcepta:me invenerunt anguſtia &
144 ומצוק מצאוני מצותיך שעשעי : צדק עדותיך
.vivam & , me fac intelligere:ſeculum in
לעולם הבינני ואחיה :

תרגום TARGUM.

116 סמוך יתי במימרך ואחי ולא תבהית יתי מן
117 כליותי : סעוד יתי ואתפרק ואנגע באוריתך
118 תדירא : כבשתא כל דשלין מגזרתך ארום
119 שקרא נכלהון : פסוליא פסקתא בטלתא
כל רשיעי ארעא מטול היכנא רחימית
120 סהדותך : מצלהב מדחלך בסרי ומדינך
121 דחלית : עבדית דינא וצדקתא לא תשבקנני
112 לטלומי : בסים עבדך לטבא לא יטלמון
123 יתי זידונין : עיני סברו לפורקנך ולמימר
124 צדקך : עבד עם עבדך היך חסדך וגזרתך
125 אליף יתי : עבדך אנא תבין יתי ואידע
126 סהדותך : עדן למעבד רעותא דיי אפיסו
127 תלמידיא אוריתך : מטול היכנא רחימית
128 פקודיך מדהבא ומן אובריזא : מטול היכנא
כל פקודיא כולהון התרצתנון כל אורח
129 שקרא סניתי : פרישן סהדותך מטול היכנא
130 נטרתנון נפשי : גליף דבריך ינהר חשיכיא
131 יתבין שרניני : פומי פתחית ואלפית ארום
132 לפקודיך צביתי : אתפני לותי וחוס עלי
133 כהלכתא לרחימי שמך : אסתורי אתקין
134 במימרך ולא תשליט בי כל שקר : פרוק
135 יתי מטלומא דבר נשא ואטור פקודיך : זיו
136 אפך אנהר בעבדך ואלפני ית גזרתך : טיפי
מיא יחתון עיני על מטול דלא נטרו
137 138 אוריתא : זכי את יי ותריצין דינך : פקדתא
139 צדקתא דסהדותך והימנותא לחדא : מגרת
יתי טננתי ארום אתנשיאו דבריך מעיקי :
140 141 סנינא מימרך לחדא ועבדך רחמה : זוטר
142 אנא ובסיר פקודיך לא אתנשיתי : צדקתך
143 צדקא לעלמא ואוריתך קשוט : עקא ומעיקא
144 ערעו יתי פקודיך פרנקי : צדקתא דסהדותך
לעלם תבינני ואתקים :

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Suſtenta me in verbo tuo, & vivam: & ne confundas me ab expectatione mea. Adjuva me, & ſalvus ero: & meditabor in ſtatutis tuis ſemper. Conculcaſti omnes aberrantes à præceptis tuis, quoniam mendax eſt deceptio eorum. Idola confregiſti, abolevisti omnes impios terræ; propterea dilexi teſtimonia tua. Inflammatur præ timore tui caro mea, & à judiciis tuis timui. HAIN. Feci judicium & juſtitiam: ne deſeras me calumniatoribus meis. Lætifica ſervum tuum in bonum; ne calumnia me opprimant ſuperbi. Oculi mei ſperaverunt in redemptione tua, & in verbo juſtitiæ tuæ. Age cum ſervo tuo ſecundùm miſericordiam tuam, & præcepta tua doce me. Servus tuus ego ſum, da mihi intellectum, & ſciam teſtimonia tua. Tempus eſt faciendi voluntatem Domini: profanârunt diſcipuli Legem tuam. Propterea dilexi mandata tua ſuper aurum & obrizum. Propterea omnia mandata tua, ea [inquam] omnia direxi, omnem viam iniquam odio habui. PHE. Mirabilia teſtimonia tua, propterea cuſtodivit ea anima mea. Impreſſio verbi tui illuminabit obſcuros, dabit intellectum ſimplicibus. Os meum aperui & didici, quoniam mandata tua volui. Reſpice me, & miſerere mei, pro conſuetudine [tua] erga diligentes nomen tuum. Greſſus meos dirige in verbum tuum, & ne des poteſtatem in me iniquitati. Redime me à calumnia hominum, & cuſtodiam mandata tua. Splendorem faciei tuæ lucere fac in ſervo tuo, & doce me decreta tua. Fluenta aquarum emittant oculi mei, quoniam non cuſtodierunt Legem [tuam.] SADE. Juſtus es tu Domine, & recta judicia tua. Præcepiſti juſtitiam teſtimoniorum tuorum, & veritatem valdè. Diſſipavit me zelus meus, quoniam obliti ſunt verbi tui moleſtatores mei. Purum eſt verbum tuum valdè, & ſervus tuus dilexit illud. Parvulus ego ſum & contemptus; mandata tua non ſum oblitus. Juſtitia tua juſtitia in æternum, & Lex tua veritas eſt. Oppreſſio & anguſtia evenerunt mihi: mandata tua deliciæ meæ ſunt, Juſtitia teſtimoniorum tuorum in æternum: intellectum da mihi, & vivam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

116 [illegible]
117 [illegible]
118 [illegible]
119 120 [illegible]
121 [illegible]
122 123 [illegible]
124 125 [illegible]
126 [illegible]
127 128 [illegible]
129 [illegible]
130 131 [illegible]
132 [illegible]
133 [illegible]
135 136 [illegible]
137 138 [illegible]
139 [illegible]
140 141 [illegible]
142 [illegible]
143 144 [illegible]
[illegible]

Corrobora me verbo tuo, ac vivam, & ne fruſtres ſpe meâ. Suffulci me, ac ſalvabor & erudiar mandatis tuis. Omni tempore aſpernat⁹ quoſcũq; aberrantes à te, quia eſt cura eorũ. Fulci me, & ſervabor, ac meditabor ſemper tua præcepta. Horruit caro mea præ formidine tua, & judicia tua timui. * Ee * O faciens judicium & æquitatem, ne me deſeras in manu oppreſſorum meorum. Oblecta ſervum tuum bonis, & ne criminentur me ſuperbi. Oculi mei expectaverunt ſalutem tuam, & ſermonem juſtitiæ tuæ. Age cum ſervo tuo pro tua miſericordia & doce me legem tuam. Servus tuus erudi me ut ſciam teſtimonium tuum. Tempus eſt colendi Dominum, at ecce abrogarunt legem tuam; Ideò amavi præcepta plusquam aurum, & plusquam lapides mos: Omnia mandata tua dilexi, omnem viam ſceleſtorum odi. * Phe * Prodigia ſunt teſtimonia tua, idcircò ſervavit anima mea. Aperi verbum tuum, & na atque erudi pueros. Os meum traxique ſpiritum, & expectavi ſalutem am. Convertere ad me, & miſerere quia dilexi nomen tuum. Confirma meos in ſemitis tuis, ne dominetur farius. Libera me à tyrannide hominis, ſtodiam mandata tua. Nitere fac vulum ſuper ſervum tuum, & doce me tuam. Rivi aquarum prodierunt ex meis, eò quòd non cuſtodierint legem * Sſode * Juſtus es, Domine, & recta ſunt judicia tua; Præcepiſti nium tuum cum æquitate & fide. me zelus omni tempore, quia obliti bum tuum hoſtes tui. Selectiſſimum bum tuum, & ſervus tuus amavit vus ſum atq; deſpectus; attamen non ſum oblitus. Juſtitia tua æternum, & lex tua cum veritate. & mœror aſſecuti ſunt me, tuáque ſum contemplatus. Æquum eſt tuum in æternum, erudi me ac vivam.

Verſio VULG. LAT.

Suſcipe me ſecundùm eloquium tuum,
116 & vivā: & non confundas me ab ex-
pectatione mea. Adjuva me, & ſalv⁹ e-
117 ro: & meditabor in juſtificationib⁹ tu-
is ſemper. Sprevisti omnes diſcedentes
118 à judiciis tuis: quia injuſta cogitatio
eorū. Prævaricantes reputavi omnes
119 peccatores terræ: ideò dilexi teſtimo-
nia tua. Confige timore tuo carnes me-
120 as: à judiciis enim tuis timui. AIN.
Feci judiciū & juſtitiā: non tradas me
121 calumniantib⁹ me. Suſcipe ſervū tuū
122 in bonū: non calumnientur me ſuper-
bi. Oculi mei defecerunt in ſalutare
123 tuū: & in eloquium juſtitiæ tuæ. Fac
124 cum ſervo tuo ſecūdm miſericordiā tuā:
& juſtificationes tuas doce me. Serv⁹
125 tu⁹ ſum ego: da mihi intellectū, ut ſciā
teſtimonia tua. Tempus faciendi, Dñe:
126 diſſipaverunt legē tuam. Ideò dilexi
127 mandata tua, ſuper aurū & topazion.
Propterea ad omnia mandata tua di-
128 rigebar: omnē viā iniquā odio habui.
PHE. Mirabilia teſtimonia tua:
129 ideò ſcrutata eſt ea anima mea. Decla-
130 ratio ſermonū tuorū illuminat: & in-
tellectū dat parvulis. Os meū aperui,
131 & attraxi ſpiritum: quia mandata tua
deſiderabā. Aſpice in me, & miſerere
132 mei, ſecundùm judiciū diligentiū no-
mē tuū. Greſſus meos dirige ſecundū
133 eloquiū tuum: & non dominetur mei
omnis injuſtitia. Redime me à calum-
134 niis hominū: ut cuſtodiā mandata tua.
Faciē tuā illumina ſuper ſervū tuū: &
135 doce me juſtificationes tuas. Exitus a-
136 quarū deduxerūt oculi mei: quia non
cuſtodierūt legē tuā. SADE. Juſt⁹
137 es, Dñe: & rectū judiciū tuū. Mandâſti
138 juſtitiā teſtimonia tua: & veritatē tuā
nimis. Tabeſcere me fecit zel⁹ meus:
139 quia obliti ſunt verba tua inimici mei.
Ignitū eloquiū tuū vehemēter: & ſer-
140 vus tu⁹ dilexit illud. Adoleſcentul⁹ ſum
141 ego, & contempt⁹: juſtificationes tuas
non ſum oblitus. Juſtitia tua, juſtitia
142 in æternū: & lex tua veritas. Tribula-
143 tio & anguſtia invenerunt me: man-
data tua meditatio mea eſt. Æquitas
144 teſtimonia tua in æternū: intellectum
da mihi, & vivam.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

116 † Ἀντιλαβοῦ μου κατὰ τὸ λόγιόν σου, καὶ ζῆσόν με, † καὶ
117 μὴ καταισχύνῃς με ἀπὸ τῆς προσδοκίας μου. † Βοήθη-
σόν μοι, καὶ σωθήσομαι, † καὶ μελετήσω ἐν τοῖς δικαι-
118 ώμασί σου διαπαντός. † Ἐξουδένωσας πάντας τοὺς
ἀποστατοῦντας ἀπὸ τῶν δικαιωμάτων σου, † ὅτι ἄδικον
119 τὸ ἐνθύμημα αὐτῶν. † Παραβαίνοντας ἐλογισάμην
πάντας τοὺς ἁμαρτωλοὺς τῆς γῆς, † διὰ τοῦτο ἠγάπησα
120 τὰ μαρτύριά σου. † Καθήλωσον ἐκ τοῦ φόβου σου τὰς
σάρκας μου, † ἀπὸ γὰρ τῶν κριμάτων σου ἐφοβήθην.
121 † Ἐποίησα κρίμα καὶ δικαιοσύνην, μὴ παραδῷς με
122 τοῖς ἀδικοῦσί με. † (ʺ) Ἔνδεξαι τὸν δοῦλόν σου εἰς ἀ-
123 γαθόν, † μὴ συκοφαντησάτωσάν με ὑπερήφανοι. † Οἱ
ὀφθαλμοί μου ἐξέλιπον εἰς τὸ σωτήριόν σου, † καὶ εἰς
124 τὸ λόγιον τῆς δικαιοσύνης σου. † Ποίησον μετὰ τοῦ δού-
λου σου (σ) κατὰ τὸ ἔλεός σου, † καὶ τὰ δικαιώματά σου
125 δίδαξόν με. † Δοῦλός σου εἰμὶ ἐγώ, συνέτισόν με,
126 † καὶ γνώσομαι τὰ μαρτύριά σου. † Καιρὸς τοῦ ποιῆσαι
127 τῷ κυρίῳ, † διεσκέδασαν τὸν νόμον σου. † Διὰ τοῦτο ἠ-
γάπησα τὰς ἐντολάς σου ὑπὲρ (ʺ) χρυσίον καὶ τοπάζιον.
128 † Διὰ τοῦτο πρὸς πάσας τὰς ἐντολάς σου κατωρθού-
129 μην, † πᾶσαν ὁδὸν ἄδικον ἐμίσησα. † Θαυμαστὰ τὰ
μαρτύριά σου, † διὰ τοῦτο (τ) ἐξηρεύνησεν αὐτὰ ἡ ψυχή
130 μου. † Ἡ δήλωσις τῶν λόγων σου φωτιεῖ καὶ συνετιεῖ
131 νηπίους. † Τὸ στόμα μου (υ) ἤνοιξα, καὶ εἵλκυσα
132 πνεῦμα, † ὅτι τὰς ἐντολάς σου ἐπεπόθουν. † Ἐπί-
βλεψον ἐπ᾽ ἐμὲ καὶ ἐλέησόν με, † κατὰ τὸ κρίμα τῶν
133 (φ) ἀγαπώντων τὸ ὄνομά σου. † Τὰ διαβήματά μου
κατεύθυνον κατὰ τὸ λόγιόν σου, † καὶ μὴ κατακυ-
134 ριευσάτω μου πᾶσα ἀνομία. † Λύτρωσαί με ἀπὸ
συκοφαντίας ἀνθρώπων, † καὶ φυλάξω τὰς ἐντολάς
135 σου. † Τὸ πρόσωπόν σου ἐπίφανον ἐπὶ τὸν δοῦλόν
136 σου, † καὶ δίδαξόν με τὰ δικαιώματά σου. † Δι-
εξόδους ὑδάτων (χ) κατέβησαν οἱ ὀφθαλμοί μου,
137 † ἐπεὶ οὐκ ἐφύλαξα τὸν νόμον σου. † Δίκαιος
138 εἶ κύριε, καὶ εὐθεῖς αἱ κρίσεις σου. † Ἐνετείλω δι-
καιοσύνην τὰ μαρτύριά σου, † καὶ ἀλήθειαν σφόδρα.
139 † Ἐξέτηξέ με (ψ) ὁ ζῆλός σου, † ὅτι ἐπελάθοντο
140 (ω) τῶν λόγων σου οἱ ἐχθροί μου. † Πεπυρωμένον τὸ
λόγιόν σου σφόδρα, † καὶ ὁ δοῦλός σου ἠγάπησεν αὐ-
141 τό. † Νεώτερος ἐγώ εἰμι καὶ ἐξουδενωμένος, † τὰ
142 δικαιώματά σου οὐκ ἐπελαθόμην. † Ἡ δικαιοσύνη
σου δικαιοσύνη εἰς τὸν αἰῶνα, † καὶ ὁ νόμος σου
143 ἀλήθεια. † Θλίψεις καὶ ἀνάγκαι εὕροσάν με, † (α)
144 ἐντολαί σου μελέτη μου. † Δικαιοσύνη τὰ μαρτύριά
σου εἰς τὸν αἰῶνα, † συνέτισόν με καὶ (β) ζήσομαι.

MS.A. (ʺ) Ἔκδεξαι (σ) κύριε κατὰ τὸ λόγιόν σου, καὶ τὰ (ʺ) τὸ χρυσίον (τ) ἐξηραύνησεν (υ) ἤνυξα, καὶ ἤλκυσα (φ) ἀγαπούντων (χ) διέβησαν (ψ) ὁ ζῆλος τοῦ οἴκου σου, (ω) τῶν ἐντολῶν σου (α) αἱ ἐντολαί σου (β) ζῆσόν με.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

116 Suſcipe me ſecundū (aaa) elo- 116
quium tuū, & (b) vivifica me: &
ne confundas me ab expectatione
mea. 117 Adjuva me, et ſalvus ero: 117
et meditabor in juſtificationibus tuis
ſemper. 118 (c) [o] Ad nihilum de- 118
duxiſti omnes diſcedentes à juſtifi-
cationibus tuis: quia injuſta cogitatio
corū. 119 (d) [p] Prævaricantes re- 119
putavi omnes peccatores terræ: ideò
dilexi teſtimonia tua. 120 Confige (e) 120
clavis à timore tuo carnes meas: à
judiciis enim tuis timui. 121 Feci 121
(f) judicium, & juſtitiā: ne tradas
me (g) iis [q] qui mihi injuriā faciūt.
122 (h) [r] Excipe ſervum tuum in 122
bonum: non calumnientur me ſuperbi.
123 Oculi mei defecerunt in ſaluta- 123
re tuum, et in eloquium juſtitiæ tuæ.
124 Fac cum ſervo tuo ſecundùm 124
miſericordiā tuā: & juſtificationes
tuas doce me. 125 Serv⁹ tu⁹ ſum e- 125
go: da mihi intellectum; & ſciā te-
ſtimonia tua. 126 Tempus faciendi 126
(i) Domino: (k) diſſipaverunt legem
tuā. 127 Ideò dilexi mandata tua 127
ſuper aurum, & topazion. 128 Pro- 128
pterea ad omnia mandata tua dirige-
bar: omnē viā iniquam odio habui.
129 Mirabilia teſtimonia tua: ideò 129
ſcrutata eſt ea anima mea. 130 Mani- 130
feſtatio ſermonum tuorum (l) illumi-
nabit, & intelligere faciet parvulos.
131 Os meum aperui, et attraxi ſpi- 131
ritū: quia mandata tua deſiderabā.
132 Reſpice in me, et miſerere mei: 132
ſecundū judicium diligentiū nomen
tuum. 133 [ſ] Greſſus meos dirige 133
ſecundū eloquium tuū: & non domi-
netur mei omnis iniquitas. 134 Redi- 134
me me à calumnia hominum: &
cuſtodiam mandata tua. 135 Fa- 135
ciē tuā illumina ſuper ſervū tuū: et
doce me juſtificationes tuas. 136 Ex- 136
itus aquarū (m) deſcenderunt oculi
mei, quia non (n) cuſtodivi legē tuā.
137 Juſtus es, Domine, et recta ju- 137
dicia tua. 138 [t] Mandâſti juſtitiā 138
teſtimonia tua, & veritatem valde.
139 [v] Tabefecit me (o) zelus tuus, 139
quia obliti ſunt verba tua inimici
mei. 140 (p) Ignitum eloquium tuū 140
valdè: & ſervus tuus dilexit illud.
141 Junior ego ſum, & contempt⁹: 141
juſtificationes tuas non ſum oblitus.
142 Juſtitia tua, juſtitia in æternū, 142
& [x] lex tua veritas. 143 Tribula- 143
tio, & neceſſitates invenerunt me: mandata tua (y) meditatio mea eſt. 144 Juſtitia 144
teſtimonia tua in æternum: intellectum da mihi, (α) & vivam.

Verſio ÆTHIOPICA.

ተወከፈኒ፡ በከመ፡ ነቢብከ፡ ወአሕይወ፡፡ ወ 116
ኢትስተኃፍረኒ፡ እምተስፋየ፡፡ ፨ ርድአ 117
ኒ፡ ወእድኅነኒ፡፡ ወአነብብ፡ በኵነኔከ፡ በኵ
ሉ፡ ጊዜ፡፡ ፨ አኅሰርኮሙ፡ ለኵሎሙ፡ እ 118
ለ፡ ይርሕቁ፡ እምትእዛዝከ፡፡ እስመ፡ ዐመ
ፃ፡ ፍትወቶሙ፡፡ ፨ ዐላዊያን፡ እሙንቱ፡ ኵ 119
ሎሙ፡ ኃጥአነ፡ ምድር፡፡ በእንተዝ፡ አፍቀር
ኩ፡ ስምዐከ፡፡ ፨ አውድድ፡ ውስተ፡ ሥጋ 120
የ፡ ፈሪሆተከ፡፡ እስመ፡ ፈራህኩ፡ እምኵነኔ
ከ፡፡ ፨ 16 ዓ፡ ገበርኩ፡ ፍትሐ፡ ወጽ 121
ድቀ፡፡ ኢትመጥወኒ፡ ለእለ፡ ይሄቅዩኒ፡፡ ፨
ፀንሖ፡ ለገብርከ፡ ውስተ፡ ሠናይ፡፡ ወኢይት 122
ዐገሉኒ፡ ዕቡያን፡፡ ፨ ደክማ፡ አዕይንትየ፡ 123
ለአድኅኖትከ፡፡ ወለቃለ፡ ጽድቅከ፡፡ ፨ ግ 124
በር፡ ለገብርከ፡ በከመ፡ ምሕረትከ፡፡ ወመሀ
ረኒ፡ ኵነኔከ፡፡ ፨ ገብርከ፡ አነ፡ አለብወኒ፡፡ 125
ወአእምር፡ ስምዐከ፡፡ ፨ ጊዜ፡ ለገቢር፡ ለ 126
እግዚአብሔር፡፡ ወአማሰኑ፡ ሕገከ፡፡ ፨ በእ 127
ንተዝ፡ አፍቀርኩ፡ ትእዛዘከ፡፡ እም ወርቅ፡
ወእምጳዝዮን፡፡ ፨ በእንተዝ፡ አርተዕኩ፡ 128
ኀበ፡ ኵሉ፡ ትእዛዝከ፡፡ ኵሉ፡ ፍኖተ፡ ዐመ
ፃ፡ ጸላእኩ፡፡ ፨ 17 ፈ፡ መንክር፡ ስም 129
ዕከ፡፡ በእንተዝ፡ ኃሠሠቶ፡ ነፍስየ፡፡ ፨ ነገ 130
ረ፡ ቃልከ፡ ያበርህ፡ ወያለብዎሙ፡ ለሕፃናት፡፡ ፨
አፉየ፡ ከሠትኩ፡ ወነፋስየ፡ ለፀሕኩ፡፡ እስመ፡ 131
ትእዛዘከ፡ አፍቀርኩ፡፡ ፨ ነጽር፡ ላዕሌየ፡ 132
ወተሠሀለኒ፡፡ በከመ፡ ፍትሖሙ፡ ለእለ፡ የፈ
ቅሩ፡ ስመከ፡፡ ፨ አርትዕ፡ ፍኖትየ፡ ወሑረ 133
ትየ፡ በከመ፡ ነቢብከ፡፡ ወኢይመዐኒ፡ ኵሉ፡
ኃጢአት፡፡ ፨ አድኅነኒ፡ እምትእግልተ፡ 134
እጓለ፡ እመሕያው፡፡ ወእዐቅብ፡ ትእዛዘ
ከ፡፡ ፨ አብርህ፡ ገጸከ፡ ላዕለ፡ ገብርከ፡፡ 135
ወምህረኒ፡ ኵነኔከ፡፡ ፨ ሙሐዘ፡ ማይ፡ ወ 136
ረደ፡ እምአዕይንትየ፡፡ ወእምአኮ፡ እም፡
ኢዐቀብኩ፡ ሕገከ፡፡ ፨ 18 ጸ፡ ጻ 137
ድቅ፡ አንተ፡ እግዚኦ፡ ወርቱዕ፡ ኵነኔከ፡፡ ፨
ወአዘዝከ፡ ስምዐከ፡ በጽድቅ፡፡ ወርቱዕ፡ 138
ፈድፋደ፡፡ ፨ መሰወኒ፡ ቅንአተ፡ ቤትከ፡፡ እ 139
ስመ፡ ረስዑ፡ ትእዛዘከ፡ ጸላእትየ፡፡ ፨ ርሱ 140
ን፡ ቃልከ፡ ፈድፋደ፡፡ ወገብርከ፡ አፍቀ
ሮ፡፡ ፨ ወሬዛ፡ አነ፡ ወትሑት፡፡ ወሕገከ 141
ሰ፡ ኢረሳዕኩ፡፡ ፨ ጽድቅከሰ፡ ጽድቅ፡ ዘ 142
ለዓለም፡፡ ወቃልከኒ፡ እሙን፡ ውእቱ፡፡ ፨
ሕማም፡ ወምንዳቤ፡ ረከበኒ፡፡ ወትእዛዝከ 143
ሰ፡ ተመሀርየ፡ ውእቱ፡፡ ፨ ጽድቅ፡ ውእ 144
ቱ፡ ስምዕከ፡ ለዓለም፡፡ አለብወኒ፡ ወአሐ
ይወኒ፡፡ ፨

INTERP. ÆTHIOP. [o] Spreviſti omnes diſcedentes à præceptis tuis: quia deſiderium eorum eſt injuſtum. [p] Prævaricantes ſunt omnes [q] qui excruciant me. [r] Suſtenta ſervum [ſ] Dirige viam meā, & greſſus meos [t] Continuiſti teſtimonia tua in juſtitia, & rectus es valdè. [v] Liquefecit me zelus domûs tuæ, quia obliti ſunt præcepta tua [x] verbum tuum [y] doctrina mea

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

116 أعضدني كقولك فأحيا ولا تخيب رجاي * أعني فأخلص وأدرس في فرائضك في كل حين
117 * رذلت كل الذين حادوا عن سننك لأن فكرهم الظلم * عددت جميع الأرض خطاة كمن
118 لذلك أحببت شهاداتك في كل حين * اقشعر جسمي من خشيتك لأني خفت أحكامك يا رب
119 * الفصل السادس عشر وهو ح * صنعت حكما وعدلا فلا تسلمني إلى الظالمين لي * اقبل
120 عبدك إليك في الخير لئلا يغضب علي المتعظمون * عيناي فنيتا إلى خلاصك وقول عدلك
121 * اصنع مع عبدك نظير رحمتك وعرفني حقوقك * أنا هو عبدك أفهمني فأعلم شهاداتك
122 * هذا زمان يعبد فيه الرب فقد عطلوا سننك * من أجل هذا أحببت وصاياك أفضل من
123 الذهب والجوهر * ومن أجل هذا قمت في جهة وصاياك جميعها وأبغضت كل طرق الظلم
124 * الفصل السابع عشر وهو ح * شهاداتك عجائب لذلك فحصتها نفسي * إعلان
125 كلامك يضيء لي ويفهم الأطفال * فتحت فاي واستنشقت روحا لأني اشتهيت إلى وصاياك * انظر
126 إلي وارحمني كمثل حكم محبي اسمك يا رب * تقوم خطواتي إلى طرقك فلم تتسلط علي كل
127 الآثام * انقذني من بغي البشر فأحفظ وصاياك * أنر وجهك على عبدك وعرفني حقوقك
128 * عيناي غاصت في مخارج المياه لأني لم أحفظ ناموسك * الفصل الثامن عشر وهو ز
129 130 * أنت عدل يا رب ومستقيم حكمك * أمرت بالعدل والحق جدا في شهاداتك * غير بيتك
131 132 أذابني لأن أعدائي نسوا وصاياك * قولك مجرب جدا وعبدك أحبه * أنا صغير مرذول ولم
133 أنس وصاياك * عدلك حق هو إلى الأبد وكلامك حق هو * أحزان وشدائد لحقتني وكانت
134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 وصاياك قراءتي * شهاداتك صادقات إلى الأبد أفهمني فأحيا

Fulci me juxta ſermonem tuum et vivam, 116
& ne fruſtres ſpem meam. Adjuva me & 117
ſalvabor, et meditabor decreta tua in omni
tempore. Contempſi omnes qui deviârunt à 118
legibus tuis, quia cogitatio eorum eſt perver-
ſitas. Totam terrā reputavi infidelem, ideò 119
dilexi teſtimonia tua in omni tempore. Hor- 120
ruit corpus meum præ formidine tua, quia
extimui teſtimonia tua O Domine. Sectio
decimaſexta. Verſ. 8. Feci judicium et ju- 121
ſtitiam: ne igitur me tradas opprimentibus
me. Accipe ſervum tuum ad te, in bonum: 122
ut ne excandeſcant mihi ſuperbi. Oculi mei 123
defecerunt intenti ad ſalutem tuam et ſer-
monem juſtitiæ tuæ. Age cum ſervo tuo ſe- 124
cundùm miſericordiam tuam, et notas mihi
fac veritates tuas. Ego ſum ſervus tuus, 125
intellectum da mihi & ſciam teſtimonia
tua. Hoc eſt tempus quo colendus eſt Deus, 126
jam enim abrogârunt leges tuas. Propterea 127
dilexi mandata tua pluſquam aurum &
gemmas. Et propterea ſteti à partibus o- 128
mnium præceptorum tuorum, & odi omnes
vias perverſitatis. Sectio decimaſeptima.
Verſ. 8. Teſtimonia tua mira ſunt, ideò 129
ſcrutata eſt ea anima mea. Manifeſtatio 130
ſermonis tui elucet mihi, et intellectum dat
parvulis, Aperui os meum et attraxi aurā, 131
quia cupivi mandata tua. Reſpice in me et 132
miſerere mei ſecundùm judicium diligen-
tium nomen tuum, O Domine. Dirigas paſ- 133
ſus meos ad vias tuas, non enim dominatæ
ſunt mihi omnes iniquitates. Libera me à 134
calumnia hominum, & ſervabo mandata
tua. Illumina faciem tuam ſuper ſervum 135
tuum, & nota fac mihi ſtatuta tua. Oculi 136
mei immerſi ſunt in ſcatebras aquarum, quia
ego non cuſtodivi legem tuam. Sectio de-
cimaoctava. Ver. 7. Tu es juſtiſſimus, O 137
Domine, & rectum judicium tuum. Præ- 138
cepiſti juſtitiam & veritatem ſummopere
in teſtimoniis tuis. Zelus domûs tuæ liqua- 139
vit me: eò quòd inimici mei obliti ſunt
mandata tua. Sermo tuus probatus eſt val- 140
dè, & ſervus tuus dilexit illum. Ego par- 141
vus ſum, contemptus, & non ſum oblitus
mandata tua. Æquitas tua vera eſt in æ- 142
ternum, & ſermo tuus verus eſt. Mœro- 143
res & tribulationes ſecutæ ſunt me, & fue-
runt mandata tua lectio mea. Teſtimonia 144
tua [illegible]
& vivam.

תהלים : קיט

145 , te invocavi .custodiam tua statuta : Domine me exaudi : corde toto in Clamavi
146 קָרָאתִי בְכָל־לֵב עֲנֵנִי יְהוָה חֻקֶּיךָ אֶצֹּרָה: קְרָאתִיךָ 145
: clamavi & , crepusculo in Præveni .tua testimonia custodiam & : me serva 146
147 הוֹשִׁיעֵנִי וְאֶשְׁמְרָה עֵדֹתֶיךָ: קִדַּמְתִּי בַנֶּשֶׁף וָאֲשַׁוֵּעָה 147
meditandum ad : vigilias mei oculi Prævenerunt .expectavi tuum verbum ad
148 לִדְבָרְךָ יִחָלְתִּי: קִדְּמוּ עֵינַי אַשְׁמֻרוֹת לָשִׂיחַ
Domine : tuam misericordiam secundùm audi meam Vocem .tuo dicto in 148
149 בְּאִמְרָתֶךָ: קוֹלִי שִׁמְעָה כְחַסְדֶּךָ יְהוָה 149
; nefarium cogitatum sequentes Appropinquaverunt .me vivifica tuum judicium secundùm 150
150 כְּמִשְׁפָּטֶךָ חַיֵּנִי: קָרְבוּ רֹדְפֵי זִמָּה
tua præcepta omnia & : Domine tu Propinquum .se elongaverunt tua lege à 151
151 מִתּוֹרָתְךָ רָחָקוּ: קָרוֹב אַתָּה יְהוָה וְכָל־מִצְוֺתֶיךָ 152
Vide .ea fundâsti seculum in quia:tuis testimoniis de novi Anteà .veritas
152 153 אֱמֶת: קֶדֶם יָדַעְתִּי מֵעֵדֹתֶיךָ כִּי לְעוֹלָם יְסַדְתָּם: רְאֵה 153
, meam litem Litiga .sum oblitus non tuæ legis quia : me erue &,meam afflictionem 154
154 עָנְיִי וְחַלְּצֵנִי כִּי־תוֹרָתְךָ לֹא שָׁכָחְתִּי: רִיבָה רִיבִי 155
: salus impiis ab est Longè .me vivifica tuum eloquium propter : me redime & 156
155 וּגְאָלֵנִי לְאִמְרָתְךָ חַיֵּנִי: רָחוֹק מֵרְשָׁעִים יְשׁוּעָה
: Domine multæ tuæ Misericordiæ .quæsierunt non tua statuta quia 157
156 כִּי־חֻקֶּיךָ לֹא דָרָשׁוּ: רַחֲמֶיךָ רַבִּים יְהוָה 158
tuis testimoniis à:mei hostes &,me persequentes Multi.me vivifica tua judicia secundùm 159
157 כְּמִשְׁפָּטֶיךָ חַיֵּנִי: רַבִּים רֹדְפַי וְצָרָי מֵעֵדְוֺתֶיךָ
non tuum eloquium quia : sum affectus tædio & prævaricantes Vidi .declinavi non
158 לֹא נָטִיתִי: רָאִיתִי בֹגְדִים וָאֶתְקוֹטָטָה אֲשֶׁר אִמְרָתְךָ לֹא 160
tuam misericordiam secundùm Domine : dilexi tua præcepta quia ,Vide .custodierunt
159 שָׁמָרוּ: רְאֵה כִּי־פִקּוּדֶיךָ אָהָבְתִּי יְהוָה כְּחַסְדְּךָ 161
Principes .tuæ justitiæ judicium omne seculum in &:veritas tui verbi Caput .me vivifica 162
160 חַיֵּנִי: רֹאשׁ־דְּבָרְךָ אֱמֶת וּלְעוֹלָם כָּל־מִשְׁפַּט צִדְקֶךָ. שָׂרִים
161 super ego Gaudens .meum cor expavit tuo verbo à & : gratis me sunt persecuti 163
162 רְדָפוּנִי חִנָּם וּמִדְּבָרְךָ פָּחַד לִבִּי: שָׂשׂ אָנֹכִי עַל־ 164
: sum abominatus & , odivi Falsitatem .multum spolium inveniens sicut :tuo eloquio 165
163 אִמְרָתֶךָ כְּמוֹצֵא שָׁלָל רָב: שֶׁקֶר שָׂנֵאתִי וָאֲתַעֵבָה
.tuæ justitiæ judicia super : te laudavi die in Septies .dilexi tuam legem
164 תּוֹרָתְךָ אָהָבְתִּי: שֶׁבַע בַּיּוֹם הִלַּלְתִּיךָ עַל מִשְׁפְּטֵי צִדְקֶךָ: 166
Speravi .offensio eis non & : tuam legem diligentibus multa Pax 167
165 166 שָׁלוֹם רָב לְאֹהֲבֵי תוֹרָתֶךָ וְאֵין לָמוֹ מִכְשׁוֹל: שִׂבַּרְתִּי
:tua testimonia mea anima Custodivit .feci tua præcepta &:Domine tuam salutē in 168
167 לִישׁוּעָתְךָ יְהוָה וּמִצְוֺתֶיךָ עָשִׂיתִי: שָׁמְרָה נַפְשִׁי עֵדֹתֶיךָ 169
meæ viæ omnes quia:tua testimonia &,tua præcepta Custodivi .vehementer ea diligo & 170
168 וָאֹהֲבֵם מְאֹד: שָׁמַרְתִּי פִקּוּדֶיךָ וְעֵדֹתֶיךָ כִּי כָל־דְּרָכַי
tuum verbum secundùm : Domine tuas facies ad meus clamor Appropinquet .te coram 171
169 נֶגְדֶּךָ: תִּקְרַב רִנָּתִי לְפָנֶיךָ יְהוָה כִּדְבָרְךָ 172
tuum eloquium secundùm : tuas facies ad mea deprecatio Veniat .me fac intelligere
170 הֲבִינֵנִי: תָּבוֹא תְּחִנָּתִי לְפָנֶיךָ כְּאִמְרָתְךָ
Respondebit .tua statuta me docueris cum : laudem mea labia Eructabunt .me erue
171 172 הַצִּילֵנִי: תַּבַּעְנָה שְׂפָתַי תְּהִלָּה כִּי תְלַמְּדֵנִי חֻקֶּיךָ: תַּעַן
.justitia tua mandata omnia quia : tuum eloquium mea lingua
לְשׁוֹנִי אִמְרָתֶךָ כִּי כָל־מִצְוֺתֶיךָ צֶּדֶק:

תרגום TARGUM

145 קריתי בכל לבא ענא יתי יי גזרתך אנטור :
146 147 קריתך פרוק יתי ואנטור סהדותך : אקדמית
בשפרפרא וצליתי לפתגמך אורכית :
148 אקדימו עיני מטרתא דצפר ורמש למללא
149 במימרך : קלי שמע היך חסדך יי היך
150 דינך קיים יתי : קריבו רדפי זנו מאוריתך
151 אתרחקו : קריב את יי וכל פקודיך קשוט :
152 מן לקדמין חכימית מן סהדותך ארום
153 לעלם יסדתינון : חמי סגופי ופצי יתי ארום
154 אוריתך לא אתנשיתי : נצי מצותי ופרוק
155 יתי למימרך אסי יתי : רחיק מן רשיעי
156 פורקנא ארום גזרתך לא תבעו : רחמך
157 סגיעין יי היך דינך אסי יתי : סגיעין רדפי
158 ומעיקי מסהדותך לא אצליתי : חמיתי בוזזי
159 ואדינית עמהון די מימרך לא נטרו : חמי
ארום פקודיך רחימית יי היך חסדך אסי
160 יתי : שרוי פתגמך קשוט ולעלם כל דיני
161 צדקתך : רברבין רדפו יתי מגן ומפתגמך
162 דלח לבי : חדי אנא על מימרך היך גבר
163 דמשכח עדי סגי : שקרא סניתי ורחקית
164 אוריתך רחימית : שבע זמנין ביומא
165 שבחית יתך מטול דיני צדקך : שלם סגי
לרחמי אוריתך בעלמא הדין ולית להון
166 תקלא לעלמא דאתי : סברית לפורקנך
167 יי ופקודיך עבדית : נטרת נפשי סהדותך
168 ורחמנון לחדא : נטרית פקודיך וסהדותך
169 ארום כל אורחתי לקבלך : תתקרב צלותי
170 קדמך יי היך פתגמך תבינני : תיתי צלותי
171 קדמך היך מימרך פצי יתי : תבעין ספותי
172 תושבחתא ארום תלפנני גזירתך : תתיב
לישני מימרך ארום כל דינך צדקתא :

PARAPH. CHALD. Vers. La

COPH. Clamavi in toto corde, exaudi me Domine, decreta tua custodiam. Invocavi te, redime me, & custodiam testimonia tua. Præveni in aurora, & oravi, & verbum tuum expectavi. Anticipaverunt oculi mei vigilias matutinas & vespertinas, ut loquerer de verbo tuo. Vocem meam audi secundùm misericordiam tuam Domine : secundùm judicia tua vivifica me. Appropinquaverunt qui sequuntur scelus : à Lege tua longè facti sunt. Propè es tu Domine, & omnia mandata tua veritas. A principio cognitionem consecutus sum de testimoniis tuis, quòd in æternum fundaveris ea. RES. Vide afflictionem meam, & libera me; quia Legem tuam non sum oblitus. Age causam meam, & redime me: in verbo tuo *sana* me. Longè ab impiis abest salus, quoniam mandata tua non exquisierunt. Misericordiæ tuæ multæ sunt Domine : secundùm judicia tua *sana* me. Multi persecutores mei & molestatores mei sunt, à testimoniis tuis non declinavi. Vidi direptores & certavi cum eis, quòd verbum tuum non observâssent. Vide quoniam mandata tua dilexi, Domine, secundùm misericordiam tuam *sana* me. Principium verbi tui veritas, & in æternum omnia judicia justitiæ tuæ. SIN. Principes persecuti sunt me sine causa, verbum autem tuum timuit cor meum. Lætor ego in verbo tuo, sicut vir qui invenit spolia multa. Falsitatem odio habui & abominatus sum, Legem tuam dilexi. Septies in die laudem dixi tibi, propter judicia justitiæ tuæ. Pax multa diligentibus Legem tuam in mundo hoc : & non est illis scandalum in mundo venturo. Expectavi redemptionem tuam, Domine, & mandata tua executus sum. Custodivit anima mea testimonia tua, & diligam ea vehementer. Servavi mandata tua & testimonia tua, quoniam omnes viæ meæ in conspectu tuo sunt. THAU. Appropinquet oratio mea coram te, Domine, secundùm verbum tuum da mihi intellectum. Veniat oratio mea in conspectum tuum, secundùm verbum tuum libera me. Effundent labia mea hymnum, quoniam docebis me præcepta tua. Narrabit lingua mea verbum tuum, quoniam omnia judicia tua justitia sunt.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

145 ܩ * * ܩܪܝܬܟ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܝ ܡܪܝܐ ܥܢܝܢܝ ܕܐܛܪ ܦܘܩܕܢܝܟ: * ܩܪܝܬܟ
146 147 ܦܪܘܩܝܢܝ ܕܐܛܪ ܣܗܕܘܬܟ. * ܩܕܡܬ ܒܨܦܪܐ ܘܩܥܝܬ ܘܣܟܝܬ ܠܡܠܬܟ: * ܩܕܡ ܥܝܢܝ
148 149 ܠܡܛܪܬܐ ܕܐܪܢܐ ܒܡܠܬܟ. * ܫܡܥ ܩܠܝ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܪ̈ܚܡܝܟ ܘܒܕܝܢܝܟ ܐܚܝܢܝ: * ܩܪܒܘ
150 151 ܪ̈ܕܘܦܝ ܒܝ̈ܫܐ ܘܡܢ ܢܡܘܣܟ ܐܬܪܚܩܘ. * ܩܪܝܒ ܐܢܬ ܡܪܝܐ ܘܟܠܗܘܢ ܦܘ̈ܩܕܢܝܟ
152 ܒܩܘܫܬܐ: ܩܕܡܘ ܥܝܢܝ ܠܡܛܪܬܐ ܕܐܪܢܐ ܒܡܠܬܟ. * ܡܢ ܩܕܝܡ ܝܕܥܬ ܣܗܕܘܬܟ
153 ܕܠܥܠܡ ܬܩܢܬܗ: * ܪ * * ܚܙܝ ܡܘܟܟܝ ܘܦܪܘܩܝܢܝ ܡܛܠ ܕܢܡܘܣܟ ܠܐ
154 155 ܛܥܝܬ. * ܕܘܢ ܕܝܢܝ ܘܦܪܘܩܝܢܝ ܘܒܡܠܬܟ ܐܚܝܢܝ: * ܪܚܝܩ ܗܘ ܦܘܪܩܢܐ ܡܢ ܚܛܝ̈ܐ
156 ܡܛܠ ܕܠܐ ܒܥܘ ܦܘ̈ܩܕܢܝܟ. * ܣܓܝܐܝܢ ܪ̈ܚܡܝܟ ܡܪܝܐ ܘܒܕܝܢܝܟ ܐܚܝܢܝ:
157 158 * ܣܓܝܘ ܪ̈ܕܘܦܝ ܘܡܥܩ̈ܒܢܝ ܘܡܢ ܣܗܕܘܬܟ ܠܐ ܣܛܝܬ. * ܚܙܝܬ ܒܥܘܠܐ
159 ܘܚܙܝܬ ܕܡܠܬܟ ܠܐ ܢܛܪܘ: * ܚܙܝ ܕܪܚܡܬ ܦܘ̈ܩܕܢܝܟ ܡܪܝܐ ܘܒܛܝܒܘܬܟ ܐܚܝܢܝ.
160 161 * ܪܫܐ ܕܡܠܬܟ ܩܘܫܬܐ ܘܠܥܠܡ ܟܠܗܘܢ ܕ̈ܝܢܐ ܕܙܕܝܩܘܬܟ: * ܫ * * ܪ̈ܘܪܒܢܐ
162 ܪܕܦܘܢܝ ܡܓܢܐܝܬ ܘܡܢ ܡܠܬܟ ܕܚܠ ܠܒܝ. * ܚܕܐ ܒܡܐܡܪܟ ܐܝܟ ܗܘ
163 164 ܕܡܫܟܚ ܥܕܐ̈ܐ ܣܓܝ̈ܐܐ: * ܠܥܘܠ ܣܢܝܬ ܘܐܣܬܠܝܬ ܘܢܡܘܣܟ ܪܚܡܬ. * ܫܒܥ
165 ܙܒܢܝܢ ܫܒܚܬܟ ܥܠ ܕܝܢܝܟ ܙܕܝܩܐ: * ܫܝܢܐ ܗܘ ܣܓܝܐܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܪܚܡܝܢ
166 ܢܡܘܣܟ ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ ܬܘܩܠܬܐ. * ܣܒܪܬ ܠܦܘܪܩܢܟ ܡܪܝܐ ܘܦܘ̈ܩܕܢܝܟ ܥܒܕܬ:
167 168 * ܢܛܪܬ ܢܦܫܝ ܣܗܕܘܬܟ ܘܪܚܡܬܗ ܛܒ. * ܢܛܪܬ ܦܘ̈ܩܕܢܝܟ ܘܣܗܕܘܬܟ ܘܟܠܗܘܢ
169 ܐܘܪ̈ܚܬܝ ܩܕܡܝܟ: * ܬ * * ܬܬܩܪܒ ܬܫܒܘܚܬܝ ܩܕܡܝܟ ܡܪܝܐ ܘܒܡܠܬܟ ܐܚܝܢܝ.
170 172 * ܬܥܘܠ ܒܥܘܬܝ ܩܕܡܝܟ ܘܒܡܠܬܟ ܦܨܝܢܝ: * ܬܡܠܠ ܠܫܢܝ ܡܠܬܟ ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ
171 ܦܘ̈ܩܕܢܝܟ ܒܟܐܢܘܬܐ: * ܢܒܥܢ ܣܦܘܬܝ ܬܫܒܘܚܬܟ ܡܐ ܕܐܠܦܬܢܝ ܦܘ̈ܩܕܢܝܟ.

* *Qoph* * Invocavi te ex toto corde meo Domine exaudi me, ut custodiā mandata tua. Vocavi te, salva me : ut observem testimonium tuum. Surrexi summo manè & clamavi atque expectavi tuum verbum. Præcesserunt oculi mei vigiliam, ut meditarer eloquium tuum. Audi vocem meā Domine juxta miserationes tuas, & judiciis tuis vivifica me. Accesserunt persequutores mei pessimi, & à lege tua recesserunt. Vicinus es tu *quoq;* Domine, & omnia tua mandata in veritate. Prævenerunt oculi mei vigiliam, ut contemplarer eloquium tuum. Jampridē agnovi testimoniū tuum, quoniam ab æterno statuisti illud. * *Risc* * Vide humilitatem meam, & eripe me, quia legem tuam non sum oblitus. Judica judicium meum & vindica me, tuóq; verbo me vivifica. Remota est salus à scelestis, quia non petierunt mandata tua. Copiosæ sunt miserationes tuæ Domine, quare judiciis tuis vivifica me. Multiplicati sunt persequutores mei atque hostes mei, *tamen* à testimonio tuo non deflexi. Consideravi iniquos, & percepi sermonem tuum haud servari ab eis. Vide quòd amaverim præcepta Dñe : ideò ex bonitate tua vivifica me. Initium eloquii tui veritas & in æternum sunt cuncta judicia æquitatis tuæ. * *Sin* * Magnates insecuti sunt me gratis, verbum autem tuum extimuit cor meum. Lætatus sum in sermone tuo sicut is qui reperit spolia opima. Iniquitatem odi atq; abominatus sum, legem verò tuā dilexi. Septies in die laudavi te ob judicia tua, ô Justissime. Multa est tranquillitas eorum qui amant legem tuā, & non est eis infirmitas. Speravi salutem tuā Dñe, & mandata tua sum executus. Servavit anima mea testimonium tuū, & dilexit illud vehementer. Custodivi tua præcepta & testimonia tua, omnésq; viæ meæ sunt coram te. * *Tau* * Ingrediatur laus mea in conspectum tuum Domine, & verbo tuo vivifica me. Intret supplicatio mea in conspectum tuum, & sermone tuo salva me. Depromet lingua mea eloquium tuum, quia universa mandata tua sunt cum justitia. Loquentur labia mea laudes tuas, cum docueris me tua præcepta

Verſio VULG. LAT.

145 COPH. Clamavi in toto corde meo, exaudi me, Dñe: juſtificationes tuas requiram.
146 Clamavi ad te, ſalvum me fac: ut cuſtodiam mandata tua.
147 Præveni in maturitate, & clamavi: quia in verba tua ſuperſperavi.
148 Prævenerunt oculi mei ad te diluculò: ut meditarer eloquia tua.
149 Vocem meam audi ſecundùm miſericordiam tuam, Dñe: & ſecundùm judiciū tuū vivifica me.
150 Appropinquaverunt perſequentes me iniquitati: à lege autem tua longè facti ſunt.
151 Propè es tu, Domine: & omnes viæ tuæ veritas.
152 Initio cognovi de teſtimoniis tuis: quia in æternum fundaſti ea.
153 RES. Vide humilitatem meam, & eripe me: quia legem tuā non ſum oblitus.
154 Judica judicium meū, & redime me: propter eloquiū tuū vivifica me.
155 Longè à peccatorib⁹ ſalus: quia juſtificationes tuas non exquiſierunt.
156 Miſericordiæ tuæ multæ, Dñe: ſecundū judiciū tuū vivifica me.
157 Multi qui perſequuntur me, & tribulant me: à teſtimoniis tuis non declinavi.
158 Vidi prævaricantes, & tabeſcebam: quia eloquia tua non cuſtodierunt.
159 Vide quoniam mādata tua dilexi, Domine: in miſericordia tua vivifica me.
160 Principiū verborum tuorum, veritas: in æternum omnia judicia juſtitiæ tuæ. SIN.
161 Principes perſecuti ſunt me gratis: & a verbis tuis formidavit cor meum.
162 Lætabor ego ſuper eloquia tua: ſicut qui invenit ſpolia multa.
163 Iniquitatem odio habui, & abominat⁹ ſum: legem autē tuā dilexi.
164 Septies in die laudem dixi tibi, ſup judicia juſtitiæ tuæ.
165 Pax multa diligentibus legē tuā: & non eſt illis ſcandalū.
166 Expectabā ſalutare tuū, Dñe: & mandata tua dilexi.
167 Cuſtodivit anima mea teſtimonia tua: & dilexit ea vehementer.
168 Servavi mandata tua, et teſtimonia tua: quia omnes viæ meæ in conſpectu tuo.
169 TAU. Appropinquet deprecatio mea in conſpectu tuo, Domine: juxta eloquium tuū da mihi intellectū.
170 Intret poſtulatio mea in cōſpectu tuo: ſecundū eloquiū tuū eripe me.
171 Eructabunt labia mea hymnū, cū docueris me juſtificationes tuas.
172 Pronuntiabit lingua mea eloquium tuum: quia omnia mandata tua æquitas.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

145 † Ἐκέκραξα ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου, ἐπάκουσόν μου κύριε, † τὰ δικαιώματά σου ἐκζητήσω.
146 † Ἐκέκραξά (γ) σοι, σῶσόν με, καὶ φυλάξω τὰ μαρτύριά σου.
147 † Προέφθασα ἐν ἀωρίᾳ καὶ ἐκέκραξα, † εἰς τοὺς λόγους σου (δ) ἐπήλπισα.
148 † Προέφθασαν οἱ ὀφθαλμοί μου πρὸς ὄρθρον, † τοῦ μελετᾷν τὰ λόγιά σου.
149 † Τῆς φωνῆς μου ἄκουσον κύριε κατὰ τὸ ἔλεός σου, † κατὰ τὸ κρίμα σου ζῆσόν με.
150 † Προσήγγισαν οἱ καταδιώκοντές με ἀνομίᾳ, † ἀπὸ δὲ τοῦ νόμου σου ἐμακρύνθησαν.
151 † Ἐγγὺς εἶ (ε) κύριε, καὶ πᾶσαι αἱ ὁδοί σου ἀλήθεια.
152 † Κατ' ἀρχὰς ἔγνων ἐκ τῶν μαρτυρίων σου, † ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα ἐθεμελίωσας αὐτά.
153 † Ἴδε τὴν ταπείνωσίν μου καὶ ἐξελοῦ με, † ὅτι τοῦ νόμου σου οὐκ ἐπελαθόμην.
154 † Κρῖνον τὴν κρίσιν μου καὶ λύτρωσαί με, † διὰ τὸν λόγον σου ζῆσόν με.
155 † Μακρὰν ἀπὸ ἁμαρτωλῶν σωτηρία, † ὅτι τὰ δικαιώματά σου οὐκ ἐξεζήτησαν.
156 † Οἱ οἰκτιρμοί σου πολλοὶ κύριε, † κατὰ τὸ κρίμα σου ζῆσόν με.
157 † Πολλοὶ οἱ ἐκδιώκοντές με καὶ (ζ) θλίβοντές με· † ἐκ τῶν μαρτυρίων σου οὐκ ἐξέκλινα.
158 † Εἶδον ἀσυνετοῦντας καὶ ἐξετηκόμην, † ὅτι τὰ λόγιά σου οὐκ ἐφυλάξαντο.
159 † Ἴδε ὅτι τὰς ἐντολάς σου ἠγάπησα † κύριε, ἐν τῷ ἐλέει σου ζῆσόν με.
160 † Ἀρχὴ τῶν λόγων σου ἀλήθεια, † καὶ εἰς τὸν αἰῶνα πάντα τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου.
161 † Ἄρχοντες κατεδίωξάν με δωρεάν, † καὶ ἀπὸ τῶν λόγων σου ἐδειλίασεν ἡ καρδία μου.
162 † Ἀγαλλιάσομαι ἐγὼ ἐπὶ τὰ λόγιά σου, † ὡς ὁ εὑρίσκων σκῦλα πολλά.
163 † Ἀδικίαν ἐμίσησα καὶ ἐβδελυξάμην, † τὸν δὲ νόμον σου ἠγάπησα.
164 † Ἑπτάκις τῆς ἡμέρας ᾔνεσά (η) σε † ἐπὶ τὰ κρίματα τῆς δικαιοσύνης σου.
165 † Εἰρήνη πολλὴ τοῖς ἀγαπῶσι (θ) τὸν νόμον σου, † καὶ οὐκ ἔστιν αὐτοῖς σκάνδαλον.
166 † (ι) Προσεδόκων τὸ σωτήριόν σου κύριε, † καὶ τὰς ἐντολάς σου ἠγάπησα.
167 † Ἐφύλαξεν ἡ ψυχή μου τὰ μαρτύριά σου, † καὶ ἠγάπησεν αὐτὰ σφόδρα.
168 † Ἐφύλαξα τὰς ἐντολάς σου καὶ τὰ μαρτύριά σου, † ὅτι πᾶσαι αἱ ὁδοί μου (κ) ἐναντίον σου κύριε.
169 † (λ) Ἐγγισάτω ἡ δέησίς μου (μ) ἐνώπιόν σου † κύριε, κατὰ τὸ λόγιόν σου συνέτισόν με.
170 † Εἰσέλθοι τὸ ἀξίωμά μου ἐνώπιόν σου † κύριε, κατὰ (ν) τὸ λόγιόν σου ῥῦσαί με.
171 † Ἐξερεύξαιντο τὰ χείλη μου ὕμνον, † ὅταν διδάξῃς με τὰ δικαιώματά σου.
172 † (ξ) Φθέγξαιτο ἡ γλῶσσά μου (ο) τὰ λόγιά σου, † ὅτι πᾶσαι αἱ ἐντολαί σου δικαιοσύνη.

MS.A. (γ) σε, (δ) ἐφήλπισα. (ε) σὺ κύριε, καὶ πᾶσαι αἱ ἐντολαί σου (ζ) ἐκθλίβοντές με· (η) σοι (θ) τὸ ὄνομα σου, (ι) Προσεδόκουν (κ) ἐνώπιόν σου (λ) Ἐγγισάτω (μ) ἐναντίον σου (ν) τὸ κρίμα σου ζῆσόν με. Ἐξερεύξονται (ξ) Φθέγξεται (ο) τὸ λόγιόν σου,

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

145 Clamavi in toto corde meo, exaudi me, Domine: juſtificationes tuas exquirā.
146 Clamavi (r) tibi, [z] ſalvū me fac: & cuſtodiā teſtimonia tua.
147 [†] Præveni (ſ) in immaturitate, & clamavi: in verba tua ſuperſperavi.
148 Prævenerunt oculi mei ad matutinū, ut meditarer eloquia tua.
149 Vocē meam audi, Domine, ſecundū miſericordiā tuā: ſecundū judiciū tuū (t) vivifica me.
150 Appropinquaverunt perſequentes me (u) iniquitate: à lege autē tua longè facti ſunt.
151 Propè [aaa] es, Dñe: et omnes viæ tuæ [b] veritas.
152 Initio cognovi de teſtimoniis tuis: quia in æternum fundâſti ea.
153 Vide humilitatē meā, & eripe me; quia legem tuam non ſum oblit⁹.
154 Judica judiciū meū, et redime me: (x) propter verbū tuū vivifica me.
155 Longè à peccatoribus [c] ſalus; quia juſtificationes tuas non exquiſierunt.
156 Miſerationes tuæ [d] multæ, Domine: ſecundū (y) judiciū tuū vivifica me.
157 Multi, qui perſequuntur me, et tribulant me: à teſtimoniis tuis non declinavi.
158 Vidi (z) [e] inſenſatos, et tabeſcebam, quia eloquia tua non cuſtodierunt.
159 Vide quoniam mandata tua dilexi, Domine: in miſericordia tua vivifica me.
160 Principium verborū tuorū veritas: & in æternū omnia judicia juſtitiæ tuæ.
161 Principes perſequuti ſunt me gratis: & à verbis tuis formidavit cor meum.
162 Exultabo ego ſuper eloquia tua, ſicut qui invenit ſpolia multa.
163 Injuſtitiā odio habui, & abominatus ſum: legē autē tuam dilexi.
164 (ω) Septies in die (aaaa) laudavi te, ſuper judiciū juſtitiæ tuæ.
165 Pax multa diligentibus [f] legē tuā: & non eſt eis ſcandalum.
166 Expectabā ſalutare tuū, Domine: et mandata [g] tua dilexi.
167 Cuſtodivit anima mea [h] teſtimonia tua, & dilexit ea valdè.
168 Cuſtodivi mandata tua, et teſtimonia tua: quia omnes viæ meæ in conſpectu tuo, Domine.
169 Appropinquet oratio mea in conſpectu tuo, Domine: ſecundū eloquiū tuū da mihi intellectū.
170 Intret poſtulatio mea in conſpectu tuo, Domine: ſecundum eloquium tuum eripe me.
171 (b) Eructent labia mea [i] hymnū; cùm docueris me juſtificationes tuas. 171
172 Pronuntiet lingua mea eloquia tua: quia omnia mādata tua juſtitia. 172

INTERP. ÆTHIOP. [z] exaudi me, & ſalvū [†] Præveni mediū intempeſtæ noctis, & clamavi, quoniā verbum tuum [aaa] es tu [b] rectæ. [c] vita; [d] valdè quam multæ ſunt [e] ſtultos & conturbatus ſum, [f] nomen tuum: & [g] tua cuſtodivi. [h] mandata tua, [i] gloriam tuam; quoniam docebis

Verſio ÆTHIOPICA.

፲፱ ቆፍ፡ ጸራኅኩ፡በኵሉ፡ ልብየ፡ ስምዐ 145
ኒ፡እግዚኦ፡፡ወኀሠሥኩ፡ኵነኔከ፡፡=፡ ጸ 146
ራኅኩ፡ኀቤከ፡ስምዐኒ፡ ወአድኅነኒ፡፡ወዐቀ
ብ፡ስምዐከ፡፡=፡ በጸሐኩ፡ ማእከለ፡ ለድ 147
ባር ፡ ወከለሕኩ፡፡እስመ ፡ ቃለከ፡ ተሰፈው
ኩ፡፡=፡ በጽሑ፡አዕይንትየ፡ለጊዜሁ፡፡ከመ፡ 148
አንብብ፡ቃለከ፡፡=፡ ስማዕ፡ እግዚኦ፡ ቃለ 149
የ፡በከመ፡ ሣህልከ፡፡ወአሕይወኒ፡ በከመ፡ፍ
ትሕከ፡፡=፡ ቀርቡ፡እለ፡ ሮዱኒ፡በዐመፃ፡፡ 150
ወእምሕግከሰ፡ርሕቁ፡፡=፡ ቅሩብ፡አንተ፡ 151
እግዚኦ፡ ወርቱዕ ፡ ኵሉ፡ ፍናዊከ፡፡=፡ እ 152
ምትካት፡አእመርኩ፡እምስምዕከ፡፡ከመ፡
ለዓለም፡ሣረርኮን፡፡=፡ ፳ ሬስ፡ ርኢ፡ 153
ሕማምየ፡ ወአድኅነኒ፡፡እስመ፡ ኢረሳዕኩ፡
ሕገከ፡፡=፡ ፍትሕ፡ ፍትሕየ፡ወበልሐኒ፡፡ 154
ወበእንተ፡ ቃልከ፡ አሕይወኒ፡፡=፡ ርሑቅ፡ 155
ሕይወት፡እምኃጥኣን፡፡እስመ፡ ኢሐሠሡ፡
ኵነኔከ፡፡=፡ ብዙኅ፡ ሣህልከ፡ እግዚኦ፡ 156
ፈድፋደ ፡፡ ወአሕይወኒ ፡ በከመ ፡ ፍትሕ
ከ፡፡=፡ ብዙኃን፡ እለ፡ ሮዱኒ፡ ወአመንደቡ 157
ኒ፡፡ወኢተገሐስኩ ፡ እምስምዕከ፡፡=፡ ር 158
ኢኩ፡አብዳነ ፡ ወተከዝኩ፡፡እስመ ፡ ኢዐቀ
ቡ፡ቃለከ፡፡=፡ ርኢ፡ከመ፡ አፍቀርኩ፡ ትእ 159
ዛዘከ፡፡እግዚኦ፡አሕይወኒ፡ በሣህልከ፡፡=፡
ቀደሚ፡ቃልከ፡ጽድቅ፡ ውእቱ፡፡ወለዓለም፡ 160
ኵሉ፡ኵነኔከ፡ጽድቅ፡፡=፡ ፳፩ ሳን፡ መ 161
ላእክት፡ሰደዱኒ፡ ብከንቱ፡፡ወእምቃልከ፡ ደ
ንገፀኒ፡ልብየ፡፡=፡ ወበቃልከ፡ተፈሣሕኩ፡፡ 162
ከመ፡ዘ፡ ረከበ፡ ምህርከ፡ ብዙኃ፡፡=፡ ዐመ 163
ፃ፡ ጸላእኩ ፡ ወአስቆረርኩ፡፡ወሕገከሰ፡ አ
ፍቀርኩ፡፡=፡ ስብዐ ፡ ለዕለትየ ፡ ወአሴብ 164
ሐከ፡፡በእንተ ፡ ኵነኔ ፡ ጽድቅከ፡፡=፡ ሰላ 165
ም፡ብዙኅ፡ለእለ፡ የፈቅሩ፡ስምከ፡፡ወአል
ቦሙ፡ ዕቅፍት፡፡=፡ ተሰፈውኩ ፡ አድኅኖ 166
ተከ፡እግዚኦ፡፡ወአቀብኩ ፡ ትእዛዘከ፡፡=፡
ዐቀበት ፡ ነፍስየ ፡ ትእዛዘከ፡፡ወአፍቀረቶ፡ 167
ፈድፋደ፡፡=፡ ዐቀብኩ፡ ትእዛዘከ ፡ ወስም 168
ዐከ፡፡ እስመ፡ ኵሉ፡ ፍናዊየ፡ቅድሜከ፡
እግዚኦ፡፡=፡ ፳፪ ታው፡ ለትቅረብ፡ስ 169
እለትየ፡ኀቤከ፡ እግዚኦ፡፡ወበከመ፡ ቃልከ፡
አለብወኒ፡፡=፡ ትብጻሕ፡አስተብቍዖትየ፡ 170
ቅድሜከ፡ እግዚኦ፡፡ ዐበከመ ፡ ቃልከ፡አ
ድኅነኒ፡፡=፡ ጕሥአ ፡ ከናፍርየ ፡ ስብሐቲ 171
ከ፡፡እስመ፡መሐርከኒ፡ኵነኔከ፡፡=፡ ነበበ፡ 172
ልሳንየ፡ ቃለከ፡፡ ለስመ፡ ጽድቅ ፡ ኵሉ፡ት
እዛዝከ፡፡=፡

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

145 * الفصل التاسع عشر وهو ح * صرخت من جميع قلبي فاستجب لي يا رب لابتغي وصاياك *
146 147 صرخت اليك خلصني فاحفظ شهاداتك * بكرت في غير الوقت وصرخت وعلى اقوالك
148 149 توكلت * بكرت عيناي وقت الاسحار لدرس كلامك * اسمع صوتي يا رب كرحمتك واحيني
150 151 كاحكامك * اقترب الطاردون لي اثما وبعدوا من ناموسك * قريب انت يا رب وجميع وصاياك
152 حق * منذ البدء علمت شهاداتك انك اسستها الى الابد * * الفصل العشرون وهو ح
153 154 * انظر الى تواضعي وخلصني فاني لم انس سنتك * اقض قضائي وانقذني من اجل كلامك
155 156 احيني * الخلاص بعيد من الخطاة لانهم لم يطلبوا عدلك * كثيرة رافتك جدا يا رب فاحيني
157 158 كاحكامك * كثر الذين يطاردوني ويحزنوني ولم اعدل عن شهاداتك * رايت الذين لا
159 يفهمون حزنت لانهم لم يحفظوا قولك * انظر يا رب اني احببت وصاياك فبرحمتك يا رب احيني
160 * ابتداء كلامك حق هو وجميع احكام عدلك الى الابد * * الفصل الحادي والعشرون وهو ح
161 162 * طاردني الرؤساء مجانا وان قلبي خاف من اقوالك * ابتهج انا باقوالك مثل الذي وجد
163 164 غنائم كثيرة * ابغضت الظلم وارذلته وناموسك احببته * سبع دفعات في النهار باركتك
165 166 على احكام عدلك * لتكون سلامة عظيمة للذين يحبون اسمك ولا يكون لهم شك * رجوت
167 168 خلاصك يا رب ووصاياك حفظتها * حفظت نفسي شهاداتك واحببتها جدا * حفظت وصاياك
169 وشهاداتك وجميع طرقي امامك يا رب * * الفصل الثاني والعشرون وهو ح * فليقترب
170 171 منك دعائي يا رب افهمني نظير قولك * يدخل قدامك تضرعي ككلمتك احيني * شفتاي
172 تفيض بركة اذا عرفتني فرائضك * لساني يجيب باقوالك لان جميع وصاياك عادلة

Sectio xix. Ver. 3. *Clamavi ex toto corde meo, exaudi me, O Domine, ut quæram præcepta tua.* 145
Clamavi ad te, ſalva me & cuſtodiam teſtimonia tua. 146
Manè ſurrexi præter tempus & clamavi, & in ſermonibus tuis ſum confiſus. 147
Præproperârunt oculi mei tempore matutino ad meditationem ſermonum tuorum. 148
Audi vocem meam, O Domine, juxta miſericordiam tuam, & vivifica me ſecundùm judicia tua. 149
Acceſſerunt perſequentes me iniquè, & receſſerunt à lege tua. 150
Propinquus es, O Domine, & omnia mandata tua veritas. 151
Ab initio cognovi teſtimonia tua, quòd fundaveris ea in æternum. 152
Sectio xx. Verſ. 8. *Vide humilitatem meam, & ſalva me quoniam ego non ſum oblitus juris tui.* 153
Judica cauſam meam & redime me, pro ſermone tuo vivifica me. 154
Salus diſtans eſt à peccatoribus, quia non quæſierunt æquitatem tuam. 155
Copioſa eſt clementia tua admodùm, O Domine, vivifica me, ſecundùm judicia tua. 156
Multiplicati ſunt qui perſequuntur me & affligunt me, & non deviavi à teſtimoniis tuis. 157
Vidi eos qui non intelligunt, & contriſtatus ſum: quia non cuſtodierunt ſermonem tuum. 158
Vide, O Domine, quòd amaverim præcepta tua: quarè ex miſericordia tua, O Domine, vivifica me. 159
Principium ſermonis tui verax eſt, & omnia judicia juſtitiæ tuæ in æternum. 160
Sect. xxi. Verſ. 8. *Perſecuti me ſunt principes gratis, & quidem cor meum formidavit ſermones tuos.* 161
Exultabo ego in ſermonibus tuis, velut is qui invênit ſpolia multa. 162
Odio habui perverſitatem, & abominatus ſum eam, & legem tuam dilexi. 163
Septem vicibus in die benedixi tibi pro judiciis juſtitiæ tuæ. 164
Proculdubiò erit pax ſumma iis qui diligunt nomen tuum, et non erit ipſis ſcandalum. 165
Speravi ſalutem tuam, O Domine, & mandata tua ſervavi. 166
Servavit anima mea teſtimonia tua, et dilexi ea vehementer. 167
Servavi mandata tua & teſtimonia tua, et omnes viæ meæ coram te ſunt, O Domine. 168
Sectio xxii. Verſ. 8. *Accedat ad te deprecatio mea, O Domine: intelligentem redde me juxta ſermonem tuum.* 169
Intret coram te ſupplicatio mea, ſecundum verbum tuum vivifica me. 170
Labia mea redundabunt benedictione, quum nota mihi feceris tua ſtatuta. 171
Lingua mea proferet ſermones tuos, quoniam cuncta mandata tua ſunt juſta. 172

תהלים׃ קכ קכא קכב

Deſideravi ,elegi tua præcepta quoniam : mihi auxiliandum ad tua manus Sit

173 174 תְּהִי־יָדְךָ לְעָזְרֵנִי כִּי פִקּוּדֶיךָ בָחָרְתִּי׃ תָּאַבְתִּי

: te laudabit & ,mea anima Vivet .meæ *deliciæ* tua lex & : Domine tuam ſalutem

175 לִישׁוּעָתְךָ יְהוָה וְתוֹרָתְךָ שַׁעֲשֻׁעָי׃ תְּחִי־נַפְשִׁי וּתְהַלְלֶךָּ

quia : tuum ſervum quære , *periens agnus* ſicut Erravi .me adjuvabunt tua judicia &

176 וּמִשְׁפָּטֶךָ יַעֲזְרֻנִי׃ תָּעִיתִי כְּשֶׂה אֹבֵד בַּקֵּשׁ עַבְדֶּךָ כִּי

.oblitus ſum non tuorum mandatorum

מִצְוֹתֶיךָ לֹא שָׁכָחְתִּי׃

PSAL. CXX. קכ

.me exaudivit & ,clamavi ,*mihi* anguſtia in Dominum Ad .graduum Canticum

1 שִׁיר הַמַּעֲלוֹת אֶל־יְהוָה בַּצָּרָתָה לִּי קָרָאתִי וַיַּעֲנֵנִי׃

dabit Quid .doloſa lingua à *: falſitatis* labio à meam animam erue Domine

2 3 יְהוָה הַצִּילָה נַפְשִׁי מִשְּׂפַת־שֶׁקֶר מִלָּשׁוֹן רְמִיָּה׃ מַה־יִּתֵּן

cum : acutæ potentis Sagittæ ? doloſa lingua tibi *addet* quid & ,tibi

4 לְךָ וּמַה־יֹּסִיף לָךְ לָשׁוֹן רְמִיָּה׃ חִצֵּי גִבּוֹר שְׁנוּנִים עִם

cum habitavi : Meſech ſum peregrinatꝰ quia ,mihi Heu .*geniſtarum* carbonibus

5 גַּחֲלֵי רְתָמִים׃ אוֹיָה־לִי כִּי־גַרְתִּי מֶשֶׁךְ שָׁכַנְתִּי עִם־

.pacem habente odio cum ,mea anima ſibi habitavit Multùm .Chedar *tentoriis*

6 אָהֳלֵי קֵדָר׃ רַבַּת שָׁכְנָה־לָּהּ נַפְשִׁי עִם שׂוֹנֵא שָׁלוֹם׃

.bellum ad ipſi : loquebar cùm & , *pax* Ego

7 אֲנִי־שָׁלוֹם וְכִי אֲדַבֵּר הֵמָּה לַמִּלְחָמָה׃

PSAL. CXXI. קכא

veniet unde : montes ad meos oculos Levabo .graduum Canticum

1 שִׁיר לַמַּעֲלוֹת אֶשָּׂא עֵינַי אֶל־הֶהָרִים מֵאַיִן יָבֹא

.terram & cœlum *faciente* : Domino *cum* à meum Auxilium .meum auxilium

2 עֶזְרִי׃ עֶזְרִי מֵעִם יְהוָה עֹשֵׂה שָׁמַיִם וָאָרֶץ׃

non Ecce .te *cuſtodiens* dormitabit neque *: tuum pedem nutandum ad dabit* Non

3 4 אַל־יִתֵּן לַמּוֹט רַגְלֶךָ אַל־יָנוּם שֹׁמְרֶךָ׃ הִנֵּה לֹא־

Dominus : tuus cuſtos Dominus .Iſrael *cuſtodiens* dormiet neque dormitabit

5 יָנוּם וְלֹא יִישָׁן שׁוֹמֵר יִשְׂרָאֵל׃ יְהוָה שֹׁמְרֶךָ יְהוָה

luna *&*,te percutiet non ſol *Interdiu* .tuam dexteram manum ſuper,tua umbra

6 צִלְּךָ עַל־יַד יְמִינֶךָ׃ יוֹמָם הַשֶּׁמֶשׁ לֹא־יַכֶּכָּה וְיָרֵחַ

Dominus .tuam animam cuſtodiet : malo omni ab te cuſtodiet Dominus .*nocte in*

7 8 בַּלָּיְלָה׃ יְהוָה יִשְׁמָרְךָ מִכָּל־רָע יִשְׁמֹר אֶת־נַפְשֶׁךָ׃ יְהוָה

.ſeculum in uſque & *nunc* ex : tuum *intrare* & , tuum *egredi* cuſtodiet

יִשְׁמָר־צֵאתְךָ וּבוֹאֶךָ מֵעַתָּה וְעַד־עוֹלָם׃

PSAL. CXXII. קכב

Domini domum : mihi dicentibus *in* ſum Lætatus .Davidi graduum Canticum

1 שִׁיר הַמַּעֲלוֹת לְדָוִד שָׂמַחְתִּי בְּאֹמְרִים לִי בֵּית יְהוָה

Jeruſalaim .Jeruſalaim tuis portis in : noſtri pedes fuerunt Stantes .ibimus

2 3 נֵלֵךְ׃ עֹמְדוֹת הָיוּ רַגְלֵינוּ בִּשְׁעָרַיִךְ יְרוּשָׁלָםִ׃ יְרוּשָׁלַםִ

, tribus aſcenderunt illuc Quia .ſimul *ſibi* eſt juncta *quæ* ,civitas ut , *ædificata*

4 הַבְּנוּיָה כְּעִיר שֶׁחֻבְּרָה־לָּהּ יַחְדָּו׃ שֶׁשָּׁם עָלוּ שְׁבָטִים

Quia .Domini nomini confitendum ad : Iſraeli teſtimonium ,*Jah* tribus

5 שִׁבְטֵי־יָהּ עֵדוּת לְיִשְׂרָאֵל לְהֹדוֹת לְשֵׁם יְהוָה׃ כִּי

.David domui *ſolia* : judicium ad *ſolia* ſederunt ibi

שָׁמָּה יָשְׁבוּ כִסְאוֹת לְמִשְׁפָּט כִּסְאוֹת לְבֵית דָּוִד׃

תרגום TARGUM.

173 תהא ידך לסיועתי ארום פקודיך רעיתי : רגגית
174 לפורקנך יי ואוריתך פרנוקי : תחי נפשי
175 ותשבחנך ודינך יסיעונני : טעיתי היך עאן
176 דמתבר בעי עבדך ארום פקודיך לא אתנשיתי:

קכ

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא קדם יי
2 כד עיק לי צליתי וקבל צלותי : יי פצי נפשי
3 מספותא דשקרא מן לישנא נכילתא : מא יהיב
לך מלשינא ומא יוסיף לך אכיל קורצי לישנא
4 נכילתא : גררין דגברא שנונין היך ברקין
מלעיל עם גומרי רתמין דדלקין בגהנם מלרע:
5 ווי לי ארום אתותבית עם אוסאי שרית עם
6 משכניהון דערבאי : יתיר מנהון שרת נפשי
7 עם ארום סני שלם : אנא שלם ארום אצלי
הנון לקרבא : קכא

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא אזקוף
2 עיני לטוריא מן האן ייתי סעדי : סעדי מן קדם
3 יי דעבד שמיא וארעא : לא יתן לאתמוטטא
4 רגלך לא נים נטרך : הא לא נים ולא ידמוך
5 נטר ישראל : יי ינטרנך יי יטלל עלך על סטר
6 ימינך : יימם כד שליט שמשא לא ימחונך
צפרירי ולילי כד שליט סיהרא בליליא :
7 מימרא דיי ינטרנך מכל ביש ינטור ית נפשך :
8 יי ינטור מפקך לפרנמטיא ומעלך למעסק
באוריתא מן השתא ועד עלמא :

קכב

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא חדיתי
2 באמרין לי בית מקדשא דיי ניזל : קימין
3 הואה רגלנא בתרעיך ירושלם : ירושלם
דמתבניא ברקיעא היך קרתא דאתחברא לה
4 כחדא בארעא : דתמן סליקו שבטיא שבטין
דיי מסהיד לישראל די שכנתיה שריא ביניהון
5 במיזליהון לאודאה לשמא דיי : ארום תמן
מתיתבין כורסון בירושלם כורסון בבית
מקדשא למלכיא דבית דוד :

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Sit manus tua in auxilium meum, quoniam mandata tua elegi. Deſideravi redemptionem tuam Dñe, & Lex tua delectationes meæ ſunt. Vivat anima mea, & laudabit te; & judicia tua adjuvabunt me. Erravi ſicut agnus qui periit: quære ſervum tuum, quoniam mandata tua non ſum oblitus.

Canticum quod dictum eſt ſuper gradibus *abyſſi*. PSAL. CXX.

COram Domino cùm ineſſet anguſtia mihi, oravi; & accepit orationem meam. Domine libera animam meam à *labiis* mendacii, à lingua doloſa. Quid dabit tibi detrectator, aut quid adjiciet tibi *delator* lingua doloſa? Sagittæ robuſti acutæ ſunt *ſicut fulgura deſuper*, cum carbonibus geniſtarum *accenſis in gehenna infernè*. Heu mihi quoniam peregrinatus ſum cum Aſianicis, habitavi in tabernaculis Arabum. Pluſquàm illi habitavit anima mea cum Edom odio pacem proſequente. Ego pacem proinde orabo, ipſi verò bellum [*cupiunt*.]

Canticum quod dictum eſt ſuper gradibus *abyſſi*. PSAL. CXXI.

LEvabo oculos meos ad montes, unde veniet auxilium meum. Auxilium meum à conſpectu Domini, qui fecit cœlum & terram. Non dabit ut commoveantur pedes tui, nec dormitabit qui cuſtodit te. Ecce non dormitabit neque dormiet cuſtos Iſrael. Dominus cuſtodiet te, Dominus obumbrabit tibi ad latus dexteræ tuæ. Interdiu quando dominatur Sol, non feriet te ſpectris matutinis, neque noctu quando dominatur Luna, nocturnis. Verbum Domini cuſtodiet te ab omni malo, cuſtodiet animam tuam. Dominus cuſtodiet exitum tuum *ad negotiationem*, & introitum tuum *ad ſtudium legis* deinceps & uſque in æternum.

Canticum quod dictum eſt ſuper gradibus *abyſſi*. PSAL. CXXII.

LÆtatus ſum in his qui dicunt mihi, In domum ſanctuarii Dñi ibimus. Stantes erant pedes noſtri in portis tuis Jeruſalem. Jeruſalem quæ ædificatur in firmamento tanquam civitas, quæ conjuncta eſt ſibi pariter in terra. Quoniam illuc aſcenderunt tribus, tribus Domini teſtificantis Iſraeli *majeſtatem ſuam commoraturam inter eos, cum iverint* ad confitendum nomini Domini. Quia ibi præparantur ſedes in Jeruſalem, ſedes in domo ſanctuarii regibus domus David.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

173 174 * ܬܥܕܪܢܝ ܐܝܕܟ ܡܛܠ ܕܨܒܝܬ ܒܦܘܩܕܢܝܟ: * ܣܟܝܬ ܢܦܫܝ ܠܦܘܪܩܢܟ. ܘܒܢܡܘܣܟ

175 176 ܗܓܝܬ. * ܬܚܐ ܢܦܫܝ ܘܬܫܒܚܟ. ܘܕܝܢܟ ܗܘ ܢܥܕܪܢܝ: * ܛܥܝܬ ܐܝܟ ܐܡܪܐ ܕܐܒܕ ܒܥܝ

1 ܠܥܒܕܟ. ܡܛܠ ܕܦܘܩܕܢܝܟ ܠܐ ܛܥܝܬ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܚܕ * ܠܐ ܡܫܡܗܝܐ.

ܡܥܠܝܬܐ ܩܕܡܝܬܐ ܕܡܣܩܬܐ. ܡܨܠܐ ܥܡܐ ܕܐܣܝܪ ܒܒܒܠ ܕܢܫܬܪܐ. ܘܐܦ ܚܢܢ ܡܨܠܝܢ ܕܢܫܬܪܐ

2 ܡܢ ܫܐܕܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܗ. ܠܡܪܝܐ ܒܐܘܠܨܢܝ ܩܪܝܬ. ܘܥܢܢܝ * ܡܪܝܐ ܦܨܝܗ ܠܢܦܫܝ:

3 ܡܢ ܣܦܘܬܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܡܢ ܠܫܢܐ ܢܟܝܠܬܐ: * ܡܢܐ ܢܬܠܠܟ. ܘܡܢܐ ܢܘܣܦܘܢ ܠܟ.

4 5 ܠܠܫܢܐ ܢܟܝܠܬܐ: * ܓܐܪܘܗܝ ܕܓܢܒܪܐ ܚܪܝܦܝܢ. ܐܝܟ ܓܘܡܪܐ ܕܒܘܛܡܐ: * ܘܝ ܠܝ ܕܐܬܘܬܒܘܬܝ

6 ܐܘܪܟܬ. ܘܫܪܝܬ ܒܡܫܟܢܐ ܕܩܕܪ: * ܣܓܝܐܐ ܫܪܬ ܢܦܫܝ ܥܡ ܐܝܠܝܢ ܕܣܢܝܢ ܫܠܡܐ.

7 * ܘܐܢܐ ܡܡܠܠ ܗܘܝܬ ܫܠܡܐ: ܘܗܢܘܢ ܡܬܟܬܫܝܢ ܗܘܘ ܥܡܝ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܬܪܝܢ *

1 * ܠܐ ܡܫܡܗܝܐ. ܡܢ ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܣܩ ܒܒܠ. ܘܡܣܒܪܢܘܬܐ ܕܛܒܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܝ. ܐܪܝܡ

2 ܥܝܢܝ ܠܛܘܪܐ: ܕܡܢܗ ܢܐܬܐ ܡܥܕܪܢܝ. * ܡܥܕܪܢܝ ܡܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ: ܗܘ ܕܥܒܕ ܫܡܝܐ

3 4 ܘܐܪܥܐ. * ܘܠܐ ܢܬܠ ܙܘܥܐ ܠܪܓܠܟ: ܘܠܐ ܢܕܡܟ ܢܛܘܪܟ. * ܠܐ ܓܝܪ ܢܕܡܟ ܘܠܐ ܢܬܬܢܡ ܢܛܘܪܗ

5 6 ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܡܪܝܐ ܗܘ ܢܛܘܪܟ: ܡܪܝܐ ܢܛܠܠ ܥܠܝܟ ܒܝܡܝܢܗ. * ܒܐܝܡܡܐ ܫܡܫܐ ܠܐ

7 8 ܢܚܒܠܟ: ܘܠܐ ܣܗܪܐ ܒܠܠܝܐ. * ܡܪܝܐ ܢܛܪܟ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܒܝܫܬܐ: ܢܛܪ ܢܦܫܟ * ܡܪܝܐ.

ܢܛܪ ܡܦܩܟ ܘܡܥܠܟ: ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܬܠܬܐ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܡܢ ܡܙܡܘܪܐ. ܟܕ ܦܩܕ ܗܘܐ ܟܘܪܫ ܕܢܣܩܘܢ ܫܒܝܬܐ. ܘܪܘܚܢܐܝܬ ܡܣܒܪܢܘܬܐ

2 ܕܛܒܬܐ. ܦܬܓܡܐ ܛ. ܚܕܝܬ ܟܕ ܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܠܝ: ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܙܠܝܢܢ. * ܩܝܡܝܢ

3 ܗܘܝ ܪܓܠܝܢ ܒܬܪܥܝܟܝ ܐܘܪܫܠܡ: * ܐܘܪܫܠܡ ܡܒܢܝܐ. ܐܝܟ ܡܕܝܢܬܐ ܕܫܘܪܐ ܠܗ

4 ܚܕܪܝܗ: * ܠܬܡܢ ܣܠܩܘ ܫܒܛܐ ܫܒܛܐ ܕܡܪܝܐ. ܣܗܕܘܬܐ ܠܐܝܣܪܝܠ ܠܡܘܕܝܘ ܠܫܡܗ

5 ܕܡܪܝܐ: * ܡܛܠ ܕܬܡܢ ܝܬܒܘ ܟܘܪܣܘܬܐ ܠܕܝܢܐ. ܟܘܪܣܘܬܐ ܕܒܝܬ ܕܘܝܕ:

Auxilietur mihi manus tua, quia ſum delectatus conſtitutionibus tuis. Expectavit anima mea ſalutem tuam, & legem tuam conſideravi. Vivat anima mea teque laudet, & judicium tuum ipſum ferat mihi opem. Erravi ſicut ovis perdita, quære ſervum tuum, quia tua præcepta non ſum oblitus.

PSAL. CXIX.

Anonymus. Canticum primum aſcen

Orat populus detentus in Babel ut liber

Ac proinde nos oramus ut liberemur à dæ-

monibus. Verſ. 15.

DOminum in anguſtia mea vocavi, reſpondit mihi Dominus, atque liberavit animam meam à labiis iniquorum, à linguis doloſis. Quid dent tibi, & quid addant linguæ doloſæ, Sagittæ viri acutæ carbones quercûs? Hei mihi quòd peregrinatio mea protracta eſt, et habitavi in tabernaculo Cedar: Diu commorata eſt anima mea cum his qui oderunt pacem. Nam ego pacem loquebar eis: ipſi verò decertabant mecum.

PSAL. CXX.

Anonymus Ex Pſalmis aſcenſionis

bel. Et promiſſiones bonorum. Verſ. 10.

LEvabo oculos meos ad montem unde veniet auxiliator meus. Auxilium meum à conſpectu Domini, qui condidit cœlum & terram. Et non dabit pedē tuum vacillare, neque dormiſcet cuſtos tuus. Non enim dormiſcit neque dormit cuſtos Iſraelis. Dominus eſt cuſtos tuus, Dominus obumbrabit tibi manu ſuá dexterâ: Interdiu ſol non nocebit tibi, neque luna noctu. Dominus cuſtodiet te ab omnibus malis: cuſtodiet animam tuam Dominus: cuſtodiet egreſſum tuum & ingreſſum tuum, ex nunc uſque in ſeculum.

PSAL. CXXI.

Davidis. Ex Pſalmis aſcenſionis

præcepit Cyrꝰ ut aſcenderet captivitas

tualiter verò promiſſio bonorum. Verſ.

LÆtabar cùm dicerent mihi, Ad domum pergimꝰ. Siſtebant enim ſe pedes in portis tuis Hieruſalē. Hieruſalē munita urbs vallata muro. Illuc aſcenderunt familiæ *inquā* Dñi, obteſtatio Iſraeli confitendū nomini Domini. Illic enim runt ſedes ad judicium, ſedes domûs

Verſio VULG. LAT.

173 Fiat manus tua ut ſalvet me: quoniam
174 mandata tua elegi. Concupivi ſalutare tuum, Domine: & lex tua meditatio
175 mea eſt. Vivet anima mea, & laudabit
176 te: & judicia tua adjuvabunt me. Erravi, ſicut ovis quæ periit: quære ſervũ tuũ, quia mandata tua non ſum oblit⁹.

Canticum graduum. CXIX.

1 AD Dominum cùm tribularer clamavi: & exaudivit me. Domine, libera
2 animã meã à labiis iniquis, & à lingua
3 doloſa. Quid detur tibi, aut quid apponatur tibi ad linguam doloſam?
4 Sagittæ potentis acutæ, cum carbonibus
5 deſolatoriis. Heu mihi, quia incolatus meus prolongatus eſt: habitavi
6 cum habitantibus Cedar: Multùm
7 incola fuit anima mea. Cum his qui oderunt pacem, eram pacificus: cùm loquebar illis, impugnabant me gratis.

Canticum graduum. CXX.

1 LEvavi oculos meos in montes, unde
2 veniet auxilium mihi. Auxiliũ meum à Domino, qui fecit cœlum & ter-
3 ram. Non det in commotionẽ pedem tuum: neque dormitet qui cuſtodit te.
4 Ecce non dormitabit neque dormi-
5 et, qui cuſtodit Iſrael. Dominus cuſtodit te, Dominus protectio tua, ſup
6 manum dexteram tuam. Per diem Sol
7 non uret te, neq; Luna per noctẽ. Dominus cuſtodit te ab omni malo: cuſto-
8 diat animam tuã Dominus. Dominus cuſtodiat introitum tuum, & exitũ tuum, ex hoc nunc, & uſque in ſeculum.

Canticum graduum. CXXI.

1 LÆtatus ſum in his, quæ dicta ſunt
2 mihi; In domum Domini ibim⁹. Stantes erant pedes noſtri, in atriis tuis, Je-
3 ruſalem. Jeruſalem, quæ ædificatur ut civitas: cujus participatio ejus in id-
4 ipſum. Illuc enim aſcenderunt tribus, tribus Domini, teſtimonium Iſrael ad
5 confitendum nomini Domini. Quia illic ſederunt ſedes in judicio, ſedes ſuper domum David.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

173 † Γενέσθω ἡ χείρ σου τοῦ σῶσαί με, † ὅτι τὰς ἐντο-
174 λάς σου ᾑρετισάμην. †Ἐπεπόθησα τὸ σωτήριόν σου
175 κύριε, †καὶ ὁ νόμος σου μελέτη μού ἐστι. †Ζήσεται ἡ ψυχή μου καὶ αἰνέσει σε, † καὶ τὰ κρίματά σου βοηθήσει
176 μοι. † Ἐπλανήθην ὡς πρόβατον ἀπολωλός, †ζήτησον τὸν δοῦλόν σου, ὅτι τὰς ἐντολάς σου οὐκ ἐπελαθόμην.

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ριθ'.

1 †Πρὸς κύριον ἐν τῷ θλίβεσθαί με ἐκέκραξα, καὶ
2 εἰσήκουσέ μου. †Κύριε ῥῦσαι τὴν ψυχήν μου ἀπὸ χειλέ-
3 ων ἀδίκων †καὶ ἀπὸ γλώσσης δολίας. †Τί δοθείη σοι,
4 καὶ τί προστεθείη σοι πρὸς γλῶσσαν δολίαν; †Τὰ βέλη τοῦ δυνατοῦ ἠκονημένα †σὺν τοῖς ἄνθραξι
5 τοῖς ἐρημικοῖς. †(α) Οἴμοι ὅτι ἡ παροικία μου ἐμακρύνθη, †κατεσκήνωσα μετὰ τῶν σκηνωμάτων Κηδάρ.
7 †Πολλὰ παρῴκησεν ἡ ψυχή μου. †Μετὰ τῶν μισούντων (β) τὴν εἰρήνην ἤμην εἰρηνικός· †ὅταν ἐλάλουν αὐτοῖς, ἐπολέμουν με δωρεάν.

MS. A. (α) Οἴμμοι (β) εἰρήνην

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκ'.

1 †Ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου εἰς τὰ ὄρη, (α) ὅθεν ἥξει
2 ἡ βοήθειά μου. †Ἡ βοήθειά μου παρὰ κυρίου †τοῦ
3 ποιήσαντος τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν. †Μὴ δῷς εἰς σάλον τὸν πόδα σου, †μηδὲ (β) νυστάξῃ ὁ φυλάσσων σε.†
4 Ἰδοὺ οὐ νυστάξει οὐδὲ ὑπνώσει ὁ φυλάσσων τὸν Ἰσραήλ.
5 †Κύριος φυλάξει σε, κύριος σκέπη σου ἐπὶ χεῖρα
6 (γ) δεξιάν σου. †Ἡμέρας ὁ ἥλιος οὐ συγκαύσει σε,
7 †οὐδὲ ἡ σελήνη τὴν νύκτα. †Κύριος (δ) φυλάξαι σε ἀπὸ παντὸς κακοῦ, †φυλάξει τὴν ψυχήν σου ὁ κύριος.
8 †Κύριος φυλάξει τὴν εἴσοδόν σου, καὶ τὴν ἔξοδόν σου, †ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος.

MS. A. (α) πόθεν (β) νυστάξει (γ) δεξιᾶς σου. (γ) φυλάξει σε

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκα'.

1 †Εὐφράνθην ἐπὶ τοῖς εἰρηκόσι μοι, †Εἰς οἶκον
2 κυρίου πορευσόμεθα. †Ἑστῶτες ἦσαν οἱ πόδες ἡμῶν †
3 ἐν ταῖς αὐλαῖς σου Ἱερουσαλήμ. Ἱερουσαλὴμ οἰκοδομουμένη ὡς πόλις, †ἧς (α) ἡ μετοχὴ αὐτῆς ἐπὶ τὸ αὐτό.
4 †Ἐκεῖ γὰρ ἀνέβησαν αἱ φυλαί, †(β) φυλαὶ κυρίου μαρτύριον τῷ Ἰσραήλ, †τοῦ ἐξομολογήσασθαι τῷ ὀνό-
5 ματι κυρίου. †Ὅτι ἐκεῖ ἐκάθισαν θρόνοι εἰς κρίσιν, †θρόνοι (γ) ἐπὶ οἶκον Δαυίδ.

MS. A. (α) οἱ μέτοχοι αὐτῆς (β) αἱ φυλαὶ (γ) ἐπ' οἶκον

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiop. Tranſl. LAT.

173 Fiat manus tua ut ſalvet me: 173
quia mandata [k] tua (c) elegi. 174
(d) Concupivi ſalutare tuum, Domine: & lex tu[a] [l] meditatio mea 174
eſt. 175 Vivet anima mea, & laudabit te: & judicia tua adjuvabunt me. 176 [m] Erravi ſicut ovis 175 176
perdita: quære ſervum tuum; quia mandata tua non ſum oblitus.

(a) Canticum graduum. CXIX. 1

1 AD Dominum, cum tribularer, clamavi, & exaudivit me.
2. Domine, erue animam meam à (b) labiis injuſtis, & à lingua doloſa. 3 (c) Quid detur tibi, et quid apponatur tibi ad linguam doloſam? 2 3
4 Sagittæ potentis acutæ [a] cum carbonibus (d) deſolatoriis. 5 Heu me, quia incolatus meus (e) prolongatus eſt: inhabitavi [b] cum (f) tabernaculis Cedar: Multum [c] incola fuit anima mea. 6 Cum his qui oderunt pacem, eram pacificus: cum (g) loquebar illis, impugnabant me gratis. 4 5 6 7

Canticum graduum. CXX.

1 LEVAVI (a) oculos meos ad montes, unde veniet auxilium meum. 2 Auxilium meum à Domino; qui fecit cœlum, & terram. 3 [†] Non des (b) in commotionem pedem tuum: neq; dormitet qui cuſtodit te. 4 Ecce non dormitabit, neque obdormiet, qui cuſtodit Iſrael. 5 Dominus cuſtodiet te: Dominus [a] protectio tua, (c) ſuper manum dexteram tuam. 6 Per diem Sol non uret te, neque Luna per noctem. 7 Dominus (d) cuſtodiat te ab omni malo: [b] cuſtodiet animam tuam Dominus. 8 Dominus cuſtodiet (e) introitum tuum, & exitum tuũ, ex hoc nunc & uſq; in ſeculũ. 1 2 3 4 5 6 7 8

MS. Æth. Poc. Gloria Patri & Filio & Spiritui ſancto, omni tempore, nunc, & ſemper, & in æternũ, Amen.

Canticum graduum. CXXI. 1

1 LÆTATUS ſum [a] in (a) iis qui dixerunt mihi, In domum Domini ibimus. 2 Stantes erant pedes noſtri, in atriis tuis, Hieruſalem. 3 Hieruſalem, (b) [b] quæ ædificatur ut civitas: cujus participatio [c] ejus in idipſum. 4 Illuc enim aſcenderunt [d] trib⁹, (c) tribus Domini, teſtimonium Iſrael, ad confitendum [e] nomini Domini. 5 Quoniam ibi ſederunt 5 ſedes in judicium: [f] ſedes ſuper domum David. 2 3 4 5

Verſio ÆTHIOPICA.

ይኩንኒ፡የማንከ፡ከመ፡ያድኅነኒ፡፡እስመ፡ት 173
እዛዚከ፡አፍቀርኩ፡፡፨አፍቀርኩ፡ለአድኅኖ 174
ትከ፡እግዚኦ፡፡ ወሕግከሰ፡ተመሀርየ፡ውእ
ቱ፡፡፨ ትሕየወኒ፡ነፍስየ፡ወእሴብሐከ፡፡ወ 175
ይርድአኒ፡ኵነኔ፡ዚአከ፡፡፨ ተረሰዐኩ፡ከ 176
መ፡በግዕ፡ዘተገድፈ፡፡ ኅሥሥ ፡ ለገብርከ፡
እስመ፡ ትእዛዚከ ፡ ኢረሳዕኩ፡፡፨

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

፻፲፱ ኀቤከ፡ እግዚኦ ፡ ጸራኅኩ፡ ሶበ፡ ተመን 1
ደብኩ፡ ወሰማዕከኒ፡፡፨ እ°ዚኦ፡አድኅና፡ 2
ለነፍስየ፡እምከናፍረ፡ዐመፃ፡፡ ወእምልሳን፡
ጽልሑት፡፡፨ ምንተ፡ ይሁቡከ፡ወምንተ፡ 3
ይዌስኩከ፡ በእንተ ፡ ከናፍረ፡ ጕሕሉት፡፡፨
አሕፃሁ፡ለኃያል፡ስሑል፡፡ ከመ፡ አፍሐመ፡ 4
ሐቅል፡፡፨ ሴልየ ፡ ዘርኅቀ ፡ ማኅደርየ፡፡
ወኀደርኩ ፡ ውስተ ፡ አዕፃደተ፡ ለለ፡ቄደር፡፡ 5
በዙኀ፡ተእገሠት፡ነፍስየ፡፡፨ ምስለ፡ለለ፡ 6
ይጸልኡ ፡ ሰላመ፡፡ እንዘ ፡ ሰላማዊ ፡ አነ፡፡ 7
ወሶበ፡እትናገሮሙ፡ይፀብኡኒ፡በከንቱ፡፡፨

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

፻፳ አንሣእኩ ፡ አዕይንትየ ፡ መንገለ፡አድ 1
ባር፡፡ እምአይቴ፡ይመጽእ፡ረድኤትየ፡፡፨
ረድኤትየሰ፡እምኀበ፡ እግዚአብሔር፡፡ ዘገ 2
ብረ፡ ሰማየ ፡ ወምድረ፡፡፨ ወኢይሁበኒ፡ 3
ሁከተ ፡ ለእገርየ፡፡ ወኢይዴቅስ ፡ ዘየዐቅ
በከ፡፡፨ ናሁ ፡ ኢይዴቅስ ፡ ወኢይነውም፡ 4
ዘየዐቅቦ ፡ ለእስራኤል፡፡፨ እ° ዚአብሔ 5
ር፡ይዕቀብከ፡ ወእ°ዚአብሔር ፡ ይክድንከ፡
በየማኑ፡እዴሁ፡፡፨ መዐልተ፡ፀሐይ፡ ኢያ 6
ውዒከ፡፡ ወኢወርኅ፡ በሌሊት፡፡፨ እግዚ 7
አብሔር፡ ይዕቀብከ፡ እምኵሉ፡እኩይ፡፡ወ
ይትማኅፀና፡ለነፍስከ፡ እግዚአብሔር፡፡፨
እግዚአብሔር፡ይዕቀብ፡በንግደትከ ፡ወበዕ 8
ትወትከ፡፡እምይእዜ፡ወእስከ፡ለዓለም፡፡፨
ስብሐት፡ ለአብ፡ ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ቅዱስ፡
ኵሉ፡ ጊዜ፡ ይእዜኒ፡ ወዘልፈኒ፡ ወለዓለ
መ፡አሜን፡፡ ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

፻፳፩ ተፈሣሕኩ፡እስመ፡ ይቤሉኒ፡ቤተ፡ እ 1
ግዚአብሔር፡ነሐውር፡፡፨ ወቆማ፡እገሪነ፡ 2
ውስተ፡አዕጻዲኪ፡ኢየሩሳሌም፡፡፨ ኢየ 3
ሩሳሌምሰ፡ሕንጽት፡ከመ፡ ሀገር፡፡ እለ፡ ከ
ማሁ፡ኅቡረ፡ምስሌሃ፡፡፨ እስመ፡ህየ፡ዐረ 4
ጉ፡አሕዛብ፡፡ ሕዝበ፡እግዚአብሔር ፡ስም
ዐ፡እስራኤል፡፡ከመ፡ይግነዩ፡ለስምከ፡ እግዚ
ኦ፡፡፨እስመ፡ህየ፡አንበሩ፡መናብርቲሆሙ፡ 5
ለኰንኖ፡፡ መናብርት ፡ቤተ፡ዳዊት፡፡፨

INTERP. ÆTHIOP. [k] tua dilexi. Dilexi ſalutare [l] eruditio mea [m] Oblivioni traditus ſum ſicut PSAL. CXIX. [a] ſicut carbones deſerti. [b] in atriis Cedar: [c] ſuſtinuit anima, PSAL. CXX. [†] Non dabit in commotionem pedem meum: [a] proteget te in manu dextera ſua. [b] commendatam ſibi habebit animam tuam Dominus. PSAL. CXXI. [a] quoniam dixerunt [b] quidem ædificatur [c] ſimul eſt apud illam. [d] populi, populus [e] nomini tuo Domine. [f] ſedes domûs

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

173 174 لتكن يدك لخلاصي فاني اشتهيت وصاياك * اشتهيت خلاصك يا رب وشرعك هو تلاوتي * تحيا
175 176 نفسي وتباركك واحكامك تعينني * ضللت كالخروف الضال اطلب عبدك واستجب لي لاني لم
انس وصاياك * الليلويا *
* المزمور المائة وتسعة عشر *
1 * وهو الي آخر المائة وثلاثة وثلاثين * مرسوم لتسبحة الدرج * وهو ح * استجابات *
2 الي الرب صرخت في ضري فاستجاب لي * يا رب خلص نفسي من شفاه ظالمة ومن لسان غاش *
3 4 * ما هو الذي يعطي لك وما هو الذي يزيدك الالسن الغاشة * نبال القوي مسنونة مثل
5 6 الجمر المحرق * الويل لي فان غربتي قد طالت علي وسكنت في مساكن قيدار * كثيرا تغربت
7 نفسي * وكنت مسالما مع مبغضي السلامة * وكنت اذا كلمتهم بالسلام حاربوني مجانا * الليلويا *
1 * المزمور المائة وعشرون * وهو * ي * استجابات *
2 رفعت عيني الي الجبال اي من اين ياتيني معونتي * معونتي انا هي من عند الرب الذي خلق
3 4 5 السماء والارض * لا يعطي الزلل رجليك ولا ينعس حافظك * حافظ اسرائيل لا ينعس ولا ينام * الرب
6 7 يحفظك * الرب يظلل عليك بيده اليمني * لا تحرقك الشمس نهارا ولا القمر ليلا * الرب يحفظك
8 من كل سو * الرب يحفظ نفسك * الرب يحفظ مدخلك ومخرجك منذ الان والي الابد * الليلويا *
1 * المزمور المائة والحادي والعشرون * وهو يه * استجابات * فرحت بالقايلين لي
2 3 اننا الي بيت الرب نمضي * ارجلنا وقفت في ديار يروسليم * يروسليم المبنية مثل مدينة التي
4 شركتها معها * لان هناك صعدت القبايل * قبايل الرب شهود لاسرايل يشكرون اسم الرب
5 * لان هناك جلسوا علي كراسي الحكم كراسي علي بيت داود *

Sit manus tua in ſalvationem meam, quia 173
expetivi præcepta tua. Concupivi ſalutem 174
tuam O Domine, & lex tua eſt meditatio
mea. Vivat anima mea, teque benedicat, 175
& judicia tua adjuvent me. Erravi ſicut 176
agnus devius: quære ſervum tuũ, et exaudi me, quia non ſum oblitus mandata tua. Alleluja.

PSAL. CXIX.

Iſte *cum ſequentibus pſalmis* uſque ad extremum centeſimum tertium, titulum gerunt, Pro cantico graduum. Verſ. 8. 1

AD Dominum clamavi in neceſſitate mea, & exaudivit me. O Domine, 2
libera animam meam à labiis iniquis, & à
lingua doloſa. Quid eſt quod dabunt tibi, 3
aut quid eſt quod addent tibi linguæ fallaces? Sagittæ potentis, acutæ ſunt veluti 4
carbones comburentes. Væ mihi, quoniam 5
peregrinatio mea protracta eſt mihi, commoratus ſum in habitaculis Cedar: Mul- 6
tùm peregrinata eſt anima mea, & fui
pacificus cum oſoribus pacis. Quumque al- 7
loquerer eos pacificè, impugnabant me gratis. Alleluja.

PSAL. CXX.

Verſ. 10. 1

LEvavi oculos meos ad montes, ſcilicet unde mihi veniet auxilium meum.
Auxilium meum eſt à conſpectu Domini 2
qui creavit cœlum et terram. Non per- 3
mittet labi pedes tuos, neq; dormitabit cuſtos tuus. Cuſtos Iſraelis non dormitabit 4
neque dormiet. Dominus cuſtodiet te, Do- 5
minus obumbrabit te manu ſuâ dexterâ.
Non comburet te ſol interdiu, neque luna 6
noctu. Domin⁹ cuſtodiet te ab omni malo:
Dominus cuſtodiet animã tuam, Dominus 7
cuſtodiet introitum tuum et exitum tuum 8
ex nunc et uſque in æternum. Alleluja.

PSAL. CXXI.

Verſ. 15. 1

GAviſus ſum in dicentibus mihi, Sanè ad domũ Domini ibimus. Pedes noſtri 2
ſteterunt in atriis Jeroſolymæ, Jeroſolymæ 3
inquam *conſtructæ velut urbs cujus ſocietas concors eſt. Nam illuc aſcenderunt* 4
trib⁹, trib⁹ inquam *Domini teſtes Iſraeli,*
gratias acturi nomini Domini. Quoniam 5
illic ſederunt ſuper ſedibus judicii, ſedibus ſuper domum David.

תהלים : קכג קכד קכה

pax Sit .te diligentes *erunt quieti* : Jeruſalaim pacem Poſtulate

6 שַׁאֲלוּ שְׁלוֹם יְרוּשָׁלָם יִשְׁלָיוּ אֹהֲבָיִךְ׃ יְהִי־שָׁלוֹם 7

loquar : meos *ſocios* & ,meos fratres Propter .tuis *palatiis in tranquillitas* ;*tuo antemurali* in

בְּחֵילֵךְ שַׁלְוָה בְּאַרְמְנוֹתָיִךְ׃ לְמַעַן אַחַי וְרֵעָי אֲדַבְּרָה־ 8

.tibi bonum quæram : noſtri Dei DOMINI domum Propter .te in pacem nunc

נָּא שָׁלוֹם בָּךְ׃ לְמַעַן בֵּית־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ אֲבַקְשָׁה טוֹב לָךְ׃ 9

PSAL. CXXIII. קכג

Ecce .cœlis in *ſedens* : meos oculos levavi te Ad .graduum Canticum

1 שִׁיר הַמַּעֲלוֹת אֵלֶיךָ נָשָׂאתִי אֶת־עֵינַי הַיֹּשְׁבִי בַּשָּׁמָיִם׃ הִנֵּה 2

manũ ad ancillæ oculi ſicut ,ſuorũ dominorum manum ad ſervorum oculi ſicut

כְעֵינֵי עֲבָדִים אֶל־יַד אֲדוֹנֵיהֶם כְּעֵינֵי שִׁפְחָה אֶל־יַד

.noſtri miſereatur donec : noſtrum Deum Dominum ad noſtri oculi ita ;ſuæ *heræ*

גְּבִרְתָּהּ כֵּן עֵינֵינוּ אֶל־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ עַד שֶׁיְּחָנֵּנוּ׃

Multùm .deſpectione ſum⁹ ſatiati multũ quia:noſtri miſerere,Domine noſtri Miſerere

3 חָנֵּנוּ יְהוָה חָנֵּנוּ כִּי־רַב שָׂבַעְנוּ בוּז׃ רַבַּת 4

.ſuperborum deſpectione : *pacatorum* ſubſannatione noſtra anima ſibi eſt ſatiata

שָׂבְעָה־לָּהּ נַפְשֵׁנוּ הַלַּעַג הַשַּׁאֲנַנִּים הַבּוּז לִגְאֵיוֹנִים׃

PSAL. CXXIV. קכד

nunc dicat : *nobis* fuit qui Dominus Niſi .David ipſi graduum Canticum

1 שִׁיר הַמַּעֲלוֹת לְדָוִד לוּלֵי יְהוָה שֶׁהָיָה לָנוּ יֹאמַר־נָא

Tunc .homines nos *ſuper ſurgendo in* : *nobis* fuit qui Dominus Niſi .Iſrael

2 יִשְׂרָאֵל׃ לוּלֵי יְהוָה שֶׁהָיָה לָנוּ בְּקוּם עָלֵינוּ אָדָם׃ אֲזַי 3

,nos *innudâſſent* aquæ Tunc .nos in eorum *naſum iraſcendo in* ,nos deglutiſſent vivos

חַיִּים בְּלָעוּנוּ בַּחֲרוֹת אַפָּם בָּנוּ׃ אֲזַי הַמַּיִם שְׁטָפוּנוּ 4

aquæ : noſtrã animã ſuper tranſiſſet Tunc .noſtrã animã ſuper tranſiſſet torrens

נַחְלָה עָבַר עַל־נַפְשֵׁנוּ׃ אֲזַי עָבַר עַל־נַפְשֵׁנוּ הַמַּיִם 5

.eorum dentibus prædam nos dedit non qui , Dominus Benedictus *.tumidæ*

הַזֵּידוֹנִים׃ בָּרוּךְ יְהוָה שֶׁלֹּא נְתָנָנוּ טֶרֶף לְשִׁנֵּיהֶם׃ 6

nos & ,eſt contritus laqueus : *irretientium* laqueo de evaſit avis ſicut noſtra Anima

נַפְשֵׁנוּ כְּצִפּוֹר נִמְלְטָה מִפַּח יוֹקְשִׁים הַפַּח נִשְׁבָּר וַאֲנַחְנוּ 7

.terram & cœlum *facientis* : Domini nomine in noſtrum Adjutorium .evaſimus

נִמְלָטְנוּ׃ עֶזְרֵנוּ בְּשֵׁם יְהוָה עֹשֵׂה שָׁמַיִם וָאָרֶץ׃ 8

PSAL. CXXV. קכה

,commovebitur non ,Sijon mons ſicut : Domino in *Confidentes* .graduum Canticum

1 שִׁיר הַמַּעֲלוֹת הַבֹּטְחִים בַּיהוָה כְּהַר־צִיּוֹן לֹא־יִמּוֹט

DOMINUS & , *ipſam circum* montes Jeruſalaim .manebit ſeculum in

לְעוֹלָם יֵשֵׁב׃ יְרוּשָׁלַם הָרִים סָבִיב לָהּ וַיהוָה 2

virga requieſcet non Quia .ſeculum in uſque & , *nunc ex* , *ſuum populum circum*

סָבִיב לְעַמּוֹ מֵעַתָּה וְעַד־עוֹלָם׃ כִּי לֹא יָנוּחַ שֵׁבֶט 3

iniquitatem *in* juſti mittant *non ut* , juſtorum ſortem ſuper impietatis

הָרֶשַׁע עַל גּוֹרַל הַצַּדִּיקִים לְמַעַן לֹא־יִשְׁלְחוּ הַצַּדִּיקִים בְּעַוְלָתָה

.ſuis cordibus in rectis & : bonis Domine Benefac .ſuas manus

יְדֵיהֶם׃ הֵיטִיבָה יְהוָה לַטּוֹבִים וְלִישָׁרִים בְּלִבּוֹתָם׃ 4

operantibus cum Dominus eos faciet ambulare ,*ſuis tortuoſitatibus pervertentes* Et

וְהַמַּטִּים עֲקַלְקַלּוֹתָם יוֹלִיכֵם יְהוָה אֶת־פֹּעֲלֵי 5

.Iſrael ſuper pax : iniquitatem

הָאָוֶן שָׁלוֹם עַל־יִשְׂרָאֵל׃

תרגום Targum.

6 שאילו בשלמא דירושלם יתבון בשלותא

7 רחימיך: יהי שלם בחיליך שלותא בבירניתיך:

8 מן בגלל אחי וחברי אמלל כדון שלם בך:

9 מטול בית מקדש דיי אלהנא אתבע

לאוטבא לך: קכג

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא קדמך

וקפית ית עיני דיתיב על כורסי יקרא בשמיא:

2 הא כמא דמודיקן עיני עבדין מידיא דרבוניהון

והיכמא דמודיקן עיני אמתא מידיא

דרבונתהא הכדין מדיקן עיננא קדם יי אלהנא

3 עד דיחוס עלנא: חוס עלנא יי חוס עלנא

4 ארום סגי שבענא בסירותא: סוגעת שבעת

לה נפשנא תלעובא דשליין מבסרניא

וגיותניא: קכד

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא על יד

דוד אלולי יי דהוה בסעדנא יימרון כדון

2 ישראל: אלולי מימרא דיי דהוה בסעדנא כד

3 קם עלנא בר נש: הא בכן כד חיין בלעו יתנא

4 כד תקיף רוגזהון בנא: הא בכן מיא שטפו

5 יתנא מרעית עברא על נפשנא: הא בכן

עבר על נפשנא מלכא דמתיל למוי זידוניא

6 דימא: בריך שמא דיי דלא מסרנא היך תבירא

7 לשניהון: נפשנא היך כצפרא אשתיזבת מפחי

8 תקליא פחא אתבר ואנן אשתזבנא: סעדנא

בשום מימרא דיי דעבד שמיא וארעא:

קכה

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא צדיקיא

דמתרחצין במימרא דיי היך טורא דציון לא

2 יזדעזע לעלם יתיתב: ירושלם טוריא חזור

חזור די לה ומימרא דיי חזור חזור לעמיה מן

3 השתא ועד עלמא: ארום לא ינוח שבט רשעא

על פצתא דצדיקיא מן בגלל דלא יושטון

4 צדיקיא בשקרא אידיהון: אוטיב יי לטבין

5 ולתריצין בלבבהון: ודסטין בתר עוקמנותהון

יוליכנון בגהנם חולקהון עם עבדי שקר שלמא

על ישראל:

Paraph. Chald. Verſ. La

Rogate pro pace Jeruſalem,ſedeant in tra quillitate amatores tui. Sit pax in exerc tuo,tranquillitas in prætoriis tuis. Propte fratres meos et ſocios meos loquar nunc pa cem in te. Propter domum ſanctuarii Dñ Dei noſtri, quæram ut bene ſit tibi.

Canticum quod dictum eſt ſuper gra bus *abyſſi*.

PSAL. CXXIII.

Coram te elevavi oculos meos, qui ha bitas ſuper ſedem gloriæ in cœlis. Ecce ſic ut reſpiciunt oculi ſervorum de manibu dominorum ſuorum, et ecce ſicut reſpici unt oculi ancillarum de manibus domina rum ſuarum ; ſic reſpiciunt oculi noſtri a Dñm Deum noſtrum, uſque quo miſereatur noſtri. Miſerere noſtri Dñe, miſerere no ſtri, quoniam multum ſaturati ſumus deſpe ctione. Multum ſaturata eſt anima noſtr opprobrio opulentorum, *deſpectorum* ſuperborum.

Canticum quod dictum eſt ſuper gra bus *abyſſi* per manum David.

PSAL. CXXIV.

Niſi fuiſſet *Dominus qui* fuit in aux noſtrum, dicat nunc Iſrael : Niſi fuiſſe Verbum Dñi qui fuit in adjutoriũ noſtrum cùm inſurgeret adverſus nos homo, Tu vivos deglutiſſent nos, cùm invaleſcere furor eorum adverſum nos. Tunc aquæ o ruiſſent nos, infirmitas tranſiiſſet ſupe animam noſtram. Ecce tunc tranſiſſet ſupe nos rex, *qui comparatur* aquis elatis mar Benedictum nomen Domini, qui non de nos *ſicut prædam* dentibus eorũ. Anima no ſtra eſt ſicut avis [*quæ*] elapſa eſt de laque *offendiculorum* : laqueus contritus eſt, nos liberati ſum⁹. Adjutoriũ noſtrum in nomine Verbi Dñi, qui fecit cœlũ et ter

Canticum quod dictum eſt ſup gradi *abyſſi*.

PSAL. CXXV.

Juſti qui confidunt in verbo Dom ſunt ſicut mons Sion, [*qui*] non comm vebitur, in æternum habitandus. Je ſalem montes in circuitu ejus, & maj Dñi in circuitu populi ſui, ex hoc tem & uſq; in æternum. Quoniam non quieſc virga impietatis ſuper ſortem juſtorum, extendant juſti in iniquitaté manus ſuas. nignè fac Dñe bonis & rectis in corde Declinantes autem in obliquitates ſuas, ducet in gehennã, pars eorum erit cum rantibus iniquitaté. Pax [*vero*] ſuper Iſ

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

6 * ܫܐܠܘ ܫܠܡܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܢܗܘܘܢ ܫܠܝܢ ܪܚܡܝܟܝ :* ܢܗܘܐ ܫܠܡܐ ܒܚܝܠܟܝ.

7 ܘܫܝܢܐ ܒܐܣܛܘܢܝܟܝ: * ܡܛܠ ܐܚܝ ܘܪܚܡܝ. ܐܡܠܠ ܫܠܡܐ ܥܠܝܟܝ : * ܡܛܠ ܒܝܬܗ 8

9 ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܐܒܥܐ ܛܒܬܟܝ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * * ܠܕܘܝܕ. ܡܢ ܡܣܩܬܐ. 1

ܘܡܬܐܡܪ ܡܢ ܦܪܨܘܦܐ ܕܙܘܪܒܒܠ ܪܫܐ ܕܫܒܝܐ. ܘܨܠܘܬܐ ܕܒܥܘܬܐ. ܦܬܓܡ ܝ. ܠܘܬܟ

ܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܥܡܘܪܐ ܕܒܫܡܝܐ. * ܐܝܟ ܥܝܢܐ ܕܥܒܕܐ ܠܘܬ ܡܪܘܬܗܘܢ : ܘܐܝܟ ܥܝܢܐ ܕܐܡܬܐ 2

ܠܘܬ ܡܪܬܗ. ܗܟܢ ܥܝܢܝܢ ܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ : ܥܕܡܐ ܕܬܬܪܚܡ ܥܠܝܢ. * ܐܬܪܚܡ ܥܠܝܢ 3

ܡܪܝܐ ܐܬܪܚܡ ܥܠܝܢ: ܡܛܠ ܕܫܒܥܢ ܫܘܝܛܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܣܓܝ ܣܒܥܬ ܢܦܫܢ: ܡܢ ܚܣܕܐ 4

ܕܡܬܪܘܪܒܢܐ ܘܫܘܝܛܐ ܕܫܒܗܪܢܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܢ *

1 * ܠܐ ܡܫܡܗܢܐ. ܬܘܕܝܬܐ. ܡܣܩܬܐ. ܦܬܓܡ ܝܓ. ܐܠܘ ܠܐ ܡܪܝܐ ܕܩܡ ܠܢ. ܢܐܡܪ ܐܝܣܪܝܠ

2 * ܐܠܘܠܐ ܡܪܝܐ ܕܩܡ ܠܢ : ܟܕ ܩܡܘ ܥܠܝܢ ܒܢܝܢܫܐ. * ܚܝܐ ܒܠܥܝܢ ܗܘܘ ܠܢ : ܘܟܕ 3

4 ܐܬܚܡܬ ܪܘܓܙܗܘܢ ܥܠܝܢ. * ܒܡܝܐ ܛܒܥܝܢ ܗܘܘ ܠܢ : ܢܚܠܐ ܥܒܪ ܥܠ ܢܦܫܢ.

5 * ܘܡܝܐ ܥܫܝܢܐ ܥܒܪܘ ܥܠ ܢܦܫܢ: * ܒܪܝܟ ܡܪܝܐ ܕܠܐ ܝܗܒܢ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܫܢܝܗܘܢ. 6

7 * ܢܦܫܢ ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܐܬܦܨܝܬ ܡܢ ܦܚܐ ܕܨܝܕܐ : ܦܚܐ ܐܬܬܒܪ ܘܚܢܢ ܐܬܦܨܝܢ. * ܥܘܕܪܢܢ 8

ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ : ܗܘ ܕܥܒܕ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܢ * * ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܠܐ 1

ܡܣܩܬܐ. ܦܬܓܡ ܝܗ. ܐܝܠܝܢ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠ ܡܪܝܐ ܒܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ : ܠܐ ܢܙܘܥܘܢ ܐܠܐ ܠܥܠܡ

ܢܬܒܘܢ. * ܐܘܪܫܠܡ ܛܘܪܐ ܡܚܕܪܝܢ ܠܗ : ܘܡܪܝܐ ܡܚܕܪ ܠܥܡܗ. ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ : 2

* ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܬܢܝܚ ܫܒܛܐ ܕܚܛܝܐ ܥܠ ܦܠܓܘܬܐ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܠܐ ܢܘܫܛܘܢ ܙܕܝܩܐ ܐܝܕܝܗܘܢ 3

ܒܥܘܠܐ : * ܐܛܐܒ ܡܪܝܐ ܠܛܒܐ. ܘܠܐܝܠܝܢ ܕܬܪܝܨܝܢ ܒܠܒܗܘܢ : ܘܠܐܝܠܝܢ ܕܡܥܩܡܝܢ 4 5

ܫܒܝܠܝܗܘܢ. ܢܕܒܪ ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ ܥܡ ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ : ܘܫܠܡܐ ܥܠ ܐܝܣܪܝܠ.

* Precamini pacem Hieruſalem, Sint in affluentes amici tui : Sit pax in exercit & abundantia in palatiis tuis. Propte tres meos & amicos meos, loquar pace Propter domũ Dñi Dei noſtri, precabo fœlicitates.

PSAL. CXXII.

Davidis. Ex Pſalmis aſcenſionis. türque ex perſona Zorobabel principi vorum: & oratio ſupplicationis. Ver

AD te levavi oculos meos Habitator Ut oculi ſervorũ ad dominos ſuos oculi ancillæ ad dominam ſuam, ita ocu ſtri ad te Dñe Deus noſter, donec miſe noſtrî. Miſerere noſtrî Dñe, miſerere no quia multitudinem contemptûs audivi diu ſatiata eſt anima noſtra probro irriſo & contemptu ſuperborum.

PSAL. CXXIII.

Anonym⁹. Gratiarũ actio. Aſcenſus Ver

NIſi Dñs ſurrexiſſet pro nobis: dicat el, Niſi Dñs ſurrexiſſet pro nobis, inſurrexiſſent adverſùm nos homines, deglutîſſent nos : & cùm æſtuaſſet ira contra nos, In aquas immerſiſſent nos rens tranſiiſſet ſuper animã noſtrã, Et copioſæ tranſiiſſent ſuper animã noſtr nedictus Dñs qui non dedit nos eſcam bus eorũ. Anima noſtra ſicut paſſer eva queũ aucupis : laqueus contritus eſt, liberati ſumus. Auxiliũ noſtrum in no Domini, qui condidit cœlum ac terram

PSAL. CXXIV.

Ex Pſalmis aſcenſionis. Anonymus. Ver

II qui ſperant in Dño in monte Sion movebuntur : ſed perpetuò morab Hieroſolymã montes circundant, & D cundat populũ ſuũ ex nunc & uſq; in lum. Non enim requieſcet tribus ini in parte juſtorũ, neq; protendent juſti ſuas in ſcelere. Benefac Dñe bonis, & recti ſunt in corde ſuo. Eos autem q torquent ſemitas ſuas, ducet Dominus operantibus iniquitatem : pax verò

Verſio VULG. LAT.

6 Rogate quæ ad pacem ſunt Ieruſalem:
7 & abundantia diligentib⁹ te. Fiat pax
in virtute tua: & abundantia in turribus
8 tuis. Propter fratres meos, & proximos
meos, loquebar pacem de te:
9 Propter domum Domini Dei noſtri,
quæſivi bona tibi.

Canticum graduum. CXXII.

1 AD te levavi oculos meos, qui habi-
2 tas in cœlis. Ecce ſicut oculi ſervorũ,
in manibus dominorũ ſuorũ. Sicut
oculi ancillæ in manibus dominæ ſuæ:
ita oculi noſtri ad Dominũ Deum noſtrũ,
donec miſereatur noſtri. Miſerere
3 noſtri Domine, miſerere noſtri:
quia multũ repleti ſumus deſpectione:
4 Quia multũ repleta eſt anima noſtra:
opprobrium abundantibus, & deſpectio
ſuperbis.

Canticum graduum. CXXIII.

1 NIſi quia Dominus erat in nobis, dicat
2 nunc Iſrael: Niſi quia Dominus erat
in nobis, Cũ exurgerent homines
3 in nos, Forte vivos deglutiſſent nos:
4 Cũ iraſceretur furor eorũ in nos, Forſitan
5 aqua abſorbuiſſet nos. Torrentem
pertranſivit anima noſtra: forſitan
pertranſiſſet anima noſtra aquam intolerabilem.
6 Benedictus Dominus, qui
non dedit nos in captionem dentibus
7 eorum. Anima noſtra ſicut paſſer erepta
eſt de laqueo venantium: Laqueus
contritus eſt, & nos liberati ſumus.
8 Adjutorium noſtrum in nomine Domini,
qui fecit cœlum & terram.

Canticum graduum. CXXIV.

1 QUi confidunt in Dño, ſicut mons
Sion: non commovebitur in æternum,
2 qui habitat In Ieruſalem. Montes in
circuitu ejus: & Dominus in circuitu
populi ſui, ex hoc nunc & uſque in ſeculum.
3 Quia non relinquet Dominus
virgam peccatorum ſuper ſortem juſtorum:
ut non extendant juſti ad in-
4 iquitatem manus ſuas. Benefac, Do-
5 mine, bonis, & rectis corde. Declinantes
autem in obligationes, adducet
Dominus cum operantibus iniquitatem:
pax ſuper Iſrael.

Verſ. GRÆCA. LXX. Interp.

6 † Ἐρωτήσατε δὴ τὰ εἰς εἰρήνην τὴν Ἱερουσαλήμ,
7 † καὶ εὐθηνία τοῖς ἀγαπῶσί σε. † Γενέσθω (γ) δὴ εἰρήνη
ἐν τῇ δυνάμει σου, † καὶ εὐθηνία ἐν ταῖς πυργοβάρεσί
8 σου. † (δ) Ἕνεκα τῶν ἀδελφῶν μου καὶ τῶν πλησίον
9 μου, † ἐλάλουν ( ) δὴ εἰρήνην περὶ σοῦ. † (ε) Ἕνεκα τοῦ
οἴκου κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν ἐξεζήτησα ἀγαθά (ζ) σοι.
MS. A. (γ) δὲ (δ) Ἕνεκεν ( ) δὲ (ε) Ἕνεκεν (ζ) ἐζήτησα ἀγαθά.

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκβʹ.

1 † ΠΡὸς σὲ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, † τὸν κατοι-
2 κοῦντα ἐν τῷ οὐρανῷ. † Ἰδοὺ ὡς ὀφθαλμοὶ δούλων
εἰς χεῖρας τῶν κυρίων αὐτῶν, † ὡς ὀφθαλμοὶ παιδίσκης
εἰς χεῖρας τῆς κυρίας αὐτῆς, † οὕτως οἱ ὀφθαλμοὶ
ἡμῶν πρὸς κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν, † ἕως
3 οὗ οἰκτειρήσαι ἡμᾶς. † Ἐλέησον ἡμᾶς κύριε, ἐλέησον
ἡμᾶς, † ὅτι ἐπὶ πολὺ ἐπλήσθημεν ἐξουδενώσεως.
4 † Ἐπὶ πλεῖον ἐπλήσθη ἡ ψυχὴ ἡμῶν· † τὸ ὄνειδος
τοῖς εὐθηνοῦσι, καὶ ἡ ἐξουδένωσις τοῖς ὑπερηφάνοις.

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκγʹ.

1 † ΕΙ μὴ ὅτι κύριος ἦν ἐν ἡμῖν, † εἰπάτω δὴ
2 Ἰσραήλ, † Εἰ μὴ ὅτι κύριος ἦν ἐν ἡμῖν, † ἐν τῷ
3 ἐπαναστῆναι ἀνθρώπους ἐφ' ἡμᾶς, † Ἄρα ζῶντας ἂν
κατέπιον ἡμᾶς· † ἐν τῷ ὀργισθῆναι τὸν θυμὸν αὐ-
4 τῶν ἐφ' ἡμᾶς, † Ἄρα (α) τὸ ὕδωρ ἂν κατεπόντι-
5 σεν ἡμᾶς. † Χείμαρρον διῆλθεν ἡ ψυχὴ ἡμῶν· † ἄρα
διῆλθεν ἡ ψυχὴ ἡμῶν τὸ ὕδωρ τὸ ἀνυπόστατον.
6 † Εὐλογητὸς κύριος, ὃς οὐκ ἔδωκεν ἡμᾶς † εἰς θή-
7 ραν τοῖς ὀδοῦσιν αὐτῶν. † Ἡ ψυχὴ ἡμῶν ὡς στρουθίον
(β) ἐρρύσθη † ἐκ τῆς παγίδος τῶν θηρευόντων·
8 † ἡ παγὶς συνετρίβη, καὶ ἡμεῖς (γ) ἐρρύσθημεν. † Ἡ
βοήθεια ἡμῶν ἐν ὀνόματι κυρίου, † τοῦ ποιήσαντος
τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν.
MS. A. (α) τὸ ὕδωρ κατεπόντισεν (β) ἐρύσθη (γ) ἐρύσθημεν.

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκδʹ.

1 † ΟΙ πεποιθότες ἐπὶ κύριον ὡς ὄρος Σιών, † οὐ
σαλευθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα † ὁ κατοικῶν Ἱερου-
2 σαλήμ· † ὄρη κύκλῳ αὐτῆς, ( ) † καὶ ὁ κύριος κύκλῳ
3 τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, † ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος. † Ὅτι
(α) οὐκ ἀφήσει κύριος τὴν ῥάβδον τῶν ἁμαρτωλῶν
† ἐπὶ τὸν κλῆρον τῶν δικαίων, † ὅπως ἂν μὴ ἐκτείνω-
4 σιν οἱ δίκαιοι (β) ἐν ἀνομίαις χεῖρας αὐτῶν. † Ἀγάθυνον
κύριε τοῖς ἀγαθοῖς † καὶ τοῖς εὐθέσι τῇ
5 καρδίᾳ. † Τοὺς δὲ ἐκκλίνοντας εἰς τὰς στραγγαλιάς,
† ἀπάξει κύριος μετὰ τῶν ἐργαζομένων τὴν ἀνομίαν.
† εἰρήνη ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ.
MS. A. ( ) καὶ κύριος (α) οὐκ ἀφήσει τὴν ῥάβδον (β) ἐν ἀνομίᾳ

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſl. LAT.

(d) [g] Interrogate quæ ad pacem 6
ſunt Hieruſalem: & (e) abundantia
diligentib⁹ te. 7 Fiat pax in (f) vir- 7
tute tua, & (g) abundantia in [h]
turrib⁹ tuis. 8 Propter fratres meos, 8
& proximos meos, (h) [i] loquebar
pacem de te. 9 Propter domum Do- 9
mini Dei [k] noſtri quæſivi bona tibi.

Canticum graduum. CXXII.

1 AD te [a] levavi oculos meos, 1
qui habitas in cœlo. 2 Ecce 2
ſicut oculi ſervorum ad manus dominorum
ſuorum, 3 ſicut oculi ancillæ
ad manus dominæ ſuæ; ita oculi
noſtri ad Dominum Deum no- 3
ſtrũ, donec miſereatur noſtri. 4 Miſerere
noſtri Domine, miſerere noſtri:
quoniam multùm repleti ſumus de- 4
ſpectione. 5 In (a) plurimum repleta
eſt anima noſtra: opprobrium [b]
abundantib⁹, & deſpectio ſuperbis. 1

Canticum graduum. CXXIII.

1 NISI (a) quia Dominus erat
in nobis, dicat nunc Iſrael, Niſi 2
quia Dominus erat in nobis, 2 Cum
inſurgerent homines ſuper nos: [a]
Forſitã vivos deglutiſſent nos: 3 [b] 3
Cùm iraſceretur furor eorum ſuper
nos; (b) Forſitan aqua abſorbuiſſet 4
nos. 4 Torrentẽ pertranſivit anima 5
noſtra: (c) fortaſſe pertranſivit anima
noſtra aquam (d) intolerabilem.
5 Benedictus Dominus [c], qui non 6
dedit nos in venationem dentibus eorum.
6 Anima noſtra ſicut paſſer, 7
erepta eſt de laqueo venantium. 7
Laqueus contritus eſt: & nos [d] e-
ruti ſumus. 8 Auxilium noſtrum in 8
nomine Domini: qui fecit cœlum, &
terram.

Canticum graduum. CXXIV. 1

1 QUI confidunt in Domino;
ſicut mons Sion, non (a) commovebitur
in æternum, qui habitat
In Hieruſalem. 2 Montes in cir- 2
cuitu ejus, & Dominus [a] in circuitu
populi ſui: ex hoc nunc &
uſque in ſeculum. 3 Quia non re- 3
linquet Dominus virgam peccatorum
ſuper ſortem juſtorum: ( ) ut
non [b] extendant juſti ad iniquitates
manus ſuas. 4 Benefac, Domine, 4
bonis, & rectis corde: 5 Declinan- 5
tes autem [c] in (c) ſtrangulationes,
abducet Dominus cum operantibus
iniquitatem: pax ſuper Iſrael.

Verſio ÆTHIOPICA.

ተዘነው፡ ይሓናሃ፡ ለኢየሩሳሌም፡፡ ወፍሥ 6
ሓሆሙ፡ ለእለ፡ ያፈቅሩ፡ ስመከ፡፡=፡ ይኩ 7
ን፡ሰላም፡ በኃይልከ፡፡ ወትፍሥሕት፡ ወብ
ት፡ማኅፈደ፡ክበዲከ፡፡=፡ በእንተ፡አኃዊየ፡ 8
ወቢጽየ፡፡ ይትናገሩ፡ ሰላም፡ በእንቲአ
ከ፡፡=፡ ወበእንተ፡ ቤተ፡ እግዚአብሔር፡ 9
አምላክየ፡ኃሠሥኩ፡ሠናይተከ፡፡=፡

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

፻፳፪ ኀቤከ፡አንቃዕደነ፡አዕይንቲነ፡ዘትነብ 1
ር፡፡ ውስተ፡ ሰማይ፡፡=፡ ናሁ፡ ከመ፡
አዕይንተ፡አግብርት፡ ውስተ፡እደ፡ አጋእዝ 2
ቲሆሙ፡፡=፡ ወከመ፡ ዐይነ፡ዓመት፡ውስተ፡እ 3
ደ፡ እግዝእታ፡፡ ከማሁ፡ አዕይንቲነ፡ ኀበ፡
እግዚአብሔር፡ አምላክነ፡፡ እስከ፡ አመ፡
ይሣሀለነ፡፡=፡ ተሣሀለነ፡ እግዚኦ፡ ተሣሀለ 4
ነ፡፡ እስመ፡ ፈድፋደ፡ ጸገብነ፡ ኀሳረ፡፡=፡
ወፈድፋደ፡ ጸግበት፡ ነፍስነ፡፡ ኀሳረ፡ብዑ 5
ላን፡ወኀሳረ፡ዕቡያን፡፡=፡

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

፻፳፫ ሶበ፡አኮ፡እግዚአብሔር፡ምስሌነ፡፡ይ 1
ብል፡ እስራኤል፡ ሶበ፡አኮ፡ እግዚአብሔር፡
ምስሌነ፡፡=፡ አመ፡ጊዜ፡ ተንሥኡ፡ሰብእ፡ 2
ላዕሌነ፡፡ አሕዛብ፡ ሕያዋኒነ፡እምውኅጡ
ነ፡፡=፡ በከመ፡ አንሥኡ፡ ቍጥዓ፡ መዐቶ 3
ሙ፡ ላዕሌነ፡፡ አሕዛብ፡ በማይ፡ እምአስጠ
ሙነ፡፡=፡ እምውኂዝ፡እምሰጠት፡ነፍስየ፡፡ 4
እምሰጠት፡ ነፍስነ፡ ለማየ፡ ሀበክ፡፡=፡ ይ
ትባረክ፡ እግዚአብሔር፡ አምላክነ፡ ዘኢየ
ግብአነ፡ውስተ፡መሠግርተ፡ ማዕገቶሙ፡፡=፡
ነፍስነሰ፡ እምሰጠት፡ከመ፡ ዖፍ፡ እመሠገር 6
ተ፡ነአዊት፡፡=፡ መሠገርትሰ፡ተቀጥቀጠት፡ 7
ወንሕነሰ፡ድኅነ፡፡=፡ ረድኤትነ፡በስመ፡እግ 8
ዚአብሔር፡፡ዘገብረ፡ ሰማየ፡ወምድረ፡፡=፡

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

፻፳፬ እለ፡ ተወከሉ፡በእግዚአብሔር፡ከመ፡ 1
ደብረ፡ ጽዮን፡ ኢይትሀወክ፡ ለዓለም፡ ዘየኃ
ድር፡ ውስተ፡ ኢየሩሳሌም፡፡=፡ አድ
ባር፡ የአውዳ፡ ወእግዚአብሔር፡ ይዐግብ፡ 2
ሕዝቦ፡፡እምይእዜ፡ ወእስከ፡ለዓለም፡፡=፡
እስመ፡ ኢየኀድግ፡ እግዚአብሔር፡ በትረ፡ 3
ኃጥአን፡ ዲበ፡ መክፈልተ፡ ጻድቃን፡፡ ከመ፡
ኢያንሥኡ፡እደዊሆሙ፡ ጻድቃን፡ በዐመ
ፃ፡፡=፡ አሠኒ፡እግዚኦ፡ ለኄራን፡ ወለርቱዐ 4
ን፡ልብ፡፡=፡ ወእለሰ፡ ይትመየጡ፡ ውስተ፡ 5
ፁግ፡፡ይወስዶሙ፡ እግዚአብሔር፡ ምስለ፡ ገ
በርተ፡ዐመፃ፡፡ሰላም፡ላዕለ፡ እስራኤል፡፡=፡

INTERP ÆTHIOP. [g] Enarrate ſalutare Hieruſalem. & lætitiam eorum qui diligunt nomen tuum. [h] turritis palatiis tuis. [i] loquentur pacem [k] mei quæſivi decorem tuum. *PSAL. CXXII.* [a] levavimus oculos noſtros, [b] divitibus, & *PSAL. CXXIII.* [a] exiſtimaverim vivos [b] Secundum deſpectum & furorem eorum quem portabant in nos, exiſtimaverim ut in aqua abſorbuiſſent nos. Ex torrente evaſit anima noſtra aquas tumultuantes. [c] Deus noſter, qui [d] etiam liberavit. *PSAL. CXXIV.* [a] providebit populo ſuo: [b] attollant juſti [c] in nequitiam.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

6 *سلوا السلم ليروسليم وخصبا للذين يحبونك *فلتكن السلامة في جنودك والخصب واليسار في
7 ابراج قصورك * من اجل اخوتي والقريبين اليك · تكلمت من اجلك بالسلامة * ومن اجل بيت 8 9
الرب الهنا · طلبت لك الخيرات · الليلويا ·

المزمور المائة والثاني والعشرون ·

* وهو ح · استيحانات

1 رفعت عيني اليك يا رب الساكن في السماء * فهاهما 2
كعيون العبيد الى ايدي مواليهم * وكعين الامة الى يد سيدتها كذلك عيوننا الى الرب الهنا
حتى يتراف علينا * ارحمنا يا رب ارحمنا واغفر لنا · فقد راينا من الهوان كثيرا * وامتلت 3 4
نفوسنا اكثر · العار اعطه للمخصبين والهوان للمتعظمين · الليلويا ·

* المزمور المائة والثالث وعشرون

* وهو يج · استيحن ·

1 لولا ان الرب كان فينا ·
يقول اسرائيل *لولا ان الرب كان فينا عند قيام الناس علينا اذن لابتلعونا ونحن احيا * وعند 2 3
غضب سخطهم علينا * اذن لغرقنا الما · عبرت نفوسنا واديا * احرى عبرت نفوسنا الما الذي 4 5
لا نهاية له * مبارك الرب الذي لم يسلمنا صيدا لاسنانهم * نجت نفوسنا مثل عصفور من 6 7
فخ الصياد · الفخ انكسر ونحن نجونا * معونتنا باسم الرب الذي خلق السما والارض · الليلويا · 8

* المزمور المائة واربعة وعشرون

* وهو ح · استيحانات

1 المتوكلون على الرب
مثل جبل صهيون لا يزول بيروسليم الى الابد * الجبال محيطة بها · والرب محيط بشعبه من الان 2
والى الابد * لان الرب لا يدع عصا الخطاة على ميراث الصديقين لكيلا يمد الصديقون ايديهم 3
الى السيئات * احسن يا رب الى المحسنين والى المستقيمين بقلوبهم * واما الذين يميلون الى سبل 4 5
المعوج الرب يلقيهم مع عاملي الاثم · والسلم على اسرائيل · الليلويا ·

Rogate pacem Jeroſolymis, et abundantiam 6
iis qui te diligunt. Sit pax in exercitibus 7
tuis, et abundantia atq; divitiæ in turrib⁹
palatiorum tuorũ. Propter fratres meos et 8
proximos tibi, locutus ſum pro te pacem. Et 9
propter domum Domini Dei noſtri, precatus
ſum tibi proſpera. Alleluja.

PSAL. CXXII.

Verſus 8.

LEvavi oculos meos ad te Domine, 1 2
qui habitas in cœlo: Et ecce ipſi ſunt
velut oculi ſervorũ ad manus dominorũ
ſuorũ; & prout eſt oculus ancillæ ad manum
dominæ ſuæ, ſic oculi noſtri ad Dominum
Deum noſtrum, quatenus propitietur
nobis. Miſerere noſtri O Domine, miſerere 3
noſtri, & parce nobis: quia jam vidimus è
contemptu multum. Et impletæ ſunt ani- 4
mæ noſtræ abundantiùs. Opprobriũ da opulentis,
et deſpectionem ſuperbis. Alleluja.

PSAL. CXXIII.

Verſus 13.

NIſi Dominus fuiſſet inter nos: dicat 1
Iſrael. Niſi Dominus fuiſſet inter nos 2
inſurgentib⁹ hominib⁹ adverſum nos, Cer- 3
tè abſorbuiſſent nos adhuc viventes; &
æſtuante furore eorum in nos, Certè obru- 4
iſſet nos aqua. Transfretârunt animæ noſtræ
torrentem, Forſitan trajecerunt ani- 5
mæ noſtræ aquam cui nullus eſt terminus.
Benedictus Dominus qui non tradidit nos 6
in venationem dentibus eorum. Evaſe- 7
runt animæ noſtræ ſicut avis laqueum venatoris.
Laqueus fract⁹ eſt & nos evaſim⁹.
Adjutorium noſtrum in nomine Domini, 8
qui creavit cœlum & terram.

PSAL. CXXIV.

Verſus 8.

COnfidentes in Domino erunt ſicut 1
mons Sion, qui inceſſanter erit in
Jeruſalem in ſempiternum. Montes cir- 2
cundant eam, & Dominus circundat populum
ſuum ex nunc & in perpetuum.
Quoniam Dominus non ſinet baculum pec- 3
catorum ſuper hæreditatem juſtorum, ut
ne extendant juſti manus ſuas ad ſcelera.
Benefac O Domine, benefacientibus, & eis 4
qui recti ſunt in cordibus ſuis. At verò qui 5
declinant ad ſemitas obliquitatis, Dominus
projiciet eos cum operantibus iniquitatem;
& pax ſuper Iſrael. Alleluja.

תהלים: קכו קכז קכח

PSAL. CXXVI. קכו

.somniantes veluti fuimus :Sijon *reversionem Dominum convertendo In* .graduum Canticum
שִׁיר הַמַּעֲלוֹת בְּשׁוּב יְהוָה אֶת־שִׁיבַת צִיּוֹן הָיִינוּ כְּחֹלְמִים׃ 1
: *gentibus in* dixerunt tunc ; *præconio* nostra lingua & ,nostrū os risu est repletū Tunc
אָז יִמָּלֵא שְׂחוֹק פִּינוּ וּלְשׁוֹנֵנוּ רִנָּה אָז יֹאמְרוּ בַגּוֹיִם 2
DOMINUS Magnificavit .istis cum facere DOMINUS Magnificavit
הִגְדִּיל יְהוָה לַעֲשׂוֹת עִם־אֵלֶּה׃ הִגְדִּיל יְהוָה 3
,nostram captivitatē DOMINE fac redire .lætantes fuimus :nobiscum facere
לַעֲשׂוֹת עִמָּנוּ הָיִינוּ שְׂמֵחִים׃ שׁוּבָה יְהוָה אֶת־שְׁבוּתֵנוּ 4
, ibit Eundo .metent *præconio in* : *lachryma in Seminantes* .*meridie* in torrentes sicut
כַּאֲפִיקִים בַּנֶּגֶב׃ הַזֹּרְעִים בְּדִמְעָה בְּרִנָּה יִקְצֹרוּ׃ הָלוֹךְ יֵלֵךְ 5 6
.suos manipulos portans,*præconio in* veniet veniendo :*seminis tractionem* portans flendo &
וּבָכֹה נֹשֵׂא מֶשֶׁךְ הַזָּרַע בֹּא־יָבֹא בְרִנָּה נֹשֵׂא אֲלֻמֹּתָיו׃

PSAL. CXXVII. קכז

: domum ædificet non DOMINUS Si .Selomoh ipsi graduum Canticum
שִׁיר הַמַּעֲלוֹת לִשְׁלֹמֹה אִם־יְהוָה לֹא־יִבְנֶה בַיִת 1
,civitatem custodiat non DOMINUS Si : *ea in ejus ædificatores laboraverunt* frustra
שָׁוְא עָמְלוּ בוֹנָיו בּוֹ אִם־יְהוָה לֹא־יִשְׁמָר־עִיר
,sedere tardantibus ,surgere *manicantibus* vobis Frustra .custos *vigilavit* frustra
שָׁוְא שָׁקַד שׁוֹמֵר׃ שָׁוְא לָכֶם מַשְׁכִּימֵי קוּם מְאַחֲרֵי־שֶׁבֶת 2
hæreditas Ecce .somnum suo dilecto dabit sic : dolorum panem edentibus
אֹכְלֵי לֶחֶם הָעֲצָבִים כֵּן יִתֵּן לִידִידוֹ שֵׁנָא׃ הִנֵּה נַחֲלַת 3
filii ita : potentis manu in sagittæ Sicut .ventris fructus merces ; filii DOMINI
יְהוָה בָּנִים שָׂכָר פְּרִי הַבָּטֶן׃ כְּחִצִּים בְּיַד־גִּבּוֹר כֵּן בְּנֵי 4
non , ipsis *ex* suam pharetram implevit qui *viri Beatitudines* .juventutum
הַנְּעוּרִים׃ אַשְׁרֵי הַגֶּבֶר אֲשֶׁר מִלֵּא אֶת־אַשְׁפָּתוֹ מֵהֶם לֹא 5
.porta in inimicis cum fuerint locuti cùm : afficientur pudore
יֵבֹשׁוּ כִּי־יְדַבְּרוּ אֶת־אוֹיְבִים בַּשָּׁעַר׃

PSAL. CXXVIII. קכח

ambulantis : DOMINUM *timentis* omnis *Beatitudines* .graduum Canticum
שִׁיר הַמַּעֲלוֹת אַשְׁרֵי כָּל־יְרֵא יְהוָה הַהֹלֵךְ 1
.tibi bonum & ,*tuæ beatitudines* : comedes quia tuarū *volarum* Laborem .ejus viis in
בִּדְרָכָיו׃ יְגִיעַ כַּפֶּיךָ כִּי תֹאכֵל אַשְׁרֶיךָ וְטוֹב לָךְ׃ 2
plantationes sicut tui filii ,tuæ domus lateribus in fructificans vitis sicut tua Uxor
אֶשְׁתְּךָ כְּגֶפֶן פֹּרִיָּה בְּיַרְכְּתֵי בֵיתֶךָ בָּנֶיךָ כִּשְׁתִלֵי 3
.Dominum *timens* vir benedicetur sic quia Ecce .tuæ mensæ *circum* : olearum
זֵיתִים סָבִיב לְשֻׁלְחָנֶךָ׃ הִנֵּה כִי־כֵן יְבֹרַךְ גָּבֶר יְרֵא יְהוָה׃ 4
omnibus , Jerusalaim *bono in vide* & , Sijon ex DOMINUS tibi Benedicat
יְבָרֶכְךָ יְהוָה מִצִּיּוֹן וּרְאֵה בְּטוּב יְרוּשָׁלָםִ כֹּל 5
.Israel super pacem : tuis filiis filios *vide* Et .*tuarum vitarum* diebus
יְמֵי חַיֶּיךָ׃ וּרְאֵה־בָנִים לְבָנֶיךָ שָׁלוֹם עַל־יִשְׂרָאֵל׃ 6

תרגום TARGUM.

קכו

שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא כד יתיב 1
יי ית גלות ציון הוינא היך מרעיא דאתסין׃
הכדין יתמלי פומנא חוכא ולישננא תושבחא 2
הידין יימרון בעמיא אסגי יי למעבד טבא עם
אלין׃ אסגי יי למעבד טבא עמנא הוינא חדין׃ 3
אתיב יי ית גלותן היך דמיתבא ארעא כד 4
נבעין מפקני מיא בבצורתא׃ דזרעין בדמעתא 5
בשבחתא יחצדון׃ מהלכא יהליך בבכותא 6
מסובר נגדא דבר זרעא מיתא ייתי בתושבחא
כד יסובר אסרתוי׃

קכז

שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא על יד 1
שלמה אין מימרא דיי לא יבני קרתא מגן לען
ארדכלוי ביה אין מימרא דיי לא נטיר קרתא
דירושלם מגן אתער נטיר׃ על מגן תטרחון 2
לכון דתקדמון בצפרא למעבד לכון חטוף די
מאחרין ותתבון למעבד זנו דאכלין מזוני
דמסכנין דלעו בהון על יאות וכיון יתן יי
לרחמיה דמכא׃ הא אחסנת יי בנין כשרין 3
אגר עובדין טבין ולדי מעא׃ כגירין באידא 4
דגברא כן בנין דעולימא׃ טב ליה לגבר דימלי 5
בית מדרשיה מנהון לא יבהתון ארום ינצון
עם בעלי דבביהון בתרע בית דינא׃

קכח

שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא טוביהון 1
דכל דחליא דיי דאזלין באורחתיה׃ לעות 2
אידך ארום תיכול טובך בעלמא הדין וטב לך
לעלמא דאתי׃ אתתך היך גופנא דעבדת פרין 3
על שדא דביתך בנך היך שתיליא דזיתיא חזור
חזור לפתורך׃ הא ארום היכנא מתברך גברא 4
דחל מן קדם יי׃ יברכנך יי מציון ותחמי בטובא 5
דירושלם כל יומי חייך׃ ותחמי בנין לבניך 6
שלמא על ישראל׃

PARAPH. CHALD. VERS. L

Canticum quod dictum est super gradib *abyssi.*

PSAL. CXXVI.

QUando convertet Domin⁹ captivitate Sion, erimus similes *infirmis* qui c *luerunt*. Tunc replebitur risu os nostr & lingua nostra *hymnodia*. Tunc dicent populis: Multiplicavit Dominus benig facere cum illis: Multiplicavit Dñs fac benignè nobiscū, facti sumus lætantes. Co verte Domine captivitatem nostrā, sicut co vertitur terra quando erumpunt exitus aqu rum tempore siccitatis. Qui seminant cum la chrymis, cum *laudatione* metent. Ambula ambulabit in fletu portans *tractū frumen* sementis; veniens veniet cum hymnod quando reportabit manipulos suos.

Canticum quod dictū est super gradibu *abyssi* per manum Salomonis.

PSAL. CXXVII.

SI verbum Domini non ædificaverit ur frustrà laborant in ea architecti ejus: si Ve bum Domini non custodierit civitat Jerusalem, frustrà vigilat custos. In num laborabitis vobis qui præven manè ad perpetrandam *vobis* rapinam, moram facietis atque sedebitis ad patran scelus, comedentes cibos miserorum, in q bus laborârunt, convenienter vero & dabit Domin⁹ dilecto suo somnū. Ecce h reditas Dñi filii recti, præmiū operum norum nati ventris. Sicut sagittæ in ma potentis, sic *filii juvenis*. Beatus vir qui pleverit scholam suam ex ipsis: non co dentur quando contenderint cum adve riis suis in porta dom⁹ judicii.

Canticum quod dictum est super grad *abyssi.*

PSAL. CXXVIII.

BEati omnes qui timent Dominū, qui a bulant in viis ejus. Laborem manuū tu rū cùm comederis, beatus tu in mundo & bonū erit tibi in mundo venturo. U tua erit sicut vitis quæ facit fruct⁹ in late domus tuæ: filii tui sicut plantationes ol rum in circuitu mensæ tuæ. Ecce enim benedicitur viro, qui timet à conspectu D mini. Benedicat tibi *Dominus* ex Sion, videas bonum Jerusalem omnibus die vitæ tuæ. Et videas filios filiorum tuoru pacem super Israel.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 ܡܢ ܡܙܡܘܪܐ. ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܡܬܐܡܪ ܥܠ ܚܓܝ ܘܙܟܪܝܐ * ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܣܩܬܐ *
ܕܣܠܩܘ ܡܢ ܒܒܠ ܥܡ ܫܒܝܬܐ. ܘܒܪܘܚܢܐ ܣܘܟܝܐ ܕܛܒܬܐ ܕܥܬܝܕܢ. ܦܬܓܡܐ ܝܘ.
2 ܟܕ ܡܗܦܟ ܡܪܝܐ ܫܒܝܬܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܗܘܝܢ ܐܝܟ ܗܢܘܢ ܕܚܕܝܢ : ܗܝܕܝܢ ܢܬܡܠܐ ܦܘܡܢ
ܓܘܚܟܐ ܘܠܫܢܢ ܬܫܒܘܚܬܐ. ܗܝܕܝܢ ܢܐܡܪܘܢ ܒܥܡܡܐ : ܕܐܣܓܝ ܡܪܝܐ ܠܡܥܒܕ
3 4 ܥܡܗܘܢ. * ܐܣܓܝ ܡܪܝܐ ܠܡܥܒܕ ܥܡܢ ܘܗܘܝܢ ܒܚܕܘܬܐ : * ܐܗܦܟ ܡܪܝܐ ܫܒܝܬܢ ܐܝܟ
5 6 ܢܒܥ̈ܐ ܕܒܬܝܡܢܐ. * ܐܝܠܝܢ ܕܙܪܥܝܢ ܒܕܡܥܬܐ ܒܚܕܘܬܐ ܢܚܨܕܘܢ : * ܡܐܙܠ ܐܙܠ
ܘܒܟܐ. ܐܝܢܐ ܕܫܩܠ ܙܪܥܐ : ܡܐܬܐ ܐܬܐ ܒܚܕܘܬܐ. ܐܝܢܐ ܕܫܩܠ ܟܪܟܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܣܩܬܐ *
1 * ܡܢ ܡܙܡܘܪܐ. ܐܡܝܪ ܒܝܕ ܕܘܝܕ ܥܠ ܫܠܝܡܘܢ. ܘܡܬܐܡܪ ܥܠ ܚܓܝ ܘܙܟܪܝܐ ܕܐܥܛܦܘ ܥܠ
ܒܢܝܢܐ ܕܗܝܟܠܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܕ. ܐܢ ܡܪܝܐ ܠܐ ܒܢܐ ܒܝܬܐ. ܠܣܪܝܩܘܬܐ ܠܐܝܢ ܒܢܘܝܗܝ : ܘܐܢ ܡܪܝܐ
2 ܠܐ ܢܛܪ ܡܕܝܢܬܐ. ܠܣܪܝܩܘܬܐ ܫܗܪܘ ܢܛܘܪܝܗ : * ܠܣܪܝܩܘܬܐ ܐܢܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܡܩܕܡܝܢ ܠܡܩܡ
3 ܘܡܘܚܪܝܢ ܠܡܬܒ. ܐܟܠܝ ܠܚܡܐ ܕܟܘܪܗܢܐ : ܗܟܢ ܢܬܠ ܠܪܚܡܘܗܝ ܫܢܬܐ. * ܕܗܐ ܝܪܬܘܬܐ
4 ܕܡܪܝܐ ܒܢܝܐ ܐܢܘܢ : ܐܓܪܐ ܕܦܐܪܐ ܕܟܪܣܐ. * ܐܝܟ ܓܐܪܐ ܒܐܝܕܐ ܕܓܢܒܪܐ : ܗܟܢ ܐܢܘܢ
5 ܒܢܝ ܛܠܝܘܬܐ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܢܡܠܐ ܐܩܘܒܪܐ ܕܝܠܗ ܡܢܗܘܢ : ܘܠܐ ܢܒܗܬܘܢ ܟܕ
ܢܡܠܠܘܢ ܥܡ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ ܒܬܪܥܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܣܩܬܐ *
1 * ܡܢ ܡܙܡܘܪܐ. ܠܐ ܡܫܡܗܐ. ܡܬܐܡܪ ܥܠ ܙܘܪܒܒܠ ܪܫܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܫܘܡܠܝܐ ܕܒܢܝܢܐ.
ܘܪܡܙ ܥܠ ܩܪܝܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܕ.
2 ܛܘܒܘܗܝ ܠܟܠ ܕܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ : ܘܡܗܠܟ ܒܫܒܝܠܘܗܝ. * ܠܥܡܠܐ ܕܐܝܕܝܟ ܟܕ ܬܐܟܘܠ
3 ܓܒܪܐ : ܛܘܒܝܟ ܘܛܒܬܐ ܠܢܦܫܟ. * ܐܢܬܬܟ ܐܝܟ ܓܦܬܐ ܡܫܒܚܬܐ ܒܣܦܘܬܐ ܕܒܝܬܟ :
4 ܒܢܝܟ ܐܝܟ ܢܨܒܬܐ ܕܙܝܬܐ ܚܕܪܝܢ ܠܦܬܘܪܟ. * ܗܟܢ ܢܬܒܪܟ ܓܒܪܐ ܕܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ :
5 6 * ܢܒܪܟܟ ܡܪܝܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ. ܘܬܚܙܐ ܒܛܒܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܟܠ ܝܘܡܝ ܚܝܝܟ : * ܘܬܚܙܐ
ܒܢܝܐ ܠܒܢܝܟ. ܘܫܠܡܐ ܥܠ ܐܝܣܪܝܠ.

PSAL. CXXV.

Ex Psalmis ascensionis. Anonymus. citur de Aggæo & Zacharia, qui ascen è Babel una cum captivitate. Spiritua verò expectatio bonorum futurorum. Ve

CUm reducet Dñs captivitatem Sion, e mus ut ii qui lætantur: Tunc imple os nostrū risu, & lingua nostra cantu: T dicent inter gentes, Multiplicavit Dñs fa erga illos. Multiplicavit quidē Dñs facere bis, & facti sumus in lætitia. Reduxit e Dominus captivitatem nostram ut scat quæ sunt in Austro. Qui seminant in la ma, cum jubilo metent. Vadens vadit plorat qui portat semen. Veniens veni exultatione qui portat manipulum.

PSAL. CXXVI.

Ex Psalmis ascensionis. Dictus à Da de Salomone. Dicitur quoque de Ag Zacharia qui urgebant structuram T Versus 14.

NIsi Dominus ædificet domum, frust borant ædificantes eam. Et nisi Dñ stodiat civitatē, frustrà vigilant custodes Vani sunt ii qui maturi sunt ad surgen seri ad sedendum, comedentes panem doloribus: sic concedet charis suis som Hæreditas enim Dñi filii sunt, merces fr um uteri. Qualis est sagitta in manu ro tales sunt filii juventutis; Beatus vir q pleverit pharetram suam ipsis, certè no fundentur cùm alloquentur inimicū in po

PSAL. CXXVII.

Ex Psalmis ascensionis. Anonymus tur de Zorobabel principe Judha, & tionis ædificii. Innuit etiam in co vocati Gentium. Vers. 14.

BEatus quicunque timet Dñm, & inc per semitas ejus. Laborem manuum cùm manducaveris homo, beatus eris, & licitas *erit* animæ tuæ. Uxor tua *erit* sicu tis laudabilis in marginibus domus tuæ tui ut planta olivæ ambientes mensam Hac ratione benedicetur vir qui timet D num. Benedicat tibi Dñs è Sion, & faustà Jerosolymæ omnib⁹ diebus vitæ Videasque filios liberis tuis, & pacem

Verſio VULG. LAT.

1 Canticum graduum. CXXV.

In convertendo Dominus captivi-
tatem Sion: facti ſumus ſicut con-
2 ſolati: Tunc repletum eſt gaudio os
noſtrum: & lingua noſtra exultatione.
Tunc dicent inter gentes; Magnifica-
3 vit Dominus facere cum eis. Magni-
ficavit Dominus facere nobiſcum:
4 facti ſumus lætantes. Converte, Do-
mine, captivitatem noſtram, ſicut tor-
5 rens in Auſtro. Qui ſeminant in la-
6 chrymis, in exultatione metent. Euntes
ibant & flebant, mittentes ſemina
ſua. Venientes autem venient cum ex-
ultatione, portantes manipulos ſuos.

1 Canticum graduum Salomonis.
CXXVI.

Niſi Dominus ædificaverit domū,
in vanum laboraverunt qui ædificant
eam. Niſi Dominus cuſtodierit civita-
tem, fruſtrà vigilat qui cuſtodit eam.
2 Vanum eſt vobis ante lucem ſurgere:
ſurgite poſtquam ſederitis, qui man-
ducatis panem doloris. Cùm dederit
3 dilectis ſuis ſomnum: Ecce hæreditas
Domini, filii, merces; fructus ventris.
4 Sicut ſagittæ in manu potentis: ita fi-
5 lii excuſſorum. Beatus vir qui imple-
vit deſiderium ſuum ex ipſis: non
confundetur cùm loquetur inimicis
ſuis in porta.

1 Canticum graduum. CXXVII.

Beati omnes, qui timent Dominū,
2 qui ambulant in viis ejus. Labores
manuum tuarum quia manducabis:
3 beatus es, & benè tibi erit. Uxor
tua ſicut vitis abundans, in lateribus
domûs tuæ. Filii tui ſicut novellæ oli-
4 varum, in circuitu menſæ tuæ. Ecce
ſic benedicetur homo, qui timet Do-
5 minum. Benedicat tibi Dominus ex
Sion: & videas bona Jeruſalem omni-
6 bus diebus vitæ tuæ. Et videas filios
filiorum tuorum, pacem ſuper Iſrael.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

1 Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκέ.
† ἘΝ τῷ ἐπιστρέψαι κύριον τὴν αἰχμαλωσίαν
Σιὼν, † ἐγενήθημεν (α) ὡσεὶ παρακεκλημένοι. †
2 Τότε ἐπλήσθη χαρᾶς τὸ στόμα ἡμῶν, † καὶ ἡ γλῶσ-
σα ἡμῶν ἀγαλλιάσεως· † τότε ἐροῦσιν ἐν τοῖς ἔθνε-
σιν, † Ἐμεγάλυνε κύριος τοῦ ποιῆσαι μετ᾽ αὐτῶν.
3 † Ἐμεγάλυνε κύριος τοῦ ποιῆσαι μεθ᾽ ἡμῶν, † ἐ-
4 γενήθημεν εὐφραινόμενοι. † Ἐπίστρεψον κύριε τὴν
αἰχμαλωσίαν ἡμῶν † ὡς (β) χειμάῤῥους ἐν τῷ Νότῳ.
5 † Οἱ σπείροντες ἐν δάκρυσιν, ἐν ἀγαλλιάσει θεριοῦ-
6 σι. † Πορευόμενοι ἐπορεύοντο, καὶ ἔκλαιον † (γ) βάλ-
λοντες τὰ σπέρματα αὐτῶν· † ἐρχόμενοι δὲ ἥξουσιν
ἐν ἀγαλλιάσει, † αἴροντες τὰ δράγματα αὐτῶν.

MS. A. (α) ὡς (β) ὁ χειμάῤῥους (γ) αἴροντες

1 Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκς´.
† ἘΑν μὴ (α) κύριος οἰκοδομήσῃ οἶκον, † εἰς μά-
την ἐκοπίασαν (β) οἱ οἰκοδομοῦντες· † ἐὰν μὴ κύρι-
ος φυλάξῃ πόλιν, † εἰς μάτην ἠγρύπνησεν ὁ φυ-
2 λάσσων. † Εἰς μάτην ὑμῖν ἐστι (γ) τὸ ὀρθρίζειν·
† ἐγείρεσθε μετὰ τὸ καθῆσθαι, † (δ) οἱ ἐσθίοντες ἄρτον
ὀδύνης, † ὅταν δῷ τοῖς ἀγαπητοῖς αὐτοῦ ὕπνον. †
3 Ἰδοὺ ἡ κληρονομία κυρίου, υἱοὶ, † ὁ μισθὸς τοῦ καρποῦ
4 τῆς γαστρός. † Ὡσεὶ βέλη ἐν χειρὶ δυνατοῦ, † οὕτως
5 οἱ υἱοὶ τῶν ἐκτετιναγμένων. † Μακάριος (ε) ὃς
πληρώσει τὴν ἐπιθυμίαν αὐτοῦ ἐξ αὐτῶν· † οὐ (ζ) κατ-
αισχυνθήσονται, ὅταν λαλῶσι τοῖς ἐχθροῖς αὐτῶν (η)
ἐν πύλαις.

MS. A. (α) ὁ κύριος οἰκοδομήσει (β) οἱ οἰκοδο-
μοῦντες αὐτόν· ἐὰν μὴ ὁ κύριος (γ) τοῦ ὀρθρίζειν·
(δ) οἱ ἔσθοντες (ε) ἄνθρωπος ὃς (ζ) καταισχυν-
θῶσιν, (η) ἐν πύλῃ.

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκζ´.
1 † ΜΑκάριοι πάντες οἱ φοβούμενοι τὸν κύριον, † οἱ
2 πορευόμενοι ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ. † (α) Τοὺς πόνους
τῶν καρπῶν σου φάγεσαι· † μακάριος εἶ καὶ καλῶς
3 σοι ἔσται. † Ἡ γυνή σου ὡς ἄμπελος εὐθηνοῦσα † (β)
ἐν τοῖς κλίτεσι τῆς οἰκίας σου· † οἱ υἱοί σου ὡς νεό-
4 φυτα ἐλαιῶν † κύκλῳ τῆς τραπέζης σου. † Ἰδοὺ οὕτως
εὐλογηθήσεται ἄνθρωπος ὁ φοβούμενος τὸν κύρι-
5 ον. † (ϛ) Εὐλογήσαι σε κύριος ἐκ Σιὼν, † καὶ ἴδοις τὰ
ἀγαθὰ Ἱερουσαλὴμ † πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς
6 σου. † Καὶ ἴδοις υἱοὺς τῶν υἱῶν σου· † εἰρήνη ἐπὶ τὸν
Ἰσραήλ.

MS. A. (α) Τοὺς καρποὺς τῶν πόνων σου (β) ἐν
τοῖς κλίτεσιν (ϛ) Εὐλογήσει

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Canticum graduum. CXXV. 1
1 *Cum (a) converteret Dñs capti-*
vitatē Siō; facti ſum⁹ ſicut cōſolati.
2 Tunc repletum eſt gaudio os no- 2
ſtrum, & lingua noſtra (b) exulta-
tione. 3 Tunc dicent inter gentes;
Magnificavit Dominus facere cum
[†] eis. Magnificavit Dominus fa- 3
cere nobiſcū: 4 facti ſum⁹ lætantes.
5 Converte, Domine, captivitatem no- 4
ſtrā, ſicut (c) [a] torrentes in Au-
ſtro. 6 Qui ſeminant in lachrymis; 5
in exultatione metent. 7 [b] Euntes 6
ibant, & flebant, mittentes ſemina
ſua. 8 Venientes autem venient in
exultatione, portantes manipulos
ſuos.

Canticum graduum. *CXXVI.* 1
1 *Niſi Dominus ædificaverit*
domum; in vanum labora-
verunt (a) ædificantes. 2 Niſi Do-
minus cuſtodierit civitatem; fru- 2
ſtrà [a] vigilat, qui cuſtodit. 3 (b)
[b] In vanum eſt vobis ante lucem
ſurgere: (c) ſurgite poſtquàm ſede-
ritis, qui manducatis (d) panem do-
loris. 4 Cum dederit dilectis ſuis ſo-
mnum; Ecce [c] hæreditas Domini, 3
filii, (e) merces fructûs ventris. 5
Sicut ſagittæ in manu potentis; ita 4
(f) filii excuſſorum. 6 (g) Beatus [d], 5
qui (h) implebit deſiderium ſu-
um ex eis: non (i) [e] confundentur,
cùm loquentur inimicis ſuis in
porta.

Canticum graduum. *CXXVII.* 1
Beati omnes, qui timent Domi-
num, qui ambulant in viis ejus. 2
[a] Labores (a) palmarum tuarum 2
manducabis: beatus es, & benè tibi
erit. 3 Uxor tua, ſicut (b) vitis [b] 3
abundans, in (c) lateribus domûs
tuæ. 4 Filii tui, ſicut (d) novellæ
olivarum in circuitu menſæ tuæ. 5
Ecce ſic benedicetur homo, qui ti- 4
met Dominum. 6 Benedicat te Do- 5
minus ex Sion, (e) & videas bo-
na Hieruſalem omnibus diebus vi-
tæ tuæ: 7 Et videas filios filio- 6
rum tuorum: (f) pax ſuper Iſrael.

Verſio ÆTHIOPICA.

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

፻፳፭ እመ፡ሜጠ፡እግዚአብሔር፡ፄዋ፡ጽዮ 1
ን፡፡ኮነ፡ፍሡሐነ፡፡ ፨ አሜሃ፡መልአ፡ፍሥ 2
ሐ፡አፉነ፡፡ ወተሐሥየ፡ልሳንነ፡፡ ፨ አሜ 3
ሃ፡ይቤሉ፡አሕዛብ፡፡ አዕበየ፡ገቢረ፡ሎሙ፡
እግዚአብሔር፡፡ ፨ ወኮነ፡ፍሡሓነ፡፡ ፨ 4
ሚጥ፡እግዚኦ፡ፄዋነ፡፡ ከመ፡ውሒዝ፡ውስ 5
ተ፡አዜብ፡፡ ፨ እለ፡ይዘርኡ፡በአንብዕ፡ወበሐ 6
ሤት፡የዓርሩ፡፡ ፨ ወሶበሰ፡የሐውሩ፡ወይፈ 7
ሩ፡አንዘ፡ይበክዩ፡፡ ወጾሩ፡ዘርዖሙ፡፡ ፨
ወሶበ፡የአትዉ፡መጽኡ፡አንዘ፡ይትፌሥሑ፡፡ 8
ወጾሩ፡ከለስስቲሆሙ፡፡ ፨

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

፻፳፮ እመ፡እግዚአብሔር፡ኢሐነጸ፡ቤተ፡፡ 1
ከንቶ፡ይጻምዉ፡እለ፡የሐንጹ፡፡ ፨ እመ፡ 2
እግዚአብሔር፡ኢዐቀበ፡ሀገረ፡፡ ከንቶ፡ይ
ትጊሁ፡እለ፡ይሄልዉ፡፡ ፨ ወከንቱ፡ገይሶት 3
ክሙ፡፡ ተንሥኡ፡እምድኅረ፡ነበርክሙ፡፡
እለ፡ትሴስዩ፡እክለ፡ሕማም፡፡ ፨ ሶበ፡ይሁ 4
በሙ፡ንዋመ፡ለፍቁራኒሁ፡፡ ናሁ፡ጸጋሁ፡
ለእግዚአብሔር፡ውሉድ፡፡ ዕሤተ፡ፍሬሃ፡ለ
ከርሥ፡፡ ፨ ከመ፡አሕጻ፡ውስተ፡እደ፡ኃያ 5
ል፡፡ከማሁ፡ደቂቆሙ፡ለንጉፋን፡፡ ፨ ብፁ 6
ዕ፡ብእሲ፡ዘይፌጽም፡ፍትወቶሙ፡እምኔሆ
ሙ፡ወኢይትኃፈር፡ሶበ፡ይትናገሮሙ፡ለጸላእ
ቱ፡በአናቅጽ፡፡ ፨

ማኅሌት፡ዘበዓርጊሁ፡፡

፻፳፯ ብፁዓን፡ኵሎሙ፡እለ፡ይፈርህዎ፡ 1
ለእግዚአብሔር፡፡ እለ፡የሐውሩ፡በፍናዊ
ሁ፡፡ ፨ ፍሬ፡ጻማከ፡ትሴሰይ፡፡ብፁዕ፡አን 2
ተ፡ወሠናይ፡ለከ፡፡ ፨ ብእሲትከ፡ከመ፡ወ 3
ይን፡ለሀመር፡ውስተ፡ጽርሐ፡ቤትከ፡፡ ፨
ወውሉድከ፡ከመ፡ተክለ፡ዘይት፡ሐዲስ፡ዐ 4
ውደ፡ማዕድከ፡፡ ፨ ናሁ፡ከመዝ፡ይትባረክ፡ 5
ብእሲ፡ ዘይፈርሆ፡ለእግዚአብሔር፡፡ ፨
ይባርክ፡እግዚአብሔር፡እምጽዮን፡፡ ወት 6
ሬኢ፡ሠናይተ፡ለኢየሩሳሌም፡፡ በኵሉ፡
መዋዕለ፡ሕይወትከ፡፡ ፨ ወትሬኢ፡ውሉ 7
ደ፡ውሉድከ፡፡ ሰላም፡ ላዕለ፡ እስራኤ
ል፡፡ ፨

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. CXXV.* [†] eis. Facti [a] torrens [b] Et cùm ibant flentes egreſſi ſunt, & portantes ſemina. *PSAL. CXXVI.* [a] vigilant, qui *in ea* ſunt. [b] Vana eſt manicatio veſtra: [c] donum Domini, [d] vir, qui [e] confundetur, cùm loquetur *PSAL. CXXVII.* [a] Fructum laboris tui manducabis: [b] placens, in cœnaculis domûs tuæ.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور المايه وخمسه وعشرون * وهو * سبح * استجابات *
2 لما رد الرب سبي صهيون صرنا كالمعزيين * حينئذ امتلى فمنا فرحا ولساننا تهليلا * حينئذ
3 4 يقال في الامم قد اكثر الرب الصنيع الى هولاء * اكثر الرب الصنيع الينا فصرنا فرحين * يا
5 6 رب رد الينا سبينا كاودية التيمن * الذين يزرعون بالدموع ويحصدون بالفرح * كانوا ينطلقون
ماشيين باكين حاملين بذورهم * ويعودون مقبلين بالتهليل حاملين غلاتهم * الليلويا *

1 * المزمور المايه وسته وعشرون * وهو * سبح * استجابات *
اذ لم يبن الرب البيت تعب البناوون باطلا * وان لم يحفظ الرب المدينه سهر الحافظون باطلا *
2 باطلا يكون بكورهم * انهضوا من بعد جلوسكم يا اكلي الخبز بالهموم * اذا اعطي حبيبه نوما *
3 4 فها هوذا البنون هم ميراث الرب * اجر ثمر البطن * مثل السهام في يد الجبار * هذا هو
5 مثل البنين في شبيبتهم * مغبوط هو الرجل الذي يكمل شهوته منهم * حينئذ لا يخزون
اذا كلموا اعداءهم في الابواب * الليلويا *

1 * المزمور المايه وسبعه وعشرون * وهو * سبح * استجابات *
2 طوبا لكل الخايفين من الرب السالكين في سبله * تاكل من ثمر اتعابك * تصير مغبوطا
3 ويكون لك الخير * امراتك تصير مثل كرمة مخصبة في جوانب بيتك * بنوك مثل غروس
4 5 الزيتون حول مايدتك * ها هوذا يبارك الرجل الخايف من الرب * هكذا يباركك الرب من صهيون
6 وترى خيرات يروشليم جميع ايام حياتك * وترى بني بنيك * والسلام على اسرايل * الليلويا

PSAL. CXXV.
Verſ. 10.

Quando revocabit Dominus captivi- 1
tatem Sion, fiemus veluti conſolati:
Tunc implebitur os noſtrum gaudio, et lin- 2
gua noſtra exultatione. Tunc dicetur inter
gentes, Jam multiplicavit Dominus bene-
ficium erga iſtos. Multiplicavit Dominus 3
beneficium erga nos, & facti ſumus læ-
tantes. O Domine, reducas nobis captivita- 4
tem noſtram ſicuti torrentes Auſtri. Qui 5
ſeminant cū lachrymis, etiam metent cum
gaudio. Ibant gradientes gemebundi, por- 6
tantes ſemina ſua; at venient redeuntes
cum exultatione, geſtantes fruges ſuas.
Alleluja.

PSAL. CXXVI.
Verſ. 13.

Si non ædificet Dominus domum, fru- 1
ſtrà laborant ædificantes. Et niſi cu-
ſtodiat Dominus urbem, fruſtrà vigilant
cuſtodes: Vana eſt ſurrectio eorum ma- 2
tutina. Expergiſcimini poſtquam ſederi-
tis O qui comeditis panem cum ſollicitu-
dinibus. Quum dederit dilectis ſuis ſo-
mnum: Ecce filii erunt hæreditas Domini. 3
Merces fructûs ventris Eſt veluti ſagitta 4
in manu gigantis. Hæc eſt ſimilitudo fili-
orum in juventute ipſorum. Fœlix eſt 5
homo qui explet votum ſuum in eis: tunc
non confundentur, quum alloquentur ini-
micos ſuos in portis. Alleluja.

PSAL. CXXVII.
Verſ. 10.

Beati omnes timentes Dominum, am- 1
bulantes in ſemitis ejus. Manducabis 2
ex fructu laborum tuorum, ſis proſper,
& erit tibi bonum. Uxor tua fiet inſtar 3
vitis abundans in lateribus domûs tuæ,
filii tui ſicut plantæ olivarum circa men-
ſam tuam. Nonne ecce benedicetur homo 4
timens Dominum? Sic benedicet tibi Do-
minus de Sion, & videbis bona Jeruſa-
lem omnibus diebus vitæ tuæ, Et videbis 5
filios filiorum tuorum: & pacem ſuper
Iſrael. Alleluja.

תהלים : קכט קל קלא קלב

PSAL. CXXIX. קכט

nunc dicat : *meis pueritiis à* me affecerunt angustiis Multùm .graduum Canticum
שִׁיר הַמַּעֲלוֹת רַבַּת צְרָרוּנִי מִנְּעוּרָי יֹאמַר־נָא 1
.mihi prævaluerunt non *etiam* .*meis pueritiis* à me affecerūt angustiis Multùm .Israel
יִשְׂרָאֵל׃ רַבַּת צְרָרוּנִי מִנְּעוּרָי גַּם לֹא־יָכְלוּ לִי׃ 2
.suum sulcum protraxerunt longum in : arantes araverunt meum dorsum Supra
עַל־גַּבִּי חָרְשׁוּ חֹרְשִׁים הֶאֱרִיכוּ לְמַעֲנוֹתָם׃ 3
:retrorsum *recedent* &,afficientur Pudore .impiorum funes concidit : justus Dominus
יְהוָה צַדִּיק קִצֵּץ עֲבוֹת רְשָׁעִים׃ יֵבֹשׁוּ וְיִסֹּגוּ אָחוֹר 4 5
.exaruit ,*evulsit* antequam quæ : tectorum herba sicut Erunt .Sijon *odientes* omnes
כֹּל שֹׂנְאֵי צִיּוֹן׃ יִהְיוּ כַּחֲצִיר גַּגּוֹת שֶׁקַּדְמַת שָׁלַף יָבֵשׁ׃ 6
dixerunt non Et .manipulos *colligens suū sinum &* ; *metens* suā *volam* implevit non Qua
שֶׁלֹּא מִלֵּא כַפּוֹ קוֹצֵר וְחִצְנוֹ מְעַמֵּר׃ וְלֹא אָמְרוּ 7 8
.Domini nomine in vobis benediximus : vos *ad* Domini Benedictio :transeuntes
הָעֹבְרִים בִּרְכַּת־יְהוָה אֲלֵיכֶם בֵּרַכְנוּ אֶתְכֶם בְּשֵׁם יְהוָה׃

PSAL. CXXX. קל

mea voce in audi Domine .Domine te *invocavi* profundis De .graduum Canticum
שִׁיר הַמַּעֲלוֹת מִמַּעֲמַקִּים קְרָאתִיךָ יְהוָה׃ אֲדֹנָי שִׁמְעָה בְקוֹלִי 1
iniquitates Si .mearum deprecationum vocem ad intentæ tuæ aures sint
תִּהְיֶינָה אָזְנֶיךָ קַשֻּׁבוֹת לְקוֹל תַּחֲנוּנָי׃ אִם־עֲוֺנוֹת 2 3
.timeberis ideo : *venia tecum Quia* ? stabit quis Domine , *Jah* observaveris
תִּשְׁמָר־יָהּ אֲדֹנָי מִי יַעֲמֹד׃ כִּי־עִמְּךָ הַסְּלִיחָה לְמַעַן תִּוָּרֵא׃ 4
.*sum præstolatus* ejus verbo in & : mea anima expectavit , Dominum Expectavi
קִוִּיתִי יְהוָה קִוְּתָה נַפְשִׁי וְלִדְבָרוֹ הוֹחָלְתִּי׃ 5
Expecta .*matutino in custodibus matutino in custodibus præ* Dominum ad mea Anima
נַפְשִׁי לַאדֹנָי מִשֹּׁמְרִים לַבֹּקֶר שֹׁמְרִים לַבֹּקֶר׃ יַחֵל 6 7
eo cum multa & : misericordia Domino cum quia , Dominum ad Israel
יִשְׂרָאֵל אֶל־יְהוָה כִּי־עִם־יְהוָה הַחֶסֶד וְהַרְבֵּה עִמּוֹ
.ejus iniquitatibus omnibus ex , Israel redimet ipse Et .redemptio
פְדוּת׃ וְהוּא יִפְדֶּה אֶת־יִשְׂרָאֵל מִכֹּל עֲוֺנֹתָיו׃ 8

PSAL. CXXXI. קלא

sunt elati neque ,meū cor est exaltatū non Domine .David ipsi graduum Canticum
שִׁיר הַמַּעֲלוֹת לְדָוִד יְהוָה לֹא־גָבַהּ לִבִּי וְלֹא־רָמוּ 1
; posui *non Si* .*me præ* mirabilibus in *&* ,magnis in ambulavi neque : mei oculi
עֵינַי וְלֹא־הִלַּכְתִּי בִּגְדֹלוֹת וּבְנִפְלָאוֹת מִמֶּנִּי׃ אִם־לֹא שִׁוִּיתִי 2
ablactatus sicut : suam matrem super ablactatum sicut , meam animam feci silere &
וְדוֹמַמְתִּי נַפְשִׁי כְּגָמֻל עֲלֵי אִמּוֹ כַּגָּמֻל
.seculum in usque & ,*nunc* ex : *Dominum ad* Israel *Expectet* .mea anima me *super*
עָלַי נַפְשִׁי׃ יַחֵל יִשְׂרָאֵל אֶל־יְהוָה מֵעַתָּה וְעַד־עוֹלָם׃ 3

PSAL. CXXXII. קלב

.ejus afflictionis universæ : David Domine Memento .graduum Canticum
שִׁיר הַמַּעֲלוֹת זְכוֹר־יְהוָה לְדָוִד אֵת כָּל־עֻנּוֹתוֹ׃ 1
.Jahacob potenti vovit : Domino juravit Qui
אֲשֶׁר נִשְׁבַּע לַיהוָה נָדַר לַאֲבִיר יַעֲקֹב׃ 2

תרגום TARGUM.

קכט

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא סגיעין
דאעיקו לי מן טליותי יימר כדון ישראל׃
2 סגיעין דאעיקו לי מן טליותי ברם לא יכילו
3 לאבאשא לי׃ על גושמי רדו רדיא אוריכו
4 למורדניתהון׃ יי זכאה קצץ שולשלי רשיעיא׃
5 יבהתון ויזורו לאחורא כל סנאי דציון׃ יהוון
6 כחציר אגריא דמן קדם דיציץ אתי רוח קדומא
נתב ביה ואתיבש׃ דלא מלי אידיה חצד
7 וכתפיה מעמר׃ ולא אמרו דעברין מתמן
8 ברכתא דיי עליכון ולא יתיבון להון ברכנא
יתכון בשמא דיי׃

קל

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא מן
2 עומקיא קריתך יי׃ יי קביל צלותי תהוין
3 אודניך צייתין לקל צלותי׃ אין עוין תטור יה
4 יי מן יקום׃ ארום גבך שביקותא מן בגלל
5 דתתחמי׃ אמתינית ליי מתינת נפשי ולאיקריה
6 אוריכית׃ נפשי אוריכא ליי מן נטרי מטרת
7 לצפרא דנטרין לקרבא קרבן צפרא׃ מוריך
ישראל ליי ארום גבי יי חסדא וסגי עמיה
8 פורקן׃ והוא יפרוק ית ישראל מכל עויתיה׃

קלא

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא יי לא
גבה לבי ולא אתרוממו עיני ולא הלכית
2 ברברבן ובפרישן מני׃ אין לא שוית אידא
לפום ושתקית נפשי עד דצית פתגמי אוריתא
היך חסילא על תדיי אמיה אתגברית באוריתא
3 היך חסילא עלוי נפשי׃ יוריך ישראל ליי מן
השתא ועד עלמא׃

קלב

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא אדכר יי
2 לדויד ית כל סגופיה׃ די קיים קדם יי נדר
לתקיפא דיעקב׃

PARAPH. CHALD. Vers

Canticū ꝙ dictū est sup gradibus a

PSAL. CXXIX.

Multi fuerunt qui molestias intulerunt mihi à pueritia mea, dicat nunc Israel: Multi qui molestias intulerunt mihi à pueritia mea; verùm non potuerunt inferre malum mihi. Super corpus meum araverunt arantes; prolongaverunt arationem suam. Dominus justus concîdit catenas impiorum. Confundantur & revertantur retrorsum omnes qui oderunt Sion. Fiant sicut fœnum tectorum, quod antequàm floruit irruit ventus vehemens, perflavit in illud & siccatum est. De quo non implevit manum suam messor, & axillam suam spicilegium faciens. Et non dixerunt transeuntes indè, Benedictio Domini super vos: non responderunt eis, Benedicimus vos in nomine Domini.

Canticum quod dictū est super grad *abyssi.*

PSAL. CXXX.

De profundis invocavi te Domine: Domine exaudi orationem meam: sint aures tuæ attendentes voci orationis meæ. Si iniquitates observaveris Deus, Domine quis subsistet? Quoniam apud te est indulgentia ut videaris. Expectavi Dominum, expectavit anima mea, & in gloria ejus speravi. Anima mea expectavit Dominum, plusquam observantes custodias matutinas, quas observant ut offerant oblationem matutinam. Sperat Israel in Domino, quoniam apud Dñm misericordia, & copiosa cum illo redemptio. Et ipse redimet Israel ex omnibus iniquitatibus ejus.

Canticum quod dictum est super gradibus *abyssi.*

PSAL. CXXXI.

Domine non est exaltatū cor meū & non sunt elati oculi mei; & non ambulavi in magnificentiis, rebúsq; mirandis præ me. Si non posui manum ad os, & tacere feci animā meā donec audiret verba Legis, ut ablactat⁹ sup mammas matris suæ roboratus sum in Lege, sicut ablactatus super me anima mea. Sperabit Israel in Domino à hoc tempore et usque in æternum.

Canticū quod dictum est super gra *abyssi.*

PSAL. CXXXII.

Memento Domine Davidis [&] omnis afflictionis ejus. Qui juravit coram Domino; vota nuncupavit fortissimo Jaacob.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܣܩܬܐ *

* ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܠܐ ܡܬܝܕܥ ܕܡܢܘ. ܐܘܠܨܢܐ ܕܥܡܐ. ܘܥܠܝܢ ܕܝܢ ܡܪܡܙ ܥܠ ܙܟܘܬܐ ܘܬܘܩܦܐ ܕܦܘܪܩܢܐ. 1
ܦܬܓ̈ ܝܓ. ܣܓܝܘ ܐܠܘܨܝ ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ. ܢܐܡܪ ܐܝܣܪܝܠ * ܣܓܝܘ ܐܠܘܨܝ ܡܢ 2
ܛܠܝܘܬܝ: ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ ܠܡܚܒܠܘܬܝ. * ܥܠ ܚܨܝ ܢܓܕܘ ܢܓܕܐ ܘܐܘܪܟܘ ܡܘܟܟܗܘܢ: * ܡܪܝܐ 3 4
ܙܕܝܩ ܗܘ ܘܦܣܩ ܫܒܘܫܐ ܕܥܘܠܐ. * ܢܬܗܦܟܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ ܟܠܗܘܢ ܣܢܐܝܗ ܕܨܗܝܘܢ: 5
* ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܕܐܓܪܐ. ܕܟܕ ܢܫܒܬ ܒܗ ܪܘܚܐ ܡܚܡܠ ܘܝܒܫ: * ܘܠܐ ܡܠܐ ܚܨܕܐ 6
ܟܦܗ ܚܨܘܕܐ. ܘܐܦܠܐ ܥܘܒܗ ܡܥܡܪܢܐ: * ܘܠܐ ܐܡܪܘ ܐܝܠܝܢ ܕܥܒܪܝܢ. ܒܘܪܟܬܗ ܕܡܪܝܐ 7 8
ܥܠܝܟܘܢ: ܒܪܟܢܟܘܢ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܣܩܬܐ *

* ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܡܬܐܡܪ ܥܠ ܢܚܡܝܐ ܟܗܢܐ. ܘܡܪܡܙ ܒܗ ܒܥܘܬܐ ܕܣܗܕܐ. ܦܬܓ̈ ܝܘ. 1
ܡܢ ܥܘܡܩܐ ܩܪܝܬܟ ܡܪܝܐ * ܘܫܡܥ ܒܩܠܝ: ܢܗܘܝܢ ܐܕܢܝܟ ܨܝܬܢ ܠܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ. * ܐܢ 2
ܚܛܗ̈ܐ ܬܛܪ ܡܪܝܐ ܡܢܘ ܢܩܘܡ ܩܕܡܝܟ: * ܡܛܠ ܕܡܢܟ ܗܘ ܫܘܒܩܢܐ. 3 4
* ܣܒܪܬ ܒܡܪܝܐ ܘܣܟܝܬ ܢܦܫܝ ܠܡܠܬܗ: * ܣܟܝܬ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܡܛܪܬܐ ܕܨܦܪܐ ܥܕܡܐ 5
ܠܡܛܪܬܐ ܕܨܦܪܐ. * ܢܣܟܐ ܐܝܣܪܝܠ ܠܡܪܝܐ: ܡܛܠ ܕܡܢ ܠܘܬܗ ܐܢܘܢ ܪ̈ܚܡܐ. ܘܣܓܝ 6 7
ܠܘܬܗ ܦܘܪܩܢܐ: * ܘܗܘ ܢܦܪܘܩܝܘܗܝ ܠܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܟܠܗ ܥܘܠܗ. 8

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ * * ܕܕܘܝܕ. ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܘܡܬܐܡܪ ܥܠ ܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܨܕܩ ܟܗܢܐ 1
ܪܒܐ: ܘܥܠ ܡܟܝܟܘܬܐ. ܦܬܓ̈ ܗ. ܡܪܝܐ ܠܐ ܐܬܪܝܡ ܠܒܝ ܘܠܐ ܐܬܬܪܝܡܘ ܥܝܢܝ: ܘܠܐ
ܗܠܟܬ ܒܕܪ̈ܡܢ ܡܢܝ. * ܐܠܐ ܡܟܟܬ ܢܦܫܝ ܐܝܟ ܫܒܪܐ ܕܚܣܝܠ ܥܠ ܐܡܗ: ܘܐܝܟ ܫܒܪܐ 2
ܕܚܣܝܠ ܥܠܝ ܢܦܫܝ. * ܢܣܟܐ ܐܝܣܪܝܠ ܠܡܪܝܐ: ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. 3

ܬܫܒܘܚܬܐ ܘܫܘܪܝܐ ܕܡܣܩܬܐ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܡܣܩܬܐ * * ܡܢ ܡܣܩܬܐ. ܠܐ ܡܬܝܕܥܐ: ܟܕ 1
ܨܒܝܢ ܗܘܘ ܠܡܒܢܐ ܒܝܬܐ ܠܡܪܝܐ ܨܒܐܘܬ. ܘܨܠܘܬܐ ܕܕܘܝܕ ܘܓܠܝܢܐ ܕܡܫܝܚܐ. ܦܬܓ̈ ܠܙ.
ܐܬܕܟܪ ܡܪܝܐ ܠܕܘܝܕ ܘܠܟܠܗ ܡܟܝܟܘܬܗ. * ܕܝܡܐ ܠܡܪܝܐ ܘܢܕܪ ܠܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ: 2

PSAL. CXXVIII.

Ex Psalmis ascensionis. Anonymus. De angustia populi. Quod autē ad nos, innuit nobis victoriam atq; triumphum cu Vers. 13.

Creverunt oppressores mei à pueritia mea, dicat Israel, Creverunt oppressores mei à pueritia mea, at non potuerunt resistere laboribus meis. Supra dorsum meū flagellaverunt flagella, & protraxerunt humiliationem suam. Dñs justus est, ac divellit ramos iniquorum. Agantur retro cuncti osores Sion, Fiant similes fœno tecti, quod quum invaserit ventus, languet atque arescit, Nec implet volā suā messor, neq; complexū suū colligens. Et non dixerūt hi qui prætereunt, Benedictio Dñi super vos, benedixim⁹ vobis in nomine Dñi.

PSAL. CXXIX.

Ex Psalmis ascensionis. Dicitur de Nehemia Sacerdote. Et innuit in eo precationem Martyrum. Vers. 16.

Ex profundo te vocavi Dñe, Et audi vocē meā. Sint aures tuæ intentæ ad vocem precationis meæ. Si peccata observes Dñe, quis valeat subsistere? Nam à te remissio. Speravi in Dño, & expectavit anima mea verbū ejus: Expectavi Dñm à custodia matutina usq; ad custodiā matutinā. Expectet Israel Dñm, quoniā ab eo sunt misericordiæ & plurimum apud eum salutis, Ipseq; redimet Israelem ab omni ejus iniquitate.

PSAL. CXXX.

Davidis. Ex Psalmis ascensionis: Dicitur que de Jesu filio Jozedec Sacerdote magno. Et de humiliate. Vers. 5.

Domine, non superbivit cor meum, nec extulerunt se oculi mei, neq; incessi in rebus me eminentiorib⁹; Sed humiliavi animā meā, ut *puer* ablactatus apud matrem suam, quasi *puer* ablactat⁹ erat apud me anima mea. Expectet Israel Dominum ex nunc & usque in sempiternum.

Laus, & initium gradus.

PSAL. CXXXI.

Ex Psalmis ascensionis. Anonymus cum vellent extruere domum Domino Sabaoth. Et oratio Davidis. Et revelatio Christi. Vers. 37.

Memento Domine Davidis & omnis humilitatis ejus, Qui juravit Domino, vovitque Deo Jacobi,

Verſio VULG. LAT.

1 Canticum graduum. CXXVIII.
SÆpè expugnaverunt me à juventute
2 mea, dicat nunc Iſrael. Sæpè expugnaverunt
me à juventute mea : etenim
3 non potuerunt mihi. Supra dorſum
meũ fabricaverunt peccatores :
4 prolongaverunt iniquitatem ſuã. Dominus
juſtus concidet cervices peccatorũ
5 : Confundantur & convertantur
6 retrorſũ omnes qui oderunt Sion. Fiant
ſicut fœnũ tectorũ : quod priuſquam
7 evellitur, exaruit : De quo non
implevit manũ ſuã qui metit, & ſinũ
8 ſuũ qui manipulos colligit. Et non dixerunt
qui præteribant, Benedictio
Domini ſuper vos : benediximus vobis
in nomine Domini.

1 Canticum graduum. CXXIX.
DE profundis clamavi ad te, Dñe:
2 Dñe, exaudi vocem meam : Fiant
aures tuæ intendentes, in vocem deprecationis
3 meæ. Si iniquitates obſervaveris,
Dñe : Dñe, quis ſuſtinebit ?
4 Quia apud te propitiatio eſt : & propter
legẽ tuã ſuſtinui te, Dñe. Suſtinuit
5 anima mea in verbo ejus : Speravit
6 anima mea in Dño. A cuſtodia
matutina uſq; ad noctẽ, ſperet Iſrael in
7 Dño. Quia apud Dñm miſericordia :
8 & copioſa apud eũ redemptio. Et ipſe
redimet Iſrael, ex omnibus iniquitatibus
ejus.

1 Canticum graduum David. CXXX.
DOmine, non eſt exaltatũ cor meũ:
neq; elati ſunt oculi mei. Neq; ambulavi
in magnis, neq; in mirabilibus
2 ſup me. Si non humiliter ſentiebam:
ſed exaltavi animã meã : Sicut ablactatus
eſt ſuper matre ſua, ita retributio
3 in anima mea. Speret Iſrael in Domino,
ex hoc nunc & uſque in ſeculum.

1 Canticum graduum. CXXXI.
MEmento, Domine, David, et omnis
2 manſuetudinis ejus : Sicut juravit
Domino, votum vovit Deo Jacob:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

1 ᾨδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκη΄.
† ΠΛεονάκις ἐπολέμησάν με ἐκ νεότητός μου, †
2 εἰπάτω δὴ Ἰσραήλ· Πλεονάκις ἐπολέμησάν με
ἐκ νεότητός μου, † καὶ γὰρ οὐκ (α) ἠδυνήθησάν μοι. †
3 Ἐπὶ (β) τὸν νῶτόν μου ἐτέκταινον οἱ ἁμαρτωλοὶ, †
4 ἐμάκρυναν τὴν ἀνομίαν αὐτῶν. † Κύριος δίκαιος
5 συνέκοψεν αὐχένας ἁμαρτωλῶν· † Αἰσχυνθήτωσαν
καὶ ἀποστραφήτωσαν εἰς τὰ ὀπίσω πάντες οἱ μισοῦντες
6 Σιών. † Γενηθήτωσαν ὡσεὶ χόρτος (γ) δωμάτων,
7 † ὃς πρὸ τοῦ ἐκσπασθῆναι ἐξηράνθη· † Οὗ οὐκ
ἐπλήρωσε τὴν χεῖρα αὐτοῦ ὁ θερίζων, † καὶ τὸν κόλπον
8 αὐτοῦ ὁ τὰ δράγματα συλλέγων. † Καὶ οὐκ εἶπαν οἱ
παράγοντες, Εὐλογία κυρίου ἐφ' ὑμᾶς, † εὐλογήκαμεν
ὑμᾶς ἐν ὀνόματι κυρίου. MS. A. (α) ἐδυνήθησάν
(β) * τοῦ νώτου ἐτέκτενον (γ) δομάτων,

1 ᾨδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρκθ΄.
2 † ἘΚ βαθέων ἐκέκραξά (α) σοι κύριε, † Κύριε εἰσάκουσον
τῆς (β) φωνῆς μου † γενηθήτω τὰ ὦτά σου προσέχοντα
3 † εἰς τὴν φωνὴν τῆς δεήσεώς μου. † Ἐὰν ἀνομίας
4 (γ) παρατηρήσῃς κύριε, † κύριε τίς ὑποστήσεται; † Ὅτι
παρὰ σοὶ ὁ ἱλασμός ἐστιν. † ἕνεκεν τοῦ ὀνόματός
σου † ὑπέμεινά σε κύριε, † ὑπέμεινεν ἡ ψυχή μου εἰς
5 τὸν λόγον σου, † Ἤλπισεν ἡ ψυχή μου ἐπὶ τὸν κύριον.
6 † Ἀπὸ φυλακῆς πρωΐας (δ) μέχρι νυκτὸς, † ἐλπισάτω
7 Ἰσραὴλ ἐπὶ τὸν κύριον· † Ὅτι παρὰ τῷ κυρίῳ
8 τὸ (ε) ἔλεος, † καὶ πολλὴ παρ' αὐτῷ λύτρωσις. † Καὶ
αὐτὸς λυτρώσεται τὸν Ἰσραὴλ † ἐκ πασῶν τῶν ἀνομιῶν αὐτοῦ.

MS. A. (α) σε κύριε, (β) προσευχῆς μου (γ) παρατηρήσῃ (δ) καὶ μέχρι νυκτὸς, † ἀπὸ φυλακῆς πρωΐας ἐλπισάτω (ε) ἔλαιός ἐστιν, καὶ πολλὴ

ᾨδὴ τῶν ἀναβαθμῶν (α). ρλ΄.
1 † ΚΥριε οὐχ ὑψώθη (β) ἡ καρδία μου, † οὐδὲ ἐμετεωρίσθησαν
οἱ ὀφθαλμοί μου· † οὐδὲ ἐπορεύθην ἐν μεγάλοις,
† οὐδὲ ἐν θαυμασίοις ὑπὲρ ἐμέ. † Εἰ μὴ (γ) ἐταπεινοφρόνουν,
2 ἀλλὰ ὕψωσα (δ) τὴν ψυχήν μου· † ὡς τὸ
ἀπογεγαλακτισμένον ἐπὶ τὴν μητέρα αὐτοῦ, † ὡς (ε)
ἀνταποδώσεις ἐπὶ τὴν ψυχήν μου. † Ἐλπισάτω Ἰσραὴλ
3 ἐπὶ τὸν κύριον † ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ ἕως τοῦ αἰῶνος.

MS. A. (α) τῷ Δαυίδ. (β) μου ἡ καρδία, (γ) ἐταπεινοφρόνουν (δ) τὴν καρδίαν (ε) ἀνταπόδοσις

1 ᾨδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρλα΄.
† ΜΝήσθητι κύριε τοῦ Δαυὶδ, † καὶ πάσης τῆς
2 ( ) πραότητος αὐτοῦ· † Ὡς ὤμοσε τῷ κυρίῳ, ηὔξατο
τῷ θεῷ Ἰακώβ· MS. A. (ʼ) πραΰτητος

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Canticum graduum. CXXVIII. 1
SÆpe (a) impugnaverunt me à
juventute mea, [†] dicat nũc Iſrael:
2 Sæpe impugnaverunt me à juventute 2
mea: [a] etenim (b) nõ potuerunt
mihi. 3 Supra dorſum meum (c) [b] 3
fabricaverunt peccatores : (d) prolongaverunt
iniquitatem ſuam. 4
Dominus juſtus (e) concidit cervices 4
peccatorum: Confundantur, & (f) avertantur 5
retrorſum omnes, qui oderunt Sion. 5 Fiant ſicut fœnum tectorum 6
: quod priuſquã (g) evellatur,
exaruit. 6 De quo non (h) implevit 7
manum ſuam, qui metit, & ſinum
ſuũ, qui manipulos colligit. 7 Et nõ 8
dixerunt, qui præteribant; Benedictio
Domini ſuper vos, (i) benediximus
vos in nomine Domini.

Canticum graduũ. CXXIX. 1
1 DE profundis clamavi (a) tibi,
Domine: Domine, exaudi vocem me- 2
am. 2 Fiant aures tuæ intendentes
in vocem deprecationis meæ. 3 Si 3
iniquitates obſervaveris, Domine;
Domine, quis ſuſtinebit? 4 Quoni- 4
am apud te propitiatio eſt : propter
(b) nomen tuum ſuſtinui te, Domine.
5 Suſtinuit anima mea in (c) [a]
verbum tuum. Speravit anima mea 5
in Dominum. 6 [b] A cuſtodia ma- 6
tutina uſque ad noctem, [c] ſperet
Iſrael in Dominum. 7 Quoniam a- 7
pud Dominũ miſericordia, & multa
apud illum redemptio. Et ipſe 8
redimet Iſrael ex omnibus iniquitatibus
ejus.

Canticum graduum. CXXX. 1
1 DOmine, non eſt exaltum cor
meum : neque [a] in (a) altum elati
ſunt oculi mei. 2 Neque ambulavi
in (b) magnis, (c) neque in
[b] mirabilibus ſuper me. 3 Si (d) 2
non [c] humiliter ſentiebam, ſed
exaltavi animam meam. 4 Sicut
ablactatus ſuper matrem ſuam; ſic
(e) retribues in animam meam. 5
Speret Iſrael in Domino ex hoc 3
nunc, & uſq; in ſeculum.

MS. Æth. Poc. Gloria Patri, & Filio, & Spiritui ſancto, omni tempore, nunc, & ſemper, & in ſecula ſeculorum Amen.

Canticum graduũ. CXXXI. 1
1 MEmento, Domine, David, &
omnis (a) manſuetudinis ejus. 2 (b) [a] Sicut juravit Domino: votum vovit Deo Jacob. 2

Verſio ÆTHIOPICA.

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡
፻፳፰ ዘልፈ፡ይፀብኡኒ፡እምንእስየ፡፡ ይብ 1
ል፡እስራኤል፡ 2 ዘልፈ፡ይፀብኡኒ፡እምንእ
ስየ፡፡ ወባሕቱ፡ ኢክህሉኒ፡፡=፡ ዲበ፡ዘባን 3
የ፡ዘበጡ፡ ኃጥአን፡፡ ወአስተርሐቅዋ፡ ለኃ
ጢአቶሙ፡፡=፡ እግዚአብሔር፡ ጻድቅ፡ ሰ 4
በረ፡ሐየፊሆሙ፡ለኃጥአን፡፡ ይትኃፈሩ፡ወይ
ግብኡ፡ድኅሬሆሙ፡፡ ኵሎሙ፡እለ፡ይጸልእ
ዋ፡ለጽዮን፡፡=፡ ወይኩኑ፡ከመ፡ ሣዕረ፡አን 5
ሕስት፡፡ ዘይየብስ፡ ዘእንበለ፡ ይምሐው
ዎ፡፡=፡ ወኢይመልእ፡እዴሁ፡ለዘ፡የዐፅድ፡፡ 6
ወኢሕፅኖ፡ ለዘ፡ ያስተጋብእ፡ ከለሰስቲ
ሁ፡፡=፡ ወኢይቤሉ፡ለለ፡የኃልፉ፡በረከተ፡እ 7
ግዚአብሔር፡ምስሌክሙ፡፡ ባረክናክሙ፡በስመ፡
እግዚአብሔር፡፡=፡

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡
፻፳፱ እማዕምቅ፡ ጸዋዕኩከ፡ እግዚኦ፡፡ 1
እግዚኦ፡ ስምዓኒ፡ ቃልየ፡፡=፡ ወይኩን፡ እ 2
ዝንከ፡ ዘያጸምዕ፡ቃለ፡ስእለትየ፡፡=፡ እመ 3
ሰ፡ኃጢአተነ፡ ትትዐቀብ፡፡ እግዚኦ፡እግዚ
ኦ፡ መኑ፡ ይቀውም፡፡=፡ እስመ፡ እምኀቤ 4
ከ፡ውእቱ፡ሣህል፡፡ በእንተ፡ስምከ፡ተሰፈው
ኩከ፡እግዚኦ፡፡=፡ ተዐገሠት፡ነፍስየ፡በሕ 5
ግከ፡፡ ተወከለት፡ ነፍስየ፡ በእግዚአብሔ
ር፡፡=፡ እምሰዓተ፡ጽባሕ፡እስከ፡ሌሊት፡፡ 6
እምሰዓተ፡ጽባሕ፡ ተወከለ፡ እስራኤል፡ በእ
ግዚአብሔር፡፡=፡ እስመ፡ እምኀበ፡ እግዚ 7
አብሔር፡ሣህል፡፡ ወብዙኅ፡ ያድኅኖ፡ በኀ
ቤሁ፡፡ ወውእቱ፡ ያድኅኖ፡ ለእስራኤል፡
እምኵሉ፡ኃጢአቱ፡፡=፡

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡
፻፴ እግዚኦ፡ ኢይትዐበየኒ፡ ልብየ፡፡ ወኢ 1
ይዜኀዐ፡ አዕይንትየ፡፡=፡ ወኢሖርኩ፡ መ 2
ስለ፡ዐቢይት፡፡ ወኢመስለ፡ እለ፡ይከብሩ፡
እምኔየ፡፡=፡ ዘእንበለ፡ ዘአትሐትኩ፡ርእ 3
ስየ፡፡ወከለሕኩ፡ በቃልየ፡ 4 ከመ፡ ዘአኅደ
ገዎ፡ ጥበ፡እሙ፡፡=፡ ከመ፡ ትእስያ፡ ለነፍ 4
ስየ፡፡=፡ ተወከለ፡ እስራኤል፡ በእግዚአብ 5
ሔር፡፡ እምይእዜ፡ ወእስከ፡ለዓለም፡፡=፡
ስብሐት፡ ለአብ፡ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ ቅዱስ፡
ኵሉ፡ጊዜ፡ይእዜኒ፡ወዘልፈኒ፡ወለዓለመ፡
ዓለም፡ አሜን፡፡

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡
፻፴፩ ተዘከሮ፡እግዚኦ፡ ለዳዊት፡ ወለኵ 1
ሉ፡የዋሀቱ፡፡=፡ ዘከመ፡መሐለ፡ ለእግዚአ 2
ብሔር፡ ወበፅአ፡ለአምላከ፡ያዕቆብ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. cxxviii. [†] dicat Iſrael: [a] veruntamen non [b] flagellaverunt peccatores: PSAL. cxxix. [a] lege tuâ. [b] Ab hora matutina [c] ab hora matutina ſperet PSAL. cxxx. [a] intendi oculos meos. [b] eminentioribus ſupra [c] meipſum humiliavi, & clamavi voce meâ. Sicut qui dimiſit ubera matris ſuæ; Sic PSAL. cxxxi. [a] Qui ſic

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 المزمور المايه والثامن والعشرون * وعدده يج استيخن *
2 مرارا كثيرا حاربوني منذ صباي يقول اسرايل * مرارا كثيرا حاربوني منذ صباي وانهم لم
3 4 يقدروا علي * وعلي ظهري جلدني الخطاه * واطالوا اثمهم * الرب عادل هو يقطع اعناق
5 6 الخاطيين * فليخزوا وليرتدوا علي عقبهم كل مبغضي صهيون * وليكونوا مثل حشيش الاسطحة
7 الذي يجف قبل قلعه * الذي لم يملا الحاصد منه يده ولم يملا جامع الاغمار منه حضنه *
8 ولم يقل العابرون ان بركة الرب عليكم * باركناكم باسم الرب * الليلويا *
1 المزمور المايه والتاسع والعشرون * وهو ي * استيخن *
2 من الاعماق صرخت اليك * يا رب يا رب اسمع صوتي ولتكن اذناك مصغيتين الي صوت طلبتي يا
3 4 رب * ان واخذت بالخطايا فمن يستطيع ان يثبت قدامك * لان المغفرة هي من عندك لاجل
5 6 اسمك ٥ يا رب رجوتك * لزمت نفسي ناموسك * نفسي توكلت علي الرب * من حين الصباح الي
7 المساء ٧ فليتوكل اسرايل علي الرب من حين الصباح الي المساء لان الرحمة من عند الرب وعظم
8 هو خلاصه * وهو ينقذ اسرايل من جميع احزانه * الليلويا * المزمور المايه والثلثون *
1 * وهو ح * استيخات * يا رب لم يستعل قلبي ولم تستعل عيناي ولم امش في عظايم *
2 ولا في عجايب اكثر مني * وان كنت لم اتواضع بل رفعت صوتي مثل المفطوم من امه *
3 مثل المجازاة علي نفسي * فليتوكل اسرايل علي الرب * منذ الان والي الابد * الليلويا *
1 المزمور المايه واحد وثلاثون * وهو * لب * استيخن *
2 اذكر يا رب داود وجميع دعته * كما اقسم للرب ونذر لاله يعقوب *

PSAL. CXXVIII.
Et numerus verſuum 13. 1

VIcibus multis bellârunt mecum à pueritia mea: dicat Iſrael, Vicibus multis 2
bellârunt mecum à pueritia mea, attamen non prævaluerunt in me. Et ſuper ter- 3
gum meum flagellârunt me peccatores, & prolongârunt iniquitatem ſuam. Dominus 4
juſtus eſt: ipſe truncabit colla peccatorum. Igitur pudefiant & retroagantur ſuper 5
calcaneos ſuos cuncti oſores Sionis. Sint- 6
que velut herba tectorum, quæ areſcit antequã evellatur, Quâ non implevit meſ- 7
ſor manum ſuam, nec implevit collector manipulorum ipsâ ſinum ſuum : Neq; dixerunt
prætereuntes, Benedictio Domini 8
ſuper vos, benediximus vobis in nomine Domini. Alleluja.

PSAL. CXXIX.
Verſus 10. 1

DE profundis clamavi ad te. O Domine, O Domine audi vocem meam : 2
ſintque aures tuæ intentæ voci precis meæ O Domine. Si ſuccenſeas peccatis, quis po- 3
terit conſiſtere coram te ? Nam indulgen- 4
tia abs te eſt : propter nomen tuum. O 5
Domine, te ſperavi. Sequuta eſt anima mea legem tuam: Anima mea confiſa eſt in 6
Domino, à tempore matutino uſque ad vеſperas. Confidat Iſrael in Domino à 7
tempore matutino uſque ad veſperas: quoniam miſericordia à conſpectu Domini, et
maxima eſt ſalus ejus. Et ipſe redimet Iſ- 8
rael ex omnibus mœroribus ejus. Alleluja.

PSAL. CXXX.
Verſus 8. 1

O Domine, non magnificavit ſe cor meum, neq; extulerunt ſe oculi mei,
neque ambulavi in magnificentiis, neque in mirabilioribus me; Et niſi me humilia- 2
vi, imo extuli vocem meã ut ablactatus à matre ſua, par ſit retributio in animam
meam. Confidat Iſrael in Domino ex nunc 3
& uſque in ſeculum. Alleluja.

PSAL. CXXXI.
Verſus 32. 1

MEmento Domine David & omnis manſuetudinis ejus, Sicuti juravit 2
Domino, et vovit Deo Jacob

תהלים: קלג קלד

.meorum stratorum lectum super ascendero si : meæ domus *tentorium* in introiero Si

3 אם־אבא באהל ביתי אם־אעלה על־ערש יצועי :

inveniam Donec .dormitationem meis palpebris : meis oculis somnum dedero Si

4 5 אם־אתן שנת לעיני לעפעפי תנומה : עד־אמצא

:Ephrathah in eam audivimus Ecce .Jahacob forti habitacula : Domino locum

6 מקום ליהוה משכנות לאביר יעקב : הנה שמענוה באפרתה

nos incurvabimus :ej⁹ tabernacula in Introibimus .sylvæ campis in eam invenimus

7 מצאנוה בשדי־יער : נבואה למשכנותיו נשתחוה

.tuæ fortitudinis arca & ,tu : tuā requiem ad Domine Surge .ej⁹ pedum scabello

8 להדם רגליו : קומה יהוה למנוחתך אתה וארון עזך :

David Propter .exultent tui sancti & : justitiam induant tui Sacerdotes

9 10 כהניך ילבשו־צדק וחסידיך ירננו : בעבור דוד

,veritatem David ipsi Dominus Juravit .tui *uncti facies* avertas ne ,tuū servum

11 עבדך אל־תשב פני משיחך : נשבע־יהוה לדוד אמת

custodierint Si .*tibi solio in* ponam ,tui ventris fructu de , ea ab avertetur non

12 לא־ישוב ממנה מפרי בטנך אשית לכסא־לך : אם־ישמרו

:*perpetuum* in usque eorū filii etiam ,*eos* docebo quæ meū testimoniū &,meū pactū tui filii

בניך בריתי ועדתי זו אלמדם גם־בניהם עדי־עד

.sibi habitaculū *in* desideravit :Sijon *in* Dominus elegit Quoniam .*tibi solio in* sedebūt

13 ישבו לכסא־לך : כי־בחר יהוה בציון אוה למושב לו :

ejus Escæ .eā desideravi quoniam ,habitabo hic :*perpetuum* in usque mea requies Hæc

14 15 זאת־מנוחתי עדי־עד פה אשב כי אותיה : צידה

induam ejus sacerdotes Et .pane saturabo ejus *egenos* : benedicam benedicendo

16 ברך אברך אביוניה אשביע לחם : וכהניה אלביש

: David cornu faciam *germinare* Ibi .exultabunt exultando ejus *pii* & : salutem

17 ישע וחסידיה רנן ירננו : שם אצמיח קרן לדוד

eum super & : pudorem induam ejus Inimicos .meo *uncto* lucernam *disposui*

18 ערכתי נר למשיחי : אויביו אלביש בשת ועליו

.ejus corona florebit

יציץ נזרו :

PSAL. CXXXIII. קלג

etiā fratres habitare, jocundū quàm & bonum quàm Ecce.David ipsi graduum Canticum

1 שיר המעלות לדוד הנה מה־טוב ומה־נעים שבת אחים גם־

:Aharon barbam ,barbam super descendens ,caput super optimum oleum Sicut .pariter

2 יחד : כשמן הטוב על־הראש ירד על־הזקן זקן־אהרן

mōtes super *descendens* qui Chermon ros Sicut .ej⁹ vestimentorū os super *descendens* quod

3 שירד על־פי מדותיו : כטל חרמון שירד על־הררי

.seculum in usque *vitas* ,benedictionem Dominus præcepit ibi quoniam : Sijon

ציון כי שם צוה יהוה את־הברכה חיים עד־העולם :

PSAL. CXXXIV. קלד

stantes : Domini servi omnes Domino Benedicite Ecce .graduum Canticum

1 שיר המעלות הנה ברכו את־יהוה כל־עבדי יהוה העמדים

benedicite & : sanctitatem vestras manus Levate .noctibus in Domini domo in

2 בבית־יהוה בלילות : שאו־ידכם קדש וברכו

.terram & cœlum *faciens* : Sijon ex Dominus tibi Benedicat .Domino

3 את־יהוה : יברכך יהוה מציון עשה שמים וארץ :

תרגום TARGUM.

3 אין אעול על אתתי אין אסיק על דרגש
4 מצעי : אין אתן דומכא לעיני לתימורי
5 ניומתא : עד דאשכח אתר למבני בית מקדשא
6 דיי משכניא לתקיפיא דיעקב : הא שמענא
יתה באפרת אשכחנוהא בחקל חורשי לבנן
7 אתר דצליאו אבהת עלמא : נעול למשכנוי
8 נסגוד לכבשא דרגלוי : קום יי שרי בבית
9 מישרוי ניחך את וארון די ביה אוריתך : כהניך
ילבשון לבושין דזכו ולואי חסידיך ישבחון
10 על קורבניא : מטול זכותיה דדוד עבדך במעל
ארונא במצע תרעיא לא תתיב אפי שלמה
11 משיחך : קים יי לדוד בקושטא לא יתוב מנה
מן ולדא דמעך אשוי מלך על כורסי דילך :
12 אין נטרין בנך קימי וסהדותי דנן דאלפנון אף
13 בניהון לעלמין יתבון על כורסי דילך : ארום
14 אתרעי יי בציון רגג יתה למותב די ליה : דא
ניח שכנתי עד עלמא כא אתיב ארום רגגתה :
15 וודה מברכא אברך וחשיכהא יסבעון לחמא :
16 וכהנהא אלביש לבושי פורקן וחסידהא
17 משבחא ישבחון : תמן אצמח מלך יקיר לבית
18 דוד סדרית שרגא למשיחי : בעלי דבבוי
אלביש לבושין דבהתא ועלוי יניץ כלילה :

קלג

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא הא כמא
טב וכמא בסים למתב ציון וירושלם כתרין
2 אחין כרם כחדא : כמשח טב דמתרק על
רישא נחת על דקנא דקניה דאהרן דנחית
3 על אמרא דלבושוי : היך כטלא דחרמון
דנחת על טורי דציון ארום תמן פקיד יי ית
ברכתא חיי עד עלמא :

קלד

1 שירא דאתאמר על מסוקין דתהומא הא
בריכו ית יי כל עבדיא דיי דקימין על בית
מטרת בית מקדשא דיי ומשבחין בלילון :
2 טולו ידיכון קודשא כהניא על דוכן קודשא
ובריכו ית יי : 3 יברכנך יי מציון דעבד שמיא וארעא :

PARAPH. CHALD. Vers. L

Si introiero *ad uxorem meam*, si ascenden
sup lectū strati mei: Si dedero somnū oc
lis meis, palpebris meis dormitationē: D
nec inveniā locū *ædificandæ* domui sanct
arii Dñi, tabernaculum fortissimo Jacob
Ecce audivimus eam in Ephrata, invenim
eam in campo sylvæ Libani, *loco ubi ora*
runt patres prisci. Intrabimus in taberna
la ejus, adorabim⁹ scabellū pedū ej⁹. Su
ge Domine, pone in domo hospitii ej⁹ qui
tem tuā, tu et arca in qua est Lex tua. S
cerdotes tui induant vestes justitiæ, et Le
tæ pii tui laudes dicant propter oblation
Propter merita Davidis servi tui, *cum* i
gressa fuerit arca in mediū portarū, ne av
tas faciē *Salomonis* christi tui. Juravit D
Davidi in veritate, non avertetur ab ea: D
fructu ventris tui ponā regē sup sedē tua
Si custodierint filii tui pactū m eū, & te
ficationes meas istas quas docebo eos, etia
filii eorū usque in *secula* sedebunt supe
dem tuam. Quoniam elegit Dominus Si
desideravit eam pro habitatione sua. H
requies majestatis meæ usq; in seculū : h
habitabo quoniam desideravi eam. Vi
ejus benedicens benedicā, & pauperes e
saturabuntur pane. Et sacerdotes ej⁹ ind
vestib⁹ redemptionis, et pii ejus laudan
laudabunt. Ibi faciam germinare regē gl
riosum in domo Davidis : ordinavi luce
christo meo. Inimicos ejus induā vesti
confusionis: at sup ipsū florebit coron

Canticum quod dictum est super grad
abyssi.

PSAL. CXXXIII.

ECce quàm bonum et quam jocundū
bitare Sion et Jerusalem sicut duo fr
etiam in unum. Sicut unguentum bon
effusum sup caput descendit sup barbā
bam [*inquam*] Aharon, & descendit s
fimbriam vestimentorū ejus. Sicut ros H
mon qui descendit sup montes Sion, qu
illic præcepit Dominus benedictione
tam usque in æternum.

Canticum quod dictum est super gra
abyssi.

PSAL. CXXXIV.

ECce benedicite Dñm omnes servi D
qui statis in vigiliis dom⁹ sanctuarii D
laudatis per noctes. Levate manus v
[*cum*] *sanctitate* Sacerdotes ad sugg
sanctitatis, & benedicite Dño. Bene
tibi Dñs ex Sion, qui fecit cœlū & te

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܕܠܐ ܐܥܘܠ ܠܡܫܟܢܐ ܕܒܝܬܝ. ܘܠܐ ܐܣܩ ܥܠ ܥܪܣܐ ܕܡܫܟܒܝ : * ܘܠܐ ܐܬܠ ܫܢܬܐ
4 5 ܠܥܝܢܝ. ܘܠܐ ܢܘܡܐ ܠܓܒܝܢܝ : * ܥܕܡܐ ܕܐܫܟܚ ܐܬܪܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܡܫܟܢܐ ܠܐܠܗܗ
6 7 ܕܝܥܩܘܒ :* ܗܐ ܫܡܥܢܝܗ ܒܐܦܪܬܐ. ܘܐܫܟܚܢܝܗ ܒܚܩܠܐ ܕܥܒܐ. * ܢܥܘܠ ܠܡܫܟܢܘܗܝ ܘܢܣܓܘܕ
8 9 ܠܟܘܒܫܐ ܕܪ̈ܓܠܘܗܝ : * ܩܘܡ ܡܪܝܐ ܠܢܝܚܟ. ܐܢܬ ܘܐܪܘܢܐ ܕܥܘܫܢܟ : * ܟܗܢܝܟ
10 ܢܠܒܫܘܢ ܙܕܝܩܘܬܐ ܘܙܕܝܩܝܟ ܢܫܒܚܘܢ. * ܡܛܠ ܕܘܝܕ ܥܒܕܟ ܠܐ ܬܗܦܘܟ ܐܦܘܗܝ ܕܡܫܝܚܟ :
11 * ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܠܕܘܝܕ ܒܩܘܫܬܐ ܘܠܐ ܢܗܦܘܟ ܡܢܗ. ܕܡܢ ܦܐܪܐ ܕܟܪܣܟ ܐܘܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܟ :
12 * ܐܢ ܢܛܪܘܢ ܒܢܝܟ ܩܝܡܝ. ܘܣܗܕܘܬܝ ܗܕܐ ܕܐܠܦ ܐܢܘܢ : ܘܐܦ ܗܢܘܢ ܒܢܝܗܘܢ ܢܬܒܘܢ
13 ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ ܥܠ ܟܘܪܣܝܟ. * ܡܛܠ ܕܓܒܐ ܡܪܝܐ ܒܨܗܝܘܢ : ܘܪܓܒܗ ܠܗ ܠܒܝܬ
14 15 ܡܥܡܪܐ. * ܗܕܐ ܗܝ ܢܝܚܬܝ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ : ܗܪܟܐ ܐܬܒ ܡܛܠ ܕܪ̈ܓܝܬܗ. * ܘܨܝܕܗ
16 ܐܒܪܟ : ܘܡܣܟܢܘܗ ܐܣܒܥ ܠܚܡܐ. * ܘܟܗܢܝܗ ܐܠܒܫ ܦܘܪܩܢܐ ܘܙܕܝܩܘܗ
17 18 ܢܫܒܚܘܢ : * ܬܡܢ ܐܕܢܚ ܩܪܢܐ ܠܕܘܝܕ. ܘܐܛܝܒ ܫܪܓܐ ܠܡܫܝܚܗ : * ܘܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ
ܐܠܒܫ ܒܗܬܬܐ. ܘܥܠܘܗܝ ܢܦܪܥ ܟܠܝܠܗ. * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܠܒ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܡܢ ܡܣܩܬܐ : ܡܬܐܡܪ ܥܠ ܡܘܫܐ ܘܥܠ ܐܗܪܘܢ. ܕܡܫܪܝܢ ܗܘܘ ܒܡܫܟܢܐ
ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܘܥܠ ܥܡܐ ܡܫܡܠܝܐ. ܦܬܓ̈ܡ ܚ. ܗܐ ܡܢܐ ܫܦܝܪ ܘܡܢܐ ܒܣܝܡ. ܐܡܬܝ
2 ܕܝܬܒܝܢ ܐܚܐ ܐܟܚܕܐ : * ܐܝܟ ܡܫܚܐ ܕܢܚܬ ܥܠ ܪܝܫܐ ܘܥܠ ܕܩܢܐ. ܕܩܢܗ ܕܐܗܪܘܢ ܕܢܚܬ ܥܠ
3 ܦܘܡܐ ܕܟܘܬܝܢܗ : * ܐܝܟ ܛܠܐ ܕܚܪܡܘܢ ܕܢܚܬ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܡܛܠ ܕܬܡܢ ܦܩܕ
ܡܪܝܐ ܒܘܪܟܬܐ ܘܚܝܐ ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܫܠܡ ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܠܓ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܟܗܢܐ ܕܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܒܬܫܡܫܬܗ ܕܡܪܝܐ ܒܠܠܝܐ. ܘܪܘܚܢܐܝܬ
ܡܠܦܢܘܬܐ ܕܓܡܝܪܐ. ܦܬܓ̈ܡ ܚ. ܒܪܟܘ ܠܡܪܝܐ ܟܠܟܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ : ܕܩܝܡܝܢ
2 ܘܩܝܡܝܢ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܒܡܫܡܫܢܘܬܐ : * ܐܪܝܡܘ ܐܝܕܝܟܘܢ ܒܩܘܕܫܐ ܘܒܪܟܘ ܠܡܪܝܐ.
3 * ܢܒܪܟܟ ܡܪܝܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ : ܗܘ ܕܥܒܕ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ.

Dicens; Non ingrediar tabernaculū do
meæ, neq; conscendā stratū lecti mei, N
concedā somnū oculis meis, neq; dorm
nē superciliis meis, Donec inveniā locū
mino & habitaculū Deo Jacobi. Ecce a
vimus hoc in Ephrata, & invenimus i
agris. Adibimus habitationē ej⁹ & ado
mus scabellū pedū ejus. Surge Dñe ad
tuam, tu & arca fortitudinis tuæ. Sac
tes tui induant æquitatē, & justi tui glo
Propter David servū tuū non avertas fa
uncti tui. Juravit Dñs Davidi in verit
non recedet ab ea, *inquiens*, De fructib
tris tui sedere faciam super soliū tuū. S
stodierint filii tui fœdus meū & testim
hoc quod docebo eos, etiam de ipsor
sedebūt in seculū seculorū sup soliū tuū
oblectatus est Dñs Sione, & elegit ea
domiciliū. Hæc est requies mea in se
seculorū : hîc sedebo, quoniam expetivi
Et venationibus ejus benedicam, ejusq
peres satiabo pane. Pontifices ejus in
salute, & justos ipsius gloriā. Ibi ori
cornu Davidi, & accendā lucernam C
ejus. Hostes autē ej⁹ induam confusio
erga eum multiplicabitur sanctitas mea

PSAL. CXXXII.

Davidis. Ex Psalmis ascensus. Di
Mose & de Aharone degentibus in
naculo in domo Domini. Et innu
populum perfectum. Vers. 8.

QUàm bonum & quàm pulchrū est
bus cùm habitaverint simul : Sic
guentū q defluit super caput & super
barbam *inquam* Aharonis; quod deflu
os vestis ejus : Sicut ros Hermon, q
dit super montē Sion: nam ibi manda
benedictionem & vitam usq; in semp

PSAL. CXXXIII.

Davidis. De Sacerdotibus quos con
ad incumbendum ministerio Domi
bus, Spiritualiter autem documen
tæ. Vers. 8.

BEnedicite Dominum omnes servi D
commoramini in domo Domini no
Levate manus vestras ad sanctitatem,
nedicite Domino. Benedicat tibi D
è Sion, qui condidit cœlum ac terra

Verſio VULG. LAT.

3 Si introiero in tabernaculum domûs
meæ, ſi aſcendero in lectũ ſtrati mei:
4 Si dedero ſomnũ oculis meis, & palpebris
5 meis dormitationẽ, Et requiẽ
temporib⁹ meis: donec inveniã locum
6 Dño, tabernaculum Deo Jacob. Ecce
audivimus eã in Ephrata: invenim⁹ eã
7 in campis ſylvæ. Introibimus in tabernaculum
ejus: adorabimus in loco,
8 ubi ſteterunt pedes ejus. Surge, Domine,
in requiem tuã, tu & arca ſanctificationis
9 tuæ. Sacerdotes tui induantur
10 juſtitiã: & Sancti tui exultent. Propter
David ſervum tuum, non avertas faciem
11 Chriſti tui. Juravit Domin⁹ David veritatem,
& non fruſtrabitur eam; De
fructu ventris tui ponam ſuper ſedem
12 tuam. Si cuſtodierint filii tui teſtamentum
meũ, & teſtimonia mea hæc, quæ
docebo eos: Et filii eorum uſq; in ſeculum,
13 ſedebunt ſuper ſedẽ tuã. Quoniam
elegit Domin⁹ Sion: elegit eam
14 in habitationẽ ſibi. Hæc requies mea
in ſeculum ſeculi: hîc habitabo quoniam
15 elegi eam. Viduam ejus benedicens
benedicam: pauperes ejus ſaturabo
16 panibus. Sacerdotes ejus induã ſalutari:
& Sancti ejus exultatione exultabunt.
17 Illuc producã cornu David, pa-
18 ravi lucernã Chriſto meo. Inimicos ejus
induam confuſione: ſuper ipſum
autẽ efflorebit ſanctificatio mea.

Canticũ graduũ David. CXXXII.

1 Ecce quàm bonũ, & quã jucundũ,
2 habitare fratres in unũ: Sicut unguentum
in capite, quòd deſcendit in barbã,
barbã Aaron: Quod deſcendit in
3 oram veſtimenti ej⁹: Sicut ros Hermõ,
qui deſcendit in montẽ Sion. Quoniam
illic mandavit Domin⁹ benedictionem,
& vitã uſq; in ſeculum.

Canticum graduum. CXXXIII.

1 Ecce nunc benedicite Dominum,
omnes ſervi Domini: Qui ſtatis in domo
Domini, in atriis domûs Dei no-
2 ſtri, In noctibus extollite manus veſtras
in Sancta, & benedicite Dominũ.
3 Benedicat te Dominus ex Sion, qui fecit
cœlum & terram.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

3 †(*) Εἰ εἰσελεύσομαι εἰς σκήνωμα οἴκου μου, † εἰ ἀναβήσομαι
4 ἐπὶ κλίνης στρωμνῆς μου· † Εἰ δώσω ὕπνον τοῖς
ὀφθαλμοῖς μου, † καὶ τοῖς βλεφάροις μου νυσταγμὸν,
5 † Καὶ ἀνάπαυσιν τοῖς κροτάφοις μου· † ἕως οὗ εὕρω
τόπον τῷ κυρίῳ, † σκήνωμα τῷ Θεῷ Ἰακώβ.
6 † Ἰδοὺ ἠκούσαμεν αὐτὴν (α) ἐν Ἐφραθᾷ, † εὕρομεν αὐτὴν
7 ἐν τοῖς πεδίοις τοῦ δρυμοῦ. † (*) Εἰσελευσόμεθα
εἰς τὰ σκηνώματα αὐτοῦ· † προσκυνήσομεν (β) εἰς
8 τὸν τόπον οὗ ἔστησαν οἱ πόδες αὐτοῦ. † Ἀνάστηθι κύριε εἰς
τὴν ἀνάπαυσίν σου, † σὺ καὶ ἡ κιβωτὸς τοῦ ἁγιάσματός
9 σου. † Οἱ ἱερεῖς σου ἐνδύσονται δικαιοσύνην, † καὶ οἱ ὅσιοί
10 σου (γ) ἀγαλλιάσονται. † Ἕνεκεν Δαυὶδ τοῦ δούλου
σου, † μὴ ἀποστρέψῃς τὸ πρόσωπον τοῦ χριστοῦ σου. †
11 Ὤμοσε κύριος τῷ Δαυὶδ ἀλήθειαν, † καὶ οὐ μὴ ἀθετήσει (δ) αὐτήν, † Ἐκ καρποῦ τῆς κοιλίας σου, θήσομαι
12 ἐπὶ (ε) τοῦ θρόνου σου. † Ἐὰν φυλάξωνται (ζ)
οἱ υἱοί σου τὴν διαθήκην μου, † καὶ τὰ μαρτύριά μου
ταῦτα ἃ διδάξω αὐτούς, † καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν (η) ἕως τοῦ
13 αἰῶνος καθιοῦνται ἐπὶ τοῦ θρόνου σου. † Ὅτι ἐξελέξατο
κύριος τὴν Σιών, † ᾑρετίσατο αὐτὴν εἰς κατοι-
14 κίαν ἑαυτῷ. † Αὕτη ἡ κατάπαυσίς μου εἰς αἰῶνα αἰῶνος,
† ὧδε κατοικήσω ὅτι ᾑρετισάμην αὐτήν. † (θ)
15 Τὴν θήραν αὐτῆς εὐλογῶν εὐλογήσω, † τοὺς πτω-
16 χοὺς αὐτῆς χορτάσω ἄρτων. † Τοὺς ἱερεῖς αὐτῆς ἐνδύσω
σωτηρίαν, † καὶ οἱ ὅσιοι αὐτῆς ἀγαλλιάσει ἀγαλ-
17 λιάσονται. † Ἐκεῖ ἐξανατελῶ κέρας τῷ Δαυίδ, †
18 (ι) ἡτοίμασα λύχνον τῷ χριστῷ μου. † Τοὺς ἐχθροὺς
αὐτοῦ ἐνδύσω αἰσχύνην, † ἐπὶ δὲ αὐτὸν ἐξανθήσει τὸ
ἁγίασμά μου.

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν (α). ρλβ΄.

1 † Ἰδοὺ δὴ τί καλὸν, ἢ τί τερπνὸν, † ἀλλ᾽ ἢ τὸ κατ-
2 οικεῖν ἀδελφοὺς ἐπὶ τὸ αὐτό; † Ὡς μύρον (β) ἐπὶ κε-
φαλῆς τὸ καταβαῖνον ἐπὶ πώγωνα, † τὸν πώγωνα
τὸν Ἀαρών, † τὸ καταβαῖνον ἐπὶ τὴν ᾤαν τοῦ ἐνδύ-
3 ματος αὐτοῦ. † Ὡς δρόσος Ἀερμὼν ἡ καταβαίνου-
σα ἐπὶ τὰ ὄρη Σιών· † ὅτι ἐκεῖ ἐνετείλατο κύριος
τὴν (γ) εὐλογίαν, † ζωὴν ἕως τοῦ αἰῶνος.

Ὠδὴ τῶν ἀναβαθμῶν. ρλγ΄.

1 † Ἰδοὺ δὴ εὐλογεῖτε τὸν κύριον, † πάντες οἱ δοῦλοι κυ-
ρίου, † οἱ ἑστῶτες ἐν οἴκῳ κυρίου, † ἐν αὐλαῖς οἴκου
2 θεοῦ ἡμῶν. † Ἐν ταῖς νυξὶν ἐπάρατε τὰς χεῖρας ὑμῶν
3 εἰς τὰ ἅγια, † καὶ εὐλογεῖτε τὸν κύριον. † Εὐλογήσαι σε
κύριος ἐκ Σιών, † ὁ ποιήσας τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν.

MS.A. (*) Ἡ (α) ἐν Εὐφραθᾷ, εὕρομεν αὐτὴν ἐν
*τοῖς δάσεσι τοῦ (*) Εἰσελευσόμεθα (β) εἰς τόπον (γ) ἀ-
γαλλιάσει ἀγαλλιάσονται. (δ) αὐτοῦ, (ε) τοῦ θρόνου (ζ) υἱοί
σου (η) καθιοῦνται ἕως τοῦ αἰῶνος ἐπὶ τοῦ θρόνου σου. Ὅτι ἐκεῖ ἐξελέξατο (θ) Τὴν χήραν (ι) ἡτοίμασας
τῷ χριστῷ μου λύχνον. MS.A. ρλβ΄. (α) τῷ Δαυίδ. (β) ἐπὶ κεφαλὴν (γ) εὐλογίαν αὐτοῦ, καὶ ζωὴν

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

3 [b] Si introiero in tabernaculum domûs meæ: [c] ſi aſcendero ſuper lectum ſtrati mei. 4 [d] Si dedero ſomnum oculis meis, [e] & palpebris meis dormitationem, 5 [f] Et (c) requiẽ temporibus meis: donec inveniam locum Domino: tabernaculum Deo Jacob. 6 Ecce audivimus eam in Ephratha: invenimus eam in (d) campis ſylvæ. 7 (e) Introiemus in [g] tabernacula ejus: adoremus in loco, ubi ſteterunt pedes [h] ejus. 8 Surge, Domine, in requiem tuam, tu, & arca (f) ſanctificationis tuæ. 9 Sacerdotes tui (g) induentur juſtitiam: & Sancti tui [i] exultabunt. 10 Propter David ſervum tuum, non (h) avertas faciẽ Chriſti tui. 11 Juravit Dominus David [k] veritatem, & non (i) fruſtrabitur eam; De fructu ventris tui ponã ſuper (k) ſedẽ tuã. 12 Si cuſtodierint filii tui [l] teſtamentum meum, & teſtimonia mea hæc, quæ docebo eos; 13 Et filii eorum uſq; in ſeculum ſedebunt ſuper ſedem tuã. 14 Quoniã elegit Dominus Sion, (l) [m] præelegit eam in habitationem ſibi. 15 Hæc requies mea in [n] ſeculum ſeculi: hîc habitabo, quoniã præelegi eã. 16 (m) [o] Venationẽ ejus benedicens benedicam; pauperes ejus ſaturabo panib⁹. 17 Sacerdotes ejus induam [p] ſalute: & Sancti ejus (n) exultatione exultabunt. 18 Ibi (o) [q] ſuſcitabo cornu David: paravi lucernam Chriſto [r] meo. 19 Inimicos ejus induã confuſione: ſuper ipſum autem efflorebit (p) ſanctificatio mea.

Canticum graduum. CXXXII.

1 Ecce (a) [a] nunc quid bonum, vel quid jocundũ, niſi habitare fratres in unum? 2 Sicut (b) unguentum in capite, quod deſcendit in barbam, barbam Aaron: 3 quod deſcendit in oram veſtimenti ejus. Sicut ros [b] Æmon, qui deſcendit ſuper (c) montes Sion. 4 [c] Quoniam ibi mandavit Dominus benedictionem, [d] vitam uſq; in ſeculum.

Canticum graduum. CXXXIII.

1 Ecce nunc benedicite Dominum omnes ſervi Domini: qui ſtatis in domo Domini, in (a) atriis domûs Dei noſtri. 3 In (b) noctibus extollite manus veſtras (c) in [a] Sancta, & benedicite Dominum. 4 Benedicat te Dominus ex Sion, qui fecit cælum, & terram.

Verſio ÆTHIOPICA.

ከመ፡ ሊይበውእ፡ ውስተ፡ ጽላሎተ፡ ቤት 3
የ፡፡ ወከመ፡ ሊየዐርግ፡ ውስተ፡ ዓራተ፡
መስካብየ፡፡=፡ ወከመ፡ ሊይሁበኒ፡ ንዋ 4
መ፡ ለአዕይንትየ፡፡ ወሊይ ቃስ፡ ለቀራ
ንብትየ፡፡=፡ ወሊእረፍተ፡ ለመዋዕሊ 5
የ፡፡ እስከ፡ እረክብ፡ መካነ፡ ለእ ዚአ
ብሔር፡፡ ወማኅደረ፡ ለአምላከ፡ ያዕቆ
ብ፡፡=፡ ናሁ፡ ሰማዕናሁ፡ በኤፍራታ፡፡ ወረ 6
ከብናሁ፡ውስተ፡ለመ፡ገዳም፡፡=፡ ንበውእ፡ 7
እንከሰ፡ውስተ፡ሀቢያቲሁ፡፡ ወንስ ገድ፡ውስ
ተ፡መካን፡ኃበ፡ ቆሙ፡ እገሪ፡ እ ዚአን፡፡=፡
ተንሥእ፡ እግዚኦ፡ ውስተ፡ ዕረፍትከ፡፡ አን 8
ተ፡ወታቦተ፡ መቅደስከ፡፡=፡ ከህናቲከ፡ይለ 9
ብሱ፡ ጽድቀ፡፡ ወጻድቃኒከ፡ትፍሥሕተ፡ይት
ፈሥሑ፡፡=፡ በእንተ፡ ዳዊት፡ ገብርከ፡፡ 10
ወኢትሚጥ፡ገጸከ፡እመሲሕከ፡፡=፡ መሐለ፡ 11
እግዚአብሔር፡ለዳዊት፡ በጽድቅ፡ ወኢይኔስ
ሐ፡፡ እስመ፡እምፍሬ፡ ከርሥከ፡ አነብር፡
ዲበ፡መንበርከ፡፡=፡ ወለእመ፡ዐቀቡ፡ደቂቅ 12
ከ፡ ሕግየ፡፡ ወስምዕየ፡ ዘንተ፡ ዘአመህሮ 13
ሙ፡፡=፡ ወደቂቆሙኒ፡ እስከ፡ ለዓለም፡ ይነ
ብሩ፡ ዲበ፡መንበርከ፡፡=፡ እስመ፡ ኀረየ፡እ 14
ግዚአብሔር፡ ለጽዮን፡፡ ወአብየራ፡ ከመ፡
ትኩኖ፡ማኅደሮ፡፡=፡ ዛቲ፡ይእቲ፡መዕረፍ 15
የ፡ለዓለም፡፡ ወዝየ፡እኅድር፡፡እስመ፡ኀረይ
ክዋ፡፡=፡ ለእቤራቲሃ፡ ባርኮ፡ እባርኮን፡፡ 16
ወለነዳያኒሃ፡አጸግቦሙ፡እክለ፡፡=፡ ወለካህ 17
ናቲሃ፡ አለብሶሙ፡ሕይወተ፡፡ ወጻድቃኒሃ፡
ትፍሥሕተ፡ይትፌሥሑ፡፡=፡ ወበህየ፡አበቊ 18
ል፡ቀርነ፡ ለዳዊት፡፡ ወአስተደሉ፡ ማኅቶተ፡
ለመሲሕየ፡፡=፡ ወአለብሶሙ፡ኃፍረተ፡ለጸ 19
ላእቱ፡፡ ወባቲ፡ይፈሪ፡ቅድሳትየ፡፡=፡

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

የሀብ ናሁ፡ሠናይ፡ወናሁ፡አደም፡፡ ሶበ፡ይሄ 1
ልው፡አኃው፡ኅቡረ፡፡=፡ ከመ፡ዕፍረት፡ዘይ 2
ውኅዝ፡እምርእሱ፡ እስከ፡ጽሕሙ፡፡ ጽሕ
ሙ፡ለአሮን፡ 3 ዘይወርድ፡ዲበ፡ኅባኔ፡መል
በሱ፡፡ ከመ፡ጠለ፡አርሞንኤም፡ዘይወርድ፡
ዲበ፡አድባረ፡ጽዮን፡፡=፡ እስመ፡ አዘዘ፡እግ 4
ዚአብሔር፡በረከቶ፡፡ ወሕይወተ፡እምይእ
ዜ፡ወእስከ፡ለዓለም፡፡=፡

ማኅሌት፡ዘበመዓርጊሁ፡፡

የሀር ናሁ፡ይባርክዎ፡ለእግዚአብሔር፡፡ ኵ 1
ሎሙ፡እግብርተ፡እግዚአብሔር፡፡=፡ እለ፡ 2
ይቀውሙ፡ውስተ፡ቤተ፡እግዚአብሔር፡፡ውስ
ተ፡ዐጸደ፡ቤተ፡አምላክነ፡፡=፡በሌሊት፡አንሥ 3
ኡ፡እደዊክሙ፡በቤተ፡ መቅደስ፡ ፡ወባርክዎ፡
ለእግዚአብሔር፡፡=፡ ይባርከ፡እግዚአብሔ 4
ር፡እምጽዮን፡፡ዘገብረ፡ሰማየ፡ወምድረ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] Quòd non ingrediar in[c] & quòd non[d]neque dedero[e]neque[f]neque requiem[g]palatia ejus:[h]Domini noſtri. [i]exultatione exultabunt[k]in veritate,& non poenitebit;Quoniam de[l]legem meam,[m]& voluit ut ejus eſſet habitaculum.[n]ſeculum:hic[e]Viduam ejus benedicens[p]vitâ: [q]florere faciam[r]tuo. *PSAL. CXXXII.* [a]bonum eſt,& ecce jucundum, cum fratres ſunt ſimul: [b]Æermonèm,[c]Quoniam mandavit[d]& vitam,ex nunc & uſque, *PSAL. CXXXIII.* [a]domo Sanctuarii, &

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

3 *اني لا ادخل الي مسكن بيتي ولا اصعد على سرير فراشي *ولا اعطي عيني نوما ولا اجفاني 4
5 نعاسا ولا لصدغي راحة *الي ان اجد موضعا للرب ومسكنا لاله يعقوب *ها نحن قد سمعناها في 6
7 افراثا ووجدناها في مواضع الغياض خالية *ندخل الي مسكنه ونسجد في موضع قامت فيه رجلاه 8
9 *قم يا رب الي راحتك انت وتابوت مقدسك *كهنتك يلبسون عدلا وقديسوك يبتهجون *لاجل 10
11 داود عبدك لا ترد وجه مسيحك *حلف الرب لداود حقا ولن يغدر به ان من ثمر بطنك 12
13 اجعل على كرسيك *ان حفظ بنوك عهدي وشهاداتي التي انا اعلمها لهم فبنوهم الي الابد 14
15 يجلسون على كرسيك *الان الرب اختار صهيون واختارها له مسكنا *هذا هو موضع راحتي الي
16 الابد ههنا اسكن لاني اردتها *ابارك في صيدها تبريكا واشبع مساكينها خبزا *ألبس 17
18 كهنتها خلاصا وابرارها يبتهجون ابتهاجا *هناك اقيم لداود قرنا اعددت لمسيحي نورا *والبس
اعداءه خزيا ويزهر عليه قدسي * الليلويا * المزمور المائة والثاني والثلثون

1 *وهو ز استيخات * ها ما هو الحسن او الحلو الا الاخوة الساكنون باتفاق
2 *كالطيب الكاين على الراس النازل على اللحية لحية هرون النازلة الي جيب قميصه *مثل ندا 3
حرمون النازل على جبل صهيون *لان هناك امر الرب بالبركة والحياة الي الابد * الليلويا

* المزمور المية والثلاثة والثلثون * وهو ه * استيخات * ها باركوا الرب يا جميع عبيد 1
الرب القايمين في بيت الرب في ديار بيت الهنا *ارفعوا ايديكم في الليالي الي القدس وباركوا
الرب *الرب يباركك من صهيون خالق السموات والارض * الليلويا

Quòd non ingrediar in habitaculũ domûs meæ, & non aſcendã ſuper lectũ ſtrati mei, 3
Nec dabo oculis meis ſomnũ, neq; palpebris meis dormitationem, neque temporibus meis 4
requiem: Donec inveniã locũ Domino, & habitaculum Deo Jacob. Ecce nos jam au- 5 6
divimus eã in Ephratha, & invenimus eam in locis ſylvarũ vacuã. Intrabimus in habi- 7
taculum ejus, & adorabimus in loco in quo ſteterunt pedes ejus. Surge O Domine ad re- 8
quiem tuam, tu & arca ſanctuarii tui. Sacerdotes tui induentur juſtitiâ, et ſancti tui 9
exultabunt. Propter David famulum tuum ne avertas faciem Chriſti tui. Juravit Do- 10 11
minus Davidi veritatem, & non fraudabit eam: dicens, De fructu ventris tui ponam
ſuper ſedem tuam. Si cuſtodierint filii tui pactum meum, & teſtimonia mea quæ ego 12
docebo eos, filii eorum in æternum ſedebunt ſuper ſedem tuam. Itaque Dominus elegit 13
Sion, & elegit eam ſibi habitaculum. Hic eſt locus requiei meæ in ſeculum: hîc habita- 14
bo, quoniam volui eam. Benedicam venationem ejus benedictione, & ſaturabo pau- 15
peres ejus pane. Induam ſacerdotes ejus ſalute, & juſti ejus exultabunt exultatione. 16
Ibi erigam Davidi cornu, paravi Chriſto meo lucem. Et induam inimicos ejus confuſione, & florebit ſuper eum ſanctitas mea. Alleluja. 17 18

PSAL. CXXXII.

Verſus 7.

1 *Ecce, quid eſt bonum aut dulce? nonne fratres habitantes cum concordia? Si-* 2
cuti fragrantia quæ eſt ſuper caput, deſcenditq; ſuper barbã, barbã Aaron demiſſam ad aperturam ſubuculæ ejus: Sicut ros Her- 3
mon decidens ſuper montem Sion, quoniam ibi præcepit Dominus benedictionem, & vitam in æternum. Alleluja.

PSAL. CXXXIII.

Verſus 5.

1 *Ecce, benedicite Dominum O omnes ſervi Domini ſtantes in domo Domini, in atriis domûs Dei noſtri. Elevate manus ve-* 2
ſtras in noctibus ad ſanctuarium, & benedicite Dominum. Dominus benedicat tibi 3
ex Sion, Creator cælorum & terræ, Alleluja.

תהלים : קלה קלו

תרגום TARGUM.

PARAPH. CHALD. Verſ. L

PSAL. CXXXV. קלה

ſtantes Qui .Domini ſervi laudate : Domini nomen Laudate .Jah-Hallelu
1 2 הללו יה הללו את־שם יהוה הללו עבדי יהוה: שעמדים
bonus quia , *Jah* Laudate .noſtri Dei domus atriis in : Domini domo in
3 בבית יהוה בחצרות בית אלהינו: הללו־יה כי־טוב
ſibi elegit Jahacob Quoniam .jocundum quia ,ejus nomini canite : Dominus
4 יהוה זמרו לשמו כי נעים: כי־יעקב בחר לו
: Dominus magnus quòd , novi ego Quia *ſuum peculium in* Iſrael : *Jah*
5 יה ישראל לסגלתו: כי אני ידעתי כי־גדול יהוה
fecit Dominus voluit quæ Omnia .diis omnibus præ noſter *Dominus* &
6 ואדנינו מכל־אלהים: כל אשר־חפץ יהוה עשה
vapores faciens Aſcendere .voraginibus omnibus & ,maribus in : terra in & cœlo in
7 בשמים ובארץ בימים וכל־תהמות: מעלה נשאים
.ſuis theſauris de ventum *educens : fecit* pluviam ad fulgura , terræ extremo ab
מקצה הארץ ברקים למטר עשה מוצא רוח מאוצרותיו:
Miſit .jumentum ad uſque homine ab : Ægypti primogenita percuſſit Qui
8 9 שהכה בכורי מצרים מאדם עד־בהמה: שלח
.ejus ſervos omnes in & ,Parhoh in : Ægypte tui medio in prodigia & ſigna
אתות ומפתים בתוככי מצרים בפרעה ובכל־עבדיו:
regem Sichon .fortes reges occidit & : multas gentes percuſſit Qui
10 11 שהכה גוים רבים והרג מלכים עצומים: לסיחון מלך
dedit Et .Chenahan regna omnia & : Baſan regem Hogh & , Emoræum
12 האמרי ולעוג מלך הבשן ולכל ממלכות כנען: ונתן
tuū nomen Domine .ſuo populo Iſrael hæreditatem : hæreditatem eorum terram
13 ארצם נחלה נחלה לישראל עמו: יהוה שמך
faciet judicium Quia .generationē & generatione in tua memoria Domine : ſecula in
14 לעולם יהוה זכרך לדר־ודר: כי־ידין
,argentū ,gentium *Dolores* .*pœnitentia ducetur* ſuis ſervis *ſuper* & : ſuo populo Dominus
15 יהוה עמו ועל־עבדיו יתנחם: עצבי הגוים כסף
non & , eis oculi : loquentur non & , eis Os .hominis manuū opus : aurum &
16 וזהב מעשה ידי אדם: פה־להם ולא ידברו עינים להם ולא
.ipſorū ore in ſpiritus eſt non etiam : auſcultabunt non & , eis Aures .videbunt
17 יראו: אזנים להם ולא יאזינו אף אין־יש־רוח בפיהם:
benedicite Iſrael *Domus* .eis *in fidens* qui omnis ,ea facientes ſint ipſa Sicut
18 כמוהם יהיו עשיהם כל אשר־בטח בהם: בית ישראל ברכו
Levi *Domus* .DOMINO benedicite Aharon *domus* : DOMINO
19 20 את־יהוה בית אהרן ברכו את־יהוה: בית הלוי
.DOMINO benedicite DOMINUM *timentes* : Domino benedicite
ברכו את־יהוה יראי יהוה ברכו את־יהוה:
.Jah-Hallelu .Jeruſalaim *habitans* : Sijon ex DOMINUS Benedictus
21 ברוך יהוה מציון שכן ירושלם הללו־יה:

PSAL. CXXXVI. קלו

.ejus miſericordia ſeculum in quoniam : bonus quoniam DOMINO Confitemini
1 הודו ליהוה כי־טוב כי לעולם חסדו:

קלה

הלליה שבחו ית שמא דיי שבחו עבדיא דיי: 1
דקימין בבית מקדשא דיי בדרת בית אלהנא: 2
הלליה ארום טב יי זמרו לשמיה ארום בסים: 3
ארום דבית יעקב בחר ליה יי ישראל 4
לחבוביה: ארום אנא ידעית ארום רב יי 5
ורבוננא על כל אלהים: כל די יתרעי יי עבד 6
בשמיא ובארעא בימיא וכל תהומיא:
דמסיק עננין מסיפי ארעא ברקין למחת 7
מטרא עבד דמפיק זעפא מן תוסבריא
דיליה: די קטל בוכריא דמצראי מאנשא 8
עד בעירא: שדר אתין ותמהין במציעיך 9
מצרים בפרעה ובכל עבדוי: די מחא 10
עממין סגיעין וקטל מלכין תקיפין: לסיחון 11
מלכא אמוראה ולעוג מלכא דמתנן
ולכל מלכות כנען: ויהב ארעהון אחסנא 12
אחסנא לישראל עמיה: יי שמך לעלם 13
יי דכרנך לדר ודר: ארום ידין יי במימריה 14
דינא דעמיה ועל עבדוי צדיקיא יתוב ברחמוי:
טעון דעממיא סימא ודהבא עובד אידי 15
בר נש: פום להון ולא ממללין עינין 16
להון ולא חמין: אודנין להון ולא ציתין 17
נחירי ולא אית רוחא דחיי בפומהון: די 18
כמתהון יהון עובדיהון כל דמתרחץ עליהון:
דבית ישראל בריכו ית יי דבית אהרן 19
בריכו ית יי: דבית ליואי בריכו ית יי 20
דחליא דיי בריכו ית יי: בריך יי מציון 21
דאשרי שכנתיה בירושלם הללויה:

קלו

שבחו קדם יי ארום טב ארום לעלם 1
טוביה:

Hallelujah.

PSAL. CXXXV.

Laudate nomen Domini , laudate ſer
Domini : Qui ſtatis in domo ſanctuarii Do
mini, in atriis domus Dei noſtri. Laudate
Dominum, quoniam *bonus* Dominus:
pſallite nomini ejus, quoniam ſuave. Quo
niam domum Jaacob elegit ſibi Dominus
Iſraelem in dilectum ſuum. Quoniam ego
ſcio quòd magnus eſt Dñs, & dominator
noſter ſupra omnes deos. Omnia quæ vo
luit Dominus fecit in cœlis & in terra
in maribus & omnibus abyſſis. Elevat
nubes ab extremis terræ, fulgura ad deſcen
ſum *pluviæ* edidit : qui producit ven
tum impetuoſum de theſauris ſuis. Q
interfecit primogenita Ægypti ab homine
uſque ad pecus. Miſit ſigna et portenta
medio tui Ægypte, in Pharaonem &
omnes ſervos ejus. Qui percuſſit popu
plurimos, & interfecit reges fortes. Sichon
regem Amorrhæum, & Og regem Baſan
& univerſum regnum Chananæum. Et de
dit terram eorum hæreditatem, hæredita
tem [*inquam*] Iſrael populo ſuo. Dom
ne nomen tuum in æternum eſt, Dom
memoria tui in generatione & generatio
nem. Quoniam judicabit Dominus ver
bo ſuo judicium populi ſui, & ſuper ſer
vos ſuos juſtos convertetur in miſeratio
bus ſuis. Idola gentium argentea & au
rea, opera manuum hominis. Os habe
& non loquuntur ; oculos habent & n
vident. Aures habent & non audiun
nares, nec eſt ſpiritus vivens in ore ip
rum. Similes illis fiant qui faciunt
omnes qui confidunt in eis. Domus Iſ
el benedicite Domino, domus Aharon
nedicite Domino. Domus Levi benedi
te Domino : timentes Dominum bene
cite Domino. Benedictus Dominus ex
on, qui poſuit majeſtatem ſuam in Jeru
lem : *Hallelujah.*

PSAL. CXXXVI.

LAudes dicite coram Domino, qu
am bonus eſt, quoniam in æternum
gnitas ejus.

VerſioSYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 [illegible] *
[illegible]
[illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7 [illegible]
8 [illegible]
9 [illegible]
10 [illegible]
11 [illegible]
12 [illegible]
13 [illegible]
14 [illegible]
15 [illegible]
16 [illegible]
17 [illegible]
18 [illegible]
19 [illegible]
20 [illegible]
21 [illegible] *
1 [illegible]
[illegible]
[illegible]

PSAL. CXXXIV.

Anonymus. Spirituali ſenſu dicitur a
ma ſomniante hymnos cum cognition
gilante in unione cum Trinitate. Et
it in eo converſionem populi Chriſt
fidem. Verſus 45.

LAudate nomen Dñi, laudes præcin
vi Dñi. Qui ſtatis in domo Dñi &
trio domûs Dei noſtri, Glorificate D
quia bonus eſt : & pſallite nomini ejus
niam ſuave eſt. Jacobum enim eleg
Dñs, & Iſraelē in cœtū ſuū. Quon
novi quòd maximus eſt Dñs. Dñs
noſter, omnium deorum. Et quicqu
Dñs facit in cœlo & in terra, in mar
in omnibus abyſſis : Elevat nubes e
terræ, & fulgura in pluviam ſtatuit :
ventos ex horreis. Qui percuſſit p
nita Ægypti ab hominibus uſq; ad ju
Miſit ſigna ſua & prodigia ſua in ce
Ægypti, adverſùs Pharaonem, & a
omnes ſubditos ejus. Qui percuſſit
plurimas, & occidit reges potentes :
regem Amorræorū, & Og regem Ba
omnia regna Canaan : Deditque ter
hæreditatem Iſraeli populo ſuo. Dñ
tuum ſempiternum eſt, Dñe memori
generationem generationum. Judica
Dñs populū ſuum, & de ſervis ſuis
percipit. Simulacra gentium argen
atque aurum, opus manuum homin
habent, & non loquuntur : oculos ha
non vident : Aures habent, & non a
neque eſt flatus in ore ipſorum. Sim
eis opifices eorū, & quicunque fid
Domeſtici Iſraelis benedicite Dño : D
ci Aharonis benedicite Dño: Domeſti
benedicite Dño : Timentes Dñm be
Dño. Benedictus ſit Dñs è Sion, q
in Hieruſalem.

PSAL. CXXXV.

Anonymus. Dicitur de Moſe & Iſra
dantibus Dominum de his qui li
runt : deque liberatione animarum
henna ex Pharaone diabolo per C
Salvatorem noſtrum redemptorem
Verſ. 56.

COnfitemini Domino quoniam bo
& in æternum miſerationes ejus

Versio VULG. LAT.

Alleluja. CXXXIV.

1
Laudate nomen Domini, laudate
2 servi Dominū. Qui statis in domo Do-
3 mini, in atriis domûs Dei nostri. Lau-
date Dominū, quia bonus Dominus:
psallite nomini ejus, quoniam suave.
4 Quoniam Jacob elegit sibi Dominus,
5 Israel in possessionem sibi. Quia ego
cognovi quòd magnus est Dominus, &
6 Deus noster præ omnibus diis. Omnia
quæcunque voluit, Dominus fecit in
cœlo, in terra, in mari, & in omnibus
7 abyssis. Educens nubes ab extremo
terræ: fulgura in pluviam fecit. Qui
8 producit ventos de thesauris suis: Qui
percussit primogenita Ægypti ab ho-
9 mine usque ad pecus. Et misit signa et
prodigia in medio tuî, Ægypte; in Pha-
10 raonem, & in omnes servos ejus. Qui
percussit gentes multas: & occîdit re-
11 ges fortes. Sehon regem Amorrhæo-
rum, & Og regem Basan, & omnia re-
12 gna Chanaan. Et dedit terram eorum
hæreditatem, hæreditatem Israel popu-
13 lo suo. Domine, nomen tuum in æter-
num: Domine, memoriale tuum in ge-
14 nerationem & generationem. Quia
judicabit Dominus populum suum: &
15 in servis suis deprecabitur. Simula-
chra gentium argentum & aurum, o-
16 pera manuum hominum. Os habent,
& non loquentur: oculos habent &
17 non videbunt. Aures habent, & non
audient: neque enim est spiritus in o-
18 re ipsorum. Similes illis fiant qui faci-
unt ea: & omnes, qui confidunt in e-
19 is. Domus Israel benedicite Domi-
no: domus Aaron benedicite Domi-
20 no. Domus Levi benedicite Domino:
qui timetis Dominum, benedicite Do-
21 mino. Benedictus Dominus ex Sion,
qui habitat in Jerusalem.

Alleluja. CXXXV.

1
Confitemini Domino, quoniam
bonus: quoniam in æternum miseri-
cordia ejus.

Vers. GRÆC. LXX. Interp.

1 Ἀλληλούϊα. ρλδʹ.

2 † Αἰνεῖτε τὸ ὄνομα κυρίου, † αἰνεῖτε δοῦλοι κύρι-
ον. † Οἱ ἑστῶτες ἐν οἴκῳ κυρίου, † ἐν αὐλαῖς οἴκου
3 Θεοῦ ἡμῶν. † Αἰνεῖτε τὸν κύριον ὅτι ἀγαθὸς κύριος,
4 † ψάλατε τῷ ὀνόματι αὐτοῦ ὅτι (α) καλόν. † Ὅτι τὸν
Ἰακὼβ ἐξελέξατο ἑαυτῷ ὁ κύριος, † Ἰσραὴλ εἰς
5 περιουσιασμὸν (β) ἑαυτῷ. † Ὅτι ἐγὼ (γ) ἔγνωκα,
ὅτι μέγας (δ) ὁ κύριος, † καὶ ὁ κύριος ἡμῶν παρὰ
6 πάντας τοὺς θεούς. † Πάντα ὅσα ἠθέλησεν ὁ κύρι-
ος, ἐποίησεν † ἐν τῷ οὐρανῷ καὶ ἐν τῇ γῇ, † ἐν ταῖς
7 θαλάσσαις καὶ (‘) ἐν πάσαις ταῖς ἀβύσσοις. † Ἀνάγων νε-
φέλας ἐξ ἐσχάτου τῆς γῆς, † ἀστραπὰς εἰς ὑετὸν ἐ-
ποίησεν· † ὁ ἐξάγων ἀνέμους ἐκ θησαυρῶν αὐτοῦ. †
8 Ὃς ἐπάταξε τὰ πρωτότοκα Αἰγύπτου † ἀπὸ ἀν-
9 θρώπου ἕως κτήνους. † Ἐξαπέστειλε σημεῖα καὶ τέ-
ρατα † ἐν μέσῳ σου Αἴγυπτε, † ἐν Φαραὼ καὶ ἐν πᾶ-
10 σι τοῖς δούλοις αὐτοῦ. † Ὃς ἐπάταξεν ἔθνη πολλά,
11 † καὶ ἀπέκτεινε βασιλεῖς κραταιούς. † Τὸν Σηὼν βα-
σιλέα τῶν Ἀμορραίων, † καὶ τὸν Ὢγ βασιλέα τῆς Βα-
12 σάν, † καὶ πάσας τὰς βασιλείας Χαναάν· † Καὶ ἔδω-
κε τὴν γῆν αὐτῶν κληρονομίαν, † κληρονομίαν Ἰσ-
13 ραὴλ (ε) λαῷ αὐτοῦ. † Κύριε τὸ ὄνομά σου εἰς τὸν
αἰῶνα, † (ζ) καὶ τὸ μνημόσυνόν σου εἰς γενεὰν καὶ γε-
14 νεάν. † Ὅτι κρινεῖ κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, † καὶ ἐπὶ
15 τοῖς δούλοις αὐτοῦ παρακληθήσεται. † Τὰ εἴδωλα τῶν
ἐθνῶν ἀργύριον καὶ χρυσίον, ἔργα χειρῶν ἀνθρώ-
16 πων. † Στόμα ἔχουσι καὶ οὐ λαλήσουσιν· † ὀφθαλμοὺς
17 ἔχουσι καὶ οὐκ ὄψονται· † Ὦτα ἔχουσι καὶ οὐκ (η) ἐνω-
τισθήσονται· † οὐδὲ γάρ ἐστι πνεῦμα ἐν τῷ στόματι
18 αὐτῶν. Ὅμοιοι αὐτοῖς γένοιντο (θ) οἱ ποιοῦντες αὐ-
19 τά, † καὶ πάντες οἱ πεποιθότες ἐπ᾿ αὐτοῖς. † Οἶ-
κος Ἰσραὴλ εὐλογήσατε τὸν κύριον· † οἶκος Ἀα-
20 ρὼν εὐλογήσατε τὸν κύριον· Οἶκος Λευὶ εὐλο-
γήσατε τὸν κύριον· † οἱ φοβούμενοι τὸν κύριον
21 εὐλογήσατε τὸν κύριον. † Εὐλογητὸς κύριος (ι)
ἐν Σιών, † ὁ κατοικῶν Ἱερουσαλήμ.

MS. A. (α) ἡδύ. (β) αὐτοῦ. (γ) ἔγνων, (δ) κύριος,
(‘) ἐν τῇ (ε) δούλῳ αὐτοῦ. (ζ) κύριε τὸ μνημόσυνόν (η)
ἀκούσονται· † ῥῖνας ἔχουσιν καὶ οὐκ ὀσφρανθήσονται· † χεῖ-
ρας ἔχουσιν καὶ οὐ ψηλαφήσουσιν· † πόδας ἔχουσιν καὶ οὐ
περιπατήσουσιν. † Οὐ φωνήσουσιν ἐν τῷ λάρυγγι αὐτῶν·
οὐδὲ γάρ ἐστιν πνεῦμα (θ) πάντες οἱ ποιοῦντες (ι) ἐκ
Σιών,

Ἀλληλούϊα. ρλεʹ.

1 † Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ ὅτι (α) ἀγαθός, † ὅτι
εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ.

MS. A. (α) χρηστός,

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

(a) Alleluja. CXXXIV. 1

1 Laudate nomen Domini: lau-
date [a] servi Dominum. 2
Qui statis in domo Domini, in a- 2
triis domûs Dei nostri. 3 Laudate 3
Dominum, quia (a) bonus Dominus:
psallite nomini ejus, (b) quoniam [b]
decens. 4 Quoniam Jacob elegit 4
sibi Dominus, [c] Israel in (c) posses-
sionem sibi. 5 Quoniam ego cogno- 5
vi, quòd magnus est Dominus, &
Deus noster super omnes deos. 6
Omnia, quæcunq; voluit Dominus, 6
fecit, in cœlo, & in terra: in mari-
bus, & in omnibus abyssis. 7 (d)
Educens nubes ab extremo terræ: 7
fulgura in [d] pluviam fecit. 8 Qui
(e) educit ventos de thesauris (f)
suis. Qui percussit primogenita Æ- 8
gypti: ab homine usque ad pecus.
9 Emisit signa & prodigia sua in 9
medio tuî, Ægypte: in Pharaonem,
& [e] in omnes servos ejus. 10 Qui 10
percussit gentes multas, & occîdit
reges fortes. 11 Seon regem Amor- 11
rhæorum, & Og regem Basan, &
omnia regna Chanaan. 12 Et dedit 12
terram eorum hæreditatem: hære-
ditatem (g) Israel populo suo. 13
Domine, nomen tuum in seculum: 13
et (h) memoriale tuum in gene-
rationem & generationem. 14 Quo- 14
niam judicabit Dominus populum
suum: & in servis suis (i) depreca-
bitur. 15 Idola gentium argentum, 15
& aurum: opera manuum hominū.
16 Os habent, & non loquentur: o- 16
culos habent, & non videbunt. 17
Aures habent, & non (k) audient: 17
[f] neque enim est spiritus in ore i-
psorū. 18 Similes illis fiant [g], qui 18
faciunt ea: & (l) omnes qui confi-
dunt in eis. 19 Domus Israel bene- 19
dicite Dominum, domus Aaron be-
nedicite Dominum. 20 Domus Le- 20
vi benedicite Dominum: qui timetis
Dominum, benedicite Dominum. 21 21
Benedictus Dominus in (m) Sion,
qui habitat in Hierusalem.

(a) Alleluja. CXXXV. 1

1 Confitemini Domino, quoni-
am bonus: quoniam in secu-
lum misericordia ejus.

Versio ÆTHIOPICA.

ሃሌሉያ ::

፻፴፬ ሰብሑ : ለስሙ : እግዚአብሔር :: ሰ 1
ብሕዎ : አግብርቲሁ : ለእግዚአብሔር ::=:
እለ : ይቀውሙ : ውስተ : ቤተ : እግዚአብሔ 2
ር :: ውስተ : አጸደ : ቤተ : አምላክነ ::=: ሰብ 3
ሕዎ : ለእግዚአብሔር : እስመ : ኄር : እግዚአ
ብሔር :: ወዘምሩ : ለስሙ : እስመ : ሠናይ ::=:
እስመ : ለያዕቆብ : ኀረዮ : እግዚአብሔር :: 4
ወለእስራኤልኒ : ሎቱ : ለርስቱ ::=: እስመ : 5
አነ : አእመርኩ : ከመ : ዐቢይ : እግዚአብሔ
ር :: ወአምላክነሂ : እምኵሉ : አማልክ
ት ::=: ኵሎ : ዘፈቀደ : ገብረ : እግዚአብሔ 6
ር :: በሰማይኒ : ወበምድርኒ :: በባሕርኒ : ወበ
ኵሉ : ቀላያት ::=: የዐርግ : ደመናተ : እምአ 7
ጽናፈ : ምድር :: ወገብረ : መብረቀ : ለገዚ
ዝናም ::=: ዘያወፅኦሙ : ለነፋሳት : እመዛግ 8
ብቲሆሙ :: ዘቀተለ : ኵሎ : በኵሮሙ : ለግ
ብጽ :: እምሰብእ : ወእስከ : እንስሳ ::=: ፈነ 9
ወ : ተአምረ : ወመንክረ : ማእከሌኪ : ግብጽ ::
ላዕለ : ፈርዖን : ወላዕለ : አግብርቲሁ ::=: ዘ 10
ቀተለ : አሕዛበ : ብዙኃነ :: ወቀተለ : ነገሥተ :
ጽኑዓነ ::=: ለሴዎን : ንጉሠ : አሞሬዎን :: 11
ወለአግ : ንጉሠ : ባሳን :: ወለኵሎሙ : ነገ
ሥተ : ከናአን ::=: ወወሀበ : ምድሮሙ : ር 12
ስተ :: ወርስተ : ለእስራኤል : ገብሩ ::=: ስም 13
ከ : እግዚአ : ለዓለም :: ወዝክርከኒ : ለትው
ልደ : ትውልድ ::=: እስመ : ይኴንን : እግዚ 14
አብሔር : ሕዝቦ :: ወይትናበብ : በእንተ : አ
ግብርቲሁ ::=: አማልክቲሆሙ : ለአሕዛብ : 15
ዘወርቅ : ወብሩር :: ግብረ : እደ : እጓለ : እመ
ሕያው ::=: አፈ : ቦሙ : ወኢይነቡ :: አዕይ 16
ንተ : ቦሙ : ወኢይሬእዩ ::=: እዘነ : ቦሙ : 17
ወኢይሰምዑ :: አንፈ : ቦሙ : ወኢያጼንዉ ::
እደ : ቦሙ : ወኢይገሱ :: እግረ : ቦሙ : ወኢይ
ሖሩ :: ወኢይነቡ : በጕርዔቶሙ :: ወአል
ቦሙ : መንፈስ : ውስተ : አፉሆሙ ::=: ከማ 18
ሆሙ : ለይኩኑ : ኵሎሙ : እለ : ገብርዎሙ ::
ወኵሎሙ : እለ : ይትአመኑ : ቦሙ ::=: ቤ 19
ተ : እስራኤል : ባርክዎ : ለእግዚአብሔር ::
ቤተ : አሮን : ባርክዎ : ለእግዚአብሔር ::=: 20
ቤተ : ሌዊ : ባርክዎ : ለእግዚአብሔር :: እለ :
ትፈርህዎ : ለእግዚአብሔር : ባርክዎ : ለእግ 21
ዚአብሔር ::=: ቡሩክ : እግዚአብሔር : በጽ
ዮን :: ዘየኃድር : ውስተ : ኢየሩሳሌም ::=:

ሃሌሉያ ::

፻፴፭ ግነዩ : ለእግዚአብሔር : እስመ : ኄ 1
ር :: እስመ : ለዓለም : ምሕረቱ ::=:

INTERP. ÆTHIOP. [a] vos servi ejus [b] bonū est. [c] & Israel etiam [d] tempus pluviæ [e] servos ejus. [f] nares habent, & non odorabunt: manus habent, & non palpabunt: pedes habent, & non ambulabunt: & non loquuntur in gutture eorum: neque est [g] omnes, qui

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 * المزمور المائة واربعة وثلاثون * مرسوم بالهللويا * وهو مه · استيكن *
2 3 سبحوا الرب يا عبيد الرب * القائمين في بيت الرب في ديار بيت الهنا * سبحوا الرب فان الرب
4 5 صالح * رتلوا اسمه فانه حلو * ان الرب اختار له يعقوب · واسرائيل ميراثا له * اني انا علمت ان
6 الرب عظيم هو · والهنا اعظم من جميع الالهة * وكلما شاء الرب صنعه في السماء وعلى الارض
7 وفي البحار وجميع الاعماق * الذي يصعد السحاب من اقطار الارض · خلق بروقا للامطار الذي
8 9 اخرج الرياح من خزائنه * الذي اهلك ابكار مصر من الانسان الى البهيمة * وارسل الايات
10 والعجائب في وسطك يا مصر · في فرعون وجميع جنوده * الذي اهلك امما كثيرين · وقتل
11 12 ملوكا اعزا * سيحون ملك الاموريين · وعوج ملك بيسان · وجميع ممالك كنعان * اعطى
13 ارضهم ميراثا · ميراثا لاسرائيل عبده * اسمك يا رب دائما الى الابد · وذكرك من جيل الى جيل
* ان الرب يتراءف على شعبه · ويدعوه عبيده * ان الهة الامم فضة وذهب وهي عمل ايدي
البشر * لها افواه ولا تتكلم · لها عيون ولا ترى * لها اذان ولا تسمع · لها اناف ولا تشم · لها
ايدي ولا تلمس · لها ارجل ولا تمشي · ولا تقدر ان تدعوا بصوت من حناجرها · وانها لا
روح في افواهها * يشبهها الذين يصنعونها * وكل المتوكلين عليها * يا بيت اسرائيل بارك الرب · يا بيت
هرون باركوا الرب * يا بيت لاوي باركوا الرب · يا اتقياء الرب باركوا الرب * مبارك الرب من صهيون
الساكن في يروسليم * الهللويا · المزمور المائة وخمسة وثلاثون *
* وهو كح · استيكن · الهللويا · اشكروا الرب فانه صالح هو وان رحمته لدائمة الى الابد ·

PSAL. CXXXIV.

Titulus, Alleluja. Vers. 45. 1

Laudate Dominum O servi Domini,
Stantes in domo Domini, in atrio do- 2
mûs Dei nostri. Laudate Dominum quo- 3
niam Dominus bonus est: psallite nomini
ejus quia dulce est. Quoniam Dominus 4
elegit sibi Jacobum, & Israelem hæredita-
tem sibi. Quoniam ego novi quòd Domi- 5
nus magnus est, & Deus noster maximus
omnium deorum. Et quicquid voluit Do- 6
minus, fecit in cœlo, & super terram, &
in maribus, & in omnibus profundis. Qui 7
elevat nubes de extremitatibus terræ: con-
didit fulgur in pluvias: qui eduxit ven-
tos de thesauris suis. Qui perdidit primo- 8
genita Ægypti ab homine usq; ad jumen-
tum, Et misit signa et miracula in medium 9
tui, O Ægypte, in Pharaonem & omnes
exercitus ejus. Qui perdidit gentes mul- 10
tas, & occidit reges fortes: Sihon regem 11
Amorræorum, & Og regem Basan, & o-
mnia regna Canaan: Dedit terram eorum 12
hæreditatem, hæreditatem Israeli servo
suo. Nomen tuum O Domine, perpetuum 13
est in æternum, & memoria tua à genera-
tione in generationem. Miserebitur Domi- 14
nus populo suo, & invocabunt eum servi
ipsius. Nam dii gentium argentum sunt 15
ac aurum, et sunt opus manuū hominum.
Habent ora, & non loquuntur: habent o- 16
culos, & non vident: Habent aures, & 17
non audiunt: habent nares, & non odo-
rantur: habent manus, & non palpant:
habent pedes & non ambulant: nec pos-
sunt edere vocem è gutturibus suis: &
quidem non est spiritus in oribus eorum.
Similes sint eis qui faciunt eos, & omnes 18
confidentes in illis. O domus Israelis, bene- 19
dic Dominum: O domus Aaronis, benedicite 20
Dominum: O domus Levi, benedicite Do-
minum: O cultores Domini, benedicite Do-
minum. Benedictus Dominus de Sion, ha- 21
bitans in Jerusalem. Alleluja.

PSAL. CXXXV.

Vers. 28. Alleluja. 1

Gratias agite Domino, quoniam bonus
est: & quia misericordia ejus perman-
sura est in æternum.

Confitemini ejus miſericordia ſeculum in quoniam : deorum Deo Confitemini
2 הוֹדוּ לֵאלֹהֵי הָאֱלֹהִים כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ הוֹדוּ
3 mirabilia Facienti .ejus miſericordia ſeculum in quoniam ,dominorum Domino
לַאֲדֹנֵי הָאֲדֹנִים כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ לְעֹשֵׂה נִפְלָאוֹת 4
cœlos Facienti .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : ſoli magna
גְּדֹלוֹת לְבַדּוֹ כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ לְעֹשֵׂה הַשָּׁמַיִם 5
ſuper terram Expandenti .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : intelligentia in
בִּתְבוּנָה כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ לְרֹקַע הָאָרֶץ עַל־ 6
: magna luminaria Facienti .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : aquas
הַמָּיִם כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ לְעֹשֵׂה אוֹרִים גְּדֹלִים 7
: die in dominium ad Solem .ejus miſericordia ſeculum in quoniam
כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ אֶת־הַשֶּׁמֶשׁ לְמֶמְשֶׁלֶת בַּיּוֹם 8
dominia ad ſtellas & Lunam .ejus miſericordia ſeculum in quoniam
כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ אֶת־הַיָּרֵחַ וְכוֹכָבִים לְמֶמְשְׁלוֹת 9
Ægyptum Percutienti .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : nocte in
בַּלָּיְלָה כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ לְמַכֵּה מִצְרַיִם 10
eduxit Et .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : eorum primogenitis in
בִּבְכוֹרֵיהֶם כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ וַיּוֹצֵא 11
manu In .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : eorum medio de Iſrael
יִשְׂרָאֵל מִתּוֹכָם כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ בְּיָד 12
.ejus miſericordia ſeculum in quoniam : extento brachio in & , forti
חֲזָקָה וּבִזְרוֹעַ נְטוּיָה כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃
.ejus miſericordia ſeculum in quoniam : diviſiones in Suph mare *Scindenti*
13 לְגֹזֵר יַם־סוּף לִגְזָרִים כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃
.ejus miſericordia ſeculum in quoniam : ejus mediũ *in* Iſrael fecit tranſire Et
14 וְהֶעֱבִיר יִשְׂרָאֵל בְּתוֹכוֹ כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃
.ejꝰ miſericordia ſeculum in quoniam :Suph mare in ejꝰ *virtutem* & ,Pharoh excuſſit Et
15 וְנִעֵר פַּרְעֹה וְחֵילוֹ בְיַם־סוּף כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃
.ejus miſericordia ſeculum in quoniam : *deſerto in* ſuum populum *Deducenti*
16 לְמוֹלִיךְ עַמּוֹ בַּמִּדְבָּר כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃
occidit Et .ejus miſericordia ſeculum in quoniã : magnos reges *Percutienti*
17 לְמַכֵּה מְלָכִים גְּדֹלִים כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ וַיַּהֲרֹג
18 regem Sichon .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : fortes reges
מְלָכִים אַדִּירִים כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ לְסִיחוֹן מֶלֶךְ 19
quoniã ,Baſan regem Hogh Et .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : Emoræum
הָאֱמֹרִי כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ וּלְעוֹג מֶלֶךְ הַבָּשָׁן כִּי 20
quoniam : hæreditatem in eorum terram dedit Et .ejus miſericordia ſeculum in
לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ וְנָתַן אַרְצָם לְנַחֲלָה כִּי 21
ſeculum in quoniã : ſuo ſervo Iſrael Hæreditatem .ejus miſericordia ſeculum in
לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ נַחֲלָה לְיִשְׂרָאֵל עַבְדּוֹ כִּי לְעוֹלָם 22
ſeculum in quoniã : noſtri fuit memor noſtra humilitate in Qui .ejus miſericordia
חַסְדּוֹ׃ שֶׁבְּשִׁפְלֵנוּ זָכַר לָנוּ כִּי לְעוֹלָם 23
.ejꝰ miſericordia ſeculũ in quoniã :noſtris hoſtibꝰ ab nos redemit Et .ejꝰ miſericordia
חַסְדּוֹ׃ וַיִּפְרְקֵנוּ מִצָּרֵינוּ כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ 24
Confitemini .ejus miſericordia ſeculũ in quoniam : carni omni panem *Danti*
25 נֹתֵן לֶחֶם לְכָל־בָּשָׂר כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃ הוֹדוּ
26 .ejus miſericordia ſeculum in quoniam : cœli Deo
לְאֵל הַשָּׁמָיִם כִּי לְעוֹלָם חַסְדּוֹ׃

תרגום TARGUM.

2 שבחו לאלהי אלהיא ארום לעלם טוביה׃
3 שבחו למרי מריא ארום לעלם טוביה׃
4 לעבד פרישן רברבן בלחודיה ארום
5 לעלם טוביה׃ לעבד שמיא בסוכלתנו
6 ארום לעלם טוביה׃ לרדיד ארעא
7 עלוי דמיא ארום לעלם טוביה׃ לעבד
8 נהורין רברבין ארום לעלם טוביה׃ ית
שמשא למשלט ביממא ארום לעלם
9 טוביה׃ ית סיהרא וכוכביא למשלט
10 בליליא ארום לעלם טוביה׃ למחי
מצראי במכתשין קטל ארום לעלם טוביה׃
11 ואפיק ישראל פריקין מביניהון ארום
12 לעלם טוביה׃ באידא תקיפא ובדרע
13 מרממא ארום לעלם טוביה׃ לצלח
ימא דסוף לצלוחין ארום לעלם טוביה׃
14 ואעבר ישראל במציעיה ארום לעלם
15 טוביה׃ ושנק פרעה וחילותיה בימא
16 דסוף ארום לעלם טוביה׃ למהלך עמיה
17 במדברא ארום לעלם טוביה׃ למחי
מלכין רברבין ארום לעלם טוביה׃
18 וקטל מלכין גיותנין ארום לעלם טוביה׃
19 לסיחון מלכא אמוראה ארום לעלם
10 טוביה׃ ולעוג מלכא דמתנן ארום לעלם
21 טוביה׃ ויהב ארעהון לאחסנא ארום
22 לעלם טוביה׃ אחסנתא לישראל עבדיה
23 ארום לעלם טוביה׃ באתמככותנא
דכר לנא קימיה ארום לעלם טוביה׃
24 ופריקנא מן מעיקנא ארום לעלם טוביה׃
25 דיהב מוניה לכל בסרא ארום לעלם
26 טוביה׃ שבחו לאלהא שמיא ארום
לעלם טוביה׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Laudes dicite Deo deorum, quoniam in æternum benignitas ejus. Laudes dicite Domino dominorum, quoniam in æternum benignitas ejus. Factori mirabilium magnorum ſoli, quoniam in æternum benignitas ejus. Factori cœlorum in intelligentia, quoniam in æternum benignitas ejus. Ei qui extendit terram ſuper aquas, quoniam in æternum benignitas ejus. Ipſi qui fecit luminaria magna, quoniam in æternum benignitas ejus. Solem ut præeſſet diei, quoniam in æternum benignitas ejus. Lunam & ſtellas ut præeſſent noctis, quoniam in æternum benignitas ejus. Qui percuſſit Ægyptios plagis *occiſionis [primogenitorum,]* quoniam in æternum benignitas ejus. Et eduxit Iſraelem ereptum de medio eorum, quoniam in æternum benignitas ejus. In manu forti & brachio excelſo, quoniam in æternum benignitas ejus. Qui diviſit mare rubrum in diviſiones, quoniam in æternum benignitas ejus. Et tranſire fecit Iſrael per medium ejus, quoniam in æternum benignitas ejus. Et ſubmerſit Pharaonem & exercitum ejus in mari rubro, quoniam in æternum benignitas ejus. Qui duxit populum ſuum per deſertum, quoniam in æternum benignitas ejus. Qui percuſſit reges magnos, quoniam in æternum benignitas ejus. Et occîdit reges ſuperbos, quoniam in æternum benignitas ejus. Sichon regem Amorræorum, quoniam in æternum benignitas ejus. Et Og regem Baſan, quoniam in æternum benignitas ejus. Et dedit terram eorum hæreditatem, quoniam in æternum benignitas ejus. Hæreditatem Iſrael ſervo ſuo, quoniam in æternum benignitas ejus. In *humilitate* noſtra memor fuit erga nos pacti ſui, quoniam in æternum benignitas ejus. Et redemit nos ab iis qui angebant nos, quoniam in æternum benignitas ejus. Qui dat eſcam *ſuam* omni carni, quoniam in æternum benignitas ejus. Laudes dicite Deo cœli, quoniam in æternum benignitas ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 * ܐܘܕܘ ܠܐܠܗ ܐܠܗܐ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ : * ܐܘܕܘ ܠܡܪܐ ܡܪܘܬܐ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ.
3
4 * ܠܕܥܒܕ ܬܕܡܪܬܐ ܪܘܪܒܬܐ ܒܠܚܘܕܘܗܝ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ : * ܠܕܥܒܕ ܫܡܝܐ
5
6 ܒܣܘܟܠܬܗ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ. * ܠܕܩܒܥ ܐܪܥܐ ܥܠ ܡܝܐ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ :
7 * ܠܕܥܒܕ ܢܗܝܪܐ ܪܘܪܒܐ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ. * ܫܡܫܐ ܠܫܘܠܛܢܐ ܕܐܝܡܡܐ
8
9 ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ : * ܣܗܪܐ ܘܟܘܟܒܐ ܠܫܘܠܛܢܐ ܕܠܠܝܐ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ.
10 * ܠܕܡܚܐ ܠܡܨܪܝܐ ܒܒܘܟܪܝܗܘܢ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ : * ܘܐܦܩ ܠܐܝܣܪܐܝܠ ܡܢ ܡܨܥܬܗܘܢ
11
12 ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ. * ܒܐܝܕܐ ܥܫܝܢܬܐ ܘܒܕܪܥܐ ܪܡܐ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ : * ܠܕܦܠܓ
13
14 ܝܡܐ ܕܣܘܦ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ : * ܘܐܥܒܪ ܠܐܝܣܪܐܝܠ ܒܓܘܗ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ.
15 * ܘܢܦܨ ܠܦܪܥܘܢ ܘܠܚܝܠܗ ܒܝܡܐ ܕܣܘܦ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ : * ܠܕܕܒܪ ܠܥܡܗ
16
17 ܒܡܕܒܪܐ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ. * ܠܕܡܚܐ ܡܠܟܐ ܪܘܪܒܐ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ * ܘܩܛܠ
18
19 ܡܠܟܐ ܥܫܝܢܐ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ : * ܠܣܝܚܘܢ ܡܠܟܐ ܕܐܡܘܪܝܐ ܕܠܥܠܡ
20 ܪܚܡܘܗܝ. * ܘܠܥܘܓ ܡܠܟܐ ܕܡܬܢܢ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ : * ܘܝܗܒ ܐܪܥܗܘܢ
21
22 ܝܪܬܘܬܐ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ. * ܝܪܬܘܬܐ ܠܐܝܣܪܐܝܠ ܥܒܕܗ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ :
23 * ܕܒܡܘܟܟܢ ܥܗܕܢ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ. * ܘܦܪܩܢ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝܢ ܕܠܥܠܡ
24
25 ܪܚܡܘܗܝ : * ܕܝܗܒ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܟܠ ܒܣܪ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ. * ܐܘܕܘ ܠܐܠܗܐ
26
ܕܒܫܡܝܐ ܕܠܥܠܡ ܪܚܡܘܗܝ.

Confitemini Deo deorum, quoniam in æternum miſerationes ejus. Confitemini Domino dominorum, quoniam in æternum miſerationes ejus. Ei qui fecit prodigia magna ſolus, quoniam in æternum miſerationes ejus. Ei qui condidit cœlum in ſapientiâ, quoniam in æternum miſerationes ejus. Qui firmavit terram ſuper aquas, quoniam in æternum miſerationes ejus. Qui fecit luminaria magna, quoniam in æternum miſerationes ejus. Solem in dominium diei, quoniam in æternum miſerationes ejus. Lunam & ſtellas in dominium noctis, quoniam in æternum miſerationes ejus. Qui percuſſit primogenita Ægypti, quoniam in æternum miſerationes ejus. Et eduxit Iſraelem de medio eorum, quoniam in æternum miſerationes ejus. Manu validâ & brachio excelſo, quoniam in æternum miſerationes ejus. Qui diviſit mare Suph, quoniam in æternum miſerationes ejus. Et traduxit Iſraelem per illud, quoniam in æternum miſerationes ejus. Et exagitavit Pharaonem & exercitum ejus in mari Suph, quoniam in æternum miſerationes ejus. Qui duxit populum ſuum per deſertum, quoniam in æternum miſerationes ejus. Qui percuſſit reges magnos, quoniam in æternum miſerationes ejus. Et occîdit reges potentes, quoniam in æternum miſerationes ejus. Sihon regem Amorrhæorum, quoniam in æternum miſerationes ejus. Et Og regem Baſan, quoniam in æternum miſerationes ejus. Dedit terram eorum hæreditatem, quoniam in æternum miſerationes ejus. Hæreditatem Iſraeli ſervo ſuo, quoniam in æternum miſerationes ejus. Qui memor fuit noſtri in humilitate noſtra, quoniam in æternum miſerationes ejus. Et liberavit nos ab inimicis noſtris, quoniam in æternum miſerationes ejus. Qui dat eſcam omni carni, quoniam in æternum miſerationes ejus. Confitemini Deo qui eſt in cœlo, quoniam in æternum miſerationes ejus.

Verſio VULG. LAT.

2 Confitemini Deo deorũ : quoniam in
3 æternũ miſericordia ejus. Confitemini
Dño dominorum : quoniã in æternum
4 miſericordia ejus. Qui facit mirabilia
magna ſolus : quoniã in æternũ mi-
5 ſericordia ejus. Qui fecit cœlos in in-
tellectu : quoniã in æternũ miſericor-
6 dia ejus. Qui firmavit terrã ſuper a-
quas: quoniam in æternũ miſericor-
7 dia ejus. Qui fecit luminaria magna:
quoniam in æternum miſericordia ej⁹.
8 Solem in poteſtaté diei : quoniã in æ-
9 ternũ miſericordia ej⁹. Lunam & ſtel-
las in poteſtatem noctis : quoniã in
10 æternum miſericordia ejus. Qui per-
cuſſit Ægyptũ cũ primogenitis eorũ :
quoniã in æternum miſericordia ejus.
11 Qui eduxit Iſrael de medio eorum :
quoniã in æternum miſericordia ejus.
12 In manu potenti, & brachio excelſo:
quoniã in æternum miſericordia ejus.
13 Qui diviſit Mare rubrum in diviſio-
nes: quoniã in æternum miſericordia
14 ejus. Et eduxit Iſrael per medium ej⁹:
quoniã in æternum miſericordia ejus.
15 Et excuſſit Pharaonem, & virtuté ej⁹
in Mari rubro : quoniam in æternum
16 miſericordia ejus. Qui traduxit po-
pulum ſuum per deſertum : quoniam
17 in æternum miſericordia ejus. Qui
percuſſit reges magnos : quoniam in
18 æternum miſericordia ejus. Et occi-
dit reges fortes : quoniam in æter-
19 num miſericordia ejus. Sehon regem
Amorrhæorum : quoniam in æternum
20 miſericordia ejus. Et Og regem Ba-
ſan : quoniam in æternum miſericor-
21 dia ejus. Et dedit terram eorum hære-
ditatem : quoniam in æternum miſe-
22 ricordia ejus. Hæreditaté Iſrael ſervo
ſuo : quoniã in æternum miſericordia
23 ejus. Quia in humilitate noſtra memor
fuit noſtrî : quoniã in æternũ miſe-
24 ricordia ej⁹. Et redemit nos ab inimi-
cis noſtris: quoniã in æternũ miſericor-
25 dia ejus. Qui dat eſcam omni carni :
quoniam in æternum miſericordia ej⁹.
Confitemini Deo cœli : quoniam in
26 æternum miſericordia ejus. Confite-
mini Domino dominorum : quoniam
in æternum miſericordia ejus.

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

2 †Ἐξομολογεῖσθε τῷ Θεῷ τῶν θεῶν, †ὅτι εἰς τὸν αἰ-
3 ῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Ἐξομολογεῖσθε τῷ κυρίῳ τῶν
4 κυρίων, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Τῷ
ποιήσαντι θαυμάσια μεγάλα μόνῳ, †ὅτι εἰς τὸν
5 αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Τῷ ποιήσαντι τοὺς οὐρανοὺς
ἐν συνέσει, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †
6 Τῷ στερεώσαντι τὴν γῆν ἐπὶ τῶν ὑδάτων, †ὅτι εἰς
7 τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. Τῷ ποιήσαντι φῶτα
μεγάλα μόνῳ, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ·
8 †Τὸν ἥλιον εἰς ἐξουσίαν τῆς ἡμέρας, †ὅτι εἰς τὸν
9 αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· †Τὴν σελήνην καὶ (β) τοὺς
ἀστέρας εἰς ἐξουσίαν τῆς νυκτὸς, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶ-
10 να τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Τῷ πατάξαντι Αἴγυπτον σὺν
τοῖς πρωτοτόκοις αὐτῶν, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔ-
11 λεος αὐτοῦ. †Καὶ ἐξαγαγόντι τὸν Ἰσραὴλ ἐκ μέ-
12 σου αὐτῶν, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· †Ἐν
χειρὶ κραταιᾷ καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ, †ὅτι εἰς τὸν
13 αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Τῷ καταδιελόντι τὴν ἐρυθρὰν
θάλασσαν εἰς διαιρέσεις, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος
14 αὐτοῦ· †Καὶ διαγαγόντι τὸν Ἰσραὴλ διὰ μέσου αὐ-
15 τῆς, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· †(γ) Καὶ ἐκ-
τινάξαντι Φαραὼ καὶ τὴν δύναμιν αὐτοῦ εἰς θάλασσαν
16 ἐρυθρὰν, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Τῷ
διαγαγόντι τὸν λαὸν αὐτοῦ ἐν τῇ ἐρήμῳ, †ὅτι εἰς τὸν
17 αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Τῷ πατάξαντι βασιλεῖς
18 μεγάλους, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· †Καὶ
ἀποκτείναντι βασιλεῖς κραταιοὺς, †ὅτι εἰς τὸν αἰ-
19 ῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· Τὸν Σηὼν βασιλέα τῶν Ἀμοῤ-
20 ῥαίων, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· Καὶ τὸν
Ὢγ βασιλέα τῆς Βασὰν, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ
21 ἔλεος αὐτοῦ. †Καὶ δόντι τὴν γῆν αὐτῶν κληρονο-
21 μίαν, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ· Κληρο-
νομίαν Ἰσραὴλ δούλῳ αὐτοῦ, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα
23 τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Ὅτι ἐν τῇ ταπεινώσει ἡμῶν ἐ-
μνήσθη ἡμῶν ὁ κύριος, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλε-
24 ος αὐτοῦ· †Καὶ ἐλυτρώσατο ἡμᾶς ἐκ τῶν ἐχθρῶν ἡ-
25 μῶν, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ. †Ὁ διδοὺς
τροφὴν πάσῃ σαρκὶ, †ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος
αὐτοῦ. †Ἐξομολογεῖσθε (δ) τῷ Θεῷ τοῦ οὐρανοῦ, †ὅτι
εἰς τὸν αἰῶνα τὸ ἔλεος αὐτοῦ.

MS. A. (β) τὰ ἄστρα (γ) Τῷ ἐκτινάξαντι (δ) τῷ κυρίῳ

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

2 Confitemini Deo deorum : quoni- 2
am in ſeculum miſericordia ejus. 3 3
Confitemini Domino dominorum : 3
quoniam in ſeculum miſericordia
ejus. 4 Qui facit [a] mirabilia 4
magna ſolus : quoniam in ſeculum
miſericordia ejus. 5 Qui fecit cœ- 5
los in intellectu : quoniam in ſe-
culum miſericordia ejus. 6 Qui (b) 6
firmavit terram ſuper aquas : quo-
niam in ſeculum miſericordia ejus.
7 Qui fecit (c) luminaria magna ſo- 7
lus : quoniam in ſeculum miſericor-
dia ejus. 8 Solem [b] in (d) pote- 8
ſtatem diei : quoniam in ſeculum
miſericordia ejus. 9 Lunam & ſtel- 9
las [c] in poteſtatem noctis : quo-
niam in ſeculum miſericordia ejus.
10 Qui percuſſit Ægyptum cum pri- 10
mogenitis eorum : quoniam in ſe-
culum miſericordia ejus. 11 Et qui 11
eduxit Iſrael de medio eorum: quo
niam in ſeculum miſericordia ejus.
12 In manu potenti & in brachio 12
excelſo:quoniam in ſeculum miſeri-
cordia ejus. 13 Qui diviſit Mare 13
rubrum in (e) diviſiones : quoniam
in ſeculum miſericordia ejus. 14
Et traduxit Iſrael per medium e- 14
jus : quoniam in ſeculum miſericor-
dia ejus. 15 Et percuſſit Pharao- 15
nem, & virtutem ejus in Mare ru-
brum : quoniam in ſeculum miſeri-
cordia ejus. 16 Qui traduxit popu- 16
lum ſuum in deſerto : quoniam in
ſeculum miſericordia ejus. [d]
17 Qui percuſſit reges magnos : 17
quoniam in ſeculum miſericordia
ejus. 18 Et occîdit reges fortes : 18
quoniam in ſeculum miſericordia e-
jus. 19 Seon regem Amorrhæorum : 19
quoniam in ſeculum miſericordia
ejus. 20 Et Og regem Baſan : 20
quoniam in ſeculum miſericordia e-
jus. 21 Et dedit terram eorum hæ- 21
reditatem: quoniam in ſeculum mi-
ſericordia ejus. 22 Hæreditatem Iſ- 22
rael ſervo ſuo : quoniam in ſeculũ
miſericordia ejus. 23 Quia in hu- 23
militate noſtra memor fuit noſtrî
Dominus : quoniam in ſeculum mi-
ſericordia ejus. 24 Et redemit nos 24
[e] ab inimicis noſtris : quoniam in
ſeculum miſericordia ejus. 25 Qui 25
dat (f) eſcam omni carni : quoniam in ſeculum miſericordia ejus. 26 Con-
fitemini Deo cœli : quoniam in ſeculum miſericordia ejus.

Verſio ÆTHIOPICA.

ግነዩ፡ ለአምላክ ፡ አማልክት፡፡ እስመ ፡ ለ 2
ዓለም ፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ግነዩ ፡ ለእግዚእ፡ 3
አጋእዝት፡፡ እስመ ፡ ለዓለም ፡ ምሕረ
ቱ፡፡=፡ ዘገብረ ፡ ዐቢየ ፡ ወመንክረ ፡ በ 4
ሕቲቱ፡፡ እስመ፡ ለዓለም ፡ ምሕረቱ፡፡=፡
ዘገብረ ፡ ሰማያተ ፡ በጥበቡ፡፡ እስመ ፡ ለዓ 5
ለም ፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ዘአጽንዓ ፡ ለምድ 6
ር ፡ ደበ ፡ ማይ፡፡ እስመ ፡ ለዓለም ፡ ም
ሕረቱ፡፡=፡ ዘገብረ ፡ ብርሃናተ ፡ ዐቢየ 7
ተ፡ በሕቲቱ፡፡ እስመ ፡ ለዓለም ፡ ምሕረ
ቱ፡፡=፡ ለፀሐይ፡ አሠናየም፡ መዐልተ፡፡ እስ 8
መ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ለወርኅ፡ ወለከ 9
ዋክብት፡ አሠናየም፡ ሌሊተ፡፡ እስመ፡ ለዓለ
ም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ዘቀተሎሙ፡ ለግብጽ፡ ም 10
ስለ፡ በኵሮሙ፡ ፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረ
ቱ፡፡=፡ ወአውፅኦሙ፡ ለእስራኤል፡ እማእ 11
ከሎሙ፡፡ እስመ፡ ለዓለም ፡ ምሕረቱ፡፡=፡
በእድ፡ ፀንዕት፡ ወበመዝራዕቱ፡ ልዑል፡፡ እስ 12
መ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ወነፈቀ፡ ለባሕ 13
ረ፡ ኤርትራ፡ ወከፈሎ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ም
ሕረቱ፡፡=፡ ወአውፅኦሙ፡ ለእስራኤል፡ እ 14
ንተ ፡ ማእከሎ፡፡ እስመ ፡ ለዓለም ፡ ምሕረ
ቱ፡፡=፡ ዘነፅሖ፡ ለፈርዖን፡ ወኀይሉ፡ ውስተ፡ 15
ባሕረ፡ ኤርትራ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረ
ቱ፡፡=፡ ዘወአውፅኦሙ፡ ለሕዝቡ፡ ውስተ፡ 16
ገደም፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡ ዘአው
ፅአ፡ ማየ፡ እምኰኵሕ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡
ምሕረቱ፡፡=፡ ዘቀተለ፡ ነገሥተ፡ ዐቢይተ፡፡ 17
እስመ ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ወቀተለ፡ 18
ነገሥተ ፡ ፀኑዓነ፡፡ እስመ ፡ ለዓለም፡ ምሕ
ረቱ፡፡=፡ ለሴዎን ፡ ንጉሠ ፡ አሞሬዎን፡፡ 19
እስመ ፡ ለዓለም ፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ወለዖግ፡ 20
ንጉሠ ፡ ባሳን፡፡ እስመ፡ ለዓለም ፡ ምሕረ
ቱ፡፡=፡ ወወሀበ፡ ምድሮሙ፡ ለርስት፡፡ እስ 21
መ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ርስተ፡ እስራኤ 22
ል፡ ገብሩ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡
እስመ፡ ተዘከረነ፡ እግዚአብሔር፡ በሕማም 23
ነ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ወአ 24
ድኀነነ፡ እምእደ፡ ፀርነ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡
ምሕረቱ፡፡=፡ ዘይሁብ፡ ሲሳየ፡ ለኵሉ፡ ዘ 25
ሥጋ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡ ምሕረቱ፡፡=፡ ግነ 26
ዩ፡ ለአምላክ ፡ ሰማይ፡፡ እስመ፡ ለዓለም፡
ምሕረቱ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. *PSAL. CXXXV.* [a] magnalia & mirabilia [b] ad dominandum diei : [c] ad dominandum noctì : [d] Qui eduxit aquam ex rupe : quoniam in ſeculum miſericordia ejus. Qui percuſſit [e] à manu inimicorum noſtrorum :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

2 3 * اشكروا اله الالهة * فان رحمته لثابتة الي الابد * اشكروا رب الارباب * فان رحمته كائنة الي
4 5 الابد * الذي صنع العجائب العظيمة وحده * وان رحمته لدائمة الي الابد * الذي خلق
6 السموات بحكمته * وان رحمته لثابتة الي الابد * الذي ثبت الارض علي المياه * وان رحمته لكائنة
7 8 الي الابد * الذي خلق الانوار العظيمة وحده * لان رحمته دائمة الي الابد * الشمس لسلطان
9 النهار * لان رحمته دائمة الي الابد * القمر والنجوم لسلطان الليل * لان رحمته دائمة الي الابد *
10 11 * الذي ضرب مصر مع ابكارها * فان رحمته ثابتة الي الابد * واخرج اسرائيل من وسطهم * وان
12 13 رحمته دائمة الي الابد * بيد عزيزة وذراع رفيعة * فان رحمته دائمة الي الابد * الذي فرق البحر
14 الاحمر افلاقا * وان رحمته لثابتة الي الابد * واجاز اسرائيل في وسطهم * لان رحمته دائمة الي الابد *
15 16 * وغرق فرعون وجميع جنوده في البحر الاحمر * وان رحمته لثابتة الي الابد * الذي هدي شعبه في
البرية * فان رحمته لكائنة الي الابد * وانبع الماء من صخر صماء * وان رحمته لكائنة الي الابد *
17 18 * الذي ضرب ملوكا عظمة * وان رحمته لثابتة الي الابد * وقتل ملوكا عجيبة * وان رحمته لثابتة
19 20 الي الابد * سيحون ملك الاموريين * وان رحمته لكائنة الي الابد * وعوج ملك بيسان * وان رحمته
21 22 لدائمة الي الابد * واعطي ارضهم ميراثا * لان رحمته دائمة الي الابد * ميراثا لاسرائيل عبده * وان رحمته
23 24 لكائنة الي الابد * ان الرب ذكرنا في تواضعنا * لان رحمته الي الابد * وخلصنا من يد اعدائنا * لان
25 26 رحمته الي الابد * الذي يعطي طعاما لكل ذي جسد * وان رحمته لثابتة الي الابد * اشكروا اله
27 السماء * فان رحمته كائنة الي الابد * اشكروا رب الارباب * فان رحمته دائمة الي الابد * الليلويا *

Gratias agite Deo deorum, quoniã miſeri- 2
cordia ejus firmiſſima eſt in æternũ. Gra- 3
tias agite Domino dominorũ, quia miſe-
ricordia ejus duratura eſt in æternũ. Qui 4
edidit miracula magna ſolus: et quidẽ mi-
ſericordia ejus perpetua eſt in æternũ. Qui 5
creavit cœlos ſapientiâ ſuâ: et quidẽ mi-
ſericordia ejus cõſtans eſt in æternũ. Qui 6
ſtabilivit terrã ſuper aquas: et quidẽ mi-
ſericordia ejus perſtat in æternum. Qui 7
creavit lumina magna ſolus : quia miſe-
ricordia ejus perpetua eſt in æternũ. Solem 8
in dominiũ diei: quia miſericordia ej⁹ per-
ſeverans eſt in æternũ. Lunã et ſtellas in 9
dominiũ noctis: quia miſericordia ej⁹ per-
ſtans eſt in æternũ. Qui percuſſit Ægyptũ 10
cũ primogenitis ejus: quia miſericordia e-
jus firma eſt in æternũ. Et eduxit Iſraelẽ 11
è medio eorũ : et quidẽ miſericordia ejus
perpetua eſt in æternũ. Manu robuſtâ & 12
brachio excelſo: quoniã miſericordia ejus
perpetua eſt in æternũ. Qui fidit mare ru- 13
brum in ſciſſiones: et quidem miſericordia
ejus conſtantiſſima eſt in æternum. Et tra- 14
duxit Iſraelẽ per mediũ earum: quia mi-
ſericordia ejus perpetua eſt in æternũ. Et 15
ſubmerſit Pharaonem omneſque exercitus
ejus in mare rubrum: et quidẽ miſericor-
dia ejus firmiſſima eſt in æternum. Qui 16
rexit populũ ſuũ in deſerto : quia miſeri-
dia ejus perſtans eſt in æternum. Et pro-
fluere fecit aquam è petra ſolidiſſima :
& quidem miſericordia ejus perſtans eſt
in æternum. Qui percuſſit reges magnos: 17
& quidem miſericordia eius prſeverans
eſt in æternum. Et occîdit reges admiran- 18
dos : & quidem miſericordia eius firma
eſt in æternum. Sehon regem Amorræorũ: 19
& quidem miſericordia ejus permanens
eſt in æternum. Et Og regẽ Baſã: & quidẽ 20
miſericordia ejus perpetua eſt in æternum.
Et dedit terrã eorum hæreditatẽ: quia mi- 21
ſericordia ej⁹ perpetua eſt in æternum. Hæ- 22
reditatẽ Iſraeli ſervo ſuo: & quidẽ miſe-
ricordia ej⁹ perſtans eſt in æternum. Quia 23
Domin⁹ recordatus eſt noſtrî in humilita-
te noſtra: quia miſericordia ejus eſt in æ-
ternum. Et ſalvavit nos de manu inimico- 24
rum noſtrorum: quia miſericordia eius eſt
in æternum. Qui dat eſcã omni corporeo: 25
& quidem miſericordia eius firma eſt in 26
æternum. Gratias agite Deo cœli, quia miſericordia eius exſtet in æternum. Gratias agite Domino dominorum, quia miſericordia ejus perpetua eſt in æternum. Alleluia. 27

תהלים: קלז קלח קלט

PSAL. CXXXVII. קלז

.Sijon *nos recordando in* : flevimus etiam ,sedimus ibi Babel flumina *Super*
על־נהרות בבל שם ישבנו גם־בכינו בזכרנו את־ציון: 1
,*nos petierunt* ibi Quia .nostras citharas suspendimus : ejus medio in salices Super
על־ערבים בתוכה תלינו כנורותינו: כי שם שאלונו 2
3 cantico de nobis cantate : *lætitiam nostros ululatus* & , cantici verba , nos *captivantes*
שובינו דברי־שיר ותוללינו שמחה שירו לנו משיר
? alienigenæ *humum super* Domini canticum cantabimus Quomodo .Sijon
ציון: איך נשיר את־שיר־יהוה על אדמת נכר: 4
mea lingua Adhæreat .mea dextera obliviscatur : Jerusalaim tui fuero oblitus Si
אם־אשכחך ירושלם תשכח ימיני: תדבק לשוני 5
6 *super* Jerusalaim fecero ascendere non si : tui meminero non si ,meo palato
לחכי אם־לא אזכרכי אם־לא אעלה את־ירושלם על־
, Jerusalaim diei Edom filiorũ Domine Recordare .meæ lætitiæ capite
ראש שמחתי: זכר יהוה לבני אדום את יום ירושלם 7
Babel Filia .ea in fundamentum ad usque discooperite , Discooperite : *dicentium*
האמרים ערו ערו עד היסוד בה: בת־בבל 8
.nobis retribuisti quam ,tuam retributionem tibi retribuit qui *beatitudines* , vastata
השדודה אשרי שישלם־לך את גמולך שגמלת לנו: 9
.petram ad tuos parvulos allidet &,apprehendet qui *Beatitudines*
אשרי שיאחז ונפץ את־עולליך אל־הסלע:

PSAL. CXXXVIII. קלח

.tibi canam *Diis* coram : meo corde toto in tibi Confitebor .David ipsi
לדוד אודך בכל־לבי נגד אלהים אזמרך: 1
super tuo nomini confitebor & , tuæ sanctitatis *templum ad* me Incurvabo
אשתחוה אל־היכל קדשך ואודה את־שמך על־ 2
,tuũ nomen omnia super magnificâsti quoniam : tua veritate super & ,tua misericordia
חסדך ועל־אמתך כי־הגדלת על־כל־שמך
mea anima in me *roborabis* : me exaudisti & , invocavi die In .tuum eloquium
אמרתך: ביום קראתי ותענני תרהבני בנפשי 3
eloquia audierunt quia :terræ reges omnes Domine tibi Confiteantur .fortitudine
עז: יודוך יהוה כל־מלכי־ארץ כי־שמעו אמרי־ 4
5 Quoniam .Domini gloria magna quoniã : Domini viis in cantent Et .tui oris
פיך: וישירו בדרכי יהוה כי־גדול כבוד יהוה: כי־ 6
Si .cognoscet longinquo à *altum* & : videbit humilem & ,Dominus excelsus
רם יהוה ושפל יראה וגבה ממרחק יידע: אם־ 7
mittes meorũ inimicorum *nasum* super : me vivificabis angustiæ *interiori* in ambulavero
אלך בקרב צרה תחיני על אף איבי תשלח
,Domine ,me pro *perficiet* DOMINUS .tua dextera me servabit & : tuã manum
ידך ותושיעני ימינך: יהוה יגמר בעדי יהוה 8
.dimittas ne tuarum manuum *facta* : seculum in tua misericordia
חסדך לעולם מעשי ידיך אל־תרף:

PSAL. CXXXIX. קלט

cognovisti Tu .cognovisti &,me investigâsti Domine .*cantus* David ipsi Victori
למנצח לדוד מזמור יהוה חקרתני ותדע: אתה ידעת 1
2 .longè à meam cogitationem intellexisti : *meum resurgere* &,*meum sedere*
שבתי וקומי בנתה לרעי מרחוק:

תרגום TARGUM.

קלז

על נהרותא דבבל תמן יתבנא לחוד בכינא 1
כד הוינא דכרין ית ציון: על ערבין 2
במציעתא תלינן כנרנא: ארום תמן 3
שילו יתנא בבלאי דשבו יתנא למימר
מלין דשיריא ובזוזנא על עסק חדוא אמרין
שבחו לנא מן שירתא דהויתון אמרין
בציון: מן יד ליואי אמרין היכדין נשבח 4
ית תושבחא דיי על ארעא חילוניתא:
מתיבא קל רוחא דקודשא ואמרה דאין 5
מנשינא ליך ירושלם אנשיה לימיני: תדבק 6
לישני למוריני אין לא אדכר יתיכי אין לא
אסיק דכרן ירושלים על שרוי חדות בית
שמשי: אמר מיכאל רבה דירושלם אדכר 7
יי לעמא דאדומא דאחריבו ירושלם דאמרין
צדו צדו עד דשתאסא בה: אמר גבריאל 8
רבה דציון לאומא בבליתא בזוזיתא טבליה
דישלם לך ית גומליך בישדי גמלת לנא:
טבליה דאחד ומרטש ית טלייך על כיפא: 9

קלח

על יד דוד אודי קדמך יי בכל לבי קבל 1
דיניא אומרנך: אסגוד קדם היכלא 2
דקודשא ואודי ית שמך מטול טובך ומטול
קושטך ארום אסגיתא על כל שמך מימרי
תושבחתך: ביומא די קרית עני יתי אסגעתני 3
בנפשי עושנא: יודון קדמך יי כל מלכי 4
ארעא ארום שמעו מימרי תושבחתך: וישבחון 5
על כבישי יי ארום רב איקרא דיי: ארום רמא 6
יי ומכיך יחמי לטב וגיותנא מן שמיא רחיקין
ימאיך: אין אהלך במצע עקתא תחינני על 7
נחירא בעלי דבבי תושיט אידך לחבלותהון
ותפרקנני ימינך: יי ישלים בישא עלויהון 8
אמטולתי יי טובך לעלם עובדי אידך לא
תשבוק:

קלט

לשבחא על יד דוד תושבחתא יי פשפשתני 1
ית: את קדמך גלי אותבותי למעסק באוריתא ואוקימותי למיול בקרבא אתבינת לחברותי בכנשתך מן עם רחיק: 2

PARAPH. CHALD. Vers. La

PSAL. CXXXVII.

Super flumina Babylonis, ibi sedimus &
flevimꝰ cum recordaremur Sion. Sup sal
ces in medio ejus suspendimꝰ citharas no
stras. Ibi autem rogaverunt nos Babyloni
qui captivos adduxerunt nos, ut diceremus
verba canticorum: et raptores nostri lætitiæ
causa dicebant : Psallite nobis cantica quæ
dicebatis in Sion. *Evestigiò Levitæ dixe-*
runt, Quomodo cantabimꝰ hymnos Dñi in
terra aliena? *Respondit vox spiritꝰ sancti et*
dixit, *Quòd* si oblitus fuero tui Jerusalem,
oblivioni tradam dexterã meam. Adhæreat
lingua mea palato meo, nisi recordatus fu-
ero tui, nisi ascendere fecero memoriam Je-
rusalem in initio lætitiæ *domus* ministrorũ
meorũ. *Dixit Michael princeps Jerusalem*,
Memor esto Domine populi Edom, *qui de-*
struxerunt Jerusalem, dicentes : *Destruite*
destruite usq; ad fundamentũ in ea. *Dixit*
Gabriel princeps Sion genti Babylonicæ
vastatrici, Beatꝰ qui reddiderit tibi *retribu-*
tionẽ tuã malã quã retribuisti nobis. Beatꝰ
qui capiet et allidet parvulos tuos sup petr

Per manum Davidis.

PSAL. CXXXVIII.

COnfitebor coram te Dñe in toto cor
meo : in conspectu judicum cantabo ti
Adorabo corã templo sancto[*tuo*,] & con
tebor nomini tuo propter benignitatẽ tuam
& propter veritatem tuam, quoniam magni
câsti super omne nomen tuum *verba laud*
tuæ. In die qua invocavi, *responde mih*
multiplicâsti in anima mea fortitudinem.
Confiteantur coram te Dñe omnes reges
terræ, quoniam audierunt *verba* laudis tuæ.
Et cantent in viis Dñi, quoniam magna
gloria Domini. Quoniam excelsus Dominus
& humilem respiciet *in bonum*, et superbos
de cœlis longinquis deprimet. Si ambu
vero in media angustia, vivificabis me, &
super *nasum* inimicorum meorum pon
manũ tuam ut destruas illos: et redimet me
dextera tua. *Dominus* reddet malum il
propter me: Domine benignitas tua in æ
num; opera manuum tuarum ne derelinqua

Ad laudandũ p manum Davidis cantic.

PSAL. CXXXIX.

DOmine perscrutatus es me & cogno
sti. Coram te nota est sessio mea *ad stu*
dum legi, et surrectio mea *ad eundum in*
lum: intellexisti societatem meam in eccle
sia *tua* de *populo longinquo*

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

1 [illegible] * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 6 [illegible]
7 [illegible]
8 [illegible]
9 [illegible]
[illegible] * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *
1 [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 6 [illegible]
7 [illegible]
8 [illegible]
1 [illegible] * ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *
[illegible]
[illegible]
3 [illegible]

PSAL. CXXXVI.

Davidis. Verba Sanctorum qui cap
ducti sunt in Babel. Vers. 16.

AD flumina Babylonis ibi sedimꝰ & fle
mus cũ recordaremur Siõ, Ad salices qu
sunt intra ipsã appendimꝰ citharas no
Quoniã illîc petierunt à nobis qui capt
duxerunt nos verba laudationũ: & qui ab
xerũt nos, dixerũt nobis; Canite nobis de
ticis Siõ. Quomodò canemꝰ vobis laudes
in terra aliena? Si obliviscar tui Hierusal
obliviscatur meî dextera mea: Hæreat ling
mea cœlo oris mei, si nõ meminero tui
attollã Hierusalẽ in principio gaudiorũ
orũ. Memor esto Dñe filiorũ Adũ in die
rusalem: dicentiũ ; Detegite, detegite us
ipsius fundamenta. Filia Babylonis depræ
trix, beatus qui reddet tibi retribution
quam nobis retulisti : Beatus qui appre
det tuos infantes & allidet ad petram.

PSAL. CXXXVII.

Compositus à Davide. Gratiarum a
cum prophetia. Vers. 21.

COnfitebor Dño ex toto corde me
corã regibꝰ psallã tibi: Adorabo in
plo sanctitatis tuæ, & gratias agã no
tuo de tua bonitate deque veritate tua
magnificâsti sup omne nomen, eloquiũ
Die quâ vocavi te respondisti mihi, et au
robur animæ meæ. Confiteantur tibi Dñe
mnes reges terræ, quoniã audierunt serm
oris tui: Et glorificent vias Dñi, quoniã m
gna est majestas Dñi, Et excelsꝰ est Dñs, q
profundũ respicit, & eũ qui superbit è
cognoscit. Si ambulavero p angustiã, vivi
cabis me: in ira inimicorũ meorũ ext
manũ tuã, & salvabis me. Dexteram tu
Domine quiescere fac super me, *quia* [illegible]
dem Dñe misericordia tua sempiterna
& opus manuum tuarum ne destituas.

PSAL. CXXXVIII.

Davidis. Quum clamabat & expr
ei quòd rebellâsset, quidam qui voca
mei filius Gari dicens, O effundens
nem. Spirituali verò sensu Theologia
tio cum petitione. Vers. 46.

DOmine scrutatus es me, & agnov
Tu nôsti meũ sedendi atque surg
cũ : Intellexisti cogitationes meas à

Versio VULG. LAT.

Psalmus David, Jeremiæ, CXXXVI.
1 Super flumina Babylonis, illic sedimus
& flevim⁹: cùm recordaremur Sion:
2 In salicibus in medio ejus, suspendimus
3 organa nostra. Quia illic interrogaverunt
nos, qui captivos duxerunt nos, verba
cantionum: Et qui abduxerunt nos;
Hymnū cantate nobis de canticis Sion.
4 Quomodò cantabimus canticū Dñi in
5 terra aliena? Si oblitus fuero tui, Jerusalem,
6 oblivioni detur dextera mea. Adhæreat
lingua mea faucibus meis, si non
meminero tui: Si non proposuero Jerusalem,
in principio lætitiæ meæ. Memor
7 esto, Dñe, filiorū Edom, in die Jerusalem:
Qui dicunt; Exinanite, exinanite usq; ad
8 fundamentū in ea. Filia Babylonis misera:
beat⁹, qui retribuet tibi retributionē
9 tuā quā retribuisti nobis. Beatus, qui tenebit,
& allidet parvulos tuos ad petrā.

Ipsi David. CXXXVII.
1 Confitebor tibi, Dñe, in toto corde
meo: quoniā audisti verba oris mei.
In conspectu Angelorum psallam tibi:
2 Adorabo ad templum sanctum tuum, &
confitebor nomini tuo, Super misericordia
tua, & veritate tua: quoniam magnificâsti
sup omne, nomen sanctū tuū.
3 In quacunque die invocavero te, exaudi
me: multiplicabis in anima mea
4 virtutem. Confiteantur tibi, Domine,
omnes reges terræ: quia audierunt
5 omnia verba oris tui: Et cantent in viis
Domini: quoniam magna est gloria Domini.
6 Quoniam excelsus Dominus, &
humilia respicit: & alta à longè cognoscit.
7 Si ambulavero in medio tribulationis,
vivificabis me: & sup irā inimicorū
meorū extendisti manū tuā, & salvū
8 me fecit dextera tua. Dñs retribuet
pro me: Dñe, misericordia tua in seculum:
opera manuū tuarū ne despicias.

1 In finem, Psalm⁹ David. CXXXVIII.
2 Domine, probasti me, et cognovisti
me: Tu cognovisti sessionem meā, &
resurrectionem meam. Intellexisti cogitationes
meas de longé:

Vers. GRÆCA. LXX. Interp.

(α) Τῷ Δαυὶδ, Ἱερεμίου. ρλϛ'.
1 † Ἐπὶ τῶν ποταμῶν Βαβυλῶνος † ἐκεῖ ἐκαθίσαμεν,
καὶ ἐκλαύσαμεν † ἐν τῷ μνησθῆναι ἡμᾶς τῆς Σιών.
2 † Ἐπὶ ταῖς ἰτέαις ἐν μέσῳ αὐτῆς (β) ἐκρεμάσαμεν τὰ ὄργανα
3 ἡμῶν. † Ὅτι ἐκεῖ ἐπηρώτησαν ἡμᾶς οἱ (γ) αἰχμαλωτεύσαντες
ἡμᾶς, λόγους ᾠδῶν, † καὶ οἱ ἀπαγαγόντες
ἡμᾶς, ὕμνον· † Ἄσατε ἡμῖν ἐκ τῶν ᾠδῶν
4 Σιών. † Πῶς ᾄσωμεν τὴν ᾠδὴν κυρίου ἐπὶ γῆς ἀλλοτρίας;
5 † Ἐὰν ἐπιλάθωμαί σου Ἱερουσαλήμ, ἐπιλησθείη
6 ἡ δεξιά μου. † Κολληθείη ἡ γλῶσσά μου τῷ
λάρυγγί μου, ἐὰν μή σου μνησθῶ· † ἐὰν μὴ προανατάξωμαι
τὴν Ἱερουσαλὴμ (δ) ὡς ἐν ἀρχῇ τῆς εὐφροσύνης
7 μου. † Μνήσθητι κύριε τῶν υἱῶν Ἐδὼμ τὴν ἡμέραν
Ἱερουσαλήμ· † τῶν λεγόντων, Ἐκκενοῦτε, ἐκκενοῦτε,
8 (ε) ἕως τῶν θεμελίων αὐτῆς. † Θυγάτηρ Βαβυλῶνος
ἡ ταλαίπωρος, † μακάριος ὃς ἀνταποδώσει
σοι τὸ ἀνταπόδομά σου, ὃ ἀνταπέδωκας ἡμῖν.
9 † Μακάριος ὃς κρατήσει καὶ ἐδαφιεῖ τὰ νήπιά
σου πρὸς τὴν πέτραν.

1 (α) Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, Ἀγγαίου καὶ
Ζαχαρίου. ρλζ'.
† Ἐξομολογήσομαί σοι κύριε ἐν ὅλῃ καρδίᾳ μου,
† καὶ ἐναντίον ἀγγέλων (β) ψαλῶ σοι, † ὅτι ἤκουσας πάντα
2 τὰ ῥήματα τοῦ στόματός μου. Προσκυνήσω πρὸς
ναὸν ἅγιόν σου, † καὶ ἐξομολογήσομαι τῷ ὀνόματί
σου, † ἐπὶ τῷ ἐλέει σου καὶ τῇ ἀληθείᾳ σου· † ὅτι ἐμεγάλυνας
3 (γ) ἐπὶ πᾶν τὸ ὄνομα τὸ ἅγιόν σου. † Ἐν ᾗ
ἂν ἡμέρᾳ (*) ἐπικαλέσωμαί σε, ταχὺ ἐπάκουσόν μου·
4 † πολυωρήσεις με ἐν ψυχῇ μου (δ) δυνάμει σου. † Ἐξομολογησάσθωσάν
σοι κύριε πάντες οἱ βασιλεῖς τῆς
γῆς, † ὅτι ἤκουσαν πάντα τὰ ῥήματα τοῦ στόματός σου.
5 † Καὶ ᾀσάτωσαν ἐν ταῖς ὁδοῖς κυρίου, † ὅτι μεγάλη ἡ δόξα
6 κυρίου. † Ὅτι ὑψηλὸς κύριος, καὶ τὰ ταπεινὰ ἐφορᾷ,
7 † καὶ τὰ ὑψηλὰ ἀπὸ μακρόθεν γινώσκει. † Ἐὰν
πορευθῶ ἐν μέσῳ θλίψεως, (ε) ζήσεις με. † ἐπ᾽ ὀργὴν
ἐχθρῶν μου ἐξέτεινας χεῖράς σου, † καὶ ἔσωσέ με
8 ἡ δεξιά σου. † (ζ) Κύριε ἀνταποδώσεις ὑπὲρ ἐμοῦ.
† κύριε τὸ ἔλεός σου εἰς τὸν αἰῶνα, † τὰ ἔργα τῶν
χειρῶν σου μὴ παρίδῃς.

1 Εἰς τὸ τέλος, (α) ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ρλη'.
2 † Κύριε ἐδοκίμασάς με, καὶ ἔγνως με. † Σὺ ἔγνως
3 τὴν καθέδραν μου, καὶ τὴν ἔγερσίν μου. † Σὺ συνῆκας τοὺς
διαλογισμούς μου ἀπὸ μακρόθεν.

Vers. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Transl. LAT.

[a] Ipsi David, (a) Hieremiæ.
CXXXVI.
Super flumina Babylonis illîc sedim⁹, 1
& flevim⁹: dum (b) recordaremur
Sion. 2 In salicibus in medio ejus 2
suspendim⁹ (c) organa nostra. 3 Quoniam 3
illîc interrogaverunt nos, qui
captivos duxerunt nos, verba canticorum:
4 & [b] qui (d) abduxerunt
nos hymnū; Cantate nobis de canticis
Sion. 5 Quomodò cantabim⁹ canticū 4
Domini in terra aliena? 6 Si oblitus 5
fuero tuî, Hierusalem, (e) obliviscatur
dextera mea. 7 Adhæreat lingua 6
mea faucibus meis; si non meminero
tuî: 8 Si non [c] præposuero Hierusalem,
sicut in (f) principio lætitiæ
meæ. 9 Memento, Domine, filiorū (g) 7
Edom in die Hierusalem. 10 Qui
dicū, [d] Exinanite, exinanite usq;
ad (h) fundamenta ejus. 11 Filia 8
Babylonis (i) misera: beat⁹, qui retribuet
tibi retributionē tuā, quam (k)
retribuisti nobis. 12 Beat⁹ qui tenebit, 9
& allidet parvulos tuos ad petrā.

[a] Psalmus ipsi David. (a) Aggæi, 1
& Zachariæ. CXXXVII.
1 Confiteor tibi, Domine, in toto
corde meo; 2 [b] & (b) coram angelis
psallā tibi: (c) quoniā audisti omnia
verba oris mei. Adorabo ad templū 2
sanctū tuum: & confitebor nomini
tuo, 3 Super misericordia tua, & veritate
tua: quoniā magnificâsti super
(d) omne nomē sanctū tuū. 4 In
(e) quacunq; die invocavero te; citò 3
exaudi me: (f) [c] multiplicabis me
in anima mea virtute tuâ. 5 Confiteantur 4
tibi, Domine, omnes reges terræ;
quoniā audierunt omnia verba
oris tui. 6 Et cantent [d] in (g) viis 5
Domini: quoniam magna est gloria
Domini. 7 Quoniā excelsus Dominus, 6
& humilia respicit: & (h) excelsa
à longè cognoscit. 8 Si (i) ambulavero 7
in medio tribulationis; vivificabis
me. Super irā [e] inimicorum
meorū extendisti man⁹ tuas, &
salvū me fecit dextera tua. 9 Domine, 8
(k) retribues pro me: Domine, misericordia
tua in seculum: [f] opera
manuum tuarum ne despicias.

In finem, Psalmus ipsi (a) David. 1
CXXXVIII.
1 Domine, probâsti me, et cognovisti
me: Tu cognovisti sessionē meā, & resurrectionē meā. 2 Tu intellexisti: [a] cogitationes 2 3
meas de longé:

Versio ÆTHIOPICA.

ዘዳዊት፡፡
የሀጊ ወስተ፡ አፍላገ፡ ባቢሎን፡ ህየ፡ ነበርነ፡ 1
ወበከይነ፡፡ ሶበ፡ ተዘከርናሃ፡ ለጽዮን፡፡=⁝ ወ 2
ስተ፡ ኵላዊሃ፡ ሰቀልነ፡ አንዚራቲነ፡፡=⁝ እስ 3
መ፡ በህየ፡ ተስእሉነ፡ ለለ፡ ፄወውነ፡ ነገረ፡ ማኅ
ሌት፡፡=⁝ ወእለሂ፡ ይወስዱነ፡ ይቤሉነ፡ ኀልዩ፡ 4
ለነ፡ እማኅሌሃ፡ ለጽዮን፡፡=⁝ ወለፎ፡ ንኅሊ፡ ማ 5
ኅሌተ፡ እግዚአብሔር፡ በምድረ፡ ነኪር፡፡=⁝
ወእመሰ፡ ረሳእኩኪ፡ ኢየሩሳሌም፡ ለትርስአ 6
ኒ፡ የማንየ፡፡=⁝ ወይጥጋዕ፡ ልሳንየ፡ በጕርዔየ፡ 7
እመ፡ ኢተዘከርኩኪ፡፡=⁝ ወለእመ፡ ኢበፃሕ 8
ኩ፡ ለኢየሩሳሌም፡ በቀዳሚ፡ ትፍሥሕት
የ፡፡=⁝ ተዘከሮሙ፡ እግዚኦ፡ ለደቂቀ፡ ኤዶ 9
ም፡፡ በዕለተ፡ ኢየሩሳሌም፡፡=⁝ እለ፡ ይብ 10
ሉ፡ ተክዕዉ፡ ወተሰወጡ፡ እስከ፡ መሰረታቲ
ሃ፡፡=⁝ ወለተ፡ ባቢሎን፡ ኅስርት፡፡ ብፁዕ፡ ዘ 11
ይትቤቀለኪ፡ በቀለ፡ ተበቀልክነ፡፡=⁝ ብፁዕ፡ 12
ዘይእኅዞሙ፡ ለደቂቅ፡ ወይነጽሖሙ፡ ወሰ
ተ፡ ኰኵሕ፡፡=⁝

ዘዳዊት፡፡
የሀጊ እገኒ፡ ለከ፡ እግዚኦ፡ በኵሉ፡ ልብየ፡፡ 1
እስመ፡ ሰማዕከኒ፡ ኵሎ፡ ቃለ፡ አፉየ፡፡=⁝ በ 2
ቅድመ፡ መላእክቲከ፡ እዜምር፡ ለከ፡፡ ወእ
ሰግድ፡ ውስተ፡ ጽርሐ፡ መቅደስከ፡፡ ወእገኒ፡
ለስምከ፡፡=⁝ በምሕረትከ፡ ወበጽድቅከ፡፡ 3
እስመ፡ አዕበይከ፡ ዲበ፡ ኵሉ፡ ስምከ፡ ቅዱ
ስ፡፡=⁝ አመ፡ ዕለተ፡ እፀውአከ፡ ፍጡነ፡ ሰምዐ 4
ኒ፡፡ ብዙኀ፡ አጽናዕከ፡ ለነፍስየ፡ በኀይል
ከ፡፡=⁝ ይገንዩ፡ ለከ፡ እግዚኦ፡ ኵሎሙ፡ 5
ነገሥተ፡ ምድር፡፡ እስመ፡ ሰምዑ፡ ኵሎ፡ ቃ
ለ፡ አፉከ፡፡=⁝ ወየኀልዩ፡ በስብሐተ፡ እግዚአ 6
ብሔር፡፡ እስመ፡ ዐቢይ፡ ክብረ፡ ለእግዚአብሔ
ር፡፡=⁝ እስመ፡ ልዑል፡ እግዚአብሔር፡ ወይ 7
ሬኢ፡ ዘበታሕቱ፡፡ ወለነዋኃኒ፡ ለእምርሑቅ፡
ያእምሮ፡፡=⁝ እመኒ፡ ሖርኩ፡ ማእከለ፡ መ 8
ንደቤ፡ ተሐይወኒ፡፡ ዲበ፡ መዐተ፡ አሐዘ፡ ሰ
ፋሕከ፡ እደዊየ፡፡ ወአድኀነኒ፡ የማንከ፡፡=⁝
እግዚአብሔር፡ ይትቤቀል፡ ሊተ፡፡ እግዚኦ፡ 9
ምሕረትከ፡ ለዓለም፡፡ እግዚኦ፡ ተግባረ፡ እደዊ
ከ፡ ኢትትሀየይ፡፡=⁝

ፍጻሜ፡ መዝሙር፡ ዘዳዊት፡፡
የሀጟ እግዚኦ፡ አመከርከኒ፡ ወአእመርከ 1
ኒ፡፡ አንተ፡ ተአምር፡ ንብረትየ፡ ወታሥእት
የ፡፡=⁝ ወአንተ፡ ተአምር፡ ኵሎ፡ ሕሊናየ፡ 2
ልብየ፡ እምርሑቅ፡፡

MS. A. ρλϛ'. (α) Τῷ Δαυίδ. (β) ἐκεῖ ἐκρεμάσαμεν (γ) * ἐκχμαλωτεύσαντες (δ) ἐν ἀρχῇ (ε) ἕως ὁ θεμέλιος ἐν αὐτῇ. MS. A. ρλζ'. (α) Τῷ Δαυίδ, Ζαχαρίου. (β) ψαλῶ σοι. Προσκυνήσω πρὸς (γ) πάντας τὸ ὄνομά σου τὸ ἅγιον. (*) ἐπικαλέσομαι (δ) ἐν δυνάμει. Ἐξομολογησάσθωσαν (ε) * ζώσεις με. (ζ) Κύριος ἀνταποδώσει MS. A. ρλη'. (α) τοῦ Δαυίδ, ψαλμὸς Ζαχαρίου ἐν τῇ διασπορᾷ.

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. CXXXVI. [a] Ipsi David. [b] qui adduxerunt nos allocuti sunt nos. Cantate. [c] vovero Hierusalem forte in [d] Effusa est & exinanita PSAL. CXXXVII. [a] Ipsi David. [b] quoniam audisti omnia verba oris mei: coram Angelis tuis psallam tibi. [c] valdè corroborasti animam meam virtute tuâ. [d] in canticis Dñi: [e] populorū extendisti manus meas, [f] Dñe opera PSAL. CXXXVIII. [a] omnes cogitationes cordis mei de

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*المزمور الماية والسادس والثلثون *لداود في ارمياء وهوية استيكن علي انهار بابل 1
جلسنا هناك وبكينا لما ذكرنا صهيون *علي الصفصاف الذي في وسطها علقنا الاتنا *لان هناك 2 3
سالنا الذين سبونا اقوال التسبيح والذين اسرونا الي هناك قالوا سبحوا لنا تسبحة من تسابيح
صهيون *كيف نسبح لكم تسبحة الرب في ارض غريبة *ان نسيتك يا يروسليم تنسي يميني 4 5
*ان لم اذكرك يلصق لساني بحنكي وان لم اسبق فارتب يروسليم في ابتداء فرحي *اذكر 6
يا رب بني ادوم في يوم يروسليم القائلين اهدموا الي اساسها *يا ابنة بابل الشقية طوبي 7 8
لمن يجازيك عوض ما صنعت بنا *طوبي لمن يمسك اطفالك ويضربهم الصخرة الليلويا 9

*المزمور الماية والسابع والثلثون *لداود في زكرياء * وهو ك استيكن
اشكرك يا رب من كل قلبي واحمدك امام الملايكة لانك استجبت جميع اقوال فمي *واسجد 1
عند هيكل قدسك واشكر اسمك علي رحمتك وعدلك لانك عظمت اسمك القدوس علي 2
الكل *استجب لي عاجلا في اليوم الذي ادعوك فيه تكثر التطلع علي نفسي بقوتك 3
*فليعترف لك يا رب جميع ملوك الارض لانهم سمعوا جميع اقوال فمك *وليسبحوا في طرق 4 5
الرب لان عظيم هو مجد الرب *الرب عالم ويري ما في العمق ويعلم ما بعد السموات 6
سلكت في وسط الشدايد احييتني بسطت يدك علي غضب الاعداء وخلصتني يمينك 7
*الرب يكافي عني يا رب رحمتك دايمة الي الابد يا رب لا تطرح ما صنعته يداك الليلويا 8

*المزمور الماية والثامن والثلثون *كامل مزمور داود في التفريق * وهو ح استيكن
يا رب جربتني وعلمتني *انت عارف جلسي وقيامي *انت فهمت افكاري من البعد 1 2

PSAL. CXXXVI.
Davidis, de Jeremia. Vers. 15. 1
Prope flumina Babylonis sedimus ibi et flevimus,
cùm recordati sumus Sion. At salices 2
quæ erant in medio eorū, appendim⁹ instrumēta
nostra. Quoniā illic postulaverunt 3
à nobis qui nos captivos duxerant, sermones
cantici: Et qui abripuerant nos illuc, dixerunt,
Canite nobis canticum è cantilenis Sion.
Quomodo canemus vobis canticum Domini 4
in terra aliena? Si oblitus fuero tui Jerusalem, 5
obliviscatur mei dextera mea: Si 6
non meminero tui, adhæreat lingua mea palato
meo: itidem si non prævenero ac disposuero
Jerusalem in principio lætitiæ meæ.
Recordare O Domine, filiorum Edom in die 7
Jerusalem, dicentium, Evertite usq; ad fundamentum
ipsius. O filia Babylonis misera, 8
Beatus qui rependet tibi quicquid egisti nobis.
Beatus qui arripiet parvulos tuos, eosque allidet 9
ad petram. Alleluja.

PSAL. CXXXVII.
Davidis, de Zacharia. Vers. 20. 1
Gratias ago tibi O Domine, ex toto corde
meo, & glorifico te in conspectu Angelorum:
quoniam exaudîsti cunctos sermones
oris mei. Et adorabo prope templum sanctitatis 2
tuæ, & gratias agam nomini tuo pro misericordia
tua & æquitate tua: quia magnificâsti
nomen tuum sanctum super omnia.
Exaudi me protinus in die quâ invocabo te: 3
multiplica respicere animā meā cum virtute.
Confiteantur tibi O Domine, omnes reges 4
terræ, quoniā audiunt omnes sermones oris
tui. Et laudem dicant in viis Domini, quia 5
magna est gloria Domini. Dominus sciens est, 6
et videt quicquid est in profundo, & novit
quicquid est ultra oculos. Si ambulavero in 7
mediis tribulationibus vivificabis me: extendes
manum tuā adversùs irā inimicorū, et
& salvabit me dextera tua. Dominus retribuet 8
pro me. O Domine, misericordia tua perpetua
est in æternum. O Domine, ne projicias
quod operatæ sunt manus tuæ. Alleluja.

PSAL. CXXXVIII.
Perfectio. Psalmus Davidis, de dispersione. Vers. 46. 1
O Domine, probâsti me et cognovisti me:
Tu scivisti sessionem meam & surrectionem 2
meam. Tu intellexisti cogitationes meas
de longinquo.

תהלים׃ קמ

Quia *assuevisti* *meis viis omnibus* & : ventilâsti meum accubitum &,meam Semitam

3 אָרְחִי וְרִבְעִי זֵרִיתָ וְכָל־דְּרָכַי הִסְכַּנְתָּה׃ כִּי 4

antè & ,Retrò .ipsum totum nôsti tu Domine ecce : mea lingua in sermo non

אֵין מִלָּה בִּלְשׁוֹנִי הֵן יְהוָה יָדַעְתָּ כֻלָּהּ׃ אָחוֹר וָקֶדֶם 5

; me *præ* scientia *Mirabilis* .tuam *volam* me super posuisti & : me formâsti

צַרְתָּנִי וַתָּשֶׁת עָלַי כַּפֶּכָה׃ פְּלִאיָה דַעַת מִמֶּנִּי 6

? fugiam *tuis faciebus* à quò & :tuo spiritu à ibo Quò .*ei* potero non ,est excelsa

נִשְׂגְּבָה לֹא־אוּכַל לָהּ׃ אָנָה אֵלֵךְ מֵרוּחֶךָ וְאָנָה מִפָּנֶיךָ אֶבְרָח׃ 7

Assumpsero .tu ecce ,*infernum* fecero stratū & : *tu* ibi ,cœlos ascendero Si

אִם־אֶסַּק שָׁמַיִם שָׁם אָתָּה וְאַצִּיעָה שְּׁאוֹל הִנֶּךָּ׃ אֶשָּׂא 8 9

: me ducet tua manus ibi Etiam .*Maris* novissimo in habitavero : *auroræ* pennas

כַנְפֵי־שָׁחַר אֶשְׁכְּנָה בְּאַחֲרִית יָם׃ גַּם־שָׁם יָדְךָ תַנְחֵנִי 10

nox & : me *occultabit tenebra* Veruntamen : dixero Et .tua dextera me tenebit &

וְתֹאחֲזֵנִי יְמִינֶךָ׃ וָאֹמַר אַךְ־חֹשֶׁךְ יְשׁוּפֵנִי וְלַיְלָה 11

: lucebit dies sicut nox & , te à *obscurabit non tenebrositas* Etiam .me circa *lux*

אוֹר בַּעֲדֵנִי׃ גַּם־חֹשֶׁךְ לֹא־יַחְשִׁיךְ מִמֶּךָ וְלַיְלָה כַּיּוֹם יָאִיר 12

utero in me texisti : meos renes possedisti tu Quia .*lux sicut ,tenebrositas sicut*

כַּחֲשֵׁיכָה כָּאוֹרָה׃ כִּי־אַתָּה קָנִיתָ כִלְיֹתָי תְּסֻכֵּנִי בְּבֶטֶן 13

mirabilibus sum mirificatus terribilibus quòd *super* tibi Confitebor .meæ matris

אִמִּי׃ אוֹדְךָ עַל כִּי נוֹרָאוֹת נִפְלֵיתִי נִפְלָאִים 14

, te à meū corpus fuit occultum Non .valdè *cognoscens* mea anima & :tuis operibus

מַעֲשֶׂיךָ וְנַפְשִׁי יֹדַעַת מְאֹד׃ לֹא־נִכְחַד עָצְמִי מִמֶּךָּ 15

meum *Informe* .terræ imis in sum compactus variè : occulto in fui factus quando

אֲשֶׁר־עֻשֵּׂיתִי בַסֵּתֶר רֻקַּמְתִּי בְּתַחְתִּיּוֹת אָרֶץ׃ גָּלְמִי 16

non & : sunt formata dies *scribentur ipsa* omnia tuo libro *super* & ,tui oculi viderunt

רָאוּ עֵינֶיךָ וְעַל־סִפְרְךָ כֻּלָּם יִכָּתֵבוּ יָמִים יֻצָּרוּ וְלֹא

invaluerūt quàm : Deus tuæ cogitationes fuerūt pretiosæ quàm mihi Et .*eis in unum*

אֶחָד בָּהֶם׃ וְלִי מַה־יָּקְרוּ רֵעֶיךָ אֵל מֶה עָצְמוּ 17

ego adhuc *&* ,*evigilavi* :multiplicabuntur arena præ ,eas Dinumerabo ? earum *capita*

רָאשֵׁיהֶם׃ אֶסְפְּרֵם מֵחוֹל יִרְבּוּן הֱקִיצֹתִי וְעוֹדִי 18

Qui .me à recedite : *sanguinum* viros & : impium Deus occideris Si .tecum

עִמָּךְ׃ אִם־תִּקְטֹל אֱלוֹהַּ רָשָׁע וְאַנְשֵׁי דָמִים סוּרוּ מֶנִּי׃ אֲשֶׁר 19 20

te habētes odio Nónne .tui hostes vanum in assumpserunt : *nefas in te dicent*

יֹמְרֻךָ לִמְזִמָּה נָשֻׂא לַשָּׁוְא עָרֶיךָ׃ הֲלוֹא־מְשַׂנְאֶיךָ 21

odii Perfectione ? afficiar tædio *te in insurgentes in* & : habebo odio Domine

יְהוָה אֶשְׂנָא וּבִתְקוֹמְמֶיךָ אֶתְקוֹטָט׃ תַּכְלִית שִׂנְאָה 22

: meum cor scito & ,Deus me Investiga .mihi fuerunt *inimicos in* : illos odi

שְׂנֵאתִים לְאוֹיְבִים הָיוּ לִי׃ חָקְרֵנִי אֵל וְדַע לְבָבִי 23

: me in *doloris* via si vide Et .meas cogitationes scito & , me proba

בְּחָנֵנִי וְדַע שַׂרְעַפָּי׃ וּרְאֵה אִם־דֶּרֶךְ עֹצֶב בִּי 24

.*seculi* viam *in* me duc &

וּנְחֵנִי בְּדֶרֶךְ עוֹלָם׃

PSAL. CXL. קמ

viro à : malo homine ab Domine me Eripe .David ipsi *cantus* Victori

לַמְנַצֵּחַ מִזְמוֹר לְדָוִד׃ חַלְּצֵנִי יְהוָה מֵאָדָם רָע מֵאִישׁ 1 2

.me *custodies iniquitatum*

חֲמָסִים תִּנְצְרֵנִי׃

תרגום TARGUM.

3 כדון בהליכותי באורחא וברבעותי למעסק
באוריתא אתעבדת חילוני וכל ארחתי
4 אסכנתא׃ וכד לית ממלל בלישני הא
5 יי ידעת מחשבת לבי כולא׃ מאחורי ומאפי
6 אעקתא יתי וגרית עלי מחתא דידך׃ מכסיא
7 למידע מני אתקפת לא אכול לה׃ אן איזיל
8 מן קדם זעפך ואן מן קדמך אפוך׃ אין אסק
לשמיא תמן אנת ואסוד לשיול הא תמן
9 מימרך׃ אזקוף ציצין דקריץ אשרי בסופי ימא׃
10 לחוד תמן אידך תדבר יתי ותחדנני ימינך׃
11 ואמרית ברם חושך מחברבר עלי ולילא
12 קבל אמטולתי׃ לחוד חשוכא לא יחשיך
מן מימרך ולילא היך יומא ינהיר היך
13 חשוכא היך נהורא שוין׃ ארום אנת קניתא
14 כליתי אשתית לי בכריסא דאמי׃ אודינך
מטול דדחילן פרישית פרישן עובדיך ונפשי
15 חכמא לחדא׃ לא אתכסא גרמי מנך די
אתעבידית בטומרא אצטיירית בכריסא
16 דאמא׃ גושמי חמין עינך ועל ספר דכרנך
כולהון יומי מכתבין ביומא דאתברי עלמא
מן שרויא אתבריאו כולהון בריתא ולית
17 בחד חד ביניהון׃ ולי כמה יקירין רחמיך
צדיקיא אלהא כמה אתחילו רבניהון׃
18 אמנינון בעלמא הדין יתיר מן חלא יסנעון
אתערית בעלמא דאתי ועד כדון אנא גבך׃
19 אין תקטול אלהא לרשיעא וגברין דחיבין
20 דין דקטול יזורון מני׃ דיימון בשמך על
נכלא משתבעין על מגן בעלי דבבך׃
21 הלא מסנאך יי אנא סני וכד קימין לקבלך
22 אנא מנרג׃ עד שציאות סניתא סניתינון
23 לבעלי דבבין הוון לי׃ חקרני אלהא וידע
24 רעיוני בחון יתי וידע הירהורי׃ וחמי אין
אורח דטעין בי ודבר יתי באורח תריצי עלמא׃

קמ

1 לשבחא תושבחתא על יד דוד׃ פצי יתי יי
2 מבר נש ביש מגבר חטופין תנטור יתי׃

PARAPH. CHALD. Vers. L

Nunc autem ambulante me in via, a[...] cumbente *ad studium legis*, factus es [...] traneus ; & omnes vias meas frequen[...] sti. *Et cum* non est eloquium in lingua mea : *ecce Domine* cognovisti cogitati[...] *ones cordis mei omnes*. A tergo [...] ante molestâsti me, et concitâsti super [...] percussionem manuum tuarum. *Occulta* [...] scientia *à* me, ardua facta est, non pot[...] ad eam. Quò ibo à præsentia tempesta[...] tis tuæ? & quò à conspectu tuo me ve[...] tam? Si ascendero in cœlum, illic tu es: [...] stratum fecero in inferno, *ecce* ibi [*adest*] Verbum tuum. Si sustulero alas auroræ & habitavero in novissimo *maris*: Et[...] illuc manus tua deducet me, & appre[...] hendet me dextera tua. Et dixi: C[...] tenebræ obscurant me, nox *quoque* ten[e]*brosa est circa* me. Verùm tenebræ [...] occultabunt [*aliquid*] à Verbo tuo, [...] nox sicut dies illuminabit: & tenebr[...] & lux apud te æquales. Quoniam tu po[s]sedisti renes meos, fundâsti me in ute[ro] matris meæ. Confitebor te quia terribi[lia] [*fecisti*,] mirificè *factus sum*. mirabi[lia] [*sunt*] opera tua; & anima mea eru[...] sapiens valdè. Non est absconsa subst[an]tia mea à te qua factus sum in abscon[dito,] formatus sum in utero matris meæ. Co[r]pus meum viderunt oculi tui, & in li[bro] memoriæ tuæ omnes dies *mei* scripti [sunt] in die qua creatus est mundus, à princ[ipio] creatæ sunt omnes creaturæ, nec *sicut* [...] *tera* est *ulla* in eis. Et *mihi* quàm [...] rabiles sunt qui amant te *justi* Deus, [...] fortificantur principes eorum! Dinum[e]rabo eos in mundo isto; uberantiùs [...] arena multiplicabuntur: resurrexi in mun[do] venturo, licet adhuc apud te sim. Si [oc]cideris Deus impium, viri autem [...] judicio mortis discedant à me. Qui ju[rant] in nomine tuo dolosè, jurant in vanum [...] ctores inimicitiæ tuæ. Nonne odientes [te] Domine odio habeo? & in iis qui [...] gunt contra te, nausea afficior? Co[n]summato odio infestus fui illis: au[...] inimicitiæ facti sunt mihi. Scrutare [me] Deus, & scito cogitationes meas; pr[oba] me, & scito cogitatus meos. Et vide [si] erroris in me est: & deduc me in via [...] rum mundi.

Ad laudandū canticū p manū Dav[id]

PSAL. CXL.

LIbera me Deus ab homine malo, [...] iniquitatum custodi me.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7 [illegible]
8 [illegible]
9 [illegible]
10 [illegible]
11 [illegible]
12 [illegible]
13 [illegible]
14 [illegible]
15 [illegible]
16 [illegible]
17 [illegible]
18 [illegible]
19 [illegible]
20 [illegible]
21 [illegible]
22 [illegible]
23 [illegible]
24 [illegible]

1 [illegible]

2 [illegible]

Viam meam & semitas meas tu cogn[...] omnes vias meas exploratas habes. S[i] tergiversatio in lingua mea, tu Dñe [...] universa Quæ ab antiquo sunt usque a[d] [ex]stremum. Condidisti me, & posuisti super [me] manum tuam: Ex me facta est scientia [ad]miratio. Sumpsi animos, at non polleo [vir]ibus. Quò ibo à spiritu tuo, & ubi [ab]scondam à conspectu tuo? Si ascendero [in] cœlum, ibi es: & si descendero in inf[ernum] etiam ibi ades: Sique efferam alas me[as si]cut aquilæ, habitemque in extremitate [maris:] Etiam illic manus tua apprehendet me[,] getq; me dextera tua. Dixi, Tenebræ [...] mihi, & nox lucebit coram facie mea. [Te]nebræ non obscurabuntur tibi, & nox [...] lucebit, tenebrosumq; ut lucidum. Qu[ia] tu condidisti renes meos, meq; suscep[isti] ventre matris meæ. * *Diapsal.* * Con[...] tibi ob miraculū quod patrâsti; grandia [...] enim opera tua, & anima mea optimè [...] Neque te latent ossa mea, quæ formasti [in oc]culto: descendi in imas terræ partes. [...]butionem meam viderunt oculi mei: [...] libros tuos cuncta scribentur. Ecce dies [...]viati sunt, & *tamen* non est in eis quisq[uam]. Apud me autē maximo sunt in pretio [...] tui Deus, & valdè magnificantur; & [...] principes Enumerabo, ac plusquam [...] excrescent. Evigilavi, & rursùs tecum [...] O si occîdas Deus peccatores, & viri [...]nis deflectant à me: Quoniam de te obl[...]ti sunt, & sumpserunt in vanitatem c[...] tuam. Osores tuos Dñe odio habui, & [...] qui tibi resistunt, excandui: Et odio [...] sum eos prosecutus, & fuerunt mihi in[...] Explora me Deus, & nosce cor meū: & [...]rire me, ac nosce gressus meos: Et vide[...] si sit in me via falsitatis, ducito me pe[r] [viam] tuam sempiternam.

PSAL. CXXXIX.

Dictus à Davide, quum jaculatu[s est] eum Saul hastam ad eum occidendum, & [...] it parietem. Spiritualiter autem [...] qui Deo inhæret decertatque cum [...] suis. Vers. 26.

LIbera me Domine ab homine pr[...] viris nefariis me serva :

Versio VULG. LAT.

semitam meam, & funiculum meum
4 investigasti. Et omnes vias meas prævidisti: quia non est sermo in lingua
5 mea. Ecce, Dñe, tu cognovisti omnia,
novissima & antiqua: tu formâsti me,
6 & posuisti sup me manum tuam. Mirabilis facta est scientia tua ex me: confortata est, & non potero ad eam.
7 Quò ibo à Spiritu tuo? & quò à fa-
8 cie tua fugiam? Si ascendero in cœlum, tu illic es: si descendero in in-
9 fernū, ades. Si sumpsero pennas meas diluculò, & habitavero in extremis
10 maris: Etenim illuc manus tua dedu-
11 cet me: & tenebit me dextera tua. Et dixi, Forsitan tenebræ conculcabunt me: & nox illuminatio mea in deliciis
12 meis. Quia tenebræ non obscurabuntur à te, & nox sicut dies illuminabitur: sicut tenebræ ejus, ita & lumen
13 ejus. Quia tu possedisti renes meos: suscepisti me de utero matris meæ.
14 Confitebor tibi quia terribiliter magnificatus es: mirabilia opera tua, &
15 anima mea cognoscit nimis. Non est occultatum os meum à te, quod fecisti in occulto: & substantia mea in
16 inferioribus terræ. Imperfectum meū viderunt oculi tui, & in libro tuo omnes scribentur: dies forma-
17 buntur, & nemo in eis. Mihi autem nimis honorificati sunt amici tui, Deus: nimis confortatus est prin-
18 cipatus eorum. Dinumerabo eos, & super arenam multiplicabuntur: ex-
19 surrexi, & adhuc sum tecum. Si occideris, Deus, peccatores: viri sanguinū
20 declinate à me: Quia dicitis in cogitatione: Accipient in vanitate civi-
21 tates tuas. Nonne qui oderunt te, Dñe, oderam: & super inimicos tuos ta-
22 bescebam? Perfecto odio oderam il-
23 los: & inimici facti sunt mihi. Proba me, Deus, & scito cor meū: interroga
24 me, & cognosce semitas meas. Et vide, si via iniquitatis in me est: & deduc me in via æterna.

1 In finem, Psalmus David.
CXXXIX.

2 ERipe me, Domine, ab homine malo: à viro iniquo eripe me.

Verſ. GRÆCA LXX. Interp.

4 † τὴν τρίβον μου καὶ τὴν σχοῖνόν μου (β) ἐξιχνίασας· † Καὶ
πάσας τὰς ὁδούς μου προεῖδες, † ὅτι οὐκ ἔστι λόγος
5 ἄδικος ἐν γλώσσῃ μου. † Ἰδοὺ κύριε σὺ ἔγνως πάντα
τὰ ἔσχατα καὶ τὰ ἀρχαῖα. † Σὺ ἔπλασάς με καὶ
6 ἔθηκας ἐπ' ἐμὲ τὴν χεῖρά σου. † Ἐθαυμαστώθη ἡ γνῶσίς
σου ἐξ ἐμοῦ, † ἐκραταιώθη, οὐ μὴ δύνωμαι πρὸς
7 αὐτήν. † Ποῦ πορευθῶ ἀπὸ τοῦ πνεύματός σου, † καὶ ἀπὸ
8 τοῦ προσώπου σου ποῦ φύγω; † Ἐὰν ἀναβῶ εἰς τὸν οὐρανόν,
(γ) σὺ ἐκεῖ εἶ, † ἐὰν καταβῶ εἰς τὸν ᾅδην, πάρει.
9 † Ἐὰν ἀναλάβοιμι τὰς πτέρυγάς μου (δ) κατ' ὄρθον,
καὶ κατασκηνώσω εἰς τὰ ἔσχατα τῆς θαλάσσης, †
10 Καὶ γὰρ ἐκεῖ ἡ χείρ σου ὁδηγήσει με, † καὶ καθέξει με
11 ἡ δεξιά σου. † Καὶ εἶπα, Ἄρα σκότος καταπατήσει
12 με, † καὶ νὺξ φωτισμὸς ἐν τῇ τρυφῇ μου. † Ὅτι (ε) σκότος
οὐ σκοτισθήσεται ἀπὸ (ζ) σοῦ, καὶ νὺξ ὡς ἡμέρα φωτισθήσεται·
† ὡς τὸ σκότος αὐτῆς, οὕτως καὶ τὸ φῶς
13 αὐτῆς. † Ὅτι σὺ ἐκτήσω τοὺς νεφρούς μου κύριε, †
14 ἀντελάβου μου ἐκ γαστρὸς μητρός μου. † Ἐξομολογήσομαί
σοι ὅτι φοβερῶς ἐθαυμαστώθης· † θαυμάσια
15 τὰ ἔργα σου, καὶ ἡ ψυχή μου γινώσκει σφόδρα. † Οὐκ
ἐκρύβη τὸ ὀστοῦν μου ἀπὸ σοῦ ὃ ἐποίησας ἐν κρυφῇ,
† καὶ ἡ ὑπόστασίς μου ἐν τοῖς (η) κατωτάτω τῆς
16 γῆς. † Ἀκατέργαστόν μου εἶδον οἱ ὀφθαλμοί σου, †
καὶ ἐπὶ τὸ βιβλίον σου πάντες γραφήσονται. † ἡμέρας
17 πλασθήσονται καὶ οὐθεὶς ἐν αὐτοῖς. † Ἐμοὶ δὲ λίαν ἐτιμήθησαν
οἱ φίλοι σου ὁ θεός, † λίαν ἐκραταιώθησαν αἱ
18 ἀρχαὶ αὐτῶν. † Ἐξαριθμήσομαι αὐτοὺς καὶ ὑπὲρ ἄμμον
πληθυνθήσονται· † ἐξηγέρθην, καὶ ἔτι εἰμὶ μετὰ σοῦ.
19 † Ἐὰν ἀποκτείνῃς ἁμαρτωλοὺς ὁ θεός· † ἄνδρες αἱμάτων
20 ἐκκλίνατε ἀπ' ἐμοῦ, † Ὅτι ἐρεῖς εἰς διαλογισμόν·
† λήψονται εἰς ματαιότητα τὰς πόλεις σου.
21 † Οὐχὶ τοὺς μισοῦντάς σε κύριε ἐμίσησα, καὶ (θ) ἐπὶ
22 τοὺς ἐχθρούς σου ἐξετηκόμην; † Τέλειον μῖσος
23 ἐμίσουν αὐτούς, † εἰς ἐχθροὺς ἐγένοντό μοι. † Δοκίμασόν
με (ι) ὁ θεός, καὶ γνῶθι τὴν καρδίαν μου· † ἔτασόν
24 με, καὶ γνῶθι τὰς τρίβους μου. † Καὶ ἴδε (κ) εἰ ὁδὸς ἀνομίας
ἐν ἐμοί, † καὶ ὁδήγησόν με ἐν ὁδῷ αἰωνίᾳ.

MS. A. (β) σὺ ἐξιχνίασας· (γ) σὺ εἶ ἐκεῖ, (δ) κατ' ὄρθρον, (ε) τὸ σκότος (ζ) σου, * ὡς τὸ σκότος (η) κατωτάτοις τῆς γῆς. Τὸ ἀκατέργαστόν σου εἴδοσαν οἱ ὀφθαλμοί μου, (θ) ἐπὶ τοῖς ἐχθροῖς (ι) κύριε, καὶ (κ) εἰ εἶδες ὁδὸν ἀνομίας

1 Εἰς τὸ τέλος, τῷ Δαυὶδ (α) ψαλμός. ρλθ΄.
2 † Ἐξελοῦ με κύριε ἐξ ἀνθρώπου πονηροῦ, † ἀπὸ ἀνδρὸς ἀδίκου ῥῦσαί με.

MS. A. (α) ψαλμὸς τῷ Δαυίδ,

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

(b) semitam meam, [b] & (c) funiculū
meum investigâsti. 3 Et omnes vias 4
meas prævidisti: quia non est sermo
(d) injustus in lingua mea. 4 Ecce, 5
Domine, tu cognovisti omnia [c] novissima,
et antiqua. Tu formâsti me, et
posuisti super me manum tuam. 5 (e)
Mirificata est scientia tua ex me: (f) 6
invaluit; (g) non potero ad illam. 6
Quò ibo à spiritu tuo? et quò à fa- 7
cie tua fugiam? 7 Si ascendero in
cœlum; tu illîc es: si descendero in 8
[d] infernum, ades: 8 [e] Si recipiam 9
pennas (h) meas in directum, et (i)
habitavero in extremis maris: 9 Nam 10
et ibi manus tua deducet me: et [f]
tenebit me dextera tua. 10 Et (k) 11
dixi; Forsitan tenebræ (l) conculca-
bunt me: & [g] nox (m) illuminatio in
deliciis meis. 11 Quoniam tenebræ 12
non (n) obtenebrabuntur à te: & nox
sicut dies illuminabitur: [h] sicut (o)
tenebræ ejus; ita & lumen ejus. 12
Quoniam tu [i] possedisti renes 13
meos, Domine: (p) suscepisti me de
utero matris meæ. 13 Confitebor tibi, 14
[k] quoniam terribiliter mirificatus
es. (q) Mirabilia opera tua: & anima
mea (r) cognoscit valdé. 14 Non est 15
absconditum (s) os meum à te, quod
fecisti in abscondito: et [l] substantia
mea in infimis terræ. 15 (t) [m] Ino- 16
peratum meum viderunt oculi tui: et
in libro tuo omnes scribentur. (u)
Dies formabuntur: et [n] nemo in eis.
16 Mihi (x) autem valdè honorifi- 17
cati sunt amici tui, Deus: valdè (y)
[o] confortati sunt principatus eo-
rum. 17 Dinumerabo eos: et super 18
arenam multiplicabuntur: (z) exur-
rexi, et adhuc sum tecum. 18 Si oc- 19
cideris, Deus, (ω) peccatores: viri (aa)
sanguinū declinate à me. 19 [p] Quo- 20
niam (bb) dices in cogitatione: acci-
pient in vanitate civitates suas. 20
Nonne eos, qui oderant te, Domine, 21
odio habui, et super inimicos tuos [q]
tabescebam? 21 Perfecto odio ode- 22
ram illos: inimici facti sunt mihi. 22
[r] Proba me, Deus: et cognosce cor 23
meum. Scrutare me: et cognosce semi-
tas meas. 23 Et vide, si (ſ) via iniqui- 24
tatis in me est, et deduc me in via æterna.

In finem, ipsi David Psalmus. 1
CXXXIX.

1 E*X me me, Domine, ab homine maligno: à viro injusto erue me.* 2

Versio ÆTHIOPICA.

ፍኖትየ፡ወአሰርየ፡አንተ፡ቀጻዕከ፡፡=፡ ወኵ 3
ሉ፡ፍናዊየ፡አንተ፡አቅደምከ፡አእምሮ፡፡ ከ
መ፡አልቦ፡ቃለ፡ዐመፃ፡ውስተ፡ልሳንየ፡፡=፡ ና 4
ሁ፡አንተ፡እግዚኦ፡አእመርከ፡ኵሎ፡ ዘቀ
ደሚ፡ወዘደኃሪ፡፡ አንተ፡ፈጠርከኒ፡ወወደይከ፡እ
ዴከ፡ላዕሌየ፡፡=፡ ተነክረ፡አእምሮትከ፡በላ 5
ዕሌየ፡፡ ፀንዐተኒ፡ ወኢይክል፡ ምስሌሃ፡፡=፡
አይቴኑ፡አሐውር፡እመንፈስከ፡፡ ወአይቴኑ፡ 6
እጕይ፡እምቅድመ፡ገጽከ፡፡=፡ ወእመኒ፡ዐ 7
ረጉ፡ውስተ፡ሰማይ፡ህየኒ፡አንተ፡፡ ወእመኒ፡
ወረድኩ፡ውስተ፡ቀላይ፡ህየኒ፡ሀሎከ፡፡=፡ ወ 8
እመኒ፡ነሣእኩ፡ክንፈ፡ ከመ፡ ንስር፡፡ ወሰረር
ኩ፡እስከ፡ማኅለቅተ፡ባሕር፡፡=፡ህየኒ፡እዴ 9
ከ፡ትመርሐኒ፡፡ ወታነሥአኒ፡ የማንከ፡፡=፡
ወእቤ፡ጽልመትኑ፡እንጋ፡ ኬደኒ፡፡ ወሌሊት 10
ኒ፡ብሩህ፡ውስተ፡ትፍሥሕትየ፡፡=፡እስመ፡ 11
ጽልመትኒ፡ ኢይጸልም፡ በኀቤከ፡፡ ወሌሊት
ኒ፡ብሩህ፡ከመ፡ መዓልት፡፡ በአምጣነ፡ጽል
ሙታ፡ ከማሁ ፡ ብርሃና፡፡=፡ እስመ፡አንተ፡ 12
ፈጠርከ፡ ኵልያትየ፡ እግዚኦ፡፡ ወተወከፍ
ከኒ፡ከመ፡አእምር፡፡=፡ አገኒ፡ለከ፡እግዚ 13
ኦ፡እስመ፡ግሩም፡ተሰባሕከ፡፡ መንክር፡ግብ
ርከ፡ወነፍስየ፡ትጤይቅ ፡ ጥቀ፡፡=፡ ወኢይ 14
ትኀባእ፡እምኔከ፡ አዕፅምትየ፡ ዘገበርከ፡በ
ኅቡእ፡፡=፡ ወኢአካልየ፡ በመትሕተ፡ምድ
ር፡፡=፡ ወዘሂ፡ገበርኩ፡ርእየ፡አዕይንቲከ፡፡ 15
ወኵሉ፡ ይጸሐፍ፡ ውስተ፡ መጽሐፍከ፡፡ መ
ዐልተ፡ ይትፈጠሩ፡ ወኢይሄሉ፡ አሐዱ፡ እም
ኔሆሙ፡፡=፡ ወበኀቤየሰ፡ፈድፋደ፡ክቡራን፡ 16
አዕርክቲከ፡እግዚኦ፡፡ ወፈድፋደ፡ጸንዑ፡እ
ምቀደምቶሙ፡፡=፡ ወእኌልቆሙ፡እምኆፃ፡ 17
ይበዝኁ፡፡ ተንሣእኩኒ፡ ወዓዲ፡ሀሎኩ፡ምስ
ሌከ፡፡=፡ለመሰ፡ቀተልኮሙ፡ለኃጥኣን፡እግዚ 18
ኦ፡፡ እደው፡ደም፡ተግሐሡ፡ እምኔየ፡፡=፡
እስመ፡ ይዜኃሩ፡በሕሊናሆሙ፡፡ ወይነሥኡ፡ወ 19
ን፡ ለአህጉሪከ፡ በበንቱ፡፡=፡ አኮኑ፡ ጸላእ 20
ትከ ፡ ጸላእኩ፡ እግዚኦ፡፡ ወተመነሰውኩ፡
በእንተ፡ፀርከ፡፡=፡ ፍጹመ፡ ጸልአ፡ ጻላእክ 21
ዎሙ፡፡ ወኮኑኒ ፡ ፀርየ፡፡=፡ ፈትነኒ፡ 22
እግዚኦ ፡ ወአመክር ፡ ልብየ፡፡ አመክረኒ፡
ወርኢ፡ፍናዊየ፡፡=፡ ወርኢ፡ለመ፡ትረክብ፡ 23
ዐመፃ ፡ በላዕሌየ፡፡ ወምርሐኒ ፡ ፍኖተ ፡ ዘ
ለዓለም፡፡=፡

ፍጻሜ ፡ መዝሙር፡ ዘደዊት፡፡

የሀሀ አድኅነኒ፡እግዚኦ፡እምብእሲ፡ እኩ 1
ይ፡፡ ወእምሰብእ፡ዐማፂ፡በልሐኒ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] & vestigia mea tu pressisti. [c] quæ præcesserunt & quæ sequentur. [d] abyssum, illic ades. [e] Et si sumpsero pennas sicut aquilæ, & avolavero usque in extremum maris: [f] habitare faciet me. [g] nox etiam illuminatio in gaudio meo. [h] quam diu tenebræ ejus, est etiam pariter lux ejus. [i] formâsti renes meos, & scientiâ quasi fovisti me. [k] Domine, quoniam [l] nutritio mea [m] Et hoc quidem quod operatus sum viderunt [n] non erit ex eis unus. [o] corroborati sunt à principatu eorum. [p] Quoniam concertabunt in cogitatione eorum: & accipient in vanitate civitates tuas [q] offendebar. [r] Scrutare me Deus & proba cor meum: proba me, & [ſ] deprehenderis in me iniquitatem: &

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 4 *فحصت سبلي وتدابيري * وسبقت رؤيتك الى جميع طرقي * وانه ليس في لساني من كلام ظلم
5 6 ها انت يا رب قد عرفت جميع الاواخر والاوايل * انت جبلتني ووضعت يدك علي * فكان علمك
7 8 متعجبا مني * تشددت فلم استطع لها * اين اذهب من روحك * واين اهرب من وجهك * ان
9 صعدت الى السماء فانت هناك * وان هبطت الى الجحيم فهناك انت ايضا * وان ارتفعت
10 11 بجناحين كالنسر * وسقطت في اقاصي البحر * فان يدك تهديني * ويمينك تضبطني * فقلت
12 اترى الظلمة تغشاني * فالليل هو نوري في فرحي * لان الظلمة لا تظلم عنك * والليل ينير مثل
13 14 النهار والظلام كالنور * انت يا رب جبلت كليتي * وقبلتني منذ خرجت من بطن امي * اعترف
15 لك لان عجايبك صنعت بعلم عجايب هي اعمالك ونفسي علمت جدا * ولم يخف عنك
16 عظمي الذي خلقته خفيا * وشخصي في مواضع سفل الارض * بدء اعمالي ابصرت عيناك
17 والجميع مكتوب في مصحفك * انت خالق الايام وليس فيها انسان * وانا اكرمني احباؤك جدا يا
18 الله * وجدا عز رياستهم * احصيتهم فيكثرون اكثر من الرمل * قمت وانا معك ايضا * اذا اهلكت
19 20 الخطاة يا الله * يا رجال الدماء حيدوا عني * فانكم متماحكون في الافكار ياخذون مدنك بالباطل *
يا رب اليس ابغضت مبغضيك * وسخطت على مخالفيك * ابغضتهم بغضا كاملا وصاروا لي
اعداء * اللهم جربني واعلم قلبي * وامتحني واعلم طرقي * وانظر فان رايت في اثما فاهدني الى سبيل
الابد * الليلويا *

المزمور المائة والتاسع والثلثون * لداود * وهو لزر * اسيكن

*يا رب نجني من انسان شرير * ومن رجل ظالم انقذني *

Scrutatus es semitas meas & mores me- 3
os: & prævenit visio tua omnes vias
meas, Et quòd non sit in lingua mea ullus 4
sermo perversus. Ecce tu O Domine, cog-
novisti omnia postrema & prima: Tu me 5
coagulâsti, & posuisti manum tuam super
me: Et reddita est scientia tua admiran- 6
da apud me. Invaluit, nec potui ad eam.
Quò ibo à spiritu tuo? & quò fugiam à 7
facie tua? Si ascendero ad cœlū, tu qui- 8
dem illic es: & si descendero in inferos,
ibi quoque ades. Sique me evexero dua- 9
bus alis ut aquila, & decidero in exti-
mas partes maris: Sanè manus tua du- 10
cet me, & dextera tua me continebit. Et 11
dixi, Forsitan tenebræ velabunt me: at
nox est lumen in gaudio meo. Nam tene- 12
bræ nil obnubilant à te: & nox elucet ve-
luti dies, & tenebræ veluti lumen. Tu O 13
Domine, compegisti renes meos, & ex-
cepisti me à quo egressus sum ex utero
matris meæ. Confiteor tibi, quia miracu- 14
la tua fecisti cum scientia: mira sunt o-
pera tua, & anima mea cognovit multùm.
Non est abstrusū tibi os meū quod creâsti 15
occultum, & persona mea in locis pro-
funditatis terræ. Cœptū actionū mearum 16
viderunt oculi tui, & omnia scripta sunt
in libro tuo. Tu creator es dierum, dum
non existeret in eis quisquā. Mi autem ve- 17
nerati sunt amici tui vehementer O Deus:
& valdè roboratus est principatus eorum.
Numeravi eos, & multiplicabuntur plus- 18
quam arena. Surrexi, & ego tecū adhuc
sū. Quū perdideris peccatores, O Deus: 19
O viri sanguinum deflectite à me, Quia 20
temerè vos geritis in cogitationibus: ra-
piunt urbes tuas injustè. O Domine, nonne 21
odi osores tuos, & excandui in adver- 22
sarios tuos? Odi eos odio integro, & facti
sunt mihi inimici. Deus experire me, & 23
cognosce cor meū: et scrutare me, et cog-
nosce semitas meas; Et considera, quòd si 24
videris in me iniquitatem, ducito me ad
semitas æternitatis. Alleluja.

PSAL. CXXXIX.
Davidis. Vers. 37. 1

O *Domine, libera me ab homine malo,* 2
& à viro scelerato redime me.

תהלים : קמא

Acuerunt .bella congregabunt die omni ,corde in mala cogitaverunt Qui
3 4 אֲשֶׁר חָשְׁבוּ רָעוֹת בְּלֵב כָּל־יוֹם יָגוּרוּ מִלְחָמוֹת׃ שָׁנְנוּ
.Selah ,eorum labiis *sub* , aspidis venenum ; serpens sicut suam linguam
לְשׁוֹנָם כְּמוֹ־נָחָשׁ חֲמַת עַכְשׁוּב תַּחַת שְׂפָתֵימוֹ סֶלָה׃
qui : me *custodias iniquitatum* viro à , impii manibus à Domine me Custodi
5 שָׁמְרֵנִי יְהוָה ׀ מִידֵי רָשָׁע מֵאִישׁ חֲמָסִים תִּנְצְרֵנִי אֲשֶׁר
funibus & ,mihi laqueum superbi Absconderunt .meos pedes impellere cogitaverũt
6 חָשְׁבוּ לִדְחוֹת פְּעָמָי׃ טָמְנוּ־גֵאִים ׀ פַּח לִי וַחֲבָלִים
Dixi .Selah ,mihi posuerunt laqueos : *orbitæ manum ad* rete extenderunt
7 פָּרְשׂוּ רֶשֶׁת לְיַד־מַעְגָּל מֹקְשִׁים שָׁתוּ־לִי סֶלָה׃ אָמַרְתִּי
.mearum deprecationum vocem Domine ausculta : tu meus Deus : Domino
לַיהוָה אֵלִי אָתָּה הַאֲזִינָה יְהוָה קוֹל תַּחֲנוּנָי׃
.*armaturæ* die in meum caput *operuisti* : meæ salutis fortitudo ,Domine Domine
8 יְהוִה אֲדֹנָי עֹז יְשׁוּעָתִי סַכֹּתָה לְרֹאשִׁי בְּיוֹם נָשֶׁק׃
,*provehas* ne ejus *malam* cogitationem ; *impii* desideria Domine tradas Ne
9 אַל־תִּתֵּן יְהוָה מַאֲוַיֵּי רָשָׁע זְמָמוֹ אַל־תָּפֵק
.eos operiet eorum labiorum *labor* : me circundantium Caput .Selah ,se *exaltabunt*
10 יָרוּמוּ סֶלָה׃ רֹאשׁ מְסִבָּי עֲמַל שְׂפָתֵימוֹ יְכַסּוּמוֹ׃
ne ,*profunda* foveas in ,eos faciet cadere ignem in , prunæ eos super Declinabunt
11 יִמִּיטוּ עֲלֵיהֶם גֶּחָלִים בָּאֵשׁ יַפִּלֵם בְּמַהֲמֹרוֹת בַּל־
ipsũ venabitur :malus rapinæ vir ,terra in firmabitur non linguæ Vir .resurgant
12 יָקוּמוּ׃ אִישׁ לָשׁוֹן בַּל־יִכּוֹן בָּאָרֶץ אִישׁ־חָמָס רָע יְצוּדֶנּוּ
.mendicorum judicium : *afflicti* judiciũ Dominus faciet quòd Novi .*impulsiones ad*
13 לְמַדְחֵפֹת׃ יָדַעְתִּי כִּי־יַעֲשֶׂה יְהוָה דִּין עָנִי מִשְׁפַּט אֶבְיֹנִים׃
.*tuis faciebus cum* recti habitabunt :tuo nomini confitebuntur justi Veruntamen
14 אַךְ צַדִּיקִים יוֹדוּ לִשְׁמֶךָ יֵשְׁבוּ יְשָׁרִים אֶת־פָּנֶיךָ׃

PSAL. CXLI. קמא

meam vocem ausculta : me ad festina ; te *invocavi* Domine .David ipsi Cantus
1 מִזְמוֹר לְדָוִד יְהוָה קְרָאתִיךָ חוּשָׁה לִּי הַאֲזִינָה קוֹלִי
elevatio : *tuas facies ad* suffimentum mea oratio Firmetur .te ad *me clamando in*
2 בְּקָרְאִי־לָךְ׃ תִּכּוֹן תְּפִלָּתִי קְטֹרֶת לְפָנֶיךָ מַשְׂאַת
custodi : meo ori custodiam Domine Pone .*vesperæ munus* mearum *volarum*
3 כַּפַּי מִנְחַת־עָרֶב׃ שִׁיתָה יְהוָה שָׁמְרָה לְפִי נִצְּרָה
molendum ad malum verbum ad meum cor inclines Ne .meorũ labiorum *janua super*
4 עַל־דַּל שְׂפָתָי׃ אַל־תַּט־לִבִּי ׀ לְדָבָר רָע לְהִתְעוֹלֵל
comedam non & : iniquitatem operantibus viris cum impietate in *studia*
עֲלִלוֹת ׀ בְּרֶשַׁע אֶת־אִישִׁים פֹּעֲלֵי־אָוֶן וּבַל־אֶלְחַם
oleum ,me increpet & ,misericordia justus me *malleo* Percutiat .eorum *deliciis in*
5 בְּמַנְעַמֵּיהֶם׃ יֶהֶלְמֵנִי צַדִּיק ׀ חֶסֶד וְיוֹכִיחֵנִי שֶׁמֶן
.eorum malis *in* ,mea oratio & ,adhuc quoniam :meum caput frangat ne *capitis*
רֹאשׁ אַל־יָנִי רֹאשִׁי כִּי־עוֹד וּתְפִלָּתִי בְּרָעוֹתֵיהֶם׃
quoniam , mea verba audient & : eorum judices *petræ manus* in sunt *Demissi*
6 נִשְׁמְטוּ בִידֵי־סֶלַע שֹׁפְטֵיהֶם וְשָׁמְעוּ אֲמָרַי כִּי
ore in nostra ossa sunt dispersa : terra in findens & ,scindens Sicut .*fuerunt jucunda*
7 נָעֵמוּ׃ כְּמוֹ פֹלֵחַ וּבֹקֵעַ בָּאָרֶץ נִפְזְרוּ עֲצָמֵינוּ לְפִי
, speravi te in ,mei oculi Domine DOMINE te ad Quia .sepulchri
8 שְׁאוֹל׃ כִּי אֵלֶיךָ ׀ יְהוִה אֲדֹנָי עֵינָי בְּכָה חָסִיתִי
: mihi tetenderunt ,laquei *manibus* à me Custodi .meam animam effundas ne
9 אַל־תְּעַר נַפְשִׁי׃ שָׁמְרֵנִי מִידֵי פַח יָקְשׁוּ לִי
.iniquitatem operantium tendiculis &
וּמֹקְשׁוֹת פֹּעֲלֵי אָוֶן׃

תרגום TARGUM.

3 די חשילו בישן בלבא כל יומא מגרגין קרביא׃
4 מתנין בלישנהון היך חויא ארסא דעכוביתא
תחות ספותהון לעלמין׃ 5 נטור יתי יי מן יד
דרשיעיא מן גבר חטופין תנטור יתי די חשילו
6 למנקוף אסתורי׃ כמנו גיותנין פחא לי ואשליא
פרסין מצדתא לסטר אורחא תקלין שון לי
7 תדירא׃ אמרית ליי אלהי אנת אצית יי לקל
8 בעותי׃ אלהים יי עושנא דפורקני טללתא על
9 רישי ביום קרבא׃ לא תתן יי רגוגי דואג רשיעא
מחשבתיה לא תספק יסתלקון לעלמין׃
10 אחיתופל ריש סנהדרי תלמידי לעות מלשינותא
11 דספותהון יחפינון׃ ימטון עלויהון גומרין מן
שמיא בנורא דגהינם יפלנון בניצין דמחמרין
12 דלא יקומון לחיי עלמא׃ גבר דמשתעי לישן
תליתי לא אפשר דיתכן בארעא דחיי גבר
חטופא ביש יצודניה מלאך דמותא ינקפניה
13 בגהנם׃ הבכן גלי קדמי ארום יעבד יי דינהון
14 דענייי דינא דחשיכי׃ ברם צדיקיא יהודון לשמך
יתבון תריצי לצלאה קדמך׃

קמא

1 תושבחתא לדוד יי קריתך חיש לי אצית קלי
2 במקרי לך׃ תתכנין צלותי היך קטורת בוסמין
קדמך וזקפות ידי בצלו היך דורון בסים
3 דמתקרב ברמש׃ שוי יי מטרא לפומי נטר על
4 זקוף ספותי׃ לא תצלי לבי לפתגם ביש למחשב
מחשבן ברשעא עם גברי עבדי שקר ולא
5 אסעוד בזמר בית משתיהון׃ יטפחנני צדיקא
מטול חסדא ויכסנני משח רבות קודשא לא
יבטל מן רישי ארום עד כדון צלותי מסתדרא
6 בבישתיהון׃ אשתמיטו מבית מדרשא על ידי
תקוף דיניהון תיבין ושמעין מימרי ארום
7 בסימו׃ די כמת גבר דפלח ומבוע במרדיא
בארעא הכדין אתבדרו אברנא על פום
8 קבורתא׃ מטול היכנא לותך אלהים יי עיני
9 מודיקן במימרא סברית לא תרוקן נפשי׃ נטור
יתי מן אידי פחא דאתקילו לי ותקלן עבדי שקר׃

PARAPH. CHALD. Verſ.Lat.

Qui cogitaverunt mala in corde, tota die commiſcentes bella. Exacuunt linguam ſuam ſicut ſerpens : venenum aſpidis ſub labiis eorum in æternũ. Cuſtodi me Dñe de manu impii: de *viro* iniquitatum cuſtodias me, qui cogitaverunt ſupplantare greſſus meos. Abſconderunt ſuperbi laqueum *mihi*, & funibus extenderunt rete juxta ſemitam; ſcandala ponunt mihi continenter. Dixi Dño: Deus meus es tu: exaudi Domine vocem deprecationis meæ. Deus Dñe fortitudo redemptionis meæ, obumbrâſti caput meum in die belli. Non des Dñe deſideria *Doeg* impii: cogitationi ejus ne ſatisfacias: auferantur in æternum. Achitophel caput ordinatorũ diſcipulorum *pravitatis*, inſimulatio labiorum eorũ cooperiat eos. Cadant ſuper illos carbones de cœlo; in ignem gehennæ præcipitet eos in foveas *lutoſas*, de quibus non reſurgant ad vitam æternã. Vir delator linguæ triplici nequaquã poſſit dirigi in terra virum pravum *malum* venetur angelus mortis, & detrudat eum in gehennam. Propterea conſtat mihi quòd faciet Dominus judicium pauperum & judicium egenorum. Profecto juſti confitebuntur nomini tuo, revertentes recti ut orent coram te.

Canticum Davidi.

PSAL. CXLI.

Domine invocavi te, feſtina ad me, attende voci meæ dum clamo ad te. Dirigatur oratio mea ſicut ſuffimentum aromatum coram te; elevatio manuum mearum ſicut munus ſuave quod offertur in veſpere. Pone Domine cuſtodiam ori meo, cuſtodi clau tionem labiorum meorũ. Non declines cor meum in verbum malum, ad cogitandas cogitationes in impietate, cum viris operantibus iniquitatem, nec ſuſtentabor cantic domus convivii eorũ. Verberabit me juſtus propter miſericordiam, & corripiet me *oleum* unctionis ſanctuarii non auferetur capite meo, quoniam adhuc oratio mea ordinatur in malitiam eorum. Diſtracti ſunt de domo ſcholæ manibus *fortitudinis* judicum ſuorum: revertuntur & audiunt verba mea quoniã jucunda fuerunt. Sicut vir qui fodit & ſcindit *ſarculis* terram; ſic diſperſa ſunt membra noſtra in ore ſepulchri. *Quoniam* ad te Deus Domine oculi mei aſpiciunt in Verbum [*tuum*] ſperavi, ne di das animam meam. Cuſtodi me de manibus laquei quem poſuerunt mihi, & ſcandalis operantium iniquitatem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܕܐܬܚܫܒܘ ܒܝܫܬܐ ܒܠܒܗܘܢ. ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܓܪܘ ܚܪܝܢܐ : * ܘܚܪܦܘ ܠܫܢܗܘܢ ܐܝܟ 4
ܕܚܘܝܐ. ܘܚܡܬܐ ܕܐܣܦܣ ܬܚܝܬ ܣܦܘܬܗܘܢ : * ܢܛܪܝܢܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܚܛܝܐ. ܘܡܢ 5
ܓܒܪܐ ܚܛܘܦܐ ܢܛܪܝܢܝ: ܕܐܬܚܫܒܘ ܠܡܬܪܦܘ ܪܓܠܝ. * ܘܛܫܘ ܠܝ ܫܒܗܪܢܐ ܦܚܐ: 6
ܘܚܒܠܐ ܕܡܨܝܕܬܗܘܢ ܦܪܣܘ ܥܠ ܫܒܝܠܝ. ܘܡܨܝܕܬܐ ܐܪܡܝܘ ܥܠܝ : * ܕܝܠܟ * * ܐܡܪܬ 7
ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܐܢܬ. ܨܘܬ ܠܩܠܐ ܕܒܥܘܬܝ * ܡܪܝܐ ܦܪܘܩܝ ܚܝܠܝ : ܛܠܠܬܗ ܕܪܝܫܝ 8
ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ. * ܠܐ ܬܬܠ ܡܪܝܐ ܪܓܝܓܬܗ ܠܥܘܠܐ : ܘܬܪܥܝܬܗ ܠܐ ܬܣܩ * ܠܪܝܫܝ. ܢܟܣܐ 9 10
ܐܢܘܢ ܥܘܠܐ ܕܣܦܘܬܗܘܢ : * ܢܦܠܘܢ ܥܠܝܗܘܢ ܓܘܡܪܐ. ܢܦܠܘܢ ܒܢܘܪܐ ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢ 11
ܠܡܩܡ : * ܓܒܪܐ ܠܫܢܢܐ ܠܐ ܢܬܩܢ ܒܐܪܥܐ. ܘܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܒܝܫܬܗ ܬܨܘܕܝܘܗܝ ܠܚܘܒܠܐ : 12
* ܝܕܥܬ ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ ܕܝܢܐ ܕܡܣܟܢܐ ܘܕܝܢܐ ܕܒܨܝܪܐ. * ܒܪܡ ܙܕܝܩܐ ܢܘܕܘܢ ܠܫܡܟ : 13 14
ܘܢܬܒܘܢ ܬܪܝܨܐ ܩܕܡ ܐܦܝܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܕܘܝܕ *

* ܡܪܝܐ. ܩܪܝܬܟ ܥܢܝܢܝ. ܨܘܬ ܠܡܠܝ ܘܩܒܠ : ܘܨܠܘܬܐ ܕܡܫܡܠܝܐ ܬܬܩܢ ܩܕܡܝܟ. ܐܝܟ 1
ܒܣܡܐ ܩܕܡܝܟ : * ܘܡܘܗܒܬܐ ܕܐܝܕܝ ܐܝܟ ܩܘܪܒܢܐ ܕܪܡܫܐ : * ܣܝܡ ܡܪܝܐ 2
ܢܛܘܪܐ ܠܦܘܡܝ. ܘܢܛܘܪܐ ܠܣܦܘܬܝ : * ܠܐ ܬܨܠܐ ܠܒܝ ܠܡܠܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܐ ܐܥܒܕ 3
ܥܒܕܐ ܒܝܫܐ ܥܡ ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ. ܘܠܐ ܐܟܘܠ ܡܠܚܐ ܥܡܗܘܢ : 4
* ܢܡܚܝܢܝ ܙܕܝܩܐ ܘܢܟܣܢܝ : ܡܫܚܐ ܕܚܛܝܐ ܠܐ ܢܪܘܐ ܪܝܫܝ. ܡܛܠ ܕܬܘܒ ܨܠܘܬܝ ܥܠ ܒܝܫܬܗܘܢ : 5
* ܐܫܬܕܝܘ ܒܐܝܕܐ ܕܟܐܦܐ ܕܝܢܝܗܘܢ. ܘܫܡܥܘ ܡܠܝ ܕܒܣܝܡܢ : * ܐܝܟ ܦܠܚܐ ܕܨܐܪ ܐܪܥܐ. 6
ܐܬܒܕܪܘ ܓܪܡܝܢ ܠܦܘܡ ܫܝܘܠ : * ܘܐܢܐ ܡܪܝܐ ܠܘܬܟ ܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ. ܘܥܠܝܟ 7
ܬܟܠܬ ܠܐ ܬܫܕܐ ܢܦܫܝ : * ܢܛܪܝܢܝ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܫܒܗܪܢܐ. ܕܛܫܘ ܠܝ ܦܚܐ : 8

Qui meditati ſunt malitiam in corde ſu
tâque die conciliârunt rixam : Qui acu
linguam ſuam ut ſerpentis, & furor a
eſt ſub labiis eorum. Serva me Domine
manu ſceleſtorum, & à viris rapacib' cu
ſtodi: qui cogitaverunt impellere greſſus me
os, Et abdiderunt mihi ſuperbi laqueum
funes retium ſuorũ tetenderunt ſuper ſemi
tas meas, reteq; jecerũt ſuper me. 'Di
Dixi Dño, Deus meus es tu, auſculta vo
precationis meæ Dñe Salvator meus fo
me, umbraculũ capitis mei die belli. N
cedas Dñe deſideriũ ſuũ iniquo, & co
ejus ne aſcendat Ad caput meum. O
eos iniquitas labiorũ eorũ: Decidant ſu
carbones : corruant in ignem, nec va
ſurgere. Homo linguax non ſit firmus ſ
ra, & virũ ſceleſtũ ſua malignitas ve
interitũ. Novi quòd facit Dñs judicium
perum, & cauſam egenorum. Veru
confitebuntur nomini tuo, & ſedebu
coram facie tua.

PSAL. CXL.

Davidis, quum meditaretur miniſt
ſpertinum. Et oratio perfecti in Deo.

Domine te vocavi, tu me exau
ſculta verba mea, ac ſuſcipe. Ora
ſit ut incenſum coram te : oblatio ma
mearũ ut oblatio veſpertina. Conſtit
mine cuſtodé ori meo, & cuſtodé lab
is : Ut non deflectat cor meũ ad verb
vum, committamq; facinora iniquitat
viris impiis haud ſumã ſalé cum eis.
bit me juſtus, meque corripiet : oleu
piorum caput meum non unget; quon
ratio mea eſt adversùs malitiam ipſor
repreſſi ſunt manu lapideâ judices eor
audierunt verba mea quia ſunt jucun
vomer findens terram, diſperſa ſunt
rum ad os ſepulchri. At ego Dom
levavi oculos meos, tibique fretus
rejicias animã meam. Cuſtodi me
ſuperborum, qui abſconderunt mi

Verſio VULG. LAT.

3 Qui cogitaverũt iniquitates in corde:
4 tota die conſtituebant prælia. Acue-
runt linguas ſuas ſicut ſerpentis: ve-
5 nenum aſpidum ſub labiis eorum. Cu-
ſtodi me, Domine, de manu peccatoris:
& ab hominibus iniquis eripe me. Qui
cogitaverunt ſupplantare greſſ⁹ meos:
6 abſconderunt ſuperbi laqueum mihi:
Et funes extenderunt in laqueũ: juxta
7 iter ſcandalũ poſuerũt mihi. Dixi Dño,
Deus meus es tu: exaudi Dñe vocem de-
8 precationis meæ. Dñe, Dñe virtus ſalutis
meæ: obumbraſti ſup caput meũ in die
9 belli: Ne tradas me, Dñe, à deſiderio
meo peccatori: cogitaverunt contra
me, ne derelinquas me, ne forte exaltẽ-
10 tur. Caput circuit⁹ eorũ: labor labio-
11 rum ipſorũ operiet eos. Cadent ſup
eos carbones, in ignẽ dejicies eos: in
12 miſeriis non ſubſiſtent. Vir linguoſus
non dirigetur in terra: virũ injuſtum
13 mala capient in interitu. Cognovi
quia faciet Dñs judicium inopis, &
14 vindictam pauperum. Veruntamen
juſti confitebuntur nomini tuo: & ha-
bitabunt recti cum vultu tuo.

Pſalmus David. CXL.

1 DOmine, clamavi ad te, exaudi me:
intende voci meæ, cùm clamavero
2 ad te. Dirigatur oratio mea ſicut in-
cenſum in conſpectu tuo: elevatio ma-
nuũ mearum ſacrificium veſpertinum.
3 Pone, Dñe, cuſtodiã ori meo: & oſti-
4 um circumſtantiæ labiis meis. Non de-
clines cor meum in verba malitiæ, ad
excuſandas excuſationes in peccatis.
Cum hominib⁹ operantib⁹ iniquitatẽ,
& non communicabo cum electis eo-
5 rum. Corripiet me juſt⁹ in miſericor-
dia, & increpabit me: oleũ autem
peccatoris non impinguet caput meũ.
Quoniã adhuc & oratio mea in bene-
6 placitis eorum: Abſorpti ſunt juncti
petræ judices eorum. Audient verba
7 mea quoniã potuerunt: Sicut craſ-
ſitudo terræ erupta eſt ſup terrã. Diſ-
ſipata ſunt oſſa noſtra ſec⁹ infernum:
8 Quia ad te, Domine, Domine, oculi
mei: in te ſperavi, non auferas ani-
9 mam meã: Cuſtodi me à laqueo, quẽ
ſtatuerunt mihi: & à ſcandalis ope-
rantium iniquitatem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

3 †Οἵτινες ἐλογίσαντο ἀδικίας ἐν καρδίᾳ, †ὅλην
4 τὴν ἡμέραν παρετάσσοντο πολέμους. †Ἠκόνησαν γλῶσ-
σαν αὐτῶν ὡσεὶ ὄφεως, †ἰὸς ἀσπίδων ὑπὸ τὰ χείλη
5 αὐτῶν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †Φύλαξόν με κύριε ἐκ χειρὸς
ἁμαρτωλοῦ, †ἀπὸ (γ) ἀνθρώπων ἀδίκων ἐξελοῦ με. †
οἵτινες ἐλογίσαντο (δ) τοῦ ὑποσκελίσαι τὰ διαβή-
6 ματά μου, †Ἔκρυψαν ὑπερήφανοι παγίδα μοι †καὶ
σχοινία διέτειναν παγίδας τοῖς ποσί μου, †ἐχόμενα
τρίβου σκάνδαλον ἔθεντό (ε) μοι. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †
7 Εἶπα τῷ κυρίῳ, Θεός μου εἶ σύ, ἐνώτισαι κύριε τὴν
8 φωνὴν τῆς δεήσεώς μου. †Κύριε κύριε, δύναμις τῆς σω-
τηρίας μου, †ἐπεσκίασας ἐπὶ τὴν κεφαλήν μου ἐν ἡμέρᾳ
9 πολέμου. †Μὴ παραδῷς με κύριε ἀπὸ τῆς ἐπιθυμίας
μου ἁμαρτωλῷ· †διελογίσαντο κατ' ἐμοῦ, μὴ ἐγκατα-
λίπῃς με, μή ποτε (ζ) ὑψωθῶσιν. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †
10 Ἡ κεφαλὴ τοῦ κυκλώματος αὐτῶν, †κόπος τῶν χει-
11 λέων αὐτῶν καλύψει αὐτούς. †Πεσοῦνται ἐπ' αὐτοὺς ἄν-
θρακες (η) πυρὸς ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ καταβαλεῖς αὐτοὺς †
12 ἐν ταλαιπωρίαις, οὐ μὴ ὑποστῶσιν. †Ἀνὴρ γλωσσώ-
δης οὐ κατευθυνθήσεται ἐπὶ τῆς γῆς· †ἄνδρα ἄδικον
13 κακὰ θηρεύσει εἰς (θ) καταφθοράν. †Ἔγνων ὅτι ποι-
ήσει κύριος τὴν κρίσιν τοῦ πτωχοῦ, καὶ τὴν δίκην τῶν πενή-
14 των. †Πλὴν δίκαιοι ἐξομολογήσονται τῷ ὀνόματί
σου, †(ι) κατοικήσουσιν εὐθεῖς σὺν τῷ προσώπῳ σου.

Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ. ρμ'.

1 †ΚΥ'ριε ἐκέκραξα πρὸς σέ, εἰσάκουσόν μου· †πρόσ-
χες τῇ φωνῇ τῆς δεήσεώς μου, ἐν τῷ κεκραγέναι με
2 πρὸς σέ. †Κατευθυνθήτω ἡ προσευχή μου ὡς θυ-
μίαμα ἐνώπιόν σου· †ἔπαρσις τῶν χειρῶν μου θυσία ἑ-
3 σπερινή. †Θοῦ κύριε φυλακὴν τῷ στόματί μου, †καὶ θύ-
ραν περιοχῆς περὶ τὰ χείλη μου. †Μὴ ἐκκλίνῃς τὴν
4 καρδίαν μου εἰς λόγους πονηρίας, †τοῦ προφασίζεσθαι
προφάσεις ἐν ἁμαρτίαις. σὺν ἀνθρώποις ἐργαζομέ-
νοις τὴν ἀνομίαν, †καὶ οὐ μὴ (α) συνδυάσω μετὰ τῶν ἐκλε-
5 κτῶν αὐτῶν. †Παιδεύσει με δίκαιος ἐν ἐλέει καὶ ἐλέγ-
ξει με, †ἔλαιον δὲ ἁμαρτωλοῦ μὴ λιπανάτω τὴν κε-
φαλήν μου, †ὅτι ἔτι καὶ ἡ προσευχή μου ἐν ταῖς εὐδοκίαις
6 αὐτῶν. †Κατεπόθησαν ἐχόμενα πέτρας οἱ κραταιοὶ
7 αὐτῶν· †ἀκούσονται τὰ ῥήματά μου, ὅτι ἠδυνήθησαν. †Ὡσεὶ
πάχος γῆς διερράγη ἐπὶ τῆς γῆς, †διεσκορπίσθη τὰ
8 ὀστᾶ (β) ἡμῶν παρὰ τὸν ᾅδην. Ὅτι πρὸς σὲ κύριε
κύριε, οἱ ὀφθαλμοί μου, †ἐπὶ σοὶ ἤλπισα, μὴ ἀντανέ-
9 λῃς τὴν ψυχήν μου. Φύλαξόν με ἀπὸ παγίδος ἧς
συνεστήσαντό μοι, †καὶ ἀπὸ (γ) σκανδάλων τῶν ἐργα-
ζομένων τὴν ἀνομίαν.

Verſ. GR. T. LXX. Interp. & Æthiopice, PSAL. CXL.

2 Qui cogitaverunt iniquitates in 3 corde ſuo [a] tota die [b] conſtituebant prælia. 3 Acuerunt linguam ſuam, 4 ſicut ſerpentes: venenum aſpidum ſub labiis eorum. DIAPSALMA. 4 Cuſtodi 5 me, Domine, de manu [c] peccatoris: ab hominibus injuſtis eripe me. 5 Qui cogitaverunt ſupplantare greſſus meos: Abſconderunt ſuperbi laqueum 6 mihi. 6 Et funes [d] extenderunt laqueos pedib⁹ meis: juxta [e] ſemitã ſcandalũ poſuerunt mihi. DIAPSALMA. 7 Dixi Domino, Deus 7 me⁹ es tu: auribus percipe, Domine, vocẽ deprecationis meæ. 8 Domine, 8 Domine, (b) virt⁹ ſalutis meæ: obumbraſti ſuper caput meum in die belli. 9 Ne (c) tradas [f] me, Domine, 9 à deſiderio meo peccatori: cogitaverunt adver⁹ me: ne (d) derelinquas me; nequando exaltentur. DIAPSALMA. 10 (e) Caput circuit⁹ eo- 10 rũ: labor labiorũ ipſorũ operiet eos. 11 Cadet ſuper eos carbones [g] ignis 11 in (f) terra: & (g) dejicies eos in (h) miſeriis, nõ ſubſiſtent. 12 Vir linguo- 12 ſ⁹ nõ (i) dirigetur ſuper terrã: virũ injuſtũ mala (k) venabuntur in interitum. 13 Cognovi, quia faciet Do- 13 minus judicium inopis: & (l) cauſã pauperum. 14 Veruntamen juſti co- 14 fitebuntur nomini tuo: (m) habitabunt recti (n) [h] cum vultu tuo.

Pſalmus David [a]. CXL.

1 DOmine, clamavi ad te, exaudi me: intende voci (a) deprecationis meæ, cũ clamavero ad te. 2 (b) Dirigatur oratio mea, ſicut incenſum in 2 conſpectu tuo: elevatio manuũ mearum (c) ſacrificium veſpertinum 3 Pone Domine, cuſtodiã ori meo, & 3 oſtium [b] circumſtantiæ circa (d) labia mea. 4 Ne (e) declines cor meum 4 in verba malitiæ, ad excuſandas excuſationes in peccatis, 5 cũ hominib⁹ operantib⁹ iniquitatẽ: & nõ (f) combinabo cum electis eorum. 6 (g) [c] Corripiet me juſtus in miſe- 5 ricordia, & arguet me: oleum autẽ peccatoris nõ impinguet caput meum. 7 Quoniã (h) adhuc & oratio mea [d] in beneplacitis eorum: Ab- 6 ſorpti ſunt (i) juxta petrã potentes eorũ. Audient verba mea, quoniã (k) [e] dulcuerunt: Sicut (l) craſſitudo 7 terræ erupta eſt, diſperſa ſunt oſſa (m) noſtra ſecus infernum. Quoniã ad te, 8 [f] Domine, Domine, oculi mei: in te ſperavi, ne (n) auferas animam meam. 10 Cuſtodi me à la- 9 queo, quem [g] ſtatuerunt mihi, & à ſcandalis operantium iniquitatem.

Verſio ÆTHIOPICA.

እለ፡ሮሙ፡ሙከሩ፡በልበሙ፡፡ኵሎ፡ሌሊተ፡ 2
ይፈወይኒ፡ይቀትሉኒ፡፡ ወአብልኁ፡ል 3
ሳኖሙ፡ከመ፡አርዌ፡ምድር፡፡ሐሞተ፡አርዌ፡
ምድር፡ታሕተ፡ከናፍሪሆሙ፡፡ ዕቀበኒ፡ 4
እግዚኦ፡እምእደ፡ኃጥአን፡፡ወእምብእሲ፡
ዐመፂ፡አድኅነኒ፡፡ እለ፡መከሩ፡የዐቅ 5
ፉ፡መከይድየ፡፡ወኃብኡ፡ሊተ፡መሠገርተ፡
ዕቡያን፡፡ ወሠተሩ፡አሓባለ፡መሠግረ፡ 6
ለእገርየ፡፡ወአንበሩ፡ዕቅፋተ፡ውስተ፡ፍኖት
የ፡፡ ወእቤሎ፡ለእግዚአብሔር፡አምላ 7
ኪየ፡አንተ፡፡ወአጽምአኒ፡ቃለ፡ስእለት
የ፡፡ እግዚኦ፡እግዚኦ፡ኃይለ፡መድኃኒት 8
የ፡፡ሰወርከኒ፡በዕለተ፡ቀትል፡መልዕልተ፡ርእ
ስየ፡፡ ኢትመጥወኒ፡እምፍትወትየ፡ለኃ 9
ጥኣን፡፡ተማከሩ፡ላዕሌየ፡ወኢትኅድገኒ፡
ከመ፡ኢይዘኀሩ፡፡ ወርእሰ፡ማዕገቶ 10
ሙ፡፡ወጻማ፡ከናፍሪሆሙ፡ይድፍኖሙ፡፡
ወይደቅ፡ላዕሌሆሙ፡አፍሐመ፡እሳት፡፡ወት 11
ነጽሖሙ፡ውስተ፡ምድር፡፡በምንደቤ፡ከመ፡
ኢይክሀሉ፡ቀዊመ፡፡ ብእሲ፡ነባቢ፡ኢየ 12
ረትዕ፡በዲበ፡ምድር፡፡ወለብእሲ፡ዐመፂ፡ይ
ነዕዎ፡እኪት፡ለአማስኖ፡፡ አእመርኩ፡ 13
ከመ፡ይገብር፡እግዚአብሔር፡ኵነኔ፡ለነዳያ
ን፡ወፍትሐ፡ለምስኪናን፡፡ ወባሕቱ፡ጻ 14
ድቃን፡ይገንዩ፡ለስምከ፡፡ወይነብሩ፡ራትዓን፡
ቅድመ፡ገጽከ፡፡

መዝሙር፡ዘዳዊት፡ማኅሌት፡፡

የሀ እግዚኦ፡ጸራኅኩ፡ኀቤከ፡ስምዐኒ፡፡ወ 1
አጽምእ፡ቃለ፡ስእለትየ፡ዘጸራኅኩ፡ኀቤ
ከ፡፡ ተወከፈኒ፡ጸሎትየ፡ከመ፡ዕጣን፡በ 2
ቅድሜከ፡፡አንሥኦ፡እደዊየ፡መሥዋዕተ፡ሰ
ርክ፡፡ ሢም፡እግዚኦ፡ዐቀቤ፡ለአፉየ፡፡ 3
ወማዕጾ፡ዘዓቅም፡ለከናፍርየ፡፡ ኢትሚ 4
ጦ፡ልብየ፡ውስተ፡ነገር፡እኩይ፡፡ለአመክ
ንዮ፡ምክንያተ፡ለኃጢአት፡፡ ምስለ፡ሰ 5
ብእ፡ገበርተ፡ዐመፃ፡፡ወኢይትኃበር፡ምስለ፡
ኅሩያኒሆሙ፡፡ ገሠጸኒ፡በጽድቅ፡ወተዘ 6
ለፈኒ፡በምሕረት፡፡ወቅብአ፡ኃጥአንሰ፡ኢይ
ትቀብኦ፡ርእስየ፡፡ እስመ፡ዓዲ፡ጸሎትየ 7
ኒ፡ከመ፡ይሠምሩ፡፡ተሰጥሙ፡በጥቃ፡ኰኵ
ሕ፡ጽኑዓኒሆሙ፡፡ ሰምዑኒ፡ቃልየ፡እስ 8
መ፡ተክህለኒ፡፡ከመ፡ግዘፈ፡ምድር፡ተሠጥ
ቀ፡ዲበ፡ምድር፡፡ ወተዘርወ፡አዕጽም 9
ቲሆሙ፡በኀበ፡ሲኦል፡፡እስመ፡ኀቤከ፡እግዚ
ኦ፡አዕይንትየ፡፡ብከ፡ተወከልኩ፡ኢታውፅእ፡
ለነፍስየ፡፡ ዕቀበኒ፡እመሠገርት፡እንተ፡ 10
ኃብኡ፡ሊተ፡፡ ወእማዕቀፎሙ፡ለገበርተ፡
ዐመፃ፡፡

MS.A. (β) ἀδικίαν (γ) ἀνθρώπου ἀδίκου ῥῦσαί με (δ) ὑποσκελίσαι (ε) μοι. Εἶπα (ζ) ὑψωθῶσιν. Ἡ κεφαλὴ (η) ἐν πυρὶ καταβαλεῖς αὐτοὺς (θ) διαφθοράν. (ι) καὶ κατοικήσουσιν

MS. A. ρμ'. (α) συνδυάσω (β) αὐτῶν (γ) σκανδάλου

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. CXXXIX. [a] corde ſuo: [b] perſequuntur me, neq; interficiunt. [c] peccatorum: [d] occultârunt mi laqueos [e] ſemitã meã [f] me à deſiderio [g] ignis: & in terrã dejicies eos in mi[illegible] ſeriis ut ſubſiſtere nequeant: [h] corã facie tua. PSAL. CXL. [a] canticum. [b] quod firmum ſit labiis meis. [c] Corripuit me in juſtitia, & in miſericordia argues me: oleum autem peccatorum [d] ut [illegible] eorum: [e] dirupti ſunt ſuper [f] validi ſunt. [f] Domine, oculi [g] abſconderunt mihi,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 الذين يفكرون بالظلم في قلوبهم اعدوا الحرب النهار كله * سنوا لسانهم مثل ذي الحية * سم
4 الافاعي تحت شفاههم * احفظني يا رب من يد الخاطي ومن رجل ظالم خلصني * الذين اشيروا
5 على ازلاق خطواتي * المتكبرون اخفوا لي فخاخا وربطات مدوها فخا لرجلي وصنعوا لي عثر
6 بقرب طرقي * فقلت للرب انت هو الاهي انصت يا رب الى صوت طلبتي * يا رب يا رب يا قوة
7 خلاصي * ظللت على راسي في يوم الحرب * يا رب لا تسلمني الى الخاطي من قبل شهوتي *
8 اشتوروا علي فلا تخذلني لئلا يستعلوا * راس فسادهم وتعب شفاههم يغطيهم * يسقط عليهم
9 جمر نار * على الارض تطرحهم فلا يستطيعون القيام من الشقا * رجل ذو لسانين لا يستقيم
10 على الارض * رجل ظالم تصيده الشرور المهلكة * علمت ان الرب يصنع حكما للمساكين
11 وانتقاما للبائسين * لكن الصديقون يشكرون اسمك والمستقيمون يسكنون مع وجهك. الليلويا.
12 * المزمور المائة والاربعون * لداود وهو كج استيخن *
13 صرخت اليك يا رب فاستجب لي انصت الى صوت طلبتي اذا صرخت اليك * وليستقم تضرعي
14 امامك مثل البخور ورفع يدي يكون كقربان المساء * يا رب ضع على فمي حافظا وعلى شفتي
1 بابا حصينا * لئلا يميل قلبي الى كلام ردي فتجد سببا من الاسباب الى الخطايا مع الناس
2 عاملي الاثم فلا اتفق مع مختاريهم * البار يودبني برحمة ويوبخني وزيت الخطاة لن ادهن به
3 راسي ولا صلاتي في مسرتهم * ابتلعوا احكامهم عند الصخرة اسمعوا قولي فانه نافع * كغلظ
4 الحرث التي تشق الارض وخلف الحكام تبددت عظامهم * ان عيوننا اليك يا رب يا رب عليك
5 توكلت فلا تنزع نفسي * احفظني من الفخ الذي نصبوه لي ومن شكوك فاعلي الاثم
6
7
8
9

Qui cogitant ſcelus in cordibus ſuis, præ- 3
parârunt prælium totâ die: Acuerunt lin- 4
guã ſuã veluti ſerpentis, venenũ aſpidum
ſub labiis eorũ. Cuſtodi me O Domine, de 5
manu peccatoris, & à viro flagitioſo li-
bera me: qui conſultaverunt de labefa-
ctandis greſſib⁹ meis. Superbi abdiderunt 6
mihi laqueos, & vincula tetenderunt in
laqueum pedibus meis: poſuerunt mihi
offendiculũ juxta vias meas. Et dixi Do- 7
mino, Tu es Deus meus, attende O Do-
mine vocem petitionis meæ. O Domine, O 8
Domine, O virtus ſalutis meæ, obumbrâſti 9
caput meũ in die belli: O Domine, ne tra-
das me peccatori ob deſideriũ meũ. Con-
ſilium inierunt adverſùm me, ne me deſti-
tuas auxilio, ut ne ſuperbiant. Caput cor- 10
ruptionis eorũ, & labor labiorũ eorum o-
periat eos. Decidant ſuper eos carbones 11
ignis, ſuper terrã dejice illos, & nequeant
emergere ex ærumnis. Vir ancipitis linguæ 12
non conſiſtet ſuper terrã: virum ſcele-
ſtum venabuntur mala perniencioſa. Novi 13
Dominum facturum eſſe judicium paupe-
ribus & vindictã egenis; Verùm juſti 14
gratias agent nomini tuo, & recti habi-
tabunt cum vultu tuo. Alleluja.

PSAL. CXL.

Davidis. Verſus 23.

CLamavi ad te, O Domine exaudi 1
me: intende voci precis meæ, quum
clamavero ad te: Et dirigatur ſupplicatio 2
mea ante te ſicut incenſum, & elevatio
manuum mearum ſit veluti ſacrificium ve-
ſpertinum. O Domine pone ſuper os meum 3
cuſtodiam, & ſuper labia mea portam mu-
nitam: ne flectatur cor meũ ad ſermonẽ 4
pravum, [illegible] atq; occaſione aliquã pec-
candi cum hominibus operantibus iniqui-
tatem: neq; conſentiam cũ electis eorum.
Juſtus [illegible] me [illegible] 5
[illegible] peccatorum [illegible]
[illegible] oratio mea in bene-
placitis eorum. [illegible] 6
[illegible] quoniam
[illegible] 7
[illegible]
[illegible] 8
[illegible]
[illegible] 9

.tranſeam donec ego ſimul : impii ejus retiacula in Cadent
10 יפלו במכמריו רשעים יחד אנכי עד־אעבור :

PSAL. CXLII. קמב

Dominum ad mea Voce .oratio ſpelunca in ipſum exiſtendo in David ipſi Maſchil
1 2 משכיל לדוד בהיותו במערה תפלה: קולי אל־יהוה
:meã meditationẽ ejus facies ad Effundam .deprecabor Dominum ad mea voce :clamabo
3 אזעק קולי אל־יהוה אתחנן: אשפך לפניו שיחי
tu & ,meus ſpiritus me ſuper ſe involvendo In .annunciabo ejus facies ad meã anguſtiã
4 צרתי לפניו אגיד: בהתעטף עלי רוחי ואתה
Reſpice .mihi laqueum abſconderũt ,ambulabã qua via in :meã ſemitam cognoviſti
5 ידעת נתיבתי בארח־זו אהלך טמנו פח לי: הביט
.meã animã quærens non : me à refugium periit ;cognoſcens me non & ,vide & ,dexteram
ימין וראה ואין־לי מכיר אבד מנוס ממני אין דורש לנפשי:
.viventium terra in mea portio : mea ſpes Tu ,dixi ,Domine te ad Clamavi
6 זעקתי אליך יהוה אמרתי אתה מחסי חלקי בארץ החיים:
:me perſequentib° à me erue ,valdè ſum attenuat° quia :meũ præconium ad Intende
7 הקשיבה אל־רנתי כי־דלותי מאד הצילני מרדפי
laudandũ ad meã animam clauſura de Educ .me præ fuerunt robuſtiores quoniã
8 כי אמצו ממני: הוציאה ממסגר נפשי להודות
.me ſuper retribueris cùm : juſti coronabunt me in : tuum nomen
את־שמך בי יכתרו צדיקים כי תגמל עלי:

PSAL. CXLIII. קמג

. meas deprecationes ad auſculta ,meã orationem audi Domine .David ipſi Cantus
1 מזמור לדוד יהוה שמע תפלתי האזינה אל־תחנוני
cum judicium in venias ne Et .tua juſtitia in ,me exaudi tua veritate in
2 באמנתך ענני בצדקתך: ואל־תבוא במשפט את־
eſt perſecutus Quia .vivens omnis tuas facies ad erit juſtus non quia : tuo ſervo
3 עבדך כי לא־יצדק לפניך כל־חי: כי־רדף
, obſcuris in me fecit habitare :meã vitam terram ad contudit ,meã animam inimicus
אויב נפשי דכא לארץ חיתי הושיבני במחשכים
deſolabitur mei medio in :meus ſpiritus me ſuper ſe involvit Et .ſeculi mortuos ſicut
4 כמתי עולם: ותתעטף עלי רוחי בתוכי ישתומם
omni in ſum meditatus ;quondam à dierum ſum Recordatus .meum cor
5 לבי: זכרתי ימים מקדם הגיתי בכל־
: te ad meas manus Expandi .meditabor tuarum manuum opere in : tuo opere
6 פעלך במעשה ידיך אשוחח: פרשתי ידי אליך
defecit ,Domine me exaudi Velociter .Selah ,tibi laſſa terra ſicut mea anima
7 נפשי כארץ־עיפה לך סלה: מהר ענני יהוה כלתה
deſcendentibus cum comparabor & : me à tuas facies abſcondas ne : meus ſpiritus
רוחי אל־תסתר פניך ממני ונמשלתי עם־ירדי
me fac ſcire ,ſperavi te in quia ,tuã miſericordiã mane in me fac Audire .ciſternam
8 בור: השמיעני בבקר חסדך כי־בך בטחתי הודיעני
meis inimicis ab me Erue .meã animam levavi te ad quia : ambulem qua viam
9 דרך־זו אלך כי־אליך נשאתי נפשי: הצילני מאיבי
tu quia ,tuã voluntatẽ facere me Doce .me abſcondi te ad ; Domine
10 יהוה אליך כסתי: למדני לעשות רצונך כי־אתה
.rectitudinis terram in me ducet bonus tuus ſpiritus : meus Deus
אלוהי רוחך טובה תנחני בארץ מישור:

תרגום TARGUM.

10 יפלון במצודתוי רשיעי כחדא אנא עד זמן
די אעבר :

קמב

1 שכלא טבא על ידי דוד במהויה באספלידא
2 צלותא: קלי קדם יי אקבל קלי קדם יי
3 אצלי: אשוד קדמוי שותי עקתי קדמוי
4 אחוי: באשתלהיות עלי רוחי ואנת ידעת
שבילי בכבישא דנן דאהלך כמנו פחא לי:
5 אסתכלית על ימינא וחמית ולית לי
משתמודע הובד שיזבו מני ולית תבע לנפשי:
6 קבלית לותך יי אמרית אנת משיזבי חולקי
7 בארע חייא: אצית לצלותי ארום אתמסכנית
לחדא פצי יתי מרדפי ארום אתחילו מני:
8 הנפיק מן מסגירא נפשי לאודאה ית שמך
אמטולתי יעבדון לך כליל דשבח צדיקיא ארום
תשלם גומלא טבא עלי:

קמג

1 שבחא לדוד יי שמע צלותי אצית לתחנוני
2 בקושטך עני יתי בצדקתך: ולא תעול לבית
דינא עם עבדך ארום לא יזכי קדמך כל דחי:
3 ארום רדיף בעל דבבא נפשי דכדך לארעא
חיתי אותבני בחשוכיא היך שכיבי עלמא
4 הדין: באשתלהיות עלי רוחי בגושמי ישתעמם
5 לבי: אדכרית יומין מלקדמין רננית בכולהון
6 עובדך בעובדי אידך אמלל: פריסית אידי בצלו
קדמך נפשי היך ארעא דצהיא למיא מודיקא
7 לך לעלמין: סרהב עני יתי יי רגינת לך רוחי
לא תסלק שכנתך מני ואתמתילית עם נחתי
8 גוב בית קבורתא: אשמיע יתי בצפר טובך
ארום במימרך סברית אודע יתי אורח דנן
9 דאהלך ארום לותך זקפית נפשי בצלו: פצי
יתי מבעלי דבבי יי מימרך מניתי לפריק:
10 אלף יתי למעבד רעותך ארום אנת אלהי
רוח קודשך טבא תדבר יתי בארעא תריץ:

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Incidant in retiacula ejus impii : ſimul eg
donec tranſeam [permanebo.]

Intellectus bonus per manus David, dum
eſſet in ſpelunca, oratio.

PSAL. CXLII.

VOce mea coram Domino clamabo, voc
mea in conſpectu Domini deprecabor. E
fundam coram eo eloquium meum, tribula
tionem meam coram illo annunciabo. Cu
defeciſſet in me ſpiritus meus, & tu cogno
viſſes ſemitam meam, in via qua ambulaba
abſconderunt laqueum mihi. Reſpexi a
dexteram & vidi, et non erat qui cognoſcere
me: periit refugiũ à me, & non eſt qui quæ
rat animam meã. Clamavi ad te Dñe: dix
Tu es liberator meus, portio mea in terra v
ventiũ. Auſculta orationẽ meã, quoniã pa
factus ſum multũ: libera me à perſecutori
meis, quoniam fortiores me facti ſunt. Edu
de cuſtodia animam meam, ut confitea
nomini tuo : in mei gratiam facient tibi co
ronam laudis juſti ; quoniam reddes ret
butionem bonam mihi.

Hymnus Davidi.

PSAL. CXLIII.

DOmine exaudi orationẽ meam, auſculta
deprecationes meas; in veritate tua reſpon
mihi, in tua juſtitia. Et non intres in præ
riũ cum ſervo tuo; quoniã non juſtificab
coram te omnis vivens. Quoniam perſecu
eſt inimicus meus animã meã, conculcav
terram vitam meã ; collocavit me in tenebr
ſicut jacentes ſeculi illius. Cùm anxius
ſuper me ſpiritus meus; in corpore meo p
culſum eſt ſtupore cor meũ. Recordatus
dierũ antiquorũ, meditatus ſum in omni
operibus tuis ; opera manuũ tuarum loqu
Expandi manus meas in oratione coram
anima mea ſicut terra quæ indiget aqua,
ſpicit ad te in æternũ. Feſtina, reſponde m
Dñe, deſideravit te ſpiritus meus: non a
veas majeſtatẽ tuam à me, ne ſimilis fiam
qui deſcendunt in foveam domus ſepulc
Fac me audire manè benignitatẽ tuá; quo
in verbũ tuũ ſperavi: notam mihi fac v
hanc in qua ambulẽ; quoniã ad te animã
levavi in orationę. Libera me ab inim
meis Dñe : Verbum tuum conſtitui Rede
ptorem [meum.] Doce me facere volunta
tuam, quoniam tu Deus meus es : ſpir
ſanctus tuus bonus deducet me in ter
rectam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 *ܢܦܠܘܢ ܒܡܨܝܕܬܗܘܢ ܚܛܝܐ ܐܟܚܕܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܥܒܪ ܐܢܐ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܫܠܡ *
1 *ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܟܦܢܐ ܕܗܘܐ ܬܠܬ ܫܢܝܢ ܥܠ ܥܘܠܗ ܕܫܐܘܠ : ܘܒܪܘܚ ܥܠ ܡܬܟܬܫܢܐ.
2 ܕܐܬܟܫܦܘܬܐ. ܒܥܘܬܐ ܘܨܠܘܬܐ ܕܡܨܠܝܢ ܠܘܬ ܐܠܗܐ. ܦܢܝ ܠܗ. * ܒܩܠܝ ܠܡܪܝܐ
3 ܩܪܝܬ ܒܩܠܝ ܠܡܪܝܐ ܐܬܟܫܦܬ. * ܘܐܫܘܕ ܩܕܡܘܗܝ ܬܟܫܦܬܝ : ܘܐܘܠܨܢܝ ܩܕܡܘܗܝ ܐܚܘܝ
4 ܚܘܝܬ. * ܟܕ ܐܬܥܛܦܬ ܪܘܚܝ ܐܢܬ ܝܕܥ ܐܢܬ ܫܒܝܠܝ : ܒܐܘܪܚܐ ܕܗܠܟܬ ܛܫܘ ܠܝ ܦܚܐ
5 ܦܚܐ. * ܚܪܝܬ ܠܝܡܝܢܐ ܘܚܙܝܬ ܘܠܝܬ ܕܢܫܬܘܕܥܢܝ : ܐܒܕ ܡܢܝ ܡܥܪܩܐ ܘܠܝܬ ܕܬܒܥ
6 ܠܢܦܫܝ. * ܘܩܥܝܬ ܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪܬ : ܕܐܢܬܘܗܝ ܣܒܪܝ ܘܡܢܬܝ ܒܐܪܥܐ
7 ܕܚܝܐ. * ܫܡܥ ܒܥܘܬܝ ܡܛܠ ܕܡܟܟܬ ܛܒ : ܦܨܢܝ ܡܢ ܪܕܘܦܝ ܡܛܠ ܕܥܫܢܘ ܡܢܝ.
8 *ܐܦܩ ܢܦܫܝ ܡܢ ܒܝܬ ܐܣܝܪܐ ܕܐܘܕܐ ܠܫܡܟ : ܘܢܚܘܪܘܢ ܒܝ ܙܕܝܩܐ ܟܕ ܬܦܪܥܢܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܫܠܡ *

1 *ܕܕܘܝܕ. ܥܠ ܐܕܘܡܝܐ ܕܐܬܘ ܥܠܘܗܝ : ܘܨܠܘܬܐ ܕܡܘܕܐ ܒܟܠ ܫܥܐ ܥܠ ܐܘܠܨܢܐ.
2 ܦܢܝ ܠܗ. ܫܡܥ ܡܪܝܐ ܨܠܘܬܝ ܘܨܘܬ ܠܒܥܘܬܝ : ܒܗܝܡܢܘܬܟ ܥܢܝܢܝ ܒܙܕܝܩܘܬܟ. *ܠܐ
3 ܬܥܠܝܗܝ ܠܥܒܕܟ ܒܕܝܢܐ : ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܢܫ ܡܙܕܕܩ ܩܕܡܝܟ ܟܠ ܕܚܝ. * ܡܛܠ ܕܪܕܦ ܒܥܠܕܒܒܐ
4 ܢܦܫܝ : ܘܡܟܟ ܠܐܪܥܐ ܚܝܝ. ܐܘܬܒܢܝ ܒܚܫܘܟܐ ܐܝܟ ܡܝܬܐ ܕܠܥܠܡ : * ܘܐܬܥܛܦܬ ܥܠܝ
5 ܪܘܚܝ ܘܐܫܬܓܫ ܒܝ ܠܒܝ. * ܐܬܕܟܪܬ ܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ : ܘܐܬܪܢܝܬ ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܟ.
6 ܘܐܬܪܢܝܬ ܒܥܒܕ ܐܝܕܝܟ * ܘܦܫܛܬ ܐܝܕܝ ܠܘܬܟ : ܢܦܫܝ ܨܗܝܐ ܠܟ ܐܝܟ ܐܪܥܐ. *ܥܢܝܢܝ
7 ܡܪܝܐ ܥܓܠ ܕܫܠܡܬ ܪܘܚܝ : ܠܐ ܬܗܦܟ ܐܦܝܟ ܡܢܝ. ܕܠܐ ܐܬܕܡܐ ܥܡ ܢܚܬܝ
8 ܓܘܒܐ : * ܐܫܡܥܢܝ ܒܨܦܪܐ ܛܝܒܘܬܟ. ܡܛܠ ܕܥܠܝܟ ܬܟܠܬ. ܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܘܪܚܟ ܕܐܗܠܟ
9 ܒܗ. ܡܛܠ ܕܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܐܪܝܡܬ ܢܦܫܝ : * ܦܨܢܝ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܝ * ܘܐܠܦܢܝ
10 ܠܡܥܒܕ ܨܒܝܢܟ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܝ : ܪܘܚܟ ܬܕܒܪܢܝ ܒܐܘܪܚܟ ܦܫܝܛܬܐ.

Cadant ſceleſti ſimul in retia ſua, quoa
que pertranſeam ego.

PSAL. CXLI.

Davidis de fame quæ duravit tribus ann
ſcelus Saulis. Spiritualiter autem
Agoniſtarum. Petitio & oratio prom
nos ad Deum. Verſ. 25.

VOce meâ Dñm invocavi, voce meâ D
ſum deprecatus : Atque profudi co
eo ſupplicationẽ meã, & tribulationem
corã eo declaravi. Cùm perturbatur ſp
tus meus, tu ſcis tramites meos : in via
ſuũ meorũ abſconderunt mihi laqueos.
ſpexi ad dexterã ac vidi, & non erat qu
agnoſceret : periit à me effugium, & no
vindex animæ meæ. Et clamavi ad te D
dixi, Tu es ſpes mea & portio mea in t
vivorum. Auſculta precẽ meã, quia hu
atus ſum valdé : Libera me à perſecuto
meis, quia prævaluerunt mihi : Educ a
meã è carcere, ut gratias agã nomini tuo
que conſiderent juſti tui cùm mihi rep

PSAL. CXLII.

Davidis. De Idumæis qui venerant a
ſus eum. Et oratio ejus qui gratia
omni horâ pro moleſtiis. Verſ. 32.

AUdi Domine orationẽ meã, & a
deprecationẽ meam : per ſermon
exaudi me, perq; juſtitiã tuã. Ne induca
vum tuum in judicium, non enim juſti
corã te quiſquã vivens. Quoniam pe
eſt inimic° animã meam, proſtravitque
meam humi. Sedere me fecit in ten
quaſi mortuũ in perpetuum. Perturba
in me ſpirit° me°, atq; trepidavit co
intra me. Recordatus ſum tui Dñe jam
& conſideravi cuncta opera tua: ſum
tatus opus manuũ tuarum, Atq; expa
n° meas ad te. Anima mea ſitiens eſt t
terra: Exaudi me celeriter Dñe, quia co
ptus eſt ſpiritus me°. Ne avertas faci
me, ut ne comparer cum deſcendẽtib
veam. Audire me fac in matutino
tuam, quoniam in te ſum confiſus. O
mihi Domine viam tuam, ut incedam
Nam ad te Domine levavi animã me
pe me ab hoſtib° meis. Et doce me
luntatẽ tuam, quia tu es De° meus. S
ſanctus ducat me per viam tuam r

Verſio VULG. LAT.

10 Cadent in retiaculo ejus peccatores: ſingulariter ſum ego donec tranſeam.

1 Intellect⁹ David, Cùm eſſet in ſpelunca, oratio. (1 *Reg.* 24.) CXLI.

2 VOce meâ ad Dñm clamavi: voce meâ ad Dñm deprecatus ſum: 3 Effundo in conſpectu ejus orationem meã, & tribulationẽ meã ante ipſum 4 pronuntio. In deficiendo ex me ſpiritũ meũ, & tu cognoviſti ſemitas meas. In via hac, quâ ambulabã, abſconderunt laqueũ mihi. 5 Conſiderabã ad dexterã, & videbã: & non erat qui cognoſceret me. Periit fuga à me, & non eſt 6 qui requirat animã meã. Clamavi ad te, Domine: dixi; Tu es ſpes mea, portio mea in terra viventiũ. 7 Intende ad deprecationẽ meam: quia humiliatus ſum nimis. Libera me à perſequentibus me: quia confortati ſũt ſup me. 8 Educ de cuſtodia animã meã ad confitendũ nomini tuo: me exſpectant juſti, donec retribuas mihi.

Pſalmus David,

1 Quando perſequebatur eum Abſalom filius ejus. (2 *Reg.* 17.) CXLII.

DOmine, exaudi orationẽ meã: auribus percipe obſecrationem meã in veritate tua: exaudi me in tua 2 juſtitia. Et non intres in judiciũ cum ſervo tuo: quia non juſtificabitur in 3 conſpectu tuo omnis vivens. Quia perſecutus eſt inimicus animã meã: humiliavit in terra vitã meã. Collocavit me in obſcuris ſicut mortuos ſeculi: 4 Et anxiatus eſt ſuper me ſpiritus 5 meus, in me turbatũ eſt cor meũ. Memor fui dierum antiquorũ, meditatus ſum in omnibus operib⁹ tuis: in factis 6 manuũ tuarum meditabar. Expandi man⁹ mea ad te: anima mea ſicut terra 7 ſine aqua tibi: Velociter exaudi me, Domine: defecit ſpiritus meus. Non avertas faciem tuã à me: & ſimilis ero 8 deſcendentib⁹ in lacũ. Auditã fac mihi manè miſericordiã tuã: quia in te ſperavi. Notam fac mihi viã, in qua ambulẽ: quia ad te levavi animã meã. 9 Eripe me de inimicis meis, Domine, ad 10 te confugi: Doce me facere voluntatem tuã, quia Deus meus es tu. Spirit⁹ tuus bonus deducet me in terrã rectã:

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

10 †Πεσοῦνται ἐν ἀμφιβλήστρῳ αὐτοῦ ἁμαρτωλοί, †κατὰ μόνας εἰμὶ ἐγὼ (δ) ἕως οὗ ἂν παρέλθω.

1 Συνέσεως τῷ Δαυίδ, ἐν τῷ εἶναι αὐτὸν ἐν τῷ σπηλαίῳ, προσευχή. ρμα΄.

2 †ΦΩνῇ μου πρὸς κύριον ἐκέκραξα, (α) φωνῇ μου πρὸς κύριον ἐδεήθην. 3 †Ἐκχεῶ ἐναντίον αὐτοῦ τὴν δέησίν μου, †τὴν θλῖψίν μου ἐνώπιον αὐτοῦ 4 ἀπαγγελῶ. †Ἐν τῷ ἐκλείπειν ἐξ ἐμοῦ τὸ πνεῦμά μου, †καὶ σὺ ἔγνως τὰς τρίβους μου. †ἐν ὁδῷ ταύτῃ ᾗ ἐπορευόμην, ἔκρυψαν παγίδα μοι. 5 †Κατενόουν εἰς τὰ δεξιὰ καὶ ἐπέβλεπον, †ὅτι οὐκ ἦν ὁ ἐπιγινώσκων με· †(β) ἀπώλετο φυγὴ ἀπ' ἐμοῦ, †καὶ οὐκ 6 ἔστιν ὁ ἐκζητῶν τὴν ψυχήν μου. †(γ) Πρὸς σὲ κύριε ἐκέκραξα, †καὶ εἶπα, Σὺ εἶ ἡ ἐλπίς μου, †μερίς μου 7 ἐν γῇ ζώντων. †Πρόσχες (δ) πρὸς τὴν δέησίν μου, ὅτι ἐταπεινώθην σφόδρα· †ῥῦσαί με ἐκ τῶν καταδι- 8 ωκόντων με, †ὅτι ἐκραταιώθησαν ὑπὲρ ἐμέ. †Ἐξάγαγε ἐκ φυλακῆς τὴν ψυχήν μου, †τοῦ ἐξομολογήσασθαι τῷ ὀνόματί σου κύριε. †ἐμὲ ὑπομενοῦσι δίκαιοι, ἕως οὗ ἀνταποδῷς μοι.

1 Ψαλμὸς τῷ Δαυίδ, Ὅτε αὐτὸν ὁ υἱὸς (α) καταδιώκει. ρμβ΄.

†ΚΎριε εἰσάκουσον τῆς προσευχῆς μου, †ἐνώτισαι τὴν δέησίν μου ἐν τῇ ἀληθείᾳ σου, †(β) ἐπάκου- 2 σόν μου ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου. †Καὶ μὴ εἰσέλθῃς εἰς κρίσιν μετὰ τοῦ δούλου σου, †ὅτι οὐ δικαιωθήσεται ἐνώ- 3 πιόν σου πᾶς ζῶν. †Ὅτι κατεδίωξεν ὁ ἐχθρὸς τὴν ψυχήν μου, †ἐταπείνωσεν (γ) εἰς τὴν γῆν τὴν ζωήν μου. †ἐκάθισέ με ἐν σκοτεινοῖς ὡς νεκροὺς αἰῶνος, 4 †Καὶ ἠκηδίασεν ἐπ' ἐμὲ τὸ πνεῦμά μου· †ἐν ἐ- 5 μοὶ ἐταράχθη ἡ καρδία μου. †Ἐμνήσθην ἡμερῶν ἀρχαίων· †καὶ ἐμελέτησα ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις σου, 6 †ἐν ποιήμασι τῶν χειρῶν σου ἐμελέτων. †Διεπέτασα πρὸς σὲ τὰς χεῖράς μου, †ἡ ψυχή μου ὡς γῆ ἄ- 7 νυδρός (δ) σοι. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. †Ταχὺ εἰσάκουσόν μου κύριε, ἐξέλιπε τὸ πνεῦμά μου· †μὴ ἀποστρέψῃς τὸ πρόσωπόν σου ἀπ' ἐμοῦ, †καὶ ὁμοιωθήσο- 8 μαι τοῖς καταβαίνουσιν εἰς λάκκον. †Ἀκουστὸν ποίησόν μοι τὸ πρωῒ τὸ ἔλεός σου, †ὅτι ἐπὶ σοὶ ἤλπισα· †γνώρισόν μοι κύριε ὁδόν, ἐν ᾗ πορεύσο- 9 μαι, †ὅτι πρὸς σὲ ἦρα τὴν ψυχήν μου. †Ἐξελοῦ με ἐκ τῶν ἐχθρῶν μου κύριε, ὅτι πρὸς σὲ κατέφυγον. 10 †Δίδαξόν με τοῦ ποιεῖν (ε) τὸ θέλημά σου, ὅτι θεός μου εἶ σύ, †τὸ πνεῦμά σου τὸ ἀγαθὸν ὁδηγήσει με ἐν τῇ εὐθείᾳ.

Ψαλ. ρμ΄. MS. A. (δ) ἕως οὗ παρέλθω Ψαλ. ρμα΄. MS. A. (α) †καὶ ἡ φωνή μου πρὸς τὸν θεόν, καὶ προσέχι μοι. Ἐκχεῶ ἐνώπιον αὐτοῦ (β) ἀπόλετο (γ) Ἐκέκραξα πρὸς σὲ κύριε, εἶπα, (δ) εἰς τὴν δέησίν μου. Ψαλ. ρμβ΄. (α) κατεδίωξεν. (β) εἰσάκουσόν (γ) εἰς γῆν (δ) σοι. Ταχὺ (ε) τὸ θέλημά σου, * τὸ πνεῦμά σου τὸ ἅγιον

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

11 *Cadent in retiaculo ejus peccatores: (f) ſingulariter ſum ego, donec tranſeam.*

MS. Æthiop. Po. Gloria Patri, & Filio, & Spiritui Sancto: omni tempore, nunc, & ſemper, & in ſecula ſeculorum, Amen.

1 Intellectûs ipſi David, cùm eſſet in [a] ſpelunca, (a) oratio. CXLI.

1 *V*Oce meâ ad Dominũ clamavi: voce meâ ad Dominũ deprecatus ſum. 2 *Effundam ante eum precẽ meã: tribulationem meam in conſpectu ejus annuntiabo.* 3 *In deficiendo ex me ſpiritum meum, &* [b] *tu (b) cognoviſti ſemitas meas.* 4 *In via hac, quâ ambulabã, abſconderunt laqueũ mihi.* 5 [c] *Conſiderabam ad dexterã, & videbam: (c) quia non erat, qui cognoſceret me.* 6 *Periit fuga à me: & non eſt qui requirat animam meam.* 7 *Ad te, (d) Domine, clamavi: & dixi, Tu es ſpes mea,* [d] *portio mea in terra viventium.* 8 *(e) Intende ad deprecationẽ meã: quia humiliatus ſum nimis.* 9 *Erue me à perſequentibus me: quoniam corroborati ſunt ſuper me:* 10 *Educ de (f) cuſtodia animã meam, ut confiteatur nomini tuo, Domine. Me (g) ſuſtinebunt juſti, quoadusque retribuas mihi.*

1 Pſalmus ipſi (a) David, Quando eum filius perſequebatur. CXLII.

1 *D*OMINE, *exaudi orationem meã: aurib⁹ percipe precẽ meam in (b) veritate tua, exaudi me in tua juſtitia.* 2 *Et nõ intres in judiciũ cum ſervo tuo: quia non juſtificabitur in conſpectu tuo omnis vivens.* 3 *Quoniã perſequutus eſt inimicus animã meã, humiliavit in (c) terrã vitã meam.* 4 *Collocavit me in tenebris, ſicut mortuos ſeculi: Et (d)* [a] *anxiat⁹ eſt ſuper me ſpirit⁹ meus: In me turbatum eſt cor meum.* 5 *Memoratus ſum dierũ antiquorũ: & meditatus ſum in omnib⁹ operib⁹ tuis: in (e) factis manuũ tuarũ meditabar.* 6 [b] *Expandi manus meas ad te: anima mea, ſicut terra* [c] *ſine aqua tibi. DIAPSALMA.* 7 *Citò exaudi me, Domine:* [d] *defecit ſpiritus meus.* 8 *Ne (f) avertas faciem tuã à me, &* [e] *ſimilis ero deſcendentibus in lacũ.* 9 *Auditã fac mihi (g) manè miſericordiã tuã, quia in te ſperavi.* 10 *Notã fac mihi, Domine, viam, in qua ambulẽ: quoniã ad te levavi animã meã.* 11 *Exime me de inimicis meis, Domine: quia ad te confugi. Doce me* [f] *ut faciã voluntatem tuã: quia Deus meus es tu:* 12 *Spiritus tuus* [g] *bonus deducet me in (h) rectum:*

Verſio ÆTHIOPICA.

10 ሊይደቁ፡ ውስተ፡መሠገርቶሙ፡ኃጥአን፡፡ እስከ፡ እኅልፍ፡አነ፡ባሕቲትየ፡፡ 11

ሰብሐት፡ለአብ፡ ወወልድ፡ ወመንፈስ፡ቅዱስ፡
ኵሉ፡ጊዜ፡ይእዜኒ፡ወዘልፈኒ፡ወለዓለመ፡
ዓለም፡አሜን፡፡

1 አእምሮ፡ዘደዊት፡እመ፡ሀሎ፡ውስተ፡በዓት፡፡

1 የሀሉ ቃልየ፡ኀበ፡እግዚአብሔር፡ጸራኅኩ፡፡ ቃልየ፡ኀበ፡እግዚአብሔር፡ሰአልኩ፡፡ 2 ወእክዑ፡ቅድሜሁ፡ስእለትየ፡፡ ወእነግር፡ቅድሜሁ፡ሕማምየ፡፡ 3 ሶበ፡ተኀልቀ፡ነፍስየ፡በላዕሌየ፡፡ አንተ፡እግዚኦ፡ ተአምር፡ ፍኖትየ፡፡ 4 በዛቲ፡ፍኖት፡ እንተ፡ሖርኩ፡ወኀብኡ፡ሊተ፡መሠገርተ፡፡ 5 ወተመየጥኩ፡መንገለ፡የማንየ፡ወኢረከብኩ፡፡ ወኃጣእኩ፡ዘየአምረኒ፡፡ 6 ወኀበዊ፡አምስጥ፡አልብየ፡፡ ወአልቦ፡ዘይትኀሠሠ፡በእንተ፡ነፍስየ፡፡ 7 ኀቤከ፡እግዚኦ፡ ጸራኅኩ፡ወእቤለከ፡ አንተ፡ተስፋየ፡፡ ወአንተ፡መክፈልትየ፡በምድረ፡ሕያዋን፡፡ 8 ነጽር፡ስእለትየ፡እስመ፡ተመንደብኩ፡ ፈድፋደ፡፡ 9 አድኅነኒ፡ እምእለ፡ ሮዱኒ፡ እስመ፡ይሄይሉኒ፡፡ 10 ወአውፅአ፡እሞቅሕ፡ ለነፍስየ፡፡ ከመ፡እግነይ፡ለስምከ፡እግዚኦ፡፡ ኪያየ፡ይፀንሑ፡ ጻድቃን፡እስከ፡ ሶበ፡ተአስየኒ፡፡

መዝሙር ፡ ዘደዊት ፡ ዘአመ፡
ይስዱ፡ወልዱ፡፡

1 የሀብ እግዚኦ፡ስምዐኒ፡ጸሎትየ፡፡ወአጽምአኒ፡ስእለትየ፡በጽድቅከ፡፡ ወስምዐኒ፡በርትዕከ፡፡ 2 ወኢትባእ፡ውስተ፡ቅሠት፡ምስለ፡ገብርከ፡፡ እስመ፡ኢይጸድቅ፡ኵሉ፡ሕያው፡በቅድሜከ፡፡ 3 እስመ፡ሮደ፡ጸላኢ፡ለነፍስየ፡፡ ወአኅሰራ፡ውስተ፡ምድር፡ለሕይወትየ፡፡ 4 ወአንበረኒ፡ውስተ፡ጽልመት፡ከመ፡ምውት፡ትካት፡፡ ወቀብጸተኒ፡ነፍስየ፡በላዕሌየ፡፡ ወደንገፀኒ ፡ ልብየ፡ በውስጤየ፡፡ 5 ወተዘከርኩ፡መዋዕለ፡ትካት፡፡ ወአንበብኩ፡ በኵሉ፡ ግብርከ፡፡ ወአነብብ ፡ ግብረ፡እደዊከ፡፡ 6 ወአንሣእኩ፡እደዊየ፡ ኀቤከ፡፡ነፍስየኒ፡ከመ፡ምድረ፡በድው፡ ጸምአተከ፡፡ 7 ፍጡነ፡ ስምዐኒ ፡ እግዚኦ ፡ ኀለፈት ፡ ነፍስየ፡፡ 8 ወኢትሚጥ፡ ገጽከ፡እምኔየ፡፡ ወኢይኩን፡ ከመ፡እለ፡ ይወርዱ ፡ ውስተ ፡ አዘቅት፡፡ 9 ዘይሰማዕ፡ግበር፡ሊተ፡ምሕረትከ፡ በጽባሕ፡፡ እስመ፡ ኪያከ፡ተወከልኩ፡ እግዚኦ፡፡ 10 ምርሐኒ፡እግዚኦ፡ፍኖተ፡እንተ፡ባቲ፡ አሐውር፡፡ እስመ፡ኀቤከ፡አንቃዕደኩ፡ ነፍስየ፡፡ 11 አድኅነኒ፡እግዚኦ፡እምፀርየ፡፡ እስመ ፡ ኀቤከ፡ተማኅፀንኩ፡፡ 12 ምህረኒ፡እግዚኦ፡ለገቢረ፡ ፈቃድከ፡ እስመ፡ አምላኪየ፡ አንተ፡፡ ወመንፈስከ፡ ቅዱስ፡ ይመርሐኒ፡ በምድረ፡ጽድቅ፡፡

INTERP. ÆTHIOP. PSAL. CXLI. [a] ſpelunca. [b] tu Domine. [c] Converſus ſum ad dexteram, & non videbam [d] & tu es portio PSAL. CXLII. [a] contracta eſt in me anima mea: & in [b] Et levavi manus [c] deſerta ſitit ad te. [d] tranſit anima mea. [e] ne fiam ſicut illi qui deſcendunt [f] Domine ut [g] ſanctus

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10 * تسقط الخطاة في شباكهم الى ان اجوز وحدي وانجو منهم · اللليلويا ·

1 · المزمور المائة والحادي والاربعون · * لداود · لما كان في المغار مصليا · وهو يج استيخن

2 3 * اعلنت بصوتي الى الرب وطلبت من الرب بصوتي * وافيض امامه طلبتي · وافرغ قدامه

4 حزني * حين فنيت روحي مني انت علمت سبلي · في طريقي هذه التي اسلك فيها · اخفوا لي

5 فخاخا * التفت من يميني ونظرت انه ان يكون من يعرفني · ضل عني الهرب وليس طالب

6 7 لنفسي * فصرخت اليك يا رب · وقلت انت هو رجاي وحظي في ارض الاحياء * انصت الى

8 طلبتي فاني قد ذللت جدا · نجني من الطاردين لي فانهم اعتزوا اكثر مني * اخرج نفسي

من الحبس لكي اشكر اسمك يا رب · واياي ينتظر الابرار حتى تجازيني · اللليلويا ·

1 · المزمور المائة والثاني والاربعون · * لداود · لما كان ابشالوم ولده يطارده وهو كح استيخن ·

2 يا رب اسمع صلاتي بحقك · انصت لسؤالي بعدلك · استجب لي * ولا تحاكم عبدك فان كل

3 حي لا يتزكى امامك * وان العدو اضطهد نفسي · واذل في الارض حياتي · اجلسني في

4 5 الظلمات كاموات دهرية * حزن روحي علي · تلع قلبي في باطني * تذكرت الايام السالفة

6 درست في جميع اعمالك · ونظرت خلق يديك * بسطت يدي نحوك · صارت نفسي اليك مثل

7 ارض عديمة الماء * استجب لي يا رب عاجلا فقد فنيت روحي · لا تصرف وجهك عني · فاصير

8 كالهابطين في الجب * اسمعني رحمتك في الغدوات فاني عليك توكلت · علمني يا رب الطريق

9 10 التي اسلكها فاني رفعت نفسي اليك * نجني من اعداي فاني لجات اليك * علمني ان

اصنع مشيتك فانك انت هو الاهي · وليهدني روح قدسك الى سبل الاستقامة ·

Cadant peccatores in retia ſua, donec pertranſeã ſolus, & liberer ab eis. Alleluja. 10

PSAL. CXLI.

1 Davidis, quum eſſet in ſpelunca orans. Verſ. 13.

2 R*Evelavi voce meâ Domino, & deprecatus ſum Dominum voce meâ.* 3 *Effundo corã ipſo precem meã, & evacuo ante illum mœrorem meum.* 4 *Quum deficeret ſpiritus meus à me, tu cognoviſti ſemitas meas: in via mea hac in qua ambulo, abſconderunt mihi laqueos.* 5 *Verti me ad dexterã meã, & conſideravi num adeſſet qui me cognoſceret. Aberravit à me fuga, & non eſt qui quærat animã meã.* 6 *Quapropter clamavi ad te O Domine, & dixi; Tu es ſpes mea & ſors mea in terra vivorum.* 7 *Auſculta deprecationem meam, quia humiliatus ſum valdè. Libera me à perſequentibus me, quia invaluerunt plus me.* 8 *Educ animã meã e carcere, ut gratias agam nomini tuo O Domine: me enim expectant innocentes donec retribuas mihi. Alleluja.*

PSAL. CXLII.

1 Davidis, quum Abſalom filius ejus perſequeretur eum. Ver. 28.

O *Domine, audi orationem meam per veritatem tuã: auſculta petitionem meam ex juſtitia tuã: exaudi me.* 2 *Et ne committas judicium cum ſervo tuo, quia ullus vivens non juſtificabitur ante te.* 3 *Et quidem inimicus perſecutus eſt animã meã, & depreſſit humi vitã meã: ſedere me fecit in tenebris ut mortuos æternos.* 4 *Contriſtatus eſt ſpiritus meus in me, turbatum eſt cor meum in inteſtinis meis.* 5 *Recordatus ſum dierum præteritorum, exercui me in omnibus operibus tuis, & meditatus ſum creaturã manuum tuarum.* 6 *Extendi manus meas erga te: facta eſt anima mea ad te ſicut terra carens aquâ.* 7 *Exaudi me O Domine, cito: jam enim conſumptus eſt ſpiritus meus. Ne avertas faciem tuam à me, ſiam ut ſicuti deſcendentes in foveam.* 8 *Audire fac me miſericordiam tuam in matutinis: quoniam in te confiſus ſum. Doce me O Domine, viam per quam ambulem: quia elevavi animam meam ad te.* 9 [illegible] 10 [illegible]

תהלים : קמד קמה

anguſtia de educes *tua juſtitia in* : me vivificabis Domine tuum nomen Propter
11 לְמַעַן־שִׁמְךָ יְהוָה תְּחַיֵּנִי בְּצִדְקָתְךָ תּוֹצִיא מִצָּרָה
omnes perdes & ,meos inimicos *excindes tua miſericordia in* Et .meam animam
12 נַפְשִׁי׃ וּבְחַסְדְּךָ תַּצְמִית אֹיְבָי וְהַאֲבַדְתָּ כָּל־
.tuus ſervus ego quia : meæ animæ hoſtes
צֹרְרֵי נַפְשִׁי כִּי אֲנִי עַבְדֶּךָ׃

PSAL. CXLIV. קמד

conflictum ad meas manus *docens meæ rupes* Dominus Benedictus .David Ipſi
1 לְדָוִד בָּרוּךְ יְהוָה צוּרִי הַמְלַמֵּד יָדַי לַקְרָב
me° liberator &,mea elevatio,mea arx &,mea Miſericordia .bellum ad meos digitos
2 אֶצְבְּעוֹתַי לַמִּלְחָמָה׃ חַסְדִּי וּמְצוּדָתִי מִשְׂגַּבִּי וּמְפַלְטִי
Domine .me ſub meū populum *ſternens* : ſperavi ipſo in & ,meum ſcutum ,mihi
3 לִי מָגִנִּי וּבוֹ חָסִיתִי הָרוֹדֵד עַמִּי תַחְתָּי׃ יְהוָה
vanitati Homo ? eum reputâſti & ,hominis filius : eū cognoviſti & ,homo quid
4 מָה־אָדָם וַתֵּדָעֵהוּ בֶּן־אֱנוֹשׁ וַתְּחַשְּׁבֵהוּ׃ אָדָם לַהֶבֶל
,tuos cœlos inclina Domine .tranſiens umbra ſicut ejus dies : eſt ſimilis
5 דָּמָה יָמָיו כְּצֵל עוֹבֵר׃ יְהוָה הַט־שָׁמֶיךָ
:eos diſperge *fractos* & ,fulgur Fulgura .fumigabunt & ,montes *in* tange : *deſcendes* &
6 וְתֵרֵד גַּע בֶּהָרִים וְיֶעֱשָׁנוּ׃ בְּרוֹק בָּרָק וּתְפִיצֵם
,me redime ,excelſo de tuas manus Mitte .illos *conturbabis* & ,tuas ſagittas mitte
7 שְׁלַח חִצֶּיךָ וּתְהֻמֵּם׃ שְׁלַח יָדֶיךָ מִמָּרוֹם פְּצֵנִי
eorum os Quorum .*alienigenæ* filiorum manu è : multis aquis ex me erue &
8 וְהַצִּילֵנִי מִמַּיִם רַבִּים מִיַּד בְּנֵי נֵכָר׃ אֲשֶׁר פִּיהֶם
canticum Deus .*falſitatis* dextera ,eorum dextera & : mendacium eſt locutus
9 דִּבֶּר־שָׁוְא וִימִינָם יְמִין שָׁקֶר׃ אֱלֹהִים שִׁיר
ſalutem *Dans* .tibi canam decachordo ,*nebel* in ;tibi cantabo novum
10 חָדָשׁ אָשִׁירָה לָּךְ בְּנֵבֶל עָשׂוֹר אֲזַמְּרָה־לָּךְ׃ הַנּוֹתֵן תְּשׁוּעָה
me erue & ,me Redime .malo gladio de ſuū ſervum David *redimens* ,regibus
11 לַמְּלָכִים הַפּוֹצֶה אֶת־דָּוִד עַבְדּוֹ מֵחֶרֶב רָעָה׃ פְּצֵנִי וְהַצִּילֵנִי
,eorū dextera & :mendaciū eſt locutum *eorum* os quorum ,*alienigenæ* filiorū manu de
מִיַּד בְּנֵי־נֵכָר אֲשֶׁר פִּיהֶם דִּבֶּר־שָׁוְא וִימִינָם
:ſuis adoleſcentiis in *grandeſcentes* plantationes ſicut noſtri filii Ut .*falſitatis* dextera
12 יְמִין שָׁקֶר׃ אֲשֶׁר בָּנֵינוּ כִּנְטִעִים מְגֻדָּלִים בִּנְעוּרֵיהֶם
plena noſtra Penaria .*templi ſimilitudine* inciſi anguli ſicut noſtræ filiæ
13 בְּנוֹתֵינוּ כְזָוִיֹּת מְחֻטָּבוֹת תַּבְנִית הֵיכָל׃ מְזָוֵינוּ מְלֵאִים
millia decē parientes,mille parientes noſtræ pecudes,ſpeciem ad ſpecie de *educentia*
מְפִיקִים מִזַּן אֶל־זַן צֹאונֵנוּ מַאֲלִיפוֹת מְרֻבָּבוֹת
: *egrediens* nec ,*irruptio* non onuſti noſtri Boves .noſtris plateis in
14 בְּחוּצוֹתֵינוּ׃ אַלּוּפֵינוּ מְסֻבָּלִים אֵין פֶּרֶץ וְאֵין יוֹצֵאת
beatitudines : ei ſic cui *populi Beatitudes* .noſtris plateis in clamor nec
15 וְאֵין צְוָחָה בִּרְחֹבֹתֵינוּ׃ אַשְׁרֵי הָעָם שֶׁכָּכָה לּוֹ אַשְׁרֵי
.ejus Deus DOMINUS cujus ,*populi*
הָעָם שֶׁיְהוָה אֱלֹהָיו׃

PSAL. CXLV. קמה

tuo nomini benedicam & : rex meus Deus te Exaltabo .David ipſi Laus
1 תְּהִלָּה לְדָוִד אֲרוֹמִמְךָ אֱלוֹהַי הַמֶּלֶךְ וַאֲבָרְכָה שִׁמְךָ
.perpetuum in & ,ſeculum in
לְעוֹלָם וָעֶד׃

תרגום TARGUM.

11 מִן בְּגלַל שְׁמָךְ יְיָ תְּקִימִנַנִי בְּצִדְקָךְ אַפֵּק מִן עָקְתָא
12 נַפְשִׁי׃ וּבְחַסְדָּךְ תְּמַגַּר בַּעֲלֵי דְבָבִי וּתְהוֹבֵד
כָּל מְעִיקֵי נַפְשִׁי אֲרוּם אֲנָא עַבְדָּךְ׃

קמד

1 עַל יַד דָּוִד בְּרִיךְ יְיָ תּוּקְפִּי דִּמְאַלֵּף אִידַי לְסִדְרֵי
2 קְרָב אֶצְבְּעָתַי לְאַגָּחָא קְרָבָא׃ עָבֵד טִיבוּ וּבְרִיךְ
תַּקִּיפַי תָּקְפִּי וּמְשֵׁזִיב יָתִי תְּרִיסִי וּבְמֵימְרֵיהּ
3 סַבְרִית דִּי מְרַדֵּד עַמִּין תְּחוֹתַי׃ יְיָ מָה הוּא
4 בַּר נָשׁ דְּחַכִּימְתֵּיהּ בְּנֵי אֱנָשָׁא וְחַשַּׁבְתֵּיהּ׃ בַּר
5 נָשׁ לְלַמָּא אֲדַמָּא יוֹמוֹי הֵיךְ טוּלָא דְעָבַר׃ יְיָ
אַרְכֵּין שְׁמַיָּא וְתִתְגְּלֵי קְרַב בְּטוּרַיָּא וְיַסְּקִין
6 תְּנָנָא׃ אַבְרִיק בַּרְקָא וּבַדְרִנּוּן שַׁדַּר גִּרְרִין
7 תְּשַׁגְשְׁנוּן׃ אוֹשִׁיט יְדָךְ מִן שְׁמֵי מְרוֹמָא פְּצִי
יָתִי וְשֵׁיזִיב יָתִי מֵאוֹכְלוּסִין דְּמִתִילִין לְמַיִין
8 סַגִּיעִין מִן יְדֵיהוֹן דִּבְנֵי נוּכְרָאִין׃ דִּי פּוּמְהוֹן
מְמַלֵּל מוּמָתָא דְמַגָּן וְאוֹרַיְתְהוֹן אוֹרַיְת שִׁקְרָא׃
9 אֱלֹהִים שְׁבַח חֲדַת אֲשַׁבַּח קֳדָמָךְ בְּנִבְלָא
10 עַסְרְתֵי נִימִין אֲזַמֵּר קֳדָמָךְ׃ דִּיהַב פּוּרְקָן לְמַלְכַיָּא
דִּפְצֵי יָת דָּוִד עַבְדֵּיהּ מֵחַרְבָּא בִּישָׁא דְגָלְיָת׃
11 פְּצֵי יָתִי וְשֵׁיזִיב יָתִי מִידֵיהוֹן דִּבְנֵי נוּכְרָאִין דִּי
פּוּמְהוֹן מַלֵּל מוּמָתָא דְמַגָּן וְאוֹרַיְתְהוֹן אוֹרַיְת
12 שִׁקְרָא׃ דִּבְנָנָא כִּנְצִיבִין דְּדִקְלִין בְּאוּלְפַן
אוֹרַיְתָא רַבְיָן מִן טַלְיוּתְהוֹן בְּנָתָנָא זְוְתָנִין
וּכְשֵׁרִין לְכַהֲנַיָּא דִּמְשַׁמְּשִׁין בִּמְצַע הֵיכְלָא׃
13 תּוֹסְבָּרְנָא מַלְיָן מְסַפְּקָן מִן שַׁתָּא לְשַׁתָּא
עָאנְנָא מֵילְדָן אַלְפַיָּא מַפְשָׁן רִבְוָתָא בְּאַשְׁקָקָנָא׃
14 תּוֹרֵינָא מָרֵי מְטוֹל לֵית תְּקוֹף וְלָא מַפְקָא
בִּישָׁא וְלֵית צְוָחַת בְּכִיתָא בִּפְלַטְיָתָנָא׃
15 טוּבוֹי דְעַמָּא דְהָכְדֵין לֵיהּ טוּבוֹי דְעַמָּא דַיְיָ
אֱלָהֵיהּ׃

קמה

1 תּוּשְׁבַּחְתָּא לְדָוִד אֲרוֹמְמִנָךְ אֱלָהִי מַלְכָּא
וַאֲבָרֵיךְ שְׁמָךְ לְעָלְמֵי עָלְמִין׃

PARAPH. CHALD. Verſ. Lat.

Propter nomen tuum Deus erige me; i
juſtitia tua *educ* de afflictione animam mea
Et in miſericordia tua diſperdes inimico
meos, & perdes omnes qui in anguſtia
adigunt animam meam; quoniam ego ſerv
tuus ſum.

Per manum Davidis.

PSAL. CXLIV.

BEnedictus Dominus fortitudo mea, qu
docet manus meas ad ordines belli, digito
meos ad movendum prælium. Auctor be-
nignitatis meæ, & arx *valida mea, fortitu*
mea & liberator meus, ſcutum meum, &
in Verbo ejus ſperavi, qui ſubjicit popu-
los ſub me. Domine quid eſt homo u
agnoſcas eum; filius hominis ut repute
eum? Homo vanitati ſimilis eſt, dies eju
ſicut umbra quæ præteriit. Domine incli
cœlos, & manifeſta te; tange montes, &
emittent fumum. Fulgura *fulgurationem*, &
diſſipa eos; emitte ſagittas [*tuas, &c.*] co-
turbabis eos. Extende manum tuam de cœ-
lis excelſis, eripe & libera me de exercitibu
ſimilibus aquis multis, de manu filioru
alienorum. Quorum os locutum eſt jura-
mentum vanum, & lex eorum lex iniqui-
tis. Deus hymno novo laudabo coram te, i
pſalterio decem chordarum pſallam cor
te. Qui das ſalutem regibus, qui libera
David ſervum tuum à gladio pravo *Golia*
Libera me, & eripe me de manu filioru
alienorum, quorum os locutum eſt jurame
tum vanitatis, & lex eorum lex menda
Quòd filii noſtri ſint ſicut plantatio
dactylorum in doctrina Legis, nutriti a j
ventute ſua: filiæ noſtræ ſplendidæ, & a
ceptæ ſacerdotibus qui miniſtrant in me
templi. Cellaria noſtra plena, ſupera
berantia quotannis; oves noſtræ parien
millia, multiplicantes in myriadas in ſta
lis noſtris. Tauri noſtri *patientes one*
non eſt fortitudo, non eſt prolatio m
non eſt clamor luctuoſus in plateis noſt
Beatus populus cui ſunt hujuſmodi: bea
populus, cujus DOMINUS eſt De
ejus.

Hymnus Davidi.

PSAL. CXLV.

EXaltabo te Deus meus Rex, & bene-
cam nomen tuum in ſecula ſeculorum

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 * ܡܛܠ ܫܡܟ ܡܪܝܐ ܒܝܐܝܢܝ: ܡܛܠ ܙܕܝܩܘܬܟ ܐܦܩ ܢܦܫܝ ܡܢ ܐܘܠܨܢܐ. * ܘܒܛܝܒܘܬܟ
12 ܫܬܩ ܠܒܥܠܕܒܒܝ: ܘܐܘܒܕ ܠܒܥܠܕܒܒܝܗ̇ ܕܢܦܫܝ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܥܒܕܟ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܓ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܩܛܠܗ ܠܐܣܦ ܐܚܘܗܝ ܕܓܘܠܝܕ. ܘܬܘܕܝܬܗ ܕܥܠ ܙܟܘܬܐ ܕܗܘܬ ܠܗ. ܦܬܓܡܐ ܠܚ.
2 ܒܪܝܟ ܗܘ ܡܪܝܐ ܕܐܠܦ ܐܝܕܝ ܠܩܪܒܐ. ܘܨܒܥܬܝ ܠܩܪܒܐ: * ܚܣܝܢܝ ܘܦܪܘܩܝ.
3 ܡܣܬܪܢܝ ܕܒܗ ܬܟܠܬ: ܘܡܫܥܒܕ ܠܥܡܡܐ ܬܚܝܬܝ. * ܡܪܝܐ ܡܢܘ ܒܪܢܫܐ
4 ܕܐܝܕܥܬܝܗܝ: ܘܒܪܢܫܐ ܕܚܫܒܬܝܗܝ. * ܒܪܢܫܐ ܠܗܠܐ ܕܡܐ: ܘܝܘܡܬܗ ܥܒܪܝܢ ܐܝܟ
5 ܛܠܠܐ. * ܐܪܟܢ ܫܡܝܐ ܡܪܝܐ ܘܢܚܘܬ: ܘܟܐܐ ܒܛܘܪܐ ܘܢܥܛܢܘܢ. * ܐܒܪܩ ܒܪܩܝܟ ܘܕܠܚ ܐܢܘܢ:
6
7 ܫܕܪ ܓܐܪܝܟ ܘܒܕܪ ܐܢܘܢ. * ܐܘܫܛ ܐܝܕܟ ܡܢ ܡܪܘܡܐ: ܘܦܨܢܝ ܡܢ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܡܢ ܐܝܕܐ
8 ܕܥܘܠܐ: * ܕܦܘܡܗܘܢ ܡܡܠܠ ܣܪܝܩܘܬܐ. ܘܝܡܝܢܗܘܢ ܝܡܝܢܐ ܕܥܘܠܐ: * ܐܠܗܐ
9
10 ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ ܐܫܒܚ ܠܟ. ܘܒܟܢܪܐ ܕܥܣܪ ܢܩܫܝܢ ܐܙܡܪ ܠܟ: * ܕܝܗܒܬ ܦܘܪܩܢܐ
11 ܠܡܠܟܐ. ܘܦܪܩܬ ܠܕܘܝܕ ܥܒܕܟ ܡܢ ܚܪܒܐ ܒܝܫܬܐ: * ܦܨܢܝ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܥܘܠܐ. ܕܦܘܡܗܘܢ
12 ܡܡܠܠ ܣܪܝܩܘܬܐ: ܘܝܡܝܢܗܘܢ ܝܡܝܢܐ ܕܥܘܠܐ. * ܕܒܢܝ̈ܗܘܢ ܐܝܟ ܢܨܒܬܐ ܡܬܪܒܝܢ
13 ܡܢ ܛܠܝܘܬܗܘܢ: ܘܒܢܬܗܘܢ ܐܝܟ ܟܠܬܐ ܡܨܒܬܢ. ܐܝܟ ܕܡܘܬܐ ܕܗܝܟܠܐ: * ܐܘܨܪܝܗܘܢ
14 ܡܠܝܢ ܘܡܫܬܦܩܝܢ ܚܕ ܥܠ ܚܕ: ܥܢܗܘܢ ܝܠܕܢ ܘܡܪܒܝܢ ܒܫܘܩܝܗܘܢ. * ܬܘܪܝܗܘܢ ܥܫܝܢܝܢ
15 ܘܠܝܬ ܬܪܥܐ: ܘܠܐ ܝܠܠܬܐ ܒܫܘܩܝܗܘܢ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܥܡܐ
ܕܗܟܢ ܐܝܬ ܠܗ: ܛܘܒܘܗܝ ܠܥܡܐ ܕܡܪܝܐ ܗܘ ܐܠܗܗ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܕ *   * ܫܘܒܚܐ ܘܫܘܪܝܐ ܕܡܥܠܬܐ *

1 * ܕܕܘܝܕ. ܬܫܒܘܚܬܐ ܥܡ ܬܐܘܠܘܓܝܐ: ܦܬܓܡܐ ܠܗ.
* ܐܪܘܡܡܟ ܡܪܝ ܡܠܟܐ. ܘܐܒܪܟ ܫܡܟ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ:

Propter nomen tuum Dñe conſolar
Propter æquitatē tuā educ animā meā ex an-
guſtia: Perque tuā benignitatē ſilere fac
res meos; & perde hoſtes animæ meæ, qu
dem ego ſum ſervus tuus.

PSAL. CXLIII.

Davidis. Quum interfecit Aſaph fra
Goliad. Et gratiarum actio ejus quā vict
riam eſt conſequutus. Verſ. 38.

BEnedictus ſit Dñs qui inſtruxit manu
as ad prælium, & digitos meos ad bell
Refugium meū, & liberator meus, ſu
meus, cui ſum fiſus, & *qui* ſubjugavit pop
mihi. Dñe quid eſt homo, ut ejus not
habueris: & homo, ut eū æſtimaveris? H
vapori ſimilis eſt, & dies ejus labuntur
umbra. Inclina cœlū Dñe, ac deſcende
increpa montes, & fumabunt. Coruſca
fulgura tua, & exagita illos: emitte ſa
tuas, & diſſipa eos. Extende manū tuā
to, & extrahe me ex aquis vaſtis, & ex
ſceleſtorū, Quorum os loquitur vani
quorū dextera dextera eſt iniquitatis.
laudationē novā canā tibi, & lyrā dec
darū pſallā tibi, Quòd contuleris ſal
gi, & eripueris Davidem ſervū tuū
malo. Libera me de manu ſceleſtorū,
os loquitur vanitatē, & quorū dextera
tera eſt iniquitatis: Quorum filii ut p
aluntur à pueritia ſua, & filiæ eorum
ſponſæ ornatæ inſtar templorū: Cella
plenæ, ſeque profundentes una in alia
eorū fœtant ac nutricantur in plateis
Boves prægrandes, & non eſt interc
lis: non eſt ruptura, neque ululatus in
eorū. Nunquid beatus populus cui ta
tingunt? Beatus populus cujus Dom
Deus ejus.

Laus, & initium gradu

PSAL. CXLIV.

Davidis. Laudatio cum Theol

EXtollam te Domine mi Rex, &
Ecam nomini tuo in ſeculum ſec

Versio VULG. LAT.

Propter nomen tuũ, Dñe, vivificabis me, in æquitate tua. Educes de tribulatione animã meã: Et in misericordia tua disperdes inimicos meos. Et perdes omnes, qui tribulant animã meã: quoniam ego servus tuus sum.

Psalmus David, Adversùs Goliath. CXLIII.

1 BEnedictus Dñs Deus meus, qui docet man⁹ meas ad præliũ, & digitos meos ad bellũ.
2 Misericordia mea, & refugiũ meũ: susceptor meus, & liberator meus: Protector meus, & in ipso speravi: qui subdit populum meũ sub me.
3 Dñe, quid est homo, quia innotuisti ei? aut filius hominis, quia reputas eum?
4 Homo vanitati similis factus est: dies ejus sicut umbra prætereunt.
5 Dñe, inclina cœlos tuos, & descende: tange montes, & fumigabunt.
6 Fulgura coruscationem, & dissipabis eos: emitte sagittas tuas, & conturbabis eos.
7 Emitte manũ tuã de alto, eripe me, & libera me de aquis multis; de manu filiorũ alienorũ.
8 Quorũ os locutũ est vanitatẽ: & dextera eorũ, dextera iniquitatis.
9 Deus, canticũ novum cantabo tibi: in psalterio, decachordo psallã tibi.
10 Qui das salutẽ regibus: qui redemisti David servũ tuũ de gladio maligno:
11 Eripe me. Et erue me de manu filiorũ alienorũ, quorũ os locutũ est vanitatẽ: et dextera eorũ, dextera iniquitatis:
12 Quorũ filii, sicut novellæ plantationes in juventute sua. Filiæ eorũ compositæ: circumornatæ ut similitudo templi.
13 Promptuaria eorum plena, eructantia ex hoc in illud. Oves eorum fœtosæ, abundantes in egressibus suis:
14 Boves eorum crassæ. Non est ruina maceriæ, neque transitus, neque clamor in plateis eorum.
15 Beatum dixerunt populum, cui hæc sunt: Beatus populus, cujus Dñs Deus ejus.

1 Laudatio ipsi David. CXLIV.

EXaltabo te, Deus meus rex: & benedicam nomini tuo in seculum, & in seculum seculi.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

11 † Ἕνεκα τοῦ ὀνόματός σου κύριε ζήσεις με, ἐν τῇ δικαιοσύνῃ σου † ἐξάξεις ἐκ θλίψεως τὴν ψυχήν μου.
12 † Καὶ ἐν τῷ ἐλέει σου ( ) ἐξολοθρεύσεις τοὺς ἐχθρούς μου, † καὶ ἀπολεῖς πάντας τοὺς θλίβοντας τὴν ψυχήν μου, † (ζ) ὅτι δοῦλός σου εἰμὶ ἐγώ.

MS.A. ( ) ἐξολεθρεύσεις (ζ) ὅτι ἐγὼ δοῦλός σου εἰμί.

1 Τῷ Δαυὶδ Πρὸς τὸν Γολιάδ. ρμγʹ.

† ΕΥλογητὸς κύριος ὁ θεός μου, † ὁ διδάσκων τὰς χεῖράς μου εἰς παράταξιν, † τοὺς δακτύλους
2 μου εἰς πόλεμον· † Ἔλεός μου καὶ καταφυγή μου, † ἀντιλήπτωρ μου καὶ ῥύστης μου, † ὑπερασπιστής μου, καὶ ἐπ' αὐτῷ ἤλπισα, † ὁ ὑποτάσσων τὸν λαόν (α)
3 μου ὑπ' ἐμέ. † Κύριε ( ) τί ἐστιν ἄνθρωπος, ὅτι ἐγνώσθης αὐτῷ; † ἢ υἱὸς ἀνθρώπου, ὅτι λογίζῃ αὐτόν;
4 † Ἄνθρωπος ματαιότητι ὡμοιώθη, † αἱ ἡμέραι αὐτοῦ
5 ὡσεὶ σκιὰ παράγουσι. † Κύριε κλῖνον οὐρανούς σου καὶ
6 κατάβηθι, † ἅψαι τῶν ὀρέων καὶ καπνισθήσονται. † Ἄστραψον (β) ἀστραπὴν καὶ σκορπιεῖς αὐτούς, † ἐξαπό-
7 στειλον τὰ βέλη σου καὶ συνταράξεις αὐτούς. † Ἐξαπόστειλον τὴν χεῖρά σου ἐξ ὕψους, † ἐξελοῦ με καὶ ῥῦσαί με ἐξ ὑδάτων πολλῶν, † ἐκ χειρὸς υἱῶν ἀλλοτρίων·
8 † Ὧν τὸ στόμα ἐλάλησε ματαιότητα, † καὶ ἡ δεξιὰ
9 αὐτῶν δεξιὰ ἀδικίας. † Ὁ θεὸς ᾠδὴν καινὴν ᾄσομαί σοι, † ἐν ψαλτηρίῳ δεκαχόρδῳ ψαλῶ σοι.
10 † Τῷ διδόντι ( ) τὴν σωτηρίαν τοῖς βασιλεῦσι, † τῷ λυτρουμένῳ Δαυὶδ τὸν δοῦλον αὐτοῦ ἐκ ῥομφαίας πονη-
11 ρᾶς· † Ῥῦσαί με καὶ ἐξελοῦ με ἐκ χειρὸς υἱῶν ἀλλοτρίων, † ὧν τὸ στόμα ἐλάλησε ματαιότη-
12 τα, † καὶ ἡ δεξιὰ αὐτῶν δεξιὰ ἀδικίας. † Ὧν οἱ υἱοὶ (ʃ) ὡς νεόφυτα ἱδρυμένα ἐν τῇ νεότητι αὐτῶν· † αἱ θυγατέρες αὐτῶν κεκαλλωπισμέναι, περικεκο-
13 σμημέναι ὡς ὁμοίωμα ναοῦ. † Τὰ ταμιεῖα αὐτῶν πλήρη, (δ) ἐξερευγόμενα ἐκ τούτου εἰς τοῦτο· † τὰ πρόβατα αὐτῶν πολυτόκα, πληθύνοντα ἐν ταῖς ἐξό-
14 δοις αὐτῶν· † Οἱ βόες αὐτῶν παχεῖς. † οὐκ ἔστι κατάπτωμα φραγμοῦ, οὐδὲ διέξοδος, † οὐδὲ κραυγὴ
15 ἐν ταῖς ἐπαύλεσιν αὐτῶν. † Ἐμακάρισαν τὸν λαὸν ᾧ ταῦτά ἐστι· † μακάριος ὁ λαὸς οὗ κύριος ὁ θεὸς αὐτοῦ.

MS.A. (α) αὐτοῦ ( ) τίς (β) ἀστραπήν σου καὶ ( ) σωτηρίαν (ʃ) αὐτῶν ὡς νεόφυτα ἡδρυμμένα (δ) * ἐξερευγόμενα

1 ( ) Αἴνεσις τῷ Δαυίδ. ρμδʹ.

† ΥΨώσω σε (α) ὁ θεός μου ὁ βασιλεύς μου, † καὶ εὐλογήσω τὸ ὄνομά σου εἰς τὸν αἰῶνα † καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος.

MS.A. ( ) Αἰνέσεως τῷ (α) ὁ θεὸς ὁ βασιλεύς μου,

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

11 *Propter nomen tuum, Domine, vivificabis me: in tua (ι) justitia 13 educes de tribulatione animam meam.* 12 *Et in [h] tua misericordia disperdes inimicos meos. 14 Et perdes omnes, qui tribulant animam meam: quoniam servus tuus sum ego.*

1 Ipsi David (a) [a] Ad Goliam. CXLIII.

1 *BEnedictus Domin⁹ Deus meus; qui docet manus meas ad prælium; digitos meos ad bellum:* 2 *2 Misericordia mea, & refugium meum, susceptor meus, & liberator meus: 3 Protector meus, & in ipso speravi,* 3 *subjiciens populũ meũ sub me: 4 Domine, quid est homo, quia (b) innotuisti ei? aut filius hominis, quia reputas eum?* 4 *5 Homo (c) vanitati similis factus est: dies ejus, sicut umbra prætereunt.* 5 *6 Domine, (d) inclina cælos tuos, & descende: tange montes, &* 6 *fumigabunt. 7 Corusca [b] coruscationem, & dissipabis eos: emitte sagittas tuas, & conturbabis eos.* 7 *8 Emitte manum tuã ex alto: exime me, & erue me de aquis multis, de manu filiorũ alienorum.* 8 *9 Quorum os locutum est vanitatem, & dextera eorũ dextera iniquitatis.* 9 *10 Deus, canticum novũ cantabo tibi: in psalterio decachordo psallã tibi.* 10 *11 Qui dat salutem regibus, qui redimit David servũ suum de gladio maligno.* 11 *12 Erue me, et exime me de manu filiorum alienorum: quorũ os locutum est vanitatem: et dextera eorũ dextera iniquitatis.* 12 *13 Quorum filii sicut novellæ plantationes, (e) constabilitæ in juventute sua. 14 Filiæ eorum (f) compositæ: circumornatæ ut similitudo templi.* 13 *15 Promptuaria eorum plena, eructantia ex hoc in hoc. 16 Oves eorũ fœtosæ, multiplicantes in egressibus (g) suis: Boves eorum* 14 *crassæ. 17 Non est ruina [c] sepis, neque transitus, neque clamor (h) in villis eorum.* 15 *18 Beatum dixerunt populum, cui hæc sunt: Beatus populus, cujus Dominus Deus ejus.*

(a) Laudatio [a] ipsi David. CXLIV.

1 *EXaltabo (b) te, [b] Deus meus, (c) rex meus: & benedicam nomen tuum (d) in seculum, & in seculum seculi.*

Versio ÆTHIOPICA.

11 ወበእንተ፡ስምከ፡እግዚኦ፡ አሕይወኒ፡በጽድቅከ፡፡፨ ወአውፅኦ፡ እምንደቤሃ፡ ለነፍስ 13
12 የ፡፡ ወበሠምረትከ፡ሠርዎሙ፡ለፀርየ፡፡፨
ወታጠፍኦሙ፡ ለኵሎሙ፡ እለ፡ የሐምዋ፡ 14
ለነፍስየ፡፡እስመ፡አነ፡ገብርከ፡፡፨

1 ዘደዊት፡ ዘአመ፡ ይትበአስ፡ ምስለ፡ ዘጎልያድ፡፡

የሀር ይትባረክ፡ እግዚአብሔር፡ አምላኪ 1
የ፡፡ ዘመሐረኒ፡ፀብአ፡ለእደዊየ፡፡ ወቀተለ፡
2 ለአጻብእየ፡፡፨ መሐርየ፡ ወጸወንየ፡፡ ም 2
ስካይየ፡ ወመድኀኒየ፡፡፨ ምእመንየ፡ ወ 3
ኪያሁ፡ ተወከልኩ፡፡ ዘያገርር፡ ሲተ፡ አ
3 ሕዛበ፡ በመትሕትየ፡፡፨ እግዚኦ፡ ምንት 4
ኑ፡ሰብእ፡ከመ፡ታስተርኢ፡ሎቱ፡፡ወእጓለ፡እ
4 መሕያው፡ ዘትሐስቦ፡፡፨ ሰብእሰ፡ ከንቶ፡ 5
ይመስል፡፡ ወመዋዕሊሁኒ፡ ከመ፡ጽላሎት፡የ
5 ኀልፍ፡፡፨ እግዚኦ፡ አፅንን፡ ሰማያቲከ፡ወ 6
ረድ፡፡ ግስሶሙ፡ለአድባር፡ ወይጠይሱ፡፡፨
6 አብርቅ፡መባርቅቲከ፡ወዝርዎሙ፡፡ፈኑ፡ አ 7
ሐጻከ፡ወሁኮሙ፡፡፨ ፈኑ፡እዴከ፡እምአር 8
7 ያም፡፡ አድኅነኒ፡ ወባልሐኒ፡ እማይ፡ብዙ
ኅ፡፡ ወእምእዴሆሙ፡ለደቂቀ፡ ነኪር፡፡፨
8 እለ፡ከንቶ፡ ነበበ፡ አፈሆሙ፡፡ ወየማኖሙኒ፡ 9
የማነ፡ዐመፃ፡፡፨ እግዚኦ፡ስብሐተ፡ሐዲስ፡ 10
9 እሴብሐከ፡፡ ወበመዝሙር፡ዘዐሠርቱ፡አው
10 ታሪሁ፡እዜምር፡ለከ፡፡፨ ዘይሁቦሙ፡ለነገ 11
ሥት፡መድኀኒተ፡፡ ዘአድኀኖ፡ለዳዊት፡ገብ
ሩ፡እምኲናት፡እኪት፡፡፨ አድኅነኒ፡ወበ 12
11 ልሐኒ፡እምእዴሆሙ፡ለደቂቀ፡ነኪር፡፡ እለ፡
ከንቶ፡ነበበ፡አፈሆሙ፡፡ ወየማኖሙኒ፡ የማነ፡
12 ዐመፃ፡፡፨ እለ፡ደቂቆሙ፡ከመ፡ተክል፡ሐዲ 13
ስ፡ጽኑዓን፡በውርዙቶሙ፡፡፨ ወአዋልዲሆ 14
ሙኒ፡ርሱያት፡፡ወስርግዋት፡ ከመ፡እንተ፡ ጽ
ርሕ፡፡፨ ወአቢያቲሆሙኒ፡ምሉእ፡፡ ወይ 15
13 ስወጥ፡እምዝ፡ውስተ፡ዝ፡፡፨ ወአባግዒሆሙ 16
ኒ፡ብዙኃ፡ይትዌለዱ፡፡ ወይትባዝኁ፡ በሙፋሬ
14 ሆን፡፡ ወአልህምቲሆሙኒ፡ስቡሕ፡፡፨ ወአ 17
ልቦ፡ደቀተ፡ቅጽሮሙ፡፡ ወአልቦ፡እንተ፡ኀበ፡
ያበውእዎሙ፡፡ ወአልቦ፡አውያተ፡ውስተ፡ሀ
15 ገሮሙ፡፡፨ አስተብፅዕዎ፡ለዘ፡ ከመዝ፡ሕ 18
ዝብ፡፡ ብፁዕ፡ሕዝብ፡ዘእግዚአብሔር፡አ
ምላኩ፡፡

1 አኰቴት፡መዝሙር፡ዘደዊት፡፡

የሀዐ አሌዕለከ፡ ንጉሥየ፡ ወአምላኪየ፡፡ 1
ወእባርክ፡ ለስምከ፡፡ ለዓለም፡ ወለዓለም፡
ዓለም፡፡፨

INTERP. ÆTHIOP. [h] beneplacito tuo disperde PSAL. CXLIII. [a] cùm decertavit adversùs Goliad. [b] coruscationem tuam, [c] atrium eorum, & non est quò ingrediantur, neque PSAL. CXLIV. [a] psalmus [b] rex meus & Deus meus:

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

11 12 من اجل اسمك يا رب احيني بحقك * تخرج من الشدائد نفسي * وبرحمتك تستاصل
اعداي * وتهلك كل الذين يحزنون نفسي لاني انا هو عبدك * اللّيلويا *
1 * المزمور المائة والثالث والاربعون * لداود * لاجل جلياث * وهو لة استيخن *
2 مبارك الرب الاهي الذي علم يدي ترتيب القتال * واصابعي الحرب * راحمي وملجاي
3 ناصري ومنقذي المقاتل عني وعليه توكلت * الذي اخضع الشعوب لي * يا رب من هو الانسان
4 حتي ظهرت له * وابن الانسان حتي عددته * الانسان اشبه الهباء * وايامه مثل الفي تمضي *
5 6 * اللهم طاطئ السموات وانزل * المس الجبال فتدخن * ابرق بروقا فتبددهم * ارسل اسهامك
7 فتقلقهم * ارسل يدك من العلي نجني وخلصني من مياه غزيرة * ومن ايدي بني الغرباء *
8 9 * الذين تكلمت افواههم بالباطل * ويمينهم يمين الظلم هي * اللهم اني اسبحك تسبحة جديدة *
10 بالة المزمير ذات عشر الاوتار * وارتل لك يا معطي الخلاص للملوك * يا مخلص داود عبده *
11 نجني من سيف شرير * نجني وخلصني من يد بني الغربا * الذين تكلمت افواههم بالباطل *
12 ويمينهم هي يمين الظلم * هولاء الذين بنوهم كغروس جدد اقوياء في شبيبتهم * بناتهم مزخرفات
13 مزينات مثل شبه الهيكل * خزاينهم مملوءة فايضة من هذا الي هذا * اغنامهم كثيرة النتاج
14 كثيرا في شوارعهم * وبقرهم سمان وليس فيها هزيل * ليس يوجد لهم سقطة جدار سياج * ولا منفذ
15 ولا صراخ في اسواقهم * مغبوط الشعب الذي هذا له * طوبي للشعب الذي الرب الهه *
1 اللّيلويا * المزمور المائة والرابع والاربعون * لداود تسبحة * وهو من استيخن *
ارفعك يا الاهي وملكي وابارك اسمك الي الابد * والي ابد الابد *

* *Propter nomen tuum O Domine, vivifica me in veritate tua. Educes è tribulationibus animã meam: Et ex misericordia tua eradicabis inimicos meos: perdesque omnes qui affligunt animam meam, quoniam ego sum servus tuus. Alleluja.* 11 12

PSAL. CXLIII.

Davidis, proper Goliath. Vers. 34. 1

BEnedictus Dominus Deus meus qui docuit manus meas dispositionem certaminis, & digitos meos bellum. 2 *Miserator me⁹, & refugium meum, adjutor meus, & redemptor meus, propugnator meus, cui sum fisus, qui subjecit populum mihi.* 3 *O Domine, quis est homo ut apparueris ei, & filius hominis ut computaris eum?* 4 *Homo similis est vapori, & dies ejus velut umbra prætereunt.* 5 *Deus, inclina cælos, & descende: tange montes, & fumigabunt:* 6 *Fulgura fulgores, & dissipabis eos: mitte sagittas tuas, et conturbabis eos:* 7 *Mitte manum tuam ab alto: salva me, & libera me ab aquis multis, & de manibus filiorum alienorum:* 8 *Quorum ora locuta sunt falsitatẽ, & juramentum eorum, juramentum est iniquitatis.* 9 *Deus, equidem celebrabo te laude novâ cum instrumento psalmodiæ instructo decem chordis:* 10 *Et canam tibi O qui largiris salutem regibus, O salvator Davidis servi sui. Eripe me è gladio pessimo:* 11 *Eripe me & libera me de manu filiorum alienorum, quorum ora locuta sunt falsitatem, & juramentum eorum, est juramentum iniquitatis.* 12 *Horum, inquam, quorum filii sunt veluti plantæ recentes, robusti in juventute eorum: filiæ ipsorum concinnæ, ornatæ ad modum templi:* 13 *Æraria illorum plena, redundantia ab hoc ad illud: Oves eorum uberes fœtu, plurimæ in compitis eorum:* 14 *Et boves eorum pingues, nec est inter illas macra: non invenitur apud eos casus ambitus sepis, neque meatus, neque clamor in plateis eorum.* 15 *Fœlix populus cui hæc sunt, beatus populus cujus Dominus est Deus. Alleluja.*

PSAL. CXLIV.

Davidis, canticum. Vers. 47. 1

EXaltabo te O Deus meus & Rex meus, & benedicam nomen tuum in æternum, & in seculum seculi.

תְּהִלִּים : קמו

.perpetuum &,feculum In tuum nomen laudabo & : tibi benedicam die omni In
2 בְּכָל־יוֹם אֲבָרְכֶךָּ וַאֲהַלְלָה שִׁמְךָ לְעוֹלָם וָעֶד׃
.investigatio non ejus magnitudinis & : valdè *Laudatus* & Dominus Magnus
3 גָּדוֹל יְהוָה וּמְהֻלָּל מְאֹד וְלִגְדֻלָּתוֹ אֵין חֵקֶר׃
.annunciabunt tuas fortitudines & : tua opera *celebrabit* generationi Generatio
4 דּוֹר לְדוֹר יְשַׁבַּח מַעֲשֶׂיךָ וּגְבוּרֹתֶיךָ יַגִּידוּ׃
fortitudinē Et .meditabor tuorū mirabiliū *verba* & :tuæ *magnificentiæ* gloriæ Decorem
5 6 הֲדַר כְּבוֹד הוֹדֶךָ וְדִבְרֵי נִפְלְאֹתֶיךָ אָשִׂיחָה׃ וֶעֱזוּז
multitudinis Memoriam .*eam* narrabo tuam magnitudinē & :dicent tuorū terribiliū
7 נוֹרְאוֹתֶיךָ יֹאמֵרוּ וּגְדוּלֹּתֶיךָ אֲסַפְּרֶנָּה׃ זֵכֶר רַב־
:Dominus miserator &,*Gratiosus* .*præconio canent* tuā justitiā &,*eructabunt* tuæ bonitatis
8 טוּבְךָ יַבִּיעוּ וְצִדְקָתְךָ יְרַנֵּנוּ׃ חַנּוּן וְרַחוּם יְהוָה
ejus *miserationes* & : universis Dominus Bonus .misericordia magnus &,*naribus* longus
9 אֶרֶךְ אַפַּיִם וּגְדוֹל־חָסֶד׃ טוֹב־יְהוָה לַכֹּל וְרַחֲמָיו
tui *pii* & : tua opera omnia Domine tibi Confiteantur .ejus opera omnia super
10 עַל־כָּל־מַעֲשָׂיו׃ יוֹדוּךָ יְהוָה כָּל־מַעֲשֶׂיךָ וַחֲסִידֶיךָ
.loquentur tuam fortitudinem & : dicent tui regni Gloriam .tibi benedicant
11 יְבָרְכוּכָה׃ כְּבוֹד מַלְכוּתְךָ יֹאמֵרוּ וּגְבוּרָתְךָ יְדַבֵּרוּ׃
.ejus regni decoris gloriam & : ejus fortitudines *hominis* filios *faciendum* scire *Ad*
12 לְהוֹדִיעַ לִבְנֵי הָאָדָם גְּבוּרֹתָיו וּכְבוֹד הֲדַר מַלְכוּתוֹ׃
,generatione omni in tua dominatio & : seculorum omnium regnum ,tuum Regnum
13 מַלְכוּתְךָ מַלְכוּת כָּל־עֹלָמִים וּמֶמְשַׁלְתְּךָ בְּכָל־דּוֹר
.incurvatos omnes *erigens* & : cadentes omnes Dominus *Fulciens* .generatione &
14 וָדֹר׃ סוֹמֵךְ יְהוָה לְכָל־הַנֹּפְלִים וְזוֹקֵף לְכָל־הַכְּפוּפִים׃
.suo tempore in eorū escam eis *dans* tu & :*sperabunt* te *ad* omnium Oculi
15 עֵינֵי־כֹל אֵלֶיךָ יְשַׂבֵּרוּ וְאַתָּה נוֹתֵן־לָהֶם אֶת־אָכְלָם בְּעִתּוֹ׃
omnibus in Dominus Justus .*voluntate* vivens omne *saturans &* ,tuā manum *Aperiens*
16 17 פּוֹתֵחַ אֶת־יָדֶךָ וּמַשְׂבִּיעַ לְכָל־חַי רָצוֹן׃ צַדִּיק יְהוָה בְּכָל־
omnibus Dominus Propinquus .suis operibus omnibus in misericors & : suis viis
18 דְּרָכָיו וְחָסִיד בְּכָל־מַעֲשָׂיו׃ קָרוֹב יְהוָה לְכָל־
se timentiū Voluntatem .veritate in eū invocaverint qui omnibus :eū invocantibus
19 קֹרְאָיו לְכֹל אֲשֶׁר יִקְרָאֻהוּ בֶאֱמֶת׃ רְצוֹן־יְרֵאָיו
Dominus *Custodiens* .eos faciet servare & , audiet eorum clamorem & : faciet
20 יַעֲשֶׂה וְאֶת־שַׁוְעָתָם יִשְׁמַע וְיוֹשִׁיעֵם׃ שׁוֹמֵר יְהוָה אֶת־
Domini Laudem .faciet disperdere impios omnes & :ipsum diligentes omnes
21 כָּל־אֹהֲבָיו וְאֵת כָּל־הָרְשָׁעִים יַשְׁמִיד׃ תְּהִלַּת יְהוָה
,seculum in ejus *sanctitatis* nomini caro omnis benedicet & ,meum os loquetur
יְדַבֶּר־פִּי וִיבָרֵךְ כָּל־בָּשָׂר שֵׁם קָדְשׁוֹ לְעוֹלָם
.perpetuum &
וָעֶד׃

PSAL. CXLVI. קמו

canam : *meis vitis* in Dominū Laudabo .Dominum mea anima Lauda .jah-Hallelu
1 2 הַלְלוּ־יָהּ הַלְלִי נַפְשִׁי אֶת־יְהוָה׃ אֲהַלְלָה יְהוָה בְּחַיָּי אֲזַמְּרָה
.salus *ei* non cui,hominis filio *in* ,*munificis in* fidatis Ne .*me* adhuc *in* meo Deo
3 לֵאלֹהַי בְּעוֹדִי׃ אַל־תִּבְטְחוּ בִנְדִיבִים בְּבֶן־אָדָם שֶׁאֵין לוֹ תְשׁוּעָה׃
.ej⁹ cogitationes peribunt illa die in :suā terrā in,revertetur,ej⁹ spiritus *Egredietur*
4 תֵּצֵא רוּחוֹ יָשֻׁב לְאַדְמָתוֹ בַּיּוֹם הַהוּא אָבְדוּ עֶשְׁתֹּנֹתָיו׃

תרגום TARGUM.

בכל יומא אברכנך ואשבח שמך לעלמי 2
עלמין: רב יי ומשבח לחדא ולרבותיה 3
לית סוף: דרא לדרא ישבח עובדך 4
וגבורתך יתנון: שבהור איקר זיוך ומלי 5
פרישותך אמלל: ועושנא דחלתך יימרון 6
ורבנותך ישתעון: דכרן סגיעי טובך יביעון 7
וצדקתך ישבחון: חננא ורחמנא יי מרחיק 8
רגז ומסגי למעבד טבון: טב יי לכולא 9
ורחמוי על כולהון עובדוי: יהודונך יי כולהון 10
עובדך וחסידיך יברכונך: איקר מלכותך 11
יימרון וגבורתך ימללון: להודעא לבני 12
נשא גבורתוי ואיקר שיבהור מלכותיה:
מלכותך מלכותא דכל עלמיא ושולטנותך 13
בכל דר ודר: סעד יי לכל נפלין וזקף 14
לכולהון כפיפין: עיניהון דכולא לותך 15
סבירן ואת יהב להון ית מיכלהון בזמניה:
פותח ית אידך ומסבע לכולהון חיי רעותהון; 16
זכי יי בכל אורחתיה וחסידא בכל עובדוי; 17
קריב יי לכל דקרין ליה לכולהון דקרין 18
יתיה בקשוט: רעות דחלוי יעבד וית בעותהון 19
ישמע ויפרקנון: נטר יי ית כל רחימוי 20
וית כל רשיעי ישיצי: שבחא דיי ימלל 21
פומי ויברכון כל בני בסרא שום קודשיה
לעלמי עלמין:

קמו

1 2 הללויה שבחי נפשי ית שמא דיי: אשבח
3 יי בחיי אזמר לאלהי בדאיתי: לא תתרחצון
ברברביא בבר נש דלית ליה פורקנא:
4 תפוק רוחיה יתוב לעפריה ביומא ההוא
הובדו זמיונוי:

PARAPH. CHALD. Vers. Lat.

Omni die benedicam tibi, & laudabo nomen tuum in secula seculorum. Magnus Dominus & laudabilis multum, & magnificentiæ ejus non est finis. Generatio generationi laudabit opera tua, & potentiam tuam narrabunt. Decorem gloriæ splendoris tui, & verba mirabilium operum tuorum eloquar. Et fortitudinem terribilium tuorum dicent, & magnificentiam tuam narrabunt. Memoriam multæ bonitatis tuæ personabunt, & justitiam tuam laudabunt. Clemens & misericors Dominus, longanimis, & multiplices edens beneficentias. Bonus Dominus omnibus, & misericordiæ ejus super omnia opera ejus. Confiteantur tibi Deus omnia opera tua, & misericordes tui benedicant tibi. Gloriam regni tui dicent, & fortitudinem tuam loquentur. Ut notam faciant filiis hominum fortitudinem tuam, & gloriam decoris regni tui. Regnum tuum regnum omnium seculorum, et potestas tua in omni generatione et generatione. Sustentat Dominus omnes corruentes, et dirigit omnes curvatos. Oculi omnium in te sperant, et tu das illis cibum illorum in tempore suo. Aperis manum tuam, et satias omnia *animalia* desiderio ipsorum. Justus Dominus in omnibus viis suis, & misericors in omnibus operibus suis. Proximus est Dominus omnibus qui invocant eum, omnibus qui invocant eum in veritate. Voluntatem timentium se faciet, & preces eorum exaudiet, & salvabit illos. Servat Dominus omnes diligentes se, & omnes impios disperdet. Laudem Dei loquetur os meum, & benedicent cuncti filii carnis nomen sanctitatis ejus in secula seculorum.

Hallelujah.

PSAL. CXLVI.

LAuda anima mea *nomen Domini.* Laudabo *Dominum* in vita mea, psallam Deo meo quamdiu fuero. Nolite confidere in principibus, in filio hominis in quo non est salus. Egredietur flatus ejus, revertetur in pulverem suum, in die illo peribunt machinationes ejus.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 3 * ܒܟܠ ܝܘܡ ܐܒܪܟܟ ܘܐܫܒܚ ܫܡܟ ܠܥܠܡ. * ܪܒ ܗܘ ܡܪܝܐ ܘܡܫܒܚ ܛܒ : ܘܠܝܬ
4 5 ܣܟܐ ܠܪܒܘܬܗ. * ܕܪܐ ܠܕܪܐ ܢܫܒܚ ܥܒܕܝܟ : ܘܓܢܒܪܘܬܟ ܢܚܘܘܢ. * ܘܫܘܒܚܐ
6 ܘܝܩܪܐ ܕܬܫܒܘܚܬܟ ܢܡܠܠܘܢ ܘܬܕܡܪܬܟ ܢܫܬܥܘܢ.* ܘܚܝܠܐ ܕܕܚܠܬܟ ܢܐܡܪܘܢ : ܘܪܒܘܬܟ ܐܫܬܥܐ.
7 8 * ܘܕܘܟܪܢܐ ܕܛܝܒܘܬܟ ܢܒܥܘܢ ܙܕܝܩܝܟ : ܘܙܕܝܩܘܬܟ ܢܫܒܚܘܢ. * ܡܪܚܡܢ ܗܘ ܡܪܝܐ
9 ܘܚܢܢ : ܢܓܝܪ ܪܘܚܐ ܘܣܓܝ ܛܝܒܘܬܗ. * ܛܒ ܗܘ ܡܪܝܐ ܘܪܚܡܘܗܝ ܥܠ ܟܠ ܥܒܕܘܗܝ
10 11 ܠܟܠܗܘܢ : * ܢܘܕܘܢ ܠܟ ܡܪܝܐ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܟ. ܘܙܕܝܩܝܟ ܢܫܒܚܘܢܟ : * ܫܘܒܚܐ ܕܡܠܟܘܬܟ
12 ܢܐܡܪܘܢ. ܘܓܢܒܪܘܬܟ ܢܡܠܠܘܢ :* ܘܢܘܕܥܘܢ ܠܒܢܝ ܐܢܫܐ ܓܢܒܪܘܬܟ. ܘܫܘܒܚܐ ܕܡܠܟܘܬܟ
13 * ܡܠܟܘܬܟ ܡܠܟܘܬܐ ܕܟܠ ܥܠܡܝܢ : ܘܫܘܠܛܢܟ ܒܟܠ ܕܪܕܪܝܢ. ܡܗܝܡܢ ܗܘ ܡܪܝܐ
14 ܒܡܠܘܗܝ. ܘܙܕܝܩ ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ. * ܣܡܟ ܡܪܝܐ ܠܟܠ ܕܢܦܠܝܢ : ܘܙܩܦ ܠܟܠ
15 ܟܦܝܦܐ. * ܥܝܢܐ ܕܟܠܢܫ ܠܘܬܟ ܣܟܝܢ : ܐܢܬ ܝܗܒ ܐܢܬ ܠܗܘܢ ܡܐܟܘܠܬܐ ܒܙܒܢܗ.
16 17 * ܦܬܚ ܐܢܬ ܐܝܕܟ ܘܡܣܒܥ ܐܢܬ ܪܓܬܐ ܕܟܠ ܚܝ :* ܙܕܝܩ ܗܘ ܡܪܝܐ ܒܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܗ.
18 19 ܘܡܪܚܡ ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ.* ܩܪܝܒ ܗܘ ܡܪܝܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܩܪܝܢ ܠܗ ܒܩܘܫܬܐ. *ܘܨܒܝܢ
20 ܕܕܚܠܘܗܝ ܥܒܕ : ܘܫܡܥ ܨܠܘܬܗܘܢ ܘܦܪܩ ܠܗܘܢ. * ܢܛܪ ܡܪܝܐ ܠܟܠܗܘܢ ܕܪܚܡܝܢ ܠܗ :
21 ܘܠܟܠܗܘܢ ܪܫܝܥܐ ܢܘܒܕ : ܬܫܒܘܚܬܗ ܕܡܪܝܐ ܢܡܠܠ ܦܘܡܝ. * ܘܢܒܪܟܘܢ ܟܠ ܒܢܝ
ܒܣܪܐ. ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܗ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. * ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܗ *
1 * ܐܡܝܪ ܠܚܓܝ ܘܙܟܪܝܐ ܢܒܝܐ ܗܢܘܢ ܕܣܠܩܘ ܡܢ ܫܒܝܬܐ ܥܡ ܙܪܘܒܒܠ. ܥܠ ܬܫܡܫܬܐ
ܕܟܗܢܐ ܕܨܦܪܐ : ܘܡܟܪܙܘܬܐ ܘܬܫܒܘܚܬܐ ܥܡ ܬܐܘܠܘܓܝܐ. ܦܘܫܩ ܟܝ.
2 3 ܫܒܚܝ ܢܦܫܝ ܠܡܪܝܐ. * ܐܫܒܚ ܠܡܪܝܐ ܒܚܝܝ : ܘܐܙܡܪ ܠܐܠܗܝ ܥܕܡܐ ܕܐܝܬܝ. * ܠܐ
4 ܬܬܟܠܘܢ ܥܠ ܫܠܝܛܢܐ ܘܥܠ ܒܪܢܫܐ : ܕܠܝܬ ܒܐܝܕܗ ܦܘܪܩܢܐ. * ܕܢܦܩܐ ܪܘܚܗ ܘܗܦܟ
ܠܐܪܥܗ : ܘܒܗܘ ܝܘܡܐ ܐܒܕܝܢ ܟܠܗܘܢ ܡܚܫܒܬܗ.

Per singulos dies benedicā tibi, et laudabo nomen tuū in æternū. Maximus est Dñs nos & laudand⁹ vehementer, neque ullus est termin⁹ magnitudini ejus. Ævum ævo narrabit opera tua, & potentiam tuam declarabunt. Vimque terroris tui dicent, atque præstantia facinora tua memorabunt: Terroremque fortitudinis tuæ referēt: tuamq; majestatē recensebo: Et memoriā beneficiorū tuorum plurimorum exquirent justi tui, atque repe Misericors est Domin⁹, atque benignus: longus anim⁹ ejus, & plurima bonitas ipsius. Bonus est Dominus, & miserationes ejus in omnia opera ipsius. Gratias tibi agant Dñe servi tui, & justi tui te glorificent: Fam gni tui dicant, et magnificentiā tuam loquantur: Et exponant hominibus fortitudinem tuam majestatemque regni tui. Regnum tuum regnum est omnium seculorum, & dominium tuum in omnem generationem generationum. Verax est Dominus in verbis suis, & justus in cunctis operibus suis. Fulcit Dominus omnes labentes, & erigit omnes incurvatos. Oculi cujuslibet hominis ad te sunt erecti, tu præbes illis cibum tempestivè: Aperis tu manum tuam, & exples desiderium omnis viventis. Justus est Dominus in cunctis viis suis, & clemens in omnibus operibus suis: Proximus est Dominus iis qui vocant eum in veritate: facitque voluntatem timentium eum: audit precem eorum, servatque illos. Custodit Dominus omnes metuentes eum, omnes autem scelestos perdit. Laudes Domini loquetur ore meo: & benedicent omnes filii carnis nomini sanctitatis ejus in seculum seculorum.

PSAL. CXLV.

Dictus ab Aggæo & Zacharia Pro qui ascenderunt cum captivitate ex Ba ministerio Sacerdotum matutino. Et pr atque laudatio cum Theologia. Vers

LAuda anima mea Dominum : Laudabo Dominū in vita mea, & psallam Deo quandiu superstes ero. Ne fidatis pr & homini, cujus in manu nulla est salus; ejus exeunte spiritu, redigitur in terr am, ipsâque die pereunt omnia con

Versio VULG. LAT.

2 Per singulos dies benedicam tibi: &
laudabo nomen tuum in seculum, & in
3 seculū seculi. Magnus Dñs & laudabilis
nimis: & magnitudinis ej⁹ non est finis.
4 Generatio & generatio laudabit
opera tua: & potentiā tuā pronuntiabunt.
5 Magnificentiam gloriæ sanctitatis
tuæ loquentur: & mirabilia tua narrabunt.
6 Et virtutē terribiliū tuorū dicent:
& magnitudinē tuam narrabunt.
7 Memoriam abundantiæ suavitatis tuæ
eructabunt: & justitiā tuā exultabunt.
8 Miserator & misericors Dñs: patiens,
9 & multùm misericors. Suavis Dñs universis:
& miserationes ej⁹ super omnia
10 opera ej⁹. Confiteantur tibi, Dñe, omnia
opera tua: et Sancti tui benedicant tibi.
11 Gloriā regni tui dicēt: & potentiā tuā
12 loquētur. Ut notā faciant filiis hominū
potentiā tuā; & gloriam magnificentiæ
13 regni tui. Regnū tuū regnum omniū seculorū:
& dominatio tua in omni generatione
& generationē. Fidelis Dñs
in omnibus verbis suis: & sanctus in
14 omnibus operibus suis. Allevat Dñs
omnes, qui corruunt: & erigit omnes
15 elisos. Oculi omniū in te sperant Dñe,
& tu das escam illorū in tempore opportuno.
16 Aperis tu manū tuā: et imples
17 omne animal benedictione. Just⁹ Dñs
in omnib⁹ viis suis: et sanct⁹ in omnib⁹
18 operibus suis. Propè est Dñs omnibus
invocantib⁹ eum: omnib⁹ invocantib⁹
19 eum in veritate. Voluntatē timentiū
se faciet, & deprecationē eorū exaudiet:
20 & salvos faciet eos. Custodit Dominus
omnes diligentes se: & omnes
21 peccatores disperdet. Laudationē Dñi
loquetur os meū: & benedicat omnis
caro nomini sancto ej⁹ in seculū, & in
seculum seculi.

1 Alleluja, Aggæi, & Zachariæ.

CXLV.

2 Lauda, anima mea, Dñm, laudabo
Dominum in vita mea: psallā Deo
meo quamdiu fuero. Nolite confidere
3 in principibus: In filiis hominum, in
4 quibus non est salus. Exibit spiritus
ejus, & revertetur in terram suam: in
illa die peribunt omnes cogitationes
eorum.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

2 † Καθ' ἑκάστην ἡμέραν εὐλογήσω σε, † καὶ αἰνέσω τὸ
ὄνομά σου εἰς τὸν αἰῶνα † καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος.
3 † (β) Μέγας ὁ κύριος καὶ αἰνετὸς σφόδρα, † καὶ τῆς μεγαλωσύνης
4 αὐτοῦ οὐκ ἔστι πέρας. † Γενεὰ καὶ γενεὰ ἐπαινέσει
τὰ ἔργα σου, † καὶ τὴν δύναμίν σου ἀπαγγελοῦσι.
5 † Καὶ τὴν μεγαλοπρέπειαν τῆς (γ) δόξης † τῆς ἁγιωσύνης
σου λαλήσουσι, † καὶ τὰ θαυμάσιά σου διηγήσονται.
6 † Καὶ τὴν δύναμιν τῶν φοβερῶν σου ἐροῦσι, † καὶ τὴν
7 μεγαλωσύνην σου διηγήσονται (δ). † Μνήμην τοῦ
πλήθους τῆς χρηστότητός σου (ε) ἐξερεύξονται, καὶ τῇ δικαιοσύνῃ
8 σου (ζ) ἀγαλλιάσονται. † Οἰκτίρμων καὶ ἐλεήμων
9 ὁ κύριος, † μακρόθυμος καὶ πολυέλεος. † Χρηστὸς
κύριος τοῖς (η) ὑπομένουσι, † καὶ οἱ οἰκτιρμοὶ αὐτοῦ
10 ἐπὶ πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ. † Ἐξομολογησάσθωσάν
σοι κύριε πάντα τὰ ἔργα σου, † καὶ οἱ ὅσιοί σου εὐλογησάτωσάν
11 σε. † Δόξαν τῆς βασιλείας σου ἐροῦσι, † καὶ
12 τὴν δυναστείαν σου λαλήσουσι. † Τοῦ γνωρίσαι τοῖς υἱοῖς
τῶν ἀνθρώπων (θ) τὴν δυναστείαν σου, † καὶ τὴν δόξαν τῆς
13 μεγαλοπρεπείας τῆς βασιλείας σου. † Ἡ βασιλεία σου
βασιλεία πάντων τῶν αἰώνων, † καὶ ἡ δεσποτεία σου ἐν
πάσῃ γενεᾷ καὶ γενεᾷ. † Πιστὸς κύριος ἐν τοῖς λόγοις
14 αὐτοῦ, † καὶ ὅσιος ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις αὐτοῦ. † Ὑποστηρίζει
κύριος πάντας τοὺς καταπίπτοντας, † καὶ ἀνορθοῖ
15 πάντας τοὺς κατερραγμένους. † Οἱ ὀφθαλμοὶ πάντων
εἰς σὲ ἐλπίζουσι, † καὶ σὺ δίδως τὴν τροφὴν αὐτῶν
16 ἐν εὐκαιρίᾳ. † (ι) Ἀνοίγεις σὺ τὰς χεῖράς σου,
17 καὶ ἐμπιπλᾷς πᾶν ζῶον εὐδοκίας. † Δίκαιος κύριος
ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ, † καὶ ὅσιος ἐν πᾶσι τοῖς
18 ἔργοις αὐτοῦ. † Ἐγγὺς κύριος πᾶσι τοῖς ἐπικαλουμένοις
αὐτὸν, † πᾶσι τοῖς ἐπικαλουμένοις αὐτὸν
19 ἐν ἀληθείᾳ, † Θέλημα τῶν φοβουμένων αὐτὸν
ποιήσει, καὶ τῆς δεήσεως αὐτῶν ἐπακούσεται, καὶ
20 σώσει αὐτούς. † Φυλάσσει κύριος πάντας τοὺς ἀγαπῶντας
αὐτὸν, † καὶ πάντας τοὺς ἁμαρτωλοὺς (κ) ἐξολοθρεύσει.
21 † Αἴνεσιν κυρίου λαλήσει τὸ στόμα μου,
† καὶ εὐλογείτω πᾶσα σὰρξ τὸ ὄνομα τὸ ἅγιον αὐτοῦ,
† εἰς τὸν αἰῶνα καὶ εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος.

1 Ἀλληλούϊα. Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. ρμε'.

2 † Αἴνει ἡ ψυχή μου τὸν κύριον. † αἰνέσω κύριον ἐν
ζωῇ μου, † ψαλῶ τῷ θεῷ μου ἕως ὑπάρχω.
3 † μὴ πεποίθατε ἐπ' ἄρχοντας Καὶ ἐφ' υἱοὺς ἀνθρώπων,
4 οἷς οὐκ ἔστι σωτηρία. † Ἐξελεύσεται τὸ πνεῦμα αὐτοῦ,
καὶ ἐπιστρέψει εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ, † ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ
ἀπολοῦνται πάντες οἱ διαλογισμοὶ αὐτῶν.

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

2 Per singulos dies benedicam te, & laudabo nomen tuum in seculum, & in seculum seculi. 3 Magnus Dominus, & [c] laudabilis valde: & magnitudinis ejus non est (c) finis. 4 Generatio & generatio laudabit opera tua: & virtutem tuam annuntiabunt. 5 Et (f) magnificentiam gloriæ sanctitatis tuæ loquentur: & mirabilia tua narrabunt. 6 Et [d] virtutem terribilium tuorum dicent; & (g) magnitudinem tuam narrabunt. 7 Memoriam abundantiæ (h) suavitatis tuæ eructabunt: et (i) justitiâ tuâ exultabunt. 8 Miserator & misericors Dominus, [e] longanimis, & multùm misericors. 9 Suavis est Dominus (k) [f] sustinentibus: & miserationes (l) ejus super omnia opera ejus: 10 Confiteantur tibi, Domine, omnia opera tua: & Sancti tui benedicant te. 11 Gloriam regni tui dicent; & potentiam tuam loquentur. 12 Ut notam faciant filiis hominum potentiam tuam, & gloriā magnificentiæ regni tui. 13 Regnum tuum, regnum omnium seculorum: et dominatio tua in omni generatione, & generatione. 14 (m) Fidelis Dominus in verbis suis, [g] & sanctus in omnib⁹ operibus suis. 15 (n) Suffulcit Dominus [h] omnes qui ruunt: & erigit omnes elisos. 16 [i] Oculi omnium in te sperant: & tu das escam [k] illorum in tempore opportuno. 17 [l] Aperis tu manus tuas: & imples omne animal [m] benedictione. 18 Justus Dominus in omnibus viis suis, [n] & sanctus in omnibus operibus suis. 19 Propè est Dominus invocantibus eum: omnibus invocantibus eum in veritate. 20 Voluntatem timentium se faciet: & deprecationem eorum exaudiet: et salvos faciet eos. 21 Custodit Dominus omnes [o] diligentes ipsū: et omnes peccatores disperdet. 22 Laudationem Domini loquetur os meum: & benedicat omnis caro nomen sanctum ejus in seculum, & in seculum seculi.

Alleluja, (a) Aggæi, & Zachariæ.

CXLV.

1 Lauda, anima mea, Dñm: laudabo Dominum in vita mea: psallam Deo meo, (b) quamdiu sum. 2 Nolite confidere in principibus, (c) Et in filiis hominū. [a] quib⁹ (d) non est salus. 3 Exibit [b] spiritus ejus, et (e) revertetur in terrā suā: in illa die (f) peribunt omnes cogitationes (g) eorum.

Versio ÆTHIOPICA.

ኵሉ፡ አሚረ፡ እባርከከ። ወእሴብሕ፡ ለስም 2
ከ። ለዓለም፡ ወለዓለመ፡ ዓለም።=፡ ዐቢ 3
ይ፡ እግዚአብሔር፡ ወብዙኅ፡ ስብሐቲሁ። ወ
አልቦ፡ ጽንፈ፡ ዕበዩ፡ ዘአሁ።=፡ ትውልድ፡ ት 4
ውልድ፡ ይንእዱ፡ ምግባሪከ። ወይዜንዉ፡ ኀ
ይለከ።=፡ ወይነግሩ፡ ዕበየ፡ ክብረ፡ ስብሐተ፡ 5
ቅድሳቲከ። ወያየድዑ፡ መንክረከ።=፡ ወይብ 6
ሉ፡ ግሩመ፡ ኀይልከ። ወይነግሩ፡ ኀይለ፡ ግር
ማከ። ወያየድዑ፡ ጽንዐከ።=፡ ወይትሬሠ 7
ዑ፡ ተዝካረ፡ ብዝኃ፡ ምሕረትከ። ወይትሐ
ሠዩ፡ በጽድቅከ።=፡ መሐሪ፡ ወመስተሣህ 8
ሊ፡ እግዚአብሔር። ርሑቀ፡ መዐት፡ ወብዙ
ኅ፡ ምሕረት፡ ወጻድቅ።=፡ ኄር፡ እግዚአብ 9
ሔር፡ ለለ፡ ይትዔገሥዎ። ወሣህሉ፡ ላዕለ፡
ኵሉ፡ ተግባሩ።=፡ ይገንዩ፡ ለከ፡ እግዚአ፡ 10
ኵሉ፡ ተግባሪከ። ይባርኩከ፡ ጻድቃኒከ።=፡
ስብሐተ፡ ይብሉ፡ ለመንግሥትከ። ወይነግሩ፡ 11
ኀይለከ።=፡ ከመ፡ ይንግርዎሙ፡ ለሰብእ፡ እ 12
ምሕያው፡ ኀይለከ። ወዕበየ፡ ክብረ፡ ስብሐ
ተ፡ መንግሥትከ።=፡ መንግሥትከሰ፡ መንግ 13
ሥት፡ ዘለኵሉ፡ ዓለም። ወምኵናንከኒ፡ ለት
ውልደ፡ ትውልድ።=፡ መሃምን፡ እግዚአብ 14
ሔር፡ በኵሉ፡ ቃሉ፡ ወጻድቅ፡ በኵሉ፡ ምግባ
ሩ።=፡ ይሠውቆሙ፡ እግዚአብሔር፡ ለእ 15
ለ፡ ተንተኑ። ወያነሥኦሙ፡ እግዚአብሔር፡
ለእለ፡ ወድቁ።=፡ ዐይነ፡ ኵሉ፡ ነፍስ፡ ይሴ 16
ፎ፡ ኪያከ። አንተ፡ ትሁቦሙ፡ ሲሳዮሙ፡ በጊ
ዜሁ።=፡ ትሰፍሕ፡ የማንከ፡ ወታጸግብ፡ ለ 17
ኵሉ፡ እንስሳ፡ ዘበሠርዐትከ።=፡ ጻድቅ፡ 18
እግዚአብሔር፡ በኵሉ፡ ፍናዊሁ። ወኄር፡ በ
ኵሉ፡ ምግባሩ።=፡ ቅሩብ፡ እግዚአብሔ 19
ር፡ ለኵሎሙ፡ እለ፡ ይጼውዕዎ። ወለኵሎ
ሙ፡ ለለ፡ ይጼውዕዎ፡ በጽድቅ።=፡ ወይገብ 20
ር፡ ፈቃዶሙ፡ ለእለ፡ ይፈርህዎ። ወይሰምዖ
ሙ፡ ጸሎቶሙ፡ ወያድኅኖሙ።=፡ የዐቅቦ 21
ሙ፡ እግዚአብሔር፡ ለኵሎሙ፡ እለ፡ ይፈርህ
ዎ። ወይሠርዎሙ፡ ለኵሎሙ፡ ኃጥአን።=፡
ስብሐተ፡ እግዚአብሔር፡ ይነግር፡ አፉየ። ወ 22
ኵሉ፡ ዘሥጋ፡ ይባርክ፡ ለስሙ፡ ቅዱስ። ለዓ
ለም፡ ወለዓለመ፡ ዓለም።=፡

ሃሌ ሉያ፡ ዘሐጌ፡ ወዘዘካርያስ።

የሀሉ፡ ተአኵቶ፡ ነፍስየ፡ ለእግዚአብሔር። 1
እሴብሕ፡ ለእግዚአብሔር፡ በሕይወትየ። ወ
እዜምር፡ ለአምላኪየ፡ በአምጣነ፡ ሀለው
ኩ።=፡ ወኢትትአመኑ፡ በመላእክት። ወኢ 2
በሰብእ፡ እምሕያው፡ ለለ፡ ኢይክሉ፡ አድኅ
ኖ።=፡ ተወፅአ፡ ነፍሶሙ፡ ወይገብኡ፡ ውስ 3
ተ፡ መሬቶሙ። ወአሜሃ፡ ይጠፍአ፡ ኵ
ሉ፡ ምክሮሙ።=፡

Ψαλ. ρμδ. MS.A. (β) Μέγας κύριος (γ) δόξης σου τῆς ἁγιωσύνης (δ) † καὶ τὴν δυναστείαν σου λαλήσουσιν. Μνήμην (ε) ἐρεύξονται, (ζ) ὑψωθήσονται. (η) ὑπομένουσιν αὐτὸν, καὶ (θ) τὴν δύναμίν (ι) Ἀνοίξεις (κ) ἐξολεθρεύσει.

INTERP. ÆTHIOP. [c] multa est eius gloria: [d] terrorem virtutis tuæ dicent; & virtutem terroris tui prædicabunt; & potentiam tuam annuntiabunt [e] tardus ad iram, & abundans misericordiâ & veritate. [f] sustinentibus eum. [g] & justus in [h] eos qui dilabuntur: & erigit Deus eos qui corruunt. [i] Oculus omnis viventis in te sperat: [k] illius in tempore suo. [l] Extendis dexteram tuam: & [m] secundum decretum tuum. [n] & bonus [o] timentes ipsum: PSAL. CXLV. [a] qui salvare nequeant. [b] spiritus eorum, & revertentur

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

2 * كل يوم أباركك وأبارك اسمك الى الابد والى ابد الابد * ان الرب عظيم هو ومبارك جدا.
3 4 ولا نهاية لعظمته * جيل فجيل يبارك اعمالك ويخبر بقوتك * ويتكلم بعظمة بهاء مجد قدسك.
5 6 ويذكر عجايبك * وينطق بقوة مخافتك . ويتحدث بعظمتك ويقال بجبروتك * ويستفاض في
7 8 ذكر كثرة صلاحك ويبتهج بعدلك * الرب رؤوف رحيم هو طويل الاناة وكثير الرحمة * صالح
9 10 هو الرب للكل، ورافته على جميع اعماله * فليشكرك يا رب جميع اعمالك . وقديسوك يباركونك.
11 12 * وينطقون بمجد مملكتك ويقولون جبروتك * ويظهرون جبروتك لبني البشر ومجد عظيم
13 بهاء مملكتك * مملكتك هي مملكة الى جميع الدهور وسيادتك في كل جيل فجيل . الرب
14 صادق في كل اقواله . وقدوس في جميع اعماله * الرب يسند الساقطين . ويقيم المنكسرين
15 16 * ان اعين الكل لمرتجيه اياك . وانت تؤتيهم طعامهم في حينه * تبسط يدك فيمتلئ كل
17 18 حي مسرة * الرب عدل هو في جميع سبله . وقدوس في جميع اعماله * الرب قريب من كل
19 الصارخين اليه . وكل الطالبين منه بحق * وصانع ارادة اتقياه يستجيب طلبتهم
20 21 ويخلصهم * الرب يحفظ الذين يحبونه . ويبيد جميع الخطاة * بتسبيح الرب ينطق فمي
فليبارك اسمه القدوس كل ذي جسد الى الابد . والى ابد الابد . الليلويا .

1 . المزمور المية والخامس والاربعون * لاجاس وزكرياء . وهو ك استيكن .
2 3 يا نفسي باركي الرب * ابارك الرب في حياتي . وارتل لالهي ما دمت حيا . لا تتوكلوا على الروساء
4 ولا على بني البشر الذين ليس عندهم خلاص * فان ارواحهم تفارقهم ويعودون الى ترابهم
في ذلك اليوم تفسد جميع افكارهم .

2 Singulis diebus benedicam te, & benedicam nomini tuo in æternum, et in seculum seculi. 3 Nam Dominus magnus est & benedictus admodum, et nullus est terminus magnitudini ejus. 4 Generatio et generatio benedicet opera tua & enarrabit fortitudinem tuam: 5 Et loquetur magnitudinem nitoris gloriæ sanctitatis tuæ, & commemorabit miracula tua: 6 Et depromet vim terroris tui, 7 et efferetur majestatem tuam, & referet potentiam tuam: Et prorumpet in memoriam copiæ bonitatis tuæ, & recitabit justitiam tuam. 8 Dominus clemens ac misericors est, longanimis, & copiosus misericordiâ. 9 Optimus est Dominus in omnes, & clementia ejus super omnia opera ejus. 10 Itaque gratias agant tibi omnia opera tua, & sancti tui benedicent tibi: 11 Et proferent gloriam regni tui, & dicent potentiam tuam: 12 Et patefacient potentiam tuam filiis hominum, et gloriam summi splendoris regni tui. 13 Regnum tuum est regnum ad omnia secula, & dominatio tua in omnem generationem & generationem. Dominus verax est in cunctis sermonibus suis, & sanctus in omnibus operibus suis. 14 Dominus corroborat labentes, & erigit fractos. 15 Et verò oculi omnium te sperant, & tu concedis eis cibum illorum tempestivè. 16 Extendis manum tuam, 17 et repletur omne vivum exultatione. Dominus justissimus est in omnibus semitis suis, & sanctus in cunctis operibus suis. 18 Dominus proximus est omnibus clamantibus ad eum, & omnibus verè precantibus eum. 19 Et exequentium voluntatem eius, timentium illum, exaudiet petitionem, & salvabit eos. 20 Dominus tuetur eos qui diligunt ipsum, & perdet omnes peccatores. 21 Laudationem Domini promet os meum, & benedicat nomini ejus sancto omne præditum corpore, in æternum & in seculum seculi. Alleluja.

PSAL. CXLV.

1 Aggæi et Zachariæ. Ver. 20.

2 O Anima mea benedic Domino: Benedicam Dominum in vita mea, et psallam Deo meo quamdiu vixero. 3 Ne confidatis in principibus, neque in filiis hominum, apud quos non est salus: 4 Quoniam spiritus eorum separabuntur ab eis, & revertentur in terram suam. In illa die corrumpentur cogitationes eorum.

תהלים : קמז

Faciens .ſuo Deo Domino ſuper ejus ſpes:ejus auxilio in Jahacob Deus cuj⁹ Beatitates
5 אַשְׁרֵי שֶׁאֵל יַעֲקֹב בְּעֶזְרוֹ שִׂבְרוֹ עַל־יְהוָה אֱלֹהָיו : עֹשֶׂה 6
.ſeculum in veritatem cuſtodiens :eis in quæ omnia & , mare ,terram & ,cœlos
שָׁמַיִם וָאָרֶץ אֶת־הַיָּם וְאֶת־כָּל־אֲשֶׁר־בָּם הַשֹּׁמֵר אֱמֶת לְעוֹלָם :
ſolvens Dominus : famelicis panem dans , afflictis violentia judicium Faciens
7 עֹשֶׂה מִשְׁפָּט לָעֲשׁוּקִים נֹתֵן לֶחֶם לָרְעֵבִים יְהוָה מַתִּיר
diligens Dominus : curvatos erigens Dominus , cæcos aperiens Dominus .vinctos
8 אֲסוּרִים : יְהוָה פֹּקֵחַ עִוְרִים יְהוָה זֹקֵף כְּפוּפִים יְהוָה אֹהֵב
viam & : eriget viduam & , pupillum ,advenas cuſtodiens Dominus .juſtos
9 צַדִּיקִים : יְהוָה שֹׁמֵר אֶת־גֵּרִים יָתוֹם וְאַלְמָנָה יְעוֹדֵד וְדֶרֶךְ
Sijon tuus Deus , ſeculum in Dominus Regnabit .ſubvertet impiorum
10 רְשָׁעִים יְעַוֵּת : יִמְלֹךְ יְהוָה לְעוֹלָם אֱלֹהַיִךְ צִיּוֹן
.jah-Hallelu .generatione &,generatione in
לְדֹר וָדֹר הַלְלוּ־יָהּ :

PSAL. XCLVII. קמז

.laus decens;jucundum quoniam:noſtro Deo canere bonum quoniam ,Jah Laudate
1 הַלְלוּ יָהּ כִּי־טוֹב זַמְּרָה אֱלֹהֵינוּ כִּי־נָעִים נָאוָה תְהִלָּה :
contritos Sanans .congregabit Iſrael expulſos : Dominus Jeruſalaim Ædificans
2 בּוֹנֵה יְרוּשָׁלַם יְהוָה נִדְחֵי יִשְׂרָאֵל יְכַנֵּס : הָרֹפֵא לִשְׁבוּרֵי 3
eis omnibus : ſtellarum numerum Numerans .eorum dolores alligans & : corde
4 לֵב וּמְחַבֵּשׁ לְעַצְּבוֹתָם : מוֹנֶה מִסְפָּר לַכּוֹכָבִים לְכֻלָּם
non ejus intelligentiæ:fortitudine multus &,noſter Dominus Magnus.vocabit nomina
5 שֵׁמוֹת יִקְרָא : גָּדוֹל אֲדוֹנֵינוּ וְרַב־כֹּחַ לִתְבוּנָתוֹ אֵין
.terram ad uſque impios humilians : Dominus manſuetos Erigens .numerus
6 מִסְפָּר : מְעוֹדֵד עֲנָוִים יְהוָה מַשְׁפִּיל רְשָׁעִים עֲדֵי־אָרֶץ :
Operiens .cithara in noſtro Deo canite : confeſſione in Domino Reſpondete
7 עֱנוּ לַיהוָה בְּתוֹדָה זַמְּרוּ לֵאלֹהֵינוּ בְכִנּוֹר : הַמְכַסֶּה 8
.herbam montes faciens germinare : pluviam terræ parans ,nubibus in cœlos
שָׁמַיִם בְּעָבִים הַמֵּכִין לָאָרֶץ מָטָר הַמַּצְמִיחַ הָרִים חָצִיר :
fortitudine in Non .clamaverint quum , corvi filiis : ſuum panem jumento Dans
9 נוֹתֵן לִבְהֵמָה לַחְמָהּ לִבְנֵי עֹרֵב אֲשֶׁר יִקְרָאוּ : לֹא בִגְבוּרַת 10
; eum timentes Dominus Volens .volet viri coxendicibus in non :volet equi
11 הַסּוּס יֶחְפָּץ לֹא בְשׁוֹקֵי הָאִישׁ יִרְצֶה : רוֹצֶה יְהוָה אֶת־יְרֵאָיו אֶת־
tuum Deum lauda : Dominum Jeruſalaim Lauda .ejus miſericordia in exſpectantes
12 הַמְיַחֲלִים לְחַסְדּוֹ : שַׁבְּחִי יְרוּשָׁלַם אֶת־יְהוָה הַלְלִי אֱלֹהַיִךְ
tuis filiis benedixit : tuarum portarum vectes roboravit Quoniam .Sijon
13 צִיּוֹן : כִּי־חִזַּק בְּרִיחֵי שְׁעָרָיִךְ בֵּרַךְ בָּנַיִךְ
.te faciet ſaturare triticorum adipe : pacem tuum terminum Ponens .tuo interiori in
14 בְּקִרְבֵּךְ : הַשָּׂם־גְּבוּלֵךְ שָׁלוֹם חֵלֶב חִטִּים יַשְׂבִּיעֵךְ :

תרגום TARGUM.

5 טוביה דאלהא יעקב בסעדיה סבריה
6 על יי אלהיה : דעבד שמיא וארעא ית
ימא וית כל די בהון די נטר קשוט לעלם :
7 די עבד דינא לטלומין יהב מזון לכפינין
8 יי דשרי אסיריא : יי פקח לסמין יי זקף
9 כפיפין יי רחם צדיקיא : יי נטר ית גיורא
יתם וארמלא יסובר ואורחא דרשיעי
10 יטלטל : ימלוך יי לעלם אלהיך ציון לדר
ודר הללויה :

קמז

1 הללויה ארום טב לזמרא קדם אלהנא
2 ארום בסים יאיא תושבחתא : בני ירושלם
3 יי גלות ישראל יכנס : דמסי לתבירי לבא
4 ומסיק ארכא לצערידהון : מני סכום
5 לכוכביא לכולהון בשמא קרי : רב מרנא
וסגי חילא לסוכלתנותיה לית סכום :
6 מסובר ענותניא יי מכיך רשיעיא עדי
7 ארעא : שבחו קדם יי בתודתא זמרו קדם
8 אלהנא בכנרא : דחפי שמיא בעננין דמתקן
9 לארעא מטרא דמרבי טוריא עסבי : יהיב
10 לבעירא מזוניה לבני עורבא דקרן : לא
בגבורתא דרכיבין על סוסי יצבי לא בשוקי
11 גוברין דהטנין יצבי : רעי יי ית דחלוי
12 ית דמוריכין לטוביה : שבחי ירושלם ית
13 יי שבחי אלהיך ציון : ארום תקף נגרי תרעיך
14 בריך בניכי במצעיך : דשוי תחומך שלם
שמן חנטיא יסבענך :

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Beatus ille cui Deus Jaacob eſt auxi ſpes ejus in Domino Deo ejus. Qui fe cœlos & terram, maria & omnia quæ eis ſunt: qui cuſtodit veritatem in perpetuum. Qui facit judicium calumniam ſuſ nentibus, dat cibum eſurientibus: Dominus ſolvit vinctos. Dominus illuminat cæcos, Dominus erigit curvos, Dominus diligit juſtos. Dominus ſervat advenam; pupillum & viduam ſuſcipiet; & viam impiorum diſperdet. Regnabit Dominus in æternum, Deus tuus Sion in generationem & generationem. *Hallelujah.*

PSAL. CXLVII.

LAudate Deum, quoniam bonum eſt pſallere coram Deo noſtro, quoniam de lectabilis [&] pulchra laus eſt. Ædificans Jeruſalem Dominus, captivitatem Iſrael congregabit. Qui ſanat contritos corde, & adducit ſanitatem morbis eorum. Imponit numerũ ſtellis, & omnes nominatim vocat. Magn⁹ dominator noſter, & multus virtute: & prudentiæ ejus non eſt numerus. Suſcipiens manſuetos Deus, humilians impios uſque ad terram. Laudes dicite coram Domino in confeſſione: pſallite coram Deo noſtro in cithara. Qui operit cœlos nubibus, qui præparat terræ pluviam; qui creſcere facit in montibus herbam. Dat jumentis cibum ſuum; pullis corvi qui clamant. Non in fortitudine equitantium equis beneplacet ei; neque in tibiis currentium voluntas ejus. Benevolens complectitur Dominus timentes ſe, & eos qui expectant benignitatem ipſius. Lauda Jeruſalem Dominum, lauda Deum tuum Sion. Quoniam roboravit feras portarum tuarum: benedixit filiis tuis in medio tui. Qui poſuit terminos tuos pacem, adipe frumentorum ſaturavit te.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 * ܛܘܒܘܗܝ ܠܡܢ ܕܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ ܡܥܕܪܢܗ ܘܣܒܪܗ ܥܠ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ. * ܕܥܒܕ 6
ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ : ܘܝܡܡܐ ܘܟܠ ܕܐܝܬ ܒܗܘܢ. ܢܛܪ ܩܘܫܬܐ ܠܥܠܡ : * ܥܒܕ ܕܝܢܐ 7
ܠܡܛܠܡܐ. ܝܗܒ ܠܚܡܐ ܠܟܦܢܐ ܡܪܝܐ : ܫܪܐ ܐܣܝܪܐ * ܡܪܝܐ. ܦܬܚ ܥܘܝܪܐ 8
ܡܪܝܐ : ܙܩܦ ܟܦܝܦܐ ܡܪܝܐ. ܪܚܡ ܙܕܝܩܐ * ܡܪܝܐ : ܢܛܪ ܠܬܘܬܒܐ. ܠܝܬܡܐ 9
ܘܠܐܪܡܠܬܐ ܣܝܥ : ܘܐܘܪܚܐ ܕܥܘܠܐ ܡܛܒܥ. * ܢܡܠܟ ܡܪܝܐ ܠܥܠܡ : ܐܠܗܟܝ ܨܗܝܘܢ 10
ܠܕܪ ܕܪܝܢ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܘ *

1 ܕܚܓܝ ܘܕܙܟܪܝܐ. ܥܠ ܙܘܪܒܒܠ ܘܥܠ ܝܫܘܥ ܟܗܢܐ ܘܥܙܪܐ ܕܡܬܚܦܛܝܢ ܥܠ ܒܢܝܢܗ
ܕܐܘܪܫܠܡ : ܠܢ ܕܝܢ ܠܬܫܒܘܚܬܐ ܥܡ ܡܫܡܠܝܘܬܐ ܬܐܘܠܘܓܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܟܕ.

2 * ܛܒ ܠܡܙܡܪܘ ܠܐܠܗܢ. ܘܒܣܝܡ ܠܗ ܘܝܐܐ ܠܬܫܒܘܚܬܐ. * ܒܢܐ ܠܐܘܪܫܠܡ ܡܪܝܐ : 3
ܘܠܡܒܕܪܘܗܝ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܟܢܫ. * ܡܐܣܐ ܠܬܒܝܪܝ ܠܒܐ ܘܡܚܒܫ ܠܟܐܒܝܗܘܢ : * ܡܢܐ 4 5
ܡܢܝܢܐ ܠܟܘܟܒܐ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܫܡܗܐ ܩܪܐ : * ܪܒ ܗܘ ܡܪܢ. ܘܥܫܝܢ ܚܝܠܗ. ܘܠܝܬ
ܣܟܐ ܠܣܘܟܠܗ : * ܡܪܝܡ ܡܪܝܐ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܡܫܦܠ ܠܥܘܠܐ ܥܕܡܐ ܠܐܪܥܐ : 6
* ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܒܬܘܕܝܬܐ. ܙܡܪܘ ܠܡܪܝܐ ܒܟܢܪܐ : * ܕܡܟܣܐ ܫܡܝܐ ܒܥܢܢܐ. ܘܡܛܝܒ 7 8
ܡܛܪܐ ܥܠ ܐܪܥܐ : ܡܦܩ ܥܣܒܐ ܥܠ ܛܘܪܐ. * ܘܝܗܒ ܠܒܥܝܪܐ ܡܣܝܒܪܬܗ : ܘܠܒܢܝ 9
ܢܥܒܐ ܕܩܪܝܢ. * ܠܐ ܨܒܐ ܡܪܝܐ ܒܚܝܠܗ ܕܣܘܣܝܐ : ܘܐܦܠܐ ܒܫܩܘܗܝ ܕܓܢܒܪܐ ܪܥܐ. * ܐܠܐ 10 11
ܪܥܐ ܡܪܝܐ ܒܕܚܠܘܗܝ : ܘܒܐܝܠܝܢ ܕܡܣܟܝܢ ܠܛܝܒܘܬܗ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܡܙ *

ܕܚܓܝ ܘܕܙܟܪܝܐ. ܟܕ ܡܬܚܦܛܝܢ ܒܫܘܡܠܝ ܗܝܟܠܐ ܕܐܘܪܫܠܡ : ܘܠܬܫܒܘܚܬܐ
ܥܡ ܡܫܡܠܝܘܬܐ ܬܐܘܠܘܓܝܐ. ܦܬܓܡܐ ܝܚ.

12 * ܫܒܚܝ ܐܘܪܫܠܡ ܠܡܪܝܐ. ܫܒܚܝ ܠܐܠܗܟܝ ܨܗܝܘܢ : * ܡܛܠ ܕܐܥܫܝܢ 13
ܡܘܟܠܐ ܕܬܪܥܝܟܝ ܘܒܪܟ ܠܒܢܝܟܝ ܒܓܘܟܝ : * ܣܡ ܠܬܚܘܡܝܟܝ ܫܠܡܐ. 14
ܘܡܫܘܡܢܐ ܕܚܛܐ ܣܒܥܟܝ :

Beatus qui Deum Jacobi habet in auxilium ſuum, & cujus ſpes eſt in Domino Deo Conditore cœli ac terræ & marium, atque omnium quæ ſunt in eis. Cuſtodit veritatem in ſeculum, Facit judicium oppreſſis, dat panem eſurientibus Dominus: ſolvit vinctos Dominus: aperit cœcos Dominus: erigit inclinatos Dominus: diligit juſtos Dominus, ſervátque pauperes: alit pupillos ac viduas: viam autem nefariorum ſubmergit. Regnavit Dominus in æternum, Deus tuus ô Sion in generationem generationum.

PSAL. CXLVI.

Aggæi & Zachariæ. De Zorobabel & Sacerdote atque Ezrâ qui ſolicitabant ædificium Jeruſalem. Nobis autem laudatio Theologia. Verſ. 24.

BOnum eſt pſallere Deo noſtro, atque jucundum: eúmque decet laudatio. Ædificat Jeruſalem Dominus, & diſperſos Iſraelis congregat: Sanat fractos corde, & medetur doloribus eorum: Numeravit numerum ſtellis, & omnibus impoſuit nomina. Magnus eſt Dominus noſter, & potentiſſimum robur ejus, neque ullus eſt terminus intelligentiæ ejus. Evehit Dominus pauperes, & deprimit iniquos uſque ad terram. Laudate Dominum in laude, pſallite Domino cum lyra: Qui operit cœlum nubibus inſértque pluviam ſuper terram; producit fœnum ſuper montes: præbétque pecori cibum, & pullis corvi vocantibus. Non eſt gratum Domino robur equi, neque crura gigantis probat; Sed oblectatur Dominus timentibus eum, & iis qui præſtolantur ipſius bonitatem.

PSAL. CXLVII.

Aggæi & Zachariæ. Quum urgerent complementum templi Jeroſolymitani. Et cum Theologia. Verſ. 18.

LAudate Jeruſalem Dominũ, lauda Deum tuum Sion; Quoniam roboravit ſeras portarum tuarum, & benedixit filiis tuis intra te; Conſtituit fines tuos in tranquillitate & adipe frumenti ſaturavit te;

Verſio VULG. LAT.

Beatus, cujus Deus Jacob adjutor ejus, ſpes ejus in Dño Deo ipſius: Qui fecit cœlum & terram, mare, & omnia quæ in eis ſunt. Qui cuſtodit veritatem in ſeculum, facit judicium injuriam patientibus: dat eſcam eſurientibus. Dominus ſolvit compeditos: 8 Dominus illuminat cœcos. Dominus erigit eliſos, Dominus diligit juſtos. Dominus cuſtodit advenas, pupillum & viduam ſuſcipiet: & vias pecca- 10 torum diſperdet. Regnabit Dominus in ſecula: Deus tuus, Sion, in generationem & generationem.

Alleluja. CXLVI.

1 LAudate Dominum, quoniam bonus eſt pſalmus: Deo noſtro ſit 2 jucunda, decoráque laudatio. Ædificans Jeruſalem Dominus: diſperſiones 3 Iſraelis congregabit. Qui ſanat contritos corde: & alligat contritiones 4 eorum. Qui numerat multitudinem ſtellarum: & omnibus eis nomina 5 vocat. Magnus Dominus noſter, & magna virtus ejus: & ſapientiæ ejus 6 non eſt numerus. Suſcipiens manſuetos Dominus: humilians autem 7 peccatores uſque ad terram. Præcinite Domino in confeſſione: pſallite Deo 8 noſtro in cithara. Qui operit cœlum nubibus: & parat terræ pluviam. Qui producit in montibus fœnum, & 9 herbam ſervituti hominum. Qui dat jumentis eſcam ipſorum, & pullis 10 corvorum invocantibus eum. Non in fortitudine equi voluntatem habebit: nec 11 in tibiis viri beneplacitum erit ei. Beneplacitum eſt Domino ſuper timentes eum: & in eis, qui ſperant ſuper miſericordia ejus.

Alleluja. CXLVII.

12 LAuda, Jeruſalem, Dominum: lauda 13 Deum tuum, Sion. Quoniam confortavit ſeras portarum tuarum: 14 benedixit filiis tuis in te. Qui poſuit fines tuos pacem: & adipe frumenti ſatiat te.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

5 † Μακάριος οὗ ὁ θεὸς Ἰακὼβ (α) βοηθὸς αὐτοῦ, 6 † ἡ ἐλπὶς αὐτοῦ ἐπὶ κύριον τὸν θεὸν αὐτοῦ· † Τὸν ποιήσαντα τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν, † τὴν 7 θάλασσαν καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτοῖς· † Τὸν φυλάσσοντα ἀλήθειαν εἰς τὸν αἰῶνα· † ποιοῦντα κρίμα τοῖς ἀδικουμένοις, † διδόντα τροφὴν τοῖς πεινῶσι. † 8 κύριος λύει πεπεδημένους, † (β) Κύριος σοφοῖ τυφλοὺς, † κύριος ἀνορθοῖ κατερραγμένους, † κύριος 9 ἀγαπᾷ δικαίους, † Κύριος φυλάσσει τοὺς προσηλύτους· † ὀρφανὸν καὶ χήραν ἀναλήψεται, † καὶ ὁδὸν 10 ἁμαρτωλῶν (γ) ἀφανιεῖ. † Βασιλεύσει κύριος εἰς τὸν αἰῶνα, † ὁ θεός σου Σιὼν εἰς γενεὰν καὶ γενεάν.

MS.A. (α) βοηθὸς, ἡ ἐλπὶς (β) Κύριος ἀνορθοῖ κατερραγμένους, κύριος σοφοῖ τυφλοὺς, κύριος ἀγαπᾷ δικαίους, (γ) ἀφανίσει.

1 Ἀλληλούϊα. Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. ρμϛʹ.

† Αἰνεῖτε τὸν κύριον ὅτι ἀγαθὸν ψαλμὸς, 2 † τῷ θεῷ ἡμῶν ἡδυνθείη αἴνεσις. † Οἰκοδομῶν Ἱερουσαλὴμ ὁ κύριος, † καὶ τὰς 3 διασπορὰς τοῦ Ἰσραὴλ ἐπισυνάξει· † Ὁ ἰώμενος τοὺς συντετριμμένους τὴν καρδίαν, † καὶ δεσμεύων τὰ 4 συντρίμματα αὐτῶν· † Ὁ ἀριθμῶν πλήθη 5 ἄστρων, καὶ πᾶσιν αὐτοῖς ὀνόματα καλῶν. † Μέγας ὁ κύριος ἡμῶν, καὶ μεγάλη ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ, 6 † καὶ τῆς συνέσεως αὐτοῦ οὐκ ἔστιν ἀριθμός. † Ἀναλαμβάνων πραεῖς ὁ κύριος, † ταπεινῶν δὲ 7 ἁμαρτωλοὺς ἕως τῆς γῆς. † Ἐξάρξατε τῷ κυρίῳ ἐν ἐξομολογήσει, † ψάλατε τῷ θεῷ ἡμῶν ἐν 8 κιθάρᾳ· † Τῷ περιβάλλοντι τὸν οὐρανὸν ἐν νεφέλαις, † τῷ ἑτοιμάζοντι τῇ γῇ ὑετόν· † τῷ ἐξανατέλλοντι ἐν ὄρεσι (α) χόρτον, καὶ 9 χλόην τῇ δουλείᾳ τῶν ἀνθρώπων· † Καὶ διδόντι τοῖς κτήνεσι τροφὴν αὐτῶν, † καὶ τοῖς νεοσσοῖς 10 τῶν κοράκων τοῖς ἐπικαλουμένοις αὐτόν. † Οὐκ ἐν τῇ δυναστείᾳ τοῦ ἵππου θελήσει, † οὐδὲ ἐν ταῖς 11 κνήμαις τοῦ ἀνδρὸς εὐδοκεῖ. † Εὐδοκεῖ κύριος ἐν τοῖς φοβουμένοις αὐτὸν, † καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ἐλπίζουσιν ἐπὶ τὸ ἔλεος αὐτοῦ.

MS.A. (α) χόρτον, Καὶ διδόντι

Ἀλληλούϊα. Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. ρμζʹ.

12 13 † Ἐπαίνει Ἱερουσαλὴμ τὸν κύριον, † αἴνει τὸν θεόν σου Σιών. † Ὅτι ἐνίσχυσε τοὺς μοχλοὺς τῶν 14 πυλῶν σου, † εὐλόγησε τοὺς υἱούς σου ἐν σοί· † Ὁ τιθεὶς τὰ ὅριά σου εἰρήνην· † καὶ στέαρ πυροῦ ἐμπιπλῶν σε·

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

Beatus [c], cujus Deus Jacob adjutor 5 ejus, ſpes ejus in Domino Deo ipſius: Qui fecit cœlum, & terram, 6 mare, et omnia quæ in eis ſunt. 5 Qui 7 cuſtodit veritatem in ſeculum; facit judicium injuriam patientibus, dat eſcam eſurientibus. 6 Dominus ſolvit compeditos: Dominus (h) [d] ſapientes 8 facit cæcos: 7 Dominus erigit eliſos: Dominus diligit juſtos: 8 Dominus 9 cuſtodit (i) proſelytos, pupillum & viduam ſuſcipiet: & viam peccatorum exterminabit. 9 Regnabit 10 Dominus in ſeculũ: Deus tuus, Sion, in generationem & generationem.

Alleluja, Aggæi, & Zachariæ. 1

CXLVI.

1 LAudate Dominũ, quoniam (a) bonum eſt pſalmus: Deo noſtro jucunda (b) ſit laudatio. 2 (c) Ædificans 2 Hieruſalem Dominus: & (d) diſperſiones Iſraelis congregabit. 3 Qui ſanat (e) contritos corde: & 3 alligat (f) contritiones eorum. 4 Qui 4 numerat (g) [a] multitudines ſtellarum, & (h) omnibus eis nomina vocat. 5 Magnus Dominus noſter, & 5 magna virtus ejus, & (i) intelligentiæ ejus non eſt numerus. 6 (k) Suſ- 6 cipiens manſuetos Dominus, humilians autem peccatores uſque ad terram. 7 (l) Incipite Domino in con- 7 feſſione, pſallite Deo noſtro in (m) cithara. 8 Qui cooperit cœlum in nu- 8 bibus, qui parat terræ pluviam. 9 Qui exoriri facit in montibus fœnum, & (n) herbam ſervituti hominum. 10 Et dat pecoribus eſcam ipſorum, 9 & pullis corvorum invocantibus eum. 41 Non in (o) potentatu equi (p) 10 voluntatem habebit: neque in filiis (q) viri (r) benè ſentit. 12 Benè ſen- 11 tit Dominus in timentibus eum, & (ſ) in omnibus qui ſperant ſuper miſericordia ejus.

Alleuja, (a) Aggæi, & Zachariæ.

CXLVII.

1 COllauda, Hieruſalem, Domi- 12 num: (b) lauda Deum tuum, Sion. 2 Quoniam confirmavit vectes por- 13 tarum tuarum; [a] benedixit filios tuos in te. 3 [b] Qui ponit fines 14 tuos pacem, & adipe frumenti ſatiat te.

Verſio ÆTHIOPICA.

ብፁዕ፡ ብእሲ፡ ዘአምላኩ፡ ያዕቆብ፡ ረድኤ 4
ሁ። ወትውክልቱ፡ ሳዕለ፡ እግዚአብሔር፡
አምላኩ። ዘገብረ፡ ሰማየ፡ ወምድረ። ወባ
ሕረ፡ ወኵሎ፡ ዘውስቴቱ።=፥ ዘየዐቅብ፡ 5
ለጽድቅ፡ ለዓለም። ወይፈትሕ፡ ሎሙ፡ ለ
ግፉዓን። ዘይሁቦሙ፡ ሲሳዮሙ፡ ለርኁባ
ን።=፥ እግዚአብሔር፡ ይፈትሖሙ፡ ለሙቁ 6
ሓን። እግዚአብሔር፡ ያነሥኦሙ፡ ለእለ፡ ወ
ድቁ።=፥ እግዚአብሔር፡ ያጠብቦሙ፡ ለዕ 7
ውራን። እግዚአብሔር፡ ያፈቅሮሙ፡ ለጻድ
ቃን።=፥ እግዚአብሔር፡ የዐቅቦሙ፡ ለፈላስ 8
ያን። ወይትዌከፎሙ፡ ለአበራት፡ ወለእጓለ፡
ማውታ። ወያማስን፡ ፍኖተ፡ ኃጥአን።=፥ ይ 9
ነግሥ፡ እግዚአብሔር፡ ለዓለም። አምላክ
ኪ፡ ጽዮን፡ ለትውልደ፡ ትውልድ።=፥

ሃሌሉያ።

የሀጌ ሰብሕዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ እስመ፡ 1
ሠናይ፡ መዝሙር። ወለአምላክነ፡ ሐዋዝ፡ ሰ
ብሐት።=፥ የሐንጻ፡ እግዚአብሔር፡ ለኢየ 2
ሩሳሌም። ወያስተጋብእ፡ ዝርወቶሙ፡ ለእ
ስራኤል።=፥ ዘይፈውሶሙ፡ ለቍሱላነ፡ ል 3
ብ። ወይጸምሞሙ፡ ቍስሎሙ።=፥ ዘይኌል 4
ቆሙ፡ ለከዋክብት፡ በምልአሙ። ወይጼውዖ
ሙ፡ ለኵሎሙ፡ በበ፡ አስማቲሆሙ።=፥ ዐ 5
ቢይ፡ እግዚአብሔር፡ ወዐቢይ፡ ኀይሉ። ወአ
ልቦ፡ ኍልቈ፡ ጥበቢሁ።=፥ ያነሥኦሙ፡ እ 6
ግዚአብሔር፡ ለየዋሃን። ወያኀስሮሙ፡ ለኃ
ጥአን፡ እስከ፡ ምድር።=፥ ሰብሕዎ፡ ለእ 7
ግዚአብሔር፡ በአሚን። ወዘምሩ፡ ለአምላ
ክነ፡ በመሰንቆ።=፥ ዘይገለብቦ፡ ለሰማይ፡ በ 8
ደመና። ወያስተዴሉ፡ ክረምተ፡ ለምድር።=፥
ወያበቍል፡ ሣዕረ፡ ውስተ፡ አድባር። ወሐመ 9
ልማለ፡ ለቅኔ፡ እጓለ፡ እመሕያው።=፥ ዘይ 10
ሁቦሙ፡ ሲሳዮሙ፡ ለእንስሳ። ወለእጐለ፡ ቋ
ዓት፡ እለ፡ ይጼውዕዎ።=፥ ኢይፈቅድ፡ ኃ 11
ይለ፡ ፈረስ። ወኢይሠምር፡ በአቍያጸ፡ ብ
እሲ።=፥ ይሠምር፡ እግዚአብሔር፡ በእለ፡ 12
ይፈርህዎ። ወኵሎሙ፡ እለ፡ ይትዌከሉ፡ በ
ምሕረቱ።=፥

ሃሌሉያ።

የሀጊ ትሴብሖ፡ ኢየሩሳሌም፡ ለእግዚአብ 1
ሔር። ሰብሒዮ፡ ለአምላክኪ፡ ጽዮን።=፥
እስመ፡ አጽንዐ፡ መናስግተ፡ ኆኃትኪ። ወባረ 2
ኮሙ፡ ለውሉድኪ፡ በውስቴትኪ።=፥ ወረሰ 3
የ፡ ሰላመ፡ ለበሐውርትኪ። ወአጽገበኪ፡ ቄ
ቅሐ፡ ስርናየ።=፥

INTERP. ÆTHIOP. [c] vir, cujus [d] erigit eos qui corruunt: Dominus ſapientes facit cæcos: Dominus diligit *PSAL. CXLVI.* [a] ſtellas in plenitudine earum, iiſque omnibus & ſingulis nomina *PSAL. CXLVII.* [a] & benedixit [b] Et poſuit regiones tuas pacem,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* طوبى لمن اله يعقوب معينه وتوكله على الرب الاهه * خالق السماء والارض والبحر وجميع ما 5 6
فيه · حافظ العدل الى الابد * صانع الحكم للمظلومين · معطي الجياع طعاما · الرب يفك 7
الاسرى * الرب يقيم الساقطين · الرب يعلم العميان · الرب يحب الصديقين * الرب يحفظ 8 9
الغرباء · ويعضد اليتيم والارملة · ويهلك سبيل الخطاة * الرب يملك الى الابد · والهك يا 10
صهيون من جيل الى جيل · الليلويا ·

* المزمور المائة والسادس والاربعون · * الليلويا لاجاي وزخارياس · وهو كد استيخن · 1
سبحوا الرب بالقول الصالح · والاهنا يرضيه التسبيح * باني يروسليم هو الرب · الرب يجمع متفرقي 2
اسرائيل * الذي يشفي المنكسرة قلوبهم وجابر كسرهم * المحصي كثرة الكواكب 3 4
ويسميها جميعها * عظيم هو الرب وعظيمة قوته ولا عدد لفهمه * الرب يقبل الوديعين ويذل 5 6
الخطاة الى الارض * ابتدوا للرب بالشكر · رتلوا لالهنا بالقيثار * الذي يجلل السماء بالغمام · 7 8
الذي يعد مطرا على الارض · الذي ينبت على الجبال عشبا · وخضرا لاستعباد البشر
* ويعطي البهائم طعاما · وفراخ الغربان الذي يصرخ اليه * الرب لا يشاء قوة الفرس · ولا يسر 9 10
بقطاطة الجبار * وانما يسر الرب بخائفيه وبالذين يرجون رحمته · الليلويا · 11

* المزمور المائة والسابع والاربعون · * على ما تقدم · وهو يح · استيخن ·
* سبحي الرب يا يروسليم · سبحي الهك يا صهيون * فانه قوى عمد ابوابك · وبارك لبنيك 12 13
فيك * الذي يجعل تخومك في سلامة · ومن شحم القمح اشبعك · 14

Beatitudo illi, cujus Deus Jacobi adjutor 5 eſt, & cujus fiducia in Domino Deo ſuo: Creatore cœli, & terræ, & maris, & omnium 6 quæ in eo ſunt: ſervante æquitatem in æternum: Faciente judicium oppreſſis, 7 & largiente famelicis eſcam. Dominus ſolvit vinctos: Dominus erigit cadentes: 8 Dominus docet cæcos: Dominus diligit juſtos: Dominus cuſtodit advenis, 9 & opitulatur pupillo ac viduæ, perdit autem ſemitam peccatorum: Dominus 10 regnabit in æternũ, & Deus tuus O Sion, à generatione in generationem. Alleluja.

PSAL. CXLVI.

Alleluja, Aggæi & Zachariæ. 1
Verſ.24.

LAudate Dominum ſermone bono, etenim Deo noſtro placet laudatio. 2 Fabricator Jeroſolymæ eſt Dominus: Dominus congregat diſperſos Iſraelis. 3 Qui ſanat eos quorum fracta ſunt corda, & conſolidat fracturam eorum. 4 Numerans multitudinem ſtellarum, & nominans eas omnes. 5 Maximus eſt Dominus, et maxima virtus ejus, & nullus eſt numerus intelligentiæ ipſius. 6 Dominus ſuſcepit manſuetos, & deprimit peccatores uſque ad terram. 7 Aggredimini Domino gratiarum actionem: pſallite Deo noſtro citharâ: 8 Qui amicit cœlum nubibus, qui parat pluviam ſuper terram, qui germinare facit ſuper montes herbam, & viriditatem in ſervitutem hominum, 9 Et dat jumentis eſcam, ac pullis corvorum qui clamant ad eum. 10 Dominus non vult fortitudinem equi, neque delectatur ſævitie gigantis. 11 Imò delectatur Dominus timentibus eum, & iis qui ſperant miſericordiam ipſius. Alleluja.

PSAL. CXLVII.

De eo quod præceſſit. Ver.18.

12 LAuda Dominum O Jeruſalem, lauda 13 Deum tuum, O Sion. Quoniam ipſe fortificavit columnas portarum tuarum, & benedixit filiis tuis in te. 14 Qui reddit confinia tua pacifica, & adipe frumenti te ſatiavit.

תהלים : קמח קמט

.ejus verbum currit velociter donec : terræ ſuum eloquium Mittens

15 הַשֹּׁלֵחַ אִמְרָתוֹ אָרֶץ עַד־מְהֵרָה יָרוּץ דְּבָרוֹ׃ הַנֹּתֵן 16

:buccellas ſicut ſuam glaciē Projiciens .ſparget cinerē ſicut pruinam:lanam ſicut nivem

17 שֶׁלֶג כַּצָּמֶר כְּפוֹר כָּאֵפֶר יְפַזֵּר׃ מַשְׁלִיךְ קַרְחוֹ כְפִתִּים

flabit : eas liquefaciet & ,ſuum verbum Mittet ? ſtabit quis ejus frigoris facies ad

18 לִפְנֵי קָרָתוֹ מִי יַעֲמֹד׃ יִשְׁלַח דְּבָרוֹ וְיַמְסֵם יַשֵּׁב

, ſua ſtatuta : Jahacob ipſi ſuum verbum Annuncians .aquæ fluent ,ejus ſpiritus

19 רוּחוֹ יִזְּלוּ־מָיִם׃ מַגִּיד דְּבָרָו לְיַעֲקֹב חֻקָּיו

non judicia & ,genti omni ſic fecit Non .Iſraeli ſua judicia &

20 וּמִשְׁפָּטָיו לְיִשְׂרָאֵל׃ לֹא עָשָׂה כֵן לְכָל־גּוֹי וּמִשְׁפָּטִים בַּל־

.Jah-Hallelu .ea cognoſcent

יְדָעוּם הַלְלוּ־יָהּ׃

PSAL. CXLVIII. קמח

.excelſis in eum laudate : cœlis de Dominum Laudate .Jah-Hallelu

1 הַלְלוּיָהּ הַלְלוּ אֶת־יְהוָה מִן־הַשָּׁמַיִם הַלְלוּהוּ בַּמְּרוֹמִים׃

ſol eum Laudate.ejus exercit° omnes eum laudate : ejus angeli omnes eum Laudate

2 הַלְלוּהוּ כָל־מַלְאָכָיו הַלְלוּהוּ כָּל־צְבָאָו׃ הַלְלוּהוּ שֶׁמֶשׁ 3

aquæ & : cœlorum cœli eum Laudate .lucis ſtellæ omnes eum laudate : luna &

4 וְיָרֵחַ הַלְלוּהוּ כָּל־כּוֹכְבֵי אוֹר׃ הַלְלוּהוּ שְׁמֵי הַשָּׁמָיִם וְהַמַּיִם

,præcepit ipſe quia : Domini nomen Laudent .cœlos ſupra quæ

5 אֲשֶׁר מֵעַל הַשָּׁמָיִם׃ יְהַלְלוּ אֶת־שֵׁם יְהוָה כִּי הוּא צִוָּה

.tranſibit non & ,dedit ſtatutū:ſeculum in perpetuū in ea fecit ſtare Et.ſunt creata &

6 וְנִבְרָאוּ׃ וַיַּעֲמִידֵם לָעַד לְעוֹלָם חָק־נָתַן וְלֹא יַעֲבוֹר׃

,grando & ,Ignis .voragines omnes & , dracones : terra de Dominum Laudate

7 הַלְלוּ אֶת־יְהוָה מִן־הָאָרֶץ תַּנִּינִים וְכָל־תְּהֹמוֹת׃ אֵשׁ וּבָרָד 8

: colles omnes & , Montes .ejus verbum faciens turbinis ventus : vapor & , nix

9 שֶׁלֶג וְקִיטוֹר רוּחַ סְעָרָה עֹשָׂה דְבָרוֹ׃ הֶהָרִים וְכָל־גְּבָעוֹת

.pennæ avis & , reptile : jumentum omne & , Beſtia .cedri omnes &,fructus lignum

10 עֵץ פְּרִי וְכָל־אֲרָזִים׃ הַחַיָּה וְכָל־בְּהֵמָה רֶמֶשׂ וְצִפּוֹר כָּנָף׃

Juvenes .terræ judices omnes & principes : populi omnes & , terræ Reges

11 מַלְכֵי־אֶרֶץ וְכָל־לְאֻמִּים שָׂרִים וְכָל־שֹׁפְטֵי אָרֶץ׃ בַּחוּרִים 12

quia,Domini nomen Laudent .junioribus cum ſenes : virgines etiam &

13 וְגַם־בְּתוּלוֹת זְקֵנִים עִם־נְעָרִים׃ יְהַלְלוּ אֶת־שֵׁם יְהוָה כִּי־

exaltavit Et .cœlum & terram ſuper ejus magnificentia:ſolius ejus nomen eſt exaltatum

14 נִשְׂגָּב שְׁמוֹ לְבַדּוֹ הוֹדוֹ עַל־אֶרֶץ וְשָׁמָיִם׃ וַיָּרֶם

, ei propinquo populo , Iſrael filiis ,ejus piis omnibus laus:ſuo populo cornu

קֶרֶן לְעַמּוֹ תְּהִלָּה לְכָל־חֲסִידָיו לִבְנֵי יִשְׂרָאֵל עַם־קְרֹבוֹ

.Jah--Hallelu

הַלְלוּ־יָהּ׃

PSAL. CXLIX. קמט

.piorum cætu in ejus laus : novum canticum Domino Cantate .Jah-Hallelu

1 הַלְלוּיָהּ שִׁירוּ לִיהוָה שִׁיר חָדָשׁ תְּהִלָּתוֹ בִּקְהַל חֲסִידִים׃

Laudent .ſuo rege in exultent Sijon filii :ſuo factore in Iſrael Lætetur

2 יִשְׂמַח יִשְׂרָאֵל בְּעֹשָׂיו בְּנֵי צִיּוֹן יָגִילוּ בְמַלְכָּם׃ יְהַלְלוּ 3

.ei canant cithara & ,tympano in : choro in ejus nomen

שְׁמוֹ בְמָחוֹל בְּתֹף וְכִנּוֹר יְזַמְּרוּ־לוֹ׃

תרגום TARGUM.

15 דמשדר מימריה לארעא עד סרהובא ירהוט
16 מלוליה : דיהב תלגא חור היך עמר גליד היך
17 קטם יבדר : מטלק קרחיה פליג היך רסוקין
דמן קדם קוריה מן אפשר ליה למקם :
18 ישדר קדום חמתיה וימסנון ינתב רוחיה
19 ולחין מיא : דתני דבריא דאוריתא ליעקב
20 קימוי ודינוי לישראל : לא עבד היכנא לכל
עמא ודינין לא הודענון הללויה :

קמח

1 הללויה שבחו ית יי בריתא קדישיא מן שמיא
2 שבחו יתיה כל חילו אנגלי מרומא : שבחו
יתיה כל מלאכיא די משמשין קדמוי שבחו
3 יתיה כל חלותיה : שבחו יתיה שמשא וסיהרא
4 שבחו יתיה כל כוכבי נהורא : שבחו יתיה
שמי שמיא ומיא דתלין במימרא מעלוי שמיא :
5 ישבחון ית שמא דיי ארום הוא פקד
6 ואתבריאו : והקימנון לעלמי עלמין גזרתא
7 יהב ולא יעבר : שבחו ית יי מן ארעא תניניא
8 וכל תהומיא : אשא וברדא תלגא וקטרא רוח
9 עלעולא עבדא פתגמיה : טוריא וכל גלמתא
10 אילן דעבד פרין וכל ארזין : חיתא וכל
11 בעירא ריחשא וצפר גדפא דפרח : מלכיא
דארעא וכל אומיא רברבניא וכל דיני ארעא :
12 עולימיא ולחוד בתולן סביא עם טליא :
13 ישבחון ית שמא דיי ארום תקיף שמיה
14 בלחודוי תושבחתיה על ארעא ושמיא : וזקף
איקר לעמיה שבחא לכל חסידוי לבני ישראל
עמא דקריבין ליה שבחו ית יי :

קמט

1 שבחו קדם יי שבח חדת תושבחתיה בקהלא
2 דחסידי : יחדון דבית ישראל בעובדיהון בני
3 ציון ירוצון במלכיהון : ישבחון שמיה בחנגין
בתופין וכנרין יזמרון ליה :

PARAPH. CHALD. Verſ. L

Qui mittit verbum ſuum in terram : fe
nanter curret ſermo ejus. Qui dat nivem a
bam ſicut lanam ; pruinam ſicut cinere
ſpargit. Projicit glaciem ſuam diviſam ta
quam buccellas : & ante faciem frigor
ejus quis poterit ſubſiſtere ? Mittet rigore
caliditatis ſuæ & liquefaciet eos : facie
dere ſpiritum ſuum, [&] fluent aquæ. Q
annunciat verba legis Jacob, pacta ſua
judicia ſua Iſrael. Non fecit ſimiliter om
populo, & judicia non docuit eos. Ha
lujah.

Hallelujah.

PSAL. CXLVIII.

LAudate Dominum creaturæ ſanctæ
cœlis, laudate eum *omnes exercitus an*
rum excelſi. Laudate eum omnes angeli e
qui miniſtratis coram eo, laudate e
omnes exercitus ejus. Laudate eum Sol
Luna, laudate eum omnes ſtellæ lumino
Laudate eum cœli cœlorum & aquæ, q
pendent a verbo[*ejus*]è ſupernis cœloru
Laudabunt nomen Domini, quoniam
mandavit & creata ſunt. Et firmavit ea
ſecula ſeculorum : decretum edidit, & n
præteribit. Laudate Dominum de terra, c
& omnes abyſſi. Ignis, & grando, nix
vapor, ſpiritúſque tempeſtatis exeque
verbum ejus. Montes & omnes colles, a
fructifera & univerſæ cedri. Feræ & om
beſtiæ, reptile & avis *alæ* volatilis. Re
terræ & omnes populi, principes & om
judices terræ. Adoleſcentes ſimul cum v
ginibus, ſenes cum junioribus. Laudab
nomen Domini, quoniam forte nomen
ſolius : laus ejus ſuper terram & cœlos.
extulit gloriam populo ſuo : laus om
piis ejus, filiis Iſrael populo qui appro
quant ei. laudate *Dominum.*

PSAL. CXLIX.

LAudate coram Domino hymno no
laus ejus in Eccleſia piorum. *Lætentur*
mines] *domus* Iſrael in factore ſuo:
Sion exultent in rege ſuo. Laudent no
ejus in choris, in tympanis, & c
pſallant ei.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 * ܡܫܕܪ ܡܠܬܗ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܒܥܓܠ ܪܗܛ ܦܬܓܡܗ: * ܝܗܒ ܬܠܓܐ ܐܝܟ ܥܡܪܐ. 16
ܘܥܪܦܠܐ ܐܝܟ ܩܛܡܐ ܡܒܕܪ: * ܪܡܐ ܓܠܝܕܐ ܐܝܟ ܦܬܐ. ܘܩܕܡ ܩܘܪܫܗ ܡܢܘ ܡܫܟܚ ܠܡܩܡ: 17
18 * ܡܫܕܪ ܡܠܬܗ ܘܡܦܫܪ ܠܗܘܢ. ܡܫܒ ܪܘܚܗ ܘܢܪܕܘܢ ܡܝܐ: * ܡܚܘܐ ܡܠܬܗ ܒܝܥܩܘܒ. 19
20 ܢܡܘܣܗ ܘܦܘܩܕܢܘܗܝ ܒܐܝܣܪܝܠ: * ܠܐ ܥܒܕ ܗܟܢܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܕܝܢܘܗܝ
ܠܐ ܚܘܝ ܐܢܘܢ. * ܡܙܡܘܪܐ [illegible] * ܠܚܓܝ ܘܙܟܪܝܐ. 1
ܡܫܠܡܢܘܬܐ ܥܠ ܐܠܗܘܬܐ ܕܐܝܟ ܕܥܠܝܐ ܢܫܒܚܘܢ ܐܦ ܬܚܬܝܐ ܠܡܪܝܐ ܡܫܒܚܐ ܡܪܝܐ ܕܚܝܠܘܬܐ
ܠܟܠܗܘܢ. ܦܣܘܩܐ ܠܐ. ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܫܡܝܐ. ܫܒܚܘܗܝ ܒܡܪܘܡܐ.
2 * ܫܒܚܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܡܠܐܟܘܗܝ. ܫܒܚܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܚܝܠܘܗܝ: * ܫܒܚܘܗܝ ܫܡܫܐ 3
4 ܘܣܗܪܐ. ܫܒܚܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܟܘܟܒܐ ܘܢܘܗܪܐ: * ܫܒܚܘܗܝ ܫܡܝܐ ܫܡܝܐ. ܘܡܝܐ ܕܠܥܠ ܡܢ
5 ܫܡܝܐ * ܢܫܒܚܘܢ ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ: ܡܛܠ ܕܗܘ ܐܡܪ ܘܗܘܘ. ܘܗܘ ܦܩܕ ܘܐܬܒܪܝܘ:
6 * ܐܩܝܡ ܐܢܘܢ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. ܢܡܘܣܐ ܝܗܒ ܘܠܐ ܥܒܪ: * ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. 7
8 ܬܢܝܢܐ ܘܟܠܗܘܢ ܬܗܘܡܐ: * ܢܘܪܐ ܘܒܪܕܐ ܘܬܠܓܐ ܘܓܠܝܕܐ. ܘܪܘܚܐ ܘܡܥܠܥܠܐ ܥܒܕܝ
9 ܡܠܬܗ: * ܛܘܪܐ ܘܟܠܗܘܢ ܪܡܬܐ. ܐܝܠܢܐ ܕܦܐܪܐ ܘܟܠܗܘܢ ܐܪܙܐ: * ܚܝܘܬܐ ܘܟܠܗ ܒܥܝܪܐ. 10
11 ܘܪܚܫܐ ܘܦܪܚܬܐ ܘܓܦܢܝܐ: * ܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ ܘܟܠܗܘܢ ܐܡܘܬܐ. ܪܘܪܒܢܐ ܘܟܠܗܘܢ ܕܝܢܐ ܕܐܪܥܐ:
12 * ܥܠܝܡܐ ܘܒܬܘܠܬܐ. ܣܒܐ ܥܡ ܛܠܝܐ: * ܢܫܒܚܘܢ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ: ܡܛܠ ܕܪܡ ܗܘ ܫܡܗ 13
14 ܒܠܚܘܕܘܗܝ. ܫܘܒܚܗ ܒܐܪܥܐ ܘܒܫܡܝܐ: * ܘܐܪܝܡ ܩܪܢܐ ܕܥܡܗ ܘܬܫܒܘܚܬܐ ܠܟܠܗܘܢ
ܙܕܝܩܘܗܝ. ܘܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܥܡܐ ܕܩܪܝܒ ܠܗ. * ܡܙܡܘܪܐ [illegible] *
1 * ܥܠ ܗܝܟܠܐ ܚܕܬܐ. ܘܡܙܡܘܪܐ ܗܘ ܠܐ ܡܫܡܠܝܐ: ܬܫܒܘܚܬܐ ܥܡ ܡܫܠܡܢܘܬܐ ܐܠܗܝܬܐ.
ܦܠܓ ܚܝ. ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ. ܬܫܒܘܚܬܗ ܒܥܕܬܐ
2 ܕܙܕܝܩܐ: * ܢܚܕܐ ܐܝܣܪܝܠ ܒܥܒܘܕܗ. ܘܒܢܝ ܨܗܝܘܢ ܢܪܘܙܘܢ ܒܡܠܟܗܘܢ: * ܘܢܫܒܚܘܢ 3
ܠܫܡܗ ܒܩܘܐܠܐ ܘܒܛܒܠܐ ܘܒܟܢܪܐ ܢܙܡܪܘܢ ܠܗ:

Mittit verbum ſuum ſuper terram, & ve
ter currit ſermo ejus: Dat nivem ſicut la
& caliginem ut cinerem ſpargit: Projic
ciem velut micas : & frigori ejus quis
reſiſtere ? Mittit verbum ſuum, & lique
ea: & excitat ventos qui fluere faciunt a
Manifeſtat verbum ſuum in Jacobo,
ſuum atque præcepta ſua in Iſraele. N
cit ſic omnibus populis, & judicia ſu
declaravit eis.

PSAL. CXLVIII.

Aggæi & Zechariæ. Sermo de D
quemadmodum ſuperi ſic laudent inf
minum glorioſum Dominum Sabaot
dai. Verſ. 31.

LAudate Dominum de cœlo, lauda
in excelſis. Laudate eum omnes
ejus, laudate eum omnes exercitus ejus
date eum ſol & luna, laudate eum om
læ & lumen : Laudate eum cœli cœ
& aquæ quæ ſuper cœlum ſunt, Lau
men Domini : quoniam ipſe dixit ac fa
ipſéque juſſit & creata ſunt. Stabiliv
ſeculum ſeculorum: legem tulit quæ n
teribit. Laudate Dominum de terra dra
& omnes abyſſi: Ignis & grando, & n
gelu, venti, ac turbines opus ver
Montes, & omnes colles, arbores fr
& omnes cedri : Animal, & univerſa p
reptilia, & volucre, atque volatile
terræ, cunctæque gentes, magnates
omnes judices terræ : Adoleſcentes, &
nes, ſenes ac juvenes. Laudent nom
mini : quia magnum eſt nomen ej
& gloria ejus in terra & in cœlo. At
nu populi ſui, & laudem omnibus j
& filiis Iſrael populo ſibi conjuncto.

PSAL. CXLIX.

De templo novo. Et pſalmus
mus eſt. Laudatio cum Theolog

CAnite Domino laudem novam
in cœtu juſtorum. Gaudeat Iſ
ctore ſuo, & filii Sion exhilarent
rege : Laudéntque nomen ejus ty
ſiſtris, & lyris pſallant ei :

Verſio VULG. LAT.

15 Qui emittit eloquium ſuum terræ: ve-
locitèr currit ſermo ejus. 16 Qui dat ni-
vem ſicut lanam: nebulam ſicut cine-
17 rem ſpargit. Mittit cryſtallum ſuam
ſicut buccellas: ante faciem frigoris
18 ejus quis ſuſtinebit? Emittet verbum
ſuum, & liquefaciet ea: flabit ſpiritus
19 ejus, & fluent aquæ. Qui annuntiat
verbum ſuum Jacob: juſtitias & ju-
20 dicia ſua Iſrael. Non fecit taliter omni
nationi: & judicia ſua non manifeſta-
vit eis. Alleluja.

Alleluja. CXLVIII.

1 Laudate Dominum de cœlis: lau-
date eum in excelſis. Laudate eum
2 omnes angeli ejus: laudate eum omnes
3 virtutes ejus. Laudate eum Sol & Lu-
na: laudate eum omnes ſtellæ, & lu-
4 men. Laudate eum cœli cœlorum: &
aquæ omnes, quæ ſuper cœlos ſunt,
5 Laudent nomen Domini. Quia ipſe
dixit, & facta ſunt: ipſe mandavit, &
6 creata ſunt. Statuit ea in æternum, &
in ſeculum ſeculi: præceptum poſuit,
7 & non præteribit. Laudate Domi-
num de terra, dracones, & omnes a-
8 byſſi. Ignis, grando, nix, glacies, ſpi-
ritus procellarum: quæ faciunt ver-
9 bum ejus: Montes, & omnes colles:
10 ligna fructifera, & omnes cedri. Be-
ſtiæ, & univerſa pecora: ſerpentes, &
11 volucres pennatæ: Reges terræ, &
omnes populi: principes, & omnes
12 judices terræ. Juvenes, & virgines:
ſenes cum junioribus laudent nomen
13 Domini: Quia exaltatum eſt nomen
14 ejus ſolius. Confeſſio ejus ſuper cœ-
lum & terram: & exaltavit cornu po-
puli ſui. Hymnus omnibus Sanctis e-
jus: filiis Iſrael, populo appropin-
quanti ſibi. Alleluja.

1 Alleluja. CXLIX.

Cantate Domino canticum novum:
2 laus ejus in eccleſia Sanctorũ. Læ-
tetur Iſrael in eo, qui fecit eum: & fi-
3 lii Sion exultent in rege ſuo. Laudent
nomen ejus in choro: in tympano &
pſalterio pſallant ei:

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

15 † Ὁ ἀποστέλλων τὸ λόγιον αὐτοῦ τῇ γῇ, † ἕως τά-
16 χους δραμεῖται ὁ λόγος αὐτοῦ· † Τοῦ διδόντος χιό-
να ὡσεὶ ἔριον, † ὁμίχλην ὡσεὶ σποδὸν πάσσοντος·
17 † Βάλλοντος κρύσταλλον αὐτοῦ ὡσεὶ ψωμούς. † κατὰ
18 πρόσωπον ψύχους αὐτοῦ τίς ὑποστήσεται; † Ἀποστε-
λεῖ τὸν λόγον αὐτοῦ, καὶ τήξει αὐτά, † πνεύσει τὸ
19 πνεῦμα αὐτοῦ, καὶ ῥυήσεται ὕδατα. † Ἀπαγγέλλων
τὸν λόγον αὐτοῦ τῷ Ἰακώβ, † δικαιώματα καὶ κρί-
20 ματα αὐτοῦ τῷ Ἰσραήλ. † Οὐκ ἐποίησεν οὕτως
παντὶ ἔθνει, † καὶ τὰ κρίματα αὐτοῦ οὐκ ἐδήλωσεν
αὐτοῖς.

Ἀλληλούϊα. Ἀγγαίου καὶ Ζαχαρίου. ρμή.

1 † Αἰνεῖτε τὸν κύριον ἐκ τῶν οὐρανῶν, † αἰνεῖτε αὐ-
τὸν ἐν τοῖς ὑψίστοις. † Αἰνεῖτε αὐτὸν πάν-
2 τες οἱ ἄγγελοι αὐτοῦ, † αἰνεῖτε αὐτὸν πᾶσαι αἱ
3 δυνάμεις αὐτοῦ. † Αἰνεῖτε αὐτὸν ἥλιος καὶ σελήνη,
4 † αἰνεῖτε αὐτὸν πάντα τὰ ἄστρα καὶ τὸ φῶς. † Αἰ-
νεῖτε αὐτὸν οἱ οὐρανοὶ τῶν οὐρανῶν, † καὶ τὸ ὕδωρ τὸ
5 ὑπεράνω τῶν οὐρανῶν, † Αἰνεσάτωσαν τὸ ὄνομα κυρίου·
† ὅτι αὐτὸς εἶπε καὶ ἐγενήθησαν, † αὐτὸς ἐνετείλα-
6 το καὶ ἐκτίσθησαν. † Ἔστησεν αὐτὰ εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ
εἰς τὸν αἰῶνα τοῦ αἰῶνος, † πρόσταγμα ἔθετο, καὶ οὐ
7 παρελεύσεται. † Αἰνεῖτε τὸν κύριον ἐκ τῆς γῆς, † δρά-
8 κοντες καὶ πᾶσαι ἄβυσσοι. † Πῦρ, χάλαζα, χιών,
κρύσταλλος, πνεῦμα καταιγίδος, † τὰ ποιοῦντα
9 τὸν λόγον αὐτοῦ. † Τὰ ὄρη καὶ πάντες (α) βουνοί, † ξύ-
10 λα καρποφόρα καὶ πᾶσαι κέδροι· † Τὰ θηρία καὶ
πάντα τὰ κτήνη, † ἑρπετὰ καὶ πετεινὰ πτερωτά.
11 † Βασιλεῖς τῆς γῆς καὶ πάντες λαοί, † ἄρχοντες καὶ
12 πάντες κριταὶ γῆς· † Νεανίσκοι καὶ παρθένοι,
† πρεσβύται μετὰ νεωτέρων † αἰνεσάτωσαν τὸ ὄνο-
13 μα κυρίου, † Ὅτι ὑψώθη τὸ ὄνομα αὐτοῦ μόνου. † Ἡ
14 ἐξομολόγησις αὐτοῦ ἐπὶ γῆς καὶ οὐρανοῦ, † καὶ ὑψώσει
κέρας λαοῦ αὐτοῦ. † ὕμνος πᾶσι τοῖς ὁσίοις αὐτοῦ,
† τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ, λαῷ ἐγγίζοντι αὐτῷ.

MS.A. (α) οἱ βουνοί,

1 Ἀλληλούϊα. ρμθ'.

† Ἄσατε τῷ κυρίῳ ᾆσμα καινόν· † ἡ αἴνεσις
2 αὐτοῦ ἐν ἐκκλησίᾳ ὁσίων. † Εὐφρανθήτω
Ἰσραὴλ ἐπὶ τῷ ποιήσαντι αὐτόν, † καὶ υἱοὶ Σιὼν
3 ἀγαλλιάσθωσαν ἐπὶ τῷ βασιλεῖ αὐτῶν. † Αἰνεσά-
τωσαν τὸ ὄνομα αὐτοῦ ἐν χορῷ, † ἐν τυμπάνῳ καὶ
ψαλτηρίῳ ψαλάτωσαν αὐτῷ.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

4 Qui emittit eloquium ſuũ terræ: 15
(c) uſque in velocitate currit verbũ
ejus. 5 Qui dat nivẽ ſicut lanam: (d) 16
nebulã, ſicut cinerem ſpargit. 6 Qui 17
mittit cryſtallum ſuam, ſicut (e) bucellas: ante faciem frigoris ejus quis
(f) ſubſiſtet? 7 Emittet (g) verbum 18
ſuum & liquefaciet ea: ſpirabit ſpiritus ejus, & fluent aquæ. 8 Qui 19
annuntiat verbum ſuum Jacob: (h)
juſtificationes, et judicia ſua Iſrael.
9 Non fecit (i) ſic [c] omni nationi: 20
& judicia ſua non manifeſtavit eis.

Alleluja. Aggæi & Zachariæ. 1
CXLVIII.

1 Laudate Dominum de cœlis: laudate eum in excelſis. 2 Laudate 2
eum omnes angeli ejus: laudate eum
(a) omnes virtutes ejus. 3 Laudate 3
eum Sol & Luna: laudate eum (b)
omnes ſtellæ, & lumen. 4 Laudate e- 4
um cœli cœlorum, & (c) aqua, quæ
ſuper cœlos. Laudent nomen Domini, 5
5 Quoniam ipſe dixit, et facta ſunt:
ipſe mandavit, & creata ſunt.
6 (d) Statuit ea in ſeculum, & in 6
ſeculum ſeculi: præceptum poſuit, et
non [†] præteribit. 7 Laudate Dñm 7
de terra, dracones, & omnes abyſſi.
8 Ignis, [a] grando, nix, glacies, ſpi- 8
ritus (e) tempeſtatis, facientia verbũ
ejus: 9 Montes, et omnes colles: ligna 9
fructifera, & omnes cedri: 10 Beſtiæ, 10
& omnia pecora: reptilia, & [b] volatilia pennata: 11 Reges terræ, & 11
(f) omnes populi: principes, & omnes
judices terræ. 12 (g) Juvenes, et vir- 12
gines: ſenes cum junioribus laudent
nomen Domini: (h) Quia exaltatum 13
eſt nomen ejus ſolius. 13 (i) [c] Con- 14
feſſio ejus ſuper cœlum, & terram:
& (k) exaltabit cornu populi ſui.
14 (l) Hymnus omnibus Sanctis ejus:
filiis Iſrael, populo appropinquanti
(m) ſibi.

Alleluja. *CXLIX.* 1

1 Cantate Domino canticũ novũ: laus ejus in eccleſia Sanctorum. 2 Lætetur Iſrael in eo qui 2
fecit eum: & (a) filii Sion exultent
in rege ſuo. 3 Laudent nomen ejus [a] 3
in choro: in tympano & pſalterio
pſallant ei.

Verſio ÆTHIOPICA.

ዘይፌኑ፡ቃሎ፡ለምድር፡፡ ወፍጡነ፡ ይረው 4
ጽ፡ ነቢቡ፡፡፨ ዘይሁብ፡ በረደ፡ ከመ፡ፀም 5
ር፡፡ወይዘርው፡ ለጊሜ፡ ከመ፡ ሐመድ፡፡፨
ወያወርድ፡በረደ፡ከመ፡ፍተታት፡፡ወመኑ፡ይት 6
ቃወም፡ለቍረ፡፡፨ይፌኑ፡ቃሎ፡ወይመስዎ፡፡ 7
ይነፍሕ፡ መንፈሱ፡ ወይውኅዝ፡ማያተ፡፡፨
ዘነገሮ፡ ቃሎ፡ ለያዕቆብ፡፡ፍትሐ፡ ወኵነኔ 8
ሁ፡ለእስራኤል፡፡፨ ወኢገብረ፡ ከማሁ፡ለ 9
ባዕድ፡ አሕዛብ፡፡ወኢነገሮሙ፡ ፍትሐ፡፡፨

ሃሌሉያ፡ዘሐጌ፡ወዘዘካርያስ፡፡

፻፵፰ ሰብሕዎ፡ለእግዚአብሔር፡ እምሰማ 1
ያት፡፡ይሴብሕዎ፡በአርያም፡፡፨ ይሴብሕ 2
ዎ፡ ኵሎሙ፡ መላእክቲሁ፡፡ይሴብሕዎ፡ኵ
ሎሙ፡ ኃይሉ፡፡፨ ይሴብሕዎ፡ ፀሐይ፡ ወወር 3
ኅ፡፡ይሴብሕዎ፡ ኵሉ፡ከዋክብት፡ ወብርሃ
ን፡፡፨ ይሴብሕዎ፡ ሰማያተ፡፡ሰማያት፡፡ወ 4
ማይኒ፡ዘመልዕልተ፡ሰማያት፡፡ይሴብሑ፡ ለስ
ሙ፡እግዚአብሔር፡፡፨እስመ፡ውእቱ፡ይቤ፡ 5
ወኮኑ፡ወውእቱ፡አዘዘ፡ወተፈጥሩ፡፡፨ ወአ 6
ቀሞሙ፡ለዓለም፡ ወለዓለመ፡ ዓለም፡፡ትእዛ
ዘ፡ወሀቦሙ፡ ወኢኃለፈ፡፡፨ ሰብሕዎ፡ለእ 7
ግዚአብሔር፡ እምድር፡፡አክይስትኒ፡ ወኵ
ሉ፡ ቀላያት፡፡፨ እሳት፡ ወበረድ፡ አስሐት 8
ያ፡ ወሐመደ፡ መንፈሰ፡ ዓውሎ፡፡ዘይገብር፡
ነቢቦ፡፡፨ አድባርኒ፡ ወኵሉ፡ አውግር፡፡ 9
ዕፀውኒ፡ዘይፈሪ፡ ወኵሉ፡ አርዝ፡፨ አራ 10
ዊትኒ፡ ወኵሉ፡ እንስሳ፡፡ዘይትሐወስኒ፡ አዕ
ዋፍ፡ ዘይሠርር፡፡፨ ነገሥተ፡ ምድርኒ፡ 11
ወኵሉ፡ አሕዛብ፡፡መላእክትኒ፡ ወኵሉ፡መ
ኳንንተ፡ ምድር፡፡፨ ወራዙትኒ፡ ወደናግ 12
ል፡፡ሊቃናትኒ፡ ወመሐዛት፡፡ ይሴብሑ፡ ለስ
ሙ፡ እግዚአብሔር፡፡እስመ፡ተለዐለ፡ ስሙ፡
ለባሕቲቱ፡፡፨ ይገንዩ፡ሎቱ፡ በሰማይ፡ ወበ 13
ምድር፡፡ ወያሌዕል፡ቀርነ፡ሕዝቡ፡፡፨ ወ 14
ስብሐተ፡ ኵሉ፡ጻድቃኑ፡፡ለደቂቀ፡ እስራኤ
ል፡ሕዝብ፡ዘቅሩብ፡ሎቱ፡፡፨

ሃሌሉያ፡፡

፻፵፱ ሰብሕዎ፡ለእግዚአብሔር፡ ስብሐተ፡ 1
ሐዲስ፡፡ስብሐቲሁ፡በማኅበረ፡ጻድቃኑ፡፡፨
ይትፌሣሕ፡ እስራኤል፡ በፈጣሪሁ፡፡ ወደቂ 2
ቀ፡ጽዮን፡ ይትሐሠዩ፡በንጉሦሙ፡፡፨ ወይ 3
ሴብሑ፡ ለስሙ፡ በትፍሥሕት፡፡በከበሮ፡ወ
በመዝሙር፡ይዜምሩ፡ሎቱ፡፡፨

INTERP. ÆTHIOP. [c] aliis nationibus: *PSAL. CXLVIII.* [ ] præteribunt [a] grando, pruina, & cinis, ſpiritus [b] volucres quæ volant: [c] Confitebuntur ei in cœlo, & in terra: *PSAL. CXLIX.* [a] in lætitias in tympano

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

15 16 المرسل كلمته الي الارض كلمته جارية بسرعة * المعطي الثلج كالصوف * الساكب الضباب
17 18 كالدخان * والملقي الجليد كلباب الخبز * من يطيق القيام امام برده * يرسل كلمته فيذيبه *
19 20 تهب ريحه فتسيل المياه * الذي قال كلمته ليعقوب * وحقوقه واحكامه في آل اسرائيل * لم
يصنع هكذا مع كل الشعوب * ولم يظهر لهم احكامه * اللليلويا *

1 * المزمور المائة والثامن والاربعون * علي ما تقدم * وهو كط * استيخن *

2 سبحوا الرب من السموات * سبحوه من الاعالي * سبحوه يا جميع ملائكته * سبحوه يا جميع قواته *
3 4 سبحاه ايها الشمس والقمر * سبحيه يا جميع الكواكب والنور * سبحيه يا سموات السموات *
5 وايتها المياه الاخر التي فوق السموات * فليسبح الجميع اسم الرب * لانه قال فكانت وهو امر
6 7 فخلقت * اقامها الي الابد والدهر والي ابد الابد * وضع امرا فلم يتجاوز * سبحوا الرب من
8 في الارض * ايها التنانين وجميع الاعماق * والنار والبرد والثلج والجليد * والريح العاصف
9 10 الصانعات بكلمته * والجبال العالية وجميع الاكام * والشجر المثمر وجميع الارز * والوحوش
11 وجميع الدواب والهوام * والطيور المجنحة * وملوك الارض وجميع الشعوب * الرؤساء وجميع
12 13 حكام الارض * الشابات والعذاري * والشيوخ والشبان * فليسبح الجميع اسم الرب لانه قد
14 علا اسمه وحده * ومجده علي الارض وعلي السماء * ويرفع قرن شعبه * ومجد جميع ابراره بنو
اسرائيل الشعب القريب اليه * اللليلويا *

1 * المزمور المائة والتاسع والاربعون * اللليلويا * وهو ح * استيخن *

2 سبحوا الرب تسبيحا جديدا * لان تسبيحه في كنائس القديسين * فليفرح اسرائيل بخالقه *
3 وليبتهج بنو صهيون بملكهم * وليسبحوا اسمه القدوس في الصفوف * وليرتلوا له بالدف والمزمار *

Qui mittit verbum ſuum in terram, ver- 15
bum ejus currens eſt cum celeritate. Qui 16
dat nivem ſicut lanam, effundit nebulam
ſicut fumum. Quique projicit glaciem ut 17
ſimilam tritici: quis poſſit conſiſtere ante
grandinem ejus? Mittit verbum ſuum, 18
& liquefacit eam: flat ventus ejus, &
fluunt aquæ. Qui dixit verbum ſuum 19
Jacobo, & ſtatuta atque judicia ſua in
progenie Iſraelis. Non egit ita cum omni- 20
bus populis, neque manifeſtavit eis judi-
cia ſua. Alleluja.

PSAL. CXLVIII.

De eo quod præceſſit, Ver. 29. 1

Laudate Dominum de cœlis, laudate
eum de excelſis. Laudate eum, O 2
omnes angeli ejus: laudate eum, O omnes
virtutes ejus. Laudate eum, O ſol et lu- 3
na: laudate eum, O omnes ſtellæ & lu-
men. Laudate eum, O cœli cœlorum, & 4
O aquæ aliæ quæ ſuper cœlos. Laudent 5
omnia nomen Domini: quoniam ipſe di-
xit, & fuerunt: ipſéque mandavit, &
creata ſunt. Statuit ea in æternum et ſe- 6
culum, & in æternitatem perpetuam: po-
ſuit præceptum quod non eſt prætergreſ-
ſus. Laudate Dominum qui eſtis in ter- 7
ra, O dracones & omnes abyſſi: Et ignis, 8
& grando, & nix, & glacies, & ven-
tus procelloſus, executores verbi ejus.
Etiam montes ſublimes, & omnes colles, 9
& arbores frugiferæ, omnéſque cedri. Et 10
beſtiæ, atque omnia reptilia, & inſecta,
& volucres alatæ. Et reges terræ, & o- 11
mnes populi, principes, & omnes judices
terræ. Juvenculæ & virgines, & ſenes 12
ac juvenes. Laudent cuncta nomen Domi- 13
ni, quia exaltatum eſt nomen ejus ſolius:
& gloria ejus ſuper terram, & ſuper cœ-
lum. Et exaltabit cornu populi ſui: & 14
gloria omnium juſtorum ejus, ſunt filii
Iſraelis populi propinqui illi. Alleluja.

PSAL. CXLIX.

Alleluja. Verſ. 8. 8

Laudate Dominum laudatione novâ,
nam laus ejus in eccleſiis ſanctorum.
Lætetur Iſrael in creatore ſuo, et exultent 2
filii Sion in rege ſuo. Et laudent nomen 3
ejus ſanctum in ordinibus, & pſallant ei
cum tympano & pſalterio.

תהלים : קנ

.ſalute in humiles glorificabit : ſuo populo in Dominus complacebit Quia
כִּי־רוֹצֶה יְהוָה בְּעַמּוֹ יְפָאֵר עֲנָוִים בִּישׁוּעָה : 4
.ſuis cubilibus *ſuper* *præconizabunt* : gloria in miſericordes Exultabunt
יַעְלְזוּ חֲסִידִים בְּכָבוֹד יְרַנְּנוּ עַל־מִשְׁכְּבוֹתָם : 5
faciendum Ad .eorum *manu* in *acierum* gladius & : eorum gutture in Dei Exaltationes
רוֹמְמוֹת אֵל בִּגְרוֹנָם וְחֶרֶב פִּיפִיּוֹת בְּיָדָם : לַעֲשׂוֹת 6 7
eorum reges alligandum Ad .populis in increpationes : gentibus in vindictam
נְקָמָה בַּגּוֹיִם תּוֹכֵחוֹת בַּלְאֻמִּים : לֶאְסֹר מַלְכֵיהֶם 8
judicium eis in faciendum Ad .*ferri compedibus* in eorum *inclytos* & : compedibus in
בְּזִקִּים וְנִכְבְּדֵיהֶם בְּכַבְלֵי בַרְזֶל : לַעֲשׂוֹת בָּהֶם מִשְׁפָּט 9
.Jah-Hallelu , ſuis *piis* omnibus hic decor : ſcriptum
כָּתוּב הָדָר הוּא לְכָל־חֲסִידָיו הַלְלוּ־יָהּ :

PSAL. CL. קנ

.ejꝰ fortitudinis *expanſione* in eũ laudate:ejꝰ ſanctitate in Deum Laudate .Jah-Hallelu
הַלְלוּיָהּ הַלְלוּ־אֵל בְּקָדְשׁוֹ הַלְלוּהוּ בִּרְקִיעַ עֻזּוֹ : 1
multitudinem ſecundùm eum laudate : ejus fortitudinibus in eum Laudate
הַלְלוּהוּ בִגְבוּרֹתָיו הַלְלוּהוּ כְּרֹב 2
, nebel in eum laudate : buccinæ clangore in eum Laudate .ejus magnitudinis
גָּדְלוֹ : הַלְלוּהוּ בְּתֵקַע שׁוֹפָר הַלְלוּהוּ בְּנֵבֶל 3
.organo & ,chordis in eum laudate : choro & ,tympano in eum Laudate .cithara &
וְכִנּוֹר : הַלְלוּהוּ בְתֹף וּמָחוֹל הַלְלוּהוּ בְּמִנִּים וְעוּגָב : 4
Omnis .*ovationis* cymbalis in eum laudate : *auditus* cymbalis in eum Laudate
הַלְלוּהוּ בְצִלְצְלֵי־שָׁמַע הַלְלוּהוּ בְּצִלְצְלֵי תְרוּעָה : כֹּל 5 6
.Jah-Hallelu ,*Jah laudabit halitus*
הַנְּשָׁמָה תְּהַלֵּל יָהּ הַלְלוּיָהּ :

תרגום TARGUM.

ארום רעותא דיי בעמיה ישבחו ענותניא 4
בפורקנא : יבועון חסידי ביקרא ירננון 5
על דמכיהון : תושבחן דאלהא בעונקיהון 6
והיך סיפא דיוסטרא באידיהון : למעבד 7
נקמתא בעממיא מכסנותא באומיא : למיסר 8
מלכיהון בשירין ויקיריהון בכבלי דפרזלא :
למעבד בהון דין דכתיב באוריתא שבהורא 9
הוא לכל חסידוי הללויה :

קנ

הללויה שבחו אלהא בבית מקדשיה שבחו 1
יתיה ברקיעא דעושניה : שבחו יתיה 2
בגבורתיה שבחו יתיה היך סוגעי רבותיה :
שבחו יתיה בתקיעותא דשופרא שבחו 3
יתיה בנבלין וכנרין : שבחו יתיה בתופין 4
ובחנגין שבחו יתיה בחלילין ואבובין : שבחו 5
יתיה בצלצלין דשמעין בלחודיהון שבחו
יתיה בצלצלין דמשמעין ביבבא : כל נשמתא 6
תשבח יה הללויה :

PARAPH. CHALD. Verſ. La

Quoniam voluntas Domini in populo ej *laudabunt* humiles in redemptione. Exu bunt miſericordes in gloria, jubilabunt cubilibus ſuis. Laudes Dei in gutture eo rum; & tanquam gladii ancipites in ma bus eorum. Ad faciendam vindictam nationes; correptionem in populos. A alligandos reges eorum catenis, & nob les eorum compedibus ferreis. Ad perage dum in eos judicium quod ſcriptum eſt Lege: gloria ipſe eſt omnibus piis eju *Hallelujah.*

Hallelujah.

PSAL. CL.

LAudate Deum in domo ſanctuarii ej laudate eum in firmamento fortitud ipſius. Laudate eum in potentia ipſius, la date eum ſecundùm multitudinem mag centiæ ejus. Laudate eum clangore bucci laudate eum pſalteriis & citharis. Lau eum tympanis & choris: laudate eum & organis. Laudate eum cymbalis tantu modo ipſum reſonantibus: laudate eu cymbalis *reſonantibus cum jubilatione.* Me omnis laudet Dominum. *Hallelujah.*

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

4 * ܡܛܠ ܕܨܒܐ ܡܪܝܐ ܒܥܡܗ. ܘܝܗܒ ܠܡܣܟܢܐ ܦܘܪܩܢܐ : * ܢܬܬܥܫܢܘܢ ܙܕܝܩܐ ܒܐܝܩܪܐ.
5 ܘܢܫܒܚܘܢܝܗܝ ܥܠ ܡܫܟܒܝܗܘܢ : * ܘܢܪܘܡܘܢܝܗܝ ܠܐܠܗܐ ܒܓܓܪܬܗܘܢ. ܣܝܦܐ ܕܬܪܝܢ
6 ܦܘܡܝܗܘܢ ܒܐܝܕܝܗܘܢ : * ܠܡܥܒܕ ܦܘܪܥܢܐ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܘܡܟܣܢܘܬܐ ܡܢ ܐܘܡܘܬܐ :
7 * ܠܡܐܣܪ ܡܠܟܝܗܘܢ ܒܩܘܠܪܐ. ܘܡܝܩܪܝܗܘܢ ܒܫܝܫܠܬܐ ܕܦܪܙܠܐ : * ܠܡܥܒܕ ܒܗܘܢ
8 9 ܕܝܢܐ ܕܟܬܝܒ. ܘܫܘܒܚܐ ܠܟܠܗܘܢ ܙܕܝܩܘܗܝ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܢ *

1 * ܠܐ ܡܬܝܕܥ. ܡܦܝܣܢܘܬܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ ܓܘܢܝܬܐ ܕܐܝܠܝܢ ܕܒܪܘܚܐ
ܐܬܟܬܒ ܘܐܬܚܬܡܝ. ܦܬܓܡܐ ܝܐ.

2 ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܒܩܘܕܫܗ. ܫܒܚܘܗܝ ܒܪܩܝܥܐ ܕܥܘܫܢܗ : * ܫܒܚܘܗܝ ܒܚܝܠܬܢܘܬܗ.
3 ܫܒܚܘܗܝ ܒܣܘܓܐܐ ܕܪܒܘܬܗ : * ܫܒܚܘܗܝ ܒܩܠܐ ܕܩܪܢܐ. ܫܒܚܘܗܝ ܒܩܝܬܪܐ
4 5 ܘܒܟܢܪܐ : * ܫܒܚܘܗܝ ܒܬܦܐ ܘܒܨܢܬܪܐ. ܫܒܚܘܗܝ ܒܩܝܬܪܐ ܒܣܝܡܐ : * ܫܒܚܘܗܝ ܒܨܨܠܐ
6 ܫܡܝܥܐ. ܫܒܚܘܗܝ ܒܩܠܐ ܘܒܩܥܬܐ : * ܟܠ ܢܫܡܐ ܢܫܒܚ ܠܡܪܝܐ.

ܫܠܡܘ ܡܙܡܘܪܐ ܡܐܐ ܘܚܡܫܝܢ : ܣܦܪܐ ܕܝܢ ܚܡܫܐ. ܡܥܠܬܐ ܚܡܫܬܥܣܪ. ܫܘܒܚܐ
ܫܬܝܢ : ܦܬܓܡܐ ܕܝܢ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ ܘܬܡܢܡܐܐ ܘܬܠܬܝܢ ܘܬܪܝܢ. ܐܝܬ ܐܢܫܐ ܕܐܘܣܦܘ ܬܪܥܣܪ
ܐܚܪܢܝܢ : ܚܢܢ ܠܐ ܣܢܝܩܝܢ ܠܗܘܢ. ܘܠܐܠܗܐ ܫܘܒܚܐ ܠܥܠܡܝܢ.

* ܡܙܡܘܪܐ ܕܩܢܐ *

ܡܙܡܘܪܐ ܗܢܐ ܕܝܠܢܝܐ ܠܕܘܝܕ : ܠܒܪ ܡܢ ܡܢܝܢܐ ܕܐܝܬܘܗܝ. ܘܠܐ ܒܟܠܗܘܢ ܨܚܚܐ
ܡܫܬܟܚ : ܟܕ ܒܠܚܘܕܘܗܝ ܐܬܟܬܫ ܥܡ ܓܘܠܝܕ. ܦܬܓܡܐ ܝܕ.

1 2 * ܙܥܘܪܐ ܗܘܝܬ ܒܝܬ ܐܚܝ. ܘܛܠܝܐ ܒܒܝܬܗ ܕܐܒܝ : ܪܥܐ ܗܘܝܬ ܥܢܐ ܕܐܒܝ. * ܐܝܕܝ
3 ܥܒܕܝ ܐܪܓܢܐ : ܘܨܒܥܬܝ ܬܩܢ ܟܢܪܐ. * ܘܡܢܘ ܢܚܘܐ ܠܡܪܝ : ܗܘ ܡܪܝܐ ܘܗܘ
4 ܐܠܗܐ ܕܝܠܝ. * ܗܘ ܫܠܚ ܠܡܠܐܟܗ : ܘܕܒܪܢܝ ܡܢ ܒܬܪ ܥܢܐ ܕܐܒܝ. ܘܡܫܚܢܝ ܒܡܫܚܐ
5 6 ܕܡܫܝܚܘܬܗ : * ܐܚܝ ܫܦܝܪܐ ܘܪܘܪܒܐ. ܘܠܐ ܐܨܛܒܝ ܒܗܘܢ ܡܪܝܐ : * ܢܦܩܬ ܠܐܘܪܥܗ
7 ܕܦܠܫܬܝܐ. ܘܠܛܢܝ ܒܦܬܟܪܘܗܝ : * ܐܢܐ ܕܝܢ ܫܠܦܬ ܣܝܦܗ ܘܦܣܩܬ ܪܫܗ.
ܘܐܪܝܡܬ ܚܣܕܐ ܡܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ.

Quoniam oblectatur Dominus populo prӕſtatque pauperibus ſalutem. Confor tur juſti cum decore, & laudent eum ſu lectos ſuos, Extollántque Deum ſuis gu bus. Gladius duarum acierum in ma eorum, Ad ulciſcendam retributionem a tibus & correptionem à populis: Ad vin dos reges eorum compedibus, & nobili eorum catenis ferri: Ad faciendum eis ju cium quod ſcriptum eſt, & gloriam om juſtis ejus.

PSAL. CL.

Anonymus. Hortatio ad laudem gener eorum quӕ per Spiritum ſcripta ſunt signata. Verſ. 11.

LAudate Dominum in ſanctitate ejus date eum in firmamento roboris Laudate eum in fortitudine ipſius: la eum in abundantia magnitudinis ejus. La te eum voce cornu: laudate eum cith lyris. Laudate eum tympanis & ſiſtris date eum chordis jucundis. Laudate cymbalis ſonoris: laudate eum voce & more. Omnis aura laudet Dominum.

Completi ſunt Pſalmi Centum qu ginta, Libri verò quinque, Gradus cim, Laudes ſexaginta, Verſus autem qu millia octingenti triginta duo. Sun nulli qui addiderunt duodecim alios; egemus illis. Et Deo laus in perpetuum

PSAL. CLI.

Pſalmus iſte peculiaris Davidi, ex merum eſt; nec in omnibus exemplari venitur. Quando ſolus certavit cum tunc dixit eum. Verſ. 14.

PArvus eram inter fratres meos, & p domo patris mei, paſcebam oves mei. Manus meӕ aptârunt organum mei compegerunt lyram; Et quis an Domino meo? Ipſe Dñs, & ipſe Deus Ipſemet miſit Angelum ſuum, & e de ovibus patris mei, unxitq; me ole onis ſuӕ. Fratres mei pulchri & gra *tamen* non eſt oblectatꝰ eis Dominus. fus ſum in occurſum Philiſthӕi, male mihi per ſimulacra ſua. Ego autem, to ipſius enſe, amputavi caput ejus, & probrum è filiis Iſrael.

Verſio VULG. LAT.

4 Quia beneplacitum eſt Domino in populo ſuo: & exaltabit manſuetos in ſalutem.
5 Exultabunt Sancti in gloria: lætabuntur in cubilibus ſuis.
6 Exaltationes Dei in gutture eorum: & gladii ancipites in
7 manibus eorum: Ad faciendam vindictam in nationibus, in-
8 crepationes in populis. Ad alligandos reges eorũ in compedibus: & nobiles eorum in
9 manicis ferreis. Ut faciant in eis judiciũ conſcriptum: gloria hæc eſt omnibus Sanctis ejus. Alleluja.

Alleluja. CL.

1 Laudate Dominũ in Sanctis ejus: laudate eum in
2 firmamento virtutis ejus. Laudate eũ in virtutib⁹ ej⁹: laudate eum ſecundùm multitu-
3 dinẽ magnitudinis ejus. Laudate eum in ſono tubæ: laudate eum in pſalterio, & ci-
4 thara. Laudate eum in tympano, & choro: laudate eum in
5 chordis, & organo. Laudate eum in cymbalis beneſonantibus: laudate eum in cymba-
6 balis jubilationis: Omnis ſpiritus laudet Dominum. Alleluja.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

4 †Ὅτι εὐδοκεῖ κύριος ἐν λαῷ αὐτοῦ, † καὶ ὑψώσει
5 πραεῖς ἐν σωτηρίᾳ. † Καυχήσονται ὅσιοι ἐν δόξῃ,
6 † καὶ ἀγαλλιάσονται ἐπὶ τῶν κοιτῶν αὐτῶν. † Αἱ ὑψώσεις
τοῦ θεοῦ (α) ἐν λάρυγγι αὐτῶν, † καὶ ῥομφαῖαι δίστομοι
7 ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν. † Τοῦ ποιῆσαι ἐκδίκησιν ἐν
8 τοῖς ἔθνεσιν, † ἐλεγμοὺς ἐν τοῖς λαοῖς. † Τοῦ δῆσαι τοὺς βασιλεῖς αὐτῶν ἐν πέδαις, † καὶ τοὺς ἐνδό-
9 ξους αὐτῶν ἐν χειροπέδαις σιδηραῖς. † Τοῦ ποιῆσαι ἐν αὐτοῖς κρίμα ἔγγραπτον. † δόξα αὕτη ἐστὶν πᾶσι τοῖς ὁσίοις αὐτοῦ. MS.A. (α) ἐν τῷ

Ἀλληλούϊα. ρν'.

1 † Αἰνεῖτε τὸν θεὸν ἐν τοῖς ἁγίοις αὐτοῦ, † αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν στερεώματι δυνάμεως αὐτοῦ. † Αἰ-
2 νεῖτε αὐτὸν ἐπὶ ταῖς δυναστείαις αὐτοῦ, † αἰνεῖτε αὐτὸν
3 κατὰ τὸ πλῆθος τῆς μεγαλωσύνης αὐτοῦ. † Αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν ἤχῳ σάλπιγγος, † αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν
4 ψαλτηρίῳ καὶ κιθάρᾳ. † Αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν τυμπάνῳ καὶ
5 χορῷ, † αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν χορδαῖς καὶ (α) ὀργάνῳ. † Αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν κυμβάλοις εὐήχοις, † αἰνεῖτε αὐτὸν ἐν
6 κυμβάλοις ἀλαλαγμοῦ. † Πᾶσα πνοὴ αἰνεσάτω τὸν κύριον. MS.A. (α) ὀργάνοις.

Οὗτος ὁ ψαλμὸς ἰδιόγραφος (α) εἰς Δαυὶδ, καὶ ἔξωθεν τοῦ ἀριθμοῦ, ὅτε ἐμονομάχησε (β) τῷ Γολιάδ.

† Μικρὸς ἤμην ἐν τοῖς ἀδελφοῖς μου, † καὶ νεώτερος ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρός μου, † ἐποίμαινον τὰ πρόβατα τοῦ πατρός μου. † Αἱ χεῖρές μου ἐποίησαν ὄργανον, † (γ) καὶ οἱ δάκτυλοί μου ἥρμοσαν ψαλτήριον. † Καὶ τίς ἀναγγελεῖ τῷ κυρίῳ μου; † αὐτὸς κύριος, αὐτὸς (δ) εἰσακούει. † Αὐτὸς ἐξαπέστειλε τὸν ἄγγελον αὐτοῦ, † καὶ ἦρέ με ἐκ τῶν προβάτων τοῦ πατρός μου, † καὶ ἔχρισέ με ἐν τῷ (ε) ἐλαίῳ τῆς χρίσεως αὐτοῦ. † (ζ) Οἱ ἀδελφοί μου καλοὶ καὶ μεγάλοι, † καὶ οὐκ εὐδόκησεν ἐν αὐτοῖς (η) κύριος. † Ἐξῆλθον εἰς συνάντησιν τῷ ἀλλοφύλῳ, † καὶ ἐπικατηράσατό με ἐν τοῖς εἰδώλοις αὐτοῦ. † Ἐγὼ δὲ σπασάμενος τὴν (θ) παρ' αὐτοῦ μάχαιραν, † ἀπεκεφάλισα αὐτὸν, † καὶ ἦρα ὄνειδος ἐξ υἱῶν Ἰσραήλ.

Βίβλος ψαλμῶν ρν'.

MS.A. (α) τοῦ Δαυὶδ, (β) πρὸς τὸν Γολιάθ. (γ) οἱ δάκτυλοί μου (δ) εἰσακούσεταί μου. (ε) ἐλέει (ζ) Οἱ δὲ ἀδελφοί (η) ὁ κύριος. (θ) παρ' ἐκείνου

Ψαλμοὶ ρν'. καὶ ἰδιόγραφος α'.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

4 *Quia (b) beneplacitum eſt Domino in populo ſuo: & (c) exaltabit manſuetos in ſalute.* 4
5 *(d) [b] Exultabunt Sancti in gloria: & lætabuntur in cubilibus ſuis.* 5
6 *(e) Exaltationes Dei in gutture eorum: & gladii (f) ancipites in manibus eorum:* 6
7 *Ad faciendam vindictam in nationibus, [c] increpationes in populis:* 7
8 *Ad alligandos reges eorum in compedibus, & nobiles eorũ in manicis ferreis:* 8
9 *[d] Ad faciendum in eis judicium (g) conſcriptum: gloria hæc eſt omnibus Sanctis ejus.* 9

Alleluja. CL.

1 *Laudate Dominum in (a) Sanctis ejus: laudate eum in firmamento (b) virtutis ejus.* 1
2 *Laudate eum [a] in (c) potentatibus ejus: laudate eum ſecundùm multitudinẽ magnitudinis ejus.* 2
3 *Laudate eum in (d) ſono tubæ: laudate eum in (e) pſalterio, & cithara.* 3
4 *Laudate eum in tympano, & [b] choro: laudate eũ in (f) chordis, & [c] organo.* 4
5 *Laudate eum in cymbalis benè ſonantib⁹: laudate eũ in cymbalis (g) [d] jubilationis:* 5
6 *Omnis (h) ſpiritus laudet Dominum.* 6

INTERP. ÆTH. Abſolut⁹ eſt David.

Hic Pſalmus [a] Idiographus (a) in David: & extra (b) numerum: quando monomachiam iniit cum Goliad.

1 *Parvus eram in fratribus meis, & junior in domo patris mei, paſcebam oves patris mei.* 1
2 *Manus meæ fecerunt organum: & digiti mei [b] concinnaverunt pſalterium.* 2
3 *Et quis annuntiabit Domino meo? Ipſe Dominus, ipſe [c] exaudit.* 3
4 *Ipſe emiſit angelum ſuum, & tulit me de ovibus patris mei: & unxit me in [d] oleo unctionis ſuæ.* 4
5 *Fratres [e] mei pulchri, & magni: & non benè ſenſit in eis Domin⁹.* 5
6 *Exivi in occurſũ alienigenæ, & [†] maledixit me in idolis ſuis:* 6
7 *Ego verò trahens gladium, qui [f] ab illo, capite truncavi eũ, & abſtuli opprobrium ex filiis Iſrael.* 7

Verſio ÆTHIOPICA.

እስመ፡ ሠምረ፡ እግዚአብሔር፡ በሕዝቡ። ወያሌዕ 4
ሎሙ፡ ለየዋሃን፡ በአድኅኖቱ።=፡ ይትሜክሁ፡ ጻ 5
ድቃን፡ በክብሩ። ወይትፌሥሑ፡ በዲበ፡ ምስካቢሆ
ሙ።=፡ ወያሌዕልዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ በጐራዒ 6
ቶሙ። ሰይፍ፡ ዘክልኤ፡ አፉሁ፡ ውስተ፡ እደዊ
ሁ።=፡ ከመ፡ ይግበር፡ በቀለ፡ ውስተ፡ አሕዛብ። ወ 7
ከመ፡ ይዘልፎሙ፡ ለአሕዛብ።=፡ ከመ፡ ይዕስሮሙ፡ 8
ለነገሥቶሙ፡ በመዋቅሕት። ወለክቡራኒሆሙ፡ በእ
ደ፡ ሰናስለ፡ ኃጺን።=፡ ከመ፡ ይግበር፡ ኰነኔ፡ ዘጽ 9
ሑፍ፡ ላዕሌሆሙ። ክብር፡ ይእቲ፡ ዛቲ፡ ለኵሉ፡
ጻድቃኑ።=፡

ሃሌሉያ።

፻፶ ሰብሕዎ፡ ለእግዚአብሔር፡ በቅዱሳኑ። ሰብ 1
ሕዎ፡ በጽንዓ፡ ኃይሉ።=፡ ሰብሕዎ፡ በክሂሎ 2
ቱ። ሰብሕዎ፡ በከመ፡ ብዝኃ፡ ዕበዩ።=፡ ሰብ 3
ሕዎ፡ በቃለ፡ ቀርን። ሰብሕዎ፡ በመዝሙር፡ ወ
በመሰንቆ።=፡ ሰብሕዎ፡ በከበሮ፡ ወበትፍሥሕ 4
ት። ሰብሕዎ፡ በአውታር፡ ወበእንዚራ።=፡ ሰብ 5
ሕዎ፡ በጸናጽል፡ ዘሠናይ፡ ቃሉ። ሰብሕዎ፡ በጸና
ጽል፡ ወበይበቤ። ኵሉ፡ ነፍስ፡ ይሴብሖ፡ ለእ
ግዚአብሔር።=፡

ተፈጸመ፡ ደዊት።

መዝሙር፡ ዘርዕሱ፡ ዘደዊት፡ ዘጸሐፈ፡ ወውፁእ፡
ወእቱ፡ እምኍልቍ፡ ዘአመ፡ ይትበሐቶ፡ ወ
ይትበአስ፡ ምስለ፡ ጎልያድ፡ ወይቤ።

ዐ ንኡስ፡ አነ፡ እምአኃዊየ። ወሬዛ፡ በቤተ፡ አቡ 1
የ። ወእሬዒ፡ አባግዐ፡ አቡየ።=፡ እደዊየ፡ ይገ 2
ብራ፡ መሰንቆ። ወአጻብዕየ፡ ያስተዋድዳ፡ መዝሙ
ረ።=፡ መኑ፡ ይነግሮ፡ ለእግዚእየ። ውእቱ፡ እ 3
ግዚአብሔር፡ ወውእቱ፡ ይሰምዐኒ።=፡ ውእቱ፡ 4
ፈነወ፡ መልአኮ። ወነሠአኒ፡ እምአባግዐ፡ አቡየ።
ወቀብአኒ፡ ቅብአ፡ ቅዱስ።=፡ አኃዊየሰ፡ ሠናያ 5
ን፡ ወልሂቃን። ወኢሠምረ፡ በሙ፡ እግዚአብሔ
ር።=፡ ወወፃዕኩ፡ ለተአኅዞቱ፡ ለሕዝብ፡ ነኪ 6
ር። ወረገመኒ፡ በአማልክቲሆሙ።=፡ ወእንስ፡ ነ 7
ሣእኩ፡ ዘእምላዕሌሁ፡ ሰይፈ። ወመተርኩ፡ ር
እሶ። ወአሰሰልኩ፡ ጽእለተ፡ እምደቂቀ፡ እስራ
ኤል።=፡

INTERP. ÆTHIOP. [b] Gloriabuntur Sancti [c] & ad increpandum populos: [d] Ut exequatur judicium de illis conſcriptum: *PSAL. CL.* [a] in omnimoda potentia ejus: [b] in lætitia: [c] organis. [d] & in jubilatione. *PSAL. CLI.* [a] ipſiuſmet Davidis, quem ſcripſit, ſed extra numerum, cùm ſolus fuit in certamine cum Goliad, & dixit; [b] confixerunt pſalterium. [c] exaudiet me. [d] oleo ſancto. [e] mei quidem pulchri, & grandiores me, [†] maledixerunt [f] apud illos,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

4 * لان الرب سر بشعبه * ويعلي الودعاء بالخلاص * يفتخر القديسون بالمجد * ويهللون على
5
6 مضاجعهم * تعظيم الله موضوع في حناجرهم * وسيوف ذوات حدين موضوعة في ايديهم
7 * لكي ينتقموا من الامم * ويبكتوا الشعوب * ولكي يوثقوا ملوكهم بالقيود * واشرافهم بيد اغلال
8
9 الحديد * لكي يصنعوا فيهم حكما مكتوبا * هذا المجد هذا كان في جميع قديسيه. اللليويا.

* المزمور الخمسون والماية *

1 سبحوا الله في جميع قديسيه * سبحوه في فلك
2 قوته * سبحوه على جبروته * سبحوه ككثرة عظمته * سبحوه بصوت البوق * سبحوه بالمزمار
3
4 والقيثار * سبحوه بالدف والصنج * سبحوه بالاوتار والارغن * سبحوه بمعازف حسن صوتها.
5
6 سبحوه بمعازف التهليل * كل نسمة فلتسبح الرب.

* كملت خمسة اسفار * فالاول اخره الاربعون * والثاني اخره السبعون * والثالث اخره
الثمانون * والرابع اخره الخامس والماية * والخامس الى الكمال *

* المزمور الحادي والخمسون والماية * هذا المزمور كتب خاصة لداود * وهو
خارج عن العدد حين بارز جلياث فقط * وهو يو استيخن.

1 * صغيرا كنت في اخوتي وشابا في بيت ابي * كنت ارعى غنم ابي * يداي صنعتا ارغنا.
2
3 واصابعي الفت مزمارا * فمن ذا الذي اعلم سيدي هو الرب * والمستجيب لكل صارخ
4 اليه * هو ارسل ملاكه * ورفعني من اغنام ابي * ومسحني بدهن مسحته * اخوتي حسان وهم
5
6 عظماء ولم يسر بهم الرب * خرجت الى لقاء الغريب القبيلة * فلعنني باوثانه * فرميته بثلثة
7
8 احجار في جبهته بقوة الرب فصرعته * وانا سللت سيفه الذي بيده وقطعت راسه ورفعت
العار عن بني اسرائيل. * تمت المزامير بحمد الله وعونه وحسن توفيقه.

Quoniam Dominus oblectatus eſt populo ſuo, & extollit manſuetos per ſalutem. 4
Gloriabuntur ſancti de gloria, & laudem celebrabunt ſuper cubilibus ſuis. 5
Magnificatio Dei ſita eſt in gutturibus eorum: et gladii duarum acierum poſiti in manibus eorum: 6
ut vindictam ſumant à gentibus, & objurgent populos. 7
Et ut vinciant reges eorum compedibus, & præcipuos eorum manu vinculorum ferreorum: 8
ut faciant in eis judicium ſcriptum. Hæc eſt gloria, hæc erat in omnibus ſanctis ejus. Alleluja. 9

PSAL. CL.

Laudate Deum in omnibus ſanctis ejus: laudate eum in ſphæra fortitudinis ejus: 1
Laudate eum ob potentiam ejus: laudate eum ſecundùm multitudinem magnitudinis ejus: 2
Laudate eum ſonitu buccinæ: laudate eum pſalterio & citharâ: 3
Laudate eum tympano & ſiſtro: 4
laudate eum chordis & organo: Laudate eum fidibus dulciſonis, laudate eum inſtrumentis pſalmodiæ. 5
Omnis halitus laudet Dominum. 6

Finis quinq; librorum, quorum primus terminatur *Pſalmo* quadrageſimo; Secundus terminatur ſeptuageſimo, Tertius terminatur octuageſimo, Quartus terminatur centeſimo quinto, Quintus ultimo.

PSAL. CLI.

Hic pſalmus aſcribitur peculiariter Davidi, éſtque præter numerum. Quum ſuperavit Goliath tantúm. Verſ. 16.

Minimus eram inter fratres meos, & adoleſcens in domo patris mei, paſcebam oves patris mei. 1
Manus meæ fecerunt organum, & digiti mei compoſuerunt pſalterium. 2
Quis iſte eſt qui docuit? herus meus ipſe Dominus, et exauditor cujuſvis clamantis ad eum. 3
Ipſemet miſit angelum ſuum, & extraxit me ex ovibus patris mei, et unxit me unguento unctionis ſuæ. 4
Fratres mei pulchri ſunt et magni, & tamen non eſt oblectatus eis Dominus. 5
Egreſſus ſum in occurſum extranei natione, et maledixit mihi per ſimulachra ſua. 6
Et jaculatus ſum in eum tres lapides, in frontẽ ipſius, in virtute Domini, et proſtravi eum. 7
Et ego evaginavi gladium ejus quẽ ſuâ manu tenebat, et amputavi caput ejus, et abſtuli opprobrium à filiis Iſrael. 8

Abſoluti ſunt Pſalmi glorioſiſſimo Deo juvante rectéque diſponente.

כפר משלי׃ א

CAP. I. א

1 ,ſapientiam ſciendum Ad .Iſrael regis ,David filii,Selomoh Parabolæ
2 מִשְׁלֵי שְׁלֹמֹה בֶן־דָּוִד מֶלֶךְ יִשְׂרָאֵל׃ לָדַעַת חָכְמָה
ſuſcipiendum Ad .intelligentiæ eloquia intelligendum ad:eruditionem &
3 וּמוּסָר לְהָבִין אִמְרֵי בִינָה׃ לָקַחַת
.rectitudines & ,judicium & ,juſtitiam : intellectus eruditionem
מוּסַר הַשְׂכֵּל צֶדֶק וּמִשְׁפָּט וּמֵשָׁרִים׃
.verſutiam & ,ſcientiam puero ; calliditatem ſimplicibus dandum Ad
4 לָתֵת לִפְתָאיִם עָרְמָה לְנַעַר דַּעַת וּמְזִמָּה׃
ſolertia conſilia intelligens & : doctrinam addet & ,ſapiens Audiet
5 יִשְׁמַע חָכָם וְיוֹסֶף לֶקַח וְנָבוֹן תַּחְבֻּלוֹת
verba : jacundiam & ,parabolam intelligendum Ad .poſſidebit
6 יִקְנֶה׃ לְהָבִין מָשָׁל וּמְלִיצָה דִּבְרֵי
: ſcientiæ principium Domini Timor .eorum ænigmata & ,ſapientum
7 חֲכָמִים וְחִידֹתָם׃ יִרְאַת יְהוָה רֵאשִׁית דָּעַת
eruditionem mi fili Audi .deſpexerunt ſtulti eruditionem & ,ſapientiam
8 חָכְמָה וּמוּסָר אֱוִילִים בָּזוּ׃ שְׁמַע בְּנִי מוּסַר
gratiæ *copulatio* Quia .tuæ matris legem dimittas ne & ;tui patris
9 אָבִיךָ וְאַל־תִּטֹּשׁ תּוֹרַת אִמֶּךָ׃ כִּי לִוְיַת חֵן
te *pellexerint* ſi ,mi Fili .*tuis gutturibus* torques & : tuo capiti *ipſæ*
10 הֵם לְרֹאשֶׁךָ וַעֲנָקִים לְגַרְגְּרֹתֶךָ׃ בְּנִי אִם־יְפַתּוּךָ
,nobiſcum *Age* ,dixerint Si .*velis* ne ,peccatores
11 חַטָּאִים אַל־תֹּבֵא׃ אִם־יֹאמְרוּ לְכָה אִתָּנוּ
.gratis innocentem *ad* nos abſcondamus : ſanguini inſidiemur
נֶאֶרְבָה לְדָם נִצְפְּנָה לְנָקִי חִנָּם׃
deſcendentes ſicut integros & ; viventes ſepulchrum ſicut eos Deglutiam*
12 נִבְלָעֵם כִּשְׁאוֹל חַיִּים וּתְמִימִים כְּיוֹרְדֵי
implebimus : reperiemus precioſam ſubſtantiam Omnem .*ciſternam*
13 בוֹר׃ כָּל־הוֹן יָקָר נִמְצָא נְמַלֵּא
: noſtrum medio in *cadere fac* tuam Sortem .*ſpolio* noſtras domos
14 בָתֵּינוּ שָׁלָל׃ גּוֹרָלְךָ תַּפִּיל בְּתוֹכֵנוּ
ambules ne ,mi Fili .nobis omnibus erit unum marſupium
15 כִּיס אֶחָד יִהְיֶה לְכֻלָּנוּ׃ בְּנִי אַל־תֵּלֵךְ
Nam .eorum *ſemita* à tuum pedem prohibe : eis cum via in
16 בְּדֶרֶךְ אִתָּם מְנַע רַגְלְךָ מִנְּתִיבָתָם׃ כִּי
.ſanguinem *effundendum ad feſtinabunt* & ,*current* malum ad eorum pedes
רַגְלֵיהֶם לָרַע יָרוּצוּ וִימַהֲרוּ לִשְׁפָּךְ־דָּם׃
compotis omnis oculis in rete *expanſum gratis* Quoniam
17 כִּי־חִנָּם מְזֹרָה הָרָשֶׁת בְּעֵינֵי כָּל־בַּעַל
.eorum *animabus* abſcondent : inſidiabuntur eorum ſanguini ipſi Et .*pennæ*
18 כָּנָף׃ וְהֵם לְדָמָם יֶאֱרֹבוּ יִצְפְּנוּ לְנַפְשֹׁתָם׃
animam ; *lucri concupiſcentiam concupiſcentis* omnis ſemitæ Sic
19 כֵּן אָרְחוֹת כָּל־בֹּצֵעַ בָּצַע אֶת־נֶפֶשׁ
plateis in : prædicabit *platea in Sapientiæ* .capiet illius *patronorũ*
20 בְּעָלָיו יִקָּח׃ חָכְמוֹת בַּחוּץ תָּרֹנָּה בָּרְחֹבוֹת
oſtiis in clamabit tumultuantium capite In .ſuam vocem dabit
21 תִּתֵּן קוֹלָהּ׃ בְּרֹאשׁ הֹמִיּוֹת תִּקְרָא בְּפִתְחֵי
ſimplices Uſquequo .dicet ſua eloquia urbe in ,portarum
22 שְׁעָרִים בָּעִיר אֲמָרֶיהָ תֹאמֵר׃ עַד־מָתַי פְּתָיִם
deſiderabunt deriſionem deriſores & ? ſimplicitatem diligetis
תְּאֵהֲבוּ פֶתִי וְלֵצִים לָצוֹן חָמְדוּ
Convertemini ? ſcientiam habebunt odio ſtulti & ? ſibi
23 לָהֶם וּכְסִילִים יִשְׂנְאוּ־דָעַת׃ תָּשׁוּבוּ
: meum ſpiritum vobis *eructabo* En : meam increpationem ad
לְתוֹכַחְתִּי הִנֵּה אַבִּיעָה לָכֶם רוּחִי
.vos mea verba faciam ſcire
אוֹדִיעָה דְבָרַי אֶתְכֶם׃

Verſio VULG. LAT.

LIBER PROVERBIORUM, QUEM HEBRÆI MISLE appellant.

CAP. I.

1 PArabolæ Salomonis, filii 2 David, regis Iſrael. Ad ſciendam ſapientiam, & diſciplinam: 3 Ad intelligenda verba prudentiæ, & ſuſcipiendã eruditionem doctrinæ, juſtitiam, 4 & judicium, & æquitatem: Ut detur parvulis aſtutia, adoleſcenti ſcientia, & intellectus. 5 Audiens ſapiens, ſapientior erit: & intelligens, gubernacula 6 poſſidebit. Animadvertet parabolam, & interpretationem; verba ſapientum, & æni- 7 gmata eorum. Timor Domini principium ſapientiæ. Sapientiam, atque doctrinam ſtulti 8 deſpiciunt. Audi, fili mi, diſciplinam patris tui, & ne dimit- 9 tas legem matris tuæ: Ut addatur gratia capiti tuo, & tor- 10 ques collo tuo. Fili mi, ſi te lactaverint peccatores, ne ac- 11 quieſcas eis. Si dixerint; Veni nobiſcum, inſidiemur ſanguini, abſcondamus tendiculas 12 contra inſontem fruſtrá: Deglutiamus eum ſicut infernus viventem, & integrum quaſi 13 deſcendentem in lacum. Omnem pretioſam ſubſtantiam reperiemus, implebimus do- 14 mos noſtras ſpoliis. Sortem mitte nobiſcum, marſupium u- 15 num ſit omnium noſtrûm. Fili mi, ne ambules cum eis, prohibe pedem tuum à ſemitis eo- 16 rum. Pedes enim illorum ad malum currunt, & feſtinant ut 17 effundant ſanguinem. Fruſtrà autem jacitur rete ante oculos 18 pennatorum. Ipſi quoque contra ſanguinem ſuum inſidiantur, & moliuntur fraudes con- 19 tra animas ſuas. Sic ſemitæ omnis avari, animas poſſiden- 20 tium rapiunt. Sapientia foris prædicat, in plateis dat vocem 21 ſuam: In capite turbarum clamitat, in foribus portarum urbis profert verba ſua, di- 22 cens; Uſquequò parvuli diligitis infantiam, & ſtulti ea, quæ ſibi ſunt noxia, cupient, & imprudentes odibunt ſci- 23 entiam? Convertimini ad correptionem meam: en proferam vobis ſpiritum meum, et oſtendam vobis verba mea.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cùm Tranſlatione LATINA.

ΠΑΡΟΙΜΙ'ΑΙ ΣΑΛΩΜΩ͂ΝΤΟΣ.

ΚΕΦ. α'.

1 †Παροιμίαι (ᵘ) Σαλωμῶντος υἱοῦ Δαυὶδ,
2 † ὃς ἐβασίλευσεν ἐν Ἰσραὴλ, † Γνῶναι σο-
3 φίαν καὶ παιδείαν, † Νοῆσαί τε λόγους φρονή-
σεως, † δέξασθαί τε στροφὰς λόγων, † νο-
ῆσαί τε δικαιοσύνην ἀληθῆ, † καὶ κρίμα κατ-
4 ευθύνειν· † Ἵνα δῷ ἀκάκοις πανουργίαν,
† παιδὶ δὲ νέῳ αἴσθησίν τε καὶ ἔννοιαν. † (α)
5 Τῶνδε γὰρ ἀκούσας σοφὸς σοφώτερος ἔσται,
6 † ὁ δὲ νοήμων κυβέρνησιν κτήσεται· † Νοήσει
τε παραβολὴν καὶ σκοτεινὸν λόγον, † ῥήσεις
7 τε σοφῶν καὶ αἰνίγματα. † Ἀρχὴ σοφίας φό-
βος κυρίου, † σύνεσις δὲ ἀγαθὴ πᾶσι τοῖς
ποιοῦσιν αὐτήν. † εὐσέβεια δὲ εἰς θεὸν (β) ἀρ-
χὴ αἰσθήσεως, † σοφίαν δὲ καὶ παιδείαν ἀσε-
8 βεῖς ἐξουθενήσουσιν. † Ἄκουε υἱὲ (γ) παιδείαν
πατρός σου, † καὶ μὴ ἀπώσῃ θεσμοὺς μητρός
9 σου. † Στέφανον γὰρ χαρίτων (δ) δέξῃ σῇ
κορυφῇ, † καὶ κλοιὸν χρύσεον περὶ σῷ τραχή-
10 λῳ. † Υἱὲ μή σε πλανήσωσιν ἄνδρες ἀσε-
11 βεῖς, † μηδὲ βουληθῇς. Ἐὰν παρακαλέσω-
σί σε, λέγοντες, † Ἐλθὲ μεθ' ἡμῶν, κοινώ-
νησον αἵματος, † κρύψωμεν δὲ εἰς γῆν ἄν-
12 δρα δίκαιον ἀδίκως, † Καταπίωμεν δὲ
αὐτὸν ὥσπερ ᾅδης ζῶντα, † καὶ ἄρωμεν αὐ-
13 τοῦ τὴν μνήμην ἐκ γῆς, † Τὴν (ε) κτῆσιν αὐ-
τοῦ τὴν πολυτελῆ καταλαβώμεθα, † πλήσωμεν
14 δὲ οἴκους ἡμετέρους σκύλων· † Τὸν δὲ σὸν κλῆ-
ρον βάλε ἐν ἡμῖν, † κοινὸν δὲ (ᵛ) βαλάντιον
κτησώμεθα πάντες, † καὶ μαρσίππιον ἓν γενη-
15 θήτω ἡμῖν· Μὴ πορευθῇς ἐν (ζ) ὁδῷ
μετ' αὐτῶν, † ἔκκλινον δὲ (η) τὸν πόδα σου
17 ἐκ τῶν τρίβων αὐτῶν. † (θ) Οὐ γὰρ ἀδίκως
18 ἐκτείνεται δίκτυα πτερωτοῖς. † Αὐτοὶ γὰρ οἱ
φόνου μετέχοντες, θησαυρίζουσιν ἑαυτοῖς κα-
κά. † ἡ δὲ καταστροφὴ ἀνδρῶν παρανόμων
19 κακή. † Αὗται αἱ ὁδοί εἰσι πάντων τῶν συν-
τελούντων τὰ ἄνομα· † τῇ γὰρ ἀσεβείᾳ τὴν ἑ-
20 αυτῶν ψυχὴν ἀφαιροῦνται. † Σοφία ἐν ἐξό-
δοις ὑμνεῖται, † ἐν δὲ πλατείαις παρρησίαν
21 ἄγει. † Ἐπ' ἄκρων δὲ τειχέων κηρύσσεται,
† ἐπὶ δὲ πύλαις δυναστῶν παρεδρεύει, † ἐπὶ
22 δὲ πύλαις πόλεως θαρροῦσα λέγει, † Ὅσον
ἂν χρόνον ἄκακοι (ι) ἔχωνται τῆς δικαιοσύ-
νης, οὐκ αἰσχυνθήσονται; † οἱ δὲ ἄφρονες τῆς ὕ-
βρεως ὄντες ἐπιθυμηταὶ, ἀσεβεῖς γενόμενοι
23 ἐμίσησαν αἴσθησιν, † Καὶ ὑπεύθυνοι ἐγένον-
το ἐλέγχοις. † ἰδοὺ προήσομαι ὑμῖν ἐμῆς
πνοῆς ῥῆσιν, † διδάξω δὲ ὑμᾶς τὸν ἐμὸν
λόγον.

PROVERBIA SALOMO

CAP. I.

PRoverbia (a) Salomonis fi
David, qui regnavit in Iſrael, ad
ſciendam ſapientiam, & diſci-
nam, Et (b) intelligendum ver
prudentiæ, & (c) ſuſcipiendas
verſutias ſermonum; & intelli-
gendam juſtitiam veram, & ju-
dicium dirigendum: ut det (d)
ſimplicibus aſtutiam, & puero no-
vo & ſenſum, & (e) cogita-
onem. Hæc enim audiens ſa-
ens ſapientior erit: intelligens au-
tem, rationem gubernandi poſſi-
bit. Animadvertetque (f) para-
bolam, & tenebroſum ſermon
dictaque ſapientum, & ænigm-
ta. Principium ſapientiæ timor
Domini: intellectus autem bon
omnibus facientibus eum. Pi
autem in Deũ principium ſen
ſapientiam autem & diſcipl
(h) impii ſpernent. Audi, fi
diſciplinam patris tui: & ne
jicias leges matris tuæ. (k) Co
enim gratiarum recipies ver
tuo, & (l) torquem aureum
tuum collum. Fili, ne te ſedu
*viri impii, neque *velis. Si*
caverint te, dicentes; Veni
cum, (m) particeps eſto ſang
abſcondamus autem in ter
rum (n) juſtum injuſte, Deg
mus autem eum, ſicut infern
ventem, & tollamus ejus me
riam de terra, (o) Poſſeſſi
jus (p) pretioſã occupemus,
amus autem domos noſ
ſpoliis, (r) Tuam autem
mitte in nobis, (ſ) comm
autem crumenam poſſi
mnes, & marſupium un
nobis; (u) Ne ambules
eis, (x) declina autem
à ſemitis (y) eorum. N
nim iniquè tendun
Ipſi enim qui homicid
ſunt, theſaurizant ſibi
(ω) Everſio autem vir
quorum mala. Hæ viæ
omnium conſummant
(bb) Impietate enim ſu
animam auferunt. Sapien
itibus (cc) canitur, in
tem cum libertate agit
ſummos muros (dd)
(ee) in portis dynaſta
& in portis civitatis
ait; Quanto tempo
(ff) inhærent juſtitiæ,
beſcent? inſipientes a
contumeliæ cupidi,

(gg) facti, oderunt ſenſum, (hh) Et ſubjecti facti ſunt opprobriis. Ecc
feram vobis mei ſpiritûs dictionem: docebo autem vos meum ſermo

MS.A. Παροιμίαι. (ᵘ) Σολομῶντος (α) Τῶν τε (β)
νόμους (δ) ἕξῃ (ε) κτίσιν (ᵛ) βαλλάντιον (ζ) ὁδοὺς (η) τὸν σὸν πόδα
πόδες αὐτῶν εἰς κακίαν τρέχουσι, † καὶ ταχινοὶ τοῦ ἐκχέαι αἷμα
ἀδίκως (ι) ἔχωνται

תרגום TARGUM.

א

1 2 מתלוי דשלמה בר דוד מלכא דישראל׃ למדע חכמתא ומרדותא לאתבין אמרי
3 ביונתא׃ למקבלא מרדותא דשוכלא וצדקתא ודינא ותריצותא׃ למתן לשברי
4 5 ערימותא ולטלאי ידיעתא ותרעיתא׃ ישמע חכימא ויוסיף מדעא וסוכלתנא
6 מדברנותא יקנה׃ למתבינא מתלאה ופלאתא ומלי דחכימי ואוחדתהון׃ ריש
7 8 חכמתא דחלתא דיי וחכמתא ומרדותא סכלי שיטין׃ שמע ברי מרדותא דאבוך
9 ולא תטעי מנימוסא דאמך׃ מטול דיאותא וחסדא אנון לרישך והמניכה לצורך׃
10 11 ברי אין נשדלו לך חטאי לא תתפיס׃ אין ימרון אתא עמנא נכמון לדמא נטשי
12 לזכי מגן׃ נבלענון כשיול לחיי ולדלא מום היך נחתי גובא׃ כל עותרא ויקרא
13 14 נשכח ונמלא בתנא בותא׃ כיסך ארמה בינתנא כיסא חד יהוי לכלן׃ ברי
15 16 לא תיזל בארחא עמהון מנע רגלך מן שביליהון׃ מטול דרגליהון לבישתא
17 רהטן ומסתרהבין למשפך דמא׃ מטול דמגן פריסא מצודתא על פרחתא דגפא׃
18 19 והנון לדמהון כמנין ומטשין לנפשתהון׃ הכדין אנון ארחתא דכל דעבדין עילא
20 21 נפשתא דמריהון נסבין׃ חכמתא בשוקא משתבחא ובשקקי יהבא קלה׃ בריש
22 בירתא מכרזא ובמעלנא דתרעי בכרכי מלהא אמרה׃ עד אימת שברי רחמין
23 שברותא וממקני ממקנותא רגיגו להון וסכלי סנין ידיעתא׃ תתפנין למכסנותי
אבע לכון רוחי ואודענון מלי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

CAPUT. I

PArabolæ Salomonis filii David regis Iſrael. Ad ſciendam ſa
& diſciplinam, ad intelligenda verba intelligentiæ. Ad ſuſcip
diſciplinam intellectus, & juſtitiam, & judicium, & æquitatem. A
dum inſipientibus aſtutiam, & adoleſcentibus ſcientiam & co
Audiet ſapiens, & addet ſcientiam, & intelligens gubernaculum
bit. Ut intelligat parabolam, & interpretationem, & verba ſa
& ænigmata eorum. Initium ſapientiæ timor Domini: ſapientiam
& diſciplinam ſtulti deſpiciunt. Audi fili mi diſciplinam patris
erres à lege matris tuæ. Quoniam decor *& gratia* ſunt capiti tuo
ques collo tuo. Fili mi ſi te ſeduxerint peccatores, ne acqu
dixerint, Veni nobiſcum, inſidiemur ſanguini abſcondamur co
centem fruſtra. Abſorbeamus eos quaſi infernus viventes, & im
ſicut deſcendentes in lacum. Omnes divitias & gloriam inve
implebimus domos noſtras ſpoliis. Sortem tuam mitte inter no
pium unum erit omnibus nobis. Fili mi ne ambules in via cum
hibe pedem tuam à ſemitis eorum. Quoniam pedes eorum
currunt, & feſtinant ad effundendum ſanguinem. Quoniam
panditur rete ante volucrem pennatam. Ipſi autem contra
ſuum inſidiantur, *& abſcondunt* contra animas ſuas. Sic ſunt
operantium iniquitatem: animas dominorum ſuorum capiun
vicatim cantat, ac de plateis dat vocem ſuam. In capite arcium
zat, & in introitu portarum per urbes verba ſua dicit. Uſque
entes diligitis inſipientiam, & deriſores deriſionem appetunt
odiunt ſcientiam? Convertimini ad correptionem meam: e
vobis ſpiritum meum, & oſtendam vobis verba mea.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܟܬܒܐ ܕܡܬܠܐ ܕܫܠܝܡܘܢ ܒܪ ܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ *

* ܩܦܠܐܘܢ * * ܐ *

* ܡܬܠܘܗܝ ܕܫܠܝܡܘܢ ܒܪ ܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܠܡܕܥ ܚܟܡܬܐ ܘܡܪܕܘܬܐ. 1 2
ܘܠܡܣܬܟܠܘ ܒܡܠܐ ܕܣܘܟܠܐ. * ܘܠܡܩܒܠܘ ܡܪܕܘܬܐ ܘܕܚܠܬܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܕܝܢܐ 3
ܘܬܪܝܨܘܬܐ. * ܠܡܬܠ ܠܛܠܝܐ ܚܪܝܦܘܬܐ. ܘܠܥܠܝܡܐ ܝܕܥܬܐ ܘܬܪܥܝܬܐ. * ܢܫܡܥ ܚܟܝܡܐ 4 5
ܘܢܘܣܦ ܠܗ ܚܟܡܬܗ. ܘܡܣܬܟܠܢܐ ܡܕܒܪܢܘܬܐ ܢܩܢܐ. * ܕܢܣܬܟܠ ܡܬܠܐ ܘܦܠܐܬܐ. 6
ܘܡܠܐ ܕܚܟܝܡܐ ܘܐܘܚܕܬܗܘܢ. * ܪܫ ܚܟܡܬܐ ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܝܕܥܬܐ ܕܝܢ ܘܡܪܕܘܬܐ ܥܘܠܐ 7
ܒܣܝܘ. * ܫܡܥ ܒܪܝ ܢܡܘܣܐ ܕܐܒܘܟ. ܘܠܐ ܬܛܥܐ ܢܡܘܣܗ ܕܐܡܟ. * ܡܛܠ ܕܟܠܝܠܐ ܕܛܝܒܘܬܐ ܐܢܘܢ ܠܪܫܟ. 8 9
ܘܡܢܝܟܐ ܠܨܘܪܟ. * ܒܪܝ. ܐܢ ܢܦܓܥܘܢ ܒܟ ܚܛܝܐ ܠܐ ܬܬܦܝܣ. * ܐܢ ܢܐܡܪܘܢ ܠܟ. ܬܐ ܥܡܢ 10 11
ܢܟܡܢ ܠܕܡܐ. ܘܢܛܫܐ ܠܙܟܝܐ ܡܓܢ. * ܘܢܒܠܥܝܘܗܝ ܐܝܟ ܫܝܘܠ ܚܝܐ. ܘܟܠܗ ܡܕܡ 12
ܐܝܟ ܢܚܬܝ ܠܓܘܒܐ. * ܟܠܗ ܥܘܬܪܗ ܘܐܝܩܪܗ ܢܫܟܚ. ܘܢܡܠܐ ܒܬܝܢ ܒܙܬܐ. * ܦܣܐ 13 14
ܪܡܝ ܒܝܢܬܢ. ܘܟܝܣܐ ܚܕ ܢܗܘܐ ܠܟܠܢ. * ܒܪܝ. ܠܐ ܬܐܙܠ ܥܡܗܘܢ ܒܐܘܪܚܐ. ܐܠܐ ܟܠܝ 15
ܪܓܠܟ ܡܢ ܫܒܝܠܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܪܓܠܝܗܘܢ ܠܒܝܫܬܐ ܗܘ ܪܗܛܝܢ. ܘܡܣܪܗܒܝܢ 16
ܠܡܐܫܕ ܕܡܐ ܙܟܝܐ. * ܘܡܛܠܬܐ ܗܘ ܦܪܝܣܝܢ ܡܨܝܕܬܐ ܠܐ ܦܪܚܬܐ. * ܘܟܡܢܝܢ ܠܕܡܐ. 17 18
ܘܡܛܫܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܢܘܢ ܐܘܪܚܬܐ ܕܟܠ ܕܥܒܕܝܢ ܥܘܠܐ. ܘܢܣܒܝܢ ܢܦܫܬܐ 19
ܕܡܪܝܗܘܢ. * ܚܟܡܬܐ ܒܫܘܩܐ ܡܫܬܒܗܪܐ. ܘܒܫܘܩܐ ܡܪܝܡܐ ܩܠܗ. * ܘܒܪܝܫ ܒܢܝܢܐ 20
ܡܟܪܙܐ. ܘܒܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܡܠܝܗ ܐܡܪܐ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܛܠܝܐ ܘܪܚܡܝܢ ܛܠܝܘܬܐ 21 22
ܒܙܚܐ. ܘܡܡܝܩܢܐ ܪܓܝܓܝܢ ܡܡܝܩܢܘܬܐ. ܘܣܟܠܐ ܣܢܝܢ ܝܕܥܬܐ. * ܐܢ ܬܬܦܢܘܢ 23
ܠܡܟܣܢܘܬܝ. ܐܒܥ ܠܟܘܢ ܪܘܚܝ. ܘܐܘܕܥܟܘܢ ܡܠܝ.

LIBER
PROVERBIORUM
Salomonis filii David Regis Iſrael.

CAPUT I.

Proverbia Salomonis filii David Regis 1
Iſrael. Ad noſcendũ ſapientiã & eruditionẽ, 2
& ad percipienda verba intelligentiæ: Et 3
ad acquirendã eruditionẽ, & timorẽ, & juſtitiã, & judiciũ, atq; rectitudinẽ: Ad imbuen- 4
dum pueros ſagacitate, & adoleſcentes ſcientiâ, & conſilio. Audiet ſapiens, & augebit ſa- 5
pientiã ſuam: & cordatus moderationẽ aſſequetur. Quatenus ſciat proverbia, & parabo- 6
las, & verba ſapientũ, & ænigmata eorum.
Initium ſapientiæ, timor Dñi: ſcientiã autem 7
& eruditionẽ aſpernantur iniqui. Audi fili 8
mi, legem patris tui, & ne obliviſcaris legem
matris tuæ. Decus enim ſunt capiti tuo, & 9
torquis collo tuo. Fili mi, ſi te pellexerint 10
peccatores, ne acquieſcas: Et ſi dixerint tibi, 11
Veni nobiſcum, inſidiemur ſanguini, & latitemus innocenti, cum dolo. Et deglutiamus eum, 12
velut infernus, viventẽ, & eos qui ſine noxa
ſunt, quaſi deſcendentes in foveam: Omnes 13
divitias & gloriam ejus reperiemus, & implebimus domos noſtras ſpoliis. Sortẽ tuam 14
projice inter nos, & crumena eadem ſit nobis
omnibus. Fili mi, ne incedas cum iis per viã, 15
ſed cohibe pedẽ tuũ à ſemitis eorũ. Quoniã 16
pedes eorũ ad malũ decurrunt, & feſtinant ad
effundendũ ſanguinẽ innoxiũ, Et fraudulen- 17
ter expandunt retia ſuper volucre, Et inſidi- 18
antur ſanguini, & abſcondunt ſeipſos. Hujuſ- 19
modi ſunt viæ omnium operantiũ iniquitatẽ,
& auferentiũ animas à dominis earũ. Sapien- 20
tia in plateis gloriabitur, & in compitis attollit vocẽ ſuã, Et in vertice ædiũ prædicat, & in 21
aditu portarũ urbiũ verba ſua promit, *dicens*,
Quouſque pueri, diligetis pueritiã? & irriſo- 22
res deſiderabitis irriſionẽ? et ſtulti odio habebitis ſcientiam? Si convertamini ad incre- 23
pationẽ meam, profundã vobis ſpiritum meũ,
et notum faciam vobis ſermonem meum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله القديم الازلي الدايم السرمدي *

* الفصل الاول *

* امثال سليمان الحكيم اي مواعظه الذي ملك في بني اسرايل * اعرف حكمة وادبا • تفهم 1 2
اقوال الفطنة * اقبل حجج الاقوال • افهم العدل الحق والانصاف المستقيم * لكيما اعطي من لا 3 4
سر فيهم تدبيرا • والصبي الشاب حسا وذكاً * لان الحكيم اذا سمع هذه سيكون اوفر حكمة • والفقيه 5
يقتني سياسة * فيفهم المثل والكلام المستعجم • واقوال الحكماء ورموزهم * بدو الحكمة مخافة 6 7
الله * والفهم الصالح لجميع الذين يعملونه • حسن العبادة لله بدو الحس • والكافرون يهونون
بالحكمة والادب * يا بني اسمع شرايع ابيك • ولا تبعد فرايض امك * فستاخذ هامتك اكليل 8 9
النعم • ويحوط بعنقك طوق ذهبي * يا بني لا يضلنك الرجال المنافقون • ولا يروعن رايك * ان 10 11
يملقوك قايلين هلم معنا شارك الدم • فنخفي في الارض بظلم رجلا عدلا * ونبتلعه كالهاوية 12
حيا • ونقلع ذكره من الارض * وناخذ قنيته الجليلة • ونملا بيوتنا من الغنايم * فاجعل نصيبك 13 14
معنا • فنستقني كلنا كيسا مشاعا • ولتكن لنا مصر واحدة * يا بني لا تمضين معهم في طريق • 15
امل رجلك من مسالكهم * فان الشباك ما تنصب لذوات الاجنحة ظلما * لان هولاء الذين 16 17
يشاركون القتل • يكثرون لانفسهم الاسواء * وانصراع الرجال المتجاوزين الشريعة ردي * هذه 18 19
الطريق تخص جميع الذين يتممون الافعال المنافية الشريعة • لانهم يستجذبون انفسهم الى الكفر
* الحكمة في المنافذ تسبح • وفي الشوارع تفيد مجاهرة * ومن زوايا الحيطان تنادي • وعلى ابواب 20 21
المقتدرين تكمن • وعند ابواب المدينة تقول * مذلة ان ذوي الدعة مهما دام لهم زمان 22
عدلهم ما يستكبرون • فاما الاغبياء فيوجدون مشتهين التعظم • ولما صاروا منافقين مقتوا الحس •
وتحت التبعات حصلوا في التوبيخات * هاانذا اعطيكم كلام نسمتي • واعلمكم قولي • 23

IN NOMINE DEI
ſempiterni, immortalis, æterni,
ac perpetui.

CAPUT I.

Proverbia, nempe documenta Salomonis ſapientis, qui regnavit ſuper filios Iſrael. 1 *Noſce ſapientiam ac diſciplinam,* 2 *percipe eloquia prudentiæ. Suſcipe rationes ſermonum, intellige juſtitiam veracem, et æquitatem prudentem.* 3 *ut dem iis in quibus non eſt malitia, calliditatem, & puero adoleſcenti ſenſum et acumen.* 4 *Nam ſapiens, quando hæc audierit, erit locupletior in ſapientia: & doctus poſſidebit regimen.* 5 *Intelligit enim parabolam, et ſermones peregrinos, & verba ſapientum, et nutus eorum.* 6 *Initium ſapientiæ, timor Domini, et intellectus bonus omnibus facientibus eum. Sana religio in Deũ, eſt initium prudentiæ: infideles autem deſpiciunt ſapientiam, et diſciplinam.* 7 *O fili mi, audi leges patris tui, et ne rejicias decreta matris tuæ.* 8 *Conſequetur enim caput tuum coronam gratiarum, et circundabit collum tuũ torquis aureus.* 9 *Fili mi, ne te decipiant viri iniqui, neq; ſeducant mentem tuam.* 10 *Si blandiantur tibi, dicentes; Veni nobiſcum, particeps eſto ſanguinis, abſcondamus in terra iniquè virũ juſtum,* 11 *Et deglutiamus eum quaſi infernus vivũ,* 12 *et eradicemus memoriam ejus de terra, Et accipiamus poſſeſſionẽ ejus magnificam, et* 13 *impleamus domos noſtras ſpoliis. Pone igitur ſortem tuã nobiſcum, et poſſidebimus omnes commune marſupium, ſintque nobis iidem loculi:* 14 *Fili mi, nullo modo incedas cum iis in via: retrahe pedem tuum à ſemitis ipſorum.* 15 16 *Nam retia non tenduntur pennatis fruſtrá.* 17 *Ii enim qui participant homicidium, multiplicant animabus ſuis mala: Et proſtratio virorum tranſgredientium legem, eſt peſſima.* 18 *Hujuſmodi via propria eſt omnibus qui perficiunt opera repellentia legem; nam trahunt animas ſuas ad infidelitatem.* 19 *Sapientia in domibus laudat, & in plateis affert emolumentum palám.* 20 *Et de angulis parietum clamitat, & ad fores potentium inſidiatur, et prope portas urbis dicit;* 21 *Abominanda res eſt quòd manſueti, dum durat illis tempus juſtitiæ ſuæ, non ſublimantur ad honores: at verò ſtulti inveniuntur cupidi ſuperbiæ; & cùm facti fuerint iniqui, deſpiciunt prudentiam, & ſub ambitionibus acquirunt correptiones.* 22 *Ecce do vobis verba ſpiritûs mei, & doceo vos ſermones meos.* 23

non &, meam manum extendi : renuiſtis & , vocavi quòd eo Pro
24 יען קראתי ותמאנו נטיתי ידי ואין
meam increpationem & ;meum conſilium omne feciſtis *feriari* Et .*attendens*
25 מקשיב : ותפרעו כל־עצתי ותוכחתי
, ſubſannabo : ridebo *veſtro exitio* in ego Etiam .voluiſtis non
26 לא אביתם : גם־אני באידכם אשחק אלעג
, *veſtrum pavorem* deſolatio ſicut *veniendo In* .*veſtrum pavorem veniendo in*
27 בבא פחדכם : בבא כשאוה פחדכם
, *anguſtiam* vos ſuper *veniendo in* : *ingruerit* turbo veluti *veſtrum exitium &*
ואידכם כסופה יאתה בבא עליכם צרה
,me *diluculo* quærent:exaudiam non &,me invocabunt Tunc.*coarctationem &*
28 וצוקה : אז יקראנני ולא אענה ישחרנני
timorem & : ſcientiam odiverunt quòd Pro .me invenient non &
29 ולא ימצאנני : תחת כי־שנאו דעת ויראת
ſpreverunt :*meo conſilio acquieverunt* Nec .elegerunt non Domini
30 יהוה לא בחרו : לא־אבו לעצתי נאצו
: ſuæ viæ fructu de comedent Et .meam increpationem omnem
31 כל־תוכחתי : ויאכלו מפרי דרכם
ſimplicium averſio Quia .ſaturabuntur ſuis conſiliis de &
32 וממעצתיהם ישבעו : כי משובת פתים
audiens Et .eos perdet ſtultorum *tranquillitas* & ; eos interficiet
33 תהרגם ושלות כסילים תאבדם : ושמע
.malo *pavore à pacatus erit* & :fiducialiter habitabit mihi
לי ישכן־בטח ושאנן מפחד רעה :

CAP. II. ב

.tecum abſconderis mea mandata & ; mea eloquia ſuſceperis ſi , mi Fili
1 בני אם־תקח אמרי ומצותי תצפן אתך :
tuum cor inclines : tuam aurem *ſapientiam ad faciendum* attendere *Ad*
2 להקשיב לחכמה אזנך תטה לבך
intelligentiæ ; clamaveris intelligentiam ad ſi Quia .intelligentiæ
3 לתבונה : כי אם לבינה תקרא לתבונה
; argentum tanquam eam quæſieris Si .tuam vocem dederis
4 תתן קולך : אם־תבקשנה ככסף
intelliges Tunc .eam fueris ſcrutatus *abſconditos* theſauros ſicut &
5 וכמטמנים תחפשנה : אז תבין
Dominus Quia .invenies Dei ſcientiam & ; Domini timorem
6 יראת יהוה ודעת אלהים תמצא : כי־יהוה
abſcondet Et .intelligentia & , ſcientia ejus ore ex :ſapientiam *dabit*
7 יתן חכמה מפיו דעת ותבונה : וצפן
cuſtodiendum Ad .*perfectè ambulantibus clypeus* ; eſſentiam *rectis*
8 לישרים תושיה מגן להלכי תם : לנצר
Tunc .cuſtodiet ejus miſericordium viam & : judicii ſemitas
9 ארחות משפט ודרך חסידו ישמר : אז
.bonam *orbitam* omnem,rectitudines &;judicium &,juſtitiam intelliges
תבין צדק ומשפט ומישרים כל־מעגל־טוב :
.*fuerit jucunda* tuæ animæ ſcientia & ; tuum cor in ſapientia intraverit Cùm
10 כי־תבוא חכמה בלבך ודעת לנפשך ינעם :
te *eruendum Ad* .te ſervabit intelligentia : te *ſuper* cuſtodiet *Cura*
11 12 מזמה תשמר עליך תבונה תנצרכה : להצילך
ſemitas *Relinquentes* .perverſitates loquente viro à : mala via à
13 מדרך רע מאיש מדבר תהפכות : העזבים ארחות
facere *Lætantes* .*tenebroſitatis viis in eundum ad* ; rectitudinis
14 ישר ללכת בדרכי־חשך : השמחים לעשות
eorum ſemitæ Quorum .mali perverſitatibus in *exultabunt* ; malum
15 רע יגילו בתהפכות רע : אשר ארחתיהם
muliere à te *eruendum Ad* .eorum *orbitis* in *recedentes &* ; *obliquæ*
16 עקשים ונלוזים במעגלותם : להצילך מאשה
.*lenificavit* ſua eloquia aliena ab ; extranea
זרה מנכריה אמריה החליקה :

Verſio VULG. LAT.

24 Quia vocavi, & renuiſtis : extendi manũ meam, & non fuit 25 qui aſpiceret. Deſpexiſtis omne conſilium meum,& 26 increpationes meas neglexiſtis. Ego quoque in interitu veſtro ridebo, & ſubſannabo, cùm vobis id,quod timebatis, advenerit. 27 Cùm irruerit repentina calamitas,et interitus quaſi tempeſtas ingruerit : quando venerit ſup vos tribulatio,& anguſtia: 28 Tunc invocabunt me, & non exaudiam:manè conſurgent,& 29 non invenient me: Eò quòd exoſam habuerint diſciplinã, & timorẽ Domini non 30 ſuſceperint. Nec acquieverint conſilio meo, & detraxerint 31 univerſæ correptioni meæ.Comedent igitur fructus viæ ſuæ, ſuiſque conſiliis ſaturabuntur. 32 Averſio parvulorum interficiet eos, & proſperitas ſtultorum 33 perdet illos. Qui autem me audierit,abſque terrore requieſcet, & abundantiâ perfruetur,timore malorum ſublato.

CAP. II.

1 FIli mi, ſi ſuſceperis ſermones meos,& mandata mea 2 abſconderis penes te, Ut audiat ſapientiam auris tua : inclina cor tuum ad cognoſcendã 3 prudentiam. Si enim ſapientiam invocaveris, & inclinaveris 4 cor tuum prudentiæ : Si quæſieris eam quaſi pecuniam, & ſicut theſauros effoderis illam: 5 Tunc intelliges timorem Domini, & ſcientiam Dei 6 invenies: Quia Dominus dat ſapientiam:& ex ore ejus 7 prudentia, & ſcientia. Cuſtodiet rectorum ſalutem, & proteget 8 gradientes ſimpliciter, Servans ſemitas juſtitiæ, & vias 9 Sanctorum cuſtodiens. Tunc intelliges juſtitiam,& judiciũ, & æquitatem,& omnem 10 ſemitam bonam. Si intraverit ſapientia cor tuum,& ſcientia 11 animæ tuæ placuerit: Conſiliũ cuſtodiet te, & prudentia 12 ſervabit te,Ut eruaris à via mala, & ab homine, qui perverſa 13 loquitur: Qui relinquunt iter rectum, et ambulant per vias 14 tenebroſas: Qui lætantur cùm malefecerint,& exultant in 15 rebus peſſimis: Quorũ vitæ perverſæ ſunt, & infames greſſus 16 eorum. Ut eruaris à muliere aliena , & ab extranea, quæ mollit ſermones ſuos,

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

24 † Ἐπειδὴ ἐκάλουν, καὶ οὐχ (κ) ὑπηκούσατε, † καὶ ἐξέτεινον λόγους, καὶ οὐ προσείχετε· 25 † Ἀλλὰ ἀκύρους ἐποιεῖτε ἐμὰς βουλάς, † τοῖς 26 δὲ ἐμοῖς ἐλέγχοις (λ) ἠπειθήσατε· † Τοιγαροῦν κἀγὼ τῇ ὑμετέρᾳ ἀπωλείᾳ ἐπιγελάσομαι, † καταχαροῦμαι δὲ (μ) ἡνίκα ἔρχη- 27 ται ὑμῖν ὄλεθρος· † Καὶ ὡς ἂν ἀφίκηται ὑμῖν ἄφνω θόρυβος, † ἡ δὲ καταστροφὴ ὁμοίως καταιγίδι παρῇ, † (ν) καὶ ὅταν ἔρχηται ὑμῖν θλῖψις καὶ πολιορκία, † ἢ ὅταν 28 ἔρχηται ὑμῖν ὄλεθρος. † Ἔσται γὰρ ὅταν ἐπικαλέσησθέ με, ἐγὼ δὲ οὐκ εἰσακούσομαι ὑμῶν, † ζητήσουσί με κακοὶ, καὶ οὐχ εὑρήσου- 29 σιν. † Ἐμίσησαν γὰρ (ξ) σοφίαν, † τὸν δὲ λόγον 30 (ο) τοῦ κυρίου οὐ προείλαντο, † Οὐδὲ ἤθελον ἐμαῖς προσέχειν βουλαῖς, † ἐμυκτήριζον 31 δὲ ἐμοὺς ἐλέγχους. † Τοιγαροῦν ἔδονται τῆς ἑαυτῶν ὁδοῦ τοὺς καρποὺς, † καὶ τῆς ἑαυτῶν ἀσε- 32 βείας πλησθήσονται. † Ἀνθ᾽ ὧν γὰρ ἠδίκουν νηπίους, φονευθήσονται, † καὶ ἐξετασμὸς 33 ἀσεβεῖς ὀλεῖ. † Ὁ δὲ ἐμοῦ ἀκούων κατασκηνώσει (ν) ἐπ᾽ ἐλπίδι, † καὶ ἡσυχάσει ἀφόβως ἀπὸ παντὸς κακοῦ.

MS.A. (κ) ὑπηκούετε, (λ) οὐ προσείχετε· Τοιγαροῦν (μ) ἡνίκα ἂν ἔρχη-
ται (ν) ἢ ὅταν (ξ) παιδίαν, (ο) κυρίου (ν) ἐν

ΚΕΦ. β′.

1 † ΥΙὲ ἐὰν δεξάμενος ῥῆσιν ἐμῆς ἐντο- 2 λῆς κρύψῃς παρὰ σεαυτῷ, † Ὑπακούσεται σοφίας τὸ οὖς σου, † καὶ παραβαλεῖς καρδίαν σου εἰς σύνεσιν, † παραβαλεῖς δὲ αὐτὴν ἐπὶ 3 νουθέτησιν τῷ υἱῷ σου. † Ἐὰν γὰρ τὴν σοφίαν ἐπικαλέσῃ, † καὶ τῇ συνέσει δῷς φωνήν σου, 4 (α) † Καὶ ἐὰν ζητήσῃς αὐτὴν ὡς ἀργύριον, † καὶ ὡς θησαυροὺς (β) ἐξερευνήσῃς αὐτήν· 5 † Τότε συνήσεις φόβον κυρίου, † καὶ ἐπίγνω- 6 σιν θεοῦ εὑρήσεις. † Ὅτι κύριος δίδωσι σοφίαν, † καὶ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ γνῶσις καὶ 7 σύνεσις. † Καὶ θησαυρίζει τοῖς κατορθοῦσι σωτηρίαν, † ὑπερασπιεῖ τὴν πορείαν αὐ- 8 τῶν, Τοῦ φυλάξαι (γ) ὁδοὺς δικαιωμάτων, † καὶ ὁδὸν εὐλαβουμένων αὐτὸν διαφυλάξει. 9 † Τότε συνήσεις δικαιοσύνην καὶ κρίμα, † καὶ κατορθώσεις πάντας (δ) ἄξονας ἀγαθούς. 10 † Ἐὰν γὰρ ἔλθῃ ἡ σοφία εἰς σὴν διάνοιαν, † ἡ δὲ αἴσθησις τῇ σῇ ψυχῇ καλὴ εἶναι 11 δόξῃ, † Βουλὴ καλὴ φυλάξει σε, † ἔννοια δὲ 12 ὁσία τηρήσει σε, † (ε) Ἵνα ῥύσηταί σε ἀπὸ ὁδοῦ κακῆς, † καὶ ἀπὸ ἀνδρὸς λαλοῦν- 13 τος μηδὲν πιστόν. † Ὦ οἱ ἐγκαταλείποντες ὁδοὺς εὐθείας † τοῦ πορεύεσθαι ἐν ὁδοῖς 14 σκότους· † Οἱ εὐφραινόμενοι ἐπὶ κακοῖς 15 † καὶ χαίροντες ἐπὶ διαστροφῇ κακῇ· † Ὧν αἱ τρίβοι σκολιαὶ, † καὶ καμπύλαι αἱ τροχιαὶ αὐτῶν, † τοῦ μακράν σε ποιῆσαι 16 Ἀπὸ ὁδοῦ εὐθείας, † καὶ ἀλλότριον τῆς δικαίας γνώμης. † Υἱὲ μή σε καταλάβῃ κακὴ βουλή·

MS.A. (α) † τὴν δὲ αἴσθησιν ζητήσῃς μεγάλῃ τῇ φωνῇ. Καὶ
νήσεις (γ) ὁδὸν (δ) * αὔξονας (ε) Ἵνα ῥύσηται ἀπὸ ὁδοῦ

Quoniam vocabam, & non
ſtis: & extendebam (kk) ſerm
non attendiſtis : Sed (ll) irrita
c ebatis mea conſilia, & meis
crepationibus (mm) rebelles
Itaque & ego veſtrâ (nn) perdi
one ridebo : (oo) gaudebo
cùm venerit vobis interitus
cùm advenerit vobis ſubito tumul
tus; everſio autem ſimilis (pp)
cellæ affuerit, & cùm venerit vo
bis tribulatio, & (qq) oppreſſ
vel cùm venerit vobis interi
(rr) Erit enim, cùm invoca
me, ego autem non exaudiam
quærent me mali, & non inven
ent. (ſſ) Oderunt enim ſapien
(tt) verbum autem Domini
aſſumpſerunt. (uu) Neq;
meis attendere conſiliis : (xx)
ſannabant autem meas redargu
ones. Ergò comedent viæ ſuæ
ctus, & ſuâ ipſorum (yy)
tate ſaturabuntur. Pro
enim , quòd injuriam
parvulis, occidentur, & (zz)
aminatio impios perdet. Qui au
*tem me audit; *habitabit in*
quieſces ſine timore ab omni

CAP. II.

FIli, ſi ſuſcipiens eloquia
mandati abſconderis penes te,
Obediet ſapientiæ auris tua,
adjicies cor tuum ad intelle
adjicies autem ipſum ad mo
nem filio tuo. Si enim (c)
tiam invoces, & intellectui
vocem (d)tuam, Et, ſi
eam tanquam argentum,
quam (e)theſauros inveſtiga
Tunc intelliges timorem
& ſcientiam Dei reperies.
Dominus dat ſapientiam,
facie ejus cognitio, &
Et theſaurizat (g) rectè
ſalutem : proteget
Ad cuſtodiendas (h) vias
cationum ; & viam
ſe cuſtodiet. Tunc intelliges
tiam, & judicium :
omnes (i) ſemitas bonas.
venerit ſapientia in tuam
tem, & ſenſus eſſe animæ
pulcher videbitur ;
num cuſtodiet te, & (
ſancta ſervabit te :
via mala, & à viro lo
fidele. O qui dereliqu
ctas abeundo in vias
Qui lætamini in mal
detis in everſione mal
ſemitæ (n) pravæ, &
curſus eorum ad long
(p) A via recta, &
juſta ſententia. Fili,
hendat malum conſiliu

תרגום TARGUM.

24 על דקרית ולא הימנתון ארימית אידי ולא אציתון : ושניתון כל תרעיתי ומכסנותי
25 26 לא אביתון : אף אנא בתברכון אגחך ואדחך כד ייתי דלוחיא עליכון : כד ייתי
27 בשליא דלוחיכון ותברכון בעלעולא יתא כד תתא עליכון עקתא ושנוקא : הידין
28 29 נקרוני ולא אענה נקרין ולא תשכחנני : על דסנו ידיעתא ודחלתיה דאלהא לא
30 אתרעו : לא צבו בתרעיתי ואשלאיו כל מכסנותי : ואכלו מן פרי דארחתכון
31 32 וממלכיהון יסבעון : מטול דנהפכנותא דשברי תקטול אנון וטועי דסכלי תובדנון :
33 מן דשמע לי נשרי בסברא ונשרא מן דלוחא דבישתא :

ב

1 ברי אין תקבל מלי ופוקדני תטשי גביך : ותצלי אדנך לחכמתא ותפנה לבא לביונא :
2 3 ואמא לביוננותא תקרא ולביונה תתן קלך : ותבעי היך סימא והיך סימתא תבציה :
4 5 הידין תתבין דחלתיה דאלהא וידעתיה מן קדם אלהא תשכח : מטול דאלהא
6 יהב חכמתא מן פומיה ידיעתא וביונא : יטשי לתריצי שבהור ומסיע לאלין דמהלכין
7 8 בלא מום : למנטור ארחתא דדינא וארחתא דצדיקין ננטר : הידין תתבין צדקתא
9 ודינא ותריצותא דכל שבלי שפירי : ארי תעול חכמתא ללבך וידיעתא לנפשך
10 11 יבסם : תרעיתא תנטור עלך ביונתא תנצרך : די תתפצי מן ארחא בישא ומן
12 גברא דממלל מפרכיתא : דשבקין ארחתא תריצתא ואזלין בארחתא דחשוכא :
13 14 דחדין למעבד ביש ודיצין בהופכא דבישתא : דארחתהון מעקמן ומפתלין שביליהון :
15 16 דתתפצי מן אתתא חילוניתא מנוכריתא דמלהא חלין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Quia vocavi & non credidiſtis, levavi manus meas, & non
Et commutâſtis omne conſilium meum, & correptionem meam
Ego quoq; in interitu veſtro ridebo,& irridebo cùm venerit ſuper
vos. Cùm venerit tanquam repentina vaſtitas pavor veſter, et
ſter quaſi tempeſtas venerit ; cùm venerit ſuper vos tribulatio &
Tunc invocabunt me,& non reſpondebo; clamabunt, & non
Eò quòd oderint ſcientiam : & timorem Dei non elegerunt.
conſilium meum, & detraxerunt univerſæ correptioni meæ. E
de fructibus viarum ſuarum, & conſiliis ſuis ſatientur. Q
inſipientium interficiet eos, & error ſtultorum perdet eos.
habitabit in ſpe, & *quieſcet* à timore mali.

CAP. II.

FIli mi ſi ſuſceperis verba mea, & mandata mea abſconderis
Et inclinaveris aurem tuam ad ſapientiam, et converteris cor
telligentiam ; Atque matrem intelligentiam vocaveris, et ſi ac
dederis vocem tuam. Et quæſieris ſicut argentum, et ſicut the
ſtigaveris illam. Tunc intelliges timorem Dei, et ſcientiam
venies. Quoniam Deus dat ſapientiam ; ex ore ejus ſcientia
tia. Abſcondet rectis incolumitatem, et auxiliabitur iis qui
abſque macula. Ad cuſtodiendas vias judicii, et vias juſtorum
Tunc intelliges juſtitiam et judicium, et æquitatem omnium
bonarum. Si ingreſſa fuerit ſapientia in cor tuum, et ſcientia
dulcis fuerit ; Conſilium cuſtodiet te, et intelligentia ſervabit
à via mala, & à viro qui loquitur perverſa. Qui relinquunt
ambulant in viis tenebrarum. Qui lætantur ad faciendum
tant in perverſione malitiæ. Quorum ſemitæ pravæ ſunt, et
tæ eorum. Ut eruaris à muliere aliena, ab extranea, cujus ve

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

24 * ܡܛܠ ܕܩܪܝܬ ܘܠܐ ܗܝܡܢܬܘܢ. ܘܐܪܝܡܬ ܩܠܝ ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ. * ܘܫܒܩܬܘܢ ܟܠܗܘܢ
25 ܬܪܥܝܬܝ. ܘܡܟܣܢܘܬܝ ܠܐ ܨܒܝܬܘܢ. * ܐܦ ܐܢܐ ܐܓܚܟ ܡܛܠ ܐܒܕܢܟܘܢ. ܘܐܚܕܐ ܟܕ ܐܬܐ
26 ܥܠܝܟܘܢ ܕܘܘܢܐ. ܘܬܒܪܐ ܡܢ ܫܠܝܐ. * ܘܬܒܪܟܘܢ ܐܝܟ ܥܠܥܠܐ ܬܐܬܐ. ܘܡܐ ܕܐܬܐ ܥܠܝܟܘܢ
27 ܐܘܠܨܢܐ ܘܥܩܬܐ. * ܗܝܕܝܢ ܢܩܪܘܢܢܝ ܘܠܐ ܐܥܢܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܩܕܡܘܢ ܠܘܬܝ. ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢܢܝ.
28 * ܡܛܠ ܕܣܢܘ ܝܕܥܬܐ. ܘܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܓܒܘ. * ܘܠܐ ܨܒܘ ܒܡܠܟܝ. ܘܐܡܐܣܘ ܟܠܗ
29 30 ܡܟܣܢܘܬܝ. * ܘܐܟܠܘ ܡܢ ܦܐܪܐ ܕܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܡܢ ܬܪܥܝܬܗܘܢ ܣܒܥܘ. * ܡܛܠ ܕܗܘܐ
31 32 ܡܬܗܦܟܢܘܬܐ ܕܫܒܪܐ ܬܩܛܘܠ ܐܢܘܢ. ܘܛܘܥܝܝ ܕܚܣܝܪܝ ܪܥܝܢܐ ܬܘܒܕ ܐܢܘܢ. * ܘܡܢ
33 ܕܫܡܥ ܠܝ ܢܫܪܐ ܒܬܘܟܠܢܐ. ܘܢܬܢܝܚ ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܒܝܫܬܐ.
* [illegible] * [illegible] *

1 * ܒܪܝ. ܐܢ ܬܩܒܠ ܡܠܝ. ܘܦܘܩܕܢܝ ܬܛܫܐ ܒܠܒܟ. * ܘܬܨܠܐ ܐܕܢܟ ܠܚܟܡܬܐ. ܘܬܦܢܐ
2 ܠܒܟ ܠܣܘܟܠܐ. * ܘܬܩܪܐ ܠܣܘܟܠܐ. ܘܠܣܘܟܠܐ ܬܪܝܡ ܩܠܟ. * ܘܬܒܥܝܗ ܐܝܟ ܣܐܡܐ.
3 4 ܘܬܒܨܝܗ ܐܝܟ ܣܝܡܬܐ. * ܗܝܕܝܢ ܬܣܬܟܠ ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܬܫܟܚ ܝܕܥܬܗ
5 ܕܐܠܗܐ. * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܗܘ ܝܗܒ ܚܟܡܬܐ. ܘܡܢ ܦܘܡܗ. ܝܕܥܬܐ ܘܣܘܟܠܐ. * ܘܢܛܪ
6 7 ܣܒܪܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܬܪܝܨܝܢ. ܘܡܥܕܪ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܗܠܟܝܢ ܕܠܐ ܡܘܡ. * ܘܢܛܪ ܐܘܪܚܬܐ ܕܕܝܢܐ.
8 ܘܐܘܪܚܬܐ ܕܚܣܝܕܘܗܝ ܢܢܛܪ. * ܗܝܕܝܢ ܬܣܬܟܠ ܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܕܝܢܐ ܘܬܪܝܨܘܬܐ ܕܟܠܗܘܢ ܫܒܝܠܐ
9 ܛܒܐ. * ܟܕ ܬܥܠ ܚܟܡܬܐ ܠܠܒܟ. ܘܝܕܥܬܐ ܠܢܦܫܟ ܬܒܣܡ. * ܬܪܥܝܬܐ ܛܒܬܐ
10 11 ܬܛܪܟ. ܘܣܘܟܠܐ ܕܙܕܝܩܐ ܢܦܪܩܟ. * ܘܬܬܦܨܐ ܡܢ ܐܘܪܚܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܢ ܓܒܪܐ ܕܡܡܠܠ
12 ܗܦܝܟܬܐ. * ܕܫܒܩܝܢ ܐܘܪܚܐ ܬܪܝܨܬܐ. ܘܡܗܠܟܝܢ ܒܐܘܪܚܐ ܕܚܫܘܟܐ. * ܘܚܕܝܢ ܠܡܥܒܕ
13 14 ܒܝܫܬܐ. ܘܪܘܙܝܢ ܒܗܘܦܟܐ ܕܒܝܫܬܐ. * ܕܐܘܪܚܬܗܘܢ ܥܩܝܡܢ. ܘܡܥܓܠܢ ܫܒܝܠܝܗܘܢ.
15 16 * ܠܡܦܨܝܘܬܟ ܡܢ ܐܢܬܬܐ ܢܘܟܪܝܬܐ ܕܡܗܦܟܐ ܡܠܝܗ.

Eò quòd vocavi, & non credidiſtis, & extuli 24
vocē meam, & non audiviſtis, Et neglexiſtis 25
omnes cogitationes meas, & objurgationem
meā renuiſtis, Etiā ego ridebo exitiū veſtrū, 26
& lætabor cùm venerit ſuper vos perturbatio
& interitus repentinus, Et contritio veſtra, 27
turbinis inſtar advenerit. Cúmq; ingruerit
in eos anguſtia & tribulatio, Tunc vocabunt 28
me, & non reſpondebo eis: & diluculò venient
ad me, et non invenient me. Quia odio 29
habuerunt ſcientiā, et timorē Dñi non elegerunt,
Nec admiſerunt conſilia mea, et ſpre- 30
verunt omnem reprehenſionē meā, Et come- 31
derunt de fructibus viarū ſuarū, et cogitationibus
ſuis ſaturati ſunt: Propterea averſio 32
puerilis interficiet eos, et error carentium
ratione perdet illos. Qui autem obedierit 33
mihi, habitabit ſecurus, et requieſcet à multitudine
malorum.

CAP. II.

Filii mi, ſi ſuſceperis verba mea, et præcepta 1
mea abſconderis in corde tuo, Et inclina- 2
naveris aurē tuā ſapientiæ, et converteris cor
tuū ad intelligentiā, Vocaveriſque intellectū, 3
et ad intellectū extuleris vocē tuā, Et quæſi- 4
eris eum tanquam argentū, et indagaveris
eum tanquam theſaurū: Tunc percipies timo- 5
rem Dñi, et invenies ſcientiā Dei. Siquidem 6
Dñs dat ſapientiā, et ex ore ejus *prodit* ſcientia
et intellectus, Ipſéq; ſervat ſpem iis qui 7
recti ſunt, et protegit eos qui ambulant ſine
labe, Et cuſtodit vias judicii, et vias ſanctorū 8
ſuorū tuebitur. Tunc intelliges juſtitiam, et 9
judiciū, et rectitudinē omniū ſemitarū bonarū.
Cùm indideris ſapientiā in cor tuū, et 10
ſcientia animā tuā oblectaverit, Mens bona 11
cuſtodiet te, et intelligentia juſtorū ſalvabit
te: Et liberaberis à viis pravis, et ab homini- 12
bus loquentibus perverſa, Qui deſerunt viam 13
rectā, et ambulant in via tenebrarum, Et ge- 14
ſtiunt ad perpetranda ſcelera, et delectantur
converſatione malignâ; Quorū viæ perverſæ 15
ſunt, et obliquæ ſemitæ. Liberabit te ſapientia 16
à muliere extranea, quæ ſubvertit verba ſua,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

24 * فاذ كنت ادعوكم فما اطعتموني * واسهبت اقوالا فما اصغيتم اليها * وجعلتم ارائي منقوصة
25 26 وما اطعتم توبيخاتي * لذلك ساضحك انا على هلاككم واشمت بكم متى يوافيكم الهلاك
27 * واذا دهمكم الهيج بغتة وصرعتكم ستحضر كالزوبعة * واذا ورد اليكم الاغتمام والحصار
28 والضنك * او اذا دهمكم الهلاك * اذا استغثتم بي فلا استجيب لكم * الاشرار يطلبوني فلا
29 30 يجدوني * لانهم مقتوا الحكمة وما اثروا مخافة الرب * ولا ارادوا ان يصغوا الى مشوراتي * وكانوا
31 32 يستهزون بتوبيخاتي * لذلك سياكلون اثمار طريقهم * ويمتلون من نفاقهم * لانهم بدل
33 ما كانوا يظلمون الاطفال سيقتلون * والاستفحاص يجتاح المنافقين * ومن يسمعني يسكن
في الرجاء * ويهدا من كل شر بلا خوف *

الفصل الثاني *

1 2 * يا ابني ان اقبلت كلام وصيتي وصنته عندك * وسمعت الحكمة اذنك * ودفعت قلبك
3 الى الفهم * ودفعتها الى ابنك ليتعظ بها * وان استدعيت الحكمة * ومنحت الفقه صوتك *
4 وابتغيت الحس بصوت عظيم * وان ابتغيتها كما تطلب الفضة * واستبحثت عنها كما يفتش عن
5 6 الكنوز * حينيذ ستفهم مخافة الرب * وتصادف معرفة الله * لان الرب يعطي الحكمة * ومن وجهه
7 8 العلم والفهم * وهو يخزن لمن يتقون سبرهم خلاصا * ويعضد مسلكهم ليحفظوا مناهج حقوقه *
9 ويحفظ طرايق المتورعين منه * فحينيذ تفهم العدل والانصاف * وتقوم على كافة افعال الوصايا
10 11 الصالحة * لان الحكمة ان جات الى قلبك * فسيكون الحس في نفسك مجدا حسنا * ويحفظك
12 الراي السديد * ويصونك التفكر البار في اواخرك * لينقذك من الطريقة الردية * ومن رجل
13 14 يتكلم ما لا صدقا فيه * ايها التاركون الطرايق المستقيمة لتسلكوا في مناهج الظلمة * ايها
15 المسرورين بالمساوي والمستبشرين بالارتجاع الردي * الذي سبلهم معوجة ومناهجهم معرجة *
16 * ليجعلوك من طريق الحق المستوية بعيدا * ومن العزم المقسط غريبا *

Cùm vos vocarem, non obediſtis mihi: & multiplicavi verba, & non admoviſtis animum: Et feciſtis conſilia mea manca, et non obediviſtis correptionibus meis. Propterea ego ridebo in interitu veſtro, & geſtiam de vobis cùm advenerit vobis interitus, Et cum offuſcaverit vos tempeſtas repentè, & proſtratio veſtra adfuerit quaſi turbo: & cum venerit ad vos miſeria et anguſtia et calamitas, aut quando offuſcaverit vos interitus. Et cùm imploraveritis opem meam, non exaudiam vos. Scelesti quærent me, & non invenient me. Quia oderunt ſapientiam, et non elegerunt timorem Domini, Et noluerunt auſcultare conſilia mea, & irridebant correptiones meas: Ideò manducabunt fructus viæ ſuæ, et ſaturabuntur iniquitate ſuâ. Nam pro eo quòd opprimebant parvulos, occidentur: et diſquiſitio perdet impios. Qui autem audit me, habitabit in ſpe, & requieſcet ab omni malo ſine timore. 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33

CAP. II.

Filii mi, ſi ſuſceperis verba moniti mei, & ea ſervaveris apud te: Et audierit ſapientiam auris tua et tradideris cor tuum ad intelligentiam, & tradideris eam filio tuo, ut eā erudiatur: Et ſi invocaveris ſapientiam, & dederis prudentiæ vocem tuam, & quæſieris prudentiam clamore ingenti: Et ſi eam cupieris ut expetitur argentum, & inveſtigaveris eam ut perquiruntur theſauri: Tunc intelliges timorem Domini, & reperies cognitionem Dei; Quia Dominus dat ſapientiam, & ex ejus vultu eſt doctrina & intellectus: Ipſéque recondit eis qui cuſtodiunt vias ſuas, ſalutem: Et adjuvat ſemitas eorum, ut cuſtodiant vias veritatum ejus: & ſervat vias timentium ſe. Tunc intelliges juſtitiam & æquitatem, & inſiſtes omnibus operibus mandatorum bonis. Quia ſi ſapientia venerit ad cor tuum, erit prudentia in anima tua gloria pulcherrima. Téque tuebitur conſilium firmum, & conſervabit te cogitatio juſta in noviſſimis tuis, ut liberent te à via mala, & à viro loquente quod nullam in ſe continet veritatem. O vos qui deſeritis vias rectas, ut ambuletis in viis tenebroſis: O vos qui gaudetis malignitate, & lætamini in converſatione mala: Quorum ſemitæ ſunt retortæ, & viæ claudicantes, ut faciant te à tramite veritatis recto extorrem, & à deliberatione juſta extraneum. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16

מִשְׁלֵי : בג

.est oblita sui Dei pacti &,*suarum adolescentiarum* ducem *Relinquens*
הַעֹזֶבֶת אַלּוּף נְעוּרֶיהָ וְאֶת־בְּרִית אֱלֹהֶיהָ שָׁכֵחָה׃ 17
manes ad & ; ejus domus mortem ad est *incurvata* Quia
כִּי שָׁחָה אֶל־מָוֶת בֵּיתָהּ וְאֶל־רְפָאִים 18
nec ; revertentur non eam ingredientes Omnes .ejus *orbitæ*
מַעְגְּלֹתֶיהָ׃ כָּל־בָּאֶיהָ לֹא יְשׁוּבוּן וְלֹא 19
via in ambulabis Eapropter .*vitarum* semitas apprehendent
יַשִּׂיגוּ אָרְחוֹת חַיִּים׃ לְמַעַן תֵּלֵךְ בְּדֶרֶךְ 20
inhabitabunt recti Quia .*custodies* justorum semitas & ; bonorum
טוֹבִים וְאָרְחוֹת צַדִּיקִים תִּשְׁמֹר׃ כִּי־יְשָׁרִים יִשְׁכְּנוּ־ 21
terra de impii Et .ea in remanebunt *integerrimi* & ; terram
אֶרֶץ וּתְמִימִים יִוָּתְרוּ בָהּ׃ וּרְשָׁעִים מֵאֶרֶץ 22
.ea ex *eradentur* prævaricatores & ; succidentur
יִכָּרֵתוּ וּבוֹגְדִים יִסְּחוּ מִמֶּנָּה׃

CAP. III. ג

.tuum cor custodiat mea præcepta & ; obliviscaris ne meæ legis ,mi Fili
בְּנִי תּוֹרָתִי אַל־תִּשְׁכָּח וּמִצְוֹתַי יִצֹּר לִבֶּךָ׃ 1
.tibi *addent* pacem & ; *vitarum* annos & , dierum longitudinē Quia
כִּי אֹרֶךְ יָמִים וּשְׁנוֹת חַיִּים וְשָׁלוֹם יוֹסִיפוּ לָךְ׃ 2
: *tuis gutturibus super* eas liga , te deserant ne veritas & Misericordia
חֶסֶד וֶאֱמֶת אַל־יַעַזְבֻךָ קָשְׁרֵם עַל־גַּרְגְּרוֹתֶיךָ 3
intellectum & gratiam *inveni* Et .tui cordis tabula *super* eas scribe
כָּתְבֵם עַל־לוּחַ לִבֶּךָ׃ וּמְצָא־חֵן וְשֵׂכֶל 4
Domino *in* Fide .*hominis* & , Dei oculis in ; bonum
טוֹב בְּעֵינֵי אֱלֹהִים וְאָדָם׃ בְּטַח אֶל־יְהוָה 5
omnibus In .innitaris ne *tuam intelligentiam ad* & ; tuo corde toto in
בְּכָל־לִבֶּךָ וְאֶל־בִּינָתְךָ אַל־תִּשָּׁעֵן׃ בְּכָל־ 6
sis Ne .tuas semitas diriget ipse & ; eum scito tuis viis
דְּרָכֶיךָ דָעֵהוּ וְהוּא יְיַשֵּׁר אֹרְחֹתֶיךָ׃ אַל־תְּהִי 7
Sanitas .malo à recede & , Dominum time : tuis oculis in sapiens
חָכָם בְּעֵינֶיךָ יְרָא אֶת־יְהוָה וְסוּר מֵרָע׃ רִפְאוּת 8
Dominum Honora .tuis ossibus *irrigatio* & ; tuo umbilico erit
תְּהִי לְשָׁרֶּךָ וְשִׁקּוּי לְעַצְמוֹתֶיךָ׃ כַּבֵּד אֶת־יְהוָה 9
implebuntur Et .*tui proventus omnis principio à* & ; *tua substantia è*
מֵהוֹנֶךָ וּמֵרֵאשִׁית כָּל־תְּבוּאָתֶךָ׃ וְיִמָּלְאוּ 10
.se rumpent tua torcularia novo vino & ; saturitate tua horrea
אֲסָמֶיךָ שָׂבָע וְתִירוֹשׁ יְקָבֶיךָ יִפְרֹצוּ׃
fastidias ne & ; *reprobes* ne mi fili Domini Correctionem
מוּסַר יְהוָה בְּנִי אַל־תִּמְאָס וְאַל־תָּקֹץ 11
pater veluti & : *arguet*, Dominus *diliget* quem Quippe .ejus *increpatione in*
בְּתוֹכַחְתּוֹ׃ כִּי אֶת אֲשֶׁר יֶאֱהַב יְהוָה יוֹכִיחַ וּכְאָב 12
,*hominis* & : sapientiam invenit ,*hominis Beatitudines* .*volet filium*
אֶת־בֵּן יִרְצֶה׃ אַשְׁרֵי אָדָם מָצָא חָכְמָה וְאָדָם 13
negotiatione *præ* ejus negotiatio *bona* Quia .intelligentiam *educet*
יָפִיק תְּבוּנָה׃ כִּי טוֹב סַחְרָהּ מִסְּחַר־ 14
; margaritis *præ ipsa Preciosa* .ejus *proventus* auro *præ* & : argenti
כֶּסֶף וּמֵחָרוּץ תְּבוּאָתָהּ׃ יְקָרָה הִיא מִפְּנִיִּים 15
dierum Longitudo .*ea in* æquabuntur non *tuæ voluntates omnes* &
וְכָל־חֲפָצֶיךָ לֹא יִשְׁווּ־בָהּ׃ אֹרֶךְ יָמִים 16
viæ ejus Viæ .gloria & , *opulentia* illi* sinistra in:illi* dextera in
בִּימִינָהּ בִּשְׂמֹאולָהּ עֹשֶׁר וְכָבוֹד׃ דְּרָכֶיהָ דַרְכֵי־ 17
ipsa vitarum Lignum .*pax* ejus semitæ omnes & ; *amœnitatis*
נֹעַם וְכָל־נְתִיבֹתֶיהָ שָׁלוֹם׃ עֵץ־חַיִּים הִיא 18
Dominus .*beatus* , eam *sustentantes* & : eam *in* apprehendentibus
לַמַּחֲזִיקִים בָּהּ וְתֹמְכֶיהָ מְאֻשָּׁר׃ יְהוָה 19
.intelligentia *in* cœlos stabilivit ; terram fundavit sapientia *in*
בְּחָכְמָה יָסַד אֶרֶץ כּוֹנֵן שָׁמַיִם בִּתְבוּנָה׃
.rorem stillabunt *æthera* & ; sunt ruptæ abyssi ejus scientia *In*
בְּדַעְתּוֹ תְּהוֹמוֹת נִבְקָעוּ וּשְׁחָקִים יִרְעֲפוּ־טָל׃ 20

Verſio VULG. LAT.

17 Et relinquit ducem pubertatis
18 ſuæ, Et pacti Dei ſui oblita eſt. Inclinata eſt enim ad mortem domus ejus, & ad inferos ſemi-
19 tæ ipſius. Omnes, qui ingrediuntur ad eam, non revertentur, nec apprehendent ſemitas vi-
20 tæ. Ut ambules in via bona: et
21 calles juſtorum cuſtodias. Qui enim recti ſunt, habitabunt in terra, & ſimplices permanebũt
22 in ea. Impii verò de terra perdentur: & qui iniquè agunt, auferentur ex ea.

CAP. III.

1 FIli mi, ne obliviſcaris legis meæ, & præcepta mea cor tuũ
2 cuſtodiat. Longitudinem enim dierum, & annos vitæ, & pacẽ
3 apponent tibi. Miſericordia & veritas te non deſerant, circumda eas gutturi tuo, & de-
4 ſcribe in tabulis cordis tui: Et invenies gratiam, & diſciplinam bonam, coram Deo et ho-
5 minibus. Habe fiduciã in Dño ex toto corde tuo, & ne innita-
6 ris prudentiæ tuæ. In omnibus viis tuis cogita illum, & ipſe
7 diriget greſſus tuos. Ne ſis ſapiens apud temetipſum: time
8 Deum, & recede à malo: Sanitas quippe erit umbilico tuo,
9 & irrigatio oſſiũ tuorum. Honora Dominum de tua ſubſtantia, & de primitiis omniũ fru-
10 gum tuarum da ei: Et implebuntur horrea tua ſaturitate; et vino torcularia tua redunda-
11 bunt. Diſciplinã Domini, fili mi, ne abjicias: ne deficias cùm
12 ab eo corriperis: Quem enim diligit Dominus, corripit: & quaſi pater in filio complacet
13 ſibi. Beatus homo, qui invenit ſapientiam, & qui affluit
14 prudentiâ: Melior eſt acquiſitio ejus negotiatione argenti, & auri primi & puriſſimi fru-
15 ctus ejus: Pretioſior eſt cunctis opibus: & omnia, quæ deſiderantur, huic non valent com-
16 parari. Longitudo dierum in dextera ejus, et in ſiniſtra illius
17 divitiæ, & gloria. Viæ ejus viæ pulchræ, et omnes ſemitæ illius
18 pacificæ. Lignum vitæ eſt his, qui apprehenderint eam: &
19 qui tenuerit eam, beatus. Dominus ſapientiâ fundavit terram, ſtabilivit cœlos pruden-
20 tiâ. Sapientiâ illius eruperunt abyſſi, et nubes rore concreſcunt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 † Ἡ ἀπολιποῦσα διδασκαλίαν νεότητος,
18 † Καὶ διαθήκην θείαν ἐπιλελησμένη. † Ἔθε-
το γὰρ παρὰ τῷ θανάτῳ τὸν οἶκον αὐτῆς, † καὶ
παρὰ τῷ ᾅδῃ μετὰ τῶν γηγενῶν τοὺς (ζ) ἄξο-
19 νας αὐτῆς. † Πάντες οἱ πορευόμενοι ἐν αὐ-
τῇ οὐκ ἀναστρέψουσιν, † οὐδὲ μὴ καταλάβωσι
20 τρίβους εὐθείας· † οὐ γὰρ (η) καταλαμβάνονται
21 ὑπὸ ἐνιαυτῶν ζωῆς. † Εἰ γὰρ ἐπορεύοντο
τρίβους ἀγαθάς, † εὕροσαν ἂν τρίβους δι-
22 καιοσύνης (θ) λείας. † Ὅτι εὐθεῖς κατασκη-
νώσουσι γῆν. † καὶ ὅσιοι ὑπολειφθήσονται ἐν
αὐτῇ, † (ι) Ὁδοὶ ἀσεβῶν ἐκ γῆς ὀλοῦνται,
† οἱ δὲ παράνομοι ἐξωσθήσονται ἀπ᾽ αὐτῆς.

(q) *Quæ dereliquit* (r) *doctri*
juventutis, Et (s) *testamenti*
ni oblita eſt. (t) *Poſuit enim*
mortem domum ſuam, & pene
fernum cum terrigenis (u)
ſuas. Omnes euntes in ea non
revertent, neque apprehendent
mitas rectas: non enim appre
duntur ab annis vitæ. Nam ſi am
bularent ſemitas bonas, invenis
utique (y) *ſemitas juſtitiæ le*
(z) *Quoniam recti* (&) *inhabita*
bunt terram, & ſancti remanebunt
in ea. Viæ impiorum è terra pe
dentur: & * *iniqui expellentur*
ab ea.

MS.A. (ζ) * αὔξονας (η) καταλαμβάνωνται (θ) λείους. † χρηστοὶ ἔσονται
οἰκήτορες γῆς, † ἄκακοι δὲ ὑπολειφθήσονται ἐν αὐτῇ. Ὅτι (ι) Ὁδοὶ δὲ ἀσε

ΚΕΦ. γʹ.

1 † ΥἹὲ, ἐμῶν νομίμων μὴ ἐπιλανθάνου,
† τὰ δὲ ῥήματά μου τηρείτω σὴ καρδία.
2 † Μῆκος γὰρ βίου, καὶ ἔτη ζωῆς, καὶ εἰρήνην
3 προσθήσουσί σοι. † Ἐλεημοσύναι καὶ πί-
στεις μὴ ἐκλιπέτωσάν σε· † ἄφαψαι δὲ
4 αὐτὰς ἐπὶ σῷ τραχήλῳ, Καὶ εὑρήσεις χά-
ριν· (α) † καὶ προνοοῦ καλὰ ἐνώπιον κυρίου
5 καὶ ἀνθρώπων. † Ἴσθι πεποιθὼς (β) ἐν ὅλῃ
τῇ καρδίᾳ ἐπὶ θεῷ, † ἐπὶ δὲ σῇ σοφίᾳ μὴ
6 ἐπαίρου. † (γ) Πάσαις ὁδοῖς σου γνώριζε
αὐτήν, † ἵνα ὀρθοτομῇ τὰς ὁδούς σου.
7 † Μὴ ἴσθι φρόνιμος παρὰ σεαυτῷ, † φοβοῦ
δὲ τὸν θεόν, καὶ ἔκκλινε ἀπὸ παντὸς κακοῦ.
8 † Τότε ἴασις ἔσται τῷ σώματί σου, † καὶ ἐπι-
9 μέλεια τοῖς ὀστέοις σου. † Τίμα τὸν κύριον
ἀπὸ σῶν δικαίων πόνων, † καὶ ἀπάρχου αὐ-
10 τῷ ἀπὸ σῶν καρπῶν δικαιοσύνης· † Ἵνα
πίμπληται τὰ ταμιεῖά σου πλησμονῆς (δ)
σίτῳ, † οἴνῳ δὲ αἱ ληνοί σου ἐκβλύζωσιν.
11 † Υἱὲ μὴ ὀλιγώρει παιδείας κυρίου, † μηδὲ
12 ἐκλύου ὑπ᾽ αὐτοῦ ἐλεγχόμενος. † Ὃν γὰρ ἀ-
γαπᾷ κύριος, (ε) ἐλέγχει· † μαστιγοῖ δὲ
13 πάντα υἱὸν ὃν παραδέχεται. † Μακάριος ἄν-
θρωπος ὃς εὗρε σοφίαν, † καὶ θνητὸς ὃς
14 εἶδε φρόνησιν. (ζ) † Κρεῖσσον γὰρ αὐ-
τὴν ἐμπορεύεσθαι, † ἢ χρυσίου καὶ ἀργυ-
15 ρίου θησαυρούς. † Τιμιωτέρα δέ ἐστι λίθων
πολυτελῶν, † οὐκ (η) ἀντιτάξεται αὐτῇ οὐδὲν
πονηρόν· † εὔγνωστός ἐστι πᾶσι τοῖς ἐγγίζουσιν
αὐτῇ, † πᾶν δὲ τίμιον οὐκ ἄξιον αὐτῆς ἐστι.
16 † Μῆκος γὰρ βίου καὶ ἔτη ζωῆς ἐν τῇ δεξιᾷ
αὐτῆς, † ἐν δὲ τῇ ἀριστερᾷ αὐτῆς πλοῦτος
καὶ δόξα· † ἐκ τοῦ στόματος αὐτῆς ἐκπορεύε-
ται δικαιοσύνη, † νόμον δὲ καὶ ἔλεον ἐπὶ
17 γλώσσης φορεῖ. † Αἱ ὁδοὶ αὐτῆς ὁδοὶ καλαί,
† καὶ (θ) πᾶσαι αἱ τρίβοι αὐτῆς ἐν εἰρήνῃ.
18 † Ξύλον ζωῆς ἐστι πᾶσι τοῖς ἀντεχομένοις
αὐτῆς, † καὶ τοῖς ἐπερειδομένοις ἐπ᾽ αὐ-
19 τὴν ὡς ἐπὶ κύριον, ἀσφαλής. † Ὁ θεὸς
τῇ σοφίᾳ ἐθεμελίωσε τὴν γῆν, † ἡτοίμασε δὲ
20 οὐρανοὺς (ι) φρονήσει. † Ἐν αἰσθήσει ἄβυσσοι
ἐρράγησαν, † νέφη δὲ ἐρρύησαν δρόσους.

CAP. III.

F*Ili, mearum legum ne oblivi*
ris: verba autem mea ſervet tuum
cor. Longitudinem enim et
annos vitæ, & pacem appone
bi. (a) *Eleemoſynæ & fides non*
ferant te: (b) *alliga autem e*
ſuper collum (c) *tuum, Et inve*
nies gratiam: & (d) *provide bo*
(e) *coram Domino, & hominibus*
(f) *Eſto fidens in toto corde*
Deum: in tua autem ſapientia
ne exalteris. (h) *Omnibus viis*
cognoſce illam; (i) *ut recte*
ciat vias tuas. Ne ſis (k) *prude*
apud temetipſum: time autem
um, & declina ab omni ma
Tunc ſanitas erit corpori tuo, e
(l) *curatio oſſibus tuis. Hono*
Dominum de juſtis tuis labori
& primitias da ei de
fructibus juſtitiæ: ut imple
(n) *cellaria tua* (o) *ſaturita*
mento: & vino torcularia tua
redundent. Fili, noli (q) *negli*
re diſciplinam Domini: neque
fatigeris, dum ab eo argu
Quem enim diligit Dominus
arguit: flagellat autem omne
lium, quem ſuſcipit. Beatus
mo qui invenit ſapientiam, e
mortalis qui vidit prudentiam
lius eſt enim illã mercari, qu
& argenti theſauros. Pretio
enim lapidib⁹ pretioſis: non
illi ullum malum: bene no
omnibus (x) *appropinquanti*
omne autem pretioſum non
dignum. * *Longitudo enim*
& anni vitæ in dextera ejus
ſiniſtra autem ejus divitiæ
ria. Ex ore ejus procedit juſt
legẽ autem & miſericordiam
lingua portat. Viæ ejus viæ
& omnes (z) *ſemitæ ejus*
Lignum vitæ eſt omnib⁹ qui
plectuntur eam, & qui inn
in eam, ſicut in Domino,
Deus ſapientiã fundavit ter
paravit autem cœlos pru
In (aa) *ſenſu abyſſi erupe*
bes autem manaverunt

MS.A. (α) † γράψον δὲ αὐτὰς ἐπὶ τὸ πλάτος τῆς καρδίας σου. καὶ
ὅλῃ καρδίᾳ (γ) Ἐν πάσαις (δ) σίτου, (ε) παιδεύει· (ζ) Κρεῖττον
τάσσεται (θ) πάντες οἱ τρίβοι (ι) ἐν φρονήσει.

תרגום TARGUM.

17 דשבקה מרביתא דטליותהא וקימא דאלהא טעת׃ דבעמקא דמותא ביתה
18 19 ולנבריא הלכתא דשבילהא׃ כל דעילן לא חזרין בשלם ולא צירין ארחתא דחיי׃
20 בדיל הלך בארחתא דטבי ושבילי דצדיקי תנטור׃ מטול דתריצי עמרין בארעא
21 22 ואלין דלא מום משתותרין בה׃ ורשיעיא מן ארעא נסופון ובזוזי נתעקרון מנה׃

ג

1 2 ברי נימוסי לא תנשי ופיקדני ינטר לבך׃ מטול דנוגרא דיומתא ושניא דחיי ושלמא
3 נוספון לך׃ טיבותא וקושטא לא נשבקונך קטורנון בצורך וכתוב אנון על לוח דלבך׃
4 5 ותשכח חסדא ושכלא וטיבותא קדם אלהא וקדם בני אנשא׃ סביר באלהא מן כלי
6 לבך ועל ביונתא דלבך לא תסתמיך׃ בכל ארחתך דעה והוא יתרץ שבילך׃ לא תהוי
7 8 חכים באפך דחל מן אלהא וסטא מן בישתא׃ אסיותא תהוי לכונשרך ודוהנא לגרמיך׃
9 יקר לאלהיך מן ממונך ומריש כלהון עללתך׃ ומתמלין אוצרך שבענא ומעצרתך
10 11 חמרא נשפען׃ ברי מרדותא דאלהא לא תסלא ולא תמריק במכסנותיה׃ מטול
12 דלמן דרחם ליה אלהא רדיה ליה והיך אבא דרדי לבריה׃ טובוהי לבר נשא דאשכח
13 14 חכמתא ובר נשא דמביע ביונתא׃ מטול דטבא תגרותה מן תגרותא דסימא ומן דהבא
15 16 סנינא עללתה׃ יקירא היא מן כיפי טבתא וכל מדעם לא פחים ליה׃ נוגדא דיומתא
17 בימינה ובשמאלה עותרא ויקרא׃ ארחתהא ארחתא דבוסמא וכלהון הליכתהא
18 19 שלמא׃ אילנא דחיי היא לאלין דמתחקין בה ואלין דמתעסקין בה טוביהון׃ אלהא
20 בחכמתא שתאסיה ארעא ואתקין שמיא בביונה׃ בדעתיה תהומי אתבזיעו ושמיא
צעי מטליא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Quæ relinquit ducatum adoleſcentiæ ſuæ, & pactum Dei ſui
Quoniam in fovea mortis eſt domus ejus, & ad gigantes itinera
rum ipſius. Omnes qui ingrediuntur, non revertentur in pace,
capient ſemitas vitæ. Ut ambules in viis bonorum, & ſemitas
cuſtodias. Quoniam juſti ſtabunt in terra, & immaculati remane
ea. Impii autem de terra conſumentur, & direptores eradicabuntur

CAP. III.

FIli mi ne obliviſcaris legis meæ, & præcepta mea cuſtodiat cor
Quoniam longitudinem dierum, & annos vitæ & pacem adjicient
Benignitas & veritas ne dimittant te: liga eas in collo tuo, &
in tabula cordis tui. Et invenies gratiam & intellectum, & benign
coram Deo, & coram filiis hominum. Spera in Deo ex toto corde
prudentiæ cordis tui ne innitaris. In omnibus viis tuis cognoſce eum
ipſe diriget ſemitas tuas. Ne ſis ſapiens apud temetipſum: time De
& recede à malo. Medicina erit umbilico tuo, & pinguedo oſſibus
Honora Deum tuum de mammona tuo, & de primitiis omnium fru
tuorum. Et implebuntur cellaria tua ſaturitate, & torcularia tua
dundabunt. Diſciplinam Dei fili mi ne execreris, & ne tædio afficia
correptione ejus. Quoniam quem diligit Deus, corripit; & ſicut pater
corripit filium ſuum. Beatus filius hominis qui invenit ſapientiam,
lius viri qui profert intelligentiam. Quoniam melior eſt negotiatio
negotiatione argenti, & auro conflato fructus ejus. Precioſior eſt
bus precioſis, & nihil eſt quod ei comparetur. Longitudo dierum
tera ejus, & in ſiniſtra ejus divitiæ, & gloria. Viæ ejus viæ ſuavita
omnia itinera ejus pacifica. Arbor vitæ eſt his qui apprehendunt
& hi qui occupantur in ea, beati. Deus in ſapientia poſuit funda
terræ, et præparavit cœlos in prudentia. In ſcientia ejus abyſſi rup
et nubes deſtillaverunt rorem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

17 * ܕܫܒܩܬܗ ܠܡܪܒܝܢܐ ܕܛܠܝܘܬܗ. ܘܛܥܬ ܩܝܡܐ ܕܐܠܗܗ. * ܘܫܠܡܬ ܐܣܩܘܦܬܐ ܕܒܝܬܗ
18 ܘܫܒܝܠܬܐ ܕܫܒܝܠܝܗ. * ܟܠ ܕܥܐܠܝܢ ܠܘܬܗ ܠܐ ܗܦܟܝܢ. ܘܠܐ ܡܬܕܟܪܝܢ ܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ. 19
20 * ܗܠܟ ܗܟܝܠ ܒܐܘܪܚܐ ܕܛܒܐ. ܘܛܪ ܐܘܪܚܐ ܕܙܕܝܩܐ. * ܡܛܠ ܕܬܪܝܨܐ ܢܥܡܪܘܢ ܒܐܪܥܐ. ܘܐܝܠܝܢ 21
ܕܠܐ ܡܘܡ ܐܢܘܢ ܢܫܬܚܪܘܢ ܒܗ. * ܘܚܛܝܐ ܢܬܚܪܒܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܥܘܠܐ ܢܬܥܩܪܘܢ ܡܢܗ. 22

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ * * ܒܪܝ. ܠܐ ܬܛܥܐ ܢܡܘܣܝ. ܘܦܘܩܕܢܝ ܢܛܪ ܠܒܟ. * ܡܛܠ 1
ܕܢܘܓܪܐ ܕܝܘܡܬܐ. ܘܫܢܝܐ ܕܚܝܐ ܢܬܘܣܦܘܢ ܠܟ. * ܘܫܠܡܐ ܘܛܝܒܘܬܐ ܘܬܪܝܨܘܬܐ 2 3
ܠܐ ܢܫܒܩܘܢܟ. ܐܠܐ ܩܛܘܪ ܐܢܘܢ ܒܨܘܪܟ. ܘܟܬܘܒ ܐܢܘܢ ܥܠ ܠܘܚܐ ܕܠܒܟ. * ܕܬܫܟܚ ܪܚܡܐ 4
ܘܛܝܒܘܬܐ ܘܣܘܟܠܐ. ܛܒܐ ܩܕܡ ܐܠܗܐ ܘܩܕܡ ܒܢܝ ܐܢܫܐ. * ܣܒܪ ܒܡܪܝܐ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܟ. ܘܥܠ 5
ܚܟܡܬܐ ܕܢܦܫܟ ܠܐ ܬܬܬܟܠ. * ܒܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܟ ܕܥܘܗܝ. ܘܗܘ ܢܬܪܨ ܫܒܝܠܝܟ. * ܠܐ ܬܗܘܐ 6
ܚܟܝܡ ܒܥܝܢܝ ܢܦܫܟ. ܐܠܐ ܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܣܛܝ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. * ܕܢܗܘܐ ܐܣܝܘܬܐ ܠܒܣܪܟ. 7 8
ܘܪܘܘܝܐ ܠܓܪܡܝܟ. * ܝܩܪ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܩܢܝܢܟ. ܘܡܢ ܪܫ ܟܠܗܘܢ ܥܠܠܬܟ. * ܕܢܬܡܠܘܢ 9 10
ܐܘܨܪܝܟ ܣܒܥܐ. ܘܡܥܨܪܬܟ ܢܬܪܘܝܢ ܚܡܪܐ. * ܒܪܝ. ܡܪܕܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܬܫܘܛ. ܘܠܐ ܬܥܛܠ ܟܕ 11
ܒܡܟܣܢܘܬܗ. * ܡܛܠ ܕܠܡܢ ܕܪܚܡ ܡܪܝܐ. ܪܕܐ ܠܗ ܐܝܟ ܐܒܐ ܕܪܕܐ ܠܒܪܗ. * ܛܘܒܘܗܝ 12 13
ܠܒܪܢܫܐ ܕܐܫܟܚ ܚܟܡܬܐ. ܘܠܒܪ ܒܣܪܐ ܕܐܫܟܚ ܣܘܟܠܐ. * ܡܛܠ ܕܛܒܐ ܗܝ ܬܐܓܘܪܬܗ 14
ܡܢ ܬܐܓܘܪܬܐ ܕܣܐܡܐ. ܘܡܢ ܕܗܒܐ ܕܡܦܪܫ ܝܬܝܪܢ ܥܠܠܬܗ. * ܝܩܝܪܐ ܗܝ ܓܝܪ ܡܢ ܟܐܦܐ 15
ܛܒܬܐ. ܘܡܕܡ ܠܐ ܫܘܐ ܠܗ. * ܢܘܓܪܐ ܕܝܘܡܬܐ ܒܝܡܝܢܗ. ܘܥܘܬܪܐ ܘܐܝܩܪܐ ܒܣܡܠܗ. 16
17 * ܐܘܪܚܬܗ ܐܘܪܚܬܐ ܐܢܝܢ ܒܣܝܡܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܫܒܝܠܘܗܝ ܫܠܡܐ. * ܐܝܠܢܐ ܗܘ ܕܚܝܐ ܠܐܝܠܝܢ 18
ܕܡܬܚܡܨܢܝܢ ܒܗ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܣܟܝܢ ܠܗ ܛܘܒܝܗܘܢ. * ܡܪܝܐ ܒܚܟܡܬܗ ܫܬܐܣܝܗ 19
ܕܐܪܥܐ. ܘܬܩܢ ܫܡܝܐ ܒܣܘܟܠܗ. * ܘܒܝܕܥܬܗ ܐܬܒܙܥܘ ܬܗܘܡܐ. ܘܥܢܢܐ ܪܣܘ ܛܠܐ. 20

Quæ deſeruit nutritium adoleſcentiæ ſuæ, & 17
oblita eſt fœderis Dei ſui, Et oblivioni tradidit 18
limina domûs ſuæ, & greſſus ſemitarum
ſuarum. Quicunq; ingrediuntur ad eam, non 19
revertuntur, neq; reminiſcuntur viæ vitæ.
Ambula igitur in via proborum, & cuſtodi 20
viam juſtorum; Nam recti habitabunt in terra, 21
& ii qui ſine labe ſunt, remanebunt in ea.
Peccatores verò exterminabuntur de terra, & 22
iniqui evellentur ex ea.

CAP. III.

Fili mi, ne obliviſcaris legis meæ, & mandata 1
mea cuſtodiat cor tuũ: Quia longitudo dierũ 2
& anni vitæ apponentur tibi. Et pax, & 3
gratia, & æquitas ne te deſerant: ſed innecte
eas collo tuo, & inſculpe illas tabulis cordis
tui: Ut invenias miſericordiã & gratiã atque 4
intellectũ bonũ corã Deo, & corã filiis hominum.
Spera in Dño ex toto corde tuo, & ſapientiæ 5
animæ tuæ ne confidas. Noſce eum in 6
omnib⁹ viis tuis, & ipſe diriget ſemitas tuas.
Ne ſis ſapiens in oculis tuiipſius: ſed time 7
Dñm, & declina à malo, Ut ſit ſanitas carni 8
tuæ, & impinguatio oſſibus tuis. Honora Dñm 9
de poſſeſſione tua, & de primitiis omnium
proventuũ tuorũ. Ut impleantur horrea tua 10
ſaturitate, & torcularia tua redundent vino.
Fili mi, reprehenſioné Dñi ne deſpexeris, nec 11
te pigeat in correptione ejus: Quoniã quem 12
diligit Dñs, corripit inſtar patris qui corripit
filiũ ſuũ. Beatus homo qui reperit ſapientiã, 13
& filius carnis, qui invenit intelligentiam;
Quoniam melius eſt cõmercium ejus cõmercio 14
argenti: & auro puriſſimo præſtantiores
ſunt reditus ejus. Pretioſior enim eſt lapillis 15
optimis, & nihil æquatur illi. Longitudo dierum 16
in dextera ejus, & divitiæ atq; gloria in
læva ipſius. Viæ ejus, viæ ſunt jucundæ: & 17
cunctæ ſemitæ illius, pax. Arbor eſt vitæ iis 18
qui tenent eam: & qui expectant eam, beati
ſunt. Dominus ſapientiâ ſuâ poſuit fundamenta 19
terræ, & condidit cœlum intellectu ſuo:
Et ſcientiâ ipſius ruptæ ſunt abyſſi, & nubes 20
ſtillaverunt rorem.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 * يا بني لا تدركنك المشورة الردية * التاركة تعليم الحداثة والناسية العهد الالهي * فانها قد 18
جعلت منزلها في الموت واعمالها مع الارضيين عند الجحيم الموت * فكافة السالكين فيها لن 19
يرجعوا ولا يدركوا سبلا مستقيمة لان سني الحياة لم تدركهم * لانهم لو كانوا سلكوا طرقا صالحة 20
لكانوا قد وجدوا طرائق العدل الممهدة * الاخيار يكونوا قاطني الارض * وذوو الدعة يبقون 21
فيها * وطرق المنافقين تبيد من الارض والذين يتجاوزون الشريعة يقصون منها * 22
* الفصل الثالث * * يا بني لا تنس شرايعي وليحفظ قلبك اقوالي * فستزيدك طول 1 2
العمر وسني حياة وسلامة * الصدقات والامانات لا تفن من عندك تقلدها حول عنقك فتجد 3
نعمة * واسبق فتفطن في الحسنات امام الرب والناس * كن بكل قلبك متوكلا على الله * 4 5
وبحكمتك لا ترتفع * وفي جميع طرائقك اعرفها لتقوم طرقك * لا تكونن عند نفسك عاقلا * 6 7
اتق الله واحجم عن كل شر * حينئذ يكون لجسمك شفاء واهتماما بعظامك * اكرم الرب من 8 9
اتعابك المقسطة * ومن اثمار عدلك اعطه بواكيرها * لتمتلي خزائنك ملوها حنطة وتفيض 10
معاصرك خمرا * يا بني لا تسأم من ادب ربك ولا تتضجر مني وبخك * فان الرب يودب من 11 12
يحبه ويجلد كل ابن يقبله * مغبوط هو الانسان الذي قد وجد حكمة * وسعيد المرء الذي 13
قد وجد فطنة * لانها اكرم من احجار الجواهر النفيسة * ولن يعاندها امر خبيث * ويعرفها 14 15
سريعا كل من يدنوا اليها وكل شي كريم ما يساويها * لان من يمينها طول العمر وسني الحياة 16
وفي شمالها ثروة وشرفا ومن فمها ينبعث العدل وعلى لسانها تحمل الشريعة والرحمة * وطرائقها 17
طرائق حسنة ومسالكها في السلامة * هي عود حياة صائنة لجميع المعتصمين بها والمستندين 18
عليها كمن يستند على الرب * الله بالحكمة اسس الارض * وبالفطنة سوى السموات * وبالحس 19 20
تشققت اللجج وهطلت الغيوم الندا *

Fili mi, haudquaquam te apprehendat 17
conſilium malum quod refellit doctrinam
perſpicacitatis, & quod obliviſcitur pacti
divini. Nam collocavit habitaculum ſuum 18
in morte, & ejus opera cum terreſtribus
prope infernum mors eſt. Univerſi ambulantes 19
in eo, nullo modo revertuntur, nec
apprehendunt ſemitas rectas, quia anni
vitæ non aprehendent eos. Nam ſi ambulâſſent 20
vias rectas, ſanè inveniſſent vias
juſtitiæ planas. Boni habitabunt terram, 21
& manſueti manebunt in ea. At viæ impiorum 22
peribunt de terra, & qui prætergrediuntur
legem, exterminabuntur ab ea.

CAP. III.

Fili mi, ne obliviſcaris leges meas, & 1
cuſtodiat cor tuum verba mea. Augebunt 2
enim tibi longitudinem ætatis, & annos
vitæ, atque incolumitatem. Eleemoſynæ 3
& fidelitates ne deficiant à te: cinge eas
circa collum tuum, & invenies gratiam.
Et præveniens intellige opera bona coram 4
Deo & hominibus. Eſto ex toto corde tuo 5
fretus Deo: & in ſapientia tua ne extollaris.
Et in omnibus viis tuis noſce eam, ut 6
dirigat vias tuas. Nullo modo ſis apud 7
temetipſum prudens: time Deum, & declina
ob omni malo. Tunc erit corpori tuo ſanitas, 8
& cura de oſſibus tuis. Honora 9
Deum de laboribus tuis juſtis, & de fructibus
juſtitiæ tuæ da illi primitias. Ut 10
penitùs impleantur horrea tua frumento, et
redundent torcularia tua vino. Fili mi, ne 11
cadas animis ob diſciplinam Domini tui,
nec tædio afficiaris cùm te corripuerit;
Quia Dominus corrigit quem diligit, & 12
flagellat omnem filium quem charum habet.
Beatus eſt homo qui reperit ſcientiã, 13
& fœlix eſt vir qui invenit prudentiam:
Quia eſt pretioſior lapidibus gemmarum 14
præclaris: & nullatenus adverſabitur ei
quicquam malignum. Et cognoſcet eam 15
brevi quicunque accedet ad eam: & omne
pretioſum non adæquatur ei. Quia à dextra 16
ejus eſt longitudo ætatis & anni vitæ,
& in ſiniſtra ipſius, opes & nobilitas: Et
ex ore ejus fluit juſtitia, & ſuper linguam
ſuam portat legem & miſericordiam. Et 17
viæ ejus, ſunt viæ pulchræ: et ſemitæ ejus,
in tranquillitate. Ipſa eſt lignum vitæ, 18
ſervans omnes amplectentes eam & innitentes
ei, ut eum qui innititur Domino.
Deus ſapientiâ fundavit terram, & pru- 19
dentiâ ſtabilivit cœlos: Et conſilio diſ- 20
ſciſſæ ſunt abyſſi, & manârunt nubes rore.

משלי : ד

.cogitationem & , *eſſentiam* cuſtodi : tuis oculis ab recedant ne , mi Fili
21 בְּנִי אַל־יָלֻזוּ מֵעֵינֶיךָ נְצֹר תֻּשִׁיָּה וּמְזִמָּה׃
ambulabis Tunc .*tuis gutturibus* gratia & , tuæ animæ *vitæ* erunt Et
22 וְיִהְיוּ חַיִּים לְנַפְשֶׁךָ וְחֵן לְגַרְגְּרֹתֶיךָ׃ אָז תֵּלֵךְ
23 non , *tacueris* Si .impinget non tuus pes & ; tua via *fiducia in*
24 לָבֶטַח דַּרְכֶּךָ וְרַגְלְךָ לֹא תִגּוֹף׃ אִם־תִּשְׁכַּב לֹא
pavore à timebis Non .tuus ſomnus erit ſuavis & , *jacebis* & : *pavebis*
25 תִפְחָד וְשָׁכַבְתָּ וְעָרְבָה שְׁנָתֶךָ׃ אַל־תִּירָא מִפַּחַד
Dominus Quia .venerit cùm , impiorum deſolatione à & ;repentino
26 פִּתְאֹם וּמִשֹּׁאַת רְשָׁעִים כִּי תָבֹא׃ כִּי־יְהוָה
prohibeas Ne .captura à tuum pedem cuſtodiet & ;tua fiducia *in* erit
27 יִהְיֶה בְכִסְלֶךָ וְשָׁמַר רַגְלְךָ מִלָּכֶד׃ אַל־תִּמְנַע
Ne .faciendum ad *tuæ manus facultati exiſtendo in* ; *ſuo patrono* à bonum
28 טוֹב מִבְּעָלָיו בִּהְיוֹת לְאֵל יָדְךָ לַעֲשׂוֹת׃ אַל־
Ne .*tecum eſt &* ,dabo cras & ,revertere &,Vade : tuo *ſodali* dicas
29 תֹּאמַר לְרֵעֲךָ לֵךְ וָשׁוּב וּמָחָר אֶתֵּן וְיֵשׁ אִתָּךְ׃ אַל־
Ne .tecum *fiducia in ſedens* ipſe & : malum tuum *ſocium ſuper fabrices*
30 תַּחֲרֹשׁ עַל־רֵעֲךָ רָעָה וְהוּא־יוֹשֵׁב לָבֶטַח אִתָּךְ׃ אַל־
Ne .malum tibi retribuit non ſi , gratis homine cum contendas
31 תָּרוֹב עִם־אָדָם חִנָּם אִם־לֹא גְמָלְךָ רָעָה׃ אַל־
Quia .ejus vias omnes *in* eligas ne & ; *violentiæ* virum *in* æmuleris
32 תְּקַנֵּא בְּאִישׁ חָמָס וְאַל־תִּבְחַר בְּכָל־דְּרָכָיו׃ כִּי
Maledictio .ejus ſecretum rectis cum & ; perverſus Domini abominatio
33 תוֹעֲבַת יְהוָה נָלוֹז וְאֶת־יְשָׁרִים סוֹדוֹ׃ מְאֵרַת
illuſores *Si* .benedicet juſtorum *tugurio* & : impii domo in Domini
34 יְהוָה בְּבֵית רָשָׁע וּנְוֵה צַדִּיקִים יְבָרֵךְ׃ אִם־לַלֵּצִים
ſapientes Gloriam ? gratiam dabit *manſuetis* & ; illudet ipſe
35 הוּא־יָלִיץ וְלַעֲנָיִים יִתֶּן־חֵן׃ כָּבוֹד חֲכָמִים
.*ignominiam exaltans ſtulti* & : poſſidebunt hæreditate
יִנְחָלוּ וּכְסִילִים מֵרִים קָלוֹן׃

CAP. IV. ד

.intelligentiam *ſciendum ad* attendite &;patris eruditionem filii Audite
1 שִׁמְעוּ בָנִים מוּסַר אָב וְהַקְשִׁיבוּ לָדַעַת בִּינָה׃
Quia.derelinquatis ne meam legem : vobis dedi bonam doctrinam Quia
2 3 כִּי לֶקַח טוֹב נָתַתִּי לָכֶם תּוֹרָתִי אַל־תַּעֲזֹבוּ׃ כִּי־
,me docebat Et .meæ matris *facies ad* unicus &,tener;meo patri fui filius
4 בֵן הָיִיתִי לְאָבִי רַךְ וְיָחִיד לִפְנֵי אִמִּי׃ וַיֹּרֵנִי
.*vive* &,mea præcepta cuſtodi : tuũ cor mea eloquia Fulciat,mihi dicebátq;
וַיֹּאמֶר לִי יִתְמָךְ־דְּבָרַי לִבֶּךָ שְׁמֹר מִצְוֺתַי וֶחְיֵה׃
declines neque , obliviſcaris ne : intelligentiam eme , ſapientiam Eme
5 קְנֵה חָכְמָה קְנֵה בִינָה אַל־תִּשְׁכַּח וְאַל־תֵּט
, eam dilige : te cuſtodiet & , eam derelinquas Ne .mei oris *dictis* à
6 מֵאִמְרֵי־פִי׃ אַל־תַּעַזְבֶהָ וְתִשְׁמְרֶךָּ אֱהָבֶהָ
omni *in* & ; ſapientiam *acquire ſapientia* Principium .te conſervabit &
7 וְתִצְּרֶךָּ׃ רֵאשִׁית חָכְמָה קְנֵה חָכְמָה וּבְכָל־
: te exaltabit & , eam Exalta .intelligentiam *acquire* tua *acquiſitione*
8 קִנְיָנְךָ קְנֵה בִינָה׃ סַלְסְלֶהָ וּתְרוֹמְמֶךָּ
copulam tuo capiti Dabit .fueris eam amplexatus cùm ,te glorificabit
9 תְּכַבֵּדְךָ כִּי תְחַבְּקֶנָּה׃ תִּתֵּן לְרֹאשְׁךָ לִוְיַת־
:mea *dicta* ſuſcipe & ,mi fili Audi .*te muniet* decoris *diademate* : gratiæ
10 חֵן עֲטֶרֶת תִּפְאֶרֶת תְּמַגְּנֶךָּ׃ שְׁמַע בְּנִי וְקַח אֲמָרָי
: te *inſtitui* ſapientiæ viam In .*vitarum* anni tibi multiplicabũtur &
11 וְיִרְבּוּ לְךָ שְׁנוֹת חַיִּים׃ בְּדֶרֶךְ חָכְמָה הֹרֵתִיךָ
coarctabitur non , *te eundo In* .*rectitudinis orbitis in* te feci calcare
12 הִדְרַכְתִּיךָ בְּמַעְגְּלֵי־יֹשֶׁר׃ בְּלֶכְתְּךָ לֹא־יֵצַר
, eruditionem *in Apprehende* .impinges non , cucurreris ſi & : tuus greſſus
13 צַעֲדֶךָ וְאִם־תָּרוּץ לֹא תִכָּשֵׁל׃ הַחֲזֵק בַּמּוּסָר
impiorum ſemitam In .*tuæ vitæ* ipſa quia ,eam cuſtodi :dimittas ne
14 אַל־תֶּרֶף נִצְּרֶהָ כִּי־הִיא חַיֶּיךָ׃ בְּאֹרַח רְשָׁעִים
.malorum via in gradiaris ne & ; ingrediaris ne
אַל־תָּבֹא וְאַל־תְּאַשֵּׁר בְּדֶרֶךְ רָעִים׃

Verſio VUL. LAT.

21 Fili mi, ne effluant hæc ab oculis
tuis : Cuſtodi legem atque
22 conſilium: Et erit vita animæ
tuæ, & gratia faucibus tuis.
23 Tunc ambulabis fiducialiter in
via tua, & pes tuus non impinget:
24 Si dormieris, non timebis:
quieſces, & ſuavis erit ſomnus
25 tuus. Ne paveas repentino terrore,
& irruentes tibi potentias
26 impiorum. Dñs enim erit in latere
tuo, & cuſtodiet pedé tuũ
27 ne capiaris. Noli prohibere
benefacere eum, qui poteſt : ſi
28 vales, & ipſe benefac. Ne dicas
amico tuo; Vade, & revertere:
cras dabo tibi: cùm ſtatim
29 poſſis dare. Ne moliaris amico
tuo malũ, cùm ille in te habeat
30 fiduciam. Ne contendas adverſùs
hominem fruſtrà, cùm ipſe
31 tibi nihil mali fecerit. Ne æmuleris
hominé injuſtum, nec
32 imiteris vias ejus: Quia abominatio
Dñi eſt omnis illuſor,
& cum ſimplicibus ſermocinatio
33 ejus. Egeſtas à Dño in domo
impii: habitacula autem juſtorum
34 benedicentur. Ipſe deludet
illuſores, et manſuetis dabit
35 gratiam. Gloriam ſapientes
poſſidebunt : ſtultorum exaltatio,
ignominia.

CAP. IV.

1 Audite filii diſciplinam patris,
& attendite ut ſciatis prudentiam.
2 Donum bonum tribuam
vobis, legem meam ne
3 derelinquatis. Nam & ego filius
fui patris mei, tenellus, &
4 unigenitus corã matre mea: Et
docebat me, atque dicebat; Suſcipiat
verba mea cor tuum, cuſtodi
præcepta mea, & vives.
5 Poſſide ſapientiã, poſſide prudentiam
: ne obliviſcaris, neq;
6 declines à verbis oris mei. Ne
dimittas eam, & cuſtodiet te :
dilige eam, & conſervabit te.
7 Principium ſapientiæ, poſſide
ſapientiam, & in omni poſſeſſione
tua, acquire prudentiam :
8 Arripe illam, & exaltabit te :
glorificaberis ab ea, cùm eam
9 fueris amplexatus. Dabit capiti
tuo augmenta gratiarũ, &
coronâ inclytâ proteget te.
10 Audi fili mi, & ſuſcipe verba
mea, ut multiplicentur tibi anni
11 vitæ. Viam ſapientiæ monſtrabo
tibi, ducã te per ſemitas
12 æquitatis: Quas cùm ingreſſ⁹
fueris, non arctabuntur greſſus
tui, & currens non habebis offendiculum.
13 Tene diſciplinã,
ne dimittas eam : cuſtodi illã,
14 quia ipſa eſt vita tua. Ne delecteris
in ſemitis impiorũ, nec
tibi placeat malorum via.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cùm Tranſlatione LATINA.

21 † Υἱὲ μὴ (θ) παραῤῥυῇς, † τήρησον δὲ ἐμὴν
22 βουλὴν καὶ ἔννοιαν· † Ἵνα ζήσῃ ἡ ψυχή σου, καὶ
χάρις ᾖ περὶ σῷ τραχήλῳ. † ἔσαι δὲ ἴασις
ταῖς σαρξί σου, † καὶ ἐπιμέλεια τοῖς (ι) σοῖς
23 ὀστέοις· † Ἵνα πορεύῃ πεποιθὼς ἐν εἰρήνῃ
πάσας τὰς ὁδούς σου, † ὁ δὲ πούς σου οὐ μὴ
24 προσκόψῃ. † (κ) Ἐὰν γὰρ κάθῃ, ἄφοβος ἔσῃ,
† ἐὰν δὲ καθεύδῃς, ἡδέως ὑπνώσεις.
25 † Καὶ (λ) οὐ φοβηθήσῃ πτόησιν ἐπελθοῦσαν,
26 † οὐδὲ ὁρμὰς ἀσεβῶν ἐπερχομένας. † Ὁ γὰρ
κύριος ἔσαι ἐπὶ πασῶν ὁδῶν σου, † καὶ ἐρείσει
27 σὸν πόδα ἵνα μὴ σαλευθῇς. † Μὴ ἀπόσχῃ
εὖ ποιεῖν ἐνδεῆ, † ἡνίκα ἂν ἔχῃ ἡ χείρ
28 σου (μ) βοηθεῖν. † Μὴ εἴπῃς, Ἐπανελθὼν
ἐπάνηκε, (ν) αὔριον δώσω, δυνατοῦ σου ὄντος
εὖ ποιεῖν· † οὐ γὰρ οἶδας τί τέξεται ἡ ἐπιοῦσα.
29 † Μὴ () τεκτήνῃ ἐπὶ σὸν φίλον κακά,
30 † παροικοῦντα καὶ πεποιθότα ἐπὶ σοί. † Μὴ
φιλεχθρήσῃς πρὸς ἄνθρωπον μάτην, † μήποτε
31 (ξ) σε ἐργάσηται κακόν. † Μὴ κτήσῃ κακῶν
ἀνδρῶν ὀνείδη, † μηδὲ (ο) ζηλώσῃς
32 τὰς ὁδοὺς αὐτῶν. † Ἀκάθαρτος γὰρ ἔναντι
κυρίου πᾶς παράνομος, † ἐν δὲ δικαίοις οὐ
33 συνεδριάζει. † Κατάρα θεοῦ ἐν οἴκοις ἀσεβῶν,
34 † ἐπαύλεις δὲ δικαίων εὐλογοῦνται. † Κύριος
ὑπερηφάνοις ἀντιτάσσεται, † ταπεινοῖς
35 δὲ δίδωσι χάριν. † Δόξαν σοφοὶ κληρονομήσουσιν,
† οἱ δὲ ἀσεβεῖς ὕψωσαν ἀτιμίαν.

MS. A. (θ) παραρυῇς, (ι) ὀστέοις σου· (κ) Ἐὰν κάθῃ (λ) οὐ μὴ φοβη
(μ) εὖ ποιεῖν. Μὴ (ν) καὶ αὔριον () τέκταινε (ξ) εἰς σὲ (ο) ζηλώσ

Fili, ne diffluas : ſerva autem m
um conſilium, & ſententiam
vivat anima tua, & gratia ſit c
ca collum tuum: erit autem ſa
tas carnibus tuis, & cura tu
oſſibus: ut ambules fidens in pa
omnes vias tuas, & pes tuus no
impingat. Si enim ſederis, ſine
more eris : ſi verò dormieris, ſu
viter dormies : Et non (cc) timebis
pavorem ſupervenientem, neque
impetus impiorum ingruentes. Do
minus enim erit ſuper vias tuas,
(dd) & firmabit tuum pedem, ut
non (ee) commovearis. Ne abſti
as benefacere egeno; quandocum
habuerit manus tua auxiliari. N
** dixeris; Revertens redi, cras*
bo, cùm potens tu ſis benefacere
Non enim ſcis quid pariat ſeque
dies. Ne fabriceris in tuum a
cum mala, incolam, & fiden
ſuper te. Noli (ff) inimicitias e
ercere adverſùs hominem fru
ſa : ne quod tibi operetur ma
Ne acquiras malorum virorum o
probria; (gg) neque zelaveris
as eorum. Immundus enim coram
Domino omnis iniquus: in ju
ſtis autem non facit con
Maledictio Dei in domibus im
orum : tuguria autem juſtorum
nedicuntur. (ii) Dominus ſuper
reſiſtit: humilibus autem da
tiam. Gloriam ſapientes hæreditabunt : (kk) impii autem exaltabunt ignomin

ΚΕΦ. δ'.

1 † Ἀκούσατε παῖδες παιδείαν πατρὸς,
2 † καὶ προσέχετε γνῶναι ἔννοιαν. † Δῶρον γὰρ
ἀγαθὸν δωροῦμαι ὑμῖν, † τὸν ἐμὸν νόμον μὴ
3 ἐγκαταλίπητε. † Υἱὸς γὰρ ἐγενόμην κἀγὼ
πατρὶ ὑπήκοος, † καὶ ἀγαπώμενος ἐν
4 προσώπῳ μητρός. † Οἳ ἔλεγον καὶ ἐδίδασκόν
με, † Ἐρειδέτω ὁ ἡμέτερος λόγος
εἰς σὴν καρδίαν· † φύλασσε ἐντολὰς, μὴ
5 ἐπιλάθῃ. † Μηδὲ παρίδῃς ῥῆσιν ἐμοῦ στόματος,
6 (α) † Μηδὲ ἐγκαταλίπῃς αὐτήν,
καὶ ἀνθέξεταί σου· † ἐράσθητι αὐτῆς, καὶ τηρήσει
8 σε. † Περιχαράκωσον αὐτὴν καὶ ὑψώσει
σε. † τίμησον αὐτήν, ἵνα σε περιλάβῃ.
9 † Ἵνα δῷ τῇ σῇ κεφαλῇ στέφανον χαρίτων,
† στεφάνῳ δὲ τρυφῆς ὑπερασπίσῃ σου.
10 † Ἄκουε υἱὲ καὶ δέξαι ἐμοὺς λόγους, † καὶ πληθυνθήσεται
(β) ἔτη ζωῆς σου, † ἵνα σοι
11 γένωνται πολλαὶ ὁδοὶ βίου. † Ὁδοὺς γὰρ σοφίας
διδάσκω σε, † ἐμβιβάζω δέ σε τροχιαῖς
12 ὀρθαῖς. † Ἐὰν γὰρ πορεύῃ, οὐ συγκλεισθήσεταί
σου τὰ διαβήματα, † ἐὰν δὲ τρέχῃς,
13 οὐ κοπιάσεις. † Ἐπιλαβοῦ ἐμῆς παιδείας,
μὴ ἀφῇς, † (γ) ἀλλὰ φύλαξον αὐτὴν σεαυτῷ
14 εἰς ζωήν σου. † Ὁδοὺς ἀσεβῶν μὴ
ἐπέλθῃς, † μηδὲ ζηλώσῃς ὁδοὺς παρανόμων.

MS. A. (α) † Κτῆσαι σοφίαν, κτῆσαι σύνεσιν, μὴ ἐπιλάθῃ, † μηδὲ
ἀπὸ ῥημάτων στόματός μου. Μὴ ἐγκαταλείπῃς (β) σοι ἔτη (γ) φύλα

CAP. IV.

Audite pueri diſciplinam
et attendite, ut ſciatis (a) cogita
nem. Donum enim bonum
vobis: meam (b) legem ne dere
quatis. Filius enim fui & p
tri obediens, & (c) dilectus
cie matris. Qui dicebant, e
docebant me; (e) Firmetur
ſermo in tuo corde: cuſtodi
cepta, (g) non obliviſcaris.
deſpexeris eloquium oris m
dereliqueris eam, & (h)
tibi: ama illam, & ()
Circunda illam, &
Honora eam : ut te am
ut det tibi capiti coron
rum : Coronâ autem (k)
rum protegat te. Audi fi
cipe mea verba & mul
tur anni vitæ tuæ,
multæ viæ vitæ. Viam
entiæ (l) doceo te:
facio (m) orbitis recti
ambulaveris, non (n)
tui greſſus : ſi autem cur
non (o) laborabis. Tene
ſciplinam: ne demittas
di eam tibi ad vitam tua
impiorum ne intres:
laveris vias iniquorum.

תרגום TARGUM.

21 בְּרִי לָא נֵזֹל בְּעֵינָךְ נְטַר מַדְּעָא וְתַרְעִיתָא׃ וִיהוֹן חַיֵּי לְנַפְשָׁךְ וְחִסְדָּא לְצַוְּרָךְ׃ הֵידֵין
22 23 תֵּיזֵל בִּסְבָרָא בְּאָרְחָתָךְ וְרִגְלָךְ לָא תִתְקַל׃ אִם תִּשְׁכּוּב וְתִדְמוּךְ לָא תִדְחַל וְתִשְׁכַּב
24 וְתִבְסַם שִׁנְתָּךְ׃ לָא תִדְחַל מִן דַּחֲלַיָּא וּמִן שַׁלְיָא וּמִן חִיסָא דְּרַשִׁיעֵי כַּד יֵיתֵי׃ מְטוּל
25 26 דֶּאֱלָהָא יְהֵי בְּסַעְדָּךְ וְיִנְטַר רִגְלָךְ וְלָא תִתְּצִיד׃ לָא תִתְכְּלֵי לְמֶעְבַּד שַׁפִּיר כַּד אִית חֵילָא
27 28 בִּידָךְ לְמֶעְבַּד׃ לָא תֵימַר לְחַבְרָךְ אֱזֵל וְתוּב וּלְמָחַר אֶתֵּן וְאִית גַּבָּךְ׃ לָא תַחֲשֵׁב עַל
29 חַבְרָךְ בִּישְׁתָּא וְהוּא יָתֵב עִמָּךְ בִּשְׁלָוָה׃ לָא תִנְצֵי עִם בַּר נָשָׁא מַגָּן אִם לָא עֲבַד לָךְ
30 31 בִּישָׁא׃ לָא תְטַן בִּגְבָרָא חָטוּפָא וְלָא תִצְבֵּי בְּכֻלְּהוֹן אָרְחָתֵיהּ׃ מְטוּל דִּמְרַחַק עַוְּתָא
32 מִן קֳדָם יְיָ וְעִם תְּרִיצַיָּא שׁוּעִיתֵיהּ׃ לְוָטְתָא דֶאֱלָהָא בְּבָתֵּיהוֹן דְּרַשִׁיעֵי וּמַעֲמַדְהוֹן דְּצַדִּיקֵי
33 34 יְבָרֵךְ׃ וּלְמַמְקְנֵי נִסְחוֹף וּלְעַנְוְנֵי יִתֵּן חִסְדָּא׃ יְקָרָא חַכִּימֵי נַחְסְנָן וְסַכְלֵי נְקַבְּלָן צַעֲרָא׃
35

ד

1 שְׁמַעוּ בְנַיָּא מַרְדּוּתָא דְּאַב וְאַצִּיתוּ לְמִדַּע בִּיוּנָא׃ מְטוּל דְּיוּלְפָנָא טָבָא יְהַבִית לְכוֹן
2 3 וְנִימוֹסַי לָא תִשְׁבְּקוּן׃ מְטוּל דִּבְרָא הֲוֵית לְאַבָּא מְפַנַּק וִיחִידָא קֳדָם אִמִּי׃ וְאַלְפַנִי וְאָמַר
4 לִי יְיָ יִקְמַט מִלַּי לִבָּךְ נְטַר פִּקּוּדַי וְחֵיָה׃ קְנֵה חָכְמְתָא קְנֵה בִּיוּנָה לָא תִנְשֵׁי וְלָא תִסְטֵי מִן
5 6 מֵאמְרֵי פוּמִי׃ וְלָא תִשְׁבְּקִיהּ וְתִנְטְרִיךְ רַחֲמָהּ דְּתִשְׁגְּבִיךְ׃ רֵישׁ חָכְמְתָא קְנֵי חָכְמְתָא וּבְכֹל
7 8 קִנְיָנָךְ קְנֵה בִּיוּנָה׃ חַבְּבִיהּ דִּי תְרוֹמְמִנָּךְ וְחַבְּקִיהּ דְּתִיקְּרָךְ׃ וְתְשִׂים בְּרֵישָׁךְ יָאִיוּתָא
9 דְּחִסְדָּא כְּלִילָא דְשִׁבְהוֹרָה עֲלָךְ׃ שְׁמַע בְּרִי וְקַבֵּל מִנִּי וְנִסְגְּיוּן שְׁנַיָּא דְחַיָּיךְ׃ אָרְחָתָא
10 11 דְחָכְמְתָא אַלְפְּתָךְ וְהַלֵּכְתָּךְ בִּשְׁבִילֵי תְרִיצֵי׃ כַּד תֵּיזֵל לָא תִתְעוּק אָרְחָךְ וְאִין תִּרְהַט לָא
12 13 תִתְקַל׃ תִּתְחוּק בְּמַרְדּוּתָא וְלָא תִרְפָּא נַטְרִיהּ מְטוּל דְּהִיא חַיָּךְ׃ בְּאָרְחָא דְּרַשִׁיעֵי
14 לָא תֵיזֵל וְלָא תְטַן בְּאָרְחָא דְּבִישִׁין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Fili mi ne *vileſcat in* oculis tuis : cuſtodi ſcientiam & conſilium. E
vita animæ tuæ, & gratia collo tuo. Tunc ambulabis in ſpe in v
& pes tuus non offendet. Si cubueris & dormieris, non timebis: &
bueris, dulcis erit ſomnus tuus. Non timebis à pavore & repentino
&, à calamitate impiorum cùm venerit. Quoniam Deus erit in ad
tuum, & cuſtodiet pedem tuum ne capiaris. Ne deſinas facere b
dum valet manus tua ad faciendum. Ne dicas ſocio tuo: Vade
vertere; & cras dabo, ſi habes apud te. Ne cogites contra pro
tuum malum, cùm ipſe habitet tecum in pace. Ne contendas cum
fruſtra, cum non fecerit tibi malum. Ne æmuleris virum raptor
velis omnes vias ejus. Quoniam abominabilis eſt iniquitas coram
no, & cum rectis eſt colloquium ejus. Maledictio Dei in domibus
rum, et domicilium juſtorum benedicetur. Et illuſores propell
milibus dabit gratiam. Gloriam ſapientes hæreditabunt, et ſtu
pient tribulationem.

CAP. IV.

Audite filii diſciplinam patris, et attendite ut ſciatis prudentiam
niam doctrinam bonam dedi vobis, et legem meam ne derel
Quoniam filius fui patri meo, delicatus et unicus coram ma
Et docebant me, et dixit mihi Dominus: Apprehendat cor tu
mea : cuſtodi præcepta mea, et vives. Poſſide ſapientiam, po
dentiam, ne obliviſcaris, nec declines à ſermonibus oris mei. N
mittas eam, et cuſtodiet te; dilige eam ut protegat te. Initio ſa
poſſide ſapientiam, et in omnibus poſſeſſionibus tuis poſſide int
tiam. Dilige eam ut exaltet te; et amplexare eam ut glorificet te
net in capite tuo pulchritudinem gratiæ, corona ſplendoris e
Audi fili mi, et ſuſcipe à me; et multiplicabuntur anni vitæ tuæ
pentiæ docebo te, et deducam te in ſemitis rectis. Cùm ambula
arctabitur via tua; et ſi cucurreris, non offendes. Apprehende
nam, nec dimittas : cuſtodi eam, quoniam ipſa eſt vita tua. In
rum ne ambules, nec æmuleris viam malorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

21 * ܒܪܝ. ܠܐ ܬܙܠ ܒܥܝܢܝ̈ܟ ܠܡܛܪ ܡܪܕܘܬܝ ܘܡܠܟܝ. * ܘܢܗܘܘܢ ܚܝ̈ܐ ܠܢܦܫܟ ܘܛܝܒܘܬܐ
22 23 ܠܨܘܪܟ * ܗܝܕܝܢ ܬܗܠܟ ܒܐܘܪܚܬܟ ܒܬܘܟܠܢܐ. ܘܪܓܠܟ ܠܐ ܬܬܩܠ. * ܘܬܕܡܟ. ܘܠܐ ܬܕܚܠ.
24 25 ܘܬܫܟܘܒ ܘܬܒܣܡ ܠܟ ܫܢܬܟ. * ܘܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܕܘܚܠܐ ܕܡܢ ܫܠܝܐ. ܘܡܢ ܚܛܘܦܝܐ
26 ܕܪܫܝܥ̈ܐ. ܡܐ ܕܐܬܐ. * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܢܗܘܐ ܥܡܟ. ܘܢܛܪ ܪܓܠܟ ܕܠܐ ܬܬܬܚܕ. * ܠܐ ܬܬܟܠܐ
27 28 ܠܡܥܒܕ ܛܒܬܐ. ܟܡܐ ܕܡܫܟܚܢ ܐܝܕܝ̈ܟ ܠܡܥܒܕ. * ܘܟܕ ܐܝܬ ܠܟ. ܠܐ ܬܐܡܪ ܠܚܒܪܟ
29 ܙܠ ܘܬܘܒ ܬܐ ܡܚܪ. ܘܐܬܠ ܠܟ. * ܠܐ ܬܬܢܟܠ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܚܒܪܟ ܕܝܬܒ ܥܡܟ ܒܫܝܢܐ.
30 31 * ܠܐ ܬܬܕܝܢ ܥܡ ܒܪܢܫܐ ܒܢܟܠܐ. * ܘܠܐ ܬܛܢ ܒܓܒܪܐ ܥܘܠܐ. ܘܠܐ ܬܓܒܐ ܒܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܗ.
32 * ܡܛܠ ܕܛܢܦ ܗܘ ܥܘܠܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܡܡܠܠܗ ܕܡܪܝܐ ܥܡ ܬܪܝܨ̈ܐ. * ܠܘܛܬܗ ܕܡܪܝܐ
33 34 ܒܒܬ̈ܝܗܘܢ ܕܥܘ̈ܠܐ. ܘܕܝܪܬܗܘܢ ܕܙܕܝܩ̈ܐ ܢܒܪܟ. * ܘܢܣܚܘܦ ܠܡܡܝܩܢ̈ܐ. ܘܥܡ ܚܟܝܡ̈ܐ
35 ܢܬܪܚܡ. * ܐܝܩܪܐ ܢܐܪܬܘܢ ܚܟܝܡ̈ܐ. ܘܣܟܠ̈ܐ ܢܩܒܠܘܢ ܨܥܪܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

1 * ܫܡܥܘ ܒܢܝ̈ܐ ܡܪܕܘܬܗ ܕܐܒܐ. ܘܨܘܬܘ ܝܕܥܬܐ ܘܣܘܟܠܐ. * ܡܛܠ ܕܝܘܠܦܢܐ ܛܒܐ ܝܗܒܬ
2 3 ܠܟܘܢ. ܢܡܘܣܝ ܠܐ ܬܫܒܩܘܢ. * ܒܪܐ ܓܝܪ ܗܘܝܬ ܠܐܒܝ. ܪܟܝܟܐ. ܘܝܚܝܕܝܐ ܩܕܡ ܐܡܝ.
4 * ܘܐܠܦܢܝ ܘܐܡܪ ܠܝ. ܢܫܪܪ ܡܠܬܝ ܒܠܒܟ. ܛܪ ܦܘܩܕܢܝ ܘܚܝܝ. ܘܢܡܘܣܝ ܐܝܟ
5 6 ܒܒܬܐ ܕܥܝܢܐ. * ܩܢܝ ܚܟܡܬܐ. ܘܩܢܝ ܣܘܟܠܐ. ܘܠܐ ܬܣܛܐ ܡܢ ܡܐܡܪܐ ܕܦܘܡܝ. * ܠܐ
7 ܬܫܒܩܝܗ ܘܬܛܪܟ. ܪܚܡܝܗ ܘܬܦܨܝܟ. * ܪܫ ܚܟܡܬܐ. ܩܢܝ ܚܟܡܬܐ. ܘܒܟܠܗ ܩܢܝܢܟ
8 9 ܩܢܝ ܣܘܟܠܐ. * ܦܢܩܝܗ ܘܬܪܝܡܟ. ܘܚܒܩܝܗ ܘܬܫܒܚܟ. * ܘܬܬܠ ܠܪܫܟ ܟܠܝܠܐ ܕܛܝܒܘܬܐ.
10 ܘܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ ܬܣܡܟܟ. * ܫܡܥ ܒܪܝ. ܘܩܒܠ ܡܠܝ. ܘܢܤܓܘܢ ܫܢ̈ܝ ܚܝ̈ܝܟ.
11 12 * ܐܘܪܚܬܐ ܕܚܟܡܬܐ ܐܠܦܟ. ܘܐܕܒܪܟ ܒܫܒܝ̈ܠܐ ܬܪܝܨ̈ܐ. * ܘܡܐ ܕܗܠܟܬ ܐܢܬ. ܠܐ
13 ܢܬܥܩܠܘܢ ܗܠܟܝ̈ܟ. ܘܐܢ ܪܗܛܬ ܠܐ ܬܬܬܩܠ. * ܐܚܘܕ ܡܪܕܘܬܝ. ܘܠܐ ܬܫܒܩܝܗ. ܛܪܝܗ
14 ܡܛܠ ܕܗܝ ܗܝ ܚܝ̈ܝܟ. * ܒܐܘܪܚܐ ܕܚܛܝ̈ܐ ܠܐ ܬܐܙܠ. ܘܠܐ ܬܛܢ ܒܐܘܪܚܐ ܕܪܫܝܥ̈ܐ.

Fili mi, ne vile ſit in oculis tuis cuſtodire doctrinā meam & conſilia mea; 21 Erit enim vita animæ tuæ, & benevolentia collo tuo. 22 Et tunc gradiêris in itineribus tuis cōfidenter, & pede tuo non impinges. 23 Et dormies, & non timebis: & cubabis, eritq; ſuavis tibi ſomnus tu⁹. 24 Et non timebis perturbationē repentinā, & impetū ſceleſtorū, cùm ingruerit; 25 Quoniā Dn̄s erit tecū, & cuſtodiet pedē tuū ne capiatur. 26 Ne deſiſtas operari bonū, quandiù valent manus tuæ operari. 27 Et cùm habes, ne dicas ſodali tuo, Vade & veni iterū cras, et dabo tibi. 28 Ne moliaris malū contra ſociū tuū commorantē tecum pacificē. 29 Ne litiges cum quoquam fraudulenter. 30 Et ne æmuleris hominē iniquum, nec approbes ullas vias ejus: 31 Quoniam ſordidus eſt iniquus corā Dn̄o, & confabulationes Dn̄i cum rectis. 32 Maledictio Dn̄i in domibus iniquorū, & habitationē juſtorū benedicet. 33 Deſtruétq; irriſores, et erga ſapientes benevolus erit. 34 Gloriam adipiſcentur ſapientes, & ſtulti conſequentur ignominiam. 35

CAP. IIII.

Acquieſcite filii diſciplinæ patris, & auſcultate ſcientiā et intelligentiā. 1 Quoniā documentū bonum dedi vobis, legē meā ne derelinquatis. 2 Filius enim fui patri meo tenellus, et unicus apud matrē meam: 3 Et docuit me, dixítque mihi, Firmū ſit verbū meū in corde tuo, et ſerva præceptū meū, ut vivas, et legē meā quaſi pupillam oculi. 4 Poſſide ſapientiā, et poſſide intelligentiā, neq; declines ab eloquio oris mei. 5 Ne deſeras eam, ut cuſtodiat te: dilige illā, ut ſalvet te. 6 Principiū ſapientiæ, poſſide ſapientiā: et in omni poſſeſſione tua, acquire prudentiā. 7 Blandire illi, ut te exaltet: et amplectere eam, ut te glorificet, 8 Imponátq; capiti tuo decus benevolentiæ, et coronâ gloriæ te fulciat. 9 Audi fili mi, et accipe ſermones meos, et multiplicabuntur anni vitæ tuæ. 10 Vias ſapientiæ docebo te, et ducā te per tramites rectos. 11 Cúmq; ambulaveris, non vacillabunt greſſus tui: et ſi cucurreris, non impinges. 12 Tene diſciplinā meam, et ne deſeras illam: conſerva eam, quoniam ipſa eſt vita tua. 13 In viam peccatorum ne abeas, neque invideas itineri ſceleſtorum: 14

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

21 22 * يا بني لا تسقط هذه من امام عينيك * احفظ مشورتي ورايي * لتحيا نفسك * ويطوق على عنقك
23 نعمة * ويكون للحمانك شفاء * واهتماما بعظامك * لتذهب في جميع طرقك واثقا في سلامة * وما
24 25 يعثر قدمك * وان جلست تكون غير خايف * وان نمت تنام نوما لذيذا * ولم تدهش من
26 جبانة تجزعة واردة * ولا من وثبات المنافقين متقاطرين * لان الرب يكون في طرقك * ويوطد
27 28 رجلك لئلا تتزعزع * لا تمتنع بان تفعل بالفقير احسانا * ما دام في شيا تعين يدك به * ولا تقل
عد الي راجعا فاعطيك غدا * وفي مكنتك ان تعمل الان معروفا * فانك لا تعلم ماذا يلده
29 30 اليوم المقبل * لا تنشي على صديقك الساكن معك المتوكل عليك اسوا * ولا تؤثر مجانا
31 32 ان تعادي انسانا لئلا يصنع بك سوا * لا تقتن غار الرجال الاردياء * ولا تشابه طرايقهم * لان
33 كل من يتعدى الشريعة نجس قدام الرب * واما يجالس الصديقين * لعنة الله في منازل
34 المنافقين * ومساكن المقسطين تبارك * الرب يناصب المتكبرين * ويمنح المتواضعين
35 نعمة * الحكماء يرثون المجد * واما المنافقين فرفعوا هوانا *

الفصل الرابع

1 2 * ايها الغلمان اسمعوا ادب ابيكم * واصغوا لتعرفوا فهما * لاني اهبي لكم هدية صالحة * فلا
3 4 تهملوا شريعتي * فاني كنت ابنا مطيعا لابي * ومحبوبا في وجه امي * فعلماني وقالا لي * فليرسخ
5 6 قولنا في قلبك * احفظ وصاياي * لا تنسها * لا تعرض عن كلام فمي * لا تهمل الحكمة فتنصرك *
7 9 * اعشقها فتحفظك * سيج حولها فتعليك * اكرمها لكيما تعضدك * ** * لتعطي راسك
10 اكليل النعيم * اسمع يا بني واقبل اقوالي * فتتكاثر لك سنو حياتك * لتتصير لك طرق عمرك
11 12 كثيرين * فاني اعلمك طرايق الحكمة * واسلك بك في مناهج مستقيمة * فانك ان سلكتها
13 فما تتعرقل خطواتك * ان حاضرت فيها فما تتعب * اتخذ ادبي ولا تتركه * احفظه لنفسك
14 في حياتك * طرق المنافقين لا تجي اليها * وعداة الشريعة لا تماثل طرايقهم *

Fili mi, ne cadant hæc è conſpectu oculorum tuorum: ſerva conſilium meum, & monitum meum, 21 *ut vivat anima tua, & circundes collum tuum gratiâ, & ſit carnibus tuis ſanitas, & cura de oſſibus tuis.* 22 *ut ambules in omnibus viis tuis ſecurus in tranquillitate, & non impingat pes tuus.* 23 *Et ſi ſederis, eris intrepidus: & ſi dormieris, dormies ſomnum ſuavem:* 24 *Et non turbaberis à timore horrendo inſtante, neq; ab invaſionibus impiorum dehiſcentibus.* 25 *Nam Dominus erit in viis tuis, & firmabitur pes tuus quominus nutet.* 26 *Ne te retrahas à præſtando pauperi beneficium, quandiu ſuppetit in manu tua aliquid quo juves.* 27 *Et ne dicas, Revertere ad me iterum, dabóque tibi cras, cùm ſit in potentia tua ut modò conferas beneficium, quia neſcis quid occurrat die venturâ.* 28 *Ne excogites contra proximum tuum cohabitantem tecum, confidentem tibi, mala:* 29 *Et ne velis gratìs inimicari cuiquam, ne inferat tibi malum.* 30 *Ne poſſideas æmulationem virorum malorum, & ne imiteris ullo modo vias illorum:* 31 *Quia quicunque tranſgreditur legem, immundus eſt coram Domino, conſidet autem Dominus cum juſtis.* 32 *Maledictio Dei in habitaculis impiorum, & tabernacula juſtorum benedicentur.* 33 *Dominus reſiſtit ſuperbis, & humilibus dat gratiam.* 34 *Sapientes poſſidebunt gloriam, at verò ſtulti exaltantur ad ignominiam.* 35

CAP. IV.

O Pueri, audite diſciplinam patris veſtri, & attendite, ut cognoſcatis doctrinam. 1 *Quoniam ego præparo vobis munus bonum, ne negligatis legem meam.* 2 *Nam ego fui filius obediens patri meo, & amatus in conſpectu matris meæ:* 3 *Docebántque me ambo, & dicebant mihi; Firmiter hæreat ſermo noſter in corde tuo: cuſtodi mandata mea: non obliviſcaris ea:* 4 *Non declines à ſermone oris mei: non negligas ſapientiam, & ipſa te juvabit:* 5 *Adama eam, & ſervabit te; circunſepi eam, & exaltabit te:* 6 *Honora eam, ut opituletur tibi:* 7 *ut det capiti tuo coronam delitiarum.* 9 *Audi fili mi, & ſuſcipe verba mea, & augebuntur tibi anni vitæ tuæ, ut plures tibi pateantur ætatis tuæ viæ.* 10 *Docebo enim te vias ſapientiæ, & ducam te per vias rectas,* 11 *In quibus ſi ambulaveris, non implicabuntur greſſus tui: ſi amplectaris eas, non fatigaberis.* 12 *Cape diſciplinam meam, & ne eam derelinquas: ſerva eam animæ tuæ in vita tua.* 13 *Ad vias impiorum ne accedas, & legis tranſgreſſorum vias ne imiteris.* 14

משלי: ה

.transi & , ea *desuper* declina *: ea in* transeas ne , eam Desere
15 : פרעהו אל־תעבר־בו שטה מעליו ועבר
rapitur & ; malefecerint nisi , dormiunt non Etenim
16 כי לא ישנו אם־לא ירעו ונגזלה
panem *comederunt* Quia .fecerint ruere nisi , eorum somnus
17 שנתם אם־לא יכשולו : כי לחמו לחם
justorum semita Et *.bibent* rapinarum vinum & ; impietatis
18 רשע ויין חמסים ישתו : וארח צדיקים
.diem paratum ad usque *illuminans &* , *vadens* , *splendens* lux veluti
כאור נגה הולך ואור עד־נכון היום :
.corruent quid in *noverunt non* : caligo sicut impiorum Via
19 דרך רשעים כאפלה לא ידעו במה יכשלו :
.tuam aurem inclina mea eloquia ad : attende meis verbis , mi Fili
20 בני לדברי הקשיבה לאמרי הט אזנך :
.tui cordis medio in ea custodi : tuis oculis ab recedant Ne
21 אל־יליזו מעיניך שמרם בתוך לבבך :
ejus carni universæ & ; ea invenientibus *ipsa vitæ* Quia
22 כי־חיים הם למצאיהם ולכל־בשרו
ipso ex quia ; tuum cor custodi custodia omni *Ex .medela*
23 מרפא : מכל־משמר נצר לבך כי ממנו
pravitatem & ; oris perversitatem te à Remove *.vitarum* exitus
24 תוצאות חיים : הסר ממך עקשות פה ולזות
; aspiciant rectum ad tui Oculi .te à elonga labiorum
25 שפתים הרחק ממך : עיניך לנכח יביטו
; *tui pedis orbitam* Pondera .te coram dirigant tuæ palpebræ &
26 ועפעפיך יישירו נגדך : פלס מעגל רגלך
: sinistram & ,dexteram declines Ne .stabilientur tuæ viæ omnes &
27 וכל־דרכיך יכנו : אל־תט ימין ושמאול
.malo à tuum pedem remove
הסר רגלך מרע :

CAP. V. ה

.tuam aurem inclina meæ intelligentiæ : intende meæ sapientiæ mi Fili
1 בני לחכמתי הקשיבה לתבונתי הט־אזנך :
Quia .conservent tua labia scientiam & ; *sagacitates custodiendum Ad*
2 3 לשמור מזמות ודעת שפתיך ינצרו : כי
.ejus palatum oleo *præ lene* & ; extraneæ labia *stillabunt stillationem*
נפת תטפנה שפתי זרה וחלק משמן חכה :
acutum ; absinthium sicut amarum ejus novissimum Et
4 ואחריתה מרה כלענה חדה
infernum : mortem *descendentes* ejus Pedes *.acierum* gladius veluti
5 כחרב פיות : רגליה ירדות מות שאול
sunt mobiles: ponderes fortè si *vitarum* Semitam *.sustentabunt* ejus gressus
6 צעדיה יתמכו : ארח חיים פן־תפלס נעו
ne & ; mihi *audite* filii nunc Et .scies non , ejus *orbitæ*
7 מעגלתיה לא תדע : ועתה בנים שמעו־לי ואל־
ne & ; tuam viam ea *desuper* longe Fac .mei oris eloquiis ab recedatis
8 תסורו מאמרי־פי : הרחק מעליה דרכך ואל־
alienis des fortè Ne .ejus domus *ostium ad* appropinques
9 תקרב אל־פתח ביתה : פן־תתן לאחרים
alieni saturentur fortè Ne .crudeli tuos annos & ; tuum decorem
10 הודך ושנתיך לאכזרי : פן־ישבעו זרים
; tuo novissimo in rugias Et .aliena domo in tui *dolores* & ; tuo robore
11 כחך ועצביך בבית נכרי : ונהמת באחריתך
Quomodo , dicas Et .tuum corpus & , tuam carnem *consumendo in*
12 בכלות בשרך ושארך : ואמרת איך
? meum cor sprevit increpationem & ; eruditionem odivi
שנאתי מוסר ותוכחת נאץ לבי :

Versio VULG. LAT.

15 Fuge ab ea, nec transeas per illam:
16 declina, & desere eã. Non
enim dormiunt nisi malefecerint:
& rapitur somnus ab eis
17 nisi supplantaverint. Comedunt
panem impietatis, & vinum
18 iniquitatis bibunt. Justorum
autem semita, quasi lux
splendens, procedit & crescit
19 usque ad perfectam diem. Via
impiorum tenebrosa: nesciunt
20 ubi corruant. Fili mi, ausculta
sermones meos, & ad eloquia
21 mea inclina aurem tuam. Ne
recedant ab oculis tuis, custodi
22 ea in medio cordis tui: Vita
enim sunt invenientibus ea, &
23 universæ carni sanitas. Omni
custodiâ serva cor tuum, quia
24 ex ipso vita procedit. Remove
à te os pravum, & detrahentia
labia sint procul à te.
25 Oculi tui rectâ videant, & palpebræ
tuæ præcedant gressus
26 tuos. Dirige semitam pedibus
tuis, & omnes viæ tuæ stabilientur.
27 Ne declines ad dexteram,
neque ad sinistram: averte
pedem tuum à malo. Vias enim,
quæ à dextris sunt, novit
Dominus: perversæ verò sunt
quæ à sinistris sunt. Ipse autem
rectos faciet cursus tuos, itinera
autem tua in pace producet.

CAP. V.

1 Fili mi, attende ad sapientiã
meam, & prudentiæ meæ inclina
2 aurem tuam, Ut custodias
cogitationes, & disciplinam labia
tua conservent. Ne attendas
3 fallaciæ mulieris. Favus enim
distillans labia meretricis,
& nitidius oleo guttur ejus:
4 Novissima autem illius amara
quasi absynthiũ, & acuta quasi
5 gladius biceps. Pedes ejus descendunt
in mortem, & ad inferos
gressus illius penetrant.
6 Per semitam vitæ non ambulant,
vagi sunt gressus ejus, &
7 investigabiles. Nunc ergò, fili
mi, audi me, & ne recedas à
8 verbis oris mei. Longè fac ab
ea viam tuam, & ne appropinques
9 forib⁹ domûs ejus. Ne des
alienis honorẽ tuum, & annos
10 tuos crudeli. Ne fortè impleantur
extranei viribus tuis, &
labores tui sint in domo aliena,
11 Et gemas in novissimis,
quando consumpseris carnes
12 tuas & corpus tuum, & dicas;
Cur detestatus sum disciplinam,
& increpationibus non
acquievit cor meum,

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

15 † Ἐν ᾧ ἂν τόπῳ στρατοπεδεύσωσι, μὴ ἐπέλθῃς ἐκεῖ, † ἔκκλινον δὲ ἀπ' αὐτῶν καὶ παράλλαξον.
16 † Οὐ γὰρ μὴ ὑπνώσωσιν, ἐὰν μὴ κακοποιήσωσι, † ἀφῄρηται ὁ ὕπνος (δ) αὐτῶν, καὶ οὐ κοιμῶνται.
17 † Οἵδε γὰρ σιτοῦνται σῖτα ἀσεβείας, † οἴνῳ δὲ παρανόμῳ μεθύσκονται.
18 † Αἱ δὲ ὁδοὶ τῶν δικαίων ὁμοίως φωτὶ λάμπουσι, † προπορεύονται καὶ φωτίζουσιν, ἕως (ε) κατορθώσῃ ἡ ἡμέρα.
19 † Αἱ δὲ ὁδοὶ τῶν ἀσεβῶν σκοτειναί, † οὐκ οἴδασι πῶς προσκόπτουσιν.
20 † Υἱὲ ἐμῇ ῥήσει πρόσεχε, † τοῖς δὲ ἐμοῖς λόγοις παράβαλλε σὸν οὖς.
21 † Ὅπως μὴ ἐκλίπωσί σε αἱ πηγαί σου, † φύλασσε αὐτὰς (ζ) ἐν καρδίᾳ.
22 † Ζωὴ γάρ ἐστι τοῖς εὑρίσκουσιν αὐτάς, † καὶ πάσῃ (η) σαρκὶ ἴασις.
23 † Πάσῃ φυλακῇ τήρει σὴν καρδίαν, † ἐκ γὰρ τούτων ἔξοδοι ζωῆς.
24 † Περίελε σεαυτοῦ σκολιὸν στόμα, † καὶ ἄδικα χείλη (θ) μακρὰν ἀπὸ σοῦ ἄπωσαι.
25 † Οἱ ὀφθαλμοί σου ὀρθὰ βλεπέτωσαν, † τὰ δὲ βλέφαρά σου νευέτω δίκαια.
26 † Ὀρθὰς τροχιὰς ποίει σοῖς ποσί, † καὶ τὰς ὁδούς σου κατεύθυνε.
27 † Μὴ ἐκκλίνῃς εἰς τὰ δεξιά, μηδὲ εἰς τὰ ἀριστερά, † ἀπόστρεψον δὲ σὸν πόδα ἀπὸ ὁδοῦ κακῆς· † ὁδοὺς γὰρ τὰς ἐκ δεξιῶν οἶδεν ὁ Θεός, † διεστραμμέναι δέ εἰσιν αἱ ἐξ ἀριστερῶν. † αὐτὸς δὲ ὀρθὰς ποιήσει τὰς τροχιάς σου, † τὰς δὲ πορείας σου ἐν εἰρήνῃ προάξει.

MS. A. (δ) ἀπ' αὐτῶν, οὐ κοιμῶνται. (ε) κατορθώσῃ (ζ) ἐν σῇ καρδ (η) σαρκὶ αὐτοῦ ἴασις. (θ) ἀπὸ σοῦ μακρὰν ἄπωσον.

ΚΕΦ. ε'.

1 † Υἱὲ ἐμῇ σοφίᾳ πρόσεχε, † ἐμοῖς δὲ
2 λόγοις παράβαλλε σὸν οὖς, † Ἵνα φυλάξῃς ἔννοιαν ἀγαθήν· (α) † αἴσθησιν δὲ ἐμῶν χειλέων (β) ἐντέλλεταί σοι. † μὴ πρόσεχε
3 φαύλῃ γυναικί. † Μέλι γὰρ ἀποστάζει ἀπὸ χειλέων γυναικὸς πόρνης, † ἣ πρὸς
4 καιρὸν λιπαίνει σὸν φάρυγγα, † (γ) Ὕστερον μέντοι πικρότερον χολῆς εὑρήσεις, † καὶ
5 ἠκονημένον μᾶλλον μαχαίρας διστόμου. † Τῆς γὰρ ἀφροσύνης οἱ πόδες κατάγουσι τοὺς χρωμένους αὐτῇ μετὰ θανάτου εἰς τὸν ᾅδην,
6 † τὰ δὲ ἴχνη αὐτῆς οὐκ ἐρείδεται. † Ὁδοὺς γὰρ ζωῆς οὐκ ἐπέρχεται, † σφαλεραὶ δὲ αἱ
7 τροχιαὶ αὐτῆς, καὶ οὐκ (δ) εὔγνωστοι. † Νῦν οὖν υἱὲ ἄκουέ μου, † καὶ μὴ ἀκύρους (ε) ποιήσῃς
8 ἐμοὺς λόγους. † Μακρὰν ποίησον ἀπ' αὐτῆς σὴν ὁδόν· † μὴ ἐγγίσῃς πρὸς θύραις
9 οἴκων αὐτῆς, † Ἵνα μὴ πρόῃ ἄλλοις ζω-
10 ήν σου, † καὶ σὸν βίον ἀνελεήμοσιν· † (ζ) Ἵνα μὴ πλησθῶσιν ἀλλότριοι σῆς ἰσχύος, † οἱ δὲ σοὶ πόνοι εἰς οἴκους ἀλλοτρίων (η) ἔλθωσι·
11 † Καὶ μεταμεληθήσῃ ἐπ' ἐσχάτων, † ἡνίκα ἂν κατατριβῶσι σάρκες σώματός σου, † καὶ
12 ἐρεῖς, Πῶς ἐμίσησα παιδείαν, † καὶ ἐλέγχους ἐξέκλινεν ἡ καρδία μου;

MS. A. (α) αἴσθησιν (β) ἐντέλλομαί σοι. (γ) ὕστερον δὲ πικρότερον (δ) ποιήσῃς (ζ) Ἵνα πλησθῶσιν (η) εἰσέλθωσιν, καὶ μὴ μεταμεληθῇς ἐν

In quocunq; loco castrametati
rint; ne supervenias illuc:
autem ab eis, & (q) abscede.
enim somnum capient, nisi
fecerint: ablatus est somnus
rum, & non dormiunt. Hi
dunt (s) escas impietatis: (t)
autem in quo inebriantur. V
tem justorum similiter, ut lux
gent: (u) procedunt, et illumin
donec (x) dirigat se dies. Viæ
impiorum tenebrosæ: non
quomodò (y) offendunt. Fili
loquio attende: & meis verba
appone aurem tuam. ut non
derelinquant te fontes tui: cu
eos in corde. Vita enim est
venientibus eos, & omni
sanitas. (aa) Omni cu
serva cor tuum: ex his
(bb) exitus vitæ. (cc)
fer à te (dd) pravum os
injusta labia longè à te (ee)
pelle. Oculi (ff) tui recta
deant, palpebræ tuæ
justa. (gg) Rectas orbitas
tuis pedibus: & vias tuas
dirige. Ne declines in dext
neque in sinistra: & averte
dem tuum à via mala.
enim quæ à dextris, novit
us: perversæ autem sunt
à sinistris. Ipse autem rectas
orbitas tuas: & gressus
in pace promovebit.

CAP. V.

Fili, meæ sapientiæ attende
(a) meis sermonibus appone au
tuam; ut custodias (b) cogit
*onem bonam. * Sensus autem*
orum labiorum mandat tibi.
intendere fallaci mulieri.
nim destillat à labiis mulier
fornicariæ: (d) quæ ad tempus
guat fauces tuas: Posteà
amariorem felle invenies,
tam magis gladio bicipiti.
prudentiæ enim pedes du
utentes eâ (f) cum morte
fernum: & vestigia ejus
mantur. Vias enim vitæ
greditur: lubricæ autem
bitæ ejus, & non benè
les. Nunc igitur, fili, audi
(h) ne irritos facias sermon
os. Longè fac ab ea viam
ne appropinques ad janua
rum ejus: ut non (i) præ
vitam tuam, & (k)
immitibus: ut non imple
lieni fortitudine tuâ, &
tui in domos (l) alienorum
Et (m) pœnitebit te in
simis, quando contritæ fu
nes corporis tui: et dices,
odio habui disciplinam,
tiones (o) devitavit cor

תרגום TARGUM.

15 16 ארש ולא תעבר עמהון סטי ועבר מנהון : לא דמכין עד מה דמבאשין ופרידא
17 שנתהון עד מה דעבדין תקלא : דמיכלתהון מיכלתא דרשיעי וחמרא דחטופיא
18 16 שתין : וארחא דצדיקי כנהורא דמזהר ואזל נהריה עד מה דתקין יומא : וארחא
20 דרשיעי חבירא ולא ידעין במנא מתתקלין : ברי למלי אצית ולמאמרי צלי
21 22 אודנך : לא נולן בעינך נטרנון בגויה דלבך : מטול דחיי אנון למן דמשכח להון
23 ולכולא בשריה מאסי : מכל זהורא נטר לבך מטול דמניה הוא מפקנא דחיי :
24 25 אעבר מנך עקומא דפומא ועאתא דשפותא ארחק מנך : עינך בתריצותא נאורן
26 27 ותמריך נתרצון לקובלך : אעבר רגלך משבילי בישי וכלהון ארחתך מתקנן : לא
תסטי לימינא ולשמאלא אעבר רגלך מן בישתא :

ה

1 ברי לחכמתי צית לביוני צלי אדנך : דתזדהר בתרעיתא ודעתא שפותך ננטרן :
2 3 מטול דכבריתא מנטפן שפותא דנוכריתא ושעיע מן משחא חכה : ואחריתה
4 מרירא היך גידא חריפא מן סיפא דתרין פומין : רגלה נחתן למותא שיול
5 6 הלכתהא מסמכן : בארחא דחיי לא דרכא מטלטלין שבילהא ולא ידעה :
7 8 והשתא בניא שמעון לי ולא תסטון מן מימריה דפומי : ארחק מנה ארחך ולא
9 תקרב לתרעא דביתא : דלא תתן לאחרני חילך ושניך לנוכראין : דלא נשבעון
10 11 נוכראי חילך ולעותך תעל לביתא דאחריני : ותנהום בסופך עד מה דינמר
12 בשרך וגושמך : ותימר היכנא סנית מרדותא ומכסנותא אשלי לבי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Recede, nec transeas cum eis: declina, & transi ab eis. Quonia
dormiunt, donec malefaciant, nec solvitur somnus eorum, donec
scandalum. Quoniam cibus eorum, cibus est impiorum, & vinum
rum bibunt. Via autem justorum quasi lux splendens, vaditque
usque ad perfectum diem. Via autem impiorum tenebrosa: nesci
in quo offendunt. Fili mi ausculta sermones meos, & ad verba mea
na aurem tuam. Ne recedant ab oculis tuis; custodi ea in medio
tui. Quoniam vita sunt illi qui invenit ea: omni carni ejus sanita
omni monitione custodi cor tuum, quoniam ab ipso exitus vitæ.
fer à te os pravum; detractionem labiorum longè fac à te. Oc
recta videant, & palpebræ tuæ dirigantur contra te. Transfer pe
um à semitis malis, & omnes viæ tuæ dirigentur. Ne declines ad
ram, neque ad sinistram: transfer pedem tuum à malo.

CAP. V.

Fili mi sapientiæ meæ attende, ad intelligentiam meam inclina
tuam. Ut admonitus sis in consilio, & scientiam labia tua con
Quoniam favum distillant labia extraneæ, & lenius oleo est gut
Novissimum autem illius amarum, sicut absinthium, acutius gla
piti. Pedes ejus descendunt ad mortem: ad infernum gressus ejus
veniunt. In via vitæ non ambulat: instabiles sunt semitæ ejus, &
Et nunc filii audite me, & ne declinetis à verbo oris mei. Longè
ea viam tuam, & ne appropinques portæ domus ejus. Ut non
virtutem tuam, & annos tuos alienis. Ne satientur extranei vir
& laborem tuum introducas in domum alienam. Et gemas in
tuo, donec consumpta fuerit caro tua & corpus tuum. Et dices
modo odi disciplinam, & eruditionem execratum est cor meum

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 ܘܒܐܬܪܐ ܕܫܪܝܢ ܠܐ ܬܥܒܪ ܒܗ. ܐܠܐ ܣܛܝ ܘܥܒܪ ܥܠܘܗܝ.* ܠܐ ܓܝܪ ܕܡܟܝܢ. ܥܕܡܐ ܕܥܒܕܝܢ
16 ܒܝܫܬܐ. ܘܥܪܩܐ ܫܢܬܗܘܢ. ܥܕܡܐ ܕܥܒܕܝܢ ܨܒܝܢܗܘܢ.* ܡܛܠ ܕܡܐܟܘܠܬܗܘܢ
17 ܡܐܟܘܠܬܐ ܗܝ ܕܥܘܠܐ. ܘܚܡܪܐ ܕܢܟܠܐ ܫܬܝܢ.* ܐܘܪܚܐ ܕܝܢ ܕܙܕܝܩܐ ܐܝܟ ܢܘܗܪܐ ܡܙܠܓܐ. ܘܐܙܠ
18 ܢܘܗܪܗ ܥܕܡܐ ܕܩܐܡ ܝܘܡܐ.* ܐܘܪܚܐ ܕܝܢ ܕܪܘܫܥܐ ܥܡܛܢܝܐ ܗܝ. ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ ܒܡܢܐ ܡܬܬܩܠܝܢ.
19 ܒܪܝ. ܨܘܬ ܠܡܠܝ. ܘܠܡܡܠܠܝ ܐܪܟܢ ܐܕܢܟ.* ܠܐ ܢܐܠܦܘܢ ܒܥܝܢܝܟ. ܐܠܐ ܛܪ ܐܢܘܢ ܒܓܘܗ ܕܠܒܟ.
20 ܡܛܠ ܕܚܝܐ ܐܢܘܢ ܠܡܢ ܕܡܫܟܚ ܠܗܘܢ. ܘܠܟܠܗ ܒܣܪܗ ܐܣܝܘܬܐ.* ܒܟܠ ܢܛܘܪܐ ܛܪ ܠܒܟ.
21 ܡܛܠ ܕܡܢܗ ܗܘ ܡܦܩܢܐ ܕܚܝܐ.* ܐܥܒܪ ܡܢܟ ܦܘܡܐ ܥܩܡܐ. ܘܪܥܝܢܐ ܕܢܟܠܐ. ܐܪܚܩ ܡܢ
22 ܣܦܘܬܟ.* ܥܝܢܝܟ ܬܚܙܝܢ ܬܪܝܨܬܐ. ܘܥܝܦܝܟ ܢܬܪܨܘܢ ܩܕܡܝܟ.* ܐܥܒܪ ܪܓܠܟ ܡܢ
23 ܫܒܝܠܐ ܥܩܡܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܟ ܢܬܬܩܢܘܢ.* ܠܐ ܬܣܛܐ ܠܝܡܝܢܐ ܘܠܣܡܠܐ. ܐܠܐ ܐܥܒܪ
24 ܪܓܠܟ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܗ * ܒܪܝ . ܨܘܬ ܠܚܟܡܬܝ. ܘܠܡܡܠܠܝ
25 ܐܪܟܢ ܐܕܢܟ.* ܕܬܛܪ ܡܪܥܝܬܐ. ܘܝܕܥܬܐ ܣܦܘܬܟ ܢܛܪܢ.* ܡܛܠ ܕܕܒܫܐ ܗܘ ܢܛܦܢ
26 ܣܦܘܬܗ ܕܢܘܟܪܝܬܐ. ܘܢܩܝܕܢ ܡܢ ܡܫܚܐ ܡܠܝܗ.* ܘܐܚܪܝܬܗ ܡܢ ܓܕܐ ܡܪܝܪܐ. ܘܚܪܝܦܐ
27 ܗܝ ܡܢ ܣܝܦܐ ܕܬܪܝܢ ܦܘܡܝܗ.* ܘܪܓܠܝܗ ܡܚܬܢ ܠܡܘܬܐ. ܠܫܝܘܠ ܡܣܬܡܟܢ
1 ܦܣܥܬܗ.* ܘܠܐ ܪܕܝܐ ܒܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ. ܛܥܝܢ ܓܝܪ ܫܒܝܠܝܗ. ܘܠܐ ܡܬܝܕܥܝܢ.* ܘܗܫܐ
2 ܒܢܝ. ܫܡܥܘܢܝ. ܘܠܐ ܬܣܛܘܢ ܡܢ ܡܐܡܪܐ ܕܦܘܡܝ.* ܐܪܚܩ ܡܢܗ ܐܘܪܚܟ. ܘܠܐ ܬܬܩܪܒ
3 ܠܬܪܥܐ ܕܒܝܬܗ.* ܕܠܐ ܬܬܠ ܠܐܚܪܢܐ ܚܝܠܟ. ܘܫܢܝܟ ܠܕܠܐ ܡܪܚܡܝܢ.* ܘܢܣܒܥܘܢ
4 ܢܘܟܪܝܐ ܚܝܠܟ. ܘܥܡܠܟ ܠܒܝܬܐ ܢܘܟܪܝܐ.* ܘܬܬܬܘܐ ܒܣܘܦܟ. ܟܕ ܬܚܒܠ
5 ܒܣܪܐ ܕܦܓܪܟ.* ܘܬܐܡܪ ܕܠܡܢܐ ܣܢܝܬ ܡܪܕܘܬܐ. ܘܟܘܘܢܬܐ ܐܫܝܛ ܠܒܝ.

Et per locum ubi morantur, ne tranſeas: ſed 15 diverte, & prætergredere illũ. Non enim dor- 16 miunt, quoad committant ſcelus: & recedit ſomnus eorum, quouſque exequantur voluntatem ſuam. Quoniam cibus eorum, cibus eſt 17 iniquitatis: & vinũ fraudis bibunt. Via verò 18 juſtorũ, quaſi lumen coruſcat, & progreditur lux ejus donec invaleſcat dies. Iter autẽ im- 19 piorum tenebroſũ eſt, & ignorant in quid impingant. Fili mi, auſculta verba mea, & ſer- 20 moni meo inclina aurem tuam. Ne vileſcant 21 in oculis tuis, ſed cuſtodi ea in penetralibus cordis tui. Quoniam vita ſunt ei qui repererit 22 illa, & carnem ſuam totam curat. Cum omni 23 cautela cuſtodi cor tuũ, quia ab ipſo eſt origo vitæ. Remove à te os profundum, & cogita- 24 tionem fraudulentã aliena à labiis tuis. Ocu- 25 li tui æquitatem reſpiciant, & palpebræ tuæ dirigant *viam tuam* ante te. Averte pedem 26 tuum à ſemitis pravis, & omnes viæ tuæ confirmabuntur. Ne declines dextrorſum aut ſi- 27 niſtrorſum, ſed amove pedem tuum à malo.

CAP. V.

Fili mi, auſculta ſapientiam meam, & ſer- 1 moni meo præbe aurem tuam: Ut cautè ſer- 2 ves conſilium, & ſcientiam labia tua cuſtodiant. Quia mel ſtillant labia extraneæ, & le- 3 niora ſunt oleo verba ejus, At finis eorum 4 abſinthio amariora. Acutior eſt enim gladio 5 duarum acierum, Et pedes ejus deducunt ad mortem. Infernus paſſus ejus fulcit, Et non 6 graditur in terra vitæ; vagæ ſunt enim ſemitæ ejus, & ignotæ. Itaque filii audite me, & ne 7 declinetis ab eloquio oris mei. Longè fac ab 8 ea viam tuam, & ne accedas ad oſtium domûs ejus: Ut non des aliis robur tuum, & annos 9 tuos iis qui non ſunt miſericordes: Et ſaturen- 10 tur exteri viribꝰ tuis, & laborẽ tuũ inferas in domũ alienam: Et in ſenectute tua pœniteat 11 animã tuã, cùm conſumpta fuerit caro corporis tui; Et dicas, Ad quid, eheu, odio habui eru- 12 ditionẽ, & increpationem ſprevit cor meum?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

15 * في اي موضع نزلوا معسكرين لا تذهب اليه. ولا تحضر فيه. أحد عنهم واستبذل زعقهم.
16 * فانهم ما ينامون ان لم يعملوا الشر. قد انتزع نومهم فما ينامون * لان الذين ياكلون طعام
17 النفاق يسكرون الخمر المتعدي الشريعة * فاما طرق المقسطين بهذه الصورة تتلألأ بالنور
18 ويستضيئون الي ان يقوم النهار * واما سبل المنافقين مظلمة فما يعلمون كيف يعثرون.
19 * يا بني اصغ الي قولي. ولتستلم اذنك كلماتي * حتي لا تنقص ينابيعك. احفظها في قلبك.
20 * فان حياة للذين يصادفونها. وشفاء لكل بشر * بكافة التحفظ احفظ قلبك. فان منه مخارج
21 الحياة * انزع منك الفم الملتوي. وابعد منك الشفتين الظالمتين بعيدا * وعيناك فلتبصر
22 امورا مستوية. واجفانك فلتومي اشاراتها مقسطة * واجعل لرجليك طرقا مقومة. وقوم
23 طرايقك * لا تحيدن الي الميامن ولا المياسر واردد رجلك من الطريق الردي. فان الله قد
24 عرف الطرق التي من الميامن. لان المناهج التي من المياسر معوجة هي. فاجعل انت طرايقك
25 مقومة. ومسالكك طرق لها في السلامة.
26
27

الفصل الخامس.

1 * يا بني اصغ الي حكمتي. واجعل في سامعتيك اقوالي * لتحفظك ذكرا صالحا. فاوصي لك حس
2 سمعي. لا تصغ الي امراة طالحة * فان العسل يقطر من شفتي المراة الزانية. يدسم حنكك
3 مدة يسيرة * ثم تجده اخيرا اشد مرارة من العلقم. ومرهفا اكثر من سيف ذي فمين.
4 * لان ارجل الغباوة تحدر الذين يستعملونها وتحطهم بعد الموت الي الجحيم. وآثارك ما تثبت.
5 * مناهجها خطرة. وليس معروفة سريعا * والان يا بني اسمع مني. ولا تنقض اقوالي.
* اجعل طريقك منها بعيدة. لا تدن الي ابواب منزلها * لئلا تدفع حياتك الي غيرك.
وعمرك الي من لا يرحمك * لئلا تشبع الغرباء من قوتك. وتدخل اتعابك الي منازل اجنبية
* وتندم في اواخرك. حين تستحق لحمان جسمك * فتقول كيف مقت الادب. وحاد قلبي
عن التوبيخات.

Quemcunque locum inhabitaverint turmatim collecti, ne adeas, & in eo ne adſis. Declina ab eis, & profanum reputa clamorem eorum. 15 *Non enim dormiunt niſi commiſerint malum. Jam ſublatus eſt ſomnus eorum, nec dormiunt: Quia qui* 16 *comedunt cibum impietatis, inebriantur vino tranſgrediente legem.* 17 *At verò via juſtorum hâc formâ ſplendeſcent luce, & fulgebunt donec erigatur dies.* 18 *At ſemitæ impiorum tenebroſæ ſunt, & neſciunt quomodo impingant.* 19 *Fili mi, auſculta ſermonem meum, & percipiat auris tua verba mea,* 20 *Ut ne deficiant fontes tui. Cuſtodi eam in corde tuo:* 21 *Quia eſt vita omnibus invenientibus eam, & ſanitas univerſæ carni ſuæ.* 22 *Omni cautelâ ſerva cor tuum, quia ex ipſo ſunt origines vitæ.* 23 *Depone à te os perverſum, & remove à te labia iniqua procul.* 24 *Et oculi tui videant res æquas, & palpebræ tuæ annuant ſigna ſua juſta.* 25 *Et ſtatue pedibus tuis vias rectas, & dirige vias tuas.* 26 *Ne declines ad dexteras, nec ad ſiniſtras: & retrahe pedem tuum à ſemita mala. Deus enim novit vias quæ à dextris ſunt: quoniam viæ quæ ſunt à ſiniſtris, ſunt diſtortæ. Tu igitur ſtatue vias tuas rectas, & greſſus tuos dirige ad illas in pace.* 27

CAP. V.

Fili mi, attende ad ſapientiam meam, & colloca in auribus tuis ſermones meos, 1 *ut ſervare te faciant monitum bonum; nam te monebo prudentiam labiorum meorum. Ne præbeas aures mulieri improbæ,* 2 *Quia mel ſtillat de labiis mulieris fornicariæ: demulcet palatum tuum brevi tempore,* 3 *Demum invenies illud amarum pluſquam abſinthium, & acutum magiſquam gladium ancipitem.* 4 *Pedes enim imprudentiæ præcipitant illos qui eâ utuntur, & deprimẽt ipſos poſt mortem ad infernum: & veſtigia tua non ſubſiſtent.* 5 *Viæ ejus ſunt periculoſæ, & non illico perceptibiles.* 6 *Itaque fili mi, acquieſce mihi, & ne violes ſermones meos.* 7 *Fac viam tuam procul ab ea: ne accedas ad januas domûs ejus,* 8 *Ne fortè tradas vitam tuam alteri, & ætatem tuam illi qui non miſeretur tui:* 9 *Ne fortè ſaturentur extranei viribus tuis, & ingrediantur labores tui habitacula aliena:* 10 *Et te pœniteat in noviſſimis tuis, dum conterentur carnes corporis tui,* 11 *Dicaſque; Quomodo deſpexi diſciplinam, & declinavit cor meum à correptionibus?* 12

משלי : ו

non me docentibus & : me docentium *voce in* audivi non Et
13 ולא־שמעתי בקול מורי ולמלמדי לא־
: malo omni in *fui parum Quasi* ? meam aurem inclinavi
14 הטיתי אזני: כמעט הייתי בכל־רע
; tua cisterna de *aquas* Bibe .*cœtus* & , ecclesiæ medio in
15 בתוך קהל ועדה: שתה־מים מבורך
: foras tui fontes *Dispergantur* .tui putei medio de fluenta &
16 ונזלים מתוך בארך: יפצו מעינתיך חוצה
non & ; tibi soli tibi Sint .aquarum rivi plateis in
17 ברחבות פלגי־מים: יהיו־לך לבדך ואין
uxore de lætare & ; benedicta tua vena Sit .tecum alienis
18 לזרים אתך: יהי־מקורך ברוך ושמח מאשת
ejus ubera , gratiæ ibix & , amorum Cerva .*tuarum adolescentiarum*
19 נעוריך: אילת אהבים ויעלת חן דדיה
: jugiter *errabis* ejus amore in : tempore omni in te inebrient
ירוך בכל־עת באהבתה תשגה תמיד:
? extraneæ sinum *amplexaberis &* ; *extranea in* mi fili *errabis* quid ut Et
20 ולמה תשגה בני בזרה ותחבק חק נכריה:
ejus *orbitas* omnes & ; viri viæ DOMINI oculis coram Quia
21 כי נכח עיני יהוה דרכי־איש וכל־מעגלתיו
funibus *in* & : impium *eum* capient suæ Iniquitates .*ponderans*
22 מפלס: עוונתיו ילכדנו את־הרשע ובחבלי
multitudine in & ; *eruditione non in* morietur Ipse .tenebitur sui peccati
23 חטאתו יתמך: הוא ימות באין מוסר וברב
.errabit suæ stultitiæ
אולתו ישגה:

CAP. VI. ו

.*suas volas* alieno defixisti : tuo *sodali* spopondisti si , mi Fili
1 בני אם־ערבת לרעך תקעת לזר כפיך:
.tui oris eloquiis in es captus ; tui oris verbis in es Illaqueatus
2 נוקשת באמרי־פיך נלכדת באמרי־פיך:
: tui *socii volam* in venisti quia , te erue & , mi fili nunc hoc Fac
3 עשה זאת אפוא בני והנצל כי באת בכף־רעך
des Ne .tuos *sodales* robora & ; te *conculcandum præbe* , vade
4 לך התרפס ורהב רעיך: אל־תתן
te Erue .tuis palpebris dormitationem & ; tuis oculis somnum
5 שנה לעיניך ותנומה לעפעפיך: הנצל
Vade .aucupis manu de avis sicut & ; manu de cerva tanquam
6 כצבי מיד וכצפור מיד יקוש: לך־
Cui .*esto* sapiens & , ejus vias vide ; piger formicam ad
7 אל־נמלה עצל ראה דרכיה וחכם: אשר
æstate in Parabit .dominus *&* , præfectus , *gubernator ei* non
8 אין־לה קצין שטר ומשל: תכין בקיץ
Usquequo .suam escam messe in congregat ; suum *panem*
9 לחמה אגרה בקציר מאכלה: עד־מתי
, *somnorum Parum* ? tuo somno à surges quando ? *jacebis* piger
10 עצל תשכב מתי תקום משנתך: מעט שנות
.dormiendum ad manuum *complicationis parum* ; *dormitationum parum*
מעט תנומות מעט חבק ידים לשכב:
vir tanquam tuus defectus & ; tua *paupertas* viator tanquam veniet Et
11 ובא־כמהלך ראשך ומחסרך כאיש
.*clypei*
מגן:

Versio VULG. LAT.

13 Nec audivi vocem docentium me, & magiſtris non inclinavi 14 aurem meã? Penè fui in omni malo, in medio eccleſiæ & 15 ſynagogæ. Bibe aquam de ciſterna tua, et fluenta putei tui: 16 Deriventur fontes tui foràs, & in plateis aquas tuas divide. 17 Habeto eas ſolus, nec ſint a- 18 lieni participes tui. Sit vena tua benedicta, & lætare cum muliere adoleſcentiæ tuæ: 19 Cerva chariſſima, & gratiſſimus hinnulus: ubera ejus inebrient te in omni tempore, in amore ejus delectare jugiter. 20 Quarè ſeducêris, fili mi, ab aliena, & fovêris in ſinu alterius? 21 Reſpicit Dominus vias hominis, & omnes greſſus ejus con- 22 ſiderat. Iniquitates ſuæ capiunt impium, & funibus peccatorum ſuorũ conſtringitur. 23 Ipſe morietur, quia non habuit diſciplinam, & in multitudine ſtultitiæ ſuæ decipietur.

CAP. VI.

1 Fili mi, ſi ſpoponderis pro amico tuo, defixiſti apud ex- 2 traneum manum tuam, Illaqueatus es verbis oris tui, & captus propriis ſermonibus. 3 Fac ergò quod dico, fili mi, & temetipſum libera: quia incidiſti in manum proximi tui. Diſcurre, feſtina, ſuſcita ami- 4 cum tuum: Ne dederis ſomnum oculis tuis, nec dormi- 5 tent palpebræ tuæ. Eruere quaſi damula de manu, & quaſi 6 avis de manu aucupis. Vade ad formicam, ô piger, & conſidera vias ejus, & diſce ſa- 7 pientiam: Quæ cùm non habeat ducem, nec præcepto- 8 rem, nec principem, Parat in æſtate cibum ſibi, & congregat 9 in meſſe quod comedat. Uſquequò, piger, dormies? quando conſurges è ſomno tuo? 10 Paululùm dormies, paululùm dormitabis, paululùm con- 11 feres manus, ut dormias: Et veniet tibi quaſi viator, egeſtas, & pauperies quaſi vir armatus. Si verò impiger fueris, veniet ut fons meſſis tua, & egeſtas longè fugiet à te.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

13 † Οὐκ ἤκουον φωνὴν παιδεύοντός με καὶ διδάσκοντός με, † οὐδὲ παρέβαλλον τὸ οὖς μου. † 14 Παρ᾽ ὀλίγον ἐγενόμην ἐν παντὶ (θ) κακῷ, † ἐν 15 μέσῳ ἐκκλησίας καὶ συναγωγῆς. † Πῖνε ὕδατα ἀπὸ σῶν ἀγγείων, † καὶ ἀπὸ σῶν φρε- 16 άτων πηγῆς. † (ι) Μὴ ὑπερεκχείσθω σοι ὕδατα ἐκ τῆς σῆς πηγῆς, † εἰς δὲ σὰς πλατείας 17 διαπορευέσθω τὰ σὰ ὕδατα. † Ἔστω σοι μόνῳ ὑπάρχοντα, † καὶ μηδεὶς ἀλλότριος μετα- 18 σχέτω σοι. † Ἡ πηγή σου τοῦ ὕδατος ἔστω σοι ἰδία, † καὶ συνευφραίνου μετὰ γυναικὸς τῆς 19 ἐκ νεότητός σου. † Ἔλαφος φιλίας καὶ πῶλος σῶν χαρίτων ὁμιλείτω σοι, † ἡ δὲ ἰδία ἡγείσθω σου καὶ συνέστω σοι ἐν παντὶ καιρῷ· † ἐν γὰρ (κ) τῇ ταύτης φιλίᾳ συμπεριφε- 20 ρόμενος, πολλοστὸς ἔσῃ. † Μὴ πολὺς ἴσθι πρὸς ἀλλοτρίαν, † μηδὲ συνέχου ἀγκάλαις 21 (λ) τῆς μὴ ἰδίας. † Ἐνώπιον γάρ εἰσι τῶν τοῦ Θεοῦ ὀφθαλμῶν ὁδοὶ ἀνδρός, † εἰς δὲ (μ) πάσας 22 τὰς τροχιὰς αὐτοῦ σκοπεύει. † Παρανομίαι ἄνδρα ἀγρεύουσι, † σειραῖς δὲ τῶν ἑαυτοῦ ἁμαρ- 23 τιῶν ἕκαστος σφίγγεται. † Οὗτος τελευτᾷ μετὰ ἀπαιδεύτων, † ἐκ δὲ πλήθους τῆς ἑαυτοῦ βιότητος (ν) ἐξερρίφη, † καὶ ἀπώλετο (ξ) δι᾽ ἀφροσύνην.

MS. A. (θ) κακῷ μου, ἐμμέσῳ (ι) Ὑπερεκχείσθω σοι τὰ ὕδατα ταύτῃ τῇ φιλίᾳ (λ) ταῖς μὴ ἰδίαις. (μ) σὰς τροχιὰς αὐτοῦ (ν) ἐξερίφη, (ξ) διὰ

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 † Υἱέ, ἐὰν (α) ἐγγυήσῃ σὸν φίλον, † παρα- 2 δώσεις σὴν χεῖρα ἐχθρῷ. † Παγὶς γὰρ ἰσχυρὰ (β) ἀνδρὶ τὰ ἴδια χείλη, † καὶ ἁλίσκε- 3 ται χείλεσιν ἰδίου στόματος. † Ποίει υἱὲ ἃ ἐγώ σοι ἐντέλλομαι, καὶ σῴζου· † ἥκεις γὰρ εἰς χεῖρας κακῶν διὰ σὸν φίλον. † Ἴσθι μὴ ἐκλυόμενος, † παρόξυνε δὲ καὶ τὸν φίλον σου ὃν ἐν- 4 εγγυήσω. Μὴ δῷς ὕπνον σοῖς ὄμμασι, † μη- 5 δὲ ἐπινυστάξῃς σοῖς βλεφάροις, † Ἵνα σῴζῃ ὥσπερ δορκὰς ἐκ βρόχων, † καὶ ὥσπερ ὄρνεον 6 ἐκ παγίδος. † Ἴθι πρὸς τὸν μύρμηκα ὦ ὀκνηρέ, † καὶ ζήλωσον ἰδὼν τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, 7 † καὶ γενοῦ ἐκείνου σοφώτερος. † (γ) Ἐκείνῳ γὰρ γεωργίου μὴ ὑπάρχοντος, † μηδὲ τὸν ἀναγκάζοντα ἔχων, † μηδὲ 8 ὑπὸ δεσπότην ὤν, † Ἑτοιμάζεται θέρους τὴν τροφήν, † πολλήν τε ἐν τῷ ἀμητῷ ποιεῖται τὴν παράθεσιν. † ἢ πορεύθητι πρὸς τὴν μέλισσαν, † καὶ μάθε ὡς ἐργάτις ἐστί, † τήν τε ἐργασίαν ὡς σεμνὴν ποιεῖται. † ἧς τοὺς πόνους βασιλεῖς καὶ ἰδιῶται πρὸς (δ) ὑγίειαν προσφέρονται. † ποθεινὴ δέ ἐστι πᾶσι καὶ ἐπίδοξος, † καίπερ οὖσα τῇ ῥώμῃ ἀσθενής, † τὴν σοφίαν τιμήσα- 9 σα προήχθη. † Ἕως τίνος ὀκνηρὲ κατάκεισαι; † πότε δὲ ἐξ ὕπνου ἐγερθήσῃ; † 10 Ὀλίγον μὲν ὑπνοῖς, ὀλίγον δὲ κάθησαι, μικρὸν δὲ νυστάζεις, † ὀλίγον δὲ ἐναγκα- 11 λίζῃ χερσὶ στήθη. † Εἶτ᾽ ἐμπαραγίνεταί σοι ὥσπερ κακὸς ὁδοιπόρος ἡ πενία, † καὶ ἡ ἔνδεια ὥσπερ ἀγαθὸς δρομεύς. † ἐὰν δὲ ἄοκνος ᾖς, (ε) ἥξει ὥσπερ πηγὴ ὁ ἀμητός σου· † ἡ δὲ ἔνδεια, ὥσπερ κακὸς (ζ) δρομεὺς ἀπαυτομολήσει.

Non audiebam vocem (ſ) co
tis me, & docentium me,
bibebam aurem meam.
fui in omni malo, in m
clesiæ, & synagogæ. Bib
(ſ) de tuis vasis, & de
teorum tuorum fonte: (
supereffundantur tibi aq
tra tuum fontem, & in
plateas pertranseant aq
Sint tibi soli possessæ: &
alienus particeps sit tibi.
quæ tua sit tibi propria,
cundare cum uxore, quæ
ventute tua. Cerva amic
(y) pullus tuarũ gratiarũ
buletur tecũ, & (z)
ie, & adsit tibi in omni
In hujus enim amicitia
satus diutius eris.
ſis ad alienam, neque
ulnis nõ propria. Sunt
ram Dei oculis viæ
omnes (aa) orbitas
tur. (bb) Iniquitates
piunt: & (cc) catena
peccatorum unusquisque
constringitur. Hic mo
cum iis qui non habent
nam, & ex multitudin
ſuæ dejectus est, & pr
imprudentiam.

CAP. VI.

Fili, si spoponderis
tuum; (b) tradis manu
inimico. (c) Laqueus
viro propria labia: &
tur labiis propriis
quæ ego tibi mando,
venisti enim in
propter tuum amicum
remissus, (ſ)
& amicum tuum,
disti. Ne dederis
lis tuis,
pebris tuis; ut salveris
damula
vis è (k)
micam,
videns vias
pientior. Nam cum
gellus, neque
gat, neque sub domino
æstate alimentum,
tam in messe facit
Aut vade ad apem
modò operaria est,
quoque quàm venerabilem
cit: cujus labores
tæ, ad sanitatem
tibilis autem est omnibus
etiam cùm sit viribus
pientiam honorans
usquequò, piger,
do autem è somno
ris? Paulum quidem
lùm autem sedes,
dormitas, paulum
Cæteris manibus
supervenit tibi,
ator, paupertas, &
quã bon° cursor.
piger fueris, veniet
messis tua: egestas
malus cursor, aufugi

MS. A. (α) ἐγγύη (β) τὰ ἴδια χείλη ἀνδρί, (γ) Ἐκείνου (δ) ὑγίαν φέρονται. (ε) ἥξει σοι ὥσπερ (ζ)

תרגום TARGUM.

13 ולא שמעית קלא דמרותי ולמלפני לא צלית אדני: 14 עד כליל הוית לי בכל בישין
15 בגו כנשתא ועדתא: אשתה מיא מן גובך ורדיא מן בירך: 16 נשפעון מעינך לברא
ובפתיי טיפי דמיא: 17 יהוון לך לחודך ונוכראי לא נשתתפון עמך: 18 יהוי מבועך בריך
וחדי מן אתת טליותך: 19 אילתא דרחמותא ודיצותא דחסדא הונא אלף בכל זמן
וברחמותא תנרם תדירא: 20 ולמה תשרגג ברי בנוכריתא אוף לא תחבק עובה
דאחריתא: 21 מטול דקדם עיני דאלהא אנון ארחתיה דגברא וכולהון שבילוי גלן
קדמוי: 22 חובוי דרשיעא קמטין ליה ובחבלי דחטוי נתפכך: 23 הוא ימות בלא מרדותא
ובסוגאי דשטיותיה נטעי:

ו

1 ברי אין ערבת לחברך אשלימתא לנוכראה ידך: 2 אתצידתא במאמרא דפומך
אתאחדתא במאמרא דפומך: 3 עביד היכנא בני ואתפצא מטול דנפלת ביד דחברך
אול גרג הביל חברך: 4 לא תתן שנתא לעינך ונימתא לגבינך: 5 דתתפצי היך טביא מן
נשבא והיך צפרא מן פוחא: 6 אתדמא לשומשמנא עטלא חמי ארחתהון ואתחכם:
7 דלית לה חצדא היך אף לא סרכא ושליטא: 8 מתקנא בקיטא לחמה וגבשא בחצדא
מיכלה: 9 עד מה לאימת אנת דמיך אנת עטלא ולאימת קימת מן שנתך: 10 קליל
שנתא קליל נומתא קליל תחבק ידך למדמכא: 11 ותיתי ותדרוך מסכנותך וחוסרנך
היך גברא כשרא:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Et non audivi vocem doctorum meorum, & magiſtris meis
clinavi aurem meam. Penitus *fui mihimet in omnibus mal*
dio eccleſiæ & congregationis. Bibe aquam de ciſterna tua
enta de puteo tuo. Redundabunt fontes tui foris, & in plateis
rum. Erunt tibi ſoli, & extranei non participabunt tecum.
tuus benedictus: & lætare cum uxore adoleſcentiæ tuæ. Cerva
& exultatio gratiæ: rationem diſce in omni tempore, & in
ejus incumbe ſemper. Et quare ſeduceris fili mi in aliena? nec
amplexaberis ſinum extraneæ. Quoniam in conſpectu Dei ſunt
ri, & omnes ſemitæ ejus manifeſtæ ſunt coram eo. Peccata
prehendunt impium, & in funibus peccatorum ſuorum con
Ipſe morietur abſque diſciplina, & in multitudine ſtultitiæ ſuæ

CAP. VI.

Fili mi ſi ſpoponderis pro amico tuo, promiſiſti ſolvere extra
tua; Illaqueatus es verbis oris tui: captus es ſermonibus oris
hoc fili mi, & liberare: quia incidiſti in manum proximi tui;
ra velociter amicum tuum. Ne des ſomnum oculis tuis, neque
onem palpebris tuis. Ut evadas quaſi damula de pedica, & ſicut
laqueo. Similis eſto formicæ, piger; vide vias ejus, & ſapiens eſto
non habet meſſem, ſicut nec ducem, neque dominatorem;
æſtate cibum ſuum, & coacervat in meſſe eſcam ſibi. Uſquequo
dormis, & quando conſurges de ſomno tuo? Parum ſomni
& parum dormitationis, paululum complicabis manus tuas ad
dum. Et veniet & incedet egeſtas tua, & indigentia tua, ſicut

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 * ܘܠܐ ܫܡܥܬ ܒܩܠܐ ܕܡܠܦܢܝ. ܘܠܡܬܥܢܝܢܝ ܠܐ ܪܟܢܬ ܐܕܢܝ. *ܟܡ ܩܠܝܠ ܗܘܐ ܗܘܝܬ ܒ
14 ܟܠ ܒܝܫ ܒܡܨܥܬ ܟܢܘܫܬܐ ܘܥܕܬܐ. *ܐܫܬܝ ܡܝܐ ܡܢ ܓܘܒܟ. ܘܢܒܥܐ ܡܢ ܡܥܝܢܟ. *ܘܢܫܬܦܥܘܢ
15 16 ܡܝܟ ܒܫܘܩܝܟ. ܘܒܫܘܩܝܟ ܢܪܕܘܢ. *ܘܢܗܘܘܢ ܠܟ ܒܠܚܘܕܝܟ. ܘܢܘܟܪܝܐ ܠܐ ܢܫܬܘܬܦܘܢ
17 ܥܡܟ. *ܘܢܗܘܐ ܡܒܪܟ ܡܒܘܥܟ. ܘܚܕܝ ܥܡ ܐܢܬܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟ. *ܐܝܠܬܐ ܕܪܚܡܬܐ. ܘܝܥܠܬܐ
18 19 ܕܪܚܡܬܐ. ܐܘܪܚܬܗ ܝܠܦ ܒܟܠ ܙܒܢ. ܘܒܪܚܡܬܗ ܪܥܝ. *ܘܠܐ ܬܛܥܐ ܒܪܝ ܒܢܘܟܪܝܬܐ. ܘܠܐ
20 ܬܓܦܘܦ ܥܘܒܗ ܕܢܘܟܪܝܬܐ. *ܡܛܠ ܕܩܕܡ ܥܝܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܐܘܪܚܬܗ ܕܓܒܪܐ. ܘܟܠܗܘܢ
21 ܫܒܝܠܘܗܝ ܓܠܝܢ ܩܕܡܘܗܝ. *ܒܚܛܗܘܗܝ ܢܬܐܚܕ ܥܘܠܐ. ܘܒܚܒܠܐ ܕܚܛܗܘܗܝ
22 ܢܬܐܣܪ. *ܗܘ ܢܡܘܬ ܕܠܐ ܡܪܕܘܬܐ. ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܣܟܠܘܬܗ ܢܛܥܐ.
23

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

1 *ܒܪܝ. ܐܢ ܥܪܒܬ ܠܚܒܪܟ. ܐܫܠܡܬ ܐܝܕܝ
2 ܠܢܘܟܪܝܐ. *ܐܬܬܨܝܕܬ ܒܡܐܡܪܗ ܕܦܘܡܟ: ܘܐܬܬܚܕܬ ܒܡܡܠܠܐ ܕܣܦܘܬܟ. *ܥܒܕ ܗܟܢܐ
3 ܒܪܝ. ܘܐܬܦܨܐ. ܡܛܠ ܕܢܦܠܬ ܒܐܝܕܝ ܒܥܠܕܒܒܝܟ. ܒܥܝ ܗܟܝܠ ܚܒܪܟ
ܕܥܪܒܬ ܠܗ. *ܘܠܐ ܬܬܠ ܫܢܬܐ ܠܥܝܢܝܟ. ܘܠܐ ܢܘܡܐ ܠܓܒܝܢܝܟ. *ܕܬܬܦܨܐ ܐܝܟ
4 5 ܛܒܝܐ ܡܢ ܢܫܒܐ. ܘܐܝܟ ܨܦܪܐ ܡܢ ܦܚܐ. *ܙܠ ܠܘܬ ܫܘܫܡܢܐ. ܘܚܙܝ ܐܘܪܚܬܗ.
6 ܘܝܠܦ ܕܠܝܬ ܠܗ ܚܨܕܐ. *ܘܠܝܬ ܥܠܘܗܝ ܫܠܝܛܐ. ܘܠܐ ܡܢ ܕܕܚܩ ܠܗ. *ܘܡܛܝܒ
7 8 ܠܗ ܡܢ ܩܝܛܐ ܠܚܡܗ. ܘܟܢܫ ܒܚܨܕܐ ܡܐܟܘܠܬܗ. *ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܕܡܟ ܐܢܬ ܚܒܢܢܐ.
9 ܐܡܬܝ ܡܢ ܫܢܬܟ ܬܩܘܡ. *ܩܠܝܠ ܕܡܟ. ܘܩܠܝܠ ܬܬܢܡ. ܘܩܠܝܠ ܬܣܝܡ ܐܝܕܝܟ ܥܠ
10 11 ܚܕܝܟ. *ܘܬܐܬܐ ܠܟ ܡܣܟܢܘܬܐ. ܘܬܕܪܟܟ ܚܣܝܪܘܬܐ. ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܡܨܠܚܐ ܣܟܠܐ.

Et non audivi vocem docentium me, & hortantibus me non præbui aurem meam? 13 14 Parum abfuit quin verſatus ſim in omnibus malis in congregatione, & in eccleſia. 15 Bibe aquas de puteo tuo, & fluenta de fonte tuo. 16 Et effundantur aquæ tuæ per plateas tuas, & in compitis tuis fluant: 17 Síntque tibi ſoli, & alieni non participent tecum. 18 Et erit benedictus fons tuus; & lætare cum muliere adoleſcentiæ tuæ, 19 Cervo amoris, & ibice amoris: Vias ejus diſce in omni tempore, & in amore ejus paſcere: 20 Et ne ſeducaris fili mi, ob extraneã, neve amplectaris ſinũ extraneæ. 21 Quoniam coram oculis ſunt Dñi viæ viri, & omnes ſemitæ ej⁹ detectæ corã eo. 22 In delictis ſuis capietur iniquus, & funibus peccatorum ſuorum vincietur. 23 Ipſe morietur ineruditus, & in multitudine erroris ſui decipietur.

CAP. VI.

Fili mi, ſi ſpopondiſti pro amico tuo, tradidiſti manum tuã alienis: 1 2 Irretitus es ſermone oris tui, & captus es eloquio labiorũ tuorum. 3 Fac ita fili mi, & temetipſum libera. Quandoquidem propter amicũ tuum incidiſti in manus inimici tui, ſolicita ergò amicũ tuum pro quo fidejuſſiſti, 4 Et ne concedas ſomnũ oculis tuis, neque dormitationem ſuperciliis tuis: 5 Ut libereris quaſi cerv⁹ à plagis, & velut avis à laqueo. 6 Imitare formicam, & conſidera vias ejus: et diſce quòd non ſit ei meſſis, 7 Nec ſit ſuper eam præfectus, nec qui ſolicitet eam. 8 Attamen parat ſibi ab æſtate panem ſuum, et congregat in meſſe eſcã ſuam. 9 Uſquequo dormies piger? ecquando è ſomno tuo ſurges? 10 Parum dormies, parum ſomni capies, et parũ pones manum tuam ſupra pectus tuum: 11 Ingruétque in te paupertas, et aſſequetur te egeſtas quaſi vir fortunatus, homo ſtultus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 *ما سمعت صوت من كان يؤدبني ويعلمني * ولا وعيته في اذني *في مدة يسيرة حصلت في كافة
14 السوء * في وسط الكنيسة والجمع * اشرب امياه من اوانيك * ومن ابيار ينبوعك * ولتسكب لك
15 16 المياه من ينبوعك * ولتسلك امياهك في شوارعك * ولتكن لك وحدك ملكا * ولا يشاركك فيها
17 احد غريب *ينبوعك الذي للماء فليكن لك خصوصا * وافرح مع امراة حداثتك * ولتعانقك
18 19 ايلة محبتك * ومهر نعمتك التي لك * فلتعد لك وتعمرن بك في كل وقت * لان في انقيادك الى
مودتها تصير كثيرا *لا تصغ الى الامراة الغريبة * ولا تمض اليها * ولا تلمس ساعدي امراة
20 ليست امراتك *لان طرق الرجل امام عيني الله هي * وهو يراقب طرايقه كلها *الافعال المتجاوز
21 22 الشريعة تقتنص الانسان * وكل احد يربط بحبايل خطاياه محزوما *هذا لانه توفي مع الذين
23 لا ادبا لهم * فالقي من كثر تعمين * وهلك من اجل غباوته *

الفصل السادس *

1 2 * يا بني ان ضمنت صديقك * فقد اسلمت يدك الى عدوك * لان فخا قويا الانسان شفتاه *
3 ويوهق بشفتي فمه * يا بني اعمل ما اوصيك به تسلم * لانك حصلت في ايدي الظالمين من
4 اجل صديقك * اذهب غير متضجر * اطلب صديقك الذي تعزم تضمنه * لا تعط عينيك
5 نوما * ولا تغمض باجفانك * لتخلص كتخلص الغزال من الوهق * وكانفلات الطاير من الفخ *
6 7 ايها العاجز اذهب الى النملة * واذا رايتها فماثل طرقها * وصر اوفر منها حكمة * لان تلك
8 اذ ليست لها فلاحة * ولا لها من يضطرها * ولا هي تحت امر سيد يلزمها * تستعد منذ الحصاد
طعامها * وبالحصاد تصنع دخيرة عظيمة * او اذهب الى النحلة واعرف انها مثل الفاعل هي
تعمل صناعتها طرقة عجيبة * واتعابها تحمل الى الملوك والعامة يستعملونها لحفظ الصحة * وهي
عند جميع الناس مالوفة مشرفة * مع انها ضعيفة في قوتها فقد فاقت * لانها اكرمت بالحكمة
9 وفضلت * ايها العاجز الى متى تضطجع طريحا * متى تنهض من النوم * تنام قليلا * وتجلس
10 11 قليلا * وتنعس قليلا وتعانق بيديك صدرك يسيرا *ثم ماذا يوافيك العوز كمسافر ردي *
والفاقة كفيج حثيث السعي * وان كنت غير عاجز فياتي حصادك كفيض الينبوع وينصرف الفاقة عنك كانسان ردي *

Non audivi vocem ejus qui me erudiebat meque docebat, & non retinui eam in aure mea? 13 14 *Brevi tempore deveni in omnem miſeriam, in medio Eccleſiæ, & ſynagogæ.* 15 *Bibe aquas de vaſis tuis, & de puteis fontis tui:* 16 *Et fundantur tibi aquæ de ſcatebra tua, & fluant aquæ tuæ per vicos tuos:* 17 *Et ſint tibi ſoli poſſeſſio, & ne communicet tecum in illis ullus externus.* 18 *Fons aquæ tuus, ſit tibi peculiaris, & lætare cum uxore adoleſcentiæ tuæ:* 19 *Et amplexetur te cerva amoris tui, & hinnulus gratiæ tuæ, qui tuus eſt; ipſa ſit tibi parata, & juncta ſit tibi omni tempore: quia aſſentiendo amori ejus, fiet multus.* 20 *Ne attendas ad mulierem extraneam, nec eam adeas, & ne attrectes brachia mulieris quæ non ſit uxor tua:* 21 *Quia viæ viri coram oculis Dei ſunt, ipſeque obſervat vias ejus omnes.* 22 *Opera tranſgredientia legem venantur hominem, & unuſquiſque ligabitur funibus peccatorum ſuorum ſtrictè.* 23 *Hic quia mortuus eſt cum iis qui ſunt ſine diſciplina, dejectus eſt ob multitudinem machinationum ſuarum, & periit ob ſuam ſtultitiam.*

CAP. VI.

Fili mi, ſi ſpopondiſti pro amico tuo, jam tradidiſti manum tuam inimico tuo: 1 2 *Quia ſunt laqueus validus homini labia ſua, & illaqueatur labiis oris ſui.* 3 *Fili mi, fac quod mando tibi, & ſalvus eris. Quandoquidem offendiſti in manus improborum propter amicum tuum, abi impiger, pete amicum tuum pro quo decernis ſpondere.* 4 *Ne des oculis tuis ſomnum, & ne* levi ſomno *capiaris in palpebris tuis:* 5 *Ut evadas ſicut evadit cervus è reti, & ſicut effugit avis è laqueo.* 6 *O piger, vade ad formicam: & poſtquam videris eam, imitare vias ejus, & eſto amplioris ſapientiæ quam ipſa.* 7 *Hæc enim cùm non habeat arva, nec habeat qui eam cogat, neque ſit ſub imperio domini qui adigat eam,* 8 *Parat à tempore meſſis cibum ſuum, & in meſſe cogit annonam ingentem. Aut vade ad Apem, & ſcias eam velut operarium fabricare opus ſuum arte mirabili: & labores ejus deferuntur ad reges, & vulgus iis utitur ad tuendam ſanitatem: eſtque apud omnes homines amabilis & laudanda: etiamſi debilis ſit viribus, tamen antecellit, quia commendatur in ſapientia, & præſtans eſt.* 9 *O piger, uſquequò jacebis proſtratus? quandonam ſurges è ſomno?* 10 *Dormis paululùm, & ſedes paululùm, & dormitas paululùm, & amplecteris manibus tuis pectus tuum paululùm:* 11 *Tum quid adveniet tibi? egeſtas velut viator peſſimus, et paupertas quaſi curſor velox in ambulando. Quòd ſi fueris impiger, adveniet meſſis tua quaſi inundatio fontis, et recedet paupertas à te quaſi homo peſſimus.*

משלי : ו

.oris perversitate ambulans ; iniquitatis vir Belijahal Homo
אָדָם בְּלִיַּעַל אִישׁ אָוֶן הוֹלֵךְ עִקְּשׁוּת פֶּה׃ 12
.suis digitis in docens ; suis pedibus in loquens , suis oculis in Annuens
קֹרֵץ בְּעֵינָיו מֹלֵל בְּרַגְלָו מֹרֶה בְּאֶצְבְּעֹתָיו׃ 13
; tempore omni in malum fabricans , ejus corde in Perversitates
תַּהְפֻּכוֹת בְּלִבּוֹ חֹרֵשׁ רָע בְּכָל־עֵת 14
subitò : ejus exitium veniet extemplò Ideo .mittet contentiones
מִדְנִים יְשַׁלֵּחַ׃ עַל־כֵּן פִּתְאֹם יָבוֹא אֵידוֹ פֶּתַע 15
septem & ; Dominus odivit illa Sex .sanitas non & , conteretur
יִשָּׁבֵר וְאֵין מַרְפֵּא׃ שֶׁשׁ־הֵנָּה שָׂנֵא יְהוָה וְשֶׁבַע 16
manus & ; fallacem linguam , sublimes Oculos .ejus animæ abominatio
תּוֹעֲבוֹת נַפְשׁוֹ׃ עֵינַיִם רָמוֹת לְשׁוֹן שָׁקֶר וְיָדַיִם 17
: iniquitatis cogitationes fabricans Cor .innocentis sanguinẽ effundentes
שֹׁפְכוֹת דָּם־נָקִי׃ לֵב חֹרֵשׁ מַחְשְׁבוֹת אָוֶן 18
: falsitatis testis mendacia Efflabit .malum ad currere festinantes pedes
רַגְלַיִם מְמַהֲרוֹת לָרוּץ לָרָעָה׃ יָפִיחַ כְּזָבִים עֵד שָׁקֶר 19
; tui patris præceptum mi fili Conserva .fratres inter dissidia mittens &
וּמְשַׁלֵּחַ מְדָנִים בֵּין אַחִים׃ נְצֹר בְּנִי מִצְוַת אָבִיךָ 20
: semper tuo corde super ea Liga .tuæ matris legem dimittas ne &
וְאַל־תִּטֹּשׁ תּוֹרַת אִמֶּךָ׃ קָשְׁרֵם עַל־לִבְּךָ תָמִיד 21
, te jacendo in , te deducet , te ambulando In .tuis gutturibus super ea vinci
עָנְדֵם עַל־גַּרְגְּרֹתֶךָ׃ בְּהִתְהַלֶּכְךָ תַּנְחֶה אֹתָךְ בְּשָׁכְבְּךָ 22
lucerna Quia .te alloquetur ipsa, fueris expergefact⁹ & : te super custodiet
תִּשְׁמֹר עָלֶיךָ וַהֲקִיצוֹתָ הִיא תְשִׂיחֶךָ׃ כִּי נֵר 23
.eruditionis increpationes vitarum via & : lux lex & , mandatum
מִצְוָה וְתוֹרָה אוֹר וְדֶרֶךְ חַיִּים תּוֹכְחוֹת מוּסָר׃
.extraneæ linguæ lenitate à : mala muliere à te custodiendum Ad
לִשְׁמָרְךָ מֵאֵשֶׁת רָע מֵחֶלְקַת לָשׁוֹן נָכְרִיָּה׃ 24
te capiat non & ; tuo corde in ej⁹ pulchritudinem concupiscas Ne
אַל־תַּחְמֹד יָפְיָהּ בִּלְבָבֶךָ וְאַל־תִּקָּחֲךָ 25
ad usque meretricem mulierem propter Quia .suis palpebris in
בְּעַפְעַפֶּיהָ׃ כִּי בְעַד־אִשָּׁה זוֹנָה עַד־ 26
.venabitur preciosam animam viri mulier & : panis tortam
כִּכַּר לָחֶם וְאֵשֶׁת אִישׁ נֶפֶשׁ יְקָרָה תָצוּד׃
non ejus vestes & ; suo sinu in ignem vir accipiet Nunquid
הֲיַחְתֶּה אִישׁ אֵשׁ בְּחֵיקוֹ וּבְגָדָיו לֹא 27
ejus pedes & ; prunas super vir ambulabit Si ? comburentur
תִשָּׂרַפְנָה׃ אִם־יְהַלֵּךְ אִישׁ עַל־הַגֶּחָלִים וְרַגְלָיו 28
mundabitur non ; sui socii uxorem ad ingrediens Sic ? adurentur non
לֹא תִכָּוֶינָה׃ כֵּן הַבָּא אֶל־אֵשֶׁת רֵעֵהוּ לֹא יִנָּקֶה 29
; fuerit furatus cùm furem spernent Non .eam in tangens omnis
כָּל־הַנֹּגֵעַ בָּהּ׃ לֹא־יָבוּזוּ לַגַּנָּב כִּי יִגְנוֹב 30
: septuplum reddet inventus Et .esurierit cùm , suam animã implendum ad
לְמַלֵּא נַפְשׁוֹ כִּי יִרְעָב׃ וְנִמְצָא יְשַׁלֵּם שִׁבְעָתָיִם 31
deficit , mulierem Adulterans .dabit suæ domus substantiam omnem
אֶת־כָּל־הוֹן בֵּיתוֹ יִתֵּן׃ נֹאֵף אִשָּׁה חֲסַר־ 32
Plagam .illud faciet ipse suam animam corrumpens , corde
לֵב מַשְׁחִית נַפְשׁוֹ הוּא יַעֲשֶׂנָּה׃ נֶגַע־ 33
.delebitur non ejus opprobrium & ; inveniet ignominiam &
וְקָלוֹן יִמְצָא וְחֶרְפָּתוֹ לֹא תִמָּחֶה׃
.vindictæ die in parcet non & ; viri excandescentia zelus Quia
כִּי־קִנְאָה חֲמַת־גָּבֶר וְלֹא־יַחְמוֹל בְּיוֹם נָקָם׃ 34
cùm , volet non & ; propitiationis omnis facies accipiet Non
לֹא־יִשָּׂא פְּנֵי כָל־כֹּפֶר וְלֹא־יֹאבֶה כִּי 35
.munus multiplicaveris
תַרְבֶּה־שֹׁחַד׃

CAP. VII. ז

.tecum abdes mea præcepta & ; meos sermones custodi , mi Fili
בְּנִי שְׁמֹר אֲמָרָי וּמִצְוֺתַי תִּצְפֹּן אִתָּךְ׃ 1

Versio VULG. LAT.

12 Homo apostata, vir inutilis,
13 graditur ore perverso, Annuit
oculis, terit pede, digito loqui-
14 tur, Pravo corde machinatur
malũ, & omni tempore jurgia
15 seminat. Huic extemplò veniet
perditio sua, & subitò conte-
retur, nec habebit ultrà me-
16 dicinam. Sex sunt, quæ odit
Dominus, & septimum dete-
17 statur anima ejus: Oculos sub-
limes, linguam mendacem, ma-
nus effundentes innoxium san-
18 guinem, Cor machinans co-
gitationes pessimas, pedes ve-
loces ad currendum in malum,
19 Proferentem mendacia testem
fallacem, & eum qui seminat
20 intes fratres discordias. Con-
serva, fili mi, præcepta patris
tui, & ne dimittas legem ma-
21 tris tuæ. Liga ea in corde tuo
jugiter, et circumda gutturi tuo.
22 Cùm ambulaveris, gradiantur
tecum: cùm dormieris, custo-
diant te, & evigilans loquere
23 cum eis. Quia mandatum lu-
cerna est, & lex lux, & via vitæ
24 increpatio disciplinæ: Ut cu-
stodiant te à muliere mala, & à
25 blanda lingua extraneæ. Non
concupiscat pulchritudinem e-
jus cor tuum, nec capiaris nu-
26 tibus illius: Pretium enim scor-
ti vix est unius panis: mulier
autem viri pretiosam animam
27 capit. Numquid potest homo
abscondere ignem in sinu suo,
ut vestimenta illius non arde-
28 ant? Aut ambulare super pru-
nas, ut non comburantur plan-
29 tæ ejus? Sic qui ingreditur ad
mulierem proximi sui, non erit
mundus cùm tetigerit eam.
30 Non grandis est culpa, cùm
quis furatus fuerit: furatur e-
nim ut esurientem impleat ani-
31 mam: Deprehensus quoque
reddet septuplum, & omnem
substantiam domûs suæ tradet.
32 Qui autem adulter est, propter
cordis inopiam perdet animã
33 suam: Turpitudinem & igno-
miniam congregat sibi, & op-
probrium illius non delebitur:
34 Quia zelus & furor viri non
35 parcet in die vindictæ, Nec
acquiescet cujusquam preci-
bus, nec suscipiet pro redem-
ptione dona plurima.

CAP. VII.

1 Fili mi, custodi sermones
meos, & præcepta mea recon-
de tibi. Fili,

Versio GRÆCA. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

12 †Ἀνὴρ ἄφρων καὶ παράνομος πορεύεται ὁδοὺς
13 οὐκ ἀγαθάς. †Ὁ δ᾽ αὐτὸς ἐννεύει ὀφθαλ-
μῷ, σημαίνει δὲ ποδί, †διδάσκει δὲ ἐννεύμα-
14 σι δακτύλων. †Διεστραμμένη (η) καρδία τε-
κταίνεται κακά, †ἐν παντὶ καιρῷ ὁ τοιοῦτος
15 ταραχὰς συνίστησι πόλει. †(θ) Διὰ τοῦτο
ἐξαπίνης ἔρχεται ἡ ἀπώλεια αὐτοῦ, †διακο-
16 πὴ καὶ συντριβὴ ἀνίατος. †Ὅτι χαίρει πᾶ-
σιν οἷς μισεῖ (ι) ὁ θεός, †συντρίβεται δὲ (ʹ) δι᾽
17 ἀκαθαρσίαν ψυχῆς. †Ὀφθαλμὸς ὑβριστοῦ,
γλῶσσα ἄδικος, †χεῖρες ἐκχέουσαι αἷμα
18 (κ) δικαίου, †Καὶ καρδία τεκταινομένη λο-
γισμοὺς κακούς, καὶ πόδες ἐπισπεύδοντες κακο-
19 ποιεῖν. †Ἐκκαίει ψευδῆ μάρτυς ἄδικος,
†καὶ ἐπιπέμπει κρίσεις ἀναμέσον ἀδελφῶν.
20 †(λ) Υἱὲ φύλασσε νόμους πατρός σου, †καὶ μὴ
21 ἀπώσῃ θεσμοὺς μητρός σου. †Ἄφαψαι δὲ
αὐτοὺς ἐπὶ σῇ ψυχῇ διαπαντός, †καὶ ἐγκλοί-
22 ωσαι περὶ σῷ τραχήλῳ. †Ἡνίκα ἂν περιπα-
τῇς, ἐπάγου αὐτὴν καὶ μετὰ σοῦ ἔστω, †ὡς δ᾽
ἂν καθεύδῃς, φυλασσέτω σε, †ἵνα ἐγειρομέ-
23 νῳ (μ) συλλαλῇ σοι. †Ὅτι λύχνος ἐντολὴ
νόμου καὶ φῶς, †(ν) ὁδὸς ζωῆς, καὶ ἔλεγχος
24 καὶ παιδεία, †Τοῦ διαφυλάσσειν σε ἀπὸ γυναι-
κὸς ὑπάνδρου, †καὶ ἀπὸ διαβολῆς γλώσσης
25 ἀλλοτρίας. †Μή σε νικήσῃ κάλλους ἐπιθυμία,
μηδὲ ἀγρευθῇς σοῖς ὀφθαλμοῖς, †μηδὲ
(ʹ) συναρπασθῇς ἀπὸ τῶν αὐτῆς βλεφάρων. †
26 Τιμὴ γὰρ πόρνης ὅση καὶ ἑνὸς ἄρτου, †γυνὴ δὲ
27 ἀνδρῶν τιμίας ψυχὰς ἀγρεύει. †Ἀποδήσει
τις πῦρ ἐν κόλπῳ, τὰ δὲ ἱμάτια οὐ κατακαύ-
28 σει; †Ἢ περιπατήσει τις ἐπ᾽ ἀνθράκων
29 πυρός, †τοὺς δὲ πόδας οὐ κατακαύσει; †Οὕ-
τως ὁ εἰσελθὼν πρὸς γυναῖκα ὕπανδρον, †
οὐκ (ξ) ἀθωωθήσεται, οὐδὲ πᾶς ὁ ἁπτόμενος
30 αὐτῆς. †Οὐ θαυμαστὸν ἐὰν (ο) ἁλῷ τις κλέ-
πτων, †κλέπτει γὰρ ἵνα (π) ἐμπλήσῃ τὴν ψυχὴν
31 πεινῶν. †Ἐὰν δὲ ἁλῷ, ἀποτίσει ἑπταπλάσια,
†καὶ πάντα τὰ ὑπάρχοντα αὐτοῦ δοὺς ῥύσεται
32 ἑαυτόν. †Ὁ δὲ μοιχὸς δι᾽ ἔνδειαν φρενῶν †
33 ἀπώλειαν τῇ ψυχῇ αὐτοῦ περιποιεῖται, †Ὀ-
δύνας τε καὶ ἀτιμίας ὑποφέρει, †τὸ δὲ ὄνειδος
34 αὐτοῦ οὐκ ἐξαλειφθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα. †Με-
στὸς γὰρ ζήλου θυμὸς ἀνδρὸς αὐτῆς, †οὐ φείσε-
35 ται ἐν ἡμέρᾳ κρίσεως. †Οὐκ ἀνταλλάξεται οὐ-
δενὸς λύτρου τὴν ἔχθραν, †(ρ) οὐδὲ μὴ διαλυ-
θῇ πολλῶν δώρων.

Vir insipiens & iniquus
Lat(y) vias non bonas. Ip
tem innuit (z) oculo, & sig
cat autem pede, (aa) docet au
nutibus digitorum. (bb) Pe
sum cor fabricatur mala in
tempore, qui talis est, (cc) tur
ones affert civitati. Propte
(dd) extemplò venit perdi
psius, intercisio, & contritio
nabilis. Quoniam gaudet om
bus, quæ odit (ee) Deus: Co
teritur autem propter imm
tiam animæ. Oculus (ff) con
melios, lingua injusta, ma
fundentes sanguinem (hh) ju
cor fabricans cogitationes
las, & pedes (ii) festinantes
malefaciendum. (kk) Accen
falsa testis injustus: & im
(ll) judicia inter fratres. Fi
stodi leges patris tui, & ne
las jura matris tuæ. Liga
autem ea super (nn) animam
am semper, & (oo) quasi
circunda circa tuum co
Quandocunque ambula
(pp) adducito eã, & tecum
& quandocunq; dormier
stodiat te, ut (qq) exper
colloquatur tibi. Quoniam
na mandatum (rr) legis, &
via vitæ, & (ss) correptio
ciplina, Ad conservandum
muliere (tt) nupta, (uu) &
lumnia linguæ alienæ. (xx)
te vincat formæ concup
neq; (yy) capiaris tuis ocu
abripiaris ab ejus palpebr
tium enim meretricis, qua
& unius panis: mulier a
virorum pretiosas animas
(zz) Alligabit quis ignem
nu, vestes autẽ non combu
Aut ambulabit quis super
nas ignis, & pedes non
ret? Sic qui intrat ad mu
(ωω) nuptam, non erit ma
neq; omnis tangens eam
(aaa) mirum, si deprehen
furans: furatur enim, u
at animam (b) esurien
deprehensus fuerit, redd
pla, & omnem substantia
dans liberabit seipsum,
rans (c) autem prop
cordis perditionem ani
acquirit, (d) Ac dolores
nominias sustinet: &
brium ejus non delebitur in seculum. Plenus enim zelo fu
ejus non parcet in die (e) judicii. Non (f) commutab
emptione inimicitiam: neq; dissolvetur (g) multis don

MS. A. (η) ἡ δὲ καρδία (θ) Διὰ δὲ τοῦτο (ι) ὁ κύριος, (ʹ) διὰ
καιον, (λ) Φύλασσε υἱὲ (μ) συλλογήσω (ν) καὶ ὁδὸς ζωῆς, ἔλεγχος (ʹ) Συν
(ξ) ἀθωωθήσεται, (ο) τίς ἁλῷ (π) ἐμπλήσει ψυχὴν πεινῶν. (ρ) διαλυ
πολλῶν δώρων.

ΚΕΦ. ζ′.

1 †Υἱὲ φύλασσε ἐμοὺς λόγους, †τὰς δὲ ἐμὰς ἐντολὰς κρύψον παρὰ σεαυτῷ. †Υἱὲ τίμα τὸν κύριον καὶ ἰσχύσεις, †πλὴν δὲ αὐτοῦ μὴ φοβοῦ ἄλλον.

CAP. VII.

Fili, custodi meos
& mea mandata
teipsum. (a) Fili,
uum, & valebis:
autem ne timeas alte

תרגום TARGUM.

12 בר נש טלומא גברא עולא מהלך בעקימות פומיה : רמז בעינוי ותכס ברגלוי ורמז
13 באצבעתיה : ומתהפך בלביה וחשל בישתא בכל זמן תגרי רמי : מטול הכנא
14
15 מן שליא ניתי תבריה ומן שליא נתבר ולא תהוי ליה אסיותא : שית אנון דסני
16
17 אלהא ובשבע אסלית נפשיה : עיני רמתא ולישנא דשקרא וידי דשפכן דמא זכי :
18 לבא דחשל מחשבתא רעתא ורגלי דמסתרהבן למרהט לבישתא : סהדא דשקרא
19
20 דממלל כדבותא ומן דרמי תגרי בין אחי : טור ברי פוקדנא דאבוך ולא תטעי
21 מנימוסא דאמך : קטורנון בלבך תדירא וכרוך אנון בצורך : במיזלך תתדבר עמך
22
23 במדמכך תתנטר עלך ותתער היא תהוי רציך : מטול שרגא הוא פוקדנא ונימוסא
24 נוהרא ואורחא דחיי מכסנותא ומרדותא : דתנטרך מן אתתא בישתא ומן שעיעותא
25 דלישנא דנוכריתא : לא תרוג שופריה בלבבך ולא תשרגננך בגבינתהא : מטול
26
27 דדמיא מלתא דזניתא היך גרצתא דלחמא ואתת גברא נפשא יקירתא צידא : דלמא
28 סיב בר נשא נורא בעוביה ולבושיה לא יקיד : אי דלמא מהלך גברא עלוי גומרי
29 ורגלוי לא מתכוין : הכנא מה דעאל על אתת חבריה למיער עמה לא נקה כל
30 מן דקריב בה : לא למתדמרו לגנבא דנגב דתשבע נפשיה מטול דכפן : ומן
31 דמשתכח פריע חד בשבעה וכוליה מולא דביתיה יהיב : מזניר באתתא חסר
32 דרעיונא ומן דבעי די יחבל נפשיה הוא עבד לה : מכתשי וצערי יארעו וחסודיה לא
33 מטעי : מטול דטננא חמתא דגברא ולא חיס ביומא דפורענא : ולא נסב באפיה
34
35 דכל דיהב ליה מוהבא ולא מתפיס כד תסגא שוחדא :

1 ברי נטר מימרי ופקודי תטשי גבך :

PARAPH. CHALD. Versio Latina

Homo calumniator, vir iniquus graditur perverso ore. Annu
suis, & terit pedibus suis, & indicat digitis suis. Et perversus est
suo, & cogitat malum, in omni tempore jurgia spargit. Propter
veniet interitus ejus, & subitò conteretur, & non erit ei medici
sunt quæ odit Deus, & septimum detestatur anima ejus. Oculos
& linguam mendacem, & manus effundentes sanguinem innoc
Cor quod cogitat cogitationes pessimas, & pedes festinantes ad
dum in malum. Testem falsum qui loquitur mendacium, & qui
gia inter fratres. Custodi fili mi præcepta patris tui, & ne
res à lege matris tuæ. Liga ea in corde tuo semper, &
collo tuo. Cùm ambulaveris, deducet te; & cum dormie
stodiet te; & si evigilaveris, ipsa erit meditatio tua. Quia
tum est lucerna, & lex lux, & via vitæ correptio & discipl
custodiat te à muliere mala, & à lenitate linguæ extraneæ. Non
sces pulchritudinem ejus in corde tuo, ne seducat te palpebris
niam similis est oratio meretricis tortæ panis: & uxor viri precio
mam venatur. Nunquid potest homo ponere ignem in sinu suo, &
mentum ejus non succendatur? Aut potest ambulare aliquis
nas, & pedes ejus non comburantur? Sic est qui ingreditur a
proximi sui, ut rem habeat cum ea, non erit innoxius omnis qu
rit eam. Non *est quòd miremur furem* qui furatur ut satiet a
am cùm esurit. Et qui inventus fuerit reddet septuplum, & om
stantiam domus suæ dabit. Qui adulteratur cum uxore, indiget
& qui quærit perdere animam suam, ipse facit illud. Plaga &
accidat ei, & opprobrium ejus non recedat. Quoniam zelus est
nec parcet in die vindictæ. Neque accipiet faciem ejus qui
num, neque contentus erit quamvis multiplices munera.

CAP. VII.

Fili mi custodi verba mea, & præcepta mea abscondẽ apud

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܡܗܠܟ ܒܡܫܥܝܢܘܬܐ.* ܪܡܙ ܒܥܝܢܘܗܝ. ܘܪܦܣ ܒܪܓܠܗ. ܘܪܡܙ ܒܨܒܥܬܗ. 12
* ܘܡܬܗܦܟ ܒܠܒܗ. ܘܡܬܚܫܒ ܒܝܫܬܐ ܒܟܠ ܙܒܢ. ܘܚܪܝܢܐ ܪܡܐ ܒܝܬ ܬܪܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܢ 13 14
ܫܠܝܐ ܢܐܬܐ ܬܒܪܗ. ܘܡܢ ܫܠܝܐ ܢܬܬܒܪ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܐܣܝܘܬܐ. * ܫܬ ܐܝܬܝܢ ܕܣܢܐ ܡܪܝܐ. 15 16
ܘܫܒܥ ܡܣܠܝܐ ܢܦܫܗ. * ܥܝܢܐ ܪܡܬܐ. ܘܠܫܢܐ ܕܓܠܐ. ܘܐܝܕܝܐ ܕܐܫܕܝܢ ܕܡܐ ܙܟܝܐ. * ܘܠܒܐ 17
ܕܡܬܚܫܒ ܡܚܫܒܬܐ ܕܢܟܠܐ. ܘܪܓܠܐ ܕܡܣܪܗܒܢ ܠܡܪܗܛ ܠܒܝܫܬܐ. * ܘܣܗܕܐ ܕܓܠܐ 18
ܕܡܡܠܠ ܕܓܠܘܬܐ. ܘܡܪܡܐ ܬܓܪܐ ܒܝܬ ܐܚܐ.* ܛܪ ܒܪܝ. ܦܘܩܕܢܐ ܕܐܒܘܟ. ܘܠܐ ܬܛܥܐ ܢܡܘܣܐ ܕܐܡܟ. 19 20
* ܩܛܘܪ ܐܢܘܢ ܥܠ ܠܒܟ ܐܡܝܢܐܝܬ. ܘܥܨܘܪ ܐܢܘܢ ܥܠ ܨܘܪܟ.* ܘܡܐ ܕܡܗܠܟ ܐܢܬ. ܢܩܦܘܢ 21
ܠܟ. ܘܥܡܟ ܢܗܘܘܢ. ܛܪ ܐܢܘܢ ܕܢܛܪܘܢܟ. ܘܡܐ ܕܐܬܬܥܝܪܬ. ܢܗܘܘܢ ܠܟ ܪܢܝܐ. 22
* ܫܪܓܐ ܓܝܪ ܦܘܩܕܢܐ. ܘܢܡܘܣܐ ܢܘܗܪܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܝܢ ܕܚܝܐ. ܟܘܣܝܐ ܘܡܪܕܘܬܐ.* ܕܢܛܪܟ 23
ܡܢ ܐܢܬܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܢ ܡܐܟܠ ܩܪܨܐ ܕܠܫܢܐ ܢܘܟܪܝܬܐ.* ܘܠܐ ܬܪܓܝ ܫܘܦܪܗ ܒܠܒܟ. ܘܠܐ 24 25
ܬܬܠܟܕ ܒܥܝܢܝܗ. ܘܠܐ ܬܨܝܕܟ ܒܥܦܥܦܝܗ. * ܕܡܘܬܐ ܓܝܪ ܕܐܢܬܬܐ ܙܢܝܬܐ ܗܝ 26
ܐܝܟ ܓܪܝܨܬܐ ܕܠܚܡܐ. ܘܐܢܬܬܐ ܕܓܒܪܐ. ܢܦܫܐ ܝܩܝܪܬܐ ܨܝܕܐ. * ܠܡܐ ܢܣܝܡ ܓܒܪܐ ܢܘܪܐ ܒܥܘܒܗ. ܘܠܐ 27
ܢܘܩܕܢ ܡܐܢܘܗܝ. * ܐܘ ܢܗܠܟ ܓܒܪܐ ܥܠ ܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܪܓܠܘܗܝ ܠܐ 28
ܢܬܟܘܝܢ.* ܗܟܢܐ ܡܢ ܕܥܐܠ ܠܘܬ ܐܢܬܬܐ ܕܚܒܪܗ ܘܩܪܒ ܠܗ̇. ܠܐ ܢܙܕܕܩ.* ܠܐ ܬܬܕܡܪ ܕܢܬܬܚܕ ܓܢܒܐ 29 30
ܕܓܢܒ ܓܝܪ. ܕܢܣܒܥ ܢܦܫܗ ܕܟܦܢܐ.* ܘܐܢ ܢܬܬܚܕ ܓܢܒܐ. ܢܦܪܘܥ ܫܒܥܐ ܥܦܝܦ. ܘܟܠܗ ܩܢܝܢ 31
ܒܝܬܗ ܢܬܠ. * ܘܡܢ ܕܓܐܪ ܒܐܢܬܬܐ. ܚܣܝܪ ܪܥܝܢܐ ܗܘ. ܘܡܚܒܠ 32
ܢܦܫܗ. * ܘܗܘ ܥܒܕ ܕܢܬܩܪܒ ܠܗ ܨܥܪܐ. ܘܢܕܪܟܝܘܗܝ. ܘܚܣܕܗ ܠܐ ܢܬܛܥܐ. * ܡܛܠ 33
ܕܚܡܬܐ ܕܓܒܪܐ: ܡܠܝܐ ܛܢܢܐ. ܠܐ ܢܚܘܣ ܒܝܘܡܐ ܕܦܘܪܥܢܐ.* ܘܠܐ ܢܣܒ ܐܦܐ ܕܩܘܪܒܢܐ. 34 35
ܘܠܐ ܡܬܦܝܣ ܒܫܘܚܕܐ ܣܓܝܐܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܙ * * ܒܪܝ. ܛܪ ܡܠܝ. ܘܦܘܩܕܢܝ ܛܫܝ ܠܘܬܟ. 1

Vir ſceleſtus ambulat in detrectatione: Nictat 12
oculis ſuis, et pulſat pede ſuo, & innuit digitis 13
ſuis, Agitátque in corde ſuo, & machinatur 14
mala in omni tempore, & jurgia excitat inter
duos. Proptereà ex improviſo veniet exitiũ 15
ejus, & repentè conteretur, & non erit ei ſanitas. Sex ſunt quæ odit Dñs, et ſeptimũ abo- 16
minata eſt anima ejꝰ: Oculũ ſublimem, & lin- 17
guam mendacẽ, et manꝰ effundentes ſanguinẽ
innocentẽ, Et cor moliens conſilia fraudis, 18
& pedem celerẽ ad currendũ in malũ, Et te- 19
ſtẽ mendacẽ, qui loquitur falſitatẽ, & ſerentẽ
diſſidia inter fratres. Cuſtodi fili mi præceptũ 20
patris tui, & ne obliviſcaris legẽ matris tuæ.
Infige ea cordi tuo ſemꝑ, & circunda illa col- 21
lo tuo. Et cùm ambulas, fac adhæreant tibi, 22
tecúmque ſint. Serva illa, ut te ſervent: cúmq;
evigilaveris, ipſa ſint tibi meditatio. Lucerna 23
eſt enim mandatũ, & lex lux: via verò vitæ,
objurgatio & diſciplina: Ut cuſtodiat te à 24
muliere improba, & à criminatione linguæ
mulieris extraneæ: Et non concupiſcas pul- 25
chritudinem ejus in corde tuo, neque capteris
oculis ejꝰ, nec te prædetur palpebris ſuis. Nã 26
comparatio mulieris fornicariæ, eſt inſtar placentæ panis: & uxor viri animã pretioſã venatur. Num ponit quis ignẽ in ſinu ſuo, & ve- 27
ſtes ſuas non comburit? An verò incedit quis 28
ſuper prunas ignis, & pedes ejus non uſtulantur? Ita qui ingreditur ad uxorẽ ſocii ſui, & 29
tangit eã, non juſtificabitur. Non mirandũ eſt 30
aliquẽ deprehẽdi furantẽ, furatur enim ut ſatiet animã ſuã eſurientẽ. Et ſi deprehendatur 31
furans, rependet ſeptuplũ, et omnẽ ſupellectilẽ domûs ſuæ dabit. Qui autẽ adulteratur cum 32
muliere, expers judicii eſt, & depravat animã
ſuã: Et ipſemet efficit ut tangat eũ ignominia 33
& aſſequatur illũ, & opprobriũ ejꝰ oblivioni
minimè tradatur. Nam quia furor mariti ple- 34
nꝰ eſt zelotypiâ, non parcet in die retributionis, Nec rationem habebit oblationis, neque 35
placabitur quantunvis magno munere.

CAP. VII.

Fili mi, cuſtodi verba mea, & præcepta 1
mea reconde in corde tuo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 * الانسان العبي المتعدي السريعة يسلك طريقا ليست صالحة * فهذا يغمز بعينه ويدل برجله 13
ويعلم باشارات اصابعه * بقلبه الملتوي ينشي الاسواء * فمن هذه سجيته في كل وقت ينهض 14
في المدينة هيوجا مقلقة * ولهذا السبب سيوافي هلاكه باسراع يقطع جرمه وهشما لا شفاء له 15
* لانه يسر بجميع الاشياء التي يبغضها الله * من اجل نجاسة النفس * تنسحق عين المتعظم 16 17
ولسان الظالم * والايدي السافكة دما عدلا * والقلب المنشي افكار ردية * والارجل المسارعة الي 18
افعال الشر * الشاهد الظالم يحترق بكذبه * ويسير الي وسط الاخوة نحاكات * يا بني احفظ 19 20
شرايع ابيك ولا تبعد فرايض امك * علقها علي نفسك كل حين * وتقلد بها علي عنقك * اين 21 22
ما مشيت استصحبها * ولتكن معك * ومتي ما رقدت فتحفظك * لكيما اذا نهضت تخاطبك *
* لان وصية السريعة سراج * وطريق حياة وتوبيخ وتاديب * لتحفظك من امراة ذات رجل * ومن 23 24
وشاية اللسان الغريب * لا تغلبنك شهوة الجمال * ولا تقتنص بعينيك * ولا تخطفك جفونها * 25
* فان قيمة الزانية مقدارها خبز واحد * المراة تصطاد نفوس الرجال الكريمة * ايربط احد في 26 27
حضنه نارا وما تحرق ثيابه * ام يمشي احد علي جمر النار وما تحترق رجلاه * هكذا من يدخل 28 29
الي امراة ذات رجل ما يتبرا * ولا كل من يلمسها * وليس مستعجبا ان صيد من سرق * لانه 30
انما يسرق ليشبع نفسا جايعة * فان قبض عليه يؤدي سبعة اضعاف ما سرق * ويعطي جميع 31
ما يملكه لينجي نفسه * فاما الفاسق فمن اجل نزارة فطنته يستصنع لنفسه هلاكا * ويكمل 32 33
اوجاعا وهوانا * وعاره لن يمحي الي الابد * لان غضب رجلها موعب غيرة * فما يبقي له في 34
يوم القضاء * ولا يفادي العداوة بنوع من انواع الفداء * ولا تحلها الهدايا الجزيلة * 35

* الفصل السابع *

1 * يا بني احفظ اقوالي * ووصاياي اخباها عندك * يا بني اكرم الرب فتتايد ويقويك *
ولا تخافن احدا غيره اكثر منه *

Homo ſtolidus tranſgrediens legẽ, ambu- 12
lat viam non rectam: Idemq; innuit oculo 13
ſuo, & indicat pede ſuo, & ſignificat ſi-
gnis digitorum ſuorum: In corde ſuo per- 14
verſo machinatur mala, & ob hanc ſuam
conſuetudinem, ſingulis momentis excitat
in urbe ſeditiones turbulentas. Et hac de 15
cauſa adveniet perditio ejus cum feſtinatione, abſcindetur exciſione & fracturâ in- 16
ſanabili. Quia delectatur omnibus rebus
quas abominatur Deus. Ob immunditiam
animæ Conteretur oculus ſuperbi, & 17
lingua tyranni, & manus effundentes ſan-
guinem juſtum, Et cor machinans cogi- 18
tationes malas, & pedes veloces ad ope-
randum malum. Teſtis iniquus incenditur 19
ſuo mendacio, & inducit in medium
fratrum lites. Fili mi, cuſtodi leges patris 20
tui, & ne rejicias præcepta matris tuæ.
Appende ea ſuper animam tuam jugiter, 21
& iis circunda collum tuum. Ubicunq; 22
ambulaveris, comitare illa, & ſint tecum:
cùmque cubueris te cuſtodiant, ut cùm
ſurrexeris converſentur tecum. Quoni- 23
am mandatum legis lucerna eſt, & via
vitæ, & correptio ac diſciplina. Ut cuſto- 24
diant te à muliere habente virum, & à
calumnia linguæ alienæ. Non te vincat 25
concupiſcentia pulchritudinis, & ne capi-
aris oculis tuis, nec te rapiant palpebræ
ejus: Quia pretii meretricis valor eſt pa- 26
nis unus: mulier venatur animas viro-
rum pretioſas. Nunquid alligat quis ſinui 27
ſuo ignem, & non comburuntur veſtimen-
ta ejus? Aut ambulat quis ſuper carbo- 28
nes ignis, & non uruntur pedes ejus? Sic 29
qui ingreditur ad mulierem habentem vi-
rum, non juſtificabitur, neq; ullus qui eam
tangit. Nec mirum eſt ſi capiatur qui 30
furatur: ſiquidem ipſe furatur ut ſatiet
animam eſurientem. Imò ſi captus fue- 31
rit, ſolvet ſeptuplum ejus quod furatus
eſt: & dabit omne quod poſſidet, ut liberet
animam ſuam. At verò adulter, ob exigui- 32
tatem judicii ſui, aſtruit animæ ſuæ
interitum. Et ſuffert dolores & deſpecti- 33
onem, & opprobrium ejus non delebitur in
æternum. Nam furor mariti ejus refertus 34
eſt zelo, ideoque non parcet ei in die ju-
dicii, Nec commutabit inimicitiam ullo 35
genere ex generibus commutationum, neq;
diſſolvent eam munera plurima.

CAP. VII.

Fili mi, ſerva ſermones meos, & præ- 1
cepta mea abſconde apud te. Fili mi,
honora Dominum, & confortaberis, &
corroborabit te: & ne timeas alium præ-
ter eum, magis ipſo.

משלי׃ ח

nigredinem tanquam meam legem & ; vive & , mea præcepta Custodi
2 שמר מצותי וחיה ותורתי כאישון
.tui cordis tabula *super* ea scribe ;tuis digitis *super* ea Liga .tuorũ oculorũ
3 עיניך׃ קשרם על־אצבעתיך כתבם על־לוח לבך׃
.vocabis intelligentiam *notam* & : tu mea Soror , sapientiæ Dic
4 אמר לחכמה אחתי את ומדע לבינה תקרא׃
suos sermones , extranea ab ; aliena muliere à te *custodiendum Ad*
5 לשמרך מאשה זרה מנכריה אמריה
.prospexi *meum cancellum per* ; meæ domus *fenestra in Quia* .lenificavit
6 החליקה׃ כי בחלון ביתי בעד אשנבי נשקפתי׃
.corde *carentem* juvenem *filiis in* consideravi : *simplicibus in* vidi Et
7 וארא בפתאים אבינה בבנים נער חסר־לב׃
.gradiebatur ejus domus *via* & ,ej⁹ angulum apud *platea in* Transeuntem
8 עבר בשוק אצל פנה ודרך ביתה יצעד׃
.caligine & , noctis nigredine in ; diei vespera in , crepusculo In
9 בנשף־בערב־יום באישון לילה ואפלה׃
.corde *servata &* , *meretricis* ornatu ; ejus occursum in mulier ecce Et
10 והנה אשה לקראתו שית זונה ונצרת לב׃
.ejus pedes *habitabunt* non sua domo in ; *declinans &* , *ipsa* Tumultuosa
11 המיה היא וסררת בביתה לא־ישכנו רגליה׃
.*insidiabitur* angulum omnem juxta & ; plateis in *vice* , *vico in Vice*
12 פעם בחוץ פעם ברחבות ואצל כל־פנה תארב׃
: ei dixit & , *suas facies* roboravit :eũ est osculata & ,eũ *in* apprehendit Et
13 והחזיקה בו ונשקה לו העזה פניה ותאמר לו׃
Idcirco .mea vota reddidi hodie : *me super* pacificorum Victimæ
14 זבחי שלמים עלי היום שלמתי נדרי׃ על־כן
15 .te inveni & ,*tuas facies mane quærendum ad* : tui occursum in sum egressa
יצאתי לקראתך לשחר פניך ואמצאך׃
.Ægyptio fune *incisis* ; meum lectum *adornavi Tapetibus*
16 מרבדים רבדתי ערשי חטבות אטון מצרים׃
, Veni .cinnamomo & , aloë , myrrha , meum cubile *Perfudi*
17 נפתי משכבי מר אהלים וקנמון׃ לכה
18 .amoribus *in* collætemur ; manè usque amoribus inebriemur
נרוה דדים עד־הבקר נתעלסה באהבים׃
Ligamen .*longinquo à* via in abiit : sua domo in vir non Quia
19 כי אין האיש בביתו הלך בדרך מרחוק׃ צרור
20 .suam domum veniet *temporis statuti* diem ad :sua manu in tulit argenti
הכסף לקח בידו ליום הכסא יבוא ביתו׃
suorum labiorũ lenitate *in* :*suæ captationis* multitudine *in* eũ fecit Declinare
21 הטתו ברב לקחה בחלק שפתיה
.*veniet lanienam* ad bos veluti , statim eam post *Vadens* .eum compulit
22 תדיחנו׃ הולך אחריה פתאם כשור אל־טבח יבוא
sagitta scindat Donec .stulti castigationem ad compes sicut &
23 וכעכס אל־מוסר אויל׃ עד יפלח חץ
sui animâ *in* quod *novit non* & : laqueum ad *avem festinare ut* ,ejus jecur
כבדו כמהר צפור אל־פח ולא ידע כי־בנפשו
.mei oris eloquiis attendite & ; mihi parete , filii nunc Et .*ipse*
24 הוא׃ ועתה בנים שמעו־לי והקשיבו לאמרי פי׃
.ejus semitis in erres ne : tuum cor ejus vias ad declinet Ne
25 אל־ישט אל־דרכיה לבך אל־תתע בנתיבותיה׃
.ejus occisi omnes fortes & ; fecit cadere *vulneratos* multos Nam
26 כי־רבים חללים הפילה ועצמים כל־הרגיה׃
.mortis *penetralia* ad descendentes : ejus domus *sepulchri* Viæ
27 דרכי שאול ביתה ירדות אל־חדרי־מות׃

CAP. VIII. ח

? suam vocem *dabit* intelligentia & ; *clamabit* sapientia Nonne
1 הלא־חכמה תקרא ותבונה תתן קולה׃

Versio VULG. LAT.

2 Serva mandata mea; & vives: & legem meam quasi pupillam 3 oculi tui: Liga eam in digitis tuis, scribe illam in tabulis 4 cordis tui. Dic sapientiæ, Soror mea es: & prudentiam 5 voca amicam tuam, Ut custodiat te à muliere extranea, & ab aliena, quæ verba sua dul- 6 cia facit. De fenestra enim domûs meæ per cancellos 7 prospexi, Et video parvulos, considero vecordem juvenem, 8 Qui transit per plateam juxta angulum, & prope viam do- 9 mûs illius, graditur In obscuro, advesperascente die, in noctis tenebris, & caligine. 10 Et ecce occurrit illi mulier ornatu meretricio, præparata ad capiendas animas: garrula & 11 vaga, Quietis impatiens, nec valens in domo consistere pe- 12 dibus suis, Nunc foris, nunc in plateis, nunc juxta angulos 13 insidians. Apprehensúmque deosculatur juvenem, & procaci vultu blanditur, dicens; 14 Victimas pro salute vovi, ho- 15 diè reddidi vota mea. Idcircò egressa sum in occursum tuum, desiderans te videre, & 16 reperi. Intexui funibus lectulum meum, stravi tapetibus 17 pictis ex Ægypto. Aspersi cubile meum myrrhâ, & aloe, 18 & cinnamomo. Veni, inebriemur uberibus, & fruamur cupitis amplexibus, donec illu- 19 cescat dies: Non est enim vir in domo sua, abiit viâ longis- 20 simâ. Sacculum pecuniæ secum tulit: in die plenæ lunæ reversurus est in domum suam. 21 Irretivit eum multis sermonibus, & blanditiis labiorum 22 protraxit illum. Statim eam sequitur quasi bos ductus ad victimam, & quasi agnus lasciviens, & ignorans quòd ad 23 vincula stultus trahatur, Donec transfigat sagitta jecur ejus: velut si avis festinet ad laqueum, & nescit quòd de periculo animæ illius agitur. 24 Nunc ergò, fili mi, audi me, 25 & attende verbis oris mei. Ne abstrahatur in viis illius mens tua: neque decipiaris semi- 26 tis ejus. Multos enim vulneratos dejecit, & fortissimi qui- 27 que interfecti sunt ab ea. Viæ inferi domus ejus, penetrantes in interiora mortis.

CAP. VIII.

1 Numquid non sapientia clamitat, & prudentia dat vocem suam?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

2 † Φύλαξον ἐμὰς ἐντολὰς καὶ βιώσεις, † τοὺς δὲ ἐμοὺς λόγους ὥσπερ κόρας ὀμ- 3 μάτων. † (α) Περίθου δὲ αὐτοὺς σοῖς δακτύλοις, † ἐπίγραψον δὲ ἐπὶ τὸ πλάτος 4 τῆς καρδίας σου. † Εἰπὸν τὴν σοφίαν σὴν ἀδελφὴν εἶναι, † τὴν δὲ φρόνησιν γνώ- 5 ριμον περιποίησαι σεαυτῷ· Ἵνα σε τηρήσῃ ἀπὸ γυναικὸς ἀλλοτρίας καὶ πονηρᾶς, † ἐάν σε λόγοις τοῖς πρὸς χάριν ἐμβάλλῃ. 6 † Ἀπὸ γὰρ θυρίδος ἐκ τοῦ οἴκου αὐτῆς εἰς 7 τὰς πλατείας παρακύπτουσα, Ὃν ἂν ἴδῃ τῶν ἀφρόνων τέκνων νεανίαν ἐνδεῆ φρενῶν, † 8 Παραπορευόμενον παρὰ γωνίαν ἐν διόδοις 9 οἴκων αὐτῆς, † καὶ λαλοῦντα Ἐν σκότει ἑσπερινῷ, † ἡνίκα ἂν ἡσυχία νυκτερινὴ καὶ 10 (β) γνοφώδης, † Ἡ δὲ γυνὴ συναντᾷ αὐτῷ, εἶδος ἔχουσα πορνικὸν, † ἣ ποιεῖ νέων ἐξίπτασθαι καρδίας. † ἀνεπτερωμένη δέ ἐστι 11 καὶ ἄσωτος, † Ἐν οἴκῳ δὲ οὐχ ἡσυχάζουσιν 12 οἱ πόδες αὐτῆς. † Χρόνον γάρ τινα ἔξω ῥέμβεται, † χρόνον δὲ ἐν πλατείαις παρὰ 13 πᾶσαν γωνίαν ἐνεδρεύει. † Εἶτα ἐπιλαβομένη ἐφίλησεν αὐτὸν, † ἀναιδεῖ δὲ προσ- 14 ώπῳ προσεῖπεν αὐτῷ, † Θυσία εἰρηνική μοι ἐστὶ, † σήμερον ἀποδίδωμι τὰς εὐ- 15 χάς μου. † Ἕνεκα τούτου ἐξῆλθον εἰς συνάντησίν (γ) σοι, † ποθοῦσα τὸ σὸν πρόσ- 16 ωπον, εὕρηκά σε. † Κειρίαις τέτακα τὴν κλίνην μου, † ἀμφιτάποις δὲ ἔστρωκα 17 τοῖς ἀπ᾽ Αἰγύπτου. † Διέρραγκα τὴν κοίτην μου (δ) κροκίνῳ, † τὸν δὲ οἶκόν 18 μου κινναμώμῳ. † Ἐλθὲ, καὶ ἀπολαύσωμεν φιλίας ἕως ὄρθρου, † δεῦρο καὶ ἐγ- 19 κυλισθῶμεν ἔρωτι. † Οὐ γάρ πάρεστιν ὁ ἀνήρ μου ἐν οἴκῳ, † πεπόρευται δὲ ὁ- 20 δὸν μακρὰν, † Ἔνδεσμον ἀργυρίου λαβὼν ἐν χειρὶ αὐτοῦ, † δι᾽ ἡμερῶν πολλῶν 21 ἐπανήξει εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ. † Ἀπεπλάνησε δὲ αὐτὸν πολλῇ ὁμιλίᾳ, βρόχοις † τοῖς ἀπὸ χειλέων ἐξώκειλεν αὐτόν. † 22 Ὁ δὲ ἐπηκολούθησεν αὐτῇ (ε) κεπφωθείς· † ὥσπερ δὲ βοῦς ἐπὶ σφαγὴν ἄγεται, † 23 καὶ ὥσπερ κύων ἐπὶ δεσμοὺς, † Ἢ ὡς ἔλαφος τοξεύματι πεπληγὼς εἰς τὸ ἧπαρ. † σπεύδει δὲ ὥσπερ ὄρνεον εἰς παγίδα, † οὐκ 24 εἰδὼς ὅτι περὶ ψυχῆς τρέχει. † Νῦν οὖν υἱὲ ἄκουέ μου, † καὶ πρόσεχε (ζ) ῥήμασι στό- 25 ματός μου. † Μὴ ἐκκλινάτω εἰς τὰς ὁ- 26 δοὺς αὐτῆς ἡ καρδία (η) σου, † Πολλοὺς γὰρ τρώσασα καταβέβληκε, † καὶ ἀναρίθμητοί 27 εἰσιν οὓς πεφόνευκεν. † Ὁδοὶ ᾅδου ὁ οἶκος αὐτῆς, † κατάγουσαι (θ) εἰς τὰ ταμιεῖα τοῦ θανάτου.

MS. A. (α) Περίθου * αὐτοῖς σοῖς δακτύλοις, (β) γνόφος, (γ
(δ) κρόκῳ, (ε) κεπφωθεὶς· (ζ) ῥῆσιν (η) σε, † καὶ μὴ πλανηθῇς
τοῖς αὐτ. Πολλοὺς (θ) εἰς ταμιεῖα

ΚΕΦ. η΄.

1 † Σὺ τὴν σοφίαν κηρύξεις, ἵνα φρόνησίς σοι ὑπακούσῃ.

Custodi mea mandata (
(*b*) *vives,*) *& meos*
nes tanquàm pupillas oculor
(*c*) *Circumpone autem*
tuis digitis: inscribe autem
latitudinem (*d*) *cordis tu*
sapientiam (*e*) *tuam*
esse: & (*f*) *prudentiam*
tam redde tibi: ut te
ret à muliere aliena, & ma
(*g*) *si te sermonibus, quæ ad g*
am, adorta fuerit. De fenes
enim è domo sua in plateas p
spiciens, Quemcunque vide
insipientium filiorum adole
tem inopem cordis, Prætere
tem (*h*) *juxta angulum in tra*
sitibus domorum suarum, &
quentem In tenebris vesperti
simulac quies nocturna, & ca
ginosa; Et verò mulier occu
ei, (*i*) *speciem habens mere*
am, quæ facit juvenum
corda: (*k*) *vaga autem*
(*l*) *luxuriosa, Et in domo*
quiescunt pedes ejus. Inter
enim foràs circumvagatur; in
dum verò in plateis apud omn
angulum insidiatur. Deinde a
hendens osculata est eum, &
impudenti facie alloquitur
Sacrificium pacificum mi
hodie reddo vota mea. Ha
causa progressa sum obviam
desiderans tuam faciem inve
(*n*) *Institis texui lectum meum*
(*o*) *tapetibus ab Ægypto*
vi. (*p*) *Aspersi cubile meum*
co, & domum meam cinnam
Veni, & (*q*) *fruamur*
usque in diluculum: Veni,
(*r*) *colluctemur cupidine.*
enim adest vir meus in domo
iit autem viam longam,
volucro pecuniæ accepto in
sua: (*t*) *per dies mul*
in domum suam. (*u*) *Sedu*
autem eum multâ (*x*) *colloqu*
one, & laqueis qui ex labi
attraxit eum. Ipse autem
tus est ei (*z*) *infatuatus: &*
quàm bos ad mactationem
& tanquàm canis (*ω*) *ad vi*
la, Aut tanquàm cervus
(*aa*) *vulneratus in jecore.*
nat autem tanquàm avis
queum, nesciens, quia pro
currit. Nunc igitur, fili, au
& intende verbis oris me
declinet in vias ejus cor
um. Multos enim vulner
dejecit: et (*cc*) *innumerabi*
quos trucidavit. Viæ infer
domus ejus, deducentes in
sus mortis.

CAP. VIII.

Tu (*a*) *sapientiam præ*
ut prudentia tibi obediat.

תרגום TARGUM.

2 נטר פקודי וחיה ונימוסי היך בבתא דעינא׃ קטור אנון על אצבעתך כתוב אנון על־
3 4 לוח דלבך׃ אמר לחכמתא אחתי אנת ומודעתא קרי לביונתא׃ דננטרך מן אתתא
5 6 חילוניתא ומן נוכריתא דשעיען מלהא׃ מטול דמן כויא ועַרתא דביתי אדקרת ומן
7 חרכין דדירא׃ וחזית בשברי ואסתכלית בטלאי ותמהית בחסיר רעיונא׃ עבר
8 בשוקא לקבל פנתא ובארחא דביתא מהלך׃ ברמשא במערב יומא בחשוכא
9 10 דליליא ובחכירדה׃ והא אתתא לאורעיה באסכמא דזניתא דמפרדא לבא דעלימי׃
11 12 ומרדתא היא ופרידתא בביתא לא שכנן רגלהא׃ בעדנא בשוקי בעדנא בשקקי
13 ולקבל כל פנתה דיאיא כמנא׃ ואתקפת ביה ונשקתיה ואחציפת אפהא ואמרת ליה׃
14 15 דבחי דקרבני עלי יומנא שלמית נדרי׃ מטול הכנא נפקית לאורעך דמפכא הוית
16 לרגשא ואמרית אדברנך׃ בתשויתא שוית ערסי ובקרמא קרמתא מצראה׃
17 18 רסית על ערסי מורא וכורקמא וקונמא׃ תא נתבסם ברחמתא עד צפרא ונעסק
19 20 חד לחד ברנאנתא׃ דגברא לית הוא בביתא אזיל באורח רחיקא׃ צררא דכספא
21 נסב בידיה וליומא דעדא אתי לביתיה׃ ואטעי יתיה בסוגיא דמלהא ובשעיותא
22 דספותהא תפתיה׃ והוא אזיל בתרהא שליאית היך תורא דאזיל לות טבחא והיך
23 כלבא לאסורא׃ והיך אילא דמפריח גירא בכבדיה ומסתרהב היך צפרא לות פוחא
24 ולא ידע דלמותא דנפשיה אזיל׃ והשתא בניא שמעון לי ואציתו למימרי דפומי׃
25 26 לא יסטי לבך לארחתהא ולא תטעי בשבילהא׃ מטול דסגיעי קטיליא אפלת
27 ועשינין כולהון קטילהא׃ ארחתא דשיול ביתה נחתן לקיטוני דקבורא׃

ח

1 מטול היכנא חכמתא תקרא וביונה תרמי קלה׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina

Custodi præcepta mea, & vive; & leges meas sicut pupillam oc
Liga ea super digitos tuos; scribe ea super tabula cordis tui. Di
entiæ: Soror mea es: & cognatam voca prudentiam. Ut custo
à muliere extranea, & ab aliena, cujus blandi sunt sermones. Q
am per fenestras parvas domus meæ prospexi, & per cancellos hab
li. Et vidi insipientes, & consideravi juvenes, & admiratus sum
entem intellectu, Transeuntem per plateam contra angulum, & v
mus ejus ambulantem; Vesperi, in occasu diei, in tenebris noctis,
caligine. Et ecce mulier in occursum ejus in ornatu meretricis, qu
fert cor juvenum. Prævaricatrixque est & vaga: in domo sua no
rantur pedes ejus. Nunc foris, nunc in plateis, & contra omne
gulum opportunum insidiatur. Et apprehendit eum & osculatur
& impudenti facie dicit ei: Sacrificia oblationum [*habeo*] super m
die reddidi vota mea. Propterea egressa sum in occursum tuum,
pe me vertens ad quærendam societatem; & dixeram me te ad
ram. In stratis posui lectulum meum, & in tapetibus pictis de Æ
Aspersi cubile meum myrrha & aloe & cinnamomo. Veni jucun
amoribus usque manè, & mutuò adhæreamus desideriis. Non e
vir in domo sua; abiit in via longinqua. Sacculum argenti
manu sua, & in die congregationis veniet ad domum suam. Sed
que eum in multitudine verborum suorum, & in blanditie la
suorum decepit eum. Et ipse vadit post eam confestim sicut bos qu
ad macellum, & sicut canis ad vinculum. Et sicut cervus in cuj
volat sagitta, & festinat sicut *passer* ad laqueum, & nescit quo
ad mortem animæ suæ. Et nunc filii audite me, & auscultat
oris mei. Ne deflectat cor tuum ad vias ejus, nec decipiaris in
illius. Quoniam multos interfectos dejecit, & fortes sunt omn
fecti ejus. Viæ inferni est domus ejus, descendentes ad cubicula

CAP. VIII.

Propterea sapientia clamat, & prudentia elevat vocem suam.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

2 * ܛܪ ܦܘܩܕܢܝ ܘܚܝܝ. ܘܢܡܘܣܝ ܐܝܟ ܒܒܬܐ ܕܥܝܢܐ. * ܩܛܘܪ ܐܢܘܢ ܥܠ ܨܘܪܟ. ܘܟܬܘܒ ܐܢܘܢ
3 ܥܠ ܠܘܚܐ ܕܠܒܟ. * ܘܐܡܪ ܠܚܟܡܬܐ ܚܬܝ ܐܢܬܝ. ܘܠܡܕܥܬܐ ܩܪܝ ܚܒܪܬܐ. * ܕܢܛܪܢܟ
4 5 ܡܢ ܐܢܬܬܐ ܢܘܟܪܝܬܐ ܕܡܫܥܒܕܢ ܡܠܝܗ̇. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܟܘܬܐ ܕܒܝܬܗ̇. ܘܡܢ ܟܘܫܟܘܫܐ
6 ܕܝܩܬ. * ܘܚܙܬ ܛܠܝܐ. ܘܣܟܠܬ ܒܛܠܝܐ. ܘܚܣܝܪܝ ܪܥܝܢܐ. * ܕܥܒܪܝܢ ܒܫܘܩܐ. ܘܠܘܬ
7 8 ܙܘܝܬܐ ܕܫܒܝܠ ܒܝܬܗ̇. * ܒܪܡܫܐ ܒܡܥܪܒ ܫܡܫܐ: ܒܚܫܘܟܐ ܕܠܠܝܐ ܘܒܥܡܛܢܐ.
9 * ܘܢܦܩܬ ܐܢܬܬܐ ܠܐܘܪܥܗ ܒܐܣܟܡܐ ܕܙܢܝܬܐ. ܕܡܦܪܚܐ ܠܒܘܬܗܘܢ ܕܛܠܝܐ. * ܘܡܦܪܟܣܐ
10 ܘܡܫܬܥܠܝܐ. ܘܒܒܝܬܗ̇ ܠܐ ܫܠܝܢ ܪܓܠܝܗ̇. * ܐܠܐ ܙܒܢ ܠܒܪ ܗܘܝܐ. ܘܙܒܢ ܒܫܘܩܐ
11 12 ܘܒܙܘܝܬܐ ܟܡܝܢܐ. * ܘܐܚܕܬܗ ܘܢܫܩܬܗ. ܘܐܡܪܬ ܠܗ ܒܐܦܐ ܚܨܝܦܬܐ. * ܕܒܚܐ ܕܫܠܡܐ
13 14 ܥܠܝ. ܝܘܡܢܐ ܦܪܥܬ ܢܕܪܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܦܩܬ ܠܐܘܪܥܟ. ܕܡܬܪܓܪܓܐ ܗܘܝܬ ܠܡܚܙܝܟ
15 ܘܐܫܟܚܬܟ. * ܒܫܘܝܐ ܦܪܣܬ ܥܪܣܝ. ܘܒܦܪܣܐ ܕܡܨܪܝܢ ܟܣܝܬܗ. * ܘܙܠܦܬ ܥܠ ܥܪܣܝ
16 17 ܡܘܪܐ ܘܥܘܕܐ ܘܩܘܢܡܐ. * ܬܐ ܢܬܒܣܡ ܒܪܚܡܬܐ ܥܕܡܐ ܠܨܦܪܐ. ܘܢܬܚܒܩ ܚܕ ܥܡ
18 19 ܚܕ ܒܪܓܬܐ. * ܠܐ ܗܘܐ ܓܝܪ ܓܒܪܝ ܒܒܝܬܐ. ܐܙܠ ܠܗ ܒܐܘܪܚܐ ܪܚܝܩܬܐ. * ܘܨܪܪܐ ܕܟܣܦܐ ܢܣܒ
20 ܒܐܝܕܗ. ܘܠܒܬܪ ܝܘܡܬܐ ܣܓܝܐܐ ܐܬܐ ܠܒܝܬܗ. * ܘܐܛܥܝܬܗ ܒܣܘܓܐܐ ܕܡܠܝܗ̇. ܘܒܫܘܦܥܐ
21 22 ܕܣܦܘܬܗ̇ ܢܓܕܬܗ. * ܘܗܘ ܐܙܠ ܗܘܐ ܒܬܪܗ̇ ܐܝܟ ܫܒܪܐ. ܘܐܝܟ ܬܘܪܐ ܕܐܙܠ ܠܢܟܣܬܐ. ܘܐܝܟ ܟܠܒܐ
23 ܠܐܣܘܪܐ. * ܘܐܝܟ ܐܝܠܐ ܕܡܚܝܢ ܓܐܪܐ ܒܟܒܕܗ. ܘܡܣܪܗܒ ܐܝܟ
24 ܦܪܚܬܐ ܠܦܚܐ. ܘܠܐ ܝܕܥ ܕܥܠ ܢܦܫܗ ܗܘ ܪܗܛ. * ܗܫܐ ܒܢܝ ܫܡܥܘܢܝ. ܘܨܘܬܘ
25 ܠܡܠܝ ܦܘܡܝ. * ܠܐ ܢܣܛܐ ܠܒܟ ܠܐܘܪܚܬܗ̇. ܘܠܐ ܬܛܥܐ ܒܫܒܝܠܝܗ̇. * ܡܛܠ
26 27 ܕܣܓܝܐܐ ܩܛܝܠܐ ܐܪܡܝܬ. ܘܥܫܝܢܝܢ ܟܠܗܘܢ ܩܛܝܠܝܗ̇. * ܐܘܪܚܬܐ ܕܫܝܘܠ ܒܝܬܗ̇. ܐܘܪܚܬܐ ܐܢܝܢ
ܕܫܝܘܠ. ܕܢܚܬܢ ܠܬܘܢܝ ܕܡܘܬܐ.

* ܫܠܡ * ܙ *

1 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܟܡܬܐ ܐܩܪܝ. ܘܣܘܟܠܐ ܢܥܢܝܟ.

Serva mandata mea, & vives, & leges meas ceu pupillam oculi. Alligato ea collo tuo, et inſcribito illa tabulis cordis tui. Et dicito ſapientiæ, Soror mea tu es: & prudentiam vocato intellectum: Ut cuſtodiat te à muliere peregrina, cujus adulatoria ſunt verba. Nam de feneſtra domûs ſuæ, & de cancellis proſpexit, Viditque pueros, & contemplata eſt adoleſcentes, & expertes judicio, Prætereuntes per plateam, & ad latus angulorum ſemitarum domûs ſuæ, Veſpere, ad occaſum ſolis, in tenebris nocturnis & in caligine: Et egreſſa eſt mulier in occurſũ ejus, ornatu meretricio, divellens cor juvenum, Petulans ac laſciviens, cujus pedes domi ſuæ non quieſcunt, Sed modò foras vagantur, & modò in plateis & angulis inſidiatur. Et apprehendit eum, & deoſculata eſt illum, & procaci vultu dixit ei, Victimæ ſunt pacificæ, hodiè reddidi vota mea. Propterea egreſſa ſum in occurſum tuum, quoniam optabam te videre, & inveni te. Stragulo inſtruxi lectum meum, & ſtromatibus Ægyptiis operui: Et aſperſi cubile meum myrrhâ, & aloe, & cynnamomo. Veni oblectemur amore in craſtinum uſque, & amplectamur alter alterũ cum delectatione. Non eſt enim domi vir meus, abiit in viã longinquam. Et ligamen argenti ſumpſit manu ſuâ, & poſt dies multos venturus eſt in domum ſuam. Igitur ſeduxit eum copiâ verborum ſuorum, & blanditiis labiorũ ſuorum allexit eum ad ſe. Et ipſe abiit poſt eam quaſi infans, & quaſi bos vadens ad lanienã, & velut canis ad vinculum, Et tanquã cervus cujus jecur transfixum eſt ſagittâ: & feſtinat velut animal alatum ad laqueum, & ignorat ad mortẽ animæ ſuæ ſe pergere. Nunc ergò filii audite me, & attendite verbis oris mei Ne flectatur cor tuum ad vias ejus, neque oberres in ſemitis ejus. Quia copiam occiſorũ proſtravit, & *quidem* fortiſſimi ſunt omnes quos necavit. Viæ domûs ejus, viæ ſunt inferi, deſcendentes ad penetralia mortis. 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27

CAP. VIII.

PRopterea ſapientiam altâ voce inclama, & intelligentia reſpondebit tibi. 1

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

2 * احفظ وصاياي فتحيا. واقوالي كحدقة عينيك * اجعلها في اصابعك. واكتبها في عرض
3 4 قلبك * قل للحكمة ان تكون اختك. واصطنع الفطنة لنفسك اخص ممن تعرفه * لتحفظك من
5 6 امراة غريبة وخبيثة. ان طارحتك باقوال تختلسك بحسنها * لانها من نافذة بيتها تلتفت
7 8 مستشرفة الي الشوارع * فمن تبصره من الاولاد الجهال شابا ماشيا ينقص عقلين * عند عطفة
9 10 موارد بيتها متكلما * في الظلام المسائي حين يكون السكوت الليلي والقتامي * تلقته الامراة
11 متحلية زيا زانيا. التي تجعل قلوب الاحداث طايرة * لانها مستطيرة وقحة. ورجلاها ما يسكنان
12 13 في منزلها * تطمح مدة ما خارج بيتها. تكمن حينا في الشوارع عند كل زاوية * ثم اذا تناولته
14 15 قبلته وناجته بوقاحة وجه * هذه ذبيحة سلامية عندي. اليوم اقضي نذوري * لهذا خرجت
16 الي استقبالك تايقة الي وجهك فوجدتك * قد شددت سريري بقمط الكتان. وفرشته بالمطارح
17 واللحف التي من مصر * قد نضحت على مضاجعي الزعفران. ورششت بيتي بقصب الذرين.
18 19 * هلم نتمتع بمتع المحبة الي السحر. تعال نتقلب بعشق * فان رجلي ليس في المنزل حاضرا.
20 قد ذهب في طريق بعيدة * واخذ بيده صرة دراهم. بعد ايام كثيرة يعود الي منزله.
21 22 * فاستطلته بالحديث الكثير المتصل. وادهشته بالمواهق من شفتيها * فاستطار لسبي فارغ.
23 وتبعها كثور يساق الي الذبح. او مثل كلب يساق الي الساجور * او مثل ايل مجروح في
24 كبده بسهم رشقه. يسارع كالطاير الي الفخ. غير عالم انه في هلاك نفسه يسعى * فالان يا
25 بني اسمعني. واصغ الي اقوال فمي * لا تجنحن قلبك الي طرقها. ولا تطلن في مناهجها.
26 27 * فانها قد جرحت كثيرين وافترستهم. ولم يحص عدد الذين قتلتهم * بيتها هو طرق
الجحيم. تحدر الي مطابق الموت.

الفصل الثامن.

1 * انت تشدد بالحكمة لتعطيك الفطنة.

Cuſtodi mandata mea, & vives, & ſermones meos quaſi pupillam oculorum tuorum. Pone eos in digitis tuis, & ſcribe eos in meditullio cordis tui. Dic ſapientiæ ut ſit ſoror tua, & fac prudentiam animæ tuæ magis familiarem quocunque tibi noto. Ut cuſtodiat te à muliere aliena & malignâ, ſi jaculetur in te ſermones quis te furentur venuſtate ſuâ. Nam de feneſtra domûs ſuæ cunctatur proſpiciens in plateas: Et quem viderit de pueris ſtultis juvenem ambulantem, carentem prudentiâ, Prope flexum viarum domûs ſuæ, loquentem: In tenebris veſpertinis dum fuerit ſilentium nocturnum & tenebroſum, Occurrit ei mulier ſpeciẽ præ ſe ferens emeritam, quæ facit corda juvenum volantia. Quoniam ipſa volatica eſt & libidinoſa, & pedes ejus non conſiſtunt domi ſuæ: Egreditur aliquantiſper extra domum ſuam, inſidiatur aliquandiu in vicis propè quemlibet angulum. Denique cùm tenuerit illum, deoſculatur eum, & alloquitur illum petulanti vultu, dicens; En victimam pacificam habeo, hodiè impleo vota mea. Propterea egreſſa ſum in occurſum tuum, excupiens vultum tuum, & inveni te. Jam ſtrinxi lectum meum vinculis lineis, ſtravique illum ſtragulis & tegminibus quæ ſunt ex Ægypto: Aſperſi cubile meum croco, & aſperſi domum meam calamis cinnamomi. Veni, fruamur voluptatibus amoris uſque ad matutinum: veni, convolutemur amanter. Nam vir meus non adeſt domi, jam abiit viam longinquam, Et manu ſuâ ſumpſit ſacculum pecuniæ, poſt multos dies revertetur ad domicilium ſuum. Decepit ergò eum ſermone multo et contexto, et ſtupefecit eum laqueis labiorum ſuorum. Avolavitq; ob rẽ inanem, et ſecutus eſt eam quaſi bos ductus ad occiſionem, vel quaſi canis qui ducitur ad ſtipitẽ, Aut veluti cervus vulneratus in jecore ſagittâ, eâq; tranſverberatus: feſtinat quaſi volucris ad laqueum, ignorans ſe ad interitum animæ ſuæ pergere. Modò, fili mi, audi me, et attende verba oris mei. Nullo modo inclines cor tuũ ad ſemitas ejus, et nullo modo decipiaris in viis ejus. Quoniam ſauciavit multos, et deprædata eſt eos, neq; recenſetur numerus illorum quos enecavit. Domus ejus ſunt viæ gehennæ, deducentes ad clauſtra mortis. 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27

CAP. VIII.

Tu confortare in ſapientia, ut tribuat tibi prudentiam: 1

משלי : ח

.constituta semitarum domus : viam supra excelsorum capite In
2 בראש־מרמים עלי־דרך בית נתיבות נצבה :
.præconizabit ostiorum ingressum : civitatis os ad , portarum manum Ad
3 ליד־שערים לפי־קרת מבוא פתחים תרנה :
.hominis filios ad mea vox & ; clamabo viri vos Ad
4 אליכם אישים אקרא וקולי אל־בני אדם :
,Audite .corde intelligite stulti & ; astutiam simplices Intelligite
5 6 הבינו פתאים ערמה וכסילים הבינו לב : שמעו
.rectitudines meorũ labiorum apertio & : loquar eximia quoniam
כי־נגידים אדבר ומפתח שפתי מישרים :
abominatio & ; meum palatum loquetur veritatem Quia
7 כי־אמת יהגה חכי ותועבת
non : mei oris eloquia omnia justitia In .impietas meorũ labiorũ
8 שפתי רשע : בצדק כל־אמרי־פי אין
; intelligenti recta ipsa Universa .obliquum & , pravum eis in
9 בהם נפתל ועקש : כלם נכחים למבין
,meam eruditionem Accipite .scientiam invenientibus recta &
10 וישרים למצאי דעת : קחו־מוסרי
sapientia bona Quia .electo auro præ scientiam & : argentũ non &
11 ואל־כסף ודעת מחרוץ נבחר : כי־טובה חכמה
Ego .ea in æquabuntur non voluntates omnes & ; margaritis præ
12 מפנינים וכל־חפצים לא ישוו־בה : אני
.inveniam cogitationum scientiam & ; astutia habitavi sapientia
חכמה שכנתי ערמה ודעת מזמות אמצא :
viam & ,elationem & ,superbiam : malum habere odio DOMINI Timor
13 יראת יהוה שנאת רע גאה וגאון ודרך
ego : essentia & ,consilium Mihi .odivi perversitatum os & , malam
14 רע ופי תהפכות שנאתי : לי־עצה ותושיה אני
consules & ; regnabunt reges me In .fortitudo mihi ,intelligentia
15 בינה לי גבורה : בי מלכים ימלכו ורוזנים
; principatum habebunt principes me In .justitiam decernent
16 יחוקקו צדק : בי שרים ישרו
; diligam me diligentes Ego .terræ judices omnes magnifici &
17 ונדיבים כל־שפטי ארץ : אני אהבי אהב
: mecum gloria & ,Opulentia .me invenient ,me diluculò quærentes &
18 ומשחרי ימצאנני : עשר־וכבוד אתי
, auro præ meus fructus Bonus .justitia & , durabilis substantia
19 הון עתק וצדקה : טוב פריי מחרוץ
semita In .electo argento præ meus proventus & ; obrizo præ &
20 ומפז ותבואתי מכסף נבחר : בארח
.judicii semitarum medio in ; faciam ambulare justitiæ
צדקה אהלך בתוך נתיבות משפט :
.replebo eorum thesauros & : est me diligentes faciendum hæreditare Ad
21 להנחיל אהבי יש ואצרתיהם אמלא :
sua opera ante : suæ viæ principium , me acquisivit DOMINUS
22 יהוה קנני ראשית דרכו קדם מפעליו
initiis ab capite à , habui principatum seculo A .tunc ex
23 מאז : מעולם נסכתי מראש מקדמי
fontes non in ; sum formata voragines non In .terræ
24 ארץ : באין־תהמות חוללתי באין מעינות
facies ad ; essent dejixi montes Antequàm .aquis aggravata loca
25 נכבדי־מים : בטרם הרים הטבעו לפני
; plateas & ,terram fecerat non Adhuc .sum formata collium
26 גבעות חוללתי : עד־לא עשה ארץ וחוצות
.orbis pulverum caput &
וראש עפרות תבל :

Versio VULG. LAT.

2 In summis excelsisque verticibus supra viam, in mediis 3 semitis stans, Juxta portas civitatis in ipsis foribꝰ loquitur, 4 dicens; O viri, ad vos clamito, & vox mea ad filios hominum. 5 Intelligite parvuli astutiam, & insipientes animadvertite. 6 Audite, quoniam de rebus magnis locutura sum: & aperientur labia mea, ut recta 7 prædicent. Veritatem meditabitur guttur meum, & labia 8 mea detestabuntur impiũ. Justi sunt omnes sermones mei, non est in eis pravum quid, neque 9 perversum. Recti sunt intelligentibus, & æqui invenienti- 10 bus scientiam. Accipite disciplinam meam, et non pecuniam: doctrinam magis, quàm 11 aurum eligite. Melior est enim sapientia cunctis pretiosissimis: et omne desiderabile ei 12 non potest comparari. Ego sapientia habito in consilio, et eruditis intersum cogitationi- 13 bus. Timor Domini odit malum: arrogantiam, et superbiam, et viam pravam, et os bi- 14 lingue detestor. Meum est consilium, et æquitas, mea est pru- 15 dentia, mea est fortitudo. Per me reges regnant, et legum conditores justa decernunt: 16 Per me principes imperant, et potentes decernunt justitiam. 17 Ego diligentes me diligo: et qui manè vigilant ad me, in- 18 venient me. Mecum sunt divitiæ, & gloria, opes superbæ, et 19 justitia. Melior est enim fructus meus auro, & lapide pretioso, & genimina mea argen- 20 to electo. In viis justitiæ ambulo, in medio semitarum ju- 21 dicii, Ut ditem diligentes me, et thesauros eorum repleam. 22 Dominꝰ possedit me in initio viarum suarum, antequàm quidquam faceret à princi- 23 pio. Ab æterno ordinata sum, & ex antiquis antequàm terra 24 fieret. Nondum erant abyssi, et ego jam concepta eram: necdum fontes aquarum eru- 25 perant: Necdum montes gravi mole constiterant: ante 26 colles ego parturiebar: Adhuc terram non fecerat, et flumina, et cardines orbis terræ.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

2 † Ἐπὶ γὰρ τῶν ὑψηλῶν ἄκρων ἐστίν, † ἀνα- 3 μέσον δὲ τῶν τρίβων ἕστηκε. † Παρὰ γὰρ πύλαις δυναστῶν παρεδρεύει, † ἐν δὲ εἰσ- 4 όδοις ὑμνεῖται. † Ὑμᾶς ὦ ἄνθρωποι παρακαλῶ, † καὶ προΐεμαι ἐμὴν φωνὴν υἱοῖς 5 ἀνθρώπων. † Νοήσατε ἄκακοι πανουργίαν, † οἱ δὲ ἀπαίδευτοι ἔνθεσθε καρδίαν. 6 † Εἰσακούσατέ μου, σεμνὰ γὰρ ἐρῶ, † 7 καὶ (α) ἀνοίσω ἀπὸ χειλέων ὀρθά. † Ὅτι ἀλήθειαν μελετήσει ὁ φάρυγξ μου † ἐβδελυγμένα δὲ ἐναντίον ἐμοῦ χείλη ψευδῆ. 8 † Μετὰ δικαιοσύνης πάντα τὰ (β) ῥήματα τοῦ στόματός μου, † οὐδὲν (γ) ἐν αὐτοῖς 9 σκολιὸν οὐδὲ (δ) στραγγαλιῶδες. † Πάντα ἐνώπια τοῖς συνιοῦσι, † καὶ ὀρθὰ τοῖς 10 εὑρίσκουσι γνῶσιν. † Λάβετε παιδείαν καὶ μὴ ἀργύριον, † καὶ γνῶσιν ὑπὲρ χρυσίον 11 δεδοκιμασμένον. (ε) † Κρείσσων γὰρ σοφία λίθων πολυτελῶν, † πᾶν δὲ τίμιον οὐκ ἄ- 12 ξιον αὐτῆς ἐστιν. † Ἐγὼ ἡ σοφία κατεσκήνωσα βουλήν † καὶ γνῶσιν, καὶ ἔννοιαν ἐγὼ 13 ἐπεκαλεσάμην. † Φόβος κυρίου μισεῖ ἀδικίαν, † ὕβριν τε καὶ ὑπερηφανίαν καὶ ὁδοὺς πονηρῶν· † μεμίσηκα δὲ ἐγὼ διεστραμμέ- 14 νας ὁδοὺς κακῶν. † Ἐμὴ βουλὴ καὶ ἀσφά- 15 λεια, † ἐμὴ φρόνησις, ἐμὴ δὲ ἰσχύς. † Δι' ἐμοῦ βασιλεῖς βασιλεύουσι, † καὶ οἱ δυνάσται 16 γράφουσι δικαιοσύνην. † Δι' ἐμοῦ μεγιστᾶνες μεγαλύνονται, † καὶ τύραννοι δι' ἐμοῦ 17 κρατοῦσι γῆς. † Ἐγὼ τοὺς ἐμὲ φιλοῦντας ἀγαπῶ, † οἱ δὲ ἐμὲ ζητοῦντες (ζ) εὑρήσουσι. 18 Πλοῦτος καὶ δόξα ἐμοὶ ὑπάρχει, † καὶ 19 κτῆσις πολλῶν καὶ δικαιοσύνη. † Βέλτιον ἐμὲ καρπίζεσθαι ὑπὲρ χρυσίον καὶ λίθον τίμιον (η), † τὰ δὲ ἐμὰ γεννήματα κρείσσω 20 ἀργυρίου ἐκλεκτοῦ. † Ἐν ὁδοῖς δικαιοσύνης περιπατῶ, † καὶ ἀναμέσον τρίβων (θ) δι- 21 καιώματος ἀναστρέφομαι· † Ἵνα μερίσω τοῖς ἐμὲ ἀγαπῶσιν ὕπαρξιν, καὶ τοὺς θησαυροὺς αὐτῶν ἐμπλήσω ἀγαθῶν. † Ἐὰν ἀναγγείλω ὑμῖν τὰ καθ' ἡμέραν γινόμενα, μνημο- 22 νεύσω τὰ ἐξ αἰῶνος ἀριθμῆσαι. † Κύριος ἔκτισέ με ἀρχὴν ὁδῶν αὐτοῦ εἰς ἔργα αὐτοῦ, 23 † Πρὸ τοῦ αἰῶνος ἐθεμελίωσέ με, † (ι) ἐν 24 ἀρχῇ πρὸ τοῦ τὴν γῆν ποιῆσαι, † Καὶ πρὸ τοῦ τὰς ἀβύσσους ποιῆσαι, † πρὸ τοῦ 25 προελθεῖν τὰς πηγὰς τῶν ὑδάτων. † Πρὸ τοῦ ὄρη ἑδρασθῆναι, † πρὸ δὲ πάντων 26 βουνῶν, γεννᾷ με. † Κύριος ἐποίησε χώρας καὶ ἀοικήτους, † καὶ ἄκρα οἰκουμένης τῆς (κ) ὑπ' οὐρανῶν.

Nam super excelsas summ[…] est, & inter medium sem[…] stetit. Apud portas […] tentum assidet, (b) & in […] tus cantatur: Vos ô homin[…] voco, & profero meam voc[…] liis hominum. Intelligite […] ces astutiam: & qui non ha[…] disciplinam, (c) apponite […] audite me: (d) præclara enim […] cam, & proferam è labiis […] Quoniam veritatem medita[…] guttur meum: abominata […] coram me labia […]raetia. Cum justitia omnia verba oris mei: […] hil (e) ipsis pravum, neque […] tortuosum. Omnia (f) p[…] ita intelligentibus, & […] nientibus scientiam. Acc[…] sciplinam, & non argentum […] scientiam super aurum proba[…] Melior enim sapientia lap[…] (h) pretiosis: omne autem […] tiosum non est illâ dignum. […] sapientia inhabitavi […] um, & scientiam, & (i) […] tationem ego invocavi. […] Domini odit (l) injustitiam […] contumeliam, & superbiam […] vias malorum: (m) od[…] ego perversas vias malorum. […] um est consilium, (n) & […] tas, mea prudentia, & mea […] titudo. Per me reges reg[…] & dynastæ (p) scribunt justi[…] Per me (q) magnates magni[…] tur: (r) & tyranni per me […] terram. Ego me amantes […] & quærentes me (s) inven[…] Divitiæ, & gloria (t) mi[…] & (u) possessio multorum, & […] stitia. (x) Melius me […] percipere super aurum, & […] pretiosum: & mea genimina […] tiora argento electo. In […] justitiæ ambulo, et inter […] justificationis versor: u[…] stribuam amantibus me […] am, et thesauros eorum […] bonis. Si (ω) annuntia[…] bis, quæ in diem fiunt: mem[…] ro, quæ à seculo, numer[…] Dominus condidit me in […] viarum suarum in opera su[…] seculum fundavit me, in […] pio, antequàm terram fac[…] antequàm abyssos con[…] priusquàm procederent […] quarum. Antequàm mont[…] carentur, et ante omnes […] generat me. Dominus […] cit regiones, et inhabita[…] summitates habitatas […] cælo.

MS. A. (α) ἀνοίγω (β) κείματα (γ) ἐν αὐτοῖς (δ) στραγγ[…] (ε) † ἀνταναιρεῖσθαι ἔθησιν χρυσίου καὶ ἀργυρίου. Κρείσσων (ζ) […] χάριν. Πλοῦτος (η) πολὺν, τὰ δὲ ἐμὰ γεννήματα κρείσσω ἀργυρ[…] δικαιοσύνης (ι) πρὸ τοῦ τὴν γῆν ποιῆσαι, (κ) ὑπ' οὐρανόν.

תרגום TARGUM.

2 בריש רמתא על ארחא איתה וביני שבילי קימא : ועל תרעי בפומא דקריא
3 4 ובמעלנא דתרעי משתבחא ואמרה : לכון גברי קרינא וקלי על בני נשא : אתבינו
5 6 שברי ערימותא ושטיי נסתכלון בלבהון : שמעו מטול דשרירותא ממללא אנא
7 וממלל פומי תריצותא : מטול דקושטא דנא פומי וריחוקא דשפותי רשעא :
8 9 ובצדקותא אנון כל מימרי פומי ולית בהון פתולא ועקומא : וכולן גלין לאנש
10 דמתבין ותריצין לאלין דצבאין בידיעתא : קבילו מרדותא ולא כספא וגבו לכון
11 ידיעתא מן דהבא סנינא : מטול דטבא חכמתא מן כיפי טבתא וכל מדעם
12 לא פחי לה : אנא חכמתא דרית ערימותא ידיעתא ותרעיתא משכחא אנא :
13 דחלתא דיי סניא בישתא גאותא ורמותא וארחא בישתא ופומא הפיכא סניא אנא :
14 15 דילי היא תרעיתא ומלכנא וביונא וגברותא : מטול אנא מלכי מלכין ושליטי
16 אנא משחא בצדקותא : מטול אנא רברבני מתרברבין וסרכי כלהון דיני דתריצותא :
17 18 אנא רחמא רחמי ואלין דמקדמין לי ישכחנני : עתרא ויקרא דילי ממונא ומזלא
19 וצדקתא : טבין פריי מן דהבא סנינא ומן דהבא אובריזין ועללתי מן סניא נביא :
20 21 בארחתא דצדקתא מהלכא אנא בגו שבילי דדינא : דאורית לרחמי שניא סניאתא
22 וסימתהון אמלא : אלהא בראני בריש בריתיה ומן קדם עובדוי מן ריש : ומן
23 24 קדם עלמא אתתקנית מן רישיה מן קדם דתהוי ארעא : עד לא נהוון
25 תהומי אתילידית ועד דלא נהוון מעיני עשיני דמיא : קדים עד לא נטבעון
26 טורי וקדם רמתא אתבנית : עד לא עבד ארעא ונחלי וריש עפרא דתבל :

PARAPH. CHALD. Versio Latina

In capite collium prope viam consistit, & in medio semitarum […] in foribus in introitu civitatis, & in ingressu portarum canit & […] Ad vos ô viri clamito, & vox mea ad filios hominum. Intelligi[…] sipientes astutiam, & stulti intelligant in cordibus suis. Audite […] niam *certa* loquor, & eloquium oris mei rectum. Quoniam ver[…] tem meditatur os meum, & abominantur labia mea impietatem […] justitia enim sunt omnes sermones oris mei, neque est in eis pra[…] nec perversum. Omnes verò sunt manifesti viro intelligenti, & […] cti his qui expetunt scientiam. Suscipite disciplinam meam, & […] argentum; & colligite vobis scientiam magis quàm aurum […] tum. Quoniam melior est sapientia lapidibus pretiosis, & […] quod ei comparetur. Ego sapientia *habitavi* astutiam: & scien[…] & consilium invenio. Timor Domini odit malum, super[…] et elationem, et viam malam, & os perversum odio habu[…] um est consilium, & cogitatio, & intelligentia & fortitudo […] me reges regnant, & potentes ungo justitia. Per me […] pes imperant, & duces, omnes judices in rectitudine […] diligentes me diligo, & qui manè consurgunt ad me, invenient […] Divitiæ & gloria mea sunt, opes & substantiæ, & justitia. […] res sunt fructus mei auro conflato, & auro obrizo; & proventus […] us magis quàm argentum electum. In via justitiæ ambulo, in […] semitarum judicii. Ut hæreditare faciam diligentes me annos […] & cellaria eorum impleam. Dominus creavit me in principio […] suæ, & ante opera sua ab initio. Ante seculum præparata […] initio antequàm esset terra. Et antequàm essent abyssi genita […] antequàm essent fontes, moles aquarum. Antequàm montes […] sent, & ante colles condita sum. Antequàm faceret terram […] mina, & verticem pulveris orbis.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܥܠ ܪܝܫ ܪ̈ܡܬܐ ܓܝܪ ܩܝܡܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܒܝܬ ܐܘܪ̈ܚܬܐ. ܘܠܘܬ ܫܒ̈ܝܠܐ ܩܘܝܐ. * ܘܥܠ
3 ܬܪ̈ܥܐ ܒܦܘܡܗ ܩܪܝܐ. ܘܒܡܥܠܢܐ ܕܬܪ̈ܥܐ ܕܡܕ̈ܝܢܬܐ ܡܬܚܙܝܐ. ܘܐܡܪܐ. * ܠܟܘܢ ܓܒܪ̈ܐ
4 ܩܪܝܐ ܐܢܐ. ܘܩܠܝ ܠܘܬ ܒܢ̈ܝܢܫܐ. * ܕܢܣܬܟܠܘܢ ܛܠܝ̈ܐ ܥܪܝܡܘܬܐ. ܘܡܚܣܪ̈ܝ ܕܝܢܐ
5 ܢܕܥܘܢ ܒܠܒܗܘܢ. * ܫܡܥܘܢܝ. ܡܛܠ ܕܫܪܝܪܬܐ ܗܘ ܡܡܠܠ ܐܢܐ. ܘܡܦܬܚ ܦܘܡܝ
6 ܬܪܝܨܘܬܐ. * ܫܪܪܐ ܗܘ ܪܢܐ ܦܘܡܝ. ܘܡܣܠܝܢ ܩܕܡܝ ܣܦܘ̈ܬܐ ܕܓܠܐ. * ܘܒܟܐܢܘܬܐ
7 ܐܝܬܝܗܝܢ ܟܠܗܝܢ ܡ̈ܠܐ ܕܦܘܡܝ. ܘܠܝܬ ܒܗܝܢ ܥܘܩܡܐ ܘܡܥܩܡܘܬܐ. * ܘܟܠܗܝܢ ܦܬܝ̈ܚܢ ܐܝܬܝܗܝܢ
8 9 ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܣܬܟܠܝܢ ܒܗܝܢ. ܘܬܪ̈ܝܨܢ ܐܝܬܝܗܝܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܨܒܝܢ ܕܢܕܥܘܢ. * ܩܒܠܘ ܡܪܕܘܬܐ ܘܠܐ
10 ܟܣܦܐ. ܘܓܒܘ ܠܟܘܢ ܝܕܥܬܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܕܗܒܐ ܕܒܝܪܐ. * ܡܛܠ ܕܝܬܝܪܐ ܗܝ ܚܟܡܬܐ. ܝܬܝܪ
11 ܡܢ ܕܗܒܐ ܕܒܝܪܐ. ܘܝܬܝܪ ܡܢ ܟܐܦ̈ܐ ܝܩܝܪ̈ܬܐ. ܘܟܠܡܕܡ ܠܐ ܦܚܡ ܠܗ. * ܐܢܐ ܚܟܡܬܐ ܒܪܝܬ
12 ܥܪܝܡܘܬܐ. ܘܝܕܥܬܐ ܘܡܠܟܐ ܐܢܐ ܩܢܝܬ. * ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܣܢܝܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܫܘܒܗܪܐ
13 ܘܪܡܘܬܐ ܘܐܘܪܚܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܦܘܡܐ ܕܡܥܩܡܐ ܣܢܐ ܐܢܐ. * ܕܝܠܝ ܗܘ ܡܠܟܐ ܘܡܪܕܘܬܐ.
14 ܕܝܠܝ ܗܝ ܣܘܟܠܐ. ܘܕܝܠܝ ܗܝ ܓܢܒܪܘܬܐ. * ܡܛܠܬܝ ܡܠܟܐ ܡܡܠܟܝܢ. ܘܫܠܝܛܢܐ ܟܬܒܝܢ
15 ܙܕܝܩܘܬܐ. * ܒܝ ܫܠܝܛܝܢ ܫܠܝܛܢܐ. ܘܪܘܪ̈ܒܢܐ ܘܟܠܗܘܢ ܕܝܢ̈ܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. * ܐܢܐ ܪܚܡܬ
16 17 ܠܪ̈ܚܡܝ. ܘܕܒܥܝܢ ܠܝ ܢܫܟܚܘܢܢܝ. * ܥܘܬܪܐ ܘܐܝܩܪܐ ܕܝܠܝ ܗܘ. ܘܩܢܝܢܐ ܥܬܝܩܐ
18 ܘܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܦܐܪ̈ܝ ܛܒܝܢ ܡܢ ܕܗܒܐ ܕܒܝܪܐ. ܘܥܠܠܬܝ ܡܢ ܣܐܡܐ ܓܒܝܐ. * ܒܐܘܪܚܐ
19 ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܡܗܠܟܐ ܐܢܐ. ܘܒܓܘ ܫܒ̈ܝܠܐ ܕܕܝܢܐ. * ܕܐܘܪܬ ܠܪ̈ܚܡܝ ܣܒܪܐ. ܘܣܝܡܬܗܘܢ ܐܡܠܐ.
20 21 * ܡܪܝܐ ܒܪܢܝ ܒܪܝܫ ܒܪܝܬܗ. ܡܢ ܩܕܡ ܥܒܕܘܗܝ ܟܠܗܘܢ. * ܘܡܢ ܩܕܡ ܥܠܡܐ ܫܬܐܤܢܝ.
22 23 ܘܡܢ ܪܫܝܬܐ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܕܢܥܒܕ ܐܪܥܐ. * ܥܕܠܐ ܢܗܘܘܢ ܬܗܘܡܐ ܐܬܝܠܕܬ. ܘܥܕܠܐ ܢܗܘܘܢ
24 ܡ̈ܝܐ ܒܡܒ̈ܘܥܐ. * ܘܥܕܠܐ ܢܬܩܢܘܢ ܛܘܪ̈ܐ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܪ̈ܡܬܐ ܐܬܒܛܢܬ. *
25 26 ܥܕܠܐ ܢܥܒܕ ܐܪܥܐ ܘܢܚ̈ܠܐ. ܘܪܝܫ ܥܦܪܗ ܕܬܒܝܠ.

Super verticem collium enim adstat sapien- 2
tia, & inter vias & juxta semitas manet.
Et ad januas ore suo clamitat, & in aditibus 3
portarum urbium se ostentat, ac dicit. Vos 4
viri appello ego, & vox mea ad filios homi-
num: Ut intelligant parvuli astutiam, & 5
expertes judicio cognoscant in corde suo.
Audite me, quia verum loquar, & apertio 6
oris mei æquitas. Veritatem enim con- 7
templatur os meum, & abominanda sunt co-
ram me labia mendacia. Justitia sunt omnia 8
verba oris mei, et non est in eis obliquitas, aut
pversitas. Et omnia aperta sunt ei qui perci- 9
pit ea, et recta sunt ei qui ea scire cupit. Acci- 10
pite disciplinam, & non argentum: & eligite
vobis scientiā præ auro puro: Quoniam præ- 11
stantior est sapientia auro puro, & lapillis o-
ptimis, & nihil est illi comparandum. Ego sa- 12
pientia creavi astutiam, & scientiā atque con-
silium ego possideo. Timor Dñi odit mala, & 13
fastum, & superbiam, & viam malam, & os p-
versum ego detestor. Meum est consilium, & 14
doctrina mea est prudentia, & mea fortitudo.
Propter me reges regnant, & principes edi- 15
cunt justitiā. Per me præsides præsunt, & ma- 16
gnates, omnésque judices æquitatis. Ego de- 17
ligo diligentes me: & qui quærũt me, inveni-
ent me. Divitiæ & honor, meus est, & opes 18
antiquæ, atque justitia. Et fructus mei meli- 19
ores sunt auro puro, & proventus mei argen-
to electo. Per iter justitiæ incedo, & in me- 20
dio semitarum judicii: Ut hæredes faciā di- 21
ligentes me spei: & eorum thesauros implēā.
Dominus creavit me initio creaturæ suæ, ante 22
omnia opera sua, Et ante secula condidit me, 23
& ab initio, & antequam faceret terrā. An- 24
tequam essent abyssi, genita sum, & antequam
essent aquæ in fontibus. Et antequam firma- 25
ti essent montes, & ante colles concepta sum,
Antequàm faceret terram & torrentes, & 26
primum pulverem orbis.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

2 3 * فانها في السواهق العالية هي * وقد وقفت في وسط الطرقات * لانها تكمن عند ابواب
4 5 المقتدرين. وفي المداخل تمدح * اليكم ايها الناس اتضرع. والى بني الناس ارفع صوتي * يا ذوي
6 الدعة تفهموا تدبرا. ويا من لا ادبا لهم ضعوا قلبكم فيه * اسمعوني فانني اقول الفاظا شريفة.
7 وابدي من شفتي اقوالا مستوية * لان حلقي يهذ صدقا. والشفاه الكاذبة مرفوضة امامي.
8 9 * وكل اقوال فمي بعدل. وليس فيها صعب ولا معوج * كلها مستوية عند الذين يفهمونها.
10 ومقومة عند الذين قد وجدوها علما * خذوا ادبا ولا تتخذوا فضة. تسلموا معرفة افضل من
11 الذهب الابريز * اذ محسوسات الذهب النقي تندرس. والحكمة افضل من الجواهر الجزيلة
12 قيمتها. وكل كريم نفيس ما يساويها * انا الحكمة ساكنة في الراي والمشورة. وانا دعوت المعرفة
13 وذكر المعاد * خشية الرب تمقت الظلم والتعظم والكبرياء وطريق الاشرار. انا قد ابغضت طرق
14 15 الطاغين الملتوية * لي المشورة والتصور لي الفطنة. لي القوة * بي تملك الملوك. ويكتب
16 17 المقتدرون العدل * بي يعظم شان العظماء. وبي تمسك امراء الارض * انا احب الذين يحبونني.
18 19 والذين يطلبونني يجدونني * عندي الغنا والمجد. واقتناء الفوايد الكثيرة والعدل * فالتقطوني
20 وخذوني افضل من الذهب والجوهر الكريم. فان غلاتي افضل من الذهب المنتخب * انا في
21 طريق العدل اسلك. وفي وسط مناهج العدل اتصرف * لكيما اورث الذين يحبونني فيه دايما.
22 واملأ كنوزهم من الخيرات * ان بدات اخبركم بالصايرات كل يوم. اتذكر الامور التي
23 اعدها منذ الدهر. الرب خلقني بدو طرقه في اعماله قبل الدهر * اسسني في البدي. قبل
24 25 ان تصنع الارض * وقبل ان تخلق اللجج. قبل ان تنبع عيون المياه * وقبل ان يوطد
26 الجبال. وقبل التلول كلها صنعني * الرب صنع كورا غير مسكونة. وسواهق مسكونة
للبرية التي تحت السماء.

Quia in palatiis sublimibus quandoque 2
stat, & ipsa est in medio viarum: Quia 3
insidiatur ad januas potentium, & in
aditibus canit, dicens; Vos O homines 4
oro, & ad filios hominum extollo vo-
cem meam. O simplices, intelligite eru- 5
ditionem: & O qui non habetis discipli-
nam, apponite corda vestra ad eam.
Audite me, quia pronuntio eloquia no- 6
bilia, & profero è labiis meis sermones
rectos. Quoniam guttur meum medita- 7
tur veritatem, & labia mendacia sunt
abominanda coram me: Et omnia ver- 8
ba oris mei in justitia, & non est in eis
arduum neque perversum: Omnia ipsa 9
plana sunt apud eos qui intelligunt ea, &
recta apud eos qui jam invenerunt ea per
doctrinam. Comparate disciplinam, & 10
ne comparetis argentum: recipite do-
ctrinam potiùs quàm aurum obryzum.
Nam sensibilia auri puri teruntur, sapi- 11
entia verò præstantior est gemmis plurimi
pretii, & omne pretiosum excellens non
æquatur illi. Ego sapientia habito in co- 12
gitatione & consilio, & ego advoco sci-
entiam & memoriam finis. Timor Do- 13
mini odio habet iniquitatem, & glori-
am, & superbiam, & viam iniquorum:
ego jam odi vias improborum perversas.
Meum est consilium & imaginatio: 14
mea est prudentia, mea potentia. Per me 15
regnant reges, & scribunt potentes justi-
tiam. Per me magnificatur fama magna- 16
tum, & à me pendent principes terræ.
Ego diligo eos qui me diligunt: & qui 17
me quærunt, me invenient. Apud me 18
sunt opes, & gloria, & acquisitio uti-
litatum multarum, et justitia. Quare 19
colligite me, et accipite me potiùs quàm
aurum et gemmas pretiosas: quoniam
fruges meæ sunt præstantiores auro electo.
Ego per viam justitiæ incedo, et in me- 20
dio viarum justitiæ conversor. Ut credam 21
iis qui me amant, possessionem æternam,
et impleam thesauros eorum bonis. Si 22
incipiam exponere vobis quæ fiunt sin-
gulis diebus, memorabo res quas præpa-
ravit à seculis, Dominus creavit me ini-
tium viarum suarum in operibus suis an-
te seculum. Fundavit me in principio, 23
antequàm terra fieret, Et antequam cre- 24
arentur abyssi, antequam erumperent
fontes aquarum, Et antequam firmaret 25
montes, et ante colles omnes fecit me.
Dominus fecit regiones inhabitatas, et 26
ædes habitatas pro creatura quæ est sub
cælo.

משלי : ט

super circulum describendo in : *ego* ibi , cœlos *ipsum parando In*
27 בהכינו שמים שם אני בחקו חוג על־
: desuper *æthera ipsum roborando In* .voraginis *faciebus*
28 פני תהום : באמצו שחקים ממעל
,suum statutum mari *ipsum ponendo In* .voraginis fontes *fortificando in*
29 בעזוז עינות תהום : בשומו לים חקו
fundamenta *ipsum constituendo in* : suum *os* transirent non aquæ &
ומים לא יעברו־פיו בחוקו מוסדי
, *deliciæ* eram & , nutricius eum apud eram Et .terræ
30 ארץ : ואהיה אצלו אמון ואהיה שעשעים
orbe in *Ludens* .tempore omni in eo coram *ludens* : *die* , *die*
31 יום יום משחקת לפניו בכל־עת : משחקת בתבל
nunc Et .hominum filiis cum meæ delectationes & ;ejus terræ
32 ארצו ושעשעי את־בני אדם : ועתה
Audite .custodierint meas vias beati & : mihi *audite* filii
33 בנים שמעו לי ואשרי דרכי ישמרו : שמעו
Beatitudines .*feriamini* ne & ;estote sapientes & , eruditionem
34 מוסר וחכמו ואל־תפרעו : אשרי
;*die* , *die* meas fores *super vigilando* mihi *audientis hominis*
אדם שמע לי לשקד על־דלתתי יום יום
,me *inveniens* Quoniam : meorum ostiorum postes custodiendo
35 לשמר מזוזת פתחי : כי מצאי
,*me in peccans* Et .DOMINO à *voluntatem* educet & ; *vitas* invenit
36 מצא חיים ויפק רצון מיהוה : וחטאי
.mortem *dilexerunt* ,me *habentes odio* omnes : *suæ animæ est injurius*
חמס נפשו כל־משנאי אהבו מות :

CAP. IX. ט

.septem suas columnas excidit ;suam domum ædificavit *Sapientiæ*
1 חכמות בנתה ביתה חצבה עמודיה שבעה :
disposuit etiam : suum vinum miscuit , suam victimam Immolavit
2 טבחה טבחה מסכה יינה אף ערכה
alas super clamabit , suas puellas Misit .suam mensam
3 שלחנה : שלחה נערתיה תקרא על־גפי
carenti : huc declinet , simplex Quisquis .civitatis excelsorum
4 מרמי קרת : מי־פתי יסר הנה חסר־
bibite & ;*meo pane in* comedite , *Ite* : *ei* dixit corde
5 לב אמרה לו : לכו לחמו בלחמי ושתו
incedite & : *vivite* & , simplices Relinquite .miscui , *vino in*
6 ביין מסכתי : עזבו פתאים וחיו ואשרו
sibi accipiens , derisorem Corripiens .intelligentiæ *via in*
7 בדרך בינה : יסר לץ לקח לו
increpes Ne .ejus maculam , impium increpans & : ignominiam
8 קלון ומוכיח לרשע מומו : אל־תוכח
.te diliget & , sapientem increpa : te habeat odio fortè ne , derisorem
לץ פן־ישנאך הוכח לחכם ויאהבך :
, justum scire fac : amplius erit sapiens & , sapienti Da
9 תן לחכם ויחכם עוד הודע לצדיק
;DOMINI timor sapientiæ Principium .doctrinam addet &
10 ויוסף לקח : תחלת חכמה יראת יהוה
multiplicabuntur *me in* Nam .intelligentia sanctorum scientia &
11 ודעת קדשים בינה : כי־בי ירבו
, sapiens fueris Si .vitæ anni tibi addentur & : tui dies
12 ימיך ויוסיפו לך שנות חיים : אם־חכמת
.*portabis* tu solus , *illusisti* & : tibi eris sapiens
חכמת לך ולצת לבדך תשא :

Versio VULG. LAT.

27 Quando præparabat cœlos,
aderam : quando certâ lege, &
28 gyro vallabat abyssos: Quan-
do æthera firmabat sursum,
& librabat fontes aquarum :
29 Quando circumdabat mari
terminum suum, & legem
ponebat aquis, ne transirent
fines suos quando appendebat
30 fundamenta terræ. Cum eo
eram cuncta componens : &
delectabar per singulos dies,
ludens coram eo omni tem-
31 pore; Ludens in orbe terra-
rum : & deliciæ meæ, esse cum
32 filiis hominum. Nunc ergò
filii audite me : Beati, qui
33 custodiunt vias meas. Audite
disciplinam, & estote sapien-
tes, & nolite abjicere eam.
34 Beatus homo qui audit me, &
qui vigilat ad fores meas quo-
tidiè, & observat ad postes
35 ostii mei. Qui me invenerit,
inveniet vitam, & hauriet sa-
36 lutem à Domino : Qui autem
in me pecaverit, lædet ani-
mam suam. Omnes, qui me
oderunt, diligunt mortem.

CAP. IX.

1 SApientia ædificavit sibi
domum, excidit columnas se-
2 ptem. Immolavit victimas
suas, miscuit vinum, & propo-
3 suit mensam suam. Misit ancil-
las suas ut vocarent ad arcé,
4 & ad mœnia civitatis ; Si
quis est parvulus, veniat ad
me. Et insipientibus locuta
5 est ; Venite, comedite panem
meum, & bibite vinum quod
6 miscui vobis. Relinquite in-
fantiam, & vivite, & ambu-
7 late per vias prudentiæ. Qui
erudit derisorem, ipse inju-
riam sibi facit : & qui arguit
impium, sibi maculam gene-
8 rat. Noli arguere derisorem,
ne oderit te. Argue sapien-
9 tem, & diliget te. Da sapi-
enti occasionem, & addetur
ei sapientia. Doce justum, &
10 festinabit accipere. Prin-
cipium sapientiæ, timor Do-
mini; & scientia Sanctorum,
11 prudentia. Per me enim mul-
tiplicabuntur dies tui, & ad-
12 dentur tibi anni vitæ. Si sa-
piens fueris, tibimetipsi eris :
si autem illusor, solus porta-
bis malum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

27 † Ἡνίκα ἡτοίμαζε τὸν οὐρανὸν, συμπαρή-
μην αὐτῷ, † καὶ ὅτε ἀφώριζε τὸν ἑαυτοῦ θρό-
28 νον ἐπ' ἀνέμων, † (λ) Καὶ ὡς ἰσχυρὰ ἐποίει
τὰ ἄνω νέφη, † καὶ ὡς ἀσφαλεῖς ἐτίθει πη-
29 γὰς τῆς ὑπ' οὐρανὸν, (μ) † Καὶ ὡς ἰσχυ-
30 ρὰ ἐποίει τὰ (ν) θεμέλια τῆς γῆς, † Ἤ-
μην παρ' αὐτῷ ἁρμόζουσα· † ἐγὼ ἤμην ᾗ
προσέχαιρεν· † καθ' ἡμέραν δὲ εὐφραινό-
μην ἐν προσώπῳ αὐτοῦ ἐν παντὶ καιρῷ. †
31 Ὅτε (ξ) εὐφραίνετο τὴν οἰκουμένην συντε-
λέσας, † καὶ (ξ) ἐνευφραίνετο ἐν υἱοῖς ἀν-
32 θρώπων. † Νῦν οὖν υἱὲ ἄκουέ μου, (π) †
μακάριος ἀνὴρ ὃς εἰσακούσεταί μου, † καὶ
ἄνθρωπος ὃς τὰς ἐμὰς ὁδοὺς φυλάξει,
34 Ἀγρυπνῶν ἐπ' ἐμαῖς θύραις καθ' ἡμέραν,
35 † τηρῶν σταθμοὺς ἐμῶν εἰσόδων. † Αἱ γὰρ
ἔξοδοί μου, ἔξοδοι ζωῆς, † καὶ ἑτοιμάζεται
36 θέλησις παρὰ κυρίου. † Οἱ δὲ (ρ) ἁμαρ-
τάνοντες εἰς ἐμὲ, ἀσεβοῦσιν εἰς τὰς ἑαυ-
τῶν ψυχὰς, † καὶ οἱ μισοῦντές με ἀγαπῶσι
θάνατον.

Cùm pararet cælum, aderam
& cùm secerneret suam se
dem super ventos, Et cum
das faceret desuper (ee)
(ff) cùm confirmatos poneret
tes ejus quæ sub cælo, (gg)
quando fortia faciebat funda
ta terræ, Eram penes illum
disponens : ego eram, cui
debat. Quotidie autem
cundabar in facie ejus in
tempore, Cùm lætaretur
fecto, & lætaretur in filiis
num. Nunc igitur fili,
di me, Beatus vir, qui
me, & homo, qui meas
stodiet, Vigilans ad meas
quotidiè, (ll) servans
orum introituum. (mm)
siones enim meæ, egressiones
(nn) & paratur
mino. Qui autem
(oo) impie agunt in
animas : & qui oderunt
gunt mortem.

ΚΕΦ. Θ'.

1 † Ἡ Σοφία ᾠκοδόμησεν ἑαυτῇ οἶκον, †
2 καὶ ὑπήρεισε στύλους ἑπτά. † Ἔσφαξε τὰ ἑ-
αυτῆς θύματα, † ἐκέρασεν εἰς κρατῆρα
τὸν ἑαυτῆς οἶνον, † καὶ ἡτοιμάσατο τὴν ἑ-
3 αυτῆς τράπεζαν. † Ἀπέστειλε τοὺς ἑαυτῆς
δούλους, † Συγκαλοῦσα μετ' ὑψηλοῦ κηρύγ-
4 ματος ἐπὶ κρατῆρα, λέγουσα, † Ὅς ἐστιν
ἄφρων, ἐκκλινάτω πρός με· † καὶ τοῖς ἐν-
5 δεέσι φρενῶν εἶπεν, † Ἔλθατε, φάγετε
τῶν ἐμῶν ἄρτων, † καὶ πίετε οἶνον ὃν ἐκέ-
6 ρασα ὑμῖν. † Ἀπολείπετε ἀφροσύνην, ἵνα
εἰς τὸν αἰῶνα βασιλεύσητε· † καὶ ζητήσα-
τε φρόνησιν (α), † καὶ κατορθώσατε ἐν γνώ-
7 σει σύνεσιν. † Ὁ παιδεύων κακοὺς λήψε-
ται ἑαυτῷ ἀτιμίαν· † ἐλέγχων δὲ τὸν ἀ-
8 σεβῆ μωμήσεται ἑαυτόν. † Μὴ ἔλεγχε
κακοὺς, ἵνα μὴ () μισήσωσί σε, † ἔλεγχε σο-
9 φὸν, καὶ ἀγαπήσει (β) σε. † Δίδου σοφῷ
ἀφορμὴν, καὶ σοφώτερος ἔσται· † (γ) γνώ-
ριζε δικαίῳ, καὶ προσθήσει τοῦ δέχεσθαι. †
10 Ἀρχὴ σοφίας φόβος κυρίου, † καὶ βουλὴ
ἁγίων σύνεσις· † (δ) τὸ γὰρ γνῶναι νό-
11 μον, διανοίας ἐστὶν ἀγαθῆς. † Τούτῳ γὰρ τῷ
τρόπῳ πολὺν (ε) ζήσεις χρόνον, † καὶ προσ-
12 τεθήσεταί σοι ἔτη () ζωῆς σου. † Υἱὲ ἐὰν
σοφὸς γένῃ σεαυτῷ, σοφὸς ἔσῃ καὶ (ζ) τοῖς
πλησίον· † ἐὰν δὲ κακὸς ἀποβῇς, μόνος ἂν
ἀντλήσεις κακά. † Ὃς ἐρείδεται ἐπὶ ψεύδε-
σιν, οὗτος () ποιμαίνει ἀνέμους, † ὁ δ' αὐτὸς
διώξεται ὄρνεα πετόμενα· † ἀπέλιπε γὰρ
ὁδοὺς τοῦ ἑαυτοῦ ἀμπελῶνος, † τοὺς δὲ ἄξο-
νας τοῦ ἰδίου γεωργίου πεπλάνηται. † Διαπο-
ρεύεται δὲ δι' ἀνύδρου ἐρήμου, † καὶ γῆν
διατεταγμένην ἐν διψώδεσι, † συνάγει δὲ
χερσὶν ἀκαρπίαν.

CAP. IX.

SApientia ædificavit
mum, & (a) subdidit
septem : (b) Mactavit
as : miscuit in cratera
um ; & (c) paravit
sam : Misit (d) servos
vocans (e) cum excelsa
tione ad crateram, dicens
est (f) insipiens, declinet
Et egentibus sensu dixit,
te, edite de meis panibus,
te vinum, quod miscui
Derelinquite stultitiam,
culum regnetis : & quæ
dentiam, & (h) corrigite
entia intelligentiam.
malos, accipiet sibi
& arguens impium,
seipsum. * Non arguas
ne odio habeant te.
entem, & diliget te.
ti occasionem, & sapien
notifica justo, & addet
piendum. Initium sapientiæ
Domini, & consilium Sanctorum
intelligentia. Cognoscere
gem, mentis est bonæ:
modo multum vives
adjicientur tibi anni vitæ
si sapiens fueris tibi, sapiens
proximis : si (k) autem
vaseris, solus (l)
ries mala. Qui fidem
sis, hic pascit ventos
tem ipse sequetur aves
deseruit enim vias
mitis verò agelli sui
greditur autem per
que arida, & terram
in sitim : contrahit autem
infructuosa.

MS. A. (λ) Ἡνίκα ἰσχυρὰ ἐποίει (μ) † Ἐν τῷ τιθέναι τῇ θαλάσσῃ ἀκριβασμὸν αὐτοῦ, † καὶ ὕδατα οὐ παρελεύσονται στόματος αὐτοῦ, Καὶ ἰσχυρὰ (ν) * θελήματα
(ο) ἐνηυφραίνετο (π) † καὶ μακάριοι οἱ ὁδούς μου φυλάσσοντες † ἀκούσατε σοφίαν, καὶ σοφίσθητε, καὶ μὴ ἀποφραγῆτε, Μακάριος ἀνὴρ (ρ) εἰς ἐμὲ
Κεφ. Θ'. MS. A. (α) ἵνα βιώσητε, καὶ κατορθώσατε () μισῶσίν (β) σε, † ἄσοφον καὶ μισήσει σε. Δίδου (γ) γνώριζε δὲ (δ) τὸ δὲ (ε) ζήσῃ () ζωῆς. () τῷ πλησίον

תרגום TARGUM.

27 כד אתקין שמיא תמן הוית ועד חג הונתא על אפי תהומא : וכד אנרים ענני מלעיל
28
29 וכד אעשין מעיני תהומא : וכד שם לימא תחומיה ומיא לא עברין ליה שם שתאסיא
30 דארעא : והוית בצדוי מהימנתא וכדשבוחין הוית כל יומא ויומא וחדיא אנא קדמוי
31 בכל זמן : חדיא הוית בתבל ארעיה ושבוחי בבני נשא : והשתא בניא שמעין לי
32
33 וטובוי למן דנטר אורחתי : שמעו מרדותא ואתחכמו ולא תרשון : טובוי לבר נשא
34
35 דשמע לי ונשקוד על אסקופתי בכל יומא ויומא למנטר ספי דתרעי : מטול מן
36 דמשכח לי משכח חיי ותהוי ליה רעותא מן קדם אלהא : ומן דחטי עלי מחבל נפשיה
וכולהון שנאי רחמי למותא :

ט

1 חכמתא בנת ביתא ועתדת ביה שבעא עמודין : ונכסת נכסתה ומזגת חמרה וסדרת
2
3 פתורתה : ושדרת טליתהא דתקרין על גיב רמתא עשינתא דנצירן : מן דשבר
4
5 נאתא לותי וחסיר רעינא אמרת ליה : אתו אכולו לחמי ואשתו חמרא דמזגית :
שבוקו מנכון חסירות רעיונכון וחיו והליכו בארחא דביונא : דרדי ממיקנא ונסיב
ליה צערא ומכסנותא לרשיעא מומא הוא ליה : לא תכוס לממקנא דלא נסניך
אכיס לחכימא דנרחמך : אלף לחכימא ויתחכם תוב אודע לצדיקא ויוסף מנדעא :
שרוי דחכמתא דחלתיה דאלהא וידיעתא דקדישי ביונא : מטול דבה נסגון
יומתך ויוספון לך שניא דחיי : אין חכימת לנפשך חכימת ואבו תהוי ממוק
בלחודיך תטען :

PARAPH. CHALD. Versio Lati

Quando præparabat cœlos, ibi eram ; & quando vallabat gyro
ciem abyssi. Quando condensabat nubes desuper, & quando
fontes abyssi. Quando ponebat mari terminum suum, ut aquæ
transirent eum, ponebat fundamenta terræ. Et eram in latere
ta, & *quasi laudes fui* per singulos dies, & lætabar ego coram
omni tempore. Lætata sum in orbe terræ ejus, & laudes meæ in
minum. Et nunc filii audite me, & beatus qui custodit vias meas
dite disciplinam, & estote sapientes, & non *deseratis* eam. Be
us hominis qui audit me, & vigilat ad limina mea quotidie, ut
at postes portarum mearum. Quoniam qui invenit me, inveniet
& habebit beneplacitum à facie Dei. Qui autem peccat in me,
animam suam ; & omnes odientes me, diligunt mortem.

CAP. IX.

SApientia ædificat domum suam, & statuit in ea septem colu
immolavit victimam suam, & miscuit vinum suum, & ordina
sam suam. Misitq; puellas suas ut vocarent in altitudine collium
munitorum. Quis est insipiens veniat ad me, & indigenti
dicit: Venite comedite panem meum, & bibite vinum quod
Dimittite à vobis indigentiam intellectus vestri, & vivite, &
in via prudentiæ. Qui erudit derisorem, accipit sibi ignominiam
reptio impii, macula est ipsi. Ne corripias derisorem, ne
argue sapientem, ut diligat te. Doce sapientem, & sapientior
ùs; ostende justo, & addet scientiam. Initium sapientiæ timor
scientia sanctorum intelligentia. Quoniam per *eam* multi erunt
& addentur tibi anni vitæ. Si sapiens es, tibimet sapiens es
sor fueris, solus portabis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܟܕ ܡܬܩܢ ܫܡܝܐ. ܥܡܗ ܗܘܝܬ. ܘܟܕ ܥܒܕ ܚܘܓܐ ܥܠ ܐܦܝ ܬܗܘܡܐ. * ܘܟܕ ܐܫܪܪ 27 28
ܥܢܢܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܘܟܕ ܐܫܪܪ ܡܒܘܥܐ ܕܬܗܘܡܐ. * ܟܕ ܣܡ ܢܡܘܣܐ ܠܝܡܐ. ܘܡܝܐ ܠܐ 29
ܢܥܒܪܘܢ ܦܘܡܗ. ܘܟܕ ܥܒܕ ܫܬܐܣܘܗܝ ܕܐܪܥܐ. ܥܡܗ ܡܬܩܢܐ ܗܘܝܬ. * ܒܝ ܚܕܐ ܗܘܐ 30
ܟܠܝܘܡ. ܘܒܟܠܙܒܢ ܩܕܡܘܗܝ ܚܕܝܐ ܗܘܝܬ. * ܚܕܝܐ ܗܘܝܬ ܒܬܐܒܝܠ ܐܪܥܗ. ܘܡܫܬܒܗܪܐ 31
ܗܘܝܬ ܒܒܢܝܢܫܐ. * ܘܗܫܐ ܒܢܝ ܫܡܥܘܢܝ. ܛܘܒܘܗܝ ܠܡܢ ܕܢܛܪ ܐܘܪܚܬܝ. * ܫܡܥܘ 32
ܡܪܕܘܬܐ ܘܗܘܘ ܚܟܝܡܝܢ ܘܠܐ ܬܛܥܘܢ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܫܡܥ ܠܝ. ܘܫܗܪ ܥܠ ܬܪܥܝ 33 34
ܒܟܠܝܘܡ. ܘܢܛܪ ܣܩܘܦܐ ܕܬܪܥܝ. * ܡܦܩܢܝ ܓܝܪ ܡܦܩܢܐ ܕܚܝܐ. ܘܢܦܩ 35
ܪܚܡܐ ܡܢ ܡܪܝܐ. * ܘܐܝܠܝܢ ܕܚܛܝܢ ܠܝ. ܥܘܠܐ ܥܒܕܝܢ ܠܢܦܫܗܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܣܢܐܝ ܪܚܡܝܗ ܐܢܘܢ 36
ܕܡܘܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܛ * * ܚܟܡܬܐ ܒܢܬ ܒܝܬܐ. ܘܐܩܝܡܬ ܒܗ ܥܡܘܕܐ ܫܒܥܐ. 1
* ܘܢܟܣܬ ܢܟܣܬܗ ܘܡܙܓܬ ܚܡܪܗ. ܘܛܝܒܬ ܦܬܘܪܗ. * ܘܫܕܪܬ ܥܒܕܝܗ ܕܢܩܪܘܢ ܥܠ 2
ܪܡܬܐ ܘܢܐܡܪܘܢ. * ܡܢ ܕܫܒܪ ܢܐܬܐ ܠܘܬܝ. ܘܡܢ ܕܚܣܝܪ ܕܝܢܐ ܐܡܠܠ ܥܡܗ. * ܬܘ ܐܟܘܠܘ ܡܢ 3 4
ܠܚܡܝ. ܘܐܫܬܘ ܡܢ ܚܡܪܐ ܕܡܙܓܬ ܠܟܘܢ. * ܘܫܒܘܩܘ ܡܢܟܘܢ ܚܣܝܪܘܬ ܕܝܢܟܘܢ. ܘܚܝܘ. ܘܐܘܪܚܐ 5 6
ܬܪܝܨܬܐ ܐܬܪܥܘ. * ܡܪܕܘܬܐ ܠܒܝܫܐ ܨܥܪܐ ܗܝ ܠܗ. ܘܡܟܣܢ ܠܥܘܠܐ ܡܘܡܗ. * ܠܐ ܬܟܣ 7
ܠܒܝܫܐ ܕܠܐ ܢܣܢܝܟ. ܐܠܐ ܟܣ ܠܚܟܝܡܐ ܘܢܪܚܡܟ. * ܗܒ ܥܠܬܐ ܠܚܟܝܡܐ. ܘܢܘܣܦ ܢܚܟܡ. 8 9
ܘܐܠܦ ܠܙܕܝܩܐ. ܘܢܘܣܦ ܠܡܠܦܢܘܬܗ. * ܪܫ ܚܟܡܬܐ ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܝܕܥܬܐ ܕܩܕܝܫܐ 10
ܣܘܟܠܐ. * ܡܛܠ ܕܒܗ ܢܣܓܘܢ ܝܘܡܝܟ. ܘܢܬܬܘܣܦܢ ܠܟ ܫܢܝ ܚܝܐ. * ܒܪܝ ܐܢ ܚܟܝܡ 11
ܐܢܬ. ܚܟܝܡ ܗܘܝܬ ܠܢܦܫܟ ܘܠܚܒܪܝܟ. ܘܐܢ ܬܗܘܐ ܒܝܫ. ܒܠܚܘܕܝܟ ܬܫܬܐ ܒܝܫܬܟ. 12
ܐܝܢܐ ܕܗܠܟ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܪܥܐ ܪܘܚܐ. ܘܪܕܦ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܫܒܩ ܓܝܪ ܐܘܪܚܐ ܕܟܪܡܗ. ܘܛܥܐ
ܫܒܝܠܐ ܕܦܘܠܚܢܗ. ܠܡܪܗܛ ܒܡܕܒܪܐ ܕܠܐ ܡܝܐ. ܘܡܢ ܐܘܪܚܐ ܕܕܝܫܐ ܛܥܐ ܒܐܬܪܐ ܨܗܝܐ. ܘܗܘ ܢܟܢܫ ܠܐ ܡܕܡ.

Quando firmabat cœlos, cum eo eram: & 27
quando conſtituit circulum ſuper faciẽ vora-
ginũ. Cùm firmaret nubes ſupernè, cùmque 28
firmaret fontes abyſſorũ. Quando poſuit legẽ 29
mari, & aquis ne excederent os ejus: & cùm
ſtatuit fundamenta terræ, cum eo componebã.
In me delectabatur quotidie, & jugiter corã 30
eo lætabar. Delectabar in orbe terræ ejus, & 31
gloriabar in filiis hominũ. Nunc filii audite 32
me, Beatus qui cuſtodit vias meas. Audite 33
diſciplinam, & eſte ſapientes & non aberra-
bitis. Beatus homo qui me audierit, & excu- 34
baverit ad fores meas quotidie, & obſervave-
rit limina januarũ mearũ, Nam egreſſus mei, 35
egreſſus ſunt vitæ: & eliciet favorem à Dño.
Qui autẽ peccant in me, animã ſuam lædunt: 36
& omnes oſores mei, amici ſunt mortis.

CAP. IX.

SApientia ædificavit domũ, erexitque in ea 1
ſeptem columnas. Et mactavit victimã ſuam, 2
miſcuitque vinum ſuum, & inſtruxit menſas
ſuas, Ac miſit ſervos ſuos, ut clamarent ſuper 3
colles ac dicerent, Qui eſt parvulus veniat ad 4
me, & cujus mancũ eſt judicium, & alloquar
eum. Venite, comedite de pane meo, & bibi- 5
te de vino meo ꝙ miſcui: Et deponite à vo- 6
bis defectum judicii veſtri, & vivite: et viam
rectã cogitate. Diſciplina maligno conciliat 7
infamiam, et arguit impium macula ſua. Ne 8
corripias improbum, ne te oderit: ſed corri-
pe ſapientem, ut diligat te. Da occaſionem 9
ſapienti, ut ampliùs ſapiat: et doce juſtum, ut
augeat doctrinam ſuam. Initium ſapientiæ, 10
timor Domini: et ſcientia juſti, intellectus.
Quoniam per eam multiplicabuntur dies tui, 11
et adjicientur tibi dies vitæ. Fili mi ſi ſapiens 12
es, animæ tuæ ſapiens es et amicis tuis: ſin au-
tem fueris malꝰ, tu ſolus hauries ipſa mala tua.
Qui procedit mendaciter, paſcit ventos et ab-
igit volucres cœli; deſeruit enim viam vi-
neæ ſuæ, et oblitus eſt ſemitæ miniſterii ſui,
ut currat per deſertum inaquoſum: et ab ea
via quæ trita eſt vagatur per *locum* ſitibun-
dum: et is quidem colliget nihil.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

27 28 * حين سوى السماء كنت معه حاضرا. ولما افرد عرشه فوق الرياح * حين صنع الغيوم التي في
29 30 العلا قوية. ولما جعل الينابيع التي تحت السماء وثيقة * وصنع اساس الارض قوية راسخة * كنت
31 عنده ناظمة. انا كنت الذي يسر بي كل يوم. كنت افرح بوجهه كل وقت * لما فرح اذ كمل
32 ابتداع المسكونة. واستبشر بابناء الناس * فالان يا بني اسمعني. فمغبوط الرجل الذي يسمعني
33 34 والانسان الذي يحفظ طرقي ** اذ يسهر كل يوم على ابوابي. ويحفظ اوزان مداخلي * لان
35 36 مخارجي مخارج الحياة. ومن الرب يستفيد ارادتها * فالذين يخطئون الي انما ينافقون ويظلمون
الي نفسهم * والذين يعادونني يحبون الموت .

الفصل التاسع .

1 2 * الحكمة ابتنت لها بيتا. وسندته بسبع اساطين * وذبحت ضحاياها. ومزجت في كاس خمرها.
3 4 وسوت مائدتها * وارسلت عبيدها داعية بنداء عال الي كاسها قايلة * من كان لا فطنة له
5 فليجنح الي. وقالت للذين اراءهم ناقصة * هلموا كلوا من اخباري واشربوا الخمر التي مزجتها
6 لكم * اتركوا الغباوة لتملكوا الي الابد. واطلبوا الفطنة لتعيشوا. وتقومون في معرفتكم
7 8 فقهاء * من يادب الاردياء سياخذ لذاته هوانا. ومن يوبخ المنافق يخترع العيب لذاته * لا
9 توبخ الاردياء لئلا يمقتوك. وبخ حكيما فيحبك. لا تبكت من لا حكمة له فيمقتك * اعط الحكيم
10 حكمة فيكون اوفر حكمة. عرف الصديق حكمة فيزيد قبوله * مبداء الحكمة مخافة الرب
11 وراي المقسطين فقها. والذهن الصالح هو ان تعرف الشريعة * لانك بهذه الحال تعيش زمانا
12 طويلا. وتتزايد بذلك سنين الحياة * يا بني ان تكن حكيما فلتكون حكيما لنفسك ولرفقائك.
وان تربت رديا فستعرف الاسواء وحدك. فمن يثق بالكاذب فذاك يراعي الرياح. ومثل هذا
يجاري طيورا طايرة. لانه ترك طريق كرمه. وضل في سبل فلاحته. وسلك في قفر لا ماء
فيه * وارضا برية في حزب العطاش. يجمع بيديه ما لا ثمرا له .

* *Dum ſtabiliret cælos, præſens cum eo e-* 27
ram, & dum ſeponeret thronum ſuum ſu-
per ventos. Dum faceret nubes quæ ſunt 28
in excelſo, firmas: & dum faceret fontes
qui ſub cælo ſunt, ſtabiles: Faceretq; fun- 29
damenta terræ ſtabilia ac firma, Eram a- 30
pud ipſum componens. Ego eram is in quo
lætabatur per ſingulos dies, gaudebam in
facie ipſius ſingulis momentis: Quando 31
gaviſus eſt poſt abſolutam formationem
orbis terrarum, & delectatus eſt in filiis
hominum. Nunc fili mi, audi me: beatus 32
eſt enim vir qui audit me, & homo qui
cuſtodit vias meas, 33
Vigilans quo- 34
tidie ad fores meas, & cuſtodiens menſu-
ras liminum meorum. Quoniã fores meæ 35
ſunt fores vitæ, & à Domino conſequi-
tur poſſeſſionem ejus. Qui autem peccant 36
contra me, certè iniquitatem committunt,
& delinquunt in animam ſuam: & qui
me oderunt, diligunt mortem.

CAP. IX.

SApientia ædificavit ſibi domũ, et ful- 1
civit eam ſeptem columnis. Et mactavit 2
victimas ſuas, & miſcuit in calice vinum
ſuũ, et diſpoſuit menſã ſuã, Et miſit ſer- 3
vos ſuos, vocans alto clamore ad calicem
ſuum, dicens; Qui eſt ſine prudentia, de- 4
clinet ad me. Dixitque iis quibus deeſt
conſilium; Venite, edite de panibus meis, 5
& bibite vinum quod miſcui vobis. Dere- 6
linquite imprudentiam, ut regnetis in æ-
ternum: & petite prudentiam, ut vivatis
et perſiſtatis in doctrina veſtra intelligen-
tes. Qui erudit malos, acquirit ſibi op- 7
probrium: & qui corripit iniquum, parat
ſibi ignominiam. Ne reprehendas malos, 8
ne te odio proſequantur: corripe ſapien-
tem: & amabit te. Ne redarguas eum cui
non eſt ſapientia, quia te odio habebit. Da 9
ſapienti occaſionem, & erit ſapientior:
doce juſtum ſapientiam, & augebitur ac-
ceptio ejus. Initium ſapientiæ, timor Do- 10
mini: & mens juſtorum prudentia: & me-
moria bona eſt, ut ſcias legem. Quoniam 11
hoc modo vives longum tempus, & auge-
buntur tibi anni vitæ. Fili mi, ſi fueris 12
ſapiens, tibimet ſapiens eris & ſodalibus
tuis: & ſi feras malum, experieris cala-
mitates ſolus. Qui autem fidit mendaci,
ipſe obſervat ventos: & qui talis eſt, cur-
rit poſt volucres volantes. Is enim dereli-
quit viam vineæ ſuæ, et oberravit in ſemi-
tis agri, & ambulavit per deſertum ina-
quoſum, & terram deſertam cum turba
ſitientum: colliget manibus ſuis quod
caret fructibus.

משלי : י

.quicquam *novit non &* ,*ſimplicitatis tumultuans ſtultitiæ* Mulier
13 אשת כסילות הומיה פתיות ובל־ידעה מה :
.civitatis *excelſorum ſolium* ſuper ;ſuæ domus oſtium ad *ſedit* Et
14 וישבה לפתח ביתה על־כסא מרמי קרת :
.ſuas ſemitas *dirigentes* : viam tranſeuntes *ad clamandum Ad*
15 לקרא לעברי דרך המישרים ארחותם :
dixit & ,corde *carenti* & :huc declinet ,ſimplex Quiſquis
16 מי־פתי יסר הנה וחסר־לב ואמרה
abſconditorum panis & ;*dulceſcent ſubductæ furto* Aquæ :ei
17 לו : מים־גנובים ימתקו ולחם סתרים
:ibi *manes* quòd cognovit non *Et* .*erit jucundus*
18 ינעם : ולא ידע כי־רפאים שם
.*ejus* invitati *ſepulchri* profundis in
בעמקי שאול קראיה :

CAP. X. י

filius & ;patrem *lætificabit* ſapiens Filius .Selomoh Parabolæ
1 משלי שלמה בן חכם ישמח־אב ובן
theſauri proderunt Non .ſuæ matris *mæſtitia* ſtultus
2 כסיל תוגת אמו : לא־יועילו אוצרות
faciet eſurire Non .morte à eruet juſtitia *&* :*impietatis*
3 רשע וצדקה תציל ממות : לא־ירעיב
.expellet *impiorum* pravitatem & ;juſti animam DOMINUS
יהוה נפש צדיק והות רשעים יהדף :
.ditabit ſolicitorum manus & ;*doli vola faciens* Pauperem
4 ראש עשה כף־רמיה ויד חרוצים תעשיר :
,meſſe in *ſtertens* :intelligens filius ,æſtate in *Congregans*
5 אגר בקיץ בן משכיל נרדם בקציר
os & :juſti caput *in* Benedictiones .confundens filius
6 בן מביש : ברכות לראש צדיק ופי
:benedictionem in juſti Memoria .*injuriam* operiet impiorum
7 רשעים יכסה חמס : זכר צדיק לברכה
ſuſcipiet corde Sapiens .putreſcet impiorum nomen &
8 ושם רשעים ירקב : חכם־לב יקח
,*integritate in Ambulans* .*præcipitabitur labiis* ſtultus & ;præcepta
9 מצות ואויל שפתים ילבט : הולך בתום
Annuens .*innoteſcet* ſuas vias depravans & :confidenter *ibit*
10 ילך בטח ומעקש דרכיו יודע : קרץ
.*præcipitabitur labiis* ſtultus & ;dolorem dabit ,oculo
עין יתן עצבת ואויל שפתים ילבט :
.*rapinam* operiet impiorum os & ;juſti os *vitarum* Vena
11 מקור חיים פי צדיק ופי רשעים יכסה חמס :
prævaricationes omnes *ſuper* & ;*contentiones ſuſcitabit* Odium
12 שנאה תעורר מדנים ועל כל־פשעים
invenietur intelligentis labiis In .charitas *operiet*
13 תכסה אהבה : בשפתי נבון תמצא
Sapientes .corde *carentis* corpori virga & :ſapientia
14 חכמה ושבט לגו חסר־לב : חכמים
.propinqua contritio ſtulti os & ;ſcientiam abſcondent
יצפנו־דעת ופי אויל מחתה קרבה :
exhauſtorum contritio :ejus fortitudinis urbs divitis *Affluentia*
15 הון עשיר קרית עזו מחתת דלים
impii *proventus* :*vitas* ad juſti Opus .eorum egeſtas
16 רישם : פעלת־צדיק לחיים תבואת רשע
.peccatum ad
לחטאת :

Verſio VULG. LAT.

13 Mulier ſtulta & clamoſa, plenáq; illecebris, & nihil omnino ſciens, 14 Sedet in foribus domûs ſuæ ſuper ſellam in 15 excelſo urbis loco, Ut vocaret tranſeuntes per viam, & 16 pergentes itinere ſuo; Qui eſt parvulus, declinet ad me. Et 17 vecordi locuta eſt; Aquæ furtivæ dulciores ſunt, & panis 18 abſconditus ſuavior. Et ignoravit quòd ibi ſint gigantes, & in profundis inferni convivæ ejus.

Parabolæ SALOMONIS.

CAP. X.

1 FIlius ſapiens lætificat patrẽ: filius verò ſtultus mœſtitia eſt 2 matris ſuæ. Nil proderunt theſauri impietatis: juſtitia 3 verò liberabit à morte. Non affliget Dominus fame animam juſti, & inſidias impio- 4 rum ſubvertet. Egeſtatem operata eſt manus remiſſa: manus autem fortium divitias parat. Qui nititur mendaciis, hic paſcit ventos: idem autem ipſe ſequitur aves volan- 5 tes. Qui congregat in meſſe, filius ſapiens eſt: qui autem ſtertit æſtate, filius confuſio- 6 nis. Benedictio Domini ſuper caput juſti: os autem im- 7 piorum operit iniquitas. Memoria juſti cum laudibus: & nomen impiorum putreſcet. 8 Sapiens corde præcepta ſuſcipit: ſtultus cæditur labiis. 9 Qui ambulat ſimpliciter, ambulat confidenter: qui autem depravat vias ſuas, manifeſtus 10 erit. Qui annuit oculo, dabit dolorem: & ſtultus labiis ver- 11 berabitur. Vena vitæ, os juſti: & os impiorum operit iniqui- 12 tatem. Odium ſuſcitat rixas: & univerſa delicta operit cha- 13 ritas. In labiis ſapientis invenitur ſapientia: & virga in dorſo ejus qui indiget 14 corde. Sapientes abſcondunt ſcientiam: os autem ſtulti 15 confuſioni proximum eſt. Subſtantia divitis, urbs fortitudinis ejus: pavor pauperum, 16 egeſtas eorum. Opus juſti ad vitam: fructus autem impii ad peccatum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

13 † Γυνὴ ἄφρων ϗ θρασεῖα ἐνδεὴς ψωμοῦ γίνεται, † ἣ οὐκ ἐπίσταται αἰσχύνην. † 14 Ἐκάθισεν ἐπὶ θύραις τοῦ ἑαυτῆς οἴκου, † ἐπὶ δίφρου (ζ) ἐμφανῶς ἐν πλατείαις, 15 † Προσκαλουμένη τοὺς (η) παριόντας † ϗ κατευθύνοντας ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν· † 16 † Ὅς ἐστιν ὑμῶν ἀφρονέστατος, ἐκκλινάτω πρὸς μέ· † (θ) ϗ τοῖς ἐνδεέσι φρονήσεως 17 παρακελεύομαι, λέγουσα, † Ἄρτων κρυφίων ἡδέως ἅψασθε, † ϗ ὕδατος 18 κλοπῆς γλυκεροῦ. † Ὁ δὲ οὐκ οἶδεν ὅτι γηγενεῖς παρ' αὐτῇ ὄλλυνται, † καὶ ἐπὶ (ι) πέταυρον ᾅδου συναντᾷ. † ἀλλὰ ἀποπήδησον, μὴ (ʹ) χρονίσῃς ἐν τῷ τόπῳ, † μηδὲ (κ) ἐπιστήσῃς τὸ σὸν ὄμμα πρὸς αὐτήν, † οὕτως γὰρ διαβήσῃ ὕδωρ ἀλλότριον. (λ) † ἀπὸ δὲ ὕδατος ἀλλοτρίου ἀπόσχου, † ϗ ἀπὸ πηγῆς ἀλλοτρίας μὴ πίῃς, † ἵνα πολὺν (μ) ζήσῃς χρόνον, † προστεθῇ δέ σοι ἔτη ζωῆς.

MS. A. (ζ) ἐνφανῶς (η) παριόντας ὁδὸν, ϗ (θ) ἐνδεέσι δὲ φρονήσεως (ι) πέ-
ρον (ʹ) ἐγχρονίσῃς (κ) ἐπιστῇς (λ) † ϗ ὑπερβήσῃ ποταμὸν ἀλλότριον. ἀπ

(m) Mulier inſipiens, & au
indiga buccellæ fit, quæ non
vit pudorem: Sedet in fori
ſuæ domus, ſuper ſellam pa
in plateis, Advocans præter
tes, & eos qui rectà pergu
viis ſuis; Qui eſt veſtrum in
piens ſimus, divertat ad me
& indigentibus ſapientiâ præ
pio, dicens; Panes occult
benter attingite, & aquam
(n) dulcem. Ipſe autem ne
vit, quia (o) terrigenæ
am pereunt, & in (p)
inferni occurrit. Sed
moreris in loco, neque
lum tuum ad eam: ita enim
bis aquam (q) alienam.
qua autem aliena abſtine
de fonte alieno ne biberis
gum vivas tempus, adjicia
etiam tibi anni vitæ.

ΚΕΦ. ι΄.

1 † ΥἹὸς σοφὸς εὐφραίνει πατέρα, † υἱὸς δὲ ἄφρων λύπη τῇ μητρί. 2 † Οὐκ ὠφελήσουσι θησαυροὶ ἀνόμους, † δικαιοσύνη δὲ 3 ῥύσεται ἐκ θανάτου. † Οὐ λιμοκτονήσει κύριος ψυχὴν δικαίαν, † ζωὴν δὲ ἀσε- 4 βῶν ἀνατρέψει. † Πενία ἄνδρα ταπεινοῖ, † χεῖρες δὲ ἀνδρείων πλουτίζουσιν. † υἱὸς πεπαιδευμένος σοφὸς ἔσται, † τῷ δὲ 5 ἄφρονι διακόνῳ χρήσεται. † Διεσώθη ἀπὸ καύματος υἱὸς νοήμων, † ἀνεμόφθορος δὲ γίνεται ἐν ἀμητῷ υἱὸς παράνο- 6 μος. † Εὐλογία κυρίου (α) ἐπὶ κεφαλὴν δικαίου, † στόμα δὲ ἀσεβῶν καλύψει 7 πένθος ἄωρον. † Μνήμη δικαίων μετ' ἐγκωμίων, † ὄνομα δὲ ἀσεβοῦς σβέννυται. 8 † Σοφὸς καρδίᾳ δέξεται ἐντολάς, † ὁ δὲ ἄστεγος χείλεσι σκολιάζων ὑποσκελισθή- 9 σεται. † Ὃς πορεύεται ἁπλῶς, πορεύεται πεποιθώς· † ὁ δὲ διαστρέφων τὰς ὁ- 10 δοὺς αὐτοῦ, γνωσθήσεται. † Ὁ ἐννεύων ὀφθαλμοῖς μετὰ δόλου, συνάγει ἀνδράσι λύπας· † ὁ δὲ ἐλέγχων μετὰ παῤῥη- 11 σίας, εἰρηνοποιεῖ. † Πηγὴ ζωῆς ἐν χειρὶ δικαίου, † στόμα δὲ ἀσεβοῦς καλύψει 12 ἀπώλεια. † Μῖσος ἐγείρει νεῖκος, † πάντας δὲ τοὺς μὴ φιλονεικοῦντας καλύ- 13 πτει φιλία. † Ὃς ἐκ χειλέων προφέρει σοφίαν, † ῥάβδῳ τύπτει ἄνδρα ἀκάρδι- 14 ον. † Σοφοὶ κρύψουσιν αἴσθησιν, † στόμα 15 δὲ προπετοῦς ἐγγίζει συντριβῇ. † Κτῆσις πλουσίων πόλις ὀχυρά, † συντριβὴ 16 δὲ ἀσεβῶν πενία. † Ἔργα δικαίων ζωὴν ποιεῖ, † καρποὶ δὲ ἀσεβῶν ἁμαρτίας.

MS. A. (α) ἐπὶ κεφαλῆς

CAP. X.

FIlius (a) ſapiens lætifica
trem: filius verò ſtultus m
tia matri. Non proderun
ri iniquis: juſtitia autem
bit à morte. Non (b)
Dominus fame animam juſ
viam autem impiorum
Paupertas virum humilia
nus autem fortium divi
lius eruditus ſapiens erit
dente autem miniſtro
Incolumis evaſit ab æſtu
telligens; corrumpitur autem
to fit in meſſe filius (e)
Benedictio Domini ſuper
ſti: os autem impiorum
(f) luctum intempeſtivum
ria juſtorum (g) cum
nomen autem impii (h)
tur. Sapiens corde ſuſcipie
data: qui autem non
labiis, (i) perverſè agens
tabitur. Qui ambulat
pliciter, ambulat fidens:
tem (l) diſtorquet vias ſuas
noſcetur. Qui innuit
dolo, congregat viris
qui autem arguit cum
pacificat. Fons vitæ in
nu juſti: os autem impii
perditio. Odium ſuſcitat
tentionem: omnes autem
contentioſos operit amicitia
Qui è labiis profert
(q) virgâ percutit virum
dem. (r) Sapientes occult
ſenſum: os autem temerarii
propinquat contritioni.
divitum civitas (ſ)
contritio autem impiorum
tas. Opera juſtorum vitam
unt: (u) fructus autem
(x) peccata.

תרגום TARGUM.

13 אתתא סכלתא ופרידתא שברתה ולא ידעה טבתא : ויתבה על תרע ביתא על
14 15 כורסיא רמא ועשינא : וקריא לעברי ארחא דתריצי אורחתהון : מטול מן דשבר
16 17 נאתא לותה וחסיר רעינא ואמרה ליה : מיא גנוביא חלין ולחמא דטיטורא בסימא :
18 ולא ידע דגוברי אפלת תמן ובעמקי דשיול כל דמזמנין לה :

י

1 2 מתלוי דשלמה בר חכימא נחדי אבוי וברא סכלא מחמץ לאמיה : לא מותרין
3 אוצרי דרשיעא וצדקתא מפציא מן מותא בישא : לא מכפן אלהא נפשיה דצדיקא
4 וקנינא דרשיעי נסחוף : מסכנותא ממככא לגברא רמיא וידא דכשרא מעתרא
5 להון : דפליח בקיטא ברא סוכלתנא הוא ודדמיך בחצדא ברא הוא מבהתנא :
6 7 ברכתא תהוין על רישי דצדיקיא ובפומהון דרשיעי נכסי חטופא : דוכרנא דצדיקי
8 ברכתא ושמא דרשיעי נדעך : דחכים לביה יקבל פוקדנא וסכלא בספותיה
9 10 מתאחד : דמהלך בתמימותא ניזל בסעדא ודמעקמן אורחתיה נתידע : דרמז
11 בעינוהי יהב כאבא וסליף בספותיה מתאחד : מבועא דחיי פומא דצדיקי ופומהון
12 דרשיעי נכסא חטופא : סניאתא תגרג תגרי ועל כלהון סורחני מכסא רחמותא :
13 14 בספותי דסוכלתנא תשתכח חכמתא ושבטא לפגרא דחסר רעינא : חכימי נטשון
15 ידיעתא ופומיה דשטיא שציא קריב : קנינא דעתירא כרכא דעושניה
16 ושציא דמסכנא צריכותהון : עובדי דצדיקא לחיי עללתיה דרשיעא
לחטותא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Mulier ſtulta & vaga, inſipiens, & neſcit bonum. Et habitat
domus ſuæ, ſuper ſellam elevatam & firmam. Et vocat tranſeunte
viam, quorum viæ rectæ ſunt. Ut inſipiens veniat ad eam, &
genti intellectu dicit: Aquæ furtivæ dulces ſunt, & panis abſc
ſuavis. Et neſcit quoniam gigantes dejicit ibi, & in profund
omnes qui invitati ſunt ab ea.

CAP. X.

PArabolæ Salomonis. Filius ſapiens lætificat patrem ſuum, &
ſtultus mæſtitia eſt matri ſuæ. Non proſunt theſauri impi
ſtitia liberat à morte mala. Non facit eſurire Dominus animam
ſubſtantiam impiorum expellet. Paupertas attenuat virum
& manus recti divitias parat ſibi, Qui operatur in æſtate,
dens eſt; & qui dormit in meſſe, filius eſt confuſionis. Bene
erunt ſuper capita juſtorum, & in ore impiorum operietur rapina
moria juſtorum benedictio erit, & nomen impiorum exting
piens corde ſuſcipiet præcepta, & ſtultus labiis ſuis capietur.
bulat in perfectione, ambulat in ſpe, & qui pervertit vias ſuas
erit. Qui annuit oculis ſuis, dabit triſtitiam, & perverſus
comprehendetur. Fons vitæ, os juſtorum, & os impiorum
git. Odium incitat rixas, at univerſa delicta operit charitas.
is prudentis invenitur ſapientia, & virga corpori ejus qui in
tellectu. Sapientes abſcondunt ſcientiam, & ori ſtultorum
proxima. Subſtantia divitis civitas eſt *roboris* ejus, &
perum neceſſitas eorum. Opera juſti ad vitam, fructus
ad peccatum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

13 ܐܢܬܬܐ ܚܣܝܪܬ ܪܥܝܢܐ ܡܫܒܚܢܝܬܐ. * ܝܬܒܐ ܠܘܬ ܬܪܥܐ ܕܒܝܬܗ. ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܪܡܐ. * ܘܩܪܝܐ
14 ܠܕܥܒܪܝܢ ܐܘܪܚܐ. ܕܬܪܝܨܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܐܡܪܐ. * ܡܢܘ ܕܫܒܪ. ܢܐܬܐ ܠܘܬܝ. ܘܕܚܣܝܪ ܕܝܢܗ
15 ܘܐܡܪ ܠܗ. * ܡܝܐ ܓܢܝܒܐ ܚܠܝܢ. ܘܠܚܡܐ ܡܛܫܝܐ ܒܣܝܡ. * ܘܠܐ ܝܕܥ ܕܓܢܒܪܐ ܠܘܬܗ
16 ܐܒܕܝܢ. ܘܒܥܘܡܩܐ ܕܫܝܘܠ. ܟܠ ܕܡܬܩܪܝܢ ܠܗ. * ܐܠܐ ܥܪܘܩ. ܘܠܐ ܬܬܘܚܪ ܒܐܬܪܐ ܗܘ. ܘܠܐ
17 18 ܬܪܡܐ ܒܗ ܥܝܢܝܟ. ܗܟܢܐ ܓܝܪ ܬܥܒܪ ܡܝܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܢܗܪܐ ܢܘܟܪܝܐ ܬܥܒܪ. ܘܬܥܪܘܩ ܡܢ
ܡܝܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܡܢ ܡܝܐ ܢܘܟܪܝܐ ܠܐ ܬܫܬܐ. ܐܝܟ ܕܢܣܓܘܢ ܝܘܡܝܟ ܘܫܢܝܐ ܕܚܝܐ
ܢܬܬܘܣܦܘܢ ܠܟ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *

1 * ܒܪܐ ܚܟܝܡܐ. ܡܚܕܐ ܠܐܒܘܗܝ.
2 ܘܒܪܐ ܣܟܠܐ ܒܗܬܬܐ ܠܐܡܗ. * ܠܐ ܢܘܬܪܘܢ ܣܝܡܬܗܘܢ ܕܥܘܠܐ. ܙܕܝܩܘܬܐ ܕܝܢ ܡܦܨܝܐ
3 ܡܢ ܡܘܬܐ. * ܠܐ ܓܝܪ ܡܟܦܢ ܡܪܝܐ ܢܦܫܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܩܢܝܢܐ ܕܥܘܠܐ ܡܗܦܟ. * ܡܣܟܢܘܬܐ
4 5 ܡܡܟܟܐ ܠܓܒܪܐ. ܐܝܕܝܐ ܕܝܢ ܕܚܪܝܦܐ ܡܥܬܪܢ. * ܕܟܢܫ ܒܩܝܛܐ. ܒܪܐ ܗܘ ܡܗܘܢܐ.
6 ܘܕܕܡܟ ܒܚܨܕܐ. ܒܪܐ ܗܘ ܡܒܗܬܢܐ. * ܒܘܪܟܬܐ ܠܪܫܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܦܘܡܗܘܢ ܕܥܘܠܐ
7 8 ܢܟܣܐ ܥܘܠܐ. * ܕܘܟܪܢܗ ܕܙܕܝܩܐ ܠܒܘܪܟܬܐ. ܫܡܐ ܕܝܢ ܕܥܘܠܐ ܢܕܥܟ. * ܕܚܟܝܡ ܒܠܒܗ
9 ܢܩܒܠ ܦܘܩܕܢܐ. ܘܕܣܟܠܢ ܣܦܘܬܗ ܡܬܬܚܝܠ. * ܕܡܗܠܟ ܒܬܡܝܡܘܬܐ ܬܟܝܠ. ܘܕܡܥܩܡ
10 ܐܘܪܚܬܗ ܢܬܝܕܥ. * ܕܪܡܙ ܒܥܝܢܘܗܝ ܒܢܟܠܐ. ܝܗܒ ܟܐܒܐ. ܘܕܡܟܣ
11 ܒܓܠܝܐ. ܥܒܕ ܫܠܡܐ. * ܡܒܘܥܐ ܕܚܝܐ ܦܘܡܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܦܘܡܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܢܟܣܐ
12 ܥܘܠܐ. * ܣܢܐܬܐ ܡܥܝܪܐ ܕܝܢܐ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܥܘܠܐ ܬܟܣܐ ܒܗܬܬܐ. * ܡܢ ܕܡܢ ܣܦܘܬܗ ܡܦܩ
13 14 ܚܟܡܬܐ. ܒܫܒܛܐ ܡܚܐ ܠܓܒܪܐ ܚܣܝܪ ܠܒܐ. * ܚܟܝܡܐ ܢܛܫܘܢ ܝܕܥܬܐ. ܘܦܘܡܐ
15 ܕܡܣܪܗܒ ܩܪܝܒ ܗܘ ܠܬܒܪܐ. * ܩܢܝܢܐ ܕܥܬܝܪܐ. ܩܘܪܝܐ ܚܣܝܢܬܐ. ܘܬܒܪܐ ܕܡܣܟܢܐ
16 ܡܣܟܢܘܬܗܘܢ. * ܥܒܕܗ ܕܙܕܝܩܐ ܠܚܝܐ. ܘܥܠܠܬܗ ܕܥܘܠܐ ܠܚܛܗܐ.

Mulier expers judicii adulatrix, Aſſidet oſtio 13 14 domûs ſuæ in ſede ſublimi: Vocátque tranſeuntes viam, quorum rectæ ſunt ſemitæ, & 15 ait; Qui parvulus eſt, veniat ad me, & cujus 16 mancum eſt judicium, & dicam ei; Aquæ 17 furtivæ, dulces ſunt: & panis abſconditus jucundus. Et neſcit quòd gigantes apud 18 eam pereunt, & in profundo inferni, omnes invitati ab ea. Verùm exili, & ne moreris in loco illo, neque figas in eum oculos tuos. Sic enim pertranſibis aquas alienas, & fluvios extraneos evades, & effugies aquas alienas. Et ex aquis alienis ne bibas, ut copia dierum & anni vitæ addantur tibi.

CAP. X.

Filius ſapiens lætificat patrem ſuum: at filius 1 inſipiens pudori eſt matri ſuæ. Non eſt uti- 2 litas in theſauris iniqui: juſtitia verò liberat à morte. Non enim fame affligit Dominus 3 animam juſti, at opes impiorum evertit. Pau- 4 pertas deprimit virũ: manus autem ſolertium ditant. Qui operatur in æſtate, filius eſt pru- 5 dens: at qui dormit in meſſe, filius eſt confundens. Benedictio erit ſuper caput juſti: os 6 autem impiorum operiet impietas. Memoria 7 juſti, ad benedictioné: nomen autem iniquorum extinguetur. Qui ſapiens eſt corde, ſuſ- 8 cipit præceptum: & cujus ſtulta ſunt labia, decipitur. Qui ambulat ſimpliciter, incedit 9 confidenter: cujus autem obliquæ ſunt viæ, deprehendetur. Annuens oculis ſuis cum 10 fraude, affert dolorem: & qui corripit palàm, operatur ſalutem. Fons vitæ, os juſti: os au- 11 tem iniquorum tegit iniquitas. Odium 12 excitabit litem, & omnes iniquos operiet confuſio. Qui è labiis ſuis profert ſapien- 13 tiam, virgâ percutit virum expertem judicio. Sapientes abſcondunt ſcientiam: & os 14 temerarium, proximum eſt ruinæ. Opes divi- 15 tum, urbes munitæ: contritio autem pauperũ, egeſtas eorum. Opus juſti, ad vitam: pro- 16 ventus autem impii, ad peccatum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

13 14 * المراة الجاهلة الجسورة تحصل في عوز من الخير * وما تعرف خجلا * فربما جلست على ابواب
15 16 منزلها على كرسي في الشوارع ظاهرا * مستدعية المجتازين المقومة طريقهم * من هو فيكم
17 جزيل الغباوة فليجنح الي * واوعز الي من رايه ناقص قايلة * المسوا الخيرات الخفية بالتذاذ
18 وماء السرقة الحلو * ومن يسمعها ما قد علم ان الارضيين منها يهلكون * وانه سيصدم مغص
الهاوية * لاكن اطفر وابدا لا تلبث في ذلك الموضع * ولا تنصبن عينيك نحوها * فانك هكذا
تعبر الماء الغريب وتطفر نهر الاجنبي * ابتعد من الماء الغريب ولا تشربن من عين
ليست لك * لتعيش زمانا طويلا وتتزايد لك سنو الحياة *

الفصل العاشر *

1 2 * الابن الحكيم يسر اباه * والابن الغبي يحزن امه * كنوز الاموال ما تنفع الاثمة * والعدل ينجي
3 من الموت * الرب لن يقتل بالجوع نفسا عادلة * ويحطم حياة المنافقين * الفقر يذل الانسان *
4 ايادي الشجعان تستغني * الابن المتادب سيكون حكيما * والجاهل يستعمل خادما * الابن اللبيب
5 يتخلص من الحر * الابن المتجاوز الشريعة يكون في الحصاد باليا بريح السوء * بركة الرب على
راس ذي العدل * فم المنافقين يغطي نوحا لا حد له * ذكر المقسطين يمدح * واسم المنافق
يخمد * القلب الحكيم يقبل الوصايا * ومن لا غطاء على شفتيه يتعرقل من المعوجات * من
يسلك بلا تصنع سادجا يسلك واثقا * من يعكس طرقه ستعرف حاله * من يغمز بعينيه بغش
يجمع للرجال احزانا * ومن يوبخ بمجاهرة يصطنع سلامة * عين الحياة في يد المقسط * وفم
المنافقين يحجبه الهلاك * البغضة تنهض عليه * كافة الذين لا يحكمون تغشاهم الصداقة
* من يبدي من شفتيه حكمة يضرب بعصا رجلا لا قلب له * الحكماء يكتمون الحس * وفم
الحسود يصاقبه الهشم * قنية الاغنياء مدينة حصينة * والفقر يهشم المنافقين * اعمال المقسطين
تصنع الحياة * وغلات المنافقين خطية *

Mulier ſtulta, procax, incidet in penuriam 13 *opum, & non novit pudorem. Et quan-* 14 *doque ſedet ad fores domûs ſuæ ſuper ſedem in plateis publicè, Vocans tranſeun-* 15 *tes, quorum via recta eſt, dicens; Qui* 16 *inter vos ſtoliditate præſtat, declinet ad me. Et propoſuit iis qui mente ſunt expertes, dicens; Attrectate bona occulta, cum* 17 *delectatione, & aquam furti dulcem. Qui* 18 *verò acquieſcit illi, nondum novit quòd terreſtres per eã pereunt: & is impinget in laqueum inferni. At verò fuge proſiliens: ne moreris eo in loco: & nullo modo extollas oculum tuum verſûs eam. Atque hoc quidem modo tranſibis aquam alienam, & valebis tranſilire flumen peregrinum. Recede ab aqua aliena, & ne bibas de fonte non tuo, ut vivas longum tempus, & augeantur tibi anni vitæ.*

CAP. X.

Filius ſapiens lætificat patrem ſuum: 1 *& filius inſipiens contriſtat matrem ſuam. Theſauri pecuniarum non proſunt* 2 *iniquis: & juſtitia liberat à morte. Nullo* 3 *modo occîdet Dominus fame animam juſtam: ſed confringet vitam ſceleſtorum. Paupertas deprimet hominem: manus* 4 *fortium diteſcunt. Filius morigeratus e-* 5 *rit ſapiens: & ſtultus adhibebitur in ſervum. Filius prudens liberabitur ab æſtu: filius tranſgrediens legem, peribit in meſſe vento uredinis. Benedictio Domini ſuper* 6 *caput juſti: ori iniquorum dabitur gemitus ſine termino. Memoria juſtorum lau-* 7 *dabitur: & nomen ſceleſti tabeſcet. Cor* 8 *ſapiens recipit monita: & qui non habet operculum ſuper labiis ſuis, implicabitur obliquitatibus. Qui incedit abſque ar-* 9 *tificio ſimplex, incedit ſecurus: qui pervertit vias ſuas, deprehendetur qualitas ejus. Qui annuit oculis ſuis cum fraude,* 10 *congerit hominibus afflictiones: qui autem corripit in aperto, operatur ſalutem. Fons vitæ in manu juſti: & os* 11 *iniquorum velabit interitus, & odium* 12 *excitabitur in illud. Omnes qui non præcipitant ſeſe, operiet amor. Qui pro-* 13 *fert de labiis ſuis ſapientiam, percutit virgâ virum excordem. Sapientes abſ-* 14 *condunt prudentiam: & ori invidi occurrit fractio. Poſſeſſio divitum, ci-* 15 *vitas munita: & egeſtas conteret impios. Opera juſtorum gignunt vitam:* 16 *& fructus ſceleſtorum, peccatum.*

משלי : יא

,increpationem deſerens & : correctionem cuſtodiens vitas ad Semita
17 ארח לחיים שומר מוסר ועוזב תוכחת
,infamiam proferens & : falſitatis labiis odium Operiens .faciens errare
18 מתעה: מכסה שנאה שפתי־שקר ומוציא דבה
:prævaricatio ceſſabit non verborum multitudine In .ſtultus ipſe
19 הוא כסיל: ברב דברים לא יחדל־פשע
lingua electum Argentum .intelligens ,ſua labia prohibens &
20 וחושך שפתיו משכיל: כסף נבחר לשון
paſcent juſti Labia .parum ut impiorum cor : juſti
21 צדיק לב רשעים כמעט: שפתי צדיק ירעו
Benedictio .morientur cordis defectu in ſtulti & ;multos
22 רבים ואוילים בחסר־לב ימותו: ברכת
.ſecum dolorem adjiciet non & ;ditabit ipſa Domini
יהוה היא תעשיר ולא יוסף עצב עמה:
viro ſapientia & ;ſcelus facere ſtulto ridere Veluti
23 כשחוק לכסיל עשות זמה וחכמה לאיש
deſiderium & ;ei veniet ipſa impii Formido .intelligentia
24 תבונה: מגורת רשע היא תבואנו ותאות
juſtus & : impius non & ,turbinis tranſire Sicut .dabit juſtorum
25 צדיקים יתן: כעבור סופה ואין רשע וצדיק
fumus ſicut & ,dentibus acetum Sicut .ſeculi fundamentum
26 יסוד עולם: כחמץ לשנים וכעשן
apponet Domini Timor .illum mittentibus piger ſic : oculis
27 לעינים כן העצל לשלחיו: יראת יהוה תוסיף
juſtorum Expectatio .breviabuntur impiorum anni & : dies
28 ימים ושנות רשעים תקצרנה: תוחלת צדיקים
via perfecto Fortitudo .peribit impiorum ſpes & : lætitia
29 שמחה ותקות רשעים תאבד: מעוז לתם דרך
ſeculum in Juſtus .iniquitatem operantibus contritio & ;Domini
30 יהוה ומחתה לפעלי און: צדיק לעולם
juſti Os .terram habitabunt non impii & :nutabit non
31 בל־ימוט ורשעים לא ישכנו־ארץ: פי צדיק
juſti Labia .ſuccidetur perverſitatum lingua & ;ſapientiam propagabit
32 ינוב חכמה ולשון תהפכות תכרת: שפתי צדיק
.perverſitates impiorum os & : voluntatem ſcient
ידעון רצון ופי רשעים תהפכות:

CAP. XI. יא

perfectus lapis & :DOMINI abominatio doli Bilances
1 מאזני מרמה תועבת יהוה ואבן שלמה
cum & ;ignominia venit & ,ſuperbia Venit .ejus voluntas
2 רצונו: בא זדון ויבא קלון ואת
perverſitas & ;eos ducet rectorum Integritas .ſapientia modeſtis
3 צנועים חכמה: תמת ישרים תנחם וסלף
die in affluentia proderit Non .eos devaſtabit prævaricatorum
4 בוגדים ושדם: לא־יועיל הון ביום
integri Juſtitia .morte à eruet juſtitia & : iræ
5 עברה וצדקה תציל ממות: צדקת תמים
Juſtitia .impius corruet ſua impietate in & ;ejus viam diriget
6 תישר דרכו וברשעתו יפל רשע: צדקת
.capientur prævaricatores pravitate in & : eos eruet rectorum
ישרים תצילם ובהות בגדים ילכדו:
expectatio & : ſpes peribit ,impium hominem moriendo In
7 במות אדם רשע תאבד תקוה ותוחלת
veniet & : eſt liberatus anguſtia de Juſtus .periit roborum
8 אונים אבדה: צדיק מצרה נחלץ ויבא
ſcientia in & : ſuum ſodalem corrumpet hypocrita ore In .eo pro impius
9 רשע תחתיו: בפה חנף ישחת רעהו ובדעת
.eruentur juſti
צדיקים יחלצו:

Verſio VULG. LAT.

17 Via vitæ, cuſtodienti diſcipli-
nam: qui autem increpationes
18 relinquit, errat. Abſcondunt
odiũ labia mendacia: qui pro-
fert contumeliã, inſipiens eſt.
19 In multiloquio non deerit pec-
catum : qui autem moderatur
labia ſua, prudentiſſimus eſt.
20 Argentum electum, lingua ju-
ſti : cor autem impiorum pro
21 nihilo. Labia juſti erudiunt
plurimos : qui autem indocti
ſunt, in cordis egeſtate mori-
22 entur. Benedictio Domini di-
vites facit, nec ſociabitur eis
23 afflictio. Quaſi per riſum ſtul-
tus operatur ſcelus : ſapien-
tia autem eſt viro prudentia.
24 Quod timet impius, veniet ſu-
per eum : deſiderium ſuum ju-
25 ſtis dabitur. Quaſi tempeſtas
tranſiens non erit impius : ju-
ſtus autem quaſi fundamentum
26 ſempiternum. Sicut acetum
dentibus, & fumus oculis, ſic
piger his qui miſerunt eum.
27 Timor Domini apponet dies:
& anni impiorum breviabun-
28 tur. Expectatio juſtorum læ-
titia : ſpes autem impiorum
29 peribit. Fortitudo ſimplicis
via Domini : & pavor his, qui
30 operantur malum. Juſtus in
æternum non commovebitur :
impii autem non habitabunt
31 ſuper terram. Os juſti partu-
riet ſapientiam : lingua pra-
32 vorum peribit. Labia juſti
conſiderant placita : & os im-
piorum perverſa.

CAP. XI.

1 STatera doloſa, abominatio
eſt apud Dominum : & pon-
2 dus æquum, voluntas ejus. Ubi
fuerit ſuperbia, ibi erit & con-
tumelia : ubi autem eſt humili-
3 tas, ibi & ſapientia. Simpli-
citas juſtorum diriget eos : &
ſupplantatio perverſorum va-
4 ſtabit illos. Non proderunt
divitiæ in die ultionis : juſtitia
5 autem liberabit à morte. Juſti-
tia ſimplicis diriget viam ejus :
& in impietate ſua corruet im-
6 pius. Juſtitia rectorum libera-
bit eos : & in inſidiis ſuis capi-
7 entur iniqui. Mortuo homine
impio, nulla erit ultrà ſpes : &
expectatio ſolicitorũ peribit.
8 Juſtus de anguſtia liberatꝰ eſt :
9 & tradetur impius pro eo. Si-
mulator ore decipit amicum
ſuum : juſti autem liberabun-
tur ſcientiâ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 †(β) Ὁδοὺς δικαίας ζωῆς φυλάσσει παι-
δεία, † παιδεία δὲ ἀνεξέλεγκτος πλα-
18 νᾶται. † Καλύπτουσιν ἔχθραν χείλη δί-
καια, † οἱ δὲ ἐκφέροντες λοιδορίας ἀ-
19 φρονέστατοί εἰσιν. † Ἐκ πολυλογίας οὐκ
(γ) ἐκφεύξῃ ἁμαρτίαν, φειδόμενος δὲ χει-
20 λέων, νοήμων ἔσῃ. † Ἄργυρος (δ) πε-
πυρωμένος γλῶσσα δικαίου, καρδία δὲ
21 ἀσεβοῦς ἐκλείψει. † Χείλη δικαίων ἐπί-
σταται ὑψηλὰ, † οἱ δὲ ἄφρονες ἐν ἐν-
22 δείᾳ τελευτῶσιν. † Εὐλογία κυρίου ἐπὶ
(ε) κεφαλὴν δικαίου, αὕτη πλουτίζει, †
καὶ οὐ μὴ προστεθῇ αὐτῇ λύπη ἐν καρδίᾳ.
23 † Ἐν γέλωτι ἄφρων πράσσει κακὰ, † ἡ
24 δὲ σοφία ἀνδρὶ τίκτει φρόνησιν. † Ἐν ἀ-
πωλείᾳ ἀσεβὴς περιφέρεται, (ζ) † ἐπιθυ-
25 μία δὲ δικαίου δεκτή. (η) † Παραπορευ-
ομένης καταιγίδος ἀφανίζεται (") ἀσεβὴς,
† δίκαιος δὲ ἐκκλίνας σώζεται εἰς τὸν
26 αἰῶνα. † Ὥσπερ ὄμφαξ ὀδοῦσι (θ) βλα-
βερὸν, καὶ καπνὸς ὄμμασιν, † οὕτως παρανο-
27 μία τοῖς χρωμένοις αὐτῇ. † Φόβος
κυρίου προστίθησιν ἡμέρας, † ἔτη δὲ ἀ-
28 σεβῶν ὀλιγωθήσεται. † Ἐγχρονίζει δι-
καίοις εὐφροσύνη, † ἐλπὶς δὲ ἀσεβῶν (ι)
29 ἀπολεῖται. † Ὀχύρωμα ὁσίου φόβος
κυρίου, † συντριβὴ δὲ τοῖς ἐργαζομένοις
30 κακά. † Δίκαιος (κ) εἰς τὸν αἰῶνα οὐκ
ἐνδώσει, † ἀσεβεῖς δὲ οὐκ οἰκήσουσι γῆν.
31 † Στόμα δικαίου ἀποστάζει σοφίαν, †
32 γλῶσσα δὲ ἀδίκου ἐξολεῖται. † Χείλη
ἀνδρῶν δικαίων ἀποστάζει χάριτας, †
στόμα δὲ ἀσεβῶν ἀποστρέφεται.

MS.A. (β) Ὁδοὺς ζωῆς φυλάσσει (γ) ἐκφεύξεται ἁμαρτία,
πυρωμένος (ε) κεφαλῆς δικαίου, καὶ οὐ μὴ προστεθῇ (ζ) †
ἄφρων φρονίμῳ, ἐπιθυμία (η) † καρδία δὲ ἀσεβοῦς ἐκλείψει Παραπορευ-
ομένης (") ὁ ἀσεβὴς, (θ) βλαβερὸς, (ι) ὄλλυται. (κ) τὸν αἰῶνα

(y) Vias juſtas vitæ cuſtod
ſciplina : (z) diſciplina aute
carens increpatione errat.
riunt inimicitiam labia
qui autem proferunt (cc)
melias, inſipientiſſimi
multiloquentia non (co)
peccatum : parcens autem
ſenſatus erit. Argentum
examinatum, lingua juſti : cor a
tem impii (dd) deficiet.
juſtorum ſciunt (ee) ex
ſipientes autem in (ff)
moriuntur. Benedictio Dom
ſuper caput juſti : hæc ditat
non adjicietur ei triſtitia in cor
In (gg) riſu inſipiens operatur
ſapientia autem viro parit
dentiam. In perditione
circumfertur : deſiderium
juſti acceptabile. Prætereunte
cellâ deletur impius : juſtus
(hh) declinans, ſalvatur in
lum. Sicut uva acerba dentibus
noxia, & fumus oculis,
quitas eis qui utuntur ea.
Domini addit dies : anni
impiorum minuentur.
ratur juſtis lætitia :
impiorum perit. (kk)
ſancti, timor Domini :
tritio autem operantibus
Juſtus in ſeculum non
tabit : impii autem non hab
terram. Os juſti deſtillat
tiam : lingua autem
bit. Labia virorum juſtorum
deſtillant gratias : os autem
rum (oo) pervertit.

ΚΕΦ. ια΄.

1 † Ζυγοὶ δόλιοι βδέλυγμα ἐνώπιον κυ-
ρίου, † στάθμιον δὲ δίκαιον δεκτὸν αὐτῷ.
2 † Οὗ ἐὰν εἰσέλθῃ ὕβρις, ἐκεῖ καὶ ἀτιμία·
† στόμα δὲ ταπεινῶν μελετᾷ σοφίαν. (α)
† Ἀποθανὼν δίκαιος ἔλιπε μεταμέ-
λον, † πρόχειρος δὲ γίνεται καὶ ἐπίχαρ-
5 τος ἀσεβῶν ἀπώλεια. † Δικαιοσύνη (")
ἀμώμους ὀρθοτομεῖ ὁδοὺς, † ἀσέβεια δὲ περι-
6 πίπτει ἀδικίᾳ. † Δικαιοσύνη ἀνδρῶν
ὀρθῶν (")ῥύεται αὐτοὺς, † τῇ δὲ (β) ἀπω-
7 λείᾳ αὐτῶν ἁλίσκονται παράνομοι. † Τε-
λευτήσαντος ἀνδρὸς δικαίου, οὐκ ὄλλυ-
ται ἐλπὶς, † τὸ δὲ καύχημα τῶν ἀσεβῶν
8 ὄλλυται. † Δίκαιος ἐκ θήρας (γ) ἐκ-
δύνει, † ἀντ' αὐτοῦ δὲ παραδίδοται ὁ ἀσεβής.
9 † Ἐν στόματι ἀσεβῶν παγὶς πολίταις,
† αἴσθησις δὲ δικαίων εὔοδος.

MS. A. (α) † Τελειότης εὐθείων ὁδηγήσει αὐτοὺς, † καὶ
ἀθετούντων προνομεύσει αὐτούς. † Οὐκ ὠφελήσει ὑπάρχοντα
θυμοῦ, † καὶ δικαιοσύνη ῥύσεται ἀπὸ θανάτου. Ἀποθανὼν
(")ῥύσεται (β) ἀβουλίᾳ ἁλίσκονται παράνομοι. (γ) δύνει,

CAP. XI.

STateræ (a) doloſæ,
coram Domino : pondus
(b) juſtum acceptum ei.
que intraverit contumelia
& ignominia : (c) os autem
milium meditatur ſapientiam
riens juſtus reliquit pœni
facilis autem fit, & irriſ
piorum interitus.
immaculatas dirigit
tas autem (e) incidit
am. Juſtitia virorum
ctorum liberat eos :
(g) perditione capiuntur
Mortuo viro juſto non
(h) gloriatio autem
Perit. Juſtus è (i)
Pro eo autem traditur
(k) ore impiorum
bus : (l) ſenſus autem
proſperè procedens.

תרגום TARGUM.

17 אורח דחיי נטרי מרדותא ודשבק מכסנותא תעי: מכמין בעל דבבא ספותא
18 19 דשקרא ומפיק טבא הוא סכלא: בסוגאה דמלילא פסק חובא ודחשך שפותיה
20 שוכלתנא: סאמא נביא לשניה דצדיקא ולבא דרשיעי מחתא: שפותא דצדיקי
21 22 רעין סגיאי ושטיי בחסירות רעינא נמותון: ברכתא דאלהא היא מעתרא ולא
23 נוסיף כיבא עמה: כד גחך סכלא עבד עבידתא וחכמתא לגברא דמתבין: חריצותא
24 25 דרשיעא היא אתיא ליה ורגנתא דצדיקיא תתיהב להון: היך דיעבר עלעולא היכנא
26 נעבר רשיעא וצדיקא שתאסיא בעלמא: היך חומצא לשני וכתננא לעיני היכנא
27 שליחא עטלא למשלחוי: דחלתיה דאלהא תוסף יומתא ושני דרשיעי נוערן:
28 סברהון דצדיקי חדותא וסברא דרשיעי נאבד: מעשנא לתמימי אורחיה דאלהא ושציא
29 30 נהוי לאלין דעבדין עותא: צדיק לעלם לא נזוע ורשיעי לא יתועדון בארעא:
31 32 פומיה דצדיקא מועי חכמתא ולישנא דהפיכו נתפסק: שפותיה דצדיקא ידעון צביונא
ופומהון דרשיעי מהפיך:

יא

1 מסחא דנכלא מרחקתיה דאלהא וכמתקלא תריצא צביוניה: היך דעלא זידונתא
2 3 עלל צערא ולאלין דצניעין חכמתא: תמימותא דתריצי תדבר אנון ונטלטלון בזווי
4 ונדכנון: לא מהני שקרא ביומא דרוגזא וצדקתא מפלטא מן מותא בישא: צדקתא
6 5 דתריצי תפצי אנון ובזווי בשלומהון מתאחדין: צדקתהון דתמימי תתרץ אורחתיה
7 8 וברשעיה נפל רשיעא: כד מית גברא רשיעא יוביד סבריה וסבורהון דאלין דעבדין
9 עאתא ייבד: צדיקא מן עקתא אשתיזב על ביש תחותוהי: נכלא בפומיה מחביל
חבריה וצדיקי בידיעתהון משתזבין:

PARAPH. CHALD. Verſio Lati

Via vitæ cuſtodit diſciplinam, & qui relinquit increpationem,
ſidiatur inimicus labiis mendacii, & qui profert detractionem
In multitudine verborum non ceſſat peccatum ; & qui prohibe
ſua, prudens eſt. Argentum *electum* lingua juſti, & cor impio
tritio eſt. Labia juſtorum placant plurimos, & ſtulti in indigen
lectus morientur. Benedictio Dei divites facit, & non addetur
ea. Quando ridet ſtultus, operatur *facinus* ; & ſapientia eſt
denti. Quod timet impius, eveniet ei ; & deſiderium juſtorum
eis. Sicut tranſit turbo, ſic tranſibit impius ; juſtus autem eſt
tum in ſeculo. Sicut acetum dentibus, & ſicut fumus oculis,
tius piger his qui miſerunt eum. Timor Dei addet dies, & an
rum breviabuntur. Spes juſtorum lætitia, & ſpes impiorum
Fortitudo ſimplicibus via Dei, & conſumptio eſt his qui faciunt
tem. Juſtus in æternum non commovebitur, & impii non
buntur in terra. Os juſtorum *profert* ſapientiam, & lingua
ficiet. Labia juſti cognoſcent beneplacitum, & os impiorum

CAP. XI.

STatera doloſa abominatio eſt Dei, & *ſicut pondus rectum*
ejus. Ingrediente ſuperbia venit ignominia : at eſt humilibus
Simplicitas rectorum diriget eos, & pervertent direptores,
eos. Non prodeſt mendacium in die iræ, & juſtitia liberat a
Juſtitia rectorum eruet eos, et direptores in retributione ſua
Juſtitia ſimplicis rectam facit viam ejus, & in impietate ſua
pius. Quando moritur vir impius perit ſpes ejus, et ſpes
faciunt iniquitatem peribit. Juſtus de anguſtia liberatur, et
impius pro eo. Ore doloſus nocet amico ſuo, et juſti in
berantur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

17 * ܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ ܢܛܪܐ ܡܪܕܘܬܐ. ܘܕܣܢܐ ܡܟܣܢܘܬܐ. ܣܟܠ ܗܘ. * ܡܛܫܝܢ ܒܢܟܠ ܒܥܠܕܒܒܘܬܐ
18 ܣܦܘܬܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܡܦܩ ܠܒܘܫܬܐ. ܣܟܝܪ ܠܒܐ ܗܘ. * ܒܣܘܓܐܐ ܕܡܠܐ. ܠܐ ܡܬܦܨܐ ܥܘܠܐ.
19 ܘܕܚܣܟ ܣܦܘܬܗ ܡܣܬܟܠ. * ܣܐܡܐ ܓܒܝܐ ܠܫܢܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܠܒܐ ܕܥܘܠܐ ܡܪܪܬܐ ܗܘ.
20 * ܣܦܘܬܗ ܕܙܕܝܩܐ ܣܓܝ ܡܒܣܡܢ. ܘܣܟܠܐ ܒܚܣܝܪܘܬ ܪܥܝܢܗܘܢ ܢܡܘܬܘܢ. * ܒܘܪܟܬܗ
21 22 ܕܡܪܝܐ ܡܥܬܪܐ. ܘܟܪܝܘܬܐ ܠܐ ܗܘܝܐ ܥܡܗ. * ܣܟܠܐ ܟܕ ܓܚܟ. ܥܒܕ ܒܝܫܬܐ. ܘܚܟܡܬܐ
23 ܠܓܒܪܐ ܣܘܟܠܗ. * ܥܘܠܐ ܠܐܒܕܢܐ ܡܬܕܒܪ. ܘܣܒܪܐ ܡܬܝܗܒ ܠܙܕܝܩܐ. * ܐܝܟ ܕܥܒܪ
24 25 ܥܠܥܠܐ ܒܥܓܠ. ܗܟܢܐ ܢܐܒܕ ܥܘܠܐ ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ. ܙܕܝܩܐ ܕܝܢ ܫܬܐܣܘܗܝ
26 ܠܥܠܡ. * ܐܝܟ ܕܒܣܪܐ ܡܩܗܐ ܠܫܢܐ. ܘܬܢܢܐ ܠܥܝܢܐ. ܗܟܢܐ ܥܘܠܐ ܠܥܒܘܕܘܗܝ.
27 * ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܬܘܣܦ ܝܘܡܬܐ. ܘܫܢܝܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܢܬܒܨܪܢ. * ܣܒܪܗܘܢ ܕܙܕܝܩܐ ܒܚܕܘܬܐ.
28 29 ܘܣܒܪܐ ܕܥܘܠܐ ܢܐܒܕ. * ܡܥܫܢܐ ܐܘܪܚܗ ܕܡܪܝܐ ܠܬܡܝܡܐ. ܘܬܒܪܐ ܠܥܒܕܝ ܥܘܠܐ.
30 * ܙܕܝܩܐ ܠܥܠܡ ܠܐ ܢܙܘܥ. ܘܥܘܠܐ ܠܐ ܢܥܡܪܘܢ ܒܐܪܥܐ. * ܦܘܡܗ ܕܙܕܝܩܐ ܡܡܠܠ ܚܟܡܬܐ.
31 32 ܘܠܫܢܐ ܗܦܝܟܐ ܢܬܦܣܩ. * ܣܦܘܬܐ ܕܙܕܝܩܐ ܝܕܥܢ ܛܝܒܘܬܐ. ܘܦܘܡܗܘܢ ܕܥܘܠܐ
1 ܗܦܝܟܘܬܐ. * ܦܬܓܡܐ * ܝܐ * * ܡܣܐܬܐ ܕܢܟܠܐ ܡܣܠܝܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܡܬܩܠܬܐ
2 ܠܘܬܗ ܪܥܝܐ. * ܐܝܟܐ ܕܥܐܠܐ ܨܥܪܐ. ܥܐܠܐ ܒܗܬܬܐ. ܘܡܟܝܟܘܬܐ ܚܟܡܬܐ. * ܣܒܪܐ ܕܙܕܝܩܐ
3 4 ܡܬܒܢܐ. ܘܫܘܒܗܪܐ ܕܥܘܠܐ ܢܬܦܣܩ. * ܠܐ ܡܘܬܪܐ ܥܘܬܪܐ ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܐ. ܙܕܝܩܘܬܐ ܕܝܢ
5 ܡܦܨܝܐ ܡܢ ܡܘܬܐ. * ܙܕܝܩܘܬܗ ܕܬܡܝܡܐ ܬܬܪܘܨ ܐܘܪܚܗ. ܘܒܥܘܠܗ ܢܦܠ ܥܘܠܐ.
6 * ܙܕܝܩܘܬܗܘܢ ܕܬܪܝܨܐ ܬܦܨܐ ܐܢܘܢ. ܘܥܘܠܐ ܒܥܘܠܗܘܢ ܢܬܐܚܕܘܢ. * ܟܕ ܡܐܬ ܓܒܪܐ
7 8 ܥܘܠܐ. ܐܒܕ ܣܒܪܗ. ܘܣܒܪܗܘܢ ܕܒܝܫܐ ܐܒܕ. * ܙܕܝܩܐ ܡܢ ܐܘܠܨܢܐ ܢܬܦܨܐ. ܘܢܥܘܠ
9 ܥܘܠܐ ܚܠܦܘܗܝ. * ܥܘܠܐ ܒܦܘܡܗ ܡܚܒܠ ܠܚܒܪܗ. ܘܙܕܝܩܐ ܒܝܕܥܬܐ ܢܬܦܨܘܢ.

17 * Via vitæ cuſtodit diſciplinam: & qui odit objurgationem, ſtultus eſt. 18 Abſcondunt inſidiosè inimicitiam labia impiorum: & qui profert maledictionem, inſipiens eſt. 19 In affluentia verborum non liberatur iniquus: qui autem coërcet labia ſua, prudens eſt. 20 Argentum electum, lingua juſti: cor autem ſceleratorum fel eſt. 21 Labia juſti valdè benigna ſunt: ſtulti autem in inſipientia ſua morientur. 22 Benedictio Domini ditat, & dolor non erit cum ea. 23 Stultus cùm ridet, operatur malum: & ſapientia viro, intellectus ejus. 24 Impius ad interitū trahitur: & ſpes datur juſtis. 25 Quemadmodū repentè præterit tempeſtas, ſic peribit impius & non reperietur: juſti autem fundamenta locabuntur in æternum. 26 Sicut uvæ acerbæ dentibus nocent, & fumus oculis, ita nocet impietas operantibus eam. 27 Timor Domini adjiciet dies, anni verò iniquorum minuentur. 28 Spes juſtorum, cum lætitia: & ſpes impiorum peribit. 29 Corroborat via Domini integros, & conterit operantes iniquitatem. 30 Juſtus in æternum non movebitur: & facinoroſi non habitabunt in terra. 31 Os juſti loquitur ſapientiam: & lingua perverſa excindetur. 32 Labia juſtorum agnoſcunt beneficium: os verò ſceleſtorum, perverſitates.

CAP. XI.

1 Bilances doloſas abominatur Dominus: & ponderibus juſtis oblectatur. 2 Ubi intrat obſcœnitas, intrat ignominia: humilibus autem ſapientia. 3 Spes juſtorum aſtruetur: & ſuperbia nefariorum deſtruetur. 4 Non proderunt divitiæ in die iræ: juſtitia verò liberabit à morte. 5 Æquitas integri diriget viam ejus: & in impietate ſua corruet impius. 6 Juſtitia rectorum ſalvabit illos: at iniqui iniquitate ſuâ capientur. 7 Cùm moritur vir impius, perit ſpes ejus; & ſpes malignorum peribit. 8 Juſtus ab anguſtia liberabitur, & ſubintrabit impius pro eo. 9 Impius ore ſuo corrumpit ſocium ſuum: at juſti per ſcientiam confirmabuntur.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 18 * طرق الحياة يحفظها الأدب . والأدب الذي لا يوبخ يضل * السفاه الظالمة تغشي صاحبها
19 عداوة . الذين يبرزون الفريات أولئك أغبياء كثيرا * من كثر الكلام لم ينفلت من الخطية .
20 21 ومن يشفق على شفتيه يكون لبيبا * فضة مخبرة لسان مقسط . وقلب المنافق يبلى * شفوات
22 المقسطين تعرف العليات . والأغبياء يموتون في الفاقة * بركة الرب على رأس المقسط هذا بعينه .
23 وما ينضاف إليه حزن في القلب * الغبي بلسانه يعمل الأسواء . والحكمة تنتج الإنسان فطنة .
24 25 * المنافق يتردد في الهلاك . شهوة المقسط مقبولة * في عبور الزوبعة يبيد المنافق . والمقسط إذا
26 تحايد يسلم إلى الأبد * كما أن الحصرم ضار للأضراس والدخان للعينين . كذلك تجاوز الشريعة
27 28 ضارا لمن يستصحبه * خشية الموت تزيد أياما . وسنو المنافقين تتناقص * السرور يدائم
29 المقسطين . ورجاء المنافقين يهلك * حصن البار مخافة الرب . والهشيم لعاملي الأسواء .
30 31 * المقسط ما يتراخى مدى الدهر . والمنافقون لن يسكنون الأرض * فم المقسط يقطر حكمة .
32 ولسان الظالم يجتاح * شفوات الناس المقسطين تقطر نعما . وفم المنافقين يعوج مألوفا .

الفصل الحادي عشر .

* الموازين الغاشة مرذولة قدام الرب . والمعيار المقسط مقبولا عنده * حيث ما يدخل المعظم فهناك
الهوان . وفم المتواضعين يهذ حكمة * كمال المقومين في الخير يرشدهم . ويغول الخائبين يستأسرهم
* النعم والأموال ما تنفع في يوم الغضب . والعدل ينجي من الموت . المقسط إذا مات خلف ندما
عليه . وهلاك المنافقين يصير به مسارعة وشماتة * العدل يمهد ويقوم طرقا لا عيب فيها . والمنافق
يتهور فيه الظلم * عدل الناس المقومين ينجيهم . والعادلون عن الشريعة يوخذون بعدمهم
المشاورة * إذا توفي الرجل المقسط لن يهلك رجاؤه . وفخر المنافقين يضمحل * المقسط ينفلت من
المضيق . ويسلم المنافق عوضه * في فم المنافقين فخ لأهل المدينة . وحسن المقسطين رجاء لهم ويسر .

17 *Vias vitæ cuſtodit diſciplina: & diſciplina quæ non corripit, in errorem inducit.* 18 *Labia iniqua operiunt illa habentem inimicitiâ: qui promunt mendacia, ipſi ſunt inſipientes valdé.* 19 *Qui multiplicat verba, non evadit peccatum; & qui parcit labiis ſuis, eſt prudens.* 20 *Argentum probatum, lingua juſta: & cor impii marceſcet.* 21 *Labia juſtorum docent ſublimia: inſipientes autem morientur in egeſtate.* 22 *Benedictio Domini ſuper caput juſti hujuſmetipſius, nec comitabitur eum mœror in corde.* 23 *Inſipiens linguâ ſuâ operatur mala: & ſapientia generat homini intelligentiam.* 24 *Iniquus verſatur in interitu: deſiderium juſti eſt acceptum.* 25 *In tranſitu turbinis peribit impius: juſtus autem cùm declinaverit, ſervabitur in æternum.* 26 *Sicut uva acerba eſt infenſa dentibus, & fumus oculis; ſic tranſgreſſio legis nocet ei qui amat illam.* 27 *Timor mortis auget dies: & anni impiorum diminuentur.* 28 *Lætitia perſeverat cum juſtis: & ſpes iniquorum peribit.* 29 *Arx juſti, timor Domini; & fractio, operantibus iniquitates.* 30 *Juſtus non relaxabitur in æternum, impii verò non habitabunt terram.* 31 *Os juſti ſtillat ſapientiam, & lingua impii eradicabitur.* 32 *Labia hominum juſtorum ſtillant delitias, & os iniquorum pervertetur inſaniens.*

CAP. XI.

1 *Stateræ doloſæ ſunt abominandæ coram Domino, & menſura juſta eſt accepta apud eum.* 2 *Quocunque ingreditur ſuperbia, ibi eſt deſpectus, os verò humilium meditabitur ſapientiam.* 3 *Perfectio rectorum in bono, diriget eos: & perverſitas tranſgreſſorum mancipabit eos.* 4 *Delectationes & opes non proderunt in die furoris: juſtitia autem liberabit à morte. Juſtus cùm moritur, relinquit poſt ſe lamentationem ſuper ſeipſum; in interitu verò iniquorum erit feſtinatio & lætitia.* 5 *Juſtitia ſternit ac dirigit vias immaculatas; & in impietatem præcipitabitur iniquus.* 6 *Juſtitia hominum rectorum liberabit eos; & tranſgredientes legem capientur propter carentiam conſilii.* 7 *Cùm obierit vir juſtus, nullo modo peribit ſpes ejus; & gloria iniquorum diſſipabitur.* 8 *Juſtus effugiet laqueum, & tradetur iniquus pro eo.* 9 *In ore iniquorum laqueus eſt incolis urbis; at benefacta juſtorum ſpes eſt ipſis ac facilitas.*

משלי : יא

impios pereundo in & ; civitas exultabit justorum bonitate In
10 בטוב צדיקים תעלץ קריה ובאבד רשעים
ore in & ; civitas exaltabitur rectorum benedictione In .cvatio
11 רנה: בברכת ישרים תרום קרת ובפי
; corde carens suum socium Despicit .subvertetur impiorum
12 רשעים תהרס: בז־לרעהו חסר־לב
revelans delator Ambulans .tacebit prudentiarum vir &
13 ואיש תבונות יחריש: הולך רכיל מגלה־
non In .verbum operiens spiritu fidelis & : secretum
14 סוד ונאמן־רוח מכסה דבר: באין
.consiliarii multitudine in salus & : populus corruet , industriæ
תחבלות יפל־עם ותשועה ברב יועץ:
odiens & : extraneo fidejusserit cùm , conteretur Contritione
15 רע ירוע כי־ערב זר ושנא
fortes & ; gloriam assequetur gratiæ Mulier .fidens , stipulantes
16 תוקעים בוטח: אשת חן תתמך כבוד ועריצים
; misericordiæ vir , suæ animæ Retribuens .opulentiam adipiscentur
17 יתמכו־עשר: גמל נפשו איש חסד
opus faciens Impius .crudelis , suam carnem turbans &
18 ועכר שארו אכזרי: רשע עשה פעלת־
justitia Sic .veritatis merces justitiam seminanti & : mendax
19 שקר וזרע צדקה שכר אמת: כן־צדקה
DOMINI Abominatio .suam mortem ad ,malum sequens & , vitas ad
20 לחיים ומרדף רעה למותו: תועבת יהוה
manum ad Manus .via perfecti ejus beneplacitum & ; corde perversi
21 עקשי־לב ורצונו תמימי דרך: יד ליד
Inauris .evasit justorum semen & : malus impunis erit non
22 לא־ינקה רע וזרע צדיקים נמלט: נזם
.discretionem declinans & , pulchra mulier : porci nare in aurea
זהב באף חזיר אשה יפה וסרת טעם:
, impiorum præstolatio : bonum tantummodo justorum Desiderium
23 תאות צדיקים אך־טוב תקות רשעים
prohibens & : amplius additur & ,dispergens Est .penetrans furor
24 עברה: יש מפזר ונוסף עוד וחשך
benedictionis Anima .defectum ad veruntamen , rectitudine à
25 מישר אך־למחסור: נפש־ברכה
Prohibenti .pluvia ipse etiam , inebrians & : impinguabitur
26 תדשן ומרוה גם־הוא יורא: מנע
.frangentis capiti benedictio & ; populus ei maledicent , frumentum
בר יקבהו לאום וברכה לראש משביר:
, malum quærens & : placitum quæret , bonum mane Quærens
27 שחר טוב יבקש רצון ודרש רעה
: corruet ipse ,sua opulentia in Fidens .ei veniet
28 תבואנו: בוטח בעשרו הוא יפל־
,suam domum Conturbans .germinabunt justi folium tanquã &
29 וכעלה צדיקים יפרחו: עכר ביתו
.corde sapienti stultus servus & ; ventum accipiet hæreditatem
ינחל־רוח ועבד אויל לחכם־לב:
.sapiens animas suscipiens & : vitarum lignum justi Fructus
30 פרי צדיק עץ חיים ולקח נפשות חכם:
, impio quia etiam ; reddetur terra in justo En
31 הן צדיק בארץ ישלם אף כי־רשע
? peccanti &
וחוטא:

Verſio VULG. LAT.

10 In bonis juſtorum exultabit civitas : & in perditione impiorum erit laudatio. 11 Benedictione juſtorum exaltabitur civitas : & ore impiorum ſubvertetur. 12 Qui deſpicit amicum ſuum, indigens corde eſt : vir autem prudens tacebit. 13 Qui ambulat fraudulenter, revelat arcana : qui autem fidelis eſt animi, celat amici commiſſum. 14 Ubi non eſt gubernator, populus corruet : ſalus autem, ubi multa conſilia. 15 Affligetur malo, qui fidem facit pro extraneo : qui autem cavet laqueos, ſecurus erit. 16 Mulier gratioſa inveniet gloriã : & robuſti habebunt divitias. 17 Benefacit animæ ſuæ vir miſericors : qui autem crudelis eſt, etiam propinquos abjicit. 18 Impius facit opus inſtabile : ſeminanti autem juſtitiam merces fidelis. 19 Clementia præparat vitam : & ſectatio malorum mortem. 20 Abominabile Domino cor pravum : & voluntas ejus in iis, qui ſimpliciter ambulant. 21 Manus in manu non erit innocens malus : ſemen autem juſtorum ſalvabitur. 22 Circulus aureus in naribus ſuis, mulier pulchra & fatua. 23 Deſiderium juſtorum omne bonum eſt : præſtolatio impiorum furor. 24 Alii dividunt propria, & ditiores fiunt : alii rapiunt non ſua, & ſemper in egeſtate ſunt. 25 Anima, quæ benedicit, impinguabitur : & qui inebriat, ipſe quoque inebriabitur. 26 Qui abſcondit frumenta, maledicetur in populis : benedictio autem ſuper caput vendentium. 27 Benè conſurgit diluculò qui quærit bona : qui autem inveſtigator malorum eſt, opprimetur ab eis. 28 Qui confidit in divitiis ſuis, corruet : juſti autem quaſi virens folium germinabunt. 29 Qui conturbat domum ſuam, poſſidebit ventos : & qui ſtultus eſt, ſerviet ſapienti. 30 Fructus juſti lignum vitæ : & qui ſuſcipit animas, ſapiens eſt. 31 Si juſtus in terra recipit, quantò magis impius & peccator.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 † Ἐν ἀγαθοῖς δικαίων κατώρθωσε πόλις, (δ) † στόματι δὲ ἀσεβῶν κατεσκάφη. 12 † Μυκτηρίζει πολίτας ἐνδεὴς φρενῶν, † ἀνὴρ δὲ φρόνιμος ἡσυχίαν ἄγει. 13 † Ἀνὴρ δίγλωσσος ἀποκαλύπτει βουλὰς ἐν συνεδρίῳ, † πιστὸς δὲ πνοῇ κρύπτει πράγματα. 14 † Οἷς μὴ ὑπάρχει κυβέρνησις, πίπτουσιν ὥσπερ φύλλα, † σωτηρία δὲ ὑπάρχει ἐν πολλῇ βουλῇ. 15 † Πονηρὸς κακοποιεῖ ὅταν συμμίξῃ δικαίῳ, † μισεῖ δὲ ἦχον ἀσφαλείας. 16 † Γυνὴ εὐχάριστος ἐγείρει ἀνδρὶ δόξαν, † θρόνος δὲ ἀτιμίας γυνὴ μισοῦσα δίκαια. † πλούτου ὀκνηροὶ ἐνδεεῖς γίνονται, † οἱ δὲ ἀνδρεῖοι ἐρείδονται πλούτῳ. 17 † Τῇ ψυχῇ αὐτοῦ ἀγαθὸν ποιεῖ ἀνὴρ ἐλεήμων, † ἐξολλύει δὲ αὐτοῦ σῶμα ὁ ἀνελεήμων. 18 † Ἀσεβὴς ποιεῖ ἔργα ἄδικα, † σπέρμα δὲ δικαίων μισθὸς ἀληθείας. 19 † Υἱὸς δίκαιος γεννᾶται εἰς ζωήν, † διωγμὸς δὲ ἀσεβοῦς εἰς θάνατον. 20 † Βδέλυγμα κυρίῳ διεστραμμέναι ὁδοὶ, † προσδεκτοὶ δὲ αὐτῷ πάντες ἄμωμοι ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν. 21 † Χειρὶ χεῖρας ἐμβαλὼν ἀδίκως οὐκ ἀτιμώρητος ἔσται, † ὁ δὲ σπείρων δικαιοσύνην λήψεται μισθὸν (ε) πιστόν. 22 † Ὥσπερ ἐνώτιον ἐν ῥινὶ ὑὸς, † οὕτως γυναικὶ κακόφρονι 23 κάλλος. † Ἐπιθυμία δικαίων πᾶσα ἀγαθή, † ἐλπὶς δὲ ἀσεβῶν ἀπολεῖται. † 24 Εἰσὶν, οἳ τὰ ἴδια σπείροντες πλείονα ποιοῦσιν· † εἰσὶ δὲ καὶ οἱ συνάγοντες ἐλαττονοῦνται. 2 † Ψυχὴ (ζ) εὐλογουμένη πᾶσα ἁπλῆ, † ἀνὴρ δὲ θυμώδης οὐκ εὐσχήμων. 26 † Ὁ συνέχων σῖτον ὑπολείποιτο αὐτὸν τοῖς ἔθνεσιν, † εὐλογία δὲ εἰς 27 κεφαλὴν τοῦ μεταδιδόντος. † Τεκταινόμενος ἀγαθὰ ζητεῖ χάριν ἀγαθήν, ἐκζητοῦντα δὲ κακὰ καταλήψεται αὐτόν. 28 † Ὁ πεποιθὼς ἐπὶ πλούτῳ οὗτος πεσεῖται, † ὁ δὲ ἀντιλαμβανόμενος δικαίων οὗτος 29 ἀνατελεῖ. † Ὁ μὴ συμπεριφερόμενος τῷ ἑαυτοῦ οἴκῳ, κληρονομήσει ἄνεμον, † δουλεύσει δὲ ἄφρων φρονίμῳ. 30 † Ἐκ καρποῦ δικαιοσύνης φύεται δένδρον ζωῆς, † ἀφαιροῦνται δὲ ἄωροι ψυχαὶ παρανόμων. 31 † Εἰ ὁ μὲν δίκαιος μόλις σώζεται, ὁ ἀσεβὴς καὶ ἁμαρτωλὸς ποῦ φανεῖται;

In bonis juſtorum (m)
geſſit civitas : ore autem
rum (n) diruta eſt.
nat cives indigens cor
autem prudens ſilentium
Vir (p) bilinguis revelat
ſilia in conſeſſu : fidelis
ſpiritu (ſ) abſcondit res.
bus non eſt gubernatio
tanquàm folia : ſalus autem
in (u) multo conſilio. Ma
lifacit, (x) cum commiſ
rit juſto : (y) odit autem
ſecuritatis. Mulier
ſuſcitat viro gloriam :
autem ignominiæ, mulier
bens juſta. Divitiarum
tunt indigi : (z) fortes
tuntur divitiis. Anima
bonum facit vir mi
perdit autem ſuũ ipſius
miſericors. Impius facit
injuſta : ſemen autem
merces veritatis. F
gnitur ad vitam :
tio autem impii ad mortem.
ominatio Domino (cc)
ſæ viæ : (dd) accepti
omnes immaculati in
Manu manus (ee) injic
ſtè, non impunitus (ff)
(gg) autem ſeminans
ci, iet mercedem fidelem.
(hh) inauris in naribus
ſic mulieri male p
tudo. Deſiderium
mne, bonum : ſp
ium (ii) peribit. Sunt,
pria (kk) ſeminantes,
ciunt. Sunt autem,
congregantes minuuntur
benedicta, (mm) omnis
(nn) vir autem animo
ſtus eſt. Qui (oo) con
mentum, relinquat illu
tionibus : benedictio autem
jus capite, (qq) qui
(rr) Fabricans bon
gratiam bonam : exqui
tem mala comprehend
dens in divitiis, hic ca
autem inhæret juſtis, hi
minabit. Qui (ss)
ſuam domum, hæ
tum : ſerviet autem
prudenti. (tt) De
ſtitiæ naſcitur arbor
feruntur autem intempe
mæ iniquorum. Si juſtus
vix ſalvatur : impius &
tor ubi parebunt?

MS. A. (δ) † καὶ ἐν ἀπωλείᾳ ἀσεβῶν ἀγαλλίαμα. † Ἐν εὐλογ
θείων ὑψωθήσεται πόλις, στόμασιν δὲ ἀσεβῶν (ε) πισ
γημένη

תרגום TARGUM.

10 בטבתהון דצדיקי תרוץ קריתהון וביובדנא דרשיעי חדותא : בברכתהון דצדיקי
11
12 תתרורם מדנתא ובפומהון דרשיעי תתעקר : דשט לחבריה חסיר רעינא הוא וגברא
13 דמתבין שתיק : אכל קרצא גלי רזא ודמהימן ברוחיה מכסי מלתא : באתרא
14
15 דלית מדברא נפל עמא ופורקנא ייתי בסוגעא דמלכותא : בישא מבאיש בצדיקא
16 מטול דהוא ערב חלוני וסני לאלין דסימין סברהון באלהא : אתתא חסידתא פלגא
17 איקרא ועשיני רהטין בתר עותרא : פריע טבתא לנפשיה גברא חסידא ודמובד
18 גושמיה נכוריא : רשיעא עבד עובדא דשקרא ודזריע לצדקתא קושטיה הוא
19 אגריה : היכנא מן דעבד צדקתא לחיי נטיר ודרדף בישתא נטיר למותא : מרחק
20
21 אלהא לעקימי לבא וצבי באלין דתמימין : דמושיט אידא על חבריה לא מודכי מן
22 בישתא וזרעא דצדיקי מתפרק : קדשיה דדהבא בנחירי דחזירתא היכנא אתתא
23 דשפירא וסרי טעמא : רגתא דצדיקי בטבתא וסבורא דרשיעי ברוגזא : אית
24
25 דפרד ומוסיף תוב וחשיך מן תריצותא חוסרנא ליה : נפשא דברכתא תדהן ומן
26 דמאלף אף הוא יליף : מן דכלא עבורא באולצנא נשבקיניה לבעלי דבבוי
27 וברכתא תהוי לאנא דמזבן : דמקדים טבתא בעי צבינא ותבע בישתא אתיא
28 עלוי : דמסבר בעותריה הוא נפל ואיך טרפא צדיקי מפרחין : עכר ביתיה
30 ירית פחתא וסכלא יהוי עבדא לחכים לבא : פירי דצדיקא אילנא דחיי
31 ומקבלנותא דנפשי חכמתא : הן צדיקא בארעא מתחסן ורשיעי וחטאי סיפין מן
ארעא :

PARAPH. CHALD. Verſio Lati

In bonis juſtorum lætabitur civitas eorum, & in perditione impi
titia erit. Benedictione rectorum exaltabitur provincia, & ore
rum ſubvertetur. Qui deſpicit amicum ſuum, indigens intelle
vir prudens tacebit. Qui accuſator eſt revelat ſecretum, & q
eſt in ſpiritu ſuo celat ſermonem. In loco ubi non eſt gubernat
ruit populus : ſalus autem continget in multitudine conſilii. Ma
lè agit contra juſtum, eo quod fidejuſſor ſtetit pro extraneo, &
qui collocant ſpem ſuam in Deo. Mulier gratioſa dividit gloria
buſti currunt poſt divitias. Retribuit bonum *animæ ſuæ* vir ben
& qui perdit corpus ſuum, crudelis eſt. Impius facit opera
& qui ſeminat in juſtitia, veritas ejus erit merces ipſius. Sic
cit juſtitiam ſervatur ad vitam, ſic qui ſequitur malum, ſervatur
tem. Abominatur Deus pravos corde, & vult illos qui ſimpli
Qui extendit manum ſuam contra ſocium ſuum, non erit innoc
lo, & ſemen juſtorum ſalvum erit. Sicut circulus aureus in nar
ei, ſic eſt mulier pulchra & fœtido ſenſu. Deſiderium juſtoru
num eſt, & expectatio impiorum ad iram. Eſt qui diſpergit,
additur ei, & indigentia erit ei qui recedit à rectitudine.
nedicta impinguabitur ; & qui docet, etiam ipſe diſcet. Q
frumentum, in fame relinquet illud inimicis ſuis, & benedic
vendit. Qui conſurget diluculo ad bonum, quærit benepla
qui quærit malum, veniet ſuper eum. Qui ſperat in divitiis
corruet : & ſicut folium juſti germinabunt. Qui conturba
ſuam, poſſidebit ventum, & ſtultus erit ſervus ſapientis cor
ctus juſti arbor vitæ, & *ſuſceptio* animarum eſt ſapientia.
in terra roboratur : impii autem et peccatores de terra con

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܒܛܝܒܘܬܗܘܢ ܕܙܕܝܩܐ ܡܬܩܢܐ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܒܐܒܕܢܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܐܒܝܐ. * ܒܒܘܪܟܬܗܘܢ
11 ܕܬܪܝܨܐ ܬܬܪܝܡ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܒܦܘܡܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܬܬܗܦܟ. * ܕܡܫܝܛ ܠܚܒܪܗ ܚܣܝܪ ܪܥܝܢܐ
12 ܗܘ. ܘܓܒܪܐ ܡܣܬܟܠܢܐ ܒܫܠܝܐ ܥܡܪ. * ܐܟܠ ܩܪܨܐ ܡܓܠܐ ܐܪܙܐ. ܘܕܡܗܝܡܢ ܒܪܘܚܗ. ܡܟܣܐ
13 ܡܠܬܐ. * ܥܡܐ ܕܡܕܒܪܢܐ ܠܝܬ ܠܗ ܢܦܠ. ܘܦܘܪܩܢܗ ܒܣܘܓܐܐ ܡܠܟܐ. * ܥܘܠܐ
14 ܥܒܕ ܒܝܫܬܐ ܟܕ ܦܓܥ ܒܙܕܝܩܐ. ܘܣܢܐ ܠܕܡܣܟܝܢ ܠܣܒܪܐ. * ܐܢܬܬܐ ܡܬܪܚܡܢܝܬܐ
15 ܡܣܡܟܐ ܐܝܩܪܐ ܠܓܒܪܐ. ܟܘܪܣܝܐ ܕܝܢ ܕܨܥܪܐ. ܐܢܬܬܐ ܣܢܝܐ ܩܘܫܬܐ. ܚܒܢܢܐ ܐܦ
16 ܒܥܘܬܪܗܘܢ ܢܗܘܘܢ ܣܢܝܩܝܢ. ܘܥܫܝܢܐ ܢܣܡܟܘܢ ܝܕܥܬܐ. * ܓܒܪܐ ܛܒܐ ܡܘܙܦ ܠܢܦܫܗ
17 ܚܘܠܦܐ ܛܒܐ. ܘܡܘܒܕ ܦܓܪܗ ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܡܪܚܡ. * ܥܘܠܐ ܥܒܕ ܥܒܕܐ ܕܢܟܠܐ. ܘܙܪܘܥ
18 ܙܕܝܩܘܬܐ. ܦܘܪܥܢܐ ܗܘ ܕܩܘܫܬܐ. * ܒܪܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܠܚܝܐ. ܘܕܥܒܕ ܒܝܫܬܐ ܠܡܘܬܐ. * ܡܣܠܝܐ
19 ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܥܩܡܬ ܠܒܐ. ܘܨܒܐ ܒܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܡܘܡ ܐܢܘܢ ܒܐܘܪܚܐ. * ܕܡܘܫܛ ܐܝܕܗ
20 ܠܚܒܪܗ ܠܐ ܢܙܕܟܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܙܪܥܐ ܕܙܕܝܩܐ ܢܬܦܪܩ. * ܐܝܟ ܩܕܫܐ ܕܕܗܒܐ ܒܦܘܡܗ ܕܚܙܝܪܐ. ܗܟܢܐ
21 ܗܝ ܐܢܬܬܐ ܫܦܝܪܬܐ ܘܣܪܝܚܬ ܛܥܡܐ. * ܪܓܬܐ ܕܙܕܝܩܐ ܥܠ ܛܒܬܐ. ܘܣܒܪܐ ܕܥܘܠܐ ܪܘܓܙܐ ܗܘ.
22 * ܐܝܬ ܕܙܪܥ ܕܝܠܗ ܘܡܣܓܐ ܥܠܠܬܐ. ܘܐܝܬ ܕܠܐ ܕܝܠܗ ܡܟܢܫ. ܘܒܨܝܪ ܗܘ ܠܗ. * ܢܦܫܐ
23 ܡܒܪܟܬܐ ܬܬܕܫܢ. ܘܠܝܛܐ ܬܘܒ ܢܬܠܛ. * ܕܟܠܐ ܥܒܘܪܐ ܒܐܘܠܨܢܐ. ܢܫܒܩܝܘܗܝ
24 ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. ܘܒܘܪܟܬܐ ܥܠ ܪܫܗ ܕܡܙܒܢ. * ܕܒܥܐ ܛܒܬܐ ܒܥܐ ܪܚܡܐ. ܘܕܒܥܐ ܒܝܫܬܐ
25 ܬܐܬܐ ܠܗ. * ܕܬܟܝܠ ܥܠ ܥܘܬܪܗ ܢܦܠ. ܘܙܕܝܩܐ ܐܝܟ ܛܪܦܐ ܢܦܪܥܘܢ.
26 * ܕܒܢܐ ܒܝܬܐ ܒܢܟܠܐ. ܫܒܩ ܬܢܚܬܐ ܠܒܢܘܗܝ. ܘܕܠܐ ܟܢܫ ܒܒܝܬܗ. ܢܦܠܓ ܠܒܢܘܗܝ
27 ܪܘܚܐ. ܘܢܗܘܐ ܣܟܠܐ ܥܒܕܐ ܠܚܟܝܡܐ. * ܦܐܪܐ ܕܙܕܝܩܐ ܐܝܠܢܐ ܕܚܝܐ.
28 ܘܡܬܚܒܠܢ ܢܦܫܬܗܘܢ ܕܥܘܠܐ. * ܐܢ ܙܕܝܩܐ ܒܥܡܠ ܚܝܐ. ܥܘܠܐ
29 ܘܚܛܝܐ ܐܝܟܐ ܢܩܘܡ.

* In probitate juſtorum roborabitur civitas : 10
& in interitu impiorũ exultabit. 11 Benedictione
rectorũ erigetur civitas: & ore impiorũ
ſubvertetur. Qui deſpicit ſociũ ſuũ, demens 12
eſt: & vir prudens in ſilentio habitat. Delator 13
revelat ſecretum: at qui fidelis eſt animo,
tegit ſermonẽ. Populus cui gubernator non 14
eſt, corruet:& ſalus ipſius in conſilio multo.
Improbus malum operatur, cùm occurrit 15
juſto, quoniã odit expectantes ſpem. Mulier 16
gratioſa fulcit gloriam viri : ſedes autẽ contumeliæ,
mulier odio habens veritatem. Pigri
etiam cum divitiis ſuis erunt inopes : at animoſi
ſuſtentabunt ſcientiam. Vir probus locat 17
animæ fœnora optima:perdit autem corpus
ſuum vir qui non miſeretur. Impius facit 18
opera fraudis : at ſerentis juſtitiã, æquitas erit
merces. Filius juſtitiæ,ad vitam: & qui operatur 19
nequitiã, ad mortẽ. Abhorret Dñs à 20
profundis corde:et delectatur iis qui ſine macula
ſunt in via. Qui extendit manum ſuã in 21
ſocium ſuum, non erit inſons mali: & ſemen
juſtorũ ſalvabitur. Quale eſt monile aureum 22
in rictu ſuis, talis eſt mulier pulchra & fœtida
ſapore. Deſiderium juſtorum,circa bona: 23
& ſpes injuſtorum eſt ira. Eſt qui proprium 24
ſerit, & multum cogit proventum:eſtque qui
non proprium colligit, & tamen parum habet.
Anima benedicta impinguabitur : & 25
maledictus, adhuc maledicetur. Qui denegat 26
frumentum in anguſtia, relinquet illud inimicis
ſuis: & benedictio erit ſuper caput ejᵘ
qui vendit. Qui quærit bonum, quærit favorem : 27
& qui quærit malum, adveniet ei. Qui 28
fidit opibus ſuis, corruet : & juſti velut folia
germinabunt. Qui domum fraudibus ædificat, 29
relinquet liberis ſuis gemitus : & qui
non accumulat in domo ſua,diſtribuet liberis
ſuis ventum. Et ſtultus erit ſervus ſapienti.
Fructus juſti, arbor vitæ : diſſipabuntur autem 30
animæ impiorum. Si juſtus vix vivit, 31
impius & peccator ubi conſiſtet?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10 * بصالحات المقسطين تصطلح المدينة * وبافواه المنافقين تهدم وتحفر * وفي هلاك المنافقين
11 12 ابتهاج * ببركة المستقيمين يعلوا شان المدينة * بفزع اهل المدينة نقض اراوهم * والانسان
13 المتعمق العقل يستصحب السكوت * الانسان المثني اللسان يعلن الاراء في الجمع * ونسمة
14 الثقة تكتم الامر * من ليس لهم تدبير يسقطون كسقوط الورقة * والخلاص هو في المشاورة
15 16 الجزيلة * الخبيث يعمل الشر اذا خالط مقسطا * ويمقت ذكر التصون * المراة السكون
تنهض لرجلها شرفا * وكرسي الهوان المراة الماقتة المعدلات * العاجزون ذوو الغناء
17 يصيرون معسرين * وذوو الشهامة يتوطدون في الثروة * بنفسه يعمل الخير الانسان الرحوم
18 19 * المنافق يعمل اعمالا ظالمة * ونسل المقسطين يعمل ثواب الحق * الابن المقسط يولد للحياة
20 وركض المنافق يخرجه الي الموت * رذالة عند الرب الطريق الملتوية * وجميع الذين لا عيب
21 في مناهجهم مقبولون عنده * ومن يلقي يدا في يد ظلما لن يكون غير معاقب * ومن
22 يزرع عدلا ياخذ ثوابا امينا * مثل القرط في انف خنزير * كذلك الحسن في امراة غير
23 24 رشيد * شهوة المقسطين كلها صالحة * ورجا المنافقين يهلك * يكون قوم يزرعون
ويبذرون الاشياء التي لهم فيحصل لهم اكثر منها * وقوم يكونون يجمعون فينقص حالهم
25 26 ويعسرون * كل نفس مباركة بسيطة * والرجل الغضوب ليس شكله حسنا * ومن يجمع الحنطة
27 يخلفها للامم * والبركة تحل على راس المعطي السخي * العامل الصالحات يلتمس نعمة
28 صالحة * والمبتغي الطالحات ستدركه * الواثق بالغناء والمدل به هذا يسقط * ومن يعضد
29 30 المقسطين يشرق نوره * من لا يتصرف حسنا في منزله يرث رياحا * والغبي يخدم العاقل * من ثمر
31 العدل ينبع شجر الحياة * ونفوس العادلين عن الشريعة تعتزل قبل حدها * فان كان المقسط
بالجهد يخلص * فالخاطي والمنافق اين يظهر *

* *Per bona opera juſtorum inſtauratur civitas : & per ora iniquorum deſtruitur &* 10
effoditur : & in interitu iniquorum hilaritas. 11 *Per benedictionem rectorum exaltabitur*
fama urbis : in timore civium deſecerunt conſilia ſua. 12 *Et homo profundi*
intellectûs amat ſilentium. 13 *Homo bilinguis revelat conſilia in congregatione : &*
ſpiritus ſtabilis occultat rem. 14 *Qui non*
habent providentiam cadent, ut cadit folium : & ſalus eſt in conſilio multo.
15 *Sceleſtus committit malum cùm converſatur cum juſto, & odit memoriam circumſpectionis.*
16 *Mulier gratioſa ſuſcitat ſuo*
viro gloriam : & ſedes deſpectionis, mulier peroſa juſtitias. Pigri poſſidentes divitias evadent pauperes: & ſolertes confirmabuntur in opulentia. 17 *Animæ ſuæ benefacit homo miſericors.* 18 *Impius facit opera iniqua : & progenies juſtorum facit*
præmium veritatis. 19 *Filius juſtus gignitur*
ad vitam : & paſſus iniqui currit ad
mortem. 20 *Abominatio eſt apud Dominum*
via perverſa : & omnes, in quorum viis
non eſt culpa, ſunt accepti apud ipſum. 21 *Et*
qui tradit manum manui iniquè, nullo
modo erit impunis : & qui ſeminat juſtitiam, accipiet mercedem ſecuram. 22 *Uti*
inauris in naſo porcæ, ſic eſt pulchritudo in muliere minimè circumſpecta.
23 *Deſiderium juſtorum totum eſt rectum,*
& ſpes impiorum peribit. 24 *Sunt homines*
qui ſerunt ac ſpargunt res ſuas, & acquirunt, plures iis : & ſunt homines qui
colligunt, & deficit conditio illorum, &
in paupertatem rediguntur. 25 *Omnis anima benedicta ſimplex eſt : & viri iracundi consuetudo non eſt bona.* 26 *Et qui*
congregat triticum, relinquet illud gentibus : & benedictio deſcendet ſuper
caput donantis, liberalis. 27 *Faciens recta,*
cupit gratiam bonam : & optans iniquitates, apprehendent eum. 28 *Tenax in opibus & avarus in iis, hic cadet : & qui*
auxiliatur juſtis, ejus lumen ſplendeſcet.
29 *Qui non benè incedit domi ſuæ, poſſidebit ventos: & inſipiens ſerviet prudenti.*
30 *De fructu juſtitiæ naſcetur arbor vitæ :*
& animæ declinantium à lege, ſeparabuntur ante terminum ſuum. 31 *Si*
juſtus cum difficultate ſalvatur, igitur peccator, & iniquus ubi apparebit?

משלי : יב

CAP. XII. יב

,increpationem odiens & ; scientiam diligens , correctionem Diligens

1 אהב מוסר אהב דעת ושנא תוכחת

machinationum virum & : Domino à benevolentiam educet Bonus .insipiens

2 בער: טוב יפיק רצון מיהוה ואיש מזמות

justorum radix & : impietate in homo stabilis erit Non .reum peraget

3 ירשיע: לא־יכון אדם ברשע ושרש צדיקים

putredo velut & ; sui mariti corona virtutis Mulier .commovebitur non

4 בל־ימוט: אשת חיל עטרת בעלה וכרקב

: judicium justorum Cogitationes .afficiens pudore ejus ossibus in

5 בעצמותיו מבישה: מחשבות צדיקים משפט

insidiari impiorum Verba .dolus impiorum callida consilia

6 תחבלות רשעים מרמה: דברי רשעים ארב־

: ipsi non & , impios Vertendo .eos eruet rectorum os & ; sanguini

7 דם ופי ישרים יצילם: הפוך רשעים ואינם

laudabitur ipsius intellectum os Ad .stabit justorum domus &

8 ובית צדיקים יעמד: לפי שכלו יהלל־

,despectus Bonus .contemptum in erit corde perversus & : vir

9 איש ונעוה־לב יהיה לבוז: טוב נקלה

justus Cognoscens .pane carente & ,se glorificante præ : sibiipsi servus &

10 ועבד לו ממתכבד וחסר־לחם: יודע צדיק

Colens .crudelis impiorum miserationes & : sui jumenti animam

11 נפש בהמתו ורחמי רשעים אכזרי: עבד

.corde carens , vacuos sequens & : pane saturabitur ,suam humum

אדמתו ישבע־לחם ומרדף ריקים חסר־לב:

.dabit justorum radix & ; malorum rete impius Desideravit

12 חמד רשע מצוד רעים ושרש צדיקים יתן:

angustia de egredietur & : malus laqueus labiorum prævaricatione In

13 בפשע שפתים מוקש רע ויצא מצרה

retributionem & : bono saturabitur viri oris fructu De .justus

14 צדיק: מפרי פי־איש ישבע־טוב וגמול־

; ejus oculis in recta stulti Via .ei reddet hominis manuum

15 ידי־אדם ישוב לו: דרך אויל ישר בעיניו

: eius ira cognoscetur die in Stulti .sapiens consilio audiens &

16 ושמע לעצה חכם: אויל ביום יודע כעסו

annunciabit ,veritatem Efflabit .callidus ,ignominiam operiens &

17 וכסה קלון ערום: יפיח אמונה יגיד

confossiones ut effutiens Est .dolum ,falsitatum testis & ; justitiam

18 צדק ועד שקרים מרמה: יש בוטה כמדקרות

erit firmum veritatis Labium .sanitas sapientum lingua & : gladii

19 חרב ולשון חכמים מרפא: שפת־אמת תכון

Dolus .falsitatis linguam faciam quiescere perpetuò & : perpetuum in

20 לעד ועד־ארגיעה לשון שקר: מרמה

Non .lætitia ,pacis consiliariis & ; malum fabricantium corde in

21 בלב־חרשי־רע וליעצי שלום שמחה: לא־

.malo sunt repleti impii & : iniquitas omnis justo accidet

יאנה לצדיק כל־און ורשעים מלאו רע:

, veritatem facientes & ; falsitatis labia Domini Abominatio

22 תועבת יהוה שפתי־שקר ועשי אמונה

stultorum cor & ; scientiam operiens callidus Homo .ejus voluntas

23 רצונו: אדם ערום כסה דעת ולב כסילים

dolosa & ; dominabitur solicitorum Manus .stultitiam prædicabit

24 יקרא אולת: יד־חרוצים תמשול ורמיה

.tributum in erit

תהיה למס:

Versio VUL.LAT.

CAP. XII.

1 Qui diligit disciplinam, diligit scientiam : qui autem odit increpationes, insipiens 2 est. Qui bonus est, hauriet gratiam à Domino : qui autem confidit in cogitationibus 3 suis, impiè agit. Non roborabitur homo ex impietate : & radix justorum non commo- 4 vebitur. Mulier diligens, corona est viro suo : & putredo in ossibus ej⁹, quæ confusione 5 res dignas gerit. Cogitationes justorum judicia : & consilia 6 impiorum fraudulenta. Verba impiorum insidiantur sanguini : os justorum liberabit eos. 7 Verte impios, & non erunt : domus autem justorum per- 8 manebit. Doctrinâ suâ noscetur vir : qui autem vanus & excors est, patebit contem- 9 ptui. Melior est pauper & sufficiens sibi, quàm gloriosus & 10 indigens pane. Novit justus jumentorum suorum animas : viscera autem impiorum cru- 11 delia. Qui operatur terram suam, satiabitur panibus : qui autem sectatur otium, stultissimus est. Qui suavis est in vini demorationibus, in suis munitionibus relinquit con- 12 tumeliam. Desiderium impii munimentum est pessimorũ : radix autem justorũ proficiet. 13 Propter peccata labiorum ruina proximat malo: effugiet au- 14 tem justus de angustia. De fructu oris sui unusquisque replebitur bonis, & juxta opera manuũ suarum retribuetur ei. 15 Via stulti recta in oculis ejus : qui autem sapiens est, audit 16 consilia. Fatuus statim indicat iram suam: qui autem dissimu- 17 lat injuriam, callidus est. Qui ꝙ novit loquitur, index justitiæ est : qui autem mentitur, 18 testis est fraudulentus. Est qui promittit, & quasi gladio pungitur conscientiæ : lingua autẽ 19 sapientiũ sanitas est. Labium veritatis firmũ erit in perpetuũ : qui autẽ testis est repentinus, concinnat linguã men- 20 dacii. Dolus in corde cogitantiũ mala : qui autẽ pacis ineunt consilia, sequitur eos 21 gaudiũ. Non contristabit justũ quidquid ei acciderit : impii 22 autem replebuntur malo. Abominatio est Dño labia mendacia : qui autẽ fideliter agunt, 23 placent ei. Homo versutus ce- 24 lat scientiam : & cor insipientium provocat stultitiam. Manus fortium dominabitur : quæ autem remissa est, tributis serviet.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. ιβ΄.

1 † Ὁ ἀγαπῶν παιδείαν, ἀγαπᾷ αἴσθησιν· 2 † ὁ δὲ μισῶν ἐλέγχους, ἄφρων. † Κρείσσων ὁ εὑρὼν χάριν παρὰ κυρίῳ, † ἀνὴρ δὲ πα- 3 ράνομος παρασιωπηθήσεται. † Οὐ κατορθώσει ἄνθρωπος ἐξ ἀνόμου, † αἱ δὲ ῥί- 4 ζαι τῶν δικαίων οὐκ ἐξαρθήσονται. † Γυνὴ ἀνδρεία στέφανος τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς, † ὥσπερ δὲ ἐν ξύλῳ σκώληξ, οὕτως ἄνδρα ἀ- 5 πόλλυσι γυνὴ κακοποιός. † Λογισμοὶ δικαίων κρίματα, † κυβερνῶσι δὲ ἀσεβεῖς 6 δόλους. † Λόγοι ἀσεβῶν δόλιοι, † στόμα δὲ 7 ὀρθῶν ῥύσεται αὐτούς. † Οὗ ἐὰν στραφῇ ὁ ἀσεβής, ἀφανίζεται, † οἶκοι δὲ δικαίων 8 παραμένουσι. † Στόμα συνετοῦ ἐγκωμιάζεται ὑπὸ ἀνδρός, † νωθροκάρδιος δὲ 9 μυκτηρίζεται. † Κρείσσων ἀνὴρ ἐν ἀτιμίᾳ δουλεύων ἑαυτῷ, † ἢ τιμὴν ἑαυτῷ περιτιθεὶς, 10 καὶ προσδεόμενος (α) ἄρτου. † Δίκαιος οἰκτείρει ψυχὰς κτηνῶν αὐτοῦ, † τὰ δὲ 11 σπλάγχνα τῶν ἀσεβῶν ἀνελεήμονα. † Ὁ ἐργαζόμενος τὴν ἑαυτοῦ γῆν, ἐμπλησθήσεται ἄρτων, † οἱ δὲ διώκοντες μάταια, ἐνδεεῖς φρενῶν. † ὅς ἐστιν ἡδὺς ἐν οἴνων διατριβαῖς, † ἐν τοῖς ἑαυτοῦ ὀχυρώμασι καταλείψει 12 ἀτιμίαν. † Ἐπιθυμίαι ἀσεβῶν κακαί, † αἱ δὲ ῥίζαι τῶν εὐσεβῶν ἐν ὀχυρώμασι. 13 † Δι' (β) ἁμαρτίαν χειλέων ἐμπίπτει εἰς παγίδας ἁμαρτωλός, † ἐκφεύγει δὲ ἐξ αὐτῶν δίκαιος. † ὁ βλέπων λεῖα ἐλεηθήσεται, † ὁ δὲ συναντῶν ἐν πύλαις ἐκθλίψει 14 ψυχάς. † Ἀπὸ καρπῶν στόματος ψυχὴ ἀνδρὸς πλησθήσεται ἀγαθῶν, † ἀνταπόδο- 15 μα δὲ χειλέων αὐτοῦ δοθήσεται αὐτῷ. † Ὁδοὶ ἀφρόνων ὀρθαὶ ἐνώπιον αὐτῶν, † εἰσα- 16 κούει δὲ συμβουλίας σοφός. † Ἄφρων αὐθημερὸν ἐξαγγέλλει ὀργὴν αὐτοῦ, † κρύπτει δὲ 17 τὴν ἑαυτοῦ (γ) ἀτιμίαν ἀνὴρ πανοῦργος. † Ἐπιδεικνυμένην πίστιν ἀπαγγέλλει δίκαιος, 18 † ὁ δὲ μάρτυς τῶν ἀδίκων δόλιος. † Εἰσὶν οἳ λέγοντες τιτρώσκουσι, (δ) μάχαιραι· † γλῶσ- 19 σαι δὲ σοφῶν ἰῶνται. † Χείλη ἀληθινὰ κατορθοῖ μαρτυρίαν, † μάρτυς δὲ ταχὺς 20 γλῶσσαν ἔχει ἄδικον. † Δόλος ἐν καρδίᾳ τεκταινομένου κακά, † οἱ δὲ βουλόμενοι εἰρή- 21 νην εὐφρανθήσονται. † Οὐκ ἀρέσει τῷ δικαίῳ οὐδὲν ἄδικον, † οἱ δὲ ἀσεβεῖς πλησθή- 22 σονται κακῶν. † Βδέλυγμα κυρίῳ χείλη ψευδῆ, † ὁ δὲ ποιῶν πίστεις δεκτὸς παρ' 23 αὐτῷ. † Ἀνὴρ συνετὸς θρόνος αἰσθήσεως, † καρδία δὲ ἀφρόνων συναντήσεται ἀραῖς. 24 † Χεὶρ ἐκλεκτῶν κρατήσει (ε) εὐχερῶς, † δόλιοι δὲ ἔσονται (ζ) ἐν προνομῇ.

CAP. XII.

Qui diligit disciplinam,
diligit sensum : qui autem odit
crepationes, insipiens. (b) Meli
qui invenit gratiam à Domi
vir autem iniquus tacebitur. No
(c) prosperabitur homo ex iniqu
radices autem (d) justorum n
auferentur. Mulier (e) fortis, co
rona viro suo : sicut autem (f)
ligno vermis, sic virum dispe
mulier malefica. Cogitationes
storum judicia : (g) gubernant a
tem impii dolos. Verba impior
(h) dolosa : os autem (i) rector
liberabit eos. Quocunque se ver
rit impius, delebitur ; domus a
justorum permanent. (k) Os in
ligentis laudatur à viro : co
autem (l) subsannatur. Melior v
in (m) vilitate serviens sibi, qu
(n) honorem sibi circumponens
egens pane. Justus (o) misere
animas jumentorum suorum :
viscera autem impiorum imm
cordia. Qui operatur suam ter
replebitur panibus : (q) qui au
sequuntur vana, indigentes c
de. Qui est jucundus in vin
conversationibus; in suis mun
nibus relinquet ignominiam.
piditates impiorum malæ : ra
ces autem (r) piorum in mun
nibus. Propter peccatum labior
incidit in laqueos peccator: eff
autem ex eis justus. (s) Qui
det levia, misericordiam c
habebitur : qui autem occur
portis, vexabit animas. De fru
bus oris anima viri implebitu
nis : (t) & retributio labiorum
jus dabitur ei. Viæ insipient
ctæ coram ipsis ; (u) exaudit a
consilia sapiens. Imprudens i
die (x) enunciat iram suam :
condit autē inhonorationem
astutus. (z) Planam fidem an
tiat justus : (ω) testis autem in
storum dolosus. (aa) Sunt, qui
centes vulnerant, enses : lin
autem sapientum sanant. Lab
racia (bb) dirigunt testimon
testis autem (cc) citus ling
habet injustam. Dolus in c
(dd) fabricantis mala : qui a
(ee) volunt pacem, (ff) lætab
tur. Non placebit justo qui
injustum : impii autem impl
tur malis. Abominatio Domin
bia mendacia : qui autem
des ; (gg) acceptus apud e
(hh) intelligens, (ii) thron
sûs : cor autem insipient
occurret execrationibus.
(ll) electorum dominabitur facile : dolosi autem erunt in (mm) dire

MS.A. (α) ἄρτων. Οἰκτείρει δίκαιος (β) ἁμαρτίας (γ)
πανοῦργος. (δ) μάχαιραν· (ε) ἐχθρῶν, (ζ) εἰς προνομήν.

תרגום TARGUM.

יב

1 2 מן דרחם מרדותא רחם ידיעתא וסני מכסנותא בורא הוא : טב מן דקביל רעותיה
3 דאלהא וגברא רשיעא רעיא תרעיתיה : לא נתקן בר נשא ברשעא ועקרהון
4 דצדיקי לא נזוע : אתתא כשרתא כלילא לבעלה ואנתתא בישתא היך מלטיתא
5 בקיסא היכנא מיבדא גרמוי דגברה : מחשבתהון דצדיקי דינא מדברנותא
6 דרשיעי רמיותא : מלי דרשיעי כמנין לדמא ופומהון דתריצי מפצי להון :
7 8 נתהפכון רשיעי ולא נשתכחון וביתהון דצדיקי יקום : גברא משתבח בפומא
9 דסוכלתנותיה וחסיר רעינא יהוי לשטותא : טב הוא זלילא ועבדי איתליה מן הוא
10 דמתיקר וחסיר לחמא : ידיע צדיקא נפשא דבעיריה ורחמיהון דרשיעי נכוריותא :
11 12 דפלח בארעה יסבע לחמא ודרדף בתר סריקותא חסר רעינא הוא : ראג רשיעא
13 מצודתא בישתא ועקרהון דצדיקי נתקים : בחובא דשפותא מתקל בישא ופליט צדיקא
14 מן עקתא : גברא מן פרי פומיה ישבע טבתא וכל בר נש היך עובד אידוי מתפריע :
15 16 ארחיה דסכלא תריצא באפוי ודשמע לעיצתא חכימא הוא : שטיא כד יומיה
17 מודע רוגזיה ועריםמ מכסי צעריה : מן דמסהיד הימנותא נתני צדיקותא וסהד
18 19 דשקרא רמאה הוא : אית דאמריה ספסירא רגשא ולישנא דחכימי מאסיה : שפתא
20 דקשטא תתקן לעלם וסהדא מסתרהב בלישנא דשקרא : רמיותא בלבהון דחשלין
21 בישתא ולאלין דיעצין שלמא חדותא תהוי : לא שפיר לצדיקא כל מדעם דעאתא
22 ורשיעי מלין בישתא : מרחקתיה דאלהא ספותיה דשקרא ובאלין דעבדין הימנותא
23 24 מתרעי : בר נש ערימא מכסה ידיעתא ולבהון דסכלי קרי ידיעתא : אידא דתקיפי
תשלט ורמאי יהון למסא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. XII.

Qui diligit disciplinam, diligit scientiam : & qui odit increpati
insipiens est. Bonus est qui suscipit voluntatem à Deo, & vir
infringitur consilium. Non dirigetur filius hominis in impietate
autem justorum non commovebitur. Mulier honesta corona est v
& mulier mala sicut putredo in ligno, sic disperdit ossa viri sui.
tationes justorum, judicium ; & solertia impiorum fraus est. Ver
piorum insidiantur sanguini, & os rectorum liberat eos. Subver
impii, & non inveniuntur ; domus autem justorum permanebit.
datur juxta intellectum ejus , & indigens intelligentia erit in co
ptum. Melior est abjectus qui habet servos, quàm ille qui gloriosus
indiget pane. Novit justus animam jumenti sui ; & miserationes
orum, crudelitas. Qui operatur terram suam satiabitur pane :
sectatur vacua, indigens intellectu est. Desiderat impius rete ma
autem justorum permanebit. Propter peccatum labiorum corru
lus, & liberatur justus de angustia. Vir de fructibus oris sui sa
bono, & omni homini retribuetur juxta opus manuum suarum.
ti recta est in conspectu ejus : & qui audit consilium, sapiens e
tus importunè iram suam ostendit : callidus autem celat ignomin
am. Qui attestatur veritatem, narrat justitiam, & testis falsus
Est cujus sermo [*est quasi*] *gladius tumultuosus*, & lingua sapien
nat. Labium veritatis dirigetur in seculum , & festinus lingua
sitatis est. Dolus est in corde eorum qui cogitant malum, & gau
iis qui consilium pacis ineunt. Non decet justum aliquid iniquitat
autem replentur malo. Abominatio Dei est labium mendacii :
fideliter agunt placent ei. Filius hominis astutus operit scient
cor stultorum repetit scientiam. Manus fortium dominabitur, &
erunt in tributum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ * ܕܪܚܡ ܡܪܕܘܬܐ. ܪܚܡ ܝܕܥܬܐ. ܘܕܣܢܐ ܡܟܣܢܘܬܐ ܣܟܠܐ 1
ܗܘ. * ܢܛܐܒ ܠܓܒܪܐ ܕܢܛܪ ܨܒܝܢܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܢܬܚܝܒ. * ܠܐ ܢܬܩܢ ܓܒܪܐ 2
ܒܪܘܫܥܗ. ܘܥܩܪܐ ܕܙܕܝܩܐ ܠܐ ܢܙܘܥ. * ܐܢܬܬܐ ܚܝܠܬܢܝܬܐ ܟܠܝܠܐ ܗܝ ܠܒܥܠܗ. ܘܐܝܟ ܩܡܝܬܐ 3 4
ܘܬܘܠܥܐ ܒܩܝܣܐ. ܗܟܢܐ ܡܘܒܕܐ ܠܓܒܪܐ ܐܢܬܬܐ ܒܝܫܬܐ. * ܡܚܫܒܬܗܘܢ ܕܙܕܝܩܐ
ܕܝܢܐ. ܘܗܘܦܟܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܢܟܠܐ. * ܡܠܐ ܕܥܘܠܐ ܡܟܡܢܝܢ ܠܕܡܐ. ܘܦܘܡܗܘܢ ܕܬܪܝܨܐ ܡܦܨܐ 5 6
ܠܗܘܢ. * ܢܬܗܦܟܘܢ ܥܘܠܐ. ܘܠܐ ܢܫܬܟܚܘܢ. ܘܒܝܬܐ ܕܙܕܝܩܐ ܢܬܩܝܡ. * ܠܦܘܡܐ 7 8
ܡܗܘܡܢܐ ܢܫܒܚܘܢ ܒܢܝ ܐܢܫܐ. ܘܕܚܣܝܪ ܪܥܝܢܐ ܢܬܒܣܐ. * ܛܒ ܗܘ ܓܒܪܐ 9
ܡܣܟܢܐ ܕܡܫܡܫ ܢܦܫܗ. ܛܒ ܡܢ ܗܘ ܕܡܫܬܒܗܪ. ܘܚܣܝܪ ܠܠܚܡܐ. * ܙܕܝܩܐ ܝܕܥ ܢܦܫܐ 10
ܕܒܥܝܪܗ. ܘܪܚܡܝܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܐܚܝܕܝܢ. * ܕܦܠܚ ܐܪܥܗ ܢܣܒܥ ܠܚܡܐ. ܘܕܪܕܦ ܒܬܪ ܣܪܝܩܘܬܐ 11
ܚܣܝܪ ܪܥܝܢܐ ܗܘ. * ܪܓܐ ܥܘܠܐ ܠܡܥܒܕ ܒܝܫܬܐ. ܘܥܩܪܐ ܕܙܕܝܩܐ ܢܦܪܥ. * ܒܥܘܠܐ 12 13
ܕܣܦܘܬܗ ܡܬܐܚܕ ܒܝܫܐ. ܘܦܠܛ ܙܕܝܩܐ ܡܢ ܐܘܠܨܢܐ. * ܓܒܪܐ ܛܒܐ ܡܢ ܦܐܪܐ ܕܦܘܡܗ 14
ܢܣܒܥ. ܘܟܠ ܒܪܢܫ ܐܝܟ ܥܒܕ ܐܝܕܘܗܝ ܡܬܦܪܥ. * ܐܘܪܚܗ ܕܣܟܠܐ ܫܦܝܪܐ ܗܝ ܒܥܝܢܘܗܝ. 15
ܘܕܫܡܥ ܠܡܠܟܐ ܚܟܝܡ ܗܘ. * ܣܟܠܐ ܒܗ ܒܝܘܡܗ ܡܘܕܥ ܪܘܓܙܗ. ܘܚܪܝܦܐ ܡܟܣܐ 16
ܨܥܪܗ. * ܗܝܡܢܘܬܐ ܓܠܝܬܐ ܡܡܠܠ ܙܕܝܩܐ. ܘܣܗܕܐ ܕܥܘܠܐ ܢܟܝܠ ܗܘ. * ܐܝܬ ܕܐܡܪܝܢ 17 18
ܚܪܒܐ ܕܩܪܝܐ. ܘܠܫܢܐ ܕܚܟܝܡܐ ܡܐܣܐ. * ܣܦܘܬܐ ܕܫܪܪܐ ܬܪܝܨܢ. ܘܣܗܕܐ ܡܣܪܗܒܐ. 19
ܠܫܢܗ ܥܘܠܐ. * ܢܟܠܐ ܒܠܒܗ ܕܒܝܫܐ ܒܢܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܝܠܝܢ ܕܡܬܡܠܟܝܢ ܫܠܡܐ 20
ܬܗܘܐ ܠܗܘܢ ܚܕܘܬܐ. * ܠܐ ܫܦܝܪ ܠܓܒܪܐ ܙܕܝܩܐ ܡܕܡ ܕܢܟܠܐ. ܘܥܘܠܐ ܡܠܝܢ ܒܝܫܬܐ. 21
* ܣܦܘܬܐ ܕܟܕܒܘܬܐ ܡܣܠܝ ܡܪܝܐ. ܘܨܒܐ ܒܐܝܠܝܢ ܕܥܒܕܝܢ ܗܝܡܢܘܬܐ. * ܓܒܪܐ ܥܪܝܡܐ 22 23
ܟܘܪܣܝܐ ܗܘ ܕܝܕܥܬܐ. ܘܠܒܐ ܕܣܟܠܐ ܩܪܐ ܠܒܝܫܬܐ. * ܐܝܕܐ ܕܚܝܠܬܢܐ ܬܫܠܛ. ܘܢܟܝܠܐ ܢܗܘܘܢ ܠܡܕܐܬܐ. 24

CAP. XII.

Qui diligit increpationem, diligit ſcien- 1
tiā : & qui odit increpationē, ſtultꝰ eſt.
Bene cedet viro cuſtodienti volūtatē Dñi : at 2
vir iniquus condemnabitur. Non firmabitur 3
homo ex impietate ſua : & radix juſti non
movebitur. Mulier virtute prædita, corona 4
eſt mariti ſui : & qualis eſt caries ac vermis
in ligno, ſic perdit virum mulier nefaria.
Cogitationes juſtorū, judiciū : & converſatio 5
impiorū, fraus. Verba ſceleſtorū inſidiantur 6
ſanguini : & os juſtorū liberat eos. Subver- 7
tentur impii, & non invenientur : domus au-
tem juſtorū perdurabit. Os prudens lauda- 8
bunt homines : & qui expers eſt judicio, de-
ſpicietur. Melior eſt vir pauper miniſtrans 9
ſibiipſi, melior *inquam* eo qui gloriatur, &
indiget pane. Juſtus agnoſcit animā jumenti 10
ſui : at impiorū clauſa ſunt viſcera. Qui colit 11
terrā, ſaturabitur pane : & qui currit poſt va-
nitatē, demens eſt. Exoptat impius patrare 12
facinus : & radix juſtorū germinabit. In ini- 13
quitate labiorū ſuorū capitur malignꝰ : effugit
autē juſtꝰ ex anguſtia. Vir probꝰ fructibꝰ oris 14
ſui ſaturabitur : & cuiq; homini juxta opus
manuū ſuarū rependetur. Via deſipientis, bo- 15
na eſt in oculis ſuis : & qui obtemperat con-
ſilio, ſapiens eſt. Stultus eâdē die declarat 16
irā ſuā : at prudens tegit opprobriū ſuū. Fi- 17
delitatē manifeſtam loquitur juſtus : & teſtis
iniquitatis, fraudulentꝰ eſt. Sunt qui dicunt, 18
Gladius transfodit, lingua verò ſapientū ſa-
nat. Labia veracia recta ſunt : & teſtis temera- 19
rii lingua eſt iniqua. Dolus in corde maligni 20
ſtruit malitiam : & iis qui conſulunt paci, erit
gaudiū. Non convenit viro juſto quidquam 21
fraudis : impii autē pleni ſūt nequitiis. Labia 22
mendacia abominatur Dñs : delectatur au-
tem iis qui agunt fideliter. Homo cautus, 23
ſedes eſt ſcientiæ : et cor ſtultorum advocat
nequitiam. Manus fortium dominabitur : 24
et fraudulenti erunt ſub tributo.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* الفصل الثاني عشر * من يحب الادب يحب الحس * ومن يمقت التوبيخات 1
فذاك جاهلا * من وجد عند الرب نعمة فذاك الفاضل * والانسان المتجاوز الشريعة سيعرض عنه 2
* الانسان ما يتقوم من قبل من لا شريعة له * واصول المقسطين لن تقتلع * الامراة الشهمة 3 4
اكليلا لرجلها * بمنزلة الدودة في الخشب هكذا تهلك الرجل امراة تعمل السوء * افكار 5
المقسطين حكومات * والمنافقون يدبرون الغشوش * اقوال المنافقين غاشة * وفم المقومين 6
ينجيهم * الى حيث ما اتجه المنافق ولفت يبيد ويهلك * ومنازل المقسطين تبقى ثابتة * فم 7 8
الفقيه تمدحه الناس * والناكل القلب يستهزا به * الانسان الذي في خطر خامل يخدم ذاته 9
افضل ممن يجعل لنفسه كرامة وهو محتاج خبزا * المقسط يتراف على انفس بهائمه * وجوانح انفس 10
المنافقين لا رحمة لها * من فلح ارضه يمتلي من الاخباز * والذين يجرون غرورات الاباطيل 11
اراوهم ناقصة * من يكون ملتذ في حانات الخمور سيجد في حصونه هوانا * شهوات المنافقين 12
سيئة * واصول العابدين المومنين في صيانة * الخاطي من اجل خطايا شفتيه يسقط في الفخاخ 13
والمقسط يفلت منها * من يبصر بصرا مقوما سيرحم * ومن يلتقي في الابواب يغم النفوس
* من ثمر الفم يمتلي نفس الانسان خيرات * وسيعطى مكافاة شفتيه * طرق الجهال مستوية 14 15
امامهم * والحكيم يسمع المشورة * الجاهل من يومه يخبر بغيظه * والماكر يكتم اهانته 16
* المقسط يعد ويخبر بامانة مكشوفة * وشاهد الظلم غاش يكون * قوم يقولون انهم يجرحون 17 18
بالسيف * والسن حكماء تصدى * الشفاه الصادقة تبقي الشهادة * والشاهد العاجل له 19
لسان ظالم * الغش في القلب ينشئ الطالحات * والذين يريدون السلامة يفرحون * ما يرضي 20 21
المقسط ظلما * ولا صنفا واحدا منه * والمنافقون يستوعبون من الاسواء * الشفة الكاذبة رذالة 22
عند الرب ومن يعمل الصدق مقبول عنده * الانسان الفقيه كرسي الحس * وقلب الاغبياء 23
تلقاه اللعنات * يد المختارين تملك بسهولة * والدغلون يكونون للاسر 24

PSAL. XII.

Qui amat diſciplinam, amat pruden- 1
tiam : & qui odit correptiones, ipſe eſt ſtul-
tus. Qui invenit apud Dominum gratiam, 2
ipſe eſt virtute præditus : & vir tranſgre-
diens legem avertet ſe ab eo. Homo non 3
corrigitur beneficio non habentis legem :
& radices juſtorum nullo modo era-
dicabuntur. Mulier prudens, corona eſt 4
viro ſuo : ſicut vermis in ligno, ſic perdit
virum mulier quæ malū committit. Co- 5
gitationes juſtorum, judicia : & impii
diſponent fraudes. Verba iniquorum, frau- 6
dulenta : & os rectorum liberabit eos.
Quocunq; abierit iniquus & ſeſe verte- 7
rit, peribit & perdetur : domicilia verò
juſtorum manebunt firma. Os doctoris 8
laudabunt homines : & timidus corde de-
ridebitur. Homo qui in ſtatu miſero in- 9
ſervit ſibi ipſi, præſtantior eſt eo qui facit
animæ honorem, cum ipſe egeat pane.
Juſtus miſeretur animarū jumentorum 10
ſuorū : & latera viſcerum impiorū nullā
habent miſericordiā. Qui operatur terrā 11
ſuā, implebitur panibus : & qui currunt
poſt dæmones falſitatum, mentes eorū de-
ficientes ſunt. Qui oblectatur in tabernis
vinariis, inveniet in finibus ſuis oppro-
brium. Deſideria iniquorum ſunt mala : & 12
radices piorum fideliū, in cuſtodia. Pecca- 13
tor ob peccata labiorū ſuorū cadet in la-
queos : & juſtus effugiet eos. Qui inſpi-
cit inſpectionem rectam, miſericordiam
conſequitur : & qui obvius eſt in portis,
contriſtat animas. De fructu oris impletur 14
hominis anima bonis, & dabitur ei re-
tributio labiorū ſuorū. Viæ ſtultorum 15
æquæ ſunt apud ipſos : & ſapiens audit
conſiliū. Stultus eodem die declarat iram 16
ſuam : & callidus abſcondit contemptū
ſuū. Juſtus enumerat & enarrat fide a- 17
pertâ : & teſtis iniquitatis, fraudulentus
eſt. Sunt quidā qui dicunt ſe ſauciaturos 18
gladio : at linguæ ſapientum ſe opponunt.
Labia veracia efficax reddunt teſtimoni- 19
um : & teſtis temerarius habet linguam
iniquam. Fraus in corde producit impro- 20
ba : & qui eligunt pacem, gaudebunt.
Non vult juſtus iniquitatem, nec ullam 21
ſpeciem ejus : & iniqui integrè capientur
à malis. Labium mendax, abominatio eſt 22
apud Dominum : qui autem facit veri-
tatem, eſt acceptus apud eum. Homo do- 23
ctus, ſedes prudentiæ : cordi autem
inſipientium occurrent maledictiones.
Manus electorum capiet cum facilitate : 24
& fraudulenti erunt in mancipationem.

משלי : יג

bonum verbum & : illud *incurvabit* viri corde in *Solicitudo*
25 דאגה בלב־איש ישחנה ודבר טוב
impiorum via & : juſtus ſuo *ſocio præ* *Abundans* .illud lætificabit
26 ישמחנה׃ יתר מרעהו צדיק ודרך רשעים
affluentia & : ſuam venationem *fraudulentus* aduret Non .eos faciet errare
27 תתעם׃ לא־יחרך רמיה צידו והון־
ſemita via & ; *vitæ* juſtitiæ ſemita In .*ſeduli* *precioſa* hominis
28 אדם יקר חרוץ׃ בארח־צדקה חיים ודרך נתיבה
.mors non
אל־מות׃

CAP. XIII. יג

audivit non deluſor & : patris eruditionem ſapiens Filius
1 בן חכם מוסר אב ולץ לא־שמע
anima & : *bonum* comedit viri oris fructu De .increpationem
2 גערה׃ מפרי פי־איש יאכל טוב ונפש
: ſuam animam *ſervans* ,ſuum os *Cuſtodiens* .*injuriam* prævaricatorum
3 בגדים חמס׃ נצר פיו שמר נפשו
ipſius anima non & ,*Concupiſcens* .*ei* contritio ſua labia aperienti
4 פשק שפתיו מחתה־לו׃ מתאוה ואין נפשו
falſitatis Verbum .impinguabitur ſolicitorum anima & : *pigri*
5 עצל ונפש חרצים תדשן׃ דבר־שקר
.afficiet pudore & ,*fætere* faciet impius & : juſtus habebit odio
ישנא צדיק ורשע יבאיש ויחפיר׃
pervertet impietas & : via perfectum cuſtodiet Juſtitia
6 צדקה תצר תם־דרך ורשעה תסלף
ubertas & ,ſe *depauperans* : *omne* non & ,ſe *ditans* Eſt .*peccatum*
7 חטאת׃ יש מתעשר ואין כל מתרושש והון
non pauper & : ejus *opulentia* viri animæ Redemptio .*multa*
8 רב׃ כפר נפש־איש עשרו ורש לא־
lucerna & : *lætificabit* juſtorum Lux .increpationem audivit
9 שמע גערה׃ אור־צדיקים ישמח ונר
cum & : litem dabit *ſuperbia in* Verè .extinguetur impiorum
10 רשעים ידעך׃ רק־בזדון יתן מצה ואת־
congregans & : *minuetur* vanitate ex *Affluentia* .ſapientia *conſultis*
11 נועצים חכמה׃ הון מהבל ימעט וקבץ
infirmitas *protracta* Spes .multiplicabit *manum* *ad uſque*
12 עד־יד ירבה׃ תוחלת ממשכה מחלה
Contemnens .veniens deſiderium *vitarum* lignum & : cordis
13 לב ועץ חיים תאוה באה׃ בז
.*compenſabitur* *ipſe* ,præceptum *timens &* : *ei* corrumpetur *rem*
לדבר יחבל לו וירא מצוה הוא ישלם׃
laqueis à recedendum ad ; *vitarum* vena ſapienti Lex
14 תורת חכם מקור חיים לסור ממקשי
prævaricatorum via & : gratiam dabit bonus Intellectus .mortis
15 מות׃ שכל טוב יתן־חן ודרך בגדים
pandet ſtultus & ; ſcientia *in* faciet callidus Omnis .dura
16 איתן׃ כל־ערום יעשה בדעת וכסיל יפרש
veritatum legatus & : malum in cadet impius Nuncius .ſtultitiam
17 אולת׃ מלאך רשע יפל ברע וציר אמונים
.ſanitas
מרפא׃

Verſio VULG. LAT.

25 Mœror in corde viri humiliabit illum, & ſermone bono 26 lætificabitur. Qui negligit damnum propter amicum, juſtus eſt : iter autem impio27rum decipiet eos. Non inveniet fraudulentus lucrum : & ſubſtantia hominis erit au28ri pretium. In ſemita juſtitiæ, vita : iter autem devium ducit ad mortem.

CAP. XIII.

1 Filius ſapiens, doctrina patris : qui autem illuſor eſt, 2 non audit cùm arguitur. De fructu oris ſui homo ſatiabitur bonis : anima autem præ3varicatorum iniqua. Qui cuſtodit os ſuum, cuſtodit animam ſuam : qui autem inconſideratus eſt ad loquen4dum, ſentiet mala. Vult & non vult piger : anima autem operantium impinguabitur. 5 Verbum mendax juſtus deteſtabitur : impius autem con6fundit, & confundetur. Juſtitia cuſtodit innocentis viam: impietas autem peccatorem 7 ſupplantat. Eſt quaſi dives, cùm nihil habeat : & eſt quaſi pauper, cùm in multis divitiis 8 ſit. Redemptio animæ viri, divitiæ ſuæ : qui autem pauper eſt, increpationem non ſuſti9net. Lux juſtorum lætificat: lucerna autem impiorum extin10guetur. Inter ſuperbos ſemper jurgia ſunt : qui autem agunt omnia cum conſilio, re11guntur ſapientiâ. Subſtantia feſtinata minuetur : quæ autem paulatim colligitur manu, 12 multiplicabitur. Spes quæ differtur, affligit animam : lignum vitæ deſiderium veni13ens. Qui detrahit alicui rei, ipſe ſe in futurum obligat : qui autem timet præceptum, in pace verſabitur. Animæ doloſæ errant in peccatis : juſti autem miſericordes ſunt, & 14 miſerantur. Lex ſapientis fons vitæ, ut declinet à ruina mor15tis. Doctrina bona dabit gratiam : in itinere contemptorum 16 vorago. Aſtutus omnia agit cum conſilio : qui autem fatuus eſt, aperit ſtultitiam. 17 Nuntius impii cadet in malum : legatus autem fidelis, ſanitas.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

25 † φοβερὸς λόγος καρδίαν ταράσσει ἀνδρὸς
δικαίου, † ἀγγελία δὲ ἀγαθὴ (μ) εὐφραίνει αὐτόν.
26 † Ἐπιγνώμων δίκαιος ἑαυτοῦ φίλος ἔσται,
† (ν) ἁμαρτάνοντας δὲ καταδιώξεται κακά,
† ἡ δὲ ὁδὸς τῶν ἀσεβῶν πλανήσει αὐτούς.
27 † Οὐκ ἐπιτεύξεται δόλιος θήρας, † κτῆ-
28 μα δὲ τίμιον ἀνὴρ καθαρός. † Ἐν ὁδοῖς δι-
καιοσύνης ζωή, † ὁδοὶ δὲ μνησικάκων εἰς
θάνατον.

(nn) *Terribilis ſermo cor tu viri juſti : nuntiatio autem bo lætificat eum. (oo) Cognitor ju ſtus, ſuiipſius (pp) amicus er eos autem qui peccant, perſequ tur mala : & via impiorum ſe ducet eos. Non conſequetur do ſus venationes : poſſeſſio autem pretioſa vir mundus. In viis ju ſtitiæ vita : viæ autem eorum qui memores ſunt injuriarum, a mortem.*

MS. A. (μ) εὐφρανεῖ (ν) αἱ δὲ γνῶμαι τῶν ἀσεβῶν ἀνεπιεικεῖς, ἁμαρτάνοντας καταδιώξεται

ΚΕΦ. ιγʹ.

1 † Υἱὸς πανοῦργος ὑπήκοος πατρί, † υἱὸς δὲ
2 ἀνήκοος ἐν ἀπωλείᾳ. †(α) Ἀπὸ καρ-
πῶν δικαιοσύνης φάγεται ἀγαθός, † ψυχαὶ
3 δὲ παρανόμων ὀλοῦνται ἄωροι. † Ὃς φυλάσ-
σει τὸ ἑαυτοῦ στόμα τηρεῖ τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν,
† ὁ δὲ προπετὴς χείλεσιν πτοήσει ἑαυτόν.
4 † Ἐν ἐπιθυμίαις ἐστὶ πᾶς ἀεργός, † χεῖρες
5 δὲ ἀνδρείων ἐν ἐπιμελείᾳ. † Λόγον ἄδι-
κον μισεῖ δίκαιος, † ἀσεβὴς δὲ αἰσχύνεται,
7 καὶ οὐκ ἕξει παρρησίαν. (β)† Εἰσὶν οἱ πλουτί-
ζοντες ἑαυτοὺς μηδὲν ἔχοντες, † καὶ εἰσὶν οἱ
8 ταπεινοῦντες ἑαυτοὺς ἐν πολλῷ πλούτῳ. † Λύ-
τρον ἀνδρὸς ψυχῆς ὁ ἴδιος πλοῦτος, † πτω-
9 χὸς δὲ οὐχ ὑφίσταται ἀπειλήν. † Φῶς δι-
καίοις διαπαντός, † φῶς δὲ ἀσεβῶν σβέν-
νυται. † ψυχαὶ δόλιαι πλανῶνται ἐν ἁ-
μαρτίαις, † δίκαιοι δὲ οἰκτείρουσι καὶ ἐλεοῦσι.
10 † Κακὸς μεθ' ὕβρεως πράσσει κακά, † οἱ δὲ
11 ἑαυτῶν ἐπιγνώμονες σοφοί. † Ὕπαρξις
ἐπισπουδαζομένη μετὰ ἀνομίας, ἐλάσσων
γίνεται, † ὁ δὲ συνάγων ἑαυτῷ μετ' εὐσε-
βείας πληθυνθήσεται. † δίκαιος οἰκτεί-
12 ρει καὶ κιχρᾷ. † Κρείσσων ἐναρχόμενος
(γ) βοηθῶν καρδίᾳ, † τοῦ ἐπαγγελλομένου
καὶ εἰς ἐλπίδα ἄγοντος· † δένδρον γὰρ ζωῆς,
13 ἐπιθυμία (δ) ἀγαθή. † Ὃς καταφρονεῖ
πράγματος, καταφρονηθήσεται ὑπ' αὐτοῦ·
† ὁ δὲ φοβούμενος ἐντολήν, οὗτος ὑγιαίνει.
† υἱῷ δολίῳ οὐδὲν ἔσται ἀγαθόν, † οἰκέτῃ δὲ
σοφῷ εὔοδοι ἔσονται πράξεις, † καὶ κατευ-
14 θυνθήσεται ἡ ὁδὸς αὐτοῦ. † Νόμος σο-
φοῦ πηγὴ ζωῆς, † ὁ δὲ ἄνους ὑπὸ παγίδος
15 θανεῖται. † Σύνεσις ἀγαθὴ δίδωσι χά-
ριν, † τὸ δὲ γνῶναι νόμον διανοίας ἐστὶν ἀ-
γαθῆς, † ὁδοὶ δὲ καταφρονούντων ἐν ἀπω-
16 λείᾳ. † Πᾶς πανοῦργος πράσσει μετὰ γνώ-
σεως, † ὁ δὲ ἄφρων ἐξεπέτασεν ἑαυτοῦ κα-
17 κίαν. † Βασιλεὺς θρασὺς ἐμπεσεῖται εἰς
κακά, † ἄγγελος δὲ σοφὸς ῥύσεται αὐτόν.

CAP. XIII.

Filius (a) aſtutus, obediens tri : filius autem inobediens perditione. De fructibus juſti comedet bonus : animæ autem quorum (b) peribunt immaturæ. Qui cuſtodit ſuum os, ſervat am animam : & qui temerarius eſt labiis, (c) terrebit ſeipſum. deſideriis eſt (d) omnis otioſus manus autem fortium in (e) dulitate. Verbum injuſtum juſtus : impius autem confunditur & (f) non habebit libertatem quendi. Sunt qui ditant ſe, habentes: & ſunt (g) qui humili ant ſe in multis divitiis. (h) Re emptio animæ viri propriæ divitiæ inops autem (i) non ſuſtinet minationem. Lux juſtis perpetua lux autem impiorum extinguitur. Animæ doloſæ errant in peccatis juſti autem miſerantur, & mi rentur. (k) Malus cum contumelia agit mala : qui autem (l) ſuiipſo rum cognitores, ſapientes. Subſtan tia (m) feſtinata cum iniquitate minor fit : congregans autem cum pietate multiplicabitur. Juſtus miſeretur, & commodat. Melior, qui incipit auxiliari de, eo qui promittit, & in ſpem adducit : arbor enim vitæ de derium bonum. Contemnens (o) contemnetur ex ea : timens autem mandatum, hic (p) ſanus eſt. Filio doloſo nullum erit bo num: famulo autem ſapienti proſpe rè procedent actiones, & dirige tur via ejus. Lex ſapientis fons vitæ : (q) demens autem ſub la queo morietur. Intellectus bonus dat gratiam: noſcere autem legem mentis eſt bonæ : viæ autem con temnentium, in perditione. Omnis aſtutus agit cum ſcientia: inſipiens autem expandit (r) ſuam malitiam: (ſ) Rex audax incidet in mala : nuntius autem (t) ſapiens liberabit eum.

MS.A. (α) Ἀπὸ καρποῦ (β) † δικαιοσύνη φυλάσσει ἀκάκους † τοὺς δὲ ἀσεβεῖς φαύλους ποιεῖ ἁμαρτία. Εἰσὶν οἱ πλουτίζοντες (γ)
θεῖν (δ) * κακή.

תרגום TARGUM.

25 מלתא דחילתא בלביה דגברא מדחלא ומליא טביא מחדין ליה׃ טב מן חבריה
26 27 צדיקא וארחהון דרשיעי מתעי להון׃ לא נסתקבל צידא לגברא נכילא ומוליה
28 דבר אנש דהבא יקירא׃ בארחא דצדיקא חיי ואורח דעותנא
למותא׃

יג

1 2 בר חכימא מקבל מרדותא דאבא וברא ממקנא לא מקבל בעתא׃ גברא
3 מן פרי פומיה נסבע טבתא ונפשהון דבזוזי תתחטף׃ דנטר פומיה מזדהר בנפשיה
4 ופתיח שפותיה סיגו שציא אית ליה׃ מתרגנא נפשיה דעטלא מדעם ולא
5 מיתי לה ונפשהון דתקיפי תדהן׃ מלתא דשקרא סני צדיקא ורשיעא נבהרת
6 ונחפר׃ צדקתא תנטור לאלין דתמימין בארחתהון ורשיעא מטלטל בחטוהי׃
7 8 אית דמעתר נפשיה ולית כל מדעם וממסכן נפשיה ומוליה סגיאה׃ אית
9 ליה פורקנא דנפשיה דגברא עותריה ומסכנא לא מקבל בעתא׃ נוהרא דצדיקי
10 נרוז ושרגא דרשיעי נדעך׃ לחוד בזדנותא אתיא מצותא ואלין דמתמלכין חכימי
11 12 אנון׃ מולא מן עולא דמריה יזער ודמכנש ויהב למסכנא יסגי ממוניה׃ מן
13 דמשדי למעדריה טב מן דתלי בסברא ואילנא דחיי רגתא מיתא׃ דבזי על מלתא
14 נתחבל מנה ודדחל מפוקדנא משתלם טבתא׃ נימוסא דחכימא מבועי דחיי
15 16 למסטי מן פחא דמותא׃ שכלא טבא יהיב חסדא וארחא תקיפא דבזוזי תיבד׃
17 כל ערימא עבידתיה מדעתא וסכלא פרס ליה לשטיותא׃ שליחא בישא יפל בבישתא
ואזגדא מהימנא אסיא הוא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Verbum timoris in corde viri terrorem gignit,& verba bona lætifi illum. Melior eſt juſtus ſocio ſuo,& via impiorum decipit eos. Non viam fiet venatio viro doloſo, & ſubſtantia hominis erit aurum pretio ſum. In via juſti vita eſt, & iter *perverſi* in mortem.

CAP. XIII.

Filius ſapiens ſuſcipit doctrinam patris : ſed filius deriſor non ſuſ objurgationem. Unuſquiſque de fructibus oris ſui ſatiabitur bono anima autem prædonum *rapietur*. Qui cuſtodit os ſuum, cavet ani ſuæ : et qui aperit labia ſua, *multa conſumptio* imminet ei. Deſi anima pigri aliquid, et non obvenit ei : et anima fortium impingua tur. Verbum mendacii deteſtatur juſtus, impius autem confunditur erubeſcet. Juſtitia cuſtodiet eos qui ſimplices ſunt in via ſua : impie tem inſtabilis erit propter peccata ſua. Eſt qui divitem facit ipſum, et nihil habet ; et eſt qui pauperem facit animam ſuam, ſubſtantiam multam. Redemptio animæ cujuſque ſunt divitiæ ſuæ; pau per autem non recipit increpationem. Lux juſtorum exultabit, et impiorum extinguetur. Attamen in ſuperbia venit contentio : qui conſilium ineunt, ſapientes ſunt. Opulentia iniquitate parta acquiſita minuetur : et qui congregat et dat pauperi, multiplicabit cuniam ſuam. Melior eſt qui projicit ſarculum ſuum illo qui in ſpe : et arbor vitæ adducit deſiderium. Qui contemnit verbum trimentum patietur ab eo ; et qui timet præceptum, penſabitur Lex ſapientis fons vitæ, ad declinandum à laqueo mortis. Intelle ctus bonus dat gratiam,et via fortis direptorum peribit. Omnis opus eſt ex ſcientia, et ſtultus ſibi expandit ſtultitiam ſuam. impius cadet in malum, et legatus fidelis medicina eſt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܠܬܐ ܕܚܝܠܬܐ ܠܒܗ ܕܓܒܪܐ ܙܝܥܐ. ܘܡܠܬܐ ܛܒܬܐ ܡܚܕܝܐ ܠܗ. * ܙܕܝܩܐ ܡܠܟ 25 26
ܡܠܟܐ ܛܒܐ ܠܪܚܡܗ. ܘܐܘܪܚܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܬܛܥܐ ܐܢܘܢ. * ܠܐ ܢܫܟܚ ܨܝܕܐ ܠܓܒܪܐ 27
ܢܟܠܐ. ܘܩܢܝܢܐ ܝܩܝܪܐ ܓܒܪܐ ܓܒܝܐ. * ܒܐܘܪܚܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܚܝܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܪܓܙܢܐ ܠܡܘܬܐ. 28
* ܫܠܡ * ܝܓ * * ܒܪܐ ܚܟܝܡܐ ܡܫܬܡܥ ܠܐܒܘܗܝ. ܘܒܪܐ ܣܟܠܐ ܠܐ ܡܩܒܠ 1
ܟܐܬܐ ܢܐܒܕ. * ܓܒܪܐ ܛܒܐ. ܡܢ ܦܐܪܐ ܦܘܡܗ ܢܣܒܥ. ܘܢܦܫܬܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܢܐܒܕܢ. 2
* ܕܢܛܪ ܦܘܡܗ. ܢܛܪ ܢܦܫܗ. ܘܕܦܬܚ ܣܦܘܬܗ. ܬܒܪܐ ܠܢܦܫܗ. * ܒܪܓܝܓܬܐ 3 4
ܡܬܗܦܟ ܓܒܪܐ ܕܥܒܕܐ ܠܐ ܥܒܕ. ܘܢܦܫܐ ܕܚܝܠܬܢܐ ܬܬܪܣܐ. * ܙܕܝܩܐ ܣܢܐ ܡܠܬܐ 5
ܕܫܘܩܪܐ. ܘܥܘܠܐ ܢܒܗܬ ܘܢܚܦܪ. * ܙܕܝܩܘܬܐ ܬܛܪ ܠܐܝܢܐ ܕܬܡܝܡ ܒܐܘܪܚܗ. ܘܚܛܝܐ 6
ܚܛܝܬܗ ܣܚܦܬܗ. * ܐܝܬ ܕܡܥܬܪ ܢܦܫܗ. ܘܡܕܡ ܠܝܬ ܠܗ. ܘܐܝܬ ܕܡܡܣܟܢ 7
ܢܦܫܗ. ܘܩܢܝܢܐ ܣܓܝܐܐ. * ܦܘܪܩܢܐ ܕܢܦܫܗ ܕܓܒܪܐ ܥܘܬܪܗ. ܘܡܣܟܢܐ ܠܐ ܡܩܒܠ ܟܐܬܐ. 8
* ܢܘܗܪܐ ܕܙܕܝܩܐ ܢܢܗܪ. ܘܫܪܓܐ ܕܥܘܠܐ ܢܕܥܟ. * ܓܒܪܐ ܒܝܫܐ ܒܨܥܪܐ ܥܒܕ ܒܝܫܬܐ. ܘܕܡܠܟܝܢ 9 10
ܡܬܡܠܟܝܢ ܚܟܝܡܝܢ ܐܢܘܢ. * ܩܢܝܢܐ ܕܡܢ ܥܘܠܐ ܢܒܨܪ. ܘܕܡܟܢܫ ܡܢ ܙܕܝܩܘܬܐ ܢܣܓܐ. 11
* ܛܒ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܡܫܪܐ ܠܡܥܕܪܘ. ܛܒ ܡܢ ܗܘ ܕܠܐ ܡܣܒܪ. ܘܐܝܠܢܐ ܕܚܝܐ ܣܒܪܐ 12
ܣܓܝܐ. * ܕܡܒܣܐ ܠܡܠܬܐ ܬܬܒܣܐ ܡܢܗ. ܘܕܕܚܠ ܡܢ ܦܘܩܕܢܐ ܢܬܦܨܐ. 13
ܠܓܒܪܐ ܢܟܠܐ ܠܐ ܬܗܘܐ ܠܗ ܛܒܬܐ. ܘܠܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ ܕܬܪܝܨܝܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܐܦ
ܐܘܪܚܗ ܬܦܘܫ ܬܪܝܨ. * ܢܡܘܣܐ ܕܚܟܝܡܐ ܡܒܘܥܐ ܗܘ ܕܚܝܐ: ܠܐܝܠܝܢ ܕܣܛܝܢ ܡܢ 14
ܦܚܐ ܕܡܘܬܐ. ܡܕܥܐ ܛܒܐ ܝܗܒ ܛܝܒܘܬܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܥܘܠܐ ܠܐܒܕܢܐ. * ܟܠ ܕܥܒܕ ܚܪܝܦܐ 15 16
ܒܝܕܥܬܐ. ܘܣܟܠܐ ܡܦܪܣ ܣܟܠܘܬܐ. * ܐܝܙܓܕܐ ܥܘܠܐ. ܢܦܠ ܒܒܝܫܬܐ. ܘܐܝܙܓܕܐ 17
ܡܗܝܡܢܐ ܐܣܝܐ ܗܘ.

Verbum terribile, cor viri conturbat : & verbum placidū exhilarat illud. Juſtus conſulit conſiliū bonū amico ſuo : & via impiorum ſeducet eos. Non occurret venatio viro doloſo : & poſſeſſio pretioſa, homo electus. In via juſtitiæ, vita : & via iracundorum, ad mortem. 25 26 27 28

CAP. XIII.

Filius ſapiens obtemperat patri ſuo : & filius nequā qui non recipit objurgationem, peribit. Vir prob⁹ fructib⁹ oris ſui ſatiabitur : & animæ impiorū peribunt. Qui cuſtodit os ſuum, tuetur animā ſuā : & qui aperit labia ſua, parat contritionem animæ ſuæ. Semper in concupiſcentiis verſatur homo qui opus non operatur : at anima fortiū impinguabitur. Juſtus odit verbū falſitatis : & iniquus erubeſcet & pudefiet. Juſtitia cuſtodiet eum qui integer eſt in via ſua : & peccatorē perdet peccatū ſuū. Sunt qui divites ſe ſimulāt, cùm nihil habeant : & eſt qui pauperem ſe fingit, cùm poſſideat multū. Salus animæ viri, opulentia ſua : & pauper non recipit increpationem. Lux juſtorū hilareſcet : & lucerna impiorū extinguetur. Homo nequam, cum opprobrio commitit ſcel⁹ : & ii qui conſilio utuntur, ſapientes ſunt. Opes ex iniquitate partæ, imminuentur : quæ verò congeſtæ ſunt cum juſtitia, augeſcent. Melior eſt homo qui incipit auxiliari, melior, *inquam*, eo qui ſuſpendit ſpem : et arborē vitæ affert ſpes. Qui negligit verbum, evertetur ab eo : & qui timet præceptū, ſalvabitur. Viro doloſo nulla erit proſperitas : & viri ſapientis, cuj⁹ rectæ ſunt actiones, via quoq; ad *fœlicem* exitū perducetur. Lex ſapientiæ, fons eſt vitæ iis qui devitant laqueos mortis. Intellect⁹ bon⁹ conciliat gratiā : et via impiorum, in interitum. Quidquid operatur ſagax, ſcitè *agit* : at ſtultus loquitur vana. Legatus perfidus incidet in malum : et legatus fidelis, medicus eſt. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الكلام المجزع يقلق قلب الانسان المقسط * والبشارة الصالحة تسر * المقسط يكون عارفا 25 26
صديقه * وعزايم المنافقين ليست وديعة * الخاطيون تطردهم شرورهم * وطريق المنافقين تضلهم *
* الغاش لن ينال صيدا * والرجل الطاهر قنيته كريمة * في طرق العدل حياة * وطرق 27 28
الحقودين الى الموت مورده * * الفصل الثالث عشر * * الابن المدرب مطيع 1
لابيه * والابن العاصي يحصل في الهلاك * من ثمرات العدل ياكل الصالح * ونفوس العادلين 2
عن الشريعة تهلك في غير اوقاتها * من يحفظ فمه يصون نفسه * والجسور بشفتيه يدهش نفسه * 3
* في الشهوات يكون كل من لا يعمل * وايادي ذوي الشهامة بالاهتمام * الكلام الظلم يبغضه 4 5
المقسط * والمنافق يستحي وما يكون له دالة * العدل يحفظ ذوي الدعة في طريقهم * والخطية 6
تجعل المنافقين طالحين * يكون قوم يغنون انفسهم * ولا شي لهم * ويكون قوم يذلون انفسهم 7
في ثروة جزيلة * فداء نفس الانسان غناه * والمسكين ما يقاوم وعيدا * النور للمقسطين كل 8 9
حين * وضوء المنافقين ينطفي * الانفس الغاشة تضل في الخطايا * والمقسطون يتراءفون
ويرحمون * الطالح بتعظمه يعمل الاسواء * والذين يعرفون انفسهم حكماء * النعمة المحروص
عليها بظلم تصير متناقصة * ومن يجمع لنفسه بتدبير جميل يتكاثر ماله * المقسط يتراءف
ويقرض * من يبتدئ بمعروف يعين به القلب * لا فضل من الواعد به والسايق الى الامل
لان شجرة الحياة الشهوة الصالحة * من يهون بامر يهون به ذاك الامر * ومن يرهب الوصية هذا
يعافى * الابن الغاش لن يكون له شي صالح * والعبد الحكيم ستكون له طرايق اعماله ميسر
ويقوم طرقه * شريعة الحكيم عين حياة * ومن لا عقل له يقتله الفخ * الفهم الصالح يمنح
منه * والذهن الصالح ان تعرف الشريعة * طرق المتهاونين في الهلاك * كل مدرب يعمل بمعرفة
والغبي قد بسط رذيلته وطيرها * الملك الجسور يسقط في الاسواء * الرسول الامين ينجيه

Sermo formidabilis conturbat cor hominis juſti : & nuntium fauſtum lætificat. Juſtus eſt cognoſcens amicum ſuum : & intentiones iniquorum non ſunt pacificæ. Peccatores expellentur à malis ſuis, & iter impiorum decipiet eos. Fraudulentus non obtinebit venationem : viri autem puri poſſeſſio pretioſa eſt. In itineribus juſtitiæ, vita : & itinera iracundorum ad mortem ducunt. 25 26 27 28

CAP. XIII.

Filius morigeratus eſt obediens patri ſuo : & filius rebellis incidet in interitū. De fructibus juſtitiæ edet probus : animæ autem prætereuntium legem, peribunt extra tempora ſua. Qui cuſtodit os ſuum, ſervat animam ſuam : temerarius autem labiis ſuis conturbat animam ſuam. In libidinibus eſt omnis qui non operatur : & manus prudentiam habentis, in ſolicitudine. Verba iniqua odit juſtus : iniquus autem confundetur, nec habebit fiduciam. Juſtitia cuſtodit manſuetos in via eorum : peccatum verò facit iniquos improbos. Sunt quidam qui ditant ſeipſos, et nihil habēt : et ſunt quidā qui deprimūt ſeipſos in multis divitiis. Redemptio animæ viri, divitiæ ſuæ : et pauper non reſiſtit minis. Lux eſt juſtis omni tēpore : & lumē iniquorum extinguetur. Animæ doloſæ peribunt in peccatis : juſti autem miſerebuntur & miſereſcent. Improbus in ſua ſuperbia operatur mala : qui autem ſeipſos cognoſcunt, ſunt ſapientes. Opes quæ avidè quæruntur cum iniquitate, deficient : qui autem congregat animæ ſuæ cum conſilio bono, multiplicabitur ejus ſubſtantia. Juſtus miſeretur, & commodat : qui facit beneficium, juvat eo cor. Nulla gratia promittenti illud, & ducenti ad ſpem : quia arbor vitæ, deſiderium bonum. Qui negligit præceptum, ipſe negligetur ab illo præcepto : & qui timet mandatum, liberabitur. Filius fraudulentus non habebit ullam rem bonam : & ſervo ſapienti erunt viæ operum ipſius faciles, & dirigentur viæ ejus. Lex ſapientis, fons vitæ, & qui eſt ſine intellectu, occidet eum laqueus. Doctrina recta dat gratiam, & memoria bona eſt ut ſciatur lex : viæ negligentium in interitum. Omnis aſtutus facit cum ſcientia : & inſipiens jam extendit vitium ſuum, & avolare fecit illud. Nuntius præceps cadet in mala : legatus fidelis, ſalus. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17

משלי : יד

,increpationem *cuſtodiens &* : *eruditionem deferenti* ignominia & ,Paupertas
18 ריש וקלון פורע מוסר ושמר תוכחת
abominatio & : animæ dulceſcet *exiſtens* Deſiderium .glorificabitur
19 יכבד : תאוה נהיה תערב לנפש ותועבת
: erit ſapiens ,ſapientibus cum *Ambulans* .malo à recedere ſtultorum
20 כסילים סור מרע : הלך את־חכמים יחכם
: malum ſequetur Peccatores .conteretur ,*ſtultos paſcens &*
21 ורעה כסילים ירוע : חטאים תרדף רעה
filios faciet hæreditare Bonus .bonum reddet juſtis &
22 ואת־צדיקים ישלם־טוב : טוב ינחיל בני
cibus Multus .peccantis *facultas* juſto *recondita &* : filiorum
23 בנים וצפון לצדיק חיל חוטא : רב־אכל
Prohibens .judicio ſine conciſus eſt & : *pauperum ſulcatione*
24 ניר ראשים ויש נספה בלא משפט : חושך
ei diluculo quæſivit eum diligens & : ſuum filium *odiens* , ſuam virgam
שבטו שונא בנו ואהבו שחרו
venter & : ſuæ animæ ſaturitatem ad *comedens* Juſtus .correctionem
25 מוסר : צדיק אכל לשבע נפשו ובטן
.*egebit* impiorum
רשעים תחסר :

CAP. XIV. יד

ſuis manibus *in ſtultitia &* : ſuam domum ædificavit *mulierum Sapientes*
1 חכמות נשים בנתה ביתה ואולת בידיה
: Dominum *timens* , ſua rectitudine in *Ambulans* .eam deſtruet
2 תהרסנו : הולך בישרו ירא יהוה
baculus ſtulti ore In .eum *ſpernens* ,ſuis viis perverſus *&*
3 ונלוז דרכיו בוזהו : בפי־אויל חטר
, *bobus non In* .eos cuſtodient ſapientum labia & : ſuperbiæ
4 גאוה ושפתי חכמים תשמורם : באין אלפים
.bovis potentia in *proventuum* multitudo & : *mundum* præſepe
אבוס בר ורב־תבואות בכח שור :
teſtis mendacia *efflabit &* : mentietur non *veritatum* Teſtis
5 עד אמונים לא יכזב ויפיח כזבים עד
intelligenti ſcientia & : non & ,ſapientiam irriſor Quæſivit .*falſitatis*
6 שקר : בקש לץ חכמה ואין ודעת לנבון
neſcies & : ſtulto viro cum *eminus* Vade .levis
7 נקל : לך מנגד לאיש כסיל ובל־ידעת
: ſuam viam intelligere callidi Sapientia .ſcientiæ labia
8 שפתי־דעת : חכמת ערום הבין דרכו
: *delictum palliabit quiſque Stultorum* .dolus ſtultorum ſtultitia &
9 ואולת כסילים מרמה : אולים יליץ אשם
amaritudinem *cognoſcens* Cor .*benevolentia* rectos inter &
10 ובין ישרים רצון : לב יודע מרת
Domus .alienus miſcebitur non ipſius lætitia in & : ſuæ animæ
11 נפשו ובשמחתו לא־יתערב זר : בית
via Eſt .*florebit* rectorum *tentorium &* : delebitur impiorum
12 רשעים ישמד ואהל ישרים יפריח : יש דרך
Etiam .mortis viæ ejus noviſſimum & ; *viri facies ad* recta
13 ישר לפני־איש ואחריתה דרכי־מות : גם־
.triſtitia lætitiæ *ejus* noviſſimum & ; cor dolebit *ridendo* in
בשחק יכאב־לב ואחריתה שמחה תוגה :
vir eo *deſuper &* : corde averſus ſaturabitur ſuis viis De
14 מדרכיו ישבע סוג לב ומעליו איש
intelliget callidus & : verbo omni credet Simplex .bonus
15 טוב : פתי יאמין לכל־דבר וערום יבין
ſtultus *&* : malo à *recedens & , timens* Sapiens .ſuum greſſum *ad*
16 לאשרו : חכם ירא וסר מרע וכסיל
.*fidens & , iraſcens*
מתעבר ובוטח :

Verſio VULG. LAT.

18 Egeſtas, & ignominia ei, qui deſerit diſciplinam: qui autem acquieſcit arguenti, glori-19 ficabitur. Deſiderium ſi compleatur, delectat animam: deteſtantur ſtulti eos, qui fu-20 giunt mala. Qui cum ſapientibus graditur, ſapiens erit: amicus ſtultorum ſimilis ef-21 ficietur. Peccatores perſequitur malum: & juſtis retribu-22 entur bona. Bonus relinquit hæredes filios, & nepotes: & cuſtoditur juſto ſubſtantia 23 peccatoris. Multi cibi in novalibus patrum: & aliis con-24 gregantur abſque judicio. Qui parcit virgæ, odit filiũ ſuum: qui autem diligit illum, in-25 ſtanter erudit. Juſtus comedit, & replet animam ſuam: venter autem impiorum inſaturabilis.

CAP. XIV.

1 SApiens mulier ædificat domum ſuam: inſipiens extructam quoque manibus de-2 ſtruet. Ambulans recto itinere, & timens Deum, deſpicitur ab eo, qui infami gra-3 ditur viâ. In ore ſtulti virga ſuperbiæ: labia autem ſapi-4 entium cuſtodiunt eos. Ubi non ſunt boves, præſepe vacuum eſt: ubi autem plurimæ ſegetes, ibi manifeſta eſt for-5 titudo bovis. Teſtis fidelis non mentitur: profert autem 6 mendaciũ doloſus teſtis. Quærit deriſor ſapientiam, & non invenit: doctrina prudentiũ 7 facilis. Vade contra virum ſtultum, & neſcit labia pru-8 dentiæ. Sapientia callidi eſt intelligere viam ſuam: & imprudentia ſtultorum errans. 9 Stultus illudet peccatum, & inter juſtos morabitur gratia. 10 Cor quod novit amaritudinẽ animæ ſuæ, in gaudio ejus non 11 miſcebitur extraneus. Domus impiorũ delebitur: tabernacula verò juſtorum germina-12 bunt. Eſt via, quæ videtur homini juſta: noviſſima autem 13 ejus deducunt ad mortem. Riſus dolore miſcebitur, & extrema gaudii luctus occupat. 14 Viis ſuis replebitur ſtultus, & 15 ſuper eũ erit vir bonus. Innocens credit omni verbo: aſtutus conſiderat greſſus ſuos. Filio doloſo nihil erit boni: ſervo autem ſapienti proſperi erunt actus, & dirigetur via e-16 jus. Sapiens timet, et declinat à malo: ſtult' tranſilit et confidit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

18 † Πενίαν καὶ ἀτιμίαν ἀφαιρεῖται παιδεία, † ὁ δὲ φυλάσσων ἐλέγχους δοξασθήσεται. † 19 Ἐπιθυμίαι εὐσεβῶν ἡδύνουσι ψυχήν, † ἔργα δὲ ἀσεβῶν μακρὰν ἀπὸ γνώσεως. † 20 (δ) Συμπορευόμενος σοφοῖς σοφὸς (ε) ἔσῃ, † ὁ δὲ συμπορευόμενος ἄφροσι γνωσθή-21 σεται. † Ἁμαρτάνοντας καταδιώξεται κακὰ, † τοὺς δὲ δικαίους καταλήψεται ἀ-22 γαθά. † (ζ) Ἀγαθὸς ἀνὴρ κληρονομήσει υἱοὺς υἱῶν, † θησαυρίζεται δὲ δικαίοις πλοῦ-23 τος ἀσεβῶν. † Δίκαιοι ποιήσουσιν ἐν πλούτῳ ἔτη πολλὰ, † ἄδικοι δὲ ἀπολοῦνται 24 συντόμως. † Ὃς φείδεται τῆς βακτηρίας, μισεῖ τὸν υἱὸν αὐτοῦ, † ὁ δὲ ἀγαπῶν 25 ἐπιμελῶς παιδεύει. † Δίκαιος ἔσθων ἐμπιπλᾷ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, † ψυχαὶ δὲ ἀσεβῶν ἐνδεεῖς.

MS. A. (δ) Ὁ συμπορευόμενος (ε) ἔσται, ὁ δὲ συμπορευόμενος (ζ) ὁ
ἀγαθὸς

(u) Paupertatem, & ignomi
am aufert diſciplina: qui aut
cuſtodit increpationes, glorifica
tur. Deſideria (x) piorum de
lectant animam: (y) opera autem
impiorum longè à ſcientia. (z)
Ambulans cum ſapientibus, ſa
piens eris: & qui (ω) ambula
cum inſipientibus, (aa) agnoſce
tur. Eos qui peccant, perſequen
tur mala: juſtos autem compre
hendent bona. Bonus vir (bb) he
reditare faciet filios filiorum: (c
theſaurizantur autem juſtis, d
vitiæ impiorum. Juſti facient
divitiis annos multos: injuſti au
tem peribunt brevi. Qui parc
* baculo, odit filium ſuum: qu
autem diligit, (dd) diligen
erudit. Juſtus comedens (ee) im
plet animam ſuam: (ff) anima
autem impiorum egenæ.

ΚΕΦ. ιδʹ.

1 † ΣΟφαὶ γυναῖκες ᾠκοδόμησαν οἴκους, ἡ δὲ ἄφρων (α) κατέσκαψε ταῖς χερσὶν 2 αὐτῆς. † Ὁ πορευόμενος ὀρθῶς φοβεῖται τὸν κύριον, † ὁ δὲ σκολιάζων ταῖς ὁδοῖς 3 αὐτοῦ ἀτιμασθήσεται. † Ἐκ στόματος ἀφρόνων βακτηρία ὕβρεως, † χείλη δὲ σο-4 φῶν (β) φυλάσσει αὐτούς. † Οὗ μή εἰσι βόες, φάτναι καθαραί· † οὗ δὲ πολλὰ 5 γεννήματα, φανερὰ βοὸς ἰσχύς. † Μάρτυς πιστὸς οὐ ψεύδεται, † ἐκκαίει δὲ ψευδῆ 6 μάρτυς ἄδικος. † Ζητήσεις σοφίαν παρὰ κακοῖς καὶ οὐχ εὑρήσεις, † αἴσθησις δὲ 7 παρὰ φρονίμοις εὐχερής. † Πάντα ἐναντία ἀνδρὶ ἄφρονι, † ὅπλα δὲ αἰσθήσεως 8 χείλη σοφά. † Σοφία πανούργων ἐπιγνώσεται τὰς ὁδοὺς αὐτῶν, † ἄνοια δὲ ἀφρό-9 νων ἐν πλάνῃ. † Οἰκίαι (ʾ) παρανόμων ὀφειλήσουσι καθαρισμὸν, † οἰκίαι δὲ δικαί-10 ων δεκταί. † Καρδία ἀνδρὸς αἰσθητικὴ, λυπηρὰ ψυχὴ αὐτοῦ, † ὅταν δὲ εὐφραίνηται 11 οὐκ ἐπιμίγνυται (γ) ὕβρει. † Οἰκίαι ἀσεβῶν ἀφανισθήσονται, † σκηναὶ δὲ κατορ-12 θούντων στήσονται. † Ἔστιν ὁδὸς ἣ δοκεῖ (δ) παρὰ ἀνθρώποις ὀρθὴ εἶναι, † τὰ δὲ τελευταῖα (ε) αὐτῆς ἔρχεται εἰς πυθ-13 μένα ᾅδου. † Ἐν εὐφροσύναις οὐ προσμίγνυται λύπη, † τελευταῖα δὲ (ζ) χαρὰ 14 εἰς πένθος ἔρχεται. † Τῶν ἑαυτοῦ ὁδῶν πλησθήσεται θρασυκάρδιος, † ἀπὸ δὲ τῶν δια-15 νοημάτων αὐτοῦ ἀνὴρ ἀγαθός. † Ἄκακος πιστεύει παντὶ λόγῳ, † πανοῦργος δὲ ἔρ-16 χεται εἰς μετάνοιαν. † Σοφὸς φοβηθεὶς ἐξέκλινεν ἀπὸ κακοῦ, † ὁ δὲ ἄφρων ἑαυτῷ πεποιθὼς μίγνυται ἀνόμῳ.

CAP. XIV.

SApientes mulieres ædificave
domos: imprudens autem demo
ta eſt ſuis manibus. Qui ambu
lat (a) rectè, timet Dominum
qui autem tortuoſè incedit viis
is, afficietur ignominiâ. Ex o
re imprudentium (b) baculus con
tumeliæ: labia autem ſapientum
* cuſtodiunt ipſos. Ubi (c) no
ſunt boves, præſepia munda
ubi autem multa genimina, mani
feſta bovis virtus. Teſtis fidelis
non mentitur: (d) accendit au
tem falſa teſtis injuſtus. (e) Quæ
res ſapientiam apud malos, &
non invenies: (f) ſenſus autem
apud prudentes (g) facilis. O
mnia contraria viro imprudenti
(h) arma autem ſenſûs, labia ſa
pientia. Sapientia aſtutorum co
noſcet vias ipſorum; dementia
autem imprudentum in (i) erro
(k) Domus iniquorum debe
bunt mundationem: domus au
tem juſtorum acceptabiles.
viri ſenſitivum, (l) triſtis anima
ejus: (m) quando autem læta
bitur, non miſcetur contumelia
Domus impiorum delebuntur: ta
bernacula autem rectè agentium
ſtabunt. Eſt via, quæ videtur a
pud homines recta eſſe: (n) no
viſſima autem ejus vadunt in (o
fundum inferni. In (p) lætiti
non admiſcetur triſtitia: (q) no
viſſimè autem gaudium in luctu
vadit. Suis (r) itineribus ſatura
tur temerarius: & de cogita
nibus ſuis vir bonus. ( ) Sim
plex credit omni verbo: aſtut
autem vadit in pœnitentiam. (
Sapiens timens declinavit à ma
imprudens autem ſibi fidens m
ſcetur iniquo.

MS. A. (α) κατέστρεψεν (β) φυλάξει (ʾ) ἀφρόνων (γ) ὕβρειν. (δ) ὀρθὴ
παρὰ ἀνθρώποις, (ε) αὐτοῦ (ζ) χαρᾶς

תרגום TARGUM.

18 19 מסכנא ומן ליה צערא מרש מרדותא ודמזדהר במכסנותא מתיקר : רגתא דיאיא
20 תבסם נפשא ומרחקתא דסכלי פריקא מן ידיעתא : דמהלך עם חכימי נתחכם
21 22 ודמחבר לסכלי נבאש ליה : לחטאי תרדף בישתא וצדיקי ישתלמון טבתא : גברא
23 טבא מורית לבני בנוהי ומתנטר לצדיקא עותריה דחטאה : רבא אכיל ארע למסכנא
24 ואית גברא מתנגד בלא דינא : דחשך שבטיה סני בריה ודרחם ליה מקדם ליה
25 מרדותא : צדיקא אכל ושבעא נפשיה וכריסא דרשיעי תחסר :

יד

2 1 חכימתא דנשיא בניא ביתא ושטיתא בידהא עקרא ליה : דמהלך בתריצותא דחל
3 מן קדם אלהא ודעשיק באורחתיה שאט ליה : בפומיה דשטיא זקתא דצערא
4 ושפותהון דחכימי נטרן אנון : אתר דלית תורא דכין אורותא וסוגעא דעללתא
5 6 בחיליה דתורא : סהדא מהימנא לא מכוב ודממלל כדבותא סהדא רגלא הוא : בעי
7 ממיקנא חכמתא ולית וידיעתא למן דמתבין ולילא : אזיל באורחא אחריתא מן
8 קדם סכלא דלית בשפותיה ידיעתא : חכמתא דערימא ביונא ארחיה ושטיותא
9 10 דסכלי רמיותא : כסילי מתלין בחטאה ובינת תריצי רעותא : לבא ידיע מרירותא
11 דנפשיה ובחדותיה לא מתערב נוכראה : ביתא דרשיעי ישתצי ומשכנא דתריצי
12 13 מפריח : אית אורחא דסברין בני נשא דתריצא היא וסופה אורחא דמותא : אף
14 בגוחכא נכאב לבא וסופה דחדותא תוגא : מן אורחתיה נסבע מן דמרחק לביה
15 וגברא טבא נסבע מן דחלתיה : שברא מהימן לכל מלי וערימא מתבין לטבתיה :
16 חכימא דחל ומסטא מן בישתא וסכלא מתחלט בסכלותא ומסביר בה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Pauper & qui ignominioſus eſt deſerit diſciplinam: & qui cu
tus eſt in redargutione, honoratur. Deſiderium honeſtum
eſt animæ, & abominatio ſtultorum *recedit* à *ſcientia*. Qui amb
lat cum ſapientibus, ſapiens erit; & qui habet ſocietatem cum ſ
tis, malum erit ei. Peccatores perſequetur malum: juſtis vero retrib
cutur bona. Vir bonus hæreditare facit filios filiorum ſuorum, &
vantur juſto divitiæ peccatoris. Multus cibus evenit pauperi, & eſt
præter jus mortem oppetit. Qui prohibet virgam ſuam, odit filium
um; & qui diligit illum, manè quæret ei eruditionem. Juſtus co
& ſatiatur anima ejus, & venter impiorum indigebit.

PSAL. XIV.

QUæ ſapiens eſt in mulieribus, ædificat domum ſuam; & ſtulta ma
bus deſtruit eam. Qui ambulat in rectitudine, timet Deum; &
calumniator eſt in via ſua, contemnit eum. In ore ſtulti virga *tribul*
onis: & labia ſapientum cuſtodiunt eos. Ubi non ſunt boves, præ
munda ſunt, & multitudo frugum in fortitudine bovis. Teſtis fidelis n
mentitur; & qui loquitur mendacium, teſtis detractor eſt. Quær
riſor ſapientiam, & non adeſt; & ſcientia prudenti vileſcit. Vad
viam aliam à facie ſtulti, quia in labiis ejus non eſt ſcientia. Sapie
callidi intelligentia eſt viæ ſuæ: *in* ſtultitia ſtultorum *fraus* [*eſt.*]
ponunt comparationes in peccato, & inter rectos eſt beneplac
Cor novit amaritudinem animæ ſuæ, & in gaudio ejus non miſcebitur
traneus. Domus impiorum deſtruetur, & tabernaculum rectorum
minabit. Eſt via quam putant [illegible] hominis eſſe rectam; & finis ej
via mortis. Etiam in riſu do[illegible] cor, & finis lætitiæ mœror.
ſuis ſatiabitur qui eſt ev[illegible]dus corde ſuo, & vir bonus ſatiabitur
ſuo. Inſipiens credit omni verbo, & callidus attendit ad bon
Sapiens timet & declinat à malo: & ſtultus fervet in ſtultitia, & co
in ea.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܣܟܢܘܬܐ ܘܨܥܪܐ ܡܒܛܠܝܢ ܡܪܕܘܬܐ. ܘܕܢܛܪ ܡܟܣܢܘܬܐ ܢܫܬܒܚ. * ܪ̈ܓܝܓܬܐ ܢܟܦܬܐ
ܠܢܦܫܐ ܢܒܣܡ. ܘܡܣܪܝܘܬܐ ܕܥܘܠܐ ܪܚܝܩܐ ܗܝ ܡܢ ܝܕܥܬܐ. * ܕܡܗܠܟ ܥܡ ܚܟܝܡܐ ܢܗܘܐ
ܚܟܝܡ. ܘܕܡܗܠܟ ܥܡ ܣܟܠܐ ܢܬܒܐܫ ܒܗ. * ܠܚܛܝܐ ܬܪܕܘܦ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܙܕ̈ܝܩܐ ܬܫܠܡ
ܛܒ̈ܬܐ. * ܓܒܪܐ ܛܒܐ ܡܘܪܬ ܠܒ̈ܢܝ ܒ̈ܢܘܗܝ. ܘܡܬܢܛܪ ܠܙܕܝܩܐ ܥܘܬܪܗ ܕܚܛܝܐ.
* ܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܚܙܘ ܥܡܘܪܐ. ܒܫ̈ܢܝܐ ܣܓܝ̈ܐܬܐ ܐܘܒܕܘ ܥܘܬܪܐ. ܘܐܢܫ ܓܡܝܪ ܐܘܒܕܘ
* ܕܚܐܣ ܥܠ ܫܒܛܗ. ܣܢܐ ܠܒܪܗ. ܘܕܪܚܡ ܠܒܪܗ. ܡܫܩܠܝܬ ܪܕܐ ܠܗ. * ܙܕܝܩܐ
ܐܟܠ. ܘܣܒܥܐ ܢܦܫܗ. ܘܟܪܣܐ ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܚܣܝܪܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܕ * ܐܢ̈ܬܬܐ ܚܟܝܡܬܐ
ܒܢܝܐ ܒܝܬܐ. ܘܣܟܠܬܐ ܒܐܝ̈ܕܝܗ̇ ܣܚܦܐ ܠܗ. * ܕܡܗܠܟ ܒܬܪܝܨܘܬܐ. ܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ
ܘܕܥܩܝܡ ܒܐܘܪܚܬܗ. ܫܐܛ ܠܗ. * ܒܦܘܡܗ ܕܣܟܠܐ ܚܘܛܪܐ ܘܨܥܪܐ. ܘܣܦܘ̈ܬܗܘܢ ܕܚܟܝ̈ܡܐ
ܢܛܪ̈ܢ ܐܢܘܢ. * ܐܝܟܐ ܕܠܝܬ ܬܘܪ̈ܐ. ܐܘܪ̈ܝܐ ܣܪܝܩܝܢ. ܘܣܘܓܐܐ ܕܥ̈ܠܠܬܐ ܒܚܝܠܗ ܕܬܘܪܐ. * ܣܗܕܐ
ܡܗܝܡܢܐ ܠܐ ܡܬܟܢܫ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܘܕܡܡܠܠ ܕܓܠܘܬܐ ܗܘ ܣܗܕܐ ܕܓܠܐ. * ܒܥܐ ܒܝܫܐ ܚܟܡܬܐ
ܘܠܐ ܡܫܟܚ ܠܗ̇. ܘܝܕܥܬܐ ܡܢ ܣܟܘܠܬܢܐ ܡܫܬܟܚܐ. * ܠܓܒܪܐ ܣܟܠܐ. ܟܠܡܕܡ ܣܩܘܒܠܐ ܗܘ ܠܗ.
ܘܙܝܢܐ ܕܝܕܥܬܐ. ܣܦܘ̈ܬܐ ܕܚܟܝ̈ܡܐ. * ܚܪܝܦܐ ܒܚܟܡܬܗ ܡܣܬܟܠ ܠܐܘܪܚܗ. ܘܐܘܪܚܐ
ܕܣܟ̈ܠܐ ܒܛܘܥܝܝܐ. * ܒ̈ܬܝܐ ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܒܕܝܢܐ ܬܒܥܝܢ ܣܘܦܐ. ܘܒ̈ܬܝܗܘܢ ܕܙܕ̈ܝܩܐ ܡܩܒܠܝܢ.
* ܣܟ̈ܠܐ ܥܒܕܝܢ ܚܛ̈ܗܐ. ܘܒ̈ܢܝܐ ܕܙܕ̈ܝܩܐ ܨܒܝܢܐ. * ܠܒܐ ܚܟܝܡܐ ܟܪܝܘܬܐ ܗܘ ܠܢܦܫܗ.
ܘܒܚܕܘܬܗ ܠܐ ܢܬܚܠܛ ܢܘܟܪܝܐ. * ܒܝܬܐ ܕܪ̈ܫܝܥܐ ܢܐܒܕ. ܘܡܫܟܢܐ ܕܬܪ̈ܝܨܐ ܢܕܘܨ. * ܐܝܬ ܐܘܪܚܐ
ܕܡܣܒܪܝܢ ܒ̈ܢܝܢܫܐ ܕܬܪܝܨܐ ܗܝ. ܘܐܚܪܝܬܗ ܐܘܪ̈ܚܬܐ ܐܢܝܢ ܕܡܘܬܐ. * ܐܦ ܒܓܘܚܟܐ ܢܟܐܒ
ܠܒܐ. ܘܚܪܬܐ ܕܚܕܘܬܗ ܥܩܬܐ. * ܡܢ ܐܘܪ̈ܚܬܗ ܢܣܒܥ ܡܢ ܕܡܪܚ ܒܠܒܗ. ܘܓܒܪܐ ܛܒܐ
ܢܣܒܥ ܡܢ ܕܚܠܬܐ ܕܢܦܫܗ. * ܛܠܝܐ ܡܗܝܡܢ ܠܟܠ ܡܠܐ. ܘܚܪܝܦܐ ܦܪܫ ܛܒܬܐ ܡܢ
ܒܝܫܬܐ. * ܚܟܝܡܐ ܕܚܠ. ܘܣܛܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܣܟܠܐ ܡܬܚܠܛ ܠܗ ܒܬܘܟܠܢܐ.

Paupertas & ignominia deſtrunt diſciplinā: 18
& qui obſervat objurgationem, laudabitur.
Deſideriū honeſtū, delectabit animā: & ob- 19
ſcœnitas impiorū remota eſt à ſcientia. Qui 20
graditur cum ſapiente, erit ſapiens : & qui
ambulat cum ſtulto, malo afficietur. Peccato- 21
rem perſequetur calamitas : at juſti addicen-
tur bonis. Vir probus hæreditatem relinquet 22
filiis filiorū ſuorū : & aſſervantur juſto divi-
tiæ peccatoris. Ii qui non viderunt habitati- 23
onē, annorum multorum ſpatio amiſerunt di-
vitias: imò quidam penitùs amiſerunt. Qui- 24
cunque parcit virgæ ſuæ, odit filium ſuum:
qui verò diligit filium ſuum, ſedulò corripit 25
eum. Juſtus comedit, & ſaturatur anima ipſi-
us: & venter impiorum egebit.

CAP. XIV.

Mulier ſapiens ædificabit domū : & ſtulta 1
manibus ſuis deſtruit eam. Qui ambulat in 2
rectitudine, timet Dñm: & qui perverſus eſt
in itinere ſuo, contemnit illū. In ore ſtulti, 3
ſtimulus & ignominia: & labia ſapientū ſer-
vabunt eos. Ubi non ſunt boves, vacua ſunt 4
præſepia: & copia proventuū, ex fortitudine
bovis. Teſtis verax non arguitur mendacio: 5
& qui loquitur mendacium, teſtis eſt falſus.
Malignus quærit ſapientiam, & non inve- 6
niet eam : & ſcientia à prudente invenitur.
Viro ſtulto omnia contraria ſunt: & armatu- 7
ra ſcientiæ, labia ſapientū. Cautus, ſapientiâ 8
ſuá intelligit viā ſuam: & iter ſtultorū, in er-
rore. Dom⁹ impiorū æquo jure poſtulant e- 9
vacuationē: domus autē juſtorum, gratæ. Stul- 10
ti operantur peccata: et filii juſtorum, bene-
placitum. Cor prudens, mœror eſt ſibimet- 11
ipſi: et in gaudio ejus, non ſe immiſcebit ali-
enus. Domus impiorū peribit : et habitaculū
rectorū exultabit. Eſt via quā putant homines 12
rectā eſſe: at ſemitæ illius, ſemitæ ſunt mortis.
Etiam in riſu dolebit cor : et finis gaudii ej⁹, 13
triſtitia. De viis ſuis ſatiabitur qui audax eſt 14
in corde ſuo : et vir bonus ſaturabitur timore
animæ ſuæ. Puer credit omni verbo: et cau- 15
tus diſcernit bonum à malo. Sapiens timet, 16
et deflectit à pravitate : et ſtultus immiſcet ſe
illi confidenter.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الادب ينزع الفقر والهوان * ومن يحفظ التوبيخات يشرف * شهوات المؤمنين حسنا تلذ
النفس * واعمال المنافقين بعيدة من المعرفة * من يماشي الحكماء يكون حكيما ومن يمشي
طاغيا مع الجهال سيعرف بهم * الخاطيون تطردهم شرورهم والمقسطون تدركهم الخيرات * الانسان
الصالح يرث ابناء البنين وثروة المنافقين تكثر للصديقين * المقسطون يعيشون في الغنى
سنين كثيرين * والظالمون يهلكون سريعا * من يشفق على عصاه يمقت ابنه * ومن يحب ابنه
يؤدبه باهتمام * المقسط اذا اكل يشبع نفسه * وانفس المنافقين محتاجة معسرين *

* الفصل الرابع عشر * النساء الحكيمات ابتنوا المنازل * والمراة الجاهلة تخربها
بيدها وتحفرها * السالك مستقيما يتقي الرب * ومن يعوج طرقه يهان * من فم الجهال يبرز
عصا الشتيمة * وشفاه الحكماء تحفظهم * موضع لا يكون بقر فالمعالف نظيفة * وحيث
الغلات الكثيرة فقوة البقر ظاهرة * الشاهد الصدوق لن يكذب * والشاهد الظالم يحترق
بالكذب * تطلب عند الاشرار حكمة فلا تجدها والحس عند ذوي الفطنة متيسر وجوده * كافة
الاشياء مضادة للانسان الجاهل * وسلاح الحس الشفوات الحكيمة * حكمة المدبرين تعرف
بطرايقهم * وشفاه الاغبياء في الضلالة * منازل العادلين عن الشريعة تستوجب الاهدام
ومنازل المقسطين مقبولة * قلب الرجل الحساس نفسه حزينة * واذا فرح فما يخالطه تعظم
* منازل المنافقين تجتاح وتبيد * ومساكن المقومين تبقى ثابتة * تكون طريق يظنها الناس
انها مستوية * واواخرها تفضي الى اعماق الجحيم * الافراح لا تختلط فيها حزن واواخرها تفضي
الى النوح * الجسور القلب يمتلي من طرقه * والانسان الصالح يشبع من افعاله * الساذج الوديع
يصدق كل كلام * والمدرب يجي الى التوبة * الحكيم اذا خشي جنح عن الشر * والجاهل متوكل
على ذاته * وبتوكله على ذاته يخالط الاثيم

Diſciplina aufert paupertatem & contemptum: & qui cuſtodit correptiones, glorificabitur. 18 *Deſideria fidelium optimè delectant animum: opera autem impiorū remota ſunt à ſcientia.* 19 *Qui ambulat cum ſapientibus, ſapiens erit: & qui ſuperbè incedit cum ſtultis, denominabitur ab eis.* 20 *Peccatores expellent mala ſua: & juſtos apprehendent bona.* 21 *Homo probus hæreditatem dividet filiis filiorum: & opulentia impiorum multiplicabitur pro juſtis.* 22 *Juſti vivent in divitiis multos annos: impii autem peribunt ſubitò.* 23 *Qui parcit virgæ ſuæ, odit filium ſuum, & qui amat filium ſuum, caſtigat eum cum ſolicitudine.* 24 *Juſtus cùm comederit, ſatiabitur anima ejus: & animæ ſceleſtorum erunt egentes & inopes.* 25

CAP. XIV.

Mulieres prudentes ædificant domos: mulier autem fatua deſtruit eas manu ſuâ & effodit eas. 1 *Incedens rectà, timet Dominum: qui autem pervertit vias ſuas, vilipendetur.* 2 *De ore ſtultorum egreditur virga contumeliæ: & labia ſapientum cuſtodiunt eos.* 3 *Ubi non ſunt boves, præſepia ſunt munda: & ubi ſunt ſegetes multæ, ibi fortitudo boum eſt manifeſta.* 4 *Teſtis fidelis non mentitur: & teſtis iniquus comburitur in mendacio.* 5 *Quæres apud improbos ſapientiā, & non invenies eā: & ſenſum apud prudentes facile eſt invenire.* 6 *Omnes res contrariæ ſunt homini ſtulto: & arma prudentiæ, labia ſapientiæ.* 7 *Sapientia callidorum cognoſcitur à viis eorum: & labia imprudentum, in errore.* 8 *Domus prætereuntium legem merentur deſtructionem: & domicilia juſtorum ſunt grata.* 9 *Cordis viri ſenſati animus triſtis eſt: & cùm gaudet, non commiſcetur ei ſuperbia.* 10 *Habitacula iniquorum deſtruentur & peribunt: habitacula autem rectorum manebunt ſtabilia.* 11 *Eſt via quam putant homines eſſe planam, & noviſſima ejus exterminant ad profunda inferni.* 12 *Gaudia non miſcentur mœrore, & extrema eorum expellunt luctū.* 13 *Audax corde implebitur viis ſuis: & homo probus ſatiabitur operibus ſuis.* 14 *Simplex manſuetus credit omni verbo: & eruditus veniet ad pœnitentiam.* 15 *Sapiens cùm timet, declinat à malo: ſtultus autem fidit ſibiipſi, & ob fiduciam ſuam in ſeipſo, converſatur cum ſceleſto.* 16

odietur machinationum vir & : ſtultitiam faciet naribus Brevis
קצר־אפים יעשה אולת ואיש מזמות ישנא : 17
ſibi coronam imponent callidi & : ſtultitiam ſimplices acceperunt Hæreditate
18 נחלו פתאים אולת וערומים יכתירו
ſuper impii & : bonis coram mali ſunt Incurvati .ſcientiam
19 דעת : שחו רעים לפני טובים ורשעים על־
diligentes & : pauper erit odioſus ſuo ſocio Etiam .juſti portas
20 שערי צדיק : גם־לרעהו ישנא רש ואהבי
miſereſcens & : peccans ,ſuum ſocium Spernens .multi divitem
21 עשיר רבים : בז־לרעהו חוטא ומחונן
? malum fabricantes errabunt Nonne .ejus beatitudines ,modeſtorum
22 ענוים אשריו : הלוא יתעו חרשי רע
labore omni In .bonum cogitantibus veritas & ,miſericordia &
23 וחסד ואמת חרשי טוב : בכל־עצב
Corona .defectum ad verè labiorum verbum & : augmentum erit
24 יהיה מותר ודבר שפתים אך למחסור : עטרת
Eruens .ſtultitia ſtultorum ſtultitia : eorum opulentia ſapientum
25 חכמים עשרם אולת כסילים אולת : מציל
timore In .dolus mendacia efflabit & : veritatis teſtis animas
26 נפשות עד אמת ויפח כזבים מרמה : ביראת
Timor .tutela erit ejus filiis & : fortitudinis fiducia Domini
27 יהוה מבטח־עז ולבניו יהיה מחסה : יראת
.mortis laqueis à recedendum ad : vitarum vena Domini
יהוה מקור חיים לסור ממקשי מות :
populi conſumptione in & : regis decor populi multitudine In
28 ברב־עם הדרת־מלך ובאפס לאם
brevis & : intelligentia multus naribus Longus .rectoris contritio
29 מחתת רזון : ארך אפים רב־תבונה וקצר
: ſanum cor carnium Vitæ .ſtultitiam exaltans ſpiritu
30 רוח מרים אולת : חיי בשרים לב מרפא
exprobravit ,tenuem Opprimens .invidia oſſium putredo &
31 ורקב עצמות קנאה : עשק דל חרף
ſua malitia In .egeni miſereſcens ,eum honorans & : ejus factorem
32 עשהו ומכבדו חנן אביון : ברעתו
corde In .juſtus ſua morte in ſperans & : impius expelletur
33 ידחה רשע וחסה במותו צדיק : בלב
.cognoſcetur ſtultorum interiori in & : ſapientia requieſcet intelligentis
נבון תנוח חכמה ובקרב כסילים תודע :
.peccatum populorum miſericordia & : gentem exaltabit Juſtitia
34 צדקה תרומם גוי וחסד לאמים חטאת :
erit ejus ira & : intelligentem ſervum ad regis Benevolentia
35 רצון־מלך לעבד משכיל ועברתו תהיה
.confundens
מביש :

CAP. XV. טו

.furorem faciet aſcendere doloris verbum & : iram avertet mollis Reſponſio
מענה־רך ישיב חמה ודבר־עצב יעלה־אף : 1
eructabit ſtultorum os & : ſcientiam reddet bonam ſapientum Lingua
2 לשון חכמים תיטיב דעת ופי כסילים יביע
,malos ſpeculantes Domini oculi loco omni In .ſtultitiam
3 אולת : בכל־מקום עיני יהוה צפות רעים
ea in perverſitas & : vitarum lignum linguæ Remiſſio .bonos &
4 וטובים : מרפא לשון עץ חיים וסלף בה
cuſtodiens & : ſui patris correctionem reſpuet Stultus .ſpiritu in contritio
5 שבר ברוח : אויל ינאץ מוסר אביו ושמר
.aſtutus efficietur ,increpationem
תוכחת יערם :

Verſio VULG. LAT.

17 Impatiens operabitur ſtultitiam : & vir verſutus odioſus 18 eſt. Poſſidebunt parvuli ſtultitiam, & expectabunt aſtuti 19 ſcientiam. Jacebunt mali ante bonos : & impii ante portas 20 juſtorum. Etiam proximo ſuo pauper odioſus erit : amici 21 verò divitum multi. Qui deſpicit proximum ſuum, peccat : qui autem miſeretur pauperis, beatus erit. Qui credit in Domino, miſericordiam 22 diligit. Errant qui operantur malum : miſericordia & ve- 23 ritas præparant bona. In omni opere erit abundantia : ubi autem verba ſunt plurima, ibi frequenter egeſtas. 24 Corona ſapientium, divitiæ eorum : fatuitas ſtultorum, 25 imprudentia. Liberat animas teſtis fidelis : & profert men- 26 dacia verſipellis. In timore Domini fiducia fortitudinis, 27 & filiis ejus erit ſpes. Timor Domini fons vitæ, ut decli- 28 nent à ruina mortis. In multitudine populi dignitas regis: & in paucitate plebis ignomi- 29 nia principis. Qui patiens eſt, multâ gubernatur prudentiâ: qui autem impatiens eſt, ex- 30 altat ſtultitiam ſuam. Vita carnium, ſanitas cordis : pu- 31 tredo oſſium, invidia. Qui calumniatur egentem, exprobrat factori ejus : honorat autem eum, qui miſeretur 32 pauperis. In malitia ſua expelletur impius : ſperat au- 33 tem juſtus in morte ſua. In corde prudentis requieſcit ſapientia, & indoctos quoſque 34 erudiet. Juſtitia elevat gentem : miſeros autem facit 35 populos peccatum. Accept' eſt regi miniſter intelligens : iracundiã ejus inutilis ſuſtinebit.

CAP. XV.

1 REſponſio mollis frangit iram : ſermo durus ſuſcitat fu- 2 rorem. Lingua ſapientium ornat ſcientiam : os fatuorum e- 3 bullit ſtultitiam. In omni loco oculi Domini contemplantur 4 bonos & malos. Lingua placabilis, lignum vitæ: quæ autem immoderata eſt, conteret ſpiri- 5 tum. Stultus irridet diſciplinã patris ſui : qui autem cuſtodit increpationes, aſtutior fiet. In abundanti juſtitia virtus maxima eſt : cogitationes autem impiorum eradicabuntur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 † Ὀξύθυμος πράσσει μετὰ ἀβουλίας, † 18 ἀνὴρ δὲ φρόνιμος πολλὰ ὑποφέρει. † Μεριοῦνται ἄφρονες κακίαν, † οἱ δὲ πανοῦργοι 19 κρατήσουσιν αἰσθήσεως. † Ὀλισθήσουσιν κακοὶ ἔναντι ἀγαθῶν, † καὶ ἀσεβεῖς θερα- 20 πεύσουσιν θύρας δικαίων. † Φίλοι (η) μισήσουσιν φίλους πτωχούς, † φίλοι δὲ πλουσίων 21 πολλοί. † Ὁ ἀτιμάζων πένητας ἁμαρτάνει, 22 † ἐλεῶν δὲ πτωχοὺς (θ) μακαριστός. † Πλανώμενοι τεκταίνουσι κακά, † ἔλεον δὲ καὶ ἀλήθειαν τεκταίνουσιν ἀγαθοί. † οὐκ ἐπίστανται ἔλεον καὶ πίστιν τέκτονες κακῶν, † ἐλεημοσύναι δὲ καὶ πίστεις παρὰ τέκτοσιν ἀ- 23 γαθοῖς. † Ἐν παντὶ μεριμνῶντι ἔνεστι περισσόν, † ὁ δὲ ἡδὺς καὶ ἀνάλγητος ἐν ἐν- 24 δείᾳ ἔσται. † Στέφανος σοφῶν πανοῦργος, † ἡ δὲ διατριβὴ ἀφρόνων κακή. † 25 Ῥύσεται ἐκ κακῶν ψυχὴν μάρτυς πιστός, 26 † ἐκκαίει δὲ ψευδῆ δόλιος. † Ἐν φόβῳ κυρίου ἐλπὶς ἰσχύος, † τοῖς δὲ τέκνοις 27 αὐτοῦ καταλείπει ἔρεισμα. † Πρόσταγμα κυρίου πηγὴ ζωῆς, † ποιεῖ δὲ ἐκκλίνειν ἐκ 28 παγίδος θανάτου. † Ἐν πολλῷ ἔθνει δόξα βασιλέως, † ἐν δὲ ἐκλείψει λαοῦ συν- 29 τριβὴ δυνάστου. † Μακρόθυμος ἀνὴρ πολὺς ἐν φρονήσει, † ὁ δὲ ὀλιγόψυχος ἰσχυ- 30 ρῶς ἄφρων. † Πραΰθυμος ἀνὴρ καρδίας ἰατρός, † σὴς δὲ ὀστέων καρδία αἰσθητική. † 31 Ὁ συκοφαντῶν πένητα παροξύνει τὸν ποιήσαντα αὐτόν, † ὁ δὲ τιμῶν αὐτὸν (ι) ἐ- 32 λεεῖ πτωχόν. † Ἐν κακίᾳ αὐτοῦ ἀπωσθήσεται ἀσεβής, † ὁ δὲ πεποιθὼς τῇ ἑαυ- 33 τοῦ ὁσιότητι δίκαιος. † Ἐν καρδίᾳ ἀγαθῇ ἀνδρὸς σοφία, † ἐν δὲ καρδίᾳ ἀφρόνων οὐ 34 διαγινώσκεται. Δικαιοσύνη ὑψοῖ ἔθνος, 35 † ἐλαττονοῦσι δὲ φυλὰς ἁμαρτίαι. † Δεκτὸς βασιλεῖ ὑπηρέτης νοήμων, † τῇ δὲ ἑαυτοῦ εὐστροφίᾳ ἀφαιρεῖται ἀτιμίαν.

(v) Impatiens agit cum temeritate : vir autem (x) prudens multa ſuffert. (y) Divident imprudentes (z) malum : aſtuti autem obtinebunt ſenſum. Labentur mali coram bonis : & impii colent portas juſtorum. Amici odio habebunt amicos mendicos : amici autem divitum multi. Qui inhonorat pauperes, peccat : qui autem miſeretur mendicorum, beatiſſimus. (aa) Errantes fabricantur mala : miſericordiam autem & veritatem fabricantur boni. Non ſciunt miſericordiam & fidem fabricatores malorum : eleemoſynæ autem & fides apud fabricatores bonos. In omni ſolicito ineſt abundantia : dulcis autem & carens dolore in egeſtate erit. Corona ſapientum (bb) aſtutus : (cc) converſatio autem imprudentium mala. (dd) Liberabit de malis animam teſtis fidelis : accendit autem falſa doloſus. In timore Domini ſpes fortitudinis : filiis autem ſuis relinquet (ee) firmamentum. (ff) Præceptum Domini fons vitæ : facit autem declinare (gg) laqueo mortis. (hh) In multa gente gloria regis : in (ii) defectu autem populi contritio principis. Longanimis vir, multus in prudentia : (kk) puſillanimis autem, (ll) valde imprudens. Manſuetus vir, cordis medicus : tinea autem oſſium (mm) cor ſenſitivum. (nn) Qui calumniatur pauperem, irritat eum, qui fecit illum : (oo) qui autem honorat illum, miſeretur inopis. In malitia ſua (pp) repelletur impius : qui (qq) autem fidit ſuæ ſanctitati, juſtus. In corde (rr) boni viri ſapientia : in corde autem prudentum (ſſ) non dignoſcitur. Juſtitia exaltat gentem : (tt) minuunt autē tribus peccata. (uu) Acceptus regi miniſter intelligens : (xx) ſuâ autem ag auſert ignominiam.

MS. A. (η) μισήσωσιν (θ) μακάριος ἔσται. (ι) ἐλεᾷ.

ΚΕΦ. ιε'.

1 † ὈΡγὴ ἀπόλλυσι καὶ φρονίμους, † ἀπόκρισις δὲ ὑποπίπτουσα ἀποστρέφει θυμόν, † λόγος δὲ λυπηρὸς ἐγείρει ὀργάς. † 2 † Γλῶσσα σοφῶν καλὰ ἐπίσταται, † στόμα δὲ 3 ἀφρόνων ἀναγγελεῖ κακά. † Ἐν παντὶ τόπῳ ὀφθαλμοὶ κυρίου σκοπεύουσι κακούς τε 4 καὶ ἀγαθούς. † Ἴασις γλώσσης δένδρον ζωῆς, † ὁ δὲ συντηρῶν αὐτὴν πλησθήσεται πνεύ- 5 ματος. † Ἄφρων μυκτηρίζει παιδείαν πατρός, † ὁ δὲ φυλάσσων ἐντολὰς, πανουργότερος. † ἐν πλεοναζούσῃ δικαιοσύνῃ ἰσχὺς πολλή, † οἱ δὲ ἀσεβεῖς (α) ὁλόρριζοι ἐκ γῆς ἀπολοῦνται.

CAP. XV.

IRa (a) perdit & prudentes : reſponſio autem (b) ſubmiſſa avertit furorem : ſermo autem triſtis ſuſcitat iras. Lingua ſapientum bona novit, & os ſtultorum (d) pronuntiat mala. In omni loco oculi Domini ſpeculantur & (e) bonos, & malos. (f) Sanitas linguæ arbor vitæ, qui (g) autem ſervat eam, implebitur ſpiritu. Imprudens (h) ſubſannat diſciplinam patris, qui autem cuſtodit (i) mandata, aſtutior. In abundanti juſtitia fortitudo multa : impii autē radicitus de terra peribunt.

MS.A. (α) ὁλόρριζοι ἐκ γῆς ὀλοῦνται.

תרגום TARGUM.

17 מן דכריא רוחיה מתחשיב שטיא וסניא לגברא דאריכא תרעיתיה : ירתון שברי 18
19 שטיותא וכלילהון דערימאי ידיעתא : נפלו בישי קדם טבי ורשיעי נתדון
20 בתרעיא דצדיקי : אף לחבריה סני מסכנא ורחמי דעתירא סגיעין : חטיא שאט 21
21 לחבריה ומן דיהיב למסכנא טובוהי : הלא תעין דחשלים בישתא וחסדא וקשוט
23 חשלין טבי : בכל מן דאצפא לך יהוי לך יותרנא וספותא יתירתא לחוסרנא :
24 כלילא דחכימי עותרהון ושבהורהון דסכלי שטיותהון : מפצא נפשא סהדא 25
26 דקושטא ודממלל כדבותא רמיא הוא : דחלתיה דאלהא סברא דעשנא ולבנוי
27 נהוי תוכלן : דחלתא דאלהא מבועא דחיי לדמסטי מן פחא דמותא : בסוגעא 28
29 דעמא הדריה דמלכא והיך דבציר עמא מתתבר פרנסידה : מן דנגידא רוחידה
30 סגיעא ביוניה ומן דכרידה רוחיה מסגי שטיותא : דמפליג חמתא דלביה אסיא
31 הוא דבסריה והיך מלטיתא בקיסא הכין קנאתא בגרמי : דעשק למסכנא חסודא
32 עביד לבריה ודמרחם עליבא יקרידה : בבישותיה מסתחף רשיעא ודתכל דמארת
33 צדיקא הוא : בלבא דמתבין תשרי חכמתא ובגוייהון דסכלי שטיותא תתידע : 34
35 צדקתא תרורם אומא וחסודא דעמי חטהי : רעותיה דמלכא בעבדא סוכלתנא
ובסורחניה יבהתון :

טו

1 מלתא רכתא מהפכא חמתא ומלתא דעויזא מסקא רוגזא : לישנא דחכימי משפר 2
3 ידיעתא ופומהון דסכלי נביע שטיותא : בכל אתר עינוי דיי חמין בבישי ובטבי :
4 אסיותא דלישנא אילנא דחיי הוא ודאכל מן פרוהי נשבע : שטיא מסלי מרדותא 5
דאבוי ודמזדהר במכסנותא ערימא הוא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Qui præceps eſt in ſpiritu ſuo, reputatur ſtultus, & odio proſequuntur differentem conſilium ſuum. Hæreditabunt inſipientes ſtultitiam, & corona aſtutorum eſt ſcientia. Corruunt impii coram bonis, & impii obſtupeſcunt in portis juſtorum. Et ſocio ſuo odioſus eſt pauper, & amici divitis multi ſunt. Contemnit ſocium ſuum peccator : & qui dat pauperi, beatus eſt. *Nónne* errant qui cogitant malum : miſericordia autem & veritas erit his qui cogitant bona. In omni quod ſollicitus facit, erit tibi commodum, & labia ſuperflua in egeſtate erunt. Corona ſapientum divitiæ eorum, & decus ſtultorum ſtultitia illorum. Liberat animas teſtis veritatis, & qui loquitur mendacium, doloſus eſt. Timor Dei eſt fiducia fortitudinis, & filiis ejus erit protectio. Timor Dei fons vitæ, ad declinandum à laqueo mortis. In multitudine populi cor eſt regis : & quando minuitur populus, conteritur gubernator ejus. Qui longanimis eſt, multæ prudentiæ eſt ; & qui præceps eſt in ſpiritu ſuo, multiplicat ſtultitiam. Qui dividit iram cordis ſui, medicina carni ejus : & ſicut putredo in ligno eſt, ſic & invidia in oſſibus. Qui opprimit pauperem, opprobium facit *creatori ſuo* ; & qui miſeretur patientis injuriam, ipſum honorat. In malitia ſua repellitur impius, & qui ſperat quod ſit moriturus, juſtus eſt. In corde intelligentis moratur ſapientia, & in medio ſtultorum cognoſcitur ſtultitia. Juſtitia exaltat gentem, & opprobrium populi peccatum eſt. Voluntas regis in ſervo intelligenti eſt, & in offenſa ejus confundetur.

CAP. XV.

SErmo mollis avertit iram, & ſermo durus ſuſcitat furorem. Lingua ſapientum ornat ſcientiam, & os ſtultorum eructat ſtultitiam. In omni loco oculi Domini vident bonos & malos. Medicina linguæ arbor vitæ, & qui comedit ex eo, de fructibus ejus ſatiabitur. Stultus irridet diſciplinam patris ſui : & qui ſibi cavet ejus increpationes dus eſt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA

* ܡܪܓܙܐ. ܟܠ ܕܥܒܕ ܠܐ ܡܬܡܠܟ. ܘܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ ܡܣܝܒܪ. * ܝܪܬܝܢ ܣ̈ܟܠܐ ܫܛܝܘܬܐ. ܘܥܪ̈ܝܡܐ 17
ܡܦܠܓܝܢ ܝܕܥܬܐ. * ܢܬܟܦܘܢ ܒ̈ܝܫܐ ܩܕܡ ܛ̈ܒܐ. ܘܥ̈ܘܠܐ ܢܐܬܘܢ ܠܬܪܥܗ ܕܙܕܝܩܐ. * ܐܦ 18 19
ܠܚܒܪܘܗܝ ܣܢܐ ܡܣܟܢܐ. ܘܪ̈ܚܡܘܗܝ ܕܥܬܝܪܐ ܣܓܝܐܝܢ. * ܕܫܐܛ ܠܚܒܪܗ ܚܛܐ. 20
ܘܕܡܪܚܡ ܥܠ ܡܣܟܢܐ ܛܘܒܘܗܝ. * ܛܥܝܢ ܐܝܠܝܢ ܕܥܒܕܝܢ ܒ̈ܝܫܬܐ. ܘܡܪ̈ܚܡܢܐ ܘܙܕ̈ܝܩܐ 21
ܥܒܕܝܢ ܟܠܗܝܢ ܛ̈ܒܬܐ. ܥ̈ܒܕܝ ܒ̈ܝܫܬܐ. ܚܣܕܐ ܘܗܝܡܢܘܬܐ ܠܐ ܡܣܬܟܠܝܢ. ܡܪܚܡܢܘܬܐ 22
ܕܝܢ ܘܗܝܡܢܘܬܐ. ܥܡ ܥ̈ܒܕܝ ܛ̈ܒܬܐ ܐܢܘܢ. * ܒܟܠ ܕܪܕܦ ܐܢܬ. ܚܕܐ ܗܝ ܕܡܘܬܪܐ. ܘܐܢܫ
ܕܡܟܝܟ ܒܡܘܬܒܗ. ܢܝܚܐ ܘܡܒܣܡܐ ܢܗܘܐ. ܟܠ ܟܐܒ. ܡܪܝܐ ܡܐܣܐ. ܘܡܠܬܐ ܕܣ̈ܦܘܬܗܘܢ 23
ܕܥ̈ܘܠܐ ܡܘܣܦܐ ܠܗܘܢ. * ܟܠܝܠܐ ܕܚܟ̈ܝܡܐ ܥܘܬܪܗܘܢ. ܘܗ̈ܘܦܟܐ ܕܣ̈ܟܠܐ ܫܛܝܘܬܗܘܢ. 24
* ܡܦܨܐ ܢܦ̈ܫܬܐ ܣܗܕܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܘܡܡܠܠ ܢܟܠܐ ܣܗܕܐ ܕܓܠܐ. * ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܣܒܪܐ 25 26
ܪܒܐ. ܘܠܒ̈ܢܘܗܝ ܢܗܘܐ ܡܥܕܪܢܐ. * ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܡܒܘܥܐ ܗܘ ܕܚ̈ܝܐ. ܠܐܝܠܝܢ 27
ܕܡܦܠܛܝܢ ܡܢ ܦ̈ܚܐ ܕܡܘܬܐ. * ܒܥܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܗܕܝܪ ܡܠܟܐ. ܘܒܡܘܒܕܢܗ ܕܥܡܐ. ܡܬܬܒܪ 28
ܡܠܟܐ. * ܕܢܓܝܪ ܪܘܚܗ ܣܓܝ ܚܟܝܡ. ܘܕܟܪܝܐ ܪܘܚܗ ܛܒ ܣܟܠ. * ܕܡܟܦܐ ܚܡܬܗ. 29 30
ܐܣܝܐ ܗܘ ܕܠܒܗ. ܘܫܘܫܐ ܕܓܪ̈ܡܐ. ܛܢܢܐ ܗܘ. * ܕܥܒܕ ܠܡܣܟܢܐ ܥܒܕ ܥܒ. ܡܪܓܙ 31
ܠܥܒܘܕܗ. ܘܕܡܝܩܪ ܠܡܪܝܐ. ܡܪܚܡ ܥܠ ܡܣ̈ܟܢܐ. * ܒܒܝܫܘܬܗ. ܡܬܬܣܚܦ ܥܘܠܐ. 32
ܘܬܟܝܠ ܕܠܝܬ ܠܗ ܚܛܗܐ. ܙܕܝܩܐ ܗܘ. * ܒܠܒܐ ܕܙܕ̈ܝܩܐ ܬܫܪܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܒܠܒܐ ܕܣ̈ܟܠܐ 33
ܠܐ ܡܬܝܕܥܐ. * ܙܕܝܩܘܬܐ ܬܪܝܡ ܠܥܡܐ. ܘܡܒܨܪܝܢ ܠܥܡ̈ܡܐ ܚܛ̈ܗܐ. * ܪܘܚܬܗ ܕܡܠܟܐ ܒܥܒܕܐ 34 35
ܣܘܟܠܬܢܐ. ܘܒܚܟܡܬܐ ܕܢܦܫܗ. ܡܬܬܚܒܠ ܥܘܠܐ. ܘܬܟܝܠ ܕܠܝܬ ܠܗ ܚܛܗܐ
ܙܕܝܩܐ ܗܘ. ܘܪܘܓܙܐ ܐܦ ܠܚܟ̈ܝܡܐ ܡܘܒܕ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܗ *

* ܦܬܓܡܐ ܪܟܝܟܐ ܡܗܦܟ ܚܡܬܐ. ܘܡܠܬܐ ܩܫܝܐ ܡܥܝܪܐ ܪܘܓܙܐ. * ܠܫܢܐ ܕܚܟ̈ܝܡܐ 1
ܡܫܦܪ ܝܕܥܬܐ. ܘܦܘܡܐ ܕܣ̈ܟܠܐ ܢܒܥ ܨܘܚܝܬܐ. * ܒܟܠ ܐܬܪ ܥܝ̈ܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܚܝ̈ܪܢ 2
ܒܛ̈ܒܐ ܘܒܒ̈ܝܫܐ. * ܐܣܝܘܬܐ ܕܠܫܢܐ. ܐܝܠܢܐ ܗܘ ܕܚ̈ܝܐ. ܘܡܢ ܕܐܟܠ ܡܢ ܦܐܪ̈ܘܗܝ ܢܣܒܥ 3 4
ܡܢܗ. * ܣܟܠܐ ܡܡܝܩ ܡܪܕܘܬܐ ܕܐܒܘܗܝ. ܘܕܥܪܝܡ ܢܛܪ ܡܪܕܘܬܐ. 5

Præceps, quæcunque operatur, inconſultò agit: & vir ſapiens, cunctabundus eſt. 17 Hæreditariò acquirunt ſtulti inſipientiam: & 18 cauti dividunt ſcientiam. Procident mali coram bonis: 19 & ſceleſti venient ad portam juſti. Etiam ſociis ſuis exoſus eſt pauper: & 20 amici divitis, multi ſunt. Qui contemnit ſocium ſuum, peccat: 21 & qui miſeretur pauperis, beatus. Iniqui errant committentes flagitia: 22 miſericordes verò atque juſti operantur quælibet bona. Perpetrantes mala, miſericordiam & fidem non intelligent: clementia autem et fides eſt cum operantibus bona. In omnibus rebus ad quas contendis, una eſt utilis: 23 qui humilis eſt *conditionis* in habitaculo ſuo, tranquillus ac jucundus erit. Omnem dolorem ſanat Dominus: & ſermo labiorum *hominum* nefariorũ jacturam afferet eis. Corona ſapientum, divitiæ eorum: 24 & mores ſtultorum, dementia illorum. Liberat animas teſtis veritatis: 25 & loquitur dolum teſtis mendax. Timor Domini, ſpes magna: 26 et filiis ſuis erit protector. Timor Domini fons eſt vitæ 27 iis qui devitant laqueos mortis. In populo 28 copioſo magnificus eſt rex: & in exitio populi frangitur rex. Qui longanimis eſt, admodum ſapiens eſt: 29 at qui impatiens eſt, valdè ſtultus eſt. Qui temperat iram ſuam, medicus 30 eſt cordis ſui: & caries oſſium zelus eſt. Qui 31 tractat pauperem aſperè ac durè, irritat factorem ejus; et qui veneratur Dominum, miſeretur egenorum. In malitia ſua deſtruitur iniquus: 32 et qui confidit ſe non habere peccata, juſtus eſt. In corde juſtorum habitabit ſapientia: 33 et in corde ſtultorum non agnoſcetur. Juſtitia exaltabit gentem: 34 et extenuant populos peccata. Oblectatio regis, in ſervo prudente: 35 et in ſapientia animæ ſuæ corruit impius. Qui confidit ſe non habere peccata, juſtus eſt: ira autem etiam ſapientes perdit.

CAP. XV.

VErbum mite, avertit furorem: at ſermo aſper, concitat iram. 1 Lingua ſapientum ornat ſcientiam: 2 et os ſtultorum eructat maledictionem. In omni loco oculi Domini intuentur bonos et malos. 3 Sanitas linguæ, arbor eſt vitæ: 4 et qui comedit de fructibus ejus, ſaturabitur ex ea. Stultus irridet caſtigationem patris ſui: 5 et qui callidus eſt, cuſtodit correctionem.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 18 * الحاد الغضب يعمل بلا مشاورة * والرجل الدقيق العقل يحمل نوايب كثيرة * الأغبياء
19 يتقاسمون الرذيلة * والمكرة يمسكون الحس * الأشرار يزلقون لدى الصالحين * والمنافقون
20 يخدمون لدى أبواب المقسطين * الأصدقاء يمقتون للأصدقاء المساكين * وأصدقاء
21 22 الأغنياء كثيرون * من يهين الفقراء يخطي * ومن يرحم المساكين مطوب * الظالمون
المستظلمون يدبرون المساوي * والصالحون يصطنعون رحمة وحقا * المبتدعون الأسواء لن يعرفوا
23 الرحمة والأمانة * والصدقة والأمانة عند الصانعين الصالحات * في جميع ما يهتم به يوجد
24 شي واحد صالح * والمتلذذ ومن لا يتوجع سيكون في الفاقة * إكليل الحكماء المكر وكمال
25 26 الأغبياء ردي * الشاهد الصادق يحيي النفس من الأسواء * والغاش يحرقها في الكذب * في
27 تقوى الرب القوة * ومتخذها يخلف لأولاده قاعدة * أمر الرب عين الحياة يجعل فاعلها أن يحيد
28 29 من فخ الموت * شرف الملك بالأمة الكثيرة * وهشم المقتدر يفني الشعب * الإنسان المتمهل
30 يكون جزيل الحظ في دقة العقل * والشاتم جاهل قوي * الإنسان الوديع الغضب طبيب
31 القلوب * وسوس العظام القلب الحساس * من يبغي على فقير يغيظ من خلقه * ومن يكرمه
32 33 يرحم المسكين * المنافق يبعد برذيلته * والواثق يبين عدل * في القلب الصالح حكمة
34 35 الإنسان * ولن تعرف في قلب الجاهل * العدل يعطي الأمة * والخطايا تنقص القبايل * الخادم
اللبيب مقبول عند الملك * وبحسن تصرفه ينزع الهوان * * الفصل الخامس عشر
1 * الغيظ يهلك العقلاء * والمجاوبة المنخفضة ترد الغضب * الكلمة الجارحة تنهض شمايل
2 3 4 الغيظ * وفم الأغبياء يخبر بالأسواء * عينا الرب في كل مكان تترقب الطالحين والصالحين * شفا اللسان شجر الحياة
5 ومن يصونه ويحفظه يمتلي روحا * الولد الغبي يهزأ بتأديب أبيه * ومن يحفظ وصاياه فذاك متوافر الدراية

Promptus ad iram, operatur abſque conſilio: vir autem acutus ingenio ſuſtinet viciſſitudines multas. 17 *Impudentes dividunt inter ſe vitium: & callidi tenent ſenſum.* 18 *Mali lapſabunt propè bonos: & iniqui ſervient prope januas juſtorum.* 19 *Amici odio habent amicos pauperes: amici verò divitum ſunt multi.* 20 *Qui vilipendit pauperes, peccat: & qui miſeretur pauperum eſt beatus.* 21 *Scelerati perverſi architectantur mala: recti verò faciunt miſericordiam & veritatem. Architecti malorum nullo modo cognoſcunt miſericordiam & fidelitatem: & eleemoſyna atque fidelitas, apud facientes bona.* 22 *In omnibus in quibus cura impenditur, invenitur res una bona: & voluptuoſus, & qui non vexatur, erit in egeſtate.* 23 *Corona ſapientum, aſtutia: & fraus imprudentum, peſſima.* 24 *Teſtis verax liberat animam à malis: & doloſus comburit eam mendacio.* 25 *In timore Domini, fortitudo: & qui ſibi eam vindicat, relinquet filiis ſuis baſim.* 26 *Imperium Domini, fons vitæ, faciens exequentem illud declinare à laqueo mortis.* 27 *Gloria regis in gente multa: & laceratio potentis diſſipat populum.* 28 *Vir longanimis erit multæ fortunæ per acumen ingenii: & convicia tor eſt valdè ſtultus.* 29 *Homo mitis in ira, medicus eſt cordium: & tinea oſſium, cor odio plenum.* 30 *Qui opprimit pauperem, irritat creatorem ejus: & qui honorat eum, miſeretur pauperis.* 31 *Iniquus expelletur in ſuo vitio: & conſtans in ſua rectitudine, juſtus eſt.* 32 *In corde probo, ſapientia hominis: & nullo pacto cognoſcetur in corde ſtulti.* 33 *Juſtitia protegit gentem: & peccata diminuunt nationes.* 34 *Miniſter cordatus gratus eſt apud regem: & optimâ ſe gerendi ratione demit contemptum.* 35

CAP. XV.

IRa perdit prudentes: & reſponſio humilis avertit furorem. 1 *Verbum dirimens concitat malignitates iræ: & os inſipientium narrat mala.* 2 *Oculi Domini in omni loco explorant improbos & probos.* 3 *Sanitas linguæ, arbor vitæ: & qui ſervit eam & cuſtodit eam, implebitur tranquillitate.* 4 *Filius impudens deridet diſciplinam patris ſui: & qui cuſtodit præcepta ejus, is præſtat peritiâ.* 5

מִשְׁלֵי : טו

.conturbatur impii *proventu* in & *: multa fortitudo* juſti Domo
6 בֵּית צַדִּיק חֹסֶן רָב וּבִתְבוּאַת רָשָׁע נֶעְכָּרֶת׃
ſtultorum cor & : ſcientiam ſpargent ſapientum Labia
7 שִׂפְתֵי חֲכָמִים יְזָרוּ דָעַת וְלֵב כְּסִילִים
: DOMINI abominatio impiorum Sacrificium *ſic* non
8 לֹא־כֵן׃ זֶבַח רְשָׁעִים תּוֹעֲבַת יְהוָה
DOMINI Abominatio .ejus voluntas rectorum oratio &
9 וּתְפִלַּת יְשָׁרִים רְצוֹנוֹ׃ תּוֹעֲבַת יְהוָה
mala Correptio .diliget , juſtitiam ſequentem & : impii via
10 דֶּרֶךְ רָשָׁע וּמְרַדֵּף צְדָקָה יֶאֱהָב׃ מוּסָר רָע
, Infernus .morietur , increpationem *odiens* : ſemitam relinquenti
11 לְעֹזֵב אֹרַח שׂוֹנֵא תוֹכַחַת יָמוּת׃ שְׁאוֹל
filiorum corda *quia etiam* : DOMINO coram perditio &
וַאֲבַדּוֹן נֶגֶד יְהוָה אַף כִּי־לִבּוֹת בְּנֵי־
ſapientes ad : ſe increpantem illuſor amabit Non ? hominum
12 אָדָם׃ לֹא־יֶאֱהַב לֵץ הוֹכֵחַ לוֹ אֶל־חֲכָמִים
cordis *dolore in* & *: facies bonificabit* lætum Cor .ibit non
13 לֹא יֵלֵךְ׃ לֵב שָׂמֵחַ יֵיטִב פָּנִים וּבְעַצְּבַת־לֵב
os & : ſcientiam quæret intelligens Cor *.confractus* ſpiritus
14 רוּחַ נְכֵאָה׃ לֵב נָבוֹן יְבַקֶּשׁ־דָּעַת וּפְנֵי
: mali *afflicti* dies Omnes *.ſtultitia* paſcetur ſtultorum
15 כְסִילִים יִרְעֶה אִוֶּלֶת׃ כָּל־יְמֵי עָנִי רָעִים
timore *in* parum *Bonum .juge convivium* corde *bonus* &
16 וְטוֹב לֵב מִשְׁתֶּה תָמִיד׃ טוֹב־מְעַט בְּיִרְאַת
Bonum .eo in *tumultus* & , *multo theſauro præ* ; DOMINI
17 יְהוָה מֵאוֹצָר רָב וּמְהוּמָה בוֹ׃ טוֹב
odium & , *ſaginato bove præ* ; *ibi* dilectio & , oleris *viaticum*
אֲרֻחַת יָרָק וְאַהֲבָה שָׁם מִשּׁוֹר אָבוּס וְשִׂנְאָה־
longus & *: contentionem excitabit excandeſcentiæ* Vir *.eo in*
18 בוֹ׃ אִישׁ חֵמָה יְגָרֶה מָדוֹן וְאֶרֶךְ
ſepes velut pigri Via *.litem* faciet quieſcere *naribus*
19 אַפַּיִם יַשְׁקִיט רִיב׃ דֶּרֶךְ עָצֵל כִּמְשֻׂכַת
ſapiens Filius *.ſtrata* rectorum ſemita & *: ſpinæ*
20 חָדֶק וְאֹרַח יְשָׁרִים סְלֻלָה׃ בֵּן חָכָם
.ſuam matrem *deſpiciens* homo ſtultus & : patrem lætificabit
יְשַׂמַּח אָב וּכְסִיל אָדָם בּוֹזֶה אִמּוֹ׃
intelligentiæ vir & : corde *carenti* Lætitia Stultitia
21 אִוֶּלֶת שִׂמְחָה לַחֲסַר־לֵב וְאִישׁ תְּבוּנָה
; *ſecreto non in* cogitationes *infringere .ambulando* ſeipſum diriget
22 יְיַשֶּׁר־לָכֶת׃ הָפֵר מַחֲשָׁבוֹת בְּאֵין סוֹד
viro Lætitia *.ſtabit* conſiliariorum multitudine *in* &
23 וּבְרֹב יוֹעֲצִים תָּקוּם׃ שִׂמְחָה לָאִישׁ
quàm ſuo tempore in verbum & : ſui oris reſponſione in
בְּמַעֲנֵה־פִיו וְדָבָר בְּעִתּוֹ מַה־
pro : intelligentem *ſupra vitarum* Via .bonum
24 טּוֹב׃ אֹרַח חַיִּים לְמַעְלָה לְמַשְׂכִּיל לְמַעַן
demolietur ſuperborum Domum .inferiori inferno ab *declinare*
25 סוּר מִשְּׁאוֹל מָטָּה׃ בֵּית גֵּאִים יִסַּח׀
Abominatio .viduæ terminum ſtatuet & : DOMINUS
26 יְהוָה וְיַצֵּב גְּבוּל אַלְמָנָה׃ תּוֹעֲבַת
.jucunditatis eloquia munda & : mali cogitationes DOMINI
יְהוָה מַחְשְׁבוֹת רָע וּטְהֹרִים אִמְרֵי־נֹעַם׃
, dona *habens odio & : concupiſcentiam appetens* ſuam domum *Turbans*
27 עֹכֵר בֵּיתוֹ בּוֹצֵעַ בָּצַע וְשׂוֹנֵא מַתָּנֹת
os & : reſpondendum *ad* meditabitur juſti Cor .vivet
28 יִחְיֶה׃ לֵב צַדִּיק יֶהְגֶּה לַעֲנוֹת וּפִי
.mala *eructabit* impiorum
רְשָׁעִים יַבִּיעַ רָעוֹת׃

Verſio VULG. LAT.

6 Domûs juſti plurima fortitudo : & in fructibus impii con-
7 turbatio. Labia ſapientium
diſſeminabunt ſcientiam : cor
8 ſtultorum diſſimile erit. Victimæ
impiorum abominabiles
Domino : vota juſtorum placabilia.
9 Abominatio eſt Domino
via impii : qui ſequitur
10 juſtitiam, diligitur ab eo. Doctrina
mala deſerenti viam vitæ
: qui increpationes odit,
11 morietur. Infernus, & perditio
coram Domino : quantò
magis corda filiorum hominum?
12 Non amat peſtilens
eum, qui ſe corripit : nec ad
13 ſapientes graditur. Cor gaudens
exhilarat faciem: in mœrore
animi dejicitur ſpiritus.
14 Cor ſapientis quærit doctrinam
: & os ſtultorum paſcitur
15 imperitiâ. Omnes dies pauperis,
mali : ſecura mens quaſi
16 juge convivium. Melius eſt
parum cum timore Domini,
quàm theſauri magni & inſatiabiles.
17 Melius eſt vocari ad
olera cum charitate, quàm ad
vitulum ſaginatum cum odio.
18 Vir iracundus provocat rixas:
qui patiens eſt, mitigat ſuſcitatas.
19 Iter pigrorum quaſi ſepes
ſpinarum : via juſtorum
20 abſque offendiculo. Filius ſapiens
lætificat patrem : & ſtultus
homo deſpicit matrem
21 ſuam. Stultitia gaudium ſtulto:&
vir prudens dirigit greſſus
22 ſuos. Diſſipantur cogitationes
ubi non eſt conſilium
: ubi verò ſunt plures
13 conſiliarii,confirmantur. Lætatur
homo in ſententia oris
ſui : & ſermo opportunus eſt
24 optimus. Semita vitæ ſuper
eruditum, ut declinet de inferno
25 noviſſimo. Domum ſuperborum
demolietur Dominus
: & firmos faciet terminos
26 viduæ. Abominatio Domini
cogitationes malæ : &
purus ſermo pulcherrimus firmabitur
27 ab eo. Conturbat
domum ſuam qui ſectatur avaritiam
: qui autem odit munera,
vivet. Per miſericordiam
& fidem purgantur peccata
: per timorem autem
Domini declinat omnis à malo.
28 Mens juſti meditatur obedientiam
: os impiorum redundat malis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 † Οἴκοις δικαίων ἰσχὺς πολλή, † καρποὶ
7 δὲ ἀσεβῶν ἀπολοῦνται. † Χείλη σοφῶν δέδεται
αἰσθήσει, † καρδίαι δὲ ἀφρόνων οὐκ
8 ἀσφαλεῖς. † Θυσίαι ἀσεβῶν βδέλυγμα
κυρίῳ, † εὐχαὶ δὲ κατευθυνόντων δεκταὶ
9 παρ' αὐτῷ. † Βδέλυγμα κυρίῳ ὁδοὶ ἀσεβοῦς,
† διώκοντας δὲ δικαιοσύνην ἀγαπᾷ.
10 † Παιδεία ἀκάκου γνωρίζεται ὑπὸ
τῶν παριόντων, † οἱ δὲ μισοῦντες ἐλέγχους
11 τελευτῶσιν αἰσχρῶς. † Ἅδης καὶ ἀπώλεια
φανερὰ παρὰ τῷ κυρίῳ· † πῶς οὐχὶ καὶ
12 αἱ καρδίαι τῶν ἀνθρώπων; † Οὐκ ἀγαπήσει
ἀπαίδευτος τοὺς ἐλέγχοντας αὐτόν,
13 † μετὰ δὲ σοφῶν οὐχ ὁμιλήσει. † Καρδίας
εὐφραινομένης πρόσωπον θάλλει, † ἐν δὲ
14 λύπαις (β) οὔσης σκυθρωπάζει. † Καρδία
ὀρθὴ ζητεῖ αἴσθησιν, † στόμα δὲ ἀπαιδεύτων
15 γνώσεται κακά. † Πάντα τὸν
χρόνον οἱ ὀφθαλμοὶ τῶν κακῶν προσδέχονται
κακά, † οἱ δὲ ἀγαθοὶ ἡσυχάζουσι
16 διαπαντός. † (γ) Κρεῖσσον μικρὰ μερὶς
μετὰ φόβου κυρίου, † ἢ θησαυροὶ μεγάλοι
17 μετὰ ἀφοβίας. † Κρείσσων (δ) ξενισμὸς μετὰ
λαχάνων πρὸς φιλίαν καὶ χάριν, † ἢ παράθεσις
18 μόσχων (ε) μετὰ ἔχθρας. † Ἀνὴρ θυμώδης
παρασκευάζει μάχας· † μακρόθυμος
δὲ καὶ τὴν μέλλουσαν καταπραΰνει. † μακρόθυμος
ἀνὴρ κατασβέσει κρίσεις, † ὁ δὲ ἀσεβὴς
19 ἐγείρει μᾶλλον. † Ὁδοὶ ἀεργῶν
ἐστρωμέναι ἀκάνθαις, † αἱ δὲ τῶν ἀνδρείων
20 τετριμμέναι. † Υἱὸς σοφὸς εὐφραίνει πατέρα,
† υἱὸς δὲ ἄφρων μυκτηρίζει μητέρα
21 αὐτοῦ. † Ἀνοήτου τρίβοι ἐνδεεῖς φρενῶν,
† ἀνὴρ δὲ φρόνιμος κατευθύνων πορεύεται.
22 † Ὑπερτίθενται λογισμοὺς οἱ μὴ τιμῶντες
συνέδρια, † ἐν δὲ καρδίαις βουλευομένων
23 μένει βουλή. † Οὐ μὴ ὑπακούσῃ
ὁ κακὸς αὐτῇ, † οὐδὲ μὴ εἴπῃ καίριόν
24 τι καὶ καλὸν τῷ κοινῷ. † Ὁδοὶ ζωῆς
διανοήματα συνετοῦ, † ἵνα ἐκκλίνας
25 ἐκ τοῦ ᾅδου σωθῇ. † Οἴκους ὑβριστῶν κατασπᾷ
κύριος, † ἐστήρισε δὲ ὅριον χήρας.
26 † Βδέλυγμα κυρίῳ λογισμὸς ἄδικος,
27 † ἁγνῶν δὲ ῥήσεις σεμναί. † Ἐξόλλυσιν
ἑαυτὸν ὁ δωρολήπτης, † ὁ δὲ μισῶν δώρων
λήψεις σώζεται. † ἐλεημοσύναις καὶ πίστεσιν
ἀποκαθαίρονται ἁμαρτίαι, † τῷ δὲ
φόβῳ κυρίου ἐκκλίνει πᾶς ἀπὸ κακοῦ.
28 † Καρδίαι δικαίων μελετῶσι πίστεις, † στόμα
δὲ ἀσεβῶν ἀποκρίνεται κακά. † δεκταὶ
παρὰ κυρίῳ ὁδοὶ ἀνθρώπων δικαίων,
† διὰ δὲ αὐτῶν καὶ οἱ ἐχθροὶ φίλοι
γίνονται.

Domibus juſtorum fortitudo m
ta : fructus autem impiorum p
ibunt. Labia ſapientum (l) al
gata ſunt ſenſu : corda autem
prudentum non (m) ſecura. S
crificia impiorum abominatio D
mino : vota autem (n) rectè a
bulantium (o) accepta apud e
Abominatio Domino viæ imp
ſequentes autem juſtitiam dil
Diſciplina (p) innocentis cog
ſcitur à prætereuntibus : qu
tem oderunt correptiones, (
moriuntur turpiter. Infernus
perditio (r) manifeſta apud D
num : quomodò non & corda
minum ? Non diliget (ſ) indi
plinatus caſtigantes ſe : cum
pientibus autem non converſa
(t) Cordis læti facies flore
triſtitiis autem poſiti mæ
Cor rectum quærit ſenſum :
autem indiſciplinatorum (u)
noſcet mala. (x) Omni tem
oculi malorum ſuſcipiunt ma
boni autem quieſcunt ſemper. M
lius parva pars cum timore D
mini , quàm theſauri magni
timore. Melior hoſpitalitas
(y) oleribus ad amicitiam &
tiam , quàm (z) appoſitio
borum cum inimicitia. V
moſus (ω) parat rixas : lo
mis autem & eam , quæ f
erat , mitigat. Longanim
extinguet judicia : impius a
ſuſcitat magis. Viæ (aa)
ſorum ſtratæ ſpinis : (bb) ſ
verò tritæ. Filius ſapiens l
ficat patrem : filius autem
dens (cc) ſubſannat matrem
am. (dd) Dementis ſemitæ
digentes corde : vir autem
dens rectà tendens vadit.
Differunt cogitationes, q
honorant conſeſſum : (ff)
dibus autem conſultantium
net conſilium. Non obedi
illi : neque dicet opportun
& bonum communi. Viæ
excogitationes intelligent
declinans ex inferno ſ
Domos contumelioſorum
Dominus : firmavit aute
minum viduæ. Abomin
mino, cogitatio injuſta :
vorum autem eloquia
(hh) Diſperdit ſeipſum
ceptor munerum : qui au
munerum acceptiones, ſ
(kk) Eleemoſynis, & fi
gantur peccata : timor
Domini declinat omnis
Corda juſtorum meditan
os autem impiorum
mala. Acceptæ apud Dominum viæ hominum juſtorum : p
autem & inimici fiunt amici.

MS. A. (β) οὖσα (γ) Κρίσσων (δ) ξενισμὸς λαχάνω
μετ' ἔχθρας.

תרגום TARGUM.

6 בביתא דצדיקא סני חילא ועללתהון דרשיעי תתעכר : שפותיה דחכימי מודעין
7 8 מנדעא ולבהון דסכלי לא כן : דבחהון דרשיעי מרחקתיה דאלהא ובצלותהון
9 דתריצי מתרעי : מרחק אלהא אורחיה דרשיעא ודרדף צדקתא נתרחם :
10 11 מרדותא דבישא מטעיא אורחיה ומן דסני מכסניתא ימות : שיול ואובדנא קדם
12 אלהא אף לבי בר נשא : לא רחם ממיקנא למן דמכסן ליה ולות חכימי לא אזל :
13 לבא חדיא משפיר אפי ובכיבא דלבא רוחא ממכתא : לבא דמתבין בעי
14 15 ידיעתא ופומהון דסכלי שטיותא : כל יומי דמסכנא בישין ומן דטב לביה משקיא
16 תדירא : טב קליל בדחלתיה דאלהא מן סימתא רברבתא ועאתא בהן :
17 18 טבא שרותא דירקא ורחמותא תמן מן תורי מפטמי בסניאתא : גברא חמתנא
19 מגרי תגרא ונגיד רוחא מדעך חרתדה : אורחיהון דעטלי קרצובי וכובי ואורחא
20 21 דתריצי שפיא : ברא חכימא יחדי לאבוי וברא סכלא משיט אמיה : שטיותא
22 חדותא היא לחסיר לבא וגברא דמתבין תרצות מהלך : בטולא דמחשבתא היך
23 דלית רזא ובסוגעא דאלין דמתמלכין עצתא תקום : חדותא לגברא במלתא
24 דפומיה ומלתא בעדנא סנו טבא : ארחא דחיי מעליא לסוכלתנא דנסטא
25 מן שיול תחתיתא : ביתא דגיותנא נסתר אלהא ויעתד תחומא דארמלתא :
26 27 מרחקתיה דאלהא מחשבתא דבישתא ודכין מלי בסימתא : מוביד ביתיה מכנש
28 ממון דשקר ודסני מוהביתא דמגן יחי : לבא דצדיקא רנן בהימנותא ופומהון
דרשיעי מביע בישתא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

In domo juſti virtus maxima eſt , & fructus impiorum conturb
Labia ſapientum notam faciunt ſcientiam, & cor ſtultorum non e
Sacrificia ſtultorum abominatio eſt Dei, & in oratione rectorum p
bitur. Abominatur Deus viam impii ; & qui ſequitur juſtitiam, dilig
Diſciplina mali hominis errare facit viam ſuam; & qui odit increp
nem, morietur. Infernus & perditio coram Deo, quanto magis co
liorum hominis ! Non diligit deriſor eum qui ſe corripit, & ad ſap
non graditur. Cor gaudens exhilarat faciem, & in dolore cordis ſp
dejicitur. Cor intelligentis quærit ſcientiam, & os ſtultorum ſtult
Omnes dies pauperis, mali ſunt ; & cujus hilaris eſt animus, conv
eſt continuum. Melius eſt parum in timore Dei, quàm theſauri mag
quibus eſt turbatio. Melius eſt prandium oleris ubi eſt charitas,
boves pingues cum odio. Vir iracundiæ provocat rixas : & qui lon
mis eſt, extinguit litem. *Viæ* pigrorum tribuli & ſpinæ ; & via rect
trita eſt. Filius ſapiens lætificat patrem, & ſtultus homo contemn
trem ſuam. Stultitia gaudium eſt carenti corde, et vir prudens
graditur. Diſſipantur cogitationes ubi non eſt ſecretum ; & in mu
dine conſiliariorum, conſilium confirmatur. Gaudium eſt viro in
oris ſui, & verbum in tempore ſuo valde bonum eſt. Semita vitæ
ſum intelligenti , ut declinet ab inferno inferiori. Domum ſuperb
demolietur Deus, et ſtatuet terminum viduæ. Abominatio eſt De
tatio maligna , et puri ſermones ſuaves ſunt. Perdit domum ſu
congregat mammonam iniquitatis : et qui odit munus gratis, viv
juſti meditatur in fide, et os impiorum eructat malum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܣܦܘܬܐ ܕܚܟܝܡܐ * ܒܒܝܬܗ ܕܙܕܝܩܐ ܚܣܢܐ ܣܓܝܐ. ܘܡܥܠܠܬܗܘܢ ܕܥܘܠܐ ܢܐܒܕܢ.
ܡܡܠܠܢ ܝܕܥܬܐ. ܘܠܒܘܬܐ ܕܣܟܠܐ ܠܐ ܬܪܝܨܢ. * ܕܒܚܐ ܕܥܘܠܐ ܡܣܠܝܢ ܡܪܝܐ. ܘܨܠܘܬܐ ܕܬܪܝܨܐ
ܪܥܝܢ ܠܗ. * ܐܘܪܚܐ ܕܥܘܠܐ ܡܣܠܝܐ ܡܪܝܐ. ܘܪܚܡ ܠܐܝܢܐ ܕܥܒܕ ܙܕܝܩܘܬܐ. * ܡܪܕܘܬܐ ܕܐܝܠܝܢ
ܕܠܐ ܝܕܥܝܢ ܒܝܫܬܐ ܓܠܝܐ ܗܝ. ܘܣܢܝܢ ܕܗܢܝܢ ܡܟܣܢܘܬܐ ܢܡܘܬܘܢ. * ܫܝܘܠ ܘܐܒܕܢܐ
ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܢܘܢ. ܐܦ ܠܒܘܬܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. * ܠܐ ܪܚܡ ܒܝܫܐ. ܠܡܢ ܕܡܟܣ ܠܗ. ܘܥܡ
ܚܟܝܡܐ ܠܐ ܡܗܠܟ. * ܠܒܐ ܚܕܝܐ ܡܫܦܪ ܦܪܨܘܦܐ. ܘܠܒܐ ܟܪܝܐ ܡܟܐܒ ܪܘܚܐ.
* ܠܒܐ ܕܟܐܢܐ ܒܥܐ ܝܕܥܬܐ. ܘܦܘܡܐ ܕܥܘܠܐ ܡܡܠܠ ܒܝܫܬܐ. * ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܘܗܝ
ܕܡܣܟܢܐ ܒܝܫܝܢ. ܘܡܟܝܟܐ ܫܠܝܢ ܒܟܠܙܒܢ. * ܛܒ ܠܡܕܚܠ ܠܡܪܝܐ ܩܠܝܠ: ܛܒ
ܡܢ ܣܝܡܬܐ ܪܘܪܒܬܐ ܕܥܘܠܐ. * ܛܒܐ ܗܝ ܫܪܘܬܐ ܕܝܪܩܐ ܘܚܘܒܐ ܕܫܡܐ: ܛܒ ܡܢ ܬܘܪܐ
ܡܦܛܡܐ ܒܣܢܐܬܐ. * ܓܒܪܐ ܚܡܬܢܐ ܡܓܪܐ ܚܪܝܢܐ. ܘܓܒܪܐ ܡܓܪ ܪܘܚܐ ܥܕ ܠܐ ܗܘܐ
ܡܕܥܟ ܠܗ. * ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܕܚܒܢܢܐ ܡܠܝܢ ܟܘܒܐ. ܘܐܘܪܚܬܗܘܢ ܕܬܪܝܨܐ ܫܦܝܢ. * ܒܪܐ
ܚܟܝܡܐ ܡܚܕܐ ܠܐܒܘܗܝ. ܘܒܪܐ ܣܟܠܐ ܒܘܣܪܢܐ ܗܘ ܠܐܡܗ. * ܓܒܪܐ ܕܣܟܠ ܚܣܝܪ ܠܒܐ ܗܘ.
ܘܓܒܪܐ ܣܘܟܠܬܢܐ ܬܪܝܨܐܝܬ ܡܗܠܟ. * ܡܒܛܠܝܢ ܡܚܫܒܬܐ ܐܝܠܝܢ ܕܡܝܩܪܝܢ ܟܢܘܫܬܐ.
ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܡܠܘܟܐ ܡܠܟܐ ܬܬܩܝܡ. * ܚܕܘܬܐ ܠܓܒܪܐ ܡܠܬܐ ܕܦܘܡܗ. ܘܕܡܡܠܠ
ܒܙܒܢܗ ܫܦܝܪ ܠܗ. * ܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ ܡܣܩܬܐ ܗܝ ܠܡܣܬܟܠܢܐ: ܕܢܗܦܟ ܡܢ ܫܝܘܠ
ܬܚܬܝܬܐ. * ܒܝܬܐ ܕܫܒܗܪܢܐ ܥܩܪ ܡܪܝܐ. ܘܡܩܝܡ ܬܚܘܡܐ ܕܐܪܡܠܬܐ. * ܡܣܠܝܢ
ܐܝܬܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܡܚܫܒܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܕܟܝܢ ܡܠܐ ܒܣܝܡܬܐ. * ܡܘܒܕ ܢܦܫܗ ܐܝܢܐ
ܕܡܩܒܠ ܫܘܚܕܐ. ܘܕܣܢܐ ܠܡܣܒ ܫܘܚܕܐ ܢܚܐ. * ܠܒܗ ܕܙܕܝܩܐ ܪܢܐ ܒܗܝܡܢܘܬܐ.
ܘܦܘܡܐ ܕܥܘܠܐ ܡܒܥ ܒܝܫܬܐ.

* In domo juſti multiplicantur opes: & proventus 6
impiorum peribunt. Labia ſapientum 7
loquuntur ſcientiam: & corda ſtultorum
non ſunt recta. Sacrificia impiorum abominabitur 8
Dominus: at oratio juſtorum grata
eſt ei. Viam impiorum execratur Dominus: 9
& diligit eum qui operatur juſtitiam. Diſciplina 10
eorum qui non nôrunt iniquitatem,
aperta eſt: & qui odio habent objurgationem,
morientur. Infernus & perditio coram 11
Domino ſunt: & multò magis corda hominum.
Non amat malignus corripientem ſe, 12
& cum ſapientibus non ambulat. Cor hilare 13
exornat corpus: & cor triſte affligit ſpiritum.
Cor juſtorum expetit ſcientiam: & os 14
iniquorum loquitur nequitias. Omnes dies 15
pauperis, mali ſunt: mites autem tranquilli
ſunt omni tempore. Melius eſt parumper 16
timere Dominum, melius *inquam* theſauris
ingentibus impiorum. Præſtantius eſt convivium 17
ex oleribus, & amor *boni* nominis:
præſtantius tauris ſaginatis cum odio. Vir 18
iracundus excitat contentionem; at vir longanimis,
antequam oriatur extinguit illam.
Viæ pigrorum plenæ ſunt ſentibus; et viæ 19
rectorum, complanatæ. Filius ſapiens exhilarat 20
patrem ſuum; et filius inſipiens opprobrium
eſt matris ſuæ. Vir ſtultus expers eſt 21
cordis; et vir prudens rectè incedit. Dirimunt 22
ſuſpiciones qui venerantur concilium,
et in multitudine conſiliariorum firmum erit.
Gaudium viri, ſermo oris ſui; et loquenti 23
opportunè, bonum eſt. Via vitæ aſcenſus eſt 24
prudenti, ut deflectat ab inferno imo. Domum 25
ſuperborum extirpat Dominus; & terminum
viduarum firmat. Abominandæ ſunt 26
coram Domino cogitationes pravæ, at pura
ſunt verba jucunda. Perdit animam ſuam 27
qui recipit munus; & qui recuſat accipere
donum, vivet. Cor juſti meditatur fidem; 28
et os iniquorum effutit mala.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* في العدل المتكاثر قوة جزيلة * والمنافقون يجتثون من الأرض بجملة أصلهم * في منازل المقسطين
قوة جزيلة * وغلات المنافقين تهلك * شفاه الحكماء مربوطة بالحس وقلوب الأغبياء ليست
مصونة * * ضحايا المنافقين رذالة عند الرب * وهو يحب الطالبين العدل * أدب ذي الدعة
يعرفه المختارون * والماقتون التوبيخ يموتون موتة مستقبحة * الجحيم والهلاك ظاهران عند الرب
فكيف ولا تكون قلوب الناس ظاهرة عنده * الغير مؤدب لم يحب من يوبخه * ولا يخاطب
الحكماء * القلب المسرور ينمي نضارة الوجه * وإذا حصل في الغموم يقطبه * القلب المقوم
يبتغي الحس * وهم من ليسوا مؤدبين يعرف الأسواء * مدى الزمان كله أعين الطالحين تقبل
الأسواء * والصالحين كل حين يسكنون * نصيب صغير بمخافة الرب أفضل من كنوز
كثيرة مع عدم مخافته * ضيافة ببقول بالصداقة والإنعام أفضل من تقديم عجول بمعاداة
* الإنسان الغضوب ينشئ خصومات * والطويل الأناة يسكن العتيدة أن تكون * الإنسان
المهمل يخمد الخصومات * والمنافق ينهضها * أكثر طرق الذين لا يعملون مفروشة بأنواع
الشوك * ومناهج المستحقين ممهدة * الابن الحكيم يسر أباه * والابن الجاهل يستهزئ بأمه
* سبل السفيه في أقفار الروايات * والرجل الحازم العقل يسلك مقوما * الذين لا يكرمون الجموع
يجورون أفكارهم * وفي قلوب المشاورين يثبت المشورة * والطالح ما يطيعها ولا يقول شيئا جيدا ولا
خطرا في الرأي السالم * طرائق الحياة روايات الفقيه حقا إذا جنح عن الهاوية يخلصه الرب
* الرب يقتلع منازل المتعظمين وقد وطد تخم الأرملة * الفكر الظالم رذالة عند الرب * والفاظ
الطاهرين شريفة * من يأخذ الهدايا يهلك ذاته * ومن يمقت أخذ الهدايا يخلص * الصدقات
والأمانات تهذب من الخطايا ويجتثن آثارها * وبخشية الرب يحيد الإنسان عن الشر * قلوب
المقسطين تتلو وتهذ في صنوف الأمانة * وفم المنافقين يجاوب بالأسواء * طرق الناس المقسطين
عند الرب * لأن بها يصير الأعداء أصدقاء *

In juſtitia multa, fortitudo copioſa: iniqui 6
autem evellentur è terra cum univerſa
radice ſua. In domibus juſtorum robur
multum: & fructus impiorum peribunt.
Labia ſapientum ligata ſunt prudentiâ: 7
& corda inſipientium non ſunt cuſtodita. 8
Victimæ impiorum ſunt abominatio apud
Dominum: & ipſe diligit quærentes juſtitiam. 9
Diſciplinam manſueti nôrunt 10
electi: & odientes correptionem obibunt
obitu turpi. Gehenna & interitus ſunt 11
manifeſta apud Dominum: quomodo ergò
non erunt etiam corda hominum manifeſta
apud ipſum? Immorigeratus non 12
amat eum qui corripit ipſum, neque verſatur
cum ſapientibus. Cor lætum nutrit 13
hilaritatem vultûs: cùm autem verſatur
in mœroribus, triſtem reddit illum.
Cor rectum quærit prudentiam: & os eorum 14
qui non ſunt morigerati, cognoſcit
mala. Toto temporis intervallo oculi improborum 15
recipient mala: proborum autem
omni momento quieſcunt. Sors parva 16
cum timore Domini, præſtantior eſt
theſauris multis cum carentia timoris ejus.
Convivium cum oleribus cum charitate 17
& gratiâ, præſtantius eſt oblatione
vitulorum cum inimicitia. Homo iracundus 18
alit jurgia: & longanimus ſedat imminentia.
Vir patiens ſedat lites: & iniquus
ſuſcitat eas. Pleræque viæ eorum 19
qui non operantur, ſunt ſtratæ generibus
ſpinarum: viæ autem fortium planæ ſunt.
Filius ſapiens exhilarat patrem ſuum: et 20
filius ſtultus deridet matrem ſuam. Itinera 21
ſtulti, in deſertis opinionum: & vir
præditus judicio incedit rectâ. Qui non 22
honorant concilia, omittunt illorum cogitationes:
& in cordibus conſiliatorum
manebit conſilium; At injuſtus non obedit 23
illi, nec dicit quicquam boni neque
fauſti mente ſanâ. Semitæ vitæ ſunt opiniones 24
eruditi verè: cùm declinaverit
ab inferno, liberabit eum Dominus. Dominus 25
eradicabit domos ſuperborum: &
jam confirmavit terminos viduæ. Cogitatio 26
iniqua abominatio eſt apud Dominum:
& eloquia mundorum, præclara.
Qui ſumit munera, perdit ſeipſum: & 27
qui odit ſumptionem munerum, ſalvabitur.
Miſericordiæ & fidelitates corrigunt
à peccatis, & exterminant veſtigia
eorum: & per timorem Domini devitat
homo malitiam. Corda juſtorum contemplantur 28
& meditantur genera fidelitatis:
& os iniquorum profert malignitates.
Semitæ hominum juſtorum, apud
Dominum: quia per ipſas inimici fiunt
amici.

משלי : יו

.audiet justorum orationem & : impiis ab Dominus Longinquus
29 רחוק יהוה מרשעים ותפלת צדיקים ישמע :
Auris .os impinguabit bona *auditio* : cor lætificabit oculorum Lux
30 31 מאור עינים ישמח־לב שמועה טובה תדשן־עצם : און
.commorabitur ſapientum *interiori in* ; *vitarum* increpationem *audiens*
שמעת תוכחת חיים בקרב חכמים תלין :
poſſidens increpationem *audiens &* :ſuam animam *ſpernens eruditionem* Negligens
32 פורע מוסר מואס נפשו ושומע תוכחת קונה
.*modeſtia* gloriam ante & : ſapientiæ eruditio Domini Timor .cor
33 לב : יראת יהוה מוסר חכמה ולפני כבוד ענוה :

CAP. XVI. יו

Omnes .linguæ reſponſio Domino à & : cordis *diſpoſitiones* Hominis
1 2 לאדם מערכי־לב ומיהוה מענה לשון : כל־
.Dominus ſpiritus *ponderans &* : ſuis oculis in mundæ viri viæ
דרכי־איש זך בעיניו ותכן רוחות יהוה :
.tuæ cogitationes firmabuntur & : tua opera Dominum ad Volve
3 גל אל־יהוה מעשיך ויכנו מחשבתיך :
diem ad impium etiam & : ſe propter Dominus eſt operatus Omnia
4 כל פעל יהוה למענהו וגם־רשע ליום
manus : corde elatus omnis Domini Abominatio .malam
5 רעה : תועבת יהוה כל־גבה־לב יד
:iniquitas *expiabitur* veritate & ,miſericordia In .erit *innocens* non *manum ad*
6 ליד לא ינקה : בחסד ואמת יכפר עון
vias Dominum volendo In .malo à *recedere* Domini timore in &
7 וביראת יהוה סור מרע : ברצות יהוה דרכי־
parum *Bonum* .eo cum *pacificabit* ejus inimicos Etiam ; viri
8 איש גם־אויביו ישלם אתו : טוב מעט
Cor .judicio abſque *proventuum multitudine præ* ; juſtitia *in*
9 בצדקה מרב תבואות בלא משפט : לב
.ejus greſſum *parabit* Dominus & : ſuam viam cogitabit hominis
אדם יחשב דרכו ויהוה יכין צעדו :
.ejus os *prævaricabitur* non judicio in : regis labiis *ſuper* Divinatio
10 קסם על־שפתי־מלך במשפט לא ימעל־פיו :
omnes ejus opus : Domino judicii bilances & , Statera
11 פלס ומאזני משפט ליהוה מעשהו כל־
quia : impietatem facere regum Abominatio .*marſupii lapides*
12 אבני־כיס : תועבת מלכים עשות רשע כי
labia regum Benevolentia .ſolium firmabitur juſtitia in
13 בצדקה יכון כסא : רצון מלכים שפתי־
legati regis Ira .diliget recta loquentem & : *juſtitiæ*
14 צדק ודבר ישרים יאהב : חמת־מלך מלאכי־
regis *facierum luce In* .illam *expiabit* ſapiens vir & : mortis
15 מות ואיש חכם יכפרנה : באור־פני־מלך
Acquirere .pluviæ ſerotinæ nubes *ut* ejus benevolentia & : *vitæ*
16 חיים ורצונו כעב מלקוש : קנה־
intelligentiam acquirere & : *puro auro præ bonum quàm* ſapientiam
חכמה מה־טוב מחרוץ וקנות בינה
cuſtodiens : malo à declinare rectorum via *Strata* .*argento præ electum*
17 נבחר מכסף : מסלת ישרים סור מרע שומר
.ſuam viam *ſervans* , ſuam animam
נפשו נצר דרכו : חצי
.ſpiritus elatio ruinam ante & : ſuperbia contritionem Ante
18 לפני־שבר גאון ולפני כשלון גבה רוח :
cum *ſpolium* dividere *præ* ; *manſuetis* cum ſpiritu humiliari *Bonum*
19 טוב שפל־רוח את־עניים מחלק שלל את־
confidens & : bonum inveniet , *verbum ſuper* Intelligens .ſuperbis
20 גאים : משכיל על־דבר ימצא־טוב ובוטח
.*ejus beatitudines* , Domino in
ביהוה אשריו :

Verſio VULG. LAT.

29 Longè eſt Dominus ab impiis: & orationes juſtorũ exaudiet. 30 Lux oculorum lætificat animã: 31 fama bona impinguat oſſa. Auris, quæ audit increpationes vitæ, in medio ſapientiũ commorabitur. 32 Qui abjicit diſciplinam, deſpicit animam ſuam: qui autem acquieſcit increpationibus, poſſeſſor eſt cordis. 33 Timor Domini, diſciplina ſapientiæ: & gloriam præcedit humilitas.

CAP. XVI.

1 HOminis eſt animam præparare: & Domini gubernare 2 linguam. Omnes viæ hominis patent oculis ejus: ſpirituum 3 ponderator eſt Dominus. Revela Domino opera tua, & di- 4 rigentur cogitationes tuæ. Univerſa propter ſemetipſum operatus eſt Dominus; impium 5 quoque ad diem malum. Abominatio Domini eſt omnis arrogans: etiam ſi manus ad manum fuerit, non eſt innocens. Initium viæ bonæ, facere juſtitiam: accepta eſt autem apud Deum magis, quàm immolare 6 hoſtias. Miſericordiâ & veritate redimitur iniquitas: & in timore Domini declinatur à 7 malo. Cùm placuerint Domino viæ hominis, inimicos quoque ejus convertet ad pacem. 8 Melius eſt parum cum juſtitia, quàm multi fructus cum iniqui- 9 tate. Cor hominis diſponit viam ſuam: ſed Domini eſt di- 10 rigere greſſus ejus. Divinatio in labiis regis, in judicio non 11 errabit os ejus. Pondus & ſtatera judicia Domini ſunt: & opera ejus omnes lapides ſaccu- 12 li. Abominabiles regi qui agunt impié: quoniam juſtitiâ 13 firmatur ſolium. Voluntas regum labia juſta: qui recta lo- 14 quitur, diligetur. Indignatio regis, nuntii mortis: & vir ſa- 15 piens placabit eam. In hilaritate vultûs regis, vita: & clementia ejus quaſi imber ſero- 16 tinus. Poſſide ſapientiam, quia auro melior eſt: & acquire prudentiam, quia preti- 17 oſior eſt argento. Semita juſtorum declinat mala: cuſtos animæ ſuæ ſervat viam ſuam. 18 Contritionem præcedit ſuperbia: & ante ruinam exaltatur 19 ſpiritus. Melius eſt humiliari cum mitibus, quàm dividere 20 ſpolia cum ſuperbis. Eruditus in verbo reperiet bona: & qui ſperat in Domino, beatus eſt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

29 † Μακρὰν ἀπέχει ὁ θεὸς ἀπὸ ἀσεβῶν, † εὐχαῖς δὲ δικαίων ἐπακούει. † κρείσσων ὀλίγη λῆψις μετὰ δικαιοσύνης, † ἢ πολλὰ γεννήματα μετὰ ἀδικίας.

ΚΕΦ. ιϛʹ.

† ΚΑρδία ἀνδρὸς λογιζέσθω δίκαια, † ἵνα ὑπὸ τοῦ θεοῦ διορθωθῇ τὰ διαβήματα 30 αὐτοῦ. † Θεωρῶν ὀφθαλμὸς καλὰ εὐφραίνει καρδίαν, † φήμη δὲ ἀγαθὴ παίνει ὀστᾶ. 32 † Ὃς ἀπωθεῖται παιδείαν, μισεῖ ἑαυτόν, † ὁ δὲ τηρῶν ἐλέγχους, ἀγαπᾷ ψυχὴν αὐτοῦ. 33 † Φόβος κυρίου παιδεία καὶ σοφία, † καὶ ἀρχὴ (α) δόξης ἀποκριθήσεται αὐτῇ. † Πάντα τὰ ἔργα τοῦ ταπεινοῦ φανερὰ παρὰ τῷ θεῷ, † οἱ δὲ ἀσεβεῖς ἐν ἡμέρᾳ κακῇ ὀλοῦν- 5 ται. † Ἀκάθαρτος παρὰ (*) θεῷ πᾶς ὑψηλοκάρδιος, † χειρὶ δὲ χεῖρας ἐμβαλὼν ἀδίκως οὐκ (β) ἀθῳωθήσεται. † ἀρχὴ ὁδοῦ ἀγαθῆς τὸ ποιεῖν τὰ δίκαια, † δεκτὰ δὲ παρὰ θεῷ μᾶλλον ἢ θύειν θυσίας. † ὁ ζητῶν τὸν κύριον εὑρήσει γνῶσιν μετὰ δικαιοσύνης, † οἱ δὲ ὀρθῶς ζητοῦντες αὐτόν, εὑρήσουσιν εἰρήνην. † Πάντα τὰ ἔργα (γ) τοῦ κυρίου μετὰ δικαιοσύνης, † φυλάσσεται δὲ ὁ 10 ἀσεβὴς εἰς ἡμέραν κακήν. † Μαντεῖον ἐπὶ χείλεσι βασιλέως, † ἐν δὲ κρίσει οὐ μὴ 11 πλανηθῇ τὸ στόμα αὐτοῦ. † Ῥοπὴ ζυγοῦ δικαιοσύνη (δ) παρὰ κυρίῳ, † τὰ δὲ ἔργα αὐ- 12 τοῦ στάθμια δίκαια. † Βδέλυγμα βασιλεῖ ὁ ποιῶν κακά, † μετὰ γὰρ δικαιοσύνης ἑτοι- 13 μάζεται θρόνος ἀρχῆς. † Δεκτὰ βασιλεῖ χείλη δίκαια, † λόγους δὲ ὀρθοὺς ἀγαπᾷ. 14 † Θυμὸς βασιλέως ἄγγελος θανάτου, † ἀνὴρ 15 δὲ σοφὸς ἐξιλάσεται αὐτόν. † Ἐν φωτὶ ζωῆς υἱὸς βασιλέως, † οἱ δὲ προσδεκτοὶ 16 αὐτῷ ὥσπερ νέφος ὄψιμον. † Νοσσιαὶ σοφίας αἱρετώτεραι (ε) χρυσίου, † νοσσιαὶ δὲ φρονήσεως αἱρετώτεραι ὑπὲρ ἀργύριον. 17 † Τρίβοι ζωῆς ἐκκλίνουσιν ἀπὸ κακῶν, † μῆκος δὲ βίου ὁδοὶ δικαιοσύνης. † ὁ δεχόμενος παιδείαν ἐν ἀγαθοῖς ἔσται, † ὁ δὲ φυλάσσων ἐλέγχους σοφισθήσεται. † ὃς φυλάσσει τὰς ἑαυτοῦ ὁδούς, τηρεῖ τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν. † ἀγαπῶν δὲ ζωὴν αὐτοῦ, φείσεται στό- 18 ματος αὐτοῦ. † Πρὸ συντριβῆς ἡγεῖται ὕβρις, † πρὸ δὲ πτώματος κακοφροσύνη. 19 † Κρείσσων (ζ) πραΰθυμος μετὰ ταπεινώσεως, † ἢ ὃς διαιρεῖται σκῦλα (η) μετὰ ὑβρι- 20 στῶν. † Συνετὸς ἐν πράγμασιν εὑρετὴς ἀγαθῶν, † πεποιθὼς δὲ (θ) ἐπὶ θεῷ μακαριστός.

MS. A. (α) δόξης αὐτοῦ ἀποκριθήσεται αὐτῷ. † [illegible] νὸς δόξα. Πάντα τὰ ἔργα (*) τῷ θεῷ (β) ἀθῳωθήσεται. (γ) κυρίου κυρίου, (ε) χρυσίῳ, (ζ) πρόθυμος (η) μετὰ ὕβρεως. (θ) ἐπὶ

Longè abeſt Deus ab impiis: preces autem juſtorum exaudiet. Melior parva acceptio cum juſtitia, quàm multa genimina cum injuſtitia.

CAP. XVI.

COr viri cogitet juſta, (a) ut à Deo dirigantur greſſus ejus. (b) Spectans oculus pulchra lætificat cor: fama autem bona (c) impinguat oſſa. Qui expellit diſciplinam, odit ſeipſum: qui autem ſervat correptiones, diligit animam ſuam. Timor Domini diſciplina, & ſapientia: (d) & principium gloriæ reſpondebit ei. (e) Omnia opera humilis manifeſta apud Deum: impii autem in die mala peribunt. Immundus apud Deum omnis ſublimis corde: manu autem manus (f) inferens injuſtè, non erit innocens. (g) Initium viæ bonæ facere juſta: accepta autem ſunt apud Deum magis, quàm immolare hoſtias. Qui quærit Dominum, inveniet ſcientiam cum juſtitia: & qui rectè quærunt eum, invenient pacem. Omnia opera Domini cum juſtitia, ſervatur autem impius in diem malam. Divinatio in labiis regis: in judicio autem non (h) errabit os ejus. (i) Momentum ſtateræ juſtitia apud Dominum: opera autem ejus (k) pondera juſta. Abominatio regi qui facit mala: nam (l) cum juſtitia paratur ſolium principatus. (m) Accepta regi labia juſta: ſermones autem rectos diligit. Ira regis, nuntius mortis: vir autem ſapiens placabit eum. In luce (n) vitæ filius regis: (o) qui autem valdè accepti ſunt ei, quàm nubilum ſerotinum. Nidi ſapientiæ magis eligendi auro: nidi prudentiæ ſunt magis eligendi ſuper argentum. Semitæ vitæ declinant à malis: longitudo autem vitæ, viæ juſtitiæ. Qui ſuſcipit diſciplinam, in bonis erit: qui autem cuſtodit correptiones, ſapiens fiet. (p) Qui cuſtodit vias ſuas, ſervat ſuam animam: qui diligit vitam (q) ſuam, parcet ori ſuo. (r) Ante contritionem præcedit contumelia: & ante ruinam mala cogitatio. Melior manſuetus cum humilitate, quàm qui dividit ſpolia cum contumelioſis. Intelligens in negotiis inventor bonorum: & qui confidit in Deo, beatiſſimus.

תרגום TARGUM.

29 רחיק הוא אלהא מרשיעי וצלותהון דצדיקי ישמע : נהורא דעיני מחדי לבא שומעתא
30 טבא מדהנא גרמא : אודנא דשמעא מכסנותא דחיי בינת דחכימי תבות : מריש
31 32 מרדותא מסלי נפשיה ודשמיע מכסנותא דחיי קני חוכמתא : דחלתיה דיי מרדותא
33 דחוכמתא ומן דמתיקר יהוי ענון :
יו
1 מן בר נש תרעיתא דלבא ומן יי ממללא דלישנא : כלהון ארחתיה דגברא דכין אנון
2 בעינוי ואלהא מתקן ארחתיה : גלי לאלהא עובדך ומתקנן מחשבתך : כלהון עובדין
3 4 דאלהא לאלין דמשתמעין ליה ורשיעא ליומא בישא : מרחקתיה דאלהא כל דרם
5 6 בלביה מן בישתא לא נדכי : בטיבותא וקושטא מתכפר סורחנא ודחלתיה דאלהא
7 מסטי מן בישתא : כד אתרעי אלהא בארחתיה דגברא ואף לבעלי דבבוי נשלים ליה :
8 9 טב קליל בצדקתא מן סגיעא דעללתא דלא בדינא : לביה דבר נשא מחשב ארחתיה
10 11 ואלהא מתקן הלכתיה : קסמא על שפותיה דמלכא ובדינא לא נדגול פומיה : רגיא
12 ומסחא דתריצותא מן קדם אלהא ועובדוי כולהון מתקלי דקושטא : מרחקתיה
13 דמלכין דעבדין רשעא מטול דבצדקותא תקין כורסיא : רעותיה דמלכא שפותא
14 דצדקתא ומלתא דתריצי רחם : חמתיה דמלכא מלאכי דמותא אנון וגברא חכימא
15 16 נדעכנידה : בנהורא דפרצופיה דמלכא חיי וצביוניה היך עננא בברירותא : דקני
17 חכמתא טבא ליה מן דהבא סנינא ודקני ביונא טב מן סניא נביא : שבילא דתריצי
18 מסטי מן בישתא ודמזהר נפשיה נטר ארחיה : קדם תברא גיותנותא וקדם תקלא רמת
19 20 רוחא : טב הוא שפל רוח ועננא מן הוא דמפליג עדיתא עם גיותני : דמסתכל במלתא
ישכיח טבתא ודמסבר באלהא טוביהי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Longè eſt Deus ab impiis, & orationem juſtorum exaudiet. Lux oculorum lætificat cor: fama bona impinguat oſſa. Auris quæ audit increpationem vitæ, in medio ſapientum commorabitur. Qui deſerit diſciplinam averſatur animam ſuam: & qui audit increpationem vitæ, poſſidet ſapientiam. Timor Domini diſciplina ſapientiæ: & qui glorioſus eſt, humilis.

CAP. XVI.

AB homine eſt conſilium cordis, & à Domino ſermo linguæ. Omnes viæ viri mundæ ſunt in oculis ejus, & Deus dirigit vias ejus. Revela Deo opera tua, & dirigentur cogitationes tuæ. Omnia opera Dei pro his qui obediunt ei, & impius ſervatur in diem malum. Abominatio Dei eſt omnis elatus corde: à malo non mundabitur. In benignitate & veritate expiatur iniquitas: & timor Dei [*eſt*] *avertere* à malo. Quando vult Deus viam viri, inimicos quoque ejus pacificos reddit ei. Melius eſt parum in juſtitia, quàm multi fructus abſque judicio. Cor filii hominis cogitat viam ſuam, & Deus dirigit greſſum ejus. Divinatio in labiis regis, & in judicio non mentitur os ejus. Pondus & ſtatera recta Dei eſt, & opera ejus omnia pondera veritatis. Abominatio ſunt regi ii qui operantur iniquitatem, quoniam in juſtitia dirigitur ſolium. Voluntas regis labia juſtitiæ, & verbum rectorum diligit. Indignatio regis angeli mortis ſunt, & vir ſapiens reſtinguet eam. In luce vultus regis vita, & voluntas ejus quaſi nubes in ſerenitate. Qui poſſidet ſapientiam melior eſt ei auro conflato; & qui poſſidet prudentiam melior eſt argento lecto. Semita rectorum eſt declinare à malo; & qui cavet animam ſuam ſervat viam ſuam. Ante interitum venit ſuperbia, & ante ruinam elevatur ſpiritus. Melior eſt humilis ſpiritu & manſuetus, quàm ille qui dividit ſpolia cum ſuperbis. Qui contemplatur in verbo, inveniet bonum: & qui ſperat in Deo, beatus eſt.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܪܚܝܩ ܗܘ ܡܪܝܐ ܡܢ ܥܘܠܐ. ܘܨܠܘܬܗܘܢ ܕܙܕܝܩܐ ܫܡܥ. * ܢܘܗܪܐ ܕܥܝܢܐ. ܡܚܕܐ ܠܒܐ. 29 30
ܘܫܡܥܬܐ ܛܒܬܐ. ܡܫܡܢܐ ܓܪܡܐ. * ܐܕܢܐ ܕܫܡܥܐ ܡܟܣܢܘܬܐ ܕܚܝܐ. ܒܝܢܝ ܚܟܝܡܐ ܬܫܪܐ. 31
* ܕܡܣܠܐ ܡܪܕܘܬܐ. ܣܢܐ ܠܢܦܫܗ. ܘܕܫܡܥ ܡܟܣܢܘܬܐ. ܩܢܐ ܚܟܡܬܐ. * ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ 32 33
ܡܠܦܢܘܬܐ ܗܝ ܕܚܝܐ. ܘܠܡܟܝܟܘܬܗ ܕܫܘܒܚܐ ܐܙܠܐ ܩܕܡܘܗܝ. * ܫܠܡ * ܗܘ *
* ܡܢ ܒܪܢܫܐ ܬܪܥܝܬܐ ܕܠܒܐ. ܘܡܢ ܡܪܝܐ ܡܡܠܠܐ ܕܠܫܢܐ. * ܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܗ ܕܓܒܪܐ 1 2
ܕܟܝܢ ܐܝܟ ܕܒܥܝܢܘܗܝ. ܘܡܪܝܐ ܡܬܩܢ ܐܘܪܚܬܗ. * ܓܠܝ ܠܡܪܝܐ ܥܒܕܝܟ. ܘܢܬܩܢ 3
ܡܚܫܒܬܟ. * ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܫܬܡܥܝܢ ܠܗ. ܘܥܘܠܐ ܢܛܝܪ 4
ܠܝܘܡܐ ܒܝܫܐ. * ܛܢܦ ܗܘ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܟܠ ܕܪܡ ܒܠܒܗ. ܘܡܘܫܛ ܐܝܕܗ ܥܠ ܚܒܪܗ. 5
ܠܐ ܢܬܚܣܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. * ܒܛܝܒܘܬܐ ܘܒܩܘܫܬܐ ܡܫܬܒܩܐ ܚܛܝܬܐ. ܘܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ 6
ܡܣܛܝܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. * ܒܨܒܝܢܗ ܕܡܪܝܐ ܐܘܪܚܬܗ ܕܓܒܪܐ. ܐܦ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ 7
ܢܦܪܘܥ. * ܛܒ ܗܘ ܩܠܝܠ ܒܙܕܝܩܘܬܐ: ܡܢ ܣܓܝܐܘܬ ܥܠܠܬܐ ܕܠܐ ܒܕܝܢܐ. * ܠܒܗ ܕܒܪܢܫܐ 8
ܡܬܪܥܐ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܡܪܝܐ ܡܬܩܢ ܗܠܟܬܗ. * ܩܘܣܡܐ ܥܠ ܣܦܘܬܗ ܕܡܠܟܐ. ܘܒܕܝܢܐ 9 10
ܠܐ ܢܛܥܐ ܦܘܡܗ. * ܒܡܬܩܠܐ ܕܡܣܐܬܐ ܕܝܢܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܥܒܕܘܗܝ ܟܠܗܘܢ. ܡܬܩܠܐ ܕܩܘܫܬܐ. 11
* ܡܣܠܝܢ ܐܢܘܢ ܡܠܟܐ ܕܥܒܕܝܢ ܥܘܠܐ. ܡܛܠ ܕܒܙܕܝܩܘܬܐ ܗܘ ܡܬܩܢ ܟܘܪܣܝܐ. * ܨܒܝܢܗ 12 13
ܕܡܠܟܐ. ܣܦܘܬܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܡܠܬܐ ܕܬܪܝܨܐ ܪܚܡ. * ܚܡܬܗ ܕܡܠܟܐ. ܡܠܐܟܐ ܐܢܘܢ ܕܡܘܬܐ. 14
ܘܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ ܢܕܥܟܝܗ. * ܒܢܘܗܪܐ ܕܐܦܘܗܝ ܕܡܠܟܐ. ܚܝܐ. ܘܪܥܝܢܗ. ܐܝܟ ܥܢܢܐ 15
ܕܒܡܠܩܘܫܐ. * ܕܩܢܐ ܚܟܡܬܐ. ܛܒ ܠܗ ܡܢ ܕܗܒܐ. ܘܕܩܢܐ ܣܘܟܠܐ. ܡܝܬܪ ܗܘ ܠܗ ܡܢ 16
ܣܐܡܐ. * ܫܒܝܠܐ ܕܬܪܝܨܐ ܡܣܛܝܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܕܢܛܪ ܒܢܦܫܗ. ܢܛܪ ܐܘܪܚܗ. * ܩܕܡ ܬܒܪܐ 17 18
ܨܥܪܐ. ܘܩܕܡ ܟܘܪܗܢܐ ܪܡܘܬ ܪܘܚܐ. * ܛܒ ܗܘ ܡܟܝܟ ܪܘܚܐ ܘܡܟܝܟ ܥܝܢܐ. ܡܢ ܗܘ ܕܡܦܠܓ 19
ܒܙܬܐ ܥܡ ܥܫܝܢܐ. * ܕܡܣܬܟܠ ܒܡܠܬܐ. ܢܫܟܚ ܛܒܬܐ. ܘܕܬܟܝܠ ܥܠ ܡܪܝܐ ܛܘܒܘܗܝ. 20

Procul abeſt Dominus ab impiis : & oratio- 29
nem juſtorum exaudit. Lux oculorum delectat 30
cor : & cor bonum impinguat oſſa. Auris 31
quæ audit increpationem vitæ, inter ſapien-
tes commorabitur. Qui deſpicit objurgatio- 32
nem, odit animam ſuam : qui autem acquie-
ſcit diſciplinæ, poſſidebit ſapientiam. Timor 33
Domini, doctrina eſt vitæ : & gloria humilis
præcedit eum.

CAP. XVI.

Ab homine cogitatio cordis, & à Domino 1
ſermo linguæ. Omnes viæ viri mundæ ſunt 2
in oculis ſuis : & Dominus diſponit vias ejus.
Revela Domino opera tua, & diſponet cogi- 3
tationes tuas. Univerſa opera Domini ſunt 4
propter eos qui obediunt illi : & impius ſer-
vatur ad diem malum. Immundus eſt coram 5
Domino omnis elatus corde : & qui extendit
manum ſuam contra ſocium ſuum, non expi-
abitur à malo. Per bonitatem & juſtitiam re- 6
mittitur iniquitas : et timor Domini declinare
facit à malo. In beneplacito Domini, viæ viri, 7
et inimicis quoque ſuis rependet. Melius eſt 8
parum cum juſtitia, quàm copia frugum abſq;
judicio. Cor hominis cogitat vias ſuas : et 9
Dominus diſponit greſſus ejus. Divinatio ſu- 10
per labia regis, et in judicio non errabit os
ejus. In pondere ſtateræ, judicium Domini, 11
et opera ejus omnia, pondera ſunt juſtitiæ.
Execrabiles ſunt reges qui committunt ini- 12
quitatem, juſtitiâ enim firmatur ſolium. Vo- 13
luntas regis, labia juſti, et verbum rectorum
diligit. Ira regis, nuntii ſunt mortis, vir au- 14
tem ſapiens extinguet eam. In ſplendore vul- 15
tûs regis, vita, et gratia illius tanquam nubes
ſerotina. Poſſidenti ſapientiam, melior eſt ei 16
quàm aurum, et poſſidenti intelligentiam,
præſtantior eſt ei quàm argentum. Semita 17
rectorum vitare facit malum, et qui cautus
eſt in anima ſua, cuſtodit viam ſuam. Ante 18
fractionem, ignominia, et ante morbum, ela-
tio ſpiritûs. Melior eſt humilis ſpiritu et hu- 19
milis oculis, eo qui partitur ſpolia cū poten-
tibus. Qui percipit verbum, reperiet bona, 20
et qui fretus eſt Domino, beatus.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الله يبتعد بعد البعد من المنافقين * ويستجيب صلوات الصديقين * كسب قليل بعدل 29 30
افضل من غلات كثيرة بظلم * قلب الانسان فليهتد رويات مقسطة * حتى يقوم الله خطواته *
العين اذا ابصرت لحظات جيدة تسر القلب * والبشارة الصالحة تدسم الاعظام * من يطرح 31 32
الادب يمقت نفسه * ومن يحفظ التوبيخات يحب نفسه * خشية الرب ادب وحكمة * ومبدا الشرف 33
يجاوبها * والمجد يسلك قدام المتواضعين *

* الفصل السادس عشر *

* اعمال المتواضع كلها طاهرة امام الله * والمنافقون يهلكون في يوم سوء * * * كل مستعلي 1 5
القلب نجس عند الله * من يطرح يدا في يد ظالم لن يتبرا الطائلة * مبدا الطريق الصالح 6
افتعال المعدلات * وهي مقبولة عند الله اكثر من تضحية الذبائح * من يلتمس الرب يجد 7
المعرفة مع العدل * الذين يبتغونه ابتغاء مستويا يجدون السلامة * اعمال الرب كلها بعدل * 8 9
والمنافق يخبا ليوم شرير * معرفة الخاطر في شفتي الملك * فما يضل فمه في القضاء * رجحان 10 11
الميزان عدل عند الرب * واعماله مثاقيل عدله * من يعمل الاسواء مرذول عند الرب * لان 12
كرسي رياسته مرسوم بالعدل * الشفاه المقسطة عند الملك * فهو يحب الاقوال القويمة * 13
* غضب الملك رسول الموت * والانسان الحكيم يستعطفه * ابن الملك في نور الحياة * 14 15
والمقبولون عنده كسحابة مسائية * فراخ الحكمة عالية مادون اكثر من الذهب * فراخ 16
الفطنة مادون رفيعة اكثر من الفضة * سبل الحياة تستميل من الاسواء * وطرق العدل 17
تفيد طول العمر من يقبل ادبا سيكون في الخيرات * ومن يحفظ التوبيخات سيحكم *
من يحفظ طرقه يصون نفسه * ومن يحب حياته يشفق على فمه * التعظم يتقدم قبل الهشم * 18 19
وسوء التمييز يسقط قبل السقوط * الوديع الغضب بتواضعه افضل من الذي يوزع الغنائم 20
بتعظم * الفقيه في الامور واجد الصالحات * والمتوكل على الرب مغبوط *

Deus recedit diſtantia diſtantiarum ab 29
impiis, & exaudit orationes proborum.
Lucrum parvum cum juſtitia, præſtantius 30
eſt frugibus multis cum iniquitate. Cor ho-
minis cogitet cogitationes juſtas, ut diri-
gat Deus greſſus ejus. Oculus, cùm in- 31
tuetur inſpectiones bonas, lætificat cor :
& nuntium bonum impinguat oſſa. Qui 32
rejicit diſciplinam, odit animam ſuam :
& qui ſervat correptiones, amat animam
ſuam. Timor Domini, diſciplina ac ſapi- 33
entia : & initium gloriæ reſpondebit ei :
& honor incedet ante humiles.

CAP. XVI.

Opera humilis omnia, munda ſunt co- 1
ram Deo : et ſceleſti peribunt in die mala.
Omnis elatus corde, immundus eſt apud 5
Deum. Qui injecerit manum in manum
tyranni, non effugiet poteſtatem. Initium 6
viæ bonæ, operatio æquitatum : ſuntque
acceptæ apud Deum pluſquàm mactatio
victimarum. Qui quærit Dominum, in- 7
veniet ſcientiam cum æquitate. Qui quæ- 8
runt eum inquiſitione rectâ, invenient ſa-
lutem. Opera Domini cuncta, cum juſti- 9
tia : impius ſervatur ad diem malum.
Cognitio intentionis, in labiis regis : neque 10
errabit os ejus in judicio. Exuberantia 11
ſtateræ, juſtitia eſt apud Dominum : &
opera ejus, pondera juſtitiæ ipſius. Qui 12
committit ſcelera, execrabilis eſt apud
Dominum : quia ſolium principatûs ejus
eſt firmatum in æquitate. Labia juſta, a- 13
pud regem : nam ipſe diligit ſermones re-
ctos. Ira regis nuntius eſt mortis : & 14
homo ſapiens devitabit eam. Filius re- 15
gis, in ſplendore vitæ : & accepti apud il-
lum, ſunt veluti nubes veſpertina. Ger- 16
mina ſapientiæ, excelſa, electa magis quàm
aurum : germina prudentiæ, electa, ſubli-
mia plus quàm argentum. Semitæ vitæ 17
declinant à nequitiis : & viæ æquitatis
important longitudinem ætatis. Qui reci-
pit diſciplinam, erit in bonis : & qui cu-
ſtodit correptiones, ſapiens fiet. Qui ob-
ſervat vias ſuas, ſervat animam ſuam :
& qui amat vitam ſuam, parcit ori ſuo.
Superbia præcedit confractionem : & ma- 18
lè conſiderans corruet ante ruinam. Qui 19
mitis eſt in ira, in humilitate ſua præ-
ſtantior eſt eo qui dividit ſpolia cum ſu-
perbia. Prudens in negotiis, inveniet bo- 20
na : & confidens in Domino, fœlix.

משלי : יו

addet labiorum dulcedo & : intelligens vocabitur corde *Sapiens*
21 לחכם־לב יקרא נבון ומתק שפתים יסיף
ſtultorum eruditio & : *ea præditi* intelligentia *vitarum* Vena .doctrinam
22 לקח : מקור חיים שכל בעליו ומוסר אולים
ſuis labiis *ſuper* & ; ſuum os *prudens reddet* ſapientis Cor .ſtultitia
23 אולת : לב חכם ישכיל פיהו ועל־שפתיו
dulcis : *jucunditatis* eloquia mellis Favus .doctrinam addet
24 יסיף לקח : צוף־דבש אמרי־נעם מתוק
: *viri* *facies ad* recta via Eſt .*oſſi* *medela* & , animæ
25 לנפש ומרפא לעצם : יש דרך ישר לפני־איש
laboravit laborantis Anima .mortis viæ ejus noviſſimum &
26 ואחריתה דרכי־מות : נפש עמל עמלה
: malum *fodiens Belijahal* Vir .ſuum os *eum ſuper ſe inflexit* quia ; ſibi
27 לו כי־אכף עליו פיהו : איש בליעל כרה רעה
mittet *perverſitatum* Vir .ardens ignis ut ſuis labiis *ſuper* &
28 ועל־שפתיו כאש צרבת : איש תהפכות ישלח
ſeducet *violentiæ* Vir .*ducem dividens* ſuſurrator & : *contentionem*
29 מדון ונרגן מפריד אלוף : איש חמס יפתה
Claudens .*bona non via in* eum ambulare faciet & : ſuum *ſocium*
30 רעהו והוליכו בדרך לא־טוב : עצה
perfecit ſuis labiis annuens : perverſitates cogitandum ad ſuos oculos
עיניו לחשב תהפכות קרץ שפתיו כלה
.invenietur juſtitiæ via in : canicies gloriæ *Diadema* .malum
31 רעה : עטרת תפארת שיבה בדרך צדקה תמצא :
capiente præ ,*ſuum ſpiritum in* *dominans &* ; *forti præ* *naribus* *longus* *Bonus*
32 טוב ארך אפים מגבור ומשל ברוחו מלכד
omne Domino à & : ſors projicitur ſinum In .urbem
33 עיר : בחיק יוטל את־הגורל ומיהוה כל־
.ejus judicium
משפטו :

CAP. XVII. יז

plena *domo præ* ; ea in *tranquillitas* & , ſicca buccella *Bona*
1 טוב פת חרבה ושלוה־בה מבית מלא
filium in dominabitur intelligens Servus .jurgii victimis
2 זבחי־ריב : עבד משכיל ימשול בבן־
Conflatorium .hæreditatem dividet *fratrum medio in &* ; *confundentem*
3 מביש ובתוך אחים יחלק נחלה : מצרף
Malus .Dominus corda *probans &* ; *auro* caminus & , *argento*
4 לכסף וכור לזהב ובחן לבות יהוה : מרע
linguæ *ſuper* *auſcultans falſitas* : *iniquitatis* *labio* *ſuper* *attendens*
מקשיב על־שפת־און שקר מזין על־לשון
: ejus factorem affecit probris ,pauperem *Subſannans* .*pravitatum*
5 הות : לעג לרש חרף עשהו
filii ſenum *Diadema* .impunis erit non ,contritione in *lætans*
6 שמח לאיד לא ינקה : עטרת זקנים בני
ſtulto *decorum* Non .eorum patres filiorum gloria & : filiorum
7 בנים ותפארת בנים אבותם : לא־נאוה לנבל
Lapis *? falſitatis labium* liberali *quia etiam* : *dignitatis* *labium*
8 שפת יתר אף כי־לנדיב שפת־שקר : אבן־
, *reſpexerit* *quod* *omne* ad : ejus *patroni* oculis in munus *gratiæ*
חן השחד בעיני בעליו אל־כל־אשר יפנה
.*aget prudenter*
ישכיל :

Verſio VULG. LAT.

21 Qui ſapiens eſt corde, appellabitur prudens : & qui dulcis eloquio, majora percipiet. 22 Fons vitæ eruditio poſſidentis : doctrina ſtultorum, fatuitas. 23 Cor ſapientis erudiet os ejus : & labiis ejus addet gratiam. 24 Favus mellis, compoſita verba : dulcedo animæ, ſanitas oſſium. 25 Eſt via quæ videtur homini recta : & noviſſima ejus ducunt ad mortem. 26 Anima laborantis laborat ſibi, quia compulit eum 27 os ſuum. Vir impius fodit malum, & in labiis ejus ignis ardeſcit. 28 Homo perverſus ſuſcitat lites : & verboſus ſeparat principes. 29 Vir iniquus lactat amicum ſuum : & ducit eum per viam non 30 bonam. Qui attonitis oculis cogitat prava, mordens labia ſua perficit malum. 31 Corona dignitatis ſenectus, quæ in viis juſtitiæ reperi- 32 etur. Melior eſt patiens viro forti : & qui dominatur animo ſuo, expugnatore ur- 33 bium. Sortes mittuntur in ſinum, ſed à Domino temperantur.

CAP. XVII.

1 MElior eſt buccella ſicca cum gaudio, quàm domus ple- 2 na victimis cum jurgio. Servus ſapiens dominabitur filiis ſtultis, & inter fratres hære- 3 ditatem dividet. Sicut igne probatur argentum, & aurum camino : ita corda probat 4 Dominus. Malus obedit linguæ iniquæ, & fallax obtem- 5 perat labiis mendacibus. Qui deſpicit pauperem, exprobrat factori ejus : & qui ruinâ lætatur alterius, non erit impu- 6 nitus. Corona ſenum filii filiorum : & gloria filiorum 7 patres eorum. Non decent ſtultum verba compoſita ; nec principem labium mentiens. 8 Gemma gratiſſima, expectatio præſtolantis : quocunque ſe vertit, prudenter intelligit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cùm Tranſlatione LATINA.

21 † Τοὺς σοφοὺς καὶ συνετοὺς φαύλους καλοῦσιν, † οἱ δὲ γλυκεῖς ἐν λόγῳ (ι) πλείονα ἀκού- 22 σονται. † Πηγὴ ζωῆς ἔννοια τοῖς κεκτη- 23 μένοις, † παιδεία δὲ ἀφρόνων κακή. † Καρδία σοφοῦ νοήσει τὰ ἀπὸ τοῦ ἰδίου στόματος, † ἐπὶ δὲ χείλεσι φορέσει ἐπιγνωμοσύνην. 24 † Κηρία μέλιτος λόγοι καλοί, † γλύκασμα 25 δὲ (κ) αὐτοῦ ἴασις ψυχῆς. † Εἰσὶν ὁδοὶ δοκοῦσαι εἶναι ὀρθαὶ ἀνδρί, † τὰ μέντοι τελευταῖα αὐτῶν βλέπει εἰς πυθμένα ᾅδου. 26 † Ἀνὴρ ἐν πόνοις πονεῖ ἑαυτῷ. † καὶ ἐκ- 27 βιάζεται (λ) τὴν ἀπώλειαν ἑαυτοῦ. † Ὁ μέντοι σκολιὸς ἐπὶ τῷ ἑαυτοῦ στόματι φορεῖ τὴν ἀπώλειαν. † ἀνὴρ ἄφρων ὀρύσσει ἑαυτῷ κακά, † ἐπὶ δὲ τῶν ἑαυτοῦ χειλέων 28 (μ) θησαυρίζει πῦρ. † Ἀνὴρ σκολιὸς διαπέμπεται κακά, † καὶ λαμπτῆρα δόλου (ν) πυρσεύσει κακοῖς, † καὶ διαχωρίζει 29 φίλους. † Ἀνὴρ παράνομος ἀποπειρᾶται φίλων, † καὶ ἀπάγει αὐτοὺς ὁδοὺς οὐκ ἀγα- 30 θάς. † (ξ) Στηρίζων δὲ ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ διαλογίζεται διεστραμμένα, † ὁρίζει δὲ τοῖς χείλεσιν αὐτοῦ πάντα τὰ κακά· † οὗτος 31 κάμινός ἐστι (ο) κακίας. † Στέφανος καυχήσεως γῆρας, † ἐν δὲ ὁδοῖς δικαιοσύνης 32 εὑρίσκεται. † Κρείσσων ἀνὴρ μακρόθυμος ἰσχυροῦ, (π) † ὁ δὲ κρατῶν ὀργῆς κρείσσων 33 (ρ) καταλαμβανομένου πόλιν. † Εἰς κόλπους ἐπέρχεται πάντα τοῖς ἀδίκοις, † παρὰ δὲ κυρίου πάντα τὰ δίκαια.

MS.A. (ι) πλεῖον ἀκούονται. (κ) αὐτῶν (λ) ἑαυτοῦ τὴν ἀπώλειαν. (μ ὀρύσσει πῦρ. (ν) πυρσεύει (ξ) Στηρίζων ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ λογίζεται (ο) κακῶν. (π) † καὶ ἀνὴρ φρόνησιν ἔχων γεωργίου μεγάλου, ὁ δὲ κρατῶν (ρ) τοῦ καταλαμβανομένου πόλιν.

ΚΕΦ. ιζʹ.

1 † ΚΡείσσων ψωμὸς μεθ᾽ ἡδονῆς ἐν εἰρήνῃ, † ἢ (α) οἶκος πολλῶν ἀγαθῶν καὶ ἀ- 2 δίκων θυμάτων μετὰ μάχης. † Οἰκέτης νοήμων κρατήσει δεσποτῶν ἀφρόνων, † ἐν 3 δὲ ἀδελφοῖς διελεῖται μέρη. † Ὥσπερ δοκιμάζεται ἐν καμίνῳ ἄργυρος καὶ χρυσός, † οὕτως ἐκλεκταὶ καρδίαι (β) παρὰ κυ- 4 ρίῳ. † Κακὸς ὑπακούει γλώσσης παρανόμων, † δίκαιος δὲ οὐ προσέχει χείλεσι 5 ψευδέσιν. (γ) † Ὁ καταγελῶν πτωχοῦ παροξύνει τὸν ποιήσαντα αὐτόν, † ὁ δὲ ἐπιχαίρων ἀπολλυμένῳ οὐκ (δ) ἀθωωθήσεται, † ὁ δὲ (ε) ἐπισπλαγχνιζόμενος 6 ἐλεηθήσεται. † Στέφανος γερόντων τέκνα τέκνων, † καύχημα δὲ τέκνων πατέρες αὐτῶν. (ζ) † Τοῦ πιστοῦ ὅλος ὁ κόσμος τῶν χρημάτων, † τοῦ δὲ ἀπίστου οὐδὲ ὀβολός. 7 † Οὐχ ἁρμόσει ἄφρονι χείλη πιστά, † οὐδὲ 8 δικαίῳ χείλη ψευδῆ. † Μισθὸς χαρίτων (η) παιδεία τοῖς χρωμένοις, † οὗ δ᾽ ἂν ἐπιστρέψῃ εὐοδωθήσεται.

MS.A. (α) οἶκος πλήρης πολλῶν (β) παρὰ θεῷ. (γ) τοῦ πιστοῦ ὅλος ὁ κόσμος τῶν χρημάτων, τοῦ δὲ ἀπίστου οὐδὲ ὀβολός. Ὁ *καταγγέλλων (δ θωωθήσεται, (ε) σπλαγχνιζόμενος (ζ) Οὐχ ἁρμόσει ἄφρονι χείλη πι οὐδὲ δικαίῳ χείλη ψευδῆ. Μισθὸς (η) ἡ παιδεία

(ι) Sapientes, & intelligentes vocant malos : dulces autem in ſermone plura audient. Fons vitæ (u) cogitatio poſſidentibus : (x) diſciplina autem imprudentum mala. Cor ſapientis cogitabit, quæ ab ore proprio : & in labiis (y) portabit doctrinam. Favi (z) mellis ſermones boni : (ω) dulcedo autem ejus ſanitas animæ. Sunt viæ, quæ videntur eſſe rectæ homini : attamen noviſſima eorum ſpectant in fundum inferni. (aa) Vir in laboribus laborat ſibi, & vim facit interitum ſuum. (bb) Perverſus in ore ſuo portat perditionem : vir (cc) imprudens fodit ſibi mala : & in labiis ſuis (dd) ignem condit. Vir perverſus (ee) tranſmittit mala : (ff) et facē doli accendet malis, & disjungit amicos. Vir iniquus (gg) palpat amicos : & abducit eos per vias non bonas. (hh) Qui autem obfirmat oculos ſuos ; cogitat (ii) perverſa, (kk) & ſtatuit labiis ſuis omnia mala : hic fornax eſt mali. Corona gloriationis ſenectus : & in viis juſtitiæ invenitur. Melior vir (ll) longanimis forti : & qui continet iracundiam, melior eſt, quàm qui urbem capit. In ſinus veniunt omnia (mm) injuſtis : à Domino autem omnia juſta.

CAP. XVII.

MElior buccella (a) cum voluptate in pace, quàm (b) domus multorum bonorum, & injuſtarum victimarum cum jurgio. Servus intelligens reget (c) dominos ſtultos : in fratribus autem (d) dividet partes. Sicut probatur in camino argentum, & aurum ; ita (e) electa corda apud Dominum. Malus obedit linguæ iniquorum : (f) juſtus autem non intendit labiis mendacibus. Qui irridet pauperem, (g) irritat eum qui fecit illum : qui autem lætatur pereunte, non erit innocens : ille autem, cujus viſcera commoventur, miſericordiam conſequetur. Corona ſenum filii filiorum ; (h) gloriatio autem filiorum patres eorum. (i) Ejus qui fidelis eſt, totus mundus divitiarum : illius autem, qui infidelis eſt, neque obolus. Non (k) congruent imprudenti labia fidelia, (l) neq; juſto (m) labia mendacia. (n) Merces gratiarum, diſciplina iis, qui utuntur : quocunque ſe verterit, proſperabitur.

תרגום TARGUM.

21 חכים לבא יתקרי סוכלתנא ודחלין שפותיה מוסיף אולפנא : מבוע דחיי סוכלא
22 דמריה ומרדותא דשטיי שטיותא : לבא דחכימא מסתכל פומיה ובשפותוהי
23 מוסיף אולפנא : כבריתא דדובשא מאמרא דבוסמא חליותא דנפשא ואסותא
24 לגרמי : אית ארחא דמתחזיא בעיני בני נשא דתריצא היא וסופא ארחתא דמותא
25 אנון : נפש דלעיא לעותא תסובר דמן פומא אתי לה כיפא : גברא טלומא
26 חפר בישתא ובשפותה נורא יהבה זליקי : גברא מהפכנא יגרי תגרי וחרתנא
27 מעריק רחמיה : גברא חטופא משרגג חבריה מוביל ליה בארחא דלא שפירא :
28 רמז בעינוי וחשב הפכתא גזים בשפותיה וגמר בישתא : כלילא דשבהירא
29 סיבותא בארחא דצדקתא משתכחא : טב נגיד אפי רוחא מן גברא ודמכביש
30 נפשיה טב מן הוא דאחד מדינתא : בעובא דעצתא נפלה פצתא ומן אלהא
31 נפק דיניה :
32
33

יז

1 טבא היא לחמא שרבתא ושלותא בה מן ביתא דמלי דבחי דדינא : עבדא
2 סוכלתנא ישתלט בברא מבהתנא ובינת אחי נפלג ירותתא : צרפא נקי לסאמא
3 וכורא לדהבא ואלהא בדיק לביא : גברא בישא צית לספותא דעאתא שקרא
4 ודגלותא על לישנא דעאתא : דמצדי במסכנא מרגז לבריה ודחדי לתברא
5 דחבריה לא מודכי : כלילא דסבי בני בניא ושבהורהון דבניא אבהתהון : לא יאי
6 לטפשא שפתא יתרתא אף לא לשליטא שפתא דשקרא : כיפא דשוחדא חסידא
7 היא באפי מאן דשקל לה לכל אתר דמתפני שכולא :
8

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sapiens corde vocatur intelligens ; & qui dulcis eſt labiis ſuis, addit diſciplinam. Fons vitæ intellectus *poſſidentis*, & diſciplina ſtultorum ſtultitia. Cor ſapientis erudit os ipſius, & in labiis ſuis adjicit doctrinam. Favus mellis verbum ſuave, dulcedo animæ & medicina oſſium. Eſt via quæ videtur in oculis filiorum hominum recta : & finis ejus ſunt viæ mortis. Anima laborantis laborem ſuſtinebit ; quia ex ore ſuo veniet ei humiliatio. Vir calumniator fodit malum, & in labiis ejus ignis dat ſcintillas. Vir perverſus concitat lites, & *litigioſus* divellit à ſe amicum ſuum. Vir raptor lactat amicum ſuum, & ducit eum per viam non bonam. Qui annuit oculis ſuis & cogitat perverſa, *minans* labiis ſuis perficit malum. Corona pulchritudinis eſt ſenectus, in via juſtitiæ invenitur. Melior eſt lentus ira animi quàm fortis : & qui dominatur ſibiipſi, magis quàm ille qui capit provinciam. In ſinum conſilii cadit ſors, & à Deo egreditur judicium ejus.

CAP. XVII.

MElior eſt panis ſiccus cum tranquillitate, quàm domus plena victimis jurgii. Servus prudens dominabitur filio impudenti, & inter fratres dividet hæreditatem. Conflatorium purum eſt ad argentum, & caminus ad aurum, & Deus ſcrutatur corda. Vir malus auſcultat labia iniqua : iniquitas & *mendacium* in lingua perverſa. Qui deridet pauperem, provocat iram creatoris ſui ; & qui lætatur in interitu ſocii ſui, non erit innocens. Corona ſenum filii filiorum, & pulchritudo filiorum patres eorum. Non decet inſipientem labium exceſſivum, neque principem labium mendax. Lapis muneris gratia eſt in oculis ejus qui tollit eum : ad omnem locum quò ſe vertit, prudenter agit.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܚܟܝܡ ܒܠܒܗ ܝܕܥ ܣܘܟܠܐ. ܘܕܚܠܝܢ ܣܦܘܬܗ ܡܘܣܦ ܝܘܠܦܢܐ. *
ܕܚܝܐ ܣܘܟܠܐ ܗܘ ܠܐܝܠܝܢ ܕܝܕܥܝܢ ܠܗ. ܘܡܪܕܘܬܐ ܕܣܟܠܐ ܣܟܠܘܬܐ ܗܝ. *
ܡܐܡܪܐ ܕܦܘܡܗ. ܘܥܠ ܣܦܘܬܗ ܡܘܣܦ ܝܘܠܦܢܐ. * ܟܘܪܬܐ ܕܕܒܫܐ
ܕܚܟܝܡܐ. ܘܚܠܝܐ ܗܝ ܠܢܦܫܗ ܘܐܣܝܘܬܐ ܗܝ ܠܓܪܡܘܗܝ. * ܐܝܬ ܐܘܪܚܐ
ܬܪܝܨܬܐ ܒܥܝܢܝ ܒܢܝܢܫܐ ܗܝ. ܘܐܚܪܝܬܗ ܐܘܪܚܬܐ ܐܢܝܢ ܕܡܘܬܐ. * ܢܦܫܐ
ܡܬܟܪܝܐ ܠܗ. ܘܡܢ ܦܘܡܗ ܕܝܠܗ ܢܦܩ ܐܒܕܢܗ. * ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ
ܘܡܢ ܣܦܘܬܗ ܡܬܝܩܕܐ ܢܘܪܐ. * ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܡܓܪܓ ܕܝܢܐ. ܘܡܣܪܩܐ
* ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܡܫܥܠ ܚܒܪܗ. ܘܡܕܒܪ ܠܗ ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܛܒܐ. * ܘܪܡܙ
ܘܡܬܚܫܒ ܥܘܩܡܬܐ. ܘܡܬܪܥܐ ܒܣܦܘܬܗ. ܘܡܫܡܠܐ ܒܝܫܬܐ. * ܟܠܝܠܐ
ܣܝܒܘܬܐ. ܘܒܐܘܪܚܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܡܫܬܒܚܐ. * ܛܒ ܗܘ ܢܓܝܪ ܪܘܚܐ ܡܢ ܓܢܒܪܐ.
ܢܦܫܗ ܡܢ ܗܘ ܕܐܚܕ ܡܕܝܢܬܐ. * ܒܥܘܒܐ ܕܢܟܠܐ ܢܦܠ ܦܣܐ. ܘܡܢ ܡܪܝܐ
ܢܦܩ ܕܝܢܗ. * ܦܣܘܩܐ * ܫܠ * * ܛܒ ܗܘ ܠܚܡܐ ܝܒܝܫܐ
ܛܒ ܗܘ ܡܢ ܒܝܬܐ ܕܡܠܐ ܕܒܚܐ ܕܚܪܝܢܐ. * ܥܒܕܐ ܚܟܝܡܐ ܢܫܠܛ ܒܒܪܐ ܡܒܗܬܢܐ.
ܐܚܐ ܢܦܠܓ ܝܪܬܘܬܐ. * ܟܘܪܐ ܒܚܐ ܠܟܣܦܐ. ܘܩܡܝܢܐ ܠܕܗܒܐ. ܘܡܪܝܐ
* ܓܒܪܐ ܒܝܫܐ ܨܐܬ ܠܣܦܘܬܐ ܕܢܟܠܐ. ܘܙܕܝܩܐ ܠܐ ܫܡܥ ܠܠܫܢܐ ܕܥܘܠܐ. *
ܡܣܟܢܐ ܡܪܓܙ ܠܒܪܘܝܗ. ܘܕܚܕܐ ܒܬܒܪܐ ܠܐ ܢܙܕܟܐ. * ܟܠܝܠܐ ܕܣܒܐ ܒܢܝ
ܘܫܘܒܚܐ ܕܒܢܝܐ ܐܒܗܝܗܘܢ. * ܠܐ ܝܐܐ ܠܣܟܠܐ ܣܦܘܬܐ ܡܗܝܡܢܬܐ. ܘܐܦܠܐ
ܣܦܘܬܐ ܕܕܓܠܘܬܐ. * ܟܐܦܐ ܕܛܝܒܘܬܐ ܫܦܝܪܐ ܗܝ ܒܥܝܢܝ ܡܢ ܕܩܢܐ ܠܗ.
ܕܡܬܦܢܝܐ ܣܘܟܠܐ ܗܝ.

Sapiens corde novit intelligentiam : & is cujus dulcia ſunt labia, auget doctrinam. 21
Vena eſt vitæ intellectus iis qui nôrunt illũ, & diſciplina ſtultorũ, inſipientia. 22
Cor ſapiens noſcit ſermonem oris ſui : & labiis ſuis addit doctrinam. 23
Favus mellis, dictũ ſapientis : & dulcis eſt animæ ejus, & ſanitas oſſib⁹ ipſius. 24
Eſt via quæ videtur oculis hominũ eſſe recta : attamen ſemitæ ejus, ſemitæ ſunt mortis. 25
Anima dolens, ſibi dolet : & ex ore ſui ipſius procedit interitus ejus. 26
Vir ſceleratus aſtruit malum : & ex ore ejus ardeſcit ignis. 27
Vir iniquus excitat litem : & vanus perſequitur amicos ſuos. 28
Vir perverſus adulatur ſocio ſuo, & ducit eum per viam haud bonam : 29
Innuit etiam oculis ſuis, & meditatur perverſitates : & cogitat labiis : ſuis, & malum perficit. 30
Diadema gloriæ, ſenectus : & in via juſtitiæ celebratur. 31
Præſtantior eſt longanimis gigante : & qui domat animum ſuum, eo qui dominatur urbi. 32
In ſinum doloſi cadet ſors ejus : & à Domino egredietur judicium ejus. 33

CAP. XVII.

MElior eſt panis ſiccus cum quiete, melior *inquam* domo plenâ victimis contentioſis. 1
Servus prudens dominabitur filio pudefacienti, & inter fratres dividet hæreditatem. 2
Conflatorium probat argentum, & fornax aurum : Dominus autem cor explorat. 3
Vir malignus auſcultat labia doloſorum : juſtus autem non obedit linguæ flagitioſorum. 4
Qui deridet pauperem, irritat creatorem ejus : & qui lætatur pernicie, non erit impunis. 5
Corona ſenum, filii filiorum ſunt : & gloria filiorũ, parentes eorum. 6
Non decet ſtultum, labium fidele : neque juſtum, labium mendax. 7
Lapillus gratiæ pulcher eſt in oculis habentis eum : & quoquò ſe vertit *lapillus ille*, prudentia eſt. 8

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الحكماء والفقهاء يسموهم صالحين * ومن يكون حلوا في كلامه يسمعون منه * اكثر ال
في المعاد عين حياة لمن يقتنيه * وادب الاغبياء ردي * قلب الحكيم يفهم الالفاظ ال
من فمه * وفي شفتيه يحمل جمهور المعرفة * الاقوال الجيدة شهد العسل * وحلاوتها شفاء النفس
* تكون طرقا يظنها الانسان جيدة مستوية * واواخرها تاصل الي اعماق الجحيم * الانس
بالاتعاب يتعب ذاته ويقتسر هلاكه * من يكون ملتويا يحمل هلاكه في فمه * الانس
الجاهل يحفر لنفسه المساوي * وفي شفتيه يكنز النار * الانسان الملتوي يبعث الشر
ويشعل الغش يحرق الاشرار ويفرق بين الاصدقاء * الرجل المجاوز السريعة يجرب اصدقا
ويسوقهم الي طرق ليست صالحة * من يصلب عينيه يفتكر افكارا معوجة * ويحد بشف
جميع الاسواء ويميزها * فذاك هو اتون الشر * الشيخوخة اكليل الفخر * وانما توجد في
العدل * الرجل المتمهل افضل من الرجل القوي * والانسان الذي له فطنة افضل
فلاحة عظيمة * ومن يمسك غيظه افضل ممن ياخذ مدينة ويملكها * الظالمون جميع ال
توافي الي حضونهم * ومن الله كل الامور المقسطة *

* الفصل السابع عشر *

* خبز بلده في سلامة وامن لافضل من منزل موعب خبرات كثيرة وضحايا ظالمة بخص
* العبد اللبيب يمسك السادة الاغبياء * وبين الاخوة يقسم الانصبة * كما تختبر الفضة وا
في الكور * هكذا تختبر القلوب المختارة عند الرب * الطالح يطيع السنن العادلين
السريعة * والمقسط لن يصغي الي الشفوات الكاذبة * جميع عالم الاموال للمومن * ولي
لا ايمان له ولا فلس * من يضحك على المسكين يغيظ من خلقه * ومن يشمت بال
يتزكى ولا يتبرأ * والمتحنن يرحم * اكليل الشيوخ اولاد الاولاد * وفخر الاولاد اباوهم *
الصادقة ما تلايم الجاهل * ولا الشفوات الكاذبة توافق الصديق * ثواب ال
يستعملونه * لان صاحبه ايما التفت يتيسر امره *

Sapientes & eruditos appellabunt optimos : & qui fuerit dulcis in ſermone ſuo, obtemperabunt illi. 21
Frequentiſſima conſideratio finis, fons eſt vitæ poſſidenti illam : & diſciplina inſipientium peſſima eſt. 22
Cor ſapientis intelligit eloquia prodeuntia ex ore ſuo ; & in labiis ſuis portat præſtantiſſimum ſcientiæ. 23
Sermones probi, favus mellis : & dulcedo eorum, ſanitas animæ. 24
Sunt viæ quas homo exiſtimat bonas & rectas, at extrema illarum reſpiciunt profunda inferni. 25
Homo laboribus ſatigat ſe ipſum, & vi evocat perditionem ſuam. Qui fuerit perverſus, portabit interitum ſuum in ore ſuo. 26
Homo ſtultus fodit animæ ſuæ mala, & in labiis ſuis theſaurizat ignem. 27
Homo perverſus ſuſcitat mala : & fax fraudis comburit malos, et ſeparat inter amicos. 28
Homo tranſgreſſor legis ſuffuratur amicos ſuos, & ducit eos ad vias non bonas. 29
Qui indurat oculos ſuos, cogitat cogitationes perverſas, & acuit labiis ſuis omnes nequitias, & diſcernit illas : is eſt fornax malitiæ. 30
Senectus eſt corona gloriæ, & quidem reperitur in viis juſtitiæ. 31
Vir longanimis, præſtantior eſt viro forti : & homo cui eſt prudentia, præſtantior eſt proſperitate maximâ. Et qui cohibet iram ſuam, præſtantior eſt eo qui capit urbem, & poſſidet illam. 32
Ad iniquorum ſinus omnes res veniunt : & à Deo, omnes res juſtæ. 33

CAP. XVII.

P*Anis vetuſtus cum pace & ſecuritate, certè melior eſt domo confertâ panibus multis & victimis iniquis cum rixa.* 1
Servus prudens cohibebit dominos ſtultos, & inter fratres dividet ſortes. 2
Quemadmodum probatur argentum et aurum in fornace, ſic probantur corda electa apud Dominum. 3
Sceleſtus obtemperat linguis declinantium à lege : juſtus autem non intendit ad labia mendacia. Totus mundus divitiarum, fideli : ei verò cui non eſt fides, nec obolus quidem. 4
Qui irridet pauperem, irritat creatorem ejus : & qui lætatur de pereunte, non juſtificabitur, neque innoxius erit : & miſericors miſericordiam conſequetur. 5
Corona ſenum, filii filiorum : & gloria filiorum, parentes eorum. 6
Labia veridica non conveniunt ſtulto, neque labia mendacia competunt juſto. 7
Præmium beneficiorum, iis qui utuntur ipſo : quoniam qui præditus eſt illo, quocunque ſe verterit, planum inveniet negotium ſuum. 8

משלי : יח

; verbo in iterans & ; amorem quærens , prævaricationem Tegens
9 מכסה פשע מבקש אהבה ושנה בדבר
percutere præ ; intelligentem in increpatio Deſcendet .ducem ſeparans
10 מפריד אלוף : תחת גערה במבין מהכות
nuncius & : malum quæret rebellio Profecto .centies ſtultum
11 כסיל מאה : אך מרי יבקש־רע ומלאך
; virum in orbatum urſum Occurrere .eum in mittetur crudelis
12 אכזרי ישלח־בו : פגוש דב שכול באיש
pro malum Reddens .ſua ſtultitia in ſtultum non &
13 ואל־כסיל באולתו : משיב רעה תחת
, aquas Aperiens .ejus domo de malum recedet non : bono
14 טובה לא־תמיש רעה מביתו : פוטר מים
.dimitte , lis miſceatur antequàm & ; contentionis principium
ראשית מדון ולפני התגלע הריב נטוש :
abominatio ; juſtum faciens iniquum & , impium Juſtificans
15 מצדיק רשע ומרשיע צדיק תועבת
pretium hoc quid Ut .ipſi ambo etiam DOMINI
16 יהוה גם־שניהם : למה־זה מחיר
? non cor & , ſapientiam acquirendum ad ; ſtulti manu in
ביד־כסיל לקנות חכמה ולב־אין :
anguſtiam ad frater & : amicus diligens tempore omni In
17 בכל־עת אהב הרע ואח לצרה
ſpondens : volam percutiens corde carens Homo .naſcetur
18 יולד : אדם חסר־לב תוקע כף ערב
, prævaricationem Diligens .ſui amici facies ad ſponſionem
19 ערבה לפני רעהו : אהב פשע
.contritionem quærens , ſuum oſtium elevans : litem diligens
אהב מצה מגביה פתחו מבקש־שבר :
, ſua lingua in ſe vertens & : bonum inveniet non corde Perverſus
20 עקש־לב לא ימצא־טוב ונהפך בלשונו
non & : ſibi triſtitiam ad , ſtultum Generans .malum in cadet
21 יפול ברעה : ילד כסיל לתוגה לו ולא
: medicina benefaciet lætum Cor .ſtulti pater lætabitur
22 ישמח אבי נבל : לב שמח ייטב גהה
impius ſinu è Munus .os exſiccabit contritus ſpiritus &
23 ורוח נכאה תיבש־גרם : שחד מחק רשע
faciebus Cùm .judicii ſemitas pervertendum ad ; capiet
24 יקח להטות ארחות משפט : את־פני
Ira .terræ extremo in ſtulti oculi & : ſapientia intelligentis
25 מבין חכמה ועיני כסיל בקצה־ארץ : כעס
multare Etiam .ſuæ genetrici amaritudo & ; ſtultus filius ſuo patri
26 לאביו בן כסיל וממר ליולדתו : גם ענוש
.rectitudinem ſuper magnificos percutere : bonum non , juſtum
לצדיק לא־טוב להכות נדיבים על־ישר :
vir ſpiritu precioſus : ſcientiam ſciens , ſua eloquia Prohibens
27 חושך אמריו יודע דעת וקר־רוח איש
: reputabitur ſapiens tacens ſtultus Etiam .intelligentiæ
28 תבונה : גם אויל מחריש חכם יחשב
.intelligens , ſua labia obturans
אטם שפתיו נבון :

CAP. XVIII. יח

.ſe miſcebit exiſtentia omni in ; ſeparatus quæret deſiderium Ad
1 לתאוה יבקש נפרד בכל־תושיה יתגלע :
ſe manifeſtando in quin ; intelligentia in ſtultus volet Non
2 לא־יחפץ כסיל בתבונה כי אם־בהתגלות
.ejus cor
לבו :

Verſio VULG. LAT.

9 Qui celat delictum, quærit amicitias : qui altero ſermone
repetit, ſeparat fœderatos.
10 Plus proficit correptio apud
prudentem, quàm centum plagæ
11 apud ſtultum. Semper
jurgia quærit malus : angelus
autem crudelis mittetur
12 contra eum. Expedit magis
urſæ occurrere raptis fœtibus,
quàm fatuo confidenti in ſtultitia
13 ſua. Qui reddit mala pro
bonis, non recedet malum de
14 domo ejus. Qui dimittit aquam,
caput eſt jurgiorum: &
antequàm patiatur contumeliam,
15 judicium deſerit. Qui juſtificat
impium, et qui condemnat
juſtum, abominabilis eſt
16 uterq; apud Deum. Quid prodeſt
ſtulto habere divitias,cùm
ſapientiam emere non poſſit ?
Qui altam facit domum ſuam,
quærit ruinam : & qui evitat
17 diſcere, incidet in mala. Omni
tempore diligit qui amicus eſt:
& frater in anguſtiis comprobatur.
18 Stultꝰ homo plaudet manibus,
cùm ſpoponderit pro amico
19 ſuo. Qui meditatur diſcordias,
diligit rixas: & qui exaltat
oſtium, quærit ruinam.
20 Qui perverſi cordis eſt,non inveniet
bonum : & qui vertit
21 linguam,incidet in malū. Natus
eſt ſtultus in ignominiam
ſuam:ſed nec pater in fatuo lætabitur.
22 Animus gaudens ætatem
floridam facit:ſpiritus triſtis
23 exiccat oſſa. Munera de ſinu
impius accipit, ut pervertat
24 ſemitas judicii. In facie
prudentis lucet ſapientia:oculi
25 ſtultorum in finibus terræ. Ira
patris, filius ſtultus : & dolor
26 matris quæ genuit eum. Non
eſt bonum, damnum inferre
juſto:nec percutere principé,
27 qui recta judicat. Qui moderatur
ſermones ſuos,doctus &
prudens eſt : & pretioſi ſpiritûs
28 vir eruditus. Stultus quoq;
ſi tacuerit, ſapiens reputabitur
: & ſi compreſſerit labia
ſua, intelligens.

CAP. XVIII.

1 Occaſiones quærit qui vult
recedere ab amico : omni tempore
2 erit exprobrabilis. Non
recipit ſtultus verba prudentiæ
: niſi ea dixeris quæ verſantur
in corde ejus.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

9 † Ὃς κρύπτει ἀδικήματα ζητεῖ φιλίαν,
† ὃς δὲ μισεῖ κρύπτειν διΐστησι φίλους καὶ
10 οἰκείους. † Συντρίβει ἀπειλὴ καρδίαν φρονίμου,
† ἄφρων δὲ μαστιγωθεὶς οὐκ αἰσθάνεται.
11 † Ἀντιλογίας ἐγείρει πᾶς κακὸς, † ὁ δὲ κύριος
ἄγγελον ἀνελεήμονα ἐκπέμψει αὐτῷ.
12 † Ἐμπεσεῖται μέριμνα ἀνδρὶ νοήμονι,
13 † οἱ δὲ ἄφρονες διαλογιοῦνται κακά. † Ὃς
ἀποδίδωσι κακὰ ἀντὶ ἀγαθῶν, † οὐ κινηθήσεται
14 κακὰ (ϑ) ἐκ τοῦ οἴκου αὐτοῦ. † Ἐξουσίαν
δίδωσι λόγοις ἀρχὴ δικαιοσύνης,
† προηγεῖται δὲ τῆς ἐνδείας στάσις καὶ μάχη.
15 † Ὃς δίκαιον κρίνει τὸν ἄδικον, ἄδικον
δὲ τὸν δίκαιον, † ἀκάθαρτος καὶ βδελυκτὸς
16 παρὰ θεῷ. † Ἱνατί ὑπῆρξε χρήματα
ἄφρονι; † κτήσασθαι (ι) γὰρ σοφίαν
ἀκάρδιος οὐ δυνήσεται. † ὃς ὑψηλὸν
ποιεῖ τὸν ἑαυτοῦ οἶκον, ζητεῖ συντριβήν·
† ὁ δὲ σκολιάζων τοῦ μαθεῖν, ἐμπεσεῖται
17 εἰς κακά. † Εἰς πάντα καιρὸν φίλος
ὑπαρχέτω σοι, † ἀδελφοὶ δὲ ἐν ἀνάγκαις
χρήσιμοι ἔστωσαν, † τούτου γὰρ χάριν γεννῶνται.
18 † Ἀνὴρ ἄφρων ἐπικροτεῖ καὶ ἐπιχαίρει
ἑαυτῷ, † ὡς καὶ ὁ ἐγγυώμενος ἐγγύῃ
19 (κ) τῶν ἑαυτοῦ φίλων. † Φιλαμαρτήμων
20 (λ) χαίρει μάχαις, † Ὁ δὲ σκληροκάρδιος
οὐ συναντᾷ ἀγαθοῖς. † ἀνὴρ εὐμετάβολος
γλώσσῃ ἐμπεσεῖται εἰς κακά,
21 † Καρδία δὲ ἄφρονος ὀδύνη τῷ κεκτημένῳ
αὐτήν. † οὐκ εὐφραίνεται πατὴρ
ἐφ' υἱῷ ἀπαιδεύτῳ, † υἱὸς δὲ φρόνιμος (ᴬ)
22 εὐφραίνει μητέρα αὐτοῦ. † Καρδία εὐφραινομένη
εὐεκτεῖν ποιεῖ, † ἀνδρὸς δὲ λυπηροῦ
23 ξηραίνεται τὰ ὀστᾶ. † Λαμβάνοντος δῶρα
(μ) ἀδίκως ἐν κόλποις οὐ κατευοδοῦνται
ὁδοὶ, † ἀσεβὴς δὲ ἐκκλίνει ὁδοὺς δικαιοσύνης.
24 † Πρόσωπον συνετὸν ἀνδρὸς σοφοῦ,
† οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ τοῦ ἄφρονος ἐπ' ἄκρα
25 γῆς. † Ὀργὴ πατρὶ υἱὸς ἄφρων, † καὶ ὀδύνη
26 τῇ τεκούσῃ (¨) αὐτόν. † Ζημιοῦν ἄνδρα
δίκαιον οὐ καλὸν, † οὐδὲ ὅσιον ἐπιβουλεύειν
27 δυνάσταις δικαίοις. † Ὃς φείδεται ῥῆμα
προέσθαι σκληρὸν, ἐπιγνώμων, † μακρόθυμος
28 δὲ ἀνὴρ φρόνιμος. † Ἀνοήτῳ (ν)
ἐπερωτήσαντι σοφίαν σοφία λογισθήσεται,
† ἐνεὸν δέ τις ἑαυτὸν ποιήσας, δόξει
φρόνιμος εἶναι.

Qui celat injuſtè facta, quæri
amicitiam : (o) qui autem odi
celare, dividit amicos, & dome
ſticos. (p) Conterunt minæ co
prudentis : imprudens autem fla
gellatus non ſentit. (q) Contradi
ctiones ſuſcitat omnis malus : Do
minus autem angelum (r) immiſe
ricordem emittet ei. (ſ) Incide
ſolicitudo viro intelligenti : im
prudentes autem excogitabunt
mala. Qui reddit mala pro bonis
non movebuntur mala è domo e
jus. (t) Poteſtatem dat ſermoni
principium juſtitiæ: præcedit au
tem egeſtatem contentio, & ju
gium. Qui juſtum judicat eum
qui injuſtus, injuſtum autem eum
qui juſtus; (u) immundus, &
abominabilis apud Deum. Ut quid
ſunt divitiæ imprudenti? acqui
rere enim ſapientiam excors non
poterit. Qui excelſam facit
ſuam domum,quærit contritionem
qui autem tortuoſè accedit ad
diſcendum, (x) incidet in mala
In omne (y) tempus amicus ſi
tibi : fratres autem in neceſſitati
bus utiles ſint : hujus enim
gratiâ naſcuntur. Vir imprudens
(z) plaudit, & congaudet ſi
cum etiam ſpondens ſpoponderit
(ω) ſuos ipſius amicos. Aman
peccata gaudet (aa) rixis: E
(bb) durus corde non occurr
bonis. Vir facilè mutabilis lingua
incidet in mala : Cor autem im
prudentis, dolor poſſidenti illu
Non lætatur pater ſuper (cc) fi
indiſciplinato : filius autem pru
dens lætificat matrem ſuam. Co
lætum facit (dd) benè habe
(ee) viri autem triſtis ſiccat
oſſa. Accipientis munera (
injuſtè in ſinibus non proſpera
viæ : impius autem declinat vi
juſtitiæ. (gg) Vultus intellige
viri ſapientis : oculi autem i
prudentis ad extrema terræ. I
patri filius imprudens : (hh) e
dolor ei, quæ peperit ipſum. D
mnum inferre viro juſto,non bo
neque fas inſidiari (ii) princi
bus juſtis. Qui parcit verb
promere durum , (kk) benè
tiens : longanimis autem
prudens. Dementi interroga
ſapientiam ſapientia reputab
(mm) mutum autem quis ſe faciens, videbitur pruden

MS.A. (ϑ) * εἰς τοὺς οἴκους αὐτοῦ. (ι) δὲ σοφίας (κ) τὸν ἑαυτοῦ φίλ
(λ) * κείρει (ᴬ) εὐφρανεῖ (μ) ἐν κόλπῳ ἀδίκως (¨) αὐτοῦ (ν) ἐπερω
σοφία λογισθήσεται,

ΚΕΦ. ιη.

1 † Προφάσεις ζητεῖ ἀνὴρ βουλόμενος
χωρίζεσθαι ἀπὸ φίλων, † ἐν παντὶ δὲ καιρῷ
2 ἐπονείδιστος ἔσται. † Οὐ χρείαν ἔχει
σοφίας ἐνδεὴς φρενῶν, μᾶλλον γὰρ (ᴬ) ἄγεται
ἀφροσύνῃ. MS.A. (ᴬ) ἀνάγκῃ

CAP. XVIII.

Occaſiones (a) quærit qu
vult recedere ab amicis: o
autem tempore erit expro
Non (b) opus habet ſapien
qui indiget corde : magi
ducitur inſipientiâ.

תרגום TARGUM.

9 דמכסי חובה בעי רחמותא ודשני מלתא מפרק רחמא : עלא בעתא במן דמתבין
10 11 טב מן דלממחי לסכלא מאה חוטרין : ברם גברא מרירא בעי בישתא ומלאכא
12 נוכריא ישתדר עליה : פגע דוב ורתיתא בגברא חכימא לא מתזיע וסכלא
13 בשטיותיה נפל : דפריע בישתא חלף טבתא לא תפסוק בישתא מן ביתיה :
14 15 אשד דמא היך מיא מגרי תגרי וקדם קריא אטעי דינא : דמזכיה לרשיעא ומחיב
16 לצדיקא מרחקתיה דאלהא אף תרויהון : למה דין אולא ליה תגרותא לסכלא
17 דלית ליה לבא וחכמתא : בכל עדן גברא רחים הוא ואחא לעקתא מתיליד :
18 19 בר נש חסיר רעינא משלם ידיה וערב ערבותא על חבריה : דרחם חובא רחם
20 מצותא ומורים תרעיה בעי תברא : מן דעקים לביה לא משכח טבתא ודמתהפך
21 בלשניה נפל בבישתא : דמוליד סכלא חמוצא דיליה ולא חדי אבוי דטפשא :
22 23 לבא חדיא משפיר גופא ורוחא דכיכתא מיבשא גרמא : שוחדא מן עובא יסב
24 רשיעא למצלי ארחא דדינא : אפוי דסוכלתנא חדין בחכמתא ועינוי דסכלא
25 26 בעומקא דארעא : ברא סכלא מכביד אבוי וממרמר לאמיה : למתך לצדיקא
27 לא שפיר אף לא לממחי צדיקיא דאמרין תריצותא : דחשך מלוי ידיע ידיעתא
28 ודמכיכא רוחיה גברא דמתבין : ואף שטיא דשתק חכימא הוא מתחשב ודכלי
שפותיה מתבין :

יח

1 רגתא בעי פהיא ובכל מלכנא מצטדי : לא צבי סכלא בסוכלתנא אלא
2 בשטיותא פהי לביה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Qui celat delictum, quærit amicitiam ; & qui repetit ſermonem
parat amicum. Penetrat increpatio intelligentem magis quàm
cutere ſtultum centies virgis. Verùm vir amarus quærit malum,
gelus crudelis mittetur contra eum. Occurrit urſus & terror vi
pienti, non commovetur : & ſtultus in ſtultitia ſua cadit. Qui
malum pro bono, non recedet malum de domo ejus. Qui effundit
guinem ſicut aquam, concitat jurgia : & antequàm exardeſcat
litem. Qui juſtificat impium , & qui condemnat juſtum, uterque
abominandus Deo. Ad quid prodeſt negotiatio ſtulto, qui non
cor neque ſcientiam ? In omni tempore ſocius diligit, & frat
tempus anguſtiæ natus eſt. Filius hominis indigens intellectu
manum ſuam, & ſpondit fidejuſſionem pro amico ſuo. Qui dilig
catum, diligit rixam: & qui exaltat portam ſuam, quærit inter
Qui pravus eſt corde ſuo, non inveniet bonum : & qui perverſus
lingua ſua, corruet in malum. Qui generat ſtultum, mœſtitia erit
non lætabitur pater inſipientis. Cor gaudens pulchrum facit co
& ſpiritus triſtis exſiccat oſſa. Munus de ſinu capiet impius, ut de
à via judicii. Vultus prudentis hilaris eſt in ſapientia, & oculi
rum in profundis terræ. Filius ſtultus exaſperat patrem ſuum,
acerbat matrem ſuam. Multare juſtum non eſt bonum, neque per
juſtos qui dicunt recta. Qui prohibet ſermones ſuos, ſcit ſcientiam
qui humilis eſt ſpiritu ſuo, vir intelligens eſt. Stultus quoque ſi
rit, ſapiens reputabitur : & qui compreſſerit labia ſua, intelligens

CAP. XVIII.

Deſiderium quærit ſeparatus, & omne conſilium deridet. No
ſtultus intelligentiam, ſed in ſtultitia immoratur ejus animus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕܡܟܣܐ ܥܘܠܐ܂ ܒܥܐ ܪܚܡܘܬܐ܂ ܘܕܣܢܐ ܠܡܟܣܢܘܬܐ܂ ܦܪܫ ܪܚܡܐ ܘܡܥܡܪܐ ܦܪ
* ܡܘܟܣܢܐ ܡܚܐ ܠܠܒܗ ܕܚܟܝܡܐ܂ ܘܡܛܠ ܟܐܐ ܡܬܢܓܕ ܣܟܠܐ܂ ܘܠܐ ܪܓܫ * ܓܒܪܐ
ܚܪܝܢܐ܂ ܒܥܐ ܒܝܫܬܐ܂ ܘܡܛܠܗܕܐ ܡܫܬܕܪ ܥܠܘܗܝ ܡܠܐܟܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܚܢܢܐ܂ * ܢܦܠ ܚܫ
ܘܕܚܠܬܐ ܥܠ ܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ܂ ܘܥܠ ܣܟܠܐ ܡܛܠ ܣܟܠܘܬܗ܂ * ܕܦܪܥ ܒܝܫܬܐ ܚܠܦ ܛܒܬܐ܂ ܠܐ
ܬܥܢܕ ܒܝܫܬܐ ܡܢ ܒܝܬܗ܂ * ܘܕܐܫܕ ܕܡܐ܂ ܡܓܪܐ ܚܪܝܢܐ ܩܕܡ ܫܠܝܛܐ܂ * ܕܡܙܕܩ
ܠܥܘܠܐ܂ ܘܡܚܝܒ ܙܕܝܩܐ܂ ܛܢܦ ܗܘ ܩܕܡ ܡܪܝܐ܂ * ܠܡܢܐ ܗܘ ܩܢܝܢܐ ܠܣܟܠܐ
ܕܠܝܬ ܠܗ ܠܒܐ ܠܡܩܢܐ ܚܟܡܬܐ܂ * ܒܟܠܙܒܢ ܪܚܡܐ܂ ܪܚܝܡ ܗܘ܂ ܘܐܚܐ ܠܐܘܠܨܢܐ
ܡܬܝܠܕ܂ * ܓܒܪܐ ܣܟܠܐ ܡܩܦܚ ܐܝܕܗ܂ ܕܥܪܒ ܠܚܒܪܗ ܥܪܒܘܬܐ܂ * ܕܪܚܡ ܥܘܠܐ ܪܚܡ
ܢܟܠܐ ܘܚܪܝܢܐ܂ ܘܕܡܪܝܡ ܬܪܥܗ܂ ܒܥܐ ܬܒܪܐ ܠܢܦܫܗ܂ * ܕܥܩܡ ܠܒܗ ܠܐ ܡܫܟܚ
ܛܒܬܐ܂ ܘܕܡܗܦܟ ܠܫܢܗ܂ ܢܦܠ ܒܒܝܫܬܐ܂ * ܕܡܘܠܕ ܣܟܠܐ܂ ܠܒܗܬܬܐ ܕܢܦܫܗ܂ ܘܠܐ
ܚܕܐ ܒܗ ܐܒܘܗܝ܂ * ܠܒܐ ܚܕܝܐ܂ ܡܫܦܪ ܦܓܪܐ܂ ܘܪܘܚܐ ܕܟܪܝܐ ܡܝܒܫܐ ܓܪܡܐ܂ * ܡܢ
ܕܢܣܒ ܫܘܚܕܐ܂ ܥܘܠܐ ܗܘ܂ ܘܠܐ ܡܬܪܨ ܐܘܪܚܐ ܕܕܝܢܐ܂ * ܐܦܘܗܝ ܕܡܣܬܟܠܢܐ ܚܙܝܢ ܚܟܡܬܐ
ܘܥܝܢܘܗܝ ܕܣܟܠܐ ܒܥܘܡܩܝܗ ܕܐܪܥܐ܂ * ܡܪܓܙ ܠܐܒܘܗܝ ܒܪܐ ܣܟܠܐ܂ ܘܡܡܪܪ ܠܝܠܕܬܗ
* ܠܡܚܣܪܘ ܠܙܕܝܩܐ ܠܐ ܫܦܝܪ܂ ܐܦܠܐ ܠܡܡܚܐ ܠܙܕܝܩܐ ܕܡܡܠܠܝܢ ܬܪܝܨܬܐ܂ * ܕܚܣܟ ܡܠܘܗܝ
ܝܕܥ ܝܕܥܬܐ܂ ܘܢܓܝܪ ܪܘܚܐ ܓܒܪܐ ܗܘ ܚܟܝܡܐ܂ * ܫܬܝܩܐ ܕܣܟܠܐ܂ ܐܝܟ ܚܟܝܡܐ
ܡܬܚܫܒ܂ ܘܕܚܣܟ ܣܦܘܬܗ ܡܣܬܟܠܢܐ ܡܬܚܫܒ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܚ * ܘܒܫܬܩܘܬܗ ܪܢܐ ܪܓܬܐ܂ ܘܡܒܙܚ
ܒܡܪܬܝܢܘܬܐ ܛܒܬܐ܂ * ܣܟܠܐ ܠܐ ܪܓܐ ܒܚܟܡܬܐ܂ ܡܛܠ ܕܪܢܐ ܠܒܗ ܒܣܟܠܘܬܐ܂

Qui tegit delictum, quærit amicitiam : & 9
qui renuit corripere, ab amico & hoſpite ſe-
paratur. Minæ conterunt cor ſapientis : & 10
pro increpatione vapulabit ſtultus, nec ſen-
tiet. Vir litigioſus quærit malum : quapro- 11
ter mittetur in eum angelus in quo non eſt
miſericordia. Cadet cogitatio & terror in 12
virum ſapientem, & in ſtultum ob inſipien-
tiam ſuam. Qui rependit malum pro bono, 13
non recedet malum de domo ipſius. Et qui 14
effundit ſanguinem, litem concitat apud præ-
fectum. Qui juſtificat impium, & damnat ju- 15
ſtum, abominabilis eſt apud Dominum. Ad 16
quid prodeſt poſſeſſio ſtulto qui non habet
cor ad poſſidendam ſapientiam? Amicus quo- 17
cunque tempore amicus eſt, & frater ad an-
guſtiam naſcitur. Homo ſtultus dat manum 18
ſuam, ſpondens pro ſocio ſuo ſponſionem.
Qui diligit iniquitatem, diligit fraudem & 19
jurgium : & qui exaltat oſtium ſuum, quærit
fractionē animæ ſuæ. Is cujus cor obtrectans 20
eſt, non inveniet bonū : & qui pervertit lin-
guā ſuā, cadet in malum. Qui generat ſtultū, 21
ad ignominiā animæ ſuæ *generat illum* : neq;
lætabitur in eo pater ipſius. Cor hilare exor- 22
nat corpus : ſpiritus autem dolens exſiccat
oſſa. Qui munus accipit, iniquus eſt : depravat 23
enim viam judicii. Vultus prudentis intuetur 24
ſapientiam : oculi verò inſipientis profunda
terræ. Laceſſit iram patris ſui filius ſtultus, & 25
irritat genitricē ſuam. Inferre damnum juſto 26
non decet, nec etiā percutere juſtos qui recta
loquuntur. Qui cohibet ſermones ſuos, novit 27
ſcientiam : & qui longanimis eſt, vir ſapiens
eſt. Sultus ſilens, quaſi ſapiens cenſebitur : et is 28
cujus labia ſunt taciturna, prudens reputa-
bitur :

CAP. XVIII.

IN ſilentio autem ſuo meditatur concupi- 1
ſcentiam, & deridet documentum bonum.
Stultus non oblectatur ſapientiâ, quoniam 2
meditatur cor ejus inſipientiam.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*من يكتم الظلامات يبتغي صداقة * ومن يمقت كتمانها يفرق بين الاصدقاء والمنازل * قلب
الدقيق العقل يسحقه الوعيد * والجاهل اذا جلد لن يحس * كل شرير ينهض المقاومة
والمخاوبة * والرب يرسل اليه ملاكا غير رحوم * الهم يسقط على الرجل اللبيب * والاغبياء يفكرون
في الاسواء * من يكافي عوض الصالحات طالحات ما تنصرف الاسواء من منزله * ابتداء العدل
يمنح الاقوال سلطانا * والمقاومة والخصومة تتقد من قبل الفقر والفاقة * نجس ومرذول عند الله
من يحكم الظلم عدلا والعدل ظلما * لم صارت للغبي اموالا * لان من لا قلب له لن
يستطيع يقتني حكمة * من يجعل منزله شاهقا يلتمس تهشيما * ومن يستصعب ان يتعلم يسقط
في الاسواء * في كل زمان فليكن لك صديقا * وليكن لك في الشدايد اخوة نافعون * لانهم
لهذا الحال ولدوا * الرجل الغبي يصدم ذاته * ويشمت مثل الكفيل الذي يضمن صديقه
* المحب الخطية يحب الخصايم * والقاسي القلب ما يلقي الخيرات * الانسان الذي لسانه سريع
التغيير والتنقل يسقط في الاسواء * القلب الغبي يولم من اقتناه * الاب ما يسر بابن لا ادبا له
والابن العاقل يفرح امه * القلب المسرور ينشي التودد والتعطف * والرجل الحزين تجف اعظامه
* من ياخذ الهدايا في حجر ظلم * لن تتيسر طرقه * والمنافق يحيد من طرق العدل * وجه الرجل
الحكيم دونهم * وعينا الجاهل الي قواصي الارض باصرن * الابن الغبي غيظ لابيه * ووجعا للتي
ولدته * ليس حسنا ان يخسر انسان ظلما شيا * وامرا بارا ان يحتال علي صديقين دو
اقتدار * من يسعف ويمتنع ان يبرز كلمة صعبة فذاك عالما * الرجل المتمهل حازم العقل
* ومن لا فهما له * اذا سال عن حكمة يحسب له ذلك حكمة * من يجعل ذاته اصم يستشعر عا
* الفصل الثامن عشر * * الرجل المويثر ان يفارق اصدقاءه يلتمس حججا وفي
وقت يكون معيرا * ومن اراوه معسرة لا حاجة به الي الحكمة * لان الغباوة تسوقه اكثر

Qui celat delicta, cupit amicitiam : & qui odit abſconſionem eorum, ſeparat in- 9
ter amicos & domos. Cor ſubtilis ingenii 10
conterent minæ : & ſtultus, etiamſi vapu-
let, non percipit. Omnis iniquus ſuſcitat 11
jurgium & litem, & Dominus mittet ad
eum angelum non miſericordem. Cura ca- 12
dit ſuper virum cordatum : & ſtulti co-
gitant nequitias. Qui retribuit pro bonis 13
mala, non recedent mala de domo ipſius.
Initium juſtitiæ tribuit ſermonibus au- 14
thoritatem : & lis atque jurgium exar-
deſcunt propter paupertatem & egeſta-
tem. Abominabilis eſt ac deſpectus apud 15
Deum, qui in judicio declarat iniquum
juſtum, & juſtum iniquum. Quarè fa- 16
ctæ ſunt inſipienti divitiæ? quandoqui-
dem qui excors eſt, non poteſt poſſidere
ſapientiam. Qui facit domum ſuam ſub-
limem, quærit fractionem : & qui diffi-
cultatem facit diſcendi, incidet in mala.
In omni tempore ſit tibi amicus : & ſint 17
tibi in anguſtiis fratres utiles, quoniam
ad hanc conditionem nati ſunt. Homo 18
ſtultus collidit ſeipſum, & de eo geſtie-
tur ut de fidejuſſore qui ſpondet pro a-
mico ſuo. Amans peccatum, diligit ri- 19
xas : & durus corde, non inveniet bona.
Homo, cujus lingua velox eſt ad mutatio- 20
nem & variationem, incidet in mala.
Cor imprudens cruciat eum qui poſſidet 21
illud. Pater non gaudebit filio immorige-
rato : & filius prudens lætificat matrem
ſuam. Cor hilare nutrit amicitiam, & 22
ſocietatem : & hominis triſtis exſiccantur
oſſa. Qui ſuſcipit munera in ſinu ſuo, 23
iniquitatem commiſit, haudquaquam ex-
planabuntur viæ ejus : & impius decli-
nat à via iniquitatis. Vultus viri ſapi- 24
entis ſuper hos eſt : & oculi inſipientis
ad fines terræ aſpiciunt. Filius inſipiens, 25
ira patri ſuo : & dolor ei quæ genuit
illum. Non eſt bonum jacturam inferre 26
homini iniquè ulla in re : neque res eſt
juſta circumvenire juſtos potentes. Qui 27
parcit, & cohibet ſe quin proferat verbum
aſperum, is eſt doctus. Vir longanimis, fir-
mus eſt judicio. Et qui non habet intel- 28
lectum, cùm interrogaverit de ſapientia,
reputabitur hoc illi ſapientia. Qui facit
ſeipſum mutum, cenſebitur prudens.

CAP. XVIII.

VIr cupiens ſeparare ſe ab amicis ſuis 1
quærit occaſiones : & in omni tempo-
re erit vituperabilis. Et qui habet opi- 2
niones difficiles, non eget ſapientiâ : quia
ſtultitia ducit illum magis.

מִשְׁלֵי : יט

ignominia cum & : contemptus etiam venit , impium veniendo In
3 בְּבוֹא־רָשָׁע בָּא גַם־בּוּז וְעִם־קָלוֹן
ſcaturiens torrens : viri oris verba profundæ Aquæ .opprobrium
4 חֶרְפָּה : מַיִם עֲמֻקִּים דִּבְרֵי פִי־אִישׁ נַחַל נֹבֵעַ
: bonum non , impii facies Accipere .ſapientiæ vena
5 מְקוֹר חָכְמָה : שְׂאֵת פְּנֵי־רָשָׁע לֹא־טוֹב
venient ſtulti Labia .judicio in juſtum pervertendum ad
6 לְהַטּוֹת צַדִּיק בַּמִּשְׁפָּט : שִׂפְתֵי כְסִיל יָבֹאוּ
contritio ſtulti Os .vocabit percuſſiones ad ejus os & :litem in
7 בְרִיב וּפִיו לְמַהֲלֻמוֹת יִקְרָא : פִּי־כְסִיל מְחִתָּה־
ſuſurratoris Verba .ſuæ animæ laqueus ejus labia & :ſibi
8 לוֹ וּשְׂפָתָיו מוֹקֵשׁ נַפְשׁוֹ : דִּבְרֵי נִרְגָּן
ſe remittens Etiam .ventris penetralia deſcenderunt ipſa & : lenientia ut
9 כְּמִתְלַהֲמִים וְהֵם יָרְדוּ חַדְרֵי־בָטֶן : גַּם מִתְרַפֶּה
fortitudinis Turris .corrumpenti patrono ipſe frater : ſuo opere in
10 בִּמְלַאכְתּוֹ אָח הוּא לְבַעַל מַשְׁחִית : מִגְדַּל־עֹז
divitis Abundantia .exaltabitur & ,juſtus curret ipſam in:Domini nomen
11 שֵׁם יְהוָה בּוֹ־יָרוּץ צַדִּיק וְנִשְׂגָּב : הוֹן עָשִׁיר
.ejus imaginatione in elevatus murus ſicut &;ejus fortitudinis urbs
קִרְיַת עֻזּוֹ וּכְחוֹמָה נִשְׂגָּבָה בְּמַשְׂכִּיתוֹ :
.manſuetudo gloriam ante & : viri cor elevabitur contritionem Ante
12 לִפְנֵי־שֶׁבֶר יִגְבַּהּ לֵב־אִישׁ וְלִפְנֵי כָבוֹד עֲנָוָה :
.pudor & ,ei ipſa ſtultitia ;audiat antequam verbum Reddens
13 מֵשִׁיב דָּבָר בְּטֶרֶם יִשְׁמָע אִוֶּלֶת הִיא־לוֹ וּכְלִמָּה :
quis ,contritum ſpiritum & : ejus infirmitatem ſufferet viri Spiritus
14 רוּחַ־אִישׁ יְכַלְכֵּל מַחֲלֵהוּ וְרוּחַ נְכֵאָה מִי
ſapientum auris & : ſcientiam acquiret intelligens Cor ? eum feret
15 יִשָּׂאֶנָּה : לֵב נָבוֹן יִקְנֶה־דָּעַת וְאֹזֶן חֲכָמִים
magnates ante & :ei faciet dilatare hominis Donum .ſcientiam quæret
16 תְּבַקֶּשׁ־דָּעַת : מַתָּן אָדָם יַרְחִיב לוֹ וְלִפְנֵי גְדֹלִים
, ejus ſocius veniet & ; ſua lite in primus Juſtus .eum ducet
17 יַנְחֶנּוּ : צַדִּיק הָרִאשׁוֹן בְּרִיבוֹ וּבָא רֵעֵהוּ
fortes inter & : ſors faciet ceſſare Contentiones .eum inveſtigabit &
18 וַחֲקָרוֹ : מִדְיָנִים יַשְׁבִּית הַגּוֹרָל וּבֵין עֲצוּמִים
vectis ſicut contentiones & : forti civitate præ rebellans Frater .dividet
19 יַפְרִיד : אָח נִפְשָׁע מִקִּרְיַת־עֹז וּמִדְוָנִים כִּבְרִיחַ
proventu : ejus venter ſatiabitur viri oris fructu De .palatii
20 אַרְמוֹן : מִפְּרִי פִי־אִישׁ תִּשְׂבַּע בִּטְנוֹ תְּבוּאַת
; linguæ manu in vitæ & Mors .ſaturabitur ſuorum labiorum
21 שְׂפָתָיו יִשְׂבָּע : מָוֶת וְחַיִּים בְּיַד־לָשׁוֹן
: bonum invenit ,uxorem Invenit .ejus fructum comedet eam diligens &
22 וְאֹהֲבֶיהָ יֹאכַל פִּרְיָהּ : מָצָא אִשָּׁה מָצָא טוֹב
: pauper loquetur Deprecationibus .Domino à benevolentiam educet &
23 וַיָּפֶק רָצוֹן מֵיְהוָה : תַּחֲנוּנִים יְדַבֶּר־רָשׁ
: ſe præſtandum ſociabilem ad amicorum Vir .fortia reſpondebit dives &
24 וְעָשִׁיר יַעֲנֶה עַזּוֹת : אִישׁ רֵעִים לְהִתְרֹעֵעַ
.fratre præ adhærens amans eſt &
וְיֵשׁ אֹהֵב דָּבֵק מֵאָח :

CAP. XIX. יט

ipſe & , ſuis labiis perverſo præ:ſua integritate in ambulans pauper Bonus
1 טוֹב־רָשׁ הוֹלֵךְ בְּתֻמּוֹ מֵעִקֵּשׁ שְׂפָתָיו וְהוּא
feſtinus & : bonum non animæ ſcientia abſque Etiam .ſtultus
2 כְסִיל : גַּם בְּלֹא־דַעַת נֶפֶשׁ לֹא־טוֹב וְאָץ
: ejus viam pervertet hominis Stultitia .peccans pedibus in
3 בְּרַגְלַיִם חוֹטֵא : אִוֶּלֶת אָדָם תְּסַלֵּף דַּרְכּוֹ
: multos amicos addet Copia .ejus cor ſæviet Dominum ſuper &
4 וְעַל־יְהוָה יִזְעַף לִבּוֹ : הוֹן יֹסִיף רֵעִים רַבִּים
.ſeparabitur ſuo amico ab tenuis &
וְדָל מֵרֵעֵהוּ יִפָּרֵד :

Verſio VUL. LAT.

3 Impius, cùm in profundum venerit peccatorum, contemnit: ſed ſequitur eum ignominia et 4 opprobrium. Aqua profunda verba ex ore viri: & torrens 5 redundans fons ſapientiæ. Accipere perſonam impii non eſt bonum, ut declines à veritate 6 judicii. Labia ſtulti miſcent ſe rixis: & os ejus jurgia provo- 7 cat. Os ſtulti contritio ejus: & labia ipſius, ruina animæ e- 8 jus. Verba bilinguis, quaſi ſimplicia: & ipſa perveniunt uſq; ad interiora ventris. Pigrum dejicit timor: animæ autem ef- 9 fœminatorũ eſurient. Qui mollis & diſſolut⁹ eſt in opere ſuo, frater eſt ſua opera diſſipantis. 10 Turris fortiſſima, nomen Domini: ad ipſum currit juſtus, et 11 exaltabitur. Subſtantia divitis urbs roboris ejus, & quaſi murus validus circumdans eum. 12 Antequàm conteratur, exaltatur cor hominis: & antequàm 13 glorificetur, humiliatur. Qui priùs reſpondet quàm audiat, ſtultum ſe eſſe demonſtrat, & 14 confuſione dignum. Spiritus viri ſuſtentat imbecillitatem ſuam: ſpiritũ verò ad iraſcendum facilem quis poterit ſuſti- 15 nere? Cor prudens poſſidebit ſcientiam: & auris ſapientium 16 quærit doctrinam. Donum hominis dilatat viam ejus, & ante principes ſpatiũ ei facit. 17 Juſtus, prior eſt accuſator ſuî: venit amicus ejus, & inveſti- 18 gabit eum. Contradictiones comprimit ſors, & inter po- 19 tentes quoque dijudicat. Frater, qui adjuvatur à fratre, quaſi civitas firma: & judicia quaſi 20 vectes urbium. De fructu oris viri replebitur venter ejus: & genimina labiorum ipſius ſatu- 21 rabunt eum. Mors, & vita in manu linguæ: qui diligũt eam, 22 comedent fructus ejus. Qui invenit mulierem bonam, invenit bonum: & hauriet jucunditatem à Domino. Qui expellit mulierem bonam, expellit bonũ: qui autem tenet adulteram, ſtultus eſt & impius. 23 Cum obſecrationibus loquetur pauper: & dives effabitur 24 rigidé. Vir amabilis ad ſocietatem, magis amicus erit, quàm frater.

CAP. XIX.

1 MElior eſt pauper, qui ambulat in ſimplicitate ſua, quàm dives torquens labia ſua, & in- 2 ſipiẽs. Ubi non eſt ſcientia ani- 3 mæ, non eſt bonũ: & qui feſtin⁹ eſt pedibus, offendet. Stultitia hominis ſupplantat greſſ⁹ ejus: & con 4 Deũ fervet animo ſuo. Divitiæ addunt amicos plurimos: à paupere autẽ & hi, quos habuit, ſeparan

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 †Ὅταν ἔλθῃ ἀσεβὴς εἰς βάθος κακῶν, καταφρονεῖ, †ἐπέρχεται δὲ αὐτῷ ἀτιμία καὶ 4 ὄνειδος. †Ὕδωρ βαθὺ λόγος ἐν καρδίᾳ ἀνδρός, †ποταμὸς δὲ ἀναπηδύει καὶ πηγὴ 5 ζωῆς. †Θαυμάσαι πρόσωπον ἀσεβοῦς οὐ καλόν, †οὐδὲ ὅσιον ἐκκλίνειν τὸ δίκαιον ἐν κρί- 6 σει. †Χείλη ἄφρονος ἄγουσιν (α) αὐτὸν εἰς κακά, †τὸ δὲ στόμα αὐτοῦ τὸ θρασὺ θάνατον 7 ἐπικαλεῖται. †Στόμα ἄφρονος συντριβὴ αὐτῷ, †τὰ δὲ χείλη αὐτοῦ παγὶς τῇ ψυχῇ αὐτοῦ. 8 †Ὀκνηροὺς καταβάλλει φόβος, †ψυχαὶ δὲ 9 ἀνδρογύνων πεινάσουσιν. †Ὁ μὴ ἰώμενος (β)αὐτὸν ἐν τοῖς ἔργοις αὐτοῦ, †ἀδελφός 10 ἐστι τοῦ λυμαινομένου ἑαυτόν. †Ἐκ μεγαλωσύνης ἰσχύος ὄνομα κυρίου. †αὐτῷ δὲ προσ- 11 δραμόντες δίκαιοι ὑψοῦνται. †Ὕπαρξις πλουσίου ἀνδρὸς πόλις ὀχυρά, †ἡ δὲ δόξα αὐτῆς μέγα (γ) ἐπισκιάζει. †Πρὸ συντριβῆς ὑψοῦται καρδία ἀνδρός, καὶ πρὸ δόξης τα- 13 πεινοῦται. †Ὃς ἀποκρίνεται λόγον πρὶν ἀκοῦσαι, †ἀφροσύνη (δ)αὐτῷ ἐστι καὶ ὄνειδος. 14 †Θυμὸν ἀνδρὸς πραΰνει θεράπων φρόνιμος, 15 †ὀλιγόψυχον δὲ ἄνδρα τίς ὑποίσει; †Καρδία φρονίμου κτᾶται αἴσθησιν, †ὦτα δὲ σο- 16 φῶν ζητεῖ ἔννοιαν. †Δόμα ἀνθρώπου (ε)ἐμπλατύνει αὐτόν, †καὶ παρὰ δυνάσταις καθι- 17 ζάνει αὐτόν. †Δίκαιος ἑαυτοῦ κατήγορος ἐν πρωτολογίᾳ, †ὡς δ' ἂν ἐπιβάλῃ ὁ ἀντίδι- 18 κος ἐλέγχεται. †Ἀντιλογίας παύει σιγη- 19 ρός, †ἐν δὲ (ζ) δυναστείαις ὁρίζει. †Ἀδελφὸς ὑπὸ ἀδελφοῦ βοηθούμενος, †ὡς πόλις ὀχυρὰ καὶ ὑψηλή, †ἰσχύει δὲ ὥσπερ τεθεμελι- 20 ωμένον βασίλειον. †(η)Ἀπὸ καρπῶν στόματος ἀνὴρ πίμπλησι κοιλίαν αὐτοῦ, †ἀπὸ δὲ 21 καρπῶν χειλέων αὐτοῦ ἐμπλησθήσεται. †Θάνατος (θ) καὶ ζωὴ ἐν χειρὶ γλώσσης, †οἱ δὲ κρατοῦντες αὐτῆς ἔδονται τοὺς καρποὺς αὐτῆς. 22 †Ὃς εὗρε γυναῖκα ἀγαθήν, εὗρε χάριτας, †ἔλαβεν δὲ (ι)παρὰ θεοῦ ἱλαρότητα. †ὃς ἐκβάλλει γυναῖκα ἀγαθήν, ἐκβάλλει τὰ ἀγαθά, †ὁ δὲ κατέχων μοιχαλίδα, ἄφρων καὶ 3 ἀσεβής. †Ἀφροσύνη ἀνδρὸς λυμαίνεται τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, †τὸν δὲ θεὸν αἰτιᾶται τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ.

Cùm (c) venerit impius in profundum malorum, contemnit: ſupervenit autem ei inhonoratio, & opprobrium. Aqua profunda, ſermo in (d) corde viri: flumen autem (e) ſcaturit, & (f) fons (g) vitæ. (h) Mirari perſonam impii non bonum: neque ſanctum declinare juſtum in judicio. Labia ſtulti ducunt eum (i) in mala, & os ejus audax mortem invocat. Os imprudentis, (k) contritio ei: labia autem ejus (l) laqueus animæ ejus. Pigros dejicit timor: animæ autem effœminatorum eſurient. (m) Qui non medetur ſibi in operibus ſuis, frater eſt perdentis ſe ipſum. Ex (n) magnificentia fortitudinis, nomen Domini: (o) ei autem accurrentes juſti exaltantur. Subſtantia divitis viri, urbs (p) munita: gloria autem ejus magnoperè obumbrat. (q) Ante contritionem exaltatur cor viri: & (r) ante gloriam humiliatur. Qui reſpondet verbum, priuſquàm audiat; imprudentia ei eſt, & opprobrium. (ſ) Furorem viri mitigat ſervus prudens: (t) puſillanimem autem virum quis ſuſtinebit? Cor prudentis (u) poſſidet ſenſum: aures autem ſapientum quærunt (x) cogitationem. Donum hominis dilatat eum: & cum principes ſedere facit eum. Juſtus ſuî eſt accuſator (y) in principio ſermonis: cùm verò aggreſſus adverſarius, arguitur. Contradictiones ſedat (z) taciturnus, & in potentatibus (æ) definit. (aa) Frater à fratre adjutus, tanquam urbs munita, & excelſa: (bb) invaleſcit autem, tanquam fundatum regnum. De fructibus oris vir implet ventrem ſuum, (cc) & de fructibus labiorum ſuorum implebitur. Mors & vita in manu linguæ: qui autem (dd) continent eam, comedent fructus ejus. Qui invenit mulierem (ee) bonam, invenit gratias: & accepit à Deo (ff) hilaritatem. Qui ejicit mulierem bonam, ejicit bona: qui autem tenet adulteram, ſtultus & impius. Imprudentia viri (gg) vaſtat vias ejus: (hh) Deum autem accuſat corde ſuo.

MS.A. (α) αὐτὰ (β) ἑαυτὸν (γ) ἐπισκιάσει. (δ) αὐτῷ, αὐτῷ (ε) ἐνπλατύνει (ζ) δυνάσταις (η) Ἀπὸ καρποῦ (θ) ζωῆς (ι) παρὰ

ΚΕΦ. ιθ'.

4 †Πλοῦτος προστίθησι φίλους πολλούς, †ὁ δὲ πτωχὸς καὶ ἀπὸ τοῦ ὑπάρχοντος φίλου λείπεται.

CAP. XIX.

DIvitiæ addunt amicos: inops autem & ab eo qui erat, (a) deſeritur.

תרגום TARGUM.

3 כד אתי רשיעא בשטיותא ייתי ובצערא ובחסורא : מיא עמיקי פומיה דגברא נחלא
4 5 דנביע מבוע דחכמתא : למסב אפי לרשיעא לא שפיר אף לא למצלי דינא לצדיקא :
6 ספותיה דסכלא מיתן ליה לדינא ופומיה מסטי ליה לחרתא : פומיה דסכלא שציא
7 8 הוא ליה ושפותיה פחא אנון לנפשיה : מלוי דשגושא מרכנן ליה ומחתן ליה לעומק
9 דשיול : ואף דמתרפא בעבדתיה חברא הוא לגברא מחבלנא : מגדלא דעושנא
10 11 שמיה דאלהא וביה נרהט צדיקא ונתרים בידה : מוליה דעתירא קריתא דעושניה
12 וכשורה ירום משריה : קדם תברא יתרורם לביה דגברא וקדם יקרא ענותנותא :
13 14 מחזיר פתגמא עד לא שמיע שטיותא ליה ובהתתא : רוחיה דגברא תסובר ברהניה
15 ורוחא מככתא מן נטעניה : לבא דמתבין נקנא ידיעתא ואדנא דחכימי תבעי מנדעא :
16 17 מוהבתיה דבר נשא מרוחא ליה וקדם רברבי מקימא ליה : זכי הוה קדמאה בדיניה
18 ואתא חבריה ונציח ליה : תגרי מבטלא פצתא ובינת תקיפי פרשא : אחא דמתעוי
19 20 מן אחוי היך קריתא עשנתא ואחרא היך סוכרא דחוסנא : מן פרי פומיה דגברא תסבע
21 כרסיה ומן עללתא דשפותיה נסבע : מותא וחיי בידא דלישנא ודרחם ליה ניכול מן
22 23 פרוי : דמשכח אתתא טבאתא משכח ומקבל רעותיה מן אלהא : תחנוני נמלל מסכנא
24 ועתירא נמלל עשינתא : אית חברי דמתחברין ואית רחמא דבק מן אח :

יט

1 טב מסכינא דמהלך בתמימותא מן הוא דמעקמן ארחתיה והוא סכל : מן דלא
2 3 ידיע נפשיה לא שפיר ליה ודקליל ברגלוי לבישתא חטיא הוא : שטיותא דבר
4 נשא מטלטלא ארחתיה ועל אלהא מתרעם לביה : ממונא מוסיף חברי סגיעי ומסכנא
פריש חבריה מניה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quando venit impius in ſtultitia, venit & in ignominia & oppro Aquæ profundæ os viri, torrens redundans fons ſapientiæ. Accipe ciem impii non eſt bonum, neque declinare à judicio contra juſtum. ſtulti adducunt eum in judicium, & os ejus pervertit eum ad rixam ſtulti perniciei eſt ei, & labia ejus laquei ſunt animæ ejus. Verba ſu nis proſternent illum, & deducent illum in profundum inferni. Is qui remiſſus eſt in opere ſuo, ſocius eſt viri diſſipantis. Turris forti nomen Dei; in ea autem curret juſtus, & exaltabitur in ipſa. Sub divitis urbs fortitudinis ejus, & quaſi murus elevatum eſt habita ejus. Ante interitum exaltatur cor hominis, & ante gloriam eſt hu tas. Qui reſpondet verbum anteaquàm audiat, ſtultitia eſt ei & con Spiritus viri ſuſtentat infirmitatem ipſius: & ſpiritum demiſſum poterit ſuſtinere? Cor intelligentis poſſidebit ſcientiam, & auris ſa tum quæret notitiam. Donum filii hominis dilatat eum, & ante pr pes ſuſtentat illum. Juſtus eſt primus in judicio ſuo, & venit ſociu & vincit eum. Contentiones abrogat ſors, & inter fortes dirimit. ter qui deficit à fratre ſuo, quaſi civitas fortis, & clauſa quaſi repa forti. De fructu oris viri ſatiabitur venter ejus, & de genimine la ſuorum ſatiabitur. Mors et vita in manu linguæ: et qui diligit edet de fructibus ejus. Qui invenit mulierem, invenit bonum, voluntatem ſuam à Deo. Deprecationes loquetur pauper, et dives tur rigida. Sunt ſocii qui aſſociantur, et amicus adhærens magis frater.

CAP. XIX.

MElior eſt pauper qui ambulat in ſimplicitate, quàm ille qui per vias ſuas, et ipſe eſt ſtultus. Qui neſcit animam ſuam, non eſt et qui velox eſt pedibus ſuis in malum, peccator eſt. Stultitia nis inſtabilem facit viam ipſius, et contra Deum murmurat cor vitiæ adducunt amicos plurimos: à paupere autem ſocius ſepar

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܡܐ ܕܐܬܐ ܥܘܠܐ ܠܥܘܡܩܐ ܕܒܝܫܬܐ. ܐܬܐ ܥܠܘܗܝ ܫܛܝܘܬܐ ܘܥܘܠܐ ܘܨܥܪܐ ܘܚܣܕܐ. * ܡܝܐ
ܥܡܝܩܐ ܡܠܐ ܕܦܘܡܗ ܕܓܒܪܐ. ܘܢܚܠܐ ܕܢܒܥ. ܡܒܘܥܐ ܕܚܟܡܬܐ. * ܠܡܣܒ ܒܐܦܝ 5
ܕܥܘܠܐ. ܠܐ ܫܦܝܪ. ܘܠܡܨܠܝܘ ܕܝܢܐ ܕܙܕܝܩܐ ܠܐ ܙܕܩ. * ܣܦܘܬܗ ܕܣܟܠܐ ܡܥܠܢ ܠܗ ܒܕܝܢܐ. ܘܦܘܡܗ 6
ܡܩܪܒ ܠܗ ܠܡܘܬܐ. * ܦܘܡܗ ܕܣܟܠܐ ܬܒܪܐ ܗܘ ܠܢܦܫܗ. ܘܣܦܘܬܗ ܦܚܐ ܠܢܦܫܗ. 7
* ܡܠܘܗܝ ܕܚܒܢܢܐ ܪܡܝܢ ܠܗ ܒܒܝܫܬܐ. ܘܗܢܝܢ ܢܚܬܢ ܠܗ ܠܬܘܢܝ ܕܫܝܘܠ. * ܘܐܢܫ 8 9
ܕܡܪܦܐ ܐܝܕܘܗܝ ܒܥܒܕܗ. ܐܚܘܗܝ ܗܘ ܕܓܒܪܐ ܡܚܒܠܢܐ. * ܡܓܕܠܐ ܗܘ ܥܫܝܢܐ ܫܡܗ 10
ܕܡܪܝܐ. ܘܠܗ ܪܗܛ ܙܕܝܩܐ ܘܡܥܫܢܐ. * ܥܘܬܪܐ ܘܐܝܩܪܐ ܡܕܝܢܬܐ ܕܥܫܝܢܘܬܗ. ܘܫܘܪܐ 11
ܥܫܝܢܐ ܡܥܡܪܗ. * ܩܕܡ ܬܒܪܐ ܡܬܪܘܡ ܠܒܗ ܕܓܒܪܐ. ܘܩܕܡ ܐܝܩܪܐ ܡܘܟܟܐ. * ܕܡܦܢܐ 12
ܦܬܓܡܐ ܥܕܠܐ ܢܫܡܥ. ܣܟܠܐ ܗܘ ܘܡܬܚܣܕ. * ܪܘܚܗ ܕܓܒܪܐ ܡܣܝܒܪܐ ܟܘܪܗܢܗ. ܘܪܘܚܐ 13 14
ܡܟܪܝܬܐ. ܡܢ ܢܣܝܒܪܝܗ. * ܠܒܐ ܫܪܝܪܐ ܩܢܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܐܕܢܐ ܚܟܝܡܬܐ ܬܨܘܬ ܝܕܥܬܐ. 15
* ܡܘܗܒܬܐ ܕܒܪܢܫܐ ܡܪܘܚܐ ܠܗ. ܘܩܕܡ ܪܘܪܒܢܐ ܡܩܝܡܐ ܠܗ. * ܙܟܝ ܗܘ ܓܒܪܐ 16
ܒܕܝܢܗ. ܘܡܐ ܕܐܬܐ ܚܒܪܗ ܒܨܐ ܠܗ. * ܦܣܐ ܡܫܪܐ ܚܪܝܢܐ. ܘܒܝܬ ܥܫܝܢܐ ܦܪܫ. * ܐܚܐ 17 18
ܕܡܬܥܕܪ ܡܢ ܐܚܘܗܝ. ܐܝܟ ܡܕܝܢܬܐ ܡܢ ܫܘܢܝܬܗ. ܘܡܘܪܟܘܗܝ ܐܝܟ ܡܘܟܠܐ ܕܫܢܝܢܐ. * ܡܢ 19 20
ܦܐܪܐ ܕܦܘܡܗ ܕܓܒܪܐ. ܢܣܒܥ ܟܪܣܗ. ܘܡܢ ܥܠܠܬܐ ܕܣܦܘܬܗ ܢܣܒܥ. * ܡܘܬܐ ܘܚܝܐ ܒܐ 21
ܠܫܢܐ ܗܘ. ܘܕܪܚܡ ܠܗ. ܢܐܟܘܠ ܡܢ ܦܐܪܘܗܝ. * ܕܐܫܟܚ ܐܢܬܬܐ ܛܒܬܐ. ܐܫܟܚ 22
ܛܒܬܐ. ܘܡܩܒܠ ܪܚܡܐ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܕܡܦܩ ܐܢܬܬܐ ܛܒܬܐ. ܡܦܩ ܛܒܬܐ ܡܢ ܒܝܬܗ.
* ܡܣܟܢܐ ܡܡܠܠ ܒܬܟܫܦܬܐ. ܘܥܬܝܪܐ ܡܡܠܠ ܥܫܝܢܬܐ. * ܐܝܬ ܪܚܡܐ ܕܪܚܡܐ ܐܢܘܢ. ܘܐܝܬ 23 24
ܪܚܡܐ ܕܢܩܦ ܝܬܝܪ ܡܢ ܐܚܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܛ * ܛܒ ܗܘ ܡܣܟܢܐ ܕܡܗܠܟ 1
ܒܬܡܝܡܘܬܐ. ܡܢ ܥܬܝܪܐ ܕܡܥܩܡ ܐܘܪܚܬܗ. * ܡܢ ܕܠܐ ܝܕܥ ܢܦܫܗ. ܠܐ ܫܦܝܪ 2
ܠܗ. ܘܕܡܣܪܗܒ ܒܪܓܠܘܗܝ ܚܛܐ. * ܫܛܝܘܬܗ ܕܓܒܪܐ ܡܥܩܡܐ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܥܠ ܡܪܝܐ 3
ܡܬܚܡܬ ܒܠܒܗ. * ܥܘܬܪܐ ܡܘܣܦ ܪܚܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܡܣܟܢܐ ܦܪܝܫ ܡܢ ܪܚܡܘܗܝ. 4

Cúmque devenerit impius ad imum malorum, 3
veniet ſuper eum ſtultitia & iniquitas
& contumelia & opprobrium. Aquæ pro- 4
fundæ, verba oris viri: & fluvius decurrens,
fons ſapientiæ. Vereri vultum impii, non eſt 5
bonum: neque reflectere judicium adverſùs
juſtum. Labia ſtulti ingrediuntur in litem, et 6
os ejus perducit eum ad mortem. Os impru- 7
dentis fractio eſt animæ: & labiis ſuis venatur
animam ſuam. Verba ſocordis injiciunt 8
eum in malum: ipſáque deprimunt eum in
penetralia inferni. Et qui remittit manus 9
ſuas in opere ſuo, frater eſt viri deſtruentis.
Turris eſt munita nomen Domini, & ad eam 10
accurret juſtus & fortis. Honor & divitiæ, 11
urbs fortitudinis ejus: & intra murum fortiſſimum,
habitaculum ejus. Ante contritio- 12
nem extolletur cor viri: & ante honorem
depreſſio. Qui reſponſum reddit antequam 13
audiat, ſtultus eſt & ignominioſus. Spiritus 14
viri tolerat paſſionem ſuam: ſpiritum verò
dolentem quis ferat? Cor firmum poſſidet 15
ſapientiam: & auris ſapiens auſcultat ſcientiam.
Munera hominis dilatant ei, & ante 16
magnates ſiſtunt eum. Innocens eſt homo in 17
lite propria: at cùm venit ſocius ejus indicat
illi. Sors dirimit litem, & inter potentes 18
dividit. Frater qui adjuvatur à fratre ſuo, in- 19
ſtar urbis ab arce ſua, cujus repagula ſunt veluti
ſeræ arcis. De fructibus oris viri ſatiabi- 20
tur venter ejus, & frugibus labiorum ſuorum
ſaturabitur. Mors & vita in linguæ poteſtate 21
ſunt: & qui diligit eam, veſcetur fructibus
ejus. Qui invenit uxorem bonam, invenit bo- 22
num, & impetrat gratiam à Domino: & qui
expellit uxoré boná, expellit bonum è domo
ſua. Pauper loquitur mollia: dives autem lo- 23
quitur grandia. Sunt amici qui amici ſunt: & 24
eſt amicus qui firmiùs hæret quàm frater.

CAP. XIX.

MElior eſt pauper qui ambulat in inte- 1
gritate, quàm dives cujus perverſæ ſunt viæ.
Qui non noſcit ſeipſum, malè cedet ei: & 2
qui celer eſt pedibus ſuis, peccabit. Sultitia 3
viri depravat vias ejus, & contra Dominum
ſuccenſet in corde ſuo. Opes addunt ami- 4
cos plurimos: pauper autem ſeparatur ab
amicis ſuis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* اذا اقصى المنافق الى قعر الاسواء يتهاون * ويوافيه هوان وعار * ماء عميق الكلام في قلب 3 4
الرجل * وهو ينبوع فيضه * وعين حياة * ليس حسنا ان يستعجب وجه المنافق * ولا بارا ان
يميل العدل في القضاء * شفاه الجاهل تسوقه الى الاسواء * وفم المتهجم يستدعي الموت 6
* فم الغبي يهشمه * وشفتاه فخ لنفسه * العاجزون يصرعهم الخوف * وانفس الطالبين المتواجسين 7 8
جايعة * من لا يشفي ذاته بافعاله فذاك اخو من يفسد ذاته * اسم الرب من عظمة قوته 9 10
والمقسطون باحضارهم اليه يستعليون * وجود ثروة الانسان مدينة حصينة * وشرفها يجللها 11
عظما * تعالي قلب الرجل لتهشمه * ويذل قبل شرفه * من يجاوب كلاما قبل ان يسمع * فذلك 12 13
غباوة له وعار * غضب الرجل يسكنه غلام عاقل * والانسان الصغير النفس من ذا يحمله
* قلب الحازم العقل يستفيد حسا * واذان الحكماء تطلب معقولا وذكرا * عطية الانسان توسع
جاهه * وتجلسه مع المقتدرين * المقسط يثلب ذاته في بدء كلامه * كما ان المقاوم من خطر
بباله يوبخه * المقسط يسكن المجاوبة * ويفرج لها في ذوي الاقتدار * اخا يعينه اخوه كمدينة
حصينة وشاهقة * ويحصل في القوة كقوة ملك موسس * الانسان من ثمر فمه يملأ جوفه
ومن اثمار شفتيه يشبع ويمتلي * الموت والحياة في يد اللسان * والذين يمسكونه ياكلون
ثمراته * من وجد امراة صالحة * فقد وجد الخيرات * وقد اخذ من الله امارات الطا
والاستبشار * من يخرج من منزله امراة صالحة يخرج الخيرات * ومن يمسك فاسقة فذاك ع
ومنافق *

* الفصل التاسع عشر *

* غباوة الرجل تفسد طرايقه * وفي قلبه يلوم الله * الغنا يزيد صاحبه اصدقاء كثير
والمسكين يخيب ومن صديقه المختص به *

Cùm tetigerit impius ima nequitiarum, deſpicietur, & conſequentur eum contemptus & infamia. 3
Aqua profunda, ſermo in corde viri, & flumen cujus redundat eluvies, & fons vitæ. 4
Non eſt bonum aſſentari vultui impii, neque rectum torquere juſtitiam in judicio. 5
Labia inſipientis ducunt illum ad mala: & os temerarii accerſit mortem. 6
Os ſtulti frangit eum: & labia ejus, laqueus animæ ipſius. 7
Pigros proſternet pavor: & animæ avidorum & ambitioſorum ſunt eſurientes. 8
Qui non ſanat ſeipſum operibus ſuis, ipſe eſt frater ejus qui corrumpit ſeipſum. 9
Nomen Domini ex magnitudine roboris ejus eſt: & juſti accurrendo ad ipſum, exaltabuntur. 10
Abundantia divitiarum hominis, urbs fortis: & magnificentia earum glorificat illum ſummoperé. 11
Superbia cordis hominis, in fractionem ipſius: & humiliabitur ante exaltationem ſuam. 12
Reſpondenti verba antequam audiat, id imprudentiæ eſt ipſi atque ignominiæ. 13
Iram viri ſedabit puer prudens: & hominem puſillanimem quis ſuſtinebit? 14
Cor firmi judicii poſſidet ſenſum: & aures ſapientum quærunt prudentiam & monitum. 15
Donum hominis amplificat dignitatem ipſius, & ſedere facit eum cum potentibus. 16
Juſtus accuſat ſeipſum in exordio ſermonis ſui: quemadmodum pertinax, quicunque ſibi in mentem venerit, arguit. 17
Juſtus comprimit objectionem, & relaxat illam inter potentes. 18
Frater quem adjuvat frater ſuus, eſt veluti urbs munita et alta: & acquiret fortitudinem, quaſi fortitudinem regis fundati. 19
Homo de fructu oris ſui implebit ventrem ſuum: et de fructibus labiorum ſuorum ſaturabitur, & replebitur. 20
Mors & vita, in manu linguæ: & qui cohibent illam, comedent fructus ejus. 21
Qui invenit mulierem probam, invenit bona: & jam accepit à Deo ſigna hilaritatis & lætitiæ. Qui expellit è domo ſua mulierem probam, expellit bona: et qui tenet adulteram, hic ſtultus eſt & ſceleſtus. 22

Deſiderantur duo poſtremi verſus hujus capitis, & duo primi ſequentis.

CAP. XIX.

IMprudentia viri corrumpit vias ejus: & in corde ſuo accuſat Deum. 3
Divitiæ addunt domino ſuo multos amicos: et pauper fruſtratur etiam amico ſuo præcipuo. 4

משלי: יט

.evadet non , mendacia *efflabit* & : impunis erit non *falsitatum* Testis
5 עֵד שְׁקָרִים לֹא יִנָּקֶה וְיָפִיחַ כְּזָבִים לֹא יִמָּלֵט׃
.doni viro amicus quivis & :liberalis *facies* precabuntur Multi
6 רַבִּים יְחַלּוּ פְנֵי־נָדִיב וְכָל־הָרֵעַ לְאִישׁ מַתָּן׃
se elongaverunt ejus *sodales quia etiam*,eum oderunt pauperis fratres Omnes
7 כָּל־אֲחֵי־רָשׁ ׀ שְׂנֵאֻהוּ אַף כִּי מְרֵעֵהוּ רָחֲקוּ
diligens , cor Possidens *? ipsa non dicta sequens* : eo ab
8 מִמֶּנּוּ מְרַדֵּף אֲמָרִים לֹא־הֵמָּה׃ קֹנֶה־לֵּב אֹהֵב
.bonum inveniendum ad , intelligentiam *custodiens* : suam animam
נַפְשׁוֹ שֹׁמֵר תְּבוּנָה לִמְצֹא־טוֹב׃
.peribit , mendacia *efflabit* & : erit impunis non *falsitatum* Testis
9 עֵד שְׁקָרִים לֹא יִנָּקֶה וְיָפִיחַ כְּזָבִים יֹאבֵד׃
dominari servum *quia etiam* : delectatio stulto decora est Non
10 לֹא־נָאוֶה לִכְסִיל תַּעֲנוּג אַף כִּי־לְעֶבֶד ׀ מְשֹׁל
ejus gloria & *: suam narem prolongavit* hominis Intellectus *? principes in*
11 בְּשָׂרִים׃ שֵׂכֶל אָדָם הֶאֱרִיךְ אַפּוֹ וְתִפְאַרְתּוֹ
: regis *sævitia* catuli veluti Rugitus .prævaricationem *super transire*
12 עֲבֹר עַל־פָּשַׁע׃ נַהַם כַּכְּפִיר זַעַף מֶלֶךְ
filius suo patri *Contritiones* .ejus benevolentia herbam super ros sicut &
13 וּכְטַל עַל־עֵשֶׂב רְצוֹנוֹ׃ הַוֺּת לְאָבִיו בֵּן
copia & ,Domus .mulieris contentiones continuans stillatio & : stultus
14 כְּסִיל וְדֶלֶף טֹרֵד מִדְיְנֵי אִשָּׁה׃ בַּיִת וָהוֹן
Pigredo .intelligens mulier Domino à & : patrum hæreditas
15 נַחֲלַת אָבוֹת וּמֵיְהוָה אִשָּׁה מַשְׂכָּלֶת׃ עַצְלָה
Custodiens .famescet *fraudulenta* anima & : soporem faciet cadere
16 תַּפִּיל תַּרְדֵּמָה וְנֶפֶשׁ רְמִיָּה תִרְעָב׃ שֹׁמֵר
.morietur , suas vias *contemnens* : suam animam *custodiens* , mandatum
מִצְוָה שֹׁמֵר נַפְשׁוֹ בּוֹזֵה דְרָכָיו יוּמָת׃
.ei reddet ejus retributionem & *: tenuis miserescens* ,Domino *Mutuans*
17 מַלְוֵה יְהוָה חוֹנֵן דָּל וּגְמֻלוֹ יְשַׁלֶּם־לוֹ׃
ne *ejus fremitum* ad & : spes est *quia* : tuum filium Castiga
18 יַסֵּר בִּנְךָ כִּי־יֵשׁ תִּקְוָה וְאֶל־הֲמִיתוֹ אַל־
quia *: mulctam ferens* ira Magnus .tuam animam eleves
19 תִּשָּׂא נַפְשֶׁךָ׃ גְּרָל־חֵמָה נֹשֵׂא עֹנֶשׁ כִּי
suscipe & , consilium Audi .addes adhuc & , erueris si
20 אִם־תַּצִּיל וְעוֹד תּוֹסִף׃ שְׁמַע עֵצָה וְקַבֵּל
cogitationes Multæ .tuo novissimo in sis sapiens ut ; correctionem
21 מוּסָר לְמַעַן תֶּחְכַּם בְּאַחֲרִיתֶךָ׃ רַבּוֹת מַחֲשָׁבוֹת
Desiderium *.stabit* ipsum Domini consilium & : viri corde in
22 בְּלֶב־אִישׁ וַעֲצַת יְהוָה הִיא תָקוּם׃ תַּאֲוַת
Timor *.mendacii viro præ* pauper *bonus* & :ejus misericordia hominis
23 אָדָם חַסְדּוֹ וְטוֹב רָשׁ מֵאִישׁ כָּזָב׃ יִרְאַת
.malo visitabitur non ,commorabitur satur & *: vitæ* ad Domini
יְהוָה לְחַיִּים וְשָׂבֵעַ יָלִין בַּל־יִפָּקֶד רָע׃
suum os ad etiam *: axilla* in suam manum piger Abscondit
24 טָמַן עָצֵל יָדוֹ בַּצַּלָּחַת גַּם־אֶל־פִּיהוּ
: efficietur astutus simplex & , percusseris Derisorem .eam reducet non
25 לֹא יְשִׁיבֶנָּה׃ לֵץ תַּכֶּה וּפֶתִי יַעְרִם
Expilans .scientiam intelliget ,intelligentem increpaverit &
26 וְהוֹכִיחַ לְנָבוֹן יָבִין דָּעַת׃ מְשַׁדֶּד־
.faciens erubescere & , afficiens pudore filius ; matrem fugabit , *patrem*
אָב יַבְרִיחַ אֵם בֵּן מֵבִישׁ וּמַחְפִּיר׃
eloquiis ab *errandum ad* : eruditionem audire mi fili Cessa
27 חֲדַל־בְּנִי לִשְׁמֹעַ מוּסָר לִשְׁגוֹת מֵאִמְרֵי־
impiorum os & ; judicium deridebit *Belijahal* Testis .scientiæ
28 דָעַת׃ עֵד בְּלִיַּעַל יָלִיץ מִשְׁפָּט וּפִי רְשָׁעִים
percussiones & : judicia delusoribus sunt Parata .iniquitatem *deglutiet*
29 יְבַלַּע־אָוֶן׃ נָכוֹנוּ לַלֵּצִים שְׁפָטִים וּמַהֲלֻמוֹת
.stultorum corpori
לְגֵו כְּסִילִים׃

Versio VULG. LAT.

5 Testis falsus non erit impunitus: & qui mendacia loquitur, 6 non effugiet. Multi colunt personam potentis, & amici sunt 7 dona tribuentis. Fratres hominis pauperis oderunt eum : insuper & amici procul recesserunt ab eo. Qui tantùm verba sectatur, nihil habebit: 8 Qui autem possessor est mentis, diligit animam suam, & custos 9 prudentiæ inveniet bona. Falsus testis non erit impunitus: et qui loquitur mendacia, peri-10 bit. Non decent stultum deliciæ, nec servum dominari prin-11 cipibus. Doctrina viri per patientiam noscitur : & gloria ejus est iniqua prætergre-12 di. Sicut fremitus leonis, ita & regis ira : & sicut ros super herbam, ita & hilaritas ejus. 13 Dolor patris, filius stultus : & tecta jugiter perstillantia, liti-14 giosa mulier. Domus, & divitiæ dantur à parentibus : à Domino autem propriè uxor 15 prudens. Pigredo immittit soporem, & anima dissoluta esu-16 riet. Qui custodit mandatũ, custodit animam suam: qui autem negligit viam suam, mor-17 tificabitur. Fœneratur Domino qui miseretur pauperis : & vicissitudinem suam reddet 18 ei. Erudi filiũ tuum, ne desperes : ad interfectionem autem ejus ne ponas animam tuam. 19 Qui impatiens est, sustinebit damnum : & cùm rapuerit, a-20 liud apponet. Audi consilium, & suscipe disciplinam, ut sis 21 sapiens in novissimis tuis. Multæ cogitationes in corde viri : voluntas autẽ Domini perma-22 nebit. Homo indigens misericors est: et melior est pauper, 23 quàm vir mendax. Timor Domini ad vitam: et in plenitudine commorabitur, absque vi-24 sitatione pessima. Abscondit piger manum suam sub ascella, nec ad os suum applicat eam. 25 Pestilente flagellato stultus sapientior erit : si autem corripueris sapientem, intelliget di-26 sciplinam. Qui affligit patrẽ, & fugat matrem, ignominiosus 27 est & infœlix. Non cesses, fili, audire doctrinam, nec ignores 28 sermones scientiæ. Testis iniquus deridet judicium : & os impiorum devorat iniquita-29 tem. Parata sunt derisoribus judicia: & mallei percutientes stultorum corporibus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 † Μάρτυς ψευδὴς οὐκ ἀτιμώρητος ἔσται, † ὁ
6 δὲ ἐγκαλῶν ἀδίκως οὐ διαφεύξεται. † Πολλοὶ
θεραπεύουσι πρόσωπα βασιλέων, † (α) πᾶς
7 δὲ ὁ κακὸς γίνεται (β) ὄνειδος ἀνδρί. † Πᾶς
ὃς ἀδελφὸν πτωχὸν μισεῖ, καὶ φιλίας μακρὰν
ἔσται. † Ἔννοια ἀγαθὴ τοῖς εἰδόσιν αὐτὴν ἐγγιεῖ, † ἀνὴρ δὲ φρόνιμος εὑρήσει αὐτήν.
† Ὁ πολλὰ κακοποιῶν τελεσιουργεῖ κακίαν,
8 † ὃς δὲ ἐρεθίζει λόγους, οὐ σωθήσεται. † Ὁ
κτώμενος φρόνησιν ἀγαπᾷ ἑαυτόν, † ὃς δὲ
9 φυλάσσει φρόνησιν, εὑρήσει ἀγαθά. † Μάρτυς ψευδὴς οὐκ ἀτιμώρητος ἔσται, † ὃς δ'
ἂν ἐκκαύσῃ κακίαν, ἀπολεῖται ὑπ' αὐτῆς.
10 † Οὐ συμφέρει ἄφρονι τρυφή, † καὶ ἐὰν
11 οἰκέτης ἄρξηται μεθ' ὕβρεως δυναστεύειν. † Ἐλεήμων ἀνὴρ μακροθυμεῖ, † τὸ δὲ καύχημα
12 αὐτοῦ ἐπέρχεται παρανόμοις. † Βασιλέως
ἀπειλὴ ὁμοία βρυγμῷ λέοντος, † ὥσπερ δὲ
δρόσος ἐπὶ χόρτῳ, οὕτως τὸ ἱλαρὸν αὐτοῦ.
13 † Αἰσχύνη πατρὶ υἱὸς ἄφρων, (γ) † οὐχ ἁ-
14 γναὶ εὐχαὶ ἀπὸ μισθώματος ἑταίρας. † Οἶκον καὶ ὕπαρξιν (δ) μερίζουσι πατέρες παισί, † παρὰ δὲ κυρίου ἁρμόζεται γυνὴ ἀν-
15 δρί. † Δειλία κατέχει ἀνδρόγυνον, † ψυ-
16 χὴ δὲ ἀεργοῦ πεινάσει. † Ὃς φυλάσσει ἐντολήν, τηρεῖ τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν· † ὁ δὲ κατα-
17 φρονῶν τῶν ἑαυτοῦ ὁδῶν, ἀπολεῖται. † Δανείζει θεῷ ὁ ἐλεῶν πτωχόν, † κατὰ δὲ τὸ
18 δόμα αὐτοῦ ἀνταποδώσει αὐτῷ. † Παίδευε
υἱόν σου, οὕτως γὰρ ἔσται εὔελπις, † εἰς δὲ
19 ὕβριν μὴ ἐπαίρου τῇ ψυχῇ σου. † Κακόφρων ἀνὴρ πολλὰ ζημιωθήσεται, † ἐὰν δὲ
λοιμεύηται, καὶ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ προσθήσει.
20 † Ἄκουε υἱὲ παιδείαν πατρός σου, † ἵνα σο-
21 φὸς γένῃ ἐπ' ἐσχάτων σου. † Πολλοὶ λογισμοὶ ἐν καρδίᾳ ἀνδρός, † ἡ δὲ βουλὴ τοῦ
22 κυρίου εἰς τὸν αἰῶνα μένει. † Καρπὸς ἀνδρὶ
ἐλεημοσύνη, † κρείσσων δὲ πτωχὸς δίκαιος
23 ἢ πλούσιος (ε) ψευδής. † Φόβος κυρίου
εἰς ζωὴν ἀνδρί, † ὁ δὲ ἄφοβος αὐλισθήσεται ἐν τόποις, οὗ οὐκ ἐπισκοπεῖται γνῶσις.
24 † Ὁ ἐγκρύπτων εἰς τὸν κόλπον αὐτοῦ χεῖρας ἀδίκως, † οὐδὲ τῷ στόματι οὐ μὴ (ζ) προσ-
25 ενέγκῃ αὐτάς. † Λοιμοῦ μαστιγουμένου ἄφρων πανουργότερος (η) γίνεται, † ἐὰν δὲ
ἐλέγχῃς ἄνδρα φρόνιμον, νοήσει αἴσθησιν.
26 † Ὁ ἀτιμάζων πατέρα καὶ ἀπωθούμενος μητέρα αὐτοῦ, καταισχυνθήσεται καὶ ἐπονείδιστος
27 ἔσται. † Υἱὸς ἀπολειπόμενος φυλάξαι παιδείαν πατρός, μελετήσει ῥήσεις κακάς.
28 † Ὁ ἐγγυώμενος παῖδα ἄφρονα, (θ) καθυβρίζει δικαίωμα, † στόμα δὲ ἀσεβῶν καταπί-
29 εται κρίσεις. † Ἑτοιμάζονται ἀκολάστοις μάστιγες, † καὶ τιμωρίαι ὁμοίως ἄφροσιν.

Testis falsus (b) non impunitus
rit: & qui accusat iniquè, (c) non
effugiet. Multi colunt facies re-
gum : (d) omnis autem malus fi
opprobrium viro. Omnis qui fra-
trem inopem odit ; etiam ab ami-
citia longè erit. Cogitatio bona sci-
entibus eam appropinquabit : o
vir prudens inveniet eam. Mu
malefaciens, perficit malitiam: qu
autem (e) contendit verbis, non
salvabitur. Qui possidet (f) pru-
dentiam , diligit seipsum : qu
autem custodit prudentiam, inve-
niet bona. Testis falsus non impu-
nitus erit : qui autem accenderit
malum , peribit ab eo. Non (g)
conferunt imprudenti deliciæ, (h)
& si famulus incipiat cum contu-
melia dominari. (i) Misericor
vir longanimis est ; (k) gloriatio
autem ejus supervenit iniquis. Re-
gis comminatio similis (l) fremitu
leonis : tanquam autem ros sup
herbam , sic (m) hilaritas ejus.
(n) Confusio patri filius impru-
dens ; (o) non pura vota de mer-
cede meretricis. Domum & sub-
stantiam dividunt patres pueri
à Domino autem aptatur mu
(p) viro. (q) Pavor detinet effe-
minatum : anima autem otios
suriet. Qui custodit mandatum
servat suam animam : qui autem
negligit suas vias, peribit. Fœne-
rat Deo qui miseretur pauper
(r) secundùm datum autem ej
retribuet ei. Erudi filium tuum
sic enim erit bonæ spei: (s) a
contumeliam autem ne eleveris
nimo tuo. (t) Malè cogitans v
multa damna patietur : (u) si au-
tem corruperit ; & animam su
addet. (x) Audi, fili, disciplina
patris tui; ut sapiens sis in no
simis tuis. Multæ cogitationes i
corde viri : consilium autem Do-
mini in seculum manet. Fructu
viro misericordia : melior aut
pauper justus, quàm mendax
ves. Timor Domini ad vitam v
(y) carens autem timore, morab
in locis, ubi non consideratur s
entia. Qui abscondit in (z)
num suum manus injustè, ne
ori quidem (ω) admovebit
Pestilente flagellato (aa)
astutior fit : si autem corripue
virum prudentem, cognosc
sensum. Qui inhonorat pat
& (cc) expellit matrem s
confundetur, & exprobrabit
(dd) Filius omittens custodire
sciplinam patris, meditabitur
loquia mala. Qui (ee)
puerum imprudentem ;
contumeliâ afficiet justificationem : os autem impiorum (gg) devora
Parantur (hh) intemperantibus flagella, (ii) & supplicia similiter impru

MS.A. (α) πᾶς δὲ κακὸς (β) ἄδικος ἀνδρί. (γ) καὶ ὀδύνη τῇ
αὐτοῦ, οὐχ ἁγναὶ (δ) μερίζουσιν (ε) ψεύστης. (ζ) [illegible]
(η) ἔσται, (θ) καθυβρίζει

תרגום TARGUM.

5 6 סהדא דשקרא לא נזדכי ודמועי כדבותא לא נתמלט : סגיעי דמשמשין קדם רבא
7 ודלבישין יהיב מוהבתא : כלהון רחמוי דמסכנא סנין ליה ואף חברוי רחקין מניה
8 איכא דטרד במלוי לא שריר : קני לבא טבא רחם נפשיה נטר ביונא משכיח טבתא :
9 10 סהדא דשקרא לא נזדכא ודמועי כדבותא נאבד : לא יאי לסכלא פנוקא אף לא
11 לעבדא דנשתלט ברברבנין : שכליה דבר נשא נגידות אורחיה ושבהוריה חובא :
12 13 נהם היך אריא ועפיה דמלכא והיך טלא על עסבא רעותיה : בר סכלא קשה
14 הוא לאבוי היך קרסי והיך דלפא דדלף תגרי דאתתא : ביתא ומולא וירותתא הוא
15 דאבהן ומן אלהא מתמסרא אתתא לגברא : עטלותא יהבא שנתא ונפשא רמיתא
16 17 תכפן : דנטר פוקדנא נטר נפשיה ודמשיט אורחתיה ימות : מן דבעי דנזיף לאלהא
18 מתרחם על מסכנא ופורענותא טבתא משלם ליה : רדי ברך מטול דאית סבויא
19 ולמיתותיה לא תרים נפשך : גברא חמתנא מקבל תכא וכמה דמתעלי על טועניה
20 21 מוסיף : שמע עיצתא וקבל מרדותא מטול דתתחכם בסופך : סגיען מחשבתא
22 בלביה דגברא ועצתא דאלהא היא תקום : רגתיה דבר נשא חסדיה וטב מסכנא
23 מן גברא כדבא : דחלתיה דאלהא לחיי ומן דשביע מניה נבות ולא נפקוד בישתא :
24 25 עטלא דמטשי ידיה בשחתיה אף לא לפומיה מקרב ליה : לממקנא תמחי
26 ושברא מתערם ואכיס לסוכלתן דנתביין ידיעתא : דבזז לאבוי ומעריק לאמיה ברא
27 הוא מבהתנא ומחפרנא : פרש ברי ושמע מרדותא ולא תשנא מן מאמרי דפומי :
28 29 סהדא דגלאה ממיק בדיניה ופומהון דרשיעי מפיק עאתא : מתקנין לממקני
דיני ומחתא לנשמיהון דסכלי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina

Testis falsus non erit innocens : & qui loquitur mendacium, non li
bitur. Multi sunt qui ministrant coram principe, & malis dat mu
Omnes amici pauperis oderunt eum, insuper socii ejus recedunt a
ubi *est* qui *insectatur* verbis suis, nihil erit eis *firmum*. Qui possid
bonum, diligit animam suam : qui custodit prudentiam ; inveniet bo
Testis falsus non erit innocens : & qui loquitur mendacium, pe
Non decent stultum deliciæ, neque servum dominari cum princi
Intellectus hominis est differre furorem suum, & pulchritudo ejus
tergredi] iniquitatem. Fremit sicut leo ira regis, & sicut ros
herbam voluntas ejus. Filius stultus gravis est patri suo sicut acu
sicut stillicidium quod distillat, litigia mulieris. Domus & substan
hæreditas [*sunt*] à parentibus, & à Deo traditur mulier viro. Pi
mittit somnum, & anima dolosa esuriet. Qui custodit mandatum,
dit animam suam : & qui spernit viam suam, morietur. Qui quæ
modare Deo, miseretur pauperis, & *retributionem bonam reddit ei.* E
filium tuum, quoniam est spes: & ad mortem ejus ne attollas animam
Vir iracundus suscipit pœnam, & quando exaltatur, super onus
addit. Audi consilium & suscipe disciplinam, ut sapiens sis in no
Multæ cogitationes in corde *viri:* consilium autem Dei ipsum perma
Desiderium filii hominis misericordia ejus , & melior est pauper
vir mendax. Timor Dei est ad vitam ; & qui satiatur ab eo, pernoc
nec visitabitur à malo. Piger abscondit manum suam sub ascella
neque ad os suum applicat eam. Percute derisorem, & insipiens a
fiet . & corripe prudentem, ut intelligat scientiam. Qui deridet pa
suum & fugat matrem suam, filius est ignominiosus & confusione
Cresce fili mi & audi disciplinam, & non erres à verbis oris mei.
iniquus deridet judicium, & os impiorum profert iniquitatem. Pa
derisoribus judicia ; & verbera corporibus *stultorum*.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܣܗܕܐ ܕܓܠܐ ܠܐ ܢܙܕܟܐ. ܘܕܡܡܠܠ ܕܓܠܘܬܐ ܠܐ ܢܬܦܨܐ. * ܣܓܝܐܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܩܕܡ 5 6
ܪܒܐ. ܘܠܒܝܫܐ ܝܗܒ ܡܘܗܒܬܐ. * ܟܠܗܘܢ ܐܚܘܗܝ ܕܡܣܟܢܐ ܣܢܝܢ ܠܗ. ܘܐܦ 7
ܪܚܡܘܗܝ ܡܬܪܚܩܝܢ ܡܢܗ. * ܐܝܢܐ ܕܪܕܦ ܒܡܠܘܗܝ ܠܐ ܫܪܝܪ. ܘܕܩܢܐ ܚܟܡܬܐ ܪܚܡ 8
ܢܦܫܗ. * ܕܢܛܪ ܗܝܡܢܘܬܐ ܡܫܟܚ ܛܒܬܐ. ܘܣܗܕܐ ܕܓܠܐ ܠܐ ܢܙܕܟܐ. ܘܕܡܡܠܠ 9
ܕܓܠܐ ܢܐܒܕ. * ܠܐ ܝܐܝܐ ܠܣܟܠܐ ܦܘܢܩܐ. ܘܐܦܠܐ ܠܥܒܕܐ ܕܢܫܬܠܛ ܒܪܘܪܒܢܐ. * ܡܣܟܠܢܘܬܗ 10
ܕܓܒܪܐ ܢܓܝܪܘܬ ܪܘܚܗ ܗܝ. ܘܫܘܒܚܗ ܡܥܒܪ ܥܘܠܐ. * ܢܗܡ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܪܘܓܙܗ 11
ܕܡܠܟܐ. ܘܐܝܟ ܛܠܐ ܥܠ ܥܣܒܐ ܪܥܝܘܬܗ. * ܨܥܪܐ ܗܘ ܠܐܒܐ ܒܪܐ ܣܟܠܐ. ܘܐܝܟ ܕܠܦܐ 12
ܕܢܛܦ ܒܒܝܬܐ ܬܟܫܐ ܕܐܢܬܬܐ. * ܒܝܬܐ ܘܩܢܝܢܐ ܝܘܪܬܢܐ ܕܐܒܐ. ܡܢ ܡܪܝܐ ܕܝܢ ܡܬܡܟܪܐ 13
ܐܢܬܬܐ ܠܓܒܪܐ. * ܫܢܬܐ ܡܘܠܕܐ ܢܘܡܐ. ܘܢܦܫܐ ܪܡܬܐ ܬܟܦܢ. * ܕܢܛܪ ܦܘܩܕܢܐ ܢܛܪ 14
ܢܦܫܗ. ܘܕܒܣܐ ܐܘܪܚܬܗ ܢܬܩܛܠ. * ܕܡܬܢܩܦ ܠܡܪܝܐ ܡܪܚܡ ܥܠ ܡܣܟܢܐ. 15
ܘܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ ܦܘܪܥܢܐ ܢܣܒ. * ܪܕܝ ܒܪܟ ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܣܒܪܐ. ܘܠܨܥܪܗ ܠܐ ܬܪܡܐ ܢܦܫܟ. 16
* ܓܒܪܐ ܚܡܬܢܐ ܢܩܒܠ ܚܘܣܪܢܐ. ܘܟܡܐ ܕܡܣܟܠ ܡܘܣܦ ܡܘܒܠܗ. * ܫܡܥ ܡܠܟܐ 17
ܘܩܒܠ ܡܪܕܘܬܐ ܕܬܚܟܡ ܒܐܘܪܚܬܟ. * ܣܓܝܐܢ ܡܚܫܒܬܐ ܒܠܒܗ ܕܓܒܪܐ. ܡܠܟܗ ܕܝܢ 18
ܕܡܪܝܐ ܩܝܡܐ. * ܪܓܬܗ ܕܒܪܢܫܐ ܛܝܒܘܬܗ. ܘܛܒ ܗܘ ܡܣܟܢܐ ܡܢ ܓܒܪܐ ܥܬܝܪܐ ܕܓܠܐ. 19 20
* ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܚܝܐ. ܘܕܣܒܥ ܡܢܗ ܢܒܘܬ. ܘܠܐ ܢܬܦܩܕ ܒܒܝܫܬܐ. * ܥܛܠܐ ܕܛܫܐ 21 22
ܐܝܕܘܗܝ ܒܥܘܒܗ. ܐܦܠܐ ܠܦܘܡܗ ܢܩܪܒ ܐܢܝܢ. * ܟܕ ܡܬܢܓܕ ܒܝܫܐ. ܚܟܝܡܐ ܡܬܥܪܐ. 23 24
ܘܐܢ ܬܟܣ ܠܚܟܝܡܐ ܡܣܬܟܠ ܝܕܥܬܐ. * ܕܡܨܥܪ ܠܐܒܘܗܝ ܘܡܥܝܩ ܠܐܡܗ. ܒܪܐ ܗܘ ܡܒܗܬܢܐ 25 26
ܘܡܚܣܕܢܐ. * ܦܘܫ ܒܪܝ. ܘܫܡܥ ܡܪܕܘܬܐ. ܘܠܐ ܬܛܥܐ ܡܠܐ ܕܝܕܥܬܐ. * ܣܗܕܐ ܥܘܠܐ ܢܩܫ 27 28
ܕܝܢܐ. ܘܦܘܡܗ ܕܥܘܠܐ ܡܬܛܒܥ ܒܗ. * ܡܛܝܒܝܢ ܟܐܒܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܚܡܨܝܢ ܕܝܢܐ. ܘܡܚܘܬܐ ܠܥܡܐ ܣܟܠܐ. 29

Teſtis mendax non erit impunis: & qui loquitur mendaciũ, non evadet. 5 Multi ſunt qui miniſtrant apud principem, et flagitioſis largitur munera. 6 Omnes fratres pauperis oderũt illũ: quin etiam amici ejus recedunt ab ipſo. 7 Qui detrectat verbis ſuis, non eſt verax: & qui poſſidet ſapientiã, diligit animã ſuã. 8 Qui ſervat fidẽ inveniet bonũ: et teſtis falſus non impunè feret: et qui loquitur falſum, peribit. 9 Non convenit ſtulto voluptas, neque ſervo dominari magnatib⁹. 10 Prudentia viri, longanimitas ejus eſt: et gloria ej⁹ amovet iniquitatẽ. 11 Fremit ceu leo ira regis: et ut ros ſuper herbã, benevolentia ej⁹. 12 Ignominia eſt patri fili⁹ ſtult⁹: et ut pluvia in domũ ſtillans, angor mulieris. 13 Dom⁹ & opes hæreditas ſunt paterna: à Dño autẽ maritatur uxor viro. 14 Dormitatio parit ſomnũ: & anim⁹ elatus fame laborabit. 15 Qui ſervat præceptũ, cavet animæ ſuæ, qui autẽ negligit vias ſuas, occidetur. 16 Qui Dño adhæret, miſeretur pauperũ, & ſecundùm opera ſua præmiũ accipiet. 17 Erudi filiũ tuũ, quoniã adhuc ſpes eſt: et ignominiæ ej⁹ ne proſternas animã tuã. 18 Homo iracundus damna percipiet: & quò magis delinquit, ſarcinã ſuã auget. 19 Audi conſiliũ, & complectere caſtigationẽ, ut ſapias in viis tuis. 20 Plurimæ ſunt cogitationes in corde viri: at conſiliũ Dñi firmũ erit. 21 Deſideriũ hominis, beneficiũ ſuũ. Melior eſt pauper homine diviti fallaci. 22 Timor Dñi, ad vitã: & quicunq; ſatiabitur illo, pernoctabit, & non viſitabit malũ. 23 Piger qui abſcondit man⁹ ſuas in ſinu ſuo, neq; ad os quidẽ ſuũ admovebit eas. 24 Dum flagellatur facinoroſus, ſapiens cautus evadit; & ſapientẽ ſi corripias, intelligit ſcientiã. 25 Qui deſpicit patrem ſuũ, & affligit matrem ſuã, filius eſt ignominiã ac dedecus afferens. 26 Cunctare fili mi, & audi diſciplinã, & ne oblieviſcaris ſermonẽ ſcientiæ. 27 Teſtis iniquus robur addit liti: & ore ſuo ſceleſtus immergetur. 28 Parati ſunt dolores his qui fovent litem, & plaga populo ſtulto. 29

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الشاهد الكذوب لن يكون غير معاقب ومن يستعدي وهو ظالم فما ينفلت * كثيرون 5 6
يخدمون وجوه الملوك وكل ردي يصير للانسان عارا * كل من يبغض اخا مسكينا فذاك بعيد 7
من الصداقة * الذكر الصالح يصادف الذين يعرفوها والرجل الحازم العقل يصادفها
* من يعمل خطايا كثيرة يتمم عمل الرذيلة ومن يعاجل الاقوال لن يسلم * المقتني فطنة 8
يحب ذاته ومن يحفظها بتفطن يجد الخيرات * الشاهد الكذوب لن يكون غير معاقب ومن 9
يضرم شرا سيهلكه * التنعم لن يوافق الجاهل وان كان عبدا فسيبتدئ يتجبر بتعاظم * الانسان 10
الرحوم يمهل وفخره سيوافي لدى العادلين عن الشريعة * وعيد الملك يضاهي زئير 11
الاسد وكالندى على العشب كذلك طلاقته * الابن الجاهل خزيا لابيه ونذورا من اجرة زانية 12 13
ليست طاهرة * الاباء يقسمون لابنائهم منازلهم ونعمهم ومن قبل الرب تقرن الامراة بالرجل 14
* الجبانة تمسك البطال المسترخي ونفس من لا يعمل شيا تجوع * من يحفظ وصيته يصون 15 16
نفسه ومن يتهاون بطرقه يهلك * من يرحم مسكينا يقرض الله وسيكافيه على قدر عطيته 17
* ادب ابنك فان رجاه هكذا يكون حسنا ولا ترفع نفسك بالتعظم * الرجل الردي التمييز 18 19
سيخسر اشياء كثيرة فان شيت فانه يضيف اليها نفسه * اسمع يا بني ادب ابيك لتصير في 20
اواخرك حكيما * افكارا كثيرة في قلب الانسان وراي الرب يبقى الى الابد * الصدقة ثمر 21 22
الانسان مسكين مقسط افضل من موسر كذوب * خشية الرب في الانسان حياة ومن لا تقوى 23
فيه سيسكن في مواضع لا يسايرها معرفة * من يخبي يديه في حضنه ظالم فما يقدمهما 24
ولا الى فمه * الغبي اذا ادبه الجوع وجلده يكون اوفر دربة وان وبخت رجلا عاقلا سيفيد 25
حسا * من يهين اباه ويدفع امه يستحي ويكون بذلك ملقيا * الابن المتخلي عن حفظ 26 27
ادب ابيه يدرس الفاظا ردية * من يتكفل بعبد جاهل يتضمن الواجب * فم المنافقين 28 29
يبلع الانصاف والسياط معدة للفساق وكذلك العقوبات مسومة للجهال

Teſtis mendax non erit impunitus: & qui aggreſſor eſt & impius, non evadet. 5 *Multi ſerviunt vultibus regum: & omnis nequitia fiet homini ignominia.* 6 *Quicunque odit fratrem pauperem, is eſt remotus à charitate. Fama bona occurrit iis qui illam nôrunt: & vir firmus judicio reperiet illam.* 7 *Qui perpetrat ſcelera multa, complet opus abominationis: & qui præcipitat ſermones, non ſalvabitur. Poſſidens prudentiam, diligit ſemetipſum: & qui eam ſervat cautè, inveniet bona.* 8 *Teſtis mendoſus non erit impunitus: & qui accendit malum, perdetur ab eo.* 9 *Delitiæ non conveniunt ſtulto: & ſi fuerit ſervus, incipiet ſe reficere cum arrogantia.* 10 *Homo clemens, longanimis eſt: & gloria ejus deveniet uſque ad declinantes à lege.* 11 *Minæ regis ſimiles ſunt rugitui leonis: & velut ros ſuper herbam, ſic ſerenitas illius.* 12 *Filius ſtultus pudori eſt patri ſuo: & vota ex mercede fornicariæ, non ſunt pura.* 13 *Patres dividunt filiis ſuis domum ſuam & opes ſuas: & à Domino jungitur mulier cum viro.* 14 *Timiditas detinet otioſum & ignavum: & anima ejus qui non operatur quidquam, eſuriet.* 15 *Qui ſervat mandatum, cuſtodit animam ſuam: & qui negligit vias ſuas, interibit.* 16 *Qui miſeretur pauperis, commodat Deo: & retribuet ei juxta datum ejus.* 17 *Erudi filium tuum, quoniam ſpes illius hoc pacto erit bona: & ne extollatur anima tua cum ſuperbia.* 18 *Homo malè circumſpectus amittet res multas: ſi volueris, apponet illis etiam animam ſuam.* 19 *Audi O fili mi, diſciplinam patris tui, ut evadas in noviſſimis tuis ſapiens.* 20 *Cogitationes multæ in corde hominis: & conſilium Domini manet in æternum.* 21 *Eleemoſyna, fructus hominis. Pauper juſtus præſtantior eſt divite mendaci.* 22 *Timor Domini in homine, vita: & is quo non eſt religio, habitabit in locis ad quæ non accedit ſcientia.* 23 *Qui condit manus ſuas in ſinu ſuo, perverſus eſt, & non approximabit illas ne quidem ad os ſuum.* 24 *Stultus, cùm fame correptus ac flagellatus fuerit, evadet ſagacior. Si corripias virum prudentem, acquiret ſenſum.* 25 *Qui deſpicit patrem ſuum, & abjicit matrem ſuam, confundetur, & erit propter hoc abjectus.* 26 *Filius poſtponens cuſtodiam diſciplinæ patris ſui, ſtudet eloquiis pravis.* 27 *Qui ſpondet pro ſervo ſtulto, obligat ſe debito.* 28 *Os iniquorum deglutit juſtitiam: & lora ſunt parata flagitioſis: & ſimiliter tormenta ſunt indubitata inſipientibus.* 29

משלי : כ

CAP. XX. כ

.erit sapiens non ,eo in *errans* omnis & : sechar *tumultuans* , vinum *Derisor*
1 לץ היין המה שכר וכל־שגה בו לא יחכם :
.suam animam *peccans ei succensens* :regis terror leunculi tanquam Rugitus
2 נהם ככפיר אימת מלך מתעברו חוטא נפשו :
hiemē Propter .se miscebit stultus omnis &:lite à *considere* viro Gloria
3 כבוד לאיש שבת מריב וכל־אויל יתגלע : מחרף
4 consilium *profundæ Aquæ* .non & ,*messe in postulabit* : arabit non piger
5 עצל לא־יחרש ישאל בקציר ואין : מים עמקים עצה
vocabit hominis *Multitudo* .illud hauriet *intelligentiæ vir* & : viri corde in
6 בלב־איש ואיש תבונה ידלנה : רב־אדם יקרא
sua *integritate* in *Ambulās*?inveniet quis *veritatum* virū &:*suæ misericordiæ virū*
7 איש חסדו ואיש אמונים מי ימצא : מתהלך בתמו
dispergens;judicii soliū super *sedens* Rex .eum post ejus filii beati ; *justus*
8 צדיק אשרי בניו אחריו : מלך יושב על־כסא־דין מזרה
sum mundus?meum cor Mundavi , *dicet* Quis .malum omne suis oculis in
9 בעיניו כל־רע : מי־יאמר זכיתי לבי טהרתי
etiam Domini abominatio ; *ephah & ephah* ,*lapis & Lapis* ? meo peccato à
10 מחטאתי : אבן ואבן איפה ואיפה תועבת יהוה גם־
utrùm &,mundū utrùm;puer cognoscetur suis *studiis* in Etiam .*ipsa* ambo
11 שניהם : גם במעלליו יתנכר־נער אם־זך ואם־
etiam fecit Dominus;videntē oculum &,audientē Aurem .ejus opus rectū
12 ישר פעלו : אזן שמעת ועין ראה יהוה עשה גם־
,tuos oculos aperi:efficiaris paup forte ne,somnū diligas Ne .*ipsa ambo*
13 שניהם : אל־תאהב שנה פן־תורש פקח עיניך
tunc *sibi abiens* & : emptor dicet ,malum,Malum .pane teipsum satura
14 שבע־לחם : רע רע יאמר הקונה ואזל לו אז
labia preciosum vas &:margaritarū multitudo & ,aurū Est .se jactabit
15 יתהלל : יש זהב ורב־פנינים וכלי יקר שפתי־
pro & : extraneo fidejussit quia , ejus vestimentum Tolle .scientiæ
16 דעת : לקח־בגדו כי־ערב זר ובעד
postea & : *falsitatis* panis viro est Suavis .illud tolle pignus in extraneis
17 נכרים חבלהו : ערב לאיש לחם שקר ואחר
industriis in & firmabitur consilio in Cogitationes.calculo ejus os implebitur
18 ימלא־פיהו חצץ : מחשבות בעצה תכון ובתחבלות
pellicienti & : *delator videns* ,secretum *Revelans* .bellum fac
19 עשה מלחמה : גולה־סוד הולך רכיל ולפתה
,suam matrem &,suum patrem Maledicentis .te miscebis non *suis labiis*
20 שפתיו לא תתערב : מקלל אביו ואמו
festinans Hæreditas .*tenebrositatis nigrore* in *ejus* lucerna extinguetur
21 ידעך נרו באישון חשך : נחלה מבהלת
Reddam , dicas Ne .*benedicetur* non ejus *novissimum* & : principio in
22 בראשונה ואחריתה לא תברך : אל־תאמר אשלמה־
Domini Abominatio .te faciet salvum & , Dominum expecta : malum
23 רע קוה ליהוה וישע לך : תועבת יהוה
: viri gressus Domino A .*bonum non doli bilances & : lapis & lapis*
24 אבן ואבן ומאזני מרמה לא־טוב : מיהוה מצעדי־גבר
devorabit hominis Laqueus ? suam viam intelliget quomodo homo &
25 ואדם מה־יבין דרכו : מוקש אדם ילע
rex impios *Spargens* .inquirere vota post & : *sanctitatem*
26 קדש ואחר נדרים לבקר : מזרה רשעים מלך
mens Domini Lucerna .rotam eos super faciet redire & : sapiens
27 חכם וישב עליהם אופן : נר יהוה נשמת
veritas & Misericordia .ventris *penetralia* omnia *investigans* ;hominis
28 אדם חפש כל־חדרי־בטן : חסד ואמת
Gloria .suum solium misericordia *in* fulcit & : regem custodient
29 יצרו־מלך וסעד בחסד כסאו : תפארת
.canicies , senum decor & ; eorum fortitudo juvenum
בחורים כחם והדר זקנים שיבה :

Versio VULG. LAT.

CAP. XX.

1 LUxuriosa res, vinum, & tumultuosa ebrietas : quicunque his delectatur, non erit sapi-
2 ens. Sicut rugitus leonis, ita & terror regis : qui provocat eum, peccat in animam suam.
3 Honor est homini, qui separat à contentionibus : omnes autem stulti miscentur contume-
4 liis. Propter frigus piger arare noluit : mendicabit ergò
5 æstate,& non dabitur illi. Sicut aqua profunda,sic consilium in corde viri:sed homo sapiēs
6 exhauriet illud.Multi homines misericordes vocantur:virum autem fidelem quis inveniet?
7 Justus, qui ambulat in simplicitate sua, beatos post se filios
8 derelinquet. Rex, qui sedet in solio judicii,dissipat omne ma-
9 lum intuitu suo. Quis potest dicere,Mundum est cor meum,
10 purus sum à peccato? Pondus & pondus, mensura & mensura : utrumque abominabile
11 est apud Deum. Ex studiis suis intelligitur puer, si munda &
12 recta sint opera ejus. Aurē audientem,& oculum videntem,
13 Dominus fecit utrumque. Noli diligere somnum, ne te egestas opprimat : aperi oculos
14 tuos, & saturare panibus. Malum est,malum est, dicit omnis emptor : & cùm recesserit,
15 tunc gloriabitur. Est aurum, & multitudo gemmarum : & vas pretiosum labia scientiæ.
16 Tolle vestimentum ejus,qui fidejussor extitit alieni, & pro extraneis aufert pignus ab eo.
17 Suavis est homini panis mendacii : & posteà implebitur os
18 ejus calculo.Cogitationes consiliis roborantur : & guberna-
19 culis tractanda sunt bella. Ei, qui revelat mysteria, & ambulat fraudulenter, & dilatat la-
20 bia sua,ne commiscearis. Qui maledicit patri suo, & matri, extinguetur lucerna ejus in me-
21 diis tenebris. Hæreditas, ad quam festinatur in principio, in novissimo benedictione ca-
22 rebit. Ne dicas; Reddam malum : exspecta Dñm,& libera-
23 bit te. Abominatio est apud Dominum pondus & pondus:
24 statera dolosa non est bona. A Domino diriguntur gressus viri: quis autem hominum intelligere
25 potest viam suam? Ruina est homini devorare Sanctos,& post vota retractare. Dissipat impios
26 rex sapiens, & incurvat super eos fornicem. Lucerna Domini spiraculum hominis, quæ investi-
27 gat omnia secreta ventris. Misericordia & veritas custodiunt regem, & roboratur clementiâ
28 thronus ejus. Exultatio juvenum, fortitudo eorum : & dignitas senum, canities.
29

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cùm Translatione LATINA.

ΚΕΦ. κ'.

1 † ἈΚόλαστον οἶνος, καὶ ὑβριστικὸν μέθη,
(α) † πᾶς δὲ ἄφρων τοιούτοις συμπλέκεται.
2 † Οὐ διαφέρει ἀπειλὴ βασιλέως θυμοῦ λέοντος, ὁ δὲ παροξύνων (˙˙) αὐτὸν ἁμαρτάνει εἰς τὴν
3 ἑαυτοῦ ψυχήν. † Δόξα ἀνδρὶ ἀποστρέφεσθαι
λοιδορίας, † πᾶς δὲ ἄφρων τοιούτοις συμπλέ-
4 κεται. † Ὀνειδιζόμενος ὀκνηρὸς οὐκ αἰσχύνεται, ὡσαύτως καὶ ὁ δανειζόμενος σῖτον ἐν ἀ-
5 μητῷ. † Ὕδωρ βαθὺ βουλὴ ἐν καρδίᾳ ἀνδρός, † ἀνὴρ δὲ φρόνιμος ἐξαντλήσει αὐτήν.
6 † Μέγα ἄνθρωπος, καὶ τίμιον ἀνὴρ ἐλεήμων,
7 † ἄνδρα δὲ πιστὸν ἔργον εὑρεῖν. † Ὃς ἀναστρέφεται ἄμωμος ἐν δικαιοσύνῃ, μακαρίους
8 τοὺς παῖδας αὐτοῦ καταλείψει. † (β) Ὅταν βασιλεὺς δίκαιος καθίσῃ ἐπὶ θρόνου, † οὐκ
ἐναντιοῦται ἐν ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ πᾶν πονηρόν.
9 † Τίς καυχήσεται ἁγνὴν ἔχειν τὴν καρδίαν;
† ἢ τίς παρρησιάσεται καθαρὸς εἶναι ἀπὸ ἁ-
20 μαρτιῶν; † Κακολογοῦντος πατέρα ἢ μητέρα, σβεσθήσεται λαμπτήρ, † αἱ δὲ κόραι τῶν
21 ὀφθαλμῶν αὐτοῦ ὄψονται σκότος. † Μερὶς ἐπισπουδαζομένη ἐν πρώτοις, † ἐν τοῖς τε-
22 λευταίοις οὐκ εὐλογηθήσεται. † Μὴ εἴπῃς, Τίσομαι τὸν ἐχθρόν, † (˙˙) ἀλλ' ὑπόμεινον τὸν κύ-
10 ριον ἵνα σοι βοηθήσῃ. † Στάθμιον μέγα καὶ μικρόν, καὶ μέτρα δισσά, ἀκάθαρτα ἐνώπιον κυρίου καὶ ἀμφότερα, † καὶ ὁ ποιῶν αὐτά.
11 Ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτοῦ συμποδισθήσεται † νεανίσκος μετὰ ὁσίου, καὶ εὐθεῖα
12 ἡ ὁδὸς αὐτοῦ. † Οὖς ἀκούει, καὶ ὀφθαλμὸς
13 ὁρᾷ, † κυρίου ἔργα καὶ ἀμφότερα. † Μὴ ἀγάπα καταλαλεῖν, ἵνα μὴ ἐξαρθῇς, † (γ) διάνοιξον τοὺς ὀφθαλμούς σου, καὶ ἐμπλήσθητι
23 ἄρτων. † Βδέλυγμα κυρίῳ δισσὸν στάθμιον, † καὶ ζυγὸς δόλιος οὐ καλὸν ἐνώπιον αὐ-
24 τοῦ. † Παρὰ κυρίου εὐθύνεται (δ) τὰ διαβήματα ἀνδρί, † θνητὸς δὲ πῶς ἂν νοή-
25 σαι τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ; † Παγὶς ἀνδρὶ ταχύ τι τῶν ἰδίων ἁγιάσαι, † μετὰ γὰρ τὸ εὔξα-
26 σθαι μετανοεῖν γίνεται. † Λικμήτωρ ἀσεβῶν βασιλεὺς σοφός, † καὶ ἐπιβαλεῖ αὐτοῖς
27 τροχόν. † Φῶς κυρίου πνοὴ ἀνθρώπων, † (ε)
28 ὃς ἐρευνᾷ ταμιεῖα κοιλίας. † Ἐλεημοσύνη καὶ ἀλήθεια φυλακὴ βασιλεῖ, † καὶ περικυκλώσουσιν ἐν δικαιοσύνῃ τὸν θρόνον αὐτοῦ.
29 † Κόσμος νεανίαις σοφία, † δόξα δὲ πρεσβυτέρων πολιαί.

CAP. XX.

PRodigum (a) est vinum, &
contumeliosa ebrietas : (b) omnis
autem imprudens talibus complicatur. Non differt comminatio re-
gis à (c) furore leonis : qui autem
(d) irritat eum, peccat in suam
ipsius animam. Gloria viro (e)
aversari contumeliam : omnis autem imprudens (f) talibus complicatur. (g) Exprobratus piger non
confunditur : similiter & qui fœ-
nore accipit frumentum in messe.
Aqua profunda consilium in corde
viri : vir autem prudens exhauriet illud. (h) Magnum homo, &
pretiosum vir misericors : hominem autem (i) fidelem opus est invenire. Qui conversatur sine re-
prehensione in justitia ; beatos (k)
filios suos relinquet. Cùm rex justus
sederit super thronum ; (l) non adversatur in oculis ejus omne malum. Quis gloriatur castum se
habere cor? aut quis (m) gloriabitur mundum se esse à peccatis? (n)
Maledicentis patrem aut matrem,
extinguetur fax : pupillæ autem
oculorum ejus (o) videbunt tenebras. (p) Pars festinata in primis,
in novissimis non benedicetur. Ne
dixeris, (q) Ulciscar inimicum :
sed sustine Dominum, ut tibi au-
xilio sit. Pondus magnum, & pu-
sillum, & mensuræ duplices, im-
munda sunt apud Dominum (r),
& utraque, & qui facit ea. In
adinventionibus suis compedietur
adolescens : cum sancto, & recta
via ejus. Auris audit, & oculus
videt : Domini opera & utraque.
Noli diligere (s) detrahere : ne ex-
tollaris. (t) Aperi oculos tuos, &
implere panibus. Abominatio Do-
mino duplex pondus : & statera
dolosa non bonum coram eo. A
Domino diriguntur gressus viri :
mortalis autem quomodò cogitaverit vias suas? (u) Laqueus vi-
ro citò quid ex propriis sanctifica-
re : posteà enim, quàm voverit,
evenerit pœnitere. Ventilator im-
piorum rex sapiens : & immittet
illis (x) rotam. (y) Lux Domini
(z) spiraculum hominum, qui scru-
tatur secreta ventris. Misericor-
dia, & veritas, (ω) tutela regi,
& circuibunt in justitia solium
ejus. Ornatus adolescentibus
sapientia : (bb) gloria autem seniorum (cc) canities.

MS.A. (α) † πᾶς δὲ ὁ συμμιγνύμενος οὐκ ἔσται σοφός, πᾶς δὲ ἄφρων
ἑαυτόν (β) Ὅταν καθίσῃ βασιλεὺς δίκαιος ἐπὶ ( ) ἀλλὰ (γ) διάνοιξ
δὲ τοὺς (δ) διαβήματα (ε) ἡ λύχνος ὃς

תרגום TARGUM.

כ

1 ממקנא הוא חמרא ורויתא שכרא וכל דשגי ביה לא נתחכם : נהם היך אריא אימתא
2 3 דמלכא ומן דמחמית ליה חטי על נפשיה : יקרא הוא לגברא דיתיב דלא דינא וכל דשטי
4 5 מצטדי : מתחסד עטלא לא שתיק ושאל בחצדא ולית : מיא עמיקי עצתא בלבא
6 דגברא וגברא דמתבין נדלנה : סוגעא דבני נשא מתקרין גברי מרחמני וגברא מהימנא
7 8 מנו משכח : דמהלך בתמימותיה צדיקא הוא וטוביהון לבנוהי בתרוהי : מלכא דיתב
9 על כורסיא דדינא מפור מן קדמוהי כלהון בישתא : מן דיימר זכי הוא לבי ואדכיית
10 11 מחובתי : מתקלא ומתקלא כילא וכילא מרחקין אנון קדם אלהא אף תרויהון : אוף
12 בעובדוהי מתידע טליא אין דכי ואין תריצן עובדוהי : אדנא דשמעא ועינא דחזיא אלהא
13 14 אברי תרויהון : לא תרחם שנתא דלמא תתמסכן פתח עינך ושבע לחמא : חברא
15 לחבריה נאמר דקנירת והידין נשתבח ונימר : דאית דהבא וסוגעא דכיפי טבתא ומני
16 דיקרא ושפותא דידיעתא : נסב לבושיה מטול דעריב לחילוני ועל אפי נוכריתא
17 18 משכניה : עריב לגברא בלחמא דגלא ובתר הידין נתמלא פומיה חצצא : מחשבתא
19 בעצתא תתקן ובמדברנותא מתעבד קרבא : דגלי רזא אכל קורצא ולמן דמשרגג
20 21 בשפותיה לא תתחלט : דליט לאבוי ולאמיה נדעך שרגיה איך אתונא דחשוכא : ירותתא
22 דמסרהבא בקדמיתא ובסופא לא תתבריך : לא תימר אשלם בישתא סכא לאלהך
23 ויפרקנך : מרחקין אנון קדם אלהא מתקלא ומתקלא ומשחתא דרמיותא לא שפיר
24 25 קדמוי : מן קדם יי הלכתיה דגברא ובר נשא לא מתבין ארחתיה : פחא הוא לגברא
26 דנדר לקודשא ובתר הכי חדיא ליה נפשיה : מבדר לרשיעי מלכא חכימא ומהפך
27 28 עליהון גלגלא : שרגא דאלהא נשמתא דבני נשא ובציא כלהון גויא דכריסא : חסדא
29 וקושטא ינטרו למלכא ומתקן כורסיה בחסדא : שבהורא דעולימיא חוקפהון ושבחא דסבי סיבתא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. XX.

DErisoria res est vinum, & inebriat sicera : & omnis qui erra
in ea, non erit sapiens. Rugit sicut leo terror regis : & qui provocat
peccat in animam suam. Gloria est viro qui supersedet à contentio
& omnis qui stultus est, deridet. *Probrum* sustinet piger, & non ta
& petet in messe, & non habebit. Aquæ profundæ consilium in co
viri, & vir intelligens exhauriet illud. Multi filii hominis vocantur
misericordes: virum autem fidelem quis inveniet? Qui ambulat in
plicitate sua, justus est, & beati erunt filii ejus post eum. Rex qui
in solio judicii, dissipat à facie sua omnes impios. Quis dicet: Mun
est cor meum, & purus sum à peccato meo? Pondus & pondus, men
& mensura, abominabile est utrúnque coram Deo. Etiam in oper
suis cognoscitur puer, an munda & recta sint opera ejus. Auris quæ au
& oculus qui videt, Deus creavit utrúnque. Ne diligas somnum, ne
pauper fias: aperi oculos tuos, & saturare pane. Socius ad socium
quòd emit, & tunc gloriatur, & dicit. Est aurum & multitudo gem
rum bonarum, & vasa preciosa & labia scientiæ. Tolle vestimen
ejus qui fidejussor stetit pro alieno, & pro extranea pignora eum. Sua
vis est homini panis mendax, & posteà replebitur os ejus calculo. Co
tationes consilio diriguntur, & gubernaculo fit bellum. Qui revelat
cretum, delator est : & ei qui allicit labiis suis ne commiscearis.
maledicit patri suo & matri suæ, extinguetur lucerna ejus sicut caligo te
brarum. Hæreditas ad quam festinatur in principio, in fine non be
dicetur. Ne dicas, Reddam malum : spera in Deo, & salvabit te. Abo
minabile est coram Deo pondus & pondus : & mensura dolosa non p
coram eo. A facie Domini gressus viri, & filius hominis non int
vias suas. Laqueus est homini qui devovit sanctuario, & posteà
bi anima ipsius. Dispergit impios rex sapiens, & volvit super eos ro
Lucerna Dei spiraculum filiorum hominis : & scrutatur omnia in
ventris. Misericordia & veritas custodient regem, et præparatur
mentia solium ejus. Decus juvenum fortitudo eo
laus senum canicies.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟ * ܚܣܝܢ ܗܘ ܚܡܪܐ. ܘܪܘܝܘܬܐ ܡܨܥܪܢܝܬܐ. ܘܟܠ ܕܡܫܬܪܚ ܒܗ
1 ܠܐ ܗܘܐ ܚܟܝܡ. * ܢܗܡ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܪܘܓܙܗ ܕܡܠܟܐ. ܘܕܡܚܡܬ ܠܗ. ܚܛܐ ܠܢܦܫܗ. 2
3 * ܫܘܒܚܗ ܕܓܒܪܐ. ܡܐ ܕܡܪܚܩ ܚܪܝܢܐ. ܘܟܠ ܕܣܟܠ ܡܓܚܟ. * ܡܬܚܣܕ ܚܒܢܢܐ
4 ܘܠܐ ܫܬܩ. ܘܡܫܐܠ ܒܥܕܢ ܚܨܕܐ. ܘܠܝܬ ܡܝܐ. * ܥܡܝܩܐ ܡܠܬܐ ܒܠܒܗ ܕܡܠܟܐ. ܘܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ 5
ܢܕܠܝܗ. * ܣܓܝܐܐ ܒܢܝܢܫܐ ܡܬܩܪܝܢ ܓܒܪܐ ܡܪܚܡܢܐ. ܓܒܪܐ ܕܝܢ ܡܗܝܡܢܐ ܡܢܘ 6
ܡܫܟܚ. * ܙܕܝܩܐ ܕܡܗܠܟ ܒܬܡܝܡܘܬܐ. ܛܘܒܝܗܘܢ ܠܒܢܘܗܝ ܡܢ ܒܬܪܗ. * ܡܠܟܐ 7
8 ܕܝܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܕܕܝܢܐ. ܡܬܒܕܪܝܢ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܒܝܫܬܐ. * ܡܢ ܢܐܡܪ ܕܙܟܐ 9
ܠܒܝ. ܘܐܬܕܟܝܬ ܡܢ ܚܛܗܝ. * ܡܬܩܠܐ ܘܡܬܩܠܐ. ܘܟܝܠܐ ܘܟܝܠܐ. ܛܢܦܝܢ ܐܢܘܢ 10
ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܬܪܝܗܘܢ. * ܐܦ ܒܥܒܕܘܗܝ ܡܬܝܕܥ ܛܠܝܐ. ܐܢ ܕܟܐ ܗܘ. ܘܐܢ ܬܪܝܨܝܢ ܥܒܕܘܗܝ. 11
* ܐܕܢܐ ܕܫܡܥܐ. ܘܥܝܢܐ ܕܚܙܝܐ. ܡܪܝܐ ܥܒܕ ܐܢܝܢ. * ܠܐ ܬܪܚܡ ܫܢܬܐ. ܕܠܐ ܬܬܡܣܟܢ. ܐܠܐ ܦܬܚ 12 13
ܥܝܢܝܟ ܘܣܒܥ ܠܚܡܐ. * ܢܐܡܪ ܚܒܪܐ ܠܚܒܪܗ ܕܩܢܝܬ. ܘܗܝܕܝܢ ܢܫܬܒܗܪ. * ܘܢܐܡܪ 14
15 ܐܦ ܕܐܝܬ ܕܗܒܐ ܘܣܘܓܐܐ ܕܟܐܦܐ ܛܒܬܐ. ܘܡܐܢܐ ܝܩܝܪܐ. ܘܣܦܘܬܐ ܕܝܕܥܬܐ. * ܫܩܠܘ ܡܪܛܘܛܗ 16
ܡܢ ܕܥܪܒ ܠܢܘܟܪܝܐ. ܘܡܛܠ ܢܘܟܪܝܐ ܫܩܠܘ ܡܫܟܢܗ. * ܥܪܒ ܠܓܒܪܐ ܠܚܡܐ 17
ܕܓܠܐ. ܘܒܬܪܟܢ ܢܬܡܠܐ ܦܘܡܗ ܚܨܨܐ. * ܡܚܫܒܬܐ ܒܡܠܟܐ ܡܬܩܢܐ. ܘܡܢ ܓܪܝܘܬܐ 18
ܡܬܥܒܕ ܩܪܒܐ. * ܕܓܠܐ ܐܪܙܐ. ܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܥܡ ܡܢ ܕܦܩܚܢ ܣܦܘܬܗ. ܠܐ ܬܬܚܠܛ. 19
* ܕܠܐܛ ܠܐܒܘܗܝ ܘܠܐܡܗ. ܢܕܥܟ ܫܪܓܗ. ܐܝܟ ܒܒܬܐ ܚܫܘܟܬܐ. * ܝܪܬܘܬܐ ܕܡܣܬܪܗܒܐ 20 21
ܒܫܘܪܝܗ. ܒܚܪܬܗ ܠܐ ܡܬܒܪܟܐ. * ܠܐ ܬܐܡܪ ܕܐܦܪܘܥ ܒܝܫܬܐ. ܐܠܐ ܣܟܝ ܠܡܪܝܐ ܕܢܦܪܩܟ. 22
* ܛܢܦܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܡܬܩܠܐ ܘܡܬܩܠܐ. ܘܡܣܐܬܐ ܕܢܟܠܐ ܠܐ ܫܦܝܪܢ. * ܡܢ ܡܪܝܐ 23 24
ܡܬܬܩܢܝܢ ܗܠܟܬܗ ܕܓܒܪܐ. ܘܐܝܢܐ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܢܬܩܢ ܐܘܪܚܗ. * ܦܚܐ ܗܘ ܠܒܪܢܫܐ 25
ܕܢܕܪ ܠܡܩܕܫܐ. ܘܡܢ ܒܬܪ ܕܢܕܪ. ܠܡܗܦܟܘ ܢܦܫܗ. * ܡܒܕܪ ܠܪܘܫܥܐ. ܡܠܟܐ 26
ܚܟܝܡܐ ܘܡܗܦܟ ܥܠܝܗܘܢ ܓܝܓܠܐ. * ܫܪܓܗ ܕܡܪܝܐ. ܢܫܡܬܐ ܗܝ ܠܒܢܝܢܫܐ 27
ܘܒܨܝܐ ܠܟܠܗܘܢ ܬܘܢܝ ܟܪܣܐ. * ܛܝܒܘܬܐ ܘܩܘܫܬܐ ܢܛܪܢ ܠܡܠܟܐ. ܘܒܛܝܒܘܬܐ 28
ܡܣܬܡܟ ܟܘܪܣܝܗ. * ܫܘܒܚܐ ܕܥܠܝܡܐ ܚܝܠܗܘܢ. ܘܗܕܪܐ ܕܣܒܐ. ܣܝܒܘܬܐ. 29

CAP. XX.

Potens eſt vinum, et ebrietas infamis: et 1
quicunque luxuriatur in ea, non eſt ſapiens.
Fremit ceu leo ira regis: & quiſquis ad iram 2
provocat eum, peccat in animâ ſuam. Gloria 3
viri eſt cùm amovet contentionem: & qui-
cunq; ſtultus eſt, irridet. Probris afficitur pi- 4
ger, attamen non ſilet: & mendicabit tempo-
re meſſis, nec erunt aquæ. Profundum eſt ver- 5
bum in corde regis: at vir ſapiens exhauriet
illud. Plerique homines vocantur viri miſeri- 6
cordes: virum autem fidelem quis inveniat?
Juſti ambulantis in integritate, fœlices erunt 7
filii poſt ipſum. Rege ſedente ſuper ſolio ju- 8
dicii, diſſipantur à conſpectu ejus univerſa
mala. Quis dicat, Innocens eſt cor meum, & 9
mundatꝰ ſum à peccatis? Pondꝰ & pondus, & 10
menſura ac menſura, abominanda ſunt utraq;
apud Dñm. Etiam puer ex ſuis actionibꝰ de- 11
prehenditur an purus ſit, & num recta ſunt
opera ejus. Aurem quæ audit, & oculum qui 12
videt, Dominus fecit utrumque. Ne diligas 13
ſomnū, ne ad paupertatē redigaris: ſed ape-
ri oculos tuos, ut ſatieris pane. Amicus dicat 14
ſocio ſuo, Poſſedi: ac tunc glorietur. Dicat 15
etiam, Adeſt aurū, & copia lapidum optimo-
rū, & vaſa pretioſa, & labia ſcientiæ. Abſtu- 16
lerunt palliū ab eo qui ſpondet pro alieno, et
propter alienū acceperunt pignus ejus. Fide- 17
juſſor extitit homini pro pane fallaci: et demū
implebitur os ejus calculis. Conſilium cogi- 18
tatione ſtabilitur, et ex provocatione fit præ-
lium. Qui revelat ſecretum, inimicus eſt: et 19
cum eo cujus præpropera ſunt labia, ne com-
miſcearis. Qui maledixerit patri ſuo et matri 20
ſuæ, hujꝰ lucerna extinguetur velut pupilla te-
nebroſa. Hæreditas præcipitata in principio, 21
in fine haud benedicetur. Ne dicas, Rependā 22
malū: ſed expecta Dñm ut liberet te. Abomi- 23
nabilia ſunt apud Dñm pondera diverſa, et
bilances fraudulentæ non ſunt bonæ. A con- 24
ſpectu Dñi firmantur greſſus viri: ecquis enim
eſt homo qui diſponat viam ſuam? Laqueus 25
eſt homini vovere ſanctuario, et poſtquam
voverit retractare ſeſe. Diſſipat impios rex 26
prudens, et vertit ſuper eos rotam. Lucerna 27
Domini halitus eſt hominibus, et ſcrutatur
cuncta penetralia ventris. Beneficentia et 28
veritas cuſtodiunt regem: at beneficentiâ mu-
nitur ſolium ejus. Decus juvenum, robur 29
eorum: et nitor ſeniorum, canities.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* الفصل العشرون * * كل من يلهج بالنبيذ النهم والسكر الفاضح فليس ذلك 1
2 حكيما * وعند الملك لا فرق بينه وبين غضب السبع * فمن يغيظه انما يخطي الى نفسه
3 * شرف الرجل ان يرجع عن الشتيمة * وكل جاهل يتشبك بمثل هذه الاشياء * الكسلان اذا 4
5 عير فما يخجل * وهذه الصورة من يقترض حنطة في الحصاد * الراي في قلب الرجل ماء
6 عميق * والانسان الذكي العقل يستقيه * الانسان الرحوم رجلا عظيما وكريما * والانسان الامين
7 8 يجد عملا * من يتصرف في العدل بلا عيب يخلف اولاده مغبوطين * الملك العدل اذا جلس
9 على كرسيه فلن يتصادد في عينيه كل خبث * من يفتخر ان له قلبا طاهرا * ام من يجاهر
20 بانه نقي من الخطايا * من يسي خطابه لابيه او لامه ينطفي مصباحه * وحدقتا عينيه
21 22 ينظران ظلمة * الحظ الحروص عليه في المبادي ما يحمد امن في الاواخر * لا تقولن اعذب
10 العدو بل اصبر للرب يعينك * معيار صغير وكبير ومكاييل مثناة نجسة قدام الرب كلها
11 12 * ومن يعملها من صنايعه سيعتاق بها * الشاب مع البار طريقه مقومة * الاذن تسمع والعين
13 تبصر فهما وافعالهما كلتاهما اعمال الله * لا تحب ان تغتاب احدا ليلا تقتلع * افتح عينيك
23 24 وتملا من الخيرات * رذالة عند الرب المعيار المثني والميزان الغاش ليس امامه محمودا * من
25 الرب تقوم خطوات الرجل * فالمايت كيف يفهم طرقه * فخ الرجل ان يقدس شيا من الذي
26 له سريعا * لانه بعد ان ينذر ينبغي ان يندم * الملك الحكيم ذاري المنافقين * وسبب لهم
27 28 طردا * نور الرب نسمة الناس او سراج يفتش مخازن الجوف * الصدقة والصدق حفظا للملك
29 ويحوطان في كرسيه بالعدل * الحكمة زينة للشباب * والشيب شرف الشيوخ *

CAP. XX.

Quicunque indulget vino immoderato, 1
& ebrietati inhoneſtæ, is non eſt ſapiens.
Minæ regis non diſcrepant à furore leo- 2
nis: & qui irritat eum, ſanè peccat in
animam ſuam. Præſtantia viri eſt ut 3
retrahat ſe à contumeliis: & omnis ſtul-
tus irretitur ſimilibus hiſce rebus. Igna- 4
vus, cùm vituperatur, non erubeſcit: &
hujuſcemodi eſt qui mutuatur frumentum
in meſſe. Cogitatio in corde hominis, a- 5
qua profunda: & homo acuti ingenii ex-
hauriet illam. Homo miſericors, vir 6
magnus & honeſtus: & homo fidelis in-
veniet occupationem. Qui ſe gerit cum 7
juſtitia inculpatè, relinquet filios ſuos fe-
lices. Rex juſtus, cùm ſederit ſuper 8
throno ſuo, non opponetur oculis ejus o-
mne malum. Quis glorietur ſe habere 9
cor mundum? aut quis publicet ſe eſſe pu-
rum à peccatis?

Verſ. 10. 11. 12. & 13. habentur
poſt verſ. 22. Reliqui deſiderantur.

Qui iniquè ſe gerit cum patre ſuo aut 20
matre ſuâ, extinguetur lucerna ejus: &
pupillæ oculorum ejus videbunt tenebras.
Sors avidè expetita in principiis, non lau- 21
dabitur negotium ejus in extremis. Ne 22
dicas, Cruciabo inimicum: ſed expecta
Dominum, auxiliabitur tibi. Pondus par- 10
vum & magnum, & menſuræ duplices,
abominabiles ſunt coram Domino omnes:
Et qui talia exercuerit in arte ſua, impe- 11
dietur in illis. Adoleſcentis via cum ju-
ſto, recta eſt. Auris audit, & oculus vi- 12
det ad intelligendum: & actiones utri-
uſque, opera Dei. Ne ames decipere 13
quemquam, ne eradiceris: aperi oculos tuos,
ut impleâris bonis. Abominatio eſt apud 23
Dominum menſura duplex: & ante ſtate-
ram fallacem non eſt laus. A Domino 24
diriguntur greſſus hominis: mortalis verò
quomodo intelliget vias ſuas? Gloria 25
viri eſt ut ſanctificet aliquid ex his quæ
habet, citò: quoniam poſteaquam voverit,
incipiet pœnitere. Rex ſapiens, diſſipa- 26
tor eſt iniquorum, & cauſat iis exilium.
Lumen Domini halitus eſt hominum, aut 27
lucerna inveſtigans cellas ventris. Elee- 28
moſyna & veritas, cuſtodia regis: & fir-
mant ſolium ejus in æquitate. Sapientia, 29
ornatus juvenum: & canities [illegible]
[illegible]

משלי : כא

.ventris interioribus plagæ & : malo in *detersio* vulneris Livores
30 חַבֻּרוֹת פֶּצַע תַּמְרִיק בְּרָע וּמַכּוֹת חַדְרֵי־בָטֶן׃

CAP. XXI. כא

quod omne *super* : Domini manu in regis cor ,aquarum *Pelagi*
1 פַּלְגֵי־מַיִם לֶב־מֶלֶךְ בְּיַד־יְהוָה עַל־כָּל־אֲשֶׁר
: ejus oculis in recta viri via Omnis .illud inclinabit , voluerit
2 יַחְפֹּץ יַטֶּנּוּ׃ כָּל־דֶּרֶךְ אִישׁ יָשָׁר בְּעֵינָיו
electum : judicium & ,justitiam Facere .Dominus corda *ponderans* &
3 וְתֹכֵן לִבּוֹת יְהוָה׃ עֲשֹׂה צְדָקָה וּמִשְׁפָּט נִבְחָר
novale : cordis latitudo & ,oculorum Exaltatio .*sacrificio præ* Domino
4 לַיהוָה מִזָּבַח׃ רוּם עֵינַיִם וּרְחַב־לֵב נִר
: superabundantiam ad verè soliciti Cogitationes .peccatum ,impiorum
5 רְשָׁעִים חַטָּאת׃ מַחְשְׁבוֹת חָרוּץ אַךְ־לְמוֹתָר
lingua in thesaurorum *Opus* .defectum ad verè *festinus* omnis &
6 וְכָל־אָץ אַךְ־לְמַחְסוֹר׃ פֹּעַל אֹצָרוֹת בִּלְשׁוֹן
impiorum *Rapina* .mortem *quærentes* , *expulsa vanitas* : *falsitatis*
7 שָׁקֶר הֶבֶל נִדָּף מְבַקְשֵׁי־מָוֶת׃ שֹׁד־רְשָׁעִים
via est Inversa .judicium facere renuerunt quia : eos *terrebit*
8 יְגוֹרֵם כִּי מֵאֲנוּ לַעֲשׂוֹת מִשְׁפָּט׃ הֲפַכְפַּךְ דֶּרֶךְ
habitare Melius .*ejus* opus rectum mundi & : alieni & , viri
9 אִישׁ וָזָר וְזַךְ יָשָׁר פָּעֳלוֹ׃ טוֹב לָשֶׁבֶת
.*societatis* domo & , *contentionum* muliere *præ* ; tecti angulo *super*
עַל־פִּנַּת־גָּג מֵאֵשֶׁת מִדְוָנִים וּבֵית חָבֶר׃
ejus oculis in erit gratus non : malum desideravit impii Anima
10 נֶפֶשׁ רָשָׁע אִוְּתָה רָע לֹא־יֻחַן בְּעֵינָיו
: simplex efficietur sapiens , derisorem *mulctando In* .ejus amicus
11 רֵעֵהוּ׃ בַּעְנָשׁ־לֵץ יֶחְכַּם־פֶּתִי
justus *Intelligens* .scientiam accipiet , *sapientem ad intelligendo in* &
11 וּבְהַשְׂכִּיל לְחָכָם יִקַּח־דָּעַת׃ מַשְׂכִּיל צַדִּיק
suam aurem *Obturans* .malum ad impios *pervertens* : impii *domum ad*
13 לְבֵית רָשָׁע מְסַלֵּף רְשָׁעִים לָרָע׃ אֹטֵם אָזְנוֹ
.exaudietur non & ,clamabit ipse etiam : *tenuis* clamore à
מִזַּעֲקַת־דָּל גַּם־הוּא יִקְרָא וְלֹא יֵעָנֶה׃
iram sinu in munus & ; furorem teget abscondito in Donum
14 מַתָּן בַּסֵּתֶר יִכְפֶּה־אָף וְשֹׁחַד בַּחֵק חֵמָה
contritio & : judicium facere justo Lætitia .fortem
15 עַזָּה׃ שִׂמְחָה לַצַּדִּיק עֲשׂוֹת מִשְׁפָּט וּמְחִתָּה
; intellectus via de *errans* Homo .iniquitatem operantibus
16 לְפֹעֲלֵי אָוֶן׃ אָדָם תּוֹעֶה מִדֶּרֶךְ הַשְׂכֵּל
: lætitiam *diligens defectus* Vir .requiescet *manium concione* in
17 בִּקְהַל רְפָאִים יָנוּחַ׃ אִישׁ מַחְסוֹר אֹהֵב שִׂמְחָה
justo Propitiatio .ditabitur non ,*oleum* & , vinum *diligens*
18 אֹהֵב יַיִן־וָשֶׁמֶן לֹא יַעֲשִׁיר׃ כֹּפֶר לַצַּדִּיק
terra in habitare *Bonum* .prævaricator rectis pro & : impius
19 רָשָׁע וְתַחַת יְשָׁרִים בּוֹגֵד׃ טוֹב שֶׁבֶת בְּאֶרֶץ
,desiderabilis Thesaurus .*iracundiæ & contentionum* muliere *præ* ; deserti
20 מִדְבָּר מֵאֵשֶׁת מְדוֹנִים וָכָעַס׃ אוֹצָר ׀ נֶחְמָד
.eum *deglutiet* homo stultus & : sapientis habitaculo in *oleum* &
וָשֶׁמֶן בִּנְוֵה חָכָם וּכְסִיל אָדָם יְבַלְּעֶנּוּ׃
, justitiam , vitam inveniet ; misericordiam & , justitiam *Sequens*
21 רֹדֵף צְדָקָה וָחָסֶד יִמְצָא חַיִּים צְדָקָה
faciet descendere & : sapiens ascendit fortium Civitatem .gloriam &
22 וְכָבוֹד׃ עִיר גִּבֹּרִים עָלָה חָכָם וַיֹּרֶד
custodiens ; suam linguam & , suum os *Custodiens* .fiduciæ robur
23 עֹז מִבְטֶחָה׃ שֹׁמֵר פִּיו וּלְשׁוֹנוֹ שֹׁמֵר
.suam animam angustiis ab
מִצָּרוֹת נַפְשׁוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

30 Livor vulneris abſterget ma-
la : & plagæ in ſecretioribus
ventris.

CAP. XXI.

1 Sicut diviſiones aquarum, ita
cor regis in manu Domini :
quocunque voluerit inclinabit
2 illud. Omnis via viri recta ſibi
videtur : appendit autem cor-
3 da Dominus. Facere miſeri-
cordiam & judicium, magis
placet Domino, quàm victimæ.
4 Exaltatio oculorum eſt dilata-
tio cordis : lucerna impiorum
5 peccatum. Cogitationes ro-
buſti ſemper in abundantia :
omnis autem piger ſemper in
6 egeſtate eſt. Qui congregat
theſauros linguâ mendacii, va-
nus & excors eſt, & impinge-
7 tur ad laqueos mortis. Rapi-
næ impiorum detrahent eos,
quia noluerunt facere judici-
8 um. Perverſa via viri, aliena
eſt : qui autem mundus eſt, re-
9 ctum opus ejus. Melius eſt ſe-
dere in angulo domatis, quàm
cum muliere litigioſa, & in
10 domo communi. Anima impii
deſiderat malum, non miſere-
11 bitur proximo ſuo. Mulctato
peſtilente ſapientior erit par-
vulus : & ſi ſectetur ſapientem,
12 ſumet ſcientiam. Excogitat
juſtus de domo impii, ut detra-
13 hat impios à malo. Qui obtu-
rat aurem ſuam ad clamorem
pauperis, & ipſe clamabit, &
14 non exaudietur. Munus abſ-
conditum extinguit iras, &
donum in ſinu indignationem
15 maximam. Gaudium juſto eſt
facere judicium, & pavor ope-
16 rantibus iniquitatem. Vir, qui
erraverit à via doctrinæ, in
cœtu gigantum commorabi-
17 tur. Qui diligit epulas, in ege-
ſtate erit : qui amat vinum, &
18 pinguia, non ditabitur. Pro
juſto datur impius : & pro re-
19 ctis iniquus. Melius eſt habi-
tare in terra deſerta, quàm
cum muliere rixoſa & iracun-
20 da. Theſaurus deſiderabilis,
& oleum in habitaculo juſti : et
imprudens homo diſſipabit il-
21 lud. Qui ſequitur juſtitiam
& miſericordiam, inveniet vi-
22 tam, juſtitiam, & gloriam. Ci-
vitatem fortium aſcendit ſapi-
ens, & deſtruxit robur fiduciæ
23 ejus. Qui cuſtodit os ſuum, &
linguam ſuam, cuſtodit ab an-
guſtiis animam ſuam.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

30 † Ὑπώπια καὶ συντρίμματα συναντᾷ κα-
κοῖς, πληγαὶ δὲ εἰς ταμιεῖα κοιλίας.

(dd) Livores, & contritiones (ee)
occurrunt malis : plagæ autem in
ſecreta ventris.

ΚΕΦ. κα΄.

1 † Ὥσπερ ὁρμὴ ὕδατος, οὕτως καρδία
βασιλέως ἐν χειρὶ θεοῦ, † (α) οὗ ἐὰν θέλων
2 νεῦσαι, ἐκεῖ ἔκλινεν αὐτήν. † Πᾶς ἀνὴρ
φαίνεται ἑαυτῷ δίκαιος, † κατευθύνει δὲ καρ-
3 δίας κύριος. † Ποιεῖν δίκαια καὶ ἀληθεύειν,
† ἀρεστὰ παρὰ θεῷ μᾶλλον ἢ θυσιῶν αἷμα.
4 † Μεγαλόφρων (β) ἐν ὕβρει θρασυκάρδιος,
6 † λαμπτὴρ δὲ ἀσεβῶν (γ) ἁμαρτία. † Ὁ ἐν-
εργῶν θησαυρίσματα γλώσσῃ ψευδεῖ, † μά-
ταια διώκει (δ) ἐπὶ παγίδας θανάτου.
7 † Ὄλεθρος ἀσεβέσιν ἐπιξενωθήσεται,
8 † οὐ γὰρ βούλονται πράσσειν τὰ δίκαια. † Πρὸς
τοὺς σκολιοὺς σκολιὰς ὁδοὺς (ε) ἀποστέλλει ὁ
θεός, † ἁγνὰ γὰρ καὶ ὀρθὰ τὰ ἔργα αὐτοῦ.
9 † (ζ) Κρεῖσσον οἰκεῖν ἐπὶ γωνίας ὑπαίθρου,
† ἢ ἐν κεκονιαμένοις μετὰ ἀδικίας καὶ ἐν οἴκῳ
10 κοινῷ. † Ψυχὴ ἀσεβοῦς οὐκ ἐλεηθήσεται
11 ὑπ᾽ οὐδενὸς τῶν ἀνθρώπων. † Ζημιουμένου
ἀκολάστου πανουργότερος γίνεται ὁ ἄκα-
κος, † Συνιὼν δὲ σοφὸς δέξεται γνῶσιν.
12 † Συνιεῖ δίκαιος καρδίας ἀσεβῶν, † καὶ
13 φαυλίζει ἀσεβεῖς ἐν κακοῖς. † Ὃς φράσσει
τὰ ὦτα αὐτοῦ τοῦ μὴ (η) ἐπακοῦσαι ἀσθενοῦς,
† καὶ αὐτὸς ἐπικαλέσεται, καὶ οὐκ ἔσται ὁ εἰσ-
14 ακούων. † Δόσις λάθριος ἀνατρέπει ὀργάς,
† δώρων δὲ ὁ φειδόμενος θυμὸν ἐγείρει ἰσχυ-
15 ρόν. † Εὐφροσύνη δικαίων ποιεῖν κρίμα,
† ὅσιος δὲ ἀκάθαρτος παρὰ κακούργοις.
16 † Ἀνὴρ πλανώμενος ἐξ ὁδοῦ δικαιοσύ-
νης, ἐν συναγωγῇ γιγάντων ἀναπαύσε-
17 ται. † Ἀνὴρ ἐνδεὴς ἀγαπᾷ εὐφροσύνην,
18 † φιλῶν οἶνον καὶ ἔλαιον εἰς πλοῦτον. † Πε-
19 ρικάθαρμα δὲ δικαίου ἄνομος. † Κρεῖσσον
οἰκεῖν ἐν τῇ ἐρήμῳ, † ἢ μετὰ γυναικὸς μα-
20 χίμου καὶ γλωσσώδους καὶ ὀργίλου. † Θη-
σαυρὸς ἐπιθυμητὸς ἀναπαύσεται ἐπὶ στό-
ματος σοφοῦ, † ἄφρονες δὲ ἄνδρες κατα-
21 πίονται αὐτόν. † Ὁδὸς δικαιοσύνης καὶ
ἐλεημοσύνης εὑρήσει ζωὴν καὶ δόξαν.
22 † Πόλεις ὀχυρὰς ἐπέβη σοφός, † καὶ
καθεῖλε τὸ ὀχύρωμα ἐφ᾽ ᾧ ἐπεποίθει-
23 σαν οἱ ἀσεβεῖς. † Ὃς φυλάσσει τὸ στό-
μα αὐτοῦ καὶ τὴν γλῶσσαν, διατηρεῖ
ἐκ θλίψεως τὴν ψυχὴν αὐτοῦ.

CAP. XXI.

Sicut impetus aquæ ; ita cor
regis in manu Dei : quocunque
(a) voluerit innuere, illuc incli-
navit illud. Omnis vir videtur
ſibi juſtus : (b) dirigit autem cor-
da Dominus. Facere juſta, & ve-
racem eſſe, placita apud Deum
magis, quàm hoſtiarum ſanguis.
Magna ſapiens, in contumelia au-
dax corde : fax autem impiorum,
(c) peccatum. Qui (d) operatur
theſauros linguâ mendaci, vana
ſectatur (e) in laqueos mortis.
(f) Perditio impiis hoſpitio ſuſci-
pietur : non enim volunt agere
juſta. Ad perverſos perverſas
vias mittit Deus: munda enim &
recta opera ejus. Melius habitare
ſuper angulum * ſub divo, (g)
quàm in calce litis cum iniquita-
te, & in domo communi. (h)
Anima impii non conſequetur mi-
ſericordiam ab ullo hominum.
Mulctato intemperante (i) aſtutior
fit ſimplex : intelligens autem ſa-
piens, ſuſcipiet ſcientiam. Intel-
ligit juſtus (k) corda impiorum :
& (l) vilipendit impios in malis.
Qui obturat aures ſuas, ne audiat
imbecillum ; & ipſe (m) invoca-
bit, & non erit, qui exaudiat.
Munus occultum (n) avertit iras ;
muneribus autem qui parcit, fu-
rorem ſuſcitat fortem. Lætitia ju-
ſtorum facere judicium : (o) ſan-
ctus autem immundus eſt apud
malos. Vir errans à via juſtitiæ,
in ſynagoga (p) gigantum requi-
eſcet. Vir (q) egenus amat læ-
titiam, diligens vinum, & oleum,
(r) ad divitias : (s) Conta-
gatio autem juſti (t) iniquus. Me-
lius habitare in deſerto, quàm
cum muliere rixoſa, & linguaci,
& (u) iracunda. Theſaurus deſide-
rabilis requieſcet ſuper os ſapien-
tis : imprudentes autem viri (x)
devorabunt illum. (y) Via juſti-
tiæ, & miſericordiæ (z) inveniet
vitam, & gloriam. (a) Civitates
munitas ingreſſus eſt ſapiens : &
diruit munitionem, in qua con-
fidebant impii. Qui cuſtodit os
ſuum, & linguam ; conſervat à
tribulatione animam ſuam.

MS.A. (α) οὗ δ᾽ ἂν θέλων νεύσῃ ἔκλινεν αὐτήν. (β) ἐφ᾽ ὕβρει
ἁμαρτίαι. (δ) καὶ ἔρχεται ἐπὶ παγίδας (ε) ἀποστελεῖ (ζ) * Κρεῖσσον
ὑπακοῦσαι

תרגום TARGUM.

30 שׁוּחְנֵי וּפוּרְעָנְתָא פַּגְעוּ בְּבִישָׁא וּמַחְוָתָא בְּגַוֵּיהּ דִּכְרֵיסָא׃

כא

1 היך טיפי דמיא לביה דמלכא באידוי דאלהא ולאתר דצבי נרכן ליה׃ כלהון ארחתיה
2 דגברא תריצן אנון באפוי ואלהא מתקן לביה׃ מן דעבד צדקתא ודינא מתרעי
3 ביה אלהא מן דבחא׃ רמות עיני ובעי לבא ושרגא דרשיעי לחטאה׃ מחשבתא
4 5 דנבין ליותרנא ורגלא דמסרהבא לחוסרנא׃ מעבדנותא דסימתא בלישנא דשקרא
6 ויתחבלון ויתתרון אלין דבעין למותא׃ רכונא דרשיעי יעלנון ולא צבין דיעבדון דינא׃ 7
8 9 דהפך ארחיה דגברא הוא נוכראה ודדכי תריצן עובדוהי׃ טב למיתב על קרנא דאגרא
10 מן אתתא תגרניתא וביתא טרקא׃ נפשיה דרשיעא רינא בישתא ולא מתרחם בעינוי
11 12 חבריה׃ בתכיה דממקנא נחכם שברא ובסוכלתנותיה דחכימא יסב ידיעתא׃ מסתכל
13 צדיקא בביתיה דרשיעא ומטלטל רשיעיא בבישתא׃ דמסכר אדניה דלא נשמע
14 לצוחתיה דמסכנא אף נקרא לאלהא ולא נתעני׃ מוהבא בטישא מדעכא רוגזא ושוחדא
15 16 בעובא חמתא עשנתא׃ חדותא דצדיקא למעבד דינא ושציא לאלין דעבדין עאתא׃ בר
17 נשא דתעי מן אורחא דסכולא עם בני ארעא נתתנח׃ גברא די חסר ליה ורחם חדותא
18 ורחם חמרא ובסמא לא נעתר׃ שלחופיה דצדיקא רשיעא ושלחופי דתריצי בזוזי׃
19 20 טב למתב בארע מדברא מן אתתא תגרניתא ומרגוניתא׃ סימתא רגנתא ומשחא
21 בדיריה דחכימא וסכלא דבני נשא נבלענון׃ דרדף צדקתא וחסדא ישכח חיי וצדקתא
22 23 ויקרא׃ למדנתא דגברי סליק חכימא ואחת עושנא דסברא׃ דנטר פומיה ולישניה
נטר מן עקתא נפשיה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Pavores & plagæ occurrunt malo, & *ictus* in interioribus ventris.

CAP. XXI.

Sicut rivuli aquarum, ita cor regis in manibus Dei, & quocunque
inclinat illud. Omnes viæ viri rectæ ſunt in conſpectu ejus; dirigit autem
cor ejus Deus. Qui facit juſtitiam & judicium, complacet ſibi in illo De
magis quàm in ſacrificio. Exaltatio oculorum & tumor cordis,
cerna impiorum peccatum. Cogitationes collectæ ad abundantiam
pes feſtinus ad egeſtatem [*tendit*.] Opera cellariorum in lingua men
cii, & diſſipabuntur ; & evellentur illi qui quærunt mortem.
impiorum tollet eos, quoniam non *voluerunt facere* judicium.
pervertit viam alicujus, extraneus eſt : & qui mundus eſt, recta
opera ejus. Melius eſt ſedere in angulo tecti, quàm cum muliere litig
& in domo communi. Anima impii deſiderat malũ, & non misericor
conſequetur in oculis ejus ſocius ejus. Per mulctam deriſoris ſapi
fiet inſipiens, & in intellectu ſapientis aſſumet ſcientiam. Contem
juſtus domum impii, & transfert impios in malum. Qui obturat a
ſuam ne audiat clamorem pauperis, vocabit quoque Deum, & non
dietur. Munus in abſcondito extinguit iram, & munus in ſinu indig
nem fortem. Lætitia eſt juſto facere judicium, & *perditio* iis qui
iniquitatem. Filius hominis qui errat à via intellectus, cum filiis
commorabitur. Vir qui egenus eſt & diligit lætitiam, diligitque
& unguentum, non ditabitur. In commutatione juſti [*traditur*]
& pro rectis direptores. Melius eſt habitare in terra deſerti, quàm
muliere litigioſa & rixoſa. Argentum deſiderabile, & oleum in
culo ſapientis ; & ſtultus filiorum hominis diſſipabit illud.
tur juſtitiam & miſericordiam, inveniet vitam, et juſtitiam,
Civitatem fortium aſcendit ſapiens, et detrahit robur fiduciæ
cuſtodit os ſuum et linguam ſuam, cuſtodit ab anguſtia anima

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܫܘܚܩܐ ܘܡܘܟܟܐ ܦܓܥܘ ܒܒܝܫܐ. ܘܡܚܘܬܐ ܒܬܘܢܝ ܕܟܪܣܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܐ *

1 * ܐܝܟ ܐܦܩܐ ܕܡܝܐ. ܠܒܗ ܕܡܠܟܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܐܠܗܐ. ܘܠܐܝܟܐ ܕܨܒܐ ܡܨܠܐ ܠܗ. * ܟܠܗܘܢ
2 ܐܘܪܚܬܗ ܕܓܒܪܐ ܬܪܝܨܢ ܒܥܝܢܘܗܝ ܕܢܦܫܗ. ܘܡܪܝܐ ܡܬܩܢ ܠܒܐ. * ܡܢ ܕܥܒܕ ܟܐܢܘܬܐ
3 ܘܕܝܢܐ. ܫܦܝܪ ܗܘ ܠܡܪܝܐ ܡܢ ܕܒܚܬܐ. * ܪܡܘܬܐ ܕܥܝܢܐ ܘܪܘܚܬܐ ܕܠܒܐ: ܫܪܓܐ ܕܪܫܝܥܐ
4 ܚܛܝܬܐ. * ܡܚܫܒܬܗ ܕܓܒܪܐ ܡܗܝܡܢܐ. ܘܕܒܝܫܐ ܡܚܒܠܢ. * ܡܫܚܠܦܘܬܐ ܕܣܝܡܬܐ
5 ܒܠܫܢܐ ܕܕܓܠܘܬܐ. ܘܠܡܦܘܠܐ ܢܬܚܡܨܘܢ. ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܠܡܘܬܐ. * ܬܒܪܐ ܕܥܘܠܐ ܢܐܬܐ ܥܠܝܗܘܢ
6 ܕܠܐ ܨܒܘ ܠܡܥܒܕ ܕܝܢܐ. * ܕܡܥܩܡ ܐܘܪܚܗ. ܓܒܪܐ ܗܘ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܕܟܝܐ ܕܝܢ. ܬܪܝܨܝܢ
7 ܥܒܕܘܗܝ. * ܛܒ ܠܡܬܒ ܒܩܪܢܐ ܕܐܓܪܐ. ܡܢ ܕܠܡܥܡܪ ܥܡ ܐܢܬܬܐ ܢܝܢܝܬܐ. * ܢܦܫܗ
8 ܕܥܘܠܐ. ܠܐ ܡܬܚܙܝܐ ܒܥܝܢܝ ܚܒܪܘܗܝ. * ܘܒܬܘܬܒܗ ܕܒܝܫܐ. ܡܬܚܟܡ ܦܬܝܐ. ܣܟܘܠܬܢܐ
9 ܒܡܪܥܝܬܗ. ܡܩܒܠ ܝܕܥܬܐ. * ܘܡܣܬܟܠ ܙܕܝܩܐ. ܒܠܒܗܘܢ ܕܥܘܠܐ. ܘܕܚܩ ܠܥܘܠܐ
10 ܠܒܝܫܬܐ. * ܕܣܟܪ ܐܕܢܘܗܝ ܕܠܐ ܢܫܡܥ ܠܡܣܟܢܐ. ܐܦ ܗܘ ܢܩܪܐ ܠܐܠܗܐ ܘܠܐ ܢܥܢܝܘܗܝ.
11 * ܡܘܗܒܬܐ ܕܒܛܘܫܝܐ. ܡܦܟܐ ܪܘܓܙܐ. ܘܕܚܐܣ ܥܠ ܡܘܗܒܬܐ. ܡܥܝܪ ܪܘܓܙܐ. * ܚܕܘܬܐ ܕܙܕܝܩܐ
12 ܥܒܕܐ ܕܝܢܐ. ܘܬܒܪܐ ܠܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. * ܓܒܪܐ ܕܛܥܐ ܡܢ ܐܘܪܚܐ ܕܣܘܟܠܐ. ܥܡ ܒܢܝ ܐܪܥܐ
13 ܢܬܬܢܚ. * ܓܒܪܐ ܕܡܣܟܢ ܗܘ: ܘܪܚܡ ܚܕܘܬܐ ܘܚܡܪܐ ܘܦܘܢܩܐ. ܠܐ ܢܬܥܬܪ. * ܚܠܘܦܘܗܝ
14 ܕܙܕܝܩܐ. ܥܘܠܐ. ܘܚܠܦ ܬܪܝܨܐ. ܕܓܠܐ. * ܛܒ ܠܡܬܒ ܒܐܪܥܐ ܕܡܕܒܪܐ. ܡܢ ܕܠܡܥܡܪ ܥܡ
15 ܐܢܬܬܐ ܢܝܢܝܬܐ ܘܡܪܓܙܢܝܬܐ. * ܣܝܡܬܐ ܪܓܝܓܬܐ ܘܡܫܚܐ ܒܦܘܡܐ ܕܚܟܝܡܐ. ܘܣܟܠܐ
16 ܕܒܢܝܢܫܐ ܢܒܠܥܘܢܝܗ. * ܕܪܕܦ ܙܕܝܩܘܬܐ ܘܛܝܒܘܬܐ. ܢܫܟܚ ܚܝܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܘܫܘܒܚܐ.
17 * ܠܡܕܝܢܬܐ ܕܓܢܒܪܐ ܣܠܩ ܚܟܝܡܐ: ܘܟܒܫ ܚܣܢܐ ܕܬܘܟܠܢܗ. * ܕܢܛܪ ܦܘܡܗ
18 ܘܠܫܢܗ. ܢܛܪ ܢܦܫܗ ܡܢ ܐܘܠܨܢܐ.

Contritio atque ſupplicium occurrerunt fla- 30
gitioſis: & plaga ad intima ventris eorum.

CAP. XXI.

UT rivus aquarum, cor regis in manibus 1
Dei: & quocunque vult inclinat illud. O- 2
mnes viæ viri rectæ ſunt in oculis ſuis: Do-
minus autem cor diſponit. Qui facit juſti- 3
tiam & judicium, gratior eſt Domino quàm
victima. Altitudo oculorum, & latitudo 4
cordis, & lucerna impiorum, peccatum.
Cogitationes electi, fideles: & maligni, 5
pernicioſæ. Comparatio theſauri, linguâ 6
mendaci: & ad exitium deturbabuntur
quicunque mortem quærunt. Contritio 7
impiorum veniet in ipſos, eò quòd nolue-
rint facere judicium. Qui pervertit viam 8
ſuam, vir eſt alienus: qui verò purus eſt,
recta ſunt opera ejus. Præſtat ſedere in cor- 9
nu tecti, quàm habitare cum muliere rixoſa.
Animus impii non videtur in oculis ſocio- 10
rum ejus. Et ex detrimento maligni ſapi- 11
ens redditur *qui* ſimplex *eſt*. Prudens in con-
ſilio ſuo, amplectitur ſcientiam: Et juſtus 12
intelligit cor impiorum, & impellit impios
ad malum. Qui obturat aures ſuas quomi- 13
nus audiat pauperem, ipſe quoque clamabit
ad Deum, & non exaudietur. Munus clan- 14
deſtinum removet iram: & qui parcus eſt
in dando, ſuſcitat indignationem. Gaudium 15
juſti generat judiciũ, & conterit facinoroſos.
Homo qui aberrat à via prudentiæ, cum filiis 16
terræ gemet. Homo egenus qui indulget 17
lætitiæ, vino, & lautitiis, non diteſcet.
Permutatio juſti, impius: & pro recto, men- 18
dax. Melius eſt verſari in terra deſerta, 19
quàm habitare cum muliere rixoſa & irritan-
te. Theſaurus expetibilis & unguentum 20
diſperſum, ſapientia: & prudentia hominum
deglutiet eum. Qui quærit juſtitiam, & bo- 21
nitatem, inveniet vitam, & juſtitiam, & glo-
riam. Ad urbem gigantum aſcendit ſapi- 22
ens, & ſubjugavit arcem fiduciæ ejus. Qui 23
cuſtodit os & linguam ſuam, ſervat animam
ſuam à calamitate.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

30 * المعابات والهشمات تلتقي الاشرار * والجرحات في خزاين جوفهم *

* الفصل الحادي والعشرون *

1 2 * بمنزلة دفعة الماء هكذا قلب الملك في يد الله * اينما شاء ان يومي اماله الى هناك * كل انسان
3 يظهر عند ذاته مقسطا * والرب يثقف القلوب * شيان عند الله مرضيان ان يعمل الانسان اعمالا
4 مقسطة * وان يصدق * وهما افضل من دم الذبايح * المعظم الراي بالتعظم قلبه منهمك مصباح
6 7 المنافقين الخطية * * من يعمل خزاين بلسان كاذب يجاري باطلا * ويجي الى فخاخ الموت * الهلاك
8 يصدف بالمنافقين * لانهم ما يوثرون ان يعملوا اعمالا وامورا عدلة * الله يرسل طرقا صعبة الى
9 الصعبين الملتويين * لان اعماله طاهرة مستقيمة * السكني في زاوية تحت الهوي افضل من
10 السكني في مجالس مبيضة بظلم وفي منزل جديد * نفس المنافق ما يرحمها احد من الناس
11 12 * اذا خسر الفاسق المجدف * يصير ذو الدعة اوفر دربة * الحكيم اذا تفقه يقبل علما * المقسط
13 يفهم ويعرف قلوب المنافقين * ويطلح المنافقين بمساويهم * كل من يسد اذنيه لئلا يسمع
14 الضعفاء * فذاك يستغيث ولا يكون من يسمعه * الهدية الخفية تحل مخايل الغيظ * ومن يشفق
15 على الهدايا ينهض غيظا قويا * سرور المقسطين يصنع انصافا * والبار عند العاملين الاسواء
16 17 نجس * الرجل الضال عن طريق العدل يستريح في مجمع الجبابرة * الانسان المعسر المحتاج يحب
18 19 السرور * ويوثر الزيت والخمر ليستغني * الاثيم وساخة المقسط * السكني في القفر افضل من
20 السكني مع امراة مخاصمة ملسنة غضوبة * كنز مشتهي يستريح في فم الحكيم * والناس
21 22 الاغبياء يبتلعونه * طريقة العدل والصداقة تصادف الحياة والشرف * الحكيم اركب مدنا
23 حصينة * وهدم الحصن الذي توكل عليه المنافقون * من يحفظ فمه ولسانه * يصون من
الغم نفسه *

Opprobria & fracturæ occurrent perver- 30
ſis, & perturbationes in cellis ventris
eorum.

CAP. XXI.

Sicut elevatio aquæ, ita cor regis in 1
manu Dei, quocumque voluerit innuere,
inclinat illud eò. Omnis homo videtur 2
ſibi ipſi juſtus: & Dominus confirmat
corda. Duo ſunt apud Deum grata: ut 3
faciat homo opera juſta, & ut verax ſit:
& utraque ſunt præſtantiora ſanguine
victimarum. Superbus cogitatione, in ſu- 4
perbia cor ejus præceps eſt: lucerna im-
piorum, peccatum.

Deeſt. verſ. 5.

Qui facit theſauros linguâ mendaci, mer- 6
ces ejus erit vanitas, & veniet ad la-
queos mortis. Interitus inhæret impiis, 7
quia non eligunt facere opera & negotia
recta. Deus mittit vias aſperas duris
& perverſis: quia opera ejus pura ſunt 8
ac recta. Habitare in angulo ſub dio, me- 9
lius eſt quàm habitare in domibus deal-
batis, cum ſcelere, & in domicilio novo.
Animæ impii non miſeretur ullus homi- 10
num. Cùm damnum ſuſtinet impius 11
blaſphemus, manſuetus fit cautior. Sa-
piens, cùm docebitur, accipiet doctrinam.
Juſtus intelligit, & agnoſcet corda im- 12
piorum: & perverſè agunt impii in ini-
quitatibus ſuis. Quicunque obturat 13
aures ſuas ne audiat infirmos, hic
clamabit, & non erit qui audi-
at illum. Munus ſecretum avertit vi- 14
res furoris: & qui parcit muneribus,
ſuſcitat iram potentem. Gaudium juſto- 15
rum operatur æquitatem: & innocens,
apud operantes mala immundus eſt. Vir 16
aberrans à via juſtitiæ, quieſcet in cœ-
tu gigantum. Homo pauper egenus, amat 17
hilaritatem, & eligit oleum & vinum, 18
ut diteſcat. Sceleſtus ſordes eſt juſti. Ha- 19
bitare in deſerto melius eſt quàm habitare
cum muliere litigioſa, linguoſâ, iracun-
dâ. Theſaurus optabilis quieſcit in ore 20
ſapientis: homines autem ſtulti degluti-
unt illum. Via æquitatis & charitatis 21
comitatur vitam & magnificentiam. Sa- 22
piens conſcendit urbes munitas, & de-
ſtruit arcem in qua confiſi ſunt impii.
Qui cuſtodit os ſuum & linguam ſuam, 23
ſervat ab angore animam ſuam.

משלי: כב

.ſuperbiæ ira in *faciens* : ejus nomen deriſor , *arrogans* , Superbus
זד יהיר לץ שמו עושה בעברת זדון׃ 24
.facere ejus manus renuerunt quia : eum interficiet pigri Deſiderium
תאות עצל תמיתנו כי־מאנו ידיו לעשות׃ 25
non & , tribuet juſtus & : concupiſcentiam *concupivit* die Tota
כל־היום התאוה תאוה וצדיק יתן ולא 26
quia etiam ; abominatio impiorum Sacrificium .prohibebit
יחשך׃ זבח רשעים תועבה אף כי־ 27
: peribit *mendaciorum* Teſtis .illud attulerit *mala cogitatione in*
בזמה יביאנו׃ עד־כזבים יאבד 28
impius vir Roboravit .loquetur *finem in audiens* vir &
ואיש שומע לנצח ידבר׃ העז איש רשע 29
,ſapientia Non .ſuam viam *parabit* ipſe rectus & *: ſuis faciebus in*
בפניו וישר הוא יכין דרכו׃ אין חכמה 30
Equus .DOMINUM contra conſilium nec ;intelligentia neque
ואין תבונה ואין עצה לנגד יהוה׃ סוס 31
.ſalus DOMINI & ; belli diem ad paratus
מוכן ליום מלחמה וליהוה התשועה׃

CAP. XXII. כב

auro præ & , *argento præ* : *multa opulentia præ* nomen Eligibilius
נבחר שם מעשר רב מכסף ומזהב 1
faciens : ſibi obviaverunt pauper & Dives .bona gratia
חן טוב׃ עשיר ורש נפגשו עשה 2
:ſe abſcondit & ,malum vidit Callidus .DOMINUS ipſos omnes
כלם יהוה׃ ערום ראה רעה ויסתר 3
Propter *mulctabuntur* & , ſunt tranſgreſſi ſimplices &
ופתיים עברו ונענשו׃ עקב 4
.*vitæ* & , gloria & , *opulentia* : DOMINI timor *manſuetudinem*
ענוה יראת יהוה עשר וכבוד וחיים׃
,ſuam animam *cuſtodiens* : perverſi via in laquei , Spinæ
צנים פחים בדרך עקש שומר נפשו 5
: ſuæ viæ *os ſuper* puerum *Initia* .eis ab ſe elongabit
ירחק מהם׃ חנך לנער על־פי דרכו 6
Dives .ea ab recedet non , ſenuerit cùm etiam
גם כי־יזקין לא־יסור ממנה׃ עשיר 7
Seminans .commodanti viro mutuans ſervum & : dominabitur *pauperes in*
ברשים ימשול ועבד לוה לאיש מלוה׃ זורע 8
.*conſumet* ejus iræ virga & : *calamitatem* metet iniquitatem
עולה יקצור־און ושבט עברתו יכלה׃
.*tenui* ſuo pane de dedit quia ; benedicetur ipſe , *oculus Bonus*
טוב־עין הוא יברך כי־נתן מלחמו לדל׃ 9
, judicium ceſſabit & : contentio egredietur & , deriſorem Ejice
גרש לץ ויצא מדון וישבת דין 10
, ejus labiorum *gratia* , cordis munditiam *Diligens* .ignominia &
וקלון׃ אהב טהר־לב חן שפתיו 11
: ſcientiam cuſtodierunt DOMINI Oculi .rex ejus amicus
רעהו מלך׃ עיני יהוה נצרו דעת 12
Leo : piger Dixit .prævaricatoris verba pervertet &
ויסלף דברי בגד׃ אמר עצל ארי 13
profunda Fovea .occidar platearum medio in : *vico in*
בחוץ בתוך רחבות ארצח׃ שוחה עמקה 14
Stultitia .illuc cadet DOMINUS *infenſus cui* : alienarum os
פי זרות זעום יהוה יפול־שם׃ אולת 15
eam faciet elongare correctionis virga : pueri corde in colligata
קשורה בלב־נער שבט מוסר ירחיקנה
.eo ab
ממנו׃

Verſio VULG. LAT.

24 Superbus & arrogans vocatur
indoctus, qui in ira operatur
25 ſuperbiam. Deſideria occîdunt
pigrum: noluerunt enim
quidquam manus ejus operari:
16 Totâ die concupiſcit &
deſiderat: qui autem juſtus
eſt, tribuet, & non ceſſabit.
27 Hoſtiæ impiorum abominabiles,
quia offeruntur ex ſcelere.
28 Teſtis mendax peribit: vir
obediens loquetur victoriam.
29 Vir impius procaciter obfirmat
vultum ſuum: qui autem
rectus eſt, corrigit viam
30 ſuam. Non eſt ſapientia,
non eſt prudentia, non
eſt conſilium contra Dominum.
31 Equus paratur ad diem
belli: Dominus autem ſalutem
tribuit.

CAP. XXII.

1 MElius eſt nomen bonum,
quam divitiæ multæ: ſup
2 argentũ & aurũ gratia bona. Dives
& pauper obviaverunt ſibi:
utriuſq; operator eſt Dñs.
3 Callidus vidit malum, & abſcondit
ſe: innocens pertranſiit,
4 & afflictus eſt damno. Finis
modeſtiæ timor Dñi, divitiæ
5 et gloria et vita. Arma et
gladii in via perverſi: cuſtos
autem animæ ſuæ longè recedit
6 ab eis. Proverbiũ eſt; Adoleſcens
juxta viam ſuam, etiam
cùm ſenuerit, non recedet
7 ab ea. Dives pauperibus
imperat: et qui accipit
mutuum, ſervus eſt fœnerantis.
8 Qui ſeminat iniquitatem,
metet mala, et virga iræ
9 ſuæ conſummabitur. Qui pronus
eſt ad miſericordiam, benedicetur:
de panibus enim
ſuis dedit pauperi. Victoriam
et honorem acquiret qui dat
munera: animam autem aufert
10 accipientium. Ejice deriſorē,
& exibit cum eo jurgium, ceſſabúntque
cauſæ & contumeliæ.
11 Qui diligit cordis munditiam,
propter gratiam labiorum
ſuorum habebit amicum
12 regem. Oculi Dñi cuſtodiunt
ſcientiam: & ſupplantantur
13 verba iniqui. Dicit piger;
Leo eſt foris, in medio
platearum occidendus ſum.
14 Fovea profunda os alienæ:
cui iratus eſt Dominus, incidet
15 in eam. Stultitia colligata
eſt in corde pueri, & virga
diſciplinæ fugabit eam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

24 † Θρασὺς καὶ αὐθάδης καὶ ἀλαζὼν λοιμὸς
καλεῖται, † ὃς δὲ μνησικακεῖ παράνομος.
25 † Ἐπιθυμίαι ὀκνηρὸν (°) ἀποκτείνουσιν, † οὐ
γὰρ προαιροῦνται αἱ χεῖρες αὐτοῦ ποιεῖν τι.
26 Ἀσεβὴς ἐπιθυμεῖ ὅλην τὴν ἡμέραν
ἐπιθυμίας κακάς, † ὁ δὲ δίκαιος
27 ἐλεᾷ καὶ οἰκτείρει ἀφειδῶς. † Θυσίαι ἀσεβῶν
βδέλυγμα κυρίῳ, † καὶ γὰρ παρανόμως
28 προσφέρουσιν αὐτάς. † Μάρτυς ψευδὴς
ἀπολεῖται, † ἀνὴρ δὲ ὑπήκοος φυλασσόμενος
29 λαλήσει. † Ἀσεβὴς ἀνὴρ ἀναιδῶς
ὑφίσταται προσώπῳ, † ὁ δὲ (″) εὐθὺς
30 αὐτὸς συνιεῖ τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ. † Οὐκ ἔστι
σοφία, οὐκ ἔστιν ἀνδρεία, † οὐκ ἔστι βουλὴ
31 πρὸς τὸν ἀσεβῆ. † Ἵππος ἑτοιμάζεται
εἰς ἡμέραν πολέμου, † παρὰ δὲ
κυρίου ἡ βοήθεια.

MS. A. (°) ἀποκτενοῦσιν (″) εὐθὴς

(aa) *Audax, & arrogans, & oſtentator, peſtilens vocatur: qui autem injuriarum memor eſt, iniquus. (cc) Deſideria pigrum interficiunt: non enim eligunt manus ejus facere quicquam. Impius concupiſcit totâ die concupiſcentias malas: juſtus autem (dd) miſeretur, & miſeratur non parcè. Hoſtiæ impiorum abominatio Domino: (ee) etenim iniquè offerunt eas. Teſtis falſus peribit: vir autem obediens (ff) cuſtoditus loquetur. (gg) Impius vir impudenter ſubſiſtit faciei: rectus autem ipſe (hh) intelligit vias ſuas. Non eſt ſapientia, non eſt fortitudo, non eſt conſilium (ii) apud impium. Equus paratur ad diem belli: à Domino autem auxilium.*

ΚΕΦ. κβʹ.

1 † ΑΙρετώτερον ὄνομα καλὸν ἢ πλοῦτος
πολύς, † ὑπὲρ δὲ ἀργύριον καὶ χρυσίον χάρις
2 ἀγαθή. † Πλούσιος καὶ πτωχὸς συνήντησαν
ἀλλήλοις, † ἀμφοτέρους δὲ ὁ κύριος
3 ἐποίησε. † Πανοῦργος ἰδὼν πονηρὸν
τιμωρούμενον κραταιῶς αὐτὸς παιδεύεται,
† οἱ δὲ ἄφρονες παρελθόντες ἐζημιώθησαν.
4 † Γενεὰ σοφίας φόβος κυρίου, † καὶ πλοῦτος,
5 καὶ δόξα, καὶ ζωή. † Τρίβολοι καὶ παγίδες
ἐν ὁδοῖς σκολιαῖς, † ὁ δὲ φυλάσσων
7 τὴν ἑαυτοῦ ψυχὴν ἀφέξεται αὐτῶν. † Πλούσιοι
πτωχῶν ἄρξουσι, † καὶ οἰκέται ἰδίοις
8 δεσπόταις δανειοῦσιν. † Ὁ σπείρων φαῦλα
θερίσει κακά, † πληγὴν δὲ ἔργων αὐτοῦ
συντελέσει. † ἄνδρα ἱλαρὸν καὶ δότην εὐλογεῖ
ὁ θεός, † ματαιότητα δὲ ἔργων
9 αὐτοῦ συντελέσει. † Ὁ ἐλεῶν πτωχὸν αὐτὸς
διατραφήσεται, † τῶν γὰρ ἑαυτοῦ ἄρτων
(ˢ) ἔδωκεν τῷ πτωχῷ. † νίκην καὶ τιμὴν
περιποιεῖται ὁ δῶρα (α) διδούς, † τὴν μέντοι
10 ψυχὴν ἀφαιρεῖται τῶν κεκτημένων. † Ἔκβαλε
ἐκ συνεδρίου λοιμόν, καὶ συνεξελεύσεται
αὐτῷ νεῖκος, † ὅταν γὰρ καθίσῃ
11 ἐν συνεδρίῳ πάντας ἀτιμάζει. † Ἀγαπᾷ
κύριος ὁσίας καρδίας, † δεκτοὶ
δὲ αὐτῷ πάντες ἄμωμοι. † χείλεσι ποιμαίνει
12 βασιλεύς. † Οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ κυρίου (β)
διατηροῦσιν αἴσθησιν, † φαυλίζει δὲ λόγους
13 παράνομος. † Προφασίζεται, καὶ λέγει
ὀκνηρός, † Λέων ἐν ταῖς ὁδοῖς, ἐν δὲ ταῖς πλατείαις
14 φονευταί. † Βόθρος βαθὺς στόμα παρανόμου,
† ὁ δὲ μισηθεὶς ὑπὸ κυρίου ἐμπεσεῖται
εἰς αὐτόν. † εἰσὶν ὁδοὶ κακαὶ ἐνώπιον
ἀνδρός, † καὶ οὐκ ἀγαπᾷ τοῦ ἀποστρέψαι
ἀπ᾽ αὐτῶν, † ἀποστρέφειν δὲ δεῖ ἀπὸ ὁδοῦ
15 σκολιᾶς καὶ κακῆς. † Ἄνοια ἐξῆπται
(γ) καρδίας νέου, † ῥάβδος δὲ καὶ παιδεία
μακρὰν ἀπ᾽ αὐτοῦ.

MS. A. (ˢ) δέδωκεν (α) διδοὺς, (β) διατηρήσουσιν (γ) καρδία

CAP. XXII.

ELigibilius (a) nomen bonum quàm divitiæ multæ: ſuper argentum verò, & aurum gratia bona. Dives, & pauper obviaverunt ſibi: utroſque autem Dominus fecit. Callidus (b) videns malignum punitum, valdè ipſe erudietur: imprudentes autem prætereuntes damno affecti ſunt. Progenies ſapientiæ timor Domini, & divitiæ, & gloria, & vita. Tribuli & laquei in viis perverſis: qui autem cuſtodit animam ſuam, (d) abſtinebit ab eis. Divites pauperibus imperabunt, & famuli propriis dominis fœnerabunt. Qui (f) ſeminat mala, metet mala: plagam autem operum ſuorum conſummabit. Virum hilarem, & datorem (g) benedicit Deus: vanitatem autem operum ejus conſummabit. Qui miſeretur pauperis, ipſe enutrietur: de ſuis enim panibus dedit pauperi. (h) Victoriam, & honorem acquirit, qui dat munera: animam quidem aufert poſſidentium. Ejice è conſeſſu (i) peſtem, & exibit ſimul cum eo jurgium: nam cùm ſederit in conſeſſu, omnes inhonorat. Diligit Dominus (l) ſancta corda: accepti autem ſunt ei omnes immaculati. (n) Labiis paſcit rex. Oculi autem Domini conſervant (o) ſenſum: vil. pendit autem verba iniquus. Excuſationem affert, et dicit piger; Leo in viis, & in plateis (p) ſicarii. Fovea profunda os iniqui: qui autem odio habetur à Dño, incidet in (q) illam. Sunt viæ malæ coram viro: & non diligit averti ab eis: avertere autem oportet à via perverſa, & mala. Dementia (r) pendet è corde juvenis: virga autem, & diſciplina longè ab eo.

תרגום TARGUM.

ממקנא מריחא וזידנא שמיה עבד חרינא בזידנותיה׃ רגתא דעטלא ממיתא ליה 24 25
דלא צבין אידין דעבדין עבדתא׃ כל יומא ראג רגתא וצדיקא יהיב ולא מחשך׃ 26
דבחא דרשיעי מרחק הוא מטול דבעבירתא מיתי ליה׃ סהדא דכדבותא יאבד 27 28
וגברא שמועא שריראית ממלל׃ מחציף אפוי גברא רשיעא ותריצא הוא מתקן 29
אורחיה׃ לית חכמתא ולית בינא ולית עצתא היך דאלהא׃ סוסיא מתקן ליומא 30 31
דקרבא ולאלהא הוא פורקנא׃

כב

שמא טבא אתבחר מן עותרא סגיעא ומכספא ומן דהבא שפיר חסדא׃ עתירא 1 2
ומסכנא פגען חד בחד ותרויהון אלהא ברא אנון׃ ערימא חזי בישתא ומטשי ושברי 3
עברין וחסרין אנון׃ עקבא דענותנותא דחלתא דיי עותרא ויקרא וחיי׃ נשבא 4 5
בארחא עקמתא ומן דנטר נפשיה ירחק מנהון׃ אדרכיה לטליא לקבל אורחיה 6
דלא כד נסיב נסטי מניה׃ עתירא במסכני נשתלט ועבדא יוזיף לגברא מוזפנא׃ 7
דזריע עולא נחצד עאתא ושבטא דחרינידה נגמור׃ מן דטבא הוא עיניה הוא 8 9
נתברך מטול דיהיב מן לחמיה למסכינא׃ תרך לממקנא ואפיק לתגרנא ויבטל 10
דינא וצערא׃ רחם אלהא דכי לבא ובחסדא דשפותיה יתחבר למלכא׃ עיני 11 12
דאלהא נטרן ידיעתא ומטלטל מליהון דבזוזי׃ עטלא אמר בחכינותיה אריא 13
אית לברא ובינת שוקי מתקטלנא׃ גומצא עמקתא פומה דנוכריתא ומן דמרגיז 14
קדם אלהא נפל תמן׃ שטיותא קטירא בלביה דטליא שבטא דמרדותא נרחקיה 15
מניה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Deriſor, tumidus, ſuperbus, eſt nomen ejus, faciens iram ſuperbiæ. Deſiderium pigri interficit eum, eò quòd nolunt manus ejus facere. Tota die deſiderio deſiderat, & juſtus tribuit, & non parcit. Sacrificium impiorum abominabile eſt, quia *in* ſcelere offerunt illud. Teſtis mendacii peribit, & vir bene audiens rectè loquetur. Impudens facie impius eſt, & rectus ipſe præparat viam ſuam. Non eſt ſapientia neque intelligentia neque conſilium ſicut Dei. Equus paratur in diem belli, & Deo eſt ſalus.

CAP. XXII.

ELectum eſt nomen bonum magis quàm divitiæ multæ: & argento & auro melior eſt gratia. Dives & pauper obviaverunt ſibi mutuò, ambos creavit Deus. Callidus vidit malum & abſcondit ſe, & inſipientes tranſierunt & *damnum paſſi ſunt*. Merces manſuetudinis eſt timor Domini, divitiæ & gloria & vita. Pedica [*et laquei*] in via perverſa: & qui cuſtodit animam ſuam, elongabit ſe ab eis. *Deduc* adoleſcentem in viam ſuam, ut cùm ſenuerit non declinet ab ea. Dives dominatur in pauperes, & qui accipit mutuum, ſervus eſt fœnerantis viri. Qui ſeminat injuſtitiam metet iniquitatem, & virga iræ ipſius conſummabitur. Qui bonum oculum habet, ipſe benedicetur; quoniam dedit de pane ſuo pauperi. Ejice deriſorem, & expelle contentioſum, et ceſſabit jurgium et ignominia. Diligit Deus mundum corde, et in gratia labiorum ſuorum ſocius erit regis. Oculi Dei cuſtodiunt ſcientiam, et provolvit verba prædonum. Dicit piger in ſocordia ſua: Leo eſt foris, et in medio platearum occidar. Fovea profunda os extranearum, et qui provocat Deum, eò incidet. Stultitia ligata eſt in corde pueri: virga diſciplinæ elongabit eam ab eo.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

24 25 * ܡܪܝܚܐ ܕܪܒ ܫܡܗ. ܥܒܕ ܥܘܠܐ ܒܪܘܓܙܗ. * ܪܓܬܗ ܕܚܒܝܢܐ ܩܛܠܐ ܠܗ. ܡܛܠ
26 ܕܠܐ ܨܒܐ ܕܢܥܒܕܢ ܐܝܕܘܗܝ ܥܒܕܐ. * ܘܟܠܗ ܝܘܡܐ ܪܓܝܓ ܪܓܬܐ. ܙܕܝܩܐ ܝܗܒ ܘܠܐ ܚܐܣ.
27 * ܘܕܒܚܐ ܕܥܘܠܐ ܛܡܐ ܗܘ. ܡܛܠ ܕܒܥܘܠܐ ܡܩܪܒܝܢ ܠܗ. * ܣܗܕܐ ܕܓܠܐ ܢܐܒܕ. ܘܓܒܪܐ
28 29 ܫܡܘܥܐ ܠܬܪܝܨܐ ܡܡܠܠ. * ܚܨܝܦ ܐܦܘܗܝ ܕܓܒܪܐ ܥܘܠܐ. ܘܬܪܝܨܐ ܗܘ. ܡܬܩܢ
30 ܐܘܪܚܬܗ ܒܢܦܫܗ. * ܠܝܬ ܚܟܡܬܐ. ܘܠܐ ܣܘܟܠܐ. ܘܠܐ ܡܠܟܐ. ܐܝܟ ܕܡܪܝܐ. * ܣܘܣܝܐ
31 ܡܛܝܒ ܠܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ. ܘܡܢ ܡܪܝܐ ܗܘ ܦܘܪܩܢܐ. * ܫܠܡܘ * ܟܐ *

1 * ܡܝܬܪ ܗܘ ܫܡܐ. ܡܢ ܥܘܬܪܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܛܒܐ ܡܪܚܡܢܘܬܐ. ܡܢ ܕܗܒܐ. ܘܡܢ ܣܐܡܐ. * ܥܬܝܪܐ
2 ܘܡܣܟܢܐ ܦܓܥܘ ܚܕ ܒܚܕ. ܘܠܬܪܝܗܘܢ ܡܪܝܐ ܥܒܕ. * ܚܪܝܦܐ ܚܙܐ ܒܝܫܐ ܕܡܬܢܓܕ:
3 ܘܡܬܪܕܐ ܛܒ. ܣܟܠܐ ܕܝܢ ܥܒܪܘ ܠܘܬܗ ܘܐܬܚܣܪܘ. * ܫܘܠܡܗ ܕܡܟܝܟܘܬܐ. ܕܚܠܬܐ
4 ܕܡܪܝܐ: ܘܥܘܬܪܐ. ܘܐܝܩܪܐ. ܘܚܝܐ. * ܦܚܐ ܘܡܨܝܕܬܐ. ܒܐܘܪܚܐ ܥܩܡܬܐ. ܘܡܢ ܕܢܛܪ ܢܦܫܗ
5 ܢܬܪܚܩ ܡܢܗܘܢ. * ܕܡܪܕܐ ܠܛܠܝܐ ܠܦܘܡܗ ܕܐܘܪܚܐ. ܐܦܢ ܢܣܒ. ܠܐ ܢܣܛܐ ܡܢܗ.
6 * ܠܥܬܝܪܐ ܢܫܠܛ ܒܗ ܡܣܟܢܐ. ܘܥܒܕܐ ܢܘܙܦ ܠܡܢ ܕܡܘܙܦ ܗܘܐ ܠܗ. * ܕܙܪܥ ܥܘܠܐ
7 8 ܢܚܨܘܕ ܒܝܫܬܐ. ܘܫܒܛܐ ܕܪܘܓܙܗ ܢܫܬܠܡ. * ܡܢ ܕܛܒܐ ܥܝܢܗ. ܗܘ ܢܬܒܪܟ. ܡܛܠ ܕܝܗܒ
9 ܡܢ ܠܚܡܗ ܠܡܣܟܢܐ. * ܐܘܒܕ ܠܒܝܫܐ. ܘܐܦܩ ܠܚܪܝܢܐ. ܘܒܛܠ ܕܝܢܐ ܘܨܥܪܐ. ܕܠܐ ܟܕ ܢܬܒ
10 ܒܟܢܘܫܬܐ. ܠܟܠܟܘܢ ܢܚܣܕ. * ܪܚܡ ܠܐܠܗܐ. ܟܠ ܕܕܟܐ ܒܠܒܗ. ܘܡܪܚܡ ܥܠ ܣܦܘܬܐ
11 12 ܕܪܚܡܘܗܝ ܕܡܠܟܐ. * ܥܝܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܢܛܪܢ ܝܕܥܬܐ. ܘܡܘܒܕܢ ܡܠܐ ܕܓܠܐ. * ܐܡܪ ܚܒܝܢܐ
13 ܟܕ ܡܫܬܕܪ. ܐܪܝܐ ܒܐܘܪܚܐ. ܘܗܐ ܩܛܠܐ ܒܫܘܩܐ. * ܓܘܡܨܐ ܥܡܝܩܐ. ܦܘܡܗ ܕܢܘܟܪܝܬܐ. ܘܐܝܢܐ
14 15 ܕܪܓܙ ܥܠܘܗܝ ܡܪܝܐ. ܢܦܠ ܒܗ. * ܫܛܝܘܬܐ ܡܦܪܩܐ ܠܠܒܐ ܕܛܠܝܐ. ܘܫܒܛܐ ܕܡܪܕܘܬܐ
ܡܪܚܩ ܡܢܗ.

Audax cujus magnum eſt nomen, committit 24
ſcelus in ira ſua. Deſiderium pigri interficit 25
eum, quia non vult ut exerceant manus ſuæ
ullum opus: Et totâ die flagrat cupiditate. 26
Juſtus largitur, nec parcit: Sacrificium verò 27
impiorum immundum eſt, quoniam cum ini-
quitate afferunt illud. Teſtis mendax peri- 28
bit: & vir auſcultans rectè loquetur. Impu- 29
dens eſt vultus viri flagitioſi: qui autem rectus
eſt, diſponit vias proprias. Non eſt ſapientia, 30
neque intelligentia, neque conſilium ſimile
Domini. Equus paratur ad diem belli: Do- 31
mini autem eſt ſalus.

CAP. XXII.

PRæſtantius eſt nomen *bonum*, quàm divitiæ 1
multæ: & melior eſt benignitas, quàm aurum
& argentum. Dives & pauper obviaverunt 2
ſibi: utrumque verò Dñs fecit. Cautus vidit 3
malignum vapulare, & magnopere eruditus
eſt: ſtulti verò tranſierunt prope eum, & ja-
cturam paſſi ſunt. Finis humilitatis, timor 4
Domini, & opes, & honor, & vita. Retia & 5
laquei, in via difficili: qui autem ſervat animã
ſuam, recedet ab eis. Qui corripit puerum 6
ad os viæ, etiamſi conſenuerit non aberrabit
ab ea. Diviti dominabitur pauper, & ſer- 7
vus fœnerabitur ei qui fœnerabatur illi.
Qui ſerit iniquitatem, metet flagitium: & 8
baculus iræ ejus abſumetur. Qui boni eſt 9
oculi, is benedicetur, quia tribuit de pane
ſuo pauperi. Perde facinoroſum, & ejice 10
rixoſum, & extermina litem atque contume-
liam: ut non cùm ſederit in concilio, pro-
bro vos omnes afficiat. Diligit Deum qui- 11
cunque purus eſt in corde ſuo, & miſeretur
labiis amicorum regis. Oculi Domini ob- 12
ſervant ſcientiam, & perdunt ſermones men-
daces. Dicit piger quando legatur, Leo eſt 13
in via, & ecce cædes in plateis. Fovea pro- 14
funda, os alienæ: & is cui Dominus iraſci-
tur, cadet in eam. Stultitia divellit cor 15
adoleſcentis, & virga diſciplinæ remota eſt
ab eo.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

24 25 * المتهجم والعاتي والزاهي يسمي فساد * ومن يحقد فذاك متجاوز السنة * الشهوات يقتلن
26 الكسلان * لان يديه لن تؤثرا ان تعملا شيا * المنافق يشتهي طول النهار شهوات ردية * والمقسط
27 يرحم ويتراف بلا اشفاق * ضحايا المنافقين رذالة عند الرب * لانهم يقربونها براي عادل عن
28 29 الشريعة * الشاهد الكذوب يهلك * والانسان المطيع يتكلم محفوظا * الرجل المنافق ينتصب
30 بوجه لا استحياء له * والمقوم هو يفهم طرايقه * ما يوجد شهامة * ما يكون مشورة عند المنافق
31 * الفرس يستعد ليوم القتال * ومن الله المعونة * الفصل الثاني والعشرون *
1 2 * الاسم المحمود ارفع قدرا من الغنى الجزيل * والنعمة الصالحة افضل من الفضة والذهب * الغني
3 والمسكين لقي احدهما الاخر * وكلاهما الرب خلقهما * المتدرب اذا ابصر شريرا معاقبا يتادب
4 5 تادبا اصيلا * والاغبياء لما اجتازوا خسروا * حبل الحكمة تقوى الرب وثروة ومجد وحياة * في الطريق
7 المعوجة الصعبة قرطب وفخاخ * ومن يحفظ نفسه يفلت منها * * المساكين يرؤسون الموسرين
8 والعبيد يقرضون ساداتهم * من يزرع الطالحات يحصد السيئات ويتمم ضربة اعماله * الله يحب
9 الرجل الطلق الوجه والسخي * ويكمل اباطيل اعماله * من يرحم المسكين ذاك يقات * لانه اعطى
10 المسكين من اعماله * من يعط الهدية يستصنع ظفرا واكراما * وينزع نفسه مما اقتناها * اخرج
11 الفساد من المجمع فتخرج معه الغلبة * لانه اذا جلس في المجمع يهين الجماعة * الرب يحب القلوب
12 البار * وجميع الذين لا عيب فيهم مقبولين عنده * الملك يرعى الشعب بشفتيه * وعينا الرب
13 ترصد الحس وترذل الاقوال العادلة عن الشريعة * الكسلان يحتج فيقول الاسد في الطرقات والقتلة
14 في الشوارع * هوة عميقة فم المتعدي الشريعة * ومن يمقته الرب يسقط فيها * يكون طرقا ردية
15 امام الانسان وما يحب ان يرجع منها * فينبغي له ان يرجع من الطريقة الملتوية والردية * السفاهة
يشعلها قلب الشاب * اذا كان العصا والادب بعيدا منه *

Præceps, & protervus, & ſuperbus voca- 24
tur corruptela: & qui iraſcitur, is eſt
tranſgreſſor legis. Appetitus occidunt pi- 25
grum, quoniam manus ejus non eligunt
facere quidquam. Impius concupiſcit to- 26
tâ die deſideria prava: & juſtus miſe-
retur & miſereſcit abſque parſimoniâ.
Sacrificia impiorum, deſpectio apud Do- 27
minum: quoniam offerunt illa mente a-
lienâ à lege. Teſtis mendax peribit: & 28
homo obediens loquitur cautè. Vir im- 29
pius erigit ſeſe vultu impudenti: &
rectus, ipſe intelligit vias ſuas. Non in- 30
veniuntur ſagacitas, non eſt conſilium
apud impium. Equus paratur ad diem 31
bellis: & à Deo auxilium.

CAP. XXII.

NOmen laudabile altioris eſt digni- 1
tatis quàm divitiæ multæ: & gratia bo-
na, pretioſior argento & auro. Dives 2
& pauper offenderunt alter alterum: &
utroſque Dominus creavit. Expertus 3
cùm videt ſceleſtum cruciatum, eruditur
eruditione firmâ: ſtulti autem cùm tranſ-
eunt, detrimento afficiuntur. Finis ſa- 4
pientiæ, timor Domini, & opes, &
gloria, & vita. In itinere obliquo, aſpe- 5
ro, dumi & laquei: & qui cuſtodit
animam ſuam, liberabitur ab ipſis.

Deeſt. Verſ. 6.

Pauperes dominabuntur divitibus: & 7
ſervi fœnerabuntur dominis ſuis. Qui 8
ſeminabit nequitias, metet mala, & com-
plebit flagellum operum ſuorum. Deus
diligit virum hilarem vultu & libera-
lem, & perficit vanitates operationum il-
lius. Qui miſeretur pauperis, ipſe nutrie- 9
tur, quia dedit pauperi de operibus ſuis.
Qui dat munus, parat ſibi proſperitatem
& honorem: & eruit animam ſuam ab
eo quod poſſidet illam. Educ corrupto- 10
rem è congregatione, & exibit cum eo
calamitas: quoniam cùm ſederit in con-
gregatione, vilipendet cœtum. Dominus 11
amat corda innocentia: et omnes in qui-
bus non eſt vitium, accepti ſunt apud eum.
Rex paſcit populum labiis ſuis: et oculi 12
Domini obſervant ſenſum, et aſpernan-
tur ſermones declinantes à lege. Piger 13
excuſat ſe, et ait, Leo eſt in viis, et oc-
ciſio in plateis. Præcipitium profundum, os 14
tranſgredientis legẽ: et is quem odit Do-
min⁹, incidet in illud. Sunt viæ pravæ co-
ram homine, et non cupit recedere ab i-
pſis: decet tamen illum revocare ſe à via
obliqua et prava. Stultitiam accendet 15
cor juvenis, cùm fuerit baculus et diſci-
plina longè ab illo.

משלי : כב

Inclina defectū ad verè ,diviti dans : ſibi multiplicandū ad,tenui Extorquens
16 עשק דל להרבות לו נתן לעשיר אך למחסור : הט 17
.meā ſcientiā ad pones tuū cor & : ſapientū verba audi & ,tuā aurem
אזנך ושמע דברי חכמים ולבך תשית לדעתי :
pariter dirigentur : tuo ventre in ea cuſtodieris ſi , delectabilis Quia
18 כי־נעים כי־תשמרם בבטנך יכנו יחדו
te feci ſcire : tuam fiduciam Domino in exiſtendum Ad .tuis labiis ſuper
19 על־שפתיך : להיות ביהוה מבטחך הודעתיך
, conſiliis in , terna tibi ſcripſi Nonne .tu etiam hodie
20 היום אף־אתה : הלא כתבתי לך שלשים במעצות
: veritatis eloquiorum certitudinem te faciendum ſcire Ad ? ſcientia &
21 ודעת : להודיעך קשט אמרי אמת
,tenuem diripias Ne ? te timentibus veritatis eloquia referendum ad
22 להשיב אמרים אמת לשלחך : אל־תגזל־דל
Dominus Quia .porta in afflictum conteras ne & : ipſe tenuis quia
23 כי דל־הוא ואל־תדכא עני בשער : כי־יהוה
Ne .animam eorum configentium configet & : eorum litem litigabit
24 יריב ריבם וקבע את־קבעיהם נפש : אל־
.congrediaris ne excandeſcentiarum viro cum & ;naſi auctori aſſocieris
תתרע את־בעל אף ואת־איש חמות לא תבוא :
Ne .tuæ animæ laqueum capias & ; ejus ſemitas diſcas fortè Ne
25 פן־תאלף ארחתו ולקחת מוקש לנפשך : אל־ 26
non Si .debita fidejubentibus in ; volam percutientibus in ſis
27 תהי בתקעי־כף בערבים משאות : אם־אין־
? te ſubter de tuum cubile tollet quid ut ; reddendum ad tibi
לך לשלם למה יקח משכבך מתחתיך :
.tui patres fecerunt quem ; ſeculi terminum retrogas Ne
28 אל־תסג גבול עולם אשר עשו אבותיך :
: ſtatuetur regum facies ad ? ſuo opere in velocem virum Vidiſti
29 חזית איש מהיר במלאכתו לפני־מלכים יתיצב
.tenebroſorum facies ad ſtatuetur non
בל־יתיצב לפני חשכים :

CAP. XXIII. כג

conſiderabis conſiderando ; dominatore cum comedendum ad ſederis Cùm
1 כי־תשב ללחום את־מושל בין תבין
compos ſi : tua fauce in cultrum pones Et .tuas facies ad quod
2 את־אשר לפניך : ושמת שכין בלעך אם־בעל
panis hoc & : ejus ſapidos cibos concupiſcas Ne .tu animæ
3 נפש אתה : אל־תתאו למטעמותיו והוא לחם
.ceſſa tua intelligentia ab : diteſcendum ad labores Ne .mendaciorum
4 כזבים : אל־תיגע להעשיר מבינתך חדל :
faciendo quia , ipſum non & ? illud in tuos oculos facies volare An
5 התעיף עיניך בו ואיננו כי עשה
Ne .cœlos in volabit aquila ſicut : alas ſibi faciet
6 יעשה־לו כנפים כנשר ועיף השמים : אל־
.ejus ſapidos cibos ad concupiſcas ne & : oculi mali panem comedas
תלחם את־לחם רע עין ואל־תתאו למטעמתיו :
dicet , bibe & comede : hoc ſic ,ſua anima in æſtimavit ſicut Quoniā
7 כי כמו שער בנפשו כן־הוא אכל ושתה יאמר
: eam evomes ,comediſti tuam Buccellam .tecum non ejus cor & : tibi
8 לך ולבו בל־עמך : פתך־אכלת תקיאנה
; loquaris ne ſtulti auribus In .jucunda tua verba corrumpes &
9 ושחת דבריך הנעימים : באזני כסיל אל־תדבר
loco moveas Ne .tuorum eloquiorum intellectum contemnet quia
10 כי־יבוז לשכל מליך : אל־תסג
illorū redemptor Quia .introeas ne pupillorū agros in & : ſeculi terminū
11 גבול עולם ובשדי יתומים אל־תבא : כי־גאלם
.tecum eorum litem litigabit ipſe : fortis
חזק הוא־יריב את־ריבם אתך :

Verſio VULG. LAT.

16 Qui calumniatur pauperem,ut
augeat divitias ſuas,dabit ipſe
17 ditiori,& egebit. Inclina aurem tuam,& audi verba ſapientium: appone autem cor ad
18 doctrinam meā. Quæ pulchra
erit tibi, cùm ſervaveris eam
in ventre tuo,& redundabit in
19 labiis tuis. Ut ſit in Domino
fiducia tua, undè & oſtendi e-
20 am tibi hodié. Ecce deſcripſi
eam tibi tripliciter, in cogi-
21 tationibus & ſcientiâ : Ut oſtenderem tibi firmitatem, &
eloquia veritatis , reſpondere
ex his illis qui miſerunt te.
22 Non facias violentiam pauperi,quia pauper eſt:neque con-
23 teras egenū in porta:Quia judicabit Dn̄s cauſā ej⁹,& configet eos,qui confixerūt animā
24 ejus. Noli eſſe amicus homini
iracundo, neque ambules cum
25 viro furioſo: Ne fortè diſcas
ſemitas ejus, & ſumas ſcanda-
26 lum animæ tuæ. Noli eſſe cum
his, qui defigunt manus ſuas,
& qui vades ſe offerunt pro
27 debitis : Si enim non habes
undè reſtituas, quid cauſæ eſt
ut tollat operimentum de cu-
28 bili tuo? Ne tranſgrediaris
terminos antiquos,quos poſue-
29 rūt patres tui. Vidiſti virū velocē in opere ſuo? corā regib⁹
ſtabit, nec erit ante ignobiles.

CAP. XXIII.

1 QUando ſederis ut comedas cum principe, diligenter
attende quæ appoſita ſunt an-
2 te faciem tuam : Et ſtatue cultrum in gutture tuo, ſi tamen
habes in poteſtate animam tu-
3 am,Ne deſideres de cibis ejus,
4 in quo eſt panis mendacii.No-
li laborare ut diteris: ſed pru-
5 dentiæ tuæ pone modum. Ne
erigas oculos tuos ad opes ,
quas non potes habere : quia
facient ſibi pennas quaſi aquilæ, & volabunt in cœlum.
6 Ne comedas cum homine invido, & ne deſideres cibos e-
7 jus: Quoniam in ſimilitudinem arioli & conjectoris, æſtimat quod ignorat. Comede & bibe,dicet tibi : et mens
8 ejus non eſt tecum. Cibos,
quos comederas, evomes: et
perdes pulchros ſermones tu-
9 os. In auribus inſipientium ne
loquaris: quia deſpicient do-
10 ctrinam eloquii tui. Ne attingas parvulorum terminos : et
agrum pupillorum ne introe-
11 as: Propinquus enim illorum
fortis eſt: et ipſe judicabit contra te cauſam illorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 † Ὁ συκοφαντῶν πένητα, † πολλὰ ποιεῖ τὰ
ἑαυτοῦ (δ), † δίδωσι δὲ πλουσίῳ ἐπ' ἐλάσσονι.
17 † Λόγοις σοφῶν (γ) παράβαλλε σὸν οὖς, καὶ ἄ-
κουε ἐμὸν λόγον, † τὴν δὲ σὴν καρδίαν ἐπί-
18 στησον, ἵνα γνῷς, Ὅτι καλοί εἰσιν. † καὶ ἐὰν
ἐμβάλῃς αὐτοὺς εἰς τὴν καρδίαν σου, † εὐ-
19 φρανοῦσί σε ἅμα ἐπὶ σοῖς χείλεσι· † Ἵνα σου
γένηται ἐπὶ κύριον ἡ ἐλπὶς, καὶ γνωρίσῃ σοι
20 τὴν (ε) ὁδὸν σου. † Καὶ σὺ δὲ ἀπόγραψαι αὐ-
τὰ σεαυτῷ τρισσῶς, † εἰς βουλὴν καὶ γνῶσιν
21 ἐπὶ τὸ πλάτος τῆς καρδίας σου. † Διδάσκω
οὖν σε ἀληθῆ λόγον, καὶ γνῶσιν (ς) ἀγαθὴν
ὑπακούειν, † τοῦ (ζ) ἀποκρίνεσθαί σε λόγοις
ἀληθείας τοῖς προβαλλομένοις (η) σοι. †
22 Μὴ ἀποβιάζου πένητα, πτωχὸς γάρ ἐστι, †
23 καὶ μὴ ἀτιμάσῃς ἀσθενῆ ἐν πύλαις. † Ὁ γὰρ
κύριος κρινεῖ (θ) αὐτοῦ τὴν κρίσιν, καὶ ῥύσῃ
24 σὴν ἄσυλον ψυχήν. † Μὴ ἴσθι ἑταῖρος ἀν-
δρὶ θυμώδει, † φίλῳ δὲ ὀργίλῳ μὴ συναυ-
25 λίζου· † Μή ποτε μάθῃς τῶν ὁδῶν αὐτοῦ,
26 καὶ λάβῃς βρόχους τῇ σῇ ψυχῇ. † Μὴ δί-
δου σεαυτὸν εἰς ἐγγύην αἰσχυνόμενος πρόσ-
27 ωπον· † Ἐὰν γὰρ μὴ (ι) ἔχῃ πόθεν ἀποτί-
σῃ, † λήψονται τὸ στρῶμα τὸ ὑπὸ τὰς
28 πλευράς σου. † Μὴ μέταιρε ὅρια αἰώνια,
29 ἃ ἔθεντο οἱ πατέρες σου. † Ὁρατικὸν ἄν-
δρα καὶ ὀξὺν ἐν τοῖς ἔργοις αὐτοῦ † βασι-
λεῦσι δεῖ παρεστάναι, † καὶ μὴ παρεστάναι ἀν-
δράσι νωθροῖς.

MS. A. (δ) κακὰ, δίδωσιν (γ) παράβαλε (ε) ὁδὸν αὐτοῦ. (ς) ἀγαθῇ (ζ) ἀποκρίνασθαί σε λόγοις (η) σε. (θ) ἑαυτοῦ τὴν δίκην, (ι) ἔχῃς πόθεν ἀποτίσῃς,

ΚΕΦ. κγ΄.

1 † ἘΑν καθίσῃς δειπνεῖν ἐπὶ τραπέζης
δυνάστου, † νοητῶς νόει τὰ παρατιθέμενά
2 σοι. † Καὶ ἐπίβαλλε τὴν χεῖρά σου, εἰδὼς
ὅτι τοιαῦτά σε δεῖ παρασκευάσαι. † εἰ δὲ
3 ἀπληστότερος εἶ, † Μὴ ἐπιθύμει τῶν ἐδε-
σμάτων αὐτοῦ, † ταῦτα γὰρ ἔχεται ζωῆς
4 ψευδοῦς. † Μὴ παρεκτείνου πένης ὢν πλου-
5 σίῳ, † τῇ δὲ σῇ ἐννοίᾳ ἀπόσχου. † Ἐὰν ἐ-
πιστήσῃς τὸ σὸν ὄμμα πρὸς αὐτὸν, οὐδα-
μοῦ φανεῖται· † κατεσκεύασται γὰρ αὐτῷ
πτέρυγες ὥσπερ ἀετοῦ, † καὶ ὑποστρέφει εἰς τὸν
6 οἶκον τοῦ προεστηκότος αὐτοῦ. † Μὴ συν-
δείπνει ἀνδρὶ βασκάνῳ, † μηδὲ ἐπιθύμει
7 τῶν βρωμάτων αὐτοῦ, † Ὃν τρόπον γὰρ εἴ τις
καταπίοι τρίχα, † οὕτως ἐσθίει καὶ πίνει. †
μηδὲ πρὸς σὲ εἰσαγάγῃς αὐτὸν, καὶ φάγῃς
8 τὸν ψωμόν σου μετ' αὐτοῦ, † Ἐξεμέσει γὰρ
αὐτὸν, καὶ λυμανεῖται τοὺς λόγους σου τοὺς
9 καλούς. † Εἰς ὦτα ἄφρονος μηδὲν λέγε,
† μήποτε μυκτηρίσῃ τοὺς συνετοὺς λόγους σου.
10 † Μὴ μεταθῇς ὅρια αἰώνια, (α) † εἰς δὲ
11 κτῆμα ὀρφανῶν μὴ εἰσέλθῃς· † Ὁ γὰρ λυ-
τρούμενος αὐτοὺς κύριος, κραταιός ἐστι, † καὶ
κρινεῖ τὴν κρίσιν αὐτῶν μετὰ σοῦ.

MS. A. (α) ἃ ἔθεντο οἱ πατέρες σου, εἰς δὲ κτῆμα

Qui calumniatur pauperem, multa facit (ſ) ſua : dat autem di-
viti (t) ad minus. Sermonibus
ſapientum admove aurem tuam,
& audi meum ſermonem, & cor
tuum firma, ut cognoſcas : Quod
boni ſunt. Et ſi immiſeris eos
in cor tuum, (v) ædificabunt te
ſimul in tuis labiis : ut tua fiat
ſuper Dominum ſpes, & notam
tibi faciat viam (x) tuam. Et tu
verò deſcribe (y) ea tibi tripliciter
in conſilio, & ſcientia ſuper la-
tudinem cordis tui. Doceo ergo
te verū ſermonē, & ſcientiā bonam
obaudire ; (z) ut reſpondeas ſer-
mones veritatis his qui proponunt
tibi. Non (a) facias violentiam
pauperi, inops enim eſt ; neque in-
honores imbecillum in portis : (aa)
Dominus enim judicabit ejus ju-
dicium : & erues tuam animam
tutam. Noli (bb) eſſe ſodalis vi-
ro furioſo : neque cum amico ira-
cundo cohabites : Ne fortè di-
ſcas vias ejus, & accipias (cc) la-
queos animæ tuæ. Ne dederis te
in fidejuſſionem, reveritus faciem.
Si enim non habueris unde ſolvas
tollent ſtratum, quod ſub lateribus
tuis. Noli transferre terminos
æternos, quos poſuerunt patres
tui. Pervidentem virum, & ex-
tum in operibus ſuis oportet regi-
bus aſſiſtere, & non aſſiſtere (dd)
viris ſocordibus.

CAP. XXIII.

SI ſederis cœnare ad menſam
potentis ; (a) ſapienter intellige
quæ apponuntur tibi. Et im-
mitte manum tuam, ſciens, quod
oportet te talia præparare. Si au-
tem inſatiabilis es ; Noli concupi-
ſcere eſcas ejus : hæc (c) enim
obtinent vitam falſam. Ne ex-
tendas te, cùm ſis pauper, ad
divitem : tuâ autem cogitatio-
ne abſtine. Si intenderis oculum
tuum erga eum ; nuſquā appare-
bit: paratæ enim ſunt ei alæ, tan-
quàm aquilæ, (e) & revertetur in
domum præſidis ſui. Nec cœnes
unà cum viro (f) invido, neque
concupiſcas (g) eſcas ejus: Quem-
admodùm enim (h) ſi quis de-
glutiat pilum ; ſic comedit, &
bibit. Neque ad te introducas e-
um, & comedas buccellam tu-
am cum eo : Evomet enim eam,
& (i) contaminabit ſermones tu-
os bonos. In aures imprudentis
noli quicquam dicere: ne forte ir-
rideat (k) ſapientes ſermones tu-
os. Ne (l) transponas terminos
æternos : & in poſſeſſionem or-
phanorum ne ingrediaris. (m)
Qui enim redimit eos Dominus,
validus eſt, & judicabit judicium
eorum tecum.

תרגום TARGUM.

16 דעשק למסכנא מסגי ליה בישתא ודיהב לעתירא חוסרנא הוא ליה : ברי צלי 17
18 ארנך ושמע מלי דחכימי ולבך שים לידיעתי : מטול דבסימין נטר אנון בכרסך
19 ונתקנון איך חדא על שפותך : דנהוי באלהא סברך ואודעתך יומנא הדא
20 אף אנת : והא כתבית אנון לך על תלתא זמנין בעצתא וידיעתא : לאודענך 21
22 קושטא ומלי דתריצותא דתהפיך מלתא דקושטא למשדריך : לא תגזול למסכנא
23 מטול דמסכנא הוא ולא תמכיך עניא בתרעא : מטול דאלהא דאן דינהון ומתפרע
24 פורענותהון דנפשהון : לא תתחבר עם מרי מרירותא ועם גברא חמתנא לא תעול :
25 דלא תילף ארחתיה ותשכח פחא לנפשך : לא תהוי משלם אידך בערבותא על 26
27 חברך : אם לית לך דפריע נסבין תשויתך מתחתיך : לא תשני תחומא דמן עלמא 28
29 דעבדו אבהתך : אין חזיתא גברא דמוחי בעבדתיה קדם מלכי נקום ולא נקום
קדם חשוכי :

כג

1 אין יתבתא למיכל עם שליטי אתבין במו דשים קדמיך : ותשים סכינא בלועך אין מרא
2 דנפשך את : לא תתרגג לבשולוי והנין מיכולתא דכדבותא : לא תקרב לעתירא אלא 3
4 בביונתך פרק מניה : אין תצר עינך ביה לא מתחזי לך מטול דמעבד עבד ליה גפתא היך
5 נשרא דטיס בשמיא : לא תיכול עם גברא דבישא עיניה ולא תתרגג לבשולוי : 6
7 מטול דאיך תרעא רמא הכן הוא רם בנפשיה אכיל ואשתי אמר לך ולביה נכיל
8 צדך : ולחמא דאכלתא מתיבת ליה ומחבלת מלך דבסימן : באדני דסכלא לא תמלל 9
10 מטול דשיט לסכולא דמליך : לא תשני תחומא דמן עלמא ובחלקא דיתמי לא
11 תעול : מטול די פרוקהון תקיף והוא נדון ית דינהון עמך :

PARAPH. CHALD. Verſio La

Qui calumniatur pauperem, multiplicat ſibi malum : & qui dat di
egeſtas erit ei. Fili mi inclina aurem tuam, & audi verba ſapientum
cor tuum pone ad ſcientiam meam. Quoniam dulcia ſunt, cuſtodi
ventre tuo, & dirigantur ſimul in labiis tuis. Ut ſit in Deo fiducia tu
oſtendam tibi hodie, *etiam tibi*. Et ecce ea *ſcripſi* tibi in tribus vicib
conſiliis & ſcientia. Ut oſtendam tibi veritatem, & verba recta, ut re
verba veritatis illis qui mittunt te. Ne deprædaris pauperem quia pa
eſt, neque conteras egenum in porta. Quoniam Deus judicat cauſam
rum, & ulciſcitur injuriam animæ eorum [*illatam*]. Non commiſ
cum viro bilioſo, & cum viro iracundo ne ingrediaris. Ne fortè di
ſemitas ejus, & invenias laqueum animæ tuæ. Ne pepigeris manum
in fidejuſſione pro ſocio tuo. Si non habueris unde reſtituas, tollent
tum tuum de ſub te. Ne mutes terminum qui à ſeculo eſt, quem fece
patres tui. Si vidiſti virum qui velox eſt in opere ſuo, coram regibus
bit, non ſtabit coram pauperibus.

CAP. XXIII.

SI aſſederis ut comedas cum principibus, attende ad ea quæ appo
coram te. Et pones cultrum in gutture tuo, ſi animæ tuæ dominus
Ne deſideres obſonia ejus, quæ ſunt cibaria mendacii. Ne accedas ad
vitem, ſed in intelligentia tua recede ab eo. Si alligaveris oculos tuo
eum, non comparebit tibi ; quoniam faciens faciet ſibi alas ſicut a
quæ volat in cœlum. Ne comedas cum viro qui habet oculum nequam
que deſideres pulmenta ejus. Quoniam ſicut porta erigitur, ſic elev
in anima ſua. Comede & bibe, dicet tibi, & cor ejus doloſum eſt
te. Panem autem quem comediſti, evomes ; & perdes ſermones tuos
ves. In auribus ſtulti ne loquaris; quoniam ſpernet intelligentiam ve
rum tuorum. Ne mutes terminum qui à ſeculo eſt : & in agro pupil
ne ingrediaris. Quoniam redemptor eorum fortis eſt, & ipſe ju
cauſam eorum contra te.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 * ܕܐܠܨ ܠܡܣܟܢܐ. ܡܣܓܐ ܒܝܫܬܗ. ܘܕܝܗܒ ܠܥܬܝܪܐ. ܚܘܣܪܢܐ ܗܘ ܠܢܦܫܗ.* ܐܪܟܢ
17 ܐܕܢܟ. ܘܫܡܥ ܡܠܐ ܕܚܟܝܡܐ. ܘܣܝܡ ܠܒܟ ܠܝܕܥܬܝ.* ܡܛܠ ܕܒܣܝܡܝܢ ܐܢܝܢ. ܛܪ ܐܢܝܢ
18 ܒܟܪܣܟ. ܘܢܬܩܢܢ ܐܟܚܕܐ ܥܠ ܣܦܘܬܟ.* ܕܢܗܘܐ ܠܡܪܝܐ ܬܘܟܠܢܟ. ܐܘܕܥܬܟ ܝܘܡܢܐ.
19 * ܘܗܐ ܟܬܒܬ ܠܟ ܬܠܬ ܙܒܢܝܢ. * ܕܐܘܕܥܟ ܡܠܟܐ ܘܝܕܥܬܐ ܘܫܝܢܐ. ܘܡܠܐ
20 ܕܩܘܫܬܐ. ܕܬܦܢܐ ܡܠܬܐ ܕܩܘܫܬܐ ܠܡܢ ܕܫܕܪܟ.* ܠܐ ܬܐܠܘܨ ܠܡܣܟܢܐ. ܡܛܠ ܕܡܣܟܢ
21 ܗܘ. ܘܠܐ ܬܡܟܟ ܠܡܣܟܢܐ ܒܬܪܥܐ.* ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܕܐܢ ܕܝܢܗܘܢ. ܘܡܬܦܪܥ ܥܠܘܒܝܐ
22 ܕܢܦܫܗܘܢ.* ܠܐ ܬܗܘܐ ܪܚܡܐ ܠܓܒܪܐ ܚܡܝܡܐ. ܘܥܡ ܓܒܪܐ ܕܡܠܐ ܚܡܬܐ ܠܐ ܬܥܘܠ.* ܕܠܐ
23 ܬܐܠܦ ܡܢ ܫܒܝܠܘܗܝ. ܘܬܫܟܚ ܬܘܩܠܬܐ ܠܢܦܫܟ.* ܠܐ ܬܬܠ ܢܦܫܟ ܥܪܒܘܬܐ
24 ܡܢ ܩܕܡ ܐܢܫ ܡܢ ܦܪܨܘܦܐ.* ܐܢ ܠܝܬ ܠܟ ܡܢ ܐܝܟܐ ܕܬܦܪܘܥ. ܢܣܒܘܢ ܡܫܟܒܟ ܡܢ
25 ܬܚܘܬܝܟ.* ܠܐ ܬܫܢܐ ܬܚܘܡܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܕܐܬܩܢܘ ܐܒܗܝܟ.* ܐܢ ܚܙܝܬ ܓܒܪܐ ܕܡܗܝܪ
26 ܒܥܒܕܗ. ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܢܩܘܡ. ܘܠܐ ܢܩܘܡ ܩܕܡ ܚܫܘܟܐ. *ܩܦܠܐܘܢ ܟܓ* * ܐܢ ܬܬܒ ܠܡܐܟܠ
27 ܥܡ ܫܠܝܛܐ. ܐܣܬܟܠ ܡܢܐ ܕܣܝܡ ܩܕܡܝܟ.* ܕܠܐ ܬܣܝܡ ܣܟܝܢܐ ܒܦܘܡܟ.
28 * ܐܢ ܐܝܬ ܓܒܪܐ ܕܢܦܝܫ. ܠܐ ܬܪܓ ܡܢ ܡܐܟܘܠܬܗ. ܡܛܠ ܕܠܚܡܗ. ܠܚܡܐ ܗܘ
29 ܕܕܓܠܘܬܐ.* ܠܐ ܬܬܩܪܒ ܠܘܬ ܥܬܝܪܐ. ܐܠܐ ܒܣܘܟܠܐ ܦܪܘܩ ܡܢܗ.* ܐܢ ܬܪܡܐ ܥܝܢܟ ܒܗ
1 ܠܐ ܡܬܚܙܐ ܠܟ. ܡܛܠ ܕܥܒܕ ܠܗ ܓܦܐ ܐܝܟ ܕܢܫܪܐ. ܘܦܪܚ ܠܫܡܝܐ.* ܠܐ ܬܠܥܣ ܥܡ ܓܒܪܐ
2 ܚܣܡܐ. ܘܠܐ ܬܪܓ ܡܢ ܡܐܟܘܠܬܗ.* ܐܝܟܢܐ ܓܝܪ ܕܢܒܠܥ ܣܥܪܐ. ܗܟܢܐ ܬܐܟܘܠ
3 ܘܬܫܬܐ ܥܡܗ. ܘܠܒܗ ܠܐ ܗܘܐ ܥܡܟ.* ܘܠܚܡܐ ܕܐܟܠܬ ܬܬܩܝܐ. ܘܬܚܒܠ ܡܠܝܟ
4 ܒܣܝܡܬܐ.* ܩܕܡ ܣܟܠܐ ܠܐ ܬܡܠܠ. ܡܛܠ ܕܢܫܘܛ ܚܟܡܬ ܡܠܝܟ.

ܠܐ ܬܫܢܐ ܬܚܘܡܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܘܒܚܩܠܐ ܕܝܬܡܐ ܠܐ ܬܥܘܠ. ܡܛܠ ܕܦܪܘܩܗܘܢ ܚܝܠܬܢ ܗܘ. ܘܗܘ ܢܕܘܢ ܕܝܢܗܘܢ.

Qui pauperem lædit, auget malum ſuum: & 16
qui diviti largitur, jactura eſt animæ ejus.
Admove aurem tuam, & audi verba ſapi- 17
entum, & appone cor tuum ad ſcientiam
meam. Quandoquidem jucunda ſunt, re- 18
conde ea in ventrem tuum, & parentur ſimul
ſuper labia tua. Ut ſit in Domino fiducia 19
tua notum feci tibi hodié. Et ecce ſcripſi 20
hæc tibi tertiâ vice: Ut indicarem tibi 21
conſilium & ſcientiam, tranquillitatem, &
verba veritatis: ut reſpondeas verbum veri-
tatis ei qui te miſit. Ne lædas pauperem quòd 22
pauper ſit: & ne deprimas inopem in porta.
Dominus enim judicat cauſam eorum, & 23
compenſabitur oppreſſio *illata* animæ eorum.
Ne ſis amicus homini iracundo, & cum viro 24
pleno furoris ne ingrediaris: Ne fortè di- 25
ſcas leges ejus, & invenias offendiculum a-
nimæ tuæ. Ne tradas animam tuam ſponſio- 26
ni, veritus perſonam. Nam ſi nihil habeas 27
unde reddas, auferent ſtratum tuum ſubtus
te. Ne dimoveas terminum perennem quem 28
definierunt patres tui. Si videas virum prom- 29
ptum in opere ſuo, coram regibus ſtabit: non
autem ſtabit coram obſcuris.

CAP. XXIII.

Cùm ſedes cœnaturus coram præfecto, ad- 1
verte quòd ante te poſitum eſt: Ne fortè po- 2
nas cultrũ in os tuum. Si adſit vir nobilis, Ne 3
exoptes de cibo ejus: quia panis ejus, panis eſt
mendacii. Ne accedas ad divitem, ſed cum 4
prudentia recede ab eo. Nam ſi defigas ocu- 5
lum tuum in eo, non cernetur à te: quoniam
efficit ſibi alas velut aquilæ, & avolat in cœ-
lum. Ne cœnes cum homine avido, neque 6
deſideres de cibo ejus. Ut enim ſi quis cla- 7
vam deglutiret, ſic ederes ac biberes cum eo,
& cor ejus nequaquam eſſet erga te: Et pa- 8
nem quem comederes, evomeres: & contami-
nares verba tua jucunda. Coram ſtulto ne lo- 9
quaris, quia ſpernet verba tua. Ne loco mo- 10
veas terminũ antiquum, & in agro pupillorũ
ne anticipes. Siquidem vindex eorum potens 11
eſt, & ipſe judicabit cauſam eorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 17 *من يبغ فقيرا يصنع شرورا كثيرة* ومن يعطي الغني يتناقص حاله* ابذل اذنك للاقوال
18 الحكمة* واسمع اقوالي وانصب قلبك لتعلم انها محمودة* فان جعلتها في قلبك فرحك في
19 20 شفتيك معا* ليكون توكلك على الرب ويعرفك طريقه* فاكتبها انت لنفسك مثلثة للراي
21 والمعرفة على عرض قلبك* فاعلمك كلاما صادقا وتطيع معرفة صالحة لتجاوب اقوالا صادقة
22 23 للذين يحضرون عندك* لا تغضبن فقيرا فانه مسكين* ولا تهون بعليل في احزانه* فان الرب
24 يحكم حكمه وينقذ نفسك غير مسلوبة* لا تعرفن رفيقا لرجل غضوب* ولا تساكنن صديقا
25 26 سخوطا* لئلا تتعلم طرائقه* فتاخذ لنفسك وهقا* لا تبذلن ذاتك لكفالة* اذ تخجل من
27 28 وجه انسان* لان ان لم تكن لك جهة تقضي منها* ياخذون الفراش التي تحت جنبيك* لا
29 تغيرن حدودا ابدية وضعها اباوك* الرجل العالم والجاد في افعاله يجب ان يمثل بحضرة الملوك
ولا يقف بحضرة رجال ضعفاء خاملين*

* الفصل الثالث والعشرون *

1 2 *ان جلست تتعشى لدى مائدة ذي اقتدار فتامل الموضوعات امامك تاملا عقليا* وامدد
3 يدك عالما انك نظير تلك يجب عليك ان تصلح* وان كنت جزيل الشره فلا تشتهين الاطعمة
4 لانها حاملة في المعيشة الكاذبة* اذا كنت فقيرا فلا تمد بسطتك الى موسر* وامتنع منه في
5 فكرك* فان نصبت اليه عينك فما يظهر البتة* لان قد اصلحت له اجنحة كالنسر* ويرجع الى
6 7 المنزل الواقف به* لا تتعش مع رجل حسود* ولا تشتهين اطعمته* وكمن يبلع الشعر هذا
8 كل واشرب ولا تداخله الى عندك وتاكل معه خبزك* لانه يتقياه* ويفسد اقوالك الحسنة* لا
9 10 تقولن شيئا في اذني الجاهل* لئلا يستهزي باقوالك الفقهية* لا تنقلن حدودا ابدية* ولا تدخلن
11 على اقطاع اليتامى* لان الرب الفادي اياهم هو عزيز* ويحكم حكومتهم معك*

Qui opprimit pauperem, committit ma- 16
la multa: & qui dat diviti, minora-
bitur conditio ejus. Præbe aurem tu- 17
am eloquiis ſapientibus, et audi ſermones
meos, & erige cor tuum ad agnoſcendum
eos eſſe laudabiles. Si enim poſueris eos 18
in corde tuo, lætificabunt te in labiis tuis
ſimul. Ut ſit fiducia tua in Domino, & 19
notificet tibi viam ſuam. Itaque ſcribe 20
illos tu animæ tuæ tripliciter ad conſilium
& doctrinam, ſuper latitudine cordis tui.
Nam docebo te verba vera, & feres fru- 21
ctus ſcientiæ bonæ, ut reſpondeas ſermo-
nes veraces iis qui aderunt tibi. Ne ir- 22
rites pauperem, quoniam miſer eſt: &
ne aſperneris infirmum in afflictionibus
ſuis. Nam Dominus judicabit judicium e- 23
jus, & liberabit animam tuam quin ra-
piatur. Ne agnoſcaris ſocius hominis ira- 24
cundi: & ne cohabites cum amico furi-
bundo, Ne diſcas vias ejus & ſumas a- 25
nimæ tuæ laqueum. Ne permutes te ipſum 26
pro ſponſione, erubeſcens vultum ho-
minis: Quoniam ſi non habueris modum 27
liberandi te ab illa, tollent ſtratum quod
eſt ſub lateribus tuis. Ne mutes terminos 28
æternos, quos poſuerunt patres tui. Vir 29
peritus & velox in actionibus ſuis, con-
venit verſetur coram regibus, & non ſtet
coram viris debilibus & abjectis.

CAP. XXIII.

Si ſederis ad cœnandum ad menſam 1
potentis, conſidera quæ ſunt appoſita co-
ram te conſideratione prudenti: Et ex- 2
tende manum tuam, ſciens te ſimilia illis
debere parare. Et licèt fueris immoderatæ 3
aviditatis, ne appetas cibos ejus, quia por-
tant alimentum mendax. Si fueris pauper, 4
ne extendas latitudinem tuam ad opulen-
tum, et cohibe te ab illo in cogitatione tua.
Nam ſi defixeris in eo oculum tuum, non 5
videbitur unquam: quia aptatæ ſunt illi
alæ velut aquilæ, & redibit ad domici-
lium in quo ſtat. Ne cœnes cum viro in- 6
vido, & ne appetas cibos ejus. Nam velut 7
is qui deglutit pilos eſt, iſte. Comede &
bibe, & ne introducas illum ad te, &
comedas cum eo panem tuum: Quia evo- 8
met illum, & corrumpet ſermones tuos
pulchros. Ne dicas quicquam in auribus 9
ignari, ne irrideat eloquia tua docta. Ne 10
transferas limites æternos, & ne aggre-
diaris terminos pupillorum: Quoniam Do- 11
minus redemptor eorum, eſt fortiſſimus, et
judicabit judicium illorum tecum.

מִשְׁלֵי : כג

.ſcientiæ eloquia ad tuas aures & ; tuum cor eruditionem ad fac Ingredi
12 הָבִיאָה לַמּוּסָר לִבֶּךָ וְאָזְנֶךָ לְאִמְרֵי־דָעַת׃
,virga in eum percuſſeris *cùm* : correctionem puero à prohibeas Ne
13 אַל־תִּמְנַע מִנַּעַר מוּסָר כִּי־תַכֶּנּוּ בַשֵּׁבֶט
ejus animam & ; eum percuties virga in Tu .morietur non
14 לֹא יָמוּת׃ אַתָּה בַּשֵּׁבֶט תַּכֶּנּוּ וְנַפְשׁוֹ
lætabitur ; tuum cor fuerit ſapiens ſi ,mi Fili .erues inferno ab
15 מִשְּׁאוֹל תַּצִּיל׃ בְּנִי אִם־חָכַם לִבֶּךָ יִשְׂמַח
loquendo in ; mei renes exultabunt Et .ego etiam , meum cor
16 לִבִּי גַם־אָנִי׃ וְתַעְלֹזְנָה כִלְיוֹתָי בְּדַבֵּר
: peccatores *in* tuum cor æmuletur Ne .*rectitudines* tua labia
17 שְׂפָתֶיךָ מֵישָׁרִים׃ אַל־יְקַנֵּא לִבְּךָ בַּחַטָּאִים
ſi Quia .die tota DOMINI timore in *quinimò*
18 כִּי אִם־בְּיִרְאַת־יְהוָה כָּל־הַיּוֹם׃ כִּי אִם
,mi fili tu Audi .ſuccidetur non tua ſpes & ; *noviſſimum* eſt
19 יֵשׁ אַחֲרִית וְתִקְוָתְךָ לֹא תִכָּרֵת׃ שְׁמַע־אַתָּה בְנִי
Ne .tuum cor *via in* *pregredi* fac & : *eſto* ſapiens &
20 וַחֲכָם וְאַשֵּׁר בַּדֶּרֶךְ לִבֶּךָ׃ אַל־
.*ſibi* carnis comeſſatoribus *in* : vini potatoribus *in* ſis
תְּהִי בְסֹבְאֵי־יָיִן בְּזֹלֲלֵי בָשָׂר לָמוֹ׃
.dormitatio induere faciet *ſciſſuras* & ; *efficietur pauper* edax & ,bibax Quia
21 כִּי־סֹבֵא וְזוֹלֵל יִוָּרֵשׁ וּקְרָעִים תַּלְבִּישׁ נוּמָה׃
, ſenuerit cùm ,contemnas ne & : te genuit ipſe , tuo patri *Audi*
22 שְׁמַע לְאָבִיךָ זֶה יְלָדֶךָ וְאַל־תָּבוּז כִּי־זָקְנָה
, ſapientiam ; vendas ne & , eme Veritatem .tuam matrem
23 אִמֶּךָ׃ אֱמֶת קְנֵה וְאַל־תִּמְכֹּר חָכְמָה
pater exultabit Exultando .intelligentiam & , eruditionem &
24 וּמוּסָר וּבִינָה׃ גּוֹל יָגוּל אֲבִי
Lætabitur .eo in lætabitur & , ſapientem generans : juſti
25 צַדִּיק יוֹלֵד חָכָם וְיִשְׂמַח־בּוֹ׃ יִשְׂמַח
mi fili Præbe .tua genitrix exultabit & : tua mater & ,tuus pater
26 אָבִיךָ וְאִמֶּךָ וְתָגֵל יוֹלַדְתֶּךָ׃ תְּנָה בְנִי
profunda fovea Quia .cuſtodiant meas vias tui oculi & : mihi tuũ cor
27 לִבְּךָ לִי וְעֵינֶיךָ דְּרָכַי תִּרְצֹנָה׃ כִּי־שׁוּחָה עֲמֻקָּה
prædæ tanquam ipſa Etiam .aliena anguſtus puteus & ; meretrix
28 זוֹנָה וּבְאֵר צָרָה נָכְרִיָּה׃ אַף־הִיא כְּחֶתֶף
, væ Cui .addet hominibus in prævaricatores & : inſidiabitur
29 תֶּאֱרֹב וּבוֹגְדִים בְּאָדָם תּוֹסִף׃ לְמִי אוֹי
? *gratis* vulnera cui , *murmur* cui , rixæ cui , *egeſtas* cui
לְמִי אֲבוֹי לְמִי מִדְיָנִים לְמִי־שִׂיחַ לְמִי פְּצָעִים חִנָּם
ingredientibus : vino *ſuper* Morantibus ? oculorum rubor cui
30 לְמִי חַכְלִלוּת עֵינָיִם׃ לַמְאַחֲרִים עַל־הַיָּיִן לַבָּאִים
, *rubuerit cùm* vinum intuearis Ne .*mixturam* quærendum ad
31 לַחְקֹר מִמְסָךְ׃ אַל־תֵּרֶא יַיִן כִּי יִתְאַדָּם
.*rectitudinibus in* ibit , ſuum *oculum* calice in dederit cùm
כִּי־יִתֵּן בַּכִּיס עֵינוֹ יִתְהַלֵּךְ בְּמֵישָׁרִים׃
tui Oculi .*punget* regulus velut & ; mordebit ſerpens ſicut ſuo Noviſſimo
32 אַחֲרִיתוֹ כְּנָחָשׁ יִשָּׁךְ וּכְצִפְעֹנִי יַפְרִשׁ׃ עֵינֶיךָ
33 eris Et .perverſa *loquetur* tuum cor & ; extraneas videbunt
34 יִרְאוּ זָרוֹת וְלִבְּךָ יְדַבֵּר תַּהְפֻּכוֹת׃ וְהָיִיתָ
.*rudentis* capite in *jacens* ſicut & ; maris corde in *jacens* veluti
כְּשֹׁכֵב בְּלֶב־יָם וּכְשֹׁכֵב בְּרֹאשׁ חִבֵּל׃
quando ,cognovi non ,me concuſſerunt : ægrotavi non ,me Verberaverunt
35 הִכּוּנִי בַל־חָלִיתִי הֲלָמוּנִי בַּל־יָדָעְתִּי מָתַי
.adhuc illud quæram , addam ? evigilabo
אָקִיץ אוֹסִיף אֲבַקְשֶׁנּוּ עוֹד׃

CAP. XXIV. כד

.eis cum *exiſtendum ad* deſideres ne & : *malitiæ* homines *in* æmuleris Ne
1 אַל־תְּקַנֵּא בְּאַנְשֵׁי רָעָה וְאַל־תִּתְאָו לִהְיוֹת אִתָּם׃

Verſio VULG. LAT.

12 Ingrediatur ad doctrinam cor
tuum, & aures tuæ ad verba
13 ſcientiæ. Noli ſubtrahere à
puero diſciplinam: ſi enim percuſſeris
eum virgâ, non morietur.
14 Tu virgâ percuties eum:
& animam ejus de inferno liberabis.
15 Fili mi, ſi ſapiens fuerit
animus tuus, gaudebit tecum
16 cor meum: Et exultabunt
renes mei, cùm locuta
17 fuerint rectum labia tua. Non
æmuletur cor tuum peccatores:
ſed in timore Domini eſto
18 totâ die: Quia habebis ſpem
in noviſſimo, & præſtolatio
19 tua non auferetur. Audi, fili
mi, & eſto ſapiens: & dirige
20 in via animum tuum. Noli eſſe
in conviviis potatorum, nec
in comeſſationibus eorum: qui
carnes ad veſcendum conferunt:
21 Quia vacantes potibus,
& dantes ſymbola conſumentur,
& veſtietur pannis dormitatio.
22 Audi patrem tuum, qui
genuit te: & ne contemnas
23 cùm ſenuerit mater tua. Veritatem
eme, & noli vendere
ſapientiam, & doctrinam, &
24 intelligentiam. Exultat gaudio
pater juſti: qui ſapientem
25 genuit, lætabitur in eo. Gaudeat
pater tuus, & mater tua,
26 & exultet quæ genuit te. Præbe,
fili mi, cor tuum mihi: &
oculi tui vias meas cuſtodiant.
27 Fovea enim profunda eſt meretrix:
& puteus anguſtus, aliena.
28 Inſidiatur in via quaſi latro,
& quos incautos viderit,
29 interficiet. Cui væ? cujus patri
væ? cui rixæ? cui foveæ? cui
ſine cauſa vulnera? cui ſuffuſio
30 oculorum? Nónne his, qui
commorantur in vino, & ſtudent
31 calicibus epotandis? Ne
intuearis vinum quando flaveſcit,
cùm ſplenduerit in vitro
color ejus: ingreditur blandè,
32 Sed in noviſſimo mordebit ut
coluber, & ſicut regulus venena
33 diffundet. Oculi tui videbunt
extraneas, & cor tuum loquetur
34 perverſa. Et eris ſicut
dormiens in medio mari, &
quaſi ſopitus gubernator, amiſſo
35 clavo: Et dices; Verberaverunt
me, ſed non dolui: traxerunt
me, & ego non ſenſi:
quando evigilabo, & rurſus
vina reperiam?

CAP. XXIV.

1 NE æmuleris viros malos,
nec deſideres eſſe cum eis:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 † Δὸς εἰς παιδείαν τὴν καρδίαν σου, † τὰ
δὲ ὦτά σου ἑτοίμασον λόγοις αἰσθήσεως.
13 † Μὴ ἀπόσχῃ νήπιον (β) παιδεύειν, † ὅτι
ἐὰν πατάξῃς αὐτὸν ῥάβδῳ, οὐ μὴ ἀποθάνῃ.
14 † Σὺ μὲν γὰρ πατάξεις αὐτὸν ῥάβδῳ, † τὴν
15 δὲ ψυχὴν αὐτοῦ ἐκ θανάτου ῥύσῃ. † Υἱὲ, ἐὰν
σοφὴ γένηταί σου ἡ καρδία, † εὐφρανεῖς
16 καὶ τὴν ἐμὴν καρδίαν, † Καὶ (ᵃ) ἐνδιατρίψει
λόγοις τὰ σὰ χείλη † πρὸς τὰ ἐμὰ
17 χείλη, ἐὰν ὀρθὰ ὦσι. † Μὴ ζηλούτω ἡ καρδία
σου ἁμαρτωλοὺς, † ἀλλὰ ἐν φόβῳ κυρίου
18 ἴσθι ὅλην τὴν ἡμέραν. † Ἐὰν γὰρ
τηρήσῃς αὐτὰ, ἔσται σοι (γ) ἔκγονα, † ἡ
19 δὲ ἐλπίς σου οὐκ ἀποστήσεται. † Ἄκουε υἱὲ,
καὶ σοφὸς γίνου, † καὶ κατεύθυνε ἐννοίας
20 σῆς καρδίας. † Μὴ ἴσθι οἰνοπότης, † μηδὲ
ἐκτείνου συμβολαῖς, κρεῶν τε ἀγορασμοῖς.
21 † Πᾶς γὰρ μέθυσος καὶ πορνοκόπος
πτωχεύσει, † καὶ ἐνδύσεται διερρηγμένα καὶ
22 ῥακώδη πᾶς ὑπνώδης. † Ἄκουε υἱὲ πατρὸς
τοῦ γεννήσαντός σε, † καὶ μὴ καταφρόνει
24 ὅτι γεγήρακέ σου ἡ μήτηρ. † Καλῶς
ἐκτρέφει πατὴρ δίκαιος, † ἐπὶ δὲ υἱῷ σοφῷ
25 εὐφραίνεται ἡ ψυχὴ αὐτοῦ. † Εὐφραινέσθω
ὁ πατὴρ καὶ ἡ μήτηρ ἐπὶ σοὶ, † καὶ
26 χαιρέτω ἡ τεκοῦσά σε. † Δός μοι υἱὲ σὴν
καρδίαν, † οἱ δὲ σοὶ ὀφθαλμοὶ ἐμὰς ὁδοὺς
27 τηρείτωσαν. † Πίθος γὰρ τετρημένος ἐστὶν
ἀλλότριος οἶκος, καὶ φρέαρ στενὸν ἀλλότριον.
28 † (ᵋ) Οὗτος γὰρ συντόμως ἀπολεῖται, † καὶ
29 πᾶς παράνομος ἀναλωθήσεται. † Τίνι
οὐαί; τίνι θόρυβος; τίνι κρίσεις; (δ)
τίνι δὲ ἀηδίαι καὶ λέσχαι; † τίνι συντρίμματα
διακενῆς; † τίνος (ε) πελιδνοὶ οἱ
30 ὀφθαλμοί; † Οὐ τῶν ἐγχρονιζόντων ἐν οἴνοις;
† οὐ τῶν ἰχνευόντων ποῦ πότοι γίνονται;
† μὴ μεθύσκεσθε (ζ) ἐν οἴνοις, ἀλλὰ ὁμιλεῖτε
ἀνθρώποις δικαίοις; † καὶ ὁμιλεῖτε
ἐν περιπάτοις. † ἐὰν γὰρ εἰς τὰς φιάλας
καὶ (η) τὰ ποτήρια δῷς τοὺς ὀφθαλμούς
σου, † ὕστερον περιπατήσεις γυμνότερος
32 ὑπέρου. Τὸ δὲ ἔσχατον ὥσπερ ὑπὸ ὄφεως
πεπληγὼς ἐκτείνεται, † καὶ ὥσπερ ὑπὸ κεράστου
33 διαχεῖται αὐτῷ ὁ ἰός. † Οἱ ὀφθαλμοί
σου ὅταν ἴδωσιν ἀλλοτρίαν, † τὸ στόμα σου
34 τότε λαλήσει σκολιά. † Καὶ κατακείσῃ
ὥσπερ ἐν καρδίᾳ θαλάσσης, † καὶ ὥσπερ κυβερνήτης
35 ἐν πολλῷ κλύδωνι. † Ἐρεῖς δὲ,
Τύπτουσίν με καὶ οὐκ ἐπόνεσα, † καὶ ἐνέπαιξάν
μοι, ἐγὼ δὲ οὐκ ᾔδειν· † πότε ὄρθρος ἔσται,
ἵνα ἐλθὼν ζητήσω μεθ' ὧν συνελεύσομαι;

MS. A. (β) παιδεύων, (ᵃ) ἐνδιατρίψῃ (γ) ἔγγονα, (ᵋ) Οὕτως (
ἀηδίαι (ε) πέλειοι ὀφθαλμοί; (ζ) οἴνῳ, (η) εἰς τὰ ποτήρια

ΚΕΦ. κδ΄.

1 † ΥΙὲ, μὴ ζηλώσῃς κακοὺς ἄνδρας, † μηδὲ
ἐπιθυμήσῃς εἶναι μετ' αὐτῶν.

Da in diſciplinam cor tuum : au-
res autem tuas adhibe ſermonibus
(n) ſenſûs. Ne deſtiteris parvu-
lum emendare : quoniam, ſi per-
cuſſeris eum virgâ, non morietur.
Nam tu quidem percuties eum vir-
gâ : animã autem ejus è morte e-
rues. Fili, ſi ſapiens fuerit tu-
um cor, lætificabis & meum cor.
(o) Et immorabuntur ſermonibus
tua labia ad mea labia, ſi recta
fuerint. Non æmuletur cor tuum
peccatores : ſed in timore Domini
eſto totâ die. Nam ſi ſervaveris
ea, erunt tibi nepotes : ſpes au-
tem tua (p) non recedet. Audi,
fili, & ſapiens eſto, & dirige
(q) cogitationes cordis tui. Ne
fueris bibax vini, neque extenda
te (r) ad ſymbolas, & carnium
emptiones. Omnis enim ebrius (ſ)
et ſcortator mendicabit ; & indu-
etur diſruptis & laceris omnis
ſomnolentus. Audi, fili, patrem,
qui genuit te : & non contemnas
quoniam ſenuit (t) mater tua. Be-
nè educat pater juſtus : & in filio
ſapiente lætatur anima ejus. Læ-
tetur pater, & mater ſuper te,
& gaudeat quæ peperit te. Da
mihi, fili, cor tuum ; & oculi tu
meas vias (u) ſervent. (x) Do-
lium enim perforatum eſt alien
domus, & puteus anguſtus, (y) a-
lienus. Hic enim brevi peribit
(z) omnis iniquus abſumetur. Cu
væ ? cui tumultus ? cui judic
cui autem moleſtiæ, & nugæ
cui contritiones (ω) ſupervacuæ
(aa) cui lividi oculi ? Nonne
immorantium in vinis ? (bb) nonne
ne veſtigantium, ubi compotatio-
nes fiant ? Nolite inebriari vi-
nis ; ſed converſamini cum ho-
minibus juſtis, & converſamini
locis deambulationis. Nam ſi
phialas, & pocula dederis oc
los tuos ; poſteà ambulabis n
dior piſtillo : Noviſſimè aut
tanquàm à ſerpente percuſſus ex
tenditur, & tanquàm à cera
diffunditur ei venenum. Ocu
tui cum viderint alienam ; os
um tunc loquetur (cc) perverſa.
Et (dd) jacebis tanquàm in m
de maris, & tanquàm guberna
tor in multa tempeſtate. Di
autem ; (ee) Feriunt me, & n
dolui : & (ff) illuſerunt mihi ;
autem non ſenſi : (gg) quando
rit diluculum, ut vadens quæ
quibuſcum conveniam?

CAP. XXIV.

F*Ili, ne æmuleris malos*
nec deſideres eſſe cum eis.

תרגום TARGUM.

12 אעול לבך למרדותא ואדנך למימרי דידיעתא׃ לא תמנע מן טליא מרדותא מטול דאין
13 14 מחית ליה בשבטא לא מאית׃ אנת בשבטא מחית ליה ונפשיה מפלטת מן שיול׃
15 16 ברי אם חכים לבך אף אנא חדי אנא בלבי׃ ונרוזן כליותי כד ימללון ספותי תריצתא׃
17 לא נטן לבך בחטאי אלא בדחלתא דאלהא כל יומא׃ מטול דתהוי לך אחריתא טבתא
18 19 וסכויך לא נגמר׃ שמע אנת ברי ואתחכם ותרץ לבך לארחא׃ לא תהוי באלין
20 דאסיטון בבשרא ובאלין דרוין חמרא׃ מטול דרוי ואסיט מתמסכן ובזעתא נלבש
21 22 ניומא׃ קבל מן אבוך דין ילדך ולא תשוט מטול דסיברת אמך׃ קושטא קני ולא
23 תזבן חכמתא ומרדותא וביונא׃ מדוץ נדוץ אבוי דצדיקא ומן דמוליד חכימא נחדי
24 25 ביה׃ יחדי אבוך ואמך ותדוץ תולדתך׃ הב לי ברי לבך ועינך תנטרן ארחתי׃ מטול
26 27 דגומצא עמיקא זניתא ובירא דעקא נוכריתא׃ והיך מטרף עינהא כמנא וצאד אבנא
28 שברי׃ למנוי למן דויא ולמן תגרי ולמן שותא ולמן פודעתא מגן ולמן סומקנות
29 30 עינוי׃ להלין דמוחרין על חמרא ואזלין ומעקבא בית מזגא׃ לא תחמי חמרא
31 דסמוק ויהב בכסא עינוהי ומהלך תריצאית׃ ואחריתא היך חויא נכת וכחורמנא
32 33 דפריח׃ ויחורון עינך בנכריתא ולבך ימלל תהפוכתא׃ ותהוי היך דשכב בלביה
34 דימא והיך מלחא דדמך באלפא׃ ותימר מחונני ולא אכרהית ובווני ולא ידעית
35 לאימת אתעיר ואוסיף ואבעניה עוד׃

כד

1 לא תטן במרי בישתא ולא תתרגג למהוי עמהון׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Introduc ad doctrinam cor tuum, & aurem tuam ad verba ſcientiæ.
prohibeas à puero diſciplinam; quoniam ſi percuſſeris eum virga,
morietur. Tu percuſſiſti eum virga, & animam ejus ab inferno libe
Fili mi, ſi ſapiens eſt cor tuum, lætabor ego in corde meo. Et exu
bunt renes mei, cùm labia *mea* loquuta fuerint recta. Ne æmulet
tuum peccatores, ſed in timore Dei tota die. Ut ſint noviſſima tua bo
& ſpes tua non conſumetur. Audi tu fili mi, & eſto ſapiens, & di
cor tuum in via. Ne ſis inter eos qui comeſſantur carnem, nec int
los qui inebriantur vino. Quoniam qui ebrius eſt & vorax, inopia
cietur, & pannis ruptis veſtietur dormitatio. Acquieſce patri tuo
genuit te : & ne contemnas cùm ſenuerit mater tua. Poſſide veri
tem, & ne vendas ſapientiam, & diſciplinam & intelligentiam.
ultando exultabit pater juſti, & qui genuit ſapientem, lætabitur in
Lætabitur pater tuus & mater tua, & exultabit quæ peperit te. Pone
mi cor tuum ad me, & oculi tui cuſtodiant vias meas. Quoniam
profunda eſt meretrix, & puteus anguſtus extranea. Et ſicut [fera
piens oculis inſidiatur, & venatur filios inſipientes. Cui væ? cui a
& cui rixæ? & cui *loquacitas*? & cui vulnera ſine cauſa? & cui rubedo
lorum? His qui commorantur in vino, & iis qui vadunt, & inveſtig
domum mixtionis. Ne intuearis vinum cùm rubuerit, cùm poſuerit
calice colorem ſuum, & ingreditur rectè. Noviſſimum autem ejus
coluber mordet, & ſicut aſpis quæ volat. Et videbunt oculi tui extra
& cor tuum loquetur perverſa. Et eris ſicut dormiens in corde ma
& ſicut nauta qui dormit in navi. Et dices: Percuſſerunt me, & non
lui; & diripuerunt me, & neſcivi: quando evigilabo, et rurſus ad
quærere illud?

CAP. XXIV.

NE æmuleris viros malos, neque deſideres eſſe cum eis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

12 * ܐܥܠ ܠܒܟ ܠܡܪܕܘܬܐ. ܘܐܕܢܝܟ ܠܡܐܡܪܐ ܕܝܕܥܬܐ. * ܠܐ ܬܟܠܐ ܡܪܕܘܬܐ ܡܢ ܛܠܝܐ. ܡܛܠ ܕܐܢ
13 ܡܚܐ ܐܢܬ ܠܗ ܠܐ ܡܐܬ. * ܐܢܬ ܓܝܪ ܡܚܐ ܐܢܬ ܠܗ ܒܫܒܛܐ. ܘܢܦܫܗ ܡܢ ܫܝܘܠ ܡܦܨܐ
14 ܐܢܬ. * ܒܪܝ. ܐܢ ܢܚܟܡ ܠܒܟ. ܐܦ ܠܒܝ ܕܝܠܝ ܢܚܕܐ. * ܘܢܪܘܙܘܢ ܟܘܠܝܬܝ. ܟܕ ܢܡܠܠܢ
15 16 ܣܦܘܬܟ ܬܪܝܨܬܐ. * ܠܐ ܢܛܢ ܠܒܟ ܒܚܛܝܐ. ܐܠܐ ܒܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܟܠܗ ܝܘܡ. * ܕܬܗܘܐ ܠܟ
17 18 ܚܪܬܐ. ܘܣܒܪܟ ܠܐ ܢܬܓܙܪ. * ܫܡܥ ܒܪܝ. ܘܗܘܝ ܚܟܝܡ. ܘܬܪܘܨ ܬܪܥܝܬܟ ܒܠܒܟ. * ܠܐ ܬܗܘܐ
19 20 ܪܘܝ ܒܚܡܪܐ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܙܠܝܠ ܒܒܣܪܐ. * ܡܛܠ ܕܪܘܝ ܒܚܡܪܐ. ܘܙܠܝܠ ܒܒܣܪܐ ܢܐܒܕ.
21 ܘܕܕܡܟ. ܢܠܒܫ ܡܪܘܛܐ. * ܫܡܥ ܠܐܒܘܟ ܕܐܘܠܕܟ. ܘܠܐ ܬܒܣܐ ܠܗ ܠܣܝܒܘܬܗ ܕܐܡܟ. * ܩܘܫܬܐ
22 23 ܩܢܝ. ܘܠܐ ܬܙܒܢ ܚܟܡܬܐ ܘܣܘܟܠܐ ܘܡܪܕܘܬܐ. * ܚܕܐ ܘܪܘܙ ܐܒܘܗܝ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܡܘܠܕ ܚܟܝܡܐ.
24 ܘܚܕܐ ܒܗ ܐܒܘܗܝ. * ܘܚܕܝܢ ܒܟ ܐܒܘܟ ܘܐܡܟ. ܘܪܘܙܐ ܝܠܕܬܟ. * ܗܒ ܠܝ ܒܪܝ. ܠܒܟ.
25 26 ܘܥܝܢܝܟ ܐܘܪܚܬܝ ܢܛܪܢ. * ܓܘܡܐ ܗܘ ܓܝܪ ܥܡܝܩܐ ܙܢܝܬܐ. ܘܒܐܪܐ ܐܠܝܨܬܐ ܢܘܟܪܝܬܐ.
27 * ܘܡܢ ܡܚܐ ܩܛܠܐ. ܘܣܓܝܐܐ ܡܣܓܝܢ ܥܘܠܐ. * ܠܡܢ ܘܝ. ܘܠܡܢ ܕܘܘܢܐ. ܘܠܡܢ
28 29 ܚܪܝܢܐ. ܘܠܡܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܡܢ ܡܚܘܬܐ ܣܪܝܩܬܐ. ܘܠܡܢ ܟܘܡܝܢ ܥܝܢܘܗܝ. * ܐܠܐ ܠܐܝܠܝܢ
30 ܕܡܩܘܝܢ ܒܚܡܪܐ. ܘܡܥܩܒܝܢ ܐܝܟܐ ܕܐܝܬ ܒܝܬ ܡܫܬܝܐ. ܠܐ ܬܗܘܐ ܪܘܝ ܒܚܡܪܐ. ܐܠܐ ܡܠܠ
ܥܡ ܒܢܝܢܫܐ ܙܕܝܩܐ. ܘܗܠܟ ܥܡܗܘܢ ܘܡܡܠܠ. * ܠܐ ܬܚܘܪ ܒܚܡܪܐ ܕܙܗܝܐ
31 ܥܝܢܗ ܒܟܣܐ. ܐܠܐ ܪܢܝ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. * ܡܛܠ ܕܚܪܬܗ ܕܚܡܪܐ. ܐܝܟ ܡܚܘܬܐ ܗܝ ܕܚܘܝܐ. ܘܐܝܟ ܚܘܝܐ
32 ܡܪܝܪܐ ܕܦܪܚ. * ܥܝܢܝܟ ܡܐ ܕܚܙܝ ܢܘܟܪܝܬܐ. ܗܝܕܝܢ ܠܒܟ ܢܡܠܠ ܗܦܝܟܬܐ.
33 * ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܗܘ ܕܫܟܝܒ ܒܠܒܗ ܕܝܡܐ. ܘܐܝܟ ܡܠܚܐ ܒܡܫܚܠܦܘܬ ܪܘܚܐ. * ܘܐܡܪ
34 35 ܕܡܚܐܘܢܝ ܘܠܐ ܪܓܫܬ. ܘܡܒܙܚܝܢ ܗܘܘ ܒܝ ܘܠܐ ܝܕܥܬ ܗܘܝܬ. ܐܡܬܝ ܐܬܬܥܝܪ ܘܐܙܠ ܐܒܥܝܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܕ *

1 * ܠܐ ܬܛܢ ܒܓܒܪܐ ܒܝܫܐ. ܘܠܐ ܬܪܓ ܠܡܗܘܐ ܥܡܗܘܢ.

Ingere cor tuum in diſciplinam, & aures tuas in eloquium ſcientiæ 12 Ne ſubtrahas diſciplinam à puero, quoniam ſi percuſſeris eum, non morietur. 13 Tu enim percuties eum virgâ, & animam ejus ab inferis eripies. 14 Fili mi, ſi fuerit ſapiens cor tuũ, etiam cor meũ gaudebit. 15 Exultabunt quoque renes mei, cùm labia tua rectitudinē loquentur. 16 Ne æmuletur cor tuũ peccatores, ſed timorem Domini quotidie: 17 Ut ſit tibi finis *laudabilis*, & ſpes tua non pereat. 18 Audi fili mi, & eſto ſapiens, & dirige conſiliũ meũ in corde tuo. 19 Ne ſis ebrioſus in vino, neque ſis intemperans in carne. 20 Quoniam qui ebrioſus eſt in vino & intemperans in carne, peribit: & dormitabundꝰ induetur *rudibus* pannis. 21 Audi patrem tuum qui te genuit, & ne ſpernas ſenectutem matris tuæ. 22 Veritatem compara, & ne vendas ſapientiam et prudentiam atque diſciplinam. 23 Exultabit & geſtiet pater juſti: & generabit ſapientem, & lætabitur in eo pater tuus: 24 Lætabuntur etiam in te pater tuus materq; tua, & exultabit genitrix tua. 25 Da mihi fili mi, cor tuũ: & oculi tui vias meas obſervent. 26 Fovea enim profunda eſt meretrix, & puteus anguſtiæ, aliena, 27 Et ſtatim enecat: hominéſq; permulti ſcelꝰ adaugent. 28 Cui væ? & cui perturbatio? cui contentio? cui mala? cui vulnera ſine cauſa? & cujuſnam lividi ſunt oculi: 29 Niſi eorum qui inſtant vino, & inquirunt ubi ſit convivium? 30 Ne ſis ebrioſus in vino ſed confabulare cum hominibus juſtis, cum iis ambula, & cum iis loquere. Ne intendas oculos tuos in vinũ, cujꝰ oculꝰ rutilat in calice, ſed meditare juſtitiam. 31 Nam finis vini ſimilis eſt percuſſioni ſerpentis, & ſerpenti diro volanti. 32 Cùm conſideraverint oculi tui alienam, tunc cor tuũ loquetur perverſa: 33 Eriſq; velut is qui recumbit in corde maris, & velut nauta in ſumma tempeſtate: 34 Diceſque, Percuſſerunt me, nec ſenſi: illudebant mihi, & non percipiebam: quando expergiſcar, et ibo quæſitum illam? 35

CAP. XXIIII.

NE æmuleris viros nefarios, neque cupias eſſe cum eis. 1

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 13 * ابذل قلبك للادب * واعد اذنيك لاقوال الحس * لا تمتنع من تاديب الطفل * لانك ان ضربته
14 بعصا ما يموت * فان ضربته بعصا فتخلص نفسه من الموت * يا بني ان كان قلبك حكيما
15 16 17 فسيفرح قلبي * وتجول شفتيك في الاقوال بازاء شفتي * اذا كانت مستقيمة * لا تشابهن قلبك
18 الخطاة * بل اسلك في خشية الله كل اليوم * فانك ان حفظت هذه سيكون لك اولادا * ورجاوك
19 20 لن ينتزع منك * اسمع يا بني وكن حكيما * وقوم افكار قلبك * لا تعرفن شروبا للخمر * ولا
21 تطلبن المشورات في ابتياع اللحوم * فان كل سكير وملازم تعب الزناء يفتقر * وكل نوام يلبس
22 24 اطمارا تخرقه وخلقه * اسمع يا بني من الاب الذي ولدك * ولا تتهاون لان قد عجزت امك * * الاب
25 المقسط يربي حسنا * ونفسه تسر بالابن الحكيم * فليفرح بك ابوك الذي ولدك * ولتسر بك امك
26 27 التي ولدتك * يا بني اعط قلبك * واذناك وعيناك فلتحفظ طرقي * بيت غيرك هو خابية مكسورة
28 29 وبير ضيق اجنبي * وهذا يسقط سريعا * لمن الويل * على من الهيج * لمن الخصومات * لمن الخسران *
30 لمن الهذيانات * لمن الهشمات الفاجية * لمن الاعين المكمادة * اليست للذين يدومون في شرب
النبيذ * اليست للذين يفحصون اين تصير دعوات الشرب * لا تسكروا بالخمر * بل خاطبوا رجالا
31 مقسطين * وفاوضوهم في اوقات مشيهم * لانك ان بذلت عينيك لمعاينة البرك والطاسات * فستمشي
32 اخيرا مجردا تحت الهواء * ونهاية امره عمله كالجريح قد لدغته حية * وكمن قد سكبت الافعى
33 سمها فيه * عيناك اذا رات غريبة * حينئذ يتكلم فمك اقوالا ملتوية صعبة * وتطرح كطريح
34 35 في قلب البحر * وكمدبر يحصل في شدة من الامواج كبيرة * فتقول ضربوني وما وجعني ذلك *
ولعبوا بي فما عرفت انا * متى تكون البكرة حتى اذا جاءت الشمس ان اذهب معها *

Præbe cor tuum diſciplinæ, & præpara aures tuas ſermonibus ſenſus. 12 *Ne abſtineas à correctione pueri, quia ſi percuſſeris eum baculo, non morietur.* 13 *Imò ſi percuſſeris eum baculo, ſalvabis animam ipſius à morte.* 14 *Fili mi, ſi fuerit cor tuum ſapiens, lætabitur cor meum.* 15 *Et verſabis labia tua per eloquia, ſicuti labia mea, ſi fuerint recta.* 16 *Ne aſſimiles cor tuum peccatoribus, ſed ambula in timore Domini totâ die.* 17 *Nam ſi cuſtodieris hæc, erunt tibi filii, & ſpes tua non auferetur à te.* 18 *Audi fili mi, & eſto ſapiens, & dirige cogitationes cordis tui.* 19 *Ne agnoſcas bibacem vini, & ne petas conſilia in aviditate carnium.* 20 *Nam omnis ebrioſus & adhærens ſordibus luxuriæ, paupereſcet: & omnis ſomnolentus induetur pannis ſciſſis ac laceris.* 21 *Audi O fili mi, patrem qui te genuit: et ne ſis piger, jam enim ſenuit mater tua.* 22

Deſideratur verſ. 23.

Pater juſtus educat benè, & anima ejus lætabitur in filio ſapiente. 24 *Gaudeat igitur de te pater tuus qui te generavit, & exultet in te mater tua quæ te genuit.* 25 *O fili mi, præbe cor tuum: & aures tuæ a que oculi tui cuſtodiant vias meas.* 26 *Domus aliena eſt lagena fracta: & puteus anguſtus, externus:* 27 *Et iſte cadet citò.* 28 *Cui væ? ſuper quem furiæ? cui lites? cui miſeriæ? cui deliria? cui ruina impetuoſæ? cuinam oculi decolores?* 29 *Nónne iis qui inſiſtunt potui vini? nónne iis qui ſciſcitantur ubi fiant convivia potûs? Ne inebriemini vino, ſed converſamini cum viris juſtis, & colloquimini cum eis, temporibus deambulationis eorum.* 30 *Quoniam ſi dedas oculos tuos ad inſpiciendos lacus & crateres, incedes tandem nudus ſub dio:* 31 *Et in fine ſucceſſûs ejus vini proſternêris quaſi vulneratus, quem momordit ſerpens, & velut is in quem effudit vipera venenum ſuum.* 32 *Cùm oculi tui viderint peregrinam, tunc loquetur os tuum ſermones perverſos, duros:* 33 *Et ſuccumbes veluti projectus in cor maris, & velut gubernator exiſtens in vehementia procellarum multa:* 34 *Diceſque, Percuſſerunt me, & non dolui: & illuſerunt mihi, & ignoravi ego: quandonam erit matutinum, ut cùm venerit, tentem abire cum illa?* 35

* الفصل الرابع والعشرون *

* يا بني لا تصاحبن الناس الاشرار ولا تشتهين ان تكون معهم *

CAP. XXIV.

O Fili mi, ne imiteris hominus iniquos, & ne cupias eſſe cum eis. 1

משלי : כד

.loquentur eorum labia *laborem* & ; eorum cor meditabitur rapinam Quia

2 כי־שד יהגה לבם ועמל שפתיהם תדברנה:

ſcientia in Et .ſtabilietur intelligentia *in* & :domus ædificabitur ſapientia In

3 4 בחכמה יבנה בית ובתבונה יתכונן : ובדעת

ſapiens Vir .*jucunda &* ,*precioſa copia omni* ,replebuntur *penetralia*

5 חדרים ימלאו כל־הון יקר ונעים: גבר־חכם

induſtriis in Quia .*potentiam roborans ſcientiæ* vir & : fortitudine in

6 בעוז ואיש־דעת מאמץ־כח : כי בתחבלות

Excelſæ .*conſiliarii* multitudine in ſalus & : bellum tibi facies

7 תעשה־לך מלחמה ותשועה ברב יועץ : ראמות

Cogitantem .ſuum os aperiet non porta in : ſapientiæ ſtulto

8 לאויל חכמות בשער לא יפתח־פיהו : מחשב

mala Cogitatio .vocabunt *malarum cogitationum patronum* eum : malefacere

9 להרע לו בעל־מזמות יקראו : זמת

die in fuiſti Remiſſus .deriſor homini abominatio & : peccatum *ſtultitiæ*

10 אולת חטאת ותועבת לאדם לץ : התרפית ביום

nutantes & :mortem ad *captos* Erue .tua fortitudo anguſta : anguſtiæ

11 צרה צר כחכה : הצל לקחים למות ומטים

,hunc novimus non En ,dixeris *Cùm* ? prohibebis *ſi* ,occiſionem ad

12 להרג אם־תחשוך : כי־תאמר הן לא־ידענו זה

ipſe ,tuam animam *cuſtodiens* & ? intelliget ipſe ,corda *ponderans* nónne

הלא־תכן לבות הוא־יבין ונצר נפשך הוא

mi fili Comede ? ſuum opus ſecundùm homini reddétque : cognoſcet

13 ידע והשיב לאדם כפעלו : אכל־בני

ſcientia Sic .tuo palato *ſuper* dulce favum & : bonum quia , mel

14 דבש כי טוב ונפת מתוק על־חכך : כן דעה

tua expectatio & : *noviſſimum eſt &* ,*inveniſti ſi* ; tuæ animæ ſapientiæ

חכמה לנפשך אם־מצאת ויש אחרית ותקותך

nec ; juſti habitaculo impie inſidieris Ne .excidetur non

15 לא תכרת: אל־תארב רשע לנוה צדיק אל־

impii & ; ſurget & ,juſtus cadet ſepties Quia .ejus accubitum *vaſtes*

16 תשדד רבצו : כי שבע יפול צדיק וקם ורשעים

,eū *impingendo in* & : læteris ne ,*tuū inimicum cadendo In* .malum in corruent

17 יכשלו ברעה: בנפל אויבך אל־תשמח ובכשלו

malum & , Dominus videat fortè Ne .tuum cor exultet ne

18 אל־יגל לבך : פן־יראה יהוה ורע

:malignis *in ſuccenſeas* Ne .*ſuam narem eo deſuper* avertat & : ejus oculis in

19 בעיניו והשיב מעליו אפו : אל־תתחר במרעים

: *maligno noviſſimum* erit non Quia .impios *in* æmuleris ne

20 אל־תקנא ברשעים : כי לא־תהיה אחרית לרע

: regem & ,mi fili Dominum Time .extinguetur impiorum lucerna

21 נר רשעים ידעך : ירא־את־יהוה בני ומלך

;eorū *exitium* conſurget repente Quoniam .te miſceas ne iterantibus cum

22 עם־שונים אל־תתערב : כי־פתאם יקום אידם

:ſapientibus hæc Etiam ? *ſciens* quis *eorum* amborum contritionem &

23 ופיד שניהם מי יודע : גם־אלה לחכמים

, impio Dicenti .bonum non , judicio in *facies* Cognoſcere

24 הכר־פנים במשפט בל־טוב : אמר לרשע

.nationes eum deteſtabuntur : populi *ei* maledicent , *tu* Juſtus

צדיק אתה יקבהו עמים יזעמוהו לאמים :

.bona benedictio *ingredietur* eos ſuper & : *erit jucundus* increpantibus *Et*

25 ולמוכיחים ינעם ועליהם תבוא ברכת־טוב :

Præpara .recta verba *reſpondens* : oſculabitur Labia

26 27 שפתים ישק משיב דברים נכחים : הכן

ædificabis & poſtea : *tibi* agro in illud præpara & ,tuum opus *vico in*

בחוץ מלאכתך ועתדה בשדה לך אחר ובנית

pellicies nunquid & : tuum *ſocium in gratis* teſtis ſis Ne .tuam domum

28 ביתך : אל־תהי עד־חנם ברעך והפתית

faciam ſic ,mihi fecit Quemadmodum , dicas Ne .tuis labiis in

29 בשפתיך : אל־תאמר כאשר עשה־לי כן אעשה־

.ſuum opus ſecundùm viro reddam : ei

לו אשיב לאיש כפעלו :

Verſio VULG. LAT.

2 Quia rapinas meditatur mens eorum, & fraudes labia eorum 3 loquuntur. Sapientiâ ædificabitur domus, & prudentiâ ro-4 borabitur. In doctrina replebuntur cellaria, univerſâ ſubſtantiâ pretioſâ & pulcherri-5 mâ. Vir ſapiens, fortis eſt: & vir doctus, robuſtus & vali-6 dus. Quia cum diſpoſitione initur bellum: & erit ſalus ubi 7 multa conſilia ſunt. Excelſa ſtulto ſapientia, in porta non 8 aperiet os ſuum. Qui cogitat mala facere, ſtultus vocabitur. 9 Cogitatio ſtulti peccatum eſt: & abominatio hominum de-10 tractor. Si deſperaveris laſſus in die anguſtiæ ; imminuetur 11 fortitudo tua. Erue eos, qui ducuntur ad mortem : & qui trahuntur ad interitum, libera-12 re ne ceſſes. Si dixeris ; Vires non ſuppetunt : qui inſpector eſt cordis, ipſe intelligit, & ſervatorem animæ tuæ nihil fallit, reddétque homini juxta o-13 pera ſua. Comede, fili mi, mel, quia bonum eſt, & favum dul-14 ciſſimum gutturi tuo. Sic & doctrina ſapientiæ animæ tuæ: quam cùm inveneris, habebis in noviſſimis ſpem, & ſpes tua 15 non peribit. Ne inſidieris, & quæras impietatē in domo juſti, neque vaſtes requiem ejus. 16 Septies enim cadet juſt⁹, & reſurget : impii autē corruent in 17 malum. Cùm ceciderit inimicus tu⁹, ne gaudeas, & in ruina 18 ejus ne exultet cor tuum: Ne fortè videat Dñs, & diſpliceat ei, & auferat ab eo iram ſuam. 19 Ne contendas cum peſſimis, 20 nec æmuleris impios: Quoniā non habent futurorū ſpē mali : & lucerna impiorum extingue-21 tur. Time Dominum, fili mi, & regem : & cum detractori-22 bus non commiſcearis: Quoniam repentè conſurget perditio eorum : & ruinam utriuſ-23 que quis novit? Hæc quoque ſapientibus : Cognoſcere perſonam in judicio non eſt bo-24 num. Qui dicunt impio ; Juſtus es : maledicent eis populi, & deteſtabuntur eos tribus. 25 Qui arguunt eū, laudabuntur : & ſuper ipſos veniet benedi-26 ctio. Labia deoſculabitur, qui 27 recta verba reſpondet. Præpara foris opus tuum, & diligenter exerce agrum tuum : ut poſteà ædifices domum tuam. 28 Ne ſis teſtis fruſtrà contra proximū tuū: nec lactes quemquā 29 labiis tuis. Ne dicas; Quomodò fecit mihi, ſic faciā ei : reddam unicuiq; ſecundùm opus ſuum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 †Ψευδῆ γὰρ μελετᾷ ἡ καρδία αὐτῶν, †καὶ πόνους 3 τὰ χείλη αὐτῶν λαλεῖ. †Μετὰ σοφίας οἰκοδομεῖται οἶκος, †καὶ μετὰ συνέσεως ἀνορθοῦται. † 4 Μετὰ αἰσθήσεως (α) ἐμπίμπλανται ταμιεῖα † 5 ἐκ παντὸς πλούτου τιμίου καὶ καλοῦ. †Κρείσσων σοφὸς ἰσχυροῦ, †καὶ ἀνὴρ φρόνησιν ἔχων γεωργίου 6 μεγάλου. †Μετὰ κυβερνήσεως γίνεται πόλεμος, †βοήθεια δὲ μετὰ καρδίας βουλευτικῆς. † 7 Σοφία καὶ ἔννοια ἀγαθὴ ἐν πύλαις σοφῶν·† σοφοὶ οὐκ ἐκκλίνουσιν ἐκ στόματος κυρίου, † ἀλλὰ λογίζονται ἐν συνεδρίοις. †ἀπαιδεύτοις 9 συναντᾷ θάνατος, †Ἀποθνήσκει δὲ ἄφρων ἐν ἁμαρτίαις. †(β) ἀκαθαρσία δὲ ἀνδρὶ λοιμῷ, 10 Ἐμμολυνθήσεται† ἐν ἡμέρᾳ κακῇ, καὶ ἐν ἡμέ-11 ρᾳ θλίψεως ἕως ἂν ἐκλίπῃ. † Ῥῦσαι ἀγομένους εἰς θάνατον, †καὶ (γ) ἐκπρίου κτεινομέ-12 νους, μὴ φείσῃ. †Ἐὰν δὲ εἴπῃς, Οὐκ οἶδα τοῦτον· †γίνωσκε, ὅτι (δ) κύριος καρδίας πάντων γινώσκει· καὶ ὁ πλάσας πνοὴν πᾶσιν, αὐτὸς οἶδε πάντα, ὃς ἀποδίδωσι ἑκάστῳ κατὰ τὰ ἔρ-13 γα αὐτοῦ. †Φάγε μέλι υἱέ, ἀγαθὸν γὰρ κηρίον, † 14 ἵνα γλυκανθῇ σου ὁ φάρυγξ. †Οὕτως αἰσθήσῃ (ε) σοφίαν τῇ σῇ ψυχῇ· †ἐὰν γὰρ εὕρῃς, ἔσται καλὴ ἡ τελευτή σου, καὶ ἐλπίς σε οὐκ 15 ἐγκαταλείψει. †Μὴ προσαγάγῃς ἀσεβῆ νομῇ δικαίων, †μηδὲ ἀπατηθῇς χορτασίᾳ κοιλί-16 ας. †Ἑπτάκις γὰρ πεσεῖται (῾) δίκαιος καὶ ἀναστήσεται, †οἱ δὲ ἀσεβεῖς ἀσθενήσουσιν ἐν κακοῖς. 17 †Ἐὰν πέσῃ ὁ ἐχθρός σου, μὴ ἐπιχαρῇς αὐτῷ, †ἐν δὲ τῷ ὑποσκελίσματι αὐτοῦ μὴ ἐπαί-18 ρου. †Ὅτι ὄψεται κύριος καὶ οὐκ ἀρέσει αὐτῷ, † 19 καὶ ἀποστρέψει τὸν θυμὸν αὐτοῦ ἀπ' αὐτοῦ. † Μὴ χαῖρε ἐπὶ κακοποιοῖς, † μηδὲ ζήλου ἁμαρτω-20 λούς. †Οὐ γὰρ μὴ γένηται ἔκγονα (ϛ) πονηρῷ, 21 † λαμπτὴρ δὲ ἀσεβῶν σβεσθήσεται. †Φοβοῦ τὸν θεὸν υἱὲ καὶ βασιλέα, †καὶ (ζ) μηθετέρῳ αὐτῶν 22 ἀπειθήσῃς. †Ἐξαίφνης γὰρ τίσονται τοὺς ἀσεβεῖς, †τὰς δὲ τιμωρίας ἀμφοτέρων τίς γνώσεται; 27 Cap. 29. †Λόγον φυλασσόμενος υἱὸς ἀπωλείας ἐκτὸς ἔσται, [†δεχόμενος δὲ ἐδέξατο αὐτόν. † μηδὲν ψεῦδος ἀπὸ γλώσσης (ζ) βασιλεῖ λεγέσθω, † καὶ οὐδὲν ψεῦδος ἀπὸ γλώσσης αὐτοῦ οὐ μὴ ἐξέλθῃ. † μάχαιρα γλῶσσα βασιλέως καὶ οὐ σαρκίνη, †ὃς δ' ἂν παραδοθῇ, συντριβήσεται. † ἐὰν γὰρ ὀξυνθῇ ὁ θυμὸς αὐτοῦ, †σὺν νεύροις (η) ἀνθρώπους ἀναλίσκει, καὶ ὀστᾶ ἀνθρώπων κατατρώγει, † καὶ συγκαίει ὥσπερ φλόξ, †ὥστε ἄβρωτα εἶναι νεοσσοῖς ἀετῶν. †(θ) τοὺς ἐμοὺς λόγους υἱὲ φοβήθητι, †καὶ δεξάμενος αὐτοὺς μετανόει.] Cap. 30. 1 †Τάδε λέγει ὁ ἀνὴρ τοῖς πιστεύουσι θεῷ, καὶ 2 παύομαι. †Ἀφρονέστατος γάρ εἰμι (η) ἁπάντων ἀνθρώπων, † καὶ φρόνησις (ι) ἀνθρώ-3 πων οὐκ ἔστιν ἐν ἐμοί. † Θεὸς δεδίδαχέ με 4 σοφίαν, καὶ γνῶσιν (κ) ἁγίων ἔγνωκα. †Τίς ἀνέβη εἰς τὸν οὐρανὸν καὶ κατέβη; †τίς συνήγαγεν ἀνέμους ἐν κόλπῳ;

Falſa enim meditatur cor eorū: &
labores labia eorum loquuntur. Cū
ſapientia ædificatur domus: & cū
intellectu erigitur. Cum (a) ſenſu
implentur cellaria ex omnibus di-
vitiis pretioſis, & bonis. Melior
ſapiens forti, & vir prudentiam
habens (b) agro magno. Cum ratio-
ne gubernandi fit bellum: (c) auxi-
lium autem cum corde conſilium
habente. Sapientia, & cogitatio bo-
na in portis ſapientum: ſapientes
non declinant (d) ab ore Domini:
ſed cogitant in conſeſſibus. Indiſci-
plinatis occurrit mors: (e) Mori-
tur autem impudens in peccatis.
(f) Immunditia autem viro peſti-
lenti, (g) Inquinabitur in die ma-
la, & in die tribulationis, quoad
uſque deficiat. (h) Libera eos qui
ducuntur ad mortem, & (i) re-
dime eos, qui interficiuntur, ne
parcas. Si autem dixeris, Neſcio
hunc; ſcito, (k) quoniam Domi-
nus corda omnium noſcit: & (l)
qui figuravit ſpiritum omnibus, ipſe
novit omnia, qui reddit unicuique
ſecundùm opera ejus. Comede mel
fili: bonus enim eſt favus ut dul-
ceſcat guttur tuum. Sic ſenties ſa-
pientiam animo tuo: ſi enim inve-
neris; erit bonus obitus tuus, &
ſpes te non deſeret. (m) Noli ap-
plicare impium ad (n) paſcua ju-
ſtorum: neque ſeducaris ſaturita-
te ventris. Septies enim cadet ju-
ſtus, & reſurget: impii autem a-
firmabuntur in malis. Si ceciderit
inimicus tuus, nè gaudeas ſuper
eum: & in ſupplicatione ejus ne
(o) extollaris: (p) Quoniam vi-
debit Dominus, & non placebit
ei: & avertet (q) indignationem
ſuam ab eo. (r) Ne gaudeas in ma-
lefactoribus, (ſ) neque æmuleris
peccatores. Non enim fient pro-
maligno: (t) fax autem impiorum
extinguetur. Time Deum, fili, &
regem: & neutri eorum (u) ſis in-
obediens: Subitò enim ulciſcentur
impios: ſupplicia autem utrorumq;
quis cognoſcet? Cap. 29. *(x) Ver-*
bū cuſtodiens fil.⁹ extra perditionem
erit: [excipiens autē excepit illud.
Nihil falſi de ore regi dicatur, &
nihil falſi ex lingua ipſius exeat.
Gladius lingua regis, & non car-
nea: quicunq; autem traditus fue-
rit, conteretur. Si enim irritatus
fuerit furor ejus; cum nervis ho-
mines abſumit, & oſſa hominum
devorat, & comburit tanquam
flamma, ita ut ſint inepta pul-
lis aquilarū. Mea verba, fili, time,
& ſuſcipiens ea pœnitentiam age.]
Cap. 30. *(y) Hæc dicit vir cre-*
dentib⁹ Deo, & quieſco. (z) Inſipi-
entiſſimus enim ſum omnium ho-
minum⁹ & prudentia (a) homi-
num non eſt in me. Deus docuit me
ſapientiam, & ſcientiam Sanctorum cognovi. Quis aſcendit in cœlum, (b) & de-
ſcendit? (c) quis congregavit ventos in ſinu?

MS. A. (α) ἐμπίπλαται (β) ἀκαθαρσία ἀνδρὶ (γ) ἐκπρίω (δ)
ειος (ε) σοφίας (῾) ὁ δίκαιος (ϛ) πονηρῶν, (ζ) μηδ' (ζ) βασιλέως
θρώπου (θ) τοὺς δὲ ἐμοὺς (η) πάντων (ι) ἀνθρώπου (κ) ἀνθρώπων

תרגום TARGUM.

2 מטול רכונא רנן לבהון ועולא שפותהון ממללן : בחכמתא מתבני ביתא ובביונא
3 4 מתקין: ובידיעתא קיטוני מתמלין כל מולא יקירא ובסימא : טב גבר חכימא מן עשינא
5 6 ונברא דידיעתא מן הוא דזריז בחיליה : מטול במדברנותא תעבד לך קרבא ופורקנא
7 בסוגעא דמלכנא : מתרעם שטיא בחכמתא ובתרעי לא פתח פומיה : מן דחשב
8 9 למבאשא נקרון ליה מרי תרעיתא בישתא : תרעיתא דשטיא חטאה ומרחקתא דבר
10 נשא חכימא ממקנותא : אין תתרפי ביומא דעקתא מתתעיק חילך : פצא לאלין
11 12 דמתנסבין למותא ומתדברין לקטלא חסוך : ואין תימר דלא ידענא דא הלא תרעיתא
13 דלבא אלהא בצי ודנטר נפשך הוא ידע ופרע לבר נשא היך עובדוי : ברי אכול דובשא
14 מטול דטב וכבריתא דחילא על חכך : היכנא אתחכם בנפשך דאין משכחת קדמיתא
15 אתיא אחריתא דטבא מנה וסכויך לא נגמר : לא תכמן רשיעא לדיריה דצדיקא ולא
16 תרכין בית משריה : מטול דשובעא זמנין נפל צדיקא וקאי ורשיעי מתתקלין בבישתא :
17 18 במפלותיה דבעל דבבא לא תחדי וכד יתקל בבישתא ירוץ לבך : דלא יבאש באפוי
19 דאלהא כד יחזה ויהפך רוגזיה מניה : לא תתחסם בבישיא ולא תטן ברשיעיא :
20 21 מטול דלא הויא אחריתא טבא לבישי ושרגהון דרשיעי נדעך : דחל מן אלהא ברי
22 ומן מלכא ועם שטיי לא תתחלט : מטול דבשליא אתי תברהון וסופא דשניהון מן
23 24 ידיע : אף הלין לחכימי אמרנא למסב אפי בדינא לא שפיר : דימר לרשיעא צדיק אנת
25 26 ילוטוניה עממי ויברוניה אומתא : ולמכסני יבסם ועליהון תיתא ברכתא טבתא :
27 שפותהון ננשקו דאלין דמהפכין מלי תריצתא : אתקן לברא עבדתך ועתדה לך
28 29 אובתר כן בני ביתך : לא תהוי סהדא דגלא בחברך ותשרגג בשפותך : לא תימר היך דעבד לי כן אעבד ליה ואהפך ליה היך עובדוי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Quoniā *ruinā* meditatur cor eorū, & iniquitatē labia eorū loqu
ſapientia ædificatur dom⁹, & in prudentia præparatur. Et in ſcientia
būtur cellaria oñi ſubſtātia precioſa & ſuavi. Melior eſt vir ſapiens
ſto, & vir ſcientiæ magis quā ille qui accinctus eſt fortitudine ſua. Q
in gubernaculis facies tibi bellū, ſal⁹ autē erit in multitudine conſilii.
murat ſtult⁹ adverſus ſapientiā, et in portis non aperit os ſuū. Qui co
malefacere, vocabunt eum habentem aſtutiam peſſimam. Aſtutia ſtulti
catum eſt, & abominatio viri ſapientis deriſor. Si remiſſus fueris, in
tribulationis arctabitur fortitudo tua. Redime eos qui capiuntur ad
tem, & illos qui ducuntur ad interfectionem prohibe. Et ſi dixeris:
novimus *hoc*; *nónne* cogitationes cordis ſcrutatur Deus, et qui cuſtod
mam tuam, ipſe ſcit, & reddet filio hominis juxta opera ſua? Come
fili mi mel, quoniam bonum eſt; & favum quoniam dulcis eſt gutturi
Sic ſapiens eſto in anima tua: quod ſi inveniſti, primis venient nov
meliora, et ſpes tua non conſumetur. Ne inſidieris impie habitaculo
neque projicias domum habitationis ejus. Quoniam ſepties cadet juſtus
reſurget, et impii corruent in malum. Cùm ceciderit inimicus tuus, ne
teris; & cùm corruerit in malum, [*ne*] exultet cor tuum. Ne forte di
ceat in conſpectu Dei cùm viderit, et avertat ab eo iram ſuam. Ne im
peſſimos neq; æmuleris impios. Quoniam non erunt noviſſima bona p
mis, et lucerna impiorū extinguetur. Time Deum fili mi, et regē; et cum
tis ne commiſcearis. Quoniā repentè veniet interitus eorum: et calam
amborum quis ſcit? Hæc quoq; ſapientibus dico: Accipere perſonam in
dicio, non eſt bonū. *Qui dicit* impio, Juſtus es tu; maledicent eum popu
deteſtabuntur eum nationes. Corripientibus autē ſuave erit, et ſup
niet benedictio bona. Oſculabuntur labia eorū qui reſpondent ve
cta. Præpara foris opus tuum, & ſtatue illud tibi in agro, et poſtea
fica domū tuā. Ne ſis teſtis *mendax* adverſus ſociū tuū, neq; decipi
tuis. Nec dicas: Sicut fecit mihi, ſic faciā ei, et reddam ei juxta ope

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 * ܡܛܠ ܕܒܝܫܬܐ ܗܘ ܪܢܐ ܠܒܗܘܢ. ܘܥܘܠܐ ܡܡܠܠܢ ܣܦܘܬܗܘܢ. * ܒܚܟܡܬܐ ܡܬܒܢܝܐ
3 ܒܝܬܐ. ܘܒܣܘܟܠܐ ܡܬܛܝܒ ܬܩܝܢ. * ܘܒܝܕܥܬܐ ܡܬܡܠܝܢ ܬܘܢܐ. ܟܠ ܩܢܝܢܐ ܝܩܝܪܐ
4 ܘܒܣܝܡܐ.* ܛܒ ܗܘ ܚܟܝܡܐ ܡܢ ܥܫܝܢܐ. ܘܓܒܪܐ ܕܝܕܥܬܐ ܡܢ ܕܚܝܠ ܚܝܠܐ.* ܒܕܘܘܕܐ
5 ܡܬܥܒܕ ܩܪܒܐ. ܘܦܘܪܩܢܐ ܒܣܘܓܐܐ ܕܡܠܟܐ. * ܚܟܡܬܐ ܪܡܝܐ ܠܣܟܠܐ. ܘܒܬܪܥܐ ܠܐ
6 7 ܦܬܚ ܦܘܡܗ. * ܕܡܬܚܫܒ ܠܡܒܐܫܘ. ܓܒܪܐ ܚܛܝܐ ܡܬܩܪܐ. * ܬܪܥܝܬܗ ܕܣܟܠܐ
8 ܚܛܝܬܐ ܗܝ. ܘܛܢܦܘܬܐ ܕܒܪܢܫܐ ܒܝܫܬܐ. *ܘܠܚܛܝܐ ܒܝܫܬܐ ܬܕܒܪ ܐܢܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ.
9 10 * ܦܪܘܩ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܬܕܒܪܝܢ ܠܡܘܬܐ. ܘܡܬܦܪܩ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܬܐܚܕܝܢ ܠܩܛܠܐ. ܠܐ ܬܚܘܣ.* ܘܐܢ
11 12 ܬܐܡܪ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ. ܕܥ ܕܬܪܥܝܬܐ ܕܠܒܐ. ܐܠܗܐ ܗܘ ܒܨܐ. ܘܢܛܪ ܢܦܫܟ. ܗܘ ܝܕܥ. ܘܦܪܥ
13 ܠܒܪܢܫܐ ܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ.* ܐܟܘܠ ܒܪܝ ܕܒܫܐ ܡܛܠ ܕܛܒ ܗܘ. ܘܟܘܪܬܐ ܚܠܝܬܐ ܒܚܟܟ.
14 * ܗܟܢܐ ܐܦ ܚܟܡܬܐ ܒܢܦܫܟ ܬܪܓܫ. ܘܢܗܘܐ ܠܟ ܚܪܬܐ. ܘܣܒܪܟ ܠܐ ܢܬܦܣܩ.* ܠܐ ܬܟܡܢ
15 ܥܘܠܐ ܒܒܝܬܗ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܠܐ ܬܒܙܘܙ ܡܫܪܝܬܗ.* ܡܛܠ ܕܫܒܥ ܙܒܢܝܢ ܢܦܠ ܙܕܝܩܐ ܘܩܐܡ.
16 ܘܪܫܝܥܐ ܒܒܝܫܬܐ ܢܬܬܚܪܒܘܢ. * ܟܕ ܕܢܦܠ ܒܥܠܕܒܒܟ. ܠܐ ܬܚܕܐ. ܘܟܕ ܕܡܬܬܒܪ
17 ܠܐ ܢܪܘܙ ܠܒܟ.* ܕܠܡܐ ܢܚܙܐ ܡܪܝܐ. ܘܢܒܐܫ ܒܥܝܢܘܗܝ. ܘܢܗܦܘܟ ܪܘܓܙܗ ܡܢܗ.* ܠܐ
18 19 ܬܬܚܣܡ ܒܒܝܫܐ. ܘܠܐ ܬܛܢ ܒܥܘܠܐ.* ܡܛܠ ܕܒܝܫܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܚܪܬܐ. ܘܫܪܓܗܘܢ
20 ܕܥܘܠܐ ܢܕܥܟ.* ܕܚܠ ܒܪܝ ܡܢ ܡܪܝܐ ܘܡܠܘܟ. ܘܥܡ ܣܟܠܐ ܠܐ ܬܬܚܠܛ.* ܡܛܠ ܕܡܢ ܫܠܝ
21 22 ܐܬܐ ܬܒܪܗܘܢ. ܘܚܘܪܬܐ ܕܫܢܝܗܘܢ ܡܢܘ ܝܕܥ.* ܘܗܠܝܢ ܠܚܟܝܡܐ ܐܡܪ ܐܢܐ. ܠܡܣܒ ܒܐܦܐ
23 ܒܕܝܢܐ. ܠܐ ܫܦܝܪ.* ܐܦ ܠܐ ܠܡܐܡܪ ܠܥܘܠܐ ܕܙܕܝܩ ܐܢܬ. ܠܗܢܐ ܓܝܪ ܢܠܘܛܘܢܗ ܥܡܡܐ ܘܢܨܥܪܘܢܗ
24 ܐܘܡܐ. * ܘܠܡܟܣܢܐ ܢܬܒܣܡܘܢ. ܘܥܠܝܗܘܢ ܬܐܬܐ ܒܘܪܟܬܐ ܛܒܬܐ. * ܘܣܦܘܬܐ ܢܢܫܩܘܢ
25 26 ܐܝܠܝܢ ܕܡܟܣܝܢ. * ܛܝܒ ܒܫܘܩܐ ܥܒܕܝܟ. ܘܬܩܢ ܒܚܩܠܟ. ܘܡܢ ܒܬܪܟܢ ܒܢܝ ܒܝܬܟ.
27 28 * ܠܐ ܬܗܘܐ ܣܗܕܐ ܕܓܠܐ ܥܠ ܚܒܪܟ. ܘܠܐ ܬܦܬܟܝܘܗܝ ܒܣܦܘܬܟ. * ܘܠܐ ܬܐܡܪ ܕܐܥܒܕ ܠܗ
29 ܐܝܟ ܕܥܒܕ ܠܝ. ܘܐܦܪܥܝܘܗܝ ܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ.

Nam ſcelus meditatur cor eorum, & iniqui- 2
tatem loquuntur labia eorum. Sapientiâ 3
conſtruitur domus, & prudentiâ perfectè
diſponitur : Et ſcientiâ implentur cellaria 4
omnigenis opibus, honore, ac ſuavitate. Sa- 5
piens præſtantior eſt forti, & vir ſcientificus
pollente viribus. Commotione inſtituitur 6
bellum : ſalus autem, multitudine conſilii.
Sapientia dejicit ſtultū, & in porta non ape- 7
riet os ſuum. Qui meditatur malè agere, 8
vir ſceleratus appellatur. Cogitatio ſtulti 9
peccatum eſt : & abominatio hominis, ma-
lum. Sceleratos autem calamitas reget in 10
die tribulationis. Libera eos qui rapiuntur 11
ad mortem : & redimere eos qui detinentur
ad necem ne parcas. Quòd ſi dicas, Non 12
novi, ſcias quòd cogitationem cordis Deus
ſcrutatur, & obſervator animæ tuæ ipſe no-
vit, reddétque homini juxta opera ſua. Come- 13
de fili mi mel, quia bonum eſt. & favus dul-
cis in palato tuo. Talem quoque experiêris 14
ſapientiam animæ tuæ, erítque tibi finis, &
ſpes tua non excindetur. Ne inſidioſè ſtruas 15
iniquitatem in domo juſti, & ne diripias ha-
bitationem ejus. Nam ſeptem vicibus cadit 16
juſtus, & reſurgit: impii verò in malo deſtru-
entur. Cùm ceciderit inimicus tuus, ne læ- 17
teris: cúmque deſtruetur, ne exultet cor tuum:
Ne fortè videat Dominus & diſpliceat in o- 18
culis ejus, avertátque iram ſuam ab illo. Ne 19
invideas malis, nec æmuleris nefarios. Malis 20
enim non erit finis, & lucerna nefariorum ex-
tinguetur. Time fili mi Dominum, ut re- 21
gnes : & cum ſtultis ne commiſcearis. Nam 22
ſubitò veniet contritio eorum, & terminum
annorum eorum quis novit? Hæc ſapienti- 23
bus dico. Rationem habere perſonarum in
judicio, non eſt bonum : Neque dicere ſce- 24
leſto, Juſtus es : huic *enim* maledicent popu-
li, & contumeliis afficient gentes. Qui au- 25
tem corripiunt, delectabuntur, & ſuper ipſos
veniet benedictio bona : Et labia deoſcula- 26
buntur eorum qui arguunt. Para in platea 27
opera tua, & diſpone in agro tuo, & poſtea
ædificabis domum tuam. Ne ſis teſtis falſus 28
contra proximum tuum, & ne comminuas
eum labiis tuis. Nec dicas, Faciam illi quem- 29
admodum fecit mihi, & rependam ei ſecun-
dùm opera ſua.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

2 3 * فان قلبهم يتلوا امور كاذبة * وشفاههم تتكلم دواعي الاتعاب * المنزل بالحكمة يبني *
4 5 وبالفقه يقوم * وبالحس تمتلي خزاينه من كل ثروة كريمة ونفيسة * الحكيم افضل من
القوي * والرجل الحاوي فطنة افضل من فلاحة عظيمة * بتدبير يصير القتال * والمعرفة تصير 6
7 8 بقلب ذي مشورة * الحكمة وذكر المعاد صالحة في ابواب الحكماء * الحكماء ما يزيغون عن
9 شريعة الرب * بل يفكرون فيها في الجموع والمجالس * الموت يلقي من لا ادب لهم * والغبي
10 يموت في خطاياه * النجاسة للرجل ان يتدنس بالفساد في اليوم السيء * وفي يوم الاغتمام الى ان
11 12 يفني * انقذ المسوقين الى الموت * ولا تشح ان تبتاع مقتولين * فان قلت ما عرفت هذا
فاعلم ان الرب يعرف قلوب الكل * والخالق النسمة لكافة البرايا ذلك قد عرف الكافة * وهو
13 الذي يقضي لكل احد نظير اعماله * يا بني كل عسلا * فان الشهد صالح * فيحلي حلقك *
14 * فهكذا تحس بالحكمة في نفسك * لانك ان وجدتها ستكون وفاتك حميدة * وما يتركك الرجاء *
15 16 * لا تقتادن منافقا الى مرعى المقسطين * ولا يطغينك شبع الجوف * فان المقسط يسقط سبع
17 مرات وينهض * والمنافقون يصرعون في الشرور * ان يسقط عدوك فلا تشمت به * ولا ترفع ذهنك
18 19 وتعرقله * فان الرب يرى ذلك فما يرضيه * ويرد عنه غضبه * لا تسر بالعاملين الاسواء * ولا
20 21 تشابهن الخطاة * فلا تصير ولدا للاشرار * ومصباح المنافقين ينطفي * يا بني اتق الله وارهب
22 الملك * ولا تخالفن احدا منهما * لان المنافقين يعذبون بغتة * ومن يعرف فروق تعاذيبهم *
ابن الهلاك اذا حفظ كلاما يكون خارجا عنه * وانما قبله قبولا فقط * فلا يقولن للملك
شيا من لسانه كاذبا * فان ما يخرج من لسانه لفظا كاذبا *

Quoniam cor eorum meditatur negotia 2
mendacia, & labia ipſorum loquuntur
ærumnas laborum. Domicilium ſapientiâ 3
ædificatur, & prudentiâ dirigitur. Et 4
ſenſu implentur cellaria ejus cunctis opi-
bus pretioſis ac nobilibus. Sapiens præ- 5
ſtantior eſt forti : & vir poſſidens do-
ctrinam nobilior eſt fœlicitate maximâ.
Cum ductu ſit pugna, & ſcientia ſit in 6
corde habente conſilium. Sapientia & me- 7
moria finis, bona ſunt in portis ſapien-
tum. Sapientes non aberrant à lege Do- 8
mini : ſed cogitant de illa in congregatio-
nibus & conſeſſibus. Mors dejiciet eos qui 9
diſciplinam non habent : & ſtultus morie-
tur in peccatis ſuis. Immunditia viri eſt 10
maculare ſe corruptione in die mala & in
die triſtitiæ, donec pereat. Redime ductos 11
ad mortem, & ne parcas emere occiſos.
Quòd ſi dicas, Non novi hoc, ſcito quòd 12
Dominus novit corda omnium; & qui
creavit ſpiritum cunctis creaturis, ipſe
jam novit omnia, & ipſe eſt qui de-
cernit unicuique ſecundùm opera ſua.
O fili mi, comede mel, quia favus bo- 13
nus eſt, & dulcorabitur guttur tuum :
Et ſic ſenties ſapientiam in anima tua. 14
Nam ſi inveneris illam, erit obitus tuus
glorioſus, & non deſtituet te ſpes. Ne 15
ducas impium ad paſcuam juſtorum, &
ne ſeducat te ſaturitas ventris. Nam 16
juſtus cadet ſeptem vicibus, & eriget
ſe : & impii infirmabuntur in malis.
Si ceciderit inimicus tuus, ne læteris 17
de illo, & ne extollas mentem tuam
& illaquees eum. Nam Dominus vi- 18
debit hoc, & non placebit ei, & a-
vertet ab illo furorem ſuum. Ne gaudeas 19
in operantibus mala, & ne imiteris pec-
catores. Non enim erit proles impro- 20
bis, & lucerna impiorum extinguetur.
O fili mi, time Deum, & metue re- 21
gem, & ne contravenias ulli eorum.
Quoniam ſceleſti cruciabuntur ſubitò, 22
& quis novit ſpecies cruciatuum eo-
rum? Filius perditionis, ſi cuſtodie-
rit ſermonem, erit exemptus ex ea : at
verò ſuſcipit eum ſuſceptione tantùm.
Ne dicat regi quidquam is cujus lingua
mendax eſt; non enim promit è lin-
gua ſua ſermonem falſum.

משלי: כה

corde *carentis* hominis vineam *super* & : transivi pigri hominis agrum *Super*
30 על־שדה איש־עצל עברתי ועל־כרם אדם חסר־לב:
: *cardui* ejus *facies* operuerant , *urticæ* ipsum totum *ascendit* ecce Et
31 והנה עלה כלו קמשונים כסו פניו חרלים
posui , ego vidi Et .erat destructa ejus lapidum maceria &
32 וגדר אבניו נהרסה: ואחזה אנכי אשית
parum , *somniorum Parum* .eruditionem accepi , vidi : meum cor
33 לבי ראיתי לקחתי מוסר: מעט שנות מעט
veniet Et .*jacendum* ad manuum *complicationis parum* : *dormitationum*
34 תנומות מעט חבק ידים לשכב: ובא־
.*clypei* vir tanquam *tui* defectus & : tua paupertas viator
מתהלך רישך ומחסריך כאיש מגן:

CAP. XXV. כה

Chizchijah viri transtulerunt quas : Selomoh parabolæ hæ Etiam
1 גם־אלה משלי שלמה אשר העתיקו אנשי חזקיה
gloria & : verbum celare Dei Gloria .Jehudah regis
2 מלך־יהודה: כבד אלהים הסתר דבר וכבד
terræ & , altitudine in Cœlorum .verbum investigare regum
3 מלכים חקר דבר: שמים לרום וארץ
Remove .investigatio non regum cordis & : profunditate in
4 לעמק ולב מלכים אין חקר: הגו
impium Remove .vas *conflanti* egredietur & : argento de scorias
5 סיגים מכסף ויצא לצרף כלי: הגו רשע
te decorum ostendas Ne .ejus soliũ justitia in firmabitur & *: regis facies ad*
6 לפני־מלך ויכון בצדק כסאו: אל־תתהדר
melius Quia .steteris ne magnorum loco in & *: regis facies ad*
7 לפני־מלך ובמקום גדלים אל־תעמד: כי טוב
viderunt quem *: magnifici facies ad* te *demittere præ* .huc ascende ,tibi *dicere*
אמר־לך עלה הנה מהשפילך לפני נדיב אשר ראו
aliquid fortè ne , citò litigandum ad egrediaris Ne .tui oculi
8 עיניך: אל־תצא לרב מהר פן מה־
.*tuum socium te afficiendo pudore in* : ejus novissimo in facias
תעשה באחריתה בהכלים אתך רעך:
.reveles ne alterius secretum & : tuo amico cum litiga tuum Litigium
9 ריבך ריב את־רעך וסוד אחר אל־תגל:
.revertatur non tua infamia & : audiens te afficiat probris fortè Ne
10 פן־יחסדך שמע ודבתך לא תשוב:
.suis *rotis super* dictum verbum *:argenti transparentibus thecis in auri Poma*
11 תפוחי זהב במשכיות כסף דבר דבר על־אפניו:
.*audiente aure super sapiens arguens* : obrizi ornamentũ & ,*auri* Inauris
12 נזם זהב וחלי־כתם מוכיח חכם על־אזן שמעת:
:illum mittentibus fidelis legatus , messis die in nivis frigus Sicut
13 כצנת־שלג ביום קציר ציר נאמן לשלחיו
:non *pluvia* & ,ventus & , *Vapores* .faciet *reverti* sui domini animam &
14 ונפש אדניו ישיב: נשיאים ורוח וגשם אין
persuadebitur narium longitudine In .*falsitatis* dono *in se jactans* vir
15 איש מתהלל במתת־שקר: בארך אפים יפתה
,invenisti Mel .*os* confringet mollis lingua & *: gubernator*
16 קצין ולשון רכה תשבר־גרם: דבש מצאת
fac Rarum .illud evomas & , *eo satieris* fortè ne *:tuam sufficientiam* comede
17 אכל דיך פן־תשבענו והקאתו: הקר
.te habeat odio & ,te *satietur* fortè ne : tui *socii* domo à tuum pedem
רגלך מבית רעך פן־ישבעך ושנאך:
suum *socium in respondens* vir : acuta sagitta & ,gladius & ,*Dispergens*
18 מפיץ וחרב וחץ שנון איש ענה ברעהו
.*falsitatis* testimonium
עד שקר:

Versio VULG. LAT.

30 Per agrũ hominis pigri transivi, & per vineam viri stulti:
31 Et ecce totum repleverant urticæ, & operuerant superficiem ejus spinæ, & maceria la-
32 pidũ destructa erat. Quod cũ vidissem, posui in corde meo, & exemplo didici disciplinã.
33 Parùm, inquam, dormies, modicũ dormitabis, pauxillùm manus conseres, ut quiescas:
34 Et veniet tibi quasi cursor egestas, & mendicitas quasi vir armatus.

CAP. XXV.

1 HÆ quoq; parabolæ Salomonis, quas transtulerant viri
2 Ezechiæ regis Juda. Gloria Dei est celare verbũ, & gloria regum investigare sermonem.
3 Cœlũ sursũ, & terra deorsũ,
4 & cor regũ inscrutabile. Aufer rubiginẽ de argento, & e-
5 gredietur vas purissimũ. Aufer impietatem de vultu regis, & firmabitur justitiâ thron⁹ ej⁹.
6 Ne glorios⁹ appareas corã rege, & in loco magnorũ ne ste-
7 teris. Meli⁹ est enim ut dicatur tibi, Ascende huc; quàm ut
8 humilieris corã principe. Quæ viderunt oculi tui, ne proferas in jurgio citò: ne posteà emendare non possis, cùm dehone-
9 staveris amicũ tuũ. Causam tuã tracta cũ amico tuo, & se-
10 cretũ extraneo ne reveles: Ne fortè insultet tibi cùm audierit, & exprobrare non cesset. Gratia & amicitia liberant: quas tibi serva, ne exprobra-
11 bilis fias. Mala aurea in lectis argenteis, qui loquitur verbũ
12 in tempore suo. Inauris aurea, & margaritũ fulgens, qui arguit sapientẽ, & aurem obe-
13 dientẽ. Sicut frigus nivis in die messis, ita legat⁹ fidelis ei, qui misit eũ, animã ipsius re-
14 quiescere facit. Nubes, & ventus, & pluviæ non sequentes, vir gloriosus, & promissa non
15 complens. Patientiâ lenietur princeps, & lingua mollis con-
16 fringet duritiã. Mel invenisti, comede ꝙ sufficit tibi, ne fortè
17 satiat⁹ evomas illud. Subtrahe pedem tuũ de domo proximi tui, ne quando satiatus ode-
18 rit te. Jaculum, & gladius, & sagitta acuta, homo qui loquitur contra proximum suum falsum testimonium.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

† Τίς συνέστρεψε ὕδωρ ἐν ἱματίῳ; † τίς ἐκράτησε πάντων τῶν ἄκρων τῆς γῆς; † τί ὄνομα αὐτῷ; (λ) ἢ τί ὄνομα τοῖς τέκνοις
5 αὐτοῦ; † Πάντες γὰρ λόγοι Θεοῦ πεπυρωμένοι, (μ) † ὑπερασπίζει δὲ αὐτὸς τῶν εὐλαβουμένων
6 αὐτόν. † Μὴ προσθῇς τοῖς λόγοις αὐτοῦ, ἵνα
7 μὴ ἐλέγξῃ σε καὶ ψευδὴς γένῃ. † Δύο αἰτοῦμαι παρὰ σοῦ, † μὴ ἀφέλῃς μου χάριν πρὸ
8 τοῦ ἀποθανεῖν με. † Μάταιον λόγον καὶ ψευδῆ μακράν μου ποίησον, πλοῦτον δὲ καὶ πενίαν μή μοι δῷς, † Σύνταξον δέ μοι (ν) τὰ
9 δέοντα καὶ τὰ αὐτάρκη· † Ἵνα μὴ πλησθεὶς ψευδὴς γένωμαι, καὶ εἴπω, Τίς με ὁρᾷ; † ἢ πενηθεὶς κλέψω, καὶ ὀμόσω τὸ ὄνομα τοῦ
10 Θεοῦ. † Μὴ παραδῷς οἰκέτην εἰς χεῖρας δεσπότου, † μή ποτε καταράσηταί σε καὶ ἀ-
11 φανισθῇς. † Ἔκγονον κακὸν πατέρα κατα-
12 ρᾶται, † τὴν δὲ μητέρα οὐκ εὐλογεῖ. † Ἔκγονον κακὸν δίκαιον ἑαυτὸν κρίνει, † τὴν (ʼ) δ'
13 ἔξοδον αὐτοῦ οὐκ ἀπένιψεν. † Ἔκγονον κακὸν ὑψηλοὺς ὀφθαλμοὺς ἔχει, † τοῖς δὲ βλεφάροις
14 αὐτοῦ ἐπαίρεται. † Ἔκγονον κακὸν μαχαίρας τοὺς ὀδόντας ἔχει, † καὶ τὰς μύλας, (ξ) τομίδας, ὥστε ἀναλίσκειν καὶ κατεσθίειν τοὺς ταπεινοὺς ἀπὸ τῆς γῆς, † καὶ τοὺς πένητας αὐτῶν ἐξ ἀνθρώπων. Cap. 24. † Ταῦτα δὲ
23 λέγω ὑμῖν τοῖς σοφοῖς ἐπιγινώσκειν. † (ο) αἰδεῖσθαι πρόσωπον ἐν κρίσει οὐ καλόν. † Ὁ
24 εἰπὼν τὸν ἀσεβῆ, Δίκαιός ἐστιν, † ἐπικατάρατος λαοῖς ἔσται καὶ μισητὸς εἰς ἔθνη.
25 † Οἱ δὲ ἐλέγχοντες βελτίους φανοῦνται, † ἐπ'
26 αὐτοὺς δὲ ἥξει (π) εὐλογία. † Χείλη δὲ φιλή-
27 σουσιν ἀποκρινόμενα λόγους (ρ) ἀγαθούς. † Ἑτοίμαζε εἰς τὴν ἔξοδον τὰ ἔργα σου, † καὶ παρασκευάζου εἰς τὸν ἀγρόν, † καὶ πορεύου καθόπισθέν μου, † καὶ ἀνοικοδομήσεις τὸν οἶκόν
28 σου. † Μὴ ἴσθι ψευδὴς μάρτυς ἐπὶ σὸν πο-
29 λίτην, † μηδὲ πλατύνου σοῖς χείλεσι. † Μὴ εἴπῃς, Ὃν τρόπον ἐχρήσατό μοι, χρήσομαι αὐτῷ, † τίσομαι δὲ αὐτὸν ἅ με ἠδίκη-
30 σεν. † Ὥσπερ γεώργιον ἀνὴρ ἄφρων, † καὶ ὥσπερ ἀμπελὼν ἄνθρωπος ἐνδεὴς φρενῶν.
31 † Ἐὰν ἀφῇς αὐτόν, χερσωθήσεται † καὶ χορτομανήσει ὅλος, καὶ γίνεται ἐκλελειμμένος, † οἱ δὲ φραγμοὶ τῶν λίθων αὐτοῦ κατασκά-
32 πτονται. † Ὕστερον ἐγὼ μετενόησα, † ἐπέβλε-
33 ψα τοῦ ἐκλέξασθαι παιδείαν. † Ὀλίγον νυστάζω, ὀλίγον δὲ καθυπνῶ, † ὀλίγον δὲ ἐν-
34 αγκαλίζομαι χερσὶ στήθη. † Ἐὰν δὲ τοῦτο ποιῇς, ἥξει προπορευομένη ἡ πενία σου, † καὶ (σ) ἡ ἔνδειά σου ὥσπερ ἀγαθὸς δρομεύς.
15 Cap. 30. † Τῇ βδέλλῃ (τ) τρεῖς θυγατέρες ἦσαν ἀγαπήσει ἀγαπώμεναι, † καὶ αἱ (υ) τρεῖς αὗται οὐκ (φ) ἐνεπίμπλασαν αὐτήν, † καὶ ἡ τετάρ-
16 τη οὐκ ἠρκέσθη εἰπεῖν, Ἱκανόν. † Ἅδης καὶ ἔρως γυναικός, † (χ) καὶ γῆ οὐκ ἐμπιπλαμένη ὕδατος, † καὶ ὕδωρ καὶ πῦρ οὐ μὴ εἴπωσιν,
17 Ἀρκεῖ. † Ὀφθαλμὸν καταγελῶντα πατρὸς, † καὶ ἀτιμάζοντα γῆρας μητρὸς, † (ψ) ἐκκόψαισαν αὐτὸν κόρακες ἐκ τῶν φαράγγων, † καὶ καταφάγοισαν αὐτὸν νεοσσοὶ ἀετῶν.

Quis (d) convertit aquam in ve-stimento? (e) quis tenuit omnia extrema terræ? quod nomen ei? aut quod nomen (f) filiis ejus? (g) Omnia enim verba Dei igne (h) protegit autem ipse eos, qui (i) reverentur ipsum. Ne adda verbis ejus, ut non arguat te, & fias mendax. Duo peto à te; ne (k) auferas à me gratiam, an-quàm ego moriar. (l) Vanum verbum, & mendax longè fac à me: divitias autem, & paupertatem ne dederis mihi: (m) constitue autem mihi, quæ sunt necessaria, & sufficientia: Ne saturatus (n) mendax fiam, & dicam, Quis me videt? aut (o) egens furer, & pe-jurem nomen Dei. Ne (p) trada famulum in manus domini, ne quando maledicat te, (q) & de-learis. Filius malus patrem maledicit, & matrem non benedicit. (r) Filius malus justum se judicat: exitum verò suũ non lavit. Filius malus sublimes oculos habet, palpebris autem suis extollitur. Filius mal⁹ gladios dentes habet, & cultros molas, ut consumat, & (s) comedat (t) humiles de terra, & pauperes eorum ex hominibus. Cap. 24. Hæc (u) autem dico vobis sapientibus (x) cognoscere. E-rubescere personam in judicio non est bonum: Qui dicit impium, justus est; maledictus populis erit, & odibilis in gentibus: Qui autem arguunt, meliores parebunt: ipsos autem veniet benedictio. Labia autem deosculabuntur, quæ respondent verba bona. Præ (z) in egressu opera tua, & præ-parare in agro, & vade post me, & ædificabis domum tuam. Non sis falsus testis in tuum civem, neque (aa) dilateris tuis labiis. Nè dixeris; Quemadmodum usus est me, utar eo: ulciscar autem eum de injuriis, quibus me afficit. (b) Tanquàm ager, vir imprudens: & tanquàm vinea homo egens sensu. Si dimiseris eum, desertus fiet, & sylvescet totus, & fit derelictus: sepes autem lapidum ejus defodientur. Novissimè ego egi pœnitentiam: respexi (c) ut eligerem disciplinam. Paululùm (d) dormito, paululum autem somnum capio: paululum verò amplexor manibus (e) pectora. Si autem hoc feceris, procedens paupertas tua, & egestas tua tanquàm bonus cursor.

Cap. 30. (f) Sanguisugæ tres filiæ erant dilectione dilectæ & (h) tres ipsæ non saturabant eam: & quartæ non (i) sufficit dicere, Satis est: Infernus, & amor mulieris, & terra quæ non satiatur aquâ, & aqua & ignis (l) non dicent, Satis est. Oculum, qui irridet patrem, & qui despicit senectutem matris, effodiant eum corvi de (m) convallibus, & comedant eum pulli aquilarum.

MS. A. (λ) ἢ τοῖς τέκνοις αὐτοῦ, ἵνα γνῷς. Πάντες λόγοι (μ) ὑπερασπίσει (ν) πάντα τὰ δέοντα καὶ αὐτάρκη· (ʼ) δὲ (ξ) στομίδας, ὥστε ἀναλίσκειν τοὺς ταπεινοὺς ἀπὸ τῆς γῆς, (ο) αἰδεῖσθαι πρόσωπον οὐ καλὸν ἐν κρίσει. (π) εὐλογία ἀγαθή. (ρ) Σοφούς. (σ) ἡ ἔνδεια ὥσπερ (τ) τρεῖς (υ) τρεῖς (φ) ἐνεπίμπλασαν (χ) καὶ ρος, καὶ γῆ (ψ) ἐκκολάψαισαν

תרגום TARGUM.

30 על חקלי דגברא עטלא עברית ועל כרמיה דבר נשא חסר רעינא: והא סליק כליה יערי
31 וכסיו אפוי חורלי וסינא דכיפוי אתעקר: וחזית אנא ושׂמית לבי וחמית וקבלית מרדותא:
32 קליל תנום קליל תדמוך קליל תשים ידיך על חדיך ותדמוך: ותיתי ותדרכך מסכנותא
33 34 וצריכותא היך גברא טבלרא:

כה

1 אף אלין מתלוי דשלמה עמיקי דכתבו רחמוי דחזקיה מלכא דיהודה: יקרא דאלהא
2 מן דמטשי מלתא ויקרא דמלכי מן דבצי מלתא: שמיא רמין וארעא עמיקא ולבא
3 4 דמלכי לא מתבצי: גבו סולאנא מן סימא דנפוק מן מן צרפא: נתטריד רשיעא מן קדם
5 6 מלכא ויתקן בצדקתא כורסיה: לא תשתבהר קדם מלכא ובדוכתא דרברבי לא
7 תקום: מטול דטב דנימר לך סק הכא מן דמשפילך קדם שליטא מן דחזין עינך:
8 9 לא תפוק בדינא מסרהבאית דלא תדון באחריתא כד יחמיץ יתך חברך: דינך דון
10 עם חברך באחריתא ורזא אוחרנא לא תגלי: דלא נחסדך מן דשמע וטיבך לא הפיך:
11 חזורי דדהבא בנגודי דסמא מלתא דמלל פסיאית: קדשי דדהבא ומני דומרגדא
12 13 מכסנותא דחכימא על אודנא דשמעא: איך קרירותא דתלגא ביומא דחצדא היכנא
14 אזגדא מהימנא למשדרוי ונפשיה דמריה מהפך: ליומא דענני ורוחא דמטרא לאית
15 מדמי גברא דמשתבהר במהובתא דשקרא: בנגידותא דרוחא משתרגג רשאנא ומלתא
16 17 רכיכתא תברא גרמא: דבשא משכחת אכול סופקנך דלא תשבע ותתיבניה: כלה
18 רגלך מן ביתיה דרחמך דלא נסבעך ומסניך: איך פריעא וסיפא וגירא שנינא גברא
דמסהד על חבריה סהדותא דשקרא:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Per agrum viri pigri transivi, & per vineam filii hominis indigentis intelligentia. Et ecce pullulavit tota sylva, & operuerunt superficiem ejus næ, & maceria lapidum ejus destructa erat. Et vidi ego & posui cor um, & vidi & suscepi disciplinam. Parum dormitabis, & parum dor es, parum applicabis manus tuas ad pectus tuum ut dormias. Et ve procedet paupertas tua, & indigentia quasi vir scutatus.

CAP. XXV.

HÆ quoque sunt parabolæ Salomonis profundæ, quas scripserunt Ezechiæ regis Juda. Gloria Dei qui celat verbum, at gloria regum qui vestigat sermonem. Cœli sunt excelsi & terra profunda, & cor reg investigabile. Colligite scoriam de argento, ut egrediatur vas à con torio. Ejiciatur impius à facie regis, & præparabitur in justitia solium Ne splendidus sis in conspectu regis, et in sede principum ne stes. Quo melius est ut dicat tibi, Ascende huc; quàm ut dejiciat te coram domina re, quem viderunt oculi tui. Ne egrediaris ad jurgium citò, ut non tendas posteà quando exasperaverit te amicus tuus. Causam tuam cum socio tuo in novissimo, et secretum alterius ne reveles. Ut non ex bret tibi qui audierit, et famam tuam non pervertat. Mala aurea cum laturis argenteis, qui loquitur verbum opportunè. Inauris aurea, et smaragdina, correptio sapientis in aurem audientem. Sicut frigus nivis die messis, sic est legatus fidelis his qui miserunt eum, et animam dom sui reficit. Diei nubium et venti in quo non est pluvia, similis est vir gloriatur in dono falsitatis. In patientia spiritus lactatur princeps, et bum molle confringit os. Mel invenisti, comede quod tibi sufficit, ne atus evomas illud. Prohibe pedem tuum à domo socii tui, ne oderit te. Sicut malleus et gladius et sagitta acuta, sic est vir qui catur contra proximum suum testimonium falsum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

30 * ܥܠ ܚܩܠܗ ܕܓܒܪܐ ܚܒܢܢܐ ܥܒܪܬ܂ ܘܥܠ ܟܪܡܗ ܕܓܒܪܐ ܚܣܝܪ ܠܒܐ܂ * ܘܣܠܩ ܟܠܗ
31 ܐܬܡܠܝ ܟܘܒܐ܂ ܘܟܣܝܘ ܐܦܘܗܝ ܚܘܠܕܐ܂ ܘܣܝܓܘܗܝ ܕܟܐܦܐ ܐܣܬܚܦܘ܂ * ܘܚܙܝܬ ܐܢܐ܂ 32
ܘܣܡܬܗ ܒܠܒܝ: ܘܩܒܠܬ ܡܪܕܘܬܐ܂ * ܘܐܢ ܩܠܝܠ ܬܕܡܟ܂ ܘܩܠܝܠ ܬܬܢܘܡ: ܘܩܠܝܠ ܬܣܝܡ 33
ܐܝܕܝܟ ܥܠ ܚܕܝܟ܂ * ܬܐܬܐ ܠܟ ܡܣܟܢܘܬܐ܂ ܘܬܕܪܟܟ ܚܣܝܪܘܬܐ܂ ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܪܗܛܐ܂ 34

* ܫܠܡܘ ܡܬܠܐ ܕܫܠܝܡܘܢ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܗ *

* ܐܦ ܗܠܝܢ ܡܬܠܘܗܝ ܕܫܠܝܡܘܢ ܥܡܝܩܐ܂ ܕܟܬܒܘ ܪ̈ܚܡܘܗܝ ܕܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ 1
ܕܝܗܘܕܐ܂ * ܬܫܒܘܚܬܗ ܕܐܠܗܐ ܡܢ ܕܡܟܣܐ ܡܠܬܐ܂ ܘܬܫܒܘܚܬܗ ܕܡܠܟܐ܂ ܡܢ ܕܒܨܐ 2
ܡܠܬܐ܂ * ܫܡܝܐ ܪܡܝܢ܂ ܘܐܪܥܐ ܥܡܝܩܐ܂ ܘܠܒܗ ܕܡܠܟܐ ܠܐ ܡܬܒܨܐ܂ * ܓܒܘ ܚܠܐ 3
ܡܢ ܣܐܡܐ ܕܢܦܘܩ ܡܐܢܐ ܟܕ ܕܟܐ܂ * ܢܬܒܕܪܘܢ ܥܘܠܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ܂ ܘܢܬܩܢ ܟܘܪܣܝܗ 4
ܒܙܕܝܩܘܬܐ܂ * ܠܐ ܬܫܬܒܗܪ ܩܕܡ ܡܠܟܐ܂ ܘܒܕܘܟܬܐ ܕܪܘܪܒܢܐ ܠܐ ܬܩܘܡ܂ * ܛܒ ܗܘ ܓܝܪ 5
ܕܢܐܡܪ ܠܟ܂ ܐܬܪܝܡ ܠܥܠ܂ ܡܢ ܕܢܡܟܟܟ܂ ܩܕܡ ܫܠܝܛܐ܂ ܡܕܡ ܕܚܙܝ ܥܝܢܝܟ ܗܘ 6
ܐܡܪ܂ * ܘܠܐ ܬܦܘܩ ܒܥܓܠ ܠܡܬܕܪܫܘ܂ ܕܠܐ ܡܢ ܒܬܪܟ ܟܕ ܬܬܕܪܫ ܢܚܣܕܘܢܟ ܪ̈ܚܡܝܟ܂ * ܕܝܢܟ 7
ܕܘܢ ܥܡ ܚܒܪܟ܂ ܘܪܐܙܐ ܕܢܘܟܪܝܐ ܠܐ ܬܓܠܐ܂ * ܕܠܐ ܡܢ ܕܫܡܥ ܢܚܣܕܟ܂ ܘܢܬܪܥܘܢ ܥܠܝܟ ܣܓܝܐܐ܂ 8
* ܚܙܘܪܐ ܕܕܗܒܐ ܒܟܣܐ ܕܣܐܡܐ ܕܡܡܠܠ ܡܠܬܐ܂ * ܩܕܫܐ ܕܕܗܒܐ܂ ܘܡܪܓܢܝܬܐ ܛܒܬܐ܂ 9
ܗܟܢܐ ܟܘܢܫܐ ܕܚܟܝܡܐ ܠܐܕܢܐ ܕܫܡܥܐ܂ * ܐܝܟ ܬܠܓܐ ܕܢܚܬ ܒܝܘܡܐ ܕܚܨܕܐ ܐܘܦ ܐܝܓܪܐ 10
ܡܗܝܡܢܐ ܠܡܫܕܪܢܘܗܝ܂ ܘܢܦܫܐ ܕܡܪܘܗܝ ܡܢܝܚ: ܘܢܦܫܐ ܕܡܪܘܗܝ ܡܢܝܚ܂ 11
* ܐܝܟ ܥܢܢܐ ܘܪܘܚܐ ܕܡܛܪܐ ܠܝܬ ܒܗܘܢ܂ ܗܟܢܐ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܡܫܬܒܗܪ ܒܡܘܗܒܬܗ 12
ܕܕܓܠܘܬܐ܂ * ܒܢܓܝܪܘܬ ܪܘܚܐ ܡܬܦܝܣ ܫܠܝܛܐ܂ ܘܠܫܢܐ ܪܟܝܟܐ ܬܒܪ ܓܪ̈ܡܐ܂ * ܕܒܫܐ ܐܢ ܐܫܟܚܬ 13
ܐܟܘܠ ܣܘܦܩܟ܂ ܕܠܐ ܡܢ ܕܬܣܒܥ ܬܬܩܝܝܘܗܝ܂ * ܠܐ ܬܣܓܐ ܪܓܠܟ ܠܒܝܬܐ ܕܪܚܡܟ܂ 14
ܕܠܐ ܢܣܒܥܟ ܘܢܣܢܝܟ܂ * ܐܝܟ ܦܘܠܐ ܘܣܝܦܐ ܘܓܐܪܐ ܚܪܝܦܐ܂ ܗܟܢܐ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܣܗܕ ܣܗܕܘܬܐ ܕܫܘܩܪܐ ܥܠ ܚܒܪܗ܂ 15 16 17 18

Prope agrum hominis pigri tranſivi, & prope vineam hominis excordis: Et aſcendens tota repleta eſt dumis, & operuerant ſuperficiem ejus talpæ, & ſepes ejus lapideæ dirutæ erant. Id ego vidi, & repoſui in corde meo, & eruditionem accepi. Si enim paululum dormiſcas, & paululum dormias, & paululum ponas manum tuam ſuper pectus tuum, Præcedet te paupertas, & apprehendet te inopia ceu vir tabellarius. 30 31 32 33 34

Finis Proverbiorum Salomonis.

CAP. XXV.

HÆc etiam ſunt proverbia Salomonis profunda, conſcripta ab amicis Ezeciæ regis Juda. 1 Gloria Dei, qui celat verbum: at gloria regis, qui ſcrutatur verbum. 2 Cœli ſunt ſublimes, terra profunda, & cor regis non perveſtigatur. 3 Seligite ſcoriam ab argento, ut exeat vas purgatum. 4 Diſſipentur iniqui à conſpectu regis, & firmabitur ſolium ejus in juſtitia. 5 Ne glorieris coram rege, & in loco magnatum ne ſteteris. 6 Præſtat enim ut dicat tibi. Accede ſuperiùs, potius quàm ut te humiliet. 7 Coram præfecto, quod viderunt oculi tui, illud dicito. Et ne exeas ad litigandum citó: ne cùm litigaveris, tandem te vituperent amici tui. 8 Cauſam tuam age cum ſocio tuo, & arcanum alienum ne reveles: 9 Ne fortè is qui te audit, te vituperet, & cogitent de te multi: 10 Malum aureũ in calice argenteo, qui profert verbum *tempeſtivé.* 11 *Ut* inauris aureꝰ & hyacinthus optimus, ita objurgatio ſapientũ auri obtemperantiũ. 12 Quemadmodũ cùm deſcendit nix in die meſſis, temperat æſtum: ſic fidus legatꝰ mittentibus eũ, & animam dominorũ ſuorum reſtaurat. 13 Ut nubibus ventíſque præſentibus nulla eſt pluvia, eodem modo homo qui ſe jactat de donis falſis. 14 Longanimitate pellicit princeps, & linguâ molli frangit oſſa. 15 Mel cùm repereris, ſufficientiã tuã comede: ne cùm ſatiatꝰ fueris evomas illud. 16 Ne ſit frequens pes tuꝰ ad domum amici tui: ne te ſatiatꝰ oderit te. 17 Qualis eſt clava, gladiꝰ, & ſagitta acuminata: talis eſt homo qui reddit teſtimonium falſum contra proximum ſuum. 18

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

لسان الملك سيف لحمي من دفع اليه يسحقه* لانه اذا احتد غضبه يفني الناس مع اعضائهم
وياكل عظام الناس* ثم يحرقها كاحراق لهيب النار* حتى يصير طعاما لفراخ النسور* يا بني
ارهب اقوالي واذا قبلتها لا تندم* هذه الاقوال يقولها الانسان للذين يصدقون الله وكفوا*

* الفصل الثلثون *

2 * الا انني اوفر عباوة من جميع الناس* وليست في فطنة الناس. الله علمني حكمة وعرفت معرفة 3
القديسين* من صعد الى السماء ونزل* من جمع الرياح في حضنه* من حقن الماء وجمعه في ثوبه 4
من مسك كافة اطراف الارض وغاياتها* ما اسمه وما اسم والده* اقوال الله كلها محماة مختبرة* وهو 5
يعضد المتورعين منه* لا تزيدن في اقواله شيا* لئلا يوبخك وتصير كاذبا* شيين اطلب منك 6 7
فلا تمنع عني المنة بهما قبل وفاتي* الكلام الباطل والكاذب اجعله بعيدا مني* وغنا وفقرا لا 8
تعطني* بل رتب لي ما احتاجه واكتفي به* لكيلا استغني فاصير كذوبا واقول من يراني* او 9
افتقر فاسرق واحلف باسم الله* لا تدفعن عبدا الى يدي سيده* لكيلا يلعنك فتبيد* الولد 10 11
الردي يلعن اباه* وما يبارك منه* الولد الردي يعتقد نفسه مقسطا* وما يسمع لسكوته* 12
* الولد الردي له عينان هايلتان ويرفع جفونه* الولد الردي اسنانه سيوف واضراسه فوس 13 14
قواطع* حتى انه يبيد الضعفاء من الارض وياكلهم والفقراء من الناس** هذه الاقوال اقولها 23
لكم ايها الحكماء فافهمكم* ليس محمودا محاباة وجه احد في القضاء* من يقول ان المنافق عادل 24
هو سيكون عند الشعوب ملعونا وفي الامم ممقوتا* والذين يوبخون يظهرون مفضلين* والبركة 25
الصالحة توافيهم* ويصافحون الشفوات التي تجاوب اقوالا صالحة* سوم اعمالك للانصراف 26 27
واللصوص* وتاهب في الحقل* واذهب وراي* فتعيد ابتناء منزلك* ولا تعرف شاهدا كاذبا 28
على مدينتك* ولا تعرض شفتيك*

Lingua regis gladius eſt carneus; qui ſe objecerit illi, conteret eum: quoniam cùm exacuetur furor ejus, perdet homines cum membris eorum, & comedet oſſa hominum, tùm comburet illa quaſi incendio flammæ ignis: ita ut fiant eſca pullis aquilarum. O fili mi, time eloquia mea, & cum acceperis ea, non te pænitebit. Hujuſmodi ſermones dicit homo iis qui credunt in Deum, & ſeſe retraxerunt.

Reliquos hujꝰ capitis verſiculos reperies poſt ver. 14. ſequentis. c. 30.

CAP. XXX.

AT verò ego ſum ſtultiſſimus omnium hominum, & non eſt in me intellectus hominum. 2 *Deus docuit me ſapientiam, & ſcivi ſcientiam ſanctorum.* 3 *Quis aſcendit ad cœlum, & deſcendit? Quis collegit ventos in ſinu ſuo? Quis concluſit aquam, & congregavit illam in veſte ſua? Quis tenuit univerſas extremitates terræ, & fines ejus? Quodnam eſt nomen ejus, & quodnam nomen genitoris illius?* 4 *Eloquia Dei cuncta ignita, probata: & ipſe corroborat timentes ſe.* 5 *Ne addas ſermonibus ejus quicquam, ne te arguat, & fias mendax.* 6 *Duo peto à te, ne deneges mihi conceſſionem eorum ante obitum meum.* 7 *Sermonem vanum & mendacem longè fac à me: & divitias ac paupertatem ne des mihi; ſed diſpone mihi id cujus egeo, & contentus ero.* 8 *Ne fortè diteſcam, & evadam mendax, & dicam, Quis me videbit? Aut pauper fiam, & furer, & jurem per nomen Dei.* 9 *Ne tradas ſervum in manus domini ſui, ne maledicat tibi, & pereas.* 10 *Filius improbus maledicit patri ſuo, & non benedicetur ab illo.* 11 *Filius nequam credit ſe eſſe juſtũ, et non animadvertit propter ſuperbiam ſuam.* 12 *Filius iniquus habet oculos formidabiles, et extollit palpebras ſuas.* 13 *Dentes filii mali, enſes: et molares ejus, ſecures ſcindentes; ad hoc ut perdat infirmos de terra, et comedat eos, et pauperes ex hominibus.* 14 *Cap. 24. verſ. 23.*

Hos ſermones dico vobis, O ſapientes, ut doceam vos. Non eſt laudabilis acceptio vultûs ullius in judicio. 23 *Qui ait ſceleſtum eſſe juſtum, erit apud populos maledictus, et inter gentes odioſus.* 24 *Qui autem arguunt apparebunt virtuoſi, et benedictio bona veniet illis.* 25 *Et honorabunt labia, quæ reſpondent eloquia bona.* 26 *Diſpone opera tua ad diſceſſum, et profectionem: et præpara te in agro, et abi poſt me, et reædificabis domum tuam.* 27 *Et ne præficias teſtem falſum ſuper civitatem tuam: et ne exponas labia tua.* 28

משלי : כו

die in prævaricatoris fiducia : *luxatus* pes & , confractus Dens
19 שן רעה ורגל מועדת מבטח בוגד ביום
:nether ſuper acetum ,frigoris die in veſtimentum *Removens* .anguſtiæ
20 צרה: מעדה בגד ביום קרה חמץ על נתר
,te habens odio eſurierit Si .*malo corde ſuper* canticis in cantans &
21 ושר בשרים על לב רע: אם רעב שנאך
prunas Quia .aquam ei propina ,ſitiverit ſi & : pane illum ciba
22 האכילהו לחם ואם צמא השקהו מים: כי גחלים
Ventus .tibi reddet DOMINUS & : ejus caput ſuper *capiens* tu
23 אתה חתה על ראשו ויהוה ישלם לך: רוח
.*occultationis* linguam *conturbatæ* facies & : pluviam *parturiet* aquilo
צפון תחולל גשם ופנים נזעמים לשון סתר:
.*ſocietatis* domo &,*contentionum* muliere *præ* :tecti angulo *ſuper* ſedere Melius
24 טוב שבת על פנת גג מאשת מדינים ובית חבר:
.longinqua terra è bonus auditus & : *laſſa anima ſuper* frigidæ Aquæ
25 מים קרים על נפש עיפה ושמועה טובה מארץ מרחק:
.*impii facies ad* lapſus juſtus : corrupta *vena & conculcatus* Fons
26 מעין נרפש ומקור משחת צדיק מט לפני רשע:
.gloria illorũ gloriæ inveſtigatio & :bonũ non *multiplicando* mel Comedere
27 אכל דבש הרבות לא טוב וחקר כבדם כבוד:
.*ſuo* ſpiritui *clauſtrum* non cujus vir : *murus non* dirupta Urbs
28 עיר פרוצה אין חומה איש אשר אין מעצר לרוחו:

CAP. XXVI. כו

ſtulto *decens* non ſic : meſſe in pluvia ſicut & , æſtate in nix Sicut
1 כשלג בקיץ וכמטר בקציר כן לא נאוה לכסיל
maledictio ſic : volare hirundinis ſicut , vagari avis Sicut .gloria
2 כבוד: כצפור לנוד כדרור לעוף כן קללת
corpori virga & : aſino *frænum* , equo Flagellum .veniet non gratis
3 חנם לא תבא: שוט לסוס מתג לחמור ושבט לגו
: ejus ſtultitiam ſecundùm ſtulto reſpondeas Ne .ſtultorum
4 כסילים: אל תען כסיל כאולתו
:ejꝰ ſtultitiã ſecundũ ſtulto Reſponde .tu etiam ei adæqueris fortè ne
5 פן תשוה לו גם אתה: ענה כסיל כאולתו
rapinam , pedes *Decurtans* .ſuis oculis in ſapiens ſit fortè ne
6 פן יהיה חכם בעיניו: מקצה רגלים חמס
: *claudo à* *coxas* *Elevate* .ſtulti *manu in* verba *mittens* : bibens
7 שתה שלח דברים ביד כסיל: דליו שקים מפסח
: *lapidum cumulo* in lapidem *ligare* Sicut .ſtultorum ore in parabola &
8 ומשל בפי כסילים: כצרור אבן במרגמה
: ebrii manu in aſcendit Spina .gloriam ſtulto *dans* ſic
9 כן נותן לכסיל כבוד: חוח עלה ביד שכור
dans mercedẽ& : omnia *formans* Magnus .ſtultorum ore in parabola &
10 ומשל בפי כסילים: רב מחולל כל ושכר
revertens canis Sicut .tranſgreſſoribus *dans* mercedem & , ſtulto
11 כסיל ושכר עברים: ככלב שב
.*ſua ſtultitia in* *iterans* ſtultus : ſuum vomitum *ſuper*
על קאו כסיל שונה באולתו:

Verſio VUL. LAT.

19 Dens putridus, & pes laſſꝰ, qui ſperat ſuper infideli in die an-
20 guſtiæ, Et amittit pallium in die frigoris. Acetum in nitro, qui cantat carmina cordi peſſimo. Sicut tinea veſtimento, & vermis ligno : ita triſtitia
21 viri nocet cordi. Si eſurierit inimicus tuus, ciba illũ : ſi ſi-
22 tierit, da ei aquã bibere: Prunas enim congregabis ſup caput ejus, & Dñs reddet tibi.
23 Ventꝰ Aquilo diſſipat pluvias, & facies triſtis linguã detra-
24 hentẽ. Melius eſt ſedere in angulo domatis, quàm cũ muliere litigioſa, & in domo com-
25 muni. Aqua frigida animæ ſitienti, & nuntius bonus de ter-
26 ra longinqua. Fons turbatus pede, & vena corrupta, juſtus
27 cadens corã impio. Sicut qui mel multũ comedit, non eſt ei bonũ : ſic qui ſcrutator eſt majeſtatis, opprimetur à gloria.
28 Sicut urbs patens & abſq; murorum ambitu, ita vir qui non poteſt in loquendo cohibere ſpiritum ſuum.

CAP. XXVI.

1 Quomodò nix in æſtate, & pluviæ in meſſe : ſic indecens
2 eſt ſtulto gloria. Sicut avis ad alia tranſvolans, & paſſer quò libet vadens : ſic maledictum fruſtrà prolatum in quempiã
3 superveniet. Flagellum equo, & camꝰ aſino, & virga in dor-
4 ſo imprudentium. Ne reſpondeas ſtulto juxta ſtultitiã ſuã,
5 ne efficiaris ei ſimilis. Reſponde ſtulto juxta ſtultitiã ſuam, ne ſibi ſapiens eſſe videatur.
6 Claudus pedibus, & iniquitatẽ bibens, qui mittit verba ꝑ
7 nuntiũ ſtultũ. Quomodò pulchras fruſtrà habet claudus tibias : ſic indecens eſt in ore
8 ſtultorum parabola. Sicut qui mittit lapidẽ in acervũ Mercurii: ita qui tribuit inſipienti
9 honorẽ. Quomodò ſi ſpina naſcatur in manu temulenti : ſic
10 parabola in ore ſtultorũ. Judiciũ determinat cauſas : & qui imponit ſtulto ſilentiũ, iras mi-
11 tigat. Sicut canis, qui revertitur ad vomitum ſuum, ſic imprudens, qui iterat ſtultitiã ſuam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

18 † Τρία δέ ἐστιν ἀδύνατά μοι νοῆσαι, † καὶ τὸ
19 τέταρτον οὐκ ἐπιγινώσκω· † Ἴχνη ἀετοῦ πετομένου, † καὶ ὁδοὺς ὄφεως ἐπὶ πέτρας, † καὶ τρίβους νηὸς ποντοπορούσης, † καὶ ὁδοὺς ἀνδρὸς
20 ἐν νεότητι. † Τοιαύτη ὁδὸς γυναικὸς μοιχαλίδος, † ἣ ὅτ' ἂν πράξῃ ἀπονιψαμέ-
21 νη, οὐδέν φησι πεπραχέναι ἄτοπον. † Διὰ τριῶν σείεται ἡ γῆ, † τὸ δὲ τέταρτον οὐ δύ-
22 ναται φέρειν· † Ἐὰν οἰκέτης βασιλεύσῃ, †
23 καὶ ἄφρων πλησθῇ σιτίων, † Καὶ οἰκέτις ἐὰν ἐκβάλῃ τὴν ἑαυτῆς κυρίαν, † καὶ μισητὴ γυνὴ
24 ἐὰν τύχῃ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ. † (ω) Τέσσαρα δὲ ἐλάχιστα ἐπὶ τῆς γῆς, † ταῦτα δέ ἐστι σο-
25 φώτερα τῶν σοφῶν. † Οἱ μύρμηκες οἷς μή ἐστιν ἰσχὺς, † καὶ ἑτοιμάζονται θέρους τὴν τροφήν.
26 † Καὶ οἱ χοιρογρύλλιοι ἔθνος οὐκ ἰσχυρὸν, † οἳ ἐποιήσαντο ἐν πέτραις τοὺς ἑαυτῶν οἴκους.
27 † Ἀβασίλευτόν ἐστιν ἡ ἀκρὶς, † (α) καὶ στρατεύει ἀφ' ἑνὸς κελεύσματος εὐτάκτως. †
28 Καὶ καλαβώτης χερσὶν ἐρειδόμενος, καὶ εὐάλωτος ὢν, † κατοικεῖ ἐν ὀχυρώμασι (β)
29 βασιλέων. † Τρία δέ ἐστιν ἃ εὐόδως (γ) πορεύεται, † καὶ τέταρτον ὃ καλῶς διαβαίνει·
30 † Σκύμνος λέοντος ἰσχυρότερος κτηνῶν, † ὃς οὐκ ἀποστρέφεται, οὐδὲ (δ) καταπτήσσει κτῆ-
31 νος· † Καὶ ἀλέκτωρ (ε) ἐμπεριπατῶν θηλείαις εὔψυχος, † καὶ τράγος ἡγούμενος αἰπολίου, † καὶ βασιλεὺς δημηγορῶν ἐν ἔθνει.
32 † Ἐὰν πρόῃ σεαυτὸν (ζ) ἐν εὐφροσύνῃ, † καὶ ἐκτείνῃς τὴν χεῖρά σου μετὰ μάχης, ἀτιμασθή-
33 σῃ. † Ἄμελγε γάλα, καὶ ἔσται βούτυρον· † ἐὰν δὲ ἐκπιέζῃς μυκτῆρας ἐξελεύσεται αἷμα· † ἐὰν δὲ ἐξέλκῃς λόγους, ἐξελεύσονται κρί-
1 σεις καὶ μάχαι. Cap. 31. † Οἱ ἐμοὶ λόγοι εἴρηνται ὑπὸ θεοῦ, † βασιλέως χρηματισμὸς,
2 ὃν ἐπαίδευσεν ἡ μήτηρ αὐτοῦ. † Τί τέκνον τηρήσεις; τί; ῥήσεις θεοῦ· † πρωτογενές σοι λέγω υἱέ. † τί τέκνον ἐμῆς κοιλί-
3 ας; † τί τέκνον ἐμῶν εὐχῶν; † Μὴ δῷς (η) γυναιξὶ σὸν πλοῦτον, † καὶ τὸν σὸν νοῦν καὶ βίον εἰς ὑστεροβουλίαν. † μετὰ βουλῆς πάντα ποί-
4 ει, † μετὰ βουλῆς οἰνοπότει. † οἱ δυνάσται θυ-
5 μώδεις εἰσὶν, (θ) Οἶνον δὲ μὴ πινέτωσαν· † ἵνα μὴ πιόντες ἐπιλάθωνται τῆς σοφίας, † καὶ ὀρθὰ (ι) κρῖναι οὐ μὴ δύνωνται τοὺς ἀσθενεῖς. †
6 Δίδοτε μέθην τοῖς ἐν λύπαις, † καὶ οἶνον
7 πίνειν τοῖς ἐν ὀδύναις, † Ἵνα ἐπιλάθωνται τῆς πενίας, † καὶ τῶν πόνων μὴ μνησθῶσιν ἔτι.
8 † Ἄνοιγε σὸν στόμα λόγῳ θεοῦ, † καὶ κρῖνε
9 πάντας ὑγιῶς. † Ἄνοιγε σὸν στόμα καὶ κρῖνε δικαίως, † διάκρινε δὲ πένητα καὶ ἀσθενῆ.

Tria ſunt (n) impoſſibilia mihi intelligere, & quartum non agnoſco: Veſtigia aquilæ (o) volantis, & (p) vias ſerpentis in petra, et ſemitas navis navigantis, & (q) vias viri in juventute. Talis eſt via mulieris adulteræ; (r) quandocunque egerit, lota nihil inquit feciſſe abſurdum. Per tria concutitur terra, (ſ) quartum autẽ ferre non poteſt: Si famulꝰ regnet, & imprudens ſaturatus fuerit cibis, Et famula ſi ejecerit ſuam ipſius dominam, & (t) odibilis mulier ſi ſortita fuerit virum bonum. Quatuor autẽ minima ſuper terram: hæc autem ſunt (u) ſapientiora ſapientibꝰ: Formicæ, quibus non eſt fortitudo, & parant æſtate cibum: Et (x) chœrogylli gens non fortis, qui (y) fecerunt in petris domos ſuas: Sine rege eſt locuſta, & pergit in acie ab una juſſione (z) ordinatè: Et calabotes manibus (ω) innitens, & captu facilis, habitat in (aaa) munitionibus regum. Tria autem ſunt quæ proſpere vadunt, & quartũ (b) quod benè incedit: Catulus leonis fortior beſtiis, qui non avertitur, neque horret (c) beſtiã: Et gallus (d) inſcendens fœminas alacer: & hir- ducens gregem: & rex qui concionatur in gente. Si profuderis (e) in lætitia, et (f) extenderis manum tuam cum rixa; inhonorabera. Mulge lac, et erit butyrũ: ſi (g) tẽ expreſſeris nares, ex bit ſanguis: ſi autem extraxeris ſermones, exibunt lites, & rixæ. Cap. 31. (h) Verba mea dicta ſunt à Deo, (i) regis admonitio, quem erudivit mater ſua. Quid, fili, ſervabis? quid? dictiones Dei: primogenite, tibi dico, fili: quid, fili mei ventris? quid, fili mearum orationum? Ne dederis mulieribus (k) tuas divitias, & mentem tuam & (l) vitam (m) in ſeram conſilii mutationem. Cum conſilio omnia fac: cum conſilio vinum pota. Potentes iracundi ſunt, (n) Vinum autẽ non bibant, ne bibentes obliviſcãtur ſapientiæ, & (o) recta judicare non poſſint imbecillos. Date inebriamentũ (p) qui in mœroribus, & vinum bibere iis qui in doloribus; ut obliviſcantur paupertatis, (q) & laborum non recordentur ultra. Aperi os tuum (r) verbo Dei, & (ſ) judica omnes integrè. Aperi os tuum & judica juſtè: dijudica autem (t) pauperem (u) & imbecillum.

ΚΕΦ. κε'.

1 † Αὗται αἱ (α) παιδεῖαι Σαλωμῶντος αἱ ἀδιάκριτοι, ἃς ἐξεγράψαντο οἱ φίλοι Ἐζεκίου τοῦ βασι-
2 3 λέως τῆς Ἰουδαίας. † Δόξα θεοῦ κρύπτει λόγον, † δόξα δὲ βασιλέως τιμᾷ (β) πράγματα. † Οὐρανὸς
4 ὑψηλὸς, γῆ δὲ βαθεῖα, † καρδία δὲ βασιλέως ἀνεξέλεγκτος. † (γ) Τύπτε ἀδόκιμον ἀργύριον, † καὶ
5 καθαρισθήσεται καθαρὸν ἅπαν. † Κτεῖνε ἀσεβεῖς ἐκ προσώπου βασιλέως, † καὶ κατορθώσει ἐν δικαιο-
6 σύνῃ ὁ θρόνος αὐτοῦ. † Μὴ ἀλαζονεύου ἐνώπιον βασιλέως, † μηδὲ ἐν τόποις δυναστῶν ὑφίστασο.
7 † Κρεῖσσον (δ) γάρ σοι τὸ ῥηθῆναι, Ἀνάβαινε πρὸς μὲ, † ἢ ταπεινῶσαί σε ἐν προσώπῳ
8 δυνάστου. † Ἃ εἶδον οἱ ὀφθαλμοί σου λέγε. † μὴ πρόσπιπτε εἰς μάχην ταχέως, † ἵνα μὴ μεταμεληθῇς ἐπ' ἐσχάτων. † ἡνίκα (ϛ) ἄν σε ὀνειδίσῃ (ε) ὁ σὸς φίλος,

CAP. XXV.

HÆ (a) ſunt diſciplinæ Salomonis indiſtinctæ, quas deſcripſerunt amici Ezechiæ regis Judææ. Gloria Dei celat verbum: gloria autem regis (b) honorat res. Cœlum excelſum, terra autem (c) profunda: cor autem regis (d) quod redargui non poteſt. (e) Percute argentum improbatum, & mundabitur mundum totum. (f) Interfice impios à facie regis & (g) rectâ procedet in juſtitia thronus ejus. Ne glorioſè te oſtentes coram rege: neque in locis principum (h) ſteteris. Melius enim dici, Aſcende ad me, quàm humiliare te in facie potentis. (i) Quæ viderunt oculi tui, dic: ne procurras ad jurgium citò; ut non te pœni- in noviſſimis. Cùm te exprobraverit amicus tuus;

MS.A. (ω) Τέσσαρα δέ ἐστιν ἐλάχιστα (α) καὶ ἐκστρατεύει (β) βασιλέως. (γ) πορεύονται, καὶ τὸ τέταρτον (δ) καταπτήσσει (ε) ἐνπεριπατῶν (ζ) εἰς εὐφροσύνην, (η) γυναιξὶν σου (θ) οἶνον μὴ (ι) κρίνειν

Κεφ. κε'. MS.A. (α) Παροιμίαι Σολομῶντος (β) πράγματα. (γ) Κρύπτε (δ) γὰρ τὸ ῥηθῆναί σοι, (ϛ) δ' ἂν (ε) ὁ φίλος,

תרגום TARGUM.

19 איך שנא בישתא ורגלא מועדא היכנא סבריה דבזווא ביומא דעקתא: דשקל מרטוטא
20 מן חבריה ביום דקרתא היך הו דרמי חילא על נתרא ומצרף ללבא כיבא היך ססא
21 למנא ואיך מלטיתא בקיסא היכנא בריותא מחרה לביה דגברא : אין כפן סנאך
22 אוכליה לחמא ואין צחי אשקי מיא : מטול דגומרי דנורא חתי אנת על רישיה ואלהא
23 נשלמיה לך: רוחא גרביתא בטנא מטרא היכנא אפי בנסתא ולישנא מטשיא : טב
24 25 למתב על קרנא דאגרא מן דלמעמד עם אתתא תגרניתא וביתא טרקא: מיא קרירי על
26 נפשא משלהתא היכנא שמועתא טבתא מן ארעא רחיקתא : היך דסכר אניש מעינא
27 ומבועא מחבל צדיקא דנפל קדם רשיעא: למיכל דובשא סגי לא שפיר אף לא למבציא
28 מלי מיקרתא: היך קרתא דתריעא ולא אית לה שורא היכנא גברא דלא מעצר רוחיה:

כו

1 2 איך תלגא בקיטא והיך מטרא בחצדא היכנא לא יאי לסכלא יקרא : היך צפרא דטאס
3 והיך פרחתא דפרחא היכנא לוטתא דמגן לא תעול : שוטא לסוסא ומגלבא לחמרא
4 ושבטא לגושמהון דסכלי : לא תתל פתגמא לסכלא היך שטיותא דלא תדמי ליה אף
5 6 אנת: אלא מלל עם שטיא בחכימותך דלא נסבר בנפשיה דחכימא הוא : מן דרהטא
7 ברגלוי שתי חטופא מן דמשדר מלי ביד סכלא : אין תתל הלכתא לחגירא תקבל
8 9 מלתא מן פומיה דסכלא: היך נקצא דטסא בקלעא היכנא מן דעבד יקרא לסכלא:
10 כובא סלק בידא דרויא ושטיותא בפומיה דסכלא : סגי חיש בשריה דסכלא ורויא עבר
11 ימא : היך כלבא דהפך על תיוביה היכנא סכלא דתני בסכלותיה:

PARAPH. CHALD. Verſio Latin

Sicut dens malus & pes lapſus, ſic erit ſpes deprædatoris in die anguſtiæ. Qui tollit pallium à ſocio ſuo in die frigoris, eſt ſicut ille qui projicit acetum ſuper nitrum: & probat cor dolor, ſicut *tinea veſtem*; & ſicut putre- in ligno, ſic ſtoliditas irrirat cor hominis. Si eſurierit inimicus tuus, ciba illum pane: & ſi ſitit; da ei bibendam aquam. Quoniam pru- ignis tu congeris ſuper caput ejus, & Deus retribuet tibi. Ventus Aquilo concipit pluviam, ſic facies irati & lingua abſcondita. Melius eſt ſede- in angulo tecti, quàm ſtare cum muliere litigioſa, & in domo commu- Sicut aquæ frigidæ animæ laſſæ, ſic eſt nuncium bonum de terra longinqua. Sicut qui obturat fontem, & corrumpit venam; ſic eſt juſtus cadens coram impio. Comedere multum mellis non eſt bonum, neque ſcruta- verba glorioſa. Sicut civitas quæ eſt diruta & non habet murum, ſic vir qui non poteſt cohibere ſpiritum ſuum.

CAP. XXVI.

SIcut nix in æſtate, & ſicut pluvia in meſſe, ſic indecens eſt ſtulto glor- Sicut paſſer qui volat, & ſicut volucris quæ volat, ſic maledictio non fruſtrà veniet. Flagellum equo, & ſtimulus aſino, & virga corporibus ſtultorum. Ne reſpondeas verbum ſtulto juxta ſtultitiam [*ſuam,*] ne fis ſimilis etiam tu. Sed loquere cum ſtulto in ſapientia tua, ne exiſtimet ipſum ſapientem. Qui currit pedibus ſuis bibens iniquitatem, ſic eſt qui mittit verba per manum ſtulti. Si dederis ambulationem claudo, ſuſcipe verbum ab ore ſtulti. Sicut fragmentum laminæ in funda, ſic eſt qui tri- it ſtulto honorem. Spina aſcendit in manu ebrii, & ſtultitia in ore ſtul- ti. Multum dolet caro ſtulti, & ebrius tranſit mare. Sicut canis qui re- vertitur ad vomitum ſuum, ſic eſt ſtultus qui iterat ſtultitiam ſuam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܐܝܟ ܫܢܐ ܕܒܫܝܫܐ ܘܐܝܟ ܪܓܠܐ ܡܫܪܥܬܐ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܬܘܟܠܢܗ ܕܥܘܠܐ ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠ

*ܡܢ ܕܫܩܠ ܡܪܛܘܛܐ ܡܢ ܚܒܪܗ ܒܝܘܡܐ ܕܩܘܪܫܐ. ܐܝܟ ܗܘ ܗܘ ܕܪܡܐ ܚܠܐ ܥܠ

ܘܡܥܝܩ ܠܠܒܐ ܟܪܝܗܐ. ܐܝܟ ܣܣܐ ܠܡܐܢܐ ܘܐܝܟ ܬܘܠܥܬܐ ܠܩܝܣܐ. ܗܟܢܐ ܟܪ

ܡܚܒܠܐ ܠܠܒܗ ܕܓܒܪܐ. *ܐܢ ܟܦܢ ܒܥܠܕܒܒܟ ܐܘܟܠܝܗܝ. ܘܐܢ ܨܗܐ ܐܫܩܝܗܝ. *ܘ

ܗܠܝܢ ܓܝܪ ܥܒܕ ܠܗ. ܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ ܡܟܢܫ ܐܢܬ ܥܠ ܪܫܗ. ܘܡܪܝܐ ܦܪܥ ܠܟ. *ܐܝܟ

ܪܘܚܐ ܓܪܒܝܝܐ ܡܘܠܕܐ ܡܛܪܐ. ܗܟܢܐ ܐܦܐ ܒܝܫܬܐ ܘܠܫܢܐ ܡܛܫܝܐ. *ܛܒ ܠܡܥܡܪ ܥܠ

ܩܪܢܐ ܕܐܓܪܐ: ܡܢ ܕܠܡܥܡܪ ܥܡ ܐܢܬܬܐ ܢܝܫܬܐ. ܘܒܒܝܬܐ ܕܦܠܓܘܬܐ. *ܐܝܟ ܡܝܐ ܕ

ܠܢܦܫܐ ܨܗܝܬܐ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܣܒܪܐ ܛܒܐ ܕܐܬܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ. *ܐܝܟ ܕ

ܕܣܟܪ ܡܥܝܢܐ ܘܡܚܒܠ ܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܙܕܝܩܐ ܟܕ ܢܦܠ ܩܕܡ ܥ

*ܠܡܐܟܠ ܕܒܫܐ ܣܓܝ. ܠܐ ܫܦܝܪ. ܘܐܦܠܐ ܠܡܒܨܝܘ ܡܠܐ ܡܫܒܚܬܐ. *ܐܝܟ ܡܕܝܢ

ܬܪܝܥܬܐ ܕܠܝܬ ܠܗ ܫܘܪܐ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܢܓܝܪ ܪܘܚܗ.

*ܦܨܠܐ * ܟܘ *

*ܐܝܟ ܬܠܓܐ ܒܩܝܛܐ. ܘܐܝܟ ܡܛܪܐ ܒܚܨܕܐ. ܗܟܢ

ܠܐ ܝܐܐ ܐܝܩܪܐ ܠܣܟܠܐ. *ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܘܦܪܚܬܐ ܕܦܪܚܝܢ ܒܐܐܪ. ܗܟܢܐ ܠܘܛܬܐ ܣܪܝ

ܣܪܝܩܬܐ. *ܦܪܓܠܐ ܠܣܘܣܝܐ. ܘܡܚܛܐ ܠܚܡܪܐ. ܗܟܢܐ ܐܦ ܡܚܛܐ ܠܓܒܪܐ ܣܟܠܐ. *ܠܐ

ܦܬܓܡܐ ܠܣܟܠܐ ܐܝܟ ܣܟܠܘܬܗ. ܕܠܐ ܐܦ ܐܢܬ ܬܬܕܡܐ ܠܗ. *ܐܠܐ ܡܠܠ ܥܡ ܣܟܠܐ ܐ

ܚܟܡܬܟ. ܕܠܐ ܢܗܘܐ ܚܟܝܡ ܒܢܦܫܗ. *ܡܢ ܬܚܝܬ ܪܓܠܘܗܝ ܫܬܐ ܥܘܠܐ. ܗ

ܕܡܫܕܪ ܡܠܬܐ ܒܝܕ ܣܟܠܐ. *ܐܢ ܬܫܟܚ ܠܡܦܢܝܘ ܗܠܟܬܐ ܠܚܓܝܪܐ. ܬܫܟܚ ܡܠܬܐ ܡܢ ܦܘܡܗ

ܕܣܟܠܐ. *ܐܝܟ ܟܐܦܐ ܒܩܠܥܐ. ܗܟܢܐ ܡܢ ܕܡܫܒܚ ܠܣܟܠܐ. *ܟܘܒܐ ܢܒܥܘ ܒܐܝ

ܕܪܘܝܐ. ܘܡܫܛܝܘܬܐ ܒܦܘܡܗ ܕܣܟܠܐ. *ܣܓܝ ܚܫ ܒܣܪܗ ܕܣܟܠܐ. ܘܪܘܝܐ ܥܒܪ ܝܡ

*ܐܝܟ ܟܠܒܐ ܕܗܦܟ ܥܠ ܬܝܘܒܗ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܣܟܠܐ ܕܬܢܐ ܒܫܛܝܘܬܗ.

Ut dens putridus & pes luxatus, ita eſt fiducia 19
mendacis in die anguſtiæ. Qui aufert 20
pallium à proximo ſuo in die frigoris,
ſimilis eſt ei qui perfundit acetum ſuper
chordam *arcûs*, & angit cor dolens. Ut tinea
veſtem, & ut caries ligna : ita mœror
lædit cor viri. Si famelicus ſit inimicus tuus, 21
ciba eum : & ſi ſitibundus, pota eum. Cùmque 22
talia præſtiteris illi, carbones ignis congeres
ſuper caput illius, & Dominus rependet
tibi, Quemadmodum ventus Aquilonaris 23
generat pluviam, ita vultus malus &
lingua occulta. Satius eſt degere ſuper cornu 24
tecti, quàm degere cum muliere rixoſa,
& in domo contentionum. Quales ſunt aquæ 25
frigidæ animæ ſitienti, tale eſt nuntium
bonum veniens è terra longinqua. Ut ſi 26
quis obturet fontem, ſcatebram aquarum
corrumpit : ejuſmodi eſt juſtus cùm cadit
coram impio. Comedere mel nimium, non 27
eſt bonum : nec etiam diſquirere verba faſtuoſa.
Sicut urbs aperta carens mœnibus, 28
ita eſt vir minimè longanimis.

CAP. XXVI.

Ut nix in æſtate, & imber in meſſe, ſic 1
ſtultum non decet honor. Quemadmodum 2
avis & animal pennatum per aëra volant,
ſic errat maledictio vana. Flagellum equo, 3
& ſtimulus aſino : ita quoque ſtimulus homini
ſtulto. Ne des reſponſum ſtulto ſecundùm 4
ſtultitiam ejus, ne tu quoque ſimilis
ei fias : Imò loquere cum ſtulto ſecundùm 5
ſapientiam tuam, ne arbitretur in ſe ipſo ſapientem
ſe eſſe. De ſub pede ſuo bibit iniquitatem 6
is qui mittit verbum per ſtultum.
Si reddere queas greſſum claudo, impetrabis 7
verbum ab ore ſtulti. Ut lapis in funda, 8
ſic qui laudat ſtultum. Spinæ germinârunt 9
in manu ebrioſi, & inſipientia in ore ſtulti.
Multum patitur caro ſtulti, & ebrioſus trajecit 10
mare. Ut canis rediens ad vomitum 11
ſuum, ita eſt ſtultus delirans in ſtultitia ſua.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

لا تقل نظير ما عمل معي اعمل معه اعاقبه على ما ظلمني* الرجل الجاهل كالفلاحة* والانسان

الناقص الراي كالكرم* ان تركته صار بورا* ويسعب فيه الحشيش كله* ويصير مطرحا*

ويهدم جداراته من حجارتها* انا تلذمت* اخيرا اعرضت عن اختيار الادب* لبثت اتناعس

قليلا* واتناوم قليلا* واعانق بيدي صدري قليلا* ان عملت انت هذا فسيوافي فقرك مبادرا*

واعسارك كالساعي السابق وروده** العلقة كان لها ثلثة بنات محبوبات تحبهن كثيرا*

وهولاء الثلثة ما اشبعتها* والرابعة لم تكفها ان تقول حسبي كفاني* وهن الجحيم* وعشق

المراءة* والارض القفرة التي لم تشبع مطرا* والماء والنار لم يقولوا يكفيني* العين الضاحكة

على ابيها والمهينة شيخوخة امها* تقورها الغربان من مخارجها* وتاكلها فراخ النسور* ثلثة

اشياء هي لم يمكنني افهمها* والرابع لست اعرفه* اثر النسر الطاير* وطرق الحية على الصخر

الاملس* ومسالك المركب السائر في البحر* وطرايق الانسان في حداثته* بهذه الصورة طريق

الامراءة الفاسقة التي اذا فعلت فعلها تغتسل وتقول اني ما عملت شيا قبيحا* بثلثة امور تهتز

الارض* والرابع ما يمكنها احتماله* العبد ان سمح ان يتملك* والجاهل اذا تملا من الاطعمة

واصناف النعم* والعبدة اذا اخرجت مولاتها* والامراءة الماقتة ان حصلت لرجل صالح* اربعة

اشياء فهي حقيرة في الارض* وهي اوفر حكمة من الحكماء* النمل اللواتي لا قوة لهن

ويستعدون من الصيف طعامهن* والقنافذ امة ليست قوية* وقد جعلوا منازلهم في الصخور

والجراد هولاء لا ملكا لهم ويعسكرن امن واحده بحسن ترتيب* والعنكبوت يتسند بيديه

وهو غير مصيد* ويسكن في قصور الملوك* ثلثة اشياء هي تمشي مشيا حسنا* والرابع

يعبر عبورا مليحا*

Ne dicas, Sicuti egit mecum, agam cum 29
illo; cruciabo eum pro eo quòd malè me
habuit. Vir inſipiens eſt velut arvum, & 30
homo carens judicio tanquam vinea. Si 31
illam deſtituas, fiet deſerta, & invadet
illam herba totam : fietque abjecta, &
corruent muri ejus ab lapidibus ſuis. Ego 32
percuſſi pectus meũ, tandem declinavi ab
electione diſciplinæ: Occupavi me in dormiendo 33
parùm, & dormitando aliquantùm,
& amplectendo manibus meis pectus
meum, parumper. Si feceris tu idem, 34
adveniet paupertas tua citò, & inopia
tua veluti curſor cujus præproperans eſt
adventus.

Ex cap. 30. verſ. 15.

Sanguiſuga habebat tres filias dilectas 15
quas amabat multũ, & has tres non ſatiavit,
& quartæ non ſatis fecit ita ut diceret,
Satis eſt, ſufficit mihi. Sunt autem infernus, 16
& amor mulieris, & terra ſterilis
quæ non ſatiatur pluviâ, & aqua atque ignis
non dicunt, Sufficit. Oculũ irridentem 17
patrẽ ſuũ, et contemnentem ſenectutẽ matris
ſuæ, eruent corvi ab originibus ſuis, &
comedent eũ pulli aquilarũ. Tria ſunt quæ 18
non potui intelligere, & quartũ non novi:
Veſtigia aquilæ volantis, & vias ſerpentis 19
ſuper petram lævem, & curſus navis ſulcantis
mare, & vias hominis in juventute
ſua. Hujus ſimilitudinis eſt mulier adultera, 20
quæ poſtquã egit opus ſuum, lavat ſe
& ait, Non feci quidquam turpe. Tribus 21
in rebus quaſſatur terra, quartam verò
nequit ſuſtinere. In ſervo, ſi permittatur 22
ut dominetur : & ſtulto, cùm repletus
fuerit cibo, & generibus deliciarum : &
ſerva cùm ejecerit dominam ſuam :
Et in muliere odioſa, ſi contigerit viro 23
bono. Quatuor res ſunt viles in 24
terra, & ipſæ ſunt ſapientiores ſapientibus.
Formicæ, quæ non habent vires, 25
& parant ab æſtate eſcam ſuam.
Hiſtrices, gens eſt minimè fortis, & 26
tamen ponunt domicilia ſua in petris:
Et locuſtæ, hæ non habent regem, tamen 27
in exercitu ſuo, res earum, & modus
illarum eſt cum pulchra diſpoſitione.
Et aranea nititur manibus ſuis, 28
eſtque non lædens, & habitat in palatiis
regum. Tria ſunt quæ gradiuntur 29
inceſſu pulchro, & quartum tranſit tranſitu
eleganti :

משלי : כו

.eo de quàm ſtulto ſpes : ſuis oculis in ſapientem virum Vidiſti
רָאִיתָ אִישׁ חָכָם בְּעֵינָיו תִּקְוָה לִכְסִיל מִמֶּנּוּ׃ 12
Janua .plateas inter Leo : via in Pardus : piger Dixit
13 14 אָמַר עָצֵל שַׁחַל בַּדָּרֶךְ אֲרִי בֵּין הָרְחֹבוֹת׃ הַדֶּלֶת
piger Abſcondit .ſuo lectulo ſuper piger & : ſuo cardine ſuper volvetur
15 תִּסּוֹב עַל־צִירָהּ וְעָצֵל עַל־מִטָּתוֹ׃ טָמַן עָצֵל
Sapientior .ſuum os ad eā reducere laboravit : ſinu in ſuā manum
16 יָדוֹ בַּצַּלָּחַת נִלְאָה לַהֲשִׁיבָהּ אֶל־פִּיו׃ חָכָם
.exactum conſilium referentes ſeptem quàm : ſuis oculis in piger
עָצֵל בְּעֵינָיו מִשִּׁבְעָה מְשִׁיבֵי טָעַם׃
.ſibi non litem ſuper [illegible] ſe ingerens,tranſiens :canis aures in Apprehendens
17 מַחֲזִיק בְּאָזְנֵי־כָלֶב עֹבֵר מִתְעַבֵּר עַל־רִיב לֹּא־לוֹ׃
fraudavit vir Sic .mortem &,ſagittas,ſcintillas jaciens inſaniens Sicut
18 19 כְּמִתְלַהְלֵהַּ הַיֹּרֶה זִקִּים חִצִּים וָמָוֶת׃ כֵּן־אִישׁ רִמָּה
lignorum conſumptione In ? ego ridens Nónne : dicet & : ſuū ſocium
20 אֶת־רֵעֵהוּ וְאָמַר הֲלֹא־מְשַׂחֵק אָנִי׃ בְּאֶפֶס עֵצִים
Carbo .contentio ſilebit ſuſurrone non in & : ignis extinguetur
21 תִּכְבֶּה־אֵשׁ וּבְאֵין נִרְגָּן יִשְׁתֹּק מָדוֹן׃ פֶּחָם
.litem ſuccendendū ad contentionum vir & : ignem ad ligna & ,prunas ad
לְגֶחָלִים וְעֵצִים לְאֵשׁ וְאִישׁ מִדְיָנִים לְחַרְחַר־רִיב׃
.ventris penetralia deſcenderunt ipſa & : lenientia veluti ſuſurronis Verba
22 דִּבְרֵי נִרְגָּן כְּמִתְלַהֲמִים וְהֵם יָרְדוּ חַדְרֵי־בָטֶן׃
, ardentia labia : teſtam ſuper obductum ſcoriarum Argentum
23 כֶּסֶף סִיגִים מְצֻפֶּה עַל־חָרֶשׂ שְׂפָתַיִם דֹּלְקִים
ſuo interiori in & , habens odio agnoſcetur ſuis labiis In .malum cor &
24 וְלֶב־רָע׃ בִּשְׂפָתָו יִנָּכֵר שׂוֹנֵא וּבְקִרְבּוֹ
: eum in credideris ne , ſuam vocem gratificabit Cùm .dolum ponet
25 יָשִׁית מִרְמָה׃ כִּי־יְחַנֵּן קוֹלוֹ אַל־תַּאֲמֶן־בּוֹ
odium ſe Operiet .illius corde in abominationes ſeptem quoniam
26 כִּי שֶׁבַע תּוֹעֵבוֹת בְּלִבּוֹ׃ תִּכַּסֶּה שִׂנְאָה
, foveam Fodiens .concione in ejus malitia erit manifeſta : deſolatione in
27 בְּמַשָּׁאוֹן תִּגָּלֶה רָעָתוֹ בְקָהָל׃ כֹּרֶה שַּׁחַת
Lingua .revertetur eum ad , lapidem volvens & : cadet eam in
28 בָּהּ יִפֹּל וְגֹלֵל אֶבֶן אֵלָיו תָּשׁוּב׃ לְשׁוֹן־
expulſionem faciet blandum os & : ſuos contritos habebit odio falſitatis
שֶׁקֶר יִשְׂנָא דַכָּיו וּפֶה חָלָק יַעֲשֶׂה מִדְחֶה׃

CAP. XXVII. כז

.dies ſit paritur* quid ſcies non quia :craſtino die in te laudes Ne
1 אַל־תִּתְהַלֵּל בְּיוֹם מָחָר כִּי לֹא־תֵדַע מַה־יֵּלֶד יוֹם׃
.tua labia non & , extraneus : tuum os non & , alienus te Laudet
2 יְהַלֶּלְךָ זָר וְלֹא־פִיךָ נָכְרִי וְאַל־שְׂפָתֶיךָ׃
.ipſis ambobus præ gravis ſtulti ira & : arenæ pondus & lapidis Gravitas
3 כֹּבֶד־אֶבֶן וְנֵטֶל הַחוֹל וְכַעַס אֱוִיל כָּבֵד מִשְּׁנֵיהֶם׃
: invidiæ facies ad ſtabit quis & : naſi inundatio & excandeſcentiæ Crudelitas
4 אַכְזְרִיּוּת חֵמָה וְשֶׁטֶף אָף וּמִי יַעֲמֹד לִפְנֵי קִנְאָה׃
Fidelia .abſconditus amor quàm : manifeſta increpatio Bona
5 6 טוֹבָה תּוֹכַחַת מְגֻלָּה מֵאַהֲבָה מְסֻתָּרֶת׃ נֶאֱמָנִים
Anima .habentis odio oſcula crebra & : diligentis vulnera
7 פִּצְעֵי אוֹהֵב וְנַעְתָּרוֹת נְשִׁיקוֹת שׂוֹנֵא׃ נֶפֶשׁ
.dulce amarum omne famelicæ animæ & : favum calcabit ſaturata
שְׂבֵעָה תָּבוּס נֹפֶת וְנֶפֶשׁ רְעֵבָה כָּל־מַר מָתוֹק׃
.ſuo loco à vagans vir ſic : ſuo nido à vagans avis Sicut
8 כְּצִפּוֹר נוֹדֶדֶת מִן־קִנָּהּ כֵּן אִישׁ נוֹדֵד מִמְּקוֹמוֹ׃
ſui amici dulcedo & : cor lætificabit ſuffimentum & , Unguentum
9 שֶׁמֶן וּקְטֹרֶת יְשַׂמַּח־לֵב וּמֶתֶק רֵעֵהוּ
.animæ conſilio à
מֵעֲצַת־נָפֶשׁ׃

Verſio VUL. LAT.

12 Vidiſti hominē ſapientem ſibi videri? magis illo ſpem habe-
13 bit inſipiens. Dicit piger; Leo eſt in via, & leæna in itineri-
14 bus: Sicut oſtium vertitur in cardine ſuo, ita piger in lectu-
15 lo ſuo. Abſcondit piger manum ſub aſcella ſua, & laborat ſi ad os ſuum eam converterit.
16 Sapientior ſibi piger videtur ſeptē viris loquentib⁹ ſenten-
17 tias. Sicut qui apprehendit auribus canem, ſic qui tranſit impatiens, & commiſcetur rixæ
18 alterius. Sicut noxius eſt qui mittit ſagittas, & lanceas in
19 mortē: Ita vir qui fraudulenter nocet amico ſuo: & cùm fuerit deprehenſus, dicit; Ludens fe-
20 ci. Cùm defecerint ligna, extinguetur ignis: & ſuſurrone ſubtracto, jurgia conquieſcent.
21 Sicut carbones ad prunas, & ligna ad ignē, ſic homo iracun-
22 dus ſuſcitat rixas. Verba ſuſurronis quaſi ſimplicia, & ipſa perveniunt ad intima ventris,
23 Quomodò ſi argento ſordido ornare velis vas fictile, ſic labia tumentia cum peſſimo corde
24 ſociata. Labiis ſuis intelligitur inimicus, cùm in corde tra-
25 ctaverit dolos. Quando ſubmiſerit vocem ſuā, ne credideris ei: quoniam ſeptē nequitiæ
26 ſunt in corde illius. Qui operit odiū fraudulenter, revelabitur
27 malitia ejus in concilio. Qui fodit foveā, incidet in eam: & qui volvit lapidem, revertetur
28 ad eū. Lingua fallax non amat veritatē: et os lubricū operatur ruinas.

CAP. XXVII.

1 NE glorieris in craſtinum, ignorans quid ſuperventura
2 pariat dies. Laudet te alienus, & non os tuum; extraneus, &
3 non labia tua. Grave eſt ſaxum, & onerosa arena: ſed
4 ira ſtulti utroque gravior. Ira non habet miſericordiam, nec erumpens furor: & impetum concitati ferre quis poterit?
5 Melior eſt manifeſta correptio,
6 quàm amor abſconditus. Meliora ſunt vulnera diligentis, quàm fraudulenta oſcula odi-
7 entis. Anima ſaturata calcabit favum: & anima eſuriens etiā
8 amarum pro dulci ſumet. Sicut avis tranſmigrans de nido ſuo, ſic vir qui derelinquit locum
9 ſuū. Unguento & variis odorib⁹ delectatur cor: et bonis amici conſiliis anima dulcoratur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

9 † Ἀναχώρει εἰς τὰ ὀπίσω· μὴ καταφρόνει,
10 † Μή σε ὀνειδίσῃ μὲν ὁ φίλος, † ἡ δὲ μάχη σου καὶ ἡ ἔχθρα οὐκ ἀπέσται, (ʹ) ἀλλὰ ἔσται σοι ἴση θανάτῳ. † Χάρις καὶ φιλία ἐλευθεροῖ, † ἃς τήρησον σεαυτῷ, ἵνα μὴ ἐπονείδιστος γένῃ, † ἀλλὰ φύλαξον τὰς ὁδούς σου εὐ-
11 συναλλάκτως. † Μῆλον (ζ) χρυσοῦν ἐν ὁρ-
12 μίσκῳ σαρδίου, οὕτως εἰπεῖν λόγον. † Εἰς ἐνώτιον (η) χρυσοῦν καὶ σάρδιον πολυτελὲς δέδεται, † λόγος σοφὸς εἰς εὐήκοον οὖς.
13 † Ὥσπερ ἔξοδος χιόνος ἐν ἀμήτῳ κατὰ καῦμα ὠφελεῖ, † οὕτως ἄγγελος πιστὸς τοὺς ἀποστείλαντας αὐτόν· † ψυχὰς γὰρ τῶν
14 αὐτῷ χρωμένων ὠφελεῖ. † Ὥσπερ ἄνεμοι καὶ νέφη καὶ ὑετοὶ, (θ) ἐπιφανέστατα, † οὕτως (ι)
15 ὁ καυχώμενος ἐπὶ δόσει ψευδεῖ. † Ἐν μακροθυμίᾳ εὐοδία βασιλεῦσι, † γλῶσσα δὲ
16 μαλακὴ συντρίβει ὀστᾶ. † Μέλι εὑρὼν φάγε τὸ ἱκανὸν, † μή ποτε πλησθεὶς ἐξεμέσῃς.
17 † Σπάνιον εἴσαγε σὸν πόδα πρὸς (ʹ) σεαυτοῦ φίλον, † μή ποτε πλησθείς σου (ʺ) μισήσῃ
18 σε. † Ῥόπαλον καὶ μάχαιρα καὶ τόξευμα (κ) ἀκιδωτὸν, † οὕτως καὶ (λ) ἀνὴρ ὁ καταμαρτυρῶν (μ) τοῦ φίλου αὐτοῦ μαρτυρίαν ψευδῆ.
19 (ʹ) † Ὁδὸς κακοῦ καὶ ποὺς παρανόμου ὀλεῖται ἐν
20 ἡμέρᾳ κακῇ. † Ὥσπερ ὄξος ἕλκει ἀσύμφορον, † οὕτως προσπεσὸν πάθος (ν) ἐν σώματι καρδίαν λυπεῖ. † ὥσπερ (ξ) σὴς ἐν ἱματίῳ καὶ σκώληξ ξύλῳ, † οὕτως λύπη ἀν-
21 δρὸς βλάπτει καρδίαν. † Ἐὰν πεινᾷ ὁ ἐχθρός σου, (ο) ψώμιζε αὐτὸν, † ἐὰν διψᾷ,
22 πότιζε αὐτόν. † Τοῦτο γὰρ ποιῶν (π) ἄνθρακας πυρὸς σωρεύσεις ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, † ὁ δὲ κύριος (ρ) ἀνταποδώσει σοι ἀγαθά.
23 † Ἄνεμος Βορέας ἐξεγείρει νέφη, † πρόσ-
24 ωπον δὲ ἀναιδὲς γλῶσσαν ἐρεθίζει. † Κρεῖσσον οἰκεῖν ἐπὶ γωνίας δώματος, † ἢ μετὰ γυναικὸς λοιδόρου ἐν οἰκίᾳ κοινῇ.
25 † Ὥσπερ ὕδωρ ψυχρὸν ψυχῇ διψώσῃ προσηνὲς, † οὕτως ἀγγελία ἀγαθὴ ἐκ γῆς μακρόθεν. †
26 Ὥσπερ εἴ τις πηγὴν φράσσοι καὶ ὕδατος ἔξοδον λυμαίνοιτο, † οὕτως ἄκοσμον δίκαιον
27 πεπτωκέναι ἐνώπιον ἀσεβοῦς. † Ἐσθίειν μέλι πολὺ οὐ καλὸν, † τιμᾷν δὲ χρὴ λόγους ἐνδό-
28 ξους. † Ὥσπερ πόλις τὰ τείχη καταβεβλημένη καὶ ἀτείχιστος, † οὕτως ἀνὴρ ὃς οὐ μετὰ βουλῆς τι πράσσει.

ΚΕΦ. κϛʹ.

1 † Ὥσπερ δρόσος ἐν ἀμήτῳ, καὶ ὥσπερ ὑετὸς ἐν θέρει, † οὕτως οὐκ ἔστιν ἄφρονι τι-
2 μή. † Ὥσπερ ὄρνεα (α) πέταται καὶ στρουθοὶ, † οὕτως ἀρὰ ματαία οὐκ ἐπελεύσεται οὐδε-
3 νί. † Ὥσπερ μάστιξ ἵππῳ καὶ κέντρον ὄνῳ, †
4 οὕτως ῥάβδος ἔθνει παρανόμῳ. † Μὴ ἀποκρίνου ἄφρονι (ʺ) πρὸς τὴν ἐκείνου ἀφροσύνην,
5 † ἵνα μὴ ὅμοιος γένῃ αὐτῷ. † Ἀλλὰ ἀποκρίνου ἄφρονι (β) κατὰ τὴν ἀφροσύνην αὐτοῦ, † ἵνα μὴ φαίνηται σοφὸς παρ᾽ ἑαυτῷ.
6 † (γ) Ἐκ τῶν ὁδῶν ἑαυτοῦ ὄνειδος ποιεῖται † ὁ ἀποστείλας δι᾽ ἀγγέλου ἄφρονος λόγον.

7 8 † Ἀφελοῦ πορείαν σκελῶν, καὶ παρανομίαν ἐκ στόματος ἀφρόνων. † Ὃς ἀποδεσμεύει λίθον ἐν σφενδό-
9 νῃ, † ὅμοιός ἐστι τῷ διδόντι ἄφρονι δόξαν. † Ἄκανθαι φύονται ἐν χειρὶ (δ) μεθύσου, † δουλεία δὲ ἐν χερ-
σὶ τῶν ἀφρόνων.

(k) Recede in poſteriora: ne
temnas: Nè te quidem exp
amicus, (l) rixa autem tua, &
inimicitia non aberit, ſed ei
æqualis morti. Gratia & am
tia liberat: quas ſerva tibi,
probrabilis fias: ſed cuſtodi
tuas compoſitè. Malum au
(m) in monili ſardii, ſic (n)
re verbum. (o) In auream in
etiam ſardium pretioſum lig
eſt; ſermo ſapiens in aurem
diente. Sicut exitus nivis in
ſe (p) per æſtum prodeſt; ſi
tius fidelis iis qui miſerunt
mas enim eorum, qui ipſo u
juvat. Sicut venti, & nube
pluviæ, (q) clariſſima; ſic qu
riatur ſuper dono (r) falſo. In
ganimitate proſperitas regib
gua autem (ſ) mollis conter
ſa. Mel inveniens comede
ſufficit; nè forte repletus e
(t) Rarum introduc pedem
ad tuum amicum: nè forte
tus te, oderit te. Clava, &
us, & ſagitta (u) acuta:
vir, qui contra amicum ſuum
cit falſum teſtimonium. (x)
mali, & pes iniqui, peribit
mala. (y) Sicut acetum
utile; ſic accidens paſſio in
re cor contriſtat. Sicut (z)
in veſtimento, & vermis lig
triſtitia viri lædit cor. Si
rit inimicus tuus, cibo illum
ſitit, potum da illi: Hoc
ciens, carbones ignis conge
per caput ejus: Dominus au
tribuet tibi bona. Ventus
(ω) ſuſcitat nubes: facies
imprudens linguam irritat
lius habitare ſuper angulum
matis, quàm cum muliere
melioſa, in domo communi
aqua frigida animæ ſitienti
ſic nuntius bonus de terra lo
qua. Sicut, ſi quis fontem
at, & aquæ exitum diſp
indecens eſt juſtum cecid
impio. Comedere mel mul
bonum: (aa) honorare au
portet ſermones glorioſos.
urbs muros dejectos habe
non murata; ſic vir, qui non
conſilio quid agit.

CAP. XXV

Quomodò ros in m
modò pluvia in æſtate; ſic
eſt inſipienti honor. Si
avolant, & paſſeres; ſic
ledictum vanum non ſup
ulli. Sicut (c) flagellum
ſtimulus aſino; ſic virga
iniquæ. Noli reſpondere
denti ad imprudentiam
ſimilis ei fias: Sed reſp
to (e) ad ſtultitiam ejus
videatur ſapiens apud ſe
viis ſuis opprobrium fac
miſit verbum per nuntium
dentem. (g) Aufer p
rum, (h) & iniquitatem
imprudentum. Qui alligat lapidem in
ſimilis eſt ei, qui dat imprudenti gloriam
naſcuntur in manu temulenti, ſervitus
manu imprudentum.

MS. A. (ʹ) ἀλλ᾽ (ζ) χρύσεον (η) χρυσοῦν σάρδιον (θ) ἐπιφανέσατα, (ι) οἱ καυχώμενοι (ʹ) τοῦ σεαυτοῦ (ʺ) μασήσῃ (κ) * ἀκηλίδωτον, (λ) ὁ ἀνὴρ (μ) κατὰ τοῦ φίλου ἑαυτοῦ (ʹ) Ὁδὸς
(ξ) σὴς ἱματίῳ (ο) τρέφε αὐτὸν, (π) πυρὸς ἄνθρακας σωρεύσεις (ρ) ἀνταποδώσει Κεφ. κϛʹ. MS. A. (α) πέτανται (ʺ) κατὰ τὴν (β) πρὸς τὴν (γ) Ἐκ τῶν ἑαυτοῦ ὁδῶν (δ)

תרגום TARGUM.

12 אִין הֲזֵיתָא גַּבְרָא דְחַכִּים בְּעֵינֵי נַפְשֵׁיהּ סַכְלָא טָב מִנֵּיהּ ׃ אָמַר עַטְלָא שַׁחְלָא בְּאָרְחָא
13 14 אַרְיָא בֵּינָת שׁוּקֵי ׃ הֵיךְ תַּרְעָא דְּמִכְרַךְ עַל צִירְתָהּ הֵיכְנָא עַטְלָא עַל עַרְסֵיהּ ׃ עַטְלָא מַטְשֵׁי
15 אִידֵיהּ בְּשַׁחְתָּא לָעֵי דְּנְהַפְכִּיהּ לְפוּמֵיהּ ׃ עַטְלָא חַכִּים בְּעֵינוֹי טָב מִן שׁוּבְעָא יָהֲבֵי טַעְמָא ׃
16 17 דִּלְכַד בְּאֶדְנוֹי דְּכַלְבָּא נָצֵי וּמִתְנְצֵי עַל דִּינָא דְּלָא דִילֵיהּ ׃ אֵיךְ הוּא דְּמִתַּחַת דְּפָשֵׁט גִּירֵי
18 19 שְׁנִינֵי דְּמוֹתָא ׃ הֵיכְנָא גַּבְרָא דְּמַרְמֵי בְּחַבְרֵיהּ וְאָמַר מְנַחֵךְ נַחְכֵית ׃ הֵיכְנָא דְּלֵית קִיסֵי
20 דְּעָכְבָא נוּרָא וְהֵיכְנָא דְּלֵית שׁוּשְׁשָׁא יִשְׁתּוֹק תִּגְרָא ׃ טַרְטְקָל לְגוּמְרֵי וְקִיסֵי לְנוּרָא וְגַבְרָא
21 22 תִּגְרָנָא מַחֲרֵה כְּהוּתָא ׃ מִלּוֹי דְּשׁוּשְׁשָׁא מַרְכְּנָן לֵיהּ וְהִנּוּן נָחְתִין לְגַוֵּיהּ דְּכַרְסָא ׃ הֵיךְ כַּסְפָּא
23 מְסַלְיָא דְּקָרִים עַל חַסְפָּא הֵיכְנָא שִׂפְוָתָא דְּדָלְקָן וְלִבָּא בִּישָׁא ׃ מִן שִׂפְוָתֵיהּ מִתְיְדַע סָנְאָה
24 25 וּבְגַוֵּיהּ סָאֵם רַמְיוּתָא ׃ וְאִין מְחַנֵּן בְּקָלֵיהּ לָא תְהֵימִין בֵּיהּ מְטוּל דִּשְׁבַע בִּישָׁתָא אִית
26 בְּלִבֵּיהּ ׃ דִּמְכַסֵּה סְנוּאָתָא בְּמוֹרְסְתָא תִּתְגְּלֵי בִּישְׁתֵיהּ בִּכְנִשְׁתָּא ׃ דְּחָפַר גּוּמְצָא בֵּיהּ נָפוֹל
27 28 וּדְמְעַרְגֵל כֵּיפָא עֲלוֹי הָפְכָא ׃ לִישָׁנָא דְּשִׁקְרָא סָנֵי אָרְחָתָא דְּקוּשְׁטָא וּפוּמֵהּ דְּפָלִיג עָבֵד
תַּרְכוּנְתָּא ׃

כז

1 לָא תִשְׁתַּבְּהַר בְּיוֹמָא דִּלְמָחָר דְּלָא יָדְעַתְּ מָנָא יָלֵיד יוֹמָא ׃ נְשַׁבְּחָךְ חִילוֹנֵי וְלָא פּוּמָךְ
2 3 נוּכְרָאָה וְלָא שִׂפְוָתָךְ ׃ יַקִּירָא כֵּיפָא וּנְטוּל חָלָא וְרוּגְזֵיהּ דְּשַׁטְיָא יַקִּיר מִן תַּרְוֵיהוֹן ׃
4 נַכְזְרַיוּתָא הִיא חֵימְתָא וְחֵיפָא הִיא רוּגְזָא וּמַנוּ קָאֵם קֳדָם קַנְאֲתָא ׃ טָבְתָא מַכְסְנוּתָא
5 6 דִּמְגַלְיָא מִן רַחֲמוּתָא דִּמְטַשְׁיָא ׃ שַׁפִּירָן אִנּוּן פּוֹדְעָתֵיהּ דְּרַחֲמָא וּבִישָׁן נוֹשְׁקָתָא דְּסָנְאָה ׃
7 8 נַפְשָׁא דְּשַׂבְעָא דָּיְשָׁא כַּבְרִיתָא וְנַפְשָׁא דִּכְפְנָא כָּל מֵירַם דְּמְרִיר חָלֵי לָהּ ׃ הֵיךְ צִפְּרָא
9 דִּמְשַׁנְּיָא מִן קִנָּא הֵיכְנָא הוּא גַּבְרָא דִּמְשַׁנֵּי דוּכְתֵּיהּ ׃ מִשְׁחָא וּבוּסְמָא דִּמְחַדִּין לִבָּא הֵיכְנָא
גַּבְרָא דִּמְבַסֵּם לְחַבְרֵיהּ בְּתַרְעִיתָא דְּנַפְשֵׁיהּ ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Si vidiſti virum qui ſapiens eſt apud ſemetipſum, melior eſt illo
Dicit piger: Leæna eſt in via, leo eſt in plateis. Sicut oſtium ve
cardine ſuo, ſic piger in lectulo ſuo. Piger abſcondit manum
aſcella, & laborat ut ad os ſuum convertat eam. Piger ſa
in oculis ſuis magis quàm ſeptem reddentes rationem. Sicut ille
prehendit aures canis, ſic eſt ille qui contendit, & rixatur in cauſa
eſt ſua. Sicut ille qui dejiciens ſe, emittit ſagittas acutas mortis,
vir qui fraudulenter agit in ſocium ſuum, & dicit: Ludens lude
non ſunt ligna, extinguitur ignis: & ubi non eſt ſuſurro,
jurgium. Carbones ad prunas, & ligna ad ignem, & vir lig
cendit rixam. Verba ſuſurronis proſternunt eū, & ipſa deſcendunt
riora ventris. Sicut argentum fæculentum quo opertum eſt vas
labia incenſa, & cor peſſimum. Labiis ſuis cognoſcitur inimicus
terioribus ſuis reponit fraudulentiam. Si deprecatus fuerit voce
credes ei; quoniam ſeptem mala ſunt in corde ejus. Qui operit
contritione, revelabitur malitia ejus in concilio. Qui fodit fove
det in eam: & qui volvit lapidem, vertetur in eum. Lingua
vias veritatis, & os bifidum operatur ruinam.

CAP. XXVII.

NE glorieris in diem craſtinum, quia neſcis quid paritura
dies. Laudet te extraneus & non os tuum; alienus, & non
Gravis eſt lapis, & ponderoſa arena, & ira ſtulti gravior ambo
delitas eſt ira, & inundatio eſt furor: & quis ſtabit coram ze
eſt correptio manifeſta quàm amor abſconditus. Pulchra ſunt
ligentis, & mala oſcula odientis. Anima ſaturata calcat favum
eſurienti quicquid amarum eſt, dulce eſt. Sicut paſſer qui m
do ſuo, ſic eſt vir qui mutat locum ſuum. Sicut oleum & aroma
cor, ſic vir ſuavis eſt amico ſuo in conſilio animæ ſuæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܢ ܚܙܝܬ ܓܒܪܐ ܕܚܟܝܡ ܒܥܝܢܝ̈ ܢܦܫܗ. ܦܐܫ ܣܟܠܐ ܛܒ ܡܢܗ. * ܐܡܪ ܚܒܢܢ
ܡܐ ܕܡܫܬܕܪ. ܐܪܝܐ ܒܐܘܪܚܐ. ܘܐܪܝܐ ܒܝܢ ܫܘܩܐ. * ܐܝܟ ܬܪܥܐ ܕܡܬܗܦܟ ܥܠ ܨܝܪܗ. ܗܟܢ
ܚܒܢܢܐ ܡܬܗܦܟ ܒܥܪܣܗ. * ܚܒܢܢܐ ܕܡܛܫܐ ܐܝܕܘܗܝ ܒܥܘܒܗ. ܠܐܐ ܕܢܩܪܒ
ܠܦܘܡܗ. * ܚܒܢܢܐ ܚܟܝܡ ܒܥܝܢܝ̈ ܢܦܫܗ. ܛܒ ܡܢ ܫܒܥܐ ܕܡܦܢܝܢ ܛܥܡܐ. * ܕܐܚܕ
ܒܕܝܢܐ ܕܠܐ ܕܝܠܗ. ܐܝܟ ܗܘ ܗܘ ܕܐܚܝܕ ܒܐܕܢܘܗܝ ܕܟܠܒܐ. * ܐܝܟ ܕܐܢܫ ܕܡܫܬܒܗܪ ܡܦܩ ܡܠ
ܐܝܟ ܓܐܪܐ ܚܪܝܦܐ ܕܡܘܬܐ. * ܗܟܢܐ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܢܟܠ ܠܚܒܪܗ. ܘܡܐ ܕܐܫܬܟܚ ܐܡܪ
ܡܓܚܟ ܓܚܟܬ. * ܡܐ ܕܠܝܬ ܩܝܣܐ. ܕܥܟܐ ܢܘܪܐ. ܘܐܝܟܐ ܕܠܝܬ ܪܛܢܐ. ܫܠܝܐ ܚܪܝ
* ܦܚܡܐ. ܠܓܘܡܪܐ. ܘܩܝܣܐ ܠܢܘܪܐ. ܘܓܒܪܐ ܪܛܢܐ. ܡܓܪܐ ܚܪܝܢܐ. * ܡܠܘܗܝ ܕܪܛܢܐ
ܡܥܪܩܢ. ܘܢܚܬܝܢ ܠܬܘܢܘܗܝ ܕܟܪܣܐ. * ܐܝܟ ܟܣܦܐ ܕܡܚܦܝܐ ܚܨܦܐ. ܗܟܢܐ ܣܦܘ
ܚܡܝܡܬܐ ܕܝܠܗ: ܘܠܒܐ ܒܝܫܐ. * ܡܢ ܣܦܘܬܗ ܡܬܝܕܥ ܣܢܐܐ. ܘܒܓܘ ܠܒܗ ܣܐܡ
ܢܟܠܐ ܦܠܚ. ܠܐ ܬܗܝܡܢܝܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܫܒܥ ܒܝܫܢ ܒܓܘ ܠܒܗ. * ܕܡܟܣܐ ܣܢ
ܒܠܒܗ. ܬܬܓܠܐ ܒܝܫܘܬܗ ܒܟܢܘܫܬܐ. * ܕܚܦܪ ܓܘܡܨܐ ܢܦܠ ܒܗ. ܘܕܡܥܓܠ ܟܐܦ
ܥܠܘܗܝ ܬܗܦܘܟ. * ܠܫܢܐ ܕܓܠܐ ܣܢܐ ܫܪܪܐ. ܘܦܘܡܐ ܡܫܥܠܝܐ. ܥܒܕ ܫܓܘܫܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܙ * ܠܐ ܬܫܬܒܗܪ ܒܝܘܡܐ ܕܡܚܪ. ܠܐ ܓܝܪ ܝܕܥ ܐܢܬ ܡܢܐ ܢܐܠ
* ܢܫܒܚܟ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܠܐ ܦܘܡܟ. ܘܐܚܪܢܐ ܘܠܐ ܣܦܘܬܟ. * ܝܩܝܪܐ ܟܐܦܐ. ܘܝܩܝܠ ܚܠܐ. ܘܪܘ
ܕܣܟܠܐ ܝܩܝܪ ܡܢ ܬܪܝܗܘܢ. * ܐܟܙܪܝܐ ܗܝ ܚܡܬܐ. ܘܫܘܛܦܐ ܪܘܓܙܐ. ܘܡܢܘ ܢܩܘܡ ܩܕܡ ܗ
* ܛܒܐ ܗܝ ܡܟܣܢܘܬܐ ܓܠܝܬܐ. ܡܢ ܪܚܡܬܐ ܕܡܟܣܝܐ. * ܡܗܝܡܢܝܢ ܡܚܘܬܗ ܕܪܚܡ
ܢܫܩܬܗ ܕܣܢܐܐ. * ܢܦܫܐ ܕܣܒܝܥܐ ܕܝܫܐ ܟܘܪܬܐ. ܘܢܦܫܐ ܟܦܢܬܐ. ܐܦ ܡܪ
ܚܠܐ ܐܝܬ ܠܗ. * ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܕܢܕܐ ܡܢ ܩܢܗ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܢܐܕ ܡܢ ܕܘܟܬܗ. * ܐ
ܡܫܚܐ ܘܒܣܡܐ ܕܡܒܣܡܝܢ ܠܠܒܐ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܡܢ ܕܡܒܣܡ ܠܚܒܪܗ ܒܡܠܟܐ ܕܢܦܫ

Si videris hominem ſapientem in oculis ſuis, 12
ſtultus multò præſtantior eſt illo. Dicit pi- 13
ger quando mittitur, Leo eſt in via, & leo
inter plateas. Sicut oſtium vertitur ſuper 14
cardine ſuo, ſic piger volutatur in lecto ſuo.
Piger qui abſcondit manus ſuas in ſinu ſuo, 15
laborabit in perducendis illis ad os ſuum.
Piger ſapiens ſibi videtur pluſquam ſeptem 16
reddentes ſaporem. Qui ſagax eſt in lite 17
non propria, ſimilis eſt ei qui tenet aures ca-
nis. Quemadmodum arrogantes jactant 18
verba quaſi tela mortis acuta, Sic eſt vir 19
decipiens proximum ſuum: cúmque depre-
henditur, inquit, Jocans jocabar. Cùm de- 20
ſunt ligna, extinguitur ignis: & ubi non ad-
eſt ſeditioſus, ſilet contentio. Crates car- 21
bonibus, & ligna igni: Vir autem ſuſurro,
concitat jurgium. Verba ſuſurronis per- 22
turbant, & deſcendunt in penetralia cordis.
Ut argentum vile obductum teſtæ, ſic labia 23
ardentia, & cor malum. Ex labiis ſuis di- 24
gnoſcitur oſor, & in præcordiis ſuis tendit
inſidias. Etiamſi demittat vocem ſuam, ne 25
credas ei: quoniam ſeptem nequitiæ ſunt in
viſceribus ejus. Qui tegit odium in corde 26
ſuo, revelabitur malitia ejus in cœtu. Qui 27
fodit foveam, incidet in eam: & qui pro-
volvit ſaxum, recidet in illum. Lingua men- 28
dax odit veritatem, & os detrectans generat
tumultum.

CAP. XXVII.

NE glorieris in diem craſtinum: ignoras 1
enim quid pariat. Laudet te alienus, & 2
non os tuum: alius, & non labia tua. One- 3
roſum eſt ſaxum, & gravis arena: at ira ſtul-
ti gravior utroque. Impudentia eſt ira, & 4
impetus, furor: at quis conſiſtat coram æmu-
latione? Melior eſt correptio aperta, quàm 5
dilectio occulta. Meliores ſunt plagæ ami- 6
ci, quàm oſcula inimici. Anima ſatura con- 7
culcat favum: animæ autem eſurienti, etiam
amara, dulcia ſunt. Sicut avis quæ transfert 8
nidum ſuum, ſic vir qui movetur de loco
ſuo. Ut unguentum & aromata cor exhila- 9
rant: ejuſmodi eſt qui recreat proximum
ſuum conſilio proprio.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* شبل الاسد هو اوفر قوة من البهايم * ما يلتفت ولا يجزع من بهيمة * والديك اذا تمشى بين
الاناث من الدجاج بطيبة النفس * والتيس المتقدم القطيع * والملك يخطب في جموع الامم * ان
بذلت ذاتك للشرور ومددت يدك بخصومة ستهان بك ويغمى * احلب لبنا فيكون منه زبد
فان عصرت المنخرين ينعصر منهما دما * ان استجذبت اقوالا ستهيج حكومات وخصومات
اقوالي مقولة من الله *

* الفصل الحادي والثلثون *

* تصدير قول الملك الذي ادبته امه * يا ولدي ماذا حفظت * ماذا هي اقوالي يا بني اقو
لك كلاما قبل كونه * وماذا هو يا ولد جوفي * ما هو يا ولد نذوري * لا تعط ثروتك لامرا
ولا تمح عقلك وعمرك لعدم المشورة * اعمل كل اعمالك بمشاورة * بمشاورة اشرب الخمر * الكبرا
والمقتدرون هم غصن بورقه * فلا يشربن خمرا * لكي لا اذا شربوا ينسون الحكمة * ولا
يحكمون للضعفاء احكاما مستوية * امنحوا سكرا للذين في الغموم * واعطوا شرب الخمر للذين
الاوجاع والضيقات * ليتناسوا الفقر ولن يذكروا الاتعاب ايضا * افتح فمك لكلام الله واح
للكافة حكومة معافاة * افتح فمك واحكم مقسطا * واحكم للفقير والضعيف *

* تمت بعون الله تعالي وحسن توفيقه امثال سليمان ومواعظه المملك على
اسرائيل * ويتلوها اداب المستعجم تلخيصها *

* بسم الله القديم الازلي *

* الفصل الخامس والعشرون *

* اداب سليمان ابن داوود المستعجم تلخيصها التي استكتبها اصدقاء حزقيا ملك يهود
* مجد الله يكتم القول * ومجد الملك يكرم الامر * السماء عالية والارض عميقة * وقلب الم
غير مروض * اضرب الفضة المغشوشة فتنقى نقاء كاملا * اقتل المنافقين من وجه الم
فيقوم كرسيه بالحق والعدل *

Catulus leonis eſt fortiſſimus animantium: 30
non convertitur, neque timet animal ul-
lum. Et gallus, cùm deambulat inter fœ- 31
minas gallinas cum hilaritate animi. Et
hircus præcedens gregem. Et rex collo-
quens inter cœtus populorum. Si tradi- 32
deris te ipſum vitiis, & extenderis ma-
num tuam ad rixam, contemnêris, & hu-
miliaberis. Emunge lac, & fiet ex eo buty- 33
rum: quòd ſi compreſſeris nares, elicietur
ex eis ſanguis, ſi attraxeris verba, exci-
tabis judicia & contentiones. Sermones
mei ſunt dicti à Deo.

CAP. XXXI.

Relatio ſermonis Regis quem erudivit 1
mater ſua. O fili mi, quid didiciſti? quæ- 2
nam ſunt eloquia mea, O fili mi? dicam
tibi ſermonem antequàm ſit. Ecquinam eſt,
O partus uteri mei? quinam eſt, O nate
votorum meorum? Ne des opes tuas mu- 3
lieri: & ne tradas ingenium tuum &
ætatem tuam ob defectum conſilii. Fac
omnia opera tua cum conſilio: cum conſi-
lio bibe vinum. Magnates & potentes 4
ſunt arbor cum foliis ſuis: Ne igitur bibant
vinum, Ne cum biberint obliviſcantur 5
ſapientiæ, nec poſſint judicare imbecillibus
judicia recta. Date quod inebriat iis qui 6
ſunt in mœroribus, & tribuite potum vini
iis qui ſunt in doloribus & anguſtiis: ut 7
obliviſcantur inopiæ, & non recordentur
laborum ampliùs. Aperi os tuum verbis
Dei, & judica omnibus judicium ſanum.
Aperi os tuum, & judica juſtè: & ju- 8
dica pauperi, & imbecilli.

Cæteros verſiculos reperies ad
calcem cap. 29.

Expleta ſunt, Excelſi Dei ope ejuſque optimâ providentiâ, Proverbia & monita Salomonis, qui regnavit ſuper filios Iſrael. Sequuntur Eruditiones ipſius difficiles explanatu.

IN NOMINE DEI ÆTERNI, SEMPITERNI.

CAP. XXV.

Diſciplina Salomonis filii David, cujus ex- 1
poſitio eſt valdè difficilis, quam ſcri-
pſerunt amici Ezeciæ regis Juda.

Gloria Dei celat ſermonem, & gloria 2
regis præſtat rebus honorem. Cœlum eſt 3
ſublime, & terra profunda, & cor regis
minimè domitum. Percute argentum ſor- 4
didum, & purificabitur purificatione per-
fectâ. Occide iniquos de facie regis, & 5
erigetur ſedes eius in veritate & juſtitia.

מִשְׁלֵי : כח

tui fratris domum & ,derelinquas ne tui patris amicum & ,tuũ Amicum
10 רֵעֲךָ וְרֵעֶה אָבִיךָ אַל־תַּעֲזֹב וּבֵית אָחִיךָ
frater quàm ,propinquus vicinus *bonus* : *tui exitii* die in ingrediaris ne
אַל־תָּבוֹא בְּיוֹם אֵידֶךָ טוֹב שָׁכֵן קָרוֹב מֵאָח
respondebo & : meum cor lætifica & ,mi fili sapiens Sis .longinquus
11 רָחוֹק׃ חֲכַם בְּנִי וְשַׂמַּח לִבִּי וְאָשִׁיבָה
: se abscondit ,malum vidit Callidus .verbum me afficienti probris
12 חֹרְפִי דָבָר׃ עָרוּם רָאָה רָעָה נִסְתָּר
fidejussit quia,ejꝰ vestimentũ Tolle .sunt *condemnati* ,transierunt simplices
13 פְּתָאִים עָבְרוּ נֶעֱנָשׁוּ׃ קַח־בִּגְדוֹ כִּי־עָרַב
suo *socio* Benedicens .ejus pignus cape extranea pro & : extraneo.
14 זָר וּבְעַד נָכְרִיָּה חַבְלֵהוּ׃ מְבָרֵךְ רֵעֵהוּ
.ei reputabitur maledictio , *manicando* mane *in* grandi voce *in*
בְּקוֹל גָּדוֹל בַּבֹּקֶר הַשְׁכֵּים קְלָלָה תֵּחָשֶׁב לוֹ׃
.*est æquata* *contentionum* mulier & : *imbris* die in assidua Stillatio
15 דֶּלֶף טוֹרֵד בְּיוֹם סַגְרִיר וְאֵשֶׁת מִדוֹנִים נִשְׁתָּוָה׃
.clamabit *ejus dexteræ oleum* & : ventum abscondit , eam *Abscondentes*
16 צֹפְנֶיהָ צָפַן־רוּחַ וְשֶׁמֶן יְמִינוֹ יִקְרָא׃
,ficum *Servans* .sui amici *facies* acuet vir & : acuetur ferro *in* Ferrum
17 בַּרְזֶל בְּבַרְזֶל יָחַד וְאִישׁ יַחַד פְּנֵי־רֵעֵהוּ׃ נֹצֵר תְּאֵנָה
18 .glorificabitur suum dominum *custodiens* & : ejus fructum comedet
יֹאכַל פִּרְיָהּ וְשֹׁמֵר אֲדֹנָיו יְכֻבָּד׃
Sepulchrum .homini hominis cor sic : *faciebus* facies *aquis* Sicut
19 כַּמַּיִם הַפָּנִים לַפָּנִים כֵּן לֵב־הָאָדָם לָאָדָם׃ שְׁאוֹל
20 .saturabuntur non hominum oculi & : saturabuntur non perditio &
וַאֲבַדֹּה לֹא תִשְׂבַּעְנָה וְעֵינֵי הָאָדָם לֹא תִשְׂבַּעְנָה׃
.eum laudantis *ori vir &* : *auro* caminus & , *argento* Conflatorium
21 מַצְרֵף לַכֶּסֶף וְכוּר לַזָּהָב וְאִישׁ לְפִי מַהֲלָלוֹ׃
contusorum triticorum medio in , mortario in stultum contuderis Si
22 אִם־תִּכְתּוֹשׁ אֶת־הָאֱוִיל בַּמַּכְתֵּשׁ בְּתוֹךְ הָרִיפוֹת
agnoscas Agnoscendo .ejus stultitia eo *desuper* recedet non , pistillo *in*
23 בַּעֱלִי לֹא־תָסוּר מֵעָלָיו אִוַּלְתּוֹ׃ יָדֹעַ תֵּדַע
seculum in non Quia .greges ad tuum cor pone : tui pecoris *facies*
24 פְּנֵי צֹאנֶךָ שִׁית לִבְּךָ לַעֲדָרִים׃ כִּי לֹא לְעוֹלָם
est Revelata ? generationem & ,generatione in corona *an &* : *fortitudo*
25 חֹסֶן וְאִם־נֵזֶר לְדוֹר דוֹר׃ נִגְלָה
Oves .montium herbæ *sunt collectæ* & : germen *apparuit* & , herba
26 חָצִיר וְנִרְאָה־דֶשֶׁא וְנֶאֶסְפוּ עִשְּׂבוֹת הָרִים׃ כְּבָשִׂים
caprarum *lactis sufficientia* Et .hirci agri preciũ & : *tuas vestes ad*
27 לִלְבוּשֶׁךָ וּמְחִיר שָׂדֶה עַתּוּדִים׃ וְדֵי חֲלֵב עִזִּים
.tuis puellis *vitas* & : tuæ domus *panem* in ,tuum *panem* in
לְלַחְמְךָ לְלֶחֶם בֵּיתֶךָ וְחַיִּים לְנַעֲרוֹתֶיךָ׃

CAP. XXVIII. כח

.*fidet* leunculꝰ veluti justi & : *impius* ,persequens non &,Fugerunt
1 נָסוּ וְאֵין־רֹדֵף רָשָׁע וְצַדִּיקִים כִּכְפִיר יִבְטָח׃
sciente intelligente homine in & : ejus principes multi terræ *prævaricatione In*
2 בְּפֶשַׁע אֶרֶץ רַבִּים שָׂרֶיהָ וּבְאָדָם מֵבִין יֹדֵעַ
non & ,*trahens* pluvia : pauperes *opprimens* & ,pauper Vir .*prolongabit sic*
3 כֵּן יַאֲרִיךְ׃ גֶּבֶר רָשׁ וְעֹשֵׁק דַּלִּים מָטָר סֹחֵף וְאֵין
: impium laudabunt legem Derelinquentes .panis
4 לָחֶם׃ עֹזְבֵי תוֹרָה יְהַלְלוּ רָשָׁע
non mali Viri .eis *in miscebunt litem* legem custodientes &
5 וְשֹׁמְרֵי תוֹרָה יִתְגָּרוּ בָם׃ אַנְשֵׁי־רָע לֹא־
.omnia intelligent DOMINUM quærentes & : judicium intelligent
יָבִינוּ מִשְׁפָּט וּמְבַקְשֵׁי יְהוָה יָבִינוּ כֹל׃
, viis perversus quàm : sua *integritate in ambulans* pauper *Bonus*
6 טוֹב־רָשׁ הוֹלֵךְ בְּתֻמּוֹ מֵעִקֵּשׁ דְּרָכַיִם
.dives ipse &
וְהוּא עָשִׁיר׃

Versio VUL.LAT.

10 Amicũ tuũ,& amicũ patris tui
ne dimiseris : & domũ fratris
tui ne ingrediaris in die afflictionis tuæ. Melior est vicinus
11 juxtà,quàm frater procul.Stude sapientiæ,fili mi, & lætifica
cor meũ, ut possis exprobranti
12 respondere sermonem. Astutꝰ
videns malum,absconditus est:
parvuli transeuntes sustinuerunt dispendia.Tolle vestimen-
13 tum ejus,qui spopondit pro extraneo : & pro alienis, aufer
14 ei pignꝰ. Qui benedicit proximo suo voce grandi, de nocte
consurgens maledicenti similis
15 erit. Tecta perstillantia in die
frigoris, & litigiosa mulier
16 comparantur. Qui retinet eã,
quasi qui ventũ teneat, & oleũ
17 dexteræ suæ vocabit. Ferrum
ferro exacuitur, & homo exacuit faciem amici sui. Qui ser-
18 vat ficũ,comedet fructus ejus :
& qui custos est dñi sui, glori-
19 ficabitur. Quomodò in aquis
resplendent vultus prospicientium, sic corda hominũ mani-
20 festa sunt prudentibꝰ. Infernus
& perditio nunquam implentur : similiter & oculi hominũ
21 insatiabiles. Quomodò probatur in conflatorio argentũ,
& in fornace aurũ : sic probatur homo ore laudantis. Cor
iniqui inquirit mala,cor autem
22 rectum inquirit scientiam. Si
contuderis stultũ in pila quasi
ptisanas feriente desuper pilo,
non auferetur ab eo stultitia e-
23 jus. Diligenter agnosce vultũ
pecoris tui, tuósq; greges con-
24 sidera : Non enim habebis jugiter potestatẽ:sed corona tribuetur in generationem & ge-
25 nerationem. Aperta sunt prata, & apparuerũt herbæ virentes, & collecta sunt fœna de
26 montibus.Agni ad vestimentũ
tuum:& hœdi,ad agri pretiũ.
27 Sufficiat tibi lac caprarũ in cibos tuos, & in necessaria domꝰ
tuæ,& ad victum ancillis tuis.

CAP. XXVIII.

1 Fugit impius, nemine persequente: justꝰ autẽ quasi leo con-
2 fidens,absq; terrore erit. Propter peccata terræ multi principes ejꝰ : & propter hominis
sapientiam, & horum scientiã
quæ dicuntur, vita ducis lon-
3 gior erit. Vir pauper calumnians pauperes, similis est imbri
vehementi, in quo paratur fa-
4 mes. Qui derelinquunt legẽ,
laudant impium : qui custodiunt, succenduntur contra eum.
5 Viri mali non cogitant judicium:qui autem inquirunt Dominum,animadvertunt omnia.
6 Melior est pauper ambulans in simplicitate sua,quàm dives in pravis itineribus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

10 † Πολλὰ χειμάζεται πᾶσα σὰρξ ἀφρόνων,
11 † συντρίβεται γὰρ ἡ ἔκστασις αὐτῶν. † Ὥσπερ
κύων ὅταν ἐπέλθῃ (ε) ἐπὶ τὸν ἑαυτοῦ ἔμετον
καὶ μισητὸς γένηται, † οὕτως ἄφρων τῇ ἑαυτοῦ
κακίᾳ ἀναστρέψας ἐπὶ τὴν ἑαυτοῦ ἁμαρτίαν. † ἔστιν αἰσχύνη ἐπάγουσα ἁμαρτίαν, † καί
12 ἐστιν αἰσχύνη δόξα καὶ χάρις. † Εἶδον ἄνδρα
(ζ) δόξαντα παρ' αὐτῷ σοφὸν εἶναι, † ἐλπίδα
13 μέντοι ἔσχε (η) μᾶλλον ἄφρων αὐτοῦ. † Λέγει ὀκνηρὸς ἀποστελλόμενος εἰς ὁδὸν, Λέων
ἐν ταῖς ὁδοῖς, ἐν δὲ ταῖς πλατείαις φονευταί.
14 † Ὥσπερ θύρα στρέφεται ἐπὶ (θ) τοῦ στρόφιγγος, † οὕτως ὀκνηρὸς ἐπὶ τῆς κλίνης αὐτοῦ.
15 † Κρύψας ὀκνηρὸς τὴν χεῖρα ἐν τῷ κόλπῳ
αὐτοῦ, (ι) οὐ δυνήσεται ἐπενεγκεῖν (κ) ἐπὶ
16 στόμα. † Σοφώτερος (λ) ἑαυτῷ ὀκνηρὸς φαίνεται, † τοῦ ἐν πλησμονῇ ἀποκομίζοντος ἀγ-
17 γελίαν. † Ὥσπερ ὁ κρατῶν κέρκου κυνὸς,
18 † οὕτως ὁ προεστὼς ἀλλοτρίας κρίσεως. † Ὥσπερ οἱ ἰώμενοι προβάλλουσι λόγους εἰς ἀνθρώπους, † ὁ δὲ ἀπαντήσας τῷ λόγῳ πρῶ-
19 τος ὑποσκελισθήσεται· † Οὕτως πάντες οἱ
ἐνεδρεύοντες τοὺς ἑαυτῶν φίλους, † ὅταν (μ)
δὲ ὀφθῶσι, λέγουσιν, Ὅτι παίζων ἔπρα-
20 ξα. † Ἐν πολλοῖς ξύλοις θάλλει πῦρ, † ὅπου δὲ οὐκ ἔστι (ν) δίθυμος, ἡσυχάζει μάχη.
21 † Ἐσχάρα ἄνθραξι καὶ ξύλα πυρί, † ἀνὴρ δὲ
22 λοίδορος εἰς ταραχὴν μάχης. † Λόγοι κερκώπων μαλακοί, † οὗτοι δὲ τύπτουσιν εἰς τα-
23 μεῖα σπλάγχνων. † Ἀργύριον διδόμενον
μετὰ δόλου, † ὥσπερ ὄστρακον ἡγητέον. † χεί-
24 λη λεῖα καρδίαν καλύπτει λυπηράν. † Χείλεσι πάντα ἐπινεύει (ξ) ἀποκλαιόμενος ἐχθρὸς, † ἐν δὲ τῇ καρδίᾳ τεκταίνεται δόλους.
25 † Ἐάν σου δέηται ὁ ἐχθρὸς μεγάλῃ τῇ φωνῇ, (ο) μὴ πεισθῇς, † ἑπτὰ γάρ εἰσι πονηρί-
26 αι (π) ἐν τῇ ψυχῇ αὐτοῦ. † Ὁ κρύπτων ἔχθραν συνίστησι δόλον, † ἐκκαλύπτει δὲ τὰς
ἑαυτοῦ ἁμαρτίας εὔγνωστος (ρ) ἐν συνεδρίοις.
27 † Ὁ ὀρύσσων βόθρον τῷ πλησίον, ἐμπεσεῖται
εἰς αὐτόν· † ὁ δὲ κυλίων λίθον, ἐφ' ἑαυ-
28 τὸν κυλίει. † Γλῶσσα ψευδὴς μισεῖ ἀλήθειαν, † στόμα δὲ ἄστεγον ποιεῖ ἀκαταστασίας.

MS.A. (ε) ἐπὶ τὸν ἔμετον αὐτοῦ (ζ) δοξάζοντα παρ' ἑαυτῷ (η) ἀ
μᾶλλον αὐτοῦ. (θ) τῷ στρόφιγγι, (ι) οὐ δύναται (κ) εἰς τὸ στόμα.
ὀκνηρὸς ἑαυτῷ φαίνεται, (μ) δ' ἐφωραθῶσιν, (ν) ὀξύθυμος, (ξ) ὁ ἐπι
ὁμενος (ο) μὴ πεισθῇς αὐτῷ, (π) ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτοῦ. (ρ) ἐν συνεδρίῳ.

Multis procellis jactatur omnis c
ro imprudentum: (i) conterit
enim ecstasis eorum. Sicut ca
cùm redierit ad suum vomitu
& odibilis efficitur ; sic (k) im
prudens suâ malitiâ reversus a
peccatum suum. (l) Est confu
adducens peccatum:& est confu
gloria,& gratia. Vidi virum,qu
videtur apud se sapiens esse; spe
quidem habet magis insipiens e
Dicit piger missus ad viam;Leo i
viis, & in plateis sicarii. Sicu
janua vertitur (m) super cardi
nem, ita piger super lectum suum
Abscondens piger manum in (n)
sinu suo,(o)non poterit mittere a
os. Sapientior sibi piger videtu
(p)eo qui in saturitate refert nu
tium. Sicut qui tenet (q) cau
dam canis ; sic qui præsidet alien
judicio. Sicut qui (r) curant
projiciunt verba in homines; qu
autem occurrit verbo, primus su
plantabitur : Sic omnes qui (s) insi
diantur suis amicis:cùm autem
visi fuerint,dicunt; Quia luden
feci. In (u)multis lignis germina
ignis : ubi autem non est (x) di
sentiens , quiescit rixa. Craticula
carbonibus,& ligna igni : vir au
tem (y) maledicus (z)ad tumu
tum rixæ. Sermones (a)affecta
torum molles : hi verò (aa) perc
tiunt in penetralia (bb) viscerum
Argentum datum cum dolo, ta
quàm testa reputandum. Lab. (c
lævigata cor occultant (dd) tri
(ee)Labiis omnia annuit deplora
inimicus : in corde autem fabrica
tur (ff) dolos. Si te rogaverit in
micus * magnâ voce, nè creda
ris : septem enim sunt nequitiæ
anima ejus. (gg)Qui occultat in
micitiam, componit dolum: re
velat autem sua peccata benè n
tus in consessibus. Qui fodit (hh)
foveam proximo, incidet in eam
qui autem volvit lapidem, sup
seipsum volvit. Lingua mendax
dit veritatem : os autem (ii) in
tectum facit (kk) ruinas.

ΚΕΦ. κζ΄.

1 † ΜΗ' καυχῶ τὰ εἰς αὔριον, † οὐ γὰρ γι-
2 νώσκεις τί τέξεται ἡ ἐπιοῦσα. † Ἐγκωμιαζέτω σε (α) ὁ πέλας καὶ μὴ τὸ σὸν στόμα,
ἀλλότριος καὶ μὴ τὰ σὰ χείλη. † Βαρὺ λί-
3 θος καὶ δυσβάστακτον ἄμμος, † ὀργὴ δὲ
4 ἄφρονος βαρυτέρα ἀμφοτέρων. † Ἀνελεήμων θυμὸς καὶ ὀξεῖα ὀργή, † ἀλλ' οὐδὲν ὑφ-
5 ίσταται ζῆλος. † Κρείσσους ἔλεγχοι (β)
ἀποκεκαλυμμένοι κρυπτομένης φιλίας. †(ϛ)
6 Ἀξιοπιστότερά ἐστι τραύματα φίλου, ἢ ἑκούσια φιλήματα ἐχθροῦ.

MS.A. (α) τὸ πέλας (β) ἀποκαλυπτόμενοι (ϛ) Ἀξιοπιστότερα τρα
φίλου,

CAP. XXVII.

NE glorieris in iis, quæ in
stinum : non enim cognoscis, q
pariet (a) superveniens. Laude
vicinus, & non os tuum;(b)al
nus, & non tua labia. Gravis
lapis, & vix portabilis arena
ira stulti gravior utroque. (c)C
delis est indignatio, & acuta
sed (d) nihil sustinet zelus. Me
ores correptiones manifestæ (e)
conditâ amicitiâ. Fideliora
vulnera amici, quàm (f) sp
nea oscula inimici.

תרגום TARGUM.

10 חברך וחבריה דאבוך לא תשבוק ובביתא דאחוך לא תעול ביומא דתברך טב שכנא
11 קריב מאח רחיק : אתחכם ברי וחדי לבי ואחזר מלתא לאלין דמחסדין לי : ערימא חזא
12
13 בישתא ומטשי ושברי עברין עלה וחסרין : מתנסיב מרטוטיה דמן דעריב לנוכראה
14 ועל אפי נוכריא משכניה : דמברך לחבריה בקלא רמא בצפרא בקדומא לווטתא
15 תתחשיב ליה : איך דלפא דנטף ביומא דסגרירא היכנא אתתא תגרניתא דנציא :
16 רוחא נרביתא קשיא ובשמא דימינא מתקריא : פרזלא בפרזלא לטיש וגברא לטיש
17 אפיה דחבריה : דנטר תינתא אכל פירהא ודזהיר במריה נתיקר : היך מיא והיך פרצופי
18
19 דלא דמין חד לחד היכנא לביהון דבני נשא לא דמין חד לחד : שיול ואבדנא לא סבען
20 ועיניה דגברא לא סבען : צרפא לכספא וכורא לדהבא וגברא מן פומא דמשבחנוי :
21 אין מחית ליה לשטיא במכתשי בגו סיעתא ובאודרך לא תעביר מניה שטיותיה :
22 מה דרעי אנת דע אפי ענך ושים לבך על קוטין : מטול דלא לעלם הוא אחסנא אף שלם
23
24 דרא לדרא : שוח עמירא ואתחמי דתאה ואתכנש עשבא דטורי : אמרי ללבושך וגדיא
25 לתגרותך : וסופקנא דחלבא דעזי למיכולתך ולמיכולתא דביתך וחיי לטליתך :
26
27 כח
1 ערקין רשיעי בדלית דרדף להון וצדיקי היך אריא דמסתכי למיכלתיה מסברין
2 לחכמתא : בחוביהא דארעא סגיעין רברבנהא ובני נשא דמתבינין בידיעתא נגדון :
3 גברא מסכינא דעשק למסכני איך מטרא חביטא דלית בה יתרן : דשבקין נימוסא
4
5 ומשתבחין ברשעא ואלין דנטרין אוריתא מתגרין בהון דיתובון : בני נשא בישי לא
6 מתבינין דינא ודבעי מן קדם יי מתבינין כלהון טבתא : טב מסכינא דמהלך
בתמימותיה מן הוא דמעקמן ארחתיה והוא עתיר :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Socium tuũ , & sociũ patris tui ne dimittas : & domũ fratris tui ne
grediaris in die interitus tui. Melior est vicinus propè, quàm frater p
cul. Sapiens esto fili mi, & lætifica cor meum , & respondebo ver
his qui exprobrant mihi. Astutus vidit malum, & abscondit se, &
pientes transeunt juxta illud, & penuriam sustinent. Tollatur palliũ
qui fidejussor stetit pro extraneo, & pro extranea aufer pignus ejus.
benedicit socio suo voce alta manè consurgens , maledictio reputab
illi. Sicut stillicidiũ quod stillat in die pluviæ, sic litigiosa mulier qu
xatur. Sicut ventus Aquilonaris gravis est, & unguentum dexteræ
vocatur. Ferrum ferro acuitur, & vir exacuit faciem socii sui. Qu
stodit ficulneam, comedet fructum ejus : & qui observat dominum
glorificabitur. Sicut aquæ & sicut vultus qui non sunt similes ad invi
sic cor filiorũ hominũ non est inter se simile. Infernus & perditio n
satiantur , & oculi hominis non saturantur. Conflatoriũ est argent
fornax auro,et vir ex ore laudantiũ eum. Etiamsi percusseris stultũ pi
inter cœtus idque *in area tua*,non transibit ab eo stultitia ejus. Earũ q
pascis cognosce vultũ oviũ tuarum, et pone cor tuum ad greges. Qu
am non in æternum possessio,neq; pax erit à generatione in generation
Humiliatũ est fœnũ, et apparuit herba, et congregata est herba mon
Agni sunt ad vestimentũ tuũ,et hœdi ad negotiationem tuam. Et suf
entia lactis caprarũ in cibũ tuũ,et in cibũ domus tuæ,victũmq; puellis

CAP. XXVIII.

Fugiunt impii nemine persequente eos : justi autem sicut leo qui in
dit cibo suo, sperant in sapientiam. In peccato terræ, multi sunt prin
ejus, et filii hominũ qui intelligunt scientiam, durabunt. Vir paupe
calumniatur pauperes, est sicut pluvia vehemens, in qua non est u
Qui relinquunt legem,gloriantur in impietate:et hi qui custodiunt le
contendent cum eis ut revertantur. Filii hominum impii non intell
judicium ; et qui requirunt coram Domino, intelligunt omnia bona.
lior est pauper qui ambulat in simplicitate sua, quàm ille qui perver
in via sua, et ipse est dives.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܪܚܡܟ ܘܪܚܡܗ ܕܐܒܘܟ. ܠܐ ܬܫܒܘܩ. ܘܠܒܝܬܗ ܕܐܚܘܟ. ܠܐ ܬܥܘܠ ܒܝܘܡܐ ܕܬܒܪܟ.
ܛܒ ܗܘ ܫܒܒܐ ܕܩܪܝܒ. ܡܢ ܐܚܐ ܕܪܚܝܩ. * ܐܬܚܟܡ ܒܪܝ. ܘܚܕܝ ܠܒܝ. ܘܐܦܢܝ ܡܢܝ ܚܣ
ܕܡܚܣܕܢܝ. * ܥܪܝܡܐ ܚܙܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܛܫܝ. ܣܟܠܐ ܕܝܢ ܥܒܪܘ ܥܠܝܗ. ܘܐܬ
* ܡܬܢܣܒ ܡܪܛܘܛܗ ܡܢ ܕܥܪܒ ܠܢܘܟܪܝܐ. ܘܡܛܠ ܢܘܟܪܝܐ ܡܫܟܢܘܬܗ. * ܕܡ
ܠܚܒܪܗ ܒܡܣܒ ܒܐܦܐ. ܒܩܠܐ ܪܡܐ. ܠܐ ܗܘܐ ܦܪܝܫ ܡܢ ܗܘ ܕܠܐܛ. * ܐܝܟ ܕܛܦܐ ܕ
ܒܝܘܡܐ ܕܡܛܪܐ. ܗܟܢܐ ܗܝ ܐܢܬܬܐ ܚܪܝܢܝܬܐ. * ܪܘܚܐ ܓܪܒܝܐ ܩܫܝܐ. ܘܫܡܗ ܝܡܝܢܐ
ܡܬܩܪܐ. * ܦܪܙܠܐ ܒܦܪܙܠܐ ܡܬܚܪܦ. ܘܓܒܪܐ ܡܚܪܦ ܐܦܘܗܝ ܕܚܒܪܗ. * ܕܢܛܪ ܬܐܢܬܐ
ܦܐܪܝܗ. ܘܕܢܛܪ ܠܡܪܗ ܢܫܬܒܚ. * ܐܝܟ ܕܠܐ ܕܡܝܢ ܦܪܨܘܦܐ ܠܦܪܨܘܦܐ. ܗܟܢܐ ܠܐ
ܠܒܘܬܐ ܠܠܒܘܬܐ. * ܫܝܘܠ ܘܐܒܕܢܐ ܠܐ ܣܒܥܝܢ. ܗܟܢܐ ܐܦ ܥܝܢܝܗܘܢ ܕܒܢܝܢܫܐ
ܣܒܥܢ. * ܟܘܪܐ ܒܚܢ ܠܣܐܡܐ. ܘܐܬܘܢܐ ܠܕܗܒܐ. ܘܓܒܪܐ ܡܢ ܦܘܡܐ ܕܡܫܒܚܢ
ܠܒܐ ܕܥܘܠܐ ܒܥܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܒܐ ܕܟܐܢܐ ܝܕܥܬܐ. * ܐܢ ܬܡܚܝܗܝ ܠܣܟܠܐ ܒܡ
ܟܢܘܫܬܐ. ܡܕܡ ܠܐ ܡܘܬܪ ܐܢܬ ܠܗ. ܘܠܐ ܡܥܒܪ ܐܢܬ ܡܢܗ ܫܛܝܘܬܗ. * ܟܕ ܪܥܐ ܐܢܬ
ܐܦܝ ܥܢܟ. ܘܣܝܡ ܠܒܟ ܥܠ ܡܪܥܝܬܟ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܠܥܠܡ ܩܢܝܢܐ. ܘܐܦܠܐ ܡ
ܕܪܐ ܠܕܪܐ. * ܢܒܥ ܥܣܒܐ. ܘܐܬܚܙܝ ܬܕܐܐ. ܘܐܬܟܢܫ ܥܣܒܐ ܕܛܘܪܐ. * ܐܡܪܐ ܠܠܒܘܫܟ. ܘ
ܠܡܐܟܘܠܬܟ. * ܘܚܠܒܐ ܕܥܙܐ ܠܡܐܟܘܠܬܟ. ܘܠܡܐܟܘܠܬܐ ܕܒܝܬܟ.

* ܫܠܡܘ * ܟܚ * ܢܥܪܩܘܢ ܥܘܠܐ ܟܕ ܠܝܬ ܕܪܕܦ ܠܗܘܢ. ܘܙܕܝܩܐ
ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܢܬܬܟܠܘܢ. * ܒܚܘܒܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ ܣܓܝܐܝܢ ܫܠܝܛܢܝܗ̇. ܘܒܢܝܢܫܐ ܙܕܝܩܐ
ܕܝܕܥܝܢ ܬܪܝܨܘܬܐ ܢܘܪܟܘܢ. * ܓܒܪܐ ܡܣܟܢܐ ܕܛܠܡ ܠܡܣܟܢܐ. ܐܝܟ ܡܛܪܐ ܣܚܝܦܐ ܕ
ܒܗ ܝܘܬܪܢܐ. * ܐܝܠܝܢ ܕܫܒܩܝܢ ܢܡܘܣܐ. ܡܫܬܒܗܪܝܢ ܒܥܘܠܐ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ ܢܡܘ
ܡܪܒܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. * ܒܢܝ ܐܢܫܐ ܒܝܫܐ. ܠܐ ܡܣܬܟܠܝܢ ܕܝܢܐ. ܘܕܒܥܝܢ ܠܡܪܝܐ. ܝܕܥ
ܟܠܡܕܡ ܛܒܬܐ. * ܡܣܟܢܐ ܡܗܠܟ ܒܬܡܝܡܘܬܐ. ܘܥܬܝܪܐ ܕܝܢ ܥܩܡܢ ܐܘܪܚܬܗ.

Amicum tuum & amicum patris tui ne deſeras 10
: & domū fratris tui ne ingrediaris in
die adverſitatis tuæ. Melior eſt vicinꝰ propinquꝰ,
quam frater procul abſens. Sapiens eſto 11
fili mi, & lætifica cor meū, & averte à me improperiū
exprobrantiū mihi. Cautus videns 12
malū, abſcondit ſe : ſtulti verò tranſierunt
prope illud, & detrimentū paſſi ſunt. Eripietur 13
pallium ejꝰ qui ſpondet pro alieno, et propter
extraneū, pignꝰ ejꝰ. Qui benedicit proximū 14
ſuū cum aſſentatione elatâ voce, non differt
ab eo qui maledicit. Ut pluvia *in domum* 15
perſtillans in die imbris, talis eſt mulier litigioſa.
Ventus Aquilonaris aſper eſt, & Dexteri 16
nomine vocitatur. Ferrū ferrū expolit, 17
& homo expolit faciē proximi ſui. Qui ſervat 18
ficū, comedet de fructibꝰ ejꝰ: & qui cautè
cuſtodit dn̄m ſuū, honorabitur, Quemadmodū 19
non ſunt ſimiles vultꝰ vultibꝰ, ita differentia
ſunt corda à cordibꝰ. Infernꝰ et perditio 20
nunquā ſatiantur : eodē quoq; modo oculus
hominū eſt inſatiabilis. Conflatoriū probat 21
argentum, et fornax aurū : homo verò ore
laudantiū cum *exploratur*. Cor ſceleſtorum
quærit malū : et cor juſtorū, ſcientiā. Etiamſi 22
percutias ſtultū in medio cœtu, nullū tamen
ei afferes emolumentū, nec abſtrahes dementiā
ejꝰ. Cum paſcis, agnoſce faciem pecoris 23
tui, appone cor tuū ad gregē tuū : Non enim 24
perpetua erit poſſeſſio, neq; convenit ſeculū
cum ſeculo. Germinavit fœnū, et apparuit 25
gramen, et collecta eſt herba montiū. Agni 26
ad veſtitū tuū : et hœdi ad eſcā tuā : Lac etiā 27
caprarū, in cibū tuum, et cibum domûs tuæ.

CAP. XXVIII.

Fugient impii nemine eos perſequente : juſti 1
verò tanquā leo confident. Ob iniquitatem 2
terræ multiplicantur principes ejus :
homines autem juſti qui nôrunt æquitatem,
prorogabunt *dies ſuos*. Homo pauper qui 3
decipit pauperem, ſimilis eſt pluviæ præcipiti
in qua nulla eſt utilitas. Qui deſerunt legem, 4
gloriantur de iniquitate : qui verò legē
cuſtodiunt, magnificant ſeipſos. Homines 5
mali non intelligunt judicium : qui autem
Dominum quærunt, nôrunt omnia bona.
Pauper ambulat in ſimplicitate : divitis autem 6
viæ, diſtortæ.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لا تزدهين امام الملك * لا تقف امام المقتدرين * فان الافضل ان يقال لك اصعد الي
واحسن من اهانتك بحضرة الرئيس * قل ما راته عيناك * ولا تسعطن في الخصومة سريعا
لئلا تندم في اواخرك * متى عيرك صديقك لا تتهاون ان تنصرف الي ورائك * لئلا يعـ
صديقك يعيرك فما تنقطع خصومتك وعداوتك بل تكون عندك نظير الموت * الـ
والصداقة حرزان * فاحفظهما لنفسك لئلا تكون معيرا * لكن احفظ طرايقك بحسن انعطا
* مثل تفاحة ذهب في مخنقة من الزبرجد * هكذا سبيلك ان تقول كلامك * الكلام الحك
في اذن سريعة الاستماع * كقرط ذهب يعلق فيه زبرجدة جليلة ثمنها * بمنزلة خروج الثلـ
في الحصاد ينفع اشتعال الحر * كذلك الرسول الامين ينفع من ارسله * لان ينفع نفوس الذ
يستصحبونه * كما ان الرياح والغيوم والامطار واضح ظهورها * كذلك المفتخرون بالمـ
الكاذبة * بتمهل يكون حسن المسير عند الملوك * واللسان الرخو يهشم العظام * اذا وجد
عسلا كل ما يكفيك * لئلا تملا منه فتتقياه * ادخل رجلك الي عند صديقك دخولا
يسيرا * لئلا يشبع منك فيمقتك * مثل العصا والسيف والسهم الحاد نصله * هكذا الانسـ
الذي يشهد على صديقه شهادة كاذبة * طريق الشرير ورجل متجاوز السنة يهلك
اليوم السيي * كما ان الخل لن يوافق القرحة * هكذا من يسقط بجسمه في الم ما يوافقه ان
قلبه * كفعل السوس في الثوب والدود في الخشب * هكذا حزن الانسان يضر قلبه * ان
عدوك فاطعمه * وان يعطش فاسقه * فانك ان فعلت ذلك انما تجمع جمر نار على راسه * و
يجازيك بالصالحات * الريح الجنوبي ينهض السحاب * والوجه الوقاح يخرس اللسان * السكـ
زاوية في بيت افضل من السكني في بيت جديد مع امراة فاروقة ثلابة *

Ne glorieris coram rege, ne ſtes coram 6
potentibus : Quoniam præſtat ut dicatur 7
tibi, Aſcende ad me, & melius quàm
ut vilipendaris in præſentia principis.
Dic quæ viderunt oculi tui, Et ne ruas 8
in altercationem citò, ne te pœniteat
in noviſſimis tuis. Cùm te arguerit amicus 9
tuus, ne negligas retrocedere :
Ne fortè amicus tuus te arguat, & 10
tamen non recedat lis tua & inimicitia
tua, ſed ſit apud te inſtar mortis. Gratia
& amicitia ſunt duæ res nobiliſſimæ :
ſerva eas animæ tuæ, ne ſis probroſus :
quin potius cuſtodi vias tuas in optima
converſatione. Sicut malum aureum in torque 11
ſmaragdino, ſic ſit modus tuus in
dicendis verbis tuis. Sermo ſapiens in 12
aure veloci ad audiendum, eſt velut
inauris aurea cui appenditur ſmaragdus
multi pretii. Quemadmodum exitus nivis 13
in meſſe prodeſt vehementiæ caloris,
ſic legatus fidelis prodeſt ei qui mittit
illum : prodeſt enim animabus eorum
qui eo utuntur. Ut ventorum & nubium 14
atque pluviarum patens eſt exitus, ſic qui
ſe jactant de dono mendaci. In patientia 15
conſiſtit recta vivendi ratio apud
reges, lingua mollis confringit oſſa. Cùm 16
inveneris mel, comede quod tibi ſufficit :
ne eo repletus, evomas illud. Introduc 17
pedem tuum ad amicum tuum ingreſſu
raro & parum frequenti, ne ſatietur te
& odio te habeat. Qualis eſt fuſtis, & 18
gladius, & telum acutæ cuſpidis : talis
eſt homo qui teſtatur contra amicum ſuum
teſtimonium falſum. Via maligni, & 19
homo tranſgrediens legem, peribit in die
malo. Sicut acetum non convenit ulceri, 20
ſic ei qui in corpore ſuo incidit in paſſionem,
non convenit contriſtare cor ſuū.
Qualis eſt effectus tineæ in indumento,
& vermis in ligno : ſic triſtitia hominis
officit cordi ſuo. Si eſurierit inimicus 21
tuus, ciba eum : & ſi ſitierit, pota eum.
Nam ſi id feceris, certè congregabis carbones 22
ignis ſuper caput ejus, & Dominus
retribuet tibi bona. Ventus Meridionalis 23
excitat nubes : & vultus procax obmuteſcere
facit linguam. Inhabitare 24
angulum in quacunque domo, melius eſt,
quàm habitare in domo nova cum muliere
calumniatrice & murmuratrice.

מִשְׁלֵי : כ״ז

afficiet pudore ,comedones pascens & : intelligens filius ,legem Custodiens
7 נוֹצֵר תּוֹרָה בֵּן מֵבִין וְרֹעֶה זוֹלְלִים יַכְלִים
: augmento & , usura in suam copiam Multiplicans .suum patrem
8 אָבִיו׃ מַרְבֶּה הוֹנוֹ בְּנֶשֶׁךְ וּבְתַרְבִּית
suam aurem Removens .eam congregabit , tenuium miserescendum ad
9 לְחוֹנֵן דַּלִּים יִקְבְּצֶנּוּ׃ מֵסִיר אָזְנוֹ
faciens Errare .abominatio ejus oratio etiam : legem audiendo ab
10 מִשְּׁמֹעַ תּוֹרָה גַּם־תְּפִלָּתוֹ תּוֹעֵבָה׃ מַשְׁגֶּה
integri & : cadet ipse ejus foveam in ,malam viam in rectos
יְשָׁרִים בְּדֶרֶךְ רָע בִּשְׁחוּתוֹ הוּא־יִפּוֹל וּתְמִימִים
: dives vir suis oculis in Sapiens .bonum accipient hæreditate
11 יִנְחֲלוּ־טוֹב׃ חָכָם בְּעֵינָיו אִישׁ עָשִׁיר
multa justos exultando In .eum scrutabitur intelligens tenuis &
12 וְדַל מֵבִין יַחְקְרֶנּוּ׃ בַּעֲלֹץ צַדִּיקִים רַבָּה
Tegens .homo investigabitur , impios surgendo in & : gloria
13 תִפְאָרֶת וּבְקוּם רְשָׁעִים יְחֻפַּשׂ אָדָם׃ מְכַסֶּה
relinquens & , confitens & : prosperabitur non suas prævaricationes
פְּשָׁעָיו לֹא יַצְלִיחַ וּמוֹדֶה וְעֹזֵב
indurans & : semper paventis hominis Beatitudines .consequetur misericordiam
14 יְרֻחָם׃ אַשְׁרֵי אָדָם מְפַחֵד תָּמִיד וּמַקְשֶׁה
dominans : avidus ursus & ,rugiens Leo .malum in cadet suum cor
15 לִבּוֹ יִפּוֹל בְּרָעָה׃ אֲרִי־נֹהֵם וְדֹב שׁוֹקֵק מוֹשֵׁל
multus & ,intelligentiis carens Dux .tenui populo super impius
16 רָשָׁע עַל עַם־דָּל׃ נָגִיד חֲסַר תְּבוּנוֹת וְרַב
Homo .dies prolongabit cupiditatem odiens : oppressionibus
17 מַעֲשַׁקּוֹת שֹׂנֵא בֶצַע יַאֲרִיךְ יָמִים׃ אָדָם
apprehendant ne ,fugiet cisternam ad usque : animæ sanguine in oppressor
עָשֻׁק בְּדַם־נָפֶשׁ עַד־בּוֹר יָנוּס אַל־יִתְמְכוּ־
cadet viis perversus & : erit salvus ,integer Ambulans .eum in
18 בוֹ׃ הוֹלֵךְ תָּמִים יִוָּשֵׁעַ וְנֶעְקַשׁ דְּרָכַיִם יִפּוֹל
sequens & : pane saturabitur suam humum Colens .una in
19 בְּאֶחָת׃ עֹבֵד אַדְמָתוֹ יִשְׂבַּע־לָחֶם וּמְרַדֵּף
: benedictionibus multus veritatum Vir .egestate saturabitur vacuos
20 רֵיקִים יִשְׂבַּע־רִישׁ׃ אִישׁ אֱמוּנוֹת רַב־בְּרָכוֹת
non facies Cognoscere .impunis erit non ditandum ad festinans &
21 וְאָץ לְהַעֲשִׁיר לֹא יִנָּקֶה׃ הַכֵּר־פָּנִים לֹא־
Festinus .vir prævaricabitur panis buccellam super & : bonum
22 טוֹב וְעַל־פַּת־לֶחֶם יִפְשַׁע־גָּבֶר׃ נִבְהָל
.ei veniet defectus quòd sciet non & : oculi mali vir copiam ad
לַהוֹן אִישׁ רַע עָיִן וְלֹא־יֵדַע כִּי־חֶסֶר יְבֹאֶנּוּ׃
.lingua leniente præ inveniet gratiam : me post hominem Arguens
23 מוֹכִיחַ אָדָם אַחֲרַי חֵן יִמְצָא מִמַּחֲלִיק לָשׁוֹן׃
: prævaricatio non ,dicens & ,suam matrem & ,suum patrem Rapiens
24 גּוֹזֵל ׀ אָבִיו וְאִמּוֹ וְאֹמֵר אֵין־פָּשַׁע
miscebit animo Latus .corrumpentis viri ipse socius
25 חָבֵר הוּא לְאִישׁ מַשְׁחִית׃ רְחַב־נֶפֶשׁ יְגָרֶה
suo corde in Fidens .impinguabitur ,DOMINO super fidens & : litem
26 מָדוֹן וּבוֹטֵחַ עַל־יְהוָה יְדֻשָּׁן׃ בּוֹטֵחַ בְּלִבּוֹ
Danti .evadet ipse sapientia in ambulans & : stultus ipse
27 הוּא כְסִיל וְהוֹלֵךְ בְּחָכְמָה הוּא יִמָּלֵט׃ נוֹתֵן
multitudo , suos oculos abscondenti & : defectus non , pauperi
לָרָשׁ אֵין מַחְסוֹר וּמַעְלִים עֵינָיו רַב־
eos pereundo in & : homo se abscondet , impios surgendo In .maledictionum
28 מְאֵרוֹת׃ בְּקוּם רְשָׁעִים יִסָּתֵר אָדָם וּבְאָבְדָם
.justi multiplicabuntur
יִרְבּוּ צַדִּיקִים׃

Versio VULG. LAT.

7 Qui custodit legē, fili⁹ sapiens est : qui autē comessatores pa-
8 scit, confundit patrē suū. Qui coacervat divitias usuris & fœnore, liberali in pauperes
9 congregat eas. Qui declinat aures suas ne audiat legē, ora-
10 tio ejus erit execrabilis. Qui decipit justos in via mala, in interitu suo corruet : & simplices possidebunt bona ejus.
11 Sapiens sibi videtur vir dives: paup autē prudens scrutabitur
12 eum. In exultatione justorum multa gloria est : regnantibus
13 impiis ruinæ hominum. Qui abscondit scelera sua, non dirigetur : qui autē confess⁹ fuerit, & reliquerit ea, misericor-
14 diam consequetur. Beat⁹ homo, qui semp est pavid⁹ : qui verò mentis est duræ, corruet
15 in malū. Leo rugiens, & ursus esuriens, princeps impius sup
16 populū pauperē. Dux indigens prudentiâ, multos opprimet per calumniam : qui autē odit avaritiā, longi fient dies ejus.
17 Hominem, qui calumniatur animæ sanguinē, si usq, ad lacū
18 fugerit, nemo sustinet. Qui ambulat simpliciter, salvus erit : qui perversis graditur viis,
19 concidet semel. Qui operatur terrā suā, satiabitur panibus : qui autē sectatur otium, re-
20 plebitur egestate. Vir fidelis multū laudabitur : qui autem festinat ditari, non erit inno-
21 cens. Qui cognoscit in judicio faciē, non benefacit : iste et pro buccella panis deserit verita-
22 tem. Vir, qui festinat ditari, & aliis invidet, ignorat ꝙ egestas
23 superveniet ei. Qui corripit hominē, gratiā postea inveniet apud eū, magis quā ille, qui p linguæ blandimenta decipit.
24 Qui subtrahit aliquid à patre suo, & à matre : & dicit hoc non esse peccatum, particeps
25 homicidæ est. Qui se jactat, & dilatat, jurgia concitat : qui verò sperat in Dño, sanabitur.
26 Qui confidit in corde suo, stult⁹ est: qui autē graditur sa-
27 pienter, ipse salvabitur. Qui dat pauperi, non indigebit : qui despicit deprecantē, susti-
28 nebit penuriā. Cū surrexerint impii, abscondentur homines: cùm illi perierint, multiplicabuntur justi.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

7 † Ψυχὴ ἐν πλησμονῇ οὖσα κηρίοις ἐμπαίζει, † ψυχῇ δὲ ἐνδεεῖ καὶ τὰ πικρὰ (γ) γλυκέα φαί-
8 νεται. † Ὥσπερ (δ) ὅταν ὄρνεον καταπετασθῇ ἐκ τῆς ἰδίας νοσσιᾶς, † οὕτως ἄνθρωπος δουλοῦται ὅταν ἀποξενωθῇ ἐκ τῶν ἰδίων τόπων.
9 † Μύροις καὶ οἴνοις καὶ θυμιάμασι τέρπεται καρδία, † καταῤῥήγνυται δὲ ὑπὸ συμπτω-
10 μάτων ψυχή. † Φίλον σὸν (ε) ἢ φίλον πατρῷον μὴ ἐγκαταλίπῃς, † εἰς δὲ τὸν οἶκον τοῦ ἀδελφοῦ σου μὴ εἰσέλθῃς ἀτυχῶν. † (ζ) κρείσσων φίλος ἐγγὺς ἢ ἀδελφὸς μακρὰν οἰκῶν.
11 † Σοφὸς γίνου υἱέ, ἵνα (η) σου εὐφραίνηται ἡ καρδία, † καὶ ἀπόστρεψον ἀπὸ σοῦ ἐπονειδίστους
12 λόγους. † Πανοῦργος κακῶν ἐπερχομένων ἀπεκρύβη, † ἄφρονες δὲ (θ) ἐπελθόντες ζημί-
13 αν τίσουσιν. † Ἀφελοῦ τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ, παρῆλθε γὰρ † ὑβριστὴς, ὅστις τὰ ἀλλότρια (ι)
14 λυμαίνεται. † Ὃς ἂν εὐλογῇ φίλον πρωῒ μεγάλῃ τῇ φωνῇ, † καταρωμένου οὐδὲν διαφέ-
15 ρειν δόξει. † Σταγόνες ἐκβάλλουσιν ἄνθρωπον ἐν ἡμέρᾳ χειμερινῇ ἐκ τοῦ οἴκου αὐτοῦ, † ὡσαύ-
16 τως καὶ γυνὴ λοίδορος ἐκ τοῦ ἰδίου οἴκου. † Βορέας σκληρὸς ἄνεμος, † ὀνόματι δὲ ἐπιδέ-
17 ξιος καλεῖται. † Σίδηρος σίδηρον ὀξύνει,
18 † ἀνὴρ δὲ παροξύνει πρόσωπον ἑταίρου. † Ὃς φυτεύει συκῆν φάγεται τοὺς καρποὺς αὐτῆς, † ὃς δὲ φυλάσσει τὸν ἑαυτοῦ κύριον, τιμηθήσεται.
19 † Ὥσπερ οὐχ ὅμοια πρόσωπα προσώποις, † οὕτως οὐδὲ αἱ (κ) διάνοιαι τῶν ἀνθρώπων.
20 † Ἅδης καὶ ἀπώλεια οὐκ (λ) ἐμπίμπλανται, † ὡσαύτως καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ τῶν ἀνθρώπων ἄπλη-
στοι. † βδέλυγμα κυρίῳ στηρίζων ὀφθαλμὸν,
21 † καὶ οἱ ἀπαίδευτοι ἀκρατεῖς γλώσσῃ. † Δοκίμιον ἀργυρίῳ καὶ (μ) χρυσῷ πύρωσις, † ἀνὴρ δὲ δοκιμάζεται διὰ στόματος ἐγκωμιαζόντων αὐτόν. † καρδία ἀνόμου ἐκζητεῖ κακὰ,
22 † καρδία δὲ (ν) * εὐθὺς ζητεῖ γνῶσιν. † Ἐὰν μαστιγοῖς (ξ) ἄφρονα ἐν μέσῳ (ʹ) συνεδρίου ἀτιμάζων, † οὐ μὴ περιέλῃς τὴν ἀφροσύνην αὐτοῦ.
23 † Γνωστῶς ἐπιγνώσῃ ψυχὰς ποιμνίου σου, † καὶ (ʹ)
24 ἐπιστήσεις καρδίαν σου σαῖς ἀγέλαις. Ὅτι (ο) οὐκ εἰς τὸν αἰῶνα ἀνδρὶ κράτος καὶ ἰσχὺς, † οὐδὲ παραδίδωσιν (π) ἐκ γενεᾶς εἰς γενεάν. †
25 Ἐπιμελοῦ τῶν ἐν τῷ πεδίῳ (ʹ) χλωρῶν, καὶ κερεῖς
26 (ρ) πόαν, † καὶ σύναγε χόρτον ὀρεινόν, Ἵνα ἔχῃς πρόβατα εἰς ἱματισμόν· † τίμα πεδίον,
27 ἵνα ὦσί σοι ἄρνες. † Υἱὲ παρ' ἐμοῦ ἔχεις ῥήσεις ἰσχυρὰς εἰς τὴν ζωήν σου, καὶ εἰς τὴν ζωὴν σῶν θεραπόντων.

Anima, quæ in satuitate est, favis illudit: animæ autem (g) egenti amara dulcia videntur. Sicut cùm avis devolaverit è proprio nido, sic homo servus fit, (h) cùm peregrinatus fuerit è propriis locis. Unguentis, & vinis, & odoramentis delectatur cor : (i) disrumpitur autem à calamitatibus anima. Amicum tuum, vel amicū paternum ne dereliqueris : in domum autem fratris tui ne ingrediaris (k) infortunatus. Melior (l) amicus, qui prope, quàm frater procul habitans. Sapiens esto, fili, ut lætetur cor tuum : (m) averte à te exprobrabiles sermones. Astutus malis supervenientibus abscondit se: imprudentes autem supervenientes damnū (n) patientur. (o) Aufer vestimentum ejus, (p) præterit enim injuriosus, qui quidem aliena vastat. Qui benedixerit amicū manè (q) grandi voce, à maledicente nihil differre videbitur. Stillicidia ejiciunt hominē in die hymali de domo sua : similiter & mulier (s) maledica de propria domo. (t) Aquilo durus ventus, nomine autē dexter vocatur. Ferrum acuit ferrum: vir autem exacuit faciem amici. (u) Qui plantat ficum, comedet fructus ejus : qui autem custodit suum dominum, honorificabitur. Sicut non similes facies faciebus, ita neque (x) cogitationes hominū. Infernus & perditio non implentur: similiter & oculi hominum insatiabiles. Abominatio Domino obfirmans oculum: & indisciplinati incontinentes lingua. Probatio argento, & auro (y) ignitio: vir autem probatur per os laudantium eum. Cor iniqui exquirit mala: cor autem rectum quærit scientiam. (z) Si flagellaveris imprudentē in medio consess⁹ inhonorans, non auferes imprudentiā ejus. Evidenter cognosces (aa) animas gregis tui : (bb) & applicabis cor tuum tuis armentis: Quoniam non in sæculū viro robur, et fortitudo, neque tradit ex generatione in generationem. Adhibe curam his quæ in campo sunt, (cc) viridibus, et tondebis herbam, & congrega fœnum æstivum, ut habeas oves in vestimentū: cole campū, ut sint tibi * agni. Fili, à me habes verba fortia ad vitam tuam, & ad vitam ministrorum tuorum.

ΚΕΦ. κη'.

1 † Φεύγει ἀσεβὴς μηδενὸς διώκοντος, † δί-
2 καιος δὲ ὥσπερ λέων πέποιθε. † Δι' ἁμαρτίας ἀσεβῶν κρίσεις ἐγείρονται, † ἀνὴρ
3 δὲ πανοῦργος κατασβέσει αὐτάς. † Ἀνδρεῖος ἐν ἀσεβείαις συκοφαντεῖ πτωχούς. † ὥσπερ ὑετὸς λάβρος καὶ ἀνωφε-
4 λής, † Οὕτως οἱ ἐγκαταλείποντες τὸν νόμον ἐγκωμιάζουσιν ἀσέβειαν, † οἱ δὲ ἀγαπῶντες τὸν νόμον, περιβάλλουσιν ἑαυτοῖς τεῖχος.
5 † Ἄνδρες κακοὶ οὐ συνήσουσι κρίμα, † οἱ δὲ ζητοῦντες τὸν κύριον συνήσουσιν ἐν παντί.
6 † Κρείσσων πτωχὸς πορευόμενος ἐν ἀληθείᾳ, πλουσίου ψευδοῦς. † Φυλάσσει νόμον υἱὸς
7 συνετὸς, † ὃς δὲ ποιμαίνει ἀσωτίαν ἀτιμάζει (α) πατέρα.

CAP. XXVIII.

Fugit impius nemine persequente: justus autē tanquā leo confidit. Propter peccata impiorum judicia suscitantur: vir autem astutus extinguet ea. (b) Fortis in impietatibus calumniatur pauperes: tanquā pluvia (c) vehemens et inutilis, Sic (d) qui derelinquentes legem, laudant impietatem: qui autem diligunt legem, circundant sibi murum. Viri mali non intelligent judicium: quærentes autem Dominum intelligent in (e) omni. Melior pauper (f) vadens in veritate, divite mendaci. Custodit legem filius intelligens: (g) qui autem pascit luxuriam, inhonorat patrem.

Κεφ. κζ'. MS.A. (γ) γλυκεῖα (δ) ὄρνεον ὅταν καταπετασθῇ (ε) καὶ φίλον (ζ) κρεῖσσον (η) εὐφραίνηταί σου ἡ καρδία, (θ) ἐλθόντες (ι) λοιμένεται. (κ) καρδίαι (λ) ἐνπίπλανται, (μ) χρυσ εὐθὴς ἐκζητεῖ γνῶσιν. (ξ) τὸν ἄφρονα (ʹ) συνεδρίῳ (ʹ) ἐπιστήσῃς (ο) οὐ τὸν αἰῶνα (π) εἰς γενεὰς καὶ γενεάς. (ʹ) χλωρῷ, (ρ) ποιὰν καὶ συνάγαγε χόρτον Κεφ. κη'. MS.A. (α) πατέρα

תרגום TARGUM.

7 דנטר אוריתא ברא הוא דמתבין ודמתחבר לזוללי מחמץ אבוי : דמסגיע מוליה 8
9 בנוכתתא וברביתא למן דמרחם על מסכני מכנשיה : דמסכיר ארניה דלא נשמע
10 אוריתא אף צלותיה מרחקא היא : דמשגי תריצי באורחא בישתא בנומצא הוא נפל
11 ושלימי ותמימי נרתון טבתא : גברא עתירא חכים הוא בעינוי ומסכנא סוכלתנא
12 בסר ליה : כד יחדון צדיקיא סגיעא שבהורא ובקומא דרשיעי מבצי בר נשא : דמכסה 13
14 חובוי לא נצלח ודמודי חטוי ושבק נרחם עלוי אלהא : טובוהי דבר נשא דמדליח
15 לביה תדירא ומן דמקשי לביה נפל בבישתא : אריא נהם ודובא מצריח על
16 רשיעא דמשתליט על עמא מסכנא : שליטא חסיר הוינא סגיען עושקוי ואנא דשני
17 טולמיא נגרון יומוי : בר נשא דחשש בדמא דנפשא עד גובא נערוק לא נצודוניה :
18 דמהלך בתמימותא נתפרק ודמעקמן ארחתיה נפול בחדא : דפלח בארעיה 19
20 נסבע לחמא ודרדף סריקותא נסבע מסכנותא : גברא מהימנא סגיען בורכתיה
21 ודרהט בעולה דנעתר לא מודכי : מסב באפי לא טב ועל פתתא דלחמא נחוב
22 גברא : דמסתרהב למולא גברא דביש עיניה ולא ידע דחוסרנא אתי עלוי : דמכס 23
24 לבר נשא קדמוי חסדא נשכח טב מן הוא דמפליג בלישן : דגזל לאבוי ולאמיה
25 ואמר ליה חובא חברא הוא לגברא מחבלנא : גברא רבה מרון מגרי תגרי ודמסבר באלהא
26 נרהון : דתכל על ליביה סכלא הוא ודמהלך בחכימותא נתחמי מן כיש : דיהב 27
למסכנא לא נחסר ליה ודמחמי עיניה מן מסכנא סגיען לוטתיה : בקומא דרשיעי
מתטשי בר נשא ובאבדיהון נסגון צדיקי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Qui custodit legem, filius intelligens est : & qui socius est comessatorum exasperat patrem suum. Qui multiplicat substantiam suam in usura & fœnore, ei qui miseretur pauperum congregat eam. Qui obturat aurem suam ne audiat legem, oratio ejus erit abominabilis. Qui errare facit rectos in via mala, in foveam cadet : perfecti autem & immaculati hæreditabunt bona. Vir dives sapiens sibi videtur, & pauper prudens contemnit eum. Quando lætantur justi, multa est pulchritudo : & cùm consurgunt impii, investigatur filius hominis. Qui abscondit scelera sua non dirigetur : & qui confessus fuerit peccata sua, & reliquerit, miserebitur ejus Deus. Beatus filius hominis, cujus cor est semper pavidum : & qui indurat cor suum, corruet in malum. Leo rugit & ursus clamat propter impium qui dominatur super populum pauperem. Dominatoris indigentis prudentia multæ sunt oppressiones : & qui odit calumnias, prolongabuntur dies ejus. Filius hominis qui solicitus est de sanguine animæ usque ad lacum fugerit, non comprehendent eum. Qui ambulat in simplicitate, salvus erit : & cujus perversæ sunt viæ, corruet semel. Qui operatur suam terram, satiabitur pane : & qui sectatur otium, satiabitur paupertate. Viri fidelis multæ sunt benedictiones ; & qui cucurrerit in iniquitate ut ditetur, non erit innocens. Accipere faciem non est bonum, & pro buccella panis peccabit vir. Qui festinat ad [acquirendam] substantiam vir est oculi nequam, & nescit quòd egestas veniat super eum. Qui corripit filium hominis coram eo, gratiam bonam inveniet magis quam qui bifidus est lingua. Qui deprædatur patrem suum & matrem suam dicit quòd non est peccatum, socius est viri dissipantis. Vir arrogans concitat jurgia : & qui sperat in Deo, impinguabitur. Qui confidit in corde suo, stultus est ; & qui ambulat in sapientia, protegetur à malo. Qui dat pauperi, non indigebit : & qui avertit oculum suum a paupere, multiplicabuntur maledictiones ejus. Cùm consurgunt impii, absconditur & cùm pereunt, multiplicantur justi.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܕܢܛܪ ܢܡܘܣܐ܂ ܒܪܐ ܗܘ ܡܣܬܟܠܢܐ܂ ܘܕܦܠܚ ܣܪܝܩܘܬܐ܂ ܡܒܗܬ ܠܐܒܘܗܝ܂ *
ܩܢܝܢܗ ܡܢ ܪܒܝܬܐ ܘܬܪܒܝܬܐ܂ ܢܟܢܫܝܘܗܝ ܠܡܢ ܕܡܪܚܡ ܥܠ ܡܣܟܢܐ܂ *
ܐܕܢܘܗܝ ܕܠܐ ܢܫܡܥ ܢܡܘܣܐ܂ ܐܦ ܨܠܘܬܗ ܡܣܠܝܐ ܗܝ܂ * ܕܡܛܥܐ ܠܬܪܝܨܐ ܒܐܘܪܚܐ
ܒܫܘܚܬܐ ܢܦܠ܂ ܘܬܡܝܡܐ ܢܐܪܬܘܢ ܛܒܬܐ܂ * ܓܒܪܐ ܥܬܝܪܐ܂ ܚܟܝܡ ܒܥܝܢܘܗܝ
ܘܡܣܟܢܐ ܡܣܬܟܠܢܐ܂ ܒܣܪ ܒܗ܂ * ܒܥܘܫܢܐ ܕܙܕܝܩܐ܂ ܣܓܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ܂ ܘܟܕ
ܥܘܠܐ ܡܬܡܟܟܐ܂ * ܕܟܣܐ ܣܟܠܘܬܗ ܒܥܘܒܗ܂ ܠܐ ܢܨܠܚ܂ ܘܕܡܘܕܐ ܚܛܗܘܗܝ
ܘܫܒܩ ܠܗܘܢ܂ ܡܬܪܚܡ ܥܠܘܗܝ ܐܠܗܐ܂ * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܕܚܠ ܒܟܠܙܒܢ
ܘܕܡܩܫܐ ܠܒܗ܂ ܢܦܠ ܒܒܝܫܬܐ܂ * ܐܪܝܐ ܢܗܡ܂ ܘܕܒܐ ܢܥܐ ܩܠܗ܂ ܕܫܠܛ
ܥܠ ܥܡܐ ܡܣܟܢܐ܂ * ܡܕܒܪܢܐ ܚܣܝܪ ܪܥܝܢܐ܂ ܣܓܝܐܝܢ ܚܘܣܪܢܘܗܝ܂ ܘܕܣܢܐ ܢܟܠܐ
ܢܘܪܟܘܢ ܝܘܡܘܗܝ܂ * ܓܒܪܐ ܕܚܫܚ ܕܡܐ ܕܢܦܫܐ܂ ܥܕܡܐ ܠܓܒܝܐ ܢܥܪܘܩ܂
ܢܥܕܪܘܢܗ܂ * ܕܡܗܠܟ ܕܠܐ ܡܘܡ ܢܬܦܨܐ܂ ܘܕܡܥܩܡܢ ܐܘܪܚܬܗ ܢܦܠ
* ܕܦܠܚ ܐܪܥܐ܂ ܢܣܒܥ ܠܚܡܐ܂ ܘܕܪܗܛ ܒܬܪ ܣܪܝܩܘܬܐ܂ ܢܣܒܥ ܡܣܟ
* ܓܒܪܐ ܡܗܝܡܢܐ܂ ܣܓܝܐܢ ܒܘܪܟܬܗ܂ ܘܒܝܫܐ ܒܥܘܠܗ ܠܐ ܢܙܕܟܐ܂ *
ܕܢܣܒ ܒܐܦܐ܂ ܠܐ ܫܦܝܪ܂ ܒܦܬܐ ܓܝܪ ܕܠܚܡܐ܂ ܡܫܠܡ ܓܒܪܐ܂ * ܡܬܥܓܠ ܠܡܥܬܪܘ
ܓܒܪܐ ܕܒܝܫܐ ܥܝܢܗ܂ ܘܠܐ ܝܕܥ ܕܚܘܣܪܢܐ ܐܬܐ ܠܗ܂ * ܕܡܟܣ ܠܒܪܢܫܐ ܛܝܒܘܬܐ
ܢܫܟܚ ܝܬܝܪ ܡܢ ܗܘ ܕܡܦܠܓ ܒܠܫܢܗ܂ * ܕܢܣܒ ܡܢ ܐܒܘܗܝ ܘܡܢ ܐܡܗ܂ ܘܐܡܪ ܕܠܐ
ܣܟܠܬ܂ ܫܘܬܦܐ ܗܘ ܕܓܒܪܐ ܥܘܠܐ܂ * ܓܒܪܐ ܪܚܡܢܐ ܡܓܪܐ ܚܪܝܢܐ܂ ܘܕܬܟܝܠ
ܡܪܝܐ ܢܕܫܢ܂ * ܕܬܟܝܠ ܥܠ ܠܒܗ܂ ܣܟܠ ܗܘ܂ ܘܕܡܗܠܟ ܒܬܡܝܡܘܬܐ
* ܕܝܗܒ ܠܡܣܟܢܐ ܠܐ ܢܣܬܢܩ܂ ܘܕܡܥܒܪ ܥܝܢܘܗܝ ܡܢ ܡܣܟܢܐ ܣܓܝܐܢ ܠܘ
* ܟܕ ܩܡܘ ܥܘܠܐ܂ ܢܬܛܫܐ ܓܒܪܐ܂ ܘܡܐ ܕܐܒܕܝܢ ܗܢܘܢ܂ ܢܣܓܘܢ ܙܕܝܩܐ܂

Qui legem ſervat, filius eſt prudens : qui ve- 7
rò colit vanitatem, pudore afficit patrem ſu-
um. Qui fœnore & uſurâ ſuas auget opes, re- 8
linquet eas illi qui miſeretur pauperum. Qui 9
occludit aures ſuas quominùs audiat legem,
ejus quoque precatio abominanda eſt. Qui 10
ſeducit rectum in viam malam, in foveam in-
cidet : integri verò hæreditate conſequen-
tur bona. Vir dives ſapiens eſt in oculis ſuis: 11
pauper autem prudens contemnit eum. In 12
fortitudine juſtorum augetur gloria : at cùm
exurgunt iniqui, minuitur. Homo qui celat 13
facinus ſuum, non proſperabitur : ejus au-
tem qui fatetur peccata ſua, & ab iis digredi-
tur, miſerebitur Deus. Beatus homo qui ti- 14
met omni tempore : qui autem obdurat cor
ſuum, corruet in malum. Leo rugiit & urſus 15
edidit vocem, quòd dominatus ſit impius po-
pulo pauperi. Principis mente carentis mul- 16
tæ erunt jacturæ : ejus autem qui fraudem o-
dit, prorogabuntur dies. Homo conſcius ſan- 17
guinis animæ, ad electos uſque confugiet, &
non auxiliabuntur ei. Qui ambulat ſine vi- 18
tio, ſalvabitur : cuj⁹ autem pravæ ſunt viæ,
incidet in foveam. Qui colit humum, ſatia- 19
bitur pane: qui autem currit poſt vanitatem,
ſatiabitur paupertate. Viri fidelis plurimæ 20
ſunt benedictiones : malignus autem, in ſce-
lere ſuo non erit impunis. Homo qui perſo- 21
nam reſpicit, nequam eſt : nam propter fru-
ſtum panis prodet hominem. Properat dite- 22
ſcere vir cujus malus eſt oculus, & ignorat
jacturam ſibi imminere. Qui corripit ho- 23
minem, nanciſcetur gratiam potiùs quàm is,
qui diviſus eſt in lingua ſua. Qui rapit *ali-* 24
quid à patre ſuo matréque ſuâ, & ait, Non
eſt mihi peccatum, conſors eſt hominis ini-
qui. Vir avidus excitat contentionem : at 25
qui fretus eſt Domino, pingueſcet. Qui fi- 26
dit cordi ſuo ſtultus eſt : qui autem ambulat
in integritate, ſalvabitur. Qui largitur pau- 27
peri, non indigebit : qui verò deflectit ocu-
los ſuos à paupere, multiplicabitur ejus ma-
ledictio. Cùm ſteterint impii, deliteſcet ho- 28
mo : cum verò perierint, multiplicabuntur
juſti.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* كما ان الماء البارد لذيذ للنفس الظامية * كذلك البشارة الصالحة من ارض بعيدة *
مستقبحا ان يسد احد عينا او يفسد منبع ماء * كذلك مستفظعا ان يسقط
المنافق * اكل العسل كثيرا ليس محمودا والحاجة ماسة ان تكرم الاقوال الشريفة *
مدينة اسوارها مهدومة وهي بلا سور كذلك الانسان الذي يعمل شيا بلا مشاورة *

ut aqua frigida jucunda eſt animæ ſiti- 25
bundæ, ſic eſt nuntium bonum de ter-
ra longinqua. Quemadmodum turpe 26
eſt ut intercludat quis fontem, aut cor-
rumpat fluentum aquæ : ſic eſt intolera-
bile ut cadat juſtus coram impio. Come- 27
ſtio mellis nimia, non eſt laudabilis : &
neceſſitas requirit ut honorentur ſermones
præclari. Sicut urbs cujus mœnia ſunt 28
diruta, & eſt ſine muro : ſic eſt homo,
qui aliquid agit abſque conſilio.

* الفصل السادس والعشرون *

CAP. XXVI.

* مثل الندى في الحصاد وكالمطر في الصيف * كذلك ليست للجاهل كرامة * مثل
وعصافير تتطاير * كذلك اللعنة الباطلة توافي الى احد * مثل المقرعة للفرس و
كذلك العصا لامة متجاوزة السنة * لا تجاوبن غبيا نظير غباوته * لئلا تصير شبيها به
جاوب الغبي نحو غباوته * لئلا يظهر عند نفسه حكيما * من يرسل كلام مع رسول جاهل
بعيدا من طرايقه * انزع سلوك الساقين وتجاوز الشريعة من فم الاغبياء * من
حجرا في مقلاع يضاهي من يعطي الغبي شرفا * الاشواك تونع في يد السكير و
العبودية في يد الاغبياء * كل بشر الاغبياء يثني عليها باشياء كثيرة * لان شخوصهم
لهم * مثل الكلب الذي يعود الى قيه فيصير ممقوتا * كذلك الغبي بردايته يعاود الى
يكون خجل يجلب خطية * ويكون خجل يستورد شرفا ونعمة * رايت رجلا مستشعرا
ذاته انه حكيم * بل كان قد اتخذ املا سفيها لنفسه * العاجز اذا ارسل الى طريق
الطريق السبع وفي الشوارع القتلة * مثل الباب ينعطف الى معطفه ويرجع * كذلك
ينقلب في سريره * العاجز اذا خبا يده في عبه ما يمكنه يقدمها الى فمه * العاجز
عند ذاته متوافر الحكمة * اكثر من الاخذ في شبعه بشارة * كمثل من يمسك ذنب
كذلك من يتعلم في حكومة ليست له *

V*Elut ros in meſſe, & velut pluvia in* 1
æſtate : ſic non eſt ſtulto honor. Sicut vo- 2
latilia & aves volantes, ſic maledictio
vana ſuperveniet alicui. Sicut ferula e- 3
quo, & ſtimulus aſino : ſic virga genti
tranſgredienti legem. Ne reſpondeas in- 4
ſipienti ſecundùm inſipientiam ejus, ne
fias ſimilis illi. Imò reſponde inſipienti 5
ſecundùm inſipientiam ejus, ne videatur
ſibi ſapiens. Qui mittit ſermonem per 6
nuntium ſtultum, acquiret opprobrium è
moribus ejus. Aufer inceſſum miſero- 7
rũ, & elabetur lex de ore ſtultorum. Qui 8
alligat lapidem fundæ, ſimilis eſt ei qui
tribuit inſipienti honorem. Spinæ naſcun- 9
tur in manu ebrioſi : & miſeriæ ſervitu-
tis in manu ſtultorum. Omnis pulchritudo 10
impiorum odio habebitur multis in rebus,
quia aſpectus illorum eſt ipſis fractio.
Uti canis qui revertitur ad vomitum 11
ſuum, & redditur abominandus : ſic im-
prudens in ſuo vitio revertitur ad pec-
catum ſuũ. Eſt verecundia quæ affert pec-
catum : & eſt verecundia quæ affert glo-
riam & gratiam. Vidiſti virum exiſti- 12
mantẽ apud ſemetipſũ ſe eſſe ſapientem,
is poti⁹ præſumit ſpem arrogantem de ſe.
Piger, cùm mittitur in viam, dicit, Eſt 13
in via leo, & in plateis internecio. Sic- 14
ut oſtium vertitur ad cardinem ſuum &
revertitur, ſic piger volvitur in lecto ſuo.
Piger, cùm abſconderit manum ſuam in 15
ſinu ſuo, non poterit approximare eam
ori ſuo. Piger ſibi videtur ſapientior 16
magis quàm is qui accipit in ſaturitate
ſua bonum nuntium, Sicut qui tenet 17
caudam canis, ſic eſt qui ſe offert in lite
non ſua.

משלי : כט

CAP. XXIX. כט

ſanitas non & ,conteretur repente ,cervicem indurans increpationum Vir
1 איש תוכחות מקשה־ערף פתע ישבר ואין מרפא׃
gemet , impium dominando in & : populus lætabitur , juſtos multiplicari In
2 ברבות צדיקים ישמח העם ובמשל רשע יאנח
paſcens & : ſuum patrem lætificabit ſapientiam diligens Vir .populus
3 עם׃ איש־אהב חכמה ישמח אביו ורעה
vir & : terram faciet ſtare judicio in Rex .ſubſtantiam perdet , ſcorta
4 זונות יאבד־הון׃ מלך במשפט יעמיד ארץ ואיש
expandens rete ,ſuo ſocio ſuper leniens Vir .eam diruet , oblationum
5 תרומות יהרסנה׃ גבר מחליק על־רעהו רשת פורש
juſtus & : laqueus malus viri prævaricatione In .ejus pedibus ſuper
6 על־פעמיו׃ בפשע איש רע מוקש וצדיק
impius : tenuium judicium juſtus Cognoſcens .lætabitur & ,dicet præconia
7 ירון ושמח׃ ידע צדיק דין דלים רשע
:civitatem illaqueabunt irriſionis Viri .ſcientiam intelliget non
8 לא־יבין דעת׃ אנשי לצון יפיחו קריה
viro cum ſubiens judicium ſapiens Vir .naſum avertent ſapientes &
9 וחכמים ישיבו אף׃ איש־חכם נשפט את־איש
ſanguinum Viri .requies non & ,ridebit & ,iraſcetur & : ſtulto
10 אויל ורגז ושחק ואין נחת׃ אנשי דמים
Totum .ejus animam quærent recti & : perfectum habebunt odio
11 ישנאו־תם וישרים יבקשו נפשו׃ כל־
.eum ſedabit poſterum in ſapiens & : ſtultus proferet ſuum ſpiritum
רוחו יוציא כסיל וחכם באחור ישבחנה׃
.impii ejus miniſtri omnes : falſitatis verbo ſuper attendente Dominante
12 משל מקשיב על־דבר־שקר כל־משרתיו רשעים׃
oculos illuminans : ſibi obviaverunt contritionum vir & Pauper
13 רש ואיש תככים נפגשו מאיר עיני
ej⁹ thronus : tenues veritate in judicans Rex .Dominus ipſorum amborũ
14 שניהם יהוה׃ מלך שופט באמת דלים כסאו
puer & : ſapientiam tribuet increpatio & Virga .firmabitur perpetuum in
15 לעד יכון׃ שבט ותוכחת יתן חכמה ונער
multiplicabitur impios multiplicari In .ſuã matrem afficiens pudore dimiſſus
16 משלח מביש אמו׃ ברבות רשעים ירבה־
Corripe .videbunt eorum ruinam in juſti & : prævaricatio
17 פשע וצדיקים במפלתם יראו׃ יסר
.tuæ animæ delicias dabit & : te faciet requieſcere & , tuum filium
בנך ויניחך ויתן מעדנים לנפשך׃
.ipſe beatus , legem cuſtodiens & : populus feriabitur , viſione non In
18 באין חזון יפרע עם ושמר תורה אשרהו׃
.reſpondens non & ,intelliget quia : ſervus erudietur non verbis In
19 בדברים לא־יוסר עבד כי־יבין ואין מענה׃
.illo præ ſtulto ſpes : ſuis verbis in velocem virum Vidiſti
20 חזית איש אץ בדבריו תקוה לכסיל ממנו׃
erit ſuo noviſſimo & : ſuum ſervum pueritia à delicatè Nutriens
21 מפנק מנער עבדו ואחריתו יהיה
multus excandeſcentiæ auctor & : litem miſcebit naris Vir .filius
22 מנון׃ איש־אף יגרה מדון ובעל חמה רב־
ſpiritu humilis & : eum humiliabit hominis Superbia .prævaricatione
23 פשע׃ גאות אדם תשפילנו ושפל־רוח
execrationem : ſuam animam odiens fure cum Partiens .gloriam aſſequetur
24 יתמך כבוד׃ חולק עם־גנב שונא נפשו אלה
fidens & : laqueum dabit hominis Tremor .annunciabit non & , audiet
25 ישמע ולא יגיד׃ חרדת אדם יתן מוקש ובוטח
: dominantis facies quærentes Multi .elevabitur Domino in
26 ביהוה ישגב׃ רבים מבקשים פני־מושל
: iniquitatis vir juſtorum Abominatio .viri judicium Domino à &
27 ומיהוה משפט־איש׃ תועבת צדיקים איש עול
via rectus impii abominatio &
ותועבת רשע ישר־דרך׃

Verſio VUL.LAT.

CAP. XXIX.

1 VIro, qui corripientē durâ
cervice contemnit, repentinus
ei ſuperveniet interitus: & eũ
2 ſanitas non ſequetur. In multi-
plicatione juſtorum lætabitur
vulg⁹ : cùm impii ſumpſerint
3 principatũ, gemet popul⁹. Vir
qui amat ſapientiam, lætificat
patrē ſuũ: qui autē nutrit ſcor-
4 ta, perdet ſubſtantiã. Rex juſtus
erigit terrã, vir avar⁹ deſtruet
5 eã. Homo, qui blandis fictiſq;
ſermonib⁹ loquitur amico ſuo,
6 rete expandit greſſib⁹ ej⁹. Pec-
cantē virũ iniquũ involvet la-
que⁹: & juſt⁹ laudabit atq; gau-
7 debit. Novit juſt⁹ cauſã pau-
perũ : impi⁹ ignorat ſcientiã.
8 Homines peſtilentes diſſipant
civitatē : ſapientes verò aver-
9 tunt furorē. Vir ſapiens, ſi cũ
ſtulto contenderit, ſive iraſca-
tur, ſive rideat, nō inveniet re-
10 quiem. Viri ſanguinũ oderunt
ſimplicem : juſti autē quærunt
11 animã ej⁹. Totũ ſpiritũ ſuum
profert ſtult⁹ : ſapiens differt, et
12 reſervat in poſterũ. Princeps
qui libenter audit verba men-
dacii, omnes miniſtros habet
13 impios. Paup et creditor obvi-
averũt ſibi: utriuſq; illumina-
14 tor eſt Dñs. Rex qui judicat in
veritate pauperes, thron⁹ ej⁹
15 in æternum firmabitur. Virga
atq; correptio tribuit ſapien-
tiã : puer autē, qui dimittitur
voluntati ſuæ, confundit matrē
16 ſuã. In multiplicatione impio-
rũ multiplicabuntur ſcelera: et
17 juſti ruinas eorũ videbunt. E-
rudi filiũ tuũ, & refrigerabit
te, & dabit delicias animæ tuæ.
18 Cùm prophetia defecerit, diſ-
ſipabitur popul⁹: qui verò cu-
19 ſtodit legē, beat⁹ eſt. Serv⁹ ver-
bis non poteſt erudiri: quia ꝙ
dicis intelligit, & reſpondere
20 contemnit. Vidiſti hominē ve-
locē ad loquendũ? ſtultitia ma-
gis ſperanda eſt, quã illi⁹ cor-
21 reptio. Qui delicatè à pueritia
nutrit ſervũ ſuũ, poſteà ſentiet
22 eũ contumacē. Vir iracundus
provocat rixas : & qui ad in-
dignandũ facilis eſt, erit ad
23 peccandũ proclivior. Superbũ
ſequitur humilitas : & humilē
24 ſpiritu ſuſcipiet gloria. Qui cũ
fure participat, odit animam
ſuã: adjurantē audit, & non in-
25 dicat. Qui timet hominē, citò
corruet: qui ſperat in Dño, ſub-
26 levabitur. Multi requirũt faciē
principis: & judiciũ à Dño e-
27 greditur ſingulorũ. Abominã-
tur juſti virũ impiũ: & abomi-
nantur impii eos, qui in recta
ſunt via. Verbum cuſtodiens
filius, extra perditionem erit.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 † Ὁ πληθύνων τὸν πλοῦτον αὐτοῦ μετὰ τόκων καὶ πλεονασμῶν, † τῷ (*) ἐλεῶντι πτωχοὺς συνάγει αὐτόν. 9 † Ὁ ἐκκλίνων τὸ οὖς αὐτοῦ (β) μὴ εἰσακοῦσαι νόμου, † καὶ αὐτὸς τὴν προσευχὴν αὐτοῦ ἐβδέλυκται. 10 Ὃς πλανᾷ εὐθεῖς ἐν ὁδῷ κακῇ, † εἰς διαφθορὰν αὐτὸς ἐμπεσεῖται, † οἱ δὲ ἄνομοι διελεύσονται ἀγαθά, † καὶ οὐκ εἰσελεύσονται εἰς αὐτά. 11 † Σοφὸς παρ' ἑαυτῷ ἀνὴρ πλούσιος, † πένης δὲ νοήμων καταγνώσεται αὐτοῦ. 12 † Διὰ βοήθειαν δικαίων πολλὴ γίνεται δόξα, † ἐν δὲ τόποις ἀσεβῶν ἁλίσκονται ἄνθρωποι. 13 † Ὁ ἐπικαλύπτων ἀσέβειαν ἑαυτοῦ οὐκ εὐοδωθήσεται, † ὁ δὲ ἐξηγούμενος ἐλέγχους ἀγαπηθήσεται. 14 † Μακάριος ἀνὴρ ὃς καταπτήσσει πάντα δι' εὐλάβειαν, † ὁ δὲ σκληρὸς τὴν καρδίαν ἐμπεσεῖται κακοῖς. 15 † Λέων πεινῶν καὶ λύκος διψῶν, † ὃς τυραννεῖ, πτωχὸς ὤν, 16 ἔθνους πενιχροῦ. † Βασιλεὺς ἐνδεὴς προσόδων μέγας συκοφάντης, † ὁ δὲ μισῶν ἀδικίαν μακρὸν χρόνον ζήσεται. 17 † Ἄνδρα τὸν ἐν αἰτίᾳ φόνου ὁ ἐγγυώμενος, † φυγὰς ἔσται καὶ οὐκ ἐν ἀσφαλείᾳ. † παίδευε υἱὸν καὶ ἀγαπήσει σε, † καὶ δώσει κόσμον τῇ σῇ ψυχῇ, † οὐ μὴ (*) ὑπακούσει ἔθνει παρανόμῳ. 18 † Ὁ πορευόμενος δικαίως βεβοήθηται, † ὁ δὲ σκολιαῖς ὁδοῖς πορευόμενος ἐμπλακήσεται. 19 † Ὁ ἐργαζόμενος τὴν ἑαυτοῦ γῆν πλησθήσεται ἄρτων, † ὁ δὲ διώκων σχολὴν πλησθήσεται πενίας. 20 † Ἀνὴρ (γ) ἀξιόπιστος πολλὰ εὐλογηθήσεται, † ὁ δὲ κακὸς οὐκ ἀτιμώρητος ἔσται. 21 † Ὃς οὐκ αἰσχύνεται πρόσωπα δικαίων, οὐκ ἀγαθός, † ὁ τοιοῦτος ψωμοῦ ἄρτου ἀποδώσεται ἄνδρα. 22 † Σπεύδει πλουτεῖν ἀνὴρ βάσκανος, † καὶ οὐκ οἶδεν ὅτι ἐλεήμων κρατήσει αὐτοῦ. 23 † Ὁ ἐλέγχων ἀνθρώπου ὁδούς, χάριτας ἕξει μᾶλλον τοῦ γλωσσοχαριτοῦντος. 24 † Ὃς (δ) ἀποβάλλεται πατέρα ἢ μητέρα, καὶ δοκεῖ μὴ ἁμαρτάνειν, † οὗτος κοινωνός ἐστιν ἀνδρὸς ἀσεβοῦς. 25 † (ε) Ἄπιστος ἀνὴρ κρίνει εἰκῇ, † ὃς δὲ πέποιθεν ἐπὶ κύριον, 26 ἐν ἐπιμελείᾳ ἔσται. † Ὃς πέποιθε θρασείᾳ καρδίᾳ, ὁ τοιοῦτος ἄφρων, † ὃς δὲ πορεύεται 27 σοφίᾳ, σωθήσεται. † Ὃς δίδωσι πτωχοῖς οὐκ ἐνδεηθήσεται, † ὃς δὲ ἀποστρέφει τὸν ὀφθαλμὸν 28 αὐτοῦ, ἐν πολλῇ ἀπορίᾳ ἔσται. † Ἐν τόποις ἀσεβῶν στένουσι δίκαιοι, † ἐν δὲ τῇ ἐκείνων ἀπωλείᾳ πληθυνθήσονται δίκαιοι.

Qui multiplicat divitias ſu
uſuris, & excreſcentiis, ei
miſeretur inopum, congrega
Qui declinat aurem ſuam, n
audiat legem; & ipſe oration
(i) abominabilem fecit. Qui
cit rectos in viam malam, in
ruptionem ipſe incidet: iniqui a
tem (k) tranſibunt bona, & non
gredientur in ea. Sapiens apud
vir dives: pauper autem intellig
(l) condemnabit eum. Per auxi
um juſtorum multa fit gloria: in
cis autem impiorum capiuntur
mines. Qui cooperit impietatem
ſuam, non proſperabitur: qui au
(m) narrat redargutiones, (n) di
getur. Beatus vir, qui (o)
omnia per metũ: durus autem
de incidet malis. Leo eſuriens,
lupus ſitiens, qui, cum inops ſi
rannide dominatur genti pau
( ) Rex egens proventuum, ( ) m
gnus ſycophanta: qui autē odi
juſtitiam, longum ( ) tempus
Virum, qui in cauſa mortis, fi
dens, profugus erit, & non in ſe
ritate. Erudi filium, ( ) & dil
te, & dabit ornatum animæ
non obediet genti iniquæ. Qui
bulat (t) juſtè, adjutus eſt: qui a
tem perverſis viis vadit, im
bitur. Qui operatur ſuam terra
implebitur panibus: qui autem
ctatur (u) otium, implebitur
pertate. Vir (x) fidelis multa
dicetur: (y) malus autem non im
nitus erit. Qui non reveretur
cies juſtorum, non bonus: qui
eſt, buccellâ panis vendet vir
Feſtinat diteſcere vir (z) invid
& non novit, quia ( ) mi
obtinebit eum. Qui corripit ho
nis vias, gratias reportabit ma
(aa) eo, qui linguâ gratificat
(bb) Qui abjicit patrē vel ma
& videtur non peccare; hic
conſors eſt viri impii. (dd) Inf
lis vir judicat temerè: qui au
confidit ſuper Dominum, in
diligenti erit. Qui confidit ( ) au
daciâ cordis, talis eſt impru
qui autē ambulat ſapientiâ, ſ
bitur. Qui dat pauperibus, no
gebit: qui autem avertit ocu
ſuum, (ff) in multa penuria

In locis impiorum (gg) gemunt juſti: in illorum autem perditione abundabu

MS. A. (*) ἐλεοῦντι (β) τοῦ μὴ εἰσακοῦσαι (*) ὑπακούσῃ (γ) ἀξιόπιστος (δ) ἀποβιάζεται (ε) Ἄπληστος

ΚΕΦ. κθ'.

1 † ΚΡείσσων ἀνὴρ ἐλέγχων ἀνδρὸς σκληροτραχήλου, † ἐξαπίνης γὰρ φλεγομένου αὐτοῦ οὐκ (*) 2 ἔστιν ἴασις. † (α) Ἐγκωμιαζομένων δικαίων εὐφρανθήσονται λαοί, † ἀρχόντων δὲ ἀσεβῶν 3 στένουσιν ἄνδρες. † Ἀνδρὸς φιλοῦντος σοφίαν εὐφραίνεται (*) πατὴρ αὐτοῦ, † ὃς δὲ ποιμαίνει 4 πόρνας ἀπολεῖ πλοῦτον. † Βασιλεὺς δίκαιος ἀνίστησι χώραν, † ἀνὴρ δὲ παράνομος κατα-5 σκάπτει. † Ὃς παρασκευάζεται ἐπὶ πρόσωπον τοῦ ἑαυτοῦ φίλου δίκτυον, † περιβάλλει 6 αὐτὸ τοῖς ἑαυτοῦ ποσίν. † Ἁμαρτάνοντι ἀνδρὶ μεγάλη παγίς, † δίκαιος δὲ ἐν χαρᾷ (β) καὶ ἐν εὐφροσύνῃ ἔσται.

CAP. XXIX.

Melior vir (a) corripiens
ro duræ cervicis: repentē en
ardente eo non eſt medela
Laudantur juſti, lætabuntur
imperantibus autem impiis
viri. Viri amantis ſapi
lætatur pater ejus : qu
(d) paſcit meretrices,
divitias. Rex juſtus er
gionem : vir autem iniqu
deſtruit. Qui præparat ad
ſui amici rete: (f) illud c
dat ſuis pedibus. (g) Pecca
magnus laqueus: juſtus aut
gaudio, & in lætitia erit.

MS. A. (*) ἔσται (α) Ἐγκωμιαζομένου δὲ δικαίου (*) ὁ πατὴρ (β) καὶ εὐφρ

תרגום TARGUM.

כט

1 2 גברא דלא מקבל מכסנותא ומקשי קדליה בעגלא נתתבר ולא תהוי ליה אסו׃ בסוגעא
3 דצדיקי חדי עמא ובשולטנא דרשיעי נתאנח עמא׃ גברא דרחם חכמתא נחדי אבוי
4 5 ודמתחבר בזניותא מוביד מוליה׃ מלכא בדינא נוקים ארעא וגברא עולא עקר לה׃
6 גברא דמתפלג על חבריה מצדתא פרס על הלכתיה׃ גברא בישא בחוביה מתציד
7 8 וצדיקא דיץ וחדי׃ ידע צדיקא דינהון דמסכני ורשיעי לא מתבינין ידיעתא׃ גברא
9 ממקני ממללין כדבא וחכימי מהפכין רוגזא׃ גברא חכימא דין עם גברא שטיא ורגז
10 11 וחאך ולא מתתבר׃ גברי דאשדין דמא סנין תמימותא ותריצי בעין לה׃ כולה
12 חומתיה מפיק סכלא וחכימא ברעינא מאכה׃ שליטא דצאת מלי דשקרא כלהון
13 משמשנוי רשיעי׃ מסכנא וגברא מצעיא פגיעו חד בחד ואלהא מנהיר עיני דתרויהון׃
14 15 מלכא דדאן בקושטא למסכני כורסיה לעלם תקין׃ שבטא ומכסנותא יהבין
16 חכמתא וטליא דלא מקבל בעתא מבהית אמיה׃ בסוגעא דרשיעי חובא נסני וצדיקיא
17 18 יחמון במפלתהון׃ רדי בברך ויניחך ויתן תפנוקי לנפשך׃ בסוגעא דעולאי מתתרע
19 עמא ודנטר אוריתא טובוהי׃ במלי לא מתרדי עבדא דידע ניר ולא בליע׃ אין חזיתא גברא
20 21 דמערקלין מלוי סבויא דטב הוא סכלא מניה׃ מתפנק מן טליותיה לעבדא נהוי
22 ובאחריתיה יהי מנסח׃ גברא רגוזא מגרג תגרי וגברא חמתנא סגיעין חובוי׃ רמותא
23 24 דבר נשא תשפלניה ומן דמכיכא רוחיה נפלג יקרא׃ דפלג עם גנבא סני נפשיה נפסק
25 מומתא ולא מודה׃ טלומיא דבר נשא עבדא ליה תקולתא ודמסבר באלהא נעשן׃
26 27 סגיעי דבעין אפי דשליטא ומן קדם אלהא דיניה דגברא׃ מרחקתא דצדיקי
גברא עולה ומרחקתא דרשיעי גברא דתריצי ארחתיה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXIX.

VIr qui non recipit correptionem, & indurat cervicem ſuam, citò co
retur, & non erit ei medicina. In multitudine juſtorũ, lætatur populus
dominio impiorum gemet populus. Vir qui amat ſapientiam, lætifica
trem ſuum: & qui adhæret meretrici, perdet ſubſtantiã ſuam. Rex in
ſtabilit terram; & vir iniquus diſſipat eam. Vir qui dividitur à
rete expandit greſſibus ejus. Vir malus in peccato ſuo capitur, & ju
ultat & gaudet. Novit juſtus judicium pauperum, impii autem non
gunt ſcientiam. Viri deriſores loquuntur mendacium, & ſapientes a
furorem. Vir ſapiens contendens cum viro ſtulto, ſive iraſcatur ſive
non conteritur. Viri qui effundunt ſanguinem, oderunt ſimplici
recti autem quærunt eam. Omnem furorem ſuum profert ſtultus, &
ens in prudentia reprimit. Princeps qui auſcultat verba mendaci
miniſtri ejus ſunt impii. Pauper & mediocris fortunæ homo obvia
ſibi invicem, & Deus illuminat oculos amborum. Rex qui judica
tate pauperes, thronus ejus in æternum dirigetur. Virga & correpti
bent ſapientiam, & puer qui non recipit correptionem, confund
ſuam. In multitudine impiorum peccatum multiplicatur, & juſti
ruinas eorum. Erudi filium tuum, & requieſcere te faciet, & dabit
cias animæ tuæ. In multitudine iniquorum diſſipatur populus:
ſtodit legem, beatus eſt. Verbis non eruditur ſervus; cognoſcit
patitur. Si vidiſti virum velocem in verbis ſuis, melior eſt ſpes
quàm de illo. Qui deliciis indulget à pueritia ſua, ſervus evade
extremum evertetur. Vir iracundus concitat rixam; & viri
ſunt peccata. Elatio filii hominis humiliat eum: & qui humi
ritu, dividit gloriam. Qui partitur cum fure, odit animam ſuam:
defertur ei, & non confitebitur. Calumnia filii hominis accer
diculũ: & qui ſperat in Deo, roborabitur. Multi ſunt qui quær
principis, & à facie Dei judicium viri. Abominatio juſtorum
quus, & abominatio impiorum eſt vir cujus viæ ſunt rectæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܛ *

* ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܡܩܒܠ ܡܟܣܢܘܬܐ. ܘܩܫܐ ܩܕܠܗ. ܡܚܒܠ ܢܬܚܒܠ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܐܣܝܘܬܐ. * ܒܣܓܝܐܘܬ ܕܙܕܝܩܐ. ܢܣܓܐ ܥܡܐ. ܘܒܫܘܠܛܢܐ ܕܥܘܠܐ. ܡܬܬܢܚ ܥܡܐ. * ܓܒܪܐ ܕܪܚܡ ܚܟܡܬܐ ܢܚܕܐ ܠܐܒܘܗܝ. ܘܕܪܥܐ ܙܢܝܘܬܐ ܢܘܒܕ ܩܢܝܢܗ. * ܡܠܟܐ ܕܝܢܐ ܡܩܝܡ ܐܪܥܐ. ܘܥܘܠܐ ܡܫܚܪ ܠܗ. * ܓܒܪܐ ܕܡܬܦܠܓ ܥܠ ܚܒܪܗ. ܡܨܝܕܬܐ ܦܪܣ ܥܠ ܗܠܟܬܗ. * ܓܒܪܐ ܚܛܝܐ ܒܚܘܒܘܗܝ ܡܬܬܨܝܕ. ܘܙܕܝܩܐ ܢܫܒܚ ܘܢܚܕܐ. * ܙܕܝܩܐ ܝܕܥ ܕܝܢܐ ܕܡܣܟܢܐ. ܘܥܘܠܐ ܠܐ ܡܣܬܟܠ ܝܕܥܬܐ. * ܓܒܪܐ ܡܡܝܩܢܐ ܡܘܩܕܝܢ ܩܪܝܐ. ܘܚܟܝܡܐ ܡܗܦܟܝܢ ܪܘܓܙܐ. * ܓܒܪܐ ܚܟܝܡܐ ܕܕܐܢ ܥܡ ܓܒܪܐ ܣܟܠܐ. ܘܪܓܙ ܘܓܚܟ. ܘܠܐ ܡܬܢܝܚ. * ܓܒܪܐ ܐܫܘܕ ܕܡܐ ܣܢܝܢ ܠܬܡܝܡܐ. ܘܬܪܝܨܐ ܒܥܝܢ ܢܦܫܗ. * ܟܠܗ ܪܘܓܙܗ ܡܦܩ ܣܟܠܐ. ܘܚܟܝܡܐ ܒܪܥܝܢܗ ܡܫܬܘܕܥ. * ܪܝܫܐ ܕܫܡܥ ܡܠܬܐ ܕܕܓܠܘܬܐ. ܟܠܗܘܢ ܡܫܡܫܢܘܗܝ ܥܘܠܐ ܐܢܘܢ. * ܡܣܟܢܐ ܘܡܟܝܟܐ ܦܓܥܘ ܚܕ ܒܚܕ. ܘܡܪܝܐ ܡܢܗܪ ܥܝܢܝ ܬܪܝܗܘܢ. * ܡܠܟܐ ܕܕܐܢ ܒܩܘܫܬܐ. ܟܘܪܣܝܗ ܒܕܝܢܐ ܢܫܬܪܪ. * ܫܒܛܐ ܘܡܟܣܢܘܬܐ ܝܗܒܝܢ ܚܟܡܬܐ. ܘܛܠܝܐ ܕܠܐ ܪܕܝܐ ܡܒܗܬ ܠܐܡܗ. * ܒܣܓܝܐܘܬ ܕܥܘܠܐ ܣܓܝܐ ܥܘܠܐ. ܘܙܕܝܩܐ ܢܚܕܘܢ ܒܡܦܘܠܬܗܘܢ. * ܪܕܝ ܒܪܟ. ܘܢܢܝܚܟ. ܘܢܬܠ ܒܘܣܡܐ ܠܢܦܫܟ. * ܒܣܓܝܐܘܬ ܕܥܘܠܐ ܡܬܦܠܓ ܥܡܐ. ܘܕܢܛܪ ܢܡܘܣܐ ܛܘܒܘܗܝ. * ܒܡܠܐ ܠܐ ܡܬܪܕܐ ܥܒܕܐ. ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܕܠܐ ܡܬܢܓܕ. * ܐܢ ܚܙܝܬ ܓܒܪܐ ܕܡܣܪܗܒ ܒܡܠܘܗܝ. ܕܥ ܕܛܒ ܗܘ ܡܢܗ ܣܟܠܐ. * ܕܡܬܦܢܩ ܡܢ ܛܠܝܘܬܗ ܥܒܕܐ ܢܗܘܐ. ܘܒܚܪܬܗ ܢܬܬܢܚ. * ܓܒܪܐ ܚܡܬܢܐ ܡܓܪܐ ܕܝܢܐ. ܘܓܒܪܐ ܪܓܙܢܐ ܡܣܓܐ ܚܛܗܐ. * ܪܡܘܬܗ ܕܓܒܪܐ ܬܡܟܟܝܘܗܝ. ܘܡܟܝܟܘܬܗ ܬܘܣܦ ܠܗ ܐܝܩܪܐ. * ܕܦܠܓ ܥܡ ܓܢܒܐ ܣܢܐ ܢܦܫܗ. ܘܦܣܩܝܢ ܥܠܘܗܝ ܡܘܡܬܐ. ܘܠܐ ܡܘܕܐ. * ܬܘܩܠܬܐ ܕܓܒܪܐ ܚܛܝܐ ܣܐܡ ܠܗ. ܘܕܬܟܝܠ ܥܠ ܡܪܝܐ ܢܫܬܓܒ. * ܣܓܝܐܐ ܕܒܥܝܢ ܐܦܘܗܝ ܕܫܠܝܛܐ. ܘܡܢ ܡܪܝܐ ܗܘ ܕܝܢܗ ܕܓܒܪܐ. * ܡܣܠܝ ܗܘ ܠܙܕܝܩܐ ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܬܪܝܨܬܐ ܡܣܠܝܐ ܗܝ ܠܥܘܠܐ.

CAP. XXIX.

HOmo qui non accipit correctionem, eſtque 1
duræ cervicis, brevi conteretur, nec erit
illi medela. In multitudine juſtorum creſcit 2
populus : & ſub dominio impiorum ingemiſcit
populus. Vir qui amat ſapientiam, exhilarabit 3
patrem ſuum : qui autem paſcitur in
ſcortatione, perdet facultates ſuas. Rex judicio 4
terrã erigit: at impius in egeſtatem redigit
illam. Homo qui anceps eſt erga proximum 5
ſuum, rete expandit greſſibus ejus. Homo 6
facinoroſus, crimine ſuo capietur : juſtus
autem canet & gaudebit. Juſtus enim novit 7
judicium pauperum : impius autem non percipit
ſcientiam. Homines irriſores incendunt 8
urbes: at ſapientes repellunt iram. Vir ſapiens 9
contendit cum viro ſtulto, & iraſcitur, ac
ridet, nec *tamen* ſuccenſet. Viri effuſores ſanguinis 10
oderunt pium: juſti verò diligunt eum.
Totam iram ſuam profert ſtultus: ſapiens autem 11
mente ſuâ pervolvit. Princeps qui auditum 12
præbet verbo mendaci, hujus miniſtri omnes
iniqui ſunt. Pauper & dolens occurrerunt 13
invicẽ, & Dñs illuſtrat oculos utriuſque.
Rex qui judicat in veritate, hujus thronus in 14
judicio firmabitur. Virga & objurgatio dant 15
ſapientiam: puer autem ineruditus pudefacit
matrem ſuam. In multitudine impiorum creſcit 16
impietas : & juſti lætabuntur in ruina ipſorum.
Erudi filium tuum, & is requiem & 17
delicias afferet animæ tuæ. In multitudine impiorum 18
diſrumpitur populus: & qui cuſtodit
legem, beatus. Verbis non corrigitur ſervus: 19
novit enim ſe non vapulaturũ. Si videas hominem 20
præcipitem in verbis ſuis, ſcito illo
meliorem eſſe ſtultum. Qui deliciis indulget 21
à pueritia ſua, ſervus erit, & in noviſſimo
ſuo ſuſpirabit. Homo iracundus provocat 22
litem : & homo indignabundus multiplicat
iniquitatem. Superbia hominis deprimet 23
eum, & humilitas illius honorem augebit ei.
Qui cum fure partitur, odit animam ſuam : 24
& decernent in eum juramenta, nec fatebitur.
Iniquitas viri componit ei offendiculum 25
: at qui Domino fidit, magnificabitur.
Multi ſunt qui ambiunt vultum principis : à 26
Domino autem egreditur judiciũ viri. Abominandus 27
eſt apud juſtum vir iniquus: & via
recta abominabilis eſt apud iniquos.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

18 * مثل الذين القوا ان يطرحوا الاقوال لدى الناس * ومن يلقي الكلام اولا يتعرقل به *
19 * هكذا جميع الذين يكمنون لاصدقايهم * متى ما سوهدوا يقولون انما عملت هذا مازحا *
20 21 * بالحطب الكثير يحسن وقيد النار وحيث لا يوجد ذو غضب تسكن الخصومة * الاسكار
22 للخمر * والحطب في النار * والرجل الفارق لتحريك الخصومة * اقوال الملاقين والمخادعين لينة *
23 وهذه تضرب بواطن الحشا * فضة تعطى بغش يجب ان تحسب كالخزف * الشفوات المستقيمة
24 تسر قلبا حزينا * العدو المتباكي بشفتيه يومي الى كل شي * وفي قلبه يخترع صنوف الغش *
25 26 * ان تضرع اليك العدو بصوت عظيم فلا تذعنن له * فان في نفسه سبعة شرور * من يخفي
27 عداوة يبتدع غشا * والنفيس العلم يستر خطاياه في الجماعة * من يحفر لقريبه حفرة يسقط
28 فيها * ومن يدحرج حجرا على نفسه يدحرجها * اللسان الكذوب يمقت الصدق * وفما لا
غطاء عليه يصنع جوالب الهيج والشغب *

Quemadmodum qui ſeſe præcipitant in 18
profundendo ſermones coram hominibus,
& qui effundit ſermonem prior, implicatur
in eo : Ita ſunt omnes qui inſidiantur 19
amicis ſuis : dum deprehenduntur,
dicunt ; Certè id feci jocans. In multis 20
lignis optimè ardet ignis : & ubi non adeſt
iracundus, ſedatur altercatio. Scurrilitas 21
eſt vini, & ligna in igne, & vir litigioſus
ad excitationem contentionis. Sermones 22
adulantium & decipientium, molles
: & hi percutiunt interna viſcerum.
Argentum quod datur cum fraude, debet 23
exiſtimari quaſi teſta. Labia recta
lætificant cor triſte. Inimicus lachrymabundus, 24
labiis ſuis annuit ad omnia : et
in corde ſuo excogitat genera fraudum.
Si ſupplicaverit tibi inimicus altâ voce, 25
ne obedias illi : quia in anima ejus
ſunt ſeptem nequitiæ. Qui celat odium, 26
architectatur dolum : & qui excellens
eſt in doctrina, operit peccata
ſua in concilio. Qui fodit proximo 27
ſuo foveam, cadet in illam : & qui
volvit lapidem, ſuper animam ſuam illum
volvit. Lingua mendax odit veritatem 28
: & os quod non habet operculum
ſuper ſe, producit clamores tumultûs & ſeditionis.

* الفصل السابع والعشرون *

1 * لا تفتخر بما في الغد * فانك ما تعلم ماذا ينتجه اليوم الوارد * فليمدحك قريبك لا فمك
2 3 وليقرظك غيرك ولا شفتاك * الحجر الثقيل والرمل الصعب حمله اثقل غيظ منهما جميعا *
4 5 * الجاهل الغضب لا يرحم * والغيظ حاد * لكن الغيرة لن يثبت لديها احد * توبيخات
6 مكشوفة ظاهرة افضل من صداقة مكتومة * جراحات الصديق اوثق من قبلات العدو
7 الاختيارية * النفس التي في الشبع تبذلها اربابها * والنفس التي في الضيقة تستبين لها الاشياء
8 المر حلوة * مثل الطاير اذا طار من عشه هكذا الانسان يستخدم ويستعبد اذا تغرب من
9 مواضعه * القلب يطرب بالطيوب والخمور والبخورات * والنفس تغيرها السقطات *

CAP. XXVII.

NE glorieris de eo quod futurum eſt 1
in craſtino, quia neſcis quid pariat dies
ventura. Laudet te proximus tuus, non 2
os tuum : & celebret te alius, & non
labia tua. Saxo gravi, & arenâ portatu 3
difficili, utroque ſimul gravior eſt ira.
Stultus furibundus non miſeretur, & ira 4
eſt acuta : at prope zelum nemo conſiſtere
poteſt. Correptiones manifeſtæ & apertæ, 5
ſunt præſtantiores amicitiâ occultâ.
Vulnera amici ſunt tutiora oſculis 6
inimici voluntariis. Anima quæ eſt in 7
ſaturitate, deridet dominos ſuos : &
animæ quæ eſt in anguſtia, res amaræ
dulces videbuntur. Sicut volucre cùm 8
volaverit de nido ſuo, ſic homo adhibebitur
in ſervitutem & ſubjectionem,
cùm diſceſſerit è locis ſuis. Cor gaudet 9
aromatibus, & vinis, & odoramentis :
& animam diſcernunt caſus.

משלי : ל

CAP. XXX. ל

:Ithiel ad vir dixit *Aſſumptionem* .Jache filii Aghur Verba
1 דברי אגור בן־יקה המשא נאם הגבר לאיתיאל
intelligentia non & : *viro præ ego ſtolidus* Quia .Uchal & , Ithiel ad
2 לאיתיאל ואכל׃ כי בער אנכי מאיש ולא־בינת
ſanctorum ſcientiam & ,ſapientiam didici non Et .mihi hominum
3 אדם לי׃ ולא־למדתי חכמה ודעת קדשים
ventum *collegit* Quis ? deſcendit & , cœlum aſcendit Quis .*noſcam*
4 אדע׃ מי עלה־שמים וירד מי אסף־רוח
omnes ſtatuit quis ? veſtimento in aquas ligavit Quis ? ſuis pugillis in
בחפניו מי צרר־מים בשמלה מי הקים כל־
? noveris quòd ,ejus filii nomen quod & ,ejus nomen quod ? terræ *fines*
אפסי־ארץ מה־שמו ומה־שם־בנו כי תדע׃
Ne .eo in *fidentibus ipſe* clypeus : purgatus Dei ſermo Omnis
5 6 כל־אמרת אלוה צרופה מגן הוא לחסים בו׃ אל־
Duo .*ſis* mendax & ,te *in* increpet fortè ne : ejus verbis *ſuper* addas
7 תוסף על־דבריו פן־יוכיח בך ונכזבת׃ שתים
,*Vanitatem* .moriar antequàm ,me à prohibeas ne : te à poſtulavi
8 שאלתי מאתך אל־תמנע ממני בטרם אמות׃ שוא
dederis ne *opulentiam* & ,paupertatem : me à elonga *mendax verbum &*
ודבר־כזב הרחק ממני ראש ועשר אל־תתן־
, *mentiar* & , ſatier fortè Ne .*mei ſtatuti panem mihi da prædam* : mihi
9 לי הטריפני לחם חקי׃ פן אשבע וכחשתי
apprehendā & ,furer &,efficiar pauper fortè ne & ? Dominus quis : dicam &
ואמרתי מי יהוה ופן־אורש וגנבתי ותפשתי
fortè ne : *ſuum dominum ad* ſervum *lingua crimineris* Ne .mei Dei nomen
10 שם אלהי׃ אל־תלשן עבד אל־אדנו פן־
& : maledicet ſuo patri Generatio .delinquas & ,tibi maledicat
11 יקללך ואשמת׃ דור אביו יקלל ואת
ſua ſorde à & : ſuis oculis in munda Generatio .benedicet non ſuæ matri
12 אמו לא יברך׃ דור טהור בעיניו ומצאתו
ejus palpebræ & : *ejus* oculi ſunt excelſi cujus Generatio .lota eſt non
13 לא רחץ׃ דור מה־רמו עיניו ועפעפיו
,ejus molares cultri & , *ejus dentes gladii* Generatio .ſunt elevatæ
14 ינשאו׃ דור חרבות שניו ומאכלות מתלעתיו
Haluccah .*homine* ab egenos & : terra è *afflictos comedendum ad*
15 לאכל עניים מארץ ואביונים מאדם׃ לעלוקה
quatuor : ſaturabuntur non *iſta Tria* .*da* , *da* filiæ duæ
שתי בנות הב הב שלוש הנה לא תשבענה ארבע
non terra , *vulvæ conſtrictio* & ,Sepulchrum .*abundantia dixerunt non*
16 לא־אמרו הון׃ שאול ועצר רחם ארץ לא־
ſubſannaverit Oculum .*abundantia* dixit non ignis & : aquis ſatiata eſt
17 שבעה מים ואש לא־אמרה הון׃ עין תלעג
corvi *eum* effodiant ,matris obedientiam *ad* contempſerit & , patrem
לאב ותבז ליקהת אם יקרוה ערבי־
ſunt abſcondita *ipſa* Tria .aquilæ filii eum comedant & : torrentis
18 נחל ויאכלוה בני־נשר׃ שלשה המה נפלאו
viam ,cœlis in aquilæ Viam .*ea* novi non quatuor & : me à
19 ממני וארבעה לא ידעתים׃ דרך הנשר בשמים דרך
viri viam & ,maris corde in navis viam ,petram ſuper ſerpentis
נחש עלי צור דרך־אניה בלב־ים ודרך גבר
,ſuum os terſit & ,comedit ,*adulterantis* mulieris via Sic .*puella* in
20 בעלמה׃ כן דרך אשה מנאפת אכלה ומחתה פיה
eſt commota tria Propter .iniquitatem ſum operata Non : dixit &
21 ואמרה לא־פעלתי און׃ תחת שלוש רגזה
cùm ſervum Propter .ſuſtinere *poterit* non quatuor propter & : terra
22 ארץ ותחת ארבע לא־תוכל שאת׃ תחת עבד כי
exoſam Propter .pane fuerit ſaturatus cùm ſtultum & ,regnaverit
23 ימלוך ונבל כי ישבע־לחם׃ תחת שנואה
Quatuor .ſuæ *heræ* fuerit hæres cùm ancillam & : fuerit maritata cùm
24 כי תבעל ושפחה כי־תירש גברתה׃ ארבעה
.*edocta ſapientibus* ſapientia ipſa & : terræ minima *ipſa*
הם קטני־ארץ והמה חכמים מחכמים׃

Verſio VUL. LAT.

CAP. XXX.

1 VErba Congregantis filii
Vomentis. Viſio, quā locut⁹ eſt
vir, cū quo eſt De⁹, & qui Deo
ſecū morante confortatus, ait;
2 Stultiſſim⁹ ſū virorū, & ſapien-
3 tia hominū nō eſt mecū. Non
didici ſapientiā, & non novi
4 ſcientiā Sanctorū. Quis aſcen-
dit in cœlū atq; deſcēdit? quis
continuit ſpiritū in manibus
ſuis? quis colligavit aquas
quaſi in veſtimento? quis ſu-
ſcitavit omnes terminos ter-
ræ? quod nomen eſt ej⁹, & ꝙ
5 nomen filii ej⁹, ſi nôſti? Omnis
ſermo Dei ignitus, clypeus eſt
6 ſperantibus in ſe: Ne addas
quidquā verbis illi⁹, & argua-
7 ris, inveniariſq; mendax. Duo
rogavi te, ne deneges mihi an-
8 tequā moriar. Vanitatē, et ver-
ba mēdacia lōgè fac à me. Mē-
dicitatē, & divitias ne dederis
mihi: tribue tantū victui meo
9 neceſſaria: Ne fortè ſatiat⁹ il-
liciar ad negādū, et dicā; Quis
eſt Dn̄s? aut egeſtate compulſ⁹
furer, & perjurem nomen Dei
10 mei. Ne accuſes ſervū ad do-
minū ſuū, ne fortè maledicat
11 tibi, & corruas. Generatio,
quæ patri ſuo maledicit, et quæ
12 matri ſuæ non benedicit. Ge-
neratio, quæ ſibi munda vide-
tur, & tamē nō eſt lota à ſor-
13 dib⁹ ſuis. Generatio, cuj⁹ excel-
ſi ſūt oculi, et palpebræ ej⁹ in
14 alta ſurrectæ. Generatio, quæ
pro dentib⁹ gladios habet, &
commandit molarib⁹ ſuis, ut
comedat inopes de terra, &
15 pauperes ex hominib⁹. Sangui-
ſugæ duæ ſunt filiæ, dicentes;
Affer, affer. Tria ſunt inſatu-
rabilia: & quartū, ꝙ nunquā
16 dicit; Sufficit. Infern⁹, & os
vulvæ, & terra, quæ non ſati-
atur aquā: ignis verò nun-
17 quā dicit, Sufficit. Oculum,
qui ſubſannat patrem, & qui
deſpicit partū matris ſuæ, ef-
fodiant eū corvi de torrenti-
bus, & comedant eū filii aqui-
18 læ. Tria ſunt difficilia mihi,
19 & quartū penitùs ignoro. Viā
aquilæ in cœlo, viam colubri
ſup petrā, viā navis in medio
mari, & viā viri in adoleſcen-
20 tia. Talis eſt via mulieris adul-
teræ, quæ comedit, & tergens
os ſuū dicit; Non ſum operata
21 malū. Per tria movetur terra,
& quartū nō poteſt ſuſtinere:
22 Per ſervū cū regnaverit: ꝑ ſtul-
23 tū cū ſaturat⁹ fuerit cibo: Per
odioſā mulierē cū in matrimo-
nio fuerit aſſumpta: & ꝑ an-
cillā cū fuerit hæres dominæ
24 ſuæ. Quatuor ſūt minima ter-
ræ, et ipſa ſūt ſapientiora ſa-
pientibus:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 †Ἐπίσταται δίκαιος κρίνειν πενιχροῖς, †ὁ δὲ
ἀσεβὴς οὐ (γ) νοεῖ γνῶσιν, †καὶ πτωχῷ οὐχ ὑ-
8 πάρχει νοῦς ἐπιγνώμων. †Ἄνδρες (ᵟ) ἄνομοι
ἐξέκαυσαν πόλιν, †σοφοὶ δὲ ἀπέστρεψαν ὀρ-
9 γήν. †Ἀνὴρ σοφὸς κρινεῖ ἔθνη; †ἀνὴρ δὲ
φαῦλος ὀργιζόμενος καταγελᾶται καὶ οὐ κα-
10 ταπτήσσει. †Ἄνδρες αἱμάτων μέτοχοι (δ) μι-
σοῦσιν ὅσιον, †οἱ δὲ εὐθεῖς ἐκζητήσουσι ψυ-
11 χὴν αὐτοῦ. †Ὅλον τὸν θυμὸν αὐτοῦ ἐκφέρει ἄ-
12 φρων, †σοφὸς δὲ ταμιεύεται κατὰ μέρος. †Βασι-
λέως ὑπακούοντος λόγον ἄδικον, †πάντες
13 οἱ ὑπ᾽ αὐτὸν παράνομοι. †Δανειστοῦ καὶ (ε)
χρεωφειλέτου ἀλλήλοις συνελθόντων, ἐπισκο-
14 πὴν (ζ) ἀμφοτέρων ποιεῖται ὁ κύριος. †Βα-
σιλέως ἐν ἀληθείᾳ κρίνοντος πτωχούς, †ὁ
θρόνος αὐτοῦ εἰς μαρτύριον κατασταθήσεται.
15 †Πληγαὶ καὶ ἔλεγχοι διδόασι σοφίαν, †παῖς
16 δὲ πλανώμενος αἰσχύνει γονεῖς αὐτοῦ. Πολ-
λῶν ὄντων ἀσεβῶν πολλαὶ γίνονται ἁμαρτίαι,
†οἱ δὲ δίκαιοι ἐκείνων πιπτόντων κατάφοβοι
17 γίνονται. †Παίδευε υἱόν σου, καὶ ἀναπαύσει
18 σε, †καὶ δώσει κόσμον τῇ ψυχῇ σου. †Οὐ μὴ
(ϛ) ὑπάρξῃ ἐξηγητὴς ἔθνει παρανόμῳ, †ὁ
19 δὲ φυλάσσων τὸν νόμον μακαριστός. †Λόγοις οὐ
παιδευθήσεται οἰκέτης σκληρός, †ἐὰν γὰρ καὶ
(η) νοήσῃ, ἀλλ᾽ οὐχ ὑπακούσεται. †Ἐὰν ἴδῃς
20 ἄνδρα ταχὺν ἐν λόγοις, †γίνωσκε ὅτι ἐλ-
21 πίδα ἔχει μᾶλλον ὁ ἄφρων αὐτοῦ. †Ὃς κα-
τασπαταλᾷ ἐκ παιδός, οἰκέτης ἔσται, †ἔσχα-
22 τον δὲ ὀδυνηθήσεται ἐφ᾽ ἑαυτῷ. †Ἀνὴρ θυ-
μώδης (θ) ἐγείρει νεῖκος, †ἀνὴρ δὲ ὀργίλος
23 ἐξώρυξεν (ι) ἁμαρτίαν. †Ὕβρις ἄνδρα τα-
πεινοῖ, †τοὺς δὲ ταπεινόφρονας ἐρείδει δόξῃ
24 κύριος. †Ὃς μερίζεται κλέπτῃ, μισεῖ τὴν ἑαυ-
τοῦ ψυχήν· †ἐὰν δὲ ὅρκου προτεθέντος ἀκού-
25 σαντες μὴ ἀναγγείλωσι, Φοβηθέντες καὶ αἰ-
σχυνθέντες ἀνθρώπους (κ) ὑπεσκελίσθησαν, †ὁ
δὲ πεποιθὼς (λ) ἐπὶ κυρίῳ εὐφρανθήσεται. †
ἀσέβεια ἀνδρὶ δίδωσι σφάλμα, †(μ) ὃς δὲ
26 πέποιθεν ἐπὶ τῷ δεσπότῃ σωθήσεται. †Πολ-
λοὶ θεραπεύουσι πρόσωπα ἡγεμόνων, †παρὰ
27 δὲ κυρίου γίνεται τὸ δίκαιον ἀνδρί. †Βδέλυγ-
μα δίκαιος ἀνὴρ ἀνδρὶ ἀδίκῳ, †βδέλυγ-
μα δὲ ἀνόμῳ κατευθύνουσα ὁδός. Cap. 31.
10 †Γυναῖκα ἀνδρείαν τίς εὑρήσει; †τιμιωτέρα
11 δέ ἐστι λίθων πολυτελῶν ἡ τοιαύτη. †Θαρσεῖ
(ν) ἐπ᾽ αὐτῇ ἡ καρδία τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς· †
ἡ τοιαύτη καλῶν σκύλων οὐκ ἀπορήσει. †
12 Ἐνεργεῖ γὰρ τῷ ἀνδρὶ (ξ) εἰς ἀγαθὰ πάντα
13 τὸν βίον. †Μηρυομένη ἔρια καὶ λινόν, ἐποίησεν
14 (ο) εὔχρηστον ταῖς χερσὶν αὐτῆς. †(π) Ἐγένετο
ὡσεὶ ναῦς ἐμπορευομένη μακρόθεν, †συνά-
15 γει (ρ) δὲ αὕτη τὸν βίον. Καὶ ἀνίσταται ἐκ νυ-
κτῶν, †καὶ ἔδωκε βρώματα τῷ οἴκῳ, †καὶ ἔργα
16 ταῖς θεραπαίναις. †Θεωρήσασα γεώργιον ἐ-
πρίατο, †ἀπὸ δὲ καρπῶν χειρῶν αὐτῆς κατεφύ-
17 τευσε κτῆμα. †Ἀναζωσαμένη ἰσχυρῶς τὴν ὀσφὺν
αὐτῆς †ἤρεισε τοὺς βραχίονας αὐτῆς εἰς ἔργον.

Novit juſtus judicare pauper
impius autem (h) non cognoſc
tiam: & inopi non ineſt mens co
noſcens. Viri (i) iniqui (k) ex
runt civitatē: ſapientes autem
verterunt irā. Vir ſapiens judica
bit gentes: vir autem nequam ſuc
cenſens deridetur, & non terre
Viri ſanguinū participes odio ha
bent ſanctum: recti autem (l) ex
quirent animam ejus. Totam iram
ſuam profert inſipiens: ſapiens au
tem (m) diſpenſat per partem. Re
ge exaudiente verbum injuſtum,
omnes, (n) qui ſub eo, iniqui. Fœ
neratore & debitore (o) invicem
concurrentibus, (p) viſitationem
triuſq; facit Dominus. Regis in ve
ritate judicantis pauperes, ſedes
ejus in (q) teſtimonium conſtitue
tur. Plagæ & correptiones dant
ſapientiam: (r) puer autem errans
confundit (ſ) parentes ſuos. Cum
multi ſunt impii, multa fiunt pec
cata: juſti autem illis cadentibus
timidi fiunt. Erudi filium tuum &
requiem dabit tibi, & dabit (t)
natum animæ tuæ. (v) Non erit
enarrator genti iniquæ: cuſtodiens
autem legem beatiſſimus. Verbis
erudietur famulus durus: nam et
intellexerit, ſed non obediet. Si vi
deas virum velocem in verbis, co
noſce, quia ſpem habet magis inſi
piens eo. Qui deliciatur à puero
famulus erit: noviſſimè autem
dolebit ſuper ſe. Vir indignabun
dus (y) ſuſcitat contentionem, &
vir iracundus effodit peccatū.
Contumelia virum humiliat: hu
humiliter autem ſentientes fir
gloriā Domin⁹. Qui participat cu
furi, odit ſuam animam: ſi au
juramentum propoſitum audientes
non annuntiaverunt, Timentes &
reveriti homines (z) ſupplantati
ſunt: qui autem confidit in Do
mino, lætabitur. Impietas viro
prolapſionem: qui autem confidit
Domino, ſalvabitur. Multi colunt
facies Ducum: à Domino autem
juſtum viro. Abominatio juſtus
viro injuſto: abominatio autem
quo rectè pergens via. (c) Cap.
Mulierē fortē quis inveniet? pre
tioſior autē eſt lapidibus pre
quæ talis eſt. Confidit ſuper
cor viri ejus: quæ talis eſt,
(d) ſpoliis non egebit. Opera
nim viro (e) ad bona omnia
(f) Filans lanas & linū, fe
quod utile eſt manibus ſuis.
eſt tanquā navis mercatum
ercens de longè: congregat (
tem hac vitam. Et ſurrexit
nectibus, & dedit (h) eſcam
mui, & opera ancillis. Conſi
agrum emit: & de fructibus
nuum ſuarum plantavit poſſ
onem. Præcincta fortiter (l)
ſuum, (m) firmavit brachi
ad opus.

MS. A. (γ) συνήσει (ᵟ) λοιμοὶ (δ) ζητήσουσιν ὅσιον, (ε) χρεοφειλέτ
λων (ζ) ποιεῖται ἀμφοτέρων ὁ κύριος. (ϛ) ὑπάρξει (η) νοήσῃ, οὐχ ὑπα
(θ) ὀρύσσει νεῖκος, (ι) ἁμαρτίας. (κ) ὑποσκελισθήσονται, (λ) ἐπὶ κύριον
δὲ πεποιθὼς (ν) ἐπ᾽ αὐτὴν (ξ) ἀγαθὸν καὶ οὐ κακὸν πάντα τὸν βίον. (ο
χρηστα (π) Ἐγένετο δὲ ὡσεὶ ναῦς ἐμπορευομένη (ρ) ἃ ἑαυτῆς τὸν

תרגום TARGUM.

ל

1 2 מלוי דאגור בר יקה דקבל נביותא ואמר גברא לאיתיאל לאיתיאל ואוכל׃ מטול
3 דבורא דבני נשא אנא ולא אית בי ביונא דבני נשא׃ ולא ילפית חכמתא ולא ידעית
4 ידיעתא דקדישי׃ מן סלק לשמיא ונחת ומן אחד רוחא בחפנוי ומן צר מיא בשושיפא
5 ומן אקים בריתא דארעא מן שמיה ומן שום בריה אין ידעת׃ כלהון מימרוי דאלהא
6 7 צריפן ומסיע לאלין דמתרחצין ביה׃ לא תוסף על מלוי דלא יכסנך ותתכדב׃ תרתין
8 שאלית מנך לא תכלי מני עד לא אמות׃ דגלתא ומלתא כדבותא ארחק מני מסכנותא
9 ועותרא לא תתן לי זוני לחמא מסתי׃ דלא אשבע ואכפר ואימר מנו אלהא ודלא
10 אתמסכן ואגנוב ואחלל שמיה דאלהא׃ לא תלשן עבדא למריה דלא נצערנך
11 12 ותתחיב׃ דרא דאבוהי נצער ולאמיה לא נברך׃ דרא דדכי בעינוי ומצאתיה לא
13 אשתזג׃ דרא דרמו עינוי וגבינוי מנטלין׃ דרא דספסרי אנון שנוי וחריפי אנין ניבוי
14 15 למיכל מסכני מארעא ולעליבי מן בני נשא׃ לעלוקא תרתין בנן הב הב תלת אנון
16 דלא שבען וארבע דלא אמרן מסתא׃ שיול ואחדת רחמי וארעא לא שבעא מיא ונורא
17 לא אמרה מסתא׃ עינא דמצדיא לאב ושיטא קשישותא דאמא נחצוניה עורבי
18 דנחלא ויסמון יתיה בני נשרא׃ תלת אנון דגניזן מני וארבע דלא ידעית אנון׃ ארחא
19 דנשרא בשמיא ואורחיה דחויא על שועא ואורחא דאלפא בלביה דימא וארחא דגברא
20 בעלמתא׃ היכנא ארחא דאתתא גירתא אכלה ומכפרה פמה ואמרה לא עבדית
21 22 מדעם דעאתא׃ תחות תלת רגזא ארעא ותחות ארבע לא יכלא למסברא׃ ותחות
23 עבדא כד נמלוך וטפשא דישבע לחמא׃ תחות שנואתא דהויא לגברא ואמתא די
24 ירתה לרבונתה׃ ארבעא אנון זעירין בארעא והנון חכימין ומחכמין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXX.

VErba Agur filii Jachæ, qui ſuſcepit prophetiam, & dixit vir ad Ith
Ithiel, & Uchal. Quoniam inſipientiſſimus ego ſum hominum, & no
mihi intelligentia filiorum hominum. Et non didici ſapientiam, ne
ſcientiā ſanctorum. Quis aſcendit in cœlum & deſcendit? & quis
ventum in pugillis ſuis? & quis ligavit aquas in pallio? & quis
terminos terræ? quod eſt nomen ejus, aut quod eſt nomen filii ejus,
ſti? Omnes ſermones Dei ſunt conflati, & auxiliatur eis qui confid
eo. Ne addas ad verba ejus, ut non arguat te, & inveniaris mendax. Du
tivi à te, ne prohibeas à me antequàm moriar. Detractionem & ve
mendacii longè fac à me, mendicitatem & divitias ne des mihi, enu
pane ſufficienti mihi. Ne cùm ſatiatus fuero, negem & dicam: Q
Deus? & ne paupertate compulſus furer, & violem nomen Dei. Ne acc
ſervū apud dn̄m ſuum, ne fortè maledicat tibi, & reus peragaris. Eſt g
ratio quæ patri ſuo maledicit, & matri ſuæ non benedicit. Generatio
munda eſt in oculis ſuis, & à ſordibus ſuis non eſt lota. Generatio cujus
celſi ſunt oculi, & palpebræ elevatæ. Generatio cuj⁹ dentes ſunt [ſicut] g
dii, & molares [ut] cultri, ad comedendū pauperes de terra, & afflictos
liis hominum. Sanguiſugæ duæ ſunt filiæ, [*dicentes*] *Da, da*: tres ſunt quæ
ſatiantur, et quatuor quæ nunquā dicunt, Sufficit. Infern⁹ et conſtrictio v
& terra non ſatiatur aqua: & ignis nunquā dicit, Sufficit. Oculus qu
ſannat patrē, & deſpicit ſenectutē matris, diffident eum corvi torrentis
excæcabunt eum filii aquilæ. Tria ſunt abſcondita mihi, & quatuor qu
ſcio. Viam aquilæ in cœlo, viam colubri ſuper petra, & viam navis in
de maris, et viam viri in virgine. Sic eſt via mulieris adulteræ, quæ co
et tergit os ſuum, et dicit: Non ſum operata aliquid iniqui. Per tria
movetur terra, et quartum non poteſt ſuſtinere. Propter ſervum cu
naverit, et propter inſipientem qui ſaturatur pane. Propter odioſam
fuit viro, et ancillam quæ fuerit hæres dominæ ſuæ. Quatuor ſunt m
in terra, et ſunt ſapientia & erudita.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܬܠܐ * ܠ *

* ܡܠܘܗܝ ܕܐܓܘܪ ܒܪ ܝܩܐ: ܕܩܒܠ ܢܒܝܘܬܐ. ܘܐܬܚܝܠ ܘܐܡܪ ܠܐܝܬܝܐܝܠ. * ܡܛܠ
ܕܚܣܝܪ ܗܘ ܕܝܢܝ: ܘܠܝܬ ܒܝ ܣܘܟܠܐ ܕܒܢܝܢܫܐ: * ܘܠܐ ܝܕܥܬ ܚܟܡܬܐ: ܘܠܐ ܝܠܦܬ ܝܕ
ܕܩܕܝܫܐ. * ܐܡܪ ܠܝ. ܡܢܘ ܣܠܩ ܠܫܡܝܐ ܘܢܚܬ. ܘܡܢܘ ܐܚܕ ܪܘܚܐ ܒܣܘܦܪܘܗܝ. ܘܡܢ
ܨܪ ܡܝܐ ܒܣܕܝܢܐ. ܘܡܢܘ ܐܩܝܡ ܟܠܗܘܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܐܝܢܘ ܫܡܗ. ܘܐܝܢܘ ܫܡܐ ܕܒܪ
ܐܢ ܝܕܥ. * ܟܠܗܘܢ ܡܐܡܪܘܗܝ ܕܐܠܗܐ ܓܒܝܢ. ܘܡܣܬܡܟ ܠܐܝܠܝܢ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ. *
ܠܐ ܬܘܣܦ ܥܠ ܡܠܘܗܝ. ܕܠܐ ܢܟܣܝܟ. ܘܬܬܟܕܒ. * ܬܪܬܝܢ ܫܐܠܬ ܡܢܟ. ܠܐ ܬܟܠܐ ܡܢܝ ܥܕ ܠܐ
* ܣܪܝܩܘܬܐ ܘܡܠܬܐ ܕܕܓܠܘܬܐ ܐܪܚܩ ܡܢܝ. ܘܡܣܟܢܘܬܐ ܘܥܘܬܪܐ ܠܐ ܬܬܠ ܠܝ. ܐܠܐ ܗܒ ܠܝ
ܣܘܦܩܢܝ. * ܕܠܐ ܐܣܒܥ ܘܐܟܦܘܪ. ܘܐܡܪ ܡܢܘ ܡܪܝܐ. ܘܕܠܐ ܐܬܡܣܟܢ ܘܐܓܢܘܒ. ܘܐܡܐ ܒܫ
ܕܐܠܗܝ. * ܠܐ ܬܫܠܡ ܥܒܕܐ ܠܡܪܗ. ܕܠܐ ܢܠܘܛܟ ܘܬܬܚܝܒ. * ܕܪܐ ܕܡܨܥܪ ܠܐܒܘܗܝ
ܘܠܐܡܗ ܠܐ ܡܒܪܟ. * ܕܪܐ ܕܕܟܐ ܒܥܝܢܘܗܝ. ܘܡܢ ܨܐܬܗ ܠܐ ܐܬܚܠܠ. * ܕܪܐ ܕܪܡܢ ܥܝܢ
ܘܬܒܥܘܗܝ ܡܫܩܠܢ. * ܕܪܐ ܕܣܝܦܐ ܐܝܬ ܫܢܘܗܝ. ܘܣܟܝܢܐ ܢܟܘܬܗ. ܠܡܐܟ
ܠܡܣܟܢܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܡܣܟܢܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. * ܠܥܠܘܩܐ ܬܠܬ ܒܢܢ ܗܘܝ ܠܗ ܪܚܝܡܢ. ܬܠܬ ܐ
ܠܐ ܣܒܥܢ. ܘܐܪܒܥܐ ܠܐ ܐܡܪܐ ܣܦܩ. * ܫܝܘܠ. ܘܐܚܝܕܐ ܕܡܪܚܡܐ. ܘܐܪܥܐ ܠܐ ܣܒܥܐ ܡܝܐ. ܘܢܘ
ܐܡܪܐ ܣܦܩ. * ܥܝܢܐ ܕܓܚܟܐ ܥܠ ܐܒܘܗ. ܘܫܐܛܐ ܣܝܒܘܬܐ ܕܐܡܗ. ܢܩܘܪܘܢܗ ܥܘܪܒܐ ܕܢܚ
ܘܢܐܟܠܘܢܗ ܒܢܝ ܢܫܪܐ. * ܬܠܬ ܐܝܢܝܢ ܕܟܣܝܢ ܡܢܝ. ܘܐܪܒܥܐ ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ. * ܐܘܪܚܐ ܕܢ
ܒܫܡܝܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܚܘܝܐ ܥܠ ܫܘܥܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܐܠܦܐ ܒܠܒܗ ܕܝܡܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܓ
ܒܛܠܝܘܬܗ. * ܗܟܢܐ ܗܝ ܐܘܪܚܐ ܕܐܢܬܬܐ ܓܝܪܬܐ. ܐܟܠܐ ܘܡܫܝܐ ܦܘܡܗ. ܘܐܡܪܐ. ܠܡ
ܣܥܪܬ. * ܬܚܝܬ ܬܠܬ ܙܘܥܐ ܐܪܥܐ. ܘܬܚܝܬ ܐܪܒܥܐ ܠܐ ܡܫܟܚܐ ܠܡܣܝܒܪܘ. * ܬܚܝܬ ܥܒܕܐ ܕ
ܢܡܠܘܟ. ܘܬܚܝܬ ܣܟܠܐ ܕܣܒܥ ܠܚܡܐ. * ܘܬܚܝܬ ܣܢܝܬܐ ܕܗܘܝܐ ܠܒܥܠܐ. ܘܬܚܝܬ ܐܡ
ܕܡܦܩܐ ܠܡܪܬܗ. * ܐܪܒܥ ܐܝܢܝܢ ܕܒܨܝܪܢ ܒܐܪܥܐ. ܘܗܢܝܢ ܚܟܝܡܢ ܡܢ ܚܟܝܡܐ.

CAP. XXX.

Sermones Agur filii Jaci qui conſequut⁹ eſt 1
prophetiā, & vires acquiſivit, dixitq; ad Ata-
liel; Quandoquidē mancū eſt judiciū meū, 2
nec eſt in me prudentia humana, Nec novi 3
ſapientiā, neq; didici ſcientiā ſanctorū: Dici- 4
to mihi, Quis aſcendit in cœlū, & deſcendit?
quis continuit ſpiritū volis ſuis? quis colliga-
vit aquas in linteo? & quis conſtituit omnes
terminos terræ? Quodnā eſt nomē ej⁹, & q
nomen filii ej⁹, ſi nôſti? Univerſa dicta Dei e 5
lecta ſūt, ipſeq; fulcit eos qui confidūt in illo.
Nil addas verbis ej⁹, ne te corripiat, & argua- 6
ris mendacio. Duo abs te poſtulavi, ne dene- 7
ges mihi antequā moriar. Amove à me vani- 8
tatē et ſermonē mendacē, et paupertatē ac di-
vitias ne dederis mihi, *ſed* concede mihi habi-
tationē pro ſufficiētia mea: Ne fortè ſatiat⁹ ne- 9
gē, ac dicā; Quis eſt Dñs? aut ne in pauperta-
tē redact⁹ furer, & jurē ꝑ nomē Dei mei. Ne 10
tradas ſervū heris ej⁹, ne tibi maledicat, & ſis
obnoxi⁹ Generationi quæ parentes ſuos con- 11
tumeliis afficit, & matri ſuæ non benedicit.
Generationi quæ munda eſt in oculis ſuis, & 12
tamen à ſordib⁹ ſuis non lavit ſe. Generatio- 13
ni quæ cùm elatos habet oculos, palpebras ſu-
as attollit. Generationi cujus dentes gladii 14
ſunt, et cultri canini ej⁹, ut devorent pauperes
terræ & inopes ex hominib⁹. Sanguiſuga tres 15
habebat filias dilectas: tres *inquam* ſunt quæ
non ſatiantur, & quarta nequaquā dicit, Satis 16
eſt: Infernus, et cuj⁹ conſtricta ſunt viſcera, &
terra non ſaturatur aquis, & ignis nunquā di-
cit, Sufficit. Oculum qui ridet patrem ſuum, 17
& ſpernit ſenectutem matris ſuæ, eruent cor-
vi vallis, & devorabunt pulli aquilæ. Tria 18
ſunt quæ me latent, & quartū ignoro: Viā a- 19
quilæ in cœlo, & viā ſerpentis ſupra petrā,
& viā navis in corde maris, & viam viri in
adoleſcentia ſua. Ejuſmodi eſt via mulieris 20
adulteræ: comedit, & extergit os ſuum, ac
dicit, Nihil feci. Sub tribus contremiſcit 21
terra, et ſub quatuor nequit ſuſtinere: Sub 22
ſervo cùm regnârit, ſub ſtulto qui ſatiatur pa-
ne: Sub odioſa *muliere* quæ nubit viro, et 23
ſub ancilla quæ ejicit dominam ſuam. Qua-
tuor ſunt minima ſuper terram, eaque ſapi-
entiora ſapientibus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* صديقك او صديق ابيك لا تهمله * ولا تدخلن الى منزل اخيك جزافا * صديق قريب
مصاقب بيتك افضل من اخ يسكن بعيدا * يا بني صر حكيما ليفرح قلبك * واردد عنك
اقوال المعيّن * المدرب يختفي في موافاة المساوي * والاغبياء اذا وافاهم يتكبدون خسا
* من يفسد ما ليس له ينزع ثوبه * فقد عبر المتعظم * من يبارك صديقه بالغداة بصوت
عظيم * اعتقده انه لا فرق بينه وبين من يلعنه * نقط الوكف تخرج الرجل في اليوم
الشتوي من منزله * وكذلك الامراة القارفة الشتامة تخرج الرجل من بيته * الشمال ريح
صعبة * وبالاسم تلقب يمينية * الحديد يحد الحديد والانسان يحد وجه رفيقه * من نصب تينة
ياكل اثمارها * ومن حفظ صاحبه اكرم * كما ان الوجوه ما تشابه الوجوه * كذلك اذهان
الناس ما تتشابه * الجحيم والهلاك ما يشبعان بهذه الصورة اعين الناس ما تشبع ولا تمتلي
رذالة عند الرب تصليب العين * والذين لا ادبا لهم ما يمسكون لسانهم * الاحماء اختبار
الفضة والذهب وامتحانهما * والانسان يمتحن بفم الذين يمدحونه * قلب المتعدي الشريعة
يلتمس الشر * والقلب المقوم يطلب علما * ان جلدت الغبي في وسط الجماعة واهنته * فما
تنزع بذلك غباوته * اعرف نفوس رعيتك معرفة بليغة * وبث قلبك على قطعانك * فان
العز والاقتدار ليسا للانسان مدى الدهر ولا تدفع من جيل الى جيل * اهتم بانواع الحصيد
التي في البقعة * فتحصد حشيشا * واجمع حشيشا جبليا ليكون لك غنم للبوس * اكرم الرياض
ليكون لك خراف * يا بني لك مني اقوالا قوية لحياتك وحياة من يخدمك *

* الفصل الثامن والعشرون * * المنافق يهرب من غير ان يكده احد * والمقسط مثل
كالاسد * من اجل خطايا المنافقين صارت الحكومات * والرجل المدرب يخمدها *

Amicum tuum aut amicum patris tui ne 10
*contemnas: & ne ingrediaris habitacu-
culum fratris tui, gratis. Amicus proxi-
mus propinquus domui tuæ, eſt melior
fratre habitante procul. Fili mi, eſto* 11
*ſapiens, ut gaudeat cor tuum: & aver-
te à te verba infamiæ. Cautus abſcondit* 12
*ſe in adventu malorum: & inſipientes,
cùm advenerint eis, ſuſtinebunt jacturā.
Quis deterit quod non eſt ſuum, aufere-* 13
*tur veſtis ejus: jam enim exceſſit ſuper-
bum. Qui benedicit amico ſuo in matu-* 14
*tino, voce ingenti, crede nullam eſſe dif-
ferentiam inter illum & inter eum qui
maledicit ipſi. Guttæ perſtillationis edu-* 15
*cunt virum è domo ſua in die pluvio:
ſic mulier litigioſa calumniatrix educit
virum de domo ejus. Septentrio eſt ven-* 16
*tus aſper, & nomine appellatur Dexter.
Ferrum acuit ferrum, & homo acuit fa-* 17
ciem ſocii ſui. Qui plantat ficum, edet 18
*fructus ejus: & qui cuſtodit amicum
ſuum, honorabitur. Sicut vultus non ſunt* 19
*ſimiles vultibus, ſic mentes hominum non
aſſimilantur. Infernus & perditio non* 20
*ſatiantur: hoc modo oculi hominum
non ſatiantur nec implentur. Abomina-
tio eſt apud Dominum duritíes oculi*
(i. impudentia) *& qui non habent di-
ſciplinam, non cohibent linguam ſuam.
Excandeſcentia eſt experimentum argenti* 21
*& auri, & probatio utriuſque: & homo
comprobatur ore eorum qui laudant eū.
Cor prævaricantis legem, quærit mala:
& cor rectum inveſtigat ſcientiam. Si* 22
*flagellaveris inſipientem in medio con-
& deſpexeris eum, non auferes ob hoc
ſtultitiam ejus. Cognoſce animas gregis* 23
*tui cognitione perfectâ, & conſtitue cor
tuum ſuper greges tuos. Quia gloria &* 24
*poteſtas non erunt homini in ſeculum,
que concedentur à progenie ad proge-
niem. Cura omnigenas herbas quæ ſunt* 25
in campo, & redundabit fœno: Et collige 26
*herbam montanam, ut ſint tibi pecudes ad
indumentum. In pretio habeas prata, ut* 27
*ſint tibi agni. Fili mi, habes à me ſer-
mones potentes pro vita tua & vita eo-
rum qui tibi miniſtrant.*

CAP. XXVIII.

Impius fugit abſque eo quòd vexet eum 1
quiſquam: & juſtus [illegible]
Ob peccata impiorum [illegible]
[illegible]

מִשְׁלֵי : לא

Cuniculi .ſuum panem æſtate in præparaverunt &,fortis non populus Formicæ
25 26 הַנְּמָלִים עַם לֹא־עָז וַיָּכִינוּ בַקַּיִץ לַחְמָם׃ שְׁפַנִּים
: locuſtæ non Rex .ſuā domū petra in ponent & , robuſtus non populus
27 עַם לֹא־עָצוּם וַיָּשִׂימוּ בַסֶּלַע בֵּיתָם׃ מֶלֶךְ אֵין לָאַרְבֶּה
ædibus in ipſa & : tractabit manib⁹ in Aranea .ipſum totū dimidians egredietur &
28 וַיֵּצֵא חֹצֵץ כֻּלּוֹ׃ שְׂמָמִית בְּיָדַיִם תְּתַפֵּשׂ וְהִיא בְּהֵיכְלֵי
.ire bonificantia quatuor & : inceſſum bonificantia ipſa Tria .regis
29 מֶלֶךְ׃ שְׁלֹשָׁה הֵמָּה מֵיטִיבֵי צָעַד וְאַרְבָּעָה מֵיטִבֵי לָכֶת׃
, lumbos Accinctus .omnis faciebus à revertetur non & : animali in fortis Leo
30 31 לַיִשׁ גִּבּוֹר בַּבְּהֵמָה וְלֹא־יָשׁוּב מִפְּנֵי־כֹל׃ זַרְזִיר מָתְנַיִם
ſi & : te elevando in egiſti ſtultè Si .eo cum Alcum rex & : hircus vel
32 אוֹ־תַיִשׁ וּמֶלֶךְ אַלְקוּם עִמּוֹ׃ אִם־נָבַלְתָּ בְהִתְנַשֵּׂא וְאִם
,butyrum educet lactis emulſor Quia .os ad manum ,cogitâſti malum
33 זַמּוֹתָ יָד לְפֶה׃ כִּי מִיץ חָלָב יוֹצִיא חֶמְאָה
.litem educet furorum emunctor & : ſanguinem educet naris emunctor &
וּמִיץ־אַף יוֹצִיא דָם וּמִיץ אַפַּיִם יוֹצִיא רִיב׃

CAP. XXXI. לא

quid &,mi fili Quid.ſua mater ei erudivit qua aſſumptio :regis Lemuel Verba
1 2 דִּבְרֵי לְמוּאֵל מֶלֶךְ מַשָּׂא אֲשֶׁר־יִסְּרַתּוּ אִמּוֹ׃ מַה־בְּרִי וּמַה
:tuā facultatē mulieribus dederis Ne .meorū votorū fili quid & :mei uteri fili
3 בַּר־בִּטְנִי וּמֶה בַּר־נְדָרָי׃ אַל־תִּתֵּן לַנָּשִׁים חֵילֶךָ
regibus ne , Lemuel regibus Ne .reges delendū ad tuas vias &
4 וּדְרָכֶיךָ לַמְחוֹת מְלָכִין׃ אַל לַמְלָכִים לְמוֹאֵל אַל לַמְלָכִים
:ſtatuti obliviſcatur &,bibat fortè Ne .ſechar ubi gubernatorib⁹ & :vinū bibere
5 שְׁתוֹ־יָיִן וּלְרוֹזְנִים אוֹ שֵׁכָר׃ פֶּן־יִשְׁתֶּה וְיִשְׁכַּח מְחֻקָּק
amaris vinum & :pereunti ſechar Date .afflictē filiorū omniū judiciū mutet &
6 וִישַׁנֶּה דִּין כָּל־בְּנֵי־עֹנִי׃ תְּנוּ־שֵׁכָר לְאוֹבֵד וְיַיִן לְמָרֵי
recordetur non ſui laboris & :ſuæ egeſtatis obliviſcatur & ,Bibat .animo
7 נָפֶשׁ׃ יִשְׁתֶּה וְיִשְׁכַּח רִישׁוֹ וַעֲמָלוֹ לֹא יִזְכָּר־
Aperi .tranſitus filiorū omniū judiciū ad : muto tuū os Aperi .amplius
8 עוֹד׃ פְּתַח־פִּיךָ לְאִלֵּם אֶל־דִּין כָּל־בְּנֵי חֲלוֹף׃ פְּתַח־
9 quis virtutis Mulierem .egeni & ,afflicti judiciū & : juſtitiā judica ,tuū os
10 פִּיךָ שְׁפָט־צֶדֶק וְדִין עָנִי וְאֶבְיוֹן׃ אֵשֶׁת־חַיִל מִי
:ſui mariti cor ea in Confidit .ejus merces margaritis à diſtans & ? inveniet
11 יִמְצָא וְרָחֹק מִפְּנִינִים מִכְרָהּ׃ בָּטַח בָּהּ לֵב בַּעְלָהּ
diebus omnibus :malum non & bonum ei Retribuit .indigebit non ſpolio &
12 וְשָׁלָל לֹא יֶחְסָר׃ גְּמָלַתְהוּ טוֹב וְלֹא־רָע כֹּל יְמֵי
.ſuarū volarum voluntate in fecit & : lina & ,lanam Quæſivit .ſuarū vitarum
13 חַיֶּיהָ׃ דָּרְשָׁה צֶמֶר וּפִשְׁתִּים וַתַּעַשׂ בְּחֵפֶץ כַּפֶּיהָ׃
ſurrexit Et .ſuum panem adducet longe de : circueuntis naves velut Fuit
14 15 הָיְתָה כָּאֳנִיּוֹת סוֹחֵר מִמֶּרְחָק תָּבִיא לַחְמָהּ׃ וַתָּקָם
Cogitavit .ſuis puellis ſtatutum & :ſuæ domui prædam deditque ,nocte adhuc in
16 בְּעוֹד לַיְלָה וַתִּתֵּן טֶרֶף לְבֵיתָהּ וְחֹק לְנַעֲרֹתֶיהָ׃ זָמְמָה
Accinxit .vineam plantavit ſuarum volarum fructu de :eum accepit & ,agrum
17 שָׂדֶה וַתִּקָּחֵהוּ מִפְּרִי כַפֶּיהָ נָטְעָה כָּרֶם׃ חָגְרָה
.ſua brachia roboravit & ,ſuos lumbos fortitudine in
בְעוֹז מָתְנֶיהָ וַתְּאַמֵּץ זְרֹעוֹתֶיהָ׃

Verſio VULG. LAT.

25 Formicæ, popul⁹ infirm⁹, qui præparat in meſſe cibū ſibi: 26 Lepuſculus, plebs invalida, qui collocat in petra cubile ſuū: 27 Regē locuſta non habet, & egreditur univerſa p turmas ſuas: 28 Stellio manib⁹ nititur, & moratur in ædibus regis. 29 Tria ſunt, quæ benè gradiuntur, & quartum, q incedit fœliciter: 30 Leo fortiſſim⁹ beſtiarū, ad nulli⁹ pavebit occurſū: 31 Gall⁹ ſuccinct⁹ lumbos: & aries: nec eſt rex, qui reſiſtat ei. 32 Eſt qui ſtult⁹ apparuit poſtquā elevatus eſt in ſublime: ſi enim intellexiſſet, ori ſuo impoſuiſſet manū. 33 Qui autē fortiter premit ubera ad eliciendū lac, exprimit butyrū: & qui vehemēter emungit, elicit ſanguinē: & qui provocat iras, producit diſcordias.

CAP. XXXI.

1 Verba Lamuelis regis. Viſio, quâ erudivit eū mater ſua. 2 Quid dilecte mi, quid dilecte uteri mei, quid dilecte votorū meorū? 3 Ne dederis mulierib⁹ ſubſtantiā tuā, & divitias tuas ad delendos reges. 4 Noli regibus, O Lamuel, noli regibus dare vinū: quia nullum ſecretū eſt ubi regnat ebrietas. 5 Et ne fortè bibant, & obliviſcantur judiciorum, & mutent cauſam filiorū pauperis. 6 Date ſicerā mœrentib⁹, & vinum 7 his qui amaro ſunt animo: Bibant, & obliviſcantur egeſtatis ſuæ, & doloris ſui non recordentur amplius. 8 Aperi os tuū muto, & cauſis omnium filiorū qui pertranſeunt: 9 Aperi os tuū, decerne q juſtū eſt, & judica inopem & pauperem.

10 Mulierē fortē quis inveniet? procul, 11 & de ultimis finib⁹ pretiū ej⁹. Confidit in ea cor viri ſui, & ſpoliis 12 non indigebit. Reddet ei bonum, & non malū, omnib⁹ diebus vitæ ſuæ. 13 Quæſivit lanā & linū, & operata 14 eſt conſilio manuū ſuarū. Facta eſt quaſi navis inſtitoris, de longè portans panē ſuū. 15 Et de nocte ſurrexit, deditq; prædā domeſticis ſuis, & 16 cibaria ancillis ſuis. Conſideravit agrū, & emit eū: de fructu manuū 17 ſuarum plantavit vineam. Accinxit fortitudine lumbos ſuos, & roboravit brachium ſuum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

18 †(σ) Καὶ ἐγεύσατο ὅτι καλόν ἐστι τὸ ἐργάζεσθαι, † καὶ οὐκ ἀποσβέννυται (τ) ὁ λύχνος αὐτῆς ὅλην τὴν νύκτα. 19 † Τοὺς πήχεις αὐτῆς ἐκτείνει ἐπὶ τὰ συμφέροντα, † (υ) τὰς δὲ χεῖρας αὐτῆς ἐρείδει 20 εἰς ἄτρακτον. † Χεῖρας δὲ αὐτῆς διήνοιξε πένητι, † καρπὸν δὲ ἐξέτεινε πτωχῷ. 21 † Οὐ (ʾ) φροντίζει τῶν ἐν οἴκῳ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, † ὅταν που χρονίζῃ, † πάντες γὰρ οἱ παρ' αὐτῆς (φ) ἐνδεδυμένοι εἰσί. † 22 † Δισσὰς χλαίνας ἐποίησε τῷ ἀνδρὶ αὐτῆς, † ἐκ δὲ βύσσου καὶ πορφύρας ἑαυτῇ 23 ἐνδύματα. † Περίβλεπτος δὲ γίνεται (χ) ὁ ἀνὴρ αὐτῆς ἐν πύλαις, † ἡνίκα ἂν καθίσῃ ἐν συνεδρίῳ μετὰ τῶν 24 (ψ) γερόντων κατοίκων τῆς γῆς. † Σινδόνας ἐποίησε καὶ ἀπέδοτο † (ω) περιζώματα τοῖς Χαναναίοις. (α) † στόμα αὐτῆς διήνοιξε προσεχόντως καὶ ἐννόμως, † καὶ τάξιν ἐστείλατο τῇ γλώσσῃ 25 (ʾ) αὐτῆς. † Ἰσχὺν καὶ εὐπρέπειαν ἐνεδύσατο, † καὶ εὐφράνθη ἐν ἡμέραις ἐσχάταις. 27 † Στεγναὶ διατριβαὶ οἴκων αὐτῆς, † σῖτα δὲ ὀκνηρὰ οὐκ ἔφαγε. † (β) 26 Τὸ στόμα δὲ ἀνοίγει σοφῶς καὶ νομο- 28 θέσμως. † Ἡ δὲ ἐλεημοσύνη αὐτῆς ἀνέστησε τὰ τέκνα αὐτῆς, καὶ ἐπλούτησαν, † καὶ ὁ ἀνὴρ αὐτῆς ᾔνεσεν αὐτήν. † 29 Πολλαὶ θυγατέρες ἐκτήσαντο πλοῦτον, † πολλαὶ ἐποίησαν (γ) δύναμιν, † σὺ δὲ ὑπέρκεισαι, (δ) ὑπερῇρας πάσας. 30 † Ψευδεῖς ἀρέσκειαι, καὶ μάταιον κάλλος γυναικός, γυνὴ γὰρ συνετὴ εὐλογεῖται, φόβον δὲ κυρίου αὕτη αἰνείτω. 31 † Δότε αὐτῇ ἀπὸ καρπῶν χειλέων αὐτῆς, † καὶ αἰνείσθω ἐν πύλαις ὁ ἀνὴρ αὐτῆς.

MSA. (σ) Ἐγεύσατο δὲ (τ) ὅλην τὴν νύκτα ὁ λύχνος αὐτῆς. Τὰς χεῖρας αὐτῆς (υ) τοὺς δὲ πήχεις (ʾ) φροντίζει διδύσκονται. (χ) ἐν πύλαις ὁ ἀνὴρ αὐτῆς, (ψ) πρεσβυτέρων γῆς. (ω) περιζώματα δὲ (α) Ἰσχὺν καὶ εὐπρέπειαν ἐνεδύσατο καὶ ηὐφράνθη ἐν ἡμέραις ἐσχάταις. στόμα αὐτῆς (ʾ) αὐτῆς. Στεγναὶ (β) Στόμα δὲ αὐτῆς ἀνοίγει (γ) δυνατά, (δ) καὶ πάσας.

MS. A. Παροιμίαι Σολομῶντος.

Et guſtavit quia bonum
operari, & non extingu
cerna ejus totam noctem.
bitos ſuos extendit ad
tilia, & manus ſuas
mat ad fuſum. Manus au
as aperuit pauperi, &
extendit inopi. Non
t⁹ de iis, quæ in domo,
ſicubi moratus fuerit.
enim qui ab ea, (q) indu
Duplices (r) veſtes fe
ſuo, de byſſo autem &
ſibi indumenta: (ſ) Conſpi
autem fit vir ejus in por
quandocunq; ſe erit in
ſu cum (t) ſenibus habita
bus terræ. Sindonas fe
vendidit (u) cingula Cana
is. Os ſuum aperuit (x)
tè, & legitimè, & (y)
poſuit linguæ ſuæ. Fortitu
nem & decorem induit,
lætata eſt in diebus noviſſ
(ω) Conſtrictæ manſiones
morum ejus: (aa) cibos
pigros non manducavit.
tem aperit ſapienter, &
gruenter legibus: Eleem
autem (b) ejus (c) ſuſcita
filios ejus, (d) & ditati
& vir ej⁹ laudavit eam.
tæ filiæ (e) acquiſierunt
tias, multæ fecerunt virtu
tu autem eminens, ſuperg
es univerſas. Fallaces g
& vana pulchritudo mul
mulier enim (f) intelligens
nedicitur: timorem autem
mini iſta laudet. Date ei
ctibus (g) labiorum ejus
laudetur in portis vir ejus.

תרגום TARGUM.

25 26 שׁוּמְשְׁמָנֵי לָא עַשִׁין עַמְהוֹן וּמְתַקְנִין בְּקַיְטָא מֵיכַלְהוֹן : וְחַגְסֵי דְעַמְהוֹן לָא תַקִּיף וְעָבְדִין
27 לְהוֹן בֵּיתָא בְקַתְרֵי : וְקַמְצֵי דְמַלְכָּא לֵית לְהוֹן וּמִתְכַּנְשִׁין כֻּלְּהוֹן כַּחֲדָא : וְאַקְמְתָא
28 29 דְּמַסְכְּכָה בִידַיִן וְעָמְרָא בְּבֵיתָא דְמַלְכֵי : תְּלָתָא אִנּוּן דְשַׁפִּירָן הֲלִיכָתְהוֹן וְאַרְבְּעָא דְשַׁפִּיר
30 31 מַהְלְכִין : אַרְיָא גִּבַּר בִּבְעִירָא וְלָא הָפֵיךְ מִן כָּל מִדְעַם : וְאַכְבָּא דְמִזְדָּרֵז בֵּינַת תַּרְנְגוֹלֵי
32 וְתַיְשָׁא דְאָזֵל בֵּית גִּיוֹרָא וּמַלְכָּא דְקָאֵם וּמְמַלֵּל בֵּית עַמֵּיהּ : לָא תִתְרוֹרַם דְלָא תִטַּפַּשׁ
33 וְלָא תוֹשִׁיט אִידָךְ לְפוּמָךְ : דְמַן דְמָיְצָא חַלְבָּא נָפְקָא חֶמְאָתָא וּמִן כְּבוּשָׁא דְרוּגְזָא נָפוֹק
דְּמָא וּמִן חַרְיָנָא דְאַפֵּי נָפוֹק דִינָא :

לא

1 2 מִלּוֹהִי דִלְמוֹאֵל מַלְכָּא נְבִיּוּתָא וּמַרְדוּתָא דְרַדְתֵיהּ אִמֵּיהּ וַאֲמַרַת לֵיהּ : וַי בְּרִי וַי בַר
3 כַּרְסִי וַי בַר נִדְרַי : לָא תִתֵּן לִנְשֵׁי חֵילָךְ וְאָרְחָתָךְ לִבְנַת מַלְכִּין : אִזְדְּהַר מִן מַלְכֵי לְמוֹאֵל
4 5 מִן מַלְכֵי דְשָׁתַיִן חַמְרָא וּמִן שַׁלְטוֹנֵי דְשָׁתַיִן שִׁכְרָא : לָא תִשְׁתֵּי וְתִטְעֵי הוֹנָךְ וְתִשְׁנֵה
6 דִּינְהוֹן דְּכֻלְּהוֹן בְּנֵי עַנְיֵי : הֲבוּן שִׁכְרָא לַאֲבִלֵי וְחַמְרָא לִמְרִירֵי נַפְשָׁא : וְנִשְׁתּוֹן וְנִטְעוֹן
7 8 מִסְכֵּינָתְהוֹן וְשַׁחֲקֵיהוֹן לָא נִדְכְּרוּן תּוּב : פְּתַח פּוּמָךְ לְהָלֵין דְלָא מַסְטוּ דִין וְדוּן לְכֻלְּהוֹן
9 10 בְּנֵי עוֹלֵי : פְּתַח פּוּמָךְ וְדוּן צִדְקְתָא וְדוּן לַעֲנִיֵי וּלְעַלִיבֵי : אִתְּתָא כְּשַׁרְתָּא מַנוּ יִשְׁכַּח
11 יַקִּירָא הִיא מִן כֵּיפֵי טָבָתָא טִימְהָא : דְתָכֵל עֲלָהּ לִבֵּיהּ דְבַעְלָהּ וְלָא מִתְבַּזָּא וְלָא חָסְרָא :
12 13 פַּרְעָתֵיהּ טָבְתָא וְלָא בִישְׁתָא כָּל יוֹמֵי חַיְּהָא : תְּבַעַת עַמְרָא וְכִתָּנָא וַעֲבַדַת הֵיךְ צִבְיָנָא
14 דְאִידָהּ : וַהֲוָת הֵיךְ אִלְפַּת דְתַגְּרָא דְמִן רָחִיק מַיְתְיָא מֵיכַלְתָא : וְקָמַת בְּלֵילְיָא וִיהַבַת
15 16 מְזוֹנָהּ לְבֵיתָהּ וּפוּלְחָנָא לְטַלְיָתְהָא : וְאִתְחַשְּׁבַת בְּתַרְעִיתָא וְנַסְבַת חַקְלָא וּמִן פֵּרֵי
17 דִידָהָא נְצַבַת כַּרְמָא : וְאַסְרַת בְּעוּשְׁנָא חַרְצָהָא וְזָרְזַת דְּרָעֲהָא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Formicæ quarum populus non eſt fortis, & præparant in æſtate cibum
Et cuniculi quorum populus non eſt fortis, & faciunt ſibi domos in p
Et locuſtæ quæ non habent regem, & congregantur omnes in unum. E
nea manibus tegumenta facit, & ſtat in domo regum. Tria ſunt qu
greſſus pulchri ſunt, & quatuor quæ pulchrè gradiuntur. Leo forti
in animalibus, & non fugatur à quoquàm. Et gallus ſuccinctus inte
linas, & hircus ſylveſtris qui vadit in domū peregrini, & rex qui ſta
quitur in domo populi ſui. Ne te extollas, ne ſis inſipiens, neque ext
manū tuam ad os tuum. Quia qui exprimit lac, elicit butyrum: & de
preſſione furoris exit ſanguis, & de naribus vultus exit contentio.

CAP. XXXI.

Verba Lamuelis regis: Prophetia & eruditio, qua erudivit eum m
ſua, & dixit ei: Væ fili mi, & væ fili uteri mei, & væ fili votorū me
Ne dederis mulierib⁹ fortitudinem tuam, & vias tuas filiabus regum.
ſerva te à regibus Lamuel, à regib⁹ qui bibunt vinum, & à potentib
bibunt ſiceram. Ne fortè bibas & pervertas rationē tuā, & mutes
omniū filiorū pauperum. Date ſiceram lugentib⁹, & vinum his qui a
ſunt animo. Ut bibant & obliviſcantur egeſtatis ſuæ, & detritarū ve
non recordentur amplius. Aperi os tuū his qui non pervertunt judic
judica omnes filios perverſorū. Aperi os tuū, & judica juſtitiam, & ju
de pauperib⁹, & injuriā patientib⁹. ALEPH. Mulierē bonā quis inve
pretioſior eſt lapidibus optimis æſtimatio ejus. BETH. Confidit in e
viri ſui, & non ſpoliatur neque indiget. GIMEL. Reddet ei bonum &
malum omnib⁹ diebus vitæ ſuæ. DALETH. Quæſivit lanam et lin
operata eſt juxta voluntatē manuum ſuarū. HE. Et facta eſt ſicut navis
catoris, cuj⁹ è longinquo affertur cib⁹. VAU. Et ſurrexit in nocte, et de
cam domui ſuæ, et penſum ancillis ſuis. ZAIN. Et cogitavit in conſilio
cepit agrum, et de fructib⁹ manuum ſuarum plantavit vineā. HETH.
cingit fortitudine lumbos ſuos, et accingit brachia ſua.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 4 * المستجع بالنفاقات يبغي المساكين * مثل المطر الشديد هطله والذي لا ينفع * هكذا
الذين يهملون الشريعة ويمدحون النفاق * والذين يحبون الشريعة يصطنعون لانفسهم سورا *
5 6 * الناس الاشرار ما يفهمون الانصاف * والطالبون الرب يفهمونه في كل شي * المسكين السالك
7 في الصدق افضل من موسر كذوب * الابن الفهيم يحفظ الشريعة * من يراعي الاسراف يهين
8 9 اباه * من يكثر ثروته بكسب الربا والاستكثار * انما يجمعه لمن يرحم المساكين * من
يميل اذنه لئلا يسمع الشرايع فذلك سيرذل صلاته *

* Audax in impietatibus, opprimit
Veluti pluvia cujus vehemens e
& quæ nihil prodeſt: ſic ſunt
ligunt legem, & laudant impie
qui amant legem, conſiciunt
ſuis mœnia. Homines mali non
gunt æquitatatem: & quærent
minum intelligunt eam omnibus
Pauper incedens in veritate,
tior eſt divite mendace. Fili
ſervat legem: qui efficitur
deſpicit patrem ſuum. Qui
opes ſuas multitudine uſuræ e
cationis, certè colligit illas ei
retur pauperum. Qui a
ſuam ne audiat leg
tur oratio.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܫܘܫܡܢܐ ܕܚܝܠܐ ܠܝܬ ܠܗܘܢ. ܘܡܛܝܒܝܢ ܡܢ ܩܝܛܐ ܠܚܡܗܘܢ. * ܘܫܦܢܐ
ܕܟܪܝܗܝܢ ܒܚܝܠܐ. ܘܥܒܕܝܢ ܠܗܘܢ ܒܬܐ ܒܫܘܥܐ. * ܘܩܡܨܐ ܕܡܠܟܐ ܠܝܬ ܠܗܘܢ.
ܘܡܬܟܢܫܝܢ ܟܠܗܘܢ ܐܟܚܕܐ. * ܘܐܩܡܬܐ ܕܡܣܬܡܟܐ ܒܐܝܕܝܗ. ܘܥܡܪܐ ܒܗܝܟܠܐ ܕܡܠܟܐ.
* ܬܠܬܐ ܐܝܬ ܕܫܦܝܪ ܗܠܟܝܢ. ܘܐܪܒܥܐ ܫܦܝܪ ܡܗܠܟܝܢ. * ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܕܚܝܠܬܢ
ܡܢ ܟܠܗ ܒܥܝܪܐ. ܘܠܐ ܕܚܠ. ܘܠܐ ܗܦܟ ܡܢ ܩܕܡ ܟܠܗ ܒܥܝܪܐ. * ܘܬܪܢܓܠܐ ܕܡܬܓܐܐ ܒܝܬ
ܐܢܬܬܐ. ܘܕܟܪܐ ܕܐܙܠ ܒܪܝܫ ܥܢܐ. ܘܡܠܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. * ܠܐ ܬܪܓ ܕܠܐ ܬܬܚܣܕ.
ܘܠܐ ܬܦܫܛ ܐܝܕܝܟ ܠܦܘܡܟ ܒܢܟܠܐ. * ܡܢ ܚܘܡܬܗ ܕܚܠܒܐ ܢܦܩܐ ܚܐܘܬܐ. ܘܐܢ ܬܥܨܘܪ
ܐܝܕܝܟ ܥܠ ܚܛܬܐ ܢܦܩܝܢ ܕܡܐ. ܘܗܟܢܐ ܡܢ ܚܪܝܢܐ ܕܐܦܐ ܢܦܩ ܕܝܢܐ. * [illegible] *

* ܡܠܘܗܝ ܕܡܘܐܝܠ ܡܠܟܐ ܢܒܝܐ. ܕܪܕܝܬܗ ܐܡܗ ܘܐܡܪܬ ܠܗ. * ܘܝ ܒܪܝ. ܘܝ ܒܪ ܟܪܣܝ.
ܘܝ ܒܪ ܢܕܪܝ. * ܠܐ ܬܬܠ ܚܝܠܟ ܠܢܫܐ. ܘܐܘܪܚܬܟ ܠܡܐܟܘܠܬܐ ܕܡܠܟܐ. * ܡܢ ܡܠܟܐ ܡܘܐܝܠ.
ܐܙܕܗܪ. ܡܢ ܡܠܟܐ ܕܫܬܝܢ ܚܡܪܐ. ܘܡܢ ܫܠܝܛܢܐ ܕܫܬܝܢ ܫܟܪܐ. * ܕܠܐ ܬܫܬܐ. ܘܬܛܥܐ
ܠܡܦܫܩܢܐ. ܘܬܫܢܐ ܕܝܢܐ ܕܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܡܣܟܢܐ. * ܐܬܝܗܝܒ ܫܟܪܐ ܠܕܘܝܐ. ܘܚܡܪܐ
ܠܡܪܝܪܝ ܢܦܫܐ. * ܕܢܫܬܘܢ ܘܢܛܥܘܢ ܟܘܪܗܢܗܘܢ. ܘܒܝܫܬܗܘܢ ܬܘܒ ܠܐ ܢܬܕܟܪܘܢ. * ܦܬܚ
ܦܘܡܟ ܒܡܠܬܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܘܕܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܥܘܠܐ. * ܦܬܚ ܦܘܡܟ ܒܕܝܢܐ ܟܐܢܐ.
ܘܕܘܢ ܠܡܣܟܢܐ ܘܠܡܚܝܠܐ. * ܐܢܬܬܐ ܚܝܠܬܢܝܬܐ ܡܢܘ ܢܫܟܚ. ܝܩܝܪܐ ܗܝ ܡܢ ܟܐܦܐ
ܛܒܬܐ. ܕܠܝܬ ܠܗ ܛܝܡܐ. * ܘܬܟܝܠ ܥܠܝܗ ܠܒܗ ܕܒܥܠܗ. ܘܡܘܬܪܐ ܠܐ ܢܚܣܪ ܠܗ.
* ܦܪܥܬܗ ܛܒܬܐ ܘܠܐ ܒܝܫܬܐ. ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܝ ܚܝܝܗ. * ܒܥܬ ܥܡܪܐ
ܘܟܬܢܐ. ܘܥܒܕܝܢ ܐܝܕܝܗ ܐܝܟ ܨܒܝܢܗ. * ܗܘܬ ܐܝܟ ܐܠܦܐ ܕܬܓܪܐ. ܕܡܢ ܪܘܚܩܐ
ܡܝܬܝܐ ܡܐܟܘܠܬܗ. * ܘܩܝܡܐ ܒܠܠܝܐ. ܘܝܗܒܐ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܒܢܝ ܒܝܬܗ. ܘܥܒܕܐ
ܠܐܡܗܬܗ. * ܘܚܙܬ ܚܩܠܐ ܘܙܒܢܬܗ. ܘܡܢ ܦܐܪܐ ܕܐܝܕܝܗ ܢܨܒܬ ܟܪܡܐ
* ܘܐܣܪܬ ܚܨܝܗ ܒܚܝܠܐ. ܘܐܥܫܢܬ ܕܪܥܝܗ.

* Formicæ, quibus nullus eſt robur, attamen pa- 25
rant ab æſtate panem ſuum : Cuniculi qui 26
ſunt infirmi robore, attamen componunt ſibi
domos in petris: Locuſtæ, quæ regem non ha- 27
bent, omnes tamen ſimul congregantur : Et 28
ſtellio, qui ſerpit manibus ſuis, & habitat in
ædibus regum. Tria ſunt quorũ greſſus recti 29
ſunt, & quartum bellè incedit. Catulus leonis 30
fortiſſimus eſt omnium belluarum, non expa-
veſcit, nec terga vertit ulli beſtiæ : Gallus ſu- 31
perbè ſe circumagens inter gallinas: Aries in-
cedens in fronte gregis : & rex loquens inter
populos. Ne concupiſcas, ne probro afficia- 32
ris : & ne extendas manum tuam ad os tuum
cum dolo. De pinguedine lactis egreditur bu- 33
tyrum, & ſi comprimas manum tuam ſuper
frumentum, emanabit ſanguis : pari modo ex
pertinacia vultûs procedit contentio.

CAP. XXXI.

Sermones Muel regis prophetæ, quem eru- 1
diens mater ſua, dixit ad eum; Heu fili mi, heu 2
fili uteri mei, heu fili votorũ meorum. Ne de- 3
deris robur tuũ mulieribus, & vias tuas in
cibos regũ. A regibus, ô Muel, caveto: à re- 4
gibus *inquam* qui bibunt vinum, & principi-
bus qui bibunt ſiceram : Ne fortè bibas, & 5
obliviſcaris Expoſitoris *legis*, & oblivioni
tradas cauſam omnium filiorum pauperum.
Conceditur ſicera mœſtis, & vinum iis qui 6
amaro ſunt animo.: Ut bibant, & obliviſcan- 7
tur dolorum ſuorum, et calamitatum ſuarum
ultrà non recordentur. Aperi os tuum in ver- 8
bo veritatis, et judica omnes filios impiorum.
Aperi os tuum in judicio juſto, & judica pau- 9
peres ac inopes. Mulierem ſedulam quis in- 10
veniat? pretioſior quidem eſt lapidibus opti-
mis quibus non eſt pretium. Et fretum eſt illi 11
cor mariti ejus, unde et materiam ei deeſſe
non eſt paſſus. Ipſa rependit illi bona et non 12
mala, cunctis diebus vitæ ſuæ. Quæſivit lanam 13
et linum, et operatæ ſunt manus ejus pro ar-
bitrio ſuo. Facta eſt quaſi navis mercatoris, 14
cujus merces è longinquo veniunt. Et ſurgens 15
noctu dedit eſcam domeſticis ſuis, et operam
ancillis ſuis. Et conſideravit arvum, et emit 16
illud : et de fructibus manuum ſuarum plan-
tavit vineam : Et accinxit fortiter lumbos ſu- 17
os, et roboravit brachia ſua.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* من يضل المستقيمين في طريقة ردية • فذاك سيسقط في الفساد والدمار * والعادلون عن
السريعة بجورهم الخيرات • وما يدخلون فيها * الانسان الموسر حكيم عند نفسه * والفقير اللبيب
يلوم ذاته * من اجل معونة المقسطين يصير مجد كبير * والناس يفنون في اماكن المنافقين *
* من يكتم نفاقه ما تتيسر مذاهبه * من يشهر نفاقه وتوبيخه يجب * مغبوط الانسان الذي
يخشي كل شي من اجل الورع * والقاسي القلب يسقط في الاسواء * سبع جايع وذيب صا
من يغصب المسكين • ويكون من امة فقير * الملك الذي ارتفاعات امواله مفرعة
باغ عظيم * ومن يبغض الظلم يعيش زمانا طويلا * من يطمن رجلا في علة قتل * سيكون
هاربا ولا يكون في امن واطمانينة * ادب ابنك فيحبك ويمنح نفسك زينة * لا تطيعن امة
متعدية الشريعة * السالك مقسطا فقد غنم • والسالك في طرق ملتوية صعبة يكون مشتبكا
بها * من يعمل ارضه سيمتلي من الاخبار • ومن يطلب الفراغ والبطالة يمتلي فقرا * الانسان
الموثق المامون يبارك ببركات كثيرة • والردي ما يكون غير معاقب * ومن هذه سجيته
يسلم انسانا بكسرة خبز * الرجل الحسود يحرص ان يستغني • وما قد علم ان الرحوم يمسكه
* من يوبخ طرايق الانسان له ايادي • ومنح اكثر ممن يلاطفه بخطابه * من يغتصب ابا
وامه ويظن انه ما يخطي بذلك • فذاك شريك الرجل المنافق * الرجل الذي ما يشبع
يدين باطلا • ومن قد توكل على الرب سيكون مهتما به * من توكل على قلب متهاجم فذا
جاهلا • ومن يسلك بحكمة يخلص * من يعطي المساكين ما يحوج الى احد • ومن يرد عيـ
عنهم سيكون في ضيقة كثيرة * في مواضع المنافقين يضيق حال المقسطين • وفي هلا
اوليك يتكاثر للمقسطين حظهم *

* *Qui ſeducit rectos per viam malam*, 10
is cadit in corruptionem & interitum ;
& declinantes à lege effugient bona,
& non ingredientur in ea. Vir di- 11
ves eſt ſapiens apud ſemetipſum : &
pauper prudens accuſat ſeipſum. Pro- 12
pter auxilium juſtorum fiet gloria mul-
ta : & homines peribunt in locis ini-
quorum. Qui celat impietatem ſuam, 13
non erunt planæ viæ ejus. Qui promulgat
impietatem ſuam, etiam correptio ejus
licebit. Beatus homo qui omnia timet 14
propter pietatem. Et durus corde cadet
in mala. Leo famelicus, & lupus 15
aggrediens, qui irritat pauperem :
eritque de gente egena. Rex cujus 16
ſublimitates pecuniarum ſunt ſorte
projectæ, eſt oppreſſor maximus : qui
autem odit oppreſſionem, vivet longum
tempus. Qui ſecuritatem præſtat viro 17
in occaſione homicidii, erit profugus,
& non erit in ſecuritate ac tranquil-
litate. Erudi filium tuum, & ama-
bit te, dabiſque animæ tuæ ornamen-
tum. Ne obtemperes genti tranſgre-
dienti legem. Ambulans juſtè, jam 18
prædeſtinatus eſt : & incedens per
tramites perverſos, arduos, implicabi-
tur in iis. Qui operatur terram 19
ſuam, implebitur panibus : & qui
expetit ceſſationem & otium, reple-
bitur egeſtate. Homo ſecurus, fide- 20
lis, benedicetur benedictionibus mul-
tis : & ſceleratus non erit impunis ;
Et qui talis eſt naturæ, tradit homi- 21
nem pro fragmento panis. Vir invi- 22
dus inhiat ditari, & neſcit quòd mi-
ſericors detinet eum. Qui corripit 23
vias hominis, acquirit plus gratiæ &
donorum quàm is qui blanditur illi
ſermone ſuo. Qui vim infert patri 24
ſuo aut matri ſuæ, & putat ſe in hoc
non peccare, hic particeps eſt viri ne-
farii. Homo qui non ſatiatur, judicat 25
temerè : & qui confiſus eſt in Domino,
cura habebitur illius. Qui confidit in 26
corde præcipiti, is deſipiens eſt : & qui
incedit ſapienter, ſalvabitur. Qui dat 27
pauperibus, nemine indigebit : & qui
avertit oculum ſuum ab eis, erit in
anguſtia maxima. In locis impiorum 28
miſer erit ſtatus juſtorum : & in in-
teritu eorum multiplicabitur ſors ju-
ſtorum.

משלי : לא

.ej° lucerna nocte in extinguetur non:ej° *circuitio* bona quòd Guſtavit
18 טעמה כי־טוב סחרה לא־יכבה בלילה נרה :
.colum apprehenderunt ejus *volæ* &:vertibulum ad miſit ſuas Manus
19 ידיה שלחה בכישור וכפיה תמכו פלך :
.egenum ad *miſit* ſuas manus & : *afflictum* ad extendit ſuam *Volam*
20 כפה פרשה לעני וידיה שלחה לאביון :
.*coccinis* veſtita ej° *domus* omnis quia :nive à ſuæ *domui* timebit Non
21 לא־תירא לביתה משלג כי כל־ביתה לבש שנים :
.ejus indumentum purpura &, byſſus : ſibi fecit *Tapetia*
22 מרבדים עשתה־לה שש וארגמן לבושה :
.terræ ſenioribus cum *ipſum ſedendo in* : *ejus maritus* portis in Notus
23 נודע בשערים בעלה בשבתו עם־זקני־ארץ :
.negociatori tradidit cingulum & : vendidit & , fecit *Sindonem*
24 סדין עשתה ותמכר וחגור נתנה לכנעני :
.noviſſimo die in ridebit & : ejus indumentum decor &,Fortitudo
25 עוז־והדר לבושה ותשחק ליום אחרון :
.ejus lingua *ſuper miſericordiæ* lex & : *ſapientia in* aperuit ſuum Os
26 פיה פתחה בחכמה ותורת־חסד על־לשונה :
.*edet* non pigritiæ panem & : ſuæ domus vias *Speculans*
27 צופיה הליכות ביתה ולחם עצלות לא תאכל :
, ejus *maritus* : eam *beatificaverunt* & , ejus filii Surrexerunt
28 קמו בניה ויאשרוה בעלה
aſcendiſti tu & : *virtutem* fecerunt filiæ Multæ .eam laudavit &
29 ויהללה : רבות בנות עשו חיל ואת עלית
: pulchritudo *vanitas* & , gratia *Falſitas* .*ipſas* univerſas ſuper
30 על־כלנה : שקר החן והבל היפי
ei Date .laudabitur ipſa , Domini timor mulier
31 אשה יראת־יהוה היא תתהלל : תנו־לה
.ejus opera portis in eam laudent &:ſuarum manuum fructu de
מפרי ידיה ויהללוה בשערים מעשיה :

Verſio VUL. LAT.

18 Guſtavit & vidit quia bona eſt
negotiatio ejus: non extingue-
19 tur in nocte lucerna ejus. Ma-
num ſuam miſit ad fortia, & di-
giti ejus apprehenderunt fu-
20 ſum. Manum ſuam aperuit in-
opi, & palmas ſuas extendit ad
21 pauperem. Non timebit do-
mui ſuæ à frigoribus nivis : o-
mnes enim domeſtici ejus ve-
22 ſtiti ſunt duplicibus. Stragu-
latam veſtem fecit ſibi : byſſus
& purpura indumentum ejus.
23 Nobilis in portis vir ej°, quan-
do ſederit cum ſenatoribus ter-
24 ræ. Sindonem fecit, & vendi-
dit, & cingulum tradidit Cha-
25 nânæo. Fortitudo & decor in-
dumentum ejus, & ridebit in
26 die noviſſimo. Os ſuum ape-
ruit ſapientiæ, & lex clementiæ
27 in lingua ejus. Conſideravit
ſemitas domûs ſuæ, & panem
28 otioſa non comedit. Surrexerũt
filii ejus, & beatiſſimam præ-
dicaverunt; vir ejus, & laudavit
29 eam. Multæ filiæ congrega-
verunt divitias: tu ſupergreſſa
30 es univerſas. Fallax gratia, &
vana eſt pulchritudo : mulier
timens Dominum, ipſa lauda-
31 bitur. Date ei de fructu ma-
nuum ſuarum: & laudent eam
in portis opera ejus.

תרגום TARGUM. PAR. CHALD.

18 וטעמת מטול דטבתא תגרותה ולא דעך
19 בליליא שרגה : יהא פשטא בכונשרא
20 וידהא לבכין מעולא : ידה פשטא לעניא
21 ודרעיה מושיטא לעליבי : לא ידחלון בני
ביתיה מן תלגא מטול דכלהון בני ביתיה
22 לבישין הוו זהוריתא : תשויתא עבדת לה
23 בוצא וארגונא לבושה : ידיע הוה בינת
מדינתא בעלה כד יתיב הוא עם סבי
24 ארעא : פתנא עבדת וזבנת וזונרא יהבת
25 לכנענאה : עושנא והדרה לבושה ונחכא
26 ביומא אחריתא : פומה פתחת בחכמתא
27 ונימוסא דחסדא על לישנה : וגלין
ארחתא דביתה ולחמא חבינות לא
28 אכלה: קמו בנהא ויהבון לה טובא בעלה
29 ומשבחה : סגיען בנתא דקניי עתרא ואת
30 עבדת על כלהין: מטול דשקרא הוא חנא
וסריק הוא שופרא אתתא דחלתיה
31 דאלהא היא משתבחא : הבו לה מן פרי
דידהא ונשבחונה עובדהא בתרעי :

Verſio Latina.

TETH. Et guſtavit quoniam bona eſt negotiatio ſua, & non extinguetur in nocte lucerna ejus. JOD. Manum ſuam extendit ad vertibulum & manus ejus tenuerunt fuſum. CAPH. Manum ſuam extendit ad inopem, & brachia ſua miſit injuriam patientib°. LAMED. Non timebunt filii domus ejus à nive, quoniã omnes domeſtici ej veſtiti ſunt coccineis. MEM. Strata fecit ſibi : byſſus & purpura indumentum ejus. NUN. Notus eſt in provinciis marit° ejus, quando ſederit cum ſenioribus terræ. SAMECH. Sindonem fecit, & vendidit, & cingulum tradidit mercatori. AIN. Fortitudo & decor indumentum ejus, & ridebit in die noviſſimo. PHE. Os ſuum aperuit in ſapientia, & lex gratiæ in lingua ejus. SADIC. Manifeſtæ ſunt viæ domus ejus, & panem pigredinis non comedit. COPH. Surrexerunt filii ejus, & beatitudinem il dederunt : vir ejus & laudavit eam. RES. Multæ filiæ poſſederunt divitias, ſed tu ſuperâſti univerſas. SIN. Quoniam fallax eſt gratia, & vana pulchritudo : Mulier timens Deum, ipſa laudatur. THAU. Date ei de fructibus manuum ſuarum, & laudent eam opera ſua in portis.

FINIS PROVERBIORUM.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

اَلْفَصْلُ ٱلتَّاسِعُ وَٱلْعِشْرُونَ *

1 * الانسان الموبخ افضل من الانسان الغليظ العنق * لانه اذا تلهب بغتة فليس له شفا *
2 * المقسطون اذا مدحوا الشعوب يسرون * والمنافقون اذا ترأسوا ضاقت بالناس امورهم *
3 4 * الانسان اذا احب الحكمة يسر اباه * ومن يراعي الزواني يضيع ثروته * الملك العدل
5 يقيم شان البلدة * والرجل المتعدي السنة ينقضها ويخربها * من يصلح شبكة لدى
6 وجه صديقه * تحصل فيها رجلاه * في اقتران الانسان الخطية فخا عظيما * والمقسط يكون
7 في الفرح والسرور * المقسط يعرف ان يحكم في احقر الاشياء * والمنافق ما يفقه علما *
8 والمسكين لن يوجد عنده عقل عالم * الناس المفسدون احرقوا مدينتهم * والحكماء
9 استعادوا الغيظ * الانسان الحكيم يحكم للامم * والرجل الطالح اذا اغتاظ يضحك
10 عليه * فما يجزع ولا يتوقى * الناس المشاركون الدماء يمقتون المقسط * والمقومون يطلبون
11 12 نفسه * الجاهل يخرج جميع غضبه * والحكيم يخبوه في كل جهة * الملك اذا اطاع كلاما
13 ظالما * فجميع الذين تحت يده عادلون عن الشريعة * المقرض والغريم اذا اجتمع احدهما
14 مع الآخر * فالرب يتفقد احوالهما كليهما * الملك اذا حكم للمساكين بالحق * فقد
15 انتصب كرسيه للشهادة * الجراحات والتوبيخات يمنحان حكمة * والصبي الضال يخزي
16 والديه * اذا كان المنافقون كثيرين صارت خطايا كثيرة * والمقسطون اذا سقط اوليك
17 18 صاروا مخوفين * ادب ابنك فيحبك * ويمنح نفسك زينة * في امة متجاوزة السنة لن
19 يوجد مفسر * ومن يحفظ الشريعة مغبوط * العبد الفظ ما يودب بالاقوال * لانه ان فهم
20 لكنه ما يطيع * اذا رايت انسانا في اقواله عجولا * فاعلم ان الجاهل له رجاء اكثر
21 منه * من يتدلل ويبطر منذ صباه * سيكون عبدا ويتالم على نفسه اخيرا *
22 23 * الرجل الغضوب ينفذ طفرا * والانسان السخوط يفتح مناسي الخطايا * المعظم يذلل
24 الانسان * والمتواضعين اللب يقول لهم الرب ما يزينا به * من يقاسم السارق يمقت
نفسه * واذا حضرت اليمين اذا سمعوا بها ما يعترفون *

CAP. XXIX.

Homo corrigibilis excellentior eſt homine duræ cervicis : quia cùm repen ſuccenſus fuerit, nullam habebit ſa tem. Juſti cùm laudantur, populi ga deat : impii verò cùm principatum o tinuerint, faſtidio ſunt hominibus eorum. Homo, cùm amaverit ſa tiam, lætificat patrem ſuum : & indulget ſcortis, perdet opes ſuas. juſtus erigit famam patriæ: & vir varicator legis, deſtruit eam & ſtat illam. Qui parat rete coram cie amici ſui, eo capientur pedes In adhæſione hominis peccato, la ingens : juſtus autem erit in gaudi exultatione. Juſtus novit judicar bus viliſſimis : impius autem non ligit doctrinam : & apud pauperem invenitur intellectus ſciens. Ho corruptores combuſſerunt civitatem & ſapientes deteſtantur furorem. mo ſapiens judicabit populis : & improbus, cùm iratus fuerit, ir tur : attamen nec veretur, nec vet. Homines participes ſanguinum, habent juſtum : recti autem qu animam ejus. Stultus profert iram ſuam : at ſapiens abſcondit in omni occaſione. Rex cùm co ſermoni iniquo, omnes ii qui ſu manu ejus, tranſgreſſores ſunt Fœnerator & debitor dum alte altero conveniunt, Dominus conditiones amborum. Rex cùm caverit pauperibus in veritate, th ſedes ejus in teſtimonium. Vuln correptiones tribuunt ſapientiam: f lius perditus confundit genitores Cùm impii ſunt multi, fiunt p multa : juſti verò, cùm ceciderin fiunt pavidi. Erudi filium tuum, mabit te, & dabit animæ tuæ tum. In gente tranſgrediente nullo modo invenietur Interpr qui cuſtodit legem, beatus. Ser ſcolus non eruditur ſermonibus quanquam intelligat, tamen n dit. Cùm videris hominem in nibus ſuis præcipitem, ſcito ma jorem eſſe ſpem quàm illius. Q litur, & delicate nutritur à ſua, erit ſervus ; & dolebit nimam ſuam poſtremò. Homo dus permeare facit irruptionem homo indignabundus aperit f catorum. Superbia humiliat & humilibus corde Dominus quibus corroborat. Qui p fure, odit animam ſuam: & eſt juſjurandum, audiens fatentur.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܛܥܡܬ ܕܛܒܐ ܗܝ ܬܐܓܘܪܬܗ. ܘܠܐ ܕܥܟ ܗܘܐ ܫܪܓܗ ܠܠܝܐ ܟܠܗ. * ܘܐܕܪܥܝܗ ܐܘܫܛܬ 18
ܒܚܟܝܡܘܬܐ. ܘܐܝܕܝܗ ܐܚܝܕܢ ܠܥܙܠܐ. * ܐܝܕܝܗ ܦܫܛܬ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܐܕܪܥܝܗ ܐܘܫܛܬ 19 20
ܠܚܣܝܪܐ. * ܘܠܐ ܕܚܠܝܢ ܗܘܘ ܒܢܝ ܒܝܬܗ ܡܢ ܬܠܓܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܠܒܝܫܝܢ 21
ܗܘܘ ܙܗܘܪܝܬܐ. * ܫܘܝܬܐ ܥܒܕܬ ܠܗ. ܘܢܚܬܐ ܕܒܘܨܐ ܘܐܪܓܘܢܐ. * ܝܕܝܥ ܗܘܐ ܒܥܠܗ 22
ܒܝܢܬ ܡܕܝܢܬܐ. ܟܕ ܝܬܒ ܗܘܐ ܒܝܢܬ ܣܒܐ ܕܐܪܥܐ. * ܣܕܝܢܐ ܥܒܕܬ ܘܙܒܢܬ. ܘܐܣܪܐ 23 24
ܝܗܒܬ ܠܟܢܥܢܝܐ. * ܥܘܫܢܐ ܘܗܕܪܐ ܠܒܘܫܗ. ܘܚܕܝܐ ܒܝܘܡܐ ܐܚܪܝܐ. 25
* ܦܘܡܗ ܦܬܚܬ ܒܚܟܡܬܐ. ܘܢܡܘܣܐ ܕܛܝܒܘܬܐ ܥܠ ܠܫܢܗ. * ܘܦܬܝܚܢ ܐܘܪܚܬܐ 26 27
ܕܒܝܬܗ. ܠܚܡܐ ܕܚܒܝܠܘܬܐ ܠܐ ܐܟܠܬ. * ܩܡܘ ܒܢܝܗ. ܘܛܘܒܢܗ ܝܗܒܘ ܠܗ 28
ܘܒܥܠܗ ܫܒܚܗ. * ܣܓܝܐܬܐ ܒܢܬܐ ܩܢܝ ܥܘܬܪܐ. ܐܢܬܝ ܕܝܢ ܥܠܝܬܝ ܥܠ ܟܠܗܝܢ. 29
* ܫܩܪܐ ܗܝ ܫܘܦܪܐ. ܘܣܪܝܩ ܗܘ ܫܘܦܪܐ. ܐܢܬܬܐ ܕܕܚܠܐ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܗܝ ܬܫܬܒܚ. 30
* ܗܒܘ ܠܗ ܡܢ ܦܐܪܐ ܕܐܝܕܝܗ. ܘܢܫܒܚܘܢܗ ܥܒܕܝܗ ܒܬܪܥܐ. 31

* ܫܠܡ ܟܬܒܐ ܕܡܬܠܐ ܕܫܠܝܡܘܢ ܒܪ ܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ.
ܕܗܘܝܢ ܦܬܓܡܘܗܝ ܐܠܦܐ ܘܬܡܢܐ ܡܐܐ ܘܫܬܝܢ ܘܬܠܬܐ *

* Et guſtavit bonam eſſe negotiationem ſuam : & non extinguebatur lucerna ejus totâ nocte. 18
Et brachia ſua extendit cum ſolertia, manúſq; ſuas ad fuſum. 19
Manus ſuas extendit pauperibus, & brachia ſua protendit ad inopes. 20
Et non metuebant domeſtici ejus nivem, quia omnes veſtiti erant croceis. 21
Stratum ſibi fecit, & indumenta byſſina atque purpurea. 22
Celebris erat maritus ejus inter urbes, dum ſederet inter ſeniores terræ. 23
Linteum fecit, ac vendidit : & cingulum tradidit Chananæis. 24
Fortitudo & decus veſtimentũ ejus, & gaudebit in die poſtremo. 25
Os ſuum aperuit cum ſapientia, & lex miſericordiæ ſuper linguâ ejus. 26
Et apertæ ſunt viæ domûs ejus : panem ſuum ignaviter non comedit. 27
Surrexerunt filii ejus, & tribuerunt ei beatitudinem : maritus quoq; ejus laudavit eam. 28
Complures etiam filiæ ejus poſſederunt divitias : Tu verò omnes excelluiſti. 29
Fallax eſt decor, & vana pulchritudo : & mulier quæ Dominum timet, ipſa laudabitur. 30
Date ei de fructibus manuum ſuarum, & glorificent eam opera ejus in porta. 31

Finis Libri Proverbiorum Salomonis filii David regis Iſrael, complectentis verſus mille octingentos ſexaginta tres.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* فتعرقلوا اذا اتقوا الناس وخجلوا منهم * ومن توكل على الرب سيفرح * النفاق يمنح الانسان 25
غلطا وزللا * ومن توكل على سيده يسلم * كثيرون يخدمون امام وجوه الرؤساء والمدبرين * ومن 26
الرب يصير العدل للانسان * الانسان المقسط رذالة عند الرجل الظالم * والطريقة المقومة 27
رذالة عند الحائد عن السنة * الامراة الفهمة من يجدها * من هذه سجيتها هي اكرم من 10
الحجارة والجواهر النفيسة * قلب رجلها واثق بها * من هذه صورتها ما تعوزها الذخاير الجليلة * 11
* لانها تعمل برجلها طول عمرها الخير لا الشر * مدت يدها الى الصوف والكتان * واذا سرحتها 12 13
عملت بيديها اعمالا نافعة * وصارت كمركب التجر فافاد من بلدة بعيدة * وجمعت ثروتها * 14
* وقامت منذ الليالي * ومنحت اهل منزلها الطعمة واعمالا لخادميها * لما رات فلاحة ابتاعتها * ومن 15 16
اعمال يديها نصبت فيه * حقوها منزر شديدا * ومدت يديها الى الصوف * وذاقت ان العمل 17
جيد هو * فما تطفي طول الليل سراجها * مدت باعها الى الاعمال الموافقة * وحرصت يداها الى 18 19
المغزل * ومنحت يديها الى الفقير * ومدت ثمرها الى المسكين * رجلها ما يهتم في الذين بمنزله 20 21
ان ابطا في موضع ما * جماعة الذين عندها قد البستهم كسوتهم * وعملت لرجلها حلة
مبطنة * وعملت لها ملابس من القرمز والبرفير * فصار رجلها مشار اليه في الابواب * واذا جلس 22 23
في الجمع مع الشيوخ الساكنين الارض * عملت سبائن وباعتها لاهل بصرى * وميازر وباعتها 24
للكنعانيين * فتحت فمها باصغاء ووعي سنة الكلام * وجعلت للسانها ترتيبا * وتسربلت
قوة وحسن بهاء * وفرحت في الايام الاخيرة * مسالك منزلها ضيقة * ما اكلت اغذية عاجزة *
فتحت فمها بحكمة وباستواء سنة المنطق * وصدقتها انهضت اولادها فاستغنوا * ورجلها سبحها
ومدحها * بنات كثيرات ملكن الغناء * وكثيرات صنعن قوة * وانت استعليت عليهن *
وارتفعت اكثر منهن كلهن * فلن توجد فيك مرضيات كاذبة * وجمال امراة باطلا * لان
الامراة ذات الفهم تبارك * ولتسبحها مخافة الرب * اعطوها من اثمار شفتيها * وليسبح في
الابواب رجلها *

* تمت بعون الله تعالى وحسن توفيقه اداب سليمان المستعجم تلخيصها *
التي استكتبها اصدقاء حزقيا ملك يهودا *

* والسبح لله دايما ابدا *

* *Quare implicati ſunt dum timuerunt homines, & veriti ſunt eos : qui autem confiderit in Domino, gaudebit. Impietas cauſat homini errorem & lapſum : & qui confidit in Domino ſuo, ſalvabitur.* 25
Multi miniſtrant coram faciebus Principum & gubernatorum : & à Domino æquitas fiet homini. 26
Vir juſtus, abominatio apud virum iniquum : & via recta, execratio apud declinantem à lege. 27

Ex Cap.31.

Mulierem prudentem quis inveniat ? cujus enim conditio talis eſt, pretioſior eſt lapidibus & gemmis eximiis. 10
Cor viri ejus tutum eſt in ea. Ei quæ iſtiuſmodi eſt, non deerunt theſauri præclari. 11
Nam exercet in virum ſuum totâ ætate ſuâ bonum, non malum. 12
Extendit manum ſuam ad lanam & linum : & cùm texuerit ea, componit manibus ſuis opera utilia. 13
Factáque eſt quaſi navis quæ mercata eſt, & lucrum attulit è regione longinqua; & congregavit opes ſuas. 14
Et ſurrexit de noctibus, & dedit domeſticis ſuis cibos, & exercitia miniſtris ſuis. 15
Quando vidit agrum, emit eum : & de operibus manuum ſuarum plantavit poſſeſſionem. 16
Lumbus ejus eſt accinctus fortiter, & extendit manus ſuas ad lanam, & guſtavit laborem eſſe bonum : quapropter non extinguit totâ nocte lucernam ſuam. 17
Extendit brachium ſuum ad opera opportuna. 18
Et ſolicitavit manus ſuas ad fuſum. 19
Et aperuit manus ſuas inopi, & porrexit fructum ſuum pauperi. 20
Vir ejus non eſt ſolicitus de iis qui ſunt domi ſuæ, ſi demoretur aliquo in loco: cœtus enim eorum qui ſunt apud ipſam, jam induit eos veſtibus eorum. 21
Fecitque viro ſuo veſtes duplices, & fecit ſibi indumenta ex byſſo & purpurâ. 22
Unde vir ejus digito oſtendebatur in portis, & dum ſederet in concilio cum ſenibus habitantibus terram. 23
Fecit mantilia, & vendidit incolis Boſra : (urbs eſt in Meſopotamia) *& ſyndones, vendidítque illas Chananæis.* 24

verſ.25.poſtponitur.26.

Aperuit os ſuum cum attentione, & juxta ſenſum regulæ ſermonis : & conſtituit linguæ ſuæ ordinem. 26
Et amicta eſt fortitudine & decore claritatis : & gaviſa eſt in diebus ultimis. 25
Semitæ domûs ejus ſunt arctæ : non manducavit cibos otioſa. Aperuit os ſuum cum ſapientia & ad normam legis ſermonis. 27
Et eleemoſyna ejus erexit filios ſuos, & ditati ſunt : & vir ejus laudavit eam, & celebravit illam. 28
Filiæ multæ poſſederunt divitias, & multæ fecerunt potentiam : at tu ſuperâſti eas, & elevata es plus iis omnibus. 29
Haudquaquam reperiuntur in te gratiæ falſæ, & formoſitas mulieris fruſtrà : quia mulier intellectu prædita benedicetur & ſanè laudabit eam timor Domini. 30
Date ei de fructibus labiorum ſuorum, & laudetur in portis vir ejus. 31

Completa eſt, excelſo Deo juvante, rectéque diſponente, Diſciplina Salomonis, cujus expoſitio eſt valdè ardua, quámque ſcripſerunt amici Ezeciæ Regis Juda.

Et laus Deo perennis ac ſempiterna.

ספר קהלת׃ א

CAP. I. א

,vanitatum Vanitas .Jerusalaim in regis David filii Choheleth ,Verba
1 דברי קהלת בן־דוד מלך בירושלם׃ הבל הבלים
2 utilitatis Quid .vanitas omnia vanitatum vanitas : Choheleth dixit
3 אמר קהלת הבל הבלים הכל הבל׃ מה־יתרון
Generatio ? sole sub *laborabit* quo ,suo labore omni *in* ,homini
4 לאדם בכל־עמלו שיעמל תחת השמש׃ דור
,sol orietur Et .*stans* seculum in terra &,*veniens* generatio & ,*vadens*
5 הלך ודור בא והארץ לעולם עמדת׃ וזרח השמש
.*ibi* *ipse* *oriens* *anhelus* suum locum ad & ,sol *ingredietur* &
ובא השמש ואל־מקומו שואף זורח הוא שם׃
vadens,circuiens,circuiens:aquilonem ad *circuiens &* ,*austrum* *ad* *Vadens*
6 הולך אל־דרום וסובב אל־צפון סובב ׀ סבב הולך
flumina Omnia .spiritus revertitur suos circuitus *super* & ,spiritus
7 הרוח ועל־סביבתיו שב הרוח׃ כל־הנחלים
flumina *quò* locum Ad .*plenum ipsum* non mare & ,mare ad *euntia*
הלכים אל־הים והים איננו מלא אל־מקום שהנחלים
non *laboriosa* *verba* *Omnia* .*eundum ad revertentia* *ipsa* *illuc* *euntia*
8 הלכים שם הם שבים ללכת׃ כל־הדברים יגעים לא־
implebitur nec ,videndo oculus *satiabitur* non : eloqui vir *poterit*
יוכל איש לדבר לא־תשבע עין לראות ולא־תמלא
,est factū quod *quid* & ,erit *quod* *ipsum* fuit quod *Quid* .audiendo *ab* auris
9 אזן משמע׃ מה־שהיה הוא שיהיה ומה־שנעשה
verbum Est .sole sub novum *omne non* & : fiet *quod* *idipsum*
10 הוא שיעשה ואין כל־חדש תחת השמש׃ יש דבר
fuit quod seculis in fuit Jam ? *ipsum* novum hoc vide : *dicat quod*
שיאמר ראה־זה חדש הוא כבר היה לעלמים אשר היה
,erunt qui,posteriorum etiam & , priorum memoria Non .nos ante
11 מלפננו׃ אין זכרון לראשנים וגם לאחרנים שיהיו
Choheleth Ego .*posterum in* erunt qui cum ,memoria *eis* erit non
12 לא־יהיה להם זכרון עם שיהיו לאחרנה׃ אני קהלת
meum cor dedi Et .Jerusalaim in Israel super rex fui
13 הייתי מלך על־ישראל בירושלם׃ ונתתי את־לבי
est factum quod omne *super*,sapientia in investigandū ad & quærendū ad
לדרוש ולתור בחכמה על כל־אשר נעשה
Adam filiis Deus dedit malam *negotiatione* Hanc .cœlo sub
תחת השמים הוא ׀ ענין רע נתן אלהים לבני האדם
sub *sunt facta* quæ opera omnia Vidi .ea in se *affligendum ad*
14 לענות בו׃ ראיתי את־כל־המעשים שנעשו תחת
.spiritus *pastio* & , vanitas universa ecce & : sole
השמש והנה הכל הבל ורעות רוח׃

Versio VUL. LAT.

ECCLESIASTES,
Qui ab Hebræis
COHELETH appellatur.

CAP. I.

1 VErba Ecclesiastæ, filii Da-
2 vid, regis Jerusalē. Vanitas va-
nitatum, dixit Ecclesiastes: va-
nitas vanitatū, & omnia vani-
3 tas. Quid habet amplius homo
de universo labore suo, quo la-
4 borat sub Sole? Generatio præ-
terit, & generatio advenit: ter-
5 ra autē in æternum stat. Oritur
Sol, & occidit, & ad locū suum
revertitur: ibique renascens,
6 Gyrat per Meridiē, & flectitur
ad Aquilonē: lustrans universa
in circuitu pergit spiritus, &
7 in circulos suos revertitur. O-
mnia flumina intrant in mare,
& mare non redundat: ad lo-
cū, unde exeunt flumina, rever-
8 tuntur ut iterùm fluant. Cun-
ctæ res difficiles: non potest eas
homo explicare sermone. Non
saturatur oculus visu, nec auris
9 auditu impletur. Quid est quod
fuit? ipsum ꝙ futurum est: quid
est ꝙ factū est? ipsum ꝙ facien-
10 dum est. Nihil sub Sole novū,
nec valet quisquā dicere; Ecce
hoc recens est: jam enim præ-
cessit in seculis, quæ fuerūt an-
11 te nos. Non est priorū memo-
ria: sed nec eorū quidem, quæ
posteà futura sunt, erit recor-
datio apud eos, qui futuri sunt
12 in novissimo. Ego Ecclesiastes
13 fui rex Israel in Jerusalem, Et
proposui in animo meo quære-
re & investigare sapienter de
omnibus, quæ fiunt sub Sole.
Hanc occupationē pessimā de-
dit Deus filiis hominū, ut occu-
14 parētur in ea. Vidi cuncta, quæ
fiunt sub Sole: et ecce universa
vanitas, & afflictio spiritûs.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ἘΚΚΛΗΣΙΑΣΤΗ'Σ.

ΚΕΦ. α΄.

1 †ΡΉματα Ἐκκλησιαστοῦ υἱοῦ Δαυὶδ βασι-
2 λέως Ἰσραὴλ ἐν Ἱερουσαλήμ. † Ματαιότης
ματαιοτήτων εἶπεν ὁ Ἐκκλησιαστής, †ματαιό-
3 της ματαιοτήτων, τὰ πάντα ματαιότης. †Τίς
περισσεία τῷ ἀνθρώπῳ †ἐν παντὶ μόχθῳ αὐ-
4 τοῦ ᾧ μοχθεῖ ὑπὸ τὸν ἥλιον; † Γενεὰ πορεύεται
καὶ γενεὰ ἔρχεται, †καὶ ἡ γῆ εἰς τὸν αἰῶνα ἕστηκε.
5 † Καὶ ἀνατέλλει ὁ ἥλιος καὶ δύνει ὁ ἥλιος καὶ
εἰς τὸν τόπον αὐτοῦ ἕλκει· † (α)αὐτὸς ἀνατέλ-
6 λων ἐκεῖ Πορεύεται πρὸς Νότον, † καὶ κυ-
κλοῖ (β) πρὸς Βορρᾶν· †κυκλοῖ κυκλῶν πο-
ρεύεται τὸ πνεῦμα, καὶ ἐπὶ κύκλους αὐτοῦ ἐπιστρέ-
7 φει τὸ πνεῦμα. †Πάντες οἱ χείμαῤῥοι πο-
ρεύονται εἰς τὴν θάλασσαν, † καὶ ἡ θάλασσα οὐκ
(γ)ἔστιν ἐμπιμπλαμένη· † (δ) εἰς τὸν τόπον οὗ
οἱ χείμαῤῥοι πορεύονται, † ἐκεῖ αὐτοὶ ἐπιστρέ-
8 φουσι τοῦ πορευθῆναι. †Πάντες οἱ λόγοι ἔγκο-
ποι, †οὐ δυνήσεται ἀνὴρ τοῦ λαλεῖν· †(ε)καὶ οὐ πλη-
σθήσεται ὀφθαλμὸς τοῦ ὁρᾶν, †καὶ οὐ πληρωθήσεται
9 οὖς ἀπὸ ἀκροάσεως. † Τί τὸ γεγονός; αὐτὸ
τὸ γενησόμενον· †καὶ τί τὸ πεποιημένον; αὐτὸ
10 τὸ ποιηθησόμενον. †Καὶ οὐκ ἔστι πᾶν πρόσφα-
τον ὑπὸ τὸν ἥλιον. † Ὃς λαλήσει καὶ ἐρεῖ, Ἴδε
τοῦτο καινόν ἐστιν; †ἤδη(ϛ)γέγονεν ἐν τοῖς αἰ-
ῶσι †τοῖς γενομένοις ἀπὸ ἔμπροσθεν ἡμῶν.
11 † Οὐκ ἔστι μνήμη τοῖς πρώτοις, † καί γε
τοῖς ἐσχάτοις γενομένοις (ζ) οὐκ ἔσται αὐτῶν
μνήμη †μετὰ τῶν(ʺ)γενησομένων εἰς τὴν ἐσχάτην.
12 †Ἐγὼ Ἐκκλησιαστὴς ἐγενόμην †βασιλεὺς
13 ἐπὶ Ἰσραὴλ ἐν Ἱερουσαλήμ. † Καὶ ἔδωκα τὴν
καρδίαν μου τοῦ ἐκζητῆσαι †καὶ τοῦ κατασκέψα-
σθαι ἐν τῇ σοφίᾳ περὶ πάντων †τῶν(η)γινομέ-
νων ὑπὸ τὸν οὐρανόν, † ὅτι περισπασμὸν πονη-
ρὸν ἔδωκεν ὁ Θεὸς τοῖς υἱοῖς(θ)τῶν ἀνθρώπων
14 τοῦ περισπᾶσθαι ἐν αὐτῷ. †Εἶδον σύμπαντα τὰ
ποιήματα τὰ πεποιημένα ὑπὸ τὸν ἥλιον· †καὶ
ἰδοὺ τὰ πάντα ματαιότης καὶ προαίρεσις πνεύματος.

MS.A. Ἐκκλησιαστής. (α) ἀνατέλλων αὐτὸς (β) πρὸς Βορρᾶ, (γ)
ἐμπιπλαμένη· (δ) εἰς τόπον οὗ (ε) καὶ οὐκ ἐμπλησθήσεται (ϛ) γέγον
οὐκ ἔστιν (ʺ) γενηθησομένων, (η) γενομένων (θ) τοῦ ἀνθρώπου

ECCLESIASTES
CAP. I.
VErba Ecclesiastæ, filii Dav
regis (a) Israel in Hierusalem.
Vanitas vanitatum, dixit Eccle
astes, vanitas vanitatū, om
vanitas. (c) Quid superest homi
in omni (d) labore suo, quo labo
sub Sole? Generatio vadit, & ge
ratio venit, & terra (e) in secu
stat. Et oritur Sol, & occidit Sol
et ad locum suum (f) ducit: or
ipse ibi, (g) Vadit ad Austrum, &
gyrat ad Aquilonem: (h) gyra
rans vadit spiritus, & in circu
suos revertitur spiritus. Om
torrentes vadunt in mare, & m
re (i) non est impletum. Ad loc
(k) quo torrentes eunt, illuc
revertuntur ad eundum. Om
sermones (l) graves, (m) non p
rit vir loqui. Et non satiabitur o
lus videndo: & non implebitur
ris ex auditu. Quid est quod f
ipsum quod (n) futurū est. Et q
est quod factū est? ipsum (o) qu
faciendum est. Et non est omn
recens sub Sole. (q) Qui loq
tur ac dicet, Vide, hoc recen
jam fuit in seculis, quæ fue
ante nos. Non est memoria p
& quidem novissimis, cum
fuerint, non erit (r) eorū mem
(s) cum eis qui futuri sunt in n
vissimo. Ego Ecclesiastes fu
super Israel in Hierusalem. E
dedi cor meum ad inquirend
(u) considerandum in sapient
omnibus quæ fiunt sub cœlo.
Quoniam distentionem m
dedit Deus filiis hominum, u
stendantur in ea. Vidi unive
pera, quæ facta sunt sub Sol
ecce omnia (y) vanitas, &
præsumptio spiritûs.

תרגום TARGUM.

א

1 פתגמי נבואה דאתנבא קהלת הוא שלמה בר דוד מלכא דהוה בירושלם׃ כד חזא
2 שלמה מלכא דישראל ברוח נבואה ית מלכות רחבעם בריה דעתיד לאתפלגא עם
ירבעם בר נבט וית ירושלם ובית מוקדשא דאנון עתידין למחרב וית עמא בני ישראל
די אנון עתידין למגלי אמר במימריה הבל הבליא עלמא הדין הבל הבליא כל מה
3 דטרחית אנא ודוד אבא כולא הבלו׃ מה מותר אית לאנש בתר די מות מן כל טורחיה
דהוא טרח תחות שמשא בעלמא הדין אלהן למעסק באוריתא לקבלא אגר שלים
4 לעלמא דאתי קדם מרי עלמא׃ אמר שלמה מלכא ברוח נבואה דרא טבא דצדיקיא
דאזל מן עלמא בגין חובי דרא בישא דרשיעא דעתידין למיתי בתריהון וארעא לעלמי
5 עלמין קימא לסוברא פורענותא דאתי על עלמא בגין חוביהון דבני אנשא׃ וידנח
שמשא ביממא מן סטר מדנחא ואעיל שמשא לסטר מערבא בליליא ולאתריה שחיף
6 ואזל אורח תהומא ודנח למחר מן אתר דהוא נח מתמן מאתמלי׃ אזל כל סטר דרומא
ביממא ומחזר לסטר צפונא בליליא אורח תהומא מחזר מחזר ואזל לרוח עבר דרומא
בתקופת ניסן ותמוז ועל סחרנוהי תיב לרוח עבר צפונא בתקופת תשרי וטבת נפק
7 מחרכי מדנחא בצפרא ואעיל לחרכי מערבא ברמשא׃ כל נחליא ומבועי מיא אזלין
ונגדין למי אוקינוס דמסחר לעלמא כגושפנקא ואוקינוס ליתוהי מתמלי ולאתר
8 דנחליא אזלין ונגדין תמן אנון תיבין למיזל מצנורי תהומא׃ כל פתגמיא דעתידין למהוי
בעלמא אשתלהיאו בהון נביא קדמאין ולא יכילו למשכח סופיהון ברם הכי לית ליה
רשו לגבר למללא ביה דעתיד למיתי בתרוהי ולא יכילא עינא למחזי כל מה דעתיד
למהוי בעלמא ולא יכילא אודנא לאתמלאה מלמשמע כל פתגמי כל דיירי ארעא׃
9 מה דהוות מן קדמת דנא הוא עתיד למהוי בתר כן ומה דאתעבד מן קדמת דנא הוא
עתיד לאתעובדא עד סוף כל דריא עלמא ולית כלום פתגם חדת בעלמא הדין תחות
10 שמשא׃ אית פתגם דיימר אנש חזי דין פתגם חדת הוא הא כבר הוה לעלמין ביומי דריא
11 די הוו לקדמנא׃ לית דכרנא לדריא קדמאין ואף לבתראין דעתידין למהוי לא יהי להון
12 דכרנא עם דריא דיהון ביומי מלכא משיחא׃ כד הוה שלמה מלכא יתיב על כורסי
מלכותיה אתגבה לביה לחדא על עתריה ועבר על מימרא דיי וכנש סוסון ורתיכין
ופרשין סגיאין וצבר כספא ודהבא לחדא ואתחתן בעממין נוכראין מן יד תקיף רוגזא
דיי עלוהי וטרד יתיה מן כורסי מלכותיה בכן אמר שלמה אנא קהלת דהוי שמיה
13 שלמה מתקרי מן קדמת דנא הויתי מלכא על ישראל בירושלם׃ ומסרית ית לבי
למתבע אולפן מן קדם יי בזמן דאתגלי לי בגבעון לאללותי ולמשאל יתי מה אנא צבי
מניה ואנא לא תבעית מניה אלהן חוכמתא למידע בין טב לביש וסוכלתנו על כל מה
דאתעבד תחות שמשא בעלמא הדין וחזית כל עובדי בני אנשא חיבא גון ביש די יהב
14 יי לבני אנשא לאסתגפא ביה׃ חזיתי ית כל עובדי בני אנשא די אתעבידו תחות שמשא
בעלמא הדין והא כולא הבלא ותבירות רוחא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina

CAPUT I.

VErba *prophetiæ, quæ vaticinatus est Ecclesiastes* (ipse est Sel
filii David regis qui fuit in Jerusalem. *Cum videret Selomoh rex Is*
spiritum propheticum, regnum Roboam filii sui divisum iri cum
filio Nebat, Jerusalem etiam domumq́; sanctuarii destructū iri, &
filiorum Israel exulaturum, dixit in verbo suo: Vanitas vanitatum
hoc: vanitas vanitatum omne quod laboravi *ego, & David pat*
omnino vanitas. Quid reliquum est homini postquàm mortuus fu
omni labore suo, quem ipse laboravit sub sole in hoc seculo? *nisi ut*
ram legi ad accipiendum præmium perfectum in seculo venturo co
mino mundi. Dixit Selomoh rex per spiritum propheticum, felix ge
justorum, quæ abiit de mundo, propter peccata generationis male
qui venturi sunt post eos; & terra in secula seculorum stat, *ad*
dum vindictam venturam super mundum causa delictorum filior
nis. Oritur sol in die ex latere Orientis, & ingreditur sol in latu
dentis in nocte, & ad locum suum *paulatim proripit se,* & ambula
am abyssi, & oriturus est cras ex loco unde ipse ortus est heri. Per
omne latus Meridiei *in die,* & redit ad latus Aquilonis *in nocte va*
gyrat, circuit, & ambulat *ad ventum plagæ Australis in revolution*
& Tammuz, & per circuitus suos revertitur *ad ventum plagæ Bo*
revolutione Tisri & Tebeth: egreditur carceres Orientis mane, &
tur cancellos Occidentis vesperi. Omnia flumina & scaturigines
vadunt & fluunt in mare Oceanum, quod circuit mundum *instar a*
Oceanus non impletur: & ad eundem locum quò flumina vadunt &
ipsa redeunt, ut vadant per meatus abyssi. In omnib⁹ verbis quæ pa
ut fiant in seculo, defatigati sunt prophetæ antiqui, & non potueru
nire fines eorum: verùm utique non est facultas viro ut loquatur q
turum est post se, & non potest oculus videre omne quod futurum
cidat in mundo, & non potest auris impleri audiendo verba omniu
larum terræ. Id quod fuit ab antiquo, ipsum futurum est posthac: &
factum est ab antiquo, ipsum futurum est ut fiat usque ad finem om
nerationum seculi: & non est ulla res nova in seculo hoc sub sole.
de qua dicat homo, Vide, hæc res nova est, ecce antè fuit in seculo
bus generationum, quæ fuerunt ante nos. Non est memoria genera
prioribus, & etiam posteris qui futuri sunt, non erit illis memoria
nerationibus quæ erunt in diebus regis Christi. *Cùm Selomoh rex*
super solium regni sui, extulit se cor ejus valde ob divitias suas, &
gressus est verbum Domini, collegitque equos & currus & equit
plurimos; accumulavit etiam argentum et aurum abundanter & co
affinitatem cum populis alienis: evestigiò invaluit ira Domini in
deturbavit eum de solio regni sui: tunc dixit Selomoh, Ego Eccle
Selomonis nomine dictus antehac, fui rex super Israel in Jerusalem.
didi cor meum ad investigandam doctrinam à Domino, *tempore*
paruit mihi in Gibeon, ut exploraret me, & petere potuissem quic
lem ab eo: at ego nihil aliud postulavi ab eo nisi sapientiam, ad
dum inter bonum & malum, & intellectum de omni quod factum
sole in mundo hoc: & vidi quòd omnia facta filiorum hominis
sint negotio malo, quod dedit Domin⁹ filiis hominis, ut affligere
Vidi omnia facta filiorum hominis quæ fiunt sub sole in mun
ecce omne vanitas & confractio spiritûs.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܟܬܒܐ ܕܩܘܗܠܬ ܕܗܘ ܫܠܝܡܘܢ ܒܪ ܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܩܘܗܠܬ ܒܪ ܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܗܒܠ ܗܒܠܝܢ ܐܡܪ 1 2
ܩܘܗܠܬ ܗܒܠ ܗܒܠܝܢ. ܟܠ ܡܕܡ ܗܒܠ. * ܡܢܐ ܝܘܬܪܢܐ ܠܒܪܢܫܐ. ܒܟܠ 3
ܥܡܠܗ ܕܗܘ ܥܡܠ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܕܪܐ ܐܙܠ ܘܕܪܐ ܐܬܐ. ܘܐܪܥܐ ܠܥܠܡ ܩܝܡܐ. 4
* ܕܢܚ ܫܡܫܐ ܘܥܪܒ ܫܡܫܐ. ܘܠܐܬܪܗ ܕܢܚ ܗܘ ܐܙܠ. ܕܬܡܢ ܐܦ ܗܘ ܕܢܚ. 5
* ܐܙܠ ܠܬܝܡܢܐ ܘܡܬܟܪܟ ܠܓܪܒܝܐ. ܡܬܟܪܟܢܐ ܡܬܟܪܟ ܘܐܙܠ ܪܘܚܐ. ܘܥܠ ܚܘܕܪܘܗܝ 6
ܬܐܒ ܪܘܚܐ. * ܟܠ ܢܚܠܐ ܪܗܛܝܢ ܠܝܡܐ. ܘܝܡܐ ܠܐ ܡܬܡܠܐ. ܠܐܬܪܐ ܕܪܗܛܝܢ ܢܚܠܐ. ܠܬܡܢ 7
ܗܢܘܢ ܬܝܒܝܢ ܠܡܐܙܠ. * ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܠܐܝܢ. ܠܐ ܢܫܟܚ ܓܒܪܐ ܠܡܡܠܠܘ. 8
ܘܠܐ ܣܒܥܐ ܥܝܢܐ ܠܡܚܙܐ. ܘܠܐ ܡܬܡܠܝܐ ܐܕܢܐ ܠܡܫܡܥ. * ܡܕܡ ܕܗܘܐ. ܗܘ ܗܘܐ. ܘܡܕܡ 9
ܕܐܬܥܒܕ. ܗܘ ܡܬܥܒܕ. ܘܠܝܬ ܡܕܡ ܚܕܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܟܠ ܕܢܡܠܠ 10
ܘܢܐܡܪ. ܚܙܝ ܗܢܐ ܚܕܬ ܗܘ. ܟܒܪ ܗܘܐ ܡܢ ܥܠܡܝܢ ܕܗܘܘ ܡܢ ܩܕܡܝܢ. * ܠܝܬ 11
ܕܘܟܪܢܐ ܠܩܕܡܝܐ. ܐܦ ܠܐ ܠܐܚܪܝܐ ܕܗܘܝܢ. ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܕܘܟܪܢܐ: ܥܡ ܐܝܠܝܢ
ܕܗܘܝܢ ܠܐܚܪܝܬܐ. * ܐܢܐ ܩܘܗܠܬ ܗܘܝܬ ܡܠܟܐ ܥܠ ܐܝܣܪܝܠ ܒܐܘܪܫܠܡ. 12
* ܘܝܗܒܬ ܠܒܝ ܠܡܒܥܐ ܘܠܡܬܒܩܝܘ ܒܚܟܡܬܐ. ܥܠ ܟܠ ܕܐܬܥܒܕ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. 13
ܥܢܝܢܐ ܒܝܫܐ ܝܗܒ ܐܠܗܐ ܠܒܢܝ ܐܢܫܐ. ܕܢܬܥܢܘܢ ܒܗ. * ܚܙܝܬ ܟܠ ܥܒܕܐ ܕܐܬܥܒܕ 14
ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܘܗܐ ܟܠ ܡܕܡ ܗܒܠ. ܘܬܘܙܦܐ ܕܪܘܚܐ.

LIBER

COHELETH,

Nempè Salomonis filii Davidis
Regis Iſrael.

CAPUT I.

Sermones Coheleth filii David Regis Jeruſalem. 1
Vanitas vanitatum, ait Coheleth: 2
vanitas vanitatum: omnia vanitas. Quod 3
emolumentum eſt homini ex omni labore
quo laborat ſub ſole? Ætas præterit, & 4
ætas ſuccedit: terra autem in æternũ perſtat.
Oritur ſol, & occidit ſol: & ad locum ubi ori- 5
tur, idem revertitur, ut inde rurſus oriatur:
Pergit ad Auſtrum, & flectitur ad Aquilo- 6
nem. In orbem circumagitur permeátq; ventus, & ad circulos ſuos remeat ventus. Omnes 7
torrentes exonerant ſeſe in mare, attamen
mare non impletur. Ad locum *enim* quò defluunt torrentes, eodem ipſi revertuntur, ut
iterum fluant. Omnes ſermones fatigantur, 8
homo non ſaturabitur loquendo, neque ſaturatur oculus videndo, nec impletur auris audiendo. Quod fuit, ipſum eſt: & quod factũ 9
eſt, ipſum fit: nec eſt quicquam novum ſub
ſole. Quicquid loquentes dixerimus, Vide, 10
hoc novum eſt, forte fuit à ſeculis quæ nos
præceſſerunt. Non eſt antiquorum memoria, 11
neque poſterorum qui extant, ulla erit memoria apud eos qui poſtmodum futuri ſunt.
Ego Coheleth fui rex ſuper Iſrael in Jeruſa- 12
lem. Et tradidi cor meum ad exquirendam & 13
contemplandam ſapientiam de omni re quæ
facta eſt ſub ſole. Curam ærumnoſam dedit
Dominus hominibus, ut occuparentur in
ea. Perſpexi omne opus quod factum eſt ſub 14
ſole: & ecce omnia vanitas & perturbatio
ſpiritûs.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الخالق الرازق *

* كتاب الجامعة * اقوال الجامع ابن داوود *

* الفصل الاول *

* باطلة الاباطيل قال الجامع سليمان بن داوود * باطلة الاباطيل * كافة الاشياء باطلة
* ما الفضل للانسان في جميع تعبه الذي يتعب فيه تحت الشمس * جيل يمضي
وجيل يجي * والارض الي الابد هي * وتشرق الشمس وتغيب الشمس وتنجذب الي
موضعها * اذا اشرقت هناك * تذهب الي القبلة وتدور الي الشمال * تدور جايلة فتمضي
الرياح * والي دورانها تعود الرياح * الاودية كلها تذهب الي البحر والبحر ما يحصل ممتليا
الي المكان الذي تمضي اليه الاودية اليه تعود نفسها * فتذهب الاقوال كلها منقطعة
ما يستطيع الانسان الا يتكلم * والعين ما تشبع من النظر * والاذن ما تمتلي من
السماع * ما الامر الكاين المكون نفسه * وما هو الشي الصاير المصنوع نفسه * وكل ليس
تحدث تحت الشمس * لم يقدر احد ان يتكلم او يقول ابصر هذا الشي فانه جديد
هو * وقد صار فيما سلف في الدهور الصايرة قبلنا * ولن يوجد ذكرا للدهور الاولة
ولا للصايرة اخيرا * يعني للمكونة ما يكون لها ذكرا بعد الحكومة اخيرا
* انا الجامع صرت ملكا على اسراييل باورسليم * وبذلت قلبي ان ينبغي ويتامل
بحكمة على جميع الكاينات تحت السماء * فان الله اعطا ابناء الناس تعلقا ليتشاغلوا
به * وعرفت في جميع الصنايع المصنوعة تحت الشمس * فاذا هي كلها باطلة واختيار
الروح *

IN NOMINE DEI
Creatoris, Largitoris.

LIBER

COLLECTANEORUM,

Hoc eſt,

SENTENTIÆ Collectoris,
filii David.

CAP. I.

Vanitas vaniſſima, inquit Collector 2
Solomon filius David, vanitas vaniſſima: res omnes vanæ ſunt. Quid re- 3
ſidui habet homo ex toto labore ſuo,
quo ſub ſole contendit? Ætas præterit, 4
ætáſque ſuccedit: & terra æternùm perſtat. Oriturque ſol, & occidit ſol, ſeſe- 5
que recipit in locum ſuum: & cùm
illic ortus eſt, Pergit ad Meridiem, 6
tum flectitur ad Septentrionem. In gyrum errantes abeunt venti, & ad revolutionem ſuam redeunt venti. Tor- 7
rentes omnes in mare ſe recipiunt, mare tamen non invenitur plenum: ad
locum in quem ſe recipiunt torrentes,
ad eundem ipſimet recurrunt. Et verò 8
ſermones omnes deficientes pereunt, non
poteſt homo quin loquatur, & oculus
non ſatiatur videndo, neque auris impletur audiendo. Quænam eſt res præ- 9
ſens? eadem quæ extitit. Et quænam
eſt res quæ fit? eadem quæ facta
fuit, nihil eſt ſub ſole novum. Ne- 10
mo poteſt pronuntiare aut dicere, Vide
hoc, quia novum eſt: nam fortaſſe
fuit olim ſeculis quæ nos præceſſerunt.
Neque enim reperitur memoria ſeculo- 11
rum præcedentium, neque poſthac ſuccedentium. Hoc eſt, hujus creaturæ
non erit memoria poſt judicium in fine.
Ego Collector fui rex ſuper Iſrael Je- 12
roſolymis. Et prodidi cor meum ut 13
expeteret & contemplaretur ſapienter
quæcunque fiunt ſub cœlo: (Deus
enim dedit filiis hominum negotium
perplexum quo ſe occupent.) Et cog- 14
novi omnia opera quæ fiunt ſub ſole,
& ecce omnia ſunt inania, & appetitus ſpontaneus animi.

.numerari *poterit* non defectus & :dirigi *poterit* non Perversum
15 מעות לא־יוכל לתקן וחסרון לא־יוכל להמנות :
,feci magnificare *ecce* Ego : dicendo ,meo corde cum ego sum Locutus
16 דברתי אני עם־לבי לאמר אני הנה הגדלתי
super meas facies ad fuit qui omnem super sapientiam addidi &
והוספתי חכמה על כל־אשר־היה לפני על־
dedi Et .scientiæ & ,sapientiæ *multum* vidit meum cor & : Jerusalaim
17 ירושלם ולבי ראה הרבה חכמה ודעת : ואתנה
: stultitiam & ,insanias , scientiam & ,sapientiam sciendum ad meum cor
לבי לדעת חכמה ודעת הוללות ושכלות
multitudine in Quia .spiritus *confractio ipsum* hoc etiam quod agnovi
18 ידעתי שגם־זה הוא רעיון רוח : כי ברב
.dolorem *addet* scientiam *addet* & :ira multa sapientiæ
חכמה רב־כעס ויוסיף דעת יוסיף מכאוב :

CAP. II. ב

vide & , lætitia in te *tentabo* nunc Vade:meo corde in *ego* Dixi
1 אמרתי אני בלבי לכה־נא אנסכה בשמחה וראה
: *insane* , dixi Risui .vanitas hoc etiam ecce & : bonum *in*
2 בטוב והנה גם־הוא הבל : לשחוק אמרתי מהולל
vinũ in *trahendũ ad* meo corde in Investigavi ? *faciens hoc* quid , lætitiæ &
3 ולשמחה מה־זה עשה : תרתי בלבי למשוך ביין
,stultitiã *in apprehendendũ ad* &,sapientia in *ducens* meum cor & :meã carnem
את־בשרי ולבי נהג בחכמה ולאחז בסכלות
sub faciant quod , Adam filiorum bonum *hoc ubi* viderem donec
עד אשר־אראה אי־זה טוב לבני האדם אשר יעשו תחת
mihi ædificavi:mea opera Magnificavi.corũ vitæ dierum numero , cœlis
4 השמים מספר ימי חייהם : הגדלתי מעשי בניתי לי
: paradisos & ,hortos mihi Feci .vineas mihi plantavi , domos
5 בתים נטעתי לי כרמים : עשיתי לי גנות ופרדסים
,aquarum piscinas mihi Feci .fructus omnis *lignum* eis in plantavi &
6 ונטעתי בהם עץ כל־פרי : עשיתי לי ברכות מים
, servos Acquisivi .*ligna* germinantem sylvam illis *ab irrigandum ad*
7 להשקות מהם יער צומח עצים : קניתי עבדים
multa pecoris & ,bovis acquisitio etiam:mihi *fuit* domus filii & ,ancillas &
ושפחות ובני־בית היה לי גם מקנה בקר וצאן הרבה
Coacervavi .Jerusalaim in *meas facies ad* fuerant qui omnib⁹ præ mihi *fuit*
8 היה לי מכל שהיו לפני בירושלם : כנסתי
mihi feci : provinciarum & ,regum *peculium* &,aurum & argentũ etiã mihi
לי גם־כסף וזהב וסגלת מלכים והמדינות עשיתי לי
.*captivas & ,captivam ,hominis* filiorum delicias & ,*cantatrices & ,cantores*
שרים ושרות ותענגות בני האדם שדה ושדות :
.Jerusalaĩ in *meas facies ad fuit qui omni* præ sum auct⁹ &,sum magnificat⁹ &
9 וגדלתי והוספתי מכל שהיה לפני בירושלם
non mei oculi postulaverũt quæ omnia Et .*mihi* stetit mea sapientia insup
10 אף חכמתי עמדה לי : וכל אשר שאלו עיני לא
meũ cor nam : lætitia omni ab meum cor prohibui nec : eis *ab subtraxi*
אצלתי מהם לא־מנעתי את־לבי מכל־שמחה כי־לבי
.meo labore omni de mea pars fuit hoc &,meo labore omni de est lætatum
שמח מכל־עמלי וזה־היה חלקי מכל־עמלי :

VERS. VULG. LAT.

15 Perversi difficilè corriguntur, & stultorũ infinitus est nume- 16 rus. Locutus sum in corde meo, dicens; Ecce magn⁹ effect⁹ sum, & præcessi omnes sapientiâ, qui fuerũt ante me in Jerusalẽ: & mens mea contemplata est 17 multa sapienter, & didici. Dedíque cor meũ ut scirẽ prudentiam atque doctrinã, errorésq; & stultitiã: & agnovi ꝙ in his quoque esset labor, & afflictio 18 spirit⁹: Eò ꝙ in multa sapientia, multa sit indignatio: & qui addit scientiã, addit & laborẽ.

CAP. II.

1 Dixi ego in corde meo; Vadam, & affluã deliciis, & fruar bonis. Et vidi quòd hoc quoq; 2 esset vanitas. Risũ reputavi errorẽ: & gaudio dixi; Quid fru- 3 strà deciperis? Cogitavi in corde meo abstrahere à vino carnem meã, ut animũ meũ transferrẽ ad sapientiã, devitarémq; stultitiam, donec viderem quid esset utile filiis hominum: quo facto opus est sub Sole numero 4 dierum vitæ suæ. Magnificavi opera mea, ædificavi mihi do- 5 mos, & plantavi vineas, Feci hortos, & pomaria, & consevi 6 ea cuncti generis arborib⁹, Et extruxi mihi piscinas aquarũ, ut irrigarẽ sylvã lignorũ ger- 7 minantiũ, Possedi servos & ancillas, multámq; familiã habui, armenta quoque, & magnos ovium greges, ultra omnes qui fuerunt ante me in Jerusalem: 8 Coacervavi mihi argentum, & aurũ, & substantias regum, ac provinciarũ: feci mihi cantores, & cantatrices, & delicias filiorũ hominũ, scyphos & urceos in ministerio ad vina fun- 9 denda: Et supergress⁹ sum opibus omnes, qui ante me fuerũt in Jerusalem: sapientia quoque 10 perseveravit mecũ. Et omnia, quæ desideraverunt oculi mei, non negavi eis: nec prohibui cor meum, quin omni voluptate frueretur, & oblectaret se in his, quæ præparaveram: & hanc ratus sum partem meam, si uterer labore meo.

Versio GRÆC. LXX. Interp. Cum Transl. LAT.

15 †Διεστραμμένον οὐ δυνήσεται (ι) ἐπικοσμηθῆναι, †καὶ ὑστέρημα οὐ δυνήσεται (κ) ἀριθμηθῆναι.
16 †Ἐλάλησα ἐγὼ (λ) ἐν καρδίᾳ μου, τοῦ λέγειν, †(μ) Ἰδοὺ ἐγὼ ἐμεγαλύνθην, †καὶ προσέθηκα σοφίαν ἐπὶ πᾶσιν †οἳ ἐγένοντο ἔμπροσθέν μου ἐν Ἱερουσαλήμ.
17 †(ν) Καὶ ἔδωκα καρδίαν μου τοῦ γνῶναι σοφίαν καὶ γνῶσιν. †καὶ καρδία μου εἶδεν πολλά, σοφίαν καὶ γνῶσιν, †παραβολὰς καὶ ἐπιστήμην. (ξ) ἔγνων ἐγὼ †ὅτι καί γε τοῦτό
18 ἐστι προαίρεσις πνεύματος. †Ὅτι ἐν πλήθει σοφίας πλῆθος γνώσεως, †καὶ ὁ (ο) προστιθεὶς γνῶσιν, προσθήσει ἄλγημα.

MS.A. (ι) τοῦ κοσμηθῆναι, (κ) τοῦ ἀριθμηθῆναι. (λ) ἐν τῇ καρδίᾳ (μ) ἰδοὺ (ν) Καὶ καρδία μου ἴδεν πολλά, σοφίαν καὶ γνῶσιν. καὶ ἔδωκα καρδίαν τοῦ γνῶναι σοφίαν καὶ γνῶσιν, παραβολὰς (ξ) ἔγνων ὅτι καί γε (ο)* προστιθεὶς

ΚΕΦ. β'.

1 †Εἶπον ἐγὼ ἐν καρδίᾳ μου, Δεῦρο δὴ πειράσω σε ἐν εὐφροσύνῃ, καὶ ἴδε ἐν ἀγαθῷ· †καὶ ἰδοὺ
2 καί γε τοῦτο ματαιότης. †Τῷ γέλωτι εἶπα Περιφοράν, †καὶ τῇ εὐφροσύνῃ, Τί τοῦτο ποιεῖς;
3 †Καὶ κατεσκεψάμην εἰ ἡ καρδία μου †ἑλκύσει ὡς οἶνον τὴν σάρκα μου, †καὶ καρδία μου ὡδήγησεν ἐν σοφίᾳ, †καὶ τοῦ κρατῆσαι (α) ἐπ᾽ εὐφροσύνην, †ἕως οὗ ἴδω ποῖον τὸ ἀγαθὸν τοῖς υἱοῖς (β) τῶν ἀνθρώπων, ὃ ποιήσουσιν ὑπὸ τὸν ἥλιον,
4 †ἀριθμὸν ἡμερῶν ζωῆς αὐτῶν. †Ἐμεγάλυνα ποίημά μου, †ᾠκοδόμησά μοι οἴκους, †ἐφύτευσά
5 μοι ἀμπελῶνας, †Ἐποίησά μοι κήπους καὶ παραδείσους, †καὶ ἐφύτευσα ἐν αὐτοῖς ξύλον πᾶν
6 καρποῦ. †Ἐποίησά μοι κολυμβήθρας ὑδάτων †τοῦ ποτίσαι ἀπ᾽ αὐτῶν δρυμὸν βλαστῶντα ξύ-
7 λα. †Ἐκτησάμην δούλους καὶ παιδίσκας, †καὶ οἰκογενεῖς ἐγένοντό μοι, †καί γε κτῆσις βουκολίου καὶ ποιμνίου πολλὴ ἐγένετό μοι †ὑπὲρ πάντας τοὺς γενομένους ἔμπροσθέν μου ἐν Ἱερουσαλήμ.
8 †Συνήγαγόν μοι καί γε ἀργύριον καί γε χρυσίον, †καὶ περιουσιασμοὺς βασιλέων καὶ τῶν χωρῶν. †ἐποίησά μοι ᾄδοντας καὶ ᾀδούσας, †καὶ ἐντρυφήματα υἱῶν (γ) ἀνθρώπων, †(δ) οἰνοχόον καὶ
9 οἰνοχόας. †Καὶ ἐμεγαλύνθην καὶ προσέθηκα †παρὰ πάντας τοὺς (ε) γενομένους ἀπὸ ἔμπροσθέν μου ἐν Ἱερουσαλήμ, †καί γε σοφία μου ἐστά-
10 θη μοι. †Καὶ πᾶν ὃ ᾔτησαν οἱ ὀφθαλμοί μου, (ζ) οὐκ ἀφεῖλον ἀπ᾽ αὐτῶν· †οὐκ ἀπεκώλυσα τὴν καρδίαν μου ἀπὸ πάσης (η) εὐφροσύνης μου, †ὅτι καρδία μου εὐφράνθη ἐν παντὶ μόχθῳ μου· †καὶ τοῦτο ἐγένετο μερίς μου ἀπὸ μόχθου μου. MS.A. (α) ἐπ᾽ εὐφροσύνῃ, (β) τοῦ ἀνθρώπου, (γ) τοῦ ἀνθρώπου, χόους καὶ (ε) γενομένους ἔνπροσθέν μου (ζ) οὐχ ὑφεῖλον (η) εὐφροσύνης, ὅτι

Perversum non poterit ado
(ω) imminutio non poterit nume
Loquutus sum ego (aa) in corde m
dicens: Ecce ego magnificatus su
(bb) adjeci sapientiã super omnes
fuerunt ante me in Hierusalem.
Et dedi cor meum, ut noscerem
entiam, et scientiam. Et cor meum
dit multa, sapientiam, & scienti
(dd) parabolas, & scientiam. Cogn
vi ego, quia (ee) et hoc est præsum
spiritus. Quia in multitudine sa
tiæ multitudo (ff) cognitionis: &
apponit scientiam, apponit (gg) do

CAP. II.

Dixi ego in corde meo; Veni
tentabo te in lætitia, & vide in
& ecce etiam hoc (a) vanitas.
dixi (b) Circumlationem, et jucun
ti, Quid (c) hoc facis? (d) Et con
ravi, si cor meum trahet tanqua
num carnem meã: & cor meũ (e)
duxit in sapientia, & (f)
lætitiam; donec viderẽ, quid sit (g)
num filiis hominum, quod facia
Sole, numero dierũ vitæ suæ. (h)
gnificavi opus meum, ædifica
domos, plantavi mihi vineas. Fe
hi hortos, & pomaria, & planta
illis lignum (i) omne fructus. Fe
hi (k) piscinas aquarũ ad irriga
ex eis saltũ germinantem ligna
catus sum servos, & ancillas
vernaculi fuerunt mihi: &
possessio armenti, & oviũ, mul
mihi super omnes qui fuerunt
in Hierusalem. (l) Congrega
etiam argentum, etiam aurũ
opes regum, et provinciarum. Fe
hi cantores, et cantatrices, et
cias filiorũ hominũ, (o) mini
ni et vini ministras. Et (p) magni
tus sum, et adjeci (q) super omnes
fuerunt ab ante me in Hierus
& quidem sapientia mea (r)
tit mihi. Et omne, quod (s) po
verunt oculi mei; non abstuli
Non prohibui cor meum ab om
tia mea: quia cor meum læta
in (t) omni labore meo. Et
portio mea ex omni labore m

תרגום TARGUM.

15 גבר די סריכן אורחתיה בעלמא הדין ומית בהון ולא הדר בתיובתא לית ליה רשו
לאתקנא בתר מותיה וגבר חסר מן אוריתא ופקודיא בחיוהי בתר מותיה לית ליה רשו
16 לאתמנאה עם צדיקיא בגנתא דעדן: מללית אנא בהרהור לבי למימר אנא הא אסגיתי
ואוספית חוכמתא על כל חכימיא די הוו קדמי בירושלם ולבי חזא סגיאות חוכמתא
17 ומנדעא: ויהבית לבבי למדע חוכמתא וחולחלתא דמלכותא ומנדעא וסוכלתנו בחנית
18 למדע דאף דין הוא תבירות רוחא לגבר דמשתדל למשכח יתהון : ארום גבר דמסגי
חכמתא כד ייחוב ולא יתב בתיובתא מסגי רגיז קדם יי ודמוסיף מנדעא וימות
בטליותיה מוסיף כאיב לבא לקריבוי :

ב

1 אמרית אנא בלבי איזל כען הכא ואבחין בחדוא ואחזי בטוב עלמא הדין וכדו מטא עלי
2 צערא וסגופא אמרית במימריה הא אף דין הוא הבלו : לחוכא אמרית בעדן צערא
3 ליצנותא הוא ולחדוא מה הנאה אית לגבר די עבדנה : אללית בלבי לנגדא בבית
משתיא דחמרא ית בסרי ולבי דבר בחוכמתא ולאחדא בשטות עולמיא עד די בחנית
וחזית אידין מנהון טב לבני אנשא דיעבדון עד דאנון קימין בעלמא הדין תחות שמיא
4 מנין יומי חייהון : אסגיתי עובדין טבין דירושלם בניתי לי בתין בית מוקדשא לכפרא
על ישראל ובית מקירת מלכא ואדרון ואולם ובית דינא אבנין פסילן דתמן יתבין
חכימיא ודינין ית דינא עבדית כורסיא דשן דפילא למותב מלכותא אנציבית לי ביבנה
כל קבל כרמין דענבא למשתי חמרא אנא ורבני סנהדרין ואף לנסכא חמר חדת ועתיק
5 על מדבחא : עבדית לי גנת שקין ופרדסין ודרעית תמן כל מיני עסבין מנהון לצרוך
מיכלא ומנהון לצרוך משתיא ומנהון לצרוך אסותא כל מיני עסבי בוסמין נציבית בהון
אילני סרק וכל אילני בוסמין דאיתיאו לותי טלני ומזיקי מן הנדקא וכל אילן דעבד פרין
6 ותחומיה מן שור קרתא דבירושלם על כיף מיא דשילוח : בחנית בית משקיא דמיא
אידין חזי לאשקאה אילניא ועסבין ועבדית לי פרקטנין דמיא מנהון אפילו חורשא די
7 מרבי קיסין לאשקאה: קניתי עבדין ואמהן מבניהון דחם ושאר עממין נוכראין וגדברין
די ממנן על מזונא דביתי הוו לי לפרנסא יתי וית אנשי ביתי תרי עסר ירחי שתא וחד
לפרנסותי בירחא דעבורא אף קנין תורין ועניין הוה לי יתיר מכל דריא די הוו קדמי
8 בירושלם : כנשית לי אף אוצרין כסף ודהב דאפילו מתקלין ומואזנין דקשוט עבדית
מן דהב טב וטסברי מלכין ופלכין אתיהיבו לי לכרנא עבדית בבית מוקדשא זיני זמרא
לזמרא בהון ליואי על קורבניא וקתרוסין ואבובין לזמרא בהון זמריא וזמריתא בבית
משתיא דחמרא ותפנוקי בני אנשא ודימסיא ובי בנין מרזבין דשדין מיא פשורי ומרזבין
9 דשדין מיא חמימי : ואסגיתי טובא ואוספית עותרא מן כל דריא די הוו קדמי בירושלם
10 ברם חכמתי קמת לי והיא סיעתיני: וכל מה דבעו מני רבני סנהדרין לדכאה ולסאבא
לזכאה ולחיבא לא כליתי מנהון פשר מליא ולא מנעית ית לבבי מן כל חדות אוריתא
ארום הוה לי פנאי די לבבי בדח בחכמתא די אתיהיבת לי מן קדם יי מן כל אנשא וחדית
בטרחותי ידין הוה חולקי טב דאזדמן לי לקבלא עלוהי אגר שלים לעלמא דאתי מכל טרחותי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Vir cujus viæ *perversæ* sunt in hoc seculo, & moritur in eis, nec reverti
pœnitentiam, non est illi facultas corrigendi se post mortem suam: & vir
ens *à* Lege & præceptis in vita sua, post mortem suam non est illi facultas
meretur cũ justis in paradiso. Locut⁹ sum ego in cogitatione cordis mei,
do: Ego *ecce* auxi & addidi sapientiam super omnes sapientes qui fuerunt
me in Jerusalem, & cor meum vidit magnitudinem sapientiæ & scientiæ.
di cor meum ut cognoscerẽ sapientiam & agitationẽ regni, & scientiam
telligentiam probavi ad sciendum: quin etiam hoc ipsum fractio spirit⁹
solicitus est ad inveniendum ea. Namq; vir qui multiplicat sapientiam,
peccat, & non convertitur ad pœnitentiam, multiplicat indignationẽ à D
qui addit scientiam & moritur in pueritia sua, addit dolorẽ cordis prop
suis.

CAP. II.

Dixi ego in corde meo: Veni nunc huc & tentabo lætitiam, & videbo
seculi huj⁹: & cumprimum advenit sup me angustia & afflictio, dixi
ejus, Ecce etiã hoc vanitas. De risu dixi in tempore angustiæ meæ, De
ipse: & gaudio; Quid emolumenti est viro qui fecerit illud? Exploravi in
meo ad protrahendum in domo *convivii* vini carnem meam, & cor meum
[*me*] in sapientia, ut apprehenderẽ stultitiã juvenum, quoad tentarẽ & vi
quale ex illis bonum esset filiis hominis ut faciant quandiu ipsi manẽt in
culo, sub *cœlo*, numero dierum vitæ suæ. Multiplicavi opera bona in Je
ædificavi mihi domos; *domũ sanctuarii ad expiandum peccata Israel, &*
refrigerii regis, & conclave, & porticum, & domum judicii de lapidibus
ubi sedent sapientes & exercent judicaturam; *feci solium ex ebore pro*
regia: plantavi mihi *in Jabne è regione* vineas *uvarum ut biberemus*
& magistri Zzanhedrin, atq; ad libandum vinum novum & vetus super
re. Feci mihi hortos irriguos & paradisos: & seminavi ibi omnia genera
rum; *partim ad usum cibi, & partim ad usum potus, & partim ad usum*
næ: omnis generis herbas aromaticas plantavi in illis, arbores steriles &
arbores aromatum, quas attulerunt mihi lemures ac spiritus noxii ex
omnem arborem fructiferam: fuitq; terminus ejus à muro urbis, qui est
salem, ad ripam aquarum Siloahh. Exploravi conceptaculum aquarum
opus est ad irrigandas arbores & herbas: & feci mihi piscinas aquarum
gandum ex eis etiã sylvã quæ alit ligna. Emi servos & ancillas *de filiis*
& reliquis alienigenis; & dispensatores qui præpositi essent victui dom
fuerunt mihi ad alendum me & homines domus meæ *duodecim mensibus*
præterea unus, qui id muneris haberet in mense embolismico: etiã posse
um & ovium fuit mihi, plusquàm omnib⁹ habitatoribus qui fuerunt ante
Jerusalẽ. Congregavi mihi etiã thesauros argenti & auri, *ut vel ipsa pon*
lances justitiæ facerem ex auro bono; & thesauri regum & regionum da
vitæ inter sacrificandum, & citharas & tibias ut canerent in
cantatrices *in domo convivii vini*, & delicias filiorum hominis,
& balnea [habentia] siphones qui effunderent aquas tepidas, &
effunderent aquas calidas. Et multiplicavi bonum, & inveni divitias
habitatorib⁹ qui fuerunt ante me in Jerusalẽ: verùm sapientia mea
hi, & ipsa auxiliabatur mihi, Et in omnibus quæ quæsierunt
Zzanhedrin, *ad pronunciandum de mundo vel immundo, ad*
ad condemnandum, non inhibui ab eis solutionem sermonum, &
cor meum ab omni lætitia Legis, quoniam fuit mihi inclinatio cordis
tans in sapientia quæ data erat mihi à Dño, præ omni homine, &
ea ex omni labore meo: & hæc ipsa fuit pars mea bona, quæ
accipiendũ sup eã præmium perfectum in seculo venturo ex omni

בה יתיר מכל טרחותי

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܥܘܝܐ ܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܬܩܢܘ. ܘܚܣܝܪܐ ܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܬܡܢܝܘ. * ܡܠܠܬ ܐܢܐ ܥܡ
ܠܒܝ ܟܕ ܐܡܪܢܐ: ܐܢܐ ܗܐ ܪܒܝܬ. ܘܐܘܣܦܬ ܚܟܡܬܐ. ܥܠ ܟܠ ܕܗܘܘ ܩܕܡܝ ܒܐܘܪܫܠܡ.
ܘܠܒܝ ܚܙܐ ܣܘܓܐܐ ܕܚܟܡܬܐ ܘܝܕܥܬܐ. * ܘܝܗܒܬ ܠܒܝ ܠܡܕܥ ܚܟܡܬܐ ܘܝܕܥܬܐ.
ܘܡܬܠܐ ܘܣܘܟܠܬܢܘܬܐ. ܘܝܕܥܬ ܕܐܦ ܗܢܐ. ܬܘܕܪܐ ܗܘ ܕܪܘܚܐ. * ܡܛܠ
ܕܥܡ ܣܘܓܐܐ ܕܚܟܡܬܐ. ܣܘܓܐܐ ܕܪܘܓܙܐ. ܘܕܡܘܣܦ ܝܕܥܬܐ. ܡܘܣܦ ܟܐܒܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

* ܐܡܪܬ ܐܢܐ ܠܠܒܝ: ܬܐ ܐܢܣܝܟ ܒܚܕܘܬܐ. ܘܚܙܝ ܒܛܒܬܐ. ܘܗܐ ܐܦ ܗܢܐ. ܗܒܠܐ
* ܠܓܘܚܟܐ ܐܡܪܬ. ܡܢܐ ܗܘܝܐ. ܘܠܚܕܘܬܐ. ܡܢܐ ܥܒܕܐ ܐܢܬܝ. * ܙܢܬ ܒܠܒܝ ܠܡܒܣܡܘ
ܒܚܡܪܐ ܒܣܪܝ. ܘܗܦܟܬ ܐܢܐ ܠܡܫܒܩ ܠܒܝ. ܘܠܒܝ ܕܢܐ ܒܚܟܡܬܐ. ܘܐܚܕ
ܒܣܘܟܠܬܢܘܬܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܚܙܐ ܐܝܢܐ ܗܝ ܛܒܬܐ ܠܒܢܝܢܫܐ ܕܢܥܒܕܘܢ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ: ܡܢܝܢ
ܝܘܡܝ ܚܝܝܗܘܢ. * ܐܣܓܝܬ ܠܝ ܥܒܕܐ. ܒܢܝܬ ܠܝ ܒܬܐ. ܢܨܒܬ ܠܝ ܟܪܡܐ. * ܥܒܕܬ
ܠܝ ܓܢܐ. ܘܦܪܕܝܣܐ. ܘܢܨܒܬ ܒܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܟܠ ܦܐܪܝܢ. * ܥܒܕܬ ܠܝ ܢܩܥܬܐ
ܕܡܝܐ: ܠܡܫܩܝܘ ܡܢܗܘܢ ܥܒܐ ܕܡܦܪܥ ܐܝܠܢܐ. * ܩܢܝܬ ܠܝ ܥܒܕܐ ܘܐܡܗܬܐ.
ܘܒܢܝ ܒܝܬܐ. ܗܘܘ ܠܝ ܣܓܝܐܐ. ܘܐܦ ܩܢܝܢܐ ܕܬܘܪܐ ܘܕܥܢܐ: ܣܓܝ ܗܘܐ ܠܝ. ܡܢ ܟܠ
ܕܗܘܘ ܩܕܡܝ ܒܐܘܪܫܠܡ. * ܟܢܫܬ ܠܝ ܐܦ ܟܣܦܐ ܘܕܗܒܐ. ܘܩܢܝܢܐ ܕܡܠܟܐ
ܘܕܡܕܝܢܬܐ. ܥܒܕܬ ܠܝ ܡܙܡܪܢܐ ܘܡܙܡܪܢܝܬܐ. ܘܒܘܣܡܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܥܒܕܬ
ܠܝ ܡܫܩܝܢܐ ܘܡܫܩܝܢܝܬܐ. * ܘܪܒܝܬ ܘܐܘܣܦܬ. ܝܬܝܪ ܡܢ ܟܠ ܕܗܘܘ ܩܕܡܝ ܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܦ
ܚܟܡܬܝ ܩܡܬ ܠܝ. * ܘܟܠ ܕܫܐܠܘ ܥܝܢܝ. ܠܐ ܟܠܝܬ ܡܢܗܘܢ. ܘܠܐ ܟܠܝܬ ܠܒܝ ܡܢ
ܟܠ ܚܕܘܐ. ܡܛܠ ܕܠܒܝ ܚܕܐ ܒܟܠ ܥܡܠܝ. ܘܗܢܐ ܗܘܐ ܡܢܬܝ. ܡܢ ܟܠܗ ܥܡܠܝ.

Rebellis dirigi nequit, & imperfectum nequit 15
numerari. Locutus ſum ego cum corde meo, 16
dicens, En ego magnificatus ſum, & compa-
ravi mihi ſapientiã ultra omnes qui me præ-
ceſſerunt in Jeruſalem, viditq; cor meum mul-
titudinẽ ſapientiæ ac ſcientiæ. Et adjeci men- 17
tem meam ad cognoſcendã ſapientiam & ſci-
entiam, & proverbia, atque prudentiam: &
intellexi hoc etiam eſſe perturbationem ſpi-
ritûs. Nam cum multitudine ſapientiæ *con-* 18
juncta eſt multitudo indignationis: & qui
comparat *ſibi* ſcientiam, comparat dolorem.

CAP. II.

Dixi ego cordi meo, Veni ut tentem te gau- 1
dio, & experire bonum: at ecce, hoc etiam
vanitas. Riſui dixi, Quæ utilitas? & gaudio, 2
Quid agis? Cogitavi mecum ipſe exhilarare 3
vino carnem meam: & verti me ad remit-
tendum cor meum, (interim meditante corde
meo ſapientiam, & hærente prudentiæ) do-
nec viderem quid ſit melius hominibus face-
cere ſub ſole, numero dierum vitæ ſuæ. Mul- 4
tiplicavi mihi opera, ædificavi mihi domos,
plantavi mihi vineas. Feci mihi hortos & 5
viridaria, & plantavi in eis arbores omni-
geni fructûs. Feci mihi piſcinas aquarum, 6
ut irrigarem ex eis ſylvam germinantem, atq;
arbores. Poſſedi mihi ſervos & ancillas, & 7
domeſticos habui permultos: armenta quoq;
boum ac pecudum plura mihi fuêre, quàm
omnibus qui me præceſſerunt in Jeruſalem.
Congeſſi etiam mihi argentum & aurum, & 8
opes regum ac urbium. Feci mihi cantores &
cantatrices, & delitias in filiis hominum. Feci
mihi pincernas & propinatrices. Et magni- 9
ficatus ſum & crevi plus omnibꝰ qui ante me
fuerunt in Jeruſalem: quin & ſapientia mea
perſeveravit. Quicquid etiam expetiverunt 10
oculi mei, non denegavi eis, nec prohibui cor
meum ab ulla voluptate; nam cor meum læ-
tatum eſt in cunctis laboribus meis: atque
hæc fuit ſors mea ex omni meo labore.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فالمعوج ما يمكن أن يزين * والنقص ما يمكن أن يحصى * أنا تكلمت في قلبي لأقول
هانذا قد عظم شاني أكثر من جميع الذين كانوا تقدموني باورشليم * وازددت حكمة في كل
شي أكثر من الذين تقدموني باورشليم * وعرف قلبي حكمة جزيلة وعلما كثيرا * وملك
قلبي ليتعلم الحكمة والعلم * وعرفت الأمثال الواعظة والصناعة * مع أن هذا لعمري هو اختيار
الروح * لأن في تكاثر الحكمة تكاثر العلم * ومن يزداد علما يزداد وجعا *

* الفصل الثاني *

* أنا قلت في قلبي هلم حتى أختبرك في السرور وأبصرك في الحظ الصالح * وإذا هذا
باطل * قلت للضحك ما سبب نهوضك * وللسرور لم صنعت هذا * وتأملت قلبي إن
كان يجتذب بشري كاجتذاب الخمر * فأرشدني قلبي إلى الحكمة وإلى مسك السرور بها * إلى أن
حصلت أعرف ما هو الشي الصالح عند أبناء الناس الذي يعملونه تحت الشمس عدد
أيام حياتهم * فعظمت صناعتي * وابتنيت لي منازل * نصبت لي كروما * صنعت لي بساتين
وميادين * وغرست فيها شجرا مثمرا من كل نوع * عملت لي برك أمياه لأصنع بها غيضه
أشجار الغروس * اقتنيت عبيدا وجواري * وصاروا أبناء جنس داري * وصارت لي قني
قطعان بقر وغنم كثير * أكثر من جميع الذين كانوا تقدموني باورشليم * جمعت لي
هذا فضة وذهبا وطرائف الملوك والبلدان * اصطنعت لي مغنين ومغنيات في النعيم
أبناء الناس * وسقاة وساقيات * فعظم شاني وازداد حالي أكثر من الذين سلف تقدمهم
إياي باورشليم أجمعين * ومع هذا ثبتت حكمتي عندي * وسائر ما طلبته عيناي
ما حجبت منه * وما منعت قلبي من كافة السرور * لأن قلبي فرح بكل تعبي * وصار هذا
حظي من جميع تعبي *

Etenim contortum non poteſt reconcin- 15
nari, & defectus non poteſt numerari.
Locutus ego ſum in corde meo ut dice- 16
rem, Ecce magnificata eſt gloria mea
pluſquam omnium qui me præceſſerant in
Jeruſalem, & ſapientiam in omni re
majorem ſum adeptus præ omnibus qui
me præceſſerunt in Jeruſalem, ſcivitque
cor meum ſapientiam plurimam, &
ſcientiam copioſiſſimam. Dedi etiam 17
cor meum ut addiſceret ſapientiam &
ſcientiam, & didici proverbia cohor-
tatoria & artem; licèt hoc quidem ſit
libera ſpiritûs voluntas. Nam creſcen- 18
te ſapientiâ, creſcit ſcientia: & qui
ſcientiam acquirit, dolorem acquirit.

CAP. II.

Dixi ego mecum ipſe, Age, experiar 1
te gaudio, & oſtendam tibi ſortem bonam,
at ecce hoc vanum eſt. Riſui dixi, Quæ 2
cauſa elationis tuæ? & gaudio, Cur
id feciſti? Et cor meum perpendi, num 3
ita *traheret carnem meam, ut vinum tra-*
here conſuevit: direxit me autem cor
meum ad ſapientiam & ad perſeveran-
tem delectationem in ipſa, donec aſſeque-
rer notitiam optimæ penes filios hominum
rei, quam agant ſub ſole numero dierum
vitæ ſuæ. Igitur opus meum magnifica- 4
vi, & extruxi mihi ædes, vineas con-
ſevi mihi: Paravi mihi hortos & loca 5
amœna, omniſque generis arbores frugi-
feras in iis conſevi: Feci mihi piſcinas 6
aquarum, ut in iis aptarem nemus ar-
borum omnium *plantarum: Poſſedi* 7
ſervos & ancillas, factique ſunt ver-
naculi domûs meæ: fuit etiam mihi am-
pla poſſeſſio armentorum boum & ovi-
um, amplior quàm omnibus qui me præ-
ceſſerant in Jeruſalem. Præterea coa- 8
cervavi mihi argentum & aurum, &
pulcherrima quæque regum atque regio-
num. Comparavi mihi cantores & can-
tatrices, inter delitias cum filiis homi-
num: necnon viros ac mulieres potum
præbentes. Demum magnificata eſt glo- 9
ria mea, & conditio mea aucta eſt
pluſquam omnium qui me præceſſerunt
in Jeruſalem: & ad hæc permanſit a-
pud me ſapientia mea. Et omni re quam 10
poſtulârunt oculi mei, non ſum fruſtra-
tus, neque prohibui cor meum omni gau-
dio: quoniam cor meum fruitum eſt cun-
ctis laboribus meis: atque hoc fuit pars
mea ex omnibus laboribus meis.

קהלת : ב

laborem ad &, meæ manus fecerant quæ mea opera omnia in ego reſpexi Et
11 וּפָנִיתִי אֲנִי בְּכָל־מַעֲשַׂי שֶׁעָשׂוּ יָדַי וּבֶעָמָל
non &, ſpirit⁹ paſtio &, vanitas univerſa ecce & :faciendum ad laboravi quo
שֶׁעָמַלְתִּי לַעֲשׂוֹת וְהִנֵּה הַכֹּל הֶבֶל וּרְעוּת רוּחַ וְאֵין
, inſanias &, ſapientiam videndum ad ego reſpexi Et .ſole ſub reliquum
12 יִתְרוֹן תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ׃ וּפָנִיתִי אֲנִי לִרְאוֹת חָכְמָה וְהוֹלֵלוֹת
quod , regem poſt eſt venturus qui, homo quid Nam .ſtultitiã &
וְסִכְלוּת כִּי מֶה הָאָדָם שֶׁיָּבוֹא אַחֲרֵי הַמֶּלֶךְ אֵת אֲשֶׁר־
ſupra ſapientiæ præſtantia eſt quòd ego vidi Et ? ipſum fecerunt jam
13 כְּבָר עָשׂוּהוּ׃ וְרָאִיתִי אָנִי שֶׁיֵּשׁ יִתְרוֹן לַחָכְמָה מִן־
ejus oculi Sapientis .tenebroſitate præ lucis excellentia ſicut :ſtultitiam
14 הַסִּכְלוּת כִּיתְרוֹן הָאוֹר מִן־הַחֹשֶׁךְ׃ הֶחָכָם עֵינָיו
, ego etiam cognovi Et .ambulans tenebroſitate in ſtultus & , ejus capite in
בְּרֹאשׁוֹ וְהַכְּסִיל בַּחֹשֶׁךְ הוֹלֵךְ וְיָדַעְתִּי גַם־אָנִי
:meo corde in ego Dixique .ipſis omnibus eveniet unus eventus quòd
15 שֶׁמִּקְרֶה אֶחָד יִקְרֶה אֶת־כֻּלָּם׃ וְאָמַרְתִּי אֲנִי בְּלִבִּי
ego ſapui quid ut &, mihi eveniet ego etiam ſtulti eventum ſecundùm
כְּמִקְרֵה הַכְּסִיל גַּם־אֲנִי יִקְרֵנִי וְלָמָּה חָכַמְתִּי אֲנִי
.vanitas hoc etiam quòd , meo corde in ſum locutus Et ? excellentius tunc
אָז יוֹתֵר וְדִבַּרְתִּי בְלִבִּי שֶׁגַּם־זֶה הָבֶל׃
jam quod eo in : ſeculum in ſtulto cum ſapientis memoria non Quia
16 כִּי אֵין זִכְרוֹן לֶחָכָם עִם־הַכְּסִיל לְעוֹלָם בְּשֶׁכְּבָר
cum ſapiens morietur quomodo &, eſt oblitum omne venientium dierum
הַיָּמִים הַבָּאִים הַכֹּל נִשְׁכָּח וְאֵיךְ יָמוּת הֶחָכָם עִם־
opus me ſuper malum quia , vitas odi Et ? ſtulto
17 הַכְּסִיל׃ וְשָׂנֵאתִי אֶת־הַחַיִּים כִּי רַע עָלַי הַמַּעֲשֶׂה
.ſpiritus paſtio & , vanitas omnia quia : ſole ſub fit quod
שֶׁנַּעֲשָׂה תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ כִּי־הַכֹּל הֶבֶל וּרְעוּת רוּחַ׃
: ſole ſub laborans ego quo, meum laborem omnem ego odi Et
18 וְשָׂנֵאתִי אֲנִי אֶת־כָּל־עֲמָלִי שֶׁאֲנִי עָמֵל תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ
ſapiens utrũ ſciens quis Et .me poſt erit qui ,homini illum dimittam quia
19 שֶׁאַנִּיחֶנּוּ לָאָדָם שֶׁיִּהְיֶה אַחֲרָי׃ וּמִי יוֹדֵעַ הֶחָכָם
,laboravi quo meo labore omni in habebit auctoritatē &? ſtult⁹ vel ſit futurus
יִהְיֶה אוֹ סָכָל וְיִשְׁלַט בְּכָל־עֲמָלִי שֶׁעָמַלְתִּי
ego ſum verſus Et .vanitas hoc etiam : ſole ſub eſſem ſapiens quo &
20 וְשֶׁחָכַמְתִּי תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ גַּם־זֶה הָבֶל׃ וְסַבּוֹתִי אֲנִי
ſub laboravi quo ,laborem omnem ſuper: meum cor faciendũ deſperare ad
לְיַאֵשׁ אֶת־לִבִּי עַל כָּל־הֶעָמָל שֶׁעָמַלְתִּי תַּחַת
, ſcientia in & ,ſapientia in ejus labor cujus homo eſt Nam .ſole
21 הַשָּׁמֶשׁ׃ כִּי־יֵשׁ אָדָם שֶׁעֲמָלוֹ בְּחָכְמָה וּבְדַעַת
:ſuam partē ei dabit, ea in laboravit non qui ,homini & : rectitudine in &
וּבְכִשְׁרוֹן וּלְאָדָם שֶׁלֹּא עָמַל־בּוֹ יִתְּנֶנּוּ חֶלְקוֹ
homini exiſtens quid Quia .magnum malum & ,vanitas hoc etiam
22 גַּם־זֶה הֶבֶל וְרָעָה רַבָּה׃ כִּי מֶה־הֹוֶה לָאָדָם
ſub laborans ipſe quo , ſui cordis contritione & , ſuo labore univerſo in
בְּכָל־עֲמָלוֹ וּבְרַעְיוֹן לִבּוֹ שֶׁהוּא עָמֵל תַּחַת
etiam ,ejus negotium ira & , dolores ejus dies omnes Quia ? ſole
23 הַשָּׁמֶשׁ׃ כִּי כָל־יָמָיו מַכְאֹבִים וָכַעַס עִנְיָנוֹ גַּם־
.ipſum vanitas hoc etiam : ejus cor jacuit non nocte in
בַּלַּיְלָה לֹא־שָׁכַב לִבּוֹ גַּם־זֶה הֶבֶל הוּא׃

Verſio VULG. LAT.

11 Cúmque me convertiſſem ad
univerſa opera, quæ fecerant
manus meæ, & ad labores, in
quibus fruſtrà ſudaveram, vidi
in omnibus vanitatem &
afflictionē animi, & nihil permanere
12 ſub Sole. Tranſivi ad
contemplandam ſapientiam,
erroréſque & ſtultitiã: (quid
eſt, inquam, homo, ut ſequi poſſit
13 regem Factorem ſuum?) Et
vidi quòd tantùm præcederet
ſapientia ſtultitiam, quantùm
14 differt lux à tenebris. Sapientis
oculi in capite ejus: ſtultus in
tenebris ambulat: & didici ꝙ
unus utriuſque eſſet interitus.
15 Et dixi in corde meo: Si unus
& ſtulti & meus occaſus erit,
quid mihi prodeſt quòd majorem
ſapientiæ dedi operam?
Locutúſque cùm mente mea,
animadverti quòd hoc quoque
16 eſſet vanitas. Non enim erit
memoria ſapientis ſimiliter ut
ſtulti in perpetuum, & futura
tempora oblivione cuncta pariter
operient: moritur doctus
17 ſimiliter ut indoct⁹. Et idcircò
tæduit me vitæ meæ, videntem
mala univerſa eſſe ſub Sole, &
cuncta vanitatem & afflictionem
18 ſpiritus. Rurſus deteſtat⁹
ſum omnem induſtriam meam,
quâ ſub Sole ſtudioſiſſimè laboravi,
habiturus hæredē poſt
19 me, Quem ignoro, utrùm ſapiens
an ſtultus futurus ſit, et
dominabitur in laborib⁹ meis,
quibus deſudavi & ſolicit⁹ fui:
& eſt quidquam tam vanum?
20 Unde ceſſavi, renuntiavitq; cor
meū ultrà laborare ſub Sole.
21 Nam cùm alius laboret in ſapientia,
& doctrina, & ſolicitudine,
homini otioſo quæſita
dimittit: & hoc ergò, vanitas,
22 & magnū malum. Quid
enim proderit homini de univerſo
labore ſuo, & afflictione
ſpiritus, quâ ſub Sole cruciatus
23 eſt? Cuncti dies ejus
doloribus & ærumnis pleni
ſunt, nec per noctem mente
requieſcit: & hoc nónne vanitas
eſt?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

11 † Καὶ ἐπέβλεψα ἐγὼ ἐν πᾶσι (ϑ) ποιήμασί
μου † οἷς ἐποίησαν αἱ χεῖρές μου, † καὶ (ι) ἐν μόχθῳ
ᾧ ἐμόχθησα τοῦ ποιεῖν, † καὶ ἰδοὺ τὰ πάντα
ματαιότης καὶ προαίρεσις πνεύματος, † καὶ
12 οὐκ ἔστι περίσσεια ὑπὸ τὸν ἥλιον. † Καὶ ἐπέβλεψα
ἐγὼ τοῦ ἰδεῖν σοφίαν † καὶ (κ) παραφορὰν
καὶ ἀφροσύνην, † ὅτι τίς (λ) ἄνθρωπος ὃς
ἐπελεύσεται ὀπίσω τῆς βουλῆς; † τὰ ὅσα (μ)
13 ἐποίησεν αὐτήν. † Καὶ εἶδον ἐγὼ ὅτι ἐστὶ
περίσσεια † τῇ σοφίᾳ ὑπὲρ τὴν ἀφροσύνην,
† ὡς περίσσεια τοῦ φωτὸς ὑπὲρ τὸ σκότος.
14 † Τοῦ σοφοῦ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ ἐν κεφαλῇ αὐτοῦ,
† καὶ ὁ ἄφρων ἐν σκότει πορεύεται. † καὶ
ἔγνων καί γε ἐγὼ ὅτι συνάντημα ἓν † συναν-
15 τήσεται τοῖς πᾶσιν αὐτοῖς. † Καὶ εἶπα ἐγὼ
ἐν καρδίᾳ μου, † Ὡς συνάντημα τοῦ ἄφρονος
† καί γε ἐμοὶ συναντήσεταί μοι, † καὶ ἵνα τί
ἐσοφισάμην † (ν) ἐγώ; περισσὸν ἐλάλησα ἐν
καρδίᾳ (ξ) μου, † Ὅτι καί γε τοῦτο ματαιότης,
† διότι ὁ ἄφρων ἐκ περισσεύματος λα-
16 λεῖ. † Ὅτι οὐκ ἔστι μνήμη τοῦ σοφοῦ μετὰ τοῦ
ἄφρονος (ο) εἰς τὸν αἰῶνα, † καθότι ἤδη (π)
αἱ ἡμέραι ἐρχόμεναι τὰ πάντα ἐπελήσθη· † καὶ
πῶς ἀποθανεῖται ὁ σοφὸς μετὰ τοῦ ἄφρονος;
17 † Καὶ ἐμίσησα σὺν τὴν ζωήν· † ὅτι πονηρὸν ἐπ᾽
ἐμὲ τὸ ποίημα † τὸ πεποιημένον ὑπὸ τὸν ἥλιον,
† ὅτι (ρ) πάντα ματαιότης καὶ προαίρεσις
18 πνεύματος. † Καὶ ἐμίσησα ἐγὼ σύμπαντα
μόχθον μου † ὃν ἐγὼ (σ) κοπιῶ ὑπὸ τὸν ἥλιον,
† ὅτι ἀφίω αὐτὸν τῷ ἀνθρώπῳ (τ) τῷ γινομένῳ
19 μετ᾽ ἐμέ. † Καὶ τίς (υ) εἶδεν εἰ σοφὸς ἔσται ἢ
ἄφρων; † καὶ εἰ ἐξουσιάζεται ἐν παντὶ μόχθῳ
μου, † ᾧ ἐμόχθησα καὶ ᾧ ἐσοφισάμην ὑπὸ τὸν
20 ἥλιον; † καί γε τοῦτο ματαιότης. † Καὶ ἐπέστρεψα
ἐγὼ τοῦ ἀποτάξασθαι (φ) τὴν καρδίαν
μου † ἐν παντὶ μόχθῳ μου ᾧ ἐμόχθησα ὑπὸ τὸν
21 ἥλιον· † Ὅτι ἐστὶν ἄνθρωπος, ὅτι μόχθος αὐτοῦ
† ἐν σοφίᾳ καὶ ἐν γνώσει καὶ ἐν ἀνδρίᾳ· † (χ)
καὶ ἄνθρωπος ᾧ οὐκ ἐμόχθησεν ἐν αὐτῷ † δώσει
(ψ) αὐτῷ μερίδα αὐτοῦ. † καί γε τοῦτο ματαιότης
22 καὶ πονηρία μεγάλη, † Ὅτι γίνεται (ω) ἐν τῷ
ἀνθρώπῳ ἐν παντὶ μόχθῳ αὐτοῦ † καὶ ἐν προαιρέσει
καρδίας αὐτοῦ † ᾧ αὐτὸς μοχθεῖ ὑπὸ
23 τὸν ἥλιον. † Ὅτι πᾶσαι αἱ ἡμέραι αὐτοῦ † ἀλγημάτων
καὶ θυμοῦ περισπασμὸς αὐτοῦ, † καί γε
ἐν νυκτὶ οὐ κοιμᾶται ἡ καρδία αὐτοῦ. † καί
γε τοῦτο ματαιότης ἐστίν.

Et reſpexi ego ad omnia opera me
quæ fecerunt manus meæ, (u
laborem, quo laboraveram facien
do. Et ecce omnia (x) vanitas, &
voluntas ſpiritûs: & non
abundantia ſub Sole. Et reſpexi e
go, ut viderem ſapientiam, &
errorem, & (z) ſtultitiam; quia quis
eſt homo (ω) qui ingredietur
conſiliũ? (aa) ea, quæ fecerit
Et vidi ego, quia abundãtia
pientiæ ſuper (bb) ſtultitiã, ſicut a
undantia lucis ſuper tenebras. Sa
pientis oculi ejus in capite ejus: &
ſtultus in tenebris ambulat. Et co
novi etiã ego, quia (cc) event⁹
eveniet omnibus eis. Et dixi ego
corde meo; Sicut eventus ſtulti,
& mihi eveniet mihi: & ut quid
(dd) ſapiẽs fact⁹ ſũ ego? (ee) Abun
danter locutus ſum in corde me
Quoniã hoc quoque vanitas:
quoniã inſipiens ex abundantia
quitur: Quia non eſt memoria
pientis cũ ſtulto in æternũ, ſo
quòd jam dies ſupervenientes
verſa oblivio operuit: & quomodo
morietur ſapiens cum ſtulto? Et
divi quidē vitã; quia (hh) malum
ſuper me opus quod factum eſt
Sole, quia omnia vanitas, & p
ſumptio ſpirit⁹. Et odivi ego om
laborem meũ, quem ego labora
Sole: quia dimitto illũ homini
qui fit poſt me. Et quis novit
ſapiens ſit, vel ſtult⁹? & (
poteſtatem habeat in omni la
meo, (ll) quo laboravi, & quo
piens fact⁹ ſum ſub Sole? Etia
vanitas. Et (mm) converſ⁹ ſum
ut (nn) renuntiarem cordi meo
omni labore meo, quo laborav
Sole: Quia eſt homo, (oo) quia la
ejus eſt in ſapientia, & in ſcien
et in (pp) virtute: (qq) et homi
non laboravit in eo, dabit illi
ſuam. Et quidē hoc vanitas,
quitia magna, (rr) Quoniam
homine in omni labore ſuo, &
voluntate cordis ſui, quo
borat ſub Sole: Quia omnes
jus (ſſ) dolorum, & (tt) ira
diſtentio ejus: & quidem
non dormit cor ejus. Sed
vanitas eſt.

MS. A. (ϑ) τοῖς ποιήμασίν μου (ι) ἐν μόχθῳ μου ᾧ (κ) περιφορὰν (λ) ἄνθρω
ἐπελεύσεται (μ) ἐποίησαν (ν) ἐγὼ τότε περισσὸν (ξ) μου, διότι ἄφρων ἐκ
ματος λαλεῖ, Ὅτι καί γε τοῦτο ματαιότης. Ὅτι οὐκ ἔστιν μνήμη (ο) εἰς
(π) ταῖς ἡμέραις ταῖς ἐπερχομέναις (ρ) τὰ πάντα (σ) μοχθῶ (τ) τῷ
νω (υ) οἶδεν ἢ (φ) τῇ καρδίᾳ μου ἐπὶ παντὶ τῷ μόχθῳ ᾧ (χ) καὶ ἄνθρωπος οὐκ ἐμόχθησεν (ψ) αὐτὸν (ω) τῷ

תרגום TARGUM.

11 ואסתכלית אנא בכל עובדי די עבדו ידי ובטורחתי די טרחית למעבד והא כולא הבלו
ותבירות רוחא ולית מותר בהון תחות שמשא בעלמא הדין אלהן אית לי אגר שלים
12 על עובדי טבא לעלמא דאתי : ואסתכלית למחזי חוכמתא וחלחולתא דמלכותא
וסוכלתנו ארום מה הנאה אית לגבר לצלאה בתר גזירת מלכא ובתר פורענותא הא
13 כבר אתגזרת עלוהי ואתעבידת ליה : וחזית אנא ברוח נבואה דאית מותר לחוכמתא
14 מן שטותא יתיר כמותר נהור יומא מן חשוך ליליא : חכימא מסתכל ברישא מה דעתיד
למהוי בסוף ומצלי ומבטל גזירתא בישתא מן עלמא ושטיא בחשוכא אזיל וידעית אף
אנא דאי לא מצלי חכימא ומבטל גזירתא בישתא מן עלמא כד ייתי פורענותא בעלמא
15 אירעון חד יארע ית כולהון : ואמרית אנא בלבבי כארעון שאול בר קיש אנא מלכא
דסט בסטותיה ולא נטר תפקדתא דאתפקד על עמלק ואתנטלת מניה מלכותא אף
אנא יערענני ולמה דין חכימית אנא בכן יתיר מניה ומללית אנא בלבי דאף דין הבלו
16 ולית אלהן גזירת מימרא דיי : ארום לית דכרנא לחכימא עם שטיא לעלמא דאתי
ובתר מיתת גברא מה דהוה כבר ביומוהי כד ייתון יומיא דעתידין למהוי בתרוהי
17 כולא אשתכח ואיכדין יימרון בני אנשא דהיא סופא דצדיקיא כסופא דחיבא : וסניתי
אנא ית כל חיין בישין ארום ביש עלי עובדא בישא די אתעביד על בני אנשא תחות
18 שמשא בעלמא הדין ארום כולא הבלו ותבירות רוחא : וסניתי אנא ית כל טרחותי די
טרחית תחות שמשא בעלמא הדין בגין דאשבקניה לרחבעם ברי דאתי בתרי וייתי
19 ירבעם עבדיה ויסב מן ידוי עשרתי שבטיא ויחסין פלגות מלכותא : ומן ידע החכים יהא
או טפש מלכא דעתיד למהוי בתרי וישלט בכל טרחותי די טרחית בעלמא הדין ובכל
מה דאתקנית בחוכמתי תחות שמשא בעלמא הדין ותהית בלבי ותבית למימר אף ית
20 דין הבלו : וחזרית אנא ליאשא ית לבי על כל טורחא די טרחית למקני ודחכימית לתקנא
21 תחות שמיא בעלמא הדין : ארום אית גבר די טורחיה בחוכמתא ובסוכלתנו ובצדקו
וימות בלא ולד ולגבר דלא טרח ביה יתנניה למהוי חולקיה אף דין הבלו ובישתא
22 רבתא : ארום מה הנאה אית ליה לגבר טורחיה ובתבירות לביה די הוא טרח תחות
23 שמשא בעלמא הדין : ארום כל יומוהי כאיבין ותקיף רוגזיה גוניה אף בליליא לא
דמיך מן הרהורי לביה אף דין הבלו הוא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et contemplatus ſum ego in omnibus operibus meis quæ fecerant ma
meæ, & in labore quem laboraveram ad faciendum: & ecce omnia va
tas & confractio ſpiritus, & nihil eſt reliqui in eis ſub Sole in ſeculo
ſed manet me præmium integrum pro operibus meis bonis in ſeculo ven
Et animadverti ego ad videndum ſapientiam & commotionem regn
intelligentiam: nam quæ utilitas eſt viro ut oret poſt decretum reg
poſt ultionem, cùm ecce jam ſtatutum ſit ſuper eum & factum ſit ei
vidi ego in ſpiritu prophetiæ, quòd *longè* plus dignitatis ſit ſapien
quàm ſtultitiæ; ſicut excellentior eſt lux diei tenebris noctis. Sapiens
templatur in principio id quod futurũ eſt in fine, *& orat & avertat de*
mala à mundo, & ſtult⁹ in tenebris ambulat: & cognovi etiam ego qu
non oret ſapiens, ut avertat decreta mala à mundo, cùm venerit ſu
mundum accidens unum accidet omnibus illis. Et dixi ego in corde
Juxta accidens *Saul filii Kis, mihi (rex ille declinavit perverſe, ne*
vavit mandatum quod acceperat de Amalek, quapropter regno pri
eſt) etiam mihi accidet, & ad quidnam ſapiens fui ego ſic magis
ille? & locutus ſum in corde meo, quod etiam hoc vanitas, & n
niſi decretum verbi Domini. Nam non eſt memoria ſapientis cum
ſeculo venturo, & poſt mortem viri id quod fuit jam in diebus ejus
venerint dies qui futuri ſunt poſt eum, omne invenietur: & quomo
cent filii hominis quòd futurus ſit finis juſti ſicut finis peccatoris? E
omnem vitam malam, quia malum contra me eſt, opus malum
contra filios hominis *ſub ſole* in ſeculo hoc, quia omnia vanitas &
fractio ſpiritus. Et odi ego omnem laborem meum quem laboravi
in ſeculo hoc, propterea quod relinquam eum Rehabgham filio m
veniet poſt me, *venietque ſervus ejus Jerabgham & auferet e m*
ejus decem tribus, & obtinebit dimidium regni. Et quis novit an
erit an ſtultus rex qui futurus eſt poſt me, et dominabitur in omni
meo quem laboravi *in ſeculo hoc*, & omni eo quod acquiſivi in ſa
mea ſub Sole in ſeculo hoc: & obſtupui in corde meo, & rurſus
Etiam hoc vanitas. Et reverſus ſum ego ut facerem deſperare co
ſuper omnem laborem quem laboravi ad acquirendum; & quod
fuerim ad præparandum ſub *cœlo* in ſeculo hoc. Quia eſt vir cujus
fit in ſapientia, & in intelligentia & in juſtitia, & morietur abſque li
& viro qui non laboravit in illo, dabit illud ut ſit pars ejus. Etia
vanitas & malum magnum. Etenim quæ utilitas eſt in viro [in omni
ſuo & in confractione cordis ſui, quo ille laborat ſub Sole in ſec
Etenim omnes dies ejus moleſti, & *fortem reddit indignationem*
tium ejus: etiam noctu non dormit præ ſolicitudinibus co
hoc vanitas eſt.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܚܙܝܬ ܐܢܐ ܒܟܠ ܥܒ̈ܕܐ ܕܥܒܕ̈ܝ ܐܝܕ̈ܝ . ܘܒܟܠܗ ܥܡܠܐ ܕܥܡܠܬ ܠܡܥܒܕܗܘܢ.
ܟܠܗܘܢ ܗܒܠܐ ܘܫܘܓܫܐ ܕܪܘܚܐ. ܘܠܝܬ ܝܘܬܪܢܐ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܘܚܙܝܬ
ܠܡܚܙܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܡܥܒܪܢܘܬܐ. ܘܣܟܠܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܡܢܘ ܓܒܪܐ
ܒܬܪ ܡܠܟܐ ܒܕܝܢܐ . ܟܡܐ ܟܡܐ ܡܢ ܕܥܒܕܗ. * ܘܫܟܚܬ ܕܝܬܝܪܐ ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܣܟܠܘܬܐ.
ܡܢ ܣܟܠܘܬܐ . ܐܝܟ ܕܝܬܝܪ ܢܘܗܪܐ ܡܢ ܚܫܘܟܐ. * ܚܟܝܡܐ ܥܝܢ̈ܘܗܝ ܒܪܫܗ. ܘܣܟܠܐ
ܒܚܫܘܟܐ ܐܙܠ. ܘܝܕܥܬ ܕܓܕܫܐ ܚܕ ܓܕܫ ܠܟܠܗܘܢ. * ܘܐܡܪܬ ܐܢܐ ܒܠܒܝ. ܐܝ
ܓܕܫܐ ܕܣܟܠܐ. ܐܦ ܠܝ ܢܓܕܫ . ܘܠܡܢܐ ܚܟܡܬ ܐܢܐ ܝܬܝܪܐܝܬ. ܘܡܠܠܬ
ܒܠܒܝ. ܕܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ ܗܘ. * ܡܛܠ ܕܣܟܠܐ ܡܢ ܝܬܝܪ ܡܡܠܠ. ܡܛܠ
ܕܠܝܬ ܕܘܟܪܢܐ ܠܚܟܝܡܐ ܥܡ ܣܟܠܐ ܠܥܠܡ. ܐܝܟ ܕܝܘ̈ܡܬܐ ܕܡܢ ܩܕܡ ܐܬܝܢ. ܘܟܠ
ܡܬܛܥܐ. ܘܐܝܟܢܐ ܕܡܐܬ ܚܟܝܡܐ ܥܡ ܣܟܠܐ. * ܘܣܢܝܬ ܐܢܐ ܚܝ̈ܐ. ܡܛܠ
ܕܒܝܫ ܠܝ ܥܒܕܐ ܕܐܬܥܒܕ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܡܕܡ ܗܒܠܐ ܘܫܘܓܫܐ ܕܪܘܚܐ. *
ܐܢܐ ܟܠܗ ܥܡܠܝ . ܕܐܢܐ ܥܡܠܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܡܛܠ ܕܫܒܩ ܐܢܐ ܠܗ ܠܓܒܪܐ
ܕܗܘܐ ܒܬܪܝ. * ܘܡܢ ܝܕܥ . ܐܢ ܚܟܝܡܐ ܢܗܘܐ . ܐܘ ܣܟܠܐ. ܘܢܫܠܛ ܒܟܠܗ
ܕܐܢܐ ܥܡܠܬ. ܘܕܐܬܚܟܡܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ. *
ܠܡܫܒܩܘ ܠܒܝ . ܥܠ ܟܠ ܥܡܠܐ ܕܥܡܠܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܡܛܠ ܕܐܝܬ
ܕܥܡܠܗ ܒܚܟܡܬܐ ܘܒܝܕܥܬܐ ܘܒܟܫܝܪܘܬܐ. ܘܠܐܢܫܐ ܕܠܐ ܥܡܠ ܒܗ .
ܠܗ ܡܢܬܗ. ܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ ܘܒܝܫܬܐ ܪܒܬܐ. * ܕܡܢܐ ܗܘܐ ܠܒܪܢܫܐ ܒܟܠ
ܥܡܠܗ. ܘܒܨܒܝܢܐ ܕܠܒܗ. ܕܗܘ ܥܡܠ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܝܘܡ̈ܘܗܝ
ܟܐܒܐ ܘܪܘܓܙܐ ܥܢܝܢܗ. ܐܦ ܒܠܠܝܐ ܠܐ ܫܟܒ ܠܒܗ. ܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ.

Prætereà conſideravi ego omne opus quod 11
egerant manus meæ, & omnem laborem in
quo exercendo fatigatus fueram : ſed ecce
omnia vanitas & perturbatio ſpiritûs, nec
ullum eſt emolumentum ſub ſole. Et reſpexi 12
ut conſiderarem ſapientiam & tranſgreſſionem
atque ſtultitiam : quid enim eſt
homo, ut ingrediatur poſt regem in judicium,
ac multò magis cum factore ſuo ? Et 13
deprehendi tantò præſtantiorem eſſe ſapientiam
ſtultitiâ, quantò præclarius eſt lumen
tenebris. Sapientis oculi ſunt in capite 14
ipſius : ſtultus autem in tenebris incedit. Prætereà
cognovi idem accidens omnibus evenire.
Et dixi ego in corde meo, Si caſus 15
idem ſtulti, mihi etiam contingat, quorſum
igitur majorem ego ſapientiam acquirerem ?
Et pronuntiavi in corde meo, quòd hoc etiam
ſit vanitas. Quoniam ſtultus abundè 16
loquitur : quoniam ſapienti non erit memoria
cum ſtulto in æternum; non ſecus ac dies jampridem
reverſi, utque omnia traduntur oblivioni,
& quemadmodum moritur ſapiens cum
ſtulto. Quapropter odi vitam, quoniam diſplicet 17
mihi opus quod factum eſt ſub ſole :
quandoquidem omnia ſunt inanitas, & animi
moleſtia. Odi quoque omnem laborem meũ 18
quo me fatigavi ſub ſole, quòd ſim relicturus
illum homini qui poſt me erit. Quis autem ſcit 19
utrùm ſapiens futurus ſit, an ſtultus ? & tamen
potietur omnium laborum meorum in quibus
ego deſudavi, quæque induſtriâ meâ acquiſivi
ſub ſole : & hoc etiam eſt inanitas. Quapropter 20
reverſus ſum ut relaxarem cor meum
pro omni labore quem laboravi ſub ſole. Invenitur 21
namque homo cuj⁹ labor *inſumitur*
in ſapientia, & ſcientiâ, atque ſolertiâ, & ſortem
ſuam tradit homini minimè laboranti in
illa : & hoc etiam vanitas eſt & ſumma miſeria.
Quid enim reſultat homini ex omni 22
labore ſuo, & placito cordis ſui, quo fatigatur
ſub ſole ? Nam cunctis diebus ſuis occupatio 23
ipſius dolor eſt atque indignatio, & ne
nocte quidem quieſcit cor ejus : & hoc etiam
vanitas.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ونظرت انا في جميع صنايعي التي صنعتها يداي * وفي تعبي الذي تعبته في
افتعالها * فاذاها كلها باطلة واختيار الروح * ولن يوجد فيها فضلة تحت الشمس *
* وتبصرت انا لانظر الي الحكمة وحركة دور الزمان والغباوة * لان أي انسان
وراء المسون فيعرف ما عمله الناس بها * فعلمت انا ان الحكمة لها مثل فضل
الغباوة كما يفضل فضل النور على الظلمة * الحكيم عيناه في راسه * والغبي يسلك
الظلمة * وعلمت انا ان لقيا واحدة تلتقيهم كلهم * فقلت انا في قلبي * مثل
الغبي * وكذلك تلتقيني * فلم تحكمت * حينئذ تكلمت في قلبي فضلة * لان
الغبي من فضلة قلبه يتكلم * ولعمري ان هذا باطل * لان لن يوجد ذكر
مع الغبي * فابغضت الحياة كلها معا * لان الصناعة المعمولة تحت الشمس ردية على
لان كل الاشياء باطلة واختيار الروح * فابغضت انا جميع تعبي الذي اتعبه انا
الشمس * لاني اتركه للانسان الصاير بعدي * ومن قد علم ان كان
حكيما او غبيا * وان كان يستولي على تعبي كله الذي تعبته وتحكمت
تحت الشمس * ولعمري ان هذا باطل * وعاودت انا ازهد بقلبي في كافة
الذي تعبت فيه تحت الشمس * ان يكون انسان تحصل تعبه في الحكمة وفي
وفي السماحة * ويكون انسان ما تعب في هذا يعطيه حصته * وهذا لعمري فباطل
عظيم * لان ماذا يصير للانسان في جميع تعبه واختيار قلبه كما يتعب هو تحت
* لان كافة ايامه تعلبه موعب من الاوجاع والغضب * ومع هذا فقلبه ما ينام في الليل
وهذا لعمري باطل *

Deinde reſpexi ego cuncta opera mea 11
quæ fecerant manus meæ, meumque
laborem quem tuleram in iis agendis,
& ecce omnia vana ſunt & animi
libitum, nec ullum reperitur in eis emolumentum
ſub ſole. Reſpexi etiam ut 12
contemplarer ſapientiam, & motum revolutionis
temporum, atque dementiam,
quis enim mortalium ſequatur conſilium,
ac ſciat quæ fecerint homines per
illud ? Et cognovi quòd ſapientia tantùm 13
dignitate præſtat dementiæ, quantùm
lucis præſtantia tenebris antecellit.
Sapientis oculi ſunt in capite ipſius, 14
ſtolidus verò ambulat in tenebris.
Sciens autem ego quòd idem caſus
omnibus contingat, Dixi apud meipſum, 15
Juxta caſum dementis, ita mihi
continget, cur ergò ſapiens evaſi ?
Tunc abundanter ſum locutus in corde
meo (ſtolidus enim ex abundantia cordis
ſui loquitur) & hoc quidem vanum
eſt : Non enim reperietur memoria 16
ſapientis cum ſtolido. Quapropter 17
totam pariter odi vitam, quoniam
laborioſum eſt mihi opus quod
fit ſub ſole : quandoquidem res omnes
vanæ ſunt, & placitum ſpiritûs.
Et odi omnem laborem meum cui deſudo 18
ſub ſole, quia relicturus ſum eum
homini poſt me futuro, Et quis novit 19
utrùm ſapiens futurus ſit, an ſtolidus ?
Quòd ſi dominaturus eſt in omnem laborem
meum cui deſudavi & induſtriosè
ſtudui ſub ſole, certè hoc vaniſſimum
eſt. Quare converſus ego renuntiavi 20
in corde meo omni labori quo
fatigatus fueram ſub ſole : Siquidem 21
eſt homo qui laborem ſuum acquirit
per ſapientiam, per ſcientiam, perque
generoſitatem : eſtque homo qui non laboravit
in hoc, cui dabit ſortem ſuam :
atque id quidem vanum eſt, ac ſummum
malum. Quid enim provenit homini 22
ex labore ſuo & placito cordis
ſui, quandiu ipſe laborat ſub ſole ?
Nam cunctis diebus ſuis, moleſtis 23
detinetur negotiis, doloribus & indignatione
plenus ; & adhæc cor ejus non
dormit noctu : & hoc ſanè vanum
eſt ;

קהלת : ג

ſuæ animæ oſtendat &, bibat & ,comedat quòd ,homine in bonum Non
24 אין־טוב באדם שיאכל ושתה והראה את־נפשו
Dei manu de quòd ego vidi hoc etiam : ſuo labore in bonum
טוב בעמלו גם־זה ראיתי אני כי מיד האלהים
Quia me præ extra ſentiet quis & ,comedet quis Quia illud
25 היא : כי מי יאכל ומי יחוש חוץ ממני : כי
26 : lætitiam &,ſcientiam & ,ſapientiam dedit ,ejus facies ad bonus qui homini
לאדם שטוב לפניו נתן חכמה ודעת ושמחה
dandum ad congregandum ad &,colligendum ad negotium dedit peccatori &
ולחוטא נתן ענין לאסף ולכנוס לתת
.ſpiritus paſtio & , vanitas hoc etiam : Dei facies ad bono
לטוב לפני האלהים גם־זה הבל ורעות רוח :

CAP. III. ג

.cœlis ſub voluntati omni tempus &,determinatū tempus Omnibus
1 לכל זמן ועת לכל־חפץ תחת השמים :
evellendi tempꝰ &,plantandi tempꝰ :moriendi tempꝰ &,naſcendi Tempus
2 עת ללדת ועת למות עת לטעת ועת לעקור
,irrumpendi tempus : medendi tempus & ,occidendi Tempus .plantatum
3 נטוע : עת להרוג ועת לרפוא עת לפרוץ
,plangendi tempus,ridendi tempus & ,flendi Tempus .ædificandi tempus &
4 ועת לבנות : עת לבכות ועת לשחוק עת ספוד
acervandi tempus & , lapides projiciendi Tempus .ſaltandi tempus &
5 ועת רקוד : עת להשליך אבנים ועת כנוס
.amplectendo ab ſe elongandi tempus & ,amplexandi tempus : lapides
אבנים עת לחבוק ועת לרחק מחבק :
.projiciendi tēpus &,cuſtodiendi tēpus :perdendi tēpus &,quærēdi Tempus
6 עת לבקש ועת לאבד עת לשמור ועת להשליך :
.loquendi tempus & ,tacendi tempus :ſuendi tempus &,ſcindendi Tempus
7 עת לקרוע ועת לתפור עת לחשות ועת לדבר :
.pacis tempus & ,belli tempus :habendi odio tēpus &,diligēdi Tēpus
8 עת לאהב ועת לשנא עת מלחמה ועת שלום :
?negotium Vidi ? laborans ipſe quo in facientis præſtantia Quæ
9 מה־יתרון העשה באשר הוא עמל : ראיתי את־הענין
10 Omne .ea in ſe affligendū ad hominum filiis Deus dedit quod
11 אשר נתן אלהים לבני האדם לענות בו : את־הכל
eorum corde in dedit ſeculum Etiam .ſuo tempore in pulchrum fecit
עשה יפה בעתו גם את־העלם נתן בלבם
fecit quod opus homo inveniret non quòd propter
מבלי אשר לא־ימצא האדם את־המעשה אשר עשה
: eis in bonum non quòd Novi .finem ad uſque & capite à Deus
12 האלהים מראש ועד־סוף : ידעתי כי אין טוב בם
homo omnis etiam Et .ſuis vitis in bonum facere & , lætari quum
13 כי אם־לשמוח ולעשות טוב בחייו : וגם כל־האדם
.ipſum Dei donū,ſuo labore omni in bonū videat &,bibat &,cōedat quod
שיאכל ושתה וראה טוב בכל־עמלו מתת אלהים היא :

Verſio VUL. LAT.

24 Nónne meliꝰ eſt comedere & bibere, & oſtendere animæ ſuæ bona de laboribꝰ ſuis? & 25 hoc de manu Dei eſt. Quis ita devorabit, & deliciis affluet 26 ut ego? Homini bono in conſpectu ſuo dedit Deꝰ ſapientiam, & ſcientiā, & lætitiam: peccatori autem dedit afflictionem, & curā ſuperfluā, ut addat, & congreget, & tradat ei qui placuit Deo: ſed & hoc vanitas eſt, & caſſa ſolicitudo mentis.

CAP. III.

1 Omnia tempus habent, & ſuis ſpatiis tranſeunt univerſa 2 ſub cœlo. Tempus naſcendi, & tempus moriendi. Tempus plantandi, & tempꝰ evellendi 3 ꝙ plantatum eſt. Tempus occidendi, & tempus ſanandi. Tempus deſtruendi, & tempꝰ 4 ædificandi. Tempus flendi, & tempꝰ ridēdi. Tempꝰ plangen-5di, & tempꝰ ſaltandi. Tempus ſpargendi lapides, & tempus colligendi. Tempꝰ amplexandi, & tempꝰ longe fieri ab am-6plexibꝰ. Tempꝰ acquirendi, & tempꝰ perdendi. Tempꝰ cuſtodiendi, & tempus abjiciendi. 7 Tempus ſcindendi, & tempus conſuendi. Tempus tacendi, & 8 tempus loquendi. Tempꝰ dilectionis, et tempꝰ odii. Tempꝰ 9 belli, & tempꝰ pacis. Quid habet ampliùs homo de labore 10 ſuo? Vidi afflictionē, quā dedit Deꝰ filiis hominū, ut diſten-11dantur in ea. Cuncta fecit bona in tempore ſuo, & mundū tradidit diſputationi eorū, ut non inveniat homo opꝰ, ꝙ operatꝰ eſt Deꝰ ab initio uſq; ad finē. 12 Et cognovi ꝙ non eſſet meliꝰ niſi lætari, & facere benè in 13 vita ſua. Omnis enim homo, qui comedit & bibit, & videt bonum de labore ſuo, hoc donum Dei eſt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

24 †Οὐκ ἔστιν ἀγαθὸν ἀνθρώπῳ, (α) ὃ φάγεται καὶ ὃ πίεται †καὶ ὃ δείξει τῇ ψυχῇ αὐτοῦ ἀγαθὸν ἐν μόχθῳ αὐτοῦ. †καί γε τοῦτο εἶδον ἐγὼ ὅτι ἀπὸ 25 χειρὸς τοῦ θεοῦ ἐστιν. †Ὅτι τίς φάγεται καὶ τίς πί-26εται πάρεξ αὐτοῦ; †Ὅτι τῷ ἀνθρώπῳ τῷ ἀγαθῷ πρὸ προσώπου αὐτοῦ †ἔδωκεν σοφίαν καὶ γνῶσιν καὶ εὐφροσύνην, †καὶ τῷ ἁμαρτάνοντι ἔδωκεν περισπασμὸν †τοῦ προσθεῖναι καὶ τοῦ συναγαγεῖν, †τοῦ δοῦναι τῷ ἀγαθῷ πρὸ προσώπου τοῦ θεοῦ. †ὅτι καί γε τοῦτο ματαιότης καὶ προαίρεσις πνεύματος.

ΚΕΦ. γʹ.

1 †ΤΟῖς πᾶσιν ὁ χρόνος, †καὶ καιρὸς τῷ παντὶ 2 πράγματι ὑπὸ τὸν οὐρανόν. Καιρὸς τοῦ τεκεῖν †καὶ καιρὸς τοῦ ἀποθανεῖν, †καιρὸς τοῦ φυτεῦσαι καὶ καιρὸς τοῦ ἐκτῖλαι τὸ πεφυτευμένον, 3 †Καιρὸς τοῦ ἀποκτεῖναι καὶ καιρὸς τοῦ ἰάσασθαι, †καιρὸς τοῦ καθελεῖν καὶ καιρὸς (α) τοῦ οἰκο-4δομεῖν, †Καιρὸς τοῦ κλαῦσαι καὶ καιρὸς τοῦ γελάσαι, †καιρὸς τοῦ κόψασθαι, καὶ καιρὸς τοῦ ὀρχήσα-5σθαι, †Καιρὸς τοῦ βαλεῖν λίθους καὶ καιρὸς τοῦ συναγαγεῖν λίθους, †καιρὸς τοῦ περιλαβεῖν καὶ καιρὸς τοῦ μακρυνθῆναι (β) ἀπὸ περιλήψεως, 6 †Καιρὸς τοῦ ζητῆσαι καὶ καιρὸς τοῦ ἀπολέσαι, †καιρὸς τοῦ φυλάξαι καὶ καιρὸς τοῦ ἐκβαλεῖν, 7 †Καιρὸς τοῦ ῥῆξαι καὶ καιρὸς τοῦ ῥάψαι, †καιρὸς 8 τοῦ σιγᾶν καὶ καιρὸς τοῦ λαλεῖν. †Καιρὸς τοῦ φιλῆσαι καὶ καιρὸς τοῦ μισῆσαι, †καιρὸς πολέμου 9 καὶ καιρὸς εἰρήνης. †Τίς περισσεία τοῦ ποιοῦν-10τος ἐν οἷς αὐτὸς μοχθεῖ; †Εἶδον (γ) σὺν πάντα τὸν περισπασμὸν, ὃν ἔδωκεν ὁ θεὸς †τοῖς υἱοῖς (δ) τῶν ἀνθρώπων τοῦ περισπᾶσθαι ἐν αὐτῷ. 11 †(ε) Τὰ σύμπαντα ἃ ἐποίησε καλὰ ἐν καιρῷ αὐτοῦ. †καί γε (ζ) σύμπαντα τὸν αἰῶνα ἔδωκεν ἐν καρδίᾳ αὐτῶν, †ὅπως μὴ εὕρῃ ὁ ἄνθρωπος τὸ ποίημα ὃ ἐποίησεν ὁ θεὸς †ἀπ᾽ ἀρχῆς καὶ μέ-12χρι τέλους. †Ἔγνων ὅτι οὐκ ἔστιν ἀγαθὸν ἐν αὐτοῖς, †εἰ μὴ τοῦ εὐφρανθῆναι καὶ τοῦ ποιεῖν ἀγα-13θὸν ἐν ζωῇ αὐτοῦ. †Καί γε (θ) πᾶς ὁ ἄνθρωπος ὃς φάγεται καὶ πίεται, †(γαθὸν ἐν παντὶ μόχθῳ αὐτοῦ, †(ι) δόμα θεοῦ ἐστιν.

MS. A. (α) ὃς φάγεται καὶ πίεται
(β) ἀπὸ περιλήμματος, (γ) σὺν τὸν πειρασμὸν, (δ) τοῦ ἀνθρώπου (ε) Σύ
(ζ) σὺν τὸν αἰῶνα (η) αὐτοῦ, (θ) πᾶς ἄνθρωπος (ι) τοῦτο δόμα

Κεφ. γʹ. MS. A. (α) τοῦ

Non eſt bonū homini, (αα) quod
edet, & quod bibet, & quod
animæ ſuæ bonū (ββ) in labore
Et quidem hoc vidi ego, quod de
nu Dei eſt. Quis enim come
quis (γγ) bibet ſine illo? (δδ)
homini bono corā ſe dedit
& ſcientiā, et lætitiā
dit (ωω) ſolicitudinē
& congreget ad dādū
ciem Dei. Quoniam & hoc
& præſumptio ſpiritus.

CAP. III.

OMnibꝰ (a) tempꝰ eſt &
(b) omni rei ſub cœlo Tempus
di, & tempꝰ moriendi: tempus
tandi, & tempus (c) evellendi
plantatum eſt. Tempus occidendi
tempus ſanandi: tempus deſtruendi
tempus ædificandi. Tempus flendi
tempus ridendi: tempus plangendi
tempus ſaltandi: Tempus (d)
di lapides, & tempus colligendi
des: tempus amplexandi, &
longè fieri ab (e) amplexu
quærendi, & tempus perdendi
cuſtodiendi, & tempus
Tempꝰ ſcindendi, et tempus
di: tempus tacendi, & tempus
di: Tempus (f) amandi, &
diendi: tempus belli, & tempus
cis. Quæ abundantia eſt
quibus ipſe laborat? Vidi
ſtrationē, quā dedit Deus
nū, ut diſtendantur in ea.
quæ fecit (g) bona in tempore
quidē (h) omne ſeculū dedit
corū, ut (i) non inveniat
quod fecit Deus ab initio
que in finē. Cognovi quia
num in eis, niſi lætari, &
in vita ſua. Et quidē omnis
comedet, & bibet, &
in omni labore ſuo, donum

תרגום Targum.

24 לית דשפיר באנשא אלהין די ייכול וישתי ויחזי ית נפשיה טב קדם בני אנשא למעבד ית
פקודיא למהך באורחן דתקנן קדמוהי בגין דיוטיב ליה מן טורחיה אף דין חזית אנא דגבר
25 מצלח בעלמא הדין מן ידא דיי הוא דאתגזר למהוי עלוהי : ארום מן הוא די עסק בפתגמי
26 אוריתא ומן הוא גברא דאית ליה חששא מן יום דינא רבא דעתיד למיתי בר מני : ארום
לאנש דתקנן עובדוהי קדם יי יהב חוכמתא ומנדעא בעלמא הדין וחדוא עם צדיקיא
לעלמא דאתי ולגברא חיבא יהב גון ביש למכנש ממון ולמצבר קנין סגי למהוי מתנסיב
מניה ולמהוי מתיהיב לגבר דשפיר קדם יי אף דין הבלו הוא לחיבא ותבירות רוחא :

ג

1 לכל גבר ייתי זמנא ועדנא לכל עסקא תחות שמיא : עדן בחיר למילד בנין ובנן ועדן בחיר
2 לקטלא בנין מסרבין ומרגזין לקטלותהון באבנין על מימר דינא עדן בחיר למנצב אילן
3 ועדן בחיר לשרשא אילן נציב : עדן בחיר לקטלא בקרבא ועדן בחיר לאסאה שכיב מרע
4 עדן בחיר לפרכא בנינא ועדן בחיר למבני חורבנא : עדן למבכי על שכיבא ועדן בחיר
5 למחדי בחוכא ועדן בחיר למספדא על קטילא ועדן בחיר לטפזא בהלולא : עדן בחיר
לפקחא דגור אבנין ועדן בחיר למצבר אבנין לבנינא ועדן בחיר לגפפא אתתא ועדן בחיר
6 לרחקא מגפפא בשבעת יומי אבלא : עדן בחיר למתבע נכסיא ועדן בחיר למיבד נכסיא עדן
7 בחיר למנטר עסקא ועדן בחיר למשדי עסקא בימא בעדן נחשולא רבא : עדן בחיר למבזע
לבושא על שכיבא ועדן בחיר דלאחטא בויעא עדן בחיר למשתק מלצלאה ועדן בחיר
8 למללא פתגמי מציתא : עדן בחיר לרחמא חד לחבריה ועדן בחיר למסני לגבר חיבא עדן
9 בחיר לאגחא קרבא ועדן בחיר למעבד שלמא : מה מותר אית לגבר פלח די הוא טרח
10 למעבד אוצרין ולמכנש ממון אלולי מסתיע במולא דלעילא : חזית ית גון אסורין
11 ופורענותא די יהב יי לבני אנשא די אנון רשיעין לסגפותהון בידה : אמר שלמה מלכא
ברוח נבואה ית כולא עבד יי שפיר בעדניה דחויא דהות מצותא דהות ביומי ירבעם בר
נבט למהוי ביומי שבע בר בכרי ואתעכבת והות ביומי ירבעם בר נבט דאלו הות ביומי
שבע בר בכרי לא הות מתבני בית מוקדשא על עסק עגלין דדהב די עבד ירבעם חיבא
ושואנון חד בביתאל וחד בדן ומני פרוובין על שבילא ופסקו עולי רגלאין ובגין כן
אתעכבת עד די יתבני בית מוקדשא בגין דלא יעכבון ישראל למבני יתיה אף ית שמא
דהות כתיב ומפרש על אבן שתיא כסי מנהון דאשתמודע קדמוהי יצרא בישא די בלבהון
דאלו הוה מסיר ביד אנשי הוה משמש בידיה ומשכח בנוה מה דעתיד למהוי בסוף יומיא
עד עלמי עלמיא ואוף יום מותא כסי מנהון בדיל דלא יהודע לגבר מן רישא מה דעתיד
12 למיתי בסופא : אמר שלמה מלכא ברוח נבואה ידעית ארום לית טב תהון בבני אנשא
13 ארום אלהן למחדי בחדות אוריתא ולמעבד טב ביומי חיוהי : ואוף כל אנש דייכול וישתי
ויחזי טב ביומוי ויחסין לבנוי בעדן מותיה כל טרחותיה מתנן דאתיהיבא ליה מן קדם
יי הוא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Non eſt quod pulchrū appareat in homine, niſi ut comedat & bib dere faciat animā ſuā bona ante filios hominis, exequendo man mini] & ambulando in viis quæ rectæ ſunt corā eo, ut benefiat e ſuo: etiam hoc vidi ego, quòd vir qui proſperatur in ſeculo hoc Dñi ſit, *quod hoc decretum eſt futurum de eo.* Etenim quis eſt operā verbis Legis, & quis ille vir cui ſit ſolicitudo de die judic qui venturꝰ eſt, præter me? Etenim homini cujꝰ opera recta minū, dedit ſapientiā & ſcientiā in ſeculo hoc, & lætitiā cū juſtis venturo: & viro peccatori dedit negotia mala ad cōgregandū & ad acervandā poſſeſſionē multā, ut auferatur ab eo, & chriori [*ipſo*] ante Dñm: etiā hoc vanitas *eſt peccatori* & cōtritio

CAP. III.

OMni viro veniet tempꝰ, & opportunitas omni negotio ſub pus electū ad generandū filios *& filias,* & tempꝰ electū ad occi nequā & irritantes, *interficiendo eos lapidibus ex ſententia* electū ad plantandū arborē, & tempꝰ electū ad evellendū arbor Tempꝰ idoneū ad occidendū *in bello,* & tēpus idoneū ad cura ægrotū: tēpus idoneū ad diruendū ædificiū, & tēpus idoneū diruta. Tēpus ad lugendū ſup jacentē, et tēpus idoneū ad læ tēpus idoneū ad lamentandū ſup occiſum, & tēpus idoneū in lætitia. Tempus idoneū ad disjiciendū cumulū lapidū, & ad cōgregandū lapides ad ædificiū: tēpus idoneū ad amplex & tēpus idoneū ad elongandū ab amplexu, *in ſeptē diebus luctu* idoneū ad quærendas divitias, & tēpus idoneū ad perdendas idoneū ad cuſtodiendā rem, et tempꝰ idoneū ad effundendam in tēpore tēpeſtatis magnæ. Tempꝰ idoneū ad lacerandū veſt *mortuo,* & tēpus idoneum ad conſuendā ſciſſurā: tempus idone dum *ab orando,* & tēpus idoneum ad eloquenda verba cōtrov idoneum ut unus amet ſocium ſuum, & tēpus idoneum ut odi rum peccatorē: tēpus idoneum ad ineundum bellum, & tēpus faciendā pacem. Quid reliqui eſt viro ſervienti qui laborat thesauros, & ad congregandū mammonā, niſi adjuvetur Vidi negotium caſtigationum, & vindictam quàm dedit Dñs qui ſunt improbi ut affligantur in eo. *Dixit Selomoh rex prophetiæ,* Univerſum fecit Dominus pulchrum in tempore ſuo *enim ut illud diſſidium, quod evenit in diebus Jeroboam filii in diebus Seba filii Bichri, ſed dilatum eſt ut acciderent filii Nebat; nam ſi fuiſſet in diebus Seba filii Bichri,* haud *domus ſanctuarii, propter vitulos aureos quos fecit Jeroboam locavit eos unum in Bethel & alterum in Dan ſtatutis cuſtod ut ceſſarent aſcendentes ad feſta; propterea retardatum eſt tur domus ſanctuarii, ne impedirent Iſrael quo minus Nomen etiam, quod erat inſcriptum & explicatum in lap celavit ab eis; manifeſtū ſiquidē erat in cōſpectu illiꝰ ingen in corde illorū, ſi traditum fuiſſet in manum hominum, ejꝰ ope inventurū quod futurum eſt in fine dierum in ſecula denique, mortis occultavit ab illis,* ne innoteſcat viro à princ *rum* ſit in fine. *Dixit Selomoh rex per ſpiritum prophetiæ* non eſt bonum in illis, in filiis [*inquam*] hominis, niſi ut del ctitione Legis, & faciant bonum in diebus vitæ ſuæ. Et et ut comedat & bibat & videat bonū in diebus ſuis, & hær Iiis ſuis in tēpore mortis ſuæ omnē laborē ſuum: donum quod datum eſt ei, à

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܝܬ ܛܒ ܠܒܪܢܫܐ . ܐܠܐ ܕܢܐܟܘܠ ܘܢܫܬܐ. ܘܢܚܘܐ ܛܒܬܐ ܠܢܦܫܗ 24
ܒܥܡܠܗ. ܘܐܦ ܗܕܐ ܚܙܝܬ. ܕܡܢ ܐܝܕܐ ܗܝ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܡܢܘ ܢܐܟܘܠ 25
ܘܡܢܘ ܢܫܬܐ ܣܛܪ ܡܢܗ. * ܡܛܠ ܕܠܒܪܢܫܐ ܕܛܒ ܩܕܡܘܗܝ . ܝܗܒ 26
ܚܟܡܬܐ ܘܝܕܥܬܐ ܘܚܕܘܬܐ : ܘܠܚܛܝܐ. ܝܗܒ ܥܢܝܢܐ. ܠܡܘܣܦܘ ܘܠܡܟܢܫܘ.
ܘܠܡܬܠ ܠܕܛܒ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܦ ܗܢܐ. ܗܒܠܐ ܘܬܘܪܦܐ ܕܪܘܚܐ.

* Non eſt quod proficiat homini, niſi edere 24
ac bibere, & oſtendere animæ ſuæ bonum
de labore ſuo : & hoc etiam deprehendi
eſſe de manu Domini. Quis enim come- 25
dat, & quis bibat præter ipſum? Nam ho- 26
mini qui probus eſt in conſpectu ſuo, lar-
gitur *Deus* ſapientiam, & ſcientiam, ac læ-
titiam : peccatoribus autem dat curam au-
gendi & coacervandi, dandíque ei qui bo-
nus eſt coram Domino : atque hoc etiam
vanitas eſt, & animi perturbatio.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

CAP. III.

* ܠܟܠ ܡܕܡ ܙܒܢܐ. ܘܙܒܢܐ ܠܟܠ ܨܒܘ ܬܚܝܬ ܫܡܝܐ. * ܙܒܢܐ ܠܡܬܝܠܕ . ܘܙܒܢܐ 1 2
ܠܡܡܬ. ܙܒܢܐ ܠܡܢܨܒ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܥܩܪ ܢܨܒܬܐ. * ܙܒܢܐ ܠܡܩܛܠ . ܘܙܒܢܐ 3
ܠܡܐܣܝܘ. ܙܒܢܐ ܠܡܣܬܪ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܒܢܐ. * ܙܒܢܐ ܠܡܒܟܐ . ܘܙܒܢܐ 4
ܠܡܓܚܟ. ܙܒܢܐ ܠܡܪܩܕܘ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܪܩܕܘ. * ܙܒܢܐ ܠܡܫܕܝܘ ܟܐܦܐ . 5
ܘܙܒܢܐ ܠܡܟܢܫܘ ܟܐܦܐ. ܙܒܢܐ ܠܡܓܦܦ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܪܚܩܘ ܡܢ ܓܘܦܐ.
* ܙܒܢܐ ܠܡܘܒܕܘ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܒܥܐ . ܙܒܢܐ ܠܡܐܣܪ. ܘܙܒܢܐ ܠܡܫܪܐ. * ܙܒܢܐ 6 7
ܠܡܨܪܐ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܚܝܛ. ܙܒܢܐ ܠܡܫܬܩ . ܘܙܒܢܐ ܠܡܡܠܠܘ. * ܙܒܢܐ ܠܡܪܚܡ . 8
ܘܙܒܢܐ ܠܡܣܢܐ. ܙܒܢܐ ܠܩܪܒܐ . ܘܙܒܢܐ ܠܫܠܡܐ. * ܘܡܢܐ ܝܘܬܪܢܐ ܠܥܒܕܐ. ܒܗܝ 9
ܕܥܡܠ. * ܚܙܝܬ ܥܢܝܢܐ. ܕܝܗܒ ܡܪܝܐ ܠܒܢܝܢܫܐ ܠܡܬܥܢܝܘ ܒܗ: * ܟܠ 10 11
ܕܥܒܕ. ܫܦܝܪ ܒܙܒܢܗ. ܘܐܦ ܠܥܠܡܐ. ܝܗܒ ܒܠܒܗܘܢ. ܐܝܟ ܕܠܐ ܢܫܟܚ ܐܢܫ
ܥܒܕܐ ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ. ܡܢ ܪܫܗ ܘܥܕܡܐ ܠܚܪܬܐ. * ܘܝܕܥܬ ܕܠܝܬ ܛܒ ܒܗܘܢ. 12
ܐܠܐ ܠܡܚܕܐ ܘܠܡܥܒܕ ܛܒ ܒܚܝܘܗܝ. * ܘܐܦ ܟܠ ܐܢܫ ܕܢܐܟܘܠ ܘܢܫܬܐ 13
ܘܢܚܙܐ ܛܒܬܐ ܒܟܠ ܥܡܠܗ . ܡܘܗܒܬܐ ܗܝ ܕܡܪܝܐ.

* OMnibus rebus eſt tempus, & cuncta ne- 1
gotia tempus habent ſub ſole. Tempus na- 2
ſcendi, & tempus moriendi : tempus plan-
tandi, & tempus evellendi plantatum :
Tempus occidendi, & tempus ſervandi vi- 3
tam : tempus deſtruendi, & tempus ædifi-
candi : Tempus flendi, & tempus riden- 4
di : tempus plangendi, & tempus ſaltandi.
Tempus projiciendi lapides, & tempus col- 5
ligendi lapides : tempus amplexandi, &
tempus recedendi ab amplexu. Tempus 6
amittendi, & tempus quærendi : tempus
ligandi, & tempus ſolvendi : Tempus 7
lacerandi, & tempus conſuendi : tempus
tacendi, & tempus loquendi. Tempus a- 8
mandi, & tempus odiendi : tempus belli,
& tempus pacis. Et quæ utilitas in opere 9
in quo ipſe deſudat? Vidi occupationem 10
quam Dominus dedit hominibus, ut occu-
parentur in ea : Quicquid agit, bonum 11
eſſe in tempore ſuo : & mundum indidiſſe
cordi eorum, ut non inveniat homo opus
quod egit Dominus ab initio uſque ad fi-
nem. Et percepi non eſſe ipſis melius, 12
quàm lætari & benefacere in vita ſua. Imò 13
etiam quicunque comedit ac bibit, fruitúr-
que bono ex omni labore ſuo, donum eſt
Domini.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولن يوجد للانسان شيا صالحا سوي ما ياكل ويشرب وما يراه لنفسه صالحا في تعبه * 24
ومع هذا عرفت انا هذا انه من يد الله هو * لان من ياكل ومن يشرب حلوا منه * 25
* لانه مع الانسان الصالح * واورد لدى وجهه حكمة وسرورا * واعطا لمن يخطي 26
تعبا ليزداد ويجمع ليعطي ذلك للصالح امام وجه الله * وهذا لعمري فباطل واختيار
الروح *

Nec invenitur homini quicquam boni, 24
præter id quod comedit ac bibit, & bo-
num quod ſibi experitur in labore ſuo :
inſuper deprehendi ego id eſſe de manu
Dei. Quis enim eſurus eſt, & quis 25
bibiturus præter ipſum? Nam ipſe dat 26
homini probo, & affert in conſpectum
ejus ſapientiam & gaudium : ei verò
qui peccat, negotium dat moleſtum, ut
acquirat congeratque, quatenus tradat
illud ei qui probus eſt in conſpectu
Dei : quod ſanè vanum eſt, & animi
placitum.

* الفصل الثالث *

CAP. III.

* لكل الزمان * ولكل امر تحت السماء اوان * للولودة وقت وللوفاة وقت * وللاقلاع 1 2
الغروس وقت وللاغتراس وقت * للقتل اوان وللمداواة اوان * للنقض وقت وللابتناء وقت * 3
* للبكاء اوان وللضحك اوان * للانتحاب وقت وللرقص وقت * لرمي الحجارة وقت 4 5
وجمع الحجارة وقت * للاعتناق وقت وللافتراق وقت * للطلب وقت وللاضاعة وقت * 6
للحفظ وقت وللاخراج وقت * للتمزيق اوان وللخياطة اوان * للصمت وقت وللكلام وقت * 7
* للتودد اوان وللمقت اوان * وقت للحرب ووقت للصلح والسلم * ما فضل من يعمل 8 9
في الاشياء التي يتعب فيها * وعرفت كل الاشياء والتعب الذي منحه الله لابناء 10
الناس ليتشاغلوا به * فكل الاشياء التي صنعها عرفت انها حسنة في وقتها * 11
ومع هذا اعطي معرفة ذلك مع الدهر في قلبهم * ليلا يجد الانسان التي صنعها الله منذ
البدء والي الاخر * وعرفت ان ليس فيها صالحا * سوى ان يفرح وان يعمل في حياته 12
عملا صالحا * مع ان الانسان كلما ياكله ويشربه * ويرى صالحا في جميع تعبه هذا 13
عطية الله هو *

* *OMnibus eſt tempus, & res quælibet* 1
quæ ſub cœlo eſt, tempus habet. Eſt 2
nativitati tempus, tempus & morti :
evulſio plantarum tempeſtatem habet,
& plantatio tempeſtatem : Et occiſioni 3
tempus, & medelæ tempus : demoliti-
oni tempus, & extructioni tempus :
Fletui tempus, & riſui tempus : luctui 4
tempus, & tripudio tempus : Projecti- 5
oni lapidum tempus, & collectioni la-
pidum tempus : amplexationi tempus,
& ſeparationi tempus : Acquiſitioni 6
tempus, & jacturæ tempus : conſerva-
tioni tempus, & expulſioni tempus :
Lacerationi tempus, & ſuturæ tempus : 7
ſilentio tempus, & ſermoni tempus :
Amori tempus, & odio tempus : tem- 8
pus eſt bello, tempus & paci atque con-
cordiæ. Quid habet reſidui is qui opera- 9
tur, ex rebus in quibus fatigatur?
Aſſecutus ſum etiam cognitionem omni- 10
um rerum, & moleſti negotii quod
dedit Deus filiis hominum, ut diſtine-
antur in eo. Omnes enim res quas con- 11
didit, novi pulchras eſſe ſuo tempore.
Et præterea indidit notitiam hujus rei
unà cum ſeculo in cor illorum, ne re-
periat homo quæ fecit Deus ab initio
uſque ad finem. Et didici quòd non ſit 12
in rebus illis bonum, niſi ut lætetur, &
ut exerceat in vita ſua opus bonum.
Præterquam quòd quicquid comedit ho- 13
mo ac bibit, & commodum experitur
in cuncto labore ſuo, hoc donum Dei
eſt.

קהלת : ד

:ſeculum in erit ipſum ,Deus faciet quod omne quòd Novi
14 יָדַעְתִּי כִּי כָּל־אֲשֶׁר יַעֲשֶׂה הָאֱלֹהִים הוּא יִהְיֶה לְעוֹלָם
,fecit Deus & : diminuendū non eo ab & ,addendū non illud ſuper
עָלָיו אֵין לְהוֹסִיף וּמִמֶּנּוּ אֵין לִגְרֹעַ וְהָאֱלֹהִים עָשָׂה
fore quod & ,*ipſum* jam fuit Quod .ejꝰ *faciebus* à timeant ut
15 שֶׁיִּרְאוּ מִלְּפָנָיו׃ מַה־שֶּׁהָיָה כְּבָר הוּא וַאֲשֶׁר לִהְיוֹת
ſub vidi adhuc Et :*conſequutum* requiret Deus & : fuit jam
16 כְּבָר הָיָה וְהָאֱלֹהִים יְבַקֵּשׁ אֶת־נִרְדָּף׃ וְעוֹד רָאִיתִי תַּחַת
ibi ,juſtitiæ *locum* & ,impietas ibi ,judicii *locum* ,ſole
הַשָּׁמֶשׁ מְקוֹם הַמִּשְׁפָּט שָׁמָּה הָרֶשַׁע וּמְקוֹם הַצֶּדֶק שָׁמָּה
impium & Juſtum ,meo corde in *ego* Dixi .impietas
17 הָרָשַׁע׃ אָמַרְתִּי אֲנִי בְּלִבִּי אֶת־הַצַּדִּיק וְאֶת־הָרָשָׁע
opus omne ſuper & *voluntati* omni tēpus quia : Deus judicabit
יִשְׁפֹּט הָאֱלֹהִים כִּי־עֵת לְכָל־חֵפֶץ וְעַל כָּל־הַמַּעֲשֶׂה
Adam filiorum verbum Super ,meo corde in *ego* Dixi .*ibi*
18 שָׁם׃ אָמַרְתִּי אֲנִי בְּלִבִּי עַל־דִּבְרַת בְּנֵי הָאָדָם
.*ſibi ipſi animal ipſi quòd videndum ad &* : *Deus eos purgandos ad*
לְבָרָם הָאֱלֹהִים וְלִרְאוֹת שֶׁהֶם־בְּהֵמָה הֵמָּה לָהֶם׃
: eis unus *eventus &* ,*animalis* eventus & , *Adam* filiorū eventus Quia
19 כִּי מִקְרֶה בְנֵי־הָאָדָם וּמִקְרֶה הַבְּהֵמָה וּמִקְרֶה אֶחָד לָהֶם
hominis præſtantia & :omnibꝰ unus ſpiritꝰ &,*illum mori* ſic ,iſtud *mori* ſicut
כְּמוֹת זֶה כֵּן מוֹת זֶה וְרוּחַ אֶחָד לַכֹּל וּמוֹתַר הָאָדָם
: unum locum ad *vadens Omne* .vanitas omnia quia ,*nulla animali præ*
20 מִן־הַבְּהֵמָה אָיִן כִּי הַכֹּל הָבֶל׃ הַכֹּל הוֹלֵךְ אֶל־מָקוֹם אֶחָד
ſciens Quis .pulverem *ad revertens omne* & ,pulvere ex *fuit omne*
21 הַכֹּל הָיָה מִן־הֶעָפָר וְהַכֹּל שָׁב אֶל־הֶעָפָר׃ מִי יוֹדֵעַ
jumenti ſpiritus & : furſum *ipſe aſcendens* hominum filiorum *ſpiritus*
רוּחַ בְּנֵי הָאָדָם הָעֹלָה הִיא לְמָעְלָה וְרוּחַ הַבְּהֵמָה
,*bonum* non quòd vidi Et ?terram ſubtus *ipſe deſcendens*
22 הַיֹּרֶדֶת הִיא לְמַטָּה לָאָרֶץ׃ וְרָאִיתִי כִּי אֵין טוֹב
: ejus pars illud quia ; ſuis operibus in homo lætetur quòd quàm
מֵאֲשֶׁר יִשְׂמַח הָאָדָם בְּמַעֲשָׂיו כִּי־הוּא חֶלְקוֹ
? eum poſt erit quod illud *in* videndum ad eum adducet quis quia
כִּי מִי יְבִיאֶנּוּ לִרְאוֹת בְּמֶה שֶׁיִּהְיֶה אַחֲרָיו׃

CAP. IV. ד

fiunt *qui oppreſſos* omnes vidi & , *ego* ſum cōverſus Et
1 וְשַׁבְתִּי אֲנִי וָאֶרְאֶה אֶת־כָּל־הָעֲשֻׁקִים אֲשֶׁר נַעֲשִׂים
,conſolator eis non &,oppreſſorum *lachryma* ecce & : ſole ſub
תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ וְהִנֵּה דִּמְעַת הָעֲשֻׁקִים וְאֵין לָהֶם מְנַחֵם
ego laudans Et .conſolator eis non &,*potentia* eos opprimentiū manu de &
2 וּמִיַּד עֹשְׁקֵיהֶם כֹּחַ וְאֵין לָהֶם מְנַחֵם׃ וְשַׁבֵּחַ אֲנִי
vivi *ipſi* qui , vivos *ſuprà*,ſunt mortui jam qui mortuos
אֶת־הַמֵּתִים שֶׁכְּבָר מֵתוּ מִן־הַחַיִּים אֲשֶׁר הֵמָּה חַיִּים
qui ,fuit non adhuc uſque qui *ipſis ambobus præ bonum* Et .uſque huc
3 עֲדֶנָה׃ וְטוֹב מִשְּׁנֵיהֶם אֵת אֲשֶׁר־עֲדֶן לֹא הָיָה אֲשֶׁר
.ſole ſub fit quod ,malum opus vidit non
לֹא־רָאָה אֶת־הַמַּעֲשֶׂה הָרָע אֲשֶׁר נַעֲשָׂה תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ׃

Verſio VULG. LAT.

14 Didici quòd omnia opera, quæ fecit Deꝰ, perſeverent in perpetuū: non poſſumꝰ eis quidquā addere, nec auferre, quæ 15 fecit Deus ut timeatur. Quod factum eſt, ipſum permanet: quæ futura ſunt, jam fuerunt: 16 & Deus inſtaurat ꝙ abiit. Vidi ſub Sole in loco judicii impietatem, & in loco juſtitiæ 17 iniquitatem. Et dixi in corde meo; Juſtū & impiū judicabit Deus, & tempus omnis rei 18 tunc erit. Dixi in corde meo de filiis hominum, Ut probaret eos Deus, & oſtenderet ſi- 19 miles eſſe beſtiis. Idcircò unꝰ interitꝰ eſt hominis & jumentorum, & æqua utriuſque conditio: ſicut moritur homo, ſic & illa moriuntur: ſimiliter ſpirant omnia, & nihil habet homo jumento amplius: cuncta ſubjacent va- 20 nitati, Et omnia pergunt ad unum locum: de terra facta ſunt, & in terram pariter re- 21 vertuntur. Quis novit ſi ſpiritus filiorum Adam aſcendat ſurſum, & ſi ſpiritus jumen- 22 torum deſcendat deorſum? Et deprehendi nihil eſſe melius quàm lætari hominem in opere ſuo, & hanc eſſe partem illius. Quis enim eum adducet, ut poſt ſe futura cognoſcat?

CAP. IV.

1 VErti me ad alia, & vidi calumnias, quæ ſub Sole geruntur, & lachrymas innocentium & neminem conſolatorē: nec poſſe reſiſtere eorum violentiæ, cunctorum auxilio 2 deſtitutos. Et laudavi magis 3 mortuos, quam viventes: Et fœliciorem utroque judicavi, qui necdum natus eſt, nec vidit mala quæ ſub Sole fiunt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 † Ἔγνων ὅτι πάντα ὅσα ἐποίησεν ὁ Θεὸς, † αὐτὰ ἔσται εἰς τὸν αἰῶνα, † (κ) ἐπ' αὐτῷ οὐκ ἔστι προσθεῖναι, † καὶ (λ) ἀπ' αὐτοῦ οὐκ ἔστιν ἀφελεῖν· † καὶ ὁ Θεὸς ἐποίησεν, ἵνα φοβηθῶσιν ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ. 15 † Τὸ (μ) γινόμενον, ἤδη ἐστί, † καὶ ὅσα τοῦ γίνεσθαι, ἤδη γέγονε, 16 † καὶ ὁ Θεὸς ζητήσει τὸν διωκόμενον. † Καὶ ἔτι εἶδον ὑπὸ τὸν ἥλιον † τόπον τῆς κρίσεως, ἐκεῖ ὁ ἀσεβής· † καὶ τόπον (ν) τοῦ δικαίου, ἐκεῖ ὁ εὐσεβής. 17 † (ξ) Καὶ εἶπα ἐγὼ ἐν καρδίᾳ μου, † Σὺν τὸν δίκαιον καὶ σὺν τὸν ἀσεβῆ κρινεῖ ὁ Θεὸς, † ὅτι καιρὸς τῷ παντὶ πράγματι, † καὶ 18 (ο) ἐπὶ παντὶ τῷ ποιήματι † ἐκεῖ. Εἶπα ἐγὼ ἐν καρδίᾳ μου, † περὶ λαλιᾶς υἱῶν τοῦ ἀνθρώπου, Ὅτι διακρινεῖ αὐτοὺς ὁ Θεὸς, † καὶ ([illegible]) 19 τοῦ δεῖξαι ὅτι αὐτοὶ κτήνη εἰσί. † Καί γε αὐτοῖς συνάντημα υἱῶν τοῦ ἀνθρώπου, † καὶ συνάντημα τοῦ κτήνους, συνάντημα ἓν αὐτοῖς. † ὡς ὁ θάνατος τούτου, (π) οὕτως καὶ ὁ θάνατος τούτου· † καὶ πνεῦμα ἓν τοῖς πᾶσιν· † καὶ τί ἐπερίσσευσεν ὁ ἄνθρωπος παρὰ τὸ κτῆνος; † οὐδέν· ὅτι (ρ) πάντα ματαιότης. 20 † Τὰ πάντα (σ) εἰς τόπον ἕνα, † τὰ πάντα ἐγένετο ἀπὸ τοῦ χοὸς, † καὶ τὰ πάντα ἐπιστρέψει εἰς τὸν χοῦν. 21 † Καὶ τίς (τ) εἶδεν πνεῦμα υἱῶν τοῦ ἀνθρώπου, † εἰ ἀναβαίνει αὐτὸ (υ) ἄνω; † καὶ τὸ πνεῦμα τοῦ κτήνους, εἰ καταβαίνει αὐτὸ κάτω (φ) εἰς γῆν; 22 † Καὶ εἶδον ὅτι οὐκ ἔστι ἀγαθὸν † εἰ μὴ ὃ εὐφρανθήσεται ([illegible]) ὁ ἄνθρωπος ἐν ποιήμασιν αὐτοῦ, † ὅτι αὐτὸ μερὶς αὐτοῦ· † ὅτι τίς ἄξει αὐτὸν τοῦ ἰδεῖν ἐν (χ ᾧ ἐὰν γένηται) μετ' αὐτόν;

MS.A. (κ) ἐπ' αὐτῷ (λ) ἀπ' αὐτοῦ (μ) γινόμενον, (ν) τῶν δικαίων, (ξ) Καὶ
πον ἐγὼ (ο) ἐπὶ παντὶ ποιήματι ([illegible]) τοῦτο (π) οὕτως ὁ θάνατος (ρ)
(σ) πορεύεται εἰς τόπον ἕνα, (τ) οἶδεν τὸ πνεῦμα (υ) εἰς ἄνω;
(φ) εἰς τὴν γῆν; ([illegible]) ἄνθρωπος (χ) ᾧ ἂν γένηται

ΚΕΦ. δʹ.

1 † ΚΑὶ ἐπέστρεψα ἐγὼ, καὶ εἶδον † συμπάσας τὰς συκοφαντίας τὰς γινομένας ὑπὸ τὸν ἥλιον· † καὶ ἰδοὺ δάκρυον τῶν συκοφαντουμένων, † καὶ οὐκ ἔστιν αὐτοῖς παρακαλῶν, † καὶ ἀπὸ χειρὸς συκοφαντούντων (α) αὐτοῖς ἰσχύς, † καὶ 2 οὐκ ἔστιν αὐτοῖς (β) παρακαλῶν. Καὶ ἐπῄνεσα ἐγὼ (γ) σύμπαντας τοὺς τεθνηκότας † τοὺς ἤδη ἀποθανόντας ὑπὲρ τοὺς ζῶντας, † ὅσοι αὐτοὶ 3 ζῶσιν ἕως τοῦ νῦν. † Καὶ ἀγαθὸς ὑπὲρ τοὺς δύο τούτους † ὅστις οὔπω ἐγένετο, † ὃς οὐκ εἶδε (δ) σὺν πᾶν τὸ ποίημα τὸ πονηρὸν τὸ πεποιημένον ὑπὸ τὸν ἥλιον.

MS.A. (α) αὐτοὺς (β) ὁ παρακαλῶν. (γ) σὺν τοὺς τεθνηκότας (δ) σὺν

Cognovi, quia omnia quæ fecit
us, ipſa (ι) erunt in æternum.
per illud non poteſt adjici, &
illo non poteſt auferri. Et De
cit, ut timeant à facie ejus.
fuit, jam eſt: & quæ futura
jam fuerunt. Et Deus quæret
eum, qui perſequitur
Et adhuc vidi ſub Sole locum
dicii, illic impius: & locum
(ν) illic pius. Et dixi ego
de meo; (ο) Juſtum & impium
dicabit Deus: quia tempus eſt
omni rei, & ſuper omne factu
Dixi ego in corde meo de
filiorum hominis:
rabit illos Deus, &
quia ipſi jumenta ſunt.
dem eis eventus filiorum
& eventus pecoris,
eis. Sicut mors hujus, ita &
illius: & (ς) ſpiritus unus
bus: & quid abundavit ho
pecore? nihil: quia omnia
tas. Omnia ad locum
omnia facta ſunt de
& omnia revertentur in
rem. Et quis novit ſpiritum
rum hominis, ſi aſcendat ip
ſum? & ſpiritus pecoris,
ſcendat ipſe deorſum in te
Et vidi, quia non eſt bonum,
quòd lætetur homo in ope
is: quia hæc eſt pars eju
(χ) enim adducet eum,
in illud, quod futurum
ipſum?

CAP. IV.

ET converti me ego, & vi
niverſas (α) calumnias quæ
ctæ ſunt ſub Sole. Et ecce
chryma eorū, qui calumnia
nent: & non eſt qui c
letur eos: & de manu calum
tium eos, fortitudo, &
conſolator. Et (β) laudavi
omnes mortuos, qui jam
ſunt, ſuper viventes,
ipſi vivunt uſq; nunc. E
per hos duos, qui nondum
eſt, qui non vidit (δ)
malum, quod factum eſt

תרגום TARGUM.

14 ידעית ברוח נבואה ארום כל די יעבד יי בעלמא בין טב לביש מראתגזר מפומיה הוא
יהא לעלם עלוהי לית רשו לגבר לאוספא ומניה לית רשו לגבר לבצרא ובעדן די ייתי
15 פורענותא בעלמא יי הוא דעבד בגין די ידחלון בני אנשא מן קדמוהי : מה דהוות מן
קדמת דנא הא כבר הוא ודאתי מה דעתיד למהוי בסוף יומיא הא כבר הוה וליום רבא
16 דעתיד יי למתבע חשוכא ומסכינא מן ידוהי דרשיעא דרדף ליה : ועוד חזית תחות
שמשא בעלמא הדין אתר בית דינא דדייני שקרא תמן יחובון לזכאה למפק חיבא
בדיניה ואתר דמשתכח תמן גבר זכי תמן משתכח גברא חיבא למשלט ביה בגין חובי
17 דרא בישא : אמרית אנא בלבי ית זכאה וית חיבא ידין יי ביום דינא רבא ארום עדן
18 מתעבד לכל עסקא ועל כל עובדא דעבדו בעלמא הדין אתדונון תמן : אמרית אנא
בלבי על עסק בני אנשא דייתון עליהון מכתשין ומרעין בישין בגין לנסאיהון ובגין
למבחניהון עבד יי למחזי אין תיבין בתיובתא ישתבק להון ויתסון ורשיעיא די אנון
19 כבעירא לא תיבין בגין כן אנון מתיכחין בהון לאבאשא להון : ארום ארעון בני אנשא
חיבא וארעון בעירא מסאבא ארעון חד לכולהון והיכמה דתמות בעירא מסאבא כן
ימות דין דלא תאב בתיובתא קדם מותיה ונשמת רוח תרויהון כחדא אתדן לכל גון
ושארות גברא חיבא מן בעירא מסאבא מדעם בין תרויהון אלהן בית קבורתא ארום
20 כולא הבלו : כולא אזלין לאתר חד כל דיירי ארעא אתבריאו מן עפרא וכד ימותון
21 כולהון עתידין למתוב לעפרא : מן הוא חכימא דידע אין רוח נשמתא בני אנשא
22 הסלקא היא לעילא לרקיעא ורוח נשמתא דבעירא הנחתא היא לרע לארעא : וחזית
ארום לית טב בעלמא הדין מדיחדי אנש בעובדוי טבין וייכול וישתי ויוטיב לביה
ארום הוא חולקיה טב בעלמא הדין למקני ביה עלמא דאתי דלא יימר אנש בלביה
למה דין אנא מבזבז ממונא למעבד צדקתא טב לי דאשבקניה לברי בתרי או אתזן
מניה בעדן סיבתי ארום מן הוא דיעלניה למחזי מה דעתיד למהוי בתרוי :

ד

1 ותבית אנא וחזית ית כל אניסין דאתעבידו לצדיקיא בעלמא הדין תחות שמיא מן יד
דוחקיהון ולית די מליל להון תנחומין ולית למפרקהון מן יד דאנסיהון בתקוף ידא
2 ובחילא ולית די ינחים להון : ושבחית אנא ית שכיבא דהא כבר מיתו ולא חזו
פורענותא דאתי בעלמא בתר מותיהון יתיר מן חייא די אנון קימין בעלמא הדין בעקא
3 עד כען : ושפיר מן תרויהון ית דעוד כען לא הוה ולא אתברי די לא חזא ית עובדא
בישא דאתעבד בעלמא הדין תחות שמשא :

PARAPH. CHALD. Verſio La

Cognovi in ſpiritu prophetiæ quod omne quod faciet Dominus
inter bonum & malum, *poſtquam decretum eſt ex ore ejus*, id
culum: ſuper ipſum non eſt facultas cuiquam addere, & ex eo
cultas alicui detrahere: & in tempore quo veniet ultio in ſecul
minus ipſe eſt qui fecit, ut timeant filii hominis à conſpectu ejus
fuit ab initio, *ecce* jam eſt quod venit; & id quod futurum eſt ut
dierum, *ecce* jam fuit, & in die [*judicii*] magni futurum eſt ut Do
quirat obſcurum & pauperem de manibus improbi qui perſecut
eum. Et adhuc vidi ſub Sole, in ſeculo hoc locum domus jud
quo judices mendacii condemnant innocentem, ut exeat reus
ſuo, & locum in quo invenitur vir innocens; ibidem invenitur
cator, ut imperet ei propter peccata generationis malæ. Dixi eg
de meo, Innocentem & peccatorem judicabit Dominus in die jud
gni, quoniam tempus præfinitum eſt omni cauſæ: & propter om
quod fecerint in ſeculo hoc judicabuntur ibi. Dixi ego in corde
per cauſam filiorum hominis quòd venient ſuper eos percuſſiones
bi mali ad tentandum eos & ad probandum eos: [*hæc*] fecit Dom
videat; ſi revertentur ad pœnitentiam, dimittetur illis & ſanabun
improbi qui ut jumentum non convertuntur, propterea illi
nocendo eis. Quoniam eventus hominis *peccatoris* & eventus jum
mundi, eventus unus omnibus illis: & ecce quemadmodum m
mentum *immundum*, ſic moritur is qui non convertitur ad pœn
ante mortem ſuam, & ſpiraculum ſpiritus utriúſque ſimul judica
omni negotio: & reſiduum viri *peccatoris* præ jumento *immund*
quicquid inter utrúmque, niſi domus ſepulchri, quia omnia
Omnia eunt ad locum unum: omnes habitatores ſeculi creati
vere: et quando mortui fuerint omnes illi futuri ſunt ut conve
pulverem. Quis ſapiens qui novit an ſpiritus animæ filiorum ho
cendat ipſe ſupra firmamentum, & ſpiritus animæ jumenti deſc
ſubtus terram? Et vidi quòd non eſt melius in ſeculo hoc, quàm
at homo in operibus ſuis bonis, & comedat & bibat & bene
ejus: namque hæc eſt pars ejus bona in ſeculo hoc ad acquirend
ſeculum venturum: *ne dicat quiſquam in corde ſuo, Cur ego*
cultates meas præſtando eleemoſynam? ſatius eſſet mihi ut rec
lio meo poſt me, vel ut alar eis in tempore ſenectutis meæ; nam qu
qui introducet eum ad videndum id quod futurum eſt ut fiat poſt

CAP. IV.

ET redii ego & vidi omnes calumnias quæ factæ ſunt juſtis
muntur in ſeculo hoc ſub *cælo* à manu oppreſſorum ipſorum,
qui loquatur illis conſolationes, & non eſt qui vindicet eos de
leſtantium eos in fortitudine manus & in virtute, & non eſt qui
eos. Et laudavi ego jacentes qui ecce jam mortui fuerunt,
runt ultionem quæ venit in ſeculum poſt mortem ſuam magis
qui vixerunt *in mundo hoc* in moleſtia uſque nunc. Et præſtan
is eſt qui haſtenus nondum fuit, nec creatus eſt, quòd non viderit opera mala quæ facta ſunt in mundo ho

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܝܕܥܬ ܕܟܠ ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ ܗܘ ܢܗܘܐ ܠܥܠܡ. ܥܠܘܗܝ ܠܝܬ ܠܡܬܘܣܦܘ
ܘܡܢܗ ܠܝܬ ܠܡܒܨܪܘ. ܘܡܪܝܐ ܥܒܕ ܕܢܕܚܠܘܢ ܡܢܗ. * ܡܕܡ ܕܗܘܐ ܡܢ ܟܕܘ 14
ܐܝܬܘܗܝ. ܘܡܕܡ ܕܢܗܘܐ. ܡܢ ܩܕܝܡ ܗܘܐ. ܘܐܠܗܐ ܢܒܥܐ ܠܪܕܝܦܐ ܕܡܬܪܕܦ. 15
* ܘܬܘܒ ܚܙܝܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܐܬܪ ܕܕܝܢܐ. ܬܡܢ ܪܫܥܐ. ܘܐܬܪ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܬܡܢ ܥܘܠܐ.
* ܘܐܡܪܬ ܐܢܐ ܒܠܒܝ. ܠܙܕܝܩܐ ܘܠܪܫܝܥܐ. ܢܕܘܢ ܐܠܗܐ. ܙܒܢܐ ܓܝܪ. 16
ܠܟܠ ܨܒܘ. ܘܥܠ ܟܠ ܥܒܕܐ ܬܡܢ. * ܐܡܪܬ ܐܢܐ ܒܠܒܝ. ܥܠ ܡܡܠܠܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. 17
ܕܒܪܐ ܐܢܘܢ ܐܠܗܐ. ܘܠܡܚܘܝܘ ܕܐܢܘܢ ܐܝܟ ܒܥܝܪܐ ܐܢܘܢ. * ܡܛܠ ܕܦܓܥܐ 18
ܕܒܢܝܢܫܐ ܘܦܓܥܐ ܕܒܥܝܪܐ. ܦܓܥܐ ܚܕ. ܦܓܥ ܠܟܠܗܘܢ. ܐܝܟ ܡܘܬܗ ܕܗܢܐ. 19
ܗܟܢܐ ܡܘܬܗ ܕܗܘ. ܘܪܘܚܐ ܚܕܐ ܠܟܠܗܘܢ. ܘܡܝܬܪܘܬܗ ܕܒܪܢܫܐ ܡܢ ܒܥܝܪܐ ܠܝܬ.
ܡܛܠ ܕܟܠܡܕܡ ܗܒܠܐ. * ܟܠ ܐܙܠ ܠܐܬܪ ܚܕ. ܟܠ ܗܘܐ ܡܢ ܥܦܪܐ. ܘܟܠ ܗܦܟ
ܠܥܦܪܐ. * ܘܡܢܘ ܝܕܥ ܐܢ ܪܘܚܗ ܕܒܢܝܢܫܐ ܣܠܩܐ ܠܥܠ. ܘܪܘܚܗ ܕܒܥܝܪܐ. ܢܚܬܐ ܗܝ 20
ܠܬܚܬ ܠܐܪܥܐ. * ܘܚܙܝܬ ܕܠܝܬ ܕܛܒ ܡܢ ܕܢܚܕܐ ܐܢܫ ܒܥܒܕܘܗܝ. ܡܛܠ 21
ܕܗܝ ܗܝ ܡܢܬܗ. ܡܢܘ ܓܝܪ ܢܝܬܝܘܗܝ ܠܡܚܙܐ. ܡܕܡ ܕܗܘܐ ܡܢ ܒܬܪܗ. 22

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܘܗܦܟܬ ܐܢܐ ܘܚܙܝܬ ܠܟܠ ܥܘܠܨܢܐ ܕܡܬܥܒܕܝܢ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܘܗܐ ܕܡܥܐ 1
ܕܡܬܥܠܨܐ. ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ ܡܒܝܐܢܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܥܠܘܨܝܗܘܢ. ܚܝܠܐ. ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ
ܡܥܕܪܢܐ. * ܘܫܒܚܬ ܐܢܐ ܠܡܝܬܐ ܕܟܒܪ ܡܝܬܘ. ܡܢ ܚܝܐ ܕܚܝܝܢ ܥܕܡܐ 2
ܠܗܫܐ. * ܛܒ ܡܢ ܬܪܝܗܘܢ. ܗܘ ܡܢ ܕܥܕܡܐ ܠܐ ܗܘܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܚܙܐ 3
ܥܒܕܐ ܒܝܫܐ ܕܡܬܥܒܕܝܢ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ.

Novi quòd quicquid Dominus condidit, 14
hoc manebit in æternum, nihil illi addendo,
nihílque ab eo detrahendo: & Dominus effecit
ut ipſum formident. Quod fuit jam- 15
pridem, eſt: & quicquid erit, multò jam
antè fuit. Et Deus requiret vexatum qui
propellitur. Præterea vidi ſub ſole ubi ju- 16
dicium *eſſe debuerat*, ibi impietatem *regna-*
re: & ubi juſtitia, ibi iniquitatem. Qua- 17
propter dixi apud meipſum, Juſtum & im-
pium judicabit Deus: tempus enim omni
negotio omnique facto tunc erit. Dixi 18
ego in corde meo, more loquens homi-
num, Creavit illos Deus: & ut oſtenderet
eos ſimiles eſſe jumentis, Contingit eis 19
caſus hominum & caſus jumentorum: idem
caſus omnibus contingit. Ut moritur iſte,
ſic moritur ille: idémque ſpiritus omnibus
ineſt, nec præſtat homo jumento, quia cun-
cta ſunt vanitas. Omnia tendunt ad locum 20
unum: omnia facta ſunt ex pulvere, & o-
mnia in pulverem revertuntur. Et quis 21
ſciat an ſpiritus hominum ſurſum aſcen-
dat, ſpiritus autem jumentorum deorſum
in terram deſcendat? Igitur deprehendi 22
nihil melius eſſe penes eos, quàm ut fruatur
homo operibus ſuis, quum ea ſit ſit pars i-
pſius. Quis enim adducet eum ut ſpectet
quicquid poſt ipſum futurum eſt?

CAP. IV.

PRæterea converſus conſideravi oppreſſio- 1
nes omnes quæ fiunt ſub ſole; & ecce la-
chrymæ oppreſſorum, nec adeſt qui ſub-
levet eos de manu opprimentium eos:
violentia, nec habent auxiliatorem. Unde 2
laudavi mortuos qui quidem mortui ſunt,
præ vivis qui adhuc vivunt. His autem u- 3
triuſque beatior eſt qui nondum fuit, quia
non vidit actiones peſſimas quæ fiunt ſub
ſole.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وعرفت أن كل البرايا التي خلقها الله تكون إلى الأبد على ترتيبها وحالها * ولن يمكن 14
أن يزاد فيها ولا ينقص منها * والله صنع ليرهبوا من وجهه * الأمر الكائن أنه موجود * 15
وكلما سيكون أنه قد كان ومضى * والله يبتغي المطلوب أي ما يسعى في أثره * وعرفت 16
أيضا تحت الشمس موضع الحكومة فهناك الكافر * وموضع الصديق وهناك المؤمن *
* فقلت أنا في قلبي * إن الله يحاكم المقسط بالسواء ويحاكم المنافق بالسواء * لأن لكل 17
أمر ولكل صناعة وقت * فقلت أنا في قلبي عن كلام بني الإنسان * إن الله يحاكمهم 18
وليريهم أنهم بهائم هم * وذلك أن عندهم لقيا بني الإنسان ولقيا البهيمة لقيا واحد عندهم
فيظنون أن مثل موت الإنسان هذه كذلك موت هذه * وروح واحدة للكل * وما فضل
الإنسان على البهيمة لا شيء * لأن كل الأشياء باطلة * والكل يذهب إلى موضع واحد * الكل
صار من التراب والكل يرجع إلى التراب * ومن قد عرف إن كان روح ابن الإنسان نفسه
يصعد إلى فوق * وإن كان روح البهيمة نفسه ينزل إلى أسفل الأرض * وعرفت أن ليس أمرا صالحا
سوى ما يفرح به الإنسان في أعماله * فإن ذلك حظه * لأن من يقوده ليرى ماذا يصير
بعده فيما يخلفه *

* الفصل الرابع *

* والتفت أنا فرأيت المباغي الصائرة تحت الشمس كلها معا * وها دموع المظلومين ولن
يوجد لهم معزي * والقوة صادرة من يد الذين يبغونهم ولن يوجد لهم معزي * فمدح
أنا مع الذين ماتوا الذين توفوا الآن أكثر من الأحياء * من كان منهم يعيش كما هو
الآن * والصالح أكثر من هذين الفريقين من لم يولد * الذي ما عرف الشر من أفعال
صناعته المصنوعة تحت الشمس *

Didici etiam creaturas omnes quas con- 14
didit Deus, in eodem ordine & condi-
tione perpetuò manſuras, nec eſſe poſſibile
quicquam his addi, aut ex his detrahi:
Deumque effeciſſe ut timeant à conſpectu
ipſius. Quod fuit, ipſum quidem exi- 15
ſtit: & quicquid erit, jam fuit ac præ-
teriit. Et Deus poſtulat quod requiritur,
hoc eſt, quod ejus veſtigia ſequitur.
Novi præterea ſub ſole locum judicii, ibi- 16
que eſt infidelis &: locum juſti, ibique
fidelis. Quare dixi in corde meo, Deus 17
quidem juſtum ex æquo judicat, & im-
pium ex æquo judicat: omnis enim res
& quodlibet negotium tempeſtatem ha-
bet. Dixi ego in corde meo hominum 18
verbis, Deus judicabit illos, & oſtendet
eis quòd ſint belluæ. Nam apud ipſos ca- 19
ſus hominum & caſus jumenti idem eſt
apud ipſos, & arbitrantur qualis eſt
mors hujus hominis, talem eſſe mortem
illius, eundemque ſpiritum omnibus in-
eſſe, nec hominem præſtare jumento ullo
modo, quandoquidem res omnes vanæ
ſunt; Et omnia in unum locum redire, 20
omnia facta eſſe ex pulvere, & omnia
in pulverem redigenda. Et quis novit 21
utrùm ſpiritus ipſe hominis ſurſum a-
ſcendat, & an ſpiritus ipſe jumenti in
ima terræ deſcendat? Et cognovi rem 22
aliam *non eſſe bonam, præter eam quâ*
quis perfruitur in operibus ſuis: hæc e-
nim eſt pars ipſius, nam quis ducet eum
ad videndum quid fiet poſt ſe de his quæ
relinquit?

CAP. IV.

DEinde converti me, vidique o- 1
mnes ſimul oppreſſiones quæ fiunt ſub
ſole: & ecce lachrymas oppreſſorum,
nec invenitur eis conſolator: & vio-
lentiam prodeuntem de manu opprimen-
tium, nec reperitur eis conſolator.
Quare laudavi ego ſimul cum his qui 2
mortui ſunt, eos qui defuncti ſunt mo-
dò, magis quàm vivos, cum ſcilicet
qui vivit ut ſit modò. Et fœlicior his 3
ambobus eſt qui natus non eſt, qui non
eſt expertus malum ex operatione acti-
onis ſuæ quæ committitur ſub ſole.

קהלת : ד

ipſa quòd , operis rectitudinē omnem &, laborē omnem ego vidi Et
4 וראיתי אני את כל עמל ואת כל כשרון המעשה כי היא
Stultus .ſpiritus paſtio & ,vanitas hoc etiam :ſuo ſocio à viri invidia
5 קנאת איש מרעהו גם זה הבל ורעות רוח : הכסיל
,requie volæ plenitudo Bona .ſuam carnem comedens &,ſuas manꝰ complicans
6 חבק את ידיו ואכל את בשרו : טוב מלא כף נחת
, ego ſum converſus Et .ſpiritus paſtione &,labore pugillorum plenitudo quàm
7 ממלא חפנים עמל ורעות רוח : ושבתי אני
,filius etiam,ſecundus non & ,unus Eſt .ſole ſub vanitatem vidi &
8 ואראה הבל תחת השמש : יש אחד ואין שני גם בן
ſatiabitur non ejꝰ oculus etiam ,ejꝰ laboris omnis finis non & ,ei non frater &
ואח אין לו ואין קץ לכל עמלו גם עינו לא תשבע
hoc etiam ? bono à meā animā faciens deficere &,laborans ego cui &:opulentia
עשר ולמי אני עמל ומחסר את נפשי מטובה גם זה
eſt quia : unus quàm duo Meliores .ipſum malū negociū &,vanitas
9 הבל וענין רע הוא : טובים השנים מן האחד אשר יש
faciet ſtare unus ceciderit ſi Quia .eorū labore in bona merces eis
10 להם שכר טוב בעמלם : כי אם יפלו האחד יקים את
.eū ſublevandū ad ſecundꝰ non & ,ceciderit cùm uni illi væ &:ſuū ſociū
חברו ואילו האחד שיפול ואין שני להקימו :
ſi Et ? calor erit quomodo uni & :eis erit calor &,duo jacuerint ſi Etiā
11 12 גם אם ישכבו שנים וחם להם ולאחד איך יחם : ואם
non triplicatum filum & :eū contra ſtabunt duo ,unus ei prævaluerit
יתקפו האחד השנים יעמדו נגדו והחוט המשלש לא
,ſtulto &,ſene rege præ:ſapiēs & pauper gnatus Melior.rumpetur feſtinatia in
13 במהרה ינתק : טוב ילד מסכן וחכם ממלך זקן וכסיל
eſt egreſſus vinctorum domo è Quia .adhuc moneri novit non qui
14 אשר לא ידע להזהר עוד : כי מבית הסורים יצא
cunctos vidi .pauper eſt natus ſuo regno in etiā quia ;regnandū ad
15 למלך כי גם במלכותו נולד רש : ראיתי את כל
qui , ſecundo gnato cum , ſole ſub ambulantes viventes
החיים המהלכים תחת השמש עם הילד השני אשר
eorū facies ad fuit qui omni ,populo omni finis Non .eo pro ſtabit
16 יעמד תחתיו : אין קץ לכל העם לכל אשר היה לפניהם
contritio &,vanitas hoc etiam quia :eo in lætabūtur non poſteri etiam
גם האחרונים לא ישמחו בו כי גם זה הבל ורעיון
propinquꝰ & : Dei domum ad ibis quando ,tuū pedē Cuſtodi .ſpiritꝰ
17 רוח : שמר רגליך כאשר תלך אל בית האלהים וקרוב
.malum facere ſe ſcientes ipſi non quia :ſacrificiū ſtultos dare præ audiendū ad
לשמע מתת הכסילים זבח כי אינם יודעים לעשות רע :

Verſio VUL. LAT.

4 Rurſū contemplatꝰ ſum omnes
labores hominū, & induſtrias
animadverti patere invidiæ
proximi : & in hoc ergò vani-
5 tas, & cura ſuperflua eſt. Stultꝰ
complicat manꝰ ſuas, & come-
6 dit carnes ſuas, dicens; Melior
eſt pugillus cum requie, quàm
plena utraque manꝰ cum labo-
7 re, & afflictione animi. Conſi-
derans reperi & aliā vanitatē
8 ſub Sole: Unꝰ eſt, & ſecundum
non habet, non filium, non fra-
trē, & tamen laborare non ceſ-
ſat, nec ſatiantur oculi ejꝰ divi-
tiis : nec recogitat, dicens; Cui
laboro, & fraudo animā meam
bonis? in hoc quoq; vanitas eſt,
9 & afflictio peſſima. Meliꝰ eſt
ergò duos eſſe ſimul, quā unū:
habent enim emolumentū ſo-
10 cietatis ſuæ: Si unꝰ ceciderit, ab
altero fulcietur. Væ ſoli : quia
cùm ceciderit, non habet ſub-
11 levantem ſe. Et ſi dormierint
duo, fovebuntur mutuó : unus
12 quomodò calefiet? Et ſi quiſpiā
prævaluerit contra unum, duo
reſiſtunt ei : funiculꝰ triplex dif-
13 ficilè rumpitur, Melior eſt puer
pauper & ſapiens, rege ſene &
ſtulto, qui neſcit prævidere in
14 poſterū. Quòd de carcere cate-
niſque interdū quis egrediatur
ad regnū: & aliꝰ natꝰ in regno,
15 inopiā conſumatur. Vidi cun-
ctos viventes, qui ambulāt ſub
Sole cum adoleſcente ſecūdo ,
16 qui conſurget pro eo. Infinitus
numerus eſt populi omniū, qui
fuerūt ante eū: et qui poſteà fu-
turi ſunt, non lætabuntur in eo:
ſed & hoc vanitas & afflictio
17 ſpiritꝰ. Cuſtodi pedē tuum in-
grediens domū Dei, & appro-
pinqua ut audias. Multò enim melior eſt obedientia, quàm ſtultorum victimæ, qui neſciunt quid faciunt

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 †Καὶ εἶδον ἐγὼ σύμπαντα τὸν μόχθον, †καὶ σύμ-
πασαν ἀνδρίαν τοῦ ποιήματος, †ὅτι αὐτὸ ζῆλος
ἀνδρὸς ἀπὸ τοῦ ἑταίρου αὐτοῦ. †καί γε τοῦτο μα-
5 ταιότης καὶ προαίρεσις πνεύματος. †(ε) Ὁ ἄ-
φρων περιέβαλε τὰς χεῖρας αὐτοῦ, †καὶ ἔφαγεν
6 τὰς σάρκας αὐτοῦ. †Ἀγαθὸν πλήρωμα δρακὸς
ἀναπαύσεως †ὑπὲρ πληρώματα δύο δρακῶν
7 μόχθου †καὶ προαιρέσεως πνεύματος. †Καὶ ἐπ-
έστρεψα ἐγὼ, καὶ εἶδον ματαιότητα ὑπὸ τὸν ἥλι-
8 ον. †Ἔστιν εἷς, καὶ οὐκ ἔστι δεύτερος· †καί γε υἱὸς
καί γε ἀδελφὸς οὐκ ἔστιν αὐτῷ· †καὶ οὐκ ἔστι περα-
σμὸς τῷ παντὶ μόχθῳ αὐτοῦ· †καί γε ὀφθαλμὸς
αὐτοῦ οὐκ (ζ) ἐμπίμπλαται πλούτου. †καὶ τίνι ἐγὼ
μοχθῶ, †καὶ στερίσκω τὴν ψυχήν μου ἀπὸ ἀγαθω-
σύνης; †καί γε τοῦτο ματαιότης καὶ (η) περισπα-
9 σμὸς πονηρός ἐστι. †Ἀγαθοὶ οἱ δύο ὑπὲρ τὸν ἕ-
να, †οἷς ἐστιν αὐτοῖς μισθὸς ἀγαθὸς ἐν μόχθῳ
10 αὐτῶν. †Ὅτι ἐὰν πέσωσιν, ὁ εἷς (ϑ) ἐγερεῖ τὸν μέτο-
χον αὐτοῦ· †καὶ οὐαὶ αὐτῷ τῷ ἑνὶ, ὅταν πέσῃ †καὶ
11 μὴ ᾖ δεύτερος (θ) ἐγεῖραι αὐτόν. †Καί γε ἐὰν κοι-
μηθῶσιν (ι) δύο, καὶ θέρμη αὐτοῖς, †καὶ ὁ εἷς πῶς
12 θερμανθῇ; †Καὶ ἐὰν ἐπικραταιωθῇ ὁ εἷς, †οἱ
δύο στήσονται κατέναντι αὐτοῦ, †καὶ τὸ σπαρτίον τὸ
13 ἔντριτον οὐ ταχέως ἀπορραγήσεται. †Ἀγαθὸς
παῖς πένης καὶ σοφὸς †ὑπὲρ βασιλέα πρεσβύ-
τερον καὶ ἄφρονα, †ὃς οὐκ ἔγνω τοῦ προσέχειν ἔ-
14 τι. †Ὅτι ἐξ οἴκου τῶν (κ) δεσμίων ἐξελεύσεται τοῦ
βασιλεῦσαι, †ὅτι καί γε ἐν βασιλείᾳ αὐτοῦ ἐγε-
15 νήθη πένης. Εἶδον σύμπαντας τοὺς ζῶντας
†τοὺς περιπατοῦντας ὑπὸ τὸν ἥλιον †μετὰ τοῦ νεανί-
16 σκου τοῦ δευτέρου, †ὃς (λ) στήσεται ἀντ' αὐτοῦ. †Οὐκ
ἔστι περασμὸς τῷ παντὶ λαῷ, †τοῖς πᾶσιν (μ) οἳ
ἐγένοντο ἔμπροσθεν αὐτῶν· †καί γε οἱ ἔσχατοι οὐκ
εὐφρανθήσονται (ν) ἐπ' αὐτῷ. †ὅτι καί γε τοῦτο
17 ματαιότης καὶ προαίρεσις πνεύματος. †Φύλα-
ξον τὸν πόδα σου, (ξ) ἐν ᾧ ἐὰν πορεύῃ εἰς οἶ-
κον τοῦ θεοῦ. †καὶ ἐγγὺς τοῦ ἀκούειν, †ὑπὲρ δόμα
τῶν ἀφρόνων θυσία σου, †ὅτι
σιν εἰδότες τοῦ ποιῆσαι κακόν. MS. A. (ε) Ἄφρων περιέλαβεν (ζ) ἐμπίπλα
(η) πειρασμὸς (ϑ) ἐγείρει (θ) τοῦ ἐγεῖραι (ι) οἱ δύο, (κ) δεσμῶν ἐξελεύσεται βασιλ
(λ) ἀναστήσεται (μ) ὅσοι ἐγένοντο (ν) ἐν αὐτῷ. (ξ) ἐν ᾧ ἂν πορεύῃ εἰς

Et vidi ego univerſum labore
mul(i) omnē virtutē operis
ipſū æmulatio viri à ſodali
quidē hoc vanitas, et præſump
ris. Stultꝰ (l) complexꝰ eſt man
as, & comedit carnes ſuas. Bon
nitudo pugilli (m) requietis ſupe
plenitudines duorum pugillorū
ris, & præſumptionis ſpiritus.
converſꝰ ſum ego, & vidi vanit
ſub Sole. Eſt unꝰ & (p) non eſt ſe
dꝰ: & quidē filius, & frater non
ei: nec eſt (q) finis omni labori ejus
quidē oculꝰ ejus non ſatiatur
tiis. Et cui ego laboro, & fraudo
mā meā (r) bonitate? Sed & h
nitas, & (ſ) diſtentio peſſima eſt.
Boni duo ſuper unum, quibus
merces bona in labore ſuo : Q
ceciderint, unꝰ eriget (u) partic
ſuum. Et væ ipſi uni, cum cec
& (x) non fuerit ſecundꝰ qui
eum. Et quidē ſi dormierint duo
calor erit illis: & unꝰ quomodo
lefiet ? Et ſi (y) invaluerit unus
ſtabunt adverſꝰ eū: & funiculꝰ
triplex non citò rumpetur. B
puer pauper & ſapiens, ſuper
niore & ſtultū, (ω) qui neſcit pr
dere in poſterū. (aa) Quoniā
mo vinctorum egreditur, ut reg
quia etiā in regno ſuo factꝰ eſt
per. Vidi univerſos viventes, qu
bulant ſub Sole, (bb) cum adol
ſecundo, qui * ſtabit pro illo. No
finis omni (cc) populo, univ
fuerunt ante illo. Et quidē
mi non lætabuntur in eo. Sed &
vanitas, & præſūptio ſpiritꝰ. C
pedē tuū, cum vadis in domum
& (dd) propinquus ad audiend
Super donum inſipientium, ſacri
tuum : quia neſciunt, quod fa
(ee) malum.

תרגום TARGUM.

4 וחזית אנא ית כל טורחא וית כל אוטבות עובדא די עבדין בני אנשא ארום היא קנאתא
דקני גבר לחבריה למעבד כותיה דמקני ליה למעבד טבא כותיה מימרא דשמיא יוטיב
ליה ודמקני ליה לביש למעבד כבישתיה מימרא דשמיא יבאיש ליה ואף דין הבלו לחיבא
5 ותבירות רוחא : שטיא אזל ומנפף ית ידוי בקיטא ולא צבי למטרח ובסתוא ייכול ית כל
6 מה דאית ליה ואפילו כסו מעל משך בסריה : טב לגבר מלי חפני מיכלא בהניית נפש ובלא
גוילא וחטופין מן תרין חפנין מלין מיכלא בגזילא וחטופין ועתיד לשלמא בדינא בטורחא
7 8 ובתבירות רוחא : ותבית אנא וחזית הבלו דאתגזר למהוי בעלמא הדין תחות שמשא : אית
גבר יחידא ולית תנין בר מניה אף ברא ואף אחא לית ליה למירת ית נכסוי ולית סוף לכל
טורחיה ואף עיניה לא תכול למסבע עותריה ולא יימר בלביה למא דנן אנא טרח ומחסר
ית נפשי מטיבותא אקום כען ואעבד מניה צדקתא ואחדי בעלמא הדין עם בני אנשא
9 ולעלמא דאתי עם צדיקיא אף דין הבלו ונין ביש הוא : טבין תרין צדיקיא בדרא יתיר מן
חדא ואנון די דברין במולא ומשתמעין מליהון די אית להון אגר טב לעלמא דאתי
10 בטורחהון די טרחו לסוברא ית דריהון : ארום אלהן אין יפול חד מנהון על ערסא וישכוב
מרע חדא יקים ית חבריה בצלותיה דאלו חד דהוא זכי בלחודוהי בדריה די יפול על
ערסיה וישכוב מרע לית ליה בדריה חבר תנין לצלאה עלוהי אלהן בזכותיה יקום
11 12 מםרעיה : אף אין דמכן תרין גבר ואתתיה ושחין להון בסתוא ולחד איכדין ישחן : ואין
יקום גבר רשיעא ותקיפא בדרא ועובדוהי מקלקלין ומסתקפין לאיתאה פורענותא
בעלמא קימין תרין צדיקיא לקבליה ומבטלין פורענותא בזכותיהון וכמה יאון תלתא
צדיקיא דהנון בדרא ושלם ביניהון כתכא דמגדלא תלת נימין לא בבהילו אתנתק :
13 טב הוא אברהם די הוא רביא מסכין והות ביה רוח נבואה מן קדם יי ואשתמודע ליה מריה
במהוייה בר תלת שנין ולא צבי למפלח לטעותא יתיר מן נמרוד רשיעא דהוה מלכא סיב
טפש ומן בגלל דלא צבי אברהם למפלח לטעותא רמוהי לגו אתון נורא יקדתא ואתרחיש
ליה נסא מן רבוני עלמא ושזביה מתמן ואפילו מן בתר הכי לא הות מנדעא בנמרוד
14 לאזדהרא עוד בדיל דלא למפלח לטעותא דהוא פלח מן לקדמין : ארום מן גניסת פלחי
טעותא נפק אברהם ומלך על ארעא דכנענאי ארום אף ביומי מלכותיה דאברהם אתעביד
15 נמרוד מסכינא בעלמא : אמר שלמה מלכא ברוח נבואה מן קדם יי חזית ית כל חייא דאזלין
בטפשיהון לסרבא על רחבעם ברי תחות שמיא ומפלגין ליה ית מלכותא לאתיהבא
לירבעם בר נבט ברם שבטא דבנימן ויהודה הוה לבהון שלים עם רביא הוא רחבעם ברי
16 דהוה תנין למלכותי דיקום וימלוך באתר אחסנתיה בירושלם : לית סוף לכל עמא בית
ישראל לכל צדיקיא דהוה מדבר קדמיהון ברם הנון יעטוהי בחוכמתא למקל ניראי
מעלוייהון ובטפשותיה אזל ואתיעט עם עולימא והנון יעטוהי בטפשותא לייקרא ניר
מי כותא על עמא בית ישראל ושבק מלכת סביא ואזל במלכת בתראי ברם הנון בתראי
תוהו בתר כן לא חדו ביה ואנון גרמו עלוהי לאסתפקא למהוי מתפלגין מניה עשרתי
שבטיא ומלוך עלויהון ירבעם חיבא אמרית אף דין הבלו לרחבעם ברי ותבירות רוח
17 לדיליה : אנת בר נשא טר רגלך בעדן דתיזיל לבית מוקדשא דיי לצלאה דלא תהך תמן כד אנ
חובין קדם עד לא תתוב ותהי מקריב אודנך לקבלא אולפן אוריתא מן כהניא וחכימיא ולא
תהא כטפשיא דמקרבין קורבנא על חוביהון ולא תיבין מן עובדיהון בישיא דאחידין
בידיהון וליתוהי מקבל ברעוא ארום ליתיהון ידעין למעבד בהין בין טב לביש :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et vidi ego omnē laborē & omnē directionē operis quod fecerūt filii ho-
nis, quòd ſit æmulatio qua æmulatur vir ſociū ſuū ad faciendū ſicut ille
æmulatur eū, ut faciat bonū ſicut ille, verbū cœleſte benefaciet ei; qui
æmulatur malum, ad faciendū juxta malū ipſius, verbū cœleſte male
ciet illum: & etiā hoc vanitas eſt peccatori & confractio ſpiritꝰ. Stultꝰ
& cōplicat manꝰ ſuas in æſtate & non vult laborare, & in hyeme com
quicquid eſt ipſi, & etiā operimentū de pelle carnis ſuæ. Melius eſt viro
plementū volæ [unius] cibi in quiete animæ & ſine direptione et ra
quàm duæ volæ plenæ cibo in direptione & rapinis: nam perſolvitur
judicio cum moleſtia & confractione ſpiritus. Et redii ego & vidi van
quæ decreta eſt ut ſit in ſeculo hoc ſub Sole. Eſt vir unicꝰ, & nō eſt ſe
præter eū, neq; etiā filiū neq; fratrē habet ad hæreditandū facultates
& nō eſt finis omnibꝰ laboribꝰ ejꝰ; etiā oculꝰ ejus nō poteſt ſatiari div
nec dicit in corde ſuo, Ad quidnā ego laboro & defraudo animā me
nis? ſurgam nunc & faciā ex iis eleemoſynam, ut gaudeā in hoc ſecul
filiis hominis, & in ſeculo futuro cum juſtis: etiā hoc vanitas & nego
malū eſt. Meliores ſunt duo juſti in generatione, quàm unꝰ, qui quæ
feliciter & audiuntur verba eorū; quia eſt illis merces bona in ſeculo
turo in laboribꝰ ſuis, quos laboraverunt ad ſuſtentandū generationē
Nā ſi ceciderit unꝰ ex eis ſuper lectū & cubaverit ægrotans, alter ſu
faciet ſociū ſuū oratione ſua: quòd ſi unꝰ innocēs ſolꝰ fuerit in genera
ſua, qui decidet ſup lectū & cubabit ægrotans, nō erit illi in genera
ſua ſociꝰ ſecundꝰ ad orandū ſup eū: ſed in puritate ſua ſurget ex ægri
ſua. Etiam ſi dormierint duo, vir et uxor ejꝰ, et calor eis erit in hyeme
unꝰ quomodo calefiet? Et ſi ſurrexerit vir improbꝰ & robuſtꝰ in gene
ne, & opera ejꝰ corrupta, & occaſionē afferentia ad provocandā ultion
ſeculo; ſtantes duo juſti adverſus eū, ceſſare faciēt ultionem merito ſuo
quanto cōgruentius tres juſti qui fuerint in generatione, & pax inter
ſicut catena quæ contorta eſt ternis funibus, non feſtinanter conve
Major erat Abraham qui puer erat pauper, et inerat in eo ſpiritꝰ pro
ab-ante Dñm, & innotuit illi Dominꝰ ejꝰ cū tertiū annū nondū exc
neq; voluit cultū præſtare idolis, quàm Nimrod impiꝰ qui rex erat
ſtultꝰ ; cùm enim nollet Abraham cultū præſtare idolis, projecerunt
fornacē ignis ardētis, ſed editū eſt ei miraculū à Domino mūdi, & er
indè: et ultra hæc quidē nō erat cognitio in Nimrod ut admoneretur
plius quo minꝰ coleret idola, quæ coluiſſet antea. Etenim de ſtirpe ido
rū exivit Abrahā et regnavit ſup terrā Chananæorū: etenim in diebꝰ
ipſiꝰ Abrahā, factꝰ eſt Nimrod pauper in ſeculo. Dixit Selomoh rex
ritu prophetiæ à cōſpectu Domini; Vidi omnes vivētes qui ambulāt in
titia ſua ad rebellandū in Roboā filiū meū ſub cœlo, & dividunt ei
ad dandum Jeroboā filio Nebat : veruntamē tribꝰ Benjamin & J
corde integro fuerūt cum puero Roboā filio meo. qui fuit ſecundꝰ regn
qui ſurrexerit et regnârit in loco hæreditatis ſuæ in Jeruſalem. Nō e
omnis populi domꝰ Iſrael, omnium juſtorū quibꝰ ductor fuit ante illos
quidem cōſuluerunt ei ſapienter, ut alleviaret illis jugum, at in ſtultitia
abiens cōſuluit juvenes, qui cōſilium dederunt ei ſtolidum, ut aggra
jugum regni ſuper populum domus Iſrael, & relicto cōſilio ſeniorum,
eſt cōſilium poſteriorum: ſed & ipſi poſteriores attoniti fuerunt, nec
gaviſi ſunt in eo, cum ipſi auctores fuiſſent ei, ut occaſionē daret ut de
deſciſcerent ab eo, & regnaret ſuper eas Jeroboā peccator. Dixi etiā ho
nitas eſt Roboā filio meo, & cōfractio ſpiritus ſuis. Tu fili hominis c
pedes tuos in tēpore quo ieris in domum ſanctuarii Domini ad ora
ne venias eò plenꝰ peccatis quoad cōvertaris: & eſto ad movens au
ad excipiendā doctrinā Legis à Sacerdotibꝰ et ſapientibꝰ, et ne ſi
ſtulti qui offerunt munus pro peccatis ſuis & nō cōvertuntur ab o
ſuis malis quæ apprehendunt manibꝰ ſuis, et ipſe non accipit in bene
quia ipſi neſciunt facere in eis inter bonum et malum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܚܙܝܬ ܐܢܐ ܟܠܗ ܥܡܠܐ ܘܟܠܗ ܟܘܫܪܐ ܕܥܒܕܐ. ܡܛܠ ܕܛܢܢܗ ܕܓܒܪܐ. ܡܢ ܚܒܪܗ.
ܐܦ ܗܢܐ. ܗܒܠܐ ܘܬܘܪܥܝܬܐ ܕܪܘܚܐ. * ܣܟܠܐ ܡܚܒܩ ܐܝܕܘܗܝ. ܘܐܟܠ ܒܣܪܗ. * ܛܒ 5
ܡܠܐ ܚܘܦܢܐ ܢܝܚܐ. ܡܢ ܡܠܐ ܚܘܦܢܝܢ ܥܡܠܐ ܘܬܘܪܥܝܬܐ ܕܪܘܚܐ. * ܘܗܦܟܬ ܐܢܐ 6
ܘܚܙܝܬ ܗܒܠܐ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܐܝܬ ܚܕ. ܘܠܝܬ ܬܪܝܢ. ܘܒܪܐ ܘܐܚܐ. ܠܝܬ ܠܗ. 7
ܘܠܝܬ ܣܘܦ ܠܟܠܗ ܥܡܠܗ. ܐܦ ܥܝܢܗ. ܠܐ ܣܒܥܐ ܥܘܬܪܐ. ܘܠܡܢ ܐܢܐ ܥܡܠ 8
ܘܡܚܣܪ ܢܦܫܝ ܡܢ ܛܒܬܐ. ܐܦ ܗܢܐ. ܗܒܠܐ ܗܘ. ܘܥܢܝܢܐ ܒܝܫܐ. * ܛܒܝܢ 9
ܬܪܝܢ ܡܢ ܚܕ. ܕܐܝܬ ܠܗܘܢ ܐܓܪܐ ܛܒܐ ܒܥܡܠܗܘܢ. * ܐܢ ܢܦܠܘܢ ܚܕ. ܡܩܝܡ 10
ܠܚܒܪܗ. ܘܘܝ ܠܗ ܠܚܕ. ܕܐܢ ܢܦܠ. ܠܝܬ ܡܢ ܕܢܩܝܡܝܘܗܝ. * ܘܐܢ ܢܫܟܒܘܢ ܬܪܝܢ 11
ܢܫܚܢܘܢ. ܘܚܕ. ܐܝܟܢ ܢܫܚܢ. * ܘܐܢ ܢܬܩܦ ܚܕ. ܬܪܝܗܘܢ ܢܩܘܡܘܢ ܠܘܩܒܠܗ. 12
ܘܚܘܛܐ ܕܡܬܠܬܐ. ܠܐ ܒܥܓܠ ܡܬܦܣܩ. * ܛܒ ܛܠܝܐ ܕܡܣܟܢ ܘܚܟܝܡ. ܡܢ 13
ܡܠܟܐ ܣܒܐ ܕܣܟܠ. ܘܠܐ ܝܕܥ ܠܡܙܕܗܪܘ ܬܘܒ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܒܝܬ ܐܣܝܪܐ ܢܦܩ 14
ܠܡܡܠܟܘ. ܡܛܠ ܐܦ ܒܡܠܟܘܬܗ. ܐܬܝܠܕ ܡܣܟܢܐ. * ܚܙܝܬ ܐܢܐ ܟܠܗܘܢ ܚܝܐ 15
ܕܡܗܠܟܝܢ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܥܡ ܛܠܝܐ ܬܢܝܢܐ ܕܢܩܘܡ ܚܠܦܘܗܝ. * ܘܠܝܬ 16
ܣܘܦ ܠܟܠܗ ܥܡܐ. ܠܟܠܗܘܢ ܕܗܘܘ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܐܦ ܐܚܪܝܐ ܠܐ ܢܚܕܘܢ ܒܗ. ܡܛܠ ܕܐܦ
ܗܢܐ. ܗܒܠܐ ܘܬܘܪܥܝܬ ܕܪܘܚܐ. * ܛܪ ܪܓܠܟ ܟܕ ܐܙܠ ܐܢܬ ܠܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ. ܘܩܪܘܒ 17
ܠܡܫܡܥ. ܛܒ ܡܢ ܕܒܚܬܐ ܕܝܗܒܝܢ ܣܟܠܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥܝܢ
ܠܡܥܒܕ ܛܒܬܐ.

Conſideravi quoque labores omnes, cun- 4
ctáſque in operando proſperitates; quòd
hominis æmulatio ſit à ſocio ſuo: atque
hoc etiam vanitas eſt, & animi perturbatio.
Stultus amplexatur manus ſuas, devorát- 5
que carnem ſuam, *dicens*; Pleno pugillo 6
requies, melior eſt quàm plenis volis labore
& animi moleſtiâ. Converſus etiam con- 7
templatus ſum vanitatem ſub ſole. Eſt unus 8
quiſpiam, nec habet ſecundum; & filium
aut fratrem non habet: attamen nullus eſt
omnium laborum ejus finis, imò nec ſatura-
tur oculus ejus divitiis. Cuinam ego laboro,
& fraudo meipſum bono? & hoc etiam va-
nitas eſt, & cura peſſima. Meliores ſunt duo 9
quàm unus, quoniam eſt eis præmium bo-
num in labore ſuo. Nam ſi ceciderint, alter 10
ſocium ſuum eriget. Væ ſoli, quia ſi ceciderit,
non adeſt qui eum erigat. Prætereà ſi duo 11
ſimul cubent, caleſient: unus autem quomo-
do caleſcat? Et ſi quis inſultet, ambo reſi- 12
ſtent ei: denique filum triplicatum haud citò
rumpitur. Præſtantior eſt puer egenus & 13
ſapiens, rege ſene qui ſtultus eſt, ac neſcit am-
pliùs eſſe cautus. Quoniam è carcere prodit 14
ad regnandũ, & quoniã in regno quoq; ſuo
natus eſt pauper. Vidi ego cunctos viventes 15
qui ambulant ſub ſole, comitari juvenem ſe-
cundum qui loco ipſius ſurrecturus eſt. Neque 16
terminus eſt omni populo, omnibus *inquam*
qui præceſſerunt eum: imò nec poſteri læta-
buntur in eo: nam hoc vanitas eſt & animi
moleſtia. Cuſtodi pedem tuum, quum per- 17
gis ad domum Dei, & accede ad audiendum:
præſtantius *hoc* eſt victimis quas offerunt
ſtulti; quoniam ignorant agere quod bo-
num eſt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وعرفت انا جميع التعب وكافة شجاعة الصناعة * ان الحسد دابة للانسان من رفيقه 4
يكون * وهذا لعمري فباطل واختيار الروح * الغبي قد تناول يديه واكل لحمانه * 5
* ملو كف راحة صالح اكثر من ملو كفين تعبا واختيار الروح * وانعطفت انا فرايت 6 7
الاباطيل تحت الشمس * يوجد واحدا ولن يوجد ثان وذلك ابن * ومع هذا ليس له اخ 8
وليس في جميع تعبه تقلب * ومع هذا ان عينه لن تشبع من الغنا * ولمن اتعب
انا واعدم نفسي الصلاح * وهذا لعمري فباطل وتقلب شرير هو * الاثنان صالحان 9
خير من الواحد * اذ لهما ثواب صالح في تعبهما * لانهما ان سقطا فالواحد ينهض 10
شريكه * والويل للواحد نفسه اذا سقط ولا يكون له ثان ينهضه * وان رقدا اثنان 11
يكون لهما دفاء وحرارة * والواحد كيف يسخن * وان تايد الواحد فالاثنان يقومان 12
مقابلة * والخيط المثلث ما ينسحب سريعا * صبي فقير وحكيم صالح افضل من 13
ملك شيخ وغبي * ما قد عرف ان يصغي الي ذاته ايضا * وانه من منزل المقتدرين 14
يخرج ليتملك * ومع هذا فانه صار في ملكه فقيرا * عرفت جميع الاحياء معا 15
السالكين تحت الشمس بعد الشاب الثاني من يقوم بدلا منه * وليس التقلب لجميع 16
الشعب * وكان لجميع الذين تقدموا قبلهم * ولعمري ان الاخرين لم يسروا به * وذلك
ان هذا باطلا واختيار الروح * احفظ قدمك في الوقت الذي تذهب فيه الي بيت الله * 17
وصاقب القريب للاستماع * ولتكن ذبيحتك افضل من عطية الجهال * لانهم ليسوا
عارفين ان يعملوا حسنا *

Deprehendi quoque omnem laborem & 4
omnem in agendo ſolertiam; quòd ipſa
quoque hominis invidia ſit à ſocio:
& hoc quidem vanum eſt, & placi-
tum ſpiritûs. Stolidus capitis ſuis ma- 5
nibus, comedit carnes ſuas. Vola 6
quiete plena, potior eſt duabus volis
labore & animi placito refertis. Præ- 7
terea converſus ego vidi vanitates ſub
ſole. Adeſt unus, nec invenitur ſe- 8
cundus nempe filius, adhæc non habet
fratrem; & tamen nullo frangitur la-
bore; quódque magis eſt, oculus ejus
haudquaquam ſaturatur divitiis. At
cuinam laboro, & meipſum bono de-
fraudo? atque id quidem vaniſſimum
eſt & negotium peſſimum. Duo, boni 9
ſunt, meliores uno: quandoquidem ha-
bent mercedem bonam in dolore ſuo.
Nam ſi cadant, alter ſocium ſuum e- 10
rigit. Væ autem uni ſoli quum ceci-
derit, nec adſit illi ſecundus qui eri-
gat eum. Et, ſi duo cubent, foventur 11
& calſiunt: unus autem quomodo
calſiet? Et, ſi unus quiſpiam inva- 12
leſcat, duo ſtabunt adverſus eum:
& verò filum triplicatum haud citò
rumpitur. Puer pauper ac ſapiens bo- 13
nus eſt, præſtantior rege ſene ac ſto-
lido, qui neſcit ampliùs ſibi conſulere.
Tum quia hic ex ædibus potentium e- 14
greditur ad regnum ſuſcipiendum: tum
etiam quòd in regno ſuo pauper eveniat.
Omnes ſimul vivos deprehendi ſub ſo- 15
le incedentes poſt juvenem ſecundum
qui hujus loco ſurrecturus eſt. Et 16
negotium non ſolùm univerſo populo
faceſſitur, ſed fuit omnibus qui præ-
ceſſerunt eos, & ne poſteri quidem
lætabuntur in eo: quia nimirum hoc
vanum eſt, & placitum ſpiritûs. Ob- 17
ſerva pedem tuum quo tempore adie-
ris domum Dei, & accede ad eum
qui proximus eſt ad audiendum: ſit-
que ſacrificium tuum præclarius mu-
nere ſtultorum; hi enim neſciunt utrùm
benefaciant.

קהלת : ה

CAP. V. ה

facias ad verbum proferre acceleret ne tuũ cor &, tuo ore *ſuper* feſtines Ne
1 אַל־תְּבַהֵל עַל־פִּיךָ וְלִבְּךָ אַל־יְמַהֵר לְהוֹצִיא דָבָר לִפְנֵי
idcirco : terrã ſuper tu & , cœlis in Deus quia : *Dei*
הָאֱלֹהִים כִּי הָאֱלֹהִים בַּשָּׁמַיִם וְאַתָּה עַל־הָאָרֶץ עַל כֵּן
: *negotii* multitudine in ſomnium *veniens* Quia .pauca tua verba ſint
2 יִהְיוּ דְבָרֶיךָ מְעַטִּים׃ כִּי בָּא הַחֲלוֹם בְּרֹב עִנְיָן
, Deo votum voveris Quum .verborũ multitudine in ſtulti vox &
3 וְקוֹל כְּסִיל בְּרֹב דְּבָרִים׃ כַּאֲשֶׁר תִּדֹּר נֶדֶר לֵאלֹהִים
Quæ : ſtultis in voluntas non quia : illud reddere tardes ne
אַל־תְּאַחֵר לְשַׁלְּמוֹ כִּי אֵין חֵפֶץ בַּכְּסִילִים אֵת אֲשֶׁר־
non & ,voveas quod quàm ,voveas non quòd Melius .redde , voveris
4 תִּדֹּר שַׁלֵּם׃ טוֹב אֲשֶׁר לֹא־תִדֹּר מִשֶּׁתִּדּוֹר וְלֹא
ne & ,tuã carnem *faciendũ peccare ad* tuum os des Ne .reddas
5 תְשַׁלֵּם׃ אַל־תִּתֵּן אֶת־פִּיךָ לַחֲטִיא אֶת־בְּשָׂרֶךָ וְאַל־
Deus iraſcetur quid Ut .*iſtud error quia* , *angeli facies ad* dicas
תֹּאמַר לִפְנֵי הַמַּלְאָךְ כִּי שְׁגָגָה הִיא לָמָּה יִקְצֹף הָאֱלֹהִים
multitudine in Quia?tuarũ manuũ opus diſſipabit &,tuã vocẽ propter
6 עַל־קוֹלֶךָ וְחִבֵּל אֶת־מַעֲשֵׂה יָדֶיךָ׃ כִּי בְרֹב
.time Deum ſed : *multum* verba & ,vanitates & ,ſomniorum
חֲלֹמוֹת וַהֲבָלִים וּדְבָרִים הַרְבֵּה כִּי אֶת־הָאֱלֹהִים יְרָא׃
,provincia in videris juſtitiæ & ,judicii rapinam &,pauperis oppreſſionẽ Si
7 אִם־עֹשֶׁק רָשׁ וְגֵזֶל מִשְׁפָּט וָצֶדֶק תִּרְאֶה בַמְּדִינָה
,*cuſtodiens* excelſum *deſuper* excelſus quia : voluntate *ſuper* mireris ne
אַל־תִּתְמַהּ עַל־הַחֵפֶץ כִּי גָבֹהַּ מֵעַל גָּבֹהַּ שֹׁמֵר
agro rex : *ipſa* omnib⁹ in terræ *præſtantia* Et .eos ſuper excelſi &
8 וּגְבֹהִים עֲלֵיהֶם׃ וְיִתְרוֹן אֶרֶץ בַּכֹּל הִיא מֶלֶךְ לְשָׂדֶה
multitudine in diligens qui &,argento ſatiabitur non argentũ *Diligens*.ſervus *fit*
9 נֶעֱבָד׃ אֹהֵב כֶּסֶף לֹא־יִשְׂבַּע כֶּסֶף וּמִי־אֹהֵב בֶּהָמוֹן
ſuis multiplicati ,bonum multiplicando In .vanitas hoc etiam *: fructus non*
10 לֹא תְבוּאָה גַּם־זֶה הָבֶל׃ בִּרְבוֹת הַטּוֹבָה רַבּוּ
?*ejus oculorum videre quinimo* ,ſuis dominis *rectum quid & : illud* comedẽtes
אוֹכְלֶיהָ וּמַה־כִּשְׁרוֹן לִבְעָלֶיהָ כִּי אִם־רְאִית עֵינָיו׃
: comedat multum ſive ,parum ſive ,operantis ſomnus Dulcis
11 מְתוּקָה שְׁנַת הָעֹבֵד אִם־מְעַט וְאִם־הַרְבֵּה יֹאכֵל
infirmitas mala Eſt .dormire *ei permittens ipſa* non divitis ſaturitas &
12 וְהַשָּׂבָע לֶעָשִׁיר אֵינֶנּוּ מַנִּיחַ לוֹ לִישׁוֹן׃ יֵשׁ רָעָה חוֹלָה
.ſuum malũ in ſuis dominis *cuſtodita opulentia* , ſole ſub vidi
רָאִיתִי תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ עֹשֶׁר שָׁמוּר לִבְעָלָיו לְרָעָתוֹ׃
non & ,filium genuit & : mala occupatione in *ipſa opulentia perit* Et
13 וְאָבַד הָעֹשֶׁר הַהוּא בְּעִנְיַן רָע וְהוֹלִיד בֵּן וְאֵין
ſuæ matris utero ex eſt egreſſus Quemadmodum .quicquam ejus manu in
14 בְּיָדוֹ מְאוּמָה׃ כַּאֲשֶׁר יָצָא מִבֶּטֶן אִמּוֹ
portabit non quicquam & : venit quòd ſecũdũ *eundum ad* revertetur ,nudus
עָרוֹם יָשׁוּב לָלֶכֶת כְּשֶׁבָּא וּמְאוּמָה לֹא־יִשָּׂא
.ſua manu in ducat quod ,ſuo labore *in*
בַעֲמָלוֹ שֶׁיֹּלֵךְ בְּיָדוֹ׃

Verſio VUL. LAT.

CAP. V.

1 NE temerè quid loquaris,
neque cor tuum ſit velox ad
proferendum ſermonẽ coram
Deo. Deus enim in cœlo, &
tu ſuper terram : idcircò ſint
2 pauci ſermones tui. Multas cu-
ras ſequuntur ſomnia, & in
multis ſermonibus invenietur
3 ſtultitia. Si quid voviſti Deo,
ne moreris reddere : diſplicet
enim ei infidelis & ſtulta pro-
miſſio : ſed quodcunque vove-
4 ris, redde : Multóque melius
eſt non vovere, quàm poſt vo-
tum promiſſa non reddere.
5 Ne dederis os tuum ut pecca-
re facias carnem tuam : neque
dicas coram angelo, Non eſt
providentia : ne fortè iratus
De⁹ contra ſermones tuos, diſ-
ſipet cuncta opera manuũ tua-
6 rum. Ubi multa ſunt ſomnia,
plurimæ ſunt vanitates, & ſer-
mones innumeri : tu verò Deũ
7 time. Si videris calumnias ege-
norum, & violenta judicia, &
ſubverti juſtitiam in provincia,
non mireris ſuper hoc negotio:
quia excelſo excelſior eſt alius,
& ſuper hos quoque eminen-
8 tiores ſunt alii. Et inſupèr u-
niverſæ terræ rex imperat ſer-
9 vienti. Avarus non implebitur
pecuniâ : & qui amat divitias,
fructum non capiet ex eis : &
10 hoc ergò vanitas. Ubi multæ
ſunt opes, multi & qui come-
dunt eas. Et quid prodeſt poſ-
ſeſſori, niſi quòd cernit divitias
11 oculis ſuis ? Dulcis eſt ſomnus
operanti, ſive parùm, ſive mul-
tùm comedat : ſaturitas autem
divitis non ſinit eum dormire.
12 Eſt & alia infirmitas peſſima,
quam vidi ſub Sole : divitiæ
conſervatæ in malum domini
13 ſui. Pereunt enim in afflictio-
ne peſſima : generavit filium,
qui in ſumma egeſtate erit.
14 Sicut egreſſus eſt nudus de u-
tero matris ſuæ, ſic revertetur,
& nihil auferet ſecum de la-
bore ſuo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ε´.

1 †ΜΗ´ σπεῦδε ἐπὶ στόματί σου, † καὶ καρδία
σου μὴ (α) ταχυνάτω † τοῦ ἐξενέγκαι λόγον πρὸ
προσώπου τοῦ θεοῦ· † ὅτι ὁ θεὸς ἐν τῷ (β) οὐρανῷ
ἄνω, καὶ σὺ ἐπὶ τῆς γῆς· † (γ) διὰ τοῦτο ἔστωσαν
2 οἱ λόγοι σου ὀλίγοι. † Ὅτι παραγίνεται ἐνύπνιον
ἐν πλήθει περισπασμοῦ, † καὶ φωνὴ ἄφρονος ἐν πλή-
3 θει λόγων. † Καθὼς (ϛ) εὔξῃ εὐχὴν τῷ θεῷ, † μὴ
χρονίσῃς τοῦ ἀποδοῦναι αὐτήν· † ὅτι οὐκ ἔστι θέ-
λημα ἐν ἄφροσι. † σὺ οὖν ὅσα (δ) ἐὰν εὔξῃ, ἀπό-
4 δος. † Ἀγαθὸν τὸ μὴ εὔξασθαί σε, † ἢ τὸ εὔ-
5 ξασθαί σε καὶ μὴ ἀποδοῦναι. † Μὴ δῷς τὸ στό-
μα σου τοῦ (ε) ἐξαμαρτῆσαι τὴν σάρκα σου, † καὶ μὴ
εἴπῃς πρὸ προσώπου τοῦ θεοῦ, Ὅτι ἄγνοιά ἐστιν·
† ἵνα μὴ ὀργισθῇ ὁ θεὸς ἐπὶ φωνῇ σου, † καὶ δια-
6 φθείρῃ τὰ ποιήματα χειρῶν σου. † Ὅτι ἐν πλή-
θει ἐνυπνίων καὶ ματαιοτήτων καὶ λόγων πολ-
7 λῶν, † ὅτι (ζ) σὺ τὸν θεὸν φοβοῦ. † Ἐὰν συκοφαν-
τίαν πένητος καὶ ἁρπαγὴν κρίματος καὶ δικαιο-
σύνης ἴδῃς ἐν χώρᾳ, † μὴ θαυμάσῃς ἐπὶ τῷ
πράγματι· † Ὅτι ὑψηλὸς ἐπάνω ὑψηλοῦ (η)
8 φυλάξαι, † καὶ ὑψηλοὶ (θ) ἐπ᾽ αὐτοῖς. Καὶ πε-
ρίσσεια γῆς † ἐπὶ παντί ἐστι, βασιλεὺς τοῦ ἀγροῦ
9 εἰργασμένου. † Ἀγαπῶν ἀργύριον οὐ πλησθήσεται
ἀργυρίου· † καὶ τίς ἠγάπησεν ἐν πλήθει (ι) αὐτῶν
10 γέννημα; † καί γε τοῦτο ματαιότης. † Ἐν πλήθει
ἀγαθωσύνης ἐπληθύνθησαν (κ) ἔσθοντες αὐτήν·
† καὶ τί ἀνδρεία τῷ παρ᾽ αὐτῆς; † ὅτι ἀρχὴ τοῦ ὁ-
11 ρᾶν ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ. † Γλυκὺς ὕπνος τοῦ δού-
λου † εἰ ὀλίγον καὶ εἰ πολὺ φάγεται, † καὶ τῷ ἐμπλη-
σθέντι τοῦ πλουτῆσαι, † οὐκ ἔστιν ἀφίων αὐτὸν τοῦ ὑ-
12 πνῶσαι. † Ἔστιν ἀρρωστία ἣν εἶδον ὑπὸ τὸν ἥλι-
ον, † πλοῦτον φυλασσόμενον τῷ παρ᾽ αὐτοῦ εἰς
13 κακίαν (λ) αὐτῷ, † Καὶ ἀπολεῖται ὁ πλοῦτος ἐκεῖ-
νος ἐν περισπασμῷ (μ) πονηρῷ, † καὶ ἐγέννησεν
14 υἱόν, καὶ οὐκ ἔστιν ἐν χειρὶ αὐτοῦ οὐδέν. † Καθὼς ἐξ-
ῆλθεν ἀπὸ γαστρὸς μητρὸς αὐτοῦ γυμνός, † ἐπι-
στρέψει τοῦ πορευθῆναι ὡς ἥκει, † καὶ (ν) οὐδὲν οὐ
λήψεται ἐν μόχθῳ αὐτοῦ, † ἵνα πορευθῇ ἐν
χειρὶ αὐτοῦ.

MS. A. (α) ταχυνέτω (β) οὐρανῷ, καὶ σὺ (γ) ἐπὶ τέλω (ϛ) ἂν εὔξῃ (δ) ἀ
μαρτεῖν (ζ) σὺ τὸν θεὸν (η) φυλάσσει, (θ) ἐπ᾽ αὐτ. (ι) αὐτοῦ γέννημα; (κ) οἱ ἐσ-
(λ) αὐτοῦ, (μ) αὐτοῦ, καὶ (ν) οὐδὲν λήμψεται

CAP. V.

NOli (a) feſtinare in ore tu
cor tuũ non feſtinet ad profer
verbũ in conſpectu Dei: quia
cœlo ſurſum, & tu ſuper (te
(c) Propter hoc ſint verba tua
Quia (d) advenit ſomnium in m
tudine ſolicitudinis: & vox ſtu
multiplicatione ſermonum. Si
voveris votum Deo, ne mor
dere illud : quia (e) non eſt vo
in inſipientibus. Tu igitur quæ
voveris, redde. (f) Bonũ eſt n
re te, quàm vovere te, & non
dere. Non des os tuũ, (g) ut p
facias carnẽ tuam : & ne dix
conſpectu (h) Dei, Quia (i) ignora
eſt ; ne iraſcatur Deus ſuper
tuam, & (k) diſperdat opera ma
tuarum. Quia in multitudine ſo
niorum, (l) & vanitatum, & ſer
plurimorũ : (m) quare tu Deũ
Si calumniã pauperis, (n) & v
onẽ judicii, & juſtitiæ videris
gione, nè mireris ſuper negoti
excelſus ſuper excelſum (o) ad c
diendum, & (p) excelſi ſuper e
Et præſtantia terræ in omni e
agri culti. Qui diligit argen
implebitur argento : (r) & qui
xit in multitudine eorum fructu
et hoc vanitas. In multitudine
nitatis multiplicati ſunt, qui com
eam. Et (t) quid fortitudo ei
ea? (v) quia principiũ videre
ſuis. Dulcis ſomnus ſervi ſi pa
lũm, & ſive multum comeder
(x) ei, qui ſaturatus eſt ditari
non eſt dimittens eũ dormire. E
languor, quẽ vidi ſub Sole, (z) di
tias cuſtoditas ei, qui ab eis
ei : Et (aa) peribunt divitiæ illæ
tentione peſſima. Et genuit fil
nõ eſt in manu ej⁹ quicquã. Sic
ivit de utero matris ſuæ nud
tetur, ut eat, ſicut venit : & n
piet in labore ſuo, ut
nu ſua.

תרגום TARGUM.

ה

1 לא תבהל על מימרך לשבשא ית מלי פומך ולבך לא יוחי לאפקא ממלל בעדן דאת מצלי
מן קדם יי ארום יי שליט על כל עלמא ויתיב על כורסיה יקריה בשמי מרומא ואנת יתב על
2 ארעא בגין כן יהון מלי פומך קלילן : ארום היכמה דאתי חלמא על הרהורי לבא וסגיאות
3 קל שטיא בסגיאות פתגמין בטילין : בעדן דתדר נדרא קדם יי לא תעכב לשלמותיה ארום
בגין כן לית רעוא דיי בטפשיא מן בגלל דמעכבין נדריהון ולא משלמין ואנת ית די תנדר
4 שלם : טב לך די לא תנדר מן די תנדר ולא תשלם : לא תנבל ית מימרא דפומך למגרם דין
5 גהנם עלי בסרך וביום דינא רבא לא תכול למימר קדם מלאכא אכזריא דרדי בך ארום
שלותא היא למה דין יתקף רוגזא דיי על קל מימרך דאתאמר בגנותא ויחבל ית עובדי
6 ידך : ארום בסגיאות חלמין דנביאי שקרא והבלין דבעלי חרשין ומלין סגיאין דרשיעיא
לא תהימן ארום חכימיא צדיקיא תהי משמש ומנהון תתבע אולפן ומן קדם יי תהי דחיל :
7 אין אניסות מסכנין וגזלתא וצדקתא תחמי בקרתא לא תתמה בלבך למימר איכדין רעותא
דיי על כל אלין ארום על שמי מרומא נטיר עובדי בני אנשא בין טב לבישתא ומן קדמוי
8 משתלחין גוברין גנין ותקיפין למרדי ברשיעיא ולמהוי מתמנן רבנין עליהון : ומותר
שבח פולחנות ארעא על כולא היא דבעדן דמרדין בני מלכותא ומלכא מתיהב בפצחהון
מן קדמיהון אין לית ליה עבור למיכל ההוא מלכא לגבר פלח בחקלא מתעבד עבד
9 משתעבד : גבר תגר די רחים למקני כסף ומרי פרגמטיא לא ישבע למצבור כסף ומן די
רחים למכנוש ממון יתיר לית ליה שבח בעלמא דאתי אין לא יעבד מניה צדקתא בדיל
10 דלית ליה אגר עלל למיכל אף דין הבלו : בזמן דסגי טבותא בעלמא סגיאן אוף בני אנשא
דייכלונה ומה הנאה אית למרהא דיצברנה אין לא יעביד מנה טיבותא בגין די יחזי
11 בעלמא דאתי יהבית אגרהא בעינוי : בסימת דמיכת גברא די פלח למרי עלמא בלב שלים
ואית ליה ניחא על בית קבורתיה אין זעירות שנין יחי אין סגיאות שנין בתר דפלח למרי
עלמא בעלמא הדין לעלמא דאתי אגר עובדי ידוי יחסין וחוכמת אוריתא דיי לגבר דעתיר
בחוכמתא היכמה דמעסק בה בעלמא הדין ואשתדל באולפנא כדין תנוח עלוהי על בית
קבורתיה ולא תשבקניה בלחודוהי היכמה דלא שבקת אתתא לגוברה בלחודוהי למדמך :
12 אית בישותא מרעיתא חמית בעלמא הדין תחות שמשא ולית ליה אסו גבר דיכנוש עותרא
ולא עבד מניה טב ולסוף יומיא ההוא עתרא נטיר ליה לאבאשא ליה לעלמא דאתי :
13 וההוא עתרא דיי שבק לבריה בתר מותיה יהובד על דקנא ליה בנין ביש ולא יתקיים ביד
14 בריה די יוליד ולא אשתאר ליה בידוי מדעם : היכמה די נפק ממעי אמיה ערטילי בלא כסו
ובלא מדעם טב כדין יתוב לבית קבורתיה חסיר מן זכותא היכמא די אתא בעלמא
הדין ומדעם אגר טב לא יקבל בטורחיה די יסב עמיה לעלמא דאתי לעלמא דהוא אזיל
לזכו בידיה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. V.

NOn accelerabis ſuper dictum tuum ut confundas eloquia oris t
cor tuum non feſtinabit proferre loquelã in tempore quo tu oras ant
minũ : namq; Dñs imperat ſup omnẽ mundum, & ſedet ſup ſolium g
in cœlis altiſſimis, & tu ſedes ſup terrã : propterea erunt verba oris tu
dica. Ecce enim quẽadmodum venit ſomnium ſup cogitationes cordi
multitudo vocis ſtulti in multitudine verborum otioſorum. In tẽpor
voveris votum ante Dominum, ne tardes exolvere illud : quoniã prop
nõ eſt beneplacitum *Domini* in ſtultis quòd differant vota ſua, & n
vunt : & tu quod voveris exolvito. Melius eſt tibi ut non voveas, qu
voveas & non exolvas. Ne cõjicias dictum oris tui ut cauſam adfer
dicii gehennæ ſup carnẽ tuã, & in die judicii magni non poteris dice
te angelum crudelẽ qui poteſtatẽ exercebit in te quod ignorantia fu
ad quidnã roborabitur indignatio Domini ſup *vocem eloquii tui* q
fuerit incongruè, & corrumpet opera manus tuæ ? Etenim in multi
ſomniorum Prophetarum mendacii, & vanitatibus auctorum inca
num, & loquelis multis improborum non credes : verùm ſapientib⁹
miniſtrabis, & ex eis quæres doctrinam, & à cõſpectu Domini timebi
violentiam *pauperum, & direptiones*[*judicii*] & juſtitiæ videris in civ
ne admireris in corde tuo ; quomodo voluntas Domini ſit ſup omnia
quia[*Deus potens*] ſup cœlos altiſſimos obſervat opera filiorum ho
tam bona quàm mala : & à facie ejus mittuntur viri magnifici & ro
ut poteſtatẽ exerceant in improbos, & ut ſint præpoſiti magiſtratus
eos. Et excellentia laudis culturæ terræ ſuper omnia eſt, quod in tem
quo rebellant filii regni, & rex datur in villas *eorum* à facie eorum,
eſt ipſi frumentum ad comedendum, ipſe idem rex viro culturã in ag
cienti ſerviens ſervus efficitur. Vir negotiator qui amabit *acquire*
gentum, & mercator non ſaturabitur cumulando argentum : & qui
rit congregare divitias copioſiores, non eſt ei laus in ſeculo ventu
fecerit ex eis eleemoſynam : propterea quod non eſt ei merces prov
ad comedendum : etiam hoc vanitas. Quando multiplicatur bon
ſeculo, multiplicantur etiã filii hominum qui comedant illud : & qu
litas eſt domino ej⁹ qui cõgregabit illud ; niſi fecerit ex eo bonum
deat in ſeculo venturo retributionẽ mercedis in oculis ſuis ? Suavis
nus viri qui colit Dominum mundi *corde integro*, & eſt ei quies in
ſepulchri ej⁹, ſive paucos annos vixerit ſive multos poſtquàm ſervi
mundi in ſeculo hoc, ad ſeculum venturum mercedem operum ma
rum hæreditabit : & ſapientia Legis Dñi erit viro diviti in ſapientia
quẽadmodum ſtuduit in ea in ſeculo hoc, & ſollicitus fuit in doctr
requieſcet ſup eum in domo ſepulchri ejus, & non deſeret eum ſolum
admodũ non ſinit uxor virum ſuũ ut dormiat ſolus. Eſt malus morb⁹
vidi in ſeculo hoc ſub Sole, & nõ eſt in eo ſanitas : vir qui cõgregat
as, & nõ facit ex eis *bonum* : in finẽ dierum ille ſibi divitias cuſtodit
triſtent eum in ſeculum venturum. Et illæ divitiæ quas relinquet
poſt mortẽ ſuã peribunt, eo quòd comparaverit eas negotio malo
permanebunt in manu filii ſui quẽ genuit : nec reſiduum erit illi
ejus quicquam. Quẽadmodum exiit de utero matris ſuæ nudus ab
rimento & abſque omni bono, ſic revertetur ad eundum in dom
turæ ſuæ indigens merito, quẽadmodum venit in ſeculũ hoc, ne
mercedis bonæ excipiet in labore ſuo, ut tollat ſecum in ſeculum
ipſe vadit, *ut ſit in meritum in manu ejus*.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *

* ܠܐ ܬܣܬܪܗܒ ܒܦܘܡܟ. ܘܠܒܟ. ܠܐ ܢܣܬܪܗܒ ܠܡܦܩܘ ܡܠܬܐ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. 1
ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܒܫܡܝܐ. ܘܐܢܬ ܒܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܗܘܘܢ ܒܨܝܪܝܢ ܦܬܓܡܝܟ.
* ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܚܠܡܐ ܒܣܘܓܐ ܕܒܨܝܢܐ ܀ ܘܩܠܗ ܕܣܟܠܐ ܒܣܘܓܐ ܕܡܠܐ. 2
* ܐܡܬܝ ܕܬܢܕܪ ܢܕܪܐ ܠܐܠܗܐ ܀ ܠܐ ܬܫܘܚܪ ܠܡܫܠܡܘܬܗ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܨܒܝܢܐ 3
ܒܣܟܠܐ. ܐܢܬ ܕܝܢ. ܡܕܡ ܕܬܢܕܪ ܐܢܬ ܫܠܡ. * ܛܒ ܗܘ ܕܠܐ ܬܢܕܪ. ܡܢ ܕܬܢܕܪ ܘܠܐ 4
ܬܫܠܡ. * ܠܐ ܬܬܠ ܦܘܡܟ. ܠܡܚܛܝܘ ܠܒܣܪܟ. ܘܠܐ ܬܐܡܪ ܩܕܡ ܐܠܗܐ ܕܫܘܚܠܦܐ 5
ܗܘ. ܕܠܡܐ ܢܪܓܙ ܐܠܗܐ ܥܠ ܩܠܟ. ܘܢܚܒܠ ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܟ. * ܡܛܠ ܕܒܣܘܓܐ 6
ܕܚܠܡܐ ܘܗܒܠܐ : ܘܦܬܓܡܐ ܣܓܝܐܐ ܕܛܘܥܝܝ. ܐܢܬ ܠܐܠܗܐ ܕܚܠ. * ܐܢ ܥܘܠܨܢܐ 7
ܕܡܣܟܢܐ : ܘܚܛܘܦܝܐ ܘܕܝܢܐ ܚܙܝܬ ܒܡܕܝܢܬܐ. ܠܐ ܬܬܕܡܪ ܥܠ ܨܒܘܬܐ. ܡܛܠ
ܕܪܡܐ ܥܠ ܪܡܐ ܢܛܪ. ܘܪܡܐ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܝܘܬܪܢܐ ܕܐܪܥܐ ܒܟܠ ܗܘ. ܡܠܟܐ 8
ܠܚܩܠܐ ܡܬܦܠܚ. * ܘܕܪܚܡ ܟܣܦܐ. ܠܐ ܢܣܒܥ ܟܣܦܐ. ܘܕܪܚܡ ܡܡܘܢܐ. ܠܐ 9
ܢܬܗܢܐ ܡܢܗ. ܘܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ. * ܒܡܣܓܝܐ ܕܛܒܬܐ. ܣܓܝܘ ܐܟܠܝܗ. ܘܡܢܐ ܗܘ 10
ܟܘܫܪܐ ܠܡܪܝܗܝܢ. ܐܠܐ ܐܢ ܚܙܬܐ ܕܥܝܢܘܗܝ. * ܚܠܝܐ ܫܢܬܐ ܠܦܠܚܐ. ܐܢ 11
ܙܥܘܪܐ ܘܐܢ ܣܓܝܐܐ ܢܐܟܘܠ. ܣܒܥܐ ܕܝܢ ܕܥܬܝܪܐ ܠܐ ܫܒܩ ܠܗ ܠܡܕܡܟ. * ܐܝܬ 12
ܟܘܪܗܢܐ ܒܝܫܐ ܕܚܙܝܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܥܘܬܪܐ ܕܢܛܝܪ ܠܡܪܗ ܠܒܝܫܬܗ. * ܘܐܒܕ ܥܘܬܪܐ 13
ܗܘ ܒܥܢܝܢܐ ܒܝܫܐ. ܘܐܘܠܕ ܒܪܐ ܘܠܝܬ ܒܐܝܕܗ ܡܕܡ. * ܐܝܟ ܕܢܦܩ 14
ܡܢ ܟܪܣܐ ܕܐܡܗ. ܥܪܛܠܝܐ ܢܗܦܘܟ ܢܐܙܠ ܐܝܟ ܕܐܬܐ. ܘܡܕܡ ܠܐ ܢܣܒ ܒܥܡܠܗ
ܕܢܐܙܠ ܒܐܝܕܗ.

CAP. V.

NE festines ore tuo, & cor tuum non ſit 1
velox ad promendum ſermonem coram Deo:
Deus enim in cœlo eſt, & tu in terra : quocirca pauci ſint ſermones tui. Nam ex 2
multa cura provenit ſomnium, & vox ſtulti
ex multis ſermonibus. Quum votum Deo 3
voveris, ne differas illud ſolvere : ſtultus
enim non eſt gratus : tu verò quod voves
perſolve. Melius eſt te non vovere, quàm 4
vovere nec perſolvere. Ne committas ut os 5
tuum occaſionem peccandi præbeat carni
tuæ. Et ne dicas coram Deo, Error eſt : ne
fortè iraſcatur Deus voci tuæ, deſtruatque
opus manuum tuarum. Quandoquidem in 6
multitudine ſomniorum cùm vanitates inſunt, tum multi ſermones erronei, tu Deum
time. Si pauperum oppreſſionem, & ra- 7
pinam atque jurgium videris in civitate, hanc
ob rem ne obſtupeſcas : quoniam excelſus
excelſum obſervat, & utrique præſunt excelſiores. Hæreditas terræ cuique eſt inſita: 8
rex agrum coli curat. Et qui amat argen- 9
tum, non ſaturabitur argento : & qui amat
mammonam, haud fruetur illo : atque hoc
etiam vanitas eſt. Creſcentibus opibus, 10
creſcunt qui comedant illas. Et in quo ſunt
utiles domino ſuo opes, præterquàm aſpectui
oculorum ejus ? Dulcis eſt ſomnus agricul- 11
tori, ſive parùm ſive multùm comedat : diviti autem ſaturitas non concedit dormire.
Eſt morbus acerrimus quem vidi ſub ſole. 12
Divitias, *ſcilicet* aſſervari domino ſuo in exitium ejus : Et perire divitias illas in occu- 13
patione peſſima: generavit enim filium, qui nihil habet in manu ſua. Quemadmodum 14
egreſſus eſt è ventre matris ſuæ, nudus iterum abit ut venerat nec quicquam reportat
ex labore ſuo, quod abeat in manu ipſius.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الخامس *

* لا تسارعن بفمك * ولا يعجلن قلبك ان يقرب كلمة امام الله * فان الله في السماء 1
وانت في الارض * ولتكن في هذا اقوالك قليلة * فان المنام يجي بكثرة امتحان * وصوت 2
الغبي يجي بكثرة الاقوال * كما يجب انك اذا نذرت لله نذرا لا تتباطى ان تقضيه * 3
لان ليست مشية الله في الاغبياء * جميع ما تنذره انت فاقضيه * فالاصلح الا تنذر 4
من ان تنذر ولا تقضي * لا تدع فمك ان يخطي الى بشرتك * ولا تقولن ان امام وجه 5
الله عدم معرفة * لئلا يسخط الله على غباوتك وتفسد صنايع يديك * فانها في كثرة 6
المنامات والاباطيل والاقوال الخبيثة * اتق الله * ان رايت في البلد بغي على فقير واختلاس 7
الانصاف والعدل * فلا تتعجبن من الامر * فان العالي يحفظك فوق الامر العالي * والمستعلون 8
على فضلة الارض وما فيها * في كل امر يوجد لهم ملك للصقع المعمول * من يحب الفضة 9
ما يشبع من الفضة * ومن احب غلته في كثرتها ما يشبع * وهذا لعمري باطل * في 10
كثرة الخير يتكاثر الذين ياكلونه * وما السهامة التي فيه * لان للاعين انفسها ابتداء
ان تبصر * نوم العبد حلو ان عرض ان ياكل قليلا او كثيرا والشره في الاستغناء ما يهمله
شرهه ان ينام * قد يكون شرها قد عرفته تحت الشمس * ثروة محفوظة عند صاحبها 12
لشر له * تهلك تلك الثروة في تعب رديء * واولد ابنا وليس في يده شي * كما خرج من
بطن امه عاريا يعاود ان يمضي كما جاء * ولن ياخذ شي من تعبه ليذهب حاملا بيده *

CAP.

NE feſtines ore tuo, & ne præpro- 1
peret cor tuum ad offerendum verbum
coram Deo; quoniam Deus eſt cœlo, tu
verò humi : & ſint ob hoc ſermones tui
pauci. Nam ſomnium provenit ex ni- 2
mia perquiſitione, & vox ſtolidi prove-
nit è multitudine verborum. Quem- 3
admodum oportet ut cùm votum Deo
voveris, minimè cuncteris in eo perſol-
vendo, (non enim oblectatur Deus ſtoli-
dis) ita *quicquid tu voveris, perſolve.*
Nam conſultius eſt te non vovere, quàm 4
vovere, & non perſolvere. Ne conceſſe- 5
ris ori tuo peccare in carnem tuam. Et ne
dicas, In conſpectu Dei eſt ignorantia, ne
ſuccenſeat Deus imprudentiæ tuæ, & 6
marceſcant opera manuum tuarū: Quan-
doquidem iſta ſunt in multitudine ſo-
mniorum, & vanitatum, atque ſermonum
pravorum. Deum time. Siquando vide- 7
ris in regione oppreſſionem pauperis, &
furtum judicii atque juſtitiæ, ne rem mi-
rêris : nam Excelſus te tuebitur ſuper ne-
gotium ſublime. Et verò præpoſiti emo- 8
lumento terræ & his quæ in ea ſunt, in
rebus omnibus, regem habent ſoli quod eſt
elaboratum. Qui amat argentum, non ſa- 9
tiabitur argento : & qui amat ſuum pro-
ventum in abundantia ſua, non ſaturabi-
tur : & hoc ſanè vanum eſt. Dum au- 10
geſcunt bona, augentur qui comedant
illa. Ad quid igitur induſtria quæ
adhibetur *in eis ? nam oculi quidem*
ipſi habent initium videndi. Servi ſomnus 11
eſt jucundus, ſive parùm ſive multùm
edere contingat : avidum autem in ac-
quirendis opibus, aviditas ſua dormire
non ſinit. Eſt interdum aviditas quam 12
deprehendi ſub ſole, Divitiæ penes do-
minū ſuū reconditæ in propriā perniciem.
Peribunt enim *illæ divitiæ peſſima cum* 13
moleſtia, & quem genuit filius nihil ha-
bebit in manu ſua. Sicuti nudus prod- 14
iit ex utero matris ſuæ, iterum abibit
ut venerat, nec quicquam ſumet ex la-
bore ſuo ut diſcedat geſtans illud ma-
nu ſuâ.

קהלת : ו

præſtantiæ quid Et abibit ſic, venit *quo pacto* omni, *doloroſum malum* hoc etiã Et

15 וְגַם־זֹה רָעָה חוֹלָה כָּל־עֻמַּת שֶׁבָּא כֵּן יֵלֵךְ וּמַה־יִּתְרוֹן

:comedet *tenebris in ſuis* diebus cunctis Etiam ?ventũ in laboravit quòd, ei

16 לוֹ שֶׁיַּעֲמֹל לָרוּחַ׃ גַּם כָּל־יָמָיו בַּחֹשֶׁךְ יֹאכֵל

ego vidi quod Ecce .furore &, *ſua* infirmitate &, multa ira &

17 וְכָעַס הַרְבֵּה וְחָלְיוֹ וָקָצֶף׃ הִנֵּה אֲשֶׁר־רָאִיתִי אָנִי

omni *in* bonum videre &, bibere &, comedere, pulchrum quod, bonum

טוֹב אֲשֶׁר־יָפֶה לֶאֱכוֹל וְלִשְׁתּוֹת וְלִרְאוֹת טוֹבָה בְּכָל־

,*ſuarũ vitarum* dierum numero, ſole ſub *laborabit* quo, ſuo labore

עֲמָלוֹ ׀ שֶׁיַּעֲמֹל תַּחַת־הַשֶּׁמֶשׁ מִסְפַּר יְמֵי־חַיָּו

,homo omnis Etiam .ejus pars *iſtud* quia : Deus ei dedit quos

18 אֲשֶׁר־נָתַן־לוֹ הָאֱלֹהִים כִּי־הוּא חֶלְקוֹ׃ גַּם כָּל־הָאָדָם

,ei dedit facultatẽ & *opes & , opulentiam* Deus ei dedit cui

אֲשֶׁר נָתַן־לוֹ הָאֱלֹהִים עֹשֶׁר וּנְכָסִים וְהִשְׁלִיטוֹ

:ſuo labore *in lætandum ad* &, ſuam partem *tollendum ad* &, eo ex *edendum ad*

לֶאֱכֹל מִמֶּנּוּ וְלָשֵׂאת אֶת־חֶלְקוֹ וְלִשְׂמֹחַ בַּעֲמָלוֹ

dierum recordabitur multum non Quia .*iſtud* Dei donum hoc

19 זֹה מַתַּת אֱלֹהִים הִיא׃ כִּי לֹא הַרְבֵּה יִזְכֹּר אֶת־יְמֵי

.ejus cordis *lætitia in reſpondens* Deus quia : ſuæ vitæ

חַיָּיו כִּי הָאֱלֹהִים מַעֲנֶה בְּשִׂמְחַת לִבּוֹ׃

CAP. VI. ו

.*hominem ſuper ipſum multũ* &, ſole ſub vidi quod malum Eſt

1 יֵשׁ רָעָה אֲשֶׁר רָאִיתִי תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ וְרַבָּה הִיא עַל־הָאָדָם׃

ipſe non &, gloriã &, *opes &, opulentiam* Deus ei dedit cui Vir

2 אִישׁ אֲשֶׁר יִתֶּן־לוֹ הָאֱלֹהִים עֹשֶׁר וּנְכָסִים וְכָבוֹד וְאֵינֶנּוּ

ei poteſtatem *dabit* non & *:deſiderabit* quæ omnibus ex ejus animæ *deficiens*

חָסֵר לְנַפְשׁוֹ ׀ מִכֹּל אֲשֶׁר־יִתְאַוֶּה וְלֹא־יַשְׁלִיטֶנּוּ

vanitas hoc *:illud* comedet extraneus vir ſed, eo ex comedendi Deus

הָאֱלֹהִים לֶאֱכֹל מִמֶּנּוּ כִּי אִישׁ נָכְרִי יֹאכְלֶנּוּ זֶה הֶבֶל

multos annos &, centum vir genuerit Si .*ipſum* mala infirmitas &

3 וָחֳלִי רַע הוּא׃ אִם־יוֹלִיד אִישׁ מֵאָה וְשָׁנִים רַבּוֹת

ſaturata fuerit non ej⁹ anima &, ej⁹ annorũ dies fuerit *quod multũ* &, vixerit

יִחְיֶה וְרַב ׀ שֶׁיִּהְיוּ יְמֵי־שָׁנָיו וְנַפְשׁוֹ לֹא־תִשְׂבַּע

illo *præ bonum* dixi :ei fuerit non ſepultura etiam &, bono *de*

מִן־הַטּוֹבָה וְגַם־קְבוּרָה לֹא־הָיְתָה לּוֹ אָמַרְתִּי טוֹב מִמֶּנּוּ

tenebroſitate in & :ibit *tenebroſitatem in* &, venit vanum in Quia .*abortivum*

4 הַנָּפֶל׃ כִּי־בַהֶבֶל בָּא וּבַחֹשֶׁךְ יֵלֵךְ וּבַחֹשֶׁךְ

requies, cognoverit non &, viderit non ſolem Etiam .operietur ejus nomen

5 שְׁמוֹ יְכֻסֶּה׃ גַּם־שֶׁמֶשׁ לֹא־רָאָה וְלֹא יָדָע נַחַת

bonum &, vicibus duab⁹ annos mille vixerit ſi Et .illi quàm huic

6 לָזֶה מִזֶּה׃ וְאִלּוּ חָיָה אֶלֶף שָׁנִים פַּעֲמַיִם וְטוֹבָה

labor Omnis *:vadens* omnis unum locum ad nonne : viderit non

7 לֹא רָאָה הֲלֹא אֶל־מָקוֹם אֶחָד הַכֹּל הוֹלֵךְ׃ כָּל־עֲמַל

præſtantius quid Quia .implebitur non anima etiam & : ejus os ob hominis

8 הָאָדָם לְפִיהוּ וְגַם־הַנֶּפֶשׁ לֹא תִמָּלֵא׃ כִּי מַה־יּוֹתֵר

? *vitis coram* pergere ſcienti *afflicto* Quid ? ſtulto quàm ſapienti

לֶחָכָם מִן־הַכְּסִיל מַה־לֶּעָנִי יוֹדֵעַ לַהֲלֹךְ נֶגֶד הַחַיִּים׃

Verſio VUL. LAT.

15 Miſerabilis prorſùs infirmitas: quo modo venit, ſic revertetur. Quid ergò prodeſt ei quòd laboravit in ventũ? 16 Cunctis dieb⁹ vitæ ſuæ comedit in tenebris & in curis multis, & in ærumna atq; triſtitia. 17 Hoc itaq; viſum eſt mihi bonũ, ut comedat quis, & bibat, & fruatur lætitiâ ex labore ſuo, quo laboravit ipſe ſub Sole, numero dierũ vitæ ſuæ, quos dedit ei Deus: & 18 hæc eſt pars illi⁹. Et omni homini, cui dedit De⁹ divitias, atque ſubſtantiam, poteſtatémq; ei tribuit ut comedat ex eis, & fruatur parte ſuâ, & lætetur de labore ſuo: hoc eſt donũ Dei. 19 Non enim ſatis recordabitur dierũ vitæ ſuæ, eò quòd Deus occupet deliciis cor ejus.

CAP. VI.

1 Eſt & aliud malũ, quod vidi ſub Sole, & quidẽ frequens apud homines: 2 Vir, cui dedit De⁹ divitias, & ſubſtantiã, & honorẽ, & nihil deeſt animæ ſuæ, ex omnib⁹ quæ deſiderat: nec tribuit ei poteſtatẽ De⁹ ut comedat ex eo, ſed homo extraneus vorabit illud: hoc va- 3 nitas, & miſeria magna eſt. Si genuerit quiſpiã centũ liberos, & vixerit multos annos, & plures dies ætatis habuerit, & anima illius non utatur bonis ſubſtantiæ ſuæ, ſepulturâque careat: de hoc ego pronuntio, quòd melior illo ſit abortivus. 4 Fruſtrà enim venit, & pergit ad tenebras, & oblivione de- 5 lebitur nomen ejus. Non vidit Solẽ, neque cognovit diſtantiã 6 boni & mali: Etiam ſi duobus millibus annis vixerit, & non fuerit perfruitus bonis: nónne ad unũ locũ properant omnia? 7 Omnis labor hominis in ore ej⁹: ſed anima ej⁹ non implebi- 8 tur. Quid habet amplius ſapiens à ſtulto? & quid pauper, niſi ut pergat illuc, ubi eſt vita?

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 † Καί γε τοῦτο πονηρὰ ἀῤῥωστία· † ὥσπερ γὰρ παρεγένετο, οὕτως ϗ ἀπελεύσεται. † ϗ τίς ἡ περισσεία αὐτοῦ ἣ μοχθεῖ εἰς ἄνεμον; 16 † Καί γε πᾶσαι αἱ ἡμέραι αὐτοῦ ἐν σκότει, ϗ ἐν πένθει, † ϗ θυμῷ πολλῷ, ϗ ἀῤῥωστίᾳ, ϗ χόλῳ. 17 † Ἰδοὺ εἶδον ἐγὼ (ξ) ἀγαθὸν, ὅ ἐστι καλὸν, † τοῦ φαγεῖν ϗ τοῦ πιεῖν † ϗ τοῦ ἰδεῖν ἀγαθωσύνην † ἐν παντὶ μόχθῳ αὐτοῦ, ᾧ ἐὰν (ο) μοχθῇ ὑπὸ τὸν ἥλιον † ἀριθμὸν ἡμερῶν ζωῆς αὐτοῦ † ὧν ἔδωκεν αὐτῷ ὁ θεὸς, ὅτι αὐτὸ με- 18 ρὶς αὐτοῦ. † Καί γε πᾶς ἄνθρωπος ᾧ ἔδωκεν αὐτῷ ὁ θεὸς † πλοῦτον ϗ ὑπάρχοντα, ϗ ἐξουσίασεν (π) αὐτῷ φαγεῖν ἀπ᾽ αὐτοῦ, ϗ λαβεῖν τὸ μέρος αὐτοῦ, † ϗ τοῦ εὐφρανθῆναι ἐν μόχθῳ 19 αὐτοῦ, † τοῦτο δόμα θεοῦ ἐστιν. Ὅτι οὐ (ρ) πολλὰ μνησθήσεται τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς αὐτοῦ, † ὅτι ὁ θεὸς περισπᾷ αὐτὸν ἐν εὐφροσύνῃ καρδίας αὐτοῦ.

ΚΕΦ. ϛ΄.

1 † Ἔστι πονηρία ἣν εἶδον ὑπὸ τὸν ἥλιον, † ϗ 2 πολλή ἐστι (⁺) ὑπὸ τὸν ἄνθρωπον. † Ἀνὴρ ᾧ δώσει αὐτῷ ὁ θεὸς πλοῦτον ϗ ὑπάρχοντα ϗ δόξαν, † ϗ οὐκ ἔστιν ὑστερῶν τῇ ψυχῇ αὐτοῦ (α) ἀπὸ πάντων ὧν ἐπιθυμήσει, † ϗ οὐκ ἐξουσιάσει αὐτῷ ὁ θεὸς (β) τοῦ φαγεῖν ἀπ᾽ αὐτοῦ, ὅτι ἀνὴρ ξένος φάγεται (γ) αὐτόν. † τοῦτο 3 ματαιότης ϗ ἀῤῥωστία πονηρά ἐστι. † Ἐὰν γεννήσῃ ἀνὴρ ἑκατὸν, ϗ ἔτη πολλὰ ζήσεται, † ϗ πλῆθος ὅ, τι ἔσονται αἱ ἡμέραι ἐτῶν αὐτοῦ, † (δ) ϗ ψυχὴ αὐτοῦ οὐ πλησθήσεται ἀπὸ τῆς ἀγαθωσύνης, † καί γε ταφὴ οὐκ ἐγένετο αὐτῷ, † εἶπα, Ἀγαθὸν ὑπὲρ αὐτὸν τὸ 4 ἔκτρωμα. † Ὅτι ἐν ματαιότητι ἦλθε, ϗ ἐν σκότει πορεύεται, † ϗ ἐν σκότει ὄνομα αὐτοῦ 5 καλυφθήσεται. † Καί γε ἥλιον οὐκ εἶδεν, ϗ οὐκ ἔγνω † ἀναπαύσεις, τούτῳ ὑπὲρ τοῦτον. 6 † Καὶ (⁺⁺) ἔζησεν χιλίων ἐτῶν καθόδους, † ϗ ἀγαθωσύνην οὐκ εἶδεν, † μὴ οὐκ εἰς τόπον ἕνα 7 (ε) πορεύεται τὰ πάντα; † Πᾶς μόχθος (ζ) ἀνθρώπου εἰς στόμα αὐτοῦ, † (η) καί γε ἡ ψυχὴ 8 οὐ πληρωθήσεται. † (·) Ὅτι περισσεία τῷ σοφῷ ὑπὲρ τὸν ἄφρονα, † διότι ὁ πένης οἶδε πορευθῆναι κατέναντι τῆς ζωῆς.

Κεφ. ε΄. MS. A. (ξ) ἀγαθόν ἐστιν καλὸν τοῦ φαγεῖν (ο) μοχθήσῃ (π) φαγεῖν (ρ) πολλὰς Κεφ. ϛ΄. MS. A. (⁺) ἐπὶ τὸν (α) ἀπὸ παντὸς θυμεῖ, (β) φαγεῖν (γ) αὐτά· καί γε τοῦτο (δ) ϗ ἡ ψυχὴ αὐτοῦ οὐκ σεται ἀπὸ ἀγαθωσύνης, (⁺⁺) εἰ ἔζησεν (ε) τὰ πάντα πορεύεται; (ζ) θρώπου (η) καί γε ψυχὴ (·) Ὅτι τίς περισσεία

Sed & hoc languor peſſimus: ut enim advenit, ita & ab (cc) quæ abundantia ejus, qui borat in ventum? Et quidem omnes dies ejus in tenebris, & luctu, & iracundia multa, & guore, et inſania. (ee) Ecce di bonũ, quod eſt pulchrũ, come re, & bibere, et cernere bonitat omni labore ſuo, quocunq; verit ſub Sole, (ff) numero dierum vitæ ſuæ, quos dedit ei Deus quippe eſt pars ejus. (gg) Et omnis homo, cui dedit ei De⁹ divitias, et ſubſtantiã, conceſſitq; vesceretur ex eis, (hh) & tolle partẽ ſuam, & lætaretur in labore ſuo; hoc Dei donum eſt. Non tam multùm recordabitur dierum ſuæ, quia Deus (ii) occupat eum lætitia cordis ejus.

CAP. VI.

Est malum quod vidi ſub & multum eſt (a) ſub homine cui dabit ei Deus divitias & ſtantiam, & gloriam & deficiens animã ſuã ex omnibus deſiderabit: et non (c) dabit ei poteſtatẽ, ut mãducaret ex eo vir alienus comedet illud. Hæc vanitas eſt, et languor peſſimus. Si genuerit vir (d) centum, et annos tis vixerit, & (e) multitudo cunque fuerint dies annorũ anima ejus non (f) repleatur ex bonitate, nec ſepul dixi, Bonũ ſuper eum abortivum vanitate quippe venit, & in tenebris vadit, et in tenebris nomen abſcondetur. Et quidẽ Solem vidit, (h) nec cognovit requiem huic ſuper hunc. Et (i) ſi annorum reditus, et bonitatem vidit; nonne ad locũ unũ vadunt omnia? Omnis labor hominis ipſius: & quidẽ anima non implebitur. (k) Quoniam abundantia ſapienti ſuper inſipientem, quòd pauper novit ire ad vitæ.

תרגום TARGUM.

15 ואף דא בישתא מרעיתא ולית לה אסו דכל קבל דאתא לעלמא הדין חסיר מן זכותא כדין

16 ייזל לעלמא ההוא ומה מותר הוה ליה די טרח לקבלת רוחיה : אף כל יומוהי בחשוכא

17 שרא בדיל דלחמיה בלחודוהי טעם ובנכסים סגי חזי ובמרעין ורגיז הוו חיוהי : והא די

חזית אנא טבא הוא לבני אנשא ודשפיר להון למעבד בעלמא הדין דייכלון וישתון מן

טורחותהון בדיל דלא לאושטא ידא באניסא וחטוף ולמטר פתגמי אוריתא ולמחן עניי

נכסא מן בגלל דיחזון טבתא בכל טורחותהון די טרחו בעלמא הדין תחות שמשא מנין

18 יומי חיוהי דגבר די יהב ליה יי במוליה ארום הוא חולקיה ולית אחורן בר מניה : אוף

כל אנש דיהב ליה יי עותר ונכסין ואשלטיה יי למיכל מניה בעלמא הדין ולמעבד מניה

צדקתא ולקבלא אגר שלים לעלמא דאתי ולמחדי בטורחיה עם צדיקיא הא דא מתנא

19 דאתיהיבת ליה במוליה מן קדם יי הוא : ארום לא יומין סגיאין חיי אנש די ידכר ית יומי

חיוהי כמה מנהון עתידין למהוי טבין וכמה מנהון עתידין למהוי בישן מטול דלא אתמסר

לבני אנשא ארום מן קדם יי אתגזר עלוהי כמה יומין אסתגיף וכמה יומין יהי בחדוות

לביה :

ו

1 אית בישתא דחזית בעלמא הדין תחות שמשא ורבתא היא על בני אנשא : גבר דיהב

2 ליה יי במוליה עותר ויקר ונכסין וליתוהי מחסר לנפשיה מכל די יתרעי ולא אשלטיה

יי על חובתיה למטעם מניה אלהן ימות בלא ולד ולא חס קריביה לאחסנותיה להא ארום

אנתתיה תהא מתנסבא לגבר חילוני ויחסנניה וייכלנה כל דין גרמו ליה חובוהי דלא

3 עבד מניה מדעם טב ואתהפך עתריה למהוי ליה להבלו ולמרעא בישא : אין יוליד גבר

מאה בנין ושנין סגיאין יחי ובשלטנותא ורבנותא הוא די יהון יומי שנוהי ונפשיה לא

שבעת מן טבתא דהוות ליה על די רחים על עתריה ולא קנא מניה שמא טבא אף בית

קבורתא לא הות מזמנא ליה אמרית אנא במימרי דטב מניה שלילא דלא חזא עלמא

4 הדין : ארום בהבלו אתא בעלמא הדין ובחשוכא שמיה מתחפי מן בגלל דלית ליה

5 זכותא ושום טב לא קנא למהוי מדכר : ואף נהור אוריתא לא חמא ולא ידע בין טב לביש

6 למבחן בין עלמא הדין לעלמא דאתי : ואלולי הוו יומי חיוהי דגברא תרין אלפין שנין

ובאוריתא לא עסיק ודינא וצדקתא לא עבד בשבועת מימרא דיי דביום מותיה נחתא

7 נפשיה לגהנם לאתר חד דכל חיבא אזלין תמן : כל טורח דגברא בדיל מזון פומיה הוא

8 טרח ועל מימר פומא דיי מיתין ואף נפשא דאנש לא תשבע מכלא ומשתיא : ארום

מה מותרא אית לחכימא בעלמא הדין יתיר מן שטיא בגין דרא בישא דלא מתקבל

עלויהון ומה אית ליה ההוא גברא עניא למעבד אלהן למעסק באוריתא דיי בגין די

ינדע היכדין למהך עתיד למהך לכל קבל צדיקיא בגנתא דעדן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et etiam hic malus morbus cui nec ſanitas eſt: quia omnino quemadmodum venit in ſeculũ hoc *indigens merito*, ſic ibit ad ſeculũ *illud*: & reliqui eſt ei quòd laboraverit ut *caliget ſpiritus ejus?* Etiam omnes ſuos in tenebris habitat ut panẽ ſuum ſol⁹ deguſtet: & in furore *videt*, & in ægrotationib⁹ & indignatione fuit vita ej⁹. Et ecce quod vidi ego bonũ eſſe filiis hominum & pulchrum illis ut faciant in ſeculo ut comedant & bibant ex labore ſuo, ita ut non extendant manum in lentiam & rapinam, ſed cuſtodiant verba Legis, & ut miſereantur pau proptereà videant bonum in omni labore ſuo quo laboraverint in hoc ſub Sole numero dierũ vitæ hominis quẽ dederit ei Domin⁹ in *dentia ſua*: etenim hæc pars ej⁹ eſt, *nec aliud ab hoc*. Etiã omnis homo dederit Domin⁹ divitias & facultates, & præpoſuerit eum Dñs, ut com ex eis in ſeculo hoc, & ut faciat ex eis eleemoſynã, & ut accipiat perfectam in ſeculũ venturũ; & ut lætetur in labore ſuo cum juſtis: hoc donũ quod datũ eſt illi *in ſortem ſuam*, à Dño eſt. Etenim non multi vitæ hominis ſunt ut recordetur dierũ vitæ ſuæ quotnam ex eis ſint boni, & quotnam ex eis futuri ſint mali, proptereà quòd non eſt tũ filio hominis: quia à Dño decretũ eſt ſuper eum quot dieb⁹ aff & quot diebus vivet in gaudio cordis ſui.

CAP. VI.

Est malum quod vidi ſub Sole in ſeculo hoc, & magnum illud eſt filios hominis. Vir cui dedit Dñs *in ſortem ſuam* divitias & facultatum, & nihil deficit animæ ej⁹ ex omnib⁹ quæ voluit: ſed non poteſtatem ei Dominus ob peccatũ ſuum ut guſtaret ex eis: ſed abſque liberis, & non miſertus eſt proximi ſui ut hæredem eum ſtitueret: etenim uxor ej⁹ tradetur viro alieno, qui hæreditabit comedet ipſas: omnis hujus rei cauſa peccata ſua illi fuerunt, quod fecerit ex illis quicquam boni, & converſæ ſunt divitiæ ej⁹ ut eſſent vanitatem & in ægritudinem malam. Si genuerit vir centũ filios, & multos vixerit, & in imperio & magiſtratu totidem fuerint dies ej⁹, & anima ej⁹ non ſatiata fuerit bono quod erat ei, eò quòd divitiis ſuis, & non acquiſivit ex illis nomen bonũ, etiámq; dom⁹ non fuerit præparata illi, dixi *ego in verbo meo* quòd melior eſt v⁹ qui non vidit ſeculũ hoc. Etenim in vanitate venit in ſeculũ hoc obſcuritate nomen ej⁹ obvolvetur; *eò quòd non ſit ei meritũ, bonum acquiſierit, ut eſſet in memoria*. Etiam lucem Legis non non cognovit inter bonũ & malum, & ad dijudicandũ inter & ſeculũ alterũ. Et tametſi fuerint dies vitæ viri duo millia in Lege non ſtuduerit, & judiciũ & juſtitiam non fecerit, in dicti Dñi quod [*fuerit*] in die mortis ej⁹, anima ej⁹ deſcendet nam ad locũ unũ quò omnes peccatores eunt. Omnẽ laborem cibũ oris ſui ipſe laborat, & in dicto oris Dñi *moriuntur*, & hominis non ſatiabitur cibo & potu. Etenim quid ampli⁹ eſt culo hoc quàm *ſtulto, propter generationem malã, quod non eos?* & quid eſt ipſi *viro* pauperi, niſi ut ſtudeat in *Lege* Dñi, quomodo *eundo* futurũ ſit ut eat omninò corã juſtis in paradiſo

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܦ ܗܕܐ ܟܘܪܗܢܐ ܒܝܫܐ. ܐܝܟ ܕܐܬܐ ܗܟܢܐ ܐܙܠ. ܘܡܢܘ ܝܘܬܪܢܗ 15
ܕܥܡܠ ܕܥܡܠ ܠܪܘܚܐ. * ܘܐܦ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܘܗܝ ܒܚܫܘܟܐ ܐܟܠ. ܘܒܪܘܓܙܐ ܣܓܝܐܐ 16
ܘܒܟܪܝܘܬܐ ܘܒܟܘܪܗܢܐ. ܘܒܚܡܬܐ. * ܗܢܐ ܚܙܝܬ ܐܢܐ ܩܘܗܠܬ. ܛܒ ܗܘ 17
ܘܫܦܝܪ ܠܡܐܟܠ ܘܠܡܫܬܐ. ܘܠܡܚܙܐ ܛܒܬܐ. ܒܟܠܗ ܥܡܠܗ ܕܥܡܠ ܐܢܫ
ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ : ܡܢܝܢ ܝܘܡܬܐ ܕܚܝܘܗܝ ܕܝܗܒ ܠܗ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܗܘ ܡܢܬܗ.
* ܘܐܦ ܟܠܢܫ ܕܝܗܒ ܠܗ ܡܪܝܐ ܥܘܬܪܐ ܘܢܟܣܐ . ܘܐܫܠܛܗ ܠܡܐܟܠ ܡܢܗܘܢ 18
ܘܠܡܣܒ ܡܢܬܗ : ܘܠܡܚܕܐ ܒܥܡܠܗ . ܗܕܐ ܡܘܗܒܬܐ ܗܝ ܕܐܠܗܐ.
* ܡܛܠ ܕܠܘ ܣܓܝ ܢܥܗܕ ܝܘܡܬܐ ܕܚܝܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܡܥܢܐ ܠܗ. ܒܚܕܘܬܐ 19
ܕܠܒܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

* ܐܝܬ ܒܝܫܬܐ ܕܚܙܝܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ . ܘܣܓܝܐܐ ܗܝ ܥܠ ܒܢܝܢܫܐ. * ܓܒܪܐ 1
ܕܝܗܒ ܠܗ ܐܠܗܐ ܥܘܬܪܐ ܘܢܟܣܐ ܘܝܩܪܐ . ܘܠܐ ܚܣܝܪ ܠܢܦܫܗ ܡܕܡ ܡܢ ܟܠ ܡܐ 2
ܕܪܓܝ . ܘܠܐ ܡܫܠܛ ܠܗ ܐܠܗܐ ܠܡܐܟܠ ܡܢܗ . ܐܠܐ ܓܒܪܐ ܢܘܟܪܝܐ ܢܐܟܠܝܘܗܝ ܡܢ
ܒܬܪܗ . ܗܢܐ ܐܦ ܗܘ ܣܪܝܩܘܬܐ ܗܝ. * ܐܢ ܢܘܠܕ ܓܒܪܐ ܡܐܐ . ܘܫܢܝܢ ܣܓܝܐܢ 3
ܢܚܐ . ܘܢܣܓܘܢ ܝܘܡܬܐ ܕܫܢܘܗܝ . ܘܢܦܫܗ ܠܐ ܬܣܒܥ ܡܢ ܛܒܬܐ . ܘܐܦ ܩܒܘܪܬܐ
ܠܐ ܗܘܬ ܠܗ . ܐܡܪܬ ܕܛܒ ܗܘ ܡܢܗ ܝܚܛܐ. * ܡܛܠ ܕܒܣܪܝܩܘܬܐ ܐܬܐ . ܘܒܚܫܘܟܐ ܐܙܠ 4
ܘܒܚܫܘܟܐ ܫܡܗ ܢܬܟܣܐ. * ܐܦ ܫܡܫܐ ܠܐ ܚܙܐ ܘܠܐ ܝܕܥ. ܢܝܚ ܠܗܢܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܕܗܢܐ. 5
* ܘܐܠܘ ܚܝܐ ܐܠܦ ܫܢܝܢ ܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ . ܘܛܒܬܐ ܠܐ ܚܙܐ : ܕܠܐ ܗܘܐ ܠܐܬܪܐ ܚܕ 6
ܐܙܠ ܟܠ. * ܟܠ ܕܥܡܠ ܐܢܫ ܠܦܘܡܗ. ܘܢܦܫܗ ܠܐ ܡܬܡܠܝܐ. * ܡܛܠ ܕܡܢܐ ܝܘܬܪܢܐ 7 8
ܠܚܟܝܡܐ ܡܢ ܣܟܠܐ. ܠܡܢܐ . ܕܡܣܟܢܐ ܝܕܥ ܠܡܪܕܝܬܐ ܕܚܝܐ.

Atque hic etiam morbus peſſimus eſt : nam uti venerat, ſic abiit : & quod operæpretium eſt in omnibus quæ vento laboravit? 15
Quin etiam cunctis diebus ſuis in tenebris comedit, & in ira magna, & in furore, ac moleſtiâ, & ægritudine. 16
Hæc eſt res quam vidi ego Coheleth, Bonum eſt atque decorum edere ac bibere, & bono frui in omni ſuo labore quo *quis* ſub ſole deſudat, numero dierum vitæ ſuæ, quos concedit illi Dominus : quoniam hæc eſt portio ipſius. 17
Etiam, cuicunque dederit Dominus divitias atque facultates, & copiam fecerit ei comedendi ex ipſis, & percipendi partem ſuam, & fruendi labore ſuo : hoc quoque donum Dei eſt. 18
Non enim admodum recordabitur dierum vitæ ſuæ : quia Deus occupat illum in lætitia cordis ejus. 19

CAP. VI.

Eſt miſeria quam vidi ſub ſole, & frequens eſt apud homines. 1
Vir cui largitur Deus divitias & facultates atque honorem, nec deeſt animæ ſuæ quicquam ex omnibus quæ expetit, nec tamen tribuit ei poteſtatem Deus comedendi ex iis, ſed homo extraneus vorabit eas poſt ipſum : hoc vanitas eſt, ac morbus. 2
Si progenuerit quis centum *liberos*, & plurimos vixerit annos, & multiplicentur dies annorum ejus, animus autem ejus non ſaturetur bonis, adeoque ſepulchrum non habeat : dico abortivum potioris eſſe conditionis quàm iſte. 3
Is enim in vanum prodiit, & in tenebras abibit, tenebriſq; nomen ejus occultabitur ; 4
Imò nec ſolem aſpexit, nec agnovit. Tolerabilius eſt iſti quam illi, 5
Etiamſi vixerit annis bis mille, bonis autem non ſit fruitus. Nonne *enim* unum in locum tendũt omnia? 6
Quicquid laborioſè contendit homo, propter os ejus eſt : anima tamen ipſius haud expletur. 7
Quia plus utilitatis eſt ſapienti quàm ſtulto. Quare? quoniam pauper ſcit vitam ſectari. 8

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وذلك ان هذا سقما رديا * لانه كما جاء كذلك ينصرف * وما فضلة الذي يتعب فيه للرياح 15
* ومع ذلك جميع ايامه للظلام والنوح والغضب الكثير والسقم والمر * فهذا الشي 16 17
الذي عرفته انا صالحا للذي هو جيدا * ان ياكل ويشرب ويبصر الصلاح في جميع
تعبه الذي يتعب فيه تحت الشمس * ويراعي عدد ايام حياته التي منحه الله اياها. لان
ذاك حظه * ولعمري ان كل انسان اعطاه الله ثروة ومالا * وسلطه عليها لياكل منها 18
وياخذ حظه ويسر بتعبه * هذا عطية الله هو * لان ايام حياته لم يذكر كثيرا * لان 19
الله يجتذبه في سرور قلبه *

* الفصل السادس *

* يكون شر قد عرفته تحت الشمس * وهو كثير تحت السماء * انسان يعطيه الله ثروة 1 2
وقنية وشرفا * وليس لنفسه اعواز من كل ما يشتهي * وما يسلطه الله ان ياكل منه
لكن انسان غريب ياكله * ولعمري ان هذا باطل وسقم خبيث هو * ان ولد الانسان 3
ماية * وعاش سنين كثيرة * وكانت ايام حياته كثيرة * وما تشبع نفسه من الخير
ومع ذلك ما صار له من ذاك قبر * قلت انا ان السقط صالح افضل منه * لانه جاء 4
بالباطل وسيمضي الى الظلمة * وسيغطي اسمه بالظلمة * مع انه ما راى شمسا ولا يعرفها. 5
فلهذا راحة اكثر من هذا * وان عاش جمل الوف سنين وما عرف خيرا * وليس الى 6
موضع واحد يذهب الكل * كل تعب الانسان لفمه * ونفسه ما تمتلي * لان الحكيم له 7
فضل اكثر من الغبي * لان الفقير قد عرف السلوك امام الحياة * 8

Nimirum morbus eſt hic peſſimus ; quia prout venerat, ſic abibit : & quid proderit id in quo laborat ventis? 15
Et adhæc omnes dies ejus conſumpti ſunt tenebris, & luctu, & indignatione multâ, morbo, atque amaritudine. 16
En igitur quod cognovi bonum eſſe ei qui probus eſt, Edere ac bibere, & videre bonum in omni ſuo labore quo fatigatur ſub ſole, & arridere numero dierum ætatis ſuæ, quos dedit ei Deus : quandoquidem hæc eſt pars ipſius. 17
Et quidem quoties concedit Deus homini divitias & opes, & dat illi poteſtatem comedendi ex ipſis, & ſumendi partem ſuam, ac fruendi labore ſuo : hoc Divini muneris eſt. 18
Non enim frequenter recordatur dierum vitæ ſuæ, quia Deus trahit illum in hilaritate cordis ipſius. 19

CAP. VI.

Eſt malum quod cognovi ſub ſole, & illud quidem frequens ſub cœlo. 1
Eſt homo cui Deus tribuit divitias, poſſeſſionem, atque honorem, nec eſt ejus animæ penuria ullius rei quam exoptat : & tamen non præbet ei Deus facultatem edendi ex illis, ſed homo alienus comedet eas : & reverà hoc vanum eſt, & morbus pernicioſus. 2
Si gignat quis centum, & annos vivat permultos, ſintque dies ætatis ejus plurimi, non tamen ſatietur ejus anima bonis, & adhæc non fiat ei ex illis ſepulchrum; ego pronuntio abortivum ipſo meliorem ac præſtantiorem eſſe. 3
Nam is venit in vanum, & in tenebras abibit, tenebriſque tegetur nomen ejus : 4
Præterquam quòd nec ſolem vidit, nec agnovit eum. Itaque major eſt illi quies quàm iſti. 5
Et quamvis pluribus annorum millibus vixerit, bonum autem non cognoverit, nonne ad eundem locum omnia ſe recipiunt? 6
Totus labor hominis pro ipſius eſt ore, animus tamen ejus non impletur. 7
Etenim ſapiens inſulſo præſtantior eſt, quia pauper novit obviàm ire vitæ. 8

.ſpiritus *paſtio* &,vanitas hoc etiam *animã ire præ* oculorũ viſio *Bona*
9 טוֹב מַרְאֵה עֵינַיִם מֵהֲלָךְ־נָפֶשׁ גַּם־זֶה הֶבֶל וּרְעוּת רוּחַ׃
: homo *ipſe* quod *notum* & ,ej⁹ nomen eſt vocatũ jam fuerit Quicquid
10 מַה־שֶּׁהָיָה כְּבָר נִקְרָא שְׁמוֹ וְנוֹדָע אֲשֶׁר־הוּא אָדָם
verborum eſt Quia .ſe *præ fortis* qui *eo* cum judicare *poterit non* &
11 וְלֹא־יוּכַל לָדִין עִם שֶׁהתַּקִּיף מִמֶּנּוּ׃ כִּי יֵשׁ־דְּבָרִים
? homini *præſtantius* quid : vanitatem *multiplicantium multum*
הַרְבֵּה מַרְבִּים הָבֶל מַה־יֹּתֵר לָאָדָם׃

CAP. VII. ז

vitarum dierum numero *vitis* in homini bonum quid *ſciens* quis Quia
1 כִּי מִי־יוֹדֵעַ מַה־טּוֹב לָאָדָם בַּחַיִּים מִסְפַּר יְמֵי־חַיֵּי
quid ,homini indicabit quis quia ?umbrã tanquã *eos perfecit &*,ſuæ vanitatis
הֶבְלוֹ וְיַעֲשֵׂם כַּצֵּל אֲשֶׁר מִי־יַגִּיד לָאָדָם מַה־
dies & :bonũ *oleũ* quàm nomen Melius ? ſole ſub eum poſt erit
2 יִּהְיֶה אַחֲרָיו תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ׃ טוֹב שֵׁם מִשֶּׁמֶן טוֹב וְיוֹם
ire quàm ,luctus domum ad ire *Bonum* .*ejus naſci* dies quàm ,mortis
3 הַמָּוֶת מִיּוֹם הִוָּלְדוֹ׃ טוֹב לָלֶכֶת אֶל־בֵּית־אֵבֶל מִלֶּכֶת
dabit vivens & :hominis omnis finis *ipſum* quod eo *in* :convivii domũ ad
אֶל־בֵּית מִשְׁתֶּה בַּאֲשֶׁר הוּא סוֹף כָּל־הָאָדָם וְהַחַי יִתֵּן
erit jucundũ *facierum triſtitia in* quia , riſu *præ* ira *Bona* .ſuũ cor *ad*
4 אֶל־לִבּוֹ׃ טוֹב כַּעַס מִשְּׂחֹק כִּי־בְרֹעַ פָּנִים יִיטַב
.lætitiæ domo in ſtultorum cor & : luctus domo in ſapientũ Cor .cor
5 לֵב׃ לֵב חֲכָמִים בְּבֵית אֵבֶל וְלֵב כְּסִילִים בְּבֵית שִׂמְחָה׃
.ſtultorum canticũ *audiens vir* quàm :ſapientis increpationẽ audire Melius
6 טוֹב לִשְׁמֹעַ גַּעֲרַת חָכָם מֵאִישׁ שֹׁמֵעַ שִׁיר כְּסִילִים׃
hoc etiam : ſtulti riſus ſic , olla ſub ſpinarum *vox* ſicut Quia
7 כִּי כְקוֹל הַסִּירִים תַּחַת הַסִּיר כֵּן שְׂחֹק הַכְּסִיל גַּם־זֶה
.donum cor perdet &:ſapientẽ faciet inſanire oppreſſio Quia.vanitas
8 הָבֶל׃ כִּי הָעֹשֶׁק יְהוֹלֵל חָכָם וִיאַבֵּד אֶת־לֵב מַתָּנָה׃
elat⁹ quàm,ſpiritu *longus* melior:ej⁹ principiũ quàm,*verbi noviſſimum Melius*
9 טוֹב אַחֲרִית דָּבָר מֵרֵאשִׁיתוֹ טוֹב אֶרֶךְ־רוּחַ מִגְּבַהּ־
ſtultorum ſinu in ira quia:iraſcẽdũ ad tuo ſpiritu in feſtines Ne .ſpiritu
10 רוּחַ׃ אַל־תְּבַהֵל בְּרוּחֲךָ לִכְעוֹס כִּי כַעַס בְּחֵיק כְּסִילִים
boni fuerunt priores dies quòd , fuit quid ,dicas Ne.requieſcet
11 יָנוּחַ׃ אַל־תֹּאמַר מֶה הָיָה שֶׁהַיָּמִים הָרִאשֹׁנִים הָיוּ טוֹבִים
cum ſapientia Bona .hoc ſup interrogãſti ſapiẽtia ex non quia:iſtis *præ*
12 מֵאֵלֶּה כִּי לֹא מֵחָכְמָה שָׁאַלְתָּ עַל־זֶה׃ טוֹבָה חָכְמָה עִם־
umbra in ,ſapientiæ umbra in Quia .ſolem videntib⁹ magis &:hæreditate
13 נַחֲלָה וְיֹתֵר לְרֹאֵי הַשָּׁמֶשׁ׃ כִּי בְּצֵל הַחָכְמָה בְּצֵל
Vide .*ſuos patronos* vivificabit *ſapientiæ ſcientiæ præſtantia &*:argenti
14 הַכָּסֶף וְיִתְרוֹן דַּעַת הַחָכְמָה תְּחַיֶּה בְעָלֶיהָ׃ רְאֵה אֶת־
?ipſe *depravaverit* quem dirigere *poterit* quis quia : Dei opus
מַעֲשֵׂה הָאֱלֹהִים כִּי מִי יוּכַל לְתַקֵּן אֵת אֲשֶׁר עִוְּתוֹ׃

Verſio VUL. LAT.

9 Melius eſt videre quod cupias, quàm deſiderare quod neſcias: ſed & hoc vanitas eſt, & præſumptio ſpiritûs. 10 Qui futurus eſt, jam vocatum eſt nomen ejus: & ſcitur quòd homo ſit, & non poſſit contra fortiorem 11 ſe in judicio contendere. Verba ſunt plurima, multámq; in diſputando habentia vanitaté.

CAP. VII.

1 Quid neceſſe eſt homini majora ſe quærere, cũ ignoret quid conducat ſibi in vita ſua, numero dierũ peregrinationis ſuæ, & tempore quo velut umbra præterit? Aut quis ei poterit indicare quid poſt eum futu-2 rum ſub Sole ſit? Meli⁹ eſt nomen bonũ, quã unguenta pretioſa, et dies mortis die nativi-3 tatis. Meli⁹ eſt ire ad domũ luctûs, quã ad domũ cõvivii: in illa enim finis cunctorũ admonetur hominũ, & vivens cogitat 4 quid futurũ ſit. Melior eſt ira riſu: quia per triſtitiã vultûs, cor-5 rigitur anim⁹ delinquentis. Cor ſapientiũ ubi triſtitia eſt, et cor 6 ſtultorũ ubi lætitia. Meli⁹ eſt à ſapiente corripi, quã ſtultorũ 7 adulatione decipi. Quia ſicut ſonit⁹ ſpinarũ ardentium ſub olla, ſic riſus ſtulti: ſed & hoc 8 vanitas. Calumnia conturbat ſapienté, & perdet robur cor-9 dis illi⁹. Melior eſt finis orationis, quã principiũ. Melior eſt 10 patiens arrogante. Ne ſis velox ad iraſcendũ: quia ira in ſinu 11 ſtulti requieſcit. Ne dicas; Quid putas cauſæ eſt, quòd priora tempora meliora fuêre quàm nunc ſunt? ſtulta enim eſt hu-11 juſcemodi interrogatio. Utilior eſt ſapientia cum divitiis, & magis prodeſt videntib⁹ Solé. 13 Sicut enim protegit ſapientia, ſic protegit pecunia: hoc auté 14 plus habet eruditio & ſapientia, quòd vitam tribuunt poſſeſſori ſuo. Conſidera opera Dei, quòd nemo poſſit corrigere quem ille deſpexerit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

9 † Ἀγαθὸν ὅραμα ὀφθαλμῶν ὑπὲρ πορευόμενον ψυχῇ. καί γε τοῦτο ματαιότης καὶ προαίρεσις 10 πνεύματος. † (´) Εἴ τι ἐγένετο, ἤδη (ϑ) κέκληται ὄνομα αὐτοῦ, † καὶ ἐγνώσθη ὅ ἐστιν ἄνθρωπος, † καὶ οὐ δυνήσεται (ι) κριθῆναι μετὰ τοῦ ἰσχυροτέρου ὑπὲρ αὐ-11 τόν. † Ὅτι εἰσὶν λόγοι πολλοὶ πληθύνοντες ματαιότητα.

ΚΕΦ. ζʹ.

1 † Τί περισσὸν τῷ ἀνθρώπῳ; ὅτι τίς οἶδεν (α) ἀγαθὸν τῷ ἀνθρώπῳ ἐν τῇ (β) ζωῇ, † ἀριθμὸν (γ) ζωῆς ἡμερῶν ματαιότητος αὐτοῦ; καὶ ἐποίησεν (δ) αὐτὰ ἐν σκιᾷ. † ὅτι τίς ἀπαγγελεῖ τῷ ἀνθρώπῳ, τί ἔσται ὀπίσω αὐτοῦ ὑπὸ τὸν ἥλι-2 ον; (ε) † Ἀγαθὸν ὄνομα ὑπὲρ ἔλαιον ἀγαθόν, † καὶ ἡμέρα τοῦ θανάτου ὑπὲρ ἡμέραν (ζ) γεν-3 νήσεως. † Ἀγαθὸν πορευθῆναι εἰς οἶκον πένθους † ἢ ὅτι πορευθῆναι εἰς οἶκον πότου· † καθότι τοῦτο (η) τέλος παντὸς ἀνθρώπου, † καὶ 4 ὁ ζῶν δώσει ἀγαθὸν (θ) εἰς καρδίαν αὐτοῦ. † Ἀγαθὸν θυμὸς ὑπὲρ γέλωτα, † ὅτι ἐν κακίᾳ 5 προσώπου ἀγαθυνθήσεται καρδία. † Καρδία σοφῶν ἐν οἴκῳ πένθους, † καὶ καρδία ἀφρόνων ἐν 6 οἴκῳ εὐφροσύνης. † Ἀγαθὸν τὸ ἀκοῦσαι ἐπιτίμησιν σοφοῦ † ὑπὲρ ἄνδρα ἀκούοντα ᾆσμα ἀ-7 φρόνων. † (ι) Ὡς φωνὴ ἀκανθῶν ὑπὸ τὸν λέβητα, † οὕτως (κ) γέλως τῶν ἀφρόνων. † καί γε τοῦτο μα-8 ταιότης. † Ὅτι ἡ συκοφαντία περιφέρει σοφόν, 9 † καὶ (λ) ἀπόλλυσι τὴν καρδίαν εὐγενείας αὐτοῦ. † Ἀγαθὴ ἐσχάτη λόγων ὑπὲρ ἀρχὴν αὐτοῦ, † ἀγα-10 θὸν μακρόθυμος ὑπὲρ ὑψηλὸν πνεύματι. † Μὴ σπεύσῃς ἐν πνεύματί σου τοῦ θυμοῦσθαι, † ὅτι θυ-11 μὸς ἐν κόλπῳ ἀφρόνων ἀναπαύσεται. † Μὴ εἴπῃς, Τί ἐγένετο, ὅτι αἱ ἡμέραι (μ) αἱ πρότεραι ἦσαν ἀγαθαὶ ὑπὲρ ταύτας; † ὅτι οὐκ ἐν σοφίᾳ ἐπη-12 ρώτησας περὶ τούτου. † Ἀγαθὴ σοφία μετὰ (ν) κληρονομίας, † καὶ περισσεία τοῖς θεωροῦσιν τὸν ἥλιον. 13 Ὅτι ἐν σκιᾷ αὐτῆς ἡ σοφία ὡς σκιὰ (´) ἀργυρίου, † καὶ περισσεία γνώσεως τῆς σοφίας 14 † ζωοποιήσει τὸν παρ' αὐτῆς. † Ἴδε τὰ ποιήματα τοῦ θεοῦ, † ὅτι τίς δυνήσεται κοσμῆσαι † ὃν ἂν ὁ θεὸς διαστρέψῃ αὐτόν;

Κεφ. ε΄. MS. A. (´) Ἤ τι (ϑ) κέκληκεν (ι) τοῦ κριθῆναι μετὰ τοῦ ἰσχυροῦ Κεφ. ζ΄. MS. A. (α) τί ἀγαθὸν (β) ζωῇ αὐτοῦ, (γ) ἡμερῶν ζωῆς (δ) αὐτὰς (ε) † καὶ καθὼς ἐστι τίς ἀγγελεῖ αὐτῷ; Ἀγαθὸν (ζ) γενέσεως αὐτοῦ. (η) τὸ τέλος (θ) ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ. Ὅτι ὡς φωνὴ τῶν ἀκανθῶν (κ) ὁ γέλως ὁ τῶν ἀφρόνων. (λ) ἀπολλύει (μ) αἱ πρ (ν) κληροδοσίας, (´) τοῦ ἀργυρίου, (ξ) τοῦ κοσμῆσαι

(m) Bonum eſt aſpect⁹ oculorũ ſu ambulantem animã. H etiã et præſumptio ſpirit⁹. Si (n) quid fu jam vocatũ eſt nomẽ ej⁹, et cogni quod eſt homo, et non poterit jud cum (o) fortiore ſuper ſe. Quia verba multa multiplicãtia vanita

CAP. VII.

Quid pl⁹ homini? Quis enim novit (a) bonũ homini in vita rũ dierũ vitæ vanitatis ej⁹, et ea in umbra? Quia, quis annunciabit homini, quid erit poſt eum ſub Sole? Bonũ eſt nomẽ (c) ſuper oleũ bonũ, & dies mortis ſuper diem nativitatis. Bonum ire ad domũ luctûs, quã ire ad domũ convivii, eò quòd hic eſt finis omniu hominũ: & qui vivit, dabit bonum ad cor ſuũ. Bonũ eſt ira ſuper riſum; quia in (e) malo vultûs bonum cor. Cor ſapientiũ in domo luctûs, & cor inſipientiũ in domo lætitiæ. Bonum eſt audire increpationẽ ſapientis ſuper virũ audientẽ carmẽ ſtultorũ. (f) Sicut vox ſpinarum ſub olla, ſic riſ⁹ ſtultorũ. Etiã hoc vanitas. Quoniã calumnia (g) circumfert ſapientẽ, et perdit (h) cor vigoris ejus. (i) Bonũ eſt noviſſimum ſermonum ſuper principiũ ejus. Bonũ eſt longanimis ſuper (k) excelſum ſpiritu. Ne feſtines in ſpiritu tuo iraſci: (m) quia furor in ſinu ſtultorũ requieſcet. Ne dixeris, Quid factũ eſt, quia dies priores erant boni ſuper hos? (o) quia non in ſapientia interrogãſti de hoc. Bona eſt ſapientia cum hæreditate, et amplius videntib⁹ Solẽ: (p) Quia in umbra ſapientia, ſicut umbra argenti: & abundantia ſcientiæ ſapientiæ vivificabit eum qui ab ea. (q) Vide opera Dei: quoniam quis poterit adornare quem Deus perverterit eum?

תרגום TARGUM.

9 טב לגברא למחדי על עלמא דאתי ליה ולמעבד צדקתא ולמחמי אגר טב על עובדוי ליום
דינא רבא מן די יזיל לעלמא ההוא בסיגוף נפש ברם דין לגברא חייבא הבלו ותבירות
10 רוחא : מה דהוה בעלמא הא כבר אתקרי שמיה ואשתמודע לבני אנשא מן יומא דהוה
אדם קדמאה וכולא גזירת מימרא דיי היא ולית רשו לגברא למקם בדינא עם מרי עלמא
11 דתקיף מניה : ארום אין פתגמין סגיאין דמסגין הבלו בעלמא מה מותר אית לגבר
דמתעסק בהון :

ז

1 ארום מן הוא די ינדע מה יוטיב לאנשא בעלמא הדין אלהן למעסק באוריתא די אנון חיי
עלמא וכל מנין יומי חיי הבלו די יחי בעדן מותיה אנון חשיבין בעינוי כטללא דמן הוא די
2 חוי לאנשא מה דעתיד למהוי באפוהי בעלמא הדין תחות שמשא : טב שמא טבא דיקנון
צדיקיא בעלמא הדין יתיר ממשחא דרבותא דהוה מתרבי על ריש מלכיא וכהניא ויומא
דישכב גבר ויפטר לבית קבורתא בשום טב ובזכותא מן יומא די אתיליד רשיעא בעלמא :
3 טב למיזל לגבר אבלא לנחמותיה מלמיזל לבית משתיא דחמרא דמתלעבין די בבית
אבלא תמן הוא סוף כל אנשא למיזל די על כולהון אתגזרת גזרת מותא ומן בגלל דיהך
לבית אבלא גברא צדיקא יתב ויתן ללביה מלי דמותא ואין אית בידיה מדעם ביש ישבקניה
4 ויתוב בתיובתא קדם מרי עלמא : טב רגיז דרגז מרי עלמא על צדיקיא בעלמא הדין מן
חוכא די הוא מחיך עם רשיעא ארום באבאשות אפי שכנתא אתי בצורתא ופרענותא
5 בעלמא בגין לאוטבא לב צדיקיא ויצלון קדם מרי עלמא דהוא מרחם עליהון : לבהון
דחכימיא אנן על חורבן בית מוקדשא ועצב על גלות בית ישראל ולב שטין בחדות בירת
6 ליצנותהון אכלין ושתן ומתפנקין ולא יתיבון על לבהון סגוף אחיהון : טב למתב במדרש
בית אולפנא ולמשמע נזוף גבר חכימא באוריתא מגבר דאזיל למשמע קל טבלא דשטין:
7 ארום כקל קבלת כובין דמתוקדין תחות דודא כדין קל חוכא דשטיא אוף דין הבלו : ארום 8
אניסא יהתל בחכימא בגין דלא אזיל באורחתיה ומהובד במלוי בישיא ית חוכמת לב
9 חכימא דאתיהיבת לה במתנא מן שמיא: טב סוף עסקא מן שרויה דבשרויה לא אשתמודע
לגבר מה דעתיד למהוי בסופיה אלהן סוף מלתא טב אשתמודע לגבר דטב הוא וטב מן
10 קדם יי גבר די שליט ברוחיה ומכבש יצריה מגבר דאזיל בנפסות רוחיה : ובעדן דתיתי עלך
אוכחתא מן שמיא לא תבהל בנפשך למרתח ולמימר פתגמי סרבנותא כלפי שמיא ארום
אין אנת סבל ישתבק לך ואין את מסרב ומרתח דע ארום רתחא בעטף שטין יניח עד כדין
11 דיהובד יתהון : ובעדן עשקך לא תימר מה דהות קדמת דנא טב בעלמא דיומין קדמאין
הוו טבין ואנשי דרא ההוא הוו שפירי עובדא יתיר מן אלן בגין כן טבא היה מטי להון ואנת
12 לא על חוכמתא שאלתא על דנא:טבתא חוכמתא דאוריתא עם אחסנת ממונא ויתיר לגבר
למהוי מדבר בענותנותא עם גוברין דיירי ארעא דחזן טב וביש תחות שמשא בעלמא הדין :
13 ארום היכמה דמסתתר גברא בטלל חוכמתא היכדין מסתתר בטלל כספא בעדן די עבד
מניה צדקתא ומותר מנדעא חוכמתא דאוריתא תחי ית מרהא מבית קבורתא לעלמא
14 דאתי : הוי מסתכל ית עובדא דיי וגבורתיה די עבד ית סמיא ית גבינא וחגירא למהויהון
פרישן בעלמא ארום מן הוא די יכיל לתקנא ית חד מנהון אלהן מרי עלמא די עותיה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Melius eſt viro ut lætetur ſuper *ſeculo venturo* ipſi, & ut faciat juſtitiam & ut videat mercedem *bonam* operum ſuorum in die judicii magni, quando ut eat ad ſeculum illud in afflictione animæ: verùm hoc vanitas eſt peccatori, & confractio ſpiritus. Id quod fuit in mundo, ecce jam vocatum fuit nomen ejus & cognitum filiis hominis à die quo fuit Adam antiquus, *eſtq; totum decretum verbi Domini*; & non eſt facultas viro conſtendi in judicio cum Domino mundi, qui fortior eſt illo. Etenim ſi res multæ ſunt quæ multiplicant vanitatem in mundo: quæ adjectio eſt viro qui ſtuduerit in eis?

CAP. VII.

Quis enim eſt qui noverit quid proderit homini in ſeculo hoc, niſi ut ſtudeat in Lege, quòd ipſa vita ſeculi; & omnis numerus dierũ vitæ vanitatis ejus quos vixerit, in tempore mortis ſuæ illi reputentur in oculis ejus umbra: nam quis indicabit homini quid futurum eſt ut fiat coram eo in ſeculo hoc ſub Sole? Melius eſt nomen bonum quod comparabunt juſti in ſeculo hoc, quàm unguentum unctionis quod fuerit inunctum ſuper caput regum & Sacerdotum: & dies quo jacebit vir & emittetur in domum ſepulchri cum nomine bono atque juſtitia, quàm dies quo natus eſt improb⁹ in mundo. Melius eſt ire *ad virum lugentem* ad *conſolandum* quàm ire in domum convivii vini ſubſannatorum: quod in domo luctus finis omnis hominis ut eat; ſiquidem ſuper omnes illos decreta eſt ſententia mortis: propterea qui iverit ad domum luctus, vir juſtus ſedebit, ponet in corde ſuo loquelas mortis: & ſi eſt in *manu ipſius* quicquam mali, deponet illud, & convertetur in pœnitentiam *coram Domino mundi*. Melior eſt indignatio qua indignabitur Domin⁹ mundi adverſus juſtos in ſeculo hoc, quàm riſus quo ille deridet *improbum*: dum enim contrahit vult⁹ majeſtatis, venit penuria & vindicta in ſeculum ad beandum cor juſtorum qui orabunt ante Dñm mundi, & ipſe miſerebitur ipſorum. Cor ſapientum *mœret propter vaſtationem domus ſanctuarii, &* dolet propter *exilium domus Iſrael*; & cor ſtultorum eſt in lætitia domus deriſionis; comedunt & bibunt & delitiantur, & non revolvunt ſuper cor ſuũ afflictionem fratrum ſuorum. Melius eſt *ſedere in ſchola domus doctrinæ, &* audire increpationem viri ſapientis in Lege, quàm ſi quis eat ad audiendam vocem *tympani* ſtultorum. Etenim ſicut vox clamoris ſpinarum quæ comburuntur ſub olla, ſic vox riſus ſtultorũ: etiam hoc vanitas. Etenim violentia decipiet ſapientem *quò non ambulet in via ſua*, & perdet per eloquia mala ſapientiam cordis *ſapientis*, quæ data fuerit ei dono cœlit⁹. Melior eſt finis negotii quã initiũ ej⁹; quod in principio ej⁹ non notũ eſt viro quid futurum eſt ut fiat in fine ej⁹, *ſed finis rei bon⁹ innoteſcit viro quòd bonum*; melior eſt ante Dñm vir qui imperat ſpiritui ſuo & ſubigit concupiſcentiam ſuã, quã vir qui ambulat in tumore ſpirit⁹ *ſui*. Et in tempore quo venerit ſuper te correctio de cœlis, ne feſtines in anima tua ut incaleſcas, & dicas verba contumaciæ contra cœlũ: etenim ſi tu ſuſtinens fueris, remittetur tibi, et ſi tu exacerbaveris & incalueris, ſcito quòd furor in ſinu ſtultorum quieſcet, quoad perire faciat eos. Et in tempore moleſtiæ tuæ ne dicas, Quid fuit *antehac bonũ in mundo*, quòd dies antiqui fuerunt boni, & homines generationis illi⁹ fuerunt pulchriores opere quã hi: ideò bonũ contigit eis: tu non ex ſapientia quæſiſti ſuper hoc. Bona eſt ſapientia Legis cum hæreditate *divitiarũ*: ſed longè meli⁹ eſt ut vir *verſetur* in manſuetudine cum viris habitatorib⁹ terræ qui viderunt bonũ & malũ ſub Sole in ſeculo hoc. Etenim quemadmodũ cuſtoditur vir in umbra ſapientiæ, ſic cuſtoditur in umbra argenti in tempore quo facit ex eo eleemoſynam: & excellentia cognitionis ſapientiæ vivificabit dñm ſuũ *è ſepulchro ad ſeculum* venturum. Contemplare op⁹ Domini et fortitudinẽ ejus, qui fecit cæcum, gibbum & claudum, ut ſint mirabilia in ſeculo: etenim quis eſt qui poterit corrigere unum ex illis, niſi Dominus mundi qui curvavit eum?

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܛܒ ܚܙܘܐ ܕܥܝܢܐ. ܡܢ ܡܗܠܟܢܐ ܕܢܦܫܐ. ܐܦ ܗܢܐ. ܗܒܠܐ ܘܬܘܙܦܐ ܕܢܦܫܐ. * ܡܕܡ 9
ܕܗܘܐ. ܡܢ ܩܕܝܡ ܐܬܩܪܝ ܫܡܗ. ܘܐܬܝܕܥ ܕܗܘ ܒܪܢܫܐ. ܘܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܕܢ ܥܡ 10
ܕܬܩܝܦ ܡܢܗ. * ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܡܠܐ ܣܓܝܐܐ ܕܡܣܓܝܢ ܗܒܠܐ. 11

Melior eſt aſpectus oculorum, quàm inceſſus voluntarius : at hoc etiam vanitas eſt, & animi turbatio. 9 Quod extitit, jam olim vocatum eſt nomen ejus, & cognitum eſt quòd ſit homo, nec poſſit judicio contendere cum potentiore ſe. 10 Multa ſunt enim verba quæ augent vanitatem. 11

* ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *

CAP. VII.

* ܡܢܐ ܝܘܬܪܢܐ ܠܒܪܢܫܐ. ܡܛܠ ܕܡܢܘ ܝܕܥ ܡܢܐ ܛܒ ܠܒܪܢܫܐ ܒܚܝܘܗܝ. ܡܢܝܢ
ܝܘܡܝ ܚܝܐ ܗܒܠܗ. ܘܥܒܪܘ ܐܝܟ ܛܠܠܐ. ܡܢܘ ܢܚܘܐ ܠܒܪܢܫܐ ܡܢܐ ܢܗܘܐ 1
ܡܢ ܒܬܪܗ. ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܛܒ ܫܡܐ ܛܒܐ. ܡܢ ܡܫܚܐ ܛܒܐ. ܘܝܘܡܐ ܕܡܘܬܐ 2
ܛܒ ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܡܘܠܕܗ. * ܛܒ ܠܡܐܙܠ ܠܒܝܬ ܐܒܠܐ. ܡܢ ܕܠܡܐܙܠ ܠܒܝܬ 3
ܡܫܬܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܗܘܐ ܗܝ ܚܪܬܐ ܕܟܠܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ. ܘܕܚܝ. ܢܬܠ ܛܒܬܐ ܠܠܒܗ.
* ܛܒ ܪܘܓܙܐ ܡܢ ܓܘܚܟܐ. ܡܛܠ ܕܒܟܡܝܪܘܬ ܐܦܐ. ܢܬܛܝܒ ܠܒܐ. * ܠܒܐ ܕܚܟܝܡܐ 4
ܒܒܝܬ ܐܒܠܐ. ܘܠܒܐ ܕܣܟܠܐ ܒܒܝܬ ܚܕܘܬܐ. * ܛܒ ܠܡܫܡܥ ܟܐܬܐ ܕܚܟܝܡܐ. ܡܢ 5 6
ܓܒܪܐ ܕܫܡܥ ܙܡܪܐ ܕܣܟܠܐ. * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܩܠܐ ܕܟܘܒܐ ܬܚܝܬ ܩܕܪܐ. ܗܟܢܐ 7
ܓܘܚܟܗܘܢ ܕܣܟܠܐ. ܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ. * ܡܛܠ ܕܥܘܫܩܐ ܡܘܒܕ ܠܚܟܝܡܐ. 8
ܘܡܘܗܒܬܐ ܠܠܒܐ ܡܘܒܕܐ. * ܛܒܐ ܗܝ ܐܚܪܝܬܗ ܕܡܠܬܐ. ܡܢ ܫܘܪܝܗ. ܘܛܒܐ 9
ܢܓܝܪܘܬ ܪܘܚܐ. ܡܢ ܪܡܘܬ ܪܘܚܐ. * ܠܐ ܬܬܥܒܗܠ ܒܪܘܚܟ ܠܡܪܓܙ. ܡܛܠ ܕܪܘܓܙܐ 10
ܒܥܘܒܐ ܕܣܟܠܐ ܢܬܢܝܚ. * ܠܐ ܬܐܡܪ. ܡܢܐ ܗܘܐ : ܕܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ ܛܒܝܢ ܗܘܘ ܡܢ 11
ܗܠܝܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܒܚܟܡܬܐ ܫܐܠܬ ܥܠ ܗܠܝܢ. * ܛܒܐ ܗܝ ܚܟܡܬܐ ܡܢ 12
ܡܐܢܝ ܩܪܒܐ. ܘܝܬܝܪ. ܠܚܙܝ ܫܡܫܐ. * ܡܛܠ ܕܛܠܠܐ ܕܚܟܡܬܐ. ܐܝܟ ܛܠܠܐ ܕܟܣܦܐ. 13
ܘܝܘܬܪܢܐ ܕܝܕܥܬܐ ܕܚܟܡܬܐ. ܐܚܝܬ ܠܡܪܗ. * ܚܙܝ ܥܒܕܐ ܕܐܠܗܐ. ܡܛܠ ܕܡܢܘ 14
ܡܫܟܚ ܠܡܬܩܢܘ ܠܡܢ ܕܥܘܬܗ ܗܘ.

Quod emolumentum eſt homini ? quis enim ſcit quid utile ſit homini in vita ſua numero dierum vaniſſimæ ætatis ſuæ ? hi enim velut umbra prætereunt. Quis indicabit homini quid futurum ſit poſt eum ſub ſole ? 1 Melior eſt fama bona quàm unguentum optimum, & dies mortis melior eſt die nativitatis. 2 Melius eſt adire locum luctûs, quàm adire locum convivii : is enim eſt finis omnium hominum : & qui vivit, bona præſtabit cordi ſuo. 3 Melior eſt indignatio riſu : quia ſeveritate vultûs ſerenum redditur cor. 4 Cor ſapientum inter luctum *verſatur* : cor autem ſtultorum inter gaudia. 5 Melius eſt audire correptionem ſapientum, quàm ut quis audiat cantionem ſtultorum : 6 Qualis enim eſt ſonitus ſpinarum ſub olla, talis eſt riſus ſtultorum : At hoc etiam vanitas eſt : 7 Quia calumnia perdit ſapientes, & munere cor peſſundatur. 8 Melior eſt finis ſermonis, quàm exordium ejus. Et melior eſt longanimitas arrogantiâ. 9 Ne præcipiti ſis animo ad ſuccenſendum : quoniam ira in ſtultorum ſinu requieſcet. 10 Ne dicas, Quî factum eſt ut priſtini dies meliores eſſent quàm iſti ? non enim ſapienter hæc percontaris. 11 Melior eſt ſapientia inſtrumentis bellicis, ac multò magis ſolem videntibus. 12 Nam umbra ſapientiæ ſimilis eſt umbræ pecuniæ : at abundantia cognitionis ſapientiæ vitam tribuet domino ſuo. 13 Conſidera opus Dei : quis enim poſſit ſtabilire eum qui perturbatus eſt ? 14

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* العين ذات النظر صالحة افضل من النفس الماضية • ومع ذلك فهذا باطل واختيار الروح • 9
* ان كان شيا فقد سمي اسمه وعرف انه انسان • ولن يمكنه ان يحتكم مع قوي افضل 10
منه * لان يكون اقوال كثيرة تكثر الاباطيل • 11

Oculus circumſpectus bonus eſt, præſtantior animâ celeri : nihilominus hoc vanum eſt, & placitum ſpiritûs. 9 *Si quid extat, jam eſt impoſitum nomen ejus, & innotuit quòd homo ſit, nec valeat judicio contendere cum potente præſtantiore ſe.* 10 *Nam permulti ſunt ſermones qui multiplicant vanitates.* 11

• الفصل السابع •

CAP. VII.

* ما الفضل للانسان • لان من قد عرف ما هو الاصلح للانسان في حياته • عدد ايام حياته 1
بطالته فاجازها بالظل • لان من يخبر الانسان ماذا يكون خلفه تحت الشمس * اسم الصالح 2
افضل من زيت صالح • ويوم الموت هو للانسان اخير من يوم مولده * لصالح المضي الي 3
بيت النوح افضل من الذهاب الي مجلس الشرب • بما ان هذا غاية كل انسان • والحي
يعطي قلبه صلاحا * الغضب صالح افضل من الضحك • لان بشر الوجه يطيب القلب • 4
* قلب الحكماء في بيت النوح • وقلب الجهال في منزل السرور * استماع انتهار الحكيم 5 6
افضل من انسان يسمع غناء الجهال * لان كصوت الشوك تحت الطنجير كذلك ضحك 7
الاغبياء • ولعمري هذا باطل * لان البغي يدبر راي الحكيم • ويحل قلب قوته * انتهاء 8 9
الكلام صالح افضل من ابتدائه • المتمهل صالح افضل من المستعلي بروح الهوان • 10
* لا تسارع ان تغضب بروحك • فان الغضب في حضن الاغبياء يستروح * لا تقل ماذا صار 11
وماذا اصابني • لان الايام السالفة كانت صالحة افضل من هذه الايام • فانهم ما سالوا عن
هذه بحكمة * الحكمة صالحة مع بذل حظها • وفضلها نافع للذين يبصرون الشمس * لان 12 13
الحكمة في ظلها كظل الفضة • وفضل معرفة الحكمة تحيي من اقتبس منها * ابصر صنايع 14
الله • لان من يمكنه يبرين من يعكسه الله •

Quid prodeſt homini ? quis enim novit quid magis conducat homini in vita ſua ? numerum dierum ætatis ſuæ, imò verò vanitatis ſuæ, tranſegit in umbra : nam quis referet homini quid futurum ſit poſt ipſum ſub ſole ? 1 *Nomen bonum excellentius eſt unguento optimo : & dies mortis melior eſt homini quàm dies nativitatis ejus.* 2 *Bonum quidem eſt ire ad domum luctûs, melius quàm ire ad conſeſſum potationis ; quoniam hoc, finis eſt omnis hominis ; & qui vivus eſt, bono imbuit cor ſuum.* 3 *Melior eſt indignatio quàm riſus, quia per triſtitiam vultûs cor hilareſcit.* 4 *Cor ſapientum eſt in domo luctûs, & cor ſtultorum in domo gaudii.* 5 *Audire objurgationem ſapientis, præſtantius eſt homine qui audit concentum ſtultorum.* 6 *Nam ut crepitus ſpinarum ſub olla, ita eſt riſus ſtultorum : & hoc quidem vanum eſt.* 7 *Oppreſſio namq; pervertit mentem ſapientis, & diſſolvit cor fortitudinis ejus.* 8 *Finis ſermonis melior eſt principio ejus. Longanimis præſtantior eſt eo qui e ſpiritu deſpectionis ſuperbit.* 9 *Ne feſtines iraſci in animo tuo ; quoniam ira in ſtolidorum ſinu requieſcit.* 10 *Ne dicas, Quid factum eſt, & quid accidit mihi ? nam dies præteriti meliores erant diebus præſentibus : quia inſipienter hoc ſciſcitarentur.* 11 *Bona eſt ſapientia cum beneficio ſuæ ſortis, ejuſque præſtantia prodeſt his qui vident ſolem.* 12 *Nam eſſe in ſapientia umbra, idem eſt ac eſſe in umbra pecuniæ : præſtantia cognitionis ſapientiæ tribuit illi vitam, qui utilitatem ex ea percipit.* 13 *Inſpice opera Dei ; nam quis poſſit concinnare quem Deus perverterit ?* 14

contra hoc Etiam .vide mala die in & ,bono in esto bono die In
15 ביום טובה היה בטוב וביום רעה ראה גם את־זה לעמת־
eum post homo inveniret non *quod verbum super* , Deus fecit hoc
זה עשה האלהים על־דברת שלא ימצא האדם אחריו
periens justus Est .meæ vanitatis dieb⁹ in vidi Omnia .quicquam
16 מאומה: את־הכל ראיתי בימי הבלי יש צדיק אבד
,multùm justus sis Ne.sua malitia in ,plongās impi⁹ est &,sua justitia in
17 בצדקו ויש רשע מאריך ברעתו: אל־תהי צדיק הרבה
ne &,multū *improbus sis* Ne ?desolaberis quid ut :*abundāter* sapiens sis ne &
18 ואל־תתחכם יותר למה תשומם: אל־תרשע הרבה ואל־
apprehēdas quòd Bonū ?tuo tempore non in morieris quid ut :stultus sis
19 תהי סכל למה תמות בלא עתך: טוב אשר תאחז
Deum *timens quia* :tuā manū facias quiescere ne hoc ab etiā & ,hoc *in*
בזה וגם־מזה אל־תנח את־ידך כי־ירא אלהים
,*potentibus* decem *præ* :sapientē roborabit Sapientia .*hæc omnia* egredietur
20 יצא את־כלם: החכמה תעז לחכם מעשרה שליטים
faciat qui : terra in justus non homo Quia .civitate in fuerunt qui
21 אשר היו בעיר: כי אדם אין צדיק בארץ אשר יעשה־
des ne ,*loquentur* quæ verbis omnib⁹ Etiā .peccet non & ,bonū
22 טוב ולא יחטא: גם לכל־הדברים אשר ידברו אל־תתן
etiam Quia .tibi maledicentē tuū servū audias non ut :tuum cor
23 לבך אשר לא־תשמע את־עבדך מקללך: כי גם־
Omne .aliis maledixisti tu etiam quòd :tuū cor novit multis vicibus
24 פעמים רבות ידע לבך אשר גם־את קללת אחרים: כל־
.me à est elongata ipsa & :ero Sapiens : dixi ,sapientia in tentavi *hoc*
זה נסיתי בחכמה אמרתי אחכמה והיא רחוקה ממני:
ego Circuivi ?*illud* inveniet quis ,pfundū profundū & :*fuit quod illud* Remotū
25 26 רחוק מה־שהיה ועמק עמק מי ימצאנו: סבותי אני
:supputatiōnē & ,sapientiā *quærendū* & ,*investigandū ad & ,sciendū ad* meū cor &
ולבי לדעת ולתור ובקש חכמה וחשבון
amarā ego inveniens Et.*insaniarum* fatuitatē &,stultitiæ impietatē *sciendū ad &*
27 ולדעת רשע כסל והסכלות הוללות: ומוצא אני מר
,eius cor *retia* & ,*decipulæ ipsa* quia ,mulierem morte *præ*
ממות את־האשה אשר־היא מצודים וחרמים לבה
peccans & ,illa ab evadet *Dei facies ad* bonus :ejus manus vincula
אסורים ידיה טוב לפני האלהים ימלט ממנה וחוטא
,alteram *ad* unam :Choheleth dixit ,inveni hoc ,Vide .ea *in* capietur
28 ילכד בה: ראה זה מצאתי אמרה קהלת אחת לאחת
.inveni non &,mea anima quæsivit adhuc Quam .*computationē inveniendū ad*
29 למצא חשבון: אשר עוד־בקשה נפשי ולא מצאתי
.inveni non his omnib⁹ in mulierē & ,inveni mille ex unū Hominē
אדם אחד מאלף מצאתי ואשה בכל־אלה לא מצאתי:
Deus fecit quod ,inveni hoc *vide* Tantummodo
30 לבד ראה־זה מצאתי אשר עשה האלהים את־
.multas *computationes* inquisierunt ipsi & : rectum hominem
האדם ישר והמה בקשו חשבנות רבים:

Versio VUL. LAT.

15 In die bona fruere bonis, et malā diē præcave : sicut enim hanc, sic & illā fecit De⁹, ut nō inveniat homo contra eū justas
16 querimonias. Hæc quoq; vidi in dieb⁹ vanitatis meæ : Justus perit in justitia sua, & impius multo vivit tempore in malitia
17 sua. Noli esse just⁹ multùm: neque plus sapias quā necesse est,
18 ne obstupescas. Ne impiè agas multùm : & noli esse stult⁹, ne moriaris in tempore non tuo.
19 Bonū est te sustentare justū, sed & ab illo ne subtrahas manū tuā : quia qui timet Deū, nihil
20 negligit. Sapientia confortavit sapientē sup decē principes
21 civitatis. Non est enim homo just⁹ in terra, qui faciat bonū,
22 & non peccet. Sed & cunctis sermonib⁹, qui dicuntur, ne accōmodes cor tuū: ne fortè audias servū tuū maledicentē ti-
23 bi. Scit enim conscientia tua, quia & tu crebrò maledixisti
24 aliis. Cūcta tentavi in sapientia. Dixi, Sapiēs efficiar: et ipsa
25 longi⁹ recessit à me Multò magis quā erat: et alta profundi-
26 tas, quis inveniet eā? Lustravi universa animo meo, ut scirē, et cōsiderarē, & quærerē sapientiā, et rationē: et ut cognoscerē impietatē stulti, et errorē
27 imprudentiū : Et inveni amariorē morte mulierem, quæ laque⁹ venatorū est, et sagena cor ej⁹, vincula sunt man⁹ illi⁹: qui placet Deo, effugiet illam: qui autē peccator est, capietur ab
28 illa. Ecce hoc inveni, dixit Ecclesiastes, unū & alterū, ut in-
29 venirem rationem, Quā adhuc quærit anima mea, et nō inveni. Virū de mille unū reperi, mulierē ex omnib⁹ nō inveni.
30 Solūmodò hoc inveni, ꝙ fecerit De⁹ hominē rectū, et ipse se infinitis miscuerit quæstionib⁹.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

15 † Ἐν ἡμέρᾳ ἀγαθωσύνης ζῆθι ἐν ἀγαθῷ, καὶ ἴδε ἐν ἡμέρᾳ κακίας. † ἴδε, καί γε (ο) σὺν τούτῳ συμφώνως τοῦτο † ἐποίησεν ὁ θεὸς περὶ λαλιᾶς, † ἵνα μὴ εὕρῃ ἄνθρωπος ὀπίσω αὐτοῦ (π) οὐ-
16 δέν. † Σύμπαντα εἶδον ἐν ἡμέραις ματαιότητός μου· † ἔστι δίκαιος (ʾ) ἀπολλύμενος ἐν δικαίῳ αὐτοῦ, † καί ἐστιν ἀσεβὴς μένων ἐν κακίᾳ αὐτοῦ.
17 † Μὴ γίνου δίκαιος πολύ, † (ρ) μηδὲ σοφίζου
18 περισσά, μή ποτε ἐκπλαγῇς. † Μὴ ἀσεβήσῃς πολύ, καὶ μὴ γίνου σκληρός, ἵνα μὴ ἀποθάνῃς ἐν
19 οὐ καιρῷ σου. † Ἀγαθὸν τὸ ἀντέχεσθαί σε ἐν τούτῳ, † καί γε ἀπὸ τούτου μὴ μιάνῃς τὴν χεῖρά σου, † ὅτι (σ) φοβουμένοις τὸν θεὸν ἐξελεύσεται τὰ
20 πάντα. † Ἡ σοφία βοηθήσει τῷ σοφῷ † ὑπὲρ δέκα ἐξουσιάζοντας τοὺς ὄντας ἐν τῇ πόλει. †
21 Ὅτι ἄνθρωπος οὐκ ἔστι δίκαιος ἐν τῇ γῇ, † ὃς
22 ποιήσει ἀγαθὸν καὶ οὐχ ἁμαρτήσεται. † Καί γε εἰς πάντας λόγους οὓς (τ) λαλήσουσιν ἀσεβεῖς, † μὴ θῇς καρδίαν σου, † ὅπως μὴ ἀκούσῃς τοῦ
23 δούλου σου καταρωμένου σε. † Ὅτι πλειστάκις πονηρεύσεταί σε, † καὶ καθόδους πολλὰς κακώσει καρδίαν σου, † ὅτι ὡς καί γε σὺ κατηράσω ἑτέ-
24 ρους. † Πάντα ταῦτα ἐπείρασα (υ) ἐν σοφίᾳ. † εἶπα, Σοφισθήσομαι· † καὶ αὐτὴ ἐμακρύνθη
25 ἀπ' ἐμοῦ Μακρὰν ὑπὲρ ὃ ἦν, † καὶ βαθὺ βά-
26 θος, τίς εὑρήσει αὐτό; † Ἐκύκλωσα ἐγὼ καὶ ἡ καρδία μου τοῦ γνῶναι † καὶ τοῦ κατασκέψασθαι καὶ τοῦ ζητῆσαι σοφίαν καὶ ψῆφον, † καὶ τοῦ γνῶναι ἀσεβοῦς ἀφροσύνην † καὶ ὀχληρίαν καὶ (φ) περιφο-
27 ράν. † Καὶ εὑρίσκω ἐγὼ (χ) αὐτήν, καὶ ἐρῶ πικρότερον ὑπὲρ θάνατον † σὺν τὴν γυναῖκα ἥτις ἐστὶ (ψ) θήρευμα, † καὶ σαγῆναι καρδία αὐτῆς, † δεσμὸς εἰς χεῖρας αὐτῆς. † ἀγαθὸς πρὸ προσώπου τοῦ θεοῦ ἐξαιρεθήσεται ἀπ' αὐτῆς, † καὶ ἁμαρτάνων συλληφθήσεται ἐν αὐτῇ. †
28 † Ἴδε τοῦτο εὗρον, εἶπεν ὁ Ἐκκλησιαστής· †
29 μία τῇ μιᾷ τοῦ εὑρεῖν λογισμόν, † Ὃν (ω) ἐπεζήτησεν ἡ ψυχή μου, καὶ οὐχ εὗρον· † καὶ ἄνθρωπον ἕνα ἀπὸ χιλίων εὗρον, † καὶ γυναῖκα ἐν
30 πᾶσι τούτοις οὐχ εὗρον. † Πλὴν ἴδε τοῦτο εὗρον, ὃ ἐποίησεν (α) ὁ θεὸς † σὺν τὸν ἄνθρωπον (β) εὐθῆ· † καὶ αὐτοὶ ἐζήτησαν λογισμοὺς πολλούς.

MS. A. (ο) τοῦτο σύμφωνον τοῦτο (π) μηδέν. (ʾ) ἀπολλυόμενος (ρ) καὶ μὴ βουλόμενος (τ) λαλήσουσιν, μὴ θῇς (υ) ἐν τῇ σοφίᾳ. (φ) περιφορεάν. (χ) αὐτὴν τερον ὑπὲρ θάνατον (ψ) θηρεύματα, (ω) ἐζήτησεν (α) ὁ κύριος (β)

In die bonitatis (s) vive in bo
(t) vide in die mali, vide. E
(v) huic congruenter istud fecit
de loquela, ut nō inveniat hom
eum quicquā. Omnia vidi in d
vanitatis meæ. Est justus per
(x) justo suo: & est impius (y) ma
in malitia sua. Noli esse justu
multū, & noli (ω) argumentari p
quā oportet: nequādo obstupesca
impiè agas multū, & noli esse st
ne moriaris in tempore non tuo.
num est inhærere te in hoc: &
ab hoc (aa) ne contamines man
am: quoniā (bb) timentib⁹ Deū
dientur omnia. Sapientia (cc) ad
bit sapientē super decem pote
habentes, qui sint in civitate:
homo non est justus in terra, qu
ciet bonum, & non peccabit. E
dē (dd) in omnes sermones, qu
quentur impii, nè posueris cor tu
non audias servū tuum (ee) mal
centē tibi. Etenim frequenter (ff
lignabitur in te, & multis modis ma
lè afficiet cor tuū, nempè quia
tu (gg) maledixisti aliis. Omnia
tentavi in (hh) sapiētia. (ii) Dixi
piens efficiar: & ipsa elongata
me (kk) Longè super id, quod e
et alta profunditas: (ll) quis inv
cā? (mm) Circuivi ego, & cor m
ut cognoscere, & (nn) considerare
quærerem sapientiā & (oo) num
& ut cognoscerem impii stultitiā
turbulentiā, & (pp) circumlat
Et invenio ego eā, & dicā am
rem super mortem mulierem, qu
queus venatorum est, & sagena
ejus, vinculum in (qq) manibus
(rr) Bonus coram Deo, eruetur a
(ss) et qui peccat, capietur in illa.
ce hoc inveni, dixit Ecclesiaste
una ad unam, ut invenirem ra
Quam quæsivit anima mea:
inveni. Et hominem unum ex
inveni: & mulierem in omnib
non inveni. (vv) Solummodò
hoc inveni; quòd fecit Deus ho
rectum: & ipsi (xx) quæsierunt co
gitationes multas.

תרגום TARGUM.

15 ביום דיוטיב לך יי תהוי אף אנת בטיבותא ותיטב לכל עלמא בגין דלא ייתי עלך יומא בישא
חזי ואסתכל ואף ית דין כל קבל דין עבד יי בגין לאוכחא אנשי עלמא מן בגלל דלא ישכח
16 אנש בתרוהי מדעם ביש לעלמא ההוא: ית כולא חזית ביומי הבלותי דמן קדם יי מתגזרין
טב וביש למהוי בעלמא על עסק מזליא דאתבריאו בהון בני אנשא דאית גבר זכי אבד
בצדקותיה בעלמא הדין וזכותיה מנטרא ליה לעלמא דאתי ואית גבר חיב דמאריך יומין
בחובוהי וחושבן עובדוהי בישיא נטרין ליה לעלמא דאתי לאתפרע מניה ביום דינא רבא:
17 לא תהי זכי יתיר בעדן דאתחיב חיבא קטול בבית דינך בדיל לחיסא עלוהי דלא למקטליה
ולא תתחכם בכן יתיר חוכמת רשיעיא דקימין בדרך ולא תאלף אורחתהון למה דין תצדי
18 ית אורחתך: לא תהך בתר הרהור לבך לאתחיבא סגי ולא תרחק אורחך מן אולפן
אוריתא דיי למהוי שטיא למה אנת גרם מותא לנפשך ויתקצרון שני חייך לממת עד דלא
19 מטא זמנך לממת: טב דתאחד בעסקי עלמא הדין לגמול טובא לנפשך באורח תגריא ואף
מדין ספר אוריתא לא תשבוק חולקך ארום גבר דחיל מן קדם יי נפק ית די חובת כולהון:
20 וחוכמת יוסף בר יעקב אסתיעת עלוהי לחכימותיה כל קבל עשרתי אחוהי צדיקיא
דשלטין בדחלתא דיי ולא שלט בהון יצרא בישא בעדן דהוו יהיבין בקרתא דמצרים ולא
21 קטלו ית יוסף אחוהון דהוה מצער להון בזמנא ההוא בקל מלוי: ארום לית גבר זכי בארעא
די יעבד טב כל יומוהי ולא יחוב קדם יי אבל גברא די יחוב קדם יי חמי ליה למהדר
22 בתיובתא עד דלא ימות: אוף כל מליא דימללון לך רשיעיא לא תמסור לבך לקבלותהון
23 דלא ייתון יומין די תשמע ית עבדך דילוט לך ולית לך חילא לאשתיזבא מן ידוי: ארום
חזי לך למצדק ית דינא בזמן די ילוט לך גבר דלית דכותך דאף זמנין סגיאין ידע לבך
24 דאוף אנת הויתא לטי גוברין אוחרנין: כל די אמרית בחנית בחוכמתא אמרית במימרי
25 אחכום אף כל חוכמת אוריתא והיא רחיקת מני: הא כבר אתרחק מבני נשא למידע כל
מה דהוה מן יומי עלמא ורז יום מותא ורז יום דייתי מלכא משיחא מן הוא דישכחניה
26 בחוכמתא: חזרית אנא לחשבא בלבי ולמידע ולאללא ולמתבע חוכמתא וחושבן אגר
עובדוי דצדיקיא ולמידע פורענותא חובא דשטיא וסוכלתנו חולחולתא דמלכותא:
27 ואשכחית אנא פתגם דמריר על אנש יתיר מן מריר יום מותא ית אתתא דהיא עבדת עקין
סגיאין לבעלה ומצדתן ותקלן בלבא כפיתן ידהא בדיל דלא למפלח בהן תקין קדם יי
גבר די יפטיר יתהא בגט פטורין ומשתזיב מנה וחיבא קדם יי גבר דיסבנה ואתלכד
28 בזנותהא: חזי דין עובדא דאשכחית אמרה קהלת דמתקרי שלמה מלכא דישראל כונית
29 מזליא חדא עם חברתה למשכח חשבון בני אנשא מה יהא בסופהון את פתגם אוחרן
דעוד תבעת נפשי ולא אשכחית גבר שלים וזכי בלא [illegible] מן [illegible] עד די אתיליד
אברהם צדיקא די אשתכח מהימן וזכי בין אלף מלכין דאתכנשו למעבד מגדלא בבבל
30 ואתתא דבכל אלין נשיהון דמלכיא כשרה לא אשכחית: לחוד חזי דין אשכחית די עבד
יי אדם קדמאה תקין קדמוי וזכי וחויא וחוה אנהו אטעיו למיכל מן פירא דאילנא דאכלין
פירוי חכימין למידע בין טב לביש וגרמו לאסתקפא עלוהי יום מותא ולכל דיירי ארעא
ואנון תבעו למשכח חשבונין סגיאין בגין לאיתאה מחתא על דיירי ארעא:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

In die quo benefecerit tibi Dñs, esto etiam tu in bonitate, & benefac
mundo, ut non veniat super te dies malus : vide & contemplare;
hoc è regione hujus fecit Dñs ut corripiat homines mundi : ideo
inveniat homo post se quicquam mali in seculo hoc. Omnia vidi in
vanitatis meæ, quòd à conspectu Dñi decernuntur bonū & malum
in mundo, *ratione syderum quibus producti sunt homines* : quoniam
cens perit in innocentia sua in seculo hoc, & meritum ejus custodi
in seculum venturum : & est vir peccator prolongans dies in peccat
& computatio operū ejus malorū custoditur ei ad seculū venturum
niatur in die judicii magni. Ne sis justus nimium in tempore quo
peccator mortis *in domo judicii tua* ; ut clementer agas erga eum, ne
dens eum ; nec sapiens fias sic amplius *sapientiā* improborum qui
in via, & ne discas vias eorum : ad quidnam pervertes viam tuam?
eas post *cogitationē* cordis tui ad peccandum multū, & ne elonges vi
doctrina Legis *Domini*, ut sis stultus: ad quidnam tu causam affers
animæ tuæ, *ut abbrevientur anni vitæ tuæ, ad moriendū* cùm nondum
venerit tempus tuum moriendi ? Bonum est te adjungi negotiis
hujus, ut retribuas beneficentiā animæ tuæ in via negotiatorum, &
hoc libro Legis ne dimittas partē tuā: etenim qui timet Dominum,
omne delictū illorum. Et sapientia *Joseph filii Jaacob auxiliata est*
dendo illum sapientē præ omnibus decem fratribus ejus justis ; qui
in timore Domini, neq; imperavit illis concupiscentia mala, tempore
runt dati in urbe Ægypti, nec occiderant Joseph fratrem suū, qui
affecit ipsos tempore isto voce verborū suorū. Quoniā non est vir
in terra qui faciat bonum omnibus diebus *suis*, & non peccet ante
viro verò qui peccaverit ante Dominum, convenit ut revertatur
antequam moriatur. Etiam ad omnia verba quæ loquentur tibi im
tradas cor tuum ut accipias ea, ne veniant dies ut audias servum
maledicentē tibi, & *non sit tibi facultas evadendi è manibus ipsius*
animadverte tibi ut justifices judicium in tempore quo maledixerit
qui non fuerit sicut tu ; quia etiā persæpe *novit cor tuum* quòd tu
ledixeris viris aliis. Omne hoc quod dixi, probavi in sapientia: dixi
meo, Sapiā *etiā* omnē sapientiā Legis, & ipsa elongata est à me.
pridē elongatū est à filiis hominis, ut sciant omne quod fuit à dieb
& secretū diei mortis, & secretū diei quo veniet rex Christus: quis
qui inveniet illud in sapientia ? Reversus sum ego ad cogitandum in
meo, & ad cognoscendū, & investigandū, & ad inquirendum sapient
æstimationē mercedis operum justorum, & ad cognoscendā ultionē
stultorum, & intelligentiā immutationis regni. Inveni autem ego rem
amara est super hominē magis quàm amaritudo diei mortis, uxorē
cit molestias multas viro suo: et retia et offendicula sunt in corde ejus
tæq; manus ejus, [*sic*] ut non *operetur eis*: acceptus corā Dño [*erit*]
dimiserit eam libello repudii séque liberaverit ab ea: peccator verò
conspectu Dñi vir qui acceperit eā, et capietur in fornicatione ejus.
hoc opus quod inveni, dixit Ecclesiastes, *qui vocatur Selomoh rex*
contuli sydera unū cum altero, ut invenirē computationē filiorū hom
quid erit in extremis eorū. Est res alia quam adhuc quæsivit anima
non inveni virum perfectum et innocentē absq; corruptione à die
donec nasceretur Abraham justus, qui inventus est fidelis &
mille reges, qui convenerūt ad moliendā turrim Babel: et mulier
bus his *uxoribus regum sicut Sarah* non inveni. Tantummodo
inveni, quod fecit Dñs hominē primū, rectum ante se et innocen
pens & Eva ipsum seduxerunt, ad comedendum de fructibus ar
qui comederint fructus, facultatē obtinent discernendi inter
lum; & causam præbuerunt, ut ingrueret in eum dies mortis
incolas terræ : et ipsi quæsierunt ut invenirent computationes multas, *ad inducendum plagam super habit*

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܒܝܘܡܐ ܕܛܒܬܐ ܗܘܝ ܒܛܒ. ܘܒܝܘܡܐ ܕܒܝܫܬܐ ܚܙܝ ܢܦܫܟ. ܐܦ ܗܢܐ ܠܘܩܒܠ
ܗܢܐ ܥܒܕ ܐܠܗܐ. ܥܠ ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܫܟܚ ܒܪܢܫܐ ܡܕܡ ܒܬܪܗ. * ܟܠ ܡܕܡ 16
ܚܙܝܬ ܒܝܘܡܬܐ ܗܒܠܝ. ܐܝܬ ܙܕܝܩܐ ܕܐܒܕ ܒܙܕܝܩܘܬܗ. ܘܐܝܬ ܪܫܝܥܐ ܕܐܪܝܟ
ܒܒܝܫܘܬܗ. * ܠܐ ܬܗܘܐ ܙܕܝܩ ܛܒ. ܘܠܐ ܬܬܚܟܡ ܝܬܝܪ. ܕܠܐ ܬܬܕܡܪ. * ܠܐ ܬܪܫܥ 17
ܛܒ. ܕܠܐ ܬܣܬܢܐ ܛܒ. ܠܐ ܬܗܘܐ ܣܟܠܐ. ܕܠܐ ܬܡܘܬ ܕܠܐ ܒܙܒܢܟ. * ܛܒ ܕܬܐܚܘܕ 18
ܒܗܢܐ. ܘܐܦ ܡܢ ܗܘ ܠܐ ܬܪܦܐ ܐܝܕܟ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܕܕܚܠ ܠܐܠܗܐ. ܢܩܦ ܠܟܠܗܘܢ. 19
* ܚܟܡܬܐ ܡܥܫܢܐ ܠܚܟܝܡܐ. ܝܬܝܪ ܡܢ ܥܣܪܐ ܫܠܝܛܝܢ ܕܐܝܬ ܒܡܕܝܢܬܐ. * ܡܛܠ 20
ܕܒܪܢܫܐ ܠܝܬ ܙܕܝܩ ܒܐܪܥܐ: ܕܥܒܕ ܛܒܬܐ ܘܠܐ ܚܛܐ. * ܘܐܦ ܠܟܠܗܝܢ ܡܠܐ ܕܡܡܠܠܝܢ 21 22
ܪܫܝܥܐ. ܠܐ ܬܬܠ ܠܒܟ. ܠܐ ܬܫܡܥ ܠܥܒܕܟ ܕܡܨܚܐ ܠܟ. * ܡܛܠ ܕܙܒܢܝܢ ܣܓܝܐܐ 23
ܝܕܥ ܠܒܟ. ܕܐܦ ܐܢܬ ܨܚܝܬ ܠܐܚܪܢܐ. * ܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ ܢܣܝܬ ܒܚܟܡܬܐ. ܐܡܪܬ 24
ܕܐܬܚܟܡ. ܘܗܝ ܪܚܩܬ ܡܢܝ. * ܝܬܝܪ ܡܢ ܕܗܘܬ ܪܚܝܩܐ. ܘܥܡܝܩܐ ܕܥܘܡܩܐ 25
ܡܢܘ ܢܫܟܚܝܗ. * ܐܬܟܪܟܬ ܐܢܐ ܘܠܒܝ ܠܡܕܥ ܘܠܡܒܨܐ. ܘܠܡܒܥܐ ܚܟܡܬܐ 26
ܘܚܘܫܒܢܐ. ܘܠܡܕܥ ܪܘܫܥܗ ܕܣܟܠܐ. ܘܣܟܠܘܬܐ ܘܡܪܚܒܢܘܬܐ. * ܘܐܫܟܚܬ 27
ܕܡܪܝܪܐ ܡܢ ܡܘܬܐ ܐܢܬܬܐ. ܕܗܝ ܐܝܟ ܨܝܕܐ ܗܝ. ܘܡܟܡܪܐ ܠܒܗ. ܐܣܝܪܐ ܐܝܕܝܗ. ܡܢ
ܕܛܒ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. ܡܫܬܘܙܒ ܡܢܗ. ܘܡܢ ܕܚܛܐ. ܡܬܬܚܝܕ ܒܗ. * ܚܙܝ ܗܢܐ 28
ܕܐܫܟܚܬ. ܐܡܪ ܩܘܗܠܬ. ܚܕܐ ܠܚܕܐ. ܠܡܫܟܚܘ ܚܘܫܒܢܐ. * ܘܥܘܕ ܒܥܬ 29
ܢܦܫܝ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ. ܐܢܫܐ ܚܕ ܡܢ ܐܠܦܐ ܐܫܟܚܬ. ܘܐܢܬܬܐ ܒܟܠܗܝܢ ܠܐ
ܐܫܟܚܬ. * ܒܪܡ ܚܙܝ ܗܢܐ ܕܐܫܟܚܬ. ܕܥܒܕ ܐܠܗܐ ܠܒܢܝܢܫܐ ܬܪܝܨܐ. ܘܗܢܘܢ 30
ܒܥܘ ܡܚܫܒܬܐ ܣܓܝܐܬܐ.

In die proſperitatis eſto jucundus; & in die calamitatis conſidera teipſum: nimirum, unum oppoſuit alteri Deus, eam ob cauſam ut nihil inveniat homo quod queratur de ipſo *Deo*. 15
Omnia vidi in diebus vanitatis meæ. Eſt juſtus qui pereat in juſtitia ſua, & eſt impius qui diu manet in facinoribus ſuis. 16
Ne ſis nimis juſtus, & plus æquo ne ſapias, ut ne obſtupeſcas. 17
Ne ſis impius immodicè, ne nimiùm exoſus reddaris. Ne ſis ſtolidus, ne præter tempus tuum moriaris. 18
Bonum eſt ut hoc teneas, & ab illo quoque manum ne remittas: nam qui Deum timet, utrique inhæret. 19
Sapientia corroborat ſapientem pluſquam decem potentes qui ſunt in urbe. 20
Non eſt enim quiſquam juſtus in terra, qui faciat bonum, & non peccet. 21
Præterea cunctis ſermonibus quos impii loquentur, ne adjicias animum. Servum tuum contumeliis te afficientem ne audias: 22
Novit enim cor tuum quòd tu quoque ſæpenumero alios contumeliis affeceris. 23
Hæc omnia tentavi per ſapientiam. Dixi, Sapientiam acquiram, ipſa tamen remota eſt me. 24
Pluſquam ſit ipſa diſtantia; & *verò* imum profundum quis reperiat? 25
Obivi ego & cor meum, ut ſcirem, & viſitarem atque perquirerem ſapientiam & rationem, & ut ſcirem impietatem ſtulti, & ſtultitiam ac prævaricationem. 26
Deprehendi autem morte amariorem eſſe mulierem, quòd ipſa ſit laqueus, rete cor ejus, vincula manus ejus. Qui bonus eſt coram Deo, effugiet eam: qui autem peccat, capietur ab illa. 27
Adverte, hoc eſt quod deprehendi, ait Coheleth: ſingulæ res *perpendendæ*, ut inveniantur rationes. 28
Et quæſivit adhuc anima mea, ſed non reperi. Hominem inter mille unum reperi: mulierem autem inter cunctas non inveni. 29
Verùm adverte hoc quod inveni, quòd Deus homines rectos fecerit, ipſi verò cogitationes plurimas quæſierint. 30

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* في يوم الخير عش في الخير * وتبصر في يوم الشر * ابصر مع ذاك ان هذا قد صنعه 15
الله من اجل ان الكلام موافق لهذا * لكيلا يجد الانسان ولا يصادف وراه شيا * وعرفت 16
مع الاشياء كلها في ايام بطالتي * ان يكون مقسط مهلكا بعدله * ويكون منافق
باقيا بشره * لا تكون مقسطا كثيرا * ولا تحاكمن حكما زايدا * لا تداهن فتنافق 17 18
كثيرا * ولا تكن فظا قاسيا * ليلا تموت في غير وقتك * امر صالح ان تتمسك بهذا 19
الوعظ وتعتصم به * ومع ذاك لا تيبس يدك من هذا * فان المتقي الله يخرج من جميع
الاشياء مبريا * الحكمة تعين الحكيم اكثر من العشرة المتسلطين في المدينة لمعونة 20
اهلها * لان انسان صديق لن يوجد في الارض يعمل صلاحا ولا يخطي * ومع هذا 21 22
لا تصغين قلبك في جميع الاقوال التي يتكلمها المنافقون * ليلا يسمع عبدك فيلعنك *
* لانه يتيسر عليك مرار كثيرة * ويضر قلبك دفعات كثيرة * كما لعنت انت اخرين * 23
* هذه كلها اختبرتها بالحكمة * فقلت الحكيم في افادة الحكمة فابتعدت هي مني 24
كثيرا * ابعد مما كانت هي نازحة * فمن يجد قعر عمقها * جلت انا وقلبي لاعرف 25 26
ولاتامل ولابتغي الحكمة والعلم * ولاعرف غباوة المنافق واحزانه وانتقال رايه * فوجدت
انا الغباوة اشد مرارة من الموت * مع المراة التي هي حاوية * قلبها مقانص وشباك * وفي 27
يديها قيد * فالصالح امام وجه الله يستنقذ منها * ومن يخطي يقتنص بها * قال الجامع 28
انظر قد وجدت هذا * واحدة بواحدة قايست لاجد الكفر * الذي طلبته نفسي * فما 29
وجدته * ووجدت انسانا واحدا من الوف اناس * وفي كافة هولاي النساء ما وجدت امراة *
* بل انني ابصرت اني وجدت هذا الذي صنع الله * الانسان معه مقوما وطلبوا هم 30
افكارا كثيرة *

In die proſperitatis proſperè vivito, & contemplare diem adverſitatis. Conſidera præterea quòd Deus rem iſtam fecerit eò quòd ſermo ſit eidem rei conſentaneus, ut nihil inveniat homo, nihilq; poſt ipſum offendat. 15
Cum rebus omnibus didici quoq; in diebus vanitatis meæ, eſſe juſtum qui pereat in juſtitia ſua, & eſſe impium qui perduret in pravitate ſua. 16
Ne ſis nimiùm juſtus, nec nimiam ſapientiam oſtentes. 17
Ne ſis nimiùm fraudulentus ac impius, neve ſis dyſcolus atque crudelis, ne præter tuum tempus moriaris. 18
Optima res eſt monitum hoc tenere illúdque complecti, ita tamen ut manus tua ab eo minimè torpeſcat: nam qui Deum timet, incolumis evadet ab omnibus rebus. 19
Sapientia plus juvat ſapientem, quàm decem præfecti urbis cives juvent. 20
Non enim reperitur in terra quiſquam juſtus, qui faciat bonum & non peccet. 21
Præterea mentem tuam ne adhibeas omnibus verbis quæ impii loquuntur, ne audiat ſervus tuus, & maledicat tibi: 22
Nam frequenter inſultabit tibi, & crebris vicibus nocebit cordi tuo, quemadmodum tu aliis maledixiſti. 23
Hæc omnia per ſapientiam expertus, dixi, Sapiens evadam beneficio ſapientiæ: verùm ipſa multùm receſſit à me, 24
Longiùs quàm eſſet remota: nam quis inveniat imum profundum illius? 25
Luſtravi ego & mens mea, ut ſcirem, & contemplarer, atque expoſcerem ſapientiam & doctrinam, & cognoſcerem ſtoliditatem impii, angores ejus, & mobilitatem animi ipſius: 26
Et inveni ego ſtoliditatem eſſe morte amariorem, unà cum muliere quæ eſt poſſidens, cujus cor laquei ſunt ac retia, & compedes in manibus ejus: ſed qui probus eſt ante conſpectum Dei, liberatur ab ea: qui verò peccat, capitur ab ea. 27
Dixit Collector, Vide, hoc inveni; rem unam cum altera comparavi, ut invenirem impietatem. 28
Quam quæſivit anima mea; ſed minime inveni. Inveni autem hominem unum è millibus hominum, at inter omnes has mulieres, non inveni mulierem. 29
Sed equidem vidi hoc me repériſſe quòd fecit Deus, hominem ſcilicet erga ſe rectum: ipſi verò homines cogitationes plurimas quæſierint. 30

קהלת : ח

?verbi interpretationem *sciens* quis & , sapiens ut Quis
1 מי כהחכם ומי יודע פשר דבר

CAP. VIII. ח

.mutabitur ej⁹ *facierũ* fortitudo & :ej⁹ *facies* faciet lucere hominis Sapientia
חכמת אדם תאיר פניו ועז פניו ישנא:
Ne .Dei juramenti verbum *super* & ,*observa* regis os Ego
2 אני פי־מלך שמר ועל דברת שבועת אלהים: אל־
quod omne quia *:malo verbo* in stes ne ;*abibis ejus facieb⁹ à* festin⁹ sis
3 תבהל מפניו תלך אל־תעמד בדבר רע כי כל־אשר
quid : ei dicet quis & *: imperium* regis verbum *quo In* .faciet voluerit
4 יחפץ יעשה: באשר דבר־מלך שלטון ומי יאמר־לו מה־
judiciũ &,temp⁹ & *:malũ verbũ* cognoscet non,præceptũ *Custodiens ? facies*
5 תעשה: שומר מצוה לא ידע דבר רע ועת ומשפט
quia :judiciũ & ,tempus est *voluntati* omni Quia .sapientis cor cognoscet
6 ידע לב חכם: כי לכל־חפץ יש עת ומשפט כי־
:est futurum quod *sciens ipse non* Quia .eum super multum hominis malum
7 רעת האדם רבה עליו: כי־איננו ידע מה־שיהיה
,spiritũ in *imperans* homo *Non* ? ei indicabit quis ,erit quando nam
8 כי כאשר יהיה מי יגיד לו: אין אדם שליט ברוח
dimissio nec ,mortis die in potestas nec ,spiritũ *prohibendum ad*
לכלוא את־הרוח ואין שלטון ביום המות ואין משלחת
hoc Omne *.ejus patronos* impietas eruet neque :prælio in
9 במלחמה ולא־ימלט רשע את־בעליו: את־כל־זה
sub fit quod *factum* omne ad meũ cor *dare* & , vidi
ראיתי ונתון את־לבי לכל־מעשה אשר נעשה תחת
tunc Et .sibi malũ in hominẽ in homo est dominatus quo tempore : sole
10 השמש עת אשר שלט האדם באדם לרע לו: ובכן
ambulabunt sancto loco à & venerunt *&* ,sepultos impios vidi
ראיתי רשעים קברים ובאו וממקום קדוש יהלכו
Quia vanitas hoc etiam:fecerant *sic* qua civitate in tradẽtur oblivioni *&*
11 וישתכחו בעיר אשר כן־עשו גם־זה הבל: אשר
cor est plenum ideo :citò *mali facti sententia* fit non
אין־נעשה פתגם מעשה הרעה מהרה על־כן מלא לב
malum *faciens* peccans Quoniã .malũ faciendũ ad eis in hominis filiorũ
12 בני־האדם בהם לעשות רע: אשר חטא עשה רע
timentib⁹ bonũ erit quod *ego sciens* etiam quia :ei *prolongans* &,centies
מאת ומאריך לו כי גם־יודע אני אשר יהיה־טוב ליראי
.impio erit non bonum Et *.ejus faciebus à timebunt* qui , Deum
13 האלהים אשר ייראו מלפניו: וטוב לא־יהיה לרשע
.Dei *faciebus à timens ipse* non qui umbra tanquã:dies ,ꝓlongabit nõ &
ולא־יאריך ימים כצל אשר איננו ירא מלפני אלהים:
quod justi sunt quia : terram super fit quæ vanitas Est
14 יש־הבל אשר נעשה על־הארץ אשר יש צדיקים אשר
pertingens quod impii sunt & : impiorum opus *secundum eos ad pertingens*
מגיע אלהם כמעשה הרשעים ויש רשעים שמגיע
.vanitas hoc etiam quod dixi : justorum opus *secundum eos ad*
אלהם כמעשה הצדיקים אמרתי שגם־זה הבל:

Verſio VUL. LAT.

Quis talis ut ſapiens eſt? & quis cognovit ſolutioné verbi?

CAP. VIII.

1 Sapientia hominis lucet in vultu ej⁹, & potentiſſim⁹ facié 2 illi⁹ commutabit. Ego os regis obſervo, et præcepta juramenti Dei. 3 Ne feſtines recedere à facie ej⁹, neq; permaneas in opere malo: quia omne, ꝙ vo- 4 luerit, faciet: Et ſermo illi⁹ poteſtate plen⁹ eſt: nec dicere ei quiſquã poteſt, Quarè ita fa- 5 cis? Qui cuſtodit præceptũ, nõ experietur quidquã mali. Tempus & reſponſioné cor ſapien- 6 tis intelligit. Omni negotio temp⁹ eſt, & opportunitas, & 7 multa hominis afflictio: Quia ignorat præterita, et futura nul- 8 lo ſcire poteſt nuntio. Non eſt in hominis poteſtate prohibere ſpiritũ, nec habet poteſtaté in die mortis, nec ſinitur quieſcere ingruente bello, neq; ſalva- 9 bit impietas impium. Omnia hæc conſideravi, & dedi cor meũ in cunctis operib⁹, quæ fiunt ſub Sole. Interdũ dominatur homo homini in malũ ſuũ. 10 Vidi impios ſepultos: qui etiã cùm adhuc viverent, in loco ſancto erant, & laudabantur in civitate quaſi juſtorũ operũ: 11 ſed & hoc vanitas eſt. Etenim quia non profertur citò contra malos ſententia, abſq; timore ullo filii hominum perpetrant 12 mala. Attamé peccator ex eo ꝙ centies facit malũ, & ꝑ patientiã ſuſtentatur, ego cognovi ꝙ erit bonũ timétib⁹ Deũ, qui 13 verétur facié ej⁹. Non ſit bonũ impio, nec prolongentur dies ejus, ſed quaſi umbra tranſeant 14 qui non timent facié Dñi. Eſt & alia vanitas, quæ fit ſup terram: ſunt juſti, quibus mala proveniunt, quaſi opera egerint impiorũ: & ſunt impii, qui ita ſecuri ſunt, quaſi juſtorum facta habeant: ſed & hoc vaniſſimum judico.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

†Τίς οἶδε σοφοὺς, καὶ τίς οἶδε λύσιν ῥήματος;

ΚΕΦ. η´.

1 †Σοφία ἀνθρώπου φωτιεῖ (α) πρόσωπον αὐτοῦ, †καὶ ἀναιδὴς προσώπῳ αὐτοῦ μισηθήσεται. 2 †Στόμα βασιλέως φύλαξον, †καὶ περὶ λόγου 3 (β) ὅρκου θεοῦ Μὴ σπουδάσῃς, †ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ πορεύσῃ· †μὴ στῇς ἐν λόγῳ πονηρῷ, †ὅτι πᾶν 4 (γ) ὃ ἐὰν θελήσῃ ποιήσει, †Καθὼς βασιλεὺς (δ) ἐξουσιάζων, †καὶ τίς ἐρεῖ αὐτῷ, Τί (ε) ποι- 5 εῖς; †Ὁ φυλάσσων ἐντολὴν, οὐ γνώσεται ῥῆμα πονηρόν. †καὶ καιρὸν κρίσεως γινώσκει καρδία σο- 6 φοῦ. †Ὅτι παντὶ πράγματι ἐστὶ καιρὸς καὶ κρίσις, 7 †ὅτι ἡ γνῶσις τοῦ ἀνθρώπου πολλὴ ἐπ' αὐτόν. †Ὅτι οὐκ ἔστι γινώσκων τί τὸ ἐσόμενον, †ὅτι καθὼς ἔ- 8 σται, τίς ἀναγγελεῖ (ζ) αὐτῷ; †Οὐκ ἔστιν ἄνθρωπος ἐξουσιάζων ἐν πνεύματι, †τοῦ κωλῦσαι σὺν τὸ πνεῦμα· †καὶ οὐκ ἔστιν (η) ἐξουσία ἐν ἡμέρᾳ θανάτου, †καὶ οὐκ ἔστιν ἀποστολὴ ἐν ἡμέρᾳ πολέμου, †καὶ οὐ διασώσει ἀσέβεια τὸν παρ' αὐτῆς. 9 †Καὶ (θ) σύμπαν τοῦτο εἶδον, καὶ ἔδωκα τὴν καρδίαν μου (ι) εἰς πᾶν τὸ ποίημα ὃ πεποίηται ὑπὸ τὸν ἥλιον, †τὰ ὅσα (κ) ἐξουσιάσατο ὁ ἄνθρω- 10 πος †ἐν ἀνθρώπῳ τοῦ κακῶσαι αὐτόν. †Καὶ τότε εἶδον ἀσεβεῖς εἰς τάφους εἰσαχθέντας, καὶ ἐκ τοῦ ἁγίου· †καὶ ἐπορεύθησαν καὶ ἐπῃνέθησαν ἐν τῇ πόλει, ὅτι οὕτως ἐποίησαν. †καί γε τοῦτο ματαιό- 11 της. †Ὅτι οὐκ ἔστι γινομένη ἀντίρρησις †ἀπὸ τῶν (λ) ποιούντων τὸ πονηρὸν ταχὺ, †διὰ τοῦτο ἐπληροφορήθη καρδία υἱῶν τοῦ ἀνθρώπου ἐν αὐ- 12 τοῖς τοῦ ποιῆσαι τὸ πονηρόν. †Ὃς ἥμαρτεν ἐποίησε τὸ πονηρὸν †ἀπὸ τότε καὶ ἀπὸ μακρότητος αὐτῶν· †(μ) ὅτι καὶ γινώσκω ἐγὼ, †(ν) ὅτι ἐστὶν ἀγαθὸν τοῖς φοβουμένοις τὸν θεὸν, †ὅπως 13 φοβῶνται ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ. †Καὶ ἀγαθὸν οὐκ ἔσται τῷ ἀσεβεῖ, †καὶ οὐ μακρυνεῖ ἡμέρας ἐν σκιᾷ, †ὃς οὐκ ἔστι φοβούμενος ἀπὸ προσώπου τοῦ 14 θεοῦ. †Ἔστι ματαιότης ἣ πεποίηται ἐπὶ τῆς γῆς, †ὅτι εἰσὶ δίκαιοι, (ξ) ὅτι φθάνει ἐπ' αὐτοὺς ὡς ποίημα τῶν ἀσεβῶν, †καί εἰσιν ἀσεβεῖς, ὅτι (ο) φθάνει πρὸς αὐτοὺς ὡς ποίημα τῶν δικαίων. †εἶπα, Ὅτι καί γε τοῦτο μαται

MS. A. (α) πρόσωπον, καὶ ἀναιδὴς (β) ὅρκου Μὴ σπουδάσῃς, (γ) ὃ ἂν (δ) ἐξουσιάζων λαλεῖ, καὶ τίς (ε) ποιήσεις; (ζ) αὐτοῖς; (η) ἐξουσιάζων ἡμέρᾳ θανάτου, (θ) σύμπαν (ι) εἰς πᾶν ποίημα (κ) ἐξουσιάζεται (λ) ποιούντων (μ) ὅτι καί γε (ν) ὅτι ἔσται (ξ) ὅτι φθάννει πρὸς αὐτοὺς (ο) φθάννει

Quis novit (yy) ſapientes, &
novit ſolutionem verbi?

CAP. VIII.

Sapientia hominis illumina
vultum ejus: & (a) impudens
ſuo odietur. Os (b) regis cuſtodi
de verbo juramenti Dei. Ne feſtin
à facie ej⁹ ambulabis; ne ſtes in
bo malo: quoniam omne quod vo
rit, faciet, Sicut rex poteſtatem
bens: & quis dicet ei, Quid
Qui cuſtodit mandatũ, (d) non
noſcet verbum malũ: & tempus
judicii cognoſcit cor ſapientis
Quia omni negotio eſt temp⁹
dicii. (g) quia ſcientia hominis
ta ſuper eũ: (h) Quia nõ eſt qui co
noſcat, quid futurum ſit: ſicut
erit, quis annuntiabit ei? Non
homo poteſtatem habens in ſpiritu
prohibeat ſpiritũ: et nõ eſt poteſtas
*die mortis: & non eſt (*)*emiſſio in*
bello: & non ſalvabit impietas
qui ab ea. Et omne hoc vidi
cor meũ in omne opus, quod
eſt ſub Sole (l) quæ pro poteſta
cit homo in hominẽ, ut affligeret
Et tunc vidi impios in ſepulchra
troductos, & de (m) Sancto
runt, & laudati ſunt in civitate
ſic fecerant. Etiam hoc vanitas
Quia nõ eſt facta contradictio
cientibus malũ citò (*)
eſt cor filiorũ hominis in
ant malum. Qui peccavit fecit
lũ ex tunc, & ex longitudine
Quarè, & cognoſco ego, quia
nũ timentib⁹ Deũ, ut timeant
ej⁹. Et bonum non erit impio,
*prolongabit dies in (*)*umbra*
eſt timens à facie Dei. (q) Eſt va
tas, quæ facta eſt ſuper terram,
ſunt juſti, (r) quia venit ſuper
quaſi factum impiorum &
pii, quia venit ad eos quaſi
juſtorum: dixi, Quia hoc etiam
vanitas eſt.

תרגום TARGUM.

ח

1 מן הוא חכימא דיכיל למקם קבל חוכמתא דיי ולמדע פשר מליא בנביאיא חוכמתא
דגבר חכים תנהר זיו אפוהי ביני צדיקיא וחציף אפין מתחלפן כל אורחתיה מטב לביש:
2 הוי זהיר ית פומך על גזירת מלכא למטר מה די פקדנך ועל עסק מומתא דיי אזדהר
3 ולא תימי בשום מימריה על מגן: ובעדן רוגזא דיי לא תניח לצלאה קדמוהי אתבהל
קדמוהי אזל וצלי ותבעי רחמין מניה בגין דלא תקום בפתגם ביש ארום רבון כל עלמיא
4 דיי כל די יצבי יעבד: בתר דאתגזירת מימרא דמלכא דשליט על כל עלמא מתעבדא
5 בבהלו ומן הוא גברא דמחי בידיה ויימר ליה מה עבדתא: גבר די נטר פקודיא דיי
לא ינדע מדעם ביש לעלמא דאתי ועדן צלותא ודין וקשוט אשתמודע בלב חכימיא:
6 ארום לכל עסקא אית עדן טב וביש ועל דין קשוט אתדן כל עלמא וכד אתגזר מן קדם
7 יי למהוי פורענותא בעלמא על חובת אנשין עבדי בישא דסגיאן עליהון: ארום ליתוי
חכים מה דעתיד למהוי בסופיה עלוהי ארום בעדן די יהי רעוא מן קדם יי לאבאשא ליה
8 מן הוא די חוי ליה: לית אנש דישלוט ברוח נשמתא למנע ית נשמתא דחיי בגין דלא
יפסוק מן גופא דאנשא ולית שלטונא ביום מותא לשיזבא גבר לחבריה ולית מני זינא
9 מסיען בקרבא ולא ישזיב חובא ית מרוהי ביום דינא רבא: ית כל דין חזית די הוה בעלמא
הדין ויהבית ית לבבי למדע ית כל עובדא דאתעבד בעלמא הדין תחות שמשא בעדן די
10 ישלוט אנש באנש לאבאשא ליה: ובקושטא חזית חיביא דאתקברו ואשתיצאו מעלמא
מאתר קדיש דצדיקיא שרין תמן דאזלו לאתוקדא בגהנם ואתנשין מבין יתבי קרתא
11 והיכמה דעבדו אתעבד להון אף דין הבלו: ומן בגלל דלית מתעבד פתגם ביש
פורענות רשיעא בפריע על עובדיהון בישיא בגין כן אתמלי לבא דבני אנשא בהון
12 למעבד ביש בעלמא הדין: ובזמן דחיבא יעביד ביש מאה שנין ומן קדם יי אתיהיבת
ליה ארכא בגין דיתוב ארום אתגלי ליה ברוח קודשא וידעית אנא דיהי טב לעלמא דאתי
13 לדחליא דיי דדחלין מן קדמוהי ועבדין רעותיה: וטב לא יהי לרשיעא ולא יהי ליה
ארכא לעלמא דאתי ובעלמא הדין יתקטיעון יומי חיוהי יערקון ויחלפון כטלל בגין
14 דליתוהי דחיל מן קדם יי: אית הבלו דאתגזר למהוי מתעבד על אפי ארעא דאית
צדיקיא דמטי להון ביש כאלו אנון עבדין כעובדי חיביא ואית חיבין דמטי להון כאלו
אנון עבדין כעובדי צדיקיא וחזית ברוח קודשא דבישא דמטי לצדיקיא בעלמא הדין לא
על חוביהון אלהן למנבי מנהון חובא קלילא למהוי אגרהון שלים לעלמא דאתי וטב
דמטי לחיביא בעלמא הדין לא על זכותהון אלא למפרע להון אגרא על זכותיה קלילא
דעבדו למהויהון אכלין אגרא בעלמא הדין ולהובדיהון חולקהון לעלמא דאתי אמרית
במימרי דאף דין הבלו:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. VIII.

Quis eſt ſapiens qui poſſit conſiſtere adverſ⁹ ſapientiã Dñi, & ſci
lutioñe eloquiorũ in *prophetis?* Sapientia viri ſapientis illuſtrat ſplendo
faciei ej⁹ inter juſtos: & impudens facie, immutantur *omnes viæ* ej⁹ de bo
in malum. Cuſtodi os tuũ ſuper ſententiã regis, ut obſerves quod ju
tibi, & ſuper negotiũ juramenti Dñi caut⁹ eſto, & ne jures in nomine
ejus in vanum. Et in tempore indignationis Domini ne ceſſes or
ante eum: territus à facie ejus, vade & ora, & quære miſericor
ab eo, ut non inſiſtas in re mala: etenim Dominus *omnium ſecul*
DOMINUS quod voluerit faciet. Poſtquàm decretum
dictum regis qui imperat ſuper *totum* mundum, fit in celeritate:
quis eſt vir qui percutiet manum ejus, & dicet ei, Quid feciſti? Vi
cuſtodit præcepta Dñi, non cognoſcet quicquam mali in ſeculo ven
& temp⁹ orationis & *judicii &* veritatis cognoſcitur in corde *ſapien*
Etenim omni negotio eſt tempus bonũ & malũ, & juxta judiciũ ver
judicatur univerſus mund⁹, & quando decernitur ante Dñm ut fiat ul
mundo ob peccatũ hominũ facientiũ malum, quòd *multa ſunt* in eis. E
nim non eſt qui ſciat quidnã ſit futurũ ut fiat in extremo ej⁹ ſuper
in tempore enim quo erit voluntas à conſpectu Dñi ut male ſit ei, qu
qui nuntiabit ei? Non eſt vir qui imperet ſpiritui animæ, ut prohi
animã vitalem ne *deficiat* à corpore hominis, & non eſt imperator in
mortis, ut eripiat quiſquam ſociũ ſuũ, neq; vaſa armorũ auxiliantur in
lio, neque eripiet impietas dominũ ſuũ in die judicii magni. Omne
vidi quod fuit in mundo, & dedi cor meũ ad cognoſcendũ omne op
fit in mundo hoc ſub Sole in tempore quo imperat homo homini ad
faciendum ei. Et in veritate vidi peccatores qui ſepulti ſunt & exter
ti de mundo de loco ſancto ubi juſti habitant, & abierunt ut combur
in gehennã, & oblivioni traditi ſunt inter habitatores urbis: & ecce
fecerunt, factũ eſt eis: etiã hoc vanitas. Et ideo quòd non fit verbũ ul
improborũ velociſſimè ſuper opera eorũ mala, propterea plenũ eſt cor
liorũ hominis ad faciendũ malũ in mundo hoc. Et in tempore quo pec
tor fecerit malũ centum annis & à Dño datur ei ſpatiũ ut convertatur
enim revelatũ eſt *ei* in ſpiritu ſancto, & ſcio ego quòd erit bonum in
lo futuro timentib⁹ Dñm qui timent eũ, & faciunt voluntaté ej⁹. Bene
erit improbo, neque erit ei longitudo in ſeculo venturo, & in ſeculo
præſcindentur dies vitæ ej⁹; fugient & ſuccidentur velut umbra, quia
ipſe timet Dñm. Eſt vanitas quæ conſtituta eſt ut fiat ſuper faciem ter
Sunt juſti quibus accidit malũ, ac ſi illi facerent opera peccatorũ; et
peccatores quib⁹ contingit [*bonum.*] ac ſi illi facerent opera juſtorũ: et
in ſpiritu ſancto quia malum quod accidit juſtis in ſeculo hoc, non
propter peccata eorũ, ſed ad removendum ex eis culpam levem, ut ſi
ces eorum integra in ſeculo venturo: et bonum quod contingit pecca
bus *in ſeculo hoc*, non eſt *propter meritum* eorum, ſed ad retribuendum
mercedem meriti levis quod fecerunt, ut comedant mercedem ſuam
culo hoc, et ut perdant partem ſuam in ſeculo venturo: dixi in
quòd etiam hoc eſſet vanitas.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܚ *

* ܡܢܘ ܐܝܟ ܚܟܝܡܐ. ܘܡܢܘ ܝܕܥ ܦܘܫܩܗ ܕܡܠܬܐ. ܚܟܡܬܗ ܕܓܒܪܐ. ܡܢܗܪܐ ܐܦܘܗܝ. 1
ܘܕܚܨܝܦ ܐܦܘܗܝ. ܢܣܬܢܐ. * ܦܘܡܗ ܕܡܠܟܐ ܛܪ. ܘܥܠ ܡܠܬܐ ܡܘܡܬܐ ܕܐܠܗܐ 2
ܠܐ ܬܬܒܗܠ. * ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܙܠ. ܘܠܐ ܬܩܘܡ ܒܦܬܓܡܐ ܒܝܫܐ. ܡܛܠ ܕܟܠ ܕܨܒܐ 3
ܥܒܕ. * ܐܝܟܢܐ ܕܡܫܠܛ ܡܠܟܐ. ܡܡܠܠ. ܘܡܢܘ ܢܐܡܪ ܠܗ. ܡܢܐ ܥܒܕ ܐܢܬ. 4
* ܕܢܛܪ ܦܘܩܕܢܐ. ܠܐ ܢܕܥ ܡܠܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܙܒܢܐ ܘܕܝܢܐ. ܢܕܥ ܠܒܗ ܕܚܟܝܡܐ. 5
* ܡܛܠ ܕܠܟܠ ܨܒܘ ܐܝܬ ܙܒܢܐ ܘܕܝܢܐ. ܡܛܠ ܕܒܝܫܬܗ ܕܒܪܢܫܐ. ܣܓܝܐܐ ܥܠܘܗܝ. 6
* ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܕܝܕܥ ܡܢܐ ܕܗܘܐ. ܘܡܕܡ ܕܥܬܝܕ ܠܡܗܘܐ ܠܗ ܡܢ ܒܬܪܗ. ܡܢܘ ܡܚܘܐ ܠܗ. 7
* ܠܝܬ ܓܒܪܐ ܕܫܠܝܛ ܒܪܘܚܐ. ܠܡܟܠܝܘ ܠܪܘܚܐ. ܘܠܝܬ ܫܘܠܛܢܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܘܬܐ. ܘܠܝܬ 8
ܦܘܠܛܢܐ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ. ܘܠܐ ܡܦܨܝܐ ܪܫܥܐ ܠܡܪܘܗܝ. * ܘܐܦ ܠܟܠ ܗܢܐ ܚܙܝܬ. 9
ܘܝܗܒܬ ܠܒܝ ܠܟܠ ܥܒܕܐ ܕܡܬܥܒܕ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܘܙܒܢܐ ܕܫܠܛ
ܒܪܢܫܐ ܒܒܪܢܫܐ. ܠܡܒܐܫܘ ܠܗ. * ܘܗܝܕܝܢ ܚܙܝܬ ܪܫܝܥܐ ܕܡܬܩܒܪܝܢ ܘܐܬܝܢ. ܘܡܢ ܐܬܪܐ 10
ܕܩܘܕܫܐ ܐܙܠܘ. ܘܐܬܛܥܝܘ ܒܡܕܝܢܬܐ. ܕܗܟܢܐ ܥܒܕܘ. ܘܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ 11
ܡܬܥܒܕܐ ܦܬܓܡܐ ܡܢ ܥܒܕܝ ܒܝܫܬܐ ܥܓܠ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܡܠܝ ܠܒܐ ܕܒܢܝܢܫܐ
ܒܗܘܢ. ܠܡܥܒܕ ܒܝܫܬܐ. * ܡܢ ܕܚܛܐ. ܥܒܕ ܒܝܫܬܐ ܡܐܐ. ܘܡܓܪܓ ܠܗ. ܘܐܦ ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܢܗܘܐ 12
ܛܒ ܠܕܚܠܝܗܘܢ ܕܡܪܝܐ. ܕܕܚܠܝܢ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. * ܘܠܪܫܝܥܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܛܒܬܐ. ܘܠܐ ܢܓܪܓ 13
ܝܘܡܬܐ. ܐܝܟ ܛܠܠܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܕܚܠ ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. * ܐܝܬ ܗܒܠܐ ܕܗܘܐ ܥܠ 14
ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܙܕܝܩܐ ܕܡܛܝܐ ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܥܒܕܐ ܕܪܫܝܥܐ. ܘܐܝܬ ܪܫܝܥܐ ܕܡܛܝܐ
ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܥܒܕܐ ܕܙܕܝܩܐ. ܘܐܡܪܬ. ܕܐܦ ܗܢܐ ܗܒܠܐ.

CAP. VIII.

Quis eſt ſapienti ſimilis? & quis novit in- 1
terpretationem verbi? Sapientia viri illuſtrat
vultum ejus: qui autem procacis eſt vultûs,
odio habebitur. Os regis obſerva, & ad pro- 2
ferendum juramentum Dei ne feſtines. Ab 3
ejus conſpectu recede, neque perſiſtas in re
mala: quicquid enim libuerit ei, faciet. Quo- 4
modocunque rex loquatur, permiſſum eſt ei,
& quis dicat illi, Quid agis? Qui ſervat man- 5
datum, neſcit rem malam. Et tempus ac rati-
onem novit cor ſapientis: Nam res quælibet 6
opportunitatem habet ac rationem. Multa
namque miſeria accidit homini. Quoniam 7
ignorat quid evenerit; & quid eventurum ſit
ei poſt ipſum, quis indicet illi? Neque eſt qui 8
dominetur vento, ut ventum prohibeat: nec
eſt dominium in diē mortis, nec evaſio in die
certaminis, neque ſalvabit impietas dominos
ſuos. Hoc etiam totum conſideravi, & appli- 9
cui animū meū ad cognoſcendum omne opus
quod geritur ſub ſole, & tempus quo homo
dominat⁹ eſt homini ut noceret ei. Tunc etiā 10
vidi impios ſepultos redire: & *quamvis* è
loco ſanctitatis receſſerint, nihilominus ob-
livioni traditum eſſe in urbibus quòd talia fe-
cerint: at hoc etiam vanitas. Quia non illi- 11
co ſumitur vindicta à facinoroſis, propterea
roboratur animus hominum intra ipſos ad
perpetrandum ſcelus. Qui peccat, centum 12
mala committit, attamen prorogat illi *pœ-
nam Deus*. Scio etiam quòd bonum obve-
niet timentibus Dominum, qui eum reveren-
tur. Impio autem non erit bonum, neque 13
prorogabit dies, non ſecus ac umbra: quia
Deum non reveretur. Eſt vanitas quæ uſu 14
venit ſuper terram: Sunt videlicet juſti qui-
bus obtingit quaſi *facerent* opera impio-
rum: & ſunt impii quibus obtingit quaſi
facerent opera juſtorum: atque dixi, Hoc
vanitas eſt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثامن *

1 * من قد عرف الحكماء ومن قد عرف تلخيص القول • حكمة الانسان تنير وجهه • ومن
2 لا حيا له يمقت وجهه * احفظ فم الملك • ولا تعجل في قسم ذكر الله * فمن من وجهه
3 يمضي لا يثبت في كلام خبيث • فان كلما يشاوه يعمله * يتكلم كملك ذي سلطان •
4 فمن يقول ماذا صنعت * من يحفظ وصيته لن يعرف قولا خبيثا • وقلب الحكيم يعرف
5 وقت الحكومة * لان لكل امر يوجد وقت وحكم • لان لن يوجد من يعرف • لان معرفة
6 الانسان كثيرة عليه * لان لن يوجد من يعرف الموقف • لان من يخبره بالامر كما يكون •
7 * لن يوجد انسان له سلطان في الروح ليمنع الروح * ولم يوجد ذو سلطان يعمل به في
8 يوم الموت • وقيل في موضع آخر • ولن يوجد من يتسلط في يوم الموت على امن • ولن
يوجد رسالة في يوم الحرب • والنفاق ما يسلم من ينال منه * وعرفت هذا مع كل شي
9 وبذلت قلبي الى كل صناعة تعمل تحت الشمس • من الاشياء التي تسلط عليها الانسان
لنضره ويوذيه * وحينئذ رايت منافقين يدخلون ومن قبل القديس الى القبور وذهبوا
10 ومدحوا في المدينة انهم هكذا عملوا • وهذا لعمري باطل * لان العاملين الشر لم يصر
11 منهم مقاومة الخطاب سريعا • فلهذا تمكن قلب بني الانسان في ذاتهم على افتعال الشر •
12 * من اخطاء فقد عمل الشر منذ ذاك الحين ومنذ طول مدته • ومع ذاك انا اعرف ان
المتقين الله يكون لهم صلاحا ليرهبوا من وجهه * والمنافق لن يكون له خيرا • ولا من
13 لا يكون خايفا من وجه الله ما يطيل ايامه • فتكون كانها في ظل * ويكون امر باطل
14 يعمل في الارض • ان يوجد صديقون يبلغ اليهم مثل صناعة المنافقين • ويوجد منافقون
يبلغ اليهم مثل صناعة المقسطين • فقلت بحقيقي ان هذا باطل •

CAP. VIII.

*Quis cognovit ſapientes; & quis 1
novit ſermonis interpretationem? ſapi-
entia hominis lucidum reddit vultum
ejus; & qui caret pudore, odioſum
reddit vultum ſuum. Obſerva os re- 2
gis, & ne ſis præceps in jurando men-
tionem Dei. Nam qui diſcedit è con- 3
ſpectu illius, non permanebit in ſermo-
ne malo: quoniam quicquid voluerit,
faciet. Loquetur ut rex poteſtate præ- 4
ditus, & quis dicet; Quid feciſti?
Qui ſervat præceptum, haudquaquam 5
experietur ſermonem malum. Et cor
ſapientis novit opportunitatem ſapientiæ:
Quia cuilibet rei invenitur opportunitas 6
& judicium: quia non reperitur qui
ſciat: quia ſcientia hominis multa eſt
ſuper ipſum: Quia non reperitur qui 7
ſciat futurum: quis enim ipſi rem in-
dicabit quomodo ſit futura? Nemo 8
reperitur qui poteſtatem habeat in ven-
tum, ut impediat ventum: neque re-
peritur qui polleat poteſtate quam ex-
erceat in diem mortis, (vel, ut alibi di-
citur, neque reperitur qui poteſtatem
habeat in [illegible] diei mortis:) neque e-
peritur emiſſio in die belli: neque im-
pietas incolumem ſervabit eum qui ex
ipſa facultates acquirit. Hoc etiam cum 9
rebus omnibus cognovi. Præterea cor
meum adjeci ad omnem actum qui ſub
ſole exercetur, ex iis rebus quibus homo
dominatur in propriū damnum ac nocu-
mentum. Et tunc vidi impios ingre- 10
dientes adeò è conſpectu ſancti in ſe-
pulchra, & abiiſſe, ac laudatos fuiſſe
in urbe quòd ita geſſerint: atqui id
quidem vanum eſt. Etenim quia ſcele- 11
ſtorum actionibus haud prompta fit op-
poſitio, idcirco obfirmatum eſt cor filio-
rum hominum intra ipſos in perpetran-
do ſcelere. Qui peccat, facinus com- 12
mittit ex eo tempore & diuturna mo-
ra ipſi conceſſa. Attamen novi ego quòd
timentibus Deum proſperè ſuccedet, ut
eum vereantur. Impio autem non benè 13
ſuccedet; neque is qui Deum non ve-
retur, prorogabit dies ſuos; ſed erunt
acſi eſſent in umbra. Eſt etiam res 14
vanitas quæ fit in terra: Reperiuntur, vi-
delicet juſti quibus obtingit ſecundùm
opus impiorum: & reperiuntur impii
quibus obtingit ſecundùm opus juſto-
rum: unde dixi, Reverà hoc va-
num eſt.*

קהלת : ט

ſub homini bonum non quòd , lætitiam ego laudavi Et
15 ושבחתי אני את־השמחה אשר אין־טוב לאדם תחת
eum comitabitur hoc & : lætari & , bibere & , comedere quum , ſole
השמש כי אם־לאכל ולשתות ולשמוח והוא ילונו
ſub Deus ei dedit quos , ſuarum vitarum diebus , ſuo labore in
בעמלו ימי חייו אשר־נתן־לו האלהים תחת
,ſapientiam ſciendum ad meum cor dedi Quemadmodum .ſole
16 השמש׃ כאשר נתתי את־לבי לדעת חכמה
die in etiam quòd :terram ſuper fit quod negotium videndum ad &
ולראות את־הענין אשר נעשה על־הארץ כי גם ביום
omne vidi Et .videns ipſe non ſuis oculis in ſomnum nocte in &
17 ובלילה שנה בעיניו איננו ראה׃ וראיתי את־כל־
opus invenire homo poterit non quod Dei opus
מעשה האלהים כי לא יוכל האדם למצוא את־המעשה
, homo laborabit quod propter :ſole ſub fit quod
אשר נעשה תחת־השמש בשל אשר יעמל האדם
non , ſcire ſapiens dixerit ſi etiam &:inveniet non & ,quærendū ad
לבקש ולא ימצא וגם אם־יאמר החכם לדעת לא
.invenire poterit
יוכל למצא׃

CAP. IX. ט

.hoc omne declarandum ad & ,meo corde in dedi hoc omne Quia
1 כי את־כל־זה נתתי אל־לבי ולבור את־כל־זה
etiam : Dei manu in eorum ſervitia &,ſapientes & , juſti Quia
אשר הצדיקים והחכמים ועבדיהם ביד האלהים גם־
Omnia .eorum facies ad omnia , homo ſciens non odium etiam , amorem
2 אהבה גם־שנאה אין יודע האדם הכל לפניהם׃ הכל
,mundo & , bono , impio & juſto unus eventus omnibus ſicut
כאשר לכל מקרה אחד לצדיק ולרשע לטוב ולטהור
,peccator ſic,bon⁹ ſicut :ſacrificans ipſe non qui ei &,ſacrificanti &,immundo &
ולטמא ולזבח ולאשר איננו זבח כטוב כחטא
quod omni in malum Hoc timens juramentum qui ſicut , jurans
3 הנשבע כאשר שבועה ירא׃ זה רע בכל אשר־
cor etiam & : omnibus unus eventus quòd , ſole ſub fit
נעשה תחת השמש כי־מקרה אחד לכל וגם לב
,eorum vitis in,eorum corde in inſaniæ & ,malo eſt plenum hominis filiorum
בני־האדם מלא־רע והוללות בלבבם בחייהם
,viventes omnes ad eligatur quiſquis Quia .mortuos ad hoc poſt &
4 ואחריו אל־המתים׃ כי־מי אשר יבחר אל כל־החיים
Nam .mortuo leone præ bonus ipſe vivus canis quia :ſpes eſt
5 יש בטחון כי־לכלב חי הוא טוב מן־האריה המת׃ כי
ſcientes ipſi non mortui & : ſunt morituri quòd ,ſcientes viventes
החיים יודעים שימתו והמתים אינם יודעים
.eorū memoria eſt tradita oblivioni quia:merces eis ultrà non &,quicquam
מאומה ואין־עוד להם שכר כי נשכח זכרם׃
: periit jam eorum invidia etiam,eorum odium etiam,eorum amor Etiā
6 גם אהבתם גם־שנאתם גם־קנאתם כבר אבדה
.ſole ſub fit quod omni in ſeculū in ultrà eis non pars &
וחלק אין־להם עוד לעולם בכל אשר־נעשה תחת השמש׃

Verſio VUL. LAT.

15 Laudavi igitur lætitiam, quòd non eſſet homini bonum ſub Sole, niſi quòd comederet, & biberet, atque gauderet: & hoc ſolum ſecū auferret de labore ſuo, in diebus vitæ ſuæ, quos dedit ei Deus ſub Sole. 16 Et appoſui cor meum ut ſcirem ſapientiā, & intelligerem diſtentionē quæ verſatur in terra: eſt homo, qui diebus & noctibus 17 ſomnum non capit oculis. Et intellexi, quòd omnium operum Dei nullā poſſit homo invenire rationē, eorum quæ fiunt ſub Sole: & quantò pl⁹ laboraverit ad quærendum, tantò minùs inveniat: etiam ſi dixerit ſapiens ſe nôſſe, non poterit reperire.

CAP. IX.

1 OMnia hæc tractavi in corde meo, ut curioſè intelligerē: Sunt juſti atque ſapientes, & opera eorum in manu Dei: Et tamen neſcit homo, utrùm a-2 more an odio dignus ſit: Sed omnia in futurū ſervantur incerta, eò quòd univerſa æquè eveniāt juſto & impio, bono & malo, mundo & immundo, immolanti victimas, & ſacrificia contemnenti: ſicut bonus, ſic et peccator: ut perjurus, ita & ille 3 qui verum dejerat. Hoc eſt peſſimū inter omnia, quæ ſub Sole fiunt, quia eadem cunctis eveniunt, unde et corda filiorū hominum implentur malitiā, & contemptu in vita ſua, & poſt hæc ad inferos deducentur. 4 Nemo eſt qui ſemper vivat, & qui hujus rei habeat fiduciam: melior eſt canis vivus leone 5 mortuo. Viventes enim ſciunt ſe eſſe morituros, mortui verò nihil noverūt ampliùs, nec habent ultrà mercedē: quia oblivioni tradita eſt memoria eo-6 rum. Amor quoque, & odiū, et invidiæ ſimul perierūt, nec habent partē in hoc ſeculo, & in opere quod ſub Sole geritur.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 †Καὶ ἐπῄνεσα ἐγὼ σὺν τὴν εὐφροσύνην, †ὅτι οὐκ ἔστιν ἀγαθὸν τῷ ἀνθρώπῳ ὑπὸ τὸν ἥλιον, †ὅτι εἰ μὴ (π) φαγεῖν καὶ τοῦ πιεῖν καὶ τοῦ εὐφρανθῆναι· †καὶ αὐτὸ συμπροσέσεται αὐτῷ ἐν μόχθῳ αὐτοῦ †ἡμέρας ζωῆς αὐτοῦ, (ρ) 16 ὅσας ἔδωκεν αὐτῷ ὁ Θεὸς ὑπὸ τὸν ἥλιον. †Ἐν οἷς ἔδωκα τὴν καρδίαν μου τοῦ γνῶναι τὴν σοφίαν, †καὶ τοῦ ἰδεῖν (σ) τὸν περισπασμὸν τὸν πεποιημένον ἐπὶ τῆς γῆς, †ὅτι καὶ ἐν ἡμέρᾳ καὶ ἐν νυκτὶ †ὕπνον (τ) ὀφθαλμοῖς αὐτοῦ οὐκ ἔστι 17 βλέπων. †Καὶ εἶδον σύμπαντα τὰ ποιήματα τοῦ Θεοῦ, †ὅτι οὐ δυνήσεται ἄνθρωπος τοῦ εὑρεῖν †σὺν τὸ ποίημα τὸ πεποιημένον ὑπὸ τὸν ἥλιον· †(υ) ὅσα ἂν μοχθήσῃ ἄνθρωπος τοῦ ζητῆσαι, καὶ οὐχ εὑρήσει. †καί γε ὅσα ἂν εἴπῃ (φ) σοφὸς τοῦ γνῶναι, †οὐ δυνήσεται τοῦ εὑρεῖν. †ὅτι σύμπαν τοῦτο ἔδωκα (χ) εἰς καρδίαν μου, †καὶ καρδία μου σύμπαν εἶδε τοῦτο.

Et laudavi ego lætitiam: quia n
eſt bonum homini ſub Sole,
comedere, & bibere, & læt
(t) Et ipſum ſimul aderit
labore ejus diebus vitæ
quos dedit ei Deus ſub Sole.
(u) quibus dedi cor meum,
cognoſcerem ſapientiam, &
rem (x) diſtentionem, quæ
eſt ſuper terram: quia &
& in nocte ſomnum oculis
non eſt videns. (y) Et
omnia opera Dei, quia non po
rit homo invenire opus
factum eſt ſub Sole: quæcun
laborabit homo quærere, &
inveniet. Etiam quæcunq; di
erit ſapiens cognoſcere; non
terit invenire. Quarè omne hoc
di in corde meo: & (z) cor meum
omne vidit hoc.

ΚΕΦ. Θ'.

1 †(α) ὩΣ οἱ δίκαιοι καὶ οἱ σοφοὶ καὶ αἱ ἐργασίαι αὐτῶν ἐν χειρὶ τοῦ Θεοῦ, †καί γε ἀγάπην καί γε μῖσος οὐκ ἔστιν εἰδὼς ὁ ἄνθρωπος· 2 †τὰ πάντα πρὸ προσώπου αὐτῶν, †Ματαιότης ἐν τοῖς πᾶσιν. †Συνάντημα ἓν τῷ δικαίῳ καὶ τῷ ἀσεβεῖ, τῷ ἀγαθῷ καὶ τῷ κακῷ, †(β) καὶ τῷ καθαρῷ καὶ τῷ ἀκαθάρτῳ, †καὶ τῷ θυσιάζοντι καὶ τῷ μὴ θυσιάζοντι· †ὡς ὁ ἀγαθὸς ὡς ὁ ἁμαρτάνων, †ὡς ὁ ὀμνύων 3 καθὼς ὁ τὸν ὅρκον φοβούμενος. †Τοῦτο (γ) πονηρὸν ἐν παντὶ πεποιημένῳ ὑπὸ τὸν ἥλιον, †ὅτι συνάντημα ἓν τοῖς πᾶσιν. †καί γε καρδία υἱῶν τοῦ ἀνθρώπου ἐπληρώθη πονηροῦ· †καὶ περιφέρεια ἐν καρδίᾳ αὐτῶν ἐν ζωῇ αὐτῶν, 4 †καὶ ὀπίσω αὐτῶν πρὸς τοὺς νεκρούς. †Ὅτι τίς ὃς κοινωνεῖ πρὸς πάντας τοὺς ζῶντας; †ἔστιν ἐλπίς, ὅτι ὁ κύων ὁ ζῶν αὐτὸς ἀγα-5 θὸς †ὑπὲρ τὸν λέοντα τὸν νεκρόν. †Ὅτι οἱ ζῶντες γνώσονται ὅτι ἀποθανοῦνται, †καὶ οἱ νεκροὶ οὐκ εἰσὶ γινώσκοντες οὐδέν· καὶ οὐκ ἔστιν αὐτοῖς ἔτι μισθός, †ὅτι (δ) ἐπελήσθη ἡ 6 μνήμη αὐτῶν. †Καί γε ἀγάπη αὐτῶν, καί γε μῖσος αὐτῶν, †καί γε ζῆλος αὐτῶν ἤδη ἀπώλετο· †(ε) καί γε μερὶς οὐκ ἔστιν αὐτοῖς ἔτι (ζ) εἰς τὸν αἰῶνα †ἐν παντὶ τῷ πεποιημένῳ ὑπὸ τὸν ἥλιον.

CAP. IX.

Quomodo juſti, & ſapien
et operationes eorum in manu
(a) & quidem charitatem, &
dem odium non eſt cognoſcens
mo: omnia ante faciem eorum.
Vanitas in omnibus. Eventus u
juſto, & impio, bono, & mal
mundo, & immundo, & ſa
canti, & non ſacrificanti
bonus, ut peccator: ſi
rans, ſicut juramentum tim
Hoc eſt peſſimum in (c) omni
factum eſt ſub Sole; quia even
unus omnibus. Et quidem cor f
rum hominis repletum eſt ma
& (d) circumlatio in cord
rum in vita eorum; & (e) poſt
ad mortuos: Quia quis eſt qu
municet in omnes viventes?
ſpes, quoniam (f) canis viven
bonus ſuper leonem mortu
Quia viventes ſcient quòd m
entur: & mortui non ſunt co
ſcentes quicquam: & non
ampliùs merces: in oblivio
enim venit memoria eorum.
dilectio eorum, etiam odi
rum, etiam zelus eorum
etiam pars non eſt eis ultrà
lum in omni, quod factum
Sole.

MS.A. (π) τοῦ φαγεῖν (ρ) ἃς ἔδωκεν (σ) τὸν περισμὸν (τ) ἐν ὀφθ
αὐτοῦ οὐκ ἔστιν βλέπων. (υ) ὅσα ἐὰν ποιήσῃ (φ) ὁ σοφὸς (χ) εἰς τὴν
Κεφ. θ'. MS.A. (α) Ὅτι οἱ δίκαιοι (β) τῷ καθαρῷ (γ) τὸ πονηρὸν (δ) *ἐπελήσθη (ε) καὶ μερὶς (ζ) εἰς

תרגום TARGUM.

15 ושבחית אנא ית חדות אוריתא ארום לית טב לאנש בעלמא הדין תחות שמשא ארום
אלהן למיכל ולמשתי ולמחדי בטורחיה ובחולקיה דאתיהיב ליה מן שמיא ולא יושיט
ידיה בחטופין ואניסא והוא ילוניה לשלם לעלמא ההוא ויקבל אגר שלים על טורחיה
16 די טרח בשלמותא כל יומי חיוהי דיהב ליה יי בעלמא הדין תחות שמשא׃ כמא די
יהבית ית לבבי למנדע חוכמת אוריתא ולמחזי ית עניין דאתעביד על ארעא ארום אף
חכימא דיצבי למעסק באוריתא ולאשכחא חוכמתא טורחא הוה ליה ארום אף ביממא
17 לא ינוח ובליליא שינתא בעינוהי לא חזי׃ וחזית אנא ית כל עובד גבורתא דיי ארום
דחילא הוא ולית ליה רשו לאנש לאשכחא ית עובד גבורתא דיי דאתעביד בעלמא
הדין תחות שמשא כד יטרח אנש למתבע מה דעתיד למהוי ולא ישכח ואף אם יימר
גבר חכים במימריה למנדע מה דעתיד למהוי בסוף יומיא ולית ליה רשו למשכח׃

ט

1 ארום ית כל דין יהבית על לבי ולמבלוש ית כל דין די צדיקיא וחכימיא ותלמידיהון
דמשתעבדין להון על עסק אולפן אוריתא מסירין בידא דיי ומניה אתגזר על כל עלמא
כל מה דיהי ביומיהון אף רחמתא די רחמנון אף סניאתא דסננון גבר לית נביא
2 בעלמא די ינדע מה דיהי באנשא כולא במולא אתגזר למהוי קדמיהון׃ כולא במוליא
תליא מן שמיא אתגזר מה דעתיד למהוי לכולא ארעון חד לזכאה ולחיבא לדתקנן
אורחתיה ולמדכי נפשיה ולמסאב נפשיה ולמקרב נכסת קודשיא ולדליתוהי מקריב
3 נכסת קודשין כחיבא כגבר דיומי לשקרא כגבר דמומתא דחיל׃ דין מזל ביש בכל
עלמא די יתעבד תחות שמשא ארום ארעון חד לכולא לכל דיירי ארעא ואף לבא דבני
אנשא אתמלי ביש על דא וחולחולתא בלבבהון כל יומי חייהון ובתר סופיהי דאנשא
4 נטיר ליה לאתוכחא עם מיתיא בדין חיביא׃ ארום מן גברא די אתחבר לכל פתגמי
אוריתא ולמקני חיי עלמא דאתי אית ליה סבר ארום כלבא חיא הוא טב מן אריא די
5 הוא מית׃ ארום צדיקיא ידעין דאין יחובון עתידין למהויהון חשיבין כמיתיא לעלמא
דאתי בגין כן נטרין אורחהון ולא חיבין ואין יחובון תיבין בתיובתא וחיביא ליתיהון
ידעין מדעם טב על דלא אוטיבו עובדיהון בחייהון וליתיהון ידעין מדעם טב לעלמא
6 דאתי ולית להון אגר טב בתר מותהון ארום אתנשי דכרנהון מביני צדיקיא׃ בתר
מותהון דרשיעיא לית בהון צרוך אף רחמתהון אף שנאתהון אף קנאתהון הא כבר
הובדון מן עלמא וחולק טב לית להון עוד עם צדיקיא לעלמא דאתי ולית להון הניה
מן כל מה דאתעבד בעלמא הדין תחות שמשא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et laudavi ego gaudium Legis , quia non eſt bonum homini in ſeculo
ſub Sole , niſi tantùm comedere & bibere & gaudere in labore ſuo
pro parte ſua quæ data eſt ei ex cœlo, atq; non extendere manum ſuam
rapinas & violentiam, & hoc conducet illum in pacem ad ſeculum
& accipiet mercedem perfectam pro labore ſuo quo laboravit in inte
tate omnibus diebus vitæ ſuæ quos dedit illi Dn̄s in ſeculo hoc ſub S
Quemadmodum dedi cor meum ad ſciendum ſapientiam Legis, &
dendum negotium quod fit ſuper terram, etenim ſapiens etiam
ſtudere in Lege, & invenire ſapientiam, labor eſt illi : nam etiam
diu non quieſcit, & noctu ſomnum oculis ſuis non videt. Et
omne opus fortitudinis Dn̄i, quoniam terribilis eſt : & non eſt fac
mini inveniendi opus fortitudinis Dn̄i quod factum eſt in mundo
Sole; quando laboraverit homo ut inquirat id quod futurum eſt ut
inveniet : & etiamſi dixerit vir ſapiens in dicto ſuo, ut ſciat id quod
turum eſt ut fiat in fine dierum, non licebit illi invenire.

CAP. IX.

ETenim omnia hæc poſui in corde meo, & ut ſcrutarer omnia
Quod juſti & ſapientes, & diſcipuli eorum qui ſubditi ſunt eis
legis gratia, traditi ſunt in manum Dn̄i: & ab eo decretum eſt de
omne quod erit in diebus eorum ; etiam amor quo dilexerit eos
etiam odiū quo eos perſecut⁹ fuerit : non eſt *propheta in mundo* qu
quod erit homini : omne in providentia decretum eſt ut ſit ante eos.
ex *ſyderibus* pendet, ex cœlo decretum eſt quod futurum eſt ut fiat
eventus unus innocenti & peccatori, ei cujus viæ rectæ ſunt, & pu
animam ſuam, & polluenti *animam ſuam* ; & offerenti oblationem
ctitatum, & ei qui non offert oblationem ſanctitatum : [*ſicut bonus*
peccator ; *ſicut vir qui jurat in falſum* , *ſic* vir qui juramentum
Hoc *fatum* malum eſt in toto mundo , quod *factum* eſt ſub Sole
eventus eſt omnibus unus, omnibus [*inquam*] habitatorib' terræ,
cor filiorū hominū repletum eſt malo propter hoc, & inſania in cor
erit omnibus diebus vitæ eorum, & poſt *finem* hominis ſervatur
ripiatur cum mortuis juxta judicium *peccatorum*. Etenim quis
aſſociabitur omnibus verbis Legis ? ad acquirendam vitam ſecul
eſt illi ſpes : etenim canis vivus melior eſt, quàm leo qui mortuus
niam juſti norunt quod ſi peccaverint, futuri ſunt ut reputentur
in ſeculo venturo : propterea cuſtodiunt vias ſuas, & non pecc
ſi peccant, convertuntur in pœnitentia : & peccatores neſciunt
boni, eò quòd non correxerunt opera ſua in melius in vita ſua,
quicquam boni de ſeculo venturo, & non eſt eis merces bona
tem eorum : etenim oblivioni data eſt memoria eorum inter juſtos
mortem impiorum nulla eſt in eis utilitas ; etiam amor eorum,
um eorum, invidia quoque, ecce pridem *perierunt* ex mundo,
na non eſt eis *amplius* cum juſtis in ſeculo venturo, nec eſt
omni quod fit in hoc mundo ſub Sole.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܫܒܚܬ ܐܢܐ ܠܗ ܠܚܕܘܬܐ. ܕܠܝܬ ܛܒ ܠܒܪܢܫܐ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ: ܐܠܐ ܠܡܐܟܠ
ܘܠܡܫܬܐ ܘܠܡܚܕܐ. ܘܗܘ ܢܠܘܝܘܗܝ ܒܥܡܠܗ. ܒܝܘܡ̈ܝ ܚܝ̈ܘܗܝ ܕܝܗܒ ܠܗ ܐܠܗܐ
ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܝܗܒܬ ܠܒܝ ܠܡܕܥ ܚܟܡܬܐ. ܘܠܡܚܙܐ ܥܢܝܢܐ
ܕܐܬܥܒܕ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܦ ܒܐܝܡܡܐ ܘܒܠܠܝܐ ܫܢܬܐ ܒܥܝ̈ܢܘܗܝ ܠܐ ܚܙܐ. * ܘܚܙܝܬ
ܐܢܐ ܟܠܗ ܥܒܕܐ ܕܐܠܗܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܫܟܚ ܒܪܢܫܐ ܠܡܫܟܚܘ ܥܒܕܐ ܕܐܬܥܒܕ ܬܚܝܬ
ܫܡܫܐ. ܟܠ ܕܢܥܡܠ ܒܪܢܫܐ ܠܡܒܥܐ ܠܐ ܢܫܟܚ. ܘܟܠ ܕܢܐܡܪ ܚܟܝܡܐ ܠܡܕܥ ܠܐ
ܢܫܟܚ ܠܡܫܟܚܘܬܗ.

Quapropter laudavi lætitiam, quòd nil ſit homini melius ſub ſole, quàm edere, & bibere, ac lætari: hoc enim comitatur ipſum ex labore ſuo diebus ætatis ſuæ, quos conceſſit illi Deus ſub ſole. 15

Propterea cor meum appuli ad ſciendam ſapientiam, & inſpiciendam occupationem quâ ſe exercet *homo* ſuper terram: (nam diù noctúque ſomnum in ſuis oculis haud experitur.) 16

Et animadverti omnia opera Dei, quòd invalidus ſit homo ad opus quod actum eſt ſub ſole; quò plus deſudat homo in perquirendo, eò minus aſſequitur: & quicquid ſapiens ſcire proponat, aſſequi minimè poterit. 17

* ܩܦܠܐܘܢ * ܛ *

* ܡܛܠ ܕܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܝܗܒܬ ܒܠܒܝ. ܘܠܒܝ ܚܙܐ ܠܗ ܟܠ ܗܢܐ. ܕܙܕܝܩ̈ܐ
ܘܚܟܝ̈ܡܐ ܘܥܒ̈ܕܝܗܘܢ. ܒܐܝܕܐ ܕܐܠܗܐ. ܐܦ ܪܚܡܬܐ ܐܦ ܣܢܐܬܐ. ܠܐ ܝܕܥ ܒܪܢܫܐ. ܟܠ
ܕܩܕܡܝܗܘܢ. ܗܒܠܐ. * ܟܠ ܚܕ ܕܟܘܬܗ. ܓܕܫܐ ܚܕ. ܠܙܕܝܩܐ. ܘܠܪܫܝܥܐ. ܠܛܒܐ
ܘܠܒܝܫܐ. ܠܕܟܝܐ. ܘܠܛܡܐܐ. ܠܕܕܒܚ. ܘܠܕܠܐ ܕܒܚ. ܐܝܟ ܛܒܐ. ܐܦ ܚܛܝܐ. ܐܝܟ
ܕܝܡܐ. ܐܦ ܗܘ ܕܡܢ ܡܘܡܬܐ ܕܚܠ. * ܗܢܐ ܒܝܫܐ. ܒܟܠ ܡܐ ܕܐܬܥܒܕ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ.
ܡܛܠ ܕܓܕܫܐ ܚܕ ܠܟܠܗܘܢ. ܘܐܦ ܠܒܐ ܕܒܢܝ̈ܢܫܐ ܡܠܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܦܟܗܝܘܬܐ
ܒܠܒܗܘܢ ܒܚܝ̈ܝܗܘܢ. ܘܒܬܪܗܘܢ. ܠܘܬ ܡܝ̈ܬܐ. * ܟܠ ܕܡܫܬܘܬܦ ܥܡ ܟܠ
ܚܝ̈ܐ. ܐܝܬ ܠܗ ܣܒܪܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܒܐ ܚܝܐ. ܛܒ ܗܘ ܡܢ ܐܪܝܐ ܕܡܝܬ. * ܡܛܠ ܕܚܝ̈ܐ
ܝܕܥܝܢ ܕܡܝܬܝܢ. ܘܡܝ̈ܬܐ ܠܐ ܝܕܥܝܢ ܡܕܡ. ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ ܬܘܒ ܐܓܪܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܛܥܝ
ܕܘܟܪܢܗܘܢ. * ܐܦ ܪܚܡܬܗܘܢ ܐܦ ܣܢܐܬܗܘܢ. ܘܐܦ ܚܣܡܗܘܢ ܡܢ ܟܕܘ ܐܒܕ. ܘܡܢܬܐ
ܠܝܬ ܠܗܘܢ ܬܘܒ ܠܥܠܡ. ܒܟܠ ܡܐ ܕܡܬܥܒܕ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ.

CAP. IX.

HÆc enim omnia cordi meo indidi, totúmque hoc deprehendit cor meum: Quòd juſti ac ſapientes, & opera eorum ſunt in manu Dei: & amorem pariter ac odium ignorat homo: quicquid ob oculos habet, vanitas eſt. 1

Omnibus uni ſicut alteri par caſus *contingit*, juſtis & impiis, bonis ac malis, puris impuriſque, ſacrificanti & non ſacrificanti; ut probo, ſic peccatori; ut juratori, ſic ei qui à juramentis abhorret. 2

Hoc peſſimum eſt inter omnia quæ uſu veniunt ſub ſole, quia caſus idem omnibus. Quin etiam cor hominum impletum eſt malitiâ, & error improbus *inſidet* in corde vitâque ipſorum, & eorum finis ad mortuos. 3

Quicunque particeps eſt cujuſcunque vitæ, ſpem habet: canis enim vivus, melior eſt leone mortuo. 4

Nam vivi ſciunt ſe morituros: at mortui nihil ſciunt: nec habent ampliùs mercedem, quia oblivione deleta eſt memoria ipſorum: 5

Tum amor, tum odium, tum invidia ipſorum jampridem periit, nec partem habent ampliùs in æternum in iis omnibus quæ fiunt ſub ſole. 6

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ومدحت انا السرور * لان ليس للانسان تحت الشمس حظا صالحا سوي ما ياكله ويشربه
ويسر به * وهذا يمضي معه في تعبه ايام حياته التي منحه الله اياها تحت الشمس * وبذلت
قلبي في الامور لاعرف الحكمة واعاين التقلب المصنوع في الارض * لان صاحبه في النهار
والليل ما يرى في عينيه نوم * وعرفت كافة صنايع الله * وان ما يمكن احدا ان يجد
الصناعة مع المصنوع تحت الشمس * ومهما يتعب الانسان في ابتغايها ما يجدها * ومع ذلك
كافة ما يقول الحكيم ليعرف لن يمكن ان يوجد *

Et laudavi ego lætitiam, quòd non ſit homini ſub ſole ſors fœlix præter id quod comedit ac bibit, & quo fruitur: atque hoc cum eo vadit pro labore ipſius, diebus vitæ ſuæ, quos conceſſit illi Deus ſub ſole. 15

Deinde animum meum ad res adjeci, ut ſcirem ſapientiam, & inſpicerem operoſum negotium quod exercetur in terra: illud enim exercenti, neque die neque nocte aſpicitur ſomnus in oculis ejus. 16

Et cognovi univerſa Dei opera, & quòd nemini poſſibile ſit opus invenire in rebus conditis ſub ſole. Quantumvis laboret homo in his perquirendis, non reperiet illa. Quin etiam quicquid ſcire proponit ſapiens, reperiri nunquam poterit. 17

* الفصل التاسع *

* لان هذا كله منحته لقلبي وعرف قلبي هذا كله * ان المقسطين والحكماء بل واعمالهم
في يد الله * والانسان لعمري لن يعرف المحبة ولا البغض * كل شي امام وجوههم باطل *
* في جميع امورهم لقيا واحدة للمقسط والمنافق * للصالح والطالح * وللطاهر وللنجس
ولمن يضحي ولمن لا يضحي * مثل الصالح منا والخاطي * كمن يحلف نظيره من
يتقي القسم * هذا امر خبيث في كل مصنوع تحت الشمس * ان لقيا واحدة للكل * ومع
ذلك فقلت ان بني الانسان امتلوا من الراي الخبيث * وفي قلبهم اعوجاج في حياتهم
وما وراهم يدوحي الموتي * لان من يشارك الاحياء في كل شي فذلك رجاء مامول * لان الكلب
الحي ذاك صالح افضل من سبع مايت * لان الاحياء يعرفون انهم سيموتون * والموتي ليسوا
موجودين فما يعرفون شيا * وليس لهم ثواب ايضا * لان قد نسي ذكرهم * ومع ذلك
فمحبتهم وبغضهم وغيرتهم قد هلكت * وليس لهم في جميع المصنوع تحت الشمس نصيب
ايضا الي الابد *

CAP. IX.

ID enim totum conceſſi cordi meo, idque totum cognovit cor meum; juſtos ac ſapientes, imò etiam opera eorum in manu Dei eſſe; & hominem quidem nec amorem nec odium ſcire. Omnia in conſpectu eorum vana ſunt. 1

In omnibus eorum negotiis caſus idem accidit juſto & impio, probo & improbo, mundo & immundo; tam ei qui ſacrificat, quàm qui non ſacrificat; ut bono inter nos, ita & peccatori; ſicut ei qui jurat, ſic qui timet jurare. 2

Hæc res eſt peſſima inter omnia ſub ſole condita, quòd caſus idem ſit omnibus. Prætereà dixi filios hominum plenos eſſe malo animo, & in corde ipſorum obliquitatem ineſſe quandiu vivunt, & quod ab eorum tergo eſt, ad mortuos tendere. 3

Nam communicare aliquem cum vivis in rebus omnibus, res eſt optatæ ſpei: quandoquidem canis ipſe vivus melior eſt leone mortuo. 4

Nam vivi nôrunt ſe morituros: mortui verò non extant, nihilque ſciunt; nec habent ulteriùs præmium, quia oblivioni jam tradita eſt memoria eorum. 5

Quin etiam amor ac odium, & æmulatio ipſorum jam periit, nec ſortem habent ampliùs in æternum in ulla re quæ fit ſub ſole. 6

קהלת : ט

bono corde in bibe & , tuum panem gaudio in comede , Vade
7 לֵךְ אֱכֹל בְּשִׂמְחָה לַחְמֶךָ וּשֲׁתֵה בְלֶב־טוֹב
omni In .tua opera Deus voluit jam quia : tuum vinum
8 יֵינֶךָ כִּי כְבָר רָצָה הָאֱלֹהִים אֶת־מַעֲשֶׂיךָ׃ בְּכָל־
tuum caput super oleum & : candida tua vestimenta sint tempore
עֵת יִהְיוּ בְגָדֶיךָ לְבָנִים וְשֶׁמֶן עַל־רֹאשְׁךָ
omnibus dilexisti quam , uxore cum vitas Vide .deficiat non
9 אַל־יֶחְסָר׃ רְאֵה חַיִּים עִם־אִשָּׁה אֲשֶׁר־אָהַבְתָּ כָּל־
sole sub tibi dedit quos tuæ vanitatis vitarum diebus
יְמֵי חַיֵּי הֶבְלֶךָ אֲשֶׁר נָתַן־לְךָ תַּחַת הַשֶּׁמֶשׁ
,tuo labore in & vitis in tua pars hoc quia:tuæ vanitatis dieb⁹ omnibus
כֹּל יְמֵי הֶבְלֶךָ כִּי הוּא חֶלְקְךָ בַּחַיִּים וּבַעֲמָלְךָ
invenerit quod Omne .sole sub laborans tu quo
10 אֲשֶׁר־אַתָּה עָמֵל תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ׃ כֹּל אֲשֶׁר תִּמְצָא
, opus non quia : fac tua virtute in faciendum ad tua manus
יָדְךָ לַעֲשׂוֹת בְּכֹחֲךָ עֲשֵׂה כִּי אֵין מַעֲשֶׂה
.illuc vadens tu quo sepulchro in sapiētia &,sciētia &,cōputatio &
וְחֶשְׁבּוֹן וְדַעַת וְחָכְמָה בִּשְׁאוֹל אֲשֶׁר אַתָּה הֹלֵךְ שָׁמָּה׃
nec , cursus levium non quòd , sole sub videre &,sum Coversus
11 שַׁבְתִּי וְרָאֹה תַחַת־הַשֶּׁמֶשׁ כִּי לֹא לַקַּלִּים הַמֵּרוֹץ וְלֹא
non etiam & ,panis sapientium non etiam & , bellum fortium
לַגִּבּוֹרִים הַמִּלְחָמָה וְגַם לֹא לַחֲכָמִים לֶחֶם וְגַם לֹא
occursus & tempus sed .gratia scientium non etiam & ,opulentia prudentium
לַנְּבֹנִים עֹשֶׁר וְגַם לֹא לַיֹּדְעִים חֵן כִּי־עֵת וָפֶגַע
: suum tempus homo sciet non etiam Quia .ipsis omnibus accidet
12 יִקְרֶה אֶת־כֻּלָּם׃ כִּי גַּם לֹא־יֵדַע הָאָדָם אֶת־עִתּוֹ
;laqueo in captæ aves sicut & ,malo reti in capiuntur qui pisces sicut
כַּדָּגִים שֶׁנֶּאֱחָזִים בִּמְצוֹדָה רָעָה וְכַצִּפֳּרִים הָאֲחֻזוֹת בַּפָּח
ceciderit quod secundùm,malo tempore in hominum filii irretiti ipsi sicut
כָּהֵם יוּקָשִׁים בְּנֵי הָאָדָם לְעֵת רָעָה כְּשֶׁתִּפּוֹל
: sole sub sapientiam vidi hanc Etiam .repentè eos super
13 עֲלֵיהֶם פִּתְאֹם׃ גַּם־זֹה רָאִיתִי חָכְמָה תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ
venit & : parum ea in virorum & , parva Civitas .me ad ipsa magna &
14 וּגְדוֹלָה הִיא אֵלָי׃ עִיר קְטַנָּה וַאֲנָשִׁים בָּהּ מְעָט וּבָא־
eam super extruxit & , eam circundedit & ,magnus rex eam adversus
אֵלֶיהָ מֶלֶךְ גָּדוֹל וְסָבַב אֹתָהּ וּבָנָה עָלֶיהָ
,sapiens pauper vir ea in est inventus Et .magnas munitiones
15 מְצוֹדִים גְּדֹלִים׃ וּמָצָא בָהּ אִישׁ מִסְכֵּן חָכָם
est recordatus non homo & : sua sapientia in urbem ipse eruit &
וּמִלַּט־הוּא אֶת־הָעִיר בְּחָכְמָתוֹ וְאָדָם לֹא זָכַר
sapientiam bonam , ego dixi Et .illius pauperis viri
16 אֶת־הָאִישׁ הַמִּסְכֵּן הַהוּא׃ וְאָמַרְתִּי אָנִי טוֹבָה חָכְמָה
.stultos in dominantis clamor quam : audiuntur quiete in sapientum Verba .audita ipsa non ejus verba & , contempta pauperis sapientia & , fortitudine præ
17 מִגְּבוּרָה וְחָכְמַת הַמִּסְכֵּן בְּזוּיָה וּדְבָרָיו אֵינָם נִשְׁמָעִים׃ דִּבְרֵי חֲכָמִים בְּנַחַת נִשְׁמָעִים מִזַּעֲקַת מוֹשֵׁל בַּכְּסִילִים׃

Versio VUL. LAT.

7 Vade ergò & comede in lætitia panē tuū, & bibe cum gaudio vinū tuū: quia Deo placent 8 opera tua. Omni tempore sint vestimenta tua candida, et oleū 9 de capite tuo non deficiat. Perfuere vitâ cum uxore, quam diligis, cunctis dieb⁹ vitæ instabilitatis tuæ, qui dati sunt tibi sub Sole omni tempore vanitatis tuæ: hæc est enim pars in vita, & in labore tuo, quo laboras 10 sub Sole. Quodcumque facere potest man⁹ tua, instanter operare: quia nec opus, nec ratio, nec sapientia, nec scientia erūt apud inferos, quò tu properas. 11 Verti me ad aliud, & vidi sub Sole, nec velociū esse cursum, nec fortiū bellum, nec sapientiū panē, nec doctorū divitias, nec artificū gratiā, sed tempus, 12 casúmque in omnibus. Nescit homo finē suū: sed sicut pisces capiuntur hamo, & sicut aves laqueo comprehenduntur, sic capiuntur homines in tempore malo, cùm eis extemplò super-13 venerit. Hanc quoq; sub Sole vidi sapientiā, & probavi ma-14 ximā: Civitas parva, & pauci in ea viri: venit contra eā rex magn⁹, & vallavit eam, extruxítque munitiones per gyrum, 15 & perfecta est obsidio. Inventúsque est in ea vir pauper & sapiens, & liberavit urbem per sapientiam suam, & nullus deinceps recordatus est hominis 16 illius pauperis. Et dicebam ego, meliorem esse sapientiam fortitudine: quomodò ergò sapientia pauperis contempta est, & verba ejus non sunt au-17 dita? Verba sapientium audiuntur in silentio, plusquam clamor principis inter stultos.

Versio GRÆC. LXX Interp. cum Transl. LAT.

7 † Δεῦρο φάγε ἐν εὐφροσύνῃ τὸν ἄρτον σου, † καὶ πίε ἐν καρδίᾳ ἀγαθῇ οἶνόν σου, † (η) ὅτι ἤδη εὐ-8 δόκησεν ὁ Θεὸς τὰ ποιήματά σου. † Ἐν παντὶ καιρῷ ἔστωσαν ἱμάτιά σου λευκὰ, καὶ ἔλαιον (θ) 9 ἐπὶ κεφαλῆς σου μὴ ὑστερησάτω. † Καὶ ἴδε ζωὴν μετὰ γυναικὸς ἧς ἠγάπησας † πάσας τὰς ἡμέρας ζωῆς ματαιότητός σου, τὰς δοθείσας σοι ὑπὸ τὸν ἥλιον, † ὅτι αὐτὸ μερίς σου ἐν τῇ ζωῇ σου, † καὶ ἐν τῷ μόχθῳ σου (ι) ᾧ σὺ μοχθεῖς ὑπὸ τὸν ἥλι-10 ον. † Πάντα ὅσα ἂν εὕρῃ ἡ χείρ σου τοῦ ποιῆσαι, ὡς ἡ δύναμίς σου ποίησον, † ὅτι οὐκ ἔστι ποίημα καὶ λογισμὸς καὶ γνῶσις καὶ σοφία † ἐν 11 ᾅδῃ, ὅπου σὺ πορεύῃ ἐκεῖ. † Ἐπέστρεψα καὶ εἶδον ὑπὸ τὸν ἥλιον, † ὅτι οὐ τοῖς κούφοις ὁ δρόμος, † καὶ οὐ τοῖς δυνατοῖς ὁ πόλεμος, † καί γε οὐ (κ) τῷ σοφῷ ἄρτος, † καί γε οὐ τοῖς συνετοῖς (λ) πλοῦτος, † καί γε οὐ τοῖς γινώσκουσι χάρις, † ὅτι καιρὸς καὶ ἀπάντημα συναντήσεται (μ) σύμπα-12 σιν αὐτοῖς. † Ὅτι καί γε καὶ οὐκ ἔγνω ὁ ἄνθρωπος τὸν καιρὸν αὐτοῦ, † ὡς οἱ ἰχθύες οἱ θηρευόμενοι ἐν ἀμφιβλήστρῳ κακῷ, † καὶ ὡς ὄρνεα τὰ θηρευόμενα ἐν παγίδι· † ὡς αὐτὰ παγιδεύονται οἱ υἱοὶ τοῦ ἀνθρώπου εἰς καιρὸν πονηρὸν, 13 † ὅταν ἐπιπέσῃ ἐπ' αὐτοὺς ἄφνω. † Καί γε τοῦτο εἶδον σοφίαν ὑπὸ τὸν ἥλιον, † καὶ μεγάλη ἐστὶ 14 πρὸς μέ· Πόλις μικρὰ καὶ ἄνδρες ἐν αὐτῇ ὀλίγοι, † καὶ ἔλθῃ ἐπ' αὐτὴν βασιλεὺς μέγας καὶ κυκλώσῃ αὐτὴν, † καὶ οἰκοδομήσῃ ἐπ' αὐτὴν 15 χάρακας μεγάλους· † Καὶ εὕρῃ ἐν αὐτῇ ἄνδρα πένητα (ν) σοφὸν, † καὶ διασώσῃ αὐτὸς τὴν πόλιν ἐν τῇ σοφίᾳ αὐτοῦ, † καὶ ἄνθρωπος οὐκ ἐμνήσθη 16 σὺν τοῦ ἀνδρὸς τοῦ πένητος ἐκείνου. † Καὶ εἶπα ἐγὼ, Ἀγαθὴ σοφία ὑπὲρ δύναμιν· † καὶ σοφία τοῦ πένητος ἐξουδενωμένη, † (ξ) καὶ οἱ λόγοι 17 αὐτοῦ οὐκ (ο) εἰσακουόμενοι. † Λόγοι σοφῶν ἐν ἀναπαύσει ἀκούονται † ὑπὲρ κραυγὴν ἐξουσιαζόντων ἐν ἀφροσύναις.

*Veni, comede in lætitia panem tuum, & bibe in (ζ) corde bono vinum tuum; quoniam jam complacuerunt Deo opera tua. In omni tempore sint vestimenta tua * candida: & oleum super caput tuum (ι) non desit. Et vide vitam cum muliere, quam dilexisti (l) omnibus diebus vitæ vanitatis tuæ, qui dati sunt tibi sub Sole: quia hoc est pars tua in vita tua, & in labore tuo, quo tu laboras sub Sole. Omnia, quæ (m) invenerit manus tua facere; prout virtus tua, fac: quia non est opus, & cogitatio, & scientia, & sapientia in inferno, quo tu vadis illuc. Converti me, & vidi sub Sole; quoniam non est velocibus cursus, nec potentibus (o) prælium, nec quidem (p) sapienti panis, nec quidem intelligentibus divitiæ, nec quidem scientibus gratia: quoniam tempus & eventus (q) occurret omnibus illis. Quia etiam nescit homo (r) tempus suum, sicut pisces, qui tenentur in reticulo (s) malo; & sicut volucres, quæ capiuntur in laqueo. Sicut ea, illaqueantur filii hominis in tempore malo: cum ceciderit super ipsos subito. Etiam hoc vidi, sapientiam sub Sole, & magna est (u) ad me. Civitas parva, & viri pauci in ea; & venit super eam rex magnus, & circundedit eam, & ædificavit adversus eam (x) aggeres magnos: Et invenit in ea virum pauperem sapientem: & salvavit hic civitatem in sapientia sua: & homo non recordatus est pauperis illius. Et dixi ego, Bona sapientia super potentiam: & sapientia pauperis (y) pro nihilo habita, & verba ejus non exaudita. Verba sapientum, (z) in quiete audiuntur super clamorem eorum, qui potestatem habent in stultitiis.*

MS. A. (η) ὅτι εὐδόκησεν (θ) ἐπὶ κεφαλὴν (ι) ὃ μοχθεῖς (κ) τοῖς σοφοῖς ὁ ἄρτος, (λ) ὁ πλοῦτος, (μ) τοῖς πᾶσιν αὐτοῖς. Καί γ ἔγνω (ν) καὶ σοφὸν, καὶ διασώσει (ξ) καὶ λόγοι (ο) εἰσὶν ἀκουόμενοι.

תרגום TARGUM.

7 אמר שלמה ברוח נבואה מן קדם יי עתיד מרי עלמא למימר לכל צדיקיא באנפי נפשיה
אזל טעום בחדוא לחמך דאתותב לך על לחמך די יהבתא לעניא ולחשיכא דהוי כפן
ושתי בלב טב חמרא דאצטנע לך בגן עדן חלף חמרך דמזגתא לעניא וחשיכא דהוי צחי
8 ארום הא כבר אתרעית קדם יי עובדך טבא: בכל עדן יהוין כסותך חורין מן כל סואבות
חובתא ושמא טבא דמתיל למשח רבותא קני בגין די ימטון ברכן על רישך וטיבותך
9 אל יחסר: חוי חיין טבין עם אתתא דרחמתא כל יומי חיי הבלותך די יהב יי לך במולא
בעלמא הדין תחות שמשא ארום היא חולקך בחיין ובטורחותך די אנת טרחתא
10 בעלמא הדין תחות שמשא: כל די מספקא ידך למעבד טיבו וצדקתא עם מסכינא בכל
חילך עבד ארום בתר מותא לית לגבר עובדא וחושבנא ומנדעא וחוכמתא בבית
11 קבורתא דאת אזל תמן ולא יסיעון לך אלהן עובדין טבין וצדקתא בלחודיהון: אמר
שלמה מלכא כד הויתי יתב על כורסי מלכותי הוה אסתכלית וחזית בעלמא הדין
תחות שמשא ארום לא גוברין דאנון קלילין כנשרין מסתיעין למרהט לאשתיזבא מן
מותא בקרבא ולא גבריא מסתיעין באגחותהון קרבא בגבורתהון ואף לא חכימיא
מסתיעין בחוכמתהון למסבע לחמא בעדן כפנא ואף לא סוכלתנין מסתיעין
בסוכלתנותהון למכנוש עתרא ואף לא ידעי בינה מסתיעין במנדעותהון למשכח
12 רחמין בעיני מלכא ארום עדן וערעיתא במזלהון יערע ית כולהון: ארום אף לא
אשתמודע לגבר ית זמניה בין טב לביש מן מה דעתיד למהוי בעלמא ולמיתי עלוי
כנוני ימא דמתאחדין בחכא וכצפרי שמיא דמתאחדין בקולא כותהון מתקלין בני
13 אנשא לזמן בישתא דאתעתדת למהוי נפלא עליהון רגעא חדא משמיא: אף דין חזיתי
14 דהיא חוכמתא בעלמא הדין תחות שמשא ורבתא היא לותי: גוף בר נשא דמתיל
לקרתא זעירתא ונברין גברי חילא זעיר בגוה היכמה דקלילן זכותיה בגו לבא דאנשא
ויעול לות גופא יצרא בישא דמתיל למלך רב תקיף לאתכנעא ואסחר ית לבא למטעי
יתיה ובנא עלוהי אתר למתב על די יצבי לאסטיותיה מן אורחן דתקנן קדם יי לאחדא
15 יתיה במצודין רברבין דגהנם לאדלקותיה שבע זמנין על חובוהי: ואשתכח בגו גוף
יצרא טבא מכיך וחכים ואתגבר עלוהי וכבש יתיה בחוכמתיה ושיזיב ית גופא מן דינא
דגהנם בתוקפיה ובחוכמתיה היכמא דגברא עבד לקרבא משיזב יתבי קרתא בחוכמת
לבביה ואנש לא דכר בתר כן ליצרא טבא דשיזביה אלהן יימר בלבביה זכאה אנא
16 היכמה דיתבי קרתא ההיא לא דכירו ית עניא ההוא דשיזיב יתהון: ואמרית אנא
במימרי טבא חכמת צדיקיא מכח גבורת רשיעיא דחוכמת צדיקיא וזכותיה משיזבא
ליה ולאנשי דריה ותקוף רשיעא דקאים בתוקפיה דלביה בדיל דלא למהדר בתיובתא
מחבלא ליה בלחודוהי וחוכמת צדיקא ועניא מודלזלא בעיני רשיעי דריה ובעדן דיוכח
17 יתהון על עובדיהון בישיא ופתגמי אוכחותיה ליתנון מקבלין: מלי דצלותא דחכימיא
בחשי מתקבלין קדם מרי עלמא יתיר מקבלת רשיעא דהוא שליט על שטיין דפנין ולית מקבל:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Dixit Selomoh in spiritu prophetiæ à conspectu Domini: Futurū est ut Dominus mundi dicat singulis justis in facie uniuscujusque: Vade gusta in lætitia panem tuum, qui repositus est tibi propter panem tuum quem dedisti pauperi & humili qui erat esuriens, & bibe in corde jucundo vinum quod *reconditum est tibi in paradiso,* pro vino tuo quod miscuisti pauperi & humili qui *fuit sitiens*: ecce enim jam beneplacita fuere ante Dominum opera tua bona. In omni tempore sint vestes tuæ lotæ ab omni contaminatione peccati: & nomen bonum quod assimilatur unguento tibi acquire, ut contingant benedictiones super caput tuum, & bonitas tua non deficiat. Fruere vita bona cum uxore quàm amâsti omnibus diebus vitæ vanitatis tuæ quos dederit tibi Dominus *ex providentia in hoc mundo sub Sole*, quia hæc est pars tua in vita tua & in labore tuo quo tu laboras in mundo hoc sub Sole. Omne quod suppeditaverit man⁹ tua ad faciendum bo*num & eleemosynam* pauperi, *omnibus viribus tuis* facito: etenim post mortem non est viro opus, aut cogitatio vel scientia, aut sapientia in domo sepulchri quò tu vadis, & non adjuvabunt te, nisi opera bona & justitia tantummodo. *Dixit Selomoh rex, Cum sederem super solium regni mei,* contemplatus sum & vidi in seculo hoc sub Sole, quòd nec viri qui veloces fuerint sicut aquilæ adjuti sunt currendo ut eriperentur à morte in prælio, neq; robusti adjuvantur dum ineunt prælium robore suo, nec sapientes adjuvantur sapientia sua ut satientur pane in tempore famis, neq; etiam intelligentes adjuvantur intelligentia sua ad congregandas divitias, neq; scientes prudentiā juvantur scientiis suis ad inveniendā gratiā in oculis regis: quoniā temp⁹ & event⁹ *pro sorte eorum* accidet omnib⁹ his. Etenim non notū est viro tempus suum tam bonū quàm malum ex eo quod futurum est in seculo & venturū super eū: sicut pisces maris qui capiuntur hamo & ut aves cœlorū quæ comprehenduntur laqueo, sic illaqueantur filii hominis in tempore mali, quod ruiturū est super eos puncto uno cœlitus. Etiam hoc vidi quod est sapientia in seculo hoc sub Sole, & magna quidem est mihi. Corpus filii hominis quod simile est civitati parvæ, & viri pauci exigua virtute in medio ipsi⁹, ecce cùm leves fuerint justitiæ in medio cordis hominis, intrabit in corpus concupiscentia mala, quæ assimilatur regi magno & robusto, ad opprimendum, & obsidet cor ut errare faciat & ædificat in illo locum ad sedendū ubicunque voluerit, ut declinare faciat illud à viis quæ rectæ sūt ante Dñm, ad cōprehendendū illud in retibus magnis gehennæ ut comburat eū *septies* propter peccata sua. Invent⁹ est in medio corporis affect⁹ bon⁹ humilis & sapiens, & prævaluit super illud, subjecit illud sapientia sua, & eripuit corp⁹ à judicio gehennæ robore & sapientia sua, sicut vir faciens præliū liberat habitatores urbis sapientia cordis sui, & homo non recordatur posteà affectus boni qui liberavit eum, sed dicit in corde suo, Innocens ego sum, sicut etiā habitatores urbis non recordati sunt humilis illius qui liberavit eos. Et dixi ego in dicto meo: Melior est sapientia *justorum,* quàm vis fortitudinis *improborum, quia sapi*entia justi et meritum ejus liberat eum & homines generationis *ejus;* robur impii, qui perstat in obfirmatione cordis sui ut non convertatur in pœnitentiā, perdat ipsum solum: & sapientia justi & pauperis vilipenditur in oculis improborum generationis ejus, & in tempore quo corripit eos propter opera eorum mala, verba correptionis illius non *suscipiunt.* Verba orationis sapientum in silentio suscipiuntur ante Dominum mundi, quā clamor improbi qui imperat stultis clamantib⁹, & non est qui

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܙܠ ܐܟܘܠ ܒܚܕܘܬܐ ܠܚܡܟ. ܘܐܫܬܝ ܒܠܒܐ ܛܒܐ ܚܡܪܟ. ܡܛܠ ܕܐܬܪܥܝ ܐܠܗܐ
ܒܥܒܕܝܟ. * ܒܟܠܙܒܢ ܢܗܘܘܢ ܡܐܢܝܟ ܚܘܪܐ. ܘܡܫܚܐ ܥܠ ܪܫܟ ܠܐ ܢܚܣܪ. 8
* ܘܚܙܝ ܚܝܐ ܥܡ ܐܢܬܬܐ ܕܪܚܡܬ. ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܝ ܚܝܝ ܗܒܠܟ. ܡܛܠ ܕܗܘ ܗܘ 9
ܡܢܬܟ ܒܚܝܐ. ܘܒܥܡܠܟ ܕܐܢܬ ܥܡܠ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܟܠ ܕܡܫܟܚܐ ܐܝܕܟ 10
ܠܡܥܒܕ ܒܚܝܠܟ ܥܒܕ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܥܒܕܐ ܘܚܘܫܒܢܐ. ܘܝܕܥܬܐ ܘܚܟܡܬܐ.
ܒܫܝܘܠ ܕܐܢܬ ܐܙܠ ܠܬܡܢ. * ܗܦܟܬ ܘܚܙܝܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܕܠܐ ܠܩܠܝܠܐ 11
ܪܗܛܐ. ܘܠܐ ܠܓܢܒܪܐ ܩܪܒܐ. ܘܠܐ ܠܚܟܝܡܐ ܠܚܡܐ. ܘܠܐ ܠܣܘܟܠܬܢܐ ܥܘܬܪܐ. ܘܠܐ
ܠܝܕܘܥܬܢܐ ܛܝܒܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܙܒܢܐ ܘܦܓܥܐ ܦܓܥ ܒܟܠܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ 12
ܒܪܢܫܐ ܙܒܢܗ. ܐܝܟ ܢܘܢܐ ܕܡܬܬܨܝܕܝܢ ܒܡܨܝܕܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܝܟ ܨܦܪܐ ܕܡܬܐܚܕܝܢ ܒܦܚܐ.
ܗܟܢܐ ܡܬܬܨܝܕܝܢ ܒܢܝܢܫܐ ܒܙܒܢܐ ܒܝܫܐ ܕܢܦܠ ܥܠܝܗܘܢ ܡܢ ܫܠܝ. * ܘܐܦ ܗܕܐ ܚܙܝܬ 13
ܚܟܡܬܐ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܘܪܒܐ ܗܝ ܠܘܬܝ. * ܡܕܝܢܬܐ ܙܥܘܪܬܐ. ܘܐܢܫܐ ܒܓܘܗ ܙܥܘܪܝܢ. 14
ܘܐܬܐ ܥܠܝܗ ܡܠܟܐ ܪܒܐ ܘܐܚܕܗ. ܘܒܢܐ ܥܠܝܗ ܟܠܩܘܡܝܢܐ. * ܘܐܫܟܚ ܒܗ ܓܒܪܐ 15
ܡܣܟܢܐ ܚܟܝܡܐ. ܘܦܨܝܗ ܗܘ ܡܣܟܢܐ ܠܡܕܝܢܬܐ ܒܚܟܡܬܗ. ܘܐܢܫ ܠܐ ܐܬܕܟܪ
ܠܓܒܪܐ ܗܘ ܡܣܟܢܐ. * ܘܐܡܪܬ ܐܢܐ. ܕܛܒܐ ܗܝ ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܓܢܒܪܘܬܐ. ܘܚܟܡܬܗ 16
ܕܡܣܟܢܐ ܫܝܛܐ ܗܝ. ܘܡܠܘܗܝ ܠܐ ܡܫܬܡܥܝܢ. * ܘܡܠܐ ܕܚܟܝܡܐ ܒܢܝܚܐ 17
ܡܫܬܡܥܢ. ܡܢ ܩܥܬܐ ܕܫܠܝܛܐ ܣܟܠܐ.

Agedum comede cum lætitia panem tuum, 7
& vinum tuum bono animo bibe, quia Deo
placent opera tua. Omni tempore candi- 8
dæ ſint veſtes tuæ, & unguentum capiti tuo
ne deſit. Et fruere vitâ cum uxore quam di- 9
ligis, cunctis diebus frivolæ vitæ tuæ: hæc eſt
enim pars tua in vita tua, & in labore tuo quo
ſub ſole fatigaris. Quicquid operari poteſt 10
manus tua, dum polles viribus, facito: quia
nec opus, nec ratio, nec ſcientia, nec ſapien-
tia eſt in inferno, ad quem tendis. Conver- 11
ſus deprehendi ſub ſole, quòd neque velo-
cium ſit curſus, neque bellum robuſtorum,
neque ſapientum panis, neque prudentum di-
vitiæ, neque peritorum gloria: *tum* quia
tempus & fortuna omnibus accidit: Tum 12
quia ignorat homo tempus ſuum. Ut piſces
qui capiuntur ſagenâ improbâ & ut aves quæ
capiuntur laqueo, ita capiuntur homines tem-
pore infauſto quod extemplò ruit in ipſos.
Hanc etiam vidi ſapientiam ſub ſole, & maxi- 13
ma quidem eſt apud me. Urbs erat parva, & 14
homines in ea pauci: hanc invaſit rex magn⁹,
& obſedit eam, & extruxit adverſùs eam
aggeres: Repertus eſt autem in ea vir pau- 15
per ſapiens, qui pauper liberavit ſuâ ſa-
pientiâ urbem illam; nemo tamen recor-
datus eſt viri illius pauperis. Unde dixi ego 16
meliorem eſſe ſapientiam fortitudine, & ſa-
pientiam pauperis eſſe deſpectam, ejúſque
ſermones minimè audiri: Et verba ſapien- 17
tum pacatiùs audiri, quam clamorem prin-
cipis ſtulti.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* تعال كل خبزك بفرح واشرب خمرك بقلب صالح ٭ فان الله قد ارتضى صنايعك * في 7 8
كل اوان فلتكن ثيابك بيضا ٭ ولا يعوزن راسك زيتا ينصب عليه * وابصر حياتك 9
مع الامراة التي احببتها كافة ايام حياة بطالتك ٭ الايام التي منحتها تحت الشمس ٭
جميع ايام باطلك ٭ فان هذا حظك في حياتك وفي تعبك الذي تتعبه انت تحت
الشمس * كلما عسى تجده يدك ٭ ذاك تعمله اعمل بطبر قوتك ٭ فان الجحيم ليست فيه 10
صناعة ولا فكر ولا علم ولا حكمة ٭ حيث تمضي انت هناك * التفتّ فعرفت تحت الشمس 11
ان السعي ليس للاخفاء ٭ ولا الحرب للاقوياء ٭ ولعمري ولا الخبز للحكماء ٭ لا الغنا للفقهاء ٭ ولا
المنة للعلماء ٭ لان الوقت والاتفاق يلقاهم كلهم * وبالحقيقة فما يعرف الانسان وقته ٭ كالسمك 12
المصيد في شبكة ردية ٭ وكالطير المصيد من فخ ٭ مثل هذا تقتنص ابناء الناس في
وقت خبيث شرير ٭ اذا سقط عليهم بغتة * وهذا لعمري عرفته حكمة تحت الشمس ٭ وهي 13
لدي عظيمة * ان مدينة لطيفة فيها ناس قليل ٭ فوافى اليها ملك عظيم ٭ فاحاط بها وابتنا 14
عليها فصيلا برحبة عظيمة * فوجد فيها رجلا حكيما فقيرا ٭ فسلم ذاك المدينة وخلصها 15
بحكمته ٭ ولم يذكر انسان فقه ذلك الرجل الفقير * فقلت انا الحكمة صالحة افضل من 16
القوة ٭ وحكمة الفقير مرفوضة ٭ وكلماته ليست مسموعة * اقوال الحكماء تسمع بنياحة 17
اكثر من هتاف ذوي السلطان في مسارهم ٭

Veni, comede panem tuum cum hilari- 7
tate, & bibe vinum tuum bono animo,
quoniam Deus jam approbavit opera tua.
Quovis tempore candida ſint veſtimenta 8
tua, neque careat caput tuum oleo ſuper
ipſum fundendo. Et fruere vitâ tuâ 9
cum uxore quam diligis, cunctis die-
bus vitæ vanitatis tuæ, diebus inquam
qui tibi conceſſi ſunt ſub ſole, cunctis
diebus vanitatis tuæ; quum hæc ſit por-
tio tua in vita tua, & in labore tuo
quo laboras ſub ſole. Quicquid fortè 10
manui tuæ occurrit agendum, ipſum agi-
to pro virili tuo; nam nulla eſt ars,
neque cogitatio, neque ſcientia, neque
ſapientia in inferno, quò tu es iturus.
Convertens me deprehendi ſub ſole cur- 11
ſum non eſſe levium, neque fortium
prælium, imò nec panem quidem ſa-
pientum, nec opes prudentum, nec eru-
ditorum gratiam: quoniam opportuni-
tas & fortuna his omnibus contingit.
Et reverà neſcit homo ſuam opportu- 12
nitatem. Ut piſces reti noxio capti,
utque volucres laqueo capti, ſic illa-
queantur filii hominum ſiniſtro adver-
ſóque tempore, quum in eos irruit ex
improviſo. Et hoc ſanè ſapientiam eſſe 13
deprehendi ſub ſole, eámque apud me
maximam: Quòd nimirum *urbs quæ-* 14
dam erat elegans, paucis frequens ho-
minibus: ad hanc accedens rex ma-
gnus, obſedit eam, & murum adver-
ſùs eam extruxit in vaſtiſſima platea.
Inventus eſt autem in ea vir quidam 15
ſapiens, pauper; atque is urbem eri-
puit ac liberavit ſuâ ſapientiâ: nemo
tamen recordatus eſt prudentiam homi-
nis illius pauperis. Quapropter ego 16
dixi ſapientiam meliorem ac præſtan-
tiorem eſſe robore, ſed ſapientiam pau-
peris eſſe abjectam, ejúſque verba non
audiri. Sermones ſapientum audiun- 17
tur majore cum tranquillitate, quàm
clamor poteſtate præditorum in concla-
vi ſuo.

קהלת : ט

bono corde in bibe & , tuum panem gaudio in comede , Vade
7 לֵךְ אֱכֹל בְּשִׂמְחָה לַחְמֶךָ וּשְׁתֵה בְלֶב־טוֹב
omni In . tua opera Deus voluit jam quia : tuum vinum
8 יֵינֶךָ כִּי כְבָר רָצָה הָאֱלֹהִים אֶת־מַעֲשֶׂיךָ׃ בְּכָל־
tuum caput super oleum & : candida tua vestimenta sint tempore
עֵת יִהְיוּ בְגָדֶיךָ לְבָנִים וְשֶׁמֶן עַל־רֹאשְׁךָ
omnibus dilexisti quam , uxore cum vitas Vide .deficiat non
9 אַל־יֶחְסָר׃ רְאֵה חַיִּים עִם־אִשָּׁה אֲשֶׁר־אָהַבְתָּ כָּל־
sole sub tibi dedit quos tuæ vanitatis vitarum diebus
יְמֵי חַיֵּי הֶבְלֶךָ אֲשֶׁר נָתַן־לְךָ תַּחַת הַשֶּׁמֶשׁ
,tuo labore in & vitis in tua pars hoc quia:tuæ vanitatis dieb⁹ omnibus
כֹּל יְמֵי הֶבְלֶךָ כִּי הוּא חֶלְקְךָ בַּחַיִּים וּבַעֲמָלְךָ
invenerit quod Omne .sole sub laborans tu quo
10 אֲשֶׁר־אַתָּה עָמֵל תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ׃ כֹּל אֲשֶׁר תִּמְצָא
, opus non quia : fac tua virtute in faciendum ad tua manus
יָדְךָ לַעֲשׂוֹת בְּכֹחֲךָ עֲשֵׂה כִּי אֵין מַעֲשֶׂה
.illuc vadens tu quo sepulchro in sapiẽtia &,sciẽtia &,cõputatio &
וְחֶשְׁבּוֹן וְדַעַת וְחָכְמָה בִּשְׁאוֹל אֲשֶׁר אַתָּה הֹלֵךְ שָׁמָּה׃
nec , cursus levium non quòd , sole sub videre &,sum Cõversus
11 שַׁבְתִּי וְרָאֹה תַחַת־הַשֶּׁמֶשׁ כִּי לֹא לַקַּלִּים הַמֵּרוֹץ וְלֹא
non etiam & ,panis sapientium non etiam & , bellum fortium
לַגִּבּוֹרִים הַמִּלְחָמָה וְגַם לֹא לַחֲכָמִים לֶחֶם וְגַם לֹא
occursus & tempus sed .gratia scientium non etiam & ,opulentia prudentium
לַנְּבֹנִים עֹשֶׁר וְגַם לֹא לַיֹּדְעִים חֵן כִּי־עֵת וָפֶגַע
: suum tempus homo sciet non etiam Quia .ipsis omnibus accidet
12 יִקְרֶה אֶת־כֻּלָּם׃ כִּי גַּם לֹא־יֵדַע הָאָדָם אֶת־עִתּוֹ
;laqueo in captæ aves sicut & ,malo reti in capiuntur qui pisces sicut
כַּדָּגִים שֶׁנֶּאֱחָזִים בִּמְצוֹדָה רָעָה וְכַצִּפֳּרִים הָאֲחֻזוֹת בַּפָּח
ceciderit quod secundùm,malo tempore in hominum filii irretiti ipsi sicut
כָּהֵם יוּקָשִׁים בְּנֵי הָאָדָם לְעֵת רָעָה כְּשֶׁתִּפּוֹל
: sole sub sapientiam vidi hanc Etiam .repentè eos super
13 עֲלֵיהֶם פִּתְאֹם׃ גַּם־זֹה רָאִיתִי חָכְמָה תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ
venit & : parum ea in virorum & , parva Civitas .me ad ipsi magna &
14 וּגְדוֹלָה הִיא אֵלָי׃ עִיר קְטַנָּה וַאֲנָשִׁים בָּהּ מְעָט וּבָא־
eam super extruxit & , eam circundedit & ,magnus rex eam adversus
אֵלֶיהָ מֶלֶךְ גָּדוֹל וְסָבַב אֹתָהּ וּבָנָה עָלֶיהָ
,sapiens pauper vir ea in est inventus Et .magnas munitiones
15 מְצוֹדִים גְּדֹלִים׃ וּמָצָא בָהּ אִישׁ מִסְכֵּן חָכָם
est recordatus non homo & : sua sapientia in urbem ipse eruit &
וּמִלַּט־הוּא אֶת־הָעִיר בְּחָכְמָתוֹ וְאָדָם לֹא זָכַר
sapientiam bonam , ego dixi Et .illius pauperis viri
16 אֶת־הָאִישׁ הַמִּסְכֵּן הַהוּא׃ וְאָמַרְתִּי אָנִי טוֹבָה חָכְמָה
.stultos in dominantis clamor quam : audiuntur quiete in sapientum Verba .audita ipsa non ejus verba & , contempta pauperis sapientia & , fortitudine præ
17 מִגְּבוּרָה וְחָכְמַת הַמִּסְכֵּן בְּזוּיָה וּדְבָרָיו אֵינָם נִשְׁמָעִים׃ דִּבְרֵי חֲכָמִים בְּנַחַת נִשְׁמָעִים מִזַּעֲקַת מוֹשֵׁל בַּכְּסִילִים׃

Versio VUL.LAT.

7 Vade ergò & comede in lætitia panẽ tuũ, & bibe cum gaudio vinũ tuũ: quia Deo placent 8 opera tua. Omni tempore sint vestimenta tua candida, et oleũ 9 de capite tuo non deficiat. Perfuere vitâ cum uxore, quam diligis, cunctis dieb⁹ vitæ instabilitatis tuæ, qui dati sunt tibi sub Sole omni tempore vanitatis tuæ: hæc est enim pars in vita, & in labore tuo, quo laboras 10 sub Sole. Quodcumque facere potest man⁹ tua, instanter operare: quia nec opus, nec ratio, nec sapientia, nec scientia erũt apud inferos, quò tu properas. 11 Verti me ad aliud, & vidi sub Sole, nec velociũ esse cursum, nec fortiũ bellum, nec sapientiũ panẽ, nec doctorũ divitias, nec artificũ gratiã, sed tempus, 12 casúmque in omnibus. Nescit homo finẽ suũ: sed sicut pisces capiuntur hamo, & sicut aves laqueo comprehenduntur, sic capiuntur homines in tempore malo, cùm eis extemplò super13venerit. Hanc quoq; sub Sole vidi sapientiã, & probavi ma14ximã: Civitas parva, & pauci in ea viri: venit contra eã rex magn⁹, & vallavit eam, extruxitque munitiones per gyrum, 15 & perfecta est obsidio. Inventúsque est in ea vir pauper & sapiens, & liberavit urbem per sapientiam suam, & nullus deinceps recordatus est hominis 16 illius pauperis. Et dicebam ego, meliorem esse sapientiam fortitudine: quomodò ergo sapientia pauperis contempta est, & verba ejus non sunt au17dita? Verba sapientium audiuntur in silentio, plusquam clamor principis inter stultos.

Versio GRÆC. LXX Interp. cum Transl. LAT.

7 † Δεῦρο φάγε ἐν εὐφροσύνῃ τὸν ἄρτον σου, † καὶ πίε ἐν καρδίᾳ ἀγαθῇ οἶνόν σου, † (η) ὅτι ἤδη εὐ8δόκησεν ὁ Θεὸς τὰ ποιήματά σου. † Ἐν παντὶ καιρῷ ἔστωσαν ἱμάτιά σου λευκά, καὶ ἔλαιον (θ) 9 ἐπὶ κεφαλῆς σου μὴ ὑστερησάτω. † Καὶ ἴδε ζωὴν μετὰ γυναικὸς ἧς ἠγάπησας † πάσας τὰς ἡμέρας ζωῆς ματαιότητός σου, τὰς δοθείσας σοι ὑπὸ τὸν ἥλιον, † ὅτι αὐτὸ μερίς σου ἐν τῇ ζωῇ σου, † καὶ ἐν τῷ μόχθῳ σου (ι) ᾧ σὺ μοχθεῖς ὑπὸ τὸν ἥλι10ον. † Πάντα ὅσα ἂν εὕρῃ ἡ χείρ σου τοῦ ποιῆσαι, ὡς ἡ δύναμίς σου ποίησον, † ὅτι οὐκ ἔστι ποίημα καὶ λογισμὸς καὶ γνῶσις καὶ σοφία † ἐν 11 ᾅδῃ, ὅπου σὺ πορεύῃ ἐκεῖ. † Ἐπέστρεψα καὶ εἶδον ὑπὸ τὸν ἥλιον, † ὅτι οὐ τοῖς κούφοις ὁ δρόμος, † καὶ οὐ τοῖς δυνατοῖς ὁ πόλεμος, † καίγε οὐ (κ) τῷ σοφῷ ἄρτος, † καίγε οὐ τοῖς συνετοῖς (λ) πλοῦτος, † καίγε οὐ τοῖς γινώσκουσι χάρις, † ὅτι καιρὸς καὶ ἀπάντημα συναντήσεται (μ) σύμπα12σιν αὐτοῖς. † Ὅτι καίγε καὶ οὐκ ἔγνω ὁ ἄνθρωπος τὸν καιρὸν αὐτοῦ, † ὡς οἱ ἰχθύες οἱ θηρευόμενοι ἐν ἀμφιβλήστρῳ κακῷ, † καὶ ὡς ὄρνεα τὰ θηρευόμενα ἐν παγίδι· † ὡς αὐτὰ παγιδεύονται οἱ υἱοὶ τοῦ ἀνθρώπου εἰς καιρὸν πονηρόν, 13 † ὅταν ἐπιπέσῃ ἐπ' αὐτοὺς ἄφνω. † Καίγε τοῦτο εἶδον σοφίαν ὑπὸ τὸν ἥλιον, † καὶ μεγάλη ἐστὶ 14 πρὸς μέ· Πόλις μικρὰ καὶ ἄνδρες ἐν αὐτῇ ὀλίγοι, † καὶ ἔλθῃ ἐπ' αὐτὴν βασιλεὺς μέγας καὶ κυκλώσῃ αὐτήν, † καὶ οἰκοδομήσῃ ἐπ' αὐτὴν 15 χάρακας μεγάλους· † Καὶ εὕρῃ ἐν αὐτῇ ἄνδρα πένητα (ν) σοφόν, † καὶ διασώσῃ αὐτὸς τὴν πόλιν ἐν τῇ σοφίᾳ αὐτοῦ, † καὶ ἄνθρωπος οὐκ ἐμνήσθη 16 σὺν τοῦ ἀνδρὸς τοῦ πένητος ἐκείνου. † Καὶ εἶπα ἐγώ, Ἀγαθὴ σοφία ὑπὲρ δύναμιν· † καὶ σοφία τοῦ πένητος ἐξουδενωμένη, † (ξ) καὶ οἱ λόγοι 17 αὐτοῦ οὐκ (ο) εἰσακουόμενοι. † Λόγοι σοφῶν ἐν ἀναπαύσει ἀκούονται † ὑπὲρ κραυγὴν ἐξουσιαζόντων ἐν ἀφροσύναις.

*Veni, comede in lætitia pan tuum, & bibe in (g) corde bo vinum tuum; quoniam jam complacuerunt Deo opera tua In omni tempore sint vestimenta tua * candida: & oleum sup caput tuum (i) non desit. E vide vitam cum muliere, quam dilexisti (l) omnibus diebus tæ vanitatis tuæ, qui dati sunt tibi sub Sole: quia hoc est pa tua in vita tua, & in labo tuo, quo tu laboras sub S Omnia, quæ (m) invenerit ma nus tua facere; prout virtu tua, fac: quia non est opus, & cogitatio, & scientia, & sa entia in inferno, quò tu vadis illuc. Converti me, & vi sub Sole; quoniam non est velocibus cursus, nec potentibus (o) prælium, nec quidem (p) sapienti panis, nec quidem intelligentibus divitiæ, nec quidem scientibus gratia: quoniam tempus & eventus (q) occurret omnibus illis. Quia etiam ne homo (r) tempus suum, quasi pisces, qui tenentur in re culo (s) malo; & sicut a ves, quæ capiuntur in laque Sicut ea, illaqueantur filii hominis in tempore malo: cum ceciderit super ipsos sub Etiam hoc vidi, sapientiam su Sole, & magna est (u) ad me. Civitas parva, & viri pau in ea; & venit super eam re magnus, & circundedit eam & ædificavit adversus eam (x) aggeres magnos: Et venit in ea virum pauperem sa pientem: & salvavit hic ci vitatem in sapientia sua: & homo non recordatus est vi pauperis illius. Et dix. eg Bona sapientia super potentiam: & sapientia pauperis (y) pro nihilo habi & verba ejus non exaudita. Verba sapientum, (z) in quiete audiuntur per clamorem eorum, qui potestatem habent in stultitiis.*

MS.A. (η) ὅτι εὐδόκησεν (θ) ἐπὶ κεφαλὴν (ι) ᾧ μοχθεῖς (κ) τοῖς σοφοῖς ὁ ἄρτος, (λ) ὁ πλοῦτος, (μ) τοῖς πᾶσιν αὐτοῖς. Καί γε ἔγνω (ν) καὶ σοφόν, καὶ διασώσει (ξ) καὶ λόγοι (ο) εἰσὶν ἀκουόμενοι.

תרגום TARGUM.

7 אמר שלמה ברוח נבואה מן קדם יי עתיד מרי עלמא למימר לכל צדיקיא באנפי נפשיה
אזל טעום בחדוא לחמך דאתותב לך על לחמך די יהבתא לעניא ולחשיכא דהוי כפן
ושתי בלב טב חמרא דאצטנע לך בגן עדן חלף חמרך דמזגתא לעניא וחשיכא דהוי צחי
8 ארום הא כבר אתרעית קדם יי עובדך טבא: בכל עדן יהוין כסותך חורין מן כל סואבות
חובתא ושמא טבא דמתיל למשח רבותא קני בגין די ימטון ברכן על רישך וטיבותך
9 אל יחסר: חזי חיין טבין עם אתתא דרחמתא כל יומי חיי הבלותך די יהב יי לך במזלא
בעלמא הדין תחות שמשא ארום היא חולקך בחיין ובטורחותך די אנת טרחתא
10 בעלמא הדין תחות שמשא: כל די מספקא ידך למעבד טיבו וצדקתא עם מסכינא בכל
חילך עבד ארום בתר מותא לית לגבר עובדא וחושבנא ומנדעא וחוכמתא בבית
11 קבורתא דאת אזל תמן ולא יסיעון לך אלהן עובדין טבין וצדקתא בלחודיהון: אמר
שלמה מלכא כד הויתי יתב על כורסי מלכותי הוה אסתכלית וחזית בעלמא הדין
תחות שמשא ארום לא גוברין דאנון קלילין כנשרין מסתיען למרהט לאשתיזבא מן
מותא בקרבא ולא גבריא מסתיעין באגחותהון קרבא בגבורתהון ואף לא חכימיא
מסתיעין בחוכמתהון למסבע לחמא בעדן כפנא ואף לא סוכלתנין מסתיעין
בסוכלתנותהון למכנוש עתרא ואף לא ידעי בינה מסתיעין במנדעותהון למשכח
12 רחמין בעיני מלכא ארום עדן וערעיתא במזלהון יערע ית כולהון: ארום אף לא
אשתמודע לגבר ית זמניה בין טב לביש מן מה דעתיד למהוי בעלמא ולמיתי עלוי
כנוני ימא דמתאחדין בחכא וכצפרי שמיא דמתאחדין בקולא כותהון מתקלין בני
13 אנשא לזמן בישתא דאתעתדת למהוי נפלא עליהון רגעא חדא משמיא: אף דין חזיתי
14 דהיא חוכמתא בעלמא הדין תחות שמשא ורבתא היא לותי: גוף בר נשא דמתיל
לקרתא זעירתא וגברין גברי חילא זעיר בגוה היכמה דקלילן זכותיה בגו לבא דאנשא
ויעול לות גופא יצרא בישא דמתיל למלך רב תקיף לאתכנעא ואסחר ית לבא למטעי
יתיה ובנא עלוהי אתר למתב על די יצבי לאסטיותיה מן אורחן דתקנן קדם יי לאחדא
15 יתיה במצודין רברבין דגהנם לאדלקותיה שבע זמנין על חובוהי: ואשתכח בגו גוף
יצרא טבא מכיך וחכים ואתגבר עלוהי וכבש יתיה בחוכמתיה ושיזיב ית גופא מן דינא
דגהנם בתוקפיה ובחוכמתיה היכמא דגברא עבד לקרבא משיזב יתבי קרתא בחוכמת
לבביה ואנש לא דכר בתר כן ליצרא טבא דשיזביה אלהן יימר בלבביה זכאה אנא
16 היכמה דיתבי קרתא ההיא לא דכירו ית עניא ההוא דשיזיב יתהון: ואמרית אנא
במימרי טבא חכמת צדיקיא מכח גבורת רשיעיא דחוכמת צדיקיא וזכותיה משיזבא
ליה ולאנשי דריה ותקוף רשיעא דקאם בתוקפיה דלביה בדיל דלא למהדר בתיובתא
מחבלא ליה בלחודוהי וחוכמת צדיקא ועניא מזדלזלא בעיני רשיעי דריה ובעדן דיוכח
17 יתהון על עובדיהון בישיא ופתגמי אוכחותיה ליתנון מקבלין: מלי דצלותא דחכימיא
בחשי מתקבלין קדם מרי עלמא יתיר מקבלת רשיעא דהוא שליט על שטיין דפנין ולית מקבל:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Dixit Selomoh in spiritu prophetiæ à conspectu Domini: Futurũ est ut D minus mundi dicat singulis justis in facie uniuscujusque: Vade gusta in læ tia panem tuum, qui repositus est tibi propter panem tuum quem ded pauperi & humili qui erat esuriens, & bibe in corde jucundo vinum q *reconditum est tibi in paradiso,* pro vino tuo quod miscuisti pauper humili qui *fuit sitiens*: ecce enim jam beneplacita fuere ante Domin opera tua bona. In omni tempore sint vestes tuæ lotæ ab omni conta natione peccati: & nomen bonum quod assimilatur unguento unctio tibi acquire, ut contingant benedictiones super caput tuum, & bon tua non deficiat. Fruere vita bona cum uxore quàm amâsti omnibus die vitæ vanitatis tuæ quos dederit tibi Dominus *ex providentia in hoc m sub Sole*, quia hæc est pars tua in vita tua & in labore tuo quo tu labora mundo hoc sub Sole. Omne quod suppeditaverit man⁹ tua ad faciend *num* & eleemosynam pauperi, *omnibus viribus tuis* facito: etenim p mortem non est viro opus, aut cogitatio vel scientia, aut sapientia in do sepulchri quò tu vadis, & non adjuvabunt te, nisi opera bona & justitia tummodo. *Dixit Selomoh rex, Cum sederem super solium regni mei,* contemplatus sum & vidi in seculo hoc sub Sole, quòd nec viri qui vel fuerint sicut aquilæ adjuti sunt currendo ut eriperentur à morte in præ neq; robusti adjuvantur dum ineunt prælium robore suo, nec sapientes a vantur sapientia sua ut satientur pane in tempore famis, neq; etiam in gentes adjuvantur intelligentia sua ad congregandas divitias, neq; e scientes prudentiã juvantur scientiis suis ad inveniendã gratiã in ocul gis: quoniã temp⁹ & event⁹ *pro sorte eorum* accidet omnib⁹ his. Etenim notũ est viro tempus suum tam bonũ quàm malum ex eo quod futurum in seculo & venturũ super eũ: sicut pisces maris qui capiuntur *hamo* & ut aves cœlorũ quæ comprehenduntur laqueo, sic illaqueantur filii ho nis in tempore mali, quod ruiturũ est super eos puncto uno cœlitus. E hoc vidi quod est sapientia in seculo hoc sub Sole, & magna quidem est mihi. Corpus filii hominis quod simile est civitati parvæ, & viri pot exigua virtute in medio ipsi⁹, ecce cùm leves fuerint justitiæ in medio dis hominis, intrabit in corpus concupiscentia mala, quæ assimilatur magno & robusto, ad opprimendum, & obsidet cor ut errare faciat & ædificat in illo locum ad sedendũ ubicunque voluerit, ut declinare illud à viis quæ rectæ sũt ante Dñm, ad cõprehendendũ illud in retib mis gehennæ ut comburat eũ *septies* propter peccata sua. Invent⁹ est in medio corporis affect⁹ bon⁹ humilis & sapiens, & prævaluit sup illud subjecit illud sapientia sua, & eripuit *corp⁹* à judicio gehennæ robore & sapientia sua, sicut vir faciens præliũ liberat habitatores urbis sapi cordis sui, & homo non recordatur posteà affectus boni qui liberavit sed dicit in corde suo, Innocens ego sum, sicut etiã habitatores urbis non recordati sunt humilis illius qui liberavit eos. Et dixi ego in d. bo Melior est sapientia *justorum*, quàm vis fortitudinis *improborum, quia entia justi et meritum ejus liberat eum & homines generationis eju robur impii, qui perstat in obfirmatione cordis sui ut non convertat tentiã, perdat ipsum solum*: & sapientia justi & pauperis vilipend oculis improborum generationis ejus, & in tempore quo corrip pter opera eorum mala, verba correptionis illius non *suscipiunt* orationis sapientum in silentio suscipiuntur ante Dominum m quã clamor improbi qui imperat stultis clamantib⁹, & non est q

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

7 * ܐܬܐ ܐܟܘܠ ܒܚܕܘܬܐ ܠܚܡܟ. ܘܐܫܬܝ ܒܠܒܐ ܛܒܐ ܚܡܪܟ. ܡܛܠ ܕܐܬܪܥܝ ܐܠܗܐ
ܒܥܒܕܝܟ. * ܒܟܠܙܒܢ ܢܚܬܝܟ ܢܗܘܘܢ ܚܘܪܝܢ. ܘܡܫܚܐ ܥܠ ܪܫܟ ܠܐ ܢܚܣܪ. 8
* ܘܚܙܝ ܚܝܐ ܥܡ ܐܢܬܬܐ ܕܪܚܡܬ. ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܝ ܚܝܝ ܗܒܠܟ. ܡܛܠ ܕܗܘ ܗܘ 9
ܡܢܬܟ ܒܚܝܐ. ܘܒܥܡܠܟ ܕܐܝܬ ܠܟ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. * ܟܠ ܕܡܫܟܚܐ ܐܝܕܟ 10
ܠܡܥܒܕ ܒܚܝܠܟ ܥܒܕ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܥܒܕܐ ܘܡܚܫܒܬܐ. ܘܝܕܥܬܐ ܘܚܟܡܬܐ.
ܒܫܝܘܠ ܕܐܝܟܐ ܕܐܙܠ ܐܢܬ ܠܬܡܢ. * ܗܦܟܬ ܘܚܙܝܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܕܠܐ ܠܩܠܝܠܐ 11
ܪܗܛܐ. ܘܠܐ ܠܓܢܒܪܐ ܩܪܒܐ. ܘܠܐ ܠܚܟܝܡܐ ܠܚܡܐ. ܘܠܐ ܠܣܘܟܠܬܢܐ ܥܘܬܪܐ. ܘܠܐ
ܠܝܕܘܥܬܢܐ ܛܝܒܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܙܒܢܐ ܘܦܓܥܐ ܦܓܥ ܒܟܠܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ 12
ܒܪܢܫܐ ܙܒܢܗ. ܐܝܟ ܢܘܢܐ ܕܡܬܐܚܕܝܢ ܒܡܨܝܕܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܝܟ ܨܦܪܐ ܕܡܬܐܚܕܝܢ ܒܦܚܐ.
ܗܟܢܐ ܡܬܐܚܕܝܢ ܒܢܝܢܫܐ ܒܙܒܢܐ ܒܝܫܐ ܕܢܦܠ ܥܠܝܗܘܢ ܡܢ ܫܠܝ. * ܘܐܦ ܗܕܐ ܚܙܝܬ 13
ܚܟܡܬܐ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܘܪܒܐ ܗܝ ܠܘܬܝ. * ܡܕܝܢܬܐ ܙܥܘܪܬܐ. ܘܒܢܝܢܫܐ ܒܗ ܙܥܘܪܝܢ. 14
ܘܐܬܐ ܥܠܝܗ ܡܠܟܐ ܪܒܐ ܘܚܕܪܗ. ܘܒܢܐ ܥܠܝܗ ܩܠܩܘܡܐ. * ܘܐܫܟܚ ܒܗ ܓܒܪܐ 15
ܡܣܟܢܐ ܚܟܝܡܐ. ܘܦܨܝܗ ܗܘ ܡܣܟܢܐ ܠܡܕܝܢܬܐ ܒܚܟܡܬܗ. ܘܐܢܫ ܠܐ ܐܬܕܟܪܗ
ܠܓܒܪܐ ܗܘ ܡܣܟܢܐ. * ܘܐܡܪܬ ܐܢܐ. ܕܛܒܐ ܗܝ ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܓܢܒܪܘܬܐ. ܘܚܟܡܬܗ 16
ܕܡܣܟܢܐ ܫܝܛܐ ܗܝ. ܘܡܠܘܗܝ ܠܐ ܡܫܬܡܥܝܢ. * ܘܡܠܐ ܕܚܟܝܡܐ ܒܢܝܚܐ 17
ܡܫܬܡܥܢ. ܡܢ ܩܥܬܐ ܕܫܠܝܛܐ ܣܟܠܐ.

Agedum comede cum lætitia panem tuum, 7
& vinum tuum bono animo bibe, quia Deo
placent opera tua. Omni tempore candi- 8
dæ ſint veſtes tuæ, & unguentum capiti tuo
ne deſit. Et fruere vitâ cum uxore quam di- 9
ligis, cunctis diebus frivolæ vitæ tuæ: hæc eſt
enim pars tua in vita tua, & in labore tuo quo
ſub ſole fatigaris. Quicquid operari poteſt 10
manus tua, dum polles viribus, facito: quia
nec opus, nec ratio, nec ſcientia, nec ſapien-
tia eſt in inferno, ad quem tendis. Conver- 11
ſus deprehendi ſub ſole, quòd neque velo-
cium ſit curſus, neque bellum robuſtorum,
neque ſapientum panis, neque prudentum di-
vitiæ, neque peritorum gloria: *tum* quia
tempus & fortuna omnibus accidit: Tum 12
quia ignorat homo tempus ſuum. Ut piſces
qui capiuntur ſagenâ improbâ & ut aves quæ
capiuntur laqueo, ita capiuntur homines tem-
pore infauſto quod extemplò ruit in ipſos.
Hanc etiam vidi ſapientiam ſub ſole, & maxi- 13
ma quidem eſt apud me. Urbs erat parva, & 14
homines in ea pauci: hanc invaſit rex magn⁹,
& obſedit eam, & extruxit adverſùs eam
aggeres: Repertus eſt autem in ea vir pau- 15
per ſapiens, qui pauper liberavit ſuâ ſa-
pientiâ urbem illam; nemo tamen recor-
datus eſt viri illius pauperis. Unde dixi ego 16
meliorem eſſe ſapientiam fortitudine, & ſa-
pientiam pauperis eſſe deſpectam, ejúſque
ſermones minimè audiri: Et verba ſapien- 17
tum pacatiùs audiri, quam clamorem prin-
cipis ſtulti.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* تعال كل خبزك بفرح واشرب خمرك بقلب صالح * فان الله قد ارتضى صنايعك * في 7 8
كل اوان فلتكن ثيابك بيضا * ولا يعوزن راسك زيتا ينصب عليه * وابصر حياتك 9
مع الامراة التي احببتها كافة ايام حياة بطالتك * الايام التي منحتها تحت الشمس *
جميع ايام باطلك * فان هذا حظك في حياتك وفي تعبك الذي تتعبه انت تحت
الشمس * كلما عسى تجده يدك * ذاك تعمله اعمل نظير قوتك * فان الجحيم ليست فيه 10
صناعة ولا فكر ولا علم ولا حكمة * حيث تمضي انت هناك * التفتّ فعرفت تحت الشمس 11
ان السعي ليس للاخفاء * ولا الحرب للاقوياء * ولعمري ولا الخبز للحكماء * لا الغنا للفقهاء * ولا
المنة للعلماء * لان الوقت والاتفاق يلقاهم كلهم * وبالحقيقة فما يعرف الانسان وقته * كالسمك 12
المصيد في شبكة ردية * وكالطير المصيد من فخ * مثل هذا تقتنص ابناء الناس في
وقت خبيث شرير * اذا سقط عليهم بغتة * وهذا لعمري عرفته حكمة تحت الشمس * وهي 13
لدي عظيمة * ان مدينة لطيفة فيها ناس قليل * فوافى اليها ملك عظيم * فاحاط بها وابتنا 14
عليها فصيلا برحبة عظيمة * فوجد فيها رجلا حكيما فقيرا * فسلم ذاك المدينة وخلصها 15
بحكمته * ولم يذكر انسان فقه ذلك الرجل الفقير * فقلت انا الحكمة صالحة افضل من 16
القوة * وحكمة الفقير مرفوضة * وكلماته ليست مسموعة * اقوال الحكماء تسمع بنياحة 17
اكثر من هتاف ذوي السلطان في مسارهم *

Veni, comede panem tuum cum hilari- 7
tate, & bibe vinum tuum bono animo,
quoniam Deus jam approbavit opera tua.
Quovis tempore candida ſint veſtimenta 8
tua, neque careat caput tuum oleo ſuper
ipſum fundendo. Et fruere vitâ tuâ 9
cum uxore quam diligis, cunctis die-
bus vitæ vanitatis tuæ, diebus inquam
qui tibi conceſſi ſunt ſub ſole, cunctis
diebus vanitatis tuæ; quum hæc ſit por-
tio tua in vita tua, & in labore tuo
quo laboras ſub ſole. Quicquid fortè 10
manui tuæ occurrit agendum, ipſum agi-
to pro virili tuo; nam nulla eſt ars,
neque cogitatio, neque ſcientia, neque
ſapientia in inferno, quò tu es iturus.
Convertens me deprehendi ſub ſole cur- 11
ſum non eſſe levium, neque fortium
prælium, imò nec panem quidem ſa-
pientum, nec opes prudentum, nec eru-
ditorum gratiam: quoniam opportuni-
tas & fortuna his omnibus contingit.
Et reverà neſcit homo ſuam opportu- 12
nitatem. Ut piſces reti noxio capti,
utque volucres laqueo capti, ſic illa-
queantur filii hominum ſiniſtro adver-
ſóque tempore, quum in eos irruit ex
improviſo. Et hoc ſanè ſapientiam eſſe 13
deprehendi ſub ſole, eámque apud me
maximam: Quòd nimirum *urbs quæ-* 14
dam erat elegans, paucis frequens ho-
minibus: ad hanc accedens rex ma-
gnus, obſedit eam, & murum adver-
ſùs eam extruxit in vaſtiſſima platea.
Inventus eſt autem in ea vir quidam 15
ſapiens, pauper; atque is urbem eri-
puit ac liberavit ſuâ ſapientiâ: nemo
tamen recordatus eſt prudentiam homi-
nis illius pauperis. Quapropter ego 16
dixi ſapientiam meliorem ac præſtan-
tiorem eſſe robore, ſed ſapientiam pau-
peris eſſe abjectam, ejúſque verba non
audiri. Sermones ſapientum audiun- 17
tur majore cum tranquillitate, quàm
clamor poteſtate præditorum in concla-
vi ſuo.

.multum bonum perdet unus peccator &:conflictus vasis præ sapientia Bona
18 טוֹבָה חָכְמָה מִכְּלֵי קְרָב וְחוֹטֶא אֶחָד יְאַבֵּד טוֹבָה הַרְבֵּה׃

CAP. X. י

preciosum : pigmentarii unguentum faciet vaporare ,faciet fœtere mortis Muscæ
1 זְבוּבֵי מָוֶת יַבְאִישׁ יַבִּיעַ שֶׁמֶן רוֹקֵחַ יָקָר
cor &,ej⁹ dexterā ad sapientis Cor .parum stultitiæ ,gloria à sapientia à
2 מֵחָכְמָה מִכָּבוֹד סִכְלוּת מְעָט׃ לֵב חָכָם לִימִינוֹ וְלֵב
ej⁹ cor ,ambulans stultus quod secundum viā per etiā Et. ipsius sinistrā ad stulti
3 כְּסִיל לִשְׂמֹאלוֹ׃ וְגַם־בַּדֶּרֶךְ כְּשֶׁהַסָּכָל הֹלֵךְ לִבּוֹ
ascēderit dominantis spiritus Si .ipse stultus,omnib⁹ dicit &,deficiens
4 חָסֵר וְאָמַר לַכֹּל סָכָל הוּא׃ אִם־רוּחַ הַמּוֹשֵׁל תַּעֲלֶה
peccata faciet quiescere sanitas quia ,dimittas ne tuum locum ,te super
עָלֶיךָ מְקוֹמְךָ אַל־תַּנַּח כִּי מַרְפֵּא יַנִּיחַ חֲטָאִים
egrediens qui error sicut : sole sub vidi malum Est .magna
5 גְּדוֹלִים׃ יֵשׁ רָעָה רָאִיתִי תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ כִּשְׁגָגָה שֶׁיֹּצָא
: multis excellentiis in stultitia est Data .dominantis faciebus à
6 מִלִּפְנֵי הַשַּׁלִּיט׃ נִתַּן הַסֶּכֶל בַּמְּרוֹמִים רַבִּים
: equos super servos Vidi .sedebunt humilitate in divites &
7 וַעֲשִׁירִים בַּשֵּׁפֶל יֵשֵׁבוּ׃ רָאִיתִי עֲבָדִים עַל־סוּסִים
,foveam Fodiens .terram super servos tanquam ambulantes principes &
8 וְשָׂרִים הֹלְכִים כַּעֲבָדִים עַל־הָאָרֶץ׃ חֹפֵר גּוּמָּץ
faciens Proficisci .serpens eum mordebit sepem dissipans & : incidet eam in
9 בּוֹ יִפּוֹל וּפֹרֵץ גָּדֵר יִשְּׁכֶנּוּ נָחָשׁ׃ מַסִּיעַ
Si .eis in periclitabitur ligna scindens : eis in afficietur dolore ,lapides
10 אֲבָנִים יֵעָצֵב בָּהֶם בּוֹקֵעַ עֵצִים יִסָּכֶן בָּם׃ אִם־
:roborabit vires & ,terserit facies non ipse & ,ferrum fuerit hebetatū
קֵהָה הַבַּרְזֶל וְהוּא לֹא־פָנִים קִלְקַל וַחֲיָלִים יְגַבֵּר
: susurro non in serpens mordeat Si .sapientia ,rectificandi præstantia &
11 וְיִתְרוֹן הַכְשֵׁיר חָכְמָה׃ אִם־יִשֹּׁךְ הַנָּחָשׁ בְּלוֹא לָחַשׁ
labia & : gratia sapientis oris Verba .linguam habenti præstantia non &
12 וְאֵין יִתְרוֹן לְבַעַל הַלָּשׁוֹן׃ דִּבְרֵי פִי־חָכָם חֵן וְשִׂפְתוֹת
novissimum & : stultitia ejus oris verborum Initium .eum deglutiet stulti
13 כְּסִיל תְּבַלְּעֶנּוּ׃ תְּחִלַּת דִּבְרֵי־פִיהוּ סִכְלוּת וְאַחֲרִית
sciet non : verba multiplicabit stultus Et .mala insania ejus oris
14 פִּיהוּ הוֹלֵלוּת רָעָה׃ וְהַסָּכָל יַרְבֶּה דְבָרִים לֹא־יֵדַע
? sibi annunciabit quis ,se post erit quod & ,erit quod quid homo
הָאָדָם מַה־שֶּׁיִּהְיֶה וַאֲשֶׁר יִהְיֶה מֵאַחֲרָיו מִי יַגִּיד לוֹ׃
.civitatē ad pergere novit non qui ,eū faciet laborare stultorum Labor
15 עֲמַל הַכְּסִילִים תְּיַגְּעֶנּוּ אֲשֶׁר לֹא־יָדַע לָלֶכֶת אֶל־עִיר׃
.comedent mane in tui principes & : puer tuus rex quod ,terra tibi Væ
16 אִי־לָךְ אֶרֶץ שֶׁמַּלְכֵּךְ נָעַר וְשָׂרַיִךְ בַּבֹּקֶר יֹאכֵלוּ׃

Versio VUL. LAT.

18 Melior est sapientia, quàm arma bellica : & qui in uno peccaverit, multa bona perdet.

CAP. X.

1 Muscæ morientes perdunt suavitatē unguenti. Pretiosior est sapientia & gloria, parvâ et ad temp⁹ stultitiâ. 2 Cor sapientis in dextera ejus, & cor stulti 3 in sinistra illius. Sed & in via stultus ambulans, cùm ipse insipiēs sit, omnes stultos æstimat. 4 Si spiritus potestatem habentis ascenderit super te, locum tuū ne dimiseris : quia curatio faciet cessare peccata maxima. 5 Est malū ꝙ vidi sub Sole, quasi per errorem egrediens à facie 6 principis: Positū stultum in dignitate sublimi, & divites se-7 dere deorsum. Vidi servos in equis, & principes ambulantes 8 super terram quasi servos. Qui fodit foveam, incidet in eam: & qui dissipat sepem, morde-9 bit eum coluber. Qui transfert lapides, affligetur in eis : & qui scindit ligna, vulnera-10 bitur ab eis. Si retusum fuerit ferrum, & hoc non ut priùs, sed hebetatum fuerit, multo labore exacuetur, & post industriam sequetur sapien-11 tia. Si mordeat serpens in silentio, nihil eo minus habet 12 qui occultè detrahit. Verba oris sapientis gratia : & labia insipientis præcipitabunt eū : 13 Initium verborū ejus stultitia, & novissimum oris illius error 14 pessimus. Stultus verba multiplicat. Ignorat homo, quid ante se fuerit: & quid post se futurū sit, quis ei poterit indicare? 15 Labor stultorū affliget eos, qui nesciunt in urbē pergere. 16 Væ tibi terra, cuj⁹ rex puer est, & cuj⁹ principes manè comedunt.

Vers. GRÆC. LXX. Interp. cum Transl. LAT.

18 † Ἀγαθὴ σοφία ὑπὲρ σκεύη πολέμου· † καὶ ἁμαρτάνων εἷς ἀπολέσει ἀγαθωσύνην πολλήν.

ΚΕΦ. ι'.

1 † Μυῖαι θανατοῦσαι σαπριοῦσι σκευασίαν ἐλαίου ἡδύσματος. † τίμιον ὀλίγον σοφίας 2 ὑπὲρ δόξαν ἀφροσύνης μεγάλην. † Καρδία σοφοῦ εἰς δεξιὸν αὐτοῦ, † καὶ καρδία ἄ-3 φρονος εἰς ἀριστερὸν αὐτοῦ. † Καί γε ἐν ὁδῷ ὅταν ἄφρων πορεύηται, † καρδία αὐτοῦ ὑστερήσει, † καὶ ἃ λογιεῖται πάντα ἀφροσύνη 4 ἐστίν. Ἐὰν πνεῦμα τοῦ ἐξουσιάζοντος ἀναβῇ ἐπὶ σὲ, † τόπον σου μὴ ἀφῇς, † ὅτι ἴαμα κατα-5 παύσει ἁμαρτίας μεγάλας. † Ἔστι πονηρία ἣν εἶδον ὑπὸ τὸν ἥλιον, † ὡς ἀκούσιον (α) ὃ ἐξῆλθεν 6 ἀπὸ προσώπου ἐξουσιάζοντος. † Ἐδόθη ὁ ἄφρων ἐν ὕψεσι μεγάλοις, † καὶ πλούσιοι ἐν τα-7 πεινῷ καθήσονται. † Εἶδον δούλους ἐφ' ἵππους, † καὶ ἄρχοντας (β) πορευομένους ὡς δούλους ἐπὶ τῆς 8 γῆς. † Ὁ ὀρύσσων βόθρον, (γ) εἰς αὐτὸν ἐμπεσεῖται· † καὶ καθαιροῦντα φραγμὸν, δήξεται αὐτὸν 9 ὄφις. † Ἐξαίρων λίθους διαπονηθήσεται ἐν αὐτοῖς· † σχίζων ξύλα κινδυνεύσει ἐν αὐτοῖς. 10 † Ἐὰν ἐκπέσῃ τὸ σιδήριον, † καὶ αὐτὸς πρόσωπον ἐτάραξε· † καὶ δυνάμεις δυναμώσει, † καὶ 11 περισσεία (δ) τῷ ἀνδρὶ ἡ σοφία. † Ἐὰν δάκῃ ὄφις ἐν οὐ ψιθυρισμῷ, † καὶ οὐκ ἔστι περισσεία τῷ 12 ἐπᾴδοντι. † Λόγοι στόματος σοφοῦ χάρις, † καὶ χείλη ἄφρονος (ε) καταποντίσουσιν αὐτόν. † 13 Ἀρχὴ λόγων στόματος αὐτοῦ ἀφροσύνη, καὶ ἐ-14 σχάτη στόματος αὐτοῦ περιφέρεια πονηρά. † Καὶ ὁ ἄφρων πληθύνει λόγους. † οὐκ ἔγνω (ζ) ἄνθρωπος τί τὸ γενόμενον, † καὶ τί τὸ ἐσόμενον, † ὅ-15 τι ὀπίσω αὐτοῦ τίς (ι) ἀναγγελεῖ αὐτῷ; † Μόχθος (η) τῶν ἀφρόνων κακώσει αὐτοὺς, † ὃς 16 οὐκ ἔγνω τοῦ πορευθῆναι εἰς πόλιν. † Οὐαί σοι πόλις ἧς ὁ βασιλεύς σου νεώτερος, † καὶ οἱ ἄρχοντές σου (θ) πρωῒ ἐσθίουσιν.

Bona sapientia super va
& peccans unus perdet (a)
tatem multam.

CAP. X.

Muscæ (a) morientes putr
ciunt compositionem olei suav
tis. Pretiosum paululum sapien
super gloriā insipientiæ (b) ma
Cor sapientis in (c) dextro
cor stulti in sinistro ejus. E
via, cùm stultus ambulat,
(d) deficiet : & (e) quæ cogi
omnia stultitia sunt. Si spiritu
potestatem habentis ascende
per te, locum tuum ne dimi
quia sanitas requiescere facie
cata magna. Est (g) malum
vidi sub Sole: (h) quasi non
taneum exivit à facie potest
habentis. (i) Datus est
tus in sublimitatibus magnis
divites in humili sedebunt.
servos in equis, et principes a
lantes quasi servos super terr
Qui fodit (k) foveam, in ips
cidet: & qui dissipat sepem, m
debit eum serpens. Qui (l)
bit lapides, dolebit in eis: scinde
ligna, periclitabitur in eis, (m
exciderit ferrum, et ipse fac
bavit. Et fortitudines confort
et abundantia viro (n) non sa
tia. Si momorderit serpēs in
susurro; & (p) non est am
cantanti. Verba oris sapientis g
tia: & labia insipientis (q)
ent eū. Initiū verborū oris
sipientia, & novissimū oris
circumlatio pessima: Et (r)
multiplicat verba. Ignorat
quid sit, quod factū est, &
quod futurū est, (t) quod po
quis annuntiabit ei? Labor (u)
torum affliget eos, qui (x) n
in civitatem. Væ tibi (y) civit
cujus rex tuus junior, & principes tui manè come

MS. A. (α) ὃ ἐξῆλθεν ἀπὸ προσώπου τοῦ ἐξουσιάζοντος. (β) ὡς δού πορευομένους (γ) ἐν αὐτῷ ἐμπεσεῖται, καὶ ὁ κυλίων λίθον, ἐφ' ἑαυτὸν καὶ καθαιροῦντα (δ) τοῦ ἀνδρείου σοφία. (ε) καταποντίσουσιν (ζ) ὁ ἄνθρ (ι) ἀπαγγελεῖ (η) τοῦ ἄφρονος σκοτώσει αὐτὸν, (θ) ἐν πρωΐᾳ

תרגום TARGUM.

18 טבא חוכמת חכימת בעדן עקתא יתיר מן מני קרבא בעדן אגיחות קרבא וגברא חיבא
חד דאיתיה בדרא גרם לאובדא טבתא רבתא מן עלמא׃

י

1 ויצרא בישא דשכן על תרעי לבא היכדבובא וגרם מותא בעלמא על דמסרי חכימא
בעדן דחטי ומחבל שמא טבא דהוה דמי מן קדמת דנא למשח רבותא דמבסם
בבוסמנין וכמה יאי ויקיר יתיר מן חוכמתא חכימין ועותר עתירין גבר דטפשותיה זעיר
2 וקליל׃ לבא דחכימיא למקני אוריתא דאתיהיבת ביד ימינא דיי ולבא דשטיא למקני
3 נכסין כסף ודהב׃ ואף באורחא סריכא בעדן דשטיא אזל לביה חסיר מן חוכמתא ועבד
4 מלין דלא תקנין לאתעובדא וכולא אמרין דשטיא הוא׃ אין רוח דיצרא בישא מתל בך
ומתגבר למסק עלך אתרך טב די הויתא נהג למקם ביה לא תשבק ארום פתגמי אוריתא
5 אתבריאו אסו בעלמא למשבק ולמנשי מן קדם יי חובין רברבין׃ אית בישתא דחזיא
בעלמא הדין תחות שמשא ומה נזקא בעלמא בפתגמא דשלותא דנפקא מחצפא על
6 גברא ומן קדם שולטן׃ יהב יי ית שטיא למהוי בריא במוליה ומשמש באצלחותא מן
שמי מרומא וחילותוהי גיותנין וסגיאין ועמך בית ישראל משתעבדין תחותוהי בגלותא
7 ומן סגיאות חוביהון עתירי נכסין מתמסכנין ובמכיכותא יתבין בני עממיא׃ אמר
שלמה מלכא ברוח נבואה חזית עממיא דהוו משתעבדין מן קדמת דנא לעמא בית
ישראל מתגברין ורכבין על סוסין כארכונין ועמא בית ישראל ורברבניהון אזלין
8 היכעבדין על ארעא׃ ענת מדת דינא וכן אמרת אנון גרמו להון כל דא היכמא דגבר
דכרי שוחא בפרשת אורחא ביה אתחיב למפל ואומא די עבר על גזירת מימרא דיי
9 ותקיפו גודא דעלמא נפלו ביד מלכא רשיעא דנכת להון כחויא׃ אמר שלמה מלכא
נביא גלי קדמי דמנשה בר יחזקיהו עתיד למחב ולמסגד לצלמא דאבנין בגין כן
אתמסר ביד מלכא דאתור ויכפתניה בזממין על דבטל פתגמי אוריתא דכתיבין בלוחי
אבנין מן עקריהון בגין כן יצטער בהון ורבשקה אחוהי עתיד למסגד לצלמיא דקיסין
ולמשבק פתגמי אוריתא דאתיהיבן בארונא קיסי דשטי בגין כן עתיד לאתוקדא בנורא
10 על יד מלאכא דיי׃ וכד יחובון עמא בית ישראל ויתעבדון שמיא תקיפין כברזלא
מלאחתא מטרא והוא דרא לא צלו קדם יי בגין כן אתקלקל כל עלמא בכפנא וכדו
תיבין ומתכנשין אוכלוסין ומתגברין על יצרהון וממנן ברוליהון למבעי רחמין קדם
11 אלהי שמיא אית בהון רעוא על מותר אכשרות חוכמתהון׃ כד מתגרן חיוין קלן לטרקה
ולנזקא בעלמא על חוביהון דבית ישראל דלא עסיקו בפתגמי אוריתא בחשי ואף לית
מותר לגבר אכל קורצין דמשתעי לישן תליתי ארום באשתא דגהנם עתיד לאתוקדא׃
12 מלי פום גבר חכים דאשתכח בדרא כד אתי פורענותא בעלמא מצלי ומעדי ית
פורענותא ומשכח רחמין קדם יי וספותיה דגברא שטיא מלין נזיפותא ובגין כן כולי
13 עלמא מתגמרין׃ שרוי מלי פומיה שטותא וסוף מימר פומיה חולחלתא בישא׃ ושטיא
14 מסגי פתגמין סריקין דלית בהון צרוך עד דלא ינדע אנש מה דעתיד למהוי ביומוהי
15 ומה דעתיד למהוי מן סיפיה מן יחוי ליה׃ טרחות שטיא דטרח בשטותא איהו משלהי
16 ליה על דלא אליף למיזל לקרתא דחכימיא שרי בגויה למתבע מניה אולפנא׃ וי לך
ארעא דישראל בזמן די ימלוך עלך ירבעם חיבא ויבטל מנך קורבנא דצפרא
ורברבנך עד דלא יקרבון תמידא דצפרא ייכלון לחמא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina

Melior est sapientia [quæ] reddit sapientes in tempore afflictionis, qu
vasa bellica in tempore ineundi prælii : & vir peccator unus qui
generatione, occasionem affert ut perdatur bonum magnum ex mund

CAP. X.

Et concupiscentia mala quæ manet juxta portas cordis, est sicut m
quòd causam adferat mortis in mundo, adeò ut tradat sapientem in
pore quo peccat, & corrumpat nomen bonum quod simile fuerat
unguento unctionis suavissimo cum aromatibus : & quanto decentior
preciosior est quàm sapientia sapientū, & quàm divitiæ divitum, vir c
stultitia exigua & levis est. Cor sapientis incumbit ad acquirendam L
quæ data est manu dextera Dei, & cor stulti ad acquirendas facultates
genti & auri. Etiam in via perplexa tempore quo stultus ambulat, cor
caret sapientia, ita ut faciat verba quæ non decent fieri, & omnes
ipsum esse stultum. Si spiritus concupiscentiæ malæ dominatus in te f
& adeò invaluerit ut super te conscendat, locum tuum bonum, in quo
sueveras stare, ne dimittas: etenim verba Legis creata sunt pro medica
in mundo, ut remittantur atq; oblivioni tradantur à Dño peccata ma
Est malum ꝙ vidi in seculo hoc sub Sole, & quantum damni est in m
per verbum ignorantiæ quod profertur impudens super virum, etia
imperante. Posuit Dominus stultum ut sit sanus in felicitate sua, & m
stret in prosperitate ex cœlo alto, & exercitus ejus sint sublimes & m
& popul⁹ tuus domus Israel servituti subditus sub eo in exilio, & præ
titudine peccatorum suorum divites facultatibus depauperantur, & in
militate sedent inter gentes. Dixit Selomoh rex in spiritu prophetico
populos qui subditi fuerant antehac populo domus Israel prævalentes
equitantes super equos sicut principes, & populum domus Israel & ma
tes eorum ambulantes sicuti servos super terram. Respondit proprietas
cii & sic dixit, ipsi accersiverunt sibi omne hoc, sicut vir qui foderit fov
in bivio itineris, in eam dignus est ut cadat : & populus qui transgres
decretum verbi Domini & dissiparunt maceriem mundi, ceciderunt in
num regis improbi qui mordet eos ut serpens. Dixit Selomoh rex pro
revelatum est mihi quod Menasseh filius Hizkiahu peccaturus sit &
raturus statuam lapidum, ideoq; traditus sit in manum regis Assyri
ligabit eum frænis, eò quod violaverit verba legis quæ inscripta sunt
lis lapidum ab origine eorum, propterea angustiabitur in illis; & Rab
frater ejus adoraturus est statuas lignorum, & relicturus verba legis
indita est in arcam lignorum sethim, ideò futurū est ut comburatur in
per manum angeli Domini. Et cùm peccaverit populus domus I
& facti fuerint cœli duri in modum ferri, ne demittant pluviam : &
generatio non orat ante Dñm, propterea dissipat⁹ est tot⁹ mundus fame
quando convertuntur & congregantur turbæ & prævalent adversus c
cupiscentias suas, & constituunt gubernatores suos ut postulent miser
diā à Deo cœli, complacet sibi in augmento rectitudinis sapientiæ eo
Quando excitantur serpentes leves ad mordendū & nocendum in mun
propter peccata domus Israel quòd operā non posuerint in verbis legis
citurnitate id fit : etiā non est utilitas viro fraudulenter accusanti, ut
triplici lingua, quoniā in igne gehennæ futurū est ut cremetur. Sermo
oris vir sapiēs qui invenitur in generatione, cū vētura est pœna in mu
orat & avertit vindictā & invenit misericordias ante Dñm, & labia
stulti plena sunt increpatione, & propterea tot⁹ mund⁹ destruitur. In
sermonū oris ej⁹ stultitia, et finis verbi oris ej⁹ amentia mala. Et stul
plicat verba inania, in quib⁹ nulla est utilitas, donec cognoscat hom
futurū sit ut fiat in diebus suis : & quid futurū sit in fine ejus, quis
illi? Fatigatio stulti qua defatigatur in stultitia, ipsa delassat eū
discat ire in civitatē intra quam sapiēs habitat ad quærendū ab eo
nā. Væ tibi terra Israel in tempore quo regnabit sup te Jarabgham
tor, & cessare faciet ex te oblationē matutinā, & magnates tu
offerant juge matutinum sacrificium, panem comedent.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܛܒܐ ܗܝ ܚܟܡܬܐ ܡܢ ܡܐܢܝ ܩܪܒܐ. ܘܚܛܝܬܐ ܚܕܐ ܡܘܒܕܐ ܛܒܬܐ ܣܓܝܐܬܐ. 18

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *

* ܐܝܟ ܕܒܒܐ ܕܡܝܬܝܢ ܡܣܪܚܝܢ ܠܡܐܢܐ ܕܡܫܚܐ ܒܣܝܡܐ. ܝܩܝܪܐ ܗܘ ܡܢ ܚܟܡܬܐ 1
ܘܡܢ ܫܘܒܚܐ ܣܓܝܐܐ. ܣܟܠܘܬܐ ܙܥܘܪܬܐ. * ܠܒܗ ܕܚܟܝܡܐ ܠܝܡܝܢܗ. ܘܠܒܗ 2
ܕܣܟܠܐ ܠܣܡܠܗ. * ܐܦ ܣܟܠܐ ܟܕ ܒܐܘܪܚܐ ܡܗܠܟ. ܠܒܗ ܚܣܝܪ. ܘܟܠ 3
ܕܡܬܚܫܒ ܣܟܠܘܬܐ ܗܝ. * ܐܢ ܪܘܚܐ ܕܫܠܝܛܐ ܬܣܩ ܥܠܝܟ. ܐܬܪܟ ܠܐ ܬܫܒܘܩ. 4
ܡܛܠ ܕܐܣܝܘܬܐ ܡܫܪܝܐ ܚܛܗܐ ܣܓܝܐܐ. * ܐܝܬ ܒܝܫܬܐ ܕܚܙܝܬ ܬܚܝܬ ܫܡܫܐ. ܐܝܟ 5
ܫܠܝܘܬܐ ܕܢܦܩܐ ܡܢ ܩܕܡ ܫܠܝܛܐ. * ܕܢܬܒ ܣܟܠܐ ܒܪܘܡܐ ܪܒܐ. ܘܥܬܝܪܐ ܒܡܟܝܟܘܬܐ 6
ܢܬܒܘܢ. * ܚܙܝܬ ܥܒܕܐ ܥܠ ܪܟܫܐ. ܘܫܠܝܛܢܐ ܕܡܗܠܟܝܢ ܐܝܟ ܥܒܕܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. 7
* ܕܚܦܪ ܓܘܡܬܐ ܒܗ ܢܦܠ. ܘܕܦܪܥ ܣܝܓܐ ܢܟܬܝܘܗܝ ܚܘܝܐ. * ܕܡܫܢܐ ܟܐܦܐ 8
ܢܬܟܪܐ ܒܗܘܢ. ܘܕܨܠܚ ܩܝܣܐ ܢܫܬܦܠ ܒܗܘܢ. * ܐܢ ܩܗܐ ܦܪܙܠܐ. ܘܗܘ ܐܦܐ ܩܠܩܠ 9 10
ܘܚܝܠܐ ܡܣܓܐ. ܘܡܘܬܪܢܐ ܠܟܫܝܪܐ ܚܟܡܬܐ. * ܐܢ ܢܟܬ ܚܘܝܐ. ܠܐ ܒܠܚܫܐ 11
ܠܝܬ ܝܘܬܪܢܐ ܠܡܠܚܫܢܐ. * ܡܠܐ ܦܘܡܗ ܕܚܟܝܡܐ ܛܝܒܘܬܐ. ܘܣܦܘܬܗ ܕܣܟܠܐ 12
ܡܬܒܠܥܢ ܠܗ. * ܪܫ ܡܠܐ ܦܘܡܗ ܣܟܠܘܬܐ. ܘܚܪܬܐ ܕܦܘܡܗ ܦܘܪܫܢܐ ܒܝܫܐ. 13
* ܘܣܟܠܐ ܡܣܓܐ ܡܠܝܢ. ܠܐ ܝܕܥ ܒܪܢܫܐ ܡܕܡ ܕܗܘܐ. ܘܡܕܡ ܕܥܬܝܕ ܕܢܗܘܐ ܡܢ ܒܬܪܗ. ܡܢܘ 14
ܡܚܘܐ ܠܗ. * ܥܡܠܗܘܢ ܕܣܟܠܐ ܡܠܐܐ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܠܡܐܙܠ ܠܡܕܝܢܬܐ. 15
* ܘܝ ܠܟܝ ܡܕܝܢܬܐ ܕܡܠܟܝܟܝ ܛܠܝܐ: ܘܪܘܪܒܢܝܟܝ ܒܨܦܪܐ ܐܟܠܝܢ. 16

* Meliorem eſſe ſapientiam inſtrumentis belli- 18
cis: & peccatum unum plurima bona de-
perdere.

CAP. X.

UT muſcæ mortuæ fœtidum reddunt vas 1
unguenti ſuavis. Præponderat ſapientiæ &
gloriæ multæ, modica ſtultitia. Cor ſapi- 2
entis eſt in dextera ipſius, cor autem ſtulti
in ſiniſtra ipſius. Imò etiam ſtultus quum 3
per viam graditur, væcors eſt; & quicquid
cogitat, dementia eſt. Si ſpiritus principis 4
efferatur in te, ne deſeras locum tuum: quia
curatio remittit peccata multa. Eſt malum 5
quod vidi ſub ſole quaſi errorem prodeuntem in conſpectum principis: Sedere 6
ſtultum in ſummo faſtigio, divites autem in
humilitate ſedere. Vidi ſervos in equis, & 7
principes quaſi ſervos ſuper terram ambulantes. Qui fodit foſſam, incidet in eam: 8
& qui ſepem aperit, mordebit eum ſerpens.
Qui transfert lapides, dolore circa illos 9
afficietur: & qui findit ligna, laborat in
eis, Si ferrum hebetetur: idemque vultum 10
perturbat, & occiſos multiplicat: at ſapientia gnavis eſt emolumento. Si morde- 11
at coluber, abſque incantatione non eſt in
incantatore emolumentum. Verba oris ſapi- 12
entis, laus: labia verò ſtulti demergunt eum.
Initium verborum oris ejus, ſtultitia: & fi- 13
nis oris illius, dedecus atrox. Sultus etiam 14
verba multiplicat. Neſcit homo quid fuerit,
& quid poſt ipſum futurum ſit, quis indicabit ei? Labor ſtultorum fatigat eos, quia 15
neſciunt urbem adire. Væ tibi civitas cu- 16
jus rex eſt puer, & cujus magnates manè
comedunt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

18 * الحكمة صالحة افضل من آلات الحرب ۔ واذا اخطأ واحدا يهلك صلاحا جزيلا ۔

۔ الفصل العشر

1 * الذباب المايت يعفن ويفسد ظرف زيت طيب ۔ قليل من الحكمة كريم افضل من
2 3 سرف الغباوة الجزيل * قلب الحكيم من يمناه ۔ وقلب الغبي من يسراه * ولعمري ان
الغبي اذا مضى في طريق يعوز قلبه ۔ وعدمه النطق في جميع الاشياء غباوة هو
4 * اذا صعد اليك روح المتسلط فلا تتركن له موضعا ۔ فان الشفا يسكن خطايا عظيمة
5 * يكون شرور عرفت تحت الشمس ۔ كمن قد خرج بغير اختيار من حضرة وجه المتسلط
6 7 * اعطي به الغبي في معالي جسمة ۔ والاغنياء يجلسوا في حال ذليل * رايت عبيدا على
8 الخيل ۔ ورؤساء ماشيين على الارض كالعبيد * من يحفر هوة يسقط فيها ۔ ومن ينقض
9 سياجا تلدغه حية * من ينزع حجارة يعذب بها ۔ من يشق حطبا يعطب به * ان
10 11 سقط الحديد عليه ۔ وهو قد ارعج وجها وايد قوة ۔ والحكمة فضل الشجاع * ان
12 لدغته الحية في مساررته فما يوجد للراقي فضل * اقوال فم الحكيم نعمه ۔ وشفتا الغبي
13 تعرقباه * مبدا اقوال فمه غباوة ۔ ونهاية فمه اعوجاج خبيث * والغبي يكثر اقواله
14 وما يعلم الانسان ما هو الكاين وما هو العتيد ان يكون ۔ لان من يخبره بما وراه * تعب
15 الاغنياء يتعبهم الذي ما يعرف السلوك في المدينة * الويل لك ايتها المدينة التي
16 ملكك شاب ۔ ورؤساك ياكلون بالغداة ۔

Sapientia melior eſt inſtrumentis belli- 18
cis: & quum quis unum committit pec-
catum, jacturam facit multorum bono-
rum.

CAP. X.

Muſcæ mortuæ mucidum reddunt 1
& corrumpunt vas olei ſuaviſſimi.
Parum ſapientiæ honorabilius eſt quàm
gloria ſtultitiæ multa. Cor ſapientis 2
eſt ad dexteram ipſius, & cor inſipi-
entis ad ſiniſtram ipſius. Et profectò 3
inſipienti, quum per viam incedit, cor
deficiet: & defectus rationis ejus in
rebus omnibus, ſtultitia eſt. Cùm 4
aſcenderit ad te ſpiritus poteſtatem ha-
bentis, ne relinquas ei locum: nam
ſanitas reprimit grandia peccata. Sunt 5
mala quæ deprehendi ſub ſole, quale
eſt ejus qui egreditur invitus è con-
ſpectu principis. Et ejus loco ſuffici- 6
tur ſtultus in ſummis ſublimitatibus:
divitibus interim in humili conditione
ſedentibus. Vidi ſervos in equis, & 7
principes ſuper terram incedentes more
ſervorum. Qui foderit foveam, inci- 8
det in eam: & qui demolitur ma-
ceriam, mordebit eum coluber. Qui 9
lapides erigit, cruciabitur in eis: qui
findit ligna, periclitabitur in illis. Si 10
acciderit in eum ferrum, quod & vul-
tum ſegnem reddit, & vires confir-
mat: etenim ſapientia eſt generoſi
hominis emolumentum. Nulla reperi- 11
tur in venefico virtus, ſi mordeat eum
coluber dum ſua profert ſecreta. Elo- 12
quia oris ſapientis, gratia: & labia
ſtulti implicant eum. Exordium ſer- 13
monum oris ejus, inſania; & finis
oris ejus, obliquitas perverſa: Et ta- 14
men ſtultus multiplicat ſermones ſuos.
Neſcit autem homo quid factum ſit,
quidque ſit futurum: quis enim indi-
caret ei quid poſt ipſum ſit? Labor 15
ſtultorum vexabit illos, qui neſciunt
ambulare per urbem. Hei tibi civitas, 16
cujus rex eſt adoleſcens, & cujus prin-
cipes manè veſcuntur.

tēpore in tui principes & ingenuorum filius tuus rex quia ,terra tuæ Beatitudines

17 אשריך ארץ שמלכך בן־חורים ושריך בעת

:contignatio se inclinabit *pigritiis In* .*potatione in* non &,*fortitudine in* comedent

18 יאכלו בגבורה ולא בשתי: בעצלתים ימך המקרה

, panem *facientes* risum *Ad* .domus distillabit manuum *dejectione in* &

19 ובשפלות ידים ידלף הבית: לשחוק עשים לחם

tua *scientia* in Etiam .*omnibus respondebit* argentū &:vivos lætificabit vinū &

20 ויין ישמח חיים והכסף יענה את־הכל: גם במדעך

:divitē vilipendas ne tui cubilis penetralibus in & ,vilipendas ne regem

מלך אל־תקלל ובחדרי משכבך אל־תקלל עשיר

annunciabit *alis præditus* & ,vocem faciet ire cœlorum avis quia

כי עוף השמים יוליך את־הקול ובעל הכנפים יגיד

.verbum

דבר:

CAP. XI. יא

dierum multitudine in quia : aquarum *facies* super tuum panem Mitte

1 שלח לחמך על־פני המים כי־ברב הימים

quid *scies non* quia : octo etiam & ,septem partem Da.illū invenies

2 תמצאנו: תן־חלק לשבעה וגם לשמונה כי לא תדע מה־

super pluviam , nubes fuerint repletæ Si .terram super mali erit

3 יהיה רעה על־הארץ: אם־ימלאו העבים גשם על־

loco :*aquilone in* si &,austrum *in* lignum ceciderit si Et .evacuabūt terram

הארץ יריקו ואם־יפול עץ בדרום ואם בצפון מקום

videns &:seminabit non,ventum *Observans* .erit ibi ,lignum ceciderit quo

4 שיפול העץ שם יהוא: שמר רוח לא יזרע וראה

,venti via quid *sciens tu* non Quemadmodum .metet non nubes *in*

5 בעבים לא יקצור: כאשר אינך יודע מה־דרך הרוח

opus *scies non* sic : *plenæ* ventre in ossa sicut

כעצמים בבטן המלאה ככה לא תדע את־מעשה

,tuum semen semina mane *In* .omnia *faciet* qui , Dei

6 האלהים אשר יעשה את־הכל: בבקר זרע את־זרעך

erit rectū hoc si sciens tu non quia :tuā manū facias quiescere ne *vespera in* &

ולערב אל־תנח ידך כי אינך יודע אי זה יכשר

bonum & :lux est dulcis Et.bona *unum sicut ipsa* ambo an &,illud vel,hoc an

7 הזה או־זה ואם־שניהם כאחד טובים: ומתוק האור וטוב

vixerit multis annis si *Quia* .solem videre oculis

8 לעינים לראות את־השמש: כי אם־שנים הרבה יחיה

quia ,tenebrositatis dierum recordetur &:fuerit lætatus omnibus his in ,homo

האדם בכלם ישמח ויזכר את־ימי החשך כי־

,tua adolescentia in juvenis Lætare .*vanitas* ,evenit quicquid ,*erunt multum*

9 הרבה יהיו כל־שבא הבל: שמח בחור בילדותך

,tui cordis viis in ambula &,*tuarū electionū* diebꝰ in tuū cor tibi *sit bonum* &

ויטיבך לבך בימי בחורותיך והלך בדרכי לבך

te adducet hæc omnia propter quod scito & : tuorum oculorū *aspectu in* &

ובמראה עיניך ודע כי על־כל־אלה יביאך

fac transire & , tuo corde à iram amove Et .judicium in Deus

10 האלהים במשפט: והסר כעס מלבך והעבר

.vanitas *pubertas &* adolescentia quia : tua carne à malitiam

רעה מבשרך כי־הילדות והשחרות הבל:

Versio VUL. LAT.

17 Beata terra, cujꝰ rex nobilis est, & cujꝰ principes vescuntur in tempore suo, ad reficiendū, & 18 non ad luxuriā. In pigritiis humiliabitur contignatio, & in infirmitate manuū perstillabit 19 domus. In risū faciunt panē, & vinū ut epulentur viventes: & 20 pecuniæ obediunt omnia. In cogitatione tua regi ne detrahas, & in secreto cubiculi tui ne maledixeris diviti: quia & aves cœli portabunt vocē tuā, & qui habet pennas annuntiabit sententiam.

CAP. XI.

1 Mitte panē tuū super transeuntes aquas: quia post tempo- 2 ra multa invenies illū. Da partem septē, necnon & octo: quia ignoras quid futurum sit mali 3 sup terrā. Si repletæ fuerint nubes, imbrē sup terrā effundent. Si ceciderit lignū ad Austrum, aut ad Aquilonē, in quocunq; 4 loco ceciderit, ibi erit. Qui observat ventū, non seminat: & qui considerat nubes, nunquā 5 metet. Quomodò ignoras quæ sit via spiritûs, & quâ ratione compingantur ossa in ventre prægnātis; sic nescis opera Dei, 6 qui fabricator est omniū. Manè semina semen tuū, & vesperè ne cesset manꝰ tua: quia nescis quid magis oriatur, hoc aut illud; & si utrumq; simul, meliꝰ 7 erit. Dulce lumen, & delecta- 8 bile est oculis videre Solē. Si annis multis vixerit homo, et in his omnibꝰ lætatꝰ fuerit, meminisse debet tenebrosi temporis, & dierū multorū: qui cùm venerint, vanitatis arguentur præ- 9 terita. Lætare ergò juvenis in adolescentia tua, & in bono sit cor tuū in diebꝰ juventutis tuæ, & ambula in viis cordis tui, et in intuitu oculorū tuorum: & scito ꝙ pro omnibꝰ his adducet 10 te Deus in judiciū. Aufer iram à corde tuo, & amove malitiā à carne tua. Adolescentia enim & voluptas vana sunt.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

17 † Μακαρία σὺ γῆ, ἧς ὁ βασιλεύς σου υἱὸς (ι) ἐλευθέρων, † καὶ οἱ ἄρχοντές σου πρὸς καιρὸν φάγονται ἐν δυνάμει, † καὶ οὐκ αἰσχυνθήσονται. 18 † Ἐν ὀκνηρίαις ταπεινωθήσεται ἡ δόκωσις, † καὶ ἐν ἀργίᾳ χειρῶν (κ) στάξει ἡ οἰκία. 19 Εἰς γέλωτα ποιοῦσιν ἄρτον, † (λ) καὶ οἶνον καὶ ἔλαιον τοῦ εὐφρανθῆναι ζῶντας, † καὶ τοῦ (μ) ἀργυρίου ταπεινώσει ἐπακούσεται τὰ πάντα. 20 † Καί γε ἐν συνειδήσει σου βασιλέα μὴ καταράσῃ, † καὶ ἐν ταμιείοις κοιτώνων σου μὴ καταράσῃ πλούσιον· † ὅτι πετεινὸν τοῦ οὐρανοῦ ἀποίσει τὴν φωνήν σου, † καὶ ὁ (ν) ἔχων τὰς πτέρυγας ἀπαγγελεῖ λόγον σου.

MS. A. (ι) ἐλευθέρου, (κ) στενάξει (λ) καὶ οἶνος εὐφραίνει ζῶντας, (μ) ἀργυρίου ἐπακούσεται σὺν τὰ πάντα. (ν) ἔχων πτέρυγας

ΚΕΦ. ια΄.

1 † Ἀπόστειλον τὸν ἄρτον σου ἐπὶ πρόσωπον τοῦ ὕδατος, † ὅτι ἐν πλήθει (α) ἡμερῶν εὑρήσεις 2 αὐτόν. † Δὸς μερίδα τοῖς ἑπτὰ, καί γε τοῖς ὀκτὼ, † ὅτι οὐ γινώσκεις τί ἔσται πονηρὸν ἐπὶ 3 τὴν γῆν. † (β) Ἐὰν πληρωθῶσι τὰ νέφη ὑετοῦ, ἐπὶ τὴν γῆν ἐκχέουσιν· † καὶ ἐὰν πέσῃ ξύλον ἐν τῷ Νότῳ, καὶ ἐὰν ἐν τῷ Βορρᾷ, τόπῳ † οὗ 4 πεσεῖται τὸ ξύλον, ἐκεῖ ἔσται. † Τηρῶν ἄνεμον οὐ σπείρει, † καὶ βλέπων ἐν ταῖς νεφέλαις οὐ θερί- 5 σει. † Ἐν οἷς οὐκ ἔστι γινώσκων τίς ἡ ὁδὸς τοῦ πνεύματος, † ὡς ὀστᾶ ἐν γαστρὶ (γ) κυοφορούσης, οὕτως οὐ γνώσῃ τὰ ποιήματα τοῦ Θεοῦ, ὅ- 6 σα ποιήσει τὰ σύμπαντα. (δ) † Ἐν τῷ πρωῒ σπεῖρον τὸ σπέρμα σου, † καὶ ἐν ἑσπέρᾳ μὴ ἀφέτω ἡ χείρ σου, † ὅτι οὐ γινώσκεις ποῖον στοιχήσει, ἢ τοῦτο ἢ τοῦτο, † καὶ ἐὰν τὰ δύο ἐπὶ τὸ 7 αὐτὸ, (ε) ἀγαθά. † Καὶ γλυκὺ τὸ φῶς, καὶ ἀγαθὸν τοῖς ὀφθαλμοῖς † τοῦ βλέπειν σὺν τὸν 8 ἥλιον. † Ὅτι καὶ ἐὰν ἔτη πολλὰ ζήσεται ὁ ἄνθρωπος, † ἐν πᾶσιν αὐτοῖς εὐφρανθήσεται, † καὶ μνησθήσεται τὰς ἡμέρας τοῦ σκότους, † ὅτι πολλαὶ ἔσονται. † πᾶν τὸ ἐρχόμενον ματαιό- 9 της. † Εὐφραίνου νεανίσκε ἐν νεότητί σου, καὶ ἀγαθυνάτω σε ἡ καρδία σου ἐν ἡμέραις νεότητός σου, † καὶ περιπάτει ἐν ὁδοῖς καρδίας σου ἄμωμος † (ζ) καὶ μὴ ἐν ὁράσει ὀφθαλμῶν σου. † καὶ γνῶθι ὅτι ἐπὶ πᾶσι τούτοις ἄξει σε ὁ Θε- 10 ὸς ἐν κρίσει. † Καὶ ἀπόστησον θυμὸν ἀπὸ καρδίας σου, † (η) καὶ παράγαγε πονηρίαν ἀπὸ σαρκός σου, † ὅτι ἡ νεότης καὶ ἡ ἄνοια ματαιότης.

MS. A. (α) τῶν ἡμερῶν (β) Ἐὰν πληρωθῶσιν (γ) τῆς κυοφορούσης, πρωΐᾳ (ε) ἀγαθόν. (ζ) καὶ ἐν ὁράσει (η) καὶ παράγαγε

Beata tu terra, cujus rex tuus fi
i genuorum, et principes tui ad
pus comedent (z) in fortitudine,
(ω) non confundentur. In pigri
humiliabitur contignatio: & in p
gritie manuum stillabit domus. In
risu faciunt pane, & (aa) vinū &
oleum ad lætificandū viventes: &
argento (bb) humiliatione obedie
omnia. Etiam in conscientia tua re
gi ne maledixeris: & in penetra
bꝰ cubiliū tuorū ne (cc) maled
ris diviti: quia volucris cæ
feret vocem tuam: & (dd) hab
pennas annuntiabit verbum tuu

CAP. XI.

Mitte panem tuū super fa
aquæ: quia in multitudine die
invenies illum. Da partem ipsis
ptem, & quidē ipsis octo: quia
scis, quid futurum malum sit su
terrā. Si repletæ fuerint nubes
viâ, super terrā (a) effundunt. E
ceciderit (b) lignum ad Austru
&, si ad Aquilonem, loco, ubi c
derit lignum; (c) ibi erit. Qui
servat ventum, non seminat: &
aspicit nubes, non metet. In
quibꝰ nō est cognoscēs, quæ sit
spiritûs, sicut ossa in utero prægn
tis; sic non cognosces opera Dei, q
faciet omnia. In (e) matutino
na semen tuum: & (f) ad v
rū (g) ne remittat manus tua: q
niam nescis, quid (h) recte
det, aut hoc, an illud: & si
idipsum; bona Et dulce lumen
bonum oculis videre Solem: Q
et si annis multis vixerit hom
(i) omnibus his lætabitur, &
recordabitur dierum tenebrar
quia multi erunt. Omne venie
vanitas. Lætare adolescens in
ventute tua: & (l) bonum fa
te cor tuum in diebus adolesce
tuæ: & ambula in viis cordis tu
(m) immaculatus, et non in
oculorum tuorū. Et scito quia
per omnibus his adducet te De
judiciū. Et repelle irā à corde
& aufer malitiā à carne tu
adolescentia & stultitia va
est.

תרגום TARGUM.

17 טב ליך ארעא דישראל בעדן די ימלוך עלך חזקיהו בר אחז די הוא מן יחוס בית דוד מלכא דישראל די הוא גבר תקיף באוריתא ונפק ידי חובת פקודיא ורברבניך בתר דמקרבין תמידא אכלין לחמא בזמן ארבע שעין מן עמל ידיהון בגבורת אוריתא ולא 18 בחלשות ובסמיות עינא: בחלשות עסק אוריתא ופקודיא מתמסכן גבר מבנין ובמכיכות הפקדתא דאתפקדת אתתא למנטר מן ריחוק סואבות דמא ולא נטרא 19 מתעבדא דוותא בגו ביתה: לחוכא עבדין צדיקיא לחם לפרנסא עניין כפינין וחמרא דמזגין לדצחין יהא להון לחדוא לעלמא דאתי וכסף פורקניהון יסהד עליהון זכותא 20 לעלמא ההוא דאתי באנפי כולא: אף במנדעך בחביוני לבך מלכא לא תלוט ובאדרון בית משכבך לא תלוט חכימא ארום רזיאל מלאכא מכריז בכל יומא מן שמיא על טורא דחורב ומהלך קליה בכל עלמא ואליהו כהנא רבא אזל ופרח באויר שמיא כנשרא מ[illegible] נפין ומחוי מלין דמתעבדין בטמורתא לכל דיירי ארעא:

יא

1 אושיט לחם פרנסותך לעניי דאזלין בספינן על אפי מיא ארום בתר עדן יומין סגיאין 2 תמן תשכח אגריה לעלמא דאתי: הב חולק טב מן זרעא לחקלך בתשרי ולא תתמנע מלמזרע אף בכסליו ארום לא תנדע מה יהי בישא עלוי ארעא אי חרפי נצחן אי אפלי: 3 אין מתמלין ענניא מטרא עלוי ארעא מערן ית מיהון בגין זכותא דצדיקיא ואין לית זכו בדרא ההוא בימא ובמדברא נחתן דלא יתהנון מנהון בני אנשא ואי אתגזר מן שמיא למנפל מלכא ויעטוהי מן שררותהון מן קדם מימרא דשמיא הוי סיבעא וכפנא בדרומא 4 או בצפונא אתר דאתגזר למתקימא ההיא עיטא משתלחא למהוי: גבר דנטיר חרשין וקוסמין לא יעבד טב לעלם ודמסתכל במזליא לא מגבי אגר ארום חרשין מתילין 5 לרוחא דלא מתפס בידוי דבר נש ומזליא מתילן לענני שמיא דאזלו ולא תיבין: היכמה דליתך ידע אכדין יהלך רוח נשמתא דחיי בגוף עולמא שליא דשרי במעינא דאמיה מעברא והיכמה דלא תנדע או דכר או נוקבא עד זמן דאתיליד הכדין ליתך ידע ית 6 עובדא דיי דעבד בחוכמתא ית כולא: ביומי עולמתך תסב אתתא ותוליד בנין ולעדן סיבותך לא תשבוק את חולקך מלמילד בנין ארום לא אשתמודע לך אידין מנהון 7 אתבחר למהוי טב הדין אי דין אי תרויהון כחדא טבין: ובסים נהורא דאוריתא וטב לאנהרא עינין חשיכין למחזי יקר אפי שכנתא דעתיד לאנהרא אפי צדיקיא מן זיו 8 שכנתא ולמהוי שופריהון כשמשא: ארום אם יומין סגיאין חיי אנשא בכולהון חזי ליה למחדי ולמעסק באוריתא דיי יהא דכיר ית יומי חשוכא דמותא ולא יחוב ארום סגיאין אנון יומיא דישכיב שכיבא בבית קבורתא לקבלא דינא מן שמיא בחיוהי ברחים כל 9 ומן דייתי עלוהי פורענותא על הבלותא די עבד: חדי עולמא ביומי עולימותך ויהי לבך טב עלך ביומי רביותך ואזל בענותנותא עם אורחי לבך ותהי זהיר בחזיוני עינך ולא 10 תסתכל בביש ואשתמודע לך ארום על כל אלין עתיד יי לאעלותך בדינא: ותעדי רגיז מלבבך ולא תגרום ביש על בסרך ארום עולימותא ויומי אוכמות שערא הבל:

PARAPH CHALD. Versio Latina.

Bene erit tibi terra *Israel* quo tempore regnabit super te Hizkiahu
Achaz, qui est de prosapia domus David regis Israel, quòd sit vir vale
Lege, *& elapsus è manibus reatus præceptorum*, & magnates tui postq
obtulerint juge sacrificium, comedent panem *tempore quatuor horarum*
labore manuum suarum in fortitudine Legis, & non in debilitate & in
citate oculorum. In debilitate studii Legis & præceptorum depaupera
vir ab ædificio: & in negligentia præcepti quo mandatum est mulier
custodiat se ab abominatione contaminationis sanguinis, et non custodi
fit tristitia intra domum *ejus*. Ad gaudium faciunt justi panem, ad alend
pauperes esurientes, & vinum quod miscent sitientibus, erit eis in læti
in seculo venturo, & argentum redemptionis eorum testabitur pro eis
ritum in seculo ipso *venturo* in conspectu omniū. Etiam in conscientia
in absconditis cordis tui Regi ne maledicas, & in penetrali domus cu
culi tui ne maledicas *sapienti*: etenim *Raziel* angelus *clamat quoti
cœlis super montē Horeb, & permeat vox ejꝰ universū mundū*; & Eli
sacerdos magnꝰ it volās in aëre cœli velut aquila alata, & nūtiat se
qui fiunt in latibulo omnibꝰ habitatoribꝰ terræ.

CAP. XI.

Porrige *panē alimenti tui* pauperibꝰ qui ambulant in navibꝰ sup fa
aquarum, quoniam post tempꝰ dierum multorū *illic* invenies merc
ejus in seculo venturo. Dato partem bonam ex semine agro tuo in T
ne cesses seminare etiam in Kasleu: etenim nescies quid erit mali super
ram *an præcocia prævalitura sint an serotina*. Si impletæ fuerint nubes
via, super terram effundent aquas suas *propter meritum justorū; si*
*lum fuerit meritum in generatione ista, in mare & in desertum desc
ne commodum percipiant ex eis filii hominis*: & si decretum fuerit d
lo ut cadat rex & consiliarii ejus de principatu eorum, ex auctoritate
Domini fiet saturitas aut fames; in Meridiem aut Septentrionem, ubi
decretum fuerit ut firmetur illud consilium, mittitur ut fiat. Vir qui ob
vaverit incantatores & ariolos, non faciet bonum in seculo: & qui
in astris, non congregat mercedem: etenim incantatores assimilantur v
qui non apprehenditur manibꝰ filii hominis, & astra assimilantur nu
cœli, quæ eunt, & non revertuntur. Quemadmodū non cognoscis quo
modo ibit spiritꝰ animæ vitæ in corpus infantis abortivi, qui manet in
matris suæ prægnantis; & quemadmodum non cognosces an mas aut fe
na fuerit, quoad nascatur: sic tu non cognoscis opꝰ Dn̄i qui facit in sap
tia omnia. In die juventutis tuæ accipies uxorem, & gignes filios:
tempore senectutis tuæ ne dimittas uxorem, quæ est pars tua, quo m
neres filios: etenim non notū est tibi quisnam ex illis electus sit, ut fi
hic an ille, an ambo boni pariter sint futuri. Et dulcis est lux *Legis*, &
ad illuminandū oculos caligantes, ut videant gloriā faciei majestatis
mini,] quia futurū est ut illuminentur facies justorum ex splendore ma
tis [*ejus*,] & ut sit pulchritudo eorum ut Solis. Etenim si dies multi vi
minis fuerint, in omnibꝰ illis decet eū gaudere, & studere in lege Dn̄i
memor dierū tenebrarū mortis, & non peccabit, quia multi sunt die
jacebit mortuꝰ in domo sepulturæ, [*decétque eum*] suscipere judi
in vita sua cū dilectione omni tempore quo venerit sup eū pu
vanitatē quam fecit. Lætare puer in diebꝰ pueritiæ tuæ, & sit cor
sup te in diebꝰ adolescentiæ tuæ, & ambulato in humilitate cū v
tui, et esto cautꝰ in visu oculorū tuorū, ut non contempleris mal
sit tibi quòd propter omnia hæc futurum est ut Dn̄s introduc
cium. Et removebis iracundiam à corde tuo, ne moliaris malum
nem tuam: etenim adolescentia & dies nigredinis capillorum va

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܛܘܒܝܟܝ ܡܕܝܢܬܐ ܕܡܠܟܟܝ ܒܪ ܚܐܪܐ . ܘܪܘܪܒܢܝܟܝ ܒܥܕܢܗܘܢ ܐܟܠܝܢ
ܠܓܢܒܪܘܬܐ ܘܠܐ ܠܡܫܬܝܐ. * ܒܡܟܝܟܘܬܐ ܢܬܡܟܟ ܡܛܠܠܐ. ܘܒܡܫܪܝܘܬܐ ܕܐܝܕܝܐ ܢܕܠܦ 18
ܒܝܬܐ. * ܠܚܕܘܬܐ ܥܒܝܕܝܢ ܠܚܡܐ ܘܚܡܪܐ ܘܡܫܚܐ . ܕܢܚܕܘܢ ܚܝܐ. ܘܟܣܦܐ 19
ܡܡܟܟ ܘܡܛܥܐ ܠܗܘܢ ܠܟܠ. * ܐܦ ܒܡܕܥܟ ܠܡܠܟܐ ܠܐ ܬܠܘܛ. ܘܒܬܘܢܝ 20
ܡܫܟܒܟ ܠܐ ܬܠܘܛ ܠܥܬܝܪܐ. ܡܛܠ ܕܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܢܘܒܠ ܩܠܟ . ܘܡܪܐ
ܟܢܦܐ ܢܚܘܐ ܡܠܝܟ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܐ *

* ܫܕܪ ܠܚܡܟ ܥܠ ܐܦܝ ܡܝܐ. ܡܛܠ ܕܒܣܓܝܐܘܬ ܝܘܡܬܐ ܬܫܟܚܝܘܗܝ. * ܗܒ 1
ܡܢܬܐ ܠܫܒܥܐ ܐܦ ܠܬܡܢܝܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ ܡܢܐ ܒܝܫܬܐ ܢܗܘܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. 2
* ܐܢ ܢܬܡܠܘܢ ܥܢܢܐ ܡܛܪܐ . ܥܠ ܐܪܥܐ ܢܫܦܘܢ. ܘܐܢ ܢܦܠ ܩܝܣܐ ܠܬܝܡܢܐ. ܐܘ 3
ܠܓܪܒܝܐ ܒܐܬܪ ܕܢܦܠ ܩܝܣܐ. ܬܡܢ ܢܗܘܐ. * ܕܢܛܪ ܠܪܘܚܐ. ܠܐ ܙܪܥ. 4
ܘܕܚܐܪ ܒܥܢܢܐ. ܠܐ ܚܨܕ . * ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ ܡܢܐ ܗܝ ܐܘܪܚܗ ܕܪܘܚܐ. ܐܝܟ ܓܪܡܐ 5
ܒܟܪܣܐ ܕܒܛܢܬܐ . ܗܟܢܐ ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ ܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܟܠ ܕܥܒܕ. * ܒܨܦܪܐ 6
ܙܪܘܥ ܙܪܥܟ. ܘܒܪܡܫܐ ܠܐ ܬܫܒܘܩ ܐܝܕܟ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ ܐܝܢܐ ܢܨܠܚ. ܐܢ ܗܢܐ
ܐܘ ܗܢܐ. ܘܐܢ ܬܪܘܝܗܘܢ ܐܝܟ ܚܕ ܛܒܝܢ. * ܒܣܝܡ ܢܘܗܪܐ ܘܫܦܝܪ ܠܥܝܢܐ. ܘܝܬܝܪ 7
ܠܚܙܝܢ ܫܡܫܐ.* ܡܛܠ ܕܐܢ ܫܢܝܢ ܣܓܝܐܢ ܢܚܐ ܒܪܢܫܐ. ܒܟܠܗܘܢ ܢܚܕܐ. ܘܢܥܗܕ 8
ܝܘܡܬܐ ܕܚܫܘܟܐ. ܡܛܠ ܕܣܓܝܐܝܢ ܢܗܘܘܢ. ܟܠ ܕܐܬܐ ܗܒܠܐ. * ܚܕܝ ܒܛܠܝܘܬܟ 9
ܥܠܝܡܐ . ܘܐܬܗܢܐ ܒܛܒܬܐ. ܘܗܠܟ ܒܐܘܪܚܬܐ ܕܠܒܟ. ܘܒܚܙܘܐ ܕܥܝܢܝܟ. ܘܕܥ
ܕܥܠ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܡܝܬܐ ܠܟ ܡܪܝܐ ܒܕܝܢܐ.

* O te beatam civitatem cujus rex ingenuus 17
eſt, & cujus magnates ſuo tempore comedunt,
ad ſtrenuitatem, & non ad compotandum.
Per pigritiam inclinabitur contigna- 18
tio, & per remiſſionem manuum perſtillabit
domus. Ad hilaritatem facta ſunt panis & 19
vinum atque oleum, ut viventes exhilarent :
pecunia verò penitùs eos deprimit ac ſeducit.
Ne in mente quidem tua regi maledi- 20
xeris : & in cubiculo cubilis tui ne maledicas
diviti : nam volucre cœli deferet vocem
tuam, & dominus volucris patefaciet ſermones
tuos.

CAP. XI.

Mitte panem tuum ſuper aquarum ſuper- 1
ficiem, quia poſt multos dies reperies illum.
Da portionem ſeptem, imò octo : quia ne- 2
ſcis quid mali futurum ſit ſuper terram. Si 3
nubes impleantur pluviâ, ſuper terram effundent
eam. Et ſi lignum cadat ad Auſtrum,
aut in plagam Aquilonarem, quocunque ceciderit
lignum, ibi manebit. Qui ventum 4
obſervat, non ſeminabit : & qui ſpectat nubes,
non metet : Quoniam neſcis quæ ſit 5
via venti. Ut enim prægnantem quæ concipit,
ſic ignoras opera Domini omnia quæ facit.
Quolibet mane ſemina ſemen tuum, & 6
veſpere ne remittas manum tuam : neſcis
enim utrum proſperè ſit habiturum, an hoc,
an illud : quòd ſi utrumque ſimul, eò meliora.
Gratum eſt lumen & jucundum ocu- 7
lis, præſertim verò ſolem videntibus. Nam 8
ſi multis annis vivat homo, in illis omnibus
lætetur, & recordetur dierum tenebrarum,
quoniam plurimi erunt : quicquid venturum
eſt, vanitas eſt. In diebus adoleſcentiæ tuæ 9
lætare adoleſcens, & fruere bonis, & ambula
in viis cordis tui, & in aſpectu oculorum
tuorum : at ſcito quòd pro his omnibus
inducet te Dominus in judicium.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 * مغبوطة انت ايتها الارض الذي ملكك ابن حر * ورؤساؤك ياكلون في وقت الطعام بقوة وما
18 يخجلون * بانواع الكسل ينحني السقف * وبطلان الايادي يدلف البيت * يصنعون الخبز
19 ضحكا * والخمر يسر الاحياء * وكل الاشياء تذل وتطيع للفضة * ومع هذا لا تلعنن انت في 20
سريرتك ملكا * وفي خزاين مساكنك لا تلعنن موسرا * فان طاير السماء يسير صوتك *
وذو الاجنحة يخبر قولك *

* الفصل الحادي عشر *

1 * ارسل خبزك على وجه الماء فانك ستجده في كثرة الايام * اعط السبعة نصيبا وامنح موفرا 2
للثمنية * فانك ما تعرف ماذا يكون على الارض شرير * اذا كملت السحاب المطر سكبا 3
على الارض * واذا سقطت خشبة من القبلة واذا سقطت في موضع الشمال * حيث تسقط
الخشبة هناك تكون * من يرصد الرياح ما يزرع * ومن يتبصر الى السحب ما يحصد * 4
5 * الامور التي لم يوجد فيها احد يعرف ما هو طريق الروح * كالعظام في بطن الحبلى
كذلك ما تعرف البرايا صنايع الله التي يعملها كلها * من الغدوات ازرع زرعك * وفي المساوات 6
لا تطلق يدك بطالة * فانك ما تعلم ايهما ينبت وينشو اما ذا واما ذاك * وان اينعا
كلاهما معا فذاك حظ صالح * والنور حلو وصالح للعينين لتبصر الشمس معه * لان الانسان 7
اذا عاش سنين كثيرة يسر بها كلها ويتذكر ايام الظلمة * فانها تكون كثيرة * كل امر 8
وارد باطل * ايها الشاب افرح في حداثتك * وليبتهج قلبك في ايام شبيبتك * وتصرف 9
غير معيب في طرق قلبك * ولا تتصرف في معاينة عينيك * واعلم ان بعد هذه الخطوب
سيحملك الله الى الدينونة

Fœlix es tu O terra, cujus rex filius eſt 17
ingenuus, & cujus principes tempore
comeſtionis veſcuntur generosè, nec erubeſcunt.
Variis pigritiæ generibus fle- 18
ctitur laqueare, & otio manuum perſtillat
domus. Panem faciunt riſum, 19
& vinum lætificat viventes : & omnia
ſubjiciuntur & obediunt argento. Præter- 20
ea ne maledicas tu regi in ſecreto tuo,
& in conclavibus ædium tuarum ne maledicas
diviti : nam volucre cœli perferet
vocem tuam, & alatum renuntiabit
ſermonem tuum.

CAP. XI.

Mitte panem tuum ſuper aquæ ſu- 1
perficiem : quoniam reperies eum inter
multitudinem dierum. Da portionem 2
ſeptem, & octo abundè largire : quia
neſcis quid mali futurum ſit ſuper terram.
Cùm complentur nubes pluviâ, ef- 3
funditur ſuper terram. Cùmque ceciderit
lignum ab Auſtro, & cùm ceciderit
in plagam Aquilonarem, quocunque ceciderit
lignum, ibi manebit. Qui obſer- 4
vat ventos, non ſeret : & qui reſpicit ad
nubes, non metet. Res nimirum ſunt, in 5
quibus nemo reperitur qui ſciat quænam
ſit via venti. Ut oſſa in utero gravidæ,
ſic ignorant creaturæ opera Dei cuncta
quæ facit. A matutinis horis ſere ſemen 6
tuum, & in veſpertinis ne relinquas manum
tuam otioſam : quia neſcis utrùm
naſcetur & adoleſcet, hoc ne, an illud :
quòd ſi utrunque ſimul exoriatur, optima
ſanè fortuna. Porrò lux dulcis eſt 7
& commoda oculis, ut cùm ea ſolem videas.
Nam ſi homo multos vivat an- 8
nos, in omnibus lætetur, & recordetur
dierum tenebrarum (multi ſiquidem
erunt :) res omnis ventura vana eſt.
Heus adoleſcens, lætus eſto in adole-
ſcentia tua, & exultet cor tuum in 9
diebus juventutis tuæ, & inculpatus verſare
in viis cordis tui, & ne ambules
in aſpectu oculorum tuorum : &
ſcito quòd poſt ſermones iſtos adiget te
Deus ad judicium.

קֹהֶלֶת׃ יב

CAP. XII. יב

non quo usque : tuarum electionum diebus in tui creatoris memento Et

1 וּזְכֹר אֶת־בּוֹרְאֶיךָ בִּימֵי בְּחוּרֹתֶיךָ עַד אֲשֶׁר לֹא־

eis in mihi Non ,dicas quibus anni attingant & , mali dies veniant

יָבֹאוּ יְמֵי הָרָעָה וְהִגִּיעוּ שָׁנִים אֲשֶׁר תֹּאמַר אֵין־לִי בָהֶם

, luna & , lux & , sol obtenebrescat non Donec .voluntas

2 חֵפֶץ׃ עַד אֲשֶׁר לֹא־תֶחְשַׁךְ הַשֶּׁמֶשׁ וְהָאוֹר וְהַיָּרֵחַ

die In .pluviam post nubes revertantur & : stellæ &

3 וְהַכּוֹכָבִים וְשָׁבוּ הֶעָבִים אַחַר הַגָּשֶׁם׃ בַּיּוֹם

cessabunt & :virtutis viri pervertentur &,domus custodes se cōmovebūt qua

שֶׁיָּזֻעוּ שֹׁמְרֵי הַבַּיִת וְהִתְעַוְּתוּ אַנְשֵׁי הֶחָיִל וּבָטְלוּ

.fenestris in videntes tenebrescent & ,diminuerunt quia , molares

הַטֹּחֲנוֹת כִּי מִעֵטוּ וְחָשְׁכוּ הָרֹאוֹת בָּאֲרֻבּוֹת׃

cōsurget & : molæ vocis humilitate in , platea in fores claudentur Et

4 וְסֻגְּרוּ דְלָתַיִם בַּשּׁוּק בִּשְׁפַל קוֹל הַטַּחֲנָה וְיָקוּם

excelso de Etiam .cantici filiæ omnes incurvabuntur & ,volucris voce ad

5 לְקוֹל הַצִּפּוֹר וְיִשַּׁחוּ כָּל־בְּנוֹת הַשִּׁיר׃ גַּם מִגָּבֹהַּ

, locusta erit oneri & ,amygdalus florebit & , via in consternati &,timebūt

יִרָאוּ וְחַתְחַתִּים בַּדֶּרֶךְ וְיָנֵאץ הַשָּׁקֵד וְיִסְתַּבֵּל הֶחָגָב

, sui seculi domum ad homo vadens quoniā : aviditas dissipabit &

וְתָפֵר הָאֲבִיּוֹנָה כִּי־הֹלֵךְ הָאָדָם אֶל־בֵּית עֹלָמוֹ

,argēteus funis elongetur non Donec .plangentes platea in circuibūt &

6 וְסָבְבוּ בַשּׁוּק הַסֹּפְדִים׃ עַד אֲשֶׁר לֹא־יֵרָחֵק חֶבֶל הַכֶּסֶף

,scaturiginem super hydria conteratur & : aurea lenticula cōfringatur &

וְתָרֻץ גֻּלַּת הַזָּהָב וְתִשָּׁבֶר כַּד עַל־הַמַּבּוּעַ

terram super pulvis revertetur Et .cisternam ad rota cōfringatur &

7 וְנָרֹץ הַגַּלְגַּל אֶל־הַבּוֹר׃ וְיָשֹׁב הֶעָפָר עַל־הָאָרֶץ

.illum dedit qui , Deum ad revertetur spiritus & : fuit quod sicut

כְּשֶׁהָיָה וְהָרוּחַ תָּשׁוּב אֶל־הָאֱלֹהִים אֲשֶׁר נְתָנָהּ׃

fuit quia amplius Et .vanitas omnia ,Choheleth dixit vanitatū Vanitas

8 הֲבֵל הֲבָלִים אָמַר הַקּוֹהֶלֶת הַכֹּל הָבֶל׃ וְיֹתֵר שֶׁהָיָה 9

,fecit auscultare & ,populum scientiam docuit adhuc : sapiens Choheleth

קֹהֶלֶת חָכָם עוֹד לִמַּד־דַּעַת אֶת־הָעָם וְאִזֵּן

invenire Choheleth Quæsivit .multum parabolas direxit ,investigavit &

10 וְחִקֵּר תִּקֵּן מְשָׁלִים הַרְבֵּה׃ בִּקֵּשׁ קֹהֶלֶת לִמְצֹא

sapientum Verba .veritatis verba,rectitudinis scripturam &:voluntatis verba

11 דִּבְרֵי־חֵפֶץ וְכָתוּב יֹשֶׁר דִּבְרֵי אֱמֶת׃ דִּבְרֵי חֲכָמִים

sunt dati ,collectionum auctores , plantati clavi tanquā & stimuli tanquam

כַּדָּרְבֹנוֹת וּכְמַשְׂמְרוֹת נְטוּעִים בַּעֲלֵי אֲסֻפּוֹת נִתְּנוּ

libros facere .sis monitus mi fili illis ab amplius Et .uno pastore à

12 מֵרֹעֶה אֶחָד׃ וְיֹתֵר מֵהֵמָּה בְּנִי הִזָּהֵר עֲשׂוֹת סְפָרִים

verbi Finis .carnis labor multum lectionis & : finis non multum

13 הַרְבֵּה אֵין קֵץ וְלַהַג הַרְבֵּה יְגִעַת בָּשָׂר׃ סוֹף דָּבָר

quia ,custodi ejꝰ mandata & , time Deum : est auditus omnis

הַכֹּל נִשְׁמָע אֶת־הָאֱלֹהִים יְרָא וְאֶת־מִצְוֺתָיו שְׁמוֹר כִּי־

adducet Deus opus omne Quia .homo omnis hoc

14 זֶה כָּל־הָאָדָם׃ כִּי אֶת־כָּל־מַעֲשֶׂה הָאֱלֹהִים יָבִא

.malum sive ,bonum sive : occultum omne super judicium in

בְמִשְׁפָּט עַל כָּל־נֶעְלָם אִם־טוֹב וְאִם־רָע׃

Versio VUL. LAT.

CAP. XII.

1 MEmento Creatoris tui in diebꝰ juventutis tuæ, antequàm veniat tempꝰ afflictionis, & appropinquent anni, de quibꝰ dicas; Non mihi placent : 2 Antequā tenebrescat Sol, & lumen, & luna, & stellæ, & revertantur nubes post pluviā: 3 Quando commovebuntur custodes domûs, & nutabunt viri fortissimi, & otiosæ erūt molentes in minuto numero, & tenebrescent videntes p foramina: 4 Et claudent ostia in platea, in humilitate vocis molentis, & consurgent ad vocem volucris, & obsurdescent omnes filiæ carminis. 5 Excelsa quoq; timebūt, & formidabunt in via, florebit amygdalus, impinguabitur locusta, & dissipabitur capparis: quoniam ibit homo in domum æternitatis suæ, & circuibūt in platea plangentes. 6 Antequàm rumpatur funiculus argenteus, & recurrat vitta aurea, & conteratur hydria super fontē, & confringatur rota super cisternam, 7 Et revertatur pulvis in terrā suam unde erat, & spiritꝰ redeat ad Deū, qui dedit illum. 8 Vanitas vanitatū, dixit Ecclesiastes, & omnia vanitas. 9 Cúmque esset sapientissimꝰ Ecclesiastes, docuit populū, & enarravit quæ fecerat: & investigans composuit parabolas multas. 10 Quæsivit verba utilia, & conscripsit sermones rectissimos, ac 11 veritate plenos. Verba sapientiū sicut stimuli, & quasi clavi in altū defixi, quæ p magistrorum consiliū data sunt à pasto- 12 re uno. His ampliùs, fili mi, ne requiras. Faciēdi plures libros nullꝰ est finis : frequénsq; meditatio, carnis afflictio est: 13 Finē loquendi pariter omnes audiamus. Deū time, & mandata ejꝰ observa : hoc est enim omnis 14 homo: Et cuncta, quæ fiunt, adducet Deꝰ in judiciū pro omni errato, sive bonum, sive malum illud sit.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. ιβʹ.

1 †ΚΑὶ μνήσθητι τοῦ κτίσαντός σε †ἐν ἡμέραις νεότητός σου, †(α)ἕως ὅτου μὴ ἔλθωσιν (β) αἱ ἡμέραι τῆς κακίας, † καὶ φθάσωσιν ἔτη ἐν οἷς ἐρεῖς, †Οὐκ ἔστι μοι ἐν αὐτοῖς θέλη- 2 μα. †Ἕως οὗ μὴ σκοτισθῇ ὁ ἥλιος καὶ τὸ φῶς, †καὶ ἡ σελήνη καὶ οἱ ἀστέρες, † καὶ (γ) ἐ- 3 πιστρέψωσι τὰ νέφη (δ)ὀπίσω τοῦ ὑετοῦ· †Ἐν ἡμέρᾳ (ε)ᾗ ἐὰν σαλευθῶσι φύλακες τῆς οἰκίας, † καὶ διαστραφῶσιν ἄνδρες τῆς δυνάμεως, † καὶ ἤργησαν αἱ ἀλήθουσαι ὅτι ὠλιγώθησαν, † καὶ σκοτάσουσιν αἱ βλέπουσαι ἐν ταῖς ὀπαῖς· 4 †Καὶ κλείσουσιν (ζ) θύρας ἐν ἀγορᾷ, †ἐν ἀσθενείᾳ φωνῆς τῆς ἀληθούσης. † καὶ ἀναστήσεται εἰς φωνὴν τοῦ στρουθίου, †καὶ ταπεινωθήσονται πᾶσαι 5 αἱ θυγατέρες τοῦ ᾄσματος. † (η)Καί γε εἰς τὸ ὕψος ὄψονται, καὶ θάμβοι ἐν τῇ ὁδῷ, †καὶ (ϛ) ἀνθήσῃ τὸ ἀμύγδαλον, †καὶ παχυνθῇ ἡ ἀκρίς, †καὶ διασκεδασθῇ ἡ κάππαρις, †ὅτι ἐπορεύθη (θ) ὁ ἄνθρωπος εἰς οἶκον αἰῶνος αὐτοῦ, †καὶ 6 ἐκύκλωσαν ἐν ἀγορᾷ οἱ κοπτόμενοι. †Ἕως ὅτου μὴ ἀναστραφῇ (ʺ) τὸ σχοινίον τοῦ ἀργυρίου, †καὶ (ι) συντριβῇ τὸ ἀνθέμιον τοῦ χρυσίου, †καὶ συντριβῇ (κ) ὑδρία ἐπὶ τῇ πηγῇ, †καὶ συντροχάσῃ ὁ 7 τροχὸς ἐπὶ τὸν λάκκον, †Καὶ (˜) ἐπιστρέψῃ ὁ χοῦς ἐπὶ τὴν γῆν ὡς ἦν, †καὶ τὸ πνεῦμα (ʹ) ἐπιστρέ- 8 ψῃ πρὸς τὸν θεὸν ὃς ἔδωκεν αὐτό. †Ματαιότης ματαιοτήτων, εἶπεν ὁ Ἐκκλησιαστής, † τὰ 9 πάντα ματαιότης. †Καὶ περισσὸν ὅτι ἐγένετο (ʹ) Ἐκκλησιαστὴς σοφός, † (λ) ὅτι ἐδίδαξε γνῶσιν σὺν τὸν ἄνθρωπον, †καὶ οὖς ἐξιχνιάσεται 10 κόσμιον παραβολῶν. †Πολλὰ ἐζήτησεν Ἐκκλησιαστὴς †τοῦ εὑρεῖν λόγους θελήματος, † (μ)καὶ γεγραμμένον εὐθύτητος, λόγους ἀλη- 11 θείας. †Λόγοι σοφῶν ὡς τὰ βούκεντρα, †καὶ ὡς ἧλοι (ν) πεφυτευμένοι, †οἳ παρὰ τῶν (ξ) συν- 12 θεμάτων ἐδόθησαν †ἐκ ποιμένος ἑνός. Καὶ περισσὸν ἐξ αὐτῶν †υἱέ μου (ο) φύλαξαι· τοῦ ποιῆσαι βιβλία πολλὰ †οὐκ ἔστι περασμός, †καὶ 13 μελέτη πολλὴ κόπωσις σαρκός. †Τέλος λόγου, τὸ πᾶν ἄκουε· †τὸν θεὸν φοβοῦ, καὶ τὰς ἐντολὰς αὐτοῦ φύλασσε· †ὅτι τοῦτο πᾶς ὁ ἄνθρω- 14 πος. †Ὅτι (π) σύμπαν τὸ ποίημα ὁ θεὸς ἄξει ἐν κρίσει, ἐν παντὶ παρεωραμένῳ, ἐὰν ἀγαθὸν καὶ ἐὰν πονηρόν.

MS. A. (α) ἕως οὗ (β) ἡμέραι τῆς κακίας σου, καὶ φθάσωσιν (γ) ἐπιστρ
(δ) ὀπίσω ὑετοῦ· (ε) ᾗ ἂν (ζ) θύραν (η) Καί γε ἀπὸ ὕψους (ϛ) ἀνθήσ
θρωπος (ʺ) σχοινίον (ι) συνθλιβῇ (κ) ἡ ὑδρεία ἐπὶ τὴν πηγήν, (˜) ἐπιστ
(ʹ) ἐπιστρέψει (ʹ) ὁ Ἐκκλησιαστὴς (λ) καὶ ὅτι (μ) γεγραμμένον (ν) πεφυ
μένοι, (ξ) συναγμάτων (ο) φυλάσσου· (π) σύμπαν τὸ ποίημα ἄξει

MS. A. Ἐκκλησιαστής.

CAP. XII.

ET memento (a) Creatoris tui in diebꝰ juventutis tuæ; (b) usquequo non veniant dies malitiæ, & propinquent anni, in quibꝰ dic Non est mihi in illis volunta usquequò non obtenebrescat Sol, & lumen, & Luna, & stellæ: & revertentur nubes post pluviā. In quo commoti fuerint custodes domûs, & (c) perversi fuerint viri fortitudinis: & (d) cessaverint molētes, quoniā imminutæ sunt: & tenebrescēt, (e) quæ vidēt in foraminibꝰ: Et claudēt ostia in platea in (f) infirmitate vocis molentis, & consurget ad vocē (g) passeris: & (h) humiliabuntur omnes filiæ carminis. Et in (i) sublime aspi ent; & (k) terrores in via. Et florebit amygdalū, & impinguabitur locusta, & (l) dissipabitur capparis: quoniā ivit homo in domū æternitatis suæ, & circumierunt in platea plangentes. (m) Usquequo non evertatur funiculꝰ argenteus, & (n) conteratur vitta auri, & conteratur hydria super fontē, & convolvatur rota ad cisternā, & revertatur pulvis in terram, qua erat, & spiritꝰ redeat ad Deū, qui dedit illū? (p) Vanitas vanita dixit Ecclesiastes, omnia vanita Et (q) amplꝰ, quia factus est Ecclesiastes sapiens, (r) quia docuit scientiā hominem; (s) & scrutabitur ornatū parabolarum Multū (t) quæsivit Ecclesiastes, inveniret verba (u) voluntatis, scriptū rectitudinis, verba veritatis. Sermones sapientū tanquam stimuli, & quasi clavi (x) plantati. Qui à (y) conciliis dati sunt pastore uno. Et amplius ab mi, (z) cave, faciendi libros tos, non est finis, & meditatio rima, labor est carnis. (a nis verbi, omne audi: Deum time, mandata ejus custodi: (aa) enim omnis homo: Quia omne factū Deꝰ adducet in judici in omni contempto, sive bonum sive malum.

תרגום TARGUM.

יב

1 ותהי דכיר ית בריך ליקרותיה ביומי רביותך עד דלא ייתון לותך יומי בישות וימטון
2 עלך שנין דתימר לית ליבהון רעוא׃ עד דלא ישתני זיו יקרא דאפך דמתיל לשמשא
ונהורא דעינך עד דלא יסתמון והדר ליסתך עד דלא יתקדרון ובבי עינך דמתילן
3 לכוכביא עד לא יתעממון ריסי עינך יהון זלגין דמען כעננין בתר מטרא׃ ביומא די
יזועון ארכובתך ויתנקשון אדרעך ויתבטלון ככי פומך עד לא יכלין למלעס מיכלא
4 ויתעממון עינך דמסתכלין בחרכי רישך׃ ויהון רגלך כבילן מלמפק בשוקא ויעדי מנך
רעות מיכלא ותהי מתער משנתך על עסק קל עופא כאלו על גנביא דאזלין בליליא
5 ויתרפסון ספיתך מלמימר שירתא׃ אף מן עובדין דהוו מן קדמת דנא תהי דחיל
למדכר יתהון ובשושיתא קלילא מתילא באנפי נפשך לטור רם בעדן מהלכך
באורחא ותציץ ריש שזרתך מן כחישותא כשגדא ויתנפחון אסתורי רגלך ותתמנע מן
משכבא ארום אתפני אנשא למהך לבית קבורתיה ויסחרון מלאכיא תבעי דינך
6 כספריא דמסחרין בשוקא למכתב דין חושבנך׃ עד די לא יתאלם לישנך מלמללא
7 ותהי רעיעא מוקרא דרישך ותתבר מרירתך על כבדך וירהט גופך בגו קברך׃ ויתוב
בסרך דאתברי מן עפרא עלוי ארעא היכמה דהוה מלקדמין ורוח נשמתך תתוב למקם
8 בדינא קדם יי דיהבה לך׃ כד אסתכל שלמה מלכא דישראל בהבלו דעלמא הדין
9 ובהבלין דעבדין בני אנשא אמר קהלת במימריה כולא הבלו׃ ויותר מן כל בני אנשא
הוה שלמה די מתקרי קהלת חכים ותוב הוה מאלף מנדעא ית עמא בית ישראל ואצית
לקל חכימיא ובלש בספרי חוכמתא וברוח נבואה מן קדם יי תקין ספרי חוכמתא
10 ומתלין דסוכלתנו סגיאין לחדא׃ בעא שלמה מלכא דמתקרי קהלת בחוכמתיה למדן
דינין על הרהורי לבא דאנשא ובלא סהדין בכן אתאמר ליה ברוח נבואה מן קדם יי הא
כבר כתיב בספר אורייתא על ידוי דמשה רבהון דישראל תקין פתגמין ומהימנין
11 על מימר סהדיא יקום פתגם׃ פתגמי חכימין מתילין לזקתין ולקלשונין לאלפא
חוכמתא לסריקי מנדעא היכמה דמאלף זקתא לתורתא ורבני סנהדרין מרי הלכתין
ומדרשין דאתיהיבו על ידוי דמשה נביא דרעא בלחודוי ית עמא בית ישראל במדברא
12 במנא וברגוגין׃ ויתיר מנהון בני אזדהר למעבד ספרי חוכמתא סגי עד לית סוף
13 למעסק בפתגמי אורייתא ולאסתכלא בליאות בשרא׃ סוף פתגם דאתעבד בעלמא
בצנעא כולא עתיד דלהוי אתפרסמא ולאשתמעא לכל בני אנשא בכן ית מימרא דיי הוי
דחיל וית פקודוי הוי נטר דלא תחטי למחב בסתרא ואין תחוב למתב ארום כדין
14 חזי למהוי אורח כל אנש׃ ארום ית כל עובדא יי עתיד לאיתאה ית דינא רבא ועתיד לפרסמא
על פתגם דאתכסי מן בני אנשא אין טב ואין ביש׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. XII.

ET esto memor creatoris tui, ut glorifices eum in diebus adolescen tuæ, antequàm veniant tibi dies mali, & perveniant super te anni, bus dicas, Non est mihi in illis complacentia. Antequàm mutetur ho dor gloriæ faciei tuæ, qui assimilatur Soli, & lumen oculorum tuo antequàm obcæcetur, & decor maxillarum tuarum antequàm obtenebre tur, & pupillæ oculorū tuorum, qui assimilātur stellis, antequàm extingu tur; palpebræ oculorū tuorū stillabunt lachrymas, ut nubes post pluvi die quo contremiscent coxæ tuæ & concutientur brachia tua & defic dentes oris tui antequàm possint masticare cibū, & caligabunt oculi tu vident per cancellos capitis tui. Et erunt pedes tui ligati, ut non pro in plateā, & recedet à te appetitus cibi; & excitaberis à somno tuo vocis aviculæ *acsi à furibus qui grassantur noctu*; & remittentur lab à dicendo cantico. Etiam facta quæ antea fuerunt, timebis, memo rum; & tumulus levis, similis erit in facie animæ tuæ monti ex tempore quo ieris in via, & germinabit caput spinæ tuæ præ mace amygdalus, & inflabuntur tali pedum tuorum, & prohibeberis à cubi *culo*, etenim declinat homo ad eundum in domum sepulchri sui, & cir dabunt angeli inquisitores judicii tui, ut lamentantes qui circundant plateam ad scribendum judicium rationis tuæ. Antequàm obmu lingua tua à loquendo, & sit confractus vertex *capitis tui*, & rump fel tuum super jecur tuum, & decurrat corpus tuū in medium sepulc Et redibit caro tua quæ creata est ex pulvere in terram, quemadm erat ab antiquo : & spiritus animæ tuæ redibit, ut stet in judicio Dominū qui dedit illū tibi. Quando contemplatus est Selomoh vanitatem mundi hujus, & vanitates quas faciunt filii hominum, clesiastes in verbo suo, Omnia vanitas. Et plus quàm omnes fil num fuit Selomoh, qui vocatur Ecclesiastes, sapiens : & rursu scientiam *populum domus* Israel, & attendit voci sapientum. tatus est libros sapientiæ, *& in spiritu prophetico à Domino* *bros sapientiæ*, & parabolas intelligentiæ multas valdè. Q lomoh *rex*, qui vocatur Ecclesiastes, sapientia sua judicare judi per cogitationes cordis hominis & sine testibus : propterea dictum per spiritum prophetiæ à facie Domini, Ecce jam scripta sunt in libro gis *per manum Mosis magistri Israel* rectissima verba & fidelia, testium stabit verbum. Verba sapientum assimilantur stimulis nibus, quæ impellunt ad docendum scientiam indigentes scienti docet *stimulus* bovem, & magistri *Sanhedrin* ductores viarum *monum* qui dati sunt per manum Moseh prophetæ, qui pavit solus lum domus Israel in deserto *manna & cupediis*. Et quod plus est fili mi monitus esto, ut facias libros sapientiæ plurimos, adeò ut finis, & ut studeas verbis Legis, conspiciasque defatigatione Finis verbi quod factum est in seculo occultè, totum futurum est cetur atque divulgetur omnibus filiis hominum : propterea ve mini time, & præcepta ejus custodito, ut non pecces in secreto si peccaveris, circumspectus esto ut te convertas : nam hujusmo esse viam omnis hominis. Etenim omne factum Dominus a diem judicii magni, & futurum est ut publicetur adversus omne velata fuerit à filiis hominum, tam bonum quàm malum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ * ܐܥܒܪ ܪܘܓܙܐ ܡܢ ܠܒܟ. ܘܐܥܒܪ ܒܝܫܬܐ ܡܢ ܒܣܪܟ. 1
ܡܛܠ ܕܛܠܝܘܬܐ ܘܠܐ ܝܕܥܬܐ ܣܪܝܩܘܬܐ ܗܝ. * ܘܐܬܕܟܪ ܠܒܪܘܝܟ ܒܝܘܡܝ ܛܠܝܘܬܟ. ܥܕܠܐ ܢܐܬܘܢ 2
ܝܘܡܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܢܡܛܘܢ ܫܢܝܐ ܕܬܐܡܪ ܕܠܝܬ ܠܝ ܒܗܘܢ ܨܒܝܢܐ. * ܥܕܠܐ ܢܚܫܟ ܫܡܫܐ: 3
ܘܢܘܗܪܐ ܕܣܗܪܐ ܘܕܟܘܟܒܐ. ܘܢܗܦܟܘܢ ܥܢܢܐ ܒܬܪ ܡܛܪܐ. * ܒܝܘܡܐ ܕܢܬܬܙܝܥܘܢ 4
ܢܛܘܪܝ ܒܝܬܐ: ܘܢܬܥܘܪܘܢ ܓܒܪܝ ܚܝܠܐ. ܘܢܬܒܛܠܢ ܛܚܢܬܐ. ܡܛܠ ܕܙܥܪ. ܘܢܚܫܟܢ
ܚܙܝܬܐ ܒܟܘܐ. * ܘܢܬܐܚܕܘܢ ܬܪܥܐ ܒܫܘܩܐ. ܒܡܘܟܟܐ ܕܩܠܐ ܕܛܚܢܬܐ. ܘܢܩܘܡ ܠܩܠܐ 5
ܕܨܦܪܐ. ܘܢܬܡܟܟܢ ܟܠ ܒܢܬ ܙܡܪܐ. * ܘܐܦ ܡܢ ܪܘܡܐ ܢܕܚܠ. ܘܢܬܬܙܝܥ ܒܐܘܪܚܬܗ. 6
ܘܢܕܢܚ ܥܠܘܗܝ ܫܗܪܐ. ܘܢܦܪܥ ܫܓܕܐ. ܘܢܣܓܐ ܩܡܨܐ. ܘܢܬܒܕܪ ܨܠܦܐ. ܘܢܬܒܛܠ
ܡܣܟܢܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܙܠ ܒܪܢܫܐ ܠܒܝܬ ܥܡܠܗ. ܘܢܬܟܪܟܘܢ ܒܫܘܩܐ ܐܒܝܠܐ. * ܥܕܠܐ 7
ܢܬܦܣܩ ܚܒܠܐ ܕܣܐܡܐ: ܘܢܬܦܠܚ ܚܙܘܪ ܕܗܒܐ: ܘܬܬܬܒܪ ܩܠܬܐ ܥܠ ܡܒܘܥܐ. ܘܬܬܪܥܥ
ܓܝܓܠܐ ܥܠ ܓܘܒܐ. * ܘܢܗܦܘܟ ܥܦܪܐ ܠܐܪܥܐ ܐܝܟ ܕܗܘܐ. ܘܪܘܚܐ ܬܗܦܘܟ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܕܝܗܒܗ. 8
* ܗܒܠ ܗܒܠܝܢ ܐܡܪ ܩܘܗܠܬ ܗܒܠ ܗܒܠܝܢ. ܟܠ ܡܕܡ ܗܒܠܐ. * ܘܝܬܝܪ ܕܗܘܐ 9
ܩܘܗܠܬ ܚܟܝܡܐ. ܕܐܠܦ ܗܘܐ ܝܕܥܬܐ ܠܥܡܐ. ܘܨܬ ܘܒܚܢ. ܘܬܩܢ ܡܬܠܐ ܣܓܝܐܐ. * ܒܥܐ 10
ܛܒ ܩܘܗܠܬ ܠܡܫܟܚܘ ܡܠܐ ܕܨܒܝܢܐ. ܘܟܬܒ ܒܬܪܝܨܘܬܐ ܡܠܐ ܕܩܘܫܬܐ. 11
* ܡܠܐ ܕܚܟܝܡܐ ܐܝܟ ܙܩܬܐ ܘܐܝܟ ܣܟܐ ܕܢܩܝܫܝܢ. ܡܪܝ ܬܪܥܐ ܐܬܝܗܒܘ ܡܢ ܪܥܝܐ ܚܕ. 12
* ܘܝܬܝܪ ܡܢܗܘܢ ܒܪܝ ܐܙܕܗܪ. ܠܡܥܒܕ ܣܦܪܐ ܣܓܝܐܐ ܠܝܬ ܣܘܦ. ܘܡܠܬܐ 13
ܣܓܝܐܬܐ. ܠܐܘܬܐ ܗܝ ܕܒܣܪܐ. * ܚܪܬܗ ܕܡܠܬܐ ܟܠܗ. ܟܠ ܫܡܥ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ 14
ܕܚܠ. ܘܦܘܩܕܢܘܗܝ ܛܪ. ܡܛܠ ܕܗܢܘ. ܕܡܢ ܪܥܝܐ ܚܕ ܐܬܝܗܒ ܠܟܠܢܫ. * ܡܛܠ 15
ܕܟܠ ܥܒܕܐ. ܡܪܝܐ ܡܝܬܐ ܒܕܝܢܐ. ܥܠ ܟܠ ܕܟܣܐ ܘܓܠܐ. ܐܢ ܕܛܒ. ܘܐܢ ܕܒܝܫ.

* ܫܠܡ ܣܦܪܐ ܕܩܘܗܠܬ *

CAP. XII.

Averte indignationem ab animo tuo, & 1
amove malum à carne tua: nam pueritia &
ignorantia ſunt vanitas. Et memor eſto Creatoris 2
tui in diebus adoleſcentiæ tuæ, antequã
adveniant dies aſperi, & accedant anni de
quibus dicas, Non delector illis. Antequam 3
tenebreſcat ſol, & ſpendor lunæ atque ſtellarum,
& redeant nubes poſt pluviam. Quo 4
die trement cuſtodes domûs, & præditi robore
agitabuntur, et ceſſabunt molentes eò quòd
in parvum numerum ſint redactæ; & obſcurabuntur
ſpectantes per feneſtras. Et fores 5
claudentur in plateis cum exili ſonitu molentium,
ſurgétque ad vocem aviculæ, & deprimentur
omnes filiæ cantici: Excelſum quoque 6
metuet, & contremiſcet in viis ſuis & emerget
ſup eum vigilia, & germinabit amygdalus,
& creſcet locuſta, & diſſipabitur capparis,
& deſinet inopia, eò quòd repetat homo
domum laboris ſui & lugentes in plateis
circumibunt. Antequam præcidatur funis 7
argenteus, & comminuatur pomum aureum,
& frangatur hydria ad fontem, & rota curat
ſuper puteum: Et revertatur pulvis in terram 8
qualis erat, & ſpiritus redeat ad Dominũ
qui dedit illum. Vanitas vanitatum, ait Coheleth, 9
vanitas vanitatum, omnia vanitas.
Præterea, quia Coheleth fuit ſapientiſſimus 10
adeo ut doceret populum ſcientiam, & auſcultaverit,
indicaverit, atque compoſuerit
proverbia plurima: Summopere quæſivit 11
Coheleth ut inveniret ſermones jucundos, &
in veritate ſcripſit ſermones veritatis. Verba 12
ſapientum ſunt velut aculei, & velut clavi
infixi. Præpoſiti liminibus dati ſunt ab uno
paſtore: Quare maximè eos, fili mi, caveto. 13
Multos ſcribendi libros nullus eſt finis, &
nimius ſermo labor eſt carnis. Summa ſermonis 14
univerſi eſt, Omnia audi, à conſpectu
Domini timeto, & præcepta illius ſervato:
hoc enim eſt quod ab eodem opifice datum
eſt cuilibet homini. Cuncta námque opera 15
Dominus adducet in judicium de quacunque
re occulta vel aperta, ſive bona ſive mala.

Libri Coheleth finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثاني عشر *

1 * وابعد الغضب من قلبك * وانزع الشر من بشرتك. فان الحداثة والمأثمة باطل * واذكر 2
خالقك في ايام حداثتك * حتى لا توافي ايام شرك * ويصل السنون التي تقول فيها ليست لي
3 فيها مشيئة * ما دام لم تظلم الشمس والنور والقمر والنجوم * ويتعطف السحب وراء المطر * في 4
اليوم الذي يتزعزع فيه حافظا البيت * يرتجع رجال الاقتدار ويبطل الطحانات فان طحنهم
5 قد بطل * ويتناقص ويظلم الناظرات في الانقاب * ويغلقون الباب في السوق في ضعف صوت
6 الطاحنة * ويقام صوت العصفور * ويتذلل كافة بنات الاغاني * ومع ذلك يبصرون من العلي
ويكون الجزعات في الطريق * ويزهر اللوز * ويسمن الجراد * ويضمحل الكبر * لان الانسان
7 قد ذهب الى منزل دهره * والمتحدبون قد طافوا في السوق * ما دام لم ينتقض حبل الفضة
8 وينسحق سرير الذهب * وينكسر الجر على العين * ويدور البكر على الجب * ويعود التراب الى
9 الارض كما كان * ويعود الروح الى الله الذي منحه * قال الجامع باطلة الاباطيل * وكل الاشياء
10 باطلة * وفضله زائدة اذا صار الجامع حكيما * وانه علم الانسان معه علما * ويصغي اذنه
11 زينة الامثال * اشياء كثيرة تجسس الجامع ليجد اقوال المشيئة * ومكتوب الاستقامة * اقوال الحق
12 * اقوال الحكماء كمناخس البقر وكالمسامير المحماة * الاقوال التي ملكوها من سمات اعمالهم من عند
13 راع واحد * فنالوا زيادة منها * يا بني احفظ هذا * ان تصطنع مصاحف كثيرة فليست لمنفعتها
14 غاية * وفي دراستها الكثيرة تعب للبشر * واخر القول اسمع * جملة الامر اتق الله واحفظ وصاياه
15 فان كل الانسان ينفعه هذا * لان الله سيحضر كافة صناعته في الحكومة * ليحاكموا في كل امر
اهملوا به * ان كان صالحا وان كان رديا * والحمد لله دائما ابدا *

* تم بعون الله تعالى كتاب الجامعة * لسليمن ابن داوود الذي ملك على بني اسرائيل * وهي باطل الاباطيل

CAP. XII.

Quin remove iram à corde tuo, et aufer 1
malitiam à carne tua: quoniam adoleſcentia, et iniquitatis operatio vanitas eſt.
Et recordare Creatoris tui in diebus adoleſcentiæ 2
tuæ, ne fortè veniant dies calamitatis tuæ, & adveniant anni quibus dicas, Non eſt in eis mihi voluntas. Quandiu 3
ſol et lumen, lunáque et ſtellæ nondum ſunt tenebris occupati, neque recurrunt nubes poſt pluviã. In die qua contremiſcent 4
ambo domûs cuſtodes, retrocedent viri potentes, et ceſſabunt molitrices: ceſſabit ſiquidem molitura earum, & deficient ac tenebreſcent ſpeculantes per foramina.
Claudent etiã januas in foro, ad imbecillitatem 5
vocis molitricis, & ſuſcitabitur vox avis, & deficientur omnes filiæ carminum. Adhæc proſpectabunt ab alto, 6
eruntq; terriculamenta in via, & florebit amygdalus, et pingueſcet locuſta, et capparis evaneſcet: homo namq; ſe recipiet in domiciliũ ævi ſui, et lugentes perluſtrabunt forũ. Tantiſper dũ non retexitur funis ar- 7
genteus, nec teritur emiſſio auri, et frangitur hydria ſecus fontem, & volvitur rota ſuper puteũ. Redeatq; pulvis in terrã quē- 8
admodũ fuerat, redeatq; ſpiritus ad Deũ qui dederat illũ. Inquit Collector, Vanitas 9
vanitatum, res quidem omnes vanæ ſunt.
Et verò immenſi beneficii eſt quòd Colle- 10
ctor ſapiens fuerit, et hominem unà ſecũ docuerit ſcientiã, et cõſideràrit auris ejus decus proverbiorũ. Multarũ rerũ ſtudio 11
vacavit Collector, ut inveniret dicta pergrata, et ſcriptũ rectũ, ſermones veritatis.
Dicta ſapientum ſunt velut ſtimuli boum, 12
et velut clavi igniti: dicta inquã quæ tradiderunt è veſtigiis operũ ſuorum ab uno paſtore, et ex iis augmentũ ſunt conſecuti.
O fili mi, hæc obſerva. Ex plurium libro- 13
rũ compoſitione nullã conſequi unquã poteris utilitatem: et in frequenti eorũ lectitatione labor ineſt carni. Et ut uno verbo 14
dicã, Audi, ſũma rei hæc eſt: Deũ time, et præcepta ejus obſerva: cuilibet enim homini hoc prodeſt. Nã Deus adiget univerſa 15
opera ſua ad judicium, ut judicentur de quacunque re in qua fuerunt negligentes, ſive bona, ſive mala.

Laus Deo ſempiterna & perpetua.

Auxilio Dei excelſi abſolutus eſt liber Eccleſiaſtæ, qui eſt Vanitas vanitatum, à Salomone filio Davidis, qui regnavit ſuper filios Iſrael, conſcriptus.

שיר השירים: א

CAPUT I. א

quod , canticorum Canticum
שיר השירים אשר 1
me Osculetur .Selomoh ipſi
לשלמה: ישקני 2
boni quia : ſui oris oſculis ex
מנשיקות פיהו כי טובים
odorem Ad .vino præ tui amores
דדיך מיין: לריח 3
oleum,optimorũ tuorũ unguentorum
שמניך טובים שמן
ideo : tuum nomen effuſum
תורק שמך על כן
,me Trahe.te dilexerunt adoleſcẽtulæ
עלמות אהבוך: משכני 4
me introduxit : curremus te poſt
אחריך נרוצה הביאני
,exultabimus , ſua penetralia rex
המלך חדריו נגילה
memorabimus , te in lætabimur &
ונשמחה בך נזכירה
rectitudines : vino præ tuos amores
דדיך מיין מישרים
, ego Nigra .te dilexerunt
אהבוך: שחורה אני 5
: Jeruſalaim filiæ , deſiderabilis &
ונאוה בנות ירושלם
cortinæ ſicut , Chedar tentoria ſicut
כאהלי קדר כיריעות
,me reſpiciatis Ne .Selomoh
שלמה: אל־תראני 6
me radiavit quia , fuſca ego quòd
שאני שחרחרת ששזפתני
ſunt ſuccenſi meæ matris filii : Sol
השמש בני אמי נחרו־
cuſtodem me poſuerunt , me in
בי שמני נטרה את
,mihi quæ ,meam vineam ; vinearum
הכרמים כרמי שלי
, mihi Nuncia .cuſtodivi non
לא נטרתי: הגידה לי 7
ubi , mea anima dilexit quem
שאהבה נפשי איכה
facias cubare ubi , paſcas
תרעה איכה תרביץ
ero quid ut quia : meridie in
בצהרים שלמה אהיה
greges ſuper ſe operiens veluti
כעטיה על עדרי
cognoveris Niſi ? tuorũ ſodaliũ
חבריך: אם־לא תדעי 8
egredere ;mulieribus in pulchra ô ,tibi
לך היפה בנשים צאי־
paſce & , pecoris veſtigia in tibi
לך בעקבי הצאן ורעי
tabernacula ſuper tuas capellas
את־גדיתיך על משכנות
.paſtorum
הרעים:

תרגום TARGUM.

א

שירין ותושבחן די אמר שלמה נביא מלכא דישראל ברוח 1
נבואה קדם רבון כל עלמא יי עסרתי שירתא אתאמרו
בעלמא הדין שירא דין משבח מן כולהון שירתא קמיתא
אדם בזמן דאשתבק ליה חובתיה ואתא יומא דשבתא ואגן
עלוי פתח פומיה ואמר מזמור שיר ליומא דשבתא שירתא
תניתא אמר משה עם בנוי דישראל בזמן די בזע להון מרי
עלמא ית ימא דסוף פתחו כולהון ואמרו כחדא שירתא
דהכדין כתיב בכן שבח משה ובני ישראל שירתא תליתאה
אמרו בנוי דישראל בזמן דאתיהיבת להון בארא דמיא
דהכדין כתיב בכן שבח ישראל שירתא רביעאה אמר משה
נביא כד אתא זמניה למפטר מן עלמא ואוכח בה ית עמא בית
ישראל דהכדין כתיב אציתו שמיא ואמלל שירתא חמישאה
אמר יהושע בר נון כד אגח קרבא בגבעון וקמו ליה שמשא
וסיהרא תלתין ושית שעין ופסקו מלמימר שירתא פתח
פומיה איהו ואמר שירתא דהכדין כתיב בכן ישבח יהושע
קדם יי שירתא שתיתאה אמרו ברק ודבורה ביומא דמסר יי
ית כסרא וית משריתיה ביד בנוי דישראל דהכדין כתיב
ושבחת דבורה וברק בר אבינועם שירתא שביעאה אמרה
חנה בזמן דאתיהיבת לה בר מן קדם יי דהכדין כתיב
וצליאת חנה בנבואה ואמרת שירתא תמיניתא אמר דוד
מלכא דישראל על כל נסיא דעבד ליה יי פתח פומיה ואמר
שירתא דהכדין כתיב ושבח דוד בנבואה קדם יי שירתא
תשיעאה אמר שלמה מלכא דישראל ברוח קודשא קדם
רבון כל עלמא יי ושירתא עשיריתא עתידין למימר בני
גלותא בעדן דיפקון מגלותא דהכדין כתיב ומפרש על ידוי
דישעיה נביא דהכדין כתיב שירא הדין יהא לכון לחדוה
בליל אתקדשות חגא דפסחא וחדות לבא כעמא דאזלין
לאתחזאה קדם יי תלת זמנין בשתא במיני זמר וקל טבלא
למעל לטורא דיי ולמפלח קדם יי תקיפא דישראל: ישקני 2
אמר שלמה נביא בריך שמיה דיי דיהב לן אוריתא על ידוהי
דמשה ספרא רבא כתיבא על תרין לוחי אבניא ושתא סדרי
משנה ותלמודא בגרסא והוה מתמלל עמן אפין באפין כגבר
דנשק לחבריה מן סגיאות חבתא דחבב לן יתיר משבעין
עממיא: לריח לקל נסך וגבורתך דעבדת לעמא בית ישראל 3
זעו כל עממיא די שמעו ית שמע גבורתך ואתותך טביא ושמך
קדישא אשתמע בכל ארעא דהוה בחיר ממשח רבותא דהוה
מתרבי על רישי מלכין וכהנין ובגין כן רחימו צדיקיא למהך
בתר אורח טובך בדיל דיחסנון עלמא הדין ועלמא דאתי:
משכני כד נפקו עמא דבית ישראל ממצרים הות מדברא 4
שכינת מרי עלמא קדמיהון בעמודא דעננא ביממא ובעמודא
דאשתא בליליא אמרו צדיקי דרא ההוא רבון כל עלמא
נגדנא בתרך ונהי רהטין בתר אורח טובך וקריב יתן
בשפולא דטורא דסיני והב לן ית אוריתך מן בית גנזך
דרקיעא ונחדי ונבדח בעסרין ותרתין אתון דמכתבא בהון ונהי דכירין יתהון ונרחם ית
אלהותך ונהי מתרחקין מבתר טעות עממיא וכל צדיקיא דעבדין דתקין קדמך יהון דחלין
מנך ורחמין ית פקודך: שחורה כד עבדו בית ישראל ית עגלא אתקדרו אפיהון כבנוי 5
דכוש דשרין במשכני קדר וכד תבו בתיובתא ואשתבק להון סגא זיו יקר אפיהון כמלאכיא
על דעבדו יריעתא למשכנא ושרת ביניהון שכנתא דיי ומשה רבהון סליק לרקיעא ויהב
שלם ביניהון ובין מלכהון: אל אמרת כנשתא דישראל כל קבל עממיא לא תבזון יתי 6
על די אנא קדריתא מנכון על דעבדית כעובדיכון וסגידית לשמשא וסהרא דנביאי שקרא
אנון גרמו לאסתקפא תקוף רוגזא דיי עלי ואלפוני למפלח טעותכון ולהלכא בנימוסיכון
ולמרי עלמא די הוא אלהי לא פלחית ולא אזלית בנימוסיה ולא נטרית ית פקודוי וית
אוריתה: הגידה כד מטא זמניה דמשה נביא למפטר מן עלמא אמר קדם יי גלי קדמי 7
דעמא הדין עתידין למחב ולמהלכא בגלותא כען חוי קדמי איכדין יתפרנסון וישרון ביני
עממיא דקשין גזירתהון כחומתא וכשרבי שמשא דטיהרא בתקופת תמוז ולמה דין יהון
מטלטלין ביני עדרי בנוי דעשו וישמעאל די משתפין לך טעותהון לחבריא: אם אמר 8
קודשא בריך הוא למשה נביא אבעיא להון למחי גלותא כנשתא דמתילא לריבא שפירתא
ודנפשי תהא רחם לה תהא מהלכא באורחיהון דצדיקיא ותהא מסדרא צלותא על פום
ברזילהא ומדברי דרהא ותהי מאלפא לבנהא דמתילין לגדיי עזין למהך לבית כנשתא
ולבית מדרשא ובההיא זכותא יהוון מתפרנסין בגלותא עד זמן דאשלח מלכא משיחא ויהי
מדבר יתהון בניח על משכניהון הוא בית מקדשא דיבני להון דוד ושלמה רעיא דישראל:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT. I.

CAntica & laudes quæ dixit Salomon propheta rex Iſrael per ſpiritum ſanctum coram Domino dominatore totius ſeculi. Decem cantica dicta fuerunt in ſeculo iſto, & hoc canticum laudabilius eſt omnibus illis. Primum canticum [*dixit*] Adam in tempore quo dimiſſum fuit illi peccatum ſuum : & venit dies Sabbati, & protexit eum : aperuit os ſuum, & dixit pſalmum cantici diei Sabbati. Canticum ſecundum dixit Moſes cum filiis Iſrael in tempore quo diviſit eis dominator ſeculi mare carectoſum : aperuerunt omnes [os *ſuum,*] & dixerunt ſimul canticum : quoniam ſic ſcriptum eſt; Tunc cecinit Moſes & filii Iſrael. Canticum tertium dixerunt filii Iſrael in tempore quo datus fuit eis puteus aquæ : ſic enim ſcriptum eſt; Tunc cecinit Iſrael. Canticum quartum dixit Moſes propheta quando pervenit tempus ejus ut diſſolveretur ab hoc ſeculo : & increpavit in eo domum Iſrael : quoniam ſic ſcriptum eſt; Audite cœli, & loquar. Canticum quintum dixit Joſue filius Nun quando iniit prælium in Gabaon, & ſteterunt ei Sol & Luna triginta & ſex horis, & ceſſaverunt dicere canticum : aperuit ille os ſuum, & dixit canticum : ſic enim ſcriptum eſt : Tunc cecinit Joſue coram Domino. Canticum ſextum dixerunt Barach & Debora, in die quo tradidit Dominus Siſaram & exercitum ejus in manum filiorum Iſrael : quoniam ſic ſcriptum eſt; Et cecinit Debora & Barach filius Abinoem. Canticum ſeptimum dixit Anna in tempore quo datus fuit ei filius a facie Domini : ſic enim ſcriptum eſt; Et oravit Anna in prophetia & dixit. Canticum octavum dixit David rex Iſrael pro omnibus miraculis quæ fecit ipſi Dominus : aperuit os ſuum & dixit canticum; quoniam ſic ſcriptum eſt : Et cecinit David in prophetia coram Domino. Canticum nonum dixit Salomon rex Iſrael in ſpiritu prophetico coram Domino dominatore totius ſeculi. Canticum decimum dicturi ſunt filii captivitatis, quando egreſſi fuerint de captivitate ſua : quoniam ſic ſcriptum eſt & declaratum per manus Eſaiæ prophetæ; ſic enim ſcriptum eſt : Canticum iſtud erit vobis in gaudium, ſicut in nocte qua ſanctificata eſt ſolennitas Paſchæ, & lætitia cordis ſicut populi qui ambulant ut appareant coram Domino tribus vicibus in anno, in organis muſicorum & voce tubæ corneæ, ut ingrediantur montem Domini, & ut ſerviant coram Deo fortiſſimo Iſrael. Dixit Salomon Propheta : Benedictum nomen Domini, qui dedit nobis Legem per manum Moſis ſcribæ magni ſcriptam in duabus tabulis lapideis, *& ſex tractatus Miſchnah ac Talmud cum explicatione*, & loquebatur nobiſcum facie ad faciem, ſicut vir qui oſculatur ſocium ſuum, præ multitudine dilectionis ſuæ, qua dilexit nos magis quam ſeptuaginta nationes. A voce miraculorum tuorum & potentiæ tuæ quæ feciſti populo tuo domui Iſrael, commoti ſunt omnes populi qui audierunt famam potentiæ tuæ, & ſignorum tuorum bonorum, & nomen tuum ſanctum auditum eſt in univerſa terra, quod eſt electum magis quàm oleum unctionis quo unguntur capita Regum & Sacerdotum : & ideò dilexerunt juſti ambulare poſt viam bonitatis tuæ, ut poſſideant ſeculum hoc & ſeculum venturum. Quando egreſſi fuerunt populus domus Iſrael de Ægypto, majeſtas dominatoris ſeculi erat dux eorum in columna nubis per diem, & in columna ignis per noctem. Dixerunt juſti illius generationis; Dominator totius ſeculi, trahe nos poſt te, & curremus poſt viam bonitatis tuæ, & applica nos ad radices montis Sinai, & da nobis Legem tuam de theſauro tuo quod eſt in firmamento : & delectabimur & exultabimus *in viginti & duobus characteribus quibus ſcripta eſt*, & recordabimur eorum, & diligemus deitatem tuam, & recedemus ab idolis populorum ; & omnes juſti qui faciunt quod rectum eſt coram te, timebunt te, & diligent præcepta tua. Quando fecerunt domus Iſrael vitulum, denigratæ ſunt facies eorum ſicut filiorum Æthiopiæ qui morantur in tabernaculis Cedar : quando egerunt pœnitentiam & dimiſſum fuit eis peccatum, multiplicatus fuit ſplendor gloriæ vultus eorum, ſicut [*vultus*] angelorum, eò quòd fecerunt cortinas tabernaculi, & reſedit in medio eorum majeſtas Domini. Moſes autem magiſter eorum aſcendit ad firmamentum, & poſuit pacem inter eos & regem eorum. Dixit cœtus Iſrael coram populis : Nolite me deſpicere eò quòd nigrior vobis ſum, quia feci juxta opera veſtra, & adoravi Solem & Lunam, quia prophetæ falſi fuerunt cauſa ut devolveretur ira furoris Domini ſuper me, & docuerunt me ut ſervirem idolis veſtris, & ambularem in inſtitutis veſtris : Domino autem ſeculi, qui eſt Deus meus, non ſervivi , neque ambulavi in legibus ejus, neque cuſtodivi præcepta ejus & Legem ejus. Quando pervenit tempus ut Moſes propheta diſſolveretur ab hoc ſeculo, dixit coram Domino : Manifeſtum eſt coram me quòd populus iſte futurus eſt ut peccet, & ut vadat in captivitatem : nunc autem indica mihi quomodo gubernabuntur, & quomodo habitabunt inter populos quorum decreta ſunt eis gravia ſicut calore & æſtu Solis in meridie in revolutione Tammuz : & quare erunt tranſmigrantes inter greges filiorum Eſau & Iſmael, qui applicant tibi idola ſua pro ſociis. Dixit ſanctus benedictus Moſi prophetæ : *Si* [*tu*] *poſtules* ut deleatur illis exilium, ſynagoga, quæ comparata eſt puellæ pulcherrimæ, & quam anima mea diligit, ambulet in viis juſtorum, & ordinet orationem ſuam in ore præfectorum ſuorum, & deducat generationes ſuas, & doceat filios ſuos, qui comparantur hœdis caprarum, ut ambulent in domum Eccleſiæ & in domum doctrinæ : propter illud meritum ſuſtentabuntur in captivitate, donec mittam eis regem Meſſiam, qui ducat eos in requiem ad tabernaculum ipſorum , quod eſt domus ſanctuarii, quam ædificabunt eis David & Salomon paſtores Iſrael.

Versio VULG. LAT.

CANTICUM CANTICORUM SALOMONIS,

Quod Hebraicè dicitur

SIR HASIRIM.

CAP. I.

OSCULETUR me osculo o-
ris sui : quia meliora sunt ubera tua
2 vino, Fragrantia unguentis optimis.
Oleum effusum nomen tuum : ideò
3 adolescentulæ dilexerunt te. Tra-
he me : post te curremus in odo-
rem unguentorum tuorum. Intro-
duxit me rex in cellaria sua : ex-
ultabimus & lætabimur in te , me-
mores uberum tuorum super vinũ:
recti diligunt te. Nigra sum , sed
4 formosa, filiæ Jerusalem, sicut taber-
nacula Cedar , sicut pelles Salomo-
5 nis. Nolite me considerare quòd
fusca sim , quia decoloravit me Sol:
filii matris meæ pugnaverunt contra
me, posuerunt me custodẽ in vineis:
6 vineam meam non custodivi. Indica
mihi quem diligit anima mea ,
ubi pascas, vbi cubes in meridie,
ne vagari incipiam post greges so-
7 dalium tuorum. Si ignoras te , ô
pulcherrima inter mulieres, egre-
dere, & abi post vestigia gregum,
& pasce hœdos tuos juxta taberna-
cula pastorum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

(ˢ) ΑΣΜΑ.

ΚΕΦ. α΄.

1 † ἎΣμα ἀσμάτων, ὅ ἐστι (α) Σαλωμών. † Φιλη-
σάτω με ἀπὸ φιλημάτων στόματος αὐτοῦ· † ὅτι ἀγα-
2 θοὶ μαστοί σου ὑπὲρ οἶνον, † Καὶ ὀσμὴ μύρων σου
ὑπὲρ πάντα τὰ ἀρώματα. † μύρον ἐκκενωθὲν ὄ-
νομά (β) σου· † διὰ τοῦτο νεάνιδες ἠγάπησάν σε, †
3 Εἵλκυσάν σε· † ὀπίσω σου εἰς ὀσμὴν μύρων σου δρα-
μοῦμεν. † εἰσήνεγκέ με ὁ βασιλεὺς εἰς τὸ (γ) ταμεῖ-
ον αὐτοῦ. † ἀγαλλιασώμεθα καὶ εὐφρανθῶμεν ἐν σοί. †
ἀγαπήσομεν μαστούς σου ὑπὲρ οἶνον· † εὐθύτης ἠγά-
4 πησέ σε. † Μέλαινά (δ) εἰμι ἐγὼ καὶ καλὴ θυγα-
τέρες Ἱερουσαλήμ, † ὡς σκηνώματα Κηδάρ, ὡς
5 δέῤῥεις Σαλωμών. † Μὴ βλέψητέ με ὅτι ἐγώ εἰμι με-
μελανωμένη, † ὅτι παρέβλεψέ με ὁ ἥλιος· † υἱοὶ μη-
τρός μου ἐμαχέσαντο ἐν ἐμοί, † ἔθεντό με φυλά-
κισσαν ἐν ἀμπελῶσιν, † ἀμπελῶνα ἐμὸν οὐκ (ε) ἐ-
6 φύλαξα. † Ἀπάγγειλόν μοι ὃν ἠγάπησεν ἡ ψυχή
μου, † ποῦ (ᵗ) ποιμαίνεις, ποῦ κοιτάζεις ἐν μεσημβρίᾳ,
† μήποτε γένωμαι ὡς περιβαλλομένη ἐπ᾽ ἀγέλαις
7 ἑταίρων σου. † Ἐὰν μὴ γνῷς σεαυτὴν ἡ καλὴ ἐν γυ-
ναιξὶν, † ἔξελθε σὺ ἐν πτέρναις τῶν ποιμνίων, †
καὶ ποίμαινε τὰς ἐρίφους σου † ἐπὶ σκηνώμασι τῶν
(ζ) ποιμένων.

Vers. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Transl. LAT.

CANTICUM.

CAP. I.

CAnticum canticorum, quod est
(a) Salomon. Osculetur me (b) ab 1
osculis oris sui: quoniam (c)[a]bo-
na ubera tua super vinum: Et odor 2
unguentorum tuorum super omnia
aromata: oleum* effusum est nomen
tuum. Propterea adolescentulæ di-
lexerunt te, (d) Traxerunt te: (e) 3
post te in odorem unguentorum tu-
orum curremus. (f) Introduxit me
rex in cubiculum suum. (g) Exul-
temus, & lætemur in te : diligemus
ubera tua super vinum; * rectitudo
dilexit te. (h) Nigra sum ego, & 4
(i) formosa,[†] filiæ Hierusalem, ut
tabernacula Cedar, ut (k) pelles Sa-
lomonis. Nolite aspicere me, quia 5
ego (l) denigrata sum:[b] quia(m)
despexit me Sol. Filii matris meæ
pugnaverunt in(n) me. Posuerũ: me
custodẽ in vineis: vineam meã non
custodivi. Annuntia mihi, quem di- 6
lexit anima mea, ubi pascis, ubi cu-
bas in meridie : ne forte [c] effici-
ar sicut (o) adoperta super greges
sodalium tuorum.[d] Nisi cognove- 7
ris te, ô pulchra inter mulieres; egre-
dere tu in(p) vestigiis gregum, & pasce hœdos tuos in tabernaculis (q) pastorum.

Versio ÆTHIOPICA.

ማኅልየ ፡ ማኅልይ ፡ ዘውእቱ ፡
ዘሰሎሞን ።

፩ ፡ ይስዐመኒ ፡ በስዕመተ ፡ አፉሁ ። አዳ 1
ም ፡ አጥባትኪ ፡ እምወይን ።=። ወመ 2
ዓዛ ፡ ዕፍረትኪ ፡ እምኵሉ ፡ አፈው ።
ዕፍረት ፡ ዘተሠውጠ ፡ ስምከ ። ወበእ
ንተዝ ፡ ደናግል ፡ አፍቀራከ ።=። ወሰ 3
ሐብከ ፡ ድኅሬከ ። በመዓዛ ፡ ዕፍረትከ ፡
ንረውጽ ። አብአኒ ፡ ንጉሠ ፡ ውስተ ፡
ጽርሑ ። ንትፈሣሕ ፡ ወንትሐሠይ ፡ ብ
ከ ። ናፍቅር ፡ አጥባተኪ ፡ እምወይ
ን ። ርቱዕ ፡ አፍቀሮትከ ።=። ጸላም ፡ 4
አነ ፡ ወሠናይት ፡ እምአዋልደ ፡ ኢየሩሳ
ሌም ። ከመ ፡ መጽለላተ ፡ ቄዳር ፡ ወሐ
ይመታተ ፡ ሰሎሞን ።=። ኢትርአያኒ ፡ 5
እስመ ፡ አነ ፡ ጸላም ። እስመ ፡ ኢይር
እየኒ ፡ ፀሐይ ። ደቂቀ ፡ እምየ ፡ ተበአሱ ፡
በእንቲአየ ። አንበሩኒ ፡ ዓቀቢተ ፡ ዐጸደ ፡
ወይን ። ዐጸደ ፡ ወይን ፡ ዘዚአየ ፡ ኢዐቀ
ብኩ ።=። ንግረኒ ፡ ዘአፍቀረተ ፡ ነፍስየ ። 6
አይቴ ፡ ትሬኢ ፡ ወአይቴ ፡ ትሰክብ ፡ ጊ
ዜ ፡ ቀትር ። ከመ ፡ ኢይኩን ፡ እንዘ ፡ እ
ንገዲ ፡ ውስተ ፡ መራእየ ፡ ካልአኒከ ።=።
እመ ፡ ኢያእመርኪ ፡ ርእስኪ ፡ ሠናይት ፡ 7
እምአንስት ። ፃኢ ፡ አንቲ ፡ ውስተ ፡ ሰ
ኰናሆሙ ፡ ለመርዔት ። ወረዐይ ፡ መሐስ
አ ፡ አጣልኢኪ ። ውስተ ፡ አዕጻዳቲሆሙ ፡
ለኖሎት ።=።

MS.A. (ˢ) Ἄσματα ἀσμάτων. (α) τῷ Σαλωμών. (β) σοι· (γ) ταμιεῖον (δ) εἰμι καὶ καλή (ε) ἐφύλαξαν. (ᵗ) ποιμανεῖς, (ζ) ποιμνίων σου.

INTERP. ÆTHIOP. [a] jucunda *sunt* ubera [†] præ filiabus [b] quoniam non me intuitus est Sol. [c] efficiar errabunda super [d] Si teipsam non cognoveris,

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܚܟܡܬ ܚܟܡܬܐ ܕܝܠܗ ܕܫܠܝܡܘܢ *

* ܟܬܒܐ ܕܡܬܩܪܐ ܒܥܒܪܐܝܬ ܫܝܪܬ ܫܝܪܝܢ. ܗܢܘ ܕܝܢ ܬܫܒܘܚܬܐ ܕܬܫܒܚܬܐ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

2 * ܢܫܩܢܝ ܡܢ ܢܘܫܩܐ ܕܦܘܡܗ. ܡܛܠ ܕܛܒܝܢ ܪܚܡܝܟܝ ܡܢ ܚܡܪܐ. * ܠܪܝܚܐ
3 ܕܒܣܡܝܟܝ ܛܒܐ. ܡܫܚܐ ܕܡܘܪܐ ܫܡܟ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܥܠܝܡܬܐ ܐܚܒܟܝ. * ܢܓܕܢܝ
4 ܒܬܪܟ ܢܪܗܛ. ܐܥܠܢܝ ܡܠܟܐ ܠܬܘܢܗ. ܢܕܘܨ ܘܢܚܕܐ ܒܟ. ܢܥܗܕ ܚܘܒܟ ܡܢ ܚܡܪܐ.
ܘܬܪܝܨܘܬܐ ܪܚܡܬܟ. * ܐܘܟܡܬܐ ܐܢܐ ܘܫܦܝܪܬܐ ܐܢܐ ܒܢܬ ܐܘܪܫܠܡ. ܐܝܟ ܡܫܟܢܐ ܕܩܕܪ. ܘܐܝܟ
5 ܝܪܝܥܬܐ ܕܫܠܝܡܘܢ. * ܠܐ ܬܚܙܝܢܢܝ ܕܐܘܟܡܬܐ ܐܢܐ. ܕܫܡܫܐ ܐܘܟܡܢܝ. ܒܢܝ ܐܡܝ ܐܬܟܬܫܘ
6 ܥܡܝ. ܘܣܡܘܢܝ ܢܛܘܪܬܐ ܠܟܪܡܐ. ܘܟܪܡܝ ܕܝܠܝ ܠܐ ܢܛܪܬ. * ܚܘܝܢܝ ܡܢ ܕܪܚܡܐ ܢܦܫܝ. ܐܝܟܐ
7 ܪܥܐ ܐܢܬ. ܘܐܝܟܐ ܡܪܒܥ ܐܢܬ ܒܛܗܪܐ. ܕܠܐ ܐܗܘܐ ܐܝܟ ܛܥܝܬܐ ܒܬܪ ܓܙܪܐ ܕܚܒܪܝܟ. * ܐܢ ܠܐ ܝܕܥܐ
8 ܐܢܬܝ ܠܢܦܫܟܝ ܫܦܝܪܬܐ ܒܢܫܐ. ܦܘܩܝ ܒܥܩܒܬܐ ܕܥܢܐ. ܘܪܥܝ ܓܕܝܝܟܝ ܒܡܫܟܢܐ ܕܪܥܘܬܐ.

Sequitur SAPIENTIA SAPIENTIARUM
ejusdem Salomonis.

Liber qui vocatur Hebraicè *Sirath Sirin*,
hoc est, Canticum Canticorum.

CAP. I.

OSculetur me osculis oris sui, quia meliora 2
sunt viscera tua vino. Ob odorem unguen- 3
torum tuorum optimorum, oleum myrrhæ est
nomen tuum : propterea adolescentulæ ada-
mârunt te. Trahe me, post te curremus. In- 4
troducito me rex in cubiculum tuum. Lætabi-
mur & exultabimus in te; commemorabimus
amorẽ tuum plusquam vinum, & plusquã re-
ctos dilectionẽ tuam. Nigra sum, at decora fi- 5
liæ Jerusalẽ, sicut tentoria Cedar, & sicut cor-
tinæ Salomonis. Ne me respiciatis ꝙ nigra 6
sim; nam sol nigram me reddidit. Filii matris
meæ pugnârunt adversùm me, posuerunt me
custodẽ vinearum, & vineã meam non custo-
divi. Indicate mihi quem diligit anima mea. 7
Quomodo pascis, & quomodo cubas in meri-
die? ne sim velut errabunda inter gregẽ arie-
tum tuorũ. Nisi teipsã noscas O pulcherrima 8
inter mulieres, veni tibi ꝑ vestigia pecudũ, &
pasce hœdos tuos in tabernaculis pastorum.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله القديم الازلي الدايم السرمدي *

* كتاب نشيد الانشاد وهو نشيد النشايد * لسليمان ابن داوود النبي *

* الفصل الاول *

* فليقبلني من قبلات فمه * فان ثدييك صالحان افضل من الخمر * ونسيم طيوبك افضل
من ساير الطيوب * اسمك دهن طيب مهراق * لهذا احبتك الشباب * فجذبتك من
وراءك * الي نسيم طيوبك نحاضر * داخلني الملك الي خزانته * فلنبتهج ولنفرح بك * فانا
ثدييك افضل من الخمر * الاستقامة احبتك * يا بنات اورشليم انني سوداء * وجميلة
كمساكن قيدار مثل خيم سليمان * لا تنظروا الي لانني سوداء انا * لان الشمس اعرضت
عني * ابناء امي حاربوا في امري * جعلوني في الكروم حافظة * وما حفظوا كرمي * اخبريني
يا من احبته نفسي اين ترعي اين تضطجع في الظهر * لئلا اكون كمطروحة في قطعان
غيرك * ايتها الجميلة في النساء ان لم تعرفي ذاتك اخرجي انتي في اعقاب الرعايا * وارعي
الجداء التي لك في مساكن الرعا *

IN NOMINE DEI
Æviterni, indeficientis, perpe-
tui, sempiterni.

LIBER
CARMINIS CARMINUM,
HOC EST,
CANTICI CANTICORUM,
Salomonis filii Davidis Pro-
phetæ.

CAPUT I.

OSCULETUR me osculis oris 2
sui : nam ubera tua meliora sunt
vino : Et fragrantia unguentorum tuo- 3
rum excellentior cunctis unguentis. No-
men tuum oleum suave effusum, icci co
amârunt te puellæ, Teque traxerunt à 4
tergo tuo. Ad fragrantiam unguento-
rum tuorum accurremus. Introduxit me
rex in conclave suum secretius. Ex-
ultemus & lætemur in te : amamus enim
ubera tua plusquam vinum. Rectitudo
te dilexit. O filiæ Jerusalem, nigra qui- 5
dem sum, at formosa velut tabernacula
Cedar, ut tentoria Salomonis. Ne me 6
spectetis quòd nigra sum, quia sol de-
flexit à me. Filii matris meæ de re mea
certantes posuerunt me custodem in vi-
neis, nec custodierunt vineam meam. In- 7
dica mihi O tu quem diligit anima mea,
ubi pascas, ubi recubes in meridie, ne
sim quasi projecta inter greges non tuos.
O speciosissima inter fœminas, si teipsam 8
ignoras, egredere tu per vestigia pa-
storum, & hœdos qui ad te pertinent,
pasce in tabernaculis pastorum.

Parhoh curribus in meæ Equæ
9 לְסֻסָתִי בְּרִכְבֵי פַרְעֹה
ſunt Decoræ mea amica te aſſimilavi
דִּמִּיתִיךְ רַעְיָתִי׃ נָאווּ 10
tuũ collum , murenulis in tuæ maxillæ
לְחָיַיִךְ בַּתֹּרִים צַוָּארֵךְ
faciemus auri Murenulas . torquibus in
בַּחֲרוּזִים׃ תּוֹרֵי זָהָב נַעֲשֶׂה־ 11
. argenti punctis cum tibi
לָּךְ עִם נְקֻדּוֹת הַכָּסֶף׃
, ſuo circuitu in rex Uſquequo
12 עַד־שֶׁהַמֶּלֶךְ בִּמְסִבּוֹ
. ſuum odorem dedit mea nardus
נִרְדִּי נָתַן רֵיחוֹ׃
meus dilectus myrrhæ Faſciculus
13 צְרוֹר הַמֹּר ׀ דּוֹדִי
. cõmorabitur mea ubera inter , mihi
לִי בֵּין שָׁדַי יָלִין׃
, mihi meus dilectus Copher Botrus
14 אֶשְׁכֹּל הַכֹּפֶר ׀ דּוֹדִי לִי
pulchra tu Ecce . Hen-ghedi vineis in
15 בְּכַרְמֵי עֵין גֶּדִי׃ הִנָּךְ יָפָה
, pulchra tu ecce : mea amica
רַעְיָתִי הִנָּךְ יָפָה
pulcher tu Ecce . columbæ tui oculi
16 עֵינַיִךְ יוֹנִים׃ הִנְּךָ יָפֶה
etiam , jucundus etiam , mi dilecte
דוֹדִי אַף נָעִים אַף־
Tigna . viridis noſter lectus
17 עַרְשֵׂנוּ רַעֲנָנָה׃ קֹרוֹת
, larices noſtrarum domorum
בָּתֵּינוּ אֲרָזִים
. abietes noſtra laquearia
רַחִיטֵנוּ בְּרוֹתִים׃

CAP. II. ב

lilium , Saron roſa Ego
1 אֲנִי חֲבַצֶּלֶת הַשָּׁרוֹן שׁוֹשַׁנַּת
inter Lilium Sicut . convallium
2 הָעֲמָקִים׃ כְּשׁוֹשַׁנָּה בֵּין
inter mea amica ſic , ſpinas
הַחוֹחִים כֵּן רַעְיָתִי בֵּין
, ſylvæ lignis in malus Sicut . filias
3 הַבָּנוֹת׃ כְּתַפּוּחַ בַּעֲצֵי הַיַּעַר
: filios inter meus dilectus ſic
כֵּן דּוֹדִי בֵּין הַבָּנִים
, ſedi & , concupivi ejus umbra in
בְּצִלּוֹ חִמַּדְתִּי וְיָשַׁבְתִּי
. meo palato dulcis ejus fructus &
וּפִרְיוֹ מָתוֹק לְחִכִּי׃
, vini domum ad me Introduxit
4 הֱבִיאַנִי אֶל־בֵּית הַיָּיִן
. amor me ſuper ejus vexillum &
וְדִגְלוֹ עָלַי אַהֲבָה׃
me roborate , lagenis in me Fulcite
5 סַמְּכוּנִי בָּאֲשִׁישׁוֹת רַפְּדוּנִי
amore ægra quia : malis in
בַּתַּפּוּחִים כִּי־חוֹלַת אַהֲבָה
. ego
אָנִי׃

תרגום Targum.

9 לססתי כד נפקו ישראל ממצרים רדפו פרעה ומשריתיה
בתריהון ברתיכין ובפרשין והות אורח סגירא להון מארבע
סטריהון מן ימינא וסמאלא הוו מדבריא דמלין חיון קלן ומן
בתריהון הוה פרעה רשיעא ומשריתיה ומן קדמיהון הוה ימא
דסוף מה עבד קודשא בריך הוא אתגלי בכח גבורתיה על ימא
ונגב ית ימא וית טינא לא נגב אמרו רשיעיא וערבלאין
ונוכראין די ביניהון ית מוי דימא יכיל לנגבא וית טינא לא
יכיל לנגבא בהיא שעתא תקף רוגזיה דיי עליהון ובעא
לשנקותהון במוי דימא היכמה דאשתנקו פרעה וחילותיהי
רתיכוהי ופרשוהי וסוסותוי אלולי משה נביא דפרש ידוי בצלו
קדם יי ואתיב רוגזא דיי מנהון ופתח איהו וצדיקי דרא ית
פומהון ואמרו שירתא ועברו בגו ימא דסוף ביבשתא בגין
זכותא דאברהם יצחק ויעקב רחימיא דיי : נאוו כד נפקו 10
למדברא אמר יי למשה כמה יאי עמא הדין לאתיהבא להון
פתגמי אוריתא ויהון כזממין בליסתהון דלא יעדון מן אורחא
טבא היכמה דלא עדי סוסיא דזממא בליסתיה וכמה יאי
קדלהון לסוברא ניר פקודי ויהי עלויהון כנירא על קדל תורא
דהוא חריש בחקלא ומפרנס יתיה וית מריה : תורי בכן 11
אתאמר למשה סק לרקיעא ואתן לך ית תרין לוחי אבנין
חציבין מספיר כורסי יקרי בהיקן כדהב טב מסדרן בשיטין
כתיבין באצבעי גליף בהון עסרתי דבריא זקיקין יתיר מכספא
דמוקק שבעא זמנין שבעא דסכום ענינין דמתפרשין בהון
ארבעין ותשע אפין ואתננון על ידך לעמא בית ישראל : עד 12
ועוד דהוה משה רבהון ברקיעא לקבלא ית תרין לוחי אבניא
ואוריתא ותפקדתא קמו רשיעי דרא ההוא ועבדו עגל דדהב
ועירברובין די ביניהון ואסריאו עובדיהון ונפק להון שום ביש
בעלמא דמקדמת דנא הוה נפק ריחיהון נדיף בעלמא ובתר
כן סריאו כנידא ריחיהון ביש לחדא ונחת מכתש סגירו על
בסרהון : צרור בהיא זמנא אמר יי למשה אזיל חות ארום 13
חבילו עמך פסק מני ואשיצנון בכן תב משה ובעא רחמין מן
קדם יי ודכר יי להון עקדת יצחק דכפתיה אבוי בטור מוריה
על מדבחא ותב יי מן רוגזיה ואשרי שכנתיה ביניהון
כמלקדמין : אשכול הא בכן נחת משה ותרין לוחי אבנין 14
בידוי ובגין חובי ישראל אתיקרו ידוי ונפלו ואתברו בכן אזל
משה ושף ית עגלא ובדר ית עפריה לנחלא ואשקי ית בני
ישראל וקטיל ית כל מן דאתחיב קטול וסליק זמנא תניתא
לרקיעא וצלי קדם יי וכפר על בני ישראל בכן אתפקיד למעבד
משכנא וארונא בהיא זמנא אוחי משה ועבד ית משכנא וית
כל מנוי וית ארונא ושוי בארונא ית תרין לוחין אוחרנין ומני
ית בנוי דאהרן כהניא למקרב קורבנא על מדבחא ולנסכא ית
חמרא על קורבנא ומנן הוה להון חמרא לנסכא הלא אנון
במדברא לא אתר כשר לבית דרע ואף לא תינין וגופנין
ורמונין אלא הוו אולין לכרמי עין גדי ונסבין מתמן אתכלין
דענבין ועצרין מנהון חמרא ומנסכין יתיה על מדבחא רבעות
הינא לאמרא חדא : הנך כד עבדו בני ישראל רעותא דמלכהון 15
הוא במימריה משבח יתהון בפמליא במלאכיא קדישיא ואמר
כמה יאין עובדך ברתי חביבתי כנשתא דישראל בזמן די אנת עבדא רעותי ועסיקא בפתגמי
אוריתי וכמא תקנין עובדיך ועניניך כגוזלין בני יונתא דמתכשרין לאתקרבא על מדבחא :
16 הנך אתיבת כנשתא דישראל קדם רבון עלמא וכן אמרת כמה יאי שכינת קודשך בעדן די את
שרי ביננא ומקבל ברעוא צלותנא ובעדן די את משרי בפורינא חביבתא ובננא סגין עלוי
17 ארעא ואנחנא פישין וסגין כאילן דנציב על עינא דמיא די עפיה שפיר ואנביה סגי : קורות
אמר שלמה נביא כמה יאי בית מוקדשא דיי דאתבני על ידי מן קיסי גולמש אבל יתיר יהי יאי
בית מוקדשא דעתיד לאתבנאה ביומי מלכא משיחא דכשורוהי יהוין מן ארזין דגנתא דעדן
ושירתוהי יהוין מן ברתי ושני ושורבני :

ב

1 אני אמרת כנשתא דישראל בעדן דמשרי מרי עלמא שכנתיה ביני אנא מתילא לנרקום רטיב
2 מגנתא דעדן ועובדי יאין כוורדא דבמישר גנוניתא דעדן : כשושנה ובעדן די אנא סטיא מן
אורחא דתקנא קדמוי ואיהוא מסלק שכינת קודשיה מני אנא מתילא לוורדא דמלבלבא ביני
סלויא דנעיצן עפיהא ובזיען הכדין אנא נעיצא ובזיעא מגזירן בישן בגלותא ביני פלכי עממיא :
3 כתפוח היכמה דיאי ומשבח אתרוג ביני אילני סרק וכולי עלמא מודעין יתיה כן רבון עלמא
הוה משבח ביני מלאכיא בעדן דאתגלי על טורא דסיני בזמן דיהב אוריתא לעמיה בהיא
שעתא בטלל שכנתיה רגינת למתב ופתגמי דאוריתיה בסימן על מוריני ושכר פקודוי נטרין לי
4 לעלמא דאתי : הביאני אמרת כנשתא דישראל אעל יתי יי לבית מתיבת מדרשא דישראל
דסיני למילף אוריתא מפום משה ספרא רבא וטקס פקודוי קבלית עלי בחבתא ואמרית כל די
5 פקיד יי אעביד ואשמע : סמכוני ובעדן די שמעית ית קליה די מתמלל מגו שלהובית אשתא
זעית ורתעית בתראי מן רתיתא בכן קריבית לות משה ואהרן ואמרית להון קבילו אתון קל
פתגמי דיי מגו אשתא ואעילו יתי לבית מדרשא וסעידו יתי בפתגמי אוריתא די עלויהון אתבסס
רדידין על צוארי מפשר מליא קדישין דמתיקן על מוריני כתפוחי גנתא דעדן ואהי עסיקא בהון מאים אתסא בהון ארום מרעת חבתא אנא :

Paraph. Chald. Verſio Latina

Quando egreſſi ſunt filii Iſrael de Ægypto, ſecuti ſunt Pharao &
exercitus ejus poſt eos in curribus & in equitibus; & erat via cla
eis à quatuor partibus : à dextris & à ſiniſtris erant deſerta ple
ſerpentibus ignitis, & poſt tergum eorum erat Pharao impius & ex-
ercitus ejus, & ante eos erat mare carectoſum. Quid fecit ille ſa
ctus & benedictus ? revelatus eſt in virtute potentiæ ſuæ ſuper ma-
re, *& exiccavit mare, at lutum non exiccavit; dixerunt impii*
miſcelli & alieni qui inter eos erant, Aquas maris potuit exicca
& lutum non potuit exiccare : *ipſa hora excanduit furor Domi*
in eos, & voluit ſuffocare eos in aquis maris, ſicut ſuffocatus eſt Pha-
rao & exercitus ejus, & currus & equites, & equi ejus ; niſi Mo-
ſes propheta extendiſſet manus ſuas in oratione coram Domino, &
avertiſſet iram Domini ab ipſis : & aperuerunt ipſe & juſti gene-
rationis illius os ſuum, & dixerunt canticum, & tranſierunt in me
dio maris carectoſi per ſiccum, propter meritum Abrahæ & Iſaac &
Jaacob dilectorum Domini. Quando egreſſi ſunt ad deſertum, dix
Dominus ad Moſen : Quàm pulcher eſt populus hic ut dentur ei
verba Legis, & ſint ſicut inauris in maxillis eorũ, ut nõ recedant
via bona, ſicut non recedit equus in cujus maxilla eſt frænum : &
quã pulchra ſunt dorſa eorum ut ſuſtineant jugum præceptorũ me-
orum, & ſint ſuper eos ſicut jugum ſuper cervice bovis qui ar
in agro, & ſuſtentat ſe & dominum ſuum. Tunc dictum eſt Moſi :
Aſcende ad firmamentũ, & dabo tibi duas tabulas lapideas exciſ
ex ſapphiro throni gloriæ meæ, & ſplendidas ſicut aurum op-
mum, ordinatas per lineas, ſcriptas digito meo, in quibus ſcu
pta ſunt decem verba quæ expurgata ſunt magis quam ar-
gentum quod expurgatum eſt ſepties ſeptem vicibus, pro nume
rerum expoſitarum in illis quadraginta novem modis : dabo autem
ea per manum tuam populo domũs Iſrael. Dum eſſet Moſes ma-
giſter eorum in firmamento ut ſuſciperet duas tabulas lapideas, &
Legem & præcepta: ſurrexerunt impii generationis illi⁹, & fecer
vitulum aureum unà cum promiſcuis qui erant inter eos, & fœ
fecerunt opera ſua, & egreſſum eſt eis nomen peſſimum in ſecul
quoniam anteà odor eorum exibat diffuſus per orbem, & poſt
fœtidi facti ſunt ut abſinthium cujus odor quàm peſſimus eſt, & a-
ſcendit lepra in carnem eorum. In tempore illo dixit Dominus ad
Moſem: Vade & deſcende, quia corrupit ſe populus tuus: dimi
me ut conſumã eos. Tunc reverſus eſt Moſes & quæſivit miſeri-
diam à facie Domini : & recordatus eſt Dominus inclinationis
ac, qui ligatus fuerat à patre ſuo in monte Moriah ſuper altare
converſus eſt Dominus ab ira ſua, & habitare fecit majeſtatem
am in medio eorum ſicut anteà. Tunc enim deſcendit Moſes, &
as tabulas lapideas portabat in manibus ſuis, & propter peccata
rael aggravatæ ſunt manus ejus, & ceciderunt [*tabulæ*] & con
ctæ ſunt : & tunc abiit Moſes & comminuit vitulum, & diſpe
pulverem ejus in fluvium, & potum dedit filiis Iſrael; & occi
omnes qui erant rei mortis : & aſcendit ſecundò ad firmamentu
& oravit coram Domino, & placavit pro filiis Iſrael. Tunc præ
ptum eſt ei ut faceret tabernaculum & arcam. In illo tempore
ſtinavit Moſes & fecit tabernaculum & omnia vaſa ejus, & arca
& poſuit in arca duas tabulas alias, & conſtituit filios Aaron ſa
dotes ut offerrent oblationes ſuper altare, & ut libarent vinum
per oblationes : & undè erat illis vinum ad libandum? nõne
[*morabantur*] in deſerto loco qui non eſt aptus ad ſeminatio
neque etiam erant ibi ficus, neque vites, neque malogranata :
ibant ad vineas Engadi, & accipiebant indè botros uvarum,
exprimebant ex eis vinum, & libabant ex illo ſuper altare qua
partem hin ſuper ſingulos arietes. Quando faciebant filii Iſ
voluntatem regis ſui, ipſe in verbo ſuo laudabat eos in conſil
angelorum ſanctorum, & dicebat : Quàm pulchra ſunt opera
filia mea dilecta mea congregatio Iſrael, in tempore quo facis
luntatem meam, & laboras in verbis Legis meæ ! & quàm
ſunt opera tua & occupationes tuæ, ſicut pullorum columbæ,
mundi ſunt ut offerantur ſuper altari meo. Reſpondit cœtus Iſ
corã dominatore ſeculi, & ita ait: Quàm pulchra eſt majeſtas
tatis tuæ ! quoniã in tempore quo tu habitas inter nos, &
voluntariè orationes noſtras; & in tempore quo tu habitas in
lo noſtro dilecto; filii noſtri multi ſunt ſup terrã, & creſcim⁹ &
tiplicamur ſicut arbor quæ plantata eſt juxta fontẽ aquarũ, cuj⁹
pulchrũ eſt, & fruct⁹ ej⁹ mult⁹. Dixit Salomon propheta: Qu
chra eſt dom⁹ ſanctuarii Dñi quæ ædificata eſt p man⁹ meas
gnis cedrinis: ſed pulchrior eſt dom⁹ ſanctuarii quæ ædifica
in dieb⁹ regis Meſſiæ, cuj⁹ trabes erunt ex cedris quæ ſunt in
diſo voluptatis, & tigna ej⁹ erunt ex abietib⁹ & arceuthis &

CAP. II.

Dixit cœt⁹ Iſrael: Tempore quo dominator ſeculi colloca
ſtatẽ ſuã inter me, ego ſimilis ſum lilio viridi ex paradiſo vo
tis, & opera mea pulchra ſunt ſicut roſa quæ eſt in campo
luptatis. In tempore autẽ quo ego declino à *via* quæ recta
eo, & ipſe aufert majeſtatẽ ſanctitatis ſuæ à me; ego compara
roſæ quæ germinat inter ſpinas, à quib⁹ perforantur & rum
folia ej⁹: ſic ego ſum compuncta et ſciſſa propter peſſimas im
nes in captivitate inter provincias populorũ. Ecce ſicut p
et laudabilis mal⁹ citrea inter arbores infructuoſas, et tot
cognoſcit illã; ita dominator ſeculi fuit laudabilis inter ang
tempore quo revelat⁹ fuit in monte Sinai, quando dedit Leg
lo ſuo: tunc temporis in umbra majeſtatis ej⁹ deſideravi hab
verba Legis ej⁹ dulcia fuerunt gutturi meo, et præmia præce
ejus ſervantur mihi in ſeculo venturo. Dixit cœtus Iſra
troduxit me Dominus in domũ gymnaſii doctrinæ Iſrael, in m
Sinai, ut diſcerẽ Legẽ ex ore Moſis ſcribæ magni, et ver
ceptorum ejus ſuſcepi ſup me in dilectione, et dixi, Omnia q
cepit Dñs, faciã et audiã. Et in tempore quo audivi vocẽ
loquebatur de medio flammæ ignis, commota ſum & contre
trorſũ præ pavore. Tunc acceſſi ad Moſem & Aaron, & dixi
Suſcipite vos vocẽ ſermonũ Dñi de medio ignis, & introd
in domũ doctrinæ, & ſuſtentate me in verbis Legis in quib
fit ſeculũ; & imponite velamina ſuper cervicẽ meã, interp
verborũ ſanctorũ quæ dulcia ſunt gutturi meo, ſicut poma
voluptatis, & laborabo in eis ſi fortè ſanabor ex eis, qu
amore.

Verſio VULG. LAT.

Equitatui meo in curribus Pharaonis aſſimilavi te, amica mea. Pulchræ ſunt genæ tuæ ſicut turturis: collum tuum ſicut monilia. Murenulas aureas faciemus tibi, vermiculatas argento. Dum eſſet rex in accubitu ſuo, nardus mea dedit odorem ſuum. Faſciculus myrrhæ dilectus meus mihi, inter ubera mea commorabitur. Botrus cypri dilectus meus mihi, in vineis Engaddi. Ecce tu pulchra es, amica mea, ecce tu pulchra es, oculi tui columbarum. Ecce tu pulcher es, dilecte mi, & decorus. Lectulus noſter floridus: Tigna domorum noſtrarum cedrina, laquearia noſtra cypreſſina.

CAP. II.

Ego flos campi, & lilium convallium. Sicut lilium inter ſpinas, ſic amica mea inter filias. Sicut malus inter ligna ſylvarum, ſic dilectus meus inter filios. Sub umbra illius, quem deſideraveram, ſedi: & fructus ejus dulcis gutturi meo. Introduxit me in cellam vinariã, ordinavit in me charitatem. Fulcite me floribus, ſtipate me malis: quia amore langueo.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

8 † Τῇ ἵππῳ μου (η) ἐν ἅρμασι Φαραὼ † ὡμοίωσά
9 σε ἡ πλησίον μου. † Τί ὡραιώθησαν σιαγόνες
σου (θ) ὡς τρυγόνος, † τράχηλός σου (ι) ὡς ὁρμί-
10 σκοι; † Ὁμοιώματα χρυσίου ποιήσομέν σοι
11 μετὰ στιγμάτων τοῦ ἀργυρίου, † Ἕως οὗ ὁ βασιλεὺς ἐν
ἀνακλίσει αὐτοῦ. † νάρδος μου ἔδωκεν ὀσμὴν αὐ-
12 τοῦ. † Ἀπόδεσμος τῆς στακτῆς ἀδελφιδός μου ἐμοὶ,
13 † ἀναμέσον τῶν μαστῶν μου αὐλισθήσεται. † Βότρυς τῆς
κύπρου ἀδελφιδός μου ἐμοὶ, † ἐν ἀμπελῶσιν Ἐν-
14 γαδδί. † Ἰδοὺ εἶ καλὴ ἡ πλησίον μου, ἰδοὺ εἶ καλή. †
15 (κ) ὀφθαλμοί σου περιστεραί. † Ἰδοὺ εἶ καλὸς (λ) ἀ-
δελφιδός μου, καί γε ὡραῖος † πρὸς κλίνη ἡμῶν σύ-
16 σκιος. † Δοκοὶ οἴκων ἡμῶν κέδροι, † φατνώματα ἡ-
μῶν κυπάρισσοι.

MS. A. (η) ἐπ' ἅρμασιν (θ) ὡς * στρυγόνες, (ι) ὡς ὁρμίσκος; (κ) ὀφθαλμός σου (λ) ὁ ἀδελφιδός

ΚΕΦ. β'.

1 † Ἐγὼ ἄνθος τοῦ πεδίου, † κρίνον τῶν κοιλάδων.
2 † Ὡς κρίνον ἐν μέσῳ ἀκανθῶν, † οὕτως ἡ πλησίον
3 μου ἀναμέσον τῶν θυγατέρων. † Ὡς μῆλον ἐν τοῖς
ξύλοις τοῦ δρυμοῦ, † οὕτως ἀδελφιδός μου ἀναμέσον
τῶν υἱῶν. † † ἐν τῇ σκιᾷ αὐτοῦ ἐπεθύμησα, καὶ ἐκά-
θισα, † καὶ καρπὸς αὐτοῦ γλυκὺς ἐν λάρυγγί μου. †
4 Εἰσαγάγετέ με εἰς οἶκον τοῦ οἴνου, † τάξατε ἐπ' ἐμὲ
5 ἀγάπην. † Στηρίσατέ με ἐν μύροις, † (α) στοιβά-
σατέ με ἐν μήλοις, † ὅτι τετρωμένη ἀγάπης
ἐγώ.

MS. A. (α) στοιβάσατε ἐν μήλοις,

Verſ. GRÆ.LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

(η) Equæ meæ in curribus Pharaonis aſſimilavi te, [e] proxima mea. 8
Quàm ſpecioſæ factæ ſunt genæ tuæ, tanquam turturis: cervix tua, 9
ſicut (ſ) redimicula. (ι) Similitudines auri [f] faciemus tibi cum (υ) 10
diſtinctionibus argenti. Quoadusq; rex ſit in (χ) recubitu ſuo. Nardus 11
mea dedit (ψ) odorem ſuum. (ζ) [g] Alligamentum guttæ (ω) fratruelis 12
meus mihi: in medio uberum meorum (aa) [h] demorabitur. Botrus 13
(bb) [i] cyperi fratruelis meus mihi in vineis (cc) [k] Engaddi. Ecce es 14
(dd) ſpecioſa, [l] proxima mea: ecce es ſpecioſa. Oculi tui (ee) columbæ.
Ecce es bonus, [m] fraternus meus, 15
& quidem es (ff) ſpecioſus: (gg) ad cubile noſtrum (hh) umbroſus. Tra- 16
bes domorum noſtrarum cedri, (ii) lacunaria noſtra cypreſſi.

CAP. II.

Ego flos campi, (a) [a] lilium 1
convallium: Sicut lilium in medio 2
ſpinarum; ita (b) proxima mea in
medio filiarum. Tanquam (c) malum 3
in lignis ſylvæ; ita (d) [b] fraternus
meus inter medium filiorum. In (e)
umbra ejus concupivi, & ſedi: &
fruct⁹ ejus dulcis (f) in faucib⁹ me-
is. Introducite me in (g) domum vi- 4
ni: (h) ordinate in me charitatem:
Confirmate me in (i) unguentis: (k) 5
ſtipate me in malis: quia (l) vulnera-
ta charitatis ego ſum.

Verſio ÆTHIOPICA.

ለፈረስየ ፡ ለሰረገላተ ፡ ፈርዖን፡፡ አስተ 8
ማሰልኩኪ ፡ እንተ ፡ ኀቤየ፡፡=፡ ጕቀ፡ 9
አደሙ ፡ መላትሕኪ ፡ ከመ ፡ መዕነቅ፡፡
ወክሳድኪ ፡ ከመ ፡ አርመስቀስ፡፡=፡ አም 10
ሳለ ፡ ወርቅ ፡ ይገብሩ ፡ ለኪ ፡ ኆሳክኍሰ፡
ዘብሩር፡፡=፡ እስከ ፡ ሶበ ፡ ንጉሠ ፡ ያስ 11
ምክ ፡ ቦቱ፡፡ ናርደስ ፡ ወሀበ ፡ መዓዛ
ሁ፡፡=፡ ለቍረ ፡ ማየ ፡ ልብን ፡ ዘወልድ፡ 12
እኁየ ፡ ሊተ፡፡ ማእከለ ፡ አጥባትየ ፡ የ
ዓርፍ፡፡=፡ አስካል ፡ ዘጸገየ ፡ ዘወልድ ፡ 13
እኁየ ፡ ሊተ፡፡ ውስተ ፡ ዐጸደ ፡ ወይን ፡
ዘበጋዲ፡፡=፡ ነያ ፡ ሠናይት ፡ እንተ ፡ ኀ 14
ቤየ ፡ ነያ ፡ ሠናይት፡፡ አዕይንትኪ ፡ ዘ
ርግብ፡፡=፡ ናሁ ፡ ሠናይ ፡ አንተ ፡ ወል 15
ድ ፡ እኁየ፡፡ አደሙ ፡ በውስተ ፡ ምስከ
ቢነ ፡ ዘበሕቁ፡፡=፡ ወምጸሕተ ፡ ቤትነ ፡ 16
ዘአርዝ፡፡ ወመሠአርቲነ ፡ ዘበሕቁ፡፡=፡
CAP. II አነ፡ጽጌ፡ገዳም፡፡ጽጌ፡ገዳም፡ዘ 1
ውስተ፡ቈላት፡፡=፡ ከመ፡ጽጌ ፡ ደንጐላት ፡ 2
በማእከለ፡አስዋክ፡፡ከማሁ ፡ አንቲ ፡ እንተ፡
ኀቤየ ፡ በማእከለ ፡ አዋልድ፡፡=፡ ወከ 3
መ ፡ ኮል ፡ ውስተ ፡ ዕፀወ ፡ ገዳም፡፡ ከ
ማሁ ፡ ዘአፈቅር ፡ በማእከለ ፡ ኣኃው፡፡
ታሕተ ፡ ጽላሎቱ ፡ ፈተውኩ ፡ ወነበር
ኩ፡፡ ወፍሬሁ ፡ ጥዑም ፡ ለጕርዔየ፡፡=፡
አብኡኒ ፡ ቤተ ፡ ወይን፡፡ ገብሩ ፡ ላዕሌ 4
የ ፡ ፍቅረ፡፡=፡ አጽንዑኒ ፡ በዕፍረት፡፡ 5
ሰደቁኒ ፡ በአክዋል ፡ እስመ ፡ ተነደፍኩ፡
በፍቅሩ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [e] amica mea. [f] facient tibi [g] Faſciculus ſtyracis qui ad nepotem meum pertinet & ad me: in [h] acquieſcet. [i] florum nepos meus [k] qui in Gaddi [l] amica mea: [m] nepos meus, jucundus in cubili noſtro cyprino. Trabes *CANT. II.* flos campi, qui eſt in valle: Sicut flos virginum in medio [b] dilectus meus in medio fratrum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܠܪܟܫܬܝ ܒܡܪܟܒܬܗ ܕܦܪܥܘܢ ܐܕܡܝܬܟܝ ܩܪܝܒܬܝ. * ܫܦܪܘ ܦܟܝܟܝ ܒܓܕܘܠܐ.
ܘܨܘܪܟܝ ܒܚܘܡܪܐ. * ܓܕܘܠܐ ܕܕܗܒܐ ܢܥܒܕ ܠܟܝ. ܥܡ ܢܩܘܕܐ ܕܣܐܡܐ. * ܥܡ ܡܠܟܐ
ܒܡܣܡܟܗ ܢܪܕܝܢ ܝܗܒ ܪܝܚܗ. * ܨܪܪܐ ܕܡܘܪܐ ܕܪܚܡ ܠܝ. ܒܝܬ ܬܕܝ ܢܒܘܬ. * ܣܓܘܠܐ
ܕܟܘܦܪܐ ܕܕܝ ܒܟܪܡܐ ܕܥܝܢ ܓܕܝ. * ܗܐ ܫܦܝܪܬܝ ܩܪܝܒܬܝ. ܗܐ ܫܦܝܪܬܝ. ܥܝܢܝܟܝ ܝܘܢܐ.
* ܗܐ ܫܦܝܪ ܐܢܬ ܕܕܝ ܐܦ ܒܣܝܡ. ܥܪܣܢ ܪܥܢܢܐ. * ܩܪܝܬܐ ܕܒܝܬܢ ܐܪܙܐ. ܚܘܩܐ ܕܒܪܘܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

* ܐܝܟ ܫܘܫܢܬܐ ܕܫܘܪܝܐ. ܫܘܫܢܬܐ ܕܥܘܡܩܐ. * ܐܝܟ ܫܘܫܢܐ ܒܝܬ ܟܘܒܐ. ܗܟܢܐ
ܩܪܝܒܬܝ ܒܝܬ ܒܢܬܐ. * ܐܝܟ ܚܙܘܪܐ ܒܩܝܣܐ ܕܥܒܐ. ܗܟܢܐ ܕܕܝ ܒܝܬ ܒܢܝܐ.
ܒܛܠܠܗ ܐܬܪܓܪܓܬ ܘܝܬܒܬ. ܘܦܐܪܗ ܚܠܐ ܠܚܟܝ. * ܐܥܠܘܢܝ ܠܒܝܬ ܚܡܪܐ. ܬܩܢܘ
ܥܠܝ ܚܘܒܐ. * ܣܡܘܢܝ ܒܝܬ ܦܘܢܩܐ. ܣܝܓܘܢܝ ܒܚܙܘܪܐ. ܡܛܠ ܕܟܪܝܗܬ ܚܘܒܐ ܐܢܐ.

Equæ meæ in curru Pharaonis comparavi te propinqua mea. Venuſtæ ſunt maxillæ tuæ in cincinnis, & collum tuum in murenulis. Intextos torques aureos faciemus tibi, cum laminis argenteis. Cum rege in accubitu ſuo, nardus odorem ſuum reddidit. Faſciculus eſt myrrhæ qui me diligit, inter mammas meas pernoctabit. Botrus eſt cypri patruus meus in vinea In-gadh. Ecce formoſa es propinqua mea, ecce formoſa es; oculi tui, columbini. Ecce pulcher es mi patrue, atque jucundus. Lectus noſter ſtratus eſt, Trabes domûs noſtræ cedrinæ, cinguli cupreſſini.

CAP. II.

Qualis eſt flos abietum & flos vallis; 1
Quales ſunt flores inter ſpinas, talis eſt pro- 2
pinqua mea inter filias. Quales ſunt 3
mali *arbores* inter ligna ſylvæ, talis eſt
patruus meus inter filios. Umbrâ ejus ob-
lectata ſum, *ſub qua* et ſedi: fructus ejus
dulcis eſt palato meo. Introducite me in cel- 4
lam vinariam, diſponite ſuper me amorem,
Ponite me inter blandimenta, circunſepite 5
me pomis, quia languida ſum amore.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* شبهتك يا قريبتي بفرسي في مركبات فرعون * ما اشد بهاء وجنتيك كاليمامة • وعنقك
كقلادة الجوهر * نستعمل لك تماثيل ذهب تشاكلك • بنقط الفضة * الي ان يجي الملك في
عودته • البان الذي لي افاح نسيم طيبه * من رباط الميعة الذي لابن اخي عندي يستوطن
فيما بين ثديي * ابن اخي عنقود الزهر في كروم بني جاد * ها انت يا قريبتي جميلة • ها
انت حسناء • وعيناك حمامتان * ها انت يا ابن اخي جميل • ومع ذلك على سريرنا تظليل بهي
* جسور منزلنا ارز • ودفوف سقفنا سربين *

• الفصل الثاني •

* انا زهر البقعة • وسوسنة الاودية * كالسوسنة بين الاشواك • هكذا قريبتي بين البنات
* كتفاحة في شجر الغيطة • هكذا ابن اخي بين البنين • اشتهيت استظل بظله وجلست
وثمرته حلو في حلقي * داخلوني الي بيت الخمر • رتبوا علي المحبة * شددوني بالطيوب
ارفدوني بالتفاح • فاني انا المحبة مجروحة •

Comparavi te O cognata mea, equæ meæ 9
in aurigis Pharaonis. Quàm vehemens 10
eſt nitor genarum tuarum! velut turturis: & collum tuum velut torques gemmarum. Adhibebuntur tibi figuræ aureæ 11
ſpeciem tuam referentes, cum punctis argenteis, Quoad veniat rex in reditu ſuo. 12
Nardus mea exhalavit odorem unguenti
ſui, Ob faſciculum ſtyracis qui pertinet ad 13
nepotem meum. Apud me commorabitur
inter ubera mea. Nepos meus botrus flo- 14
rum in vineis filiorum Gadh. Ecce tu O 15
cognata mea pulchra es, ecce tu formoſa
es, oculi tui duæ columbæ. Ecce tu O 16
mi nepos, formoſus es: & adhæc ſuper lectum noſtrum, pulcherrimum eſt operi-
mentum: Trabes domûs noſtræ cedrus, & 17
aſſeres laquearis noſtri cupreſſini.

CAP. II.

Ego ſum flos campi, & liliũ vallium. 1
Quale eſt lilium inter ſpinas, talis eſt co- 2
gnata mea inter filias. Quale eſt pomũ in
arbore ſylvæ, talis nepos meus inter filios. 3
Optavi in umbram ejus me recipere, &
quidem ſedi: & fructus ejus dulcis eſt in
palato meo. Introducite me in cellam vi- 4
nariam, ordinate ſuper me amorem, Con- 5
fortate me ungentis, ſtipate me malis, quoniam ego dilecta ſaucia ſum.

שיר השירים : ב

,meo capite ſub ejus Læva
6 שְׂמֹאלוֹ תַּחַת לְרֹאשִׁי
.me amplexabitur ejus dextera &
וִימִינוֹ תְּחַבְּקֵנִי׃
filiæ vos Adjuravi
7 הִשְׁבַּעְתִּי אֶתְכֶם בְּנוֹת
vel ,capreis in Jeruſalaim
יְרוּשָׁלִַם בִּצְבָאוֹת אוֹ
,ſuſcitaveritis ſi ; agri cervis in
בְּאַיְלוֹת הַשָּׂדֶה אִם־תָּעִירוּ
, amorem feceritis evigilare ſi &
וְאִם־תְּעוֹרְרוּ אֶת־הָאַהֲבָה
Ecce,mei dilecti Vox .voluerit donec
8 עַד שֶׁתֶּחְפָּץ׃ קוֹל דּוֹדִי הִנֵּה־
,montes ſuper tranſiliens venit ipſe
זֶה בָּא מְדַלֵּג עַל־הֶהָרִים
.colles ſuper raptim accurrens
מְקַפֵּץ עַל־הַגְּבָעוֹת׃
vel ,capreæ meus dilectus eſt Similis
9 דּוֹמֶה דוֹדִי לִצְבִי אוֹ
ſtans iſte en : cervorum hinnulo
לְעֹפֶר הָאַיָּלִים הִנֵּה־זֶה עוֹמֵד
è proſpiciens,noſtrũ parietẽ poſt
אַחַר כָּתְלֵנוּ מַשְׁגִּיחַ מִן־
.cancellis è ſeſe prodens ,feneſtris
הַחַלֹּנוֹת מֵצִיץ מִן־הַחֲרַכִּים׃
,mihi dixit &,meus dilectus Reſpondit
10 עָנָה דוֹדִי וְאָמַר לִי
,mea ſpecioſa ,mea ſocia tibi Surge
קוּמִי לָךְ רַעְיָתִי יָפָתִי
:tranſiit hyems ecce Quia .tibi abi &
11 וּלְכִי־לָךְ׃ כִּי־הִנֵּה הַסְּתָו עָבָר
.ſibi abiit , pertranſivit imber
הַגֶּשֶׁם חָלַף הָלַךְ לוֹ׃
tempus ,terra in ſunt viſi Flores
12 הַנִּצָּנִים נִרְאוּ בָאָרֶץ עֵת
turturis vox & : pertigit cantus
הַזָּמִיר הִגִּיעַ וְקוֹל הַתּוֹר
Ficus .noſtra terra in eſt audita
13 נִשְׁמַע בְּאַרְצֵנוּ׃ הַתְּאֵנָה
vites & , ſuos groſſos protruſit
חָנְטָה פַגֶּיהָ וְהַגְּפָנִים
ſurge : odorẽ dederũt minutæ uvæ
סְמָדַר נָתְנוּ רֵיחַ קוּמִי
abi & ,mea formoſa,mea amica tibi
לָכִי רַעְיָתִי יָפָתִי וּלְכִי־
petræ ſciſſuris in mea Columba tibi
14 לָךְ׃ יוֹנָתִי בְּחַגְוֵי הַסֶּלַע
mihi oſtende : gradus abſcondito in
בְּסֵתֶר הַמַּדְרֵגָה הַרְאִינִי
me audire fac ,tuum aſpectum
אֶת־מַרְאַיִךְ הַשְׁמִיעִנִי אֶת־
,dulcis tua vox quia : tuã vocem
קוֹלֵךְ כִּי־קוֹלֵךְ עָרֵב
nobis Prehendite .decorus tu⁹ aſpect⁹ &
15 וּמַרְאֵיךְ נָאוֶה׃ אֶחֱזוּ־לָנוּ
, parvas vulpes , vulpes
שׁוּעָלִים שֻׁעָלִים קְטַנִּים
noſtræ vineæ & :vineas corrumpentes
מְחַבְּלִים כְּרָמִים וּכְרָמֵינוּ
ego &,mihi me⁹ Dilectus.minutæ uvæ
16 סְמָדַר׃ דּוֹדִי לִי וַאֲנִי
Donec .liliis in paſcens illi
17 לוֹ הָרֹעֶה בַּשּׁוֹשַׁנִּים׃ עַד
: umbræ fugiant & ,dies aſpiret
שֶׁיָּפוּחַ הַיּוֹם וְנָסוּ הַצְּלָלִים
vel,capreæ mi dilecte te aſſimila ,circui
סֹב דְּמֵה־לְךָ דוֹדִי לִצְבִי אוֹ
.Bether mõtes ſuper cervorũ hinnulo
לְעֹפֶר הָאַיָּלִים עַל־הָרֵי בָתֶר׃

תרגום TARGUM.

6 שמאלו כד הוו עמא בית ישראל אזלין במדברא הוו ענני יקרא מסחרן להון ארבעה מארבע רוחי עלמא בגין דלא ישלוט בהון עינא בישא וחד מן עלויהון בגין דלא ישלוט בהון שרבא ושמשא ואוף לא מטרא וברדא וחד מלרע להון די הוה מסובר יתהון היכמה דמסובר תורבינא ית ינקא בעטפיה וחד הוה רהט קדמיהון מהלך תלתא יומין למככא טוריא ולמדלי מישריא וקטיל כל חיון קלן ועקרבין די במדברא והוה מאלל להון אתר כשר למבת בגין דהוו עסיקין באולפן דאוריתא דאתיהיבת להון ביד ימינא דיי : 7 השבעתי בתר כן אתאמר למשה בנבואה ומן קדם יי למשלח אזגדין לאללא ית ארעא וכדו תבו מלאללא אפיקו שום ביש על ארעא דישראל ואתעכבו ארבעין שנין במדברא פתח משה בפומיה וכן אמר אשבעית יתכון כנשתא דישראל ביי צבאות ובתקפי ארעא דישראל דלא תזידון למסק לארעא דכנען עד דיהא רעוא מן קדם יי ויסופון כל דרי אנשי קרבא לממת מגו משריתא היכמה דזדו אחוכון בני אפרים די נפקו תלתין שנין ממצרים עד לא מטא קצא ונפלו ביד פלשתאי דיתבין בגת וקטלו יתהון אלהן אוריכו עד זמן ארבעין שנין ובתר כן יעלון בניכון ויחסנון יתה:

8 קול אמר שלמה מלכא בעדן דהוו יתבין עמא בית ישראל במצרים סליקת קבלתהון לשמי מרומא הא בכן אתגלי יקרא דיי למשה על טורא דחורב ושדר יתיה במצרים למפרק יתהון ולאפקא יתהון מגו דחוק מרות מצרים וטפו על קצא בגין זכותא דאבהתהון דמתילין לטוריא ושור על זמן שעבודא מאה ותשעין שנין על צדקתא דאמהתן דמתילן לגלמתא:

9 דומה אמרת כנשתא דישראל בזמן דאתגלי יקרא דיי במצרים בליליא דפסחא וקטל כל בוכרא רכב על חיוא קלילא ורהט כטביא וכאורזלא דאילא ואגן על בתיא די אנן תמן ואתעתד בתר אשותנא ואשגח מן כותא ואסתכל מן חרכיא וחזא דמא דנכסא דפסחא ודמא דגזרת מהולתא דחקיק על תרענא וחש מן שמי מרומא וחמא לעמיה דאכלין ית נכסת חגא טוי נורא על תמכה ועולשין ופטירין וחס עלן ולא יהב רשותא למלאך מחבל למחבלא בן : 10 ענה ובעדן צפרא אתיב רחימי ואמר לי קומי לך כנשתא דישראל רחימתי די מלקדמין ושפירת עובדין אזילי נפקי מן שעבוד מצראי : 11 כי ארום הא זמן שעבודא דדמי לסתוא פסק ושניא דאמרית לאברהם ביני פלגיא אתקטעו ומרות מצראי דמתילא למטרא טרידא חלף ואזל ולא תוספין למחזיהון עוד עד עלמא : 12 הנצנים ומשה ואהרן דמתילו ללולבי דתמר אתחזו למעבד נסין בארעא דמצרים ועדן קטוף בוכריא מטא וקל רוחא דקודשא דפורקנא דאמרית לאברהם אבוכון כבר שמעתון מה דאמרית ליה ואף ית עמא די ישתעבדון בהון דאן אנא ובתר כן יפקון בקנינא סגיא וכען צביתי למעבד מה דקימית ליה במימרי : 13 התאנה כנשתא דישראל דמתילא לבכורי תאנים פתחת פומה ואמרת שירתא על ימא דסוף ואף עולימיא ויניקיא שבחו למרי עלמא בלישנהון מן יד אמר להון מרי עלמא קומי לך כנשתא דישראל רחמתי ושפרתי אזילי מכא לארעא דקיימית לאבהתך : 14 יונתי וכדרדף פרעה רשיעא בתר עמא דישראל הות מתילא כנשתא דישראל ליונתא דסגירא בחגוי טנרא וחויא מעיק לה מגיו ונצא מעיק לה מברא הכדין הות כנשתא דישראל סגירא מארבע סטרוי דעלם דמן קדמיהון ימא ומן בתריהון רדף סנאה ומן תרין סטריהון מדברין דמלין חיון קלן דנכתין וקטלין בארסיהון ית בני נשא ומן יד פתחת פומה בצלו קדם יי ונפקת ברת קלא מן שמי מרומא וכן אמרת אנת כנשתא דישראל דמתילא ליונתא דכיתא ומטמרא בסגור חגוי טנרא ובחביוני דרגתא אחזיני ית חזויך וית עובדיך דתקנן אשמעני ית קליך ארום קליך ערב בצלותא בבית מוקדש זעיר וחזויך שפיר בעובדין טבין : 15 אחזו בתר דעברו ית ימא אתרעמו על מיא ואתא עליהון עמלק רשיעא די נטר להון דבבו על עסק בכרותא וברכתא די שקל יעקב אבונא מן עשו ואתא לאגחא קרבא בישראל על דבטלו פתגמי אוריתא והוה עמלק רשיעא גנב מתחות גדפי ענני יקרא נפשתא משבטוי דדן ומקטל יתהון על דהוה בידיהון פסלידה דמיכה בההיא שעתא אתחיבו בית ישראל דמתילין לכרמא לאתחבלא אלולי צדיקי דרא ההוא דמתילין לבוסם טב : 16 דודי בההיא שעתא הדרו בתיובתא בכן אתעתד משה נביא וצלי קדם יי ויהושע משומשניה אזדרז ונפק מתחות גדפי ענני יקרא דיי ועמיה גוברין צדיקיא דדמין בעובדיהון לורדא ואגיחו קרבא

17 ית עמלק וית עמיה בשמתא דיי וקטלא ותבירא ובפתגם דחרב : עד ובזערות יומיא עבדו בני ישראל ית עגלא דדהבא ואסתלקו ענני יקרא
עליהון ואשתארו מפרסמן ואתרוקנו ית תקין זיניהון דחקיק ביה שמא רבא מפרש בשבעין שמהן ובעא יי להובדא יתהון מן עלמא אלולי
קים דקים במימריה לאברהם ליצחק וליעקב דהוו קלילין בפולחניה כטביא וכאורזילא דאילא ותקרובתא די קרב אברהם ית יצחק בריה
ומן קדמת דנא קרב תמן ית קורבניה ופלג יתהון בשוה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Quando popul⁹ dom⁹ Iſrael ambulabat ꝑ deſertũ, erãt nubes gloriæ circundantes eos, *quatuor* ꝑ quatuor ventos mundi *ne prævale in eos ocul⁹ mal⁹; & una ſupra eos* ut non dominaretur in eos æſtu neque Sol, neque pluvia, neque grando: *& altera infra eos, quæ portabat eos, ſicut portat nutritius infantem in ſinu ſuo; alia demũ præcurrebat eos itinere triũ dierũ ad deprimendos montes & elevandas valles, & interimebat omnes ſerpentes ignitos & ſcorpios in deſerto, & explorabat eis locum idoneũ ad pernoctandũ, propterea quod occupati erant in doctrina legis, quæ data fuerat eis manu dextera Domini.* Poſt hæc dictum fuit Moſi in prophetia à facie Domini ut mitteret nuncios ad explorandam terram: & quando reverſi ſunt ab explorando, detraxerunt terræ Iſrael, & demorati ſunt quadraginta annis in deſerto. Aperuit Moſes os ſuum, & ſic ait: Adjuro te eccleſia Iſrael in Domino exercituum, & in fortitudinibus terræ Iſrael, ne ſuperbè contendatis aſcendere ad terram Chanaan, donec ſit voluntas à facie Dñi: & conſumatur tota generatio virorũ bellatorum ut moriantur de medio caſtrorum: ſicut ſuperbierunt fratres veſtri filii Ephraim, qui ex Ægypto egreſſi ſunt triginta annis antequàm perveniſſet finis: & ceciderunt in manum Philiſtinorum qui habitabant in Geth, & occiderunt eos: ſed expectate uſque tempus quadraginta annorum, & poſteà ingredientur filii veſtri & poſſidebunt eam. Dixit Salomon rex: In tempore quo habitabat populus domus Iſrael in Ægypto, aſcendit clamor eorũ ad cœlos excelſos: tunc revelata eſt gloria Dñi Moſi ſuper montem Horeb, & miſit eum in Ægyptum ut redimeret eos, & ut educeret eos de oppreſſione ſubjectionis Ægyptiorũ, & abbreviatum eſt tempus præfinitum propter merita patrum qui comparati ſunt montibus: & diminuit de tempore ſervitutis centum nonaginta annos, propter juſtitiam matrũ quæ comparatæ ſunt collibus. Dixit cœtus Iſrael tempore quo revelata eſt gloria Dñi in Ægypto in nocte Phaſe, occidit omnẽ primogenitum; aſcendit ſuper fulgur velociſſime & cucurrit ſicut caprea & ſicut hinnulus cervorũ, & protexit domos in quib⁹ eramus, & ſtetit poſt parietes noſtros, & proſpexit per feneſtras, & aſpexit per cancellos, & vidit ſanguinẽ victimæ Phaſe & ſanguinem circuncisionis qui impreſſus erat in portis noſtris, contemplatus eſt de cœlis excelſis, & vidit populum ſuum qui comedebat victimam ſolennitatis aſſam igni cum inteſtinis & lactucis agreſtibus & azymis; & pepercit nobis, & non dedit poteſtatem angelo diſſipatori ut diſperderet nos. Et in tempore matutino reſpondit dilectus meus & dixit mihi; Surge tibi ſynagoga Iſrael, dilecta mea ab initio, & pulchra operibus, vade egredere de ſubjectione Ægyptiorum. Quoniam ecce tempus ſubjectionis, quod ſimile hyemi, ceſſavit, & anni quos dixi Abrahæ inter diviſiones, abbreviati ſunt; & dominiũ Ægyptiorum, quod comparatum eſt pluviæ continuæ, tranſivit & abiit, & non addetis ultrà videre eos in ſeculum. Moſes autem & Aaron qui comparati ſunt ramis palmarum, apparuerunt ut ederent miracula in terra Ægypti: & tempus putationis primogenitorum advenit, & vox Spiritus ſancti redemptionis quàm dixi Abrahæ patri veſtro: jam enim audiſtis quid dixerim ei; Et etiam populũ cui ſervituri ſunt judicabo; & poſteà egredientur cum ſubſtantia magna: & nunc volo facere quod juravi ei in verbo meo. Cœtus Iſrael qui comparatus eſt præcocibus ficub⁹, aperuit os ſuũ, & dixit canticũ ſuper mare rubrum; & etiam pueri & infantes laudaverunt dominatorem ſeculi in linguis ſuis. Illico dixit eis dominator ſeculi: Surge tibi congregatio Iſrael dilecta mea & formoſa mea, vade hinc ad terram quam juravi patribus tuis. Quando perſecutus eſt Pharao impius populum Iſrael, erat cœtus Iſrael ſimilis columbæ quæ clauſa eſt in foraminibus petræ, quam ſerpens coarctat intrinſecus, & accipiter coarctat eam extrinſecus: ſic erat cœtus Iſrael clauſus à quatuor partibus mundi, quoniam ante eos erat mare, & poſt eos perſequebatur hoſtis, & à duobus lateribus eorum erant deſerta plena ſerpentibus ignitis, qui mordebant & occidebant veneno ſuo filios hominum; illico autẽ aperuit os ſuũ in oratione coram Dño, & deſcendit filia *vocis* de cœlis excelſis, & ſic ait: Tu congregatio Iſrael quæ comparata es columbæ mundæ, & occultata es in clauſura foraminis & in abſconditis graduum, oſtende mihi aſpectum tuum & tua recta: fac me audire vocem tuam, quoniam vox tua eſt in oratione in domo ſanctuarii modici, & aſpectus tuus in operibus bonis. Poſtquàm tranſierunt mare, murmurarunt propter aquas; & venit contra eos Amalech impius, qui ſervavit eis inimicitiã propter primogenituram & benedictionem quam tulerat Jaacob pater noſter ab Eſau, & venit ut pugnaret contra Iſrael, eò quòd irrita fecerant verba Legis: & Amalech impius furabatur de-ſub alis nubium gloriæ animas de tribu Dan, & occidebat eas *quòd eſſet in manibus eorum ſimulacrum Michæ.* In illo tempore condemnatus eſt populus domus Iſrael, qui comparatus eſt vineæ, ut diſperderetur, niſi adfuiſſent juſti generationis qui comparati ſunt optimo aromati. In illo tempore converſi ſunt pœnitentia: tunc ſtetit Moſes propheta & oravit coram Domino; & Joſue miniſter ejus accinctus eſt, & egreſſus eſt de ſub alis nubium gloriæ Domini, & cum eo viri juſti qui ſimiles roſæ in operibus ſuis, & inierunt prælium contra Amalech, & confregerunt *Amalech* & populum ejus in nomine Domini: occîdit & contrivit eos in ore gladii. Et poſt paucos dies fecerunt filii Iſrael vitulum aureum, & ſublatæ ſunt nubes gloriæ quæ obumbrabant eos: & remanſerunt diſcooperti, & exuti ornamentum armorum ſuorum in quibus ſculptum erat nomen expoſitum in ſeptuaginta nominibus; & voluit Dominus perdere eos de ſeculo, niſi ſubiiſſet memoria coram eo juramenti quod juravit in verbo ſuo Abraham, Iſaac & Jaacob, qui velociſſimi in cultu ejus ſicut caprea & hinnulus cervorum, & oblationis quam obtulit Abraham Iſaac filium ſuum in monte Moriah: & antehac obtulerat illic oblationes ſuas, & diviſerat æqualiter.

Verſio VULG. LAT.

6 Læva ejus ſub capite meo, & dextera
7 illius amplexabitur me. Adjuro vos,
filiæ Jeruſalem, per capreas cervoſq;
camporũ, ne ſuſcitetis, neq; evigilare
faciatis dilectam, quoadusq; ipſa ve-
8 lit. Vox dilecti mei, ecce iſte venit ſa-
liens in montibus, tranſiliens colles:
9 Similis eſt dilectus meus capreæ, hin-
nuloque cervorũ: en ipſe ſtat poſt
parietem noſtrũ, reſpiciens per fe-
10 neſtras, proſpiciens per cancellos. En
dilectus meus loquitur mihi; Surge,
propera, amica mea, columba mea,
11 formoſa mea, & veni. Jam enim
hyems tranſiit, imber abiit, & receſ-
12 ſit. Flores apparuerunt in terra no-
ſtra, tempus putationis advenit: vox
turturis audita eſt in terra noſtra:
13 Ficus protulit groſſos ſuos: vineæ
florentes dederunt odorem ſuum.
Surge, amica mea, ſpecioſa mea, &
14 veni: Columba mea in foraminibus
petræ, in caverna maceriæ, oſtende
mihi faciem tuam, ſonet vox tua in
auribus meis: vox enim tua dulcis,
15 & facies tua decora. Capite nobis
vulpes parvulas, quæ demoliuntur
16 vineas: nam vinea noſtra floruit. Di-
lectus meus mihi, & ego illi, qui
17 paſcitur inter lilia, Donec aſpiret
dies, & inclinentur umbræ. Rever-
tere: ſimilis eſto, dilecte mi, ca-
preæ, hinnuloque cervorum ſuper
montes Bether.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

6 † Εὐώνυμος αὐτοῦ ὑπὸ τὴν κεφαλήν μου, † καὶ ἡ δε-
7 ξιὰ αὐτοῦ περιλήψεταί με. † Ὥρκισα ὑμᾶς θυγατέ-
ρες Ἱερουσαλὴμ, † (β) ἐν δυνάμεσι καὶ ἐν ἰσχύσεσι τοῦ
ἀγροῦ· † ἐὰν ἐγείρητε καὶ ἐξεγείρητε τὴν ἀγάπην ἕως
8 οὗ θελήσῃ. † Φωνὴ ἀδελφιδοῦ μου, † ἰδοὺ οὗτος ἥκει πη-
9 δῶν ἐπὶ τὰ ὄρη, † διαλλόμενος ἐπὶ τοὺς βουνούς. † Ὅ-
μοιός ἐστιν ἀδελφιδός μου τῇ δορκάδι † ἢ νεβρῷ ἐ-
λάφων ἐπὶ τὰ ὄρη Βαιθήλ. † ἰδοὺ οὗτος (γ) ὀπίσω τοῦ
τοίχου ἡμῶν, † παρακύπτων διὰ τῶν θυρίδων, † ἐκ-
10 κύπτων διὰ τῶν δικτύων. † Ἀποκρίνεται ἀδελφιδός
μου, καὶ λέγει μοι, † Ἀνάστα, ἐλθὲ ἡ πλησίον μου, κα-
11 λή μου, περιστερά μου. † Ὅτι ἰδοὺ ὁ χειμὼν παρῆλ-
12 θεν, † ὁ ὑετὸς ἀπῆλθεν, ἐπορεύθη ἑαυτῷ. † Τὰ ἄν-
θη ὤφθη ἐν τῇ γῇ, † καιρὸς τῆς τομῆς ἔφθακε, † φω-
13 νὴ (δ) τῆς τρυγόνος ἠκούσθη ἐν τῇ γῇ ἡμῶν. † Ἡ συκῆ
ἐξήνεγκεν ὀλύνθους αὐτῆς, † αἱ ἄμπελοι κυπρίζου-
σιν, ἔδωκαν ὀσμήν. † ἀνάστα, ἐλθὲ ἡ πλησίον μου,
14 καλή μου, περιστερά μου, † καὶ ἐλθέ, Σὺ περιστερά μου,
ἐν σκέπῃ τῆς πέτρας, † ἐχόμενα τοῦ προτειχίσμα-
τος. † δεῖξόν μοι τὴν ὄψιν σου, † καὶ ἀκούτισόν με τὴν φω-
νήν σου, † ὅτι ἡ φωνή σου ἡδεῖα, καὶ ἡ ὄψις σου ὡ-
15 ραία. Πιάσατε ἡμῖν ἀλώπεκας † μικροὺς ἀφανίζον-
τας ἀμπελῶνας· † καὶ αἱ ἄμπελοι ἡμῶν (ε) κυπρί-
16 ζουσι. † Ἀδελφιδός μου ἐμοί, κἀγὼ αὐτῷ· † ὁ ποι-
17 μαίνων ἐν τοῖς κρίνοις, † Ἕως οὗ διαπνεύσῃ (ʺ) ἡ ἡμέ-
ρα, καὶ κινηθῶσιν αἱ σκιαί. † ἀπόστρεψον, ὁμοιώθητι
σὺ ἀδελφιδέ μου † τῷ δόρκωνι ἢ νεβρῷ ἐλάφων
† ἐπὶ ὄρη κοιλωμάτων.

MS. A. (β) ἐν τοῖς δυνάμεσιν καὶ ἐν ταῖς ἰσχύσεσιν (γ) ἕστηκεν ὀπίσω τοῦ τοίχου (δ) τοῦ τρυγόνος (ε) κυπρίζουσιν. (ʺ) ἡμέρα,

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

[†] Læva ejº ſub capite meo, et dexte- 6
ra ejus (m) amplectetur me. Adju- 7
ravi vos, filiæ Hieruſalem, in virtu-
tibus, & in viribus agri; ſi ſuſcita-
veritis, & (n) reſuſcitaveritis [c]
charitatem, (o) quoadusq; velit. Vox 8
(p) [d] fraterni mei, ecce hic venit ſa-
liens [e] ſuper montes, tranſiliens ſu-
per colles. Similis eſt [f] fraternus 9
meus capreæ, vel (q) hinnulo cervo-
rum in montibus Bethel. Ecce (r) hic
[g] poſt parietem noſtrum, incumbens
per feneſtras, proſpiciens per retia.
(ſ) Reſpondet fraternus meus, & 10
dicit mihi; Surge, veni, [h] proxima
mea, formoſa mea, columba mea:
Quoniã ecce hyems (t) tranſiit, plu- 11
via abiit, receſſit ſibi. Flores viſi ſunt 12
in [i] terra: tempus (u) ſectionis ad-
venit: vox turturis audita eſt in ter-
ra noſtra: Arbor fici (x) produxit 13
germina ſua: (y) vites florent, dede-
runt odorem. (z) Surge, veni, proxi-
ma mea, formoſa mea, columba mea,
& veni, Tu columba mea in te- 14
gimento petræ juxta promurale.
Oſtende mihi faciem tuam, et au-
ditam (ω) fac mihi vocem tuam:
quia vox tua ſuavis, et facies tua
ſpecioſa. (aa) Capite nobis vulpes 15
puſillas (bb) exterminantes vineas:
& vineæ noſtræ florentes. [k] Fra- 16
ternus meus mihi, & ego (cc) ei: qui
paſcit in liliis, (dd) Donec reſpiret 17
dies, & (ee) [l] amoveantur um-
bræ. (ff) Revertere, ſimilis efficere,
[m] fraterne mi, capreæ, vel hinnu-
lo cervorum ſuper montes cavitatũ.

Verſio ÆTHIOPICA.

የማኑ፡ ተሐቅፈኒ፡ ወፀጋሙ፡ ታሕተ፡ ርእስ 6
የ።፨ አምሐልኩክን፡ አዋልደ፡ ኢየሩሳሌም፡ 7
በኃይሉ፡ ወበጽንዑ፡ ለገዳም። እመ፡ ተንሥአ፡
ወአንሥአ፡ ሙታን። አፈቅሮ፡ እስከ፡ እመ፡ ፈ
ቀደ።፨ ቃለ፡ ወልድ፡ እኁየ፡ ናሁ፡ ውእቱ፡ 8
መጽአ።
ፀ፡ እንዘ፡ ይቀንጽ፡ ማእከለ፡ አድባ
ር። ወያንበሰብስ፡ ደብ፡ አውግር።፨ ይመስል፡ 9
ወልድ፡ እኁየ፡ ከመ፡ ወይጠል። ወከመ፡ ወሬዛ፡
ኃየል፡ ውስተ፡ አድባረ፡ ቤቴል። ናሁ፡ ውእቱ፡
ይቀውም፡ እንተ፡ ድኅረ፡ አረፍት። ወይኄው
ጽ፡ እንተ፡ መሳክው። ወይደንን፡ እንተ፡ ተድባ
ብ።፨ ያወሥእ፡ ወልድ፡ እኁየ፡ ወይብለኒ። 10
ተንሥኢ፡ ወንዒ፡ እንቲአየ፡ ሠናይት፡ ርግብ
የ።፨ እስመ፡ ናሁ፡ ክረምት፡ ኀለፈ። ወዝና 11
ም፡ ኀለፈ፡ ወገብአ፡ ለሊሁ።፨ ጽጌ፡ አስተር 12
እየ፡ በውስተ፡ ምድርን። ጊዜ፡ ገሚድ፡ በጽሐ።
ቃለ፡ ማዕነቅ፡ ተሰምዓ፡ በውስተ፡ ምድርን።፨
በለስ፡ አውፅአ፡ ሠርፀ። አውያን፡ ጸገዩ፡ ወወ 13
ሀቡ፡ መዓዛ። ተንሥኢ፡ ወንዒ፡ ቅርብትየ።፨
እንቲአየ፡ ሠናይት፡ ርግብየ። ውስተ፡ ጽላሎ 14
ተ፡ ኰኵሕ፡ ቅሩብ፡ ጥቅም። አርእይኒ፡ ገጸከ፡
ወአስምዓኒ፡ ቃለከ። እስመ፡ ቃልከ፡ አዳም፡ ወ
ገጽከ፡ ሳሕይ።፨ አስግሩ፡ ለነ፡ ቈናጽለ፡ ንኡ 15
ሳን፡ እለ፡ ያማስኑ። ዓጸደ፡ ወይንነ፡ ዓጸደ፡ ወይ
ንነ፡ ይጸጊ።፨ ወልድ፡ እኁየ፡ ሊተ፡ ወአነ፡ 16
ሎቱ። ዘይትረዓይ፡ ውስተ፡ ጽጌያት።፨ እስ 17
ከ፡ ሶበ፡ ታስተነፍስ፡ ዕለት፡ ወያንቀለቅሉ፡ ጽላ
ሎት። ተመየጥ፡ አንተ፡ ወልድ፡ እኁየ፡ ወተመ
ሰል፡ ወይጠል። ወከመ፡ ወሬዛ፡ ኃየል፡ ውስተ፡
አድባረ፡ ድኁኃን።፨

INTERP. ÆTHIOP. [†] Dextera eius amplectitur me, & læva [c] Dominum charitatis, [d] nepotis mei, [e] inter montes, adproperans [f] nepos meus [g] ſtans poſt parietem, proſpectans per feneſtras, & recumbens per cacumina. Reſpondet nepos meus, [h] unica mea, [i] terra noſtra: [k] Nepos meus [l] inclinentur umbræ. [m] nepos

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

6 7 * شماله تحت رأسي * ويمينه تنعطف علي * أستحلفكن يا بنات اورشليم باقتدارات الحقل
8 وقواته * إن أنبهتم وأيقظتم المحبة إلى أن تشاء هي * صوت ابن أخي * ها هوذا يجي
9 فيطفر على الجبال * ويقفز على التلال * ابن أخي شبيه بالغزال أو بخشف الأيل على جبال
10 بيت إيل * ها هو قد وقف ورا حايطنا متسترا في النوافذ متطلعا في الشباك * فأجابني
11 ابن أخي وقال * يا قريبتي الحسني وتعالي يا جميلتي وحمامتي * فها الشتي قد عبر * والمطر
12 ذهب وسار إلى ذاته * الأزهار قد ظهرت في الأرض * وقد بلغ أوان القطع * صوت اليمامة
13 سمع في أرضنا * التينة قربت قوتها * الكروم إذا أزهرت منحت نسيم طيبها * الحسني
14 وتعالي يا قريبتي يا جميلتي وحمامتي * وهلمي أنتِ يا حمامتي في كنف الصخرة مصاقبة
فصيل السور أريني وجهك * واسمعيني صوتك * فإن صوتك لذيذ * ووجهك بهي *
15 16 * اصطادوا لنا الثعالب الصغار المبيدة الكروم * فتزهر كرومنا * ابن أخي لي وأنا له * الذي
17 يرعى في السوسن * إلى أن يهب النهار وتسير الأفياء * ابن أخي ارجع فأنت شبيهًا بالغزال
أو بخشف الأيل المرح على الجبال *

** Siniſtra ipſius ſub capite meo, et dex-* 6
tera ipſius flectatur ſuper me. Adju- 7
ro vos O filiæ Jeruſalem, per poten-
tias agri ejuſque virtutes, ne ſuſci-
tetis, neve expergefaciatis dilectam, donec
ipſa velit. Vox nepotis mei auditur*: ecce* 8
venit, ſalitque ſuper montes, & ſub-
ſultat ſuper colles. Nepos meus ſimilis 9
eſt cervo aut hinnulo capreæ ſuper mon-
tes Beth-Il. En ipſe ſtetit poſt noſtrum
parietem, proſpiciens per feneſtellas, pro-
ſpectans per clathrum: Et reſpondens 10
mihi nepos meus ait, O cognata mea ſur-
ge & veni, O formoſa mea, & co-
lumba mea. Ecce enim hyems jam præ- 11
teriit, & pluvia abiit, ſeſeque recepit.
Flores jam apparuerunt in terra, jamque 12
adeſt tempus amputandi. Vox turturis
audita eſt in terra noſtra. Fici vigor 13
advenit: vineæ, quòd floruerint, odo-
rem fragrantiæ ſuæ reddiderunt. Surge
itaque*, & veni O cognata mea, O for-*
moſa mea, & columba mea; Et adveni 14
tu O columba mea, ad latus petræ ad-
jacentis parieti ſubmœniano oſtende mi-
hi faciem tuam, & audire me fac
vocem tuam: vox enim tua jucunda
eſt, & facies tua nitida. Venamini 15
nobis vulpes parvas vinearum vaſta-
trices, florebuntque vineæ noſtræ. Ne- 16
pos meus, meus eſt; & ego illius,
qui paſcit inter lilia. Donec perflet 17
dies, & procedant umbræ. Mi ne-
pos, revertere: tu enim ſimilis es
cervo aut hinnulo capreæ uberibus pa-
ſcuis ſuper montes gaudenti.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

6 7 * ܣܡܠܗ ܬܚܝܬ ܪܫܝ. ܘܝܡܝܢܗ ܡܓܦܦܐ ܠܝ. * ܐܘܡܝܬܟܝܢ ܒܢܬ ܐܘܪܫܠܡ ܒܛܒܝܐ ܐܘ ܒܐܝܠܐ
8 ܕܚܩܠܐ. ܐܢ ܬܥܝܪܢ ܘܐܢ ܬܬܥܝܪܢ ܠܚܘܒܐ ܥܕܡܐ ܕܨܒܐ. * ܩܠܗ ܕܕܕܝ ܗܐ
9 ܗܢܐ ܐܬܐ ܡܫܘܪ ܥܠ ܛܘܪ̈ܐ. ܘܡܕܠܓ ܥܠ ܪ̈ܡܬܐ. * ܕܡܐ ܕܕܝ ܠܛܒܝܐ ܐܘ ܠܐܝܠܐ ܕܐܝ̈ܠܐ. ܗܐ
10 ܗܘ ܩܐܡ ܒܬܪ ܫܘܪܢ. ܘܡܕܝܩ ܡܢ ܟܘ̈ܐ. ܘܡܬܚܪܐ ܡܢ ܨܝ̈ܪܐ. * ܥܢܐ ܕܕܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܩܘܡܝ
11 12 ܩܪܝܒܬܝ. ܫܦܝܪܬܝ. ܘܬܝ ܠܟܝ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܣܬܘܐ ܥܒܪ ܘܐܙܠ ܠܗ. * ܗܒܒ̈ܐ
13 ܐܬܚܙܝܘ ܒܐܪܥܐ. ܙܒܢܐ ܕܙܡܝܪܐ ܡܛܐ. ܘܩܠܐ ܕܫܘܦܢܝܢܐ ܐܫܬܡܥ ܒܐܪܥܢ. * ܬܐܢܬܐ ܐܦܩܬ
ܦܓ̈ܝܗ. ܘܓܘܦ̈ܢܐ ܘܦܪ̈ܥܐ ܝܗܒܘ ܪܝܚܗܘܢ. ܩܘܡܝ ܠܟܝ ܫܦܝܪܬܝ. ܩܪܝܒܬܝ. ܘܬܝ ܝܘܢ
14 ܬܝ. * ܒܢܩܥ̈ܬܐ ܕܟܐܦܐ ܘܒܛܘܫܝܐ ܕܣܝܓܐ ܚܘܝܢܝ ܚܙܘܟܝ. ܘܐܫܡܥܝܢܝ ܩܠܟܝ. ܡܛܠ
15 ܕܩܠܟܝ ܒܣܝܡ. ܘܚܙܘܟܝ ܫܦܝܪ. * ܐܚܘܕܘ ܠܢ ܬܥ̈ܠܐ. ܬܥ̈ܠܐ ܙܥܘܪ̈ܐ. ܕܡܚܒܠܝܢ ܟܪ̈ܡܐ. ܘܟܪ̈ܡܢ
16 17 ܡܦܪܥܝܢ. * ܕܕܝ ܠܝ. ܘܐܢܐ ܠܗ. ܕܪܥܐ ܒܫܘ̈ܫܢܐ. * ܥܕܡܐ ܕܢܦܘܚ ܝܘܡܐ ܘܢܨܠܘܢ ܛܠ̈ܠܐ.
ܐܬܦܢܐ ܕܡܐ ܕܕܝ ܠܛܒܝܐ ܐܘ ܠܐܝܠܐ ܕܐܝ̈ܠܐ. ܥܠ ܛܘܪ̈ܝ ܒܣ̈ܡܐ.

Læva ejus ſub capite meo, & dextera ipſius 6
amplexetur me. Obteſtor vos O filiæ Jeruſa- 7
lem, p capreolos aut p hinnulos agri, ſi exci-
tetis aut expergefaciatis ipſam dilectã, donec 8
velit. Vox patrui mei, en iſte eſt qui venit, tri-
pudians ſup mõtes, ſaltãs ſup colles. Similis eſt 9
patruº meº capreolo, aut hinnulo cervi: ipſe-
met ecce ſtat à tergo parietis noſtri, proſpe-
ctans è feneſtris, & inclinatus à cardinibus.
Reſpondit patruº meº, dixitque mihi, Surge 10
propinqua mea, pulchra mea, & abi tibi.
Quoniã ecce hyems præteriit & abiit. Flores 11
apparuerunt in terra, tempº putandi appro- 12
pinquavit, & vox turturis audita eſt in terra
noſtra. Ficus protulit groſſos ſuos, vites & 13
flores *vineæ* dederũt odorẽ ſuũ. Surge tibi
pulchra mea, propinqua mea; & veni colum-
ba mea. In cavitatibus petræ, & in latibulo 14
maceriæ oſtẽde mihi aſpectũ tuũ, et audire me
fac vocẽ tuã; quia vox tua ſuavis eſt, et aſpe-
ctus tuº decorus. Prehendite nobis vulpes, 15
vulpes *inquam* minutas, corrumpentes vine-
as, et *quidem* vineas noſtras florentes. Patru- 16
us meus mihi, et ego illi, qui paſcitur in liliis,
Donec refrigeretur dies, et inclinentur um- 17
bræ. Convertere, ſimilis eſto mi patrue, capre-
olo aut hinnulo cervorũ ſup mõtes aromatũ.

שיר השירים׃ ג

CAP. III. ג

quæſivi noctibus in meo cubili *Super*
1 עַל־מִשְׁכָּבִי בַּלֵּילוֹת בִּקַּשְׁתִּי
,eum quæſivi : mea anima *dilexit* quem
אֵת שֶׁאָהֲבָה נַפְשִׁי בִּקַּשְׁתִּיו
, nunc Surgam .eum inveni non &
2 וְלֹא מְצָאתִיו׃ אָקוּמָה נָּא
, *plateis in* , *civitate in* circuibo &
וַאֲסוֹבְבָה בָעִיר בַּשְּׁוָקִים
dilexit quem quæram ,*latis locis in &*
וּבָרְחֹבוֹת אֲבַקְשָׁה אֵת שֶׁאָהֲבָה
.eum inveni non & ,eũ quæſivi :mea anima
נַפְשִׁי בִּקַּשְׁתִּיו וְלֹא מְצָאתִיו׃
circueuntes cuſtodes me Invenerunt
3 מְצָאוּנִי הַשֹּׁמְרִים הַסֹּבְבִים
mea anima *dilexit* quem : *civitate in*
בָּעִיר אֵת שֶׁאָהֲבָה נַפְשִׁי
tranſiviſſẽ *quòd* paululũ *Tanquã* ? vidiſtis
4 רְאִיתֶם׃ כִּמְעַט שֶׁעָבַרְתִּי
dilexit quem inveni *quo uſque* ,eis ab
מֵהֶם עַד שֶׁמָּצָאתִי אֵת שֶׁאָהֲבָה
non & , eum apprehendi : mea anima
נַפְשִׁי אֲחַזְתִּיו וְלֹא
eum introducam donec , eum dimittam
אַרְפֶּנּוּ עַד־שֶׁהֲבֵיאתִיו
conclave ad & ,meæ matris domum *ad*
אֶל־בֵּית אִמִּי וְאֶל־חֶדֶר
filiæ vos Adjuravi .meæ genitricis
5 הוֹרָתִי׃ הִשְׁבַּעְתִּי אֶתְכֶם בְּנוֹת
cervis in vel , *capreis in* Jeruſalaim
יְרוּשָׁלִַם בִּצְבָאוֹת אוֹ בְּאַיְלוֹת
ſi & ,ſuſcitaveritis ſi ; campi
הַשָּׂדֶה אִם־תָּעִירוּ ׀ וְאִם־
donec , amorem feceritis evigilare
תְּעוֹרְרוּ אֶת־הָאַהֲבָה עַד
è *aſcendens* iſta Quæ .voluerit
6 שֶׁתֶּחְפָּץ׃ מִי זֹאת עֹלָה מִן
ſuffita ; fumi columnæ ſicut deſerto
הַמִּדְבָּר כְּתִימֲרוֹת עָשָׁן מְקֻטֶּרֶת
pulvere omni ex , thure & , myrrha
מֹר וּלְבוֹנָה מִכֹּל אַבְקַת
,Selomoh ipſi qui *ipſi*° lect° En ?pigmẽtarii
7 רוֹכֵל׃ הִנֵּה מִטָּתוֹ שֶׁלִּשְׁלֹמֹה
: *eum circum* , potentes ſexaginta
שִׁשִּׁים גִּבֹּרִים סָבִיב לָהּ
apprehenſi ipſi Omnes .Iſrael potentibus ex
8 מִגִּבֹּרֵי יִשְׂרָאֵל׃ כֻּלָּם אֲחֻזֵי
viri : *bellum* docti , *gladio*
חֶרֶב מְלֻמְּדֵי מִלְחָמָה אִישׁ
pavore à , ſuum femur ſuper *ejus* gladius
חַרְבּוֹ עַל־יְרֵכוֹ מִפַּחַד
ſibi fecit *ſponſarũ Thalamum* .noctibus in
9 בַּלֵּילוֹת׃ אַפִּרְיוֹן עָשָׂה לוֹ
.Lebanon lignis ex Selomoh rex
הַמֶּלֶךְ שְׁלֹמֹה מֵעֲצֵי הַלְּבָנוֹן׃
ejus ſtratum ,*argenti* fecit ejus Columnas
10 עַמּוּדָיו עָשָׂה כֶסֶף רְפִידָתוֹ
ejus medium : *purpuræ ejus vehiculum* ,*auri*
זָהָב מֶרְכָּבוֹ אַרְגָּמָן תּוֹכוֹ
.Jeruſalaim *filiabus à* , amore *ſuccenſum*
רָצוּף אַהֲבָה מִבְּנוֹת יְרוּשָׁלִָם׃
regem *in* Sijon filiæ videte &,Egredimini
11 צְאֶינָה וּרְאֶינָה בְּנוֹת צִיּוֹן בַּמֶּלֶךְ
eum coronavit *quo* ,*diademate in* Selomoh
שְׁלֹמֹה בָּעֲטָרָה שֶׁעִטְּרָה־לּוֹ
ſuæ deſponſationis die in ejus mater
אִמּוֹ בְּיוֹם חֲתֻנָּתוֹ
.ejus cordis lætitiæ die in &
וּבְיוֹם שִׂמְחַת לִבּוֹ׃

תרגום TARGUM.

ג

1 על וכד חזו עמא בית ישראל דאסתלקו ענני יקרא מעלויהון וכלילא דקודשא דאתיהב להון בסיני אתנטילת מנהון ואשתארו חשיכין כליליא ובעו ית כלילא דקודשא דאסתלק מנהון ולא אשכחוהי : 2 אקומה אמרין בני ישראל אלין לאלין נקום וניזיל ונסחר למשכן זמנא דפרסיה משה מברא למשריתא ונתבע אולפן מן קדם יי ושכינת קודשא דאסתלקת מננא וחזרו בקרוין ובפלטיא ובפתוין ולא אשכחו : 3 מצאוני אמרת כנשתא דישראל אשכחו יתי משה ואהרן וליואי נטרי מטרת מימרא דמשכן זמנא די מסחרן יתיה חזור חזור ושאלית להון על עסק שכינת יקרא דיי דאסתלקת מני אתיב משה ספרא רבא דישראל וכן אמר אסק לשמי מרומא ואצלי קדם יי מאים יכפר על חוביכון וישרי ית שכנתיה ביניכון כמלקדמין : 4 כמעט כזעיר צבחר הוה ותב יי מתקוף רוגזיה ופקיד למשה נביא למעבד משכן זמנא וארונא ואשרי שכנתיה בגויה ועמא בית ישראל הוו מקרבין קורבניהון ועסיקין בפתגמי אוריתא באדרון בית מדרשא דמשה רבהון ובקטונא דיהושע בר נון משומשניה : 5 השבעתי כד שמעו שבעא אומיא דבני ישראל עתידין למחסן ית ארעהון קמו כחדא וקציצו ית אילניא וסתימו ית מבועי מיא וצדיאו ית קרויהון וערקו אמר קודשא בריך הוא למשה נביא אנא קימית לאבהתהון דאלין לאעלא ית בניהון לאחסנא ארעא עבדא חלב ודבש והכדין אנא מעל ית בניהון לארעא צדיא וריקניא כען אנא מעכב יתהון ארבעין שנין במדברא ותהי אוריתי מתערבא בגופיהון ומבתר כן אנון עממין רשיעין יבנון מה דאצדיאו בכן אמר משה לבני ישראל אשבעית לכון כנשתא דישראל ביי צבאות ובתקיפי ארעא דישראל דלא תזידון למסק לארעא דכנענאי עד משלם ארבעין שנין ויהא רעוא מן קדם יי לממסר יתבי ארעא בידיכון ותעברון ית ירדנא ותהי ארעא כבישא קדמיכון : 6 מי כד סליקו ישראל מן מדברא ועברו ית ירדנא עם יהושע בר נון אמרו עממי ארעא מה היא דא אומא בחירתא דסלקא מן מדברא מתנמרא מן קטורת בוסמין וסעידא בזכותיה דאברהם די פלח וצלי קדם יי בטור מוריה ומתמרקא משח רבותא בצדקתיה דיצחק די אתעקד באתר בית מוקדשא דמתקרי טור דלבונתא ומתעבדין לה נסין בחסידותיה דיעקב דאשתדל עמיה עד מסק קרצתא ואתגבר מניה ואשתזיב הוא ותרי עסר שבטוי : 7 הנה כד בנא שלמה מלכא דישראל ית בית מקדשא דיי בירושלם אמר יי במימריה כמה יאי בית מוקדשא הדין דאתבני לי על ידוי דמלכא שלמה בר דוד וכמה יאין כהניא בעדן דפרסין ידיהון וקימין על דוכניהון ומברכין לעמא בית ישראל בשתין אתין דמסירין למשה רבהון ובההיא ברכתא מסחרא להון כשור רם ותקיף ובה מתגברין ומצלחין כל גברי ישראל : 8 כלם וכהניא וליואי וכל שבטיא דישראל כולהון אחדין בפתגמי אוריתא דמתילין לחרבא ושקלן וטירן בהון כגברין מאלפי קרבא וכל חד וחד מנהון חתימת מילה על בסרהון היכמה אתחתימת בבסריה דאברהם ומתגברין בה כגבר דחרבא חגירא על ירכיה ובגין כן לא דחלין מן מזיקיא וטלני דאזלין בליליא : 9 אפריון היכל קודשא בנא ליה שלמה מלכא מן אילני ונגבילא ושאגי ושורבני דאיתי מן לבנון וחפא יתיה דהב דכי : 10 עמודיו ובתר די שלם יתיה שוי בגויה ית ארונא דסהדותא דהוא עמודא דעלמא ובגויה תרין לוחי אבניא די אצנע תמן משה בחורב דיקירין מן דהב טב ופריש וטלל מן עלוויה ית פרוכתא דתכלא וארגונא וביני כרוביא די עלוי כפורתא הות שריא שכנתא דיי דשכן שמיה בירושלם מן כל כרכי ארעא דישראל : 11 צאינה כד אתא שלמה מלכא למעבד ית חנכת בית מוקדשא כרוזא נפק בחיל וכן אמר פוקו וחזו יתבי פלכיא דארעא דישראל ועמא דציון בתגא ובכלילא דכלילו עמא בית ישראל ית מלכא שלמה ביום חנוכת בית מוקדשא וחדי בחדות חגא דמטללתא דעבד שלמה מלכא בעדנא ההיא ית חגא דמטללתא ארבעה עסר יומין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. III.

ET quando vidit populus domus Iſrael quòd ſublatæ eſſent nubes gloriæ ab eis, & corona ſanctitatis quæ data fuit eis in Sinai, ablata eſſet ab eis, remanſerunt contenebrati ſicut nox, & quæſierunt coronam ſanctitatis quæ ſublata fuerat ab eis, & non invenerunt illam. Dixerunt filii Iſrael ad invicem: Surgamus & eamus & circundemus tabernaculum fœderis quod extendit Moſes extra caſtra, & quæramus doctrinam à facie Domini, & majeſtatem ſanctam quæ ſublata eſt à nobis: & circuierunt per civitates & plateas & per vicos, & non invenerunt eam. Dixit cœtus Iſrael: Invenerunt me Moſes & Aaron & Levitæ obſervantes cuſtodiam verbi tabernaculi fœderis qui circuibant illud per gyrum, & interrogavi eos de majeſtate gloriæ Domini quæ ſublata fuerat à me. Reſpondit Moſes ſcriba princeps Iſrael, & ſic ait: Aſcendam ad cœlos excelſos & orabo coram Domino, ſi fortè placabitur ſuper peccata veſtra, & habitare faciet majeſtatem ſuam inter vos ſicut olim. Quaſi paulum & modicum fuit, & reverſus eſt Dominus ab ira furoris ſui, & præcepit Dominus Moſi prophetæ ut faceret tabernaculum fœderis & arcam; & collocavit majeſtatem ſuam in medio ejus: & populus domus Iſrael offerebant oblationes ſuas, & navabant operam verbis Legis in cœnaculo domus doctrinæ Moſis magiſtri eorum, et in cubiculo Joſue filii Nun miniſtri ejus. Quando audierunt ſeptem populi quòd filii Iſrael poſſeſſuri eſſent terram ipſorum, ſurrexerunt ſimul et ſucciderunt arbores, et obturaverunt fontes aquarum, et deſtruxerunt urbes ſuas et fugerunt. Dixit ille ſanctus et benedictus Moſi prophetæ: Ego juravi patribus iſtorum me introducturum filios eorum in poſſeſſionem terræ fluentis lacte & melle, *& nunc ego induco filios eorum in terram devaſtatam & vacuam*: nunc ego retinebo eos quadraginta annis in deſerto, & erit Lex mea adhuc in corporibus eorum: & poſteà illi populi impii ædificabunt quod deſtruxerunt. Tunc dixit Moſes filiis Iſrael: Adjuro vos cœtus Iſrael per Dominum exercituum, & per fortes terræ Iſrael, ne ſuperbè contendatis ut aſcendatis in terram Chananæorum, donec impleantur quadraginta anni, & ſit voluntas coram Domino ut tradat habitatores terræ in manus veſtras: & tranſibitis Jordanem, & erit terra ſubjecta coram vobis. Quando aſcenderunt filii Iſrael de deſerto, & tranſierunt Jordanem cum Joſue filio Nun, dixerunt populi terræ: Quæ eſt iſta gens electa quæ aſcendit de deſerto, ſuffumigata ab incenſu aromatum, & adjuta propter meritum Abrahæ, qui ſervivit & oravit coram Domino in monte Moriah, & exterſa oleo unctionis propter juſtitiam Iſaac qui ligatus fuit in loco domûs ſanctuarii, qui vocatur Mons thuris: & fiunt ei mirabilia propter miſericordiam Jaacob, cum quo luctatus eſt uſque ad aſcenſum auroræ & prævaluit illi, & liberatus eſt ipſe & duodecim tribus ejus. Quando ædificavit Salomon rex Iſrael domum ſanctuarii Domini in Jeruſalem, dixit Dominus in verbo ſuo: Quàm pulchra eſt domus ſanctuarii hæc quæ ædificata eſt mihi per manus regis Salomonis filii David, & quàm pulchri ſunt Sacerdotes in tempore quo extendunt manus ſuas & ſtant in ſuggeſto ſuo, & benedicunt populo domûs Iſrael *in ſexaginta ſignis quæ tradita ſunt Moſi magiſtro eorum*! & illa benedictio circundat eos ſicut murus excelſus & fortis, & in ea prævalent & proſperantur omnes fortes Iſrael. Sacerdotes autem & Levitæ & omnes tribus Iſrael univerſi apprehendunt verba Legis, quæ comparantur gladio, & ponderant & agitant ea ſicut fortes docti in bello, & ſuper unoquoque eorũ ſignata eſt circunciſio in carne ipſorum, ſicut ſignata fuit in carne Abrahæ: & prævalent & confortantur in ea ſicut fortis qui accinctus eſt gladio ſuper femur ſuum; & ideò non timent à ſpiritibus nocivis & dæmonibus qui ambulant in nocte. Templum ſanctuarii ædificavit ſibi rex Salomon de lignis cedrinis, & arceuthinis et pinis quæ adducuntur de Libano, et operuit illud auro puriſſimo. Et poſtquàm conſummavit illud, poſuit in medio ejus arcam teſtimonii quæ erat columna ſeculi, et in medio ejus erant duæ tabulæ lapideæ quas repoſuit ibi Moſes in Horeb, quæ erant precioſiores argento purgato & pulchriores auro optimo: et extendit et obumbravit ſuper eam velum hyacinthinum et purpureum, et inter Cherubim, quæ erant ſuper propitiatorium, reſidebat majeſtas Domini, qui habitare fecit nomen ſuum in Jeruſalem magis quàm in omnibus urbibus terræ Iſrael. Quando venit Salomon rex ut faceret dedicationem domus ſanctuarii, præco egreſſus eſt in fortitudine, et ſic ait: Egredimini et videte habitatores provinciarum terræ Iſrael et populus Sion diadema & coronam qua coronavit populus domûs Iſrael regem Salomonem in die dedicationis domûs ſanctuarii: & lætatus eſt in lætitia ſolemnitatis tabernaculorum: *nam* fecit Salomon rex in tempore illo *ſolennitatem tabernaculorum* quatuordecim diebus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܓ * ܩܦܠܐܘܢ *

1 ܥܠ ܡܫܟܒܝ. ܒܠܠܝܘܬܐ. ܒܥܝܬܗ ܠܡܢ ܕܪܚܡܐ ܢܦܫܝ. ܒܥܝܬܗ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬܗ. *2 ܐܩܘܡ ܗܝ
ܐܚܕܪ ܒܡܕܝܢܬܐ ܒܫܘܩܐ ܘܒܦܠܛܝܬܐ. ܐܒܥܐ ܠܡܢ ܕܪܚܡܐ ܢܦܫܝ. ܒܥܝܬܗ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬܗ.

CAP. III.

Super cubile meũ in noctibus quæſivi eum quem dilexit anima mea: quæſivi eum, nec inveni. Surgam equidem, circumibo in civitate vicis, & in plateis, quæram quem dilexit anima mea: quæſivi eum, nec inveni.

Verſio VULG. LAT.

CAP. III.

1 IN lectulo meo per noctes quæſivi
quem diligit anima mea: quæſivi
2 illum, & non inveni. Surgam, & circuibo
civitatem: per vicos & plateas
quæram quem diligit anima mea:
3 quæſivi illum, & non inveni. Invenerunt
me vigiles, qui cuſtodiunt civitatem:
Num quem diligit anima mea,
4 vidiſtis? Paululum cùm pertranſiſſem
eos, inveni quem diligit anima
mea: tenui eum; nec dimittam, donec
introducã illum in domum matris
meæ, & in cubiculum genitricis
5 meæ. Adjuro vos, filiæ Jeruſalem, per
capreas cervóſque camporum, ne
ſuſcitetis, neque evigilare faciatis
6 dilectam, donec ipſa velit. Quæ eſt
iſta, quæ aſcendit per deſertum, ſicut
virgula fumi ex aromatibus myrrhæ,
& thuris, & univerſi pulveris
7 pigmentarii? En lectulum Salomonis
ſexaginta fortes ambiunt
ex fortiſſimis Iſrael: Omnes te-
8 nentes gladios, & ad bella doctiſſimi:
uniuſcujuſque enſis ſuper
femur ſuum propter timores noctur-
9 nos. Ferculum fecit ſibi rex Salomon
10 de lignis Libani: Columnas ejus fecit
argenteas, reclinatorium aureum,
aſcenſum purpureum: media charitate
conſtravit propter filias Jeruſa-
11 lem. Egredimini & videte, filiæ Sion,
regem Salomonem in diademate,
quo coronavit illum mater ſua in
die deſponſationis illius, & in die
lætitiæ cordis ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

ΚΕΦ. ε΄.

1 † ΕΠὶ κοίτην μȣ ἐν νυξὶν, † ἐζήτησα ὃν ἠγάπησεν
ἡ ψυχή μȣ· † ἐζήτησα αὐτὸν, ϗ οὐχ εὗρον αὐτόν· †
2 ἐκάλεσα αὐτὸν, ϗ οὐχ ὑπήκουσέ μȣ. † Ἀναστήσομαι
(α) δὴ ϗ κυκλώσω ἐν τῇ πόλει, † ἐν ταῖς ἀγοραῖς, ϗ
ἐν ταῖς πλατείαις, † ϗ ζητήσω ὃν ἠγάπησεν ἡ ψυχή
3 μȣ· ἐζήτησα αὐτὸν, ϗ οὐχ εὗρον (β) αὐτόν. † Εὕροσάν
με οἱ τηροῦντες, οἱ κυκλοῦντες ἐν τῇ πόλει.
4 † Μὴ ὃν ἠγάπησεν ἡ ψυχή μȣ, ἴδετε; † Ὡς μικρὸν
ὅτε παρῆλθον ἀπ᾽ αὐτῶν, † ἕως οὗ εὗρον ὃν ἠγάπησεν
ἡ ψυχή μȣ. † ἐκράτησα αὐτὸν ϗ οὐκ (γ) ἀφῆκα αὐτὸν,
† ἕως οὗ εἰσήγαγον αὐτὸν εἰς οἶκον μητρός μȣ,
5 † ϗ (δ) εἰς ταμεῖον τῆς συλλαβούσης με. † Ὥρκισα ὑμᾶς
θυγατέρες Ἱερουσαλὴμ † ἐν ταῖς δυνάμεσι, ϗ ἐν ταῖς
ἰσχύεσι τοῦ ἀγροῦ· † ἐὰν ἐγείρητε ϗ ἐξεγείρητε τὴν ἀγά-
6 πην ἕως ἂν θελήσῃ. † Τίς αὕτη ἡ ἀναβαίνουσα ἀπὸ
τῆς ἐρήμου, † ὡς στελέχη καπνοῦ τεθυμιαμένη † σμύρναν
ϗ λίβανον ἀπὸ πάντων κονιορτῶν μυρεψοῦ;
7 † Ἰδοὺ ἡ κλίνη τοῦ Σαλωμὼν, † ἑξήκοντα δυνατοὶ
8 κύκλῳ αὐτῆς † ἀπὸ δυνατῶν Ἰσραήλ· † Πάντες κατέχοντες
ῥομφαίαν, † δεδιδαγμένοι πόλεμον· † ἀνὴρ
ῥομφαία αὐτοῦ ἐπὶ μηρὸν αὐτοῦ † ἀπὸ θάμβους
9 ἐν νυξί. † Φορεῖον ἐποίησεν ἑαυτῷ ὁ βασιλεὺς
10 Σαλωμὼν † ἀπὸ ξύλων τοῦ Λιβάνου. † Στύλους αὐτοῦ
ἐποίησεν ἀργύριον, † ϗ ἀνάκλιτον αὐτοῦ χρύσεον·
† ἐπίβασις αὐτοῦ πορφυρᾶ, † ἐντὸς αὐτοῦ λιθόστρωτον,
† ἀγάπην ἀπὸ θυγατέρων Ἱερουσαλήμ. †
11 (ε) Θυγατέρες Σιὼν ἐξέλθατε, ϗ ἴδετε † ἐν τῷ
βασιλεῖ Σαλωμὼν, † ἐν τῷ στεφάνῳ ᾧ ἐστεφάνωσεν
αὐτὸν ἡ μήτηρ αὐτοῦ, † ἐν ἡμέρᾳ νυμφεύσεως αὐτοῦ,
† ϗ ἐν ἡμέρᾳ εὐφροσύνης καρδίας αὐτοῦ.

MS. A. (α) δὴ, κυκλώσω (β) αὐτ, † ἐκάλεσα αὐτ, ϗ οὐχ ὑπήκουσέν μου. Εὗροσ (γ) ἀφήσω (δ) εἰς ταμιεῖον (ε) Ἐξέλθατε ϗ ἴδετε θυγατέρες Σιὼν ἐν τῷ βασιλεῖ

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

CAP. III.

IN cubili meo, in [a] noctibus quæſivi, 1
quem dilexit anima mea: quæſivi
eum, & non inveni eum: vocavi
eum, & non obaudivit me. Ex- 2
urgã nunc: & circuibo in civitate,
in (a) foris, & in plateis, & quæram,
quem dilexit anima mea:
quæſivi eũ, & non inveni (b) [b] eũ.
Invenerunt me (c) cuſtodes, qui 3
circumeunt in civitate. [c] Nunquid,
quem dilexit anima mea, vidiſtis?
(d) Quàm modicum fuit, 4
cùm tranſivi ab ipſis, quoadusque
inveni, quem dilexit anima mea.
Tenui eum, & non (e) dimiſi eum;
donec introduxi eum in domum
matris meæ, & in (f) cubiculum ejus
quæ concepit me. Adjuravi vos, 5
filiæ Hieruſalem, (g) in virtutibus
& in viribus agri: ſi ſuſcitaveritis,
& exuſcitaveritis [d] charitatem,
quoadusq; velit. Quæ eſt iſta quæ 6
aſcendit è deſerto, tanquã (h) truncus
fumi incenſus myrrham, & thus
ex omnibus (i) pulveribus unguentarii?
Ecce lectus Salomonis: ſexagin- 7
ta potentes in circuitu ejus ex potentibus
Iſrael, Omnes tenentes [e] 8
gladium, docti bellum: (k) vir, gladius
ejus ſuper femur ejus à (l) pavore
in noctibus. (m) [f] Lectum 9
fecit ſibi rex Salomon ex lignis Libani;
Columnas ejus fecit (n) argen- 10
tum, & acclinatorium ejus aureũ:
aſcenſus ejus purpura: (o) intimum
ejus [g] lapidibus conſtratum, charitate
à filiabus Hieruſalẽ. Filiæ Si- 11
on, egredimini, & intuemini in regẽ
Salomonem in corona, quâ coronavit
eum mater ejus in die ſponſalium
ejus, & in die jocunditatis cordis
ejus.

Verſio ÆTHIOPICA.

CAP. III. በዐራትየ : ወበለያልየ :: እኃሥሥ 1
ሥ : ዘአፍቀረት : ነፍስየ :: ኃሠሥክዎ : ወ
ኢረከብክዎ::ጸዋዕክዎ : ወኢተሰጥወኒ::=:
እትነሣእ : ወእዐውድ : ሀገረ::ውስተ: መሠ 2
ያጥት : ወመራኅብት::ወእኃሥሥ: ዘአፍቀ
ረት : ነፍስየ :: ኃሠሥክዎ : ወኢረከብክዎ:
ጸዋዕክዎ : ወኢተሰጥወኒ::=: ረከቡኒ: መ 3
ዐቅብተ: እለ: የዐውዱ : ሀገረ::ወእቤሎሙ:
ርኢክሙኑ: ዘአፍቀረት: ነፍስየ::=: ንስቲ 4
ተ: ኃሊፍየ: እምኔሆሙ::ውእተ: ጊዜ : ረከ
ብክዎ : ዘአፍቀረት : ነፍስየ:: እኃዝክዎ:ወ
ኢያኃድጎ::እስከ:ሶበ: አባእክዎ: ውስተ:ቤ
ተ : እምየ :: ወውስተ : ውሳጥያቲሃ : ለእን
ተ : ኃፀነተኒ::=: አምሐልኩክን : አዋልደ: 5
ኢየሩሳሌም::በኃይሉ:ወበጽንዑ: ለገደም::
አመ: ተንሥአ : ወአንሥአ : ሙታን::አፈቅ
ሮ: እስከ: አመ: ፈቀደ::=: መኑ:ይእቲ:ዘ 6
ቲ : እንተ : ተዐርግ : እምገዳም::
ሮ: ከመ : ሠርፀ : ጢስ : ዕጣንታ::ከርቤ:ወ
ስኂን:እምኵሉ: ጸበለ : አፈዉ::=: ናሁ: 7
ዓራቱ: ለሰሎሞን::ስሳ: ኃያላን: ዐውደ:እም
ኃያላነ: እስራኤል::=: ኵሎሙ : እኍዛነ: 8
አስይፍት : ወምሑራነ : ቀትል::ብእሲ: ብእ
ሲ: ሰይፉ : ዲበ: መንቀዕቱ::በድንጋፄ : ሌሊ
ት::=: መጸረ : ገብረ: ለርእሱ: ንጉሠ:ሰ 9
ሎሞን : እምዕፀወ : ሊባኖስ::=: አዕምደ 10
ሁ:ገብረ : ዘብሩር:: ወምስማኪ : ዘወርቅ::
መንበሩ: ዘሜላት::ውስጡ: ንጹፍ: በእብን:
ሰንፔር:: አፍቅሮ : እምአዋልደ : ኢየሩሳሌ
ም::=: ፃእ : ርእያ : አዋልደ : ኢየሩሳሌ 11
ም :: ለንጉሠ : ሰሎሞን :: በአክሊል : ዘአ
ስተቀጸለቶ : እሙ:: አመ : ዕለተ : መርዓሁ:
ወአመ : ፍሥሐ : ልቡ::=:

INTERP. ÆTHIOP. [a] noctibus meis [b] eum: vocavi eum, & non exaudivit me. [c] Et dixi illis, Nunquid [d] virum charitatis, [e] gladios, [f] Palatium fecit [g] lapide Sapphirino conſtratum,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 الفصل الثالث * في الليالي على مضجعي طلبت من احبته نفسي * طلبته فما
2 وجدته * دعوته فما اطاعني * فانهض واطوف في المدينة في الاسواق وفي الشوارع * واطلب
3 من احبته نفسي * طلبته فما وجدته * دعوته فما اطاعني * فوجدني الحراس الذين يطوفون
4 في المدينة * فقلت ارايتم من احبته نفسي * فما جاوزتهم الا قليلا حتى وجدت من احبه نفسي *
5 فامسكته وما خليته الى ان ادخلته الى منزل امي والى خزانة من حبلت بي * اقسم عليكن
6 يا بنات اورشليم باقتدارات الحقل وقواته * ان انبهتم او ايقظتم المحبة الى ان تشاء هي * من
هذه الصاعدة من القفر كانها مبخرة باغصان البخور ومر وكندر * من جميع ذرائر العطار *
7 8 ها سرير سليمان * وحوله ستون اقوياء من اقوياء اسرائيل * كلهم ماسكون سيفا معلمون
9 الحرب * الرجل منهم سيفه على فخذه من المهاول التي في الليل * سليمن الملك عمل له عمارية
10 من خشب لبنان * فعمل عمدها فضة * ومتكاها ذهب * ودرجها ارجوان * وباطنها مرصع
11 بالجواهر * وتلك محبة من بنات اورشليم * يا بنات صهيون اخرجن وابصرن الى سليمن
الملك * والى الاكليل الذي كلله به امه في يوم تعريسه وفي يوم سرور قلبه *

CAP. III.

IN noctibus ſuper cubili meo quæſivi 1
quem dilexit anima mea: quæſivi eum,
ſed non inveni: vocavi eum ſed non acquievit
mihi. Surgam igitur, & perlu- 2
ſtrabo urbem, vicos, & plateas, & quæram
quem diligit anima mea. Quæſivi
eum, nec inveni: vocavi eum, nec acquievit
mihi. Offendentibus autem me cuſto- 3
dibus qui perluſtrant urbem, dixi, Vidiſtiſne
quem diligit anima mea? Nec 4
non ſi paululũ iis prætermiſſis, inveni quem
diligit anima mea: eumque apprehenſum
nequaquam dimiſi, donec introduxiſſem in
domum matris meæ, in promptuarium ejus
quæ me concepit. Adjuro vos ô filiæ Je- 5
ruſalem per potentias agri ejuſque virtutes,
ne excitetis neve expergefaciatis dilectam
donec ipſa voluerit. Quæ eſt iſta 6
aſcendens è deſerto acſi eſſet ſuffumigata
ramus incenſi & myrrhæ ac thuris, omnibuſque
pulveribus aromatarii? Ecce le- 7
ctus Salomonis cui circumſtant ſexaginta
heroes ex heroibus Iſraelis. Omnes gla- 8
dium tenentes, bellum edocti, quorum
quilibet ſuum habet enſem ſuper femur
ſuum, ob terrores qui noctu contingunt.
Salomon rex fecit ſibi umbraculum ex 9
lignis Libani. Fecitque columnas ejus 10
argenteas, fulcrum autem ipſius aureum
erat, & operimenta ipſius purpurea, pars
autem interior gemmis inſerta: atque id
quidem ob amorem erga filias Jeruſalem.
O filiæ Sion, egredimini, & ſpectate Sa- 11
lomonem regem, & coronam quâ coronavit
eum mater ipſius in die deſponſationis
ejus, & in die lætitiæ cordis illius.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 4 ܐܫܟܚܘܢܝ ܢܛܘܪܐ ܕܡܚܕܪܝܢ ܒܡܕܝܢܬܐ. ܠܡܐ . ܠܡܢ ܕܪܚܡܐ ܢܦܫܝ. ܚܙܝܬܘܢܝܗܝ. *ܟܡ
ܩܠܝܠ ܕܥܒܪܬ ܡܢܗܘܢ، ܥܕܡܐ ܕܐܫܟܚܬܗ ܠܡܢ ܕܪܚܡܐ ܢܦܫܝ. ܐܚܕܬܗ ܘܠܐ ܫܒܩܬܗ.
5 ܥܕܡܐ ܕܐܥܠܬܗ ܠܒܝܬ ܐܡܝ. ܘܠܬܘܢܐ ܕܝܠܕܬܝ.* ܐܘܡܝܬܟܝܢ ܒܢܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ.
6 ܒܛܒܝܐ ܐܘ ܒܐܝܠܐ ܕܚܩܠܐ. ܐܢ ܬܥܝܪܢ ܘܐܢ ܬܥܝܪܢ ܠܚܘܒܐ. ܥܕܡܐ ܕܬܨܒܐ. * ܡܢ
ܗܝ ܕܣܠܩܐ ܡܢ ܡܕܒܪܐ. ܐܝܟ ܥܡܘܕܐ ܕܬܢܢܐ ܕܡܬܒܣܡܐ ܒܡܘܪܐ ܘܒܠܒܘܢܬܐ : ܡܢ ܟܠ
7 ܐܒܩܐ ܕܒܣܡܐ. * ܗܐ ܥܪܣܗ ܕܫܠܝܡܘܢ. ܫܬܝܢ ܓܢܒܪܝܢ ܚܕܪܝܢ ܠܗ : ܡܢ ܓܢܒܪܐ
8 ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܟܠܗܘܢ ܐܚܝܕܝ ܣܝܦܐ. ܘܡܠܦܝܢ ܩܪܒܐ. ܟܠ ܓܒܪ ܣܝܦܗ ܥܠ ܝܪܟܗ : ܡܢ
9 ܕܚܠܬܐ ܕܠܠܝܐ. * ܦܘܪܝܐ ܥܒܕ ܠܗ ܡܠܟܐ ܫܠܝܡܘܢ، ܡܢ ܩܝܣܐ ܕܠܒܢܢ.
10 * ܥܡܘܕܘܗܝ ܥܒܕ ܕܣܐܡܐ. ܘܫܘܝܗ ܕܕܗܒܐ. ܘܬܚܦܝܬܗ ܕܐܪܓܘܢܐ. ܓܘܗ ܪܨܝܦ
11 ܪܚܡܬܐ ܡܢ ܒܢܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܦܘܩܝ ܘܚܙܝܢ ܒܢܬܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܒܡܠܟܐ ܫܠܝܡܘܢ،
ܒܬܓܐ ܕܟܠܠܬܗ ܐܡܗ ܒܝܘܡܐ ܕܡܟܘܪܘܬܗ. ܒܝܘܡܐ ܕܚܕܘܬܐ ܕܠܒܗ.

Invenerunt me cuſtodes qui circumeunt in civitate:
Num quem dilexit anima mea, vidiſtis?
Quum aliquantulum proceſſiſſem ab eis 4
donec offendiſſem eum quem dilexit anima
mea, tenui illum, neque dimiſi eum, donec
introduxiſſem illum in domum matris meæ,
& in cubiculum genitricis meæ. Obteſtor 5
vos filiæ Jeruſalem, per capreolos aut per
hinnulos campi, ſi excitetis & ſi expergefacitis
dilectam quoad velit. Quæ eſt iſta quæ 6
aſcẽdit à deſerto inſtar ſuffitûs fumi myrrhâ
ac thure conditi, ex omni pulviſculo aromatum?
Ecce lectum Salomonis ſexaginta 7
circundant gigantes è gigantibus Iſraelis,
Omnes gladiatores, & bello exercitati, quiſque
gladio ſuo ſuper femur ſuum *accinctus* 8
ob timorem noctium. Solium fabrica- 9
vit ſibi rex Salomon de lignis Libani. Co- 10
lumnas ejus fecit ex argento, ſtratum ejus
ex auro, operimentum ipſius ex purpura;
intima pars ejus ſtrata amore erga filias
Jeruſalem. Egredimini, & conſiderate filiæ 11
Sion regem Salomonem in diademate quo
coronavit eum mater ejus in die ſponſaliorũ
ejus, in die lætitiæ cordis ejus.

שִׁיר הַשִּׁירִים׃ ד

CAP. IV. ד

tu ecce , mea amica pulchra tu Ecce
1 הִנָּךְ יָפָה רַעְיָתִי הִנָּךְ
, intra *columbæ* tui oculi ,pulchra
יָפָה עֵינַיִךְ יוֹנִים מִבַּעַד
caprarũ grex ut tuus capillus : *tuã comã*
לְצַמָּתֵךְ שַׂעְרֵךְ כְּעֵדֶר הָעִזִּים
.Ghilhad monte de *ſe depilârunt* quæ
שֶׁגָּלְשׁוּ מֵהַר גִּלְעָד׃
, tonſarum grex ut tui Dentes
2 שִׁנַּיִךְ כְּעֵדֶר הַקְּצוּבוֹת
ipſæ oẽs quæ; lavacro de aſcẽderũt quæ
שֶׁעָלוּ מִן־הָרַחְצָה שֶׁכֻּלָּם
.*eis in* non *orba &* , *geminantes*
מַתְאִימוֹת וְשַׁכֻּלָה אֵין בָּהֶם׃
, tua labia coccineum filum Sicut
3 כְּחוּט הַשָּׁנִי שִׂפְתוֹתַיִךְ
fragmen ſicut : decorũ tuũ eloquiũ &
וּמִדְבָּרֵיךְ נָאוֶה כְּפֶלַח
intra *tuum tempus* , punici mali
הָרִמּוֹן רַקָּתֵךְ מִבַּעַד
David turris Sicut .*tuam comam*
4 לְצַמָּתֵךְ׃ כְּמִגְדַּל דָּוִיד
: *acumina celſa in* ædificata ,tuũ colli
צַוָּארֵךְ בָּנוּי לְתַלְפִּיּוֹת
omnia ,ea *ſuper* ſuſpenſi clypei mille
אֶלֶף הַמָּגֵן תָּלוּי עָלָיו כֹּל
tũa ubera Duo .potentium *ſcuta*
5 שִׁלְטֵי הַגִּבּוֹרִים׃ שְׁנֵי שָׁדַיִךְ
; capreæ gemelli hinnuli duo ſicut
כִּשְׁנֵי עֳפָרִים תְּאוֹמֵי צְבִיָּה
Donec .*liliis in* *paſcentes*
6 הָרוֹעִים בַּשּׁוֹשַׁנִּים׃ עַד
: umbræ fugiant & ,dies ſpiret
שֶׁיָּפוּחַ הַיּוֹם וְנָסוּ הַצְּלָלִים
ad & ,myrrhæ montẽ ad mihi ibo
אֵלֶךְ לִי אֶל־הַר הַמּוֹר וְאֶל־
pulchra tu Tota .thuris collem
7 גִּבְעַת הַלְּבוֹנָה׃ כֻּלָּךְ יָפָה
Mecũ .te in non macula &,mea amica
8 רַעְיָתִי וּמוּם אֵין בָּךְ׃ אִתִּי
Lebanon de mecũ ,ſponſa Lebanon de
מִלְּבָנוֹן כַּלָּה אִתִּי מִלְּבָנוֹן
,Amanah *capite* de proſpicies : venies
תָּבוֹאִי תָּשׁוּרִי מֵרֹאשׁ אֲמָנָה
, Chermon & , Senir *capite* de
מֵרֹאשׁ שְׂנִיר וְחֶרְמוֹן
montibus de ,*leænarum* habitaculis de
מִמְּעֹנוֹת אֲרָיוֹת מֵהַרְרֵי
mea ſoror meũ cor Abſtuliſti.*pardorum*
9 נְמֵרִים׃ לִבַּבְתִּנִי אֲחֹתִי
uno *in* meũ cor abſtuliſti : ſponſa
כַלָּה לִבַּבְתִּנִי בְּאַחַד
torque una *in* : tuis oculis ex
מֵעֵינַיִךְ בְּאַחַד עֲנָק
ſunt pulchri Quàm .*tui cervicibus de*
10 מִצַּוְּרֹנָיִךְ׃ מַה־יָּפוּ
quàm : ſponſa mea ſoror tui amores
דֹדַיִךְ אֲחֹתִי כַלָּה מַה
odor &,*vino præ* tui amores ſunt boni
טֹּבוּ דֹדַיִךְ מִיַּיִן וְרֵיחַ
cunctis præ tuorum unguentorum
שְׁמָנַיִךְ מִכָּל־
ſtillabunt Favum ! aromatibus
11 בְּשָׂמִים׃ נֹפֶת תִּטֹּפְנָה
lac & mel : ſponſa tua labia
שִׂפְתוֹתַיִךְ כַּלָּה דְּבַשׁ וְחָלָב
odor & , tua lingua *ſub*
תַּחַת לְשׁוֹנֵךְ וְרֵיחַ
.Lebanõ odor ſicut tuorũ veſtimẽtorũ
שַׂלְמֹתַיִךְ כְּרֵיחַ לְבָנוֹן׃
: ſponſa mea ſoror *obſeratus* Hortus
12 גַּן נָעוּל אֲחֹתִי כַלָּה
.ſignatus fons , *obſeratus* fons
גַּל נָעוּל מַעְיָן חָתוּם׃

תרגום TARGUM.

ד

1 הנך ובההוא יומא קרב מלכא שלמה אלף עלון על מדבחא
ואתקבל ברעוא קורבניה קדם יי נפקת בת קלא מן שמיא וכן
אמרת כמה יאה אנת כנשתא דישראל וכמה יאין אנון רברבי
כנשתא וחכימיא יתבי סנהדרין דאנון מנהרין לעלמא לעמא
בית ישראל ודמין לגוזלין בני יונתא ואפילו שאר בני כנשתך
ועמא דארעא אנון צדיקין כבנוי דיעקב די לקטו אבנין ועבדו
2 גלשושיתא בטורא דגלעד׃ שניך כמה יאין כהניא וליואי
דמקרבין ית קורבנך ואכלין בסר קודשא ומעשרא ואפרשותא
ודכין מכל אונסא וגזלא היכמה דהוו דכין עדרי ענא דיעקב
בעדן דהוו גזיזין וסלקין מן נחלא דיובקא דלא הות בהון אניסותא
וגזלא וכולהון דמין דא לדא וילדן תיומין בכל עדן ועקרא
3 ומתכלא לא הות בהון׃ כחוט ושפתוי דכהנא רבא הוו בעין
בצלותא ביומא דכפורי קדם יי ומלוי הוו מהפכין חוביהון
דישראל דדמין לחוט זהריתא ומחורן יתהון כעמר נקי ומלכא
די הוא רישהון מלי פקודיא כרמונא בר מן אמרכליא וארכונין
דאנין קריבין למלכא די אנון צדיקיא ולית בהון מדעם ביש׃
4 כמגדל וריש מתבתא די הוא רב די ליך חסין בזכותא ורב
בעובדין טבין כדוד מלכא דישראל ועל מימר פומיה הוה
מתבני עלמא ובאולפן דאוריתא הוה עסק רחיצין עמא
בית ישראל ומנצחין בקרבא כאלו אחדין בידיהון כל מיני
5 זינין דגברין׃ שני תרין פריקך דעתידין למפרקך משיח בר
דוד ומשיח בר אפרים דמין למשה ואהרן בני יוכבד דאמתילו
לתרין אורזילין תיומי טביא והוו רען לעמא בית ישראל
בזכותהון ארבעין שנין במדברא במנא ובעופין פטימין ומי
6 בארא דמרים׃ עד וכל זמן דהוו בית ישראל אחדין
בידיהון אומנות אבהתהון צדיקיא הוו ערקין מזיקי וטלני
וצפרירי וטהרי מביניהון על דהוה שכינת יקרא דיי שריא
*בבית מוקדשא דהוה מתבני בטור מוריה וכל מזיקיא
7 ומחבליא הוו ערקין מריח קטורת בוסמין׃ כלך ובזמן דעמך
בית ישראל עבדין רעותיה דמרי עלמא הוא מקלס יתהון
בשמי מרומא וכן אמר כולך שפירתא כנשתא דישראל
8 ומחתא לית ביך׃ אתי אמר יי במימריה עמי תהי יתבא
כנשתא דישראל דדמיא לננפי דהיא צניעא ועמי תעלון
לבית מוקדשא ויהון מקרבין לך דורון ראשי עמא דיתבין
על נהר דאמנה ודירי דיתבין בריש טור תלגא ואומיא
די בחרמון ויהון מסקין לך מסין יתבי כרכין תקיפין די אנון
נברין כאריון תקרובתא מן קרוי טוריא דחסינין מן נמרין׃
9 לבבתני קביע על לוח לבי רחמתיך אחתי כנשתא דישראל
דמתילא לננפי די היא צניעא קביע על לוח לבי חבית
זוטר די בינך די הוא צדיקא כחד מן רבני סנהדרין וכחד
מן מלכיא דבית יהודה דהות יהיבא כלילא דמלכותא
10 על צורידה׃ מה כמה שפירן עלי חבתיך אחתי כנשתא
דישראל דמתילא לננפידה דהיא צניעא כמה טבן עלי
חבתיך יתיר משבעין אומיא ושום טב דצדיקיך נדיף מכל
11 בוסמנין׃ נפת ובעדן דמצלין כהניא בעזרתא דקודשא
ולחן ספותהון יערת דובשא ולישנך ננפי צניעא בממללותיך
שירין ותושבחן מתיקין כחלב ודבש וריח לבושי כהנין כריח
12 אולבנין׃ גן ונשיך דמתנסבן לגוברין צניען כננפי צניעא
וכננתא דעדן דלית רשו לגבר למעל לגוה אלהן צדיקיא
דנפשהון משתלחין לגוה על יד מלאכיא ובתולתיך טמירן
וגניזן באנפלין וחתימן בכן כמבועי דמין חיין דנפיק מתחות
אילנא ומתפרש לארבעת רישי נהרין ואלמלי דיהוא
חתים בשמא רבא וקדישא הוה נפק ומבע ושטף כל
עלמא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. IV.

ET in illo die obtulit rex Salomon mille holocauſta ſup altare, & ſuſcepta eſt cum beneplacito oblatio ejus coram Domino: irruit *filia vocis* de cœlis & ſic ait: Quàm pulch cœtus Iſrael, & quàm pulchri ſunt principes congregation & ſapientes habitantes in concilio: quia ipſi ſemper illu minant populum domus Iſrael, & ſimiles ſunt pullis fil columbæ, & etiam reliqui filii congregationis tuæ & popu lus terræ ſunt juſti ſicut filii Jaacob, qui collegerunt lapides & fecerunt acervum in monte Galaad. Quàm pulchri ſunt Sacerdotes & Levitæ qui offerunt oblationes tuas, & come dunt carnes ſanctificatas, & decimas & primitias: & mundi ſunt ab omni violentia & rapina, ſicut erant mu di greges ovium Jaacob, in tempore quo tondebantur, & aſcendebant de torrente Jaboc, in quibus non erat violen tia & rapina; & omnes ſimiles erant ad invicem, & pariebant gemellos in omni tempore: & ſterilis & orba non erat in eis. Et labia Sacerdotis magni deprecaba tur in oratione in die propitiationis coram Domin & verba ejus avertebant peccata Iſrael, quæ ſimilia era vittæ coccineæ, & dealbabant ea ſicut lanam mundam: & rex qui erat princeps eorum plenus erat præceptis ſicut ma logranatum, exceptis præpoſitis & principibus qui acce dunt ad regem, qui ſunt juſti, in quibus non eſt qu quam mali. Et princeps ſcholæ qui erat magiſter tuu fortis in juſtitia, & magiſter operum bonorum, ſicut Da rex Iſrael, & per verbum oris ejus ædificatum eſt ſeculum & in doctrina Legis in qua laborabat confidebant popu domus Iſrael, & vincebant in bello, quaſi eſſent tene manibus ſuis omnia genera armorum fortium. Duo ſalva tores tui qui te ſalvaturi ſunt, *Meſſias filius David* *Meſſias filius Ephraim,* ſimiles ſunt Moſi & Aaron fili Jocabed, qui comparati ſunt duobus hinnulis gemellis ca preæ, & paſcebant populum Iſrael per merita ſua quadra ginta annis in deſerto manna & avibus pinguibus & aq putei Miriam. Et omni tempore quo populus domus Iſr tenebat manibus ſuis artem patrum ſuorum juſtorum, fuga bant nocentes [*ſpiritus*,] tenebriones & matutini ac me diani [*dæmones*] de medio eorum, eò quòd majeſtas glo Domini reſidebat in domo ſanctuarii quæ ædificata eſt in mo te Moriah, & omnes dæmones & ſpiritus nocentes fug bant ab odore incenſi aromatum. Et in tempore quo po lus *tuus* domus Iſrael faciunt voluntatem dominatoris laudat eos in cœlis excelſis, & ſic dicit: Tota pulchra congregatio Iſrael, & macula non eſt in te. Dixit Dom in verbo ſuo: Mecum habitabis cœtus Iſrael, qui es ſponſæ honeſtæ, & mecum ingredieris in domum ctuarii, & offerent tibi munus principes populi qui tant ſuper fluvium Amana, & incolæ qui morantur in tice Montis nivis, & gentes quæ ſunt in Hermon, & of tibi tributa habitatores civitatum fortium, qui ſunt robu cut leones, & munus ab urbibus montium qui ſunt fortiores pardis. Infixus eſt in tabula cordis mei amor tuus, mea, cœtus Iſrael, quæ comparata es ſponſæ quæ eſt hone infixa eſt in tabula cordis mei dilectio minimi inter te eſt juſtus, ſicut unus de principibus concilii, & ſicut un regibus domus Juda ſuper cujus collum poſitum eſt dia regni. Quàm pulchræ ſunt ſuper me dilectiones tuæ mea, cœtus Iſrael, quæ comparata es ſponſæ pudicæ! bonæ ſunt ſuper me dilectiones tuæ magis quàm ſeptua ta nationum: & nomen bonum juſtorum tuorum fra tius eſt omnibus aromatibus. Et in tempore quo era cerdotes in atrio ſanctuarii, labia eorum ſtillant mellis: & lingua tua eſt inſtar ſponſæ honeſtæ in ſer tuo; cantica & laudes dulces ſicut lac & mel; & odor ſtimentorum Sacerdotum ſicut odor aromatum Li Et mulieres tuæ quæ nuptæ ſunt viris, honeſtæ ſunt ſponſæ honeſtæ; & ſicut hortus voluptatis ad quem vir habet poteſtatem introeundi, niſi juſti, quorum mittuntur illuc per manus angelorum: & virgines tu ſconditæ ſunt & reconditæ in penetralibus, & ſignatæ fons aquarum viventium qui oritur ſub arbore, & ditur in quatuor capita fluminum: & niſi eſſet nomine magno & ſancto, egrederetur & fluere daret univerſum mundum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

1 * ܐܨܚܐ * ܕ * ܗܐ ܫܦܝܪܬܝ ܩܪܝܒܬܝ. ܗܐ ܫܦܝܪܬܝ. ܥܝܢܝܟܝ ܕܝܘܢܐ ܠܒܪ ܡܢ
2 ܨܡܬܟܝ. ܣܥܪܟܝ ܐܝܟ ܓܙܪܐ ܕܥܙܐ ܕܣܠܩ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܓܠܥܕ. * ܫܢܝܟܝ ܐܝܟ ܓܙܪܐ
3 ܕܓܙܝܙܬܐ ܕܣܠܩܝ ܡܢ ܡܣܚܬܐ. ܕܟܠܗܝܢ ܡܬܐܡܢ: ܘܥܩܪܬܐ ܠܝܬ ܒܝܢܬܗܝܢ. * ܐܝܟ ܚܘܛܐ
4 ܕܙܚܘܪܐ ܣܦܘܬܟܝ. ܡܡܠܠܟܝ ܫܦܝܪܐ. ܐܝܟ ܦܠܚܐ ܕܪܘܡܢܐ. * ܨܘܪܟܝ ܡܛܠ ܫܠܝܘܬܟܝ.
ܐܝܟ ܡܓܕܠܐ ܕܕܘܝܕ. ܨܘܪܟܝ ܒܢܝܐ ܠܬܠܦܝܘܬܐ. ܐܠܦ ܡܓܢܐ ܬܠܝܢ ܒܗ. ܟܠ ܙܝܢܐ ܕܓܢܒܪܐ

CAP. IV.

ECce pulchra es propinqua mea, ec chra es. Oculi tui columbini, præte tium tuum, Pilus tuus ut grex capra aſcendit è monte Gelaad. Dentes tu tonſarum quæ aſcenderunt è lavacro niverſæ ſunt gemellos habentes, eſt inter eas effœta. Ut filum cocc bia tua: ſermo tuus decorus ut fragm punici. Cervix tua, propter ſilentii cut turris David. Collũ tuũ extruct ſtiis, è quo mille pendent clypei,

Verſio VULG. LAT.

CAP. IV.

1 Quàm pulchra es, amica mea, quàm pulchra es! Oculi tui columbarum, abſq; eo quod intrinſecus latet. Capilli tui ſicut greges caprarũ, quæ aſcenderunt de monte Galaad. 2 Dentes tui ſicut greges tonſarũ, quæ aſcenderunt de lavacro, omnes gemellis fœtibus, & ſterilis non eſt inter eas. 3 Sicut vitta coccinea, labia tua: & eloquiũ tuũ, dulce. Sicut fragmen mali punici, ita genæ tuæ, abſq; eo quod intrinſecus latet. 4 Sicut turris David collũ tuũ, quæ ædificata eſt cũ propugnaculis: mille clypei pendent ex ea, omnis armatura fortiũ. 5 Duo ubera tua, ſicut duo hinnuli capreæ gemelli, qui paſcuntur in liliis. 6 Donec aſpiret dies, et inclinentur umbræ, vadã ad montẽ myrrhæ, et ad collẽ thuris. 7 Tota pulchra es, amica mea, & macula non eſt in te. 8 Veni de Libano, ſponſa mea, veni de Libano, veni: coronaberis de capite Amana, de vertice Sanir & Hermon, de cubilibus leonũ, de montibus pardorum. 9 Vulneraſti cor meũ, ſoror mea ſponſa, vulneraſti cor meũ in uno oculorum tuorũ, & in uno crine colli tui. 10 Quã pulchræ ſunt mammæ tuæ, ſoror mea ſponſa! pulchriora ſunt ubera tua vino, & odor unguentorũ tuorũ ſup omnia aromata. 11 Favus diſtillans labia tua, ſponſa, mel et lac ſub lingua tua: & odor veſtimentorũ tuorũ ſicut odor thuris. 12 Hortus concluſus ſoror mea ſponſa, hortus concluſus, fons ſignatus.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

ΚΕΦ. Δʹ.

1 † Ἰδοὺ εἶ καλὴ ἡ πλησίον μου, ἰδοὺ εἶ καλή· † ὀφθαλμοί σου περιστεραί, † ἐκτὸς τῆς σιωπήσεώς σου· † τρίχωμά σου ὡς ἀγέλαι τῶν αἰγῶν, † αἳ ἀπεκαλύφθησαν ἀπὸ τοῦ Γαλαάδ. 2 † Ὀδόντες σου ὡς ἀγέλαι τῶν κεκαρμένων, † αἳ ἀνέβησαν ἀπὸ τοῦ λουτροῦ, † αἱ πᾶσαι διδυμεύουσαι, † καὶ ἀτεκνοῦσα οὐκ ἔστιν (α) ἐν αὐταῖς. 3 † Ὡς (β) σπαρτίον τὸ κόκκινον χείλη σου, † καὶ ἡ λαλιά σου ὡραία, † ὡς λέπυρον (γ) ῥοᾶς μῆλόν σου † ἐκτὸς τῆς σιωπήσεώς σου. 4 † Ὡς πύργος Δαυὶδ τράχηλός σου, † ὁ ᾠκοδομημένος εἰς (δ) θαλπιώθ. † χίλιοι θυρεοὶ κρέμανται ἐπ' αὐτόν, † πᾶσαι βολίδες τῶν δυνατῶν. 5 † Δύο μαστοί σου ὡς δύο νεβροὶ δίδυμοι δορκάδος † οἱ νεμόμενοι ἐν κρίνοις, 6 † (ε) Ἕως οὗ διαπνεύσῃ ἡμέρα καὶ κινηθῶσιν αἱ σκιαί. † πορεύσομαι ἐμαυτῷ πρὸς τὸ ὄρος τῆς σμύρνης † καὶ πρὸς τὸν βουνὸν τοῦ λιβάνου. 7 † Ὅλη καλὴ εἶ πλησίον μου, καὶ μῶμος οὐκ ἔστιν ἐν σοί. 8 † Δεῦρο ἀπὸ Λιβάνου νύμφη, δεῦρο ἀπὸ Λιβάνου· † ἐλεύσῃ καὶ διελεύσῃ (ʹ) ἀπὸ ἀρχῆς Πίστεως, † ἀπὸ κεφαλῆς Σανὶρ καὶ (ζ) Ἑρμών, † ἀπὸ μανδρῶν λεόντων, ἀπὸ ὀρέων παρδάλεων. 9 † Ἐκαρδίωσας ἡμᾶς ἀδελφή μου νύμφη, † ἐκαρδίωσας ἡμᾶς (η) ἑνὶ ἀπὸ ὀφθαλμῶν σου, † ἐν μιᾷ ἐνθέματι (¨) τραχήλων σου. 10 † Τί ἐκαλλιώθησαν μαστοί σου ἀδελφή μου, νύμφη; † τί ἐκαλλιώθησαν μαστοί σου ἀπὸ οἴνου, † καὶ ὀσμὴ ἱματίων σου ὑπὲρ πάντα (θ) ἀρώματα; 11 † Κηρίον ἀποστάζουσι χείλη σου νύμφη· † μέλι καὶ γάλα ὑπὸ τὴν γλῶσσάν σου· 12 † καὶ ὀσμὴ ἱματίων σου, ὡς ὀσμὴ λιβάνου. Κῆπος κεκλεισμένος ἀδελφή μου νύμφη, † κῆπος κεκλεισμένος, πηγὴ ἐσφραγισμένη.

MS.A. (α) ἐν αὐτοῖς. (β) σπαρτίον κόκκινον (γ) τῆς ῥοᾶς (δ) θηριώθ. (ε) Ἕως διαπνεύσῃ ἡ ἡμέρα (ʹ) ἀπαρχῆς (ζ) Ἀρμών, (η) ἐν * ἀπὸ (¨) τραχήλου (θ) τὰ ἀρώματα;

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſl. LAT.

CAP. IV.

1 Ecce es pulchra, [a] proxima mea, ecce es pulchra. Oculi tui [b] columbæ (a) extra taciturnitatem tuam. Capillamentum tuum, ſicut greges caprarum, quæ revelatæ ſunt de [c] Galaad. 2 Dentes tui, ſicut greges tonſarum, quæ aſcenderũt de lavacro: quæ omnes (b) geminantes, & infœcunda non eſt in eis. 3 Sicut (c) funiculus coccineus, labia tua, & eloquium tuum decorum. Sicut cortex mali punici, (d) gena tua extra taciturnitatem tuam. 4 Sicut turris David, collum tuum, quæ ædificata eſt in (e) Thalpioth: mille [d] clypei pendent ſuper eam, omnia jacula potentium. 5 Duo ubera tua, ſicut duo hinnuli gemelli capreæ, qui paſcuntur in liliis, 6 (f) Donec aſpiret dies, et amoveantur umbræ. Ibo mihi ad montem myrrhæ, & ad (g) collem thuris. 7 Tota [e] pulchra es, proxima mea, & macula non eſt in te. 8 Veni à Libano ſponſa, veni à Libano: venies, & tranſibis à principio (h) Fidei, à capite Sanir, & Ermon, à (i) latibulis leonum, à montibus pardorum: (k) 9 [f] Cor abſtuliſti nobis, ſoror mea ſponſa, cor abſtuliſti nobis (l) uno ex oculis tuis, in uno (m) ornamento cervicũ tuarũ. 10 Quã (n) pulchra facta ſũt ubera tua, ſoror mea ſponſa? quàm pulchra facta ſunt ubera tua (o) à vino? et odor [g] veſtimentorum tuorum ſuper omnia aromata. 11 (p) [h] Favum deſtillant labia tua, ſponſa: mel, & lac ſub lingua tua: & odor veſtimentorum tuorum, ſicut odor thuris. 12 Hortus concluſus ſoror mea ſponſa; hortus concluſus, fons ſignatus.

Verſio ÆTHIOPICA.

CAP.IV.ናሁ:ሠናይት:አንተ:ኀቢየ:ናሁ:ሠናይ 1
ት::አዕይንቲኪ:ዘርግብ:: ሠዕርትኪ: ከመ:
መርዔተ:አጣሊ:: እለ:ተከሥታ:እምአድባ
ረ:ገላአድ::=: ስነንኪ:ከመ:መራዕይ: እለ: 2
ተቀርጻ::እለ:ወፅአ:እምሐፀብ:: ኵሎን:እ
ለ:ይመንትዋ::ወአልቦ:እምኔሆን:መካን::=:
ከመ:ፈትለ:ቀይሕ:ከናፍርኪ:: ወነባብኪ:አ 3
ዳም:: ከመ:ቅርፍተ:ሮማን:መላትሕኪ:እን
በለ:አርምሞትኪ::=: ወከመ:ማኅፈድ:ዳዊ 4
ት:ክሳድኪ:: እለ:ተሐንጸ: ውስተ: ተልፊዮ
ስ::ዐሠርቱ: ምእት: ንዋየ:ሐቅል:ስቁል:ው
ስቴታ::ኵሉን:መዋጽፍተ:ኃያላት::=: ክል 5
ሌ: አጥባትኪ:ከመ:ክልኤ: ዕጕለ:መንታ:ዘ
ወይጠል:ዘይትረዓይ:ውስተ:ጽጌያት::=: እ 6
ስከ:ሶበ: ያስተናፍስ:ዕለት:ወይትሐወስ: ጽላ
ሎት:: አሐውር:ለሊየ:ኀበ:ደብረ:ከርቤ::
ውስተ:አውግረ:ስኂን::=:ኵለንታኪ:ሠናይ 7
ት: : አልብኪ : ነውረ : ወኢመንተሂ : ላዕሌ
ኪ::=: ንዒ:እምሊባኖስ:መርዓት:ንዒ:እም 8
ሊባኖስ:: ንዒ:ወትወጽኢ:እምቅድመ:ሃይማ
ኖት:: ወእምርእሰ:ሳኔር:ወአርሞንኤም::እ
ምግበበ: አናብስት: ወእምአድባረ: አናምር
ት::=: አረሳረሳክነ:እኅትየ:መርዓት::አ 9
ረሳረሳክነ:በምዕር :በአዕይንቲኪ:: በአሐ
ቲ:ንብረትኪ:ዘክሳድኪ::=: መአድም:አጥ 10
ባትኪ:እኅትየ:መርዓት:: ጥቀ:አደሙ:አጥባ
ትኪ:እምወይን:: ወማዓዛ : ዕፍረትኪ:እም
ኵሉ:አፈው::=: ጸቃውዕ:ይውሕዝ:እም 11
ከናፍርኪ::ሐሊብ: ወመዓር:እምታሕተ:ልሳ
ንኪ::ወጼና:አንፍኪ:ከመ:ጼና:ስኂን::=:ገነ 12
ት:እፁው:እኅትየ:መርዓት:: ገነት: እፁው:
ወዐዘቅት : ኅትምት::=:

INTERP. ÆTHIOP. [a] amica mea, [b] columbæ. Capillamentum tuum [c] montibus Galaad. [d] inſtrumenta bellica pendent [e] pulchra es, nec macula neque ejuſmodi quidquam eſt in te. [f] Emolliſti me ſoror mea ſponſa, emolliſti me modo ex oculis tuis, uno ſitu colli tui. [g] unguenti tui ſuper omnia aromata. [h] Favus ſtillat de labiis tuis, lac & mel ſub lingua tua: & odor narium tuarum, ſicut

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * الفصل الرابع * يا قريبتي ها انت جميلة ها انت حسناء * عيناك حمامتان حلوا من
2 سكوتك * شعرك كقطعان المعزى التي اعتلفت من جلعاد * واسنانك كالقطعان الجزوز الصاعدة
3 من الاستحمام التي هي كلها ذوات اتوام وليست فيها ثكلى * شفتاك كالخيط القرمزي وكلامك
4 لذيذ وتفاحة خدك كقشر الرمانة سوى حسن سكوتك * عنقك كبرج داود المبني في تلبيوس
5 المعلق عليه الف ترس وكافة اسنة المقتدرين * ثدياك كخشفي توم الغزالة اللذان يرعيان في
6 السوسن * الى ان يفرغ النهار وتسير الافياء سامضي معه الى جبل المر والى تل الكندر
7 8 * كلك جميلة يا قريبتي وليس فيك معاب * ايتها العروس تعالي من لبنان هلمي من لبنان
تجيئين فتعبرين من مبدإ الامانة * من راس سانير وحرمون * ومن صير السباع ومن جبل
9 10 النمور * ايتها العروس اختي الهبت قلوبنا من جمال عينيك * بقلادة عنقك الواحدة * ايتها
العروس اختي ما احسن جمال ثدييك * ثدياك احسن من الخمر وطيب نسيم ثيابك افضل من
11 جميع الطيوب * ايتها العروس شفتاك تقطران شهدا * تحت لسانك عسل ولبن * وطيب نسيم
12 ثيابك كنسيم لبنان * اختي العروس بستان مغلق * جنة مقفلة * عين مختومة *

CAP. IV.

1 O Cognata mea, ecce tu formoſa es, ecce tu pulchra es. Oculi tui ſunt duæ columbæ, præter ſilentium tuum. Pili tui ſicut greges caprarum quæ prodierunt è Galaad. 2 Et dentes tui ſicut greges tonſi aſcendentes à lotione, quorum omnes oves ſunt gemelli paræ, & nulla eſt inter eas orba. 3 Labia tua ſicut filum coccineum, & eloquium tuum jucundum: & mala genæ tuæ ſicut cortex malogranati, præter decus taciturnitatis tuæ. 4 Collum tuum ſimile eſt turri Davidis ædificatæ in Talbios, cui ſunt appenſi mille clypei, omnesq; robuſtorum cuſpides. 5 Ubera tua velut hinnuli gemelli cervæ, qui paſcunt inter lilia, 6 Donec conficiatur dies, & procedant umbræ. Ibo cum eo ad montem myrrhæ & ad collem thuris. 7 Tota formoſa es O cognata mea, & nullum eſt in te vitium. 8 O ſponſa, veni de Libano, propera; de Libano venies ac tranſibis per initium Fidei, per caput Sanir & Hermon, per luſtra leonum, & montem pardorum. 9 O ſponſa ſoror mea, inflammâſti corda noſtra pulchritudine oculorum tuorum, altero torque colli tui. 10 Heus ſponſa ſoror mea, quàm ſpecioſa eſt pulchritudo uberum tuorum! Ubera tua ſunt vino pulchriora, & ſuavitas odoris veſtimentorũ tuorum præſtantior cunctis aromatibus. 11 Heus ſponſa, labia tua ſtillant favum, ſub lingua tua mel & lac; & ſuavitas odoris veſtium tuarum velut fragrantia Libani. 12 Soror mea ſponſa hortus eſt concluſus, viridarium obſeratum, fons obſignatus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 6 ܕܓܢܒܪ̈ܐ. * ܬܪܝܢ ܬܕ̈ܝܟܝ. ܐܝܟ ܬܪܝܢ ܥܘ̈ܙܠܐ ܬܐܡ̈ܐ ܕܛܒܝܬܐ. ܕܪܥܝܢ ܒܫܘܫܢ̈ܐ. * ܥܕ ܢܦܘܓ
7 ܝܘܡܐ. ܘܢܬܡܟܟܘܢ ܛܠ̈ܠܐ. ܐܙܠ ܠܟܝ ܠܛܘܪ̈ܐ ܕܡܘܪܐ ܘܠܪ̈ܡܬܐ ܕܠܒܘܢܬܐ. * ܟܠܟܝ ܫܦܝܪܐ
8 ܩܪܝܒܬܝ. ܘܡܘܡܐ ܠܝܬ ܒܟܝ. * ܐܬܝ ܡܢ ܠܒܢܢ ܚܬܝ ܟܠܬܐ. ܐܬܝ ܡܢ ܠܒܢܢ. ܬܐܬܝܢ
ܘܬܥܒܪܝܢ ܡܢ ܪܫ ܐܡܢܐ. ܘܡܢ ܪܫ ܣܢܝܪ ܘܚܪܡܘܢ. ܡܢ ܡܥܪ̈ܐ ܕܐܪ̈ܝܘܬܐ. ܘܡܢ
ܛܘܪ̈ܐ ܕܢܡܪ̈ܐ. * ܠܒܒܬܝܢܝ ܚܬܝ ܟܠܬܐ. ܠܒܒܬܝܢܝ ܒܚܕܐ ܡܢ ܥܝ̈ܢܝܟܝ. ܒܚܕ
9 10 ܩܘܪܐ ܡܢ ܨܘܪܟܝ. * ܡܐ ܫܦܝܪܝܢ ܬܕ̈ܝܟܝ ܚܬܝ ܟܠܬܐ. ܡܐ ܫܦܝܪܝܢ ܬܕ̈ܝܟܝ ܡܢ ܚܡܪܐ.
11 ܘܪܝܚܐ ܕܒܣܡ̈ܝܟܝ ܡܢ ܟܠ ܒܣ̈ܡܝܢ. * ܢܘܒܐ ܢܛܦܢ ܣܦܘ̈ܬܟܝ. ܟܠܗ ܕܒܫܐ
12 ܘܚܠܒܐ ܬܚܝܬ ܠܫܢܟܝ. ܘܪܝܚܐ ܕܠܒܘܫܟܝ ܐܝܟ ܪܝܚܐ ܕܠܒܢܢ. * ܓܢܬܐ ܐܚܝܕܬܐ
ܚܬܝ ܟܠܬܐ ܓܢܬܐ ܐܚܝܕܬܐ. ܡܒܘܥܐ ܚܬܝܡܐ.

gigantum. 5 Geminæ tuæ mammæ ſunt veluti duo hinnuli gemelli capreorum, paſcẽtes in liliis. 6 Donec remittatur dies, & humilientur umbræ, vade *O dilecta*, ad montes myrrhæ & ad colles thuris. 7 Tota pulchra es propinqua mea, & macula non eſt in te. 8 Veni de Libano ſoror mea ſponſa, veni de Libano: venias, tranſeaſque ab origine Amnarum *(i. indigenarũ)* & à vertice Sonir et Hermon, à cubili leonũ, & à montibus tigrium. 9 Roboraſti me ſoror mea ſponſa, roboraſti me altero oculorum tuorum, unâ murenulâ colli tui. 10 O quàm pulchræ ſunt mammæ tuæ ſoror mea ſponſa, quàm pulchræ ſunt mammæ tuæ præ vino, & odor fragrantiarum tuarum præ cunctis fragrantiis! 11 Favum ſtillant labia tua, omne mel & lac ſub labiis tuis: & odor indumenti tui ſicut odor Libani. 12 Hortus clauſus eſt ſoror mea ſponſa, hortus clauſus, fons obſignatus.

שִׁיר הַשִּׁירִים : ה

,punicorũ malorũ paradiſus tuæ Propagines
13 שְׁלָחַיִךְ פַּרְדֵּס רִמּוֹנִים
cum cyperi : dulcearum fructu cum
עִם פְּרִי מְגָדִים כְּפָרִים עִם
, canna , crocus & ,Nardus .nardis
14 נְרָדִים׃ נֵרְדְּ וְכַרְכֹּם קָנֶה
: thuris lignis omnibus cum cinnamomũ &
וְקִנָּמוֹן עִם כָּל־עֲצֵי לְבוֹנָה
omnibus cum , aloes & , myrrha
מֹר וַאֲהָלוֹת עִם כָּל־
hortorum Fons .aromatum capitibus
15 רָאשֵׁי בְשָׂמִים׃ מַעְיַן גַּנִּים
fluentium & ; viventium aquarum puteus
בְּאֵר מַיִם חַיִּים וְנֹזְלִים
veni & ,Aquilo Excitare .Lebanon de
16 מִן־לְבָנוֹן׃ עוּרִי צָפוֹן וּבוֹאִי
fluant , meum hortum perfla , Auſter
תֵימָן הָפִיחִי גַנִּי יִזְּלוּ
meus dilectus veniat : illius aromata
בְשָׂמָיו יָבֹא דוֹדִי
fructum comedat & , ſuum hortum ad
לְגַנּוֹ וְיֹאכַל פְּרִי
.ſuarum dulcedinum
מְגָדָיו׃

CAP. V. ה

,ſponſa mea ſoror meũ hortum in Veni
1 בָּאתִי לְגַנִּי אֲחֹתִי כַלָּה
,meo aromate cum meã myrrham collegi
אָרִיתִי מוֹרִי עִם־בְּשָׂמִי
,meo melle cum meum favum comedi
אָכַלְתִּי יַעְרִי עִם־דִּבְשִׁי
comedite :meo lacte cum meũ vinũ bibi
שָׁתִיתִי יֵינִי עִם־חֲלָבִי אִכְלוּ
.dilecti vos inebriate & , bibite , ſocii
רֵעִים שְׁתוּ וְשִׁכְרוּ דּוֹדִים׃
vox : vigil meũ cor & ,dormiens Ego
2 אֲנִי יְשֵׁנָה וְלִבִּי עֵר קוֹל
mihi Aperi , pulſantis mei dilecti
דּוֹדִי דוֹפֵק פִּתְחִי־לִי
, mea columba , mea amica , mea ſoror
אֲחֹתִי רַעְיָתִי יוֹנָתִי
eſt plenum meum caput quia ,mea perfecta
תַמָּתִי שֶׁרֹּאשִׁי נִמְלָא־
.noctis guttis mei cincinni ; rore
טָל קְוֻצּוֹתַי רְסִיסֵי לָיְלָה׃
quomodo ,meã tunicam me Expoliavi
3 פָּשַׁטְתִּי אֶת־כֻּתָּנְתִּי אֵיכָכָה
,meos pedes lavi ? illam induam
אֶלְבָּשֶׁנָּה רָחַצְתִּי אֶת־רַגְלַי
meus Dilectus ? illos inquinabo quomodo
4 אֵיכָכָה אֲטַנְּפֵם׃ דּוֹדִי
mea viſcera & ,foramine e ſuã manũ miſit
שָׁלַח יָדוֹ מִן־הַחֹר וּמֵעַי
ego Surrexi .eo ſuper tumultuaverunt
5 הָמוּ עָלָיו׃ קַמְתִּי אֲנִי
meæ manus & : meo dilecto aperiendũ ad
לִפְתֹּחַ לְדוֹדִי וְיָדַי
myrrham mei digiti &,myrrhã ſtillaverunt
נָטְפוּ־מוֹר וְאֶצְבְּעֹתַי מוֹר
.feræ manubria ſuper tranſeuntem
עֹבֵר עַל כַּפּוֹת הַמַּנְעוּל׃
me⁹ dilectus &,meo dilecto ego Aperui
6 פָּתַחְתִּי אֲנִי לְדוֹדִי וְדוֹדִי
,eſt egreſſa mea anima :tranſierat ,circuierat
חָמַק עָבָר נַפְשִׁי יָצְאָה
non & , eum quæſivi , ipſum loquendo in
בְדַבְּרוֹ בִּקַּשְׁתִּיהוּ וְלֹא
non & , eum vocavi ; eum inveni
מְצָאתִיהוּ קְרָאתִיו וְלֹא
cuſtodes me Invenerunt .mihi reſpondit
7 עָנָנִי׃ מְצָאֻנִי הַשֹּׁמְרִים
,me percuſſerunt , civitate in circumeuntes
הַסֹּבְבִים בָּעִיר הִכּוּנִי
meũ pallium tulerunt ; me vulneraverũt
פְצָעוּנִי נָשְׂאוּ אֶת־רְדִידִי
.murorum cuſtodes me deſuper
מֵעָלַי שֹׁמְרֵי הַחֹמוֹת׃

תרגום TARGUM.

13 שלחיך ועולמיך מלין פקודיא הכרמונין ורחימין לנשיהון
וילדן בנין כן צדיקין כותהון וריחיהון מטול הכי כבוסמנין
14 טבין דגנתא דעדן כפורין עם רשקין : נרד רשק ומוריקא
וקנה בוסמא וקנמון עם כל קיסי לבונתא מירא דכיא
15 ואקסיל אלואין עם כל מיני בוסמנין : מעין ומיא
דשילוח מדברין בניח עם מותר מיין דנגדין מן לבנון
לאשקאה ית ארעא דישראל בגין דאנון עסיקין בפתגמי
אוריתא דמתילין לבירא דמיין חיין ובזכותא דנסוך מיא
דנסכין על מדבחא בבית מקדשא דמתבני בירושלם
16 דמתקרי לבנון : עורי ועל סטר צפונא הוה פתורא ועלוהי
תרי עסר לחמין דאפין ועל סטר דרומא הות בוצינא
לאנהרא ועל מדבחא הוו מקרבין כהניא קורבנא ומסקין
עלוי קטורת בוסמין כנשתא דישראל אמרת יעול אלהיא
רחימי לבית מקדשא וקבל ברעוא קורבנהון דעמיה :

ה

1 באתי אמר קודשא בריך הוא לעמיה בית ישראל עלית
לבית מקדשי דבנית לי אחותי כנשתא דישראל דמתילא
לנגפי צניעא ואשריתי שכינתי בינך קבלית ית קטורת בוסמיך
דעבדית לשמי שלחית אשתא מן שמיא ואכל ית עלון וית
נכסת קודשיא אתקבל ברעוה קדמי נסוך חמר סומק וחמר
חיור דנסיכו כהניא על מדבחי כען אתו כהניא רחמי פקודי
אכלו מה דמשתאר מן קורבניא ואתפנקו מן טובא דאתעתד
2 לכון : אני בתר כל פתגמיא האלין חבו עמא בית ישראל
ומסר יתהון ביד נבוכדנצר מלכא דבבל ואוביל יתהון בגלותא
והוו דמין בגלותא כגבר דמכא דלא יכיל לאתערא משנתיה
וקל רוחא דקודשא מזהרא להון על יד נביאיא והות עירא
יתהון מדמוך לבהון ענה רבון כל עלמא וכן אמר הדרי
בתיובתא פתחי פומיך ובועי ושבחי לי אחתי רחמתי כנשתא
דישראל דמתילא ליונתא בשלימות עובדיך ארום שער רישי
אתמלי מן דמעתיך כגבר דסער רישיה מצטבע מטלא
דשמיא וציצית נזרי אתמלי מן טפי עיניך כגבר דציצית
3 נזרוהי מלין מטפי מטרא דנחתין בליליא : פשטתי ענת
כנשתא דישראל כל קבל נביאיא הא כבר אעדיתי מני
ניר פקודוי ופלחית לטעות עממיא והכדין יהוין לי אפין
למהדר לותיה אתיב להון מרי עלמא על יד נביאיא ואף
אנא הא כבר סלקית שכנתי מבינך והכדין אהדור וארת
עבדת עובדין בישין ואנא קדשית ית רגלי מסובתך והכדין
4 אטנפנון בינך בעובדיך בישיא : דודי כד אתגלי מן קדם
יי דעמא בית ישראל לא צבן למחרט ולמתב לותיה
אושיט מחת גבורתיה על שבטא דראובן וגד ופלגות שבטא
דמנשה למעברא לירדנא ומסר יתהון ביד סנחריב מלכא
דאתור ואגלי יתהון בלחלח ובחבור נהרי גוזן וקרוי מדי ודבר
מידהון עגלא מתכא דשוי ירבעם חיבא בלשם דן דמתקריא
פמיאס ביומי פקח בר רמליהו וכד שמעת אנא רחמי אתגלגלו
5 עליהון : קמתי וכדו תקפת עלי מחת גבורתא דיי תהית
על עובדי וכהניא קריבו קרבנא ואסיקו קטורת בוסמין ולא
אתקבל ברעוא ארום מרי עלמא אחד דשי תיובתא
6 באנפי : פתחתי אמרת כנשתא דישראל צביתי למתבע
אולפן מן קדם יי ואיהו סלק שכנתיה מביני ונפשי תאבת
לקל מלוי תבעית שכינת יקריה ולא אשכחית צליתי קדמוהי
7 ואיהו טלל שמיא בענני ולא קבל צלותי : מצאוני ארביקו
לי כשדאי דנטרין אורחתא ומעיקין חזור חזור על קרתא
דירושלם מני קטלו בחרבא ומני אובילו בשביתא נטלו
תנא דמלכותא מעל צוריה דצדקיהו מלכא דיהודה ואובילו
יתיה ברבלא וסימו ית עינוהי עמא דבבל דמעיקין על קרתא
ונטרין ית שוריא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Juvenes autem tui pleni ſunt præceptis ſicut malogranata, & diligunt uxores ſuas, & generant filios juſtos ſimiles eis: & ideò odor eorum ſicut aromata optima horti voluptatis, & ſicut cypri cum nardo. Nardus, & crocus, & calamus aromaticus, & cinnamomum cum omnibus lignis thuris, myrrha munda & ligna aloes cum omnibus ſpeciebus laudabilium aromatum. Et aquæ Siloe quæ ducuntur in quiete cum reliquis aquis quæ defluunt de Libano ut irrigent terram Iſrael, eò quòd navant operam verbis Legis quæ comparatur puteo aquarum viventium; & in juſtitia libationis aquarum quæ libantur ſuper altare in domo ſanctuarii quæ ædificata eſt in Jeruſalem, quæ vocatur Libanus. Et in latere Aquilonari erat menſa, & ſuper eam duodecim panes facierum, & in latere Auſtrali erat candelabrum ad illuminandum, & ſuper altari offerebant Sacerdotes oblationes, & adolebant ſuper illo incenſum aromatum. Dixit populus Iſrael: Ingrediatur Deus dilectus meus in domum ſanctuarii, & ſuſcipiat voluntariè oblationes populi ſui.

CAP. V.

Dixit ille ſanctus & benedictus populo ſuo domus Iſrael: Ingreſſus ſum domum ſanctuarii mei quam ædificaſti mihi ſoror mea congregatio Iſrael, quæ comparata es ſponſæ honeſtæ, & habitare feci majeſtatem meam in medio tui; ſuſcepi incenſum aromatum tuorum quod feciſti nomini meo: miſi ignem de cœlis, qui conſumpſit holocauſta & victimas ſanctificatas; ſuſcepta eſt voluntariè coram me libatio vini rubicundi, & vini albi quod libaverunt Sacerdotes ſuper altare meum. Nunc autem venite Sacerdotes diligentes præcepta mea, comedite quod relictum eſt de oblationibus, & delectamini bonis quæ præparata ſunt vobis. Poſt omnia verba hæc peccaverunt populus domus Iſrael, & tradidit eos in manus Nabuchodonoſor regis Babylonis, & adduxit eos in captivitatem: & erant ſimiles in captivitate viro dormienti, qui non poteſt expergiſci de ſomno ſuo: & vox Spiritus ſancti admonebat eos per manus Prophetarum, & excitabat eos de ſomno cordis eorum. Reſpondit dominator totius ſeculi, & ſic ait: Convertere ad pœnitentiam, aperi os tuum & exulta & lauda me ſoror mea dilecta mea ſynagoga Iſrael, quæ comparata es columbæ, in perfectione operum tuorum: quoniam capilli capitis mei pleni ſunt lachrymis tuis, ſicut vir cujus capilli capitis tinguntur de rore cœli, & cincinnus cæſariei meæ repletus eſt guttis oculorum tuorum, ſicut vir cujus cincinnus cæſariei ſuæ plenus eſt guttis pluviæ quæ decidunt in nocte. Reſpondit cœtus Iſrael coram Prophetis: Ecce jam abſtuli à me jugum præceptorum ejus, & ſervivi idolis populorum: quomodo ergo erit mihi facies ut convertar ad eum? Reſpondit eis dominator ſeculi per manum Prophetarum: Ego quoque abſtuli majeſtatem meam de medio tui, & quomodo convertar? tu autem fecisti opera mala: ego ſanctificavi pedes meos ab immunditiis tuis, ſed quomodo coinquinabo eos inter te operib' tuis malis? Quando manifeſtum fuit coram Domino quòd populus domus Iſrael nolebat pœnitentiam agere, et converti ad eum, extendit plagam fortitudinis ſuæ contra tribum Ruben et Gad et dimidiam tribum Menaſſe quæ erant trans Jordanem, et tradidit eos in manus Sennacherib regis Aſſyriorum, qui tranſtulit eos in Lachlach et Chabor flumina Gozan, et civitates Medorum, et tulit è manu eorum vitulum conflatilem quem poſuerat Jeroboam impius in Leſem-dan, quæ vocata eſt Pameias, in diebus Pekah filii Romeliæ: et quando audivi ego, miſerationes meæ revolutæ ſunt ſuper eos. Cùm autem prævaluit contra me plaga fortitudinis Domini, obſtupui propter opera mea: et Sacerdotes obtulerunt oblationes, et adoleverunt incenſum aromatum, et non fuit acceptum cum beneplacito: quoniam dominator ſeculi clauſit portas pœnitentiæ in conſpectu meo. Dixit cœtus Iſrael: Volui quærere doctrinam à facie Domini; ipſe autem abſtulit majeſtatem ſuam de medio mei: et anima mea deſideravit vocem verborum ejus: quæſivi majeſtatem gloriæ ejus, et non inveni: oravi coram eo, et ipſe obumbravit cœlos nubibus et non ſuſcepit orationem meam. Comprehenderunt me Chaldæi qui cuſtodiebant vias, & obſidebant in circuitu contra civitatem Jeruſalem; quoſdam meorum occiderunt gladio, et quoſdam meorum duxerunt in captivitatem: abſtulerunt torquem regium Sedechiæ regis Juda de collo ejus, et duxerunt eum in Ribla, et excæcaverunt oculos ejus populi Babylonis qui obſidebant civitatem et cuſtodiebant muros.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 * ܫܘܠܚܝܟܝ ܦܪܕܝܣܐ ܕܪܘܡܢܐ. ܥܡ ܦܐܪܐ ܕܒܣܝܡܐ. ܟܘܦܪܐ ܥܡ ܢܪܕܝܢ. * ܘܟܘܪܟܡܐ.
14 ܩܢܝܐ ܘܩܘܢܡܘܢ. ܥܡ ܩܝܣܐ ܕܠܒܘܢܬܐ. ܡܘܪܐ ܘܥܠܘܝ. ܥܡ ܟܠ ܪܫ ܒܣܡܝܢܐ.
15 * ܡܒܘܥܐ ܕܓܢܬܐ. ܒܐܪܐ ܕܡܝܐ ܚܝܐ ܕܪܕܝܢ ܡܢ ܠܒܢܢ. * ܐܬܬܥܝܪܝ ܓܪܒܝܝܐ. ܘܬܐܝ ܬܝܡܢܐ.
16 ܢܫܒ ܒܓܢܬܝ. ܢܪܕܘܢ ܒܣܡܝܗ.

Miſſio tua, paradiſus malorum puni cum fructibus pomorum, cyprus cum n Et croco, fiſtula, & cinnamomum, cum thurifero, myrrha, & aloë, cum om præcipuis aromatibus. Fons hortorum, teus aquarum viventium effluentium e no. Expergiſcere Aquilo, & veni perfla hortum meum, ut fluant aroma

Verſio VULG. LAT.

13 Emiſſiones tuæ paradiſus malorũ punicorũ cũ pomorũ fructib⁹. Cypri cũ nardo, 14 Nard⁹ & croc⁹, fiſtula & cinnamomũ cũ univerſis lignis Libani, myrrha & aloë cum omnib⁹ primis unguentis. 15 Fons hortorum: puteus aquarũ viventiũ, quæ fluunt impetu de Libano. 16 Surge Aquilo, & veni Auſter, perfla hortũ meũ, & fluant aromata illius.

CAP. V.

1 Veniat dilect⁹ me⁹ in hortũ ſuũ, & comedat fructũ pomorũ ſuorũ. Veni in hortũ meũ, ſoror mea ſponſa, meſſui myrrhã meã cũ aromatib⁹ meis: comedi favũ cũ melle meo, bibi vinũ meũ cũ lacte meo: comedite amici, & bibite, & inebriamini chariſſimi. 2 Ego dormio, & cor meũ vigilat: vox dilecti mei pulſantis; Aperi mihi ſoror mea, amica mea, columba mea, immaculata mea: quia caput meum plenũ eſt rore, & cincinni mei guttis noctiũ. 3 Expoliavi me tunicâ meâ, quomodò induar illâ? lavi pedes meos, quomodò inquinabo illos? 4 Dilect⁹ me⁹ miſit manũ ſuã p foramẽ, & venter me⁹ intremuit ad tactũ ejus. 5 Surrexi, ut aperirẽ dilecto meo: man⁹ meæ ſtillaverũt myrrhã, & digiti mei pleni myrrhâ probatiſſimâ. 6 Peſſulum oſtii mei aperui dilecto meo: at ille declinaverat, atq; tranſierat. Anima mea liquefacta eſt, ut locut⁹ eſt: quæſivi, et non inveni illũ: vocavi, et non reſpondit mihi. 7 Invenerunt me cuſtodes qui circumeunt civitatẽ: percuſſerunt me, et vulneraverunt me: tulerunt palliũ meum mihi cuſtodes murorum.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

13 Ἀποςολαί σου (ι) παράδεισος ῥοῶν † μετὰ καρποῦ ἀκροδρύων, † κύπροι μετὰ νάρδων· 14 † Νάρδος καὶ κρόκος, † κάλαμος καὶ κιννάμωμον, † μετὰ πάντων ξύλων τοῦ Λιβάνου, † σμύρνα, ἀλώθ, μετὰ πάντων πρώτων μύρων, 15 † (κ) Πηγὴ κήπου, καὶ φρέαρ ὕδατος ζῶντος † καὶ ῥοιζοῦντος ἀπὸ τοῦ Λιβάνου. 16 † Ἐξεγέρθητι Βοῤῥᾶ, καὶ ἔρχου Νότε, † (λ) καὶ διάπνευσον κῆπόν μου, † καὶ ῥευσάτωσαν ἀρώματά μου.

MS. A. (ι) παράδεισος μετὰ καρποῦ (κ) Πηγὴ κήπων, φρέαρ (λ) διάπνευσον

ΚΕΦ. ε΄.

1 † Καταβήτω ἀδελφιδός μου εἰς (α) κῆπον αὐτοῦ, † καὶ φαγέτω καρπὸν ἀκροδρύων αὐτοῦ. † εἰσῆλθον εἰς κῆπόν μου ἀδελφή μου νύμφη· † ἐτρύγησα σμύρναν μου μετὰ ἀρωμάτων μου, † ἔφαγον ἄρτον μου μετὰ μέλιτός μου, † ἔπιον οἶνόν μου μετὰ γάλακτός μου. † φάγετε (β) πλήσιοι καὶ πίετε, καὶ μεθύσθητε ἀδελφοί. 2 † Ἐγὼ καθεύδω, καὶ ἡ καρδία μου ἀγρυπνεῖ. † φωνὴ ἀδελφιδοῦ μου κρούει ἐπὶ τὴν θύραν, † Ἄνοιξόν μοι (γ) ἡ πλησίον μου, ἀδελφή μου, † περιςερά μου, τελεία μου· † ὅτι ἡ κεφαλή μου ἐπλήσθη δρόσου, † καὶ οἱ βόςρυχοί μου ψεκάδων νυκτός. 3 † Ἐξεδυσάμην τὸν χιτῶνά μου, πῶς (·) ἐνδύσομαι αὐτόν; † ἐνιψάμην τοὺς πόδας μου, πῶς μολυνῶ αὐτούς; 4 † Ἀδελφιδός μου ἀπέςειλεν χεῖρα αὐτοῦ ἀπὸ τῆς ὀπῆς, † καὶ ἡ κοιλία μου ἐθροήθη ἐπ᾽ αὐτόν. 5 † Ἀνέςην ἐγὼ ἀνοῖξαι τῷ ἀδελφιδῷ μου, † (δ) χεῖρές μου ἔςαξαν σμύρναν, † δάκτυλοί μου σμύρναν πλήρη 6 † ἐπὶ χεῖρας τοῦ κλείθρου. † Ἤνοιξα ἐγὼ τῷ ἀδελφιδῷ μου· † ἀδελφιδός μου παρῆλθε· † (ε) ψυχή μου ἐξῆλθεν ἐν λόγῳ αὐτοῦ. † ἐζήτησα αὐτὸν καὶ οὐχ εὗρον αὐτόν, † ἐκάλεσα αὐτὸν καὶ οὐχ (ζ) ὑπήκουσέ μου. 7 † Εὕροσάν με οἱ φύλακες οἱ κυκλοῦντες ἐν τῇ πόλει, † ἐπάταξάν με, ἐτραυμάτισάν με· † ἦραν τὸ θέριςρόν μου ἀπ᾽ ἐμοῦ φύλακες τῶν τειχέων.

MS. A. (α) κῆπόν μου, (β) οἱ πλησίον (γ) ἀδελφή μου, ἡ πλησίον μου, περιςερά (·) ἐνδύσωμαι (δ) αἱ χεῖρές μου (ε) ἡ ψυχή μου (ζ) ἐπήκουσέν μου.

Verſio GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopicæ, Tranſ. LAT.

13 [i] Emiſſiones tuæ paradiſus malorum punicorũ cum fructu (q) nucum. Cyperi cum nardis, 14 Nardus, & crocus, calamus, et cinnamomũ cũ omnibus lignis Libani: myrrha, (r) aloth, cum omnibus primis unguentis. 15 Fons horti, & puteus aquæ viventis, (ſ) & cum ſtrepitu fluentis è Libano. 16 Exurge [k] Aquilo, et veni Auſter, & aſpira hortum meum, & (t) fluant aromata (u) mea.

CAP. V.

1 Deſcendat [a] fraternus meus in hortum meum: & comedat [b] fructum (a) nucũ ejus. Introivi in hortum meum, ſoror mea ſponſa: vindemiavi myrrham meam cum aromatibus meis: (b) manducavi panem meum cum melle meo: bibi vinum meum cum lacte meo. Comedite [c] proximi, & bibite, & inebriamini (c) fratres. 2 Ego dormio, & cor meũ vigilat. Vox fraterni mei pulſat ad oſtium; Aperi mihi [d] proxima mea, ſoror mea, columba mea, perfecta mea. Quia caput meum impletum eſt rore, & cincinni mei guttis (d) noctis. 3 Exui tunicam meã: quomodò induã illam? Lavi pedes meos; quomodò inquinabo illos? 4 [e] Fraternus meus emiſit manum ſuam de proſpectu: & venter meus conturbatus eſt ſuper (e) ipſum. 5 Exurrexi ego aperire fraterno meo: manus meæ ſtillaverunt myrrham; digiti mei myrrhã plenam ſuper (f) manus peſſuli. 6 Aperui ego [f] fraterno meo: fraternus meus (g) tranſiit: (h) anima mea egreſſa eſt in ſermone ejus. Quæſivi eum, & non inveni eum: vocavi eũ, & non obaudivit me. 7 Invenerunt me cuſtodes, qui [g] circumeunt in civitate; percuſſerunt me, (i) vulneraverunt me; tulerunt (k) [h] theriſtrum meum à me cuſtodes murorum.

Verſio ÆTHIOPICA.

13 ፍናወ፡ ዚአከ፡፡ ገነት፡መስለ፡ፍሬ፡ ዕቅማ 13
ሓ፡፡=፡ ቆዕ፡መስለ፡ናርደስ፡፡ናርደስ፡ወመጽ 14
ርይ፡፡ ቀጺሞት፡ወቀናንሞስ፡፡መስለ፡ኵሉ፡ዕ
ፀወ፡ሊባኖስ፡፡ ከርቤ፡ወዐልወ፡መስለ፡ኵሉ፡
መቅድመ፡ዕፍረታት፡፡=፡ ነቅዐ፡ገነት፡ዐዘቅ 15
ተ፡ማየ፡ ሕይወት፡፡ ዘይውሕዝ፡ እመሊባና
ስ፡፡=፡ተንሥአ፡ሰሜን፡ወነዐ፡ደቡብ፡፡ንፈሕ፡ 16
ገነትየ፡፡ ወይትኃዝ፡አፈዋተ፡ዚአየ፡፡=፡
CAP. V. ለይረድ፡ ወልድ፡ እኁየ፡ ውስተ፡ገ 1
ነቱ፡፡ ወይብላዕ፡ እመፍሬ ፡ አቅማሂሁ፡፡
ቦእኩ፡ ውስተ፡ገነትየ፡ እኅትየ፡ መርዐት፡፡
አረርኩ፡ከርቤ፡መስለ፡ አፈዋትየ፡፡ በላዕኩ፡
ኅብስትየ፡ መስለ፡ መዓርየ፡ ሰተይኩ፡ ወይን
የ፡ መስለ፡ ሐሊብየ፡፡ በልዑ፡ ካልአንየ፡ ወ
ጽግቡ፡፡ ወሰክሩ፡ ውሉደ፡ አኃዊየ፡፡=፡ አ 2
ነ፡ንውም፡ ወልብየ፡ ንቁህት፡፡ ቃለ፡ ወልድ፡
እኁየ፡ ይጐደጕድ፡ ኆኅተ፡፡ አርሕውኒ፡እኅ
ትየ፡ ካልእትየ፡፡ ርግብየ፡ ፍጽምት፡፡ እስ
መ፡ርስአየኒ፡መሉአ፡ጠል፡፡ ወድምድማየኒ፡
ነፍነፈ፡ሊሊት፡፡=፡ አውጻእኩ፡ልብስየ፡እፎ 3
ኑ፡እለብሶ፡፡ ተሐፀብኩ፡እግርየ፡እፎኑ፡እገ
መኖን፡፡=፡ወልድ፡እኁየ፡ፈነወ፡እዴሁ፡እንተ፡ 4
ስቍረት፡፡ከርሥየ፡ደንገፀት፡ 5 ተንሣእኩ፡
አርኃውክዎ፡ለወልድ፡እኁየ፡፡ እደዊየ፡ውሕ
ዛ፡ከርቤ፡፡ ወአጻብዕየ፡ ከርቤ፡ መሉአት፡፡
ውስተ፡እደ፡መንሥግ፡፡ 6 አነ፡አርኃውክዎ፡ለ
ወልድ፡እኁየ፡፡ወልድ፡እኁየ፡ኃለፈ፡፡ነፍስየ፡
ደንገፀት፡እመቃሉ፡፡ ኀሠሥክዎ፡ወኢረከብ
ክዎ፡፡ጸዋዕክዎ፡ወኢተሰጥወኒ፡፡=፡ ረከቡኒ፡ 7
መዐቅብ፡እለ፡የዐቅቡ፡ሀገረ፡፡ ዘበጡኒ፡ ወፈ
ቀሩኒ፡፡ነሥኡ፡ግልባብየ፡እመላዕለ፡ርእስየ፡
እለ፡የዓቅቡ፡ቅጽረ፡፡=፡

INTERP. ÆTHIOP. [i] Emiſſio tua hortus cum fructu pomorum, [k] Auſter & veni Aquilo, CAP. V. [a] nepos meus in hortum ejus: [b] fructum pomorum ejus. [c] ſodales mei, & ſaturamini, & inebriamini nepotes mei. [d] ſoror mea, amica mea, columba mea perfecta. [e] Nepos meus emiſit manum ſuam per foramen: venter meus conturbatus eſt. Exurrexi & aperui nepoti meo: [f] nepoti meo: nepos meus tranſiit: anima mea conturbata eſt [g] cuſtodiunt civitatem; [h] velum meum de capite meo qui cuſtodiunt arcem.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* رسايلك بستان ذو ثمر * اطراف الاغصان * ازهار * مع الوان البان والزعفران * قصب الذرير
ووسط الطيب * مع كافة شجر لبنان * مر وعود * مع جميع اوايل الطيوب * عين بستان * بير
الماء الحي الذي يجري من لبنان * انهض يا شمال وهلم يا قبلي * وهبا على بستاني واسكبا طيوبي *
* الفصل الخامس * لينزل ابن اخي الى بستانه وليأكل ثمر فاكهته *
* العروس اختي دخلت الى بستاني * اقتطفت المر الذي لي مع طيوبي * اكلت خبزي مع
عسلي * شربت خمري مع لبني * كلوا يا اقربائي واشربوا يا اخوتي واسكروا * انا نايم وقلبي
ساهر * صوت ابن اخي يقرع على الباب * افتحي لي يا اختي وقريبتي حمامتي كاملتي لان راسي
امتلأ ندي * وعناقيدي تنضح ليلا * قد خلعت ثوبي فكيف البسه * قد غسلت قدمي
فكيف اوسخهما * ابن اخي ارسل يده من الثقب * وجوفي اندهل عليه * قمت انا لافتح لابن
اخي * يداي قطرتا مرا * اصابعي مملوة مرا على يدي القفل * فتحت انا لابن اخي
ابن اخي جاز * نفسي خرجت بكلمته * طلبته فما وجدته * دعوته فما اطاعني * وجدني
الحراس الذين يطوفون المدينة * فضربوني وجرحوني * حراس الاسوار اخذوا علالي مني *

13 Emiſſiones tuæ hortus frugifer frondes ramorum, flores, 14 Cum generibus nardi & croci, calami cinnamomi, & coſtum aromaticum, cum univerſis arboribus Libani, myrrha, & aloë, cũ omnibus præcipuis aromatibus. 15 Fons horti, puteus aquæ cum murmure decurrit è Libano. 16 Surge O Aquilo, & veni O Auſter, ac perflate ſuper hortum meum, & effundite aromata mea;

CAP. V.

Ut deſcendat nepos meus in hortum ſuum, comedatque fructus pomorum ejus. 1 Sponſa ſoror mea ingreſſa eſt hortum meũ, decerpſit myrrham meã cũ aromatibus meis; comedit panẽ meũ cũ melle meo, bibit vinũ meũ cũ lacte meo. Comedite O propinqui mei, & bibite O fratres mei, ac inebriamini. 2 Ego dormio, & cor meum vigilat. Vox nepotis mei pulſantis oſtium. Aperi mihi O ſoror mea, & propinqua mea, columba mea, perfecta mea: quia caput meũ repletũ eſt rore, & botri mei ſtillant noctu. 3 Jam exui tunicã meam, quomodo induam illã? lavi pedes meos, quomodo coinquinabo eos? 4 Nepos meus immiſit manum ſuam per foramen, & venter meus obſtupuit ſuper eũ. 5 Surrexi ego ut aperirem nepoti meo; manus meæ ſtillaverunt myrrhã, digiti mei pleni ſunt myrrhã ſecus peſſulum. 6 Aperiente me nepoti meo, nepos meus pertranſierat: anima mea egreſſa eſt ad ſermonem ipſius. Quæſivi eum, nec inveni: vocavi illum, & non acquievit mihi. 7 Invenerunt me cuſtodes qui obeunt urbem, percuſſerunt ac vulneraverunt me: cuſtodes murorum abſtulerunt à me pallium meum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ * ܢܐܬܐ ܕܕܝ ܠܓܢܬܗ . ܘܢܐܟܘܠ ܡܢ ܦܐܪ̈ܐ ܕܐܒ̈ܘܗܝ * ܐܬܝܬ
ܠܓܢܬܝ ܚܬܝ . ܟܠܬܐ ܐܬܝܬ ܐܢܐ ܠܓܢܬܝ . ܠܩܛܬ ܡܘܪܝ
ܥܡ ܒܣ̈ܡܝ . ܐܟܠܬ ܒܣܝܡܘܬܝ ܥܡ ܕܒܫܝ . ܫܬܝܬ ܚܡܪܝ ܥܡ ܚܠܒܝ . ܐܟܘ
ܠܘ ܪ̈ܚܡܝ . ܘܐܫܬܘ ܘܪܘܘ ܕܕܝ * ܐܢܐ ܕܡܟܐ ܘܠܒܝ ܥܝܪ . ܩܠܗ ܕܕܕܝ ܢܩܫ . ܦܬܚܝ ܠܝ ܚܬܝ
ܩܪܝܒܬܝ . ܝܘܢܬܝ ܡܫܡܠܝܬܐ . ܕܗܐ ܪܫܝ ܐܬܡܠܝ ܛܠܐ . ܘܩܘ̈ܨܬܝ ܡܢ ܢܛ̈ܦܝ ܠܠܝܐ . * ܫܠܚܬ
ܟܘܬܝܢܝ . ܐܝܟܢܐ ܐܠܒܫܝܗ . ܐܫܝܓܬ ܪ̈ܓܠܝ . ܐܝܟܢܐ ܐܛܢܦ ܐܢܘܢ . * ܕܕܝ ܐܘܫܛ ܐܝܕܗ
ܡܢ ܟܘܬܐ . ܘܡܥ̈ܝ ܙܥܘ ܥܠܘܗܝ . * ܩܡܬ ܐܢܐ ܕܐܦܬܚ ܠܕܕܝ . ܘܐܝܕܝ ܢܛܦܬ
ܡܘܪܐ . ܘܨܒ̈ܥܬܝ ܡܘܪܐ ܕܢܛܦ ܥܠ ܐܝܕܐ ܕܩܠܕܐ . * ܦܬܚܬ ܐܢܐ ܠܕܕܝ . ܘܕܕܝ ܐܬܓܚܢ ܥܒܪ . ܢܦ
[illegible]
[illegible]

CAP. V.

1 Veniat patru⁹ me⁹ ad hortũ ſuũ, & comedat è fructib⁹ pomorum ſuorũ. Veni *ego* ad hortũ meum ſoror mea: ſponſa, veni *ego* ad hortũ meũ, myrrham meã legi cum aromatibus meis, comedi ſuavitatẽ meã cum melle meo, bibi vinũ meũ cum lacte meo: edite ſodales mei, bibite, & inebriamini patrui mei. 2 Ego dormio, & cor meũ vigilat. Vox eſt patrui mei pulſantis. Aperi mihi ſoror mea, propinqua mea, colũba mea perfecta: ſiquidẽ caput meũ impletum eſt rore, & cincinni mei ſtillis nocturnis. 3 Exui tunicã meã, quomodo induerẽ eã? lavi pedes meos, quomodo inquinarẽ eos? 4 Patru⁹ me⁹ porrexit manũ ſuã è foramine, & viſcera mea eruperunt in eũ. 5 Surrexi ego ut aperirẽ patruo meo, et manus mea ſtillavit myrrhã, et digiti mei myrrham ſtillârunt ſec⁹ ſerã. 6 Aperui ego patruo meo, at patru⁹ me⁹ ſe ſubducens præterierat: anima mea egreſſa eſt ipſo loquente. Quæſivi eũ, & non inveni eũ: compellavi eũ, & nõ reſpõdit mihi. 7 Offenderũt me cuſtodes qui circumeũt in urbe, percuſſerũt ac vulnerârũt me; abſtulerũt à me pallium meum cuſtodes mœnium.

שיר השירים : ו

; Jerusalaim filiæ vos *Adjuravi*
8 השבעתי אתכם בנות ירושלם
quid ,meum dilectum inveneritis si
אם־תמצאו את־דודי מה־
ego amore *ægra* quia ? ei *indicabitis*
תגידו לו שחולת אהבה אני :
pulcherrima ,*dilecto* præ tuus dilectus *Quid*
9 מה־דודך מדוד היפה
,*dilecto præ* tuus dilectus quid ?*mulieribus in*
בנשים מה־דודך מדוד
meus Dilectus ? nos adjurâsti sic quia
10 שככה השבעתנו : דודי
vexillatus , rubicundus & , candidus
צח ואדום דגול
auri massa ejus Caput .millibus decem *à*
11 מרבבה : ראשו כתם
nigri crispi ejus cincinni :*obrizi*
פז קוצותיו תלתלים שחרות
columbæ sicut ejus Oculi .corvus veluti
12 כעורב : עיניו כיונים
se lavantes , aquarum *torrentes super*
על־אפיקי מים רחצות
.plenitudinem *super* manentes , lacte in
בחלב ישבות על־מלאת :
, aromatis fulci linea sicut ejus Maxillæ
13 לחיו כערוגת הבשם
ejus labia : aromatum flores
מגדלות מרקחים שפתותיו
.transeuntē myrrham distillantia lilia
שושנים נטפות מור עבר :
pleni , *auri* circuli ejus Manus
14 ידיו גלילי זהב ממלאים
, *eboris nitor* ,ejus *viscera* : *tharsis in*
בתרשיש מעיו עשת שן
columnæ ejus *Coxæ* .sapphiris *obtectus*
15 מעלפת ספירים : שוקיו עמודי
: obrizi auri bases super fundatæ *marmoris*
שש מיסדים על־אדני־פז
electus ,Lebanon ut ejus aspectus
מראהו כלבנון בחור
,dulcedines ejus Palatum .*larices* ut
16 כארזים : חכו ממתקים
,meus dilectus iste : desideria ipse totus &
וכלו מחמדים זה דודי
.Jerusalaim filiæ meus *socius* iste &
וזה רעי בנות ירושלם :
pulcherrima tuus dilectus abiit Quò
17 אנה הלך דודך היפה
,tuus dilectus *respexit* quò ? *mulieribus in*
בנשים אנה פנה דודך
? tecum eum quæremus &
ונבקשנו עמך :

CAP. VI. ו

,suum hortum ad descendit meus Dilectus
1 דודי ירד לגנו
pascendū ad :aromatis fulcorum lineas ad
לערוגת הבשם לרעות
.lilia colligendum ad & , hortis in
בגנים וללקט שושנים :
,mihi meus dilectus & ,meo dilecto Ego
2 אני לדודי ודודי לי
tu Pulchra .*liliis in pascens*
3 הרעה בשושנים : יפה את
decora , Tirsah sicut mea amica
רעיתי כתרצה נאוה
.*vexillatæ* ut terribilis : Jerusalaim sicut
כירושלם אימה כנדגלות :

תרגום TARGUM.

8 השבעתי אמרת כנשתא דישראל אשבעית לכון נביאיא בגזירת
מימרא דיי מאים אתגליית עליכון רחמתכון חויאו קדמוהי
דמרעיתא מן חבת רחמוהי אנא : מה ענו נביאיא ואמרו 9
לבית ישראל אידין אלהא אנת בעיא למפלח כנשתא דישראל
שפירתא מכל עממיא לאידין אנת צביא למדחל דהכדין קיימת
עלנא : דודי בכן שריאת כנשתא דישראל למשתעי בשבחא 10
למרי עלמא וכן אמרת לההוא אלהא רעותי למפלח דעטיף
ביממא באצטלא חיור כתלגא וזיו יקרא דיי דאנפוהי זהרין
כנורא מסגיאות חוכמתא וסברא דהוא מחדת שמועין חדתין
בכל יומא ועתיד לפרסמנון לעמיה ביומא רבא וטקסיה על
רבוא רבון מלאכין דמשמשין קדמוי : ראשו אוריתיה די היא 11
רגיגה מדהב טב ופירוש מליא דבהון דגורין דגורין טעמין
ופקודין למן דנטרין להון חורין כתלגא ודלא נטרין יתהון
אוכמין כאנפי עורבא : עיניו עינוהי מסתכלין תדירא על 12
ירושלם לאוטבא לה ולברכא לה מרישא דשתא ועד סופא
דשתא כיונין דקימין ומסתכלין על מפקנות מיא בגין זכותא
דיתבי סנהדרין דעסקין באוריתא ומנהרין ית דינא למהוי
שעיע כחלב ויתבין בבית מדרשא ומתינין בדינא עד דגמרין
לזכאה ולחיבא : לחיו תרין לוחי אבנין דיהב לעמיה כתיבן 13
בעשר שטין דמיין לשטי גנת בוסמא מרבין דקדוקין וטעמין
היכמה דגנוניתא מרבי בוסמין וספותי חכימוי דעסקין
באוריתא נלחין טעמין בכל סטר ומאמר פומהון כמירא בחירא :
ידיו תרי עסר שבטין דיעקב עבדיה גלילן על ציץ כלילא 14
דדהבא דקודשא גליפן על תרי עסר מרגליתא עם תלתא
אבהן דעלמא אברהם יצחק ויעקב ראובן גליף על אחמר
שמעון גליף על עקיק לוי גליף על ברקן ועפרן יהודה גליף
על כחלי יששכר גליף על אזמורד זבולן גליף על גיהר דן
גליף על ברלא נפתלי גליף על אספור גד גליף על טבאג אשר
גליף על פרוזג יוסף גליף על מריבג בנימן גליף על אפנטור
דמיין לתרי עסר מזליא נהירין כעששית צחיחין בעובדיהון כשן
דפיל ובהיקין כשבזיזין : שוקיו וצדיקיא אנון עמודי עלמא 15
בסיסן על סמכין דדהב טב אנון פתגמיא דאוריתא דעסקין
בהון ומוכחין עמא בית ישראל למעבד רעותיה ואיהו מתמלי
רחמין עליהון כסבא ומחור חוביהון דבית ישראל כתלג
ומתעתד למעבד נצחן וקרבא בעממיא דעברין על מימריה
כעולם גבר וחסין כגלמשין : חכו מלי מורינוי מתיקן 16
כדובשא וכל פקודוי רגיגן על חכימוי מדהב וכסף דין הוא
תושבחתיה דאלהא רחימי ודין הוא תקוף חוסניה דמרי חביבי
נביאיא ומתנבאין בירושלם : אנה אתיבו נביאיא כד שמעו וכן 17
אמרו תושבחתא דיי מפום כנשתא דישראל על אידין חובא
אסתלק מבינך שכנתא דיי את דשפירא עובדך מכל אומיא
ולאן אתר אתפני רחימך באסתלקותיה ממוקדשך אמרת
כנשתא דישראל על חובין ומרודין ואשתדור די השתכחו בי
אמרין נביאיא כען הדרי בתיובתא ונקום אנת ואנן ונצלי
קדמוהי ונבעי רחמין עמך :

ו

1 דודי ומרי עלמא קבל צלותהון ברעוא ונחת לבבל לסנהדרין
דחכימיא ויהב רוחא לעמיה ואסקנון מגלותהון על יד כורש
ועזרא ונחמיה וזרובבל בר שאלתיאל וסבי יהודאי ובנו ית בית
מוקדשא ומניאו כהניא על קורבניא וליואי על מטרת מימרא
דקודשא ושלח אשתא מן שמיא וקבל ברעוא ית קורבנא וית קטורת בוסמין וכגבר
דמפרנס ית בריה רחימא בתפנוקין כן פנקנון וכגבר דמנבב ורדין מן מישריא כן כנשנון
מן בבל : אני ובההיא יומא אנא פלחנא למרי עלמא רחימי ורחימי אשרי שכינת 2
קודשיא ביני וזן יתי בתפנוקין : יפה אמר יי במימריה כמה יאה את חביבתי בזמן דצביתיך 3
למעבד רעותי שפיר בית מוקדשא דבנית לי כמקדש קדמי די בנא לי שלמה
מלכא בירושלם ואימתך על כל עממיא ביומא דהלכו ארבע טקסיך במדברא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Dixit cœtus Israel: Adjuro vos Prophetæ per decre verbi Domini, quòd si revelatus fuerit vobis miseric vester, annuncietis coram eo, quòd amore miserationis e ego langueo. Responderunt Prophetæ & dixerunt dom Israel: Qualis est Deus quem tu vis colere cœtus Isr qui pulcher es super omnes populos? qualis est Deus q tu vis timere; quia sic adjurâsti nos? Tunc cœpit cœt Israel narrare laudes dominatoris seculi, et sic ait: Illi D volo servire qui amictus est per diem stola alba sicut nix splendor gloriæ vultus Domini lucet sicut ignis, prop multitudinem sapientiæ et opinionis, quia rumores no ipse innovat quotidie, et futurum est ut manifestet eos p pulo suo in die magno, et vexillum ejus erit supra millia m lia angelorum qui ministrant coram eo. Lex ejus qua siderabilior est auro obrizo, et interpretatio verborum in ea sunt coacervata, et eloquia et præcepta, custodien ea sunt alba sicut nix: his autem qui non custodiunt ea, nigra sicut alæ corvi. Oculi ejus contemplantur semper rusalem, ut benefaciat ei et benedicat ei à principio usque ad finem ejus; sicut columbæ quæ stant et aspic ad exitum aquarum; propter meritum eorum qui hab in concilio qui laborant in Lege, et illuminant judicium sit lene sicut lac, et habitant in domo doctrinæ et discep in judicio donec consumment ut justificent et ut condem Duæ tabulæ lapideæ quas dedit populo suo, scriptæ decem lineis similibus lineis horti aromatum quæ germ acutissimos sensus & suaves, sicut hortus germinat aro ta: & labia sapientum qui laborant in Lege, fluunt se tiis ex omni parte; & eloquium oris eorum sicut my electa. Et duodecim tribus Jacob servi ejus disposita per circuitum in lamina coronæ aureæ sanctæ, sculptæ in decim margaritis cum tribus patribus mundi, Abra Isaac & Jaacob. Ruben sculptus erat in lapide Sardio: Si on sculptus erat in lapide Topazio: Levi sculptus er Sapphiro: Juda sculptus erat in Carbunculo: Is sculptus erat in Smaragdo: Zabulon sculptus erat in Dan sculptus erat in Beryllo: Neptalim sculptus e Agate; Gad sculptus erat in Amethysto: Asser sculp in Chrysolitho: Joseph sculptus erat in Onychino, jamin sculptus erat in Ligurio: qui similes erant d cim signis cælestibus, lucidi sicut lampas, & politi in o bus suis sicut dentes elephantis, & splendentes sicut mæ. Justi autem ipsi sunt columnæ seculi; & bases sustentacula auri optimi, sunt verba Legis in quibus rant, & corripiunt populum domus Israel ut facia luntatem ejus: & ipse impletur super eos misericor sicut senis, & dealbat peccata domus Israel sicut n & paratus est ut faciat victorias *& bellū* contra popu transgrediuntur verbum ejus, sicut juvenis fortis qu stus est sicut cedri. Verba gutturis ejus dulcia sun mel, & omnia præcepta ejus desiderabilia sapientibus super aurum & argentum. Hæc est laus Dei dilecti & hæc est fortitudo virtutis Domini dilecti mei, ô Pr tæ *& prophetantes* in Jerusalem. Responderunt Pro cùm audirent laudes Domini ex ore cœtus Israel, & d xerunt, Propter quod peccatum sublata est de medio jestas Domini, ô tu quæ pulchra es in operibus tuis omnes nationes? & ad quem locum declinavit dilectu quando elevatus est de sanctuario tuo? Dixit cœtus Is Propter peccata & rebelliones & proditionem quæ in sunt in me. Dixerúntque Prophetæ: Nunc conver pœnitentiam, & surgamus tu & nos, & oremus cora & quæramus misericordiam tecum.

CAP. VI.

Dominator autem seculi suscepit voluntariè ora eorum, & descendit in Babylonem ad concilium sap & dedit populo suo requiem; & eduxit eos de cap ipsorum per manum Cyri & Esdræ & Nehemiæ & Zo bel filii Sealthiel, & seniorum Judæorum; & æd runt domum sanctuarii, et constituerunt sacerdotes oblationes, et Levitas super custodiam verbi sa et misit ignem de cœlis, et suscepit voluntariè obla et incensum aromatum: et sicut vir qui nutrit fili dilectum in deliciis, ita delicatè nutrivit eos; et sic collegit rosas de convallibus, ita congregavit eos a lonia. Et in illo die ego servivi domino seculi di et dilectus meus habitare fecit majestatem sanctam mei, et nutrivit me deliciis. Dixit Dominus in ve Quàm pulchra es tu dilecta mea in tempore quo v voluntatem meam! pulchra est domus sanctuarii, q ficâsti mihi similem priori [*domui*] sanctuari ædificavit mihi Salomon rex Jerusalem; et terror super omnes populos in die quo ambulaverunt qua xilla tua per desertum.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

8 [illegible]
9 [illegible]
10 [illegible]
[illegible]
12 [illegible]

Adjuro vos filiæ Jerusalem, si repe truū meū, narrate ei esse me amore Quis est patruꝰ tuꝰ è patruis, pul ter mulieres? quis est patruus tu quòd ita nos adjurâsti? Patru est ac rubicundꝰ, & electꝰ inter simule est lapidi aureo, cincinn si, nigri ut corvus. Oculi ejꝰ barū super rivis aquæ, lacte per convenientiā sitarum.

Verſio VULG. LAT.

8 Adjuro vos, filiæ Jeruſalē, ſi invene-
ritis dilectū meū, ut nuntietis ei quia
9 amore langueo. Qualis eſt dilectꝰ tuꝰ
ex dilecto, ô pulcherrima mulierū?
qualis eſt dilectꝰ tuꝰ ex dilecto, quia
10 ſic adjuraſti nos? Dilectꝰ meꝰ candi-
dus & rubicundꝰ, electꝰ ex millibus.
11 Caput ejꝰ aurū optimū: Comæ ejꝰ
ſicut elatæ palmarū, nigræ quaſi cor-
12 vus. Oculi ejꝰ ſicut columbæ ſup ri-
vulos aquarū, quæ lacte ſunt lotæ, &
13 reſident juxta fluenta pleniſſima. Ge-
næ illiꝰ ſicut areolæ aromatū conſitæ
à pigmentariis. Labia ejꝰ lilia diſtil-
14 lantia myrrhā primā. Manꝰ illiꝰ tor-
natiles aureæ, plenæ hyacinthis. Ven-
ter ejus eburneus, diſtinctus ſap-
15 phiris. Crura illius columnæ mar-
moreæ, quæ fundatæ ſunt ſuper baſes
aureas. Species ejꝰ ut Libani, electus
16 ut cedri. Guttur illius ſuaviſſimum,
& totus deſiderabilis: talis eſt di-
lectus meus, & ipſe eſt amicus meus,
17 filiæ Jeruſalem. Quò abiit dilectus
tuus, ô pulcherrima mulierum? quò
declinavit dilectus tuus? & quæ-
remus eum tecum.

CAP. VI.

1 Dilectus meus deſcendit in hortū
ſuum ad areolam aromatum, ut pa-
2 ſcatur in hortis, & lilia colligat. Ego
dilecto meo, & dilectus meus mihi,
3 qui paſcitur inter lilia. Pulchra es
amica mea, ſuavis, & decora ſicut Je-
ruſalem: terribilis ut caſtrorum acies
ordinata.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

8 †Ὥρκισα ὑμᾶς θυγατέρες Ἱερουσαλὴμ †ἐν ταῖς δυ-
νάμεσι καὶ ἐν ταῖς ἰσχύσεσι τοῦ ἀγροῦ· †ἐὰν εὕρητε τὸν ἀ-
δελφιδόν μου, τί ἀπαγγείλητε αὐτῷ; †ὅτι τετρωμέ-
9 νη ἀγάπης (η) ἐγώ εἰμι. †Τί ἀδελφιδός σου ἀπὸ ἀ-
δελφιδοῦ, ἡ καλὴ ἐν γυναιξί; †τί ἀδελφιδός σου ἀ-
10 πὸ ἀδελφιδοῦ, ὅτι οὕτως ὥρκισας ἡμᾶς; †Ἀδελφι-
δός μου λευκὸς καὶ πυῤῥὸς, †ἐκλελοχισμένος ἀπὸ
11 μυριάδων. †Κεφαλὴ αὐτοῦ χρυσίον (θ) κεφάζ, †βόστρυ-
12 χοι αὐτοῦ ἐλάται, μέλανες ὡς κόραξ. †Ὀφθαλμοὶ
αὐτοῦ ὡς περιστεραὶ ἐπὶ πληρώματα ὑδάτων, †(ι) λε-
λουσμέναι ἐν γάλακτι, †καθήμεναι (κ) ἐπὶ πληρώ-
13 ματα. †Σιαγόνες αὐτοῦ ὡς (λ) φιάλαι τοῦ ἀρώματος
φύουσαι μυρεψικά· †χείλη αὐτοῦ κρίνα στάζοντα
14 σμύρναν πλήρη. †Χεῖρες αὐτοῦ τορευταὶ χρυσαῖ πε-
πληρωμέναι Θαρσίς· †κοιλία αὐτοῦ πυξίον ἐλεφάν-
15 τινον ἐπὶ λίθου σαπφείρου. †Κνῆμαι αὐτοῦ στῦλοι μαρ-
μάρινοι †τεθεμελιωμένοι ἐπὶ βάσεις χρυσᾶς· †εἶ-
16 δος αὐτοῦ ὡς Λίβανος, ἐκλεκτὸς ὡς κέδροι. †Φά-
ρυγξ αὐτοῦ γλυκασμοὶ καὶ ὅλος ἐπιθυμία. †οὗτος ἀ-
δελφιδός μου καὶ οὗτος πλησίον μου, †θυγατέρες Ἱερου-
17 σαλήμ. †Ποῦ ἀπῆλθεν ὁ ἀδελφιδός σου ἡ καλὴ
ἐν γυναιξί; †ποῦ ἀπέβλεψεν ὁ ἀδελφιδός σου; †καὶ
ζητήσομεν αὐτὸν μετὰ σοῦ.

MS. A. (η) εἰμὶ ἐγώ. (θ) καιφάζ, (ι) λελουμέναι (κ) ἐπὶ πληρώματα ὑδάτων. (λ)* φιάλες

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 †ἈΔελφιδός μου κατέβη εἰς (α) κῆπον αὐτοῦ †εἰς
φιάλας τοῦ ἀρώματος, †ποιμαίνειν ἐν κήποις, καὶ συλ-
2 λέγειν κρίνα. †Ἐγὼ τῷ ἀδελφιδῷ μου, καὶ (ʼ) ἀδελφι-
3 δός μου ἐμοὶ, †ὁ ποιμαίνων ἐν τοῖς κρίνοις. †Καλὴ εἶ
ἡ πλησίον μου, ὡς εὐδοκία, †ὡραία ὡς Ἱερουσαλήμ,
θάμβος ὡς τεταγμέναι.

MS. A. (α) κῆπόν μου (ʼ) ὁ ἀδελφιδός

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & ÆTHIOP. Tranſ. LAT.

Adjuravi vos, filiæ Hieruſalem, in 8
virtutibꝰ, & viribꝰ agri: ſi invene-
ritis[i] *fraternū meū; quid annun-*
tiabitis ei? Quoniā vulnerata a cha-
ritatis ego ſum. Quid[k] *fraternus* 9
tuus à fraterno, pulchra in muli-
eribus? Quid[l] *fraternꝰ tuus à fra-*
terno; quia ſic adjuraſti nos? Fra- 10
ternꝰ meꝰ (l) candidꝰ, & rubicundꝰ,
(m)[m]*electus è decē millibꝰ. Ca-* 11
put ejꝰ aurū (n) Cephaz: cincinni ejꝰ
[n]*elatæ, nigri tanquàm corvꝰ: O-* 12
culi ejus, ſicut columbæ [o]*ſuper (o)*
plenitudines aquarū, lotæ in lacte,
ſedentes [p]*ſuper plenitudines: Ma-* 13
xillæ ejꝰ, ſicut (p)[q]*phialæ aroma-*
tis germinantes unguentaria: labia
ejus lilia ſtillantia myrrhā (q) ple-
nā: Manus ejus tornatæ [r]*aureæ* 14
impletæ (r) Tharſis: venter ejꝰ[ſ]*pi-*
xis eburnea ſuper lapidē ſapphirū:
Crura ejus columnæ (ſ) marmoreæ 15
fundatæ ſuper baſes aureas: [t]*ſpe-*
cies ejꝰ, ut Libanꝰ, electus ſicut ce-
dri: Guttur ejus dulcedines: & to- 16
tus deſideriū. Hic[v]*fraternus me-*
us, & hic proximus meꝰ, filiæ Hie-
ruſalē. Quò (t) abiit[x]*fraternus* 17
tuus, pulchra in mulieribus? quò re-
ſpexit fraternus tuus? & quæremus
eum tecum.

CAP. VI.

FRaternꝰ meꝰ deſcendit in hortū 1
ſuū ad (a) phialas aromatis, (b) pa-
ſcere in hortis, et colligere lilia. [a]
Ego fraterno meo, & fraternꝰ meus mihi, (c) qui paſcit in liliis. Pulchra es, proxima 2 3
mea, (d) ſicut beneplacitū, decora ſicut Hieruſalē, (e) [b] *pavor, ut ordinatæ.*

Verſio ÆTHIOPICA.

አምሐልኩክን : አዋልደ : ኢየሩሳሌም :: በኃ 8
ይሉ: ወበጽንዑ: ለገዳም :: እመ: ረከብክሙ:
ለወልድ:እኁየ:ከመ:ታይድዑሁ: ከመ:ንድፍ
ት:አነ:በፍቅሩ::=÷ምንት:ወልድ:እኁኪ:እ 9
ምወሉደ:እኃው:ሠናይት:እምአንስት::=÷
ዐ: ወምንት: ወልድ: እኁክ : እምወሉደ:እ
ኃው: ዘከመዝ: አምሐልክነ::=÷ እኁየ:ጸ 10
ዐደ:ወቀይሕ::ውሉድ:እምእእላፍ::=÷ ወ 11
ርእሱ:ወርቀ : ቄፋዝ::ድምድማሁ: ድሉል:
ወጸሊም:ከመ:ቋዕ::=÷ አዕይንቲሁ: ከመ: 12
ርግብ:ውስተ:ምእቃለ: ማይ: ምሉእ::ኅፁ
ባት:በሐሊብ:እለ:ይነብሩ:ውስተ: ምዕቃለ:
ማያት: ምሉእ::=÷ መላትሒሁ : ከመ: ር 13
ኄ:አፈው:እለ:ይፈርያ: አፈዋተ::ከናፈሪሁ:
ጽጌ:እለ:ይውሕዛ:ከርቤ: ፍጹመ::=÷ እደ 14
ዊሁ:ፍሑቃት: እለ: በወርቅ: ስርግዋተ: ተር
ሴስ::ከርሡ:ሰሌደ:ከመ: ቀርን: ነጌ: ዲበ:እ
ብን:ሰንፔር::=÷ ቈያጺሁ:አዕማደ: በሌቅ: 15
ሱረራት:ዲበ: መንበረ: ወርቅ::ርእሱ: ከመ:
ስኒን: ወኅሩይ: ከመ: ቄድሮስ::=÷ ጕርዔ 16
ሁ:መዐርዒር: ወኵሉ:ፍትወት::ወልድ: እኁ
የ:ውእቱ: ፍቁርየ::=÷ አይቴ: ኃለፈ: ወል 17
ድ:እኁኪ:ወንኃሥሥ:ምስሌኪ::=÷

CAP. VI. ወልድ:እሑየ:ወረደ: ውስተ:ገነ 1
ት::ወውስተ:አብያተ: አፈው::ይርአይ:ዘው
ስተ:ገነት: ወያስተጋብእ: ጽገያተ::=÷ ከማ 2
ሁ:አንቲ: አንተ: ኃቤየ:ከመ: ሠምረት::=÷
አደም:ከመ:ኢየሩሳሌም::መደንግፅት:ከመ: 3
ምጽአት::=÷

INTERP. ÆTHIOP.[i]nepotē meū;[k]nepos tuꝰ præ nepote,[l]nepos tuꝰ præ nepote;[m]natus ex millibꝰ.[n]penduli, nigri[o]juxta piſcinas aquarū plenarū, [p]juxta piſcinas aquarum plenarum: [q] areola aromatis producens aromatica: [r]auro Tharſis decoratæ: [ſ]turgidus, ſicut ebur ſuper [t] caput ejus, ut [v] nepos meus, & hic dilectus meus, [x] nepos tuus, ut quæramus eum tecum?
CANT. VI. [a]Sicut tu es, *ſic ego*: amica mea ſicut beneplacitum, [b] terrifica, ſicut procurrens *acies*.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* يا بنات اورسليم استحلفكن باقتدارات الحقل وقواته * اذا وجدتم ابن اخي فاخبروه انّي 8
انا المحبة مجرحة * ايتها الجميلة في النساء ما ابن اخيك من ابناء الاخ * ايتها الحسناء في 9
النساء ما هو ابن اخيك من ابناء الاخ لانك استحلفتنا هكذا * ابن اخي ابيض واسمر منتخب 10
من بين ربوات * راسه ذهب كافار * طفاين سبطة سود كسواد الغراب * عيناه كحمامتين 11 12
على احواض موعبة ماء * مستحمان في اللبن * جالستين على احواض موعبة ماء * خدّاه كبرك 13
الطيب الموعبة طيوب العطر * شفتاه سوسنتان تقطران ندى * مملوتان مرّا * يداه 14
مخروطتان * مملوتان ذهب ترسيس * جوفه لوح عاج في جوهر الكاربا والمرجان * ساقاه عمودا 15
رخام موسسان على قاعدة ذهب * نوعه كلبنان * منتخب كالارز * لهاته حلاوة * وكله شهوة * هذا 16
ابن اخي وهذا قريبي يا بنات اورسليم * ايتها الجميلة في النساء اين ذهب ابن اخيك * الى 17
اين ابصر ابن اخيك فنطلبه معك *

* الفصل السادس *

* ابن اخي انحدر الى بستانه الى احواض الطيب * 1
ليرعى في البساتين ويجمع السوسن * انا لابن اخي وابن اخي لي * الذي يرعى في السوسن 2
* قريبتي جميلة كمسرة المشية بهية كاورسليم * مجزعة كالصفوف المرتبة * 3

O filiæ Jeruſalem obteſtor vos per poten- 8
tias agri ejuſque virtutes, quum offende-
ritis nepotem meum, ſignificate illi quòd
ego dilecta ſaucia ſum. O pulcherrima 9
inter mulieres, qualis eſt nepos tuus inter
nepotes? O formoſiſſima inter mulieres,
qualis eſt nepos tuus inter nepotes, quòd
ita nos obteſtaris? Nepos meus candidus 10
eſt ac rufus, electus è myriadibus. Caput 11
ejus aurum purgatiſſimum: cincinni ejus
penduli, nigri inſtar nigredinis corvinæ.
Oculi ejus, veluti duæ columbæ ſuper pi- 12
ſcinas aquâ plenas, lacte ſeſe lavantes,
inſidentes piſcinis aquâ refertis: Ejus 13
genæ quaſi lacus aromatis producentes
fragrantias aromaticas. Labia ejus, duo
lilia ſtillantia rorem, plena myrrhâ.
Manus ejus tornatiles, plenæ auro Tar- 14
ſis. Venter ejus lamina eburnea cum
gemmis ſuccini & corallii. Ejus crura 15
duæ columnæ marmoreæ fundatæ ſuper
baſim auream. Species ejus ut Libanus,
electus ut cedri. Palatum ejus dulciſ- 16
ſimum eſt, totus denique optabiliſſimus.
Is eſt nepos meus, atque is eſt propin-
quus meus, O filiæ Jeruſalem. O pul- 17
cherrima inter mulieres, quò abiit nepos
tuus? quò reſpexit nepos tuus, ut tecum
perquiramus eum?

CAP. VI.

NEpos meus deſcendit in hortum 1
ſuum ad piſcinas aromatis, ad paſcen-
dum in hortis, & legendum lilia. Ego 2
nepotis mei ſum, & nepos meus mihi,
qui paſcitur inter lilia. Propinqua mea 3
formoſa eſt, ſimilis delectationi volunta-
tis, decora ut Jeruſalem, formidabilis ut
acies inſtructæ.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

ܦܟܘܗܝ. ܐܝܟ ܡܫܟܒܐ ܕܒܣܡܐ. ܣܦܘܬܗ ܐܝܟ ܫܘܫܢܐ ܕܢܛܦܢ ܡܘܪܐ ܘܢܪܕܝܢ *
ܐܝܕܘܗܝ. ܐܝܟ ܓܘܠܠܐ ܕܕܗܒܐ. ܕܡܠܝܢ ܟܐܦܐ ܕܕܗܒܐ. ܟܪܣܗ ܥܒܕܐ ܕܫܢܐ ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܕܣܦܝܠܐ *
ܫܩܘܗܝ. ܥܡܘܕܐ ܕܫܝܫܐ. ܕܡܫܬܐܣܝܢ ܥܠ ܒܣܝܣܐ ܕܕܗܒܐ. ܚܕܝܗ. ܐܝܟ *
ܠܒܢܢ. ܓܒܝܐ ܐܝܟ ܐܪܙܐ. * ܚܟܗ. ܐܝܟ ܟܘܪܝܬܐ ܕܚܠܝܐ. ܘܡܐܢܘܗܝ ܪܓܝܓܝܢ. ܗܢܘ
ܕܕܝ ܘܗܢܘ ܚܒܪܝ. ܒܢܬܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܠܐܝܟܐ ܐܙܠ ܕܕܟܝ ܫܦܝܪܬܐ ܒܢܫ̈ܐ. ܠܐܝܟܐ ܦܢܐ
ܕܕܟܝ. ܘܢܒܥܝܘܗܝ ܥܡܟܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

ܕܕܝ ܢܚܬ ܠܓܢܬܗ. ܠܡܫܟܒܐ ܕܒܣܡܐ. ܕܢܪܥܐ ܒܓܢܐ. ܘܢܠܩܘܛ ܫܘܫܢܐ *
ܐܢܐ ܠܕܕܝ ܘܕܕܝ ܠܝ. ܗܘ ܕܪܥܐ ܒܫܘܫܢܐ. * ܫܦܝܪܐ ܐܢܬܝ ܪܚܡܬܝ ܐܝܟ ܨܒܝܢܐ. ܫܦܝܪܐ ܐܝ *
ܟ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܕܚܝܠܐ ܐܝܟ ܓܒܝܬܐ.

* Maxillæ ejus ut areolæ aromatum. Labia ejus 13
ut lilia myrrham ac nardum ſtillantia. Manus 14
ejus velut orbis aureus refertus lapillis au-
reis. Venter ejus opificium eburneum ſuper
ſedem ſapphirinam. Crura ejus columnæ 15
marmoreæ firmatæ ſuper baſes aureas. Pectus
ejus ut Libani: denique lectiſſimus ut cedri.
Palatum ejus ut favi dulciſſimi: & veſtes ejus 16
optabiles. Talis eſt patruus meus, & talis ſo-
cius meus, filiæ Jeruſalem. Quonam abiit pa- 17
truus tuus, pulcherrima inter mulieres? quò ſe
vertit patruus tuus, ut quæramus eum tecum.

CAP. VI.

PAtruus meus deſcendit ad hortum ſuum & 1
ad pulvillos aromatum, ut paſcat in hortis,
colligátque lilia. Ego patruo meo, & pa- 2
truus meus mihi, qui paſcit in liliis. Pulchra 3
es propinqua mea, ut voluntas, formoſa ut
Jeruſalem, terribilis ut electa.

שיר השירים : ז

ipſi quia, mei regione e tuos oculos Averte
4 הָסֵבִּי עֵינַיִךְ מִנֶּגְדִּי שֶׁהֵם
grex ſicut tuus pilus : me efferu reddiderunt
הִרְהִיבֻנִי שַׂעְרֵךְ כְּעֵדֶר
.Ghilghad de ſe depilarunt quæ ,caprarū
הָעִזִּים שֶׁגָּלְשׁוּ מִן־הַגִּלְעָד׃
aſcẽderũt quæ ,oviū grex ſicut tui Dẽtes
5 שִׁנַּיִךְ כְּעֵדֶר הָרְחֵלִים שֶׁעָלוּ
,geminantes ipſæ omnes quæ : lavacro de
מִן־הָרַחְצָה שֶׁכֻּלָּם מַתְאִימוֹת
fragmen Sicut .eis in non orba &
6 וְשַׁכֻּלָה אֵין בָּהֶם׃ כְּפֶלַח
.tuam comam intra tuum temp⁹ punici mali
הָרִמּוֹן רַקָּתֵךְ מִבַּעַד לְצַמָּתֵךְ׃
octoginta & , reginæ ipſæ Sexaginta
7 שִׁשִּׁים הֵמָּה מְלָכוֹת וּשְׁמֹנִים
.numerus non adoleſcentularū & :pellices
פִּילַגְשִׁים וַעֲלָמוֹת אֵין מִסְפָּר׃
una, mea perfecta, mea columba ipſa Una
8 אַחַת הִיא יוֹנָתִי תַמָּתִי אַחַת
:ſuæ genitrici ipſa munda, ſuæ matri ipſa
הִיא לְאִמָּהּ בָּרָה הִיא לְיוֹלַדְתָּהּ
eam dixerunt beatā &, filiæ eam viderunt
רָאוּהָ בָנוֹת וַיְאַשְּׁרוּהָ
.eā laudaverunt & , pellices & , reginæ
מְלָכוֹת וּפִילַגְשִׁים וַיְהַלְלוּהָ׃
velut reſpicitur iſta Quæ
9 מִי־זֹאת הַנִּשְׁקָפָה כְּמוֹ־
pura , luna ut pulchra ; aurora
שָׁחַר יָפָה כַלְּבָנָה בָּרָה
? vexillatæ ut terribilis , ſol ut
כַּחַמָּה אֲיֻמָּה כַּנִּדְגָּלוֹת׃
deſcendi nucis hortum Ad
10 אֶל־גִּנַּת אֱגוֹז יָרַדְתִּי
; convallis fructus in videndum ad
לִרְאוֹת בְּאִבֵּי הַנָּחַל
, vitis gemmuiſſet an videndum ad
לִרְאוֹת הֲפָרְחָה הַגֶּפֶן
, novi Non .punica mala floruiſſent
11 הֵנֵצוּ הָרִמֹּנִים׃ לֹא יָדַעְתִּי
quadrigæ , me poſuit mea anima
נַפְשִׁי שָׂמַתְנִי מַרְכְּבוֹת
, Revertere .munifici mei populi
12 עַמִּי נָדִיב׃ שׁוּבִי
, revertere ; Sulamith revertere
שׁוּבִי הַשּׁוּלַמִּית שׁוּבִי
quid : te in intuebimur & ,revertere
שׁוּבִי וְנֶחֱזֶה־בָּךְ מַה־
chorum Sicut ? Sulamith in videbitis
תֶּחֱזוּ בַּשּׁוּלַמִּית כִּמְחֹלַת
.caſtrorum
הַמַּחֲנָיִם׃

CAP. VII. ז

tui pedes ſunt pulchri Quàm
1 מַה־יָּפוּ פְעָמַיִךְ
! magnifici filia calceamentis in
בַּנְּעָלִים בַּת־נָדִיב
ſicut tuorum femorum vertebræ
חַמּוּקֵי יְרֵכַיִךְ כְּמוֹ
.artificis manuum opus , monilia
חֲלָאִים מַעֲשֵׂה יְדֵי אָמָּן׃
non ,rotundus crater tuus Umbilicus
2 שָׁרְרֵךְ אַגַּן הַסַּהַר אַל־
tuus venter : temperamento indigebit
יֶחְסַר הַמָּזֶג בִּטְנֵךְ
ſeptus triticorum acervus
עֲרֵמַת חִטִּים סוּגָה
tua ubera Duo .liliis in
3 בַּשּׁוֹשַׁנִּים׃ שְׁנֵי שָׁדַיִךְ
gemelli hinnuli duo ſicut
כִּשְׁנֵי עֳפָרִים תָּאֳמֵי
.capreæ
צְבִיָּה׃

תרגום TARGUM.

4 הסבי אסחרי רבניך חכימי כנשתא רבתא חזור חזור לקבלי די אנון אמלכוני בגלותא וקבעי מדרשא לאולפן אוריתי ושאר ועטוטיך ועמא דארעא אצדיקו יתי במימר פומהון כבנוי דיעקב דלקטו אבניא ועבדו גלישושיתא בטורא דגלעד׃
5 שניך וכהניא וליואי אכלי קורבניך ומעשר קודשא ואפרשותא דכין מכל אניסות וגזילות דהוו היכמה דכין עדרי דענא דיעקב בזמן דסלקן מן נחל יובקא דלא הות בהון אניסא וגזלה וכולהון דמין דא לדא וילדן תיומין בכל עדן ומתכלא ועקרא לא הות בהון׃
6 כפלח ומלכות בית חשמונאי כולהון מלין פקודיא כרמונא בר מן מתתיה כהנא רבא ובנוהי דאנון צדיקין מכולהון ומקימין פקודיא ופתגמי אוריתא בצהותא׃
7 ששים באדין קמו יונאי וכנשו שתין מלכין מבנוי דעשו מלובשי שריונין רכבין על סוסין ופרשין ותמנן דוכסין מבנוי דישמעאל רכבין על פיליא בר מן שאר עממיא ולישניא דלית בהון מנין ומניאו אלכסנדרוס מלכא עליהון לרישא ואתו לאגחא קרבא לירושלם׃
8 אחת ובעדנא ההיא הות כנשתא דישראל דמתילא ליונתא שלמתא פלחא בלב חד למרהא ואחידא לאוריתא ועסקא בפתגמי אוריתא בלב שלים ובריין זכותהא כיומא דנפקת ממצרים הא בכן נפקו בני חשמונאי ומתתיה וכל עמא דישראל ואגיחו בהון קרבא ומסר יי יתהון בידהון וכד חזו יתבי פלכיא אשרו יתהון ומלכות ארעא ושלטוניא וקלסו להון׃
9 מי אמרו אומיא כמה זותנין עובדי עמא הדא בקרצתא שפירין עולימהא כסיהרא ובריין זכותהא כשמשא ואימתהא על כל יתבי ארעא בזמן דהליכו ארבעת טקסהא במדברא׃
10 אל אמר מרי עלמא לבית מקדש תנין דאתבני על ידוהי דכורש אשריתי שכנתי למחמי עובדין טבין דעמי ולמחמי אלולי פשן וסגן חכימיא דמתילין לגופנא ולבלוביהון מלין עובדין טבין הכרמונין׃
11 לא וכדו אתגלי קדם יי די אנון צדיקין ועסקין באוריתא אמר יי במימריה לא אוסיף למכנון ואף לא אעבד עמהון גמירא אלהין אמליך בנפשי לאוטבותהון ולשואה יתהון גיותנין ברתיכי מלכין בגין זכותא דצדיקי דרא דדמין בעובדיהון לאברהם אבוהון׃
12 שובי תובי לותי כנשתא דישראל תובי לירושלם תובי לבית אולפן אוריתא תובי לקבלא נבואה מן נביאיא די מתנבאין בשום מימרא דיי ומה טיבכון נביאי שקרא למטעי עמא דירושלם בנבואתכון די אתון ממללין סטיא על מימרא דיי ולאחלא משרית ישראל ויהודה׃

ז

1 מה אמר שלמה ברוח נבואה מן קדם יי כמה שפירן רגליהון דישראל כד סלקן לאתחזאה קדם יי תלת זמנין בשתא בסנדלין דססגונא ומקרבין ית נדריהון וית נדבתהון ובניהון נפקי ירכיהון יאון כיוהרין דקביען על כלילא דקודשא דעבד בצלאל אומנא לאהרן כהנא׃
2 שררך וריש מתיבתך די בזכותיה מתפרנסין כל עלמא היכמה דעוברא מתפרנס מן פרתיה במעינא דאמיה בהיק באוריתא כאוגנא דסיהרא במיתיה לדכאה ולסאבא לזכאה ולחיבא ולא חסרין פתגמי אוריתא תדירא מפומיה היכמה דלא חסרין מוי דנהרא רבא די נפק מעדן ושבעין חכימין מסחרין יתיה כאדר סגלגל ואוצריהון מליין מן מעשר קודשא ונדרא ונדבתא דסינו להון עזרא כהנא וזרובבל וישוע ונחמיה ומרדכי בלשן אנשי כנשתא רבתא דמתילין לורדין בגין דיהי להון חילא למעסק באוריתא יימם ולילא׃
3 שני תרין פריקיך דעתידין למפרקיך [משיח בר דוד ומשיח בר אפרים] דמין למשה ואהרן בני יוכבד דמתילן לתרין אורזילין תיומי טביא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina CAP. V

Fac accumbere magiſtros tuos ſapientes, congregatio magna, circuitu in conſpectu meo; ipſi enim conſulebant me in cap tate, & conſtituebant gymnaſium doctrinæ legis meæ. Reli autem magnates tui & populus terræ juſtificaverunt me in ve oris ſui, ſicut filii Jaacob, qui collegerunt lapides, & fece acervum in monte Galaad. Sacerdotes autem & Levitæ q comedunt oblationes tuas & decimas ſanctificatas & primit mundi ſunt ab omni violentia & rapina, quemadmodum m erant greges ovium Jaacob in tempore quo aſcendebant de t rente Jaboc, in quibus non erat violentia nec rapina; & om ſimiles erant ad invicem, & pariebant gemellos fœtus in o tempore: & orbata & ſterilis non erat in eis. Regnum autem mus Haſmenæorum omne plenum eſt præceptis ſicut malog natum, præter Mathatiam ſacerdotem magnum & filios ejus erant juſtiores illis omnibus, & confirmabant præcepta & v legis in puritate. Tunc ſurrexerunt Græci & congregaverunt aginta reges de filiis Eſau, indutos loricis, aſcendentes ſu equos, & equites & octoginta duces de filiis Iſmael, aſcende ſuper elephantos, præter reliquos populos & linguas quorum erat numerus; & conſtituerunt Alexandrum regem ſuper e principem, & venerunt ut pugarent contra Jeruſalem. Et i lo tempore erat cœtus Iſrael ſimilis columbæ perfectæ, & viebat unanimis domino ſuo, & apprehendebat legem, laborabat in verbis legis in corde perfecto, & puræ erant ſtitiæ ejus ſicut in die quo egreſſa eſt de Ægypto. Tunc eg ſunt filii Haſmonæorum & Mathatias & omnis populus I & pugnaverunt contra eos, & tradidit eos Dominus in ma eorum: & cùm hoc vidiſſent habitatores provinciarum, tos eos dixerunt, & regna terræ & potentes, & laudav eos. Dixerunt nationes: Quàm ſplendida ſunt opera p hujus mane! Pulchri ſunt juvenes ejus ſicut luna, ra ſunt merita ejus ſicut ſol: & terror ejus erat ſuper o habitatores terræ, quando ambulabant *quatuor* vexilla e deſertum. Dixit dominator ſeculi: In domo ſanctu cunda quæ ædificata eſt per manum Cyri, habitare fe jeſtatem meam ut viderem opera bona populi mei viderem ſi creſcant & multiplicentur ſapientes qui rantur viti, & ſi germina eorum plena ſint operibu ſicut mala punica. Cùm autem revelatum fuit cor mino quòd eſſent juſti, & quòd laborarent in lege, di minus in verbo ſuo: Non addam ultrà humiliare eos, n faciam cum eis conſumptionem, ſed conſilium inibo in mea ut benefaciam eis, et ut ponam eos excelſos in curru gum propter merita juſtorum generationis illius: q les ſunt in operibus ſuis Abrahæ patri ſuo. Revertere cœtus Iſrael: revertere ad Jeruſalem; revertere ad doctrinæ legis meæ, revertere ad ſuſcipiendam proph prophetis qui prophetant in nomine verbi Domini. prodeſt vobis ô prophetæ falſi, ut decipiatis populum in Jeruſalem in prophetia veſtra; qua vos loquimini onem contra verbum Domini, ut prophanetis caſtra & Judæ?

CAP. VII.

Dixit Salomon in ſpiritu prophetiæ à facie D Quàm pulchri ſunt pedes Iſrael, quando aſcendunt u reant coram Domino tribus vicibus in anno, cum cal tis taxeis, & offerunt vota ſua & oblationes volunta & filii eorum qui egreſſi ſunt de femore eorum pul ſicut lapides pretioſi, qui fixi ſunt in corona ſancta fecit Beſeleel artifex Aaron ſacerdoti. Et princeps tuæ per cujus meritum gubernantur omnia ſecula, ſic enutritur per umbilicum in utero matris ſuæ, ſic eſt in lege ſicut circulus Lunæ; quando venit ad m dum, & ad contaminandum, & ad juſtificandum condemnandum: & non deficiunt verba legis unq ore ejus, ſicut non deficiunt aquæ fluminis magni, egreditur de paradiſo, & ſeptuaginta ſapientes circ cum ſicut aream rotundam, & cellaria eorum plena cimis ſanctificatis & votivis & ſpontaneis, quas co runt eis Eſdras ſacerdos, & Zorobabel, & Joſue, & mias, & Mardochæus et Belſan, viri eccleſiæ mag comparantur roſis, ut ſit eis virtus ut laborent in leg nocte. *Duo* ſalvatores tui qui te redempturi ſunt, *as filius David & Meſſias filius Ephraim*, ſimi Moſi et Aaron filiis Jocabed qui comparantur duob nulis gemellis capreæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

4 * ܐܗܦܟܝ ܥܝܢܝܟܝ ܡܢ ܠܘܩܒܠܝ. ܕܗܢܘܢ ܐܪܦܝܘܢܝ. ܣܥܪܟܝ ܐܝܟ ܓܙܪܐ ܕܥܙܐ.
5 ܕܣܠܩܝܢ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܓܠܥܕ. * ܫܢܝܟܝ ܐܝܟ ܓܙܪܐ ܕܓܙܝܙܬܐ. ܕܣܠܩܢ ܡܢ ܡܣܚܝܬܐ. ܕܟܠܗܝܢ
6 ܡܬܐܡܢ. ܘܥܩܪܬܐ ܠܝܬ ܒܗܝܢ. * ܐܝܟ ܩܠܦܐ ܕܪܘܡܢܐ ܦܠܚܬܟܝ. ܠܒܪ ܡܢ ܫܬܩܟܝ.
7 8 * ܫܬܝܢ ܐܢܝܢ ܡܠܟܬܐ. ܘܬܡܢܝܢ ܦܠܓܫܬܐ. ܘܥܠܝܡܬܐ ܕܠܝܬ ܠܗܝܢ ܡܢܝܢܐ. * ܚܕܐ ܗܝ
ܝܘܢܬܝ ܘܓܡܝܪܬܝ. ܚܕܐ ܗܝ ܠܐܡܗ. ܘܓܒܝܬܐ ܗܝ ܠܝܠܕܬܗ. ܚܙܝܢܗ ܒܢܬܐ ܘܛܘܒܝܗ.
9 ܡܠܟܬܐ ܘܦܠܓܫܬܐ ܘܫܒܚܘܗ. * ܡܢ ܗܝ ܗܕܐ ܕܡܬܚܙܝܐ ܐܝܟ ܨܦܪܐ. ܫܦܝܪܐ ܐܝܟ ܣܗܪܐ. ܓܒܝܐ ܐܝܟ ܫܡܫܐ. ܕܚܝܠܐ
10 ܐܝܟ ܡܫܪܝܬܐ. * ܠܓܢܬܐ ܕܓܘܙܐ ܢܚܬܬ. ܠܡܚܙܐ ܦܐܪܐ ܕܢܚܠܐ. ܠܡܚܙܐ ܐܢ

* Averte oculos tuos ex adverſo mei, q ipſi abdicârunt me. Coma tua ſicut g p arum aſcendens è monte Gelaad. tmi ſicut grex tonſarum aſcendentium cro, quæ omnes habent gemellos, & inter eas orba. Ut fragmen mali puni tua, præter ſilentium tuum. Sexag reginæ, & octoginta concubinæ, pu innumeræ. Una eſt columba mea p una eſt matri ſuæ, & electa gen Viderunt eam filiæ, & laudârunt ea ginæ & concubinæ, & celebrârunt ea eſt hæc quæ proſpectat ſicut auror ſa ut luna, pura ut ſol, terribilis u Ad hortum nucum deſcendi ad dum poma convallium, ad vid

Cap. VII.

Versio VULG. LAT.

4 Averte oculos tuos à me, quia ipsi me
avolare fecerunt. Capilli tui sicut
grex caprarum, quæ apparuerunt de
5 Galaad. Dentes tui sicut grex ovium,
quæ ascenderunt de lavacro, omnes
gemellis fœtibus, & sterilis non est
6 in eis. Sicut cortex mali punici, sic
7 genæ tuæ absq; occultis tuis. Sexaginta
sunt reginæ, & octoginta concubinæ,
& adolescentularum non est
8 numerus. Una est columba mea, perfecta
mea, una est matris suæ, electa
genitrici suæ. Viderunt eam filiæ, &
beatissimam prædicaverunt; reginæ
et concubinæ, et laudaverunt eam.
9 Quæ est ista, quæ progreditur quasi
aurora consurgens, pulchra ut luna,
electa ut Sol, terribilis ut castrorum
10 acies ordinata? Descendi in hortum
nucum, ut viderem poma convalliū,
et inspicerem si floruisset vinea, et germinassent
11 mala punica. Nescivi: anima
mea conturbavit me propter quadrigas
12 Aminadab. Revertere, revertere,
Sulamitis: revertere, revertere, ut
intueamur te.

CAP. VII.

1 Quid videbis in Sulamite, nisi
choros castrorum? Quàm pulchri
sunt gressus tui in calceamentis, filia
principis! Juncturæ femorum tuorū,
sicut monilia quæ fabricata sunt ma-
2 nu artificis. Umbilicus tu⁹ crater tornatilis,
nunquam indigens poculis.
Venter tuus sicut acervus tritici, val-
3 latus liliis. Duo ubera tua sicut duo
hinnuli gemelli capreæ.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

4 †Ἀπόστρεψον ὀφθαλμούς σου ἀπεναντίον (β) μου, †ὅτι
αὐτοὶ ἀνεπτέρωσάν με. †Τρίχωμά σου ὡς ἀγέλαι τῶν
5 αἰγῶν, †αἳ ἀνεφάνησαν ἀπὸ τοῦ Γαλαάδ. †Ὀδόντες
σου ὡς ἀγέλαι τῶν κεκαρμένων, αἳ ἀνέβησαν ἀπὸ τοῦ
λουτροῦ, †αἱ πᾶσαι διδυμεύουσαι, †καὶ ἀτεκνοῦσα οὐκ
ἔστιν (γ) ἐν αὐταῖς· †ὡς σπαρτίον τὸ κόκκινον χείλη
6 σου, †καὶ ἡ λαλιά σου ὡραία. †Ὡς λέπυρον τῆς
7 ῥοᾶς μῆλόν σου †ἐκτὸς τῆς σιωπήσεώς σου. †Ἑξήκοντά
εἰσι βασίλισσαι †καὶ ὀγδοήκοντα παλλακαί, †καὶ
8 νεάνιδες ὧν οὐκ ἔστιν ἀριθμός. †Μία ἐστὶ περιστερά μου,
τελεία μου, †μία ἐστὶ τῇ μητρὶ αὐτῆς, †ἐκλεκτή ἐστι
τῇ τεκούσῃ (δ) αὐτήν. †Εἴδοσαν αὐτὴν θυγατέρες καὶ
μακαριοῦσιν αὐτὴν †βασίλισσαι, (ε) καί γε παλλακαί,
9 καὶ αἰνέσουσιν αὐτήν. †Τίς αὕτη ἡ (ζ) ἐκκύπτουσα
ὡσεὶ ὄρθρος, †καλὴ ὡς σελήνη, ἐκλεκτὴ
10 ὡς ὁ ἥλιος, †θάμβος ὡς τεταγμέναι; †Εἰς
κῆπον καρύας κατέβην †ἰδεῖν (η) ἐν γεννήμασι
τοῦ χειμάρρου, †ἰδεῖν εἰ ἤνθησεν ἡ ἄμπελος, †(θ)
11 ἐξήνθησαν αἱ ῥοαί. †Ἐκεῖ δώσω τοὺς μαστούς μου σοί.
†Οὐκ ἔγνω ἡ ψυχή μου. †Ἔθετό με ἅρματα Ἀμιναδάβ.
12 †Ἐπίστρεφε, ἐπίστρεφε ἡ (ι) Σουναμῖτις· †ἐπίστρεφε,
ἐπίστρεφε, καὶ ὀψόμεθα ἐν σοί.

MS.A. (β) ἐμοῦ, (γ) ἐν αὐτοῖς ὡς σπαρτίον κόκκινον (δ) αὐτῆς. (ε) καὶ παλλακαί, (ζ) ἐγκύπτουσα (η) ἐν γεννήμασι (θ) εἰ ἤνθησαν (ι) Σουλαμῖτις·

ΚΕΦ. ζ'.

1 †Τί ὄψεσθε ἐν τῇ (α) Σουναμίτιδι †ἡ ἐρχομένη
ὡς χοροὶ τῶν παρεμβολῶν; †(β) ὡραιώθησαν διαβήματά
σου ἐν ὑποδήμασί (γ) σου †θύγατερ ναδάβ·
†ῥυθμοὶ (δ) μηρῶν ὅμοιοι ὁρμίσκοις, †(ε) ἔργον
2 τεχνίτου. †Ὀμφαλός σου κρατὴρ τορευτός, †μὴ ὑστερούμενος
(ζ) κρᾶμα· †κοιλία σου (η) θημωνία σίτου
3 πεφραγμένη ἐν κρίνοις. †Δύο μαστοί σου, ὡς
δύο νεβροὶ δίδυμοι δορκάδος.

MS.A. (α) Σουλαμίτιδι (β) τί ὡραιώθησαν (γ) θύγατερ Ἀμιναδάβ. (δ) μηρῶν σου (ε) ἔργῳ χειρῶν τεχνίτου. (ζ) κράματος· (η) θημωνία

Vers. GRÆ. LXX. Interp. & Æthiopicæ. Transl. LAT.

Averte oculos tuos è (f) regione 4
mei: quia ipsi avolare fecerunt me.
Capillamentum tuum, sicut greges
caprarum, quæ (g) apparuerunt [c]
è Galaad. Dentes tui, sicut greges 5
(h) tonsarum, quæ ascenderunt de
lavacro, omnes geminantes, & infœcunda
non est in eis. Sicut (i) funiculus
coccineus, labia tua, & (k)
eloquium tuum decorum. Sicut cortex 6
mali punici, gena tua (l) extra
taciturnitatem tuam. Sexaginta sunt 7
reginæ, & octuaginta concubinæ,
& adolescentulæ, quarum non est
numerus. Una est columba mea, perfecta 8
mea, una est matri suæ, electa
est ei, quæ peperit ipsam. Viderunt
eam filiæ, & (m) beatificabunt
eam reginæ, & concubinæ, & laudabunt
eam. Quæ est ista, [d] *quæ* 9
(n) progreditur, sicut aurora, pulchra
ut Luna, electa ut Sol, (o)
pavor, ut ordinatæ? In hortum 10
nucis [e] *descendi (p) videre in genimina*
torrentis, videre si floruit
vitis, [f] *effloruerunt mala punica.*
Ibi dabo ubera mea tibi. (q) Non 11
novit anima mea. (r) Posuit me
currus Aminadab: Convertere, convertere, 12
(s) Sunamitis: convertere,
convertere, & (t) videbimus in te.

CAP. VII.

Quid (a) videbitis in [a] *Sunamitide,* 1
quæ venit, (b) sicut chori
castrorum? Speciosi facti sunt gressus
tui in calceamentis tuis, filia (c)
Nadab: [b] *moduli femorum similes*
torquibus, (d) opus artificis.
Umbilicus tuus crater tornatilis, 2
non deficiens misto: venter tuus (e)
acervus frumenti vallatus in liliis: Duo ubera tua, sicut duo hinnuli gemelli capreæ: 3

Versio ÆTHIOPICA.

ሚጢ: አዕይንቲከ: እምአንፃርየ:: እስመ: እ 4
ማንቱ: አስረረኒ:: ሠዕርትከ: ከመ: መርዔ
ተ: አጣሊ:: እለ: ተከሥቱ: እምአድባረ: ገ
ለአድ::=፡ ስነኒከ: ከመ: መርዔተ: ለለ: ተ 5
ቀርጸ:: እለ: ወጽአ: እምሐጸብ:: ኵሎን: እ
ለ: ይመንትዋ:: ወአልቦ: እምኔሆን: መካን::
ከመ: ፈትል: ቀይሕ: ከናፍሪከ:: ወነባቢከ:
አደም::=፡ ከመ: ቀረፈተ: ሮማን: መላትሒ 6
ከ: እንበለ: አርምሞትከ::=፡ ስሳ: እማንቱ: 7
ንግሥታት:: ወሰማንያ: ዕቁባት:: አዋልድ: እ
ለ: አልቦ: ኍልቆ::=፡ አሐቲ: ይእቲ: ርግብየ: 8
ፍጽምት:: ወአሐቲ: ይእቲ: ለእማ:: ወኅሪት:
ይእቲ: ለእንተ: ወለደታ:: ርእያ: አዋልድ: ወ
አስተብፅዕዋ:: ንግሥታት: ወዕቁባት: ወይሴ
ሃ::=፡ መኑ: ይእቲ: ዛቲ: እንተ: ትሔውጽ: ከ 9
መ: ጎሕ:: ሠናይት: ከመ: ወርኅ:: ብርህት: ከ
መ: ፀሓይ:: ደንጋፂ: ከመ: ሠርዌት::=፡ ውስ 10
ተ: ገነት: ክርካዕ: ወረደ: ወልድ: እኁየ:: ውስ
ተ: ዘርአ: መሐገዝ:: ይርአይ: እመ: ጸገየ: ወይ
ን:: ወእመ: ጸገየ: ቆፅ:: ወለእመ: ፈረየ: ሮ
ማን::=፡ በህየ: እሁበከ: አጥባትየ: ለከ:: 11
ነፍስየ: ኢየአመረት:: ረሰየኒ: ሰረገላተ: አ
ሚናደብ::=፡ ተመየጢ: ተመየጢ: ሱላሚ 12
ጢስ:: ተመየጢ: ተመየጢ: ወንርአይ: ብ
ኪ::=፡

CAP. VII. ምንተ: ትሬእዩ: በእንተ: ሰላም: ሰ 1
ጣዊት:: እንተ: ትሔውጽ: እምርሑቅ: ከመ:
መድበለ: ማኅበር:: ጥቀ: አደሙ: ሑረታቲከ:
ዘበስን: ወለተ: ናደብ:: ወንብረተ: መናቅዕቲከ:
ይመስል: አርማስቆስ: ግብረ: እደ: ኬንያ::=፡
ሓንብርትከ: ከመ: ማዕክክ: ፍሑቅ: ዘኢይዓር 2
ቅ: እምቱስሕት:: ከርሥከ: ስዋጠ: ስርና
ይ: ወሓጹር: በጽጌ::=፡ ክልኤ: አጥባትኪ: 3
ከመ: ክልኤ: እጕለ: መንታ: ዘወይጠል::=፡

INTERP. ÆTHIOP. [c] de montibus Galaad. [d] quæ prospectat, [e] descendit nepos meus videre [f] & floruerunt cyperi, & si fructificârunt mala CAP. VII. [a] Shelama Shetavith? tu prospectas à longè sicut ordinata congregatio: quàm speciosi sunt gressus [b] structura femorum tuorum similis est

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

4 * اردد عينيك من مقابلتي فهما قد طيراني * شعرك كقطعان المعزى الطاهر من
5 جلعاد * اسنانك كالقطعان المجزوزة التي قد صعدت من الاستحمام * التي كلها ذوات توام
6 وليست فيها ثكلى * شفتاك كالخيط القرمزي * وكلامك لذيذ بهي * وجنتاك ككسر
7 الرمانة سوى جمال سكوتك * الملكات هي ستون * والسريات ثمانون * والشواب هي لا عدد
8 لهن كثير * حمامتي وكاملتي واحدة هي * واحدة هي لامها * منتخبة هي لمن ولدها *
9 البنات ابصرنها وطوبنها * وراتها الملكات والسريات فسبحنها * من هذه المستشرفة كمطلع
10 الصبح * جميلة كالقمر * منتخبة كالشمس * مخوفة كالصفوف المرتبة * في بستان الجوز
انحدرت لانظر الى غلة الوادي * لابصر ان كان الكرم قد ازهر * قد ازهر الرمان * هناك
11 12 ادفع اليك ثديي * وما عرفت نفسي جعلتني مركبة عميناداب * ارجعي ايتها السومانية *
ارجعي ارجعي فننظر اليك *

* الفصل السابع *

1 ماذا رايتم في السومانية المقبلة كصفوف العساكر * خطوتك بهية في احذية بنات ناداب *
2 انتظام اجزاء فخذيك يضاهي قلائد الجواهر من اعمال يدي الصانع * سرتك كاس مخروطة
3 لن يعوزها ممزوجا جوفك عرمة حنطة مسيجة بالسوسن * ثدياك كالخشفي توم الغزالة *

Deflecte oculos tuos ex adverso mei, quo- 4
niam ipsi me jam abalienârunt. Capilli
tui sunt similes gregibus caprarum prod-
euntium è Galaad. Dentes tui similes 5
gregibus tonsis qui ascenderunt è lotione,
quorum oves universæ gemelliparæ, nec
est inter eas orba. Labia tua sunt vel- 6
uti filum coccineum, & sermo tuus ju-
cundus ac decorus. Genæ tuæ velut cor-
tex malogranati, præter gratiam silentii
tui. Reginæ sunt sexaginta, & concu- 7
binæ octoginta, & puellæ plurimæ absque
numero. Columba mea & perfecta mea 8
una est, una est matri suæ, electa est a-
pud eam quæ genuit illam. Filiæ viden-
tes eam, beârunt illam: & reginæ at-
que concubinæ eam conspicatæ, laudâ-
runt eam. Quæ est ista prospectans vel- 9
ut ortus auroræ, pulchra ut luna, e-
lecta ut sol, formidabilis ut acies in-
structæ? Ad hortum nucum descendi 10
ut considerarem fruges vallis, ut vi-
derem num vinea jam floruisset, jam
floruissent malogranata: illic præbebo
tibi ubera mea. At nescivi: anima 11
mea posuit me currum Amminadab. Re- 12
vertere O Sumanitis, revertere, reverte-
re, ut te spectemus.

CAP. VII.

Quid vidistis in Sumanitide venienti
ut acies exercituum? Gressus tuus de- 1
corus est in calceamentis filiarum Na-
dab. Structura partium femorum tuorum
similis est torquibus gemmeis fabrefactis
operâ manuum artificis. Umbilicus tuus 2
calix tornatilis, vino temperato haud in-
digens. Venter tuus acervus frumenti
circumseptus liliis. Geminæ tuæ mam- 3
mæ ut hinnuli gemelli cervæ.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܦܪܥܬ ܓܦܬܐ. ܐܘ ܐܢ ܦܪܚܘ ܪܘܡܢܐ. * ܠܐ ܝܕܥܬ ܢܦܫܝ. ܣܡܬܢܝ ܒܡܪܟܒܬܐ ܕܥܡܐ
ܡܛܝܒܐ. * ܗܦܘܟܝ ܗܦܘܟܝ ܫܝܠܘܡܝܬܐ. ܗܦܘܟܝ ܗܦܘܟܝ ܘܢܚܙܐ ܒܟܝ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *
ܡܢܐ ܚܙܝܬܘܢ ܒܫܝܠܘܡܝܬܐ ܕܢܚܬܐ ܐܝܟ ܚܕܘܬܐ. ܘܐܝܟ ܚܕܘܬܐ ܕܡܫܪܝܬܐ. * ܡܐ ܫܦܝܪ
ܗܘܝ ܪܓܠܝܟܝ ܒܡܣܐܢܐ. ܒܪܬ ܡܛܝܒܐ. ܘܐܣܟܡܐ ܕܥܛܡܝܟܝ ܐܝܟ ܫܪܝܬܐ. ܥܒܕ ܐܝܕܝ ܐܘܡܢܐ
ܫܪܟܝ * ܐܓܢܐ ܕܡܚܪܛܐ. ܕܠܐ ܚܣܝܪ ܡܢܗ ܡܙܓܐ. ܟܪܣܟܝ ܟܪܘܝܐ ܕܚܛܐ. ܕܣܝܓܐ
ܒܫܘܫܢܐ. * ܬܪܝܢ ܬܕܝܟܝ ܐܝܟ ܬܪܝܢ ܥܘܙܠܐ ܬܐܡܐ ܕܪܥܝܢ ܒܫܘܫܢܐ.

germinâsset vitis, & num floruissent malogranata.
Nescivit anima mea, posuit me in curru 11
populi parati. Revertere, revertere Silomitis, 12
revertere, revertere, & intuebimur te.

CAP. VII.

Quid spectabitis in Silomitide quæ descendit
sicut chorus, et *quidem* ut chorus castrorū?
Quàm pulchri fuerunt pedes tui in calceis, filia 1
parati! & forma femorū tuorum ut monilia,
opus manuum artificis. Umbilicus tuus lagena 2
rotunda, in qua non deest *vinum* mixtū. Venter
tuus acervus tritici vallatus liliis. Duo 3
ubera tua similia sunt duobus hinnulis gemellis
capreolorum pascentibus inter lilia.

שיר השירים : ח

tui oculi *eboris* turris ſicut tuum Collum
4 צוארך כמגדל השן עיניך
filiæ portam *ſuper*, Cheſbon in piſcinæ
ברכות בחשבון על שער בת
, Lebanon turris ſicut *tuus naſus*: magnatum
רבים אפך כמגדל הלבנון
tuum Caput .Dammeſec *facies* ſpeculans
5 צופה פני דמשק : ראשך
tui capitis coma & , Carmel veluti te ſup
עליך ככרמל ודלת ראשך
.canalibus in ligatus rex :purpura ſicut
כארגמן מלך אסור ברהטים:
fuiſti jucunda quàm & ,pulchruiſti Quàm
6 מה יפית ומה נעמת
tua ſtatura Iſta ! deliciis in amor
7 אהבה בתענוגים : זאת קומתך
tua ubera & , palmæ eſt aſſimilata
דמתה לתמר ושדיך
Aſcendam , Dixi .botris
8 לאשכלות : אמרתי אעלה
: ejus ramos *in* apprehendam ,palmam in
בתמר אחזה בסנסניו
botri ſicut tua ubera nunc erunt &
ויהיו נא שדיך כאשכלות
.malorum ſicut ,*tuæ naris* odor & ,vitis
הגפן וריח אפך כתפוחים :
vadens optimũ vinũ ſicut tuũ palatũ Et
9 וחכך כיין הטוב הולך
loqui faciẽs;*rectitudines ad*,meũ dilectũ ad
לדודי למישרים דובב
, mei dilecti Ego .dormientium labia
10 שפתי ישנים : אני לדודי
,mi dilecte Veni.ej[9] deſideriũ me *ſuper* &
11 ועלי תשוקתו : לכה דודי
commoremur , agrum in egrediamur
נצא השדה נלינה
, vineas ad *ſurgamus Manè* .villis in
12 בכפרים : נשכימה לכרמים
ſe aperuerit ,vitis *gemmuerit* an videam[9]
נראה אם פרחה הגפן פתח
ibi : punica mala *floruerint* ,parva uva
הסמדר הנצו הרמונים שם
Mandragoræ .tibi meos amores dabo
13 אתן את דדי לך : הדודאים
noſtris *oſtiis* *ſuper* & , odorem dederunt
נתנו ריח ועל פתחינו
,vetera etiam , nova , *delicata* omnia
כל מגדים חדשים גם ישנים
.tibi abſcondi ,mi dilecte
דודי צפנתי לך :

CAP. VIII. ח

ubera ſugentẽ,mihi fratrẽ ut te det Quis
1 מי יתנך כאח לי יונק שדי
,*platea in* te inveniam ? meæ matris
אמי אמצאך בחוץ
.me contemnant non *etiam*,te oſculer
אשקך גם לא יבוזו לי :
domum ad te faciam venire ,te Ducam
2 אנהגך אביאך אל בית
te faciam bibere : me docebis ,meæ matris
אמי תלמדני אשקך
dulci vino de , *conditura* vino de
מיין הרקח מעסים
ſub ejus Læva .mei granati mali
3 רמני : שמאלו תחת
.me amplexabitur illi[9] dextera &,meo capite
ראשי וימינו תחבקני :

תרגום TARGUM.

4 צוארך ואב בית דינא דדאן דיניך חסין על עמא לכפתא יתהון
ולמנגד מן די יתחיב בדינא לנגדא כשלמה מלכא דעבד מגדלא
דשן דפיל וכבש ית עמא בית ישראל ואהדר יתהון למרי עלמא
ספריך מלין חוכמתא כפרקטינין דמיא וידעין לממני חושבני
עבורין ומעברין שנין וקבעין רישי ירחין ורישי שנין בתרע בית
סנהדרין רבא ורב בית אבא לבית יהודה דמי לדוד מלכא
דבנא מצדתא דציון די מתקרי מגדלא דלבנן דכל מן דיקום
5 עלוהי יכיל לממני כל מגדלין די בדמשק : ראשך מלכא דאתמני
עלך רישא צדיקא כאליהו נביא דקני קנאתא למרי שמיא וקטל
ית נביאי שקרא בטורא דכרמל ואתיב ית עמא בית ישראל
לדחלתא דיי אלהיא ודלת עמא די אזלין ברישא מכא על די אנון
מסכנין עתידין למלבש ארגונא היכמה די לבש דניאל בקרתא
דבבל ומרדכי בשושן בגין זכותא דאברהם דאמליך מן קדמת
דנא למרי עלמא ובצדקתא דיצחק דכפתיה אבוהי למקרביה
6 ובחסדותא דיעקב דקלף על חוטריא ברהטיא : מה אמר מלכא
שלמה כמה יאה אנת כנישתא דישראל בזמן די תסבולי עליך ית
ניר מלכותי בעדן די אנא מוכח יתיך ביסורין על חוביך ואנת
7 מקבלא יתהון ברחים דמין באנפיך כתפנוקין : זאת ובעדן די
פרסין כהניך ידיהון בצלו ומברכין לאחיהון בית ישראל דדמין
ארבעת ידיהון מתפרשין כלולבי דתמר וקומתהון כדקלא
וקהליך קימין אפין באפין כל קבל כהניא ואפיהון כבישן לארעא
8 כאותכלא דענבין : אמרתי אמר יי במימריה אסק ואנסיה
לדניאל ואחזי אי כהל למקם בנסיונא הדא היכמה דקם אברהם
דדמי ללולבא בעסרא נסין ובחן אף אנא לחנניה מישאל ועזריה
אי כהלין למקם בנסיוניהון אפרוק בדיל זכותהון לעמא בית
ישראל דמתילן לאתכלין דענבין ושומהון דדניאל חנניא מישאל
ועזריה אשתמע בכל ארעא וריחיהון יהי נדיף כריחא דתפוחין
9 דגנתא דעדן : וחכך אמר דניאל וחברוהי קבלא נקבל עלנא
גזירת מימרא דיי היכמה די קבל עליה אברהם אבונא דמתיל
לחמר עתיק ונהך באורחן דתקנן קדמוהי היכמה דאזלו אליהו
ואלישע נביאיא די בזכותהון קמו מתיא דדמין לגבר דדמיך
וכיחזקאל בר בוזי כהנא דמנבואת פומיה אתערו דמכי מיתיא
10 די בבקעת דורא : אני אמרת ירושלם כל זמן די אנא מהלכא
באורחא דמרי עלמא משרי שכנתיה ביני ועלי מתויה ובעדן די
אנא סטיא מן אורחתיה מסלק שכנתיה מביני ומטלטל יתי ביני
11 עממיא ואנון שלטין בי כגבר דשליט באנתתיה : לכה כד חבו
עמא בית ישראל אגלי יי יתהון בארעא דשעיר חקלי אדום אמרת
כנשתא דישראל בבעו מנך רבון כל עלמא קבל צלותי די אנא
12 מצלא קדמך בקרוי גלותא ובפלכי עממיא : נשכימה אמרין
בני ישראל אלין לאלין נקדים בצפרא ונהך לבית כנשתא ולבית
מדרשא ונבקר בספרא דאוריתא ונחמי אי מטא זמן פירקנא
דעמא בית ישראל דמתילין לגופנא לאתפרקא מגלותהון ונשאל
לחכימיא אתגלי קדם יי זכותא דצדיקיא דמלין פקודיא כרמנא
אי מטא קצא למסק לירושלם למתן תמן שבח לאלהא דשמיא
13 ולמקרב עלון ונכסת קודשין : הדודאים וכד יהא רעוא מן קדם
יי למפרק ית עמיה מן גלותא יתאמר למלכא משיחא כבר
שלים קץ גלותא וזכות צדיקיא אתבסם קדמי כריח בלסמון
וחכימי דריא קביען על תרעי מדרשא עסקין בפתגמי ספריא
ופתגמי אוריתא כען קום קבל מלכותא די גנוית לך :

ח

1 מי בההיא זמנא אתגלי מלכא משיחא לכנשתא דישראל ויימרון ליה בני ישראל אתא תהא עמנא
לאח ונסק לירושלם ונהי ינקין עמך טעמי אוריתא היכמה דיניק ינקא בתדיא דאמיה דכל
זמן דהויתי מטלטלא לברא מן ארעי כד הויתי דכירא ית שום אלהא רבא ומסירא נפשי על
2 אלהותיה אף עממי ארעא לא הוו מבזין לי : אנהגך אדברנך מלכא משיחא ואעלנך לבית
מוקדשי ותאלף יתי למדחל מן קדם יי ולמהך באורחתיה ותמן נסעוד סעודתא [דלויתן]
ונשתי חמר עתיק דאצטנע בענבוהי מן יומא דאתברי עלמא ומרמוני פרי דאתעתדו לצדיקיא
3 בגנתא דעדן : שמאלו אמרת כנשתא דישראל אנא בחרתא מכל עממיא די אנא קטרא
תפלין ביד שמאלי וברישי וקביעא מזוותא בסטר ימינא דדשי תולתא לקבל תיקי דלית
רשו למזיקא לחבלא בי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latin

Judex quoque tuus qui judicat judicium tuum, fortis eſt ſup
populum, ut alliget eos, & ut trahat eos, qui condemnat
in judicio, ad carcerem, ſicut Salomon rex, qui fecit tu
eburneam, & ſubjecit populum domus Iſrael; & conve
eos ad dominatorem ſeculi: ſcribæ tui pleni ſunt ſapientia
ut piſcinæ aquarum; & ſciunt conſtituere rationes emboli
rum, & annos intercalant, & ſignant principia annorum
menſium, in porta domus conſilii magni: & princeps fa
arum domus Juda ſimilis eſt David regi, qui ædificavit a
Sion, quæ vocatur Turris Libani; quoniam omnis qui
rit in ea, poteſt numerare omnes turres quæ ſunt in Dam
Rex qui conſtitutus eſt ſuper te in principem, juſtus e
Helias propheta, qui zelo zelatus eſt pro Domino cœli
occîdit prophetas falſos in monte Carmelo, & convert
pulum domus Iſrael ad timorem Domini Dei: & paup
populi qui ambulabant apud principem hinc & inde, eo q
egeni ſunt, futurum eſt ut induantur purpura, ſicut indut
Daniel in civitate Babylonis, & Mardochæus in Suſis,
pter meritum Abrahæ, quem regem conſtituit ab initio
minatorem ſeculi; & propter juſtitiam Iſaac, quem ligavi
ter ejus ut offerret eum [*in holocauſtum*,] & propter be
tatem Jaacob, qui decorticavit virgas, [*& poſuit eas*]
nalibus. Dixit Salomon rex: Quàm pulcher es cœtus I
in tempore quo tu portas ſuper te jugum regni mei, in te
re quo ego corripio te infirmitatibus propter peccata tu
tu ſuſcipis eas in charitate, & videntur tibi quaſi delitiæ
in tempore quo Sacerdotes tui extendunt manus ſuas in
one, & benedicunt fratribus ſuis domui Iſrael, ſimiles
giti manus eorum extenſi ramis palmarum, & ſtatura eo
ſicut palma, & eccleſia tua ſtat facie ad faciem contra S
dotes, & facies eorum inclinatæ ſunt in terram ſicut bo
rum. Dixit Dñs in verbo ſuo: Aſcendam & tentabo D
lem, & videbo ſi poteſt ſtare in tentatione hac ſicu
Abraham, qui ſimilis fuit ramo [*palmarum, quem proba*
cem tentationibus: & probabo ego quoq; Ananiam, M
& Azariam: & ſi poſſunt ſtare in tentationibus ſuis, re
propter merita eorum populum domus Iſrael, qui comp
eſt botris uvarum: & nomen Daniel, Ananiæ, Mizael &
riæ audietur in univerſa terra, & odor corũ erit fragra
odor pomorum paradiſi voluptatis. Dixit Daniel & ſoc
Suſcipiendo ſuſcipiemus ſuper nos decretum verbi Dñi
ſuſcepit ſuper ſe Abraham pater noſter, qui comparatu
no veteri; & ambulabimus in viis quæ rectæ ſunt co
ſicut ambulaverunt Helias & Heliſæus prophetæ, per
merita ſurrexerunt mortui, qui ſimiles ſunt viro dormi
ſicut Ezechiel filius Buzi Sacerdos, quia in propheti
ſuſcitati ſunt dormientes mortui qui erant in campo
Dixit Jeruſalem: In omni tempore quo ego ambula
dominatoris ſeculi, habitare facit majeſtatem ſuam
mei, & ad me eſt deſiderium ejus: & in tempore
declino à viis ejus, aufert majeſtatem ſuam à me, &
me inter populos: & ipſi dominantur in me ſicut vi
minatur uxori ſuæ. Quando peccaverunt populus do
rael, tranſmigrare eos fecit Dñs in terram Seir regio
meæ: dixit cœtus Iſrael, Obſecro te dominator to
ſuſcipe orationem meam, qua ego oro coram te in
tranſmigrationis meæ & provinciis populorum. Dix
Iſrael ad invicem: Surgamus manè, & eamus ad
eccleſiæ & ad domum examinis, & inveſtigemus in
gis, & videamus an pervenerit tempus redemptio
domus Iſrael, qui comparatus eſt viti, ut redimatur
vitate ſua: & interrogemus ſapientes an manifeſta
Dño juſtitia juſtorum, qui pleni ſunt præceptis ſicut
nata, & an pervenerit finis ut aſcendamus in Jeruſalem
mus ibi laudem Deo cœli, & offeramus holocauſta &
ſanctificatas. Et cùm fuerit voluntas à facie Dñi
populum ſuum de captivitate, dicetur regi Meſſiæ:
pletus eſt finis captivitatis, & meritum juſtorum ſua
ram me ſicut odor balſami: & ſapientes generatio
ſtituti in portis gymnaſii, operam dant verbis Scri
verbis Legis: nunc ſurge ſuſcipe regnum quod re

CAP. VIII.

ET in tempore illo revelabitur rex Meſſias c
& dicent ei filii Iſrael: Veni, eſto frater noſte
damus in Jeruſalem, & ſugemus tecum ſentent
ſicut ſugit infans ubera matris ſuæ: quia omni tem
eram extorris extra terram meam, cùm recorda
nis Dei magni, & tradebam animam meam pr
tatem ejus, etiam populi terrarum non deſpic
Ducam te rex Meſſias & introducam te in do
ctuarii mei, & docebis me timere à facie D
ambulare in viis ejus, & ibi prandebimus pr
viathan, & bibemus vinum vetus quod re
in uvis ſuis à die quo creatum eſt ſeculum, &
nicis quæ præparata ſunt juſtis in paradiſo
Dixit cœtus Iſrael: Ego electa ſum ſupra om
los, quia ego alligo frontalia manui ſiniſtræ
capiti; chartuláque infixa eſt lateri dextero p
cujus tertia pars reſpicit thalamum meum, u
ant licentiam dæmones ad nocendum mihi.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܨܘܪܟܝ. ܐܝܟ ܡܓܕܠܐ ܕܫܢܐ. ܥܝܢܝܟܝ ܐܝܟ ܡܥܝܢܘܬܐ ܕܚܫܒܘܢ. ܒܬܪܥܐ ܕܒܪܬ ܣܓܝܐܐ. ܢܚܝܪܟܝ 4
ܕܚܐܪ ܠܐܦܝ ܕܪܡܣܘܩ. * ܪܝܫܟܝ ܥܠܝܟܝ. ܐܝܟ ܟܪܡܠܐ. 5
ܘܣܥܪܐ ܕܪܝܫܟܝ. ܐܝܟ ܐܪܓܘܢܐ ܕܡܠܟܐ ܕܐܣܝܪ ܒܪܗܛܐ. * ܡܐ ܫܦܝܪܬܝ. ܘܡܐ ܒܣܝܡܬܝ. ܚܘܒܐ 6

Collum tuum ſimile turri eburn
tui ſicut piſcinæ Heſbon ad po
multorum. Naſus tuus ſimilis
ni ſpectanti verſùs Damaſcum
um ſuper te ſimile eſt Carmelo
crines capitis tui, ſicut purpura
ta ſtadiis. Quàm pulchra es

Verſio VULG. LAT.

4 Collum tuũ ſicut turris eburnea. O-
culi tui ſicut piſcinæ in Heſebon, quæ
ſunt in porta filiæ multitudinis. Na-
ſus tuus ſicut turris Libani, quæ re-
5 ſpicit contra Damaſcum. Caput tuũ
ut Carmelus: & comæ capitis tui, ſic-
ut purpura regis vincta canalibus.
6 Quã pulchra es, & quã decora cha-
7 riſſima, in deliciis! Statura tua aſſimi-
lata eſt palmæ, & ubera tua botris.
8 Dixi: Aſcendã in palmã, & apprehen-
dã fruct⁹ ej⁹: & erunt ubera tua ſicut
botri vineæ: et odor oris tui ſicut ma-
9 lorũ. Guttur tuũ ſicut vinũ optimũ,
dignum dilecto meo ad potandũ, la-
biiſq; & dentib⁹ illi⁹ ad ruminandũ.
10 Ego dilecto meo, & ad me converſio
11 ejus. Veni, dilecte mi, egrediamur in
12 agrum, commoremur in villis. Mane
ſurgamus ad vineas, videamus ſi flo-
ruit vinea, ſi flores fruct⁹ parturiunt,
ſi floruerunt mala punica: ibi dabo ti-
13 bi ubera mea. Mandragoræ dederunt
odorem. In portis noſtris omnia po-
ma: nova & vetera, dilecte mi, ſer-
vavi tibi.

CAP. VIII.

1 Quis mihi det te fratrẽ meũ ſugẽ-
tem ubera matris meæ, ut inveniã te
foris, & deoſculer te, & jam me nemo
2 deſpiciat? Apprehendam te, & ducã
in domũ matris meæ: ibi me docebis,
& dabo tibi poculum ex vino condi-
to, & muſtum malorũ granatorũ me-
3 orum. Læva ejus ſub capite meo, &
dextera illius amplexabitur me.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

4 †(θ)Ὁ τράχηλός σου ὡς πύργος ἐλεφάντινος· †(ι)
οἱ ὀφθαλμοί σου ὡς λίμναι ἐν Ἐσεβὼν, †ἐν πύλαις
θυγατρὸς πολλῶν. †μυκτήρ σου, ὡς πύργος τοῦ Λι-
5 βάνου †σκοπεύων πρόσωπον Δαμασκοῦ. †Κεφαλή
σου ἐπὶ σὲ ὡς Κάρμηλος, †καὶ πλόκιον κεφαλῆς σου
ὡς πορφύρα· †βασιλεὺς δεδεμένος ἐν παραδρο-
6 μαῖς. †Τί ὡραιώθης, καὶ τί ἡδύνθης †ἀγάπη; ἐν
7 τρυφαῖς σου. †Τοῦτο μέγεθός σου (κ)ὡμοιώθης τῷ
8 φοίνικι, †καὶ οἱ μαστοί σου τοῖς βότρυσιν. †Εἶπα, Ἀ-
ναβήσομαι (λ)ἐπὶ τῷ φοίνικι, †κρατήσω τῶν ὕψεων
αὐτοῦ· καὶ ἔσονται δὴ μαστοί σου ὡς βότρυες τῆς ἀμπέ-
9 λου, †καὶ ὀσμὴ ῥινός σου ὡς μῆλα, †Καὶ ὁ λάρυγξ
σου ὡς οἶνος (μ)ὁ ἀγαθὸς, †πορευόμενος τῷ ἀδελ-
φιδῷ μου εἰς εὐθύτητα, †ἱκανούμενος (ν)χείλεσί μου
10 καὶ ὀδοῦσιν. †Ἐγὼ τῷ ἀδελφιδῷ μου, †καὶ ἐπ' ἐμὲ
11 ἡ ἐπιστροφὴ αὐτοῦ. †Ἐλθὲ ἀδελφιδέ μου, ἐξέλθω-
12 μεν εἰς ἀγρὸν, †αὐλισθῶμεν ἐν κώμαις. †Ὀρθρίσω-
μεν εἰς ἀμπελῶνας· †ἴδωμεν εἰ ἤνθησεν ἡ ἄμπελος,
†ἤνθησεν ὁ κυπρισμὸς, †ἤνθησαν αἱ ῥοαί· †ἐκεῖ
13 δώσω τοὺς μαστούς μου σοί. †Οἱ (ξ)μανδραγόραι ἔ-
δωκαν ὀσμὴν· †καὶ ἐπὶ θύραις (ο)ἡμῶν πάντα ἀκρό-
δρυα †νέα πρὸς παλαιὰ ἀδελφιδέ μου ἐτήρησά σοι.

ΚΕΦ. η'.

1 †Τίς δῴη σε ἀδελφιδέ μου θηλάζοντα μαστοὺς
μητρός μου; †εὑροῦσά σε ἔξω φιλήσω σε, †καί γε
2 οὐκ ἐξουδενώσουσί (α)μοι. †Παραλήψομαί σε, εἰσ-
άξω σε εἰς οἶκον μητρός μου †καὶ εἰς (β)ταμεῖον τῆς
συλλαβούσης με· †ποτιῶ σε ἀπὸ οἴνου τοῦ μυρεψι-
3 κοῦ, †ἀπὸ νάματος ῥοῶν μου. †Εὐώνυμος αὐτοῦ
ὑπὸ τὴν κεφαλήν μου, †(γ)καὶ ἡ δεξιὰ αὐτοῦ περι-
λήψεταί με.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp. & Æthiopice Tranſ. LAT.

Collum tuum, ſicut turris eburnea: 4
oculi tui, tanquam (f) ſtagna in Eſe-
bon in portis filiæ (g) multorum. Na-
ris tua, ſicut turris Libani proſpici-
ens faciẽ Damaſci. Caput tuum ſu- 5
per te, ſicut Carmelus, (h) & plexus
capitis tui, ſicut purpura. Rex liga-
tus in tranſcurſib⁹. Quàm pulchra, 6
& quàm ſuavis fact⁹ es, charitas,
(i) in deliciis tuis? Hæc (k)[c] ma- 7
gnitudo tua, ſimilis facta es palmæ;
et ubera tua botris. Dixi; Aſcendã in 8
palmã, tenebo (l) cacumina ejus: &
erunt nunc ubera tua, ſicut botri vi-
tis, & odor naſi tui, ſicut poma: Et 9
guttur tuum, ſicut vinũ bonũ, (m)
[d] vadens fraterno meo in rectitu-
dinem, (n) ſufficiens labiis meis, &
dentibus. Ego fraterno meo, et ſuper 10
me converſio ejus. Veni, [e] fraterne 11
mi, exeamus in agrũ, requieſcamus
[f] in caſtellis. Diluculò ſurgamus in 12
vineas: Videamus, ſi (o) floruit vi-
tis, [g] floruit propago, (p) floruerũt
mala punica. Ibi dabo ubera mea
tibi: Mandragoræ dederunt odorẽ. 13
[h] Et in oſtiis noſtris omnes nuces
novis ad veteres, fraterne mi, (q)
ſervavi tibi.

CAP. VIII.

Quis det te, (a)[a] fraterne mi, 1
lactentẽ ubera matris meæ? (b) In-
veniens te foris oſculabor te: (c) &
quidem non ſpernent me. Aſſumam 2
te, introducam te in domum matris
meæ, & in cubiculũ ejus, quæ con-
cepit (d) me. Potabo te de vino (e)
unguentato, [b] de latice malorum
punicorum meorum. [c] Leva ejus 3
ſub capite meo, & dextera illius
amplexabitur me.

Verſio ÆTHIOPICA.

ወክሳድኪ ፡ ከመ ፡ ማኅፈደ ፡ ቀርን ፡ ነገ ፡፡ አ 4
ዕይንትኪ ፡ ከመ ፡ መዕቁረት ፡ በአሴቦን ፡ በ
አናቅጽ ፡ ወለተ ፡ ብዙኃን ፡፡ አንፍኪ ፡ ይመስ
ል ፡ ከመ ፡ ማኅፈደ ፡ ሊባኖስ ፡፡ ዘይኔጽር ፡ መ
ንገለ ፡ ገጸ ፡ ደማስቆስ ፡፡=፡ ርእስኪ ፡ ዘዲቤ 5
ኪ ፡ ከመ ፡ ቀርሜሎስ ፡፡ ወጸፈር ፡ ርእስኪ ፡ ከ
መ ፡ ሜላት ፡፡ አሠረ ፡ ንጉሥ ፡ በረዊጽ ፡፡=፡
ጥቀ ፡ ሠናይኪ ፡ ወጥቀ ፡ አዳምኪ ፡፡ አፍቅሮ ፡ 6
ለፍግዕኪ ፡፡=፡ ዝቆመኪ ፡ ይመስል ፡ በቀል 7
ተ ፡፡=፡ ወአኃዝ ፡ መልዕልቶ ፡፡ ወጺና ፡ አን 8
ፍኪ ፡ ከመ ፡ ጺና ፡ ስኂን ፡፡ ወኮና ፡ አጥባትኪ ፡
ከመ ፡ አስከለ ፡ ወይን ፡፡ ወጺና ፡ አንፍኪ ፡ ከ
መ ፡ ጺና ፡ ስኂን ፡፡=፡ ወጕርዔከ ፡ ከመ ፡ ወ 9
ይን ፡ ሠናይ ፡፡ ወእንዘ ፡ የሐውር ፡ ወልድ ፡
እኁየ ፡፡ ወእንዘ ፡ ይደሉ ፡ ለከናፍርየ ፡ ወለ
ልሳንየ ፡፡=፡ አነ ፡ ለወልድ ፡ እኁየ ፡ ወኀቤ 10
የ ፡ ሚገብኦሙ ፡፡=፡ ነዐ ፡ ወልድ ፡ እኁየ ፡ 11
ንፃእ ፡ ሐቅለ ፡፡ ወናዕርፍ ፡ ውስተ ፡ አድያ
ም ፡፡=፡ ወንጊሠ ፡ ውስተ ፡ አዕጻደ ፡ ወ 12
ይን ፡፡ ንርአይ ፡ እመ ፡ ጸገየ ፡ ወይን ፡፡ ወለ
እመ ፡ ጸገየ ፡ ቆዕ ፡፡ ወለእመ ፡ ፈረየ ፡ ሮማ
ን ፡፡ በህየ ፡ እሁበከ ፡ ለጥባትየ ፡ ለከ ፡፡=፡
ዕንጕታት ፡ ወሀቡ ፡ ማዕዛ ፡፡ ወውስተ ፡ አ 13
ዕጻዲነ ፡ ኵሉ ፡ አቅማሕ ፡፡ ሐዲስ ፡ ሐዲ
ስ ፡ ወብሉይ ፡፡ ወልድ ፡ እኁየ ፡ አነ ፡ ዐቀብ
ኩ ፡ ለከ ፡፡=፡

CAP. VIII. መኑ ፡ ይሁበከ ፡ ወልድ ፡ እኁ 1
የ ፡ ትጥቡ ፡ አጥባተ ፡ እምየ ፡፡ ወረኪብየ ፡
በአፍአ ፡ እስዕመከ ፡፡ ወሊይሜንኑኒ ፡፡=፡
እነሥአከ ፡ ወአበውአከ ፡ ውስተ ፡ ቤተ ፡ እ 2
ምየ ፡፡ ወውስተ ፡ ውሳጥያቲሃ ፡ ለእንተ ፡ ሐ
ፀነተኒ ፡፡ ወአስትየከ ፡ እምርሒ ፡ እፈውየ ፡፡
ወእምስቴ ፡ ሮማንየ ፡፡=፡ የማኑ ፡ ተሐቅፈ 3
ኒ ፡ ወጸጋሙ ፡ ታሕተ ፡ ርእስየ ፡፡=፡

MS.A. (θ) Τράχηλός (ι) ὀφθαλμοί (κ) ὡμοιώθη (λ) ἐν τῷ φοίνικι, (μ) ἀγαθὸς, (ν) ἐν χείλεσίν μου (ξ) *μανδραγόρες (ο) *ὑμῶν
Κεφ. η'. MS.A. (α) με. (β) ταμιεῖον (γ) καὶ δεξιὰ

INTERP. ÆTHIOP. [c] ſtatura tua, ſimilis facta eſt palmæ.... Et tenebo cacumina ejus: & odor naſi tui, ſicut odor thuris. Et facta ſunt ubera tua, ſicut botri vitis: & odor naſi tui, ſicut odor thuris: & guttur tuum, [d] & vadens nepoti meo, & paratum labiis meis & linguæ meæ. Ego nepoti meo, [e] nepos mi, [f] vicinia. [g] & ſi floruit cyprus, & an fructificârunt mala [h] Et in atriis noſtris omnia poma nova juxtà ac vetera, nepos mi, ipſe ſervavi tibi.
CAP. VIII. [a] nepos mi, [b] de potu [c] Dextera illius amplexabitur me, & læva ejus ſub capiti meo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

4 * عنقك كبرج العاج * عيناك كالغدران التي باسعون في ابواب بيت المدن * انفك كبرج
5 لبنان يراصد وجه دمسق * راسك عليك كجبل الكرمل * وضفر راسك كبرفير ملك مربوط
6 7 في الملاعب * ما احسن بهاءك وما الذك * ايتها المحبة في نعماتك * فعظم سانك هذا شبيه
8 بالنخلة * وثدياك تضاهي اعذاقها * قلت لاصعدن في النخلة ولامسكن معاليها * فتكون
9 ثدياك كعناقيد الكرمة * ونسيم انفك كنسيم التفاحة * وحنكك كنسيم النبيذ الجيد *
10 ابن اخي ذاهب الي الاستقامة * مجريا بسعي واسناني * انا عند ابن اخي * والي عندي تكون
11 12 عودته * يا ابن اخي هلم نخرج الي الحقل * ونستوطن في الضياع * ونبتكر الي الكروم *
13 وننظر ان كان الكرم قد ازهر * ازهر الزهر ازهرت الجبال * هناك ادفع اليك ثديي * اللفاح
منحل نسمه * وكافة اثمار الشجر المباركة على ابوابنا * يا ابن اخي قد حفظت لك الحديثة
1 بازاء العتيقة * الفصل الثامن * من ذا يعطيك يا ابن اخي
2 ان ترضع ثديي امي * اذ وجدتك خارجا قبلتك * ومع ذاك فلم يزدروا بي * اتناولك
فادخلك الي بيت امي والي خزانة من حبلت بي * فاسقيك من الخمر الطيب ومن ماء
3 رماني * يسارة تحت راسي * ويمينه تنعطف علي *

Collum tuum ſicut turris eburnea. Oculi 4
tui veluti viridaria quæ ſunt in Eſepon
ad portas filiæ urbium. Naſus tuus ut
turris Libani, quæ ſpectat verſùs Dama-
ſcum. Caput tuum craſſum eſt ut mons 5
Carmelus. Et comæ capitis tui veluti pur-
pura regis ligata in foris luſoriis. Quàm 6
pulcher eſt decor tuus, & quàm jucunda
es O dilecta, in delitiis tuis! Tanta ſa- 7
nè tua magnitudo ſimilis eſt palmæ, &
mammæ tuæ botros ejus referunt. Dixi, 8
Conſcendam equidem in palmam, & api-
ces ejus prehendam: eruntque mammæ
tuæ ſicut botri vitis, & odor naſi tui
velut odor pomi, Et palatum tuum quaſi 9
odor vini optimi. Nepos meus pergit ad
rectitudinem, vim faciens in labia mea
& dentes meos. Ego ſum apud nepotem 10
meum, & ad me erit reverſio ejus. O mi 11
nepos, veni, egrediamur ad agrum, & in
ruribus moremur; Manéque ſurgentes 12
ad vineas, videamus num jam floruerit
vinea, flores eruperint, floruerint montes.
Illic præbebo tibi mammas meas. Man- 13
dragoras propter fragrantiam ſuam, o-
mnéſque fructus arborum januis noſtris
accumbentium O mi nepos, repoſui tibi,
recentes æquè ac veteres.

CAP. VIII.

O Quis tibi det mi nepos, ut ſugas 1
mammas matris meæ? Cum te foris in-
venero, deoſculabor te, nec me tamen de-
ſpicient. Prehendam te, introducámque 2
in domum matris meæ, & in promtuari-
um ejus quæ me concepit, téque potabo vi-
no ſuaviſſimo & aquâ granatorum meo-
rum. Siniſtra ejus ſub capite meo, & 3
dextera ipſius flectitur ſuper me.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

7 8 ܚܒܝܒܬܐ ܒܪܬ ܦܘܢܩܐ * ܘܗܕܐ ܩܘܡܬܟܝ ܕܡܝܐ ܠܕܩܠܐ. ܘܬܕܝܟܝ ܠܣܓܘܠܐ * ܐܡܪܬ
ܐܣܩ ܒܕܩܠܐ. ܘܐܚܘܕ ܒܣܘܟܝܗ̇. ܘܢܗܘܘܢ ܬܕܝܟܝ ܐܝܟ ܣܓܘܠܐ ܕܓܦܬܐ. ܘܪܝܚ
9 ܐܦܝܟܝ ܐܝܟ ܚܙܘܪܐ. * ܘܚܢܟܝܟܝ ܐܝܟ ܚܡܪܐ ܛܒܐ. ܕܐܙܠ ܠܚܒܝܒܝ ܠܬܪܝܨܘܬܐ. ܘܡܕܒܪ ܣܦܘܬܝ
10 11 ܘܫܢܝ. * ܐܢܐ ܠܚܒܝܒܝ ܘܥܠܝ ܦܢܝܬܗ. * ܬܐ ܚܒܝܒܝ ܢܦܘܩ ܠܚܩܠܐ. ܢܒܘܬ ܒܟܦܪܐ. * ܘܢܩܕܡ
12 ܠܟܪܡܐ. ܢܚܙܐ ܐܢ ܦܪܥܬ ܓܦܬܐ. ܘܦܬܚܘ ܣܡܕܪܐ. ܘܦܪܥܘ ܪܡܘܢܐ. ܬܡܢ ܐܬܠ ܠܟ ܬܕܝ
13 ܝ. ܝܒܪܘܚܐ ܝܗܒܘ ܪܝܚܐ. * ܘܥܠ ܬܪܥܝܢ ܟܠ ܦܐܪܐ. ܚܕܬܐ ܘܥܬܝܩܐ. ܚܒܝܒܝ ܢܛܪܬ ܠܟ
1 * ܩܦܠܐܘܢ ܚ * ܡܢ ܢܬܠܟ ܐܝܟ ܐܚܐ ܠܝ ܕܝܢܩ
2 ܬܕܝܐ ܕܐܡܝ. ܘܐܫܟܚܟ ܒܫܘܩܐ ܘܐܢܫܩܟ. ܘܐܦ ܠܐ ܢܒܣܘܢ ܒܝ. * ܐܕܒܪܟ ܘܐܥܠܟ
ܠܒܝܬ ܐܡܝ. ܘܠܬܘܢܐ ܕܝܠܕܬܢܝ. ܘܐܫܩܝܟ ܚܡܪܐ ܒܣܝܡܐ. ܘܡܢ ܥܨܝܪ

dilecta, filia delitiarũ! Cæterùm hæc ſtatura 7
tua ſimilis eſt palmæ, & ubera tua botris. Dixi. 8
Conſcendã palmã, et apprehendã ramos ejus:
eruntq; ubera tua ut botri vitis, et odor vultûs
tui ut pomorũ, Et palatũ tuũ ut vinũ optimũ, 9
utile patruo meo ad rectitudinẽ, agitans labia
mea & dentes meos. Ego patruo meo, ad me 10
regreſſus ej⁹. Veni patrue mi, exeam⁹ ad agrũ, 11
pernoctemus in rure; Et mane adeamus vineã, 12
videamus num germinarit vitis, flores emer-
ſerint, & floruerint malogranata: ibi dabo
tibi ubera mea. Mandragoræ ediderunt odo- 13
rem, et propè januas noſtras omnigena poma,
recentia ac vetera, mi patrue, recondi tibi.

CAP. VIII.

Quis te det fratrem mihi (lactârunt ubera 1
mea agnos meos) inveniam te in foro, te
oſculer, nec me contemnant. Ducam te, & 2
introducam in domum matris meæ, & in cu-
biculum genitricis meæ: potabo te ex vino
meo ſuaviſſimo, & ex dulcedine malogranatorum meorum. Læva ejus ſub capite meo, & dextera ejus amplectetur me. 3

, Jerusalaim filiæ vos Adjuravi
השבעתי אתכם בנות ירושלם 4
faciatis evigilare cur & , suscitabitis cur
מה תעירו ומה תעררו את
ista Quæ ? voluerit donec amorem
האהבה עד שתחפץ : מי זאת 5
sese adjungens , deserto de ascendens
עלה מן המדבר מתרפקת
malo sub ? suum dilectum super
על דודה תחת התפוח
,tua mater te concepit ibi , te excitavi
עוררתיך שמה חבלתך אמך
me Pone .te genuit parturiit ibi
שמה חבלה ילדתך : שימני 6
signaculum ut,tuū cor super signaculū ut
כחותם על לבך כחותם
mors ut fortis quia,tuum brachium super
על זרועך כי עזה כמות
infernus sicut dura , dilectio
אהבה קשה כשאול
, ignis prunæ ejus prunæ : zelotypia
קנאה רשפיה רשפי אש
non multæ Aquæ .Domini flamma
שלהבתיה : מים רבים לא 7
,dilectionem extinguere poterunt
יוכלו לכבות את האהבה
si : illam inundabunt non flumina &
ונהרות לא ישטפוה אם
suæ dom⁹ substantiā omnem vir dederit
יתן איש את כל הון ביתו
.eum contēnent contēnendo,dilectione in
באהבה בוז יבוזו לו :
: ei non ubera &,parvula nobis Soror
אחות לנו קטנה ושדים אין לה 8
die in nostræ sorori faciemus quid
מה נעשה לאחתנו ביום
, ipsa murus Si ? ea in sermo fiet qua
שידבר בה : אם חומה היא 9
si & : argenti palatium eā sup ædificem⁹
נבנה עליה טירת כסף ואם
.cedri tabula eā super muniam⁹ ,ipsa janua
דלת היא נצור עליה לוח ארז :
: turres sicut mea ubera & , murus Ego
אני חומה ושדי כמגדלות 10
reperiens sicut ejus oculis in fui tunc
אז הייתי בעיניו כמוצאת
Selomoh ipsi fuit Vinea .pacem
שלום : כרם היה לשלמה 11
vineam tradidit,Hamon Bahal in
בבעל המון נתן את הכרם
ej⁹ fructu in adduceret vir : custodibus
לנטרים איש יבא בפריו
, mihi quæ mea Vinea .argenteos mille
אלף כסף : כרמי שלי 12
, Selomoh tibi mille : meas facies ad
לפני האלף לך שלמה
.ejus fructum custodientibus ducenti &
ומאתים לנטרים את פריו :
socii , hortis in habitans O
הישבת בגנים חברים 13
.me fac audire,tuam vocem ad attendentes
מקשיבים לקולך השמיעני :
tibi assimilare & , mi dilecte Fuge
ברח דודי ודמה לך 14
cervorum hinnulo vel , capreæ
לצבי או לעפר האילים
.aromatum montes super
על הרי בשמים :

TARGUM. תרגום

4 השבעתי יאמר מלכא משיחא משביע אנא עליכון עמי בית ישראל מה דין אתון מתגרין בעמי ארעא למפק מן גלותא ומה דין אתון מרדין בחילותיה דגוג ומגוג אתעכיבו פון זעיר עד דישיצון עממיא די עלו לאגחא קרבא לירושלם ובתר כן ידכר לכון מרי עלמא רחמי צדיקיא ויהא רעוא מן קדמוהי למפרקכון:

5 מי אמר שלמה נביא כד יחון מיתיא עתיד לאתבזעא טור משחא וכל מיתיא דישראל עתידין למפק מתחותוהי ואפילו צדיקיא דמיתו בגלותא עתידין למיתי אורח כוכיא מלרע לארעא ונפקין מן תחות טור משחא ורשיעיא דמיתו ואתקברו בארעא דישראל עתידין למהויהון רמין היכמה דרמי גבר אבנא באלא בכן יימרון כל דירי ארעא מה הוה זכותא דעמא הדין דסלקא מן ארעא רבא רבבן כיומא דסלקת מן מדברא לארעא דישראל ומתפנקין על רחמי מרהא כיומא דאתחמת תחות טורא דסיני לקבל ית אוריתא ובהיא שעתא עתידא ציון דהיא אמן דישראל למילד ית בנהא וירושלם לקבלא ית בני גלותא:

6 שימני אמרין בני ישראל ביומא ההוא לרבוניהון בבעו מנך שוי יתן כגלוף דעזקא על לבך כגלוף דעזקא על אדרעך דלא נוסיף עוד למהוי גלין ארום תקיפא כמותא אהבת אלהותך וחסינא כגהנם קנאתא דעמא מקנאן לן ודבבו דנטרין לן דמיא לגומרין דאשא דגהנם דברא יתיה יי ביומא תנינא לברית עלמא לאוקדא ביה פלחי פולחנא נוכראה:

7 מים אמר מרי עלמא לעמיה בית ישראל אלולי מתכנשין כל עממיא דמתילן למוי דימא דאנון סגיאין לא יכלין למטפי ית רחמי מנך ואי מתכנפין כל מלכי ארעא דמתילן למוי דנהרא דנגרא בתקוף לא יכלין לממחי יתיך מעלמא ואלולי יהב גבר כל ממון ביתיה למקני חוכמתא בגלותא אנא מהדר ליה כפיל לעלמא דאתי וכל בזתא דיבזון מן משריתיה דגוג יהי די ליה:

8 אחות בעדנא ההיא יימרון מלאכי שמיא אלן לאלן אומא חדא אית לן בארעא וקלילן זכותהא ומלכין ושלטונין לית לה למפק לאגחא קרבא עם משריתה דגוג מה נעביד לאחתנא ביומא דמלילו אומיא למסק עלהא לקרבא:

9 אם יימר מיכאל רבהון דישראל אם היא מתעתדא כאושא ביני עממיא ויהבא כספא למקני יחוד שמיה דמרי עלמא נהי אנא ואתון עם ספריהון סחרין לה כנדבכין דכספא ולית רשו לעממיא למשלט בה היכמה דלית רשו לזחלא למשלט בכספא ואפילו אי מסכינא היא מן פקודיא נבעי רחמין עלהא קדם יי וידכר לה זכות אוריתא דעסקן בידה ינקיא דכתיבא על לוחא דלבא ומתעתדא לקבל אומיא כארזא:

10 אני מתיבא כנשתא דישראל ואמרת אנא תקיפא בפתגמי אוריתא כשורא ובנוי חסינין כמגדלא ובההיא זמנא תהי כנשתא דישראל משכחא רחמין בעיני מרהא ויהון שאלין בשלמא כל דירי ארעא:

11 כרם אומא חדא סלקת בעדביה דמרי עלמא דשלמא עמיה דהיא מתילא לכרמא אותיב יתה בירושלם ומסר יתה ביד מלכיא דבית דוד דיהון נטרין יתה היכמה דאריסא נטר לכרמא בתר דמית שלמה מלכא דישראל אשתארא בידוי רחבעם בריה אתא ירבעם בר נבט ופלג עמיה מלכותא ודבר מן ידוי עסר שבטין על מימר פומיה דאחיה דמן שילה די הוא גברא רבא:

12 כרמי כד שמע שלמה מלכא דישראל נבואתיה דאחיה דמן שילה בעא למקטליה וערק אחיה מן קדם שלמה ואזל למצרים ובהיא שעתא אתאמר בנבואה למלכא שלמה למהוי איהו שליט בעסר שבטין כל יומוהי ובתר מותיה יהי שליט בהון ירבעם בר נבט ותרין שבטין יהודה ובנימן יהי שליט בהון רחבעם בר שלמה:

13 היושבת אמר שלמה בסוף נבואתיה עתיד מרי עלמא למימר לכנשתא דישראל בסוף יומיא את כנשתא דישראל דמתילא לגנתא קלילא ביני אומיא ויתיבא בבית מדרשא עם חברי סנהדרין ושאר עמא דציתין לקל ריש מתיבתא ואלפין מן פומיה פתגמיה אשמיעיני אוריתא קל מליך בעדן דאת יתבא לזכאה ולחיבא ואהי מסכים לכל מה די את עבדת:

14 ברח בההיא שעתא יימרון סבי כנשתא דישראל ערוק לך רחמי מרי עלמא מארעא הדא מסאבא ותשרי שכנתך בשמי מרומא ובעדן עקתין די אנחנא מצלין קדמך תהי דמי לטביא די בעדן דדמיך עינא חדא קמיץ ועינא חדא יהי פתיח או כאורזילא דאילא דבעדן דעריק מסתכל בתריה כן אנת תהא משגח בן ומסתכל בצערן ובסגופן משמי מרומא עד זמן די תתרעי בן ותפרוק יתן ותעל יתן על טורא דירושלם ותמן יסקון כהניא קדמך קטרת בוסמנין:

PARAPH. CHALD. Versio Latina

Dicet rex Messias: Adjuro vos popule mi domus Israel, qua
contenditis contra populos terrarum ut egrediamini ex cap-
vitate ? & quare vos vultis rebellare contra exercitum G
& Magog ? sustinete modicum donec consumantur pop
qui ascenderunt ad belligerandum contra Jerusalem, & po
recordabitur vobis dominator seculi miserationum justor
& erit voluntas à facie ejus ut liberet vos. Dixit Salomo
propheta : Quando reviviscent mortui, futurum est ut
datur mons olivarum : & omnes mortui Israel egressuri
ex eo ; & etiam justi qui mortui sunt in captivitate, ve
sunt per viam *cavernarum* sub terra, & egredientur ex mon-
te olivarum. Futurum est autem ut impii qui mortui sunt
sepulti sunt in terra Israel, dejiciantur sicut lapis quem
jecit homo *ex funda* : tunc dicent omnes habitatores
ræ : Quod est meritum populi hujus qui ascendit de terra
mille millibus, sicut in die quo ascendit de deserto in terra
Israel, & delitiis affluunt propter miserationes Domini
sicut in die qua visus est sub monte Sinai ut susciperet Le
& futurum est in illa hora ut Sion, quæ est mater Israel,
filios suos, et Jerusalem suscipiat filios captivitatis. D
filii Israel in die illa Domino suo : Obsecro te, pone
sicut sculpturam anuli super cor tuum & sicut sculpt
anuli super brachium tuum, ut non addamus ultra
exules : quoniam fortis est sicut mors dilectio deitatis tuæ
robustus sicut gehenna zelus populorum qui zelant nos, &
imicitia quam reservant nobis, similis est prunis ignis ge
næ, quem creavit Deus *die secundo creationis mundi* ut
cendantur in eo cultores idololatriæ. Dixit dominator
li populo suo domui Israel : Quamvis congregentur om
populi qui comparati sunt aquis maris, quæ sunt multæ,
poterunt extinguere miserationes meas à te : & si con
gati fuerint omnes reges terræ, qui comparati sunt aquis
minis quod defluit cum impetu, non poterunt evellere
seculo : & si dederit vir omnem pecuniam domus suæ
sideat sapientiam in captivitate, ego reddam ei duplum
culo venturo ; & omnis præda quam deprædabitur de ca
Gog, ipsius erit. In illo tempore dicent angeli cœli
vicem : Gens una est nobis in terra, & merita ejus
sunt, & reges & dominatores non habet ut egre
ad pugnandum contra exercitum Gog ; quid faciem
rori nostræ in die qua locutæ fuerint nationes, ut a
contra eam ad bellum ? Dicet Michael princeps Isra
ipsa steterit sicut fundamentum inter populos, & dede
gentum ut possideat unitatem nominis dominatoris
erimus ego & vos cum scribis eorum circundantes
sicut ordines argentei ; & non habebunt potestatem
ut dominentur in eam, sicut non est potestas verm
minetur argento : & quamvis sit egena præceptis,
mus miserationem propter eam coram Domino, &
dabitur ejus propter meritum Legis in qua labora
quæ scripta est in tabulis cordis : & stat contra ge
cedrus. Respondebit cœtus Israel & dicet : Ego
in verbis Legis sicut murus, & filii mei robusti
res : & in illo tempore cœtus Israel inveniet mi
am in oculis Domini sui, & salutabunt eum omnes
tores terræ. Gens una ascendit in sortem domina
culi, apud quem est pax, quæ comparata est vineæ
cavit eam in Jerusalem, tradiditque eam in manum
domus David, ut custodirent eam, sicut agricola
neam suam. Postquàm mortuus est Salomon rex Isra
mansit in manu Roboam filii ejus, & venit Jerob
lius Nabat, & divisit cum eo regnum : & tulit de ma
decem tribus, juxta verbum oris Achiæ Sylonitæ,
vir magnus. Quando audivit Salomon rex Isra
phetiam Achiæ Sylonitæ, quæsivit occidere eum : &
Achia à facie Salomonis, & abiit in Ægyptum : &
tempore dictum est in prophetia Salomoni regi, quo
naretur decem tribubus omnibus diebus suis, & po
suam dominaretur eis Jeroboam filius Nabat : &
tribubus, videlicet Juda & Benjamin, dominaretur
am filius Salomonis. Dixit Salomon in fine prop
Dicturus est dominator seculi cœtui Israel in fine
Tu congregatio Israel quæ comparata es horto
nationes, & habitas in domo doctrinæ cum sociis
reliquis populis qui auscultant vocem principis
discunt ab ore ejus verba ejus : audire me fac Le
[*scilicet*] sermonum tuorum in tempore quo tu
justificandum & ad condemnandum, & assentiar
quæ feceris. In illo tempore dicent senes cœtus
Fuge tibi dilecte mi dominator seculi de terra ha
da, & habitet majestas tua in cœlis excelsis : &
tribulationis quo nos oraverimus coram te, eris
preæ, quæ in tempore quo dormit, unus oculus ejus
sus, & alter oculus est apertus : aut sicut hinnu
vorum, qui in tempore quò fugit respicit post
contemplaberis nos, & respicies tribulationem
afflictionem nostram de cœlis excelsis, usque ad te
beneplacitum erit tibi in nobis, & redimes nos
duces nos in montem Jerusalem, & ibi adoleb
tes coram te incensum aromatum.

Finis Canticorum.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

*ܐܘܡܝܬ ܠܟܝܢ ܒܢ̈ܬ ܐܘܪܫܠܡ. ܕܠܐ ܬܥܝܪܘܢ ܘܠܐ ܬܬܥܝܪܘܢ ܚܘܒܐ ܥܕܡܐ ܕܬܨܒܐ. *ܡܢܘ ܗܕܐ 4 5
ܕܣܠܩܐ ܡܢ ܡܕܒܪܐ ܘܡܣܬܡܟܐ ܥܠ ܕܕܗ̇. ܬܚܝܬ ܬܦܘܚܐ ܐܥܝܪܬܟܝ. ܬܡܢ ܚܒܠܬܟܝ ܐܡܟܝ. ܬܡܢ
ܚܒܠܬܟܝ ܡܪܒܝܢܝܬܟܝ. *ܣܝܡܝܢܝ ܐܝܟ ܛܒܥܐ ܥܠ ܠܒܟܝ. ܘܐܝܟ ܛܒܥܐ ܥܠ ܕܪܥܟܝ. 6

Adjuro vos filiæ Jerusalem,
expergefaciatis ipsam dilectam
Quæ est ista quæ ascendit à de
patruo suo ? sub malo *arbore* ex
ibi enixa est te mater tua, ibi
nitrix tua. Pone me sigillum
um, & velut sigillum super bra

Verſio VULG. LAT.

4 Adjuro vos, filiæ Jeruſalem, ne ſuſcitetis, neq; evigilare faciatis dilectam,
donec ipſa velit. 5 Quæ eſt iſta, quæ
aſcendit de deſerto, deliciis affluens,
innixa ſuper dilectum ſuū? Sub arbore malo ſuſcitavi te: ibi corrupta eſt
mater tua, ibi violata eſt genitrix tua.
6 Pone me ut ſignaculum ſuper cor tuū,
ut ſignaculum ſuper brachium tuum:
quia fortis eſt ut mors dilectio, dura
ſicut infernꝰ æmulatio: lampades ejꝰ,
7 lampades ignis atq; flammarū. Aquæ
multæ non potuerunt extinguere charitatem, nec flumina obruent illam:
ſi dederit homo omnem ſubſtantiam
domûs ſuæ pro dilectione, quaſi nihil
8 deſpiciet eam. Soror noſtra parva, &
ubera non habet: quid faciemꝰ ſorori noſtræ in die quando alloquenda
9 eſt? Si murus eſt, ædificemus ſuper eum propugnacula argentea: ſi oſtium
eſt, compingamus illud tabulis cedrinis.
10 Ego murus: & ubera mea ſicut
turris, ex quo facta ſum corā eo quaſi
11 pacem reperiens. Vinea fuit pacifico
in ea, quæ habet populos: tradidit
eam cuſtodibus, vir affert pro fructu
12 ejus mille argenteos. Vinea mea coram me eſt. Mille tui pacifici, & ducenti his, qui cuſtodiunt fructus ejus.
13 Quæ habitas in hortis, amici auſcultant: fac me audire vocem tuam.
14 Fuge, dilecte mi, & aſſimilare capreæ
hinnuloque cervorum ſuper montes
aromatum.

Verſio GRÆC LXX. Interp.

4 † Ὥρκισα ὑμᾶς, θυγατέρες Ἱερουσαλὴμ † (δ) ἐν ταῖς ἰσχύσεσι τοῦ ἀγροῦ· † (ε) ἐὰν ἐγείρητε καὶ ἐὰν ἐξεγείρητε τὴν ἀγάπην † ἕως ἂν θελήσῃ. † Τίς αὕτη ἡ
5 ἀναβαίνουσα λελευκανθισμένη, † ἐπιστηριζομένη ἐπὶ
τὸν ἀδελφιδὸν αὐτῆς; † ὑπὸ μῆλον ἐξήγειρά σε·
† ἐκεῖ ὤδινησέ σε ἡ μήτηρ σου, † ἐκεῖ ὤδινησέ σε
6 ἡ τεκοῦσά σε. † Θές με ὡς σφραγῖδα ἐπὶ τὴν καρδίαν
σου, † ὡς σφραγῖδα ἐπὶ τὸν βραχίονά σου· † ὅτι κραταιὰ ὡς θάνατος ἀγάπη, † (ζ) σκληρὸς ὡς ᾅδης
ζῆλος· † περίπτερα αὐτῆς περίπτερα πυρὸς, φλόγες
7 αὐτῆς. † Ὕδωρ πολὺ οὐ δυνήσεται σβέσαι τὴν ἀγάπην, † καὶ ποταμοὶ οὐ (η) συγκλύσουσιν αὐτήν. † ἐὰν
δῷ ἀνὴρ (θ) πάντα τὸν βίον αὐτοῦ ἐν τῇ ἀγάπῃ, † ἐξουδενώσει (ι) ἐξουδενώσουσιν αὐτόν. † Ἀδελφὴ ἡμῶν
8 μικρὰ καὶ μαστοὺς οὐκ ἔχει. † τί ποιήσωμεν τῇ ἀδελφῇ
9 ἡμῶν, † ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἐὰν λαληθῇ ἐν αὐτῇ; † Εἰ τεῖχός ἐστιν, οἰκοδομήσωμεν ἐπ' αὐτὴν ἐπάλξεις ἀργυρᾶς· † καὶ εἰ θύρα ἐστὶ, διαγράψωμεν ἐπ' αὐτὴν σα-
10 νίδα κεδρίνην. † Ἐγὼ τεῖχος, καὶ μαστοί μου ὡς
πύργοι· † ἐγὼ ἤμην ἐν ὀφθαλμοῖς (κ) αὐτῶν ὡς
11 εὑρίσκουσα εἰρήνην. † Ἀμπελὼν ἐγενήθη τῷ Σαλωμὼν ἐν Βεελαμών· † ἔδωκεν τὸν ἀμπελῶνα αὐτοῦ
τοῖς (λ) τηροῦσιν. ἀνὴρ οἴσει ἐν καρπῷ αὐτοῦ χιλίους
12 ἀργυρίου. † Ἀμπελών μου ἐμὸς ἐνώπιόν μου, † οἱ χίλιοι Σαλωμὼν, † καὶ οἱ διακόσιοι τοῖς τηροῦσι τὸν
13 καρπὸν αὐτοῦ. † Ὁ καθήμενος ἐν κήποις, ἑταῖροι
14 προσέχοντες † τῇ φωνῇ σου, ἀκούτισόν με. † Φύγε
ἀδελφιδέ μου, καὶ ὁμοιώθητι τῇ δορκάδι, † (μ) ἢ τῷ
νεβρῷ τῶν ἐλάφων ἐπὶ ὄρη τῶν ἀρωμάτων.

MS.A. (δ) ἐν ταῖς δυνάμεσιν, καὶ ἐν ταῖς (ε) τί ἐγείρητε καὶ τί ἐξεγείρητε (ζ) σκληρὸν (η) συνκλίσουσιν (θ) τὸν πάντα βίον (ι) ἐξουδενήσουσιν (κ) αὐτοῦ εὑρίσκουσα (λ) τηροῦσιν ** Ἀμπελών μου (μ) ἢ νεβρῷ ἐλάφων ἐπὶ τὰ ὄρη κοιλωμάτων. MS.A. Ἆσμα ᾀσμάτων.

Verſ. GRæc. LXX. Interp. & Æthiopicæ. Tranſl. LAT.

Adjuravi vos, filiæ Hieruſalem [c] in 4
(f) viribꝰ agri, ſi ſuſcitaveritis, & ſi
exuſcitaveritis [d] charitatē, quoadusque voluerit. [e] Quæ eſt iſta, 5
quæ (g) aſcēdit dealbata, (h) innitens
ſuper fraternū ſuum? (i) Sub malo
exuſcitavi te. (k) Ibi peperit te mater tua, [f] ibi peperit te, quæ genuit
te. (l) Pone me ut [g] ſignaculū ſu- 6
per cor tuū, ut ſignaculū ſuper brachium tuum. (m) Quia valida, ut
mors, charitas; durus, ſicut infernus,
zelꝰ: (n) alæ ejꝰ, alæ ignis, [h] flammæ ejus. Aqua multa non poterit ex- 7
tinguere [ ] charitatem, & flumina
non undabūt eam. Si dederit vir (o)
omnē [i] vitā ſuam (p) in charitate;
contemptu contemnent eum. Soror 8
noſtra (q) parva, et ubera non habet.
Quid faciemus ſorori noſtræ in die,
quâ (r) loquetur in ea? Si murus eſt, 9
[k] ædificemꝰ ſuper eā propugnacula
argentea: et ſi janua eſt, (ſ) [l] ſculpamus ſuper eam tabulā cedrinam.
Ego [m] murus, & ubera mea ſicut 10
turres. Ego eram in oculis (t) eorum
tanquam inveniens pacem: Vinea 11
facta eſt Salomoni in (u) Beelamon:
dedit vineam ſuam iis qui [n] ſervant. Vir feret in (x) fructu ejus
mille argenti. Vinea (y) mihi 12
mea in conſpectu meo: mille Salomoni, & (z) ducenti ſervantibus
fructum ejus. Qui (ω) ſedes in hor- 13
tis, amici ſunt (aa) intendentes voci
tuæ: vocem tuam inſinua mihi. Fu- 14
ge, [o] fraterne mi, & ſimilis eſto
capreolæ, aut hinnulo cervorum
ſuper [p] montes (bb) aromatum.

Verſio ÆTHIOPICA.

4 አምሐልኩክን፡ አዋልደ፡ ኢየሩሳሌም፡፡ በኃ
ይሉ፡ ወበጽንዐ፡ ለገዳም፡፡ ወእመ፡ ተንሥአ፡
ወአንሥአ፡ ምንትኒ፡፡ አፍቅሮ፡ እስከ፡ እመ፡
5 ፈቀደ፡፡ ፦ መኑ፡ ይእቲ፡ ዛቲ፡ እንተ፡ ትሔ
ውጽ፡ ከመ፡ ጎሕ፡፡
ቲ፡ ጽዕዱት፡ ወብርህት፡፡ እንተ፡ ትትመረጐ
ዝ፡ በወልደ፡ እኁሃ፡፡ እምታሕተ፡ ኮል፡ አንሣእ
ኩክ፡፡ ወበህየ፡ ሐመት፡ ብከ፡ እምከ፡ ወሰደት
6 ክ፡፡ ፦ አንብረኒ፡ ከመ፡ ሕልቀት፡ ውስተ፡ ልብ
ከ፡፡ ወከመ፡ ማዕተብ፡ ውስተ፡ መዝራዕትከ፡፡
እስመ፡ ፍቅር፡ ከመ፡ ሞት፡ ፀንዕት፡፡ ወድርክት፡
ከመ፡ ሲኦል፡ ቅንዓት፡፡ ክነፊሃ፡ ክነፈ፡ እሳት፡ ወ
7 ላህብ፡፡ ፦ ወማይ፡ ብዙኅ፡ ኢይክል፡ አጥፍ
ኦታ፡ ለፍቅር፡፡ ለእመ፡ ወሀበ፡ ብእሲ፡ ብእሲ፡
ኵሎ፡ ንብረቶ፡ ለፍቅር፡፡ መንኖ፡ ኢይሜንን
8 ዋ፡፡ ፦ እኅትነ፡ ንስቲት፡ ይእቲ፡ ወአጥባት፡
አልባ፡፡ ምንተ፡ ንገብር፡ ለእኅትነ፡ በዕለተ፡ አ
9 መ፡ ይትናገሩ፡ ባቲ፡፡ ፦ እመ፡ አረፍት፡ ይእ
ቲ፡ ንግበር፡ ላቲ፡ ተድባበ፡ ዘብሩር፡፡ እመ፡ ኆ
ኅት፡ ይእቲ፡ ንሕንጽ፡ ላቲ፡ ማዕጾ፡ ዘቄድሮ
10 ስ፡፡ ፦ አነ፡ ቅጽር፡ ወአጥባትየ፡ ከመ፡ ማኅፈ
ድ፡፡ አነ፡ ወይእቲ፡ በአዕይንቲሁ፡ እንተ፡ እረክ
11 ብ፡ ሰላመ፡፡ ፦ ዓጸደ፡ ወይን፡ ኮነ፡ ዘሰሎሞን፡ በ
ብሌሃሞን፡፡ ወወሀበ፡ ዓጸደ፡ ወይን፡ ለእለ፡ የዐቅ
ቡ፡ ፍሬሁ፡፡ ብእሲ፡ ብእሲ፡ ይሁብ፡ ፍሬሁ፡፡
12 በበጊዜሁ፡ እሠርቱ፡ ምእት፡ ብሩረ፡፡ ፦ ዐሠ
ርቱ፡ ምእት፡ ኮነ፡ ዘሰሎሞን፡፡ ወክልኤቱ፡ ም
13 እት፡ ለእለ፡ የዐቅቡ፡ ፍሬሁ፡፡ ፦ ዘይነብር፡
ውስተ፡ ገነት፡ ካልኣን፡ ይሬእዩ፡፡ ቃለከ፡ አ
14 ስምዓኒ፡፡ ፦ ጉየይ፡ አንተ፡ ወልድ፡ እኁየ፡
ወተመሰል፡ ለወይጠል፡፡ ወከመ፡ ወሬዛ፡ ኃየል፡
ውስተ፡ አድባረ፡ ቤቴል፡፡ ፦

ተፈጸመ፡፡

INTERP. ÆTH. [c] in virtutibus & in [d] hominem quem diligo, [e] Quænam eſt iſta quæ proſpicit ut aurora dealbata ſplendida, innixa ſuper nepotem ſuum? [f] genitrix tua. [g] ut annulum ſuper [h] & flammæ. [ ] charitatem. Si dederit [i] victum ſuum [k] faciamus ei pinnas argenteas: [l] ædificemus ei [m] arx, & [n] ſervant fructum ejus. Vir omnis feret fructum ejus, quilibet in tempore ſuo mille argenti: mille fuerunt Salomoni, [o] tu nepos mi, [p] montes Bethel. Finis

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* استحلفكن يا بنات اورشليم بقدرات الحقل وقواته. ان انبهتم اقمتم وانهضتم المحبة الى ان 4
تشاء هي * من هذه الصاعدة مبيضة. مستندة على ابن اخيها. ايقظتك تحت التفاحة. هناك 5
ابتاعتك امك. تحصنت بك والدتك * ضعني على قلبك كمختم * وعلى ساعديك كخاتم 6
فان المحبة معتزمة كالموت. والغيرة قاسية كالجحيم. بسط اجنحتها كانبساط اجنحة النار. هذا
مقدار لهيب المحبة * فالماء الكثير لن يستطيع يطفي المحبة * والانهار ما تغسل اثارها. 7
ان بذل الانسان كل غنى في المحبة. وانما يحقرونه احتقارا * الاخت عندنا صغيرة ولا ثديين 8
لها. ماذا نصنع يا ابن اخينا في اليوم الذي نتكلم فيه * فان كانت هي سور فلنبن 9
عليها الواح فضة. وان كانت بابا فلننقش عليها دف ارز * انا سور وثدياي برجان. انا كنت 10
في عينيه واجدة سلامة * صار لسليمن كرم في بعل امون. فدفع كرمه الى نواطير يحفظونه 11
يحمل انسان بثمرته الوفا من الفضة * الكرم الذي لي امامي. الوف لك يا سليمان. والمايتان 12
للذين يحفظون ثمرته * الجالس في البساتين. اخرون يصغون اليه. اسمعني صوتك * نح يا 13 14
ابن اخي. وشبه بالغزال او بخشف الايلة على جبال الطيوب.

* والتسبيح لله دائما ابدا *

Obteſtor vos O filiæ Jeruſalem, per poten- 4
tias agri ejuſque virtutes, ne excitetis ne-
ve expergefaciatis dilectam, quoad ipſa
voluerit. Quæ eſt iſta aſcendens dealbata, 5
innixa nepoti ſuo? Excitavi te ſub malo
arbore: ibi te deſtruxit mater tua, te par-
turivit genitrix tua. Imponito me cordi 6
tuo ut ſigillum, & brachiis tuis ut annu-
lum: amor enim violentus eſt ut mors, &
zelotypia crudelis ut infernus: expanſio
alarum ejus velut expanſio alarum ignis.
Talis eſt vis flammæ amoris: Nam aqua 7
plurima haudquaquam poterit extinguere
amorem, & flumina haud abluent veſti-
gia ejus. Si prodegerit quis totam ætatem
ſuam in amore, nihilominus maximo in
contemptu habebunt illum. Soror adeſt 8
nobis parva, nondum habens mammas,
quid faciemus O nepos noſter, in die quâ
loquetur? Quòd ſi ipſa murus eſt, fabri- 9
cemus ſuper eam laminas argenteas: ſin au-
tem ſit janua, metiamur ſuper eam aſſerem
cedrinū. Ego murus ſum, & meæ mammæ 10
geminæ turres: facta ſum in oculis ejus
inveniens pacem. Poſſidet Salomon vineā 11
in Baal-amon, deditque vineam ſuam cu-
ſtodibus aſſervandam: quorum quilibet
percipit ex ejus fructu millia numorum
argenteorum. Vinea quæ me attinet, ob 12
oculos eſt mihi: millia tibi O Salomon, du-
centa verò his qui cuſtodiunt fructum e-
jus. Sedens in hortis, quem alii auſcul- 13
tant, audire me fac vocem tuam. Secede 14
O mi nepos, & ſimilis eſto cervo aut hin-
nulo capreæ ſuper montes aromatum.

Laus Deo perpetua & infinita.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܡܛܠ ܕܥܫܝܢܐ ܐܝܟ ܡܘܬܐ ܚܘܒܐ. ܘܩܫܝܐ ܐܝܟ ܫܝܘܠ ܛܢܢܐ. ܓܡܘܪܝܗ̇ ܓܡܘܪܐ ܕܢܘܪܐ
7 ܘܫܠܗܒܝܬܐ. * ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܠܡܕܥܟܘ ܠܚܘܒܐ. ܘܢܗܪܘܬܐ ܠܐ ܢܫܛܦܘܢܗ
8 ܘܐܢ ܢܬܠ ܓܒܪܐ ܟܠܗ ܩܢܝܢܗ ܕܒܝܬܗ ܚܠܦ ܚܘܒܐ. ܡܒܣܪܘ ܢܒܣܪܘܢ ܒܗ. * ܚܬܐ ܠܢ
ܙܥܘܪܬܐ. ܘܬܕܝܐ ܠܝܬ ܠܗ̇. ܡܢܐ ܢܥܒܕ ܠܚܬܢ ܒܝܘܡܐ ܕܡܬܡܠܠ ܒܗ̇. * ܐܢ ܫܘܪܐ ܗܝ
9 ܢܒܢܐ ܥܠܝܗ̇ ܩܢܝܐ ܕܣܐܡܐ. ܘܐܢ ܬܪܥܐ ܗܝ ܢܩܒܥ ܥܠܝܗ̇ ܕܦܐ ܕܐܪܙܐ. * ܐܢܐ ܫܘܪܐ
10 ܐܢܐ ܘܬܕܝ̈ ܐܝܟ ܡܓܕ̈ܠܐ. ܗܝܕܝܢ ܗܘܝܬ ܩܕܡ ܥܝܢܘܗܝ ܐܝܟ ܕܡܫܟܚܐ ܫܠܡܐ. * ܟܪܡܐ
11 ܗܘܐ ܠܫܠܝܡܘܢ ܒܥܠ ܗܡܘܢ. ܝܗܒ ܟܪܡܐ ܠܢܛܘܪ̈ܐ. ܓܒܪܐ ܢܝܬܐ ܒܦܐܪ̈ܘܗܝ
12 ܐܠܦ ܕܣܐܡܐ. * ܟܪܡܝ ܕܝܠܝ ܩܕܡܝ. ܐܠܦܐ ܠܟ ܫܠܝܡܘܢ. ܘܡܐܬܝܢ ܠܢܛܘܪ̈ܐ
13 14 ܕܦܐܪ̈ܘܗܝ. * ܗܢܘܢ ܕܝܬܒܝܢ ܒܓܢ̈ܐ ܘܫܡܥܝܢ ܩܠܟܝ ܐܫܡܥܝܢܝ. * ܗܦܘܟ ܕܕܝ
ܐܬܕܡܐ ܠܛܒܝܐ ܐܘ ܠܥܘܦܪܐ ܕܐܝ̈ܠܐ ܥܠ ܛܘܪ̈ܐ ܕܒܣܡ̈ܐ.

* ܫܠܡ ܣܦܪܐ ܕܚܟܡܬܐ ܕܫܠܝܡܘܢ ܗܢܘ ܬܫܒܘܚܬܐ ܕܬܫܒܚܬ̈ܐ *

nam fortis eſt ut mors amor, & dura ſicut in-
fernus zelotypia: radii ejus radii ſunt ignis ac
flammæ. Aquæ multæ nequeunt extinguere 7
amorem, & flumina haud abripient illum. Si
quis dederit omnes opes domûs ſuæ pro amo-
re, planè deridebunt eum. Soror nobis eſt 8
parva, & ubera non habet; quid faciemus
ſorori noſtræ in die quo ſermo fiet de ipſa?
Si murus eſt, ædificemus ſuper eam pinnas ar- 9
genteas: ſin fuerit janua, compingamus ſuper
eam tabulas cedrinas. Ego murus ſum, & ube- 10
ra mea turres: tunc eram in oculis ejus quaſi
pacem conſecuta. Vineam habebat Salomon 11
fructûs feraciſſimam: dedi vineā cuſtodibus:
vir obtulit pro fructibus ejus mille argenteos.
Vinea mea coram me eſt: mille tibi Salomon, 12
& ducenti fructuum cuſtodibus. Eos qui ſe- 13
dent in hortis, & auſcultant vocem tuam, au-
dire me fac. Revertere mi patrue, ſimilis eſto 14
capreolo & hinnulo cervorum ſuper montes
aromatum.

Sapientiæ Salomonicæ, hoc eſt
Cantici Canticorum
FINIS.

Notandum hic, Librum Canticorum, quem communiter in octo dividimus Capita, (quæ literis Romanis expreſsimus, verſibus etiam ſecundùm Græcam verſionem appoſitis;) apud Æthiopes, in quinque tantum tmemata diſtingui, quæ figuris numeralibus illorum propriis indicantur.

ESAIAS.

ספר ישעיהו

CAPUT I. א

,Jeruſalaim & Jehudah ſuper vidit quam , Amos filii Jeſahiahu Viſio
חזון ישעיהו בן־אמוץ אשר חזה על־יהודה וירושלם 1
regum Jehizchijahu , Achaz , Jotham , Huzzijahu diebus in
בימי עזיהו יותם אחז יחזקיהו מלכי
quoniam , terra percipe auribus & , cœli Audite .Jehudah
יהודה: שמעו שמים והאזיני ארץ כי 2
ipſi & , exaltavi & ,*magnificavi* Filios :eſt locutus DOMINUS
יהוה דבר בנים גדלתי ורוממתי והם
aſinus & , ſuũ poſſeſſorem bos Cognovit .me contra ſunt prævaricati
פשעו בי: ידע שור קנהו וחמור 3
.intellexit non meꝰ populus,cognovit non Iſrael : ſui domini præſepe
אבוס בעליו ישראל לא ידע עמי לא התבונן:
,*malignantium* ſemini , iniquitate gravi populo ,peccatrici genti Væ
הוי גוי חטא עם כבד עון זרע מרעים 4
fecerunt iraſci ,DOMINUM dereliquerunt : corruptoribus filiis
בנים משחיתים עזבו את־יהוה נאצו
quid *Super* .retrorſum ſe alienaverunt , Iſrael Sanctum
את־קדוש ישראל נזרו אחור: על־מה 5
, *ægritudinem* ad caput omne ? *defectionem* addetis , adhuc percutiemini
תכו עוד תוסיפו סרה כל־ראש לחלי
,*integritas* eo in non *caput* ad uſque pedis planta A .infirmum cor omne &
וכל־לבב דוי: מכף־רגל ועד־ראש אין־בו מתם 6
,circumligata nec ,ſunt compreſſa non : *recens* plaga & ,livor & ,vulnus
פצע וחבורה ומכה טריה לא־זרו ולא חבשו
ſuccenſæ veſtræ civitates , deſolata veſtra Terra .oleo in *mollita* nec
ולא רככה בשמן: ארצכם שממה עריכם שרפות 7
deſolatio & ;*eam depaſcentes* alieni vobis coram veſtram *humum* : igni
אש אדמתכם לנגדכם זרים אכלים אתה ושממה
umbraculum ſicut Sijon filia derelinquetur Et .alienorum everſio ſicut
כמהפכת זרים: ונותרה בת־ציון כסכה 8
.*obſeſſa* civitas ſicut , cucumerario in *diverſorium* ſicut ; vinea in
בכרם כמלונה במקשה כעיר נצורה:
, *parum ut ſuperſtitem* nobis reliquiſſet exercituum DOMINUS Niſi
לולי יהוה צבאות הותיר לנו שריד כמעט 9
Audite .fuiſſemus aſſimilati Hamorah ipſi ,fuiſſemus Sedom ſicut
כסדם היינו לעמרה דמינו: שמעו 10
legem percipite auribus ; Sedom *gubernatores* DOMINI verbum
דבר־יהוה קציני סדם האזינו תורת
multitudo mihi quid Ut .Hamorah populus noſtri Dei
אלהינו עם עמרה: למה־לי רב־ 11
aſcenſionibus ſum Satur ? DOMINUS *dicet* , veſtrarum victimarum
זבחיכם יאמר יהוה שבעתי עלות
agnorum & *juvencorum* ſanguinem & : *pinguium* adipe & , arietum
אילים וחלב מריאים ודם פרים וכבשים
; *meis faciebus* *conſpici* veniretis Cùm .volui non hircorum &
ועתודים לא חפצתי: כי תבאו לראות פני 12
Ne ? mea atria *conculcare* , veſtra manu de hoc quæſivit quis
מי־בקש זאת מידכם רמס חצרי: לא 13
ipſa abominatio ſuffimentum : *mendacii munus* afferre addatis
תוסיפו הביא מנחת־שוא קטרת תועבה היא
iniquitatem potero non ,*convocationem vocare* , ſabbatum & ,*menſem* : mihi
לי חדש ושבת קרא מקרא לא־אוכל און
.*retentionem &*
ועצרה:

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA ISAIÆ.

CAP. I.

1 VISIO Iſaiæ filii Amos, quã
vidit ſuper Judã & Jeruſalẽ, in
diebꝰ Oziæ, Joathan, Achaz, &
2 Ezechiæ, regum Juda. Audite
cœli, & auribꝰ percipe terra,
quoniã Dñs locutꝰ eſt. Filios
enutrivi, et exaltavi: ipſi autem
3 ſpreverunt me. Cognovit bos
poſſeſſorem ſuũ, & aſinus præ-
ſepe domini ſui: Iſrael autem
me non cognovit, & populus
4 meus non intellexit. Væ genti
peccatrici, populo gravi ini-
quitate, ſemini nequã, filiis ſce-
leratis: dereliquerunt Dñm,
blaſphemaverunt Sanctũ Iſra-
el, abalienati ſunt retrorſum.
5 Super quo percutiã vos ultrà,
addentes prævaricationem?
omne caput languidũ, et omne
6 cor mœrens. A planta pedis
uſq; ad verticem, non eſt in eo
ſanitas: vulnꝰ, et livor, et plaga
tumens, non eſt circumligata,
nec curata medicamine, neque
7 fota oleo. Terra veſtra de-
ſerta, civitates veſtræ ſuc-
cenſæ igni: regionem veſtram
coram vobis alieni devo-
rant, & deſolabitur ſicut in
8 vaſtitate hoſtili. Et derelin-
quetur filia Sion ut umbraculũ
in vinea, & ſicut tugurium in
cucumerario, & ſicut civitas,
9 quæ vaſtatur. Niſi Dñs exerci-
tuum reliquiſſet nobis ſemen,
quaſi Sodoma fuiſſemꝰ, et qua-
ſi Gomorrha ſimiles eſſemus.
10 Audite verbum Dñi, principes
Sodomorũ; percipite auribus
legẽ Dei noſtri, populꝰ Gomor-
11 rhæ. Quò mihi multitudinem
victimarũ veſtrarũ, dicit Dñs?
plenꝰ ſum: holocauſta arietũ,
et adipẽ pinguiũ, et ſanguinẽ
vitulorũ, et agnorũ, et hirco-
12 rũ, nolui. Cùm veniretis ante
conſpectũ meũ, quis quæſivit
hæc de manibꝰ veſtris, ut am-
13 bularetis in atriis meis? Ne
offeratis ultrà ſacrificium fru-
ſtrà: incenſũ abominatio eſt
mihi. Neomeniã, et ſabbatũ,
et feſtivitates alias non feram,
iniqui ſunt cœtus veſtri:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

(*) ἩΣΑΪΑΣ ESAIAS

ΚΕΦ. α´.

1 Ὅρασις ἣν εἶδεν Ἡσαΐας υἱὸς Ἀμὼς,
ἣν εἶδε κατὰ τῆς Ἰουδαίας καὶ κατὰ Ἱερου-
σαλὴμ, ἐν βασιλείᾳ Ὀζίου, καὶ Ἰωάθαμ,
καὶ (α) Ἄχαζ, καὶ Ἐζεκίου, οἳ ἐβασίλευ-
2 σαν τῆς Ἰουδαίας. Ἄκουε οὐρανὲ, καὶ ἐνωτίζου
γῆ, ὅτι κύριος ἐλάλησεν, Υἱοὺς ἐγέννη-
3 σα καὶ ὕψωσα, αὐτοὶ δέ με ἠθέτησαν. Ἔ-
γνω βοῦς τὸν κτησάμενον, καὶ ὄνος τὴν
φάτνην τοῦ κυρίου αὐτοῦ· Ἰσραὴλ δέ με
4 οὐκ ἔγνω, καὶ ὁ λαός με οὐ συνῆκεν. Οὐαὶ
ἔθνος ἁμαρτωλὸν, λαὸς πλήρης ἁμαρτι-
ῶν, σπέρμα πονηρὸν, υἱοὶ ἄνομοι, (b) ἐγκατε-
λίπετε τὸν κύριον, καὶ παρωργίσατε τὸν
5 ἅγιον τοῦ Ἰσραήλ. Τί ἔτι πληγῆτε προσ-
τιθέντες ἀνομίαν; πᾶσα κεφαλὴ εἰς πό-
6 νον, καὶ πᾶσα καρδία εἰς λύπην· Ἀπὸ
ποδῶν ἕως (β) κεφαλῆς, οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ
ὁλοκληρία, οὔτε τραῦμα, οὔτε μώλωψ, οὔτε
πληγὴ φλεγμαίνουσα· οὐκ ἔστι μάλαγμα
ἐπιθεῖναι, οὔτε ἔλαιον, οὔτε καταδέσμους.
7 Ἡ γῆ ὑμῶν ἔρημος, αἱ πόλεις ὑμῶν πυ-
ρίκαυστοι· τὴν χώραν ὑμῶν ἐνώπιον ὑμῶν
ἀλλότριοι κατεσθίουσιν αὐτὴν, καὶ ἠρήμωται
8 κατεστραμμένη ὑπὸ λαῶν ἀλλοτρίων. Ἐγ-
καταλειφθήσεται ἡ θυγάτηρ Σιὼν, ὡς
σκηνὴ ἐν ἀμπελῶνι, καὶ ὡς ὀπωροφυλάκιον
ἐν (c) σικυηράτῳ, ὡς πόλις πολιορκουμέ-
9 νη. Καὶ εἰ μὴ κύριος σαβαὼθ ἐγκατέ-
λιπεν ἡμῖν σπέρμα, ὡς Σόδομα ἂν ἐγε-
νήθημεν, καὶ ὡς Γόμοῤῥα ἂν (γ) ὡμοιώθη-
10 μεν. Ἀκούσατε λόγον κυρίου, ἄρχοντες Σο-
δόμων· προσέχετε νόμον θεοῦ, λαὸς Γο-
11 μόῤῥας. (δ) Τί μοι πλῆθος τῶν θυσιῶν
ὑμῶν, λέγει κύριος; πλήρης εἰμὶ ὁλο-
καυτωμάτων κριῶν, καὶ στέαρ ἀρνῶν καὶ αἷ-
12 μα ταύρων καὶ τράγων οὐ βούλομαι, Οὐδ'
ἂν ἔρχησθε ὀφθῆναί μοι· τίς γὰρ ἐξεζή-
τησε ταῦτα ἐκ τῶν χειρῶν ὑμῶν; πατεῖν
13 τὴν αὐλήν μου οὐ προσθήσεσθε. Ἐὰν (ε) φέ-
ρητε σεμίδαλιν, μάταιον θυμίαμα, βδέ-
λυγμά μοι ἐστί. τὰς νουμηνίας ὑμῶν, καὶ
τὰ σάββατα, καὶ ἡμέραν μεγάλην οὐκ ἀν-
έχομαι· νηστείαν, καὶ ἀργίαν,

CAP. I.

VISIO, *quam vidit E*
filius Amos, quam vidit (a)
contra Judæam, & contra Hieru
lem, in regno Oziæ, & Joat
& Achaz, & Ezechiæ, qui
gnaverunt in Judæa. Aud
lum; & auribus percipe, ter
quia Dominus locutus eſt, F
(b) genui, & exaltavi: ipſi au
tem ſpreverunt me. Cognovit
poſſeſſorem, & aſinus præſep
mini ſui: Iſrael autem me non
novit: & populus (c) me
intellexit. Væ gens peccatrix
pulus plenus peccatis, ſemen
quam, filii (d) ſceleſti: dere
ſtis Dominum, & ad iracun
concitâſtis Sanctum (e)
Quid adhuc percutiamini adden
(f) iniquitatem? Omne cap
labore, & omne cor in me
A pedibus uſque ad caput
in eo integritas, (g) neque
nus, neque livor, neque pla
mens. Non eſt (h) malagma
nere, neque oleum, neque
tas. Terra veſtra deſerta, ci
tes veſtræ igne ſuccenſæ. Regi
veſtram in conſpectu veſtro
devorant eam: & deſolata
verſa à populis alienis. Re
tur filia Sion, ſicut taberna
in vinea, & ſicut pomorum
dia (i) in cucumerario,
vitas expugnata. Et niſi Do
Sabaoth reliquiſſet nobis
quaſi Sedoma facti eſſem
quaſi Gomorrha, ſimiles fa
dite verbũ Domini, princi
morum: attendite legẽ De
Gomorrhæ. Quò mihi m
nem ſacrificiorum veſtro
Dominus? Plenus ſum
ſtis arietum: & adipem
& ſanguinem taurorum &
rum (k) nolo: Neque
appareatis mihi. Quis
vit hæc de manibus ve
care atrium meum
Si afferatis ſimilam,
cenſum, abominatio m
menias veſtras, & ſabbat
em (l) magnum non
um, & otium,

MS. A. (*) Ἡσαΐας προφήτης. (α) Ἄχας, † (b) ἐγκατέλιπ...
φαλῆς, οὔτε τραῦμα, οὔτε μώλωψ (c) Συκυηράτῳ (γ) ὁμοιώθη...
ἐμοὶ (ε) φέρητέ μοι σεμίδαλιν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

נבואת ישעיה בר אמוץ דאתנבי על אנש יהודה ויתבי ירושלם ביומי עזיה יותם אחז 1
יחזקיהו מלכיא דבית יהודה: שמעו שמיא דזעו כד יהבית אוריתי לעמי ואציתי ארעא 2
דאתרגישת מן קדם פתגמי ארי יי מלל עמי בית ישראל קריתי להון בנין חבבתנון
ויקרתנון ואנון מרדו במימרי: ידע תורא זבניה וחמרא אוריא דמרוהי ישראל לא 3
אליף למדע דחלתי עמי לא אסתכל למתב לאוריתי: וי על דאתקריאו עם קדיש וחטו 4
כנישא בחירא ואסגיאו חובין אתכניאו בזרעא רחימא ואבאישו אתאמר להון בנין
חביבין וחבילו אורחתהון שבקו ית פולחנא דיי קצו בדחלת קדישא דישראל ובדיל
עובדיהון בישיא אסתחרו והוו לאחורא: לא מסתכלין למימר על מה לקינא עוד 5
מוספין למחטי ולא אמרין מא דין כל ריש מרע וכל לבב דוי: משאר עמא ועד רישא 6
לית בהון דשלים בדחלתי כולהון סרבין ומרדין אתגעלו בחובין כמחא מרססא לא
שבקין מרודיהון ולא מחסדין לתיובתא אף לא זכון להון לאגנא עליהון: ארעכון 7
צדיא קרויכון יקידת נור ארעכון לקבליכון עממיא מחסנין יתה ובחוביהון צדיאת
מנכון אתחלפת והות לנוכראין: ואשתארת כנשתא דציון כמטללתא בכרמא בתר 8
דקטפוהי כערסל מבתותא במקשיא בתר דאבעיוהי כקרתא דצירין עלה: אלולפון 9
מותר טוביה דיי צבאות אשאר לנא שיזבא ברחמוהי אית עמנא חובין דכאנש סדום
פון אבדנא וכיתבי עמורה אשתיצנא: קבילו פתגמא דיי שלטוניא דעובדיהון בישין 10
כשלטוני סדום אציתו לאוריתא דאלהנא עמא דעובדיהון דמין לעם עמרה: לא רעוא 11
קדמי בסגיאות נכסת קודשיכון אמר יי שבעית מסת עלות דכרין ותרב פטימין ודם
תורין ואמרין וגדיין דכאלין לא רעוא קדמי בהון: כד אתון אתן לאתחזאה קדמי מן 12
תבעדא מידכון למיתי ולאתדשא עזרתי: לא תוספון לאיתאה מנחת אניסא קורבן 13
מרחק הוא קדמי ירחין ושבין כנישא אתון מתכנשין לא שבקין חוביכון לקבלא
צלותכון בעדן כנישתכון:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

CAPUT I.

PRophetia Eſaiæ filii Amos, quam prophetavit ſuper viros
bitatores Jeruſalem in diebus Oziæ, Jotham, Achaz, Ezechiæ,
mus Juda. Audite cœli, qui commoti eſtis, quando dedi legem
pulo meo; & auſculta terra, quæ contremuiſti à facie Verbi me
am Dominus locutus eſt. Populus meus domus Iſrael, quos voca
dilexi eos, & honorificavi eos, & ipſi rebellaverunt in verb
Cognovit bos emptorem ſuum, & aſinus præſepe domini ſui
tem non didicit ut ſciret timorem mei: populus meus non
converteretur ad *legem meam*. Væ eis qui vocati ſunt populus
peccaverunt; congregatio electa, & multiplicaverunt delicta
nati ſunt ſemen electum, & malè egerunt; dicti ſunt filii dile
ruperunt vias ſuas; dereliquerunt cultum Domini; deteſtati ſunt
Sancti Iſrael, & propter opera eorum prava averſi ſunt, & facti
ſum. Non animadverterunt, dicentes: Propter quid percuſſi ſum
addunt peccare, nec dicunt: Quare omne caput languidum, &
mœrens? A reliquo populo uſque ad principes, non eſt in e
ctus ſit in timore mei: omnes ſunt contumaces, & rebelles;
ſunt in peccatis, ſicut plaga ulceroſa; non dimittunt ſuperbias
deſiderant agere pœnitentiam, neque ſunt in eis juſtitiæ quibus
tur. Terra veſtra deſerta, civitates veſtræ ſuccenſæ igni: terram
ram vobis populi poſſident eam, et propter peccata *eorum*
vobis tranſlata eſt ad alienos. Et relinquetur cœtus Sion, ſicut
in vinea, poſtquam vindemiarunt eam; ſicut tugurium manens
rario poſtquam legerunt cucumeres ab eo; ſicut civitas quæ ob
ſuperexcedens bonitas Domini exercituum reliquiſſet nobis
nem in miſerationibus ſuis; peccata ſunt in nobis propter
Sodomæ periiſſemꝰ, & quaſi habitatores Gomorræ conſumpti
pite verbum Dñi principes, quorum opera ſunt mala, ſicut
domæ; auſcultate legem Dei noſtri populi, quorum opera ſim
pulo Gomorræ. Non eſt beneplacitum coram me in multitu
rum veſtrarum, dicit Dñs: ſatiatus ſum abundantia holocau
tum, & adipe pinguium, & ſanguine taurorum, & agnorum, &
quia in eis non eſt beneplacitum coram me. Cùm venitis ut
conſpectu meo, quis quæſivit hoc de manibus veſtris, ut
culcanda atria mea? Non addatis ultra offerre oblationem
crificium abominabile eſt coram me, & neomeniæ & ſabbata
gregationis veſtræ, quoniam non relinquitis peccata veſtra, ut exaudiatur oratio veſtra in tempore congre-

Obſervet lector in verſione Arab. prophetarum, verſiculos plurimos, præſertim in Hieremia, imò alicubi integra ferè capitula, in editione Pariſienſi deſiderari, quæ ex MS. Arab. antiquiſſimo & præſtantiſſimo, quod cum Hebr. plerunque concordat, ſupplevimus: ſupplementa verò uncis includuntur, præfixis hiſce literis, MS. Oxon.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܢܒܝܘܬܗ ܕܐܫܥܝܐ ܒܪ ܐܡܘܨ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܚܙܘܐ ܕܐܫܥܝܐ ܒܪ ܐܡܘܨ. ܕܚܙܐ ܥܠ ܝܗܘܕܐ ܘܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܒܝܘܡܝ ܥܘܙܝܐ ܘܝܘܬܡ 1
ܘܐܚܙ ܘܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܫܡܥܘ ܫܡܝܐ ܘܨܘܬܝ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ. 2
ܒܢܝܐ ܪܒܝܬ ܘܐܪܝܡܬ. ܗܢܘܢ ܕܝܢ ܫܩܪܘ ܒܝ. * ܝܕܥ ܬܘܪܐ ܩܢܝܢܗ. ܘܚܡܪܐ ܐܘܪܝܐ ܕܡܪܗ. 3
ܐܝܣܪܝܠ ܠܐ ܝܕܥ. ܘܥܡܝ ܠܐ ܐܣܬܟܠ. * ܘܝ ܠܥܡܐ ܚܛܝܐ. ܥܡܐ ܕܥܫܝܢ ܚܛܗܘܗܝ. ܙܪܥܐ 4
ܡܒܐܫܢܐ. ܒܢܝܐ ܡܚܒܠܐ. ܫܒܩܬܘܢ ܠܡܪܝܐ. ܘܐܪܓܙܬܘܢ ܠܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܗܦܟܬܘܢ
ܠܒܣܬܪܟܘܢ. * ܥܠ ܡܢܐ ܬܬܡܚܘܢ ܬܘܒ. ܘܬܘܣܦܘܢ ܡܪܕܘܬܐ. ܟܠ ܪܝܫ ܠܟܐܒܐ. 5
ܘܟܠ ܠܒܐ ܠܟܪܝܘܬܐ. * ܡܢ ܦܣܬܐ ܕܪܓܠܐ ܘܥܕܡܐ ܠܩܪܩܦܬܐ. ܠܝܬ ܒܗ ܕܘܟܬܐ ܚܠܝܡܬܐ. 6
ܡܚܘܬܐ ܘܫܘܒܛܐ ܘܡܚܘܬܐ ܡܛܪܝܬܐ. ܠܐ ܐܬܐܣܝܘ. ܘܠܐ ܐܬܚܒܫܘ. ܘܠܐ ܐܬܪܟܟܘ
ܒܡܫܚܐ. * ܐܪܥܟܘܢ ܚܪܒܐ. ܩܘܪܝܟܘܢ ܝܩܝܕܢ ܒܢܘܪܐ. ܠܐܪܥܟܘܢ ܠܘܩܒܠܟܘܢ 7
ܢܘܟܪܝܐ ܐܟܠܝܢ ܠܗ. ܘܚܪܒܐ ܐܝܟ ܡܗܦܟܬܐ ܕܢܘܟܪܝܐ. * ܘܐܫܬܒܩܬ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ ܐܝܟ ܡܛܠܬܐ ܒܟܪܡܐ 8
ܘܐܝܟ ܡܛܪܬܐ ܒܡܩܫܝܐ. ܘܐܝܟ ܡܕܝܢܬܐ ܕܟܪܝܐ. * ܘܐܠܘ ܠܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܒܩ ܠܢ 9
ܫܪܟܐ. ܐܝܟ ܣܕܘܡ ܗܘܝܢ ܗܘܝܢ. ܘܠܥܡܘܪܐ ܕܡܝܢ ܗܘܝܢ. * ܫܡܥܘ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ 10
ܪܫܐ ܕܣܕܘܡ. ܘܨܘܬܘ ܢܡܘܣܗ ܕܐܠܗܢ ܥܡܐ ܕܥܡܘܪܐ. * ܠܡܢܐ ܠܝ ܣܘܓܐܐ 11
ܕܕܒܚܝܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܣܒܥܬ ܥܠܘܬܐ ܕܕܟܪܐ. ܘܬܪܒܐ ܕܦܛܡܐ. ܘܕܡܐ ܕܬܘܪܐ ܘܕܐܡܪܐ
ܘܕܓܕܝܐ ܠܐ ܨܒܝܬ. * ܡܐ ܕܐܬܝܬܘܢ ܠܡܚܙܐ ܐܦܝ. ܡܢܘ ܒܥܐ ܗܕܐ ܡܢ ܐܝܕܝܟܘܢ. ܠܡܕܫ 12
ܕܪܬܝ. * ܠܐ ܬܘܣܦܘܢ ܠܡܝܬܝܘ ܩܘܪܒܢܐ ܕܣܪܝܩܘܬܐ. ܒܣܡܐ ܛܢܦܐ ܗܘ ܠܝ. ܪܝܫ 13
ܝܪܚܐ ܘܫܒܬܐ. ܩܪܝܬܘܢ ܟܢܘܫܬܐ. ܠܐ ܐܟܘܠ ܥܘܠܐ ܘܐܠܨܢܘܬܐ.

PROPHETIA ESAIÆ FILII AMOS.

CAP. I.

Viſio Eſaiæ filii Amos, quam vidit de Juda 1
& de Jeruſalem, in diebus Oziæ, Jotham, 2
Ahaz,& Hezeciæ regum Judæ. Audite cœli,
& auſculta terra: nam Dominus loquitur. Filios
enutrivi & exaltavi, ipſi autem perfidè
mecum egerunt. Agnoſcit bos poſſeſſorem 3
ſuum, & aſinus præſepe domini ſui: at Iſrael
non agnoſcit,& popul' meus non animadvertit.
Heu gentem peccatricem, gentem iniquitate 4
gravatam, ſemen facinoroſum: filii
corrupti, dereliquiſtis Dominum,& irritâſtis
Sanctum Iſraelis,& retroceſſiſtis: Quorſum 5
vapularetis ultrà, & ampliùs erudiremini?
Omne caput dolore, & omne cor mœrore
languet: A planta pedis ad cerebrum uſque 6
non eſt in eo locus ſanus: vulnera,cicatrices,
& plagæ tumentes non fuerunt conſolidata,
nec obligata,nec oleo emollita. Terra veſtra 7
devaſtata, civitates veſtræ igne exuſtæ, terram
veſtram aſpicientibus vobis devorant alieni,
& eſt deſolata veluti ruina ab extraneis *facta*.
Et relicta eſt filia Sion ut tugurium in vinea, 8
ut pergula in cucumerario, & velut urbs obſeſſa.
Et niſi Dominus exercituum reſervâſſet 9
nobis ſuperſtites iſtos, ſicut Sodoma eſſemus,
& Gomorræ compararemur. Audite 10
ſermonem Domini principes Sodomorum,&
aures præbete legi Dei noſtri popule Gomorræ.
Ad quid mihi cedit multitudo ſacrificiorum 11
veſtrorum? dicit Dominus: ſatur ſum holocauſtis
arietum; adipe ſaginatorum,& ſanguine
taurorum, agnorum, & hœdorum non
oblector. Cùm ad videndum faciem meam 12
venitis, quis hæc poſtulat è manibus veſtris, ut
conculcetis atria mea? Ne pergatis afferre 13
mihi oblationes vanas, ſuffitum qui eſt mihi
abominandus: initio menſium & ſabbatho
cœtum convocatis, at non comedo fraude
& coactu *parta*.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الرحمن الرحيم *

* بدو نبوة اشعياء النبي بركاته تدوم علينا الى الابد

والى ابد الابدين امين *

* الفصل الاول * الاصحاح الاول *

* الرؤيا التي راها اشعياء ابن اموص * راها على اليهودية واوروشليم * في مملكة عوزيا 1
ويوثام * واحاز وحزقيا * الذين ملكوا على اليهودية * اسمعي ايها السماء * وانصتي ايتها 2
الارض * لان الرب قال ولدت ابناء ورفعتهم وهم غدروا بي * عرف الثور قانيه * والحمار مذود 3
سيده * واسرائيل لم يعرفني * الويل للامة الخاطية * الشعب الممتلي من الخطايا * والنسل 4
الخبيث * الابناء الاثمة * تركتم الرب واغضبتم قدوس اسرائيل * لماذا تضربون ايضا * تزدادون 5
اثما * كل راس لوجع * وكل قلب لحزن * من القدمين الى الراس ليس هو جرح * ولا عقر 6
ولا ضربة ملتهبة ليس يوضع عليها مرهم * ولا دهن * ولا رباطات * ارضكم تخرب * ومدنكم 7
تحرق بالنار * وكورتكم تاكلها الغرباء امامكم * خربت وقفرت من الغرباء * واهملت ابنة 8
صهيون مثل قبة في كرم * كمنطرة الفاكهة في مقثاة * وكالمدينة المحاصرة * لولا ان رب 9
الجيوش ابقى لنا بقية * لكنا قد صرنا مثل سدوم * وماثلنا اهل عامورا * اسمعوا كلمة الرب 10
يا رؤساء سدوم * وانصتوا لناموس الله يا شعب عامورا * ما هي كثرة ذبائحكم لي يقول 11
الرب * مملو انا من محرقات الكباش * وشحم الخراف ودم الثيران والتيوس لست اريدها * واذا ما 12
اتيتم لتظهروا لي من ذا طلب هذه من ايديكم * لا تعودوا ان تطوا دياري * ان قدمتم لي 13
سميذا باطلا وبخورا * مرذول هو عندي * رؤوس شهوركم وسبوتكم ويومكم العظيم 14
لست احتملها * صومكم

IN NOMINE DEI Clementis & Miſericordis.

INITIUM PROPHETIÆ ESAIÆ

prophetæ, cujus benedictiones perpetuò & ad æterna ſecula ſuper nos maneant. Amen.

CAPUT PRIMUM.

Textus primus.

VISIO quam vidit Eſaia filius 1
Amos, quam inquam vidit de Judæa
& Jeruſalem ſub regno Oziæ, Jothami,
Ahazi, & Hezeciæ, qui regnârunt
ſuper Judæam. Audi O cœlum,& 2
auſculta O terra, quia Dominus ait; Filios
genui & evexi, ipſi verò fefellerunt
me. Cognoſcit bos poſſeſſorem ſuum, 3
& aſinus præſepe domini ſui; Iſrael
autem non cognovit me. Væ genti 4
peccatrici, populo pleno peccatis, progeniei
peſſimæ, filiis ſceleratis: dereliquiſtis
Dominum, & ad iram provocâſtis
Sanctum Iſraelis. Ad quid verberemini 5
ulteriùs? augeretis impietatem.
Omne caput dolens quidem eſt, & omne
cor mœrens. A pedibus ad verticem uſq; 6
non eſt vulnus, neque ulcus, neque plaga
accenſa, cui non ſit impoſitum malagma,
nec oleum, nec faſciæ. Terra veſtra vaſtabitur, 7
urbes veſtræ igne ſuccendentur,
& regionem veſtram devorabunt alieni
coram vobis: vaſtata & deſolata eſt ab
alienis. Et remanſit filia Sion quaſi teſtudo 8
in vinea, quaſi cuſtodia pomorum
in cucumerario, & quaſi urbs obſeſſa.
Niſi Dominus exercituum reſervâſſet nobis 9
reliquias, evaſiſſemus quidem ut
Sodoma, & ſimiles eſſemus genti Gomorræ.
Audite verbum Domini O principes 10
Sodomorum, & auſcultate legem
Dei O popule Gomorræ. Quid eſt multitudo 11
ſacrificiorum veſtrorum apud me?
dicit Dominus: plenus quidem ſum holocauſtis
arietum: adipem agnorum, &
ſanguinem taurorum atque hircorum nolo.
Et quando venitis ut compareatis coram 12
me, quiſnam hæc poſtulavit è manibus
veſtris? Ne ampliùs conculcetis
ædes meas. Etiamſi obtuleritis mihi ſimilaginem 13
vanam et incenſum, deteſtabile eſt
apud me. Initia menſium veſtrorũ, ſabbatha 14
veſtra,& dies veſter celeberrim⁹, ſunt
mihi intolerabilia: Jejunium veſtrum,

ישעיה : א

: mea anima habuit odio veſtras ſolennitates & veſtras Calendas
14 חדשיכם ומועדיכם שנאה נפשי
vos expandendo in Et .ſuſtinendo laboravi ,defatigationem ad me ſuper fuerunt
15 היו עלי לטרח נלאיתי נשא : ובפרשכם
quando etiam : vobis à meos oculos occultabo , veſtras volas
כפיכם אעלים עיני מכם גם כי־
ſanguinibus veſtræ manus : audiens ego non , orationem multiplicabitis
תרבו תפלה אינני שמע ידיכם דמים
veſtrorũ ſtudiorũ malum removete ,eſtote mundi , vos Lavate .ſunt plenæ
16 מלאו : רחצו הזכו הסירו רע מעלליכם
Diſcite .malefacere deſinite : meorum oculorum conſpectu de
17 מנגד עיני חדלו הרע : למדו
, pupillo judicate ,injuria affectum dirigite ,judicium quærite ,benefacere
היטב דרשו משפט אשרו חמוץ שפטו יתום
.DOMINUS dicet ,nos increpemus &,nunc Adeſte .viduæ litigate
18 ריבו אלמנה : לכו־נא ונוכחה יאמר יהוה
: albeſcent nix veluti , coccina tanquam veſtra peccata fuerint Si
אם־יהיו חטאיכם כשנים כשלג ילבינו
, acquieveritis Si .erunt lana velut,vermiculus tanquam rubra fuerint ſi
19 אם־יאדימו כתולע כצמר יהיו : אם־תאבו
, renueritis ſi Et .comedetis terræ bonum , audieritis &
20 ושמעתם טוב הארץ תאכלו : ואם־תמאנו
DOMINI os quia : devorabimini gladio , fueritis rebelles &
ומריתם חרב תאכלו כי פי יהוה
plena ? fidelis civitas meretrix ut fuit Quomodo .eſt locutum
21 דבר : איכה היתה לזונה קריה נאמנה מלאתי
tuum Argentum .homicidæ nunc & ,ea in eſt morata juſtitia ,judicio
22 משפט צדק ילין בה ועתה מרצחים : כספך
tui Principes .aquis in mixtus tuus potus : ſcorias in fuit
23 היה לסיגים סבאך מהול במים : שריך
ſequens & , munus diligens ipſe totus : furum ſocii & , contumaces
סוררים וחברי גנבים כלו אהב שחד ורדף
ingredietur non viduæ lis & : judicabunt non pupillo :retributiones
שלמנים יתום לא ישפטו וריב אלמנה לא־יבוא
exercituum DOMINUS Dominus dicit Propterea .eos ad
24 אליהם : לכן נאם האדון יהוה צבאות
me vindicabo & ,meis hoſtibus de conſolabor Heu : Iſrael fortis
אביר ישראל הוי אנחם מצרי ואנקמה
, te ſuper meam manum convertam Et .meis inimicis de
25 מאויבי : ואשיבה ידי עליך
.tua ſtanna omnia auferam & ; tuas ſcorias purificativum ut repurgabo &
ואצרף כבר סיגיך ואסירה כל־בדיליך :
tuos conſiliarios & , principio in ſicut tuos judices reſtituam Et
26 ואשיבה שפטיך כבראשנה ויעציך
, juſtitiæ civitas tibi vocabitur poſtea & : initio in ſicut
כבתחלה אחרי־כן יקרא לך עיר הצדק
ejus converſi & : redimetur judicio in Sijon .fidelis civitas
27 קריה נאמנה : ציון במשפט תפדה ושביה
peccatorum & , prævaricatorum contritio Et .juſtitia in
28 בצדקה : ושבר פשעים וחטאים
Quia .conſumentur DOMINUM derelinquentéſque ; pariter
29 יחדו ועזבי יהוה יכלו : כי
hortis ab erubeſcetis & ; concupiviſtis quas ulmis ab afficientur pudore
יבשו מאילים אשר חמדתם ותחפרו מהגנות
.elegiſtis quos
אשר בחרתם :

Verſio VULG. LAT.

14 Calendas veſtras, & ſolennitates veſtras, odivit anima mea: facta ſunt mihi moleſta, 15 laboravi ſuſtinens. Et cùm extenderitis manus veſtras, avertam oculos meos à vobis: & cùm multiplicaveritis orationem, non exaudiã: manus enim veſtræ ſanguine plenæ ſunt. 16 Lavamini, mundi eſtote, auferte malũ cogitationum veſtrarum ab oculis meis: quieſcite agere perverſè, 17 Diſcite benefacere: quærite judiciũ, ſubvenite oppreſſo, judicate 18 pupillo, defendite viduã. Et venite, & arguite me, dicit Dominus: ſi fuerint peccata veſtra ut coccinum, quaſi nix dealbabuntur: & ſi fuerint rubra quaſi vermiculus, velut lana alba erunt. 19 Si volueritis, & audieritis me, bona terræ comedetis. 20 Quòd ſi nolueritis, & me ad iracundiam provocaveritis: gladius devorabit vos, quia os Domini locutum eſt. 21 Quomodò facta eſt meretrix civitas fidelis, plena judicii? juſtitia habitavit in ea, nunc 22 autem homicidæ. Argentum tuum verſum eſt in ſcoriam: vinum tuum miſtum eſt aquâ. 23 Principes tui infideles, ſocii furũ: omnes diligunt munera, ſequuntur retributiones. Pupillo non judicant: & cauſa viduæ non ingreditur ad illos. 24 Propter hoc ait Dominus Deus exercituum fortis Iſrael: Heu, conſolabor ſuper hoſtib⁹ meis, & vindicabor de inimi- 25 cis meis. Et convertam manum meam ad te, & excoquam ad purum ſcoriam tuam, et auferam omne ſtannum 26 tuum. Et reſtituam judices tuos ut fuerunt priùs, et conſiliarios tuos ſicut antiquitùs: poſt hæc vocaberis civitas juſti, 27 urbs fidelis. Sion in judicio redimetur, et reducent eam in 28 juſtitia: Et conteret ſceleſtos, et peccatores ſimul: et qui dereliquerunt Dominum, con- 29 ſumentur. Confundentur enim ab idolis, quibus ſacrificaverunt: et erubeſcetis ſuper hortis, quos elegeratis,

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

14 Καὶ τὰς νεομηνίας ὑμῶν, καὶ τὰς ἑορτὰς ὑμῶν μισεῖ ἡ ψυχή μου. ἐγενήθητέ μοι εἰς πλησμονήν, οὐκέτι ἀνήσω τὰς ἁμαρτίας ὑμῶν. 15 Ὅταν (ζ) ἐκτείνητε τὰς χεῖρας, ἀποστρέψω τοὺς ὀφθαλμούς μου ἀφ᾽ ὑμῶν· καὶ ἐὰν πληθύνητε τὴν δέησιν, οὐκ εἰσακούσομαι ὑμῶν· 16 αἱ γὰρ χεῖρες ὑμῶν αἵματος πλήρεις. Λούσασθε, καθαροὶ γένεσθε, ἀφέλετε τὰς πονηρίας ἀπὸ τῶν ψυχῶν ὑμῶν, ἀπέναντι τῶν ὀφθαλμῶν μου, παύσασθε ἀπὸ τῶν πονηριῶν ὑμῶν, 17 Μάθετε καλὸν ποιεῖν, ἐκζητήσατε κρίσιν, ῥύσασθε ἀδικούμενον, κρίνατε 18 ὀρφανῷ, καὶ δικαιώσατε χήραν, Καὶ δεῦτε, (η) διελεγχθῶμεν, λέγει κύριος. καὶ ἐὰν ὦσιν αἱ ἁμαρτίαι ὑμῶν ὡς φοινικοῦν, ὡς χιόνα λευκανῶ. ἐὰν δὲ ὦσιν ὡς κόκκινον, ὡς 19 ἔριον λευκανῶ. Καὶ ἐὰν (θ) θέλητε, καὶ εἰσακούσητέ μου, τὰ ἀγαθὰ τῆς γῆς φάγεσθε. 20 Ἐὰν δὲ μὴ θέλητε, μηδὲ εἰσακούσητέ μου, μάχαιρα ὑμᾶς κατέδεται· τὸ γὰρ στόμα κυ- 21 ρίου ἐλάλησε ταῦτα. Πῶς ἐγένετο πόρνη πόλις πιστὴ Σιὼν πλήρης κρίσεως; ἐν ᾗ δικαιοσύνη ἐκοιμήθη ἐν αὐτῇ, νῦν δὲ φονευ- 22 ταί. Τὸ ἀργύριον ὑμῶν, ἀδόκιμον· (ι) οἱ 23 κάπηλοί σου μίσγουσι τὸν οἶνον ὕδατι. Οἱ ἄρχοντές σου ἀπειθοῦσι, κοινωνοὶ κλεπτῶν, ἀγαπῶντες δῶρα, διώκοντες ἀνταπόδομα, ὀρφανοῖς οὐ κρίνοντες, καὶ κρίσιν (κ) χηρῶν οὐ 24 προσέχοντες. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει (λ) κύριος ὁ δεσπότης Σαβαώθ, Οὐαὶ οἱ ἰσχύοντες (μ) Ἰσραήλ· οὐ παύσεται γάρ μου ὁ θυμὸς ἐν τοῖς ὑπεναντίοις, καὶ κρίσιν ἐκ 25 τῶν ἐχθρῶν μου ποιήσω· Καὶ ἐπάξω τὴν χεῖρά μου ἐπὶ σέ, καὶ πυρώσω (ν) εἰς καθαρόν, τοὺς δὲ ἀπειθοῦντας ἀπολέσω, καὶ ἀφελῶ πάν- 26 τας ἀνόμους ἀπὸ (ξ) σοῦ. Καὶ ἐπιστήσω τοὺς κριτάς σου, ὡς τὸ πρότερον, καὶ τοὺς συμβούλους σου, ὡς τὸ ἀπ᾽ ἀρχῆς· καὶ μετὰ ταῦτα κληθήσῃ πόλις δικαιοσύνης, μητρόπο- 27 λις πιστὴ Σιών· μετὰ γὰρ κρίματος σωθήσεται ἡ αἰχμαλωσία αὐτῆς, καὶ μετὰ ἐλεη- 28 μοσύνης. Καὶ συντριβήσονται οἱ ἄνομοι καὶ οἱ ἁμαρτωλοὶ ἅμα, καὶ οἱ ἐγκαταλιπόντες 29 τὸν κύριον συντελεσθήσονται. Διότι (ο) αἰσχυνθήσονται ἀπὸ τῶν εἰδώλων αὐτῶν, ἃ αὐτοὶ ἠβούλοντο, καὶ (π) ἠσχύνθησαν ἐπὶ τοῖς κήποις, ἃ ἐπεθύμησαν.

MS. A. (ζ) τὰς χεῖρας ἐκτείνητε πρός με, (η) καὶ διελεγχθῶμεν λετε, (ι) αἱ πόλεις ὑμῶν πυρίκαυστοι· οἱ κάπηλοί (κ) χήρας (λ) ὁ δεσπ κύριος Σαβαώθ, (μ) Ἱερουσαλήμ· (ν) σε εἰς καθαρόν, (ξ) πάντας ὑπερηφάνους ταπεινώσω. Καὶ ἐπιστήσω (ο) καταισχυνθήσονται εἰδώλοις (π) ἐπαισχυνθήσονται ἐπὶ τοῖς κήποις αὐτῶν,

Et neomenias veſtras, & ſolennitates veſtras odit anima mea. Facti eſtis mihi in ſatietem: (m) nequaquam ultrà remittam peccata veſtra. Cum extenderitis manus, avertam oculos meos à vobis: & ſi multiplicaveritis orationem, non exaudiam. Manus enim veſtræ ſanguine plenæ ſunt. Lavamini, mundi eſtote, auferte mala ex animabus veſtris ab oculis meis, quieſcite à malitiis veſtris, Diſcite facere bonũ, quærite judicium, liberate oppreſſum, judicate pupillo, & juſtificate viduã. Et venite, (n) arguamur, dicit Dominus: & ſi fuerint peccata veſtra, quaſi phœniceum; ſicut nivem dealbabo: & ſi fuerint, ut coccinum; ſicut lanam dealbabo. Et ſi volueritis & audieritis me, bona terræ comedetis. Si autem nolueritis, neq; exaudieritis me, gladius devorabit vos. Os enim Domini loquutum eſt hæc. Quomodo facta eſt meretrix civitas fidelis, Sion plena judicii? in qua (p) dormivit juſtitia in ea, nunc autem homicidæ. Argentum veſtrum non probũ: (q) caupones tui miſcẽt vinum aquâ: Principes tui inobedientes ſunt, participes furum, diligentes munera, ſequentes retributionem, pupillis non judicantes, & judicio viduarum non attendentes. Propterea hæc dicit Dominus dominator Sabaoth, Væ fortes Iſrael. Non ceſſabit enim furor meus contra (u) adverſarios: & judiciũ de inimicis meis faciam: Et inducam manum meam ſuper te, & (x) excoquam rum; inobedientes autem perdam, & auferam omnes prævaricatores à te. Et imponam judices tuos ut priùs, & conſiliarios tuos ut ab initio. Et poſt hæc vocaberis civitas juſtitiæ, metropolis fidelis Sion. Nam cum judicio ſalvabitur captivitas ipſius, & cum miſericordia. Et contenentur ſceleſti & pecccatores ſimul: & qui dereliquerunt Dominum, conſumentur. Confundentur enim ab idolis quæ ipſi volebant: & confundentur ſuper hortis, quos concupierunt.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ירחיכון ומועדיכון רחק מימרי הוו קדמי לריחוק אסגיתי למשבק : וכד כהניא פרסין
15 ידהון לצלאה עליכון מסלקנא אפי שכנתי מנכון ואף כד אתון מסגן לצלאה לא רעוא
16 קדמי לקבלא צלותכון מדידיכון דם זכי מלין : תובו לאוריתא ואדכו מחוביכון ואעדו
17 בישות עובדיכון מקביל מימרי אתמניעו מלאבאשא : אליפו לאוטבא תבעו דינא זכו
18 דאניס דונו דין יתמא עבידו קבילו קבלת ארמלתא : בכן כד תתובון לאוריתא תבעון
מן קדמי ואעביד בעותכון אמר יי אם יהון חוביכון כתימין כצבעונין כתלגא יחורון
19 אם יסמקון כזהריתא כעמר נקי יהון : אם תיבון ותקבלון למימרי טובא דארעא
20 תיכלון : ואם תסרבון ולא תקבלון למימרי בחרב סנאה תתקטלון ארי מימרא דיי
21 גזר כן : איכדין תבו עובדהא למהוי כטעיתא קרתא מהימנתא דהות מליא עבדי
22 דינא קושטא הוה מתעביד בה וכען אנון קטולי נפשן : כספך הוה לפסולא וחמריך
23 מערב במיא : רברביך מרדין ושותפין לגנבין כולהון רחימין לקבלא שוחדא
אמרין גבר לחבריה עביד לי טב בדיני ואשלם לך בדינך דין יתמא לא דינין
24 וקבילת ארמלתא לא עלת לקדמיהון : בכן אמר רבון עלמא יי צבאות תקיפא דישראל
קרתא ירושלם אנא עתיד לנחמותה ברם וי רשיעיא כד אתגלי למעבד פורענות דין
25 מסנאי עמי ואתיב נקמא לבעיל דבבי : ואתיב מחת גבורתי עלך ואברר כמא דמנקן
26 בבוריתא כל רשעא ואעדי כל חובך : ואמני ביך דיני קושטא תקנין כדבקדמיתא
27 ומלכי מלכך כד מן אולא ובתר כן יתקרי לך קרתא דקושטא קרתא מהימנתא : ציון כד
28 יתעבד בה דינא תתפרוק ודעבדו אוריתא יתובון לה בזכו : ויתברון מרודין וחיבין
29 כחדא ודשבקו אוריתא דיי ישתיצון : ארו תתבהתון מאילני טעותא דחמדתון
ותתכנעון מגני טעותא דאתון מסתיעין בהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Neomenias & feſtivitates veſtras deteſtatur Verbum meum, factaque coram me in abominationem: multiplicavi remittens. Et cùm tes extenderint manus ſuas ad orandum pro vobis, auferam meã à vobis; & cùm multiplicaveritis orationẽ, non eſt voluntas me ad exaudiendã orationẽ veſtram, eò quòd manus veſtræ plenæ guine innocentis. Convertimini ad legem meam, & mundamini à tis veſtris, & auferte malum operationũ veſtrarum à conſpectu deſinite malefacere. Diſcite benefacere, quærite judicium, patientis judicate: judicium pupilli facite, audite clamorem viduæ converſi fueritis ad legem meam, deprecabimini coram me, & precationẽ veſtrã, dicit Dñs. Si fuerint peccata veſtra maculata cturæ, quaſi nix dealbabuntur: & ſi fuerint rubra ſicut coccinum, munda erunt. Si volueritis & obedieritis verbo meo, bona terræ detis. Et ſi renueritis & non obedieritis verbo meo; gladio terficiemini, quia verbum Dñi decrevit ita. Quomodo vitas fidelis, ut eſſent opera ejus ſicut opera meretricis? quæ operantium judiciũ, & veritas fiebat in ea, nunc autẽ ipſi ſunt Argentum tuũ factum eſt in ſcoriã: vinũ tuũ miſtũ eſt aqua. tui rebelles, & ſocii latronũ; omnes diligunt accipere munera: unuſquiſq; proximo ſuo: Fac pro me bonum in judicio meo, & tibi in cauſa tua. Judiciũ pupilli non judicant, & clamor viduæ non ditur in conſpectu eorum. Propterea dicit dominator ſeculi Dñs tuum fortis Iſrael: Civitatem Hieruſalem ego conſolabor; ſed væ quando revelatus fuero ut faciã ultionẽ judicii de hoſtib⁹ populi retribuã vindictam inimicis meis. Et convertã pcuſſionẽ fortitudinis in te, & mundabo, quaſi purificans cum herba borith, omnem & auferã omne peccatũ tuum. Et conſtituam in te judices veraces principio, & conſiliarios tuos ſicut antiquit⁹: & poſtea vocaberis veritatis, urbs fidelis. Sion autem, cùm factum fuerit in ea judicium dimetur: & qui operati ſunt legem, revertentur ad eam in conterentur rebelles & peccatores ſimul: & qui dereliquerunt Domini, conſumentur. Quoniam confundemini à lucis idolorum concupiſtis; & erubeſcetis ab hortis ſimulachrorum, à quibus auxilium

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܪ̈ܝܫ ܝܪ̈ܚܝܟܘܢ ܘܥܐܕ̈ܝܟܘܢ܆ ܣܢܝܐ ܢܦܫܝ. ܗܘܘ ܠܝ ܠܡܘܒܠܐ. ܠܐܝܬ ܠܡܫܩܠܘ. * ܟܕ 14
ܬܦܪܣܘܢ ܐܝܕ̈ܝܟܘܢ܆ ܐܗܦܟ ܥܝ̈ܢܝ ܡܢܟܘܢ. ܘܐܦܢ ܬܣܓܘܢ ܨܠܘܬܐ. ܠܐ ܫܡܥ ܐܢܐ. ܐܝܕ̈ܝܟܘܢ 15
ܡܠܝܢ ܕܡܐ. * ܣܚܘ ܘܐܬܕܟܘ. ܘܐܥܒܪܘ ܒܝܫܘܬܐ ܕܥܒ̈ܕܝܟܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܥܝ̈ܢܝ. * ܫܠܘ ܡܢ 16
ܒܝܫܬܐ. ܘܝܠܦܘ ܠܡܥܒܕ ܛܒܬܐ. ܒܥܘ ܕܝܢܐ. ܘܐܛܝܒܘ ܠܡܬܛܠܡܢܐ. ܕܘܢܘ ܝܬܡܐ ܘܕܘܢܘ 17
ܠܐܪ̈ܡܠܬܐ. * ܘܬܘ ܢܬܕܝܢ ܐܟܚܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܢ ܢܗܘܘܢ ܚܛܗ̈ܝܟܘܢ ܐܝܟ ܙܚܘܪܝܬܐ. ܐܝܟ 18
ܬܠܓܐ ܢܚܘܪܘܢ. ܘܐܢ ܣܡܘܩܝܢ ܐܝܟ ܙܚܘܪܝܬܐ. ܐܝܟ ܥܡܪܐ ܢܗܘܘܢ. * ܘܐܢ ܬܬܛܦܝܣܘܢ 19
ܘܬܫܬܡܥܘܢ ܠܝ. ܛܘܒܬܗ ܕܐܪܥܐ ܬܐܟܠܘܢ. * ܘܐܢ ܠܐ ܬܬܛܦܝܣܘܢ ܘܬܡܪܚܘܢ. ܚܪܒܐ 20
ܬܐܟܠܟܘܢ. ܦܘܡܗ ܓܝܪ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ. * ܐܝܟܢܐ ܗܘܬ ܙܢܝܬܐ ܡܕܝܢܬܐ ܡܗܝܡܢܬܐ 21
ܕܡܠܝܐ ܗܘܬ ܕܝܢܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܗ ܒܝܬܐ ܗܘܬ. ܗܫܐ ܩܛܘ̈ܠܐ. * ܟܣܦܟܝ ܗܘܐ ܫܝܛܐ. ܡܙܓ̈ܝܟܝ 22
ܡܚܠܛܝܢ ܡܝܐ. * ܪ̈ܘܪܒܢܝܟܝ ܡܪ̈ܘܕܝܢ ܘܫܘܬܦܐ ܐܢܘܢ ܕܓܢ̈ܒܐ. ܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܢ ܫܘܚܕܐ. 23
ܘܪܗܛܝܢ ܒܬܪ ܦܘܪ̈ܥܢܐ. ܠܝܬܡܐ ܠܐ ܕܝܢܝܢ. ܘܕܝܢܐ ܕܐܪ̈ܡܠܬܐ ܠܐ ܥܐܠ ܩܕܡܝܗܘܢ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܚܝ̈ܠܘܬܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܘܝ. ܐܬܦܪܥ ܐܢܐ ܡܢ 24
ܣ̈ܢܐܝ. ܘܐܬܬܒܥ ܐܢܐ ܡܢ ܒܥܠܕܒ̈ܒܝ. * ܘܐܦܢܐ ܐܝܕܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܨܪܘܦ ܡܪ̈ܘܕܝܟܝ 25
ܠܕܟܝܘ. ܘܐܥܒܪ ܥܘ̈ܠܝܟܝ ܟܠܗܘܢ. * ܘܐܩܝܡ ܕܝ̈ܢܝܟܝ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܡܠܟ̈ܝܟܝ 26
ܐܝܟ ܕܡܢ ܒܪܫܝܬ. ܘܡܢ ܒܬܪܟܢ ܢܬܩܪܝܢ ܠܟܝ ܡܕܝܢܬܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܡܕܝܢܬܐ ܕܗܝܡܢܘܬܐ.
* ܨܗܝܘܢ ܒܕܝܢܐ ܬܬܦܪܩ. ܘܫܒܝܬܗ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܬܬܒܪ ܥܘܠܐ ܘܚܛܝܐ ܐܟܚܕܐ. ܘܐܝܠܝܢ 27 28
ܕܫܒܩܘܗܝ ܠܡܪܝܐ ܢܣܘܦܘܢ. * ܢܒܗܬܘܢ ܓܝܪ ܡܢ ܦܬܟܪ̈ܐ ܕܪܓܒܘ. ܘܢܚܦܪܘܢ ܡܢ 29
ܓܢ̈ܐ ܕܓܒܘ.

Neomenias & ſolennitates veſtras odit anima 14
mea, ſunt mihi oneri, defeſſus ſum ferendo.
Cùm expandetis manus veſtras, avertam ocu-
los meos à vobis: & licèt multiplicetis ora- 15
tionẽ, haudquaquam exaudiã. Manus veſtræ
plenæ ſunt ſanguine. Lavate vos, mundate
vos, & amovete malignitates actionum ve- 16
ſtrarum à conſpectu oculorũ meorũ. Deſiſti-
te à ſceleribus, & diſcite benefacere: ſcruta- 17
mini litem, & benefacite oppreſſis: jus dici-
te pupillis, & cauſas viduarũ dirimite: Tum
venite, colloquamur ſimul, dicit Dñs. Nam 18
ſi fuerint peccata veſtra ut coccus, ſicut nix
dealbabuntur: & ſi rubra fuerint ut vermicu-
lus, fient ſicut lana. Si acquieſcatis, & obtem-
peretis mihi, delitias terræ comedetis: Quòd 19
ſi non acquieſcatis, imò repugnetis, gladio 20
devorabimini: os Dñi locutũ eſt. Quomo-
do effecta eſt meretrix urbs fidelis? quæ ple- 21
na erat judicio, & juſtitia pernoctabat in ea,
jam *facti ſunt* homicidæ. Argentum tuum
deſpectui eſt, caupones tui immiſcent aquam: 22
Principes tui rebelles ſunt, & conſortes fu-
rum; omnes munera diligunt, & feſtini ſunt 23
ad exigendam retributionẽ: pupillis jus non
dicunt, & cauſa viduarum non ingreditur ad
eos. Propterea ſic dicit Dñs dominorũ po-
tẽs Fortis Iſraelis: Heu, vindictã ſumã ab oſo- 24
ribus meis, & ultionem capiã ab hoſtibus me-
is. Et iterum admovebo manum meam ad te,
& defæcabo rebelles tuos ad puritatẽ uſque, 25
& auferam ſceleratos tuos omnes: Et reſti-
tuam judices tuos ut antea, & conſiliarios 26
tuos ut antiquitùs: ac poſtea vocaberis urbs
juſtitiæ, & urbs fidelitatis. Sion judicio re-
dimetur, & captivitas ejus juſtitiâ. Contri- 27
tio autem ſceleſtorum & peccatorũ ſimul *ve-* 28
niet, & qui Dñm dereliquerunt, abſumentur.
Pudefient enim de idolis quæ appetiverunt, 29
& erubeſcent de fanis quæ elegerunt:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

وبطالتكم واعيادكم ابغضها نفسي* وصرتم لي ثقلا* لست منذ الآن احمل خطاياكم * اذا مددتم ايديكم الي 15
اصرف عيني عنكم* وان اكثرتم الطلبة لست استجيب لكم* لان ايديكم مملوة من الدم*
* اغتسلوا وصيروا انقياء* انزعوا الشرور من نفوسكم امام عيني * كفوا عن شروركم* 16 17
تعلموا ان تصنعوا حسنا* اطلبوا انصافا* انقذوا المظلوم* واحكموا لليتيم* وبرروا الارملة*
* وتعالوا نتناظر يقول الرب* فان تكن خطاياكم مثل السواد لابيضها مثل الثلج* وان 18
تكن مثل القرمز لابيضها مثل الصوف النقي* وان شئتم وسمعتم مني* ستاكلون خيرات 19
الارض* وان لا تريدوا ولم تسمعوا مني* سياكلكم السيف* لان فم الرب نطق بهذا* 20

ferias veſtras, & ſolennitates veſtras odit
anima mea; & facti eſtis mihi graves: non
ferã deinceps peccata veſtra. Cùm expan- 15
deritis ad me manᵒ veſtras, avertã à vobis
oculos meos: & quamvis multiplicaveri-
tis preces, haud exaudiam vos; quia ma-
nus veſtræ plenæ ſunt ſanguine. Lavami- 16
ni, & evadite puri: deponite à vobiſmet-
ipſis flagitia coram oculis meis: Abſti- 17
nete à ſceleribus veſtris: diſcite benefa-
cere: quærite juſtitiam: vindicate oppreſſũ:
jus dicite pupillo, & juſtificate viduam:
Tum venite diſceptemus, ait Dominus. Sa- 18
nè ſi fuerint peccata veſtra fuligini ſi-
milia, alba reddam illa ſicut nivem; & ſi
fuerint cocco ſimilia, alba reddam ea ſicut
lanam mundam. Tandem ſi volueritis 19
& acquieveritis mihi, comedetis bona ter-
ræ; Sin autem volueritis, nec acquieve- 20
ritis mihi devorabit vos gladius; quoni-
am os Domini hæc pronuntiavit.

* القريان فيه تعجب النبي من مدينة ايروشليم وتغيرها* واخبار بما يصيبها ويصيب اهلها*

Lectio in qua continetur admiratio Prophetæ de urbe Jeroſolymorum, ejuſque mutatione, & narratio eorum quæ eventura ſunt illi & civibus ejus.

* كيف صارت مدينة صهيون المومنة زانية* المملوة من الانصاف* التي رقد العدل فيها* 21
والآن اضطجع فيها القاتلون* فضتكم غير نقية* وخماروك يمزجون الخمر بالماء* ورؤساك 22
عصاة يشاركون اللصوص* ويحبون الرشا* ويستعجلون في المكافاة* ولا يحكمون للايتام* 23
والى قضاء الارامل لا يصغون* لاجل هذا يقول السيد رب الجنود جبار اسرائيل* الويل للاقوياء 24
في آل اسرائيل* لان غضبي لم يكف عن المضادين* وساصنع حكمي باعداي* واطبق 25
يدي عليك* واحمك للنقاء* واهلك العصاة* واستاصل كل الاثمة منك* ولاذلن المستكبرين*
* ولانصبن قضاتك كما كانوا اولا* ومشيريك كما كانوا قديما* وبعد ذلك تدعين مدينة 26
العدل* ام المدن المومنة صهيون* لان بعد الحكم يخلص سبيها بالعدل والرحمة* 27
* وسيهشمون الاثمة والخطاة معا* والذين اهملوا الرب يستاصلون * من اجل انهم يخزون 28 29
باوثانهم التي ارادوها* ويسقطون ايضا بمنحوتاتهم التي صنعوها* وسيخزون بسياتهم
التي اشتهوها*

Quomodo urbs Sion fidelis evaſit mere- 21
trix? in ea quæ plena erat æquitate, in qua
cubabat juſtitia, nunc cubant homicidæ.
Argentum veſtrum haud purum eſt, cau- 22
pones tui vinum aquâ permiſcent: Prin- 23
cipes tui ſunt contumaces, furum partici-
pes, amant munus, retributionem accele-
rant, non dicunt jus pupillis, & ad litem
viduarum non attendunt? Propterea dicit 24
Dominᵒ, Dominᵒ exercituum, Fortiſſimus
Iſraelis; Væ potentibus inter gentem Iſ-
raeliticam: quoniam ira mea non deſiſtet
ab adverſariis, & judicium meum exerce-
bo in hoſtes meos. Manum meam ſuper te 25
claudã, teq; lavabo ad munditiem: perdã
rebelles, & omnes impios evellam à te, &
humiliabo ſuperbos: Erigam judices tuos 26
ut erant antea, & conſiliarios tuos ut e-
rant olim: et poſt hæc vocaberis urbs æqui-
tatis, mater urbium fidelis Sion. Poſt ju- 27
dicium enim ſalvabitur captivitas ejus
per æquitatẽ & miſericordiã: Impii ve- 28
rò & peccatores ſimul frangentur, et qui
Dominũ ſpreverunt extirpabuntur. Quo- 29
niam pudore ſuffundentur propter idola
ſua quæ amaverunt, & præcipites quoq;
ruent propter ſculptilia quæ fecerunt, &
pudefient propter iniquitates quas experti-
verunt.

יְשַׁעְיָה : ב

aqua cui hortus velut & , *suo folio* defluens *ulmus ut* eritis Quando
30 כִּי תִהְיוּ כְּאֵלָה נֹבֶלֶת עָלֶהָ וּכְגַנָּה אֲשֶׁר־מַיִם
; *favillam in* operator ejus & , *stuppam in* fortis erit Et .ei non
31 אֵין לָהּ: וְהָיָה הֶחָסֹן לִנְעֹרֶת וּפֹעֲלוֹ לְנִיצוֹץ
.*extinguens* non & ,pariter ipsi ambo succendentur &
וּבָעֲרוּ שְׁנֵיהֶם יַחְדָּו וְאֵין מְכַבֶּה:

CAP. II. ב

Jehudah super , Amos filius Jesahjahu vidit quod Verbum
1 הַדָּבָר אֲשֶׁר חָזָה יְשַׁעְיָהוּ בֶּן־אָמוֹץ עַל־יְהוּדָה
erit præparatus *dierum novissimo* in erit Et .Jerusalaim &
2 וִירוּשָׁלִָם: וְהָיָה בְּאַחֲרִית הַיָּמִים נָכוֹן יִהְיֶה
se elevabit & , montium *capite* in DOMINI domus mons
הַר בֵּית־יְהוָה בְּרֹאשׁ הֶהָרִים וְנִשָּׂא
populi ibunt Et .gentes omnes eum ad confluent & : collibus præ
3 מִגְּבָעוֹת וְנָהֲרוּ אֵלָיו כָּל־הַגּוֹיִם: וְהָלְכוּ עַמִּים
domum ad DOMINI montem ad ascendamᵉ &, *Agite:* dicent & ,multi
רַבִּים וְאָמְרוּ לְכוּ וְנַעֲלֶה אֶל־הַר־יְהוָה אֶל־בֵּית
ambulabimus & , *suis viis de* nos docebit & : Jahacob Dei
אֱלֹהֵי יַעֲקֹב וְיֹרֵנוּ מִדְּרָכָיו וְנֵלְכָה
DOMINI verbum & , lex exibit Sijon de quia : ejus semitis in
בְּאֹרְחֹתָיו כִּי מִצִּיּוֹן תֵּצֵא תוֹרָה וּדְבַר־יְהוָה
populos arguet & , gentes inter judicabit Et .Jerusalaim de
4 מִירוּשָׁלִָם: וְשָׁפַט בֵּין הַגּוֹיִם וְהוֹכִיחַ לְעַמִּים
suas lanceas & , ligones in suos gladios contundent & : multos
רַבִּים וְכִתְּתוּ חַרְבוֹתָם לְאִתִּים וַחֲנִיתוֹתֵיהֶם
non & , gladium gentem contra gens levabit non : falces in
לְמַזְמֵרוֹת לֹא־יִשָּׂא גוֹי אֶל־גּוֹי חֶרֶב וְלֹא־
ambulemus & , *adeste* , Jahacob Domus .bellum ultrà discent
5 יִלְמְדוּ עוֹד מִלְחָמָה: בֵּית יַעֲקֹב לְכוּ וְנֵלְכָה
domum ,tuum populum dimisisti Quia .DOMINI lumine in
6 בְּאוֹר יְהוָה: כִּי נָטַשְׁתָּה עַמְּךָ בֵּית
natis in & ,Pelistim sicut augures & : *Oriente ab sunt repleti* quia ,Jahacob
יַעֲקֹב כִּי מָלְאוּ מִקֶּדֶם וְעֹנְנִים כַּפְּלִשְׁתִּים וּבְיַלְדֵי
,auro & ,argento ejus terra est repleta Et .fuerunt sufficientes *alienorum*
7 נָכְרִים יַשְׂפִּיקוּ: וַתִּמָּלֵא אַרְצוֹ כֶּסֶף וְזָהָב
finis non & , equis ejᵒ terra est repleta & : ejᵒ thesauris finis non &
וְאֵין קֵצֶה לְאֹצְרֹתָיו וַתִּמָּלֵא אַרְצוֹ סוּסִים וְאֵין קֵצֶה
suarũ manuũ Operi .idolis ejus terra est repleta Et .ejus quadrigis
8 לְמַרְכְּבֹתָיו: וַתִּמָּלֵא אַרְצוֹ אֱלִילִים לְמַעֲשֵׂה יָדָיו
,homo se incurvavit Et .eorum digiti fecerunt quod ei ,se *incurvabunt*
9 יִשְׁתַּחֲווּ לַאֲשֶׁר עָשׂוּ אֶצְבְּעֹתָיו: וַיִּשַּׁח אָדָם
,petram in Ingredere .eis parces non & , vir se humiliavit &
10 וַיִּשְׁפַּל־אִישׁ וְאַל־תִּשָּׂא לָהֶם: בּוֹא בַצּוּר
decore à &,DOMINI formidinis *faciebus* à ; pulvere in te absconde &
וְהִטָּמֵן בֶּעָפָר מִפְּנֵי פַּחַד יְהוָה וּמֵהֲדַר
se incurvabit & ,*humiliabitur* hominis *elationis* Oculi .ejus *excellentiæ*
11 גְּאֹנוֹ: עֵינֵי גַּבְהוּת אָדָם שָׁפֵל וְשַׁח
.illa die in ipse solus DOMINUS elevabitur & : hominũ altitudo
רוּם אֲנָשִׁים וְנִשְׂגַּב יְהוָה לְבַדּוֹ בַּיּוֹם הַהוּא:
,excelsum & superbum omnem super exercituum DOMINI dies Nam
12 כִּי יוֹם לַיהוָה צְבָאוֹת עַל כָּל־גֵּאֶה וָרָם
Lebanon cedros omnes super Et .se humiliabit & elatum omnem super &
13 וְעַל כָּל־נִשָּׂא וְשָׁפֵל: וְעַל כָּל־אַרְזֵי הַלְּבָנוֹן
.Basan quercus omnes super & ,elevatas & , sublimes
הָרָמִים וְהַנִּשָּׂאִים וְעַל כָּל־אַלּוֹנֵי הַבָּשָׁן:

Versio VULG. LAT.

30 Cùm fueritis velut quercus defluentibus foliis, & velut hor- 31 tus absque aqua. Et erit fortitudo vestra, ut favilla stuppæ, & opus vestrum quasi scintilla: & succendetur utrumque simul, & non erit qui extinguat.

CAP. II.

1 VErbum, quod vidit Isaias, filius Amos, super Juda & Je- 2 rusalem. Et erit in novissimis diebus præparatus mons domûs Domini in vertice montium, & elevabitur super colles, & fluent ad eum omnes 3 gentes. Et ibunt populi multi, & dicent; Venite & ascendamus ad montem Domini, & ad domum Dei Jacob, & docebit nos vias suas, & ambulabimus in semitis ejus: quia de Sion exibit lex, & verbum Do- 4 mini de Jerusalem. Et judicabit Gentes, & arguet populos multos: & conflabunt gladios suos in vomeres, & lanceas suas in falces: non levabit gens contra gentem gladium, nec exercebuntur ultrà ad præliũ. 5 Domus Jacob, venite, & ambulemus in lumine Domini. 6 Projecisti enim populum tuũ, domum Jacob: quia repleti sunt ut olim, & augures habuerunt ut Philisthiim, & pueris 7 alienis adhæserunt. Repleta est terra argento & auro: & non 8 est finis thesaurorum ejus: Et repleta est terra ejus equis: & innumerabiles quadrigæ ejus. Et repleta est terra ejus idolis: opus manuum suarum adoraverunt, quod fecerunt digiti 9 eorum. Et incurvavit se homo, & humiliatus est vir: ne 10 ergò dimittas eis. Ingredere in petram, & abscondere in fossa humo à facie timoris Domini, & à gloria majestatis e- 11 jus. Oculi sublimes hominis humiliati sunt, & incurvabitur altitudo virorum: exaltabitur autem Dominus solus in die 12 illa. Quia dies Domini exercituum super omnem superbũ, & excelsum, & super omnem arrogantem: & humiliabitur. 13 Et super omnes cedros Libani sublimes, & erectas, & super omnes quercus Basan.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

30 Ἔσονται γὰρ ὡς τερέβινθος ἀποβεβληκυῖα τὰ φύλλα, καὶ ὡς παράδεισος ὕδωρ μὴ 31 ἔχων. Καὶ ἔσται ἡ ἰσχὺς αὐτῶν ὡς καλάμη στιππύου, καὶ αἱ ἐργασίαι αὐτῶν ὡς (ρ) σπινθῆρες, καὶ κατακαυθήσονται οἱ ἄνομοι καὶ οἱ ἁμαρτωλοὶ ἅμα, καὶ οὐκ ἔσται ὁ σβέσων.

MS. A. (ρ) σπινθῆρες πυρὸς,

ΚΕΦ. β'.

1 Ὁ Λόγος ὁ γινόμενος (α) πρὸς Ἡσαΐαν υἱὸν Ἀμὼς περὶ τῆς Ἰουδαίας, καὶ 2 περὶ Ἱερουσαλήμ. Ὅτι ἔσται ἐν ταῖς ἐσχάταις ἡμέραις ἐμφανὲς τὸ ὄρος (*) κυρίου, καὶ ὁ οἶκος τοῦ θεοῦ (β) ἐπ' ἄκρου τῶν ὀρέων, καὶ ὑψωθήσεται ὑπεράνω τῶν βουνῶν, καὶ ἥ- 3 ξουσιν ἐπ' αὐτὸ πάντα τὰ ἔθνη. Καὶ πορεύσονται ἔθνη πολλὰ, καὶ ἐροῦσι, (γ) Δεῦτε καὶ ἀναβῶμεν εἰς τὸ ὄρος (*) κυρίου, καὶ εἰς τὸν οἶκον τοῦ θεοῦ Ἰακὼβ, καὶ ἀναγγελεῖ ἡμῖν τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, καὶ πορευσόμεθα ἐν αὐτῇ· ἐκ γὰρ Σιὼν ἐξελεύσεται νόμος, καὶ 4 λόγος κυρίου ἐξ Ἱερουσαλήμ. Καὶ κρινεῖ ἀναμέσον τῶν ἐθνῶν, καὶ (δ) ἐξελέγξει λαὸν πολύν· καὶ συγκόψουσι τὰς μαχαίρας αὐτῶν εἰς ἄροτρα, καὶ τὰς ζιβύνας αὐτῶν εἰς δρέπανα· καὶ οὐ λήψεται (ε) ἔθνος ἐπ' ἔθνος μάχαιραν, καὶ οὐ μὴ μάθω- 5 σιν ἔτι πολεμεῖν. Καὶ νῦν ὁ οἶκος (ζ) Ἰακὼβ, δεῦτε πορευθῶμεν τῷ φωτὶ κυρί- 6 ου· Ἀνῆκε γὰρ τὸν λαὸν αὐτοῦ τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραήλ· ὅτι ἐνεπλήσθη ὡς τὸ ἀπ' ἀρχῆς ἡ χώρα αὐτῶν κληδονισμῶν, ὡς ἡ τῶν ἀλλοφύλων, καὶ τέκνα πολλὰ ἀλλόφυλα ἐγε- 7 νήθη αὐτοῖς. Ἐνεπλήσθη γὰρ ἡ χώρα αὐτῶν ἀργυρίου καὶ χρυσίου, καὶ οὐκ ἦν ἀριθμὸς 8 τῶν θησαυρῶν αὐτῶν· Καὶ ἐνεπλήσθη ἡ γῆ (η) ἵππων, καὶ οὐκ ἦν ἀριθμὸς τῶν ἁρμάτων αὐτῶν. καὶ ἐνεπλήσθη ἡ γῆ βδελυγμάτων τῶν ἔργων τῶν χειρῶν αὐτῶν, καὶ προσεκύνησαν οἷς ἐποίησαν οἱ δάκτυλοι 9 αὐτῶν. Καὶ ἔκυψεν ἄνθρωπος, καὶ ἐτα- 10 πεινώθη ἀνήρ, καὶ οὐ μὴ ἀνήσω αὐτούς. Καὶ νῦν (*) εἰσέλθετε εἰς τὰς πέτρας, καὶ κρύπτεσθε εἰς τὴν γῆν ἀπὸ προσώπου τοῦ φόβου κυρίου, καὶ ἀπὸ τῆς δόξης τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, 11 ὅταν ἀναστῇ θραῦσαι τὴν γῆν. Οἱ γὰρ ὀφθαλμοὶ κυρίου ὑψηλοί· ὁ δὲ ἄνθρωπος ταπεινός. καὶ ταπεινωθήσεται τὸ ὕψος τῶν ἀνθρώπων, καὶ ὑψωθήσεται κύριος μόνος 12 ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ. Ἡμέρα γὰρ κυρίου Σαβαὼθ ἐπὶ πάντα ὑβριστὴν καὶ ὑπερήφα- 13 νον, καὶ ἐπὶ πάντα ὑψηλὸν καὶ μετέωρον, καὶ ταπεινωθήσονται). Καὶ ἐπὶ πᾶν δένδρον τοῦ Λιβάνου τῶν ὑψηλῶν καὶ μετεώρων, καὶ ἐπὶ πᾶν δένδρον βαλάνου

MS. A. (α) παρὰ κυρίου πρὸς (*) τοῦ κυρίου (β) ἐπ' ἄκρων (γ) Δεῦτε
(*) τοῦ κυρίου (δ) ἐλέγξει (ε) ἔτι ἔθνος (ζ) τοῦ Ἰακὼβ, (η) αὐτῶν ἵππων, (*)

Erunt enim quasi (γ) terebin
quæ abjecit folia, & velut
tus non habens aquam. E
titudo eorum, ut (ζ) stupa
pæ, & operationes eorum,
scintillæ: & comburentur
sti, & peccatores simul: &
erit, qui extinguat.

CAP. II.

VErbum, quod factum est a
Isaiam filium Amos (a) de Jude
& de Hierusalem. Quia in
novissimis diebus manifestus
Domini, & domus Dei in ver
montium, & elevabitur supe
les: & venient ad eum om
gentes. Et ibunt gentes multæ
dicent; Venite, & ascendam
montem Domini, & ad domum
Jacob: & annuntiabit nobis
am suam: & ambulabimus
Quia de Sion exibit lex, & v
bum Domini de Hierusalem.
judicabit inter gentes, & ar
populum multum. Et concid
gladios suos in aratra, & lanc
suas in falces: & non levab
contra gentem gladium, & n
discent ultra bellare. Et nunc
mus Jacob, venite, ambulem
mine Domini. Dimisit enim
pulum suum domum Israel
repleta est, ut ab initio, regio
auguriis, ut ea quæ (b) alieni
rum: & filii multi alienigenæ
facti sunt eis. Repleta est en
gio eorum argento, & auro
non fuit numerus thesauro
rum. Et impleta est terra eq
non fuit numerus quadrigar
rum. Et repleta est terra abo
tionibus operum manuum
& adoraverunt ea, quæ fec
digiti ipsorum. Et procubuit
& humiliatus est vir: & n
mittam eos. Et nunc ingre
in petras, & occultamini in
à facie timoris Domini, & à
ria fortitudinis ejus, quando
xerit quassare terram. Ocu
Domini sublimes: homo aut
milis. Et humiliabitur altitu
minum: & exaltabitur Do
solus in die illa. Dies enim
ni Sabaoth super omnem con
liosum & superbum, & sup
mnem excelsum & sublime
humiliabuntur. Et super om
di ũ Libani excelsarũ et su
et super omnẽ arborẽ glandi

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

30 אֲרֵי תְהוֹן כְּבוּטְמָא דִי מְנַתַּר טַרְפּוֹהִי וּכְגִנַּת שַׁקְיָא דְמַיִן לֵית לַהּ: וִיהֵי תוֹקְפְּהוֹן
31 דְרַשִׁיעַיָא כִּנְעוֹרֶת כִּתָּנָא וְעוֹבַד יְדֵיהוֹן כְּנִיצוֹץ נוּרָא כְּמָא דִמְקָרְבִין דִין לִסְטַר דִין
וְדָלְקִין תַּרְוֵיהוֹן כַּחֲדָא כֵּן יְסוּפוּן רַשִׁיעַיָא אִנּוּן וְעוֹבָדֵיהוֹן בִּישַׁיָא וְלָא יְהֵי עֲלֵיהוֹן חַיִס:

ב

1 פִּתְגָם נְבוּאָה דְאִתְנַבִּי יְשַׁעְיָה בַּר אָמוֹץ עַל אֱנָשׁ יְהוּדָה וְיָתְבֵי יְרוּשְׁלֶם: וִיהֵי בְּסוֹף
2 יוֹמַיָא מְתַקַּן יְהֵי טוּר בֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ בְּרֵישׁ טוּרַיָא וּמִנְטַל מִרְמָתָא וְיִתְפְּנוּן לְמִפְלַח
3 עֲלוֹהִי כָּל מַלְכְוָתָא: וִיהָכוּן עַמְמִין סַגִּיאִין וְיֵימְרוּן אֱתוֹ וְנִסַּק לְטוּר בֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ
לְבֵית שְׁכִינַת אֱלָהֵיהּ דְיַעֲקֹב וְיַלְפִנָּנָא מֵאוֹרְחָן דְתַקְנָן קֳדָמוֹהִי וּנְהָךְ בְּאוּלְפַן אוֹרַיְתֵיהּ
4 אֲרֵי מִצִּיּוֹן תִּפּוֹק אוֹרַיְתָא וְאוּלְפַן פִּתְגָמָא דַיְיָ מִירוּשְׁלֶם: וִידִין בֵּין מַלְכְוָתָא
וְיוֹכַח לְעַמְמִין סַגִּיאִין וִיעַפְּפוּן סֵיפֵיהוֹן לְסִכִּין וּמוּרְנְיָתֵיהוֹן לְמַגָּלִין לָא יִטּוֹל עַם בְּאַפֵּי
5 עַם זַיִן וְלָא יִתְאַלְּפוּן עוֹד מִכְבַּן קְרָבָא: יֵימְרוּן דְבֵית יַעֲקֹב אֱתוֹ וּנְהָךְ בְּאוּלְפַן אוֹרַיְתָא
6 דַיְיָ: אֲרֵי שְׁבַקְתּוּן דַחֲלָא תַקִּיפָא דַהֲוָה פָּרֵק לְכוֹן דְבֵית יַעֲקֹב אֲרֵי אִתְמְלִיאַת
7 אַרְעֲכוֹן טַעֲוָן כְּמִלְקַדְמִין וְעָנְנִין כְּפְלִשְׁתָּאֵי וּבְנִימוֹסֵי עַמְמַיָא אָזְלִין: וְאִתְמְלִיאַת
אַרְעֲהוֹן כְּסַף וּדְהַב וְלֵית סוֹף לְגִנְזוֹהִי וְאִתְמְלִיאַת אַרְעֲהוֹן סוּסָוָן וְלֵית סוֹף לִרְתִיכוֹהִי:
8 וְאִתְמְלִיאַת אַרְעֲהוֹן טַעֲוָן לְעוֹבָדֵי יְדֵיהוֹן סָגְדִין לִדְאַתְקִינָא אֶצְבְּעָתְהוֹן: וְיִתְמָאַךְ אֱנָשָׁא
9 10 וְיַחֲלַשׁ תְּקוֹף גֻּבְרִין וְלָא תִשְׁבּוֹק לְהוֹן: וְיֵעֲלוּן לְמֵעֲרַק בְּמַעֲרַק בְּטִנְרָא וּלְאִטַּמָּרָא
11 בְּעַפְרָא מִן קֳדָם דְחִילָא דַיְיָ וּמִזִּיו יְקָרֵיהּ: עֵינֵי רָמוּת אֱנָשָׁא יִמָּאכָן וְיַחֲלַשׁ תְּקוֹף גֻּבְרִין
12 וְתַקִּיף יְיָ בִּלְחוֹדוֹהִי בְּעִדָּנָא הַהִיא: אֲרֵי יוֹמָא דַעֲתִיד לְמֵיתֵי מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת עַל כָּל
13 גּוֹתְנַיָא וְרָמֵי לִבָּא וְעַל כָּל תַּקִּיפַיָא וְיִמָּאכוּן: וְעַל כָּל מַלְכֵי עַמְמַיָא תַּקִּיפַיָא וְחַסִּינַיָא
וְעַל כָּל טוּרְנֵי מְדִינָתָא:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quia eritis veluti quercus, cujus folia defluunt, & veluti hortus
qui non habet aquam. Et erit fortitudo impiorum sicut stuppa
opus manuum eorum sicut scintilla ignis; quæ cùm applicantur ad
cem, ardent ambo simul: sic consumentur impii, & opera eorum
va, & non erit super eis misericordia.

CAP. II.

VErbum prophetiæ, quod prophetavit Esaias filius Amos super
Juda, & habitatores Jerusalem. Et erit in fine dierum paratus mo
mus sanctuarii Domini in capite montium, & elevabitur super
& confluent ut serviant super eum, omnia regna. Et ibunt popul
& dicent: Venite & ascendamus in montem domus sanctuarii D
& in domum majestatis Dei Jacob, & docebit nos vias, quæ rectæ
ram eo; & ambulabimus in doctrina legis ejus: quia de Sion exib
doctrina verbi Domini de Hierusalem. Et judicabit inter regna, &
et populos multos, & contundent gladios suos in vomeres, & lance
as in falces: non levabit populus contra populum arma, neque
amplius prælium. Dicent viri domus Jacob: Venite & ambule
doctrina legis Domini. Quia dereliquistis terribilem & fortissimum
erat redemptor vester domus Jacob; quia repleta est terra vestra
sicut ab initio; & augures fuerunt sicut Philistim, & in legibus p
rum ambulant. Et repleta est terra eorum argento & auro, & non
thesaurorum ejus, & repleta est terra eorum equis, & non est finis q
garum ejus. Et repleta est terra eorum idolis, *opera* manuum suarum
rant, *quæ* paraverunt digiti eorum. Et humiliabitur homo, & infir
tur fortitudo virorum: ne dimittas eis. *Et* ingredientur ut fugiant
in *petra*, & ut abscondantur in pulvere à facie timoris Dñi, & à
re gloriæ ejus. Oculi sublimis hominis humiliabuntur, & infirmab
titudo virorum: & erit fortitudo Domini solius in tempore illo. Q
venturus est à facie Domini exercituum super omnes superbos &
corde: & super omnes fortes, & humiliabuntur. Et super om
populorum fortes & robustos, & super omnes principes provin

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

30 * ܡܛܠ ܕܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܒܛܡܬܐ ܕܢܬܪ ܛܪܦܗ̇. ܘܐܝܟ ܓܢܬܐ ܕܡܝܐ ܠܝܬ ܠܗ̇. * ܘܢܗܘܐ
31 ܥܘܫܢܗܘܢ ܠܢܥܘܪܬܐ. ܘܥܒܕܝܗܘܢ ܠܙܠܝܩܐ. ܘܢܐܩܕܘܢ ܬܪܝܗܘܢ ܐܟܚܕܐ. ܘܠܝܬ
ܕܡܕܥܟ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

1 * ܦܬܓܡܐ ܕܚܙܐ ܐܫܥܝܐ ܒܪ ܐܡܘܨ. ܥܠ ܝܗܘܕ ܘܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. * ܢܗܘܐ ܒܚܪܬ ܝܘܡܬܐ
2 ܢܗܘܐ ܡܬܩܢ ܛܘܪܐ ܕܒܝܬ ܡܪܝܐ ܒܪܝܫ ܛܘܪܐ. ܘܢܬܪܝܡ ܡܢ ܪܡܬܐ. ܘܢܚܙܘܢ ܠܗ
ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. * ܘܢܐܙܠܘܢ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܘܢܐܡܪܘܢ. ܬܘ ܢܣܩ ܠܛܘܪܗ ܕܡܪܝܐ
3 ܘܠܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܢܠܦܢ ܡܢ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܢܗܠܟ ܒܫܒܝܠܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܡܢ
ܨܗܝܘܢ ܢܦܩ ܢܡܘܣܐ. ܘܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. * ܘܢܕܘܢ ܒܝܬ ܥܡܡܐ
4 ܘܢܟܣ ܠܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܕܪܘܚܩܝܢ. ܘܢܦܚܡܘܢ ܣܦܣܝܪܝܗܘܢ ܠܣܟܐ ܦܕܢܐ.
ܘܪܘܡܚܝܗܘܢ ܠܡܓܙܠܐ. ܘܠܐ ܢܫܩܘܠ ܥܡܐ ܥܠ ܥܡܐ ܣܦܣܪܐ. ܘܬܘܒ ܠܐ ܢܐܠܦܘܢ ܩܪܒܐ.
5 * ܒܢܝ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܬܘ ܢܗܠܟ ܒܢܘܗܪܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܫܒܩܬܝܗܝ ܠܥܡܟ ܒܢܝ ܒܝܬ
6 ܝܥܩܘܒ. ܡܛܠ ܕܐܬܡܠܝܘ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܡܢܚܫܝܢ ܐܝܟ ܦܠܫܬܝܐ. ܘܒܢܝܐ
ܕܢܘܟܪܝܐ ܣܓܝܘ. * ܘܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܗܘܢ ܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ. ܘܠܝܬ ܣܟܐ ܠܣܝܡܬܗܘܢ.
7 ܘܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܗܘܢ ܪܟܫܐ. ܘܠܝܬ ܣܟܐ ܠܡܪܟܒܬܗܘܢ. * ܘܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܗܘܢ
8 ܦܬܟܪܐ. ܠܥܒܕ ܐܝܕܝܗܘܢ ܣܓܕܝܢ. ܠܕܥܒܕܝ ܨܒܥܬܗܘܢ. * ܘܐܬܡܟܟ ܐܢܫܐ.
9 ܘܐܫܬܦܠ ܓܒܪܐ. ܘܠܐ ܬܫܒܘܩ ܠܗܘܢ. * ܥܘܠܘ ܠܟܐܦܐ. ܘܐܬܛܫܘ ܒܥܦܪܐ. ܡܢ ܩܕܡ
10 ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܗܕܪܐ ܕܥܘܫܢܗ. * ܥܝܢܐ ܪܡܬܐ ܕܐܢܫܐ ܢܡܟܟ. ܘܢܬܡܟܟ ܪܘܡܐ
11 ܕܓܒܪܐ. ܘܢܫܬܓܒ ܡܪܝܐ ܒܠܚܘܕܘܗܝ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. * ܡܛܠ ܕܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܠ
12 ܟܠ ܕܡܬܪܘܪܒ ܘܡܬܬܪܝܡ. ܘܥܠ ܟܠ ܕܡܫܬܥܠܐ ܕܢܬܡܟܟ. * ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܪܙܐ
13 ܕܠܒܢܢ ܪܡܐ ܘܡܫܬܥܠܝܐ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܒܠܘܛܐ ܕܒܬܢܢ.

Quoniam erunt ſicut terebinthus cujus folia defluxêre, & ſicut hortus cui non eſt aqua : 30
Eritque fortitudo eorum in ſtupam, opera autem eorum in ſcintillas: & ardebunt ambo ſimul, nemine extinguente. 31

CAP. II.

SErmo quem vidit Eſaia filius Amos de Juda & de Jeruſalem. 1 Erit ultimis diebus 2 mons domûs Domini conſtitutus in vertice montium, & altior collibus; eumque ſpectabunt omnes gentes : Et ibunt multi populi 3 dicentes, Venite, aſcendamus ad montem Domini, & ad Deum Jacobi, ut doceat nos de viis ſuis, & ambulemus in ſemitis ejus : quoniam de Sion prodibit lex, & ſermo Domini de Jeruſalem : Et jus dicet inter gentes, 4 & arguet populos multos remotos : tundéntque gladios ſuos in vomeres aratri, & lanceas ſuas in falces : & non levabit gens contra gentem gladium, neque diſcent ampliùs bellum. Filii familiâs Jacobi, agite, 5 ambulemus in luce Domini. Nam deſtituiſti 6 populum tuum filios familiâs Jacobi, eò quòd repleti ſint ut antea, præſtigiis utantur ut Paleſtini, & plurimos exterorum filios educârint : Repleta ſit terra eorum argento & 7 auro, nec ſit finis theſaurorum eorum : impleta ſit terra eorum equis, & curruum eorum nullus ſit finis : Impleta quoque ſit 8 terra eorum idolis, opus manuum ſuarum adorent, quod fecerunt digiti eorum; Et humiliaverit 9 ſe homo, & vir ſe demiſerit : ne ergò dimittas eis. Ingredimini in petram, 10 & abſcondite vos in pulvere, propter pavorem Domini, & præ majeſtate fortitudinis ejus. Oculos hominum elatos humiliabit, 11 & deprimetur ſuperbia viri, & ſolus Dominus magnificabitur in die illa. Nam dies 12 Domini erit ſuper omnem ſeſe jactantem & efferentem, & ſuper omnem ſuperbientem, ut deprimatur : Super omnes cedros Libani 13 altas & ſublimes, et ſuper quercus Baiſan :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

30 * لانهم يصيرون مثل البطمة التي انتثرت اوراقها * ومثل روضة ليس فيها ماء * ويصير
31 قوتهم مثل قصبة المشاقة * واعمالهم مثل شرار النار *

* الفصل الثاني * الوحي الثاني *

1 * القول الذي صار من قبل الرب الي اشعياء بن اموص * من اجل اليهودية وايروسليم *
2 * انه سيكون في الايام الاخيرة جبل الله ظاهرا * وبيت الله على اطراف الجبال * ويستعلي فوق
3 اعلا التلال * وتنطلق اليه كافة الامم * ويسير اليه كثير من الشعوب ويقولون هلموا بنا
نصعد الي جبل الرب والي بيت اله يعقوب * ويخبرنا طريقه لنسلك فيها * لان من صهيون
4 يخرج الناموس * وكلمة الرب من ايروسليم * ويحكم بين امم كثيرة * ويبكت شعبا كثيرا *
فيقطعون سيوفهم ويصلحونها سككا * ويعملون حرابهم مناجل * ولا تحمل امة على امة سيفا
5 ولا يتعلمون الحرب ايضا * والان يا بيت يعقوب هلموا نسير في نور الرب * 6 لانه خلص شعبه
بيت اسرايل * لان قد امتلي بلدهم كما كان اولا تطيرا مثل الغرباء * وولد لهم اولاد غرباء
7 كثيرون * لان بلدهم قد امتلات فضة وذهبا * وليس لكنوزهم عدد * وامتلات ارضهم خيلا *
8 وليس لمراكبهم عدد * وامتلات ارضهم رذالات اعمال ايديهم وسجدوا لما صنعت اصابعهم
9 * وهان الانسان * واتضع الرجل * ولست اهملهم * الاصحاح الثاني *
10 * فادخلوا الان في الصخور * واختفوا في الارض * من وجه خوف الرب * ومن مجد قوته
11 اذا قام ليهشم الارض * لان الحاظ الرب عالية * والانسان ذليل * وسيذل ارتفاع البشر * ويتعالى
12 الرب وحده في ذلك اليوم * لان يوم رب الجنود سياتي على كل شاتم ومتعظم * وكل
13 من استعلى وشامخ فيذلون * وعلى كل ارز لبنان المتعالي الشامخ * وعلى كل شجر
بلوط بيسان *

Quoniam evadent ſicut terebinthus cujus folia defluxerunt, & ſicut hortus in quo nulla extat aqua : 30 *Et evadet robur eorum velut arundo cannabis, & actiones eorum velut ſcintillæ ignis.* 31

CAPUT. II.

Revelatio ſecunda.

Sermo qui factus eſt à Domino ad Eſaiam filium Amos, de Judæa & de Jeruſalem. 1

ERit quidem poſtremis diebus mons Dei conſpicuus, & domus Dei ſuper cacumina montium, & attolletur ſuper editiſſimos colles : 2 *Et confluent ad illum univerſæ gentes, & multi ex populis ad illum ſeſe recipient dicentes; Adeſte, aſcendamus ad montem Domini & ad domum Dei Jacobi, ut ſignificet nobis viam ſuam, quatenus ambulemus in eam: nam è Sion prodibit lex, & verbum Domini è Jeruſalem :* 3 *Et jus dicet inter gentes multas, & corripiet populum copioſum : & concident gladios ſuos, & aptabunt eos in vomeres, & lanceas ſuas component in falces : & & non feret gens contra gentem gladium, & non diſcent ampliùs bellum.* 4 *Nunc itaque O domus Jacob, venite, ambulemus in luce Domini;* 5 *Quoniam ipſe liberavit populum ſuum domum Iſraelis: jam enim repleta eſt regio eorum, ut erat antehac, augurationibus more exterorum; & nati ſunt eis filii exteri permulti.* 6 *Nam regio eorum impleta jam eſt argento & auro, & theſauris eorum nullus eſt numerus : impleta eſt terra eorum equis, & curribus eorum nullus eſt numerus :* 7 *Denique repleta eſt terra eorum abominationibus, operibus* ſcilicet *manuum eorum; et adoraverunt quod compoſuêre digiti eorum :* 8 *Contempſit ſe homo, et humiliavit ſe vir : attamen non deſtituam eos.* 9

Textus ſecundus.

Nunc ergò ingredimini in petras, et abdite vos in terra à facie terroris Domini, et à gloria roboris ejus, cùm exurget ad perfringendam terram: 10 *Intuitus enim Domini ſublimes ſunt, homo verò abjectus. Et deprimetur celſitudo hominum, et ſolus Dominus exaltabitur in die illa.* 11 *Nam dies Domini exercituum ventura eſt ſuper omnem blaſphemum et arrogantem; et quicunque ſuperbierint et extulerint ſeſe, deprimentur.* 12 *Item ſuper omnes cedros Libani celſiſſimas et elatiſſimas, et ſuper omnem arborem quercûs Baſanæ :* 13

יְשַׁעְיָה : ג

.elevatos colles omnes ſuper & ,excelſos montes omnes ſuper Et
וְעַל כָּל־הֶהָרִים הָרָמִים וְעַל כָּל־הַגְּבָעוֹת הַנִּשָּׂאוֹת׃ 14
.munitum murum omnem ſuper & ,excelſam turrim omnem ſuper Et
וְעַל כָּל־מִגְדָּל גָּבֹהַּ וְעַל כָּל־חוֹמָה בְּצוּרָה׃ 15
.deſiderii proſpecturæ omnes ſuper & , Tarſis naves omnes ſuper Et
וְעַל כָּל־אֳנִיּוֹת תַּרְשִׁישׁ וְעַל כָּל־שְׂכִיּוֹת הַחֶמְדָּה׃ 16
: hominum altitudo ſe humiliabit & ,hominis elatio ſe incurvabit Et
וְשַׁח גַּבְהוּת הָאָדָם וְשָׁפֵל רוּם אֲנָשִׁים 17
vana Et .illa die in ipſe ſolus DOMINUS elevabitur &
וְנִשְׂגַּב יְהוָה לְבַדּוֹ בַּיּוֹם הַהוּא׃ וְהָאֱלִילִים 18
, petrarum ſpeluncas in introibunt Et .concidet penitus
כָּלִיל יַחֲלֹף׃ וּבָאוּ בִּמְעָרוֹת צֻרִים 19
gloria à & ,DOMINI formidinis faciebus à ,pulveris concavitates in &
וּבִמְחִלּוֹת עָפָר מִפְּנֵי פַּחַד יְהוָה וּמֵהֲדַר
die In .terram frangendam ad ipſum ſurgendo in ,ejus altitudinis
גְּאוֹנוֹ בְּקוּמוֹ לַעֲרֹץ הָאָרֶץ׃ בַּיּוֹם 20
,ſui aur. vana & ,ſui argenti vana homo projiciet illa
הַהוּא יַשְׁלִיךְ הָאָדָם אֵת אֱלִילֵי כַסְפּוֹ וְאֵת אֱלִילֵי זְהָבוֹ
.veſpertilionibus & , foveas fodiendum ad ſe incurvandum ad ſibi fecerunt quæ
אֲשֶׁר עָשׂוּ־לוֹ לְהִשְׁתַּחֲוֹת לַחְפֹּר פֵּרוֹת וְלָעֲטַלֵּפִים׃
faciebus à ſaxorum ſcopulos in & , petrarum ſciſſuras in veniendum Ad
לָבוֹא בְּנִקְרוֹת הַצֻּרִים וּבִסְעִפֵי הַסְּלָעִים מִפְּנֵי 21
ipſum ſurgendo in ejus altitudinis decore à & ,DOMINI formidinis
פַּחַד יְהוָה וּמֵהֲדַר גְּאוֹנוֹ בְּקוּמוֹ
flatus cujus ,homine ab vobis Deſinite .terram frangendam ad
לַעֲרֹץ הָאָרֶץ׃ חִדְלוּ לָכֶם מִן־הָאָדָם אֲשֶׁר נְשָׁמָה 22
? ipſe reputatur quo in nam ; ejus naſo in
בְּאַפּוֹ כִּי־בַמֶּה נֶחְשָׁב הוּא׃

CAP. III. ג

, Jeruſalaim à removens exercituum Dominus dominator ecce Nam
כִּי הִנֵּה הָאָדוֹן יְהוָה צְבָאוֹת מֵסִיר מִירוּשָׁלַם 1
, panis fulcimentum omne , fulcimentum & fulcimentum Jehudah à &
וּמִיהוּדָה מַשְׁעֵן וּמַשְׁעֵנָה כֹּל מִשְׁעַן־לֶחֶם
judicem , belli virum & Fortem .aquæ fulcimentum omne &
וְכֹל מִשְׁעַן מָיִם׃ גִּבּוֹר וְאִישׁ מִלְחָמָה שׁוֹפֵט 2
quinquaginta Principem .ſenem & divinum & , prophetam &
וְנָבִיא וְקֹסֵם וְזָקֵן׃ שַׂר־חֲמִשִּׁים 3
.eloquii peritũ &, ingenioſorum ſapientem & ,conſiliarium &, faciebus elevatum &
וּנְשׂוּא פָנִים וְיוֹעֵץ וַחֲכַם חֲרָשִׁים וּנְבוֹן לָחַשׁ׃
.eos in dominabuntur parvuli & , eorum principes pueros dabo Et
וְנָתַתִּי נְעָרִים שָׂרֵיהֶם וְתַעֲלוּלִים יִמְשְׁלוּ־בָם׃ 4
puer ſuperbient :ſuũ ſocium in vir &,virum in vir ,popul' fuit exactor Et
וְנִגַּשׂ הָעָם אִישׁ בְּאִישׁ וְאִישׁ בְּרֵעֵהוּ יִרְהֲבוּ הַנַּעַר 5
ſuũ fratrẽ in vir apprehendet Quoniã .inclytum in contemptus &,ſenem in
בַּזָּקֵן וְהַנִּקְלֶה בַּנִּכְבָּד׃ כִּי־יִתְפֹּשׂ אִישׁ בְּאָחִיו 6
ruina & : nobis eris gubernator , tibi Veſtimentũ : ſui patris domus
בֵּית אָבִיו שִׂמְלָה לְכָה קָצִין תִּהְיֶה־לָּנוּ וְהַמַּכְשֵׁלָה
ero Non : dicendo ,illa die in Aſſumet .tua manus ſub hæc
הַזֹּאת תַּחַת יָדֶךָ׃ יִשָּׂא בַיּוֹם הַהוּא לֵאמֹר לֹא־אֶהְיֶה 7
me conſtituatis Ne .veſtimentum nec ,panis non mea domo in &,alligans
חֹבֵשׁ וּבְבֵיתִי אֵין לֶחֶם וְאֵין שִׂמְלָה לֹא תְשִׂימֻנִי
: concidit Jehudah & , Jeruſalaim ruit Quia .populi gubernatorem
קְצִין עָם׃ כִּי כָשְׁלָה יְרוּשָׁלַם וִיהוּדָה נָפָל 8
irritandum ad ,DOMINUM contra eorum conata & eorũ lingua quia
כִּי־לְשׁוֹנָם וּמַעַלְלֵיהֶם אֶל־יְהוָה לַמְרוֹת
.ejus gloriæ oculos
עֵנֵי כְבוֹדוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

14 Et ſuper omnes montes excel-
ſos, & ſuper omnes colles ele-
15 vatos: Et ſuper omnem turrim
excelſam, & ſuper omnem mu-
16 rum munitum, Et ſuper omnes
naves Tharſis, & ſuper omne
17 quod viſu pulchrum eſt. Et
incurvabitur ſublimitas homi-
num, & humiliabitur altitudo
virorum, & elevabitur Domi-
18 nus ſolus in die illa: Et idola
19 penitùs conterentur: Et intro-
ibunt in ſpeluncas petrarum,
& in voragines terræ, à facie
formidinis Domini, & à glo-
ria majeſtatis ejus, cùm ſurre-
20 xerit percutere terram. In die
illa projiciet homo idola ar-
genti ſui, & ſimulachra auri
ſui, quæ fecerat ſibi ut adora-
ret, talpas & veſpertiliones.
21 Et ingredietur ſciſſuras petra-
rum, & in cavernas ſaxorum,
à facie formidinis Domini, &
à gloria majeſtatis ejus, cùm
ſurrexerit percutere terram.
22 Quieſcite ergò ab homine, cu-
jus ſpiritus in naribus ejus eſt,
quia excelſus reputatus eſt
ipſe.

CAP. III.

1 Ecce enim dominator Do-
minus exercituum auferet à Je-
ruſalem & à Juda validum &
fortem, omne robur panis, &
2 omne robur aquæ; Fortem, &
virum bellatorem, judicem, &
prophetam, & ariolum, & ſe-
3 nem; Principem ſuper quin-
quaginta, & honorabilem vul-
tu, & conſiliarium, & ſapien-
tem de architectis, et pruden-
4 tem eloquii myſtici. Et dabo
pueros principes eorum, et ef-
fœminati dominabuntur eis.
5 Et irruet populus, vir ad virũ,
et unuſquiſque ad proximum
ſuum: tumultuabitur puer con-
tra ſenem, et ignobilis contra
6 nobilem. Apprehendet enim
vir fratrem ſuum domeſticum
patris ſui: Veſtimentum tibi
eſt, princeps eſto noſter, ruina
7 autem hæc ſub manu tua. Re-
ſpondebit in die illa, dicens;
Non ſum medicus, et in domo
mea non eſt panis, neque ve-
ſtimentum: nolite conſtituere
8 me principem populi. Ruit e-
nim Jeruſalem, et Judas con-
cidit: quia lingua eorum et
adinventiones eorum contra
Dominum, ut provocarent o-
culos majeſtatis ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Καὶ ἐπὶ (θ) πᾶν ὑψηλὸν ὄρος, καὶ
15 ἐπὶ πάντα βουνὸν ὑψηλὸν, Καὶ ἐπὶ
πάντα πύργον ὑψηλὸν, καὶ ἐπὶ πᾶν τεῖ-
16 χος ὑψηλὸν, Καὶ ἐπὶ πᾶν πλοῖον θα-
λάσσης, καὶ ἐπὶ πᾶσαν θέαν πλοίων κάλ-
17 λους. Καὶ ταπεινωθήσεται πᾶς ἄνθρω-
πος, καὶ πεσεῖται (ι) ὕβρις τῶν ἀνθρώπων,
καὶ ὑψωθήσεται κύριος μόνος ἐν τῇ ἡμέρᾳ
18 ἐκείνῃ. Καὶ τὰ χειροποίητα πάντα κα-
19 τακρύψουσιν, Εἰσενέγκαντες εἰς τὰ σπή-
λαια, καὶ εἰς τὰς σχισμὰς τῶν πετρῶν, καὶ εἰς
τὰς τρώγλας τῆς γῆς ἀπὸ προσώπου τοῦ
φόβου κυρίου, καὶ ἀπὸ τῆς δόξης τῆς ἰσχύ-
ος αὐτοῦ, ὅταν ἀναστῇ θραῦσαι τὴν γῆν.
20 (κ) Τῇ γὰρ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐκβαλεῖ ἄνθρω-
πος τὰ βδελύγματα αὐτοῦ τὰ ἀργυρᾶ, καὶ
τὰ χρυσᾶ, (λ) ἃ ἐποίησαν προσκυνεῖν τοῖς
21 ματαίοις, καὶ ταῖς νυκτερίσι, Τοῦ εἰσελ-
θεῖν εἰς τὰς τρώγλας τῆς στερεᾶς πέτρας,
καὶ εἰς τὰς σχισμὰς τῶν πετρῶν, ἀπὸ προσ-
ώπου τοῦ φόβου κυρίου, καὶ ἀπὸ τῆς δόξης
τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, ὅταν ἀναστῇ θραῦσαι τὴν
γῆν.

MS. A. (θ) πᾶν ὄρος, (ι) ὕψος ἀνθρώπων, (κ) Τῇ ἡμέρᾳ (λ
ἐποίησεν

ΚΕΦ. γ'.

1 Ἰδοὺ δὴ ὁ δεσπότης κύριος Σαβαὼθ
ἀφελεῖ (α) ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ καὶ ἀπὸ τῆς
Ἰουδαίας, ἰσχύοντα καὶ ἰσχύουσαν, ἰσχὺν ἄρ-
2 του καὶ ἰσχὺν ὕδατος, Γίγαντα καὶ ἰσχύον-
τα, καὶ ἄνθρωπον πολεμιστὴν, καὶ δικαστὴν,
καὶ προφήτην, καὶ στοχαστὴν, καὶ πρεσβύτε-
3 ρον, Καὶ πεντηκόνταρχον, καὶ θαυμαστὸν
σύμβουλον, καὶ σοφὸν ἀρχιτέκτονα, καὶ συν-
4 ετὸν ἀκροατήν. Καὶ ἐπιστήσω νεανίσκους
ἄρχοντας αὐτῶν, καὶ ἐμπαῖκται κυριεύσου-
5 σιν αὐτῶν. Καὶ συμπεσεῖται ὁ λαὸς, ἄν-
θρωπος πρὸς ἄνθρωπον, καὶ ἄνθρωπος
πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ· προσκόψει τὸ
παιδίον πρὸς τὸν πρεσβύτην, ὁ ἄτιμος
6 πρὸς τὸν ἔντιμον. Ὅτι ἐπιλήψεται ἄν-
θρωπος τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ, ἢ τοῦ οἰκείου τοῦ
πατρὸς αὐτοῦ, λέγων, Ἱμάτιον ἔχεις, ἀρ-
χηγὸς (β) γενοῦ ἡμῶν, καὶ τὸ βρῶμα τὸ ἐ-
7 μὸν ὑπὸ σὲ ἔστω. Καὶ ἀποκριθεὶς (γ) ἐν τῇ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐρεῖ, Οὐκ ἔσομαί σου ἀρχη-
γός· οὐ γάρ ἐστιν ἐν τῷ οἴκῳ μου ἄρτος,
οὐδὲ ἱμάτιον. οὐκ ἔσομαι ἀρχηγὸς τοῦ λαοῦ
8 τούτου, Ὅτι ἀνεῖται Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἡ Ἰ-
ουδαία συμπέπτωκε, καὶ αἱ γλῶσσαι αὐ-
τῶν μετὰ ἀνομίας, τὰ πρὸς κύριον ἀπει-
θοῦντες.

MS. A. (α) ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας καὶ ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ, (β) ἡμῶν
(γ) ἐρεῖ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, Οὐκ

Et ſuper omnem excelſum mon
tem, & ſuper omnem collem ex
celſum, Et ſuper omnem turr
excelſam, & ſuper omnem mur
excelſum, Et ſuper omne nav
um (d) maris, & ſuper omnẽ aſp
ectum pulchritudinis navium. E
humiliabitur omnis homo, & ca
det (e) contumelia hominum: &
exaltabitur Dominus ſolus in d
illa. Et manufacta omnia abſcon
dent, Inferentes in ſpeluncas p
in ſciſſuras petrarum, & in caver
nas terræ, à facie timoris Domi
& à gloria fortitudinis ejus, cum
ſurrexerit frangere terrã. In die
illâ ejiciet homo abominationes ſ
as argenteas, & aureas, quas f
cerunt, ad adorandum (f) talpas
veſpertiliones, Ad ingrediendum
cavernas firmæ petræ, & in
ſuras petrarum, à facie tim
Domini, & à gloria fortitudi
ejus, cùm ſurrexerit frang
(g) terram.

CAP. III.

Ecce itaque dominator Domi
Sabaoth auferet de Hieruſalem
de Judæa, (a) validum, & va
dam, robur panis, & robur aq
(b) Gigantẽ & fortem, & ho
bellatorem, & judicẽ, & prop
& (c) conjectorem, et preſb
Et quinquagenarium, & adm
bilem conſiliarium, & (d) ſa
entem architectum, & (e) p
dentem auditorem. Et im
adoleſcentes principes eorum
(f) illuſores dominabuntur
Et corruet populus, homo a
minem, & homo ad proxi
ſuum: (g) impinget puer a
nem, & inhonoratus ad ho
tum: Quia apprehende
fratrem ſuum, vel domeſtic
tris ſui, dicens; Veſtimentu
bis: princeps eſto noſter
(h) cibus meus ſub te ſit.
ſpondens in die illa dicet; N
tuus (i) princeps: non enim
domo mea panis, neque veſ
tum; non ero princeps po
jus: Quia diſſoluta eſt Hi
lem, et Judæa concidit,
linguæ eorum cum ini
(l) in his, quæ ad Domin
creduli.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

14 ועל כל טוריא רמיא ועל כל רמתא מנטלתא׃ ועל כל דיתבין במגדל רם ועל כל דשרן 15
בשור כריך׃ ועל כל דיתבין בנסי ימא ועל כל דשרן בבירניתא שפירן׃ וימאך רמות 16
אנשא ויחלש תקוף גברין ותקיף יי בלחודוהי בעדנא ההיא׃ וטעותא גמירא יסופון׃ 17 18
ויעלון במערת טנריא ובמחלי עפרא מן קדם דחלתא דיי ומזיו יקריה באתגליותיה 19
למתבר רשיעי ארעא׃ בעדנא ההיא ירחקון בני אנשא ית טעות כספהון וית טעות 20
דהבהון דעבדו להון למסגד לטעותא ולצלמניא׃ למעל במערת טנריא ובשקיפי 21
כיפא מן קדם דחלתא דיי ומזיו יקריה באתגליותיה למתבר רשיעי ארעא׃ אתמנעו 22
לכון מלאשתעבדא לאנשא במעבדיה דחלא דנשמת רוח חיין באפוהי ארי יומא דין
הוא קים ומחר ליתוהי וכלמא חשיב הוא׃

ג

1 ארי הא רבון עלמא יי צבאות מעדי מירושלם ומיהודה סמך וסעיד כל סמך מיכל וכל
2 סעיד משתי׃ גבר וגבר עביד קרב דין וספר ומשתאל וסב׃ רב חמשין ונסב אפין 3
ומליך מילך ואמר ומשתמע וחכים וסוכלתן בעצה׃ ואמני ינקיא פרנסיהון וחלשיא 4
ישלטון בהון׃ ויתגרון עמא גבר בגבר וגבר בחבריה ישלטון עולימיא בסבא ודשיט 5
בדיקיר׃ ארי יחוד גבר באחוהי מזרעית בית אבוהי למימר כסו אית לך רב תהי עלנא 6
ומגביתא הדא תהי תחות ידך׃ יתיב בעדנא ההיא למימר לית אנא כשר למהוי ריש 7
ובביתי לית מה דאיכול ולית מה דאתכסי לא תמנוני רב בריש כל עמא׃ ארי אתקילו 8
יתבי ירושלם ואנש יהודה גלו ארי ממלל פומהון ואגר עובדיהון גלן קדם יי ומרגזין
קדם יקריה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſup omnes montes excelſos, & ſup omnes colles elevatos. Et ſup
qui habitant in turre excelſa, & ſup omnes qui morantur in muro
Et ſup omnes qui habitãt in inſulis maris, & ſup oẽs qui morantur
tiis pulcherrimis, Et humiliabitur altitudo hominũ, & infirmabitur
do virorum, & roborabitur Dñs ſolus in tempore illo. Et idola pen
ficient. Et introibunt in ſpeluncas petrarum, & in cavernas pulver
cie timoris Domini, & à ſplendore gloriæ ejus, cùm revelatus
conterat impios terræ. In tempore illo procul abjicient homin
ſua argentea, & idola ſua aurea, quæ ſibi fecerant, ut adorarent
ſimulachra. Ut ingrediantur ſpeluncas rupium, *petræque* foramin
timoris Domini, & à ſplendore gloriæ ejus, cùm revelatus fuerit
terat impios terræ. Ceſſate vobis ne ſubjiciamini homini, cùm
erit terribilis, cujus ſpiraculum ſpiritus vitæ in naribus ejus eſt:
diè eſt vivus & cras non eſt, & quaſi nihilum reputatus eſt ipſe.

CAP. III.

Ecce enim dominator ſeculi Dominus exercituum auferet de Hi
lem & de Juda fulcimentum & ſuſtentaculum, omne fulcimentum
& omnem ſuſtentationem potus. Fortem & virum bellatorem, ju
& ſcribam, & conjectorem, & ſenem; Et principem quinquagen
& acceptabilem vultus, & conſiliarium, & docentem, & audientem
ſapientem, & prudentem in conſilio. Et conſtituam pueros guber
res eorum; & infirmi dominabuntur eis. Et irruet populus vi
rum, & unuſquiſque in proximum ſuum; *dominabuntur* pueri con
nem, & ignobilis contra nobilem. Apprehendet enim vir fratrem
de cognatione domus patris ſui, dicens: Veſtimentum tibi eſt, p
eſto noſter, & poteſtas hæc erit ſub manu tua. Reſpondebit in tem
lo dicens: Non ſum ſufficiens ut ſim princeps, & in domo mea n
beo quod comedam, neque quo operiar; ne conſtituatis me princ
caput totius populi. Quia offenderunt habitatores Hieruſalem
Juda tranſmigrati ſunt, quia eloquium oris ſui, & merces operum ſuorum manifeſta ſunt coram Domino; provocant enim maje

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

14 * ܘܥܠ ܛܘܪ̈ܐ ܕܪ̈ܡܝܢ. ܘܥܠ ܟܠ ܪ̈ܡܬܐ ܕܪ̈ܡܢ. * ܘܥܠ ܟܠ ܡܓܕ̈ܠܐ ܕܪ̈ܡܝܢ. ܘܥܠ ܟܠ 15
ܫܘܪܐ ܕܚܣܝܢ. * ܘܥܠ ܟܠܗܝܢ ܐܠܦ̈ܐ ܕܬܪܫܝܫ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܚܙ̈ܘܐ ܕܪܓܬܐ. 16
* ܘܢܬܡܟܟ ܪܘܡܐ ܕܐܢܫܐ. ܘܢܬܡܫܦܠ ܪܘܡܐ ܕܓܒܪ̈ܐ. ܘܢܬܥܠܐ ܡܪܝܐ ܒܠܚܘܕܘܗܝ 17
ܒܝܘܡܐ ܗܘ. * ܘܦܬܟܪ̈ܐ ܠܓܡܪ ܢܥܒܪܘܢ. * ܘܢܥܠܘܢ ܠܡܥܪ̈ܐ ܕܟܐܦ̈ܐ ܘܠܢܩܥ̈ܐ 18 19
ܕܐܪܥܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܗܕܪܐ ܕܥܘܫܢܗ. ܡܐ ܕܩܐܡ ܠܡܬܒܪܗ̇ ܠܐܪܥܐ.
* ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܫܕܘܢ ܐܢܫܐ ܦܬܟܪ̈ܐ ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ. ܕܥܒܕܘ ܠܗܘܢ ܠܡܣܓܕ 20
ܠܣܪ̈ܝܩܘܬܐ ܘܠܥܛܠܦ̈ܐ. * ܠܡܥܠ ܠܡܥܪ̈ܐ ܕܟܐܦ̈ܐ ܘܠܢܩܥ̈ܐ ܕܫܘܥ̈ܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܕܚܠܬܗ 21
ܕܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܗܕܪܐ ܕܥܘܫܢܗ. ܡܐ ܕܩܐܡ ܠܡܬܒܪܗ̇ ܠܐܪܥܐ. * ܫܒܘܩܘ ܠܟܘܢ ܡܢ ܐܢܫܐ 22
ܕܢܫܡܬܐ ܒܢܚܝܪ̈ܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܡܢܐ ܚܫܝܒ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

* ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܪܝܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܡܥܒܪ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܘܡܢ ܝܗܘܕܐ. ܣܡܘܟܐ ܘܣܡܘܟܬܐ. 1
ܟܠ ܕܣܡܟ ܒܠܚܡܐ. ܘܟܠ ܕܣܡܟ ܒܡܝܐ. * ܓܢܒܪܐ ܘܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ. ܘܕܝܢܐ. ܘܢܒܝܐ. 2
ܘܩܨܘܡܐ. ܘܩܫܝܫܐ. * ܘܪܝܫ ܚܡܫܝܢ. ܘܗܕܝܪ ܐܦ̈ܐ. ܘܡܠܟܘܟܐ. ܘܚܟܝܡ ܢܓܪ̈ܐ. 3
ܘܡܬܒܝܢ ܒܡܠܬܐ. * ܘܐܩܝܡ ܛܠܝ̈ܐ ܪܘܪ̈ܒܢܝܗܘܢ. ܘܡܒܙܚܢ̈ܐ ܢܫܬܠܛܘܢ ܒܗܘܢ. 4
* ܘܢܬܩܦܘܢ ܥܡܐ ܓܒܪܐ ܒܓܒܪܐ ܓܒܪܐ ܒܚܒܪܗ. ܘܢܬܚܨܦܘܢ ܛܠܝ̈ܐ ܒܣܒ̈ܐ: ܘܫܝ̈ܛܐ 5
ܒܡܝܩܪ̈ܐ. * ܡܛܠ ܕܢܐܚܘܕ ܓܒܪܐ ܠܐܚܘܗܝ. ܡܢ ܒܝܬ ܐܒܘܗܝ ܘܢܐܡܪ ܠܗ. 6
ܢܚܬܐ ܐܝܬ ܠܟ. ܗܘܝ ܠܢ ܪܝܫܐ. ܘܬܘܩܠܬܐ ܗܕܐ ܬܗܘܐ ܬܚܝܬ ܐܝܕܟ. * ܘܢܥܢܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ 7
ܘܢܐܡܪ. ܠܐ ܗܘܐ ܐܢܐ ܪܝܫܐ. ܕܒܒܝܬܝ ܠܝܬ ܠܚܡܐ. ܘܐܦܠܐ ܬܟܣܝܬܐ. * ܠܐ ܬܩܝܡܘܢܢܝ 8
ܪܝܫܐ ܥܠ ܥܡܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܬܩܠܬ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܝܗܘܕܐ ܢܦܠ. ܡܛܠ ܕܠܫܢܗܘܢ
ܘܥܒܕ ܐܝܕܝܗܘܢ. ܐܡܪܪܘ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܥܢܢܐ ܕܐܝܩܪܗ.

Super montes excelſos, & ſuper colles ſublimes: 14 Super omnes turres altas, & ſuper omnes muros munitos: 15 Super omnes naves Tharſis, & ſuper omnes ſpeculas optatiſſimas. 16 Et humiliabitur celſitudo hominis, & altitudo viri deprimetur, & ſolus Dominus exaltabitur in die illa: 17 Idola verò penitùs tranſibunt. 18 Et ingredientur in ſpecus petræ, & in hiatus terræ, propter terrorem Domini, & propter nitorem fortitudinis ejus, cùm ſurrexerit ad domandum terram. 19 Eâdem illâ die abjicient homines idola aurea & argentea quæ fabricaverant ſibi, ut adorarent vanitates & veſpertiliones. 20 Ingrediendo in cavernas petræ & in rupes lapideas, propter pavorem Domini, & propter decorem fortitudinis ejus, cùm ſurrexerit ad domandum terram. 21 Quieſcite ab homine qui halitum habet in naribus ſuis: quanti enim eſt momenti? 22

CAP. III.

Nam ecce Dominus dominorum amotus eſt à Jeruſalem & à Juda fultorem & fultricem, omnem fulcientem pane, & omnem fulcientem aquâ: 1 Strenuum, & virum bellatorem, judicem, & prophetam, hariolum, & ſenem: 2 Ducem quinquagenarium, honorandi vultûs *virum*, & conſiliarium, fabrum peritum, & ſagacem in conſilio: 3 Et adoleſcentes conſtituam principes eorum, & irriſores imperitabunt eis. 4 Et irruet populus alter in alterum, quiſque in ſocium ſuum: & inſoleſcent juvenes contra ſenes, & ignobiles contra nobiles. 5 Etenim apprehendet unuſquiſpiam fratrem ſuum è domo ſua paterna, & dicet ei; Veſtes habes, eſto princeps noſter; et offendiculum hoc ſub manu tua ſit. 6 Reſpondebit autem eo die, dicétque; Nequaquam ero caput, quia in domo mea nec panis extat, nec operimentum. 7 Ne conſtituatis me principem ſuper populum, quoniam impegit Jeruſalem, et lapſus eſt Juda: nam lingua eorum, et opus manuum eorum exacerbaverunt Dominum et nubem majeſtatis ejus. 8

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA

14 15 * وعلى كل جبل عال * وعلى كل آكام مرتفعة * وعلى كل برج شاهق * وعلى كل سور مرتفع *
16 17 * وعلى كل سفن البحر * وعلى كل منظر حسن السفن * ويذل كل انسان * ويسقط ارتفاع البشر
18 19 ويتعالى الرب وحده في ذلك اليوم * ويخفون جميع ما عملت ايديهم * ويخفوها في المغاير * وفي
سقوف الصخور * وفي انقاب الارض * من وجه خوف الرب ومن مجد قوته * اذا قام ليهشم الارض *
20 * لأن في ذلك اليوم يخرج الانسان رذائله من كسب الفضة الذهب * التي اغتصبوها لهم
21 ليسجدوا لها * ومن الاشباح الليلية * ليوكزوها في انقاب الصخر الصلد * وفي سقوف الصخور
من وجه خوف الرب * ومن مجد قوته * اذا قام ليهشم الارض *

22 [MS. Oxon. كفوا عن الانسان الذي يتنشق الريح بمنخريه لانه بماذا اقياس •]

* الفصل الثالث *

* قريان فيه توبيخ النبي للشعب * ونهيه لهم عن التوكل على الانسان *

1 * هاهوذا السيد رب الجنود ينزع من اليهودية ومن ايروشليم القوي والقوية * وقوة الخبز
2 وقوة الماء * والجبار والمقتدر * والانسان المحارب * والقاضي والنبي * والعراف والشيخ * ورئيس
3 خمسين * والمشير العجيب * والمهندس الحكيم السامع الفهم * واقيم رؤساءهم احداثا * ويسودون
4 5 عليهم المستهزيون * ويقع الشعب انسان على انسان وانسان على رفيقه * ويتعدى الصبي بالشيخ
6 والسفيه بالمكرم * لأن الرجل منهم يتشبث باخيه او بواحد من بيت ابيه * ويقول له لك ثوب
7 فكن رئيسا علينا * وليكن طعامي من عندك * فيجيب في ذلك اليوم ويقول لست اكون
8 رئيسا * لأن ليس في بيتي خبز ولا ملبوس * لست اكون على هذا الشعب رئيسا * لأن ايروشليم
قد خلت * واليهودية سقطت * والسنتهم تخالف فرايض الله باثامهم

Super quoſcunq; montes altiſſimos, & ſuper eduiſſimos quoſq; colles. 14 *Super omnes turres elatiſſimas, & ſuper omnes muros celſiſſimos:* 15 *Super omnes naves maris, & ſuper omnem aſpectum pulchritudinis navium.* 16 *Et deprimetur omnis homo, & altitudo mortaliũ labetur; ſolus autem Dominus exaltabitur eo die.* 17 *Et abſcondent quæcunq; compoſuerunt manus eorum;* 18 *Abſcondent inquã, illam in antris, in hiatibus petrarum, & in foraminibus terræ à facie terroris Domini, & à majeſtate roboris ejus, cùm exurget ad perrumpendam terram.* 19 *Nam eo die ejicient homines vitia ſua ex acquiſitione argenti atq; auri quæ ſibi congeſſerant ut adorarent ea, & ex phantaſmatibus nocturnis;* 20 *ut indant ea in foramina petræ duriſſimæ, & in hiatus rupium, à facie terroris Domini, & à majeſtate roboris ejus, cùm exurget ad comminuendam terram.* 21

[Deſiſtite vos ab ipſo homine, cujus halitus eſt in naribus ejus: nam in quo eſtimandus eſt?] 22

CAP. III.

Lectio continens commonitionem Prophetæ ad populum, et cohortationem ne ſpem collocent in homine.

Ecce Domin⁹ dominator exercituũ auferet ab Judæa et ab Jeruſalẽ validũ et validam, robur panis & robur aquæ; 1 *Gigantẽ, & potentẽ, hominemq; bellatorem, judicem, prophetã, divinum, atque ſenem;* 2 *Ducem quinquaginta, conſiliarium admirandum, architectum ſapientem, capacem rationis.* 3 *Et conſtituam principes eorum juvenes, et dominabuntur eis irriſores.* 4 *Irruetq; populus alter in alterum: & homo in ſocium ſuum: et inſoleſcet puer contra ſenem, et ſtolidus contra honeſtum.* 5 *Nam apprehendet quis eorum fratrem ſuum, aut aliquem de domo patris ſui, dicetque ad eum; Veſtem habes, ſis ergò dux noſter, ſitque cibus meus à te.* 6 *At is reſpondebit eã die, dicetque; Non ero dux, quia non eſt domi meæ panis neque indumentum.* 7 *Non ero dux ſuper hunc populum, quia Jeruſalem jam deſolata eſt, et Judæa corruit, et linguæ eorum adverſantur præceptis divinis ob iniquitates eorum.* 8

ישעיה : ג

Sedom sicut suum peccatum & , eos in respondit eorum facierum Agnitio
9 הַכָּרַת פְּנֵיהֶם עָנְתָה בָּם וְחַטָּאתָם כִּסְדֹם
reddiderunt quoniam ,eorum animæ Væ .celârunt non , nunciaverunt
הִגִּידוּ לֹא כִחֵדוּ אוֹי לְנַפְשָׁם כִּי־גָמְלוּ
fructum quòd , bonus cùm justo Dicite .malum sibiipsis
10 לָהֶם רָעָה׃ אִמְרוּ צַדִּיק כִּי־טוֹב כִּי־פְרִי
retributio nam : malum impio Væ .comedent suorum studiorum
11 מַעַלְלֵיהֶם יֹאכֵלוּ׃ אוֹי לְרָשָׁע רָע כִּי־גְמוּל
, parvulus , ejus exactores mei Populi .ei fiet ejus manuum
12 יָדָיו יֵעָשֶׂה לּוֹ׃ עַמִּי נֹגְשָׂיו מְעוֹלֵל
,errare facientes ,te beatificantes mi Popule .eum in sunt dominatæ mulieres &
וְנָשִׁים מָשְׁלוּ בוֹ עַמִּי מְאַשְּׁרֶיךָ מַתְעִים
,DOMINUS litigandum ad Stans .absorbuerunt tuarũ semitarũ viam &
13 וְדֶרֶךְ אֹרְחֹתֶיךָ בִּלֵּעוּ׃ נִצָּב לָרִיב יְהוָה
judicium ad DOMINUS .populos judicandum ad stans &
14 וְעֹמֵד לָדִין עַמִּים׃ יְהוָה בְּמִשְׁפָּט
succendistis vos Et .suis principibus &,sui populi senibus cum veniet
יָבוֹא עִם־זִקְנֵי עַמּוֹ וְשָׂרָיו וְאַתֶּם בִּעַרְתֶּם
contundetis vobis Quid .vestris domibus in afflicti rapina : vineam
15 הַכֶּרֶם גְּזֵלַת הֶעָנִי בְּבָתֵּיכֶם׃ מַלָּכֶם תְּדַכְּאוּ
Dominus dicit , moletis afflictorum facies & , meum populum
עַמִּי וּפְנֵי עֲנִיִּים תִּטְחָנוּ נְאֻם־אֲדֹנָי
eo Pro : DOMINUS dixit Et ? exercituum DOMINUS
16 יֱהוִה צְבָאוֹת׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה יַעַן
, gutture extentæ ambulaverunt & , Sijon filiæ superbierunt quòd
כִּי גָבְהוּ בְּנוֹת צִיּוֹן וַתֵּלַכְנָה נְטוּוֹת גָּרוֹן
suis pedibus in & , ibant plaudendo & ambulando , oculis fallentes &
וּמְשַׂקְּרוֹת עֵינַיִם הָלוֹךְ וְטָפֹף תֵּלַכְנָה וּבְרַגְלֵיהֶם
filiarum verticem Dominus inficiet scabie Et .tinniebant
17 תְּעַכַּסְנָה׃ וְשִׂפַּח אֲדֹנָי קָדְקֹד בְּנוֹת
die In .deteget earum pudendum DOMINUS & , Sijon
18 צִיּוֹן וַיהוָה פָּתְהֵן יְעָרֶה׃ בַּיּוֹם
, crepidarum gloriam Dominus faciet recedere illa
הַהוּא יָסִיר אֲדֹנָי אֵת תִּפְאֶרֶת הָעֲכָסִים
, armillas & , Collaria .lunulas & , reticula &
19 וְהַשְּׁבִיסִים וְהַשַּׂהֲרֹנִים׃ הַנְּטִפוֹת וְהַשֵּׁירוֹת
domus & , vittas & , periscelides & , Tiaras .velamina &
20 וְהָרְעָלוֹת׃ הַפְּאֵרִים וְהַצְּעָדוֹת וְהַקִּשֻּׁרִים וּבָתֵּי
.naris circulos & Annulos .inaures & animi
21 הַנֶּפֶשׁ וְהַלְּחָשִׁים׃ הַטַּבָּעוֹת וְנִזְמֵי הָאָף׃
.crumenas & , pepla & , operimenta & , vestes Mutatorias
22 הַמַּחֲלָצוֹת וְהַמַּעֲטָפוֹת וְהַמִּטְפָּחוֹת וְהָחֲרִיטִים׃
.palliola & , calyptras & , sindones & , Specula
23 וְהַגִּלְיֹנִים וְהַסְּדִינִים וְהַצְּנִיפוֹת וְהָרְדִידִים׃
, excisio cingulo pro & , erit mucus aromate pro , erit Et
24 וְהָיָה תַחַת בֹּשֶׂם מַק יִהְיֶה וְתַחַת חֲגוֹרָה נִקְפָּה
cingulum fascia pectorali pro &,calvitium calamistri opere pro &
וְתַחַת מַעֲשֶׂה מִקְשֶׁה קָרְחָה וְתַחַת פְּתִיגִיל מַחֲגֹרֶת
, cadent gladio in tui Viri .pulchritudine pro quia : sacci
25 שַׂק כִּי־תַחַת יֹפִי׃ מְתַיִךְ בַּחֶרֶב יִפֹּלוּ
,ejus portæ lugebunt & ,plangent Et .prælio in tua fortitudo &
26 וּגְבוּרָתֵךְ בַּמִּלְחָמָה׃ וְאָנוּ וְאָבְלוּ פְּתָחֶיהָ
.sedebit terra in munda &
וְנִקָּתָה לָאָרֶץ תֵּשֵׁב׃

Versio VULG. LAT.

9 Agnitio vultûs eorum respondit eis: & peccatum suum quasi Sodoma prædicaverunt, nec absconderunt: væ animæ eorum, quoniam reddita sunt eis mala. 10 Dicite justo, Quoniã benè, quoniam fructũ adinventionum suarum comedet. 11 Væ impio in malum: retributio enim manuum ejus fiet ei. 12 Populum meum exactores sui spoliaverunt, et mulieres dominatæ sunt eis. Populo meus, qui te beatum dicunt, ipsi te decipiunt, & viam gressuum tuorum dissipant. 13 Stat ad judicandum Dominus, & stat ad judicandos populos. 14 Dominus ad judicium veniet cum senibus populi sui, & principibus ejus: vos enim depasti estis vineam, & rapina pauperis in domo vestra. 15 Quarè atteritis populum meum, & facies pauperum commolitis, dicit Dominus Deus exercituum? 16 Et dixit Dominus; Pro eo quòd elevatæ sunt filiæ Sion, & ambulaverunt extento collo, & nutibus oculorum ibant, & plaudebant, ambulabant pedibus suis, & composito gradu incedebant: 17 Decalvabit Dominus verticem filiarum Sion, & Dominus crinem earum nudabit. 18 In die illa auferet Dominus ornamentum calceamentorum, & lunulas, 19 Et torques, & monilia, & armillas, & mitras, 20 Et discriminalia, & periscelidas, & murenulas, et olfactoriola, & inaures, 21 Et annulos, et gemmas in fronte pendentes, 22 Et mutatoria, & palliola, & linteamina, et acus, 23 Et specula, & sindones, et vittas, et theristra. 24 Et erit pro suavi odore fœtor, et pro zona funiculus, et pro crispanti crine calvitiũ, et pro fascia pectorali cilicium. 25 Pulcherrimi quoque viri tui gladio cadent, 26 et fortes tui in prælio. Et mœrebunt atque lugebunt portæ ejus, et desolata in terra sedebit.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

9 Διότι νῦν ἐταπεινώθη ἡ δόξα αὐτῶν, καὶ ἡ αἰσχύνη τοῦ προσώπου αὐτῶν ἀντέστη αὐτοῖς· τὴν δὲ ἁμαρτίαν αὐτῶν ὡς Σοδόμων ἀνήγγειλαν καὶ ἐνεφάνισαν. οὐαὶ τῇ ψυχῇ αὐτῶν, (γ) διότι βεβούλευνται βουλὴν πονηρὰν, καθ᾽ ἑαυτῶν, 10 (δ) Εἰπόντες, Δήσωμεν τὸν δίκαιον, ὅτι δύσχρηστος ἡμῖν ἐστι. τοίνυν τὰ γεννήματα τῶν ἔργων αὐτῶν φάγονται. 11 Οὐαὶ τῷ ἀνόμῳ, πονηρὰ κατὰ τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτοῦ συμβήσεται αὐτῷ. 12 Λαός μου, οἱ πράκτορες ὑμῶν καλαμῶνται ὑμᾶς, καὶ οἱ ἀπαιτοῦντες κυριεύουσιν ὑμῶν. λαός μου, οἱ μακαρίζοντες ὑμᾶς, πλανῶσιν ὑμᾶς, καὶ (ε) τὸν τρίβον τῶν ποδῶν ὑμῶν ταράσσουσιν. 13 Ἀλλὰ νῦν καταστήσεται εἰς κρίσιν κύριος, καὶ στήσει εἰς κρίσιν τὸν λαὸν αὐτοῦ. 14 Αὐτὸς κύριος εἰς κρίσιν ἥξει μετὰ τῶν πρεσβυτέρων τοῦ λαοῦ, καὶ μετὰ τῶν ἀρχόντων αὐτοῦ. ὑμεῖς δὲ τί ἐνεπυρίσατε τὸν ἀμπελῶνά μου, καὶ ἡ ἁρπαγὴ τοῦ πτωχοῦ ἐν τοῖς οἴκοις ὑμῶν; 15 Τί ὑμεῖς ἀδικεῖτε τὸν λαόν μου, καὶ τὸ πρόσωπον τῶν πτωχῶν καταισχύνετε; 16 Τάδε λέγει κύριος, Ἀνθ᾽ ὧν ὑψώθησαν αἱ θυγατέρες Σιών, καὶ ἐπορεύθησαν ὑψηλῷ τραχήλῳ, (ζ) καὶ ἐν νεύμασιν ὀφθαλμῶν, καὶ τῇ πορείᾳ τῶν ποδῶν ἅμα σύρουσαι τοὺς χιτῶνας, καὶ τοῖς ποσὶν ἅμα παίζουσαι, 17 Καὶ ταπεινώσει ὁ θεὸς ἀρχούσας θυγατέρας Σιών· καὶ κύριος (η) ἀνακαλύψει τὸ σχῆμα αὐτῶν 18 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἀφελεῖ κύριος τὴν δόξαν τοῦ ἱματισμοῦ αὐτῶν, (θ) τὰ ἐμπλόκια, καὶ τοὺς κοσύμβους, καὶ τοὺς μηνίσκους, 19 Καὶ τὸ κάθεμα, καὶ τὸν κόσμον τοῦ προσώπου αὐτῶν, καὶ (ι) τὴν σύνθεσιν τοῦ κόσμου (κ) τῆς δόξης, καὶ τοὺς χλιδῶνας, καὶ τὰ ψέλια, καὶ τὸ ἐμπλόκιον, (λ) καὶ τοὺς δακτυλίους, καὶ τὰ περιδέξια, 21 καὶ τὰ ἐνώτια, Καὶ τὰ περιπόρφυρα, καὶ τὰ μεσοπόρφυρα, καὶ τὰ ἐπιβλήματα τὰ κατὰ τὴν οἰκίαν, καὶ τὰ διαφανῆ Λακωνικὰ, καὶ τὰ βύσσινα, καὶ τὰ ὑακίνθινα, καὶ (μ) κόκκινα, καὶ τὴν βύσσον, (ν) σὺν χρυσῷ καὶ ὑακίνθῳ συγκαθυφασμένα, καὶ θέριστρα κατάκλιτα. 24 Καὶ ἔσται ἀντὶ ὀσμῆς (ξ) ἡδείας, κονιορτός· καὶ ἀντὶ ζώνης, σχοινίῳ ζώσῃ· καὶ ἀντὶ τοῦ κόσμου τῆς κεφαλῆς τοῦ χρυσίου, φαλάκρωμα ἕξεις διὰ τὰ ἔργα σου· καὶ ἀντὶ τοῦ χιτῶνος τοῦ μεσοπορφύρου, περιζώσῃ σάκκον. 25 Καὶ ὁ υἱός σου ὁ κάλλιστος ὃν ἀγαπᾷς, μαχαίρᾳ πεσεῖται. καὶ οἱ ἰσχύοντες ὑμῶν, μαχαίρᾳ πεσοῦνται. 26 Καὶ ταπεινωθήσονται, καὶ πενθήσουσιν αἱ θῆκαι τοῦ κόσμου ὑμῶν· καὶ καταλειφθήσῃ μόνη, καὶ εἰς τὴν γῆν ἐδαφισθήσῃ.

MS. A. (γ) ὅτι (δ) Εἴπαντες (ε) τὴν τρίβον (ζ) καὶ
(η) ἀποκαλύψει (θ) καὶ τοὺς κόσμους αὐτῶν, καὶ τὰ ἐμπλόκια, (ι) τὴν
(κ) τῆς δόξης αὐτῶν, (λ) καὶ τὰ περιδέξια, καὶ τοὺς δακτυλίους,
κινα, (ν) σὺν χρυσίῳ (ξ) * ἰδίας,

Quarè nunc humiliata est g
eorum: & confusio vultûs
restitit eis: & peccatum
quasi Sodomorum, annunciaver
& ostenderunt. Væ anima
rum, quoniam consiliati sunt
silium pessimum contra semetips
Dicentes; Alligemus
quoniam (m) inutilis est nobis
que fructus operum suorum
dent. Væ iniquo: mala
opera manuum ejus accid
Populo meus, exactores vestri
liant vos, & (n) exigentes
nantur vobis. Populo meus,
beatos vos dicunt, decipiunt
& semitam pedum vestrorum
bant. Sed nunc stabit in
Dominus, & statuet ad judi
populum suum. Ipse Domi
judicium veniet cum senior
puli, & cum principibus ejus
autem quarè incendistis
meam? & rapina pauperis
mibus vestris? Quare
riis afficitis populum meum, e
ciem pauperum confunditis?
dicit Dominus; Pro eo, quod
altatæ sunt filiæ Sion, &
verunt collo excelso, & nu
oculorum, & incessu pedum
trahentes tunicas, & pedibus
ludentes; Et humiliabit Deus
cipales filias Sion: & Do
denudabit habitum earum
illa: & auferet Dominus
vestimenti earum, reticula
cincinnos, & (o) lunulas:
monile demissum, & orna
ei eorum, & compositionem
tûs gloriæ, & brachialia, &
millas, & reticulum, &
dextralia, & inaures, Et pe
purpureas, et purpuras
indumenta, quæ per domos
perspicua Laconica, et
hyacinthina, et coccinea
byssum cum auro et hyacintho
contexta, et theristra
bitoria. Et erit pro suavi
pulvis: et pro zona funiculo
gêris: et pro ornamento
aureo calvitium habebis
opera tua: et pro tunica
tæ purpuræ circumcingeris
Et filius tuus pulcherrimus
diligis, gladio cadet:
vestri gladio cadent. E
liabuntur, atque lugebunt
ornatûs vestri: et relinq
la, et ad terram allidêris.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

9 אשתמודעות אפיהון בדינא אסהיד בהון וחטאיהון כסדומאי קבלין ולא מנעין וי
10 לנפשהון ארי גרמו דתיתי להון בישתא : אמרו לצדיקא טוביכון ארי פרי עובדיהון
11 ישתלמון : וי לרשיעיא דעובדיהון בישין ארי גמלא דידיהון יתתב להון : עמי דסרכוהי
12 בזוזהי כמעללי לכרמא וכמרי חובא שליטו בידה עמי משבחך אטעיוך ואורח שבילך
13 קלקילו : עתיד למדן יי ומתגלי למעבד פורענות דין מן עממיא : יי בדינא יעול ית סבי
14 15 עמא וסרכוהי ואתון אנסתון ית עמי חטוף מסכנא בבתיכון : מה לכון דאתון ממסכנין
16 ית עמי ואפי חשיכיא מבלין אתון ומיתין בדיניהון אמר יי אלהים צבאות : ואמר יי
חלף דאתרברבא בנת ציון ואזלן מרימן צואר ומסרבקן עינין אזלן ובפתהן מקפן
17 וברגלהן מרגזן : וישעביד יי יקרת בנת ציון ויי יקרהן יעדי : ביומא ההוא יעדי יי ית
18 19 תושבחת דמסניא ושביסיא וסבכיא : ענקיא ושירי ידיא וחניסנסיא : כליליא ושירי
20 רגליא וקלמסמסיא וקדשיא וחליטתא : עזקתא וטלטוליא : כתוניא ושושיפיא
21 22 ולבורנקיא ומחכיא : ומחזיתא וקרטסיא וכתריא וכבינתא : ויהי אתר דהואה יהבן
23 24 בוסמין יתמסי ואתר דהואה אסרן פסיקיא יהי רושמין דמחא וחלף אקפות פתא
גוון ריש וחלף דהואה מהלכן בגיוה יסרן סקין דא פורענותא תתעביד מנהון ארי
25 26 טעאה בשופרהון : שפר גבריך בחרבא יתקטלון ועבדי נצחניך בקרבא : ויצדון
ויסופון תרעי קרוהא ותתרוקין ארעא ותחרוב :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Agnitio enim vultus eorum in judicio testificatur contra eos, &
eorum quasi Sodomitæ prædicant, & non desinunt. Væ animæ
quoniam ipsi fuerunt causa quòd venerit eis malum. Dicite
ati estis vos; quia fructus operum suorum retribuetur eis. Væ
quorum opera mala sunt, quia retributio manuum suarum redd
Populum meum exactores sui expoliaverunt, quasi vindemiantes
ani, & quasi fœneratores dominati sunt ei. Popule meus, qui
dant, decipiunt te; & viam semitæ tuæ dissipant. Judicaturus
minus, & revelabit se, ut faciat ultionem judicii in populos. D
ad judicium veniet cum senioribus populi sui, & exactoribus ejus
autem diripuistis populum meum, rapina pauperis in dom
stris est. Quid vobis est quòd depauperatis populum meum
facies pauperum atteritis, ut in causa sua pereant? dicit D
Deus exercituum. Et dixit Dominus: Pro eo quod elevatæ sunt
Sion, & ambulaverunt extento collo, & stibio linitis oculis
crinibus circumvolutis, & pedibus suis provocantes: Prosternet
nus gloriam filiarum Sion, & Dominus gloriam earum auferet.
tempore auferet Dominus ornamentum calceamentorum; & lunulas
torques, Et monilia, & armillas manuum, & mitras. Et discr
lia, & armillas pedum, & murenulas, & inaures, & olfactoria
annulos, & gemmas. Tunicas & palliola, & linteamina, & acus
specula, & sindones, & coronas, & theristra. Et in loco ubi era
mata, tabefactio erit; & in loco ubi ligabant zonas, erunt stigmata
cussionis, & pro circunvoluto crine erit tonsio capitis, & pro eo
ambulabant in superbia, accingentur saccis. Hæc vindicta sumetur
quia fornicatæ sunt in pulchritudine sua. Pulcherrimi viri tui gla
cidentur, & victores tui in bello. Et destruentur & peribunt in porta civitatum suarum, & desolabitur terra & dese

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܡܣܒ ܒܐܦܝܗܘܢ ܣܗܕ ܒܗܘܢ. ܘܚܛܗܝܗܘܢ ܐܝܟ ܣܕܘܡ ܚܘܝܘ. ܘܠܐ ܐܬܟܣܝܘ. 9
ܘܝ ܠܢܦܫܗܘܢ. ܕܐܛܝܒܘ ܠܗܘܢ ܦܘܪܥܢܐ ܒܝܫܐ. *ܐܡܪܪܘ ܠܙܕܝܩܐ ܛܒ. ܡܛܠܗܢܐ 10
ܦܐܪܐ ܕܥܒܕܝܗܘܢ ܢܐܟܠܘܢ. *ܘܝ ܠܪܫܝܥܐ ܒܝܫܐ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܐ ܕܐܝܕܘܗܝ ܢܬܦܪܥ ܠܗ. 11
*ܫܠܝܛܢܘܗܝ ܕܥܡܝ ܡܥܘܠܝܢ ܠܗ. ܘܢܫܐ ܐܫܬܠܛܝ ܒܗ. ܥܡܝ ܡܛܝܒܢܝܟܝ 12
ܐܛܥܝܘܟܝ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܫܒܝܠܝܟܝ ܒܠܒܠܘ. *ܩܐܡ ܠܡܕܢ ܡܪܝܐ. ܘܩܐܡ ܠܡܕܢ ܠܥܡܗ. 13
*ܡܪܝܐ ܒܕܝܢܐ ܢܥܘܠ. ܥܡ ܩܫܝܫܐ ܕܥܡܗ. ܘܥܡ ܪܘܪܒܢܘܗܝ. ܐܢܬܘܢ 14
ܐܘܩܕܬܘܢ ܟܪܡܐ. ܘܚܛܘܦܝܐ ܕܡܣܟܢܐ ܒܒܬܝܟܘܢ. *ܠܡܢܐ ܢܟܝܬܘܢ ܠܥܡܝ. 15
ܘܐܦܐ ܕܡܣܟܢܐ ܐܒܗܬܬܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. *ܡܛܠ ܕܐܬܪܝܡ ܒܢܬܗ ܕܨܗܝܘܢ. 16
ܘܗܠܟܢ ܒܨܘܪܐ ܪܡܐ. ܘܒܪܡܙܐ ܕܥܝܢܐ ܡܗܠܟܢ ܗܘܝ: ܘܡܛܦܦܢ ܒܪܓܠܝܗܝܢ.
ܘܡܪܓܙܢ ܠܡܪܝܐ: *ܢܡܟܟ ܡܪܝܐ ܪܫܝܬܐ ܕܒܢܬܗ ܕܨܗܝܘܢ. ܘܡܪܝܐ ܥܪܛܠܝܘܬܗܝܢ 17
ܢܦܪܥ. *ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܥܒܪ ܡܪܝܐ ܫܘܒܚܐ ܕܢܚܬܝܗܝܢ. ܘܕܨܒܬܝܗܝܢ. ܘܕܓܕܘܠܝܗܝܢ. 18
*ܘܐܣܦܝܪܐ ܕܣܥܪܝܗܝܢ. ܘܩܪܘܣܬܠܘܣܝܢ. ܘܨܕܥܝܗܝܢ. *ܘܨܒܬܐ ܕܐܦܝܗܝܢ. 19
ܘܩܕܫܝܗܝܢ ܘܩܘܠܪܝܗܝܢ. *ܘܫܝܪܝܗܝܢ ܘܫܒܪܝܗܝܢ. *ܘܫܐܪܝܩܝܗܝܢ 20 21
ܘܣܕܝܢܝܗܝܢ. ܘܟܬܢܝܗܝܢ. ܘܒܘܨܝܗܝܢ ܘܐܪܓܘܢܝܗܝܢ. *ܘܡܐܢܝܗܝܢ 22
ܘܬܟܠܬܗܝܢ ܘܙܚܘܪܝܬܗܝܢ. ܘܟܪܟܐ ܟܠܗ ܕܨܒܬܗܝܢ. *ܘܢܗܘܐ ܚܠܦ ܒܣܡ ܪܝܚܗܝܢ 23
ܥܦܪܐ. ܘܚܠܦ ܐܣܪ ܚܨܝܗܝܢ. ܚܒܠܐ ܢܬܐܣܪܢ. ܘܚܠܦ ܟܐܦܐ ܦܘܣܩܐ. ܘܚܠܦ 24
ܬܟܠܬܗܝܢ. ܣܩܐ ܢܬܟܣܝܢ. ܡܛܠ ܕܢܬܚܒܠ ܫܘܦܪܗܝܢ. *ܘܓܢܒܪܝܟܝ
ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܚܝܠܬܢܝܟܝ ܒܩܪܒܐ. *ܘܢܐܠܘܢ ܘܢܬܒܠܘܢ ܬܪܥܝܗ 25
ܘܙܟܘܬܗ ܠܐܪܥܐ ܬܦܠ. 26

Assentatio eorum testatur contra ipsos, & 9
peccata sua more Sodomorum patefaciunt,
nec erubescunt. Væ animæ eorum, quia com-
parârunt sibi retributionem malam. Justum 10
Deum vehementer exacerbârunt, propterea
fructus operum suorum comedent. Væ im- 11
pio perdito, quoniam opus manuum ejus re-
pendetur ei. Principes populi mei race-
mant illum, & mulieres dominium exercent 12
in eum. Popule mi, benefactores tui sedu-
cunt te, & viam semitarum tuarum contur-
bant. Exurget ad judicandum Dominus; 13
exurget inquam, ad judicandum populum
suum. Dominus ad judicium ingredietur 14
tam cum senibus populi sui quàm cum prin-
cipibus ejus. Vos vineam combussistis, &
rapina pauperum in domibus vestris est.
Cur læditis populum meum, & facies pau- 15
perum rubore suffunditis? ait Dominus po-
tentissimus. Quandoquidem superbiverunt 16
filiæ Sion, & erecto incedunt collo, oculo-
rum nutibus ambulant, pedibus suis tripu-
diant, & Dominum provocant ad iram;
Humiliabit Dominus præcipuas inter filias 17
Sion, & Dominus sexus earum nudabit. Eâ 18
die amovebit Dominus pompam vestium,
ornamentorum, & comarum illarum; Sphe- 19
rulas capillorum, crystallos, & tempora
earum; Ornatum vultûs, inaures, & tor- 20
ques earum; Monilia, & armillas earum; 21
Sericum, sindones, carbasa, byssum, & 22
purpuras earum; Indumenta, hyacinthos, 23
cocca, totum denique fasciculum ornatûs
earum. Eritque loco suavis odoris earum, 24
pulvis; loco vittæ lumborum suorum, cin-
gulis accingent sese; loco gemmarum, in-
cisiones; & loco hyacinthorum suorum,
saccis operientur: quoniam corrumpetur
pulchritudo earum. Potentes tui gladio 25
corruent, & robustissimi tui bello: Plo- 26
rabunt & in luctu sedebunt portæ ejus,
& victoria ejus in terram decidet.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

9 * من اجل ان مجدهم اتضع الآن * وخزي وجوههم انتصب لهم * اذا داعوا خطيتهم مثل اهل
10 سدوم واشهروها. الويل لانفسهم لانهم تشاوروا مشورة شريرة لذواتهم * وقالوا نربط الصديق
11 لانه غير صالح هو لنا. فسياكلون الآن غلات اعمالهم * الويل للاثيم. فستقترن به شرور
12 حسب اعمال يديه * يا شعبي المشرفون عليكم يقطعونكم. والمستقصون الحقوق منكم يتسلطون
13 عليكم * يا شعبي الذين يغبطونكم يضلونكم ويقلعون سبل ارجلكم * لكن سيقوم الرب الآن
14 للمحاكمة. ويقيم شعبه في القضاء * هو الرب ياتي للحكم مع مشايخ شعبه ومع رؤسائه. وانتم
15 لماذا احرقتم كرمي. واختطاف المسكين في بيوتكم * لماذا انتم اضررتم بشعبي. ووجوه
المساكين اخزيتم *

قريان فيه توبيخ النبي لشراة نساء بني صهيون *

16 * هكذا يقول رب الجيوش. من اجل ان بنات صهيون ارتفعن ومشين بالرقاب العالية
17 ويغمزن العيون. ويخفقن الارجل. يجررن ثيابهن معا. ويلعبن باقدامهن * يواضع الله بنات
18 صهيون الرئيسات. والرب يكشف شكلهن في ذلك اليوم * وينزع الرب شرف لباسهن.
19 20 وزينتهن. وضفايرهن * وسلاسلهن. وقلايدهن. وعصايبهن * وزينة وجوههن
21 وتركيب زينة شعورهن * واساورهن. وحلقهن. ومعلاقهن. ودمالجهن. وخواتمهن. واقراطهن.
22 23 * ومروطهن. ومقنعهن. وسدورهن. وشداداتهن الزاهيات * وارجوانهن. وياقوتهن. وقرمزهن.
24 وارجوانهن المنسوج بالذهب والياقوت. وجلاليبهن الحسان * ويكون عوض ريحهن الطيب
غبار. وعوض مناطقهن يمنطقن بالحبال * وعوض زينة رؤسهن بالذهب يكون لك قرع
25 من اجل اعمالك. وعوض سربالك الدمقس تتزرين مسوحا * وابنك الحسن الذي تحبه
26 يسقط بالسيف. واقوياؤكم يسقطون بالسيف ويذلون * وتحزن اوعية زينتكن. وتبقين
وحدك. وتضرب بك الارض.

Nam gloria eorum humiliata nunc est, & 9
verecundia vultuum eorum erexit se con-
tra ipsos; quandoquidem peccatum suum
divulgant et prædicant ut Sodomitæ. Væ
animabus eorum, quia consilium pessimum
ceperunt sibimetipsis, Dicentes, Vinciamus 10
justum, quia incommodus est nobis: com-
edunt ergò nunc proventus operum suo-
rum. Væ scelerato, quoniam adhærescent 11
ei mala pro portione operum manuum ejus.
O mi popule, qui præsunt vobis, succîdunt 12
vos; & qui debita à vobis exigunt, domi-
nantur in vos. O mi popule, qui vos beant,
seducunt vos, & perturbant vias pedum
vestrorum. Verùm exurget jamjam Do- 13
minus ad litem, sistetque populum suum
ad judicium. Ipse Dominus veniet ad li- 14
tigandum cum senatoribus & principi-
bus populi sui: Heus vos, cur incendistis
vineam meam, & spolium pauperis est
domi vestræ? Cur vos damnum intulistis 15
populo meo, & vultus pauperum verecun-
dos reddidistis?

Lectio continens objurgationem Prophetæ ad impudicas mulieres filiorum Sion.

Sic dicit Dominus exercituum, Quia filiæ 16
Sion efferunt sese, & ambulant porrectis
cervicibus, annuentes oculis, & crepitan-
tes pedibus, vestes suas simul reptant,
suisque vestigiis ludunt; Deprimet Deus 17
filias Sion præcipuas. Nam nudabit Domi-
nus sexum earum in illo die; Et auferet 18
Dominus luxum vestitûs earũ, ornamen-
tum, & intextas earum comas; Torques, 19
muraenulas, & vittas earum, Ornatum fa- 20
ciérum, totamque congeriem ornamenti
splendoris earum; Armillas, inaures, situ- 21
las, (species est inaurium,) *amuletorum*
pyxides, annulos, inaures, Collaria, pepla, 22
vela, & cingulos earum sumptuosos,
Purpuram, hyacinthum, coccum, purpu- 23
ram auro hyacinthoque contextam, &
stragula earum pulcherrima. Et loco sua- 24
vis odoris earum, erit pulvis; & loco cin-
gulorum earum, cingentur funibus; &
loco ornamenti aurei capitum earum, erunt
tibi porrigines, propter opera tua; & lo-
co indusii tui serici, præcingêris ciliciis.
Filius tuus venustus quem diligis, gladio 25
corruet: & robusti vestri gladio corru- 26
ent, ac deprimentur: Et mœrebunt vasa
ornatûs vestri, manebisque sola, teque
percutietur tellus.

יְשַׁעְיָה : ד ה

CAP. IV. ד

, illa die in unum virum *in* mulieres ſeptem apprehendent Et
1 וְהֶחֱזִיקוּ שֶׁבַע נָשִׁים בְּאִישׁ אֶחָד בַּיּוֹם הַהוּא
, induemur noſtris veſtimentis & ,comedemus noſtrum Panem : dicendo
לֵאמֹר לַחְמֵנוּ נֹאכֵל וְשִׂמְלָתֵנוּ נִלְבָּשׁ
.noſtrū opprobrium *collige* , nos ſuper tuū nomen invocetur tantùm
רַק יִקָּרֵא שִׁמְךָ עָלֵינוּ אֱסֹף חֶרְפָּתֵנוּ׃
fructus & : gloria & decore in Domini germen erit illa die In
2 בַּיּוֹם הַהוּא יִהְיֶה צֶמַח יְהוָה לִצְבִי וּלְכָבוֹד וּפְרִי
relictus erit Et .Iſrael *evaſioni* decore in & ſublimitate in terræ
3 הָאָרֶץ לְגָאוֹן וּלְתִפְאֶרֶת לִפְלֵיטַת יִשְׂרָאֵל׃ וְהָיָה הַנִּשְׁאָר
ſcriptus omnis :ei dicetur Sanctus ,Jeruſalaim in reſiduus & ,Sijon in
בְּצִיּוֹן וְהַנּוֹתָר בִּירוּשָׁלַםִ קָדוֹשׁ יֵאָמֶר לוֹ כָּל־הַכָּתוּב
,Sijon filiarum *ſordem* Dominus abluet *Si* .Jeruſalaim in *vitis* in
4 לַחַיִּים בִּירוּשָׁלָםִ׃ אִם רָחַץ אֲדֹנָי אֵת צֹאַת בְּנוֹת־צִיּוֹן
ſpiritu in&,judicii ſpiritu in,ej⁹ *interiori de colluerit* Jeruſalaim *ſanguines* &
וְאֶת־דְּמֵי יְרוּשָׁלַםִ יָדִיחַ מִקִּרְבָּהּ בְּרוּחַ מִשְׁפָּט וּבְרוּחַ
,Sijon montis *paratum* locum omnem ſuper Dominus creabit Et .ardoris
5 בָּעֵר׃ וּבָרָא יְהוָה עַל כָּל־מְכוֹן הַר־צִיּוֹן
flammæ ignis ſplendorē &,fumū &,diem per nubem ej⁹ *convocationem* ſuper &
וְעַל־מִקְרָאֶהָ עָנָן יוֹמָם וְעָשָׁן וְנֹגַהּ אֵשׁ לֶהָבָה
erit tabernaculum Et .*operimentum* gloriam omnem ſuper nam : *nocte*
6 לָיְלָה כִּי עַל־כָּל־כָּבוֹד חֻפָּה׃ וְסֻכָּה תִּהְיֶה
.pluvia à &,*nimbo à abſconſione in &*,*confidentiā in* &,æſtu ab *interdiu umbram in*
לְצֵל־יוֹמָם מֵחֹרֶב וּלְמַחְסֶה וּלְמִסְתּוֹר מִזֶּרֶם וּמִמָּטָר׃

CAP. V. ה

fuit Vinea .*ejus vineæ* ,mei dilecti canticum *meo dilecto* nunc Cantabo
1 אָשִׁירָה נָּא לִידִידִי שִׁירַת דּוֹדִי לְכַרְמוֹ כֶּרֶם הָיָה
eā plantavit &,eā *elapidavit* &,eā *fodit* Et .*olei filio cornu* in meo dilecto
2 לִידִידִי בְּקֶרֶן בֶּן־שָׁמֶן׃ וַיְעַזְּקֵהוּ וַיְסַקְּלֵהוּ וַיִּטָּעֵהוּ
torcular etiam & ,ejus medio in turrim ædificavit & , *pulchro palmite*
שֹׂרֵק וַיִּבֶן מִגְדָּל בְּתוֹכוֹ וְגַם־יֶקֶב
.*putidas uvas* fecit & , uvas *facere* expectavit & : ea in excidit
חָצֵב בּוֹ וַיְקַו לַעֲשׂוֹת עֲנָבִים וַיַּעַשׂ בְּאֻשִׁים׃
me inter nunc judicate , Jehudah vir & ,Jeruſalaim habitator nunc Et
3 וְעַתָּה יוֹשֵׁב יְרוּשָׁלַםִ וְאִישׁ יְהוּדָה שִׁפְטוּ־נָא בֵּינִי
non & , meæ vineæ ultrà *faciendum* Quid .meam vineam inter &
4 וּבֵין כַּרְמִי׃ מַה־לַּעֲשׂוֹת עוֹד לְכַרְמִי וְלֹא
? *uvas putidas* fecit & , uvas *faciendum ad* expectavi Cur ? ea in feci
עָשִׂיתִי בּוֹ מַדּוּעַ קִוֵּיתִי לַעֲשׂוֹת עֲנָבִים וַיַּעַשׂ בְּאֻשִׁים׃
: meæ vineæ *faciens* ego quid vos nunc faciam ſcire nunc Et
5 וְעַתָּה אוֹדִיעָה־נָּא אֶתְכֶם אֵת אֲשֶׁר־אֲנִי עֹשֶׂה לְכַרְמִי
erit &,ejus maceriam *frangere : conflagrandum* ad erit & ,ejus ſepem *removere*
הָסֵר מְשׂוּכָּתוֹ וְהָיָה לְבָעֵר פָּרֹץ גְּדֵרוֹ וְהָיָה
, *ſarrietur* non &,putabitur non : *vaſtitatem* eam ponam Et .conculcationē in
6 לְמִרְמָס׃ וַאֲשִׁיתֵהוּ בָתָה לֹא יִזָּמֵר וְלֹא יֵעָדֵר
eā ſuper *pluendo à* mandabo nubibus *ſuper* & : *ſentis* & ,vepris aſcendet &
וְעָלָה שָׁמִיר וָשָׁיִת וְעַל הֶעָבִים אֲצַוֶּה מֵהַמְטִיר עָלָיו
vir & , Iſrael domus exercituum Domini vinea Nam .pluviam
7 מָטָר׃ כִּי כֶרֶם יְהוָה צְבָאוֹת בֵּית יִשְׂרָאֵל וְאִישׁ
ecce & , judicii *ad* expectavit Et : ejus *deliciarum* plantatio Jehudah
יְהוּדָה נְטַע שַׁעֲשׁוּעָיו וַיְקַו לְמִשְׁפָּט וְהִנֵּה
.clamor ecce & , juſtitiam : *vulnus*
מִשְׂפָּח לִצְדָקָה וְהִנֵּה צְעָקָה׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. IV.

1 ET apprehendent ſeptē mulieres virū unū in die illa, dicentes; Panem noſtrū comedemus, & veſtimentis noſtris operiemur: tantummodò invocetur nomen tuū ſuper nos, 2 aufer opprobriū noſtrū. In die illa erit germen Dñi in magnificentia & gloria, & fruct⁹ terræ ſublimis, & exultatio his qui ſalvati fuerint de Iſrael. 3 Et erit: Omnis qui relictus fuerit in Sion, & reſiduus in Jeruſalem, ſanctus vocabitur, omnis qui ſcript⁹ eſt in vita in 4 Jeruſalē, Si abluerit Dñs ſordes filiarū Sion, & ſanguinem Jeruſalē laverit de medio ej⁹, in ſpiritu judicii, & ſpiritu ar- 5 doris. Et creabit Dñs ſuper omnē locū Montis Sion, et ubi invocat⁹ eſt, nubē p diē, & fumum & ſplendorē ignis flammantis in nocte: ſup omnem 6 enim gloriam protectio. Et tabernaculū erit in umbraculū diei ab æſtu, & in ſecuritatē, & abſconſionē à turbine, & à pluvia.

CAP. V.

1 CAntabo dilecto meo canticū patruelis mei vineæ ſuæ. Vinea facta eſt dilecto meo in 2 cornu filio olei. Et ſepivit eā, & lapides elegit ex illa, & plantavit eā electā, & ædificavit turrim in medio ej⁹, & torcular extruxit in ea: et expectavit ut faceret uvas, & fecit la- 3 bruſcas. Nunc ergò, habitatores Jeruſalem, & viri Juda, judicate inter me & vineā meā. 4 Quid eſt ꝙ debui ultrà facere vineæ meæ, & non feci ei? an ꝙ expectavi ut faceret uvas, 5 & fecit labruſcas? Et nunc oſtendā vobis quid ego faciam vineæ meæ: auferā ſepē ej⁹, & erit in direptionē: diruā maceriā ejus, & erit in conculca- 6 tionē. Et ponā eā deſertā: non putabitur, & non fodietur: & aſcendent vepres & ſpinæ: & nubibus mandabo ne pluant 7 ſuper eā imbrem. Vinea enim Dñi exercituū, dom⁹ Iſrael eſt: & vir Juda, germen ej⁹ delectabile: & expectavi ut faceret judiciū, & ecce iniquitas; & juſtitiā, & ecce clamor.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. δ'.

1 ΚΑὶ ἐπιλήψονται ἑπτὰ γυναῖκες ἀνθρώπου ἑνὸς, λέγουσαι, Τὸν ἄρτον ἡμῶν φαγόμεθα, καὶ τὰ ἱμάτια ἡμῶν περιβαλούμεθα, πλὴν τὸ ὄνομα τὸ σὸν κεκλήσθω ἐφ' 2 ἡμᾶς, ἄφελε τὸν ὀνειδισμὸν ἡμῶν. Τῇ δὲ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ (α) ἐπιλάμψει ὁ θεὸς ἐν βουλῇ μετὰ δόξης ἐπὶ τῆς γῆς, τοῦ ὑψῶσαι καὶ 3 δοξάσαι τὸ καταλειφθὲν τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ ἔσται τὸ ὑπολειφθὲν ἐν Σιὼν, καὶ τὸ καταλειφθὲν ἐν Ἱερουσαλὴμ, ἅγιοι κληθήσονται πάντες οἱ γραφέντες εἰς ζωὴν ἐν Ἱερουσαλήμ. 4 Ὅτι ἐκπλυνεῖ κύριος τὸν ῥύπον τῶν υἱῶν καὶ τῶν θυγατέρων Σιὼν, καὶ τὸ αἷμα ἐκκαθαριεῖ ἐκ μέσου αὐτῶν, ἐν πνεύματι (β) κρίσεως καὶ 5 πνεύματι καύσεως. Καὶ ἥξει, καὶ ἔσται πᾶς τόπος τοῦ ὄρους Σιὼν, καὶ πάντα τὰ περικύκλῳ αὐτῆς σκιάσει νεφέλη ἡμέρας, καὶ ὡς καπνοῦ (γ) καὶ φωτὸς πυρὸς καιομένου νυκτὸς, (δ) 6 καὶ πάσῃ τῇ δόξῃ σκεπασθήσεται. Καὶ ἔσται εἰς σκιὰν ἀπὸ καύματος, καὶ ἐν σκέπῃ καὶ (ε) ἐν ἀποκρύφῳ ἀπὸ σκληρότητος καὶ ὑετοῦ.

MS.A. (α) λάμψει (β) κρίσεως. Καὶ ἥξει, (γ) καὶ ὡς φωτὸς (δ
τῇ δόξῃ κυρίου * παθήσεται. (ε) ἐν ἀποκρύφῳ σκληρότητος

CAP. IV.

ET apprehendent ſeptem mu
es hominem unum, dicente
nem noſtrum comedemus, &
ſtimentis noſtris operiemur:
tummodò nomen tuum voce
per nos: aufer opprobrium no
Die autem illâ illuceſcet Deu
conſilio cum gloria ſuper terr
exaltet, & glorificet reſiduum
rael. Et erit, quod reliquum f
rit in Sion, & quod remanſeri
Hieruſalem, ſancti vocabuntu
mnes ſcripti ad vitam in Hieru
lem. Abluet enim Dominus
dem filiorum, & filiarum Sio
& ſanguinem eorum
eorum, in ſpiritu judicii, & ſpi
combuſtionis. Et veniet, & e
omnis locus montis Sion, & om
quæ in circuitu ejus,
brabit nubes per diem, &
quam fumo, & luce ignis ar
te per noctem; & omni glo
protegetur. Et erit in umb
æſtu, & in protectionem, &
abſconſionem ab aſperitat
pluvia.

ΚΕΦ. ε'.

1 ΑΣω δὴ τῷ ἠγαπημένῳ ᾆσμα τοῦ ἀγαπητοῦ (α) μου τῷ ἀμπελῶνί μου. ἀμπελὼν ἐγενήθη τῷ ἠγαπημένῳ, ἐν κέρατι, ἐν τό- 2 πῳ πίονι. Καὶ φραγμὸν περιέθηκα, καὶ ἐχαράκωσα, καὶ ἐφύτευσα ἄμπελον (β) σωρὴκ, καὶ ᾠκοδόμησα πύργον ἐν μέσῳ αὐτοῦ, καὶ προλήνιον ὤρυξα ἐν αὐτῷ, καὶ ἔμεινα τοῦ ποιῆσαι σταφυλὴν, (γ) καὶ ἐποίησεν ἀκάν- 3 θας. Καὶ νῦν (δ) οἱ ἐνοικοῦντες ἐν Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἄνθρωπος τοῦ Ἰούδα, κρίνατε 4 ἐν ἐμοὶ καὶ ἀναμέσον τοῦ ἀμπελῶνός μου. Τί ποιήσω ἔτι τῷ ἀμπελῶνί μου, καὶ οὐκ ἐποίησα αὐτῷ; διότι ἔμεινα τοῦ ποιῆσαι σταφυ- 5 λὴν, ἐποίησε δὲ ἀκάνθας. Νῦν δὲ ἀναγγελῶ ὑμῖν (ε) τί ἐγὼ ποιήσω τῷ ἀμπελῶνί μου. ἀφελῶ τὸν φραγμὸν αὐτοῦ, καὶ ἔσται εἰς διαρπαγήν. καὶ καθελῶ τὸν τοῖχον αὐτοῦ, καὶ 6 ἔσται (ζ) εἰς καταπάτημα. Καὶ ἀνήσω τὸν ἀμπελῶνά μου, καὶ (η) οὐ τμηθῇ, οὐδὲ μὴ σκαφῇ. καὶ (θ) ἀναβήσονται εἰς αὐτὸν, ὡς εἰς χέρσον (') ἄκανθαι· καὶ ταῖς νεφέλαις ἐντελοῦ- 7 μαι, τοῦ μὴ βρέξαι εἰς αὐτὸν ὑετόν. Ὁ γὰρ ἀμπελὼν κυρίου Σαβαὼθ, οἶκος τοῦ (ι) Ἰσραὴλ, καὶ ἄνθρωπος τοῦ Ἰούδα νεόφυτον ἠγαπημένον. ἔμεινα τοῦ ποιῆσαι κρίσιν, ἐποίησε δὲ ἀνομίαν, καὶ οὐ δικαιοσύνην, ἀλλὰ κραυγήν.

MS.A. (α) τῷ ἀμπελῶνι (β) σωρὴχ, (γ) ἐποίησεν δὲ ἀκάνθας. (δ
πος τοῦ Ἰούδα, καὶ οἱ ἐνοικοῦντες ἐν Ἱερουσαλὴμ, κρίνατε (ε) τί ποιήσω
ἁρπαγήν. (η) οὐ μὴ (θ) ἀναβήσεται (') ἄκανθα· (ι) Ἰσραήλ ἐστι,

CAP. V.

CAntabo nunc (a) dilecto
ticum (b) dilecti mei vineæ
(d) Vinea facta eſt dilecto
nu, in loco pingui. Et ſepem
cumpoſui, & vallavi, &
vi vineam (e) Sorec, & ædi
vi turrim in medio ejus, &
cular fodi in ea, & expectav
faceret uvam, & fecit ſpinas
Et nunc habitatores Hieruſal
homo Juda, judicate in me
inter vineam meam. Quid
ultrà vineæ meæ, & non fec
Quoniam expectavi, ut face
vam, fecit autem ſpinas. Nun
tem annuntiabo vobis, quid
ciam vineæ meæ. Auferam
ejus, & erit in direptionem
diruam murum ejus, & er
conculcationem. Et dimitt
neam meam, & non putabi
que fodietur: & aſcendent
am tanquam in terram
ſpinæ: & nubibus manda
pluant in eam imbrem. Vi
nim Domini Sabaoth, dom
rael; & homo Juda, novel
tatio dilecta. Expectavi ut
judicium: fecit autem
quitatem, & non juſtitiam
clamorem.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

ד

1 וְיִתְקְפָן שְׁבַע נְשִׁין בְּגַבְרָא חַד בְּעִדָּנָא הַהִיא לְמֵימַר מְדִילָנָא נֵיכוּל וּמְדִילָנָא נִתְכַּסֵי
2 לְחוֹד יִתְקְרֵי שְׁמָךְ עֲלָנָא כְּנוֹשׁ חִסוּדָנָא׃ בְּעִדָּנָא הַהוּא יְהֵי מְשִׁיחָא דַיְיָ לְחֶדְוָה וְלִיקָר
3 וְעָבְדֵי אוֹרַיְתָא לְרַבוּ וְלְתוּשְׁבְּחָא לְשֵׁיזָבַת יִשְׂרָאֵל׃ וִיהֵי דְאִשְׁתְּאַר יְתוּב לְצִיּוֹן וּדְעָבֵד
אוֹרַיְתָא יִתְקַיַּם בִּירוּשְׁלֵם קַדִּישׁ יִתְאֲמַר לֵיהּ כָּל דִּכְתִיב לְחַיֵּי עָלְמָא יֶחֱזֵי בְּנֶחָמַת
4 יְרוּשְׁלֵם׃ אִם יַעְדֵי יְיָ יָת תְּנָאֲלַת בְּנַת צִיּוֹן וְיָת אָשְׁדֵי דַם זַכַּי דְּבִירוּשְׁלֵם יַגְלֵי מִגַּוַּהּ
5 בְּמֵימַר דִּין וּבְמֵימַר גְּמִירָא׃ וְיִבְרֵי יְיָ עַל כָּל מַקְדַּשׁ טוּרָא דְצִיּוֹן וְעַל אֲתַר בֵּית שְׁכִנְתֵּיהּ
עֲנַן יְקָר יְהֵי מַטִּיל עֲלוֹהִי בִּימָמָא וְאַמְטְתָא וְזֵהוֹר כְּאִשָּׁא שַׁלְהוֹבִי בְּלֵילְיָא אֲרֵי יַתִּיר מִן
6 יְקָרָא דַאֲמִיר לְאֵיתָאָה עֲלוֹהִי שְׁכִנְתָּא תְּהֵי מְגַנְּנָא עֲלוֹהִי בִּגְנוּן׃ וְעַל יְרוּשְׁלֵם תְּהֵי
מְטַלַּת עֲנָנֵי לְאַטְלָלָא עֲלַהּ בִּימָם מִשָּׁרָב וּלְבֵית סְתַר וּלְאַגָּנָא מִזְּרְמִית וּמִמִּטְרָא׃

ה

1 אֲמַר נְבִיָּא אֲשַׁבְּחִיד כְּעַן לְיִשְׂרָאֵל דְּמָתִיל לְכַרְמָא זַרְעֵיהּ דְאַבְרָהָם רַחֲמִי תּוּשְׁבְּחַת
רַחֲמִי לְכַרְמֵיהּ עַמִּי חֲבִיבִי יִשְׂרָאֵל יְהָבִית לְהוֹן אַחְסָנָא בְּטוּר רָם בְּאַרְעָא שְׁמֵינָא׃
2 וְקַדִּשְׁתִּנּוּן וְיַקַּרְתִּנּוּן וְקַיֵּמְתִּנּוּן כְּמִצַּב גְּפַן בְּחִירָא וּבְנֵיתָא מַקְדְּשִׁי בֵּינֵיהוֹן וְאַף מַדְבְּחִי
יְהָבִית לְכַפָּרָא עַל חֲטָאֵיהוֹן וַאֲמָרִית דְּיַעְבְּדוּן עוֹבָדִין טָבִין קֳדָמַי וְאִנּוּן אַבְאִישׁוּ
3 עוֹבָדֵיהוֹן׃ נְבִיָּא אֲמַר לְהוֹן הָא בֵית יִשְׂרָאֵל מְרַדוּ מִן אוֹרַיְתָא וְלָא צְבַן לְמֵתַב כְּעַן
4 יָתְבֵי יְרוּשְׁלֵם וֶאֱנָשׁ יְהוּדָה דּוּנוּ כְּעַן דִּינָא קֳדָמַי מִן עַמִּי׃ מַה טָבָא אֲמָרִית לְמֶעְבַּד עוֹד
לְעַמִּי וְלָא עֲבָדִית לְהוֹן מָא דֵין אֲמָרִית דְּיַעְבְּדוּן עוֹבָדִין טָבִין וְאִנּוּן אַבְאִישׁוּ עוֹבָדֵיהוֹן׃
5 וּכְעַן אֲחַוֵּי כְעַן לְכוֹן יָת דַּאֲנָא עָתִיד לְמֶעְבַּד לְעַמִּי אַסְלֵק שְׁכִנְתִּי מִנְּהוֹן וִיהוֹן לְמִבַּז אֶתְרַע
6 בֵּית מַקְדְּשֵׁיהוֹן וִיהוֹן לְדִישׁ׃ וְאֶשְׁוִינוּן רְטִישִׁין לָא אִסְתְּעָרוּן וְלָא יִסְתַּמְכוּן וִיהוֹן מְטַלְטְלִין
7 וּשְׁבִיקִין וְעַל נְבִיַּיָּא אֲפַקֵּד דְּלָא יִתְנַבּוֹן עֲלֵיהוֹן נְבוּאָה׃ אֲרֵי עַמָּא דַיְיָ צְבָאוֹת בֵּית
יִשְׂרָאֵל וֶאֱנָשׁ יְהוּדָה נִצְבָא דְחֶדְוָתֵיהּ וַאֲמָרִית דְּיַעְבְּדוּן דִּינָא וְהָא אִנּוּן אָנְסִין אֲמָרִית
דְּיַעְבְּדוּן זָכוּ וְהָא אִנּוּן מַסְגַּן חוֹבִין׃

PARAPH. CHALD Verſio Latina.

CAP. IV.

ET apprehendent ſeptem mulieres virum unum in tempore illo,
tes : Panem noſtrum comedemus , & veſtimentis noſtris operiemur
tummodo invocetur nomen tuum ſuper nos: aufer opprobrium noſt
In tempore illo erit Chriſtus Domini in gaudiū & gloriam; & factores
gis in magnificentiam, & in laudem , his qui liberati fuerint de I
Et qui relictus fuerit, revertetur ad Sion , & factor legis ſuſtenta
in Jeruſalem. Sanctus vocabitur omnis qui ſcriptus fuerit ad vitam
nam : videbit conſolationem Jeruſalem. Si abſtulerit Dominus
filiarum Sion, & effundentes ſanguinem innocentem, qui ſunt in
lem tranſmigraverit de medio ejus, in verbo judicii & in verbo con
mationis. Et creabit Dominus ſuper omne ſanctuarium montis
& ſuper locum domus majeſtatis ſuæ, nubem gloriæ; quæ erit obum
ſuper eum in die, & caliginem ſplendorémque tanquam ignis flam
nocte; quoniam ampliori gloria quàm dixit ut adduceret ſuper
majeſtas ej⁹ erit protegens ſuper eum in protectione. Et ſuper Hieruſa
obumbrabit nubibus, ut ſit umbra ſuper *eam* in die ab æſtu, & in
refugii etiam ad protegendum à turbine & à pluvia.

CAP. V.

DIxit propheta : Cantabo nunc Iſraeli, qui comparatus eſt vineæ,
ni Abrahæ dilecti mei, canticum dilecti mei, vineæ ſuæ. Populus
dilectus meus Iſrael, dedi eis hæreditatem in monte excelſo, in terra
gui. Et ſanctificavi eos, & honorificavi eos , & ſuſtentavi eos
plantationem vitis electæ ; & ædificavi ſanctuarium meum in medio
rum. Altare quoque meum dedi ad propitiandum ſuper peccata eo
præcepi eis ut facerent opera bona *in conſpectu meo*, & ipſi inique
in operibus ſuis. Propheta dic eis: Ecce domus Iſrael receſſerunt à le
nolunt converti. Nunc habitatores Hieruſalem & viri Juda, judicate
judicium inter me & populum meum. Quod bonum dixi ut facerem
pulo meo quod non fecerim eis? & cùm præciperem eis ut facerent
bona, quare ipſi fecerunt opera mala? Nunc autem annunciabo
quod ego facturus ſum populo meo. Tollam majeſtatem meam
& erunt in direptionem : conteram domum ſanctuarii eorum, &
conculcationem. Et ponam eos derelictos : non erit eis ſuſtenta
fulcimentum; & erūt tranſmigrantes & derelicti. Prophetis quoq
dabo ne prophetizent ſuper eos prophetiam. Quia populus Dñi exercituum Iſrael eſt, & viri Juda plantatio lætitiæ ejus. *Et* dixi ut facerent judicium &
ſunt calumniatores; *dixi* ut facerent juſtitiam, & ecce ipſi multiplicant peccata.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܘܢܐܚܕܢ ܫܒܥ ܢܫܝܢ ܠܓܒܪܐ ܚܕ ܒܝܘܡܐ ܗܘ . ܘܢܐܡܪܢ ܠܗ. ܠܚܡܢ ܢܐܟܘܠ 1
ܘܢܚܬܢ ܢܠܒܫ. ܒܠܚܘܕ ܫܡܟ ܢܬܩܪܐ ܥܠܝܢ. ܘܐܥܒܪ ܚܣܕܢ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ 2
ܢܗܘܐ ܕܢܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܫܘܒܚܐ ܘܠܐܝܩܪܐ. ܘܦܐܪܐ ܕܐܪܥܐ ܠܪܒܘܬܐ ܘܠܬܫܒܘܚܬܐ. ܠܡܢ
ܕܡܫܬܚܪ ܡܢ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܢܗܘܐ ܡܢ ܕܡܫܬܚܪ ܒܨܗܝܘܢ. ܘܡܢ ܕܡܫܬܚܪ ܒܐܘܪܫܠܡ ܩܕܝܫܐ 3
ܢܬܩܪܐ. ܟܠ ܕܟܬܝܒ ܒܐܘܪܫܠܡ ܠܚܝܐ. * ܘܢܫܝܓ ܡܪܝܐ ܨܘܐܬܐ ܕܒܢܬ ܨܗܝܘܢ. ܘܕܡܐ ܢܕܟܐ 4
ܡܢ ܓܘܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܒܪܘܚܐ ܕܕܝܢܐ. ܘܒܪܘܚܐ ܕܝܩܕܐ. * ܘܢܒܪܐ ܡܪܝܐ ܥܠ ܟܠܗ ܡܕܝܪܐ 5
ܕܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܚܕܪܘܗܝ. ܥܢܢܐ ܒܐܝܡܡܐ ܘܬܢܢܐ. ܘܙܠܓܐ ܕܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ ܒܠܠܝܐ.
ܡܛܠ ܕܥܠ ܟܠ ܐܝܩܪܐ ܢܛܠܠ. * ܘܡܛܠܬܐ ܢܗܘܐ ܠܛܠܠܐ ܕܐܝܡܡܐ ܡܢ ܚܘܡܐ. ܘܠܡܬܛܫܝܘ 6
ܘܠܡܬܟܣܝܘ. ܡܢ ܪܘܒܥܐ ܘܡܢ ܡܛܪܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *

* ܐܫܒܚ ܠܚܒܝܒܝ ܬܫܒܘܚܬܐ ܕܚܒܝܒܝ ܠܟܪܡܗ. ܟܪܡܐ ܗܘܐ ܠܚܒܝܒܝ. ܒܩܪܢܐ 1
ܕܐܪܥܐ ܫܡܝܢܬܐ. * ܘܦܠܚܗ ܘܐܣܝܓܗ ܣܝܓܐ. ܘܢܨܒ ܒܗ ܫܒܘܩܐ. ܘܒܢܐ ܡܓܕܠܐ ܒܓܘܗ. 2
ܘܐܦ ܡܥܨܪܬܐ ܚܨܒ ܒܗ. ܘܣܟܐ ܕܢܥܒܕ ܥܢܒܐ ܘܥܒܕ ܒܘܫܐ. * ܘܗܫܐ ܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ 3
ܘܥܡܘܪܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܕܘܢܘ ܒܝܢܝ ܠܒܝܬ ܟܪܡܝ. * ܡܢܐ ܬܘܒ ܘܠܐ ܗܘܐ ܠܡܥܒܕ ܠܟܪܡܝ 4
ܘܠܐ ܥܒܕܬ ܠܗ. ܕܣܟܝܬ ܕܢܥܒܕ ܥܢܒܐ ܘܥܒܕ ܒܘܫܐ. * ܘܗܫܐ ܐܘܕܥܟܘܢ ܡܢܐ ܕܥܒܕ 5
ܐܢܐ ܠܗ ܠܟܪܡܝ. ܐܥܩܪ ܐܢܐ ܡܓܕܠܗ ܘܢܗܘܐ ܠܒܙܬܐ. ܘܐܦܪܘܩ ܐܢܐ ܣܝܓܗ ܘܢܗܘܐ
ܠܕܝܫܐ. * ܘܐܥܒܕܝܘܗܝ ܕܢܚܪܒ. ܘܠܐ ܢܬܙܡܪ. ܘܠܐ ܢܬܦܠܚ. ܘܢܣܩܘܢ ܒܗ ܟܘܒܐ 6
ܘܐܛܕܐ. ܘܠܥܢܢܐ ܐܦܩܕ ܕܠܐ ܢܚܬܘܢ ܥܠܘܗܝ ܡܛܪܐ. * ܡܛܠ ܕܟܪܡܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ 7
ܒܝܬܗ ܗܘ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܓܒܪܐ ܕܡܢ ܝܗܘܕܐ. ܢܨܒܬܐ ܚܕܬܐ ܘܡܚܒܒܬܐ. ܣܟܝܬ
ܠܕܝܢܐ ܘܗܘܐ ܚܛܘܦܝܐ. ܘܠܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܗܐ ܝܠܠܬܐ.

CAP. IV.

Et apprehendent ſeptem mulieres virum 1
unum in die illo, dicéntque illi; Panem no-
ſtrum comedemus, & veſtibus noſtris operi-
emur: tantummodo nomen tuum ſuper nos
vocetur, & aufer opprobrium noſtrum. Eo- 2
dem eo die erit ortus Domini in gloriam &
honorem, & fructus terræ in ſplendorem &
gloriam iis qui ſuperſtites fuerint ex Iſraele.
Et fiet, ut qui reſiduus fuerit in Sion, & qui 3
reſiduus fuerit in Jeruſalem, ſanctus vocetur;
quicunque ſcriptus fuerit, in Jeruſalem, ad
vitam. Et lavabit Dominus ſordes filiarum 4
Sion, & ſanguinem amovebit è medio Jeru-
ſalem per ſpiritum judicii, & per ſpiritum
ardentem. Et ſuper omnem locum munitum 5
creabit Dominus monti Sionis undequaque
nubem atque fumum interdiu, & fulgorem
flammæ igneæ noctu. Obumbrabit enim glo-
riam, Erítque tegimen ad umbram diurnam, 6
quò quis recipere ſe poſſit ab æſtu, tegere ſe,
& cavere à nimbo & ab imbre.

CAP. V.

Canam dilecto meo. Canticum dilecti mei 1
ad vineam ſuam. Vineam habebat dilectus
meus in cornu loci uberrimi: Coluit eam, 2
ſeptóque cinxit: ſevit in ea palmites, tur-
rim extruxit in ea, & torcular etiam fecit
in ea: & expectavit ut ederet uvas, at edidit
ſiliquas. Jam viri Judæ, et habitatores Je- 3
ruſalem, judicate inter me et vineam meam.
Quid ampliùs oportebat facere vineæ meæ, 4
quod non fecerim; ut exſpectante me ut ede-
ret uvas, ediderit ſiliquas? Nunc oſtendam 5
vobis quid ſim facturus huic vineæ meæ. Fun-
ditùs evertam turrim ejus, et erit in direptio-
nem: ſeptum ejus rumpam, et erit in concul-
cationem: Et efficiam ut vaſtetur: non pu- 6
tabitur neque excoletur, et germinabunt in
ea ſpinæ et vepres: et præcipiam nubibus ne
pluviam demittant in eam. Nam vinea Dñi 7
potentiſſimi, domus eſt Iſraelitarũ; et viri qui
ex Juda, planta ſunt nova et dilecta: expectavi
judiciũ, et fuit rapina; juſtitiã, at ecce ululatus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الرابع *

* ويتعلق سبع نسوة بانسان واحد قايلات. ناكل خبزنا ونكتسي ثيابنا. ولا نكلفك شيا غير ان 1
اسمك يدعى علينا. وانزع عارنا * في ذلك اليوم يشرق الله بمشورة ومجد على الارض. 2
ليرفع ويمجد من بقي من اسرايل * ويكون من يبقى في صهيون ويبقى في ايروسليم 3
يدعون اطهارا. كل الذين كتبوا للحياة في ايروسليم * لان الرب يغسل دنس بني وبنات 4
صهيون. ويطهر الدم من ايروسليم من بينهم. بروح الانصاف وروح التوقد * وياتي ويكون 5
كل موضع بجبل صهيون وكل ما يحوط بها. يظلله الغمام نهارا. ويستر بكل مجد مثل دخان.
وضوء نار ملتهب ليلا * ويكون في ظلال من الحر. في ستر وفي حمية من الزوبعة والمطر. 6

* الفصل الخامس *

* قربان يصف فيه النبي حسن صنيع الرب الى بني اسرايل. واساتهم ومخالفتهم له. 1
امدح حبيبي. مدح حبيبي لكرمه. كان لحبيبي كرم في زاوية في موضع خصيب * فاحطت 2
به سياجا وحصنته. وغرست فيه كرمه. وبنيت برجا في وسطه. وحفرت فيه معصرا ورجوت
ان يصنع عنبا فصنع شوكا * والان يا انسان يهوذا والسكان في ايروسليم. احكموا بيني وبين 3
كرمي * ماذا اصنع ايضا مع كرمي ولم اصنعه له. من اجل اني رجوت ان يصنع عنبا 4
فصنع شوكا * والان اعلمكم ما اصنع بكرمي. انزع جدرانه ويصير للاختطاف. واهدم جدرانه 5
ويصير موطيا * واهمل كرمي فلا يحرث ولا يفلح. فينبت فيه الشوك مثل ارض بور. وامر 6
السحاب ان لا تمطر عليه مطرا * لان كرم رب الجنود هو بيت اسرايل. وانسان يهوذا غرس 7
حديث محبوب. رجوت ان يصنع حكما فصنع اثما. وليس عدلا لكن صراخا.

CAP. IV.

*Et prehendent ſeptem mulieres homi- 1
nem unum, dicentes; Comedemus panem
noſtrum, & induemur veſtibus noſtris, nec
ulla in re moleſtæ erimus: tantummodo no-
men tuum vocetur ſuper nos, & aufer
opprobrium noſtrum. In illo die orietur 2
Deus cum conſilio et gloria ſuper terram,
ut extollat & glorificet eos qui reſidui
fuerint ex Iſraele. Et erit, qui reſidui man- 3
ſerint in Sione, & manſerint in Jeruſa-
lem, vocabuntur puri; ii omnes qui a-
ſcripti fuerint ad vitam in Jeruſalem.
Abluet enim Dominus ſordes filiorum & 4
filiarum Sionis, & ſanguinem expurgabit
è Jeruſalem de medio eorum, ſpiritu ju-
ſtitiæ & ſpiritu incendii: Quo veniente 5
continget ut quæcunq; loca in monte Sion
exiſtentia, & quæcunque ipſi circunja-
centia, nubibus obumbrentur interdiu, o-
mniq; gloriâ quaſi fumo tegantur; noctu
verò ſplendore ignis ardentis. Eritque in 6
umbra ab æſtu, ſub tecto & in latibulo à
turbine & imbre.*

CAPUT V.

Lectio in qua narrat Propheta be-
neficia Domini erga filios Iſraelis,
et maleficia atque inobedienti-
am iſtorum erga illum.

*Carmen concinam dilecto meo: Car- 1
men dilecti mei de vinea ſua. Vineam ha-
bebat dilectus meus in angulo quodam, in
loco fertili: Hanc ſepe circundedi & 2
munivi, vites in hac plantavi, turrim in
medio ejus extruxi, torcular in ea effodi;
cúmque ſperarem uvas producturam, ſpi-
nas produxit. Jam verò O homines Judæ, 3
& qui degitis in Jeruſalem, judicate in-
ter me & vineam meam. Quid reſtabat 4
agendum vineæ meæ quod non præſtite-
rim? ſperabam enim uvas reddituram,
reddidit autem ſpinas. Equidem indica- 5
bo vobis quid facturus ſim vineæ meæ.
Auferam ſepem ejus, ut exponatur direpti-
oni; evertam ſeptum ejus, ut pateat con-
culcationi: Derelinquam vineam meam, 6
et non coletur neque arabitur, ut ſpinæ
naſcantur in ea quaſi in terra inculta: et
mandabo nubibus ne pluviam demittant
in eam. Nam vinea Domini exercituum eſt 7
domus Iſraelis, et homines Judæ planta
nova et jucunda: ſperabam illam judici-
um facturam, fecit autem iniquitatem;
neququam juſtitiam, ſed clamorem.*

יְשַׁעְיָה : ה

, agrum in agrum , domum in domum facientibus pertingere Væ
הוֹי מַגִּיעֵי בַיִת בְּבַיִת שָׂדֶה בְשָׂדֶה 8
vos soli constituamini & , loci defectum ad usque ,facient appropinquare
יַקְרִיבוּ עַד אֶפֶס מָקוֹם וְהוּשַׁבְתֶּם לְבַדְּכֶם
non Si : exercituum Dominus meis auribus In .terræ interiori in
בְּקֶרֶב הָאָרֶץ׃ בְּאָזְנָי יְהוָה צְבָאוֹת אִם־לֹא 9
.habitatore absque bonæ & ,grandes ,erunt desolationem in multæ domus
בָּתִּים רַבִּים לְשַׁמָּה יִהְיוּ גְּדֹלִים וְטוֹבִים מֵאֵין יוֹשֵׁב׃
sementis & : unum batum facient , vineæ jugera decem Nam
כִּי עֲשֶׂרֶת צִמְדֵּי־כֶרֶם יַעֲשׂוּ בַּת אֶחָת וְזֶרַע 10
: sequentur Sechar , mane in maturantibus Væ .Ephah faciet , Chomer
חֹמֶר יַעֲשֶׂה אֵיפָה׃ הוֹי מַשְׁכִּימֵי בַבֹּקֶר שֵׁכָר יִרְדֹּפוּ 11
,nebel & ,cithara erit Et .eos incendet vinum crepusculum in morantibus
מְאַחֲרֵי בַנֶּשֶׁף יַיִן יַדְלִיקֵם׃ וְהָיָה כִנּוֹר וָנֶבֶל 12
Domini opus & : eorum conviviis vinum & ,tibia & ,tympanum
תֹּף וְחָלִיל וָיַיִן מִשְׁתֵּיהֶם וְאֵת פֹּעַל יְהוָה
migravit Propterea .viderunt non ejus manuum opus & ,respicient non
לֹא יַבִּיטוּ וּמַעֲשֵׂה יָדָיו לֹא רָאוּ׃ לָכֵן גָּלָה 13
ejus turba & , famis viri ejus gloria & ,scientia non à meus populus
עַמִּי מִבְּלִי־דָעַת וּכְבוֹדוֹ מְתֵי רָעָב וַהֲמוֹנוֹ
aperuit & ,suam animam sepulchrum dilatavit Propterea .siti aruit
צִחֵה צָמָא׃ לָכֵן הִרְחִיבָה שְּׁאוֹל נַפְשָׁהּ וּפָעֲרָה 14
,ejus strepitus &,ejus turba &,ejus decor descendet & ,statutum præter suum os
פִיהָ לִבְלִי־חֹק וְיָרַד הֲדָרָהּ וַהֲמוֹנָהּ וּשְׁאוֹנָהּ
oculi & , vir se humiliabit & ,homo se incurvabit Et .eo in lætus &
וְעָלֵז בָּהּ׃ וַיִּשַּׁח אָדָם וַיִּשְׁפַּל־אִישׁ וְעֵינֵי 15
, judicio in exercituum Dominus exaltabitur Et .se humiliabunt sublimium
גְבֹהִים תִּשְׁפַּלְנָה׃ וַיִּגְבַּהּ יְהוָה צְבָאוֹת בַּמִּשְׁפָּט 16
agni pascentur Et .justitia in sanctificatus sanctus Deus &
וְהָאֵל הַקָּדוֹשׁ נִקְדָּשׁ בִּצְדָקָה׃ וְרָעוּ כְבָשִׂים 17
trahentibus Væ .comedent peregrini medullatorum deserta &,suū ductum juxta
כְּדָבְרָם וְחָרְבוֹת מֵחִים גָּרִים יֹאכֵלוּ׃ הוֹי מֹשְׁכֵי 18
.peccatum plaustri funibus veluti & ,mendacii funibus in iniquitatem
הֶעָוֹן בְּחַבְלֵי הַשָּׁוְא וְכַעֲבוֹת הָעֲגָלָה חַטָּאָה׃
: videamus ut ,suum opus festinare faciat ,Acceleret : Dicentes
הָאֹמְרִים יְמַהֵר יָחִישָׁה מַעֲשֵׂהוּ לְמַעַן נִרְאֶה 19
Væ sciemus & , Israel Sancti consilium veniat & ,appropinquet &
וְתִקְרַב וְתָבוֹאָה עֲצַת קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל וְנֵדָעָה׃ הוֹי 20
tenebrositatem ponentes : malum bonum & ,bonum malum dicentibus
הָאֹמְרִים לָרַע טוֹב וְלַטּוֹב רָע שָׂמִים חֹשֶׁךְ
dulce & , dulce in amarum ponentes : tenebrositatem lucem & , lucem
לְאוֹר וְאוֹר לְחֹשֶׁךְ שָׂמִים מַר לְמָתוֹק וּמָתוֹק
suis faciebus coram & ,suis oculis in sapientibus Væ .amarum in
לְמָר׃ הוֹי חֲכָמִים בְּעֵינֵיהֶם וְנֶגֶד פְּנֵיהֶם 21
virtutis hominibus & ,vinum bibendum ad potentibus Væ .prudentibus
נְבֹנִים׃ הוֹי גִּבּוֹרִים לִשְׁתּוֹת יָיִן וְאַנְשֵׁי־חַיִל 22
justitiam & : muneris mercede impium Justificantibus .Sechar miscendum ad
לִמְסֹךְ שֵׁכָר׃ מַצְדִּיקֵי רָשָׁע עֵקֶב שֹׁחַד וְצִדְקַת 23
linguam stipulam consumere sicut Propterea .eo ab amovebunt justorum
צַדִּיקִים יָסִירוּ מִמֶּנּוּ׃ לָכֵן כֶּאֱכֹל קַשׁ לְשׁוֹן 24
: erit mucor veluti eorum radix : debilitabit flamma glumam & , ignis
אֵשׁ וַחֲשַׁשׁ לֶהָבָה יִרְפֶּה שָׁרְשָׁם כַּמָּק יִהְיֶה
Domini legem spreverunt nam : ascendet pulvis sicut ,eorū gemma &
וּפִרְחָם כָּאָבָק יַעֲלֶה כִּי מָאֲסוּ אֵת תּוֹרַת יְהוָה
.contempserunt Israel sancti eloquium & ,exercituum
צְבָאוֹת וְאֵת אִמְרַת קְדוֹשׁ־יִשְׂרָאֵל נִאֵצוּ׃

Versio VUL. LAT.

8 Væ qui conjungitis domum ad domum, et agrum agro copulatis usque ad terminū loci: numquid habitabitis vos soli in medio terræ? 9 In auribus meis sunt hæc, dicit Dominus exercituum: Nisi domus multæ desertæ fuerint, grandes & pulchræ, 10 absque habitatore. Decem enim jugera vinearū facient lagunculā unam, & triginta modii sementis facient modios tres. 11 Væ qui consurgitis manè ad ebrietatē sectandam, & potandum usque ad vesperam, ut 12 vino æstuetis. Cithara, & lyra, & tympanum, & tibia, & vinum in conviviis vestris: & op' Domini non respicitis, nec opera manuum ejus considera- 13 tis. Propterea captivus ductus est populus meus, quia non habuit scientiam, & nobiles ejus interierunt fame, & multitudo 14 ejus siti exaruit. Propterea dilatavit infernus animam suam, & aperuit os suum absque ullo termino: & descendent fortes ejus, & populus ejus, & sublimes gloriosique ejus, ad eum. 15 Et incurvabitur homo, & humiliabitur vir, & oculi sublimium 16 deprimentur. Et exaltabitur Dominus exercituum in judicio, & Deus sanctus sancti- 17 ficabitur in justitia. Et pascentur agni juxta ordinem suū, & deserta in ubertatem versa ad- 18 venæ comedent. Væ qui trahitis iniquitatem in funiculis vanitatis, et quasi vinculū plaustri 19 peccatum. Qui dicitis; Festinet, & citò veniat opus ejus, ut videamus: & appropiet, et veniat consilium Sancti Israel, et 20 sciemus illud. Væ qui dicitis malum bonum, et bonum malum: ponentes tenebras lucem, et lucem tenebras: ponentes amarū in dulce, & dulce in a- 21 marum. Væ qui sapientes estis in oculis vestris, et corā vobis- 22 metipsis prudentes. Væ qui potentes estis ad bibendū vinum, & vires fortes ad miscendam 23 ebrietatē. Qui justificatis impium pro muneribus, & justi- 24 tiam justi aufertis ab eo. Propter hoc, sicut devorat stipulā lingua ignis, & calor flammæ exurit; sic radix eorum quasi favilla erit, & germen eorum ut pulvis ascendet. Abjecerunt enim legem Domini exercituū, et eloquium Sancti Israel blasphemaverunt.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

8 Οὐαὶ οἱ συνάπτοντες οἰκίαν πρὸς οἰκίαν, καὶ ἀγρὸν πρὸς ἀγρὸν ἐγγίζοντες, ἵνα τοῦ πλησίον ἀφέλωνταί τι. μὴ οἰκήσετε μόνοι 9 ἐπὶ τῆς γῆς; Ἠκούσθη γὰρ εἰς τὰ ὦτα κυρίου Σαβαὼθ ταῦτα· ἐὰν γὰρ γένωνται οἰκίαι πολλαὶ, εἰς ἔρημον ἔσονται μεγάλαι καὶ καλαὶ, καὶ οὐκ ἔσονται οἱ (κ) ἐνοικοῦντες 10 ἐν αὐταῖς. Οὗ γὰρ ἐργῶνται δέκα ζεύγη βοῶν, ποιήσει κεράμιον ἕν· καὶ ὁ σπείρων 11 ἀρτάβας ἕξ, ποιήσει μέτρα τρία. Οὐαὶ οἱ ἐγειρόμενοι τὸ πρωῒ, καὶ τὸ σίκερα διώκοντες, οἱ μένοντες τὸ ὀψέ. ὁ γὰρ οἶνος αὐ- 12 τοὺς συγκαύσει. Μετὰ γὰρ κιθάρας καὶ ψαλτηρίου καὶ τυμπάνων καὶ αὐλῶν τὸν οἶνον πίνουσι, τὰ δὲ ἔργα κυρίου οὐκ ἐμβλέπουσι, καὶ 13 τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτοῦ οὐ κατανοοῦσι. Τοίνυν αἰχμάλωτος ὁ λαός μου ἐγενήθη, διὰ τὸ μὴ εἰδέναι αὐτοὺς τὸν κύριον· καὶ πλῆθος ἐγενήθη νεκρῶν, διὰ λιμὸν καὶ (λ) δί- 14 ψος ὕδατος. Καὶ ἐπλάτυνεν ὁ ᾅδης τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καὶ διήνοιξε τὸ στόμα αὐτοῦ, τοῦ μὴ διαλιπεῖν· καὶ καταβήσονται οἱ ἔνδοξοι καὶ οἱ μεγάλοι καὶ οἱ πλούσιοι καὶ οἱ λοιμοὶ αὐ- 15 τῆς. Καὶ ταπεινωθήσεται ἄνθρωπος, καὶ ἀτιμασθήσεται ἀνήρ· καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ οἱ με- 16 τέωροι ταπεινωθήσονται. Καὶ ὑψωθήσεται κύριος Σαβαὼθ ἐν κρίματι, καὶ ὁ θεὸς ὁ ἅ- 17 γιος δοξασθήσεται ἐν δικαιοσύνῃ. Καὶ βοσκηθήσονται οἱ διηρπασμένοι ὡς ταῦροι, καὶ τὰς ἐρήμους τῶν ἀπειλημμένων ἄρνες φά- 18 γονται. Οὐαὶ οἱ ἐπισπώμενοι τὰς ἁμαρτίας ὡς σχοινίῳ μακρῷ, καὶ ὡς ζυγοῦ ἱμάντι δα- 19 μάλεως τὰς ἀνομίας· Οἱ λέγοντες, Τὸ τάχος ἐγγισάτω ἃ ποιήσει, ἵνα ἴδωμεν· καὶ (μ) ἐλθάτω ἡ βουλὴ τοῦ (ν) ἁγίου Ἰσραὴλ, ἵνα 20 γνῶμεν. Οὐαὶ οἱ λέγοντες τὸ πονηρὸν καλὸν, καὶ τὸ καλὸν πονηρὸν, οἱ τιθέντες τὸ σκότος φῶς, καὶ τὸ φῶς σκότος, οἱ τιθέντες 21 τὸ πικρὸν γλυκὺ, καὶ τὸ γλυκὺ πικρόν. Οὐαὶ οἱ συνετοὶ ἐν ἑαυτοῖς, καὶ ἐνώπιον (ξ) 22 αὐτῶν ἐπιστήμονες. Οὐαὶ οἱ ἰσχύοντες ὑμῶν οἱ (ο) πίνοντες τὸν οἶνον, καὶ οἱ δυνάσται οἱ 23 (π) κεραννύντες τὸ σίκερα, Οἱ δικαιοῦντες τὸν ἀσεβῆ ἕνεκεν δώρων, καὶ τὸ δίκαιον τοῦ 24 δικαίου αἴροντες. Διατοῦτο ὃν τρόπον καυθήσεται καλάμη ὑπὸ ἄνθρακος πυρὸς, καὶ συγκαυθήσεται ὑπὸ φλογὸς ἀνειμένης, ἡ ῥίζα αὐτῶν ὡς χνοῦς ἔσται, καὶ τὸ ἄνθος αὐτῶν ὡς κονιορτὸς ἀναβήσεται· οὐ γὰρ ἠθέλησαν τὸν νόμον κυρίου Σαβαὼθ, ἀλλὰ (ρ) τὸ λόγιον τοῦ ἁγίου Ἰσραὴλ παρώξυναν.

MS. A. (κ) ἐνοικοῦντες. Οὗ γὰρ (λ) δίψαν (μ) ἐλθοῖ (ν) ἁγίου, ἵνα (ξ) ἑαυτῶν (ο) τὸν οἶνον πίνοντες, (π) κεραννῦντες (ρ) τὸ Ἰσραὴλ

Væ, qui conjungunt domum ad mum, & agrum ad agrum ap pinquant, ut à proximo auferant aliquid. Nunquid habitabitis soli super terram? Audita enim sunt hæc in auribus Domini Sabaoth. Nam si fuerint domus multæ, in desertum erunt: magnæ, & pul chræ, & non erunt qui habitent in eis. Ubi enim operantur decem juga boum, faciet (l) lagunculam unam: & qui seminat artabas sex faciet mensuras tres. Væ, qui sur gunt manè, & (k) siceram sequun tur, qui expectant vesperam. Vinum enim comburet eos. Nam cum c ithara, & psalterio, & tympanis & tibiis, vinum bibunt: opera tem Domini non respiciunt, & op ra manuum ejus non considerant. Ergò captivus populus meus fac est: eò quòd ipsi non cognoverunt Dominum: & facta est multitudo mortuorum propter famem, & sit aquæ. Et dilatavit infernus an mam suam, & aperuit os suum, non cesset. Et descendent & magni, & divites, & (l) pesti lentes ejus: Et humiliabitur ho & dehonorabitur vir: & oc sublimes humiliabuntur. Et ex tabitur Dominus Sabaoth in ju cio, & Deus sanctus glorifica tur in justitia: Et pascentur di pti, quasi tauri: & deserta qui capti sunt, agni comedent. qui trahunt peccata quasi funi co longo, & quasi jugi corrigia tulæ, iniquitates: Qui dicunt Citò appropinquent quæ faciet videamus: & veniat consil Sancti Israel, ut cognoscamus. qui dicunt malum bonum, & b num malum; qui ponunt te bras lucem, & lucem tene qui ponunt amarum dulce, dulce amarum. Væ, qui arguti in semetipsis, & co semetipsis scientes. Væ va tes vestri, qui bibunt vinum potentes, qui miscent siceram justificant impium propter mu & justum justi tollunt. Pr hoc, sicut uretur stipula à ignis, & comburetur à fl (m) resoluta; radix eorum lanugo erit, & flos eorum pulvis ascendet. Non enim runt legem Domini Sabaoth eloquium Sancti Israel runt.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

8 וַי דְמַקְפִּין בֵּיתָא עַל בֵּיתָא חֲקַל אוּנְסָא בְחַקְלָתְהוֹן מְקָרְבִין אָמְרִין עַד דְנַחְסִין כָּל אֲתַר
9 וּמְדַמַּן דְיָתְבִין בִּלְחוֹדֵיהוֹן בְּגוֹ אַרְעָא: אֲמַר נְבִיָא בְּאוּדְנַי הֲוֵיתִי שָׁמַע כַּד
אִתְגְזֵרַת דָא מִן קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת אִם לָא בָתִּין סַגִיאִין לְצָדוּ יְהוֹן רַבְרְבִין וְטָבִין מִבְּלִי יָתִיב:
10 אֲרֵי בְחוֹבָא דְלָא יְהַבוּ מַעַשְׂרַיָא בֵּית עֲשַׂר אַשְׁכְּרִין דִכְרַם יַעַבְדוּן בַּיְתָא חֲדָא וּבֵית כּוֹר
11 זְרַע יַעֲבֵיד תְּלָת סָאִין: וַי דְמַקְדְמִין בְּצַפְרָא לְמִשְׁתֵּי חֲמַר עַתִּיק רָדְפִין מְאַחֲרִין לְמִפְטַר
12 מַרְמְשִׁין עַל שְׁוִיהוֹן חֲמַר אוּנְסִין מַדְלִיק לְהוֹן: וַהֲוֵי עַל יְדֵי כִנּוֹר וְנֶבֶל קַתְרוֹס
אַבּוּבָא וְחַמְרָא מִשְׁתֵּיהוֹן וּבְאוֹרַיְתָא דַיְיָ לָא אִסְתַּכַּלוּ וְעוֹבַד גְבוּרְתֵּיהּ לָא חֲזוֹ:
13 בְּכֵן גְלוֹ עַמִּי מִבְּלִי דַעְתָּא וְיַקִירֵיהוֹן מִיתוּ בְכַפְנָא וְסַגִיהוֹן בִּבְצוֹרְתָא בְצַחוּתָא: בְּכֵן
14 אַפְתֵּיאַת שְׁאוֹל נַפְשָׁהּ וּפְתַחַת פּוּמַהּ וְלֵית סוֹף וְנַחְתּוּ יַקִירֵיהוֹן וְסַגִיהוֹן וְאִתְרְגוּשְׁתְּהוֹן
15 16 וּדְתַקִיף בְּהוֹן: וְיִמְאַךְ אֱנָשָׁא וְיֶחֱלַשׁ תְּקוֹף גֻבְרִין וְעֵינֵי רָמַיָא יִמְאֲכָן: וְתַקִיף יְיָ צְבָאוֹת
17 בְּדִינָא וֶאֱלָהָא קַדִישָׁא קַדִישׁ בִּזְכוּתָא: וְיִתְפַּרְנְסוּן צַדִיקַיָא כְּמָא דַאֲמִיר עֲלֵיהוֹן יִסְגוּן
18 וְנִכְסֵי רַשִׁיעַיָא צַדִיקַיָא יַחְסְנוּן: וַי דְמַשְׁרַן לְמֶחְטֵי צִבְחַר נָגְדִין חוֹבִין בְּחַבְלֵי לְמָא
19 אוּלִין וְסָגַן עַד דְתַקִיפִין וּכְנַדִילַת עֲגַלְתָּא חוֹבִין: דְאָמְרִין אֵימָתַי יוֹחִי
וְיִגְלֵי פְּרִשׁוּתֵיהּ בְּדִיל דְנֶחֱזֵי וְיִקְרַב וְיֵיתֵי מַלְכֵּיהּ דְקַדִישָׁא דְיִשְׂרָאֵל
20 וְנִדְעִנֵּיהּ: וַי דְאָמְרִין לְרַשִׁיעַיָא דְמַצְלְחִין בְּעָלְמָא הָדֵין אַתּוּן טָבַיָא וּלְעִנְוְתָנַיָא
אָמְרִין אַתּוּן רַשִׁיעַיָא הֲלָא בְמֵיתֵי נְהוֹרָא לְצַדִיקַיָא יַחְשׁוֹךְ לְרַשִׁיעַיָא וִיבַסְמוּן פִּתְגָמֵי
אוֹרַיְתָא לְעָבְדֵיהוֹן וְיֵיתֵי מִרְדָא לְרַשִׁיעַיָא וְיִדְעוּן דִבְסוֹפָא מְרִיר חֶטְאָה
21 22 לְעָבְדֵיהּ: וַי דְחַכִּימִין בְּעֵינֵי נַפְשְׁהוֹן וְקָבֵיל אַפֵּיהוֹן סוּכְלְתָנִין: וַי דְגִבָּרִין לְמִשְׁתֵּי
23 חֲמַר וְגֻבְרִין מָרֵי נִכְסִין לְאִתְרְוָאָה מִן עַתִּיק: מְזַכָּן לֵיהּ לְחַיָבָא חֲלַף דִמְקַבְּלִין
24 מִנֵּיהּ מָמוֹן דִשְׁקַר וּזְכוּת זַכָּאָה בִּרְשַׁע מַעְדַן מִנְהוֹן: בְּכֵן יִתְאַכְלוּן כְּקַשָּׁא
בְּאֶשָּׁתָא וּכְעַמִירָא בְשַׁלְהוֹבִיתָא מְסַגַן תּוּקְפְהוֹן כִּשְׁבוּיָהִי וּמָמוֹן אוּנְסֵיהוֹן כְּאַבְקָא
דְפָרַח אֲרֵי קְצוּ בְּאוֹרַיְתָא דַיְיָ צְבָאוֹת וְיָת מֵימַר קַדִישָׁא דְיִשְׂרָאֵל רַחִיקוּ:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Væ qui conjungunt domum domui, agrum violenter agro suo copu & dicunt: Donec possideamus omnem locum: existimantes quòd ha bunt soli in medio terræ. Dixit Propheta: In auribus meis audi quidem decretum est hoc à facie Domini exercituum, Si non domus tæ in desolationem erunt, grandes & bonæ absque habitatore. Ero pter peccatum non solvendi decimas, locus decem jugerum vineæ lagunculam unam, & locus ubi seminatur corus sementis, faciet ta. Væ qui consurgunt manè ad bibendum, vinum vetus sectan remorantes discessum vesperi in cubilibus suis: vinum rapinarum cendit eos. Et fiunt cum cithara & psalterio, & lyra, & organo vino convivia eorum: & in lege Domini non contemplantur, & opera tentiæ ejus non respiciunt. Propterea captivus ductus est popu eò quòd non habuit scientiam, & nobiles eorum pereunt fame, & m tudo eorū in siccitate & in siti. Propterea dilatavit infernus anima & aperuit os suū sine fine, & descenderunt nobiles eorum, & mult eorū, et tumultus eorum, & qui fortis est in eis. Et humiliabitur ho infirmabitur fortitudo fortium, & oculi sublimes humiliabuntur. E rabitur Dominus exercituum in judicio, & Deus sanctus sanctificab justitia. Et pascentur justi sicut dictum est de eis, & multiplica tur, & substantias impiorum justi possidebunt. Væ qui incipiunt p lum peccare, trahentes peccata in funiculis vanitatis; augentur & scunt donec fortiora facta sint, et quasi vinculum plaustri pecca dicunt: Quando festinabit et revelabitur miraculum ejus ut vid et appropiet, et veniat consilium sancti Israel, et sciemus illud qui dicunt impiis qui prosperantur in seculo hoc; Vos estis bo mansuetis dicunt: Vos estis impii. Itaque cum venerit lux justis, bræ *erunt* impiis; dulcia erunt verba legis operantibus ea, et *rebellio* impiis, et scient quia in fine erit amarum peccatum bus illud. Væ sapientibus in oculis mentis suæ, et coram semetipsis dentes. Væ qui potentes sunt ad bibendum vinum, et viri d ad inebriandum se vino veteri. Qui justificant impium, eò quòd piunt ab eo mammonam iniquitatis; et justitiam justorum au ferunt ab eis. Propterea consumentur sicut stipula in igne, et sic pulus in flamma, *multiplicant fortitudinem* eorum, quasi ulcus cunia rapinæ eorum, sicut favilla quæ volat: quoniam dete gem Domini Sabaoth, et Verbum sancti Israel *repulerunt.*

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

8 * ܘܝ ܠܗܘܢ ܠܕܡܩܪܒܝܢ ܒܝܬܐ ܠܒܝܬܐ: ܘܚܩܠܐ ܠܚܩܠܐ ܡܩܪܒܝܢ. ܥܕܡܐ ܕܬܐܚܕܘܢ ܐܬܪܐ ܘܬܬܒܘܢ
9 ܒܠܚܘܕܝܟܘܢ ܒܓܘ ܐܪܥܐ. * ܒܐܕܢܝ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܫܬܡܥ ܕܒܬܐ ܣܓܝܐܐ
10 ܠܚܘܪܒܐ ܢܗܘܘܢ. ܡܢ ܕܠܐ ܝܬܒ. * ܡܛܠ ܕܥܣܪ ܦܕܢܝ ܕܟܪܡܐ. ܢܥܒܕ ܩܣܛܐ ܚܕܐ. ܘܙܪܥܐ
11 ܕܟܘܪ ܢܥܒܕ ܣܐܬܐ. * ܘܝ ܠܕܡܩܕܡܝܢ ܒܨܦܪܐ ܘܪܗܛܝܢ ܠܫܟܪܐ. ܘܡܘܚܪܝܢ ܠܪܡܫܐ ܘܚܡܪܐ
12 ܡܕܠܩ ܠܗܘܢ. * ܒܟܢܪܐ ܘܒܩܝܬܪܐ. ܘܒܦܠܓܐ ܘܒܨܢܨܠܐ. ܫܬܝܢ ܚܡܪܐ. ܘܒܥܒܕܘܗܝ
13 ܕܐܠܗܐ ܠܐ ܡܣܬܟܠܝܢ. ܘܒܥܒܕ ܐܝܕܘܗܝ ܠܐ ܚܝܪܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܫܬܒܝ ܥܡܝ ܡܢ
14 ܕܠܐ ܝܕܥܬܐ. ܘܣܓܝܐܐ ܡܝܬܘ ܡܢ ܟܦܢܐ. ܘܣܓܝܐܐ ܡܢ ܨܗܝܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܪܘܝܚܬ
ܫܝܘܠ ܢܦܫܗ. ܘܦܬܚܬ ܦܘܡܗ ܕܠܐ ܣܘܦ. ܘܢܚܬܘܢ ܠܗ܆ ܡܫܒܚܐ. ܘܡܝܩܪܐ
15 16 ܘܥܫܝܢܐ. * ܘܢܬܡܟܟ ܐܢܫܐ. ܘܢܫܬܦܠ ܓܒܪܐ. ܘܥܝܢܐ ܪܡܬܐ ܢܬܡܟܟܢ. * ܘܢܬܥܠܐ
17 ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܕܝܢܐ. ܘܐܠܗܐ ܩܕܝܫܐ ܢܬܩܕܫ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܢܪܥܘܢ ܐܡܪܐ ܒܕܒܪܗܘܢ.
18 ܘܚܘܪܒܐ ܕܐܬܒܢܝܘ ܬܘܬܒܐ ܢܐܟܠܘܢ. * ܘܝ ܠܕܡܢܓܕܝܢ ܚܛܗܝܗܘܢ ܐܝܟ ܚܒܠܐ ܐܪܝܟܐ.
19 ܘܐܝܟ ܐܣܘܪܐ ܕܥܓܠܬܐ ܚܛܝܬܗܘܢ. * ܘܐܡܪܝܢ. ܥܓܠ ܢܣܪܗܒ ܡܪܝܐ ܥܒܕܘܗܝ ܕܢܚܙܐ
20 ܐܢܘܢ. ܘܬܬܩܪܒ ܘܬܐܬܐ ܡܠܟܗ ܕܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܕܥܝܗ. * ܘܝ ܠܕܐܡܪܝܢ ܠܒܝܫܬܐ
ܛܒܬܐ ܘܠܛܒܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܣܝܡܝܢ ܚܫܘܟܐ ܢܘܗܪܐ ܘܢܘܗܪܐ ܚܫܘܟܐ. ܘܣܝܡܝܢ ܡܪܝܪܐ
21 ܚܠܝܐ ܘܚܠܝܐ ܡܪܝܪܐ. * ܘܝ ܠܕܚܟܝܡܝܢ ܒܥܝܢܝ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܩܕܡ ܐܦܝܗܘܢ
22 ܣܟܘܠܬܢܝܢ. * ܘܝ ܠܓܢܒܪܐ ܕܠܡܫܬܐ ܚܡܪܐ. ܘܠܓܒܪܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܡܡܙܓܝܢ ܫܟܪܐ.
23 24 * ܕܡܙܕܩܝܢ ܠܚܝܒܐ ܡܛܠ ܫܘܚܕܗ. ܘܙܕܝܩܘܬܗ ܕܙܕܝܩܐ ܡܥܒܪܝܢ ܡܢܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ
ܐܝܟ ܕܡܬܐܟܠܐ ܚܫܫܐ: ܒܠܫܢܐ ܕܢܘܪܐ ܕܐܢܝܪܐ. ܗܟܢܐ ܒܫܠܗܒܝܬܐ ܕܡܫܬܠܚܐ ܢܬܐܟܠܘܢ.
ܥܩܪܗܘܢ ܐܝܟ ܐܒܩܐ ܢܗܘܐ. ܘܦܪܥܝܗܘܢ ܐܝܟ ܥܘܪܐ ܢܣܩ. ܡܛܠ ܕܐܣܠܝܘ ܢܡܘܣܗ ܕܡܪܝܐ
ܚܝܠܬܢܐ: ܘܡܐܡܪܗ ܕܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܪܓܙܘ.

8 Væ *vobis* qui adjungitis domum domui, & agrum agro permiſcetis, ut locum occupetis, & ſoli habitetis in terra. 9 Auribus meis auditus eſt Dominus potens *dicere*, multas domos deſolandas eſſe ob penuriam habitatorum. 10 Nam decem jugera vineæ, lagenam unam ; & ſementis cori, ſatum reddent. 11 Væ iis qui ſummo mane ſurgentes, & ad ſiceram accurrentes immorantur ad veſperam uſque, quoad vinum adurat eos. 12 Cum lyris & citharis, tympanis ac ſiſtris vinum potant : opera verò Dei non intelligunt, nec opus manuum ejus contemplantur. 13 Ideò captivus abductus eſt populus meus ob ignorantiam, & multi eorum fame, multi verò ſiti perierunt. 14 Ideò dilatavit infernus ſeipſum, & os ſuum diſtendit in immenſum ; & in eum deſcendent glorioſi, honorandi, & fortes : 15 Humiliabitur plebeius, deprimetur nobilis ; & oculi elati humiliabuntur : 16 Et exaltabitur Dominus potens in judicio, et Deus ſanctus ſanctificabitur in juſtitia. 17 Et paſcentur agni in his quæ pertinebant ad eos ; et ruinas quæ reſtauratæ fuerunt, peregrini devorabunt. 18 Væ iis qui producunt peccata ſua velut funem longum, et ut zonam rotæ peccatum ſuum : 19 Et dicunt ; Citò acceleret Dominus opera ſua, ut videamus ea ; et accedat veniátque conſilium Sancti Iſraelis, ut agnoſcamus illud. 20 Væ iis qui vocant malum bonum, et bonum malum ; ponunt tenebras lucem, et lucem tenebras ; et ſtatuunt amarum dulce, et dulce amarum. 21 Væ iis qui ſapientes ſunt in ſuis oculis, et aſpectu ſuo prudentes. 22 Væ iis qui valentes ſunt ad potandum vinum, et viris fortibus qui miſcent ſiceram : 23 Qui abſolvunt reum propter munus ipſius, et innocentiam innocentis abdicant à ſe. 24 Propterea ut abſumitur ſtipula linguâ ignis accenſi, *ſic iſti* flammâ emiſſâ abſumentur : radix eorum ut pulvis erit, et ſurculus eorum ut gluma aſcendet ; eò quòd ſpreverint legem Domini potentiſſimi, et ſermonem Sancti Iſraelis irritârint.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

8 * الاصحاح الثالث * قريان * الويل للذين يوصلون بيتا ببيت * ويدنون حقلا بحقل
9 ليستلبوا شي القريب * هل تسكنوا على الارض وحدكم * قد سمع هذا في مسامع رب الجنود *
لان اذا صارت لكم منازل كثيرة تصير للخراب وان تكن عظيمات وحسانا لا يصير فيهن سكان .
10 * لان المكان الذي يعمل عشرة فدن من البقر يعمل جرة واحدة * والذي يزرع ستة ارادب
11 يستغل ثلاثة اكيال * الويل للذين يقومون بالغداة * ويسعون في طلب المسكر * ويمددون
12 للمساء * لان الخمر تحرقهم * لانهم يشربون الخمر بالقيثار والمزمار والطبول والزمور ولا ينظرون
13 اعمال الرب * ولا يتاملون اعمال يديه * الان صار شعبي مسبي من اجل انهم لم يعرفوا الرب .
14 وصارت كثير الاموات لاجل الجوع وعطش الماء * وعرض الجحيم نفسه وفتح فاه لئلا ينقص .
15 وسينحدر فيه المسرورون والمعظمون * والاغنياء المفسدون * ويتضع الانسان * ويهان الرجل * ويذل
16 17 الاعين المتعالية * ويرتفع الرب رب الجنود بالحكم * والله القدوس يتمجد بالعدل * ويرعون
18 الذين احتفظوا مثل الثيران * وخربات المتهددين الخراف تاكلها * الويل للذين يمدون
19 خطاياهم مثل الحبل الطويل * ومثل نير سير العجلة اثامهم * والقائلون ليكن سريعا ما
20 يصنعه الله بنا * كي ننظر * ولتات مشورة قدوس اسرائيل * لكي نعرفها * الويل للذين
يقولون للشر جيدا وللجيد شرا * الذين يصنعون الظلمة نورا والنور ظلمة * الذين يجعلون
21 22 المر حلوا والحلو مرا * الويل للذين هم عند ذواتهم فهماء وعند ارواحهم عقلاء * الويل
23 للاقوياء منكم على شرب الخمر * والمقتدرين الذين يمزجون المسكر * ويزكون المنافق
24 من اجل رشوته * وينزعون حق الصديق * لاجل هذا كما يحرق القصب من جمر النار
فيحترقون من اللهيب المحرق * يصير اصلهم مثل التراب * وزهرهم تصعد كالغبار * لانهم
لم يساووا ناموس رب الجنود * لكنهم اسخطوا كلمة قدوس اسرائيل *

Textus tertius. Lectio.

8 *Væ iis qui domum domui annectunt, & agrum agro adjungunt, ut rem proximi rapiant: num ſoli ſuper terram habitaturi eſtis?* 9 *Jam auditum eſt hoc in aurib⁹ Domini exercituum. Nam quantumvis plura fiant vobis domicilia, in ruinam tamen abibunt ; & quanvis ampla ſint ac pulchra, nullus tamen erit in illis habitator.* 10 *Locus enim quem decem juga boum arare* conſueverunt, *unicam produce lagenam ; & qui ex erdabbos* (erdabbus eſt menſura capiens centũ viginti octo libras) *ſeruerit, colliget tres menſuras.* 11 *Væ iis qui manè ſurgentes ſoliciti ſunt in quærendo* potu *inebriante, ſeſeque protendunt ad veſperam uſque ; nam vinum aduret eos.* 12 *Siquidem vinum hauriunt adhibitâ lyrâ, & pſalterio, tympanis, ac tibiis ; & non reſpiciunt opera* Domini, *neq; contemplantur opera manuum ejus.* 13 *In ſumma, factus eſt populus meus captivus, eò quòd non cognoverint* Dominũ: *& facta eſt multitudo mortuorum propter famem & aquæ ſitim :* 14 *Et dilatavit infernus ſeipſum, aperuitq; os ſuum ne deficeret ; & in eum ruent nobiles, & magnates, divites, atq; corrupti :* 15 *Et humiliabitur homo, & deprimetur vir, & oculi elati demittentur :* 16 *Dominus autem exercituum, Dominus exaltabitur in judicio, & Deus ſanctus glorificabitur in juſtitia.* 17 *Et paſcentur qui reſervati fuerint, more taurorum ; & ruinas minacium comedent agni.* 18 *Væ iis qui peccata ſua veluti prolixum funem, & velut jugum lori rotæ iniquitates ſuas producunt ;* 19 *Quique dicunt, Adveniant citò quæ facturus eſt nobis Deus, ut videamus illa, & adveniat conſilium Sancti Iſraelis, ut ſciamus illud.* 20 *Væ iis qui malum dicunt bonum, & bonum malum ; qui tenebras efficiunt lucem, & lucem tenebras ; qui faciunt amarum dulce, et dulce amarum.* 21 *Væ iis qui ſunt apud ſemetipſos ſagaces, et judicio ſuo prudentes.* 22 *Væ audacibus inter vos ad potum vini, et robuſtis miſcentibus potum inebriantem ;* 23 *Juſtum declarantibus impium propter munus ejus, jus autem juſti abrogantibus.* 24 *Iccirco quemadmodum comburuntur arundines carbonibus ignis, ſic iſti ardenti flammâ comburentur : evadet origo eorum pulveri ſimilis, et flos eorum ut pulviſculus aſcendet. Quia noluerunt legem Domini exercituum, ſed verbum Sancti Iſraelis irritaverunt.*

ישעיה : ו

extendit & ,ſuum populum in DOMINI *naſus* eſt iratus Ideo
25 עַל־כֵּן חָרָה אַף־יְהוָה בְּעַמּוֹ וַיֵּט
, montes contremuerunt & , eum percuſſit & ,eum ſuper ſuam manum
יָדוֹ עָלָיו וַיַּכֵּהוּ וַיִּרְגְּזוּ הֶהָרִים
hoc omni in , platearum *interiori in ſtercus ſicut* eorū morticinium fuit &
וַתְּהִי נִבְלָתָם כַּסּוּחָה בְּקֶרֶב חוּצוֹת בְּכָל־זֹאת
elevabit Et .extenta ejus manus adhuc & ,ejus *naſus* eſt averſus non
26 לֹא־שָׁב אַפּוֹ וְעוֹד יָדוֹ נְטוּיָה׃ וְנָשָׂא־
ecce & ; terræ extremo ab ei ſibilabit & ,longè à *gentes* in vexillum
נֵס לַגּוֹיִם מֵרָחוֹק וְשָׁרַק לוֹ מִקְצֵה הָאָרֶץ וְהִנֵּה
non : eo in *impingens* non & *laſſus* Non .veniet levis citò
27 מְהֵרָה קַל יָבוֹא׃ אֵין־עָיֵף וְאֵין־כּוֹשֵׁל בּוֹ לֹא
,ejus lumborum cingulum erit ſolutum neque ,dormiet neque dormitabit
יָנוּם וְלֹא יִישָׁן וְלֹא נִפְתַּח אֵזוֹר חֲלָצָיו
ejus ſagittæ Quia .ejus calceamentorum corrigia rumpetur nec
28 וְלֹא נִתַּק שְׂרוֹךְ נְעָלָיו׃ אֲשֶׁר חִצָּיו
petra ut ejus equorum ungulæ : extenti ejus arcus omnes & , acutæ
שְׁנוּנִים וְכָל־קַשְּׁתֹתָיו דְּרֻכוֹת פַּרְסוֹת סוּסָיו כַּצַּר
: leonis ut , *ei* Rugitus .tempeſtas tanquam ejus rotæ &,ſunt reputatæ
29 נֶחְשָׁבוּ וְגַלְגִּלָּיו כַּסּוּפָה׃ שְׁאָגָה לוֹ כַּלָּבִיא
,*ſtelabit* & , prædam tenebit & , fremet & , leonum catuli ut rugiet
וְשָׁאַג כַּכְּפִירִים וְיִנְהֹם וְיֹאחֵז טֶרֶף וְיַפְלִיט
fremitum juxta illa die in eum ſuper fremet Et .*eruens* non &
30 וְאֵין מַצִּיל׃ וְיִנְהֹם עָלָיו בַּיּוֹם הַהוּא כְּנַהֲמַת־
lux & , anguſtia , *tenebroſitas* ecce & , terram in aſpiciet & , *maris*
יָם וְנִבַּט לָאָרֶץ וְהִנֵּה־חֹשֶׁךְ צַר וָאוֹר
.ſuis defluxionibus in eſt obtenebrata
חָשַׁךְ בַּעֲרִיפֶיהָ׃

CAP. VI. ו

ſedentem Dominum vidi & , Huzijahu *regem mori* anno In
1 בִּשְׁנַת־מוֹת הַמֶּלֶךְ עֻזִּיָּהוּ וָאֶרְאֶה אֶת־אֲדֹנָי יֹשֵׁב
.*palatium replentes* ejus fimbriæ &,elevatū &,excelſum ſolium ſuper
עַל־כִּסֵּא רָם וְנִשָּׂא וְשׁוּלָיו מְלֵאִים אֶת־הַהֵיכָל׃
: *uni alæ ſex alæ* Sex .illud ſupra *ſtantes* Seraphim
2 שְׂרָפִים עֹמְדִים מִמַּעַל לוֹ שֵׁשׁ כְּנָפַיִם שֵׁשׁ כְּנָפַיִם לְאֶחָד
duabus in &,ſuos pedes velabat duabus in & , *ſuas facies* velabat duabus in
בִּשְׁתַּיִם יְכַסֶּה פָנָיו וּבִשְׁתַּיִם יְכַסֶּה רַגְלָיו וּבִשְׁתַּיִם
,ſanctus,ſanctus,Sanctus : dicebat & ,*illum ad hic* clamabat Et .volabat
3 יְעוֹפֵף׃ וְקָרָא זֶה אֶל־זֶה וְאָמַר קָדוֹשׁ קָדוֹשׁ קָדוֹשׁ
ſe moverunt Et .ejus gloria *terræ totius plenitudo* :exercituū Dominus
4 יְהוָה צְבָאוֹת מְלֹא כָל־הָאָרֶץ כְּבוֹדוֹ׃ וַיָּנֻעוּ
.fumo eſt repleta domus & , clamantis *voce à liminum frontiſpicia*
אַמּוֹת הַסִּפִּים מִקּוֹל הַקּוֹרֵא וְהַבַּיִת יִמָּלֵא עָשָׁן׃
, *ego* labiis pollutus vir quia , tacui quia : mihi Væ : dixi Et
5 וָאֹמַר אוֹי־לִי כִי־נִדְמֵיתִי כִּי אִישׁ טְמֵא־שְׂפָתַיִם אָנֹכִי
regem quia : *habitans ego* labiis polluti populi medio in &
וּבְתוֹךְ עַם־טְמֵא שְׂפָתַיִם אָנֹכִי יֹשֵׁב כִּי אֶת־הַמֶּלֶךְ
de unus me ad volavit Et .mei oculi viderunt exercituum Dominum
6 יְהוָה צְבָאוֹת רָאוּ עֵינָי׃ וַיָּעָף אֵלַי אֶחָד מִן־
.altari *deſuper* tulerat forcipibus *in* ,carbo ej⁹ manu in & ,Seraphim
הַשְּׂרָפִים וּבְיָדוֹ רִצְפָּה בְּמֶלְקַחַיִם לָקַח מֵעַל הַמִּזְבֵּחַ׃
,tua labia *ſuper* hic tetigit Ecce : dixit & ,meū os *ſuper* fecit tangere Et
7 וַיַּגַּע עַל־פִּי וַיֹּאמֶר הִנֵּה נָגַע זֶה עַל־שְׂפָתֶיךָ
vocem audivi Et .expiabitur tuū peccatū &, tua iniquitas recedet &
8 וְסָר עֲוֺנֶךָ וְחַטָּאתְךָ תְּכֻפָּר׃ וָאֶשְׁמַע אֶת־קוֹל
,ego Ecce : dixi Et ?nobis ibit quis & ,mittam Quem : dicentis Domini
אֲדֹנָי אֹמֵר אֶת־מִי אֶשְׁלַח וּמִי יֵלֶךְ־לָנוּ וָאֹמַר הִנְנִי
.me mitte
שְׁלָחֵנִי׃

Verſio VULG. LAT.

25 Ideò iratus eſt furor Domini in populum ſuum, & extendit manum ſuam ſuper eum, & percuſſit eum : & conturbati ſunt montes, & facta ſunt morticina eorum, quaſi ſtercus in medio platearum. In his omnibus non eſt averſus furor ejus, ſed adhuc manus ejus extenta. 26 Et elevabit ſignum in nationibus procul, & ſibilabit ad eum de finibus terræ : & ecce 27 feſtinus velociter veniet. Non eſt deficiens, neque laborans in eo : non dormitabit, neque dormiet ; neque ſolvetur cingulum renum ejus, nec rumpetur corrigia calceamenti ej⁹. 28 Sagittæ ejus acutæ, & omnes arc⁹ ejus extenti. Ungulæ equorum ejus ut ſilex, & rotæ ejus 29 quaſi impet⁹ tempeſtatis. Rugitus ejus ut leonis, rugiet ut catuli leonum : & frendet, & tenebit prædam : et amplexabitur, & non erit qui eruat. 30 Et ſonabit ſuper eum in die illa ſicut ſonitus maris : aſpiciemus in terram, & ecce tenebræ tribulationis, & lux obtenebrata eſt in caligine ejus.

CAP. VI.

1 IN anno, quo mortu⁹ eſt rex Ozias, vidi Dominum ſedentem ſuper ſolium excelſum et elevatum : & ea quæ ſub ipſo 2 erant, replebant templū. Seraphim ſtabant ſuper illud: ſex alæ uni, et ſex alæ alteri : duabus velabant faciem ejus, & duabus velabant pedes ejus, et 3 duab⁹ volabant. Et clamabant alter ad alterum, & dicebant ; Sanctus, Sanctus, Sanctus, Dominus Deus exercituum, plena 4 eſt omnis terra gloriâ ejus. Et commota ſunt ſuperliminaria cardinum à voce clamantis, & 5 dom⁹ repleta eſt fumo. Et dixi; Væ mihi, quia tacui, quia vir pollutus labiis ego ſum, & in medio populi polluta labia habentis ego habito, & regem Dominum exercituū vidi oculis meis. 6 Et volavit ad me un⁹ de Seraphim, & in manu ejus calculus, quem forcipe tulerat 7 de altari. Et tetigit os meum, et dixit; Ecce tetigit hoc labia tua, et auferetur iniquitas tua, & peccatū tuum mundabitur. 8 Et audivi vocem Domini dicentis ; Quem mittam ? & quis ibit nobis ? Et dixi ; Ecce ego, mitte me.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

25 Καὶ ἐθυμώθη ὀργῇ κύριος σαβαὼθ (ʹ) ἐπὶ τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ ἐπέβαλε τὴν (σ) χεῖρα αὐτοῦ ἐπ' αὐτοὺς, καὶ ἐπάταξεν αὐτούς. καὶ παρωξύνθη τὰ ὄρη, καὶ ἐγενήθη τὰ θνησιμαῖα αὐτῶν ὡς κοπρία ἐν μέσῳ ὁδοῦ. (τ) καὶ ἐν πᾶσι τούτοις οὐκ ἀπεστράφη ὁ (υ) θυμὸς αὐτοῦ, 26 ἀλλ' ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή. Τοιγαροῦν ἀρεῖ σύσσημον ἐν τοῖς ἔθνεσι τοῖς μακρὰν, καὶ συριεῖ (φ) αὐτοὺς ἀπ' ἄκρου τῆς γῆς· 27 καὶ ἰδοὺ ταχὺ κούφως ἔρχονται. (χ) Οὐ πεινάσουσιν, οὐδὲ κοπιάσουσιν, οὐδὲ νυστάξουσιν, οὐδὲ κοιμηθήσονται, (ψ) οὐδὲ λύσουσι τὰς ζώνας αὐτῶν ἀπὸ τῆς ὀσφύος αὐτῶν, οὐδὲ μὴ ῥαγῶσιν οἱ ἱμάντες τῶν ὑποδημάτων αὐτῶν· 28 Ὧν τὰ βέλη (ʹ) ὀξέα ἐστὶ, καὶ τὰ τόξα αὐτῶν ἐντεταμένα· οἱ πόδες τῶν ἵππων αὐτῶν ὡς στερεὰ πέτρα ἐλογίσθησαν· οἱ τροχοὶ τῶν ἁρμάτων αὐτῶν ὡς καται- 29 γίς. (ω) Ὁρμῶσιν ὡς λέοντες, καὶ (α) παρέστηκαν ὡς σκύμνοι λέοντος· καὶ ἐπιλήψεται, καὶ (β) βοήσει ὡς θηρίον, καὶ ἐκβαλεῖ, 30 καὶ οὐκ ἔσται ὁ (γ) ῥυόμενος αὐτούς. Καὶ βοήσει δι' αὐτοὺς τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὡς φωνὴ θαλάσσης κυμαινούσης· καὶ ἐμβλέψονται εἰς τὴν γῆν, καὶ ἰδοὺ σκότος σκληρὸν ἐν τῇ ἀπορίᾳ αὐτῶν.

MS.A. (ʹ) εἰς τὴν (σ) χεῖρα αὐτοῦ ἐπ' (τ) ἐν πᾶσιν τούτοις (υ) θυμός, ἀλλ' ἔτι (φ) αὐτοῖς (χ) Οὐ κοπιάσουσιν, (ψ) οὐδ' οὐ μὴ (ʹ) ὀξεῖα (ω) Ὁρμῶσιν (α) παρεστήκασιν ὡς σκύμνος (β) βοήσεται (γ) ῥυόμενος. Καὶ βοήσεται δι' αὐτοὺς ἐν τῇ ἡμέρᾳ

Et indignatus eſt irâ Domi
baoth ſuper populum ſuum, & i
miſit manum ſuam ſuper eos,
percuſſit eos. Et (n) acerbati ſu
montes : & facta ſunt morticin
eorum, ſicut ſtercus in medio vi
Et in omnibus his non eſt aver
ſus furor ejus, ſed adhuc ma
nus excelſa. Ergò levabit ſign
in nationibus, quæ procul, & ſi
labit eos ab extremo terræ. E
ecce citò leviter venient. Non e
ſurient, neq; laborabunt, neq; dor
mitabunt, neq; dormient, neq; ſol
vent zonas ſuas à lumbo ſuo ne
que rumpentur corrigiæ calcea
mentorum eorum. Quorum ſa
gittæ acutæ ſunt, & arcus eorum
intenti : pedes equorum eorum
quaſi ſolida petra reputati ſunt
rotæ curruum eorum quaſi tempe
ſtas : (p) Fremunt ut leones, &
aſtiterunt ſicut catuli leonis. E
apprehendet, & clamabit quaſi
ra : & ejiciet ; & non erit qu
liberet eos. Et clamabit pro
eos die illâ, ſicut vox maris fl
ctuantis. Et reſpicient (q) in te
ram : & ecce tenebræ duræ i
indigentia eorum.

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο τοῦ ἐνιαυτοῦ οὗ ἀπέθανεν Ὀζίας ὁ βασιλεὺς, εἶδον τὸν κύριον καθήμενον ἐπὶ θρόνου ὑψηλοῦ καὶ ἐπηρμένου· καὶ 2 πλήρης ὁ οἶκος τῆς δόξης αὐτοῦ. Καὶ (α) σεραφὶμ εἱστήκεισαν κύκλῳ αὐτοῦ, ἓξ πτέρυγες τῷ ἑνὶ, καὶ ἓξ πτέρυγες τῷ ἑνί· καὶ ταῖς μὲν δυσὶ κατεκάλυπτον τὸ πρόσωπον· (β) ταῖς δὲ δυσὶ κατεκάλυπτον τοὺς πόδας· καὶ ταῖς 3 δυσὶν ἐπέταντο. Καὶ (γ) ἐκέκραγεν ἕτερος πρὸς τὸν ἕτερον, καὶ ἔλεγον, Ἅγιος ἅγιος ἅγιος κύριος σαβαὼθ, πλήρης πᾶσα ἡ 4 γῆ τῆς δόξης αὐτοῦ. Καὶ ἐπήρθη τὸ ὑπέρθυρον ἀπὸ τῆς φωνῆς ἧς ἐκέκραγον, καὶ 5 ὁ οἶκος (δ) ἐνεπλήσθη καπνοῦ. Καὶ (ε) εἶπον, Ὦ τάλας ἐγὼ, ὅτι κατανένυγμαι, ὅτι ἄνθρωπος ὢν, καὶ ἀκάθαρτα χείλη ἔχων, ἐν μέσῳ λαοῦ ἀκάθαρτα χείλη ἔχοντος ἐγὼ οἰκῶ, καὶ τὸν βασιλέα κύριον σαβαὼθ εἶδον 6 τοῖς ὀφθαλμοῖς μου. Καὶ ἀπεστάλη πρός με ἓν τῶν σεραφὶμ, καὶ ἐν τῇ χειρὶ εἶχεν (ζ) ἄνθρακα, ὃν τῇ λαβίδι ἔλαβεν ἀπὸ τοῦ θυσι- 7 αστηρίου, Καὶ ἥψατο τοῦ στόματός μου, καὶ εἶπεν, Ἰδοὺ ἥψατο τοῦτο τῶν χειλέων σου, καὶ ἀφελεῖ τὰς ἀνομίας σου, καὶ τὰς ἁμαρτίας σου περικα- 8 θαριεῖ. Καὶ ἤκουσα τῆς φωνῆς κυρίου λέγοντος, Τίνα ἀποστείλω, καὶ τίς πορεύσεται πρὸς τὸν λαὸν τοῦτον; καὶ εἶπα, (η) Ἰδοὺ ἐγώ εἰμι· ἀπόστειλόν με.

MS.A. (α) σεραφεὶν (β) καὶ ταῖς δυσὶ (γ) ἐκέκραγον (δ) ἐπλήσθη (ζ) ἄνθρακα πυρὸς, (η) Ἰδού εἰμι ἐγώ·

CAP. VI.

ET factum eſt anno, quo mo
tuus eſt Ozias rex, vidi Domin
ſedentem ſuper thronū excelſ
& elevatum: (a) & plena do
gloriâ ej⁹. Et (b) Seraphim ſta
in (c) circuitu ejus: ſex alæ un
ſex alæ uni: et duab⁹ quidē ve
ebant faciē, duab⁹ aūt velaba
pedes, & duabus volabant.
clamabat alter ad alterum,
dicebant, Sanctus, Sanctus, Sa
ctus Dominus Sabaoth: plen
omnis terra gloriâ ej⁹. Et ele
eſt ſuperliminare à voce, qua c
mabant: & dom⁹ impleta eſt fu
Et dixi; O miſer ego, quia co
punctus ſum: quia homo cum
& immunda labia habens, in
dio populi immunda labia hab
tis ego habito: & regem Do
num Sabaoth vidi oculis me
miſſus eſt ad me unus de Se
phim; et in manu habebat c
bonem, quem (d) forcipe acc
de altari. Et tetigit os meum, &
xit; Ecce tetigit hoc labia tu
et auferet iniquitates tuas, et
cata tua circumpurgabit. E
divi vocem Domini dicen
Quem mittam, et quis ibit ad
pulum hunc? Et dixi, Ecce
ſum: mitte me.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

25 על כן תקיף רוגזא דיי צבאות בעמיה ואריםמחת גבורתיה עליהון כד מחנון וזעו
טוריא והואה נבלתהון משגרן כסחיתא בגו שוקיא בכל דא לא תבו מחוביהון דיתוב
26 רוגזיה מנהון ועד כען מתקפין מרדיהון ועוד מחתיה עתידא לאתפרע מנהון : ויזקוף
את לעממיא מרחיק ויכלי ליה מסיפי ארעא והא בפריע מלך במשריתיה כעננין קלילין
27 ייתי : לית דמשלהי ולית דמתקל ביה לא ינום ולא ידמוך ולא ישתרי זריז חרציה ולא
28 תתפסיק ערקת מסניה : די גירוהי מחרפין וכל קשתתיה מתיחן פרסת סוסותיה
29 כטנרא תקיפין וגלגלוהי קלילין הא כעלעולא : נהומי ליה כאריא וינהום כבר אריון
30 ויכלי וייחוד בזא וישיזיב ולית דמציל : ויכלי עלוהי בעדנא ההיא כאתרגושת ימא
דאם יבעון רשיעיא סעיד מיתבי ארעא עקא ותבר איתי עליהון ברם צדיקיא דיהון
בשעתא ההיא יתכסון מן קדם בישתא :

ו

1 בשתא דאתנגע בה מלכא עזיה אמר נביא חזיתי ית יקרא דיי שרי על כורסיה רם
2 ומתנטל בשמי מרומא ומזיו יקריה אתמלי היכלא : שמשין קדישן ברומא קדמוהי
שתא גפין לחד שתא גפין לחד בתרין מכסי אפוהי דלא חזי ובתרין מכסי גויתיה דלא
3 מתחזי ובתרין משמש : ומקבלין דין מן דין ואמרין קדיש בשמי מרומא עלאה בית
שכנתיה קדיש על ארעא עובד גבורתיה קדיש לעלם ולעלמי עלמיא יי צבאות מליא
4 כל ארעא זיו יקריה: וזעו אילות ספי היכלא מקל מלולא ובית מקדשא אתמלי אמטתא:
5 ואמרית וי לי ארי חבית ארי גבר חיב לאוכחא אנא ובגו עמא דמגעל בחובין אנא יתיב
6 ארי ית יקר שכינת מלך עלמיא יי צבאות חזאה עיני : ואשתדי לותי חד מן שמשיא
ובפומיה ממלל דקביל מן קדם דשכנתיה על כורסי יקרא בשמי מרומא עיל מן
7 מדבחא : וסדר בפומי ואמר הא שויתי פתגמי נבואתי בפומך ויעדון חובך וחטאך
8 יתכפרון : ושמעית ית קל מימרא דיי דאמר ית מן אשלח לאתנבאה ומן ייזיל לאלפא
ואמרית הא אנא שלחיתי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Propterea iratus eſt furor Dñi exercituū in populū ſuū; & levavit pla
fortitudinis ſuæ ſuper eos : quando percuſſit eos, & commoti ſunt mo
tes, & fuerunt cadavera eorum projecta quaſi ſtercus in medio pla
rum. In omnibus his non ſunt converſi à peccatis ſuis, ut averteretur
ror ejus ab eis ; ſed adhuc ſcelera eorum invaleſcunt : & rurſus
ejus futura eſt, ut vindictam ſumat ab eis. Et elevabit ſignum in popu
longè, & clamabit ad eum à finibus terræ: Et ecce citò veniet rex cu
ercitu ſuo ſicut nubes leves. Non erit deficiens neque corruens in eo
dormitabit neque dormiet, neque ſolvetur cingulum lumborum ejus
rumpetur corrigia calceamenti ejus. Cujus ſagittæ acutæ, & omnes
ejus extenti: ungulæ equorum ejus ſicut petræ fortiſſimæ, & rotæ
loces ſicut tempeſtas. Rugitus ejus ſicut leo, rugiétq; ſicut filius leon
clamabit & apprehendet prædam; & auferet, & non erit qui eruat
nabit ſuper eum in tempore illo ſicut tumultus *maris*. Quòd ſi quæ
impii auxilium ab habitatorib⁹ terræ, *tribulationē et contritionē*
ſup eos. Veruntamen juſti qui erunt in illa hora, protegentur à fac

CAP. VI.

IN anno quo percuſſus eſt rex Ochozias, dixit propheta: Vidi glo
habitantem ſup ſoliū excelſum, et elevatū in cœlis excelſis, et de ſpl
gloriæ ejus replebatur templū. Miniſtri ſancti [*ſtabant*] in excelſo in
ctu ej⁹; ſex alæ unicuique; duab⁹ velabat unuſquiſq; faciē ſuā ut nō vi
& duab⁹ velabat *corpus ſuū* ut non videretur, et duab⁹ miniſtraba
mabant alter ad alterū, & dicebant: Sanct⁹ in cœlis excelſis altiſſi
mo majeſtatis ej⁹; ſanctus ſup terrā opus potentiæ ej⁹: ſanct⁹ in ſecu
in ſecula ſeculorū Dñs exercituum; plena eſt omnis terra ſplendore
ejus. Et commota ſunt ſuperliminaria cardinū templi à voce loq
dom⁹ ſanctuarii repleta eſt caligine. Et dixi: Væ mihi quia pecca
am vir peccator ſum ad increpandū, & in medio populi pollut
ego habito: quia gloriam majeſtatis regis *ſeculorum*, Dñi exerc
runt oculi mei Et volavit ad me unus de miniſtris, & in ore ej⁹ elo
ſuſceperat à facie majeſtatis ej⁹ qui habitat in throno gloriæ in c
tudinis ſupra altare. Et diſpoſuit [*verba*] in ore meo, et ait: Ecce po
prophetiæ meæ in ore tuo, et auferentur iniquitates tuæ, et pec
mittentur. Et audivi vocem verbi Dñi dicentis: Quem mittam a
tandū? et quis ibit *ad docendum*? et dixi: Ecce ego, mitte me.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܚܡܝ ܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܥܡܗ. ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܗ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܡܚܐ ܐܢܘܢ.
ܘܙܥܘ ܛܘܪܐ. ܘܗܘܘ ܫܠܕܝܗܘܢ ܐܝܟ ܣܝܢܐ ܒܓܘ ܫܘܩܐ. ܘܒܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ ܠܐ ܗܦܟ
ܪܘܓܙܗ. ܐܠܐ ܬܘܒ ܐܝܕܗ ܪܡܐ. * ܘܢܙܩܘܦ ܐܬܐ ܠܥܡܡܐ ܕܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܘܢܫܪܘܩ ܠܗܘܢ ܡܢ 26
ܫܘܠܡܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܗܐ ܩܠܝܠܐܝܬ ܘܡܣܪܗܒܐܝܬ ܢܐܬܘܢ. * ܠܐ ܢܫܬܪܚܘܢ ܘܠܐ ܢܬܬܩܠܘܢ. ܘܠܐ 27
ܢܢܘܡܘܢ ܘܠܐ ܢܕܡܟܘܢ. ܘܠܐ ܢܫܪܘܢ ܐܣܪ ܚܨܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܦܣܩܘܢ ܥܪܩܐ ܕܡܣܐܢܝܗܘܢ.
* ܕܓܐܪܝܗܘܢ ܚܪܝܦܝܢ. ܘܩܫܬܬܗܘܢ ܡܬܝܚܢ. ܘܦܪܣܬܐ ܕܪܟܫܝܗܘܢ. ܐܝܟ ܫܘܥܐ ܐܬܚܫܒ. ܘܓܝܓܠܐ 28
ܕܡܪܟܒܬܗܘܢ. ܐܝܟ ܥܠܥܠܐ. * ܘܢܗܡܬܗܘܢ ܐܝܟ ܕܐܪܝܐ. ܘܢܗܡܘܢ ܐܝܟ ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܘܬܐ. 29
ܘܢܐܚܕܘܢ ܨܝܕܐ. ܘܢܦܠܛܘܢ ܘܠܝܬ ܕܡܦܨܐ. * ܘܢܗܡܘܢ ܥܠܝܗܘܢ ܒܗܘ ܝܘܡܐ. ܐܝܟ ܢܗܡܬܐ 30
ܕܝܡܐ. ܘܢܚܘܪܘܢ ܠܐܪܥܐ. ܘܢܗܘܐ ܚܫܘܟܐ ܘܐܘܠܨܢܐ. ܘܢܘܗܪܐ ܢܚܫܟ ܒܥܪܦܠܝܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ * ܒܫܢܬܐ ܕܡܝܬ ܒܗ ܥܘܙܝܐ ܡܠܟܐ. ܚܙܝܬ ܠܡܪܝܐ ܝܬܒ ܥܠ 1
ܟܘܪܣܝܐ ܪܡܐ. ܘܡܢ ܫܘܒܚ ܬܟܫܝܦܘܗܝ ܡܠܐ ܗܝܟܠܗ. * ܘܣܪܦܐ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܥܠܘܗܝ. 2
ܫܬ ܓܦܝܢ ܠܚܕ ܡܢܗܘܢ. ܒܬܪܬܝܢ ܡܟܣܝܢ ܐܦܝܗܘܢ. ܘܒܬܪܬܝܢ ܡܟܣܝܢ
ܪܓܠܝܗܘܢ. ܘܒܬܪܬܝܢ ܦܪܚܝܢ. * ܘܩܪܝܢ ܗܘܘ ܚܕ ܠܚܕ ܘܐܡܪܝܢ. ܩܕܝܫ ܩܕܝܫ 3
ܩܕܝܫ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܡܠܝܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܫܘܒܚܗ. * ܘܐܙܠܘ ܣܩܘܦܐ ܕܬܪܥܐ ܡܢ ܩܠܐ ܕܩܥܝܢ ܗܘܘ. ܘܒܝܬܐ 4
ܐܬܡܠܝ ܬܢܢܐ. * ܘܐܡܪܬ ܘܝ ܠܝ. ܕܬܘܝ ܐܢܐ. ܡܛܠ ܕܓܒܪܐ ܐܢܐ ܕܛܡܐܢ ܣܦܘܬܗ. ܘܒܝܢܝ ܥܡܐ 5
ܕܛܡܐܢ ܣܦܘܬܗ ܝܬܒ ܐܢܐ. ܘܠܡܠܟܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܚܙܝ ܥܝܢܝ. * ܘܦܪܚ ܠܘܬܝ ܚܕ 6
ܡܢ ܣܪܦܐ. ܘܒܐܝܕܗ ܓܡܘܪܬܐ ܕܢܘܪܐ ܕܒܙܒܬܐ ܫܩܠ ܡܢ ܥܠ ܡܕܒܚܐ. * ܘܩܪܒ ܠܦܘܡܝ ܘܐܡܪ 7
ܠܝ. ܗܐ ܩܪܒܬ ܗܕܐ ܠܣܦܘܬܟ. ܘܢܥܒܪܢ ܥܘܠܝܟ. ܘܚܛܗܝܟ ܢܫܬܒܩܘܢ. * ܘܫܡܥܬ 8
ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪ. ܠܡܢ ܐܫܕܪ. ܘܡܢ ܢܐܙܠ. ܘܐܡܪܬ. ܗܐ ܐܢܐ ܫܕܪܝܢܝ.

Propterea exarſit ira Dñi contra populum ſuum, & ſublatâ in eos manu ſuâ, percuſſit illos, & contremuerunt montes, fuerúntq; cadavera eorum ut lutum in mediis plateis: his tamen omnibus non eſt averſa ira ejus, ſed adhuc manus ejus eſt elata. 25
Nam attollet ſignũ gentibus è longinquo, & ſibilabit eis ab extremis terræ; quæ ſtatim ac velociter aderunt. 26
Non fatigabuntur, nec impingent: non dormitabunt, neq; dormient: non ſolvent cingulum lumborũ ſuorum, neque rumpentur corrigiæ calceamentorũ earum: 27
Sagittæ earum acutæ, & arcus earum extenti: ungulæ equorum earum ſilicibus, & rotæ earum turbini ſimiles cenſebuntur: 28
Rugitus earum ut leonis rugientis, & ut catuli leonis rugientis, prædã capientis & ſalvam deportantis nemine eripiente. 29
Et fremet in illos eâ die ut fremitu maris: terram intuebuntur, erúntque tenebræ & calamitas, & lux obtenebreſcet præ caligine earum. 30

CAP. VI.

ANno quo mortuus eſt Ozia rex, vidi Dominum ſedentẽ ſuper ſoliũ excelſum; & majeſtate fimbriarum ej⁹ plenum erat templum ipſius: 1
Et Seraphim ſtantes ſuper illud, habentes ſinguli ſenas alas, quarum duabus tegebant facies ſuas, duabus tegebant pedes ſuos, duabus autem volabant: 2
Et clamabant alter ad alterũ, ac dicebant; Sanctus, Sanctus, Sanctus Dominus potentiſſimus, cujus laudib⁹ plena eſt univerſa terra. 3
Et commota ſunt limina portarũ à voce quæ reſonabat, & dom⁹ impleta eſt fumo. 4
Quapropter dixi, Væ mihi, ſtupens ſum, quia homo pollutus ſum labiis, et inter populum cujus polluta ſunt labia, habito: & regem Dñm potentiſſimum viderunt oculi mei. 5
Sed advolavit ad me unus ex iis Seraphim manu geſtans carbonem ignitum quem forcipe tulerat ab altari: 6
Tetigítque os meum, & dixit mihi, En tetigit hic labia tua, ut recedat iniquitas tua, & peccata tua dimittantur. 7
Deinde audivi vocem Domini dicentis, Quem mittam? et quis ibit? Cui dixi, En ego, mitte me. 8

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

25 * وغضب رب الجنود على شعبه * والقى يده عليهم وضربهم * وارجفت الجبال وصار
جثثهم مثل الزبل في وسط الطرق * وفي هذه كلها لم يرد غضبه * لكن يده ايضا عاليه *
26 والان يرفع علامه للامم البعيدات ويسوقهم من اطراف الارض * وهوذا ياتون سريعا خفيفه * لا
27 يجوعون ولا يتعبون * ولا ينعسون ولا ينامون * ولا يحلون مناطقهم من حقاهم * ولا ينقطع سيور
28 احذيتهم * هولاء الذين سهامهم حاده وقسيهم موتوره * وحوافر خيلهم حسبوا مثل الصخر
29 الصلد * وبكرات مراكبهم مثل العاصف * يثبون مثل الاسد * ويقعون مثل شبل الاسد *
30 فيدرك ويصرخ مثل السبع ويخرج * ويكون يزار ويصرخ عليهم في ذلك اليوم مثل صوت
البحر المموج * وينظرون الي السماء والي الارض اسفل * واذا الظلمه الصعبه في حيرتهم

* الفصل السادس * الوحي الثالث *

* قران فيه الرويا التي راي اشعياء بن اموص من بعد ارتفاع النبوه
عنه بثلاث سنين * وقبل ثلاثين سنه *

* وكان في السنه التي مات فيها عوزيا الملك، رايت رب الجنود جالسا على كرسي عال مرتفع
وامتلى البيت من مجده * والساروفيم قياما حوله * سته اجنحه للواحد * فباثنين يغطون
وجوههم * وباثنين يغطون ارجلهم * وباثنين يطيرون * ويصرخ الاخر للاخر ويقول قدوس
قدوس قدوس رب الجنود * كل الارض مملوه من مجده * ورفع ستر الباب من الصوت الذي
صرخوا به * والبيت امتلى دخانا * فقلت واه شقي انا فاني انا متنجس لاني انسان ولي شفتان
نجستان * وانا اسكن في وسط شعب له شفاه نجسه * ورايت بعيني الملك رب الجنود * وارسل
الي واحد من الساروفيم * وبيده جمره نار اخذها بكلبتين من المذبح * ولمس فمي وقال هوذا
هذه لمست شفتيك * فتنزع اثامك وتنقى خطاياك * وسمعت صوت الرب يقول * من ارسل
ومن يمضي الي هذا الشعب * فقلت هانذا فارسلني *

* *Iccirco irâ incenſus Dominus exercituum in populum ſuum, injecit in eos manum ſuam, & percuſſit eos, tremefacti ſunt montes, & facta ſunt eorum cadavera ceu fimus in mediis viis: his tamen omnibus nondum avertit iram ſuam, ſed manus ejus adhuc eſt alta;* 25
Et mox eriget vexillum gentibus remotis, & adducet eas ab extremitatibus terræ & ecce venturæ ſunt citò ac velociter: 26
Non eſurient, neque fatigabuntur, non dormiſcent, neque dormient, non deponent cingula ſua à lumbis ſuis, neque rumpentur corrigiæ calceorum earum. 27
Hi ſunt quorum ſagittæ ſunt acutæ, & arcus tenſi: quorum ungulæ equorum ſaxo duro, & rotæ curruum rapido vento ſimiles videntur: 28
Irruunt ut leones, & incubant ut catulus leonis. Ita prædam capiet, & rugiet ut leo, & evadet; 29
Et rugiet fremétque contra eos illo die quaſi fremitu maris fluctuantis: & cùm aſpexerint ad cœlum & ad terram deorſum, ecce tenebræ diræ in ſtupore eorum. 30

CAP. VI.

Revelatio tertia.

Lectio continens viſionem quam vidit Eſaia filius Amoſi tribus annis, vel (ut alii aſſerunt) triginta annis poſtquam ſublata fuit ab eo prophetia.

P*Reterea contigit anno quo mortuus eſt Ozia rex, ut viderem Dominum exercituum inſidentem ſolio ſublimi et alto, & ædem repletam eſſe gloriâ ipſius:* 1
Seraphim quoque circumſtantes, quorũ ſinguli ſenas habebant alas, et binis tegebant facies ſuas, binis tegebant pedes ſuos, & binis volabant: 2
Et alter ad alterum clamabat, ac dicebat; Sanctus, Sanctus, Sanctus Dominus exercituum: tota terra plena eſt gloriâ ipſius. 3
Sublatúmque eſt velum januæ propter vocem quâ clamabant, & ædes repleta eſt fumo. 4
Quamobrem dixi, Ah me miſerũ, audax equidem ſum; homo ſum enim pollutis labiis præditus, et habito in medio populi habentis labia polluta: & oculis meis vidi regem Dominum exercituum. 5
Sed miſſus ad me fuit unus ex illis Seraphim manu ſuâ ferens carbonem igneum forcipe ex ara correptum: 6
Et tetigit os meum, dixítque; Cùm hic tetigerit labia tua, abolentur iniquitates tuæ, & expiantur peccata tua. 7
Tum audivi vocem Domini dicentis, Quem mittam? & quis ibit ad populum iſtum? Dixi, Ecce me, me mittito. 8

ישעיה : ז

ne & , audiendo Audite : huic populo dices & , Vade : dixit Et
9 ויאמר לך ואמרת לעם הזה שמעו שמוע ואל־
cor Impingua .cognoſcatis ne & , videndo videte & ;intelligatis
10 תבינו וראו ראו ואל־תדעו : השמן לב־
videat fortè ne ,*obline* ejus oculos & ,aggrava ejus aures & ,hujus populi
העם הזה ואזניו הכבד ועיניו השע פן־יראה
,cõvertatur &,intelligat ſuo corde &,audiat ſuis aurib° in &,ſuis oculis in
בעיניו ובאזניו ישמע ולבבו יבין ושב
Donec : dixit Et ? Domine Uſquequo : dixi Et .*ei medeatur* &
11 ורפא לו : ואמר עד־מתי אדני ויאמר עד אשר
, homine abſque domus & ,habitatore *non à* civitates deſolentur *ſi*
אם־שאו ערים מאין יושב ובתים מאין אדם
Dominus elongabit Et .deſolatione deſoletur *humus* &
12 והאדמה תשאה שממה : ורחק יהוה את־
ea in adhuc Et .terræ *interiori in* *derelictam* multiplicabit &,hominem
13 האדם ורבה העזובה בקרב הארץ : ועוד בה
,quercus ut &,*ulmus ſicut:conflagrandum ad* erit & *convertetur &* , *decima*
עשיריה ושבה והיתה לבער כאלה וכאלון
.*ejus ſtatio ſanctitatis* ſemen ,*eis in* *ſtatio* *ejectione in* *quibus*
אשר בשלכת מצבת בם זרע קדש מצבתה :

CAP. VII. ז

, Jehudah regis Huzijahu filii , Jotham filii Achaz diebus in fuit Et
1 ויהי בימי אחז בן־יותם בן־עזיהו מלך יהודה
rex Remaljahu filius Pechach & ,Aram rex Reſin aſcendit
עלה רצין מלך־ארם ופקח בן־רמליהו מלך־
potuit non & : eam contra prælium in , Jeruſalaim , Iſrael
ישראל ירושלם למלחמה עליה ולא יכל
: dicendo , David domui eſt nunciatum Et .eam *ſuper* expugnare
2 להלחם עליה : ויגד לבית דוד לאמר
cor & , ejus cor ſe commovit & , Ephraim *ſuper* Aram Requievit
נחה ארם על־אפרים וינע לבבו ולבב
Dominus dixit Et .venti *faciebus* à ſylvæ ligna *movere ut* ,ejus populi
3 עמו כנוע עצי־יער מפני־רוח : ויאמר יהוה
Sear & ,tu , Achaz occurſum in nunc Egredere : Jeſahjahu ad
אל־ישעיהו צא־נא לקראת אחז אתה ושאר
in ſuperioris piſcinæ aquæductus extremum ad ,tuus filius Jaſub
ישוב בנך אל־קצה תעלת הברכה העליונה אל־
: quieſce & ,*Obſervare* : eum ad dices Et .fullonis agri via *ſtrata*
4 מסלת שדה כובס : ואמרת אליו השמר והשקט
titionum caudis duabus à *tereſcat* ne tuum cor & , timeas ne
אל־תירא ולבבך אל־ירך משני זנבות האודים
.Remaljahu filii & ,Aram & ,Reſin *naſi* ira in , iſtorum fumigantium
העשנים האלה בחרי־אף רצין וארם ובן־רמליהו :
filius & ,Ephraim , malum Aram te contra inierit conſilium quod Eo
5 יען כי־יעץ עליך ארם רעה אפרים ובן־
, eam *ſuſcitemus* & , Jehudah in Aſcendamus : dicendo ,Remaljahu
6 רמליהו לאמר : נעלה ביהודה ונקיצנה
, ejus medio in regem faciamus regnare & ; *nos ad* eam *perrumpamus* &
ונבקענה אלינו ונמליך מלך בתוכה את
non & ,*conſiſtet* Non : *Dominus* Dominus dixit Sic .Tabal filium
7 בן־טבאל : כה אמר אדני יהוה לא תקום ולא
,Reſin Dammeſec caput & ,Dammeſec Aram caput Etenim .erit
8 תהיה : כי ראש ארם דמשק וראש דמשק רצין
.*populo à* Ephraim frangetur , anni quinque & ſexaginta adhuc &
ובעוד ששים וחמש שנה יחת אפרים מעם :
: Remaljahu filius Someron caput & , Someron Ephraim caput Et
9 וראש אפרים שמרון וראש שמרון בן־רמליהו
.*fideles* eritis non quia credatis non ſi
אם לא תאמינו כי לא תאמנו :

Verſio VULG. LAT.

9 Et dixit; Vade, & dices populo huic; Audite audientes, & nolite intelligere: & videte viſionem, & nolite cognoſcere. 10 Excæca cor populi hujus, & aures ejus aggrava: & oculos ejus claude: ne fortè videat oculis ſuis, & auribus ſuis audiat, & corde ſuo intelligat, & convertatur, & ſanem eum. 11 Et dixi; Uſquequò, Domine? Et dixit; Donec deſolentur civitates abſque habitatore, & domus ſine homine, & terra relinquetur deſerta. 12 Et longè faciet Dominus homines, & multiplicabitur quæ derelicta fuerat in medio terræ. 13 Et adhuc in ea decimatio, & convertetur, & erit in oſtenſionem ſicut terebinthus, & ſicut quercus, quæ expandit ramos ſuos: ſemen ſanctum erit id, quod ſteterit in ea.

CAP. VII.

1 ET factũ eſt in diebus Achaz filii Joathan, filii Oziæ regis Juda, aſcendit Raſin rex Syriæ, & Phacee filius Romeliæ rex Iſrael, in Jeruſalem, ad præliandum contra eam: & non potuerunt debellare eam. 2 Et nuntiaverunt domui David, dicentes; Requievit Syria ſuper Ephraim, & commotum eſt cor ejus, & cor populi ejus, ſicut moventur ligna ſylvarũ à facie venti. 3 Et dixit Dominus ad Iſaiam; Egredere in occurſum Achaz tu, & qui derelict⁹ eſt Jaſub filius tuus, ad extremum aquæductûs piſcinæ ſuperioris in via Agri fullonis. 4 Et dices ad eum; Vide ut ſileas: noli timere, & cor tuum ne formidet à duabus caudis titionum fumigantium iſtorum in ira furoris Raſin regis Syriæ, & filii Romeliæ: 5 Eò quòd conſilium inierit contra te Syria in malum Ephraim, & filius Romeliæ, 6 dicentes, Aſcendamus ad Judam, et ſuſcitemus eum, et avellamus eum ad nos, et ponamus regem in medio ejus filium Tabeel: 7 Hæc dicit Dominus Deus; Non ſtabit, et 8 non erit iſtud: Sed caput Syriæ Damaſcus, et caput Damaſci Raſin: at adhuc ſexaginta et quinque anni, et deſinet 9 Ephraim eſſe populus: Et caput Ephraim Samaria, et caput Samariæ filius Romeliæ. Si non credideritis, non permanebitis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

9 Καὶ εἶπε, Πορεύθητι, καὶ εἶπον τῷ λαῷ τούτῳ, Ἀκοῇ (θ) ἀκούσετε, καὶ οὐ μὴ συνῆτε, 10 καὶ βλέποντες βλέψετε, καὶ οὐ μὴ ἴδητε. Ἐπαχύνθη γὰρ ἡ καρδία τοῦ λαοῦ τούτου, καὶ τοῖς ὠσὶν αὐτῶν βαρέως ἤκουσαν, καὶ τοὺς (ˑ) ὀφθαλμοὺς ἐκάμμυσαν, μήποτε ἴδωσι τοῖς ὀφθαλμοῖς, καὶ τοῖς ὠσὶ ἀκούσωσι, καὶ τῇ καρδίᾳ συνῶσι καὶ ἐπιστρέψωσι, καὶ ἰάσομαι αὐτούς. 11 Καὶ εἶπα, Ἕως πότε κύριε; καὶ εἶπεν, Ἕως ἂν ἐρημωθῶσι πόλεις παρὰ τὸ μὴ κατοικεῖσθαι, καὶ οἶκοι παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἀνθρώπους, καὶ ἡ γῆ καταλειφθήσεται ἔρημος. 12 Καὶ μετὰ ταῦτα μακρυνεῖ ὁ θεὸς τοὺς ἀνθρώπους, καὶ (ι) πληθυνθήσονται οἱ ἐγκαταλειφθέντες ἐπὶ τῆς γῆς, 13 Καὶ ἔτι ἐπ᾽ αὐτῆς ἐστι τὸ ἐπιδέκατον καὶ πάλιν ἔσται εἰς προνομὴν ὡς τερέβινθος, καὶ ὡς βάλανος ὅταν (κ) ἐκπέσῃ ἐκ τῆς θήκης αὐτῆς.

MS.A. (θ) ἀκούσητε, (ˑ) ὀφθαλμοὺς αὐτῶν (ι) οἱ καταλειφθέντες
σονται (κ) ἐκσπασθῇ

Et dixit, Vade, & di
huic, Auditu audietis, et non
ligetis: & videntes videbi
non perſpicietis: (e) Incraſſ
eſt enim cor populi hujus: & au
bus (f) ſuis graviter audie
& oculos compreſſerunt: ne
videant oculis, & auribus a
ant, & corde intelligant, &
vertant ſe, & (g) ſanabo
dixi; Uſquequò, Domine? E
Donec deſolatæ fuerint
eò quod non habitentur; e
mus, eò quod non ſint homin
terra derelinquetur deſerta
hæc longè faciet Deus
& multiplicabuntur de
per terram: Et adhuc
erit decimatio: & rurſum
deprecationem, ſicut te
& ſicut glans, cum
è theca (h) ſua.

ΚΕΦ. ζ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις Ἄχαζ τοῦ Ἰωάθαμ τοῦ υἱοῦ Ὀζίου βασιλέως Ἰούδα, ἀνέβη (α) Ῥασὶν βασιλεὺς Ἀράμ, καὶ Φακεὲ υἱὸς Ῥομελίου βασιλεὺς Ἰσραὴλ ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ πολεμῆσαι αὐτήν, καὶ οὐκ ἠδυνήθησαν 2 πολιορκῆσαι αὐτήν. Καὶ ἀνηγγέλη εἰς τὸν οἶκον Δαυίδ, (β) λέγων, Συνεφώνησεν Ἀρὰμ πρὸς τὸν Ἐφραίμ. καὶ ἐξέστη ἡ ψυχὴ αὐτοῦ, καὶ ἡ ψυχὴ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, (γ) ὃν τρόπον ἐν δρυμῷ ξύλον ὑπὸ πνεύματος 3 σαλευθῇ. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς Ἡσαΐαν, Ἔξελθε εἰς συνάντησιν Ἄχαζ σύ, καὶ ὁ καταλειφθεὶς Ἰασοὺβ (δ) ὁ υἱός σου, πρὸς τὴν κολυμβήθραν τῆς ἄνω ὁδοῦ (ε) ἀγροῦ τοῦ 4 κναφέως. Καὶ ἐρεῖς αὐτῷ, Φύλαξαι τοῦ ἡσυχάσαι, καὶ μὴ φοβοῦ, μηδὲ ἡ ψυχή σου ἀσθενείτω ἀπὸ τῶν δύο ξύλων τῶν δαλῶν τῶν καπνιζομένων τούτων· ὅταν γὰρ ὀργὴ τοῦ θυμοῦ μου γένηται, πάλιν ἰάσομαι. καὶ ὁ 5 υἱὸς τοῦ Ἀράμ, καὶ ὁ υἱὸς τοῦ Ῥομελίου, Ὅτι 6 ἐβουλεύσαντο βουλὴν πονηράν (ζ)· Ἀναβησόμεθα εἰς τὴν Ἰουδαίαν, καὶ συλλαλήσαντες αὐτοῖς, (η) ἀποστρέψομεν αὐτοὺς πρὸς ἡμᾶς, καὶ βασιλεύσομεν (θ) αὐτῆς τὸν υἱὸν 7 Ταβεήλ. Τάδε λέγει κύριος σαβαώθ, Οὐ μὴ (ι) μείνῃ ἡ βουλὴ αὕτη, οὐδὲ ἔσται, 8 Ἀλλ᾽ ἡ κεφαλὴ Ἀράμ, Δαμασκός, καὶ ἡ κεφαλὴ Δαμασκοῦ, (κ) Ῥασίμ. ἀλλ᾽ ἔτι ἑξήκοντα καὶ πέντε ἐτῶν, ἐκλείψει ἡ βασιλεία 9 Ἐφραὶμ ἀπὸ λαοῦ, καὶ ἡ κεφαλὴ Ἐφραὶμ Σομόρων, καὶ ἡ κεφαλὴ Σομόρων, υἱὸς τοῦ Ῥομελίου. καὶ ἐὰν μὴ πιστεύσητε, οὐδὲ μὴ συνῆτε.

MS.A. (α) Ῥαασσών (β) λέγοντες, (γ) ὅταν ὃν τρόπον
(ε) τοῦ ἀγροῦ τοῦ γναφέως. (ζ) περὶ σοῦ, λέγοντες, Ἀναβησόμεθα
(η) ἀποστρέψωμεν (θ) αὐτοῖς (ι) ἐμμείνῃ (κ) Ῥασείν.

CAP. VII.
ET factum eſt in dieb
filii Joatham, filii Oziæ
da, aſcendit Raſin rex
Phacee filius Romeliæ
ſuper Hieruſalem ad op
dam eam: & non potue
pugnare eam. Et annun
in domum David,
Conſenſit Aram cum E
Et expavit anima eju
ma populi ſui: quem
ſylva lignum à ſpiritu
atur. Et dixit Dom
Egredere in occurſum A
& qui derelictus eſt
tuus, ad piſcinam ſuper
Agri fullonis. Et dices e
ut ſileas: & noli timer
nima tua infirmetur à
gnis titionum fumigant
rum. Cùm enim ira fu
extiterit; rurſus ſan
lius Aram, & filius
Quoniam inierunt con
peſſimum, (Aſcendamus
am, & colloquentes
mus eos ad nos, & f
gem ejus filium Tabe
cit Dominus Sabaoth,
conſilium hoc, neque
put Aram, Damaſcus;
Damaſci, Raſim. Sed a
ginta & quinque ann
regnum Ephraim de po
caput Ephraim Somo
Somoron filius Romel
crediderits, (b) non

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

9 ואמר אזיל ותימר לעמא הדין דשמעין משמע ולא מסתכלין וחזו מחזא ולא ידעין :
10 טפש ליבה דעמא הדין ואודנוהי יקר ועינוהי עמעם דלמא יחזון בעיניהון ובאודניהון
11 ישמעון ובלבהון יסתכלו ויתובון וישתבק להון : ואמרית עד אימתי יי ואמר עד
12 דיצדון קרויא מבלי יתיב ובתיא מבלי אנשא וארעא תחרוב ותצדי : וירחק יי ית בני
13 אנשא ותסגי צדיותא בגוה דארעא : וישתארון בה חד מן עסרא צדיקיא ויתובון ויהון
לצרבא כבוטמא וכבלוטא דבמתר טרפוהי דמין ליבשין ועד כען אנון רטיבין לקימא
מנהון זרעא כן גלותא דישראל יתכנשון ויתובון לארעהון ארי זרעא דקודשא
נצבתהון :

ז

1 והוה ביומי אחז בר יותם בר עזיה מלך שבטא דבית יהודה סליק רצין מלכא דארם
ופקח בר רמליה מלכא דישראל לירושלם לאגחא קרבא עלה ולא יכיל לאגחא עלה :
2 ואתחוא לבית דוד למימר אתחבר מלכא דארם עם מלכא דישראל למיתי עלוהי וזע
3 ליביה ולבא דעמיה כאשתדיות אילני חורשא מן קדם רוחא : ואמר יי לישעיה פוק
כען לקדמות אחז את ושאר תלמידך דלא חטו ודתבו מחטאה לסיפי מזיקת ברכתא
4 עליתא די בכבש חקל משטח קצריא : ותימר ליה אשתמר ונוח לא תדחל ולבך לא
יזוע מן קדם תרין מלכיא דאנין כאודיא מתנניא האלין בתקוף רגז רצין וארם ובר
5 6 רמליהו : חלף ארי מלך עלך ארם בישא אפרים ובר רמליהו למימר : נסק בארעא
7 דבית יהודה ונחברנין ונשונון עמנא ונמליך מלכא בגוה ית מן דכשר לנא : כדנן
8 אמר יי אלהים לא תקום ולא תהוי : ארי ריש ארם דמשק וריש דמשק רצין ובסוף שתין
9 וחמש שנין יבטלון בית ישראל ממלכו : וריש אפרים שמרון וריש שמרון בר רמליה
אם לא תהמנון במלי נביא ארי לא תתקימון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Et ait, Vade & dic populo huic, Qui audientes audiunt & non
gunt, & videntes vident & neſciunt. Infatua cor populi hujus,
ejus aggrava, & oculos ejus *obſcura*, ne fortè videant oculis ſuis,
bus ſuis audiant, & cordibus ſuis intelligant: convertantur, &
tur eis. Et dixi: Uſquequo Domine? Et ait: Donec deſolentur
abſque habitatore, & domus abſque homine, & terra deſerta fi
tur. Et longè faciet Dominus filios hominis, & multiplicabitur
in medio terræ. Et *relinquentur* in ea unus ex decem *juſti*: & co
tur, & erunt in combuſtionem, ſicut terebinthus & ſicut quercus
cùm defluunt folia ejus, videntur quaſi aridæ, & adhuc retinent
ut ex eis ſuſtentetur ſemen: ſic tranſmigrationes Iſrael congreg
convertentur in terram *ſuam*, quia ſemen ſanctum eſt plantatio

CAP. VII,

ET factum eſt in diebus Achaz filii Jotham filii Oziæ regis
mus Juda; aſcendit Raſin rex Syriæ, & Phechah filius Romeliæ
in Hieruſalem ad præliandum contra eam, & non potuerunt
eam. Et nunciaverunt domui David dicentes: Conjunctus eſt
cum rege Iſrael, ut veniat contra eum: & commotum eſt cor
populi ſui ſicut moventur ligna ſylvæ à facie venti. Et dixit Do
Eſaiam: Egredere nunc in occurſum Achaz tu & reliqu
qui non peccaverunt, & qui converſi ſunt à peccato, ad extrem
ductus piſcinæ ſuperioris, quæ eſt in via agri extenſionis fullo
dices ei: Cave, et quieſce; ne timeas, et cor tuum ne con
facie *duorum* regum iſtorum, qui ſunt quaſi titiones fumantes
ris Raſin, et Syriæ, et filii Romeliæ. Pro eo quòd conſilium
runt ſuper te, Syria et Ephraim, et filius Romeliæ, dicentes:
in terram domus Juda, et jungamus et apponamus eos ad nos
mus regem in medio ejus, qui nobis placuerit. Hæc dicit Do
ſtabit neq; erit. Quia caput Syriæ Damaſcus, et caput Dam
fine ſexaginta et quinq; annorum ceſſabit regnum domus
put Ephraim Samaria, et caput Samariæ filius Romeliæ
ritis verbis prophetæ, neque permanebitis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܠܝ. ܙܠ ܐܡܪ ܠܥܡܐ ܗܢܐ. ܫܡܥܘ ܡܫܡܥ. ܘܠܐ ܬܣܬܟܠܘܢ. ܘܚܙܘ ܡܚܙܐ. ܘܠܐ 9
ܬܕܥܘܢ. * ܐܬܥܒܝ ܠܗ ܓܝܪ ܠܒܗ ܕܥܡܐ ܗܢܐ. ܘܐܕܢܘܗܝ ܝܩܪ. ܘܥܝܢܘܗܝ ܥܡܨ. ܕܠܐ ܢܚܙܐ 10
ܒܥܝܢܘܗܝ ܘܢܫܡܥ ܒܐܕܢܘܗܝ. ܘܢܣܬܟܠ ܒܠܒܗ ܘܢܬܘܒ ܘܢܫܬܒܩ ܠܗ. * ܘܐܡܪܬ 11
ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ. ܥܕܡܐ ܕܢܚܪܒܢ ܩܘܪܝܐ ܡܢ ܕܠܐ ܥܡܘܪܐ. ܘܒܬܐ ܡܢ ܕܠܐ
ܒܢܝܢܫܐ. ܘܐܪܥܐ ܬܫܬܒܩ ܚܪܒܐ. * ܘܢܪܚܩ ܡܪܝܐ ܠܒܢܝܢܫܐ. ܘܬܣܓܐ ܫܒܩܬܐ ܒܓܘ ܐܪܥܐ. 12
* ܘܢܫܬܚܪܘܢ ܒܗ. ܚܕ ܡܢ ܥܣܪܐ. ܘܢܬܘܒ ܘܢܗܘܐ ܠܡܘܩܕܐ. ܐܝܟ ܒܛܡܬܐ. ܘܐܝܟ ܒܠܘܛܐ 13
ܕܢܦܠ ܡܢ ܩܠܦܗ. ܙܪܥܐ ܩܕܝܫܐ ܢܨܒܬܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *

* ܘܗܘܐ ܒܝܘܡܘܗܝ ܕܐܚܙ ܒܪ ܝܘܬܡ ܒܪ ܥܘܙܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܣܠܩ ܪܨܝܢ ܡܠܟܐ 1
ܕܐܪܡ ܘܦܩܚ ܒܪ ܪܡܠܝܐ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܠܐܘܪܫܠܡ. ܠܡܩܪܒܘ ܥܠܝܗ.
ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ ܕܢܬܟܬܫܘܢ ܥܡܗ. * ܘܐܬܚܘܝ ܠܒܝܬ ܕܘܝܕ. ܘܐܡܪܘ ܕܐܫܬܘܝ ܐܪܡ ܥܡ ܐܦܪܝܡ. 2
ܘܙܥ ܠܒܗ ܘܠܒܐ ܕܥܡܗ. ܐܝܟ ܕܙܝܥܝܢ ܐܝܠܢܐ ܕܥܒܐ ܡܢ ܩܕܡ ܪܘܚܐ.
* ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܐܫܥܝܐ. ܦܘܩ ܠܘܪܥܗ ܕܐܚܙ. ܐܢܬ ܘܫܐܪ ܝܫܘܒ ܒܪܟ. ܠܘܬ ܣܛܪ 3
ܡܥܝܢܐ ܕܒܪܟܬܐ ܥܠܝܬܐ ܕܒܫܒܝܠ ܚܩܠ ܩܨܪܐ. * ܘܐܡܪ ܠܗ. ܐܙܕܗܪ. ܘܫܠܝ. ܘܠܐ 4
ܬܕܚܠ. ܘܠܒܟ ܠܐ ܢܬܪܟ. ܡܢ ܬܪܬܝܢ ܕܘܢܒܝܢ ܕܐܘܡܠܐ ܡܬܢܚܢܐ. ܡܢ
ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܪܨܝܢ ܘܕܒܪ ܪܡܠܝܐ. * * ܘܐܡܪܝܢ. ܢܣܩ ܠܝܗܘܕܐ ܘܢܒܙܥܝܗ. 5 6
ܘܢܦܠܓܝܗ. ܘܢܡܠܟ ܒܓܘܗ ܡܠܟܐ ܠܒܪ ܛܒܐܝܠ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. 7
ܠܐ ܬܩܘܡ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ. * ܡܛܠ ܕܪܫܐ ܕܐܪܡ ܕܪܡܣܘܩ. ܘܪܫܐ ܕܕܪܡܣܘܩ ܪܨܝܢ. ܘܒܬܪ 8
ܫܬܝܢ ܘܚܡܫ ܫܢܝܢ. ܢܥܒܪ ܐܦܪܝܡ ܡܢ ܥܡܐ. * ܘܪܫܐ ܕܐܦܪܝܡ ܫܡܪܝܢ. ܘܪܫܐ 9
ܕܫܡܪܝܢ ܒܪ ܪܡܠܝܐ. ܘܐܢ ܠܐ ܬܗܝܡܢܘܢ. ܐܦܠܐ ܬܣܬܟܠܘܢ.

9 Tum dixit mihi, Vade dictum huic populo, Audiendo audite, & ne intelligatis; videndo videte & ne cognoſcatis. 10 Craſſum enim redditum eſt cor populi hujus, aures ſuas aggravat, & oculos ſuos oblinit, ne videat oculis ſuis, & audiat auribus ſuis, corde percipiat, pœnitentiam agat, & dimittatur ei. 11 Dicenti autem mihi, Quouſque Domine? dixit, Donec vaſtentur civitates ob penuriam incolarum, & domus ob penuriam hominum, et terra vaſtetur ac deſoletur; 12 Expellat Dominus homines, maxima ſit derelictio in terra, 13 Et ſuperſtites in ea ſit unus è decem, & convertatur, ſitque in incendium, quaſi terebinthus, & quaſi glans quæ effluxit è caliculo ſuo: ſemen ſanctum eſt planta ejus.

CAP. VII.

1 Contigit autem diebus Ahazi filii Jothami filii Oziæ regis Judæ, ut aſcendentes Raſan rex Aram & Pecah filius Romeliæ rex Iſraelis in Jeruſalem ad oppugnandum eam, non potuerint expugnare eam. 2 (Quod cùm perlatum fuiſſet ad familiam Davidis, conſpirâſſe *ſcilicet* Aramum cum Aphremo, tremuit cor ejus & cor populi ipſius, ut tremere *ſolent* arbores ſylvæ vento agitatæ.) 3 Quapropter dixit Dominus ad Eſaiam, Egredere obviàm Ahazo, tu & Sariaſub filius tuus, ad latus lacûs ſuperioris qui eſt in via agri fullonis; 4 Et dic ei, Cautus eſto, & ſileto; ne timeas; neque formidet cor tuum ab his duabus caudis titionum combuſtorum, ab æſtu furoris Raſanis, & filii Romeliæ, 5 Dicentium, 6 Aſcendamus contra Judæam, evertamus, & rumpamus eam, & regem conſtituamus in ea filium Tebaelis. 7 Sic dicit Dominus Deus, Non ſubſiſtet id, neque fiet. 8 Nam caput Arami Damaſcus, & caput Damaſci Raſan: & poſt ſexaginta quinque annos labetur Aphrem è populo: 9 Et caput Aphrem *erit* Samaria, & caput Samariæ filius Romeliæ: quòd ſi non credittis, neque intelligetis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فقال اذهب فقل لهذا الشعب سماعا تسمعون ولا تفهمون * ونظرا تنظرون ولا تبصرون * لان 9 10
قلب هذا الشعب غلظ وثقلت اذانهم عن السماع * وغمضوا عيونهم لئلا ينظروا بعيونهم
ويسمعوا باذانهم ويفهموا بقلوبهم * ويرجعوا فاشفيهم * فقلت الى متى يا رب * فقال الى ان تقفر 11
المدن من ان لا تسكن * والبيوت من ان لا يكون فيها الناس * والارض تترك خرابا * وبعد 12
ذلك يبعد الله الناس * والذين اسبغوا يتكاثرون على الارض * والموجود عليها اذن العشر 13
ويصير اذن للنهب * ومثل البطمة ومثل البلوطة اذ تسقط من غلافها *

* الفصل السابع * الوحي الرابع * وكان في ايام حوز بن 1
يواثام ابن عوزيا ملك يهوذا * صعد راصان ملك ارام * وفاقح بن روملّيا ملك اسرايل * الى
ايروسليم ليحاربها * فلم يستطيعا ان يحاصراها * وخبر في بيت داود قايلين * قد توافق ارام 2
مع افرام * فضعفت نفسه ونفس شعبه كما يتزعزع عود في الغاب من الريح الشديات *

* الاصحاح الرابع * فقال الرب لاشعيا * اخرج لاستقبال احاز انت وياصوب 3
ابنك الذي تبقى لك * الى البركة التي لمصعد طريق حقل القصار * وتقول له احتفظ 4
لتسكن * ولا تخف ولا تضعف نفسك من هذين العودين الذانبين المحترقين * لانه اذ يسكن
زجر غضبي فانني انا اعود اشفي ايضا * وابن ارام وابن روملّيا فانهما تامرا عليك مسور 5
سرين قايلين * نصعد الى اليهودية * ونتكلم مع اهلها * ونردهم الينا * ونملك عليها ابن 6
طابايل * هكذا يقول رب الجيوش ضابط الكل لن يثبت هذا الراي ولا يكون * لكن 7
راس ارام دمشق * وراس دمشق راصان * وبعد خمسة وستين سنة تفنى مملكة افرام من 8
الشعب * وراس افرام شومرون وراس شومرون ابن روملّيا * وان لم تصدقوا لم تفهموا * 9

* قريان الميلاد * فيه بشارة النبي لال داود بميلاد المسيح *

9 *Dixit, Vade, dic populo iſti, Audiendo quidem audietis, at non intelligetis; videndo videbitis, at non percipietis.* 10 *Cor enim hujus populi craſſum evaſit, & graves factæ ſunt aures eorum quominùs audiant, & oculos ſuos occluſerunt quominùs videant oculis ſuis, audiant auribus ſuis, & corde ſuo intelligant, convertantur, & ſanē eos.* 11 *Cúmque dixiſſem, Quouſque Domine? Donec, inquit, deſertæ ſint urbes ita ut non habitentur, & domus ita ut nullus in eis maneat homo, & terra relinquatur deſerta.* 12 *Poſthæc verò amovebit Deus homines; & qui ſuperſtites fuerint, multiplicabuntur ſuper terram.* 13 *Quod autem adhuc in ea reperietur, decima pars erit: & fiet adhuc in direptionem, & ut terebinthus, et ut glans cùm ex acetabulo ſuo defluxerit.*

CAP. VII.

Revelatio quarta.

1 *Contigit præterea temporibus Hazi filii Joathami filii Oziæ regis Judæ, ut Raſan rex Aramæus, & Phacah filius Romeliæ rex Iſraelis aſcenderent in Jeruſalem ad expugnandam eam, nec potuerint obſidere eam.* 2 *Nunciatum ergò fuit in domo Davidis à quibuſdam dicentibus, Jam conſpiravit Aramæus cum Aphremo: quarè debilitatus eſt animus ejus & animus populi ipſius, ut concuti ſolet lignum in ſylva à vento rapido.*

Textus quartus.

3 *Quamobrem dixit Dominus ad Eſaiam, Egredere in occurſum Ahazi, tu et Jaſub filius tuus qui tibi ſuperſtes eſt, ad lacum qui eſt in clivo viæ agri fullonis;* 4 *Et dices ad eum, Cura ut ſis tranquillus, et ne metuas, neque molleſcat animus tuus propter gemina iſta ligna, geminas caudas combuſtas, quoniam licet exeniat furor indignationis meæ, ego tamen converſus iterum ſanabo.* 5 *Et de filio quidem Arami, et filio Romeliæ qui perniciosum in te conſilium inêre dicentes;* 6 *Aſcendamus in Judæam, incolas ejus alloquamur, reducamus eos ad nos, et regē conſtituamus ſuper eam filium Tabeelis;* 7 *Sic dicit Dominus exercituum omnipotens, Haudquaquam ſubſiſtet, neque ſuccedet ejuſmodi conſilium:* 8 *Sed caput Arami Damaſcus, et caput Damaſci Raſan: & poſt annos ſexaginta quinque regnum Aphremi populo deficiet;* 9 *Et caput Aphremi Samaria, & caput Samariæ filius Romeliæ: & niſi credideritis, non intelligetis.*

Lectio Nativitatis, continens annuntiationem prophetæ ad gentem Davidis, de nativitate Chriſti.

ישעיה׃ ז

Pete : dicendo , Achaz ad loqui DOMINUS adjecit Et
10 11 וַיּוֹסֶף יְהוָה דַּבֵּר אֶל־אָחָז לֵאמֹר׃ שְׁאַל־
, petitionem profunda : tuo Deo DOMINO cum à signum tibi
לְךָ אוֹת מֵעִם יְהוָה אֱלֹהֶיךָ הַעְמֵק שְׁאָלָה
, petam Non : Achaz dixit Et .excelsum in teipsum eleva vel
12 אוֹ הַגְבֵּהַ לְמָעְלָה׃ וַיֹּאמֶר אָחָז לֹא־אֶשְׁאַל
nunc Audite : dixit Et .DOMINUM tentabo non &
13 וְלֹא־אֲנַסֶּה אֶת־יְהוָה׃ וַיֹּאמֶר שִׁמְעוּ־נָא
, homines fatigare vobis à parum Nunquid : David domus
בֵּית דָּוִד הַמְעַט מִכֶּם הַלְאוֹת אֲנָשִׁים
Dominus dabit Ideo ? meum Deum etiam labore *afficiatis quòd*
14 כִּי תַלְאוּ גַּם אֶת־אֱלֹהָי׃ לָכֵן יִתֵּן אֲדֹנָי
pariens & , prægnans virgo Ecce : signum vobis ipſe
הוּא לָכֶם אוֹת הִנֵּה הָעַלְמָה הָרָה וְיֹלֶדֶת
mel & Butyrum .el--Himmanu ejus nomen vocabis & , filium
15 בֵּן וְקָרָאת שְׁמוֹ עִמָּנוּ אֵל׃ חֶמְאָה וּדְבַשׁ
Nam .*bono in* eligere & ,*malo in* reprobare *ipſum ſciendum ad* ,comedet
16 יֹאכֵל לְדַעְתּוֹ מָאוֹס בָּרָע וּבָחוֹר בַּטּוֹב׃ כִּי
; *bono in* eligere & , *malo in* reprobare puer ſciat antequam
בְּטֶרֶם יֵדַע הַנַּעַר מָאֹס בָּרָע וּבָחֹר בַּטּוֹב
duorum *faciebus* à *faſtidiens* tu quam , *humus* derelinquetur
תֵּעָזֵב הָאֲדָמָה אֲשֶׁר־אַתָּה קָץ מִפְּנֵי שְׁנֵי
ſuper & , te ſuper DOMINUS Adducet .ſuorum regum
17 מְלָכֶיהָ׃ יָבִיא יְהוָה עָלֶיךָ וְעַל־
non qui , dies tui patris domum ſuper & , tuum populum
עַמְּךָ וְעַל־בֵּית אָבִיךָ יָמִים אֲשֶׁר לֹא־
regem , Jehudah *deſuper* Ephraim *recedere* die à venerunt
בָאוּ לְמִיּוֹם סוּר־אֶפְרַיִם מֵעַל יְהוּדָה אֵת מֶלֶךְ
DOMINUS ſibilabit illa die in , erit Et .Aſſur
18 אַשּׁוּר׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא יִשְׁרֹק יְהוָה
, api & ; Ægypti fluminum extremo in quæ muſcæ
לַזְּבוּב אֲשֶׁר בִּקְצֵה יְאֹרֵי מִצְרָיִם וְלַדְּבוֹרָה
ipſi omnes requieſcent & ,venient Et .Aſſur terra in quæ
19 אֲשֶׁר בְּאֶרֶץ אַשּׁוּר׃ וּבָאוּ וְנָחוּ כֻלָּם
omnibus in & , petrarum *ſcopulis* in & , *vaſtitatum* torrentibus in
בְּנַחֲלֵי הַבַּתּוֹת וּבִנְקִיקֵי הַסְּלָעִים וּבְכֹל
illa die In .vilibus arboribus univerſis in & , *albis* ſpinis
20 הַנַּעֲצוּצִים וּבְכֹל הַנַּהֲלֹלִים׃ בַּיּוֹם הַהוּא
flumen trans in mercede conducta novacula in Dominus radet
יְגַלַּח אֲדֹנָי בְּתַעַר הַשְּׂכִירָה בְּעֶבְרֵי נָהָר
etiam & , pedum *crinem* & caput , Aſſur rege *in*
בְּמֶלֶךְ אַשּׁוּר אֶת־הָרֹאשׁ וְשַׂעַר הָרַגְלָיִם וְגַם
vivificabit illa die in , erit Et .conſumet barbam
21 אֶת־הַזָּקָן תִּסְפֶּה׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא יְחַיֶּה־
multitudine præ , erit Et .oves duas & , bovis vitulam vir
22 אִישׁ עֶגְלַת בָּקָר וּשְׁתֵּי־צֹאן׃ וְהָיָה מֵרֹב
comedet mel & butyrum nam : butyrum comedet , *lac facere*
עֲשׂוֹת חָלָב יֹאכַל חֶמְאָה כִּי־חֶמְאָה וּדְבַשׁ יֹאכַל
erit illa die in erit Et .terræ *interiori* in *reſiduum* omnis
23 כָּל־הַנּוֹתָר בְּקֶרֶב הָאָרֶץ׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא יִהְיֶה
, *argenteis* mille *in* vites mille *ibi fuerit* quo locus omnis
כָל־מָקוֹם אֲשֶׁר יִהְיֶה־שָּׁם אֶלֶף גֶּפֶן בְּאֶלֶף כָּסֶף
ingredietur arcu *in* & ſagittis *In* .erit *ſentem* in & ,veprem in
24 לַשָּׁמִיר וְלַשַּׁיִת יִהְיֶה׃ בַּחִצִּים וּבַקֶּשֶׁת יָבוֹא
montes omnes Et .terra omnis erit *ſentis* & vepris quia : illuc
25 שָׁמָּה כִּי־שָׁמִיר וָשַׁיִת תִּהְיֶה כָל־הָאָרֶץ׃ וְכֹל הֶהָרִים
vepris timor illuc veniet non , ſarrientur ſarculo in qui
אֲשֶׁר בַּמַּעְדֵּר יֵעָדֵרוּן לֹא־תָבוֹא שָׁמָּה יִרְאַת שָׁמִיר
.pecoris conculcationem in & , bovis *miſſionem in erit &* , *ſentis* &
וָשַׁיִת וְהָיָה לְמִשְׁלַח שׁוֹר וּלְמִרְמַס שֶׂה׃

Verſio VULG. LAT.

10 Et adjecit Dominus loqui ad
11 Achaz, dicens; Pete tibi ſignum à Domino Deo tuo in
profundum inferni, ſive in ex-
12 celſum ſuprà. Et dixit Achaz;
Non petam, & non tentabo
13 Dominum. Et dixit, Audite
ergò domus David: Nunquid
parum vobis eſt, moleſtos eſſe
hominibus, quia moleſti eſtis
14 & Deo meo? Propter hoc
dabit Dominus ipſe vobis ſignum. Ecce virgo concipiet,
& pariet filium, & vocabitur
15 nomen ejus Emmanuel. Butyrum & mel comedet, ut ſciat
reprobare malum, & eligere
16 bonum. Quia antequàm ſciat
puer reprobare malum, & eligere bonum, derelinquetur
terra, quàm tu deteſtaris, à facie duorum regum ſuorum.
17 Adducet Dominus ſuper te, &
ſuper populum tuum, & ſuper
domũ patris tui, dies qui non
venerunt à diebus ſeparationis Ephraim à Juda cum rege
18 Aſſyriorum. Et erit in die
illa: Sibilabit Dominus muſcæ,
quæ eſt in extremo fluminum
Ægypti, & api, quæ eſt in ter-
19 ra Aſſur, Et venient, & requieſcent omnes in torrentibus vallium, & in cavernis petrarum, & in omnibus frutetis,
20 & in univerſis foraminibus. In
die illa radet Dominus in novacula conducta, in his qui
trans flumen ſunt, in rege Aſſyriorũ, caput et pilos pedum,
21 & barbam univerſam. Et erit
in die illa: Nutriet homo vac-
22 cam boum & duas oves, Et
præ ubertate lactis comedet
butyrum: butyrum enim &
mel manducabit omnis qui
relictus fuerit in medio ter-
23 ræ. Et erit in die illa: Omnis locus ubi fuerint mille
vites, mille argenteis, in ſpi-
24 nas & in vepres erunt. Cum
ſagittis & arcu ingredientur
illuc: vepres enim & ſpinæ
25 erunt in univerſa terra. Et
omnes montes, qui in ſarculo ſarrientur, non veniet illuc terror ſpinarum & veprium, & erit in paſcua bovis,
et in conculcationem pecoris.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Καὶ προσέθετο κύριος λαλῆσαι τῷ (κ) Ἄχαζ,
11 λέγων, Αἴτησαι σεαυτῷ σημεῖον παρὰ
12 κυρίου θεοῦ σου εἰς βάθος, ἢ εἰς ὕψος. Καὶ
εἶπεν Ἄχαζ, Οὐ μὴ αἰτήσω, (λ) οὐδὲ μὴ
13 πειράσω κύριον. Καὶ εἶπεν, Ἀκούσατε δὴ
οἶκος Δαυίδ· μὴ μικρὸν ὑμῖν ἀγῶνα παρ-
έχειν ἀνθρώποις, καὶ πῶς κυρίῳ παρέχετε
14 ἀγῶνα; Διατοῦτο δώσει κύριος (μ) αὐ-
τὸς ὑμῖν σημεῖον· ἰδοὺ ἡ παρθένος ἐν γαστρὶ
(ν) λήψεται, καὶ τέξεται υἱόν, καὶ καλέ-
15 σεις τὸ ὄνομα αὐτοῦ Ἐμμανουήλ. Βού-
τυρον καὶ μέλι φάγεται πρὶν ἢ γνῶναι αὐτὸν (ξ)
ἢ προελέσθαι πονηρά, ἐκλέξασθαι τὸ ἀγαθόν.
16 Διότι πρὶν ἢ γνῶναι τὸ παιδίον ἀγαθὸν ἢ
κακόν, ἀπειθεῖ πονηρίᾳ, (ο) ἐκλέξασθαι τὸ
ἀγαθόν. καὶ καταλειφθήσεται ἡ γῆ ἣν σὺ
φοβῇ, ἀπὸ προσώπου (π) τῶν δύο βασιλέων.
17 Ἀλλὰ ἐπάξει ὁ θεὸς ἐπὶ σὲ καὶ ἐπὶ τὸν λαόν
σου καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ πατρός σου ἡμέρας, αἳ
οὔπω ἥκασιν ἀφ᾽ ἧς ἡμέρας ἀφεῖλεν Ἐφραὶμ
ἀπὸ Ἰούδα τὸν βασιλέα τῶν Ἀσσυρίων.
18 Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ συριεῖ
κύριος μυίαις, ὃ κυριεύσει (ρ) μέρος πο-
ταμοῦ Αἰγύπτου, καὶ τῇ μελίσσῃ, ἥ ἐστιν
19 ἐν χώρᾳ Ἀσσυρίων. Καὶ ἐλεύσονται πάν-
τες (σ) ἐν ταῖς φάραγξι τῆς χώρας, καὶ
ἐν ταῖς τρώγλαις τῶν πετρῶν, καὶ εἰς τὰ
20 σπήλαια, καὶ (τ) εἰς πᾶσαν ῥαγάδα. Ἐν τῇ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ξυρήσει κύριος (υ) ἐν τῷ
ξυρῷ τῷ μεμισθωμένῳ πέραν τοῦ ποταμοῦ
βασιλέως Ἀσσυρίων, τὴν κεφαλήν, καὶ
τὰς τρίχας τῶν ποδῶν, καὶ τὸν πώ-
21 γωνα ἀφελεῖ. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκεί-
νῃ θρέψει ἄνθρωπος δάμαλιν βοῶν, καὶ
22 δύο πρόβατα· Καὶ ἔσται ἀπὸ τοῦ πλεῖστον
(φ) ποιεῖν γάλα, βούτυρον καὶ μέλι φάγε-
23 ται πᾶς ὁ καταλειφθεὶς ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ
ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, πᾶς τόπος οὗ
ἐὰν ὦσι χίλιαι ἄμπελοι χιλίων σίκλων,
εἰς χέρσον ἔσονται, (χ) καὶ εἰς ἄκανθαν.
24 Μετὰ βέλους καὶ τοξεύματος εἰσελεύσονται
ἐκεῖ· ὅτι χέρσος καὶ ἄκανθα ἔσται πᾶσα
25 ἡ γῆ, Καὶ πᾶν ὄρος (ψ) ἠροτριωμένον
ἀροτριαθήσεται. οὐ μὴ ἐπέλθῃ ἐκεῖ φόβος·
ἔσται γὰρ ἀπὸ τῆς χέρσου καὶ ἀκάνθης εἰς βό-
σκημα προβάτου, καὶ (ω) καταπάτημα
βοός.

MS.A. (κ) Ἀχαάζ, (λ) οὐδ᾽ οὐ μὴ (μ) αὐτοῖς (ν) ἕξει, (ξ)
πονηρά, ἐκλέξεται τὸ ἀγαθόν, (ο) τοῦ ἐκλέξασθαι
(ρ) μέρους (σ) καὶ ἀναπαύσονται ἐν ταῖς (τ) ἐπὶ πᾶ
παντὶ ξύλῳ. Ἐν τῷ (υ) τῷ ξυρῷ τῷ μεγάλῳ, καὶ μεμ
πέραν (φ) ποιεῖν (χ) καὶ ἄκανθαν. (ψ) ἀροβιώμενον
σεται. καὶ οὐ (ω) εἰς καταπάτημα

Et adjecit Dominus loqui ad A-
chaz, dicens; Pete tibi ſignum
Domino Deo tuo (c) in profun
ſive in excelſum. Et dixit Achaz
Non petam, neque tentabo Do
num. Et dixit; Audite nunc, do
mus David: (d) Nunquid parum
vobis eſt certamen præbere hom
nibus? & quomodò Domino pr
betis certamen? Propterea da
Dominus ipſe vobis ſignũ. Ecce
virgo in utero concipiet, &
filium, & (f) vocabis nomen
Emmanuel: Butyrum et mel c
edet; antequàm ſciat, (g) aut p
ligere mala, eligere bonum. Q
niam antequàm cognoſcat pu
num, vel malum; reprobat ma
am, eligendo bonum: Et dere
quetur terra, quam tu times,
cie duorum regum. Sed ad
cet Dominus ſuper te, & ſu
populum tuum, & ſuper dom
patris tui, dies, qui needum
nerunt; ex qua die abſtulit
phræm à Juda, regem Aſſy
Et erit, in die illa ſibilabit Do
nus muſcis, (h) qui domina
parti fluminis Ægypti,
quæ eſt in regione Aſſy
Et venient omnes in con
regionis, & in cavernis p
rum, & in ſpeluncas,
omnem (i) fiſſuram. In
radet Dominus in novacu
conducta trans flumen
Aſſyriorum caput, et pilos p
& barbam auferet. Et
die illa nutriet homo vacc
um, & duas oves.
ex plurima potione lactis
rum & mel comedet omn
ſuper terram. Et erit in
omnis locus, ubi fuerint mi
tes mille ſiclorum, in deſer
runt, & in ſpinam: Cum
& arcu ingredientur illuc
niam deſertũ & ſpinæ e
terra: Et omnis mons ara
rabitur. Non ſuperveni
timor. Erit enim præ de
& ſpina in paſtum ovis, et
culcationem bovis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 וְאוֹסִיף נְבִיָא דַיְיָ לְמַלָלָא עִם אָחָז לְמֵימַר׃ שְׁאַל לָךְ אָתָא מִן קֳדָם יְיָ אֱלָהָךְ שְׁאַל
11 12 דִי יִתְעֲבֵד לָךְ נֵס עַל אַרְעָא אוֹ תִתְחֲזֵי לָךְ אָת בִּשְׁמַיָא׃ וַאֲמַר אָחָז לָא אֶשְׁאַל
13 וְלָא אֲנַסֵי קֳדָם יְיָ׃ וַאֲמַר שְׁמַעוּ כְעַן בֵּית דָוִד הַזְעֵר לְכוֹן דְאַתּוּן מְהַלְאָן יַת נְבִיַיָא אֲרֵי
14 תְהַלוּן אַף יַת פִּתְגָמֵי אֱלָהִי׃ בְּכֵן יִתֵּן יְיָ הוּא לְכוֹן אָתָא הָא עוּלֵימְתָּא מְעַדְיָא וְתֵלִיד
15 בַּר וְתִקְרֵי שְׁמֵיהּ עִמָּנוּ אֵל׃ שְׁמַן וּדְבַשׁ יֵיכוּל עַד לָא יְדַע עוּלֵימָא לְרַחָקָא בִּישָׁא
16 וּלְקָרָבָא טָבָא׃ אֲרֵי עַד לָא יְדַע עוּלֵימָא לְרַחָקָא בִּישָׁא וּלְקָרָבָא טָבָא תִּתְרְטִישׁ
17 אַרְעָא דִי אַתְּ מְעִיק מִן קֳדָם תְרֵין מַלְכָהָא׃ יַיְתֵי יְיָ עֲלָךְ וְעַל עַמָּךְ וְעַל בֵּית אֲבוּךְ
יוֹמִן דְלָא אֲתוֹ לְמִיוֹמָא דְאִתְפְּלִיגוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל עַל דְבֵית יְהוּדָה יַת מַלְכָּא דְאַתּוּר׃
18 וִיהֵי בְּעִדָנָא הַהִיא יִכְלֵי יְיָ לְעַם קַטְרֵי מַשְׁרְיַת גִבָּרַיָא דְסַגִיאִין כְּדִבוֹבַיָא וְיַיְתִנוּן מִסְיָפֵי
אַרְעָא דְמִצְרַיִם וְלַעֲזִיזֵי מַשְׁרְיָתָא דְאִנוּן תַּקִיפִין כְּדַבַּרְיָתָא וְיַיְתִנוּן מִסְיָפֵי אַרְעָא
19 דְאַתּוּר׃ וְיֵיתוּן וְיִשְׁרוּן כּוּלְהוֹן בִּרְחוֹבֵי קִרְוַיָא וּבְשִׁקִיפֵי כֵיפַיָא וּבְכָל מַדְבְּרֵי נַעֲצוּצַיָא
20 וּבְכָל בָּתֵי תוּשְׁבַּחְתָּא׃ בְּעִדָנָא הַהִיא יִקְטוֹל יְיָ בְּהוֹן כְּמָא דְמִתְקְטִיל בְּחַרְבָּא חֲרִיפָא
בְּסַבְבַיָא וּבְמַגְרַיָא בְּעִבְרֵי נַהֲרָא בְּמַלְכָּא דְאַתּוּר יַת מַלְכָּא וְיַת מַשְׁרְיָתֵיהּ וְאַף יַת
21 שִׁלְטוֹנַיָא כַּחֲדָא יְשֵׁיצֵי׃ וִיהֵי בְּעִדָנָא הַהִיא יְקַיֵם גְבַר עֶגְלַת תּוֹרִין וְתַרְין עָן׃
22 וִיהֵי מִסְנֵי טוּב מְשַׁח יֵיכוּל שְׁמַן אֲרֵי שְׁמַן וּדְבַשׁ יִתְפַּרְנְסוּן כָּל צַדִיקַיָא דְאִשְׁתָּאֲרוּן בְּגוֹ
23 אַרְעָא׃ וִיהֵי בְּעִדָנָא הַהִיא יְהֵי כָל אֲתַר דִיהוֹן תַּמָן אֲלַף גוּפְנִין שְׁוַן בְּאֶלֶף מְנִין
24 כְּסַף לְהוּבָאִי וּבוּר יְהֵי׃ בְּגִירִין וּבְקַשְׁתָּן יְהַכוּן לְתַמָּן אֲרֵי הוּבָאִי וּבוּר תְּהֵי כָל
25 אַרְעָא׃ וְכָל טוּרַיָא דְבֵית יְהוּדָה דִי בְמַעְדְרָא יִתְפַּלְחוּן לָא תֵיעוֹל לְתַמָּן דַחֲלַת הוּבָאִי
וּבוּר וִיהֵי לְבֵית אַרְבָּעָה בְּקַרְן דְתוֹרִין וּלְבֵית מַשְׁרֵי עֶדְרִין דְעָן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et addidit propheta Domini loqui cum Achaz, dicens: Pe
ſignum à facie Domini Dei tui: pete ut fiat tibi miraculum ſup
ram, aut videatur *tibi* ſignum in cœlis. Et dixit Achaz: No
tam, & non tentabo in conſpectu Domini. Et dixit: Audit
domus David; Nunquid parum vobis eſt quòd moleſti eſtis prop
quia moleſti eſtis etiam verbis Dei mei? Propterea dabit Domi
bis ſignum: Ecce virgo concipiet, & pariet filium, & vocabi
ejus Emanuel. Butyrum & mel comedet, donec ſciat *puer rep*
malum, & eligere bonum. Quoniam antequam ſciat puer rep
malum & eligere bonum, derelinquetur terra, pro qua tu tribula
pateris à facie duorum regum ejus. Adducet Dominus ſuper te &
populum tuum, & ſuper domum patris tui, dies, qui non vene
die ſeparationis domus Iſrael à domo Juda cum rege Aſſyriæ. Et
tempore illo, clamabit Dominus ad populum accinctum exer
fortium qui multi ſunt ſicut muſcæ; & adducet eos de fini
Ægypti, & exercitus fortes, qui fortes ſunt ſicut apes: & addu
de finibus terræ Aſſyriæ. Et venient & habitabunt omnes in pla
tatum, & in ſciſſuris petrarum, & in omnibus deſertis ubi ſunt car
in omnibus domibus laudis. In tempore illo occidet illos Domi
qui occidunt in gladio acuto, in fuſtibus & in ſerris trans flume
regem Aſſyriæ: regem *& exercitus ſuos*, & etiam potentes ſimu
met. Et erit in tempore illo: Nutriet vir vitulam boum & duas ov
erit, præ multitudine bonitatis pinguedinis comedet butyrum, qui
& melle nutrientur omnes juſti qui relicti fuerint in medio terræ.
in tempore illo; Omnis locus in quo fuerint mille vites, quarum p
erat mille drachmæ argenti, in ſpinas, & vepres erit. Cum ſagittis
ibũt illuc, quia vepres & ſpinæ erũt in univerſa terra. Et omnes mon
mus Juda, qui in ſarculo coluntur; non veniet illuc timor ſpinaru
um, et erit in locum accubationis boum, et in locum manſionis gre

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܘܣܦ ܬܘܒ ܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ ܠܐܚܙ. * ܫܐܠ ܠܟ ܐܬܐ ܡܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܒܥܘܡܩܐ ܫܐܠ.
ܐܘ ܐܪܝܡ ܠܥܠ. * ܘܐܡܪ ܐܚܙ ܠܐ ܐܫܐܠ. ܘܠܐ ܐܢܣܐ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܝ. * ܘܐܡܪ. ܫܡܥܘ
ܒܝܬܗ ܕܕܘܝܕ. ܙܥܘܪܐ ܗܝ ܠܟܘܢ. ܕܡܠܐܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܓܒܪܐ܆ ܐܠܐ ܕܐܦ ܠܐܠܗܝ
* ܡܠܐܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܡܛܠܗܢܐ ܢܬܠ ܠܟܘܢ ܡܪܝܐ ܗܘ ܐܬܐ. ܗܐ ܒܬܘܠܬܐ ܒܛܢܐ ܘܝܠܕܐ
ܒܪܐ. ܘܬܩܪܐ ܫܡܗ ܥܡܢܘܐܝܠ. * ܚܐܘܬܐ ܘܕܒܫܐ ܢܐܟܘܠ. ܕܢܕܥ ܠܡܣܠܝܘ ܒܝܫܬܐ
ܘܠܡܓܒܐ ܛܒܬܐ. * ܡܛܠ ܕܥܕܠܐ ܢܕܥ ܛܠܝܐ ܠܡܣܠܝܘ ܒܝܫܬܐ ܘܠܡܓܒܐ ܛܒܬܐ.
ܬܫܬܒܩ ܐܪܥܐ ܕܐܢܬ ܡܣܠܐ ܐܢܬ ܡܢ ܩܕܡ ܬܪܝܢ ܡܠܟܝܗ. * ܢܝܬܐ ܡܪܝܐ ܥܠܝܟ ܘܥܠ
ܥܡܟ ܘܥܠ ܒܝܬ ܐܒܘܟ. ܝܘܡܬܐ ܕܠܐ ܐܬܘ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܐܥܒܪ ܠܐܦܪܝܡ ܡܢ
ܝܗܘܕܐ. ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. * ܘܢܗܘܐ ܒܗܘ ܙܒܢܐ. ܢܫܪܘܩ ܡܪܝܐ ܠܕܒܒܐ ܕܒܥܒܪܝ
ܢܗܪܘܬܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܠܕܒܘܪܝܬܐ ܕܒܐܪܥܐ ܕܐܬܘܪ. * ܘܢܐܬܘܢ ܘܢܬܬܢܝܚܘܢ ܟܠܗܘܢ
ܒܢܚܠܐ ܕܝܬܘܬ. ܘܒܢܩܝܥܐ ܕܟܐܦܐ. ܘܒܟܠܗܘܢ ܢܩܒܐ. * ܒܗܘ ܙܒܢܐ ܢܓܪܘܥ ܡܪܝܐ
ܒܡܣܦܪܐ ܪܘܝܐ. ܒܥܒܪܘܗܝ ܕܢܗܪܐ. ܠܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܡܢ ܪܫܗ ܘܥܕܡܐ
ܠܣܥܪܐ ܕܪܓܠܘܗܝ. ܐܦ ܕܩܢܗ ܢܣܦ. * ܘܢܗܘܐ ܒܗܘ ܙܒܢܐ. ܢܪܒܐ ܓܒܪܐ ܥܓܠܬܐ
ܕܬܘܪܐ. ܘܬܪܬܝܢ ܥܢܐ. * ܘܢܗܘܐ ܡܢ ܣܓܝܐܘܬ ܚܠܒܐ ܕܢܥܒܕܢ. ܢܐܟܘܠ ܚܐܘܬܐ.
ܡܛܠ ܕܚܐܘܬܐ ܘܕܒܫܐ ܢܐܟܘܠ. ܟܠ ܕܢܫܬܚܪ ܒܐܪܥܐ. * ܘܢܗܘܐ
ܒܗܘ ܙܒܢܐ. ܟܠ ܐܬܪ ܕܢܗܘܘܢ ܒܗ ܐܠܦ ܓܘܦܢܝܢ. ܒܐܠܦ ܕܟܣܦ.
ܠܚܘܚܐ ܘܠܟܘܒܐ ܢܗܘܐ. * ܒܓܐܪܐ ܘܒܩܫܬܐ ܢܥܠܘܢ ܠܬܡܢ. ܡܛܠ ܕܚܘܚܐ
ܘܟܘܒܐ ܢܗܘܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܘܟܠܗܘܢ ܛܘܪܐ ܕܒܡܪܪܐ ܡܬܦܠܚܝܢ ܗܘܘ.
ܢܬܦܠܚܘܢ. ܘܠܐ ܢܥܘܠ ܠܬܡܢ ܕܚܠܬܐ ܕܚܘܚܐ ܘܕܟܘܒܐ. ܘܢܗܘܐ ܡܪܥܝܬܐ
ܕܬܘܪܐ. ܘܕܘܫܐ ܕܢܩܫܐ ܠܥܢܐ.

* Tum ſubdidit Dominus dicens ad Ahazum; 10
Pete tibi ſignum à Domino Deo tuo: in 11
imo profundo pete, aut in excelſo ſublimi.
Dixit autem Ahaz, Non petam, neque ten- 12
tabo Dominum Deum meum. Dixit ille, Au- 13
dite domus Davidis: Parva res eſt apud vos
fatigare virum, niſi fatigetis etiam Deum
meum? Propterea dabit vobis Dominus 14
Deus ſignum. Ecce virgo concipiet & pa-
riet filium, & vocabitur nomen ejus Ama-
nuel. Butyrum & mel comedet, ut ſciat ab- 15
horrere à malo & eligere bonum. Nam ante- 16
quam ſciat puer iſte abhorrere à malo & eli-
gere bonum, derelinquetur terra quam tu
deteſtaris cauſâ duorum regum ejus. Domi- 17
nus adducet ſuper te, ſuper populum tuum,
& ſuper domum patris tui, tempora qualia
nunquam venerunt ab eo die quo Aphre-
mum è Judæa tranſtulit rex Athur. Fiet eo- 18
dem tempore ut ſibilante Domino ad muſcas
quæ ſunt ad ripas fluviorum Ægypti, & ad
veſpas quæ ſunt in terra Athur; Veniant & 19
conſideant omnes in valle Jathoth, in hiati-
bus petræ, & in rimis quibuſque. Eodem 20
tempore Dominus novaculâ ebriâ trans flu-
vium abradet, regem Athur ab ejus capite
uſque ad pilos pedum ejus; etiam barbam
ejus auferet. Erit etiam eodem tempore, ut 21
nutriente aliquo vitulam bovinam & duas
oves, Contingat ut præ copia lactis quod 22
præbebunt, comedat butyrum: mel enim
ac butyrum comeſturus eſt quicunque ſu-
perſtes manſerit in terra. Fiet etiam eo- 23
dem tempore, ut omnis locus in quo fu-
erint mille vites, *conſtans* mille argenteis;
in vepretum ac ſpinetum vertatur, Ita ut 24
nonniſi cum ſagittis & arcubus ingrediantur illuc: nam vepribus ac ſpinis implebi-
tur univerſa terra. Omnes verò montes 25
quos ſulcabat aratrum, ſulcabuntur; nec intrabit illuc metus veprium aut ſpinarum,
ſed erunt *ibi* paſcua boum, & locus tritus
à pecudibus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وعاد الرب يتكلم مع احاز قايلا * سل لك اية من الرب الهك في العمق او في
العلو * فقال احاز لا اسال ولا اجرب الرب * قال اسمعوا يا بيت داود * هل صغير
عندكم ان تمنحوا الناس جهادا * فكيف تمنحون الرب جهادا * لاجل هذا يعطيكم
الرب نفسه اية * ها العذري تحبل وتلد ابنا * ويدعون اسمه عمانويل * وياكل
الزبد والعسل * من قبل ان يعلم ان يرذل الشر يختار الخير * من اجل انه قبل ان
يعلم الصبي خيرا او شرا يرذل الشر ليختار الخير * وستبقى الارض التي انت خايف
عليها من وجه هذين الملكين * لكن يجلب الله عليك وعلى شعبك وعلى بيت
ابيك اياما لم تات قط * منذ يوم صرف افرام عن يهودا ملك الموصليين * ويكون
في ذلك اليوم ويجلب الرب بذباب الذي يسود ناحية نهر مصر * والنحلة التي في بلد
الموصليين * وياتون جميعا ويستريحون في اودية الكهوف * وفي انقبة الصخور * وفي
المغاير * وفي كل شق * وفي كل شجرة * في ذلك اليوم يحلق الرب بموسه العظيم الحاد
الذي هو عبر نهر ملك الموصليين * الراس وشعر الرجلين * وينزع لحيته * ويكون
في ذلك اليوم يعلف الانسان عجلة من بقر وشاتين * ويكون من ان تصنع لبنا
كثيرا ياكل زبدا وعسلا كل من تبقي على الارض * ويكون في ذلك اليوم
كل موضع حيث ان يكون فيه الف كرمة بالف مثقال * يصيرن للبور والشوك
* بسهم وقوس يدخلون هناك * لان بورا وشوكا تصير كل الارض * وكل جبل
محروث يحرث * ولا ياتي هناك خوف * لان من البور والشوك يصير مرعى الخروف ومربع
البقر *

* *Ruſus allocutus eſt Dominus Abazum,* 10
dicens; Pete tibi ſignum à Domino 11
Deo tuo, in profundo ſive in excelſo.
Reſpondit Abaz, Non petam, neque 12
tentabo Dominum. Dixit, Audite O 13
domus Davidis: Num parvi momenti
res eſt apud vos moleſtiam hominibus
præbere? quomodò ergò moleſtiam Do-
mino præbetis? Propter hoc dat vo- 14
bis ipſemet Dominus ſignum. Ecce vir-
go concipiet pariétque filium, & vo-
cabunt nomen ejus Emmanuel. Buty- 15
rum & mel comedet, & antequam
ſciat malum deteſtari, eliget bonum: 16
Priuſquam enim ſciat puer iſte bonum
aut malum, deteſtabitur malum, ut
bonum eligat. Et terra pro qua tu
metuis à conſpectu horum duorum re-
gum, perdurabit quidem; *At adducet* 17
Deus contra te, contra populum tuum,
& contra domum tuam paternam, tem-
pora qualia nunquam evenêre ab eo die
quo Aphremum ab Judæa traduxit rex
Aſſyriorum. Eodem quoque tempore con- 18
tinget, ut adducat Dominus muſcas quæ
vigent ad oram fluminis Ægypti, & a-
pes quæ ſunt in regione Aſſyriorum:
Quæ ſimul venientes conſidebunt in val- 19
libus hujus provinciæ, in foraminibus
petrarum, in ſpeluncis, in omnibus hia-
tibus, & in cunctis arboribus. Eodem 20
tempore Dominus novaculâ ſuâ magnâ
& acutâ, hoc eſt, transfluviali rege Aſ-
ſyriorum, caput & pilos pedum abra-
det; ejúſque barbam detondebit. Eodem 21
etiam tempore continget, ut nutriat quis
vitulum de bobus & duas oves;
Fiétque ut præ multo lacte quod fa- 22
cient, butyrum & mel comedat qui-
cunque reliquus fuerit ſuper terram.
Præterea continget eodem tempore, ut 23
quivis locus in quo fuerint mille vites
mille ſiclis coëmptæ, *vertatur in ſoli-*
tudinem ac ſpinas. Adeóque cum ſa- 24
gitta & arcu ingrediantur illuc; quan-
doquidem in ſolitudinem & ſpinas de-
ſciſcet univerſa terra. Omnis autem 25
mons ad arandum idoneus, arabitur;
* *nec ullus eò metus accedet: quoniam*
ex inculto & ſpinoſo evadet paſcua
agnorum, & locus in quo boves uber-
rimè paſcentur.

ישעיה : ח

CAP. VIII. ח

ſcribe & , grande volumen tibi Tolle : me ad Dominus dixit Et
1 ויאמר יהוה אלי קח־לך גליון גדול וכתב
.prædam acceleravit ſpolium feſtinandum ad : hominis ſtylo in eo in
עליו בחרט אנוש למהר שלל חש בז׃
, ſacerdotem Uriah , fideles teſtes mihi faciam teſtificari Et
2 ואעידה לי עדים נאמנים את אוריה הכהן
, prophetiſſam ad acceſſi Et .Jeberechjahu filium Zecharjahu &
3 ואת־זכריהו בן־יברכיהו׃ ואקרב אל־הנביאה
Voca : me ad Dominus dixit Et .filium peperit & ,concepit *&*
ותהר ותלד בן ויאמר יהוה אלי קרא
antequam Quia .prædam acceleravit ſpolium Feſtinando : ejus nomen
4 שמו מהר שלל חש בז׃ כי בטרם
, Dammeſec *facultatem* tollet, mea mater & mi pater, vocare puer ſciat
ידע הנער קרא אבי ואמי ישא את־חיל דמשק
Dominus adjecit Et .Aſſur *regis facies ad* Someron *ſpolium* &
5 ואת שלל שמרון לפני מלך אשור׃ ויסף יהוה
iſte populus *reprobavit* quòd eo Pro : dicendo ,adhuc me ad loqui
6 דבר אלי עוד לאמר׃ יען כי מאס העם הזה
filio & , Reſin *cum* gaudium & ,*leniter euntes* , Silloach aquas
את מי השלח ההלכים לאט ומשוש את־רצין ובן־
eos ſuper *faciens* aſcendere Dominus ecce ideo Et .Remaljahu
7 רמליהו׃ ולכן הנה אדני מעלה עליהם
, Aſſur regem , multas & , fortes fluminis aquas
את־מי הנהר העצומים והרבים את־מלך אשור
ibit & ,ejus *decurſus* omnes ſuper aſcendet &,ejus gloriam omnem &
ואת־כל־כבודו ועלה על־כל־אפיקיו והלך
, tranſibit & ,inundabit ,Jehudah per tranſibit Et .ejus ripas omnes ſuper
8 על־כל־גדותיו׃ וחלף ביהודה שטף ועבר
plenitudo ,ejus alarum *extenſiones* erit & : pertinget collum ad uſque
עד־צואר יגיע והיה מטות כנפיו מלא־
,conterimini & ,populi Confringimini .el-Himmanu tuæ terræ latitudinis
9 רחב ארצך עמנו אל׃ רעו עמים וחתו
:conterimini & ,vos accingite:terræ longinqui univerſi auribus percipite &
והאזינו כל מרחקי־ארץ התאזרו וחתו
: diſſipabitur & , conſilium Conſiliamini .conteremini & ,vos accingite
10 התאזרו וחתו׃ עצו עצה ותפר
ſic Nam .*el-Himmanu* quia , ſtabit non & , verbum loquimini
11 דברו דבר ולא יקום כי עמנו אל׃ כי כה
cundo ab me erudivit & ,*manus* fortitudine In : me ad Dominus dixit
אמר יהוה אלי בחזקת היד ויסרני מלכת
, conjuratio , dicatis Non .dicendo , hujus populi via in
12 בדרך העם־הזה לאמר׃ לא־תאמרון קשר
ejus timorem & : conjuratio ,iſte populus *dicet* quæ omnia ad
לכל אשר־יאמר העם הזה קשר ואת־מוראו
ipſum exercituum Dominum .pavebitis non & ,timebitis non
13 לא־תיראו ולא תעריצו׃ את־יהוה צבאות אתו
erit Et .veſter pavor ipſe & , veſter timor ipſe & , ſanctificabitis
14 תקדישו והוא מוראכם והוא מעריצכם׃ והיה
duabus ,offenſionis petram in & ,percuſſionis lapidem in & .*ſanctuarium* in
למקדש ולאבן נגף ולצור מכשול לשני
.Jeruſalaim habitanti rete in & , laqueum in , Iſrael domibus
בתי ישראל לפח ולמוקש ליושב ירושלם׃
, irretientur & ,conterentur & ,cadent & , plurimi his in impingent Et
15 וכשלו בם רבים ונפלו ונשברו ונוקשו
.meis diſcipulis cum legem obſigna , *conteſtationem* Liga .capientur &
16 ונלכדו׃ צור תעודה חתום תורה בלמדי׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. VIII.

1 ET dixit Dominus ad me; Sume
tibi librum grandem, &
ſcribe in eo ſtylo hominis; Velociter
ſpolia detrahe, citò prædare.
2 Et adhibui mihi teſtes fideles,
Uriam ſacerdotem, &
Zachariam filium Barachiæ:
3 Et acceſſi ad prophetiſſam, &
concepit, & peperit filium. Et
dixit Dominꝰ ad me; Voca nomen
ejus, Accelera ſpolia detrahere:
4 Feſtina prædari. Quia
antequàm ſciat puer vocare patrem
ſuũ & matrem ſuam, auferetur
fortitudo Damaſci, &
ſpolia Samariæ, corã rege Aſſyriorum.
5 Et adjecit Dominus
6 loqui ad me adhuc, dicens; Pro
eo quòd abjecit populus iſte aquas
Siloë, quæ vadunt cum
ſilentio, & aſſumpſit magis
7 Raſin, & filium Romeliæ: Propter
hoc ecce Dominus adducet
ſuper eos aquas fluminis
fortes & multas, regem Aſſyriorum,
& omnem gloriam ejus:
& aſcendet ſuper omnes
rivos ejus, & fluet ſuper univerſas
8 ripas ejus, Et ibit per
Judam, inundans, & tranſiens
uſque ad collum veniet. Et erit
extenſio alarum ejus, implens
latitudinem terræ tuæ, O Emmanuel.
9 Congregamini populi,
& vincimini, & audite univerſæ
procul terræ: confortamini,
& vincimini, accingite
10 vos & vincimini: Inite conſilium,
& diſſipabitur: loquimini
verbum, & non fiet: quia nobiſcum
11 Deus. Hæc enim ait
Dominus ad me; Sicut in manu
forti erudivit me, ne irem
12 in via populi hujꝰ, dicens; Non
dicatis, Conjuratio: omnia enim
quæ loquitur populus iſte, conjuratio
eſt: & timorem ejus ne
13 timeatis, neque paveatis. Dominum
exercituum ipſum ſanctificate:
ipſe pavor veſter, &
14 ipſe terror veſter. Et erit vobis
in ſanctificationem. In lapidem
autem offenſionis, et in petram
ſcandali, duabus domibus Iſrael,
in laqueum & in ruinam
15 habitantibꝰ Jeruſalem. Et offendent
ex eis plurimi, & cadent,
& conterentur, & irretientur,
16 & capientur. Liga teſtimonium,
ſigna legem in diſcipulis meis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. η΄.

1 ΚΑὶ εἶπε κύριος πρός με, Λάβε σεαυτῷ
τόμον (α) καινοῦ μεγάλου, ϗ γράψον εἰς αὐτὸν
γραφίδι ἀνθρώπου, Τοῦ ὀξέως προνομὴν
2 ποιῆσαι σκύλων· Πάρεστι γάρ· ϗ μάρτυράς
μοι ποίησον πιστοὺς ἀνθρώπους, τὸν Οὐρίαν ϗ
3 Ζαχαρίαν υἱὸν Βαραχίου. Καὶ (β) προσῆλθον
πρὸς τὴν προφῆτιν, ϗ (γ) ἐν γαστρὶ ἔλαβε,
ϗ ἔτεκεν υἱόν· ϗ εἶπε κύριός μοι, Κάλεσον
τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Ταχέως σκύλευσον, ὀξέως
4 προνόμευσον· Διότι πρὶν ἢ γνῶναι τὸ παιδίον
καλεῖν πατέρα ἢ μητέρα, λήψεται δύναμιν
Δαμασκοῦ, ϗ τὰ σκῦλα Σαμαρείας ἔναντι
5 βασιλέως Ἀσσυρίων. Καὶ προσέθετο
6 κύριος λαλῆσαί μοι ἔτι· Διὰ τὸ μὴ βούλεσθαι
τὸν λαὸν τοῦτον τὸ ὕδωρ τοῦ Σιλωὰμ
τὸ πορευόμενον ἡσυχῆ, ἀλλὰ βούλεσθαι ἔχειν
τὸν (δ) Ῥαασὶν ϗ τὸν υἱὸν Ῥομελίου βασιλέα
7 ἐφ᾽ ὑμῶν, Διὰ τοῦτο ἰδοὺ (ε) κύριος ἀνάγει
ἐφ᾽ ὑμᾶς τὸ ὕδωρ τοῦ ποταμοῦ, τὸ
ἰσχυρὸν καὶ τὸ πολύ, τὸν βασιλέα τῶν
Ἀσσυρίων, ϗ τὴν δόξαν αὐτοῦ. ϗ ἀναβήσεται
ἐπὶ πᾶσαν φάραγγα ὑμῶν, ϗ περιπατήσει
8 ἐπὶ πᾶν τεῖχος ὑμῶν, Καὶ ἀφελεῖ
ἀπὸ τῆς Ἰουδαίας ἄνθρωπον, ὃς δυνήσεται
κεφαλὴν ἆραι, (ζ) ἢ δυνατὸν συντελέσασθαί
τι· ϗ ἔσται ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ, (η)
ὥστε πληρῶσαι τὸ πλάτος τῆς χώρας σου·
9 μεθ᾽ ἡμῶν ὁ θεός. Γνῶτε ἔθνη ϗ ἡττᾶσθε,
(θ) ἐπακούσατε ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς· ἰσχυκότες
ἡττᾶσθε· ἐὰν γὰρ πάλιν ἰσχύσητε, πάλιν
10 ἡττηθήσεσθε. Καὶ ἣν ἂν βουλεύσησθε βουλήν,
διασκεδάσει κύριος· ϗ (·) λόγον ὃν
ἐὰν λαλήσητε, οὐ μὴ ἐμμείνῃ (ι) ἐν ὑμῖν·
11 ὅτι μεθ᾽ ἡμῶν ὁ θεός. Οὕτω λέγει κύριος,
Τῇ ἰσχυρᾷ χειρὶ ἀπειθοῦσι τῇ πορείᾳ
12 τῆς ὁδοῦ τοῦ λαοῦ τούτου, λέγοντες, Μήποτε
(κ) εἴπωσι, Σκληρόν· πᾶν γὰρ ὃ ἐὰν
εἴπῃ ὁ λαὸς οὗτος, σκληρόν ἐστι. τὸν δὲ φόβον
αὐτοῦ οὐ μὴ φοβηθῆτε οὐδὲ (λ) μὴ ταραχθῆτε.
13 Κύριον αὐτὸν ἁγιάσατε, ϗ αὐτὸς ἔσται
14 σου φόβος. (μ) Κἂν ἐπ᾽ αὐτῷ πεποιθὼς
ἦς, ἔσται σοι εἰς ἁγίασμα, ϗ οὐχ ὡς
λίθου προσκόμματι (ν) συναντήσεσθε, οὐδὲ
ὡς πέτρας πτώματι. (ξ) οἱ δὲ οἶκοι Ἰακὼβ
ἐν παγίδι, ϗ ἐν κοιλάσματι ἐγκαθήμενοι
15 ἐν Ἱερουσαλήμ. Διὰ τοῦτο ἀδυνατήσουσιν
ἐν αὐτοῖς πολλοί, ϗ πεσοῦνται ϗ συντριβήσονται,
ϗ ἐγγιοῦσι, ϗ ἁλώσονται ἄνθρωποι
16 (ο) ἐν ἀσφαλείᾳ. Τότε φανεροὶ ἔσονται
οἱ σφραγιζόμενοι τὸν νόμον (π)
τοῦ μὴ μαθεῖν.

MS. A. (α) χάρτου καινοῦ μεγάλου, (β) προσῆλθεν (γ) ἐν γαστρὶ (δ) Ῥα-
σὼν (ε) ἀνάγει κύριος (ζ) εἰ δυνατὸν συντελέσαι (η) τὰ πλάτη τῆς χώρας
σου· (θ) ἐπακούσατε (·) τὸν λόγον (ι) ὑμῖν· ὅτι μεθ᾽ ἡμῶν κύριος ὁ θεός
Οὕτως λέγει κύριος ὁ θεός, (κ) εἴπητε, (λ) οὐδ᾽ οὐ μὴ (μ) Καὶ ἐὰν (ν) συν-
αντήσεσθαι αὐτῷ, (ξ) ὁ δὲ οἶκος (ο) ἐν ἀσφαλείᾳ ὄντες. (π) τοῦ μαθεῖν

CAP. VIII.

ET dixit Dominus ad me, Sume
tibi tomum (a) *novi magni: &*
ſcribe in eo, hominis ſtylo, ut velociter
deprædationem facias ſpoliorum.
Adeſt enim: & teſtes mihi
fac fideles homines, (b) *Uriam &*
Zachariam filium Barachiæ. Et
acceſſi ad prophetiſſam: et in utero
concepit, & peperit filium. Et dixit
Dominus mihi; Voca nomen ejus,
Citò ſpolia, velociter deprædare.
Quia, antequàm ſciat puer vocare
patrem, aut matrem, tollet virtutem
Damaſci, & ſpolia Samariæ
coram rege Aſſyriorum. Et adjecit
Dominus loqui mihi adhuc.
Eò quòd populus hic non vult
aquam Siloam, quæ vadit cum ſilentio,
ſed vult habere Raſin, &
filium Romeliæ regem ſuper vos:
Propterea ecce Dominus adducet
ſuper vos aquam fluminis fortem
& multam, regem Aſſyriorum, &
gloriam ejus. Et aſcendet ſuper omnem
convallem veſtram, & (d)
ambulabit ſuper omnem murum
veſtrum: Et auferet de Judæa
hominem, qui poſſit caput levare
aut fortem aliquid facere. Et erunt
caſtra ejus, ut impleant latitudinem
regionis tuæ. Nobiſcum Deus.
(e) *Cognoſcite gentes, & vincimini:*
exaudite uſque ad extremum
terræ: qui prævaluiſtis, vincemini.
Nam ſi rurſus prævalueritis, rurſus
vincemini: Et quodcunque conſilium
conſultaveritis, diſſipabit
Dominus: & verbum, quodcunque
loquuti fueritis, non manebit
*in vobis, quia * nobiſcum Deus. Sic*
dicit Dominus; Forti manu recedunt
ab itinere viæ populi hujus,
dicentes; Ne fortè (f) *dicant, Durum.*
Omne enim quicquid dixerit
*populus iſte, * durum eſt. Timorem*
autem ejus ne timueritis, neque conturbemini.
(g) *Dominum ipſum*
ſanctificate: & ipſe erit timor
tuus. Et, ſi in ipſo confiſus fueris,
erit tibi in ſanctificationem: et
non, ut lapidi offenſionis occurretis,
neque ut petræ ruinæ. Domus
autem Jacob in laqueo, & in
convalle ſedentes in Hieruſalem.
Ideò infirmi erunt in ipſis multi,
& cadent & conterentur: & appropinquabunt,
& capientur
homines in tuitione. Tunc manifeſti
erunt, qui (k) *ſignant legem, ut*
non diſcant legem.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ח

1 ואמר יי לי סב לך לוח רב וכתוב עלוהי כתב מפרש מוחי למבז בזא ולמעדי עדאה׃
2 ואסהיד קדמי סהידין מהימנין ית לוטיא דאמרית לאיתאה בנבואת אוריה כהנא והא
אתו אף כן כל נחמתא דאמרית לאיתאה בנבואת זכריה בר יברכיא אנא עתיד
3 לאיתאה׃ ועלית לות נביאתא ועדיאת וילדת בר ואמר יי לי קרי שמיה מוחי למבז בזא
4 ולמעדי עדאה׃ ארי עד לא ידע עולמא מקרי אבא ואמא ישבי ית נכסי דמשק וית עדאי
5 6 שמרון קדם מלכא דאתור׃ ואוסיף מימרא דיי למללא עמי עוד למימר׃ חלף דקץ
עמא הדין במלכותא דבית דוד דמדבר להון בניח כמי שלוחא דנגדין בניח ואתרעיאו
7 ברצין ובר רמליה׃ בכן הא יי מיתי ומסיק עליהון ית משרית עממיא דסגיאין כמי
נהרא תקיפיא וחסיניא ית מלכא דאתור וית כל משריתיה ויסק על כל פצידוהי ויהך
8 על כל כיפוהי׃ ויעדי בארעא דבית יהודה כנחל מגבר עד ירושלם ימטי ויהי עם
9 משריתיה מלי פתאי ארעך עמנו אל׃ אתחברו עממיא ואתברו ואציתו כל די בסיפי
10 ארעא אתקפו ואתברו אתקפו ואתברו׃ אתמליכו מלך ויעדי מלילו פתגמא ולא
11 יתקים ארי בסעדנא אלהא׃ ארי כדנן אמר יי לי במתקף נבואתא ואלפני מלמהך
12 באורח עמא הדין למימר׃ לא תימרון מרוד לכל דימר עמא הדין מרוד ולדחלתיה לא
13 תדחלון ועל תוקפיה לא תימרון תקיף׃ ית יי צבאות יתיה תימרון קדיש והוא דחלתכון
14 והוא תוקפכון׃ ואם לא תקבלון ויהי מימריה בכון לפורען ולאבן מחי ולכיף מתקל
לתרין בתי רברבי ישראל לתבר ולתקלא על דאתפליגו על דבית יהודה דיתבין
15 16 בירושלם׃ ויתקלון בהון סגיאין ויפלון ויתברון ויתצדון ויתאחדון׃ נביא טר סהדותא
לא תסהיד בהון ארי לא מקבלין חתום וטמר אוריתא לא צבן דילפון בה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. VIII.

ET dixit Dominus ad me: Sume tibi tabulam grandem, & ſcribe in
ſcripturam claram: Feſtina ad prædandum prædam, & auferendum
lium. Et conteſtare coram me teſtibus fidelibus maledictiones quas
ut inducerem in *prophetia* Uriæ ſacerdotis: Ecce venerunt. Et
omnes conſolationes, quas dixi *ut adducerem* in prophetia Zachar
Barachiæ, ego adducturus ſum. Et ingreſſus ſum ad prophetiſſam: &
cepit & peperit filium. Et dixit Dominus ad me: Voca nomen ejus
ſtina ad prædandum prædam, & auferendum ſpolium. Quoniam ante
ſciat puer vocare patrem & matrem, capientur ſubſtantiæ Dama
ſpolia Samariæ, coram rege Aſſyriæ. Et addidit Verbum Domini
mecum rurſus dicens. Pro eo quod abjecit populꝰ hic regnum domꝰ D
qui regebat eos in quiete, ſicut aquæ Siloe, quæ defluunt in quiete, &
runt Raſin & filium Romeliæ: Propterea ecce Dñs *adducet &*
faciet ſuper eos caſtra populorum, quæ magna ſunt ſicut aquæ
fortes & multæ; regem Aſſyriæ, & omnem exercitum ejus: &
ſuper omnes rivos ejus, & ibit ſuper univerſas ripas ejus. Et
per terram domus Judæ ſicut torrens inundans: uſque ad Hieruſalem
venient: & erit populus exercitus ejus implens plenitudinem terræ
Emanuel. Congregamini populi & conterimini; auſcultate omnes
eſtis in finibus terræ: confortamini & conterimini: confortamini &
terimini. Inite conſilium & diſſipabitur, loquimini verbum, & non
firmabitur; quia in adjutorium noſtrum eſt Deus. Quia hæc ait Dom
mihi in fortitudine prophetiæ, & docuit me, ne ambularem in via
hujus, dicens: Ne dicatis rebellionem, pro omni quod dicit popu
rebellionem; & timorem ejus ne timeatis, & fortitudinem ejus ne
tis eſſe fortitudinem. Dominum exercituum ipſum dicetis ſanctum
ipſe eſt timor veſter, & ipſe eſt fortitudo veſtra. Et ſi non o
erit verbum ejus vobis in ultionem & in lapidem percutientem
tram ſcandali duabus domibus principum Iſrael, & in interitum
ſcandalum his qui diviſi ſunt de domo Juda, & habitantibus
lem. Et offendent in eis multi & cadent, & conterentur, & deſtruentur, & capientur. Propheta ſerva teſtimonium, ne teſtificeris eis quia non obediunt
abſconde legem, quia non volunt diſcere eam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܚ *

* ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܣܒ ܠܟ ܦܢܩܝܬܐ ܪܒܬܐ. ܘܟܬܘܒ ܒܗ ܒܟܬܒܐ ܕܒܪܢܫܐ. 1
ܠܡܣܪܗܒܘ ܫܒܝܐ. ܘܠܡܒܙܙܘ ܒܙܬܐ. * ܘܣܗܕ ܠܝ ܣܗܕܐ ܡܗܝܡܢܐ. ܠܐܘܪܝܐ ܟܗܢܐ 2
ܘܠܙܟܪܝܐ ܒܪ ܒܪܟܝܐ. * ܘܩܪܒܬ ܠܢܒܝܬܐ. ܘܒܛܢܬ ܘܝܠܕܬ ܒܪܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. 3
ܩܪܝ ܫܡܗ. ܡܣܪܗܒ ܫܒܝܐ ܘܡܒܙܙ ܒܙܬܐ. * ܡܛܠ ܕܥܕܠܐ ܢܕܥ ܛܠܝܐ ܠܡܩܪܐ ܐܒܐ ܘܐܡܐ. 4
ܢܫܩܘܠ ܚܝܠܗ ܕܕܪܡܣܘܩ. ܘܒܙܬܐ ܕܫܡܪܝܢ. ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. * ܘܐܘܣܦ ܬܘܒ 5
ܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ ܠܝ. * ܠܐ ܕܐܣܠܝ ܥܡܐ ܗܢܐ. ܡܝܐ ܕܫܝܠܘܚܐ ܕܪܕܝܢ ܒܢܝܚܐ. ܘܚܕܝܘ 6
ܒܪܨܝܢ ܘܒܒܪ ܪܡܠܝܐ. * ܡܛܠܗܢܐ. ܗܐ ܡܣܩ ܥܠܝܗܘܢ ܡܪܝܐ. ܡܝܐ ܕܢܗܪܐ ܥܫܝܢܐ 7
ܘܣܓܝܐܐ. ܠܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܘܠܟܠܗ ܐܝܩܪܗ. ܘܢܣܩ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܦܨܝܕܝܗܘܢ. ܘܢܗܠܟ.
ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܫܘܪܝܗܘܢ. * ܘܢܥܒܪ ܒܝܗܘܕܐ. ܘܢܗܦܘܟ. ܘܢܥܒܪ. ܘܥܕܡܐ ܠܨܘܪܐ ܢܡܛܐ. 8
ܘܢܗܘܐ. ܦܪܣܐ ܕܓܦܘܗܝ. ܡܠܐ ܦܬܝܗ ܕܐܪܥܟ ܥܡܢܘܐܝܠ. * ܙܘܥܘ ܥܡܡܐ 9
ܘܐܬܬܒܪܘ. ܘܨܘܬܘ ܟܠܗܘܢ ܕܒܪ̈ܘܚܩܝ ܐܪܥܐ. ܐܬܚܝܠܘ ܘܐܬܬܒܪܘ. * ܐܬܪܥܝܘ ܬܪܥܝܬܐ 10
ܘܬܬܒܛܠ. ܡܠܠܘ ܡܠܬܐ. ܘܠܐ ܬܩܘܡ. ܡܛܠ ܥܡܢܘܐܝܠ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. 11
ܐܝܟ ܡܐܚܕ ܐܝܕܐ. ܘܢܬܠܡܕܢܝ ܕܠܐ ܐܗܠܟ ܒܐܘܪܚܗ ܕܥܡܐ ܗܢܐ. * ܘܐܡܪ. ܠܐ ܬܐܡܪܘܢ 12
ܡܪܕܐ. ܘܡܢ ܕܚܠܬܗܘܢ. ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ. ܘܠܐ ܬܬܙܝܥܘܢ. * ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܩܕܫܘ. ܘܗܘܝܘ 13
ܕܚܠܬܟܘܢ. ܘܗܘܝܘ ܡܬܢܨܚܢܟܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܠܡܩܕܫܐ. ܘܠܟܐܦܐ ܕܢܩܫܬܐ. ܘܠܫܘܥܐ 14
ܕܬܘܩܠܬܐ. ܠܬܪ̈ܝܗܘܢ ܒ̈ܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܦܚ̈ܐ ܘܠܡܨܝ̈ܕܬܐ ܠܥܡܘܪ̈ܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ.
* ܘܢܬܬܩܠܘܢ ܒܗܘܢ ܣܓܝܐܐ. ܘܢܦܠܘܢ ܘܢܬܬܒܪܘܢ. ܘܢܬܬܨܝܕܘܢ. ܘܢܬܐܚܕܘܢ. * ܨܪܘ 15 16
ܣܗܕܘܬܐ. ܘܚܬܘܡܘ ܢܡܘܣܐ.

CAP. VIII.

ET dixit mihi Dominus, Sume tibi volumen 1
magnum, & ſcribe in eo humano ſcribendi
more; Ad accelerandam captivitatem, 2
& ſolicitandam prædam. Et adhibe mihi teſtes
fideles, Uriam ſacerdotem, & Zachariam
filium Barachiæ. Deinde acceſſi ad prophetiſſam, 3
quæ concepit ac peperit filium:
& dixit ad me Dominus, Voca nomen ejus,
Celer ad captivitatem, & ſolicitus ad prædam:
Quia priuſquam nôrit hic puer proferre 4
Aba & Ema, aſportabit opes Damaſci
& ſpolia Samariæ ad regem Athur. Rurſus 5
dixit mihi Dominus; Quandoquidem ſpreverunt 6
populus iſte aquas Silohe pacatè fluentes,
& Raſane & filio Romeliæ gaudent;
Propterea efficiet Dominus ut aſcendant contra 7
iſtos aquæ fluvii copioſæ et ingentes, rex
videlicet Athur cum tota pompa ſua, qui
aſcendet ſuper omnes rivos eorum, & ambulabit
ſuper omnes muros eorum, Tranſibit 8
per Judæam, & converret; & tranſiens
ad collum uſque pertinget, & expanſio alarũ
ejus implebit latitudinem terræ tuæ O Amanuel.
Contremiſcite populi, & conterimini; 9
aurem præbete quotquot remotiſſimi eſtis in
terra: ſumite animos, & frangimini: Architectamini 10
conſilium, & irritum fiet: loquimini
verbum, & non ſubſiſtet propter
Amanuelem. Sic dixit mihi Dominus. Quaſi 11
manuum tenens abducat me ne ambulem in
via populi hujus. Et dixit, Ne dicatis, Rebellio: 12
& horum terrore ne percellamini,
neque expaveſcatis. Dominum potentem 13
ſanctificate; ipſe enim eſt timor veſter,
idémque eſt protector veſter. Et *idem* erit 14
in Sanctuarium, & in lapidem percuſſionis,
& in ſilicem offendiculi ambabus domibus 15
Iſraelis; in laqueos & retia habitatoribus
Jeruſalem: Et multi impingentes corruent 16
& confringentur, irretientur & capientur.
Colligate *vos* teſtimonium, & obſignate
legem:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثامن *

* وقال لي الرب خذ لك مدرجا صحيحا صحيفة جديدة كبيرة * واكتب فيها بكتابة انسان * 1
حاد ليصنع نهب الغنائم لانه حضر * واصنع لي شهودا اناسا ثقات * اوريا الكاهن وزكريا 2
ابن براشيا * وتقدمت الى النبية * وحبلت وولدت ابنا * وقال لي الرب * ادع اسمه اغنم 3
بسرعة وانهبوا بجد * من اجل انه من قبل ان يعلم الصبي يدعوا ابا او اما * ياخذ قوة 4
دمشق وغنائم السامرة امام ملك الموصليين * وعاد الرب يتكلم معي ايضا * من اجل ان 5 6
هذا الشعب لم يرد ماء شيلوحا الجاري بسكون * لكن يريدوا ان يكون لهم راصان وابن
روملياء ملكا عليهم * من اجل هذا يصعد الرب عليكم ماء النهر القوي الكثير ملك 7
الموصليين ومجده * فيصعد على كل غدرانكم ويحيط بكل سوركم * وينزع من اليهودية 8
الانسان الذي يستطيع ان يرفع راسا او يمكنه ان يكمل شيا ما * ويكون عسكره حتى
يملا عرض بلدتك * الله معنا * اعلموا ايها الامم وانكسروا * اسمعوا الى آخر الارض * 9
اذا تقويتم غلبتم * لانكم ايضا ان تقويتم تغلبون * واية مؤامرة تامرتم بها يبطلها الرب 10
واية كلمة تكلمتم بها لا تثبت فيكم * لان الله معنا * هكذا يقول الرب باليد القوية للعصاة 11
في مسلك طريق هذا الشعب * يقولون لئلا تقولون صعبا * لان كلما يقوله هذا الشعب هو 12
صعب * فمن خوفهم لا تخافوا ولا تضطربوا * قدسوا الرب وهو يكون خوفكم * واذا توكلت 13
عليه يكون لك عونا * وليس مثل حجر العثرة تستقبلوه * ولا مثل صخرة للسقطة * فاما بيت 14
يعقوب في فخ * وفي مصيدة الجلوس في اورشليم * من اجل هذا تضعف قوة كثيرين 15
فيهم * ويسقطون وينسحقون * ويدنون منهم الناس ويقتنصون عليهم بوثاق * حينئذ يصيرون 16
ظاهرين الذين يختمون على الناموس الا يتعلموها *

CAP. VIII.

PRetereà dixit mihi Dominus, Accipe 1
tibi volumen integrum, paginam novam
magnam, & ſcribe in ea ſtylo hominis:
Inhians ad diripienda ſpolia; adeſt enim.
Et adhibe mihi teſtes homines fidos, Uriam 2
ſacerdotem, & Zachariam filium
Barachiæ. Tunc acceſſi ad prophetiſſam, 3
quæ concepit peperitque filium:
dixitque mihi Dominus, Voca nomen
ejus, Spolia citò diripe, & avidè prædamini:
Nam quum nondum noverit hic 4
puer patrem aut matrem vocare, deferet
opulentiam Damaſci & ſpolia Samariæ
ad regem Aſſyriorum. Iterum etiam 5
allocutus eſt me Dominus, dicens; *Quoniam* 6
populus iſte non vult aquam Siloæ
tranquillè decurrentem, ſed volunt ut
Raſan & filius Romeliæ ſit rex ſuper
eos; Idcirco immittet Dominus in vos aquam 7
fluminis rapidam ingentem, regem
Aſſyriorum & gloriam ejus: qui aſcendens
ſuper omnes canales veſtros, totumque
murum veſtrum cingens: Auferet 8
à Judæa eum qui poteſt attollere
caput, aut aliquid perficere valet: eritque
exercitus ejus talis *ut impleat latitudinem*
regionis tuæ. Deus nobiſcum
ſit. Scitote hoc *O populi, & conſternamini:* 9
audite uſque ad extrema terræ.
Etiamſi animos ſumatis, vincemini; etiamſi,
inquam animos ſumpſeritis, ſuperabimini:
Et quodcunque conſilium inieritis, 10
irritum faciet illud Dominus: &
quemcunque ſermonem locuti fueritis,
haud conſtans erit in vobis; quia Deus
nobiſcum eſt. Sic dicit Dominus in manu 11
forti ad eos qui ſunt rebelles perambulando
in via hujus populi: Dicit, inquam; 12
Ne fortè dicatis, Difficile eſt:
quicquid enim dicit populus iſte, Difficile
eſt. Metu eorum ne terreamini, neve
turbemini. Dominum ſanctificate, 13
& is ſit timor veſter: nam ſi fiduciam
in eo collocaveris, præſidio tibi
erit; Neque ut in petram offendiculi 14
incideris in eum, neque ut in ſcopulum
exitialem. At verò domus Jacob
erit in laqueo, & in tendiculis cives
Jeroſolymorum. Hac de cauſa remittentur 15
vires multorum inter eos, corruent,
& conterentur; & accedentes
ad eos homines, diſpergentur adverſus
eos cum tumultu. Tunc fient 16
manifeſti qui legem ſigillo obſerant ne
addiſcant eam:

יְשַׁעְיָה : ט

domo à *suis facies abscondentem* , DOMINUM præstolabor Et
17 וְחִכִּיתִי לַיהוָה הַמַּסְתִּיר פָּנָיו מִבֵּית
quos *nati* & ego Ecce .eum expectabo & , Jahacob
18 יַעֲקֹב וְקִוֵּיתִי לוֹ׃ הִנֵּה אָנֹכִי וְהַיְלָדִים אֲשֶׁר
: Israel in portenta *in* & , signa *in* DOMINUS mihi dedit
נָתַן־לִי יְהוָה לְאֹתוֹת וּלְמוֹפְתִים בְּיִשְׂרָאֵל
.Sijon monte in *habitante* exercituum DOMINO *cum à*
מֵעִם יְהוָה צְבָאוֹת הַשֹּׁכֵן בְּהַר צִיּוֹן׃
ad & , *pythones ad* Quærite : vos ad dixerint cùm Et
19 וְכִֽי־יֹאמְרוּ אֲלֵיכֶם דִּרְשׁוּ אֶל־הָאֹבוֹת וְאֶל־
ad populus *Nonne* : *susurrantes &* , *garrientes sciolos*
הַיִּדְּעֹנִים הַמְצַפְצְפִים וְהַמַּהְגִּים הֲלֹא־עַם אֶל־
, legem *Ad* ?mortuos *ad* vivis pro , requiret *suos deos*
20 אֱלֹהָיו יִדְרֹשׁ בְּעַד הַחַיִּים אֶל־הַמֵּתִים׃ לְתוֹרָה
quo hoc verbum juxta sunt dicturi non si : *contestationem* ad &
וְלִתְעוּדָה אִם־לֹא יֹאמְרוּ כַּדָּבָר הַזֶּה אֲשֶׁר
, erit & : esuriens & ,induratus ipsam per transibit Et .*aurora ei non*
21 אֵין־לוֹ שָׁחַר׃ וְעָבַר בָּהּ נִקְשֶׁה וְרָעֵב וְהָיָה
,*suum Deum in* & , *suum regem in* maledicet & ,irascetur & ,esurierit cum
כִֽי־יִרְעַב וְהִתְקַצַּף וְקִלֵּל בְּמַלְכּוֹ וּבֵאלֹהָיו
, tribulatio ecce & ,intuebitur terram in Et .sursum respiciet &
22 וּפָנָה לְמָעְלָה׃ וְאֶל־אֶרֶץ יַבִּיט וְהִנֵּה צָרָה
.*impulsus caligine* & ,*coarctationis obtenebratio* , *tenebrositas* &
וַחֲשֵׁכָה מְעוּף צוּקָה וַאֲפֵלָה מְנֻדָּח׃

CAP. IX. ט

primum tempus secundùm ea in coarctatus qui ei , *obtenebratus* non Quia
1 כִּי לֹא מוּעָף לַאֲשֶׁר מוּצָק לָהּ כָּעֵת הָרִאשׁוֹן
postremum & , Naphthali terram & , Zebulun terram *alleviavit*
הֵקַל אַרְצָה זְבוּלֻן וְאַרְצָה נַפְתָּלִי וְהָאַחֲרוֹן
.gentium Ghelil Jarden trans maris viam fecit aggravari
הִכְבִּיד דֶּרֶךְ הַיָּם עֵבֶר הַיַּרְדֵּן גְּלִיל הַגּוֹיִם׃
habitantibus : magnam lucem *viderunt* ,*tenebrositate in ambulantes* Populus
2 הָעָם הַהֹלְכִים בַּחֹשֶׁךְ רָאוּ אוֹר גָּדוֹל יֹשְׁבֵי
Multiplicasti .eos super splenduit lux , mortis umbræ terra in
3 בְּאֶרֶץ צַלְמָוֶת אוֹר נָגַהּ עֲלֵיהֶם׃ הִרְבִּיתָ
tuas facies ad sunt lætati : lætitiam magnificasti *non* , gentem
הַגּוֹי לֹא הִגְדַּלְתָּ הַשִּׂמְחָה שָׂמְחוּ לְפָנֶיךָ
ipsos dividendo in exultabunt quemadmodum , messe in lætitiam secundùm
כְּשִׂמְחַת בַּקָּצִיר כַּאֲשֶׁר יָגִילוּ בְּחַלְּקָם
, ejus humeri virgam & , ejus oneris jugum Nam .*spolium*
4 שָׁלָל׃ כִּי אֶת־עֹל סֻבֳּלוֹ וְאֵת מַטֵּה שִׁכְמוֹ
Quia .Midian diem secundùm ,confregisti ,eo in exactoris sceptrum
5 שֵׁבֶט הַנֹּגֵשׂ בּוֹ הַחִתֹּתָ כְּיוֹם מִדְיָן׃ כִּי
: *sanguinibus in* involutum vestimentum &,*strepitu in configentis pugna* omnis
כָל־סְאוֹן סֹאֵן בְּרַעַשׁ וְשִׂמְלָה מְגוֹלָלָה בְדָמִים
gnatus Quia .ignis cibus combustionem ad erit &
6 וְהָיְתָה לִשְׂרֵפָה מַאֲכֹלֶת אֵשׁ׃ כִּי־יֶלֶד
,ejus humerum super principatus erit &,nobis est datus fili⁹,nobis est nat⁹
יֻלַּד־לָנוּ בֵּן נִתַּן־לָנוּ וַתְּהִי הַמִּשְׂרָה עַל־שִׁכְמוֹ
pater , fortis ,Deus,consiliarius,Admirabilis,ejus nomen vocabitur &
וַיִּקְרָא שְׁמוֹ פֶּלֶא יוֹעֵץ אֵל גִּבּוֹר אֲבִי־
.pacis princeps,*æternitatis*
עַד שַׂר־שָׁלוֹם׃

Versio VULG. LAT.

17 Et expectabo Dominum, qui abscondit faciem suam à domo Jacob, & præstolabor eum. 18 Ecce ego & pueri mei, quos dedit mihi Dominus in signū, & in portentum Israel à Domino exercituum, qui habitat 19 in monte Sion. Et cùm dixerint ad vos; Quærite à pythonibus, & à divinis, qui strident in incantationibus suis: Numquid non populus à Deo suo requiret, pro vivis à mortuis? 20 Ad legem magis, & ad testimonium. Quòd si non dixerint juxta verbum hoc, non erit eis 21 matutina lux. Et transibit per eam, corruet, & esuriet: & cùm esurierit, irascetur, & maledicet regi suo, & Deo suo, & su-22 spiciet sursum. Et ad terram intuebitur, & ecce tribulatio et tenebræ, dissolutio & angustia, & caligo persequens, & non poterit avolare de angustia sua.

CAP. IX.

1 PRimo tempore alleviata est terra Zabulon, & terra Nephthali: et novissimo aggravata est via maris trans Jordanem 2 Galilææ Gentium. Populus, qui ambulabat in tenebris, vidit lucem magnam: habitantibus in regione umbræ mor-3 tis, lux orta est eis. Multiplicâsti gentem, non magnificâsti lætitiam. Lætabuntur coram te, sicut qui lætantur in messe, sicut exultant victores captâ prædâ, quando dividūt spolia. 4 Jugum enim oneris ejus, et virgam humeri ejus, et sceptrum exactoris ejus superâsti, sicut in 5 die Madian. Quia omnis violenta prædatio cum tumultu, et vestimentum mistum sanguine, erit in combustionem, et cibus 6 ignis. PARVULUS enim NATUS est nobis, et filius datus est nobis, et factus est principatus super humerum ejus: et vocabitur nomen ejus, Admirabilis, consiliarius, Deus, fortis, pater futuri seculi, princeps pacis.

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Translatione LATINA.

17 Καὶ ἐρεῖ, Μενῶ τὸν Θεὸν τὸν ἀποστρέψαντα τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ οἴκου Ἰακώβ, καὶ πεποιθὼς ἔσομαι ἐπ' αὐτῷ. 18 Ἰδοὺ ἐγὼ καὶ τὰ παιδία ἅ μοι ἔδωκεν ὁ Θεός. καὶ ἔσται (ρ) σημεῖα καὶ τέρατα (σ) ἐν τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ παρὰ Κυρίου Σαβαὼθ, ὃς κατοικεῖ ἐν τῷ ὄρει Σιών. 19 Καὶ ἐὰν εἴπωσι πρὸς ὑμᾶς, Ζητήσατε τοὺς (τ) ἐγγαστριμύθους, καὶ τοὺς ἀπὸ τῆς γῆς φωνοῦντας, τοὺς κενολογοῦντας, οἳ (υ) ἐκ τῆς κοιλίας φωνοῦσιν· οὐκ ἔθνος πρὸς Θεὸν (φ) αὐτοῦ ἐκζητήσουσι; τί ἐκζητοῦσι περὶ τῶν ζώντων τοὺς νεκρούς; 20 Νόμον γὰρ εἰς βοήθειαν ἔδωκεν, ἵνα εἴπωσιν οὐχ ὡς τὸ ῥῆμα τοῦτο, περὶ οὗ οὐκ ἔστι δῶρα δοῦναι περὶ αὐτοῦ. 21 Καὶ ἥξει ἐφ' ὑμᾶς σκληρὰ λιμὸς, καὶ ἔσται ὡς ἂν πεινάσητε, λυπηθήσεσθε, καὶ κακῶς ἐρεῖτε τὸν ἄρχοντα καὶ τὰ πάτρια. καὶ ἀναβλέψονται εἰς τὸν οὐρανὸν ἄνω, 22 Καὶ εἰς τὴν γῆν κάτω ἐμβλέψονται· καὶ ἰδοὺ (χ) ἀπορία στενὴ, καὶ σκότος, θλῖψις, καὶ στενοχωρία, καὶ σκότος, ὥστε μὴ βλέπειν. καὶ οὐκ ἀπορηθήσεται ὁ ἐν στενοχωρίᾳ (ψ) ὢν ἕως καιροῦ.

Et dicet; Expectabo Deum, qui avertit faciem suam à domo Jacob: & fidens ero super eum. Ecce ego, & pueri, quos dedit mihi Deus. Et erunt signa, & portenta in domo Israel à Domino Sabaoth, qui habitat in monte Sion. Et si dixerint ad vos; Quærite ventriloquos, & eos qui de terra loquuntur, vana loquentes, qui de ventre clamitant; nonne gens ad Deum suum exquirent? Quid exquirunt de vivis mortuos? Legem enim in auxilium dedit, ut dicant non ut verbum hoc, pro quo non est dare munera pro eo. Et veniet super vos dura fames: & erit, ut cum esurieritis, contristabimini, et maledicetis principem, & paterna. Et aspicient in cœlum sursum: Et in terram deorsum inspicient: & ecce (l) egestas angusta, & tenebræ, tribulatio, & angustia, & tenebræ, ut non sit videre: (m) & non deficiet, qui in angustia fuerit, usque ad tempus.

MS.A. (ρ) εἰς σημεῖα (σ) ἐν τῷ Ἰσραὴλ (τ) ἀπὸ τῆς γῆς φωνοῦντας, καὶ τοὺς ἐγγαστριμύθους, (υ) ἀπὸ τῆς κοιλίας (φ) αὐτοῦ τί ἐκζητῶσιν περὶ (χ) θλῖψις καὶ στενοχωρία, καὶ σκότος, ἀπορία στενὴ, καὶ σκότος, (ψ) ἕως καιροῦ.

ΚΕΦ. Θ'.

1 ΤΟῦτο πρῶτον πίε· ταχὺ ποίει χώρα Ζαβουλὼν, ἡ γῆ Νεφθαλεὶμ, (α) καὶ οἱ λοιποὶ οἱ τὴν παραλίαν, καὶ πέραν τοῦ Ἰορδάνου Γαλιλαία τῶν ἐθνῶν (β). 2 Ὁ λαὸς ὁ πορευόμενος ἐν σκότει, ἴδετε φῶς μέγα· οἱ κατοικοῦντες ἐν χώρᾳ (γ) σκιᾷ θανάτου, φῶς λάμψει ἐφ' ὑμᾶς. 3 Τὸ πλεῖστον τοῦ λαοῦ, ὃ κατήγαγες ἐν εὐφροσύνῃ σου· καὶ εὐφρανθήσονται ἐνώπιόν σου, ὡς οἱ εὐφραινόμενοι ἐν ἀμήτῳ, καὶ ὃν τρόπον (δ) οἱ διαιρούμενοι σκῦλα. 4 Διότι (ε) ἀφῄρηται ὁ ζυγὸς ὁ ἐπ' αὐτῶν κείμενος, καὶ ἡ ῥάβδος ἡ ἐπὶ τοῦ τραχήλου αὐτῶν· τὴν γὰρ ῥάβδον τῶν ἀπαιτούντων (ζ) διεσκέδασεν, ὡς τῇ ἡμέρᾳ τῇ ἐπὶ Μαδιάμ. 5 Ὅτι πᾶσαν στολὴν ἐπισυνηγμένην δόλῳ, καὶ ἱμάτιον μετὰ καταλλαγῆς ἀποτίσουσιν· καὶ θελήσουσιν, εἰ (η) ἐγένοντο πυρίκαυστοι. 6 Ὅτι παιδίον ἐγεννήθη ἡμῖν, υἱὸς καὶ ἐδόθη (θ) ἡμῖν, οὗ ἡ ἀρχὴ ἐγενήθη ἐπὶ τοῦ ὤμου αὐτοῦ, καὶ (ι) καλεῖται τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Μεγάλης βουλῆς (κ) ἄγγελος· ἄξω γὰρ εἰρήνην ἐπὶ τοὺς ἄρχοντας, (λ) καὶ ὑγίειαν αὐτῷ.

CAP. IX.

HOc (a) primum bibe, celeriter (b) fac; regio Zabulon, terra Nephthalim, & reliqui, qui juxta mare, & trans Jordanem, Galilæa gentium. Populus, qui ambulabat in tenebris, (c) videte lumen magnum: qui habitatis in regione, (d) umbra mortis, lumen lucebit super vos. Plurima pars populi, (e) quā reduxisti in lætitia (f) tua: & lætabuntur in conspectu tuo, sicut qui lætantur in messe, & sicut qui dividunt spolia: Quia ablatum est jugum, quod supra ipsos positum, & virga, quæ super collo eorum. Virgam enim exactorum dissipavit, sicut die, quæ super Madiam: Quia omnem stolam congregatam dolo, & vestimentum cum commutatione restituent, & cupient, (g) si fiant igne combusti. Quia parvulus natus est nobis, filius & datus est nobis, cujus principatus factus est super humerum ejus, & vocatur nomen ejus, Magni consilii angelus. Adducam enim pacem super principes, & sanitatem ei.

MS.A. (α) ὁδὸν θαλάσσης, καὶ οἱ λοιποὶ οἱ τὴν παράλιον κατοικοῦντες, καὶ πέραν (β) τὰ μέρη τῆς Ἰουδαίας. Ὁ λαὸς καθήμενος ἐν σκότει, (γ) καὶ σκιᾷ εὐφραίνονται οἱ (ε) ἀφαιρεθήσεται (ζ) διεσκέδασεν κύριος, (η) ἐγενήθησαν ὑμῖν, (ι) καλέσει (κ) ἄγγελος, θαυμαστὸς, σύμβουλος, ἰσχυρὸς, ἐξουσιαστὴς, ἄρχων εἰρήνης, πατὴρ τοῦ μέλλοντος αἰῶνος. Ἐγὼ γὰρ ἄξω (λ) εἰρήνην

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

17 אֲמַר נְבִיָא עַל דָא צַלֵיתִי קֳדָם יְיָ דַאֲמַר לְסַלָקָא שְׁכִנְתֵּיהּ מִדְבֵית יַעֲקֹב וּבְעֵיתִי מִן
18 קֳדָמוֹהִי׃ הָא עַד דַאֲנָא קַיָם וְעוּלֵמַיָא דִיהַב לִי יְיָ יִתְקַיְמוּן בְּנָא אָתִין וּמוֹפְתִין דַאֲמִירָן
לְמֵיתֵי עַל יִשְׂרָאֵל דְאִם יֶחֱזוּן וִיתוּבוּן תִּבְטַל גְזֵירְתָא דִי גְזַרָא עֲלֵיהוֹן דִיגְלוֹן מִלְאִתְחֲזָאָה
19 קֳדָם יְיָ צְבָאוֹת דִי שְׁכִנְתֵּיהּ בְּטוּרָא דְצִיוֹן׃ וַאֲרֵי יֵימְרוּן לְכוֹן עַמְמַיָא דְאַתּוּן בֵּינֵיהוֹן תִּבְעוּ
מִן בִּדִין וּמִן זְכוּרוּ דְמַנְצְפִין וּדְמַנְהֲמִין הֲלָא כֵן אוֹרַח עַמְמַיָא פָלְחֵי טַעֲוָתָא עַמָא מִן
20 טַעֲוָתֵיהּ תָּבְעִין חַיָא מִן מִיתַיָא׃ כְּדֵין תֵּימְרוּן לְהוֹן לְאוֹרַיְתָא דְאִתְיְהִיבַת לָנָא וּלְסַהֲדוּ
אֲנַחְנָא שָׁמְעִין אֱלָא תִגְלוּן לְבֵינֵי עַמְמַיָא וְיֵימְרוּן לְכוֹן כְּפִתְגָמָא הָדֵין מִכְעַן לֵית לֵיהּ מִן
21 דְשַׁחַר וִיבַעֲנֵיהּ׃ וְיֶעְדֵי תַּקְלָא בְּאַרְעָא וִיהֵי עָקָא וְכַפָּן וִיהֵי אֲרֵי יֶחֱזֵי כַּפָּן וְסִגּוּף וִילוּט וִיבַזֵי
שׁוּם פַּתַכְרֵיהּ וְטַעֲוָתֵיהּ וְיִתְפְּנֵי לְעֵלָא לְמִבְעֵי פוּרְקָן בָּתַר דְאִתְחֲתִים גְזֵירְתָא וְלָא יִכּוֹל׃
22 וּסְעִיד מֵיתְבֵי אַרְעָא יִבְעֵי אֲרֵי יֵיתֵי עֲלוֹהִי עָקָא כַּפָּן וְשִׁלְהֵוֵי עָקָא קְבַל וּבְדוּר׃

ט

1 אֲרֵי לָא יִשְׁתַּלְהֵי כָל דְיֵיתֵי לְאָעָקָא לְהוֹן כְּעִדָן קַדְמֵי גְלוֹ עַם אֲרַע זְבוּלוּן וְעַם אֲרַע
נַפְתָּלִי וּשְׁאָרְהוֹן מְלַךְ תַּקִיף יַגְלֵי עַל דְלָא אַדְכַּרוּ גְבוּרַת יַמָא וְנִסֵי יַרְדְנָא קְרָב כְּרַכֵּי
2 עַמְמַיָא׃ עַמָא בֵית יִשְׂרָאֵל דַהֲווֹ מְהַלְכִין בְּמִצְרַיִם כִּדְבְקַבְלָא נְפַקוּ לְמֶחֱזֵי נְהוֹר סַגִי
3 יָתְבִין בְּאַרְעָא טוּלֵימוּתָא נְהוֹרָא אַזְהַר עֲלֵיהוֹן׃ אַסְגֵיתָא עַמָא בֵית יִשְׂרָאֵל לְהוֹן
אַסְגֵיתָא חֶדְוָא חֲדִיאוּ קֳדָמָךְ כְּחֶדְוַת נָצְחֵי קְרָב כְּמָא דַהֲווֹ חָדָן בְּפַלְגוּתְהוֹן בִּזְתָּא׃
4 אֲרֵי אַעְדִיתָא יָת נִיר מְרוּתֵיהּ וְיָת שׁוּלְטָן עָקְתֵיהּ שׁוּלְטוֹן דַהֲוָה מִפְלַח בֵּיהּ אִתְבַּר כְּיוֹם
5 מִדְיָן׃ אֲרֵי כָל מִסַבְהוֹן וּמִתְּנֵהוֹן בִּרְשַׁע אִתְנְעָלוּ בְחוֹבִין הָא כִּכְסוּ דִמְלוּשָׁא בִּדְם דְלָא
דָכַן רִשְׁמֵי כִּתְמָא מִנֵּהּ כֵּן כְּמָא דְלֵית בֵּיהּ צְרוֹךְ אֱלָהֵין לְאִתּוֹקָדָא בְּנוּרָא כֵּן יִתֵּן עֲלֵיהוֹן
6 עַמְמַיָא דְתַקִיפִין כְּאֶשָׁתָא וְיִקְטְלוּנוּן׃ אֲמַר נְבִיָא לְבֵית דָוִד אֲרֵי רְבֵי אִתְיְלִיד לָנָא בַּר
אִתְיְהִב לָנָא וְקַבִּיל אוֹרַיְתָא עֲלוֹהִי לְמִטְרַהּ וְאִתְקְרֵי שְׁמֵיהּ מִן קֳדָם מַפְלִיא עֵצָה אֱלָהָא
גִּבָּרָא קַיָם לְעָלְמַיָא מְשִׁיחָא דִשְׁלָמָא יִסְגֵי עֲלָנָא בְּיוֹמוֹהִי׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Dixit propheta, Pro hoc oravi coram Dño, qui dixit se subducturum majestatem suam de domo Jacob, & deprecatus sum in conspectu ejus. Ecce dum ego vivo & pueri quos dedit mihi Dñs, confirmabuntur in nobis signa & portenta, quæ dicta sunt ut venirent super Israel. Quòd si viderint & conversi fuerint, irrita erit sententia, quæ decreta est super eos ut transmigrent; ne appareant coram Dño exercituum, cujus majestas habitat in monte Sion. Et quando dixerint vobis populi, in quorum medio vos habitatis: Quærite à pythonibus & divinis qui garriunt & gemunt: nonne hæc via est populorum colentium idola? unusquisque populus ab idolo suo requirit, vivi à mortuis. Sic dicetis eis: Legem, quæ data est nobis in testimonium, audivim⁹. Nisi transmigraveritis inter populos, & dicent vobis juxta verbum hoc: jam non erit ei qui manè consurgat, & requirat illud. Et transibit corruens in terra, & erit tribulatio & fames. Et erit quando viderit famem & afflictionem, & maledicet & contemnet nomen sacerdotis sui & idoli sui: & respiciet suprà ut quærat salutem, postquam signata est sententia, & non poterit [*obtinere.*] Et auxilium quæret à habitatorib⁹ terræ, quando venerit super eum tribulatio famis, & angustia tribulationis, & tenebræ, & dispersio.

CAP. IX.

QUoniam non deficiet *omnis* qui veniat ut tribulet eos. Primo tempore transmigraverunt *populus terræ* Zabulon & *populus terræ* Nephthali, & eos qui remanserint ex eis, rex fortis eos abducet in captivitatem, eò quòd non sunt recordati potentiæ quæ facta est in mari [*rubro,*] & miraculorum [*quæ facta sunt in*] Jordane, & belli civitatum populorum. Populus domus Israel, qui ambulabat in Ægypto sicut in tenebris, egressi sunt ut viderent lumen magnum: habitantibus in terra umbræ mortis, lux orta est. Multiplicasti populum domus Israel, ipsis multiplicasti lætitiam, lætantur coram te sicut lætantur victores prælii, sicut lætantur cum dividunt spolia. Quoniam *sustulisti* jugum subjectionis ejus, & dominium tribulationis ejus, dominium quo serviebant ei, contritum est sicut in die Madian. Quoniam omnis acceptio & datum eorum est in malitiam, contaminati sunt in peccatis, sicut vestimentum quod involutum est in sanguine, cujus maculas fullones non possunt mundare ab eo; & sic non valet, nisi ut comburatur igni. Sic *dabit* contra eos populos, qui fortes sunt sicut ignis; & occident eos. Dicit propheta domui David, quia parvulus natus est nobis, filius datus est nobis: & suscepit legem super se ut servaret eam: & vocabitur nomen ejus à facie Admirabilis consilii Deus, vir permanens in æternum, Christus, cujus pax multiplicabitur super nos in diebus ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܡܠܦܢܘܬܝ ܐܣܟܐ ܠܡܪܝܐ ܕܐܗܦܟ ܐܦܘܗܝ ܡܢ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܐܣܒܪ ܠܗ. * ܗܐ ܐܢܐ
ܘܒܢܝܐ ܕܝܗܒ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܠܐܬܐ ܘܠܬܕܡܘܪܬܐ ܒܐܝܣܪܐܝܠ. ܡܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܥܡܪ
ܒܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ. * ܘܟܕ ܢܐܡܪܘܢ ܠܟܘܢ. ܕܬܒܥܘܢ ܡܢ ܐܣܘܬܐ ܘܡܢ ܢܟܝܐ ܕܡܨܦܨܦܝܢ
ܘܪܛܢܝܢ. ܠܐ ܗܘܐ ܥܡܐ ܕܐܠܗܐ ܐܢܘܢ ܕܫܐܠܝܢ ܠܡܝܬܐ ܥܠ ܚܝܐ. * ܠܢܡܘܣܐ
ܘܠܣܗܕܘܬܐ. ܕܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܐܝܟ ܡܠܬܐ ܗܕܐ. ܕܠܝܬ ܠܗ ܫܘܚܕܐ ܠܡܬܠ ܥܠܝܗ. * ܘܢܥܒܪ
ܒܗ. ܘܢܬܩܫܐ ܘܢܟܦܢ. ܘܢܗܘܐ ܕܢܟܦܢ. ܢܪܓܙ. ܘܢܨܚܐ ܠܡܠܟܗ ܘܠܐܠܗܗ. * ܘܢܚܘܪ
ܠܥܠ. ܘܠܐܪܥܐ ܢܚܘܪ. ܘܐܘܠܨܢܐ. ܘܚܫܘܟܐ. ܘܐܘܠܨܢܐ ܘܥܡܛܢܐ ܢܕܚܩܘܢܝܗ. ܘܠܐ
ܢܬܚܦܛ ܠܐܝܢܐ ܕܐܠܝܨ. ܐܝܟ ܕܒܙܒܢܐ ܩܕܡܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܛ *

* ܣܪܗܒܬ ܐܪܥܐ ܕܙܒܘܠܘܢ. ܘܐܪܥܐ ܕܢܦܬܠܝ. ܘܐܣܓܝܬ ܫܘܠܛܢܐ. ܐܘܪܚܐ ܕܝܡܐ. ܥܒܪܗ
ܕܝܘܪܕܢܢ ܢܗܪܐ. ܓܠܝܠܐ ܕܥܡܡܐ. * ܥܡܐ ܕܡܗܠܟܝܢ ܒܚܫܘܟܐ. ܢܚܙܘܢ ܢܘܗܪܐ ܪܒܐ.
ܘܥܠ ܗܢܘܢ ܕܝܬܒܝܢ ܒܐܬܪܐ ܕܛܠܠܝ ܡܘܬܐ. ܢܘܗܪܐ ܢܕܢܚ ܥܠܝܗܘܢ. * ܐܣܓܝܬ ܥܡܐ ܘܠܗ
ܐܪܒܝܬ ܚܕܘܬܐ. ܚܕܝܘ ܩܕܡܝܟ ܐܝܟ ܗܢܘܢ ܕܚܕܝܢ ܒܚܨܕܐ. ܘܐܝܟ ܗܢܘܢ ܕܪܘܙܝܢ ܟܕ
ܡܦܠܓܝܢ ܒܙܬܐ. * ܡܛܠ ܕܢܝܪܐ ܕܫܥܒܕܗܘܢ. ܘܫܒܛܐ ܕܟܬܦܗܘܢ. ܘܡܩܪܥܢܐ
ܕܐܠܨ ܗܘܐ ܠܗܘܢ. ܬܒܪܬ ܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܡܕܝܢ. * ܡܛܠ ܕܟܠ ܩܠܐ ܩܠܐ ܕܒܙܘܥܐ
ܡܫܬܡܥ. ܘܢܚܬܐ. ܡܬܒܩܠܐ ܒܕܡܐ. ܘܗܘܬ ܠܝܩܕܐ. ܘܡܐܟܘܠܬܐ ܕܢܘܪܐ. * ܡܛܠ ܕܛܠܝܐ
ܐܬܝܠܕ ܠܢ. ܒܪܐ ܐܬܝܗܒ ܠܢ: ܘܗܘܬ ܫܘܠܛܢܗ ܥܠ ܟܬܦܗ. ܘܐܬܩܪܝ ܫܡܗ
ܬܕܡܘܪܬܐ ܘܡܠܟܐ. ܐܠܗܐ ܓܢܒܪܐ ܕܥܠܡܐ. ܪܒܗ ܕܫܠܡܐ.

* *Ego verò* in doctrina mea expectabo Dominum qui avertit faciem ſuam à familia Jacobi, cumque præſtolabor. 17
En ego & filii quos conceſſit mihi Dominus, portento & miraculo ſumus in Iſraele, à Domino potentiſſimo qui habitat in monte Sion. 18
Et cùm dixerint vobis, Conſulite hariolos & divinos qui grunniunt & mugiunt; nequaquam populus Dei ſunt ii qui mortuos conſulunt de vivis. 19
Legem & teſtimonium *conſulite*, ut ne proferant hujuſmodi ſermonem, pro quo nullum dari poteſt munus. 20
Tranſibit per eam, durámque reddet illam, & eſuriet; cúmque eſurierit, iraſcetur, & blaſphemabit regem ſuum & Deum ſuum. 21
Surſum vertet *oculos* ſuos, & terram intuebitur; & anguſtia, tenebræ, calamitas, atque caligo propulſabunt eum: non enim exagitabit eum qui eſt afflictus, ut præcedenti tempore. 22

CAP. IX.

* FEſtinavit terra Zebolon & terra Nephtali, & crevit imperium: via maritima, ulteriores Jordanis fluminis partes, Galilæa populoſa, 1
Gentes quæ ambulant in tenebris, videbunt lucem magnam; & ſuper eos qui ſedent in regione umbræ mortis, lux orietur. 2
Multiplicâſti populum, eíque magnificâſti lætitiam: lætati ſunt coram te ſicut hi qui lætantur in meſſe, & ſicut hi qui geſtiunt cùm prædam partiuntur: 3
Quoniam jugum ſervitutis eorum, & fuſtim humeri eorum, & virgam quæ opprimebat eos, confregiſti ut diem Median. 4
Quivis enim ſtrepitus, cum terrore audiebatur, et veſtimentū ſanguine intinctum erat, denique abiit in combuſtionem & in pabulum ignis. 5
Nam puer natus eſt nobis, & filius datus eſt nobis factúmq; eſt imperium ejus ſuper humerum ipſius, & vocatum eſt nomen ejus Admiratio, & Conſiliarius, Deus ſeculorum fortiſſimus, Princeps pacis; 6

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 * ويقول أنتظر الله الذي أصرف وجهه عن بيت يعقوب * وأكون متوكلا عليه * هانذا
18 والبنون الذين أعطانيهم الله * ويكون آيات ومعجزات كثيرات في بيت إسرائيل من قبل
19 رب الجيوش الذي يسكن في جبل صهيون * وإن قالوا لكم * أطلبوا الذين يصوتون
من الأرض والخرافات في البطن * الذين يقولون الباطل * ان الذين يصوتون من البطن
20 ليس هم أمة لإلههم * لماذا تسألون الموتى عن الأحياء * لانه أعطاهم شريعة للمعونة * لكيما
21 يقولوا ليس مثل هذا القول الذي من أجله لن تعطي هدية عنه * وسيأتي عليكم
مجاعة صعبة * ويكون إذا ما جعتم أعميتم * وتتكلمون بالردي على رئيسكم وآبائكم *
22 * وينظرون إلى السماء فوق * وينظرون إلى الأرض أسفل * وإذا شدة وضيقة وظلام وضغطة
ضيقة وظلمة حتى لا يبصرون * ولا يحتار من هو كائن في الضيقة إلى زمان أشرب هذا
أولا * أصنع هذا سريعا *

* الفصل التاسع *   الإصحاح الخامس *

1 * بلد زابلون * أرض نفتاليم * طريق البحر وبقية قاطني الساحل وعبر الأردن جليل الأمم
2 نواحي اليهودية * الشعب الجالس في الظلمة أبصر نورا عظيما * الساكنون في الكون وظلال
3 الموت يشرق الضوء عليكم * كثير الشعب الذي أحدرته في سرورك ويفرحون أمامك
كالفرحين في البيدر وكما يفرحون الذين يقتسمون الغنائم * من أجل أن النير الموضوع
4 عليهم ينزع * والعصا التي على عنقهم * لأن عصا العصاة أبطلها الرب كما كان في يوم
5 مدين * لأن كل حلة مجموعة بالغش وكل ثوب مصالحة سيعطون ويتمنون أن لو كانوا محرقين
6 بالنار * لأن صبيا ولد لنا وابنا أعطيناه * الذي صارت رياسته على منكبيه * ويدعى
اسمه ملاك المشورة العظمى * مشير عجيب * إله قوي * مسلط * رئيس السلامة * أب الدهر
العتيد * لأني أورد سلامة على الرؤساء * سلامة وصحة لهم *

* *Dicétque, Deum expecto qui avertit faciem ſuam à domo Jacobi, & meam in ipſo fiduciam colloco;* 17
En ego & filii quos dedit mihi Deus. Fient autem ſigna & prodigia multa in domo Iſraelis, à Domino exercituum qui degit in monte Sionis. 18
Quòd ſi dixerint vobis, Sciſcitamini ab iis qui vocem emittunt è terra & res deliras è ſtomacho, qui falſa loquuntur; ſanè qui vocem è ſtomacho emittunt, nequaquam ſunt gens Dei ſui. Quare mortuos conſuleretis de vivis? 19
Nam legem dedit eis in auxilium; quominus dicerent, Nihil par eſt huic ſermoni, pro quo nullum par munus offerri poteſt. 20
Et veniet ſuper vos fames acerbiſſima; fietque ut cùm eſurietis, cæci evadatis, & turpia loquamini de principe veſtro, deque patribus veſtris. 21
Cœlum, aſpicient ſurſum, & vultum demittent in terram deorſum, & ecce calamitas, afflictio, tenebræ, & alliſio miſeriis tenebriſque plena, ita ut non videant. At non obſtupeſcet quicunque fuerit in calamitate, uſque ad tempus quo hæc prius propinem: exequar hæc quamprimum. 22

CAP. IX.

Textus quintus.

REgio Zabolonis, terra Nephtalim, via maris, & reliqui degentes in ora maritima, ulterior pars Jordanis, Galilæa gentium, climata Judææ, 1
Populus qui ſedebat in tenebris, vidit lucem magnam; Qui habitatis in regione, & umbra mortis, orietur ſplendor ſuper vos. 2
Multitudo populi quem præ tui exultatione venire feciſti, gaudebunt etiam coram te ſicut gaudentes in area, & quemadmodum lætantur qui dividunt ſpolia: 3
Quia jugum eis impoſitum & fuſtis imminens cervici eorum, auferetur: nam fuſtim rebellium abolebit Dominus, uti contigit in die Median. 4
Etenim omnem ſudorem & omnem veſtitum dolo vel pacificè comparatum reſtituent, & optabunt ea eſſe igne combuſta. 5
Puer enim natus eſt nobis, & filius datus eſt nobis, cujus dominium ſuper humeros ejus, & vocabitur nomen ejus, Angelus conſilii magni, Conſiliarius admirabilis, Deus fortis, Imperator, Dominus pacis, Pater futuri ſeculi: nam allaturus ſum pacem principibus, pacem & incolumitatem ipſimet ipſis. 6

ישעיה : ט

super finis non pacem ad & , principatum multiplicandum Ad
לםרבה המשרה ולשלום אין־קץ על־ 7
, illud *parandum ad* , ejus regnum super & , David solium
כסא דוד ועל־ממלכתו להכין אתה
usque & , *tunc* ex , justitia in & judicio in *illud fulciendum ad* &
ולסעדה במשפט ובצדקה מעתה ועד־
Verbum .hoc faciet exercituum Domini Zelus.seculum in
עולם קנאת יהוה צבאות תעשה־זאת : דבר 8
scient Et .Israel in cecidit & , Jahacob in Dominus misit
שלח אדני ביעקב ונפל בישראל : וידעו 9
, superbia in , Someron *habitans* & , Ephraim ipse omnis populus
העם כלו אפרים ויושב שמרון בגאוה
, ceciderunt Lateres : dicendo , cordis magnitudine in &
ובגדל לבב לאמר : לבנים נפלו 10
cedros sed , sunt succisæ sycomori : ædificabimus lapide *exciso* &
וגזית נבנה שקמים גדעו וארזים
, eum super Resin hostes Dominus elevabit Et .immutabimus
נחליף : וישגב יהוה את־צרי רצין עליו 11
Pelistim & , Oriente ab Aram .commiscebit ejus inimicos &
ואת־איביו יסכסך : ארם מקדם ופלשתים 12
omni In .ore toto in Israel devorabunt & ; *retro à*
מאחור ויאכלו את־ישראל בכל־פה בכל־
.extenta ejus manus adhuc sed , ejus *nasus* est aversus non hoc
זאת לא־שב אפו ועוד ידו נטויה :
& , ipsum percutientem ad reversus est non populus &
והעם לא־שב עד־המכהו ואת־ 13
Dominus excidit Et .quæsierunt non exercituum Dominum
יהוה צבאות לא דרשו : ויכרת יהוה 14
.una die juncum & *curvum* ramum, caudam & caput Israel ab
מישראל ראש וזנב כפה ואגמון יום אחד :
decens propheta & : caput ipse , *faciebus acceptus* & ,Senex
זקן ונשוא־פנים הוא הראש ונביא מורה־ 15
populum beatificantes erunt Et .cauda ipse , mendacium
שקר הוא הזנב : ויהיו מאשרי העם־ 16
Ideo .*absorpti* ejus beatificati & : facientes errare , istum
הזה מתעים ומאשריו מבלעים : על־כן 17
, ejus pupillorum & , Dominus lætabitur non ejus adolescentulis super
על־בחוריו לא־ישמח אדני ואת־יתמיו
, *hypocrita ipse omnis* quia : miserebitur non ejus viduarum &
ואת־אלמנותיו לא ירחם כי כלו חנף
est aversus non hoc omni In .stultitiam *loquens* os omne & ,*malignus* &
ומרע וכל־פה דבר נבלה בכל־זאת לא־שב
est succensa Quia .extenta ejus manus adhuc sed : ejus *nasus*
אפו ועוד ידו נטויה : כי־בערה 18
succendetur & : vorabit spinam & , veprem ; impietas ignis tanquam
כאש רשעה שמיר ושית תאכל ותצת
fervida ira In .*fumi altitudine se extulerunt* & , sylvæ *perplexitatibus* in
בסבכי היער ויתאבכו גאות עשן : בעברת 19
esca tanquam populus fuit & : terra est obscurata exercituum Domini
יהוה צבאות נעתם ארץ ויהי העם כמאכלת
, dexteram ad *se separabit* Et .*parcent non suum fratrem ad vir* : ignis
אש איש אל־אחיו לא יחמלו : ויגזר על־ימין 20
unusquisque : *saturabuntur* non & , sinistram ad comedet & ,esuriet &
ורעב ויאכל על־שמאל ולא שבעו איש
Ephraim & , Ephraim Menasseh .*comedent* sui brachii carnem
בשר־זרעו יאכלו : מנשה את־אפרים ואפרים 21
est aversus non hoc omni in ,Jehudah contra ipsi simul , Menasseh
את־מנשה יחדו המה על־יהודה בכל־זאת לא־שב
.extenta ejus manus adhuc sed ,ejus *nasus*
אפו ועוד ידו נטויה :

Versio VULG. LAT.

7 Multiplicabitur ejus imperiũ, & pacis non erit finis: super solium David, & super regnum ejus sedebit: ut confirmet illud, & corroboret in judicio & justitia, amodò & usque in sempiternum: zelus Domini exer- 8 cituum faciet hoc. Verbum misit Dominus in Jacob, & ce- 9 cidit in Israel. Et sciet omnis populus Ephraim, & habitantes Samariam, in superbia & magnitudine cordis dicentes; 10 Lateres ceciderunt, sed quadris lapidibus ædificabimus: sycomoros succiderunt, sed cedros 11 immutabimus. Et elevabit Dominus hostes Rasin super eum, & inimicos ejus in tumulum 12 vertet: Syriam ab Oriente, et Philisthiim ab Occidente: & devorabunt Israel toto ore. In omnibus his non est aversus furor ejus, sed adhuc manus ejus 13 extenta: Et populus non est reversus ad percutientem se, et Dominum exercituum non in- 14 quisierunt. Et disperdet Dominus ab Israel caput & caudam, incurvantem & refrænan- 15 tem, die unâ. Longævus & honorabilis, ipse est caput: & propheta docens mendacium, 16 ipse est cauda. Et erunt, qui beatificant populum istum, seducentes: & qui beatificantur, 17 præcipitati. Proper hoc super adolescentulis ejus non lætabitur Dominus: & pupillorum ejus, & viduarum non miserebitur: quia omnis hypocrita est & nequam, & universum os locutum est stultitiam. In omnibus his non est aversus furor ejus, sed adhuc manus ejus 18 extenta. Succensa est enim quasi ignis impietas, veprem & spinam vorabit: & succendetur in densitate saltûs, & con- 19 volvetur superbia fumi. In ira Domini exercituum conturbata est terra, & erit populus quasi esca ignis: vir fra- 20 tri suo non parcet. Et declinabit ad dexteram, & esuriet: & comedet ad sinistram, & non saturabitur: unusquisque carnem brachii sui vorabit; Manasses Ephraim, et Ephraim Manassen, simul ipsi contra Ju- 21 dam. In omnibus his non est aversus furor ejus, sed adhuc manus ejus extenta.

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Translatione LATINA.

7 Μεγάλη ἡ ἀρχὴ αὐτȣ͂, ϗ τῆς εἰρήνης αὐτȣ͂ ȣ̓κ ἔστιν ὅριον· ἐπὶ τὸν θρόνον Δαβὶδ, ϗ τὴν βασιλείαν αὐτȣ͂, κατορθῶσαι αὐτὴν, ϗ ἀντιλαβέσθαι (μ) ἐν κρίματι ϗ ἐν δικαιοσύνῃ, ἀπὸ τȣ͂ νῦν ϗ εἰς τὸν (ν) αἰῶνα. ὁ ζῆλος 8 κυρίȣ Σαβαὼθ ποιήσει ταῦτα. Θάνατον ἀπέστειλε κύριος ἐπὶ Ἰακὼβ, ϗ ἦλθεν 9 ἐπὶ Ἰσραήλ. Καὶ γνώσονται πᾶς ὁ λαὸς τȣ͂ Ἐφραὶμ, ϗ οἱ (ξ) καθήμενοι ἐν Σαμαρείᾳ, ἐφ' ὕβρει ϗ ὑψηλῇ καρδίᾳ λέγοντες, 10 Πλίνθοι πεπτώκασιν, ἀλλὰ δεῦτε λαξεύσωμεν λίθȣς, ϗ (ο) κόψωμεν συκαμίνȣς ϗ κέδρȣς, ϗ (ʹ) οἰκοδομήσωμεν ἑαυτοῖς πύργον. 11 Καὶ ῥάξει ὁ θεὸς τοὺς (π) ἐπανισταμένȣς ἐπὶ ὄρος Σιὼν ἐπ' αὐτὸν, ϗ τȣ̀ς ἐχθρȣ̀ς (ρ) 12 διασκεδάσει. Συρίαν ἀφ' ἡλίȣ ἀνατολῶν, ϗ τȣ̀ς Ἕλληνας ἀφ' ἡλίȣ δυσμῶν, τȣ̀ς κατεσθίοντας τὸν Ἰσραὴλ ὅλῳ τῷ στόματι. (σ) ἐπὶ πᾶσι τȣ́τοις ȣ̓κ ἀπεστράφη ὁ θυμὸς, 13 ἀλλ' ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή. Καὶ ὁ λαὸς ȣ̓κ (ʺ) ἐπεστράφη, ἕως ἐπλήγη, ϗ τὸν κύριον ȣ̓κ 14 (τ) ἐζήτησαν. Καὶ ἀφεῖλε κύριος ἀπὸ Ἰσραὴλ, κεφαλὴν ϗ ȣ̓ρὰν, μέγαν ϗ μικρὸν, 15 ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ, Πρεσβύτην, ϗ τȣ̀ς τὰ πρόσωπα θαυμάζοντας, αὕτη ἡ ἀρχή· ϗ προφήτην διδάσκοντα ἄνομα, οὗτος ἡ ȣ̓ρά. 16 Καὶ ἔσονται οἱ μακαρίζοντες τὸν λαὸν τȣ͂τον πλανῶντες, ϗ πλανῶσιν, ὅπως 17 (ʹʹ) καταπίνωσιν αὐτȣ́ς. Διατȣ͂το ἐπὶ τȣ̀ς νεανίσκȣς (υ) αὐτῶν ȣ̓κ εὐφρανθήσεται ὁ κύριος, ϗ τȣ̀ς ὀρφανȣ̀ς αὐτῶν ϗ τὰς χήρας αὐτῶν ȣ̓κ ἐλεήσει· ὅτι πάντες ἄνομοι ϗ πονηροὶ, ϗ πᾶν στόμα λαλεῖ ἄδικα. ἐπὶ πᾶσι τȣ́τοις ȣ̓κ ἀπεστράφη ὁ θυμὸς, ἀλλ' 18 ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή. Καὶ καυθήσεται ὡς πῦρ ἡ ἀνομία, ϗ ὡς ἄγρωστις ξηρὰ βρωθήσεται ὑπὸ πυρός· ϗ καυθήσεται ἐν τοῖς δάσεσι 19 τȣ͂ δρυμȣ͂, καὶ συγκαταφάγεται τὰ κύκλῳ τῶν βȣνῶν πάντα. Διὰ θυμὸν ὀργῆς κυρίȣ (φ) συγκέκαυται ἡ γῆ ὅλη. ϗ ἔσται ὁ λαὸς ὡς (χ) κατακεκαυμένος ὑπὸ πυρός. ἄνθρωπος τὸν ἀδελφὸν αὐτȣ͂ ȣ̓κ ἐλε- 20 ήσει· Ἀλλὰ ἐκκλινεῖ εἰς τὰ δεξιὰ, ὅτι πεινάσει, ϗ φάγεται ἐκ τῶν ἀριστερῶν, ϗ ȣ̓ μὴ ἐμπλησθῇ ἄνθρωπος ἔσθων τὰς σάρκας τȣ͂ βραχίονος (ψ) αὐτȣ͂. φάγεται γὰρ (ω) Μανασσῆς τȣ͂ Ἐφραὶμ, ϗ Ἐφραὶμ τȣ͂ (ʺ) Μανασσῆ, ὅτι ἅμα πολιορκήσȣσι τὸν Ἰȣ- 21 δαν. Ἐπὶ τȣ́τοις πᾶσιν ȣ̓κ ἀπεστράφη ὁ θυμὸς, ἀλλ' ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή.

Magnus principatus illius, & pa
cis ejus non est terminus: sup
thronum David, & regnum eju
ut corrigat illud, & auxiliet
judicio, & in justitia ex hoc nu
& in seculum. Zelus Domini Sa
baoth faciet hec. (ξ) Mortem mi
sit Dominus super Jacob, & ven
super Israel. Et cognoscent omn
populus Ephrem, & sedentes
Samaria, in contumelia & exc
so corde dicentes; Lateres ce
derunt: sed venite, dolemus la
des, & succidamus sycomoro
cedros, & ædificemus nobis tu
rim. Et allidet Deus eos, qui co
surgunt contra montem Sion,
super eum, & (ρ) inimicos dis
bit: Syriam à Solis ortu, & G
cos à Solis occasu, devorante
rael toto ore. In omnibus
est aversus furor: sed adhuc
nus excelsa. Et populus non
reversus, donec percussus est,
Dominum non quæsierunt. E
abstulit Dominus ab Israel
& caudam, magnum, & parv
in una die, Senem, &
facies admirantur: (hic est pr
cipium:) et prophetam docen
iniqua: (hic est cauda.) Et e
qui beatum dicunt populum
seducentes: et seducunt, ut
rent eos. Propter hoc super a
lescentulis eorum non læta
Dominus: & pupillorum eoru
viduarum eorum non misere
quoniam omnes iniqui, &
et omne os loquitur injusta.
mnibus his non est aversu
ror, sed adhuc manus excel
succendetur quasi ignis,
& tanquam gramen siccum
bitur ab igne: et succende
densitatibus saltûs: et devo
quæ in circuitu collium om
Propter furorem iræ Domini
busta est tota terra, & erit
tanquam combustus ab igne
fratris sui non miserebitur
clinabit ad dexteram, quia
& comedet à sinistris, &
turabitur; homo comedens
brachii sui. Comedet enim
nasses Ephrem, et Ephrem
sem: quoniam simul
Judam. In his omnibus
aversus furor, sed adhuc
excelsa.

MS.A. (μ) αὐτῆς ἐν δικαιοσύνῃ ϗ ἐν κρίματι, ἀπὸ (ν) αἰῶνα (ξ) ἐγκαθήμενοι (ο) ἐκκόψωμεν (ʹ) ᾠκοδομήσωμεν (π) ἐπανιστανομένȣς ἐπ' ὢν ἐπ' αὐτȣ̀ς, (ρ) αὐτῶν διασκεδάσει. (σ) ἐπεὶ τȣ́τοις πᾶσιν (ʺ) ἀπεστ ἐξεζήτησαν. (ʹʹ) καταπίωσιν (υ) ȣ̓κ εὐφρανθήσεται (φ) συγκ (χ) ὑπὸ πυρὸς κατακεκαυμένος. (ψ) τȣ͂ ἀδελφȣ͂ αὐτȣ͂. (ω) Μα (ʺ) Μαννασῆ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

סגי רבו לעבדי אוריתא ולנטרי שלמא לית סוף על כורסיה דוד ועל מלכותיה לאתקנא 7
יתה ולמבנא בדינא ובזכותא מכען ועד עלמא במימרא דיי צבאות תתעבד דא : פתגמא 8
שלח יי בדבית יעקב ואשתמע בישראל : ואתרברבו עמא כולהון אפרים ויתב שמרון 9
ברבו ובתקוף לבב למימר : רישיא גלו ודטבין מנהון נמני נכסיא אתבזו ודשפירין 10
מנהון נקני : ותקיף יי סנאה רצין עלוהי וית בעלי דבבוהי יערר : ארם ממדנחא 11 12
ופלשתאי ממערבא ובזו ית נכסי ישראל בכל אתר בכל דא לא תבו מחוביהון דיתיב
רוגזיה מנהון ועד כען מתקפין מרדיהון ועוד מחתיה עתידה לאתפרע מנהון : ועמא 13
לא תבו לפולחן מן דאיתי עליהון מחא ואולפן מן קדם יי צבאות לא תבעו : ושצי יי 14
מישראל ריש והגמון שלטון ואטרון יומא חד : סב ונסיב אפין הוא רישא וספר מליף 15
שקר הוא חלשא : והוו משבחי עמא הדין מטען ורברבנוהי מסלעמין : על כן על 16 17
עולמוהי לא יחדי יי ועל יתמוהי ועל ארמלתוהי לא ירחם ארי כולהון חנפין ובישין
וכל פומהון ממללין שקר בכל דא לא תבו מחוביהון דיתיב רוגזיה מנהון ועד כען
מתקפין מרדיהון ועוד מחתה עתידא לאתפרעא מנהון : ארי תדליק כאשתא פורענות 18
חוביהון חטאיא וחיביא תשיצי ותשלוט בשאר עמא ותשיצי סגי משריתא : בתעבור מן 19
קדם יי צבאות הרוכת ארעא והוה עמא כיקדת נור גבר על אחוהי לא חיסין : ובז מן 20
דרומא וכפין ושיצי מן צפונא ולא סבע גבר נכסי קריביה יבזון : דבית מנשה עם דבית 21
אפרים ודבית אפרים עם דבית מנשה כחדא יתחברון למיתי על דבית יהודה בכל
דא לא תבו מחוביהון דיתוב רוגזיה מנהון ועד כען מתקפין מרדיהון ועוד מחתיה
עתידא לאתפרע מנהון :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Multiplicabitur magnitudo operantibus legem, & custodientibus
non erit finis, super solium David & super regnum ejus : ut stabili
ficet illud in judicio & in justitia, à modo & usq; in seculum. Ve
exercituum fiet hoc. Verbum misit Dñs in domum Jacob, & audi
Israel. Et magnificatꝰ est populus omnis, Ephraim & habitator Sa
in magnitudine & in fortitudine cordis, dicentes: Principes tra
runt, & meliores eis constituemꝰ : substantiæ direptæ sunt, & pu
his ememus. Et confortabit Dñs hostes Rasin super eum, & inim
excitabit. Syriam ab Oriente, & Philistæos ab Occidente, & di
substantiam Israel in omni loco. In omnibꝰ his non sunt conver
tis suis, ut averteretur ira ejus ab eis: & adhuc retinent scelera sua
huc plaga ejꝰ futura est, ut vindictam sumat ab eis. Et populꝰ non
versus ad cultum Dei, donec adduxit super eos percussionem: & do
facie Dñi exercituũ non quæsierunt. Et disperdet Dñs ab Israel pr
præfectũ, dominatorẽ, & satrapam in die una. Senex & acceptab
ipse est princeps: & scriba docens mendaciũ, ipse est infirmꝰ. E
laudantes populũ hunc seducentes, & principes ejus deglutientes.
hoc super adolescentulis ejus non lætabitur Dñs; & super pup
super viduis ejꝰ non miserebitur; quia omnes sunt hypocritæ & m
omne os eorum locutum est mendacium. In omnibꝰ his non sunt
à peccatis suis, ut avertatur furor ejus ab eis: & adhuc retinent sce
& adhuc plaga ejus futura est, ut vindictã sumat ab eis. Quoniam
est quasi ignis ultio peccatorum eorum: *peccatores & impios* con
dominabitur in reliquum populũ, & consumet multitudinem ca
Præ ira à facie Dñi exercituum *adusta* est terra, & fuit populꝰ sic
dium ignis. Vir super fratrem suum non miserebitur. Et diripiet a
& esuriet; & consumet ab Aquilone, & non saturabitur: unusqu
stantiam proximi sui diripient, Viri domus Manasse cum domo E
& viri domus Ephraim cum domo Manasse simul jungentur
contra domum Juda. In *omni* hoc non sunt conversi à pecc
averteretur furor ejus ab eis : & adhuc retinent scelera sua, & adhuc plaga ejus futura est, ut vindictam

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܣܘܓܐܐ ܫܘܠܛܢܗ. ܘܠܫܠܡܗ. ܠܝܬ ܣܟܐ. ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܕܕܘܝܕ ܘܥܠ 7
ܡܠܟܘܬܗ. ܕܢܬܩܢܝܗ̇ ܘܢܣܡܟܝܗ̇. ܒܕܝܢܐ ܘܒܙܕܝܩܘܬܐ. ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ.
ܛܢܢܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܢܥܒܕ ܗܕܐ. * ܦܬܓܡܐ ܫܕܪ ܡܪܝܐ ܒܝܥܩܘܒ. ܘܢܦܠ ܒܐܝܣܪܝܠ. 8
* ܘܢܕܥܘܢ ܥܡܡܐ ܟܠܗܘܢ. ܐܦܪܝܡ ܘܥܡܘܪܘܗ̇ ܕܫܡܪܝܢ. ܒܪܡܘܬܐ ܘܒܪܒܘܬ ܠܒܐ 9
ܘܐܡܪܝܢ. * ܠܒܢܐ ܢܦܠܘ. ܘܟܐܦܐ ܢܦܣܘܠ. ܫܩܡܐ ܦܣܩܘ. ܘܐܪܙܐ ܢܚܠܦ. * ܘܢܥܫܢ 10
ܡܪܝܐ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܕܪܨܝܢ. ܥܠܘܗܝ. ܘܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. * ܐܕܘܡܝܐ ܡܢ ܡܕܢܚܐ 11
ܘܦܠܫܬܝܐ ܡܢ ܡܥܪܒܐ. ܘܢܐܟܠܘܢ ܠܐܝܣܪܝܠ ܒܟܠܗ ܦܘܡܗܘܢ. ܘܒܟܠܗܝܢ 12
ܗܠܝܢ. ܠܐ ܗܦܟ ܪܘܓܙܗ. ܐܠܐ ܬܘܒ ܐܝܕܗ ܪܡܐ. * ܘܥܡܐ. ܠܐ ܐܬܦܢܝ ܥܕܡܐ 13
ܕܡܚܐ. ܘܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܐ ܒܥܘ. * ܘܢܘܒܕ ܡܪܝܐ ܡܢ ܐܝܣܪܝܠ. ܪܫܐ 14
ܘܕܘܢܒܬܐ. ܒܝܘܡܐ ܚܕ. * ܣܒܐ ܘܝܩܝܪ ܐܦܐ ܗܘܝܘ ܪܫܐ. ܘܢܒܝܐ ܕܡܠܦ 15
ܫܘܩܪܐ. ܗܘܝܘ ܕܘܢܒܬܐ. * ܘܢܗܘܘܢ ܡܛܘܒܢܘܗܝ ܕܥܡܐ ܗܢܐ. ܡܛܥܝܢ 16
ܘܡܬܒܠܥܝܢ ܒܗ. * ܡܛܠܗܢܐ ܠܐ ܢܚܕܐ ܡܪܝܐ ܥܠ ܥܠܝܡܘܗܝ. ܘܥܠ ܝܬܡܘܗܝ 17
ܘܥܠ ܐܪܡܠܬܗܘܢ. ܠܐ ܢܪܚܡ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܥܘܠܝܢ ܘܒܝܫܝܢ. ܘܟܠ ܦܘܡ
ܡܡܠܠ ܣܟܠܘܬܐ. ܘܒܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ. ܠܐ ܗܦܟ ܪܘܓܙܗ. ܐܠܐ ܬܘܒ ܐܝܕܗ ܪܡܐ.
* ܡܛܠ ܕܕܠܩܬ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܥܘܠܐ. ܘܬܐܟܘܠ ܟܘܒܐ ܘܝܠܘܕܐ. ܘܬܐܚܘܕ ܒܥܒܐ 18
ܕܥܒܐ. ܘܢܬܟܪܟܘܢ ܒܬܢܢܐ ܓܒܝܐ. * ܒܚܡܬܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܬܬܙܝܥ ܐܪܥܐ. ܘܢܗܘܐ 19
ܥܡܐ. ܐܝܟ ܗܘ ܕܐܟܠܬܗ ܢܘܪܐ. ܓܒܪܐ. ܥܠ ܐܚܘܗܝ ܠܐ ܢܚܘܣ. * ܘܢܦܣܘܩ ܥܠ ܝܡܝܢܗ 20
ܘܢܟܦܢ. ܘܢܐܟܘܠ ܥܠ ܣܡܠܗ. ܘܠܐ ܢܣܒܥܘܢ. ܓܒܪ ܒܣܪܐ ܕܕܪܥܗ. * ܢܐܟܘܠ 21
ܡܢܫܐ ܠܐܦܪܝܡ. ܘܐܦܪܝܡ ܠܡܢܫܐ. ܘܐܟܚܕܐ ܥܠ ܝܗܘܕܐ. ܘܒܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ ܠܐ
ܗܦܟ ܪܘܓܙܗ. ܐܠܐ ܬܘܒ ܐܝܕܗ ܪܡܐ.

* Cujus principatûs amplitudini & paci nullus 7
erit terminus ſuper ſolium Davidis & regnũ
ejus, ut ſtabiliat illud fulciátque judicio &
juſtitiâ, è nunc in æternum uſque: zelus
Domini fortiſſimi id præſtabit. Sermonem 8
miſit Dominus in Jacob, & cadet in Iſrae-
lem. Et ſcient omnes populi, Aphrem, & 9
incolæ Samariæ, cum faſtu & magnitudine
cordis; & dicent, Lateres ponamus, & la- 10
pides cædamus, ficus ſylveſtres amputemus,
cedróſque ſubſtituamus. At roborabit Do- 11
minus adverſarios & inimicos Raſanis con-
tra ipſum; Adumæos *videlicet* ab Oriente, 12
& Paleſtinos ab Occidente; & devorabunt
Iſraelem toto ore ſuo: in his tamen omnibus
non avertetur furor ejus, ſed adhuc elata erit
manus ejus: Quia populus non converte- 13
tur donec percutiatur, & Dominum fortiſſi-
mum non quærent. Perdétq; Dominus ex Iſ- 14
raele caput & caudam eodem die: (Senex 15
& honorabilis vultu, is eſt caput; & pro-
pheta docens falſitatem, is eſt cauda) Et be- 16
nefactores hujus populi, erunt ſeductores &
immerſores ejus. Propterea non præbebit 17
lætitiam Dominus de juvenibus eorum, &
pupillorum ac viduarum eorum non miſere-
bitur; quòd omnes impii ſint ac maligni, &
omne os ſtultitiam loquatur: & cum his
omnibus nequaquam avertetur furor ejus, ſed
adhuc manus ejus erit erecta. Quoniam ex- 18
arſit peccatum velut ignis, & devorabit ve-
pres ac ſentes, & comburet ſylvæ ramos, &
fumo irretientur electi. Ex objurgatione 19
Domini potentiſſimi contremiſcet terra, &
evadet populus ut is quem conſumpſit ignis,
& alter alterius haud miſerebitur. Scindet 20
ad dexteram ſuam, tamen eſuriet; come-
détque ad ſiniſtram ſuam, nec tamen ſatu-
rabitur quiſque carne brachii ſui. Comedet 21
Manaſſes Aphremum, & Aphrem Manaſſem,
& ambo contra Judam *venient*: et cum his
omnibus nequaquam avertetur ira ejus, ſed
adhuc erit elata manus ejus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

7 * رياسته عظيمة • وليس لسلامته حد * على كرسي داود ومملكته • ليقومها ويصعدها
بالعدل والانصاف • من الآن والى الابد * غيرة رب الجيوش تفعل هذا •

* قريان البر *

8 * أرسل الرب موتا على يعقوب • وجاء على إسرائيل * وسيعلم كل شعب افرام والجلوس 9
10 في السامرة • بتعظم وقلب مرتفع يقولون * اللبن يتساقط • لكن هلموا ننحت الحجارة •
11 ونقطع التوت والارز • ونبني لنا بروجا * ويقوي الله القائمين على جبل صهيون وعلى
12 ايروشليم عليهم * ويصرف أعداء يهودا • اهل سورية من مشارق الشمس • واليونانيين
من مغارب الشمس • الذين يأكلون شعبي بكل فم • ومع هذه كلها لم يرتد غضبه
لكن يده ايضا عالية * والشعب لم يرجع حتى ضرب • ولم يطلب رب القوات * وابدع
الرب من إسرائيل الراس والذنب • الكبير والصغير في يوم واحد * والشيخ والذين
يتعجبون بالوجوه • هذا الراس • والنبي الذي يعلم الاثام هو الذنب * ويكون الذين
يطوبون هذا الشعب ضالين ومضلين كي يبتلعوه * لاجل هذا ما يسر الله باحداثهم
وايتامهم وارامله لا يرحم • لانهم كلهم اثمة وخبثاء • وكل فم يتكلم بالمظالم • وفي هذه كلها
لم يرتد غضبه بل يده ايضا عالية * وسيضطرم الاثم كالنار ومثل نجيل يابس يوكل من
النار • ويشعلون في غياب الغيضة • وياكل جميع ما يحوط بالتلال * من اجل زجر غضب
رب الجيوش احترقت الارض كلها • ويصير الشعب مثل محرق بالنار • ولن يرحم الانسان اخاه
* لكن يجنح الى ميامنه لانه يجوع • وياكل من مياسره ولا يشبع الانسان الاكل لحم ذراعه
* لان افرام ياكل منسي ومنسي ياكل افرام • لانهما يحاصران يهودا معا • وفي هذه كلها لم
يرتد غضبه لكن يده ايضا عالية •

Dominium ejus maximum erit, & pacis 7
ejus nullus erit finis ſuper ſolium &
regnum Davidis, ut dirigat & attollat
illud juſtitiâ & æquitate ex nunc & in
æternum: zelus Domini exercituum fa-
cturus eſt hoc.

Lectio de juſtitia.

Miſit Dominus mortalitatem in Jaco- 8
bum, & venit ſuper Iſraelem, Quam 9
etiam experietur totus populus Aphremi-
ticus, & ſedentes in Samaria, qui ſu-
perbo elatóque animo dicunt; Lateres 10
corruunt, ſed venite, ſecemus lapides, &
moros cædamus atque cedros, & ædi-
ficamus nobis turres. Verùm confortа- 11
bit in eos Deus adverſarios montis Sion
& Jeroſolymorum, Dimittétque hoſtes 12
Judæ, Syros ab oriente ſole, & Græcos ab
occaſu ſolis, qui populum meum omnigeno
ore comedent: his autem omnibus haud-
quaquam averſa eſt indignatio ejus, ſed
manus ejus adhuc eſt elata. Populus e- 13
nim nequaquam fuerit reverſus, nec Do-
minum poteſtatum quæſierit, quoad per-
cuſſus fuerit. Auferétque Dominus ex 14
Iſraele caput & caudam, magnum ac
parvum eodem die: (Senex, & qui fa- 15
cies demirantur, hi ſunt caput: & pro-
pheta qui docet iniquitates, is eſt cauda)
Et erunt qui beant hunc populum, er- 16
rantes & ſeducentes, ut deglutiant eum.
Propter id ingrati erunt Deo juvenes eo- 17
rum, & in pupillos & viduas eorum
nullâ utetur clementiâ; quia flagitioſi
ſunt omnes atque ſcelerati, & omne
os loquitur flagitia: his autem omni-
bus non ceſſabit ira ejus, ſed manus e-
jus adhuc eſt alta. Nam exardeſcet im- 18
probitas velut ignis, & veluti fœnum
aridum conſumetur ab igne, & ardebunt
in ſaltibus ſylvæ, & conſumetur quicquid
circumjacet collibus. Propter excande- 19
ſcentiam iræ Domini exercituum com-
buretur tota terra, fiétque populus ut is
qui uſtulatus eſt igne, & nemo in fratrem
ſuum clementiâ utetur; Sed declinabit 20
ad dexteram ſuam, eò quòd eſuriat, &
comedet è ſiniſtra ſua, neque tamen
ſaturabitur homo devorans carnem bra-
chii ſui. Nam Aphremus devorabit 21
Manaſſen, & Manaſſes devorabit
Aphremum, quoniam obſidebunt Ju-
dam ambo ſimul: his autem omnibus
non ceſſabit ira ejus, ſed manus ejus
adhuc eſt alta.

ישעיה : י

CAP. X. י

.fecerūt ſcribere laborē,facientib⁹ ſcribere &,iniquitatis ſtatuta ſtatuentibus Væ
1 הוֹי הַחֹקְקִים חִקְקֵי־אָוֶן וּמְכַתְּבִים עָמָל כִּתֵּבוּ׃
;mei populi afflictorū judiciū rapiendū ad &,tenuium judicium pervertendum Ad
2 לְהַטּוֹת מִדִּין דַּלִּים וְלִגְזֹל מִשְׁפַּט עֲנִיֵּי עַמִּי
quid Et .diripiant pupillos & , eorum ſpolium viduas exiſtendum ad
3 לִהְיוֹת אַלְמָנוֹת שְׁלָלָם וְאֶת־יְתוֹמִים יָבֹזּוּ׃ וּמַה־
quem Ad ? veniet longinquo à ,deſolatione in & ,viſitationis die in facietis
תַּעֲשׂוּ לְיוֹם פְּקֻדָּה וּלְשׁוֹאָה מִמֶּרְחָק תָּבוֹא עַל־מִי
corruit me Abſque? veſtram gloriā derelinquetis ubi & ? auxilio pro fugietis
4 תָּנוּסוּ לְעֶזְרָה וְאָנָה תַעַזְבוּ כְּבוֹדְכֶם׃ בִּלְתִּי כָרַע
eſt averſus non hoc omni In .cadent interfectos ſub & , vinctum ſub
תַּחַת אַסִּיר וְתַחַת הֲרוּגִים יִפֹּלוּ בְּכָל־זֹאת לֹא־שָׁב
, mei naſi virga Aſſur Væ .extenta ejus manus adhuc ſed,ejus naſus
5 אַפּוֹ וְעוֹד יָדוֹ נְטוּיָה׃ הוֹי אַשּׁוּר שֵׁבֶט אַפִּי
;eum mittam hypocritā gentē Ad.mea indignatio eorū manu in ipſa virga &
6 וּמַטֶּה־הוּא בְיָדָם זַעְמִי׃ בְּגוֹי חָנֵף אֲשַׁלְּחֶנּוּ
prædandum ad &,ſpoliū ſpoliandū ad,ei mandabo meæ iræ fervidæ populū ſup &
וְעַל־עַם עֶבְרָתִי אֲצַוֶּנּוּ לִשְׁלֹל שָׁלָל וְלָבֹז
non ipſe Et .platearum lutū ſicut conculcationē eū ponendū ad & ,prædam
7 בַּז וּלְשׂוּמוֹ מִרְמָס כְּחֹמֶר חוּצוֹת׃ וְהוּא לֹא־
, ſuo corde in perdendum ad ſed :putabit ita non ej⁹ cor & , exiſtimabit ſic
כֵן יְדַמֶּה וּלְבָבוֹ לֹא־כֵן יַחְשֹׁב כִּי לְהַשְׁמִיד בִּלְבָבוֹ
mei principes Nonne:dicet Siquidem.parum non gentes excidendum ad &
8 וּלְהַכְרִית גּוֹיִם לֹא מְעָט׃ כִּי יֹאמַר הֲלֹא שָׂרַי
Arphad ſicut non an ? Chalno Charchemis ſicut Nonne .reges ſimul
9 יַחְדָּו מְלָכִים׃ הֲלֹא כְּכַרְכְּמִישׁ כַּלְנוֹ אִם־לֹא כְאַרְפַּד
invenit Quemadmodum ? Someron Dammeſec ſicut Nonne ? Chamath
10 חֲמָת אִם־לֹא כְדַמֶּשֶׂק שֹׁמְרוֹן׃ כַּאֲשֶׁר מָצְאָה
, Jeruſalaim à eorum ſculptilia & , vanitatis regna ad mea manus
יָדִי לְמַמְלְכֹת הָאֱלִיל וּפְסִילֵיהֶם מִירוּשָׁלִַם
,ej⁹ vanitatibus & , Someron feci quemadmodum Nonne .Someron à &
11 וּמִשֹּׁמְרוֹן׃ הֲלֹא כַּאֲשֶׁר עָשִׂיתִי לְשֹׁמְרוֹן וְלֶאֱלִילֶיהָ
compleverit cùm erit Et ?ejus doloribus & , Jeruſalaim faciam ſic
12 כֵּן אֶעֱשֶׂה לִירוּשָׁלִַם וְלַעֲצַבֶּיהָ׃ וְהָיָה כִּי־יְבַצַּע
viſitabo ; Jeruſalaim in & ,Sijon monte in ſuum opus omne Dominus
אֲדֹנָי אֶת־כָּל־מַעֲשֵׂהוּ בְּהַר צִיּוֹן וּבִירוּשָׁלִַם אֶפְקֹד
gloriam ſuper & , Aſſur regis cordis magnitudinis fructū ſuper
עַל־פְּרִי־גֹדֶל לְבַב מֶלֶךְ־אַשּׁוּר וְעַל־תִּפְאֶרֶת
, feci meæ manus fortitudine In :dixit Nam.ejus oculorum altitudinis
13 רוּם עֵינָיו׃ כִּי אָמַר בְּכֹחַ יָדִי עָשִׂיתִי
,populorum terminos feci removere & :fui prudens quia,mea ſapientia in &
וּבְחָכְמָתִי כִּי נְבֻנוֹתִי וְאָסִיר גְּבוּלֹת עַמִּים
potens tanquam feci deſcendere & , ſum deprædatus eorum præparata &
וַעֲתִידֹתֵיהֶם שׁוֹשֵׂתִי וְאוֹרִיד כַּאבִּיר
; populorum facultatem ad mea manus nidū veluti invenit Et .ſedentes
14 יוֹשְׁבִים׃ וַתִּמְצָא כַקֵּן יָדִי לְחֵיל הָעַמִּים
: congregavi ego terram omnem ,derelicta ova colligere ſecundùm &
וְכֶאֱסֹף בֵּיצִים עֲזֻבוֹת כָּל־הָאָרֶץ אֲנִי אָסָפְתִּי
.garriens & , os aperiens & , alam movens fuit non &
וְלֹא הָיָה נֹדֵד כָּנָף וּפֹצֶה פֶה וּמְצַפְצֵף׃
ſe magnificabit an ? ea in incidentem contra ſecuris gloriabitur Nunquid
15 הֲיִתְפָּאֵר הַגַּרְזֶן עַל הַחֹצֵב בּוֹ אִם־יִתְגַּדֵּל
,ipſam exaltantes , virgam agitare ſecundùm? eam agitantem contra ſerra
הַמַּשּׂוֹר עַל־מְנִיפוֹ כְּהָנִיף שֵׁבֶט אֶת־מְרִימָיו
.lignum non baculum exaltare ſecundùm
כְּהָרִים מַטֶּה לֹא־עֵץ׃

Verſio VUL. LAT.

CAP. X.

1 VÆ qui condunt leges iniquas: & ſcribentes, injuſtitiam 2 ſcripſerunt: Ut opprimerent in judicio pauperes, & vim facerent cauſæ humilium populi mei: t eſſent viduæ præda eorum, & pupillos diriperent. 3 Quid facietis in die viſitationis, & calamitatis de longè venientis? ad cujus confugietis auxilium? & ubi derelinquetis 4 gloriam veſtram, Ne incurvemini ſub vinculo, & cum interfectis cadatis? Super omnibus his non eſt averſ⁹ furor ej⁹, ſed 5 adhuc manus ejus extenta. Væ Aſſur, virga furoris mei & baculus ipſe eſt, in manu eorum 6 indignatio mea. Ad gentē fallacem mittam eum, & contra populum furoris mei mandabo illi, ut auferat ſpolia, & diripiat prædam, et ponat illum in conculcationem quaſi lutum 7 platearum. Ipſe autem non ſic arbitrabitur, & cor ejus non ita exiſtimabit: ſed ad conterendum erit cor ejus, & ad internecionem gentium non 8 paucarum. Dicet enim; 9 Numquid non principes mei ſimul reges ſunt? numquid non ut Charcamis, ſic Calano; & ut Arphad, ſic Emath? numquid non ut Damaſcus, ſic Sa- 10 maria? Quomodò invenit manus mea regna idoli, ſic & ſimulachra eorū de Jeruſalem, 11 & de Samaria. Numquid non ſicut feci Samariæ & idolis ejus, ſic faciam Jeruſalem & ſi- 12 mulachris ejus? Et erit: cùm impleverit Dominus cuncta opera ſua in monte Sion, & in Jeruſalem, viſitabo ſuper fructum magnifici cordis regis Aſſur, & ſuper gloriam altitu- 13 dinis oculorum ejus. Dixit enim; In fortitudine man⁹ meæ feci, & in ſapientia mea intellexi: & abſtuli terminos populorum, & principes eorum deprædatus ſum, & detraxi quaſi potens in ſublimi reſidentes. 14 Et invenit quaſi nidum manus mea fortitudinem populorum: & ſicut colliguntur ova, quæ derelicta ſunt, ſic univerſam terram ego congregavi: & non fuit qui moveret pennam, & a- 15 periret os, & ganniret. Numquid gloriabitur ſecuris contra eum, qui ſecat in ea? aut exaltabitur ſerra contra eum, à quo trahitur? quomodò ſi elevetur virga contra elevantem ſe, & exaltetur baculus, qui utique lignum eſt.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ι.

1 ΟΥαὶ τοῖς γράφουσι πονηρίαν, γράφοντες 2 γὰρ πονηρίαν γράφουσιν· Ἐκκλίνοντες κρίσιν πτωχῶν, (α) ἁρπάζοντες κρίμα πενήτων τοῦ λαοῦ μου, ὥστε εἶναι αὐτοῖς χήραν (β) εἰς διαρ- 3 παγὴν, καὶ ὀρφανὸν εἰς προνομήν. Καὶ τί ποιήσουσιν ἐν τῇ ἡμέρᾳ (γ) τῆς ἐπισκοπῆς; ἡ γὰρ θλίψις ὑμῖν πόῤῥωθεν ἥξει· καὶ πρὸς τίνα καταφεύξεσθε τοῦ βοηθηθῆναι; καὶ ποῦ κα- 4 ταλείψετε τὴν δόξαν ὑμῶν, Τοῦ μὴ ἐμπεσεῖν (δ) εἰς ἀπαγωγήν; ἐπὶ πᾶσι τούτοις οὐκ ἀπεστρά- 5 φη (ε) ἡ ὀργὴ, ἀλλ' ἔτι ἡ χεὶρ ὑψηλή. Οὐαὶ Ἀσσυρίοις, ἡ ῥάβδος τοῦ θυμοῦ μου, (ζ) καὶ 6 ὀργή ἐστιν ἐν ταῖς χερσὶν αὐτῶν. Τὴν ὀργήν μου εἰς ἔθνος ἄνομον (η) ἀποστελῶ, καὶ τῷ ἐμῷ λαῷ συντάξω (θ) ποιῆσαι σκῦλα καὶ προνομὴν, καὶ καταπατεῖν τὰς πόλεις, καὶ θεῖ- 7 ναι αὐτὰς εἰς κονιορτόν. Αὐτὸς δὲ οὐχ οὕτως ἐνεθυμήθη, καὶ τῇ ψυχῇ οὐχ οὕτως λελόγισται, ἀλλὰ ἀπαλλάξει ὁ νοῦς αὐτοῦ, καὶ (ι) τοῦ ἔθνη 8 ἐξολοθρεῦσαι οὐκ ὀλίγα. Καὶ ἐὰν εἴπωσιν 9 αὐτῷ, Σὺ μόνος εἶ ἄρχων· Καὶ ἐρεῖ, Οὐκ ἔλαβον τὴν χώραν τὴν ἐπάνω Βαβυλῶνος καὶ (κ) Χαλάνης, οὗ ὁ πύργος ᾠκοδομήθη, καὶ ἔλαβον Ἀραβίαν καὶ Δαμασκὸν καὶ Σαμάρει- 10 αν. Ὃν τρόπον ταύτας ἔλαβον (λ), καὶ πάσας τὰς ἀρχὰς λήψομαι. ὀλολύξατε τὰ γλυπτὰ 11 ἐν Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐν Σαμαρείᾳ. Ὃν τρόπον γὰρ ἐποίησα Σαμαρείᾳ, καὶ τοῖς χειροποιήτοις (μ) αὐτῆς, οὕτω ποιήσω καὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ 12 τοῖς εἰδώλοις αὐτῆς. Καὶ ἔσται ὅταν συντελέσῃ κύριος πάντα ποιῶν ἐν τῷ ὄρει Σιὼν καὶ (ν) Ἱερουσαλὴμ, ἐπισκέψομαι ἐπὶ τὸν νοῦν τὸν μέγαν ἐπὶ τὸν ἄρχοντα τῶν Ἀσσυρίων, καὶ ἐπὶ τὸ ὕψος τῆς δόξης τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ. 13 Εἶπε γὰρ, (ξ) Ἐν τῇ ἰσχύϊ ποιήσω, καὶ ἐν τῇ σοφίᾳ τῆς συνέσεως ἀφελῶ ὅρια ἐθνῶν, καὶ τὴν 14 ἰσχὺν αὐτῶν προνομεύσω. Καὶ σείσω πόλεις κατοικουμένας, καὶ τὴν οἰκουμένην ὅλην καταλήψομαι (ο) τῇ χειρὶ ὡς νοσσιὰν, καὶ ὡς καταλελειμμένα ᾠὰ ἀρῶ· καὶ οὐκ ἔστιν ὃς δια- 15 φεύξεταί (π) με, ἢ ἀντείπῃ μοι. Μὴ δοξασθήσεται ἀξίνη ἄνευ τοῦ κόπτοντος ἐν αὐτῇ; ἢ ὑψωθήσεται πρίων ἄνευ τοῦ ἕλκοντος αὐτόν; (ρ) ὡς ἄν τις ἄρῃ ῥάβδον ἢ ξύλον. καὶ οὐχ οὕτως,

MS.A. (α) καὶ ἁρπάζοντες (β) εἰς ἁρπαγὴν, (γ) ἐπισκοπῆς; [illegible] ἐπαγωγήν; καὶ ὑποκάτω τῶν ἀνῃρημένων πεσοῦνται· ἐπεὶ τούτοις πᾶσιν [illegible] θυμὸς, (ζ) καὶ ὀργῆς ἐν ταῖς χερσὶν (η) ἀποστέλλω, (θ) τοῦ ποιῆσαι [illegible] ἐξολεθρεῦσαι ἔθνη οὐκ ὀλίγα. (κ) Χαλάννη, (λ) ἐν τῇ χειρί μου, καὶ πάσας τὰς χώρας (μ) *αὐτοῖς, οὕτως (ν) ἐν Ἱερουσαλὴμ, ἐπάξει ἐπὶ τὸν νοῦν τὸν μέγαν τὸν ἄρχοντα (ξ) Τῇ ἰσχύϊ ποιήσω, καὶ * τῇ συνέσεως τῆς σοφίας (ο) τῇ χειρί μου (π) μοι, (ρ) ὡσαύτως ἐάν τις

CAP. X.

VÆ ſcribentibus iniquitatem: ſcribentes enim, iniquitatem ſcribunt: Declinantes judicium inopum, rapientes cauſam pauperum populi mei; ut ſit ipſis vidua in direptionem, & pupillus in prædam. Et quid facient in die viſitationis? Tribulatio enim vobis de longè veniet: Et ad quem confugietis ad auxiliū conſequendum? Et ubi derelinquetis gloriam veſtram, ut non incidatis in (a) abductionem? In omnibus his non eſt averſus furor, ſed adhuc manus excelſa. Væ Aſſyriis: virga furoris mei, & ira in manibus eorum. Iram meam in gentem iniquam mittam, & populo meo præcipiam, ut faciat ſpolia & prædam, & conculcet civitates, & ponat eas in pulverem. Ipſe autem non ſic cogitavit, & anima non ita arbitratus eſt: ſed attendit mens ejus etiam, ut diſperdat gentes plurimas. Quòd ſi dixerint ei, Tu ſolus es princeps: Et dicet; Non cepi regionem, quæ eſt ſupra Babylonem, & Chalanen, ubi turris ædificata eſt. Cepi autem Arabiam, & Damaſcum, & Samariam. Sicut has cepi, ſic omnes principatus capiam. Ululate ſculptilia in Hieruſalem, & in Samaria. ut enim feci Samariæ, & manufactis ejus; ſic faciam et Hieruſalem & idolis ejus. Et erit, cùm conſummaverit Dominus omnia faciens in monte Sion, & Hieruſalem (b) viſitabo ſuper ſenſum magnum ſuper principem Aſſyriorum, & ſuper altitudinem gloriæ oculorum ejus. Dixit enim; In fortitudine faciam, & in ſapientia intellectus auferam terminos gentium, & fortitudinem eorum deprædabor: Et concutiam civitates habitatas, & orbem terræ totum apprehendam manu quaſi nidum, & quaſi ova derelicta tollam: & non eſt qui effugiat me, aut contradicat mihi. Nunquid glorificabitur ſecuris ſine eo, qui cædit in ipſa? aut exaltabitur ſerra ſine eo, qui eam trahit? quomodò ſiquis elevet virgam, aut (d) lignum: & [illegible]

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

י

1 2 וי דרשמין רשמין דמינס וכתב דליאו כתבין׃ לאסטאה מדין מסכנין ולמינס מה דרען
3 מחשיכי עמא בדינא למהוי ארמלן עדיהון וית נכסי יתמיא יבזון׃ ומה תעבדון ליומא
דיסערון עליכון חוביכון ולרגוש עקא מרחיק ייתי לאן תערקון למסעיד והיכא תשבקון
4 יקרכון׃ בכן בר מן ארעכון אסירין תתאסרון ובר מקרויכון קטילין תתרמון בכל דא
לא תבו מחוביהון דיתוב רוגזיה מנהון ועד כען מתקפין מרדיהון ועוד מחתיה עתידא
5 6 לאתפרע מנהון׃ וי אתוראה שולטן רוגזי ומלאך שליח מן קדמי עליהון בלוט׃ בכנשא
חנפא אשלחניה ועל עמא דעברו על אוריתא אפקדניה למבז בזא ולמעדי עדאה
7 ולשויותיה לדייש כסין שוקין׃ והוא לא כן מדמי ולביה לא כן מחשיב ארי לשצאה
8 אמר בלביה ולאספא עממין לא בחיס׃ ארי יימר הלא כל שלטוני כחדא כמלכין
9 חשיבין קדמי׃ הלא כמא דכרכמיש כבישא קדמי כן כלנו אם לא כמא דארפד מסירא
10 בידי כן חמת וכמא דעבדית לדמשק כן אעביד לשמרון׃ כמא דאשכחת ידי מלכון
11 דפלחן לטעותא וצלמניהון מירושלם ומקמתא דשמרון׃ הלא כמא דעבדית לשמרון
12 ולטעותהא כן אעביד לירושלם ולצלמניא דיבה׃ ויהי ארי ישיצי יי למעבד ית כל
דאמר בטורא דציון ובירושלם אסער על עובדי רם לבא דמלכא דאתור ועל תושבחת
13 רמות עינוהי׃ ארי אמר בתקוף ידי עבדית ובחוכמתי ארי סוכלתן אנא ואגליתי
עממיא ממדינא למדינא וקרוי תושבחתהון בזיתי ואחתית בתקוף ית יתבי כרכין
14 תקיפין׃ ואשכחת כקנא ידי נכסי עממיא וכמכנש ביעין שביקין כל דירי ארעא אנא
15 כנישית ולא הוה נטיל מכא ושדי כא ופתח פומא וממליל מלא׃ האפשר דישתבח
חולילא על דחליל ביה למימר הא אנא חללית אם יתרברב מסרא על דנגיד ביה
למימר הלא אנא נגרית כארמא חוטרא למחי לא חוטרא מחי אלהין מן דמחי
ביה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. X.

VÆ qui ſignant ſignacula violentiæ, & ſcripturam laboris ſcribunt: Ut evertant à jure pauperes, et vi rapiant id quod maximè volunt pauperes populi mei in judicio: ut ſint viduæ præda eorum; & ſubſtantiam pupillorum diripiant. Et quid facietis in die qua viſitabuntur ſuper vos peccata veſtra? & in tumultu tribulationis quæ de longè veniet? quò fugietis ad auxilium? & quomodo relinquetis gloriam veſtram? Propter extra terram veſtram vinculis vinciemini, & extra civitates veſtras interfecti projiciemini. In omnibus his non ſunt converſi à peccatis ſuis ut averteretur furor ejus ab eis, & adhuc retinent ſcelera ſua: & adhuc plaga ejus futura eſt, ut vindictam ſumat ab eis. Væ Aſſur dominium furoris mei, & angelus miſſus à facie mea contra eos in maledictionem. Ad cœtum hypocriticū mittam eum, & ſuper populum qui tranſgreſſi ſunt legem meam mandabo illi, ut diripiat prædam & auferat ſpolium, & ut ponat eum in conculcationem quaſi lutum platearum. Et ipſe non ſic exiſtimat, & in corde ſuo non ſic cogitat; ſed ad diſperdendum dicit in corde ſuo, & ut conſumat populos abſque miſericordia. Dicit enim: Nonne omnes principes mei pariter quaſi reges reputati ſunt coram me? Nonne ſicut Carchamis ſubjecta eſt coram me, ſic Calano? Nonne ſicut Arphat tradita eſt in manum meam, ſic Hemath? & ſicut feci Damaſco, ſic faciā Samariæ. Sicut invenit manus mea regna quæ colunt idola, & ſimulachra eorum de Hieruſalem & ex ſtatuis Samariæ? Nonne ſicut feci Samariæ & idolis ejus; ſic faciam Hieruſalem & ſimulachris ejus? Et erit cùm conſummaverit Dñs ut faciat omnia quæ dixit in monte Sion & in Hieruſalem, viſitabo ſuper opera elati cordis regis Aſſur, & ſuper laudem altitudinis oculorū ejus. Dixit enim: In fortitudine manus meæ feci, & in ſapientia mea quia intelligens ego ſum: & tranſmigrare feci populos de provincia in provinciā, & civitates laudabiles eorum deprædatus ſum, & detraxi in fortitudine habitantes in arcibus fortiſſimis. Et invenit quaſi nidum manus mea ſubſtantiam populorum, & ſicut colliguntur ova quæ derelicta ſunt omnes habitatores terræ ego ſubjeci; & non fuit qui tolleret [illegible] mitteret illuc, & aperiret os ſuum & loqueretur verbum. Nunquid gloriabitur ſecuris contra eum qui ſcindit in eo; dicens: Ecce ego ſcindo? [illegible] magnificabitur ſerra contra eum à quo trahitur, dicens: Nonne ego [illegible] Quando elevatur virga ad percutiendum, non virga percutit, ſed ille qui percutit [illegible]

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *

* ܘܝ ܠܕܓܙܪܝܢ ܦܘܩܕܢܐ ܕܥܘܠܐ ܘܟܬܒܝܢ ܥܡܠܐ܂ * ܠܡܣܛܝܘ ܕܝܢܐ ܕܡܣܟܢܐ܂ ܘܠܡܚܛܦ ܕܝܢܐ 2
ܕܡܣܟܢܐ ܕܥܡܝ܂ ܕܢܒܙܘܢ ܐܪܡܠܬܐ܂ ܘܢܒܙܘܢ ܠܝܬܡܐ܂ * ܘܡܢܐ ܬܥܒܕܘܢ ܒܝܘܡܐ 3
ܕܦܘܪܥܢܐ܂ ܘܠܫܓܘܫܝܐ ܕܡܢ ܪܘܚܩܐ ܐܬܝܐ܂ ܠܘܬ ܡܢ ܬܥܪܩܘܢ ܕܬܬܥܕܪܘܢ܂ ܘܠܘܬ ܡܢ
ܬܫܒܩܘܢ ܐܝܩܪܟܘܢ܂ * ܕܠܐ ܬܬܟܦܘܢ ܬܚܝܬ ܐܣܝܪܐ܂ ܬܚܝܬ ܩܛܝܠܐ ܬܦܠܘܢ܂ ܘܒܟܠܗܝܢ 4
ܗܠܝܢ ܠܐ ܗܦܟ ܪܘܓܙܗ܂ ܐܠܐ ܬܘܒ ܐܝܕܗ ܪܡܐ܂ * ܘܝ ܠܐܬܘܪܝܐ ܫܒܛܐ ܕܪܘܓܙܝ܂ ܘܚܘܛܪܐ ܗܘ 5
ܕܒܐܝܕܝܗܘܢ ܕܡܚܘܬܝ܂ * ܠܘܬ ܥܡܐ ܚܢܦܐ ܐܫܕܪܝܘܗܝ܂ ܘܥܠ ܥܡܐ ܕܐܪܓܙܢܝ ܐܦܩܕܝܘܗܝ܂ 6
ܠܡܒܙ ܒܙܬܐ܂ ܘܠܡܫܩܠ ܫܠܝܐ܂ ܘܠܡܕܝܫܘܬܗܘܢ ܐܝܟ ܛܝܢܐ ܕܫܘܩܐ܂ * ܘܗܘ ܠܐ ܗܘܐ 7
ܗܟܢܐ ܐܣܒܪ܂ ܘܒܠܒܗ ܠܐ ܗܘܐ ܗܟܢܐ ܐܬܚܫܒ܂ ܐܠܐ ܠܡܘܒܕܘ ܒܠܒܗ܂ ܘܠܫܘܨܝܘ ܥܡܡܐ 8
ܣܓܝܐܐ܂ * ܡܛܠ ܕܐܡܪ܂ ܗܐ ܪܘܪܒܢܐ ܐܟܚܕܐ ܡܠܟܐ ܐܢܘܢ܂ * ܗܐ ܐܝܟ ܒܪ ܟܡܘܫ 9
ܟܠܢܘ܂ ܐܝܟ ܐܪܦܕ ܚܡܬ܂ ܘܐܝܟ ܕܪܡܣܘܩ ܫܡܪܝܢ܂ * ܘܐܝܟ ܕܐܫܟܚܬ ܐܝܕܝ ܠܡܠܟܘܬܐ 10
ܕܦܬܟܪܐ ܘܕܨܠܡܐ܂ ܗܟܢܐ ܐܘܪܫܠܡ ܘܗܟܢܐ ܫܡܪܝܢ܂ * ܘܐܝܟ ܕܥܒܕܬ ܠܫܡܪܝܢ 11
ܘܠܦܬܟܪܝܗ܂ ܗܟܢܐ ܐܥܒܕ ܠܐܘܪܫܠܡ ܘܠܦܬܟܪܝܗ܂ * ܘܢܗܘܐ ܡܐ ܕܫܠܡ ܡܪܝܐ 12
ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܒܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܘܒܐܘܪܫܠܡ܂ ܐܣܥܘܪ ܥܠ ܦܐܪܘܗܝ ܕܪܡܐ ܠܒܐ
ܕܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ܂ ܘܥܠ ܫܘܒܗܪܐ ܕܪܘܡܐ ܕܥܝܢܘܗܝ܂ * ܡܛܠ ܕܐܡܪ܂ ܒܚܝܠܐ ܕܐܝܕܝ 13
ܥܒܕܬ܂ ܘܒܚܟܡܬܝ ܡܛܠ ܕܡܣܬܟܠ ܐܢܐ܂ ܐܥܒܪܬ ܬܚܘܡܝܗܘܢ ܕܥܡܡܐ܂
ܘܥܬܝܕܬܗܘܢ ܒܙܬ܂ ܘܟܒܫܬ ܡܕܝܢܬܐ ܕܥܡܝܪܢ܂ * ܘܐܫܟܚܬ ܐܝܟ ܩܢܐ ܐܝܕܝ ܚܝܠܐ 14
ܕܥܡܡܐ܂ ܘܐܝܟ ܕܟܢܫܝܢ ܒܐܥܐ ܕܫܒܝܩܢ܂ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܟܢܫܬ܂ ܘܠܐ ܗܘܐ
ܕܡܢܝܕ ܓܦܐ܂ ܘܦܬܚ ܦܘܡܗ ܘܡܨܦܨܦ܂ * ܕܠܡܐ ܡܫܬܒܗܪ ܢܪܓܐ 15
ܥܠ ܡܢ ܕܦܣܩ ܒܗ܂ ܐܘ ܡܫܬܥܠܝܐ ܡܣܪܐ ܥܠ ܡܢ ܕܢܣܪ ܒܗ܂ ܐܘ ܡܫܬܥܠܐ
ܫܒܛܐ ܥܠ ܡܢ ܕܡܪܝܡ ܠܗ܂

CAP. X.

VÆ promulgantibus edicta injuſta, & iniqua 1
ſcribentibus. Ad pervertendum judicium 2
pauperum, & rapiendum jus egenorum populi
mei; ut ſpolient viduas & diripiant pupillos.
Ecquid facturi eſtis in die retributionis, 3
& in perturbatione de longinquo ventura?
ad quem confugietis ut juvemini? &
apud quem relinquetis gloriam veſtram?
Qui ſub vinctis non incurvabimini, ſub occiſis 4
cadetis: his tamen omnibus non avertetur
ira ejus, ſed adhuc manus ejus erecta eſt. Væ; 5
Aſſyrium, qui eſt virga furoris mei, & baculus
eſt plagæ meæ in manu eorum; In populum 6
impium immiſſurus ſum, & in populum
pervicacem poteſtatem tribuam illi prædam
auferendi, & ſpolia diripiendi, & conculcatum
reddendi cum ceu lutum platearum.
Ipſe verò non ita *rem* ſibi fingit, nec ita 7
animo ſuo concipit; ſed perdere animo illi
eſt, & conſumere gentes multas. Dicit enim; 8
Ecce principes omnes, reges ſunt: Ecce ut 9
Bar-chemos, erit Chelio; & ut Rephad, *ſic*
Hemath; & ut Damaſcus, *ſic* Samaria: Et 10
quemadmodum aſſecuta eſt manus mea regna
idolorum & ſculptilium, *ſic* Jeroſolymam &
Samariam: Et quemadmodum feci Samariæ 11
& idolis ejus, ita faciam Jeroſolymæ & idolis
ejus. Deinde futurum eſt, cùm abſolverit 12
Dominus omnia opera ſua in monte Sion
& in Jeruſalem, ut viſitem fructus ſuperbi
animi regis Athur, & inſolentiam celſitudinis
oculorum ejus: Quia dixit, Virtute manûs 13
meæ feci, & ſapientiâ meâ, quòd prudens ſim:
amovi terminos populorum, et opes eorum
diripui, et urbes frequentes edomui: Et aſſecuta 14
eſt ceu nidum manus mea robur gentium,
et ut colliguntur ova derelicta, collegi
totam terram, nec fuit qui alas attolleret,
aut os ſuum aperiret ac pipiret. Num 15
gloriaretur ſecuris contra eum qui eâ cædit?
aut magnificaretur ſerra contra eum qui
eâ ſecat? aut ſuperbiret virga contra eum
qui attollit eam?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل العاشر * قريان المداين *

1 2 * الويل للذين يكتبون الشر * لانهم اذا كتبوا الشر * انما يكتبونه اذ يميلون عن حكم
المساكين * ويختطفون انصاف فقراء شعبي * حتى تكون الارملة لهم للاختطاف واليتيم
3 للغنيمة * فماذا يصنعون في يوم المراقبة * لان ضغطهم يوافي من البعد * فالى من تهربون
4 لتستغيثوا به * واين تخلفون مجدكم * ليلا تقعوا للاختطاف وتسقطوا تحت المقتولين * وفي
5 هذه كلها لم يرتد غضبه لكن يده ايضا عالية * الويل للموصليين * قضيب غضبي
6 ويجري في ايديهم * ارسل غضبي الى الامة الاثمة * وامر شعبي ان يصنع غنايم ونهبا *
7 ويدوس المدن ويضعها كالغبار * وهو فلم ير هكذا * ولم يفكر في نفسه هكذا * لكن
8 9 خامر عقله ان يبيد امما ليست قليلة * وان قالوا له * انت وحدك رييس * فيقول الم
اخذ البلد التي فوق باطل وخالنيس حيث بني البرج * واخذت ارابيا ودمسق وسامرن *
10 * هكذا اخذت هاولاء بيدي واخذ كل البلدان * وولولي ايها المنحوتات بايروسليم
11 والسامرة * لاني كما عملت بالسامرة وبعمل يديها * هكذا اصنع بايروسليم وباوثانها *
12 * ويكون اذا استكمل الرب كلما يصنعه في جبل صهيون وفي ايروسليم * يغلب الرب على
13 العقل العظيم * على رييس الموصليين * وعلى ارتفاع شرف عينيه * لانه قال لاعملن
14 بقوة يدي * وبحكمة فمي انزع حدود الامم * وانهب قوتهم * وازلزل المدن العامرة * واتناول
بيدي المسكونة كلها كالعش * وارفعها كالبيض المتروك * وليس من يفلت مني او يرادني
ويفتح فاه ويصاصي * هل يتشرف الفاس من غير قاطع يقطع به * او يرتفع المنشار دون
ممن يجذبه * كذلك اذا تناول احد عصا او عودا *

CAP. X.

Lectio de litibus.

VÆ ſcribentibus quod nefas eſt, quoniam 1
cùm nefaria ſcribunt, Profectò 2
ſcribunt ea deflectentes à judicio
pauperum; & rapiunt jus inopum populi
mei: ut ſic illis vidua in rapinam, &
pupillus in prædam. Quid enim facient 3
in die animadverſionis, quandoquidem calamitates
eorum ventura eſt è longinquo?
ad quem fugietis ut opem ejus imploretis?
& ubinam relinquetis gloriam veſtram,
Ne corruatis in rapinam, & ſub interfectis 4
ſuccumbatis? at his omnibus nequaquam
ceſſabit ira ejus, ſed manus ejus adhuc
eſt elevata. Væ Aſſyriis in quorum 5
manibus eſt virga furoris & indignationis
meæ. Immittam furorem meum in 6
gentem iniquam, & præcipiam populo
meo ut prædam & populationem faciat,
urbes conculcet, & ut pulverem deprimat.
Verùm ipſe nec ita ſentit, nec talia 7
apud ſe cogitat; ſed cæcâ mente ſibi
proponit conſumere gentes non paucas.
Quòd ſi dicant ei, Tu ſolus princeps es: 8
Nonne, inquit, regiones cepi quæ ſunt 9
ſuper Batelem, & Chalennis, ubi turris
extructa fuerat; & cepi Arabiam, Damaſcum,
& Samariam? Eodem modo 10
capiam iſtos manu meâ, & occupabo
regiones omnes. Ululate O ſculptilia
in Jeruſalem & Samaria; Quia 11
quemadmodum feci Samariæ & operibus
manuum ejus, ita faciam Jeroſolymæ
& idolis ejus. Futurum eſt 12
autem ut cùm perfecerit Dominus quicquid
facturus eſt in monte Sion &
in Jeruſalem, increpet Dominus mentem
illam magnam, principem Aſſyriorum,
& inſolentem ſuperbiam oculorum ejus:
Quia dixit, Equidem potentiâ manûs 13
meæ agam, & ſapientiâ oris mei auferam
terminos populorum, diripiam opulentiam
eorum, & urbes populoſas
tremefaciam: Et orbem univerſum 14
ceu nidum arripiam manu meâ, tollámque
ſicut ova derelicta, nemine à me evadente,
aut reluctante, aut os ſuum aperiente
ac pipiente. An gloriabitur 15
ſecuris abſque cædente qui eâ cædat?
aut extollet ſe ſerra ſine trahente illam?
& pari modo cùm quis baculum
aut lignum [illegible]?

ſubter &,in aciē ejus pinguib⁹ in exercituū Domin⁹ dominator mittet Ideo
16 לָכֵן יְשַׁלַּח הָאָדוֹן אֲדֹנָי צְבָאוֹת בְּמִשְׁמַנָּיו רָזוֹן וְתַחַת
Iſrael lux erit Et .ignis incendiū quaſi incendiū incendet ej⁹ gloriā
17 כְּבֹדוֹ יֵקַד יְקֹד כִּיקוֹד אֵשׁ׃ וְהָיָה אוֹר־יִשְׂרָאֵל
,ejus ſpinam devorabit & ,ardebit & : flammam in ej⁹ ſanctus & ,ignem in
לְאֵשׁ וּקְדוֹשׁוֹ לְלֶהָבָה וּבָעֲרָה וְאָכְלָה שִׁיתוֹ
,anima ab,ejus Charmel &,ejus ſylvæ gloriā Et .una die in ej⁹ veprem &
18 וּשְׁמִירוֹ בְּיוֹם אֶחָד׃ וּכְבוֹד יַעְרוֹ וְכַרְמִלּוֹ מִנֶּפֶשׁ
lignum reſiduū Et .vexilliferū liqueſcere ſicut erit &:conſumet carnē ad uſq; &
19 וְעַד־בָּשָׂר יְכַלֶּה וְהָיָה כִּמְסֹס נֹסֵס׃ וּשְׁאָר עֵץ
non ,illa die in erit Et .ea ſcribat puer ut :erunt *numerus* ejus ſylvæ
20 יַעְרוֹ מִסְפָּר יִהְיוּ וְנַעַר יִכְתְּבֵם׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא לֹא־
ſuper inniti ,Jahacob domus *evaſio* & ,Iſrael reſiduum ultrà adjiciet
יוֹסִיף עוֹד שְׁאָר יִשְׂרָאֵל וּפְלֵיטַת בֵּית־יַעֲקֹב לְהִשָּׁעֵן עַל־
.veritate in Iſrael Sanctum Dominum ſuper innitetur & :ſe percutientē
מַכֵּהוּ וְנִשְׁעַן עַל־יְהוָה קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל בֶּאֱמֶת׃
fuerit ſi Quia .fortem Deum ad ,Jahacob reſiduū,convertetur Reſiduū
21 שְׁאָר יָשׁוּב שְׁאָר יַעֲקֹב אֶל־אֵל גִּבּוֹר׃ כִּי אִם־יִהְיֶה
22 conſūmatio:eo *in* convertetur reſiduū,maris arena veluti Iſrael tu⁹ popul⁹
עַמְּךָ יִשְׂרָאֵל כְּחוֹל הַיָּם שְׁאָר יָשׁוּב בּוֹ כִּלָּיוֹן
Dominus Domin⁹ deciſam & conſūmationē Quia .juſtitiam *mundans* deciſa
23 חָרוּץ שׁוֹטֵף צְדָקָה׃ כִּי כָלָה וְנֶחֱרָצָה אֲדֹנָי יְהוִה
Dominus Dñs dixit ſic Idcirco .terræ univerſæ *interiori in faciens* exercituū
24 צְבָאוֹת עֹשֶׂה בְּקֶרֶב כָּל־הָאָרֶץ׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה
virga In .Aſſur ab Sijon habitator ,mi populus timeas Ne :exercituum
צְבָאוֹת אַל־תִּירָא עַמִּי יֹשֵׁב צִיּוֹן מֵאַשּׁוּר בַּשֵּׁבֶט
paululū adhuc Nam.Ægypti via in te ſup levabit ſuū baculū &,te pcutiet
25 יַכֶּכָּה וּמַטֵּהוּ יִשָּׂא־עָלֶיךָ בְּדֶרֶךְ מִצְרָיִם׃ כִּי־עוֹד מְעַט
ſuſcitabit Et .eorū *everſionem* ad me⁹ *naſus* & ,ira conſūmabitur &,paululū
26 מִזְעָר וְכָלָה זַעַם וְאַפִּי עַל־תַּבְלִיתָם׃ וְעוֹרֵר
,Horeb petra in ,Midian plagā juxta flagellū exercituū Dominus eū ſuper
עָלָיו יְהוָה צְבָאוֹת שׁוֹט כְּמַכַּת מִדְיָן בְּצוּר עוֹרֵב
illa die in ,erit Et .Ægypti via in eā elevabit &,mare ſup ſuā virgā &
27 וּמַטֵּהוּ עַל־הַיָּם וּנְשָׂאוֹ בְּדֶרֶךְ מִצְרָיִם׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא
:tuo collo *deſuper* ejus jugum & ,tuo humero *deſuper* ejus onus removebitur
יָסוּר סֻבֳּלוֹ מֵעַל שִׁכְמֶךָ וְעֻלּוֹ מֵעַל צַוָּארֶךָ
,Migron in tranſivit,Hajath ad Venit .olei *faciebus* à jugum corrūpetur &
28 וְחֻבַּל עֹל מִפְּנֵי־שָׁמֶן׃ בָּא עַל־עַיַּת עָבַר בְּמִגְרוֹן
Ghebah ,*tranſitum* Tranſierunt .ſua inſtrumenta commendabit Michmas in
29 לְמִכְמָשׂ יַפְקִיד כֵּלָיו׃ עָבְרוּ מַעְבָּרָה גֶּבַע
Ittona .fugit Saul Ghibhah ,Ramah *contremuit* :pernoctārūt diverſorio
30 מָלוֹן לָנוּ חָרְדָה הָרָמָה גִּבְעַת שָׁאוּל נָסָה׃ צַהֲלִי
ſe Elongavit .Hanathoth pauper ,Laiſah *attendere fac* ,Gallim filia tuā vocē
31 קוֹלֵךְ בַּת־גַּלִּים הַקְשִׁיבִי לַיְשָׁה עֲנִיָּה עֲנָתוֹת׃ נָדְדָה
Nob in dies Adhuc .*ſe collegerunt fugam ad* Ghebim habitatores,Madmenah
32 מַדְמֵנָה יֹשְׁבֵי הַגֵּבִים הֵעִיזוּ׃ עוֹד הַיּוֹם בְּנֹב
.Jeruſalaim collis ,Sijon domus mons ſuā manum *Agitabit* :ſtandum ad
לַעֲמֹד יְנֹפֵף יָדוֹ הַר בֵּית־צִיּוֹן גִּבְעַת יְרוּשָׁלִָם׃

Verſio VUL. LAT.

16 Propter hoc mittet dominator
Dñs exercituū in pinguib⁹ ej⁹
tenuitatē: & ſubtus gloriam e-
jus ſuccenſa ardebit quaſi com-
17 buſtio ignis. Et erit lumen Iſ-
rael in igne, & Sanctis ejus in
flamma: & ſuccendetur, & de-
vorabitur ſpina ejus, & vepres
18 in die una. Et gloria ſalt⁹ ej⁹,
& Carmeli ejus, ab anima uſq;
ad carnem conſumetur, & erit
19 terrore profugus. Et reliquiæ
ligni ſaltûs ejus præ paucitate
numerabuntur, & puer ſcribet
20 eos. Et erit in die illa: non ad-
jiciet reſiduū Iſrael, & hi qui
fugerint de domo Jacob, inniti
ſup eo qui percutit eos: ſed in-
nitetur ſup Dñm Sanctū Iſrael
21 in veritate. Reliquiæ conver-
tentur, reliquiæ, inquā, Jacob
22 ad Deum fortē. Si enim fuerit
popul⁹ tuus Iſrael quaſi arena
maris, reliquiæ convertentur
ex eo: conſummatio abbrevia-
23 ta inundabit juſtitiā. Conſum-
mationē enim et abbreviatio-
nem Dñs De⁹ exercituū faciet
24 in medio omnis terræ. Propter
hoc, hæc dicit Dñs Deus exer-
cituū; Noli timere, popul⁹ me⁹
habitator Sion, ab Aſſur: in vir-
ga pcutiet te, & baculū ſuū le-
25 vabit ſup te in via Ægypti. Ad-
huc enim paululum modicúm-
que, & conſūmabitur indigna-
tio et furor me⁹ ſup ſcel⁹ eorū.
26 Et ſuſcitabit ſup eum Domin⁹
exercituū flagellū, juxta plagā
Madian in petra Oreb, & vir-
gam ſuā ſuper mare, & levabit
27 eam in via Ægypti. Et erit in
die illa: Auferetur onus ej⁹ de
humero tuo, & jugū ej⁹ de col-
lo tuo, et computreſcet jugū à
28 facie olei. Veniet in Aiath,
tranſibit in Magron: apud
Machmas commendabit vaſa
29 ſua. Tranſierunt curſim, Gaba
ſedes noſtra: obſtupuit Rama,
30 Gabaath Saulis fugit. Hinni
voce tuâ filia Gallim, attende
Laiſa, paupercula Anathoth.
31 Migravit Medemena: habitato-
32 res Gabim, confortamini. Adhuc dies eſt, ut in Nobe ſtetur: agitabit manum ſuam ſuper montem filiæ Sion, collem Jeruſalem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

16 Ἀλλὰ ἀποστελεῖ κύριος Σαβαὼθ εἰς τὴν σὴν
τιμὴν ἀτιμίαν, καὶ εἰς τὴν σὴν δόξαν πῦρ καιό-
17 μενον καυθήσεται. Καὶ ἔσται τὸ φῶς τοῦ Ἰσραὴλ
(σ) εἰς πῦρ, καὶ ἁγιάσει (τ) αὐτὸν ἐν πυρὶ καιο-
μένῳ, καὶ φάγεται ὡσεὶ χόρτον τὴν ὕλην. τῇ ἡ-
18 μέρᾳ ἐκείνῃ Ἀποσβεσθήσεται τὰ ὄρη, (υ) καὶ
οἱ βουνοὶ, καὶ οἱ δρυμοὶ, καὶ καταφάγεται ἀπὸ ψυ-
χῆς ἕως σαρκῶν. καὶ ἔσται ὁ φεύγων, ὡς ὁ φεύ-
19 γων ἀπὸ φλογὸς καιομένης. Καὶ οἱ καταλει-
φθέντες ἀπ' αὐτῶν (φ) ἀριθμὸς ἔσονται, καὶ
20 παιδίον γράψει αὐτούς. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡ-
μέρᾳ ἐκείνῃ, οὐκέτι προστεθήσεται τὸ κατα-
λειφθὲν Ἰσραὴλ, καὶ οἱ σωθέντες τοῦ Ἰακὼβ
οὐκέτι μὴ πεποιθότες ὦσιν ἐπὶ τοὺς ἀδική-
σαντας αὐτοὺς, (') ἀλλὰ ἔσονται πεποιθότες ἐπὶ
21 τὸν θεὸν τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ τῇ ἀληθείᾳ. Καὶ
ἔσται τὸ καταλειφθὲν τοῦ Ἰακὼβ ἐπὶ θεὸν ἰ-
22 σχύοντα. Καὶ ἐὰν γένηται ὁ λαὸς Ἰσραὴλ ὡς
ἡ ἄμμος τῆς θαλάσσης, τὸ κατάλειμμα (χ)
23 αὐτῶν σωθήσεται. (ψ) Λόγον συντελῶν καὶ συν-
τέμνων ἐν δικαιοσύνῃ, Ὅτι λόγον συντε-
τμημένον (ω) κύριος ποιήσει ἐν τῇ οἰκουμένῃ
24 ὅλῃ. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος Σαβαὼθ,
Μὴ φοβοῦ ὁ λαός μου, οἱ κατοικοῦντες ἐν Σι-
ὼν, ἀπὸ Ἀσσυρίων, ὅτι ἐν ῥάβδῳ πατάξει σε·
πληγὴν γὰρ ἐπάγω ἐπὶ σὲ, τοῦ ἰδεῖν ὁδὸν
25 Αἰγύπτου. Ἔτι γὰρ μικρὸν, καὶ παύσεται ἡ ὀργὴ,
26 ὁ δὲ θυμός μου ἐπὶ τὴν βουλὴν αὐτῶν. Καὶ (α) ἐγε-
ρεῖ ὁ θεὸς ἐπ' αὐτοὺς, κατὰ τὴν πληγὴν (β) Μα-
διὰμ ἐν τόπῳ θλίψεως· καὶ ὁ θυμὸς αὐτοῦ τῇ
ὁδῷ τῇ κατὰ θάλασσαν, εἰς τὴν ὁδὸν τὴν κατ'
27 Αἴγυπτον. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἀφ-
αιρεθήσεται ὁ (γ) ζυγὸς αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ ὤμου σου,
καὶ ὁ φόβος αὐτοῦ ἀπὸ σοῦ, καὶ καταφθαρήσεται ὁ
28 ζυγὸς ἀπὸ τῶν ὤμων ὑμῶν. Ἥξει γὰρ εἰς τὴν πό-
λιν Ἀγγαὶ, καὶ παρελεύσεται εἰς (δ) Μαγγεδὼ,
29 καὶ ἐν Μαχμὰς θήσει τὰ σκεύη αὐτοῦ. Καὶ
παρελεύσεται φάραγγα, καὶ ἥξει εἰς Ἀγγαὶ, φό-
30 βος λήψεται Ῥαμᾶ, πόλιν Σαοὺλ, φεύξεται Ἡ
θυγάτηρ Γαλλείμ, ἐπακούσεται (ε) Λαϊσὰ, ἐπα-
31 κούσεται ἐν Ἀναθώθ. (ζ) Καὶ ἐξέστη Μαδεβη-
32 νὰ, καὶ οἱ κατοικοῦντες Γιββείρ. Παρακαλεῖτε σή-
μερον (η) ἐν ὁδῷ τοῦ μεῖναι, τῇ χειρὶ παρακα-
λεῖτε τὸ ὄρος τὴν θυγατέρα Σιὼν, καὶ οἱ βουνοὶ οἱ ἐν Ἱερουσαλήμ.

Sed mittet Domin⁹ Sabaoth in
norem tuū ignominiā: & in
riā tuā ignē ardentem accen
Et erit lumen Iſrael in igne: &
(t) ſanctificabit eum in igne a
denti, & comedet, ſicut fœnum
ſylvā. Die illā Extinguentur m
tes, & colles, et ſaltus, & devo
rabit ab anima uſq; ad carnes. E
erit, qui fugit, quaſi qui fugit à
flamma ardenti: Et reſidui ex e
numerus erunt: & parvulus ſ
bit eos. Et erit in die illa non u
trà adjiciet reſiduum Iſrael, &
ſalvati de Jacob non ultrà fid
tes erunt ſuper eos, qui ipſos in
juriis afficiunt, ſed erunt fidentes
ſuper Deū Sanctū Iſrael veritate
Et erit reſiduum Jacob ſuper Deū
fortē. Quòd ſi fuerit popul⁹ Iſr
el, quaſi arena maris, reliquiæ e
rū ſalvabuntur. Verbum conſu
mans, & brevians in juſtitia: quo
niā ſermonē breviatū faciet Do
minus in toto orbe terræ. Prop
hoc, hæc dicit Dominus Sabao
Noli timere, popul⁹ me⁹, qui ha
tatis in Sion, ab Aſſyriis: quia
virga percutiet te; plagā enim
induco ſuper te, ad videndam vi
Ægypti. Adhuc enim paululum
ceſſabit ira: furor autem meus ſu
conſiliū eorū. Et ſuſcitabit Do
nus ſuper eos ſecundū plagā M
diam in (g) loco tribulationis
furor ejus in via quæ ſuper ma
in viam quæ ſuper Ægyptum.
erit, in die illa auferetur jugū e
ab humero tuo, & timor ej⁹ à
& computreſcet jugū ab hume
veſtris. Veniet enim in civita
Angæ, & tranſibit in Magg
& in Machmas ponet vaſa ſu
Et tranſibit vallē, et veniet in A
gæ: timor apprehendet Rama ci
tatē Saul: (h) fugiet Filia Galli
(i) audietur Laiſa: audietur in A
nathoth: Et obſtupuit Madmen
& habitatores Gebbir. Conſola
ni hodiè in via, ut mane
Manu conſolamini mont
Sion, & colles, qui in Hieru

MS. A. (σ) ὡς πῦρ, (τ) αὐτὸ (υ) καὶ οἱ δρυμοὶ, καὶ οἱ βουνοὶ, (φ) ἔσον
θμὸς, (') ἀλλ' (χ) σωθήσεται. (ψ) Λόγον γὰρ (ω) ποιήσει ὁ θεὸς (α) ἐπεγερεῖ
Μαδιὰμ (γ) φόβος αὐτοῦ ἀπὸ σοῦ, καὶ ὁ ζυγὸς αὐτοῦ ἀπὸ τοῦ ὤμου σου,
γεδδὼ, (ε) ἐν * σα, (ζ) Ἐξέστη (η) ἐν τῇ ὁδῷ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 חלף דאתרברב מלכא דאתור בכן ישלח רבון עלמא יי צבאות ברברבנוהי מחא
17 ותחות מני יקרהון מיקד ייקדון כיקידת אשא : ויהי מריה נהוריה דישראל וקדישיה
מימריה תקיף כאשתא ופתגמיה כשלהוביתא ויקטול וישיצי שלטונוהי וטורנוהי
18 ביומא חד : ויקר סגי משריתיה נפשיהון עם פגריהון ישיצי ויהי תביר ועריק : ושאר
19 20 עבדי קרביה יסופון למהוי עם דמנין ומלכו חלשא יתחשבון : ויהי בעדנא ההיא לא
יוספון עוד שארא דישראל ושזבת בית יעקב לאסתמכא על עממיא דהוו מפלחין בהון
21 ויסתמכון על מימרא דיי קדישא דישראל בקשוט : שאר דלא חטו ודתבו מחטאה
22 שארא דבית יעקב יתובון למפלח קדם אלהא גברא : ארי אם יהי עמך ישראל סגי
כחלא דימא שאר דלא חטו ודתבו מחטאה יתעבדון להון גבורן דמתגברן ומדברן
23 24 בזכו : ארי גמירא ושיצאה יי אלהים צבאות עבד עם כל רשיעי בנו ארעא : בכן כדנן
אמר יי אלהים צבאות לא תדחל עמי יתיב ציון מאתורא בשולטניה ימחנך ומרותיה
25 ירמי עלך כדבאורח מצרים : ארי עוד צבחר כזעיר ויסופון לוטיא מנכון דבית יעקב
26 ורוגזי על עממיא עבדי תבלא לשיצאותהון : וייתי עלוהי יי צבאות מחא כמחת מדין
בשקיף עורב ומרותיה תעדי מנכון כמא דעדת מרות פרעה על ימא ויתעבדן לכון
27 גבורן כדבאורח מצרים : ויהי בעדנא ההיא תעדי מרותיה מנך ונירה מעל צורך
28 ויתברון עממיא מן קדם משיחא : אתא על עית עבר במגרון למכמס ימני רבני
29 משריתיה : גזו עברו ירדנא בנבע בתו להון אתברו יתבי רמתא אנש גבעת שאול
30 31 ערקו : ארימו קלכון אנש בת גלים אציתו דיתבין בליש דדירין בעניה ענתות : אתברו
32 אנש מדמנה יתבי גיבים גלו : עד כען יומא רב וסגי עדן ליה למעל הא סנחריב מלכא
דאתור נטל ועבר תלת אונין ודבר עמיה ארבעין אלפין גוספנין דדהב דבני מלכין
קטירי תגא יתבין בהון ודבר עמיה מאתן אלפין אחידי סיפין ורומחין ודבר עמיה מאתן
ושתין אלפין מחצצי גירין גיברין דרהטין קדמוהי מאה אלפין אורכא דמשריתיה
ארבע מאה פרסין צואר סוסותיה ארבעין פרסין מנין משריתיה מאתן ושתין אלפין
רבוא חסר חד וכן אתו על אברהם כד רמו יתיה לגו נורא יקידתא וכן עתידין למיתי עם
גוג ומגוג כד ישלם עלמא קציה למתפרקא משריתא קדמיתא כד עברו בירדנא שתו מיא
דהוו בירדנא משריתא תניתא כד עברו בירדנא דלו עקבי סוסותא ושתו מיא משריתא
תליתאה כד עברו בירדנא חפרו בירין ושתו מיא: אתא וקם בנוב קרית כהניא לקביל
שורא דירושלם ועני ואמר לחילותיה הלא דא היא קרתא ירושלם דעלה ארגישית כל
משריתי ועלה כבשית כל מדינתי הא היא זעירא וחלשא מכל כרכי עממיא דכבשית
בתקוף ידי עלה קם מניד ברישיה מוביל ומייתי בידיה על טור בית מקדשא די בציון
ועל עזרתא דבירושלם :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Pro eo ꝙ magnificatus eſt rex Aſſyriæ; propterea mittet dominator
Dñs exercituū in principes ej⁹ plagā, & ſubt⁹ *vaſa gloriæ* eorū
dio ſuccendentur, ſicut incendium ignis. Et erit Dñs lumen Iſrael, &
ct⁹ ej⁹, & verbum ejus forte ſicut ignis, & ſermo ejus ſicut flamma, &
det & conſumet principes ej⁹, & ſatrapas ejus in die una. Et gloriam
titudinis exercitus ejus, & animas eorum cum corporib⁹ eorum conſum
& erit confractus & profugus. Et reliqui bellatores ejus deficient,
popul⁹ pauci numeri; & in regnum infirmum reputabuntur. Et erit in tem
pore illo; Non adjicient ultra reſiduum Iſrael, & qui liberati fuer
domo Jacob, inniti ſuper populis, quibus antea ſerviebant: ſed innitentur
ſuper verbo Dñi ſancto Iſrael, in veritate. Reliquiæ quæ non peccaver
& quæ converſæ fuerunt à peccato, reliquiæ domus Jacob converten
ſerviant coram Deo forti. Quoniam ſi fuerit populus tuus Iſrael
ſicut arena maris, illis reliquiis quæ non peccaverūt, & quæ converſ
à peccato, fient magnalia quæ prævalebunt, & ducentur in juſtitia.
conſummationē, & conſumptionem Dñs Deus exercituum faciet
bus impiis *in medio* terræ. Propterea hæc dicit Dñs Deus exercituum
timeas popule meus habitator Sion ab Aſſur. In virga enim ſua p
te, & ſubjectionem ſuam projiciet ſuper te, ſicut in via Ægypti. Q
huc paululū, modicúmque, & deſinent maledictiones à vobis, ô dom
cob; & ira mea erit ſuper populos operantes ſcelus, ut conſum
adducet ſuper eum Dñs exercituum plagam Madian in petra Oreb
jectio ejus auferetur à vobis, ſicut ablata eſt ſubjectio Pharaonis
& fient eis magnalia ſicut in via Ægypti. Et erit in tempore illo
ſubjectio ejus à te, & jugum ejus de collo tuo: & conterentur pop
cie Chriſti. Venit ſuper Ajat, tranſivit in Magron, apud Machmas
tuet principes exercitus ſui. *Vadârunt* tranſierunt Jordanem
manſionē fecerunt ſibi: contriti ſunt habitatores Rama: viri Gabaa
fugerunt. Elevate vocem veſtram viri filiæ Galim; auſcultate qui
in Lais; qui moramini in paupercula Anathoth. Contriti ſunt viri
na, habitatores Gabim tranſmigrarunt. Adhuc dies magnus, &
tempus ei ut ingrediatur. Ecce Senacherib rex Aſſyriorum
tranſiit tres ſtationes, duxitq; ſecum quadragies mille ſedilia aurea
filii regum redimiti coronis inſidebant; adduxit etiā ſecū ducenta
rentiū gladios & haſtas, præterea ducenta & ſexaginta millia
viros præcurrentes eum centies mille: longitudo caſtrorum ej⁹
tæ paraſangæ, cervix equitat⁹ ej⁹ quadraginta paraſangæ, numer
ejus ducenta & ſexaginta millia myriadum minor uno
Abraham quando conjecerunt eū in mediū ignis ardentis
ſunt cum Gog & Magog cum abſolverit mund⁹ terminū
Exercit⁹ prim⁹ tranſmiſſo Jordane epotaverunt aquas quæ
ercit⁹ ſecund⁹ tranſmiſſo Jordane exhauſerunt veſtigia equ
aquas, exercit⁹ terti⁹ tranſmiſſo Jordane foderunt pu
aquas.) veniet & ſtabit in Nobe urbe ſacerdotū contra mu
Et reſpondet & dicit exercitui ſuo: Hæccinæ eſt illa civitas
contra quam congregavi omnia caſtra mea, *& propter quam*
provincias meas? Ecce ipſa *minor &* infirmior eſt cunctis
pulorū, quas ſubjeci in fortitudine manus meæ. *Contra ea*
movebit caput ſuū, & ſtet & tradet manum ſuam ſuper montem domus ſanctuarii quæ eſt in Sion, & contra atrium quod eſt

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠܗܢܐ ܢܫܕܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܟܪܝܘܬܐ ܠܫܡܝܢܘܗܝ. ܚܠܦ ܐܝܩܪܗ ܢܐܩܕ
17 ܝܩܕܢܐ. ܐܝܟ ܝܩܕܢܐ ܕܢܘܪܐ. * ܘܢܗܘܐ ܢܘܗܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܢܘܪܐ. ܘܩܕܝܫܘܗܝ
18 ܠܫܠܗܒܝܬܐ. ܘܬܘܩܕ ܘܬܐܟܘܠ ܟܘܒܘܗܝ ܘܗܓܝܘܗܝ. ܒܝܘܡܐ ܚܕ. * ܘܫܘܒܚܐ ܕܥܒܗ
19 ܘܕܟܪܡܠܗ. ܡܢ ܢܦܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܒܣܪܐ ܢܣܦ. ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܕܠܐ ܗܘܐ. * ܘܫܪܟܐ ܕܩܝܣܐ
20 ܕܥܒܗ. ܒܡܢܝܢܐ ܢܗܘܘܢ. ܘܛܠܝܐ ܢܟܬܘܒ ܐܢܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܠܐ ܢܘܣܦ
ܫܪܟܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܕܐܫܬܘܙܒܘ ܡܢ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܠܡܬܬܟܠܘ ܥܠ ܡܢ ܕܡܚܐ ܠܗܘܢ. ܐܠܐ ܢܬܬܟܠܘܢ ܥܠ
21 ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܒܩܘܫܬܐ. * ܘܫܪܟܐ ܢܬܦܢܘܢ.
22 ܫܪܟܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܠܘܬ ܐܠܗܐ ܓܢܒܪܐ. * ܐܢ ܓܝܪ ܢܗܘܐ ܥܡܟ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܝܟ ܚܠܐ ܕܝܡܐ.
23 ܫܪܟܐ ܢܬܦܢܘܢ ܡܢܗܘܢ. ܦܣܩ. ܘܓܙܡ. ܘܡܗܦܟ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. * ܡܛܠ ܕܓܙܡܬܐ
24 ܘܦܣܩܬܐ ܥܒܕ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܠܐ
ܬܕܚܠ ܥܡܝ ܕܥܡܪ ܒܨܗܝܘܢ. ܡܢ ܐܬܘܪܝܐ ܕܡܚܐ ܠܟ ܒܫܒܛܗ. ܘܚܘܛܪܗ ܡܪܝܡ
25 ܥܠܝܟܝ. ܒܐܘܪܚܐ ܕܡܨܪܝܢ: * ܡܛܠ ܕܥܘܕ ܩܠܝܠ ܙܥܘܪ: ܘܢܫܠܡ ܚܡܬܝ ܘܪܘܓܙܝ ܥܠ
26 ܚܒܠܗܘܢ. * ܘܢܥܝܪ ܥܠܘܗܝ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܡܚܘܬܐ. ܐܝܟ ܡܚܘܬܐ ܕܡܕܝܢܝܐ ܒܛܘܪܐ ܕܚܘܪܝܒ.
27 ܘܚܘܛܪܗ ܥܠ ܝܡܐ. ܘܡܘܒܠܗ ܒܐܘܪܚܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܢܗܘܐ ܒܗܘ ܙܒܢܐ.
ܢܥܒܪ ܫܘܥܒܕܗ ܡܢ ܟܬܦܟ. ܘܢܝܪܗ ܡܢ ܨܘܪܟ. ܘܢܬܚܒܠ ܢܝܪܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܫܚܐ.
28 29 ܕܬܘܪܐ. * ܐܬܐ ܠܥܢܬ. ܥܒܪ ܒܡܓܕܘ. ܘܒܡܟܡܫ ܢܣܝܡ ܡܐܢܘܗܝ. * ܥܒܪ ܡܥܒܪܬܐ
30 ܓܒܥܐ. ܒܝܬ ܒܝܬܐ. ܙܥܬ ܪܡܬܐ. ܘܓܒܥܬܗ ܕܫܐܘܠ ܥܪܩܬ. * ܨܘܚܝ ܒܩܠܟܝ ܒܪܬ
31 ܓܠܝܡ. ܐܨܬܘܬܝ ܠܝܫ. ܘܥܢܝ ܥܢܬܘܬ. * ܐܫܬܢܝܬ ܡܕܡܢܐ. ܘܥܡܘܪܐ ܕܓܒܝܢ
32 ܐܬܚܝܠܘ. * ܥܘܕ ܝܘܡܐ ܒܢܘܒ ܢܩܘܡ. ܢܢܝܕ ܐܝܕܗ
ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ.
ܘܥܠ ܪܡܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ.

* Idcirco immittet Dominus Deus fortis interitum in pingues ejus, & loco gloriæ ipſius ardebit incendium ejus velut incendium ignis. Et lux Iſraelis in ignem vertetur, & ſancti ejus in flammam, quæ comburet & devorabit vepres & ſpinas ejus eodem die: Et decor ſylvæ ejus & Charmeli ejus ab anima ad carnem uſque comſumetur & fiet quaſi nunquam fuiſſet: Et reliqua ligna ſylvæ ipſius in numerum redigentur *tam exiguum*, ut puer ſcribere *poſſit* ea. Et fiet tunc temporis, ut non pergat ampliùs reliquus Iſrael & qui evadent è domo Jacobi, inniti co qui ſe læſit; ſed æquo jure innitentur Domino ſancto Iſraelis. Reliqui enim convertentur, reliquiæ *nimirum* Jacobi, ad Deum fortiſſimum. Nam tametſi fuerit populus tuus Iſrael ut arena quæ eſt in mari, *nihilominus* reſidui convertentur ex eis: præcindet, ſecabit, & convertet cum æquitate: Quoniam finem & compendium facturus eſt Dominus potens in univerſa terra. Sic dicit Dominus potens, Ne timeas popule mi qui habitas in Sion, ab Aſſyrio qui te percutit virgâ ſuâ, & baculum ſuum contra te levat in via Ægypti: Quoniam intra breviſſimum tempus conſummabitur ira & indignatio mea contra corruptelam eorum: Et concitabit in eum Dominus fortiſſimus flagellum ſimile cædi Medianitarum in monte Horib, & baculo ſuo ſuper mare, & oneri ſuo in via Ægypti: Ac tum temporis fiet ut recedat ſervitus ejus ab humero tuo, & jugum ejus à collo tuo, & corrumpatur jugum à conſpectu juvencarum. Veniet ad Anath, tranſibit per Mageddo, & in Machmas ponet impedimenta ſua: Trajiciet vadam Gebaa, Beth-baitanem: trepidabit Rama, et Gebaath Saulis aufugiet. Hinni voce tuâ filia Gheliam, auſculta Lis, et reſponde Anathoth. Receſſit Marmena, et cives Gubin confortati ſunt. Adhuc dies in Nob manebit: agitabit manum ſuam contra montem filiæ Sionis et contra colles Jeruſalem. 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * وليس هكذا * لكن يرسل رب الجيوش الي كرامتك هوانا * والي شرفك نارا موقدة تحرق
17 * ويكون نور اسرايل كالنار ويقدسه بلهيب موقد * فتلهب وتأكل المادة كالعشب
18 * في ذلك اليوم تحمد الجبال والتلال والغياض * وتأكل من النفس الي اللحوم * ويكون الهارب
19 كالهارب من اللهيب الموقد * والذين يبقون منهم يكونون عددا وصبي صغير يكتبهم
20 * ويكون في ذلك اليوم لا يستزيد من بقي من اسرايل * والذي خلصوا من يعقوب ليس
يكونون يتوكلون ايضا على الذين ظلموهم * لكن يكونون متوكلين على الله قدوس اسرايل
21 بالحق * ويكون من يبقي من يعقوب يقبل الي الله الجبار *

* الاصحاح السادس *

22 * وان كان عدد اسرايل مثل رمل البحر * يخلص منهم النذر * لاني اكمل كلمة واقطعها
23 24 بالعدل * لان كلمة قاطعة يصنعها الله في المسكونة كلها * من اجل هذا هكذا يقول الرب
الاه الجيوش * لا تخف يا شعبي السكان في صهيون من الموصليين لانه يضربك بعصا لاني
25 انا اجلب عليك ضربة لتري طريق مصر * لانه عن قليل يكف الغضب وغضبي على
26 مشورتهم * ويثير الله عليهم كضربة مدين في موضع الضغطة * وغضبه في الطريق عند
27 البحر * في الطريق التي عند مصر * ويكون في ذلك اليوم ينزع خوفه عنك ونيره
28 عن عاتقك * ويبيد نيره عن عواتقكم * لانه ياتي الي مدينة اجا * ويجوز الي مجدو وفي
29 مخماس يضع اوعيته * ويعبر الوادي وياتي الي اجا * وياخذ راما الخوف مدينة ساول
30 31 * وهرب ابنة عاليم يسمع في ليش * يسمع في عناثوث * دهشت مادابينا * وسكان جبين
32 هزوا اليوم * ليقيموا في الطريق باليد * عزوا الجبل ابنة صهيون وايها الاكام التي
في ايروسليم *

* *Nequaquam fiet ita; ſed mittet Dominus exercituum in honorandos tuos contemptum, & in nobiles tuos ignem ardentem comburentem. Eritque lux Iſraelis velut ignis, & ſanctificabit eum flammâ accenſâ, quæ exardeſcet devorabitque herbam virentem ut fœnum. Eo die laudem dicent montes, colles, ſylvæque: & devorabit ab anima ad carnes uſque: & qui fugiet, erit velut is qui fugit flammam ardentem: Et qui ſuperfuerunt ex eis, redigentur ad eum numerum, ut parvus puer eos conſcribere poſſit. Eodem die non adjicient ii qui reſidui fuerint ex Iſraele, & qui evaſerint ex Jacobo, fidere ampliùs iis qui ſe oppreſſerunt; ſed Deo ſancto Iſraelis in rei veritate fident: Et qui ſuperſtites manſerint è Jacobo, recipient ſe ad Deum potentiſſimum.* 16 17 18 19 20 21

Textus ſextus.

* *Etiamſi fuerit numerus Iſraelis velut arena maris, rari tamen ex eis ſalvabuntur. Verbum enim abſolvam, & juſtè præcindam. Nam verbum præciſum faciet Deus in toto orbe. Propterea ſic dicit Dominus Deus exercituum; Ne timeas popule mi habitantes in Sion, ab Aſſyriis, quòd te baculo percutiat: ego enim adducam ſuper te flagellum, ut videas viam Ægypti. Nam brevi ceſſabit ira, & furor meus erit contra conſilium eorum: Concitabit enim Deus adversùs illos plagam ſimilem Medianitarum in loco anguſtiæ, & furori ſuo in via mari proxima, in via quæ eſt prope Ægyptum. Eodémque die tolletur à te metus ejus, & jugum ejus à collo tuo, & peribit jugum ejus à cervicibus veſtris. Nam venturus eſt uſque ad urbem Aagja, deinde tranſiturus ad Mageddo, & in Mechmas poſiturus vaſa ſua: Flumen trajecturus, tum reverſurus Aagjam. Ramam urbem Saulis timor occupabit, Et fugiet filia Galim: audietur in Lis, audietur in Anathoth, Obſtupeſcet Madabina. At O habitatores Gebbin, agitate hodiè, ut permaneatis in via manum: confortate montem filiam Sionis O hi colles qui eſtis in Jeruſalem.* 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32

יְשַׁעְיָה : יא

ramum deramificans exercituum Dominus dominator Ecce
33 הִנֵּה הָאָדוֹן יְהוָה צְבָאוֹת מְסָעֵף פֻּארָה
.humiliabuntur ſublimes & ,ſucciſi ſtatura excelſi & : terrore cum
בְּמַעֲרָצָה וְרָמֵי הַקּוֹמָה גְּדֻעִים וְהַגְּבֹהִים יִשְׁפָּלוּ :
.cadet forti in Lebanon & : ferro in ſylvæ perplexa ſuccidet Et
34 וְנִקַּף סִבְכֵי הַיַּעַר בַּבַּרְזֶל וְהַלְּבָנוֹן בְּאַדִּיר יִפּוֹל :

CAP. XI. יא

ejus radicibus de ſurculus & ,Iſai ſtirpe de virga egredietur Et
וְיָצָא חֹטֶר מִגֵּזַע יִשָׁי וְנֵצֶר מִשָּׁרָשָׁיו
.creſcet
ſpiritus , DOMINI ſpiritus eum ſuper requieſcet Et
2 יִפְרֶה : וְנָחָה עָלָיו רוּחַ יְהוָה רוּחַ
ſpiritus ,fortitudinis & conſilii ſpiritus , intelligentiæ & ſapientiæ
חָכְמָה וּבִינָה רוּחַ עֵצָה וּגְבוּרָה רוּחַ
timore in ejus odorari Et .DOMINI timoris & ſcientiæ
3 דַּעַת וְיִרְאַת יְהוָה : וַהֲרִיחוֹ בְּיִרְאַת
neque , judicabit ſuorum oculorum viſionem ad nec : DOMINI
יְהוָה וְלֹא־לְמַרְאֵה עֵינָיו יִשְׁפּוֹט וְלֹא־
, tenues juſtitia in judicabit Et. .arguet ſuarum aurium auditum ad
4 לְמִשְׁמַע אָזְנָיו יוֹכִיחַ : וְשָׁפַט בְּצֶדֶק דַּלִּים
terram percutiet & : terræ manſuetis rectitudine in arguet &
וְהוֹכִיחַ בְּמִישׁוֹר לְעַנְוֵי־אָרֶץ וְהִכָּה־אֶרֶץ
.impium interficiet ſuorum labiorum ſpiritu in & , ſui oris virga in
בְּשֵׁבֶט פִּיו וּבְרוּחַ שְׂפָתָיו יָמִית רָשָׁע :
cingulum fides & : ejus lumborum cingulum juſtitia erit Et
5 וְהָיָה צֶדֶק אֵזוֹר מָתְנָיו וְהָאֱמוּנָה אֵזוֹר
hœdo cum pardus & ,agno cum lupus hoſpitabitur Et .ejus renum
6 חֲלָצָיו : וְגָר זְאֵב עִם־כֶּבֶשׂ וְנָמֵר עִם־גְּדִי
puer & , ſimul pingue pecus & , leonis catulus & vitulus & : accubabit
יִרְבָּץ וְעֵגֶל וּכְפִיר וּמְרִיא יַחְדָּו וְנַעַר
accubabunt ,ſimul paſcentur urſa & vacca Et .eis in ducens parvus
7 קָטֹן נֹהֵג בָּם : וּפָרָה וָדֹב תִּרְעֶינָה יַחְדָּו יִרְבְּצוּ
lactens delectabitur Et .paleam comedet bos ſicut leo & : earum nati
8 יַלְדֵיהֶן וְאַרְיֵה כַּבָּקָר יֹאכַל־תֶּבֶן : וְשִׁעֲשַׁע יוֹנֵק
ablactatus reguli cavernam ſuper & , aſpidis foramen ſuper
עַל־חֻר פָּתֶן וְעַל מְאוּרַת צִפְעוֹנִי גָּמוּל
univerſo in corrumpent non & ,malefacient Non .miſit ſuam manum
9 יָדוֹ הָדָה : לֹא־יָרֵעוּ וְלֹא־יַשְׁחִיתוּ בְּכָל־
, DOMINI ſcientia terra eſt repleta quia : meæ ſanctitatis monte
הַר קָדְשִׁי כִּי־מָלְאָה הָאָרֶץ דֵּעָה אֶת־יְהוָה
, Iſai radix , illa die in erit Et .operientes mare aquæ ſicut
10 כַּמַּיִם לַיָּם מְכַסִּים : וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא שֹׁרֶשׁ יִשַׁי
erit & : quærent gentes illam ad,populorum vexillum in ſtans quæ
אֲשֶׁר עֹמֵד לְנֵס עַמִּים אֵלָיו גּוֹיִם יִדְרֹשׁוּ וְהָיְתָה
DOMINUS adjiciet illa die in , erit Et .gloria ejus requies
11 מְנֻחָתוֹ כָּבוֹד : וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא יוֹסִיף אֲדֹנָי
quod : ſui populi reſiduum poſſidendum ad ſuam manum ſecundo
שֵׁנִית יָדוֹ לִקְנוֹת אֶת־שְׁאָר עַמּוֹ אֲשֶׁר
,Helam ab &,Chus à & ,Pathros à & ,Ægypto ab & , Aſſur ab remanebit
יִשָּׁאֵר מֵאַשּׁוּר וּמִמִּצְרַיִם וּמִפַּתְרוֹס וּמִכּוּשׁ וּמֵעֵילָם
vexillum elevabit Et .maris inſulis ab & , Chamath à & ,Sinhar à &
12 וּמִשִּׁנְעָר וּמֵחֲמָת וּמֵאִיֵּי הַיָּם : וְנָשָׂא נֵס
congregabit Jehudah diſperſas & , Iſrael expulſos colliget & ,gentibus
לַגּוֹיִם וְאָסַף נִדְחֵי יִשְׂרָאֵל וּנְפֻצוֹת יְהוּדָה יְקַבֵּץ
hoſtes & , Ephraim zelus recedet Et .terræ alis quatuor à
13 מֵאַרְבַּע כַּנְפוֹת הָאָרֶץ : וְסָרָה קִנְאַת אֶפְרַיִם וְצֹרְרֵי
Jehudah & , Iehudah æmulabitur non Ephraim.excidentur Jehudah
יְהוּדָה יִכָּרֵתוּ אֶפְרַיִם לֹא־יְקַנֵּא אֶת־יְהוּדָה וִיהוּדָה
.Ephraim anguſtiabit non
לֹא־יָצֹר אֶת־אֶפְרָיִם :

Verſio VULG. LAT.

33 Ecce dominator Dominus exercituum confringet lagunculam in terrore, & excelſi ſtaturâ ſuccidentur, & ſublimes hu- 34 miliabuntur. Et ſubvertentur condenſa ſaltûs ferro: & Libanus cum excelſis cadet.

CAP. XI.

1 ET egredietur virga de radice Jeſſe, & flos de radice ejus 2 aſcendet. Et requieſcet ſuper eum ſpiritus Domini; ſpiritus ſapientiæ, & intellectûs, ſpiritus conſilii, & fortitudinis, 3 ſpiritus ſcientiæ, & pietatis, Et replebit eum ſpiritus timoris Domini. Non ſecundùm viſionem oculorum judicabit, neque ſecundùm auditum aurium 4 arguet: Sed judicabit in juſtitia pauperes, & arguet in æquitate pro manſuetis terræ: & percutiet terram virgâ oris ſui, & ſpiritu labiorum ſuorū 5 interficiet impium. Et erit juſtitia cingulum lumborum ej⁹: et fides cinctorium renum ejus. 6 Habitabit lupus cum agno: & pardus cum hœdo accubabit: vitulus & leo & ovis ſimul morabuntur, & puer parvulus 7 minabit eos. Vitulus & urſus paſcentur: ſimul requieſcent catuli eorum: & leo quaſi bos 8 comedet paleas. Et delectabitur infans ab ubere ſuper foramine aſpidis: & in caverna reguli, qui ablactatus fuerit, 9 manum ſuam mittet. Non nocebunt, & non occident in univerſo monte ſancto meo: quia repleta eſt terra ſcientiâ Domini, ſicut aquæ maris ope- 10 rientes. In die illa, radix Ieſſe, qui ſtat in ſignum populorum, ipſum gentes deprecabuntur, & erit ſepulchrum ejus glori- 11 oſum. Et erit in die illa: Adjiciet Dominus ſecundò manum ſuam ad poſſidendum reſiduum populi ſui, quod relinquetur ab Aſſyriis, & ab Ægypto, & à Phetros, & ab Æthiopia, & ab Ælam, & à Sennaar, & ab Emath, & ab in- 12 ſulis maris. Et levabit ſignum in nationes, & congregabit profugos Iſrael, et diſperſos Juda colliget à quatuor plagis 13 terræ. Et auferetur zelus Ephraim, et hoſtes Juda peribunt: Ephraim non æmulabitur Judam, et Judas non pugnabit contra Ephraim.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

33 (θ) Ἰδοὺ ὁ δεσπότης κύριος Σαβαὼθ συνταράσσει τοὺς ἐνδόξους μετὰ ἰσχύος, ϗ οἱ ὑψηλοὶ τῇ ὕβρει συντριβήσονται, ϗ (ι) οἱ ὑψηλοὶ ταπεινωθήσονται, 34 Καὶ πεσοῦνται ὑψηλοὶ μαχαίρᾳ, ὁ δὲ Λίβανος σὺν τοῖς ὑψηλοῖς πεσεῖται.

MS.A. (θ) Ἰδοὺ γὰρ (ι) ταπεινωθήσονται οἱ ὑψηλοὶ μαχαίρᾳ.

ΚΕΦ. ιαʹ.

1 ΚΑὶ ἐξελεύσεται ῥάβδος ἐκ τῆς ῥίζης Ἰεσσαί, ϗ ἄνθος ἐκ τῆς ῥίζης ἀναβήσεται. 2 Καὶ ἀναπαύσεται ἐπ' αὐτὸν πνεῦμα τοῦ θεοῦ, πνεῦμα σοφίας ϗ συνέσεως, πνεῦμα βουλῆς ϗ ἰσχύος, πνεῦμα γνώσεως ϗ 3 εὐσεβείας· Ἐμπλήσει αὐτὸν, πνεῦμα φόβου θεοῦ· οὐ κατὰ τὴν δόξαν κρινεῖ, οὐδὲ κατὰ τὴν λαλιὰν ἐλέγξει, 4 Ἀλλὰ κρινεῖ ταπεινῷ κρίσιν, ϗ ἐλέγξει τοὺς ταπεινοὺς τῆς γῆς, ϗ πατάξει γῆν τῷ λόγῳ τοῦ στόματος αὐτοῦ, ϗ ἐν πνεύματι διὰ χειλέων ἀνελεῖ ἀσεβῆ. 5 Καὶ ἔσται δικαιοσύνῃ ἐζωσμένος τὴν ὀσφὺν αὐτοῦ, ϗ ἀληθείᾳ (α) εἱλημένος τὰς πλευράς. 6 Καὶ συμβοσκηθήσεται λύκος μετὰ ἀρνός, ϗ πάρδαλις συναναπαύσεται ἐρίφῳ, καὶ μοσχάριον ϗ ταῦρος ϗ λέων ἅμα βοσκηθήσονται, ϗ παιδίον μικρὸν ἄξει αὐτούς. 7 Καὶ βοῦς ϗ ἄρκος ἅμα βοσκηθήσονται, ϗ ἅμα τὰ παιδία αὐτῶν (β) ἔσονται· ϗ λέων ὡς βοῦς φάγεται ἄχυρα. 8 Καὶ παιδίον νήπιον (γ) ἐπὶ τρώγλην ἀσπίδων, ϗ ἐπὶ κοίτην ἐκγόνων ἀσπίδων τὴν χεῖρα ἐπιβαλεῖ. 9 Καὶ οὐ μὴ (δ) κακοποιήσουσιν, οὐδὲ μὴ δύνωνται ἀπολέσαι οὐδένα ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου· ὅτι ἐνεπλήσθη ἡ σύμπασα τοῦ γνῶναι τὸν κύριον, ὡς ὕδωρ 10 πολὺ κατακαλύψαι θαλάσσας. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἡ ῥίζα τοῦ Ἰεσσαί, ϗ ὁ ἀνιστάμενος ἄρχειν ἐθνῶν, ἐπ' αὐτῷ ἔθνη ἐλπιοῦσι, ϗ ἔσται ἡ ἀνάπαυσις αὐτοῦ, 11 τιμή. Καὶ ἔσται (ε) τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ προσθήσει (ζ) ὁ κύριος τοῦ δεῖξαι τὴν χεῖρα αὐτοῦ, τοῦ ζηλῶσαι τὸ καταλειφθὲν ὑπόλοιπον τοῦ λαοῦ, (η) ὃ ἂν καταλειφθῇ (θ) ὑπὸ τῶν Ἀσσυρίων, ϗ ἀπὸ Αἰγύπτου, (ι) ϗ ἀπὸ Βαβυλωνίας, ϗ ἀπὸ Αἰθιοπίας, ϗ ἀπὸ Ἐλαμιτῶν, ϗ ἀπὸ ἡλίου ἀνατολῶν, ϗ ἐξ Ἀρα- 12 βίας. Καὶ ἀρεῖ σημεῖον εἰς τὰ ἔθνη, ϗ συνάξει τοὺς ἀπολομένους Ἰσραήλ, ϗ τοὺς διεσπαρμένους Ἰούδα συνάξει ἐκ τῶν τεσσάρων πτερύγων τῆς γῆς. 13 Καὶ ἀφαιρεθήσεται (κ) ὁ ζῆλος Ἐφραίμ, ϗ οἱ ἐχθροὶ Ἰούδα ἀπολοῦνται. Ἐφραὶμ οὐ ζηλώσει Ἰούδαν, ϗ Ἰούδας οὐ θλίψει Ἐφραίμ.

MS.A. (α) εἱλημμένος (β) βοσκηθήσονται· ϗ λέων ϗ βοῦς
φάγονται ἄχυρα. (γ) ἐπὶ τρώγλην (δ) κακοποιήσωσιν, οὐδ'
(ζ) κύριος (η) ὃ ἂν (θ) ἀπὸ τῶν (ι) ϗ Βαβυλωνίας, ϗ Αἰθιο
(κ) ὁ ζυγὸς

Ecce dominator Dominus Sa
conturbabit glorioſos cum
dine: & excelſi ſuperbiâ
tur: & ſublimes humiliab
Et cadent ſublimes gladio: Li
nus autem cum excelſis cadet.

CAP. XI.

ET egredietur virga de ra
dice Ieſſe, & flos de radice a
det. Et requieſcet ſuper eum ſpi
tus Dei, ſpiritus ſapientiæ, & in
tellectûs, ſpiritus conſilii, & for
titudinis: ſpiritus ſcientiæ &
tatis Replebit eum, ſpiritus ti
ris Domini. Non ſecundum glo
am judicabit, neque juxta ſerm
nem arguet: Sed judicabit hu
judicium, & arguet humiles
ræ: & percutiet terram ſerm
ſui: & in ſpiritu per labia int
ciet impium. Et erit juſtitia
ctus lumbum ſuum, & verita
involutus coſtas. Et ſimul p
tur lupus cum agno: & pardus
mul accubabit cum hœdo: Et
lus, & taurus, & leo ſimul
ſcentur, & puer parvus duc
Et bos & urſus paſcentur ſi
& erunt ſimul catuli eorum
leo, quaſi bos, comedet pale
puer infans ſuper foramen
dum, & in cubile fœtuum
dum manum mittet. Et non
bunt, neque poterunt p
quemquam in monte ſancto
quia repleta eſt terra cog
Domini, quaſi aqua multa
riat maria. Et erit in die il
dix Jeſſe, & qui conſurg
princeps ſuper gentium: in
tes ſperabunt: & erit requie
honor. Et erit die illâ
Dominus oſtendere manu
ad zelandum relictum re
populi, quod relictum fu
Aſſyriis, & ab Ægypto, &
bylonia, & ab Æthiopia,
Elamitis, & à Solis ortu
Arabia. Et levabit ſignum
tiones, & congregabit
Iſrael: & diſperſos Juda
liget à quatuor alis terræ
auferetur zelus Ephraim:
hoſtes Juda peribunt. Ephr
non æmulabitur Judam: &
das non tribulabit Ephraim.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

33 הא רבון עלמא יי צבאות רמי קטול במשריתיה כבעוט דמתבעיט במעצרתא ורמי
34 קומא יתקטפון ותקיפיא ימאכון : ויקטיל גברי משריתיה דמתגברין כברזלא ועבדי
קרביה על ארעא דישראל יתרמון :

יא

1 ויפוק מלכא מבנוהי דישי ומשיחא מבני בנוהי יתרבי : ותשרי עלוהי רוח נבואה מן
2 קדם יי רוח חוכמא וסוכלתנו רוח מלך וגבורא רוח מדע ודחלתא דיי : ויקרביניה
3 לדחלתיה יי לא לחיזו עינוהי יהי דאן ולא למשמע אודנוהי יהי מוכח : וידין בקושטא
4 מסכנין ויוכח בהימנותא מחשיכי עמא דארעא וימחי חיבי ארעא במימר פומיה
ובממלל ספותיה יהי ממית ארמילוס רשיעא : ויהון צדיקיא סחור סחור ליה ועבדי
5 הימנותא מקרבין ליה : ביומוהי דמשיחא דישראל יסגי שלמא בארעא וידור דיבא עם
6 אמרא ונמרא עם גדיא ישרי ועגלא ואריא ופטים כחדא וינוק זעיר יהי מדבר להון :
ותורתא ודיבא ירעין כחדא ישרון בניהון ואריא כתורא יכול תבנא : ויחיך ינקא על
7 חור חוי פתן ועל חיזו גלגלי עיני חוי חורמן חסילא ידוהי יושיט : לא יבאשון ולא
8 יחבלון בכל טורא דקודשי ארי תתמלי ארעא למדע ית דחלתא דיי כמיא דלימא חפן :
9 ויהי בעדנא ההיא בר בריה דישי עתיד דיקום את לעממיא ליה מלכין ישתמעון ויהי
10 אתר בית מישרוהי ביקר : ויהי בעדנא ההיא יוסיף יי תנינות גבורתיה למפרוק ית
11 שארא דעמיה דאשתאר מאתור וממצרים ומפתרוס ומהודו ומעילם ומבבל ומחמת
ומנגות ימא : ויזקוף את לעממיא ויכניש מבדרי ישראל וגלות יהודה יקרב מארבע
12 רוחי ארעא : ותעדי קנאתא דבית אפרים ודמעיקין לדבית יהודה ישתיצון דבית אפרים
13 לא יקנון בדבית יהודה ודבית יהודה לא יעיקון לדבית אפרים :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ecce dominator ſeculi Dñs exercituum projiciet interfectos in ca
ſicut cùm uvæ calcantur in torculari. Et excelſi ſtatura ſuccidentur,
tes humiliabuntur. Et occidet robuſtos exercitus ejus, qui fortes
ferrum, & bellatores ejus ſuper terram Iſrael cadent.

CAP. XI.

ET egredietur rex de filiis Ieſſe, & Chriſtus de filiis filiorum
tur. Et reſidebit ſuper eum ſpirit' prophetiæ à facie Dñi, ſpiritus
& intellect', ſpiritus conſilii & fortitudinis, ſpirit' ſcientiæ
Et applicabit eum ad tim rem ſuum Dominus: non ſecundum
oculorū ſuorū judicabit, neq; ſecundùm auditū aurium ſuarū ar
judicabit in veritate pauperes, & arguet in fide pro egenis popu
percutiet peccatores terræ verbo oris ſui, & in eloquio labiorū
cidet *Armillum* impiū. Et erunt juſti in circuitu ej⁹, & fideles
eum. In diebus Chriſti Iſrael multiplicabitur pax in terra. Et
lupus cum agno, & leopard⁹ cum hœdo commorabitur, & vitul⁹
aries pinguis ſimul erunt: & puer parvulus minabit eos. Et bos
paſcentur, ſimul morabuntur filii eorum, & leo ſicut bos com
Et delectabitur infans ſuper foramen aſpidis; & ſuper viſum
locum ſerpentis reguli, qui ablactat⁹ eſt mittet manum ſuam. N
facient neque nocebunt in omni monte ſancto meo, quia impl
ſcientia timoris Dñi, ſicut aquæ operiunt mare. Et erit in t
filius filiorum Ieſſe, qui futurus eſt ut ſtet in ſignum populorum
obedient, & erit loc⁹ manſionis ejus in gloria. Et erit in tempo
jiciet Dñs ſecundò per potentiam ſuam, ut liberet reliquias popu
relinquentur de Aſſur, & de Ægypto, & de Phetros, & de
Elam, & de Babylonia, & de Emath, & de inſulis maris. Et leva
populis, & congregabit diſperſos Iſrael, & tranſmigrationem
cabit à quatuor ventis terræ. Et auferetur zelus *domus* Ephra
guſtia afficiebant domū Juda, excidentur: viri dom⁹ Ephraim
buntur domū Juda: & viri domus Juda non anguſtiabunt domu

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

33 * ܗܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܡܦܫܚ ܡܫܬܒܗܪܢܐ ܒܥܘܫܢܐ. ܘܪ̈ܘܪܒܝ ܩܘܡܬܐ
ܢܬܡܟܟܘܢ. ܘܪ̈ܡܐ ܢܬܬܟܦܘܢ. * ܘܢܦܣܘܩ ܚܘܫ̈ܒܐ ܕܥܒܐ ܒܦܪܙܠܐ. ܘܠܒܢܢ 34
ܒܬܫܒܘܚܬܗ ܢܦܠ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܐ *

1 * ܘܢܦܘܩ ܫܒܛܐ ܡܢ ܓܘܙܥܗ ܕܐܝܫܝ. ܘܢܘܪܒܐ ܡܢ ܫܪ̈ܫܘܗܝ ܢܦܪܥ. * ܘܬܬܢܝܚ
2 ܥܠܘܗܝ ܪܘܚܐ ܕܐܠܗܐ. ܪܘܚܐ ܕܚܟܡܬܐ ܘܕܣܘܟܠܐ. ܪܘܚܐ ܕܡܠܟܐ ܘܕܓܢܒܪܘܬܐ.
ܪܘܚܐ ܕܝܕܥܬܐ ܘܕܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܢܕܢܚ ܒܕܚܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܝܟ ܕܚܙܝܢ ܥܝ̈ܢܘܗܝ
3 ܢܕܘܢ. ܘܠܐ ܐܝܟ ܕܫܡ̈ܥܢ ܐܕ̈ܢܘܗܝ ܢܟܣܐ. * ܢܕܘܢ ܒܟܐܢܘܬܐ ܠܡܣ̈ܟܢܐ. ܘܢܟܣ ܒܬܪܝܨܘܬܐ
4 ܠܡܣ̈ܟܢܘܗܝ ܕܐܪܥܐ. ܢܡܚܐ ܠܐܪܥܐ ܒܫܒܛܐ ܕܦܘܡܗ . ܘܒܪܘܚܐ ܕܣܦܘ̈ܬܗ ܢܡܝܬ
5 ܠܪ̈ܫܝܥܐ. ܘܬܗܘܐ ܙܕܝܩܘܬܐ ܐܣܘܪܐ ܕܚܨܘ̈ܗܝ. ܘܗܝܡܢܘܬܐ ܐܣܘܪܐ ܕܦܪ̈ܣܘܗܝ. * ܢܬܪܥܐ
6 ܕܐܒܐ ܥܡ ܐܡܪܐ. ܘܢܡܪܐ ܥܡ ܓܕܝܐ ܢܪܒܘܥ. ܘܥܓܠܐ ܘܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܘܬܘܪܐ ܐܟܚܕܐ
ܢܪܥܘܢ. ܘܛܠܝܐ ܙܥܘܪܐ ܢܕܒܪ ܐܢܘܢ. * ܘܬܘܪܬܐ ܘܕܒܐ ܐܟܚܕܐ ܢܪܥܘܢ. ܘܒ̈ܢܝܗܘܢ ܐܟܚܕܐ 7
8 ܢܪܒܥܘܢ. ܘܐܪܝܐ ܐܝܟ ܬܘܪܐ ܢܐܟܘܠ ܬܒܢܐ. * ܘܢܫܥܫܥ ܝܠܘܕܐ ܥܠ ܚܘܪܐ ܕܚܘܪܘܪܐ. ܘܥܠ ܚܘܪܐ
9 ܕܐܣܦܝܣ ܢܘܫܛ ܐܝܕܗ ܚܣܝܠܐ. * ܘܠܐ ܢܒܐܫܘܢ ܘܠܐ ܢܚܒܠܘܢ ܒܟܠܗ ܛܘܪܐ
ܕܩܘܕܫܝ. ܡܛܠ ܕܬܬܡܠܐ ܐܪܥܐ ܝܕܥܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܡ̈ܝܐ ܕܡܟܣܝܢ ܠܝܡܐ.
10 * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܫܪܫܗ ܕܐܝܫܝ ܕܩܐܡ ܐܬܐ ܠܥܡ̈ܡܐ. ܘܠܗ ܥܡ̈ܡܐ
11 ܢܒܥܘܢ. ܘܬܗܘܐ ܢܝܚܬܗ ܐܝܩܪܐ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܘܣܦ ܡܪܝܐ ܠܡܪܡܝܘ
ܐܝܕܗ . ܕܢܩܢܐ ܫܪܟܐ ܕܥܡܗ ܕܐܫܬܚܪ. ܡܢ ܐܬܘܪ ܘܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܘܡܢ ܦܬܪܘܣ
12 ܘܡܢ ܟܘܫ. ܘܡܢ ܥܝܠܡ ܘܡܢ ܣܢܥܪ. ܘܡܢ ܚܡܬ ܘܡܢ ܓܙܪ̈ܬܐ ܕܝܡܐ. * ܘܢܥܠܐ
13 ܐܬܐ ܠܥܡ̈ܡܐ. ܘܢܟܢܫ ܠܡ̈ܒܕܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܡ̈ܒܕܪܐ ܕܝܗܘܕܐ ܢܟܢܫ ܡܢ ܐܪ̈ܒܥ
ܟܢܦ̈ܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܘܬܥܒܪ ܚܣܡܐ. ܡܢ ܐܦܪܝܡ. ܘܡܥܝܩ̈ܢܘܗܝ ܕܝܗܘܕܐ ܢܐܒܕܘܢ. ܐܦܪܝܡ
ܠܐ ܢܚܣܡ ܒܝܗܘܕܐ. ܘܝܗܘܕܐ ܠܐ ܢܥܝܩ ܠܐܦܪܝܡ.

Ecce Dominus Deus fortis jactabundos cum violentia everſurus eſt, & proceri ſtaturâ humiliabuntur, & elati deprimentur: 33 Sylvæ ramos ferro diſrumpet, & Libanus cum gloria ſuâ corruet. 34

CAP. XI.

Tum prodibit baculus è trunco Iſai, & ſurculus ex ejus ſtirpe expullulabit. 1 Super quo requieſcet & conſidebit ſpiritus Dei, ſpiritus ſapientiæ & intelligentiæ, ſpiritus cogitationis & fortitudinis, ſpiritus ſcientiæ & timoris Domini. 2 Fulgebit timore Domini, nec prout videbunt oculi ejus judicabit, neque prout audient aures ejus arguet. 3 Cum juſtitia judicabit pro pauperibus, & arguet cum æquitate pro egenis terræ. Terram percutiet virgâ oris ſui, & ſpiritu labiorum ſuorum impios morte afficiet. 4 Erit juſtitia cingulum lumborum ejus, & fides zona laterum ejus. 5 Ita ut commoretur lupus cum agno, & pardus cum hœdo cubet; vitulus & catulus leonis & bos ſimul paſcantur, & parvus puer abigat eos: 6 Vacca & urſa ſimul paſcantur, & pulli earum ſimul cubent: leo ſicut bos paleas comedat: 7 Infans colubro ludat, & in foramen aſpidis mittat manum ſuam ablactatus; 8 Et non lædant, neque corrumpant in toto monte ſanctitatis meæ: impletur enim terra ſcientiâ Domini, ut aquis mare tegentibus. 9 Eo tempore fiet, ut ſtirpem Iſai, quæ ſurget in ſignum populis, exquirant populi, & requies ejus ſit honor. 10 Eodem quoq; tempore fiet, ut adhibeat Dñs ſecundò manum ſuam, ad cogendas reliquias populi ſui quæ remanſerunt, ex Athur, & ex Ægypto, è Patros, ex Æthiopiâ, ex Ilam, è Seir, ex Hemath, & ex inſulis maris: 11 Et ſignum attollat gentibus, congregetque errabundos Iſraelis, & diſperſos Judæ colligat è quatuor plagis terræ. 12 Recedat invidentia ab Aphremo, & oppreſſores Judæ pereant: Aphrem non invideat Judæ, nec Juda opprimat Aphremum: 13

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

33 * لأن ها السيد رب الجنود يقلق الأشراف بقوة * ويكسر المرتفعون بقوتهم * ويذلون
34 ويخزون * ويسقط المرتفعون بالسيف * ويسقط لبنان مع المرتفعين *

* الفصل الحادي عشر *

1 * ويخرج عصا من أصل إيسي * ويصعد
2 زهر من أصله * ويحل عليها روح الله * روح الحكمة والفهم روح المشورة والقوة * روح
3 العلم وحسن العبادة * روح خوف الله يملاه * ليس يدين بالشرف * ولا يحسب القول
4 يبكت * لكنه يحكم للذليل بالانصاف ويبكت أشراف الأرض * ويضرب الأرض
5 بكلمة فيه * وبروح شفتيه يبيد المنافق * ويكون حقوه ممنطقا بالعدل * وجنباه
6 مشدودان بالحق * ويرعى الذيب مع الخروف * والنمر يستريح مع الجدي * والعجل
7 والثور والأسد يرعون جميعا * وغلام صغير يسوقهم * والبقر والدب يرعون معا *
8 ويكون أولادهم جميعا والأسد مثل الثور يأكل التبن * وصبي طفل في عش
9 الأفاعي * والمفطوم في مضاجع أولاد الأفاعي يضع يده * فلا يضرونه * ولا يستطيعون
أن يهلكوا ولا واحدا في جبل المقدس * لأن الأرض كلها امتلأت لتعرف الرب مثل ماء
10 كثير يغشي البحار * ويكون في ذلك اليوم أصل يسي والقائم ليرؤس الأمم * عليه
11 يتوكل الأمم ويكون راحته كرامة * ويكون في ذلك اليوم يريد الرب أن يظهر
يده ليغار * ويطلب البقية الباقية من شعبه * التي بقيت إذن من الموصليين * ومن
مصر * ومن بابل * ومن الحبشة * ومن أهل الأهواز * ومن مشارق الشمس * ومن أرابيا *
12 * ويرفع علامة للأمم * ويجمع الهالكين من إسرائيل * والمفترقين من يهودا يجمعهم من
13 أربع أجنحة الأرض * ويبيد غيرة افرام * وأعداء يهودا يهلكون * لا يغار افرام على يهودا *
ويهودا لا يضيق على افرام *

Nam ecce Dominus, Dominus exercituum, nobiles violenter exagitabit; & proceri ſtaturâ frangentur, deprimentur, & mœrore conficientur: 33 *Alti gladio corruent, & Libanus cum ſuperbis corruet.* 34

CAP. XI.

Et egredietur virga de radice Jeſſe, & aſcendet flos è radice ejus, 1 *Et requieſcet ſuper eum ſpiritus Dei, ſpiritus ſapientiæ & intellectûs, ſpiritus conſilii & fortitudinis, ſpiritus ſcientiæ & rectæ religionis:* 2 *Spiritus timoris Dei replebit illum: non judicabit ſecundùm nobilitatem, neque ſecundùm dicta arguet:* 3 *Sed pro humili judicabit cum æquitate, & arguet nobiles terræ: percutiet terram verbo oris ſui, & ſpiritu labiorum ſuorum perdet impium.* 4 *Erit enim lumbis ejus accinctus juſtitiâ, & latera ejus aſtricta veritate:* 5 *Et paſcetur lupus cum agno, & pardus cum hœdo quieſcet: & vitulus, bos, atque leo ſimul paſcentur, & puer parvus ducet eos:* 6 *Vacca & urſa unà paſcentur, eruntque catuli earum ſimul: leo ceu bos comedet paleam:* 7 *Puellulus tenellus in nidum viperarum, & ablactatus in cubile filiorum viperarum immittet manum ſuam,* 8 *Nec lædent eum, & ne unum quidem extinguere poterunt in monte ſancto: quoniam tota terra implebitur ut agnoſcat Dominum, ut aquis multis conteguntur maria.* 9 *Et erit in die illa, ut in ſtirpe Jeſſe, & eo qui ſurrecturus eſt ad dominandum in gentes, fiduciam collocent gentes; & quies ejus ſit glorioſiſſima.* 10 *Erit etiam in die illa, ut pergat Dominus oſtendere manum ſuam, ad æmulationem; & quærat reliquias populi ſui reſiduas quæ remanſerint adhuc ex Aſſyriis, ex Ægypto, ex Babile, ex Æthiopia, & ex populis Ahuaz* (ſunt provinciæ quædam inter Baſeram & Perſidem interjectæ) *ex Orientali plaga ſolis, & ex Arabia.* 11 *Et elevabit ſignum gentibus, & congregabit errantes ex Iſraele, & diſperſos ex Juda congregabit è quatuor extremitatibus terræ.* 12 *Auferetur zelus Aphremi, & inimici Judæ peribunt: non invidebit Aphremus Judæ, nec Juda moleſtiam inferet Aphremo:* 13

יְשַׁעְיָה : יב יג

filios prædabuntur ſimul : *mare* ad Peliſtim humerum in volabunt Et
14 וְעָפוּ בְכָתֵף פְּלִשְׁתִּים יָמָּה יַחְדָּו יָבֹזּוּ אֶת־בְּנֵי־
Hammon filii & ,eorum manus miſſio Moab & Edom : Orientis
קֶדֶם אֱדוֹם וּמוֹאָב מִשְׁלוֹחַ יָדָם וּבְנֵי עַמּוֹן
, Ægypti maris *linguam* Dominus *anathemate delebit* Et .eorũ auditus
15 מִשְׁמַעְתָּם׃ וְהֶחֱרִים יְהוָה אֵת לְשׁוֹן יָם־מִצְרַיִם
: ſui ſpiritus fortitudine in flumen ſuper ſuam manum *agitabit* &
וְהֵנִיף יָדוֹ עַל־הַנָּהָר בַּעְיָם רוּחוֹ
.calceamentis in faciet ambulare & ,flumina ſeptem in ,eum percutiet &
וְהִכָּהוּ לְשִׁבְעָה נְחָלִים וְהִדְרִיךְ בַּנְּעָלִים׃
: Aſſur ab relinquetur qui ,ejus populi reſiduo *ſtrata* via erit Et
16 וְהָיְתָה מְסִלָּה לִשְׁאָר עַמּוֹ אֲשֶׁר יִשָּׁאֵר מֵאַשּׁוּר
terra è *cum aſcendere* die in Iſraeli fuit ſicut
כַּאֲשֶׁר הָיְתָה לְיִשְׂרָאֵל בְּיוֹם עֲלֹתוֹ מֵאֶרֶץ
.Ægypti
מִצְרָיִם׃

CAP. XII. יב

fuiſti acerbatus quia ,Domine tibi Confitebor : illa die in dices Et
1 וְאָמַרְתָּ בַּיּוֹם הַהוּא אוֹדְךָ יְהוָה כִּי אָנַפְתָּ
,mea ſalus Deus Ecce .me *conſolaberis* & ,tuus *naſus avertetur* ,*me in*
2 בִּי יָשֹׁב אַפְּךָ וּתְנַחֲמֵנִי׃ הִנֵּה אֵל יְשׁוּעָתִי
,Dominus *Jah canticum* & ,mea fortitudo quia ,pavebo non & confidam
אֶבְטַח וְלֹא אֶפְחָד כִּי עָזִּי וְזִמְרָת יָהּ יְהוָה
fontibus de ,gaudio in aquas haurietis Et .*ſalutem in* mihi fuit &
3 וַיְהִי־לִי לִישׁוּעָה׃ וּשְׁאַבְתֶּם־מַיִם בְּשָׂשׂוֹן מִמַּעַיְנֵי
invocate ,Domino Confitemini : illa die in dicetis Et .ſalutis
4 הַיְשׁוּעָה׃ וַאֲמַרְתֶּם בַּיּוֹם הַהוּא הוֹדוּ לַיהוָה קִרְאוּ
quoniam mementote : ejus *ſtudia* populis in facite Scire .ejus nomen *in*
בִשְׁמוֹ הוֹדִיעוּ בָעַמִּים עֲלִילֹתָיו הַזְכִּירוּ כִּי
celſitudinem quoniam , Domino Cantate .ejus nomen eſt excelſum
5 נִשְׂגָּב שְׁמוֹ׃ זַמְּרוּ יְהוָה כִּי גֵאוּת
præconiza & ,vocem Exalta .terra univerſa in *ipſa nota* : fecit
6 עָשָׂה מֻידַעַת זֹאת בְּכָל־הָאָרֶץ׃ צַהֲלִי וָרֹנִּי
.Iſrael Sanctus *tuo interiori* in magnus quia : Sijon habitatrix
יוֹשֶׁבֶת צִיּוֹן כִּי־גָדוֹל בְּקִרְבֵּךְ קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל׃

CAP. XIII. יג

Super .Amos filius Jeſahjahu vidit quam ,Babylonis *Onus*
1 2 מַשָּׂא בָּבֶל אֲשֶׁר חָזָה יְשַׁעְיָהוּ בֶּן־אָמוֹץ׃ עַל
Agitate .eos ad vocem exaltate ,vexillum elevate *præruptum* montem
הַר־נִשְׁפֶּה שְׂאוּ־נֵס הָרִימוּ קוֹל לָהֶם הָנִיפוּ
:meis ſanctificatis præcepi Ego .munificorum *oſtia* ingrediantur & ,manũ
3 יָד וְיָבֹאוּ פִּתְחֵי נְדִיבִים׃ אֲנִי צִוֵּיתִי לִמְקֻדָּשָׁי
.*meæ celſitudinis* exultantes ,*meo naſo* in meos fortes vocavi etiam
גַּם קָרָאתִי גִבּוֹרַי לְאַפִּי עַלִּיזֵי גַּאֲוָתִי׃
ſonitus vox : multi populi *ſimilitudine* montibus in *turbæ* Vox
4 קוֹל הָמוֹן בֶּהָרִים דְּמוּת עַם־רָב קוֹל שְׁאוֹן
viſitans exercituum Dominus ,congregatarum gentium regnorum
מַמְלְכוֹת גּוֹיִם נֶאֱסָפִים יְהוָה צְבָאוֹת מְפַקֵּד
: cœli extremo ab procul terra de Venientes .prælii exercitum
5 צְבָא מִלְחָמָה׃ בָּאִים מֵאֶרֶץ מֶרְחָק מִקְצֵה הַשָּׁמָיִם
.terram omnem *corrumpendum* ad ejus *indignationis* vaſa & ,Dominus
יְהוָה וּכְלֵי זַעְמוֹ לְחַבֵּל כָּל־הָאָרֶץ׃
Omnipotente ab præda veluti : Domini dies *propinquus* quia , Ululate
6 הֵילִילוּ כִּי קָרוֹב יוֹם יְהוָה כְּשֹׁד מִשַּׁדַּי
hominis cor omne & ,*remittentur* manus omnes Idcirco .veniet
7 יָבוֹא׃ עַל־כֵּן כָּל־יָדַיִם תִּרְפֶּינָה וְכָל־לְבַב אֱנוֹשׁ
.liqueſcet
יִמָּס׃

Verſio VULG. LAT.

14 Et volabunt in humeros Philiſthiim per mare, ſimul prædabuntur filios Orientis. Idumæa et Moab præceptũ manûs eorum, & filii Ammon 15 obedientes erunt. Et deſolabit Dominus linguam maris Ægypti, & levabit manum ſuã ſuper flumen, in fortitudine ſpiritûs ſui: & percutiet eum in ſeptem rivis, ita ut tranſe- 16 ant per eum calceati. Et erit via reſiduo populo meo, qui relinquetur ab Aſſyriis: ſicut fuit Iſraeli in die illa, quâ aſcendit de terra Ægypti.

CAP. XII.

1 ET dices in die illa; Confitebor tibi, Domine, quoniam iratus es mihi: converſus eſt furor tuus, & conſolatus es 2 me. Ecce Deus ſalvator meᵒ, fiducialiter agam, & non timebo: quia fortitudo mea, & laus mea Dominus, & factus 3 eſt mihi in ſalutem. Haurietis aquas in gaudio de fontibus 4 ſalvatoris: Et dicetis in die illa; Confitemini Domino, & invocate nomen ejus: notas facite in populis adinventiones ejus: mementote quoniam 5 excelſum eſt nomen ejus. Cantate Domino quoniam magnificè fecit: annuntiate hoc in 6 univerſa terra. Exulta, & lauda habitatio Sion: quia magnus in medio tuî Sanctus Iſrael.

CAP. XIII.

1 ONus Babylonis, quod vi- 2 dit Iſaias filius Amos. Super montem caliginoſum levate ſignum, exaltate vocem, levate manum, & ingrediantur por- 3 tas duces. Ego mandavi ſanctificatis meis, & vocavi fortes meos in ira mea, exultantes in 4 gloria mea. Vox multitudinis in montibus, quaſi populorũ frequentiũ: vox ſonitᵒ regũ, gentium congregatarũ: Dñs exercituum præcepit militiæ 5 belli, Venientibus de terra procul, à ſummitate cœli: Dominus, & vaſa furoris ejus, ut 6 diſperdat omnem terram. Ululate, quia propè eſt dies Dñi: quaſi vaſtitas à Domino ve- 7 niet. Propter hoc, omnes manus diſſolventur, & omne cor hominis contabeſcet,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Καὶ πετασθήσονται ἐν πλοίοις ἀλλοφύλων· θάλασσαν ἅμα προνομεύσουσι, καὶ τοὺς ἀφ' ἡλίου ἀνατολῶν, καὶ Ἰδουμαίαν, καὶ ἐπὶ Μωὰβ πρῶτον τὰς χεῖρας ἐπιβαλοῦσιν· οἱ δὲ υἱοὶ 15 Ἀμμὼν πρῶτοι ὑπακούσονται. Καὶ ἐρημώσει κύριος τὴν θάλασσαν Αἰγύπτου, καὶ ἐπιβαλεῖ τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ τὸν ποταμὸν πνεύματι βιαίῳ· καὶ πατάξει ἑπτὰ φάραγγας, ὥστε 16 διαπορεύεσθαι αὐτὸν ἐν ὑποδήμασι. Καὶ ἔσται (α) δίοδος τῷ καταλειφθέντι μου λαῷ ἐν Αἰγύπτῳ. καὶ ἔσται τῷ Ἰσραὴλ, ὡς ἡ ἡμέρα ὅτε ἐξῆλθεν ἐκ γῆς Αἰγύπτου.

MS.A. (α) ὁδὸς

Et volabunt in navium ali… narum: mare ſimul p… & eos, qui à Sole o… mæam: & ſuper Moab … manus mittent. Filii Am… mon primi obedient. E… labit Dominus mare … mittet manum ſuam … ſpiritu violento; & … ptem valles, ita ut … lied in calceamentis. E… ſiduo populo meo in Æg… erit ipſi Iſrael, ſicut d… egreſſus eſt de terra Æg…

ΚΕΦ. ιβ'.

1 ΚΑὶ ἐρεῖς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, (α) Εὐλογῶ σε κύριε, διότι ὠργίσθης μοι, καὶ ἀπέ- 2 στρεψας τὸν θυμόν σου, καὶ ἠλέησάς με. Ἰδοὺ ὁ θεός μου σωτήρ μου, πεποιθὼς ἔσομαι (β) ἐπ' αὐτῷ, καὶ οὐ φοβηθήσομαι· διότι ἡ δόξα μου καὶ ἡ αἴνεσίς μου κύριος, καὶ ἐγένετό μοι 3 εἰς σωτηρίαν. Καὶ (γ) ἀντλήσατε ὕδωρ μετ' εὐφροσύνης ἐκ τῶν πηγῶν τοῦ σωτη- 4 ρίου. Καὶ ἐρεῖς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, Ὑμνεῖτε κύριον, βοᾶτε τὸ ὄνομα αὐτοῦ, ἀναγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι τὰ ἔνδοξα αὐτοῦ· μιμνήσκεσθε, ὅτι ὑψώθη τὸ ὄνομα 5 αὐτοῦ. Ὑμνήσατε τὸ ὄνομα κυρίου, ὅτι ὑψηλὰ ἐποίησεν· ἀναγγείλατε ταῦτα ἐν 6 πάσῃ τῇ γῇ. Ἀγαλλιᾶσθε, καὶ εὐφραίνεσθε οἱ κατοικοῦντες (δ) Σιών, ὅτι ὑψώθη ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραὴλ ἐν μέσῳ (ε) αὐτῆς.

CAP. XII.

ET dices in die illa, (a) … co te, Domine, quoniam … mihi, & avertiſt… & miſertus es mei. E… meus, ſalvator meus. … (b) eo, & non timebo … gloria mea, & laus mea … & factus eſt mihi in … haurite aquam cum … tibus ſalutaris. Et dic… die; Hymnis celebrate … num, clamate nomen ejus, … tiate in gentibus glorioſa … mentote, quoniam exalta… nomen ejus. Laudate nom… mini, quoniam excelſa … nuntiate hæc in omni … tate, & lætamini, qu… Sion: quia exaltatus e… Iſrael in medio ejus.

MS.A. (α) Εὐλογήσω, (β) ἐν αὐτῷ (γ) ἀντλήσεται (δ) ἐν Σιὼν

ΚΕΦ. ιγ'.

1 ὍΡΑΣΙΣ ἫΝ ΕἾΔΕΝ ἩΣΑΪ́ΑΣ ΥἹῸΣ ἈΜῺΣ, ΚΑΤᾺ ΒΑΒΥΛῶ- 2 ΝΟΣ. Ἐπ' ὄρους πεδινοῦ ἄρατε σημεῖον, ὑψώσατε τὴν φωνὴν (α) αὐτοῖς, παρακαλεῖ- 3 τε τῇ χειρί, ἀνοίξατε οἱ ἄρχοντες. Ἐγὼ συντάσσω, (β) καὶ ἐγὼ ἄγω αὐτούς. γίγαντες ἔρχονται πληρῶσαι τὸν θυμόν μου 4 χαίροντες ἅμα καὶ ὑβρίζοντες. Φωνὴ ἐθνῶν πολλῶν ἐπὶ τῶν ὀρέων, ὁμοία ἐθνῶν πολλῶν, φωνὴ βασιλέων καὶ ἐθνῶν συνηγμένων. κύριος Σαβαὼθ ἐντέταλται ἔθνει 5 ὁπλομάχῳ, Ἔρχεσθαι ἐκ γῆς πόῤῥωθεν ἀπ' ἄκρου θεμελίου τοῦ οὐρανοῦ, κύριος καὶ οἱ ὁπλομάχοι αὐτοῦ, (γ) καταφθεῖραι πᾶσαν 6 τὴν οἰκουμένην. Ὀλολύζετε, ἐγγὺς γὰρ (δ) ἡμέρα κυρίου, καὶ συντριβὴ παρὰ τοῦ 7 θεοῦ ἥξει. Διὰ τοῦτο (ε) πᾶσα χεὶρ ἐκλυθήσεται, καὶ πᾶσα ψυχὴ ἀνθρώπου δειλιάσει.

CAP. XIII.

VIſio, quam vidit Eſa… Amos, contra Babylonem. … montem campeſtrem leva… exaltate vocem eis, (a) con… ni manu, aperite p… præcipio, & ego adduc… (c) Gigantes veniunt im… rorem meum gaudentes … contumeliam facientes. … tium multarum ſuper m… milis gentium multar… regum, & gentium congr… rum. Dominus Sabaoth … genti bellicoſæ, u… longinqua à ſummo … cœli, Dominus, & arma… res ejus, ad corrumpen… ſum orbem terræ. … enim dies Domini: & … Deo veniet. Propter… nus diſſolventur, & … hominis formida…

MS.A. (α) ἑαυτοῖς, μὴ φοβεῖσθε, παρακαλεῖτε τῇ ψυχῇ. αὐτούς. ἡγιασμένοι εἰσίν, καὶ ἐγὼ ἄγω αὐτούς. (γ) τοῦ καταφθεῖ… κουμένην ὅλην· (δ) ἡ ἡμέρα (ε) πᾶσαι χεῖρες * ἐκλυθήσεται

תַּרְגוּם יוֹנָתָן Targum JONATAN.

14 וְיִתְחַבְּרוּן כְּתַף חַד לְמִמְחֵי פְלִשְׁתָּאֵי דִי בְמַעְרְבָא כַּחֲדָא יְבוֹזוּן יָת בְּנֵי מַדְנְחָא בֶּאֱדוֹם
15 וּמוֹאָב יוֹשְׁטוּן יְדֵיהוֹן וּבְנֵי עַמּוֹן יִשְׁתַּמְעוּן לְהוֹן׃ וְיַבֵּשׁ יְיָ יָת לִישַׁן יַמָּא דְמִצְרַיִם וִירִים
מַחַת גְבוּרְתֵיהּ עַל פְּרָת בְּמֵימַר נְבִיוֹהִי וְיִמְחֲנֵיהּ לְשִׁבְעָא נַחְלִין וִיהָכוּן בֵּיהּ בְּסַנְדְּלִין׃
16 וּתְהֵי אוֹרַח כְּבִישָׁא לִשְׁאָרָא דְעַמֵּיהּ דִישְׁתְּאַר מֵאַתּוּרָאָה כְּמָא דַהֲוַת לְיִשְׂרָאֵל בְּיוֹם
מַסְּקֵיהוֹן מֵאַרְעָא דְמִצְרָיִם׃

יב

1 וְתֵימַר בְּעִדָּנָא הַהִיא אוֹדֵי קֳדָמָךְ יְיָ אֲרֵי עַל דְחָבֵית קֳדָמָךְ הֲוָה רוּגְזָךְ עֲלַי וּכְדוּ דְתָבֵית
2 לְאוֹרַיְתָא יְתוּב רוּגְזָךְ מִנִּי וּתְרַחֵם עֲלַי׃ הָא עַל מֵימַר אֱלָהָא פּוּרְקָנִי אֲנָא רְחִיץ וְלָא
3 אֶזְדַּעְזַע אֲרֵי תוּקְפִּי וְתוּשְׁבַּחְתִּי דְחִילָא יְיָ אֲמַר בְּמֵימְרֵיהּ וַהֲוָה לִי לְפָרִיק׃ וְתִקַבְּלוּן
4 אוּלְפַן חֲדַת בְּחֶדְוָא מִבְּחִירֵי צַדִּיקַיָּא׃ וְתֵימְרוּן בְּעִדָּנָא הַהִיא אוֹדוּ קֳדָם יְיָ צַלּוֹ בִשְׁמֵיהּ
5 חַוּוֹ בְעַמְמַיָּא עוֹבָדוֹהִי אַדְכַּרוּ אֲרֵי תַקִּיף שְׁמֵיהּ׃ שַׁבַּחוּ קֳדָם יְיָ אֲרֵי גְבוּרָן עֲבַד גְּלֵיָא דָא
6 בְּכָל אַרְעָא׃ בּוּעִי וְשַׁבַּחִי כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן אֲרֵי רַבָּא אֲמַר לְאַשְׁרָאָה שְׁכִנְתֵּיהּ בְּגַוִּיךְ
קַדִּישָׁא דְיִשְׂרָאֵל׃

יג

1 מַטַל כַּס דְּלוֹט לְאַשְׁקָאָה יָת בָּבֶל דְאִתְנַבֵּי יְשַׁעְיָה בַּר אָמוֹץ׃ עַל כַּרְכָּא דְיָתְבָא שְׁלֵיוָא
2 3 זְקוּפוּ אָתָא אֲרִימוּ קָלָא לְהוֹן אֲנִיפוּ יַד וְיֵיעֲלוּן בְּתַרְעֲהָא מִתְנַדְּבִין׃ אֲנָא פַקֵּדִית לִמְזֻמְּנַי
4 אַף עָרְעִית גִּבָּרַי וְיִתְפַּרְעוּן מִנְּהוֹן רוּגְזִי תוּקְפִּי וְתוּשְׁבַּחְתִּי׃ קָל הֲמוֹן בְּטוּרַיָּא דְמוּת עַם
5 סַנִּי קָל אִתְרְגוּשַׁת מַלְכְוָן עַמְמִין דְמִתְכַּנְשִׁין יְיָ צְבָאוֹת מְמַנֵּי מַשְׁרְיָן בִּקְרָבָא׃ אָתַן
מֵאַרְעָא רְחִיקָא מִסְּיָפֵי אַרְעָא יְיָ וּמָנֵי כַס דְּלוֹט קֳדָמוֹהִי לְחַבָּלָא כָּל רַשִׁיעֵי אַרְעָא׃
6 7 אֵילִילוּ אֲרֵי קָרִיב יוֹמָא דַעֲתִיד לְמֵיתֵי מִן קֳדָם יְיָ כְּבִזָּא מִן קֳדָם שַׁדַּי יֵיתֵי׃ עַל
כֵּן כָּל יְדַיָּא יִתְרַשְׁלָן וְכָל לִבָּא דֶאֱנָשָׁא יִתְמְסֵי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Et conjungentur humero uno, ut percutiant Philiſtæos qui ſunt … dente, ſimul prædabuntur filios Orientis. In Idumæam & Moab … manus ſuas, & filii Ammon obedient eis. Et exſiccabit Dñs lingu… Ægypti, & elevabit plagam fortitudinis ſuæ ſuper Euphratem, … prophetarum ſuorum; & percutiet eum in ſeptem torrentes, & … cum calceamentis. Et erit via ſtrata reliquiis populi ſui qui … Aſſur, ſicut fuit Iſrael in die quo egreſſi ſunt de terra Ægypti.

CAP. XII.

ET dices in tempore illo: Confitebor corã te Dñe, quoniã … peccavi corã te, factᵒ eſt furor tuus ſuper me; *cùm vero* … *legẽ*: avertetur furor tuᵒ à me, et miſereberis mei. Ecce in … meæ ego confido, & non commovebor; quia fortitudo mea, & … ribilis Dñs: dixit in verbo ſuo, & fuit mihi in ſaluté. Et recip… nam novam in gaudio ab electis juſtorũ. Et dicetis in tempore … temini coram Dño, orate in nomine ejus; annunciate inter popul… ejᵒ: mementote quia forte eſt nomen ejus. Canite coram Dño qu… lia fecit; & manifeſtũ eſt hoc in univerſa terra. Exulta & lauda … Sion, quia magnus eſt qui dixit, ſe collocaturum majeſtatem ſuam … tui, ſanctus Iſrael.

CAP. XIII.

ONus calicis maledictionis ad propinandum Babyloni, quod … Eſaias filius Amos. Super civitatem habitantem confidenter, … gnũ, elevate vocem eis: agitate manum, & ingrediantur per po… ſponte ſe offerunt. Ego mandavi præparatis meis; etiam convoca… meos, ut ſumant ex eis ultionem furoris mei, *fortitudinis meæ* … Vox multitudinis in montibus, ſimilitudo populi grandis: vox … regnorũ multorum, populi qui congregantur. Dñs exercituũ con… citus in bello. Venientes de terra longinqua à finibus *terræ*, … calicis maledictionis coram eo, ut diſperdat omnes impios terræ … quia propè eſt dies qui venturus eſt à facie Dñi: quaſi præda … potentis veniet. Propterea omnes manus diſſolventur, & … nis tabeſcet.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܦܪܚܘܢ ܒܟܬܦܐ ܕܦܠܫܬܝܐ ܥܠ ܝܡܐ. ܘܐܟܚܕܐ ܢܒܙܘܢ ܠܒܢܝ ܡܕܢܚܐ. ܘܒܐܕܘܡ 14
ܘܒܡܘܐܒ ܢܘܫܛܘܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܒܢܝ ܥܡܘܢ ܢܫܬܡܥܘܢ ܠܗܘܢ. * ܘܢܚܪܒ ܡܪܝܐ ܠܫܢ 15
ܝܡܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܢܪܝܡ ܐܝܕܗ ܥܠ ܢܗܪܐ ܒܥܘܫܢܐ ܕܪܘܚܗ. ܘܢܡܚܝܘܗܝ ܠܫܒܥܐ
ܢܚܠܝܢ. ܕܢܕܪܟܘܢ ܒܡܣܢܐ. * ܘܢܗܘܐ ܫܒܝܠܐ ܠܫܪܟܐ ܕܥܡܗ ܕܢܫܬܚܪ ܡܢ ܐܬܘܪ. 16
ܐܝܟ ܕܗܘܐ ܠܐܝܣܪܝܠ ܒܝܘܡܐ ܕܣܠܩܘ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ *

* ܘܬܐܡܪ ܒܗܘ ܙܒܢܐ. ܐܘܕܐ ܠܟ ܡܪܝܐ: ܕܪܓܙܬ ܥܠܝ. ܘܐܗܦܟܬ ܪܘܓܙܟ ܘܒܝܐܬܢܝ. 1
* ܗܐ ܥܠ ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܝ ܬܟܝܠ ܐܢܐ ܘܠܐ ܐܕܚܠ. ܡܛܠ ܕܬܘܩܦܝ ܘܬܫܒܘܚܬܝ ܡܪܝܐ ܗܘ. 2
ܘܗܘܐ ܠܝ ܠܦܘܪܩܢܐ. * ܘܬܡܠܘܢ ܡܝܐ ܒܚܕܘܬܐ ܡܢ ܡܒܘܥܐ ܕܦܘܪܩܢܐ. * ܘܬܐܡܪܘܢ 3
ܒܗܘ ܝܘܡܐ. ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ. ܘܩܪܘ ܒܫܡܗ. ܘܚܘܘ ܒܥܡܡܐ ܥܒܕܘܗܝ. ܐܬܕܟܪܘ ܕܥܫܝܢ ܗܘ 4
ܫܡܗ. * ܙܡܪܘ ܠܡܪܝܐ. ܕܬܫܒܘܚܬܐ ܥܒܕ. ܢܬܝܕܥܢ ܗܠܝܢ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܪܘܙܝ 5
ܘܫܒܚܝ ܥܡܘܪܬܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܡܛܠ ܕܪܒ ܗܘ ܕܒܓܘܟܝ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. 6

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܓ *   * ܡܫܩܠܐ ܕܒܒܠ ܕܚܙܐ ܐܫܥܝܐ *

* ܥܠ ܛܘܪܐ ܫܦܝܐ ܐܩܝܡܘ ܐܬܐ. ܐܪܝܡܘ ܩܠܐ ܠܗܘܢ. ܐܢܝܦܘ ܒܐܝܕܐ. ܢܥܠܘܢ ܒܬܪܥܝܟܝ 1 2
ܫܠܝܛܢܐ. * ܐܢܐ ܦܩܕܬ ܠܡܩܕܫܝ. ܘܩܪܝܬ ܠܓܢܒܪܐ ܒܪܘܓܙܝ. ܘܠܡܫܬܒܗܪܝܢ ܒܫܘܒܗܪܝ. 3
* ܩܠܐ ܕܪܘܓܫܐ ܒܛܘܪܐ. ܐܝܟ ܕܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܩܠܐ ܕܪܘܓܫܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܥܡܡܐ 4
ܕܡܬܟܢܫܝܢ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܦܩܕ ܚܝܠܐ. * ܩܪܒܬܢܐ ܐܬܝܢ. ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܘܡܢ ܣܘܦܝ 5
ܫܡܝܐ ܡܪܝܐ. ܘܡܐܢܐ ܕܪܘܓܙܗ. ܠܡܚܒܠܘ ܠܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܐܝܠܠܘ. ܡܛܠ ܕܩܪܝܒ 6
ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܝܟ ܒܙܬܐ ܡܢ ܫܠܝܐ ܬܐܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܟܠܗܝܢ ܐܝܕܝܐ ܢܫܬܪܝܢ 7
ܘܟܠܗ ܠܒܐ ܕܐܢܫܐ ܢܬܡܣܐ. ܘܢܬܕܠܚܘܢ.

Sed humero Paleſtinorum arent ſecus mare, 14
& ambo ſimul diripiant Orientales: in A-
dumæos & Moabitas extendant manus ſuas,
& Ammonitæ obediant eis. Vaſtabit quoque 15
Dominus linguam (*i. ſinum*) maris quod eſt
in Ægypto, & ſublatâ manu ſuâ contra flu-
men, poteſtate venti ſui percutiet illud in
ſeptem torrentes; ita ut calceis trajiciatur. Pa- 16
teatq; ſemita reliquo populo ſuo qui reliqu⁹
fuerit ex Athur; quemadmodũ contigit Iſrae-
litis eo die quo aſcenderunt è terra Ægypti.

CAP. XII.

ET dices eo tempore, Gratias ago tibi 1
Domine, quoniam iratus eras mihi, ſed aver-
tiſti iram tuam & conſolatus es me. En 2
Deo ſalvatore meo fretus ſum, & non ti-
mebo, quoniam præſidium & gloria mea
Dominus eſt, & erit mihi ſaluti. Haurietis 3
aquas cum gaudio de fontibus ſalutis. Et 4
dicetis eo die, Gratias agite Domino, & in-
vocate nomen ejus, patefacite inter gentes
actiones ejus; mementote magnum eſſe
nomen ejus: Pſallite Domino, quia magni- 5
ficentiam fecit: notũ ſit hoc in tota terra. Ex-
ulta, & laudes dicito habitatrix Sionis; quia 6
magnus eſt qui intra te eſt ſanctus Iſraelis.

CAP. XIII.

Onus Babelis quod vidit Eſaia. 1

SUper montes nitidos attollite ſignum, ef- 2
ferte vocem ad illos, annuite manu: prin-
cipes ingredientur per portas tuas. Ego præ- 3
cepi *in* Sanctuario meo, & advocavi poten-
tes in ira mea, qui magnificantur decore
meo. Vox tumultûs in monte, quaſi multa- 4
rum gentium: vox tumultûs regnorum
gentium quæ ſe congregant. Dominus poten-
tiſſimus recenſet copias. Bellatores veniunt 5
è longinquo, & ab extremitatibus cœli Do-
minus cum inſtrumentis iræ ſuæ, ad vaſtandã
univerſam terram. Ejulate, quia propinquus 6
eſt dies Domini, & veluti depopulatio ve-
niet ex improviſo. Iccirco manus omnes 7
remittentur, & omne cor mortalium ta-
beſcet, & turbabuntur:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

14 * ويطيرون في سفن القبائل الغريبة وينهبون البحر معا * والذين من مشارق الشمس والادومية
15 ويضعون الايدي على مواب اولا * وبنو عمون الاولون يسمعون * ويخرب الرب بحر مصر
ويضع يده على نهرها بريح عاصفة * ويضرب سبعة اودية في مصر * حتى يجوزوها بالاحذية
16 * ويكون مجازا لسبي المبقي بمصر * ويكون اسرائيل كاليوم الذي خرجوا فيه من ارض مصر

* الفصل الثاني عشر *

1 2 * وتقول في ذلك اليوم * اباركك يا رب لانك غضبت علي ورددت غضبك عني ورحمتني * ها
الهي الرب مخلصي * واتوكل عليه فاتخلص به * ولا اخاف من اجل ان الرب مجدي
3 4 وتسبحتي * وصار لي مخلصا * واستقوا الماء بسرور من ينابيع الخلاص * وتقول في ذلك اليوم
5 سبحوا الرب * اصرخوا باسمه * اخبروا في الامم بمجيداته * تذكروا ان قد رفع اسمه * سبحوا اسم
6 الرب * لانه صنع عاليات * واخبروا بهذا في الارض كلها * ابتهجوا وافرحوا يا ساكني
صهيون * لان قدوس اسرائيل رفع في وسطها *

* الفصل الثالث عشر *   * الوحي الخامس *

1 2 * الرويا التي راها اشعيا ابن اموص على بابل * ارفعوا علامة على جبل سهل * اعلوا الصوت
3 عندكم ولا تخافوا * هزوا باليد * افتحوا ايها الروساء * وانا امر * لانهم مقدسون * وانا اجلبهم
4 ياتي الجبابرة ليسكنوا غضبي * يفرحون معا ويتعظمون * صوت امم كثيرين على الجبال
5 شبه امم كثيرين * صوت ملوك وامم كثيرين مجتمعة * ورب الجيوش يامر لامة محاربة لتاتي
من الارض من بعيد * من طرف اساس السماء الرب والمحاربون معه * ليبيد كل المسكونة
6 7 ويهلك الخطاة منها * ولولوا لان يوم الرب قريب * والانكسار ياتي من قبل الله * لاجل
هذا كل يد تنحل * وكل نفس تجزع *

Sed convolantes in navibus nationum 14
exterarum, mare ſimul prædabuntur, &
eos qui ſunt ab oriente ſole, nec non
Idumæos; & manus imponent Moa-
bitis primùm, & Ammonitæ primi
obtemperabunt. Vaſtabitque Dominus 15
mare Ægypti, & manum ſuam imponet
fluvio ejus vento vehementi; percuti-
etque ſeptem torrentes in Ægypto, ita
ut calceati trajiciant eos, Fiatque adi- 16
tus populo meo qui reliquus eſt in
Ægypto: & erunt Iſraelitæ ut in die
illa quâ egreſſi ſunt è terra Ægypti.

CAP. XII.

ITaque dices eo die, Benedico te O Do- 1
mine, quòd iratus ſis mihi, tum averſâ
à me irâ tuâ miſertus ſis mei. Ecce Do- 2
minus ſervator meus eſt; ipſo confi-
dam, & per eum ſervabor, nec timebo;
quoniam Dominus laus mea & carmen
meum eſt, & factus eſt mihi ſervator.
Haurite aquam cum gaudio è fontibus 3
ſalutis. Dices etiam eo tempore, Canite 4
Domino, edite cum clamore nomen e-
jus, prædicate inter gentes glorificatio-
nes ejus, mementote exaltatum jam
eſſe nomen ejus. Laudate nomen Do- 5
mini, quia fecit ſublimia, & prædi-
cate hoc in univerſa terra. Lætamini 6
& gaudete O habitatores Sionis, quia
Sanctus Iſraelis exaltatus eſt in medio
ejus.

CAP. XIII.

Revelatio quinta.

VIſio quam vidit Eſaia filius Amos de 1
Babele. Erigite vexillum ſuper montem 2
apertum: attollite vocem apud vos, &
ne timeatis: agitate manum: aperite O
principes; Ego enim præcipio; quia 3
ſancti ſunt; & ego adduco eos: veni-
ent gigantes ad ſedandam iram meam:
gaudebunt ſimul, & magnificabuntur.
Vox gentium multarum ſuper montem, 4
ſimilis voci multarum gentium: vox re-
gum & multarum gentium congregata-
rum. Dominus enim exercituum præci- 5
piet genti bellatrici ut veniat è terra de
longinquo; ab extremis cœli fundamen-
tis Dominus, & cum eo bellatores, ad
perdendũ totũ orbem terrarũ, & pecca-
tores ex eo delendos. Ululate, quia dies 6
Domini proximus eſt, & fractura ventu-
ra eſt à Deo. Propterea omnis manus diſ- 7
ſolvetur, & omnis anima formidabit:

ישעיה : יג

parturiens veluti , eos tenebunt dolores & *tormina* , terrebuntur Et
8 ונבהלו צירים וחבלים יאחזון כיולדה
flammarum facies : ſtupebunt ſuum *ſocium* ad *vir* : *cruciabuntur*
יחילון איש אל־רעהו יתמהו פני להבים
,*excandeſcentia* & ,crudelis , *veniens* Domini dies Ecce .eorum facies
9 פניהם׃ הנה יום־יהוה בא אכזרי ועברה
ejus peccatores & ; ſolitudinem in terram *ponendum ad* ,*naris* ira &
וחרון אף לשום הארץ לשמה וחטאיה
non eorum *conſtellationes* & ,cœlorum ſtellæ Quoniam .ea ex diſperdat
10 ישמיד ממנה׃ כי־כוכבי השמים וכסיליהם לא
luna & ,*ipſum egrediendo in* ſol obſcurabitur :ſuum lumen lucere facient
יהלו אורם חשך השמש בצאתו וירח
,malum orbem ſuper viſitabo Et .ſuum lumen faciet ſplendere non
11 לא־יגיה אורו׃ ופקדתי על־תבל רעה
,*arrogantium* ſuperbiam ceſſare faciam Et .eorũ iniquitatem impios ſuper &
ועל־רשעים עונם והשבתי גאון זדים
hominem faciam *Pretioſum* .faciam humiliare *formidabilium* ſuperbiam &
12 וגאות עריצים אשפיל׃ אוקיר אנוש
cœlum Idcirco .Ophir *auri maſſa præ* hominem & : *obrizo præ*
13 מפז ואדם מכתם אופיר׃ על־כן שמים
Domini *fervida ira in* : ſuo loco de terra contremiſcet & ,faciam movere
ארגיז ותרעש הארץ ממקומה בעברת יהוה
,*expulſa dama* tanquam erit Et .ejus *naris* iræ *die in* & ,exercituum
14 צבאות וביום חרון אפו׃ והיה כצבי מדח
,*reſpicient* ſuum populum ad unuſquiſque : *congregans* non & ,pecus ſicut &
וכצאן ואין מקבץ איש אל־עמו יפנו
: perfodietur , inventus Omnis .fugient ſuam terram ad unuſquiſque &
15 ואיש אל־ארצו ינוסו׃ כל־הנמצא ידקר
allidentur eorum parvuli Et .gladio in cadet *additus* omnis &
16 וכל־הנספה יפול בחרב׃ ועלליהם ירטשו
.violabuntur eorum uxores & ,eorum domus diripientur :eorum oculis in
לעיניהם ישסו בתיהם ונשיהם תשגלנה׃
,æſtimabunt non argentum qui ,*Madii* eos contra *ſuſcitans* ego Ecce
17 הנני מעיר עליהם את־מדי אשר־כסף לא יחשבו
fructus & , allident pueros *arcus* Et .*eo in* volent non aurum &
18 וזהב לא יחפצו־בו׃ וקשתות נערים תרטשנה ופרי־
.eorum oculus parcet non filiis ſuper ,miſerebuntur non ventris
בטן לא ירחמו על־בנים לא־תחוס עינם׃
,Chaldæorum ſuperbiæ gloria ,regnorum *decoratio* Babel erit Et
19 והיתה בבל צבי ממלכות תפארת גאון כשדים
Non .Hamorah & Sedom *Dei* ſubverſione ſecundùm
20 כמהפכת אלהים את־סדם ואת־עמרה׃ לא־
,generationem in uſque habitabitur nec , *perpetuum in* habitabitur
תשב לנצח ולא תשכן עד־דור
non paſtores & ,Harabs ibi tendet tentorium non & : generationem &
ודור ולא־יהל שם ערבי ורעים לא־
replebuntur & , *Tſiim* ibi accubabunt *Et* .ibi facient accubare
21 ירבצו שם׃ ורבצו־שם ציים ומלאו
piloſi & , *ululæ* filiæ ibi habitabunt & ,furunculis eorum domus
בתיהם אחים ושכנו שם בנות יענה ושעירים
dracones & ,ejus *viduatis* ædibus in *catti canet alternis* Et .ibi ſaltabunt
22 ירקדו־שם׃ וענה איים באלמנותיו ותנים
non ejus dies & ,ejus tempus *veniendum ad prope* Et .*voluptatis* palatiis in
בהיכלי ענג וקרוב לבוא עתה וימיה לא
.protrahentur
ימשכו׃

Verſio VULG. LAT.

8 Et conteretur. Torſiones & dolores tenebunt, quaſi parturiens, dolebunt : unuſquiſque ad proximum ſuum ſtupebit, facies combuſtæ vultus eorum. 9 Ecce dies Domini veniet, crudelis, & indignationis plenus, & iræ, furoriſque, ad ponendam terram in ſolitudinem, & peccatores ejus conterendos de ea. 10 Quoniã ſtellæ cœli, & ſplendor earum, non expandent lumen ſuum: obtenebratus eſt Sol in ortu ſuo, & Luna non ſpendebit in lumine ſuo. 11 Et viſitabo ſuper orbis mala, & contra impios iniquitatem eorum, & quieſcere faciã ſuperbiam infidelium, et arrogantiam fortium humiliabo. 12 Pretioſior erit vir auro, & homo mundo obrizo. 13 Super hoc cœlum turbabo : et movebitur terra de loco ſuo, propter indignationem Domini exercituum, et propter 14 diem iræ furoris ejus. Et erit quaſi damula fugiens, & quaſi ovis : et non erit qui congreget : unuſquiſque ad populum ſuum convertetur, et ſinguli 15 ad terram ſuã fugient. Omnis, qui inventus fuerit, occidetur: et omnis, qui ſupervenerit, ca-16 det in gladio. Infantes eorum allidentur in oculis eorum : diripientur domus eorum, et uxores eorum violabuntur. 17 Ecce ego ſuſcitabo ſuper eos Medos, qui argentum non quærant, nec aurum velint : 18 Sed ſagittis parvulos interficient, et lactantibus uteris non miſerebuntur, et ſuper 19 filios non parcet oculus eorũ. Et erit Babylon illa glorioſa in regnis, inclyta ſuperbia Chaldæorum, ſicut ſubvertit Dominus Sodomam & Gomorrhã. 20 Non habitabitur uſque in finem, et non fundabitur uſque ad generationem et generationem : nec ponet ibi tentoria Arabs, nec paſtores re-21 quieſcent ibi. Sed requieſcent ibi beſtiæ, et replebuntur domus eorũ draconibus: et habitabunt ibi ſtruthiones, et piloſi 22 ſaltabunt ibi : Et reſpondebunt ibi ululæ in ædibus ejus, et ſirenes in delubris voluptatis.

CAP. XIV.

1 PRopè eſt ut veniat tempus ejus, & dies ejus non elongabuntur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 (ζ) Ταραχθήσονται οἱ πρέσβεις, καὶ ὠδῖνες αὐτοὺς ἕξουσιν, ὡς γυναικὸς τικτούσης· καὶ συμφοράσουσιν ἕτερος πρὸς τὸν ἕτερον, καὶ ἐκστήσονται, καὶ τὸ πρόσωπον αὐτῶν ὡς φλὸξ μεταβαλοῦσιν. 9 Ἰδοὺ γὰρ ἡμέρα κυρίου (η) ἔρχεται ἀνίατος, θυμοῦ καὶ ὀργῆς, θεῖναι τὴν οἰκουμένην ἔρημον, καὶ τοὺς ἁμαρτωλοὺς 10 ἀπολέσαι ἐξ αὐτῆς. Οἱ γὰρ ἀστέρες τοῦ οὐρανοῦ καὶ ὁ Ὠρίων καὶ πᾶς ὁ κόσμος τοῦ οὐρανοῦ, τὸ φῶς οὐ δώσουσι· καὶ σκοτισθήσεται τοῦ ἡλίου ἀνατέλλοντος, καὶ ἡ σελήνη οὐ δώσει τὸ 11 φῶς αὐτῆς. Καὶ ἐντελοῦμαι τῇ οἰκουμένῃ ὅλῃ κακά, καὶ τοῖς ἀσεβέσι τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν· καὶ ἀπολῶ ὕβριν ἀνόμων, καὶ ὕβριν ὑπερ-12 ηφάνων ταπεινώσω. Καὶ ἔσονται οἱ καταλελειμμένοι ἔντιμοι μᾶλλον ἢ τὸ χρυσίον τὸ ἄπυρον· καὶ (θ) ἄνθρωπος μᾶλλον ἔντιμος ἔσται ἢ ὁ λίθος ὁ (ι) ἐν Σουφίρ. 13 Ὁ γὰρ οὐρανὸς θυμωθήσεται, καὶ ἡ γῆ σεισθήσεται ἐκ τῶν θεμελίων αὐτῆς, διὰ θυμὸν ὀργῆς κυρίου σαβαώθ, (κ) ἐν τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἂν ἐπ-14 έλθῃ ὁ θυμὸς αὐτοῦ. Καὶ ἔσονται οἱ καταλελειμμένοι ὡς δορκάδιον φεῦγον, καὶ ὡς πρόβατον πλανώμενον, καὶ οὐκ ἔσται ὁ συνάγων, ὥστε ἄνθρωπον εἰς τὸν λαὸν αὐτοῦ ἀποστραφῆναι, καὶ (λ) ἄνθρωπος εἰς τὴν χώραν 15 ἑαυτοῦ διώξεται. Ὃς γὰρ (μ) ἂν ἁλῷ, ἡττηθήσεται, (ν) καὶ οἵτινες συνηγμένοι εἰσί, 16 (ξ) πεσοῦνται μαχαίρᾳ. Καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν (ο) ῥάξουσιν ἐνώπιον αὐτῶν, καὶ τὰς οἰκίας αὐτῶν προνομεύσουσι, καὶ τὰς γυναῖ-17 κας αὐτῶν ἕξουσιν. Ἰδοὺ ἐπεγείρω ὑμῖν τοὺς Μήδους, (π) οἳ ἀργύριον οὐ λογίζον-18 ται, οὐδὲ χρυσίου χρείαν ἔχουσι. Τοξεύματα νεανίσκων συντρίψουσι, καὶ τὰ τέκνα ὑμῶν οὐ μὴ (ρ) ἐλεήσωσιν, οὐδὲ ἐπὶ τοῖς τέκνοις σου φείσονται οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν. 19 Καὶ ἔσται Βαβυλὼν ἣ καλεῖται ἔνδοξος (σ) ἀπὸ βασιλέως Χαλδαίων, ὃν τρόπον κατ-20 έστρεψεν ὁ θεὸς Σόδομα καὶ Γόμορρα· Οὐ κατοικηθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον, οὐδὲ μὴ εἰσέλθωσιν εἰς αὐτὴν διὰ πολλῶν γενεῶν, οὐδὲ μὴ διέλθωσιν αὐτὴν Ἄραβες, οὐδὲ ποιμένες οὐ μὴ (τ) ἀναπαύ-21 σονται ἐν αὐτῇ. Καὶ ἀναπαύσονται ἐκεῖ θηρία, καὶ (υ) ἐμπλησθήσονται αἱ οἰκίαι ἤχου· καὶ ἀναπαύσονται ἐκεῖ σειρῆνες, καὶ 22 δαιμόνια ἐκεῖ (φ) ὀρχήσονται, Καὶ ὀνοκένταυροι ἐκεῖ κατοικήσουσι, καὶ νοσσοποιήσουσιν ἐχῖνοι ἐν τοῖς οἴκοις αὐτῶν.

ΚΕΦ. ιδʹ.

1 ΤΑχὺ ἔρχεται καὶ οὐ χρονιεῖ.

Turbabuntur legati, & dolores eos tenebunt, quaſi mulieris parrientis: & condolebunt alter ad alterum, & ſtupebunt: & faciem ſuam, quaſi flamma, mutabunt. Ecce enim dies Domini venit inſanabilis, furoris & iræ, ad ponendum orbem terræ deſertum, & peccatores perdendo ex ea. Stellæ enim cæli, & Orion, & omnis ornatus cæli non dabunt lumen: & obtenebrabitur oriente Sole: & Luna non dabit lumen ſuum. Et mandabo univerſo orbi terræ mala, & impiis peccata eorum: & perdam ſuperbiam iniquorum, & contumeliam ſuperborum humiliabo. Et erunt, qui relicti fuerint, honorati magis quàm aurum (d) incoctum: & homo magis honoratus erit, quàm lapis, qui de Suphir. Cælum enim indignabitur: & terra commovebitur à fundamentis ſuis, propter furorem iræ Domini Sabaoth, in die illa, quâ ſupervenerit furor ejus. Et erunt reſidui, quaſi damula fugiens, & quaſi ovis errans: & non erit qui congreget: ita ut homo ad populum ſuum convertatur: & homo ad regionem ſuam expelletur. Quicunque enim deprehenſus fuerit, ſuperabitur: &, qui congregati fuerint, cadent gladio. Et filios eorum allident coram eis, & domos eorum deprædabuntur, & uxores eorum habebunt. Ecce ſuſcito vobis Medos, qui argentum non reputant, nec auro opus habent. Arcus adoleſcentium conterent, & filiorum veſtrorum non miſerebuntur, neque ſuper filiis tuis parcent oculi eorum: Et erit Babylon, quæ vocatur inclyta à rege Chaldæorum, ſicut ſubvertit Deus Sodomam, & Gomorrham: Non habitabitur in æternum tempus, neque ingredientur in eam per multas generationes: neque pertranſibunt eam Arabes, neque paſtores requieſcent in ea. Et requieſcent illic (e) beſtiæ, & implebuntur domus ſonitu, & accubabunt ibi ſirenes, & dæmonia illic ſaltabunt: & onocentauri illic habitabunt, & nidificabunt hericii in domibus eorum.

CAP. XIV.

C*Ito veniet, & non*

MS.A. (ζ) Καὶ ταραχθήσονται (η) ἀνίατος ἔρχεται, (θ) ὁ ἄνθρωπ
τῇ ἡμέρᾳ (λ) ἄνθρωπον εἰς τὴν χώραν αὐτοῦ διώξαι. (μ) ἐὰν
μαχαίρᾳ πεσοῦνται. (ο) ἐνώπιον αὐτῶν ῥάξουσιν, (π) οἳ οὐκ
ἀργύριον, οὐδὲ χρυσίον (ρ) ἐλεήσουσιν, (σ) ὑπὸ (τ) ἀναπαύ
(υ) πλησθήσονται οἰκίαι (φ) ὀρχηθήσονται.

תרגום יונתן TARGUM JONATHAN.

8 ויתבהלון עקא וחבלין יחדונונון זיע כלידתא יזועון גבר לחבריה יתמהון אפי
9 שלהובין אפיהון׃ הא יומא מן קדם יי עתיד למיתי אכזרי ותעבור ותקוף
10 רגז לשואה ארעא לצדו וחיבהא ישיצי מנה׃ ארי כוכבי שמיא ונפיליהון לא
11 יזהרון נהוריהון וקבל שמשא במפקיה וסיהרא לא מזהר נהוריה׃ ואסער
על דדירין בתבל בישתא ועל רשיעיא חוביהון ואבטיל רבות רשיעין ותקוף
12 תקיפין אמאיך׃ אחבב דחלי מדהבא דמתיקרין מניה בני אנשא ועבדי אוריתא
13 ממסננא דאופיר׃ על כן שמיא אזיע ותזוע ארעא מאתרהא מן קדם יי צבאות
14 וביום תקוף רוגזיה׃ ויהי כטביא מפרד וכעאן ולית דמכניש גבר לעמיה
15 יתפנון וגבר לארעיה יערקון׃ כל דישתכח בה יתקטל וכל דיעול לכרכי
16 צירא יתקטל בחרבא׃ ועולמיהון יטרפון לעיניהון יתבזזון בתיהון ונשיהון
17 ישתכבן׃ הא אנא מיתי עליהון ית מדי די בכספא לא מטקסין ודהבא לא
18 מתרעין ביה׃ וקשתתהון עולמין יבזען ועל ולד מעין לא ירחמון על בניא
19 לא תחוס עיניהון׃ ותהי בבל דהות מלקדמין חדות מלכון תושבחת רבות
20 כסדאי כהפכתא דהפך יי ית סדום וית עמורה׃ לא תתב לעלם ולא
21 תשרי עד דר ודר לא יפרוס תמן ערבי משכניה ורעין לא ישרון תמן׃ וישרון
תמן תמון ויתמלון בתיהון אוחין וישרין תמן בנת נעמין ושידין יחיכון תמן׃
22 וינצפון חתולין בברניתהון וירודין בבית מישרי תפנוקיהון וקריב למיתי עדן
תבירה דבבל ויומהא לא יתרחקון׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et turbabuntur : tribulatio & dolores apprehendent eos :
ſicut parturiens contremiſcent : unuſquiſque *ad proximum ſuum*
peſcent : vultus flammarum [*ſunt*] *facies* eorum. Ecce dies à facie
veniet crudelis, & indignatione plenus, & ira furoris, ut ponat
ram in deſolationem, & peccatores conſumat ex ea. Quoniam
cœlorum & planetæ eorum ſplendorem ſuum non emittent,
breſcente Sole in egreſſu ſuo, & Luna lucem ſuam non diffundente
ſitabo ſuper habitatores orbis mala, & ſuper impios peccata
ceſſare faciam magnitudinem impiorum, & fortitudinem fortium
abo. Diligam timentes me magis quàm aurum quo glorian
nes; & legis obſervantes plus quàm aurum probatum de Ophir
pterea commovebo cœlos, & movebitur terra de loco ſuo, à facie
exercituũ & in die furoris indignationis ejus. Et erit ſicut damula
rans, & quaſi ovis, & non erit qui congreget. Unuſquiſque ad po
ſuum reſpiciet, & unuſquiſq; ad terram ſuam fugiet. Et omnis qui
fuerit in ea, occidetur : & omnis qui ingredietur in civitates mu
occidetur gladio. Et infantes eorum allidentur in oculis eorum
pientur domus eorum : & uxores eorum concumbentur. Ecce ego
cam ſuper eos Medos qui argento non *coguntur in ordinem*
lunt aurum. Et arcubus ſuis juvenes perfodient, & ſuper
ventris non miſerebuntur : ſuper filios non parcet oculus eorum
bylon autem quæ erat ab initio gaudium regnorum, & his
nis Chaldæorum, erit ſicut ſubverſio, qua ſubvertit Dominus
& Gomorram. Non habitabitur in ſeculum, & non incolatur
generationem & generationem : neque extendet ibi Arabs
lum ſuum, neque paſtores habitabunt ibi. Sed habitabunt ibi
plebuntur domus eorum muſteilis, & habitabunt ibi filiæ
& dæmones ludent ibi. Et ſaltabunt cati in palatiis eorum
in domo habitationis delitiarum eorum. Et prope eſt ut
interitus Babylonis, & dies ejus non elongabuntur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܙܘܥܐ ܘܚܒܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ ܢܐܚܕܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܢܬܕܡܪܘܢ. ܓܒܪ ܒܚܒܪܗ. ܘܐܦܝ̈ܗܘܢ
ܕܫܠܗܒܝܬܐ ܐܦܝ̈ܗܘܢ. * ܗܐ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܬܐ. ܘܠܐ ܐܝܬ ܠܗ ܐܣܝܘܬܐ. ܥܙܝܙ ܘܚܡܝܡ 9
ܪܘܓܙܗ. ܕܢܣܝܡܝܗ ܠܐܪܥܐ ܠܚܘܪܒܐ. ܘܚܛܝ̈ܐ ܢܘܒܕ ܡܢܗ. * ܟܘܟ̈ܒܐ ܓܝܪ ܕܫܡܝܐ 10
ܘܚܝܠܘܬܗܘܢ. ܠܐ ܢܢܗܪܘܢ. ܢܚܫܟ ܫܡܫܐ ܒܡܕܢܚܗ. ܘܣܗܪܐ ܠܐ ܢܢܗܪ ܢܘܗܪܗ.
* ܘܐܦܩܘܕ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܬܐܒܝܠ. ܘܥܠ ܪ̈ܫܝܥܐ ܥܘܠܗܘܢ. ܘܐܒܛܠ ܫܘܒܗܪܐ ܕܡܪ̈ܚܐ 11
ܘܫܘܒܗܪܐ ܕܥܫܝ̈ܢܐ ܐܫܦܠ. * ܐܘܩܪ ܓܒܪܐ ܡܢ ܕܗܒܐ. ܘܒܪܢܫܐ ܡܢ ܕܗܒܐ ܕܐܘܦܝܪ. 12
* ܡܛܠ ܗܢܐ. ܫܡܝܐ ܐܪܓܙ. ܘܐܪܥܐ ܬܙܘܥ ܡܢ ܕܘܟܬܗ. ܒܟܐܬܐ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ 13
ܒܝܘܡܐ ܕܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. * ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܛܒܝܐ ܕܥܪܩ. ܘܐܝܟ ܥܢܐ ܕܠܝܬ ܠܗ 14
ܡܟܢܫܢܐ. ܐܢܫ ܠܥܡܗ ܢܬܦܢܐ. ܘܐܢܫ ܠܐܪܥܗ ܢܥܪܘܩ. * ܟܠ ܕܢܫܬܟܚ 15
ܢܬܕܩܪ. ܘܟܠ ܕܢܬܘܣܦ ܢܦܠ ܒܚܪܒܐ. * ܘܥܘܠܠܝܗܘܢ ܢܬܪܛܫܘܢ. ܠܥܝܢܝܗܘܢ. 16
ܘܢܬܒܙܙܘܢ ܒܬܝܗܘܢ. ܘܢܫܝܗܘܢ ܢܬܛܢܦܢ. * ܗܐ ܡܥܝܪ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ ܠܡܕܝܐ 17
ܕܟܣܦܐ ܠܐ ܚܫܒܝܢ ܠܗ. ܘܒܕܗܒܐ ܠܐ ܪܓܝܓܝܢ. * ܩܫܬܐ ܕܥܠܝܡܐ ܢܬܒܪܢ. ܘܠܐ 18
ܦܐܪܐ ܕܟܪܣܐ ܠܐ ܢܪܚܡܘܢ. ܘܥܠ ܒܢܝܟܘܢ. ܠܐ ܬܚܘܣ ܥܝܢܝܗܘܢ. * ܘܬܗܘܐ ܒܒܠ 19
ܚܝܠܐ ܕܡܠܟܘܬܐ. ܘܫܘܒܚܐ ܕܫܘܒܗܪܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܐܝܟ ܕܗܦܟ ܐܠܗܐ ܠܣܕܘܡ
ܘܠܥܡܘܪܐ. * ܠܐ ܬܬܒ ܠܥܠܡ. ܘܠܐ ܬܬܥܡܪ ܠܕܪ ܕܪܝܢ. ܘܠܐ ܢܫܪܘܢ ܬܡܢ ܛܝܝܐ. ܘܪ̈ܥܘܬܐ ܠܐ 20
ܢܪܥܘܢ ܬܡܢ. * ܐܠܐ ܢܪܒܥܘܢ ܬܡܢ ܚܝܘܬܐ. ܘܢܬܡܠܘܢ ܒܬܝܗܘܢ ܩܠܐ 21
ܘܢܫܪܘܢ ܬܡܢ ܒܢܬ ܝܥܢܐ. ܘܫܐܕܐ ܢܪܩܕܘܢ ܬܡܢ. * ܘܢܥܢܘܢ ܣܝܪ̈ܢܐ ܒܐܪܡܠܬܗܘܢ. 22
ܘܝܪܘܪ̈ܐ ܒܗܝܟܠܐ ܕܦܘܢܩܝܗܘܢ. ܩܪܝܒ ܓܝܪ ܙܒܢܗ ܠܡܐܬܐ. ܘܝܘܡܬܗ ܠܐ
ܢܬܡܫܟܘܢ.

8 Vertigines & dolores ut parturientis occupabunt eos, quiſque proximum ſuum demirabitur, & facies inflammatæ erunt facies eorũ. 9 Ecce dies Domini veniet, nec erit illi remedium : pervicax & fervens erit ira ejus, ut terram in ſolitudinem redigat, & peccatores ejus extinguat ex ea. 10 Nam ſtellæ cœlorum & exercitus eorum non exhibebunt lucem, obſcurabitur ſol ab exortu ſuo, & lunæ lumen haud luceſcet. 11 Viſitabo malitiam orbis terrarum, & impiorum iniquitatem : ceſſare faciam inſolentiam ſuperborum, & faſtum potentium dejiciam : 12 Virum reddam auro graviorem, & hominem auro Ophirizo. 13 Propterea cœlum ad iram concitabo, & terra loco ſuo movebitur : Ob increpationem Domini potentiſſimi *futuram* in die furoris iræ ejus, 14 Erunt ut cervi fugientes, & ut oves non habentes colligentem : unuſquiſque ad populum ſuum revertetur, & quilibet in terram ſuam aufugiet : 15 Quicunque inventus fuerit, confodietur : et quicunque adjunxerit ſeſe, gladio corruet : 16 Infantes eorum illidentur in conſpectu eorum : domus eorum diripientur, et mulieres eorum ſtuprabuntur, 17 Ecce ego concitaturus ſum in vos Medos, apud quos argentum nullius eſt pretii, et auro non oblectantur. 18 Arcus juvenum frangentur : et fructuum ventris non miſerebuntur, nec filiis veſtris parcent oculi eorum. 19 Et Babel robur regnorũ et gloria faſtûs Chaldæorum, fiet ſimilis Sodomæ et Gomorræ, quas Deus ſubvertit : 20 Non ſubſiſtet in perpetuum, nec permanebit in ſeculum ſeculorum ; non habitabunt illic Arabes, et paſtores non paſcent ibi : 21 Sed cubabunt ibi feræ, et implebuntur domus eorũ echo, habitabunt ibi filiæ ſtruthionum & dæmones ibi ſaltabunt : 22 Cantabunt ſirenes in palatiis eorũ, et canes ſylveſtres in ædibus voluptuoſis eorum. Tempus autem ejus brevi adveniet, et dies ejus non protrahentur ampliús.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويضطرب المسايح ويأخذهم الطلقات مثل امراة تلد * ويتصادمون الآخر مع الآخر * 8
ويبهتون ويصير وجوههم مثل اللهيب * لأن ها يوم الرب يأتي * وليس له شفاء * بغضب 9
وسخط * ليصير المسكونة كلها خرابا * ويهلك الخطاة منها * لأن نجوم السماء واوريون وكل 10
زينة السماء لا تعطي ضوءها ويظلم الشمس عند طلوعها * والقمر لا يعطي ضوءه *

* الاصحاح السابع *

* وآمر بالشر على المسكونة كلها والمنافقين 11
خطاياهم * وأبيد عظمة الأثمة * وأذل المتعظمين * ويكون الذين استبقوا مكرمين كثيرا 12
أكثر من الذهب المجرب * ويكون الانسان أكرم كثيرا أكثر من الحجر الذي
من الهند * لأن السماء تتزعزع * والأرض تتزلزل من أساساتها * من سخط غضب رب 13
الجيوش * في اليوم الذي يأتي فيه غضبه * ويصير الباقون مثل ظبي هارب * وكمثل 14
خروف ضال * وليس يكون من يجمع * حتى يعود انسان الى شعبه * وانسان الى بلدته
يطلب * لأن من يدرك يغلب * والذين هم يجمعون يسقطون بالسيف * ويقتلون اولادهم 15 16
أمامهم * وينهبون بيوتهم * ويأخذون نساءهم * هوذا أنهض عليكم الماديين الذين لا 17
يفكرون في الفضة * وليس لهم حاجة بالذهب * يكسرون سهام الشبان * ولا يرحمون 18
أولادكم * ولا تشفق عيونهم على بنيك * وتصير بابل التي دعيت مسرة من ملك 19
الكلدانيين * كما قلب الله سدوم وعامورا * ولا تسكن الى الأبد * ولا يدخلون اليها 20
الى أجيال كثيرة * ولا تعبر بها الاعراب * ولا تستريح فيها الرعاة * ويستريحون فيها 21
الوحوش * وتمتلي بيوتها من الصدى * وتستريح هناك بنات آوى * وترقص هناك
الجان * وتسكن هناك الغيلان وتفرخ القنافذ في بيوتهم * هذا يأتي سريعا ولم 22
يبطي *

8 *Turbabuntur fines, & occupabunt eos dolores ut mulierem parturientem : collident ſeſe alter cum altero, obſtupeſcent, & fient vultus eorum ſicut flammæ.* 9 *Nam ecce dies Domini venturus eſt, nec ulla erit ei medela, cum ira & furore ; ad evertendum univerſum terrarum orbem, & peccatores ab eo perdendum.* 10 *Nam cœli ſydera, orion, totuſque cœli ornatus non reddent lumen ſuum, ſol in ipſo ſuo exortu obſcurabitur, & luna nequaquam præbebit lucem ſuam.*

Textus ſeptimus.

11 *Malum demum præcipiam contra univerſum orbem terrarum, & contra impios ſua ipſorum flagitia : faſtum iniquorum perdam, & deprimam ſuperbos :* 12 *Et erunt qui reſidui manſerint, admodum pretioſi, multò magis quàm aurum probatum : & erit homo pretioſior multò quàm lapillus qui ex India aſportatur.* 13 *Cœlum enim concutietur, & terra contremiſcet à fundamentis ſuis propter indignationem iræ Domini exercituum in die quo ventum eſt ira ejus.* 14 *Fientque reſidui tanquam cervus fugiens, & tanquam agnus errans quem nemo colligit ; adeoque redibit quiſque ad gentem ſuam, & quilibet patriam ſuam repetet.* 15 *Nam quicunque deprehenſus fuerit, ſuperabitur ; et qui congregati fuerint, gladio cadent.* 16 *Filios eorum interficient in præſentia ipſorum, domos eorum diripient, et fœminas eorum abducent.* 17 *Ecce concitabo adverſum vos Medos qui nec de argento cogitant, nec auro indigent.* 18 *Hi ſagittas juvenum frangent, non miſerebuntur filiorum veſtrorum, nec parcent oculi eorũ natis tuis.* 19 *Denique Babel quæ inclyta vocatur à rege Chaldæorum, fiet ſicut Sodoma et Gomorra, quas Deus ſubvertit :* 20 *Non habitabitur in ſeculum uſque, nec ingredientur eam ad generationes multas : non tranſibunt per eam Arabes, neque requieſcent in ea paſtores :* 21 *Imò requieſcent in ea beſtiæ, et implebuntur domus ejus ululis : requieſcent ibi canes ſylveſtres, et ſaltabunt ibi dæmones :* 22 *Morabuntur illic hyenæ, et fœtus ſuos gignent hiſtrices in domibus eorum. Hoc cito veniet, nec tardabit.*

ישעיה : יד

CAP. XIV. יד

, Iſrael in adhuc eliget & ,Jahacob Dominus miſerebitur Nam
1 כִּי יְרַחֵם יְהוָה אֶת־יַעֲקֹב וּבָחַר עוֹד בְּיִשְׂרָאֵל
peregrinus ſe copulabit & : ſuam humum ſuper eos requieſcere faciet &
וְהִנִּיחָם עַל־אַדְמָתָם וְנִלְוָה הַגֵּר
,populi eos tollent Et .Jahacob domo ſuper adhærebunt & ,eis ſuper
2 עֲלֵיהֶם וְנִסְפְּחוּ עַל־בֵּית יַעֲקֹב : וּלְקָחוּם עַמִּים
ſuper ,Iſrael domus eos hæreditabunt & ,ſuum locum ad eos adducent &
וֶהֱבִיאוּם אֶל־מְקוֹמָם וְהִתְנַחֲלוּם בֵּית־יִשְׂרָאֵל עַל
ducentes captivos erunt & : ancillas in & ,ſervos in ,Domini humo
אַדְמַת יְהוָה לַעֲבָדִים וְלִשְׁפָחוֹת וְהָיוּ שֹׁבִים
requiem dare die in erit Et .ſuos exactores in dominabuntur &,eos captivantes
לְשֹׁבֵיהֶם וְרָדוּ בְּנֹגְשֵׂיהֶם : 3 וְהָיָה בְּיוֹם הָנִיחַ
,dura ſervitute à & ,tuo tremore à & ,tuo labore à tibi Dominum
יְהוָה לְךָ מֵעָצְבְּךָ וּמִרָגְזֶךָ וּמִן־הָעֲבֹדָה הַקָּשָׁה
,Babel regem contra iſtam parabolam levabis Et .te in fuit ſervitum qua
אֲשֶׁר עֻבַּד־בָּךְ : 4 וְנָשָׂאתָ הַמָּשָׁל הַזֶּה עַל־מֶלֶךְ בָּבֶל
Contrivit ? aurea penſio deſiit ,exactor ceſſavit Quomodo : dices &
וְאָמָרְתָּ אֵיךְ שָׁבַת נֹגֵשׂ שָׁבְתָה מַדְהֵבָה : 5 שָׁבַר
populos Percutiente .dominantium virgam ,impiorum baculum Dominus
יְהוָה מַטֵּה רְשָׁעִים שֵׁבֶט מֹשְׁלִים : 6 מַכֶּה עַמִּים
,gentibus furore in dominantem ,declinatione ſine percuſſione ,fervida ira in
בְּעֶבְרָה מַכַּת בִּלְתִּי סָרָה רֹדֶה בָאַף גּוֹיִם
, terra omnis requievit ,Quievit .prohibuit non paſſum perſecutionem
מֻרְדָּף בְּלִי חָשָׂךְ : 7 נָחָה שָׁקְטָה כָּל־הָאָרֶץ
;Lebanon cedri ,te de ſunt lætatæ abietes Etiam .præconium jubilaverunt
פָּצְחוּ רִנָּה : 8 גַּם־בְּרוֹשִׁים שָׂמְחוּ לְךָ אַרְזֵי לְבָנוֹן
deorſum Infernus .nos ſuper ſuccidens aſcendit non jacuiſti tunc ex
מֵאָז שָׁכַבְתָּ לֹא־יַעֲלֶה הַכֹּרֵת עָלֵינוּ : 9 שְׁאוֹל מִתַּחַת
,manes tibi ſuſcitavit ,tui adventus occurſum in ,te propter contremuit
רָגְזָה לְךָ לִקְרַאת בּוֹאֶךָ עוֹרֵר לְךָ רְפָאִים
.gentium reges omnes ſuis ſoliis de fecit ſurgere : terræ hircos omnes
כָּל־עַתּוּדֵי אָרֶץ הֵקִים מִכִּסְאוֹתָם כֹּל מַלְכֵי גוֹיִם :
es infirmatus tu Etiam : te ad dicent & ,reſponſa dabunt iſti Omnes
10 כֻּלָּם יַעֲנוּ וְיֹאמְרוּ אֵלֶיךָ גַּם־אַתָּה חֻלֵּיתָ
,tua ſuperbia infernum ad eſt Depreſſa .es aſſimilatus nobis ,nos ſicut
כָמוֹנוּ אֵלֵינוּ נִמְשָׁלְתָּ : 11 הוּרַד שְׁאוֹל גְּאוֹנֶךָ
te operientes & ,vermis ſternetur te ſubter : tuorum nablorum ſtrepitus
הֶמְיַת נְבָלֶיךָ תַּחְתֶּיךָ יֻצַּע רִמָּה וּמְכַסֶּיךָ
es reſectus ? auroræ fili Lucifer cœlo de cecidiſti Quomodo .vermis
תּוֹלֵעָה : 12 אֵיךְ נָפַלְתָּ מִשָּׁמַיִם הֵילֵל בֶּן־שָׁחַר נִגְדַּעְתָּ
Cœlum :tuo corde in dixiſti tu Et .gentes ſuper debilitans terram ad
לָאָרֶץ חוֹלֵשׁ עַל־גּוֹיִם : 13 וְאַתָּה אָמַרְתָּ בִלְבָבְךָ הַשָּׁמַיִם
monte in ſedebo & :meũ ſolium exaltabo Dei ſtellas ſupra ,aſcendam
אֶעֱלֶה מִמַּעַל לְכוֹכְבֵי־אֵל אָרִים כִּסְאִי וְאֵשֵׁב בְּהַר־
ero ſimilis ,nubis excelſa ſuper Aſcendam .Aquilonis lateribus in conventus
מוֹעֵד בְּיַרְכְּתֵי צָפוֹן : 14 אֶעֱלֶה עַל־בָּמֳתֵי עָב אֶדַּמֶּה
.ciſternæ latera ad ,deprimeris infernum ad Veruntamen .Altiſſimo
לְעֶלְיוֹן : 15 אַךְ אֶל־שְׁאוֹל תּוּרָד אֶל־יַרְכְּתֵי־בוֹר :
tremefaciens vir hic Num : perpendent te ad :proſpicient te ad ,te Videntes
16 רֹאֶיךָ אֵלֶיךָ יַשְׁגִּיחוּ אֵלֶיךָ יִתְבּוֹנָנוּ הֲזֶה הָאִישׁ מַרְגִּיז
ejus urbes & ,deſertum ſicut orbem Poſuit ? regna commovens , terram
הָאָרֶץ מַרְעִישׁ מַמְלָכוֹת : 17 שָׂם תֵּבֵל כַּמִּדְבָּר וְעָרָיו
,gentium reges Omnes .carcerem aperuit non ejus vinctis ,deſtruxit
הָרָס אֲסִירָיו לֹא־פָתַח בָּיְתָה : 18 כָּל־מַלְכֵי גוֹיִם
.ſua domo in vir ,gloria in jacuerunt ,ipſi univerſi
כֻּלָּם שָׁכְבוּ בְכָבוֹד אִישׁ בְּבֵיתוֹ :

Verſio VULG. LAT.

Miſerebitur enim Dominꝰ Ja-
cob, & eliget adhuc de Iſrael,
& requieſcere eos faciet ſup
humũ ſuã: adjungetur advena
ad eos, & adhærebit domui
2 Jacob. Et tenebunt eos popu-
li, & adducent eos in locum
ſuũ: & poſſidebit eos domus
Iſrael ſup terrã Dñi in ſervos
& ancillas: & erunt capientes
eos qui ſe ceperant, & ſubjici-
3 ent exactores ſuos. Et erit in
die illa: cùm requiem dede-
rit tibi Deus à labore tuo, & à
concuſſione tua, & à ſervitute
4 dura, quâ antè ſerviſti: Sumes
parabolã iſtã contra regẽ Ba-
bylonis, & dices; Quomodò
ceſſavit exactor, quievit tribu-
5 tum? Contrivit Dñs baculũ
impiorũ, virgã dominantium,
6 Cædentem populos in indi-
gnatione, plagâ inſanabili, ſub-
jicientẽ in furore gentes, per-
7 ſequentem crudeliter. Con-
quievit & ſiluit omnis terra,
8 gaviſa eſt & exultavit: Abi-
etes quoq; lætatæ ſunt ſup te,
& cedri Libani: ex quo dor-
mîſti, non aſcendet qui ſucci-
9 dat nos. Infernus ſubtèr con-
turbatꝰ eſt in occurſũ adventꝰ
tui, ſuſcitavit tibi gigantes.
Omnes principes terræ ſur-
rexerunt de ſoliis ſuis, omnes
10 principes nationũ. Univerſi
reſpondebunt, & dicent tibi;
Et tu vulneratꝰ es ſicut & nos,
11 noſtrî ſimilis effectꝰ es. Detra-
cta eſt ad inferos ſuperbia tua,
concidit cadaver tuũ: ſubter
te ſternetur tinea, & operi-
12 mentũ tuũ erunt vermes. Quo-
modò cecidiſti de cœlo, Luci-
fer, qui manè oriebaris? cor-
ruiſti in terrã, qui vulnerabas
13 gentes? Qui dicebas in corde
tuo; In cœlũ conſcendã, ſup
aſtra Dei exaltabo ſoliũ meũ,
ſedebo in monte teſtamenti, in
14 lateribꝰ Aquilonis. Aſcendam
ſup altitudinẽ nubiũ, ſimilis
15 ero Altiſſimo. Veruntamen ad
infernũ detrahêris in profun-
16 dum laci. Qui te viderint, ad
te inclinabuntur, téque proſpi-
cient: Numquid iſte eſt vir,
qui conturbavit terrã, qui con-
17 cuſſit regna, Qui poſuit orbẽ
deſertũ, & urbes ejꝰ deſtruxit,
vinctis ejꝰ non aperuit carce-
18 rem? Omnes reges gentium
univerſi dormierunt in gloria,
vir in domo ſua.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ϗ ἐλεήσει κύριος τὸν Ἰακὼβ, ϗ ἐκλέξεται ἔτι
τὸν Ἰσραὴλ, ϗ ἀναπαύσονται ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν,
ϗ ὁ γειώρας προστεθήσεται πρὸς αὐτοὺς, ϗ
2 προστεθήσεται (α) πρὸς τὸν οἶκον Ἰακὼβ, Καὶ
λήψονται αὐτοὺς ἔθνη, ϗ εἰσάξουσιν εἰς τὸν τό-
πον αὐτῶν, ϗ κατακληρονομήσουσι, ϗ πλη-
θυνθήσονται ἐπὶ τῆς (β) γῆς εἰς δούλους καὶ
δούλας· ϗ ἔσονται αἰχμάλωτοι οἱ αἰχμαλω-
τεύσαντες αὐτοὺς, ϗ κυριευθήσονται οἱ κυρι-
3 εύσαντες αὐτῶν. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐ-
κείνῃ, ἀναπαύσει σε (γ) κύριος ἀπὸ τῆς ὀ-
δύνης ϗ τοῦ θυμοῦ σου, (δ) τῆς δουλείας σου
4 τῆς σκληρᾶς, ἧς ἐδούλευσας αὐτοῖς. Καὶ λή-
ψῃ τὸν θρῆνον τοῦτον ἐπὶ τὸν βασιλέα Βαβυ-
λῶνος, (ε) Πῶς ἀναπέπαυται ὁ ἀπαιτῶν, ϗ
5 ἀναπέπαυται ὁ ἐπισπουδαστής; Συνέτριψε
(ζ) κύριος τὸν ζυγὸν τῶν ἁμαρτωλῶν, τὸν
6 ζυγὸν τῶν ἀρχόντων. Πατάξας ἔθνος θυ-
μῷ, πληγῇ ἀνιάτῳ, παίων ἔθνος πληγὴν
7 θυμοῦ, ἣ οὐκ ἐφείσατο, Ἀνεπαύσατο πεποι-
8 θώς. πᾶσα ἡ γῆ βοᾷ μετ' εὐφροσύνης, Καὶ
τὰ ξύλα τοῦ Λιβάνου (˜) εὐφράνθησαν ἐπὶ σοὶ,
ϗ ἡ κέδρος τοῦ Λιβάνου ἀφ' οὗ σὺ κεκοίμησαι,
9 οὐκ ἀνέβη ὁ κόπτων ἡμᾶς. Ὁ ᾅδης κάτωθεν
ἐπικράνθη συναντήσας σοι· συνηγέρθη-
σάν σοι πάντες οἱ γίγαντες οἱ ἄρξαντες τῆς
γῆς, οἱ ἐγείραντες ἐκ τῶν θρόνων αὐτῶν
10 πάντας βασιλεῖς ἐθνῶν. Πάντες ἀποκρι-
θήσονται, ϗ ἐροῦσί σοι, Καὶ σὺ ἑάλως, ὥσ-
11 περ ϗ ἡμεῖς· ἐν ἡμῖν δὲ κατελογίσθης. Κατ-
έβη (η) εἰς ᾅδου ἡ δόξα σου, ἡ πολλή εὐφρο-
σύνη σου· ὑποκάτω σου στρώσουσι σῆψιν, ϗ
12 τὸ κατακάλυμμά σου σκώληξ. Πῶς ἐξέ-
πεσεν ἐκ τοῦ οὐρανοῦ ὁ Ἑωσφόρος ὁ πρωῒ ἀ-
νατέλλων; συνετρίβη εἰς τὴν γῆν ὁ ἀπο-
13 στέλλων πρὸς πάντα τὰ ἔθνη. Σὺ δὲ εἶπας ἐν
τῇ διανοίᾳ σου, Εἰς τὸν οὐρανὸν ἀναβήσο-
μαι, ἐπάνω τῶν (θ) ἀστέρων τοῦ οὐρανοῦ θήσω
τὸν θρόνον μου, καθιῶ ἐν ὄρει ὑψηλῷ, ἐπὶ τὰ
14 ὄρη τὰ ὑψηλὰ τὰ πρὸς Βορρᾶν. Ἀναβήσο-
μαι ἐπάνω τῶν (ι) νεφῶν, ἔσομαι ὅμοιος
15 τῷ ὑψίστῳ. Νῦν δὲ (κ) εἰς ᾅδου καταβήσῃ,
16 ϗ εἰς τὰ θεμέλια τῆς γῆς. Οἱ ἰδόντες σε (λ)
θαυμάσονται ἐπὶ σοὶ, ϗ ἐροῦσιν, Οὗτος ὁ
ἄνθρωπος ὁ παροξύνων τὴν γῆν, (μ) ὁ σεί-
17 ων βασιλεῖς, Ὁ θεὶς τὴν οἰκουμένην ὅλην (·)
ἔρημον, ϗ τὰς πόλεις αὐτοῦ καθεῖλε, τοὺς ἐν
18 ἐπαγωγῇ οὐκ ἔλυσε. Πάντες οἱ βασιλεῖς
τῶν ἐθνῶν ἐκοιμήθησαν ἐν τιμῇ, (ν) ἄνθρω-
πος ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ.

Et miſerebitur Dominus
& eliget adhuc Iſrael: &
quieſcent ſuper terram ſuam
(b) advena apponetur ad eos
apponetur ad domum
Et aſſument eos gentes, &
ducent in locum eorum, &
ſidebunt, & multiplicabun
per terram in ſervos, &
& erunt captivi, qui
vant eos, & ſubjicien
nationi, qui dominati fuerant
Et erit in die illa requie
faciet Dominus à dolore, e
rore tuo, à ſervitute tua
quam ſerviviſti iis. E ſume
mentationem hanc ſuper
Babylonis; Quomodo
exactor, & ceſſavit
Contrivit Dominus jugum
orum, jugum principum:
cutiens gentem furore, plaga
ſanabili, percutiens gentem
gâ furoris, quæ non peperc
Requievit confidenter omnis
ra, clamat cum lætitia:
gna Libani lætata ſunt ſuper
& cedrus Libani, ex quo dor
miviſti, non aſcendit qui
nos. Infernus ſubter
tus eſt occurrens tibi:
xerunt tibi omnes (c) gigan
qui principabantur terræ, qui
citabant de ſoliis eorum omnes
ges gentium. Omnes reſpon
bunt, & dicent tibi; Et
ptus es, ſicut & nos: & in no
reputatus es: Deſcendit ad in
fernum gloria tua, multa
tua: ſubter te ſternent
nem: & (d) operculum
vermis. Quomodò cecid
cœli Lucifer, qui manè
tur? Contritus eſt ad terram
qui mittebat ad omnes gentes
Tu autem dixeras in mente
In cœlum aſcendam, ſuper
ra cœli ponam thronum
ſedebo in monte excelſo
montes excelſos, qui ad Aquilo
nem: Aſcendam ſuper
ero ſimilis Altiſſimo. Nunc au
in infernum deſcendes, &
damenta terræ. Qui
mirabuntur ſuper te, &
Iſte homo, qui irritabat
qui concutiebat reges; Qui
nebat orbem totum deſert
civitates ejus deſtruxit,
in (e) obductione erant, no
vit. Omnes reges gentium
mierunt in honore, homo in
ſua.

MS. A. (α) ἐπὶ τὸν οἶκον (β) γῆς τοῦ θεοῦ εἰς (γ) ὁ θεὸς ἐκ τῆς ὀδύ-
νης (δ) ϗ τῆς δουλείας τῆς σκληρᾶς, (ε) ϗ ἐρεῖς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ,
(ζ) ὁ θεὸς (˜) ηὐφράνθησαν (η) δὲ εἰς (θ) ἄστρων (ι) νεφελῶν
(λ) θαυμάσουσιν (μ) σείων (·) ἔρημον, τοὺς ἐν (ν) ἕκαστος ἐν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

יד

1 ארי ירחם יי על דבית יעקב ויתרעי עוד בישראל וישרינון על ארעהון ויתוספון גיורין
2 עליהון ויסתמכון על בית יעקב : וידברנון עממין ויובלונון לארעהון ויחסנונון בית
ישראל על ארע שכנתא דיי לעבדין ולאמהן ויהון שבין לשוביהון ויפלחון
3 במשעבדיהון : ויהי ביומא דיניח יי לך מצערך וממרותך ומן פולחנא קשיא
4 דאתפלח בך : ותטול מתלא הדין על מלכא דבבל ותימר איכדין בטילת מרות
5 משעבדנא סף תקוף חיבא : תבר יי תקוף רשיעין שולטן חיבין : 6 דהוה מחי
7 עממין בתקוף מחא די לא פסיק מפלח בתקוף עממין מפלח ולא מנע : נחת שרוכת
8 כל ארעא יבעו תושבחא : אף שלטונין חדיאו עלך עתירי נכסיא אמרין מעדן דשכבתא
9 לא סליק מחבלא עלנא : שאול מלרע זעת לך לקדמות מיתך אעירת לך גברין כל
10 עתירי נכסיא אקימו מכורסותהון כל מלכי עממיא : כולהון יתיבון ויימרון לך אף
11 את מרעתא כותנא לנא דמיתא : אתחת לשאול יקרך אתרגושת תושבחת זמרך
12 תחותך ישוון רמה ועיל מנך ריחשא : איכדין אתרכנתא מן רומא דהויתא זיותן בגו
בני אנשא ככוכב נוגהא בין כוכביא אתרטשתא לארעא דהויתא קטול בעממיא :
13 ואת אמרת בלבך לרומא אסק עיל מן עמיה דאלהא אשוי כורסי מלכותי ואתב
14 בטור זמן בסיפי צפונא : אסק עלוי כל עמא אהי עלאי מכולהון : 15 ברם
16 לשאול תתחת לסיפי גוב בית אבדנא : חזך עלך ידוקון בך יסתכלון ויימרון
17 הדין גברא אזיע ארעא אצדי מלכותא : שוי תבל כמדברא וקרוהי פגר לאסירוהי
18 לא פתח תרעא : כל מלכי עממיא כולהון שכבין ביקר גבר בבית עלמיה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XIV.

MIſerebitur enim Dñs domus Jacob, & eliget adhuc Iſraelem, &
bitare faciet eos ſuper terram ſuam; & adjicientur advenæ ad eos,
adhærebunt domui Jacob. Et tollent eos populi, & adducent eos
ram ſuam: & poſſidebit eos domꝰ Iſrael ſuper terram majeſtatis Do
in ſervos & ancillas; & erunt captivantes eos qui captivaverant eos, &
vient eis illi qui ſubjecerant eos. Et erit in die qua requieſcere
Dñs te à tribulatione tua, & à ſubjectione tua, & à ſervitute dura quæ
ſerviviſti. Et tolles parabolam iſtam ſuper regem Babylonis, &
Quomodo ceſſavit ſubjectio ſubjiciens nos! defecit fortitudo
Contrivit Dñs fortitudinem impiorum, dominiũ peccatorum. Qui
ebat populos in furore, percuſſione ſine ceſſatione, ſervire faciens
populos ſervitute ſine ceſſatione. Conquievit, pacata eſt omnis terra
exultaverunt in cantico. Dominatores quoque lætati ſunt ſuper te,
tes in ſubſtantiis dicebant: A tempore quo dormiviſti, non
diſperdens ſuper nos. Infernus ſubter te commotus eſt in occurſum
ventus tui, ſuſcitavit tibi gigantes. Omnes divites in ſubſtantiis
runt de ſoliis ſuis omnes reges populorũ. Omnes illi reſpondebunt &
cent tibi: Tu quoque infirmatus es ſicut & nos; aſſimilatus es nobis.
tracta eſt in infernum gloria tua; ſtrepitus laudis muſicæ tuæ:
ſternent vermes, & ſuper te tinea. Quomodo cecidiſti de excelſo,
ſplendidus inter filios hominum, ſicut ſtella lucens inter ſtellas?
ctus es in terram qui occidebas populos. Tu autem dixiſti in corde
excelſum aſcendam, ſuper populũ Dei ponam thronum regni mei,
debo in monte fœderis in finibus Aquilonis. Aſcendam ſuper omnem
pulum: ero excelſior omnibꝰ. Veruntamen ad infernum detraheris
extremitatem laci domꝰ perditionis. Qui te viderint, ſuper te
plabuntur, te proſpicient, & dicent: Nunquid iſte eſt vir qui commovebat
terrã, in ſolitudinẽ redigens regna? Poſuit orbẽ ſicut deſertũ, &
ejus deſtruxit: vinctis ejus non aperuit januam. Omnes reges
rum univerſi dormierunt in gloria, unuſquiſque in domo

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܕ * ܡܛܠ ܕܡܪܚܡ ܡܪܝܐ ܥܠ ܝܥܩܘܒ . ܘܬܘܒ ܢܬܪܥܐ 1
ܠܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܫܒܘܩ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܗܘܢ. ܘܢܬܢܩܦܘܢ. ܥܡܗܘܢ ܬܘܬܒܐ . ܘܢܬܚܒܪܘܢ
ܥܠ ܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ. * ܘܢܕܒܪܘܢ ܐܢܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܢܝܬܘܢ ܐܢܘܢ ܠܐܬܪܗܘܢ. ܘܢܐܪܬܘܢ ܐܢܘܢ 2
ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܥܠ ܐܪܥܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܥܒܕܐ ܘܠܐܡܗܬܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܫܒܝܢ ܠܫܒܝܗܘܢ.
ܘܢܫܬܠܛܘܢ ܥܠ ܡܫܥܒܕܢܝܗܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܕܢܢܝܚ ܡܪܝܐ. ܠܟ ܡܢ ܥܡܠܟ ܘܡܢ 3
ܪܘܓܙܟ: ܘܡܢ ܫܥܒܘܕܐ ܩܫܝܐ ܕܐܫܬܥܒܕܬ. * ܘܬܫܩܘܠ ܡܬܠܐ ܗܢܐ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ 4.
ܘܬܐܡܪ. ܐܝܟܢܐ ܒܛܠ ܫܠܝܛܐ. ܘܒܛܠ ܡܫܥܒܕܢܐ. * ܬܒܪ ܡܪܝܐ ܫܒܛܐ ܕܪܫܝܥܐ 5
ܘܫܒܛܐ ܕܫܠܝܛܐ: * ܕܡܚܐ ܗܘܐ ܠܥܡܡܐ ܒܚܡܬܐ. ܡܚܘܬܐ ܕܠܐ ܫܠܝܐ. ܘܪܕܐ ܗܘܐ ܒܪܘܓܙܐ 6
ܥܡܡܐ. ܘܪܕܦ ܠܗܘܢ. ܕܠܐ ܚܘܣܢ. * ܐܬܬܢܝܚܬ ܘܫܠܝܬ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܙܡܪܬ ܒܬܫܒܘܚܬܐ. 7.
* ܐܦ ܒܪܘܬܐ ܘܐܪܙܐ ܕܠܒܢܢ. ܚܕܝܘ ܒܟ. ܡܢ ܐܡܬܝ ܕܫܟܒܬ . ܠܐ ܣܠܩ ܕܢܩܛܘܥ ܠܢ. 8.
* ܫܝܘܠ ܡܢ ܠܬܚܬ. ܐܬܬܙܝܥܬ ܠܡܥܠܟ ܠܘܩܒܠܟ. ܐܥܝܪܬ ܠܟ ܓܢܒܪܐ. ܘܟܠܗܘܢ 9
ܫܠܝܛܢܐ ܕܐܪܥܐ ܕܐܩܝܡܬ ܡܢ ܟܘܪܣܘܬܗܘܢ. * ܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܥܡܡܐ ܢܥܢܘܢ ܘܢܐܡܪܘܢ 10
ܠܟ. ܐܦ ܐܢܬ ܐܬܡܚܝܬ ܐܝܟ ܕܚܢܢ. ܘܥܡܢ ܐܫܬܠܡܬ. * ܘܢܚܬ ܫܘܒܗܪܟ ܠܫܝܘܠ. ܘܡܝܬ 11
ܩܝܬܪܟ. ܬܚܬܝܟ ܢܬܡܟܟ ܪܩܒܐ. ܘܬܠܥܐ ܢܟܣܝܟ. * ܐܝܟܢܐ ܢܦܠܬ ܡܢ ܫܡܝܐ. 12.
ܐܝܠܠ ܒܨܦܪܐ. ܢܦܠܬ ܥܠ ܐܪܥܐ ܡܨܥܪܢܐ ܕܥܡܡܐ. * ܐܢܬ ܐܡܪܬ ܒܠܒܟ. ܠܫܡܝܐ ܐܣܩ 13.
ܘܠܥܠ ܡܢ ܟܘܟܒܘܗܝ ܕܐܠܗܐ ܐܪܝܡ ܟܘܪܣܝ. ܘܐܬܒ ܒܛܘܪܐ ܪܡܐ ܕܒܣܘܦܝ ܓܪܒܝܐ. 14
* ܘܐܣܩ ܥܠ ܪܘܡܐ ܕܥܢܢܐ. ܘܐܬܕܡܐ ܠܡܪܝܡܐ. * ܒܪܡ ܠܫܝܘܠ ܬܚܘܬ. ܘܠܫܘܦܠܗ 15
ܕܓܘܒܐ. * ܟܠ ܚܙܝܟ. ܢܚܘܪܘܢ ܒܟ. ܘܒܟ ܢܣܬܟܠܘܢ. ܘܢܐܡܪܘܢ. ܗܢܘ ܓܒܪܐ 16
ܕܡܙܝܥ ܗܘܐ ܐܪܥܐ. ܘܡܪܓܙ ܡܠܟܘܬܐ. * ܘܥܒܕ ܬܐܒܝܠ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ. ܘܩܘܪܝܐ ܗܦܟ 17.
ܘܐܣܝܪܘܗܝ. ܠܐ ܫܪܐ. * ܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܥܡܡܐ. ܫܟܒܘ ܒܐܝܩܪܐ ܐܢܫ ܒܒܝܬܗ. 18

CAP. XIV.

Miserebitur enim Dominus Jacobi, & ite- 1
rum placabitur Israeli, & relinquet eos in
terra ipsorum. Rursus consociabuntur adver-
sùs eos advenæ, & aggregabuntur contra fa-
miliam Jacobi; Abducent eos gentes, & de- 2
portabunt in terram suam. At possidebunt
eos Israelitæ in terra Domini in servos & an-
cillas, in captivitatem adigent eos qui se ca-
ptivos ducebant, & dominabuntur in eos qui
se servitute premebant. Et fiet eâ die quâ re- 3
quiem dederit tibi Dominus à mœrore & in-
dignatione tuâ, & à dura servitute quâ fueris
oppressus; Ut assumas parabolam hanc de re- 4
ge Babelis, ac dicas; Quomodo cessavit præ-
fectus, cessavit & *operis* exactor? Fregit Do- 5
minus baculum impii & baculum præfecti,
Qui populos obstinatè cædebat immoderatis 6
verberibus, gentes iracundè castigabat, & si-
ne clementia persequebatur? Quievit ac silu- 7
it tota terra, & exultat cum cantico. Quin 8
etiam abietes & cedri Libani de te lætantur
dicentes, Ab eo tempore quo occubuisti, ne-
mo ascendit ad nos cædendum. Infernus de- 9
orsum commotus est causâ introitûs tui, ex-
citavit contra te gigantes omnesque terræ
principes quos propriis soliis depulisti.
Omnes reges populorum respondebunt di- 10
centque tibi, Etiam tu infirmatus es sicut nos,
& nobiscum traditus? Fastus tuus decidit in 11
infernum, & mortua est lyra tua? subter te
sternitur caries, & operit te vermis?
Quomodo de cœlo decidisti? (ejula in ma- 12
tutino) in terram ruisti dehonestans popu-
los? Tu tecum ipse dicebas, Ascendam in cœ- 13
lum, super stellas Dei exaltabo solium meum,
& sedebo in monte sublimi qui *situs* est in
imis partib⁹ Aquilonis. Super celsissimas nu- 14
bes ascendam, & similis ero Altissimo. Verùm 15
in infernum rues, & in profundum foveæ.
Omnes te videntes prospectabunt te, teque 16
contemplantes dicent, Hiccine est vir ille qui
terram exagitavit, regna conturbavit? Vasta- 17
vit orbem terrarum in modum solitudinis,
civitates destruxit, vinctos suos nequaquam
solvit? Omnes populorum reges occubue- 18
runt cum honore, quisque domi suæ;

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * الفصل الرابع عشر * ويرحم الرب يعقوب * ويختار ايضا اسرايل * ويسكنون
2 في ارضهم * والغريب يعود اليهم * ويعود الي بيت يعقوب * وتاخذهم الامم وتدخلهم الي
موضعهم * ويرثون ويكثرون في ارض الههم ويصيرون لهم عبيدا واماء * ويصير الذين سبوهم
3 مسبيين * ويسودون الذين سادوا عليهم * ويكون في ذلك اليوم الذي يريحك الله فيه من
4 وجعك وغضبك وعبوديتك الصعبة التي تعبدت لهم بها * وتاخذون هذا النوح على ملك
5 بابل * وتقول في ذلك اليوم كيف بطل المسلط وكيف بطل الحريص * الله كسر نير
6 الخطاة ونير الروساء * وضرب الامم ضربة بغضبه الذي لا شفاء له * وضرب الامم ضربة
7 8 غضب * ولم يشفق * واستراح المتوكل عليه * كل الارض تصرخ بسرور * وشجر لبنان
فرحت بك * وارز لبنان قالت * منذ الوقت الذي فيه انت اضطجعت لم يصعد من
9 يقطعنا * الجحيم من اسفل تمرمر حين استقبلك * وقامت معك جميع الجبابرة الذين سادوا
10 على الارض * القايمون عن كراسيهم * جميع ملوك الامم * وجميعهم يجاوبون ويقولون لك * وانت
11 ضعفت مثلنا * وحسبت فينا * ونزل الي الجحيم مجدك الكبير وسرورك * يفرشون تحتك
12 السوس * وغطاوك دود * كيف سقط من السماء كوكب الصبح المشرق بالغداة انكسر على
13 الارض المرسل الي كل الامم * وانت قلت في قلبك * اصعد الي السماء * وفوق كواكب
14 السماء اضع كرسي * اجلس في جبل عال على الجبال العالية التي نحو الجربياء * واصعد
15 فوق السحاب * واكون شبيها بالعلي * والان انحدرت الي الجحيم والي اساسات الارض
16 * الذين ينظرونك يتعجبون منك * ويقولون هذا الانسان الذي اخذ كل الارض * وزلزل
17 18 الملوك * وجعل المسكونة كلها خرابا * وهدم المدن * ولم يحل الذين في الاسر * جميع ملوك
الارض رقدوا بكرامة * وكل واحد من الناس في بيته

CAP. XIV.

*Deinde miserebitur Dominus Jaco- 1
bo, & eliget adhuc Israelem, & re-
quiescent in terra sua, & advena conver-
tetur ad eos, & revertetur ad domum
Jacobi: Accipient eos populi, & intro- 2
ducent eos in locum eorum, & hæredes
erunt atque multiplicabuntur in terra
Dei sui, fientque eis servi & ancillæ:
qui captivos abduxerant eos, fient ca-
ptivi, & dominabuntur in eos qui sibi
dominabantur. Et erit eo die quo re- 3
creabit te Deus dolore, & indignatione,
& durâ tuâ servitute quâ servieris eis;
ut assumatis cantionem hanc lugubrem 4
de rege Babelis, & dicas eo die; Quomo-
do cessavit præfectus, & quomodo cessa-
vit solers? Deus fregit jugum pecca- 5
torum, & jugum principum: percussitque
in ira sua gentes plagâ cui nullum est
medicamen: Et percussit populos plagâ 6
furoris, nec pepercit. Et quievit is qui 7
fisus erat ipso: tota terra clamat cum
jubilo: Arbores Libani lætantur de te, 8
& cedri Libani dicunt; A quo tempore
jacuisti, nemo ascendit ad amputandum
nos: Infernus ab imo ægrè tulit cùm 9
obvius tibi factus est, & surrexerunt te-
cum omnes gigantes qui dominati fuerant
super terram, surgentes è soliis suis,
omnes videlicet reges populorũ: Et hi 10
omnes respondebunt & dicent tibi; Et
tu debilis factus es sicut nos, & annu-
meratus es inter nos? Et descendit in 11
infernum gloria tua magna & gaudium
tuum? Sternent sub te tineas, & operi-
mentum tuum erunt vermes. Quomodo 12
cecidit è cœlo stella matutina manè
splendescens? factus est super terram
qui missus fuerat contra universos popu-
los? Tu quidem dixeras in corde tuo, 13
Ascendam ad cœlum, & super cœli sy-
dera collocabo solium meum, sedebo
in monte sublimi, super montes excelsos
qui sunt Aquilonem versus: Nubi- 14
bus altiùs ascendam, & ero similis Al-
tissimo. Nunc autem in infernum de- 15
scendisti, & in ima terræ fundamenta.
Qui te viderint, te demirabuntur, ac 16
dicent; Hiccine vir ille est qui totum
irritavit orbem? reges tremefecit?
universam terram desolatam reddidit? 17
urbes destruxit? & eos qui in vincu-
lis erant, minimè solvit? Omnes re- 18
ges terræ cum honore jacuerunt, &
quisque in domo sua.*

ישעיה : טו

vestimen tuum ,abominabilis stirps ut tuo sepulchro de es projectus tu Et
19 וְאַתָּה הֻשְׁלַכְתָּ מִקִּבְרְךָ כְּנֵצֶר נִתְעָב לְבֻשׁ
,cisternæ lapides ad descendentium : gladio perforatorum ,occisorum
הֲרֻגִים מְטֹעֲנֵי חָרֶב יוֹרְדֵי אֶל־אַבְנֵי־בוֹר
quia : sepultura in eis cum te unies Non .conculcatum cadaver veluti
20 כְּפֶגֶר מוּבָס : לֹא־תֵחַד אִתָּם בִּקְבוּרָה כִּי־
seculum in vocabitur non : occidisti tuum populum ,corrupisti tuam terram
אַרְצְךָ שִׁחַתָּ עַמְּךָ הָרַגְתָּ לֹא־יִקָּרֵא לְעוֹלָם
:eorū patrum iniquitate in occisionem ejus filiis Præparate .pessimorum semen
21 זֶרַע מְרֵעִים : הָכִינוּ לְבָנָיו מַטְבֵּחַ בַּעֲוֺן אֲבוֹתָם
facies impleant atque ,terram accipiant hæreditate & ,consurgant ne
בַּל־יָקֻמוּ וְיָרְשׁוּ אָרֶץ וּמָלְאוּ פְנֵי־
,exercituum Dominus dicit ,eos contra consurgam Et .urbibus orbis
22 תֵבֵל עָרִים : וְקַמְתִּי עֲלֵיהֶם נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת
,nepotem & ,filium & ,consanguineum & ,nomen Babel de succidam &
וְהִכְרַתִּי לְבָבֶל שֵׁם וּשְׁאָר וְנִין וָנֶכֶד
paludes & ,ericii possessionem in eam ponam Et .Dominus dicit
23 נְאֻם־יְהוָה : וְשַׂמְתִּיהָ לְמוֹרַשׁ קִפֹּד וְאַגְמֵי־
.exercituum Dominus dicit ,delendo scopis in eam scopabo & ,aquarum
מָיִם וְטֵאטֵאתִיהָ בְּמַטְאֲטֵא הַשְׁמֵד נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת :
quod secundùm non Si : dicendo ,exercituum Dominus Juravit
24 נִשְׁבַּע יְהוָה צְבָאוֹת לֵאמֹר אִם־לֹא כַּאֲשֶׁר
frangendum Ad .stabit ipsum ,consului quod secundùm & ,fuit sic ;cogitavi
25 דִּמִּיתִי כֵּן הָיָתָה וְכַאֲשֶׁר יָעַצְתִּי הִיא תָקוּם : לִשְׁבֹּר
recedet & : eum conculcabo meis montibus in & ,mea terra in Assur
אַשּׁוּר בְּאַרְצִי וְעַל־הָרַי אֲבוּסֶנּוּ וְסָר
.removebitur ejus humero desuper illius onus & ,ejus jugum eis desuper
מֵעֲלֵיהֶם עֻלּוֹ וְסֻבֳּלוֹ מֵעַל שִׁכְמוֹ יָסוּר :
manus hæc & : terram omnem super consultum consilium Hoc
26 זֹאת הָעֵצָה הַיְּעוּצָה עַל־כָּל־הָאָרֶץ וְזֹאת הַיָּד
,consuluit exercituum Dominus Nam .gentes omnes super extenta
27 הַנְּטוּיָה עַל־כָּל־הַגּוֹיִם : כִּי־יְהוָה צְבָאוֹת יָעָץ
? eam faciet redire quis & ,extenta ejus manus & ? irritabit quis &
וּמִי יָפֵר וְיָדוֹ הַנְּטוּיָה וּמִי יְשִׁיבֶנָּה :
Ne .hoc onus fuit ,Achaz regem mori anno In
28 29 בִּשְׁנַת־מוֹת הַמֶּלֶךְ אָחָז הָיָה הַמַּשָּׂא הַזֶּה : אַל־
nam : te percutientis virga sit confracta quòd ,tu omnis Peleseth læteris
תִּשְׂמְחִי פְלֶשֶׁת כֻּלֵּךְ כִּי נִשְׁבַּר שֵׁבֶט מַכֵּךְ כִּי־
igniens serpens ejus fructus & ,regulus egredietur serpentis radice de
מִשֹּׁרֶשׁ נָחָשׁ יֵצֵא צֶפַע וּפִרְיוֹ שָׂרָף
fiducia in mendici & ,tenuium primogeniti pascentur Et .volans
30 מְעוֹפֵף : וְרָעוּ בְּכוֹרֵי דַלִּים וְאֶבְיוֹנִים לָבֶטַח
tuas reliquias & ,tuam radicem fame in faciam interire & ,accubabunt
יִרְבָּצוּ וְהֵמַתִּי בָרָעָב שָׁרְשֵׁךְ וּשְׁאֵרִיתֵךְ
: tu omnis Peleseth liquefacta : civitas clama ,porta ,Ulula .interficiet
31 יַהֲרֹג : הֵילִילִי שַׁעַר זַעֲקִי־עִיר נָמוֹג פְּלֶשֶׁת כֻּלֵּךְ
.suis temporibus in solitarius non & ,veniens fumus Aquilone ab nam
כִּי מִצָּפוֹן עָשָׁן בָּא וְאֵין בּוֹדֵד בְּמוֹעָדָיו :
,Sijon fundavit Dominus quòd ? gentis nunciis respondebitur quid Et
32 וּמַה־יַּעֲנֶה מַלְאֲכֵי־גוֹי כִּי יְהוָה יִסַּד צִיּוֹן
.ejus populi afflicti confident ea in &
וּבָהּ יֶחֱסוּ עֲנִיֵּי עַמּוֹ :

CAP. XV. טו

quia ;succisus ,Moab Har est vastatus nocte in Quia .Moab Onus
1 מַשָּׂא מוֹאָב כִּי בְּלֵיל שֻׁדַּד עָר מוֹאָב נִדְמָה כִּי
.succisus ,Moab Chir est vastatus nocte in
בְּלֵיל שֻׁדַּד קִיר־מוֹאָב נִדְמָה :

Verſio VULG. LAT.

19 Tu autem projectus es de ſepulchro tuo, quaſi ſtirps inutilis pollut⁹, & obvolut⁹ cum his qui interfecti ſunt gladio, & deſcenderunt ad fundamenta laci, quaſi cadaver putridū. 20 Non habebis conſortium, neque cum eis in ſepultura: tu enim terrā tuā diſperdidiſti, tu populum tuū occidiſti: non vocabitur in æternum ſemen 21 peſſimorum. Præparate filios ejus occiſioni in iniquitate patrum ſuorum: non conſurgent, nec hæreditabunt terrā, neque implebunt faciem or- 22 bis civitatum. Et conſurgam ſuper eos, dicit Dominus exercituum: & perdam Babylonis nomen, & reliquias, & germen, & progeniem, dicit 23 Dominus. Et ponam eam in poſſeſſionem ericii, & in paludes aquarum, & ſcopabo eam in ſcopa terens, dicit Do- 24 minus exercituum. Juravit Dominus exercituum, dicens; Si non, ut putavi, ita erit: & 25 quomodò mente tractavi, Sic eveniet: Ut conteram Aſſyriū in terra mea, & in montibus meis conculcem eum: & auferetur ab eis jugum ejus, & onus illius ab humero eorum 26 tolletur. Hoc conſilium, quod cogitavi ſuper omnem terrā, & hæc eſt manus extenta ſu- 27 per univerſas gentes. Dominus enim exercituum decrevit: & quis poterit infirmare? & manus ejus extenta: & quis a- 28 vertet eam? In anno, quo mortuus eſt rex Achaz, factum 29 eſt onus iſtud: Ne læteris Philiſthæa omnis tu, quoniam comminuta eſt virga percuſſoris tui: de radice enim colubri egredietur regulus, & ſemen ejus abſorbens volucrem. 30 Et paſcentur primogeniti pauperum, & pauperes fiducialiter requieſcent: & interire faciam in fame radicem tuam, & reliquias tuas interficiam. 31 Ulula porta, clama civitas: proſtrata eſt Philiſthæa omnis: ab Aquilone enim fumus veniet, & non eſt qui effugiet 32 agmen ejus. Et quid respondebitur nuntiis gentis? Quia Dn̄s fundavit Sion, & in ipſo ſperabunt pauperes populi ej⁹.

CAP. XV.

1 ONus Moab. Quia nocte vaſtata eſt Ar Moab, conticuit: quia nocte vaſtatus eſt murus Moab, conticuit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

19 Σὺ δὲ ῥιφήσῃ ἐν τοῖς ὄρεσιν, ὡς νεκρὸς ἐβδελυγμένος, μετὰ πολλῶν τεθνηκότων ἐκκεκεντημένων μαχαίραις, καταβαινόντων εἰς ᾅδου. 20 Ὃν τρόπον (ξ) ἱμάτιον ἐν αἵματι πεφυρμένον οὐκ ἔσται καθαρὸν, οὕτως οὐδὲ σὺ ἔσῃ καθαρός. διότι τὴν γῆν μου ἀπώλεσας, καὶ τὸν λαόν μου ἀπέκτεινας· οὐ μὴ μείνῃς εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον, σπέρμα πονηρόν. 21 Ἑτοίμασον (ο) τὰ τέκνα σου σφαγῆναι ταῖς ἁμαρτίαις τοῦ πατρὸς (π) αὐτῶν, ἵνα μὴ ἀναστῶσι (ρ) καὶ κληρονομήσωσι τὴν γῆν, καὶ 22 ἐμπλήσωσι τὴν γῆν πολέμων. Καὶ ἐπαναστήσομαι αὐτοῖς, λέγει κύριος σαβαὼθ, καὶ ἀπολῶ αὐτῶν ὄνομα, καὶ κατάλειμμα, καὶ 23 σπέρμα· τάδε λέγει κύριος. Καὶ θήσω τὴν Βαβυλωνίαν ἔρημον, ὥστε κατοικεῖν ἐχίνους, καὶ ἔσται εἰς οὐδέν· καὶ θήσω αὐτὴν πη- 24 λοῦ (σ) βάραθρον εἰς ἀπώλειαν. Τάδε λέγει κύριος σαβαὼθ, Ὃν τρόπον εἴρηκα, 25 οὕτως ἔσται, καὶ ὃν τρόπον βεβούλευμαι, Οὕτως μενεῖ, τοῦ ἀπολέσαι τοὺς Ἀσσυρίους (τ) ἐπὶ τῆς γῆς τῆς ἐμῆς, καὶ ἐπὶ τῶν ὀρέων μου· καὶ ἔσονται εἰς καταπάτημα, καὶ ἀφαιρεθήσεται ἀπ᾽ αὐτῶν ὁ ζυγὸς αὐτῶν, καὶ τὸ κῦδος αὐτῶν ἀπὸ τῶν ὤμων ἀφαιρεθήσεται. 26 Αὕτη ἡ βουλὴ ἣν βεβούλευται κύριος ἐπὶ τὴν (υ) ὅλην οἰκουμένην, καὶ αὕτη ἡ χεὶρ ἡ ὑ- 27 ψηλὴ ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη (φ). Ἃ γὰρ ὁ θεὸς ὁ ἅγιος βεβούλευται, τίς διασκεδάσει; καὶ τὴν χεῖρα (χ) αὐτοῦ τὴν ὑψηλὴν τίς ἀπο- 28 στρέψει; Τοῦ ἔτους οὗ ἀπέθανεν (ψ) ὁ βα- 29 σιλεὺς Ἀχαζ, ἐγενήθη τὸ ῥῆμα τοῦτο. Μὴ εὐφρανθείητε (ω) οἱ ἀλλόφυλοι πάντες, συνετρίβη γὰρ ὁ ζυγὸς τοῦ παίοντος ὑμᾶς· ἐκ γὰρ σπέρματος (α) ὄφεως ἐξελεύσεται (β) ἔκγονα ἀσπίδων, καὶ τὰ ἔκγονα αὐτῶν ἐξελεύσονται ὄφεις 30 (γ) πετάμενοι. Καὶ βοσκηθήσονται πτωχοὶ δι᾽ αὐτοῦ· πτωχοὶ δὲ (δ) ἄνθρωποι ἐπ᾽ εἰρήνης ἀναπαύσονται· ἀνελεῖ δὲ (ε) ἐν λιμῷ τὸ σπέρμα σου, καὶ τὸ κατάλειμμά σου ἀνελεῖ. 31 (ζ) Ὀλολύξατε πύλαι πόλεων, κεκραγέτωσαν πόλεις τεταραγμέναι, οἱ ἀλλόφυλοι πάντες, ὅτι (η) ἀπὸ Βοῤῥᾶ καπνὸς ἔρχεται, 32 καὶ οὐκ ἔστι τοῦ εἶναι. Καὶ τί ἀποκριθήσονται βασιλεῖς ἐθνῶν; ὅτι κύριος ἐθεμελίωσε Σιὼν, καὶ δι᾽ αὐτοῦ σωθήσονται οἱ ταπεινοὶ τοῦ λαοῦ.

Tu autem projectus eris in montibus, ſicut (f) mortuus abominatus, cum multis mortuis confixis gladio, deſcendentibus ad inferum. Quemadmodum veſtimentum in ſanguine conſperſum non erit mundum; ita neque tu eris mundus. Quoniam terram meam perdidiſti, & populum meum interfeciſti: non manebis in æternum tempus, ſemen pravum. Præpara filios tuos, ut occidantur pro peccatis patris eorum, ut non reſurgant, neque hæreditent terram, & impleant terram bellis. Et conſurgam ſuper eos, dicit Dominus Sabaoth, & perdam eorum nomen, & reliquias, & ſemen: Hæc dicit Dominus. Et ponam Babylonem deſertam, ut inhabitent ericii, & erit in nihilum: & ponam eam luti voraginem in perditionem: Hæc dicit Dominus Sabaoth, Sicut dixi, ita erit: & ſicut conſilium cepi; Sic manebit, ad perdendum Aſſyrios ſuper terram meam, & ſuper montes meos. Et erunt in conculcationem: & auferetur ab eis jugum eorum: & gloria eorum ab humeris auferetur. Hoc eſt conſilium, quod decrevit Dominus ſuper totum terræ orbem: & hæc manus excelſa ſuper omnes gentes. Quæ enim Deus ſanctus decrevit; quis diſſipabit? & manum ejus excelſam quis avertet? Anno, quo mortuus eſt rex Achaz; factum eſt verbum hoc: Nolite lætari, alienigenæ omnes: contritum eſt enim jugum percutientis vos. Nam ex ſemine ſerpentis egredientur fœtus aſpidum: & fœtus eorum egredientur ſerpentes volantes. Et paſcentur inopes per eum: inopes autem homines ſuper pacem requieſcent: interficiet autem in fame ſemen tuum, & reliquias tuas interficiet. Ululate portæ civitatum: clament urbes turbatæ, alienigenæ omnes: quoniam ab Aquilone fumus venit: & non erit ut ſit. Et quid reſpondebunt reges gentium? Quoniam Dominus fundavit Sion: & per ipſum ſalvabuntur humiles plebis.

MS. A. (ξ) ἐν αἵματι ἱμάτιον (ο) σφαγῆναι τὰ τέκνα σου (π) … (ρ) καὶ τὴν γῆν κληρονομήσωσι, (σ)* βάθρον (τ) ἀπὸ τῆς γῆς τῆς ἐμῆς (υ) οἰκουμένην ὅλην, (φ) τῆς οἰκουμένης. (χ) τὴν ὑψηλὴν (ψ) Ἀχαζ ὁ βασιλεὺς (ω) πάντες οἱ ἀλλόφυλοι, (α) ὄφεων (β) ἔγγονα (γ) πετόμενοι. (δ) … ἐπ᾽ εἰρήνης (ε) λιμῷ (ζ) Ὀλολύζετε (η) καπνὸς ἀπὸ Βοῤῥᾶ

ΚΕΦ. ιέ.

CAP. XV.

ΤΟ (·) ΡΗ͂ΜΑ ΤΟ ΚΑΤΑ ΤΗ͂Σ ΜΩΑΒΙΤΙΔΟΣ.

1 ΝΥκτὸς ἀπολεῖται ἡ Μωαβῖτις, νυκτὸς γὰρ ἀπολεῖται τὸ τεῖχος τῆς Μωαβίτιδος.

MS. A. (·) ὍΡΑΜΑ

VERBUM, QUOD CONTRA MOABITIDEM.

NOcte peribit Moabitis: nocte enim peribit murus Moabitidis.

תרגום יונתן TARGUM JONATHAN.

19 וְאַתְּ אִתְרְכֵנְתָּא מִקִּבְרָךְ כְּחֻטַר טְמִיר חֲפֵי קְטִילִין מְטַעֲנֵי חֶרֶב נְחָתִין לְגוֹב אַבְנֵי בֵית
20 אַבְדָנָא כְּפֶגֶר מְדַשְּׁדַשׁ : לָא תְהֵי כְּחַד מִנְּהוֹן בִּקְבוּרְתָּא אֲרֵי אַרְעָךְ חַבֵּלְתָּא וְעַמָּךְ
21 קְטַלְתָּא לָא יִתְקַיַּם לְעָלַם זַרְעָא מַבְאֲשִׁין : אַתְקִינוּ לִבְנֵיהוֹן קְטוֹל בְּחוֹבֵי אֲבָהָתְהוֹן
22 דִּלְמָא יְקוּמוּן וְיַחְסְנוּן אַרְעָא וְיִתְמְלוֹן אַפֵּי תֵבֵל בְּעֲלֵי דְבָבוּ : וְאִתְגְּלֵי לְאִתְפְּרָעָא
23 מִנְּהוֹן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת וְאֵשֵׁיצֵי לְבָבֶל שׁוּם וּשְׁאָר וּבַר וּבַר בַּר אֲמַר יְיָ : וַאֲשַׁוִּינַהּ
לִירוּתַת קוּפְּדִין בֵּית צְדוּ בִּצִּין דְּמַיִן וַאֲהַמְמִנַּהּ כְּמָא דִּמְהַמְמִין בְּמַבְּנָא וְאַתְבַּבְנַהּ
24 לְשֵׁיצָאָה אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת : קַיֵּים יְיָ צְבָאוֹת לְמֵימַר אִם לָא כְּמָא דַּחֲשֵׁיבִית כֵּן תְּהֵי
25 וּכְמָא דִּיעֲצִית הִיא תְקוּם : לְמִתְבַּר אֲתוּרָאָה בְּאַרְעִי וְעַל טוּרֵי עַמִּי אֲדוּשִׁנֵּיהּ
26 וְתַעֲדֵי מִנְּהוֹן מַרְוּתֵיהּ וְנִירֵיהּ מֵעַל צַוְּרֵיהוֹן יִתְפְּסֵק : דָּא מַלְכָּא דִּי מְלִיךְ עַל
27 כָּל יָתְבֵי אַרְעָא וְדָא גְבוּרְתָּא דִּי מְרַמְמָא דְּשַׁלִּיט עַל כָּל מַלְכְוָתָא : אֲרֵי יְיָ צְבָאוֹת
28 מְלַךְ וּמַן יַעְדֵּי וּגְבוּרְתֵּיהּ מְרַמְמָא וְלֵית דִּיתִיבִנַּהּ : בְּשַׁתָּא דְּמִית מַלְכָּא אָחָז
29 הֲוָה מַטַּל נְבוּאֲתָא הָדָא : לָא תִיחֲדוּן פְּלִשְׁתָּאֵי כּוּלְכוֹן אֲרֵי אִתְּבַר שׁוּלְטָן דַּהֲוָה
מַפְלַח בְּכוֹן אֲרֵי מִבְּנֵי בְנוֹהִי דְּיִשַׁי יִפּוֹק מְשִׁיחָא וְיֶהֱוֹן עוֹבָדוֹהִי בְּכוֹן כְּחִיוֵי מַפְרִיחַ :
30 וְיִתְפַּרְנְסוּן חֲשִׁיכֵי עַמָּא וְעִנְוְתָנַיָּא בְּיוֹמוֹהִי לְרוּחְצָן יִשְׁרוּן וְיֵמִית בְּכַפְנָא בְּנָךְ
31 וּשְׁאַר עַמָּךְ יִקְטוֹל : אֲלִילִי עַל תַּרְעָךְ צְוַחִי עַל קִרְוָךְ אִתְבַּרְתּוּן פְּלִשְׁתָּאֵי כּוּלְכוֹן
32 אֲרֵי מִצִּפּוּנָא פּוּרְעָנוּתָא אָתְיָא וְלֵית דִּמְאַחַר בִּזְמָנוֹהִי : וּמָה יְבַסְּרוּן אִזְגַּדֵּי עַמְמַיָּא אֲרֵי
יְיָ שַׁכְלֵיל צִיּוֹן וּבַהּ יִתְרַחֲצוּן חֲשִׁיכֵי עַמָּא :

טו

1 מַטַּל כַּס דְּלוּט לְאַשְׁקָאָה יַת מוֹאָב אֲרֵי בְלֵילְיָא אִתְבְּזִיזַת לְחַיַּת מוֹאָב וְאִנּוּן
דָּמְכִין וּבְלֵילְיָא אִתְכְּבִישׁ כַּרְכָּא דְמוֹאָב וְאִנּוּן דָּמְכִין

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Tu autem projectus es de ſepulchro tuo, quaſi virgultum abſconditum, coopertū interfectis, vulneratis gladio, deſcendentib⁹ in lacum lapidum domus perditionis, quaſi cadaver conculcatum. Non eris ſicut unus ex eis in ſepulchro; quia terram tuam diſſipâſti, & populū tuum occidiſti: non manebit in æternum ſemen malignorum. Præparate filiis eorum occiſionem, propter peccata patrum ſuorū, ne fortè conſurgant & poſſideant terram; & impleatur facies orbis inimicis. Et revelabor, ut vindictam ſumam ex eis, dicit Dn̄s exercituum: & diſperdam de Babylone nomen & reliquias, & filium, & filium filii, dicit Dn̄s. Et ponam eam in hæreditatem ericiorum, domum deſolationis, paludes aquarum, & ſcopabo eas, ſicut ſcopatur: & ſuſcitabo eam, ut diſperdam eam, dicit Dn̄s exercituum. Juravit Dn̄s exercituum dicens: Si non ut putavi, ita erit; & ſicut conſilio decrevi, ita confirmabitur. Ut conteram Aſſyrium in terra mea, & in montibus populi mei conculcem eum: & auferetur ab eis ſubjectio ej⁹, & jugum eorum a cervicibus eorum ceſſabit. Hoc eſt conſiliū quod conſultum eſt ſuper omnes incolas terræ; & hæc eſt potentia dominantis, quæ elevata eſt ſuper omnia regna. Quoniam Dn̄s exercituum decrevit conſilium, & quis eſt qui irritum faciat ipſum? & potentia ejus elevata eſt; at quis eam revocabit? In anno quo mortu⁹ eſt rex Achaz, factum eſt onus prophetiæ hujus. Ne lætemini Philiſtæi univerſi vos, quia contritum eſt dominium cui ſerviebatis. Quoniam ex filiis filiorum Jeſſe egredietur Chriſtus, & erunt opera ejus in vobis quaſi ſerpens volans. Et paſcentur pauperes populi, & mites in diebus ejus habitabunt confidenter; & occidet fame filios tuos, & reſiduum populi tui interficiet. Ulula ſuper portas tuas, clama ſuper civitates tuas: exterminati eſtis Philiſtæi omnes vos, quia ab Aquilone malum veniet, & non erit qui moram faciat in temporibus ſuis. Et quid annunciabunt nuncii populorum? quia Dominus fundabit Sion: & in ipſa ſperabunt pauperes populi.

CAP. XV.

ONus calicis maledictionis ad propinandum Moab: Quia noctu diruta eſt Lehajath Moab ipſis dormientibus, & in nocte ſubjecta Moab ipſis ſoporatis

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܢܬ ܐܫܬܕܝܬ ܡܢ ܩܒܪܟ܂ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܡܣܠܝܐ܂ ܠܒܘܫܐ ܕܩܛܝܠܐ ܕܡܚܪ̈ܒܝܢ ܒܣܝܦܐ܂ 19
ܕܢܚܬܝܢ ܠܟܐܦ̈ܐ ܕܓܘܒܐ ܐܝܟ ܦܓܪܐ ܕܕܝܫܐ܂ * ܘܠܐ ܬܬܚܕܐ ܥܡܗܘܢ ܒܩܒܪܐ܂ ܡܛܠ ܕܐܪܥܟ 20
ܚܒܠܬ܂ ܘܥܡܟ ܩܛܠܬ܂ ܠܐ ܢܩܘܡ ܠܥܠܡ ܙܪܥܐ ܒܝܫܐ܂ * ܛܝܒܘ ܠܒܢ̈ܝܗܘܢ ܩܛܠܐ 21
ܒܚܘܒܐ ܕܐܒܘܗܘܢ܂ ܕܠܐ ܢܩܘܡܘܢ ܘܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ܂ ܘܢܡܠܘܢ ܐܦܝ̈ ܬܒܝܠ ܩܪܒܐ܂ * ܘܐܩܘܡ 22
ܥܠܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܘܐܘܒܕ ܫܡܗ ܕܒܒܠ܂ ܘܙܪܥܗ ܘܓܢܣܗ ܘܫܪܒܬܗ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܘܐܥܒܕܝܗ ܝܪܬܘܬܐ ܠܩܘܦܕ̈ܐ܂ ܘܐܓܡ̈ܐ ܕܡܝ̈ܐ܂ ܘܐܟܢܫܝܗ ܒܡܟܢܫܬܐ ܕܐܒܕܢܐ 23
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ * ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܘܐܡܪ܂ ܐܝܟ ܕܐܬܪܥܝܬ ܗܟܢܐ ܬܗܘܐ܂ 24
ܘܐܝܟ ܕܐܬܡܠܟܬ ܢܬܩܝܡ܂ * ܕܐܬܒܪ ܐܬܘܪܝܐ ܒܐܪܥܝ܂ ܘܥܠ ܛܘܪ̈ܝ ܐܕܘܫܝܘܗܝ܂ ܘܢܥܒܪ 25
ܢܝܪܗ ܡܢܗܘܢ܂ ܘܫܘܥܒܕܗ ܡܢ ܟܬܦܗܘܢ ܢܥܒܪ܂ * ܗܢܘ ܡܠܟܐ ܕܐܬܡܠܟ ܥܠ 26
ܟܠܗ ܐܪܥܐ܂ ܘܗܕܐ ܗܝ ܐܝܕܐ ܕܪܡܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡ̈ܐ܂ * ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ 27
ܐܬܡܠܟ܂ ܡܢܘ ܢܒܛܠ܂ ܘܐܝܕܗ ܪܡܬܐ ܡܢܘ ܢܗܦܟܝܗ܂
* ܡܫܩܠܐ ܕܦܠܫܬ *
* ܒܫܢܬܐ ܕܡܝܬ ܐܚܙ ܡܠܟܐ܂ ܗܘܐ ܡܫܩܠܐ ܗܢܐ܂ * ܠܐ ܬܚܕܝܢ ܦܠܫܬ ܟܠܟܝ܂ ܡܛܠ 28 29
ܕܐܬܬܒܪ ܫܒܛܐ ܕܡܫܥܒܕܢܝܟܝ܂ ܡܛܠ ܕܡܢ ܥܩܪܗ ܕܚܘܝܐ ܢܦܩ ܚܪܡܢܐ܂ ܘܦܐܪ̈ܘܗܝ
ܫܪܦܐ ܕܦܪܚ܂ * ܘܢܪܥܘܢ ܒܘܟܪ̈ܝ ܡܣܟܢ̈ܐ܂ ܘܡܣܟܢ̈ܐ ܠܫܝܢܐܝܬ ܢܫܪܘܢ܂ ܘܐܡܝܬ 30
ܒܟܦܢܐ ܥܩܪܟܝ܂ ܘܫܪܟܢܟܝ ܢܬܩܛܠ܂ * ܐܝܠܠܝ ܡܕܝܢܬܐ܂ ܩܥܝ ܡܕܝܢܬܐ܂ 31
ܐܬܕܠܚܬ ܦܠܫܬ ܟܠܗ܂ ܡܛܠ ܕܡܢ ܓܪܒܝܐ ܐܬܐ ܬܢܢܐ܂ ܘܠܝܬ ܕܫܪܝܪ ܒܥܕܥܕ̈ܘܗܝ܂
* ܘܡܢܐ ܢܦܢܐ ܠܡܠܐܟ̈ܐ ܕܥܡܡ̈ܐ܂ ܕܡܪܝܐ ܫܬܐܣ ܫܬܐܣܘܗܝ ܕܨܗܝܘܢ܂ ܘܒܗ ܢܬܛܫܘܢ 32
ܡܣܟܢ̈ܐ ܕܥܡܗ܂
* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܗ * ܡܫܩܠܐ ܕܡܘܐܒ *
* ܒܠܠܝܐ ܐܬܒܙܬ ܡܕܝܢܬܐ ܕܡܘܐܒ܂ ܘܐܬܕܡܪܘ܂ ܒܠܠܝܐ ܐܬܒܙܘ ܫܘܪ̈ܝܗ ܕܡܘܐܒ ܘܐܬܕܡܪܘ܂ 1

19 Tu verò abject⁹ es è ſepulchro tuo ut ſurculus abominand⁹, *ut* veſtimentū occiſorū gladio peremptorū, deſcendentiū ad lapides foveæ ceu cadavera conculcata: 20 Nec ſepulturā cum iis frueris, quia terrā tuam corrupiſti, & populū tuū interfeciſti. Non durabit in æternum ſemen malignum: 21 Præparavit *enim* filiis ſuis necem per ſui ipſorum patris iniquitatē, ne perdurantes terram poſſideant, & ſuperficiem orbis terrarum bello repleant. 22 Inſurgā in eos, dicit Dominus potentiſſimus; & perdā nomen Babelis, ſemen, genus, & proſapiam ejus, dicit Dominus: 23 Efficiam eam hæreditatē hiſtricibus, & ſtagna aquarum: everrámque eam ſcopâ perditionis, dicit Dominus potentiſſimus. 24 Juravit Dominus potentiſſimus, & ait; Prout cogitavi, ſic futurum eſt; & prout decrevi, ſic opere complendū: 25 Contriturū me *ſcilicet* Aſſyrium in terra mea, & ſuper montes meos proculcaturum: receſſurum ab eis jugum ipſius, & ſervitutē ejus ab humero ipſorum abſceſſuram. 26 Hoc eſt conſilium quod ſtatuit contra totam terrā, & hæc eſt manus quæ elevata eſt contra omnes gentes. 27 Dominus potentiſſimus decrevit, quis irritum faciat? & manum ejus elatam quis avertat?

Onus Paleſtinæ.

28 Anno quo mortu⁹ eſt Ahaz rex, fuit on⁹ iſtud: 29 Ne læteris Paleſtina tota, quòd fractus ſit bacul⁹ ejus qui te ſervitute premebat: nam de radice colubri naſcitur aſpis, & fœtus ejus eſt preſter volans. 30 Et paſcentur primogeniti pauperū, & inopes tranquillè cubabunt: & enecabo radicē tuam fame, & qui reſiduus fuerit ex te, interficietur. 31 Ulula civitas, exclama civitas, conturbata eſt Paleſtina univerſa: quoniā ab Aquilone ventur⁹ eſt fum⁹, et nemo erit ſingularis in feſtis ej⁹. 32 Ecquid reſpondebim⁹ Angelo gentiū? q̄ Dn̄s confirmat fundamenta Sionis, & in eam ſe recipient inopes populi ejus.

CAP. XV.

Onus Moab.

1 NOctu direpta eſt civitas Moab, & admirati ſunt: noctu direpti ſunt muri Moab, & obſtupuerunt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وانت تطرح في الامم مثل ميت مرذول مع اموات كثيرين طعنوا بالسيوف ونزلوا الى الجحيم 19
* لان كما ان الثوب الملطخ بالدم لا يكون نقيا هكذا وانت لا تكون نقيا من اجل انك 20
اهلكت ارضي وقتلت شعبي * فلا تثبت الى الدهر * هي ذرية شريرين لتذبح اولادك لخطايا 21
ابيك * لكيلا يقوموا ويرثوا الارض ويملاوا الارض حروبا * وانهض عليهم يقول رب الجيوش 22
واهلك اسمهم وبقيتهم وذريتهم * هكذا يقول الرب * واصير بابل تربة حتى تسكنها القنافذ 23
وتصير الى لا شي * واجعلها جوف طين للهلاك الى الابد * هكذا يقول رب الجيوش * كما قلت 24
هكذا يكون * وكما فكرت هكذا يدوم * لاهلك الموصليين من ارضي ومن جبالي ويصيرون 25
موطيا * ويبرح منهم نيرهم وكبرهم من عواتقهم ينزع * هذا الفكر الذي فكرها الرب في 26
المسكونة كلها * وهذه اليد العالية على جميع امم المسكونة * لان ما يفكر الله القدوس من 27
يبطله * واليد العالية من يردها * الوحي السادس * نبوة اشعياء بن اموص
في اهل فلسطين * في السنة التي مات فيها احاز الملك * صارت هذه الكلمة
لا تفرحوا يا جميع القبائل الغريبة لانه انكسر نير ضاربكم * لان من نسل الحيات تخرج اولاد
الافاعي * واولادهن تخرج حيات طيارة * ويرعون مساكين الرب * والناس الفقراء يستريحون
في سلامة * ويهلك زرعك بالجوع * وبقاياك تهلك * ولولوا يا ابواب المدن * ولتصرخ المدن القلقة
وجميع القبائل الغريبة * لان الدخان ياتي من الجربياء * وليس من يثبت في مراسيمه * وما
تجيب ملوك الامم * لان الرب اسس صهيون * ومن قبله تخلص متواضعوا الشعب *
* الفصل الخامس عشر * الوحي السابع * وهو الاصحاح الثامن *
* نبوة اشعياء بن اموص في مواب * ومدينتها وقراها *
* تهلك المواية ليلا * لان اسوار المواية تهلك ليلا *

19 *Tu verò ut mortu⁹ abominand⁹ inter plebē abjiciēris unà cum multis mortuis qui gladiis confoſſi deſcenderunt in infernū.* 20 *Quemadmodū enim veſtimentū ſanguine oblitum haudquaquā mundum eſt: ſic etiā tu nequaquā mundus es, qui terram meam diruiſti, & populum meum trucidâſti, propterea non perſiſtes in æternum.* 21 *Heus generatio ſcelerata, jugulabuntur filii tui propter peccata patris tui; ne ſurgentes poſſideant terrā, et præliis terrā impleant.* 22 *Inſurgam etiam in eos, dicit Dominus exercituum; et nomen, reliquias, atq; proſapiam eorum delebo, ſic dicit Dominus:* 23 *Et Babelem in tumulum redigā, ita ut habitent in ea hericii, & in nihilum redigatur: & redigam illā in exitialem cœni foveā in æternum. Sic ait Dominus exercituum;* 24 *Ut dixi, ita erit, & ut cogitavi, ita firmum erit:* 25 *Omnino perdam Aſſyrios è terra mea & è montibus meis, fientq; ſcamnū: & amovebitur ab iſtis jugum illorum, & faſtus illorū ab humeris iſtorum amovebitur.* 26 *Hæc eſt cogitatio quam cogitavit Dominus de toto orbe, & hæc eſt manus elevata ſuper omnes orbis gentes.* 27 *Nam quod ſtatuit Deus ſanctiſſimus, quis irritum faciat? & manum elevatam quis compeſcat?*

Revelatio ſexta.

Prophetia Eſaiæ filii Amos de incolis Paleſtinæ.

28 *Quo anno mortuus eſt rex Ahaz, factum eſt verbum iſtud.* 29 *Ne lætemini O omnes exteræ nationes, quòd ruptum ſit jugum percutientis vos, quoniam è ſtirpe ſerpentum prodeunt pulli viperarū, & harum pulli producunt ſerpentes volantes.* 30 *Paſcentur pauperes Domini, & homines egeni pacatè quieſcent: ſemen verò tuum fame peribit, & reliquiæ tuæ interibunt.* 31 *Ululate O portæ urbium, et exclament urbes inquietæ, omneſq; nationes peregrinæ; quia fum⁹ adveniet ab Aquilone, nec erit qui perſtet in veſtigiis ejus.* 32 *Ecquid reſpondebunt reges gentium, quandoquidē fundavit Dominus Sionem, et ab ipſo ſalvabuntur humiles populi?*

CAPUT XV.

Revelatio ſeptima.

Textus octavus,

Prophetia Eſaiæ filii Amos de Moabo, & urbe ac oppidis ejus.

1 *URbs Moabitica noctu peribit, quia mœnia urbis Moabiticæ noctu peribunt.*

ישעיה : יו

super & ,Nebo ſuper , fletum ad exceſſa Dibon & ,ædem in Aſcendit
2 עלה הבית ודיבן הבמות לבכי על־נבו ועל־
.refecta barba omnis,calvitiū ej° capitib° cūctis in:ululabit Moab Medba
מידבא מואב ייליל בכל־ראשיו קרחה כל־זקן גרועה:
ipſa tota ejus plateis in & ,ejus tectis in :ſacco ſe accingēt ej° plateis In
3 בחוצתיו חגרו שק על־גגותיה וברחבתיה כלה
, Elhaleh & Cheſbon clamavit Et .fletum in deſcendens ululabit
4 ייליל ירד בבכי: ותזעק חשבון ואלעלה
,clamabunt Moab expediti ideo : eorū vox audietur Jahas ad uſque
עד־יהץ נשמע קולם על־כן חלצי מואב יריעו
ejus protegi ,clamabit Moab ad meum Cor .ſibi vociferabit ej° anima
5 נפשו ירעה לו: לבי למואב יזעק בריחה
fletu in Luchith aſcenſu in quia : triennem vitulam Sohar ad uſque
עד־צער עגלת שלשיה כי מעלה הלוחית בבכי
.ſuſcitabunt contritionis clamorem Choronaim via quia ,eā in aſcendet
יעלה־בו כי דרך חרנים זעקת־שבר יעערו:
defecit , herba aruit *quoniam* ,erunt deſolationes in Nimrim aquæ Nam
6 כי־מי נמרים משמות יהיו כי־יבש חציר כלה
ſuum depoſitum & ,fecit *reſiduum* Ideo .fuit non viride , germen
7 דשא ירק לא היה: על־כן יתרה עשה ופקדתם
clamor circuivit Quia .ea deferent ſalicum torrentem juxta
8 על נחל הערבים ישאום: כי־הקיפה הזעקה את־
Elim Beer & ,ejus ululatus Eglaim ad uſque : Moab terminum
גבול מואב עד־אגלים יללתה ובאר אלים
: ſanguine ſunt repletæ Dimon aquæ Quia .ejus ululatus
9 יללתה: כי מי דימון מלאו דם
, leonem Moab *evaſioni* : addita Dimon ſuper ponam nam
כי־אשית על־דימון נוספות לפליטת מואב אריה
.humi reſiduo &
ולשארית אדמה:

CAP. XVI. יו

filiæ montem ad ,deſerti petra de terræ *dominator* Agnum Mittite
1 שלחו־כר מושל־ארץ מסלע מדברה אל־הר בת־
Moab filiæ erunt ,*emiſſa nido vagans* avis ſicut erit Et .Sijon
2 ציון: והיה כעוף־נודד קן משלח תהיינה בנות מואב
pone ,judicium fac ,conſilium Affer .Arnon vada
3 מעברת לארנון: הביאו עצה עשו פלילה שיתי
vagum : expulſos abſconde : *Meridiei medio in* tuam umbram noctē quaſi
כליל צלך בתוך צהרים סתרי נדחים נדד
ſis Moab ,mei expulſi te in Habitent .*reveles* ne
4 אל־תגלי: יגורו בך נדחי מואב הוי־
,*vaſtatio* defecit ,expreſſor *finiit* quia : *vaſtatoris faciebus* à eis latibulum
סתר למו מפני שודד כי־אפס המץ כלה שד
miſericordia in præparabitur Et .terra de *conculcans ſunt conſumpti*
5 תמו רמס מן־הארץ: והוכן בחסד
, judicans , David *tentorio* in veritate in illud ſuper ſedebit & ,ſolium
כסא וישב עליו באמת באהל דוד שפט
ſuperbiam Audivimus .juſtitiam feſtinans & , judicium quærens &
6 ודרש משפט ומהר צדק: שמענו גאון־
, ejus extollentia & , ejus ſuperbia : valde ſuperbus , Moab
מואב גא מאד גאותו וגאונו
Moab ululabit Idcirco .ejus *mendacia ſic* non ,ejus *iracundia* &
7 ועברתו לא־כן בדיו: לכן ייליל מואב
,*meditabimini* chareſeth-Chir *fundamenta ob* : ululabit ipſe totus,Moab ad
למואב כלה ייליל לאשישי קיר־חרשת תהגו
.percuſſi veruntamen
אך־נכאים:

Verſio VULG. LAT.

2 Aſcendit domus, & Dibon ad excelſa in planctū ſuper Nabo, & ſuper Medaba , Moab ululavit : in cunctis capitib° ej° calvitiū, & omnis barba radetur. 3 In triviis ejus accincti ſunt ſacco : ſup tecta ejus,& in plateis ejus omnis ululatus 4 deſcendit in fletum. Clamavit Heſebon, & Eleale, uſq; Jaſa audita eſt vox eorū : ſup hoc expediti Moab ululabunt,anima 5 ejus ululabit ſibi. Cor meū ad Moab clamabit, vectes ejus uſque ad Segor vitulā conternantē: per aſcenſū enim Luith flens aſcendet, & in via Oronaim clamorē contritionis le6 vabunt. Aquæ enim Nemrim deſertæ erunt, quia aruit herba, defecit germen, viror 7 omnis interiit. Secundùm magnitudinem operis,& viſitatio eorū : ad torrentē ſalicū du8 cent eos. Quoniā circuivit clamor terminū Moab : uſq; ad Gallim ululatus ejus, & uſque ad puteum Elim clamor ejus. 9 Quia aquæ Dibon repletæ ſunt ſanguine : ponam enim ſuper Dibon additamenta : his qui fugerint de Moab leonem, & reliquiis terræ.

CAP. XVI.

1 EMitte agnum, Domine,dominatorē terræ , de petra de2 ſerti ad montem filiæ Sion. Et erit:Sicut avis fugiens, & pulli de nido avolantes , ſic erunt filiæ Moab in tranſcenſu Ar3 non. Ini conſiliū,coge conſilium,pone quaſi noctē umbram tuā in meridie : abſconde fugientes, & vagos ne prodas. 4 Habitabunt apud te profugi mei: Moab eſto latibulū eorū à facie vaſtatoris : finitus eſt enim pulvis, conſummatus eſt miſer:defecit qui conculcabat 5 terrā. Et præparabitur in miſericordia ſolium, & ſedebit ſup illud in veritate in tabernaculo David,judicans et quærens judiciū,& velociter red6 dens ꝙ juſtum eſt. Audivimus ſuperbiam Moab, ſuperbus eſt valdé : ſuperbia ejus & arrogantia ej°, & indignatio ejus 7 pluſquā fortitudo ejus. Idcircò ululabit Moab ad Moab, univerſus ululabit : his, qui lætantur ſuper muros cocti lateris, loquimini plagas ſuas.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlitione LATINA.

2 Λυπεῖσθε ἐφ' (*) ἑαυτοῖς, ἀπολεῖται γὰρ καὶ (α) Δηβὼν, οὗ ὁ βωμὸς ὑμῶν. ἐκεῖ ἀναβήσεσθε κλαίειν, ἐπὶ Ναβαὺ τῆς Μωαβίτιδος. (β) ὀλολύξατε, ἐπὶ πάσης κεφαλῆς φαλάκρωμα, πάντες βραχίονες (γ) κατατετμημένοι. 3 Ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς περιζώσασθε σάκκους, καὶ κόπτεσθε ἐπὶ τῶν δωμάτων αὐτῆς, καὶ ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς, καὶ ἐν ταῖς ῥύμαις αὐτῆς, πάντες ὀλολύζετε μετὰ κλαυθμοῦ. 4 Ὅτι κέκραγεν Ἐσεβὼν καὶ (δ) Ἐλεαλὴ, ἕως Ἰασὰ ἠκούσθη ἡ φωνὴ αὐτῶν. διὰ τοῦτο ἡ ὀσφὺς τῆς Μωαβίτιδος βοᾷ, ἡ ψυ5 χὴ αὐτῆς γνώσεται. Ἡ καρδία τῆς Μωαβίτιδος βοᾷ (ε) ἐν αὐτῇ ἕως Σηγὼρ· δάμαλις γάρ ἐστι τριετής. ἐπὶ δὲ τῆς ἀναβάσεως (ζ) Λουεὶθ, πρὸς σὲ κλαίοντες ἀναβήσονται τῇ ὁδῷ ἡ Ἀρωνιεὶμ· βοᾷ, Σύντριμμα 6 καὶ σεισμός. Τὸ ὕδωρ τῆς (θ) Νεμηρεὶμ ἔρημον ἔσται, καὶ ὁ χόρτος αὐτῆς ἐκλείψει· 7 χόρτος γὰρ χλωρὸς οὐκ ἔσται. Μὴ καὶ οὕτως μέλλει σωθῆναι; ἐπάξω γὰρ ἐπὶ τὴν φά8 ραγγα Ἄραβας, καὶ λήψονται αὐτήν. Συνῆψε γὰρ ἡ βοὴ (ι) τὸ ὅριον τῆς Μωαβίτιδος τῆς (κ) Ἀγαλείμ, καὶ ὀλολυγμὸς αὐτῆς ἕως τοῦ 9 φρέατος τοῦ Αἰλείμ. Τὸ δὲ ὕδωρ τὸ (λ) Δειμὼν πλησθήσεται αἵματος· ἐπάξω γὰρ ἐπὶ (μ) Δειμὼν Ἄραβας, καὶ ἀρῶ τὸ σπέρμα Μωὰβ, καὶ Ἀριὴλ, καὶ τὸ κατάλοιπον Ἀδαμα.

Contriſtamini ſuper vos ip pe ibit enim & Debon, ubi ra veſtra. Illuc aſcendetis pro re ſuper Nabay Moabitidis. u late : ſuper omne caput calvi um, omnia brachia diſſecta: plateis ejus circumcing c, & plangite ſuper dom & in plateis ejus, & in vic jus : omnes ululate cum Quoniam clamavit Eſebon, Eleale : uſque Iaſſa audi vox eorum. Moabitidis clamat : anima cognoſcet : Cor Moabitid mat in ſe uſque Segor : vacca n m triennis eſt. Super aſcen autem Luith ad te flentes dent viâ Aronim : clama tritio, & concuſſio : Aqua merim deſerta erit, & herba deficiet : herba enim viri erit. Numquid & ſic ſalva eſt? Inducam enim ſuper Arabas, & capient eam. tigit enim clamor terminum abitidis ipſius Agalim, latus ejus uſque ad puteum Aqua autem Dimon impleb ſanguine. Inducam enim Dimon Arabas: & tollam men Moab, & Ariel, & reliq Adami.

MS. A. (*) ἑαυτοῖς, (α) Δαιβηδὼν, (β) ὀλολύζετε, (γ) κατατε (δ) ἐλάλησεν ἕως ἠκούσθη ἡ φωνὴ αὐτοῦ. (ε) ἐν ἑαυτῇ (ζ) τῆς * πρὸς σὲ νιεὶμ· (θ) Νεμρεὶμ (ι) τὸ ὄρος (κ) Ἀγαλλείμ, (λ) Ῥεμμὼν (μ)

ΚΕΦ. ιϛ'.

1 ἈΠοστελῶ ὡς ἑρπετὰ ἐπὶ τὴν γῆν. μὴ πέτρα ἔρημός ἐστι (α) τὸ ὄρος θυγατρὸς Σι2 ών; Ἔσῃ γὰρ ὡς πετεινοῦ ἀνιπταμένου (β) νοσσὸς ἀφῃρημένος, ἔσῃ θύγατερ Μωάβ, 3 ἔπειτα δὲ Ἀρνῶν πλείονα βουλεύου, ποίει τε σκέπην πένθους αὐτῇ διαπαντὸς, ἐν μεσημβρινῇ σκοτίᾳ φεύγουσιν, ἐξέστησαν· (γ) 4 μὴ ἀχθῇς, Παροικήσουσί σοι οἱ φυγάδες Μωάβ· (δ) ἔσονται σκέπη ὑμῖν ἀπὸ προσώπου διώκοντος, ὅτι ἤρθη ἡ συμμαχία σου (ε) καὶ ὁ ἄρχων ἀπώλετο ὁ καταπατῶν, 5 (ζ) ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ διορθωθήσεται (η) μετ' ἐλέους θρόνος, καὶ καθιεῖται ἐπ' αὐτοῦ μετὰ ἀληθείας ἐν σκηνῇ Δαυὶδ, κρίνων καὶ 6 ἐκζητῶν κρίμα καὶ σπεύδων δικαιοσύνην. Ἠκούσαμεν τὴν ὕβριν Μωάβ, ὑβριστὴς σφόδρα· τὴν ὑπερηφανίαν (θ) ἐξῆρας. οὐχ οὕτως ἡ 7 μαντεία σου, οὐχ οὕτως. Ὀλολύξει Μωάβ, ἐν γὰρ τῇ Μωαβίτιδι πάντες ὀλολύξουσι· τοῖς κατοικοῦσι δὲ Σεὲθ μελετήσεις, καὶ οὐκ ἐντραπήσῃ.

CAP. XV MIttam (a) quaſi per terram. Numquid ſerta eſt mons filiæ S enim velut avis avolant ablatus, (b) eris filia M indè verò Arnon plura & (c) fac tegmen luct ſemper, in meridianis te giunt, obſtupuerunt. (ducaris: Accolent tibi pr ab : erunt tegmen vo (e) perſequentis : quia eſt auxilium tuum, & periit, qui conculcabat Et (f) dirigetur cum m thronus, & ſedebit ſuper veritate in tabernaculo dicans, & exquirens ju accelerans juſtitiam. Au ſuperbiam Moab : con valdè : ſuperbiam Non ſic divinatio tua lulabit Moab: in Moabi omnes plorabunt : autem Deſeth medita non confundêris.

MS. A. (α) τὸ ὄρος Σιών; (β) νεοσσὸς ἀφῃρημένος, θυγάτη ἀβ, (γ) μὴ ἀπ' ἀρχῆς Παροικήσουσιν οἱ φυγάδες (δ) ἔσονται λέσθη ταλαιπωρία, καὶ ὁ ἄρχων (ζ) ἐπὶ τῆς γῆς. (η) μετὰ ἐλέους ἧρας.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 סליקו לבתיא דדיבון לבמתא למבכי על נבו ועל מידבא מואבאי מיללין בכל רישיהון
3 מרטא ובכל דקן גלוח: בשוקיהון יסרון סקין על אגריהון וברחוביהון כולהון מיללין
4 מצוחין ובכן: וצוחו יתבי חשבון ואלעלה עד יהץ אשתמע קלהון על כן מזרזין מואב
5 מיללין ועל נפשהון מצוחין: בלבהון מואבאי ימרון למערק עד צוער עגלת תלתות
רבתא ארי במסיקת לוחית כדבכן יסקון ביה ארי במחותית חורונים צוחת תבירי קרב
6 יבסרון: ארי מי נמרים לצדו יהון ארי יבש עסבא סף דתאה ירוק לא הוה: על כן 7
8 שאר נכסיהון יתבזזון ותחומהון דעל ימא מערבא יתנסיב מנהון: ארי אקפת צוחתא
9 ית תחום מואב עד אגלים מיללין ובבאר אילים מצוחין: ארי מי דימון אתמליאו דם
קטולין ארי אמני על דימון כנשת משרין לשיזבת מואב מלך במשריתיה יסק ולמבז
שארא דארעהון:

יו

1 יהון מסקי מסין למשיחא דישראל דיתקוף על דהוו במדברא טור כנשתא דציון: ויהי 2
כעופא דאפרחוהי מקנידהי ויטלטלן יתפקן ויהוין בנת מואב מגזן להון לארנון:
3 אתמליכו מלך עבידו עצה שויאו כליליא טוליך בימממא בנו טיהרא טמרי מטלטליא
4 ומבדריא לא תקרבין: יתיתבון ביך מטלטלי מלכות מואב הוי סתרא להון מן קדם
5 בזוזין ארי סף מעיקא אשתצי בוזא ספו כל דהוו דישין מן ארעא: בכן משיחא דישראל
יתקן בטוב כורסוהי ויתיב עלוהי בקשוט בקרתא דדוד דאן ותבע דין ועבד קשוט:
6 שמענא רברבי מואב דמתגאן לחדא יקירהון ומפנקיהון וגיותנותהון לקבי־
7 פורענותהון לא שוי להון: בכן מיללין מואבאי על מואבאי כולהון מצוחין ומיללין על
אנש כרך תוקפהון דהון ימרון ברם כבישין:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Aſcendite in domos Dibon, in excelſa ad plorandum ſuper Nebo Medaba Moabitæ ululant : in omnibus capitibus ſuis calvitium, barba depilatio. Et in vicis ſuis accingentur ſaccis ſuper tecta in plateis ſuis omnes ululant, clamant, & plorant. Et clamave tatores Eſſebon & Eleale : uſque Jahats audita eſt vox eorum accincti Moab ululant, ſuper animas ſuas clamant. In cordibus Moabitæ, ut fugiant uſque ad Segor, vitulam triennem gran nam per aſcenſum Luith in planctu aſcendent eò, quia Horonaim clamorem victorum in prælio annunciabunt. Quo Nemrim in deſolationem erunt, quia exiccata eſt herba, viride non fuit. Propterea reſiduum ſubſtantiæ eorum diripi minus eorum *qui eſt* ad mare Occidentale tolletur ab eis. Quo cuit clamor terminum Moab, uſque Agalim ululant, & in Be mant. Quoniam aquæ Dimon impletæ ſunt ſanguine occiſorum ſtituā ſup Dimon congregationē exercitus. Ad eos qui liberan Moab, aſcendet rex cum exercitu ſuo, & ut diripiat reſiduum terr

CAP. XVI.

DEferent tributa Chriſto Iſrael qui fortis eſt ſuper eos, qui deſerto, ad montem cœtus Sion. Et erit quaſi tranſmigrans avis, egerunt de nido ſuo ; circumductæ erunt filiæ Moab tranſlitæ Ini conſilium, fac conſilium : pone quaſi noctem umbram tuam in meridie : abſconde tranſmigrantes ; diſperſos ne contingatis. bunt in te profugi, regnum Moab ; eſto eis protectio à facie diripi quia finitus eſt hoſtis, conſummatus eſt deprædator, defecerunt conculcabant *de terra*. Tunc Chriſto Iſrael præparabitur thron° ejus no, & ſedebit ſuper eum in veritate, in civitate David, judicans rens judicium, et faciens veritatem. Audivimus principes Moab, bunt nimis ; inclytos eorum, & delicatos eorum: ſed ſuperbia pter ultionem eorum, non profuit eis. Propterea ululabunt Mo Moabitas omnes clamabunt, *& ululabunt* ſuper viros civitatis eorum mœrentes dicent : Subjecti utique ſunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܣܠܩܘ ܠܒܝܬܐ ܕܪܝܒܘܢ. ܥܠ ܪ̈ܡܬܐ ܠܡܒܟܐ. ܥܠ ܢܒܘ ܘܥܠ ܡܕܝܒܐ. ܡܘܐܒ 2
ܡܝܠܠܐ. ܒܟܠ ܪ̈ܫܝܗܘܢ ܩܪܚܘܬܐ. ܘܟܠ ܕܩܢ ܓܙܝܙܐ. * ܒܫܘ̈ܩܘܗܝ ܐܣܪܘ ܣܩ̈ܐ. 3
ܘܥܠ ܐܓܪ̈ܐ ܘܒܫܘ̈ܩܐ ܟܠܗ ܡܝܠܠ. ܘܢܚܬ ܒܒܟܝܐ. * ܐܝܠܠ ܚܫܒܘܢ ܘܐܠܥܠܐ. 4
ܘܥܕܡܐ ܠܝܗܨ ܢܫܬܡܥ ܩܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܪ̈ܨܘܗܝ ܕܡܘܐܒ ܢܝܒܒܘܢ.
ܘܢܦܫܗ ܬܝܒܒ ܠܗ. * ܘܠܒܝ ܥܠ ܡܘܐܒ ܒܪܘܚܗ ܢܝܠܠ. ܥܕܡܐ ܠܨܥܪ ܥܓܠܬܐ 5
ܬܠܝܬܝܬܐ. ܡܛܠ ܕܒܡܣܩܢܐ ܕܠܘܚܝܬ ܒܟܝܐ ܢܣܩܘܢ ܠܗ. ܘܒܐܘܪܚܐ ܕܚܘܪܢܝܡ ܓܥܬܐ
ܕܬܒܪܐ ܢܪܝܡܘܢ. * ܡܛܠ ܕܡ̈ܝܐ ܕܢܡܪܝܡ ܚܪ̈ܒܐ ܢܗܘܘܢ. ܡܛܠ ܕܝܒܫ ܥܡܒܐ ܘܫܠܡ ܕܬܐܐ. 6
ܘܝܪܘܩܐ ܠܐ ܗܘܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܕܡ ܕܐܫܬܚܪ ܢܥܒܪ. ܘܥܡܠܗܘܢ ܠܢܚܠܐ ܕܥܪ̈ܒܝܐ 7
ܢܥܒܕܘܢ. * ܡܛܠ ܕܚܕܪܬ ܓܥܬܐ ܠܬܚܘܡܐ ܕܡܘܐܒ. ܘܥܕܡܐ ܠܐܓܠܝܡ ܝܠܠܬܗ. 8
ܘܠܒܐܪܐ ܕܐܠܝܡ ܝܠܠܬܗ. * ܡܛܠ ܕܡ̈ܝܐ ܕܪܝܒܘܢ ܐܬܡܠܝܘ ܕܡܐ. ܡܛܠ ܕܐܣܝܡ 9
ܥܠ ܪܝܒܘܢ ܬܘܣܦܬܐ. ܘܐܪܢܐ ܥܠ ܐܝܠܝܢ ܕܐܫܬܘܙܒܘ ܡܢ ܡܘܐܒ. * ܩܦܠܐܘܢ ܝܘ *

*ܘܥܠ ܫܪܟܐ ܕܐܪܥܐ ܐܫܕܪ ܒܪܗ ܕܫܠܝܛܐ ܕܐܪܥܐ. ܡܢ ܟܐܦܐ ܕܡܕܒܪܐ ܠܛܘܪܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. 1
*ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܦܪܚܬܐ ܕܡܫܢܝܐ ܩܢܗ. ܘܒܢܬܗ ܕܡܘܐܒ ܢܫܬܒܩܢ ܒܡܥܒܪܐ 2
ܕܐܪܢܘܢ. * ܐܝܬܝ ܬܪܥܝܬܐ. ܥܒܕܝ ܬܘܟܠܢܐ. ܣܝܡܝ ܐܝܟ ܠܠܝܐ ܛܠܠܟܝ ܒܦܠܓܗ ܕܛܗܪܐ. 3
ܛܫܝ ܠܡܛܥܝܐ. ܘܠܡܒܕ̈ܪܐ ܠܐ ܬܓܠܝܢ. * ܢܥܡܪܘܢ ܒܟܝ ܡܒܕ̈ܪܐ ܕܡܘܐܒ. ܗܘܝ ܠܗܘܢ 4
ܡܥܫܢܐ ܡܢ ܩܕܡ ܒܙܘܙܐ. ܡܛܠ ܕܫܠܡ ܐܒܩܐ. ܘܫܠܡ ܒܙܘܙܐ. ܘܫܠܡ ܕܫܐܦ ܡܢ ܐܪܥܐ.
* ܘܢܬܬܩܢ ܒܛܝܒܘܬܐ ܟܘܪܣܝܐ. ܘܢܬܒ ܥܠܘܗܝ ܒܩܘܫܬܐ ܒܡܫܟܢܗ ܕܕܘܝܕ. ܕܝܢܐ 5
ܘܬܒܥ ܕܝܢܐ. ܘܡܣܪܗܒ ܙܕܝܩܘܬܐ. * ܫܡܥܢ ܫܘܒܗܪܗ ܕܡܘܐܒ. ܕܐܝܟ ܡܐ ܐܫܬܒܗܪ 6
ܘܪܡܘܬܗ ܘܫܘܒܗܪܗ ܘܚܡܬܗ. ܠܐ ܗܘܐ ܗܟܢܐ ܢܒܝ̈ܘܗܝ ܐܬܢܒܝܘ ܥܠܘܗܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܝܠܠ 7
ܡܘܐܒ. ܘܥܠ ܡܘܐܒ ܟܠܗ ܢܝܠܠ. ܥܠ ܫܘܪܐ ܕܥܬܝܕ ܕܢܬܥܩܪ. ܬܗܓܘܢ ܐܝܟ ܟܪ̈ܝܗܐ.

Aſcenderunt in domum Ribon ſuper excelſa ad flendum: ſuper Nebo & ſuper Madeba ululabit Moab; in omnibus capitibus ejus erit evulſio capillorum, & omnis barba detonſa. 2 In plateis ejus accingent ſe ſaccis, & ſuper tecta & in plateis unuſquiſque ululans deſcendet cum fletu. 3 Ululabit Heſbon & Elala, & uſque ad Soth audietur vox earum. Propterea inguina Moabi ſtrepitabunt, & anima ipſius vociferabit ad ipſum: 4 Et cor meum ſuper Moab ululabit in ſpiritu ſuo uſque ad Soar vitulam triennem; quia per clivum Lohath lugentes aſcendent; & in via Hornim clamorem fractionis edent, 5 Quoniam aquæ Nemrim deficient: quia fœnum areſcet, elanguebit herba, & nullum erit olus; 6 Iccirco quod reſiduum erat, præteribit; & operam eorum ſecus vallem Arabin deportabunt. 7 Nam circundabit ululatus terminum Moabi, & ad Ghelaam uſque erit ululatus ejus, & ad puteum Elim ululatus ejus; 8 Quoniam aquæ Ribonis implebuntur cruore: ponam enim ſuper Ribonem additamentum, & cogitabo de iis qui evaſerint ex Moab. 9

CAP. XVI.

Super reliquam verò terram mittam filium principis terræ, è lapide ſolitudinis ad montem filiæ Sionis. 1 Et is erit ſicut avis quæ migrare facit nidum ſuum, at filiæ Moab derelictæ manebunt in vado Arnonis. 2 Adjice mentem, fac profundam meditationem, pone ſicut noctem umbrā tuam in ipſo meridie, occulta errantes, & diſperſos ne prodas. 3 Commorentur in te diſperſi Moabi, eſto illis perfugium à facie direptoris: nam deſinet pulvis, conſumetur direptor, & conculcator deficiet à terra. 4 Et ſtabilietur ſolium benignitate, ſedebitque ſuper illud in veritate in tabernaculo Davidis, judex & inquirens judiciū, & accelerans juſtitiam. 5 Audivimus jactantiam Moabi, quòd admodum ſe jactârit; arrogantiam, ſuperbiam, & furorem ejus, qualem non prædixerant de eo vates ejus. 6 Propterea ululabit Moab, & de Moabo totuſmet ipſe ululabit: ſuper muri parietibus qui deſtruendi ſunt, gemetis ut ægroti; 7

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

احزنوا عليهم لان قد باد كماء ديبون حيث هيكلكم هناك تصعدون لتبكوا على نابوا الموابية 2
ولولوا* على كل راس قرع * جميع الاذرعة تقطع * في شوارعها البسوا مسوحا* ونوحوا على 3
اسطحتها* وفي رحابها وفي حاراتها باجمعكم ولولوا ببكاء *لان حسبون صرخ وتكلم يصاحي سمع 4
صوتهما* لاجل هذا حقو الموابية يصرخ في ذاته* ونفسها تعلم *وقلب الموابية يصرخ في ذاته 5
الى صاغار* لانها العجلة الثلاث* وعلى المصعد الذي لك يبكون* يصعدون في طريق حرنيم
بخوار وانكسار وزلزلة *ماء نبرين يصير برية* وعشبها يفني* لانه لا يكون عشب اخضر 6
وليس هكذا تستطيع ان تخلص لاني اجلب على الوادي الاعراب واخذونه *لان الصراخ 7 8
جمع حد موابية جلعام* وزئيرهم الى بير اليم *وماء رمون يمتلي دما* لاني اجلب على رمون 9
الاعراب* وانزع لسان مواب واريئيل وبقية ادام* وارسل مثل دبابات على الارض*

الفصل السادس عشر

هل صخر صحراء هو جبل صهيون لانك تكوني مثل عش مفروع لطاير طاير يا ابنة مواب* 1 2
وبعد هذا يا ارنون فكر بالاكثر *اسمعوا* ظل نوح لها كل حين في وسط الظهيرة* حاروا 3
هاربين في ظلمة* ليس يجوزون بك *هاربوا مواب* لانهم يصيرون لكم سترا من وجه 4
المضطهد* لانه قد انصرعت محاربتك* وانتهت شقوتك* وباد الرئيس الدايس على الارض*
ويستقيم الكرسي برحمة ويجلس عليه بالحق في مسكن داود الحاكم الطالب الانصاف 5
والملتمس العدل *سمعنا بعظمة مواب المتعظم جدا* انصرعت عظمته وكبرياه وحمقه 6
ليس هكذا تنجيك ليس هكذا *ولولي يا مواب* لان في الموابية جمع المولولين 7
ولسكان حداسات درس*

Dolete de eis, quia jam periit ut aqua Dibonis. Ubi eſt phanum veſtrum, illuc aſcendetis ad flendum: ſuper Nabo Moabiticam ululate, ſuper omne caput erit porrigo, omnia brachia præcidentur. 2 *In compitis ejus induimini ciliciis, gemite ſuper tecta ejus, in plateis & regionibus ejus ululate omnes cum fletu.* 3 *Nam Heſbon exclamavit, & Jeſſa locuta eſt ita ut auditus ſit clamor utriuſque; propterea lumbus Moabiticæ urbis exclamabit in ſemetipſo, & anima illius animadvertet:* 4 *Et cor Moabiticæ urbis vociferabitur in ſemetipſo ad Sogar, quia hæc eſt vitula trima: & ſuper clivum tuum flebunt: aſcendent per viam Hornim cum murmure, fragore, & tremore.* 5 *Aqua Nebrin vertetur in ſolitudinem, & ejus herba deficiet; quia non erit herba viridis.* 6 *At neque hoc modo incipiet liberari; quoniam adducturus ſum Arabes ſuper vallem, & capient eam.* 7 *Clamor enim congregabit terminos Moabiticæ Gelaam, & tumultus eorum erit uſque ad puteum Elim;* 8 *Et aqua Remmonis implebitur ſanguine: quoniam contra Remmonem Arabes adducam, & auferam linguam Moabi & Arielis, & reliquias Adamæ; mittamque veluti reptilia ſuper terram.* 9

CAP. XVI.

Num petra deſerti eſt mons Sionis? 1 *Ejus quidem velut exceptus nidus volucris volantis O filia Moabi: & poſt hæc O Arnon ſæpiùs cogita.* 2 *Audite, umbra ejulatûs eſt apud eam omni tempore, vel ipſo meridie: ſtupore capti ſunt, fugæ ſe dantes in tenebris: non tranſibunt per te.* 3 *Fugam præbete Moabitis, quoniam ipſi futuri ſunt vobis latibulū à facie perſecutoris: jam enim defecit ars tua bellica, advenit miſeria tua, & periit princeps terram conculcans.* 4 *Et ſolium clementiā erigetur, ſedebitque ſuper illud cum veritate in domo Davidis, judex amans æquitatem & quærens juſtitiam.* 5 *Audivimus inſolentiam Moabi nimiùm inſoleſcentis: detracta eſt inſolentia, ſuperbia, & obſtinatus furor ejus: nequaquam talis erat horoſcopus tuus, nequaquam talis.* 6 *Ulula O Moab; quoniam in regione Moabitide erit cœtus ululantium, & incolis Hadaſath contritio:* 7

ישעיה : יז

gentium Domini :Sibmah *vitis* *debilitata* Chesbon *arva* Quia
כִּי שַׁדְמוֹת חֶשְׁבּוֹן אֻמְלָל גֶּפֶן שִׂבְמָה בַּעֲלֵי גוֹיִם 8
erraverunt ,*contigêre* Jahazer ad usque ,ejus vites optimas quassaverunt
הָלְמוּ שְׂרוּקֶּיהָ עַד־יַעְזֵר נָגָעוּ תָּעוּ
Idcirco .mare transierunt , se extenderunt ejus *emissiones* : desertum
9 מִדְבָּר שְׁלֻחוֹתֶיהָ נִטְּשׁוּ עָבְרוּ יָם׃ עַל־כֵּן
mea lachryma te inebriabo : Sibmah vitis Jahazer fletu in plorabo
אֲבְכֶּה בִּבְכִי יַעְזֵר גֶּפֶן שִׂבְמָה אֲרַיָּוֶךְ דִּמְעָתִי
tuam messem super & ,*tuos æstivos* super quoniam : Elhaleh & , Chesbon
חֶשְׁבּוֹן וְאֶלְעָלֵה כִּי עַל־קֵיצֵךְ וְעַל־קְצִירֵךְ
, *Charmel* à exultatio & , lætitia *colligetur* Et .cecidit celeusma
10 הֵידָד נָפָל׃ וְנֶאֱסַף שִׂמְחָה וָגִיל מִן־הַכַּרְמֶל
non torcularibus in vinum : *jubilabit* non , *ovabit* non vineis in &
וּבַכְּרָמִים לֹא־יְרֻנָּן לֹא יְרֹעָע יַיִן בַּיְקָבִים לֹא־
Moab *ad* mea viscera Ideo .feci cessare *celeusma* ,calcans calcabit
11 יִדְרֹךְ הַדֹּרֵךְ הֵידָד הִשְׁבַּתִּי׃ עַל־כֵּן מֵעַי לְמוֹאָב
,erit Et .chares-Chir super *meum intimum &* ,*tumultuabuntur* *cinyra ut*
12 כַּכִּנּוֹר יֶהֱמוּ וְקִרְבִּי לְקִיר חָרֶשׂ׃ וְהָיָה
, excelsum super Moab laboraverit quòd , apparuerit cùm
כִּי־נִרְאָה כִּי־נִלְאָה מוֹאָב עַל־הַבָּמָה
.poterit non & , *orandum ad* suum sanctuarium in ingredietur &
וּבָא אֶל־מִקְדָּשׁוֹ לְהִתְפַּלֵּל וְלֹא יוּכָל׃
.*tunc* ex Moab ad DOMINUS est locutus quod verbum Hoc
13 זֶה הַדָּבָר אֲשֶׁר דִּבֶּר יְהוָה אֶל־מוֹאָב מֵאָז׃
annis tribus In : dicendo , DOMINUS est locutus nunc Et
14 וְעַתָּה דִּבֶּר יְהוָה לֵאמֹר בְּשָׁלֹשׁ שָׁנִים
omni in Moab gloria *vilipendetur* & , mercenarii annis tanquam
כִּשְׁנֵי שָׂכִיר וְנִקְלָה כְּבוֹד מוֹאָב בְּכֹל
.*copiosum non* , *pusillum* , *parvum residuum* & , *multa turba*
הֶהָמוֹן הָרָב וּשְׁאָר מְעַט מִזְעָר לוֹא כַבִּיר׃

CAP. XVII. יז

acervus erit & , civitas *remota* Dammesec Ecce .Dammesec *Onus*
1 מַשָּׂא דַּמָּשֶׂק הִנֵּה דַמֶּשֶׂק מוּסָר מֵעִיר וְהָיְתָה מְעִי
, erunt gregibus Haroher civitates Derelictæ .ruinæ
2 מַפָּלָה׃ עֲזֻבוֹת עָרֵי עֲרֹעֵר לַעֲדָרִים תִּהְיֶינָה
, Ephraim ab munitio cessabit Et .exterrens non & ,accubabunt &
3 וְרָבְצוּ וְאֵין מַחֲרִיד׃ וְנִשְׁבַּת מִבְצָר מֵאֶפְרַיִם
Israel filiorum gloria sicut : Aram residuo & ,Dammesec à regnum &
וּמַמְלָכָה מִדַּמֶּשֶׂק וּשְׁאָר אֲרָם כִּכְבוֹד בְּנֵי־יִשְׂרָאֵל
illa die in , erit Et .exercituum DOMINUS dixit , erunt
4 יִהְיוּ נְאֻם־יְהוָה צְבָאוֹת׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא
erit Et .macrescet ejus carnis pinguedo & ,Jahacob gloria attenuabitur
5 יִדַּל כְּבוֹד יַעֲקֹב וּמִשְׁמַן בְּשָׂרוֹ יֵרָזֶה׃ וְהָיָה
, metat spicas ejus brachium & , *segetis messem colligere* sicut
כֶּאֱסֹף קָצִיר קָמָה וּזְרֹעוֹ שִׁבֳּלִים יִקְצוֹר
relinquentur Et .Rephaim valle in spicas *legens* sicut erit &
6 וְהָיָה כִּמְלַקֵּט שִׁבֳּלִים בְּעֵמֶק רְפָאִים׃ וְנִשְׁאַר־
capite in granorum trium duorum ,oleæ excussio sicut , racemi eo in
בּוֹ עוֹלֵלֹת כְּנֹקֶף זַיִת שְׁנַיִם שְׁלֹשָׁה גַרְגְּרִים בְּרֹאשׁ
Dominus dixit , frugiferis ejus ramis in quinque , quatuor *verberis*
אָמִיר אַרְבָּעָה חֲמִשָּׁה בִּסְעִפֶיהָ פֹּרִיָּה נְאֻם־יְהוָה
.Israel Deus
אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל׃

Versio VULG. LAT.

8 Quoniam suburbana Hesebon deserta sunt, & vineam Sabama domini gentium exciderunt: flagella ejus usque ad Jazer pervenerunt : erraverunt in deserto, propagines ejus relictæ sunt, transierunt mare.
9 Super hoc plorabo in fletu Jazer vineam Sabama: inebriabo te lachrymâ meâ Hesebon, & Eleale: quoniam super vindemiam tuam, & super messem
10 tuam vox calcantium irruit. Et auferetur lætitia & exultatio de Carmelo, & in vineis non exultabit neque jubilabit : vinum in torculari non calcabit qui calcare consueverat :
11 vocem calcantium abstuli. Super hoc venter meus ad Moab quasi cithara sonabit, & viscera mea ad murum cocti late-
12 ris. Et erit : cùm apparuerit quòd laboravit Moab super excelsis suis, ingredietur ad sancta sua ut obsecret, & non
13 valebit. Hoc verbum, quod locutus est Dominus ad Moab ex
14 tunc : Et nunc locutus est Dominus, dicens ; In tribus annis quasi anni mercenarii, auferetur gloria Moab super omni populo multo, & relinquetur parvus & modicus, nequaquàm multus.

CAP. XVII.

1 ONus Damasci. Ecce Damascus desinet esse civitas, & erit sicut acervus lapidum in
2 ruina. Derelictæ civitates Aroër gregibus erunt, & requiescent ibi, & non erit qui
3 exterreat. Et cessabit adjutorium ab Ephraim, & regnum à Damasco : & reliquiæ Syriæ sicut gloria filiorum Israel erunt : dicit Dñs exercituum.
4 Et erit in die illa : attenuabitur gloria Jacob, & pinguedo
5 carnis ejus marcescet. Et erit sicut congregans in messe quod restiterit, & brachium ejus spicas leget : & erit sicut quærens spicas in valle Ra-
6 phaim. Et relinquetur in eo sicut racemus, & sicut excussio oleæ duarum vel trium olivarum in summitate rami, sive quatuor aut quinque in cacuminibus ejus fructus ejus : dicit Dominus Deus Israel.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

8 Τὰ πεδία Ἐσεβὼν πενθήσει, ἄμπελος Σεβαμά. καταπίνοντες τὰ ἔθνη, καταπατήσατε τὰς ἀμπέλους αὐτῆς, ἕως Ἰαζήρ. οὐ μὴ συνάψητε, πλανήθητε τὴν ἔρημον, οἱ ἀπεσταλμένοι ἐγκατελείφθησαν, διέβησαν (ι)
9 γὰρ πρὸς τὴν θάλασσαν. Διὰ τοῦτο κλαύσομαι ὡς τὸν κλαυθμὸν Ἰαζὴρ ἄμπελον Σεβαμά. τὰ δένδρα σου κατέβαλεν Ἐσεβὼν (κ) καὶ Ἐλεαλή, ὅτι ἐπὶ τῷ θερισμῷ καὶ ἐπὶ τῷ τρυγητῷ σου καταπατήσω, καὶ πάντα πε-
10 σοῦνται. Καὶ ἀρθήσεται εὐφροσύνη καὶ ἀγαλλίαμα ἐκ τῶν (˙)ἀμπελώνων, καὶ ἐν τοῖς ἀμπελῶσί σου οὐ μὴ εὐφρανθήσονται, καὶ οὐ μὴ πατήσουσιν οἶνον εἰς τὰ ὑπολήνια, πέπαυ-
11 ται γάρ. Διὰ τοῦτο ἡ κοιλία μου ἐπὶ Μωὰβ ὡς κιθάρα ἠχήσει, καὶ τὰ ἐντός μου (λ) ὡς
12 τεῖχος ἐνεκαίνισας. Καὶ ἔσται εἰς τὸ ἐντραπῆναί σε, ὅτι ἐκοπίασε Μωὰβ ἐπὶ τοῖς βωμοῖς, καὶ εἰσελεύσεται εἰς τὰ χειροποίητα αὐτῆς, ὥστε προσεύξασθαι, καὶ οὐ μὴ δύνηται
13 ἐξελέσθαι αὐτόν. Τοῦτο τὸ ῥῆμα ὃ ἐλάλησε
14 κύριος ἐπὶ Μωὰβ, ὁπότε (μ) ἐλάλησε. Καὶ νῦν λέγω, Ἐν τρισὶν ἔτεσιν ἐτῶν μισθωτοῦ ἀτιμασθήσεται ἡ δόξα Μωὰβ (ν) παντὶ τῷ πλούτῳ τῷ πολλῷ, καὶ καταλειφθήσεται ὀλιγοστὸς, καὶ οὐκ ἔντιμος.

MS.A. (ι) γὰρ τὴν ἔρημον. (κ) καὶ ἐλάλησεν, Ἐπὶ τῷ(˙) ἀμπελώνων τεῖχος ὃ ἐνεκαίνισας. Καὶ ἔσται ὡς τὸ ἐντραπῆναί σε, ἐκοπίασεν (μ) καὶ ἐλάλησεν. (ν) ἐν παντὶ

Campi Esebon lugebunt : Sebama. Qui absorbetis gen conculcate vites ejus usque zer. Nolite contingere, desertum, qui missi estis. De licti sunt : transierunt mare. Propter hoc plorabo, ploratum Jazer vineam Seba Arbores tuas dejecit E Eleale : quoniam super & super vindemiam tuam culcabo & omnia cadent. tolletur lætitia, & exultatio neis : & in vineis tuis non buntur & non calcabunt torcularibus : nam cessavit. pter hoc venter meus super ab, velut cithara, sonabit : & teriora mea quasi murum sti. Et erit in confusionem am, quia laboravit Moab & ingredietur in manufacta ut deprecetur : & non eximere eum. Hoc verbum locutus est super Moab, locutus est. Et nunc (k) tribus annis annorum narii inhonorabitur gloria omnibus divitiis multis : linquetur paucus, & ratus.

ΚΕΦ. ιζ'. CAP. XVII.

ΤΟ ῬΗΜΑ ΤΟ ΚΑΤΑ ΔΑΜΑΣΚΟΥ.

1 ἸΔοὺ Δαμασκὸς ἀρθήσεται ἀπὸ πόλεων, καὶ
2 ἔσται εἰς πτῶσιν Καταλελειμμένη εἰς τὸν αἰῶνα, εἰς κοίτην ποιμνίων καὶ ἀνάπαυσιν (α), καὶ
3 οὐκ ἔσται ὁ διώκων. Καὶ οὐκέτι ἔσται ὀχυρὰ τοῦ καταφυγεῖν Ἐφραίμ· καὶ οὐκέτι (β) βασιλεία ἐν Δαμασκῷ, καὶ τὸ λοιπὸν τῶν Σύρων (γ). οὐ γὰρ σὺ βελτίων εἶ τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, (δ) τῆς δόξης
4 αὐτῶν. τάδε λέγει κύριος Σαβαώθ. Ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔκλειψις (˙) δόξης Ἰακὼβ,
5 καὶ τὰ (ε) πίονα τῆς δόξης αὐτοῦ σεισθήσεται. Καὶ ἔσται ὃν τρόπον ἐάν τις συναγάγῃ ἀμητὸν ἑστηκότα, καὶ σπέρμα σταχύων (ζ) ἀμήσῃ· καὶ ἔσται ὃν τρόπον ἐάν τις συναγάγῃ στάχυν ἐν
6 φάραγγι στερεᾷ, Καὶ καταλειφθῇ ἐν αὐτῇ καλάμη, ἢ ὡς ῥῶγες ἐλαίας δύο ἢ τρεῖς ἐπ᾽ ἄκρου μετεώρου, ἢ τέσσαρες ἢ πέντε ἐπὶ τῶν κλάδων (η) αὐτῶν καταλειφθῇ. τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραήλ.

MS. A. (α) βουκολίων, καὶ ἐκ (β) ἔσται βασιλεία (γ) ἀπολεῖ τῆς δόξης (˙) τῆς δόξης (ε) πλίονα τῆς δόξης (ζ) ἐν τῷ βραχίο ἀμήσῃ· (η) αὐτοῦ

VERBUM, QUOD TRA DAMASCU

ECce Damascus (a) tolle civitatibus : & erit in Derelicta (b) in seculum le gregum, & requiem, erit persequens : Et non trà munita (c) ad confugien Ephræm : & non ultra regnum Damasco, & reliquum Non enim tu melior es el, gloriâ eorum. Hæc dicit minus Sabaoth; Et erit defectio gloriæ Jacob guia gloriæ ejus concutientur rit, quomodò siquis congreget sem stantem, & semen metat : & erit, quomodo congreget spicam in valle relicta in ea fuerit stipula ut grana olivæ duo, vel summitate excelsa, vel aut quinque super ramos sint relicta. Hæc dicit Deus Israel.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 ארי אתבזיזא משרית חשבון אתקטלא סיעת שבמה מלכי עממיא קטילו שלטוניהון עד
9 יעזר מטו טעו למדברא מטלטליהון גוו עברו ימא : על כן כמא דאיתיתי משרין על
יעזר כן איתי קטולין על שבמא ארוינך דמעתא חשבון ואלעלה ארי על חצדיך ועל
10 קטפיך בוזזין נפלו : ותתכנש ביע וחדוה מן כרמלא ובכרמיא לא ידוצון ולא יחיכון
11 וחמר במעצריא לא יעצרון עצורין עצור אבטלית : על כן מעיהון דמואבאי ככנריא המן
12 ולבהון על אנש כרך תוקפיהון דון : ויהי ארי יחזה ארי ילאה מואב על במתא ויעול
13 לבית טעותיה למבעי ולא יכול : דין פתגמא די מליל יי על מואבאי מבכן : וכען
14 מלל יי למימר בתלת שנין כשני אגירא ויסוף יקרהון דמואבאי בכל המון סגיא ושאר
צבחר כזעיר יסוף כל יקרהון :

יז

1 מטל כס דלוט לאשקאה ית דמשק הא דמשק מתעדיא ממלכו ותהי לכרך מחמרא :
2 שביקן קרויהון חרבו לבית משרי עדרין דען יהון וישרון ולית דמניד : ויבטל שולטן
3 מאפרים ומלכו מדמשק ושאר יחידאין מ רם ויקרהון כיקר בני ישראל יהון אמר יי
4 צבאות : ויהי בעדנא ההיא ימאך יקר יעקב ועותר יקריה יגלי : ויהי כמכנש חצד
5 קמה ודרעיה שובלין יחצוד ויהי כמלקט שובלין במישר גבריא : וישתארון ביה עוללין
6 כביעור זיתא תרין תלתא נרגרין בריש ענפא ארבעה חמשא בסוכא מרדא כן ישתארון
יחידאין צדיקיא בגו עלמא ביני מלכותא אמר יי אלהא דישראל :

PARAPH. CHALD. Versio Latina

Quoniam direpta sunt castra Essebon, interfecta est turba Sebama populorum occiderunt dominatores eorum : usq; ad Jazer perve erraverunt in solitudine, profugi eorum transfretaverunt, transie re. Propterea sicut adduxi *exercitus* contra Jazer, sic adducam oc contra Sebama : inebriabo te lachrymis Essebon & Eleale, quoniam messem tuam & super vindemiam tuam deprædatores irruerunt. hetur lætitia & gaudium de Carmelo ; & in vineis non exulta que ridebunt : vinum in torcularibus non calcabunt calcatores : ci calcationem vini. Propterea viscera Moabitarum quasi cithar bunt, & corda eorum super homines civitatis fortitudinis suæ Et erit cùm viderit quòd laboraverit Moab super excelsa, & ingr domum idololatriæ suæ ut obsecret, & non valebit. Hoc est verbum locutus est Dominus super *Moabitas* ex tunc. Et nunc locutus e nus, dicens : In tribus annis quasi anni mercenarii, & deficiet glo abitarum cum omni turba multa : & relinquetur pusillum modic & finietur omnis gloria eorum.

CAP. XVII.

ONus calicis maledictionis ad propinandum Damasco. Ecce Da definet esse regnum, & erit in civitatem redactam in acervos lapi relictæ civitates eorum *devastabuntur*, in domum mansionis greg um erunt ; et habitabunt ibi, & non erit qui exterreat. Et cessab nium ab Ephraim, & regnum à Damasco, & reliqui singulares ex Sy gloria eorum quasi gloria filiorum Israel erit, dicit Dñs exercituum erit in tempore illo, humiliabitur gloria Jacob, et divitiæ gloriæ migrabuntur. Et erit sicut congregans in messe manipulum, & qu suo spicas metit; & erit sicut colligens spicas in valle gigantum linquentur in eo racemi, sicut excussio olivæ: duo vel tria granula mitate rami, quatuor vel quinque in propagine ejus dispersa quentur solitarii justi in medio seculi inter regna : dicit Dominus D

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܚܩܠܬܐ ܕܚܫܒܘܢ ܚܪܒܘ. ܓܦܬܐ ܕܫܒܡܐ ܀ ܓܢܒܪ̈ܐ ܕܥܡ̈ܡܐ ܦܣܩܘ
ܫܒ̈ܫܝܗ. ܘܥܕܡܐ ܠܝܥܙܝܪ ܡܛܝܘ. ܥܩܪ̈ܝܗ ܕܝܢ ܒܡܕܒܪܐ ܐܬܛܥܝܘ. ܐܬܦܫܛܘ ܘܥܒܪܘ ܝܡܐ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܪܩܕܟܝ ܒܪܩܕܐ ܕܝܥܙܝܪ ܓܦܬܐ ܕܫܒܡܐ. ܐܪܘܝܟܝ ܡܢ ܕܡ̈ܥܝܟܝ 9
ܚܫܒܘܢ ܘܐܠܥܠܐ. ܡܛܠ ܕܥܠ ܚܨܕܟܝ ܘܥܠ ܩܛܘܦܟܝ ܕܝܫܐ ܢܦܠ. * ܘܢܒܛܠ 10
ܚܕܘܬܐ ܘܕܝܨܐ ܡܢ ܟܪܡܠܐ. ܘܒܟܪܡܠܐ ܠܐ ܢܬܒܣܡܘܢ. ܘܠܐ ܢܕܪܘܟ ܚܡܪܐ ܒܡܥܨܪܬܐ. ܘܠܐ ܢܕܘܫ
ܕܝܫܐ. ܡܛܠ ܕܠܕܝܫܐ ܒܛܠܬ. * ܡܛܠܗܢܐ ܟܪܣܝ ܥܠ ܡܘܐܒ. ܐܝܟ ܟܢܪܐ ܢܡܠܠ 11
ܘܡ̈ܥܝ ܥܠ ܫܘܪܐ ܕܡܣܬܚܦ. * ܘܡܐ ܕܚܙܐ ܕܠܐܝ ܡܘܐܒ ܥܠ ܡܕܒܚܐ. ܢܐܬܐ ܠܒܝܬ ܡܩܕܫܗ 12
ܕܢܨܠܐ. ܘܠܐ ܢܫܟܚ. * ܗܢܐ ܦܬܓܡܐ ܡܠܠ ܡܪܝܐ ܥܠ ܡܘܐܒ ܡܢ ܗܝܕܝܢ. * ܘܗܫܐ 13
ܡܠܠ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪ. ܒܬܠܬ ܫܢܝ̈ܢ ܐܝܟ ܫܢ̈ܝ ܐܓܝܪܐ. ܢܬܩܠܠ ܐܝܩܪܗ ܕܡܘܐܒ 14
ܥܠ ܣܘܓܐܐ ܕܥܡܗ. ܘܢܫܬܚܪ ܩܠܝܠ ܙܥܘܪ ܘܠܐ ܣܓܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܙ * ܡܫܩܠܐ ܕܕܪܡܣܘܩ *

1 * ܗܐ ܕܪܡܣܘܩ ܡܬܒܛܠܐ ܡܢ ܩܪܝܬܐ. ܘܬܗܘܐ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܡܦܘܠܬܐ. * ܘܢܗܘܝܢ
2 ܫܒܝܩܢ ܩܘܪ̈ܝܐ ܕܥܕܘܥܝܪ. ܘܢܗܘܝܢ ܠܓܙܪ̈ܐ ܕܢܪܒܥܘܢ ܒܗܝܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܕܡܙܝܥ ܠܗܘܢ.
* ܘܢܒܛܠ ܥܘܫܢܐ ܡܢ ܐܦܪܝܡ. ܘܡܠܟܘܬܐ ܡܢ ܕܪܡܣܘܩ. ܘܫܪܟܐ ܕܐܦܪܝܡ ܐܝܟ 3
ܐܝܩܪܐ ܕܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ ܢܗܘܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ 4
ܢܬܡܟܟ ܐܝܩܪܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܦܛܡܘܬܐ ܕܒܣܪܗ ܬܬܢܦܨ. * ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܗܘ ܕܟܢܫ 5
ܚܨܕܐ ܕܩܐܡ. ܘܕܪܥܗ ܫܒ̈ܠܐ ܚܨܕ. ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܗܘ ܕܡܠܩܛ ܫܒ̈ܠܐ ܒܥܘܡܩܐ
ܕܓܢܒܪ̈ܐ. * ܘܢܫܬܚܪ ܒܗ ܥܘܠܠܬܐ. ܐܝܟ ܢܦܨܬܐ ܕܙܝܬܐ. ܬܪܬܝܢ ܬܠܬ ܙܝܬܝܢ 6
ܒܪܝܫ ܣܘܟܝ̈ܗܘܢ. ܐܪܒܥܐ ܘܚܡܫܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ.

Quoniam agri Heſbonis vaſtati ſunt, vitis 8
Sebmæ propagines gigantes populorum amputarunt, & ad Jaazir uſque pervenerunt : at
radicum ejus in deſerto cùm eſſent obliti,
protenderunt ſeſe ultra mare. Hac de cauſa 9
plangam te planctu Jaazir O vitis Sebmæ,
irrigabo te lachrymis tuis O Heſbon &
Elaala; quia in meſſem tuam & in vindemiam
tuam irruet conculcator : Et ceſſabit gau- 10
dium & exultatio à Charmelo, nec lætabuntur in Charmelo : vinum haud exprimet in
lacu, nec calcabit calcator ; quia calcatorem
abolebo. Iccircò venter meus de Moabo 11
tanquam lyra loquetur, & inteſtina mea de
muro qui deſtruendus eſt. Demum cùm vi- 12
derit Moab ſe fatigatum ſuper altaribus, veniet ad ſanctuarium ut oret, ſed non poterit.
Hujuſmodi ſermonem pronuntiavit Domi- 13
nus contra Moabum inde ab illo tempore :
Nunc autem loquitur Dominus & ait ; Intra 14
tres annos, quales ſunt anni mercenarii,
infamiâ notabitur gloria Moabi cauſâ multitudinis populi ſui, quòd paucus admodum,
non multus ſit manſurus.

CAP. XVII.

Onus Damaſci.

Ecce Damaſcus deſinet eſſe civitas, erítque 1
in vaſtitatem & excidium : Et erunt de- 2
relictæ civitates Adoiris, & inſervientes
gregibus, ut cubent in iis nemine moleſtiam
exhibente. Deficiet robur ab Aphremo, & 3
regnum à Damaſco : & reſidui Aphremi ſicut
gloria filiorum Iſraelis erunt, dicit Dominus
potentiſſimus. Erit etiam in die illa ut at- 4
tenuetur honor Jacobi, & pinguedo carnis
ejus decutiatur. Erítque ſicut is qui ſege- 5
tem adhuc ſtantem colligit, cujus brachium
ſpicas metit & erit ſicut is qui ſpicas legit
in valle Rephaim. Et remanebit in eo 6
(*Aphremo*) racematio quaſi in olea, quâ
excuſſâ duæ vel tres olivæ, aut quatuor vel
quinque *remaneant* in ſummo cacumine
ramorum ejus ; dicit Dominus Deus Iſraelis ;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولان تخاجل حقول حسبون * تحزن كرمة سابامًا * تشربها الامم * دوسوا كرومها الي يعزير ولا 8
تجمعوا * توهوا في البرية ايها المرسلون الذين بقوا * لانهم جازوا البرية * لاجل هذا ابكي 9
مثل بكاء يعزير كرمة سبما * اشجارك ادركها حسبون * فقال ايضا على حصادك وعلى قطافك
سادوس ويسقطون جميعا * وينتزع سرورك وبهجتك من كرومك * وبكرومك لا يسرون * ولا 10
يعصرون خمرا في المعاصر لانهم بادوا * لاجل هذا فوادي على مواب مثل قيثار تلحن 11
واحشاي مثل السور الذي جددته * ويكون هذا اذ تخاجلين وتعبت مواب بالمذابح وتدخل 12
الي صنعة يديها حتى تصلي * فلا تستطيع ان تخلصه * هذه الكلمة التي تكلم الرب بها على 13
مواب وقالها قديما * والان اقول * في ثلاثة سنين سني الاجير * يهان مجد مواب بكل غناها 14
الكثير * ويترك قليلة وليس كريمة *

* الفصل السابع عشر * الوحي الثامن *

* نبوة اشعياء في دمشق *

1 * ها دمشق تنزع من المدن * وتصير للسقطة ومتروكة الي الدهر * مرقدا لقطعان الغنم 2
3 وراحة لاذواد البقر ولا يكون مضطهد * وليست تكون حصينة ليهرب افرايم هناك * وليس تكون
ايضا مملكة في دمشق * وبقية الشاميين تهلك * لانهم لا ينالون كرامة بني اسرايل ومجدهم
4 هكذا يقول رب الجنود * يكون في ذلك اليوم اضمحلال مجد يعقوب * وكثير سروه
5 يتزلزل * ويكون كما يجمع واحد الحصاد القايم ويحصد زرع السنبل * ويكون كما
6 يجمع واحد السنبل في واد شديد ويبقي فيه قصبه * او مثل حب زيتونة * اثنان او
ثلاثة على طرف عال * او اربعة او خمسة تترك على اغصانها * هكذا يقول الرب
اله اسرايل *

Tam quia rubore ſuffundentur arva 8
*Heſbonis, mœrore conficietur vitis Sabamæ, bibent eam gentes. Conculcate vites
ejus ad Jaazir uſque, & ne colligite eas.
Vagamini per deſertum O miſſi qui ſuperſtites eſtis, quia prætergreſſi ſunt deſertum. Hac de re plango ut planctu Ja-* 9
aziris vitim Sabamæ : arbores tuas apprehendit Heſbon, dixitque præterea, Meſſem tuam & vindemiam tuam conculcabo ita ut ſimul decidant. Et auferetur 10
*gaudium tuum & lætitia tua à vineis
tuis, ita ut vineis tuis minimè fruantur, nec vinum exprimant in lacubus,
eò quòd perierint. Hanc ob rem præcor-* 11
*dia mea, cauſâ Moabi, ſunt veluti cithara canens, & viſcera mea veluti
murus quem reſtaurâſti. Contingent et-* 12
iam hoc, ut cùm pudefactus & fatigatus fueris Moab in altaribus, & ingreſſus ad opus manuum tuarum ut deprecêris, nequeat liberare te. Hoc eſt ver- 13
*bum quod locutus eſt Dominus de Moabo,
quódque olim prædixit : Jam verò dico,* 14
Intra tres annos, eoſque quidem *annos
mercenarii, vileſcet gloria Moabi cum
univerſa copia divitiarum ejus, quæ
paucæ nec pretioſæ relinquentur.*

CAPUT XVII.

Revelatio octava.

Prophetia Eſaiæ de Damaſco. Ecce 1
*janè Damaſcus demetur ex urbibus, eritque in ruinam, & perpetuò derelicta,
Cubile gregibus ovium, & ſtatio armen-* 2
tis boum, nemine abigente. Non erit 3
*munita ut eò confugiat Aphrem, nec erit
ampliùs regnum in Damaſco, & reſiduum Damaſcenorum peribit ; non enim
aſſequentur honorem & gloriam filiorum Iſraelis : ſic dicit Dominus exercituum. Evaneſcet eo die gloria Jacob :* 4
& multitudo nobilitatis ejus concutietur : Et erit perinde ac ſiquis ſegetem 5
*ſtantem colligeret, aut ſpicarum ſemen
demeteret : eritque perinde ac ſiquis colligeret ſpicas in dura valle, in qua calami* tantùm *remanerent : Aut veluti bac-* 6
*cæ oleæ, duæ vel tres in aliquo ſummo
faſtigio, aut quatuor vel quinque in ramis
ejus relictæ : ſic dicit Dominus Deus
Iſraelis.*

ישעיה : יח

ad ejus oculi &,suū factorem ad homo aspiciet illa die In
7 ביום ההוא ישעה האדם על־עשהו ועיניו אל־
altaria ad aspiciet non Et .respicient Israel Sanctum
8 קדוש ישראל תראינה׃ ולא ישעה אל־המזבחות
,respiciet non ejus digiti fecerunt quod & ,ej⁹ manuum opus
מעשה ידיו ואשר עשו אצבעתיו לא יראה
ej⁹ fortitudinis civitates erunt illa die In .loca aprica & ,Lucos &
9 והאשרים והחמנים׃ ביום ההוא יהיו ערי מעוזו
filiorū faciebus à dereliquerunt quæ ,verberis & ,virgulti derelictio sicut
כעזובת החרש והאמיר אשר עזבו מפני בני
petræ & ,tuæ salutis Dei es oblita Quia .desolatio erit & ,Israel
10 ישראל והיתה שממה׃ כי שכחת אלהי ישעך וצור
plantationes plantabis propterea : es recordata non ,tuæ fortitudinis
מעוזך לא זכרת על־כן תטעי נטעי
tuam plantationem die In .illud seminabis alieni putamen & ,jucundas
11 נעמנים וזמרת זר תזרענו׃ ביום נטעך
messis acervus : facies germinare tuum semen mane in & ,facies crescere
תשגשגי ובבקר זרעך תפריחי נד קציר
,multorū populorū turbæ Væ .desperati doloris & ,hæreditatis die in
12 ביום נחלה וכאב אנוש׃ הוי המון עמים רבים
aquarum sonitus ut nationum sonitus & tumultuabuntur maria tumultuari ut
כהמות ימים יהמיון ושאון לאמים כשאון מים
multarum aquarum sonitus sicut Populi .sonabunt crebrarum
13 כבירים ישאון׃ לאמים כשאון מים רבים
passus persecutionem & ,longè à fugiet & ,eum in increpabit & ,sonabunt
ישאון וגער בו ונס ממרחק ורדף
.turbinis facies ad globus & ,venti facies ad montium gluma sicut
כמץ הרים לפני־רוח וכגלגל לפני סופה׃
hæc ,ipsa non mane antequam ,turbatio ecce & vesperæ tempore In
14 לעת ערב והנה בלהה בטרם בקר איננו זה
.nos diripientium sors & ,nos prædantium pars
חלק שוסינו וגורל לבוזינו׃

CAP. XVIII. יח

.Ægypti flumina trans quæ alarum umbræ terra Væ
1 הוי ארץ צלצל כנפים אשר מעבר לנהרי־כוש׃
.aquarum facies super junci vasis in & ,legatos mare per Mittens
2 השלח בים צירים ובכלי־גמא על־פני־מים
populum ad ,expilatam & tractam gentem ad leves nuncii Ite
לכו מלאכים קלים אל־גוי ממשך ומורט אל־עם
cujus ,conculcationis & ,lineæ lineæ gentem ;ultra & ,ipso ex terribilē
נורא מן־הוא והלאה גוי קו־קו ומבוסה אשר־
,terræ incolæ & ,orbis habitatores Omnes .ejus terrā flumina diripuerūt
3 בזאו נהרים ארצו׃ כל־ישבי תבל ושכני ארץ
.audietis tubam clangendo in &,videbitis montib⁹ vexillū extollere secundum
כנשא־נס הרים תראו וכתקע שופר תשמעו׃
considerabo & ,Quiescam : me ad DOMINUS dixit sic Quia
4 כי כה אמר יהוה אלי אשקוטה ואביטה
æstu in rorida nubes sicut ,lucem super nitidus calor sicut,meo parato loco in
במכוני כחם צח עלי־אור כעב טל בחם
uva acerba & ,gemmam consummare juxta ,messem ante Nam .messis
5 קציר׃ כי־לפני קציר כתם־פרח ובסר
& ,falcibus in malleolos præcidat & ,flos erit maturescens
גמל יהיה נצה וכרת הזלזלים במזמרות ואת־
.amputet ,auferat propagines
הנטישות הסיר התז׃

Versio VULG. LAT.

7 In die illa inclinabitur homo ad Factorem suum, & oculi ejus ad Sanctum Israel respicient : 8 Et non inclinabitur ad altaria, quæ fecerunt manus ejus : & quæ operati sunt digiti ejus non respiciet, lucos & delubra. 9 In die illa, erunt civitates fortitudinis ej⁹ derelictæ sicut aratra, & segetes quæ derelictæ sunt à facie filiorum Israel, & eris deserta. 10 Quia oblita es Dei Salvatoris tui, et fortis adjutoris tui non es recordata: propterea plantabis plantationem fidelem, et germen 11 alienū seminabis. In die plantationis tuæ labrusca, et manè semen tuum florebit: ablata est messis in die hæreditatis, et dolebit graviter. 12 Væ multitudini populorum multorum, ut multitudo maris sonantis : et tumultus turbarum, sicut sonitus aquarum multarum. 13 Sonabunt populi sicut sonit⁹ aquarum inundantium, & increpabit eum, & fugiet procul : & rapietur sicut pulvis montium à facie venti, & sicut turbo coram tempestate. 14 In tempore vespere, & ecce turbatio : in matutino, & non subsistet. Hæc est pars eorum qui vastaverunt nos, & sors diripientium nos.

CAP. XVIII.

1 VÆ terræ cymbalo alarum, quæ est trans flumina Æthiopiæ, 2 Qui mittit in mare legatos, & in vasis papyri super aquas. Ite angeli veloces ad gentem convulsam, et dilaceratā; ad populum terribilem, post quem non est alius; ad gentem expectantem & conculcatam, cujus diripuerunt flumina terram ejus. 3 Omnes habitatores orbis, qui moramini in terra, cùm elevatum fuerit signum in montibus, videbitis, & clangorem tubæ audietis: 4 Quia hæc dicit Domin⁹ ad me; Quiescam, & considerabo in loco meo, sicut meridiana lux clara est, & sicut nubes roris in die messis. 5 Ante messem enim totus effloruit, & immatura perfectio germinabit, & præcidentur ramusculi ejus falcibus: & quæ derelicta fuerint, abscindentur, et excutientur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

7 Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ πεποιθὼς ἔσται (θ) ὁ ἄνθρωπος ἐπὶ τῷ ποιήσαντι αὐτὸν, οἱ δὲ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ εἰς τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ ἐμβλέψονται, 8 Καὶ οὐ μὴ πεποιθότες ὦσιν ἐπὶ τοῖς βωμοῖς, οὐδὲ ἐπὶ τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν αὐτῶν, ἃ ἐποίησαν οἱ δάκτυλοι αὐτῶν, καὶ οὐκ ὄψονται (ι) τὰ δένδρα, οὐδὲ τὰ βδελύγματα αὐτῶν. 9 Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσονται αἱ πόλεις σου ἐγκαταλελειμμέναι, ὃν τρόπον (κ) κατέλιπον οἱ Ἀμοῤῥαῖοι καὶ οἱ Εὐαῖοι ἀπὸ προσώπου τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ· καὶ ἔσονται ἔρημοι, 10 Διότι (λ) κατέλιπες τὸν θεὸν τὸν σωτῆρά σου, καὶ κυρίου τοῦ βοηθοῦ σου οὐκ ἐμνήσθης· διὰ τοῦτο φυτεύσεις φύτευμα 11 ἄπιστον, καὶ σπέρμα ἄπιστον. (μ) Τῇ ἡμέρᾳ ᾗ ἂν φυτεύσῃς, πλανηθήσῃ. τὸ δὲ πρωῒ ἐὰν (ν) σπείρῃς, ἀνθήσει εἰς ἀμητὸν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ κληρώσῃ, καὶ (ξ) ὡς πατὴρ ἀνθρώ-12 που κληρώσῃ τοῖς (ο) υἱοῖς σου. Οὐαὶ πλῆθος ἐθνῶν πολλῶν· ὡς θάλασσα κυμαίνουσα, (π) οὕτω ταραχθήσεσθε· καὶ νῶτος 13 ἐθνῶν πολλῶν, ὡς ὕδωρ ἠχήσει. Ὡς ὕδωρ πολὺ ἔθνη πολλὰ, ὡς ὕδατος πολλοῦ βίᾳ (ρ) φερομένου. καὶ ἀποσκορακιεῖ αὐτὸν, καὶ πόῤῥω αὐτὸν διώξεται, ὡς (σ) χνοῦν ἀχύρου λικμώντων ἀπέναντι ἀνέμου, καὶ ὡς κονιορ-14 τὸν τροχοῦ καταιγὶς φέρουσα. Πρὸς ἑσπέραν (τ) καὶ ἔσται πένθος, πρὶν ἢ πρωῒ, καὶ οὐκ ἔσται. αὕτη ἡ μερὶς τῶν (υ) προνομευσάντων ὑμᾶς, καὶ κληρονομία τοῖς ὑμᾶς κληρονομήσασιν.

MS.A. (θ) ἄνθρωπος (ι) τὰ ἄλση αὐτῶν, οὐδὲ τὰ (κ) ἐγκατέλειπον (λ) ἐγκατέλειπες (μ) Τῇ δὲ ἡμέρᾳ (ν) φυτεύσῃς, (ξ) ὥσπερ πατὴρ οἷς. Οὐαὶ πλῆθος (π) οὕτως (ρ) καταφερομένου. (σ) χνοῦν (τ) ἔσται πένθος, (υ) ὑμᾶς προνομευσάντων, καὶ κληρονομία τῶν ὑμᾶς κληρονομησάντων.

Die illâ fidens erit homo
qui fecit eum: oculi autem
in Sanctum Israel intueb
Et non erunt fidentes in
in operibus manuum suarum
fecerunt digiti ipsorum: & non
aspicient arbores, neque
nationes eorum. Die illâ
runt civitates tuæ derelictæ
sicut dereliquerunt (d) Amo-
rhæi, & Evæi à facie filiorum
Israel: & erunt desertæ. Quia
dereliquisti Deum Salvatorem
um, & Domini adjutoris tui non
es recordata. Ideo plantabis
tationem infidelem, & semen
fidele: Quâcunque die pl
veris, errabis. Manè autem
seminaveris; florebit in m
quâcunque die hæreditaveris
tanquàm pater hominis hæredi
tem distribues filiis tuis.
multitudo gentium multarum
tanquā mare fluctuans, sic tur
bimini: & dorsum gentium mul
tarum, tanquàm aqua, son
Tanquàm aqua multa, gentes
multæ, quasi aqua multa
impulsa. Et (e) exterminabit e-
um, & longe eum persequetur
tanquàm pulverem paleæ ven-
tilantium coram vento, & sicut
pulverem rotæ (g) tempestas
pellens. Ad vesperam (h) e-
rit luctus, tanquàm mane: &
non erit. Hæc est pars eorum
deprædati sunt vos, & hæredi
iis qui hæreditaverunt vos.

ΚΕΦ. ιη'.

1 ΟΥαὶ γῆς πλοίων πτέρυγες, ἐπέκεινα 2 ποταμῶν Αἰθιοπίας· Ὁ ἀποστέλλων ἐν θαλάσσῃ ὅμηρα, καὶ ἐπιστολὰς βιβλίνας ἐπάνω τοῦ ὕδατος· πορεύσονται γὰρ ἄγγελοι κοῦφοι πρὸς ἔθνος μετέωρον, καὶ ξένον λαὸν καὶ χαλεπόν. (α) τίς αὐτοῦ ἐπέκεινα; ἔθνος ἀνέλπιστον καὶ (β) καταπεπατημένον. νῦν οἱ 3 ποταμοὶ τῆς γῆς πάντες, Ὡς χώρα κατοικουμένη κατοικηθήσεται ἡ χώρα αὐτῶν ὡσεὶ σημεῖον ἀπὸ ὄρους ἀρθῇ, ὡς σάλπιγγος φωνὴ 4 ἀκουστὸν ἔσται. (γ) Διότι οὕτως (δ) εἶπε κύριός μοι, Ἀσφάλεια ἔσται ἐν τῇ ἐμῇ πόλει, ὡς φῶς καύματος μεσημβρίας, καὶ ὡς νεφέ-5 λη δρόσου ἡμέρας ἀμητοῦ ἔσται Πρὸ τοῦ θερισμοῦ, ὅταν συντελεσθῇ ἄνθος, καὶ ὄμφαξ (ε) ἐξανθήσῃ ἄνθος ὀμφακίζουσα· καὶ ἀφελεῖ τὰ βοτρύδια τὰ μικρὰ τοῖς δρεπάνοις, καὶ τὰς κληματίδας ἀφελεῖ, καὶ (ζ) ἀποκόψει,

MS.A. (α) τί (β) κατεπατημένον νῦν. Νῦν (γ) Ὅτι (δ) εἶπεν κύριος, (ε) ἀνθήσῃ (ζ) κατακόψει.

CAP. XVIII.
VÆ terræ (a) navium alæ
trans flumina Æthiopiæ: Qui
mittit in mare obsides, & epi
las biblinas super aquam: ibunt
enim nuntii leves ad gentem
celsam, & peregrinum popu
& pessimum. (c) Quis ultra il
lum? Gens absque spe, & concul
cata. Nunc flumina terræ om
Tanquàm regio habitata, habita
bitur regio eorum. Quasi sig
de monte levabitur: quasi
vox, audibile erit. Quia sic
Dominus mihi; Securitas
civitate mea, sicut lux æs
meridie, & sicut nubes ro
die messis erit. Ante messem
do consummatus fuerit flos, & u
va immatura efflorescens
rè florem germinans; & au
racemulos parvos falcibus, &
menta auferet, & abscindet.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 בעדנא ההיא יסתמיך אנשא לפולחן עבדיה ועינוהי למימר קדישא דישראל יסברון׃
8 ולא יסתמיך על אגוריא עובד ידוהי ודאתקנא אצבעתיה לא יתקים ואשריא וחניסניא׃
9 בעדנא ההיא יהוין קרוי תוקפיהון כקרך דחריב ואתחמר די אשתבק מן קדם בני
10 ישראל ותהי לצדו׃ ארי שבקת אלהא דפורקניך ודחלת תקיפא די מימריה בסעדיך
11 לא אדכרת בדיל דאת נציבא נצבא בחירא ועובדין מקלקלין אסגית׃ באתר
דאתקדשתון למהוי עם תמן קלקלתון עובדיכון ואף כד עלתון לארע בית שכנתי תמן
הוה חזי לכון למפלח שבקתון פולחני ופלחתון לטעותא ארחיקתון תיובתא עד דמטא
12 יום תברכון בכן הוה כיבכון למפחת נפש׃ וי המון עממין סגיאין די כמהמי ימא המן
13 ואתרגושת מלכון דכאתרגושת מיין תקיפין מתרגשין׃ מלכון דכאתרגושת מיין סגיאין
מתרגשין ויזוף ביה ויעריק מרחיק ויתרדף כמוץ טוריא קדם רוחא וכגלגלא קדם
14 עלעולא׃ לעדן רמשא והא כדלא הוה עד דלא צפרא והא כדליתוהי דין חולק
לאנסנא ועדב לבוזנא׃

יח

1 וי ארעא דאתן לה בספינן מארע רחיקא וקלעיהון פריסן כנשרא דטאס בכנפוהי
2 דמעבר לנהרי הודו׃ דמשלח בימא אזגדין ובדגוגין על אפי מיא אזילו אזגדין קלילין
לות עמא אניסא ובזיזא לות עמא דתקיף מבכן ולהלא עמא אניסא ובזיזא דבזו עממיא
3 ארעיה׃ כל דיתבין בתבל ודשרן בארעא כמזקף אתא על טוריא תחזון אתא וכמתקע
4 שופרא תשמעון פורקן׃ ארי כדנן אמר יי לי אניח לעמי ישראל ואשקיט להון ואתרעי
מדור קודשי לאוטבא להון ברכן ונחמן איתי להון בפריע כשחין פצח על שמש כענן
5 טל בשחין חצד׃ ארי עד לא ימטי זמן חצדא אלנא לאפרחא ובסרא מניה סמדר ויקטול
שלטוני עממיא בחרבא וית תקיפיהון יעדי ויעבר׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

In tempore illo innitetur homo cultui factoris sui, & oculi ejus in ver
sancti Israel sperabunt. Et non innitetur altaribus operi manuum sua
& quæ paraverant digiti ejus, non stabunt luci neque delubra. In tempo-
re illo erunt civitates fortitudinis eorum, sicut urbs quæ deserta est,
dacta in acervos lapidum, quæ derelicta est à facie filiorum Israel:
in desolationem. Quia dereliquisti Deum salvatorem tuum: & terri
& fortis, cujus Verbum est in adjutorium tuum, non es recordata:
plantata es plantatione electa, & opera corrupta multiplicasti. Post
sanctificati estis ut essetis populus, ibi corrupistis opera vestra: &
per postquam ingressi estis in terram domus majestatis meæ, ubi
servire mihi, reliquistis obsequium meum; & servistis idolis, &
estis pœnitentiam. Antequam perveniret dies interitus vestri,
dolor vester in exhalationem animæ. Væ turbæ populorum multa
qui, sicut sonat mare, sonabunt: & tumultus regnorum, sicut sonitus aqua
rum fortium, sonabunt. Regna quæ quasi sonitus aquarum multarum
multuabuntur, *increpabit* ea, & fugient procul, & rapientur sicut
montium ante ventum; & sicut rota coram turbine. In tempore vespe
& ecce quasi non sit; antequam sit manè, *& ecce* quasi non sit. Hæc
pars vim facientium nobis, & sors diripientium nos.

CAP. XVIII.

VÆ terræ ad quam veniunt in navibus de terra longinqua, & vela earum
extensa sunt, quasi aquila quæ volat alis suis, quæ est trans flumina Æthi-
opiæ. Quæ mittit in mari nuncios, & in trieribus super faciem aquarum
Ite nuncii veloces ad populum vim patientem & direptum, ad popu
qui jam olim ac deinceps potens fuit, populum oppressum & direptum
cujus terram diripuerunt populi. Omnes habitatores orbis, & qui mora
tur in terra cùm elevatum fuerit signum super montes, videbitis signum
& cùm clanxerit tuba, audietis redemptionem. Quia hæc dicit Dominus
mihi, Requiescere faciam populum meum Israel: quiescere faciam eos
complacebit mihi in habitaculo sancto meo, ut benefaciam eis: bene
ctiones & consolationes adducam eis citò, sicut calor æstuans Sole
nubes roris in calore messis. Quoniam antequam perveniat tempus
ut arbor floreat, & uva acerba ex ea erumpat in florem; & occ
cipes populorum gladio, & robustos eorum auferet & transfert.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

7 * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ܂ ܢܬܬܟܠ ܐܢܫ ܥܠ ܥܒܘܕܗ܂ ܘܥܝܢܘܗܝ ܢܚܘܪܢ ܠܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܝܠ܂
8 * ܘܠܐ ܢܬܬܟܠ ܥܠ ܡܕܒܚܐ ܕܥܒܕ ܐܝܕܘܗܝ ܘܥܒܕܝ ܨܒܥܬܗ܂ ܘܠܐ ܢܚܘܪ ܠܦܬܟܪܐ ܘܠܣܓܕܬܐ܂
9 * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ܂ ܢܗܘܝܢ ܩܘܪܝܐ ܕܥܘܫܢܗ܂ ܐܝܟ ܓܘܒܐ ܕܚܪܫ܂ ܘܫܒܝܩܐ ܐܫܬܡܥܬ
ܡܢ ܩܕܡ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܘܬܗܘܝܢ ܠܚܒܠܐ܂ * ܡܛܠ ܕܛܥܝܬܝ ܠܐܠܗܐ ܦܪܘܩܟܝ܂ ܘܠܬܩܝܦܐ 10
ܡܥܕܪܢܟܝ ܠܐ ܐܬܕܟܪܬܝ܂ ܡܛܠ ܗܢܐ ܬܢܨܒܝܢ ܢܨܒܐ ܫܦܝܪܐ܂ ܫܒܫܒܐ ܢܘܟܪܝܐ ܬܙܪܥܝܢܗ܂
11 * ܒܝܘܡܐ ܕܬܢܨܒܝܢܗ܂ ܢܦܘܩ ܗܘܒܗ܂ ܘܒܨܦܪܐ ܙܪܥܟܝ ܬܦܪܥܝܢ܂ ܐܝܟ ܢܝܪܐ ܕܩܛܦܐ
ܒܝܘܡܐ ܙܥܘܪܐ܂ ܘܐܝܟ ܟܐܒܐ ܕܒܪܢܫܐ܂ * ܘܝ ܠܚܝܠܐ ܕܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ܂ ܕܩܠܗܘܢ ܐܝܟ 12
ܩܠܐ ܕܝܡܡܐ܂ ܘܪܓܘܫܝܐ ܕܥܡܡܐ܂ ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܡܝܐ ܣܓܝܐܐ܂ * ܢܟܐܐ ܒܗ܂ ܘܢܥܪܘܩ 13
ܠܡܪܚܩܐ܂ ܘܢܪܗܛ ܐܝܟ ܐܒܩܐ ܕܛܘܪܐ ܩܕܡ ܪܘܚܐ܂ ܘܐܝܟ ܓܠܐ ܩܕܡ ܥܠܥܠܐ ܒܥܕܢ
ܪܡܫܐ܂ * ܘܗܐ ܚܛܘܦܝܐ ܥܕܠܐ ܗܘܐ ܨܦܪܐ܂ ܘܠܐ ܢܩܘܐ܂ ܗܢܘ ܦܠܓܐ ܕܕܝܫܝܢ ܠܢ ܘܡܢܬܐ 14
ܕܒܙܘ ܠܢ܂

*ܩܦܠܐܘܢ * ܝܚ *

1 * ܘܝ ܠܐܪܥܐ ܕܛܠܠ ܓܦܐ܂ ܕܡܢ ܥܒܪܐ ܠܢܗܪܘܬܐ ܕܟܘܫ܂ ܕܡܫܕܪ ܡܠܐܟܐ ܒܝܡܐ 2
ܘܒܡܐܢܐ ܕܓܡܐ ܥܠ ܐܦܝ ܡܝܐ܂ ܙܠܘ ܐܝܙܓܕܐ ܩܠܝܠܐ ܠܘܬ ܥܡܐ ܕܡܬܚܫܠ
ܘܡܬܡܪܛ܂ ܠܘܬ ܥܡܐ ܕܚܝܠܗ ܪܚܝܩ ܡܢܗ ܘܠܗܠ܂ ܥܡܐ ܕܡܬܒܙܙ ܘܕܫ܂ ܕܒܙܘ ܢܗܪܘܬܐ
ܐܪܥܗ܂ * ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܘܗܝ ܕܬܒܝܠ ܕܝܬܒܝܢ ܒܐܪܥܐ܂ ܡܐ ܕܡܬܬܪܝܡ ܐܬܐ ܒܛܘܪܐ 3
ܬܚܙܘܢ܂ ܘܡܐ ܕܡܬܬܩܥ ܩܪܢܐ ܬܫܡܥܘܢ܂ * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ܂ ܐܫܠܐ ܘܐܣܬܟܠ ܒܡܛܝܒܘܬܝ 4
ܐܝܟ ܫܘܒܐ ܕܚܡܝܡܐ ܥܠ ܢܗܪܐ܂ ܘܐܝܟ ܥܢܢܐ ܕܛܠܐ ܒܝܘܡܐ ܕܚܨܕܐ܂ * ܡܛܠ ܕܩܕܡ 5
ܚܨܕܐ܂ ܓܡܪ ܦܪܥܐ܂ ܘܗܘܐ ܢܨܨܐ܂ ܘܡܐ ܕܗܘܘ ܣܘܟܐ܂ ܢܩܛܘܦ ܫܒܫܐ ܒܡܓܠܐ܂
ܘܫܒܫܐ ܕܥܒܪܝܢ ܢܦܣܩ܂

Eodem illo die confidet homo conditori ſuo, & oculi ejus reſpicient ad Sanctum Iſraelis: 7 Non autem confidet aris quas fecerunt manus ſuæ, & digiti ſui compoſuerunt, neque reſpiciet ad idola & numina. 8 Tempore illo civitates munitionis ejus evadent tanquam ciſterna Heres quæ derelicta eſſe fertur à conſpectu filiorum Iſraelis: tandem in corruptionem redigêris. 9 Quandoquidem oblita es Dei Salvatoris tui, & Potentiſſimi roboratoris tui haud meminiſti; propterea plantam decoram plantabis, feres eam palmitibus alienis: 10 Die quo plantabis eam, prodibit flos ejus, manè ſemen tuum germinare facies; velut jugum vindemiæ in die brevi, & ſicut dolor hominis. 11 Heu, exercitus populorum multorum quorum ſtrepitus procedit quaſi ſtrepitus marium, & tumultus gentium tanquam fremitus aquarum multarum. 12 Increpet eum, & fugiat procul, curràtque ſicut pulviſculus montium coram vento, & ut feſtuca coram turbine tempore veſpertino. 13 Et ecce abreptio (*i. rapiatur*) antequam ſit aurora, nec diu maneat. Talis eſto portio conculcantis nos, & pars diripientis nos. 14

CAP. XVIII.

VÆ terræ umbræ alarum, quæ eſt trans flumina Cus, 1 Mittenti legatos per mare, & in vaſis junceis ſuper faciem aquarum. Abierunt nuntii celeres ad populum intortum & evulſum: ad populum à quo robur longè diſſitum eſt, populum fœdum & conculcatum, cujus terram flumina diripuerunt. 2 Omnes habitatores orbis qui in terra commoramini, cùm portaverint montes vexillũ, videbitis, & cùm ſonuerit buccina, audietis. 3 Sic enim ait mihi Dñs, Silentium indicito, & conſidera præparationẽ meam (*i. opus ad quod ſum paratus*) ſimilem ardori ferventi ſecus flumen, & ſimilem nubi roris in die meſſis. 4 Nam ante meſſẽ perfecit gemmam, & florem ablactavit; & cùm aderint frondes, luxuriantes falce ſecabit; & palmites tranſiens decutiet. 5

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

7 * في ذلك اليوم يصير الانسان متوكلا على خالقه وعيناه لقدوس اسرائيل تنظران* ولا يصيرون 8
متوكلين على المذابح* ولا على اعمال ايديهم التي صنعتها اصابعهم لكن يصيرون متوكلين
على الرب قدوس اسرائيل* ولا ينظرون الى اصنامهم ولا رذائلهم* في ذلك اليوم تصير المدن 9
المتروكة مثل التي تركها الاموريون والموابيون من وجه بني اسرائيل* وتصير خرابا* من 10
اجل انك تركت الاله مخلصك ولم تذكري الرب معينك* لاجل هذا تغرسين غرسا غير مومن
وزرعا كافرا* في اليوم الذي تغرسين فيه تضلين* اذ زرعت بالغداة يزهر للحصاد في اي 11
يوم ترثيه مثل اب انسان يورث لبنيه* ويل كثرة امم كثيرين مثل بحر مموج* لان هكذا 12
تساقون* وصهيل امم كثيرين مثل ماء يدوي* مثل ماء كثير* امم كثيرين مثل عسف ماء 13
كثير متسلط* يقصيه وبعيدا يطرده مثل تراب التبن المغربل امام الريح* ومثل غبار البكر
تحمله العاصف عند المساء* ويكون حزن قبل الغداة* ولا يكون بعد* هذا نصيب الذين 14
نهبوكم* وميراث الذين ورثوكم* الفصل الثامن عشر* الاصحاح التاسع*

* نبوة اشعياء في ملك الحبشة الذي استعان به بنو اسرائيل وخرج ليعينهم*

1 ويل اجنحة سفن الارض الى ابعد انهار الحبشة* المرسل في البحر رهاين ورسايل مكتوبة على 2
وجه الماء* لانهم يخبرون خفيفون يمضون الى امة عالية وشعب غريب وردي من ابعد منك
امة غير مرجوة ومداسة* الان جميع انهار هذه الارض مثل كون مسكونة تسكن* كونها 3
مثل علامة من جبل ترفع* مثل صوت بوق يكون مسموعا* لان هكذا قال لي الرب* استيناف 4
يكون في مدينتي* ومثل ضوء حر وسط النهار* ومثل سحابة ندا يوم القطاف* تكون 5
قبل الحصاد* عندما تنتهي زهرة وحصرمه تزهر زهرة تحصرم* ويقص العناقيد الصغار
بالمناجل* ويقص الاغصان ويقطعها*

In illo die collocabit homo fiduciam ſuam in creatore ſuo, & oculi ejus Sanctum Iſraelis intuebuntur: 7 *Non autem collocabunt ſpem ſuam in altaribus, neq; in operibus manuum ſuarum, quæ fecerunt digiti eorum; ſed collocabunt ſpem ſuam in Domino ſancto Iſraelis, & non ſpectabunt idola ſua nec abominationes ſuas.* 8 *In illo die fient urbes quæ derelictæ ſunt, velut illæ quas dereliquerunt Amoræi & Moabitæ à conſpectu filiorum Iſraelis, fient inquam dirutæ.* 9 *Eò quòd dereliqueris Deum ſervatorem tuum, nec memineris Domini adjutoris tui: idcirco plantabis plantas infideles & ſemen impium.* 10 *Quocunque die plantaveris, errabis: cùm ſeminaveris, manè floreſcet ad meſſem, quocunq; die hæreditate poſſederis illud, ut pater aliquis hæreditatem relinquens filiis ſuis.* 11 *Calamitas multitudinis gentium multarum, ceu mare procelloſum* erit: *etenim hoc pacto abducemini: & vociferatio multarum gentium ſimilis* erit *aquæ frementi, ſimilis aquæ multæ:* 12 *Multæ gentes ut perniciosa multarum aquarum inundatio. Amovebit eam, & procul expellet eam ut pulviſculum paleæ coram vento cribratæ, & quaſi pulverem rotæ turbine abreptum ſub tempus veſpertinum.* 13 *Erit autem triſtitia ante matutinum, & non erit deinceps. Hec eſt ſors eorum qui diripuerunt vos, & hereditas eorum qui facti ſunt hæredes veſtri.* 14

Textus nonus.

CAP. XVIII.

Prophetia Eſaiæ de rege Æthiopiæ, qui opem ſuam implorantibus Iſraelis, egreſſus eſt ut opem ferret eis.

VÆ alis navium terræ ad remotiſſima Æthiopiæ flumina: 1 *Mittenti arrhabas per mare, & ſuper aquæ ſuperficiem epiſtolas ſcriptas. Quia ſunt nuntii veloces, eunt ad gentem ſublimem, populum extraneum & malignum, à te remotiſſimum, gentem inſperandam & conculcatam.* 2 *In ſumma, omnia hujus terræ flumina ut regio habitata habitantur, regio iſta ſimilis eſt vexillo quod attollitur è monte, ſimilis ſono buccinæ qui auditur.* 3 *Nam ita mihi dixit Dominus, Securitas erit in urbe mea: & perinde ac lux caloris in ipſo meridie, & perinde ac nubes roris die vindemiæ,* 4 *Quæ accidit ante meſſem, inſtante jam tempore floris & omphacis producentis florem in uvas agreſtes coaleſcentem, ita vos botros falcibus amputabit, & ſecabit excindetque ramos.* 5

ישעיה : יח

æſtivabit & , terræ *animali* & ,montium *volucri* ſimul Relinquentur
6 יעזבו יחדו לעיט הרים ולבהמת הארץ וקץ
tempore In .hyemabit ea ſuper terræ beſtia omnis & ,*volucris* ea ſuper
7 עליו העיט וכל־בהמת הארץ עליו תחרף׃ בעת
,depilati & tracti populi exercituum Domino munus deferetur illo
ההיא יובל־שי ליהוה צבאות עם ממשך ומורט
,*conculcationis* & ,*lineæ lineæ* gente ,ultrà & ,*ipſo ab* terribili populo à &
ומעם נורא מן־הוא והלאה גוי קו־קו ומבוסה
Domini nominis locum ad ,*ejus* terram flumina diripuerunt cujus
אשר בזאו נהרים ארצו אל־מקום שם־יהוה
.Sijon montem ,exercituum
צבאות הר־ציון׃

CAP. XIX. יט

,levem nubem ſuper equitans Dominus Ecce .Ægypti Onus
1 משא מצרים הנה יהוה רכב על־עב קל
,ejus *faciebus* à Ægypti *vana* ſe movebunt & ,Ægyptum ingredietur &
ובא מצרים ונעו אלילי מצרים מפניו
Ægyptum confundam Et .ejus *interiori* in liquefiet Ægypti cor &
2 ולבב מצרים ימס בקרבו׃ וסכסכתי מצרים
,ſuum *ſocium* in vir & ,ſuum fratrem in vir pugnabunt & ,Ægypto cum
במצרים ונלחמו איש־באחיו ואיש ברעהו
ſpiritus evacuabitur Et .regnum in regnum ,civitatem in civitas
3 עיר בעיר ממלכה בממלכה׃ ונבקה רוח־
ad quærent & ,*deglutiam* ejus conſilium & ,ejus *intimo* in Ægypti
מצרים בקרבו ועצתו אבלע ודרשו אל־
.*ſciolos* ad & ,pythones ad & ,divinos *ad &* ,*vana*
האלילים ואל־האטים ואל־האבות ואל־הידענים׃
fortis rex & ,*duri* dominorum manu in Ægyptum *concludam* Et
4 וסכרתי את־מצרים ביד אדנים קשה ומלך עז
dejicient Et .exercituum Dominus dominator dixit ,*eos in* dominabitur
5 ימשל־בם נאם האדון יהוה צבאות׃ ונשתו־
facient elongare Et .areſcet & ,exſiccabitur fluvius & ,mari de aquæ
6 מים מהים ונהר יחרב ויבש׃ והאזניחו
,calamus *: munitionis rivi* ſiccabuntur & ,attenuabuntur ,flumina
נהרות דללו וחרבו יארי מצור קנה
omnis & ,*rivi os* juxta rivum juxta Gramineta .excidentur *carectum* &
7 וסוף קמלו׃ ערות על־יאור על־פי יאור וכל
mœrebunt Et .*ipſum* non & ,propulſabitur ,areſcet rivi ſementis
8 מזרע יאור ייבש נדף ואיננו׃ ואנו
expandẽtes &,hamum rivum in projicientes omnes lugebunt & ,piſcatores
הדיגים ואבלו כל־משליכי ביאור חכה ופרשי
afficientur pudore Et .infirmabuntur ,aquarum *faciebus* in rete
9 מכמרת על־פני־מים אמללו׃ ובשו
erunt Et .retia *perforata* texentes & ,pectinata Lina operantes
10 עבדי פשתים שריקות וארגים חורי׃ והיו
.*animæ* ſtagnorum clauſuram *facientes omnes* ,contrita ejus retia
שתתיה מדכאים כל־עשי שכר אגמי־נפש׃
,Parhoh conſiliarii ſapientes ,Sohan principes ſtulti Veruntamen
11 אך־אולים שרי צען חכמי יעצי פרעה
Filius : Parhoh *ad* dicetis quomodo : infatuatum eſt conſilium
עצה נבערה איך תאמרו אל־פרעה בן־
?tui ſapientes nunc *ipſi* Ubi ? *antiquitatis* regum filius ,ego ſapientum
12 חכמים אני בן־מלכי־קדם׃ אים אפוא חכמיך
exercituum Dominus *conſuluerit* quid *ſciant* & ,tibi nunc *indicent* &
ויגידו נא לך וידעו מה־יעץ יהוה צבאות
.Ægyptum ſuper
על־מצרים׃

Verſio VULG. LAT.

6 Et relinquentur ſimul avibus
montiũ,& beſtiis terræ : & æ-
ſtate perpetuâ erunt ſuper eum
volucres, & omnes beſtiæ ter-
7 ræ ſuper illum hyemabunt. In
tempore illo, deferetur munus
Domino exercituũ à populo
divulſo & dilacerato ; à popu-
lo terribili, poſt quem non
fuit alius ; à gente expectante,
expectante & conculcatâ, cu-
jus diripuerunt flumina terram
ejus ; ad locũ nominis Domini
exercituum, montem Sion.

CAP. XIX.

1 ONus Ægypti. Ecce Domin⁹
aſcendet ſuper nubem levem,
& ingredietur Ægyptum, &
commovebũtur ſimulachra Æ-
gypti à facie ejus, & cor Ægy-
2 pti tabeſcet in medio ejus. Et
concurrere faciam Ægyptios
adverſùs Ægyptios : & pugna-
bit vir contra fratrem ſuum,
& vir contra amicũ ſuum, ci-
vitas adverſùs civitatem, re-
3 gnum adverſùs regnũ. Et
dirumpetur ſpiritus Ægypti in
viſceribus ejus, & conſilium
ejus præcipitabo : & inter-
rogabunt ſimulachra ſua, &
divinos ſuos, & pythones, &
4 ariolos Et tradam Ægyptũ
in manu dominorum crude-
lium, & rex fortis dominabi-
tur eorum, ait Domin⁹ Deus
5 exercituũ. Et areſcet aqua
de mari ; & fluvius deſolabi-
6 tur, atque ſiccabitur. Et de-
ficient flumina : attenuabun-
tur, & ſiccabuntur rivi agge-
rum. Calamus & juncus mar-
7 ceſcet : Nudabitur alve⁹ rivi
à fonte ſuo, & omnis ſementis
irrigua ſiccabitur, areſcet, &
8 non erit. Et mœrebunt pi-
ſcatores, & lugebunt omnes
mittentes in flumen hamum,
& expandentes rete ſuper fa-
9 ciẽ aquarũ emarceſcent. Con-
fundentur qui operabantur li-
num, pectentes et texentes
10 ſubtilia. Et erunt irrigua ej⁹
flaccentia : omnes qui facie-
bant lacunas ad capiendos pi-
11 ſces. Stulti principes Taneos,
ſapientes conſiliarii Pharao-
nis, dederunt conſilium inſi-
piens. Quomodò dicetis Pha-
raoni ; Filius ſapientium ego,
12 filius regum antiquorum? Ubi
nunc ſunt ſapientes tui? annun-
tient tibi, & indicent quid co-
gitaverit Dominus exercituum
ſuper Ægyptum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Καὶ καταλείψει ἅμα τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρα-
νοῦ, καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς· καὶ ϲυναχθήσεται
ἐπ᾽ αὐτοὺς τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ πάντα
7 τὰ θηρία τῆς γῆς ἐπ᾽ αὐτὸν ἥξει. Ἐν τῷ και-
ρῷ ἐκείνῳ ἀνενεχθήσεται δῶρα κυρίῳ Ϲαβα-
ὼθ ἐκ λαοῦ τεθλιμμένου καὶ τετιλμένου, καὶ ἀ-
πὸ λαοῦ μεγάλου ἀπὸ τοῦ νῦν, καὶ εἰς τὸν αἰῶνα
χρόνον· ἔθνος ἐλπίζον καὶ καταπεπατημέ-
νον, ὅ ἐστιν ἐν μέρει (η) ποταμοῦ τῆς χώρας
αὐτοῦ, εἰς τὸν τόπον οὗ τὸ ὄνομα κυρίου Ϲαβα-
ὼθ, ὄρος Σιών.

MS.A. (η) τοῦ ποταμοῦ

Et relinquet ſimul vola
li, & beſtiis terræ. Et
buntur ſuper eos vola
& omnes beſtiæ terræ
venient. In tempore illo
tur munera Domino Sab
populo tribulato, & con
populo magno ex hoc n
que in æternum tempus. G
rans, & conculcata,
parte fluvii regionis
cum, ubi nomen Domini
montem Sion.

ΚΕΦ. ιθʹ.

ὍΡΑΣΙΣ ΑἸΓΎΠΤΟΥ.

1 ἸΔοὺ κύριος κάθηται ἐπὶ νεφέλης κούφης, καὶ
ἥξει εἰς Αἴγυπτον, καὶ σεισθήσεται τὰ χειροποί-
ητα Αἰγύπτου ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ. καὶ (α) ἡ
2 καρδία αὐτῶν ἡττηθήσεται ἐν αὐτοῖς. Καὶ
ἐπεγερθήσονται Αἰγύπτιοι ἐπ᾽ Αἰγυπτίους, καὶ
πολεμήσει ἄνθρωπος τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ
ἄνθρωπος τὸν πλησίον αὐτοῦ, (β) πόλις ἐπὶ
3 πόλιν, καὶ νομὸς ἐπὶ νομόν. Καὶ ταραχθή-
σεται τὸ πνεῦμα τῶν Αἰγυπτίων ἐν αὐτοῖς, καὶ
τὴν βουλὴν αὐτῶν διασκεδάσω, καὶ ἐπερωτή-
σουσι τοὺς θεοὺς αὐτῶν, καὶ τὰ ἀγάλματα αὐ-
τῶν, καὶ τοὺς ἐκ τῆς γῆς φωνοῦντας, καὶ τοὺς
4 (γ) ἐγγαστριμύθους. Καὶ παραδώσω τὴν Αἴγυ-
πτον εἰς χεῖρας ἀνθρώπων, κυρίων ϲκλη-
ρῶν, καὶ βασιλεῖς ϲκληροὶ κυριεύσουσιν αὐ-
5 τῶν. τάδε λέγει κύριος Ϲαβαώθ. Καὶ πί-
ονται οἱ Αἰγύπτιοι ὕδωρ τὸ παρὰ θάλασσαν,
6 ὁ δὲ ποταμὸς ἐκλείψει, καὶ ξηρανθήσεται. Καὶ
ἐκλείψουσιν οἱ ποταμοὶ, καὶ αἱ ( ) διώρυχες τοῦ
ποταμοῦ, καὶ ξηρανθήσεται πᾶσα ϲυναγωγὴ
ὕδατος, καὶ ἐν παντὶ ἕλει καλάμου καὶ πα-
7 πύρου, Καὶ τὸ ἄχι τὸ χλωρὸν πᾶν τὸ κύ-
κλῳ τοῦ ποταμοῦ, καὶ πᾶν τὸ σπειρόμενον διὰ
8 τοῦ ποταμοῦ ξηρανθήσεται ἀνεμόφθορον. Καὶ
στενάξουσιν οἱ ἁλιεῖς, καὶ στενάξουσι πάντες οἱ
βάλλοντες ἄγκιστρον εἰς τὸν ποταμὸν, καὶ οἱ
βάλλοντες ϲαγήνας, καὶ οἱ ἀμφιβολεῖς πεν-
9 θήσουσι. Καὶ αἰσχύνη λήψεται τοὺς ἐργαζο-
μένους τὸ λίνον τὸ σχιστὸν, καὶ τοὺς ἐργαζομένους
τὴν βύσσον. καὶ ἔσονται οἱ (δ) ἐργαζόμενοι αὐτὰ ἐν
10 ὀδύνῃ, Καὶ πάντες οἱ (ε) ποιοῦντες τὸν ζύθον
11 λυπηθήσονται, καὶ τὰς ψυχὰς πονέσουσι. Καὶ
μωροὶ ἔσονται οἱ ἄρχοντες Τάνεως, οἱ ϲο-
φοὶ ϲύμβουλοι τοῦ βασιλέως, ἡ βουλὴ αὐ-
τῶν μωρανθήσεται. πῶς ἐρεῖτε τῷ βασι-
λεῖ, Υἱοὶ ϲυνετῶν ἡμεῖς, υἱοὶ βασιλέων τῶν
12 ἐξ ἀρχῆς; Ποῦ εἰσι νῦν οἱ ϲοφοί ϲου, καὶ
ἀναγγειλάτωσάν ϲοι, καὶ εἰπάτωσαν, Τί βε-
βούλευται κύριος Ϲαβαὼθ ἐπ᾽ Αἴγυπτον;

CAP. XIX.

VISIO ÆGY

ECce (a) Dominus ſede
nubem levem, & veniet in
ptum, & concutientur man
Ægypti à facie ejus. &
rum deficiet in ipſis: E
citabuntur Ægyptii ſuper Æ
os: & oppugnabit homo fr
ſuum, & homo proximum
civitas ſuper civitatem, &
ſuper legem. Et (c) tu
ſpiritus Ægyptiorum in ipſi
conſilium eorum diſſipabo. E
terrogabunt deos ſuos, &
lachra ſua, & eos, qui
vocem edunt, & ventri
Et tradam Ægyptum in ma
hominum, dominorum du
(d) & reges duri domina
eorum. Hæc dicit Dominus Sa
oth. Et (e) bibent Ægyptii a
quæ juxta mare: Flu
tem deficiet, & areſcet: E
ficient fluvii, & rivi flu
areſcet omnis congregatio
(f) etiam in omni palude
& papyri, Et (g) Ach
mne, quod in circuitu flu
omne quod ſeminatur
um, areſcet à vento
Et gement piſcatores, &
omnes qui jaciunt hamum
vium: & qui jaciunt ſagen
qui retia; lugebunt. E
capiet operantes linum
operantes byſſum: &
rantes ea in dolore: E
faciunt zythum, mœre
nimis laborabunt. Et
principes Taneos, ſa
ſiliarii reges: conſilium
infatuabitur. Quomodo
regi, Filii ſapientum
gum, qui à principio?
nunc ſapientes tui?
ent tibi, & dicant, Qu
ravit Dominus Sabaoth
gyptum?

MS.A. (α) αἱ καρδίαι αὐτῶν ἡττηθήσονται (β) ἐπεγερθήσ
(γ) ἐγγαστριμύθους, καὶ τοὺς γνώστας. Καὶ παραδώσω Αἴγυπτ
(δ) διαλογιζόμενοι (ε) τὸν ζύθον ποιοῦντες

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 ישתבקון כחדא לעופא דטוריא ולבעירא דארעא בקיטא יהי שרי עלוהי כל עופא
דשמיא וכל בעירא דארעא עלוהי יעבדון סתיא׃ בעדנא ההיא יתיהיב תקרובתא
7 לקדם יי צבאות לעמא אניסא ובזיזא ולות עמא דיתקיף מבכן ולהלא עמא
אניסא ובזיזא דבזו עממיא ארעיה לאתרא דאתקרי שמא דיי צבאות דשכינתיה
בטורא דציון׃

יט

1 מטל כס דלוט לאשקאה ית מצראי הא יי מתגלי בענן יקריה לאתפרעא ממצרים
2 ויתברו טעות מצראי מן קדמוהי ולבא דמצראי יתמסי במעיהון׃ ואגרי מצראי במצראי
3 ויגיחון קרב גבר באחוהי וגבר בחבריה קרי בקרי ומלכו במלכו׃ ותתמסי רוחא
דמצראי במעיהון וחכימיהון אסלעם ויתבעון מן טעון ומן חרשין ומן בדין ומן זכורו׃
4 ואמסר ית מצראי ביד רבון קשי ומלך תקיף ישלוט בהון אמר רבון עלמא יי צבאות׃
5 ויצדון מיא מימא ונהרהון יחרוב וייבש׃ ויצדון נהרותהון וייבשון ויחרבון נהריהון
6 עמיקיא קני וגומא לא יסקון׃ וייבש רוביה דנהרא ויהי בכיפיה וכל בית מזרע נהרהון
7 ייבש ויחרב ולא יצמח׃ ויצדון צידי נוניא ויתאבלון כל דהוו רמן בנהרא חכתא ופרסי
8 מצדן על אפי מיא יצדון׃ ויבהתון פלחי כתנא דסריקין ומחן מניה מצדן׃ ויהי אתר
9 בית שתי מחא כבישין אתר דהוו עבדין סכרא וכנשין מיא גבר לנפשיה׃ ברם אטפשו
10 רברבי טאנס חכימיא דמלכוהי לפרעה מלך דטעו איכדין תימרון לפרעה בני חכימין
11 אנחנא ואת בר מלכין דמלקדמין׃ אן אנון חכימך ויחוון כען לך וידעון מה מלך יי
צבאות על מצרים׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Relinquentur ſimul avibus montium, & beſtiis terræ : & in vere
bitans ſuper eos omnis avis cœli, & omnes beſtiæ terræ ſuper eos
bunt. In tempore illo adducetur munus in conſpectu Domini exerc
à populo vim facienti & direpto, & à populo qui fortis erit ex tunc
inceps ; populo vim patienti, & direpto, cujus terram diripuerunt
ad *locum* in *quo* invocatum eſt nomen Domini exercituum, cujus
habitat in monte Sion.

CAP. XIX.

ONus calicis maledictionis ad propinandum Ægyptiis. Ecce D
revelabitur in nube gloriæ ſuæ, ut vindictam ſumat de Ægyptiis
terentur idola Ægyptiorum à facie ejus, & cor Ægyptiorum tabeſc
ſceribus eorum. Et concurrere faciam Ægyptios contra Ægyptios
gnabit vir contra fratrem ſuum, & vir contra ſocium ſuum : civitas
tra civitatem, & regnum contra regnum. Et tabeſcet ſpiritus Ægy
in viſceribus eorum & ſapientes eorum obſtupefaciam : & recu
idolis & à maleficis, & à divinis, & ab ariolis. Et tradam Ægyp
manu Domini duri, & rex fortis dominabitur eorum ; dicit domina
culi, Dñs exercituum. Et deſertæ erunt aquæ maris , & flumen eoru
ſcet & ſiccabitur. Et deſolabuntur flumina eorum ; ſiccabuntur &
flumina eorum profunda; calamus et juncus non creſcent. Et
major pars fluminis ; & quod fuerit in ripa ejus, et omnis locus
fluminis eorum ſiccabitur, et areſcet, et non germinabit. Et deſola
ſcatores piſcium; et lugebunt omnes qui mittebant in flumen ham
pandentes *retia* ſuper faciem aquarum, deſolabuntur. Et confunde
operabantur linum carminatum, et texentes ex eo retia. Et erit locu
tium texturam conculcatus, et locus ubi faciebant lacunas, et cong
bant aquas unuſquiſq ; animæ ſuæ. Veruntamen inſipientes facti
cipes Taneos, ſapientes qui dederunt Pharaoni conſilium decepti
modo dicitis Pharaoni : Filii ſapientum ſumus, et tu filius reg
tio? Ubi ſunt ſapientes tui ut annuncient nunc tibi, et ſciant quo
um inivit Dominus exercituum contra Ægyptum?

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܫܬܒܩܘܢ ܐܟܚܕܐ ܠܦܪܚܬܐ ܕܛܘܪܐ ܘܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܬܟܢܫ ܥܠܘܗܝ ܦܪܚܬܐ. ܘܟܠܗ̇ 6
ܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ ܥܠܘܗܝ ܬܪܓܙ. * ܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܢܝܬܘܢ ܩܘܪܒܢܐ ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. 7
ܥܡܐ ܡܥܩܡܐ ܘܡܬܡܪܛܐ. ܥܡܐ ܕܚܝܠܐ ܡܢܗ ܡܪܚܩ. ܥܡܐ ܕܡܦܣ ܘܕܝܫܐ. ܕܐܪܥܗ
ܒܙܘ ܢܗܪܘܬܐ. ܠܐܬܪܐ ܕܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܠܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܛ * ܡܫܩܠܐ ܕܡܨܪܝܢ *

* ܗܐ ܡܪܝܐ ܪܟܝܒ ܥܠ ܥܢܢܐ ܩܠܝܠܬܐ. ܘܥܐܠ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܢܙܘܥܘܢ ܦܬܟܪܐ ܕܡܨܪܝܢ 1
ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܠܒܗ ܕܡܨܪܝܐ ܢܬܡܣܐ ܒܓܘܗ. * ܘܐܓܪܐ ܡܨܪܝܐ ܒܡܨܪܝܐ. ܘܢܬܟܬܫܘܢ 2
ܓܒܪܐ ܥܡ ܐܚܘܗܝ. ܘܓܒܪܐ ܥܡ ܚܒܪܗ. ܡܕܝܢܬܐ ܥܡ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܡܠܟܘܬܐ ܥܡ
ܡܠܟܘܬܐ. * ܘܬܬܦܩܥ ܪܘܚܗ ܕܡܨܪܝܐ ܒܓܘܗ. ܘܬܪܥܝܬܗ ܐܒܠܥ. ܘܢܫܐܠܘܢ ܡܢ 3
ܦܬܟܪܐ ܘܡܢ ܚܪ̈ܫܐ. ܘܡܢ ܐܣܘܬܐ ܘܡܢ ܩܨܘܡܐ. * ܘܐܫܠܡ ܠܡܨܪܝܐ ܒܐܝܕܐ ܕܡܪ̈ܘܬܐ 4
ܩܫܝܐ. ܘܡܠܟܐ ܥܫܝܢܐ ܢܫܬܠܛ ܒܗܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܢܚܣܪܘܢ ܡܝܐ ܡܢ 5
ܝܡܐ. ܘܢܗܪܐ ܢܚܪܒ ܘܢܝܒܫ. * ܘܢܚܣܪܘܢ ܢܗܪܘܬܐ ܘܢܬܡܨܘܢ. ܘܢܚܪܒܘܢ ܢܗܪܘܬܐ 6
ܪ̈ܘܪܒܬܐ. ܩܢܝܐ ܘܓܡܐ ܘܣܘܦܐ ܢܝܒܫܘܢ. * ܘܡܟܝܠ ܕܥܠ ܢܗܪܐ ܘܥܠ ܦܘܡܗ ܕܢܗܪܐ. 7
ܘܟܠ ܕܡܙܕܪܥ ܥܠ ܟܐܦܗ ܕܢܗܪܐ ܢܝܒܫ. ܘܢܬܕܩܩ ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ. * ܘܢܒܟܘܢ 8
ܨܝ̈ܕܐ. ܘܢܬܐܒܠܘܢ ܟܠ ܕܪܡܝܢ ܚܟܐ ܒܢܗܪܐ. ܘܦܪܣܝܢ ܡܨܝܕܬܐ ܥܠ ܡܝܐ ܐܬܟܪܗܘ.
* ܘܢܒܗܬܘܢ ܥܒ̈ܕܝ ܟܬܢܐ ܕܣܪܩܝܢ ܘܙܩܪܝܢ ܠܚܕܘܬܐ. * ܘܢܬܡܟܟܘܢ ܟܠ ܕܥܒܕܝܢ ܫܟܪܐ 9 10
ܠܡܫܬܝܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. * ܣܟܠܘ ܪܘܪ̈ܒܢܐ ܕܨܥܢ. ܚܟܝ̈ܡܐ ܕܡܠܟܝܢ ܠܦܪܥܘܢ ܡܠܟܐ ܡܠܟܐ 11
ܫܛܝܐ. ܐܝܟܢܐ ܬܐܡܪܘܢ ܠܦܪܥܘܢ ܕܚܟܝ̈ܡܐ ܚܢܢ. ܘܒܢܝ̈ ܡܠܟܐ ܩܕܡܝ̈ܐ. * ܐܝܟܐ ܐܢܘܢ 12
ܚܟܝ̈ܡܝܟ ܢܚܘܘܢܟ. ܘܢܕܥܘܢ ܡܢܐ ܐܬܪܥܝ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܠ ܡܨܪܝܢ.

Et relinquentur ambo volucri montium & bestiis terræ: & congregabitur adversùs eum volucre, & omnes bestiæ terræ indignabuntur in eum. 6 Eodem illo die afferet munera Domino fortissimo populus intortus & evulsus, populus à quo fortitudo procul distat, populus fœdus & conculcatus, cujus terram diripuerunt flumina, ad locum nominis Domini fortissimi, ad montem Sionis. 7

CAP. XIX.

Onus Ægypti.

Ecce Dominus conscensurus est nubes veloces, & ingressurus Ægyptum: tunc contremiscent idola Ægypti à conspectu ejus, & cor Ægyptii contabescet in præcordiis ejus. 1 Concitabo Ægyptium adversùs Ægyptium, pugnabitque alter in alterum, & quilibet in socium suum, urbs adversùs urbem, & regnum adversùs regnum. 2 Exscindetur spiritus Ægypti in præcordiis ejus, & consilium ejus immergam, consuléntque idola & magos, hariolos ac divinos. 3 Tradam Ægyptios in manum dominorum crudelium, & rex immanis dominabitur in eos, ait Dominus fortissimus. 4 Deficient aquæ è mari, & flumen destruetur & arescet. 5 Deficient flumina & exhaurientur, & destruentur amnes ingentes, arundo, scirpus, ac juncus arescent. 6 Denium alga quæ super flumen est & ad ostium fluminis, & quicquid satum erit ad ripam fluminis, exsiccabitur, tundetúrque ita ut minimè inveniatur. 7 Et flebunt piscatores, & in luctu versabuntur qui hamos injiciunt in flumen; quique retia pandunt super aquas, ægritudine laborabunt. 8 Pudefient opifices lini, qui pectunt & texunt ad lætitiam: 9 Et humiliabuntur omnes qui siceram conficiunt ad potum humanum. 10 Desipuerunt magnates Saan, sapientes illi qui regi Pharaoni consilia dabant insana: quomodo dicetis Pharaoni, Sapientes sumus, & filii regum priscorum? 11 Ubinam sunt sapientes tui? declarent jam tibi, & sciant quid statuerit Dominus potentissimus de Ægypto. 12

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويتركها لطيور السماء ووحوش الارض * فيجتمع عليهم طيور السماء * وكل وحوش الارض تاتي 6
عليه * في ذلك الزمان تقدم قرابين لرب الجنود من شعب محزون ومضيق * من شعب عظيم 7
منذ الان والى الابد * الامة الغير مرجوة والمداسة * التي هي في ناحية نهر كورتها في الموضع
حيث اسم رب الجنود دعي * جبل صهيون *

* الفصل التاسع عشر * الوحي التاسع * النبوة على مصر *

* ها الرب جالس على سحابة خفيفة ينزل الى مصر * وتتزلزل صنعة الايدي التي لمصر من 1
وجهه * وقلوبهم تذوب فيهم * ويثب مصريون على مصريين * ويحارب الانسان اخاه والانسان 2
قريبه * ويقوم مدينة على مدينة وناموس على ناموس * ويضطرب روح المصريين فيهم 3
وابطل مشورتهم * ويسالون الهتهم واصنامهم ومنجميهم من الارض وعرافيهم ومعارفهم * وادفع 4
مصر الى ايدي اناس سادة صعاب * وملوك صعاب يسودون عليهم * هكذا يقول رب الجنود *
* ويشرب المصريون الماء الذي عند البحر * واما النهر فيفنى وييبس * وتفنى الانهار وخلجان 5 6
النهر * ويجف كل مجمع ماء * وكل غاب القصب * والبردي والعشب الاخضر * وكلما حول النهر 7
وكل مزدرع من جهة النهر يجف بالريح الفاسد * ويتنهد الصيادون * ويتنهد جميع الذين 8
يلقون شبكة في النهر * والذين يلقون صنارة والصيادون يحزنون * واخذ الخزي الذين 9
يعملون الكتان الممشوط * والذين يعملون الارجوان * ويصير الذين يعملونهم في وجع *
* وجميع الذين يعملون القفاع يحزنون ويتعبون نفوسهم * ويصير رؤساء صاعن جهالا
مشيروا الملك الحكماء * ويفسد مشورتهم * كيف تقولون للملك نحن بنو الحكماء بنو
الملوك الذين منذ البدو * اين هم الان حكماؤك * فيخبروك ويقولون ما راه رب
الجنود على مصر *

Et relinquet eos volucribus cœli & bestiis terræ; & congregabuntur super eos volucres cœli, omnésque bestiæ terræ venient super eos. 6 *Tunc temporis offerentur oblationes Domino exercituũ à populo ærumnoso & afflicto, à populo magno, ex nunc & in perpetuum, gente insperatâ & conculcatâ, existente ad la. fluminis regionis suæ; in loco ubi nomen Domini exercituum invocatum est, nempè monte Sionis.* 7

CAP. XIX.

Revelatio nona.

Prophetia de Aegypto. Ecce Dominus insidens nubi levi, descendet in Ægyptum, & commovebitur opus manuum Aegypti à conspectu ejus, & corda eorum colliquescent in ipsis. 1 *Et irruent Aegyptii in Aegyptios, & oppugnabit quisque fratrem suum, & quisque proximum suum, insurgetque urbs contra urbem, & lex contra legem.* 2 *Et turbabitur spiritus Aegyptiorum intra ipsos, & irritum faciam consilium eorum, consulentque deos suos, & idola sua, & astrologum suum è terra, divinum, & ariolum suum.* 3 *Tradamque Aegyptum in manus quorundam dominorum rigidorum, & reges crudeles dominabuntur in eos: sic dicit Dominus exercituum.* 4 *Et bibent Aegyptii aquam quæ est prope mare, siquidem flumen deficiet et arescet,* 5 *Deficientque flumina & rami fluminis, arescet omnis aquæ congeries, omne arundinetum, carecta, & herba virens;* 6 *Quicquid denique circa flumen est, & quicquid satum est ad oras fluminis, arescet vento pernicioso.* 7 *Et suspirabunt piscatores, & gement omnes qui rete projiciunt in flumen, & qui hamum projiciunt, piscatores inquam mœrebunt.* 8 *Et pudor occupabit eos qui faciunt linum pexum, & qui faciunt purpuram, horum inquam opifices in dolore versabuntur.* 9 *Et omnes qui sportas faciunt, contristabuntur, seséque labore conficient:* 10 *Principes Saan prudentes regis consiliarii, evadent stulti, & insanum fiet consilium eorum. Quomodo dictitatis regi, Nos sumus filii prudentium, filii regum qui fuerunt ab initio?* 11 *Ubi nunc sunt sapientes tui? indicent jam tibi, dicantque quid decreverit Dominus exercituum de Aegypto.* 12

ישעיה : כ

feceri t errare&,Noph principes ſunt *decepti*,Sohan principes ſunt Infatuati
13 נואלו שרי צען נשאו שרי נף והתעו את־
ejus *interiori* in miſcuit DOMINUS .ejus tribuum angulo Ægyptum
14 מצרים פנת שבטיה : יהוה מסך בקרבה
ſuo opere omni in Ægyptum fecerunt errare &,perverſitatum ſpiritũ
רוח עועים והתעו את־מצרים בכל־מעשהו
, opus Ægypto erit non Et .ſuo vomitu in *ebrium errare ſecundum*
15 כהתעות שכור בקיאו : ולא־יהיה למצרים מעשה
erit illa die In .juncus & ramus ,cauda& caput fecerit quod
16 אשר יעשה ראש וזנב כפה ואגמון : ביום ההוא יהיה
manus *agitationis faciebus à pavebit & contremiſcet* & : mulieres ſicut Ægyptus
מצרים כנשים וחרד ופחד מפני תנופת יד־
erit Et .eam ſuper *agitans* ipſe quam exercituum DOMINI
17 יהוה צבאות אשר־הוא מניף עליו : והיתה
fuerit recordatus qui omnis : *tremorem* in Ægypto Jehudah *humus*
אדמת יהודה למצרים לחגא כל אשר יזכיר
quod exercituum DOMINI conſilii *faciebus à* ,*pavebit ſe in* , illius
אתה אליו יפחד מפני עצת יהוה צבאות אשר־
quinque erunt illa die In .eum ſuper *conſulens* ipſe
18 הוא יועץ עליו : ביום ההוא יהיו חמש
jurantes & , *Chenahan labio* loquentes , Ægypti terra in civitates
ערים בארץ מצרים מדברות שפת כנען ונשבעות
.uni dicetur Heres civitas :exercituum DOMINUM per
ליהוה צבאות עיר ההרס יאמר לאחת :
: Ægypti terræ medio in DOMINO altare erit illa die In
19 ביום ההוא יהיה מזבח ליהוה בתוך ארץ מצרים
, ſignum in erit Et .DOMINO ejus terminum juxta *ſtatua* &
20 ומצבה אצל־גבולה ליהוה : והיה לאות
clamabunt nam : Ægypti terra in exercituum DOMINO teſtem in &
ולעד ליהוה צבאות בארץ מצרים כי־יצעקו
, ſervatorem eis mittet & , opprimentium *faciebus* à Dominum ad
אל־יהוה מפני לחצים וישלח להם מושיע
, Ægypto Dominus cognoſcetur Et .eos liberabit & ,magnatem &
21 ורב והצילם : ונודע יהוה למצרים
,ſacrificiũ facient & ,illa die in Dominum Ægyptii cognoſcent &
וידעו מצרים את־יהוה ביום ההוא ועבדו זבח
percutiet Et .reddent & ,Domino votum vovebunt & , *munus* &
22 ומנחה ונדרו־נדר ליהוה ושלמו : ונגף
ad revertentur & : ſanando & , percutiendo Ægyptum Dominus
יהוה את־מצרים נגף ורפוא ושבו עד־
erit illa die In .eos ſanabit & , eis *erit exorabilis* &,Dominum
23 יהוה ונעתר להם ורפאם : ביום ההוא תהיה
, Ægyptum in Aſſur intrabit & , Aſſur ad Ægypto ab *ſtrata* via
מסלה ממצרים אשורה ובא־אשור במצרים
die In .Aſſur ipſi Ægyptii *ſervient* & , Aſſur in Ægyptus &
24 ומצרים באשור ועבדו מצרים את־אשור : ביום
benedictio ,Aſſur & , Ægypto tertius Iſrael erit illa
ההוא יהיה ישראל שלישיה למצרים ולאשור ברכה
: dicendo ,exercituum Dominus *ei* benedixit Cui .terræ *interiori* in
25 בקרב הארץ : אשר ברכו יהוה צבאות לאמר
, Aſſur mearũ manuum opus & , Ægypti meus populus Benedictus
ברוך עמי מצרים ומעשה ידי אשור
.Iſrael mea hæreditas &
ונחלתי ישראל :

CAP. XX. כ

rex Sarghon eum *mittendo in* , Aſdod in Tarthan *ingredi* anno In
1 בשנת בא תרתן אשדודה בשלח אתו סרגון מלך
.eam cepit & , Aſdod cum pugnâſſet & , Aſſur
אשור וילחם באשדוד וילכדה :

Verſio VULG. LAT.

13 Stulti facti ſunt principes Ta-
neos , emarcuerunt principes
Mempheos, deceperunt Ægy-
ptum, angulum populorum e-
14 jus. Dominus miſcuit in medio
ejus ſpiritũ vertiginis : & er-
rare fecerunt Ægyptũ in omni
opere ſuo, ſicut errat ebrius &
15 vomens. Et non erit Ægypto
opus, quod faciat caput &
caudam , incurvantem & re-
16 frænantem. In die illa erit
Ægyptus quaſi mulieres, &
ſtupebunt, & timebunt à facie
commotionis manûs Dñi exer-
cituũ, quam ipſe movebit ſuꝑ
17 eã. Et erit terra Juda Ægypto
in pavorem: omnis qui illiꝰ fu-
erit recordatꝰ, pavebit à facie
conſilii Domini exercituũ, ꝙ
18 ipſe cogitavit ſuper eam. In
die illa erunt quinque civita-
tes in terra Ægypti, loquentes
linguâ Chanaan , & jurantes
ꝑ Dñm exercituũ: Civitas So-
19 lis vocabitur una. In die illa
erit altare Dñi in medio terræ
Ægypti , & titulus Dñi juxta
20 terminũ ejus Erit in ſignũ, &
in teſtimoniũ Dño exercituũ
in terra Ægypti, Clamabunt
enim ad Dominũ à facie tri-
bulantis, & mittet eis ſalvato-
rem & propugnatorem , qui
21 liberet eos. Et cognoſcetur
Dominus ab Ægypto, & cog-
noſcent Ægyptii Dominum in
die illa, & colent eũ in hoſtiis
& in muneribus : & vota vo-
vebunt Domino , & ſolvent.
22 Et percutiet Dominus Ægy-
ptum plagâ, & ſanabit eã, &
revertentur ad Dominum, &
placabitur eis, & ſanabit eos.
23 In die illa erit via de Ægypto
in Aſſyrios, & intrabit Aſſy-
rius Ægyptum, & Ægyptius
in Aſſyrios, & ſervient Ægy-
24 ptii Aſſur. In die illa erit
Iſrael tertius Ægyptio & Aſ-
ſyrio: benedictio in medio ter-
25 ræ, Cui benedixit Dominus ex-
ercituũ, dicens; Benedictus po-
pulus meus Ægypti , & opus
manuum mearũ Aſſyrio : hæ-
reditas autem mea Iſrael.

CAP. XX.

1 IN anno , quo ingreſſus eſt
Tharthan in Azotum , cùm
miſiſſet eum Sargon rex Aſ-
ſyriorum, & pugnâſſet contra
Azotum, & cepiſſet eam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

13 Ἐξέλιπον οἱ ἄρχοντες Τάνεως, ϗ ὑψώθη-
σαν οἱ ἄρχοντες Μέμφεως, ϗ πλανήσουσιν
14 Αἴγυπτον κατὰ φυλάς. Κύριος γὰρ ἐκέρασεν
αὐτοῖς πνεῦμα πλανήσεως, ϗ ἐπλάνησαν
Αἴγυπτον ἐν πᾶσι τοῖς ἔργοις αὐτῶν, ὡς
15 πλανᾶται ὁ μεθύων, ϗ ὁ ἐμῶν ἅμα. Καὶ οὐκ
ἔσται τοῖς Αἰγυπτίοις ἔργον ὃ ποιήσει κε-
16 φαλὴν ϗ (") οὐρὰν, ϗ ἀρχὴν ϗ τέλος. Τῇ δὲ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσονται οἱ Αἰγύπτιοι, ὡς γυ-
ναῖκες, ἐν φόβῳ ϗ ἐν τρόμῳ ἀπὸ προσώπου
τῆς χειρὸς κυρίου Σαβαὼθ, ἣν αὐτὸς ἐπι-
17 βαλεῖ αὐτοῖς. Καὶ ἔσται ἡ χώρα τῶν Ἰουδαί-
ων τοῖς Αἰγυπτίοις εἰς φόβητρον· πᾶς (ζ)
ὃς ἐὰν ὀνομάσῃ αὐτὴν αὐτοῖς, φοβηθήσον-
ται διὰ τὴν (η) βουλὴν ἣν βεβούλευται κύ-
18 ριος Σαβαὼθ ἐπ' αὐτήν. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκεί-
νῃ ἔσονται πέντε πόλεις (θ) ἐν τῷ Αἰγύ-
πτῳ λαλοῦσαι τῇ γλώσσῃ τῇ (ι) Χανααννίτιδι,
ϗ (κ) ὀμνύντες τῷ ὀνόματι κυρίου Σαβαώθ·
19 πόλις ἀσεδὲκ κληθήσεται ἡ μία πόλις. Τῇ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται (λ) θυσιαστήριον τῷ κυρίῳ
ἐν χώρᾳ Αἰγυπτίων, ϗ στήλη πρὸς τὸ ὅρι-
20 ον αὐτῆς τῷ κυρίῳ. Καὶ ἔσται εἰς σημεῖον
εἰς τὸν αἰῶνα κυρίῳ ἐν χώρᾳ Αἰγύπτου· ὅ-
τι κεκράξονται πρὸς κύριον διὰ τοὺς θλί-
βοντας αὐτοὺς, ϗ ἀποστελεῖ αὐτοῖς (μ) ἄν-
θρωπον ὃς σώσει αὐτοὺς, κρίνων σώσει αὐτούς.
21 Καὶ γνωστὸς ἔσται κύριος τοῖς Αἰγυπτίοις·
ϗ γνώσονται οἱ Αἰγύπτιοι τὸν κύριον ἐν τῇ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ϗ ποιήσουσι θυσίας, ϗ εὔξον-
22 ται εὐχὰς τῷ κυρίῳ, ϗ ἀποδώσουσι. Καὶ πα-
τάξει κύριος τοὺς Αἰγυπτίους (ν) πληγῇ, ϗ
ἰάσεται αὐτοὺς ἰάσει, ϗ ἐπιστραφήσονται πρὸς
κύριον, ϗ (ξ) εἰσακούσεται αὐτῶν, ϗ ἰάσεται
23 (ο) αὐτοὺς ἰάσει. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται (π) ἡ
ὁδὸς ἀπὸ Αἰγύπτου πρὸς Ἀσσυρίους, ϗ
εἰσελεύσονται Ἀσσύριοι εἰς Αἴγυπτον, ϗ Αἰ-
γύπτιοι πορεύσονται πρὸς Ἀσσυρίους, ϗ δου-
24 λεύσουσιν (ρ) Αἰγύπτιοι τοῖς Ἀσσυρίοις. Τῇ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται Ἰσραὴλ τρίτος (") ἐν τοῖς
Αἰγυπτίοις, ϗ ἐν τοῖς Ἀσσυρίοις εὐλογημένος
25 ἐν τῇ γῇ, (σ) Ἣν εὐλόγησε κύριος Σαβα-
ὼθ, λέγων, Εὐλογημένος ὁ λαός μου ὁ ἐν
Αἰγύπτῳ, ϗ ὁ ἐν Ἀσσυρίοις, ϗ ἡ κληρονο-
μία μου Ἰσραήλ.

MS. A. (") οὐρὰν, ἀρχὴν (ζ) ὃς ἂν (η) βουλὴν κυρίου σαβαὼθ ἣν βεβούλ
ἐπ' αὐτήν. (θ) ἐν Αἰγύπτῳ (ι) Χανανίτιδι, (κ) ὀμνύουσαι τῷ ὀ
πόλις (λ) τὸ θυσιαστήριον (μ) κύριος ἄνθρωπον (ν) πληγῇ μεγ
ἐπακούσεται (ο) αὐτούς. Τῇ ἡμέρᾳ (π) ὁδὸς Αἰγύπτου (ρ) οἱ
(") ἐν τοῖς Ἀσσυρίοις, ϗ ἐν τοῖς Αἰγυπτίοις (σ) Ἡ

Defecerunt principes Ta
exaltati ſunt principes Mem
os: & decipient Ægyptum
tribus. Dominus enim miſc
eis ſpiritum ſeductionis: &
duxerunt Ægyptum in omni
operibus ſuis, ſicut errat ebri
vomens ſimul. Et non erit
ptiis opus, quod faciat capu
caudam, & principium &
nem. Die autem illâ erun
gyptii, quaſi mulieres, in
& tremore à facie ma Do
ni Sabaoth, quam ipſe
eis. Et erit regio Judæ
gyptiis in (ζ) terrorem. Q
que nominaverit eam illis,
bunt propter conſilium, quod
beravit Dominus ſuper eam
illâ erunt quinq; civitates
gypto loquentes linguâ Cha
tide, & jurantes nomine Do
ni Sabaoth. Civitas
vocabitur una civitas.
erit altare Domino in
gyptiorum: & titulus
num ejus Domino. Erit
gnum in ſeculum Domino
one Ægypti. Quia cla
ad Dominum propter trib
eos: & mittet eis hominem
ſalvabit eos: judicans
eos. Et notus erit Domi
gyptiis: & cognoſcent
ptii Dominum in die illâ,
cient ſacrificia, & vove
ta Domino, & reddent.
cutiet Dominus Ægyp
gâ, & ſanabit eos ſanat
convertentur ad Domin
exaudiet eos, & ſana
natione. Die illâ erit
Ægypto ad Aſſyrios
gredientur Aſſyrii in Æ
& ibunt Ægyptii ad
& ſervient Ægyptii
Die illâ erit Iſrael tertius
gyptius, & in Aſſyriis
in terra, Quam bened
minus Sabaoth, dicens
ctus populus meus, qui
& qui in Aſſyriis, &
mea Iſrael.

ΚΕΦ. κ'.

1 ΤΟῦ ἔτους (α) ὅτε εἰσῆλθε Ταναθὰν εἰς
Ἄζωτον, ἡνίκα ἀπεστάλη ὑπὸ Ἀρνὰ βασι-
λέως Ἀσσυρίων, ϗ ἐπολέμησε τὴν Ἄζωτον, ϗ
(β) ἔλαβεν αὐτήν,

MS. A. (α) οὗ εἰσῆλθεν Νάθαν (β) κατελάβετο

CAP. XX.

ANno, quo ing
than in Azotum cum
ab Arna rege A
oppugnavit Az
eam;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

13 14 אטפשו רברבי טאנס טעו אנש מפיס אטעיו ית מצראי רבני פלכהא : יי רמא ביניהון
15 רוח דטעו ואטעיאו ית מצרים בכל עובדיהון כמא דטעי רויא ומדשדש בתיוביה : ולא
16 יהי למצרים מלכא דמלך ריש והגמון שלטון ואטרון : בעדנא ההיא יהון מצראי חלשין
17 כנשין ויזועון ויתברון מן קדם ארמות גבורתא דיי צבאות דהוא מרים עליהון : ותהי
ארעא דבית יהודה למצרים לדחלא כל דידכר יתה ליה יזוע מן קדם מלכא דיי צבאות
18 דהוא מליך עליהון : בעדנא ההיא יהוין חמש קרוין בארעא דמצרים ממללן ממלל
כנענאה וקימן בשמא דיי צבאות קרתא בית שמש דעתידא למחרב יתאמר היא חדא
19 מנהן : בעדנא ההיא יהי מדבחא מתקן קדם יי בגו ארעא דמצרים וקמתא בסטר תחומה
20 קדם יי : ויהי לאת ולסהיד קדם יי צבאות בארעא דמצרים ארי יצלון קדם יי מן קדם
21 דחקיהון וישלח להון פריק ודין וישזבנון : ותתגלי גבורתא דיי לאוטבא למצראי וידעון
מצראי למדחל מן קדם יי בעדנא ההיא ויפלחון בנכסת קודשין ובקורבנין וינדרון נדרין
22 קדם יי וישלמון : וימחי יי ית מצרים מחא ויסנין ויתובון לפולחנא דיי ויקבל צלותיהון
23 ויסי יתהון : בעדנא ההיא תהי אורח כבישא ממצרים לאתור ויגיחון אתוראי למצראי
24 ומצראי באתוראי ויפלחון מצראי ית אתוראי : בעדנא ההיא יהי ישראל תליתאה
25 למצראי ולאתוראי ברכא בגו דארעא : דברכיה יי צבאות למימר בריך עמי דאפקית
ממצרים דעל דחבו קדמי אגליתי יתהון לאתור וכדו דתבו מתקרן עמי ואחסנתי
ישראל :

כ

1 בשתא דאתא תרתן לאשדוד כד שלח יתיה סרגון מלכא דאתור ואגיח קרבא
באשדוד וכבשה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Inſipientes facti ſunt principes Taneos, erraverunt viri Memphes
perunt Ægyptios principes provinciarum ejus. Dominus immi
ſpiritum erroris , & errare fecerunt Ægyptios in omnibus op
ſuis ; ſicut errat ebrius, & provolvitur in vomitu ſuo. Et non er
ptiis rex qui regnet, nec princeps nec ſatrapa, nec præfectus, nec do
In tempore illo erunt Ægyptii infirmi ſicut mulieres, & contr
& conterentur à facie elevationis potentiæ Domini exercituu
ipſe levabit ſuper eos. Et erit terra domus Judæ Ægypto in pa
omnis qui recordatus fuerit illius, contremiſcet à facie conſil
exercituum, quod ipſe conſuluit contra eos. In *tempore illo* erun
civitates in terra Ægypti, loquentes loquela Chanaan, & juran
mine Domini exercituum. Civitas domus Solis, quæ deſtruenda e
una ex eis. In tempore illo erit altare præparatum coram Dom
dio terræ Ægypti, & titulus in latere termini ejus coram Domi
in ſignum, & in teſtem coram Domino exercituum in terra Ægyp
oraverint coram Domino à facie eorum qui tribulant eos, & mitt
vatorem & judicem, & liberabit eos. Et revelabitur potentia Do
benefaciat Ægyptiis, & ſcient Ægyptii timere à facie Domini in
illo, & colent in hoſtiis ſanctificatis, & in oblationibus, & vove
coram Domino, & ſolvent. Et percutiet Dominus Ægyptios pe
& ſanabit eos, & convertentur ad cultum Domini, & ſuſcipie
eorum, & ſanabit eos. In tempore illo erit via trita de Ægyp
riam : & pugnabunt Aſſyrii contra Ægyptios, & Ægyptii co
os, & ſervient Ægyptii Aſſyriis. In tempore illo, erit Iſrael te
ptiis & Aſſyriis ; benedictio in medio terræ. Cui benedixit Do
cituum, dicens : Benedictus populus meus quem eduxi de Ægyp
peccaverunt coram me, tranſmigrare eos feci in Aſſyriam; & qu
verſi ſunt, vocati ſunt populus meus, & hæreditas mea Iſrael.

CAP. XX.

IN anno quo ingreſſus eſt Thartan in Azotum, quando miſit e
rex Aſſyriæ : & pugnavit contra Azotum, & ſubjecit eam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܫܬܛܝܘ ܪܘܪܒܢܐ ܕܨܥܢ. ܐܬܬܪܝܡܘ ܪܘܪܒܢܐ ܕܡܦ. ܘܐܛܥܝܘ ܠܡܨܪܝܢ ܒܙܘܝܬܐ ܕܫܒܛܝܗ܀ 13
* ܡܪܝܐ ܡܙܓ ܒܓܘܗ ܪܘܚܐ ܕܛܘܥܝܝܐ. ܘܐܛܥܝܘ ܠܡܨܪܝܢ ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܐܝܟ 14
ܕܛܥܐ ܪܘܝܐ ܒܬܝܒܘܬܗ. * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܡܨܪܝܐ ܓܒܪܐ ܕܥܒܕ ܪܫܐ ܘܕܘܢܒܐ: ܘܕܘܢܒܐ 15
ܘܪܫܐ. * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܢܗܘܘܢ ܡܨܪܝܐ ܐܝܟ ܢܫܐ. ܘܢܕܚܠܘܢ ܘܢܙܘܥܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܪܡܘܬܗ ܕܐܝܕܗ 16
ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܕܡܪܝܡ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܬܗܘܐ ܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ ܠܡܨܪܝܐ ܠܕܚܠܬܐ. ܘܟܠ 17
ܕܡܥܗܕ ܠܗ ܢܙܘܥ ܒܗ. ܡܛܠ ܡܠܟܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܐܬܪܥܝ ܥܠܘܗܝ.
* ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܢܗܘܝܢ ܚܡܫ ܡܕܝܢܢ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܕܡܡܠܠܢ ܒܠܫܢܐ ܟܢܥܢܝܐ. 18
ܘܝܡܝܢ ܒܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܚܕܐ ܡܢܗܝܢ ܬܬܩܪܐ ܚܪܣ. * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܢܗܘܐ ܡܕܒܚܐ 19
ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܓܘܗ ܕܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܩܝܡܬܐ ܠܡܪܝܐ ܠܘܬ ܬܚܘܡܗ. * ܘܬܗܘܐ 20
ܠܐܬܐ ܘܠܣܗܕܘܬܐ ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܢܩܥܘܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܡܢ
ܩܕܡ ܐܠܘܨܐ. ܘܢܫܕܪ ܠܗܘܢ ܦܪܘܩܐ. ܘܕܝܢܐ. ܘܢܦܨܐ ܐܢܘܢ. * ܘܢܬܝܕܥ ܡܪܝܐ ܠܡܨܪܝܐ. 21
ܘܢܕܥܘܢ ܡܨܪܝܐ ܠܡܪܝܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܘܢܩܪܒܘܢ ܕܒܚܐ ܘܣܡܝܕܐ. ܘܢܢܕܪܘܢ ܢܕܪܐ ܠܡܪܝܐ.
ܘܢܫܠܡܘܢ. * ܘܢܡܚܐ ܡܪܝܐ ܠܡܨܪܝܐ ܡܚܘܬܐ. ܘܢܐܣܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܬܦܢܘܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ. 22
ܘܢܥܢܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܐܣܐ ܐܢܘܢ. * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܢܗܘܐ ܫܒܝܠܐ ܡܢ ܡܨܪܝܢ ܠܐܬܘܪ. ܘܡܢ 23
ܐܬܘܪ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܢܥܘܠ ܐܬܘܪܝܐ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܡܨܪܝܐ ܠܐܬܘܪ. ܘܢܦܠܚܘܢ ܡܨܪܝܐ ܠܐܬܘܪܝܐ.
* ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܢܗܘܐ ܐܝܣܪܝܠ ܚܕ ܡܢ ܬܠܬܐ. ܠܡܨܪܝܐ ܘܠܐܬܘܪܝܐ ܒܘܪܟܬܐ ܒܓܘ 24
ܐܪܥܐ. * ܕܒܪܟܗ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܘܐܡܪ. ܒܪܝܟ ܥܡܝ ܕܒܡܨܪܝܢ. ܘܥܒܕ ܐܝܕܝ ܕܒܐܬܘܪ. 25
ܘܝܪܬܘܬܝ ܐܝܣܪܝܠ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܦ *

* ܒܫܢܬܐ ܕܐܬܐ ܬܪܬܢ ܠܐܫܕܘܕ. ܟܕ ܫܕܪܗ ܣܪܓܘܢ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ: ܘܐܬܟܬܫ ܥܡ 1
ܐܫܕܘܕ ܘܟܒܫܗ.

* Inſanierunt magnates Saan, extulerunt ſe magnates Mophis, & errare fecerunt Ægyptum per angulos tribuum ejus. 13
Dominus miſcuit in medio ejus ſpiritum errantem, & errare fecit Ægyptium in cunctis operibus ſuis, ſicut oberrat ebrius in vomitu ſuo: 14
Nec erit Ægyptio vir qui faciat caput vel caudam, caudam vel caput. 15
In illo erit Ægyptius ſimilis mulieribus, timebit ſiquidem ac trepidabit ob elationem manûs Domini potentiſſimi, quam elaturus eſt adverſùs eum. 16
Eritque terra Judæ Ægyptio formidini, ita ut quoties aliquis mentionem ejus fecerit apud ipſum, exhorreſcat; propter conſilium Domini potentiſſimi, quod de ſe ſtatuit. 17
In illo die erunt urbes quinque in terra Ægypti loquentes linguam Chananæam, & jurantes per Dominum potentem: & harum urbi vocabitur Heres. 18
In die illo erit ara Domino potenti in medio terræ Ægypti, & ſtatua Domino ſecus limites ejus: 19
Eritque in ſignum & teſtimonium Domino potenti in terra Ægypti. Clamabunt enim ad Dominum cauſâ opprimentis, mittétque eis ſervatorem & judicem, & eripiet eos. 20
Et innoteſcet Dominus Ægyptio, & cognoſcent Ægyptii Dominum in die illo, offerentque victimas et ſimilaginem, vovebunt vota Domino, et exolvent. 21
Itaque Dominus Ægyptios plagâ percutiet, tum ſanabit eos: convertentur ad Dominum, et exaudiet eos, et ſanabit eos. 22
In die illo erit ſemita ex Ægypto in Aſſyriam, et ex Aſſyria in Ægyptum; et ingredietur Aſſyrius Ægyptum, & Ægyptius Aſſyriam, & colent Ægyptii Aſſyrios. 23
In illo die Iſrael unus è tribus, erit benedictioni tam Ægyptiis quàm Aſſyriis in medio terræ: 24
Quoniam ipſi benedixit Dominus omnipotens, & ait; Benedictus populus meus qui eſt in Ægypto, & opus manuum mearum quod eſt in Aſſyria, & hæreditas mea Iſrael. 25

CAP. XX.

ANno quo venit Tharthan in Aſdod, cùm miſiſſet eum Sargon rex Aſſyriæ, oppugnâſſet Aſdod, & cepiſſet eam; 1

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 * فنيت روساء صاعن * وارتفعت روساء منف * ويضلون مصر بقبايلها * لان الرب مزج لهم روح
14 الضلالة * واضل مصر بكل اعمالهم كما يضل السكران * والحاذق معا * ولا يكون للمصريين
15 عمل الذي يصنع راسا وذنبا بدوا وغاية * في ذلك اليوم تصير المصريون مثل النساء في خوف
16 ورعدة من وجه يد رب الجنود التي يضعها عليهم * ويكون بلد اليهود للمصريين مخوفة
17 وكل من يسميها لهم يخافون * لاجل الراي الذي رواه الرب عليها * في ذلك اليوم تكون خمس
18 مدن بمصر تتكلم باللسان الكنعاني * وتحلف باسم الرب * مدينة عين شمس تدعى مدينة
19 واحدة * في ذلك اليوم يكون مذبح للرب في كورة المصريين * ونصبة عند حدها للرب
20 * ويكون علامة الى الدهر للرب في كورة مصر * لانهم يصرخون الى الرب لاجل محزنيهم * فيرسل
21 لهم الرب انسانا الذي يخلصهم * حاكما يخلصهم * ويكون الرب معروفا للمصريين * ويعرفون
22 المصريون الرب في ذلك اليوم * ويصنعون ذبايح * وينذرون نذورا للرب ويوفون * ويضرب الرب
23 المصريين ضربة عظيمة ويشفيهم بشفاية * ويرجعون الى الرب ويستجيب لهم * في ذلك اليوم تكون
طريق من مصر الى الموصليين * ويدخل الموصليون الى مصر * والمصريون يذهبون الى
24 الموصليين * ويتعبد المصريون للموصليين * في ذلك اليوم يكون اسرايل ثالثا في الموصليين
25 وفي المصريين * مبارك في الارض التي باركها رب الجنود قايلا * مبارك شعبي الذي بمصر
والذي في الموصليين * وميراثي اسرايل *

* Defecerunt principes Saan, amoti ſunt principes Menphis, & ſeducent Ægyptum cum nationibus ejus. 13
Nam Dominus miſcebit eis ſpiritum errorum, qui errare faciet Ægyptios in omnibus operibus ſuis quemadmodum errat ebrius, adeoque ſagaciſſimum quemque: 14
Nec erit Ægyptiis ullum opus faciens caput aut caudam, principium aut finem. 15
Eo die erunt Ægyptii ſicut mulieres in timore & formidine, propter manum Domini exercituum quam impoſiturus eſt eis. 16
Et patria Judæorum ita formidabilis reddetur Ægyptiis, ut quoties aliquis nominaverit eam apud ipſos, expaveſcant propter conſilium quod decrevit Dominus adverſùs eam. 17
Eo die erunt urbes quinque in Ægypto loquentes idioma Chananæum, & jurantes per nomen Domini; urbs Ainſemes vocatur una harum urbium. 18
Eo die erit altare Domino in regione Ægyptiorum, & ſtatua Domino juxta terminum ejus: 19
Eritque ſignum ſempiternum Domino in regione Ægypti: clamabunt enim ad Dominum ob affligentes ſe, mittetque eis Dominus hominem qui liberet eos, judicem qui eripiat illos. 20
Eritque Dominus notus Ægyptiis, & cognoſcent Ægyptii Dominum eo die, facient ſacrificia, vovebunt Domino & perſolvent. 21
Percutiet ergò Dominus Ægyptios plagâ magnâ, tum ſanabit eos curatione ſuâ: revertentur ad Dominum, & exaudiet illos. 22
Eo die erit iter ex Ægypto ad Aſſyrios, & ingredientur Aſſyrii Ægyptum, & Ægyptii abibunt ad Aſſyrios, & ſervient Ægyptii Aſſyriis. 23
Eo die erit Iſrael tertius inter Aſſyrios & Ægyptios, 24
Benedictus in terra, cui benedixit Dominus exercituum, dicens; Benedictus populus meus qui eſt in Ægypto, & qui eſt inter Aſſyrios, & hæreditas mea Iſrael. 25

* الفصل العشرون *

الوحي العاشر *

CAP. XX.

Revelatio decima.

* في السنة التي دخل فيها طاثان الى اسدود * حين ارسل من قبل اريا ملك الموصليين
وحارب اسدود * واخذها *

ANno quo ingreſſus eſt Tathan in Aſdodem (quum ſcilicet miſſus ab Aretha rege Aſſyriorum, oppugnavit Aſdodem & cepit eam) 1

ישעיה : כא

filii Jeſahjahu manum per DOMINUS eſt locutus illo tempore In
2 בעת ההיא דבר יהוה ביד ישעיהו בן־
,tuis lumbis *deſuper* ſaccum *ſolves* & , Vade : dicendo , Amos
אמוץ לאמר לך ופתחת השק מעל מתניך
, nudus eundo ſic fecit & : *tuo pede deſuper ſolves* tuum calceamentũ &
ונעלך תחלץ מעל רגלך ויעש כן הלך ערום
ambulavit Quemadmodũ : DOMINUS Dixitque .diſcalceatus &
3 ויחף : ויאמר יהוה כאשר הלך
ſignum annis tribus ; diſcalceatus & , nudus Jeſahjahu meus ſervus
עבדי ישעיהו ערום ויחף שלש שנים אות
rex ducet Sic .Æthiopiam ſuper & , Ægyptum ſuper portentum &
4 ומופת על־מצרים ועל־כוש : כן ינהג מלך־
pueros , Æthiopicam tranſmigrationẽ & , Ægypti captivitatem Aſſur
אשור את־שבי מצרים ואת־גלות כוש נערים
.Ægypti *nuditate nate* diſcoopertos & ,diſcalceatum & nudum ,ſenes &
וזקנים ערום ויחף וחשופי שת ערות מצרים :
Ægypto ab & ,ſuo aſpectu Æthiopia ab ,*erubeſcent* & ,confringentur Et
5 וחתו ובשו מכוש מבטם ומן־מצרים
Ecce : illa die in hujus inſulæ habitator dicet Et .ſua gloria
6 תפארתם : ואמר ישב האי הזה ביום ההוא הנה־
faciebus à *erui ad* ,auxilio pro *illuc* confugimus quò ,noſter aſpectꝰ *ſic*
כה מבטנו אשר נסנו שם לעזרה להנצל מפני
? nos evademus quomodo & , Aſſur regis
מלך אשור ואיך נמלט אנחנו :

C A P. XXI. כא

deſerto è,tranſeundum ad *Meridie* in turbines Ut .maris deſerti *Onus*
1 משא מדבר־ים כסופות בנגב לחלוף ממדבר
prævaricator:mihi eſt nunciata dura Viſio .formidabili terra de venit
2 בא מארץ נוראה : חזות קשה הגד־לי הבוגד
: Madai obſide : Helam Aſcende .vaſtator vaſtator & ,prævaricator
בוגד והשודד שודד עלי עילם צורי מדי
, dolore mei lumbi ſunt repleti Propterea .feci ceſſare ejꝰ gemitũ omnẽ
3 כל־אנחתה השבתי : על־כן מלאו מתני חלחלה
:audiendo ab me *Diſtorſi*:parturientis *tormina* ſicut,me apprehẽderunt *tormina*
צירים אחזוני כצירי יולדה נעויתי משמע
crepuſculum : me terruit horror ,meum cor Erravit .*videndo à* fui territus
4 נבהלתי מראות : תעה לבבי פלצות בעתתני את נשף
ſpeculando ,menſam Diſponendo .*terrorem* in mihi poſuit *mei amplexus*
5 חשקי שם לי לחרדה : ערך השלחן צפה
.clypeum ungite ,principes ſurgite : bibendo comedendo , ſpeculam
הצפית אכול שתה קומו השרים משחו מגן :
,ſpeculatorẽ ſtatue ,Vade : DOMINUS me ad dixit ſic Etenim
6 כי כה אמר אלי אדני לך העמד המצפה
currum ,equitum par ,currum vidit Et .*indicabit* ,viderit qui
7 אשר יראה יגיד : וראה רכב צמד פרשים רכב
.attentione multa ,attentione attendit Et .cameli currum , aſini
חמור רכב גמל והקשיב קשב רב־קשב :
jugiter *ſtans* ego ,mi Domine ,ſpeculam ſuper : Leo clamavit Et
8 ויקרא אריה על־מצפה אדני אנכי עמד תמיד
ecce Et .noctibus totis *ſtans* ego meã cuſtodiam ſuper & ,*interdiu*
9 יומם ועל־משמרתי אנכי נצב כל־הלילות : והנה־
: dixit & , reſpondit & : equitum par viri currus venit hic
זה בא רכב איש צמד פרשים ויען ויאמר
.terram in contrivit ejꝰ deorum ſculptilia omnia & ,Babel cecidit Cecidit
נפלה נפלה בבל וכל־פסילי אלהיה שבר לארץ :
exercituum DOMINO à audivi quæ :meæ areæ *filius* & mea Tritura
10 מדשתי ובן־גרני אשר שמעתי מאת יהוה צבאות
.vobis annunciavi , Iſrael Deo
אלהי ישראל הגדתי לכם :

Verſio VULG. LAT.

2 In tempore illo locutus eſt Dñs in manu Iſaiæ filii Amos, dicens; Vade, & ſolve ſaccũ de lumbis tuis, & calceamenta tua tolle de pedibus tuis. Et fecit ſic, vadens nudus, & 3 diſcalceatus. Et dixit Dñs; Sicut ambulavit ſervus meus Iſaias nudus, & diſcalceatus, trium annorũ ſignum & portentũ erit ſup Ægyptũ, & ſup 4 Æthiopiam: Sic minabit rex Aſſyriorum captivitatem Ægypti, & tranſmigrationẽ Æthiopiæ, juvenũ & ſenum, nudam & diſcalceatã, diſcoopertis natibus ad ignominiã Æ-5 gypti. Et timebunt, & confundentur ab Æthiopia ſpe ſuâ, & ab Ægypto gloriâ ſuâ. 6 Et dicet habitator inſulæ hujꝰ in die illa; Ecce hæc erat ſpes noſtra, ad quos confugimꝰ in auxilium, ut liberarent nos à facie regis Aſſyriorũ: & quo modo effugere poterimꝰ nos?

CAP. XXI.

1 Onus deſerti maris. Sicut turbines ab Africo veniunt, de deſerto venit, de terra hor-2 ribili. Viſio dura nuntiata eſt mihi: qui incredulꝰ eſt, infideliter agit: & qui depopulator eſt, vaſtat. Aſcende Ælam, obſide Mede: omnẽ gemitũ ejus 3 ceſſare feci. Proptereà repleti ſunt lumbi mei dolore, anguſtia poſſedit me ſicut anguſtia parturientis: corrui cùm audirem, conturbatꝰ ſum cùm vi-4 derem. Emarcuit cor meũ, tenebræ ſtupefecerunt me: Babylon dilecta mea poſita eſt 5 mihi in miraculũ. Pone menſam, contemplare in ſpecula comedentes & bibentes: ſurgite principes, arripite clype-6 um. Hæc enim dixit mihi Dominus; Vade, & pone ſpeculatorẽ: & quodcunque vide-7 rit annunciet. Et vidit currũ duorũ equitũ, aſcenſorem aſini, & aſcenſorem cameli: & contemplatus eſt diligenter 8 multo intuitu. Et clamavit leo; Super ſpeculã Dñi ego ſum, ſtans jugiter p diem: & ſuper cuſtodiã meã ego ſum, 9 ſtans totis noctibꝰ. Ecce iſte venit aſcenſor vir bigæ equitum, & reſpondit, & dixit; Cecidit, cecidit Babylon, & omnia ſculptilia deorum ejus 10 contrita ſunt in terrã. Tritura mea, & filii areæ meæ, quæ audivi à Dño exercituum Deo Iſrael, annuntiavi vobis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Τότε ἐλάλησε κύριος πρὸς (γ) Ἡσαΐαν υἱὸν Ἀμὼς, λέγων, Πορεύου καὶ ἄφελε τὸν σάκκον ἀπὸ τῆς ὀσφύος σου, καὶ τὰ σανδάλιά σου ὑπόλυσαι ἀπὸ τῶν ποδῶν σου, καὶ ποίησον οὕτως, πορευόμενος γυμνὸς καὶ (˜) ἀνυπόδετος. 3 Καὶ εἶπε κύριος, Ὃν τρόπον πεπόρευται (δ) ὁ παῖς μου Ἡσαΐας γυμνὸς καὶ ἀνυπόδετος τρία ἔτη, τρία ἔτη (ε) ἔσται εἰς σημεῖα καὶ τέρατα τοῖς Αἰγυπτίοις καὶ Αἰθίοψιν· 4 Ὅτι οὕτως ἄξει βασιλεὺς Ἀσσυρίων τὴν αἰχμαλωσίαν Αἰγύπτου καὶ Αἰθιόπων, νεανίσκους καὶ πρεσβύτας, γυμνοὺς καὶ ἀνυποδέτους, ἀνακεκαλυμμένους τὴν αἰσχύνην Αἰγύπτου. 5 Καὶ αἰσχυνθήσονται ἡττηθέντες (ζ) ἐπὶ τοῖς Αἰθίοψιν, ἐφ᾽ οἷς ἦσαν πεποιθότες οἱ 6 Αἰγύπτιοι, ἦσαν γὰρ αὐτοῖς δόξα. Καὶ ἐροῦσιν οἱ κατοικοῦντες ἐν τῇ νήσῳ (η) ταύτῃ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, Ἰδοὺ ἡμεῖς ἦμεν πεποιθότες τοῦ φυγεῖν εἰς αὐτοὺς εἰς βοήθειαν, οἳ οὐκ ἠδύναντο σωθῆναι ἀπὸ βασιλέως Ἀσσυρίων, καὶ πῶς ἡμεῖς σωθησόμεθα;

MS. A. (γ) Ἡσαΐαν, λέγων, (˜) ἀνυπόδητος. (δ) Ἡσαΐας ὁ παῖς
(ε) ἔσται σημεῖα (ζ) οἱ Αἰγύπτιοι ἐπὶ (η) ταυτῇ, Ἰδοὺ ἡμεῖς

Tunc loquutus eſt Dominus ad E-ſaiam filium Amos, dicens; Vade, & aufer ſaccum à lumbis tuis, & calceamenta tua ſolve de pedibus tuis, & (?) fac ita vadens nudus, & diſcalceatus. Et dixit Dominus; Quomodo ivit puer meus Eſaias nudꝰ, & diſcalceatus (b) tres annos, (c) tres anni erunt in ſigna, & prodigia Ægyptiis, & Æthiopibus: Quoniam ſic ducet rex Aſſyriorum captivitatem Ægypti, & Æthiopum, juvenes & ſenes, nudos & diſcalceatos, diſcoopertos confuſionem Ægypti. Et confundentur juſti ſuper Æthiopibus, in quibus erant fidentes Ægyptii: erant enim eis gloria. Et dicent habitatores inſulæ hujus in die illa; Ecce nos ſumus fidentes ad fugiendum ad eos in auxilium, qui non potuerunt ſalvari à rege Aſſyriorum: & quomodo nos ſalvabimur?

ΚΕΦ. κα'. CAP. XXI.

ΤΟ῀ ὍΡΑΜΑ ΤΗ͂Σ ἘΡΗ΄ΜΟΥ. VISIO DESERTI.

1 Ὡς καταιγὶς δι᾽ ἐρήμου διέλθοι, ἐξ ἐ-2 ρήμου ἐρχομένη ἐκ γῆς φοβερὸν τὸ ὅραμα, καὶ σκληρὸν ἀνηγγέλη μοι. ὁ ἀθετῶν ἀθετεῖ, ὁ ἀνομῶν ἀνομεῖ. ἐπ᾽ ἐμοὶ οἱ Ἐλαμῖται, καὶ οἱ πρέσβεις τῶν Περσῶν ἐπ᾽ ἐμὲ ἔρχονται· 3 νῦν στενάξω καὶ παρακαλέσω ἐμαυτόν. Διὰ τοῦτο ἐνεπλήσθη ἡ ὀσφύς μου ἐκλύσεως, καὶ ὠδῖνες ἔλαβόν με ὡς τὴν τίκτουσαν· ἠδίκησα (α) τοῦ μὴ ἀκοῦσαι, ἐσπούδασα (β) τοῦ μὴ 4 βλέπειν. Ἡ καρδία μου πλανᾶται, καὶ ἡ ἀνομία με βαπτίζει, ἡ ψυχή μου ἐφέστηκεν εἰς 5 φόβον. Ἑτοίμασον τὴν τράπεζαν, (γ) φάγετε, πίετε· ἀναστάντες οἱ ἄρχοντες, ἑτοι-6 μάσατε θυρεοὺς, Ὅτι οὕτως εἶπε (δ) πρὸς μὲ κύριος, Βαδίσας σεαυτῷ στῆσον σκο-7 πὸν, καὶ (ε) ὃ ἂν ἴδῃς ἀνάγγειλον. Καὶ εἶδον ἀναβάτας ἱππεῖς δύο, (ζ) καὶ ἀναβάτην ὄνου, καὶ ἀναβάτην καμήλου. ἀκρόασαι ἀκρόασιν 8 πολλὴν, Καὶ κάλεσον Οὐρίαν εἰς τὴν (η) σκοπιάν. κύριος εἶπεν, Ἔστην διαπαντὸς ἡμέρας, καὶ ἐπὶ τῆς παρεμβολῆς (θ) ἐγὼ ἔ-9 στην ὅλην τὴν νύκτα, Καὶ ἰδοὺ αὐτὸς ἔρχεται ἀναβάτης (˜) συνωρίδος. καὶ ἀποκριθεὶς εἶπε, (ι) Πέπτωκε πέπτωκε Βαβυλὼν, καὶ πάντα τὰ ἀγάλματα αὐτῆς, καὶ τὰ χειροποίητα 10 αὐτῆς συνετρίβησαν εἰς τὴν γῆν. Ἀκούσατε, οἱ καταλελειμμένοι, (κ) καὶ οἱ ὀδυνώμενοι ἀκούσατε, ἃ ἤκουσα παρὰ κυρίου σαβαὼθ, ὁ θεὸς τοῦ Ἰσραὴλ ἀνήγγειλεν ἡμῖν.

MS. A. (α) τὸ μὴ (β) τὸ μὴ (γ) πίετε, φάγετε· (δ) κύριος πρὸς
(ε) ὃ ἐὰν (ζ) ἀναβάτην (η) σκοπιὰν κυρίου. καὶ εἶπεν, (θ) ἕστην
δος. (ι) Πέπτωκεν Βαβυλὼν, (κ) καὶ ὀδυνώμενοι

Sicut tempeſtas per deſertum tranſeat è deſerto veniens de terra, terribilis Viſio, & dura nuntiata eſt mihi. (a) Prævaricans prævaricatur, agit. Super me Elamitæ, & legati Perſarum ſuper me veniunt. Nunc gemam, & conſolabor ipſum. Propter hoc impleti ſunt lumbus meus diſſolutione: & dolores apprehenderunt me, ſicut parturientem: injuſtè egi ne audiendo: ſtudioſè egi, ne viderem. Cor meum errat: & iniquitas me demergit: anima mea incubuit in timorem. Paramenſam comedite, bibite: Surgentes principes parate clypeos: Quoniam ſic dixit ad me Dominus; tibi ſtatue ſpeculatorem: & quodcunque videris, annuntia. di aſcenſores equites duos, aſcenſorem aſini, & aſcenſorem cameli. Auſculta auſcultatione multâ: Et voca (c) in ſpeculam: Dominus Steti ſemper die, & ſuper ego ſteti totâ nocte: Et ecce venit aſcenſor bigæ. Et dixit; Cecidit, cecidit Babylon & omnia ſimulachra ejus, & manufacta ejus contrita ſunt in terram. Audite, qui derelicti & qui doletis, audite, quæ audivi à Domino Sabaoth: Deus Iſrael annuntiavit nobis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 בעדנא ההיא גזר יי ביד ישעיה בר אמוץ למימר איזיל ותיסר סקא מחרצך ומסנך
3 תשלוף מעל רגלך ועבד כן אזל פתיח ויחיף : ואמר יי כמא דהליך עבדי ישעיה פחיח
4 ויחיף תלת שנין אית ומופת על מצראי ועל כושאי : כן ידבר מלכא דאתור ית שבי
5 מצרים וית גלות כוש עולמין וסבין פחיחין ויחפין וגלן עריה קלן מצרים : ויתברון
6 ויבהתון מכוש בית רוחצניהון ומן מצרים תושבחתהון : ויימר יתיב נסא הדין בעדנא
ההיא הכדין הוה בית רוחצננא דהוינא סבירין למערוק לתמן לסעיד לאשתזבא מן
קדם מלכא דאתור עד כדון נפשהון לא שזיבו ואיכדין נשתזיב אנחנא :

כא

1 מטל משרין דאתין ממדברא כמי ימא דנגדין כעלעולין ואתן באורח דרומא מדברן
2 ואתין ממדברא מארעא דאתעבידא בה חסינין : אמר נביא נבואה קשיא אתחזיאה לי
אניסיא מאנסין ובוזיא מתבוזין סקו עילמאי תקפו מדאי כל דהוו מתאנחין מן קדם
3 מלכא דבבל אניחית להון : על כן אתמליאו חרציהון זיעא דחלא אחדתנון הא כחבלין
4 לילדתא אטפשו מלמשמע טעו מלמחזי : טעה לבהון עקא וביעותין אחדונון אתר בית
5 רוחצניהון הוה להון לתבר : סדרו פתורין אקימו סכואין אכולו שתו קומו רברביא
6 7 מריקו וצחצחו זינא : ארי כדנן אמר לי יי איזיל אקים סכואה דיחזי יחוי : ויחזי רתך אנש
ועמיה זוג פרשין רכב על חמר רכיב על גמלא אמר נביא אצתית אצתא וחזית והא
8 משרין לחדא : אמר נביא קל משרין דאתין בסיטוניהון כאריא ועל סכותא קדם יי אנא
9 קאם תדירא בימכא ועל מטרתי אנא מעתד כל ליליא : והא דין אתא רתך אנש ועמיה
זוג פרשין ואתיב ואמר נפלת ואף עתידא למפל בבל וכל צלמי טעותהא ידקדקון
10 לארעא : מלכין דאומנין לאגחא קרבא ייתון עלה למבזהא כאכרא דאומן למדש ית
אדרא אמר נביא דשמעית ית קל מימרא דיי צבאות אלהא דישראל חויתי לכון :

P A R A P H. C H A L D. Verſio Latina

In tempore illo decrevit Dñs per manũ Eſaiæ filii Amos, dicens: Va ſolve ſaccum de lumbis tuis, & calciamenta tua diſcalciabis de pedibus & fecit ſic; ambulans nudus & diſcalciatus. Et dixit Dñs: Sicut ambula vit ſervus meus Eſaias nudus & diſcalciatus tribus annis in ſignum & tentũ ſup Ægyptios, & ſuper Æthiopes: Sic ducet rex Aſſyriæ capti Ægypti, & tranſmigrationẽ Æthiopiæ, juvenes & ſenes, nudos & diſ ciatos, & diſcoopertis pudendis in ignominiã Ægyptiorum. Et con tur & confundentur ab Æthiopia domo confidentiæ ſuæ, & ab Æg laude ſua. Et dicet habitator inſulæ hujus in tempore illo: Ecce hæ *domus* confidentiæ noſtræ, ad quem ſperabamus confugere in auxi liberaremur à facie regis Aſſyriæ: & ſi iſti adhuc animas ſuas non ſa verunt, quomodo liberabimur nos?

C A P. XXI.

Onus exercituũ venientiũ à deſerto, ſicut aquæ maris; decurrentes turbines, *&* venientes per viam Auſtri ſe proripiunt, & venient à deſer to, de terra in qua facta ſunt terribilia. Dicit propheta, Prophetia nunciata eſt mihi, Violenti violentiam inferunt, & direptores dir Aſcendite Elamitæ, circuite Medi: & omnes qui gemebãt à facie Babylonis, requieſcere feci eos. Propterea impleti ſunt lumbi eorũ re; timor apprehendit eos, ſicut dolores parturientẽ: inſipientes facti ne audiant: erraverunt ut non videant. Erravit cor eorũ, tribula conturbationes apprehenderunt eos, quia domus confidentiæ ſuæ in interitũ. Ordinate menſas, ſtatuite ſpeculas, comedite, bibite, principes, tergite et lucida facite arma. Quia hæc dicit mihi Dñs, Vade ſtitue ſpeculatorẽ, quodcunq; viderit, annuntiet. Et vidit currũ hom & cum eo par equitũ: aſcenſorẽ aſini, & aſcenſorẽ cameli. Dixit p Auſcultavi auſcultatione, & vidi; et ecce, turbæ *ingentes*. Dixit p Vox turmarũ venientiũ cum loricis ſuis ſicut leo; *et* ſup ſpecul. ego ram Dño ſemp in die, et in cuſtodia mea ego ſto tota nocte. Et ecce nit currꝰ hominis, et cum eo duo equites: et reſpondit et dixit, Ceci etiã futura eſt ut cadat Babylon, et omnia ſimulachra idolorũ ejus nuentur *ad terram*. Reges qui conſueti ſunt ad ineundũ prælium contra eam, ut diripiant eam ſicut plauſtrum artificis ad tritura am. Dicit propheta, Quod audivi, *vocem ſermonis* Domini exercituum Dei Iſrael, annun

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܡܠܠ ܡܪܝܐ ܒܝܕ ܐܫܥܝܐ ܢܒܝܐ ܒܪ ܐܡܘܨ ܘܐܡܪ ܠܗ. ܙܠ ܫܪܝ 2
ܣܩܐ ܡܢ ܚܨܝܟ. ܘܡܣܐܢܝܟ ܫܠܘܦ ܡܢ ܪܓܠܝܟ. ܘܥܒܕ ܗܟܢܐ. ܘܗܠܟ ܥܪܛܠܝ ܘܚܦܝ. * ܘܐܡܪ 3
ܡܪܝܐ. ܐܝܟܢܐ ܕܗܠܟ ܥܒܕܝ ܐܫܥܝܐ ܥܪܛܠܝ ܘܚܦܝ. ܘܗܘܝܢ ܐܬܘܬܐ ܘܬܕܡܪܬܐ
ܬܠܬ ܫܢܝܢ. ܥܠ ܡܨܪܝܢ ܘܥܠ ܟܘܫ. * ܗܟܢܐ ܢܕܒܪ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ ܫܒܝܬܐ ܕܡܨܪܝܢ 4
ܘܫܒܝܬܐ ܕܟܘܫ. ܛܠܝܐ ܘܣܒܐ ܥܪܛܠܝ ܘܚܦܝ. ܘܢܬܓܠܐ ܨܥܪܗܘܢ ܕܡܨܪܝܢ.
* ܘܢܬܒܪܘܢ. ܘܢܒܗܬܘܢ. ܡܢ ܟܘܫ ܬܘܟܠܢܗܘܢ. ܘܡܢ ܡܨܪܝܢ ܫܘܒܗܪܗܘܢ. * ܘܢܐܡܪ 5 6
ܥܡܘܪܐ ܕܓܙܪܬܐ ܗܕܐ. ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܗܢܘ ܬܘܟܠܢ ܕܥܪܩܢ ܠܘܬܗ ܠܡܥܕܪܢܘܬܐ ܘܠܡܬܦܨܝܘ
ܡܢ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܘܐܝܟܢܐ ܢܬܦܨܐ ܚܢܢ.

* ܟܐ * ܩܦܠܐܘܢ *

* ܡܫܩܠܐ ܕܡܕܒܪܐ ܕܝܡܐ * * ܐܝܟ ܥܠܥܠܐ ܡܢ ܬܝܡܢܐ ܠܥܒܪ. ܡܢ ܡܕܒܪܐ. ܘܐܬܐ 1
ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܚܝܠܬܐ. * ܚܙܘܐ ܩܫܝܐ ܐܬܚܙܝ ܠܢ. ܛܠܘܡܐ ܛܠܡ. ܘܒܙܘܙܐ ܒܙ. ܣܩ ܥܝܠܡ 2
ܒܡܕܝ. ܘܛܘܪܝ ܡܕܝ. ܘܟܠܗܝܢ ܐܢܚܬܗ ܫܒܩܬ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܡܠܝ ܚܨܝ 3
ܙܘܥܐ. ܘܐܚܕܘܢܝ ܚܒܠܐ ܐܝܟ ܚܒܠܐ ܕܝܠܕܬܐ. ܐܬܬܙܝܥܬ ܕܠܐ ܐܫܡܥ. ܘܐܬܕܠܚܬ ܕܠܐ ܐܚܙܐ.
* ܛܥܐ ܠܒܝ. ܘܚܒܠܐ ܐܒܥܬܘܢܝ. ܘܫܘܦܪܐ ܕܪܓܝܓ ܗܘܐ ܠܝ. ܗܦܟ ܠܝ ܠܙܘܥܐ. * ܛܟܣܘ 4 5
ܦܬܘܪܐ. ܕܘܩܘ ܕܘܩܐ. ܐܟܘܠܘ ܘܐܫܬܘ. ܩܘܡܘ ܪܘܪܒܢܐ: ܡܫܚܘ ܬܪܣܐ. * ܡܛܠ 6
ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܙܠ ܐܩܝܡ ܕܘܩܐ. ܘܡܕܡ ܕܚܙܐ ܢܚܘܐ. * ܘܚܙܐ ܪܟܫܐ ܕܦܪܫܐ 7
ܬܪܝܢ. ܪܟܝܒ ܚܡܪܐ. ܘܪܟܝܒ ܓܡܠܐ. ܘܨܘܬ ܨܘܬܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܩܪܐ ܕܘܩܐ ܒܐܕܢܝ ܘܐܡܪ 8
ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܩܐܡ ܐܢܐ ܐܡܝܢܐܝܬ ܒܐܝܡܡܐ. ܘܥܠ ܡܛܪܬܝ ܩܐܡ ܐܢܐ. ܟܠܗܝܢ ܠܠܘܬܐ.
* ܘܗܐ ܐܬܐ ܚܕ ܡܢ ܪܟܫܐ ܕܦܪܫܐ. ܘܥܢܐ ܘܐܡܪ. ܢܦܠܬ ܢܦܠܬ ܒܒܠ. ܘܟܠܗܘܢ 9
ܨܠܡܝ ܐܠܗܝܗ. ܐܬܬܒܪܘ ܠܐܪܥܐ. ܡܢ ܟܠܦ ܚܨܕ ܘܡܢ ܟܠܦ ܐܕܪܐ. * ܡܕܡ ܕܫܡܥܬ 10
ܡܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܚܘܝܬܟܘܢ.

Eodem illo tempore locutus eſt Dominus 2
per Eſaiam prophetam Amoſi filium, dixitque ad eum; Abi, depone cilicium de lumbis tuis, & calceos tuos de pedibus tuis: feceitque ſic, & inceſſit nudus & diſcalceatus.
Tum dixit Dominus. Quemadmodum inceſ- 3
ſit ſervus meus Eſaia nudus & diſcalceatus, ita fient ſigna & portenta tribus annis ſuper Ægyptum & ſuper Cus. Sic abducet rex 4
Aſſyriæ captivitatem Ægypti, & captivitatem Cus, juvenes ac ſenes nudos & diſcalceatos; & detegetur turpitudo Ægypti: Et fran- 5
gentur ac pudore afficientur à Cus fiduciâ ſuâ, & ab Ægypto gloriâ ſuâ. Et dicet in- 6
cola hujus inſulæ eo die: Hiccine eſt ſtatus fiduciæ noſtræ ad quam confugeramus ut haberemus præſidium, & evaderemus à rege Aſſyriæ? nos igitur quomodo ſalvaremur?

CAP. XXI.

Onus deſerti maris.

NOn ſecus ac turbinibus ab Auſtro advolans 1
è deſerto, & veniens è terra longinqua,
Spectrum atrox apparuit nobis: tyrannus 2
opprimens, & prædo diripiens. Aſcende Ilam & montes Mediæ, & omnes gemitus ejus ceſſare faciam. Idcirco repletum eſt dorſum 3
meum tremore, & corripuerunt me caligines quaſi caligines parturientis: contremiſco quò minùs audiam, et conturbor quò minùs videam. Errat cor meum, caligines me terrent, 4
et pulchritudines mihi gratiſſimas vertunt mihi in pavorem. Parate menſas, ſpecula- 5
mini ſpeculatores, edite et bibite, Surgite magnates, ungite clypeos: Nam ita dixit mihi 6
Dominus; Vade, conſtitue ſpeculatorem qui quod viderit indicet. Cùm itaque vidiſſet e- 7
quitatum duorum equitum, unius aſino, alterius camelo inſidentis; cúmque diu auditum intendiſſet, Clamavit ſpeculator in auribus 8
meis, ac dixit; Ego domine, conſiſtam jugiter per diem, et in excubiis meis perſtabo totis noctibus. Interea ecce venit unus ex inequi- 9
tantibus illis equitibus, et reſpondens dixit; Cecidit, cecidit Babel, et omnes dii ejus ſculptiles confracti ſunt humi, propter penuriam meſſis et propter penuriam areæ. Quod audivi 10
à Domino Deo Iſraelis, nuntiavi vobis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* حينئذ تكلم الرب مع اشعياء بن عاموص قايلا. امض وانزع عن حقوك مسحك. وحل 2
نعليك عن قدميك. واصنع هكذا. امض عريانا وحافيا * وقال الرب. على نحو ما مضى فتاي 3
اشعياء عريانا وحافيا. ثلاثة سنين تكون علامات وايات للمصريين وللحبش * لان هكذا يسوق 4
ملك الموصليين سبي مصر وشبان الحبش ومشايخهم * عراة وحفاة كاشفين فضيحة مصر.
* ويخزون ويغلبون المصريون بالحبش التي كانت المصريون متوكلين عليهم. لانهم كانوا لهم 5
مجدا * ويقول السكان في هذه الجزيرة في ذلك اليوم * هوذا نحن كنا متوكلين ان نلتجي 6
اليهم للمعونة. الذين لم يستطيعوا ان يخلصوا من ملك الموصليين. وكيف نحن نخلص.

* الفصل الحادي والعشرون * الوحي الحادي عشر * وهو الاصحاح العاشر.

* النبوة في اهل البرية القريبة من البحر. مثل عاصف من برية يجوز من برية آت من 1
الارض * كلمة نحوه وصعبة نخبر لي. العاصي يعصي. الاثم يأثم في اهل الاهواز وشفعاء الفرس 2
الي يقبلون. الان اتنهد واعزي ذاتي * لاجل هذا امتلى حقوي انحلالا. والطلقات اخذتني 3
مثل الوالدة. طرشت ان لا اسمع وجزعت ان لا انظر * قلبي يضل. والاثم يغمرني. ونفسي بلغت 4
الخوف * اعدوا المائدة. كلوا اشربوا. قوموا ايها الرؤساء هيوا الاترسة * لان هذا قال لي الرب. 5 6
اعمد اقم لك ديدبان. والذي تراه اخبر به * ونظر فارسين راكبين. احدهما راكب حمار 7
والاخر راكب جمل. ليسمعوا اسماعا كثيرا * وادع اوريا لديدبة الرب. وقال. وقفت كل حين 8
اياما. وعلى المعسكر وقفت انا الليل كله * واذا هو وقف * واقبل راكب من الاثنين واجاب 9
وقال. سقطت بابل العظمى. وكل اصنامها ومصنوعات الايدي التي لها انسحقت الى الارض.
* اسمعوا ايها المتعبدون والمتوجعون اسمعوا. ما سمعت من قبل رب الجنود اله اسرائيل اخبركم. 10

Eo inquam tempore allocutus eſt Dominus Eſaiam filium Amos, dicens; Vade, & exue ſaccum tuum de lumbo tuo, et ſoleas tuas ſolve de pedibus tuis, & hoc modo fac: incede nudus & diſcalceatus. Tum 3
dixit Dominus, Quemadmodum inceſſit puer meus Eſaia nudus & diſcalceatus, ita *tribus annis erunt ſigna & prodigia in Ægyptiis & Æthiopibus. Hoc enim pacto* 4
abducet rex Aſſyriorum captivos Ægypti, & juvenes ac ſenes Æthiopum, nudos et diſcalceatos, revelantes turpitudinem Ægypti. Ita pudefacti ſuperabuntur Æ- 5
gyptii ab Æthiopibus quibus freti erant Ægyptii, quippe qui glorationi eſſent apud ipſos. Et dicent habitantes in hac inſula 6
eo die, Ecce nos confidebamus fore ut pro auxilio confugeremus ad iſtos qui nequeunt liberare ſe à rege Aſſyriorum, quomodo ergò nos evaderemus?

CAP. XXI.

Revelatio undecima.

Textus decimus.

PRophetia de incolis deſerti quod eſt 1
mari proximum. *Ceu turbo de deſerto, remeans è deſerto, veniens è terra, Ver-* 2
bum formidabile ac prædurum nuntiatur mihi: Rebellis rebellat, et perfidus perfidè agit in gentem Abuaz, (i. Elamitas:) *patroni Perſarum ad me veniunt: jam reſpirabo & meipſum conſolabor. Hac de* 3
re impletũ eſt dorſum meũ diſſolutione, et occupaverunt me tormina quaſi parturientem: adeo *opprimor ut non audiam, adeo trepido ut non videam. Animus meus er-* 4
rat, ſcelus me debilitat, & anima mea ſupremo terrore percellitur. Sternite men- 5
ſam, edite, bibite: ſurgite O principes, præparate clypeos. Hoc enim dixit mihi 6
Dominus; Adſto, ſtatue tibi exploratorem; & quod videris, annuntia. Et vidi 7
duos equites inſidentes, unum inſidentem aſino, alterum inſidentem camelo, ut multa auditu digna narrarent. Vocat etiam 8
unam ad explorationem Domini: & dixit, Steti indeſinenter per dies aliquot & ſuper caſtra ſteti ego totâ nocte. Eo ſtante 9
advenit eques unus ex iis duobus, qui reſpondit ac dixit, Corruit Babel illa magna, & omnia ipſius idola & manufacta ipſius comminuta ſunt in terram uſque. Audite O religioſi & dolentes, 10
audite: quod audivi à Domino exercituum, Deo Iſraelis, annuntio vobis.

ישעיה: כב

, nocte de quid Custos : Sehir de *clamans* me ad : Dumah *Onus*
11 משא דומה אלי קרא משעיר שמר מה־מלילה
: nox etiam & mane Venit : custos Dixit ? nocte de quid custos
12 שמר מה־מליל: אמר שמר אתא בקר וגם־לילה
saltu In : Harab in *Onus* .venite ,revertimini , quærite *quæretis* si
13 אם תבעיון בעיו שבו אתיו: משא בערב ביער
sitienti occursum In .Dedanim semitæ , morabimini Harab in
14 בערב תלינו ארחות דדנים: לקראת צמא
.*virgimem* prævenite ejus pane cum Temah terræ habitatores ,aquæ venite
התיו מים ישבי ארץ תימא בלחמו קדמו נדד:
, *expansi* gladii *faciebus* à ; *evagati sunt* gladiorum *faciebus* à Quoniam
15 כי־מפני חרבות נדדו מפני חרב נטושה
sic Quia .prælii gravitatis *faciebus* à & ,extenti arcus *faciebus* à &
16 ומפני קשת דרוכה ומפני כבד מלחמה: כי־כה
cõsumetur & ,mercenarii anni sicut ,*anno adhuc* In :me ad Dominus dixit
אמר אדני אלי בעוד שנה כשני שכיר וכלה
filiorum fortium *arcus numeri* residuum Et .Chedar gloria omnis
17 כל־כבוד קדר: ושאר מספר־קשת גברי בני־
.est locutus Israel Deus DOMINUS nam : imminuentur Chedar
קדר ימעטו כי יהוה אלהי־ישראל דבר:

CAP. XXII. כב

tu omnis ascendisti quia , nunc tibi Quid .visionis vallis *Onus*
1 משא גיא חזיון מה־לך אפוא כי־עלית כלך
.læta civitas ,tumultuans urbs , plena *Tumultuationibus* ? tecta in
2 לגגות: תשאות מלאה עיר הומיה קריה עליזה
.bello mortui neque , gladio interfecti non tui Interfecti
חלליך לא חללי־חרב ולא מתי מלחמה:
Omnes .sunt ligati *arcu ab* , simul *sunt vagati* tui *gubernatores* Cuncti
3 כל־קציניך נדדו־יחד מקשת אסרו כל־
: dixi Propterea .fugerant *longè à* , pariter sunt vincti *tui* inventi
4 נמצאיך אסרו יחדו מרחוק ברחו: על־כן אמרתי
super me consolari festinetis ne : fletu in me *amarificabo* ,me à *Respicite*
שעו מני אמרר בבכי אל־תאיצו לנחמני על־
,conculcationis & ,contritionis dies Quia .mei populi filiæ *vastatione*
5 שד בת־עמי: כי יום מהומה ומבוסה
, visionis Valle in exercituum *DOMINO* Domino *perplexitatis* &
ומבוכה לאדני יהוה צבאות בגי חזיון
Helam Et .montem ad *clamor* & , parietem *exparietans*
6 מקרקר קר ושוע אל־ההר: ועילם
.*clypeum denudavit* Chir & , equitum hominis curru in pharetram *tulit*
נשא אשפה ברכב אדם פרשים וקיר ערה מגן:
, equites & , *curru* sunt repletæ *suarum vallium electio* ,fuit Et
7 ויהי מבחר־עמקיך מלאו רכב והפרשים
operimentum discooperuit Et .*portam versus posuerunt ponendo*
8 שת שתו השערה: ויגל את מסך
.sylvæ domus *armaturam* ad illa die in respexisti & : Jehudah
יהודה ותבט ביום ההוא אל־נשק בית היער:
: sunt multiplicatæ quia ; vidistis David civitatis scissuras Et
9 ואת בקיעי עיר־דוד ראיתם כי־רבו
Et .inferioris piscinæ aquas congregâstis &
10 ותקבצו את־מי הברכה התחתונה: ואת־
muniendum ad domos destruxistis & ,numerâstis Jerusalaim domos
בתי ירושלם ספרתם ותתצו הבתים לבצר
.murum
החומה:

Versio VULG. LAT.

11 Onus Duma ad me clamat ex Seir; Custos, quid de nocte? custos, quid de nocte? 12 Dixit custos; Venit manè & nox: si quæritis, quærite: convertimini, venite. 13 Onus in Arabia. In saltu ad vesperam dormietis, in semitis Dedanim. 14 Occurrentes sitienti ferte aquam, qui habitatis terram Austri, cum panibus occurrite fugienti. 15 A facie enim gladiorũ fugerunt, à facie gladii imminentis, à facie arcûs extenti, à 16 facie gravis prælii: Quoniam hæc dicit Dominus ad me; Adhuc in uno anno, quasi in anno mercenarii, & auferetur omnis 17 gloria Cedar. Et reliquiæ numeri sagittariorum fortium de filiis Cedar imminuentur: Dominus enim Deus Israel locutus est.

CAP. XXII.

1 Onus vallis Visionis. Quidnam quoque tibi est, quia ascendisti & tu omnis in tecta? 2 Clamoris plena, urbs frequẽs, civitas exultans: interfecti tui, non interfecti gladio, nec mortui in bello. 3 Cuncti principes tui fugerunt simul: duréque ligati sunt: omnes qui inventi sunt, vincti sunt pariter, procul fugerunt. 4 Propterea dixi; Recedite à me, amarè flebo: nolite incumbere ut consolemini me super vastitate filiæ 5 populi mei. Dies enim interfectionis, & conculcationis, & fletuum, Domino Deo exercituum in valle Visionis: scrutans murum, & magnificus super montem. 6 Et Ælam sumpsit pharetram, currum hominis equitis, & parietem nudavit clypeus. 7 Et erunt electæ valles tuæ plenæ quadrigarum, & equites ponent sedes 8 suas in porta. Et revelabitur operimentum Judæ, & videbis in die illa armamentarium do-9 mûs saltûs. Et scissuras civitatis David videbitis, quia multiplicatæ sunt: & congregâstis aquas piscinæ inferioris, 10 Et domos Jerusalem numerâstis, et destruxistis domos ad muniendum murum.

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Translatione LATINA.

11 ΤΟ' ὍΡΑΜΑ ΤΗ͂Σ ἸΔΟΥΜΑΙ'ΑΣ. VISIO IDUMÆ

Πρὸς ἐμὲ (λ) καλεῖ παρὰ τοῦ Σηεὶρ, (μ) Φυ-
12 λάσσετε ἐπάλξεις. Φυλάσσω τὸ πρωῒ καὶ τὴν νύ-
κτα. ἐὰν ζητῇς ζήτει, καὶ παρ' ἐμοὶ οἴκει,
13 Ἐν τῷ δρυμῷ ἑσπέρας κοιμηθήσῃ, ἢ ἐν τῇ
14 ὁδῷ Δαιδάν. Εἰς συνάντησιν (ν) διψῶντι
ὕδωρ φέρετε οἱ ἐνοικοῦντες ἐν χώρᾳ Θαιμὰν,
15 ἄρτοις συναντᾶτε τοῖς φεύγουσι. Διὰ τὸ
πλῆθος τῶν (ξ) πεφονευμένων, καὶ διὰ τὸ
πλῆθος τῶν πλανωμένων, καὶ διὰ τὸ πλῆθος τῆς
μαχαίρας, καὶ διὰ τὸ πλῆθος τῶν τοξευμάτων
τῶν διατεταμένων, καὶ διὰ τὸ πλῆθος τῶν πε-
16 πτωκότων ἐν τῷ (ο) πολέμῳ. Διότι οὕτως εἶπέ
μοι κύριος, Ἔτι ἐνιαυτὸς ὡς ἐνιαυτὸς μι-
17 σθωτοῦ, ἐκλείψει ἡ δόξα τῶν υἱῶν Κηδὰρ, Καὶ
τὸ κατάλοιπον τῶν τοξευμάτων τῶν ἰσχυρῶν υἱ-
ῶν Κηδὰρ ἔσται ὀλίγον, (π) ὅτι κύριος ὁ Θεὸς
Ἰσραὴλ ἐλάλησεν.

Ad me (d) voca de Seir, Custo-
dite propugnacula. Custodio ma-
nè, & noctu. Si quæsieris, quæ-
re, & apud me (e) habita, In
saltu vesperè dormies, aut in via
Dedan. In occursum sitienti
quam ferte, qui habitatis in regi-
one Thæman; panes obviam
te fugientibus, Propter multitu-
dinem occisorum, & propter
bam errantium, & propter
titudinem gladii, & propter
titudinem arcuum intentorum,
propter multitudinem
ceciderunt in bello. Quia
xit mihi Dominus; Adhuc
nus, quasi annus mercenarii,
ficiet gloria filiorum Cedar:
residuum arcuum fortium
rum Ceda erit aucum:
minus Deus Israel locutus

MS.A. (λ) καλεῖτε (μ) Φυλάξεται (ν) ὕδωρ διψῶντι (ξ) [illegible] (ο) παιδίῳ. Ὅτι οὕτως (π) διότι κύριος ἐλάλησεν ὁ Θεὸς Ἰσραήλ.

ΚΕΦ. κβ'. CAP. XXII.

ΤΟ' (α) ῬΗ͂ΜΑ ΤΗ͂Σ ΦΑ'ΡΑΓΓΟΣ ΣΙΩ'Ν. VERBUM VALLIS SI

1 Τί ἐγένετό σοι (β), ὅτι νῦν ἀνέβητε πάν-
2 τες εἰς δώματα μάταια; Ἐνεπλήσθη ἡ πό-
λις βοώντων, οἱ τραυματίαι σου οὐ τραυμα-
τίαι (γ) ἐν μαχαίραις, οὐδὲ οἱ νεκροί σου νε-
3 κροὶ (‶) πολέμων. Πάντες οἱ ἄρχοντές σου πε-
φεύγασι, καὶ οἱ ἁλόντες σκληρῶς (‶) δεδεμέ-
νοι εἰσὶ, καὶ οἱ ἰσχύοντες ἐν σοὶ πόῤῥω πεφεύ-
4 γασι. Διὰ τοῦτο εἶπα, Ἄφετέ με, πικρῶς
κλαύσομαι· μὴ κατισχύσητε παρακαλεῖν με ἐ-
πὶ τὸ σύντριμμα τῆς θυγατρὸς τοῦ γένους μου,
5 Ὅτι ἡμέρα ταραχῆς καὶ ἀπωλείας καὶ κατα-
πατήματος, καὶ πλάνησις παρὰ κυρίου
σαβαὼθ. ἐν φάραγγι Σιὼν πλανῶνται, ἀπὸ
6 μικροῦ ἕως μεγάλου πλανῶνται ἐπὶ τὰ ὄρη. Οἱ
δὲ Ἐλαμῖται ἔλαβον φαρέτρας, (δ) καὶ ἀναβάται
ἄνθρωποι ἐφ' (ε) ἵπποις, καὶ συναγωγὴ παρα-
7 τάξεως. Καὶ ἔσονται αἱ ἐκλεκταὶ φάραγγές
σου, πλησθήσονται ἁρμάτων, οἱ δὲ ἱππεῖς
8 ἐμφράξουσι τὰς πύλας σου, Καὶ ἀνακαλύ-
ψουσι τὰς πύλας Ἰούδα· καὶ ἐμβλέψονται τῇ
ἡμέρᾳ ἐκείνῃ εἰς τοὺς ἐκλεκτοὺς οἴκους τῆς πό-
9 λεως· Καὶ ἀνακαλύψουσι τὰ κρυπτὰ τῶν
οἴκων τῆς ἄκρας Δαυίδ. καὶ εἴδοσαν, ὅτι πλεί-
ους εἰσὶ, καὶ ὅτι (ζ) ἀπέστρεψε τὸ ὕδωρ τῆς ἀρ-
10 χαίας κολυμβήθρας εἰς τὴν πόλιν, Καὶ ὅτι
καθεῖλοσαν τοὺς οἴκους Ἱερουσαλὴμ εἰς (η) ὀχυ-
ρώματα τείχους τῇ πόλει.

Quid factum est tibi,
‶nunc ascendistis omnes
vana? Impleta est civitas
mantium, vulnerati tui
nerati in gladiis, neque mortui
mortui præliorum: Omnes
cipes tui fugerunt, & capti
ligati sunt, & fortes in te
fugerunt. Propter hoc
mittite me, amarè plorabo:
contendere, ut consolemini
super contritione filiæ
mei: Quoniam dies
& perditionis, & conculcationis
& error à Domino Sabaoth
valle Sion errant, à parvo
ad magnum errant super
(a) Elamitæ autem
pharetras, & ascensores
super equos, & congregatio
Et erunt electæ valles
plebuntur curribus, &
stipabunt portas tuas, Et
bunt portas Juda: &
die illâ in electas domos
tis. Et revelabunt
rum arcis David. Et
quia plures sunt, & quia
vertit aquam veteris
vitatem, Et quia
domos Hierusalem in
muri civitati.

MS.A. (α) ὍΡΑΜΑ (β) νῦν, ὅτι (γ) μαχαίρας, (‶) πολέμου. (δ) ἀναβάται (ε) ἵπποις, (ζ) ἀπέστρεψαν (η) ὀχύρωμα τοῦ τείχους

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 מטל כס דלוט לאשקאה ית דומה עלי אכלי מן שמיא נביא פריש להון ית נבואתא
12 נביא פריש להון מה דעתיד למיתי: אמר נביא אית אגר לצדיקיא ואית פורענות
13 לרשיעיא אם תיבין אתון תובו עד דאתון יכלין למתב: מטל כס דלוט לאשקאה ית
14 ערבאי בחורשא ברמשא יביתון שירת בני דדן: לאפי צחיא פוקו נגדין דמיא דיתבי
15 בארעא דרומא לחמא דאתון אכלין זמינו למערקיא: ארי מן קדם קטול ערקו מן קדם
16 חרבא שליפא ומן קדם קשת מתיחא ומן קדם תקוף קרבא: ארי כדנן אמר יי לי בסוף
17 שניא כשני אגירא ויסוף כל יקרהון דערבאי: ותקוף עבדי קרב גברי בני ערבאי יזערון
ארי במימרא דיי אלהא דישראל גזיר כן:

כב

1 מטל נבואתא על קרתא דיתבא בחילתא דאתנביאו עלה נביא מה לכון כדין ארי
2 סלקתון כולכון לאגריא: מן קדם אתרגושא דאתמליאת קרתא משבחתא כרכא חדאה
3 קטיליך לא אתקטילו בחרבא ואף בקרבא לא מיתו: כל שלטוניך אטלטלו כחדא מן
4 קדם מתח קשתא גלו כל דאשתכח ביך אתקטלו כחדא מרחיק ערקו: על כן אמרית
5 שבוקו מני אבכי במרר לא תתבעיתו לנחמותי על תבר כנשתא דעמי: ארי יום רגוש
ואתדשא וקטול קדם יי אלהים צבאות על קרתא דיתבא בחלתא דאתנביאו עלה נביא
6 מבלשין בתיא מקפין מגדליא ברישי טוריא: ועילמאי נטלו זין ברתך אנש ועמיה זוג
7 פרשין ועל שור דבקו תריסין: והוה שפר משרך אתמליאו רתיכין ופרשין ממנן על
8 תרעין: וגלי ית משמורית בית יהודה ואסתכי בעדנא ההיא על זין בית גנזי מקדשא:
9 10 וית פלונת קרתא דדוד חזיתון ארי סגיאת וכנשתון ית עמא למי ברכתא ארעיתא: וית
בתי ירושלם מניתון ותרעתון בתיא לתקפא שורא:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Onus calicis maledictionis ad propinandum Dumæ. Ad me clamat
lis; Propheta edissere eis prophetiam, propheta edissere illis q
est. Dixit propheta, Est merces justis, & est vindicta impiis: si
estis, convertimini dum potestis converti. Onus calicis maledictionis
propinandum Arabibus. In sylva in vespere *manebũt turbæ* filiorum
In occursum sitientis educite *fluenta* aquarum qui habitatis in terra
strali: panem quem vos comeditis præparate fugientibus. Quia à
cisionis fugerunt, à facie gladii nudati, et à facie arcus extenti,
fortitudinis prælii. Quia hæc dicit Dñs mihi, In fine annorum
mercenarii; & consumetur omnis gloria Arabum. Et *fortitudo*
fortium *filiorum* Arabum imminuetur, quia in verbo Domini
decretum est ita.

CAP. XXII.

Onus prophetiæ super civitate quæ habitat in valle, quam
runt sup eam prophetæ. Quidnã vobis est hic, quia ascendistis
in tecta? A facie tumultus quo plena erat civitas, laudabilis urbs
interfecti tui non sunt interfecti gladio, nec mortui sunt in bello.
principes tui moti sunt, simul à facie arcus extenti transmigra
omnes qui inventi sunt in te, occisi sunt, simul eminus fugerunt.
dixi, Sinite me & amarè flebo, ne quæratis consolationem meam
tritionem cœtus populi mei. Dies enim tumultus et conculcationis
cisionis coram Dño Deo exercituum, sup civitatem quæ habitat
super quam prophetaverunt Prophetæ, scrutantes domos & circ
turres quæ sunt in cacumine montium. Et Elamitæ tulerunt arma
hominis & cum eo duo equites, & super murum adhæserunt clype
chriora electæ vallis tuæ impleta sunt quadrigis, & equites con
super portas. Et revelabitur operimentum domus Judæ, & pro
tempore illo super arma thesaurorum sanctuarii. Et divisiones
David vidistis, quia multa fuit; & congregastis populum ad aqua
inferioris. Et domos Hierusalem numerastis, & confregistis
borandum murum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܫܩܠܐ ܕܕܘܡܐ. ܠܝ ܩܪܐ ܡܢ ܣܥܝܪ ܢܛܘܪܐ ܕܠܠܝܐ. * ܐܡܪ ܢܛܘܪܐ. ܐܬܐ ܨܦܪܐ. ܐܦ ܠܠܝܐ. 11
ܐܢ ܒܥܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܥܘ. ܘܗܝܕܝܢ ܬܐܬܘܢ. * ܡܫܩܠܐ ܕܥܪܒܝܐ. ܒܪܡܫܐ ܒܥܒܐ ܬܒܘܬܘܢ. 12 13
ܒܫܒܝܠܐ ܕܕܘܕܢܝܡ. * ܠܐܘܪܥ ܨܗܝܐ ܐܝܬܘ ܡܝܐ ܥܡܘܪܝ ܐܪܥܐ ܕܬܝܡܢܐ. ܒܠܚܡܗܘܢ 14
ܐܪܥܘ ܠܥܪܘܩܐ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܩܕܡ ܣܝܦܐ ܐܬܒܕܪܘ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܣܦܣܪܐ ܕܡܦܠܛܐ. ܘܡܢ 15
ܩܕܡ ܩܫܬܐ ܕܡܬܝܚܐ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܩܛܠܐ ܕܩܪܒܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. 16
ܒܫܢܬܐ ܚܕܐ ܐܝܟ ܫܢܝ ܐܓܝܪܐ. ܢܫܠܡ ܟܠܗ ܐܝܩܪܗ ܕܩܕܪ. * ܘܫܪܟܐ ܕܡܢܝܢܐ 17
ܕܩܫܬܐ. ܓܢܒܪܐ ܕܒܢܝ ܩܕܪ ܢܙܥܘܪܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܠܠ.

* ܫܠܡ * ܟܐ *

* ܡܫܩܠܐ ܕܢܚܠܐ ܕܚܙܝܘܢ *

* ܡܢܐ ܐܝܬ ܠܟܝ ܗܫܐ ܕܣܠܩܬܝ ܟܠܟܝ ܠܐܓܪܐ. * ܕܫܘܓܫܐ ܐܬܡܠܝܬܝ ܡܕܝܢܬܐ. ܩܠ 1 2
ܐܬܡܠܝܬܝ ܩܪܝܬܐ ܥܫܝܢܬܐ. ܩܛܝܠܝܟܝ ܠܐ ܗܘܘ ܩܛܝܠܝ ܕܣܝܦܐ. ܘܠܐ ܡܝܬܝ ܩܪܒܐ.
* ܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܝܟܝ ܢܕܘ ܐܟܚܕܐ. ܡܢ ܩܫܬܐ ܐܬܐܣܪܘ. ܘܪܚܩܐܝܬ ܥܪܩܘ. * ܡܛܠ 3 4
ܗܢܐ ܐܡܪܬ. ܫܒܘܩܘܢܝ ܐܒܟܐ ܒܡܪܝܪܘܬܐ. ܘܠܐ ܬܬܠܚܨܘܢ ܠܡܒܝܐܘ ܠܝ ܥܠ
ܬܒܪܐ ܕܒܪܬ ܥܡܝ. * ܡܛܠ ܕܝܘܡܐ ܕܫܘܓܫܐ ܘܕܫܝܦܐ ܘܕܒܟܝܐ: ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܢܚܠܐ 5
ܕܚܙܝܘܢ. ܒܨܐ ܫܘܪܐ. ܘܩܥܐ ܥܠ ܛܘܪܐ. * ܘܥܝܠܡ ܢܣܒ ܬܘܠܕܐ ܒܪܟܒܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܦܪܫܐ. 6
ܘܫܘܪܐ ܓܠܐ ܥܠ ܬܪܣܐ. * ܘܢܗܘܘܢ ܓܒܝܐ ܕܥܘܡܩܝܟܝ. ܡܠܝܢ ܡܪܟܒܬܐ. ܘܦܪܫܐ ܢܣܕܪܘܢ 7
ܥܠ ܬܪܥܐ. * ܘܢܓܠܘܢ ܦܪܣܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܬܚܙܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܙܝܢܐ ܕܒܝܬ ܚܘܪܫܐ. * ܘܬܪܥܝܬܐ 8 9
ܕܡܕܝܢܬܐ ܕܕܘܝܕ. ܚܙܝܬܘܢ ܕܣܓܝ. ܘܟܢܫܬܘܢ ܡܝܐ ܕܒܪܟܬܐ ܬܚܬܝܬܐ. * ܘܣܬܪܬܘܢ 10
ܒܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܣܬܪܬܘܢ ܒܬܐ ܠܡܥܫܢܘ ܫܘܪܐ.

Onus Dumæ. Me vocavit è Seir cuſtos nocturnus, 11 *Et* dixit cuſtos, Venit aurora, etiam nox: ſi quæſituri eſtis, quærite, tum demum venietis. 12 *Onus Arabiæ*. Veſpere in ſylva pernoctabit in itinere Derunim. 13 Ad occurſum ſitientium afferte aquas O incolæ terræ Auſtralis: cum pane veſtro occurrite diſperſis: 14 Nam à conſpectu gladii diſperſi ſunt, à conſpectu enſis expoliti, à conſpectu arcûs intenti, & à conſpectu atrocitatis belli. 15 Sic enim dixit mihi Dominus, In fine anni, juxta annos mercenarii, deficiet tota gloria Cedar: 16 Et reliquus numerus ſagittariorum, virorũ Cedarenorum imminuetur; quoniam Dominus Deus Iſraelis locutus eſt. 17

CAP. XXII.

Onus vallis Hezjon (i. Viſionis.)

Quid tibi jam eſt, quòd tota aſcendis in tectum? 1 Tumultu plena es civitas? 2 clamore plena es civitas potens? occiſi tui nequaquam ſunt occiſi gladio, nec bello mortui? Omnes principes tui ſimul vacillant? 3 ab *arripiendo* arcu retardantur? & procul fugiunt? Propterea dico, Sinite me fletu cruciari: 4 ne urgeatis ut me conſolemini ſuper fractura filiæ populi mei: Quia dies eſt perturbationis, 5 conculcationis, & fletûs Domino Deo potentiſſimo in valle Hezjon. Scrutatus eſt mœnia, vociferavit ſuper montes; Elamita ſumpſit pharetram cum equitatibus 6 hominum equitum, & muro *inſidentes* deprehenderunt clypeos. Erunt lectiſſimæ valles 7 tuæ plenæ curribus, & equites inſtruent ſeſe ad portas: Juda deprehendet aciem, & 8 videbis eo die arma domûs ſaltûs, Et labefactationes 9 civitatis David. Sat vidiſtis: & congeſſiſtis aquas piſcinæ inferioris, Ut 10 obrueretis domos Jeruſalem; domos everſiſtis, ut muniretis murum;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الوحي الثاني عشر *   * النبوة في ادوم وفي اهل ساعير الذين هم بنو عيسو ، 11
12 ادعوني من ساعير * احفظوا السراريف * احفظ بالغداة والليل * ان كان تطلب اطلب *
13 * النبوة في العرب وبني قيدار * وعندي اسكن في الغاب * تضطجع مساء في طريق دادان
14 * لاستقبال العطشان جيبوا ماء ايها السكان في كورة تامان * بالخبز استقبلوا الهاربين * 15 لاجل
كثرة الهاربين * ولاجل كثرة التائهين * ولاجل كثرة السيف * ولاجل كثرة القسي الموترة *
16 ولاجل كثرة الساقطين في الحرب * لان هكذا قال لي الرب * سنة ايضا مثل السنة المستوجرة
17 يفني مجد بني قيدار * وبقية القسي القوية لبني قيدار تكون قليلة * من اجل ان الرب اله
اسرائيل تكلم *

الفصل الثاني والعشرون *

الوحي الثالث عشر *

* النبوة في اهل وادي صهيون * وهي الصحاري حول اورشليم *

1 * ماذا صار لك الان لانكم صعدتم جميعا الى الاسطحة الباطلة * 2 امتلات المدينة من
الصارخين * جرحاك ليس جرحا سيف * ولا امواتك اموات حرب * 3 جميع رؤسائك هربوا * ويكون
الساقطون مربوطين بصعوبة * والاقوياء بك فروا بعيدا * 4 لاجل هذا قلت اتركوني ابكي
بمرارة * لستم تقدرون ان تعزوني على انكسار ابنة شعبي * 5 لان يوم القلق والهلاك والوطي
ويضلين من قبل رب الجيوش في وادي صهيون * يضلون من الصغير الى الكبير * يضلون
على الجبال * 6 والاهوازيون اخذوا جعابا * اناس راكبون على الخيل وجمع القتال * 7 ويكون
اوديتك المختارة ممتلي من المراكب * والفرسان يغلقون ابوابك * 8 ويكشفون ابواب يهوذا *
9 وينظرون في ذلك اليوم الى البيوت المختارة التي للمدينة * ويكشفون خفايا بيوت طرف داود *
10 ويعلمون انهم كثيرون * وانهم ردوا ماء البركة الاولى الى المدينة * وانهم هدموا بيوت
اورشليم * يحصنون سور المدينة *

Revelatio duodecima.

Prophetia de Edom & de Seir, qui ſunt filii Eſau. 11 *Vocate me de Seir, cuſtodite pinnas. Cave tibi manè & noctu: ſi quæras, quære.* 12 **Prophetia de Arabib⁹ & filiis Cedar.** 13 *Et apud me habita in ſylvis, cubabis veſpere in via Dadhan. Obviàm ſitienti afferte aquam O habitantes* 14 *in regione Theman, cum pane occurrite fugientibus: Propter multitudinem fugientium,* 15 *& propter multitudinem vagantiũ, propter multitudinem gladii, propter multitudinem arcuum intentorum, & propter multitudinem cadentiũ in prælio. Sic enim* 16 *dixit mihi Dominus, Intra annum, ut annum mercede conducti, deficiet gloria filiorum Cedar: Et reliqui arcus fortes filiorum Cedar, erunt pauci: quia Dominus* 17 *Deus Iſraelis locutus eſt.*

CAPUT XXII.

Revelatio decimatertia.

Prophetia de incolis vallis Sion, nempe camporum qui ſunt circa Jeruſalem.

Quid tibi jam accidit, quòd aſcendiſtis omnes in tecta vana? 1 *Impleta eſt urbs vociferantibus?* 2 *Vulnerati tui non ſunt gladio vulnerati, nec mortui tui bello mortui. Omnes tui duces fugerunt, &* 3 *qui cadent, cum aſperitate vincientur; & qui fortiores erant in te, procul aufugerunt. Propterea dixi, Sinite me flere cum* 4 *amaritudine, nequaquã poteſtis conſolari me ſuper fractione filiæ populi mei; Eſt* 5 *enim dies perturbationis, interitûs, & conculcationis: & errabis juſſu Domini exercituum per vallem Sionis, errabunt à minimo ad maximum, errabunt in montibus. Elamitæ ſumpſerunt pharetras, homines* 6 *equis inſidentes, & turba bellatorum. Lectiſſimæ valles tuæ plenæ erunt curribus, & equites claudent portas tuas:* 7 *Detegent portas Judæ,* 8 *& inſpicient eo die domos electas urbis: Detegentque arcana ædium cognationis Davidicæ.* 9 *Et cognoſcentes ſe eſſe multos, ſe ſeque reduxiſſe aquam piſcinæ prioris ad urbem, Se quoque* 10 *deſtruxiſſe domos Jeruſalem; munient murum urbis.*

non & , veteris piſcinæ aquis muros duos inter feciſtis *lacum* Et
11 ומקוה עשיתם בין החמתים למי הברכה הישנה ולא
.vidiſtis non longè de ej⁹ plaſmatorẽ & , ej⁹ factorẽ ad ſuſpexiſtis
הבטתם אל־עשיה ויצרה מרחוק לא ראיתם׃
,fletum ad , illa die in exercituum *Dominus* Dominus vocabit Et
12 ויקרא אדני יהוה צבאות ביום ההוא לבכי
,gaudium ecce Et .ſacci cingulum ad &,calvitium ad & ,planctum ad &
13 ולמספד ולקרחה ולחגר שק׃ והנה ששון
carnem comedendo , *pecus* jugulando & , *bovem* occidendo , lætitia &
ושמחה הרג בקר ושחט צאן אכל בשר
moriemur cras quia : bibendo & comedendo : vinum bibendo &
ושתות יין אכול ושתו כי מחר נמות׃
iniquitas expiabitur ſi : exercituũ Domini, meis auribus in revelabitur Et
14 ונגלה באזני יהוה צבאות אם־יכפר העון
.exercituum *Dominus* Dominus dixit ,moriamini donec , vobis hæc
הזה לכם עד־תמתון אמר אדני יהוה צבאות׃
ad ingredere ,Vade : exercituum *Dominus* Dominus dixit Sic
15 כה אמר אדני יהוה צבאות לך־בא אל־
: hic tibi Quid : domum ſuper qui , Sebnah ad iſtum theſaurarium
16 הסכן הזה על־שבנא אשר על־הבית׃ מה־לך פה
altitudinem excidens ? ſepulchrum hic tibi excidiſti quia : hic tibi quis &
ומי־לך פה כי־חצבת לך פה קבר חצבי מרומו
Dominus Ecce .ſibi tabernaculum petra in *ſtatuens* , ſuum ſepulchrum
17 קברו חקקי בסלע משכן לו׃ הנה יהוה
Convolvendo .amiciendo te *amiciens* & , *vir* *tranſportatione te tranſportans*
18 מטלטלך טלטלה גבר ועטך עטה׃ צנוף
,morieris ibi : *manibus* latam terram ad pilã ſicut,*convolutione te convolvet*
יצנפך צנפה כדור אל־ארץ רחבת ידים שמה תמות
.tui Domini domus ignominia , tuæ gloriæ currus ibi &
ושמה מרכבות כבודך קלון בית אדניך׃
erit Et .te diruet tuo ſtatu de & ,tua ſtatione de te expellam Et
19 20 והדפתיך ממצבך וממעמדך יהרסך׃ והיה
.Chilchijahu filium Eljachim meũ ſervũ vocabo & , illa die in
ביום ההוא וקראתי לעבדי לאליקים בן־חלקיהו׃
tuã poteſtatẽ & ,eum confortabo tuo *balteo* & ,tua tunica eum induam Et
21 והלבשתיו כתנתך ואבנטך אחזקנו וממשלתך
.Jehudah domui &,Jeruſalaim habitatori patrẽ in erit &:ej⁹ manũ in dabo
אתן בידו והיה לאב ליושב ירושלם ולבית יהודה׃
non & ,aperiet & : ej⁹ humerum ſuper David domus clavem dabo Et
22 ונתתי מפתח בית־דוד על־שכמו ופתח ואין
loco in clavum illum figam Et .*aperiens* non & ,claudet & :*claudens*
23 סגר וסגר ואין פתח׃ ותקעתיו יתד במקום
pendebunt Et .ſui patris domus gloriæ ſolium in erit & , ſtabili
24 נאמן והיה לכסא כבוד לבית אביו׃ ותלו
omnia : *fœtus* & *genimina* ſui patris domus gloria omnis illũ ſuper
עליו כל כבוד בית־אביו הצאצאים והצפעות כל
.*nablorum* inſtrumenta omnia ad uſque & craterarũ vaſis à ,*parvi vaſa*
כלי הקטן מכלי האגנות ועד כל־כלי הנבלים׃
clavus removebitur , exercituum Dominus dixit , illa die In
25 ביום ההוא נאם יהוה צבאות תמוש היתד
excidetur & ; cadet & ,excidetur & : ſtabili loco in fixus
התקועה במקום נאמן ונגדעה ונפלה ונכרת
.eſt locutus DOMINUS quia ; illum ſuper quod onus
המשא אשר־עליה כי יהוה דבר׃

CAP. XXIII. כג

domo de eſt facta vaſtatio quia , Tarſis naves Ululate : Sor *Onus*
1 משא צר הילילו אניות תרשיש כי־שדד מבית
.eis eſt revelatum Chittim terra de : *intrando ab*
מבוא מארץ כתים נגלה־למו׃

Verſio VUL. LAT.

11 Et lacum feciſtis inter duos
muros ad aquam piſcinæ veteris : & non ſuſpexiſtis ad eum,
qui fecerat eam, et operatorem
12 ejus de longè non vidiſtis. Et
vocabit Domin⁹ Deus exercituum in die illa ad fletum, &
ad planctum, ad calvitium, &
13 ad cingulum ſacci : Et ecce
gaudiũ & lætitia, occidere vitulos et jugulare arietes, comedere carnes, & bibere vinum:
Comedam⁹, & bibamus : cras
14 enim moriemur. Et revelata
eſt in aurib⁹ meis vox Domini
exercituum ; Si dimittetur iniquitas hæc vobis donec moriamini, dicit Domin⁹ Deus exer-
15 cituũ. Hæc dicit Domin⁹ De⁹
exercituum ; Vade, ingredere
ad eum qui habitat in tabernaculo, ad Sobnam præpoſitũ
16 templi, & dices ad eum ; Quid
tu hîc, aut quaſi quis hîc?
quia excidiſti tibi hîc ſepulchrum, excidiſti in excelſo memoriale diligenter, in petra
17 tabernaculum tibi. Ecce Domin⁹ aſportari te faciet, ſicut
aſportatur gallus gallinaceus,
& quaſi amictũ ſic ſublevabit
18 te. Coronans coronabit te
tribulatione, quaſi pilam mittet te in terram latam & ſpatioſam : ibi morieris, & ibi
erit curr⁹ gloriæ tuæ, ignomi-
19 nia dom⁹ Domini tui. Et expellam te de ſtatione tua, &
de miniſterio tuo deponam te.
20 Et erit in die illa : Vocabo ſervum meum Eliacim filiũ Hel-
21 ciæ, Et induam illum tunicâ
tuâ, & cingulo tuo confortabo eum, & poteſtatem tuam
dabo in manu ej⁹ : & erit quaſi
pater habitantib⁹ Jeruſalem, et
22 domui Juda. Et dabo clavem
domûs David ſuper humerum
ejus : & aperiet, & non erit
qui claudat : & claudet, &
23 non erit qui aperiat. Et figam
illum paxillum in loco fideli,
& erit in ſolium gloriæ domui
24 patris ej⁹. Et ſuſpendent ſuper
eum omnem gloriam domûs
patris ejus, vaſorũ diverſa genera, omne vas parvulum, à
vaſis craterarũ uſque ad omne
25 vas muſicorum. In die illa dicit
Domin⁹ exercituũ ; Auferetur
paxill⁹, qui fixus fuerat in loco
fideli : & frangetur, & cadet,
& peribit quod pependerat in
eo, quia Domin⁹ locutus eſt.

CAP. XXIII.

1 ON⁹ Tyri. Ululate naves maris : quia vaſtata eſt dom⁹, unde
venire conſueverant : de terra
Cethim revelatum eſt eis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

11 Καὶ ἐποιήσατε ἑαυτοῖς ὕδωρ ἀναμέσον τῶν
δύο (θ) τειχῶν ἐσώτερον τῆς κολυμβήθρας
τῆς ἀρχαίας, καὶ οὐκ ἐνεβλέψατε εἰς τὸν ἀπ' ἀρχῆς
ποιήσαντα αὐτὴν, καὶ τὸν κτίσαντα αὐτὴν
12 οὐκ εἴδετε. Καὶ ἐκάλεσε (ι) κύριος κύριος
Σαβαὼθ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ κλαυθμὸν
καὶ κοπετὸν, καὶ ξύρησιν καὶ ζῶσιν σάκκων,
13 Αὐτοὶ δὲ ἐποιήσαντο εὐφροσύνην καὶ
ἀγαλλίαμα, σφάζοντες μόσχους, καὶ θύοντες
πρόβατα, ὥστε φαγεῖν (κ) κρέατα, καὶ πιεῖν
οἶνον, λέγοντες, Φάγωμεν καὶ πίωμεν, αὔριον
14 γὰρ ἀποθνήσκομεν. Καὶ ἀνακεκαλυμμένα
ταῦτά ἐστιν ἐν τοῖς ὠσὶ κυρίου Σαβαὼθ, ὅτι
οὐκ ἀφεθήσεται ὑμῖν αὕτη ἡ ἁμαρτία, ἕως
15 ἂν ἀποθάνητε. Τάδε λέγει κύριος Σαβαὼθ,
Πορεύου εἰς τὸ παστοφόριον, πρὸς Σομνᾶν
16 τὸν (λ) ταμίαν, καὶ εἰπὸν αὐτῷ, Τί σὺ
ὧδε, καὶ τί σοί ἐστιν ὧδε; ὅτι ἐλατόμησας
σεαυτῷ ὧδε μνημεῖον, καὶ ἐποίησας σεαυτῷ
ἐν ὑψηλῷ μνημεῖον, καὶ ἔγραψας σεαυτῷ ἐν
17 πέτρᾳ σκηνήν; Ἰδοὺ δὴ κύριος Σαβαὼθ
(μ) ἐκβάλλει καὶ ἐκτρίψει ἄνδρα, καὶ ἀφελεῖ
18 τὴν στολήν σου Καὶ τὸν στέφανόν σου τὸν ἔνδοξον,
καὶ ῥίψει σε εἰς χώραν μεγάλην καὶ
ἀμέτρητον, καὶ ἐκεῖ ἀποθανῇ· καὶ θήσει τὸ
ἅρμα σου τὸ καλὸν εἰς ἀτιμίαν, καὶ τὸν οἶκον
19 τοῦ ἄρχοντός σου εἰς καταπάτημα. Καὶ ἀφαιρεθήσῃ
ἐκ τῆς οἰκονομίας σου καὶ ἐκ τῆς
20 στάσεώς σου. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ,
(ν) καὶ καλέσω τὸν παῖδά μου Ἐλιακεὶμ τὸν τοῦ
21 Χελκίου. Καὶ ἐνδύσω αὐτὸν τὴν στολήν σου,
καὶ τὸν στέφανόν σου δώσω αὐτῷ (ξ) κατὰ κράτος,
καὶ τὴν οἰκονομίαν σου δώσω εἰς τὰς χεῖρας
αὐτοῦ· καὶ ἔσται ὡς πατὴρ τοῖς ἐνοικοῦσιν ἐν
22 Ἱερουσαλὴμ, καὶ τοῖς ἐνοικοῦσιν ἐν Ἰούδᾳ. Καὶ
δώσω τὴν δόξαν Δαυὶδ αὐτῷ, καὶ ἄρξει, καὶ
οὐκ ἔσται ὁ ἀντιλέγων· καὶ (ο) δώσω αὐτῷ τὴν
κλεῖδα οἴκου Δαυὶδ ἐπὶ τῷ ὤμῳ αὐτοῦ· καὶ ἀνοίξει,
καὶ οὐκ ἔσται ὁ (π) ἀποκλείων· καὶ κλείσει, καὶ
23 οὐκ ἔσται ὁ ἀνοίγων. Καὶ στήσω αὐτὸν ἄρχοντα
ἐν τόπῳ πιστῷ, καὶ ἔσται εἰς θρόνον δόξης τοῦ
24 οἴκου τοῦ πατρὸς αὐτοῦ. Καὶ ἔσται πεποιθὼς
ἐπ' αὐτὸν πᾶς ἔνδοξος ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ πατρὸς
αὐτοῦ, ἀπὸ μικροῦ ἕως μεγάλου, καὶ ἔσονται
25 ἐπικρεμάμενοι (ρ) αὐτῷ Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ.
τάδε λέγει κύριος Σαβαὼθ, Κινηθήσεται ὁ
ἄνθρωπος ὁ ἐστηριγμένος ἐν τόπῳ πιστῷ, καὶ
(σ) ἀφαιρεθήσεται, καὶ πεσεῖται, καὶ ἐξολοθρευθήσεται
ἡ δόξα ἡ ἐπ' αὐτὸν, ὅτι κύριος
ἐλάλησεν.

MS. A. (θ) τειχέων (ι) κύριος Σαβαὼθ (κ) κρέα, (λ) γραμματέα,
βαλεῖ (ν) καλέσω (ξ) καὶ τὸ κράτος, (ο) δώσω τὴν κλεῖδα οἴκου
τοῦ ὤμου αὐτοῦ· (π) ἀποκλείσων· (ρ) ἐν αὐτῷ ἐν Τῇ (σ) πεσεῖται καὶ
ἡ δόξα ἡ ἐπ' αὐτὸν,

ΚΕΦ. κγʹ.

ΤΟ (*) ῬΗΜΑ ΤΥΡΟΥ.

1 (α) ὈΛολύξατε πλοῖα Καρχηδόνος, ὅτι
ἀπώλετο, καὶ οὐκέτι ἔρχονται ἐκ γῆς (β) Κιτιαίων,
ἧκται αἰχμάλωτος.

MS. A. (*) ὍΡΑΜΑ (α) Ὀλολύζετε (β) Κιτιαίων,

Et feciſtis vobis aquam inter
muros interiorem piſcinam
& non aſpexiſtis in eum
principio fecit eam, &
illius non vidiſtis. E
Dominus, Dominus Sabao
illa ploratum, & planctum, &
ſuram, & cinctum
Ipſi autem fecerunt
exultationem, jugulantes
& immolantes oves, ad come
das carnes, & bibendum
dicentes; Edamus,
cras enim mo
hec ſunt in auribus D
oth: quia non auf
peccatum, donec moria
dicit Dominus Sabaoth;
(c) in paſtophorium ad Som
quæſtorem: & dic ei,
hic? & quid tibi eſt hic?
excidiſti tibi hic mo
feciſti tibi in ex
mentum, & (d)
petra tabernaculum? E
Dominus Sabaoth ejiciet
teret virum, & aufe
am, Et coronam tuam
& projiciet te in regionem
gnam, & immenſam;
rieris: & ponet currum
primum in ignominiam,
mum principis tui in con
nem: Et tolleris de diſpen
tua, & de gradu tuo. E
die illa, & vocabo
Eliacim filium Chelciæ, E
am illum ſtolâ tuâ, &
tuam dabo ei (e) p
& diſpenſationem tuam
manus ejus. Et erit
habitatoribus Hieruſalem,
habitantibus in Juda. E
gloriam David ei: E
bitur, & non erit qui
(f) & dabo ei clavem
vid ſuper humerum ejus:
periet, & non erit qui
& claudet, & non erit
at. Et ſtatuam eum p
loco fideli: & erit
riæ domûs patris ejus:
confidens ſuper eum
oſus in domo patris
uſque ad (g) magnum:
pendentes ab eo. D
dicit Dominus Saba
bitur homo, qui
in loco fideli, & tolle
det, & diſperibit
ſuper eum: quoniam
loquutus eſt.

CAP. XXIII.
VERBUM T

ULulate naves
quia periit: &
de terra Citiæorum
ptiva.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 ומקויא עבדתון בין שוריא למי ברכתא עתיקתא ולא אסתכלתון בדעבדה ודי בראה
12 מלקדמין לא חזיתון׃ ואכלי נביא דיי אלהים צבאות ביומא ההוא למבכי ולמספד
13 ולנווז ריש ולמיסר סקין׃ והא ביע וחדוה אמרין נקטול תורין וננכס עאן ניכול בסר
14 ונשתי חמר ניכול ונשתי מדנמות לא נחי׃ אמר נביא באודני הויתי שמע כד אתגזר
דא מן קדם יי צבאות אם ישתבק חובא הדין לכון עד די תמותון מותא תנינא אמר יי
15 אלהים צבאות׃ כדנן אמר יי אלהים צבאות אתא איזיל לות פרנסא הדין לות שבנא
16 די ממנא על ביתא׃ ותימר ליה מה לך כא ומה לך כדין ארי אתקנית לך כא אתר
17 אתקין ברומא אתריה שוי בכיפא בית מדוריה׃ הא יי מטלטלך טלטול דגברא ותחפנך
18 בהתא׃ יעדי מנך ית מצנפתא ויקיפונך בעלי דבב כשור מקף ויגלונך לארעא פתיות
ידיין תמן תמות ולתמן רתיכי יקרך יתיבון בקלן על דלא נטרתא יקר בית רבונך׃
19 20 וארחנך ממקומך ומשמושך ימגרנך׃ ויהי בעדנא ההיא וארבי לעבדי לאליקים בר
21 חלקיה׃ ואלבשניה כתונך והמינך אזרזניה ושולטנך אתן בידיה ויהי
22 לאב ליתבי ירושלם ולבית יהודה׃ ואתן מפתח בית מקדשא ושולטן בית דוד בידיה
23 ויפתח ולית דאחיד וייחוד ולית דפתח׃ ואמנניה אמרכל מהימן משמש באתר קים
24 ויהי לכורסי יקר לבית אבוהי׃ ויסתמכון עלוהי כל יקירי בית אבוהי בניא ובני בניא
25 מרברביא ועד דעדקיא מכהניא לבשי אפודא ועד בני לוי אחדי נבליא׃ בעדנא ההיא
אמר יי צבאות יעדי אמרכל מהימן די משמיש באתר קים ויתקטיף ויפול ויבטל מטל
נבואתא די עלוהי ארי במימרא דיי גזר כן׃

כג

1 מטל כס דלוט לאשקאה ית צור אילילו נחתי ספיני ימא ארי אתבזיזו מחוזיהון מלמיתי
מארעא כתאי אתו עליהון׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et *lacus* feciſtis inter muros aquæ piſcinæ veteris, & non reſpexiſtis
ctorem ejus, neq; creatorem ejus ab initio vidiſtis. Et vocavit prop
exercituum in die illo ad planctum & ad luctum, & ad calvitium, &
cingendum ſaccos. Et ecce gaudium et lætitiam: dicunt, Occidamus
& jugulemus oves, comedamus carnes, et bibamus vinum, comeda
bibamus, quia morituri ſumus, non vivemus. Dixit Propheta, In au
is auditum eſt, quando decretum eſt hoc à facie Dñi exercituũ ; S
tetur peccatum hoc vobis donec moriamini morte ſecunda, dicit D
cituum. Hæc dicit Dñs exercituũ, Veni, & vade ad gubernatorem
Sobnam, qui eſt præpoſitus domus. Et dices ei, Quid tibi hîc? aut
in iſto loco? quia præparâſti tibi hîc locum: præparans in excelſo
um, & ponens in petra domum habitaculi ſui. Ecce Dominus tra
te faciet tranſmigratione viri, & operiet te confuſione. Auferet
& circundabunt te inimici quaſi murũ circundatũ, & in captivitat
te in locum latũ manibus; ibi morieris: & ibi quadrigæ gloriæ tuæ
tentur in ignominiã, eò quòd non conſervâſti gloriã domus Do
expellã te de *loco* tuo, & de miniſterio tuo *deponet* te. Et erit in
illo, & magnificabo ſervum meum Eliachim filiũ Helchiæ. E
tunica tua, & cingulo tuo accingam eum, & dominiũ tuũ dabo
ejus, et erit in patrẽ habitatoribus Hieruſalem, & domui Juda. E
clavem dom⁹ ſanctuarii, & dominiũ domus David in manu ejus
riet, & non erit qui claudat; et claudet, & non erit qui aperiat. E
tuam eum præpoſitũ fidelem, miniſtrantẽ in loco firmiſſimo, & e
um gloriæ domui patris ſui. Et innitentur ſup eum omnes nobil
patris ſui, filii et nepotes, à juvenibus uſque ad parvulos; à ſacer
dutis Ephod, uſque ad filios Levi tenentes organa. In die illo,
minus exercituũ, Auferetur præpoſit⁹ fidelis, qui miniſtrabat in lo
ſimo, et ſuccidetur, & cadet: & irritum erit onus prophetiæ q
per eum, quoniam in verbo Domini decretum eſt ita.

CAP. XXIII

ONus prophetiæ calicis maledictionis ad propinandum Ty
deſcendentes in naves maris, quia direptæ ſunt provinciæ vet
aditus non pateat. De terra Cetim venerunt contra eos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 * ܘܡܥܡܩܬܐ ܥܒܕܬܘܢ. ܒܝܬ ܫܘܪܐ ܠܫܘܪܐ ܕܡܝܐ ܕܒܪܟܬܐ ܥܬܝܩܬܐ. ܘܠܐ ܚܪܝܬܘܢ ܒܥܒܘܕܗ
12 ܘܠܒܪܘܝܗ ܡܢ ܩܕܝܡ ܠܐ ܚܙܝܬܘܢܝܗܝ. * ܘܩܪܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ
ܠܒܟܝܬܐ: ܘܠܡܪܩܕܐ ܘܠܡܩܪܚܘܬܐ. ܘܠܡܐܣܪ ܣܩܐ. * ܘܗܐ ܚܕܘܬܐ ܘܣܘܪܚܐ. ܢܟܣܐ
13 ܕܬܘܪܐ ܘܢܟܣܬܐ ܕܥܢܐ. ܘܡܐܟܘܠܬܐ ܕܒܣܪܐ ܘܡܫܬܝܐ ܕܚܡܪܐ. ܢܐܟܘܠ ܘܢܫܬܐ ܡܛܠ ܕܡܚܪ
14 ܡܝܬܝܢܢ. * ܘܐܬܓܠܝ ܒܐܕܢܝ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܡܪ. ܠܐ ܢܫܬܒܩ ܠܟܘܢ ܣܟܠܘܬܐ ܗܕܐ ܥܕܡܐ ܕ
15 ܬܡܘܬܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܙܠ ܥܘܠ ܠܘܬ ܣܘܟܢ
16 ܗܢܐ. ܠܘܬ ܫܒܢܐ ܪܒ ܒܝܬܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. * ܡܢܐ ܠܟ ܗܪܟܐ. ܘܡܢܐ ܐܝܬ ܠܟ ܗܪܟܐ:
17 ܕܢܩܪܬ ܠܟ ܩܒܪܐ ܗܪܟܐ. ܢܩܪ ܒܪܘܡܐ ܩܒܪܗ. ܘܚܩܩ ܒܟܐܦܐ ܡܫܪܝܗ. * ܗܐ ܡܪܝܐ
18 ܡܛܪܦ ܠܟ ܓܒܪܐ. ܘܡܛܥܝܐ ܢܛܥܝܟ. * ܢܬܟ ܠܟ ܬܟܘܟܐ ܐܝܟ ܟܘܪܐ ܠܐܪܥܐ ܪܘܝܚܬܐ. ܬܡܢ
19 ܬܡܘܬ. ܘܬܡܢ ܢܗܘܝܢ ܡܪܟܒܬܐ ܕܫܘܒܚܟ. ܨܥܪܐ ܕܒܝܬ ܡܪܟ. * ܘܐܗܦܟܟ ܡܢ ܐܝܩܪܟ
20 ܘܐܣܚܦܟ ܡܢ ܩܝܡܟ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܩܪܐ ܠܥܒܕܝ ܠܐܠܝܩܝܡ ܒܪ
21 ܚܠܩܝܐ. * ܘܐܠܒܫܝܘܗܝ ܟܘܬܝܢܟ. ܘܒܗܡܝܢܟ ܐܚܣܢܝܘܗܝ. ܘܫܘܠܛܢܟ ܐܬܠ ܒܐܝܕܘܗܝ.
22 ܘܢܗܘܐ ܐܒܐ ܠܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܠܒܢܝ ܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. * ܘܐܣܝܡ ܩܠܝܕܐ ܕܒܝܬ
23 ܕܘܝܕ ܥܠ ܟܬܦܗ. ܘܢܦܬܚ. ܘܠܝܬ ܕܐܚܕ. ܘܢܐܚܘܕ. ܘܠܝܬ ܕܦܬܚ. * ܘܐܩܒܥܝܘܗܝ
24 ܣܟܬܐ ܒܐܬܪܐ ܡܗܝܡܢܐ. ܘܢܗܘܐ ܟܘܪܣܝܐ ܕܫܘܒܚܐ ܠܒܝܬ ܐܒܘܗܝ. * ܘܢܬܠܘܢ
ܥܠܘܗܝ ܟܠܗ ܫܘܒܚܐ ܕܒܝܬ ܐܒܘܗܝ ܡܝܩܪܐ ܘܡܫܒܚܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܡܐܢܐ ܙܥܘܪܐ. ܡܢ
25 ܡܐܢܐ ܕܙܡܪܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܡܐܢܐ ܕܟܢܪܐ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܢܬܥܩܪ
ܣܟܬܐ ܕܩܒܝܥܐ ܒܐܬܪܐ ܡܗܝܡܢܐ. ܘܬܬܦܫܚ ܘܬܦܠ. ܘܢܐܒܕ ܡܘܒܠܐ ܕܥܠܝܗ
ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ. * ܦܬܓܡܐ * ܟܒ *

1 * ܡܫܩܠܐ ܕܨܘܪ * * ܐܝܠܠܘ ܐܠܦܐ ܕܬܪܫܝܫ. ܡܛܠ ܕܐܬܒܙܙ
ܡܢ ܒܝܬܐ ܡܥܠܢܐ. ܘܡܢ ܐܪܥܐ ܕܟܬܝܡ ܐܬܓܠܝ ܠܗܘܢ.

* Et aquaductus feciſtis inter murum & aquas 11
piſcinæ veteris; nullâ habuiſtis rationem opificis ejus, & conditorẽ ejus ne quidem à longè
ſpectaſtis. Cúmque vocaverit Dñs Deus po- 12
tentiſſimus eo die ad fletum, ad planctus, ad
laniatus, & ad cincturam ciliciorum; Ecce 13
voluptatem & gaudium, mactationem boum,
& mactationem pecudum, eſum carnium &
potationẽ vini: edamus *dicentes* & bibamus,
cras enim moriemur. Delatum eſt hoc ad au- 14
res Domini potentis, qui dixit; Nequaquam
feretis crimen iſtud uſq; ad mortem, ait Dominus Deus potentiſſimus, Sic dicit Dñs po- 15
tentiſſimus, Vade ad Sochanem iſtum, ad
Sebnam præfectum domûs, & dic ei; Quid 16
hìc agis? & quid tibi eſt hìc, quòd tibi ſepulchrum hìc exciderìs? O excidens in excelſo
ſepulchrũ tuum, & deſignans in petra habitaculum tuum; Ecce Dominus abjiciendo ab- 17
jiciet te heus vir, & obliviſcendo obliviſcetur
tui: Propulſabit *te* violenter ut impulſu 18
ſphæræ in terram vaſtiſſimam: ibi morieris,
ibique currus honoris tui erit ignominia domûs heri tui. Deturbabo te ab honore tuo, & 19
abdicabo te dignitate tuâ: Et erit eo die 20
dicit Dominus, ut vocem ſervum meum
Eliacim filium Helciæ, Induam eum tunicâ 21
tuâ, baltheo tuo præcingam eum, tuámque
poteſtatem tradam in manus ejus. Is erit
pater civibus Jeruſalem & viris domûs
Judæ: Imponétq; claves domûs Davidis hu- 22
mero ſuo; & aperiet, nec erit qui claudat;
claudet, nec erit qui aperiat. Infigam eum 23
ut paxillum in loco firmo, erítq; ſolium honoris domui ſuæ paternæ. Et appendent ei 24
totũ honorem domûs honorandi & glorioſi
patris ejus, omnéq; inſtrumentũ parvum, ab
inſtrumento muſico uſque ad inſtrumentum
citharæ. Die illâ, dicit Domin⁹ potentiſſimus, 25
avelletur paxillus iſte infixus in loco firmo,
deponetur, & cadet; & peribit onus quod impoſitum erat ei: nam Dominus locutus eſt.

CAP. XXIII.

Onus Tyri.

ULulate naves Tharſis, qui ſpoliatus eſt in 1
domo is qui *merces* afferebat, & de terra
Chetim apparebat nobis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

11 * وصنعوا لهم ماء بين سورين داخل البركة الاولي ولم ينظروا الي الذي صنعها منذ البدء
12 ولم يعرفوا الرب خالقها * ودعا رب الجنود في ذلك اليوم بكاء وعويلا ونتفا ولبس مسوح * هولاء
13 صنعوا سرورا وبهجة * ذبحوا عجولا وذبحوا خرافا * حتي ياكلوا لحما ويشربوا خمرا قايلين
14 ناكل ونشرب لانا غدا نموت * فهنالك صارت مكشوفة في مسامع رب الجنود * لانه لا تترك
15 لكم هذه الخطية حتي تموتوا * هكذا يقول رب الجنود * امض الي العمارية الي صمنان الخازن
16 وقل له * ما لك هاهنا * وما لك هاهنا تكون لانك نحت لك هاهنا قبرا وصنعت لك في المغاير
17 المرتفعة جدا * وصنعت لك في الصخور قبة * ها رب الجنود يخرج ويسوق رجلا وينزع حلتك
18 وتاجك الممجد * ويلقيك الي كورة بعيدة غير مقاسة وهنالك تموت ويضع مركبك الحسن
19 20 الي هوان * وبيت رييسك الي الوطي * وينزع من وكالتك ومن درجتك * ويكون في ذلك
21 اليوم ادعوا فتاي الياقيم ابن حلكيو * والبسه حلتك * واعطيه تاجك * وعز وكالتك
22 ادفعه في يديه * ويكون مثل اب للسكان بايروشليم وللسكان يهودا * واعطي مجد داود له
23 ويروس ولا يكون مقاوم * واقيمه رييسا في موضع امين ويكون لكرسي مجد لبيت ابيه
24 * ويكون متوكلا عليه كل شريف في بيت ابيه * من الصغير والي الكبير ويكونون
25 متمسكين به * في ذلك اليوم هكذا يقول رب الجنود * يتحرك الانسان الثابت في موضع
امين ويسقط * وينزع ويسقط المجد الذي عليه * لان الرب تكلم

* الفصل الثالث والعشرون * الوحي الرابع عشر

1 وهو الاصحاح الحادي عشر * النبوة الي صور وملكها واهلها * ولولوا
سفن كرسيدونية * لانه هلك وليس ياتي بعد من ارض كيتيا اون السبي اتي

* *Facientque ſibi aquam inter duos muros* 11
intra piſcinam priorem; nullam habentes,
rationem ejus qui jamdudum fecerat eam,
neque cognoſcentes Dominum creatorem
illius. Et proclamante Domino exerci- 12
tuum eo die fletum, ejulatum, depilationem, & induitum ciliciorum; Hi læti- 13
tiam & gaudium celebrârunt, vitulos
mactaverunt, & jugulaverunt agnos, ut
ederent carnem, & biberent vinum, dicentes; Edamus & bibamus, cras enim
morituri ſumus. Revelatum id fuit in au- 14
ribus Domini exercituum Profectò nequaquam dimittetur vobis hoc peccatum, do-
nec moriamini. Sic dicit Dominus exer- 15
cituum, Vade ad ædem, apud Semnan
theſaurarium, & dic ei; Quid rei tibi 16
eſt hîc? & quid hîc agis, quòd exciderìs hîc tibi ſepulchrum, feceris tibi in edita ſpelunca monumentum, & in petra
teſtudinem fornicatam feceris tibi? Ec- 17
ce Dominus exercituum egredietur &
adducet virum, detrahétque ſtolam tuam
& diadema tuum glorioſum. Et ejiciet 18
te in regionem remotiſſimam immenſam,
ibique morieris: aurigam tuam pulchram
contemptui exponet, & domum principis
tui conculcationi. Amovéberis ab offi- 19
cio tuo & à dignitate tua. Et fiet eo 20
die ut vocem puerum meum Eliacimum
filium Helcbiæ, Et induam eum ſtolâ 21
tuâ, dem illi diadema tuum, & auctoritatem officii tui tradam in manus ejus;
eritque loco patris habitantibus in Jeruſalem & habitantibus in Juda: Illi 22
dabo gloriam Davidis, & imperabit nemine adverſante: Statuam illum principem 23
in loco tuo, eritque ſolium honoris domui ſuæ paternæ. Ipſo freti erunt omnes 24
nobiles domûs ſuæ paternæ à minimo ad
maximum, eique innitentur. In die ille, 25
ſic dicit Dominus exercituum, Homo conſtitutus in loco tuto nutavit cadétque,
amovebitur & decidet honor in quo eſt;
quoniam Dominus locutus eſt.

CAP. XXIII.

Revelatio decima quarta.

Textus undecimus.

PRophetia ad Tyrum, & regem, ac cives 1
ejus. *Ejulate O naves Charſidonæ* (i.
Chalcedoniæ) *quia periit, nec ventura eſt*
deinceps e terra Chitææ ſarcina, imo venit
direptio.

יְשַׁעְיָה : כג

.te repleverunt mare *transiens* , Sidon *circuiens*:insulæ habitatores Silete
2 דֹּמּוּ יֹשְׁבֵי אִי סֹחֵר צִידוֹן עֹבֵר יָם מִלְאוּךְ׃
: ejus proventus fluminis messis , Sichor semen multis aquis in Et
3 וּבְמַיִם רַבִּים זֶרַע שִׁחֹר קְצִיר יְאוֹר תְּבוּאָתָהּ
, mare dixit nam ;Sidon Erubesce .gentium negotiatio fuit &
4 וַתְּהִי סְחַר גּוֹיִם׃ בּוֹשִׁי צִידוֹן כִּי אָמַר יָם
non & , peperi non & , parturivi Non : dicendo maris fortitudo
מָעוֹז הַיָּם לֵאמֹר לֹא־חַלְתִּי וְלֹא־יָלַדְתִּי וְלֹא
; Ægyptiis *rumor* *Sicut* .virgines exaltavi ,*electos* enutrivi
5 גִדַּלְתִּי בַחוּרִים רוֹמַמְתִּי בְתוּלוֹת׃ כַּאֲשֶׁר שֵׁמַע לְמִצְרָיִם
ululate , Tarsis in Transite .Sor auditum secundùm *torquebuntur*
6 יָחִילוּ כְּשֵׁמַע צֹר׃ עִבְרוּ תַּרְשִׁישָׁה הֵילִילוּ
quondam diebus à *? hilaris* vobis hæc Nunquid .insulæ habitatores
7 יֹשְׁבֵי אִי׃ הֲזֹאת לָכֶם עַלִּיזָה מִימֵי־קֶדֶם
.peregrinandum ad *longinquo è* ejus pedes eam ducent : ejus antiquitas
קַדְמָתָהּ יֹבִלוּהָ רַגְלֶיהָ מֵרָחוֹק לָגוּר׃
eju negotiatores cujus ? coronantem Sor super hoc consuluit Quis
8 מִי יָעַץ זֹאת עַל־צֹר הַמַּעֲטִירָה אֲשֶׁר סֹחֲרֶיהָ
,hoc consuluit exercituum Dñs ? terræ inclyti ejus *mercatores* ,principes
9 שָׂרִים כִּנְעָנֶיהָ נִכְבַּדֵּי־אָרֶץ׃ יְהוָה צְבָאוֹת יְעָצָהּ
inclytos universos *vilipendendum ad*,gloriæ omnis superbiam *profanandum ad*
לְחַלֵּל גְּאוֹן כָּל־צְבִי לְהָקֵל כָּל־נִכְבַּדֵּי־
non , Tarsis filiam : *rivum* tanquam tuam terram Transi .terræ
10 אָרֶץ׃ עִבְרִי אַרְצֵךְ כַּיְאֹר בַּת־תַּרְשִׁישׁ אֵין
perseverfecit , mare super extendit suam Manum .ultrà *cingulum*
11 מֵזַח עוֹד׃ יָדוֹ נָטָה עַל־הַיָּם הִרְגִּיז
disperdendum ad ,negotiatorem *ad* præcepit Dominus .regna
מַמְלָכוֹת יְהוָה צִוָּה אֶל־כְּנַעַן לַשְׁמִד
: *exultandum ad* ultra adjicias Non : dixit Et .ejus fortitudines
12 מָעֻזְנֶיהָ׃ וַיֹּאמֶר לֹא־תוֹסִיפִי עוֹד לַעְלוֹז
etiam , transi , surge Chittim ; Sidon filia virgo oppressa
הַמְעֻשָּׁקָה בְּתוּלַת בַּת־צִידוֹן כִּתִּיִּים קוּמִי עֲבֹרִי גַּם־
populus iste , Chasdim terra En .tibi erit requies non ibi
13 שָׁם לֹא־יָנוּחַ לָךְ׃ הֵן אֶרֶץ כַּשְׂדִּים זֶה הָעָם
suscitaverunt,ejus arces erexerunt;*deserticolis* eam fundavit Assur , fuit non
לֹא הָיָה אַשּׁוּר יְסָדָהּ לְצִיִּים הֵקִימוּ בַחִינָיו עֹרְרוּ
: Tarsis naves Ululate .ruinam in eam posuit , ejus ædes
14 אַרְמְנוֹתֶיהָ שָׂמָהּ לְמַפֵּלָה׃ הֵילִילוּ אֳנִיּוֹת תַּרְשִׁישׁ
, illa die in , erit Et .vestra fortitudo est vastata quia
15 כִּי שֻׁדַּד מָעֻזְּכֶן׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא
.unius regis dies sicut , annis septuaginta Sor tradetur oblivioni &
וְנִשְׁכַּחַת צֹר שִׁבְעִים שָׁנָה כִּימֵי מֶלֶךְ אֶחָד
canticum veluti Sor ipsi erit annorum septuaginta fine *A*
מִקֵּץ שִׁבְעִים שָׁנָה יִהְיֶה לְצֹר כְּשִׁירַת
: tradita oblivioni meretrix civitatem circui,citharam Sume .meretricis
16 הַזּוֹנָה׃ קְחִי כִנּוֹר סֹבִּי עִיר זוֹנָה נִשְׁכָּחָה
fine *à* erit Et .*memoreris* ut canticum *multiplica* ,*modulando benefac*
17 הֵיטִיבִי נַגֵּן הַרְבִּי־שִׁיר לְמַעַן תִּזָּכֵרִי׃ וְהָיָה מִקֵּץ
revertetur & , Sor Dominus visitabit annorum septuaginta
שִׁבְעִים שָׁנָה יִפְקֹד יְהוָה אֶת־צֹר וְשָׁבָה
super terræ regnis universis cum fornicabitur & ,*suum quæstû* ad
לְאֶתְנַנָּה וְזָנְתָה אֶת־כָּל־מַמְלְכוֹת הָאָרֶץ עַל־
sanctitas ,ejus *quæstus* & ,ejus negotiatio erit Et .*humi facies*
18 פְּנֵי הָאֲדָמָה׃ וְהָיָה סַחְרָהּ וְאֶתְנַנָּהּ קֹדֶשׁ
facies ad habitantibus quia : reponetur neque recondetur Non .Domino
לַיהוָה לֹא יֵאָצֵר וְלֹא יֵחָסֵן כִּי לַיֹּשְׁבִים לִפְנֵי
, saturitatem ad comedendum ad : ejus negotiatio erit *Domini*
יְהוָה יִהְיֶה סַחְרָהּ לֶאֱכֹל לְשָׂבְעָה
.vetus operimentum in &
וְלִמְכַסֶּה עָתִיק׃

Versio VUL. LAT.

2 Tacete qui habitatis in insula: negotiatores Sidonis transfretantes mare, repleverunt te. 3 In aquis multis semen Nili, messis fluminis fruges ejus: & facta est negotiatio gentium. 4 Erubesce Sidon: ait enim mare, fortitudo maris, dicens; Non parturivi, & non peperi, & non enutrivi juvenes, nec ad incrementũ perduxi virgines. 5 Cùm auditum fuerit in Ægypto, dolebunt cùm audierint 6 de Tyro: Transite maria, ululate qui habitatis in insula: 7 Numquid non vestra hæc est, quæ gloriabatur à diebus pristinis in antiquitate sua? ducent eam pedes sui longè ad peregrinandum. 8 Quis cogitavit hoc super Tyrum quondam coronatam, cujꝰ negotiatores principes, institores ejus inclyti 9 terræ? Dominus exercituum cogitavit hoc, ut detraheret superbiam omnis gloriæ, & ad ignominiam deduceret universos inclytos terræ. 10 Transi terram tuã quasi flumen, filia maris, non est cingulum ultrà tibi. 11 Manum suam extendit super mare, conturbavit regna: Dominus mandavit adversùs Chanaan, ut contereret fortes ejus, 12 Et dixit; Non adjicies ultrà ut glorieris, calumniam sustinens virgo filia Sidonis: in Cethim consurgẽs transfreta, ibi quoq; 13 non erit requies tibi. Ecce terra Chaldæorum talis populus non fuit, Assur fundavit eam: in captivitatem traduxerunt robustos ejus, suffoderunt domos ejus, posuerunt eam in 14 ruinam. Ululate naves maris, quia devastata est fortitudo ve- 15 stra. Et erit in die illa: In oblivione eris, O Tyre, septuaginta annis, sicut dies regis unius: post septuaginta autem annos erit Tyro quasi canticum me- 16 retricis. Sume citharam, circui civitatem, meretrix oblivioni tradita: benè cane, frequenta canticum, ut memoria 17 tuì sit. Et erit post septuaginta annos: Visitabit Dominus Tyrum, & reducet eam ad mercedes suas: & rursum fornicabitur cum universis regnis 18 terræ super faciem terræ. Et erunt negotiationes ejus, & mercedes ejus sanctificatæ Domino: non condentur, neque reponentur: quia his, qui habitaverint coram Domino, erit negotiatio ejus, ut manducent in saturitatem, & vestiantur usque ad vetustatem.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

2 Τίνι ὅμοιοι γεγόνασιν οἱ ἐνοικοῦντες ἐν τῇ νήσῳ, μετάβολοι (γ) Φοινίκης, δια- 3 περῶντες τὴν θάλασσαν Ἐν ὕδατι πολλῷ, σπέρμα μεταβόλων; ὡς ἀμήτου εἰσφερο- 4 μένου, οἱ μετάβολοι τῶν ἐθνῶν. Αἰσχύνθητι Σιδὼν, εἶπεν ἡ θάλασσα· ἡ δὲ ἰσχὺς τῆς θαλάσσης εἶπεν, Οὐκ ὤδινον, οὐδὲ ἔτεκον, οὐδὲ ἐξέθρεψα νεανίσκους, οὐδὲ ὕψωσα παρ- 5 θένους. Ὅταν δὲ ἀκουστὸν γένηται (δ) Αἰγύπτῳ, λήψεται αὐτοὺς ὀδύνη περὶ Τύρου. 6 Ἀπέλθατε εἰς Καρχηδόνα, (ε) ὀλολύξατε 7 οἱ κατοικοῦντες ἐν τῇ νήσῳ ταύτῃ. Οὐχ αὕτη (ζ) ἦν ὑμῶν ἡ ὕβρις ἀπ' ἀρχῆς, πρὶν ἢ 8 παραδοθῆναι αὐτήν; Τίς ταῦτα ἐβούλευσεν ἐπὶ Τύρον; μὴ ἥσσων ἐστὶν, ἢ οὐκ ἰσχύει; οἱ ἔμποροι αὐτῆς ἔνδοξοι ἄρχον- 9 τες τῆς γῆς. Κύριος Σαβαὼθ ἐβουλεύσατο παραλῦσαι (η) πᾶσαν τὴν ὕβριν τῶν ἐνδόξων, καὶ ἀτιμάσαι πᾶν ἔνδοξον ἐπὶ 10 τῆς γῆς. Ἐργάζου τὴν γῆν σου, καὶ γὰρ 11 πλοῖα οὐκέτι (*)ἔρχεται ἐκ Καρχηδόνος. Ἡ δὲ χείρ σου οὐκέτι ἰσχύει κατὰ θάλασσαν, ἡ παροξύνουσα βασιλεῖς. Κύριος Σαβαὼθ ἐνετείλατο περὶ Χαναὰν ἀπολέσαι αὐτῆς 12 τὴν ἰσχύν. Καὶ ἐροῦσιν, (θ) Οὐκέτι οὐ μὴ προσθῆτε τοῦ ὑβρίζειν καὶ ἀδικεῖν τὴν θυγατέρα (ι) Σιδῶνος. καὶ ἐὰν ἀπέλθῃς εἰς (κ) Κιτιεῖς, οὐδὲ ἐκεῖ (λ) ἀνάπαυσις 13 ἔσται σοι. Καὶ εἰς γῆν Χαλδαίων, καὶ αὕτη ἠρήμωται ἀπὸ τῶν (*) Ἀσσυρίων, ὅτι ὁ τοῖ- 14 χος αὐτῆς πέπτωκεν. (μ) Ὀλολύξατε πλοῖα Καρχηδόνος, ὅτι (ν) ἀπόλωλε τὸ 15 ὀχύρωμα ὑμῶν. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καταλειφθήσεται Τύρος ἔτη ἑβδομήκοντα, ὡς χρόνος βασιλέως, ὡς χρόνος ἀνθρώπου. καὶ ἔσται μετὰ ἑβδομήκοντα 16 ἔτη, ἔσται Τύρος ὡς ᾆσμα πόρνης. Λάβε κιθάραν, ῥέμβασον πόλις πόρνη ἐπιλελησμένη, καλῶς κιθάρισον, πολλὰ ᾆσον, 17 ἵνα σου (ξ) μνεία γένηται. Καὶ ἔσται (ο) μετὰ τὰ ἑβδομήκοντα ἔτη, ἐπισκοπὴν ποιήσει ὁ Θεὸς Τύρου, καὶ πάλιν ἀποκατασταθήσεται εἰς τὸ ἀρχαῖον, καὶ ἔσται ἐμπόριον πάσαις ταῖς βασιλείαις τῆς (π) οἰκουμέ- 18 νης ἐπὶ πρόσωπον τῆς γῆς. Καὶ ἔσται αὐτῆς ἡ ἐμπορία καὶ ὁ μισθὸς ἅγιον (*) κυρίῳ· οὐκ αὐτοῖς συναχθήσεται, ἀλλὰ τοῖς κατοικοῦσιν ἔναντι κυρίου, πᾶσα ἡ ἐμπορία αὐτῆς, φαγεῖν καὶ πιεῖν καὶ ἐμπλησθῆναι, (ρ) καὶ εἰς συμβολὴν μνημόσυνον ἔναντι κυρίου.

Cui similes facti sunt
in insula, negotiatores Phœnic
transmittentes mare? In aqua
ta, semen negotiatorum? qu
si messis inferatur, negotiat
gentium. Erubesce Sidon,
mare: fortitudo autem maris
xit; Non parturivi, neque
ri, neque enutrivi juvenes,
exaltavi virgines. Quando
tem auditum fuerit Ægypto
piet eos dolor pro Tyro.
Carthaginem, ululate, qui
tis in insula hac. Nonne
rat superbia vestra à pri
priusquam ipsa (a) trade
Quis hæc decrevit super Ty
Nunquid imbecillior est,
valet? Mercatores ejus glo
principes terræ. Dominus Sa
oth decrevit dissolvere univ
superbiam gloriosorum, &
norare omne gloriosum sup
ram. Operare terram tuam;
enim naves non ultrà veni
Carthagine: Manus autem
non ultrà valet per mare,
reges. Dominus Sabaoth ma
vit de Chanaan, perdere eju
titudinem. Et dicent; Non
trà adjicietis contumeliose
afficere injuriis filiam Sid
Quòd si abieris ad Citie
que ibi requies erit tibi: Et
ram Chaldæorum, & hæc
lata est ab (b) Assyriis:
murus ejus corruit. Ululate
ves Carthaginis; quoniam
munitio vestra. Et erit in di
la, derelinquetur Tyrus ann
ptuaginta, sicut tempus reg
ut tempus hominis. Et erit
ptuaginta annos, erit Tyrus
canticum meretricis. Sume
ram, vagare civitas meretrix
livioni tradita: bene cith
multùm cane, ut tui memor
Et erit post septuaginta ann
sitationem faciet Deus Tyr
rursus restituetur in antiqu
erit emporium omnibus regn
bis super faciem terræ: Et
ejus negotiatio, & merces
ctum Domino: non ipsis congr
bitur, sed habitantibus co
minum: omnis negotiatio
dere, & bibere, & impleri,
in Symbolam, memoriale
Domino.

MS. A. (γ) Φινίκης, (δ) ἐν Αἰγύπτῳ, (ε) ὀλολύζετε οἱ ἐνοικοῦντες ὑμῶν ἦν ἡ ὕβρις ἡ ἀπ' ἀρχῆς, (η) τὴν ὕβριν (*) ἔρχονται (θ) Οὐκέτι μὴ (ι) Σιών. (κ) Κητιεὶμ, (λ) σοι ἀνάπαυσις ἔσται. (*) Ἀσσυρίων σοι ἀνάπαυσις ἔσται, ὅτι ὁ τοῖχος αὐτῆς (μ) Ὀλολύζετε (ν) (ξ) ἡ μνία (ο) μετὰ ἑβδομήκοντα (π) οἰκουμένης. Καὶ ἔσται αὐτῆς κυρίῳ· (ρ) εἰς συμβολὴν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 אתברו יתבי ניסא תגרי צידון דהוו עברין בימא מלוך׃ דהות מספקא סחורא לעממין
3 סגיאין דבחצד כנישת נהרא עללתה והות סחורא לעממיא׃ בהיתו צידונאי ארי 4
אמר מערבאה די יתיב בתקוף ימא למימר לוי לא מרעית לא אעדיתי ולא רביתי
עולמין פנקית בתולן׃ כמא די שמעו למחתא דלקו מצראי זעו כד שמעו צוראי׃ 5
גלו למדינת ימא אילילו יתבי ניסא׃ ההדא לכון תקיפתא צור מיומי קדם 6 7
מלקדמין הוו מיתן לה תקרובתא מארע רחיקא כדו לאתותבא הא גליא׃ מן 8
מליך דא על צור דהות ממלכא מלכין די תגרהא רברבין שלטונאה יקירי ארעא׃
יי צבאות מלכה לאפסא יקר כל חדותא לאקלא כל יקירי ארעא׃ גלא 9 10
מארעיך כמי נהרא ערוקי למדינת ימא לית תקוף עוד׃ גבורתיה מרממא על ימא 11
לאזעא מלכותא יי פקיד על כנעניא לשיצאה תוקפהא׃ ואמר לא תוספון עוד 12
למתקף דהויתון אנסין לעמא די בצידון לכתים קומו גלו אף לתמן לא יהי
לכון ניח׃ הא ארעא כסדאי דין עמא כד לא הוה אתוראה שכללה לנגון 13
אקימו חזותהא פגרו ברניתהא שויוהא לדמחמרא׃ אילילו נחתי ספיני ימא ארי 14
אתבזיזו מחוזי תוקפכון׃ ויהי בעדנא ההיא ותתרחיק צור שבעין שנין כיומי 15
מלכא חד מסוף שבעין שנין יהי לצור כתושבחת נפקת ברא׃ אתחלף יקריך 16
אטלטל למדינא קרתא די הות כנפקת ברא אתרחקת הפוכי כנריך לאבלא וזמריך
לאליא מאיכי יעול דכרניך׃ ויהי מסוף שבעין שנין יעול דכרנה דצור קדם יי 17
ותתוב לאתרה ותהי מספקא סחורתה לכל מלכות עממיא די על אפי ארעא׃ ויהי 18
סחורתה ואגרה קודשא קדם יי לא יתאצר ולא יתגנז ארי לדמשמשין קדם יי יהי
אגרה למיכל למסבע ולכסו יקר׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Contriti sunt habitatores insulæ, negotiatores Sidon, qui transibant
repleverunt te. Quæ erat sufficiens negotiationi multis populis
proventus erat in messe congregationis fluminis, & facta est nego
populorum. Confusi sunt Sidonii, quia dixit Occidentalis qui
in fortitudine maris, dicens: Utinam non infirmarer, nec conciperem
nutrirem juvenes, nec deliciis affluere facerem virgines. Sicut
plagam qua percussi sunt Ægyptii, tremuerunt quando audierunt
Migraverunt in provinciã maris. Ululate habitatores insulæ. Nunquid
est vobis Tyrus fortissima à diebꝰ antiquis, cui ab antiquo afferebant
à terra longinqua? Ecce nunc migravit ut longè habitaret. Quis
hoc consilium contra Tyrum quæ erat consiliatrix? cujꝰ negotiatores
principes, & dominatores ejꝰ inclyti terræ. Dñs exercituũ dedit hoc
filiũ, ut violaret gloriam universæ lætitiæ, ut in ignominiã deduceret
gloriosos terræ. Migra de terra tua quasi aquæ fluminis; fuge in pro
maris, non est ultrà fortitudo. Potentia ejus elevata est sup mare
movenda regna. Dñs mandavit adversꝰ *Canaaneũ*, ut disperderet
Et dixit, Non addetis ultrà roborari, qui vim inferebatis populo
Sidon. In Cethim cõsurgite, transmigrate: ibi quoq; non erit vobis
Ecce terra Chaldæorũ, iste populꝰ aliquando non erat. Assyrii fun
in insulas: statuerũt speculas ejꝰ, dissipaverũt palatia ejꝰ, posuerunt
acervos lapidũ. Ululate descendentes in naves maris, quoniã
provinciæ fortitudinis vestræ. Et erit in tempore illo, et oblivioni
Tyrus septuaginta annis, sicut dies regis uniꝰ: & in fine septuaginta
erit Tyro quasi canticũ meretricis. Mutata est gloria tua: migra
provinciam, civitas quæ eras quasi meretrix oblivioni tradita
te citharam tuam in luctũ, & musicã tuã in lamentationẽ; fortasse
moria tui. Et erit in fine septuaginta annorũ, ingredietur memoria
ram Dño, & revertetur in locũ suũ: & erit sufficiens negotiatio
regnis populorũ quæ sunt sup *faciem terræ*. Et erunt negotia
merces ejꝰ sanctificatæ corã Dño, non thesaurizabuntur
tur; quia his qui ministrant corã Dño, erit merces ejꝰ, ut com
turentur, & operiantur vestimentis gloriæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܫܠܘ ܥܡܘܪܝ ܓܙܪܬܐ܃ ܬܓܪܐ ܕܨܝܕܢ ܕܥܒܪ ܝܡܐ ܡܠܘܟܝ܀ * ܡܬܓܪܢܘܬܟܝ ܒܡܝܐ ܣܓܝܐܐ.
ܙܪܥܐ ܕܬܓܪܐ ܚܨܕܐ ܕܢܗܪܐ ܥܠܠܬܗ. ܘܗܘܬ ܠܬܓܪܬܐ ܕܥܡܡܐ. * ܒܗܬܝ ܨܝܕܢ. ܕܐܡܪ ܝܡܐ ܘܥܫܝܢܗ 4
ܕܝܡܐ ܘܐܡܪ. ܠܐ ܚܒܠܬ ܘܠܐ ܝܠܕܬ. ܘܠܐ ܪܒܝܬ ܥܠܝܡܐ. ܘܠܐ ܐܪܝܡܬ ܒܬܘܠܬܐ.
* ܡܐ ܕܐܫܬܡܥ ܠܡܨܪܝܢ. ܢܚܒܠܘܢ ܚܒܠܐ ܐܝܟ ܕܢܫܡܥܘܢ ܥܠ ܨܘܪ. * ܥܒܪܘ ܠܬܪܫܝܫ. 5 6
ܐܠܠܘ ܥܡܘܪܝ ܓܙܪܬܐ. * ܗܕܐ ܗܝ ܠܟܘܢ ܥܫܝܢܬܐ ܕܡܢ ܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ. ܩܕܡܝܗ ܢܐܙܠܢ 7
ܪܓܠܝܗ ܠܡܥܡܪ ܒܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ. * ܡܢܘ ܡܠܟ ܗܠܝܢ ܥܠ ܨܘܪ ܡܟܠܠܬܐ. ܕܬܓܪܝܗ ܗܘܘ ܫܠܝܛܢܐ 8
ܘܡܬܬܓܪܢܝܗ ܡܝܩܪܝ ܐܪܥܐ. * ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܡܠܟ ܗܕܐ. ܠܡܒܛܠܘ ܫܘܒܗܪܐ ܕܟܠ ܚܝܠ 9
ܘܠܡܨܥܪܘ. ܠܟܠܗܘܢ ܡܝܩܪܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܥܒܪܝ ܠܐܪܥܟܝ ܐܝܟ ܢܗܪܐ ܒܪܬ ܬܪܫܝܫ. ܠܐ 10
ܗܘܐ ܕܡܪܕܐ ܠܟܝ. * ܐܝܕܗ ܐܪܝܡ ܥܠ ܝܡܐ. ܘܐܪܓܙ ܡܠܟܘܬܐ. ܡܪܝܐ ܦܩܕ ܥܠ ܟܢܥܢ 11
ܕܢܘܒܕ ܠܥܫܝܢܘܗ. * ܘܐܡܪ. ܠܐ ܬܘܣܦܝܢ ܬܘܒ ܠܡܫܬܒܗܪܘ܃ ܒܬܘܠܬܐ ܥܠܝܒܬܐ ܒܪܬ 12
ܨܝܕܢ. ܩܘܡܝ ܥܒܘܪܝ ܠܟܬܝܡ. ܐܦ ܬܡܢ ܠܐ ܢܢܝܚ ܠܟܝ. * ܗܐ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܗܢܘ 13
ܥܡܐ ܕܠܐ ܗܘܐ ܐܬܘܪܝܐ ܫܪܝܗ ܠܪܘܚܐ. ܐܩܝܡܘ ܕܘܟܝܐ. ܒܨܘ ܩܨܪܝܗ. ܘܥܒܕܘܗ̇
ܠܡܦܘܠܬܐ. * ܐܠܠܝ ܐܠܦܐ ܕܬܪܫܝܫ. ܕܐܬܒܙܙ ܫܘܒܗܪܟܝܢ. * ܘܢܗܘܐ ܒ 14 15
ܝܘܡܐ ܗܘ. ܬܬܛܥܐ ܨܘܪ. ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. ܐܝܟ ܝܘܡܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܚܕ. ܘܡܢ ܒܬܪ ܫܒܥܝܢ
ܫܢܝܢ. ܢܙܡܪܘܢ ܠܨܘܪ ܙܡܪܬܐ ܕܙܢܝܬܐ. * ܣܒܝ ܟܢܪܐ. ܘܐܬܟܪܟܝ ܒܡܕܝܢܬܐ. ܙܢܝܬܐ ܕܐܬܛܥܝܬܝ 16
ܫܦܝܪ ܙܡܪܝ. ܐܣܓܝ ܙܡܪܐ. ܕܬܬܕܟܪܝܢ. * ܘܢܗܘܐ ܡܢ ܒܬܪ ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. ܢܣܥܘܪ 17
ܡܪܝܐ ܠܨܘܪ. ܘܢܗܦܟܝܗ̇ ܠܐܬܓܪܗ̇. ܘܬܙܢܐ ܒܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ ܕܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ. * ܘܢܗܘܐ 18
ܐܬܓܪܗ̇ ܘܥܠܠܬܗ̇ ܩܘܕܫܐ ܠܡܪܝܐ. ܠܐ ܢܬܣܝܡܘܢ ܒܓܙܐ܂ ܘܠܐ ܢܬܟܢܫܘܢ. ܐܠܐ
ܠܝܬܒܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܢܗܘܐ ܐܬܓܪܗ̇. ܠܡܐܟܠ ܘܠܡܣܒܥ ܘܠܡܬܟܣܝܘ ܠܣܒܐ.

Sile habitator inſulæ, mercator Sidonis qui 2
ſulcas mare, Tu cujus merces ſunt in aquis 3
multis : *nam* proventus ſeminis mercatoris
erit meſſis fluvii, cedet in lucrum gentibus.
Erubeſce Sidon, quia dixit mare & fortitudo 4
maris, Non parturivi, neque peperi, neque
educavi adoleſcentes, neque virgines evexi.
Cùm *id* auditum fuerit ab Ægyptiis, dolores 5
partûs corripient eos, ut cùm audietur à Tyri- 6
is. Tranſite ad Tharſis, ululate habitatores in- 7
ſulæ. Hæccine eſt apud vos illa munita quæ
eſt ab antiquis diebus ? ante ipſam ibunt pe-
des ejus, ut habitet in *regione* remota. Quis 8
tale conſilium cepit contra Tyrum illam co-
ronatam, cujus mercatores erant principes,
cujus negotiatores honoratiſſimi terræ ? Do- 9
minus potentiſſimus decrevit hoc, ad abolen-
dam gloriam omnis potentiæ, & ignominiâ
afficiendos omnes honoratiſſimos terræ. Re- 10
mea in terram tuam ceu flumen filia Tharſis,
non eſt ampliùs qui te expellat. Manum ſuam 11
extulit ſuper mare, & irritavit regna : Dominꝰ
mandavit contra Chanaan ut perderet robu-
ſtiores ejus; Et dixit, Ne pergas ampliùs ſu- 12
perbire virgo oppreſſa filia Sidonis : Surge,
tranſi in Chetim : nec ibi requiem tibi dabit.
En terrâ Chaldæorum (id eſt populus quem 13
Aſſyrius nonne redegit in ventum?) ſtatuite
ergò exploratores, explorate palatia ejus, & 14
redigite eam in ruinâ. Ululate naves Tharſis 15
quia direptus eſt faſtus veſter. Erit autem eo
die, ut oblivioni tradatur Tyrus ſeptuaginta
annis, juxta dies unius regis; & poſt annos ſe-
ptuaginta canant Tyro cantilenâ meretricis.
Sume citharâ, & circumi civitatem, O mere- 16
trix oblivioni tradita, pulſa jucundè, cantum
multiplica, ut memoria tui renovetur. Erit 17
enim poſt annos ſeptuaginta ut reviſat Dñs
Tyrũ, & reſtituat eam ad mercaturã ſuam, &
fornicetur in omnibꝰ regnis quæ extant ſuper
faciẽ terræ. Tandem verò negotiatio ejus & 18
quæſtꝰ ejꝰ conſecrabuntur Dño : non reponen-
tur in theſauro, neq; recõdentur, ſed habitan-
tibꝰ corã Dño erit merx ejus, ad comedendũ,
ad ſaturandũ ſe, & ad operiendum ſenes ſuos.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بماذا تكون شبيها ايها الساكن في الجزيرة . تجار فينيقية العابرون البحر في ماء كثير . 2
* نسل التجار . تجار الامم مثل قبضة من حزمة حصاد * افتضحي يا صيدا قال البحر وقوة 3 4
البحر قالت لم اطلق ولم الد ولم اربي شبانا . ولم ارفع عذارى * واذ يصير مسموعا في 5
مصر * ياخذهم الوجع من اجل صور * امضوا الى كرسيذونية . وولولوا ايها السكان في هذه 6
الجزيرة * اليس عظمتكم كانت منذ البدو من قبل ان تسلم * من تآمر بهذا على 7 8
صور هل هي دنية او لا تقدر تجارها المسرفون رؤساء الارض * رب الجنود راى ان يحل كل 9
كبرياء المسرفين ويهين كل شرف على الارض * اعملي ارضك . لان ليس ياتي بعد سفن 10
من كرسيذونية * ويدك لا تقوى على البحر ايضا . التي ازعجت ملوكا . رب الجنود امر من 11
اجل كنعان ان يهلك قوتها * ويقولون لا تعودوا ان تتعظموا وتظلموا ابنة صهيون 12
وان ذهبت الى كيتيم فليس تكون لك هناك راحة . لان حائطها سقط * [MS. Ox. ولكن هذه ارض 13
الكلدانيين . هذا الشعب الذي اتاك . ليس مثل الموصلي الذي لا يقدر عليك . ويذري
ترابك في الريح . ويصيروا قصورك خرابا . ولا شعبه المفتشون الذين فتشوا قصورك] * وولولي يا 14
سفن كرسيذونية لان حصنكم هلك * ويكون في ذلك اليوم تترك صور سبعين سنة . مثل 15
زمن ملك مثل زمن انسان . ويكون بعد سبعين سنة تصير صور مثل نشيد زانية .
* خذي قيثارا وترددي ايتها المدينة الزانية المنسية . فنقري حسنا . انشدي كثيرا 16
ليكون لك ذكر * ويكون بعد سبعين سنة يصنع الله تعهد صور . ويعيدها ثانية 17
الى الاول . وتصير متجرا لكل مملكات المسكونة على وجه الارض * وتكون تجارها واجرها 18
قدسا للرب . وليس تجمع لهم لكن للسكان امام الرب في اوروشليم كل تجارها . لياكلوا
ويشربوا ويتملوا . انموذجا ذكرا امام الرب .

Cui rei comparaberis O habitator inſu- 2
læ ? Mercatores Phœniciæ trajicientes
mare per aquas multas, Semen mer- 3
catorum, mercatores gentium, ſunt ſi-
miles pugillo è manipulo meſſis excer-
pto. Pudore ſuffunditor O Saida, in- 4
quit mare : & fortitudo maris, Nequa-
quam parturivi, inquit, neque peperi,
neque educavi juvenes, neque elevavi
virgines. Id cùm auditum fuerit in 5
Ægypto, corripiet eos dolor propter Ty-
rum. Ite Charſedoniam, ejulate O in- 6
colæ hujus inſulæ. Nonne faſtus ve- 7
ſter erat ab initio, antequam traditus
eſſet ? Quis talia conſultavit adver- 8
ſùs Tyrum ? num vilis eſt ? an verò im-
potentes ſunt mercatores ejus nobiliſſimi,
principes terræ ? Dominus exercituum 9
arbitratus eſt diſſolvendam eſſe totam no-
bilium arrogantiam, omnémque faſtum
qui ſuper terram eſt, deprimendum. Co- 10
le terram tuam, quia non ſunt deinceps
adventuræ naves è Charſedonia : Nec 11
poteſtatem habebit ampliùs ſuper mare
manus illa tua quæ reges territabat. Do-
minus exercituum præcepit de perdenda
fortitudine Chanaan ; Ita ut dicant, Ne 12
ſuperbiatis deinceps, & opprimatis filiam
Sionis : etiamſi te contuleris ad Chetim,
non erit illic tibi requies, quia murus e-
jus corruit. [MS.Ox. *Sed iſta terra Chal-* 13
dæorum, iſte populus qui ad te venit, non
eſt ſicut Aſſyrius qui tibi non prævaluit :
ſed pulverem tuum in ventum diſper-
get : & erunt arces tuæ in deſolationem:
neque populus ejus, exploratores qui explo-
rabunt palatia tua.] *Ejulate O naves Char-* 14
ſedoniæ, quia periit munitio veſtra. E- 15
rit autem illo die ut deſtituatur Tyrus an-
nis ſeptuaginta. ut tempore alicujus re-
gis, ut ætate alicujus hominis : tum erit
ut exactis ſeptuaginta annis, fiat Tyrus
ſicut carmen meretricis : Sume cithar- 16
am, & deambula urbs ſcortatrix & ob-
livioni tradita, citharam benè pulſa, car-
mina multa canito, ut memoria tua re-
viviſcat. Exactis verò ſeptuaginta an- 17
nis, recordabitur Deus Tyri, & denuò
reſtituet eam in priſtinum ſtatum, ſicque
emporium omnibus regnis quæ ſunt ſu-
per faciem orbis terrarum : Et tam 18
merces quàm quæſtus ejus erunt ſa-
cræ Domino : nequaquam pro ipſis co-
gentur, ſed pro habitantibus coram Do-
mino in Jeruſalem erunt omnes mer-
ces ejus, ut edant, bibant, & ſatu-
rentur ; ad exemplar & memoriam
coram Domino.

ישעיה : כד

CAP. XXIV. כד

,ejus *facies depravabit* &:eam *defrugans* &,terram *evacuans* Dominus Ecce
1 הִנֵּה יְהוָה בּוֹקֵק הָאָרֶץ וּבוֹלְקָהּ וְעִוָּה פָנֶיהָ
: ſacerdos ſic , populus ſicut erit Et .ejus habitatores faciet diſpergere &
2 וְהֵפִיץ יֹשְׁבֶיהָ : וְהָיָה כָעָם כַּכֹּהֵן
, emens ſicut : ejus *hera* ſic , ancilla ſicut : ejus dominus ſic ,ſervus ſicut
כַּעֶבֶד כַּאדֹנָיו כַּשִּׁפְחָה כַּגְּבִרְתָּהּ כַּקּוֹנֶה
ſic , fœnerator ut : mutuum accipiens ſic,mutuans ſicut : vendens ſic
כַּמּוֹכֵר כַּמַּלְוֶה כַּלֹּוֶה כַּנֹּשֶׁה כַּאֲשֶׁר
: diripietur diripiendo & ,terra evacuabitur Evacuando.*eo ab ferens* fœnus
3 נֹשֵׁא בוֹ : הִבּוֹק תִּבּוֹק הָאָרֶץ וְהִבּוֹז תִּבּוֹז
; terra *defluxit* , *Luxit* .hoc verbum eſt locutus Dominus quia
4 כִּי יְהוָה דִּבֶּר אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה : אָבְלָה נָבְלָה הָאָרֶץ
.terræ populi *elatio* ſunt infirmati : orbis *decidit* , eſt *infirmata*
אֻמְלְלָה נָבְלָה תֵּבֵל אֻמְלָלוּ מְרוֹם עַם־הָאָרֶץ :
,leges ſunt tranſgreſſi quia : *ſuis incolis ſub hypocriſi eſt uſa* terra Et
5 וְהָאָרֶץ חָנְפָה תַּחַת יֹשְׁבֶיהָ כִּי־עָבְרוּ תוֹרֹת
perjurium Ideo *ſeculi* fœdus diſſipaverunt ,*ſtatutum* mutaverunt
6 חָלְפוּ חֹק הֵפֵרוּ בְּרִית עוֹלָם : עַל־כֵּן אָלָה
ſunt combuſti Ideò .ea in habitantes ſunt deſolati & :terram *comedit*
אָכְלָה אֶרֶץ וַיֶּאְשְׁמוּ יֹשְׁבֵי בָהּ עַל־כֵּן חָרוּ
, *muſtum Luxit .puſillum hominis remanebit* & , terræ habitatores
7 יֹשְׁבֵי אֶרֶץ וְנִשְׁאַר אֱנוֹשׁ מִזְעָר : אָבַל תִּירוֹשׁ
Ceſſavit .corde læti omnes ingemuerunt :vitis eſt *infirmata*
8 אֻמְלְלָה־גָפֶן נֶאֶנְחוּ כָּל־שִׂמְחֵי־לֵב : שָׁבַת
gaudium *deſiit* ,exultantium ſonitus *ceſſavit* , tympanorum gaudium
מְשׂוֹשׂ תֻּפִּים חָדַל שְׁאוֹן עַלִּיזִים שָׁבַת מְשׂוֹשׂ
.illam bibentibus ſechar erit amara:vinum bibent non *cantico In* .citharæ
9 כִּנּוֹר : בַּשִּׁיר לֹא יִשְׁתּוּ־יָיִן יֵמַר שֵׁכָר לְשֹׁתָיו :
Clamor .*intrando ab* domus omnis eſt clauſa : *inanitatis* civitas eſt Attrita
10 נִשְׁבְּרָה קִרְיַת־תֹּהוּ סֻגַּר כָּל־בַּיִת מִבּוֹא : צְוָחָה
11 migravit , lætitia omnis eſt obtenebrata : plateis in vinum propter
עַל־הַיַּיִן בַּחוּצוֹת עָרְבָה כָּל־שִׂמְחָה גָּלָה
conteretur deſolatione &,ſolitudo urbe in Remanſit .terræ gaudium
12 מְשׂוֹשׂ הָאָרֶץ : נִשְׁאַר בָּעִיר שַׁמָּה וּשְׁאִיָּה יֻכַּת־
excuſſio ſicut:populorũ medio in ,terræ *interiori* in erit ſic Quia .porta
13 שָׁעַר : כִּי כֹה יִהְיֶה בְּקֶרֶב הָאָרֶץ בְּתוֹךְ הָעַמִּים כְּנֹקֶף
elevabunt Hi .vindemia fuerit *conſummata ſi* racemi ſicut , oleæ
14 זַיִת כְּעוֹלֵלֹת אִם־כָּלָה בָצִיר : הֵמָּה יִשְׂאוּ
Ideo .*mari à efferent vocem* Domini *excellentia in,dicent præconia*,ſuam vocem
15 קוֹלָם יָרֹנּוּ בִּגְאוֹן יְהוָה צָהֲלוּ מִיָּם : עַל־כֵּן
Dei Domini nomen maris inſulis in;Dominum glorificate vallibus in
בָּאֻרִים כַּבְּדוּ יְהוָה בְּאִיֵּי הַיָּם שֵׁם יְהוָה אֱלֹהֵי
: dixi & , juſto gloriam ,audivimus *cantus* terræ *ala* Ab .Iſrael
16 יִשְׂרָאֵל : מִכְּנַף הָאָרֶץ זְמִרֹת שָׁמַעְנוּ צְבִי לַצַּדִּיק וָאֹמַר
prævaricantes:mihi væ ; mihi meum ſecretum , mihi meum Secretum
רָזִי־לִי רָזִי־לִי אוֹי לִי בֹּגְדִים
.ſunt prævaricati prævaricantes prævaricatione & ,ſunt prævaricati
בָּגָדוּ וּבֶגֶד בּוֹגְדִים בָּגָדוּ :
, erit Et .terræ habitator te ſuper ,laqueus & ,fovea & ,Formido
17 פַּחַד וָפַחַת וָפָח עָלֶיךָ יוֹשֵׁב הָאָרֶץ : וְהָיָה
18 medio de *aſcendens* & :foveam in cadet ,fomidinis voce à *fugiens*
הַנָּס מִקּוֹל הַפַּחַד יִפֹּל אֶל־הַפַּחַת וְהָעוֹלֶה מִתּוֹךְ
, aperientur excelſo de cataractæ quia:laqueo *in* capietur ,foveæ
הַפַּחַת יִלָּכֵד בַּפָּח כִּי־אֲרֻבּוֹת מִמָּרוֹם נִפְתָּחוּ
.terræ fundamenta contremiſcent &
וַיִּרְעֲשׁוּ מוֹסְדֵי אָרֶץ :

Verſio VUL. LAT.

CAP. XXIV.

1 Ecce Dominꝰ diſſipabit terram, & nudabit eam, & affliget faciem ejus, & diſperget
2 habitatores ejus. Et erit ſicut
populus, ſic ſacerdos: & ſicut
ſervus, ſic dominus ejus: ſicut
ancilla, ſic domina ejus: ſicut
emens, ſic ille qui vendit: ſicut
fœnerator, ſic is qui mutuũ accipit: ſicut qui repetit, ſic qui
3 debet. Diſſipatione diſſipabitur terra, & direptione prædabitur. Dominus enim locutus
4 eſt verbum hoc. Luxit, &
defluxit terra, & infirmata eſt:
defluxit orbis, infirmata eſt altitudo
5 populi terræ. Et terra
infecta eſt ab habitatoribus
ſuis: quia tranſgreſſi ſunt leges, mutaverunt jus, diſſipaverunt
fœdus ſempiternum.
6 Propter hoc maledictio vorabit terram, & peccabunt habitatores
ejus: ideóque inſanient cultores ejus, & relinquentur
7 homines pauci. Luxit vindemia, infirmata eſt vitis, ingemuerunt omnes qui lætabantur
8 corde. Ceſſavit gaudium tympanorum, quievit ſonitus lætantium, conticuit dulcedo ci-
9 tharæ. Cum cantico non bibent vinum: amara erit potio
10 bibentibꝰ illã. Attrita eſt civitas vanitatis, clauſa eſt omnis
11 domꝰ nullo introeunte. Clamor
erit ſuper vino in plateis: deſerta eſt omnis lætitia: tranſla-
12 tum eſt gaudium terræ. Relicta eſt in urbe ſolitudo, & ca-
13 lamitas opprimet portas. Quia
hæc erũt in medio terræ, in medio populorum: quomodò ſi
paucæ olivæ, quæ remanſerunt,
excutiantur ex olea; & racemi,
14 cùm fuerit finita vindemia. Hi
levabunt vocem ſuam, atque
laudabunt: cùm glorificatus
fuerit Dominꝰ, hinnient de ma-
15 ri. Propter hoc in doctrinis
glorificate Dominum; in inſulis maris nomen Domini Dei
16 Iſrael. A finibus terræ laudes
audivimus, gloriam juſti. Et
dixi; Secretum meum mihi, ſecretum meum mihi, væ mihi:
prævaricantes prævaricati ſũt,
& prævaricatione tranſgreſſorum
17 prævaricati ſunt. Formido, & fovea, & laqueus ſuper
18 te, qui habitator eſt terræ. Et
erit: Qui fugerit à voce formidinis, cadet in foveam: &
qui ſe explicaverit de fovea, tenebitur laqueo: quia cataractæ
de excelſis apertæ ſunt, & concutientur fundamenta terræ.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. κδʹ.

1 Ἰδοὺ κύριος καταφθείρει τὴν οἰκουμένην, καὶ
ἐρημώσει αὐτὴν, καὶ ἀνακαλύψει τὸ πρόσωπον
αὐτῆς, καὶ διασπερεῖ τοὺς ἐνοικοῦντας ἐν
2 αὐτῇ. Καὶ ἔσται ὁ λαὸς ὡς (α) ἱερεὺς, καὶ ὁ
παῖς ὡς ὁ κύριος, καὶ ἡ θεράπαινα ὡς ἡ
κυρία· ἔσται ὁ ἀγοράζων ὡς ὁ πωλῶν, (ʹʹ) ὁ
δανείζων ὡς ὁ δανειζόμενος, καὶ ὁ ὀφείλων
3 ὡς ᾧ ὀφείλει. Φθορᾷ φθαρήσεται ἡ γῆ, καὶ
προνομῇ προνομευθήσεται ἡ γῆ· τὸ γὰρ στόμα
4 κυρίου ἐλάλησε ταῦτα. Ἐπένθησεν ἡ
γῆ, καὶ ἐφθάρη ἡ οἰκουμένη, (β) ἐπένθησαν οἱ
5 ὑψηλοὶ τῆς γῆς. (γ) Ἡ δὲ γῆ ἠνόμησε διὰ τοὺς
κατοικοῦντας αὐτὴν, διότι (δ) παρήλθοσαν
τὸν νόμον, καὶ ἤλλαξαν τὰ (ε) προστάγματα
6 διαθήκην αἰώνιον. Διατοῦτο ἀρὰ ἔδεται
τὴν γῆν, ὅτι ἡμάρτησαν οἱ κατοικοῦντες
αὐτήν· διατοῦτο πτωχοὶ ἔσονται οἱ ἐνοικοῦντες
ἐν τῇ γῇ, καὶ καταλειφθήσονται ἄνθρωποι
7 ὀλίγοι. Πενθήσει οἶνος, πενθήσει
ἄμπελος, στενάξουσι πάντες οἱ εὐφραινόμενοι
8 τὴν ψυχήν. Πέπαυται εὐφροσύνη τυμπάνων,
9 *πέπαυται αὐθάδεια, καὶ πλοῦτος ἀσεβῶν,
πέπαυται φωνὴ κιθάρας. Ἠσχύνθησαν*, οὐκ
ἔπιον οἶνον, πικρὸν ἐγένετο τὸ σίκερα
10 τοῖς πίνουσιν. (ζ) Ἠρημώθη πᾶσα πόλις,
11 κλείσει οἰκίαν τοῦ μὴ εἰσελθεῖν. Ὀλολύζετε
περὶ τοῦ οἴνου πανταχῆ, πέπαυται πᾶσα εὐφροσύνη
τῆς (η) γῆς, ἀπῆλθεν πᾶσα εὐφροσύνη
12 τῆς γῆς. Καὶ καταλειφθήσονται πόλεις
ἔρημοι, καὶ οἶκοι ἐγκαταλελειμμένοι ἀπολοῦνται.
13 Ταῦτα πάντα (θ) ἔσονται ἐν τῇ
γῇ ἐν μέσῳ τῶν ἐθνῶν. ὃν τρόπον ἐάν τις
καλαμήσηται ἐλαίαν, οὕτως καλαμήσονται
αὐτούς· καὶ ἐὰν παύσηται ὁ τρυγητὸς,
14 Οὗτοι (ι) βοῇ φωνήσουσιν. οἱ δὲ καταλειφθέντες
ἐπὶ τῆς γῆς εὐφρανθήσονται ἅμα τῇ
δόξῃ κυρίου, ταραχθήσεται τὸ ὕδωρ τῆς θαλάσσης.
15 Διατοῦτο ἡ δόξα κυρίου ἐν ταῖς νήσοις
ἔσται τῆς θαλάσσης, τὸ ὄνομα κυρίου
16 ἔνδοξον ἔσται. Κύριε ὁ θεὸς Ἰσραὴλ ἀπὸ
τῶν πτερύγων τῆς γῆς τέρατα ἠκούσαμεν, ἐλπὶς
τῷ εὐσεβεῖ. καὶ ἐροῦσι, Οὐαὶ τοῖς
17 ἀθετοῦσιν, οἱ ἀθετοῦντες τὸν νόμον. Φόβος
καὶ βόθυνος καὶ παγὶς ἐφ᾽ ὑμᾶς τοὺς ἐνοι-
18 κοῦντας ἐπὶ τῆς γῆς. Καὶ ἔσται ὁ φεύγων τὸν
φόβον, ἐμπεσεῖται εἰς τὸν βόθυνον· (κ)
καὶ ὁ ἐκβαίνων ἐκ τοῦ βοθύνου, ἁλώσεται
ὑπὸ τῆς παγίδος· ὅτι θυρίδες ἐκ τοῦ οὐρανοῦ
(λ) ἀνεῴχθησαν, καὶ σεισθήσεται τὰ θεμέλια
τῆς γῆς.

MS.A. (α) ὁ ἱερεὺς, (ʹʹ) καὶ ὁ (β) καὶ ἐπένθησαν (γ) Ἡ δὲ γῆ ἀνόμ (δ) παρέβησαν (ε) προστάγματα κυρίου διαθήκην (ζ) * Ἠρημώθη (θ) γῆς. Καὶ καταλειφθήσονται (θ) ἔσται (ι) φωνῇ βοήσονται. ἠνεῴχθησαν,

CAP. XXIV.

Ecce Dominus diſperdit orbem terræ, & deſolabit eum, & revelabit faciem ejus, & (a) diſſeminabit inhabitantes in eo: Et erit populus, ſicut Sacerdos; & puer ſicut dominus; & ancilla, ſicut domina: erit emens, ſicut vendens, fœnerator, ſicut qui mutuum accipit; & qui debet, ſicut cui debetur. Diſſipatione diſſipabitur terra, & direptione diripietur terra. Os enim Domini loquutum eſt hæc. Luxit terra, & corrupta eſt orbis: Luxerunt excelſi terræ: Ipſa autem impiè egit propter habitantes ſuos: quia prævaricati ſunt legem, & mutaverunt præcepta, teſtamentum æternum. Propter hoc maledictio devorabit terram, quia peccaverunt habitatores ejus. Ideo pauperes erunt habitatores terræ, & derelinquentur homines pauci. Lugebit vinum, lugebit vitis, gement omnes lætantes animo. Ceſſavit lætitia tympanorum, (b) ceſſavit arrogantia, & opulentia impiorum: ceſſavit vox citharæ. Confuſi ſunt, non biberunt vinum, amara facta eſt ſicera bibentibus. Deſolata eſt univerſa civitas: claudet domum ad non ingrediendum. (c) Ululate pro vino ubique: ceſſavit omnis lætitia (d) terræ: abiit omnis lætitia terræ. Et derelinquentur civitates deſolatæ: & domus derelictæ peribunt. Hæc omnia erunt in terra in medio gentium. Quomodo ſi quis excutiat olivam; ſic excutient eos; &, ſi quieſcat vindemia. Iſti clamore vociferabuntur. Qui autem relicti fuerint ſuper terram lætabuntur ſimul cum gloria Domini: (e) conturbabitur aqua maris. Propterea gloria Domini in inſulis erit maris: nomen Domini glorioſum erit. Domine Deus Iſrael, ab alis terræ (f) portenta audivimus: ſpes (g) pio. Et dicent; Væ (h) prævaricantibus qui prævaricantur legem. Timor & fovea, & laqueus ſuper vos qui habitatis terram. Et erit qui fugerit timorem, incidet in foveam: & qui exierit de fovea, capietur à laqueo. Quia feneſtræ è (i) cœlo apertæ ſunt: & concutientur fundamenta terræ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כד

1 הא יי מביז ארעא ומסר לה לסנאה ותחפי בהתא אפי רברבהא על דעברו על אוריתא
2 ויבדר ית דיתבין בה : ויהי חילונאה ככהנא עבדא כרבוניה אמתא כמרתה זבנא
3 כמזבנא יזפא כמוזפא רשא כמן דרשי בידה : אתבזזא תתבזז ארעא ואתדשא תתדש
4 ארי יי מלל ית פתגמא הדין : אתאבלת חרובת ארעא צדיאת חרובת תבל ספו תקוף
5 עמא דארעא : וארעא חבת תחות יתבהא ארי עברו על אוריתא אבטילו מועדיא
6 אשניאו קימא די מן עלמא : על כן מן קדם מומי דשקר חרובת ארעא וצדיאו דיתבין
7 בה על כן ספו יתבי ארעא ואשתאר אנשא כזעיר : אתאבלו כל שתי חמר ארי אתפריכו
8 נופניא אתאנחו כל חדי לבא : בטלת חדות תופין אתמנעת אתרגושת תקיפין פסקת
9 חדות כנרא : על דיזמר לא ישתון חמר ימר עתיקא לשתוהי : אתברת קרתהון
10 11 צדיאת אחידו כל בתיא מלמעל : מצוחין על חמרא בשוקיא שלימת כל חדותא גלא
12 13 ביע מן ארעא : אשתאר בקרתא צדו ואתרגושתא בפגור תרעין : ארי כדין ישתארון
14 יחידאין צדיקיא בנו ארעא ביני מלכותא כביעור זיתא כעוללין בתר קטף : אנון ירמון
15 קליהון ישבחון במימרא דיי יבעון כמא דבעו על גבורן דאתעבידא להון על ימא : על
כן במיתי נהורא לצדיקיא יקרון קדם יי בניסי ימא יהון מודן ומברכין שמא דיי אלהא
16 דישראל : מבית מקדשא דמתמן עתיד למפק חדוא לכל יתבי ארעא תושבחא
שמענא לצדיקיא אמר נביא רז אגר לצדיקיא אתחזי לי רז פורענות לרשיעיא אתגלי
17 לי ווי לאנוסיא דמתאנסין ולבזוי בזוין דהא מתבזין : דחלא וכומצא ומצדא עלך יתיב
18 ארעא : ויהי דיערוק מן קדם דחלא יפול לגו כומצא ודיסק מגו כומצא יתאחד בסרגתא
ארי גבורן בשמיא אתעבידא וזעו יסודי ארעא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXIV.

Ecce Dominus diſſipabit terram, & tradet eam inimico; & cooperiet confuſione faciem principum ejus, eò quod tranſgreſſi ſunt legem: & diſperget habitantes in ea. Et erit laicus ſicut ſacerdos, ſervus ſicut dominus ejus, ancilla ſicut domina ejus; emens ſicut qui vendit; mutuans ſicut qui mutuò accipit; debitor ſicut creditor. Diſſipatione diſſipabitur terra, & conculcatione conculcabitur, quia Dominus locutus eſt verbum hoc. Luxit & deſolata eſt terra: deſertus eſt, in ſolitudinem redactus eſt orbis: defecit fortitudo populi terræ. Terra autem peccavit ſub habitatoribus ſuis, quia tranſgreſſi ſunt Legẽ, & ceſſare fecerunt ſolemnitates, mutaverunt pactum quod à ſeculo eſt. Ideò propter juramentum mendacii deſerta eſt terra, & deſolati ſunt omnes habitantes in ea: propterea conſumentur habitatores terræ, & relinquentur quaſi pauci homines. Luxerunt omnes qui bibebant vinum, quia attritæ ſunt vites: ingemuerunt omnes qui lætabantur corde. Ceſſavit gaudium tympanorum, prohibitus eſt tumultus fortium; ceſſavit gaudium citharæ. Cum inſtrumentis muſicis non bibent vinum: amara eſt ſicera bibentibus eam. Attrita eſt civitas eorum, deſerta eſt: clauſæ ſunt omnes domus nullo introeunte. Clamant ſuper vino in viis; conſummata eſt omnis lætitia; tranſlatum eſt gaudium terræ. Relicta eſt in urbe ſolitudo, & tumultus in diſſipatione portarum. Quia ſic relinquentur ſoli juſti in medio terræ, & in medio regnorum, ſicut quæ remanent poſt excuſſionem olivarum, & ſicut racemi poſt vindemiam. Hi levabunt vocem ſuam, & laudabunt *verbum* Domini: exultabunt ſicut exultaverunt ſuper magnalia quæ facta ſunt eis in mari. Ideò cum venerit lumen juſtis, glorificabunt coram Dño: in inſulis maris, confitebuntur & benedicent nomini Domini Dei Iſrael. De domo ſanctuarii, unde futurum eſt ut egrediatur gaudium omnibus habitatoribus terræ, laudes audivimus juſtorum. Dixit Propheta, Secretum, præmium juſtorum monſtratum eſt mihi: ſecretum, vindicta impiorum revelata eſt mihi. Væ eis qui vim inferunt, quia vim patientur; & direptoribus, quia ecce diripientur. Formido, & fovea, & rete ſuper te habitator terræ. Et erit qui fugerit à facie formidinis, cadet in foveam: & qui aſcenderit de medio foveæ, comprehendetur in rete; quia magnalia in cœlo facta ſunt, & commota ſunt fundamenta terræ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܕ *

* ܗܐ ܡܪܝܐ ܡܚܪܒ ܠܐܪܥܐ ܘܡܣܚܦ ܠܗ̇. ܘܡܥܩܪ ܦܪܨܘܦܗ̇
ܘܡܒܕܪ ܠܥܡܘܪ̈ܝܗ̇. * ܘܢܗܘܐ ܥܡܐ ܐܝܟ ܟܗܢܐ. ܘܥܒܕܐ ܐܝܟ ܡܪܗ. ܘܐܡܬܐ ܐܝܟ ܡܪܬܗ̇.
ܩܢܝܐ ܐܝܟ ܡܙܒܢܢܐ. ܘܡܘܙܦܐ ܐܝܟ ܡܬܘܙܦܢܐ. ܘܡܪܐ ܚܘܒܐ ܐܝܟ ܗܘ ܕܚܝܒ ܠܗ. * ܡܚܪܒܘ 3
ܬܬܚܪܒ ܐܪܥܐ. ܘܡܒܙܙܘ ܬܬܒܙܙ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. * ܐܝܠܠܬ ܘܐܬܒܠܬ 4
ܐܪܥܐ. ܐܝܠܠܬ ܘܝܬܒܬ ܘܐܬܒܠܬ ܬܒܝܠ. ܐܝܠܠ ܪܘܡܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܪܥܐ ܐܫܬܘܝܬ 5
ܠܥܡܘܪ̈ܝܗ̇. ܡܛܠ ܕܥܒܪܘ ܢܡܘܣܐ ܘܚܠܦܘ ܦܘܩܕܢܐ. ܘܒܛܠܘ ܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ. * ܡܛܠ 6
ܗܢܐ ܬܬܐܒܠ ܐܪܥܐ. ܘܢܬܚܝܒܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗ̇. ܡܛܠܗܢܐ ܢܬܩܛܠܘܢ ܟܠܗܘܢ
ܥܡܘܪ̈ܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܫܬܚܪܘܢ ܐܢܫܐ ܩܠܝܠܐ. * ܢܬܐܒܠ ܚܡܪܐ. ܘܢܐܒܠ ܓܦܬܐ.
ܘܢܬܬܢܚܘܢ ܟܠܗܘܢ ܚܕ̈ܝ ܠܒܐ. * ܒܛܠܬ ܚܕܘܬܐ ܕܦܠܓܐ. ܘܫܬܩ ܩܠܐ ܕܪܘܙܐ. ܒܛܠܬ ܚܕܘܬܐ 7 8
ܘܟܢܪܐ. * ܒܙܡܪܐ ܠܐ ܢܫܬܘܢ ܚܡܪܐ. ܢܡܪ ܫܟܪܐ ܠܫܬܘ̈ܝܗ. * ܐܬܚܪܒܬ ܩܪܝܬܐ ܘܐܬܚܕܝܬ 9
ܟܠ ܒܝܬ ܐܘܨܪܐ. * ܡܝܠܠܬܐ ܥܠ ܚܡܪܐ ܒܫܘܩܐ. ܒܛܠܬ ܟܠܗ̇ ܚܕܘܬܐ. ܘܥܒܪ ܪܘܙܗ̇ ܕܐܪܥܐ. 10 11
* ܘܐܫܬܚܪ ܒܡܕܝܢܬܐ ܚܪܒܐ. ܘܪܘܫܐ ܢܦܫܚ ܬܪ̈ܥܝܗ̇. * ܗܟܢܐ ܢܗܘܐ ܒܓܘ ܐܪܥܐ 12
ܒܝܢܝ ܥܡܡܐ. ܐܝܟ ܢܩܦܬܐ ܕܙܝܬܐ. ܘܐܝܟ ܥܘܠܠܬܐ ܡܐ ܕܫܠܡ ܩܛܦܐ. * ܗܢܘܢ 13
ܢܪܝܡܘܢ ܩܠܗܘܢ. ܘܢܫܒܚܘܢ ܒܪܒܘܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܨܘܚܘܢ ܡܢ ܝܡܐ. * ܡܛܠܗܢܐ 14
ܒܬܫܒܘܚܬܐ ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ. ܘܒܓܙܪ̈ܬܐ ܕܝܡܐ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. 15
* ܡܢ ܫܘܠܡܗ̇ ܕܐܪܥܐ ܙܡܝܪ̈ܬܐ ܫܡܥܢ. ܚܝܠܗ ܕܙܕܝܩܐ ܕܐܡܪ. ܐܪܙܝ ܠܝ. ܐܪܙܝ ܠܝ. ܘܝ ܠܝ. ܥܘܠܐ 16
ܥܘܠܘ. ܘܢܟܠܐ ܢܟܠܘ. * ܕܚܠܬܐ ܘܦܚܬܐ ܘܦܚܐ ܥܠܝܟ ܥܡܘܪܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܡܢ 17 18
ܕܥܪܩ ܡܢ ܩܠܐ ܕܕܚܠܬܐ ܢܦܠ ܒܦܚܬܐ. ܘܡܢ ܕܢܣܩ ܡܢ ܓܘ ܦܚܬܐ ܢܬܐܚܕ
ܒܦܚܐ. ܡܛܠ ܕܟܘ̈ܘܬܐ ܡܢ ܡܪܘܡܐ ܐܬܦܬܚܘ. ܘܙܥܘ ܫܬܐܣ̈ܝܗ ܕܐܪܥܐ.

CAP. XXIV.

Ecce Dominus vaſtaturus eſt terram & diſcerpturus 1
eam, deſtructurus ſuperficiem ejus,
& incolas ejus diſperſurus. Eritq; populꝰ par 2
ſacerdoti, & ſervus par dño ſuo, & ancilla
par dñæ ſuæ, poſſeſſor par vendenti, mutuò accipiens
par mutuò danti, par creditori is qui
debitor ejus eſt. Planè vaſtabitur terra, & 3
planè diripietur; quia Dñs pronuntiavit hanc
ſententiā. Ejulabit et in luctu verſabitur terra, 4
ejulabit, ſedebit, et lugebit orbis, ejulabit celſitudo
terræ, Et terra ſimilis fiet habitatoribus 5
ſuis. Quia tranſgreſſi ſunt legem, immutaverunt
mandatum, & violaverunt pactum ſempiternum;
Propterea in luctu verſabitur terra, 6
& condemnabuntur omnes habitatores
ejus: propterea interficientur omnes habitatores
terræ, & reliqui fient mortales perpauci.
Verſabitur in luctu frumentum, ejulabunt vites, 7
gement omnes læti animo. Ceſſabunt gaudium, 8
& tympana, ſilebit vox exultationis,
ceſſabunt gaudium & citharæ. Cum cantico 9
non bibent vinū, amareſcet ſicera bibentibus
eam. Prædâ exhaurietur civitas & claudentur 10
omnia cellaria. Querela erit ſuper vino 11
in plateis, ceſſabit omne gaudiū, et deſinet exultatio
terræ. Remanebit in civitate vaſtitas, 12
& afflictio diſcindet portas ejus. Sic continget 13
in medio terræ inter gentes, perinde ac *in*
excuſſione oleæ, & racematione cùm abſoluta
fuerit vindemia. Hi vocē ſuam efferent, & 14
laudabunt majeſtatē Dñi, & hinnient è mari.
Idcircò laude celebrate Dñm, & in inſulis 15
maris nomen Dñi Dei Iſraelis. Ab extremitatibus 16
terræ cantica audivimus, fortitudinem
juſti dicentis, Secretū meum eſt, meum
eſt ſecretum. Hei mihi; ſceleſti deliquerunt,
perfidi perfidiā cōmiſerunt. Pavor, & fovea, 17
& laqueus imminent tibi O habitator terræ:
Et quicunque fugerit à voce pavoris, incidet 18
in foveam; & quicunque emerſerit è fovea,
laqueo capietur: nam cataractæ ex alto aperientur,
& concutientur fundamenta terræ.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الرابع والعشرون *

* ها الرب يفسد المسكونة كلها ويخربها * ويكشف وجهها * ويبدد السكان فيها * ويكون 1 2
الشعب مثل الكاهن * والعبد مثل السيد * والعبدة مثل السيدة * ويكون المشتري مثل
البايع * والمقرض مثل المقترض * والغريم كالذي له عليه الدين * الارض تفسد فسادا 3
الارض تنهب انتهابا لان فم الرب تكلم بهذا * حزنت مرتفعوا الارض والارض اثمت لاجل 4
سكانها * من اجل انهم تعدوا ناموس الرب * وبدلوا الاوامر العهد الابدي * من اجل هذا 5 6
اللعنة تاكل الارض لان سكانها اخطاوا لاجل هذا السكان في الارض يصيرون فقراء * ويبقى
اناس قليلون * يحزن الخمر * تحزن الكرمة * تنهد جميع فرحي النفس * انكف فرح 7 8
الطبول * انكف تعاظم وغنى المنافقين * انكف صوت العيدان * حزنوا ولم يشربوا خمرا 9
صار المسكر مرا للشاربين * خربت كل مدينة * يغلق البيت لئلا يدخلوا * ولولوا من 10 11
اجل الخمر بكل موضع * انكف كل سرور الارض * وبقيت البلاد خرابا والبيوت المتروكة 12
يهلكون * كل هذا تكون في الارض في وسط الامم * وعلى نحو ما يقتطع واحد زيتونه 13
هكذا يقتطعونهم * واذا فرغ القطاف * هم بصوت يصرخون * والذين يتركون على الارض 14
يفرحون معا بمجد الرب * يضطرب ماء البحر * لاجل هذا مجد الرب يكون في جزاير البحر 15
اسم الرب يكون ممجدا * ايها الرب اله اسرائيل من اجنحة الارض سمعنا ايات * الرجا 16
بحسن العبادة * ويقولون الويل للعصاة الذين يعصون الناموس * خوف وحفر وشرك عليكم 17
ايها السكان في الارض * ويكون الهارب يسقط تحت الخوف في الحفر * والخارج من الحفر 18
يهلك من الفخ * لان كوا انفتحت من السماء * ويتزلزل اساسات الارض *

CAP. XXIV.

*Ecce Dominus conſumpturus eſt orbem 1
univerſum, deſtructurus eum, &
detecturus faciem ejus, & habitantes in
eo diſperſurus. Eritque populus ſicut 2
ſacerdos, & ſervus ſicut dominus, &
ancilla ſicut domina, eritque emptor ſicut
venditor, mutuò dans ſicut mutuò accipiens,
& creditor ſicut is qui debito
eſt illi obſtrictus. Terra penitùs conſumenda 3
eſt, terra penitùs eſt diripienda;
quoniam os Domini hæc effatum
eſt. Contriſtati ſunt ſublimiores terræ, 4
& terra deliquit propter habitatores
ſuos. Quia prætergreſſi ſunt legem 5
Domini, & immutaverunt præcepta,
nempe fœdus ſempiternum; Iccirco 6
maledictio devorabit terram. Quoniam
habitatores ejus peccaverunt, iccirco
habitantes in terra pauperes evadent,
& remanebunt homines perpauci. Mœrebit 7
vinum, mœrebit vinea, ſuſpirabunt
omnes hilares animo. Ceſſabit 8
gaudium tympanorum, ceſſabit faſtus
& opulentia impiorum, ceſſabit ſonitus
citharæ. Contriſtabuntur, nec bibent 9
vinum, & potus inebrians amarus fiet
bibentibus. Deſtruentur omnes urbes, 10
claudetur domus ne ingrediantur. Ululabunt 11
ubique propter vini penuriam,
ceſſabit omne terræ gaudium. Regio 12
manebit deſolata, & domus derelictæ
peribunt. Hæc omnia erunt in terra in 13
medio populorum: & quemadmodum
amputat aliquis oleam, ſic amputabunt
eos. Cùm autem abſoluta fuerit vindemia.
Iſti clamorem edent; & qui 14
reliqui manſerint ſuper terram, ſimul
gaudebunt in gloria Domini: agitabitur
aqua maris, Iccirco erit gloria 15
Domini in inſulis maris, nomen Domini
erit glorioſum. O Domine Deus Iſraelis, 16
ab oris terræ audivimus portenta;
ſpes decet ſanæ pietatis virum: &
dicent, Væ rebellibus qui rebellant contra
legem. Formido, & fovea, & laqueus 17
ſuper vos O habitantes in terra:
Fietque ut fugiens, cadat formidine 18
perpulſus in foveam; & emergens è fovea,
laqueo pereat: quoniam feneſtræ
de cœlo aperientur, & commovebuntur
fundamenta terræ;*

ישעיה: כה

, terra se dissipavit dissipando , terra se confregit Confringendo
19 רעה התרעעה הארץ פור התפוררה ארץ
, ebrius sicut terra *se movebit Movendo* .terra *se excussit* *nutando*
20 מוט התמוטטה ארץ: נוע תנוע ארץ כשכור
, ejus *prævaricatio* eam super erit gravis & : tugurium sicut *vacillabit* &
והתנודדה כמלונה וכבד עליה פשעה
, illa die in erit Et .*surgere* adjiciet non & , corruet &
21 ונפלה ולא־תוסיף קום: והיה ביום ההוא
super & , excelso in excelsi exercitum super DOMINUS visitabit
יפקד יהוה על־צבא המרום במרום ועל־
vincti collectione colligentur Et .*humo super humi* reges
22 מלכי האדמה על־האדמה: ואספו אספה אסיר
dierum multitudine à & : clausura in claudentur & , *lacum* in
על־בור וסגרו על־מסגר ומרב ימים
quia : sol afficietur pudore & , luna erubescet Et .visitabuntur
23 יפקדו: וחפרה הלבנה ובושה החמה כי־
, Jerusalaim in & , Sijon monte in exercituum DOMINUS regnavit
מלך יהוה צבאות בהר ציון ובירושלם
.gloria suis senibus coram &
ונגד זקניו כבוד:

CAP. XXV. כה

tuo nomini confitebor , te exaltabo , tu meus Deus DOMINE
1 יהוה אלהי אתה ארוממך אודה שמך
.*firmitas veritas* , longe à consilia : *mirabile* fecisti quoniam
כי עשית פלא עצות מרחק אמונה אמן:
: ruinam in munitam urbem , tumulum in *civitate de* posuisti Quia
2 כי שמת מעיר לגל קריה בצורה למפלה
.reædificabitur non *seculum* in , *civitate à* alienorum palatium
ארמון זרים מעיר לעולם לא יבנה:
formidabilium gentium civitas : fortis populus te glorificabunt Ideò
3 על־כן יכבדוך עם־עז קרית גוים עריצים
egeno fortitudo , *tenui* fortitudo fuisti Quia .te timebunt
4 ייראוך: כי־היית מעוז לדל מעוז לאביון
spiritus nam : æstu ab umbraculum , *inundatione ab protectio : ei angustia* in
בצר־לו מחסה מזרם צל מחרב כי רוח
sonitum , *siccitate* in æstus Sicut .*parietis inundatio* sicut , *formidabilium*
5 עריצים כזרם קיר: כחרב בציון שאון
formidabilium propago , nubis umbra in æstus : humiliabis alienorum
זרים תכניע חרב בצל עב זמיר עריצים
populis omnibus exercituum DOMINUS faciet Et .humiliabitur
6 יענה: ועשה יהוה צבאות לכל־העמים
pinguium , *fecium* convivium , pinguium convivium , hoc monte in
בהר הזה משתה שמנים משתה שמרים שמנים
facies hoc monte in *sorbebit* Et .*colatarum fecium* , medullatorum
7 ממחים שמרים מזקקים: ובלע בהר הזה פני־
obiectum velamen & , populos omnes super operti operimenti
הלוט הלוט על־כל־העמים והמסכה הנסוכה
delebit & , sempiternum in mortem *Absorbuit* .gentes omnes super
8 על־כל־הגוים: בלע המות לנצח ומחה
: *faciebus omnibus desuper* lachrymam *DOMINUS* dominus
אדני יהוה דמעה מעל כל־פנים
quia , terra universa *desuper* auferet sui populi opprobrium &
וחרפת עמו יסיר מעל כל־הארץ כי
noster Deus Ecce , illa die in dicet Et .est locutus DOMINUS
9 יהוה דבר: ואמר ביום ההוא הנה אלהינו
expectavimus DOMINUS Iste .nos servabit & , eum expectavimus : iste
זה קוינו לו ויושיענו זה יהוה קוינו
.ejus salute in lætabimur & , exultabimus , eum
לו נגילה ונשמחה בישועתו:

Versio VULG. LAT.

19 Confractione confringetur terra, contritione conteretur terra, commotione commovebi-
20 tur terra, Agitatione agitabitur terra sicut ebrius, & auferetur quasi tabernaculum unius noctis: & gravabit eam iniquitas sua, & corruet, & non
21 adjiciet ut resurgat. Et erit: In die illa visitabit Dominus super militiam cœli in excelso; & super reges terræ, qui
22 sunt super terram. Et congregabuntur in congregatione unius fascis in lacum, et claudentur ibi in carcere: & post mul-
23 tos dies visitabuntur. Et erubescet luna, & confundetur Sol, cùm regnaverit Dominus exercituum in monte Sion, et in Jerusalem, & in conspectu senum suorum fuerit glorificatus.

CAP. XXV.

1 Domine, Deus meus es tu, exaltabo te, & confitebor nomini tuo: quoniam fecisti mirabilia, cogitationes antiquas
2 fideles. Amen. Quia posuisti civitatem in tumulum, urbem fortem in ruinam, domum alienorum: ut non sit civitas, & in sempiternum non ædifice-
3 tur. Super hoc laudabit te populus fortis, civitas gentium
4 robustarum timebit te. Quia factus es fortitudo pauperi, fortitudo egeno in tribulatione sua: spes à turbine, umbraculum ab æstu: spiritus enim robustorũ quasi turbo impellens
5 parietem. Sicut æstus in siti, tumultum alienorum humiliabis: & quasi calore sub nube torrente, propaginem fortium
6 marcescere facies. Et faciet Dominus exercituum omnibus populis in monte hoc convivium pinguium, convivium vindemiæ, pinguium medullatorum, vindemiæ defæcatæ.
7 Et præcipitabit in monte isto faciem vinculi colligati super omnes populos, & telam quam orditus est super omnes natio-
8 nes. Præcipitabit mortem in sempiternum: & auferet Dominus Deus lachrymam ab omni facie, & opprobrium populi sui auferet de universa terra: quia Dominus locutus
9 est. Et dicet in die illa; Ecce Deus noster iste, expectavimus eum, & salvabit nos: iste Dominus, sustinuimus eum, exultabimus, & lætabimur in salutari ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

19 Ταραχῇ ταραχθήσεται ἡ γῆ, ϗ ἀπορίᾳ
20 ἀπορηθήσεται ἡ γῆ. Ἔκλινεν (μ) ὡς ὁ μεθύων ϗ κραιπαλῶν, ϗ σεισθήσεται ὡς ὀπωροφυλάκιον ἡ γῆ· κατίσχυσε γὰρ ἐπ᾽ αὐτῆς ἡ ἀνομία, ϗ πεσεῖται, ϗ οὐ μὴ δύνηται
21 ἀναστῆναι. Καὶ ἐπάξει ὁ θεὸς ἐπὶ τὸν κόσμον τοῦ οὐρανοῦ τὴν χεῖρα, ϗ ἐπὶ τοὺς βασι-
22 λεῖς τῆς γῆς. Καὶ συνάξουσι (ν) συναγωγὴν αὐτῆς εἰς δεσμωτήριον, ϗ ἀποκλείσουσιν εἰς ὀχύρωμα· διὰ πολλῶν γενεῶν ἐπισκοπὴ
23 ἔσται αὐτῶν. Καὶ τακήσεται ἡ πλίνθος, ϗ πεσεῖται τὸ τεῖχος· ὅτι βασιλεύσει κύριος (ξ) ἐν Σιὼν, ϗ ἐξ Ἱερουσαλὴμ, ϗ ἐνώπιον τῶν πρεσβυτέρων δοξασθήσεται.

Turbatione turbabitur terra, & egestate egebit terra. (k) Declinavit, sicut ebrius, & p
læ. Et concutietur, quasi po
rum custodia, terra: invaluit
super eam iniquitas: & cadet,
non poterit resurgere. Et induc
Dominus super ornatum cæli
num, & super reges terræ. Et con-
gregabunt congregationem e
carcerem, & claudent in mu
onem: per multas generatione
sitatio erit eorum. Et liquefi
ter, & cadet (l) murus. Qu
niam regnabit (m) Dominus
on, & de Hierusalem: & in
spectu seniorum glorificabitur.

MS.A. (μ) ϗ σεισθήσεται ὡς ὀπωροφυλάκιον ἡ γῆ, ὡς ὁ μεθύων ϗ κρεπαλῶν, ϗ πεσεῖται ϗ οὐ μὴ δύνηται ἀναστῆναι. κατίσχυσεν γὰρ ἐπ᾽ αὐ ἡ ἀνομία. Καὶ ἐπάξει ὁ θεὸς (ν) ϗ ἀποκλείσουσιν εἰς ὀχύρωμα εἰς δεσμωτήριον· διὰ πολλῶν (ξ) ἐν Σιὼν, ϗ ἐν Ἱερουσαλὴμ,

ΚΕΦ. κε΄.

1 †(α) Κύριε ὁ θεὸς δοξάσω σε, †ὑμνήσω τὸ ὄνομά σου, ὅτι ἐποίησας θαυμαστὰ πράγματα, †βουλὴν ἀρχαίαν ἀληθινήν. (α) γένοι-
2 το. †Ὅτι ἔθηκας πόλεις εἰς χῶμα, †πόλεις ὀχυρὰς (β) τοῦ μὴ πεσεῖν αὐτῶν τὰ θεμέλια, †τῶν ἀσεβῶν πόλις εἰς τὸν αἰῶνα οὐ μὴ οἰ-
3 κοδομηθῇ. †Διὰ τοῦτο εὐλογήσει σε ὁ λαὸς ὁ πτωχὸς, †ϗ πόλεις ἀνθρώπων ἀδικουμέ-
4 νων εὐλογήσουσί σε. †Ἐγένου γὰρ πάσῃ πόλει ταπεινῇ βοηθὸς, †ϗ τοῖς ἀθυμήσασι δι᾽ ἔνδειαν σκέπη, †ἀπὸ ἀνθρώπων πονηρῶν ῥύσῃ αὐτούς· †σκέπη διψώντων, ϗ πνεῦμα
5 ἀνθρώπων ἀδικουμένων (γ). †Ὡς ἄνθρωποι ὀλιγόψυχοι διψῶντες ἐν Σιὼν, †ἀπὸ ἀνθρώπων ἀσεβῶν, οἷς ἡμᾶς παρέδω-
6 κας. †Καὶ ποιήσει κύριος σαβαὼθ πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν· †ἐπὶ τὸ ὄρος τοῦτο πίονται
7 εὐφροσύνην, πίονται οἶνον. †Χρίσονται μύρον ἐν τῷ ὄρει τούτῳ· †παράδος ταῦτα πάντα τοῖς ἔθνεσιν· †ἡ γὰρ βουλὴ αὕτη ἐπὶ
8 πάντα τὰ ἔθνη. †Κατέπιεν ὁ θάνατος ἰσχύσας, †ϗ πάλιν ἀφεῖλε (δ) κύριος ὁ θεὸς πᾶν δάκρυον ἀπὸ παντὸς προσώπου· †τὸ ὄνειδος τοῦ λαοῦ ἀφεῖλεν ἀπὸ πάσης τῆς
9 γῆς, †τὸ γὰρ στόμα κυρίου ἐλάλησε. †Καὶ ἐροῦσι (ε) τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, †Ἰδοὺ ὁ θεὸς ἡμῶν ἐφ᾽ ᾧ ἠλπίζομεν, (ζ) ϗ σώσει ἡμᾶς. οὗτος κύριος, ὑπεμείναμεν αὐτῷ, †ϗ ἠγαλλιώμεθα ϗ εὐφρανθησόμεθα ἐπὶ τῇ σωτηρίᾳ ἡμῶν.

CAP. XXV.

Domine Deus, glorifica
laudabo nomen tuum, quo
fecisti admirabiles res, con
antiquum verum. Fiat. Quia po
suisti civitates in tumulum,
tates munitas, (a) ut non ca
fundamenta earum: impiorum
civitas in æternum non ædifica
tur. Propterea benedicet te po
lus pauper: & civitates hom
injuriam sustinentium (c) ben
cent tibi. Fuisti enim omni
tati humili auxiliator, & tri
propter inopiam protectio: ab
minibus pessimis liberabis eos:
braculum sitientium, &
hominum iniquitatem
um, Quasi homines pusilla
sitientes in Sion ab homin
piis, quibus nos (d) tradid
faciet Dominus Sabaoth
gentibus: super montem
bibent lætitiam, bibent vi
gentur unguento in monte
Trade hæc omnia genti
lium enim hoc super omn
Devorabit mors prævalens
rursum abstulit Dominus
mnem lachrymam ab o
opprobrium populi abstulit
terra. Os enim Domini
est. Et dicent die illâ, Ecce
noster, in quo sperabamus, &
vabit nos. Iste Dominus
nuimus eum: & exulta
& lætati sumus in

MS.A. (α) ᾨΔΗ΄. Κύριε ὁ θεός μου (α) γένοιτο κύριε. (β) τοῦ μὴ εὐλογήσουσίν σε. Ὡς (δ) ὁ θεὸς (ε) ἐν τῇ ἡμέρᾳ (ζ) ϗ ἠγ εὐφράνθημεν ἐπὶ τῇ σωτηρίᾳ ἡμῶν. Ὅτι ἀνάπαυσιν δώσει

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 מזע תזוע ארעא מנד תנוד ארעא פרוק תתפרק ארעא: אשתדאה תשתדי ארעא
20 כרויא ותהי אולא ואתיא כערזלא ויתקפון עלה חובהא ותפול ולא תוסיף למקם:
21 ויהי בעדנא ההיא יסער יי על חילותא תוקפא דיתבין בתוקפא ועל מלכי בני אנשא
22 דדירין על ארעא: ויכנשונון מכנש לבית אסירי ויעגנונון לבית ענקה ומסגי יומין
23 יעול דכרניהון: ויבהתון דפלחין לסיהרא ויתכנעין דסגדין לשמשא ארי תתגלי
גבורתא דיי צבאות בטורא דציון ובירושלם וקדם סבי עמיה ביקר:

כה

1 יי אלהי את ארוממנך אודי שמך ארי עבדתא פרישן מלכין דאמרתא לאיתאה
2 מלקדמין בכן איתיתא וקימתא: ארי שויתא קרוי פצחין לגלין כרך תקיף לדמחמרא
3 בית דחלת עממיא בקרתא ירושלם לעלם לא יתבני: על כן יקרון קדמך עם תקיף
4 קרית עממין חסינין ידחלון מן קדמך: ארי הויתא תקוף למסכן סעיד לחשיך בעדן
עקא כמא דמטמרן מן קדם זרמית כטלל משרב כן מלי רשיעיא לצדיקיא כזרמית
5 דשקפא בכותל: כשרב בארעא צחיא אתרגושת תקיפין תמאיך כטלל כיף מקר
6 בארעא משלהיא כן ניח רוחא לצדיקיא כד ימאכון רשיעיא: ויעביד יי צבאות לכל
עממיא בטורא הדין שרו וזמנא מדמן דהיא דיקר ותהי להון לקלן מחן חילא מחן דלא
7 ישתיזבון מנהון מחן דיסופון בהון: ויסתלעמון בטורא הדין אפי רבא דרב על כל
8 עממיא ואפי מלכא דשליט על כל מלכותא: יתנשון מותא לעלמין וימחי יי אלהים
דמעתא מעל כל אפיא וחסודי עמיה יעדי מעל כל ארעא ארי במימרא דיי גזיר כן:
9 ויימר בעדנא ההיא הא אלהנא דין די סברנא ליה ויפרקננא הדין יי דהוינא מסברין
למימריה נבוע ונחדי בפורקניה:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Commotione commovebitur terra, agitatione agitabitur terra;
one dissolvetur terra. Suffossione suffodietur terra sicut ebrius, &
stabilis quasi lectulus unius noctis: & roborabuntur in ea peccata
cadet, & non adjiciet ut resurgat. Et erit in tempore illo; visita
super *exercitus* fortitudinis *sedentes* in fortitudine: & super reges
hominum qui morantur in terra. Et congregabuntur congregatione
mum vinctorum, & detinebuntur in domo carceris, & post mu
veniet memoria eorum. Et confundentur qui colunt Lunam, &
qui adorant Solem; quia revelabitur potentia Dñi exercituum in
Sion, & in Hierusalem, & coram senibus populi sui in gloria.

CAP. XXV.

Domine Deus meus es tu, exaltabo te, confitebor nomini
fecisti mirabilia: consilia quæ dixisti ab antiquo ut adduceres,
duxisti, & confirmâsti Quia posuisti urbes munitas in acervos,
fortem in ruinam, domum deorum populorum in civitate Hi
in sempiternum non ædificabitur. Propterea glorificabunt
populus fortis, civitas populorum robustorum timebunt te. Qu
fortitudo pauperi, auxilium inopi in tempore tribulationis: sic
guntur à facie turbinis, *ut* umbraculo ab æstu, sic sunt verba
justis, quasi turbo impellens parietem. Sicut æstus in terra siti
multum robustorum humiliabis: quasi umbra petræ *refrigerii* in
da, sic erit requies spatiosa justis, quando humiliabuntur impii
Dñs exercituum omnibus populis in monte isto prandium & con
& putabunt quòd sit in gloriam, & erit eis in ignominiam, &
gas *fortes, plagas* ex quibus non liberabuntur, & in quibus
Et præcipitabuntur in monte isto facies principis qui est super
pulos, & facies regis qui dominatur super omnia regna. Ob
dent mortem in æternum: & delebit Dñs Deus lachrymam ab om
& opprobrium populi sui auferet ab universa terra, quia in verbo
decretum est ita. Et dicent in tempore illo, Ecce Deus noster,
sperabamus, & salvabit nos: iste est Dñs in cujus verbo sperabamus, exultabimus & lætabimur in

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܙܘܥܐ ܬܙܘܥ ܐܪܥܐ. ܘܡܬܬܙܝܥܐ ܬܬܙܝܥ ܐܪܥܐ. ܘܡܬܬܢܕܐ ܬܬܬܢܕ ܐܪܥܐ. * ܘܡܬܬܙܝܥܐ ܬܬܙܝܥ ܐܪܥܐ 20
ܐܝܟ ܪܘܝܐ. ܘܬܫܢܐ ܐܝܟ ܡܛܠܬܐ. ܘܬܝܩܪ ܥܠܝܗ ܥܘܠܗ. ܘܬܦܠ. ܘܠܐ ܬܘܣܦ ܠܡܩܡ. * ܘܢܗܘܐ 21
ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܣܥܘܪ ܡܪܝܐ ܥܠ ܚܝܠܐ ܕܪܘܡܐ ܒܪܘܡܐ. ܘܥܠ ܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ ܒܐܪܥܐ.
* ܘܢܬܟܢܫܘܢ ܟܢܘܫܬܐ ܥܠ ܐܣܝܪܐ ܒܓܘܒܐ. ܘܢܬܚܒܫܘܢ ܥܠ ܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. ܘܡܢ ܣܓܝܐܐ ܝܘܡܬܐ 22
ܢܬܦܩܕܘܢ. * ܘܬܒܗܬ ܣܗܪܐ ܘܬܚܦܪ ܫܡܫܐ. ܡܛܠ ܕܐܡܠܟ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܛܘܪܐ 23
ܕܨܗܝܘܢ. ܘܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܩܕܡ ܩܕܝܫܘܗܝ ܢܫܬܒܚ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܗ *

* ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܐܢܬ. ܐܪܝܡܟ ܘܐܘܕܐ ܠܫܡܟ. ܕܥܒܕܬ ܬܕܡܘܪܬܐ. ܘܬܪܥܝܬܐ ܫܪܝܪܬܐ ܘܡܗܝܡܢܬܐ. 1
ܡܢ ܩܕܝܡ. ܐܡܝܢ. * ܡܛܠ ܕܥܒܕܬ ܩܘܪܝܐ ܠܓܠܠܐ. ܘܩܘܪܝܐ ܥܫܝܢܬܐ ܠܡܦܘܠܬܐ. 2
ܠܗܝܟܠܐ ܕܢܘܟܪܝܐ ܠܥܠܡ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܠܡܬܒܢܝܘ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܫܒܚܘܢܟ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. 3
ܘܩܘܪܝܐ ܕܥܡܡܐ ܥܫܝܢܐ ܢܕܚܠܘܢ ܡܢܟ. * ܡܛܠ ܕܗܘܝܬ ܡܥܕܪܢܐ ܠܡܣܟܢܐ. 4
ܘܡܣܥܕܢܐ ܠܒܨܝܪܐ ܒܐܘܠܨܢܗ. ܘܡܓܢܢܐ ܡܢ ܡܛܪܐ. ܘܛܠܠܐ ܡܢ ܚܘܡܐ. * ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ 5
ܕܥܫܝܢܐ ܐܝܟ ܡܛܪܐ ܕܠܩܘܒܠ ܫܘܪܐ. ܘܐܝܟ ܛܠܠܐ ܒܚܘܡܐ. ܪܘܪܒܘܬܐ ܕܢܘܟܪܝܐ ܬܬܡܟܟ. ܘܡܛܠ
ܒܛܠܠܐ ܕܥܢܢܐ. ܫܘܒܚܐ ܕܥܫܝܢܐ ܢܬܡܟܟ. * ܘܢܥܒܕ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܟܠܗܘܢ 6
ܥܡܡܐ ܒܛܘܪܐ ܗܢܐ. ܡܫܬܘܬܐ ܕܡܫܚܐ. ܡܫܬܘܬܐ ܢܛܝܪܬܐ. ܘܕܡܫܚܐ ܕܡܚܝܢܐ ܕܫܡܝܐ
ܘܥܫܝܢܐ. * ܘܢܒܠܥ ܒܛܘܪܐ ܗܢܐ. ܐܦ ܫܠܝܛܐ ܕܫܠܝܛ ܗܘܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. 7
ܘܕܒܚܬܐ ܕܐܬܕܒܚܬ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. * ܘܢܒܠܥ ܡܘܬܐ ܠܙܟܘܬܐ ܠܥܠܡ. 8
ܘܢܥܒܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܡܥܬܐ ܡܢ ܟܠ ܐܦܝܢ. ܘܚܣܕܐ ܕܥܡܗ ܢܥܒܪ ܡܢ ܟܠܗ
ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ. * ܘܬܐܡܪ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܗܢܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܕܣܟܝܢ ܠܗ. 9
ܢܦܪܩܢ. ܗܢܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܕܣܟܝܢ ܠܗ. ܢܪܘܙ ܘܢܚܕܐ ܒܦܘܪܩܢܗ.

* Horrendè contremiſcet terra, graviter agitabitur terra, atrociter nutabit terra, 19 Vacillans vacillabit terra ſicut ebrius, & evagabitur ſicut tugurium; ingraveſcet ſuper eam ſcelus ejus, & cadet, nec ampliùs reſurget. 20 Eodem illo die viſitabit Dñs exercitus excelſi in excelſo, & reges terræ in terra. 21 Et cogent concilium adverſùs vinctum in fovea, & cogitabunt de carceribus detento, & poſt multos dies ſalvabuntur. 22 Denique erubeſcet luna, & pudefiet ſol, eò quòd Dñs potentiſſim⁹ regnabit in monte Sion & in Jeruſalem, & coram Sanctis ſuis gloriabitur. 23

CAP. XXV.

Domine, Deus meus es, te exaltabo & confitebor nomini tuo, quòd rem admirandam & conſilium fidele jampridem feceris, Amen: 1 Quòd civitatem redegeris in acervũ, & civitatem munitam in ruinã: *quòd* phanũ exterorum perpetuũ ex *hac* civitate ſit ædificandũ. 2 Hac de cauſa te celebrabunt populi multi, & civitas populorum fortiũ te venerabuntur: 3 Quòd fueris protector pauperis, & adjutor inopis in tribulatione ſua, protectio ab imbre, & umbra ab æſtu. 4 Spiritus enim *hominis* arrogantis ſimilis eſt imbri contra parietem, & ſimilis umbræ in æſtu. Superbia exterorum humiliabitur, ut æſtus umbrâ nubium: propago arrogantium humiliabitur. 5 Et faciet Dñs potens inter omnes populos in monte iſto conviviũ pingue, conviviũ inquam reſervatũ & pingue Vivificatoris noſtri cœleſtis ac fortiſſimi. 6 Et abſorbebitur etiam in hoc monte princeps qui dominabitur in omnes gentes, & victima quæ immolata fuerit pro cunctis gentibus. 7 Et abſorbebitur mors cum victoria in ſempiternũ: amovebit quoque Dñs Deus fortis lachrymã ab omnib’ faciebus, & opprobrium populi ſui amovebit ab univerſa terra: nam Dñs locutus eſt. 8 Et dices eo die, Hic eſt Domin⁹ Deus noſter quem expectabamus, liberabit nos: hic eſt Dominus Deus noſter quem expectabamus, exultabimus & lætabimur de ſalute ejus. 9

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

19 * تضطرب الارض اضطرابا · وتحير الارض حيث مالت الارض * فتتزلزل مثل مظل الفاكهة ·
20 مثل السكران الثمل · وتسقط ولا تستطيع ان تقوم · لان الاثم قوي عليها * ويكون في ذلك
21 اليوم يجلب الله على زينة السماء اليد · وعلى ملوك الارض * فيجمعون ويحبسون في حصن
22 وفي سجن من اجيال كثير · ويكون تعهدهم · ويذوب اللبن · ويسقط السور * يفتضح القمر ·
23 ويخزي الشمس · لان الرب يملك في صهيون وفي ايروسليم · ويمجد امام المشايخ ·

* Agitatione agitabitur terra, ſtupore obſtupeſcet terra, nutabit terra, 19 Et agitabitur ut ſpecula cuſtodum fructuum, ut ebrius temulentus, cadetque, nec valebit reſurgere, eò quòd iniquitas prævaluerit ei. 20 Et erit illâ die ut manum adhibente Deo contra cœli ornatum & contra reges terræ, 21 Colligantur & concludantur in arce & in carcere, poſt æva multa viſitentur, liqueſcant lateres, & corruant mœnia. 22 Erubeſcet luna, & pudebit ſolem, quia Dominus regnabit in Sion & in Jeruſalem, & glorificabitur coram ſenioribus. 23

* الفصل الخامس والعشرون *

· الاصحاح الثاني عشر ·

CAP. XXV.

Textus duodecimus.
Gratiarum actio Hezeciæ regis
ad Dominum pro victoria
quam adeptus eſt.

1 * شكر حزقيا الملك للرب على ما اوتي على الظفر · قال · ايها الرب الهي امجدك · اسبح اسمك ·
2 لانك صنعت امورا عجيبة · ليكن يا رب الراي الاول الصادق * لانك اعطيت مدنا للتراب ·
3 مدنا حصينة لتسقط اساساتها · مدن المنافقين لا تبنى الى الابد * لاجل هذا يباركك الشعب
4 المسكين · ومدن الناس المظلومين يباركونك * لانك صرت عونا لكل مدينة ذليلة · وستر
5 للكئيبين · لاجل القلة من الناس الاشرار تنجيهم يا ستر العطاش * ارواح البشر المظلومين
يباركونك · مثل اناس صغيري النفوس عطاش في صهيون · لانك تنجيهم من الناس المنافقين
6 الذين اسلمتنا اليهم · سموم في ستر سحابة يذل غصن الاقوياء * ويصنع رب الجيوش لكل
الامم على هذا الجبل شرابا دسما · شراب قطاف · يشربون سرورا يشربون خمرا · يدهنون دهنا طيبا
7 في هذا الجبل * ويدفعون في هذا الجبل دفعا · ويبتلع في هذا الجبل يعطي هذه كلها للامم
8 لان هذا الراي على كل الامم * قوي الموت وابتلع · وايضا نزع الله كل دمعة من كل وجه ·
9 ونزع عار شعبه من كل الارض · لان فم الرب تكلم * ويقولون في ذلك اليوم · ها الهنا الذي
توكلنا عليه · فنبتهج به ويخلصنا · هذا الرب رجوناه · نبتهج ونفرح بخلاصنا ·

Dixit; O Domine Deus meus, te glorifico; nomen tuum celebro, quòd res admirandas præſtiteris. Succedat O Domine conſilium illud priſtinum verum. 1 Tu enim urbes in pulverem adegiſti, ut urbes munitæ corruerent à fundamentis, urbes impiorum ne reædificarentur in æternum. 2 Propter hoc benedicet tibi populus tenuis, & urbes hominum oppreſſorum benedicent tibi: 3 Quia præſidio factus es omnibus urbibus abjectis, & protectioni afflictis, propter paucitatem ab hominibus flagitioſis liberabis eos O protectio ſitientium. 4 Spiritus hominum oppreſſorum benedicent tibi, utpote hominum puſillanimorum ſitientium in Sion; eò quòd liberes eos ab hominibus impiis quibus nos tradideras. Ventus calidus nube coopertus deprimet ramum potentum. 5 Facietque Dominus exercituum cunctis gentibus ſuper hunc montem, potum ſuavem, potum vindemiæ: hilarè bibent, vinum bibent: ungent ſe unguento ſuavi in hoc monte: 6 Dabunt etiam hoc in monte donum, & hoc in monte abſorbebitur. Hæc omnia gentibus abſcondet, quia tale conſilium eſt ſuper omnes gentes. 7 Invaluit mors, & abſorpta eſt: quin etiam amovit Deus omnem lachrymã ab omni vultu, amovitque opprobrium populi ſui à tota terra; quandoquidem os Domini locutum eſt. 8 Et dicent illâ die, Ecce Deus noſter cui confiſi ſumus, exultabimus in eo, & liberabit nos: hunc Dominum ſperavimus, exultabimus & lætabimur de ſalute noſtra. 9

ישעיה : כו

Moab conculcabitur & : iſto monte in Domini *manus* requieſcet Quia
10 כי־תנוח יד־יהוה בהר הזה ונדוש מואב
ſuas manus extendet Et *.fimo* in *paleam conculcari ut* , eo ſub
11 תחתיו כהדוש מתבן במי מדמנה: ופרש ידיו
humiliabit &:natandi ad natans *extenderet* quemadmodum,ejus medio in
בקרבו כאשר יפרש השחה לשחות והשפיל
ſublimitatis munitionem Et.ſuarum manuū *inſidiis* cum ejus altitudinem
12 גאותו עם ארבות ידיו: ומבצר משגב
terram in faciet *pertingere* , humiliabit , incurvabit tuorum murorum
חומתיך השח השפיל הגיע לארץ
.pulverem ad uſque

CAP. XXVI. כו עד־עפר:

Urbs : Jehudah terra in illud canticum cantabitur illa die In
1 ביום ההוא יושר השיר־הזה בארץ יהודה עיר
, portas Aperite.antemurale & muros ponet ſalutem,nobis fortitudinis
2 עז־לנו ישועה ישית חמות וחל: פתחו שערים
cuſtodies , *fulto Figmento* .veritates cuſtodiens juſta gens ingrediatur &
3 ויבא גוי־צדיק שמר אמנים: יצר סמוך תצר
:perpetuum in uſq; Domino in Fidite *.confiſum te in* quia *: pacem , pacem*
4 שלום שלום כי בך בטוח: בטחו ביהוה עדי־עד
;excelſi habitatores incurvabit Quia .ſeculorum *petra* Domino *Jah* in quia
5 כי ביה יהוה צור עולמים: כי השח ישבי מרום
,terram ad uſq; eam humiliabit : *eam* humiliabit ſublimem civitatem
קריה נשגבה ישפילנה ישפילה עד־ארץ
,*afflicti* pedes , pes eam Conculcabit pulverem ad uſq; eam faciet *pertingere*
6 יגיענה עד־עפר: תרמסנה רגל רגלי עני
juſti *orbitam* recte *: rectitudines* juſto Semita *.tenuium* greſſus
7 פעמי דלים: ארח לצדיק מישרים ישר מעגל צדיק
; *te expectavimus* Domine tuorum judiciorum via Etiam .librabis
8 תפלס: אף ארח משפטיך יהוה קוינוך
te deſideravi meo Animo.animæ deſideriū tui *memoriam* & ,tuum nomen *ad*
9 לשמך ולזכרך תאות־נפש: נפשי אויתך
quando nam : te *manè* quæram *mei interiori* in meo ſpiritu etiam ,nocte in
בלילה אף־רוחי בקרבי אשחרך כי כאשר
fiat Gratia .orbis habitatores didicerunt juſtitiam ,terra in tua judicia
10 משפטיך לארץ צדק למדו ישבי תבל: יחן
non & : aget iniquè *rectitudinum* terra in ,juſtitiam *didicit* non , impio
רשע בל־למד צדק בארץ נכחות יעול ובל־
ne , tua manus eſt excelſa Domine .Domini ſublimitatem videbit
11 יראה גאות יהוה: יהוה רמה ידך בל־
ignis etiam *: populi zelo* afficientur pudore & ,videbunt :videant
יחזיון יחזו ויבשו קנאת־עם אף־אש
quia : nobis pacem diſpones Domine *.eos comedet* tuos hoſtes
12 צריך תאכלם: יהוה תשפת שלום לנו כי
noſter Deus Domine .nobis es operatus noſtra opera omnia etiam
13 גם כל־מעשינו פעלת לנו: יהוה אלהינו
memorabimus , *te in* tantùm : te *præter* domini nobis ſunt dominati
בעלונו אדנים זולתך לבד־בך נזכיר
propterea: reſurgent non *manes* , vivent non Mortui .tuum nomen
14 שמך: מתים בל־יחיו רפאים בל־יקמו לכן
.eorum memoriam omnem perdidiſti & , eos *delevisti* & viſitâſti
פקדת ותשמידם ותאבד כל־זכר למו:
Elongâſti .te glorificâſti , genti addidiſti , Domine genti Addidiſti
15 יספת לגוי יהוה יספת לגוי נכבדת רחקת
effuderunt :te viſitaverūt anguſtia in Domine .terræ *fines* omnes
16 כל־קצוי־ארץ: יהוה בצר פקדוך צקון
.eis tua correctio , *muſſitationem*
לחש מוסרך למו:

Verſio VULG. LAT.

10 Quia requieſcet manus Domini in monte iſto : & triturabitur Moab ſub eo, ſicuti teruntur paleæ in plauſtro. 11 Et extendet manus ſuas ſub eo, ſicut extendit natans ad natandum : & humiliabit gloriam ejus cum alliſione manuum ejus. 12 Et munimenta ſublimium murorum tuorum concident,et humiliabuntur, & detrahentur in terram uſque ad pulverem.

CAP. XXVI.

1 IN die illa cantabitur Canticum iſtud in terra Juda : Urbs fortitudinis noſtræ Sion ſalvator, ponetur in ea murus & antemurale. 2 Aperite portas, & ingrediatur gens juſta, cuſtodiens veritatem. 3 Vetus error abiit:ſervabis pacem ; pacem, quia in te ſperavimus. 4 Sperâſtis in Domino in ſeculis æternis, in Domino Deo forti in 5 perpetuum. Quia incurvabit habitantes in excelſo , civitatem ſublimem humiliabit. Humiliabit eam uſque ad terram, detrahet eam uſque ad pulve6rem. Conculcabit eam pes,pedes pauperis, greſſus egeno7rum. Semita juſti recta eſt, rectus callis juſti ad ambulan8dum. Et in ſemita judiciorum tuorū,Domine,ſuſtinuimus te: nomen tuum,et memoriale tuū 9 in deſiderio animæ. Anima mea deſideravit te in nocte:ſed & ſpiritu meo in præcordiis meis de manè vigilabo ad te. Cùm feceris judicia tua in terra, juſtitiam diſcent habitato10res orbis. Miſereamur impio, & non diſcet juſtitiam : in terra Sanctorum iniqua geſſit, & non videbit gloriam Domini. 11 Domine, exaltetur manˢ tua,et non videant : videant, & confundantur zelantes populi : & 12 ignis hoſtes tuos devoret. Domine,dabis pacē nobis:omnia enim opera noſtra operatus es 13 nobis. Dñe Deus noſter, poſſederūt nos domini abſque te, tantùm in te recordemur no14minis tui. Morientes non vivant, gigantes non reſurgant : propterea viſitâſti & contriviſti eos,& perdidiſti omnē me15moriam eorū. Indulſiſti genti, Domine, indulſiſti genti:numquid glorificatus es? elongâſti 16 omnes terminos terræ. Domine,in anguſtia requiſierunt te, in tribulatione murmuris doctrina tua eis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 †Ἀνάπαυσιν δώσει ὁ Θεὸς ἐπὶ τὸ ὄρος τοῦτο, † καὶ καταπατηθήσεται ἡ Μωαβῖτις, ὃν τρόπον (η) πατοῦσιν ἅλωνα ἐν ἁμάξαις. 11 † Καὶ ἀνήσει τὰς χεῖρας αὐτοῦ, ὃν τρόπον καὶ αὐτὸς ἐταπείνωσε τοῦ ἀπολέσαι· † καὶ ταπεινώσει τὴν ὕβριν αὐτοῦ, ἐφ᾽ ἃ τὰς χεῖρας 12 ἐπέβαλε. †Καὶ τὸ ὕψος τῆς καταφυγῆς (θ) τοῦ τοίχου ταπεινώσει, καὶ καταβήσεται ἕως τοῦ ἐδάφους.

Requiem dabit Dominus in mon iſto : & conculcabitur (ε) Moabitis, quemadmodum calcant in plauſtris : Et remittet manus ſuas, quomodò & ipſe humiliavit ad perdendum : & humiliabit ſuperbiam ejus, ſuper quæ manus jecit. Et altitudinem muri humiliabit : et deſcendet ad pavimentum.

MS. A. (η) πατῶσιν (θ) τοῦ τοίχου σου

ΚΕΦ. κϛʹ.

1 (ʿ) Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ᾄσονται τὸ ᾆσμα τοῦτο ἐπὶ γῆς (α) τῆς Ἰουδαίας, † Ἰδοὺ πόλις ἰσχυρὰ, καὶ (β) σωτήριον † θήσει τὸ τεῖχος, 2 καὶ περίτειχος. Ἀνοίξατε πύλας, (γ) εἰσελθέτω λαὸς † φυλάσσων δικαιοσύνην, καὶ 3 φυλάσσων ἀλήθειαν, † Ἀντιλαμβανόμενος ἀληθείας, καὶ φυλάσσων εἰρήνην. † ὅτι ἐπὶ 4 σοὶ (δ) ἐλπίδι Ἤλπισαν κύριε ἕως τοῦ αἰ5ῶνος. † ὁ Θεὸς ὁ μέγας, ὁ αἰώνιος, † Ὃς ταπεινώσας κατήγαγες τοὺς ἐνοικοῦντας ἐν ὑψηλοῖς· † πόλεις ὀχυρὰς καταβαλεῖς, καὶ κατ6άξεις (ε) ἕως ἐδάφους. Καὶ πατήσουσιν (ζ) 7 αὐτοὺς πόδες πραέων καὶ ταπεινῶν. † Ὁδὸς εὐσεβῶν εὐθεῖα ἐγένετο, (η) ἡ ὁδὸς τῶν εὐσε8βῶν καὶ παρεσκευασμένη. † Ἡ γὰρ ὁδὸς κυρίου κρίσις. ἠλπίσαμεν ἐπὶ τῷ ὀνόματί 9 σου, † καὶ ἐπὶ τῇ μνείᾳ Ἡ ἐπιθυμεῖ ἡ ψυχὴ ἡμῶν· (θ) † ἐκ νυκτὸς ὀρθρίζει τὸ πνεῦμά μου πρὸς σὲ ὁ Θεὸς, † διότι φῶς τὰ προστάγματά σου ἐπὶ τῆς γῆς. † δικαιοσύνην μάθετε οἱ 10 ἐνοικοῦντες ἐπὶ τῆς γῆς· Πέπαυται γὰρ ὁ ἀσεβής. † (ι) πᾶς ὃς οὐ μὴ μάθῃ δικαιοσύνην ἐπὶ τῆς γῆς, ἀλήθειαν οὐ μὴ (ˈ) ποιήσει. † ἀρθήτω ὁ 11 ἀσεβὴς, ἵνα μὴ ἴδῃ τὴν δόξαν κυρίου. † Κύριε ὑψηλός σου ὁ βραχίων, καὶ οὐκ ᾔδεισαν, γνόντες δὲ αἰσχυνθήσονται. † ζῆλος λήψεται λαὸν ἀπαίδευτον, καὶ νῦν πῦρ τοὺς ὑπ12εναντίους ἔδεται. † Κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν, εἰρήνην δὸς ἡμῖν, πάντα γὰρ ἀπέδωκας ἡμῖν. 13 † Κύριε ὁ Θεὸς ἡμῶν, κτῆσαι ἡμᾶς. † κύριε ἐκτός σου ἄλλον οὐκ οἴδαμεν· τὸ ὄνομά σου ὀ14νομάζομεν. † Οἱ δὲ νεκροὶ ζωὴν οὐ μὴ ἴδωσιν, οὐδὲ ἰατροὶ οὐ μὴ ἀναστήσουσι· † διὰ τοῦτο ἐπήγαγες, καὶ ἀπώλεσας, καὶ ἦρας πᾶν ἄρσεν 15 αὐτῶν. † Πρόσθες αὐτοῖς κακὰ κύριε, πρόσθες κακὰ (κ) τοῖς ἐνδόξοις τῆς γῆς. 16 † Κύριε ἐν θλίψει ἐμνήσθην σου, † ἐν θλίψει μικρᾷ ἡ παιδεία σου ἡμῖν.

CAP. XXVI.

Die illâ (a) cantabunt Canticum iſtud ſuper terram Judææ Ecce civitas fortis : & (b) ſa tare ponet murum, & (c) murale. Aperite portas: ingrediatur populus cuſtodiens juſtitiam & cuſtodiens veritatem, (d) prehendens veritatem, & cuſtodiens pacem: Quoniam in ſpe Speraverunt, Domine, uſque ſempiternum. Deus magnus, æterne, Qui humilians detraxiſti qui habitant in excelſis: Civitates munitas deſtrues,& ſternes ad pavimentum. Et conculcabunt eos pedes manſuetorum, & humilium. Via piorum recta eſt, & (g) præparata via piorum Via enim Domini, judicium. Speravim⁹ in nomine tuo,et in memoria, Quâ deſiderat anima noſtra (h) de nocte: manè conſurgit ſpiritu⁹ me⁹ ad te,De⁹: quia lux præcepta tua ſuper terrā. Juſtitiam diſcite,qui habitatis ſuper terrā. Ceſſavit enim impi⁹.(k) Omnis non didicerit juſtitiam ſuper terram; veritatem non faciet. Auferatur impius ; ut non videat gloriam Domini. Domine,excelſum brachium tuum, & non ſciverunt Scientes autem confundentur. Zelus apprehendet populum ineruditum, & nunc ignis adverſarios comedet. Domine, Deus noſter, pacem da nobis: omnia enim reddidiſti nobis. Domine Deus noſter, poſſide nos: Domine,extra te alium neſcimus : nomen tuum nominamus. (l) Mortui autem vitam non videbunt, neque medici ſuſcitabunt. Idcirco induxiſti, & perdidiſti, & tuliſti omne (m) maſculum eorum. Adde eis mala Domine, adde mala gloriosis terræ. Domine in tribulatione recordatus ſum tui : in tribulatione parva, diſciplina tua nobis.

MS. A. (ʿ) ᾨΔΗ΄. (α) Ἰούδα, λέγοντες, Ἰδοὺ πόλις ὀχυρὰ, (β) σωτήριον ἡμῖν θήσει τεῖχος, (γ) εἰσελθάτω (δ) Ἤλπισα κύριε (ε) αὐτὰς ἕως ἐδάφους. (ζ) αὐτὰς (η) καὶ παρεσκευασμένη ἡ ὁδὸς τῶν εὐσεβῶν. (θ) (ι) Οὐ μὴ μάθῃ (ˈ) ποιήσῃ. (κ) πᾶσιν τοῖς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 ארי תתגלי גבורתא דיי בטורא הדין ויתדשון מואבאי באתרהון כמא דמתדש תבנא
11 בטינא: ויפרוס מחת גבורתיה ביניהון כמא דמפריס שיטא למשט וימאך יקריה עם
12 אשות ידוהי: וכרך תקוף כרכי עממיא ימגר ירמי ימטי לארעא עד עפרא:

כו

1 בעדנא ההיא ישבחון תושבחתא חדתא בארעא דבית יהודה קרית תוקפא לנא פורקן
2 יתשם על שורהא ורחמין: פתחו תרעיא ויעול עמא זכאה די נטרו אוריתא בלבב שלם:
3 4 בלבב שלם נטרו שלמא שלמא יתעבד להון ארי במימרך אתרחיצו: אתרחיצו על
5 מימרא דיי לעלם ולעלמי עלמיא בכן תתפרקון במימר דחילא דיי תקיף עלמיא: ארי
6 אמאיך יתבי רומה קריא תקיפא ימאכנה וירמנה עד ארעא ימטנה עד עפרא: ידושינה
7 רגלין רגלי צדיקיא פרסת עניתניא חשיכי עמא: אורחת צדיקיא כונן אף עבדי אורחת
8 9 צדיקיא תתקן: אף לאורח דינך יי סברנא לשמך ולדכרנך חמדת נפשנא: נפשי
מחמדא לצלאה קדמך בליליא אף רוחי במעי מברכא לך ארי כמא דדינך תקין לארעא
10 קושטא יתאלפון למעבד דדירין בתבל: ידבתא להון ארכא לרשיעיא אם יתובון
לאוריתך ולא תבו כל יומין דהוו קימין יעבדון קשוט על ארעא הוו שקרין אף אנון לא
11 יחזון בתושבחת יקרך יי: יי כד תתגלי בגבורתך לאוטבא לדדחלתך לא ינהר לסנאי
12 עמך יחזון רשיעיא ויבהתון פורענות עמא תחפנון אף אשתא לבעלי דבבך תשיצי: יי
13 תתקין שלמא לנא ארי בכל עדן דסכנא מחובנא את עביד עמנא: יי אלהנא שליטו
בנא עממיא למהוי עלנא רבונין בר מנך ברם במימרך אנחנא רחיצין בשמך אנחנא
14 מודן: אנון פלחין למתין דלא יחון לגבריהון דלא יקימון בכן כד תסער עליהון חוביהון
15 ותשיצנון ותוביד כל דכרנהון: אתגליתא לכנשא מבדרי עמך יי אף עתידא לקרבא
16 גלותהון לאתגלאה בגבורתך לדחקא כל רשיעיא לגהנם: יי בעקא הוו דכירין לדחלתך
בעקתהון הוו מלפין אולפן אוריתך בחשי:

PARAPH CHALD. Verſio Latina.

Quia revelabitur potentia Dñi in monte iſto,& triturabuntur Moabitæ in loco ſuo, ſicut teruntur paleæ in luto. Et extendet plagā potentiæ ſuæ inter eos, ſicut extendit ſe natans ad natandū ; & humiliabit gloriā ejus cum impoſitione manuū ſuarum. Civitatem autem munitam in civitatibus populorum deſtruet, projiciet eam ; & detrahetur in terram uſq; ad pulverem.

CAP. XXVI.

IN tempore illo cantabunt canticum *novum* in terra domus Juda : Civitas fortitudinis noſtræ,ſal⁹ ponetur ſuper muros ej⁹,& miſerationes. Aperite portas, & ingredietur popul⁹ juſtus, qui cuſtodit legē corde perfecto. In corde perfecto ſervaverunt pacem : pax fiet eis,quia in verbo tuo confiſi ſunt. Cōfidite in verbo Dñi in ſeculū,& in ſecula ſeculorū:tunc eritis in verbo timoris Dñi fortiſſimi ſeculorū. Quia humiliabit habitatores urbis excelſæ & fortiſſimæ,humiliabit eā & projiciet eam uſque detrahet eā uſq; ad pulverem. Conculcabunt eam pedes, pedes juſtorum plantæ humilium, pauperū populi. Semitæ juſtorū rectæ ſunt : operatores quoq; in via juſtorū diriges. Viam quoq; judiciorū tuorum Dñe ſperavimus nomen tuū & memoriale tuum deſiderat anima noſtra. Anima mea deſiderat orare coram te in nocte;etiā ſpirit⁹ meus in viſcerib⁹ meis benedicet tibi quia ſicut judicia tua diriguntur in terra;veritatē diſcēt operari qui habitant in orbe. Dediſti terminū impiis,ut converterentur ad legē tuam,&c converſi omnib⁹ diebus quib⁹ vivunt : & ut facerent veritatē tunc & facti ſunt fallaces : ipſi quoq; non videbunt laudem gloriæ tuæ Dñe quando revelat⁹ fueris in potentia tua, ut benefacias timentibus te erit lumen inimicis populi tui : videbunt impii , & confundentur vindicta populi tui cooperiet eos;ignis quoq; inimicos tuos conſumet ordinabis pacem nobis,quia in omni tempore,quo ſeparati ſum⁹ a noſtris,operat⁹ es nobiſcū. Dñe Deus noſter,dominati ſunt nobis dominarētur ſup nos abſq; te:veruntamē in verbo tuo confidimus nomine tuo nos cōfitemur. Ipſi colūt mortuos qui non vivūt,& gigantes qui nō cōſurgunt. Propterea quando viſitabis ſup eos peccata eorum perderis eos; peribit etiā memoria eorū. Revelat⁹ es ut cōgregares populi tui Dñe: futurū quoq; eſt ut colligas tranſmigrationē eorum as in potentia tua,ad projiciēdos oēs impios in gehennā. Dñe in erant memores timoris tui,in anguſtia ſua docebāt doctrinā legis

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܬܬܢܝܚ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܒܛܘܪܐ ܗܢܐ. ܘܢܬܕܝܫ ܡܘܐܒ ܬܚܘܬܘܗܝ. ܐܝܟ
ܕܡܬܕܝܫ ܬܒܢܐ ܒܥܓܠܬܐ. * ܘܢܦܪܘܣ ܐܝܕܘܗܝ ܒܓܘܗ. ܐܝܟ ܕܦܪܣ ܣܚܝܐ 11
ܠܡܣܚܐ. ܘܢܬܡܟܟ ܫܘܒܗܪܗ ܥܡ ܦܫܛܘܬܐ ܕܐܝܕܘܗܝ. * ܘܥܫܝܢ ܫܘܪܐ ܕܥܫܝܢܬܐ ܕܫܘܪܝܟܝ 11
ܢܡܟܟ ܘܢܫܦܠ ܘܢܪܡܐ ܠܐܪܥܐ ܥܕܡܐ ܠܥܦܪܐ. 12

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܘ *

* ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܫܬܒܚ ܬܫܒܘܚܬܐ ܗܕܐ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܡܕܝܢܬܐ ܕܥܫܝܢ ܦܘܪܩܢܗ 1
ܣܡܬ ܫܘܪܐ ܘܬܪ ܫܘܪܐ. * ܦܬܚܘ ܬܪܥܐ. ܢܥܘܠ ܥܡܐ ܙܕܝܩܐ. ܕܢܛܪ ܗܝܡܢܘܬܐ ܢܛܪ 2
ܫܠܡܐ. * ܬܛܪ ܠܢ ܫܠܡܐ ܡܛܠ ܕܒܟ ܣܒܪܢ ܡܪܝܐ: ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ 3
ܐܠܗܐ ܥܫܝܢܐ ܠܥܠܡܝܢ. * ܡܛܠ ܕܢܡܟܟ ܠܝܬܒܝܢ ܒܪܘܡܐ. ܘܡܕܝܢܬܐ ܥܫܝܢܬܐ 4
ܢܡܟܟܝܗ ܥܕܡܐ ܠܐܪܥܐ. ܘܢܫܦܠܝܗ ܥܕܡܐ ܠܥܦܪܐ. * ܢܕܘܫܘܢܗ ܪܓܠܐ ܕܡܣܟܢܐ ܘܗܠܟܬܐ 5
ܕܡܣܟܢܐ. * ܫܒܝܠܐ ܬܪܝܨܐ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܬܪܝܨܬܐ ܕܙܕܝܩܐ. * ܐܦ ܠܐܘܪܚܐ ܕܕܝܢܝܟ 6
ܡܪܝܐ ܣܟܝܢ. ܠܫܡܟ ܘܠܕܘܟܪܢܟ ܪܓܬ ܢܦܫܢ. * ܢܦܫܝ ܐܪܓܬܟ ܒܠܠܝܐ. ܐܦ 7
ܪܘܚܝ ܒܓܘܝ. ܢܩܕܡܬܟ. ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܕܕܝܢܝܟ ܒܐܪܥܐ. ܙܕܝܩܘܬܐ ܝܠܦܘ 8 9
ܥܡܘܪܝܗ ܕܬܐܒܝܠ. * ܐܬܦܢܝ ܥܘܠܐ ܕܠܐ ܢܐܠܦ ܕܝܢܐ. ܡܪܕܘܬܐ ܒܐܪܥܐ ܡܟܣܐ. 10
ܘܠܐ ܚܙܘ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܪܝܐ. ܪܡܬܐ ܐܝܕܟ ܠܐ ܚܙܘ. ܢܚܙܘܢ ܘܢܒܗܬܘܢ 11
ܛܢܢܗ ܕܥܡܐ. ܘܐܝܟ ܢܘܪܐ ܬܐܟܘܠ ܐܢܘܢ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟ. * ܡܪܝܐ. ܬܛܪ ܠܢ ܫܠܡܐ. ܡܛܠ 12
ܕܐܦ ܥܒܕܝܢ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܬ ܠܢ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܗܘܘ ܥܠܝܢ ܡܪܘܬܐ ܠܒܪ ܡܢܟ 13
ܠܟ ܒܠܚܘܕ. ܫܡܟ ܕܢܕܟܪ ܢܥܗܕ. * ܡܝܬܐ ܠܐ ܡܚܝܝܢ. ܘܓܢܒܪܐ ܠܐ ܡܩܝܡܝܢ. ܡܛܠܗܢܐ 14
ܦܩܕܬ. ܘܒܣܠܬ ܐܢܘܢ. ܘܐܘܒܕܬ ܕܘܟܪܢܗܘܢ. * ܐܘܣܦܬ ܡܪܝܐ ܥܠ ܥܡܐ 15
ܐܘܣܦܬ ܥܠ ܥܡܐ. ܐܬܪܚܩܬ ܘܪܚܩܬ ܟܠܗܘܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܡܪܝܐ ܒܐܘܠܨܢܐ 16
ܒܥܘܟ ܘܒܡܚܒܘܫܝܬܐ. ܠܚܫܘ ܡܪܬܘܬܟ.

Nam quieſcet manus Dñi in iſto monte, & 10
triturabitur Moab ſub illo, quemadmodum
plauſtro trituratur palea. Et expandet manus 11
ſuas in medio ejus, quemadmodum expandit
natator ad natandum : & humiliabitur faſtus
ejus ſtatim ad extenſioné manuũ illius. Deniq; 12
munitiſſimum robur mœnium tuorum humi-
liabit, deprimet, perducétque ad terram in
pulverem uſque.

CAP. XXVI.

IN die illa cantabitur canticum hoc in terra 1
Judæ: Civitas cujus magnificata eſt ſalus, po-
ſuiſtis murũ & propugnaculum; Aperite por- 2
tas *ut* ingrediatur gens juſta fidé conſervans,
conſtanter *inquam* conſervans. Pacem nobis 3
conſerves, quoniam in te Dñe ſemper ſpera-
vimus : Quia Dñs Deus, potens eſt in æternũ. 4
Deprimet enim habitantes in excelſo, & civi- 5
taté munitã dejiciet ad terrã uſque, adigétque
eam in pulverem uſque. Conculcabit eam 6
pes egenorũ & greſſus pauperũ. Semita recta 7
eſt pauperibus, & rectũ ac planũ iter juſtorũ.
Et verò judiciorũ tuorũ Dñe viam expectavi- 8
mus, nomen tuũ & memoriam tui exoptavit
anima noſtra. Anima mea deſiderio tui noctu 9
exarſit, & ſpiritus meus in præcordiis meis
ad te prævertit: quoniam qualia ſunt judi-
cia tua ſuper terram, *talem* juſtitiam didice-
runt habitatores orbis. Recedit impius, ne 10
diſcat judicium : caſtigatio *quidem* in terra
corripit, Domini tamen majeſtatem nequa-
quam conſiderant. Domine, celſitudinem ma- 11
nuum tuarum nequaquam vident : videbunt
& pudefient zelantes in populo : & quaſi ca-
min⁹ conſumes inimicos tuos. Domine, con- 12
ſerves nobis pacem, quandoquidem ſecun-
dùm omnes actus noſtros diſpoſuiſti nobis.
Domine Deus noſter, *alii* præſunt nobis do- 13
mini præter te, attamen nominis tui recor-
damur. Mortui non tribuunt vitam, neque 14
gigantes ad vitam revocant : idcirco viſi-
taſti, & poſthabuiſti eos, & memoriam eo-
rum penitùs deleviſti. Addidiſti Domine ſu- 15
per populum, addidiſti ſuper populum; rece-
dens procul amoviſti omnes terminos terræ. 16
Domine in anguſtia requiſiverunt te, & in
carcere ſuſurraverunt correptionem tuam.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لان الله يعطي نياحا على هذا الجبل * ويداس مواب كما يدوسون البيدر بالعجل * ويدل 10 11
يديه كما هو انصع ليهلك * ويواضع عظمته اذا وضع يديه * وعلو ملجاء سورك 12
يواضعه * وينزل الي التراب *

* الفصل السادس والعشرون *

* في ذلك اليوم يسبحون هذا التسبيح علي ارض اليهودية * قايلين * ها المدينة الحصينة 1
وخلاصنا يضع السور وحول السور * افتحوا الابواب ليدخل الشعب الحافظ العدل والحافظ 2
الحق * المستعين بالحق * وحافظ السلامة * لانا توكلنا عليك يا رب الي الابد * الله العظيم 3 4
الابدي * الذي اذللت وانزلت السكان في المرتفعات * المدن الحصينة هدمتها وانزلتها 5
الي التراب * ويدوسها ارجل الودعاء والمتواضعين * طريق الصديقين مستقيمة * طريق 6 7
الحسني العبادة مستقيمة * صارت طريق الحسني العبادة مستعدة * لان طريق الرب حكم 8
توكلنا على اسمك وعلي ذكرك الذي اشتهته نفسنا * من الليل تدلج روحي اليك 9
يا الله * من اجل ان اوامرك نور على الارض * تعلموا العدل ايها السكان على الارض *
* لان المنافق انكف * لا يتعلم عدلا على الارض * ولا يصنع حقا * يرفع المنافق 10
لكيلا يعاين مجد الرب * يا رب ذراعك عال ولم يعلموا * واذ يعلمون يخزون * الغيرة تاخذ 11
الشعب الغير مؤدب * والنار تاكل الان المضادين * ايها الرب الهنا اعطنا السلامة * لانك 12
اعطيتنا كل شي * ايها الرب الهنا اقتنينا * يا رب لم نعرف احدا سواك * باسمك نسمي * 13
* والاموات لا يرون الحيوة * والاطباء لا يقومون * لاجل هذا اجلبت واهلكت ورفعت كل ذكر 14
لهم * زدهم يا رب شرا * زد شرفاء الارض شرا * يا رب في الشدة ذكرناك في الضيقة تاديبك 15 16
لنا قليل *

Dabit enim Deus quietem ſuper hunc mon- 10
tem, & conculcabitur Moab quemadmo-
dum aream plauſtris coaculcant. Demit- 11
tétque manus ſuas eo modo quo ipſe ſe
humiliavit ut periret, & ſuperbiam ejus
deprimet ſtatim atque demiſerit manus ſu-
as : Et celſitudinem refugii muri tui de- 12
primet, et in pulverem detrudet.

CAP. XXVI.

IN illo die cantabunt canticum iſtud de 1
regione Judææ, dicentes; Ecce urbs
munita & ſalus noſtra murum poſuit &
muri vallum. Aperite portas, ut ingredia- 2
tur populus ſervans juſtitiam, ſervans ve-
ritatem, Fretus auxilio veritatis et ſer- 3
vans pacem. In te enim recumbit ſpes no-
ſtra in æternum O Domine. Deus maxi- 4
me, ſempiterne ; Qui humiliâſti & de- 5
turbâſti habitantes in locis ſublimibus,
urbes munitas evertiſti, & ad pulverem
uſque dejeciſti : Ita ut conculcent eam 6
pedes mitium & humilium. Juſtorum 7
via recta eſt, via veræ pietatis recta eſt.
Facta eſt autem via veræ pietatis præpa- 8
rata, quoniam via Domini judicium eſt.
Confidimus nomini tuo & memoriæ tui
quam expetit anima noſtra. De nocte ſur- 9
git ſpiritus meus ad te O Deus, quia man-
data tua ſunt lumen ſuper terram. Diſci-
te juſtitiam O qui ſuper terram habitatis :
Nam impius retraxit ſeſe, nullam diſcet 10
juſtitiam ſuper terram, nec faciet veritа-
tem : auferetur impius, ne videat gloriam
Dei. O Domine, excelſum eſt brachium 11
tuum, at ignorant : cùm autem noverint,
pudefient ; invidia occupabit populum
malè moratum, & ignis mox devorabit
adverſarios. Eja Domine Deus noſter, 12
da nobis pacem, quandoquidem omnia
dediſti nobis. O Domine Deus noſter, di- 13
rime cauſam noſtram : O Domine, nemi-
nem alium præter te novimus : nomen tu-
um invocamus. Mortui non videbunt 14
vitam, nec medici reſurgent : proptereà
exitium feciſti, perdidiſti, & abſtuliſti
omnem memoriam eorum. Adde illis O 15
Domine calamitatem, adde primatibus
terræ calamitatem. O Domine, in tribu- 16
latione memores tui ſumus, in anguſtia
animadverſio tua in nos parva eſt.

יְשַׁעְיָה׃ כו

clamabit , *cruciabitur* *pariendum ad* *appropinquabit* prægnans Sicut
17 כְּמוֹ הָרָה תַּקְרִיב לָלֶדֶת תָּחִיל תִּזְעַק
,Concepimus .Domine *tuis faciebus* à fuimus ſic : ſuis doloribus in
18 בַּחֲבָלֶיהָ כֵּן הָיִינוּ מִפָּנֶיךָ יְהוָה׃ הָרִינוּ
, terra *fit* non ſalutes : ſpiritum peperimus quaſi ,*doluimus*
חַלְנוּ כְּמוֹ יָלַדְנוּ רוּחַ יְשׁוּעֹת בַּל־נַעֲשֶׂה־אֶרֶץ
, tui mortui Vivent .orbis habitatores ceciderunt nec
19 וּבַל־יִפְּלוּ יֹשְׁבֵי תֵבֵל׃ יִחְיוּ מֵתֶיךָ
habitatores *dicite præconia* & Expergiſcimini .reſurgent meum cadaver
נְבֵלָתִי יְקוּמוּן הָקִיצוּ וְרַנְּנוּ שֹׁכְנֵי
.projiciet *manes* terra & ,tuus ros olerum ros quia ,pulveris
עָפָר כִּי טַל אוֹרֹת טַלֶּךָ וָאָרֶץ רְפָאִים תַּפִּיל׃
tuam januam claude & , tua *conclavia in* ingredere , mi popule Vade
20 לֵךְ עַמִּי בֹּא בַחֲדָרֶיךָ וּסְגֹר דְּלָתְיךָ
.ira tranſeat donec ,momentum,paululum *velut* te Abſconde .te ſuper
בַּעֲדֶךָ חֲבִי כִמְעַט־רֶגַע עַד־יַעֲבוֹר־זָעַם׃
iniquitatem *viſitandum ad* , ſuo loco de *egrediens* Dominus ecce Quia
21 כִּי־הִנֵּה יְהוָה יֹצֵא מִמְּקוֹמוֹ לִפְקֹד עֲוֹן
non & ,*ſuos ſanguines* terra revelabit & : eam ſuper terræ habitatoris
יֹשֵׁב־הָאָרֶץ עָלָיו וְגִלְּתָה הָאָרֶץ אֶת־דָּמֶיהָ וְלֹא־
.ſuos interfectos *ſuper* ultrà operiet
תְכַסֶּה עוֹד עַל־הֲרוּגֶיהָ׃

CAP. XXVII. כז

, grandi & , duro ſuo gladio in Dominus viſitabit illa die In
1 בַּיּוֹם הַהוּא יִפְקֹד יְהוָה בְּחַרְבּוֹ הַקָּשָׁה וְהַגְּדוֹלָה
Leviathan *ſuper* & , *vectem* ſerpentem Leviathan *ſuper* , forti &
וְהַחֲזָקָה עַל לִוְיָתָן נָחָשׁ בָּרִחַ וְעַל לִוְיָתָן
die In .mari in qui cetum occidet & : tortuoſum ſerpentem
2 נָחָשׁ עֲקַלָּתוֹן וְהָרַג אֶת־הַתַּנִּין אֲשֶׁר בַּיָּם׃ בַּיּוֹם
, eam *cuſtodiens* Dominus Ego .*ei accinite* ,*rubri vini* vinea : illa
3 הַהוּא כֶּרֶם חֶמֶר עַנּוּ־לָהּ׃ אֲנִי יְהוָה נֹצְרָהּ
nocte , eam *ſuper* viſitet fortè ne : eam faciam rigare momenta ad
לִרְגָעִים אַשְׁקֶנָּה פֶּן יִפְקֹד עָלֶיהָ לַיְלָה
mihi *dabit* quis : mihi non *Excandeſcentia* .eam *cuſtodiam* die &
4 וָיוֹם אֶצֳּרֶנָּה׃ חֵמָה אֵין לִי מִי־יִתְּנֵנִי
eam ſuccendam , ea in progrediar bellum in , *ſentem* , *veprem*
שָׁמִיר שַׁיִת בַּמִּלְחָמָה אֶפְשְׂעָה בָהּ אֲצִיתֶנָּה
; mihi pacem faciat , mea fortitudine in *apprehendat* Aut .pariter
5 יָּחַד׃ אוֹ יַחֲזֵק בְּמָעוּזִּי יַעֲשֶׂה שָׁלוֹם לִי
florebit ,J hacob radicabit *Venientibus* .mihi faciat pacem
6 שָׁלוֹם יַעֲשֶׂה־לִּי׃ הַבָּאִים יַשְׁרֵשׁ יַעֲקֹב יָצִיץ
plagā juxta Nũquid .*proventu* orbis *facies* implebunt & : Iſrael *gemmeſcet* &
7 וּפָרַח יִשְׂרָאֵל וּמָלְאוּ פְנֵי־תֵבֵל תְּנוּבָה׃ הַכְּמַכַּת
ejus occiſorum occiſionem ſecundùm *an* ? eum percuſſit eum percutientis
מַכֵּהוּ הִכָּהוּ אִם־כְּהֶרֶג הֲרֻגָיו
removit : eam judicabis *eam emittendo* in ,*ſito* In ? eſt occiſus
8 הֹרָג׃ בְּסַאסְּאָה בְּשַׁלְחָהּ תְּרִיבֶנָּה הָגָה
propitiabitur hoc in Idcirco .*euri die in* duro ſuo vento in
9 בְּרוּחוֹ הַקָּשָׁה בְּיוֹם קָדִים׃ לָכֵן בְּזֹאת יְכֻפַּר
, ſuum peccatum *removere* fructus omnis hoc & , J hacob iniquitas
עֲוֹן־יַעֲקֹב וְזֶה כָּל־פְּרִי הָסִר חַטָּאתוֹ
non ,*comminutos* calcis lapides ſicut,altaris lapides omnes *ipſum ponendo in*
בְּשׂוּמוֹ כָּל־אַבְנֵי מִזְבֵּחַ כְּאַבְנֵי־גִר מְנֻפָּצוֹת לֹא־
.*Solis imagines* & , luci ſtabunt
יָקֻמוּ אֲשֵׁרִים וְחַמָּנִים׃

Verſio VULG. LAT.

17 Sicut quæ concipit, cùm appropinquaverit ad partum, dolens clamat in doloribus ſuis: ſic facti ſumus à facie tua, Do-18 mine. Concepimus, & quaſi parturivimus, & peperim' ſpiritum: ſalutes non fecimus in terra, ideò non ceciderunt ha-19 bitatores terræ. Vivent mortui tui, interfecti mei reſurgent: expergiſcimini, & laudate qui habitatis in pulvere: quia ros lucis ros tuus, & terram gigan-20 tum detrahes in ruinam. Vade, populus meus, intra in cubicula tua, claude oſtia tua ſuper te, abſcondere modicùm ad momentũ, donec pertranſ-21 eat indignatio. Ecce enim Dominus egredietur de loco ſuo, ut viſitet iniquitatem habitatoris terræ contra eum: & revelabit terra ſanguinem ſuum, & non operiet ultrà interfectos ſuos.

CAP. XXVII.

1 IN die illa viſitabit Dominus in gladio ſuo duro, & grandi, & forti, ſuper Leviathan ſerpentem vectem, & ſuper Leviathan ſerpentem tortuoſum, & occidet cetum, qui in mari eſt.
2 In die illa vinea meri cantabit
3 ei. Ego Dominus, qui ſervo eam, repentè propinabo ei: ne forte viſitetur contra eam, no-4 cte & die ſervo eam. Indignatio non eſt mihi: quis dabit me ſpinam & veprem in prælio: gradiar ſuper eam, ſuccendam
5 eam pariter? An potiùs tenebit fortitudinem meam, faciet pacem mihi, pacē faciet mihi?
6 Qui ingrediuntur impetu ad Jacob, florebit & germinabit Iſrael, & implebunt faciem or-7 bis ſemine. Numquid juxta plagam percutientis ſe percuſſit eum? aut ſicut occidit interfectos ejus, ſic occiſus eſt?
8 In menſura contra menſuram, cùm abjecta fuerit, judicabis eam: meditatus eſt in ſpiritu
9 ſuo duro per diem æſtûs. Idcircò ſuper hoc dimittetur iniquitas domui Jacob: & iſte omnis fructus ut auferatur peccatum ejus, cùm poſuerit omnes lapides altaris ſicut lapides cineris alliſos, non ſtabunt luci & delubra.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 † Καὶ ὡς ἡ ὠδίνουσα ἐγγίζει (λ) τεκεῖν, † ἐπὶ τῇ ὠδῖνι αὐτῆς ἐκέκραξεν, † οὕτως ἐγενήθημεν τῷ ἀγαπητῷ σου. 18 † Διὰ τὸν φόβον σου κύριε ἐν γαστρὶ ἐλάβομεν, † ϗ ὠδινήσαμεν, ϗ ἐτέκομεν πνεῦμα σωτηρίας (*) σου, ὃ ἐποιήσαμεν ἐπὶ τῆς γῆς. † (μ) οὐ πεσούμεθα, ἀλλὰ πεσοῦνται πάντες οἱ ἐνοικοῦντες ἐπὶ τῆς γῆς. † (ν) 19 Ἀναστήσονται οἱ νεκροί, ϗ ἐγερθήσονται οἱ ἐν τοῖς μνημείοις, ϗ εὐφρανθήσονται οἱ ἐν τῇ γῇ. † ἡ γὰρ δρόσος ἡ παρὰ σοῦ ἴαμα αὐτοῖς 20 ἐστιν, † ἡ δὲ γῆ τῶν ἀσεβῶν πεσεῖται. † Βάδιζε (ξ) λαός μου, εἴσελθε εἰς τὰ (ο) ταμιεῖά σου, ἀπόκλεισον τὴν θύραν σου, ἀποκρύβηθι μικρὸν ὅσον ὅσον, † ἕως ἂν παρέλθῃ ἡ ὀργὴ 21 κυρίου. Ἰδοὺ γὰρ κύριος ἀπὸ τοῦ ἁγίου ἐπάγει τὴν ὀργὴν ἐπὶ τοὺς ἐνοικοῦντας ἐπὶ τῆς γῆς. ϗ ἀνακαλύψει ἡ γῆ (π) τὸ αἷμα αὐτῆς, ϗ οὐ κατακαλύψει (ρ) τοὺς ἀνῃρημένους.

MS.A. (λ) τοῦ τεκεῖν, ϗ ἐπὶ τῇ *ὠδῖνι (*) σου ἐποιήσαμεν (μ) ἀλλὰ πεσοῦνται οἱ ἐνοικοῦντες (ν) Ἀναστήσονται γὰρ οἱ (ξ) ὁ λαός μου, (ο) ταμιεῖά σ στόμα (ρ) ἡ γῆ τοὺς

ΚΕΦ. κζ΄.

1 (α) ἘΝ τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐπάξει ὁ θεὸς τὴν μάχαιραν τὴν ἁγίαν, ϗ τὴν μεγάλην, ϗ τὴν ἰσχυρὰν ἐπὶ τὸν δράκοντα ὄφιν φεύγοντα, ἐπὶ τὸν δράκοντα ὄφιν σκολιόν· (β) ἀνελεῖ τὸν 2 δράκοντα. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀμπελὼν καλός, 3 ἐπιθύμημα ἐξάρχειν κατ᾽ αὐτῆς. Ἐγὼ πόλις (γ) ὀχυρά, πόλις πολιορκουμένη, μάτην ποτιῶ αὐτήν· ἁλώσεται γὰρ νυκτός, ἡ-4 μέρας δὲ πεσεῖται (δ) τὸ τεῖχος. Οὐκ ἔστιν, ἣ οὐκ ἐπελάβετο αὐτῆς. τίς με θήσει φυλάσσειν καλάμην ἐν ἀγρῷ; διὰ τὴν πολεμίαν ταύτην ἠθέτηκα αὐτήν· τοίνυν διὰ τοῦτο ἐποίησε (ε) κύριος πάντα ὅσα συνέταξε. κατα-5 κέκαυμαι. Βοήσονται οἱ ἐνοικοῦντες ἐν αὐτῇ, ποιήσωμεν εἰρήνην αὐτῷ, ποιήσωμεν εἰρή-6 νην, Οἱ ἐρχόμενοι τέκνα Ἰακώβ. βλαστήσει ϗ ἐξανθήσει Ἰσραήλ, καὶ ἐμπλησθήσεται 7 ἡ οἰκουμένη τοῦ καρποῦ αὐτοῦ. Μὴ ὡς αὐτὸς ἐπάταξε, ϗ αὐτὸς οὕτως πληγήσεται; ϗ ὡς αὐτὸς ἀνεῖλεν, οὕτως ἀναιρεθήσεται; 8 Μαχόμενος καὶ ὀνειδίζων ἐξαποστελεῖ αὐτούς. οὐ σὺ ἦσθα (ζ) μελετῶν τῷ πνεύματι τῷ σκληρῷ, ἀνελεῖν αὐτοὺς πνεύματι θυμοῦ; 9 Διὰ τοῦτο ἀφαιρεθήσεται (η) ἀνομία Ἰακώβ, ϗ τοῦτό ἐστιν ἡ εὐλογία αὐτοῦ, ὅταν ἀφέλωμαι (θ) τὴν ἁμαρτίαν αὐτοῦ, ὅταν (ι) θῶσι πάντας τοὺς λίθους τῶν βωμῶν κατακεκομμένους, ὡς κονίαν λεπτήν· ϗ οὐ μὴ μείνῃ τὰ δένδρα αὐτῶν, ϗ τὰ εἴδωλα αὐτῶν ἐκκεκομμένα, ὥσπερ δρυμὸς μακράν.

MS.A. (α) Τῇ ἡμέρᾳ (β) ϗ ἀνελεῖ (γ) ἰσχυρά, (δ) τὸ τεῖχος. κύριος ὁ θεὸς (ζ) ὁ μελετῶν (η) ἡ ἀνομία (θ) αὐτοῦ τὴν ἁμαρτίαν,

Et ſicut parturiens appropin
ad pariendum, in dolore ſuo c
mavit; (p) ſic facti ſumus dil
tuo. Propier timorem tuum, Dom
ne, in utero accepimus, & partu
rimus, & peperimus ſpiritum
lutis (q) tuæ, quem fecimus
terram. Non cademus: ſed cad
omnes habitatores terræ. (r)
ſurgent mortui, & (ſ) expergi
tur, qui in monumentis, &
buntur, qui ſunt in terra. R
nim, qui à te, ſanatio eis e
autem impiorum cadet. Vade
pulus meus: ingredere in cub
tua, claude oſtium tuum, a
dere paululum quantulumcu
donec pertranſeat ira Domin
ce enim Domin' de Sancto ind
iram ſuper habitatores terræ
revelabit terra ſanguinem ſu
& non (t) abſcondet interfe

CAP. XXVII.

IN die illa inducet Deus gl
(a) ſanctum, & magnum, &
tem ſuper draconem colubru
fugientem, ſuper draconem
brum tortuoſum: occidet (c)
conem. Die illo vinea bona,
derium (d) cantare ſuper ea
go civitas munita, civitas q
pugnatur: fruſtrà potum da
Capietur enim nocte: die au
det murus. Non eſt, quæ n
prehenderit eam. Quis me
cuſtodem ſtipulæ in agro? Pr
adverſariam hanc repuli ea
circo igitur fecit Dominus o
que diſpoſuit. Combuſta
Clamabunt habitatores ejus
mus pacem illi, faciamus p
Venientes filii Jacob, germ
& florebit Iſrael, & im
orbis terrarũ fructu ejus. (e
ſicut ipſe percuſſit, & ipſe
cutietur: & ſicut ipſe inter
interficietur. Rixans, & expro
emittet eos. Nonne tu eras
ditabaris ſpiritu duro
eos ſpiritu furoris? Propter
feretur iniquitas Jacob, &
rit benedictio ejus; cum a
peccatum ejus: quando po
omnes lapides ararum
quaſi cinerem minutum: &
perſeverabunt arbores eo
idola eorum ſuccisa, qua
(f) longè:

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

17 כמעדיא דמטא דבעדן מילדה זיעא ומציחא בחבלהא כן הוינא מן קדם דחבנא
18 קדמך יי׃ אחדתנא עקא כמעדיא דמטת עדן מילדה קליל כרוחא פורקן לא איתיאו
19 ארעא לא עבדו אף פרישן לא יכלין למעבד דדירין בתבל׃ את הוא מחיי מיתין
גרמי נבלתהון את מקים יחון וישבחון קדמך כל דהוו רמן בעפרא ארי טל נהור טלך
לעבדי אוריתך ורשיעיא דיהבתא להון גבורא ואנון עברו על מימרך לגהנם תמסר׃
20 איזיל עמי עביד לך עובדין טבין דיגנון עלך בעדן עקא אטמר כזעיר זמן עד דיעדי
21 לוט׃ ארי הא יי מתגלי מאתר שכנתיה לאסערא חוב יתיב ארעא עלוהי ותגלי ארעא
על דם זכי דאתשיד בה ולא תכסי עוד על קטילהא׃

כז

1 בעדנא ההיא יסער יי בחרביה רבתא ותקפתא וחסנתא על מלכא דאתרבי כפרעה
מלכא קדמאה ועל מלכא דאתגאי כסנחריב מלכא תנינא ויקטול ית מלכא
2 דתקיף כתנינא די בימא׃ בעדנא ההיא כנשתא דישראל דהיא ככרם נציב
3 בארעא טבא שבחו לה׃ אנא יי נטר להון קים אבהתהון ולא אשצנון אלא בזמן
דאנון מרגזין קדמי אנא משקי להון כס פירענותהון אלולי חוביהון גרמין לאתפרעא
4 מנהון כבר לילי ויממא מימרי מגין עליהון׃ הא גבורן סני קדמי הלא אם ישוון
בית ישראל אפיהון למעבד אוריתא אשלח רוגזי וחמתי בעממיא דמתגרן בהון
5 ואשיצנון כמא דמשיצי אשתא הובאי וביר כחדא׃ אם יתקפון בפתגמי אוריתי
6 אתעבד שלמא להון מכען שלמא יתעבד להון׃ יתכנשון מביני גלותהון ויתובון
לארעהון תמן יתילידון דבית יעקב יפשון ויסגון דבית ישראל וימלון אפי תבל בני
7 8 בנין׃ הכמחתא דהוה מחי מחוהי אם כקטול קטילוהי יתקטיל׃ בסאתא דהויתא כאל
בה יכילון לך דהויתא שלחא ומעיק להון הני עליהון במלא מתקיף עליהון ביום לוט׃
9 בכן בדא ישתבקון חובי בית יעקב ודין כל עובדי אסטיות חובוהי בשויותיה כל אבני
אגורא כאבני גיר מנפצן לא יתקימון אשריא וחנסניא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Sicut prægnans quæ *adveniente* tēpore part' ſui contremiſcit, & cla
dolore ſuo: ſic fuim', eò quòd peccavim' coram te Dñe. Apprehe
tribulatio quaſi prægnantem *quando attigit tempus* part' ſui; velut
lutem, ſicut vent', non adduxerunt: terram non coluerunt; mirabilia
non poſſunt facere qui habitant in orbe. Tu es qui vivificas mortuos
oſſa cadaverum eorum tu ſuſcitas. Vivent & laudabunt coram te
jacent in pulvere; quia ros luminis ros tuus operantibus legem tua
autem quibus dediſti potentiam, & ipſi tranſgreſſi ſunt verbum tu
des eos in gehennam. Vade popule mi, fac opera bona, quæ prote
in tempore tribulationis: abſconde te quaſi modico tempore, donec
eat maledictio. Quia ecce Dñs revelabitur de loco majeſtatis ſuæ
ſitet peccatum *habitatoris* terræ ſuper eam: & revelabit terra
nem innocentem qui effuſus eſt in ea, & non operiet ultrà interfe

CAP. XXVII.

IN tempore illo viſitabit Dñs in gladio ſuo grandi & forti, & vali
per regem qui magnificat' eſt, ſicut Pharao rex primus [Ægypti
regem qui elevatus eſt ſicut Senacherib rex ſecundus; & occidet
fortis eſt, ſicut draco qui eſt in mari. In tempore illo cœtus Iſrael
ſicut vinea plantata in terra bona, cantate ei. Ego Dñs ſervo eis
patrum ſuorum; & non conſumam eos: ſed in tempore quo irritant
me, ego propino eis calicem ultionis eorum: ſed peccata eorum
ſæ ut vindictam ſumam ex eis: tamen in nocte & die verbum meum
tegit ſuper eos. Ecce magnalia magna à facie mea facta ſunt: ſi
poſuerit domus Iſrael faciem ſuam, ut operetur ſecundùm legem,
irā meam, & furorē meũ in populos qui irruebant in eos, & conſumam
ſicut conſumit ignis tribulũ & ſpinā pariter. Si tenuerint verba Legis
eis pax: poſt hac [*inquam*] pax fiet eis. Congregabuntur de medio
grationis eorum, & revertentur in terram ſuam: ibi generabuntur
mus Jacob: creſcent & multiplicabuntur viri domus Iſrael, & im
faciem orbis filii filiorum. Nunquid juxta plagam qua ipſe perc
percuſſit eum, aut juxta occiſionem interfectorum ej' occiſus eſt
ſura qua *metiebaris*, metientur *tibi*: qui *mittebas* & *tribulabas*
tatus eſt contra eos ſermonem: confortatus eſt contra eos in die
onis. Propterea in hoc dimittentur peccata domus Jacob: &
varicatio omnium operum eorum, & peccatorum eorum
oēs lapides altaris quaſi lapides gypſi diſperſos: non ſtabũt luci

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܝܟ ܕܒܛܢܬܐ ܕܩܪܝܒܐ ܠܡܐܠܕ: ܘܡܬܚܒܠܐ ܘܡܝܠܠܐ ܒܚܒܠܝܗ̇. ܗܟܢܐ ܗܘܝܢ ܩܕ
ܡܝܟ ܡܪܝܐ. * ܒܛܢܢ ܘܚܒܠܢ. ܐܝܟ ܗܢܘܢ ܕܝܠܕܝܢ ܪܘܚܐ. ܦܪܘܩܝܢ ܕܠܐ ܢܐܒܕ ܒܐܪܥܐ 18
ܘܠܐ ܢܦܠܘܢ ܥܡܘܪܝܗ̇ ܕܬܐܒܝܠ. * ܢܚܘܢ ܡܝܬܝܟ ܘܫܠܕܝܗܘܢ ܢܩܘܡܘܢ. ܢܬܬܥܝܪܘܢ 19
ܘܢܫܒܚܘܢ ܫܟܝܒܝ ܥܦܪܐ. ܡܛܠ ܕܛܠܐ ܕܢܘܗܪܐ ܛܠܟ. ܘܐܪܥܐ ܕܓܢܒܪܐ ܬܗܦܘܟ.
* ܙܠ ܥܡܝ ܥܘܠ ܠܬܘܢܝܟ. ܘܐܚܘܕ ܬܪܥܝܟ ܒܐܦܝܟ. ܘܐܬܛܫܝ ܩܠܝܠ ܥܕܡܐ ܕܢܥܒܪ 20
ܪܘܓܙܝ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܪܝܐ ܢܦܩ ܡܢ ܐܬܪܗ. ܘܡܣܥܪ ܚܘܒܝܗܘܢ ܕܥܡܘܪܝ ܐܪܥܐ. 21
ܘܬܓܠܐ ܐܪܥܐ ܕܡܗ̇. ܘܠܐ ܬܟܣܐ ܬܘܒ ܠܩܛܝܠܝܗ̇.

* Ut prægnanti mox parituræ, dolenti, & ſuis in doloribus ululanti, ita nobis accidit à conſpectu tuo Domine: 17 Concepimus & enixi ſumus ut illæ quæ ventos pariunt. Serva nos, ne pereamus in terra, néve ſuccumbant habitatores orbis. 18 Reviviſcant mortui tui, & cadavera eorum reſurgant: expergiſcantur, & laudem canant decumbentes in pulvere; quia ros tuus, ros eſt luminis: terram verò gigantum evertes. 19 Age popule mi, intra in penetralia tua, & claude fores tuas poſt te: latita exiguo tempore, donec prætereat indignatio mea. 20 Nam ecce Dominus proditurus eſt è loco ſuo, & viſitaturus iniquitatem habitatoris terræ: detegétque terra ſanguinem ſuum, nec occultabit ultra interfectos ſuos. 21

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܙ *

* ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܣܥܘܪ ܡܪܝܐ ܒܣܝܦܗ ܩܫܝܐ ܘܪܒܐ ܘܥܫܝܢܐ. ܠܠܘܝܬܢ ܚܘܝܐ ܫܢܝܐ 1
ܡܪܕܢܐ. ܘܠܠܘܝܬܢ ܚܘܝܐ ܥܩܝܡܐ. ܘܢܩܛܘܠ ܠܬܢܝܢܐ ܕܒܝܡܐ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ. 2
ܟܪܡܐ ܕܚܡܪܐ. ܙܡܪܘ ܠܗ̇. * ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܢܛܪ ܐܢܐ ܠܗ̇. ܐܡܝܢܐܝܬ ܐܫܩܝܗ̇. ܘܐܣܥܘܪ 3
ܥܠܝܗ̇ ܒܠܠܝܐ ܘܒܐܝܡܡܐ ܐܢܛܪܝܗ̇. * ܫܘܪܐ ܠܝܬ ܠܟܝ. ܡܢ ܗܟܝܠ ܣܡ ܒܟܝ ܝܘܒܐ 4
ܘܟܘܒܐ. ܒܩܠܝܠ ܐܦܘܚ ܒܗ̇ ܘܐܘܩܕܝܗ̇ ܐܟܚܕܐ. * ܐܘ ܢܐܚܘܕ ܒܥܘܫܢܝ. ܘܐܥܒܕ ܠܗ 5
ܫܠܡܐ. ܫܠܡܐ ܐܥܒܕ ܠܗ. * ܐܝܠܝܢ ܕܡܢ ܥܩܪܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܕܥܘ ܕܢܦܪܥ ܘܢܦܪܚ ܐܝܣܪܝܠ. 6
ܘܢܡܠܘܢ ܦܐܪܐ ܐܦܝ ܬܐܒܝܠ. * ܐܝܟ ܡܚܘܬܐ ܕܡܚܝܗܝ ܡܚܐ ܠܗ. ܘܐܝܟ ܩܛܠܐ ܕܩܛܠܗ 7
ܢܩܛܠܝܘܗܝ. * ܒܟܝܠܬܐ ܕܟܠ ܬܕܘܢܝܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܐܬܪܢܝ ܒܪܘܚܗ ܩܫܝܐ ܒܝܘܡܐ ܕܫܘܒܐ. 8
* ܡܛܠ ܗܢܐ. ܒܗܕܐ ܢܫܬܒܩ ܥܘܠܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܒܟܠܗܘܢ ܦܐܪܘܗܝ ܢܥܒܪ ܚܛܗܘܗܝ. ܡܐ ܕܢܣܝܡ 9
ܟܠܗܘܢ ܟܐܦܐ ܕܡܕܒܚܐ. ܐܝܟ ܟܐܦܐ ܕܓܝܪܐ ܕܡܬܕܩܩܢ.
ܘܦܬܟܪܐ ܠܐ ܢܬܩܝܡܘܢ. ܐܫܝܪܐ ܘܚܡܢܐ.

CAP. XXVII.

* IN die illa viſitabit Dominus gladio ſuo duro, grandi, & valido Leviathan ſerpentem pervicaciſſimum, et Leviathan ſerpentem tortuoſum, & interficiet draconem qui eſt in mari. 1 In die illa, vineæ vini canite: 2 Ego Dominus cuſtodio eam, ſemper eam irrigabo, viſitabo eam nocte, & interdiu cuſtodiá illam. 3 Murum nónne habes? quis ergò poſuit in te vepres & ſpinas? brevi flabo in eam, & penitùs comburam illam. 4 Vel certè teneat fortitudinem meam, ut faciam ei pacem: pacem faciam ei. 5 Quotquot eſtis de ſtirpe Jacobi, *ſcitote quòd* folia & flores emiſſurus eſt Iſrael, & fructibus impleturi ſunt ſuperficiem orbis. 6 Idem vulnus quod inflixit ei, infliget illi: & eâdem nece quâ extinxit eum, extinguet illum: 7 Menſurâ quâ menſus eſt, condemnabis eum. 8 Quia cogitavit animo ſuo duro de die ferventi: Idcirò per hoc dimittetur culpa Jacobi, & per omnes hos fructus abſcedet peccatum ejus; 9 quum poſuerit omnes lapides altaris, *&* ut lapides calcis qui rediguntur in pulverem, ita non conſiſtent idola nec numina.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 18 * وكمثل المطلقة اذ تقرب لتلد وفي طلقها صرخت * هكذا صرنا لحبيبك * لاجل خوفك يا
رب اخذنا حبلا وطلقنا وولدنا * روح خلاصك صنعناه على الارض * لسنا نسقط لكن تسقط
19 السكان على الارض * تقوم الاموات ويستيقظ الذين في القبور ويفرح الذي على الارض لان
20 الندا الذي من قبلك هو شفا لهم وارض المنافقين تسقط * اقعد يا شعبي * ادخل الى
21 مخدعك * اغلق بابك * واختف قليلا بمقدار الى ان يجوز غضب الرب * لان ها الرب من
الموضع المقدس يورد رجزه على السكان على الارض * ليتعهد اثم السكان على الارض عليهم
هكذا * وتكشف الارض دمها * ولا تستر المقتولين عليها بعد *

Et qualis eſt ea quæ partûs dolores patitur imminente partu, & in ſuis doloribus clamat; tales facti ſumus ad dilectum tuum. 17 *Præ timore tuo, O Domine, occupavit nos conceptio, parturivimus, & peperimus: ſpiritum ſalutis tuæ fecimus ſuper terram: nequaquam cademus nos, ſed cadent habitantes ſuper terram.* 18 *Reſurgent mortui, evigilabunt qui ſunt in ſepulchris, & lætabuntur qui ſunt ſuper terram; quia ros qui à te eſt, ſanitati eſt eis: terra verò ſceleſtorum corruet.* 19 *Siſte O popule mi, ingredere in conclave tuum, occlude oſtium tuum, téque parvo abſconde intervallo, donec pertranſeat ira Domini.* 20 *Nam ecce Dominus è loco ſancto adducturus eſt iram ſuam ſuper terricolas, ut ſcelus terricolarum adverſùs eos hoc modo viſitet, retegat terra ſanguinem ſuum, nec ampliùs celet interfectos ſuper ſe.* 21

* الفصل السابع والعشرون *

1 * في ذلك اليوم يجلب الله سيفه المقدس العظيم القوي على التنين الحية الهاربة * على
2 التنين الحية الملتوية * ويقتل التنين في ذلك اليوم الذي في البحر كرم جيد * ليبتدي
3 شهوتها منه * انا مدينة حصينة مدينة محاصرة اسقيها باطلا * لانها تدرس ليلا * ويسقط
4 سورها نهارا * لانه ليس يوجد من ياخذها * من يجعلني ان احرس قصبة في حقل * لاجل هذه
5 المحاربة غدرت بها * لاجل هذا الان صنع الرب الاله كلما عاهد به * احرقت * يصرخون
6 جميع السكان فيها * نصنع معه سلامة * نصنع ايها الواردون سلاما * اولاد يعقوب ينبتون
7 ويزهر اسرائيل * ويمتلي المسكونة من ثمرته * أليس كما هو ضرب وهو هكذا يضرب
8 وكما هو قتل وهو هكذا يقتل * محارب ومعير يرسلهم * أليس انت كنت الذي تتلو
9 بروحك الصعب ليقتلهم بروح غضب * لاجل هذا ينتزع اثم يعقوب وهذه هي بركته
اذا نزع خطيته اذ يصنعون جميع حجارة المذبح مكسرة مثل الكلس الدقيق ولا تثبت
اشجارهم * واوثانهم مكسرة بعيدا مثل الغاب *

CAP. XXVII.

* *IN illa die adducet Dominus gladium ſuum ſanctum, grandem, ac potentem ſuper draconem ſerpentem fugientem, ſuper draconem tortuoſum, & interficiet eo die draconem qui eſt in mari vinea quædam bona,* 1 *ut ab ipſa principium ducat cupiditas ejus.* 2 *Ego urbem munitam, urbem obſeſſam fruſtrà irrigo, quoniam obteretur nocte, & murus ejus cadet in die,* 3 *Quoniam non eſt qui capiat eam. Quis me ſtatuat ad cuſtodiendum arundinem in campo? propter hujuſmodi pugnam decepi illam: hac de cauſa nunc executus eſt Dominus Deus quicquid pollicitus fuerat: combuſta eſt.* 4 *Clamabunt omnes cives ejus, Conciliemus cum eo pacem, pacem conciliemus O venientes.* 5 *Filii Jacobi germinabunt, & florebit Iſrael, & orbis implebitur fructu ipſius.* 6 *Annon quemadmodum iſte percuſſit, eodem ipſe modo percutietur? et quemadmodum ipſe interfecit, eodem ipſe modo interficietur?* 7 *Bellator & convitiator mittet eos: nónne tu is eras qui ſpiritu tuo rigido meditabaris necem eorum, ſpiritu furoris?* 8 *Ob id auferetur iniquitas Jacobi, & benedictio hæc obtinget ei, cùm depoſuerit peccatum ſuum, cùm omnes lapides altaris confractos redegerint in modum calcis minutiſſimæ, arbores eorum minime ſubſtiterint, & idola eorum procul diſrupta fuerint quemadmodum luci.* 9

ישעיה: כח

derelictum & dimiſſum habitaculum ſolitaria munita civitas Nam
10 כי עיר בצורה בדד נוה משלח ונעזב
conſumet &,accubabit ibit & , vitulus paſcetur ibi : deſertum veluti
כמדבר שם ירעה עגל ושם ירבץ וכלה
venientes mulieres , conterentur ,ejus *meſſem areſcendo In* .ejus ramos
11 סעפיה : ביבש קצירה תשברנה נשים באות
non Ideo .*ipſe* intelligentiarũ populus non quia .eam *inflammantes*
מאירות אותה כי לא עם בינות הוא על כן לא
die in erit Et.ejus miſerebitur non eum *formans* &,eũ *faciens* ej⁹ miſerebitur
12 ירחמנו עשהו ויצרו לא יחננו : והיה ביום
torrentem ad uſque fluminis alveo ab Dominus excutiet , illa
ההוא יחבט יהוה משבלת הנהר עד נחל
erit Et .Iſrael filii *unum unum ad* colligemini vos & : Ægypti
13 מצרים ואתם תלקטו לאחד אחד בני ישראל : והיה
terra in *pereuntes* venient & ,magna tuba in clangetur illa die in
ביום ההוא יתקע בשופר גדול ובאו האבדים בארץ
Domino ſe incurvabunt & : Ægypti terram in expulſi & , Aſſur
אשור והנדחים בארץ מצרים והשתחוו ליהוה
.Jeruſalaim in ſanctitatis monte in
בהר הקדש בירושלם :

CAP. XXVIII. כח

decidenti flori & , Ephraim ebriis , ſuperbiæ coronæ Væ
1 הוי עטרת גאות שכרי אפרים וציץ נבל
quaſſatis ; pinguium vallis *caput* ſuper quæ ; ejus gloriæ *ornamento*
צבי תפארתו אשר על ראש גיא שמנים הלומי
, grandinis *inundatio* ſicut , Domino fortis & validus Ecce .vino
2 יין : הנה חזק ואמץ לאדני כזרם ברד
depoſuit inundantium *crebrarum* aquarum *procella ut* : excidionis turbo
שער קטב כזרם מים כבירים שטפים הניח
ſuperbiæ corona : calcabuntur pedibus In .*manu in* terram in
3 לארץ ביד : ברגלים תרמסנה עטרת גאות
, ejus decoris *ornamentum* decidens flos erit Et .Ephraim *temulentorum*
4 שכורי אפרים : והיתה ציצת נבל צבי תפארתו
; *æſtatem* ante præcox ficus ſicut ,pinguium vallis *caput* ſuper qui
אשר על ראש גיא שמנים כבכורה בטרם קיץ
.*eam* deglutiet,ſua *vola in ipſam adhuc in,ipſam* videns viderit quam
אשר יראה הראה אותה בעודה בכפו יבלענה :
, *decoris coronam in* exercituum Dominus erit illa die In
5 ביום ההוא יהיה יהוה צבאות לעטרת צבי
, judicii *ſpiritum in* Et .ſui populi reſiduo , gloriæ *cidarim in* &
6 ולצפירת תפארה לשאר עמו : ולרוח משפט
prælium avertentibus *robur in &* , *judicium* ſuper ſedenti
ליושב על המשפט ולגבורה משיבי מלחמה
: erraverunt ſechar *in* & ,erraverunt *vino in* ipſi etiam Et .portam ad
7 שערה : וגם אלה ביין שגו ובשכר תעו
: *vino à ſunt abſorpti* , ſechar *in* erraverunt propheta & ſacerdos
כהן ונביא שגו בשכר נבלעו מן היין
.judicio impegerunt , viſione in erraverunt , ſechar à erraverunt
תעו מן השכר שגו בראה פקו פליליה :
.*loco abſque* , ſorde vomitu ſunt repletæ menſæ omnes Quoniam
8 כי כל שלחנות מלאו קיא צאה בלי מקום :
? *auditum* faciet intelligere quem & , ſcientiam docebit Quem
9 את מי יורה דעה ואת מי יבין שמועה
.uberibus ab *avulſos* , lacte à *ablactatos*
גמולי מחלב עתיקי משדים :

Verſio VULG. LAT.

10 Civitas enim munita deſolata erit, ſpecioſa relinquetur, & dimittetur quaſi deſertum : ibi paſcetur vitulus, & ibi accubabit, & conſumet ſummitates ejus. 11 In ſiccitate meſſes illius conterentur, mulieres venientes, & docentes eam : non eſt enim populus ſapiens, propterea non miſerebitur ejus, qui fecit eum ; & qui formavit 12 eum, non parcet ei. Et erit: In die illa percutiet Dominus ab alveo fluminis uſque ad torrentem Ægypti, & vos congregabimini unus et unus filii Iſrael. 13 Et erit: In die illa clangetur in tuba magna, & venient qui perditi fuerant de terra Aſſyriorũ, & qui ejecti erant in terra Ægypti, & adorabunt Dñm in monte ſancto in Jeruſalem.

CAP. XXVIII.

1 VÆ coronæ ſuperbiæ, ebriis Ephraim, & flori decidenti, gloriæ exultationis ejus, qui erant in vertice vallis pinguiſſi-2 mæ, errantes à vino. Ecce validus & fortis Dominus, ſicut impetus grandinis ; turbo confringens, ſicut impetus aquarum multarum inundantium, & emiſſarum ſuper terram ſpa-3 tioſam. Pedibus conculcabitur corona ſuperbiæ ebriorum 4 Ephraim. Et erit flos decidens gloriæ exultationis ejus, qui eſt ſuper verticem vallis pinguium, quaſi temporaneum ante maturitatem autumni : quod cùm aſpexerit videns, ſtatim ut manu tenuerit, devorabit il-5 lud. In die illa erit Dominus exercituum corona gloriæ, & ſertum exultationis reſiduo 6 populi ſui : Et ſpiritus judicii ſedenti ſuper judicium, & fortitudo revertentibus de bello 7 ad portam. Verùm hi quoque præ vino neſcierunt, & præ ebrietate erraverunt : ſacerdos & propheta neſcierunt præ ebrietate, abſorpti ſunt à vino, erraverunt in ebrietate, neſcierunt videntem, igno-8 raverunt judicium. Omnes enim menſæ repletæ ſunt vomitu ſordiúmque, ita ut non 9 eſſet ultrà locus. Quem docebit ſcientiam ? & quem intelligere faciet auditũ ? ablactatos à lacte, avulſos ab uberibus.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

10 Τὸ κατοικούμενον ποίμνιον ἀνειμένον ἔσαι, ὡς ποίμνιον καταλελειμμένον· καὶ ἔσαι πολὺν χρόνον εἰς βόσκημα, καὶ ἐκεῖ (κ) ἀναπαύσονται ποίμνια. 11 Καὶ μετὰ χρόνον οὐκ ἔσαι ἐν αὐτῇ πᾶν χλωρὸν διὰ τὸ ξηρανθῆναι. γυναῖκες ἐρχόμεναι ἀπὸ θέας δεῦτε. οὐ γὰρ λαός ἐστιν ἔχων σύνεσιν, διὰ τοῦτο οὐ μὴ οἰκτειρήσῃ ὁ ποιήσας αὐτοὺς, οὐδὲ ὁ πλάσας αὐτοὺς οὐ μὴ (ι) ἐλεήσῃ. 12 Καὶ ἔσαι ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, συμφράξει (λ) ὁ Θεὸς ἀπὸ τῆς διώρυγος τοῦ ποταμοῦ ἕως Ῥινοκορούρων. ὑμεῖς δὲ συναγάγετε (μ) κατὰ ἕνα τοὺς υἱοὺς 13 Ἰσραήλ. Καὶ ἔσαι ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, σαλπιοῦσι (ν) τῇ σάλπιγγι τῇ μεγάλῃ, καὶ ἥξουσιν οἱ (ξ) ἀπολόμενοι ἐν τῇ χώρᾳ τῶν Ἀσσυρίων, καὶ οἱ ἀπολόμενοι ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ (ο) προσκυνήσουσι τῷ κυρίῳ ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ ἅγιον ἐν Ἱερουσαλήμ.

MS.A. (κ) ἀναπαύσονται. Μετὰ χρόνον οὐκ ἔσαι (ι) ἐλεήσει. (λ) κλείσει τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ κατὰ ἕνα ἕνα. (ν) ἐν τῇ (ξ) ἀπὸ ἀναλολῶν ἐν τῇ (ο) προσ κυνήσωσιν

Habitans grex dimitten g ex derelictus: & erit multo pore in paſtionem: & ibi ſcent greges. Et poſt tempus erit in ea omne viride, quia catum eſt. (g) Mulieres ven à ſpectaculo venite: non populus habens intellig Propterea non miſerebitur e qui fecit: & qui formavit parcet. Et erit in die illa, (h) cludet Deus à foſſa flum ad Rhinocorurum. Vos autem gregate ſingulos filios Iſrael erit in die illa, canet tuba ma & venient, qui perierant in one Aſſyriorum, &, qui in Ægypto: & adorabunt Do num ſuper montem ſanct Hieruſalem.

ΚΕΦ. κη'.

1 ΟΥαὶ τῷ στεφάνῳ τῆς ὕβρεως, οἱ μισθωτοὶ Ἐφραὶμ, τὸ ἄνθος τὸ ἐκπεσὸν ἐκ τῆς δόξης ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ ὄρους τοῦ παχέος, οἱ μεθύ-2 οντες ἄνευ οἴνου. Ἰδοὺ ἰσχυρὸν καὶ σκληρὸν ὁ θυμὸς κυρίου, ὡς χάλαζα καταφερομένη οὐκ ἔχουσα σκέπην, βίᾳ καταφερομένη· ὡς ὕδατος πολὺ πλῆθος σῦρον χώραν, τῇ γῇ ποιήσει (α) ἀνάπαυμα· ταῖς 3 χερσὶ, Καὶ τοῖς ποσὶ καταπατηθήσεται ὁ στέφανος τῆς ὕβρεως, οἱ μισθωτοὶ τοῦ 4 Ἐφραίμ. Καὶ ἔσαι τὸ ἄνθος τὸ ἐκπεσὸν τῆς ἐλπίδος τῆς δόξης, ἐπ' ἄκρου τοῦ ὄρους τοῦ ὑψηλοῦ· ὡς πρόδρομος σύκου, ὁ ἰδὼν αὐτὸ, (β) πρὶν εἰς τὴν χεῖρα αὐτοῦ λαβεῖν (γ) 5 αὐτὸ, θελήσει αὐτὸ καταπιεῖν. Τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσαι κύριος σαβαὼθ ὁ στέφανος τῆς ἐλπίδος, ὁ πλακεὶς τῆς δόξης, τῷ καταλειφθέν-6 τι (δ) τοῦ λαοῦ. (ε) Καταλειφθήσονται ἐπὶ πνεύματι κρίσεως ἐπὶ κρίσιν, καὶ ἰσχὺν (ζ) κω-7 λυόντων ἀνελεῖν. Οὗτοι γὰρ οἴνῳ (η) πεπλημμελημένοι εἰσίν. ἐπλανήθησαν διὰ τὸ σίκερα, ἱερεὺς καὶ προφήτης ἐξέστησαν (θ) διὰ τὸ σίκερα, κατεπόθησαν διὰ τὸν οἶνον, ἐσείσθησαν ἀπὸ τῆς μέθης (ι), ἐπλανήθησαν· τουτέστι 8 φάσμα. Ἀρὰ ἔδεται ταύτην τὴν βουλὴν, αὕτη 9 γὰρ ἡ βουλὴ (κ) ἕνεκα πλεονεξίας. Τίνι ἀνηγγείλαμεν κακὰ, καὶ τίνι ἀνηγγείλαμεν ἀγγελίαν; οἱ ἀπογεγαλακτισμένοι ἀπὸ γάλακτος, οἱ ἀπεσπασμένοι ἀπὸ μαστοῦ.

MS.A. (α) ἀνάπαυσιν· (β) πρινὴ (γ) θελήσει (δ) Καὶ καταλειφθήσονται (ζ) κωλύων ἀναιλεῖν. (η) πεπλανημένοι (θ) διὰ τὸν οἶνον, ἐσείσθησαν (ι) τοῦ σίκερα, ἐπλανήθησαν. τουτέστι φάντασμα. (κ) ἕνεκεν

CAP. XXVIII.

VÆ coronæ (a) injuriæ, mercenarii Ephraim: flos de gloria ſuper vertice ſingu, qui ebrii ſunt Ecce forte & durum fur ſicut grando, quæ fertur num, non habens tegmen, lenter decidit: ſicut aqua multitudo trahens regionem terræ faciet requiem pedibus conculcabitur corona riæ, mercenarii Ephraim. flos, qui decidit de ſpe glor ſummitate montis excelſi præmatura ficus; quã antequã ſumat eã manu cam devorare. Die illa nus Sabaoth corona glor compacta eſt gloriæ, (e) populi. Relinquentur in dicii ſuper judicium, & nem vetantium interficere nim vino (f) deliquerunt propter (g) ſiceram: ſacerd propheta exciderunt ſiceram, abſorpti ſunt num, vacillaverunt tatem, erraverunt: hoc phaſma. Maledictio conſilium: ſiquidem iſtu um propter avaritiam nuntiavim⁹ mala, et cui vimus nuntium? qui à lacte, qui abſtracti

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ארי קרתא דהות כריכא בלחודה תתב תהי מטלטלא ושביקא כמדברא בה יניחון 10
צדיקיא ויבזון ית נכסהא ויסופון משריתהא מלמפק : יתקצר חילהון ויבהתון 11
בעובדיהון יתברון נשיא עלן לבית דחלתהון ומלפן יתהון ארי לא עם סוכלתן אנון על
כן לא ירחם עליהון דעבדנון ודברנון לא יחוס עליהון : ויהי בעדנא ההיא יתרמון 12
קטילין קדם יי מכיף נהרא פרת עד נחלא דמצרים ואתון תתקרבון חד לסטר חד בני
ישראל : ויהי בעדנא ההיא יתקע בשופרא רבא וייתון די גלו לארעא דאתור 13
ודאטלטלו לארעא דמצרים ויסגדון קדם יי בטורא דקודשא בירושלם :

כח

וי די יהיב כתרא לגיותנא טפשא רבא דישראל ויהיב מצנפתא לרשיעיא 1
דבית מקדשא תושבחתיה די על ריש חילא שמנא כתישי חמר :
הא מחן תקיפן וחסינן אתין מן קדם יי כזרמית ברד בעלעול רוח כזרמית מיין 2
תקיפין שטפין כן יתון עליהון עממיא ויגלונון מארעהון לארעא אוחרי בחוביא די
בידיהון : ברגלין יתדש כתרא דגיותנא טפשא רבא דישראל : ויהי דיהיב מצנפתא 3
לרשיעיא דבית מקדשא תושבחתיה די על ריש חילא שמינא כבכורא עד לא 4
קיטא דאכם יחזי דחזי יתה כאלו היא בידיה יבלענה : בעדנא ההיא יהי משיחא 5
דיי צבאות לכלילא דחדוא ולכתר דתושבחא לשארא דעמיה : למימר קשוט דדין 6
לדיתבין בבית דינא למדן דין דקשוט ולמתן נצחנא לדנפקין בקרבא לאתבותהון
בשלם לבתיהון : ואף אלין בחמרא רוו ובעתיקא אסתלעמו כהנא וספר רוו מן 7
עתיק אסתלעמו מן חמר טעו מן עתיק אתפניאו בתר מיכל בסים טעו דיניא :
ארי כל פתוריהון מלן מיכל מגעל ומשקץ לית להון אתר דינקי מן אונס : למן 8
אתיהיבת אוריתא ומן אתפקד למסבר חוכמא הלא לבית ישראל דרחימין מכל 9
עממיא וחביבין מכל מלכותא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniam civitas quæ erat munita, ſola manebit, & erit inſtabilis relicta quaſi deſertũ : illam expugnabunt juſti, & diripient ſubſt & conſument exercitũ ejus ne ultrà creſcant. *Diminuetur* exerc confundentur in operibus ſuis, & conterentur: mulieres venientes deorum ſuorum, docebunt eos, quoniam non eſt populus ſapiens non miſerebitur eorum qui fecit eos; & qui creavit eos, non parc erit in tempore illo, projicientur interfecti coram Dño à ripa flum phratis, uſque ad torrentem Ægypti ; & vos applicabimini unus filii Iſrael. Et erit in tempore illo, clangetur in tuba magna, & captivi ducti ſunt in terrã Aſſyriæ, & qui tranſmigraverunt in ter pti, & adorabunt coram Domino in monte ſancto in Hieruſalem.

CAP. XXVIII.

VÆ ei qui dat coronam ſuperbo & inſipienti principi Iſrael mitram impiis domus ſanctuarii laudis ejus, qui erant in capite guiſſimæ confracti à vino. Ecce *plagæ terribiles & fortes* ven Dñi: ſicut impet⁹ grandinis, ſicut turbo venti, ſicut impetus aqu um inundantium, *ſic* venient contra eos populi, & transferent ra ſua, in terram aliam, propter peccata quæ ſunt in manib⁹ eor conculcabitur corona ſuperbiæ inſipientis principis Iſrael. Qu rit mitram impiis domus ſanctuarii laudabilis ejus, quæ eſt in ve pinguiſſimæ; erit ſicut præcox ficus ante æſtatẽ: quã quicunque deglutiet; cùm ſit in manu ſua. In tempore illo erit Chriſtus Dñi in coronam gaudii, & in diadema laudis reſiduo populi ſui. In ritatis *judicii* habitantib⁹ in *domo* judicii, ut judicent judiciũ victoriã egredientib⁹ ad bellum, & ut reducat eos in pacem in Hi quoque vino inebriati ſunt, & vino veteri conſopiti ſunt ſcriba inebriati ſunt vino veteri: præcipitati ſunt mero, errav veteri; declinaverunt ad cibũ ſuavẽ; erraverunt judices ej⁹ Quon menſæ eorũ plenæ ſunt cibo inquinato & ſordido : neque eſt mundus ſit à rapina. Cui data eſt Lex? & cui mandatum eſt ut in pientiam ? Nonne domui Iſrael quæ dilecta eſt ſuper omnes po amabilis ſuper omnia regna ?

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܡܛܠ ܕܩܪܝܬܐ ܥܫܝܢܬܐ . ܒܠܚܘܕܝܗ ܬܬܚܪܒ ܘܬܫܬܒܩ. ܘܬܚܪܒ ܐܪܥܐ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ. 10
ܬܡܢ ܢܪܥܐ ܥܓܠܐ. ܘܬܡܢ ܢܪܥܐ ܘܢܣܝܦ ܐܪܥܝܬܗ. * ܒܡܝܒܫ ܚܨܕܐ. ܢܬܬܒܪܢ ܢܫܐ ܕܐܬܝܢ 11
ܡܢܗܪܘ ܠܗ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܥܡܐ ܡܣܬܟܠܢܐ. ܡܛܠܗܢܐ ܠܐ ܢܪܚܡ ܥܠܘܗܝ ܥܒܘܕܗ.
ܘܓܒܘܠܗ ܠܐ ܢܚܘܣ ܥܠܘܗܝ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ . ܢܚܒܛ ܡܪܝܐ ܡܢ 12
ܫܒܠܐ ܕܢܗܪܐ . ܥܕܡܐ ܠܢܚܠܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܢܬܘܢ ܬܬܠܩܛܘܢ ܚܕ ܠܘܬ ܚܕ ܒܢܝ
ܐܝܣܪܝܠ : * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ . ܢܬܩܥ ܒܫܝܦܘܪܐ ܪܒܐ. ܘܢܐܬܘܢ ܐܒܝܕܐ ܕܒܐܪܥܐ 13
ܕܐܬܘܪ. ܘܕܡܒܕܪܝܢ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܢܣܓܕܘܢ ܠܡܪܝܐ ܒܛܘܪܐ : ܩܕܝܫܗ
ܩܕܝܫܐ ܒܐܘܪܫܠܡ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܚ *

* ܘܝ ܠܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܗܪܐ ܕܪܘܝܐ ܕܐܦܪܝܡ . ܘܠܟܠܝܠܐ ܕܡܬܒܣܪܐ ܚܝܠܐ ܕܫܘܒܚܗ ܕܥܠ ܪܝܫ ܢܚܠܐ 1
ܕܫܡܝܢܐ. ܕܫܛܝܢ ܒܚܡܪܐ. * ܗܐ ܚܝܠܐ ܘܥܘܫܢܐ ܕܡܪܝܐ . ܐܝܟ ܙܪܝܦܐ ܕܒܪܕܐ ܘܐܝܟ 2
ܥܠܥܠܐ ܕܬܒܪܐ. ܘܐܝܟ ܙܪܝܦܐ ܕܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܕܫܛܦܝܢ. * ܢܢܝܚ ܠܐܪܥܐ ܒܐܝܕܗ. ܘܒܪܓܠܐ 3
ܢܬܕܝܫ ܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܗܪܐ ܕܪܘܝܐ ܕܐܦܪܝܡ. * ܘܢܗܘܐ ܚܒܠܐ ܕܡܬܒܣܪܐ. ܚܝܠܐ ܕܫܘܒܚܗ ܕܥܠ ܪܝܫ ܢܚܠܐ 4
ܕܫܡܝܢܐ. ܐܝܟ ܒܟܘܪܐ ܕܩܕܡ ܩܝܛܐ. ܕܡܐ ܕܚܙܝܗ ܡܢ ܕܚܙܐ ܠܗ . ܘܥܕ ܗܘ ܒܐܝܕܗ ܒܠܥ
ܠܗ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ . ܢܗܘܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܟܠܝܠܐ ܕܚܝܠܐ. ܘܠܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ ܠܫܪܟܐ 5
ܕܥܡܗ. * ܠܪܘܚܐ ܕܕܝܢܐ. ܠܡܢ ܕܝܬܒ ܥܠ ܕܝܢܐ ܘܥܠ ܓܢܒܪܘܬܐ. * ܕܡܗܦܟܝܢ ܩܪܒܐ ܡܢ 6 7
ܬܪܥܐ. ܐܦ ܗܢܘܢ ܒܚܡܪܐ ܛܥܘ. ܘܒܫܟܪܐ ܛܥܘ. ܟܗܢܐ ܘܢܒܝܐ ܛܥܘ ܒܫܟܪܐ. ܐܬܒܠܥܘ ܡܢ
ܚܡܪܐ. ܙܥܘ ܡܢ ܫܟܪܐ. ܛܥܘ ܒܪܘܝܘܬܐ. ܐܣܛܪܗܒܘ. * ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܦܬܘܪܐ 8
ܐܬܡܠܝܘ ܬܝܘܒܐ ܘܨܐܬܐ ܡܢ ܕܠܐ ܐܬܪܐ. * ܠܡܢ ܢܠܦ ܝܕܥܬܐ. ܘܠܡܢ ܢܣܒܪ ܫܡܥܬܐ. 9
ܠܡܫܠܝܢ ܡܢ ܚܠܒܐ. ܘܠܦܪܝܫܝܢ ܡܢ ܬܕܝܐ.

* Nam ſola civitas munita deſtruetur & derelinquetur, & deſolabitur terra quaſi deſertū : ibi paſcet vitulus, ibi inquam paſcet, & abſumet gramina ejus. 10 Areſcente meſſe frangentur mulieres venientes ad lumen afferendum ei. Quia populus eſt minimè prudens ; ideo non miſerebitur ejus conditor ipſius, neque plaſmator ejus clementiâ utetur erga ipſum. 11 Sed continget eo die, ut excutiat Dominus ab ariſta fluminis uſque ad torrentem Ægypti, & vos filii Iſrael, *ut ſpicæ* colligemini alter penes alterum. 12 Continget eo die, ut clangatur buccina magna, & veniant qui perierant in terra Ægypti, quique diſperſi fuerant in terram Aſſyriæ, & in terra Domini Dominum adorent, in monte ſancto ejus, in Jeruſalem. 13

CAP. XXVIII.

VÆ diademati ſuperbo Aphremi temulenti, & corollæ infami, fortitudini gloriæ ipſius quæ eſt in capite vallis pinguium, ſtupidis vino. 1 Ecce fortitudo & robur Domini velut nimbus grandinis, ceu turbo confringens, & velut imber aquarum multarum vaſtantium. 2 Seda terram manu tuâ, ut pede conculcetur 3 diadema ſuperbum Aphremi temulenti ; Et 4 infamis illa corolla, robur ſuperbiæ ejus quæ eſt in capite vallis pinguium, ſit veluti fructus ante tempus æſtivum præcox, quem ubi videt, quicunque viderit eum, dum adhuc eſt in manu ſua, deglutit. In die illo erit Dominus potens pro diademate fortitudinis & corollâ glorioſâ, reliquo populo ſuo : 5 *Et* pro ſpiritu 6 judicii, ei quæ præſidet judicio & fortitudini. Qui bellum avertunt à porta, etiam ipſi ob 7 vinum erraverunt, & ob ſiceram erraverunt : ſacerdotes & prophetæ erraverunt ob ſicerā, obruti ſunt vino, vacillant propter ſiceram, errant præ ebrietate, intemperanter comedunt. Omnes enim menſæ repletæ ſunt vomitu & ſtercore præ loci penuria. 8 Quem doceret ſapientiam, 9 & cujus aures imbueret intelligentiâ ? depulſos à lacte, avulſos ab uberibus.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* القطيع الساكن يكون مسترخيا مثل قطيع متروك * ويكون للرعي زمنا كثيرا * وهناك 10
يستريحون * وبعد زمان لا يكون فيها كل حصن من اجل انها تجف * ايتها النسوة الاتيات 11
من المنظر تعالين * لان الشعب ليس له فهم * لاجل هذا لا يتراف عليهم صانعهم * ولا يرحمهم
جابلهم * ويكون في ذلك اليوم يسد الرب من خليج النهر الى انف كورون * وانتم اجمعوا بني 12
اسرائيل كل واحد واحد * ويكون في ذلك اليوم يبوقون بالبوق العظيم * ويأتون الهالكون في 13
بلد الموصليين والهالكون بمصر ويسجدون للرب على جبل المقدس باورشليم *

* الفصل الثامن والعشرون *

* الاصحاح الثالث عشر *

* الويل لاكليل الكبرياء يا اجراء افرام * الزهر البهية التي سقطت من الشرف على راس الجبل 1
السمين * يا سكارى بغير خمر * ها القوي والصعب غضب الرب مثل برد نازل وليس له وقاية 2
بعسف ينزل سريعا مثل كثر ماء كثير تجر بلدة * في الارض يضع نياحا * ويديه 3
ورجليه يداس اكليل الكبرياء يا اجراء افرام * وتكون الزهر الساقطة من رجاء المجد على 4
طرف الجبل المرتفع * مثل سابق التين الذي يبطن من قبل ان يتناوله بيده يريد ان
يبتلعه * في ذلك اليوم يكون رب الجنود الاكليل المضفور لرجاء مجد شعبي المبقى بمصر 5
* ويبقون بروح محاكمة على محاكمة * ويمنع القوة ان تقتل * لان هؤلاء هم ضالين 6 7
بالخمر * ضلوا لاجل المسكر الكاهن والنبي بهتوا لاجل الخمر * تزلزلوا من سكر المسكر * ضلوا
عني وهم * اللعنة تاكل هذه المشورة لان هذه المشورة من اجل الشره * لمن اخبرنا 8 9
سرورا * ولمن اخبرنا خيرا ايها المفطومون من اللبن المبعدون من الثدي *

* *Grex ſub tecto habitans evadet fluxus, tanquam grex derelictus ; cedétque in paſcua longo tempore, & ibi recubabunt : & aliquo poſt tempore nulla remanebit in ea viriditas, quippequæ areſcet.* 10 *Heus mulieres è ſpectaculo venientes, accedite: nam populus iſte caret intellectu : propterea non miſereſcet eorum conditor ipſorum, neque miſerebitur eorum qui finxit illos.* 11 *Erit autem eo die, ut occludat Dominus à brachio fluminis uſque ad promontorium Choronis : vos autem colligite filios Iſrael ſigillatim.* 12 *Eritque eodem die, ut cùm clanxerint tubâ magnâ, veniant pereuntes in terra Aſſyriorum & pereuntes in Ægypto, adorentque Dominum ſuper montem illum ſanctum in Jeruſalem.* 13

CAP. XXVIII.

Textus decimus tertius.

V*Æ coronæ faſtûs, O mercenarii Aphremi, flos decorus qui de ſublimitate decidit ſuper cacumen montis pinguis, O ebrii ſine vino.* 1 *Ecce vehemens & ſevera illa Domini ira, ceu grando ruens contra quam nullum eſt tegumentum, cum violentia citò decidet velut copia aquarum multarum regionem aliquam abripientium.* 2 *In terra componet quietem, & manibus ac pedibus ejus conculcabitur corona faſtûs, O mercenarii Aphremi :* 3 *Et flos de ſpe gloriæ decidens ſuper latus montis excelſi, erit veluti ficus præcoces quas cùm videt quiſpiam, antequam eas manu decerpat, deglutire vellet.* 4 *In illa die Dominus exercituum qui eſt corona contexta, erit in ſpem gloriæ populi mei qui reſiduus eſt in Ægypto.* 5 *Remanebunt autem in ſpiritu jurgii ſuper jurgium : & impediet fortitudinem quia occidat.* 6 *Nam iſti ſunt in vino perditi, erraverunt propter potum inebriantem : tam ſacerdos quàm propheta obſtupuerunt propter vinum, titubârunt ex ebrietate potûs inebriantis, ipſi quoque erraverunt à me.* 7 *Maledictio devorabit hujuſmodi conſilium, quia conſilium hoc de ingluvie eſt.* 8 *Cuinam indicaremus lætitiam, & cuinam indicaremus bonum O lacte abdicati, ab ubere disjuncti ?* 9

ישעיה: כח

linea,lineam ad lineã,præceptum ad præceptum ,præceptũ ad præceptũ Nam

10 כִּי צַו לָצָו צַו לָצָו קַו לָקָו קַו

lingua in & ,labii blæſitatibus in Quia .ibi parum ibi parum ,lineã ad

11 לָקָו זְעֵיר שָׁם זְעֵיר שָׁם׃ כִּי בְּלַעֲגֵי שָׂפָה וּבְלָשׁוֹן

Hæc :eos ad dixit Quos .iſtum populum ad loquetur altera

12 אַחֶרֶת יְדַבֵּר אֶל־הָעָם הַזֶּה׃ אֲשֶׁר ׀ אָמַר אֲלֵיהֶם זֹאת

.audire noluerunt & :requies hæc & ,laſſo præſtate requiem ,requies

הַמְּנוּחָה הָנִיחוּ לֶעָיֵף וְזֹאת הַמַּרְגֵּעָה וְלֹא אָבוּא שְׁמוֹעַ׃

,præceptũ ad præceptũ,præceptũ ad præceptum,Domini verbum eis erit Et

13 וְהָיָה לָהֶם דְּבַר־יְהוָה צַו לָצָו צַו לָצָו

corruant & vadant ut :ibi parum ,ibi parum,lineã ad lineã,lineã ad lineã

קַו לָקָו קַו לָקָו זְעֵיר שָׁם זְעֵיר שָׁם לְמַעַן יֵלְכוּ וְכָשְׁלוּ

verbum audite Ideo.capiantur &,illaqueentur &,conterantur &,retrorſum

14 אָחוֹר וְנִשְׁבָּרוּ וְנוֹקְשׁוּ וְנִלְכָּדוּ׃ לָכֵן שִׁמְעוּ דְבַר־

Nam .Jeruſalaim in qui ,hujus populi dominatores,irriſionis viri Domini

15 יְהוָה אַנְשֵׁי לָצוֹן מֹשְׁלֵי הָעָם הַזֶּה אֲשֶׁר בִּירוּשָׁלִָם׃ כִּי

:viſionem fecim⁹ ſepulchro cum &,morte cum fœdus Percuſſimus :dixiſtis

אֲמַרְתֶּם כָּרַתְנוּ בְרִית אֶת־מָוֶת וְעִם־שְׁאוֹל עָשִׂינוּ חֹזֶה

mendaciũ poſuim⁹ quia;nobis veniet non tranſierit cùm inundans flagellũ

שִׁיט שׁוֹטֵף כִּי־עָבַר לֹא יְבוֹאֵנוּ כִּי שַׂמְנוּ כָזָב

:Domin⁹ Domin⁹ dixit ſic Idcirco.ſumus occultati falſitate in &,noſtrã ſpem

16 מַחְסֵנוּ וּבַשֶּׁקֶר נִסְתָּרְנוּ׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה

fundamenti ,precii anguli ,arcis lapidis ,lapidis Sijon in fundator ego Ecce

הִנְנִי יִסַּד בְּצִיּוֹן אָבֶן אֶבֶן בֹּחַן פִּנַּת יִקְרַת מוּסָד

juſtitiam & ,lineæ judicium ponam Et .feſtinabit non ,Credens ,fundati

17 מוּסָּד הַמַּאֲמִין לֹא יָחִישׁ׃ וְשַׂמְתִּי מִשְׁפָּט לְקָו וּצְדָקָה

aquæ latibulum & ,mendacii ſpem grando verret & ,perpendiculum ad

לְמִשְׁקָלֶת וְיָעָה בָרָד מַחְסֵה כָזָב וְסֵתֶר מַיִם

cum veſtra viſio & ,morte cum veſtrum fœdus abolebitur Et .inundabunt

18 יִשְׁטֹפוּ׃ וְכֻפַּר בְּרִיתְכֶם אֶת־מָוֶת וְחָזוּתְכֶם אֶת־

ei eritis & ,tranſierit cùm inundanti Flagello .ſtabit non ſepulchro

שְׁאוֹל לֹא תָקוּם שׁוֹט שׁוֹטֵף כִּי יַעֲבֹר וִהְיִיתֶם לוֹ

mane in mane in quia ,vos tollet ipſum tranſire tẽpore A.conculcationẽ in

19 לְמִרְמָס׃ מִדֵּי עָבְרוֹ יִקַּח אֶתְכֶם כִּי־בַבֹּקֶר בַּבֹּקֶר

.auditum intelligere commotio tantum erit Et .nocte in & die in ,tranſibit

יַעֲבֹר בַּיּוֹם וּבַלָּיְלָה וְהָיָה רַק־זְוָעָה הָבִין שְׁמוּעָה׃

,eſt anguſtum operimentum & :ſe extendere ab ſtratum eſt brevius Quia

20 כִּי־קָצַר הַמַּצָּע מֵהִשְׂתָּרֵעַ וְהַמַּסֵּכָה צָרָה

valle ſicut ,Dñs ſurget Peraſim monte ſicut Quia .ſe colligere ſecundùm

21 כְּהִתְכַּנֵּס׃ כִּי כְהַר־פְּרָצִים יָקוּם יְהוָה כְּעֵמֶק

:ejus opus extraneum ,ſuum opus faciendum ad ,iraſcetur Ghibhon in

בְּגִבְעוֹן יִרְגָּז לַעֲשׂוֹת מַעֲשֵׂהוּ זָר מַעֲשֵׂהוּ

,vos deludatis ne nunc Et ejus operatio extranea :ſuã operationẽ operandum ad &

22 וְלַעֲבֹד עֲבֹדָתוֹ נָכְרִיָּה עֲבֹדָתוֹ׃ וְעַתָּה אַל־תִּתְלוֹצָצוּ

deciſam & conſumptionem quia ,veſtra vincula fortificentur forte ne

פֶּן־יֶחְזְקוּ מוֹסְרֵיכֶם כִּי־כָלָה וְנֶחֱרָצָה

.terram omnem ſuper exercituum Domino Domino à audivi

שָׁמַעְתִּי מֵאֵת אֲדֹנָי יְהוִה צְבָאוֹת עַל־כָּל־הָאָרֶץ׃

.meum eloquium audite & attendite :meã vocẽ audite &,percipite Aurib⁹

23 הַאֲזִינוּ וְשִׁמְעוּ קוֹלִי הַקְשִׁיבוּ וְשִׁמְעוּ אִמְרָתִי׃

Verſio VUL. LAT.

10 Quia manda remanda, manda remanda, expecta reexpecta, expecta reexpecta, modicũ ibi, 11 modicũ ibi. In loquela enim labii, & linguâ alterâ loquetur 12 ad populũ iſtũ. Cui dixit: Hæc eſt requies mea, reficite laſſũ, & hoc eſt meũ refrigeriũ: & no13luerũt audire. Et erit eis verbũ Dñi; Manda remandã, manda remanda, expecta reexpecta, expecta reexpecta, modicũ ibi, modicũ ibi: ut vadant, & cadãt retrorſũ, & conterantur, & il14laqueentur, & capiantur. Propter hoc audite verbũ Dñi viri illuſores, qui dominamini ſup populũ meũ, qui eſt in Jeruſa15lem. Dixiſtis enim; Percuſſim⁹ fœd⁹ cum morte, & cum inferno fecim⁹ pactũ. Flagellũ inundans cùm tranſierit, non veniet ſup nos: quia poſuim⁹ mendaciũ ſpem noſtrã, & mendacio 16 protecti ſum⁹. Idcircò hæc dicit Dñs De⁹; Ecce ego mittã in fundamentis Sion lapidẽ, lapidem probatũ, angularẽ, pretioſũ, in fundamento fundatũ: qui 17 crediderit, non feſtinet. Et ponam in pondere judiciũ, & juſtitiã in menſura: & ſubvertet grando ſpem mendacii: & pro18tectionẽ aquæ inundabunt. Et delebitur fœdus veſtrum cum morte, & pactũ veſtrũ cum inferno non ſtabit: flagellũ inundans cùm tranſierit, eritis ei in 19 conculcationẽ. Quandocumq; ptranſierit, tollet vos: quoniã manè diluculò pertranſibit in die & in nocte, & tantũmodò ſola vexatio intellectum dabit 20 auditui. Coanguſtatũ eſt enim ſtratum, ita ut alter decidat: & pallium breve utrumque ope21rire non poteſt. Sicut enim in monte diviſionum ſtabit Dñs: ſicut in valle, quæ eſt in Gabaon, iraſcetur: ut faciat opus ſuum, alienum opus ejus: ut operetur opus ſuum, peregri22num eſt opus ejus ab eo. Et nunc nolite illudere, ne fortè conſtringantur vincula veſtra, conſummationem enim & ab23breviationem audivi à Domino Deo exercituum ſuper univerſam terram. Auribus percipite,& audite vocem meam, attendite, & audite eloquium meum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Θλῖψιν ἐπὶ θλῖψιν προσδέχου, ἐλπίδα ἐπ᾽ ἐλπίδι, ἔτι μικρὸν ἔτι μικρόν, 11 Διὰ φαυλισμὸν χειλέων, διὰ γλώσσης ἑτέρας, ὅτι λαλήσουσι τῷ λαῷ τούτῳ, 12 Λέγοντες (λ) αὐτοῖς, Τοῦτο τὸ ἀνάπαυμα τῷ πεινῶντι, καὶ τοῦτο τὸ σύντριμμα· καὶ οὐκ ἠθέλησαν ἀκούειν. 13 Καὶ ἔσται αὐτοῖς τὸ λόγιον (μ) τοῦ θεοῦ, Θλῖψις ἐπὶ θλῖψιν, ἐλπὶς ἐπ᾽ ἐλπίδι, ἔτι μικρὸν ἔτι μικρόν, ἵνα πορεύσωσι καὶ πέσωσιν (ν) ὀπίσω, (ξ) καὶ συντριβήσονται, καὶ κινδυνεύσουσι, καὶ ἁλώσονται. 14 Διὰ τοῦτο ἀκούσατε λόγον κυρίου ἄνδρες τεθλιμμένοι, (ο) καὶ οἱ ἄρχοντες τοῦ λαοῦ (π) τούτου τοῦ ἐν Ἱερουσαλήμ. 15 Ὅτι εἴπατε, Ἐποιήσαμεν διαθήκην μετὰ τοῦ ᾅδου, καὶ μετὰ τοῦ θανάτου συνθήκας· καταιγὶς φερομένη ἐὰν παρέλθῃ, οὐ μὴ ἔλθῃ (ρ) ἐφ᾽ ἡμᾶς· ἐθήκαμεν ψεῦδος τὴν ἐλπίδα ἡμῶν, 16 καὶ τῷ ψεύδει σκεπασθησόμεθα. Διὰ τοῦτο (σ) οὕτω λέγει κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐμβάλλω εἰς τὰ θεμέλια Σιὼν λίθον πολυτελῆ, ἐκλεκτὸν, ἀκρογωνιαῖον, ἔντιμον, εἰς τὰ θεμέλια αὐτῆς, καὶ ὁ πιστεύων (τ) οὐ μὴ κατ17αισχυνθῇ. Καὶ θήσω κρίσιν εἰς ἐλπίδα, ἡ δὲ ἐλεημοσύνη μου εἰς σταθμοὺς, καὶ οἱ πεποιθότες μάτην ψεύδει· ὅτι οὐ μὴ παρέλθῃ ὑμᾶς 18 καταιγίς. Μὴ καὶ ἀφέλῃ ὑμῶν τὴν διαθήκην τοῦ θανάτου, καὶ ἡ ἐλπὶς ὑμῶν ἡ πρὸς τὸν ᾅδην οὐ μὴ ἐμμείνῃ. καταιγὶς φερομένη ἐὰν 19 ἐπέλθῃ, ἔσεσθε αὐτῇ εἰς καταπάτημα. Ὅταν παρέλθῃ, λήψεται ὑμᾶς, πρωῒ πρωῒ παρελεύσεται ἡμέρας, καὶ ἐν νυκτὶ ἔσται ἐλπὶς πο20νηρά. μάθετε ἀκούειν Στενοχωρούμενοι. Οὐ δυνάμεθα μάχεσθαι, αὐτοὶ δὲ ἀσθενοῦμεν τοῦ (υ) 21 ὑμᾶς συναχθῆναι. Ὥσπερ ὄρος ἀσεβῶν ἀναστήσεται (φ) κύριος, καὶ ἔσται ἐν τῇ φάραγγι Γαβαὼν, μετὰ θυμοῦ ποιήσει τὰ ἔργα αὐτοῦ, πικρίας ἔργον· ὁ δὲ θυμὸς αὐτοῦ ἀλλοτρίως χρήσεται, καὶ (χ) ἡ σαπρία αὐτοῦ ἀλλοτρία. 22 Καὶ ὑμεῖς μὴ εὐφρανθείητε, μηδὲ ἰσχυσάτωσαν ὑμῶν οἱ δεσμοί. διότι συντετελεσμένα καὶ (ψ) συντετμημένα πράγματα ἤκουσα παρὰ κυρίου σαβαὼθ, ἃ ποιήσει ἐπὶ πᾶσαν 23 τὴν γῆν. Ἐνωτίζεσθε καὶ (ω) ἀκούετε τῆς φωνῆς μου, προσέχετε καὶ ἀκούετε τοὺς λόγους μου.

MS. A. (λ) αὐτῷ, (μ) κυρίου τοῦ θεοῦ, (ν) εἰς τὰ ὀπίσω, (ξ) καὶ κιν
σουσι, καὶ συντριβήσονται, καὶ ἁλώσονται. (ο) καὶ ἄρχοντες (π) τούτου ἐ
(σ) οὕτως λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐμβαλῶ (τ) ἐν αὐτῷ οὐ μὴ (υ) ἡμ
ἔσται (χ) ἡ πικρία (ψ) συντετμημένα (ω) ἀκούσατε

Tribulationem ſuper tribula
expecta, ſpem ſuper ſpem: adhuc
parum, adhuc parum, Propter
ſubſannationem labiorum, propter lingu
alteram: quia loquentur popu
huic, Dicentes eis, Hæc eſt requie
eſurienti, & hæc contritio: & no
runt audire. Et erit eis ſermo D
Tribulatio ſuper tribulationẽ, ſpes
ſuper ſpẽ, adhuc parũ, adhuc parũ
ut (ν) vadant, & cadant retro
ſum; & conterentur, & pericli
buntur, & capientur. Propter
audite verbum Domini viri tri
lati, & principes populi hujus
eſt in Hieruſalem: Quia dixi
Fecimus teſtamentum cum infer
no, & cum morte pacta: tempeſtas
irruens ſi pertranſierit, non veniet
ſuper nos: poſuimus mendaciu
ſpem noſtram: & mendacio prote
gemur. Propterea ſic dicit Domi
nus Dominus; Ecce ego immittam
in fundamenta Sion lapidem pre
oſum, electum, ſummũ angulare
honorabilem in fundamenta
& (k) qui crediderit, non confun
detur. Et ponam judiciũ in ſpe
miſericordia autem mea in menſu
ra; & qui confiderunt fruſtra men
dacio: quoniam non præ
vos tempeſtas: Nonne etiã auf
teſtamentum veſtrũ mortis, &
veſtra, quæ erga infernum, n
permanebit. (l) Tempeſtas ru
ſupervenerit; eritis ei in concul
tionem: Cùm pertranſierit, a
vos: manè manè tranſibit, die
in nocte erit ſpes peſſima. Di
audire, Qui eſtis in tribulatione
Non poſſumus pugnare: ipſi au
infirmi ſumus, (m) ut vos congre
gemini. Sicut mons impiorum
ſurget Dominus, & erit in va
Gibaon: cum furore faciet
pera, amaritudinis opus: & i
ejus aliene utetur, & (n) pu
ejus aliena. Et vos nolite
neque confortentur vincula ve
Quia conſummatas & abbre
tas res audivi à Domino Sab
quas facturus eſt ſuper om
terram. Auribus percipite, & a
dite vocem meam: attendite
audite ſermones meos.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 אֲרֵי אִתְפַּקַדוּ לְמֶעְבַּד אוֹרַיְתָא וּמָא דְאִתְפַּקַדוּ לָא צְבִיאוּ לְמֶעְבַּד וְאִתְנַבִּיאוּ עֲלֵיהוֹן
נְבִיַּיָא דְאִם יְתוּבוּן יִשְׁתְּבֵק לְהוֹן וּלְמִלֵּי נְבִיַּיָא לָא קַבִּילוּ הֲלִיכוּ בִּרְעוּת נַפְשְׁהוֹן וְלָא
חֲמִידוּ לְמֶעְבַּד אוֹרַיְתִי סְבַרוּ דְיִתְקַיַּם לְהוֹן פּוּלְחַן טַעֲוָתָא וְלָא סְבַרוּ לְפוּלְחַן בֵּית
11 מַקְדְּשִׁי כִּזְעֵיר הֲוָה בְּעֵינֵיהוֹן בֵּית מַקְדְּשִׁי לְמִפְלַח תַּמָּן כִּזְעֵיר בְּעֵינֵיהוֹן שְׁכִנְתִּי תַמָּן׃ אֲרֵי
בְּשִׁנּוּי מַמְלַל וּבְלִישָׁן תּוֹלְעֲבָא הֲווֹ מְלַעֲגִין לָקֳבֵיל נְבִיַּיָא דְמִתְנַבַּן לְהוֹן עַמָּא הָדֵין׃
12 דַאֲמַרִין לְהוֹן נְבִיַּיָא דֵין בֵּית מַקְדְּשָׁא פְּלַחוּ בֵיהּ וְדָא אַחְסָנַת בֵּית נִיחָא וְלָא אֲבוֹ לְקַבָּלָא
13 אוּלְפָן׃ דֵין יְהֵי כָּס פּוּרְעָנוּתְהוֹן עַל דַעֲבַרוּ עַל פִּתְגָמָא דַייָ וְעַל דְאִתְפַּקַדוּ לְמֶעְבַּד אוֹרַיְתָא
וּמָא דְאִתְפַּקַדוּ לָא צְבִיאוּ לְמֶעְבַּד בְּכֵן יִתְמַסְרוּן לְעַמְמַיָא דְלָא יְדַעוּ אוֹרַיְתָא עַל דַהֲלִיכוּ
בִּרְעוּת נַפְשְׁהוֹן וְלָא חֲמִידוּ לְמֶעְבַּד רְעוּתִי בְּכֵן יְסַבְּרוּן לִסְעִיד בְּעִדָּן דְאֵיתֵי עֲלֵיהוֹן עָקָא
וְלָא יְהֵי לְהוֹן סְעִיד וּסְמִיךְ עַל דַהֲוָה זְעֵיר בְּעֵינֵיהוֹן בֵּית מַקְדְּשִׁי לְמִפְלַח תַּמָּן בְּכֵן
יִשְׁתָּאֲרוּן כִּזְעֵיר בֵּינֵי עַמְמַיָא דִיגְלוֹן לְתַמָּן בְּדִיל דִיהָכוּן וְיִתְקְלוּן לַאֲחוֹרָא וְיִתַּבְּרוּן
14 וְיִתְצַדוּן וְיִתְאַחֲדוּן׃ בְּכֵן קַבִּילוּ פִּתְגָמָא דַייָ גֻּבְרִין רַשִׁיעִין שִׁלְטוֹנֵי עַמָּא הָדֵין דִי בִירוּשְׁלֶם׃
15 אֲרֵי אֲמַרְתּוּן גְּזַרְנָא קְיָם עִם קְטוֹלָא וְעִם מְחַבְּלָא עֲבַדְנָא שְׁלָמָא מְחַת סָנְאָה אֲרֵי
תֵיתֵי עֲלֵיכוֹן כְּנַחַל מִגְבַּר דַאֲתוֹן אָמְרִין לָא תֵיתֵי עֲלָנָא אֲרֵי שַׁוִּינָא בְּכְדִיב רְחִצְנָנָא וּבְנִין
16 שִׁקְרִין אִטְּמַרְנָא׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא מְמַנֵּי בְּצִיּוֹן מֶלֶךְ מֶלֶךְ תַּקִּיף גִּבָּר
וְאֵימְתָן אַתְקְפִנֵּיהּ וְאַחְסְנִנֵּיהּ אֲמַר נְבִיָּא וְצַדִּיקַיָא דְהֵימִינוּ בְאִלֵּין בְּמֵיתֵי עָקָא לָא יִזְדַּעְזְעוּן׃
17 וְאֶשַּׁוֵּי דִינָא תְקִין דַאֲטַמַרְתּוּן כְּחוּט בִּנְיָנָא וּזְכוּתָא כְּאֶבֶן מַשְׁקוֹלְתָּא וְיִדְלַק רוּגְזִי בְּרוּחְצָן
18 כְּדִבֵיכוֹן וְעַל דַאֲטַמַרְתּוּן מִן קֳדָם מְעִיקָא יְתְכוֹן עַמְמַיָא יִגְלוֹן׃ וִיבַטֵּיל קְיָמְכוֹן דְעִם
קְטוֹלָא וּשְׁלָמְכוֹן דְעִם מְחַבְּלָא לָא יִתְקַיַּם מְחַת סָנְאָה אֲרֵי תֵיתֵי עֲלֵיכוֹן כְּנַחַל
19 מִגְבַּר וּתְהוֹן לְהוֹן לְדִישׁ׃ בִּזְמַן מֶעֱדוֹהִי יַגְלֵי יָתְכוֹן אֲרֵי בִּצְפַר בִּצְפַר יַעְדֵּי בִּימָם
20 וּבְלֵילֵי וִיהֵי עַד לָא יִמְטֵי זְמַן לְוָטָא תִּסְתַּכְּלוּן בְּמִלֵּי נְבִיַּיָא׃ אֲרֵי יִתְקְצַר חֵילֵיהוֹן
21 מִשַּׁעְבּוּד תַּקִּיף וְשָׁלְטוֹן מְעִיק יִסְגֵּי מַרְוָתָא׃ אֲרֵי כְּמָא דְזָעוּ טוּרַיָא כַּד אִתְגְּלֵי יְקָרָא
דַייָ בְּיוֹמֵי עֻזִּיָּה מַלְכָּא וּבְנִסִּין דַעֲבַד לִיהוֹשֻׁעַ בְּמֵישַׁר גִּבְעוֹן לְאִתְפָּרְעָא מֵרַשִׁיעַיָא
דַעֲבַרוּ עַל מֵימְרֵיהּ כֵּן יִתְגְּלֵי לְאִתְפָּרְעָא מִדְּעָבְדִין עוֹבָדִין נוּכְרָאִין עוֹבָדֵיהוֹן
22 וּמִדְּפָלְחִין פּוּלְחַן טַעֲוָתָא פּוּלְחָנְהוֹן׃ וּכְעַן לָא תִתְרַשְׁעוּן דִלְמָא יִתְקְפוּן יִסּוּרֵיכוֹן
23 אֲרֵי גְמִירָא וְשֵׁיצָאָה שְׁמָעִית מִן קֳדָם יְיָ אֱלֹהִים צְבָאוֹת עַל כָּל יָתְבֵי אַרְעָא׃ אֲמַר
נְבִיָּא אֲצִיתוּ וּשְׁמַעוּ קָלִי אַתְפְּנוּ וְקַבִּילוּ לְמֵימְרִי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniam ipſis mandatum eſt ut operarentur ſecundum legem, & no
runt facere quod mandatũ eſt eis. Prophetaverunt prophetæ ſuper eos
converterentur *remitteretur illis*, & noluerunt obedire verbis prophe
rum: ambulaverunt in voluntate animæ ſuæ, & non deſideraverunt op
ſecundùm legem meam: ſperaverunt quòd ſtaret eis cultus idolorum, &
attenderunt cultui domus ſanctuarii mei: quaſi perpuſilla res fuit in oc
eorum dom⁹ ſanctuarii mei, ut ſervirent ibi: quaſi parum fuit in ocu
rum eſſe majeſtatẽ meam ibi. Quoniam in mutatione loquelæ & in
ſubſannationis irridebant contra prophetas qui prophetabant popu
Quibus dicebant prophetæ: Hæc eſt domus ſanctuarii, ſervite in ea; &
eſt poſſeſſio in qua eſt requies; & noluerunt ſuſcipere diſciplinã. Hic
lix vindictæ eorum, pro eo quòd tranſgreſſi ſunt verbũ Dñi, & pro eo
mandatum eſt eis ut facerent ſecundum legem, & noluerunt facere
ceptum eſt eis. Propterea tradentur populis qui neſcierunt legem, eo
ambulaverunt in voluntate animæ ſuæ & non deſideraverunt facere
tatem meam. Propterea ſperabunt *auxilium* in tempore quo inducam
eos tribulationem, & non erit eis auxilium neq; ſuſtentaculũ. Quia
mus ſanctuarii mei modica in oculis eorũ ut ſervirent ibi, propterea
quentur pauci inter populos ad quos tranſmigraverunt, ut ambulent
ruant retrorſũ, et conterantur & capiantur, & comprehendantur. Pr
cà ſuſcipite verbũ Domini viri impii qui dominamini populo huic
in Hieruſalem. Dixiſtis enim: Pepigim⁹ pactum cum morte & cum
dente fecim⁹ pacem: plaga inimici cùm venerit ſuper vos, erit quaſi
inundans, de qua dixiſtis: Non veniet ſuper nos, quia poſuim⁹ in
ſpẽ noſtrã, & in fallaciis abſconditi ſum⁹. Propterea hæc dicit Dñs
ego conſtituam in Sion regẽ, regẽ fortem, potentem et terribilem
bo eum, & confortabo eum, dicit Propheta. Juſti autẽ qui crediderunt
cùm venerit tribulatio, non commovebuntur. Et ponam judicium
propter quod abſconditi eſtis, quaſi funiculũ ædificii, & juſtitiã qua
dẽ perpendiculi. Et ſuccendetur furor meus, propter fiduciã mendacii
veſtrorum: & pro eo quòd abſconditi eſtis à facie tribulationis tra
vos populi. Et irritũ fiet pactum veſtrũ, quod erat cum morte, & pax
quæ erat cum diſperdente, non ſtabit. Plaga inimici cum venerit ſup
erit quaſi torrens inundans, & eritis ei in conculcationẽ. In tempore
ſitus ſui tranſmigrare faciet vos, quoniam manè diluculò tranſibit
in nocte: & erit antequàm perveniat tempus maledictionis,
verba prophetarum. Abbreviata eſt enim virtus eorum, præ ſervi
ti; & dominium tribulantis multiplicabit ſubjectionem. Quia ſicut
ti ſunt montes, quando revelata eſt gloria Domini in diebus Oziæ
in miraculis quæ fecit Dominus cum Joſue in valle Gabaon,
meret ab impiis qui tranſgreſſi ſunt verbum ejus: ſic revelabitur
ſumat ab his qui operantur opera extranea, & colunt cultum
cultu ſuo. Nunc autem ne impie agatis, ne forte roborentur vincula veſtra: quia conſummationem & conſumptionem audivi à facie Do
citium, ſuper omnes habitatores terræ. Dicit propheta, Auſcultate & audite vocem meam: aſpicite & attendite verbis meis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܡܛܠ ܕܨܐܐ ܥܠ ܨܐܐ ܘܨܐܐ ܥܠ ܨܐܐ܂ ܘܬܘܟܐ ܥܠ ܬܘܟܐ ܘܬܘܟܐ ܥܠ ܬܘܟܐ܂
ܩܠܝܠ ܠܗܪܟܐ܂ ܘܩܠܝܠ ܠܬܡܢ܂ * ܡܛܠ ܕܒܡܡܠܠܐ ܥܡܝܩܐ܂ ܘܒܠܫܢܐ ܐܚܪܢܐ 11
ܡܡܠܠ ܐܢܐ ܥܡ ܥܡܐ ܗܢܐ܂ * ܕܐܡܪܬ ܠܗܘܢ܂ ܗܕܐ ܗܝ ܢܝܚܬܝ܂ ܐܢܝܚܘ 12
ܠܡܫܠܗܝܐ܂ ܘܗܕܐ ܗܝ ܢܝܚܬܐ܂ ܘܠܐ ܨܒܘ ܠܡܫܡܥ܂ * ܘܗܘܐ ܠܗܘܢ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ 13
ܨܐܐ ܥܠ ܨܐܐ܂ ܘܨܐܐ ܥܠ ܨܐܐ܂ ܘܬܘܟܐ ܥܠ ܬܘܟܐ܂ ܘܬܘܟܐ ܥܠ ܬܘܟܐ܂ ܩܠܝܠ
ܠܗܪܟܐ܂ ܘܩܠܝܠ ܠܬܡܢ܂ ܕܢܐܙܠܘܢ ܘܢܬܦܢܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ܂ ܘܢܬܬܒܪܘܢ܂
ܘܢܬܬܨܝܕܘܢ܂ ܘܢܬܐܚܕܘܢ܂ * ܡܛܠܗܢܐ ܫܡܥܘ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܓܒܪܐ ܡܒܙܚܢܐ 14
ܫܠܝܛܢܘܗܝ ܕܥܡܐ ܗܢܐ ܕܒܐܘܪܫܠܡ܂ * ܡܛܠ ܕܐܡܪܬܘܢ܂ ܓܙܪܢ ܩܝܡܐ 15
ܥܡ ܡܘܬܐ܂ ܘܥܡ ܫܝܘܠ ܥܒܕܢ ܫܘܬܦܘܬܐ܂ ܫܝܦܐ ܕܪܘܕܦܐ ܟܕ ܥܒܪ ܠܐ
ܢܐܬܐ ܥܠܝܢ܂ ܡܛܠ ܕܣܡܢ ܒܕܓܠܘܬܐ ܬܘܟܠܢ܂ ܘܒܫܘܩܪܐ ܐܬܛܫܝܢ܂
* ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܗܐ ܐܢܐ ܡܫܪܪ ܐܢܐ ܒܨܗܝܘܢ ܟܐܦܐ 16
ܟܐܦܐ ܒܚܝܪܬܐ܂ ܒܩܪܢܐ ܝܩܝܪܬܐ܂ ܪܝܫ ܫܘܪܐ ܕܫܬܐܣܬܐ܂ ܘܕܡܗܝܡܢ ܠܐ ܢܙܘܥ܂
* ܘܐܣܝܡ ܕܝܢܐ ܠܡܫܘܚܬܐ܂ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܠܡܬܩܠܐ܂ ܘܢܥܩܪ ܒܪܕܐ ܣܒܪܐ ܕܓܠܐ 17
ܘܡܥܫܢܝܬܐ ܢܬܕܒܪܘܢ ܡܝܐ܂ * ܘܢܫܬܪܐ ܩܝܡܟܘܢ ܕܥܡ 18
ܡܘܬܐ܂ ܘܫܘܬܦܘܬܟܘܢ ܕܥܡ ܫܝܘܠ ܠܐ ܬܩܘܡ܂ ܫܘܛܐ ܕܪܕܦܐ ܟܕ ܥܒܪ
ܬܗܘܘܢ ܠܗ ܠܕܝܫܐ܂ * ܘܒܙܒܢܐ ܕܥܒܪ ܢܕܒܪܟܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܒܨܦܪܐ ܒܨܦܪܐ 19
ܢܥܒܪ ܒܐܝܡܡܐ܂ ܘܒܠܠܝܐ ܢܗܘܐ ܙܘܥܐ܂ ܒܠܚܘܕ ܐܣܬܟܠ ܫܡܘܥܐ܂
* ܡܛܠ ܕܩܦܣܬ ܡܢܣܬܐ ܕܠܐ ܢܟܣܐ܂ ܘܫܬܝܐ [illegible] 20
[illegible] 21
[illegible]
[illegible] 22
[illegible]
[illegible]
[illegible] 23
[illegible]

10 Nam ſtercus ſuper ſtercore, & ſtercus ſuper ſtercore; vomitus ſuper vomitu; & vomitus ſuper vomitu; partìm hûc, partìm illûc.
11 Nam ſermone difficili, & linguâ peregrinâ alloqui *videor* hunc populum :
12 Quoniam dixi eis, Hoc eſt placitum meum, reficite laſſos, atque hæc eſt requies : ac noluerunt audire;
13 Imò fuit apud eos verbum Domini ſtercus ſuper ſtercore, & ſtercus ſuper ſtercore; vomitus ſuper vomitu, & vomitus ſuper vomitu; paululùm hûc, paululùm illûc : ut retrocedentes corruerent in tergum, & confringerentur, & irretiti caperentur.
14 Propterea audite ſermonem Domini, viri irriſores, principes hujus populi qui eſt in Jeruſalem.
15 Quia dicitis, Pepigimus fœdus cum morte, & cum fovea colloquium habuimus : extenſio inundationis vaſtantis, cùm tranſierit, non perveniet ad nos : quia collocavimus in mendacio fiduciam noſtram, & in falſitate perfugium noſtrum :
16 Ideò ſic dicit Dominus, Ecce ego firmaturus ſum in Sion lapidem, lapidem probatum, in angulo pretioſo, caput parietis fundamentalis : qui crediderit, non pavebit.
17 Et redigam judicium ad menſuram, & juſtitiam ad pondus; & excutiet grando ſpem fallacem, & perfugium abripient aquæ.
18 Fœdus veſtrum cum morte negabitur; & pactum veſtrum cum fovea, non ſubſiſtet : flagello vaſtanti, cùm tranſibit, eritis conculcationi;
19 Et quo tempore trāſibit, abripiet vos. In matutino enim, in matutino *inquam* tranſibit, in die; & in nocte erit commotio : tantummodo intellige auditor.
20 Nam telam decurtavit, quin operiat eum, & ſtamen redditum eſt anguſtum, nec ſufficit.
21 Nam in monte, in aditu ſtabit Dominus : ceu vallis Gebeonis iraſcetur : ad exequendum opera ſua; peregrina erunt opera ejus : & ad patrandum facinora ſua, inſolita erunt facinora ejus.
22 Quare ne rideatis, ne graviores fiant pœnæ veſtræ : ultimam enim deciſionem audivi à Domino potentiſſimo contra totam terram.
23 Aures præbete, & audite dicta mea.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10 * شدة على شدة انتظر * رجاء على رجاء * وايضا قليلا على قليل * لاجل سمعة السفاه بلسان
11 آخر * انهم يكلمون هذا الشعب * قايلين له * هذا النياح للشارب * وهذا الانكسار * ولم
12 يريدوا ان يسمعوا * ويكون لهم قول الرب الاله شدة على شدة * رجاء على رجاء * قليل
13 ايضا وقليل ايضا * حتى يذهبون ويسقطون الى ورايهم * ويصيبون وينكسرون ويهلكوا *
14 * من اجل هذا اسمعوا قول الرب ايها الرجال الكذبون * ورؤساء هذا الشعب الذي
15 بايروشليم * لانكم قلتم صنعنا عهدا مع الجحيم ومع الموت مواثيق * الزوبعة الواردة
اذا مرت لا تاتي علينا لانا وضعنا رجانا كذبا وسترنا بالكذب * لاجل هذا هكذا يقول
16 الرب الاله * ها انا اضع في اساسات صهيون حجرا كثير الثمن مختارا في راس الزاوية
17 مكرما في اساساتها * ومن يؤمن به لا يخزى * واضع حكما في الرجاء ورحمتي بالمقادير
18 والمتوكلون بالكذب باطلا انكم لا تمر بكم الزوبعة * ولا تنزع عهدكم مع الموت
19 فرجاوكم الذي مع الجحيم لا يثبت * اذ مرت تكونوا لها موطيا * واذا جازت باخذكم
لانها بالغداة بالغداة تجوز بكم نهارا * وفي الليل يكون الرجاء السوء * تعلموا ان تسمعوا
20 ايها المصيبون * انا لا نقدر ان نحارب * ونحن قد ضعفنا لنجتمع * مثل جبل المنافقين
21 يقوم * ويكون في وادي غاباون بغضب يصنع اعماله * اعمال مرار * وغضبه يستعمل
22 بغريبة * ومرارته غريبة * وانتم لا تفرحوا ولا تقووا رباطاتكم * من اجل اني سمعت من
23 رب الجيوش امورا مكملة ومحرومة يصنعها على كل الارض * انصتوا واسمعوا صوتي
اصغوا واسمعوا كلماتي *

10 *Afflictionem ſuper afflictionem expecto, ſpem ſuper ſpem, & pauculum etiam ſuper pauculum;*
11 *Propter blaſphemiam labiorum alienâ linguâ* prolatam : *Nam alloquuntur populum iſtum,*
12 *Dicentes ei; Hæc eſt quies bibacis, cùm hæc ſit conſternatio : & noluerunt audire.*
13 *Hic erit ſermo Domini* Dei *afflictio ſuper afflictionem, ſpes ſuper ſpem, breve etiam imò breviſſimum* tempus, *ut eant & cadant ſupini, vexentur & angantur, ac pereant.*
14 *Hac de re audite ſententiam Domini, heus viri mendaces & principes hujus populi qui eſt in Jeruſalem.*
15 *Quia dixiſtis, Pactum inivimus cum inferno, & cum morte fœdera; turbo veniens, cùm tranſierit, non veniet ſuper nos : ſiquidem mendacium ſtatuimus ſpem noſtram, & mendacio proteximus nos :*
16 *Propterea ſic dicit Dominus Deus, Ecce ego ponam in fundamentis Sionis lapidem ſummi pretii, electum, in capite anguli, venerandum in fundamentis ejus : & qui crediderit in eum, non erubeſcet.*
17 *Et ponam judicium in ſpe, & miſericordiam meam ad menſuras; ut qui in mendacio fruſtrà confiditis fore ut nequaquam tranſeat ſuper vos turbo,*
18 *Nec dirimat pactum veſtrum cum morte;* *ſpes veſtra quam in inferno* collocâſtis, *non ſubſiſtat : cùm advenerit* turbo, *ſitis illi ſcabellum;*
19 *Et cùm tranſierit, rapiat vos : nam in matutino, in matutino* inquam *tranſibit ſuper vos, interdiu; noctu verò erit ſpes improba. Diſcite auſcultare O miſeri.*
20 *Non enim pugnare poſſumus, & nos debiliores jam facti ſumus quàm ut congregemur.*
21 *Ut mons impiorum exurget* turbo, *& in valle Gabaonis cum furore exercebit opera ſua, opera amariſſima; & furore ſuo utetur inſolito modo, & amaritudo ejus erit extraordinaria.*
22 *Vos itaque ne indulgeatis lætitiæ, & ne graviora reddatis vincula veſtra : quoniam ego audivi à Domino exercituum res definitas & præciſas, quas facturus eſt ſuper univerſam terram.*
23 *Auſcultate & audite vocem meam, facite & acquieſcite verbis meis.*

ישעיה : כח

.occabit & , aperiet ? ſeminandum ad ,arans arabit die tota Nunquid
24 הכל היום יחרש החרש לזרע יפתח וישדד
,nigellam diſperget & ?ejus *facies* adæquaverit ſi Nonne ? ſuam humum
25 אדמתו : הלוא אם שוה פניה והפיץ קצח
,ſignatum hordeum & ,*princeps* triticum ponet & ,ſparget cyminum &
וכמן יזרק ושם חטה שורה ושערה נסמן
.eũ docebit ejus Deus,judicium ad illũ erudiet Et?ejus termino ſpeltam &
26 וכסמת גבלתו : ויסרו למשפט אלהיו יורנו :
cyminum ſuper plauſtri rota & ,nigella triturabitur tribula in non Quia
27 כי לא בחרוץ יודש קצח ואופן עגלה על־כמן
.baculo in cyminum.&,nigella excutietur virga in ſed : circundabitur
יוסב : כי במטה יחבט קצח וכמן בשבט :
:illum triturabit triturando perpetuum in non quia,comminuetur Panis
28 לחם יודק כי לא לנצח אדוש ידושנו
.eum comminuet non ejus dentibus & ,ejus plauſtri rotam conteret &
והמם גלגל עגלתו ופרשיו לא ידקנו :
, conſilium mirificavit : exivit exercituum Domino *cum* à hoc Etiam
29 גם־זאת מעם יהוה צבאות יצאה הפליא עצה
.*eſſentiam* magnificavit
הגדיל תושיה :

CAP. XXIX. כט

,annũ ſuper annum Addite.David manſit civitas Ariel Ariel Væ
1 הוי אריאל אריאל קרית חנה דוד ספו שנה על־שנה
; luctus & ,planctus erit & , Ariel coanguſtavi Et.*excervicabuntur agni*
2 חגים ינקפו : והציקותי לאריאל והיתה תאניה ואניה
coarctabo & : te contra *pila* caſtrametabor Et .Ariel ſicut mihi erit &
3 והיתה־לי כאריאל : וחניתי כדור עליך וצרתי
, te humiliabis Et .munitiones te contra ſtatuam & , *continuata* te *ſuper*
4 עליך מצב והקימתי עליך מצרת : ושפלת
erit & : tuum eloquium erit humile pulvere è & , loquêris terra de
מארץ תדברי ומעפר תשח אמרתך והיה
.garriet , tuum eloquium pulvere à & ,tua vox terra de pythonis ſicut
כאוב מארץ קולך ומעפר אמרתך תצפצף :
gluma ſicut & : tuorum *alienorum turba* tenuis pulvis ſicut erit Et
5 והיה כאבק דק המון זריך וכמץ
cum A .ſubitò *momentum in* erit & , *formidabilium turba* tranſiens
6 עבר המון עריצים והיה לפתע פתאם : מעם
, concuſſione in & , tonitruo in viſitabitur exercituum Domino
יהוה צבאות תפקד ברעם וברעש
.*comedentis* ignis flamma & ,tempeſtate & ,turbine : magna voce &
וקול גדול סופה וסערה ולהב אש אוכלה :
gentium omnium *turba* , nocturnæ viſionis ſomnium ſicut erit Et
7 והיה כחלום חזון לילה המון כל־הגוים
, *ejus munitionem* & ,eam *expugnantes* omnes & : Ariel contra *militantium*
הצבאים על־אריאל וכל־צביה ומצדתה
, eſuriens *ſomniabit* qui ſicut erit Et .eam afficientes anguſtiis &
8 והמציקים לה : והיה כאשר יחלם הרעב
quemadmodum &:ej⁹ anima erit vacua &,expergiſcetur &,*comedens* ecce &
והנה אוכל והקיץ וריקה נפשו וכאשר
,laſſus ecce & ,expergiſcetur & ,*bibens* ecce & , ſitiens *ſomniabit*
יחלם הצמא והנה שתה והקיץ והנה עיף
militantium , gentium omnium *turba* erit ſic : *appetens* ejus anima &
ונפשו שוקקה כן יהיה המון כל־הגוים הצבאים
,*ſunt vociferati* ,admiramini & ,eſtote Tardi .Sijon montem contra
9 על־הר ציון : התמהמהו ותמהו השתעשעו
.*Sicera* non & ,ſunt moti ; vino non & ſunt ebrii : *clamaverunt &*
ושעו שכרו ולא־יין נעו ולא שכר :

Verſio VUL. LAT.

24 Numquid totâ die arabit arans ut ſerat, proſcindet & ſarriet 25 humum ſuam? Nónne cùm adæquaverit faciem ejus, ſeret gith, & cyminum ſparget, & ponet triticum per ordinem, & hordeum, & milium, & vi-26 ciam in finibus ſuis? Et erudiet illum in judicio: Deus ſuus 27 docebit illum. Non enim in ſerris triturabitur gith, nec rota plauſtri ſuper cyminum circuibit: ſed in virga excutietur gith, & cyminum in baculo. 28 Panis autem comminuetur: verùm non in perpetuum triturans triturabit illum, neque vexabit eum rota plauſtri, nec ungulis ſuis comminuet eum. 29 Et hoc à Dño Deo exercituum exivit, ut mirabile faceret conſilium, & magnificaret juſtitiã.

CAP XXIX.

1 VÆ Ariel, Ariel civitas, quã expugnavit David: additus eſt annus ad annum: ſolennitates 2 evolutæ ſunt. Et circumvallabo Ariel, & erit triſtis & mœrens, & erit mihi quaſi Ariel. 3 Et circumdabo quaſi ſphæram in circuitu tuo, & jaciam contra te aggerem, & munimenta ponam in obſidionem tuam. 4 Humiliaberis, de terra loquêris, & de humo audietur eloquium tuum: & erit quaſi pythonis de terra vox tua; & de humo eloquium tuum muſſi-5 tabit. Et erit ſicut pulvis tenuis multitudo ventilantium te: & ſicut favilla pertranſiens multitudo eorum, qui con-6 tra te prævaluerunt: Eritque repentè confeſtim. A Domino exercituum viſitabitur in tonitruo, & commotione terræ, & voce magnâ turbinis & tempeſtatis, & flammæ ignis de-7 vorantis. Et erit ſicut ſomnium viſionis nocturnæ multitudo omnium gentium, quæ dimicaverunt contra Ariel, & omnes qui militaverunt, & obſederunt, & prævaluerunt 8 adverſùs eam. Et ſicut ſomniat eſuriens, et comedit, cùm autẽ fuerit expergefact⁹, vacua eſt anima ejus: et ſicut ſomniat ſitiens, et bibit, et poſtquàm fuerit expergefactus, laſſus adhuc ſitit, et anima ej⁹ vacua eſt: ſic erit multitudo omniũ gentiũ, quæ dimicaverunt contra 9 montẽ Sion. Obſtupeſcite et admiramini, fluctuate, et vacillate: inebriamini, et nõ à vino: movemini, et non ab ebrietate.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

24 Μὴ ὅλην τὴν ἡμέραν (α) ἀροτριάσει ὁ ἀροτριῶν; ἢ σπόρον προετοιμάσει, πρὶν
25 ἐργάσασθαι τὴν γῆν; (β) Οὐχ ὅταν ὁμαλίσῃ τὸ πρόσωπον αὐτῆς, τότε σπείρει μικρὸν
μελάνθιον (γ ἢ κύμινον, καὶ πάλιν σπείρει πυρὸν, καὶ κριθὴν, (δ) καὶ κέγχρον, καὶ ζέαν ἐν
26 τοῖς ὁρίοις σου; Καὶ παιδευθήσῃ κρίματι
27 θεοῦ σου, καὶ εὐφρανθήσῃ. Οὐ γὰρ μετὰ σκληρότητος καθαίρεται τὸ μελάνθιον, οὐδὲ
τροχὸς ἁμάξης περιάξει ἐπὶ τὸ κύμινον· ἀλλὰ ῥάβδῳ (ε) τινάσσεται τὸ μελάνθιον, τὸ δὲ
28 κύμινον Μετὰ ἄρτου βρωθήσεται. οὐ γὰρ εἰς τὸν αἰῶνα (ζ) ἐγώ εἰμι ὑμῖν ὀργισθήσομαι, οὐδὲ
29 φωνὴ τῆς πικρίας μου καταπατήσει ὑμᾶς. Καὶ ταῦτα παρὰ κυρίου Σαβαὼθ ἐξῆλθε τὰ
τέρατα· βουλεύσασθε, ὑψώσατε ματαίαν παράκλησιν.

MS.A. (α) μέλλει ὁ ἀροτριῶν ἀροτριᾷν; (β) Καὶ ὅταν ὁμαλίσῃ αὐτῆς
πρόσωπον, πρῶτον σπίρει (γ) καὶ κύμινον, καὶ πάλιν πυρὸν, (δ) καὶ ζέαν
(ε) ἐκτινάσσεται (ζ) ἐγὼ ὑμῖν

Nunquid totâ die arabit arans
aut ſementem præparabit
quàm operetur terram? Nonne
cùm adæquaverit faciem ejus
ſeminat parvum (γ) melanthium
aut cyminum, & rurſum ſeminat
triticum, & hordeum, & milium
& ſpeltam in finibus tuis? Et eru-
di eris judicio Dei tui, & læta-
ris. Non enim cum duritia munda-
tur melanthium, neque rota plau-
ſtri circuit ſuper cyminum: ſed vir-
gâ excutitur melanthium, cymi-
num autem Cum pane comedetur.
Neque enim in ſempiternum ego
dum iraſcar vobis: nec vox ama-
ritudinis meæ conculcabit vos.
hæc à Domino Sabaoth exivit
ſa portenta. Inite conſilium
tate vanam conſolationem.

ΚΕΦ. κθ'.

1 ΟΥαὶ (α) Ἀριὴλ πόλις, ἣν ἐπολέμησε
Δαυίδ. Συναγάγετε (β γεννήματα ἐνιαυτὸν
(γ) ἐπὶ ἐνιαυτὸν, (ϛ φάγεσθε, φάγεσθε γὰρ σὺν
2 Μωάβ, Ἐκθλίψω γὰρ Ἀριήλ· καὶ ἔσται αὐτῆς ἡ
3 ἰσχὺς καὶ ὁ πλοῦτος ἐμοί· Καὶ κυκλώσω ὡς Δαυὶδ
ἐπὶ σὲ, καὶ βαλῶ περὶ σὲ χάρακα, καὶ θήσω
4 (δ) περὶ σὲ πύργους, Καὶ ταπεινωθήσονται
(ε) εἰς τὴν γῆν οἱ λόγοι σου, καὶ εἰς τὴν γῆν οἱ
λόγοι σου δύσονται· καὶ (ζ) ἔσονται ὡς οἱ
φωνοῦντες ἐκ τῆς γῆς ἡ φωνή σου, καὶ πρὸς τὸ
5 ἔδαφος ἡ φωνή σου ἀσθενήσει. Καὶ ἔσται ὡς
κονιορτὸς ἀπὸ τροχοῦ ὁ πλοῦτος τῶν ἀσεβῶν,
καὶ ὡς χνοῦς φερόμενος (η) τὸ πλῆθος τῶν
καταδυναστευόντων σε, καὶ ἔσται ὡς στιγμὴ
6 Παραχρῆμα παρὰ κυρίου Σαβαώθ. ἐπισκοπὴ
γὰρ ἔσται μετὰ (θ) βροντῆς καὶ σεισμοῦ καὶ φωνῆς
μεγάλης, καταιγὶς φερομένη, καὶ φλὸξ
7 πυρὸς κατεσθίουσα. Καὶ ἔσται ὡς (ι) ἐνυπνιαζόμενος
καθ' ὕπνους νυκτὸς, ὁ πλοῦτος ἁπάντων
τῶν ἐθνῶν, ὅσοι ἐπεστράτευσαν (κ)
ἐπὶ Ἀριὴλ, καὶ πάντες οἱ (λ) στρατευόμενοι
ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ πάντες οἱ συνηγμένοι
8 ἐπ' αὐτὴν, (μ) καὶ οἱ θλίβοντες αὐτήν. Καὶ
ὡς οἱ ἐν τῷ ὕπνῳ πίνοντες καὶ ἔσθοντες, καὶ
ἐξαναστάντων, μάταιον (ν) τὸ ἐνύπνιον· καὶ
ὃν τρόπον ἐνυπνιάζεται ὁ διψῶν ὡς ὁ πίνων,
καὶ ἐξαναστὰς ἔτι διψᾷ, ἡ δὲ ψυχὴ αὐτοῦ εἰς
κενὸν ἤλπισεν· οὕτως ἔσται ὁ πλοῦτος (ξ) τῶν
ἐθνῶν πάντων, ὅσοι ἐπεστράτευσαν (ο) ἐπὶ
9 τὸ ὄρος Σιών. Ἐκλύθητε καὶ ἔκστητε, καὶ
κραιπαλήσατε οὐκ ἀπὸ σίκερα (π) οὐδὲ ἀπὸ
οἴνου,

MS.A. (α) πόλις Ἀριὴλ ἣν Δαυὶδ ἐπολέμησεν. (β) γεννήματα
ἔσθε γὰρ σὺν Μωάβ (δ) ἐπὶ σὲ (ε) οἱ λόγοι σου εἰς τὴν γῆν, καὶ εἰς (ζ)
ὡς στιγμὴ (θ) κραυγῆς (ι) ὁ ἐνυπνιαζόμενος ἐνύπνιον ὁ
πάντων, (κ) ἐπὶ Ἰσραὴλ, (λ) στρατευσάμενοι (μ) καὶ θλίβοντες
ἔσονται ὡς οἱ ἐν ὕπνῳ (ν) αὐτῶν τὸ ἐνύπνιον· (ξ) πάντων τῶν ἐθνῶν,
Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ τὸ (π) οὐδ'

CAP. XXIX.

VÆ Ariel (α) civitas, quam
expugnavit David. Congrega
nimina, annum ſuper annum
comedite: comedetis enim
Moab: Coanguſtabo enim A
erit fortitudo illius, et divitiæ
hi: Et circundabo, ſicut David
per te: & mittam vallum
cuitu tuo: & ponam per gyrum
turres: Et humiliabuntur
ram ſermones tui: & in
occident verba tua. Et (ζ)
ſicut loquentium de terra
& ad pavimentum vox tua
mabitur. Et erunt ſicut pulvis
rota, divitiæ impiorum; &
Lanugo, quæ rapitur, multitudo
primentium te: eritque, quaſi
ctus, Repentè à Domino Sa
Viſitatio enim erit cum
commotione, & voce magna
peſtas ruens, & flamma ignis
vorans. Et erunt, ſicut ſomni
per ſomnos noctu, divitiæ omni
gentium, quæ militaverunt
Ariel, & omnes, qui pugna
contra Hieruſalem, &
qui congregati ſunt ſuper
qui affligebant eam. Et
ſomno (d) bibunt, &
cùmque ſurrexerint,
ſomnium: & ſicut ſom
ſitit, quaſi bibens, &
xerit, adhuc ſitit, &
fruſtrà ſperavit: ſic
omnium gentium,
litaverunt contra
Diſſolvimini, &
crapulamini non à
vino:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

24 בכל עדן מתנבן נבייא לאלפא מאים יתפתחן אודני חיביא ויקבלון אולפן : הלא אם
25 ישוון בית ישראל אפיהון למעבד אוריתא ויתוב ויכניש יתהון מביני עממיא דאנון
מבדרין ביניהון הא כקצחא וככמונא דמזדריק ויקריב יתהון זרעין לשבטיהון הא כזרעי
26 חטין על ביר וסעורין על סוטנין וכונתין על תחומין : הא כל אלין אולפן דדין דידעון
27 די אלהא מחוי להון אורחא דתקנא די יהכון בה : ארי לא במורגי ברזלא מדרכין
קצחא וגלגלי עגלא על כמונא מחזרין ארי בחוטרא חבטין קצחא וכמונא במחבוטא :
28 ית עבורא מדרכין אף יתיה ארי לא לעלמא אדרכא ידרכוניה ומבלבל בגלגלי עגלתיה
29 ומפריש ית עבורא ומפרח ית דוקא : אף דא מן קדם יי צבאות נפקא דאתקין
עלמא במחשבת דעתיה רבתא אסגי עובדי בראשית בסגי חוכמתיה :

כט

1 וי מדבחא מדבחא דבני בקרתא די שרא בה דויד מן קדם כנישת משרין דמתכנשין
2 עלה שנא בשנא ברחגין יבטלון : ואעיק לקרתא דמדבחא בה ותהי צדיא וריקניא
ותהי מקפא קדמי דם קטילין כאקפות מדבחא דם נכסת קודשיא ביומא דחגא סחור
3 4 סחור : ואשרי עליך משרין ואבני עליך כרקום ואצבור עליך מליתא : ותמאכין מארעא
5 תמללין ומעפרא ינצפן מליך ויהי כאוב מארעא קליך ומעפרא מליך ינצפן : ויהי כאבק
6 דקיק המון מבודריך וכמוץ דעדי אתרגושת תקיפין ויהי בתכיף אתרגושא : מן קדם
7 יי צבאות תתפקיד ברעם ובזיע וקל סגי בעלעול ובריח ושלהובי אשא דמשיציא : ויהי
כמחלם הרהור לילי המון כל עממיא דמתכנשין על קרתא דמדבחא בה וכל
8 משריתהון וחיליהון ודמעיקין להון : ויהי כמא די יחלום כפנא והא אכיל ומתער
וחסירא נפשיה וכמה דיחלום צחיא והא שתי ומתער והא משלהי ונפשיה משלהיא
9 כן יהי המון כל עממיא דמתכנשין על טורא דציון : אתרפו ושהו אתמהו
ואשתממו רוו ולא מן חמר טעו ולא מן עתיק :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

In omni tempore prophetant prophetæ ad docendum, ſi fortè ape
aures peccatorum, & ſuſcipiant diſciplinam. Utique ſi poſuer
Iſrael faciem ſuam ut operentur ſecundùm legem; *convertet* & co
eos de medio populorũ in quibus diſperſi ſunt; ſicut gith, & ſicut
quæ diſperſa ſunt: & applicabit eos per cognationes tribuũ ſuarũ
minatur triticum in *agro inculto*, & hordeũ ad ſigna, & viciæ ad te
Ecce omnia hæc ſunt doctrina *judicii*, quam ſcire debent, quib⁹ De
nuntiat viam rectam in qua ambulent. Non enim in ferreo tribu
gith, nec rotæ plauſtri circunducuntur ſuper cyminũ, ſed in virg
tur gith & cyminum baculo excuſſorio. Frumentũ trituratur &
dem; nec tamen in æternũ triturantes triturabunt illud, ſed pe
rotis plauſtri ſui: & [*triturans*] ſeparabit frumentũ, & ventila
las. Hoc quoque à facie Dñi exercituũ exivit, qui aptavit ſecul
tatione ſcientiæ ſuæ magnæ; multiplicavit opera in principio
dine ſapientiæ ſuæ.

CAP. XXIX.

VÆ altare, altare quod conſtructum eſt in civitate in qua ma
vid, propter congregationem exercituum, qui congrega
per ſingulos annos: ſolemnitates abolebuntur. Et tribulabo
in qua eſt altare, & erit deſerta & vacua; & erit coram me
ſanguine occiſorum, ſicut circundatur altare ſanguine victimar
& [illegible]atarum in die ſolemnitatis per circuitum. Et caſtrame
contra te caſtra: & conſtruam ſuper te machinam, & congrega
te aggerem. Et humiliaberis, de terra loquêris, & de pulvere
quium tuum; & erit quaſi pythonis de terra vox tua, & de pu
tua muſſitabunt. Et erit ſicut favilla tenuis multitudo diſperge
ſicut ſtipula quæ tranſit, tumultus fortium; & erit repente tu
cie Dñi exercituum præcipietur in tonitruo, & in commotio
grandi, in tempeſtate & vento, & flamma ignis conſumentis
ſomnium cogitationis nocturnæ, multitudo omnium populor
gregati ſunt contra civitatem, in qua eſt altare; & omnia ca
exercitus eorum, & qui tribulant *eos*. Et erit ſicut ſomniat e
comedit, & cùm fuerit expergefactus, vacua eſt anima ejus, &
ſitiens, & ecce bibit; & expergiſcitur, & ecce laſſus eſt, anima
laſſa eſt: ſic erit multitudo omnium populorum, qui congre
montem Sion. Obſtupeſcite, admiramini, terremini, *cogitabundi* eſtote & admiramini, inebriamini, & non à vino; aberrate

Cap. XXIX.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕܠܡܐ ܝܘܡܐ ܟܠܗ ܢܕܒܪ ܐܟܪܐ ܠܡܙܪܥ. ܘܪܦܐ ܘܡܫܦܠ ܐܪܥܗ. * ܠܐ ܗܘܐ ܡܐ ܕܐܫܘܝ
ܐܦܘܗܝ. ܙܪܥ ܫܒܬܐ ܘܟܡܘܢܐ ܙܪܩ. ܘܙܪܥ ܚܛܐ ܘܣܥܪܐ ܘܕܘܚܢܐ ܒܬܚܘܡܘܗܝ. 25
* ܢܪܕܝܘܗܝ ܒܕܝܢܐ ܐܠܗܐ ܘܢܫܒܚܘܢܗ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܒܕܘܫܐ ܕܬܘܪܐ ܡܬܕܪܫ ܫܒܬܐ. 26
ܘܓܠܠ ܡܪܟܒܬܐ ܥܠ ܟܡܘܢܐ ܠܐ ܡܬܗܦܟ. ܡܛܠ ܕܒܚܘܛܪܐ ܡܬܚܒܛ ܫܒܬܐ ܘܟܡܘܢܐ 27
ܒܡܪܩܐ. * ܠܚܡܐ ܡܬܕܪܫ ܠܚܫܚܬܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܠܙܟܘ ܡܕܪܫܝܢ ܠܗ. ܐܘ
ܒܣܘܓܐܐ ܕܓܝܓܠܐ ܕܥܓܠܬܐ ܘܦܪܣܬܗܘܢ ܢܕܘܫܘܢܗ. * ܘܐܦ ܗܕܐ ܡܢ 28
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܢܦܩܬ. ܬܡܝܗܐ ܕܐܪܥܝܬܐ. ܐܘܪܒ ܐܪܥܝܬܐ. 29

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܛ *

* ܘܝ ܐܪܝܐܝܠ ܐܪܝܐܝܠ ܩܪܝܬܐ ܕܫܪܐ ܕܘܝܕ. ܐܘܣܦܘ ܫܢܬܐ ܥܠ ܫܢܬܐ. ܥܐܕܐ ܢܬܥܒܕܘܢ. 1
* ܘܐܥܝܩ ܠܐܪܝܐܝܠ. ܘܬܗܘܐ ܟܐܒܬܐ ܘܐܘܠܝܬܐ. ܘܬܗܘܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐܝܠ. * ܘܐܫܪܐ ܐܝܟ ܟܘܪܐ 2
ܥܠܝܟܝ. ܘܐܟܪܟ ܥܠܝܟܝ ܩܠܩܘܡܐ. ܘܐܩܝܡ ܥܠܝܟܝ ܡܛܪܬܐ. ܘܬܬܡܟܟܝܢ. * ܘܡܢ ܐܪܥܐ 3
ܬܡܠܠܝܢ. ܘܡܢ ܥܦܪܐ ܢܬܪܢܡܘܢ ܡܠܝܟܝ. ܘܢܫܬܡܥ ܩܠܟܝ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܐܝܟ ܐܒܘܐ. ܘܡܢ 4
ܥܦܪܐ ܢܨܘܨܘܢ ܡܠܝܟܝ. * ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܐܒܩܐ ܕܩܛܝܢ ܗܡܘܢܐ ܕܕܝܫܝܟܝ. ܘܐܝܟ ܥܘܪܐ ܕܥܒܪ 5
ܗܡܘܢܐ ܕܥܫܝܢܝܟܝ. * ܘܢܗܘܐ ܡܢ ܫܠܝܐ ܒܫܠܝ ܬܬܦܩܕܝܢ ܡܢ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܒܙܘܥܐ 6
ܒܪܥܡܐ. ܘܒܙܘܥܐ ܘܒܩܠܐ ܪܒܐ. ܘܒܥܠܥܠܐ ܘܒܣܥܘܪܐ. ܘܒܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ ܐܟܘܠܬܐ.
* ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܚܠܡܐ ܚܙܘܐ ܕܠܠܝܐ. ܗܡܘܢܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܡܬܚܦܛܝܢ ܥܠ ܨܗܝܘܢ.
ܘܟܠܗܘܢ ܚܝܠܘܬܗ ܘܟܢܫܗ ܕܡܥܝܩܝܢ ܠܗ. 7
* ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܕܚܠܡ ܟܦܢܐ ܕܐܟܠ. ܘܡܐ ܕܐܬܬܥܝܪ ܠܐܐ. ܘܣܦܝܩܐ ܢܦܫܗ. ܐܘ ܐܝܟ 8
ܕܚܠܡ ܨܗܝܐ ܕܫܬܐ. ܘܡܐ ܕܐܬܬܥܝܪ ܠܐܐ. ܘܣܦܝܩܐ ܢܦܫܗ. ܗܟܢܐ ܢܗܘܐ ܗܡܘܢܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܡܬܚܦܛܝܢ ܥܠ ܛܘܪܐ
ܕܨܗܝܘܢ. * ܐܬܕܡܪܘ ܘܬܗܘ. ܐܬܕܠܚܘ ܘܐܬܗܝܪܘ. ܐܬܪܘܝܘ ܠܐ ܡܢ ܚܡܪܐ. ܐܙܕܘܥܘ ܠܐ ܡܢ ܫܟܪܐ. 9

Num totâ die *jugum* ducit arator ad ferendū? 24 elevat ac deprimit tellurem suam? An non 25 poſtquàm æquavit ſolum ejus, ſpargit aniſum, an cyminum ſerit; vel frumentum, aut hordeum, aut panicum jacit in terminos ejus? Erudiet illum in judicio Deus, tamen laudabit 26 eum. Neque enim *taurorum* conculcatione triturat 27 aniſum, neq; circunvolvitur plauſtrū ſuper cyminum: ſed baculo excutitur aniſum, & cyminum ſtimulo. Frumentum trituratur 28 in uſum noſtrum: neque enim *quaſi* ad victoriam triturando trituramus illud, aut multitudine rotarum plauſtrorum & ungulis conterunt illud. Etiam hoc à Domino potenti prod- 29 iit: mira *hominis* induſtria auxit alimentum.

CAP. XXIX.

Heu Ariel Ariel civitas quam inhabitavit 1 David, adjice annum ad annum, ſolennitates celebrentur. Equidem vexabo Arielem ita ut 2 ſit gemitus & ululatus, fiàtque ſicut Ariel. Nam caſtrametabor tanquàm ſphæra adver- 3 ſùm te, palis anguſtabo te, & excubias contra te erigam: adeóque dejiciêris, Ut è pulve- 4 re loquaris, è pulvere reſonent verba tua, vox tua audietur è terra ſicut pythonis, & è pulvere pipiant verba tua. Erit enim ceu pulvis 5 tenuiſſimus multitudo conculcantium te, & velut gluma tranſiens, multitudo robuſtorum tuorum. Et ex improviſo mox à Domino po- 6 tenti viſitaberis terræmotibus, tonitruis, ingenti fragore, fulgure, turbine, & flammâ ignis comburentis. Eritq; velut ſomnium in viſione 7 nocturna, multitudo omnium gentium quæ inſoleſcent in Sionem, omniúmque exercituum & turbarum quæ divexant eam. Et qua- 8 lis eſt famelicus qui ſomniat ſe comedere, cùm autem evigilat, languidus eſt, & vacua anima ejus: vel qualis eſt ſitibundus qui in ſomno ſibi videtur bibere, cùm tamen evigilat, languidus eſt, & vacuâ anima ejus: talis erit multitudo cunctarum gentium inſoleſcentium in montem Sionem. Admiramini & 9 obſtupeſcite, conturbamini & ſtupete qui ebrii eſtis, ſed non vino; & qui vacillatis, ſed non ſicerâ:

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هل يستانف الحراث ان يحرث النهار كله * او يبذر من قبل ان يهي الارض * اليس 24
اذا مهد وجهها حينيذ يزرع سونيزا قليلا او كمونا * وايضا يزرع برا وشعيرا وسوفان في 25
حدودك * وتتادبين بحكم الهك وتفرحين * لانه ليس بصعوبة ينقا السونيز * ولا 26
يكن العجلة تدور على الكمون * لكن بالعصا ينفض السونيز * والكمون مع 27
الخبز يوكل * لانه ليس الى الابد انا اغضب عليكم * ولا صوت مرارتي يدوسكم 28
* وهذه الايات من قبل رب الجيوش برزت * استشيروا * ارفعوا عزا باطلا *
29

* الفصل التاسع والعشرون *

* ويل مدينة اريئيل التي حاربها داود * 1
اجمعوا الغلات سنة لسنة * لانكم تاكلوها مع مواب * لاني اضايق اريئيل * ويصير 2
قوتها وغناها لي * واحيط بك مثل داود * والقي عليك سياجا * واضع عليك بروجا * 3
* ويذل اقوالك الى الارض * والى الارض اقوالك يغوصون * ويصير صوتك مثل الذين 4
يصوتون من الارض * ويضعف صوتك الى التراب * ويكون غنى المنافقين مثل غبار 5
منتثر * ومثل الهباء المحمول * ويكون مثل دقيقة للوقت * من قبل رب الجيوش * لان 6
التعهد يكون مع رعد وزلزلة وصوت عظيم * عاصف مهول * ولهيب نار اكل *
* ويكون مثل الذي يحلم في المنام * غنا الامم جميعها الذين جيشوا على اسرايل * وجميع 7
المجيشين على ايروسليم * وجميع المجتمعين عليها ومضايقيها * ويكون مثل الذين يحلمون في 8
المنام انهم يشربون وياكلون * واذ يقومون منامهم باطل * وعلى نحو ما يحلم العطشان انه يشرب *
وينوم وهو يعطشه ايضا ونفسه ترجب باطلا * هكذا يكون غنا جميع الامم * ايها الذين 9
عسكروا على ايروسليم وعلى جبل صهيون احيروا وتوهلوا وسكروا ليس من مسكر ولا من خمر *

Nunquid agricola renuit arare totâ 24 *die? an verò ſemen jacit priuſquam tellurem diſponat? Nónne cùm æqua-* 25 *vit ſuperficiem ejus, tunc ſerit parum aniſi* nigri *vel cymini? Imò ſeret frumentum, hordeum, & ſpeltam in terminis tuis, Et erudieris in judicio Dei* 26 *tui, & gaudebis: Non enim cum dif-* 27 *ficultate purgatur aniſum, neque rota plauſtri ſuper cyminum volvitur, ſed baculo excutitur aniſum, & cyminum unà cum pane comeditur. Neque enim* 28 *in perpetuum iraſcar vobis, neque vox amaritudinis meæ conculcabit vos. Hæc* 29 *ſigna à Domino exercituum prodiêre: conſiliū capite, tollite faſtum inanem.*

CAP. XXIX.

Væ tibi Arieli quam expugnavit 1 *David: cogite annonam ab anno in annum, quia comeſturi eſtis eam cum Moabo. Nam anguſtaturus ſum Ariel-* 2 *lem, & robur ac divitiæ ejus meæ erunt: obſidebo te, ut fecit David, Faciam* 3 *circum te ſeptum, & erigam adverſùs te propugnacula: Adeo ut humilien-* 4 *tur ſermones tui ad terram uſque, & in terram ſermones tui abſtrudantur, & fiat vox tua ſicut eorum qui clamitant è terra, & infirmetur vox tua ad pulverem uſque. Divitiæ impiorum ſint* 5 *veluti pulvis diſperſus, & veluti gluma aſportata: Sintq; veluti momentum tem-* 6 *poris, ex imperio Domini exercituum. Erit enim hæc viſitatio conjuncta cū tonitruis, terræmotu, ingenti fragore, turbine horrendo, & flammâ ignis devorante. Et ſicut is qui ſomniat inter dormien-* 7 *dum, erunt divitiæ cunctarū gentiū quæ caſtra poſuerint adverſùs Iſraelem, & omniū acies inſtruentium contra Jeruſalem, & omniū ſtipatorum adverſùs eam, & obſidentiū illā. Erunt inquam* 8 *velut ii qui inter dormiendum ſomniant ſe bibere & comedere, cùm autem expergiſcuntur, ſomnium ſuum falſum eſſe experiuntur; vel tanquam ſitiendo, is qui ſomniat ſe bibere, tamen evigilat ſuâ ſiti adhuc laborans, & cum animo vanâ ſpe lactato: tales erunt divitiæ cunctarum gentium. O qui acies inſtru-* 9 *xiſtis contra Jeruſalem & contra montem Sion, admiratione atq; ſtupore percellemini, & ebrii eritis, ſed quidem potu* [illegible]

ישעיה : כט

eſtruxit & , ſoporis *ſpiritum* Dominus vos *ſuper miſcuit* Quoniam
10 כִּי־נָסַךְ עֲלֵיכֶם יְהוָה רוּחַ תַּרְדֵּמָה וַיְעַצֵּם אֶת
.operuit *videntes* , *veſtra capita* & , prophetas : veſtros oculos
עֵינֵיכֶם אֶת־הַנְּבִיאִים וְאֶת־רָאשֵׁיכֶם הַחֹזִים כִּסָּה׃
, *ſignati* *libri* verba ſicut , omnium viſio vobis erit Et
11 וַתְּהִי לָכֶם חָזוּת הַכֹּל כְּדִבְרֵי הַסֵּפֶר הֶחָתוּם
nunc Lege : dicendo , *librum* *ſcientem* *ad* *eum* dabunt *quem*
אֲשֶׁר־יִתְּנוּ אֹתוֹ אֶל־יוֹדֵעַ הַסֵּפֶר לֵאמֹר קְרָא־נָא
dabitur Et .*ipſe* *ſignatus* quia , *potero* non , dicet & : *iſtum*
12 זֶה וְאָמַר לֹא אוּכַל כִּי חָתוּם הוּא׃ וְנִתַּן
nunc Lege : dicendo *librum* ſcivit non qui *ſuper* *liber*
הַסֵּפֶר עַל אֲשֶׁר לֹא־יָדַע סֵפֶר לֵאמֹר קְרָא־נָא
quòd eo Pro ,Dominus dixit Et .*librum* novi non ,dicet & : *iſtum*
13 זֶה וְאָמַר לֹא יָדַעְתִּי סֵפֶר׃ וַיֹּאמֶר אֲדֹנָי יַעַן כִּי
,me honoraverunt ſuis labiis in & ,ſuo ore in iſte populus appropinquavit
נִגַּשׁ הָעָם הַזֶּה בְּפִיו וּבִשְׂפָתָיו כִּבְּדוּנִי
mandatum ,me eorum timor fuit & : me à ſe elongavit ejus cor &
וְלִבּוֹ רִחַק מִמֶּנִּי וַתְּהִי יִרְאָתָם אֹתִי מִצְוַת
cum mirificandum ad addens ego ecce Ideo .edoctum *virorum*
14 אֲנָשִׁים מְלֻמָּדָה׃ לָכֵן הִנְנִי יוֹסִף לְהַפְלִיא אֶת־
,ejus ſapientium ſapientia peribit & :miraculum & ,*mirabile* iſto populo
הָעָם־הַזֶּה הַפְלֵא וָפֶלֶא וְאָבְדָה חָכְמַת חֲכָמָיו
profundantibus Væ .ſe abſcondet ejus intelligentium intelligentia &
15 וּבִינַת נְבֹנָיו תִּסְתַּתָּר׃ הוֹי הַמַּעֲמִיקִים
,eorum opera *tenebroſitate* in ſunt & : conſilium *abſcondendum ad* Domino à
מֵיְהוָה לַסְתִּר עֵצָה וְהָיָה בְמַחְשָׁךְ מַעֲשֵׂיהֶם
veſtra Subverſio ? nos *cognoſcens* quis & ,nos *videns* Quis : dixerunt &
16 וַיֹּאמְרוּ מִי רֹאֵנוּ וּמִי יוֹדְעֵנוּ׃ הַפְכְּכֶם
: ſuo factori opus dicet *Quia* .reputabitur figuli lutum ſicut *ſi*
אִם־כְּחֹמֶר הַיֹּצֵר יֵחָשֵׁב כִּי־יֹאמַר מַעֲשֶׂה לְעֹשֵׂהוּ
Nónne ? intellexit Non : ſuo fictori *dixit* figmentum & ? me fecit Non
17 לֹא עָשָׂנִי וְיֵצֶר אָמַר לְיֹצְרוֹ לֹא הֵבִין׃ הֲלוֹא
Charmel & : Charmel in Lebanon convertetur & ,*puſillum parum* adhuc
עוֹד מְעַט מִזְעָר וְשָׁב לְבָנוֹן לַכַּרְמֶל וְהַכַּרְמֶל
ſurdi illa die in audient Et ? reputabitur *ſylvam in*
18 לַיַּעַר יֵחָשֵׁב׃ וְשָׁמְעוּ בַיּוֹם־הַהוּא הַחֵרְשִׁים
.videbunt cæcorum oculi *tenebroſitate* de & caligine de & , libri verba
דִּבְרֵי־סֵפֶר וּמֵאֹפֶל וּמֵחֹשֶׁךְ עֵינֵי עִוְרִים תִּרְאֶינָה׃
Sancto in hominum mendici & : lætitiam Domino in mites addent Et
19 וְיָסְפוּ עֲנָוִים בַּיהוָה שִׂמְחָה וְאֶבְיוֹנֵי אָדָם בִּקְדוֹשׁ
,illuſor defecerit & ,*formidabilis* defecerit Cùm .exultabunt Iſrael
20 יִשְׂרָאֵל יָגִילוּ׃ כִּי־אָפֵס עָרִיץ וְכָלָה לֵץ
hominem facientes Peccare .*iniquitati invigilantes* omnes ſuccidentur &
21 וְנִכְרְתוּ כָּל־שֹׁקְדֵי אָוֶן׃ מַחֲטִיאֵי אָדָם
fecerunt declinare & : *tendent* laqueos porta in increpanti & , verbo in
בְּדָבָר וְלַמּוֹכִיחַ בַּשַּׁעַר יְקֹשׁוּן וַיַּטּוּ
domum ad Dominus dixit ſic Idcirco .juſtum *inanitate in*
22 בַתֹּהוּ צַדִּיק׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה אֶל־בֵּית
afficietur pudore tunc Non : Abraham redemit qui , Jahacob
יַעֲקֹב אֲשֶׁר פָּדָה אֶת־אַבְרָהָם לֹא־עַתָּה יֵבוֹשׁ
ipſum videndo in Quia .*albeſcent* ejus facies tunc non & ,Jahacob
23 יַעֲקֹב וְלֹא עַתָּה פָּנָיו יֶחֱוָרוּ׃ כִּי בִרְאֹתוֹ
ſanctificabunt , ejus *interiori* in mearum manuum opus , ſuos natos
יְלָדָיו מַעֲשֵׂה יָדַי בְּקִרְבּוֹ יַקְדִּישׁוּ
Iſrael Deum & ,Jahacob ſanctum ſanctificabunt & : meũ nomen
שְׁמִי וְהִקְדִּישׁוּ אֶת־קְדוֹשׁ יַעֲקֹב וְאֶת־אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל
.*formidabunt*
יַעֲרִיצוּ׃

Verſio VULG. LAT.

10 Quoniam miſcuit vobis Dñs
ſpiritũ ſoporis, claudet oculos
veſtros, prophetas & princi-
pes veſtros, qui vident viſio-
11 nes, operiet. Et erit vobis
viſio omnium ſicut verba libri
ſignati, quem cùm dederint
ſcienti literas, dicent; Lege
iſtum: & reſpondebit; Non
12 poſſum, ſignatus eſt enim. Et
dabitur liber neſcienti literas,
dicetúrque ei; Lege: & re-
13 ſpondebit; Neſcio literas. Et
dixit Dominus; Eò quòd ap-
propinquat populus iſte ore
ſuo, & labiis ſuis glorificat
me, cor autem ejus longè eſt à
me, & timuerunt me manda-
14 to hominum & doctrinis: Ideò
ecce ego addam ut admiratio-
nem faciam populo huic mira-
culo grandi & ſtupendo: per-
ibit enim ſapientia à ſapien-
tibus ejus, & intellectus pru-
15 dentium ejus abſcondetur. Væ
qui profundi eſtis corde, ut à
Domino abſcondatis conſili-
um: quorum ſunt in tenebris
opera, & dicunt; Quis videt
16 nos, & quis novit nos? Per-
verſa eſt hæc veſtra cogitatio:
quaſi ſi lutum contra figulum
cogitet, & dicat opus factori
ſuo; Non feciſti me: & fig-
mentum dicat fictori ſuo;
17 Non intelligis. Nónne adhuc
in modico & in brevi con-
vertetur Libanᵒ in Charmel, &
Charmel in ſaltũ reputabitur?
18 Et audient in die illa ſurdi ver-
ba libri, & de tenebris & cali-
19 gine oculi cæcorũ videbunt. Et
addent mites in Domino læ-
titiam, & pauperes homines
in Sancto Iſrael exultabunt:
20 Quoniam defecit qui præva-
lebat, conſummatus eſt illu-
ſor, & ſuccisi ſunt omnes qui
vigilabant ſup iniquitatem:
21 Qui peccare faciebant ho-
mines in verbo, & arguentem
in porta ſupplantabant, & de-
clinaverunt fruſtrà à juſto.
22 Propter hoc, hæc dicit Do-
minus ad domum Jacob, qui
redemit Abraham; Non mo-
dò confundetur Jacob, nec
modò vultus ejus erubeſcet:
23 Sed cùm viderit filios ſuos,
opera manuum mearum, in
medio ſui ſanctificantes no-
men meum, & ſanctificabunt
Sanctum Jacob, & Deum Iſra-
el prædicabunt:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Ὅτι πεπότικεν ὑμᾶς κύριος πνεύματι κατα-
νύξεως, καὶ καμμύσει τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐ-
τῶν, καὶ τῶν προφητῶν αὐτῶν, καὶ τῶν ἀρχόντων
11 αὐτῶν, οἱ ὁρῶντες τὰ κρυπτά. (ρ) Καὶ ἔσται
ὑμῖν τὰ ῥήματα πάντα ταῦτα, ὡς οἱ λό-
γοι τοῦ βιβλίου τοῦ ἐσφραγισμένου τούτου, ὃ
ἐὰν δῶσιν αὐτὸ ἀνθρώπῳ ἐπισταμένῳ γράμ-
ματα, λέγοντες, Ἀνάγνωθι ταῦτα· καὶ ἐρεῖ,
Οὐ δύναμαι ἀναγνῶναι, ἐσφράγισται γάρ.
12 Καὶ δοθήσεται τὸ βιβλίον τοῦτο εἰς χεῖρας
ἀνθρώπου μὴ ἐπισταμένου γράμματα, καὶ ἐρεῖ
αὐτῷ, Ἀνάγνωθι τοῦτο· καὶ ἐρεῖ, Οὐκ ἐπί-
13 σταμαι γράμματα. Καὶ εἶπε κύριος, Ἐγγί-
ζει μοι ὁ λαὸς (σ) οὗτος ἐν τῷ στόματι αὐτοῦ,
καὶ ἐν τοῖς χείλεσιν αὐτῶν τιμῶσί με, ἡ δὲ
καρδία αὐτῶν πόῤῥω ἀπέχει ἀπ᾽ ἐμοῦ· μά-
την δὲ σέβονταί με, διδάσκοντες ἐντάλ-
14 ματα ἀνθρώπων καὶ διδασκαλίας. Διατοῦτο
ἰδοὺ (τ) προσθήσω τοῦ μεταθεῖναι τὸν λαὸν
τοῦτον, καὶ μεταθήσω αὐτοὺς, καὶ ἀπολῶ τὴν
σοφίαν τῶν σοφῶν, καὶ τὴν σύνεσιν τῶν συνε-
15 τῶν κρύψω. Οὐαὶ οἱ βαθέως βουλὴν ποι-
οῦντες, καὶ οὐ διὰ κυρίου· οὐαὶ οἱ ἐν κρυφῇ βου-
λὴν ποιοῦντες, καὶ ἔσται ἐν σκότει τὰ ἔργα αὐ-
τῶν· καὶ ἐροῦσι, Τίς (υ) ἑώρακεν ἡμᾶς; καὶ
16 τίς ἡμᾶς γνώσεται, ἢ ἃ ἡμεῖς ποιοῦμεν; Οὐχ
ὡς (φ) πηλὸς τοῦ κεραμέως λογισθήσεσθε;
μὴ ἐρεῖ τὸ πλάσμα τῷ (χ) πλάσαντι αὐτὸ,
Οὐ σύ με ἔπλασας; ἢ τὸ ποίημα τῷ ποι-
17 ήσαντι, Οὐ συνετῶς με ἐποίησας; Οὐκέτι
μικρὸν καὶ μετατεθήσεται ὁ Λίβανος, ὡς
τὸ ὄρος τὸ Χερμὴλ, καὶ (ψ) τὸ Χερμὴλ εἰς
18 δρυμὸν λογισθήσεται; Καὶ ἀκούσονται ἐν
τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ κωφοὶ λόγους βιβλίου, καὶ
οἱ ἐν τῷ σκότει, καὶ οἱ ἐν τῇ ὁμίχλῃ· ὀ-
19 φθαλμοὶ τυφλῶν (ω) ὄψονται, Καὶ ἀγαλλι-
άσονται πτωχοὶ διὰ κύριον ἐν εὐφροσύνῃ,
καὶ οἱ ἀπηλπισμένοι τῶν ἀνθρώπων ἐμπλησθή-
20 σονται εὐφροσύνης. Ἐξέλιπεν ἄνομος, καὶ
ἀπώλετο ὑπερήφανος, καὶ (') ἐξωλοθρεύθησαν
21 οἱ ἀνομοῦντες ἐπὶ κακίᾳ, Καὶ οἱ ποιοῦντες
ἁμαρτεῖν ἀνθρώπους ἐν λόγῳ. πάντας δὲ
τοὺς ἐλέγχοντας ἐν πύλαις πρόσκομμα θή-
σουσιν, (α) ὅτι ἐπλαγίασαν ἐπ᾽ ἀδίκοις δί-
22 καιον. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος ἐπὶ
τὸν οἶκον Ἰακὼβ, ὃν ἀφώρισεν ἐξ Ἀβραὰμ,
Οὐ νῦν αἰσχυνθήσεται Ἰακὼβ, οὐδὲ νῦν τὸ
23 πρόσωπον (β) μεταβαλεῖ. Ἀλλ᾽ ὅταν ἴδωσι
τὰ τέκνα αὐτῶν τὰ ἔργα μου, δι᾽ ἐμὲ ἁ-
γιάσουσι τὸ ὄνομά μου, καὶ ἁγιάσουσι τὸν ἅγιον
Ἰακὼβ, καὶ τὸν θεὸν τοῦ Ἰσραὴλ φοβηθήσονται.

Quoniam potavit vos Domi
ſpiritu (e) compunctionis: & clau-
det oculos eorum, & propheta
eorum, & principum eorum, q
vident occulta. Et erunt vobis o-
mnia verba hæc, ſicut verba li
ſignati hujus; quem ſi dederint
ipſum homini ſcienti literas, di-
centes, Lege hæc: & dicet, No
poſſum legere: ſignatus enim eſt
dabitur liber hic in manus homi
neſcientis literas, & dicet ei, Le-
ge hunc: & dicet, Neſcio litera
Et ait Dominus; Appropinquat m
hi populus iſte ore ſuo; & in labi
ſuis honorant me: cor autem eo
longè abeſt à me. Fruſtrà aute
colunt me, docentes hominum p
cepta, atque doctrinas. Propter
ecce adjiciam, ut transferam p
pulum iſtum. Et transferam e
& perdam ſapientiam ſapientum
& prudentiam prudentium
abſcondam. Væ, qui profun
conſilium faciunt, & non p
Dominum. Væ, qui in occu
conſilium faciunt, et erunt in te
bris opera eorum: & dicent, Q
vidit nos? et quis ſciet nos,
quæ nos facimus? Nonne ut lu
figuli reputabimini? Nunquid d
cet figmentum fictori ſuo, Non
me formâſti? aut factura facto
Non ſapienter me feciſti? No
adhuc modicum; et transfere
Libanus, ſicut mons Cherm
Chermel in ſaltum reputabitu
Et audient in die illa ſurdi ver
libri: et qui in tenebris, et qui
nebula, oculi cæcorum videbu
Et lætabuntur inopes propter D
minum in lætitia: et dejecti h
mines implebuntur lætitiâ. De
cit iniquus, et periit ſuperbus:
exterminati ſunt, qui inique
gunt in malitia, Et qui faciu
peccare homines in verbo: om
autem arguentes in porta, offe
onem ponent; quia obliquaveru
pro injuſtis juſtum. Propter h
dicit Dominus ſuper domum
cob, quam ſeparavit ex Abra
Non confundetur modò Jac
neque nunc faciem mutabit.
cùm viderint (g) filii eorum o
ra mea; propter me ſanctifica
nomen meum, et ſanctifica
Sanctum ipſius Jacob, et Deum
rael timebunt:

MS.A. (ρ) Καὶ ἔσονται ὑμῖν πάντα τὰ ῥήματα ταῦτα, (σ) οὗτος
χείλεσιν (τ) ἐγὼ προσθήσω (υ) ἡμᾶς ἑώρακεν; (φ) ὁ πηλὸς (χ) πλάσαντι
με (ψ) τὸ ὄρος τὸ Χερμὴλ (ω) βλέψονται, (') ἐξωλεθρεύθησαν (α)
γίασαν ἐν ἀδίκοις δίκαιον. (β) μεταβαλεῖ Ἰσραήλ.

תרגום יונתן TARGUM JONATHAN.

10 ארי רמא ביניכון יי רוח דטעו ואטמר מנכון ית נביא וית ספריא וית מלפיא דהוו
11 מלפין לכון אולפן אוריתא טמר : והות לכון נבואת כולא כפתגמי ספרא דחתים
דאם יתנון יתיה לדידע ספרא למימר קרי כען דין ויימר לית אנא יכיל ארי חתים
12 הוא : ויתיהב ספרא לדלא ידע ספרא למימר קרי כען דין ויימר לית אנא ידע ספרא :
13 ואמר יי חלף דאתרברב עמא הדין בפומהון ובספותהון מיקרין קדמי ולבהון
14 אתרחק מדחלתי והות דחלתהון קדמי כתפקידת גברין מלפין : בכן הא אנא
מוסיף למימחי ית עמא הדין מחן מפרשן ותיבד חוכמתא מחכימיהון וסוכלתנותא
15 מסוכלתניהון תטמר : וי דמדמן לאטמרא עיצא מן קדם יי והוו כדבקבלא עובדיהון
16 ואמרין לית דחזי לנא ולית דידע בעובדנא : הלמהפך עובדיכון אתון בען הא
כמא דטינא ביד פחרא כן אתון חשיבין קדמי האפשר דיימר טינא לעבדיה לא
17 עבדתני ובריתא דתימר לברהא לא חכימת לי : הלא עוד צבחר כזעיר ויתוב לבנן
18 למהוי ככרמלא וכרמלא קרוין סניאן יתיב : וישמעון בעדנא ההיא דכחרשין מלי
19 ספר ומקביל ומחשוך עיני סמן יחזין : ויוספון מקבלי עולבן במימרא דיי
20 חדוא וחשיכי בני אנשא במימר קדישא דישראל יבעון : ארי סף מעיקא ואשתיצי
21 בוזא וספו כל דהוו משחרין למינס : מחיבין בני אנשא במליהון ולדמוכח
להון בית דינא בתרעא פתגמי אוריתא בען ליה תקלא ואסטיאו בשקר דין זכאין :
22 בכן כדנן אמר יי על בית יעקב דפריק ית אברהם לא מכען יבהתון דבית יעקב ולא
23 מכען אפיהון ישתנון : ארי במחזוהי גבורן דאעביד לבנוהי טבות אברהם לזרעיה
בתרוהי על ארעהון בינהון יקדשון שמי ויימרון קדיש על קדישא דיעקב ועל־
אלהא דישראל יימרון תקיף :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniam immiſit in vos Dñs ſpiritum erroris: & abſcondit à
Prophetas & ſcribas: doctores quoque, qui docebant vos do
Legis, abſcondit. Et facta eſt vobis omnis prophetia ſicut verba li
gnati; quem cùm dederint ſcienti librum, dicentes; Lege nunc iſtum
dicet; Non poſſum; quia ſignatus eſt. Et dabitur liber neſcienti li
dicentes; Lege nunc iſtum: & dicet; Neſcio librum. Et dixit Dñs;
quòd magnificatus eſt populus iſte in ore ſuo; & in labiis ſuis hono
cant me; cor autem eorum longè eſt à timore mei, & fuit timor
coram me, juxta mandatum virorum docentium. Propterea ecce eg
jiciam, ut percutiam populum hunc percuſſionibus mirabilibus; & p
ſapientia à ſapientibus eorum, & prudentia prudentium eorum ab
tur. Væ qui putant abſcondere conſilium à facie Dñi, & ſunt qu
tenebris opera eorum; & dicunt, Non eſt qui videat nos, neque qu
opera noſtra. Nunquid pervertere quæritis opera veſtra? ecce
tum in manu figuli, ſic eſtis reputati coram me. Nunquid poſſibile
dicat lutum factori ſuo, Non feciſti me? aut creaturam dicere cr
ſuo, Non intelligis me? Ecce adhuc modicum paululum, & vertet
nus, ut ſit ſicut Carmelus, & Carmelus civitatibus multis habita
audient in tempore illo qui ſunt ſicut ſurdi, verba libri; & de tene
caligine oculi cæcorum videbunt. Et addent qui injuriam paſſi ſunt
dium in verbo Domini, & pauperes filiorum hominum in verbo
Iſrael exultabunt. Quia finitus eſt tribulator, & conſumptus eſt
tor, & finiti ſunt omnes qui manè ſurgebant ad diripiendum. Q
demnant filios hominũ in verbis ſuis; et ei qui corripit eos, domum
in porta, verbis legis quærunt offendiculum: & peverterunt in
judicium innocentium. Propterea hæc dicit Dominus ſuper dom
cob, qui redemit Abraham: Deinceps non confundetur domus
nec poſthac facies ejᵒ mutabuntur. Sed cùm viderit magnalia qu
filiis ſuis, & benignitatem quam promiſi Abrahæ & ſemini ejus p
ſuper terram ſuam, *inter ſe* ſanctificabunt nomen meum: & dicent
eſt ſanctiſſimus Jacob: & Deum Iſrael dicent fortiſſimum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܢܣܟ ܥܠܝܗܘܢ ܡܪܝܐ ܪܘܚܐ ܕܫܝܢܬܐ܆ ܘܚܣܢܬ ܥܠ ܥܝܢܝܗܘܢ܆ ܥܠ
ܢܒܝܐ ܘܥܠ ܪܫܝܗܘܢ ܕܚܙܝܢ ܟܣܝܬܐ. * ܘܬܗܘܐ ܠܗܘܢ ܚܙܘܐ ܕܟܠܗܘܢ܆ ܐܝܟ ܡܠܐ 11
ܕܟܬܒܐ ܚܬܝܡܐ. ܕܐܢ ܢܬܠܘܢܝܗܝ ܠܐܢܫ ܕܝܕܥ ܣܦܪܐ܆ ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܗ ܩܪܝ ܗܢܐ܆ ܘܢܐܡܪ
ܠܐ ܡܫܟܚ ܐܢܐ. ܡܛܠ ܕܚܬܝܡ ܗܘ. * ܘܢܬܠܘܢܝܗܝ ܠܟܬܒܐ ܠܡܢ ܕܠܐ ܝܕܥ ܣܦܪܐ 12
ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܗ ܩܪܝ ܗܢܐ. ܘܢܐܡܪ ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܣܦܪܐ. * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܩܪܒ ܥܡܐ 13
ܗܢܐ ܒܦܘܡܗ ܘܒܣܦܘܬܗ ܡܝܩܪ ܠܝ܆ ܘܠܒܗ ܪܚܝܩ ܡܢܝ܆ ܘܗܘܬ ܕܚܠܬܗܘܢ ܡܢܝ
ܕܦܘܩܕܢܐ ܘܡܠܦܢܘܬܐ ܕܒܢܝܢܫܐ܆ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܡܘܣܦ ܐܢܐ ܠܡܦܪܫܘ ܠܥܡܐ 14
ܗܢܐ܆ ܒܬܕܡܘܪܬܐ ܘܒܬܘܗܪܐ. ܘܬܐܒܕ ܚܟܡܬܐ ܕܚܟܝܡܘܗܝ܆ ܘܣܘܟܠܐ ܕܣܟܘܠܬܢܘܗܝ
ܢܬܛܫܐ. * ܘܝ ܠܗܘܢ ܠܕܡܥܡܩܝܢ ܡܢ ܡܪܝܐ ܠܡܛܫܝܘ ܬܪܥܝܬܐ܆ ܘܗܘܝܢ ܒܚܫܘܟܐ 15
ܥܒܕܝܗܘܢ܆ ܘܐܡܪܝܢ ܡܢܘ ܚܙܐ ܠܢ܆ ܐܘ ܡܢܘ ܝܕܥ ܠܢ ܡܐ ܕܥܒܕܝܢܢ. * ܐܝܟ ܛܝܢܐ 16
ܕܦܚܪܐ ܡܬܚܫܒܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܕܠܡܐ ܥܒܕܐ ܐܡܪ ܠܥܒܘܕܗ ܠܐ ܥܒܕܬܢܝ. ܐܘ ܓܒܝܠܬܐ ܐܡܪܐ
ܠܓܒܘܠܗ܆ ܕܒܚܟܡܬܐ ܠܐ ܓܒܠܬܢܝ. * ܗܐ ܒܬܪ ܩܠܝܠ ܙܒܢ܆ ܘܢܬܗܦܟ ܠܒܢܢ 17
ܠܟܪܡܠܐ. ܘܟܪܡܠܐ ܠܥܒܐ ܢܬܚܫܒ. * ܘܢܫܡܥܘܢ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܚܪܫܐ ܡܠܐ ܕܟܬܒܐ. 18
ܘܡܢ ܚܫܘܟܐ ܘܡܢ ܥܡܛܢܐ܆ ܥܝܢܝܐ ܕܥܘܝܪܐ ܢܚܙܝܢ. * ܘܢܣܓܘܢ ܡܟܝܟܐ ܒܡܪܝܐ ܚܕܘܬܐ܆ 19
ܘܒܢܝܢܫܐ ܡܣܟܢܐ ܒܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܢܪܘܙܘܢ. * ܡܛܠ ܕܫܠܡ ܕܝܫܐ ܘܦܣܩ ܡܡܝܩܢܐ. ܘܐܒܕܘ 20
ܟܠܗܘܢ ܕܡܥܝܪܝܢ ܥܘܠܐ. * ܘܡܚܛܝܢ ܠܒܢܝܢܫܐ ܒܡܠܬܐ. ܘܠܡܟܣܢܐ ܬܘܩܠܬܐ ܣܝܡܝܢ ܠܗ܆ 21
ܘܠܙܕܝܩܐ ܦܚܐ ܒܚܫܘܟܐ ܛܡܪܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ 22
ܕܦܪܩܗ ܠܐܒܪܗܡ. ܠܐ ܡܟܝܠ ܢܒܗܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܠܐ ܡܟܝܠ ܢܚܘܪܘܢ ܐܦܘܗܝ. * ܡܐ ܕܚܙܘ 23
ܒܢܘܗܝ ܥܒܕ ܐܝܕܝ܆ ܒܓܘܗ ܢܩܕܫܘܢ ܫܡܝ. ܘܢܩܕܫܘܢ ܠܩܕܝܫܐ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܠܐܠܗܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ ܢܪܒܘܢ.

* Quoniam effudit ſuper eos Dominus ſpiritum 10
ſopore immerſum, qui invaluit ſuper oculos
eorum, ſuper prophetas, & ſuper eorum
principes occulta videntes. Et horum omnium 11
viſio erit in ipſis ſicut verba libri obſignati,
quem cùm obtulerint alicui ſcripturam
ſcienti, & dixerint ei, Lege hoc; reſpondet,
Non poſſum, quia obſignatum eſt:
Vel obtulerint librum alicui legere neſcienti, 12
& dixerint ei, Lege hoc, reſpondet, Neſcio
legere. Et dixit Dominus, Quia populus 13
iſte ore ſuo accedit, & labiis ſuis me honorat;
cor autem ejus remotum eſt à me, &
reverentia quam mihi exhibent, eſt ex præcepto
& documento humano: Iccirco ecce 14
magis ac magis *à me* ſejungam populum
iſtum cum admiratione & ſtupore, ita ut pereat
ſapientia ſapientum ejus, & prudentia
prudentum ejus deficiat, Væ iis qui ſe diſtorquent 15
à Domino, ut conſilium *ſuum* occultent,
qui peractis clanculùm operibus ſuis,
dicunt, Quis videt nos? aut quis novit quomodo
verſamur? Vos ut lutum figuli reputamini 16
: nunquid opus factori ſuo dicit,
Non feciſti me? aut figmentum dicit fictori
ſuo, Haud ſapienter me finxiſti? Ecce poſt 17
breve tempus vertetur Libanus in Charmelum,
& Charmelus pro ſylva reputabitur.
Et audient eo die ſurdi verba libri, & è tenebris 18
atque caligine oculi cæcorum videbunt
: Creſcet in Domino gaudium humilium, 19
& homines egeni in Sancto Iſraelis
exultabunt; Quòd deſierit conculcator, & 20
defecerit irriſor, & perierint omnes qui excitant
iniquitatem, Quique homines verbis 21
inducunt ad peccatum, *vitia* carpenti ponunt
offendiculum, & juſto *laqueum* tendunt
in tenebris. Propterea ſic dicit Dominus 22
de domo Jacobi, qui ſervavit Abrahamum;
Jam non pudefiet Jacob, nec erubeſcet
ampliùs vultus ejus. Cùm viderint 23
filii ejus opus manuum mearum, in medio
ejus ſanctificabunt nomen meum, ſanctificabunt
Sanctum Jacobi, & Deum Iſraelis magnificabunt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لأن الرب سقاكم روح خشوع ويغمض عيونهم وانبيايهم وروسايهم الذين يرون الخفيات 10
* ويكون لكم جميع هذه الكلمات مثل كلمات هذا السفر المختوم * الذي اذا دفعوه 11
لانسان خبير بالكتابة يقولون اقرأ هذه * فيقول لست اقدر ان اقرأ لأنه مختوم * ويدفع 12
هذا الكتاب في يد انسان لا يعلم الكتابة ويقول له اقرأه * فيقول لست اعرف الكتابة *
* الاصحاح الرابع عشر * فيه توبيخ لبني اسرايل * * وقال الرب * هذا الشعب 13
يقرب مني بفيه ويكرمني بشفتيه وقلبه يبعد بعيدا عني * ويعبدوني باطلا * ويعلمون وصايا
الناس وتعاليمهم * لاجل هذا هاانذا اريد ان ينتقل هذا الشعب وانقلهم انتقالا وابيد حكمة 14
حكمايهم واخفي فهم فهمايهم * الويل للذين يصنعون رأيا بتعمق وليس من قبل الرب 15
ويل الذين يصنعون رأيا في خفية * ويصير اعمالهم في ظلمة * ويقولون من رآنا ومن عرفنا *
او ما الذي نصنعه نحن * أليس مثل طين الفاخوري تحسبون * هل الجبلة تقول لجابلها 16
انت ما جبلتني * أم تقول الصنعة للصانع انت ما صنعتني بفهم * أليس بعد قليل ينتقل 17
لبنان مثل جبل الكرمل * وجبل الكرمل يحسب غابة * ويسمعون في ذلك اليوم الصم 18
اقوال الكتاب * والذين في الظلمة والذين في الضباب * أعين العميان يبصرن * ويبتهج 19
المساكين لأجل الرب بسرور * والذين لا رجاء لهم من البشر يهللون سرورا بقدوس اسرايل
* فني الاثيم وهلك المستكبر * واستوصلوا الاثمة بشرهم * والذين يجعلون الناس ان 20 21
يخطوا بالقول * وجميع الذين يبكتون في الابواب * يصنعون عثرة * ويصلون الصديق
بجورهم * لأجل هذا هكذا يقول الرب على بيت يعقوب الذي ميزه من ابراهيم * لا يخزى 22
الان يعقوب * ولا يستحي الان وجه اسرايل * لكنهم اذ عاين بنوهم اعمالي * لأجلي يقدسون 23
اسمي * ويقدسون قدوس يعقوب * ويخافون اله اسرايل *

Sed quia Dominus bibendum præbebit vobis 10
ſpiritum abjectionis, & occludet oculos
tam veſtros quam prophetarum &
principum veſtrorum qui vident occulta;
Et erunt vobis omnia verba iſta, perinde 11
ac verba hujus libri obſignati, quem cùm
obtulerint homini ſcripturæ perito, &
dixerint ei, Lege hæc; reſpondebit,
Nequeo legere, quoniam obſignatus
eſt. Quod ſi detur liber iſte in manum 12
alicujus literarum imperiti, &
dicatur ei, Lege illum; reſpondebit, Literas
ignoro.

Textus decimus quartus.

Continens reprehenſionem contra filios Iſraelis.

Et dixit Dominus, Populus hic ore ſuo 13
appropinquat ad me, & labiis ſuis me honorat;
cor autem ejus procul abeſt à me,
fictè me adorant, & præcepta atque doctrinas
hominum docent. Hac de cauſa 14
ecce ego populum iſtum migrare volo;
equidem commigratione commigrare faciam
eos, ſapientiam ſapientum eorum
perdam, & prudentiũ eorũ prudentiam
abſcondam. Væ iis qui profunda conſilia 15
machinantur, at non à Domino: væ iis qui
clandeſtina conſilia machinantur, quorum
actiones fiunt in tenebris, tum dicunt,
Quis videt nos, & quis novit nos? aut
quid agimus nos? Annon ſicut lutum figuli 16
reputamini? nunquid argillæ maſſa
dicit plaſtæ ſuo, Tu non plaſmaſti me?
an opificium dicit opifici ſuo, Tu non compoſuiſti
me prudenter? An non poſt exiguum 17
tempus mutabitur Libanus ut mons
Charmelus? & mons Charmelus ceu ſylva
reputabitur? Eo die audient ſurda verba 18
hujus libri, & qui in tenebris, quique
in caligine verſantur, imò cæcorum oculi
videbunt: Pauperes propter Dominum 19
cum lætitia geſtient, & ii mortalium quibus
nulla ſpes eſt, imò exultabunt gaudio in
Sancto Iſraelis. Defecit impius, periit 20
ſuperbus, & extirpati ſunt nefarii cum
nequitia ſua: Quicunque faciunt homines 21
peccare verbis, omnes qui reprehendunt
in portis, offendiculum generant, & juſtum [illegible]
[illegible]. Propter hoc ſic dicit Dominus de 22
domo Jacobi, quem ſegregavit ex Abrahamo,
Jam non pudefiet Jacob, neque
jam erubeſcet vultus Iſraelis: Sed cùm 23
viderint filii eorum opera [illegible] me
ſanctificabunt [illegible]
[illegible]
[illegible] Iſraelis.

ישעיה : ל

.doctrinam diſcent *murmurantes* &, intelligentiam ſpiritu *errantes* ſcient Et
24 וידעו תעי־רוח בינה ורוגנים ילמדו־לקח :

CAP. XXX. ל

,conſilium *faciendum ad* ,Dominus dixit ,declinantibus filiis Væ
1 הוי בנים סוררים נאם־יהוה לעשות עצה
pro : *meus ſpiritus* non & ,*fuſionem fundendum ad* & : me ex non &
ולא מני ולנסך מסכה ולא רוחי למען
deſcendendum ad Ambulantes .peccatum ſuper peccatum *addere*
2 ספות חטאת על־חטאת : ההלכים לרדת
fortitudine in *ſe roborandum ad* :interrogaverunt non meũ os & ,Ægyptum
מצרים ופי לא שאלו לעוז במעוז
fortitudo vobis erit Et .Ægypti umbra in *protegendum ad* & ,Parhoh
3 פרעה ולחסות בצל מצרים : והיה לכם מעוז
.ignominiam ad Ægypti umbra in *protectio* & : pudorem ad Parhoh
פרעה לבשת והחסות בצל־מצרים לכלמה :
.attingent Chanes ejus nuncii & : ejus principes Sohan in fuerunt Nam
4 כי־היו בצען שריו ומלאכיו חנס יגיעו :
nec : eis proderunt non : populum ſuper eſt affectus pudore Omnis
5 כל הבאיש על־עם לא־יועילו למו לא
.opprobrium ad etiam & ,pudorem ad ſed : *proficiendum* ad nec ,auxiliũ ad
לעזר ולא להועיל כי לבשת וגם־לחרפה :
,leo ; *coarctationis* & , anguſtiæ terra in ,*meridiei* animalium *Onus*
6 משא בהמות נגב בארץ צרה וצוקה לביא
humerum ſuper ferent ; volans *ignitus* ſerpens & ,vipera eis ex ,tygris &
וליש מהם אפעה ושרף מעופף ישאו על־כתף
ſuper ,ſuos theſauros camelorum gibbum ſuper &,ſuas *facultates* pullorum
עירים חילהם ועל־דבשת גמלים אוצרותם על־
.auxiliabuntur inaniter & ,vanè Ægyptii Et .*proderunt* non populo
7 עם לא יועילו : ומצרים הבל וריק יעזרו
;ingredere Nunc .*ſedere eos* Robur ,hanc *ad* vocavi Ideo
8 לכן קראתי לזאת רהב הם שבת : עתה בוא
die in erit & : illud *exara* libro in & ,eis *cum* tabula in *illud* ſcribe
כתבה על־לוח אתם ועל־ספר חקה ותהי ליום
rebellantis populus Quia .ſeculum in uſque *perpetuum* in noviſſimo
9 אחרון לעד עד־עולם : כי עם מרי
.Domini legem audire noluerunt filii : mendaces filii , *ipſe*
הוא בנים כחשים בנים לא־אבו שמוע תורת יהוה :
aſpicietis Non,aſpicientibus & :videbitis Non ,videntibus dixerunt Qui
10 אשר אמרו לראים לא תראו ולחזים לא תחזו־
Recedite .illuſiones videte ,blanda nobis loquimini : recta nobis
11 לנו נכחות דברו־לנו חלקות חזו מהתלות : סורו
Sanctum *noſtris faciebus* à facite ceſſare : ſemita de declinate , via de
מני־דרך הטו מני־ארח השביתו מפנינו את־קדוש
vos reprobrare Propter : Iſrael Sanctus dixit ſic Propterea .Iſrael
12 ישראל : לכן כה אמר קדוש ישראל יען מאסכם
.*eo ſuper* eſtis innixi &,perverſitate &,*extorſione* in ſperâſtis & : hoc *verbo in*
בדבר הזה ותבטחו בעשק ונלוז ותשענו עליו :
requiſita , cadens *ruptura* ſicut , hæc iniquitas vobis erit Propterea
13 לכן יהיה לכם העון הזה כפרץ נפל נבעה
.*ejus contritio* veniet *momentum ad ſubito* cujus : excelſo muro in
בחומה נשגבה אשר־פתאם לפתע יבוא שברה :
.conterendo ,figulorum lagenæ contritionem ſecundùm eum conteret Et
14 ושברה כשבר נבל יוצרים כתות
capiendum ad teſta ejus fragmento *in* invenietur non & : parcet non
לא יחמל ולא־ימצא במכתתו חרש לחתות
.fovea de aquam hauriendum ad & ,incendio de ignem
אש מיקוד ולחשף מים מגבא :

Verſio VULG. LAT.

24 Et ſcient errantes ſpiritu intellectum, et muſſitatores diſcent legem.

CAP. XXX.

1 VÆ filii deſertores, dicit Dominꝰ, ut faceretis conſiliũ, & non ex me: & ordiremini telã, & non ꝑ ſpiritũ meũ, ut adderetis peccatũ ſuꝑ pecca- 2 tũ: Qui ambulatis ut deſcendatis in Ægyptũ, & os meũ nõ interrogâſtis, ſperantes auxiliũ in fortitudine Pharaonis, & habentes fiduciã in umbra Æ- 3 gypti. Et erit vobis fortitudo Pharaonis in confuſionẽ, & fiducia umbræ Ægypti in igno- 4 miniam. Erant enim in Tani principes tui, & nuntii tui uſq; 5 ad Hanes pervenerũt. Omnes cõfuſi ſunt ſuꝑ populo, qui eis prodeſſe non potuit: non fuerunt in auxiliũ & in aliquam utilitatẽ, ſed in confuſionẽ & 6 in opprobriũ. Onꝰ jumentorũ Auſtri. In terra tribulationis et anguſtiæ leæna, & leo ex eis, vipera, & regulus volans, portantes ſuꝑ humeros jumentorũ divitias ſuas, & ſuꝑ gibbũ camelorũ theſauros ſuos, ad populũ qui eis prodeſſe non 7 poterit. Ægyptꝰ enim fruſtrà et vanè auxiliabitur: ideò clamavi ſuꝑ hoc; Superbia tantũ 8 eſt, quieſce. Nunc ergò ingreſſꝰ ſcribe ei ſuꝑ buxũ, & in libro diligenter exara illud, et erit in die noviſſimo in teſtimonium 9 uſq; in æternũ. Populꝰ enim ad iracundiã provocans eſt, & filii mendaces, filii nolentes au- 10 dire legẽ Dei. Qui dicunt videntibus, Nolite videre: & aſpicientibus; Nolite aſpicere nobis ea, quæ recta ſunt: loquimini nobis placen- 11 tia, videte nobis errores. Auferte à me viã, declinate à me ſemitam, ceſſet à facie noſtra 12 Sanctꝰ Iſrael. Propterea hæc dicit Sanctus Iſrael; Pro eo ꝙ reprobâſtis verbũ hoc, & ſperâſtis in calumnia & in tumultu, & innixi eſtis ſuper eo: 13 Propterea erit vobis iniquitas hæc ſicut interruptio cadens, & requiſita in muro excelſo, quoniã ſubitò, dum non ſpera- 14 tur, veniet contritio ejꝰ. Et cõminuetur ſicut conteritur lagena figuli contritione pervalidã: & nõ invenietur de fragmentis ejus teſta, in qua portetur ignicul' de incendio, aut hauriatur parũ aquæ de fovea.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

24 Καὶ γνώσονται οἱ (γ) πλανώμενοι τῷ πνεύματι σύνεσιν, οἱ δὲ γογγύζοντες μαθήσονται ὑπακούειν, ϗ αἱ γλῶσσαι αἱ ψελλίζουσαι μαθήσονται λαλεῖν εἰρήνην.

MS.A. (γ) τῷ πνεύματι πλανώμενοι σύνεσιν,

ΚΕΦ. λ'.

1 ΟΥαὶ τέκνα ἀποστάται, (α) λέγει κύριος. ἐποιήσατε βουλὴν (β) οὐ δι' ἐμοῦ, ϗ συνθήκας οὐ διὰ τοῦ πνεύματός μου, προσθεῖναι (ᵈ) 2 ἁμαρτίας ἐφ' ἁμαρτίαις. Οἱ πορευόμενοι καταβῆναι εἰς Αἴγυπτον, ἐμὲ δὲ οὐκ ἐπηρώτησαν, τοῦ βοηθηθῆναι ὑπὸ Φαραὼ, ϗ σκεπασθῆναι 3 ὑπὸ Αἰγυπτίων. Ἔσται γὰρ ὑμῖν σκέπη Φαραὼ εἰς αἰσχύνην, ϗ τοῖς πεποιθόσιν ἐπ' Αἴγυπτον ὄνειδος. 4 Ὅτι εἰσὶν ἐν Τάνει 5 ἀρχηγοὶ ἄγγελοι πονηροί. Μάτην κοπιάσουσιν πρὸς λαὸν, ὃς οὐκ ὠφελήσει αὐτοὺς (γ) εἰς βοήθειαν, ἀλλὰ εἰς αἰσχύνην ϗ ὄνειδος.

6 Ἡ ὍΡΑΣΙΣ ΤΩ͂Ν ΤΕΤΡΑΠΌΔΩΝ ΤΩ͂Ν ἘΝ ΤΗ͂ ἘΡΉΜΩ.

Ἐν τῇ θλίψει ϗ (δ) τῇ στενοχωρίᾳ, λέων ϗ σκύμνος λέοντος, ἐκεῖθεν ϗ ἀσπίδες, ϗ ἔκγονα ἀσπίδων πετομένων, οἳ ἔφερον (ε) ἐπὶ ὄνων ϗ καμήλων τὸν πλοῦτον αὐτῶν πρὸς ἔθνος, ὃ οὐκ ὠφελήσει (ζ) αὐτούς. 7 Αἰγύπτιοι μάταια ϗ κενὰ ὠφελήσουσιν ὑμᾶς· ἀπάγγειλον αὐτοῖς, Ὅτι ματαία 8 ἡ παράκλησις ὑμῶν αὕτη. Νῦν οὖν καθίσας γράψον ἐπὶ πυξίου ταῦτα ϗ εἰς βιβλίον, ὅτι ἔσται εἰς ἡμέρας (η) ταῦτα καιρῶν, 9 ϗ ἕως εἰς τὸν αἰῶνα. Ὅτι (ˈ) ὁ λαὸς ἀπειθής ἐστι, υἱοὶ ψευδεῖς, οἳ οὐκ ἠβούλοντο ἀκούειν τὸν 10 νόμον τοῦ θεοῦ· Οἱ λέγοντες τοῖς προφήταις, Μὴ ἀναγγέλλετε ἡμῖν, ϗ τοῖς τὰ ὁράματα ὁρῶσι, Μὴ λαλεῖτε ἡμῖν, ἀλλὰ ἡμῖν λαλεῖτε ϗ ἀναγγέλλετε ἡμῖν ἑτέραν πλάνη- 11 σιν, Καὶ ἀποστρέψατε ἡμᾶς ἀπὸ τῆς ὁδοῦ ταύτης· ἀφέλετε ἀφ' ἡμῶν τὸν τρίβον τοῦτον, ϗ ἀφέλετε ἀφ' ἡμῶν τὸ λόγιον τοῦ 12 Ἰσραήλ. Διὰ τοῦτο (ˈˈ) τάδε λέγει ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραήλ, Ὅτι ἀπειθήσατε τοῖς λόγοις τούτοις, ϗ ἠλπίσατε ἐπὶ ψεύδει, ϗ ὅτι ἐγόγγυσας, ϗ πεποιθὼς ἐγένου ἐπὶ τῷ λό- 13 γῳ τούτῳ, Διὰ τοῦτο ἔσται ὑμῖν ἡ ἁμαρτία αὕτη, ὡς τεῖχος πίπτον παραχρῆμα (θ) πόλεως ὀχυρᾶς ἑαλωκυίας, ἧς παραχρῆμα 14 πάρεστι τὸ πτῶμα· Καὶ τὸ πτῶμα αὐτῆς ἔσται ὡς σύντριμμα ἀγγείου ὀστρακίνου, ἐκ κεραμίου (ι) λεπτὰ, ὥστε μὴ εὑρεῖν ἐν αὐτοῖς ὄστρακον, ἐν ᾧ πῦρ ἀρεῖς, ϗ ἐν ᾧ ἀποσυριεῖς ὕδωρ μικρόν.

MS.A. (α) τάδε λέγει (β) ϗ οὐ δι' ἐμοῦ, (ᵈ)* ἁμαρτίαις ἐφ' ἁμαρ
οὔτε εἰς βοήθειαν, οὔτε εἰς ὠφέλειαν, ἀλλὰ (δ) ἐν τῇ (ε) ἐπ' ὄνων
βοήθειαν, ἀλλὰ εἰς αἰσχύνην ϗ ὄνειδος. Αἰγύπτιοι (κ) καινὰ
ϗ εἰς τὸν (ˈ) λαὸς (ˈˈ) οὕτως λέγει (θ) πόλεως ἑαλωκυίας, (ι) λεπτ

Et ſcient, qui errant ſpiritu in
ligentiam: & muſſitantes
obedire, (b) & lingua balbu
diſcent loqui pacem.

CAP. XXX.

VÆ filii deſertores, d
minus. Feciſtis conſi
me, & pacta non per ſpiritum
um, ut adderetis peccata
Qui vadunt deſcendere in Æ
ptum (me autem non interroga
runt;) ut acciperent aux
Pharaone, et protegerentur
gyptiis. Erit enim vobis
Pharaonis in confuſionem, &
qui confidunt in Ægypto,
brium. Sunt enim in Tani
nuntii peſſimi. Fruſtra la
ad populum, qui eis non prod
(a) auxilium, ſed ad confuſi
& opprobrium.

VISIO QUADRUPEDU
IN DESERTO.

IN tribulatione & anguſtia
& catulus leonis: inde
ſpides, & genimina aſpidum
lantium: qui ferebant ſuper
& camelos divitias ſuas
tem, quæ eis non prodeſt.
inania & vacua ꝓderunt
Annuntia eis, Quia (b)
ſolatio veſtra hæc. Nunc
dens ſcribe ſuper (c) buxum
& in libro: quoniam (d)
dies hæc temporum, & uſque
num. Quia populus
eſt, filii mendaces, qui nolue
re legem Dei: Qui dicunt
tis, Nolite annuntiare nobis
dentibus viſiones, Nolite loq
bis: ſed nobis loquimini,
nuntiate nobis alteram
nem; Et avertite nos
auferte à nobis ſemitam
auferte à nobis eloquium
Propterea hæc dicit Sanct
Quia increduli fuiſtis
& ſperâſtis in mendacio
murmurâſti, & fiduc
verbo iſto; Propterea
peccatum hoc, ſicut murus
dens ſubito civitatis mu
pta, cujus repentè
Et ruina ejus erit,
vaſis teſtacei ex figulo
comminuta, ita ut non
in eis teſta, in qua ignem
in qua (f) extrahas
ſillam.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

24 וידעון דלא אליפו רוח דסוכלתנו ודהוו אמרין לית כל אלן יקבלון אולפן :

ל

1 וי בניא מרודיא אמר יי למעבד עיצה ולא ממימרי ולאתמלכא מלך ולא שאלין
2 בנביי בדיל לאוספא חובין על חובי נפשהון : דאזלין למחת למצרים ובפתגמי
3 נביי לא שאילו לאתקפא בתקוף פרעה ולאתרחצא בטלל מצרים : ויהי לכון
4 תקוף פרעה לבהתא ואתרחצנא בטלל מצרים לאתכנעו : ארי הוו בטאניס רברבוהי
5 ואזגדוהי עד תחפנחס מטו : כולהון אזלין למבהת לות עמא דלא יהנון להון
6 לא לסעיד ולא להנאה ארי לבהתא ואף לחסודין : מטלין על בעירהון באורח
דרומא בארע עקא ועייק אתר דאריא בר אריון וחיון חורמנין מפרחין נטלין על
כתף עילין נכסיהון ועל חטוריאת גמלין מא דבאצריהון מובלין לעם לא יהנון
7 להון : ומצראי למא וריקנו סעדהון בכן ערעית מנהון קטילין זמינין איתי עליהון :
8 כען עול כתב על לוח ביניהון ועל שיטין דספר רשובם ותהי ליום דין לסהדו קדמי
9 עד עלמא : ארי עם סרבן אנון בניא כדיביא בניא לא אבו לקבלא אולפן אוריתא
10 דיי : דאמרין לנביא לא תתנבון ולמלפיא לא תלפון לנא אולפן אוריתא בטימן
11 מלילו עמנא אשתעו לנא שנין : אסטיונא מאורחא דתקנא אבטלונא ממסרתא
12 ארחיקו מן קדמנא ית מימר קדישא דישראל : בכן כדנן אמר קדישא דישראל
חלף דקצתון בפתגמא הדין ואתרחצתון בשקרא ובאונסא ואסתמכתון עלוהי :
13 בכן יהי לכון חובא הדין כפרץ דחרוב ואתחמר כשור מתקף דכתפיף שלו וייתי
14 תבריה : ותבריה כתבור מן דחסף דפחרא דמרקק ליה בתימלא משתכח ברקיקוהי
חסף למחתי נור מבעור ולמדלי מין מגובא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſcient qui non didicerunt ſpiritum intellectus; & qui dicebant ni-
hil ſunt omnia hæc, ſuſcipient diſciplinam.

CAP. XXX.

VÆ filiis tranſgreſſoribus, dicit Dominus, ut inſtituerent
onem, & non ex verbo meo; & caperent conſiliũ, & non inter
runt prophetas meos, ut adjicerent peccata peccatis animæ ſuæ. Q
ut deſcendant in Ægyptum, & verba prophetarum meorum non
verunt, & ut roborentur in fortitudine Parhonis, & ut con
bra Ægypti. Et erit vobis robur Parhonis in confuſionem, & co
in umbra Ægypti, in ignominiam. Quia fuerunt in Tanes p
& nuncii ejus uſque ad Taphnes pervenerunt. Omnes
confuſionem, ad populum qui non proderit eis, nec in auxilium
utilitatem, ſed in confuſionem & in opprobria. Portant in
in via Auſtri, in *terra* tribulationis & anguſtiæ; in loco ubi
tulus leonis, & ſerpens, & baſiliſci volantes; portant in hume
rum ſubſtantias ſuas, & ſuper gibbum camelorum deferunt
bent in theſauris ſuis, populo qui non proderit eis. Ægyptii
vanũ & inane eſt auxilium: propterea occurri plurimis ex eis
tos inducam ſuper eos. Nunc autem ingredere, ſcribe ſuper ta
dio eorũ, & in columnis libri ſigna; & erit in die judicii
coram me uſque in æternũ. Quia populus rebellis eſt & filii m
qui noluerunt ſuſcipere doctrinam legis Dñi. Qui dicunt prop
prophetetis: & doctoribus, Ne doceatis nos doctrinam legis
nobis complacentia, narrate nobis mutationes. Avertite nos
ceſſare facite nos à ſemita; longè facite à conſpectu noſtro
Iſrael. Propterea ſic dicit Dñs ſanctus Iſrael, Pro eo quod
verbũ hoc, et ſperaſtis in mendacio, et in rapina, eique
pterea erit vobis peccatũ hoc, ſicut civitas quæ deſtructa
redacta, & ſicut murus *robuſtus*, cujꝰ interitꝰ veniet ſubito. E
erit ſicut contritio vaſis teſtacei *figuli*, quod comminu
cordia, ita ut non inveniatur in comminutione ejus teſta
ignem de incendio, & ad hauriendam aquam de ciſterna.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܕܥܘܢ ܣܘܟܠܐ ܐܝܠܝܢ ܕܛܥܝܢ ܗܘܘ ܒܪܘܚܗܘܢ. ܘܡܪܘܕܐ. ܢܐܠܦܘܢ ܠܡܫܬܡܥܘ. 24
* ܦܣܩܐ * ܠ * ܘܝ ܠܒܢܝܐ ܡܪܘܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܥܒܕܘ ܬܪܥܝܬܐ ܘܠܐ 1
ܡܢܝ. ܘܢܣܟܘ ܢܣܟܐ ܘܠܐ ܡܢ ܪܘܚܝ. ܕܢܘܣܦܘܢ ܚܛܗܐ ܥܠ ܚܛܗܐ. * ܕܐܙܠܝܢ ܠܡܚܬ 2
ܠܡܨܪܝܢ. ܘܡܢ ܦܘܡܝ ܠܐ ܫܐܠܘ. ܕܢܬܥܫܢܘܢ ܒܥܘܫܢܗ ܕܦܪܥܘܢ. ܘܢܬܬܟܠܘܢ
ܒܛܠܠܗ ܕܡܨܪܝܢ. * ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܥܘܫܢܗ ܕܦܪܥܘܢ ܠܒܗܬܬܐ. ܘܬܘܟܠܢܐ ܕܛܠܠܗ ܕܡܨܪܝܢ 3
ܠܡܣܚܦܬܐ. * ܡܛܠ ܕܗܘܐ ܒܨܘܥܢ ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ ܘܡܠܐܟܘܗܝ ܪܫܝܥܐ ܢܠܐܘܢ. * ܠܘܬ ܥܡܐ 4
ܕܠܐ ܡܘܬܪ ܠܗܘܢ. ܠܐ ܠܡܥܕܪܢܘܬܐ. ܘܠܐ ܠܡܘܬܪܢܘܬܐ. ܐܠܐ ܠܒܗܬܬܐ ܘܠܚܣܕܐ. * ܡܫܩܠܐ ܕܚܝܘܬܐ 5
ܕܬܝܡܢܐ ܒܐܪܥܐ ܕܐܘܠܨܢܐ ܘܕܥܩܬܐ. ܐܪܝܐ ܘܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ: ܘܒܝܢܬܗܘܢ ܐܟܕܢܐ ܘܫܦܝܦܢܐ ܦܪܚܐ.
ܢܫܩܠܘܢ ܥܠ ܚܨܐ ܕܥܝܠܐ ܩܢܝܢܗܘܢ. ܘܥܠ ܓܒܐ ܕܓܡܠܐ ܣܝܡܬܗܘܢ: ܠܘܬ ܥܡܐ 6
ܕܠܐ ܡܘܬܪ ܠܗܘܢ. * ܘܡܨܪܝܐ ܣܪܝܩܐܝܬ ܘܒܣܪܝܩܘܬܐ ܢܥܕܪܘܢ. ܡܛܠܗܢܐ ܩܪܝܬ 7
ܠܗܘܢ. ܕܣܪܝܩ ܗܘ ܬܘܟܠܟܘܢ ܗܢܐ. * ܘܗܫܐ ܬܐ ܟܬܘܒ ܐܢܝܢ ܥܠ ܠܘܚܐ. ܘܥܠ 8
ܣܦܪܐ ܕܩܝܡܗܘܢ. ܕܢܗܘܐ ܠܝܘܡܐ ܐܚܪܝܐ ܠܣܗܕܘܬܐ ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܡܛܠ 9
ܕܥܡܐ ܡܪܡܪܢܐ ܗܘ. ܒܢܝܐ ܕܓܠܐ. ܒܢܝܐ ܕܠܐ ܨܒܘ ܠܡܫܡܥ ܢܡܘܣܗ ܕܡܪܝܐ. * ܕܐܡܪܘ 10
ܠܚܙܝܐ ܕܠܐ ܬܚܙܘܢ. ܘܠܢܒܝܐ ܕܠܐ ܬܬܢܒܘܢ ܠܢ ܡܟܣܢܘܬܐ. ܡܠܠܘ ܠܢ ܦܠܓܘܬܐ. ܘܚܙܘ
ܠܢ ܕܓܠܘܬܐ. * ܘܐܣܛܘܢ ܡܢ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܦܢܘܢ ܡܢ ܫܒܝܠܐ. ܘܒܛܠܘ ܡܢܢ ܠܩܕܝܫܐ 11
ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܛܠ ܕܐܣܠܝܬܘܢ ܡܠܬܐ 12
ܗܕܐ. ܘܐܬܬܟܠܬܘܢ ܥܠ ܥܘܠܐ: ܘܪܛܢܬܘܢ ܘܐܬܬܟܠܬܘܢ ܥܠܘܗܝ. * ܡܛܠܗܢܐ ܢܗܘܐ 13
ܠܟܘܢ ܚܛܗܐ ܗܢܐ ܐܝܟ ܬܘܪܥܬܐ ܕܢܦܠܐ. ܘܐܝܟ ܫܘܪܐ ܪܡܐ ܕܡܢ ܫܠܝ ܗܘܐ ܬܒܪܗ.
* ܘܬܒܪܗ. ܐܝܟ ܬܒܪܐ ܕܡܐܢܐ ܕܦܚܪܐ ܕܡܬܕܩܩ ܕܠܐ ܚܘܣܢ. ܘܠܐ ܡܫܬܟܚ ܒܬܒܪܘܗܝ ܚܨܦܐ 14
ܠܡܣܒ ܒܗ ܢܘܪܐ ܡܢ ܝܩܕܐ. ܘܠܡܕܠܐ ܒܗ ܡܝܐ ܡܢ ܓܘܒܐ.

Et ſcientiam acquirent ignari quorum ſpiritus 24
errabat, & ſtulti diſcent obtemperare.

CAP. XXX.

VÆ filiis refractariis, dicit Dominus, qui 1
conſilium propoſuêre ſibi, ſed non ex *mente*
mea, & libavére libationes, ſed non ſecundùm
ſpiritum meum, ut peccata peccatis accumularent :
Qui os meum minimè conſulentes 2
abierunt ut deſcenderent in Ægyptum ad roborandum
ſe robore Pharaonis, & recipiendum
ſe ſub protectionem Ægypti. Cedet vobis 3
robur Pharaonis, in pudorem : & receptus
ſub protectionem Ægypti, in abſtruſionem.
Quoniam ipſe in Soane, & principes 4
ac nuntii ejus impii fatigabuntur Apud populum 5
qui non proderit eis nec ad auxilium
nec ad utilitatem, imò ad ignominiam & opprobrium.
Onus belluarum Auſtri in terra 6
anguſta & miſera. Leo & catulus leonis, &
inter eos aſpis & præſter volans, deportabunt
ſuper dorſum aſellorum opes ſuas, &
ſuper latera camelorum theſauros ſuos, ad populum
qui non proderit eis. Nam Ægyptii 7
vanum & inutile præſtabunt auxilium : iccirco
proclamo ad eos, Vana eſt hæc fiducia veſtra.
Jam ergò veni, ſcribe hæc in tabulis & 8
in libro fœderis eorum : ut ad poſtremum uſque
diem maneat in teſtimonium ſempiternum.
Eſt enim populus moroſus, filii ſunt 9
mendaces, filii qui noluerunt obedire legi
Domini : Qui dixerunt videntibus, Ne videatis; 10
& prophetis, Ne vaticinemini nobis
correptionem : loquimini nobis diſſidium, &
videte nobis mendacium : Seducite nos à via, 11
abducite nos à ſemitis, & abolete à nobis
Sanctum Iſraelis. Propterea, ſic dicit Dominus 12
Sanctus Iſraelis; Quandoquidem ſpreviſtis
verbum hoc, confiſi autem eſtis oppreſſioni,
muſſitâſtis, eique confiſi eſtis : Iccirco 13
erit vobis hoc peccatum ſimile rupturæ *muri*
collapſi, & ſicut murus altus cujus fractura fit
ex improviſo, Et cuj⁹ fractura ſimilis eſt fra- 14
cturæ vaſis teſtacei quod ſine clementia *ita*
quaſſatur, ut non reperiatur inter fragmenta
ejus teſtula quâ capi *poſſit* ignis è foco, aut
hauriri aqua è ciſterna.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويعرفون الفهم الضالون بالروح والمتذمرون يتعلمون ان يطيعوا ۔ والالسنة المهذان تتعلم 24
ان تتكلم بالسلامة ۔ الفصل الثلثون ۔ * ويل للاولاد المارقة ۔ هكذا 1
يقول الرب ۔ صنعتم رايا وليس من قبلي * ومواثيق ليس من قبل روحي ۔ لتزدادوا
خطايا على خطايا * ايها الذاهبون لينزلوا الي مصر ولم يسالوني ۔ ليستعينوا بفرعون 2
ويستذروا بالمصريين * انه يكون لكم ستر فرعون خزيا ۔ وعارا للمتوكلين علي مصر 3
* لانه يكون بصاعان ملايكة رؤساء اشرار * يتعبون مع الشعب باطلا ۔ الذي لا 4 5
ينفعهم لا للمعونة ولا للمنفعة ۔ لكن للخزي والعار ۔ الوحي الخامس عشر ۔
* ذي الاربع قوايم التي في البرية في الشقاء والمضايقة ۔ الاسد وشبل الليث من هناك ۔ 6
والافاعي واولاد الافاعي الطاير ۔ الذين يحملون على الحمير والجمال غناهم لامة لا ينفعهم
للمعونة لكن للخزي والعار * المصريون ينفعونكم باطلا وفارغا ۔ اخبرهم ان تعزيتكم 7
هذه باطلة * والان اجلس اكتب هذه على لوح وفي كتاب ۔ ان هذه تصير الي ايام زمان 8
والي الابد * لان الشعب عاص هو ۔ بنون كذبة ۔ الذين لم يشاوا ان يسمعوا ناموس 9
الله * القايلون للانبياء لا تخبرونا ۔ وللذين يرون الروبا لا تكلمونا ۔ لكن كلمونا واخبرونا 10
بضلالة اخرى * وارجعوا بنا من هذه الطريق ۔ انزعوا منا هذا السبيل وانزعوا منا كلمة 11
اسرايل * لاجل هذا هكذا يقول الرب قدوس اسرايل ۔ انكم خالفتم هذه الكلمات 12
وتوكلتم على الكذب ۔ ولانك تذمرت وصرت متوكلا على هذا القول * لاجل هذا تكون 13
هذه الخطية مثل سور ساقط سريعا لمدينة حصينة متعلقة التي حضرت سقطها سريعا ۔
* ويكون سقطها مثل كسر اناء خزف من فخار رقيق ۔ حتى ان لا يجد فيهم حرفا فيه 14
نار يرفعه ۔ وفيه ما قليل يجذبه ۔

Errantes ſpiritu prudentiam agnoſcent, 24
*ſuſurrones obedire diſcent, & linguæ effutientes
diſcent pacatè loqui.*

CAP. XXX.

HEu miſeros *filios deſertores fidei :* 1
*ſic dicit Dominus, Agitâſtis conſilium
quod non erat* ex *me, & fœdera quæ non
erant è ſpiritu meo ; ut adjiceretis vobis
peccata peccatis. Heus qui me inconſulto,* 2
*proficiſcimini ut eatis in Ægyptū ad opem
Pharaonis implorandam, & mendicandam
protectionem Ægyptiorum ; Erit* 3
*ſanè vobis protectio Pharaonis in pudorem,
& opprobrium confidentibus Ægypto. Erunt enim in Saane Angeli,* 4
nempè *principes ſcelerati, Fruſtrà laborantes* 5
*apud populum qui nullam afferet
eis opem vel utilitatem, ſed pudorem &
opprobrium :*

Revelatio decima quinta.

Populum inquam ſimilem *quadrupedibus* 6
*quæ ſunt in deſerto cum infœlicitate &
anguſtia, unde* prodière *leo & catulus
leonis, viperæ & filii viperarū volantiū,
qui aſinis & camelis deferunt opes ſuas
ad gentem quæ non proderit eis ad ſubſidium,
ſed potiùs ad pudorem & ignominiam.* 7
*Ægyptii in vanū & inaniter tradiderunt
vobis. Annuntia eis* dicens, *Hujuſmodi
conſolatio veſtra, vana eſt. Jam* 8
*autem ſede, ſcribe hæc ſuper tabulam &
in libro : nam hæc futura ſunt ad diuturnos
dies, & ad æternitatem ; Quia* 9
*populus hic rebellis eſt, filii mendaces, qui
nolunt acquieſcere legi Dei : Qui di-* 10
*cunt ad prophetas, Ne annuntietis nobis;
& his qui vident viſiones, Ne nos alloquamini
: ſed loquimini & annuntiate
nobis alium errorem : Revocate nos ab* 11
*hac via, tollite à nobis hoc inſtitutum,
& auferte à nobis vocabulum Iſraelis.
Hac de cauſa, ſic dicit Dominus Sanctus* 12
*Iſraelis ; Quia his verbis contradixiſtis,
& fiduciam collocâſtis in mendacio, &
quia murmurâſtis & facti eſtis hujuſmodi
ſermone : Iccirco erit vobis* 13
*peccatum hoc velut ruptura caſura mœnium
urbis munitæ ſubvertendæ, cujus
ruina proximè impendet ; Cujus caſus* 14
*erit ſimilis fragmentis teſtacei vaſis
tenuis ex argilla, ita ut inter illa non
reperiatur teſtula quâ vel ignis tollatur,
vel parum aquæ hauriri poſſit.*

ישעיה : ל

, quiete In : Israel ſanctus *Dominus* Dominus dixit ſic Quia
15 כי כה־אמר אדני יהוה קדוש ישראל בשובה
.veſtra fortitudo erit ſpe in & , *quieſcendo* In .eritis ſalvi requie &
ונחת תושעון בהשקט ובבטחה תהיה גבורתכם
.fugiemus equum ſuper ſed ,Nequaquam : dixiſtis Sed .noluiſtis Et
16 ולא אביתם: ותאמרו לא־כי על־סוס ננוס
erunt leves Ideo .equitabimus levem ſuper Et .fugietis Ideo
על־כן תנוסון ועל־קל נרכב על־כן יקלו
faciebus à ,unius increpationis *faciebus à una Chilias* .vos perſequentes
17 רדפיכם: אלף אחד מפני גערת אחד מפני
ſuper malus ſicut *remaneatis* donec ,fugietis quinque increpationis
גערת חמשה תנסו עד אם־נותרתם כתרן על־
expectabit propterea Et .collem ſuper *vexillum* veluti & ,montis *capite*
18 ראש ההר וכנס על־הגבעה: ולכן יחכה
, ſe exaltabit propterea & , veſtri *miſereſcendum ad* , DOMINUS
יהוה לחננכם ולכן ירום
omnes beati ,Dominus judicii Deus quia : veſtri *miſereſcendum ad*
לרחמכם כי־אלהי משפט יהוה אשרי כל־
: Jeruſalaim in , *ſedebit* Sijon in populus Nam .eum *expectantes*
19 חוכי לו: כי־עם בציון ישב בירושלם
vocem ad tui miſerebitur miſerendo ; plorabis non plorando
בכו לא־תבכה חנון יחנך לקול
vobis dabit Et .tibi reſpondebit , *eum audire ſecundùm* , tui clamoris
20 זעקך כשמעתו ענך: ונתן לכם
avolabit non at : oppreſſionis aquam & ,anguſtiæ panem Dominus
אדני לחם צר ומים לחץ ולא־יכנף
tuæ aures Et .*tuos doctores* videntes tui oculi erunt & : *tui doctores* ultrà
21 עוד מוריך והיו עיניך ראות את־מוריך: ואזניך
ambulate , via Hæc : dicendo , *tuo tergo à* verbum audient
תשמענה דבר מאחריך לאמר זה הדרך לכו
contaminabitis Et .*ſiniſtraveritis cùm &* ,*dextraveritis cùm* ,ea in
22 בו כי תאמינו וכי תשמאילו: וטמאתם את־
.tui auri conflatilis *ſuperhumerale* & ,tui argenti ſculptilium operimentum
צפוי פסילי כספך ואת־אפדת מסכת זהבך
pluviam dabit Et .ei dices ,egredere : menſtruum ſicut ea Diſperges
23 תזרם כמו דוה צא תאמר לו: ונתן מטר
fructus panis & : *humum* ſeminabis quando , tui ſeminis
זרעך אשר־תזרע את־האדמה ולחם תבואת
die in *tuas acquiſitiones* paſcet : *pinguis &* ,*craſſus* erit & , *humi*
האדמה והיה דשן ושמן ירעה מקניך ביום
,terram operantes pulli & boves Et .latum paſcuum illa
24 ההוא כר נרחב: והאלפים והעירים עבדי האדמה
.ventilabro *in* & , pala *in* ventilatur quod ,comedent purum migma
בליל חמיץ יאכלו אשר־זרה ברחת ובמזרה:
collem omnem uper & ,excelſum montem omnem ſuper *erit* Et
25 והיה על־כל־הר גבה ועל כל־גבעה
cadendo in ,*multo* interfectionis die in ; aquarum *deductus* rivi ,elevatum
נשאה פלגים יבלי־מים ביום הרג רב בנפל
lux & , ſolis lux ſicut lunæ lux erit Et .turres
26 מגדלים: והיה אור־הלבנה כאור החמה ואור
die in : dierum ſeptem lux ſicut ſeptempliciter erit ſolis
החמה יהיה שבעתים כאור שבעת הימים ביום
ejus plagæ *transfoſſionem* & ,ſui populi contritionem *Dominum alligare*
חבש יהוה את־שבר עמו ומחץ מכתו
.ſanaverit
ירפא:

Verſio VULG. LAT.

15 Quia hæc dicit Dominus Deus ſanctus Iſrael; Si revertamini & quieſcatis, ſalvi eritis: in ſilentio & in ſpe erit fortitudo 16 veſtra. Et noluiſtis: Et dixiſtis; Nequaquam, ſed ad equos fugiemus: ideò fugietis. Et ſuper veloces aſcendemus: ideò velociores erunt, qui perſe- 17 quentur vos. Mille homines à facie terroris unius: & à facie terroris quinque fugietis, donec relinquamini quaſi malus navis in vertice montis, & quaſi ſignum ſuper collem. 18 Propterea exſpectat Dominus ut miſereatur veſtrî: & ideò exaltabitur parcens vobis: quia Deus judicii Dominus: beati omnes qui expectant 19 eum. Populus enim Sion habitabit in Jeruſalem: plorans nequaquã plorabis, miſerans miſerebitur tuî: ad vocem clamoris tui ſtatim ut audierit, 20 reſpondebit tibi. Et dabit vobis Dñs panem arctũ, & aquã brevem: & non faciet avolare à te ultrà doctorẽ tuum: & erunt oculi tui videntes 21 præceptorem tuum. Et aures tuæ audient verbũ poſt tergũ monentis; Hæc eſt via, ambulate in ea: & non declinetis neq; ad dexterã, neque ad 22 ſiniſtrã. Et contaminabis laminas ſculptiliũ argenti tui, & veſtimentũ conflatilis auri tui, & diſperges ea ſicut immunditiam menſtruatæ. Egredere, 23 dices ei; Et dabitur pluvia ſemini tuo, ubicumque ſeminaveris in terra: & panis frugum terræ erit uberrimus, & pinguis: paſcetur in poſſeſſione tua in die illo agnus 24 ſpatioſè: Et tauri tui, & pulli aſinorum, qui operantur terram, commiſtum migma comedent ſicut in area 25 ventilatum eſt. Et erunt ſuper omnem montem excelſum, & ſuper omnem collem elevatum, rivi currentium aquarum, in die interfectionis multorum cùm ceci- 26 derint turres. Et erit lux Lunæ ſicut lux Solis, & lux Solis erit ſeptempliciter ſicut lux ſeptem dierum, in die quâ alligaverit Dominus vulnus populi ſui, & percuſſuram plagæ ejus ſanaverit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 (κ) Οὕτω λέγει κύριος, κύριος ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραὴλ, Ὅταν ἀποστραφεὶς (λ) στενάξῃς, τότε σωθήσῃ, καὶ γνώσῃ ποῦ ἦσθα, ὅτε ἐπεποίθεις ἐπὶ τοῖς ματαίοις, ματαία ἡ ἰσχὺς ὑμῶν ἐγενήθη· καὶ οὐκ ἠβούλεσθε 16 ἀκούειν, (μ) Ἀλλ' εἴπατε, Ἐφ' ἵππων φευξόμεθα· διατοῦτο φεύξεσθε· (ν) καὶ ἐπὶ κούφοις ἀναβάταις ἐσόμεθα· διατοῦτο κοῦ- 17 φοι ἔσονται οἱ διώκοντες ὑμᾶς. (ξ) Χίλιοι διὰ φωνὴν ἑνὸς φεύξονται, καὶ διὰ φωνὴν πέντε φεύξονται πολλοὶ, ἕως ἂν καταλειφθῆτε, ὡς ἱστὸς ἐπ' ὄρους, καὶ 18 ὡς σημαίαν φέρων ἐπὶ βουνοῦ. Καὶ πάλιν μενεῖ ὁ θεὸς τοῦ οἰκτειρῆσαι ὑμᾶς, καὶ διατοῦτο ὑψωθήσεται τοῦ ἐλεῆσαι ὑμᾶς· διότι κριτὴς κύριος ὁ θεὸς (ο) ὑμῶν. μακάριοι οἱ ἐμμένοντες (π) ἐπ' αὐτῷ, 19 Διότι λαὸς ἅγιος ἐν Σιὼν οἰκήσει· καὶ Ἱερουσαλὴμ κλαυθμῷ ἔκλαυσεν, Ἐλέησόν με. (ρ) ἐλεήσει σε, τὴν φωνὴν τῆς κραυγῆς σου ἡνίκα εἶδεν, ἐπήκουσέ σου. 20 Καὶ δώσει κύριος ὑμῖν ἄρτον θλίψεως, καὶ ὕδωρ στενὸν, καὶ οὐκ ἔτι (σ) μὴ ἐγγίσωσί σοι οἱ πλανῶντές σε· ὅτι οἱ ὀφθαλμοί σου ὄψονται τοὺς πλανῶντάς 21 σε, Καὶ τὰ ὦτά σου ἀκούσονται τοὺς λόγους τῶν ὀπίσω σε πλανησάντων, οἱ λέγοντες, Αὕτη ἡ ὁδὸς, πορευθῶμεν ἐν 22 αὐτῇ εἴτε δεξιὰ εἴτε ἀριστερά. Καὶ (τ) μιανεῖς τὰ εἴδωλα τὰ περιηργυρωμένα, (υ) καὶ περικεχρυσωμένα λεπτὰ ποιήσεις, καὶ λικμήσεις ὡς ὕδωρ ἀποκαθημένης, καὶ 23 ὡς κόπρον ὤσεις αὐτά. Τότε ἔσται ὁ ὑετὸς τῷ σπέρματι τῆς γῆς σου, καὶ ὁ ἄρτος τοῦ (φ) γενήματος τῆς γῆς σου ἔσται πλησμονὴ καὶ λιπαρός· καὶ βοσκηθήσεταί σου τὰ κτήνη τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ 24 τόπον πίονα καὶ εὐρύχωρον. Οἱ ταῦροι ὑμῶν καὶ οἱ βόες οἱ ἐργαζόμενοι τὴν γῆν, φάγονται ἄχυρα ἀναπεποιημένα ἐν κρι- 25 θῇ (χ) λελικμημένῃ. Καὶ ἔσται ἐπὶ παντὸς ὄρους ὑψηλοῦ, καὶ ἐπὶ παντὸς βουνοῦ μετεώρου ὕδωρ διαπορευόμενον ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὅταν ἀπόλωνται πολλοὶ, 26 καὶ ὅταν πέσωσι πύργοι. Καὶ ἔσται τὸ φῶς τῆς σελήνης ὡς τὸ φῶς τοῦ ἡλίου, καὶ τὸ φῶς τοῦ ἡλίου ἔσται ἑπταπλάσιον ἐν τῇ ἡμέρᾳ, ὅταν ἰάσηται κύριος τὸ σύντριμμα τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, καὶ τὴν ὀδύνην τῆς πληγῆς σου ἰάσεται.

Sic dicit Dominus, Dominus
ctus Iſrael; Cum
gemueris; tunc ſalvus
ſcies ubi fueris: quia
bas ſuper vanis;
fortitudo veſtra. Et noluiſtis
dire, Sed dixiſtis;
fugiemus: (propterea
& ſuper levibus
(g) erimus: ideò leves
qui perſequuntur vos.
ad vocem unius fugient
ad vocem quinque fugient
ti: donec relinquamini,
malus navis ſuper montem,
quaſi ſignum ferens ſuper
lem. Et rurſus exſpectabit
us, ut miſereatur veſtri:
propterea exaltabitur, ut
vobis: quia judex Dominus
Deus (h) veſter. Beati
immanent in eo: Quia
lus ſanctus in Sion habitabit
& (k) Hieruſalem plorans
ravit, Miſerere mei.
tur tui: (l) vocem
tui quando vidit;
te. Et dabit Dominus
nem tribulationis, & aquam
guſtam: & nequaquam
trà appropinquabunt
decipiant te: quia
videbunt eos, qui te
Et aures tuæ audient
te decipientium, qui
Hæc via; ambulemus
ad dextram, ſive ad
Et contaminabis idola
tata, & deaurata:
ea, & diſperges, ſicut
menſtruatæ: & ſicut
abjicies ea. Tunc
ſemini terræ tuæ: &
gum terræ tuæ erit
& pinguis. Et paſcentur
ta tua in die illa
guem, & ſpatioſum.
ſtri, & boves, qui
ram, comedent
ſtas in hordeo ventilato
ſuper omnem montem
& ſuper omnem collem
aqua tranſiens in
cum perierint multi,
ciderint turres. Et
Lunæ, ſicut lumen Solis
men Solis erit
quando ſanaverit Dominus
trit onem populi
rem plagæ tuæ

MS. A. (κ) Οὕτως λέγει κύριος ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ, (λ)
(μ) Ἀλλὰ εἴπατε, Ἐφ' ἵπποις (ν) καὶ εἴπατε, Ἐπὶ (ξ) Καὶ διὰ
ἑνὸς φεύξονται χίλιοι, (ο)* ἡμῶν ἐστιν, καὶ ποῦ καταλείψετε
ξαν ὑμῶν; μακάριοι πάντες οἱ (π) ἐν αὐτῷ, (ρ) καὶ ἐλεήσει
γῆν (σ) οὐ μὴ (τ) ἐξαρεῖς (υ) καὶ τὰ περικεχρυσωμένα λεπτὰ
καὶ λικμήσεις (φ) γενήματος (χ) λελικμημένα.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 ארי כדנן אמר יי אלהים קדישא דישראל אמרית די תתובון לאוריתא תנוחון
ותתפרקון תשקטון ותשרון לרוחצן תהון גברין ולא אביתון: 16 ואמרתון לא אלהן
על סוסותא נערוק ועל כן תערקון ועל קלילין נרכוב על כן יהון קלילין
רדפיכון: 17 אלפא חד מן קדם מזופית חד מן קדם מזופית חמשא תערקון עד
דתשתארון כבוערא על ריש טורא וכאתא על רמתא: 18 ובכן עתיד יי למחם
עליכון ותקיף הוא דירחם עליכון ארי אלהא עביד דינא יי טובי צדיקיא דמסברין
לפורקניה: 19 ארי עמא בציון יתיב בירושלם מבכא לא תבכי רחמא ירחם עלך
קל צלותך יקביל ויעביד בעותך: 20 ויהב לכון יי נכסי סנאה ובזת מעיקא ולא
יסלק עוד שכנתיה מבית מקדשא ויהוין עינך חזין ית שכנתי בבית מקדשא:
21 ואודנך ישמעון פתגמא מבתרך למימר הדא אורחא דתקנא הליכו בה לא
תסטון מניה לימינא ולסמאלא: 22 ותסאבון ית חפוי צלמי כספיכון וית תקון
מתכת דהבכון תרחיקונון כמא דמרחקין ית טומאתא כן תרחיקונון: 23 ויתן
מטר זרעך די תזרע ית ארעא ועבורא ועללא יסגי בארעא ויהי פרנוס וטב
ויתפרנסון צדיקיא מגיתיהון בעדנא ההיא שמן רכיכין ופטימין: 24 ותוריא וחמריא
די מפלחין בהון ית ארעא בליל מפטם יכלון די דרא ברחתא ובמדרא: 25 ויהי
על כל טור רם ועל כל רמא מנטלא פצידין נגדין מין הקלא למלכין ולמשריתהון
ביום קטול רב במפל רברבין: 26 ויהי נהור סיהרא כנהור שמשא ונהור שמשא יהי
עתיד לאזהרא על חד תלת מאה ארבעין ותלתא כנהור שבעת יומיא ביומא דיתיב יי
ית גלות עמיה ומרע מחתיה יסי:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Quia hæc dicit Dominus Deus ſanctus Iſrael: Dixi, Si converſi
legem meam; requieſcetis & redimemini, & quieſcetis, & habitabitis
fidenter, & eritis fortes: & noluiſtis. Et dixiſtis, Non, ſed in equis
mus: ideò fugietis; & ſuper veloces equitabimus: ideo veloces
ſecutores veſtri. Mille hominum à facie increpantis unius, à facie
pantis quinque fugietis, donec relinquamini ſicut *fax* in vertice
ſicut ſignum ſuper collem. Propterea futurum eſt ut Dominus
veſtri: & fortis eſt ipſe qui miſerebitur veſtri; quia Deus faciens
Dominus eſt: beati juſti qui ſperant in ſalutare ej'. Quoniam
Sion habitabit in Hieruſalem; plorans nequaquam plorabis.
one miſerebitur tui, vocem *orationis tuæ* ſuſcipiet, & faciet
tuam. Et dabit vobis Dñs ſubſtantias odii, & prædam afflictionis
tollet majeſtatem ſuam ultrà de domo ſanctuarii: & erunt oculi
tes majeſtatem *meam* in domo ſanctuarii. Et aures tuæ audient
poſt tergum tuum, dicentis: Hæc eſt via recta, ambulate in ea, &
netis *ab ea* ad dexteram, neque ad ſiniſtram. Et contaminabitis
turam ſimulacrorum argenti veſtri, & ornamentum conflatilis
abominabimini ea ſicut abominantur immunditiam menſtruatæ
minabimini ea. Et dabit pluviam ſeminis tui, quo ſeminabis
& frumentum fructus multiplicabitur in terra; & erit
nus; & nutrientur juſti pecoribus ſuis in tempore illo,
tenerorum & pinguium. Boves autem et aſini quibus
ram, pabulum impinguans comedent, quod eventilatum
tilabro. Et erunt ſuper omnem montem excelſum, et ſuper
lem elevatum rivi currentium aquarum, & erunt
bus, & exercitibus eorum in die occiſionis magnæ;
principes. Et erit lux Lunæ ſicut lux Solis, & lux Solis
deſcat trecenties quadragies ter ſuper lucem ſeptem
reducet Dominus captivitatem populi ſui, & infirmitatem
ſanabit.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܐ ܕܬܬܘܒܘܢ ܘܬܬܬܢܚܘܢ ܬܬܦܨܘܢ.
16 ܘܒܫܠܝܐ ܘܒܣܒܪܐ ܢܗܘܐ ܚܝܠܟܘܢ. ܘܠܐ ܐܨܛܒܝܬܘܢ. * ܘܐܡܪܬܘܢ. ܠܐ ܗܟܢܐ. ܐܠܐ
ܥܠ ܪܟܫܐ ܢܪܟܒ. ܘܠܐ ܡܬܚܝܠ ܬܥܪܩܘܢ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܬܥܪܩܘܢ. ܘܩܠܝܠܝܢ ܢܗܘܘܢ
17 ܪܕܘܦܝܟܘܢ. * ܐܠܦܐ. ܡܢ ܟܐܬܐ ܕܚܕ. ܘܡܢ ܟܐܬܐ ܕܚܡܫܐ ܬܥܪܩܘܢ. ܥܕܡܐ
18 ܕܬܫܬܚܪܘܢ ܐܝܟ ܦܪܐ ܒܪܝܫ ܛܘܪܐ. ܘܐܝܟ ܐܬܐ ܥܠ ܪܡܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܣܟܐ ܡܪܝܐ
ܠܡܪܚܡܘ ܥܠܝܟܘܢ. ܘܢܬܬܪܝܡ ܠܡܪܚܡܘ ܥܠܝܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܕܝܢܐ ܡܪܝܐ.
19 ܘܛܘܒܝܗܘܢ ܠܟܠ ܕܡܣܟܝܢ ܠܗ. * ܡܛܠ ܕܥܡܐ ܒܨܗܝܘܢ ܢܬܒ. ܘܒܐܘܪܫܠܡ
ܡܒܟܐ ܠܐ ܬܒܟܘܢ. ܡܪܚܡܘ ܢܪܚܡ ܠܩܠ ܙܥܩܬܟܘܢ. ܘܟܕ ܢܫܡܥ.
20 ܢܥܢܝܟܘܢ. * ܘܢܬܠ ܠܟܘܢ ܡܪܝܐ ܠܚܡܐ ܒܐܘܠܨܢܐ. ܘܡܝܐ. ܒܐܘܠܨܢܐ. ܘܠܐ
21 ܢܟܢܫ ܬܘܒ ܠܡܛܥܝܢܝܟܘܢ. ܘܢܚܙܝܢ ܥܝܢܝܟܘܢ ܠܡܛܥܝܢܝܟܘܢ. * ܘܐܕܢܝܟܘܢ
ܢܫܡܥܢ ܡܠܬܐ ܡܢ ܒܣܬܪܟܘܢ. ܕܐܡܪܐ. ܗܢܘ ܐܘܪܚܐ ܗܠܟܘ ܒܗ. ܘܠܐ ܬܣܛܘܢ
22 ܠܝܡܝܢܐ ܘܠܣܡܠܐ. * ܘܬܛܡܐܘܢ ܣܐܡܐ ܕܚܦܐ ܦܬܟܪܝܟܘܢ. ܘܦܘܪܐ
ܕܢܣܟܐ ܕܕܗܒܟܘܢ. ܘܬܕܪܘܢ ܐܢܘܢ. ܐܝܟ ܡܝܐ ܕܕܫܬܢܬܐ. ܐܝܟ ܛܢܦܐ ܬܦܩܘܢ ܐܢܘܢ.
23 * ܘܢܬܠ ܡܛܪܐ ܠܙܪܥܟܘܢ ܕܬܙܪܥܘܢ ܒܐܪܥܐ. ܘܥܒܘܪܐ ܕܐܪܥܐ. ܢܗܘܐ ܒܣܝܡ
24 ܘܫܡܝܢ. ܘܢܪܥܘܢ ܒܥܝܪܟܘܢ ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܒܐܬܪܐ ܪܘܝܚܐ. * ܘܬܘܪܐ ܘܥܓܠܐ ܕܦܠܚܝܢ
25 ܐܪܥܐ. ܥܒܘܠܐ ܢܩܝܐ ܢܐܟܠܘܢ. ܕܡܕܪܝ ܒܪܦܫܐ ܘܒܡܕܪܝܐ. * ܘܢܗܘܐ ܥܠ
ܟܠ ܛܘܪ ܪܡ. ܘܥܠ ܟܠ ܪܡܬܐ ܪܡܬܐ. ܢܓܕܘܢ ܦܠܓܐ ܕܡܝܐ ܒܝܘܡܐ ܕܩܛܠܐ ܪܒܐ.
26 ܘܟܕ ܢܦܠܘܢ ܡܓܕܠܐ. * ܘܢܗܘܐ ܢܘܗܪܗ ܕܣܗܪܐ ܐܝܟ ܢܘܗܪܗ ܕܫܡܫܐ. ܘܢܘܗܪܗ
ܕܫܡܫܐ ܢܗܘܐ ܫܒܥܐ ܥܦܝܦ. ܐܝܟ ܢܘܗܪܐ ܕܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܢܚܒܘܫ ܡܪܝܐ
ܬܒܪܐ ܕܥܡܗ. ܘܡܚܘܬܐ ܕܡܚܘܬܗ ܢܐܣܐ܀

15 * Propterea, ſic dicit Dominus Sanctus Iſraelis, Cùm pœnitentiam egeritis & gemueritis, liberamini, & in tranquillitate & ſpe erit fortitudo veſtra; at non acquieviſtis: 16 Sed dixiſtis, Non ita; equos conſcendemus, & ſuper velocia *jumenta* fugiemus. Iccirco fugietis, at velociores erunt qui perſequentur vos. 17 Mille ab increpatione unius, & *omnes* ab increpatione quinque fugietis: donec remaneatis velut onager in vertice montis, & velut index ſuper collem. 18 Incipiet enim Dominus miſereri veſtrûm, & exaltabit ſe ad clementiam erga vos adhibendam, quia Deus eſt judex Dominus: proinde beati omnes qui expectant eum. 19 Nam populus in Sione ſeſſurus eſt, & in Jeruſalem nullatenus flebitis: miſeratione movebitur ad vocem clamoris veſtri, & ſtatim ac audierit, exaudiet vos: 20 Dabitque vobis Dominus panem in anguſtia, & aquam in anguſtia, & non congregabit ampliùs ſeductores veſtros: ſed ſpectabunt oculi veſtri *punitionem* ſeductorum veſtrorum. 21 Et aures veſtræ audient verbum à tergo veſtro dicens, Hæc eſt via, in hac incedite, & ne digrediamini dextrorſum aut ſiniſtrorſum. 22 Et polluetis argentum quo tecta ſunt idola veſtra, & ephod fuſilis auri veſtri; ſpargetis ea velut aquas menſtruatæ, & veluti ſordes ejicietis ea. 23 Tum dabitur pluvia ſemini veſtro quod in terra feretis, & frumentum terræ ſuave erit ac pingue; paſcua jumentorum veſtrorum erunt eo die in loco uberrimo: 24 Boves etiam & juvenci tellurem arantes farraginem mundam comedent, palâ & ventilabro agitatam. 25 Fiet etiam ut ſuper quemcunque montem excelſum & ſuper quemcunque collem ſublimem, fluant rivi aquarum in die cædis magnæ & cùm corruent turres. 26 Erit præterea lux lunæ quanta lux ſolis, & lux ſolis erit ſeptupla, ut lux ſeptem dierum; in die quâ Dominus conſolidaverit fractionem populi ſui, & dolorem plagæ ejus ſanaverit.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

15 * لأن هكذا يقول الرب قدوس اسرائيل * اذا رجعت تتنهد * حينيذ تخلص وتعلم كيف
16 كنت لما توكلت على الاباطيل * صارت قوتكم باطلة * ولم تشاوا ان تسمعوا * لكن قلتم
نهرب على الخيل * لاجل هذا تهربون * وتقولون نصير ركابا على الخفيفات * لاجل هذا الان
17 تصير طاردوكم سريعين * وبصوت واحد يهربون الوف * وبصوت خمسة يهرب كثيرون *
18 الي ان تبقون مثل صار على جبل * ومثل حامل علامة على اكمة * ومن بعد يثبت الله
ليتراف عليكم * ولاجل هذا يرتفع ليرحمكم * من اجل ان الرب الهنا حاكم هو *
19 وليبقي مجدكم * مغبوطون جميع الثابتين فيه * من اجل ان الشعب المقدس يسكن في
صهيون * واورشليم اذا بكت بكا ارحمني فيرحمك * حين راي صوت صراخك سمعك *
20 * ويعطيكم خبز ضيق وما ضيقا * ولا يقتربون لك مضلوك بعد * لان عينيك تنظر
21 مضليك * واذنيك تسمع كلمات مضليك من خلف * القايلون هذه الطريق نسير فيها
22 ان كانت يمينا وان كانت شمالا * وتنزع الاصنام المغشات بالفضة والمغشات بالذهب * وتجعلها
23 سحقا وتذريها مثل ما الحايض * ومثل الزبل تقصيها * حينيذ المطر يكون لزرع
ارضك * والخبز من غلة ارضك يكون شبعا ورخصا * وترعي بهايمك في ذلك اليوم
24 موضعا دسما ومتسعا * ثيرانكم وبقركم الذي يعملون الارض ياكلون تبنا مخلوطا
25 بالشعير مغربلا * ويكون على كل جبل عال وعلي كل اكمة مرتفعة ما يجري في ذلك
26 اليوم * اذا هلكت كثيرون واذا سقطت البروج * ويكون نور القمر مثل نور الشمس *
ونور الشمس يكون سبعة اضعاف * في اليوم اذ يشفي الرب انكسار شعبه ويبري
وجع ضربتك *

15 *Sic enim dicit Dominus Sanctus Iſraelis, Cùm converſus ſuſpirabis, tunc ſalvaberis, & ſcies qualis eras quando confidebas vanitatibus, Vana facta eſt fortitudo veſtra, & audire noluiſtis;* 16 *Sed dixiſtis, Fugiemus ſuper equos; iccirco fugietis: Dicitis etiam, Levibus jumentis vehemur; iccirco jam erunt perſecutores veſtri leviſſimi:* 17 *Et ab unius voce fugient milleni, & à voce quinque fugient quamplurimi, donec maneatis ut malus navis ſuper montem, & ut vexillifer ſuper collem.* 18 *Poſtea verò perſiſtet Deus in utendo clementiâ erga vos, & ideo elevabit ſe ad miſerendum veſtri, quia Dominus noſter judex eſt, & ad æternam reddendam gloriam veſtram: beati omnes qui perſiſtunt in eo.* 19 *Nam populus ſanctus habitabit in Sione, & Jeruſalem cùm lacrymas fuderit ac dixerit; Miſerere mei, miſerebitur tui: ſimul atque viderit vocem clamoris tui, audiet te;* 20 *Et dabit vobis panem tribulationis & aquam anguſtam, & non accedent ulteriùs ad te ſeductores tui, quoniam oculi tui videbunt ſeductores tuos,* 21 *Et aures tuæ audient verba ſeductorum tuorum à tergo dicentium, Hæc eſt via, ambulemus in ea, ſive ad dexteram ſit, ſivè ad ſiniſtram.* 22 *Et auferes idola obtecta argento & obtecta auro, comminues ea, ſpargeſque velut aquam patientis menſtruum, & veluti ſtercus procul amovebis ea.* 23 *Tunc aderit pluvia ſemini telluris tuæ, & panis è proventu terræ tuæ erit ad ſaturitatem & ubertatem: paſcentur pecora tua eo die locum ſapidum & amplum:* 24 *Tauri veſtri, & vaccæ veſtræ quæ terram colunt, comedent paleam hordeo mixtam vanno expurgatam.* 25 *Præterea ſuper omnem montem ſublimem & collem elevatum, aqua decurret eo die, ubi multi perierint, & ceciderint turres.* 26 *Et erit lux lunæ ſicut lux ſolis, lux autem ſolis erit ſeptupla in die quo curabit Dominus fracturam populi ſui, & ſanabit dolorem vulneris tui.*

ישעיה : לא

gravitas & ,ejus nasus ardens ,longinquo de venit Domini nomen Ecce
27 הִנֵּה שֵׁם־יְהוָה בָּא מִמֶּרְחָק בֹּעֵר אַפּוֹ וְכֹבֶד
igois tanquam ejus lingua & , ira sunt repleta ejus labia : oneris
מַשָּׂאָה שְׂפָתָיו מָלְאוּ זַעַם וּלְשׁוֹנוֹ כְּאֵשׁ
collum ad usque ,inundans torrens velut ejus spiritus Et .consumens
28 אֹכָלֶת׃ וְרוּחוֹ כְּנַחַל שׁוֹטֵף עַד־צַוָּאר
faciens errare frænum &,vanitatis cribro in gentes *agitandum ad*,dimidiabit
יֶחֱצֶה לַהֲנָפָה גוֹיִם בְּנָפַת שָׁוְא וְרֶסֶן מַתְעֶה
sanctificari nocte sicut vobis erit Canticum .populorum maxillis in
29 עַל לְחָיֵי עַמִּים׃ הַשִּׁיר יִהְיֶה לָכֶם כְּלֵיל הִתְקַדֶּשׁ־
montem in *intrandum ad*,tibia cum *euntis* sicut cordis lætitia & :*solennitatem*
חָג וְשִׂמְחַת לֵבָב כַּהוֹלֵךְ בֶּחָלִיל לָבוֹא בְהַר־
Dominus faciet audire Et .Israel *petram* ad Domini
30 יְהוָה אֶל־צוּר יִשְׂרָאֵל׃ וְהִשְׁמִיעַ יְהוָה אֶת־
ira in ostendet sui brachii descensionem & , suæ vocis *magnificentiam*
הוֹד קוֹלוֹ וְנַחַת זְרוֹעוֹ יַרְאֶה בְּזַעַף
.grandinis *lapide* & ,turbine &,dispersione ,*comedentis* ignis flamma & ,*nasi*
אַף וְלַהַב אֵשׁ אוֹכֵלָה נֶפֶץ וָזֶרֶם וְאֶבֶן בָּרָד׃
erit Et .*percutiet* virga *in* : Assur conteretur Domini voce à Quia
31 כִּי־מִקּוֹל יְהוָה יֵחַת אַשּׁוּר בַּשֵּׁבֶט יַכֶּה׃ וְהָיָה
32 Dominus faciet requiescere quam ,*fundatæ* virgæ transitus omnis
כֹּל מַעֲבַר מַטֵּה מוּסָדָה אֲשֶׁר יָנִיחַ יְהוָה
pugnabit *agitationis* bellis in & : citharis in &,tympanis in eum super
עָלָיו בְּתֻפִּים וּבְכִנֹּרוֹת וּבְמִלְחֲמוֹת תְּנוּפָה נִלְחַם־
regi ipsa etiam ,Tophteh heri ab *disposita* Quia .ea cum
33 בָּהּ׃ כִּי־עָרוּךְ מֵאֶתְמוּל תָּפְתֶּה גַּם־הוּא לַמֶּלֶךְ
ligna & , ignis ejus pyra : dilatavit ,fecit profundam : est præparata
הוּכָן הֶעְמִיק הִרְחִב מְדֻרָתָהּ אֵשׁ וְעֵצִים
.ea in ardentis sulphuris torrens sicut Domini flatus , *multum*
הַרְבֵּה נִשְׁמַת יְהוָה כְּנַחַל גָּפְרִית בֹּעֲרָה בָּהּ׃

CAP. XXXI. לא

: *innitentur* equis *super* & , auxilio pro Ægyptum descendentibus Væ
1 הוֹי הַיֹּרְדִים מִצְרַיִם לְעֶזְרָה וְעַל־סוּסִים יִשָּׁעֵנוּ
sunt prævalidi quia ,equitibus in & : *multus* quia , *curru* in speraverũt &
וַיִּבְטְחוּ עַל־רֶכֶב כִּי רָב וְעַל פָּרָשִׁים כִּי־עָצְמוּ
Dominum & , Israel Sanctum ad respexerunt non & , valde
מְאֹד וְלֹא שָׁעוּ עַל־קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל וְאֶת־יְהוָה
& ,malum adduxit & ,sapiens ipse etiam Et .quæsierunt non
2 לֹא דָרָשׁוּ׃ וְגַם־הוּא חָכָם וַיָּבֵא רָע וְאֶת־
contra & ,pessimorum domum contra stetit & : removit non sua verba
דְּבָרָיו לֹא הֵסִיר וְקָם עַל־בֵּית מְרֵעִים וְעַל־
, Deus non & ,homines Ægyptii Et .iniquitatem operantium auxilium
3 עֶזְרַת פֹּעֲלֵי אָוֶן׃ וּמִצְרַיִם אָדָם וְלֹא־אֵל
; suã manũ inclinabit Dominus Et .spiritus non & , caro eorum equi &
וְסוּסֵיהֶם בָּשָׂר וְלֹא־רוּחַ וַיהוָה יַטֶּה יָדוֹ
.deficient ipsi omnes simul & , *adjutus* cadet & ,auxiliator corruet &
וְכָשַׁל עוֹזֵר וְנָפַל עָזֻר וְיַחְדָּו כֻּלָּם יִכְלָיוּן׃
, leo rugiet Quemadmodum : me ad Dominus dixit sic Nam
4 כִּי כֹה אָמַר־יְהוָה אֵלַי כַּאֲשֶׁר יֶהְגֶּה הָאַרְיֵה
plenitudine eum super conclamabitur quem ,suã prædam super leonis catulus &
וְהַכְּפִיר עַל־טַרְפּוֹ אֲשֶׁר יִקָּרֵא עָלָיו מְלֹא
non eorum *tumultu* à & , *consternabitur* non eorum voce à , pastorum
רֹעִים מִקּוֹלָם לֹא יֵחָת וּמֵהֲמוֹנָם לֹא
super *militandum* ad exercituum Dominus descendet sic : humiliabitur
יַעֲנֶה כֵּן יֵרֵד יְהוָה צְבָאוֹת לִצְבֹּא עַל־
.ejus collem super & ,Sijon montem
הַר־צִיּוֹן וְעַל־גִּבְעָתָהּ׃

Versio VULG. LAT.

27 Ecce nomen Domini venit de longinquo, ardens furor ejus, & gravis ad portandũ : labia ejus repleta sunt indignatione, & lingua ej⁹ quasi ignis devorans: 28 Spiritus ejus velut torrens inundans usque ad mediũ colli, ad perdendas gentes in nihilum, & frænũ erroris, ꝙ erat in maxillis populorum. 29 Canticũ erit vobis sicut nox sanctificatæ solennitatis, & lætitia cordis sicut qui ꝑgit cum tibia, ut intret in montem Dñi ad fortem Israel. 30 Et auditam faciet Dominus gloriam vocis suæ, & terrorem brachii sui ostendet in comminatione furoris, & flammâ ignis devorantis : allidet in turbine, & in lapide grandinis. 31 A voce enim Dñi pavebit Assur virgâ ꝑcussus. 32 Et erit transitus virgæ fundatus, quam requiescere faciet Dominus super eum in tympanis & citharis : & in bellis præcipuis expugnabit eos. 33 Præparata est enim ab heri Topheth, à rege præparata, profunda, & dilatata. Nutrimenta ejus, ignis & ligna multa : flatus Dñi sicut torrens sulphuris succendens eam.

CAP. XXXI.

1 VÆ qui descendunt in Ægyptum ad auxiliũ, in equis sperantes, & habentes fiduciam super quadrigis, quia multæ sunt; & super equitib⁹, quia prævalidi nimis : & non sunt confisi super Sanctũ Israel, & Dominũ non requisierunt. 2 Ipse autem sapiens adduxit malum, & verba sua non abstulit : & consurget contra domum pessimorũ, & contra auxilium operantium iniquitatẽ. 3 Ægyptus, homo, & non Deus: & equi eorum, caro, & non spiritus : & Dominus inclinabit manum suam, & corruet auxiliator, & cadet cui præstatur auxilium, simúlque 4 omnes consumentur. Quia hæc dicit Dominus ad me; Quomodò si rugiat leo & catulus leonis super prædã suam, et cùm occurrerit ei multitudo pastorum, à voce eorum non formidabit, et à multitudine eorum non pavebit: sic descendet Dominus exercituum ut prælietur super montem Sion, et super collem ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

27 Ἰδοὺ τὸ ὄνομα κυρίου (✝) ἔρχεται διὰ χρόνου, καιόμενος (῎) θυμὸς μετὰ δόξης τὸ λόγιον τῶν χειλέων αὐτοῦ, (ω) λόγιον ὀργῆς πλήρες, καὶ ἡ ὀργὴ τοῦ θυμοῦ ὡς πῦρ ἔδεται. 28 Καὶ τὸ πνεῦμα αὐτοῦ ὡς ὕδωρ ἐν φάραγγι σῦρον, ἥξει ἕως τοῦ τραχήλου, καὶ διαιρεθήσεται, (α) τοῦ ταράξαι ἔθνη ἐπὶ πλανήσει ματαίᾳ, καὶ διώξεται αὐτοὺς (β) πλάνησις, καὶ λήψεται αὐτοὺς κατὰ πρόσωπον αὐτῶν. 29 Μὴ διαπαντὸς δεῖ ὑμᾶς εὐφραίνεσθαι, καὶ εἰσπορεύεσθαι εἰς τὰ ἅγιά μου διαπαντὸς, ὡσεὶ ἑορτάζοντας, καὶ ὡσεὶ εὐφραινομένους εἰσελθεῖν μετὰ αὐλοῦ (γ) εἰς τὸ ὄρος κυρίου πρὸς τὸν θεὸν τοῦ Ἰσραήλ; 30 Καὶ ἀκουστὴν ποιήσει (δ) κύριος τὴν δόξαν τῆς φωνῆς αὐτοῦ, καὶ τὸν θυμὸν τοῦ βραχίονος αὐτοῦ, δεῖξαι μετὰ θυμοῦ καὶ ὀργῆς, καὶ φλογὸς κατεσθιούσης, κεραυνώσει βιαίως, καὶ ὡς ὕδωρ καὶ χάλαζα συγκαταφερομένη βίᾳ. 31 Διὰ γὰρ (ε) τῆς φωνῆς κυρίου ἡττηθήσονται (ζ) Ἀσσύριοι, τῇ πληγῇ ᾗ ἂν (῎) πατάξῃ αὐτούς. 32 Καὶ ἔσται αὐτῷ κυκλόθεν, ὅθεν ἦν (η) αὐτῶν ἡ ἐλπὶς τῆς βοηθείας, ἐφ' ᾗ αὐτὸς ἐπεποίθει, αὐτοὶ μετὰ (θ) τυμπάνων καὶ κιθάρας πολεμήσουσιν αὐτὸν ἐκ μεταβολῆς. 33 (ι) Σὺ γὰρ πρὸ ἡμερῶν ἀπαιτηθήσῃ· (κ) μὴ καί σοι ἡτοιμάσθη βασιλεύειν; φάραγγα βαθεῖαν, ξύλα κείμενα, πῦρ καὶ ξύλα πολλά, ὁ θυμὸς κυρίου ὡς φάραγξ ὑπὸ θείου καιομένη.

Ecce nomen Domini ve
(π) tempus : ardens fu
gloria, eloquium labiorum
eloquium iræ plenum :
furoris, sicut ignis, devora
spiritus ejus sicut aqua i
trahens veniet usque ad c
& dividetur, ut conturba
tes super errore vano : &
quetur eos error, & capiet e
faciem ipsorum. Numqu
per oportet vos lætari & i
in Sancta mea jugiter, quasi
celebrantes, & quasi gau
ingredi cum tibia in monte
mini ad Deum Israel? E
ditam faciet Dominus glo
vocis suæ, & furorem b
sui (o) ostendere; cum fu
& ira, & flamma devora
fulminabit vehementer, &
aqua & grando descendent
vi. Per vocem enim Dom
perabuntur Assyrii plagâ qua
cutiet eos. Et erit ei pe
tum, undè erat eorum spes au
lii, in qua ipse confidera
cum tympanis, & cith
gnabunt contra eum ex
tatione. Tu (p) enim an
exigêris. Nunquid & tu
tum est regnare? vallem pro
dam, ligna posita, ignem, &
gna multa, furor Domini,
vallis sulphure succensa.

MS. A. (✝) διὰ χρόνου ἔρχεται πολλοῦ, (῎) ὁ θυμὸς· (ω) τὸ λόγ
(α) τοῦ ἔθνη ταράξαι (β) πλανήσεις ματαία, (γ) εἰς τὸν οἶκον τοῦ
(δ) ὁ θεὸς τὴν (ε) τὴν φωνὴν (ζ) οἱ Ἀσσύριοι, (῎) πατάξει (η)
(θ) αὐλῶν καὶ κιθάρας (ι) Οὐ γὰρ σὺ (κ) μὴ καὶ σύ

ΚΕΦ. λα'.

1 ΟΥαὶ οἱ καταβαίνοντες εἰς Αἴγυπτον ἐπὶ βοήθειαν, οἱ ἐφ' ἵπποις πεποιθότες καὶ ἐφ' ἅρμασι, ἔστι γὰρ πολλά, καὶ ἐφ' ἵπποις πλῆθος σφόδρα· καὶ οὐκ ἦσαν πεποιθότες ἐπὶ τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραήλ, καὶ (α) τὸν κύριον οὐκ ἐξεζήτησαν. 2 Καὶ αὐτὸς (β) σοφῶς ἤγαγεν ἐπ' αὐτοὺς κακά, καὶ ὁ λόγος αὐτοῦ οὐ μὴ ἀθετηθῇ, καὶ ἐπαναστήσεται ἐπ' οἴκους ἀνθρώπων πονηρῶν, καὶ ἐπὶ τὴν ἐλπίδα αὐτῶν τὴν ματαίαν, 3 Αἰγύπτιον, ἄνθρωπον, καὶ οὐ θεόν, ἵππων σάρκας, καὶ οὐκ ἔστι βοήθεια. ὁ δὲ κύριος ἐπάξει τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπ' αὐτούς· καὶ κοπιάσουσιν οἱ βοηθοῦντες, καὶ ἅμα πάντες ἀπολοῦνται. 4 Ὅτι οὕτως εἶπέ μοι κύριος, Ὃν τρόπον (γ) βοήσῃ ὁ λέων, ἢ ὁ σκύμνος ἐπὶ τῇ θήρᾳ ᾗ ἔλαβε, καὶ κεκράξῃ ἐπ' αὐτῇ, ἕως ἂν ἐμπλησθῇ τὰ ὄρη τῆς φωνῆς αὐτοῦ, καὶ ἡττήθησαν, καὶ τὸ πλῆθος τοῦ θυμοῦ ἐπτοήθησαν, οὕτως καταβήσεται κύριος σαβαὼθ ἐπιστρατεῦσαι ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ Σιών, (δ) ἐπὶ τὰ ὄρη αὐτῆς.

CAP. XXXI.

VÆ, qui descendunt in Æ
gyptum ad auxilium, qui in
fidentes sunt, & in curru
quia multi sunt, & in equ
titudo magna. Et non erant
dentes super Sanctum Isr
Dominum non requisier
ipse sapienter adduxit
mala : & verbum ejus
strabitur : & insurget
mos hominum pessimorum
per spem eorum vanam, Æ
um, hominem, & non Deu
quorum carnes, & non est
lium. Dominus autem
manum suam super eos. La
rabunt auxiliatores: &
omnes peribunt: Quia sic
mihi Dominus, Quem
mabit leo, aut catulus
per venatione, quam cepit
c ferabitur super ea, donec
antur montes voce ejus, &
fuerint, & multitudine
expaverint; sic descendet Do
Sabaoth, ut prælietur
tem Sion, super mont

MS. A. (α) τὸν θεὸν οὐκ ἐξεζήτησαν (β) σοφὸς (γ) ἐὰν βοήσῃ λέων,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

27 הא שמא דיי מתגלי כמא דאתנביאו עלוהי נבייא מלקדמין תקיף רוגזיה וקשי
28 מלסוברא מן קדמוהי על רשיעיא נפק לוט ומימריה כאשא אכלא : ומימריה
כנחל מגבר עד צואר תקיפין יקטל לארמא עממיא ברמות ריקנו וזמם דטעו בליסת
29 עממיא : תושבחא תהי לכון כליליא דאתקדש ביה חגא וחדות לבא כמא דנגדין
30 בתורתא באבובא למעל בטור קודשא דיי לאתחזאה קדם תקיפא דישראל : וישמע
יי ית זיו קל מימריה ותקוף דרע גבורתיה יגלי בתקוף רגז ושלהובי אשא דמשיצא
31 פסילן בדור וזרמית ואבנין דברד : ארי מקל מימרא דיי מתבר אתוראה די בשולטן
32 מחי : ויהי כל מעבר רברביהון ותקיפיהון די יניח יי פורענות גבורתיה ביניהון
בתופין ובכנורין ישבחון בית ישראל ועל קרבא תקיפא דיתעביד להון בעממיא :
33 ארי מסדרא מן עלמין לקביל חוביהון גהנם אף היא מלך עלמיא אתקנא לעמיקא
ולאפתאא מדורא דאשתא דלקא בה כדבאעין סגיאין מימרא דיי כנחל מגבר
גפרית דלקא בה :

לא

1 וי דנחתין למצרים לסעיד ועל סוסותא מסתמכין ומתרחצין על רתיכיא ארי סגיאין
ועל פרשיא ארי תקיפין לחדא ולא אסתמיכו על מימר קדישא דישראל ואולפן מן
2 קדם יי לא תבעו : ואף הוא בחוכמתיה איתי בישתא על דעבדיה וית פתגמוהי לא
3 בטיל ואקים על בית מבאשין ועל דסעדין לאורת שקר : ומצרים אנש ולא רב
וסוסותהון בסר ולא רוח ויי ירים מחת גבורתיה ויתקל סעיד ויפול סעיד וכחדא
4 כולהון ישתיצון : ארי כדנן אמר יי לי כמא דמכלי אריא בר אריון על צידיה דמזדמנין
עלוהי דיר רעין מקלהון לא אתבר ומאתרגושתהון לא מודעזע כן תתגלי מלכותא
דיי צבאות למשרי על טורא דציון ועל רמתה :

PARAPH. CHALD. Versio Latina

Ecce nomen Domini revelabitur sicut prophetaverunt de eo pr
ab antiquo : fortis est furor ejus, & gravior quàm ut ferri que
ejus egressa est maledictio super impios; & verbum ejus quasi
sumens. Verbum autem ejus quasi torrens inundans ad collum u
tes interficiet, ad agitandos populos agitatione vanitatis, & frænum
in maxillis populorum. Canticum erit vobis sicut in nocte
sanctificata est solennitas; & lætitia cordis, sicut qui pergunt
sione & in organo, ut ingrediantur in montem sanctum Do
appareant coram fortissimo Israel. Et auditam faciet Dominus
vocis verbi sui, & fortitudinem brachii potentiæ suæ revelabit
roris, & flamma ignis consumentis *sculptilia*, allisione & tu
lapidibus grandinis. Quia à voce verbi Domini conteretur A
cum dominio percutiebat. Et erit omnis transitus principu
& fortium eorum, in quibus ponet Dominus ultionem potentiæ
tympanis & citharis laudabit domus Israel, propter bellum
pro eis fiet in populis. Quia ordinata est gehenna à seculis pro
cata eorum. Rex quoque seculorum præparavit eam profunda
tam : pyra ignis incensa est in ea, sicut in lignis multis : Verbum
quasi torrens sulphuris inundans succendens eam.

CAP. XXXI.

VÆ qui descendunt in Ægyptum ad auxilium, & in equis
& confidunt in quadrigis, quia multæ sunt; & in equitibus, quia
nimis : & non innituntur in verbo sancti Israel; & doctrinam
Domini non requisierunt. Ipse quoque in sapientia sua addu
propter *quod fecit* : & verba sua non fecit irrita, & constabilivit
mum malignorum, & contra adjutores iniquitatis & menda
enim homines sunt, & non principes; & equi eorum caro, &
Et Dominus levabit plagam potentiæ suæ, et corruet auxilia
cui præstatur auxilium, et simul omnes consumentur. Quia h
minus mihi, Sicut clamat leo et catulus leonis super venatione
tra quem convenit caula pastorum, à voce eorum non contere
multu eorum non *terrebitur*; sic revelabitur regnum Domini
ad castrametandum super montem Sion, et super collem

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܐ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܬܐ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܝܩܝܕ ܪܘܓܙܗ ܘܝܩܝܪ ܡܘܒܠܗ. ܘܣܦܘܬܗ ܡܠܝܢ 27
ܪܘܓܙܐ. ܘܠܫܢܗ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܕܝܩܕܐ. *ܘܪܘܚܗ ܐܝܟ ܢܚܠܐ ܕܓܪܦ. ܥܕܡܐ ܠܨܘܪܐ ܢܦܣܘܩ. 28
ܠܡܫܓܫܘ ܥܡܡܐ ܡܛܠ ܛܥܝܘܬܗܘܢ ܣܪܝܩܬܐ. ܘܡܛܠ ܦܓܘܕܐ ܡܛܥܝܢܐ ܕܥܠ
ܦܟܘܗܝ ܕܥܡܡܐ. *ܬܫܒܘܚܬܐ ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܟܠܝܠܐ ܕܡܬܩܕܫ ܒܥܐܕܐ. ܘܚܕܘܬܐ ܕܠܒܐ. 29
ܐܝܟ ܗܘ ܕܡܗܠܟ ܒܫܦܝܪܘܬܐ. ܠܡܐܬܐ ܠܛܘܪܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬ ܚܣܝܢܐ ܕܝܥܩܘܒ. *ܘܢܫܡܥ 30
ܡܪܝܐ ܫܘܒܚܐ ܕܩܠܗ. ܘܡܚܘܬܐ ܕܕܪܥܗ ܢܚܘܐ. ܒܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܐ. ܘܒܫܠܗܒܝܬܐ
ܕܢܘܪܐ ܕܐܟܠܐ. ܒܙܘܥܬܐ ܕܥܠܥܠܐ ܘܟܐܦܐ ܕܒܪܕܐ. *ܡܛܠ ܕܡܢ ܩܕܡ ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܢܬܬܒܪ 31
ܐܬܘܪܝܐ. ܘܒܫܒܛܐ ܢܬܡܚܐ. *ܘܢܗܘܐ ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܫܒܛܐ ܕܡܟܒܫܢܐ ܕܢܣܝܡ 32
ܡܪܝܐ ܥܠܘܗܝ. ܒܬܦܐ ܘܒܟܢܪܐ. ܘܒܩܪܒܐ ܥܫܝܢܐ ܢܬܟܬܫ ܥܡܗ. *ܡܛܠ ܕܡܛܝܒܐ 33
ܡܢ ܩܕܡ ܝܘܡܬܐ ܡܐܟܘܠܬܗ. ܐܦ ܗܝ ܐܬܛܝܒܬ ܠܡܡܠܟܘ. ܘܐܥܡܩܬ ܘܐܪܘܚܬ ܒܝܬ
ܡܫܪܝܗ. ܩܝܣܐ ܣܓܝܐܐ ܘܢܘܪܐ. ܘܢܫܡܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܝܟ ܢܚܠܐ ܕܟܒܪܝܬܐ ܝܩܕܐ ܒܗ.
* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܐ * ܗܘ ܕܥܠ ܝܗܘܕܝܐ ܕܢܚܬܘ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܝ ܠܗܘܢ ܠܡܥܕܪܢܘܬܐ 1
ܘܡܬܬܟܠܝܢ ܥܠ ܡܪܟܒܬܐ ܡܛܠ ܕܣܓܝܐܢ. ܘܥܠ ܦܪܫܐ ܡܛܠ ܕܥܫܝܢܝܢ ܛܒ. ܘܠܐ ܐܬܬܟܠܘ ܥܠ
ܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܡܪܝܐ ܠܐ ܒܥܘ. *ܘܗܘ ܚܟܝܡܐ ܐܝܬܝ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܠܘܗܝ ܠܐ ܗܦܟ. 2
ܘܢܩܘܡ ܥܠ ܒܝܬܐ ܕܒܝܫܐ. ܘܥܠ ܥܘܕܪܢܐ ܕܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. *ܘܡܨܪܝܐ ܒܢܝܢܫܐ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܗܘܘ 3
ܐܠܗܐ. ܘܪܟܫܝܗܘܢ ܒܣܪܐ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܗܘܘ ܪܘܚܐ. ܘܡܪܝܐ ܢܪܡܐ ܐܝܕܗ. ܘܢܬܬܩܠ
ܡܥܕܪܢܐ. ܘܢܦܠ ܐܦ ܗܘ ܕܡܬܥܕܪ. ܘܟܠܗܘܢ ܐܟܚܕܐ ܢܫܬܠܡܘܢ. *ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ 4
ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܕܢܗܡ ܐܪܝܐ ܘܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܥܠ ܨܝܕܗ ܕܨܕ. ܘܩܥܝܢ ܥܠܘܗܝ
ܣܓܝܐܐ ܪܥܘܬܐ. ܘܡܢ ܩܠܗܘܢ ܠܐ ܙܝܥ. ܘܡܢ ܣܘܓܐܗܘܢ ܠܐ ܡܬܒܗܬ. ܗܟܢܐ
ܢܚܘܬ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܡܬܚܝܠܘ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܘܥܠ ܪܡܬܗ.

Ecce nomen Domini venit è longinquo, ar- 27
dens ira ejus, & glorioſum onus ejus, labia e-
jus plena ſunt irâ, lingua ejus velut ignis ar-
deſcens, Et ſpiritus ejus, quaſi torrens abri- 28
piens, vel collum obtruncabit: ad exagitandū
populos propter vanum errorem eorum, &
propter frænum ducens in errorem, quod eſt
ſuper maxillas populorum. Canticum vobis 29
erit corona quæ ſanctificabitur in ſolennitate,
& hilaritas cordis, qualis eſt ejus qui hilariter
ambulat ut veniat in montem Domini ad Po-
tentiſſimum Jacobi. Et audire faciet Domi- 30
nus majeſtatem vocis ſuæ, & ictum brachii ſui
oſtendet per æſtuantem iram, flammam ignis
conſumentem, nimbum quaſſantem, & lapides
grandinis. Nam à conſpectu majeſtatis Do- 31
mini frangetur Aſſyrius, fuſti vapulabit, Et in 32
cunctis operibus ejˢ aderit virga domans quā
Dn̄s imponet ei cum tympanis ac citharis, &
gravi bello pugnabit adverſùs eū. Quia præ- 33
parat multis ante diebus cibū ſuum, ipſa quo-
que *(Dei majeſtas)* paravit ſe ad regnandum,
& in profundum ac latum extendit domiciliū
ſuum: multa adſunt ligna & ignis, & halitus
Dn̄i quaſi torrens ſulphuris ardentis in eo.

CAP. XXXI.

VÆ iis qui deſcendunt in Ægyptum ad im- 1
petrandum auxilium, innituntur equis, mul-
tis curribus & robuſtiſſimis equitibus confi-
dunt; Sancto autē Iſraelis minimè confidunt,
nec Dominum curant. At is ſapientiâ ſuâ 2
malum inferet, & verba ſua nequaquam re-
vocabit; ſed inſurget contra domum mali-
gnorum, & contra auxilium operantium ini-
quitatem. Et verò Ægyptii homines ſunt, 3
non dii; & equi eorum carnei ſunt, non ſpi-
rituales: quare Domino manum ſuam demit-
tente, deſtruetur is qui præbebit auxilium; &
is etiam cui auxilium præbebitur, corruet;
omnéſque ſimul conſumentur. Sic enim dixit 4
mihi Dominus, Quemadmodum rugit leo ſeu
catulus leonis ſuper id quod prædatus eſt, &
conclamantibus in eum multis paſtoribus, eo-
rum clamore minimè terretur, neque multi-
tudinem eorum formidat; ita deſcendet Do-
minus potentiſſimus ad roborandum ſeſe ſu-
per monte Sionis & ſuper collibus ejus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح الخامس عشر *

27 * ها اسم الرب يجي من زمن كثير* الغضب مشتعل بمجد كلمة شفتيه· كلمة مملوة رجزا·
28 ورجز الغضب ياكل مثل النار* وروحه مثل ما يجر في واد ياتي الي العنق· ويقسم ليقلق
29 الامم على الضلالة الباطلة· ويطردهم الضلالة الباطلة· وتاخذهم على وجوههم *هل ينبغي
لكم ان تفرحوا كل حين· وتدخلوا الي مقادسي كل حين· لتدخلوا مثل معيدين ومثل فرحين
30 بمزمر الي بيت الرب الي اله اسرايل *ويصنع الله مجد صوته مسموعا· ليظهر غضب ذراعه بغضب
31 ورجز ولهيب اكل يصعق بصعوبة· ومثل ما وبرد نازل بعسف* لان الموصليين يعلبون
32 لاجل صوت الرب· بالضربة التي يضربهم بها· ويكون له من دوله *فلهذا كان له رجا
33 المعونة التي توكل هو عليها· هاولاء مع زمور وقيثار يحاربوه منذ البدو* اليس انت
من قبل ايام ابيت· هل وانت استعديت لتملكي واديا عميقا· حطبا موضوعا· نارا وحطبا
كثيرا· غضب الرب مثل واد مملوء من كبريت·

* الفصل الحادي والثلثون · * النبوة في الذين انطلق بهم من اليهود الي ارض مصر·

1 *ويل النازلين الي مصر للمعونة· المتوكلون على الخيل والمراكب لانها كثيرة وعلى الخيل
2 كثير جدا: ولم يكونوا متوكلين على قدوس اسرايل· ولم يطلبوا الله* وهو الحكيم جلب
3 عليهم الاسوا· وكلمته لن تخلف· ويقيم على بيوت اناس اشرار وعلى رجاهم الباطل* انسانا
مصريا وليس الها· لحوم خيول وليست هي معونة· والرب يجلب يده عليهم ويتعبون المعينون
4 ويهلكون جميعا معا* لان هكذا قال لي الرب· على نحو ما يصرخ الاسد او الشبل على الفريسة
التي اخذها· ويصرخ عليها الي ان تمتلي الجبال من صوته· ويغلبون ولا يخشون كثرة
الغضب· هكذا ينزل رب الجنود ليعسكر علي جبل صهيون وعلي جبالها

Textus decimus quintus.

Ecce nomen Domini venturum eſt à tem- 27
pore multo, ira ardebit in majeſtate verbi
labiorum ejus, verbi furore pleni, furor
autem iræ devorabit ſicut ignis; Et 28
ſpiritus ejus velut aqua trahens in tor-
rente, ad collum uſque perveniens; ſeſe-
que dividet ut vexet populos propter va-
num errorem: perſequetur enim eos va-
nus error, & occupabit faciem illorum.
Nam decet vos lætari quocunque tempore, 29
& ingredi Sanctuaria mea quocunque
tempore? ingredi [illegible] quam (ut feſtum a-
gentes, & ut tibiâ lætantes) in ædem
Domini, ad Deum Iſraelis? Efficiet quo- 30
que Deus ut audiatur majeſtas vocis
ſuæ, quatenus oſtendat iram brachii ſui;
cum indignatione atque furore & flam-
mâ devorante immanem edet ſonitum, &
velut aqua violenter cum grandine ruens.
Nam Aſſyrii conſternabuntur ob vocem 31
Domini, ex ictu quo feriet illos, quique eos
undique obſidebit. Propter id enim ſpe- 32
rabat auxilium illud cui ipſe confidebat.
Hi cum tibiis & citharâ belligerabunt
adverſùs eum ab initio. Nónne tu mul- 33
tis ab hinc diebus veniſti? num tu quo-
que te parâſti ad poſſidendum vallem
profundam, ligna diſpoſita, ignem &
ligna multa? Ita Domini ſimilis eſt valli
ardenti ſulphureæ.

CAP. XXXI.

Prophetia de Judæis qui abierunt in terram Ægypti.

VÆ deſcendentibus in Ægyptum ad 1
auxilium, fiduciam collocantibus in
equis & curribus quòd multi ſint, & in
equitum multitudine copioſâ; Sancto
autem Iſraelis minimè confidentibus, neq;
Deum quærentibus. Ipſe verò ſapien- 2
tiſſimus adducet ſuper eos mala; nam
verbum ejus haudquaquam mentietur,
ſed conſtituet ſuper domos hominum re-
proborum, & ſuper vanam ſpem illorum,
Hominem Ægyptium, non autem Deum, 3
& carnes equorum quæ nullius ſunt ad-
jumenti: Dominus enim admovebit ma-
num ſuam ſuper eos, & fatigabuntur
adjutores, & omnes ſimul interibunt.
Nam ita mihi dixit Dominus, Quemad- 4
modum rugit leo vel leunculus ſuper
prædam quam cepit, rugitque ſuper eam
donec impleantur montes rugitu ejus, tum
demum victoriam reportant, nec timent
multitudinem furoris; ita deſcendet
Dominus exercituum ad caſtra ponenda
ſuper monte Sion & ſuper montibus
ejus.

ישעיה: לב

, Jeruſalaim *ſuper* exercituum Dominus proteget ſic ,volantes aves Sicut
5 כצפרים עפות כן יגן יהוה צבאות על־ירושלם
quem ad Convertimini .ſervando & tranſiliendo,liberando & protegendo
6 גנון והציל פסוח והמליט: שובו לאשר
reprobabunt illa die in Quia .Iſrael filii *defectionem profundaverunt*
7 העמיקו סרה בני ישראל: כי ביום ההוא ימאסון
fecerunt quæ ,*ſui auri vana &* ,*ſui argenti vana* unuſquiſque
איש אלילי כספו ואלילי זהבו אשר עשו
non ,gladio in Aſſur cadet Et .peccatum veſtræ manus vobis
8 לכם ידיכם חטא: ונפל אשור בחרב לא־
;gladii *facie ab* à ſibi fugiet & :eum *comedet* hominis non gladius & ,viri
איש וחרב לא־אדם תאכלנו ונס לו מפני־חרב
, tranſibit timore præ ſuam *rupem* Et .erunt *tributum in* ejus juvenes &
9 ובחוריו למס יהיו: וסלעו ממגור יעבור
ei ignis cui , DOMINUS dixit ,ejus principes vexillo à pavebunt &
וחתו מנס שריו נאם־יהוה אשר־אור לו
.Jeruſalaim in *ei* clibanus & , Sijon in
בציון ותנור לו בירושלם:

CAP. XXXII. לב

.præerunt judicium ad principes & : rex regnabit juſtitiam ad Ecce
1 הן לצדק ימלך־מלך ולשרים למשפט ישרו:
rivi ſicut : *inundationis abſconſio* & , *venti* latibulum ſicut vir erit Et
2 והיה־איש כמחבא־רוח וסתר זרם כפלגי־
.ſitienti terra in gravis petræ umbra ut ,*ſiccitate* in aquarum
מים בציון כצל סלע־כבד בארץ עיפה:
audientium aures & : videntium oculi *hallucinabuntur* non Et
3 ולא תשעינה עיני ראים ואזני שמעים
lingua & : ſcientiam intelliget *præcipitatorum* cor Et .attendent
4 תקשבנה: ולבב נמהרים יבין לדעת ולשון
ſtulto ultrà vocabitur Non .*candida* loqui feſtinabit balborum
5 עלגים תמהר לדבר צחות: לא־יקרא עוד לנבל
ſtultitiam ſtultus Nam .dives dicetur non *tenaci* & : liberalis
6 נדיב ולכילי לא יאמר שוע: כי נבל נבלה
, *hypocriſim faciendum ad* : iniquitatem faciet ejus cor & , loquetur
ידבר ולבו יעשה־און לעשות חנף
animam *exinaniendum ad* , errorem DOMINUM contra *loquendum ad* &
ולדבר אל־יהוה תועה להריק נפש
ejus vaſa *tenacis* Et .faciat deficere ſitientis potum & , eſurientis
7 רעב ומשקה צמא יחסיר: וכלי כליו
eloquiis in *afflictos corrumpendum ad conſuluit verſutias* ipſe : mala
רעים הוא זמות יעץ לחבל ענוים באמרי
liberalia liberalis Et .judicio *egenum alloquendum in* & , *falſitatis*
8 שקר ובדבר אביון משפט: ונדיב נדיבות
Mulieres .ſtabit liberalia propter ipſe & : conſuluit
9 יעץ והוא על־נדיבות יקום: נשים
confidentes filiæ ; meam vocem audite , ſurgite *tranquillæ*
שאננות קמנה שמענה קולי בנות בטחות
,*turbabimini* anno *ſuper Dies* .meum eloquium percipite auribus
10 האזנה אמרתי: ימים על־שנה תרגזנה
Pavete .veniet non collectio ,vindemia defecit quia : confidentes
11 בטחות כי כלה בציר אסף בלי יבוא: חרדו
ſuper *te accinge & ,te nuda &* , *te exue* ,confidentes *contremiſce* ,*tranquillæ*
שאננות רגזה בטחות פשטה וערה וחגורה על־
ſuper *deſiderii* agros ſuper ,plangentes ubera Super .lumbos
12 חלצים: על־שדים ספדים על־שדי־חמד על־
.fructificantem vitem
גפן פריה:

Verſio VUL. LAT.

5 Sicut aves volantes, ſic proteget Domin⁹ exercituū Jeruſalem , protegens & liberans,
6 tranſiens & ſalvans. Convertimini ſicut in profundum receſſeratis filii Iſrael.
7 In die enim illa abjiciet vir idola argenti ſui, & idola auri ſui, quæ fecerunt vobis manus veſtræ
8 in peccatum. Et cadet Aſſur in gladio non viri, & gladius non hominis vorabit eum, & fugiet non à facie gladii : & juvenes ejus vectigales erunt :
9 Et fortitudo ejus à terrore tranſibit, & pavebunt fugientes principes ejus : dixit Dñs; cujus ignis eſt in Sion, & caminus ejus in Jeruſalem.

CAP. XXXII.

1 ECce in juſtitia regnabit rex , & principes in judicio
2 præerunt. Et erit vir ſicut qui abſconditur à vento, & celat ſe à tempeſtate, ſicut rivi aquarum in ſiti, & umbra petræ prominentis in terra de-
3 ſerta. Non caligabunt oculi videntium, & aures audientium
4 diligenter auſcultabunt. Et cor ſtultorum intelliget ſcientiam, & lingua balborum ve-
5 lociter loquetur & planè. Non vocabitur ultrà is, qui inſipiens eſt, princeps : neque fraudulentus appellabitur major :
6 Stultus enim fatua loquetur, & cor ejus faciet iniquitatem, ut perficiat ſimulationem, & loquatur ad Dominū fraudulenter, & vacuam faciat animam eſurientis , & potum
7 ſitienti auferat. Fraudulenti vaſa peſſima ſunt: ipſe enim cogitationes concinnavit ad perdendos mites in ſermone mendacii, cùm loqueretur pauper
8 judicium. Princeps verò ea, quæ digna ſunt principe, cogitabit , & ipſe ſuper duces
9 ſtabit. Mulieres opulentæ ſurgite, & audite vocem meam: filiæ confidentes percipite au-
10 ribus eloquium meum. Poſt dies enim & annum, vos conturbabimini confitentes : conſummata eſt enim vindemia, collectio ultrà non veniet.
11 Obſtupeſcite opulentæ, conturbamini confidentes: exuite vos, & confundimini, accin-
12 gite lumbos veſtros. Super ubera plangite, ſuper regione deſiderabili , ſuper vinea fertili.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

5 Ὡς ὄρνεα πετόμενα, οὕτως ὑπερασπιεῖ (ε) κύριος Σαβαὼθ, ὑπὲρ Ἱερουσαλὴμ ὑπερασπιεῖ, καὶ ἐξελεῖται, καὶ περιποιήσεται, καὶ
6 σώσει. Ἐπιστράφητε οἱ τὴν βαθεῖαν βουλὴν (ζ) βουλευόμενοι καὶ (η) ἄνομον, υἱοὶ Ἰσρα-
7 ήλ. Ὅτι τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ (θ) ἀπαρνήσονται οἱ ἄνθρωποι τὰ χειροποίητα αὐτῶν τὰ ἀργυρᾶ, (ι) καὶ τὰ χειροποίητα τὰ χρυσᾶ, ἃ
8 ἐποίησαν αἱ χεῖρες αὐτῶν· Καὶ πεσεῖται Ἀσσούρ. οὐ μάχαιρα ἀνδρὸς, οὐδὲ μάχαιρα ἀνθρώπου καταφάγεται αὐτὸν, καὶ φεύξεται οὐκ ἀπὸ προσώπου (κ) μαχαίρας. οἱ δὲ νεανί-
9 σκοι ἔσονται εἰς ἥττημα, Πέτρᾳ γὰρ περιληφθήσονται ὡς χάρακι, καὶ ἡττηθήσονται, ὁ δὲ φεύγων ἁλώσεται. τάδε λέγει κύριος, Μακάριος ὃς ἔχει ἐν Σιὼν σπέρμα, καὶ οἰκείους ἐν Ἱερουσαλήμ.

Sicut aves volantes, ſic
Dominus Sabaoth ſuper Hieru
lem, proteget, & eruet, &
ſervabit, & ſalvabit. Conve
mini, qui profundum conſi
conſultabatis, & iniquum,
Iſrael. In die enim illa abn
homines manufacta ſua ar
& manufacta aurea, quæ
rant manus eorum: Et c
ſur: non gladius viri, ne
dius hominis vorabit, eu
fugiet non à facie glad
nes autem erunt in cladem
trâ enim circumdabunt
vallo, & vincentur: qu
fugerit, capietur. Hæc d
minus; (a) Beatus, (
bet in Sion ſemen, & do
in Hieruſalem.

MS. A. (ε) κύριος ὑπὲρ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐξελεῖτε (ζ) βουλευόμ (η) ἄνομον. Ὅτι τῇ ἡμέρᾳ (θ) ἀπαρνηθήσονται (ι) καὶ τὰ χει (κ) διώκοντος. οἱ δὲ

ΚΕΦ. λβ΄.

1 Ἰδοὺ γὰρ βασιλεὺς δίκαιος βασιλεύσει, καὶ
2 ἄρχοντες μετὰ κρίσεως ἄρξουσι. Καὶ ἔσται ὁ ἄνθρωπος κρύπτων τοὺς λόγους (α) αὐτοῦ, καὶ κρυβήσεται, ὡς ἀφ' ὕδατος φερομένου· καὶ φανήσεται ἐν Σιὼν ὡς ποταμὸς φερόμενος
3 ἔνδοξος ἐν γῇ διψώσῃ. Καὶ οὐκέτι ἔσονται πεποιθότες ἐπ' ἀνθρώποις, ἀλλὰ τὰ ὦτα
4 (β) ἀκούειν δώσουσι. Καὶ ἡ καρδία τῶν (γ) ἀσθενούντων προσέξει τοῦ ἀκούειν, καὶ αἱ γλῶσσαι αἱ ψελλίζουσαι ταχὺ μαθήσονται λαλεῖν
5 εἰρήνην. Καὶ οὐκέτι (δ) μὴ εἴπωσι τῷ μωρῷ ἄρχειν, καὶ οὐκέτι (ε) μὴ εἴπωσιν οἱ ὑπηρέται
6 σου, Σίγα. Ὁ γὰρ μωρὸς μωρὰ λαλήσει, καὶ ἡ καρδία (ζ) αὐτοῦ μάταια νοήσει, τοῦ συντελεῖν ἄνομα, καὶ λαλεῖν πρὸς κύριον πλάνησιν, τοῦ (η) διασπεῖραι ψυχὰς πεινώσας, καὶ τὰς ψυχὰς τὰς διψώσας κενὰς (θ) ποιή-
7 σει. Ἡ γὰρ βουλὴ τῶν πονηρῶν ἄνομα (ι) βουλεύσεται, καταφθεῖραι ταπεινοὺς ἐν λόγοις ἀδίκοις, καὶ διασκεδάσαι (κ) λόγους ταπει-
8 νῶν ἐν κρίσει. Οἱ δὲ εὐσεβεῖς συνετὰ ἐβου-
9 λεύσαντο, καὶ αὕτη ἡ βουλὴ μενεῖ. Γυναῖκες πλούσιαι ἀνάστητε, καὶ ἀκούσατε τῆς φωνῆς μου· θυγατέρες ἐν ἐλπίδι (λ) εἰσακούσατε λόγους
10 μου. Ἡμέρας ἐνιαυτοῦ μνείαν ποιήσασθε ἐν ὀδύνῃ (·) μετ' ἐλπίδος. ἀνήλωται ὁ τρυγη-
11 τὸς, πέπαυται (μ), οὐκέτι μὴ ἔλθῃ. Ἔκστητε, λυπήθητε αἱ πεποιθυῖαι, ἐκδύσασθε, γυμναὶ γένεσθε, περιζώσασθε (ν) τὰς ὀσφύας,
12 Καὶ ἐπὶ τῶν μαστῶν κόπτεσθε, (ξ) ἀπὸ ἀγροῦ ἐπιθυμήματος, καὶ ἀμπέλου (ο) γεννήματος.

CAP. XXXII.

ECce enim rex juſtus re
& (a)principes cum judi
erunt. Et (b) erit homo
ſermones ſuos, & a
quaſi ab aqua, quæ fer
apparebit in Sion, ſicut
currens inclytus in terra
Et nequaquam ultrà erunt
dentes in hominibus: ſ
ad audiendum dabunt:
infirmorum attendet
linguæ balbutientes
loqui pacem, Et nequaquam
trà dicent ſtulto, ut
nec ultrà dicent m
ce. Fatu⁹ enim fatua
cor ejus vana intelliget
ciendum iniqua, &
ad Dominum errorem,
dat animas eſurientes
ſitientes vacuas (
ſilium enim peſſimorum
cogitabit, interficere
ſermonibus iniqua,
verba humilium in
autem ſapientia cogita
hoc conſilium perma
res divites ſurgite, &
cem meam: filiæ in
verba mea: (d) Di
moriam facite in
Conſumpta eſt vindemia
ſavit, non ultrà
ſtupeſcite, triſtamini
exuimini, nudæ
cingite lumbos,
plangite, de agro
te genimine.

MS. A. (α) τούτου, (β) δώσουσιν ἀκούειν. (γ) ἀσθενούν μὴ (ζ) αὐτῶν (η) διαφθεῖραι (θ) ποιῆσαι. (ι) βουλεύεται, (λ) ἀκούσατε τοὺς λόγους μου. (·) μετὰ (μ) ὁ σπόρος, καὶ οὐκέτι τὰς ὀσφύας, (ξ) περὶ ἀγροῦ (ο) γεννήματος.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 כעופא דטאס כן תתגלי גבורתיה דיי צבאות על ירושלם יגין וישזיב יציל ויעדי: תובו 6
7 לאוריתא ארי אסגיתון למחטי בני ישראל: ארי בעדנא ההיא ירחקון גבר טעוות
8 כספהון וטעות דהבהון דעבדו לכון ידיכון חובא: ויפול אתוראה בחרב לא אנש וחרב
לא אנש תשיצניה ויערוק ליה כמן קדם דקטלין בחרבא וגברוהי לתבר יהון:
9 ושלטונוהי מן קדם דחלא יעדון ויתברון מן קדם נסא רברבוהי אמר יי דזהור ליה בציון
לעבדי אוריתא ותנור בעיר ליה דאשא בירושלם לדעברו על מימריה:

לב

1 הא לקושטא ימלוך מלכא וצדיקיא למעבד פורענות דין מן עממיא יתרבון: ויהון 2
צדיקיא דמטמרין מן קדם רשיעיא כמא דמטמרין מן קדם זרמית יתובון ויתרבון
ויתקביל אולפנהון בפריע כפצידי מיא דנגדין בארעא משלהיא כטלל כיף מיקר
3 בארעא משלהיא: ולא יטמטמן עיני צדיקיא ואודני מקבלי אולפן יציתן: ולבב 4
5 מהרהרין יסבר למידע ולישנהון דהוה בלים יוחי למללא בצחצחן: לא יתאמר עוד
6 לרשיעא צדיקא ולדעברו על מימריה לא יתאמר תקיפין: ארי רשיעיא רשעא ממללין
ובלבהון מתעשתין אונס למעבד שקר ולמללא קדם יי סטיא לשלהאה נפש צדיקיא
דמחמדין לאולפנא הא כמכפנא ללחמא ופתגמי אוריתא דאנון כמיא בצחיא מרמן
7 לבטלא: ורשיעיא דעובדיהון בישין ואנון על עיצת חטאין מתמלכין לחבלא ענותניא
8 במלי שקר ופתגמי חשיכיא בדינא: וצדיקיא קושטא מתמלכין ואנון על קושטהון
9 יתקימון: מדינן דיתבן שליון קומא שמענא קלי כרכין די שרן לרוחצן אציתא למימרי:
10 יומין עם שנין יזועון די שרן לרוחצן ארי סף עבורא עללא לית למכנש: איתברו דיתבן 11
12 שליון זעו די שרן לרוחצן שלחו ואתערטילו ואסרו על חרצין: על דדין ספדין על חקלי
חמידתא על גופנין טענין:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sicut avis quæ volat, ſic revelabitur potentia Dñi exercituū ſup
proteget & liberabit, ſalvabit & tranſibit. Convertimini ad lege
multū *peccaſtis filii* Iſrael. Quia in tempore illo projiciet unuſqu
argenti ſui, & idola auri ſui, quæ fecerunt vobis manus veſtra
Et cadet Aſſur in gladio non viri, & gladi⁹ non hominis conſume
fugiet *tanquam* à facie occidentiū gladio; & robuſti ejus in inter
Principes autē ejus à facie timoris tranſibunt , & contereNtur præ
raculū principes ej⁹. Dicit Dñs, cujus ſplendor eſt in Sion facien
gem, & caminus ignis ardens in Jeruſalem, tranſgredientibus ver

CAP. XXXII.

ECce in veritate regnabit rex ; & juſti, ut ſumant juſtā vindictā
lis, in dignitatē evehentur. Et erunt juſti qui ſeſe abſcondunt
pios, ſicut qui abdunt ſeſe à tempeſtate ; revertentur & mag
tur, & ſuſcipietur citò doctrina eorum, ſicut rivi aquarum de
terra ſitiente: & ſicut umbra petræ gravis in terra arida. Nec
oculi juſtorum : & aures recipientiū diſciplinā auſcultabunt. Et c
entiū intelliget ſcientiā, & lingua eorum quæ erat balbutiens, velo
quetur eleganter. Non *dicetur* amplius *impius juſtus*, & qu
ſunt verbū ejus, non dicentur fortes. Quia impii impietatem loqu
in corde ſuo vim cogitant ut faciant iniquū, & ut loquantur cora
rorem, ut laſſam faciant animam juſtorū, qui non aliter deſiderant
nam, quâm famelicus panem; & verba legis, quæ ſunt ſicut aqua
putant auferre. Impii autem, quorum opera mala ſunt, ipſi in co
catorū deliberant diſperdere mites verbis mendacib', & verba p
in judicio. Juſti autem veritatē cogitant; & ipſi ſup veritatē
ſtent. Provinciæ quæ habitamini tranquillè : ſurgite audite voce
Civitates quæ habitamini confidenter, auſcultate verbum meum.
enim cum annis commovebuntur, qui habitant confidenter, qu
frumentum, & non ſunt fruges ad colligendum. Contriti ſunt q
bant in pace: contremuerunt qui morabantur confidenter:
& nudamini, & accingite lumbos. Super ubera plangentes,
deſiderabiles, ſuper vites oneratas [*fructu.*]

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܕܦܪܚܢ܂ ܗܟܢܐ ܢܓܢ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ܂ ܢܓܢ ܘܢܦܨܐ 5
ܘܢܥܕܪ܂ ܘܢܦܪܘܩ܂ * ܬܘܒܘ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܕܐܥܡܩܬܘܢ ܡܪܕܘܬܐ܂ * ܡܛܠ ܕܒܝܘܡܐ ܗܘ 6
ܢܫܠܘܢ ܒܢܝܢܫܐ ܦܬܟܪܐ ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ܂ ܕܥܒܕ ܠܟܘܢ ܐܝܕܝܟܘܢ ܠܚܛܗܐ܂ * ܘܢܦܠ ܐܬܘܪܝܐ 7
ܒܚܪܒܐ܂ ܚܪܒܐ ܠܐ ܕܓܒܪܐ ܘܚܪܒܐ ܠܐ ܕܓܢܒܪܐ ܬܐܟܠܝܘܗܝ܂ ܘܢܥܪܘܩ ܡܢ ܩܕܡ 8
ܚܪܒܐ܂ ܘܥܠܝܡܘܗܝ ܢܗܘܘܢ ܠܬܕܡܘܪܬܐ܂ * ܘܫܘܥܐ ܕܡܥܡܪܗ ܢܥܒܪ܂ ܘܢܬܒܪܘܢ ܡܢ ܩܕܡ 9
ܐܬܐ ܪܘܪܒܢܘܗܝ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܕܢܘܗܪܗ ܒܨܗܝܘܢ܂ ܘܐܬܘܢܗ ܒܐܘܪܫܠܡ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܒ *

* ܗܐ ܒܟܐܢܘܬܐ ܡܠܟܐ܂ ܘܪܘܪܒܢܐ ܒܕܝܢܐ ܢܫܬܠܛܘܢ܂ * ܘܢܗܘܐ ܓܒܪܐ܂ ܐܝܟ ܡܛܫܝܬܐ 1
ܠܪܘܚܐ܂ ܘܐܝܟ ܡܛܠܠܐ ܠܥܠܥܠܐ܂ ܘܐܝܟ ܦܠܓܐ ܕܡܝܐ ܒܨܗܝܐ܂ ܘܐܝܟ ܛܠܠܐ ܕܟܐܦܐ ܥܫܝܢܬܐ 2
ܒܐܪܥܐ ܡܬܥܪܩܠܬܐ܂ * ܘܠܐ ܢܬܟܣܝܢ ܥܝܢܝܗܘܢ ܕܚܙܝܢ܂ ܘܐܕܢܝܗܘܢ ܕܫܡܥܝܢ 3
ܢܨܘܬܢ܂ * ܘܠܒܐ ܕܣܟܠܐ ܢܣܬܟܠ ܝܕܥܬܐ܂ ܘܠܫܢܐ ܕܥܓܠܐ܂ ܢܣܪܗܒ ܠܡܡܠܠܘ 4
ܫܠܡܐ܂ * ܘܠܐ ܢܩܪܘܢ ܬܘܒ ܠܣܟܠܐ ܪܫܐ܂ ܘܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܠܒܠܝܐ ܦܪܘܩܐ܂ * ܡܛܠ 5
ܕܣܟܠܐ ܣܟܠܘܬܐ ܡܡܠܠ܂ ܘܠܒܗ ܥܒܕ ܥܘܠܐ܂ ܕܢܥܒܕ ܛܠܘܡܝܐ܂ ܘܢܡܠܠ ܛܘܥܝܝܐ܂ 6
ܘܢܣܪܩ ܢܦܫܐ ܕܟܦܢܐ܂ ܘܡܫܬܝܐ ܕܨܗܝܐ ܢܚܣܪ܂ * ܡܐܢܐ ܕܝܠܗ ܒܝܫܐ܂ ܬܪܥܝܬܗ ܕܚܛܝܐ 7
ܗܘܐ܂ ܠܡܚܒܠܘ ܡܣܟܢܐ ܒܡܠܐ ܕܫܘܩܪܐ܂ ܘܕܝܢܗ ܕܡܣܟܢܐ ܒܕܝܢܐ܂ ܘܡܠܟܗ ܕܚܟܝܡܐ
ܪܘܪܒܐ܂ * ܘܪܒܐ ܪܘܪܒܬܐ ܡܬܪܥܐ܂ ܘܗܘ ܥܠ ܪܘܪܒܬܐ ܢܩܘܡ܂ * ܢܫܐ ܥܬܝܪܬܐ ܩܘܡܝܢ 8
ܫܡܥܝܢ ܩܠܝ܂ ܒܢܬܐ ܬܟܝܠܬܐ܂ ܨܘܬܝܢ ܡܠܝ܂ * ܝܘܡܬܐ ܕܫܢܬܐ ܚܕܐ ܬܬܪܓܙܢ ܬܟܝܠܬܐ܂ 9
ܡܛܠ ܕܫܠܡ ܩܛܦܐ܂ ܘܟܢܫܐ ܠܐ ܐܬܐ܂ * ܙܘܥܝܢ ܥܬܝܪܬܐ܂ ܘܐܬܪܓܙܝܢ ܬܟܝܠܬܐ܂ 10
ܫܠܚܝܢ ܘܥܪܛܠܝܢ܂ ܘܐܣܘܪܝܢ ܣܩܐ ܥܠ ܚܨܝܟܝܢ܂ * ܥܠ ܬܕܝܐ ܐܪܩܕܝܢ܂ ܥܠ ܚܩܠܐ ܪܓܝܓܐ ܘܥܠ 11
ܓܦܬܐ ܘܦܐܪܝܗ܂ 12

* Ut aves quæ volant, ſic proteget Dominus potentiſſimus Jeroſolymam, proteget, liberabit, tuebitur, & adjuvabit. 5
Pœnitentiam agite filii Iſrael, quoniam aggravâſtis animadverſionem. 6
Nam eo die contemnent homines idola aurea & argentea quæ fabricaverunt vobis manus veſtræ in peccatum. 7
Et cadet Aſſyrius gladio; non virorum quidem gladius, neque gladius gigantum conſumet eum; fugiet à gladio, & juvenes ejus erunt in prodigium: 8
In rupe domicilii ſui commorabitur, & conterentur à conſpectu prodigii principes ejus, dicit Dominus cujus lux eſt in Sione, & fornax in Jeruſalem. 9

CAP. XXXII.

* Ecce juſtè rex, & principes jure dominabuntur: 1
Et erit vir vice latibuli à vento, & vice receptûs à nimbo; ut rivus aquarum in ſiti, & velut umbra ingentis ſaxi in terra *incommodis* agitata. 2
Non obtegentur oculi eorum qui vident, & aures eorum qui audiunt, auſcultabunt: 3
Cor inſipiens intelliget ſcientiam, & lingua balborum feſtinabit loqui pacem: 4
Stolidum nequaquam vocabunt deinceps principem, neque *bonis* exhauſtum vocabunt ſervatorem. 5
Stolidus enim ſtolida loquitur, & cor ejus fabricat iniquitatem, ut committat impietatem, loquatur errorem, vacuam reddat animam famelici, & ſitibundi potum exhauriat. 6
Peſſima ſunt inſtrumenta *hominis* vacui; nam ipſius cogitatio tendit ad corrumpendos pauperes ſermone falſitatis, & cauſam inopis in judicio. 7
Magnus verò magna molitur, idémque magnis rebus inſiſtit. 8
Mulieres opulentæ, ſurgite, audite vocem meam: filiæ confidentes, auſcultate verba mea: 9
Diebus anni *unius* iraſcentur eæ quæ confidunt, quia deficiet vindemia, collecta *jam* erit, nec adveniet. 10
Trepidate opulentæ, & iraſcimini quæ confiditis: exuite atque nudate vos, ciliciis accingite lumbos veſtros: 11
De veſtris uberibus plorate, de gramine campi déque viti & fructibus ejus. 12

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* مثل الطيور الطاير هكذا يستر الرب علي ايروسليم • ويعتقها ويقتنيها ويخلصها * ارجعوا 5 6
ايها المفكرون فكرا عميقا * واما انه في ذلك اليوم ينكر البشر صنايع ايديهم الفضة والذهب 7
التي صنعتها ايديهم * ويسقط الموصلي • لا سيف رجل ولا سيف انسان ياكله • ويهرب ليس 8
من وجه طارد • الشبان يصيرون للهزيمة * لانهم يحوطون بالصخرة مثل سياح ويهزمون • 9
والهارب يهلك • هكذا يقول الرب * مغبوط الذي له في صهيون زرع وخواص في ايروسليم •

* الفصل الثاني والثلثون •

* لان ها ملك عدل يملك • ورؤساء يرؤسون بحكم * ويكون الانسان يخفي هذه الكلمات • 1 2
ويختفي مثل من ماء جار • ويظهر في صهيون مثل نهر جار ممتد في ارض عطشانة * وليس 3
يصيرون بعد متوكلين على الناس • لكن يعطون الاذان ليسمعوا * وقلب الضعفاء يصح 4
ليسمع • والالسنة الهذارة تتعلم سريعا ان تتكلم بالسلامة * وليس يقولون فيما بعد للجاهل 5
ان يرؤس • ولا يقولون ايضا لخدامك اسكتي * لان الجاهل يتكلم جهلا • وقلبه يصنع باطلا 6
ليكمل اثما • ويتكلم على الله ضلالا ليفسد نفوسا جايعة • ويجعل النفوس العطشانة خاوية •
* لان راي الاشرار يروي اثما ليفسد المتواضعين بالكلمات الظالمة • ويعكس افكار المتواضعين 7
في الحكم * فاما الحسني العبادة فيفكرون فهما • فهذه المشورة تدوم * ايتها النسوة الغنيات 8 9
قمن واسمعن صوتي • يا بنات الرجاء اسمعوا كلماتي * اصنعوا ذكر يوم سنة • بوجع مع 10
رجاء • باد القطاف • انكف الزرع • وليس ياتي بعد * اذهلن احزن يا متوكلات • تعرين 11
صرن عرايا • منطقن حقاكن مسوحا * ونحن على الثدي • من اجل حقل اللذة 12
وكرم الغلة •

* *Sicut aves volantes, ita proteget Dominus Jeroſolymam, liberabit, poſſidebit, ac ſervabit eam.* 5
Revertimini O qui profundam cogitationem meditamini. 6
Et quandoquidem eo die renunciabunt mortales opificiis manuum ſuarum argenteis & aureis quæ conflaverant manus eorum, 7
Cadet Aſſyrius. Non gladius viri, nec hominis gladius devorabit eum, & fugiet nemine perſequente: juvenes ad ſtragem deſtinabuntur; 8
Circumibunt enim petram ſicut errabundi, & profligabuntur; & profugus peribit. Sic dicit Dominus, Fœlicem illum qui habuerit in Sione agrum, & aliquid proprii in Jeruſalem. 9

CAP. XXXII.

* *Nam ecce rex juſtiſſimus regnabit, & principes cum juſtitia principatum gerent:* 1
Et homo occultabit hæc verba, & abſcondet ſe ut ab aqua rapiente: & apparebit in Sione quaſi fluvius decurrens porrigens ſeſe per terram ſitibundam. 2
Non erunt impoſterùm fidentes hominibus, ſed præbebunt aures ad audiendum; 3
Animus imbecillium conſtans erit ad audiendum, & linguæ barbaræ brevi diſcent loqui pacem. 4
Non dicent impoſterùm ſtulto ut principatum gerat, neque dicent ampliùs ſervitui, Tace. 5
Stultus enim ſtultitiam loquitur, & cor ejus fabricat vanitatem, ut perficiat flagitium: perversè loquitur de Deo, ut corrumpat animas famelicas, & animas ſitibundas reddat inane. 6
Mens etenim reproborum ſcelus architectatur, ut humiles corrumpat pravis ſermonibus, & humilium conſilia pervertat in judicio. 7
At verò ſanæ religionis viri meditantur prudentiam: atque hujuſmodi conſilium perdurabit. 8
Heus fœminæ opulentæ, ſurgite, & audite vocem meam: O filiæ confidentes, audite ſermones meos: 9
Unius diei memoriam anni ſpatio recolite cum dolore atq; ſpe: Periit vindemia, deſiit ſementis, nec veniet ampliùs. 10
Obſtupeſcite, dolete O confidentes, deponite veſtes, nudamini, accingite lumbos veſtros ciliciis, 11
Et plangite ſuper ubera, propter agrum voluptuoſum & vineam frugiferam. 12

יְשַׁעְיָה : לב

ſuper quia : aſcendet vepris ſpina mei populi humum Super
13 עַל אַדְמַת עַמִּי קוֹץ שָׁמִיר תַּעֲלֶה כִּי עַל־
palatium Quia .exultantem civitatem , gaudii domos omnes
14 כָּל־בָּתֵּי מָשׂוֹשׂ קִרְיָה עַלִּיזָה׃ כִּי־אַרְמוֹן
pro ſunt fortalitium & , altus locus , eſt relicta urbis turba ,eſt dimiſſum
נֻטָּשׁ הֲמוֹן עִיר עֻזָּב עֹפֶל וָבַחַן הָיָה בְעַד
.gregum paſcuum onagrorum gaudium , ſeculum in uſque , ſpeluncis
מְעָרוֹת עַד־עוֹלָם מְשׂוֹשׂ פְּרָאִים מִרְעֵה עֲדָרִים׃
deſertum erit & : excelſo de ſpiritus nos ſuper effundatur Donec
15 עַד־יֵעָרֶה עָלֵינוּ רוּחַ מִמָּרוֹם וְהָיָה מִדְבָּר
habitabit Et .reputabitur ſylvam in Charmel & , Charmel in
16 לַכַּרְמֶל וְכַרְמֶל לַיַּעַר יֵחָשֵׁב׃ וְשָׁכַן
erit Et .ſedebit Charmel in juſtitia & , judicium deſerto in
17 בַּמִּדְבָּר מִשְׁפָּט וּצְדָקָה בַּכַּרְמֶל תֵּשֵׁב׃ וְהָיָה
fiducia & requieſcere juſtitiæ cultus & , pax juſtitiæ opus
מַעֲשֵׂה הַצְּדָקָה שָׁלוֹם וַעֲבֹדַת הַצְּדָקָה הַשְׁקֵט וָבֶטַח
: pacis habitaculo in meus populus habitabit Et .ſeculum in uſque
18 עַד־עוֹלָם׃ וְיָשַׁב עַמִּי בִּנְוֵה שָׁלוֹם
.tranquillis requiebus in & , fiduciarum tabernaculis in &
וּבְמִשְׁכְּנוֹת מִבְטַחִים וּבִמְנוּחֹת שַׁאֲנַנּוֹת׃
ſe humiliabit loco humili in & : ſylva deſcendendo in grandinabit Et
19 וּבָרַד בְּרֶדֶת הַיָּעַר וּבַשִּׁפְלָה תִּשְׁפַּל
pedem mittentes : aquas omnes ſuper ſerentes vos Beati .civitas
20 הָעִיר׃ אַשְׁרֵיכֶם זֹרְעֵי עַל־כָּל־מַיִם מְשַׁלְּחֵי רֶגֶל־
.aſini & bovis
הַשּׁוֹר וְהַחֲמוֹר׃

CAP. XXXIII. לג

non & , prævaricanti & , direptus non tu & prædanti Væ
1 הוֹי שׁוֹדֵד וְאַתָּה לֹא שָׁדוּד וּבוֹגֵד וְלֹא־
: devaſtaberis devaſtans te conſummare Secundùm .te in ſunt prævaricati
בָגְדוּ בָךְ כַּהֲתִמְךָ שׁוֹדֵד תּוּשָּׁד
DOMINE .te in prævaricabuntur , prævaricari te complere ſecundùm
2 כַּנְּלֹתְךָ לִבְגֹּד יִבְגְּדוּ־בָךְ׃ יְהוָה
,matutinis in eorum brachium eſto : expectavimus Te .noſtri miſerere
חָנֵּנוּ לְךָ קִוִּינוּ הֱיֵה זְרֹעָם לַבְּקָרִים
turbæ voce A .anguſtiæ tempore in noſtra ſalus etiam
3 אַף־יְשׁוּעָתֵנוּ בְּעֵת צָרָה׃ מִקּוֹל הָמוֹן
.gentes ſunt diſperſæ tua exaltatione ab , populi ſunt vagati
נָדְדוּ עַמִּים מֵרוֹמְמֻתֶךָ נָפְצוּ גּוֹיִם׃
locuſtarum inceſſus ſicut : bruchi collectione veſtrum ſpolium colligetur Et
4 וְאֻסַּף שְׁלַלְכֶם אֹסֶף הֶחָסִיל כְּמַשַּׁק גֵּבִים
habitans quoniam , DOMINUS eſt Elevatus .eum per incedens
5 שֹׁקֵק בּוֹ׃ נִשְׂגָּב יְהוָה כִּי שֹׁכֵן
veritas erit Et .juſtitia & , judicio Sijon implevit : excelſo
6 מָרוֹם מִלֵּא צִיּוֹן מִשְׁפָּט וּצְדָקָה׃ וְהָיָה אֱמוּנַת
Timor .ſcientia & ,ſapientia , ſalutum fortitudo tuorum temporum
עִתֶּיךָ חֹסֶן יְשׁוּעֹת חָכְמַת וָדָעַת יִרְאַת
: foris clamabunt Erelam En .ejus theſaurus ipſe DOMINI
7 יְהוָה הִיא אוֹצָרוֹ׃ הֵן אֶרְאֶלָּם צָעֲקוּ חֻצָה
ceſſavit , viæ ſtratæ ſunt Deſolatæ .flebunt amarè pacis nuncii
8 מַלְאֲכֵי שָׁלוֹם מַר יִבְכָּיוּן׃ נָשַׁמּוּ מְסִלּוֹת שָׁבַת
non , civitates reprobavit , pactum irritavit : ſemitam tranſiens
עֹבֵר אֹרַח הֵפֵר בְּרִית מָאַס עָרִים לֹא
.hominem reputavit
חָשַׁב אֱנוֹשׁ׃

Verſio VULG. LAT.

13 Super humum populi mei ſpinæ & vepres aſcendent: quantò magis ſuper omnes domos gaudii civitatis exultantis? 14 Domus enim dimiſſa eſt, multitudo urbis relicta eſt, tenebræ & palpatio factæ ſunt ſup ſpeluncas uſq; in æternū. Gaudiū onagrorū paſcua gregum, 15 Donec effundatur ſuper nos ſpiritus de excelſo: & erit deſertum in Charmel, et Charmel in ſaltum reputabitur. 16 Et habitabit in ſolitudine judicium, & juſtitia in Charmel ſedebit. 17 Et erit opus juſtitiæ pax, & cultus juſtitiæ ſilentium, & ſecuritas uſque in ſempiternum. 18 Et ſedebit populus meus in pulchritudine pacis, et in tabernaculis fiduciæ, & in requie opulenta. 19 Grando autem in deſcenſione ſaltûs, & humilitate humiliabitur civitas. 20 Beati, qui ſeminatis ſuper omnes aquas, immittentes pedem bovis & aſini.

CAP. XXXIII.

1 VÆ qui prædaris, nónne & ipſe prædaberis? & qui ſpernis, nónne & ipſe ſperneris? cùm conſummaveris deprædationem, deprædaberis: cùm fatigatus deſieris contemnere, contemnêris. 2 Dñe, miſerere noſtri: te enim expectavimus: eſto brachium noſtrum in manè, & ſalus noſtra in tempore tribulationis. 3 A voce angeli fugerunt populi, & ab exaltatione tua diſperſæ ſunt gentes. 4 Et congregabuntur ſpolia veſtra ſicut colligitur bruchus, velut cùm foſſæ plenæ fuerint de eo. 5 Magnificatus eſt Dominus, quoniam habitavit in excelſo: implevit 6 Sion judicio & juſtitiâ. Et erit fides in temporibus tuis: divitiæ ſalutis ſapientia & ſcientia: timor Domini ipſe eſt 7 theſaurus ejus. Ecce videntes clamabunt foris, angeli 8 pacis amare flebunt. Diſſipatæ ſunt viæ, ceſſavit tranſiens per ſemitam, irritum factum eſt pactum, projecit civitates, non reputavit homines.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

13 Ἡ γῆ τοῦ λαοῦ μου, ἄκανθα καὶ χόρτος ἀναβήσεται, καὶ ἐκ πάσης οἰκίας εὐφροσύνη ἀρθήσεται. 14 Πόλις πλουσία, οἶκοι ἐγκαταλελειμμένοι πλοῦτον πόλεως (π) ἀφήσουσιν, οἴκους ἐπιθυμήματος. καὶ ἔσονται αἱ κῶμαι σπήλαια ἕως τοῦ αἰῶνος, εὐφροσύνη ὄνων ἀγρίων, βοσκήματα ποιμένων, 15 Ἕως ἂν (ρ) ἔλθῃ ἐφ' ὑμᾶς πνεῦμα ἀφ' ὑψηλοῦ. καὶ ἔσται ἔρημος ὁ Χέρμελ, καὶ ὁ Χέρμελ εἰς δρυμὸν λογισθήσεται. 16 Καὶ ἀναπαύσεται ἐν τῇ ἐρήμῳ κρίμα, καὶ δικαιοσύνη ἐν τῷ Καρμήλῳ 17 κατοικήσει. Καὶ ἔσται τὰ ἔργα τῆς δικαιοσύνης, εἰρήνη. καὶ κρατήσει ἡ δικαιοσύνη ἀνάπαυσιν, καὶ πεποιθότες (σ) ἕως τοῦ αἰῶνος, 18 Καὶ κατοικήσει ὁ λαὸς αὐτοῦ ἐν πόλει εἰρήνης, καὶ ἐνοικήσει πεποιθώς, καὶ ἀναπαύσονται μετὰ πλούτου. 19 Ἡ δὲ χάλαζα (τ) ἐὰν καταβῇ, οὐκ ἐφ' ὑμᾶς ἥξει. καὶ ἔσονται οἱ ἐνοικοῦντες ἐν τοῖς δρυμοῖς πεποιθότες, ὡς 20 οἱ ἐν τῇ πεδινῇ. Μακάριοι οἱ σπείροντες ἐπὶ πᾶν ὕδωρ, οὗ βοῦς καὶ ὄνος πατεῖ.

(g) Terra populi mei, ſ
fœnum aſcendit: &
domo lætitia tolletur
opulenta, domus derelictæ
vitias civitatis dimittent
(h) deſiderii. Et erunt
ſpeluncæ uſque in ſeculum
tia aſinorum agreſtium
paſtorum; Donec
vos ſpiritus ab excelſo
Chermel erit deſertum,
mel in ſaltum deputabitur
requieſcet in deſerto judicium
juſtitia in Carmelo
Et erunt opera juſtitiæ,
obtinebit juſtitia requiem
confidentes uſque in ſeculum
habitabit populus ejus
pacis, & inhabitabit
& requieſcent cum
Grando autem ſi deſcenderit
cediet ſuper vos. Et
inhabitant in ſylvis, ſicut
ut, qui in campeſtri. Be
nantes ſuper omnem aquam
bos, & aſinus calcat.

MS. A. (π) καὶ οἴκους ἐπιθυμητοὺς ἀφήσουσιν. καὶ ἔσονται (ρ)
σονται ἕως (τ) * ἐὰν ἐὰν

ΚΕΦ. λγ'.

1 ΟΥαὶ τοῖς ταλαιπωροῦσιν ὑμᾶς, ὑμᾶς δὲ οὐδεὶς ποιεῖ ταλαιπώρους, καὶ ὁ ἀθετῶν (α) ὑμᾶς οὐκ ἀθετεῖ. ἁλώσονται οἱ ἀθετοῦντες, καὶ παραδοθήσονται, καὶ ὡς σὴς 2 (β) ἐφ' ἱματίου, οὕτως ἡττηθήσονται. Κύριε ἐλέησον ἡμᾶς, ἐπὶ σοὶ γὰρ πεποίθαμεν. ἐγενήθη τὸ σπέρμα τῶν ἀπειθούντων εἰς ἀπώλειαν, ἡ δὲ σωτηρία ἡμῶν ἐν καιρῷ θλί- 3 ψεως. Διὰ φωνὴν τοῦ (γ) φόβου σου ἐξέστησαν λαοὶ ἀπὸ τοῦ φόβου σου, καὶ διεσπάρησαν τὰ 4 ἔθνη. Νῦν δὲ συναχθήσεται τὰ σκῦλα ὑμῶν (δ) μικροῦ καὶ μεγάλου· ὃν τρόπον ἐάν τις συναγάγῃ ἀκρίδας, οὕτως (ε) ἐμπαί- 5 ξουσιν ὑμῖν. Ἅγιος ὁ θεὸς ὁ κατοικῶν ἐν (ζ) ὑψηλῷ, ἐνεπλήσθη Σιὼν κρίσεως καὶ δι- 6 καιοσύνης. Ἐν νόμῳ παραδοθήσονται, ἐν θησαυροῖς ἡ σωτηρία ἡμῶν, ἐκεῖ σοφία καὶ ἐπιστήμη καὶ εὐσέβεια πρὸς τὸν κύριον· οὗ- 7 τοί εἰσι θησαυροὶ δικαιοσύνης. Ἰδοὺ δὴ ἐν τῷ φόβῳ ὑμῶν (η) οὗτοι φοβηθήσονται· οὓς ἐφοβεῖσθε, (θ) βοήσονται ἀφ' ὑμῶν· (ι) ἄγγελοι ἀποσταλήσονται, πικρῶς κλαίοντες, πα- 8 ρακαλοῦντες εἰρήνην. Ἐρημωθήσονται γὰρ αἱ τούτων ὁδοί· (κ) πέπαυται ὁ φόβος τῶν ἐθνῶν, καὶ ἡ πρὸς τούτους διαθήκη αἴρεται, καὶ οὐ μὴ λογίσησθε αὐτοὺς ἀνθρώπους.

CAP. XXXIII.

VÆ, qui vos miſer
unt: vos autem nemo fa
vos: & qui reprobat
reprobat. Capientur
& tradentur: & qu
in veſtimento, ſic
Domine, miſerere noſ
nim confidimus. Fact
men incredulorum
nem: ſalus autem
pore tribulationis. P
timoris obſtupuerunt
more tuo, & diſperſæ
tes. Nunc autem con
ſpolia veſtra parvi &
quomodò ſi quis con
ſtas, ſic illudent
Deus, qui habitat
Repleta eſt Sion
tiâ: In lege tradentur
ſauris ſalus noſtra
pientia, & ſcientia,
ga Dominum: iſti
ſapientiæ. Ecce
more veſtro ipſi time
timebatis, (b)
vobis: angeli
flentes, obſecrantes
ſolabuntur enim
ceſſavit timor gentium
ſtamentum, quod
tur: & non reputa
mines.

MS. A. (α) ὑμῖν (β) ἐπὶ (γ) φόβου σου (δ) ἀπὸ μικροῦ
ται (ζ) ὑψηλοῖς, (η) αὐτοὶ (θ) φοβηθήσονται (ι) ἄγγελοι γὰρ ἀπο
ἀξιοῦντες εἰρήνην, πικρῶς (κ) πέπαυται γὰρ ὁ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

13 עַל אַרְעָא דְעַמִּי דְהוּבָאִי וּבוּר הָסִיק אֲרֵי עַל כָּל בָּתֵּי דִיץ קִרְוָא תַקִּיפָא: אֲרֵי בֵית מַקְדְשָׁא
14 חָרוּב הֲמוֹן קִרְוַיָא דַהֲוָאָה פָלְחִין בֵּיהּ צַדְיָאָה בֵּית תָקְפָנָא וּמַטְמוֹרְנָא אִתְבְּלַשׁ וּכְרֵי חֲרוּב
15 וּצְדֵי עַד זְמַן אֲתַר דַהֲוָה בֵית חֶדְוָא וְחִידוּ לְמַלְכַיָא כְדוּ הֲוָה מִבַּז לְמַשְׁרְיָן: כָּל דְנָה עַד
דְיֵיתֵי לָנָא רוּחַ מִן קֳדָם דִשְׁכִנְתֵּיהּ בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא וִיהֵי מַדְבְּרָא לְכַרְמְלָא וְכַרְמְלָא קִרְוִין
16 סַגִיאִין יְתִיב: וְיִשְׁרוֹן בְּמַדְבְּרָא עָבְדֵי דִינָא וְעָבְדֵי צִדְקְתָא יַת כַּרְמְלָא יֵיתְבוּן: וִיהוֹן עָבְדֵי
17 צִדְקְתָא שְׁלָם וּמְפַלְחֵי צִדְקְתָא יִשְׁקְטוּן וְיִשְׁרוֹן לְרוּחְצָן עַד עָלְמַיָא: וְיֵתִיבוּן עַמִּי
18 בִּמְדוֹרֵיהוֹן שְׁלָם וְעַל אַרְעֲהוֹן לְרוּחְצָן וּבְקִרְוֵיהוֹן שַׁלְוָן: וְיֵחוֹת בַּרְדָא וְיִקְטִיל מַשְׁרְיַת
19 עַמְמַיָא וְיִצְדוּן וִיסוּפוּן דָיְרֵיהוֹן: טוּבֵיכוֹן צַדִיקַיָא עֲבַדְתּוּן לְכוֹן עוֹבָדִין טָבִין דְאַתּוּן דָמַן
20 לְדָרְעִין עַל שַׁקְיָא מְשַׁלְחִין לְאַדְרְכָא בְּתוֹרַיָא וּלְמִכְנַשׁ בַּחֲמָרַיָא:

לג

1 וַי דְאָתֵי לְמִבַּז וְיָתָךְ לָא יִבְזוּן וּדְאָתֵי לְמֵינַס וְיָתָךְ לָא יֵינְסוּן כַּד תֵּיתֵי לְמִבַּז יִבְזוּנָךְ וְכַד
2 תִּלְאֵי לְמֵינַס יַנְסוּנָךְ: יְיָ רְחֵים עֲלָנָא לְמֵימְרָךְ סַבַּרְנָא הֲוֵי תוּקְפָנָא בְּכָל יוֹם אַף פּוּרְקָנָנָא
3 בְּעִדָּן עָקָא: מִקָּל הֲמוֹן אִתְבָּרוּ עַמְמַיָא מִסְגֵי גְבוּרָן אִתְבַּדַּרוּ מַלְכְוָתָא: וְיִכְנְשׁוּן בֵּית
4 יִשְׂרָאֵל נִכְסֵי עַמְמַיָא סַנְאֵיהוֹן כְּמָא דְכָנְשִׁין יַת זַחְלָא וְאָזְן בְּמָאנֵי זֵינָא כְּמָא דְאָזַן בְּזוֹרַקְתָּא:
5 תַּקִּיף יְיָ דְאַשְׁרֵי שְׁכִנְתֵּיהּ בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא דַאֲמַר לְמַמְלֵי צִיּוֹן עָבְדֵי דִין דִקְשׁוֹט וְזָכוּ: וִיהֵי
6 מָא דַאֲמַרְתָּא לְאוֹטָבָא לְדַחֲלָתָךְ אֵיתֵיתָא וְקַיֵמְתָּא בְעִדָּנֵיהּ תְּקוֹף וּפוּרְקָן חוּכְמְתָא וּמַדַּע
7 לְדַחֲלַיָא דַיְיָ אוֹצַר טוּבֵיהּ עָתִיד: הָא כַד אִתְגְלֵי לְהוֹן יְצוּחוּן בִּמְרַד אִזְגַדֵי עַמְמַיָא דְאָזְלוּ
8 לְבַסָּרָא שְׁלָם תָּבוּ לְמֶהֱוֵי בָּכַן בִּמְרִיר נַפְשׁ: צַדְיָאוּ כִּבְשַׁיָא פְסַקוּ עָדֵי אוֹרְחָא עַל דְאַשְׁנִיאוּ
קְיָמָא אִתְרַחֲקוּ מִקִרְוֵיהוֹן לָא חֲשִׁיבוּ בְנֵי אֱנָשָׁא דְבִישְׁתָּא אָתְיָא עֲלֵיהוֹן:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Super terram populi mei: quæ tribulum & ſpinam profert, ſup
que domos exultationis civitatis municæ. Quoniam domus ſanct
ſtructa eſt, multitudo civitatum quæ in ea colebant, deſerta eſt
titudinis noſtræ & refugii noſtri perveſtigata eſt, & ſuffoſſa, &
vaſtata uſque ad tempus: locus in quo erat lætitia, & gaudiū reg
factus eſt in direptionem exercitibus. Omnia hæc ſuſtinemus donec
nobis reſpiratio à facie ejus, cujus majeſtas eſt in cœlis excelſis. E
ſertum in Carmel, & Carmel civitatibus multis habitabitur. Et
tur in deſerto facientes judicium, & facientes juſtitiam in Carm
bunt. Et erunt operantes juſtitiam in pace, & colentes juſtitiam
& habitabunt confidenter uſque in ſecula. Et habitabit popul
bitaculis ſuis pacificè, & in terra ſua confidenter, & in civitatibus
lentis. Et deſcendet grando, & interficiet caſtra populorum; &
& conſumentur habitatores eorum. Beati eſtis vos juſti qui fe
bona: qui ſimiles eſtis ſeminantibus ſuper irrigua, qui immittunt
calcandum, & aſinos ad colligendum.

CAP. XXXIII.

VÆ qui venis ad prædandum, nónne & te deprædabuntur
nis ad diripiendum nónne & te diripient? cùm venis ad depræ
vaſtaberis; & cùm fatigatus deſieris diripere, diripient te. Do
re noſtri; in verbū tuū ſperavimus: eſto fortitudo noſtra in om
quoque noſtra in tempore tribulationis. A voce multitudinis
populi; præ multitudine magnalium diſperſa ſunt regna. Et colle
Iſrael ſubſtantias populorum inimicorum ſuorum, ſicut colligu
& armabuntur armis bellicis, ſicut armantur lorica. Fortis eſt Do
habitare fecit majeſtatem ſuam in cœlis excelſis; qui dixit
Sion operantibus judicium verum, & juſtitiam. Et ita fit ut
benefactorum timentibus te, adducas & confirmes in tempore
tudinem & ſalutem, ſapientiam, & ſcientiam: timentibus Dñi
ejus bonus futurus eſt. Ecce quando revelatus fuerit eis, clam
tumaciter nuncii populorum; qui ierant ad annunciandam pacem, reverſi ſunt ut plorent in amaritudine animæ. Deſertæ ſunt ſemitæ,
tranſeuntes viam; eo quòd mutaverunt pactum: longè facti ſunt à civitatibus ſuis; & non cogitant filii hominum quod malum ventu

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܥܠ ܐܪܥܗ ܕܥܡܝ ܟܘܒܐ ܘܚܪܘܒܐ ܢܣܩܘܢ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܒܬܐ ܕܒܣܝܡܘܬܐ. ܘܩܪܝܬܐ 13
ܥܫܝܢܬܐ. * ܡܛܠ ܕܗܝܟܠܐ ܢܛܥܐ. ܘܚܝܠܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܢܬܒܛܠ. ܘܒܬܐ ܫܦܝܪܐ ܢܗܘܘܢ ܡܥܪܐ
ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. ܠܟܘܒܐ ܘܒܣܝܡܘܬܐ ܠܦܪܐ. ܘܡܪܥܝܬܐ ܠܥܢܐ. * ܥܕܡܐ 14
ܕܢܬܬܥܝܪ ܥܠܝܢ ܪܘܚܐ ܡܢ ܡܪܘܡܐ. ܘܢܗܘܐ ܡܕܒܪܐ ܐܝܟ ܟܪܡܠܐ. ܘܟܪܡܠܐ ܐܝܟ ܚܘܪܫܐ 15
ܢܬܚܫܒ. * ܘܢܥܡܪ ܕܝܢܐ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܟܪܡܠܐ ܬܬܬܒ. * ܘܢܗܘܐ ܥܒܕܐ 16
ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܫܠܡܐ. ܘܦܘܠܚܢܗ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܫܝܢܐ. ܘܣܒܪܐ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. * ܘܢܬܒ 17
ܥܡܝ ܒܥܡܪܐ ܕܫܠܡܐ. ܘܒܡܫܟܢܐ ܕܣܒܪܐ. ܘܒܡܫܪܝܐ ܕܬܘܟܠܢܐ. * ܘܒܪܕܐ ܢܚܘܬ ܥܠ 18
ܚܘܪܫܐ. ܘܐܝܟ ܦܩܥܬܐ ܬܬܡܟܟ ܡܕܝܢܬܐ. * ܛܘܒܝܟܘܢ ܕܙܪܥܝܢ ܥܠ ܟܠ ܡܝܐ. ܐܝܟܐ ܕܪܕܝܢ 19 20
ܬܘܪܐ ܘܚܡܪܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܓ *

* ܘܝ ܠܒܙܘܙܐ. ܐܢܬܘܢ ܠܐ ܬܒܙܘܢ. ܘܕܓܠܐ ܠܐ ܢܕܓܠ ܒܟܘܢ. ܡܐ ܕܨܒܝܬܘܢ ܠܡܒܙ ܬܬܒܙܘܢ. 1
ܘܡܐ ܕܨܒܝܬܘܢ ܠܡܕܓܠܘ ܢܕܓܠܘܢ ܒܟܘܢ. * ܡܪܝܐ ܪܚܡ ܥܠܝܢ. ܡܛܠ ܕܠܟ ܣܟܝܢ 2
ܗܘܝܢ. ܗܘܝ ܥܘܕܪܢܢ ܒܨܦܪܐ. ܘܦܘܪܩܢܢ ܒܥܕܢܐ ܕܐܘܠܨܢܐ. * ܡܢ ܩܠܐ ܕܪܘܓܙܟ ܙܥܘ ܥܡܡܐ. 3
ܘܡܢ ܪܘܡܟ ܐܬܒܕܪܘ ܥܡܡܐ. * ܘܢܬܟܢܫ ܒܙܬܐ ܕܝܠܟܘܢ. ܐܝܟ ܟܢܘܫܝܐ ܕܙܚܠܐ. ܘܐܝܟ 4
ܟܢܘܫܝܐ ܕܩܡܨܐ ܕܟܢܫܝܢ. * ܐܬܬܪܝܡ ܡܪܝܐ ܕܥܡܪ ܒܡܪܘܡܐ. ܘܡܠܐ ܠܨܗܝܘܢ ܕܝܢܐ 5
ܘܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܢܗܘܐ ܙܒܢܟ ܗܝܡܢܘܬܐ. ܘܦܘܪܩܢܟ ܒܟܣܝܐ. ܚܟܡܬܐ ܘܝܕܥܬܐ ܘܕܚܠܬܗ 6
ܕܡܪܝܐ. ܗܘ ܗܘ ܣܝܡܬܗ. * ܐܢ ܢܬܚܙܐ ܠܗܘܢ ܢܝܠܠܘܢ ܡܪܝܪܐܝܬ. ܘܡܠܐܟܐ ܕܫܠܡܐ ܢܒܟܘܢ 7
ܡܪܝܪܐܝܬ. * ܚܪܒܘ ܫܒܝܠܐ. ܘܒܛܠܘ ܥܒܪܝ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܬܒܛܠ ܩܝܡܐ. ܘܐܣܠܝܘ ܩܘܪܝܐ. 8
ܘܒܢܝܢܫܐ ܠܐ ܐܬܚܫܒܘ.

* Super terram populi mei ſpinæ vepreſque naſcentur, & in omnibus ædibus voluptariis, quin & in urbe munita. 13
Nam templum oblivioni tradetur, civitatis robur deſtituetur, & domus pulcherrimæ vertentur in ſpeluncas, in æternum uſque, in ſpinas & amœnitatem pro onagris, & paſcua pro gregibus pecudum. 14
Donec excitetur ſuper nos ſpiritus ab alto, fiat deſertum ut Charmelus, & Charmelus ceu ſylva reputetur: 15
Habitet judicium in deſerto, & juſtitia in Charmelo reddatur. 16
Tunc effectus juſtitiæ erit pax, & opus æquitatis tranquillitas & ſpes in ſeculum ſeculorum: 17
Et reſidebit populus meus in habitatione pacis, in tabernaculo ſpei, & in domicilio fiduciæ. 18
Grando ſuper ſylvam decidet, & in modum planitiei æquabitur urbs. 19
O vos beatos, qui ſeritis ad omnes aquas, ubi graditur bos & aſinus, 20

CAP. XXXIII.

VÆ diripienti: vos ne diripiatis, & deceptor nequaquam decipiet vos, cùm volueritis diripere, diripiemini; & cùm volueritis decipere, decipiemini. 1
Domine miſerere noſtri, quoniam in te eſt fiducia noſtra: eſto adjutor noſter in matutino, & ſalva nos in tempore anguſtiæ. 2
Ab horrenda voce tua titubârunt gentes, & ab eminentia tua diſſipati ſunt populi. 3
Jam colligetur præda veſtra veluti congeries bruchi, & veluti congeries locuſtæ coacervatæ. 4
Exaltavit ſe Dominus qui habitat in excelſis, & implevit Sionem judicio & juſtitiâ. 5
Et erit tempus tuum fides, & ſalus tua in occulto: ſapientia & ſcientia eſt timor Domini; is eſt theſaurus ejus. 6
Si conſpiciendum ſe præbeat illis, atrociter ululabunt; & nuntii pacis flebunt amaré. 7
Deſolatæ ſunt viæ, deſierunt viatores, ceſſavit fœdus, oppida ſpernuntur, & homines nihili æſtimantur. 8

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 * أرض شعبي صارت شوكا * ويصعد العشب ويبرع الفرح من كل بيت المدينة الغنية * بيوت
14 متروكة يتركون غنا المدينة والبيوت المشتهاة * ويصير قراهم مغاير الي الابد * فرح الحمير
15 الوحشية * ومراعي الرعاة * الي ان ياتي عليكم روح من العلو * ويصير البرية كرملا والكرمل
16 17 يعد غابا * ويستريح الحكم في البرية * والعدل يسكن في الكرمل * ويكون اعمال العدل
18 سلامة * ويضبط العدل راحة * ويكونون مطمئنين الي الدهر * ويسكن شعبي في مدينة
19 السلامة * ويسكن مطمئنا * ويستريحون بغناء * والبرد اذ نزل * لا يمر بكم * ويصير السكان في
20 الغياض مطمئنين * مثل الذين في البقعة * مغبوطون الذين يزرعون على كل ماء * ليس ثور
ولا حمار يطاء * الفصل الثالث والثلثون *
1 * ويل للذين يسوقونكم * وليس احد يجعلكم اشقياء * والمخالف لا يخالفكم * تهلك
2 العصاة ويسلمون * ومثل سوس علي ثوب كذا ينهزمون * يا رب ارحمنا لانا عليك توكلنا *
3 صار زروع العصاة للهلكة * وخلاصنا في زمن الشدة * لاجل صوت خوفك ذهلت
4 الشعوب * ومن خوفك تفرقت الامم * والان يجمع غنايمكم من صغير وكبير * كما يجمع
5 واحد جرادا هكذا يجمعون لكم * قدوس الله الساكن في الاعالي * امتلت صهيون حكما
6 وعدلا * يسلمون بالناموس * خلاصنا في كنوز * تقاك حكمة وفطنة وحسن عبادة عند
الرب * هاولاء هم كنوز العدل *

* الاصحاح السادس عشر *

* النبوة في ملك الموصل * وظفر ملك بابل به * واخذ ملكه له *

7 * ها خوفكم هم يخافون * الذين كنتم تخافون منكم * لان رسلا يرسلون يسالون سلامة *
8 يبكون بمرارة طالبين سلامة * لان طرق عون يخربون * انكف خوف الامم * ورفع
العهد مع هولاء * ليس يحسبونهم اناسا *

Terra populi mei redigetur in ſpinas, & herba exorta gaudium amovebit ab omnibus ædibus urbis opulentæ: 13
Domus derelictæ manebunt, *divitias urbis & ædes optabiles derelinquent, & eorum oppida redigentur in ſpeluncas æternas, in gaudium aſinorum ſylveſtrium, & paſcua paſtorum;* 14
Quoadusque veniat ſuper vos ſpiritus ab excelſo, convertatur ſolitudo in Charmelum, & Charmelus reputetur ſaltus; 15
Quieſcat judicium in ſolitudine; & juſtitia habitet in Charmelo. 16
Tunc opera juſtitiæ erit pax, & æquitas tranquillitatem conſervabit, eruntque ſecuri in perpetuum. 17
Commorabitur populus meus in urbe pacis, habitabit ſecurus, & inter divitias requieſcent. 18
Grando cùm deciderit, non attinget vos: & degentes in ſylvis, tuti erunt ut ii qui verſantur in planitie. 19
Fœlices qui conſeverint ſecus omnem aquam, ubi *nec bos nec aſinus conculcat.* 20

CAP. XXXIII.

VÆ illis qui vexant vos: at nemo reddet vos miſeros: nam refractarius non refragabitur vobis, peribunt rebelles atque prodentur; & non ſecus ac tineæ ſuper indumentum, ita profligabuntur. 1
O Domine, miſerere noſtrî, quoniam tibi confidimus: arva rebellium in exitium abiêre: ſalus autem noſtra facta eſt *in tempore calamitoſo.* 2
A voce tua formidabili obſtupuerunt populi, & tui metu diſſipatæ ſunt gentes: 3
Et mox colligentur ſpolia veſtra à parvo & magno: quemadmodum colligit aliquis locuſtas, ita colligentur vobis. 4
Sanctus eſt Deus habitans in excelſis: impleta eſt Sion judicio & juſtitiâ. 5
Salvabuntur per legem: ſalus noſtra in theſauris eſt: revereri te eſt ſapientia & prudentia, & ſana religio apud Dominum: hi ſunt theſauri juſtitiæ. 6

Textus decimus ſextus.

Prophetia de rege Aſſyriæ, quomodo vicerit eum rex Babelis, ejuſque regnum ſibi uſurpaverit.

Ecce metu veſtri ipſi pavebunt; ii quos metuebatis, formidabunt vos: nam *legatos mittent ad petendam pacem, flebunt amarè flagitantes pacem.* 7
Viæ namque ſubſidii perrumpentur, ceſſabit terror gentium, fœdus cum iis frangetur, ne homines quidem cenſebunt eos. 8

fuit : eſt exciſus ,Lebanon eſt affectus pudore ,terra eſt infirmata ,Luxit
9 אבל אמללה ארץ החפיר לבנון קמל היה
,ſurgam Nunc .Charmel & ,Baſan eſt excuſſa & ,deſertum ſicut Saron
10 השרון כערבה ונער בשן וכרמל : עתה אקום
,ſtramen Concipietis .me elevabo nunc,me exaltabo nunc :Dominus dicet
11 יאמר יהוה עתה ארומם עתה אנשא : תהרו חשש
populi erunt Et .vos comedet ignis veſter Spiritus .ſtipulam parietis
12 תלדו קש רוחכם אש תאכלכם : והיו עמים
Audite .comburentur igni in , exciſæ ſpinæ , calcis incendia
13 משרפות שיד קוצים כסוחים באש יצתו : שמעו
.meā fortitudinem propinqui cognoſcite & , fecerim quæ longinqui
רחוקים אשר עשיתי ודעו קרובים גברתי :
habitabit Quis .hypocritas tremor tenuit ,peccatores Sijon in Formidaverūt
14 פחדו בציון חטאים אחזה רעדה חנפים מי יגור
Perambulans ? ſeculi incendia nobis habitabit Quis ?comedentem ignem nobis
15 לנו אש אוכלה מי־יגור לנו מוקדי עולם : הלך
excutiens ,oppreſſionum aviditatē in reprobans : æquitates loquens & , juſtitias
צדקות ודבר מישרים מאס בבצע מעשקות נער
claudens &,ſanguines audiendo ab ſuā aurē obturans:munere in fulciēdo à,ſuas volas
כפיו מתמך בשחד אטם אזנו משמע דמים ועצם
munimenta ,habitabit excelſi Ipſe .malum in videndo à ſuos oculos
16 עיניו מראות ברע : הוא מרומים ישכן מצדות
Regem .fideles ejus aquæ ,eſt datus ejus panis :ejus ſublimitas ſaxorum
17 סלעים משגבו לחמו נתן מימיו נאמנים : מלך
.diſtantiarum terram videbunt : tui oculi videbunt ſua pulchritudine in
ביפיו תחזינה עיניך תראינה ארץ מרחקים :
ubi ? ponderator ubi ? ſcriba Ubi .terrorem meditabitur tuū Cor
18 לבך יהגה אימה איה ספר איה שקל איה
populum ,videbis non roboratum Populum ? turres numerans
19 ספר את־המגדלים : את־עם נועז לא תראה עם
Vide .intelligentia abſque lingua blæſum : audiendo ab labio profundos
20 עמקי שפה משמוע נלעג לשון אין בינה : חזה
Jeruſalaim videbunt tui Oculi .noſtræ ſolennitatis civitatem Sijon
ציון קרית מועדנו עיניך תראינה ירושלם
ejus paxilli proficiſcentur nec ,deponetur non tentoriū,quietam habitationē
נוה שאנן אהל בל־יצען בל־יסע יתדתיו
ibi ſi Quia חצי .rumpentur non ejus funes omnes & ,æternum in
21 לנצח וכל־חבליו בל־ינתקו : הספר כי אם־שם
: manibus latorum rivorum ,fluviorum locus ,nobis Dominus magnificus
אדיר יהוה לנו מקום־נהרים יארים רחבי ידים
.eum tranſeat non magna navis & ,remigii navis eum per ibit non
בל־תלך בו אני־שיט וצי אדיר לא יעברנו :
Dominus , noſter legifer Dominus , noſter judex Dominus Nam
22 כי יהוה שפטנו יהוה מחקקנו יהוה
rectè roborabunt non ,tui funes ſunt Extenſi .nos ſervabit ipſe ,noſter rex
23 מלכנו הוא יושיענו : נטשו חבליך בל־יחזקו כן־
.multi ſpolii præda eſt diviſa tunc : vexillum extenderunt non ,ſuū malū
תרנם בל־פרשו נס אז חלק עד־שלל מרבה
: ægrotavi ,habitator dicet non Et .prædam diripuerunt Claudi
24 פסחים בזזו בז : ובל־יאמר שכן חליתי
.iniquitate remiſſus ea in habitans populus
העם הישב בה נשא עון :

Verſio VUL. LAT.

9 Luxit, et elanguit terra: confuſ' eſt Libanus, & obſorduit, & factus eſt Saron ſicut deſertū: & concuſſa eſt Baſan, & Carmel'.
10 Nunc cōſurgā, dicit Dñs: nunc exaltabor, nunc ſublevabor.
11 Concipietis ardorem, parietis ſtipulā: ſpirit' veſter ut ignis
12 vorabit vos. Et erunt populi quaſi de incendio cinis, ſpinæ congregatæ igni comburentur.
13 Audite qui longè eſtis, quæ fecerim, et cognoſcite vicini for-
14 titudinē meā. Conterriti ſūt in Sion peccatores, poſſedit tremor hypocritas: quis poterit habitare de vobis cum igne devorāte? quis habitabit ex vobis
15 cum ardorib' ſempiternis? Qui ambulat in juſtitiis, & loquitur veritatē, qui projicit avaritiam ex calumnia, & excutit manus ſuas ab omni munere, qui obturat aures ſuas ne audiat ſanguinē, & claudit oculos ſuos ne vi-
16 deat malū. Iſte in excelſis habitabit, munimenta ſaxorū ſublimitas ej': panis ei dat' eſt, aquæ
17 ej' fideles ſunt. Regē in decore ſuo videbunt oculi ej', cernent
18 terrā de longē. Cor tuū meditabitur timorē: ubi eſt literatus? ubi legis verba ponderans?
19 ubi doctor parvulorū? Populū impudentē non videbis, populū alti ſermonis: ita ut non poſſis intelligere diſertitudinē linguæ ej', in quo nulla eſt ſapien-
20 tia. Reſpice Sion civitatem ſolennitatis noſtræ: oculi tui videbunt Jeruſalē, habitationem opulentā, tabernaculum quod nequaquā transferri poterit: nec auferentur clavi ej' in ſempiternum, & omnes funiculi ejus
21 non rumpentur: Quia ſolummodò ibi magnific' eſt Dñs noſter: loc' fluviorū rivi latiſſimi & patentes: non tranſibit per eū navis remigū, neq; trieris ma-
22 gna tranſgredietur eum. Dñs enim judex noſter, Dñs legifer noſter, Dñs rex noſter: ipſe ſal-
23 vabit nos. Laxati ſunt funiculi tui, & non prævalebunt: ſic erit mal' tuus ut dilatare ſignū non queas. Tunc dividentur ſpolia prædarū multarū: claudi diri-
24 pient rapinā. Nec dicet vicin', Elangui: popul' qui habitat in ea, auferetur ab eo iniquitas.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

9 Ἐπένθησεν ἡ γῆ, ᾐσχύνθη ὁ Λίβανος, ἕλη ἐγένετο ὁ Σάρων· φανερὰ ἔσται ἡ Γαλιλαία, καὶ ὁ
10 (λ) Χέρμελ. Νῦν ἀναστήσομαι, λέγει κύριος,
11 νῦν δοξασθήσομαι, νῦν ὑψωθήσομαι, Νῦν ὄψεσθε, νῦν (μ) αἰσθηθήσεσθε, ματαία ἔσται ἡ ἰσχὺς τοῦ πνεύματος ὑμῶν· πῦρ (ν) κατέδεται
12 ὑμᾶς. Καὶ ἔσονται ἔθνη κατακεκαυμένα, ὡς ἄκανθα ἐν ἀγρῷ ἐρριμμένη καὶ κατακεκαυμένη.
13 Ἀκούσονται οἱ πόρρωθεν ἃ ἐποίησα, γνώσονται
14 οἱ ἐγγίζοντες τὴν ἰσχύν μου. Ἀπέστησαν οἱ ἐν Σιὼν ἄνομοι, λήψεται τρόμος τοὺς ἀσεβεῖς. τίς ἀναγγελεῖ ὑμῖν, ὅτι πῦρ καίεται; τίς ἀναγγε-
15 λεῖ ὑμῖν τὸν τόπον τὸν αἰώνιον; Πορευόμενος ἐν δικαιοσύνῃ, λαλῶν εὐθεῖαν ὁδὸν, μισῶν ἀνομίαν καὶ ἀδικίαν, καὶ τὰς χεῖρας ἀποσειόμενος ἀπὸ δώρων, βαρύνων τὰ ὦτα, ἵνα μὴ ἀκούσῃ κρίσιν αἵματος, καμμύων τοὺς ὀφθαλ-
16 μοὺς, ἵνα μὴ ἴδῃ ἀδικίαν, Οὗτος οἰκήσει ἐν ὑψηλῷ σπηλαίῳ πέτρας (ξ) ἰσχυρᾶς· ἄρτος
17 αὐτῷ δοθήσεται, καὶ τὸ ὕδωρ αὐτοῦ πιστόν. Βασιλέα μετὰ δόξης ὄψεσθε, (ο) οἱ ὀφθαλμοὶ ὑ-
18 μῶν ὄψονται γῆν πόρρωθεν, Ἡ ψυχὴ ὑμῶν μελετήσει (π) φόβον· ποῦ εἰσιν οἱ γραμματικοί; ποῦ εἰσιν οἱ συμβουλεύοντες; ποῦ ἐστιν ὁ ἀριθ-
19 μῶν τοὺς (ρ) τρεφομένους Μικρὸν καὶ μέγαν λαόν; ᾧ οὐ (σ) συνεβουλεύσατο, οὐδὲ ᾔδει βαθύφωνον, ὥστε μὴ ἀκοῦσαι λαὸς πεφαυλισμένος, καὶ
20 οὐκ ἔστι τῷ ἀκούοντι σύνεσις. Ἰδοὺ Σιὼν ἡ πόλις, τὸ σωτήριον ἡμῶν, οἱ ὀφθαλμοί σου ὄψονται Ἱερουσαλὴμ, πόλις πλουσία, σκηναὶ αἳ οὐ μὴ σεισθῶσιν, (τ) οὐδὲ μὴ κινηθῶσιν οἱ πάσσαλοι τῆς σκηνῆς αὐτῆς εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον, οὐδὲ τὰ σχοινία αὐτῆς οὐ μὴ διαρραγῶσιν,
21 Ὅτι τὸ ὄνομα κυρίου μέγα (υ) ὑμῖν. τόπος ὑμῖν ἔσται, ποταμοὶ καὶ (ʹ) διώρυχες πλατεῖς καὶ εὐρύχωροι· οὐ πορεύσῃ ταύτην τὴν ὁδὸν, οὐδὲ πορεύσεται πλοῖον ἐλαῦνον.
22 Ὁ γὰρ θεός μου μέγας ἐστίν· οὐ παρελεύσεταί με κύριος (φ) κριτὴς ἡμῶν, κύριος ἄρχων ἡμῶν, κύριος βασιλεὺς
23 ἡμῶν, κύριος οὗτος ἡμᾶς σώσει. Ἐρράγησαν τὰ σχοινία σου, ὅτι οὐκ (χ) ἐνίσχυσεν· ὁ ἱστός σου ἔκλινεν, οὐ χαλάσει τὰ ἱστία, οὐκ ἀρεῖ σημεῖον, ἕως οὗ παραδοθῇ εἰς προνομήν. τοίνυν πολλοὶ χω-
24 λοὶ προνομὴν (ψ) ποιήσουσι, Καὶ οὐ μὴ (ω) εἴπωσι, Κοπιῶ, ὁ λαὸς (α) ἐνοικῶν ἐν αὐτοῖς· ἀφεθήσεται γὰρ αὐτοῖς ἡ ἁμαρτία.

Luxit terra, confuſus eſt Li
paludes facta eſt Saron,
ſta erit Galilæa, & Carme
exurgā, dicit Dominus, nunc
rificabor, nunc exaltabor
debitis, nunc (c) ſentietis
erit fortitudo ſpiritus
ignis devorabit vos: Et erunt gen
tes combuſtæ, ſicut ſpina in agro
projecta, & combuſta. Audi
qui longè ſunt quæ feci: Scien
qui appropinquant, fortitudinem
meam. Receſſerunt, qui erant
Sion iniqui: apprehendet
impios. Quis annuntiabit
quia ignis ardet? Quis annun
abit vobis locum
ambulat in juſtitia, qui
rectam viam, odit impietatem,
iniquitatem, & manus excut
muneribus, qui obturat aures
non audiat judicium ſangui
claudit oculos, ne videat
tatem: (d) Iſte habitabit
celſa ſpelunca petræ fort
Panis ei dabitur, & aqua
delis. Regem cum gloria
tis: oculi veſtri videbunt
de longè: Anima veſtra me
bitur timorē. Ubi ſunt gramma
ci? ubi ſunt conſiliatores?
qui numerat eos, qui (e) nutriun
tur? Parvum & magnum popu
lum, cui non dedit conſilium,
ſciebat profundam vocem
tem; ita ut non audiret popul
temptus: & non eſt audienti in
ligentia. Ecce Sion civitas, ſa
tare noſtrum, oculi tui videbunt
Hieruſalem: civitas dives
nacula, quæ non commovebun
neque movebantur paxilli ta
naculi ejus in ſempiternū tem
& funiculi ejus non di
tur: Quia nomen Domini
vobis. Locus vobis erit, flu
& rivuli lati, & ſpatioſi
hanc viam: neque ibit navi
pellens remigio. Deus enim
magnus eſt. Non tranſibit me
minus judex noſter, Domin
ceps noſter, Dominus rex
Dominus ipſe ſalvabit nos
pti ſunt funiculi tui, quia
valuerunt. Malus tuus
eſt: non demittet vela,
bit ſignum; donec tradatur
reptionem. Multi igitur
prædam facient, Et non dicent, Laborabo, populus qui habitat in eis
tur enim eis delictum.

MS.A. (λ) Κάρμηλος. (μ) αἰσχυνθήσεσθε, (ν) ὑμᾶς κατέδεται.
ερᾶς. (ο) καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ (π) φόβον κυρίου. (ρ) συστρεφομένους (σ) συνεβουλεύ
σαν, (τ) οὐδ᾽ οὐ μὴ (υ) ἐστίν. τόπος (ʹ) διώρυγες (φ) πατήρ, κύριος
ἡμῶν, (χ) ἐνίσχυσεν (ψ) ποιήσωσιν, (ω) εἴπῃ, (α) ὁ ἐνοικῶν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

9 אתאבלת חרובת ארעא יביש לבנן נתר הוה שרונא כמישרא צדי מתנן וכרמלא :
10 כען אתגלי אמר יי כען אתרומם כען אתנטל : 11 אתעשתון לכון עממיא עשתונין דרשע
עבדתון לכון עובדין בישין בדיל עובדיכון בישיא מימרי כעלעולא לקשא ישיצי יתכון :
12 ויהון עממיא יקידת נור כובין מפסקין בנורא יתוקדון : 13 שמעו צדיקיא דנטרו אוריתא
14 מלקדמין מא דעבדית ודעו חיביא דתבו לאוריתי קריב גבורתי : אתברו בציון חיבין
דחלא אחדתנון לרשיעיא דהוו מגנבין אורחתהון אמרין מן ידור לנא בציון דבה זהור
שכנתיה כאשא אכלא מן יתותב לנא בירושלם עתידין רשיעיא לאתדנא לאתמסרא
15 לגהנם יקידות עלם : אמר נביא יתבון בה צדיקיא כל דמהלך בזכו וממלל כיונן
מתרחיק מממון דשקר מרחיק נפשיה מן אנוסין מנע ידוהי מלקבלא שוחדא מטמטם
16 אודניה מלמשמע באשדי דם זכי וכלי עינוהי מלמחזי בעבדי ביש : הוא באתר רם
ומנטל יהי בית מישרוהי בית מקדשא תסבע נפשיה מזוניה מספק מוהי קימין
17 כמבוע דמין דלא פסקין מוהי : ית יקר שכינת מלך עלמיא בתושבחתיה יחזין
18 עינך תסתכל ותחזי בנחתי ארע גהנם : לבך יחשוב רברבן איכא ספריא איכא רבריא
19 איכא חשביא יתון אם יכלון לחשבא מנין קטילי רישי משרית גבריא : ית מרות עם
תקיף לא תכול למחזי עמא דהוה עמיק ממללהון מלמשמע מלעגין בלשנהון מדלית
20 בהון סוכלתנו : תחזי במפלתהון ציון קרית זמננא עינך יחזין בנחמת ירושלם
באצלחותא בשלותא כמשכנא דלא מתפרק ולא משתלפן סכוהי לעלם וכל אטונוהי
21 לא יתפסקון : ארי אלהן מתמן תתגלי גבורתא דיי לאוטבא לנא מאתר נפקין נהרין
22 שטפין פתיות ידין דלא תיזיל ביה ספינת צידין ובורני רבתא לא תגוזניה : ארי יי
דיננא דאפקנא בגבורתיה ממצרים יי מלפנא דיהב לנא אולפן אוריתא מסיני יי מלכנא
23 הוא יפרקננא ויעביד לנא פורענות דין מן משרית גוג : בעדנא ההיא יתברון עממיא
מתוקפהון ויהון דמן לספינא דאתפסקו חבלהא ולית לה תקוף על תרנהון דאתפסיק
ולא אפשר למפרס עלוהי קלע בכן יפלגון בית ישראל נכסי עממיא סניאות עדי וביז
24 ואפילו ישתארון בהון עורין וחגירין אף אנון יפלגון סניאות עדי וביז : ולא יימרון מכען
לעמא דשרן סחור סחור אתיב לשכנתא מליכון אתית עדנא מחת מרע עמא בית
ישראל יתכנשון ויתובון לארעהון שביק לחוביהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Luxit & deſerta eſt terra : exiccatus eſt Libanus et evulſus eſt: fuit Sa
ſicut vallis; vaſtus eſt Baſſan & Carmelus. Nunc revelabor, Dicit Dñs
exaltabor, nunc elevabor. Cogitâſtis vobis populi cogitationes impi
feciſtis vobis opera mala; propter malefacta veſtra Verbū meū
vos, ſicut turbo ſtipulā. Et erunt populi incendiū ignis; [ut] ſpinæ
igne comburētur. Audite juſti qui ſervâſtis legē ab antiquo, quid fece
ſcitote peccatores qui rediſtis ad legē meā : propè enim eſt potentia
Contriti ſunt in Sion peccatores, timor apprehendit impios qui ſuff
vias ſuas. Dicunt, Quis habitabit ex nobis in Sion; ubi eſt ſplendor ma
tis ej' ſicut ignis conſumens? quis habitabit ex nobis in Jeruſalem;
pii judicandi ſunt, tradendi in gehennā incendio ſempiterno? Dixit
pheta, Habitabunt in ea juſti; omnis qui ambulat in juſtitia, & loqu
cta, & ſeparat ſe à mammon iniquitatis; elongat animam ſuam a
prohibet manū ſuā ab acceptione muneris; & obturat aurē ſuā, ne
effundentes ſanguinē innocentē, & claudit oculos ſuos ne videat ope
iniquitatē. Ipſe in loco excelſo & elevato habebit domū habitatio
in domo ſanctuarii ſaturabitur anima ej'; cib' ej' erit ſufficiens: aquæ
erunt permanentes, ſicut fons aquarū, cuj' aquæ non deficiunt. Glo
jeſtatis regis ſeculorū in decore ſuo videbunt oculi tui; aſpicies &
deſcendentes in terrā gehennæ. Cor tuū cogitabit magnalia: ubi ſu
bæ? ubi proceres? ubi ſunt ſupputatores? veniant, ſi modò poſſint
ratum numerū capitū occiſorū exercit' fortium. Subjectionē popu
ſti non poteris videre; populi qui eſt tam profundæ loquelæ, ut non au
balbutientis lingua ſua, quia non eſt in eis intellect'. Videbis
rum tu Sion, civitas ſolemnitatis noſtræ; oculi tui videbunt co
Jeruſalem, in proſperitate, & opulentia, ſicut tabernaculū cuj' non
ventur nec evelluntur paxilli unquā; nec omnes funiculi ej' rump
Sed inde revelabitur potentia Dñi, ut benè faciat nobis de loco
egrediuntur flumina inundantia lati ſpatii, per quem non tranſibit
ſcatorū, nec trieris magna transfretabit eum. Quoniā Domin' judex
qui eduxit nos in potentia ſua de Ægypto; Domin' doctor noſter,
dit nobis doctrinā legis ex Synai; Dominus rex noſter, ipſe ſalvabit
faciet nobis vindictā judicii de caſtris Gog. In tempore illo, co
populi à fortitudine ſua, & erunt ſimiles navi cuj' funiculi rupti
non habet fortitudinē in malo ſuo, qui ita exciſ' eſt ut non poſſint
extendi vela. Tunc dividet dom' Iſrael ſubſtantias populorū, &
dinē prædæ & ſpolii; & quamvis relicti ſint in eis cæci & claud
partientur multitudinē ſpolii & prædæ. Nec deinceps dicēt popu
ratur in circuitu, Avertit majeſtatē ſuā à vobis, venit ſuper nos
mitatis: populus enim domus Iſrael congregabitur & revertetur
ſuam, remiſſis eis delictis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܒܠܬ ܘܝܬܒܬ ܒܐܒܠܐ ܐܪܥܐ. ܘܒܗܬ ܠܒܢܢ ܘܐܬܒܗܬ. ܗܘܐ ܫܪܘܢ. ܐܝܟ ܦܩܥܬܐ. 9
ܘܐܬܚܪܒܬ ܡܬܢܢ ܘܟܪܡܠܐ. * ܗܫܐ ܐܩܘܡ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܫܐ ܐܬܬܪܝܡ. ܘܗܫܐ ܐܬܥܠܐ. 10
* ܘܬܒܛܢܘܢ ܟܘܒܐ܆ ܘܬܐܠܕܘܢ ܩܫܐ. ܒܪܘܚܟܘܢ ܢܘܪܐ ܬܐܟܘܠܟܘܢ. * ܘܢܗܘܘܢ ܥܡܡܐ 11 12
ܝܩܕܢܐ ܐܝܟ ܓܝܪܐ܆ ܘܐܝܟ ܟܘܒܐ ܓܙܝܙܐ. ܒܢܘܪܐ ܢܬܝܩܕܘܢ. * ܫܡܥܘ ܪܚܝܩܐ ܡܕܡ 13
ܕܥܒܕܬ. ܘܕܥܘ ܩܪܝܒܐ܆ ܚܝܠܝ. * ܐܬܬܙܝܥܘ ܚܛܝܐ ܒܨܗܝܘܢ. ܘܐܚܕܬ ܪܬܝܬܐ 14
ܠܚܢܦܐ. ܡܢܘ ܡܢܢ ܢܥܡܪ ܥܡ ܢܘܪܐ ܐܟܘܠܬܐ. ܘܡܢܘ ܡܢܢ ܢܥܡܪ ܥܡ ܝܩܕܢܐ ܕܥܠܡܐ.
* ܕܡܗܠܟ ܒܙܕܝܩܘܬܐ܆ ܘܡܡܠܠ ܬܪܝܨܬܐ܆ ܘܣܢܐ ܢܟܠܐ ܘܥܘܠܐ: ܘܢܦܨ ܐܝܕܗ ܡܢ 15
ܕܢܣܒ ܫܘܚܕܐ: ܘܣܟܪ ܐܕܢܘܗܝ ܕܠܐ ܢܫܡܥ: ܘܡܥܡܨ ܥܝܢܘܗܝ ܕܠܐ ܢܚܙܐ ܒܝܫܬܐ.
* ܗܘ ܒܡܪܘܡܐ ܢܥܡܪ. ܘܒܫܘܪܐ ܕܫܘܥܐ ܡܥܡܪܗ. ܠܚܡܗ ܝܗܝܒ ܠܗ. ܘܡܝܘܗܝ 16
ܡܗܝܡܢܝܢ. * ܠܡܠܟܐ ܒܫܘܦܪܗ ܢܚܙܝܢ ܥܝܢܝܟ. ܒܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ. ܘܠܒܟ ܢܪܢܐ 17
ܕܚܠܬܐ. * ܐܝܟܘ ܣܦܪܐ. ܐܝܟܘ ܬܩܘܠܐ. ܐܝܟܘ ܕܡܢܐ ܡܓܕܠܐ ܠܥܡܐ ܥܫܝܢܐ. * ܠܐ ܬܚܙܐ 18 19
ܠܥܡܐ ܕܝܩܝܪ ܫܡܥܗ. ܘܥܡܝܩ ܠܫܢܗ ܘܠܐ ܡܬܣܟܠ. * ܚܙܝ ܨܗܝܘܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܥܐܕܝܢ 20
ܕܝܠܢ. ܘܥܝܢܝܟ ܢܚܙܝܢ ܐܘܪܫܠܡ ܕܝܪܐ ܫܝܢܬܐ. ܡܫܟܢܐ ܕܠܐ ܢܙܘܥ. ܘܠܐ ܢܬܬܥܩܪܘܢ ܣܟܘܗܝ
ܠܥܠܡ. ܘܟܠܗܘܢ ܐܫܠܘܗܝ ܠܐ ܢܬܦܣܩܘܢ. * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܫܡܗ ܝܩܝܪ ܥܡܢ. 21
ܘܗܘ ܢܗܘܐ ܠܢ ܐܬܪܐ ܢܗܝܪܐ. ܘܢܘܗܪܐ ܘܦܬܝܐ ܕܐܝܕܝܐ. ܕܠܐ ܢܫܠܛ ܒܗ ܡܪܘܬܐ ܕܫܠܝܛܐ.
ܘܡܫܠܛܢܐ ܕܥܒܪ ܠܐ ܢܥܒܪ ܒܗ. * ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܕܝܢܐ ܗܘ. ܘܡܪܝܐ ܡܦܫܩܢܐ 22
ܘܡܪܝܐ ܡܠܟܢ. ܘܗܘ ܦܪܘܩܢ. * ܐܫܬܪܝܘ ܚܒܠܝܟܝ. ܘܠܐ ܐܫܬܪܪܘ. ܘܐܙܕܘܥܘ 23
ܥܡܘܕܝܟܝ. ܘܠܐ ܦܫܛܘ ܢܐܣܐ ܥܕܡܐ ܕܦܠܓܘ ܒܙܬܐ. ܘܣܓܝܐܐ ܚܓܝܪܐ ܫܒܘ ܫܒܝܬܐ.
* ܘܠܐ ܢܐܡܪ ܥܡܘܪܐ ܕܟܪܝܗ ܐܢܐ. ܥܡܐ ܕܝܬܒ ܒܗ. ܢܣܒ ܚܛܗܐ. 24

Ejulavit, ſeditque in luctu terra: erubuit 9
Libanus & pudefactus eſt: factus eſt Saron
ſimilis planitiei: deſtruct⁹ eſt Baſan & Charmelus.
Nunc ſurgam, dicit Dominus, nunc 10
exaltabor, nunc extollam me. Spinas con- 11
cipietis, & feſtucam parietis in ſpiritu veſtro;
ignis devorabit vos: Et ardebunt gen- 12
tes quaſi calx, & quaſi ſpinæ congeſtæ igne
comburentur. Audite longinqui quod feci, 13
& ſcitote propinqui potentiam meam. Ex- 14
territi ſunt peccatores in Sion, & pavor invaſit
impios. Quis noſtrûm habitabit cum
igne devorante? & quis noſtrûm habitabit
cum *igne* ſecula conſumente? Qui ambu- 15
lat juſtè, & rectè loquitur, odit fraudem &
oppreſſionem, excutit manum ſuam ne munus
accipiat, obturat aures ſuas ne audiat,
& claudit oculos ſuos ne videat malum;
Is in excelſo habitabit, & in munitione rupis 16
habitaculum ejus; hujus panis jam eſt ſuppeditatus
(i. tutus) & aquæ certæ. Regem in 17
pulchritudine ſua videbunt oculi tui in terris
longinquis, & cor tuum timorem addiſcet.
Ubi eſt ſcriba? ubi ponderator: ubi qui re- 18
cenſet turres populo potenti? Non reſpiciet 19
ad populũ cujus gravis eſt audit⁹, lingua balbutiens
& non intelligibilis. Reſpice Sio- 20
nem civitatem ſolennitatum noſtrarum, &
oculi tui contemplentur Jeruſalem habitationem
opulentam, tabernaculum inconcuſſum
cujus paxilli non evellentur in æternum, cujus
nulli funes diſrumpentur: Quia Domi- 21
nus, nomen eſt apud nos glorioſum, ipſéque
erit nobis locus lucidus, claritas, & amplitudo
vaſta; ut ne regnet dominiũ *nullius* principis,
& potens (quiſquis ille fuerit) non
tranſeat per eam. Nam Dominus eſt judex, 22
Dominus interpres, Dominus rex noſter,
idémque ſervator noſter eſt. Laxati ſunt fu- 23
nes tui, non autem obfirmati; nutaverunt columnæ
tuæ, & non expanderunt vexillum donec
partiti eſſent prædam; & multitudo claudorum
ceperunt captivitatem. Neque di- 24
cet incola, Æger ſum: populus habitans in
ea peccatum ſuſcepit.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* خربت الارض * خزي لبنان صار صارون غياضا * الجليل والكرمل يكونان 9
طاهرين * الآن اقوم قال الرب * الآن امجد * الآن ارتفع * الآن تعاينون * الآن تخزون 10 11
قوة روحكم تصير باطلة * النار تاكلكم * وتصير الامم محترقين مثل شوك في حقل 12
محروق ومحترق * يسمعون الذين من بعيد ما صنعت * يعلمون القرباء قوتي * تبعد 13 14
الاثمة الذين في صهيون * الخوف ياخذ المنافقين * ويخبركم ان النار تحرق * من
يخبركم بالموضع الابدي * الماشي بالعدل * والمتكلم بالطريق المستقيمة الباغض 15
الاثم والظلم * وينفض يديه من الرشا * يثقل اذنيه الا تسمع حكم دم * يغمض عينيه
كيلا ينظر ظلما * هذا يسكن في مغار مرتفعة لصخرة قوية * يعطي له خبز 16
وماوه صدق * ترون ملكا بمجد * وترى عيونكم ارضا من بعيد * نفسكم تتلوا 17
خوفا * اين هم الكتاب * اين هم الذين يفسرون * اين هو الذي يحصي المرتعدين * شعبا 18 19
صغيرا وكبيرا ليس يرون * ولا يعلم صوتا عميقا * حتى لا يسمع شعب طالح * وليس
يوجد فهم للسامع * ها صهيون المدينة خلاصنا * عيناك تنظران يا اورشليم المدينة 20
الغنية مضارب لا تتزعزع * ولا تتحرك اوتاد مسكنها الى الابد زمانا * ولا تنصرم حبالها * لان 21
اسم الرب عظيم لكم * يكون لكم موضع انهار وخلجان عراض وموسعة * لا تسلك في
هذه الطريق ولا تسير سفينة مساقة * لان ربي عظيم هو * ولا يتجاوزني * الرب الاب * الرب 22
حاكمنا * الرب رئيسنا * الرب ملكنا * الرب هو يخلصنا * تمزقت حبالك لانها لم تقو 23
عمودك مال * ليس يدلي الاطناب ولا يرفع علامة الى ان يسلم للنهب * الآن عرج
كثيرون يصنعون نهبا * ولا يقول الشعب الساكن فيها اتعبت * لان الخطية 24
تركت لهم .

Contriſtabitur terra, pudefiet Libanus, 9
verſus eſt Saron in ſaltus, Galilæa &
Charmelus erunt ambo puri. Nunc ex- 10
urgam, dixit Dominus, nunc glorificabor,
nunc exaltabor: Nunc videbitis, 11
nunc erubeſcetis, fortitudo animi veſtri
erit vana, ignis devorabit vos: Populi 12
comburentur ceu ſpinæ in campo exuſto
& flagranti. Audient qui ſunt à 13
longinquo quid fecerim, agnoſcent propinqui
fortitudinem meam. Abſcedent 14
flagitioſi qui ſunt in Sione, terror impios
corripiet, indicabitque vobis quòd ignis
comburit: quis indicet vobis locum perennem?
Qui ambulat in juſtitia, qui 15
rectâ ratione loquitur, odit iniquitatem
& oppreſſionem, manibus ſuis excutit
munus, aggravat aures ſuas ne audiant
ſententiam ſanguinis, occludit oculos
ſuos ne videat oppreſſionem; Hic 16
habitabit in ſpelunca ſublimi petræ ſolidiſſimæ:
huic dabitur panis, & aqua
ejus certiſſima. Videbitis regem in glo- 17
ria, & oculi veſtri terram à longè videbunt,
animus veſter meditabitur terrorem.
ubi ſunt eloquentes? ubi ſunt 18
qui interpretantur? ubinam eſt qui numeret
attonitos? Populũ parvum aut ma- 19
gnũ nequaquam videbunt: neq; cognoſcet
vocem profundam, quò minùs audiat
populus improbus, nec inveniatur intellectus
apud auditorem. Ecce Sion urbs, 20
ſalus noſtra: oculi tui videbunt O Jeruſalem
opulenta, tentoria intrepida,
quorum pelles paxilli erunt immobiles ad
æternum tempus, quorum funes nunquam
rumpentur, Quia nomen Domini maxi- 21
mum erit apud vos. Erit vobis loco fluminũ
& rivulorum latorum atq; amplorum:
non ambulabit in hac via, neque
permeabit navis impulſa; Quia Domi- 22
nus meus maximus eſt, & non recedet
à me. Dominus eſt pater, Dominus judex
noſter, Dominus princeps noſter,
Dominus rex noſter, Dominus ipſe liberabit
nos. Diſrupti ſunt funes tui 23
quia debiles erant, columna tua nutavit:
non demittet reſticulas, neque
vexillum eriget, donec tradatur direptioni:
tandem claudi multi facient direptionem:
Neque dicet populus habi- 24
tans in ea, Feſſus ſum; quia remiſſum
eſt eis peccatum.

ישעיה : לד

CAP. XXXIV. לד

, terra Audiat .attendite populi & , audiendum ad gentes Accedite
קרבו גוים לשמע ולאמים הקשיבו תשמע הארץ 1
ira Quia .ejus germina omnia & , orbis ; ejus plenitudo &
ומלאה תבל וכל־צאצאיה : כי קצף 2
univerſum ſuper furor & , gentes omnes ſuper DOMINO
ליהוה על־כל־הגוים וחמה על־כל־
.jugulationi eos dedit , eos *delevit internecione* : eorum exercitum
צבאם החרימם נתנם לטבח :
,eorũ fœtor aſcendet eorum cadaveribus & ,projicientur eorũ interfecti Et
וחלליהם ישלכו ופגריהם יעלה באשם 3
exercitus omnis *muceſcent* Et .eorum *ſanguine* à montes liqueſcent &
ונמסו הרים מדמם : ונמקו כל־צבא 4
, decidet eorũ exercitus omnis &,cœlorum liber ſicut *volventur* & , cœli
השמים ונגלו כספר השמים וכל־צבאם יבול
eſt inebriatus Quia .ficu de *decidens* ſicut & ,vite de folium *defluere ut*
כנבל עלה מגפן וכנבלת מתאנה: כי־רותה 5
populum ſuper & ,deſcendet Edom ſuper ecce : meus gladius cœlis in
בשמים חרבי הנה על־אדום תרד ועל־עם
,ſanguine eſt repletus Domini Gladius .judicium ad *mei anathematis*
חרמי למשפט : חרב ליהוה מלאה דם 6
adipe ex , hircorum & ,agnorum ſanguine è ,adipe ex eſt incraſſatus
הדשנה מחלב מדם כרים ועתודים מחלב
magna *cædes* & ,Boſrah in DOMINI ſacrificiũ quia :arietum renum
כליות אילים כי זבח ליהוה בבצרה וטבח גדול
cum juvenci & , eis cum unicornes deſcendent Et .Edom terra in
בארץ אדום : וירדו ראמים עמם ופרים עם 7
adipe *ex* eorũ pulvis & ,ſanguine è eorũ terra inebriabitur & : tauris
אבירים ורותה ארצם מדם ועפרם מחלב
,retributionũ annus ,DOMINI ultionis dies Quia .impinguabitur
ידשן : כי יום נקם ליהוה שנת שלומים 8
ej⁹ pulvis & ,picem in ejus torrentes convertentur Et .Sijon *rixam* ad
לריב ציון : ונהפכו נחליה לזפת ועפרה 9
die & Nocte .ardentem picem in ejus terra erit & : ſulphur in
לגפרית והיתה ארצה לזפת בערה : לילה ויומם 10
generatione à : ej⁹ fumus aſcendet ſeculum in ,extinguetur non
לא תכבה לעולם יעלה עשנה מדור
.eam per tranſiens non ſeculorum ſeculũ in , deſolabitur generationẽ in
לדור תחרב לנצח נצחים אין עבר בה:
habitabunt corvus & , *noctua* & ,ericius & ,pelicanus eam poſſidebunt Et
וירשוה קאת וקפד וינשוף וערב ישכנו־ 11
.vacuitatis lapides & , *inanitatis* lineam eam ſuper extendet & : ea in
בה ונטה עליה קו־תהו ואבני־בהו :
ejus principes omnes & , vocabunt regnum ibi non & ,ejus *Heroes*
חריה ואין־שם מלוכה יקראו וכל־שריה 12
carduus & , urtica ,ſpinæ ejus *palatia ſcandet* Et .nihil erunt
יהיו אפס : ועלתה ארמנתיה סירים קמוש וחוח 13
.*ululæ* filiabus atrium ,draconũ habitaculũ erit & : ej⁹ munitionib⁹ in
במבצריה והיתה נוה תנים חציר לבנות יענה:
: clamabit ſuum ſocium ad *ſatyrus &* , *felibus cum martes* occurrent Et
ופגשו ציים את־איים ושעיר על־רעהו יקרא 14
.requiem ſibi invenit & , ſtrix *eſt refocillata* ibi veruntamen
אך שם הרגיעה לילית ומצאה לה מנוח :
fovebit & (,ova) ſcindet & :*ova edidit* & , *Kipoz* nidificavit Ibi
שמה קננה קפוז ותמלט ובקעה ודגרה 15
unuſquiſque vultures ſunt congregati ibi Veruntamen ,ejus umbra in
בצלה אך־שם נקבצו דיות אשה
.ſuum ſocium
רעותה :

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXXIV.

1 ACcedite Gentes, & audite, & populi attendite: audiat terra, & plenitudo ejus; orbis, & omne germen ejus. 2 Quia indignatio Domini ſuper omnes gentes, & furor ſuper univerſam militiam eorum: interfecit eos, & dedit eos in occiſionem. 3 Interfecti eorum projicientur, & de cadaveribus eorum aſcendet fœtor: tabeſcent montes à ſanguine eorum. 4 Et tabeſcet omnis militia cœlorum, & complicabuntur ſicut liber cœli: & omnis militia eorum defluet, ſicut defluit foliũ de vinea & de ficu. 5 Quoniã inebriatus eſt in cœlo gladius meus: ecce ſuper Idumæam deſcendet, & ſuper populum interfectionis meæ, ad judicium. 6 Gladius Domini repletus eſt ſanguine, incraſſatus eſt adipe, de ſanguine agnorum, & hircorum, de ſanguine medullatorum arietum: victima enim Domini in Boſra, & interfectio 7 magna in terra Edom. Et deſcendent unicornes cum eis, & tauri cum potentibus: inebriabitur terra eorum ſanguine, et humus eorum adipe pinguiũ: 8 Quia dies ultionis Domini, annus retributionũ judicii Sion. 9 Et convertentur torrentes ejus in picem, & humus ejus in ſulphur: & erit terra ejus in pi10cem ardentem. Nocte & die non extinguetur, in ſempiternum aſcendet fumus ejus: à generatione in generationem deſolabitur, in ſecula ſeculorum non erit tranſiens ꝑ eam. 11 Et poſſidebunt illam onocrotalus & ericius: ibis & corvus habitabunt in ea: & extendetur ſuper eam menſura, ut redigatur ad nihilum, & perpen12diculum in deſolationem. Nobiles ejus non erunt ibi: regẽ potiùs invocabunt, & omnes principes ejus erunt in nihilũ. 13 Et orientur in domibus ejus ſpinæ, & urticæ, & paliurus in munitionibus ejus: & erit cubile draconum, & paſcua 14 ſtruthionum. Et occurrent dæmonia onocentauris, & piloſus clamabit alter ad alterum: ibi cubavit lamia, & invenit 15 ſibi requiem. Ibi habuit foveam ericius, & enutrivit catulos, & circumfodit, & fovit in umbra ejus: illuc congregati ſunt milvi, alter ad alterum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. λδ΄.

1 ΠΡοσαγάγετε ἔθνη, ϗ ἀκούσατε ἄρχοντες· ἀκουσάτω ἡ γῆ, ϗ οἱ (α) ἐν αὐτῇ, 2 ἡ οἰκουμένη, ϗ ὁ λαὸς ὁ ἐν αὐτῇ. Διότι θυμὸς κυρίου ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη ϗ ὀργὴ ἐπὶ τὸν ἀριθμὸν αὐτῶν, τοῦ ἀπολέσαι αὐ3τοὺς, ϗ παραδοῦναι αὐτοὺς εἰς σφαγήν. Οἱ δὲ τραυματίαι αὐτῶν ῥιφήσονται, ϗ οἱ νεκροὶ, ϗ ἀναβήσεται αὐτῶν ἡ ὀσμὴ, ϗ βραχήσεται τὰ ὄρη ἀπὸ τοῦ αἵματος (β) αὐ4τῶν. Καὶ τακήσονται πᾶσαι αἱ δυνάμεις τῶν οὐρανῶν, ϗ ἑλιγήσεται ὁ οὐρανὸς ὡς βιβλίον, ϗ πάντα τὰ ἄστρα πεσεῖται ὡς φύλλα ἐξ ἀμπέλου, ϗ ὡς πίπτει φύλλα ἀπὸ συ5κῆς. Ἐμεθύσθη ἡ μάχαιρά μου ἐν τῷ οὐρανῷ· ἰδοὺ ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν καταβήσεται, ϗ ἐπὶ τὸν λαὸν τῆς ἀπωλείας μετὰ κρίσε6ως. Ἡ μάχαιρα (γ) τοῦ κυρίου ἐνεπλήσθη αἵματος, ἐπαχύνθη ἀπὸ στέατος (δ), ἀπὸ αἵματος τράγων ϗ ἀμνῶν, ϗ ἀπὸ στέατος τράγων ϗ κριῶν· ὅτι θυσία (ε) τῷ κυρίῳ ἐν Βοσὸρ, ϗ σφαγὴ μεγάλη ἐν τῇ Ἰ7δουμαίᾳ. Καὶ (ζ) συμπεσοῦνται οἱ ἁδροὶ μετ᾽ αὐτῶν, ϗ οἱ κριοὶ ϗ οἱ ταῦροι, ϗ μεθυσθήσεται ἡ γῆ ἀπὸ τοῦ αἵματος, ϗ ἀπὸ 8 τοῦ στέατος αὐτῶν ἐμπλησθήσεται. Ἡμέρα γὰρ κρίσεως κυρίου, ϗ ἐνιαυτὸς ἀνταπο9δόσεως κρίσεως Σιών. Καὶ στραφήσονται (η) αἱ φάραγγες αὐτῆς εἰς πίσσαν, ϗ ἡ γῆ αὐτῆς εἰς θεῖον. ϗ ἔσται (θ) ἡ γῆ αὐτῆς 10 ὡς πίσσα καιομένη Νυκτὸς ϗ ἡμέρας, ϗ οὐ σβεσθήσεται εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον, ϗ ἀναβήσεται ὁ καπνὸς αὐτῆς ἄνω, εἰς γενεὰς (ι) αὐτῆς ἐρημωθήσεται, ϗ (κ) εἰς χρόνον 11 πολύν. Ὄρνεα ϗ ἐχῖνοι, ϗ ἴβεις ϗ κόρακες κατοικήσουσιν ἐν αὐτῇ. ϗ ἐπιβληθήσεται ἐπ᾽ αὐτὴν σπαρτίον γεωμετρίας ἐρήμου, ϗ ὀνοκένταυροι οἰκήσουσιν ἐν αὐτῇ. 12 Οἱ ἄρχοντες αὐτῆς οὐκ ἔσονται· οἱ γὰρ βασιλεῖς (λ), ϗ οἱ μεγιστᾶνες αὐτῆς ἔσον13ται εἰς ἀπώλειαν. Καὶ (μ) ἀναφύσει εἰς τὰς πόλεις αὐτῶν (ν) ἀκάνθινα ξύλα, ϗ εἰς τὰ ὀχυρώματα αὐτῆς· ϗ ἔσται ἐπαύλεις 14 σειρήνων, ϗ αὐλὴ στρουθῶν. Καὶ συναντήσουσι δαιμόνια ὀνοκενταύροις, ϗ βοήσονται ἕτερος πρὸς τὸν ἕτερον, ἐκεῖ ἀναπαύσονται ὀνοκένταυροι, (ξ) εὑρόντες αὐ15τοῖς ἀνάπαυσιν. Ἐκεῖ ἐνόσσευσεν ἐχῖνος, ϗ ἔσωσεν ἡ γῆ τὰ παιδία αὐτῆς μετὰ ἀσφαλείας· ἐκεῖ (ο) συνήντησαν ἔλαφοι ϗ εἶδον τὰ πρόσωπα ἀλλήλων.

MS.A. (α) ἐνοικοῦντες ἐν αὐτῇ, (β) αὐτῶν. Καὶ ἑλιγήσεται (γ) κυρίου (δ) ἀρνῶν, ϗ ἀπὸ στέατος τράγων ϗ κριῶν· ὅτι (ε) Βοσόρ, (ζ) συμπεσοῦνται (η) αὐτῆς αἱ φάραγγες (θ) αὐτῆς ἡ γῆ ὡς πίσσα (ι) ἐρημωθήσεται, (κ) κατοικήσονται ἐν αὐτῇ ὄρνεα ϗ ἴβεις καὶ κόρακες. ϗ ἐπιβληθήσεται (λ) αὐτῆς, ϗ οἱ ἄρχοντες ϗ οἱ μεγιστᾶνες (μ) ἀναφύσει (ν) ἄκανθα, ϗ εἰς (ξ) εὗρον γὰρ φοι συνήντησαν

CAP. XXXI

ACcedite gentes, & au
principes. Audiat terra, &
in ea; orbis terræ, & popu
in ea. Quia furor Domini
omnes gentes, & ira ſupe
numerum earum, ad per
eos, & tradendos eos in o
nem. Vulnerati autem e
projicientur, etiam mortu
aſcendet eorum (b) odor:
rigabuntur (c) montes à ſang
eorum. Et (d) tabeſcent o
virtutes cœlorum, & com
bitur cœlum, ſicut liber:
omnes ſtellæ cadent, ſicut
vite, & ſicut cadunt folia
cu. Inebriatus eſt gladius
in cœlo: ecce ſuper Iduma
deſcendet, & ſuper populum
ditionis cum judicio. Gladius
mini impletus eſt ſanguine:
craſſatus eſt de adipe, de ſang
ne hircorum, & (f) agnorum
de adipe hircorum, & a
Sacrificium enim Domino
ſor, & mactatio magna in
mæa: Et concident robuſti
eis, & arietes, & tauri: &
ebriabitur terra ex ſanguine
ex adipe eorum implebitur.
enim judicii Domini: & a
retributionis judicii Sion. E
tentur valles ejus in picem,
terra ejus in ſulphur: &
terra ejus, quaſi pix arden
ctæ, & die, & non extingu
in ſempiternum tempus: & a
det fumus ejus ſurſum:
nerationes ſuas deſolabit
in tempus multum. Ave
bericii, & ibes, & corv
bunt in ea. Et immittetu
eam funiculus geometriæ
& onocentauri habitabunt
Principes ejus non erunt:
enim & magnates ejus er
perditionem. Et pullulabunt
civitatibus eorum ſpinæ
& in munitionibus ejus
rit caulæ (g) ſirenum, &
ſtruthionum: Et occurr
monia onocentauris: &
bunt alter ad alterum:
quieſcent onocentauri,
ſibi requiem: Illic
bericius: & ſalvavit
lios ejus cum ſecuritat
curreruntcervi, & vide
cies inter ſe:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

לד

1 אתקרבו עממיא למשמע ומלכותא אציתו תשמע ארעא ומלהא תבל וכל דדירין בה :
2 ארי רגז מן קדם יי על כל עממיא וקטולא על כל משריתהון חיבנון מסרנון לקטלא :
3 וקטיליהון יתרמון ופגריהון יסק תננהון ויתימסון טוריא מדמהון : 4 ויתימסון כל חילי
שמיא ויתמחון מתחות שמיא כמא דאמיר עליהון בספרא וכל משריתהון יסופין
5 כמיתר טרף מגפן וכנבלא מתאנה : ארי תתגלי בשמיא חרבי הא על אדום תתגלי ועל
6 עמא דחיבית לדינא : חרבא קדם יי אתמליאת דם אדהנת מתרב מדם מלכין ושלטונין
מתרב כלית רברבין ארי קטלא קדם יי בבצרא ונכסא סגיאה בארעא דאדום :
7 ויתקטלון גברין עמהון ושלטונין עם טורנין ותרוי ארעהון מדמהון ועפרהון מתרבהון
8 ידהן : ארי יום פורענותא קדם יי שנת תושלימא למעבד פורענות דין עולבנא דציון :
9 ויתהפכון נחלהא לזפא ועפרה לגופריתא ותהי ארעא לזפא בוערה : 10 לילי ויממם לא
11 תטפי לעלם יסק תננה מדר לדר תחרוב לעלם עלמיא לית די עדי בה : ויחסנונה קתין
וקפודין וקפופין ועורבין ישרן בה ויתנגיד עלה חוט דחורבנא ומשקלתא דצדיותא :
12 דהוו אמרין בני חירין אנחנא ולא צבן לקבלא עליהון מלכו וכל רברבהא יהון ללמא :
13 ויסקון בבירניתהא סירין קרסולין וחוחין בתקוף כרכהא ותהי מדור ירודין אתרא לבת
14 נעמא : ויערען תמון בחתולין ושידין חד עם חבריה יחיכון ברם תמן ישרין לילין
15 וישכחן להון ניח : תמן תקנן קופדא ותשיב וקורהון ינצפון בטולא ברם לתמן
יתכנשון דיתא אתתא לות חברתה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXXIV

ACcedite populi ad audiendum, & regna attendite; audiat terra
nitudo ejus, orbis & omnes qui habitant in eo. Furor enim a
eſt ſuper omnes populos, & occiſio ſuper omnem exercitum eorum
demnavit eos & tradidit eos in occiſionem. Et interfecti eorum pro
tur, & de cadaveribus eorũ aſcendet fœtor eorum, & colliqueſcen
tes à ſanguine eorum. Et tabeſcent omnes *exercitus* cœlorũ, &
deſubter cœlũ ſicut dictũ eſt de eis in libro: *Et* omnes exercitus eo
ſumentur, ſicut defluit foliũ de vite; & ſicut deciduũ de ficulnea
revelatus eſt in cœlo gladius meus; ecce ſuper Idumæam revelatus
ſuper populũ quẽ condemnavi in judicio. Gladius enim in conſpe
replet⁹ eſt ſanguine, impinguat⁹ eſt adipe, ſanguine regũ & domi
& adipe renum principũ; quoniam occiſio eſt corã Dño in Boſra
terfectio magna in terra Edom. Et occidentur fortes cum eis
natores cum ducibus; & inebriabitur eorũ ſanguine ipſorũ terra
vis adipe eorũ impinguabitur. Quia dies vindictæ eſt corã Dño
tributionis ad ſummendam ultionem juſtam injuriæ Sion. Et
tur torrentes *ejus* in picem, & pulvis ejus in ſulphur; & erit
cem ardentẽ. Noctes & dies non extinguetur: in æternũ aſcende
à generatione in generationes deſolabitur: in ſecula ſeculorũ no
tranſeat per eam. Et poſſidebunt illam cati & ericii; & ululæ
habitabunt in ea: et extendetur ſuper eam linea deſolationis, &
culum deſtructionis. Qui dictitabant, Filii liberi ſumus, & nole
pere regem ſuper ſe. Et omnes principes ejus erunt in nihilũ.
in palatiis ejus ſpinæ, urticæ, & tribuli in munitione civitatis eju
habitaculum draconum, & loc⁹ *filiæ ſtruthionis*. Et occurrent
dæmones inter ſe colludent: veruntamen ibi manebunt noctuæ, &
ent ſibi requiẽ. Ibi nidificabit ericius, & pullos excludet, & p
garrient in umbra ej⁹: veruntamẽ ibi congregabuntur milvi alte

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܕ *   * ܐܬܪܐ ܕܕܝܢܐ *

* ܩܪܘܒܘ ܥܡܡܐ ܠܡܫܡܥ܆ ܘܨܘܬܘ ܐܘܡܘܬܐ. ܬܫܡܥ ܐܪܥܐ ܘܡܠܝܗ̇. ܬܒܝܠ ܘܟܠܗܘܢ 1
ܥܡܘܪܝܗ̇. * ܡܛܠ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ: ܘܚܡܬܗ ܥܠ ܟܠܗ
ܚܝܠܗܘܢ. ܕܢܚܪܘܒ ܐܢܘܢ. ܘܢܫܠܡ ܐܢܘܢ ܠܩܛܠܐ. * ܘܢܫܬܕܘܢ ܩܛܝܠܝܗܘܢ. ܘܢܣܩ 2
ܣܪܝܐ ܕܦܓܪܝܗܘܢ. ܘܢܬܡܣܘܢ ܛܘܪܐ ܡܢ ܕܡܗܘܢ. * ܘܢܬܡܣܘܢ ܟܠܗ ܚܝܠܘܬܐ ܕܫܡܝܐ. 3
ܘܢܬܟܪܟܘܢ ܫܡܝܐ ܐܝܟ ܟܬܒܐ. ܘܟܠܗ ܚܝܠܗܘܢ ܢܬܪ. ܐܝܟ ܕܢܬܪ ܛܪܦܐ ܡܢ 4
ܓܘܦܢܐ. ܘܐܝܟ ܦܩܘܥܐ ܡܢ ܬܐܬܐ. * ܡܛܠ ܕܐܬܪܘܝܬ ܣܝܦܝ ܒܫܡܝܐ. ܗܐ ܥܠ ܐܕܘܡܝܐ ܢܚܘܬ.
ܥܠ ܥܡܐ ܕܐܬܚܝܒ ܒܕܝܢܐ. * ܣܝܦܗ ܕܡܪܝܐ ܡܠܐ ܕܡܐ. ܐܬܡܫܚ ܡܢ ܕܡܐ ܘܡܢ ܬܪܒܐ 5
ܕܡܦܛܡܐ ܘܕܓܕܝܐ. ܘܡܢ ܬܪܒܐ ܕܟܘܠܝܬܐ ܕܕܟܪܐ. ܡܛܠ ܕܕܒܚܬܐ ܠܡܪܝܐ ܒܒܨܪܐ. ܘܩܛܠܐ 6
ܪܒܐ ܒܐܪܥܐ ܕܐܕܘܡ. * ܘܢܦܠܘܢ ܪܝܡܐ ܥܡܗܘܢ. ܘܬܘܪܐ ܥܡ ܥܓܠܐ. ܘܬܪܘܐ ܐܪܥܐ ܡܢ
ܕܡܗܘܢ. ܘܥܦܪܐ ܡܢ ܬܪܒܗܘܢ ܢܕܗܢ. * ܡܛܠ ܕܝܘܡܐ ܕܦܘܪܥܢܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܫܢܬܐ 7
ܕܦܘܪܥܢܐ ܠܕܝܢܗ ܕܨܗܝܘܢ. * ܘܢܬܗܦܟܘܢ ܢܚܠܝܗ̇ ܠܙܦܬܐ. ܘܥܦܪܗ̇ ܠܟܒܪܝܬܐ. ܘܬܗܘܐ 8
ܐܪܥܗ̇ ܙܦܬܐ ܕܝܩܕܐ. * ܘܠܐ ܬܕܥܟ ܠܠܝܐ ܘܐܝܡܡܐ. ܠܥܠܡ ܢܣܩ ܬܢܢܗ̇. ܠܕܪ ܕܪܝܢ 9
ܬܚܪܘܒ. ܘܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ ܐܢܫ ܠܐ ܢܥܒܪ ܒܗ̇. * ܘܢܐܪܬܘܢܗ̇ ܩܩܐ ܘܩܘܦܕܐ. ܘܩܩܐ ܘܥܘܪܒܐ 10
ܢܥܡܪܘܢ ܒܗ̇. ܘܢܬܡܬܚ ܥܠܝܗ̇ ܚܒܠܐ ܕܚܘܪܒܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܬܡܢ ܚܕܘܬܐ. * ܘܠܐ ܢܩܪܘܢ 11
ܬܡܢ ܡܠܟܘܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܝܗ̇ ܠܐܒܕܢܐ. * ܘܢܣܩܘܢ ܒܒܝܢܝܗ̇ ܟܘܒܐ. ܘܚܘܚܐ 12
ܘܕܪܕܪܐ ܒܚܣܢܝܗ̇. ܘܬܗܘܐ ܕܝܪܐ ܕܝܪܘܪܐ. ܘܡܪܥܝܬܐ ܠܒܢܬ ܝܥܢܐ. * ܘܢܐܪܥܘܢ ܒܗ̇ 13
ܫܐܕܐ ܒܫܐܕܐ. ܘܫܐܕܐ ܠܚܒܪܗ ܢܩܪܐ. ܬܡܢ ܬܫܪܐ ܠܠܝܬܐ. ܘܬܫܟܚ ܠܗ̇ ܢܝܚܐ. 14
* ܘܬܡܢ ܬܩܢܢ ܩܘܦܕܐ. ܘܬܢܦܨ ܘܬܚܦܘܪ. ܘܬܓܢ ܒܛܠܠܗ̇. ܘܬܡܢ ܢܬܟܢܫܘܢ ܕܝ̈ܬܐ 15
ܚܕܐ ܥܡ ܚܕܐ.

CAP. XXXIV.

Locus judicii.

ADeſte populi ad audiendum, auſcultate gentes, audiet terra univerſa, orbis & omnes habitatores ejus : 1
Nam ira Domini eſt contra omnes populos, & indignatio ej' contra omnem exercitum eorum ; ut trucidet eos, & tradat eos internecioni. 2
Projicientur confoſſi eorum, malè olebit odor cadaverũ eorum, & fœtebunt montes ob ſanguinem eorum. 3
Etiam contabeſcent omnes cœlorum exercitus, & convolventur cœli ut volumen, & totus exercitus eorum defluet quemadmodum defluit folium è vite, & ut groſſus è fico. 4
Inebriabitur enim gladius meus in cœlis, ecce ſuper Adumæos deſcendet, ſuper populum qui convictus eſt in judicio. 5
Gladius Domini plenus eſt ſanguine, pinguefactus eſt ſanguine & adipe ſaginatorum & hœdorum, & adipe renum arietum : nam victima Domino eſt in Boſar, & cædes magna in terra Adumæorum. 6
Cum his cadent etiam unicornes, & tauri cum juvencis; adeo ut inebrietur terra ſanguine eorum, & pulvis adipe eorum pinguefiat : 7
Quoniam dies eſt ultionis Domino, & annus retributionis judicii Sionis. 8
Torrentes ejus in picem convertentur, & pulvis ejus in ſulphur ; eritque terra ejus pix ardens, 9
Et non extinguetur noctu neque interdiu, ſed perpetuò aſcendet fumus ejus : vaſtabitur ad æternas generationes, & in ſeculum ſeculorum nemo per eam tranſibit : 10
Sed occupabunt eam cygni et herinacei, et pelicani atque corvi habitabunt in ea : et extendetur ſuper eam filum vaſtitatis, nec erit ibi gaudium ; 11
Neque nominabunt ibi regnum, quia cuncti principes ejus erunt in exitium. 12
Naſcentur ſpinæ in palatiis ejus, et cardui atque tribuli in munitione ejus : et erit habitatio canum ſylveſtrium, et paſcua pullis ſtruthionum. 13
Obvios offendent in ea ſpiritus, et dæmon alterum vocabit : ibi reſidebit ſtrix : inveniétque ſibi quietem : 14
Ibi nidificabit herinaceus, excutiet ſe, effodiet, et penetrabit in umbram illius : et ibi congregabuntur milvi alter cum altero : 15

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الرابع والثلثون *

* اقتربوا ايها الامم * وتسمع الروساء * لتسمع الارض والساكنون فيها * المسكونه 1
والشعب الذين فيها * من اجل ان غضب الرب على كل الامم * والرجز على عددهم 2
ليهلكهم ويسلمهم للذبح * وجرحاهم واموايهم يطرحون * ويصعد رايحهم * ويعفن 3
الجبال من دمهم * وتطوى السماء مثل الكتاب * وجميع الكواكب تسقط مثل 4
ورق من كرمه * وكما تسقط ورقه من تينه * سكر سيفي في السماء * ها على ادوم 5
ينزل وعلى شعب الهلاك بحكم * سيف الرب امتلى دما * سمن من شحم الخراف ومن 6
دم التيوس والحملان * ومن شحم التيوس والكباش * لان الذبيحة للرب في بصور
والذبح العظيم في الادومية * وتسقط الاغنياء معهم والكباش والثيران * وتسكر الارض 7
من الدم * وتملى من شحمهم * لانه يوم حكم الرب * وسنه المكافاة والحكم في 8
صهيون حصر * وترجع اوديتها للكبريت * وتصير ارضها مثل زفت تحترق ليلا ونهارا 9
* ولا يطفى الى الدهر زمانا * ويصعد دخانها الى فوق الى جبالها * تخرب والى زمن كثير 10
تخرب * وتسكن فيها الطيور والقنافذ والكباري والغربان * ويلقى عليها خيط مساحة 11
البرية * وتسكن فيها الغيلان * روساها لا يكونون * لان ملوكها وروساها وعظماها 12
يصيرون للهلاك * وينبت في مدنها الاشجار الشوكيه وفي حصونها * وتصير ماوى لبنات 13
اوى * وحصين للنعام * وتلقى الجان * والغيلان يلقون اخر مع اخر * هناك تستريح الغيلان 14
لانهم وجدوا لهم راحة * هناك عشش القنفذ * وخلصت الارض بقاعها بثبت * هناك الايايل 15
يلتقون وينظرون وجوه بعضهم بعضا *

CAP. XXXIV.

ACcedite O gentes, audiant principes, audiat terra & qui habitant in ea, orbis & populus exiſtens in eo : 1
Quoniam ira Domini eſt adverſus omnes gentes, & furor adverſùs numerum earum ; ut perdat eas, & mactationi devoveat. 2
Vulnerati & mortui earum projicientur, aſcendetque fœtor eorum, & muceſcent montes ex eorum ſanguine. 3
Cœlum quoque ut liber complicabitur, & omnes ſtellæ decident ut folia è viti, & quemadmodum labitur folium è fico. 4
Inebriatus gladius meus in cœlo, en ſuper Edom & ſuper populum perditionis juſtè deſcenſurus eſt. 5
Gladius Domini replebitur ſanguine, pingueſcet adipe agnorum, & ſanguine hircorum & arietum, & adipe hircorum & arietum ; quia ſacrificium Domino erit in Boſor, & ingens mactatio in Edomæa. 6
Corruent etiam cum iſtis divites, & arietes, atque tauri ; ita ut inebrietur terra ſanguine, & impleatur adipe eorum : 7
Quia dies erit judicii Domini, & annus remunerationis & judicii in Sion aderit ; 8
Et convertentur in ſulphur torrentes ejus, & terra ejus evadet quaſi pix noctu diuque ardens, 9
Et nequaquam extinguenda in æternitatem temporis, & fumus ejus ſurſum aſcendet ad montem ipſius. Evertetur, & ad diuturnum tempus evertetur ; 10
Et habitabunt in ea volucres, & herinacei, bubones, & corvi : jacietur ſuper eam filum dimenſionis deſerti, & habitabunt in ea ſtriges. 11
Principes ejus non erunt, quia reges ejus, & principes ac magnates ejus interibunt. 12
Exorientur in urbibus & arcibus ejus, arbores ſpinoſæ, & erit receptus canum ſylveſtrium, & caula ſtruthionum. 13
Dæmones occurrent invicem, & ſtriges offendent altera in alteram. Ibi requieſcent ſtriges, quia invenient ſibi requiem : 14
Ibi nidificabunt herinacei : ſic terra certiſſimè ſuos eximet campos : ibi cervi ſibi invicem occurrent, ſeſeque coram videbunt. 15

, defuit non eis ex unum : legite &, Domini libro *deſuper* Requirite
16 דִּרְשׁוּ מֵעַל־סֵפֶר יְהוָה וּקְרָאוּ אַחַת מֵהֵנָּה לֹא נֶעְדָּרָה
, præcepit ipſum meũ os quia *:ſunt deſiderata* non ſuo ſocio unumquodque
אִשָּׁה רְעוּתָהּ לֹא פָקָדוּ כִּי־פִי הוּא צִוָּה
.fortem eis fecit cadere ipſe Et .ea cõgregavit ipſe ejꝰ ſpiritꝰ &
17 וְרוּחוֹ הוּא קִבְּצָן׃ וְהוּא־הִפִּיל לָהֶן גּוֹרָל
:eã poſſidebunt ſeculum in uſque : linea in eis eam diviſit ejus manus Et
וְיָדוֹ חִלְּקַתָּה לָהֶם בַּקָּו עַד־עוֹלָם יִירָשׁוּהָ
.ea in habitabunt generatione &, generatione in
לְדוֹר וָדוֹר יִשְׁכְּנוּ־בָהּ׃

CAP. XXXV. לה

florebit &, ſolitudo exultabit & *: ſiccitas* &, deſertum *eis in Gaudebunt*
1 יְשֻׂשׂוּם מִדְבָּר וְצִיָּה וְתָגֵל עֲרָבָה וְתִפְרַח
, exultatione etiam exultabit &, germinabit Germinando .roſa veluti
2 כַּחֲבַצָּלֶת׃ פָּרֹחַ תִּפְרַח וְתָגֵל אַף גִּילַת
ipſi *: Saron &*, *Charmel* decor, *ei* eſt data Lebanon gloria *:ovando* &
וְרַנֵּן כְּבוֹד הַלְּבָנוֹן נִתַּן־לָהּ הֲדַר הַכַּרְמֶל וְהַשָּׁרוֹן הֵמָּה
manus Confortate .noſtri Dei decorem, DOMINI gloriam videbunt
3 יִרְאוּ כְבוֹד־יְהוָה הֲדַר אֱלֹהֵינוּ׃ חַזְּקוּ יָדַיִם
, corde *inquietis* Dicite .roborate *labantia* genua & : remiſſas
4 רָפוֹת וּבִרְכַּיִם כֹּשְׁלוֹת אַמֵּצוּ׃ אִמְרוּ לְנִמְהֲרֵי־לֵב
retributio ; veniet *ultio* veſter Deus ecce : timeatis ne, Confortamini
חִזְקוּ אַל־תִּירָאוּ הִנֵּה אֱלֹהֵיכֶם נָקָם יָבוֹא גְּמוּל
aperientur Tunc .vos faciet ſalvos &, veniet ipſe : Dei
5 אֱלֹהִים הוּא יָבוֹא וְיֹשַׁעֲכֶם׃ אָז תִּפָּקַחְנָה
ſaliet Tunc .patebunt ſurdorum aures & : cæcorum oculi
6 עֵינֵי עִוְרִים וְאָזְנֵי חֵרְשִׁים תִּפָּתַחְנָה׃ אָז יְדַלֵּג
ſunt ſciſſæ quia : muti lingua *præconia dicet* &, claudus cervus ſicut
כָּאַיָּל פִּסֵּחַ וְתָרֹן לְשׁוֹן אִלֵּם כִּי־נִבְקְעוּ
aridus locus erit Et .ſolitudine in flumina &, aquæ deſerto in
7 בַמִּדְבָּר מַיִם וּנְחָלִים בָּעֲרָבָה׃ וְהָיָה הַשָּׁרָב
draconum habitaculo in : aquarum *ſcaturigines in*, *ſitis* & ; ſtagnum in
לַאֲגַם וְצִמָּאוֹן לְמַבּוּעֵי מָיִם בִּנְוֵה תַנִּים
. ibi erit Et .junco &, calamo atrium, ejus accubitus
8 רִבְצָהּ חָצִיר לְקָנֶה וָגֹמֶא׃ וְהָיָה־שָׁם
eã tranſibit non *: ei* vocabitur ſanctitatis via &, via &, *ſtrata* ſemita
מַסְלוּל וָדֶרֶךְ וְדֶרֶךְ הַקֹּדֶשׁ יִקָּרֵא לָהּ לֹא־יַעַבְרֶנּוּ
.errabũt non ſtulti *&*, viam *ambulans* : ipſis *hoc* &, pollutus
טָמֵא וְהוּא־לָמוֹ הֹלֵךְ דֶּרֶךְ וֶאֱוִילִים לֹא יִתְעוּ׃
nec, eam *conſcendet* non *ferarum effractor* &, leo ibi erit Non
9 לֹא־יִהְיֶה שָׁם אַרְיֵה וּפְרִיץ חַיּוֹת בַּל־יַעֲלֶנָּה לֹא
DOMINI redempti Et .redempti ambulabunt & *:* ibi invenietur
10 תִמָּצֵא שָׁם וְהָלְכוּ גְּאוּלִים׃ וּפְדוּיֵי יְהוָה
:eorũ caput ſuper ſeculi lætitia &, *præconio in* Sijon venient &, revertẽtur
יְשֻׁבוּן וּבָאוּ צִיּוֹן בְּרִנָּה וְשִׂמְחַת עוֹלָם עַל־רֹאשָׁם
.gemitus &, *mæror* fugient &, apprehendent lætitiam &, gaudium
שָׂשׂוֹן וְשִׂמְחָה יַשִּׂיגוּ וְנָסוּ יָגוֹן וַאֲנָחָה׃

CAP. XXXVI. לו

aſcendit, Chizchijahu regis anno decimo-quarto in fuit Et
1 וַיְהִי בְּאַרְבַּע עֶשְׂרֵה שָׁנָה לַמֶּלֶךְ חִזְקִיָּהוּ עָלָה
, munitas Jehudah civitates omnes contra Aſſur rex Sancherib
סַנְחֵרִיב מֶלֶךְ־אַשּׁוּר עַל כָּל־עָרֵי יְהוּדָה הַבְּצֻרוֹת
.eas cepit &
וַיִּתְפְּשֵׂם׃

Verſio VULG. LAT.

16 Requirite diligenter in libro Domini, & legite : unum ex eis non defuit, alter alterum non quæſivit : quia quod ex ore meo procedit, ille mandavit, & ſpiritus ejus ipſe con- 17 gregavit ea. Et ipſe miſit eis ſortem, & manus ejus diviſit eam illis in menſuram : uſque in æternum poſſidebunt eam, in generationem & generationem habitabunt in ea.

CAP. XXXV.

1 LÆtabitur deſerta & invia, & exultabit ſolitudo, & flore- 2 bit quaſi lilium. Germinans germinabit, & exultabit lætabunda & laudans : gloria Libani data eſt ei : decor Carmeli, & Saron, ipſi videbunt gloriam Domini & de- 3 corem Dei noſtri. Confortate manus diſſolutas, & genua 4 debilia roborate. Dicite puſillanimis ; Confortamini, & nolite timere : ecce Deus veſter ultionem adducet retributionis : Deus ipſe veniet, & 5 ſalvabit vos. Tunc aperientur oculi cæcorũ, & aures ſurdo- 6 rum patebunt. Tunc ſaliet ſicut cervus claudus, & aperta erit lingua mutorum : quia ſciſſæ ſunt in deſerto aquæ, & tor- 7 rentes in ſolitudine. Et quæ erat arida, erit in ſtagnum, & ſitiens in fontes aquarum. In cubilibus, in quibus priùs dracones habitabant, orietur vi- 8 ror calami & junci. Et erit ibi ſemita & via, & via ſancta vocabitur : non tranſibit per eam pollutus, & hæc erit vobis directa via, ita ut ſtulti 9 non errent per eam. Non erit ibi leo, & mala beſtia non aſcendet per eam, nec invenietur ibi : & ambulabunt qui 10 liberati fuerint. Et redempti à Dño convertentur, & venient in Sion cum laude : & lætitia ſempiterna ſuper caput eorum : gaudium & lætitiam obtinebunt, & fugiet dolor & gemitus.

CAP. XXXVI.

1 ET factum eſt in quartodecimo anno regis Ezechiæ, aſcendit Sennacherib rex Aſſyriorum ſuper omnes civitates Juda munitas, & cepit eas.

Verſio GRÆCA LXX. Inte

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Ἀριθμῷ παρῆλθον, καὶ μία αὐτῶν οὐκ ἀπώλετο· ἑτέρα τὴν ἑτέραν οὐκ (π) ἐζήτησαν, ὅτι ὁ κύριος αὐτοῖς ἐνετείλατο, καὶ 17 τὸ πνεῦμα αὐτοῦ συνήγαγεν (ρ) αὐτά. Καὶ αὐτὸς ἐπιβαλεῖ αὐτοῖς κλήρους, καὶ ἡ χεὶρ αὐτοῦ διεμέρισε βόσκεσθαι· εἰς τὸν αἰῶνα χρόνον (σ) κληρονομήσετε, γενεὰς γενεῶν ἀναπαύσονται ἐπ' αὐτῆς.

MS. A. (π) ἐξεζήτησαν, ὅτι κύριος ἐνετείλατο αὐτοῖς, (ρ) κληρονομήσατε εἰς γενεὰς

Numero tranſierun
rum non perit :
non requiſierunt :
eis mandavit, &
congregavit ea. E
ſortes, & manu
buit, ut paſcantur :
tempus poſſidebitis :
generationum requi
eam.

ΚΕΦ. λε'.

1 ΕΥφράνθητι ἔρημος διψῶσα, ἀγαλλιά- 2 σθω ἔρημος, καὶ ἀνθείτω ὡς κρίνον. Καὶ ἐξανθήσει καὶ ἀγαλλιάσεται τὰ ἔρημα τοῦ Ἰορδάνου, (α) ἡ δόξα τοῦ Λιβάνου ἐδόθη αὐτῇ, καὶ ἡ τιμὴ τοῦ Καρμήλου, καὶ ὁ λαός μου ὄψεται τὴν δόξαν κυρίου, καὶ τὸ ὕψος τοῦ θε- 3 οῦ. Ἰσχύσατε χεῖρες ἀνειμέναι, καὶ γόνατα 4 παραλελυμένα. Παρακαλέσατε οἱ ὀλιγόψυχοι τῇ διανοίᾳ· ἰσχύσατε, μὴ φοβεῖσθε. ἰδοὺ ὁ θεὸς ἡμῶν κρίσιν (˜) ἀνταποδίδωσι, καὶ ἀνταποδώσει, αὐτὸς ἥξει καὶ σώσει ἡμᾶς. 5 Τότε ἀνοιχθήσονται ὀφθαλμοὶ τυφλῶν, καὶ 6 ὦτα κωφῶν ἀκούσονται. Τότε ἁλεῖται ὡς ἔλαφος ὁ χωλός, (β) τρανὴ δὲ ἔσται γλῶσσα μογιλάλων, ὅτι ἐρράγη ἐν τῇ ἐρήμῳ ὕδωρ, καὶ 7 φάραγξ ἐν γῇ διψώσῃ· Καὶ (γ) ἔσται ἡ ἄνυδρος εἰς ἕλη, καὶ εἰς τὴν διψῶσαν γῆν πηγὴ ὕδατος ἔσται, ἐκεῖ εὐφροσύνη ὀρνέων, 8 ἐπαύλεις καλάμου καὶ ἕλη. (δ) Ἔσται ἐκεῖ ὁδὸς καθαρά, καὶ ὁδὸς ἁγία κληθήσεται, καὶ οὐ μὴ παρέλθῃ ἐκεῖ ἀκάθαρτος, οὐδὲ (ε) ἔσται ἐκεῖ ὁδὸς ἀκάθαρτος· οἱ δὲ διεσπαρμένοι πορεύσονται ἐπ' αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ πλανηθῶσι. 9 Καὶ οὐκ ἔσται ἐκεῖ λέων, οὐδὲ τῶν (ζ) πονηρῶν θηρίων οὐ μὴ ἀναβῇ (η) εἰς αὐτήν, οὐδὲ μὴ 10 εὑρεθῇ ἐκεῖ, ἀλλὰ πορεύσονται ἐν αὐτῇ λελυτρωμένοι, καὶ συνηγμένοι διὰ κύριον, (θ) καὶ ἀποστραφήσονται, καὶ ἥξουσιν εἰς Σιὼν μετ' εὐφροσύνης, καὶ εὐφροσύνη αἰώνιος ὑπὲρ κεφαλῆς αὐτῶν· ἐπὶ (ι) γὰρ τῆς κεφαλῆς αὐτῶν αἴνεσις καὶ ἀγαλλίαμα, καὶ εὐφροσύνη καταλήψεται αὐτούς, ἀπέδρα ὀδύνη καὶ λύπη καὶ στεναγμός.

MS.A. (α) καὶ ἡ δόξα (˜) ἀνταποδώσει (β) καὶ τρανὴ ἔσται (γ) ἔσται (δ) Ἐκεῖ ἔσται (ε) ἐκεῖ ἔσται (ζ) θηρίων τῶν πονηρῶν (η) (θ) ἀποστραφήσονται (ι) γὰρ κεφαλῆς

CAP. XX

LÆtare deſertum
ultet ſolitudo, & flo
lium. Et (a) efflore
ultabunt deſerta Jord
ria Libani data eſt ei,
nor Carmeli. Et popu
debit gloriam Domini
dinem Dei. Confortam
remiſſæ, & genua diſ
ſolamini vos, puſillan
confortamini, nolite t
Deus noſter judicium
retribuet : ipſe venie
vabit nos. Tunc aperie
cæcorum, & aures ſurd
dient. Tunc ſaliet, ſic
claudus : expedita autem
gua balborum : quia ſc
deſerto aqua, & valle
ſitienti : Et erit inaqu
des : & in ſitiente terra
erit ; ibi lætitia avium
le arundinis, & palude
via munda, & via ſan
bitur : & non tranſi
mundus : neque erit
munda : qui autem
ibunt ſuper eam, &
Et non erit ibi leo : &
ſtia non aſcendet in eam
venietur ibi : ſed amb
ea Redempti, & congr
Dominum. Et revert
nient in Sion cum læt
tia ſempiterna ſuper cap
Super caput enim eor
& exultatio, & læti
hendet eos : fugit dol
ſtitia, & gemitus.

ΚΕΦ. λϛ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο τοῦ τεσσαρεσκαιδεκάτου ἔτους βασιλεύοντος Ἐζεκίου, ἀνέβη Σενναχηρεὶμ βασιλεὺς Ἀσσυρίων ἐπὶ τὰς πόλεις τῆς Ἰουδαίας τὰς ὀχυράς, καὶ (α) ἔλαβεν αὐτάς.

MS.A. (α) συνέλαβεν αὐτάς.

CAP. XXX

ET factum eſt in q
cimo anno regnante E
dit Sennacherim rex
ſuper civitates Judæ
& cepit eas.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 תבעו מעל ספרא דיי ובעו חדא מנהון לא שגרת ואתתא לחברתה לא עכיבת ארי
17 במימריה יתכנשן וברעותיה יתקרבן : והוא במימריה רמא להון עדבא וברעותיה
פליג להון בחוטא עד עלמא יחסנונה לדור ודור ישרון בה :

לה

1 יחדון דיתבין במדברא בארעא ציחיא ויבעון דשרן במישרא ויזהרון כשושניא : מרדץ
2 ירוצון ויחדון אף ביע וחדוא יקר לבנן יתיהיב להון זיו כרמלא ושרונא בית ישראל
3 דלהון אמרין אלין אנון יחזון יקרא דיי זיו תושבחתא דאלהנא : אמר נביא תקיפו ידין
4 דמרשלן ורכובין דרעלן חסינו : אמרו לדמוחן בלבהון למעבד אוריתא תקפו ולא
תדחלון הא אלהכון למעבד פורענות דין אתגלי מרי גמליא יי הוא יתגלי ויפרקנכון :
5 בכן יתפתחן עיני בית ישראל דאנון כסמן מן אוריתא ואודניהון דכחרשין לקבלא
6 למלי נביא יציתן : בכן במחזהון גלותא דישראל דמתכנשין וסלקן לארעהון הא
כאילין קלילין ולא לאתעכבא וישבח לישנהון דהוה בלים ארי בכן אתבזעו במדברא
7 מיא ונחליא במישרא : ויהי שרובא לאנטין דמין ובית צחונא למבועי מיא אתר דהוה
8 ירודין שרין תמן יסקון קנה וגומא : ויהי תמן כבש אורח ותקון אורחא דקודשא
9 יתקרי לה לא יעדון בה מסאבין ולא יפסקון עדי אורחא ודלא אליפו לא יטעון : לא יהי
10 תמן מלך מביש ושלטון מעיק לא יגוזניה ולא ישתכחון תמן ויהכון פריקין : ופריקיא
דיי יתובון ויתכנשון מביני גלותהון ויעלון לציון בתושבחתא וחדות עלם תהי להון
די לא פסקא וענן יקר תהי מטל על רישהון ביע וחדוא ישכחון ויסוף מנהון מבית
ישראל דונא ותינחתא :

לו

1 והוה בארבע עסרי שנין למלכא חזקיה סליק סנחריב מלכא דאתור על כל קרויא
דבית יהודה כריכתא ואחדנון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Requirite in libro Dñi, & quærite ; unum ex eis non defuit, nec
alteri moram affert, quia in verbo ejus congregabuntur : & in
ejus conjungentur. Et ipſe in verbo ſuo miſit eis ſortem ; & in
ſua diviſit eis funiculo, uſque in ſeculum poſſidebunt eam ; in gener
& generationem habitabunt in ea.

CAP. XXXV

EXultabunt qui habitant in deſerto, in terra arida ; & gaude
morantur in campeſtribus, & ſplendebunt ſicut lilia. Exultantes cu
& gaudebunt exultatione & gaudio. Gloria Libani data eſt eis
Carmeli & Saron : domus Iſrael quibus dicuntur hæc, ipſi videbu
Dñi, decorem laudis Dei noſter. Dixit *Propheta* : Confortate ma
ſolutas, & genua trementia roborate. Dicite feſtinis corde ut
ſecundùm legem, Confortamini, et nolite timere : ecce Deus veſter
tur ut faciat vindictam judicii : Dñs auctor retributionis ipſe revela
ſalvabit vos. Tunc aperientur oculi domus Iſrael, qui ſunt quaſi
ge ; & aures eorum qui ſunt quaſi ſurdi ad audienda verba prop
audient. Tunc cùm viderint exules Iſraelitarum congregatos a
in terram ſuam more cervorum velociſſimorum, ita ut non det
laudabit lingua eorum, quæ erat quaſi muta, quòd *tunc* diffiſſæ ſu
ſerto aquæ, & torrentes in ſolitudine. Et erit arida in ſtagna aquar
locus ſitiens in fontes aquarum. In loco ubi prius dracones habita
multiplicabuntur calamus & juncus. Et erit ibi via trita & recta
cta vocabitur, non tranſibunt per eam immundi, & non deficient
viam : & qui non didicerint, non errabunt per eam. Non erit
lefaciens, nec dominator tribulans pertranſibit eam ; imò illic
nientur : ibúntque redempti. Redempti autem à Dño reverte
gregabuntur de medio captivitatis ſuæ, & venient ad Sion cum
lætitia ſempiterna erit eis, quæ nunquam ceſſabit, & nubes glor
umbrans ſuper capita eorum : gaudium & lætitiam invenient ; &
eis, & à domo Iſrael dolor & gemitus.

CAP. XXXVI.

ET factum eſt in decimo quarto anno regis Ezechiæ, aſcend
rib rex Aſſyriæ ſup omnes civitates domus Judæ munitas, &

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 * ܒܥܘ ܒܟܬܒܗ ܕܡܪܝܐ ܘܩܪܘ. ܚܕܐ ܡܢܗܝܢ ܠܐ ܐܬܒܛܠܬ. ܘܚܕܐ ܠܚܒܪܬܗ ܠܐ ܒܥܬ. ܐܠܐ ܗܘ ܦܩܕ
17 ܒܦܘܡܗ. ܘܪܘܚܗ ܟܢܫܬ ܐܢܝܢ. * ܘܗܘ ܐܪܡܝ ܠܗܝܢ ܦܣܐ. ܘܐܝܕܗ ܦܠܓܬ ܠܗܝܢ
ܒܡܫܘܚܬܐ. ܕܠܥܠܡ ܢܐܪܬܘܢܗ. ܘܠܕܪ ܕܪܝܢ ܢܫܪܘܢ ܒܗ.
* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܗ *
1 * ܢܚܕܐ ܡܕܒܪܐ ܘܨܗܝܐ. ܘܬܪܘܙ ܦܩܥܬܐ. ܘܬܦܪܥ ܐܝܟ ܫܘܫܢܬܐ. * ܘܬܦܪܥ ܘܬܪܘܙ ܐܝܟ ܝܐܠܐ. ܘܫܘܒܚܐ
2 ܕܠܒܢܢ ܢܬܝܗܒ ܠܗ. ܘܗܕܪܗ ܕܟܪܡܠ. ܘܫܪܘܢ. ܗܢܘܢ ܢܚܙܘܢ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ
ܘܗܕܪܗ ܕܐܠܗܢ. * ܫܠܡ ܦܠܓܘܬܐ ܩܕܡܝܬܐ *
3 * ܐܬܚܝܠܝ ܐܝܕܝܐ ܪܦܝܬܐ ܘܒܘܪܟܐ ܡܫܪܝܬܐ ܐܬܚܝܠ * ܐܡܪܘ ܠܡܪܗܒܝ ܠܒܐ
4 ܐܬܚܝܠܘ ܘܠܐ ܬܕܚܠܘܢ. * ܗܐ ܐܠܗܟܘܢ ܬܒܥܐ ܢܩܡܬܐ ܐܬܐ. ܘܠܐ ܬܕܚܠܘܢ. ܗܐ ܐܠܗܟܘܢ
5 ܬܒܥܐ ܕܝܢܐ ܐܬܐ. ܐܠܗܐ ܦܪܘܩܐ ܐܬܐ. ܘܦܪܩ ܠܟܘܢ. * ܗܝܕܝܢ ܢܬܦܬܚܢ ܥܝܢܝܗܘܢ ܕܣܡܝܐ.
6 ܘܐܕܢܝܗܘܢ ܕܚܪܫܐ ܢܬܦܬܚܢ. * ܗܝܕܝܢ ܢܫܘܪ ܚܓܝܪܐ ܐܝܟ ܐܝܠܐ. ܘܢܬܦܫܩ ܠܫܢܗ ܕܦܐܡܐ.
7 ܡܛܠ ܕܐܬܒܙܥܘ ܡܝܐ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܢܚܠܐ ܒܦܩܥܬܐ. * ܘܢܗܘܘܢ ܐܓܡܐ ܒܐܬܪܐ ܨܗܝܐ. ܘܡܒܘܥܐ
8 ܕܡܝܐ. ܒܐܬܪܐ ܨܗܝܐ. ܒܡܥܡܪܐ ܕܬܢܢܐ ܢܥܒܕ ܩܢܝܐ ܘܓܡܐ. * ܘܢܗܘܐ ܬܡܢ ܫܒܝܠܐ.
ܘܐܘܪܚܐ ܩܕܝܫܬܐ ܢܬܩܪܐ. ܘܠܐ ܢܥܒܪ ܒܗ ܛܡܐܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܐܘܪܚܐ ܠܥܘܠܐ. ܘܣܟܠܐ ܠܐ ܢܛܥܘܢ
9 ܒܗ. * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܬܡܢ ܐܪܝܐ. ܘܚܝܘܬܐ ܒܝܫܬܐ ܠܐ ܢܣܩܢ ܠܗ. ܘܠܐ ܢܫܬܟܚܢ ܬܡܢ. * ܘܢܐܙܠܘܢ ܦܪܝܩܐ
10 ܦܪܝܩܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܗܦܟܘܢ ܘܢܐܬܘܢ ܠܨܗܝܘܢ ܒܬܫܒܘܚܬܐ. ܘܚܕܘܬܐ ܕܠܥܠܡ ܬܗܘܐ
ܥܠ ܪܫܝܗܘܢ. ܒܣܝܡܘܬܐ ܘܚܕܘܬܐ ܢܕܪܟܘܢ. ܘܢܥܪܩܘܢ ܟܐܒܐ ܘܬܢܚܬܐ.
* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܘ * * ܘܗܘܐ ܒܫܢܬ ܐܪܒܥܣܪܐ ܕܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܣܠܩ
1 ܣܢܚܪܝܒ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢܬܐ ܥܫܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܟܒܫ ܐܢܝܢ.

(Quærite in libro Domini, & legite; nam ne unum quidem ex iis *quæ ibi narrantur*, omittetur) alter alterum non quæret, ſed ipſe ore ſuo præcipiet, & ſpiritus ejus congregabit illos: Ipſe jaciet eis ſortes, ejuſdémque manus dividet eis menſuras: ut ad æternitatem uſque poſſideant eam, & in generationem generationum habitent in ea. 16 17

CAP. XXXV.

LÆtabitur deſertum ſitibundum, & exultabit planities, & florebit tanquam narciſſus, Et exultabit tanquam capreus: honor Libani glorioſè dabitur ei cum nitore Charmeli & Saronis: hi videbunt majeſtatem Domini, & nitorem Dei noſtri. 1 2

Finis primæ partis.

Admonitio & conſolatio ad imbecilles, quòd venturus ſit Salvator, eoſque redempturus.

Confortamini manus remiſſæ, genua tremula confirmamini: Dicite puſillanimis, Roboramini, & ne metuite: ecce Deᵘˢ veſter ultor venturus eſt, Deus ſervator venturᵘˢ eſt & redempturus vos. Tunc aperientur oculi cæcorũ, & aures ſurdorũ reſerabuntur: Tunc ſaliet claudus tanquam cervus, & expedita erit lingua muti: quia eruperunt aquæ in deſerto, & torrentes in planitie: Erunt ſtagna in loco deſerto, & fontes aquarũ in locis ſitibundis: naſcetur gramen arundo & juncus in cubili canum ſylveſtriũ. Et erit illic ſemita quæ via ſancta vocabitur, p quam non tranſibit immunditia, nec patebit aditᵘˢ *iniquitati*: ubi nẽ ſtulti quidẽ errabunt: Ubi non erit leo, quò feræ pniciosæ nequaquam aſcendent, nec reperientur illic. Et abibunt redempti, redempti *inquam* à Domino, & reverſi ingredientur in Sionem cum gloria: in æternum erit lætitia ſuper capita eorum, jucunditatem & gaudium aſſequentur, fugiéntque mœrores ac gemitus. 3 4 5 6 7 8 9 10

CAP. XXXVI.

COntigit autẽ anno decimo quarto Hezeciæ regis Judæ, ut invaderet Sanherib rex Aſſyriæ oẽs urbes Judæ munitas, & caperet eas. 1

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * بعدة جازوا * وواحد منهم لا يهلك * ولا يطلب الاحد الاخر * لان الرب امرهم * وروحه
17 جمعهم * وهو يصنع لهم خطوطا * ويده قسمت لهم * ليرعوا الي الدهر زمانا * ترث جيل
الاجيال * ويستريحون عليها * الفصل الخامس والثلثون *
1 * افرحي ايتها البرية العطشانة * ولتبتهج البرية * ولتزهر مثل السوسن * تزهر وتفرح بالغاية
2 وتبتهج براري الاردن * فقد اعطي لها شرف لبنان وكرامة الكرمل * وشعبي يعاين مجد الرب
وعلو الله * تحضيض النبي للضعفاء وتقويته لهم * وبشره بمجي المسيح *
3 * تقوي ايتها الايدي المسترخية والركب المنحلة * تعزوا وقولوا لصغيري الانفس بعقولهم
4 5 تقووا لا تخافوا * ها الهنا جازانا انصافا ويجازي * هو ياتي ويخلصنا * حينيذ تنفتح اعين العميان
6 وتسمع اذان الصم * حينيذ يطفر الاعرج مثل الايل * ويصير لسان البكم فصيحا * لان الماء
7 انبعث في البرية * والوادي في ارض عطشانة * وتصير العديمة الماء غابات * وفي الارض العطشانة
8 يكون ينبوع الماء * هناك يكون سرور الطيور ومأوي بنات آوي * وقصب وعواب * ويكون
هناك طريق نقية * ويدعي طريق طاهرة * ولا يجوز هناك نجس * ولا يكون هناك ايضا طريق
9 نجسة * المتفرقون يعبرون فيها ولا يضلون * ولا يكون هناك اسد * ولا من الوحوش الخبيثة لا
10 يصعد اليها * ولا يوجد هناك * لكن يسلك فيها المفديون والمجتمعون من الرب * ويصيرون
وياتون الي صهيون بسرور وابتهاج * وعلي روسهم سرور ابدي * لان علي روسهم تسابيح
وبهجة * ويتسلمهم السرور * بعد عنهم الوجع والحزن والتنهد *
* الفصل السادس والثلثون * الوحي السادس عشر * وهو الاصحاح السابع عشر *
* ذكر ما اصاب ملك الموصل من الهلاك بصلاة حزقيا الملك *
1 * وكان في السنة الرابعة عشر لحزقيا الملك * صعد سنحاريب ملك الموصليين علي
مدن يهودا الحصينة واخذها *

Magnâ copiâ tranſibunt, & nullus eorum peribit, nec alter alterum quæret: quia Dominus præcipiet eis, & ſpiritus ejus congregabit illos; Ipſeque ponet eis lineas, & manus ejus diſtribuet illis; ut paſcantur in æternum tempus, poſſideant in æva ſempiterna, & quieſcant ſuper eam. 16 17

CAP. XXXV.

LÆtare O deſertum aridum, hilareſcat ſolitudo, & floreat velut lilium: Floreant, & præter modum gaudeant & exultent ſolitudines Jordanis; quia data jam eſt eis præſtantia Libani & honor Charmeli, & populus meus videbit gloriam Domini & eminentiam Dei. 1 2

Adhortatio Prophetæ ad languentes, eorumque animatio: & prædictio adventûs Chriſti.

Confirmamini O manus remiſſæ & genua diſſoluta: Conſolamini, & dicite puſillanimis mente, Sumite animos, ne timeatis: ecce Deus noſter ex æquo rependit nobis, ac rependet: ipſe veniet, redimetque nos. Tunc aperient ſe oculi cæcorum, & audient aures ſurdorum: Tunc ſaltabit claudus quaſi cervus, & erit lingua mutorum diſerta: quoniam aqua erupit in deſerto, & fluvius in terra ſitibunda: Quæ caret aquâ, redigetur in ſylvas; & in arida tellure erit aquæ ſcatebra: illic erit volucrum voluptas, & habitatio canum ſylveſtrium, arundines, & junci. Erit etiam ibi via munda, & vocabitur via pura, & non tranſibit illac impurus, nec erit illic deinceps via immunda: diſperſi tranſibunt per eam, & non errabunt. Non erit ibi leo, nec ulla malarum belluarum aſcendet ad eam, aut reperietur ibi: Sed ambulabunt in ea redempti & collecti à Domino, & proficiſcentur pervenientque Sionem cum lætitia & exultatione, & erit ſuper capita eorum gaudium perenne, quia ſuper capita eorum canticum erit ac lætitia, & occupabit eos gaudium, recedet ab eis dolor, triſtitia, & gemitus. 3 4 5 6 7 8 9 10

CAP. XXXVI.

Revelatio decima ſexta.
Textus decimus ſeptimus.
Narratio exitii quod accidit regi Aſſyriæ per orationem Hezeciæ regis.

ET factum eſt anno decimo quarto regis Hezeciæ, ut aſcendens Sanherib rex Aſſyriorum contra urbes Judæ munitas, caperet eas. 1

ישעיה : לו

ad Jerusalaim in Lachis de Rabsacheh Assur rex misit Et
2 וישלח מלך־אשור את־רבשקה מלכיש ירושלמה אל־
piscinæ aquæductu in stetit & : gravi *virtute in* Chizchijahu regem
המלך חזקיהו בחיל כבד ויעמד בתעלת הברכה
Eljachim eum ad est egressus Et .fullonis agri *strata* via in superioris
3 העליונה במסלת שדה כובס : ויצא אליו אליקים
Joach & , scriba Sebnah & : domum super qui , Chilchijahu filius
בן־חלקיהו אשר על־הבית ושבנא הספר ויואח
Dicite , Rabsacheh eos ad dixit Et .*commonefaciens* Asaph filius
4 בן־אסף המזכיר : ויאמר אליהם רבשקה אמרו־
, Assur rex magnus rex dixit sic : Chizchijahu ad nunc
נא אל־חזקיהו כה־אמר המלך הגדול מלך אשור
;labiorum *verbum certe* Dixi ? fidisti cui hæc fiducia Quæ
5 מה הבטחון הזה אשר בטחת : אמרתי אך־דבר שפתים
quia , fidisti *quo super* nunc : prælium ad *fortitudo &* , *consilium*
עצה וגבורה למלחמה עתה על־מי בטחת כי
fracto *arundinis* *fulcro* super fidisti Ecce ? me contra rebellasti
6 מרדת בי : הנה בטחת על־משענת הקנה הרצוץ
ej° *volā* in intrabit & ;*eo super* vir fuerit innix° cui ;Ægypto *super* isto
הזה על־מצרים אשר יסמך איש עליו ובא בכפו
.*eo super* fidentibus omnib° Ægypti rex Parhoh sic : eā perforabit &
ונקבה כן פרעה מלך־מצרים לכל־הבטחים עליו :
iste nonne : fidimus nostro Deo Domino In , me ad dixeris si Et
7 וכי־תאמר אלי אל־יהוה אלהינו בטחנו הלא־הוא
,*ejus* altaria & ,*ejus* excelsa Chizchijahu fecit removere cujus
אשר הסיר חזקיהו את־במתיו ואת־מזבחתיו
istius *altaris* *facies* *Aā* : Jerusalaim & , Jehudah ad dixitque
ויאמר ליהודה ולירושלם לפני המזבח הזה
regi meo domino obsecro fidejube nunc Et ? vos incurvabitis
8 תשתחוו : ועתה התערב נא את־אדני המלך
tibi dare potueris si , equorum duo millia tibi dabo & : Assur
אשור ואתנה לך אלפים סוסים אם־תוכל לתת לך
unius ducis *facies* vertere facies quomodo Et .eos super equitantes
9 רכבים עליהם : ואיך תשיב את פני פחת אחד
,Ægypto *super* tibi confidas ut : minimorum mei domini servorum
עבדי אדני הקטנים ותבטח לך על־מצרים
ascendi Domino absque numquid nunc Et ? equites & *currum* propter
10 לרכב ולפרשים : ועתה המבלעדי יהוה עליתי
ascende : me ad dixit Dominus ? eā *corrumpendum ad* ,istam terram contra
על־הארץ הזאת להשחיתה יהוה אמר אלי עלה
, Sebnah & , Eljachim dixit Et .eam *corrumpe* & , istam terram *ad*
11 אל־הארץ הזאת והשחיתה : ויאמר אליקים ושבנא
, Syriacè tuos servos ad obsecro Loquere : Rabsacheh ad Joach &
ויואח אל־רבשקה דבר־נא אל־עבדיך ארמית
auribus in Jehudaicè nos ad loquaris ne & : *nos* *audientes* quia
כי שמעים אנחנו ואל־תדבר אלינו יהודית באזני
,tuū dominū ad Nunquid:Rabsacheh dixit Et .murum super qui ,populi
12 העם אשר על־החמה : ויאמר רבשקה האל־אדניך
ad nonne ? ista verba *loquendū ad*,me° domin° me misit te ad &
ואליך שלחני אדני לדבר את־הדברים האלה הלא על־
.*sua egesta* *comedendum ad* , muro super sedentes homines
האנשים הישבים על־החמה לאכל את־חראיהם
clamavit &,Rabsacheh stetit Et ? vobiscum *suas urinas* *bibendam ad &*
13 ולשתות את־שיניהם עמכם : ויעמד רבשקה ויקרא
magni regis verba Audite :dixit &,Jehudaicè magna voce in
בקול־גדול יהודית ויאמר שמעו את־דברי המלך הגדול
:Chizchijahu *vobis* *imponat* Ne , rex dixit Sic .Assur regis
14 מלך אשור : כה אמר המלך אל־ישא לכם חזקיהו
.vos eruere poterit non quia
כי לא־יוכל להציל אתכם :

Versio VULG. LAT.

2 Et misit rex Assyriorū Rabsacen de Lachis in Jerusalem, ad regem Ezechiam in manu gravi, & stetit in aquæductu piscinæ superioris in via Agri fullonis. 3 Et egressus est ad eū Eliacim filius Helciæ, qui erat super domū, & Sobna scriba, & Joahe filius Asaph à commentariis. 4 Et dixit ad eos Rabsaces, Dicite Ezechiæ; Hæc dicit rex magnus, rex Assyriorum; Quæ est ista fiducia, quâ confidis? 5 Aut quo consilio vel fortitudine rebellare disponis? super quem habes fiduciam, quia recessisti à me? 6 Ecce confidis super baculum arundineum confractū istum, sup Ægyptum: cui si innixus fuerit homo, intrabit in manū ejus, & perforabit eam: sic Phararo rex Ægypti omnibus, 7 qui confidunt in eo. Quòd si responderis mihi; In Domino Deo nostro confidimus: nónne ipse est, cujus abstulit Ezechias excelsa & altaria, & dixit Judæ & Jerusalem; Coram altari isto adorabitis? 8 Et nunc trade te domino meo regi Assyriorum, & dabo tibi duo millia equorum, nec poteris ex te præbere ascensores eorum. 9 Et quomodò sustinebis faciem judicis unius loci ex servis domini mei minoribus? Quòd si confidis in Ægypto, in quadrigis, & in 10 equitibus: Et nunc numquid sine Domino ascendi ad terrā istam, ut disperderem eam? Dominus dixit ad me; Ascende super terram istam, & dis- 11 perde eam. Et dixit Eliacim, & Sobna, & Joahe ad Rabsacen; Loquere ad servos tuos Syrâ linguâ: intelligim° enim: ne loquaris ad nos Judaicè in auribus populi, qui est super 12 murum. Et dixit ad eos Rabsaces; Numquid ad dominum tuum & ad te misit me dominus meus, ut loquerer omnia verba ista, et non potiùs ad viros, qui sedent in muro, ut comedant stercora sua, et bibant urinam pedum suo- 13 rum vobiscum? Et stetit Rabsaces, et clamavit voce magnâ Judaicè, et dixit; Audite verba regis magni, regis 14 Assyriorum. Hæc dicit rex; Non seducat vos Ezechias, quia non poterit eruere vos.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

2 Καὶ ἀπέϛειλε βασιλεὺς Ἀσσυρίων (β) τὸν Ῥαβσάκην ἐκ Λάχης εἰς Ἱερουσαλὴμ πρὸς τὸν βασιλέα Ἐζεκίαν μετὰ δυνάμεως πολλῆς· ϗ ἔϛη ἐν τῷ ὑδραγωγῷ τῆς κολυμβήθρας τῆς ἄνω ἐν τῇ ὁδῷ τοῦ ἀγροῦ τοῦ κναφέως. 3 Καὶ ἐξῆλθε πρὸς αὐτὸν Ἐλιακεὶμ ὁ τοῦ Χελκίου ὁ οἰκονόμος, ϗ Σομνᾶς ὁ γραμματεὺς, ϗ Ἰωὰχ ὁ τοῦ Ἀσὰφ ὁ ὑπομνηματογράφος. 4 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς (γ) Ῥαβσάκης, Εἴπατε Ἐζεκίᾳ, Τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς ὁ μέγας, βασιλεὺς Ἀσσυρίων, Τί πεποιθὼς 5 εἶ; Μὴ ἐν βουλῇ (δ) ϗ λόγοις χειλέων παράταξις γίνεται; ϗ νῦν (ε) ἐπὶ τίνα πέποιθας, 6 ὅτι ἀπειθεῖς μοι; Ἰδοὺ πεποιθὼς εἶ ἐπὶ τὴν ῥάβδον τὴν καλαμίνην τὴν τεθλασμένην ταύτην, ἐπ᾽ Αἴγυπτον. (ζ) ὡς ἂν ἐπιϛηριχθῇ ἀνὴρ ἐπ᾽ αὐτὴν, εἰσελεύσεται εἰς τὴν χεῖρα αὐτοῦ, (η) ϗ τρήσει αὐτήν· οὕτως ἐϛὶ Φαραὼ βασιλεὺς Αἰγύπτου, καὶ 7 πάντες οἱ πεποιθότες ἐπ᾽ αὐτῷ. Εἰ δὲ λέγετε, Ἐπὶ κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν πεποίθα- 8 μεν, Νῦν μίχθητε τῷ κυρίῳ μου (θ) τῷ βασιλεῖ Ἀσσυρίων, ϗ δώσω ὑμῖν δισχιλίαν ἵππον, εἰ δυνήσεσθε δοῦναι ἀναβάτας ἐπ᾽ 9 αὐτούς. Καὶ πῶς δύνασθε ἀποϛρέψαι (ι) εἰς πρόσωπον τῶν τοπαρχῶν; οἰκέται εἰσὶν, οἱ πεποιθότες ἐπ᾽ Αἰγυπτίοις, εἰς ἵππον καὶ 10 ἀναβάτην. Καὶ νῦν μὴ ἄνευ κυρίου ἀνέβημεν ἐπὶ τὴν χώραν ταύτην πολεμῆσαι (κ) αὐτήν; κύριος εἶπε πρός με, Ἀνάβηθι ἐπὶ τὴν γῆν ταύτην, ϗ διάφθειρον αὐτήν. 11 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν Ἐλιακεὶμ, ϗ Σομνᾶς (λ), ϗ Ἰωὰχ, Λάλησον πρὸς τοὺς παῖδάς σου Συριϛί· ἀκούομεν γὰρ ἡμεῖς· ϗ μὴ λάλει πρὸς ἡμᾶς Ἰουδαϊϛί. ϗ ἱνατί λαλεῖς εἰς τὰ ὦτα τῶν (˜) ἀνθρώπων ἐπὶ τῷ τεί- 1 χει; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς (μ) Ῥαβσάκης, Μὴ πρὸς τὸν κύριον ὑμῶν ἢ πρὸς ὑμᾶς ἀπέϛαλκέ με ὁ κύριός μου, λαλῆσαι τοὺς λόγους τούτους; οὐχὶ πρὸς τοὺς (ν) ἀνθρώπους τοὺς καθημένους ἐπὶ τῷ τείχει, ἵνα φάγωσι κόπρον, ϗ πίωσιν οὖρον μεθ᾽ ὑμῶν ἅμα; 13 Καὶ ἔϛη (ξ) Ῥαβσάκης, καὶ ἀνεβόησε φωνῇ μεγάλῃ Ἰουδαϊϛὶ, καὶ εἶπεν, Ἀκούσατε τοὺς λόγους τοῦ βασιλέως τοῦ μεγάλου, 14 βασιλέως Ἀσσυρίων. Τάδε λέγει ὁ βασιλεύς, Μὴ (ο) ἀπατάτω ὑμᾶς Ἐζεκίας λόγοις, (π) οὐ δύνηται ῥύσασθαι ὑμᾶς.

MS. A. (β) Ῥαψάκην ἐκ Λάχεις (γ) Ῥαψάκης (δ) ἢ
(ε) ἐπὶ τίνι (ζ) ὃς ἂν ἐπιϛηριχθῇ ἐπ᾽ αὐτὴν, (η) οὕτως ἐϛὶ
σιλεῖ (ι) τὸ πρόσωπον τοπάρχου ἑνός; (κ) αὐτήν; * Καὶ εἶπ
αὐτὸν (λ) ὁ γραμματεὺς, (˜) ἀνδρῶν καθημένων ἐπὶ (μ) Ῥαψά
δρας (ξ) Ῥαψάκης, καὶ ἐβόησεν (ο) ὑμᾶς ἀπατάτω (π) οὐ
σονται

Et misit rex Assyriorum
cen de Laches in Hierusa
regem Ezeciam cum virtu
te. Et stetit in aquæductu
næ superioris in via Agri f
Et egressus est ad eum Elia
lius Chelciæ œconomus, &
mnas scriba, & Joach fi
saph à commentariis. Et d
Rabsaces; Dicite Eze
dicit rex magnus, rex A
rum; Quid fidens es? N
in consilio, & sermonibus
rum prælium fit? Et nunc
quem confidisti, quia ino
es mihi? Ecce fidens es
virgam arundineam conf
istam, super Ægyptum;
innitatur vir super eam,
bit in manum ejus, & per
eam; sic erit Pharao rex Æ
pti, & omnes, qui confi
eo. Sin autem dicitis, Sup
minum Deum nostrum co
fidimus; Nunc admiscemini
mino meo regi Assyriorum
dabo vobis duo millia eq
si poteritis præbere a
super eos. Et quomodo
avertere in faciem To
rum? Servi sunt, qui c
runt in Ægyptiis, in equ
ascensorem. Et nunc n
Domino ascendimus su
nem hanc ad oppugnandam
Dominus dixit ad me: A
super terram istam, & d
eam. Et dixit ad eum E
& Somnas, & Joach, L
re ad servos tuos Syriac
dimus enim nos: & n
ris ad nos Judaice. Et
loqueris in aures homin
per murum? Et dix
Rabsaces; Nunquid ad
minum vestrum, vel ad
sit me dominus meus lo
hæc? nonne ad homines
dent super murum? ut
stercus, & bibant urin
cum simul? Et stetit
& exclamavit voce ma
daice, & dixit; Au
ba regis magni, reg
rum: Hæc dicit rex
ducat vos Ezecias
non poterit eruere vo

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 ושלח מלכא דאתור ית רב שקה מלכיש לירושלם לות מלכא חזקיה במשרית סגיאן
3 וקם במזיקת ברכתא עליתא דכביש חקל משטח קצריא : ונפק לותיה אליקים בר
4 חלקיה די ממנא על ביתא ושבנא ספרא ויואח בר אסף די ממנא על דכרניא : ואמר
להון רב שקה אמרו כען לחזקיה כדנן אמר מלכא רבתא מלכא דאתור מה רוחצנא
5 הדין דאתרחצתא : אמרית ברם בממלל ספון במלך וגבורא אעביד קרבא כען על מן
6 אתרחצתא ארי מרדתא בי : הא אתרחצתא על סמך קניא רעיעא הדין על פרעה מלכא
דמצרים דאם יסתמיך גברא עלוהי ויעול בידיה ויבזעניה כן פרעה מלכא דמצרים לכל
7 דמתרחצין עלוהי : וארי תימרון לי על מימרא דיי אלהנא אתרחצנא הלא הוא דאעדי
חזקיה ית במתוהי וית אגורוהי ואמר לאנש יהודה וליתבי ירושלם קדם מדבחא הדין
8 תסגדון : וכען אתערב כען עם רבוני מלכא דאתור ואתן לך תרין אלפין סוסון אם תכול
9 למנאה עלך רכבין עליהון : ואיכדין את מדמי לאתבא ית אפי חד משלטוני עבדי
10 רבוני זעריא ואתרחצתא לך על מצרים לרתיכין ולפרשין : וכען הבר ממימרא דיי
11 סלקית לארעא הדא לחבלותה יי אמר לי סק על ארעא הדא וחבלה : ואמר אליקים
ושבנא ויואח לרב שקה מלל כען עם עבדך ארמית ארי שמעין אנחנא ואל תמלל
12 עמנא יהודית קדם עמא די על שורא : ואמר רב שקה הלות רבונך ועלך שלחני רבוני
למללא ית פתגמיא האלין הלא על גבריא דיתבין על שורא למיכל ית מפקתהון
13 ולמשתי ית מימי רגליהון בצירא עמכון : וקם רב שקה ואבלי בקל רב יהודית ואמר
14 שמעו ית פתגמי מלכא רבתא מלכא דאתור : כדנן אמר מלכא לא ישעי לכון חזקיה
ארי לא יכול לשיזבא יתכון :

PARAPH. CHALD. Versio Latina

Et misit rex Assyriæ Rabsacen de Lachis in Jerusalem ad regem
cum exercitu multo, & stetit in aquæductu piscinæ superioris,
ubi fullones extendunt pannos. Et egressus est ad eum Eliac
Elchiæ, qui præpositus erat domus, & Sobna scriba, & Joah fi
à commentariis. Et dixit eis Rabsaces : Dicite nunc Ezechiæ,
rex *magnus* noster rex Assyriæ, Quæ est ista fiducia qua confi
Utique in loquela labiorum, in consilio, & in potentia facian
nunc in quem confidis, ut rebelles contra me ? *Ecce* confidis
taculo calami confracti, isto Pharaone rege Ægypti; cui si quis
intrabit in manum ejus, & perforabit eam ; sic Pharao rex Æg
bus qui confidunt in eo. Quòd si dixeritis mihi, In verbo Do
nostri confidimus ; nónne ipse est cujus abstulit Ezechias exce
taria ? & dixit viris Judæ, & habitatoribus Jerusalem, Cora
adorabitis ? Et nunc commisce te obsecro cum domino
Assyriæ , & dabo tibi duo millia equorum , si poteris
tuere sessores super eos. Et quomodo tu putas avertere
è principibus servis domini mei minimis ? & confidis in Æ
curribus & in equitibus. Jam verò , Num sine verbo Do
contra terram hanc ut disperderem eam ? Dominus dixit m
super terram hanc & disperde eam. Et dixit Eliachim & S
Joach ad Rabsacen , Loquere nunc cum servis tuis Syria
gimus enim nos : nec loquaris nobiscum Judaicè coram
est super murum. Et dixit Rabsaces , Nunquid ad domin
ad te misit me dominus meus ut loquar verba hæc ? non
qui sedent super murum , ut comedant stercora sua , &
nam suam in obsidione vobiscum ? Et stetit Rabsaces &
ce magna Judaicè , & ait : Audite verba regis magni
riæ. Hæc dicit rex , Ne seducat vos Ezechias, quia
liberare vos.

CAP. XXXVI.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܫܕܪ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ ܡܢ ܠܟܝܫ ܠܪܒ ܫܩܐ . ܠܘܬ ܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܠܐܘܪܫܠܡ ܒܚܝܠܐ :
ܣܓܝܐܐ . ܘܩܡ ܒܡܣܩܬܐ ܕܒܪܟܬܐ ܥܠܝܬܐ ܕܒܐܘܪܚܐ ܕܚܩܠܐ ܕܩܨܪܐ . * ܘܢܦܩ ܠܘܬܗ 3
ܐܠܝܩܝܡ ܒܪ ܚܠܩܝܐ ܪܒ ܒܝܬܐ . ܘܫܒܢܐ ܣܦܪܐ . ܘܝܘܐܚ ܒܪ ܐܣܦ ܡܥܗܕܢܘܬܐ . * ܘܐܡܪ 4
ܠܗܘܢ ܪܒ ܫܩܐ . ܐܡܪܘ ܠܚܙܩܝܐ . ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܠܟܐ ܪܒܐ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ . ܡܢܘ
ܬܘܟܠܢܐ ܗܢܐ ܕܬܬܟܠܬ . * ܘܐܡܪܬ . ܕܐܝܬ ܠܟ ܡܠܬܐ ܕܣܦܘܬܐ . ܘܡܠܟܐ
ܘܚܝܠܐ ܠܩܪܒܐ . ܗܫܐ ܥܠ ܡܢ ܬܬܟܠܬ ܕܡܪܕܬ ܒܝ . * ܗܐ ܐܬܬܟܠܬ ܥܠ ܫܒܛܐ ܕܩܢܝܐ 5
ܪܥܝܥܐ . ܥܠ ܡܨܪܝܢ . ܕܐܢ ܓܒܪܐ ܢܣܬܡܟ ܥܠܘܗܝ . ܥܐܠ ܒܐܝܕܗ ܘܢܩܒ ܠܗ . ܗܟܢܐ ܗܘ 6
ܦܪܥܘܢ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ ܠܟܠܗܘܢ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ . * ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ .
ܕܥܠ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܬܟܝܠܝܢܢ . ܠܐ ܗܘܐ ܗܘ ܗܢܐ ܕܐܥܒܪ ܚܙܩܝܐ ܐܓܘܪܘܗܝ ܘܡܕܒܚܘܗܝ 7
ܘܐܡܪ ܠܝܗܘܕܐ ܘܠܐܘܪܫܠܡ . ܩܕܡ ܡܕܒܚܐ ܗܢܐ ܣܓܘܕܘ . * ܘܗܫܐ ܐܬܚܠܛܘ
ܥܡ ܡܪܝ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ . ܘܐܬܠ ܠܟ ܬܪܝܢ ܐܠܦܝܢ ܣܘܣܘܬܐ . ܐܢ ܡܫܟܚ ܐܢܬ 8
ܠܡܬܠ ܪܟܒܐ ܥܠܝܗܘܢ . * ܘܐܝܟܢܐ ܡܗܦܟ ܐܢܬ ܐܦܐ ܕܚܕ ܦܚܬܐ ܡܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝ ܙܥܘܪܐ 9
ܘܬܬܟܠܬ ܠܟ ܥܠ ܡܨܪܝܢ ܒܡܪܟܒܬܐ ܘܒܦܪܫܐ . * ܘܗܫܐ ܕܠܐ ܡܪܝܐ ܣܠܩܬ 10
ܠܐܪܥܐ ܗܕܐ ܠܡܚܒܠܗ . ܡܪܝܐ ܐܡܪ ܠܝ ܣܩ ܠܐܪܥܐ ܗܕܐ ܘܚܒܠܝܗ . * ܘܐܡܪ
ܠܗ ܐܠܝܩܝܡ ܘܫܒܢܐ ܘܝܘܐܚ ܠܪܒ ܫܩܐ . ܡܠܠ ܥܡ ܥܒܕܝܟ ܐܪܡܐܝܬ 11
ܡܛܠ ܕܫܡܥܝܢܢ . ܘܠܐ ܬܡܠܠ ܥܡܢ ܝܗܘܕܐܝܬ ܩܕܡ ܥܡܐ
ܕܥܠ ܫܘܪܐ . * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܪܒ ܫܩܐ . ܠܐ ܗܘܐ ܠܘܬ ܡܪܟܘܢ ܘܠܘܬܟܘܢ ܫܕܪܢܝ ܡܪܝ 12
ܠܡܡܠܠܘ ܡܠܐ ܗܠܝܢ . ܐܠܐ ܠܘܬ ܓܒܪܐ ܕܝܬܒܝܢ ܥܠ ܫܘܪܐ . ܕܠܐ ܢܐܟܠܘܢ ܨܘܐܗܘܢ
ܘܢܫܬܘܢ ܡܝܐ ܕܪܓܠܝܗܘܢ ܥܡܟܘܢ . * ܘܩܡ ܪܒ ܫܩܐ . ܘܩܥܐ ܒܩܠܐ ܪܡܐ
ܝܗܘܕܐܝܬ ܘܐܡܪ . ܫܡܥܘ ܡܠܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܪܒܐ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ . * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ . ܠܐ ܢܛܥܝܟܘܢ 13
ܚܙܩܝܐ . ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܦܨܝܘܬܟܘܢ . 14

* Tum rex Aſſyriæ de Lachis miſit Rab-ſacem 2
ad Hezeciam regem, in Jeruſalem, cum numeroſis copiis : qui cùm ſubſtitiſſet in clivo
laci ſuperioris, quod eſt in via agri fullonis ;
Et egreſſus eſſet ad eum Eliacim filius Hel- 3
ciæ præfectus domûs, Sebna ſcriba, & Joah
filius Aſaphi à commentariis : Dixit ad eos 4
Rab-ſace, Dicite Hezeciæ, Sic dicit rex maximus, rex Aſſyriæ, Quænam eſt fiducia tanta quâ confidis, Ut dicas ſupereſſe tibi ſer- 5
monem labiorum, & mentem, vireſque ad
bellandum ? cui quæſo confidis, ut in me rebelles? Ecce confidis fulcro arundinis quaſ- 6
ſatæ, *nempe* Ægyptio, quo cùm quis innititur, manum ejus penetrat perforátque : talis eſt Pharaon rex Ægypti omnibus fiduciam
in ipſo collocantibus. Quòd ſi dixeris mihi, 7
Domino Deo noſtro confidimus ; quid profuit Hezeciæ aboleviſſe altaria & aras, & dixiſſe Judæ & Jeroſolymæ, Coram hoc altari
adorabitis ? Jam verò commercium habe- 8
to cum domino meo rege Aſſyriæ, dabóque
tibi duo millia equorum, & *videbo* utrùm
habeas equites. Quomodo ergò repelle- 9
res faciem unius è nobilioribus inter minimos domini mei ſervos, & confideres Ægyptio, curribus, & equitibus ? At nunc, an 10
abſque Domino aſcendi ad terram iſtam ut
vaſtarem eam ? Dominus quidem mihi dixit
ut aſcenderem contra terram iſtam & vaſtarem eam. Dixit Eliacim, Sebna, & Joah 11
ad Rab-ſace, Alloquere ſervos tuos Aramicè, intelligimus enim ; neque alloquaris nos
Judaicè præſente populo qui adeſt ſuper
mœnia. Ait illis Rab-ſace, Nequaquam ad 12
vos & ad dominum veſtrum miſit me dominus meus ad hæc verba proferenda, ſed ad
viros qui mœnibus aſſident ; ut ne comedant
ſtercus ſuum, & bibant urinas ſuas vobiſcum.
Itaque ſurgens Rab-ſace, & elatâ voce Ju- 13
daicè exclamans dixit, Audite verba regis
maximi, regis Aſſyriæ. Sic ait rex Aſſyriæ, 14
Ne ſeducat vos Hezecia, non enim poterit
eripere vos :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وارسل ملك الموصليين ربصاكيس من لاكيس الي ايروسليم الي حزقيا الملك بجيش
عظيم * ووقف في جدول الماء الذي للبركة العليا * في طريق حقل القصار * فخرج اليه 2
الياقيم الوكيل ابن سلكيا * وصمناص كاتب الجيش * ويواح ابن اساف كاتب التذاكر 3
* فقال لهم ربصاكيس * قولوا لحزقيا هكذا يقول الملك العظيم ملك الموصليين * ماذا ترجا
* هل بحسون او بكلام شفتين يكون لك المصاف * والان على ماذا توكلت انك تعصيني * ها 4
تتوكل على العصي القصبية هذه المكسورة * على مصر * ان الذي يتوكا عليها تدخل في 5 6
يده * هكذا يكون فرعون ملك مصر وجميع المتوكلين عليه * وان قلتم على الرب الاله
نحن توكلنا * اختلطوا الان بسيدنا ملك الموصليين واعطي لكم الفي فرس * ان كنتم 7
تستطيعون ان تعطوا عليها ركابا * فكيف تستطيعون ان تراجعوا وجه رئيس موضع واحد 8
المتوكلون على المصريين هم عبيد لفرس وراكب * والان هل بغير امر من الرب صعدنا 9
الي هذه الكورة نحاربها * الرب قال لي اصعد الي هذه الارض وافسدها * فقال له الياقيم 10
وصمناص ويواح * تكلم مع عبيدك بالسريانية * لانا نحن نسمع ما تقول * ولا تتكلم معنا 11
بالكلدانية * فلماذا تتكلم في اذان الناس الجلوس في السور * فقال ربصاكيس لهم * هل
الي ربكم او اليكم ارسلني سيدي لاتكلم هذه الكلمات * اليس الي الرجال الجلوس 12
على السور كيلا ياكلوا زبلا ويشربوا اراقة معكم معا * ووقف ربصاكيس وصاح
بصوت عظيم باليهودية وقال * اسمعوا اسمعوا كلام الملك العظيم ملك الموصليين * 13
* هكذا يقول الملك * لا يخدعكم حزقيا بكلمات * لا يستطيع ان
ينجيكم * 14

Deinde miſit rex Aſſyriorum Rabſacem 2
è Lachis Jeroſolymam contra Hezeciam regem, ingenti cum exercitu : qui ſubſtitit ad fluentum aquæ piſcinæ ſuperioris, in itinere agri fullonis. Et egreſ- 3
ſus eſt ad eum Eliacim œconomus Helciæ filius, & Semnas ſcriba exercitûs, & Joah filius Aſaphi ſcriptor rerum memorabilium. Quibus dixit Rabſa- 4
ces, Dicite ad Hezeciam ; Sic dicit rex magnus, rex Aſſyriorum, Quid 5
ſperas ? Num audaciâ, an verbis labiorum acies eſt inſtruenda tibi ? cui rei confidis, quòd contra me rebel- 6
les ? Ecce confidis huic ſcipioni arundineo quaſſato, Ægypto, quo ſi quis innitatur, penetrat manum ipſius : talis eſt Pharaon rex Ægypti, & omnes qui fiduciam collocant in eo. Quòd ſi 7
dixeritis, Domino Deo noſtro fidimus ; 8
Immiſcete jam vos cum domino noſtro rege Aſſyriorum, daboque vobis duo millia equorum, ſi poſſitis ſuppeditare 9
eis equites. Quoniam igitur pacto retundere poteſtis faciem principis unius loci ? qui fidunt Ægyptiis, ſervi ſunt equi & equitis. Jam verò, num abſq; 10
juſſu Domini aſcendimus contra iſtam regionem ut oppugnaremus eam ? Dominus dixit mihi, Aſcende contra terram iſtam, eamque corrumpe. Dixerunt ad eum 11
Eliacim, Semnas, & Joah, Loquere cum ſervis tuis Syriacè, audimus enim quæ dicturus es ; & ne loquaris nobiſcum Chaldaice : cur enim loquereris in auribus hominum inſidentium muro ? 12
Reſpondit eis Rabſaces, Num ad dominum veſtrum, aut ad vos miſit me dominus meus, ut loquerer hæc verba ? nonne ad viros inſidentes muro ? quò minus comedant ſtercus, & urinam bibant unà vobiſcum. Tum ſur- 13
gens Rabſaces, & magnâ voce exclamans Judaicè dixit, Audite, audite verba magni regis, regis Aſſyriorum. Sic dicit rex, Ne decipiat vos Heze- 14
cia verbis ; non poterit ſalvare vos.

Eruendo :dicendo ,Domino in Chizchijahu vos faciat confidere ne Et
15 ואל־יבטח אתכם חזקיהו אל־יהוה לאמר הצל
.Assur regis manu in hæc civitas dabitur non :Dominus nos eruet
יצילנו יהוה לא תנתן העיר הזאת ביד מלך אשור:
facite : Assur rex dixit sic quia : Chizchijahu ad audiatis Ne
16 אל־תשמעו אל־חזקיהו כי כה אמר המלך אשור עשו
,suam vitem *vir* comedite & ,me ad egredimini & ,benedictionē mecum
אתי ברכה וצאו אלי ואכלו איש־גפנו
Usque .suæ cisternæ aquas *vir* bibite & , suam ficum *vir* &
17 ואיש תאנתו ושתו איש מי־בורו: עד־
terram ,vestrā terram sicut ,terram ad vos tollam & ,*me venire*
באי ולקחתי אתכם אל־ארץ כארצכם ארץ
vos incitet fortè Ne .vinearum & ,panis terram ,*musti* & , frumenti
18 דגן ותירוש ארץ לחם וכרמים: פן־יסית אתכם
dii eruerunt nunquid :nos eruet DOMINUS :dicendo ,Chizchijahu
חזקיהו לאמר יהוה יצילנו ההצילו אלהי
Dii Ubi ? Assur regis manu de suam terram *vir* gentium
19 הגוים איש את־ארצו מיד מלך אשור: איה אלהי
eruerunt *quia* & ? Sepharvaim *Dii* ubi , Arphad & ,Chamath
חמת וארפד איה אלהי ספרוים וכי־הצילו את־
, istarum terrarum Deos omnes inter Quis ? mea manu de Someron
20 שמרון מידי: מי בכל־אלהי הארצות האלה
DOMINUS eruet quia :mea manu de suam terram eruerint qui
אשר־הצילו את־ארצם מידי כי־יציל יהוה
ei responderunt non & siluerunt Et ? mea manu de Jerusalaim
21 את־ירושלם מידי: ויחרישו ולא־ענו אתו
.ei respondebitis Non : dicendo , *illud* regis præceptum quia : verbum
דבר כי־מצות המלך היא לאמר לא תענהו:
,domum super qui , Chilchijahu filius Eljachim est ingressus Et
22 ויבא אליקים בן־חלקיהו אשר־על־הבית
Chizchijahu ad *commonefaciens* Asaph filius Joach & , scriba Sebnah &
ושבנא הספר ויואח בן־אסף המזכיר אל־חזקיהו
.Rabsacheh verba ei *indicaverunt* & : vestibus scissis
קרועי בגדים ויגדו לו את דברי רבשקה:

CAP. XXXVII. לז

: sua vestimenta scidit &,Chizchijahu *regem audire secundùm* fuit Et
1 ויהי כשמע המלך חזקיהו ויקרע את־בגדיו
misit Et .DOMINI domum intravit & , sacco in se operuit &
2 ויתכס בשק ויבא בית יהוה: וישלח
seniores & ,scribam Sebnah & ,domum super qui ,Eljachim
את אליקים אשר־על־הבית ואת שבנא הספר ואת זקני
.prophetam Amos filium Jesahjahu ad , saccis in opertos ,sacerdotum
הכהנים מתכסים בשקים אל ישעיהו בן־אמוץ הנביא:
, angustiæ Dies , Chizchijahu dixit Sic , eum ad dixerunt Et
3 ויאמרו אליו כה אמר חזקיהו יום־צרה
filii venerunt quia : hæc dies , blasphemiæ & , increpationis &
ותוכחה ונאצה היום הזה כי־באו בנים
audiat fortè Si .pariendum ad non virtus & ,*alvi rupturam* ad usque
4 עד־משבר וכח אין ללדה: אולי ישמע
rex *eum* misit quem , Rabsacheh verba tuus Deus Dominus
יהוה אלהיך את דברי רבשקה אשר שלחו מלך־
verbis in arguat &,*viventi Deo exprobrandū ad* ,suus domin° Assur
אשור אדניו לחרף אלהים חי והוכיח בדברים
pro orationem *levabis* & : tuus Deus DOMINUS audivit quæ
אשר שמע יהוה אלהיך ונשאת תפלה בעד
,Chizchijahu regis servi venerunt Et .*reperto* residuo
5 השארית הנמצאה: ויבאו עבדי המלך חזקיהו
.Jesahjahu ad
אל־ישעיהו:

Versio VULG. LAT.

15 Et non vobis tribuat fiduciam Ezechias super Dño, dicens; Eruens liberabit nos Domin°, non dabitur civitas ista in manu regis Assyriorū. 16 Nolite audire Ezechiam: hæc enim dicit rex Assyriorum; Facite mecum benedictionem, & egredimini ad me, & comedite unusquisque vineam suam, & unusquisque ficum suam: et bibite unusquisque aquam cisternæ suæ, 17 Donec veniam, & tollam vos ad terram, quæ est ut terra vestra, terram frumenti & vini, terram panum & vinearum. 18 Nec conturbet vos Ezechias, dicens; Dominus liberabit nos. Numquid liberaverunt dii gentium unusquisque terram suam de manu regis Assyriorum? 19 Ubi est deus Emath, & Arphad? ubi est deus Sepharvaim? numquid liberaverunt Samariam de manu mea? 20 Quis est ex omnibus diis terrarum istarum, qui eruerit terrā suam de manu mea, ut eruat Dominus Jerusalem de manu mea? 21 Et siluerunt, & non responderunt ei verbum. Mandaverat enim rex, dicens; Ne respondeatis ei. 22 Et ingressus est Eliacim filius Helciæ, qui erat super domum, & Sobna scriba, & Joahe filius Asaph à commentariis, ad Ezechiam scissis vestibus, & nuntiaverunt ei verba Rabsacis.

CAP. XXXVII.

1 ET factum est, cùm audisset rex Ezechias, scidit vestimenta sua, & obvolutus est sacco, & intravit in domum Domini. 2 Et misit Eliacim, qui erat super domum, & Sobnam scribam, & seniores de sacerdotibus, opertos saccis, ad Isaiam filium Amos prophetam, 3 Et dixerunt ad eum; Hæc dicit Ezechias; Dies tribulationis, et correptionis, & blasphemiæ, dies hæc: quia venerunt filii usque ad partum, & virtus non est pariendi. 4 Si quo modo audiat Dominus Deus tuus verba Rabsacis, quem misit rex Assyriorum dominus suus ad blasphemandum Deum viventem, & exprobrandum sermonibus, quos audivit Dominus Deus tuus: leva ergò orationem pro 5 reliquiis, quæ repertæ sunt. Et venerunt servi regis Ezechiæ ad Isaiam.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

15 Καὶ μὴ λεγέτω ὑμῖν Ἐζεκίας, ὅτι ῥύσεται ὑμᾶς ὁ θεὸς, ϗ οὐ μὴ παραδοθῇ ἡ πόλις 16 αὕτη ἐν χειρὶ βασιλέως Ἀσσυρίων. Μὴ ἀκούετε Ἐζεκίου. τάδε λέγει ὁ βασιλεὺς Ἀσσυρίων, Εἰ βούλεσθε εὐλογηθῆναι, ἐκπορεύεσθε πρὸς μὲ, καὶ φάγεσθε ἕκαστος τὴν ἄμπελον αὐτοῦ ϗ τὰς συκὰς, ϗ πίεσθε ὕδωρ 17 (ρ) ἐκ τοῦ λάκκου ὑμῶν, Ἕως ἂν ἔλθω, ϗ λάβω ὑμᾶς εἰς γῆν, ὡς ἡ γῆ ὑμῶν, γῆ σίτου ϗ οἴνου ϗ ἄρτων ϗ ἀμπελώνων. 18 Μὴ (σ) ἀπατάτω ὑμᾶς Ἐζεκίας, λέγων, Ὁ θεὸς (τ) ῥύσεται ὑμᾶς. μὴ ἐῤῥύσαντο οἱ θεοὶ τῶν ἐθνῶν, ἕκαστος τὴν ἑαυτοῦ χώραν ἐκ χειρὸς βασιλέως Ἀσσυρίων; 19 Ποῦ ἐστιν ὁ θεὸς (υ) Ἐμὰθ ϗ Ἀρφάθ; (φ) ϗ ποῦ ὁ θεὸς τῆς πόλεως Ἐπφαρουαΐμ; μὴ ἐδύναντο ῥύσασθαι Σαμάρειαν ἐκ χειρός μου; 20 Τίς τῶν θεῶν πάντων τῶν ἐθνῶν (χ) τούτων, ὅστις ἐῤῥύσατο τὴν γῆν αὐτοῦ (ψ) ἐκ χειρός μου, ὅτι ῥύσεται ὁ θεὸς τὴν Ἱερουσαλὴμ ἐκ χειρός μου; 21 Καὶ ἐσιώπησαν, ϗ οὐδεὶς ἀπεκρίθη αὐτῷ λόγον, διὰ τὸ προστάξαι 22 τὸν βασιλέα μηδένα ἀποκριθῆναι. Καὶ εἰσῆλθεν Ἐλιακεὶμ ὁ τοῦ Χελκίου, (˜) οἰκονόμος, ϗ Σομνᾶς ὁ γραμματεὺς τῆς δυνάμεως, ϗ Ἰωὰχ ὁ τοῦ Ἀσὰφ ὁ ὑπομνηματογράφος πρὸς Ἐζεκίαν, ἐσχισμένοι τοὺς χιτῶνας, ϗ (ω) ἀνήγγειλαν αὐτῷ τοὺς λόγους (α) Ῥαβσάκου.

MS.A. (ρ) τοῦ λάκκου (σ) ὑμᾶς ἀπατάτω (τ) ὑμῶν ῥύσεται ὑμᾶς. μὰρ (φ) καὶ ὁ θεὸς τῆς πόλεως Σεπφαρείμ; (χ) τούτων ἐῤῥύσατο (ψ) χειρός (˜) ὁ οἰκονόμος, (ω) ἀπήγγειλαν (α) Ῥαψάκου.

ΚΕΦ. λζʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἀκοῦσαι τὸν βασιλέα Ἐζεκίαν, ἔσχισε τὰ ἱμάτια, ϗ (α) περιεβάλετο σάκκον, ϗ ἀνέβη εἰς τὸν οἶκον κυρίου. 2 Καὶ ἀπέστειλεν Ἐλιακεὶμ τὸν οἰκονόμον, ϗ Σομνᾶν τὸν γραμματέα, (β) ϗ τοὺς πρεσβυτέρους τῶν ἱερέων περιβεβλημένους σάκκους, πρὸς Ἡσαΐαν υἱὸν (˜) Ἀμὼς τὸν προφήτην. 3 Καὶ εἶπαν αὐτῷ, Τάδε λέγει Ἐζεκίας, Ἡμέρα θλίψεως ϗ ὀνειδισμοῦ ϗ ἐλεγμοῦ ϗ ὀργῆς ἡ σήμερον ἡμέρα, ὅτι ἥκει ἡ ὠδὶν τῇ τικτούσῃ, ἰσχὺν δὲ οὐκ ἔχει τοῦ 4 τεκεῖν. Εἰσακούσαι κύριος ὁ (γ) θεός σου τοὺς λόγους Ῥαβσάκου, οὓς ἀπέστειλε βασιλεὺς Ἀσσυρίων, ὀνειδίζειν θεὸν ζῶντα, ϗ ὀνειδίζειν λόγοις οὓς ἤκουσε κύριος ὁ θεός σου, (δ) ϗ δεηθήσῃ πρὸς κύριόν σου 5 περὶ τῶν καταλελειμμένων τούτων. Καὶ ἦλθον οἱ παῖδες τοῦ βασιλέως (ε) Ἐζεκίου πρὸς Ἡσαΐαν.

MS.A. (α) σάκκον περιεβάλετο, (β) * πρὸς τοὺς (˜) Ἀμὼς δς τοὺς λόγους Ῥαψάκου, οὓς ἀπέστειλεν αὐτὸν βασιλεὺς (δ) λελειμμένων (ε) πρὸς Ἡσαΐαν.

Neque dicat vobis Eze
eruet vos Deus, & non
civitas hæc in manu reg
riorum. Nolite audire
Hæc dicit rex Assyrio
vultis benedici,
me, & comedite
vitem suam, & ficus,
aquam de cisterna
nec veniam, &
terram: sicut terra
frumenti, & vini,
& vinearum. Ne seduca
Ezecias, dicens; Deus
vos. Nunquid liberaver
gentium unusquisque
suam de manu regis Assyri
Ubi est deus Emath, & Ar
& ubi deus civitatis Ep
am? Nunquid potue
Samariam de manu mea?
est ex omnibus diis gentium
rum, qui eruerit terram
manu mea; quia eruet Deus
rusalem de manu mea?
erunt: & nemo respondi
bum: quia mandaverat
mine respondere.
est Eliacim, filius Chelciæ
nomus, & Somnas scriba
tis, & Joach filius Asaph a com
mentariis ad Ezeciam,
nicis: & nuntiaverunt
Rabsacis.

CAP. XXXV

ET factum est, cum
rex Ezecias, scidit
& obvolutus est sacco,
dit in domum Domini.
Eliacim œconomum,
scribam, & seniores
opertos saccis, ad E
Amos, prophetam.
ei, Hæc dicit Ezecias
tribulationis, &
correptionis, & ira
es: quia venit dolor
virtutē autem non habet
(a) Exaudiat Dominus
tuus verba Rabsacis,
rex Assyriorum, ad
dū Deum vivum,
dum sermonibus,
Dominus Deus tuus.
Dominum tuum
bis. Et venerunt pueri
zeciæ ad Esaiam.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 ולא ירחיץ יתכון חזקיה על מימרא דיי למימר שיזבא ישיזבננא יי לא תתמסר קרתא
16 הדא ביד מלכא דאתור: לא תקבלון מן חזקיה ארי כדנן אמר מלכא דאתור עבידו עמי
17 שלמא ופוקו לותי ואכולו גבר פרי גופניה וגבר פרי תינוהי ושתו גבר מי גוביה: עד
18 מיתא ואדבר יתכון לארעא טבא כארעכון ארע עבור וחמר ארע חקלין וכרמין: דלמא
יטעי יתכון חזקיה למימר יי ישיזבננא השיזבא דחלת עממיא גבר ית ארעיה מיד מלכא
19 20 דאתור: אן דחלת חמת וארפד אן דחלת ספרוים וארי שיזבו ית שמרון מן ידי: מן בכל
דחלת מדינתא האלין דשיזבו ית ארעהון מן ידי ארי ישיזיב יי ית ירושלם מן ידי:
21 22 ושתיקו ולא אתיבו יתיה פתגמא ארי תפקידת מלכא היא למימר לא תתיבוניה: ואתא
אליקים בר חלקיה די ממנא על ביתא ושבנא ספרא ויואח בר אסף די ממנא על דכרניא
לות חזקיה כד מבזעין לבושיהון וחויאו ליה ית פתגמי רב שקה:

לז

1 והוה כד שמע מלכא חזקיה ובזע ית לבושוהי ואתכסי בסקא ועל לבית מקדשא דיי:
2 ושלח ית אליקים די ממנא על ביתא וית שבנא ספרא וית סבי כהניא כד מכסן בסקיא
3 לות ישעיה בר אמוץ נביא: ואמרו ליה כדנן אמר חזקיה יום עקא וחסודין ונאוצא יומא
4 הדין ארי אקפתנא עקא כאתא דיתבא על מתברא וחיל לית לה למילד: מאים שמיע
קדם יי אלהך ית פתגמי רב שקה דשלחיה מלכא דאתור רבוניה לחסדא עמא דיי
קימא ויעביד פורענותא על כל פתגמיא דשמעין קדם אלהך ותתחנן בצלו על שארא
5 דאשתאר: ואתו עבדי מלכא חזקיה לות ישעיה:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Nec tribuat vobis fiduciam Ezechias in verbo Domini, dicens
berando liberabit nos Dñs, & non tradetur civitas ista in manu
Assyriæ. Nolite obedire Ezechiæ: quia hæc dicit rex Assyriæ, Facite
cum pacem, & egredimini ad me, & comedite unusquisque fructum
suæ, & unusquisque fructum ficulneæ suæ, & bibite unusquisque aquam
sternæ suæ. Donec veniam & tollam vos in terram bonam, sicut terra
stra est, terram frumenti & vini, terram agrorum & vinearum. Et
seducat vos Ezechias, dicens: Dñs liberabit nos. Nunquid potuerunt
rare dii populorum quisque terram suam de manu regis Assyriæ?
Deus Emath? & Arphad? ubi est Deus Sepharvaim? & quia
am de manu mea eripuerunt? Quinam sunt inter omnes harum
rum deos qui eruerint terram suam è manu mea, ut Dñs eripiat
mea Jerusalem? Et tacuerunt, & non responderunt ei verbum:
datum regis erat, dicentis: Ne respondeatis ei. Et venit Eliachim
chiæ qui præpositus erat domus, & Sobna scriba, & Joach filius
qui constitutus erat super memorialia, ad Ezechiam scissis vestibus
raverunt ei verba Rabsacis.

CAP. XXXVII.

ET factum est cùm audisset rex Ezechias, scidit vestimenta sua, &
est sacco, & ingressus est in domum sanctuarii Dñi. Et misit Eliachim
positum domus, & Sobnam scribam, et seniores sacerdotum
cis ad Esaiam filium Amos prophetam. Et dixerunt ei, Hæc dicit
Dies tribulationis & opprobrii, & blasphemiæ est dies hæc:
hendit nos tribulatio, sicut mulierem quæ sedet ad pariendum,
ei robur ut pariat. Fortè audientur coram Domino Deo tuo
facis; quem misit rex Assyriæ dominus suus, ut exprobraret
vivi, & faciet vindictam propter omnia verba quæ audita
Deo tuo. Deprecare ergo in oratione pro reliquiis quæ remanserunt
venerunt servi regis Ezechiæ ad Esaiam.

Verſio *S Y R I A C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

* ܘܠܐ ܢܬܟܠܟܘܢ ܚܙܩܝܐ ܥܠ ܡܪܝܐ : ܘܢܐܡܪ ܕܡܦܨܘ ܡܦܨܐ ܠܢ ܡܪܝܐ : ܘܠܐ ܬܬܡܣܪ ܡܕܝܢܬܐ 15
ܗܕܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. * ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܠܚܙܩܝܐ. ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܠܟܐ 16
ܕܐܬܘܪ. ܥܒܕܘ ܥܡܝ ܒܘܪܟܬܐ ܘܦܘܩܘ ܠܘܬܝ. ܘܐܟܘܠܘ ܐܢܫ ܓܦܬܗ ܘܐܢܫ ܬܐܢܬܗ ܘܐܢܫ
ܢܫܬܐ. ܘܐܢܫ ܡܝܐ ܕܓܘܒܗ. * ܥܕܡܐ ܕܐܬܐ ܘܐܕܒܪܟܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܐܟ ܐܪܥܟܘܢ. ܐܪܥܐ 17
ܕܥܒܘܪܐ. ܘܕܡܫܚܐ. ܐܪܥܐ ܕܙܝܬܐ ܘܕܟܪܡܐ. * ܘܠܐ ܢܛܥܝܟܘܢ ܚܙܩܝܐ ܘܢܐܡܪ: ܕܡܪܝܐ ܢܦܨ 18
ܠܢ. ܕܠܡܐ ܦܨܝܘ ܐܠܗܝ ܥܡܡܐ. ܐܢܫ ܐܢܫ ܐܪܥܗ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ.
* ܐܝܟܐ ܐܢܘܢ ܐܠܗܐ ܕܚܡܬ ܘܕܐܪܦܕ. ܘܐܝܟܐ ܐܢܘܢ ܐܠܗܐ ܕܣܦܪܘܝܡ. ܕܠܡܐ. ܦܨܝܘ 19
ܠܫܡܪܝܢ ܡܢ ܐܝܕܝ. * ܡܢ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܠܗܐ ܕܐܪܥܬܐ ܗܠܝܢ ܦܨܝܘ ܐܪܥܗܘܢ ܡܢ ܐܝܕܝ. 20
ܕܢܦܨܐ ܡܪܝܐ ܠܐܘܪܫܠܡ ܡܢ ܐܝܕܝ. * ܘܫܬܩܘ ܥܡܐ ܘܐܢܫ ܠܐ ܦܢܝ ܠܗ ܦܬܓܡܐ. ܡܛܠ 21
ܕܦܩܕ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ: ܠܐ ܬܦܢܘܢ ܠܗ ܦܬܓܡܐ. * ܘܐܬܐ ܐܠܝܩܝܡ ܒܪ ܚܠܩܝܐ ܕܥܠ 22
ܒܝܬܐ ܘܫܒܢܐ ܣܦܪܐ. ܘܝܘܐܚ ܒܪ ܐܣܦ ܡܥܗܕܢܐ. ܠܘܬ ܚܙܩܝܐ ܟܕ ܡܨܪܝܢ ܢܚܬܝܗܘܢ.
ܘܚܘܝܘܗܝ ܡܠܘܗܝ ܕܪܒܫܩܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܡ *

* ܘܗܘܐ ܕܟܕ ܫܡܥ ܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ. ܨܪܐ ܢܚܬܘܗܝ. ܘܐܬܟܣܝ ܣܩܐ. ܘܥܠ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. 1
* ܘܫܕܪ ܠܐܠܝܩܝܡ ܪܒ ܒܝܬܐ. ܘܠܫܒܢܐ ܣܦܪܐ. ܘܠܩܫܝܫܐ ܕܟܗܢܐ ܟܕ ܡܟܣܝܢ ܣܩܐ. ܠܘܬ 2
ܐܫܥܝܐ ܢܒܝܐ ܒܪ ܐܡܘܨ. * ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܚܙܩܝܐ. ܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ 3
ܘܕܡܟܣܢܘܬܐ. ܘܕܪܘܓܙܐ ܝܘܡܢܐ. ܡܛܠ ܕܡܛܝܘ ܒܢܝܐ ܠܡܘܠܕܐ. ܘܚܝܠܐ ܠܝܬ ܠܝܠܕܬܐ.
* ܟܒܪ ܢܫܡܥ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ ܡܠܘܗܝ ܕܪܒܫܩܐ. ܕܫܕܪܗ ܡܪܗ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. 4
ܠܡܚܣܕܘ ܠܐܠܗܐ ܚܝܐ. ܘܢܟܘܣܝܘܗܝ ܒܡܠܐ ܕܫܡܥ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܘܬܨܠܐ. ܘܬܒܥܐ ܥܠ ܫܪܟܐ
ܕܐܫܬܚܪܘ. * ܘܐܬܘ ܥܒܕܘܗܝ ܕܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ. ܠܘܬ ܐܫܥܝܐ. 5

15 Neque fidere vos jubeat Hezecia Domino, dicátque; Procul dubio liberabit nos Dominus, & non tradetur civitas hæc in manus regis Aſſyriæ. 16 Ne acquieſcatis Hezeciæ: nam ſic ait rex Aſſyriæ, Hâc me gratiâ obſtringite, & ad me exite; ut *ita* comedatis quiſque vites ſuas, & quiſque ficus ſuas, & bibatis quilibet aquas putei ſui; 17 Donec veniam ducámque vos ad terram ſimilem terræ veſtræ, terram frumenti & olei *feracem*, terram olearum & vinearum. 18 Ne ſeducat vos Hezecia, dicátque; Dominus liberabit nos: An liberaverunt dii gentium quiſque terram ſuam de manibus regis Aſſyriæ? 19 Ubi ſunt dii Hemath & Rephad? & ubi ſunt dii Sepharvim? nunquid liberaverunt Samariam de manibus meis? 20 Quis ex omnibus diis terrarum illarum eripuit terram ſuam è manibus meis, ut eripiat Dominus Jeroſolymam è manibus meis? 21 Obticuerunt autem, & nemo reſpondit ei quicquam, præceperat enim rex & dixerat, Nihil ei reſpondeatis. 22 Itaque Eliacim filius Helciæ præfectus domûs, Sebna ſcriba, & Jojah filius Aſaphi à commentariis, laceris veſtibus ad Hezeciam regreſſi, retulerunt ei verba Rab-ſace.

CAP. XXXVII.

1 His auditis rex Hezecia, ſcidit veſtimenta ſua, operuit ſe ſacco, & ingreſſus eſt domum Domini: 2 Miſitque Eliacimum præfectum domûs, & Sebnam ſcribam, atque ſeniores ſacerdotum ſaccis opertos, ad Eſaiam prophetam filium Amos: 3 Qui dixerunt ei, Sic ait Hezecia Dies anguſtiæ, correptionis, & iræ eſt hodierna dies; inſtantibus enim fœtuum doloribus, non adſunt vires parturienti. 4 Fortaſſis audiet Dominus Deus tuus verba Rab-ſace, quem miſit rex Aſſyrius dominus ejus ad afficiendum probro Deum viventem, et arguet eum propter verba quæ audivit Dominus Deus tuus: Rogabis etiam & orabis pro reſiduis qui remanent. 5 Quum itaque veniſſent ſervi regis Hezeciæ ad Eſaiam,

Verſio *A R A B I C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

* ولا يقول لكم حزقيا ان الله ينجيكم * ولا يدفع هذه المدينة في يدي ملك الموصليين 15
* لا تسمعوا من حزقيا * هكذا يقول ملك الموصليين * ان شيتم ان تخلصوا اخرجوا الي 16
وياكل كل واحد من كرمه وتينه ويشرب من جبه * الي ان اتي واخذكم الي ارض مثل 17
ارضكم * ارض القمح والخمر والخبز والكروم * لا يضلكم حزقيا قايلا * الهكم ينجيكم * 18
هل نجت الهة الامم كل واحد كورته من يد ملك الموصليين * اين هو اله اماث 19
وارفاث * اين هو اله مدينة سفارويم * هل قدروا ان ينجوا سامرن من يدي * من 20
من الهة جميع هولاء الامم الذي نجا ارضه من يدي * حتي ينجي الله ايروسليم
من يدي * فسكتوا ولم يجاوبه احد بكلمة * لاجل ان الملك امر ان لا 21
يجاوبه احد * ودخل الياقيم الوكيل بن شلكيوا * وصمناص كاتب الجيش 22
ويواح بن اصاف كاتب التذاكر الي حزقيا ممزقين الثياب * واخبروه بكلام
ربصاكيس *

Néve dicat vobis Hezecia, Deus quidem ſalvabit vos, & non tradet hanc urbem in manus regis Aſſyriorum. 16 *Ne acquieſcatis Hezeciæ: ſic dicit rex Aſſyriorum; Si cupitis ſalutem, prodite ad me: ſic comedet unuſquiſque de vinea ſua & ficulneis ſuis, bibetque de ciſterna ſua:* 17 *Uſque dum veniens perducam vos ad regionem ſimilem regioni veſtræ, regionem frumenti & vini, panis & vinearum.* 18 *Ne vobis imponat Hezecia dicendo, Deus veſter eripiet vos: num eripuêre dii gentium quilibet regionem ſuam è manu regis Aſſyriorum?* 19 *Ubinam eſt deus Amaath & Arphath? ubinam eſt deus urbis Sepharuiim? num potuerunt eripere Samariam de manibus meis?* 20 *Quis eſt inter deos omnium iſtarum gentium, qui regionem ſuam eripuerit è manibus meis, ut eripiat Dominus Jeroſolymam de manibus meis?* 21 *Conticuerunt autem, & nemo reſpondit ei ne verbum quidem; quoniam rex præceperat ne quis reſponderet ei.* 22 *Ingreſſi ſunt ergò Eliacim œconomus Helciæ filius, Semnas ſcriba exercitûs, & Joah Aſaphi filius, ſcriptor rerum memorabilium, ad Hezeciam ſciſſis veſtibus, & indicaverunt ei verba Rabſacis.*

الفصل السابع والثلثون *

* وكان عند ما سمع الملك حزقيا * خرق ثيابه ولبس مسحا * وصعد الي بيت الرب 1
* وارسل الياقيم الوكيل * وصمناص الكاتب * ومشايخ الكهنة * جميعهم لابسي مسوحا 2
الي اشعيا النبي بن اموص * وقالوا له هكذا يقول حزقيا * يوم الضر والعار والتوبيخ 3
والغضب هو نهار هذا اليوم * لان الطلق اتي للوالدات * وليس لها قوة للولد * ليسمع الله 4
ربك كلمات ربصاكيس التي ارسلها ملك الموصليين ليعير الله الحي * وليعيره بالكلمات
التي سمعها الرب الهك * فتطلب الي الرب الهك من اجل الكلمات المتبقية * فاتوا غلمان 5
الملك حزقيا الي اشعيا *

CAP. XXXVII.

1 *Quæ cùm audiſſet rex Hezecia, veſtimenta ſua laceravit, & indutus cilicio aſcendit in domũ Domini.* 2 *Interim Eliacimum œconomum, Semnaſium ſcribam, & ſeniores ſacerdotum, omnes ciliciis indutos miſit ad Eſaiam prophetam filium Amoſi:* 3 *Qui dixerunt ei, Sic dicit Hezecia; Dies angoris, ignominiæ, increpationis, & iræ eſt hodiernus dies; nam dolores parturientem occupant, nec adſunt illi vires ad parturiendum.* 4 *Audiat Deus Dominus tuus verba Rabſacis, quæ miſit rex Aſſyriorum ad conviciandum Deo viventi; & contumelioſum reddat eum propter verba quæ audivit Dominus Deus tuus: rogabis itaque Dominum Deum tuum propter reliqua verba.* 5 *Cùm ergò veniſſent pueri regis Hezeciæ ad Eſaiam,*

ישעיה : לז

Sic : *vestrum dominum ad* dicetis Sic , Jeſahjahu eos ad dixit Et
6 ויאמר אליהם ישעיהו כה תאמרון אל־אדניכם כה
quibus , audiſti quæ verborum *facibus* à timeas Ne ,Dominus dixit
אמר יהוה אל תירא מפני הדברים אשר שמעת אשר
,ſpiritum eo in *dans* ego Ecce .me Aſſur regis pueri *blaſphemaverunt*
7 גדפו נערי מלך־אשור אותי : הנני נותן בו רוח
eum cadere faciam & : ſuam terram in revertetur & ,auditum audiet &
ושמע שמועה ושב אל־ארצו והפלתיו
regem invenit & ,Rabſacheh eſt reverſus Et .ſua terra in gladio in
8 בחרב בארצו : וישב רבשקה וימצא את־מלך
erat profectus quod audierat nam : Libnah adverſus præliantem Aſſur
אשור נלחם על־לבנה כי שמע כי נסע
: dicendo , Æthiopiæ rege Tirhacah *ſuper* audivit Et .Lachis de
9 מלכיש : וישמע על־תרהקה מלך־כוש לאמר
ad nuntios miſit & , audivit & : tecum *pugnandum ad* eſt Egreſſus
יצא להלחם אתך וישמע וישלח מלאכים אל־
,Jehudah regem Chizchijahu ad dicetis Sic : dicendo ,Chizchijahu
10 חזקיהו לאמר : כה תאמרון אל־חזקיהו מלך־יהודה
: dicendo ,*eo in fidens* tu cui tuus Deus te ſeducat Ne : dicendo
לאמר אל־ישאך אלהיך אשר אתה בוטח בו לאמר
audiſti tu Ecce .Aſſur regis manu in Jeruſalaim dabitur Non
11 לא תנתן ירושלם ביד מלך אשור : הנה אתה שמעת
: eas *anathematizando* , terris omnibus Aſſur reges fecerunt quæ
אשר עשו מלכי אשור לכל־הארצות להחרימם
quos ,gentium dii eas eruerunt Nunquid ? eruêris tu &
12 ואתה תנצל : ההצילו אותם אלהי הגוים אשר־
filios & ,Reſeph & ,Charan & , Gozan , mei patres *corruperunt*
השחיתו אבותי את־גוזן ואת־חרן ורצף ובני־
, Arpad rex & , Chamath rex Ubi ? Telaſſar in qui Heden
13 עדן אשר בתלשר : איה מלך־חמת ומלך ארפד
Chizchijahu tulit Et ? Hivvah & ,Henah ,Sepharvaim civitatis rex &
14 ומלך לעיר ספרוים הנע ועוה : ויקח חזקיהו
domum aſcendit & : *illud* legit & , nuntiorum manu de literas
את־הספרים מיד המלאכים ויקראהו ויעל בית
oravit Et .*Domini facies ad* Chizchijahu *illud* expandit & , Domini
15 יהוה ויפרשהו חזקיהו לפני יהוה : ויתפלל
Deus exercituum Domine : dicendo ,Dominum ad Chizchijahu
16 חזקיהו אל־יהוה לאמר : יהוה צבאות אלהי
omnium tu ſolus Deus *ipſe* tu , Cherubim ſedens , Iſrael
ישראל ישב הכרבים אתה־הוא האלהים לבדך לכל
.terram & , cœlos feciſti tu : terræ regnorum
ממלכות הארץ אתה עשית את־השמים ואת־הארץ :
,tuos oculos Domine aperi , audi & ,tuam aurem Domine Inclina
17 הטה יהוה אזנך ושמע פקח יהוה עינך
exprobrandum ad miſit qui , Sancherib verba omnia audi & : vide &
וראה ושמע את כל־דברי סנחריב אשר שלח לחרף
Aſſur reges vaſtaverunt , Domine , Verè .*viventi Deo*
18 אלהים חי : אמנם יהוה החריבו מלכי אשור את־
: igni in eorum Deos *dando* Et .eorum terram & , terras omnes
19 כל־הארצות ואת־ארצם : ונתן את־אלהיהם באש
,lignum , hominis manuum opus *quinimo* , ipſi dii non nam
כי לא אלהים המה כי אם־מעשה ידי־אדם עץ
nos fac ſalvos noſter Deus Domine nunc Et .eos perdiderunt & ,lapis &
20 ואבן ויאבדום : ועתה יהוה אלהינו הושיענו
Dominus tu quod ,terræ regna omnia cognoſcāt ut : ej⁹ manu de
מידו וידעו כל־ממלכות הארץ כי־אתה יהוה
: dicendo ,Chizchijahu ad Amos filius Jeſahjahu miſit Et .tu ſolus
21 לבדך : וישלח ישעיהו בן־אמוץ אל־חזקיהו לאמר
pro *me ad oraſti* quibus , Iſrael Deus Dominus dixit Sic
כה־אמר יהוה אלהי ישראל אשר התפללת אלי אל־
.Aſſur rege Sancherib
סנחריב מלך אשור :

Verſio VULG. LAT.

6 Et dixit ad eos Iſaias; Hæc dicetis domino veſtro; Hæc dicit Dominus; Ne timeas à facie verborum, quæ audiſti, quibus blaſphemaverunt pueri re-
7 gis Aſſyriorum me. Ecce ego dabo ei ſpiritū, & audiet nuntium, & revertetur ad terram ſuam, & corruere eum faciam
8 gladio in terra ſua. Reverſus eſt autem Rabſaces, et invenit regem Aſſyriorum præliantem adverſus Lobnam. Audierat enim quia profectus eſſet de La-
9 chis, Et audivit de Tharaca rege Æthiopiæ, dicentes; Egreſſus eſt ut pugnet contra te. Quod cùm audiſſet, miſit nun-
10 tios ad Ezechiam, dicens; Hæc dicetis Ezechiæ regi Judæ, loquentes; Non te decipiat Deus tuus, in quo tu confidis, dicens; Non dabitur Jeruſalem in ma-
11 nu regis Aſſyriorum. Ecce tu audiſti omnia, quæ fecerunt reges Aſſyriorum omnibus terris, quas ſubverterunt, & tu
12 poteris liberari? Numquid eruerunt eos dii Gentium, quos ſubverterunt patres mei, Gozam, & Haram, et Reſeph, & filios Eden, qui erant in Tha-
13 laſſar: Ubi eſt rex Emath, & rex Arphad, et rex urbis, Se-
14 pharvaim, Ana, et Ava? Et tulit Ezechias libros de manu nuntiorum, et legit eos, et aſcendit in domum Domini, & expandit eos Ezechias coram
15 Domino. Et oravit Ezechias
16 ad Dominum, dicens; Domine exercituum Deus Iſrael, qui ſedes ſup Cherubim: tu es Deus ſolus omnium regnorū terræ,
17 tu feciſti cœlum et terram. Inclina, Domine, aurem tuam, et audi: aperi, Domine, oculos tuos, & vide: & audi omnia verba Sennacherib, quæ miſit ad blaſphemandum Deum vi-
18 ventem. Verè enim, Domine, deſertas fecerunt reges Aſſyriorum terras, & regiones ea-
19 rum. Et dederunt deos earum igni: non enim erant Dii, ſed opera manuum hominum, lignum et lapis: et comminue-
20 runt eos. Et nunc, Dñe Deus noſter, ſalva nos de manu ejus: et cognoſcant omnia regna terræ, quia tu es Dominus ſolus.
21 Et miſit Iſaias filius Amos ad Ezechiam, dicens; Hæc dicit Dominus Deus Iſrael, Pro quibus rogâſti me de Sennacherib rege Aſſyriorum:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ἡσαΐας, Οὕτως ἐρεῖτε πρὸς τὸν κύριον ὑμῶν, Τάδε λέγει κύριος, Μὴ φοβηθῇς ἀπὸ τῶν λόγων ὧν ἤκουσας, οὓς ὠνείδισάν με οἱ πρέσβεις βασιλέως Ἀσσυ-
7 ρίων. Ἰδοὺ ἐγὼ (ζ) ἐμβάλλω εἰς αὐτὸν πνεῦμα, καὶ ἀκούσας ἀγγελίαν, ἀποστραφήσεται εἰς τὴν χώραν αὐτοῦ, καὶ πεσεῖται μαχαίρᾳ ἐν τῇ
8 γῇ αὐτοῦ. Καὶ ἀπέστρεψε (η) Ῥαψάκης, καὶ κατέλαβε τὸν βασιλέα Ἀσσυρίων πολιορκοῦντα Λοβνάν· καὶ ἤκουσεν ὅτι ἀπῆρεν
9 ἀπὸ Λαχίς. Καὶ ἐξῆλθε Θαρακὰ βασιλεὺς Αἰθιόπων πολιορκῆσαι αὐτόν. καὶ ἀκούσας ἀπέστρεψε, καὶ (θ) ἀπέστειλεν ἀγγέλους πρὸς
10 Ἐζεκίαν, λέγων, Οὕτως ἐρεῖτε Ἐζεκίᾳ βασιλεῖ τῆς Ἰουδαίας, Μή σε ἀπατάτω ὁ θεός σου, ἐφ᾽ ᾧ (ι) πέποιθας ἐπ᾽ αὐτῷ, λέγων, Οὐ μὴ παραδοθῇ Ἱερουσαλὴμ (κ) ἐν
11 χειρὶ βασιλέως Ἀσσυρίων. (λ) Σὺ οὐκ ἤκουσας ἃ ἐποίησαν βασιλεῖς Ἀσσυρίων, πᾶσαν τὴν γῆν ὡς ἀπώλεσαν; (μ) καὶ σὺ ῥυσθή-
12 σῃ; Μὴ ἐρρύσαντο αὐτοὺς οἱ θεοὶ τῶν ἐθνῶν, οὓς (ν) ἀπώλεσαν οἱ πατέρες μου, τήν τε Γωζὰν, καὶ Χαῤῥὰν, καὶ (ξ) Ῥαφὲθ, αἵ
13 εἰσιν ἐν χώρᾳ (ο) Θεεμάθ; Ποῦ εἰσι βασιλεῖς Ἐμάθ; καὶ ποῦ Ἀρφάθ; καὶ ποῦ πόλεως
14 Ἐπφαρουαὶμ, Ἀναγουγάνα; Καὶ ἔλαβεν Ἐζεκίας τὸ βιβλίον παρὰ τῶν ἀγγέλων, (π) καὶ ἀνέγνω αὐτὸ, καὶ ἀνέβη εἰς οἶκον κυρίου,
15 καὶ ἤνοιξεν αὐτὸ ἐναντίον κυρίου. Καὶ προσ-
16 ηύξατο Ἐζεκίας πρὸς κύριον, λέγων, Κύριος σαβαὼθ ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, ὁ καθήμενος ἐπὶ τῶν χερουβὶμ, σὺ (ρ) εἶ ὁ θεὸς μόνος πάσης βασιλείας τῆς οἰκουμένης, σὺ ἐποίησας τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν· (σ) Κλῖ-
17 νον κύριε τὸ οὖς σου, εἰσάκουσον κύριε, ἄνοιξον κύριε τοὺς ὀφθαλμούς σου, εἴσβλεψον κύριε, καὶ ἴδε τοὺς λόγους Σενναχηρεὶμ, οὓς
18 ἀπέστειλεν ὀνειδίζειν θεὸν ζῶντα. Ἐπ᾽ ἀληθείας γὰρ (τ) κύριε ἠρήμωσαν βασιλεῖς Ἀσσυρίων τὴν οἰκουμένην ὅλην, καὶ τὴν χώ-
19 ραν αὐτῶν, Καὶ (·) ἐνέβαλον τὰ εἴδωλα αὐτῶν εἰς τὸ πῦρ· οὐ γὰρ θεοὶ ἦσαν, ἀλλὰ ἔργα χειρῶν ἀνθρώπων, ξύλα καὶ λίθοι· καὶ (υ) ἀπώ-
20 λεσαν αὐτούς. Νῦν δὲ κύριε ὁ θεὸς ἡμῶν σῶσον ἡμᾶς ἐκ χειρὸς (φ) αὐτοῦ, ἵνα γνῷ πᾶσα βασιλεία τῆς γῆς, ὅτι σὺ εἶ (χ) ὁ θεὸς
21 μόνος. Καὶ ἀπέστειλεν Ἡσαΐας υἱὸς Ἀμὼς πρὸς Ἐζεκίαν, καὶ εἶπεν αὐτῷ, Τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ἤκουσα ἃ προσηύξω πρὸς μὲ περὶ Σενναχηρεὶμ βασιλέως Ἀσσυρίων.

MS. A. (ζ) ἐμβαλῶ (η) Ῥαψάκης, καὶ κατέλαβεν πολιορ- βασιλέα Λοβνά· καὶ ἤκουσεν βασιλεὺς Ἀσσυρίων ὅτι ἐξῆλθεν (θ) * ἀπέστρεψεν (ι) σὺ πεποιθὼς εἶ ἐπ᾽ αὐτῷ (κ) εἰς χεῖρας ἤκουσας (μ) Μὴ ἐρρύσαντο (ν) οἱ πατέρες μου ἀπώλεσαν (ο) Θαιμὰθ; Ποῦ εἰσιν οἱ βασιλεῖς Ἀμὰθ καὶ Ἀρφάθ; καὶ πόλεως Σεπ- Αναεγγουγανά, (π) καὶ ἤνοιξεν αὐτὸ ἐναντίον (ρ) θεὸς μόνος ἄκουσον κύριε, εἴσβλεψον κύριε, καὶ ἴδε τοὺς λόγους, οὓς ἀπέστειλε χηρεὶμ ὀνειδίζειν (τ) ἠρήμωσαν (·) ἐνέβαλον (υ) ἀπώλεσαν δὲ κύριε ὁ θεὸς ἡμῶν (φ) αὐτῶν, (χ) θεὸς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 ואמר להון ישעיה כדין תימרון לרבונכון כדנן אמר יי לא תדחל מן קדם פתגמיא דו
7 שמעתא דחסדו עולימי מלכא דאתור קדמי : הא אנא יהיב ביה רוחא וישמע בסורא
8 ויתוב לארעיה ואפלניה בחרבא בארעיה : ותב רבשקה ואשכח ית מלכא דאתור מגיח
9 קרבא על לבנה ארי שמע ארי נטל מלכיש : ושמע על תרהקא מלכא דכוש למימר
10 נפק לאגחא קרבא עמך ושמע ושלח אזגדין לות חזקיה למימר : כדין תימרון לחזקיהו
מלך שבטא דבית יהודה למימר לא יטעינך אלהך די את רחיץ ביה למימר לא תתמסר
11 ירושלם ביד מלכא דאתור : הא את שמעתא דעבדו מלכי אתור לכל מדינתא
12 לגמרותהון ואת מדמי לאשתיזבא : השיזבא יתהון דחלת עממיא דחבילו אבהתי ית
13 גוזן וית חרן ורצף ובני עדן דבתלסר : אן מלכא דחמת ומלכא דארפד ומלכא
14 דלקרתא ספרוים הלא טלטלנון ואגליאנון : ונסיב חזקיה ית אגרתא מיד אזגדיא
15 וקרא חדא מנהון וסליק לבית מקדשא דיי ופרסיה חזקיה קדם יי : וצלי חזקיה קדם
16 יי למימר : יי אלהא צבאות אלהא דישראל דשכנתיה שריא עיל מן כרוביא אתה הוא
17 יי ולית בר מנך לכל מלכות ארעא את עבדת ית שמיא וית ארעא : גלי קדמך יי ירון
ושמיע קדמך יי ואתפרע ועביד פורען על כל פתגמי סנחריב דשלח לחסדא עמא דיי
18 קימא : בקושטא יי אחריבו מלכי אתור ית כל מדינתא וית ארעהון : ומיקדין ית
19 טעותהון בנורא ארי לא טעון דאית בהון צרוך אנון אלהן עובד ידי אנשא אעא ואבנא
20 ואבדונון : וכען יי אלהנא פרקנא מן ידיה וידעון כל מלכות ארעא ארי את יי ולית בר
21 מנך : ושלח ישעיה בר אמוץ לות חזקיה למימר כדנן אמר יי אלהא דישראל דבעיתא
מן קדמי על סנחריב מלכא דאתור :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixit eis Eſaias, Hæc dicetis domino veſtro: Hæc dicit Dñs, Ne
à facie verborū quæ audiſti, quib⁹ exprobraverunt pueri regis Aſſ
me. Ecce ego dabo in eum ſpiritū, & audiet nuntiū, & reverte
ram ſuā; & cadere eum faciā in gladio in terra ſua. Et reverſus
faces, & invenit regem Aſſyriæ præliantē contra Lobnā; audierat
profectus eſſet de Lachis. Et audivit de Taracha rege Æthiopiæ
Egreſſus eſt ut ineat bellū tecum: & audivit, & miſit nuntios ad Ez
dicens. Sic dicetis Ezechiæ regi tribus dom⁹ Juda, dicendo: Ne
Deus tuus, in quo tu confidis, dicens: Non tradetur Jeruſalem
gis Aſſyriorū. Ecce tu audiſti quid fecerint reges Aſſyrii omnibus
ciis ut diſperderent eas, & te evaſurū putas? Nunquid liberarunt
dii populorū, quos diſſipaverunt patres mei; Gozan, & Haran, &
& filios Eden, qui erant in Thelaſar? Ubi eſt rex Emath & rex
rex civitatis Sepharvaim? nónne tranſmigrare fecit eos, &
tem duxit? Et tulit Ezechias epiſtolas de manu nuntiorum, &
ex eis, & aſcendit in domum ſanctuarii Domini; & expandit
as coram Domino. Et oravit Ezechias coram Domino: dicens
Deus exercituum Deus Iſrael, cujus majeſtas habitat ſuper C
Dominus, & nullus eſt præter te, in omnibus regnis terræ
& terram. Manifeſtum eſt coram te Domine, & judica; &
ram te Domine, & ulciſcere, & fac vindictam ſuper omnia
cherib qui miſit ad exprobrandum populum Dei vivi. Verè Do
tas fecerunt reges Aſsyrii omnes provincias & terras earum.
runt idola earum igni; idola enim ſunt in quibus nulla eſt u
opera manuum hominum, lignum & lapis, & diſperderunt
Domine Deus noſter, ſalva nos de manu ejus, & ſcient omnia
quia tu es Dominus, & nullus eſt præter te. Et miſit Eſaias
Ezechiam, dicens: Hæc dicit Dominus Deus Iſrael, Quia roga
ſuper Senacherib regem Aſsyriæ:

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܐܫܥܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪܘ ܠܡܪܟܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܡܠܐ 6
ܕܫܡܥܬ. ܕܓܕܦܘ ܥܠܝ ܥܠܝܡܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. * ܗܐ ܝܗܒ ܐܢܐ ܠܗ ܪܘܚܐ. 7
ܘܫܡܥ ܫܘܥܝܬܐ. ܘܢܗܦܘܟ ܠܐܪܥܗ. ܘܐܦܠܝܘܗܝ ܒܚܪܒܐ ܒܐܪܥܗ. * ܘܗܦܟ ܪܒ ܫܩܐ. 8
ܘܐܫܟܚ ܠܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ ܟܕ ܡܬܟܬܫ ܥܠ ܠܒܢܐ. ܟܕ ܫܡܥ ܕܫܩܠ ܡܢ ܠܟܝܫ. * ܘܫܡܥ 9
ܥܠ ܬܪܗܩ ܡܠܟܐ ܕܟܘܫ: ܕܢܦܩ ܠܡܬܟܬܫܘ ܥܡܗ. ܘܫܡܥ. ܘܫܕܪ ܐܝܙܓܕܐ ܠܘܬ ܚܙܩܝܐ.
* ܗܟܢܐ ܐܡܪܘ ܠܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܟܕ ܐܡܪܝܢ. ܠܐ ܢܛܥܝܟ ܐܠܗܟ ܕܬܟܝܠ ܐܢܬ 10
ܥܠܘܗܝ. ܘܐܡܪ ܐܢܬ ܕܠܐ ܡܫܬܠܡܐ ܐܘܪܫܠܡ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. * ܗܐ ܐܢܬ ܫܡܥܬ 11
ܟܠ ܕܥܒܕܘ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ ܠܟܠܗܝܢ ܐܪܥܬܐ. ܠܡܚܪܒܘܬܗܝܢ. ܘܐܢܬ. ܡܫܬܘܙܒ ܐܢܬ.
* ܕܠܡܐ ܦܪܩܘ ܐܠܗܝ ܥܡܡܐ. ܠܗܘܢ ܕܚܒܠܘ ܐܒܗܝ. ܠܓܘܙܢ. ܘܠܚܪܢ. ܘܠܪܨܦ. ܘܠܒܢܝ 12
ܥܕܢ ܕܒܬܠܣܪ. * ܐܝܟܘ ܡܠܟܐ ܕܚܡܬ. ܘܡܠܟܐ ܕܐܪܦܕ. ܘܡܠܟܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܕܣܦܪܘܝܡ. ܕܗܢܥ 13
ܘܕܥܘܐ. * ܘܢܣܒ ܚܙܩܝܐ ܐܓܪܬܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܐܝܙܓܕܐ. ܘܩܪܐ ܐܢܝܢ. ܘܣܠܩ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. 14
ܘܦܪܣ ܐܢܝܢ ܚܙܩܝܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܨܠܝ ܚܙܩܝܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ: * ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ 15 16
ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܕܝܬܒ ܥܠ ܟܪܘܒܐ. ܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܐ ܒܠܚܘܕܝܟ ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ
ܕܐܪܥܐ. ܐܢܬ ܥܒܕܬ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. * ܐܪܟܢ ܡܪܝܐ ܐܕܢܟ ܘܫܡܥ. ܦܬܘܚ ܡܪܝܐ ܥܝܢܝܟ 17
ܘܚܙܝ. ܘܫܡܥ ܡܠܘܗܝ ܕܣܢܚܪܝܒ: ܕܫܕܪ ܠܡܚܣܕܘ ܠܐܠܗܐ ܚܝܐ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܡܪܝܐ. 18
ܚܪܒܘ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ ܠܟܠܗܝܢ ܐܪܥܬܐ. * ܘܐܪܥܬܗܘܢ. ܘܐܠܗܝܗܘܢ ܝܗܒܘ ܒܢܘܪܐ. 19
ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܘ ܐܠܗܐ. ܐܠܐ ܥܒܕ ܐܝܕܝ ܒܢܝܢܫܐ. ܕܩܝܣܐ: ܘܕܟܐܦܐ. ܘܐܘܒܕܘ
ܐܢܘܢ. * ܘܗܫܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܦܪܘܩܝܢ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ. ܢܕܥܘܢ ܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ 20
ܕܐܪܥܐ. ܕܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܐ ܒܠܚܘܕܝܟ. * ܘܫܕܪ ܐܫܥܝܐ ܒܪ ܐܡܘܨ ܠܘܬ ܚܙܩܝܐ 21
ܘܐܡܪ ܠܗ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܠ ܕܨܠܝܬ ܩܕܡܝ
ܥܠ ܣܢܚܪܝܒ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܫܡܥܬ.

6 Dixit eis Eſaia, Sic dicite domino veſtro; Ita dicit Dominus, ne te terreant verba quæ audiſti, quibus blaſphemârunt coram me nuntii regis Aſſyriæ. 7 Ecce *talem* ei impoſiturus ſum ſpiritum, ut auditâ famâ revertatur in terram ſuam: & gladio proſternam eum in terra ſua. 8 Rab-ſace reverſus, invenit regem Aſſyriæ oppugnantem Lebnam (audiverat enim eum è Lachis profectum; 9 Audiverátq; de Tarhac rege Æthiopiæ, quòd proceſſiſſet ad pugnandum contra eum) Hoc audito, miſit nuntios ad Hezeciam *hiſce mandatis*. 10 Sic alloquimini Hezeciam regem Judæ, dicendo, Ne te decipiat Deus tuus cui tu confiſus dicis, Non tradetur Jeruſalem in manus regis Aſſyriæ. 11 Ecce tu audîſti quicquid fecerunt reges Aſsyriæ omnibus terris, deſtruentes eas: & tu eripereris? 12 Num eripuerunt dii gentiũ quas interfecerunt patres mei, Gozanem, Haranem, Raſaphum, & incolas Adanis quæ eſt in Dalaſar? 13 Ubi eſt rex Hemath, rex Rephad, rex civitatis Sepharvim, Naæ, & Avæ? 14 Acceptis ergò Hezecia literis de manu legatorum, iiſque perlectis, aſcendit in domum Domini, & explicavit eas Hezecia coram Domino, 15 Oravítque Hezecia coram Domino, & ait; 16 Domine potentiſſime, Deus Iſraelis, ſedens ſuper Cherubim, tu es Deus ſolus ſuper omnia regna terræ, tu feciſti cœlum ac terram. 17 Inclina Domine aurem tuam, & audi; aperi Domine oculos tuos, & vide; audi *inquam* verba Sanheribi, qui miſit ad probris afficiendũ Deum viventem. 18 Reverà Domine, vaſtaverunt reges Aſſyriæ cunctas regiones, 19 Et tam terram quàm deos earum igne combuſſerunt; quia non erant dii, ſed opus manuum humanarum, ex ligno, argento, aut lapide, ideo perdiderunt eos. 20 Nunc itaque Domine Deus noſter, eripe nos de manibus illius, ut cognoſcant omnia regna terræ te ſolum eſſe Deum. 21 Tunc miſſus eſt Amoſi filius Eſaia ad Hezeciam, & dixit ei: Sic dicit Dominus potentiſſimus, Deus Iſraelis; Quicquid orâſti me contra Sanheribum regem Aſſyriæ, exaudivi.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* فقال لهم اشعيا هكذا قولوا لسيدكم هكذا يقول الرب لا تخف من الكلمات التي سمعتها 6
التي عيروني بها رسل ملك الموصليين * ها انا القي حوله ريحا ويسمع خبرا ويرجع الى 7
كورته ويسقط بالسيف في ارضه * ورجع ربصاكيس وادرك ملك الموصليين محاصرا لبنا 8
* وسمع ملك الموصليين ان تارانا ملك الحبوش خرج ليحاصره سمع ورجع * وارسل مخبرين 9
لحزقيا قايلا * قولوا لحزقيا ملك اليهودية لا يخدعك الهك الذي انت متوكل عليه قايلا 10
ايروشليم لا تدفع في يد ملك الموصليين * قد سمعت بما صنعت ملوك الموصليين بكل 11
الارض كيف اهلكوها وانت تنجوا * هل نجتهم الهة الامم الذين اهلكهم ابائي عوزان 12
وحران وراصاف وعدان التي هي في كورة تامان * اين هي ملوك اماث وارفاد وقرية 13
سفارويم وناع وعاوا * واخذ حزقيا الكتاب من الرسل وقراه وصعد الى بيت الرب وفتحه امام 14
الرب * صلاة حزقيا ملك يهودا * وصلى حزقيا امام الرب قايلا * يا رب 15 16
القدوس اله اسرايل الجالس على الشاروبيم انت هو وحدك الاله على كل مملكة في المسكونة *
انت صنعت السماء والارض * امل يا رب سمعك اسمع يا رب افتح يا رب الحاظك اطلع 17
وانظر الكلمات التي ارسلها سنحاريب ملك الموصليين ليعير الله الحي *
* الاصحاح الثامن عشر * بالحق ان ملوك الموصليين اخربوا المسكونة كلها وكورهم 18
* ووضعوا اوثانهم بالنار لانها ليست الهة لكن عمل ايدي البشر اخشاب وحجارة واهلكوهم * 19
* والان انت ايها الرب الهنا خلصنا من يدهم ليعلم كل مملكة الارض انك انت هو الله 20
وحدك * وارسل اشعيا بن اموص الى حزقيا وقال له هكذا يقول الرب اله اسرايل استجبت 21
ما صليت به الي من اجل سنحاريب ملك الموصليين .

6 *Ait illis Eſaia, Sic dicite domino veſtro; Sic dicit Dominus, Ne timeas ob verba quæ audîſti, quibus conviciati ſunt mihi legati regis Aſſyriorum.* 7 *En circumjecturus ſum illi ventum, ut auditâ famâ redeat in regionem ſuam, & gladio corruat in terra ſua.* 8 *Itaque reverſus Rabſaces, aſſecutus eſt regem Aſſyriorum obſidentem Lobnam.* 9 *Audiens autem rex Aſſyriorum quòd Tharatha rex Abiſſinorum prodiiſſet ad obſidendum eum, audiens* inquam, *reverſus eſt, miſitque nuntios ad Hezeciam, dicens;* 10 *Dicite Hezeciæ regi Judææ, Ne te decipiat Deus tuus cui tu confidis, dicens; Jeruſalem nequaquam tradendam in manum regis Aſſyriorum.* 11 *Jam audiviſti quid fecerint reges Aſſyriorum toti terræ, quomodo perdiderint eam: & tu evaderes?* 12 *Num dii gentium quas perdiderunt patres mei, liberârunt eas? Gozanem, Harranem, Raſaphum, & Adanem quæ eſt in regione Thamanitica?* 13 *Ubinam ſunt reges Amathæ, Arphathæ, urbis Sepharuim, & Naæ, & Avæ?* 14 *Cumque accepiſſet Hezecia epiſtolam à nuntiis & legiſſet eam, aſcendit in domum Domini, & explicavit eam coram Domino:*

Oratio Hezeciæ regis Judæ.

15 *Oravitque Hezecia Dominum, dicens;* 16 *O Domine exercituum, Deus Iſraelis, qui ſedes ſuper Cherubim, tu ſolus Deus præes omnibus regnis quæ ſunt in orbe terrarum: tu cœlum terrámque condidiſti.* 17 *Præbe O Domine auditum tuum, audi O Domine; aperi O Domine oculos tuos, inſpice, & conſidera verba quæ miſit Sanharib rex Aſſyriorum ad afficiendum contumeliis Deum viventem.*

Textus decimus octavus.

18 *Verum quidem eſt reges Aſſyriorum deſtruxiſſe totum orbem terrarum & regiones earum.* 19 *Et poſuiſſe idola earum in ignem (quippe quæ non eſſent dii, ſed opus manuum mortalium, ligna nimirum lapidéque) & eas perdidiſſe.* 20 *Quare tu O Domine Deus noſter, libera nos de manu eorum, ut ſciat totum regnum terræ te ſolum eſſe Deum.* 21 *Miſit autem Eſaia filius Amoſi ad Hezeciam, dixit ei; Sic ait Dominus Deus Iſraelis, Exaudivi quod à me rogâſti de Sanharibo rege Aſſyriorum.*

te subsannavit , te Despexit :eū sup Dñs est locutus quod verbum Hoc
22 זֶה הַדָּבָר אֲשֶׁר־דִּבֶּר יְהוָה עָלָיו בָּזָה לְךָ לָעֲגָה לָךְ
Quem .Jerusalaim filia , movit caput te post , Sijon filia virgo
23 בְּתוּלַת בַּת־צִיּוֹן אַחֲרֶיךָ רֹאשׁ הֵנִיעָה בַּת יְרוּשָׁלִָם׃ אֶת־מִי
: vocem exaltâsti quem contra & ,affecisti *conviciis* & ,affecisti probris
חֵרַפְתָּ וְגִדַּפְתָּ וְעַל־מִי הֲרִימוֹתָה קּוֹל
manum Per .Israel Sanctum contra ? tuos oculos altitudinem levâsti &
24 וַתִּשָּׂא מָרוֹם עֵינֶיךָ אֶל־קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל׃ בְּיַד
multitudine In : dixisti & , Dominum affecisti probris tuorum servorum
עֲבָדֶיךָ חֵרַפְתָּ אֲדֹנָי וַתֹּאמֶר בְּרֹב
succidam & : Lebanon latera,montium altitudinem ascendi ego *mei currus*
רִכְבִּי אֲנִי עָלִיתִי מְרוֹם הָרִים יַרְכְּתֵי לְבָנוֹן וְאֶכְרֹת
altitudinem introibo & , ejus *abietum electionem* ,ejus cedrorum *staturam*
קוֹמַת אֲרָזָיו מִבְחַר בְּרֹשָׁיו וְאָבוֹא מְרוֹם
, aquas bibi & *excidi* Ego .ejus Carmeli saltum ,ejus *extremitatis*
25 קִצּוֹ יַעַר כַּרְמִלּוֹ׃ אֲנִי קַרְתִּי וְשָׁתִיתִי מָיִם
audisti Nonne *munitionis* rivos omnes meorum pedū planta in siccabo &
26 וְאַחְרִב בְּכַף־פְּעָמַי כֹּל יְאֹרֵי מָצוֹר׃ הֲלֹא־שָׁמַעְתָּ
nunc : *eam* plasmavi & ,*quondam* diebus à , feci *eam* longe à
לְמֵרָחוֹק אוֹתָהּ עָשִׂיתִי מִימֵי קֶדֶם וִיצַרְתִּיהָ עַתָּה
civitates ,destructionum acervos desolandum ad erit & ,*illam* adduxi
הֲבֵאתִיהָ וּתְהִי לְהַשְׁאוֹת גַּלִּים נִצִּים עָרִים
, sunt contriti , manu abbreviati earum Habitatoresque ? munitas
27 בְּצֻרוֹת׃ וְיֹשְׁבֵיהֶן קִצְרֵי־יָד חַתּוּ
,tectorū herba,germinis olus & ,agri herba Fuerunt:affecti sunt pudore &
וָבֹשׁוּ הָיוּ עֵשֶׂב שָׂדֶה וִירַק דֶּשֶׁא חֲצִיר גַּגּוֹת
tuum ingredi & ,tuum egredi & ,tuum sedere Et .segetem ante uredo &
28 וּשְׁדֵמָה לִפְנֵי קָמָה׃ וְשִׁבְתְּךָ וְצֵאתְךָ וּבוֹאֲךָ
tuum otium & ,me contra *te irasci* Pro .me in tuum *irasci* & , novi
29 יָדָעְתִּי וְאֵת הִתְרַגֶּזְךָ אֵלָי׃ יַעַן הִתְרַגֶּזְךָ אֵלַי וְשַׁאֲנַנְךָ
meum *frænum & ,tua nari* in meum hamum ponam & ,meas aures in ascendit
עָלָה בְאָזְנָי וְשַׂמְתִּי חַחִי בְּאַפֶּךָ וּמִתְגִּי
tibi hoc Et .*ea in* venisti *qua* viam per te faciam redire &,tuis labiis in
30 בִּשְׂפָתֶיךָ וַהֲשִׁבֹתִיךָ בַּדֶּרֶךְ אֲשֶׁר־בָּאתָ בָּהּ׃ וְזֶה־לְּךָ
: *repullulans* secundo anno in & ,*nascens sponte* anno *Comedere* : signum
הָאוֹת אָכוֹל הַשָּׁנָה סָפִיחַ וּבַשָּׁנָה הַשֵּׁנִית שָׁחִיס
comedite & vineas plantate &,metite &,seminate tertio anno in &
וּבַשָּׁנָה הַשְּׁלִישִׁית זִרְעוּ וְקִצְרוּ וְנִטְעוּ כְרָמִים וְאָכוֹל
radicem , *residuæ* Jehudah domus evasio adjiciet Et.earum fructum
31 פִּרְיָם׃ וְיָסְפָה פְּלֵיטַת בֵּית־יְהוּדָה הַנִּשְׁאָרָה שֹׁרֶשׁ
egredietur Jerusalaim de Quia .sursum fructum faciet & , deorsum
32 לְמָטָּה וְעָשָׂה פְרִי לְמָעְלָה׃ כִּי מִירוּשָׁלִַם תֵּצֵא
faciet exercituum Domini *Zelus* .Sijon monte de evasio & , *reliquum*
שְׁאֵרִית וּפְלֵיטָה מֵהַר צִיּוֹן קִנְאַת יְהוָה צְבָאוֹת תַּעֲשֶׂה־
in introibit Non:Assur *regem ad* Dominus dixit sic Propterea .hoc
33 זֹּאת׃ לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה אֶל־מֶלֶךְ אַשּׁוּר לֹא יָבוֹא אֶל־
,clypeo eā præoccupabit non &:sagittā ibi jaciet non & , hanc civitatem
הָעִיר הַזֹּאת וְלֹא־יוֹרֶה שָׁם חֵץ וְלֹא־יְקַדְּמֶנָּה מָגֵן
: revertetur *ea in* venit *qua via In* .aggerem eam juxta effundet non &
34 וְלֹא־יִשְׁפֹּךְ עָלֶיהָ סֹלְלָה׃ בַּדֶּרֶךְ אֲשֶׁר־בָּא בָּהּ יָשׁוּב
super protegam Et.Domin⁹ dixit,ingredietur non hanc civitatem in &
35 וְאֶל־הָעִיר הַזֹּאת לֹא יָבוֹא נְאֻם־יְהוָה׃ וְגַנּוֹתִי עַל־
.meū servum David propter &,me propter ,eā *servandū aa* ,hanc civitatem
הָעִיר הַזֹּאת לְהוֹשִׁיעָהּ לְמַעֲנִי וּלְמַעַן דָּוִד עַבְדִּי׃
centum Assur *castrametatione in* percussit &,Domini angel⁹ est egressus Et
36 וַיֵּצֵא ׀ מַלְאַךְ יְהוָה וַיַּכֶּה בְּמַחֲנֵה אַשּׁוּר מֵאָה
.mortua cadavera *ipsi* omnes ecce & , mane in maturaverunt & : millia quinque & octoginta &
וּשְׁמֹנִים וַחֲמִשָּׁה אָלֶף וַיַּשְׁכִּימוּ בַבֹּקֶר וְהִנֵּה כֻלָּם פְּגָרִים מֵתִים׃

Versio VUL. LAT.

22 Hoc est verbū, ꝙ locut⁹ est Dñs super eum, Despexit te, & subsannavit te virgo filia Sion : post te caput movit filia Jerusalē. 23 Cui exprobrâsti, & quem blasphemâsti, & sup quem exaltâsti vocē, & levâsti altitudinem oculorū tuorū? Ad Sanctū 24 Israel. In manu servorū tuorū exprobrâsti Dño: & dixisti ; In multitudine quadrigarū mearū ego ascendi altitudinē montiū, juga Libani: & succidā excelsa cedrorū ejus, & electas abietes illi⁹, et introibo altitudinē summitatis ej⁹, saltū Carmeli ejus. 25 Ego fodi, & bibi aquā, & exiccavi vestigio pedis mei omnes 26 rivos aggerum. Numquid non audîsti, quæ olim fecerim ei? ex dieb⁹ antiquis ego plasmavi illud: et nunc adduxi: & factū est in eradicationē colliū compugnantiū, & civitatū munitarū. 27 Habitatores earū breviatâ manu contremuerunt, & confusi sunt: facti sunt sicut fœnū agri, & gramen pascuæ, & herba tectorū, quæ exaruit antequā maturesceret. 28 Habitationē tuam, & egressū tuū, & introitū tuū cognovi, & insaniā tuam con- 29 tra me. Cùm fureres adversùm me, superbia tua ascendit in aures meas: ponā ergò circulū in naribus tuis, & frænū in labiis tuis, & reducā te in viam, ꝑ quā 30 venisti. Tibi autem hoc erit signū : Comede hoc anno quæ spōte nascuntur, & in anno secundo pomis vescere : in anno autē tertio seminate, & metite, & plantate vineas, et comedite 31 fructū earum. Et mittet id, ꝙ salvatū fuerit de domo Juda, et ꝙ reliquum est, radicē deorsū, 32 & faciet fructū sursum: Quia de Jerusalē exibunt reliquiæ, et salvatio de monte Sion : zelus Dñi exercituum faciet istud. 33 Propterea hæc dicit Dñs de rege Assyriorū ; Non intrabit civitatē hanc, et non jaciet ibi sagittā, & non occupabit eā clypeus, & non mittet in circuitu 34 ejus aggerē. In via quâ venit, per eam revertetur, & civitatem hanc non ingredietur, di- 35 cit Dominus : Et protegam civitatem istam, ut salvem eam propter me, & propter David servum 36 meum. Egressus est autem Angelus Domini, & percussit in castris Assyriorum centum octoginta quinque millia. Et surrexerunt manè, et ecce omnes, cadavera mortuorum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

22 Οὗτος ὁ λόγος ὃν ἐλάλησε περὶ αὐτοῦ ὁ θεὸς, Ἐφαύλισέ σε, καὶ ἐμυκτήρισέ σε παρθένος θυγάτηρ Σιὼν, ἐπὶ σοὶ κεφαλὴν ἐκίνησε θυγάτηρ Ἱερουσαλήμ. 23 Τίνα ὠνείδισας καὶ παρώξυνας; ἢ πρὸς τίνα ὕψωσας τὴν φωνήν σου; καὶ οὐκ ἦρας εἰς ὕψος τοὺς ὀφθαλμούς σου 24 (ʹ) πρὸς τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραήλ; Ὅτι δι' ἀγγέλων ὠνείδισας κύριον· σὺ γὰρ εἶπας, Τῷ πλήθει τῶν ἁρμάτων ἐγὼ ἀνέβην εἰς ὕψος ὀρέων, καὶ εἰς τὰ ἔσχατα τοῦ Λιβάνου, καὶ ἔκοψα τὸ ὕψος τῆς κέδρου αὐτοῦ, καὶ τὸ κάλλος τῆς κυπαρίσσου, καὶ εἰσῆλθον εἰς ὕψος μέρους τοῦ 25 δρυμοῦ, Καὶ ἔθηκα γέφυραν, καὶ ἠρήμωσα ὕ- 26 δατα καὶ πᾶσαν συναγωγὴν ὕδατος. Οὐ ταῦτα ἤκουσας πάλαι ἃ ἐγὼ ἐποίησα; ἐξ (ψ) ἡμερῶν ἀρχαίων συνέταξα, νῦν δὲ ἐπέδειξα ἐξερημῶσαι ἔθνη ἐν ὀχυροῖς, καὶ (ω) 27 οἰκοῦντας ἐν πόλεσιν ὀχυραῖς. Ἀνῆκα τὰς χεῖρας, καὶ ἐξηράνθησαν, καὶ ἐγένοντο ὡς χόρτος (α) ξηρὸς ἐπὶ δωμάτων, καὶ ὡς ἄγρωστις. 28 Νῦν δὲ τὴν ἀνάπαυσίν σου, καὶ τὴν ἔξοδόν σου, 29 καὶ τὴν εἴσοδόν σου ἐγὼ ἐπίσταμαι. Ὁ δὲ θυμός σου ὃν ἐθυμώθης, καὶ ἡ πικρία σου ἀνέβη πρὸς μὲ, καὶ ἐμβαλῶ φιμὸν εἰς τὴν ῥῖνά σου, καὶ χαλινὸν εἰς τὰ χείλη σου, καὶ ἀποστρέψω σε 30 τῇ ὁδῷ ᾗ ἦλθες ἐν αὐτῇ. Τοῦτο δέ σοι τὸ σημεῖον· φάγε τοῦτον τὸν ἐνιαυτὸν ἃ ἔσπαρκας, (β) τῷ δὲ ἐνιαυτῷ τῷ δευτέρῳ τὸ κατάλειμμα, τῷ δὲ τρίτῳ σπείραντες (γ) ἀμήσατε, καὶ φυτεύσατε ἀμπελῶνας, καὶ φάγεσθε τὸν καρ- 31 πὸν αὐτῶν. Καὶ ἔσονται οἱ καταλελειμμένοι ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ, φυήσουσι ῥίζαν κάτω, καὶ ποι- 32 ήσουσι σπέρμα ἄνω· Ὅτι ἐξ Ἱερουσαλὴμ (δ) ἔσονται οἱ καταλελειμμένοι, καὶ οἱ σωζόμενοι (ε) ἐξ ὄρους Σιών. ὁ ζῆλος κυρίου σαβαὼθ 33 ποιήσει ταῦτα. Διατοῦτο οὕτως λέγει κύριος ἐπὶ βασιλέα Ἀσσυρίων, Οὐ μὴ εἰσέλθῃ εἰς τὴν πόλιν ταύτην, οὐδὲ μὴ βάλῃ ἐπ' αὐτὴν βέλος, οὐδὲ μὴ (ζ) ἐπιβάλῃ ἐπ' αὐτὴν θυρεὸν, (η) οὐδὲ μὴ κυκλώσῃ ἐπ' αὐτὴν χά- 34 ρακα· Ἀλλὰ τῇ ὁδῷ ᾗ ἦλθεν, ἐν αὐτῇ ἀποστραφήσεται, (θ) καὶ εἰς τὴν πόλιν ταύτην οὐ μὴ 35 εἰσέλθῃ· τάδε λέγει κύριος. Ὑπερασπιῶ ὑπὲρ τῆς πόλεως ταύτης τοῦ σῶσαι αὐτὴν 36 δι' ἐμὲ, καὶ διὰ Δαυὶδ τὸν παῖδά μου. Καὶ ἐξῆλθεν ἄγγελος κυρίου, καὶ ἀνεῖλεν ἐκ τῆς παρεμβολῆς τῶν Ἀσσυρίων ἑκατὸν (ι) ὀγδοήκοντα πέντε χιλιάδας· καὶ (κ) ἀναστάντες τοπρωῒ, εὗρον πάντα τὰ σώματα νεκρά.

MS. A. (ʹ) εἰς τὸν (ψ) ἀρχαίων ἡμερῶν (ω) ἐνοικοῦντας (α) χλωρὸς
ἀμήσουτε, (δ) ἐξελεύσονται (ε) ἐπ' ὄρους (ζ) βάλῃ (η) οὐδ' οὐ μὴ
γει κύριος. Ὑπερασπιῶ (ι) καὶ ὀγδοηκονταπέντε (κ) ἐξαναστάντες

Hoc est verbum, quod
est de eo Deus, V
subsannavit te, virgo fil
super te caput movit, fil
salem. Quem exprobrâst
isti? aut erga quem exal
cem tuā? Et non elevâsti
dinem oculos tuos ad Sanct
rael? Quia per nuntios exp
st Dominum. Tu enim d
Multitudine curruum ego a
di in altitudinem montium
in ultima Libani, & succid
titudinem cedri ejus, & p
tudinem cupressi, & intr
altitudinem partis silvæ: E
pontem : & desolavi aquas,
mnem congregationem aquæ
hæc audîsti, olim quæ ego
diebus antiquis constitui:
tem ostendi, desolare gente
nitionibus, & habitantes
tatibus munitis: Remisi ma
exaruerunt, et facti sunt q
num aridum super tecta,
gramen. Nunc autem requ
am, & exitum tuum, & int
tuum ego scio : Furor autem
quo furis, & amaritudo tu
dit ad me: & immittam c
in nasum tuum, et frænum
tui: & avertam te viâ, qua
sti in ea. Hoc au tibi sign
ede hoc anno, quæ semi
autem secu
autem sem
tate vineas
earū. Et er
pullulabun
facient sem
de Hierusalem (f) erunt
salvati de monte Sion. Z
mini Sabaoth faciet hoc. P
sic dicit Dominus super reg
Syriorum; Non ingredietur
tatem hanc, neque jaciet
gittam, neque immittet
scutum, neque circumdab
am vallum: Sed viâ, qua
ea revertetur: et in civitate
non ingredietur. Hæc dic
nus; Protegam pro civitate
salvandam eam propter me
pter David puerum meum
gressus est angelus Domi
cidit de castris Assyrioru
octuaginta quinque millia
gentes mane, invenerunt
corpora mortua.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 דין פתגמא די מליל יי עלוהי מבסרא עלך ממיקא עלך מלכות כנשתא דציון בתרך
23 רישיהון מנידין עמא דבירושלם : ית מן חסדתא וית מן אתרברבתא וקדם מן ארימתא
24 קלא וזקפתא לרומא עינך ואמרתא מלין דלא כשרין קדם קדישא דישראל : ביד עבדך
חסדתא עמא דיי ואמרתא בסגיאות רתיכי אנא סלקית לתקוף כרכיהון ואף איחוד
בית מקדשהון ואקטול שפר גבריהון מבחר שלטוניהון ואכבוש קרית תוקפהון ואשיצי
25 סגי משריתהון : אנא הויתי חפיר גובין ושתי מין וטפחית בפרסת רגלי עמא דעמי כל
26 מי נהרין עמיקין : הלא שמעתא מלקדמין מא עבדית לפרעה מלכא דמצרים ואף
עלך אתנביאו נביי ישראל ולא תבתא ודא חזיא קדמי מיומי קדם למעבד לך ואף
אתקנתה כען איתיתה ודא הות לך לתקלא על דהואה קדמך כאתרגושת גלין דשחו
27 קרוין כריכן : ויתביהון אתקצר חיליהון אתברו ובהיתו הוו כעשב חקלא וירוק דתאה
28 כעשב אגריא דשלוק עד לא מטא למהוי שובלין : ומתבך בעיצה ומפקך לברא לאגחא
29 קרבא ומיתיך לארעא דישראל גלי קדמי וית דארגזתא קדמי גלי : חלף דארגזתא על
מימרי ואתרגושתך סליקת לקדמי ואשוי שירין בליסתך וזמם בספותך ואתבנך
30 באורחא דאתיתא בה : ודין לך אתא אכול בשתא הדא כתין ובשתא תניתא כחכתין
31 ובשתא תליתאה זרעו וחצודו וצובו כרמין ואכולו אבהן : ויספון משיזביא דבית יהודה
32 דאשתארון כאילן דמשלח שורשוהי מלרע ומרים נופיה לעלא : ארי מירושלם יפקון
שאר צדיקיא ושיזבת מקימי אוריתא מטורא דציון במימרא דיי צבאות תתעביד דא :
33 בכן כדנן אמר יי על מלכא דאתור לא יעול לקרתא הדא ולא יקשת תמן גיר ולא
34 יקדמנה בתריסין ולא יצבור עלה מליתא : באורחא דאתא בה יתוב ולקרתא הדא לא
35 יעול אמר יי : ואגין על קרתא הדא למפרקה בדיל מימרי ובדיל דוד עבדי : ונפק
36 מלאכא דיי וקטל במשרית אתוראה מאה ותמנן וחמשא אלפין ואקדימו בצפרא והא
כולהון פגרין מתין :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Hoc est verbū quod decrevit Dñs sup eū: despexit te, *subsannav*
cœtus Sion : post te capita sua moverunt, popule qui habitas in
lem. Cui exprobrâsti, & super quem magnificat⁹ es, & contra que
listi vocem ? & sustulisti in excelsum oculos tuos; & dixisti verba
sunt recta coram sancto Israel ? In manu servorum tuorum exprob
pulo Dñi, & dixisti : Cum multitudine quadrigarum mearū ego a
in munitionem civitatū eorum, & insuper capiam domū sanctuar
& occidam pulcherrimos inter fortes eorū, & electos principes eo
subjiciam civitatē fortitudinis eorū; & consumam multitudinem
eorū. Ego fodi cisternas, & bibi aquas; & conculcavi vestigiis pe
qui mecum est, omnes aquas fluminū profundorū. Nonne olim au
fecerim Pharaoni, regi Ægypti? etiā de te prophetaverunt prophe
& non egisti pœnitentiā; & hoc visum est ante me à dieb⁹ antiquis
rem tibi : & etiā præparavi illud; & nunc adduxi illud : & hoc
ruinā, eò quòd facta sint corā te, sicut tumult⁹ fluctuū, quo hu
civitates munitæ. Et habitatorū ejus virt⁹ abbreviata est, con
confusi, facti sunt sicut herba agri, & sicut ol⁹ viride, quasi fœn
quòd *uredine tangitur* antequā perveniat ad spicā. Et sessio tua
& egressus tu⁹ *foras* ad pugnandū; & introit⁹ tu⁹ in terrā Israel
sunt corā me: & quòd provocâris me ad irā, coram me manifestū
quòd provocâsti contra verbū meū, & tumult⁹ tuus ascendit in
meo; ponam armillas in maxilla tua, & frænū in labiis tuis, & red
viam qua venisti. Et hoc tibi erit signū, Comede hoc anno quæ
scuntur, & in anno secundo ꝙ ex illis renascitur; & in anno tertio
& metite, & plantate vineas, & comedite fructū eorū. Et adden
rati fuerint de domo Juda, & qui remanserint, sicut arbor, quæ mi
deorsū, & elevantur rami ej⁹ sursum. Quoniā de Hierusalem e
reliqui justi, & erepti confirmantes legē de monte Sion. In verbo
cituū fiet hoc. Propterea hæc dicit Dñs sup regē Assyriæ, Non
vitatē hanc, & non jaciet ibi sagittam, & non occupabit eā cl
congereret contra eā aggerē Per viā qua venit, ꝑ eā revertetur
hanc non ingredietur, dicit Dñs, Et protegam civitatē hanc,
propter verbū meum, & propter David servum meum. Et egr
gelus Dñi , & interfecit in castris *Assyrii* centum & octo
millia ; & surrexerunt manè, & ecce omnes erant cadavera

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܢܐ ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ ܥܠܘܗܝ ܡܪܝܐ. ܫܛܬܟܝ ܘܓܚܟܬ ܒܟܝ ܒܬܘܠܬܐ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ܂
ܘܡܢܝܕܐ ܪܝܫܗ ܒܬܪܟܝ ܒܪܬ ܐܘܪܫܠܡ. * ܠܡܢ ܚܣܕܬ ܘܓܕܦܬ. ܘܥܠ ܡܢ ܐܪܝܡܬ ܩܠܟ܂ 23
ܘܐܪܝܡܬ ܒܪܘܡܐ ܥܝܢܝܟ ܥܠ ܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܒܝܕ ܐܝܙܓܕܝܟ ܚܣܕܬ ܠܡܪܝܐ 24
ܘܐܡܪܬ. ܒܣܘܓܐ ܕܡܪܟܒܬܝ ܐܢܐ ܐܣܩ ܠܪܘܡܐ ܕܛܘܪܐ. ܘܠܫܘܦܠܘܗܝ ܕܠܒܢܢ܂
ܘܐܦܣܘܩ ܪܘܡܐ ܕܐܪܙܘܗܝ. ܘܓܒܝܐ ܕܒܪܘܬܘܗܝ. ܘܐܥܘܠ ܠܪܘܡܐ ܕܫܘܦܗ ܕܚܘܪܫܐ
ܕܟܪܡܠ. * ܐܢܐ ܐܚܦܘܪ ܘܐܫܬܐ ܡܝܐ. ܘܐܚܪܒ ܒܦܪܣܬܐ ܕܪܟܫܝ. ܟܠܗܘܢ ܢܗܪܘܬܐ 25
ܚܣܝܢܐ. * ܠܐ ܫܡܥܬ ܕܡܢ ܪܘܚܩܐ ܥܒܕܬܗ: ܘܡܢ ܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ: ܒܪܝܬܗ. 26
ܘܗܫܐ ܐܝܬܝܬܗ ܕܬܗܘܐ ܠܫܘܪܒܐ ܘܚܘܪܒܐ: ܐܝܟ ܡܕܝܢܬܐ ܚܣܝܢܬܐ. * ܕܥܡܘܪܝܗܝܢ 27
ܪܦܝܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܐܬܬܒܪܘ ܘܒܗܬܘ: ܘܗܘܘ ܐܝܟ ܥܣܒܐ ܕܚܩܠܐ. ܘܐܝܟ ܝܘܪܩܐ ܕܬܐܐ:
ܘܐܝܟ ܫܒܠܐ ܕܐܓܪܐ. ܘܐܝܟ ܛܪܦܐ ܕܚܛܐ ܩܕܡ ܕܢܫܒܠ. * ܘܡܘܬܒܟ ܘܡܥܠܟ ܘܡܦܩܟ 28
ܝܕܥ ܐܢܐ. ܘܕܐܬܡܪܚܬ ܥܠܝ. * ܡܛܠ ܕܐܬܡܪܚܬ ܥܠܝ. ܘܓܘܕܦܟ ܣܠܩ ܠܐܕܢܝ. ܐܪܡܐ ܚܟܐ 29
ܒܢܚܝܪܝܟ. ܘܡܚܟܡܐ ܒܣܦܘܬܟ. ܘܐܗܦܟܟ ܒܐܘܪܚܐ ܕܐܬܝܬ ܒܗ. * ܘܗܢܐ ܠܟ ܐܬܐ. ܐܟܘܠ 30
ܥܠܠܬܐ ܗܕܐ ܫܢܬܐ. ܘܥܠܠܬܐ ܠܫܢܬܐ ܕܬܪܬܝܢ. ܒܫܢܬܐ ܕܬܠܬ ܙܪܘܥܘ ܐܢܬܘܢ. ܘܚܨܘܕܘ
ܐܢܬܘܢ. ܘܢܨܒܘ ܐܢܬܘܢ ܟܪܡܐ. ܘܐܟܘܠܘ ܐܢܬܘܢ ܦܐܪܝܗܘܢ. * ܘܢܫܬܘܙܒܘܢ ܫܪܟܐ ܕܒܝܬ 31
ܝܗܘܕܐ ܕܐܫܬܚܪܘ. ܐܝܟ ܥܩܪܐ ܕܠܬܚܬ ܘܥܒܕ ܦܐܪܐ ܠܥܠ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܐܘܪܫܠܡ 32
ܢܦܩܘܢ ܫܪܟܢܐ. ܘܡܫܬܘܙܒܝܢ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܛܢܢܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܢܥܒܕ ܗܕܐ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܠܐ ܢܥܘܠ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܠܐ ܢܫܕܐ ܬܡܢ 33
ܓܐܪܐ. ܘܠܐ ܢܩܕܡܝܗ ܒܣܟܪܐ. ܘܠܐ ܢܣܝܡ ܥܠܝܗ ܟܡܝܢܐ. * ܐܠܐ ܒܐܘܪܚܐ ܕܐܬܐ ܒܗ ܢܗܦܘܟ. 34
ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܠܐ ܢܥܘܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܓܢ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܘܐܦܨܝܗ. ܡܛܠܬܝ 35
ܘܡܛܠ ܕܘܝܕ ܥܒܕܝ. * ܘܢܦܩ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܩܛܠ ܒܡܫܪܝܬܗ ܕܐܬܘܪܝܐ. ܡܐܐ 36
ܘܬܡܢܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܩܡܘ ܒܨܦܪܐ. ܘܗܐ ܟܠܗܘܢ ܦܓܪܐ ܡܝܬܐ.

Hæc eſt ſententia quam protulit in eum Dn̄s, 22
Contemnit ridétque te virgo filia Sionis, movétque poſt te caput ſuum filia Jeruſalem.
Quemnam contumeliis & blaſphemiis affe- 23
ciſti? & contra quem extuliſti vocem tuam?
Extuliſti oculos tuos in altū contra Sanctum
Iſraelis, Et per legatos tuos convitiatus es Do- 24
mino, & dixiſti, Multitudine curruum meorū
conſcendam ego ſummitatem montium, & radices Libani, præcidámque proceras cedros
ejus & lectiſſimas abietes ejus; penetrabo
etiam uſque ad ſummam extremitatem ſaltûs
Charmeli. Ego effodiam ut bibam aquas; 25
nam ungulis equorū meorū exiccabo flumina
quæque *vel* maxima. Annon audiſti quòd 26
jampridem fecerim eam, *(i. Jeruſalem,)* & à
priſcis diebus condiderim eam? & nunc adducerem eam ut ſit in vaſtam ſolitudinem
inſtar magnarū urbium illarū, In quibus ci- 27
ves remittentes manus confracti ſunt et pudore ſuffuſi; factíque ſunt velut herba campi, ut
olus viride, ut ſpica tecti, & ut folia tritici antequam in culmū aſſurgat. Seſſionem tuā, & 28
ingreſſum egreſſúmq; tuū ego novi, & quòd
impudenter te geſſeris corā me. Quoniam in- 29
ſolenter egiſti coram me, & blaſphemia tua
aſcendit ad aures meas, injiciam hamum in
nares tuas, & fiſcellā in labia tua, reducámq;
te per viā per quam veniſti. Illud autem eſto 30
tibi *hujus rei* ſignum: comedes anno præſenti
frumentū ſponte naſcens, anno ſequenti ſponte renaſcens, anno verò tertio ſeretis ac metetis, plantabitis vineas & comedetis fructus
earū. Et evadent reſidui domûs Judæ qui ſu- 31
perfuerint, veluti radix quæ *licèt* ſit infernè
dejecta, ſupernè tamen fructus edit: Nam è Je- 32
ruſalem prodibunt reliquiæ, & è monte Sion
eripientur: zelus Dn̄i potentiſſimi id efficiet.
Propterea ſic dicit Dn̄s de rege Aſſyriæ; Non 33
eſt ingreſſurus in hanc civitatē, neq; jactaturus huc ſagittā, nec obvius illi venturus cum
clypeis, nec inſidias contra eā poſiturus. Sed 34
per viā quâ venit, per eandē reverſurus eſt, &
in civitatē iſtā nequaquā ingreſſurus, ait Dn̄s.
Nam protegam civitatē iſtā, & eripiam eam, 35
propter me, & propter Davidem ſervum meum. Egreſſus itaque angelus Domini trucida- 36
vit in caſtris Aſſyrii centum octoginta quinque millia *hominum*: cúmq; mane præterverti ſſent, ecce erant omnes cadavera mortua,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هذا القول الذي تكلم الله به عليه * دحضتك وهزيت بك العذري الابنة صهيون * 22
حركت راسها عليك الابنة ايروسليم * لمن عيرت واجدفت * او على من رفعت صوتك ولم 23
ترفع عينيك الى العلي الى قدوس اسرايل * لان برسل عيرت الرب. لانك قلت انا اصعد 24
بكثرة المراكب الى علو الجبال والى اواخر لبنان * وقطعت ارتفاع ارزه وحسن سروه *
ودخلت الى علو ناحية الغاب * ووضعت جسرا واخربت المياه وكل مجمع ماء * اما سمعت هذا 25 26
قديما التي انا صنعتها منذ الايام الاولى * جلبتها عليك * والان رايت ان اخرب الامم في الحصون
والسكان في المدن الحصينة * وضعت يدي خربوا * وصاروا مثل عشب يابس على الاسطحة * 27
ومثل نخيل * والان راحتك وخروجك ومدخلك انا اعرفهم * وغضبك الذي تفكر به 28
* ومرارتك صعدت الي * واضع خزاما في انفك ولجاما في شفتيك * واردك في الطريق التي جيت 29
فيها * وهذه العلامة لك. كل هذه السنة ما زرعت وفي السنة الثانية البقية * وفي الثالثة ازرعوا 30
واحصدوا * واغرسوا كروما وكلوا ثمرها * ويكون المبقيون في اليهودية يفرعون اصلا 31
اسفل * ويصنعون ثمرا فوق * لان من ايروسليم يكون المبقيون * والمخلصون على جبل 32
صهيون * غيرة رب الجيوش تفعل هذا * لاجل هذا هكذا يقول الرب على ملك الموصليين 33
لا يدخل الى هذه المدينة * ولا يرمي عليها سهما * ولا يلقي عليها ترسا ولا يحط عليها
سياجا * لكن في الطريق التي جاء بها فيها يعود * والى هذه المدينة لا يدخل. قال الرب * 34
* واظلل على هذه المدينة لاخلصها من اجلي ومن اجل داود عبدي * وخرج ملاك 35
الرب وقتل من عسكر الموصليين مائة الف وخمسة وثمانين الفا * فقاموا بالغداة فوجدوا
جميع الاجساد ميتة *

* *Hic eſt ſermo quem de ipſo locutus eſt* 22
*Deus: Te dedignatur téque deridet virgo
filia Sion, motat ſuper te caput ſuum filia
Jeruſalem. In quem convitia vomis, ac* 23
*furis? aut contra quem extollis vocem tuam, nec attollis oculos tuos in ſublime ad
Sanctum Iſraelis; Quòd per legatos con-* 24
*vitia vomis contra Dominum? Ego enim,
inquis, cum aurigarum copia ſuperabo cacumina montium & extrema Libani, altiſſimas cedros ejus & pulcherrimas cupreſſos ejus amputabo, & ad penitiſſimum
ſylvarum latus penetrabo: Pontem po-* 25
*nam, aquas & omnes aquarum congeries
vaſtabo. An non illud jam olim audi-* 26
*viſti, quod ego feci inde à priſcis diebus?
illud adduxi contra te, jámque decrevi
gentes in arcibus deſtruere, & cives in
urbibus munitis. Admovebo manum me-* 27
*am, & deſtruentur, fientque ſi ut herba
aridi ſuper tecta, & ut folia ſicca. Et* 28
*nunc, quietem tuam, & tuum excundi
atque intrandi locum ego cognoſco: et furor quem meditaris, Nec non fel tuum* 29
*aſcenderunt ad me. Hamum injiciam in
naſum tuum, & frænum in labia tua, &
reducam te per viam per quam veniſti.
Hoc autem ſit tibi ſignum: Comede hoc* 30
*anno quod ſerueris, anno ſecundo reſiduum, tertio verò ſerite & metite, plantate
vineas et comedite fructum earum. Qui* 31
reliqui fuerint in Judæa, deorſum radices emittent, ſurſum verò fructum producent. Nam ex Jeruſalem erunt reſi- 32
*dui; & qui ſe eripuerint, ſuper montem
Sion: æmulatio Domini exercituum eſt id
effectura. Quapropter ita dicit Domi-* 33
*nus de rege Aſſyriorum; Nequaquam ingredietur hanc urbem, neque ſagittam jaculabitur in eam; clypeum non jaciet in
eum, neque cinget eam vallo: Sed viâ* 34
*quâ venit, eâdem redibit: hanc autem
urbem nequaquam ingredietur, ait Dominus. Nam protegam urbem iſtam, ut* 35
eripiam eam propter me & propter Davidem ſervum meum. Itaque egreſſus 36
*angelus Domini trucidavit ex Aſſyriorum
copiis centum millia & octoginta quinque millia: & manè ſurgentes corpora
omnia mortua repererunt.*

habitavit & , Aſſur rex Sancherib eſt reverſus &, abiit &, eſt profect⁹ Et
37 וַיִּסַּע וַיֵּלֶךְ וַיָּשָׁב סַנְחֵרִיב מֶלֶךְ־אַשּׁוּר וַיֵּשֶׁב
, ſuum Deum Niſroch domo *ſe incurvante* eo fuit Et .Nineveh in
38 בְּנִינְוֵה׃ וַיְהִי הוּא מִשְׁתַּחֲוֶה בֵּית נִסְרֹךְ אֱלֹהָיו
ipſi & , gladio in eum percuſſerunt ejus filii Sareſer & , Adramelech &
וְאַדְרַמֶּלֶךְ וְשַׂרְאֶצֶר בָּנָיו הִכֻּהוּ בַחֶרֶב וְהֵמָּה
.eo pro ejus filius Chaddon-Eſar regnavit & : Ararath terra evaſerunt
נִמְלְטוּ אֶרֶץ אֲרָרָט וַיִּמְלֹךְ אֵסַר־חַדֹּן בְּנוֹ תַּחְתָּיו׃

CAP. XXXVIII. לח

eum ad venit & :moriendum ad Chizchijahu ægrotavit illis diebus In
1 בַּיָּמִים הָהֵם חָלָה חִזְקִיָּהוּ לָמוּת וַיָּבוֹא אֵלָיו
, Dominus dixit Sic , eum ad dixitque , prophetæ Amos filius Jeſahjahu
יְשַׁעְיָהוּ בֶן־אָמוֹץ הַנָּבִיא וַיֹּאמֶר אֵלָיו כֹּה־אָמַר יְהוָה
convertit Et .vives non & , tu *mortuus* quia , tuæ domui præcipe
2 צַו לְבֵיתֶךָ כִּי מֵת אַתָּה וְלֹא תִחְיֶה׃ וַיַּסֵּב
, dixit Et .Dominum ad oravit & : parietem ad *ſuas facies* Chizchijahu
3 חִזְקִיָּהוּ פָּנָיו אֶל־הַקִּיר וַיִּתְפַּלֵּל אֶל־יְהוָה׃ וַיֹּאמַר
tuas facies ad ambulaverim quòd , quæſo memento Domine Obſecro
אָנָּה יְהוָה זְכָר־נָא אֵת אֲשֶׁר הִתְהַלַּכְתִּי לְפָנֶיךָ
flevit & : fecerim tuis oculis in bonum & , perfecto corde in & , veritate in
בֶּאֱמֶת וּבְלֵב שָׁלֵם וְהַטּוֹב בְּעֵינֶיךָ עָשִׂיתִי וַיֵּבְךְּ
, Jeſajahu ad Domini verbum fuit Et .magno fletu Chizchijahu
4 חִזְקִיָּהוּ בְּכִי גָדוֹל׃ וַיְהִי דְּבַר־יְהוָה אֶל־יְשַׁעְיָהוּ
Dominus dixit Sic , Chizchijahu ad *dices* & , Vade : dicendo
5 לֵאמֹר׃ הָלוֹךְ וְאָמַרְתָּ אֶל־חִזְקִיָּהוּ כֹּה־אָמַר יְהוָה
vidi , tuam orationem audivi : tui patris David Deus
אֱלֹהֵי דָּוִד אָבִיךָ שָׁמַעְתִּי אֶת־תְּפִלָּתֶךָ רָאִיתִי אֶת־
.annos quindecim tuis diebus *ſuper addens* ego ecce : *tuam lachrymam*
דִּמְעָתֶךָ הִנְנִי יוֹסִף עַל־יָמֶיךָ חֲמֵשׁ עֶשְׂרֵה שָׁנָה׃
protegam & : hanc civitatem & , te eruam Aſſur regis *vola* de Et
6 וּמִכַּף מֶלֶךְ־אַשּׁוּר אַצִּילְךָ וְאֵת הָעִיר הַזֹּאת וְגַנּוֹתִי
quod , Domino à ſignum tibi hoc Et .hanc civitatem *ſuper*
7 עַל־הָעִיר הַזֹּאת׃ וְזֶה־לְּךָ הָאוֹת מֵאֵת יְהוָה אֲשֶׁר
ego Ecce .eſt locutus quod hoc verbum Dominus ſit facturus
8 יַעֲשֶׂה יְהוָה אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה אֲשֶׁר דִּבֵּר׃ הִנְנִי
gradus per deſcendit quæ graduum umbram *faciens* reverti
מֵשִׁיב אֶת־צֵל הַמַּעֲלוֹת אֲשֶׁר יָרְדָה בְמַעֲלוֹת
ſol eſt reverſus & : gradibus decem retrorſum ſole in Achaz
אָחָז בַּשֶּׁמֶשׁ אֲחֹרַנִּית עֶשֶׂר מַעֲלוֹת וַתָּשָׁב הַשֶּׁמֶשׁ
Chizchijahu Scriptura .deſcenderat quos gradus *per* gradibus decem
9 עֶשֶׂר מַעֲלוֹת בַּמַּעֲלוֹת אֲשֶׁר יָרָדָה׃ מִכְתָּב לְחִזְקִיָּהוּ
, dixi Ego .*ſua ægritudine de revixiſſet & , ipſum ægrotando in*, Jehudah regis
10 מֶלֶךְ־יְהוּדָה בַּחֲלֹתוֹ וַיְחִי מֵחָלְיוֹ׃ אֲנִי אָמַרְתִּי
ſum privatus : ſepulchri portas ad vadam meorum dierum exciſione In
בִּדְמִי יָמַי אֵלֵכָה בְּשַׁעֲרֵי שְׁאוֹל פֻּקַּדְתִּי
, *Jah* videbo Non , Dixi .meorum annorum reſiduo
11 יֶתֶר שְׁנוֹתָי׃ אָמַרְתִּי לֹא־אֶרְאֶה יָהּ
cum ultrà hominem aſpiciam non : viventium terra in *Jah*
יָהּ בְּאֶרֶץ הַחַיִּים לֹא־אַבִּיט אָדָם עוֹד עִם־
me à migravit & *eſt projectum* meus Incolatus .*temporis* habitatoribus
12 יוֹשְׁבֵי חָדֶל׃ דּוֹרִי נִסַּע וְנִגְלָה מִנִּי
attenuatione ab , *meam vitam* texens velut præcidi : paſtoris *tentorium* veluti
כְּאֹהֶל רֹעִי קִפַּדְתִּי כָאֹרֵג חַיַּי מִדַּלָּה
Poſui .me conſumes noctem ad uſque die à : me concidet
13 יְבַצְּעֵנִי מִיּוֹם עַד־לַיְלָה תַּשְׁלִימֵנִי׃ שִׁוִּיתִי
die à : mea oſſa omnia conterebat ſic , leo ſicut mane ad uſque
עַד־בֹּקֶר כָּאֲרִי כֵּן יְשַׁבֵּר כָּל־עַצְמוֹתָי מִיּוֹם
.me *conficies* noctem ad uſque
עַד־לַיְלָה תַּשְׁלִימֵנִי׃

Verſio VULG. LAT.

37 Et egreſſus eſt, & abiit, & reverſus eſt Sennacherib rex Aſſyriorum, & habitavit in Ninive. 38 Et factum eſt, cùm adoraret in templo Neſroch deum ſuum, Adramelech & Saraſar filii ejus percuſſerunt eum gladio: fugerúntque in terram Ararat, & regnavit Aſarhaddon filius ejus pro eo.

CAP. XXXVIII.

1 IN diebus illis ægrotavit Ezechias uſque ad mortem: & introivit ad eum Iſaias fili⁹ Amos propheta, & dixit ei; Hæc dicit Dominus; Diſpone domui tuæ, quia morieris tu, & non vives. 2 Et convertit Ezechias faciem ſuam ad parietem, & oravit ad Dominum, 3 Et dixit; Obſecro, Domine, memento, quæſo, quomodò ambulaverim coram te in veritate, & in corde perfecto, & quod bonum eſt in oculis tuis fecerim. Et 4 flevit Ezechias fletu magno. Et factum eſt verbum Domini ad 5 Iſaiam, dicens; Vade, & dic Ezechiæ, Hæc dicit Dominus Deus David patris tui; Audivi orationem tuam, & vidi lachrymas tuas: ecce ego adjiciam ſuper dies tuos quindecim annos: 6 Et de manu regis Aſſyriorum eruam te, & civitatem iſtam, & protegam eam. 7 Hoc autem tibi erit ſignum à Domino, quia faciet Dominus verbum hoc, quod locutus eſt: 8 Ecce ego reverti faciam umbram linearum, per quas deſcenderat in horologio Achaz in Sole, retrorſum decem lineis. Et reverſus eſt Sol decem lineis per gradus, quos deſcenderat. 9 Scriptura Ezechiæ regis Juda cùm ægrotaſſet, & convaluiſſet de infirmitate ſua. 10 Ego dixi; In dimidio dierum meorum vadam ad portas inferi. Quæſivi reſiduum annorum meorum. 11 Dixi; Non videbo Dominum Deum in terra viventium. Non aſpiciam hominem ultrà, & habitatorem quietis. 12 Generatio mea ablata eſt, & convoluta eſt à me, quaſi tabernaculum paſtorum. Præciſa eſt velut à texente, vita mea: dum adhuc ordirer, ſuccidit me: de manè uſque ad veſperam finies me. 13 Sperabā uſque ad manè, quaſi leo ſic contrivit omnia oſſa mea: De manè uſque ad veſperam finies me:

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

37 Καὶ (λ) ἀπῆλθεν ἀποστραφεὶς Σενναχηρεὶμ βασιλεὺς Ἀσσυρίων, ϗ ᾤκησεν ἐν Νινευῆ. 38 Καὶ ἐν τῷ αὐτὸν προσκυνεῖν (μ) ἐν τῷ οἴκῳ Νασαρὰχ τὸν πάτραρχον αὐτοῦ, Ἀδραμέλεχ ϗ (ν) Σαρασὰρ οἱ υἱοὶ αὐτοῦ ἐπάταξαν αὐτὸν μαχαίραις, αὐτοὶ δὲ διεσώθησαν εἰς Ἀρμενίαν, ϗ ἐβασίλευσεν Ἀσορδὰν ὁ υἱὸς αὐτοῦ ἀντ᾽ αὐτοῦ.

ΚΕΦ. λη΄.

1 Ἐγένετο δὲ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ἐμαλακίσθη Ἐζεκίας ἕως θανάτου. ϗ ἦλθε πρὸς αὐτὸν Ἡσαΐας υἱὸς Ἀμὼς ὁ προφήτης, ϗ εἶπε πρὸς αὐτὸν, Τάδε λέγει κύριος, Τάξαι περὶ τοῦ οἴκου σου, (α) ἀποθνήσκεις γὰρ σὺ, 2 ϗ οὐ ζήσῃ. Καὶ ἀπέστρεψεν Ἐζεκίας τὸ πρόσωπον αὐτοῦ πρὸς τὸν τοῖχον, ϗ προσηύξατο πρὸς κύριον, 3 Λέγων, Μνήσθητι κύριε, ὡς ἐπορεύθην ἐνώπιόν σου μετὰ ἀληθείας, ἐν καρδίᾳ ἀληθινῇ, ϗ τὰ ἀρεστὰ ἐνώπιόν σου ἐποίησα. ϗ ἔκλαυσεν Ἐζεκίας κλαυθμῷ 4 μεγάλῳ. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς 5 Ἡσαΐαν, λέγων, (β) Πορεύθητι, ϗ εἰπὸν Ἐζεκίᾳ, Τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Δαυὶδ τοῦ πατρός σου, Ἤκουσα (γ) τῆς προσευχῆς σου, ϗ εἶδον τὰ δάκρυά σου· ἰδοὺ προστίθημι πρὸς τὸν χρόνον σου (δ) δεκαπέντε ἔτη, 6 Καὶ ἐκ χειρὸς βασιλέως Ἀσσυρίων (ε) ῥύσομαί σε ϗ τὴν πόλιν ταύτην, ϗ ὑπερασπιῶ 7 ὑπὲρ τῆς πόλεως ταύτης. Τοῦτο δέ σοι τὸ σημεῖον παρὰ κυρίου, ὅτι (ζ) ποιήσει ὁ θεὸς 8 τὸ ῥῆμα τοῦτο· Ἰδοὺ (η) ἐγὼ στρέψω τὴν σκιὰν τῶν ἀναβαθμῶν οὓς κατέβη (θ) τοὺς δέκα ἀναβαθμοὺς τοῦ οἴκου τοῦ πατρός σου ὁ ἥλιος, ἀποστρέψω τὸν ἥλιον τοὺς δέκα ἀναβαθμούς. ϗ ἀνέβη ὁ ἥλιος τοὺς δέκα ἀναβαθμοὺς, οὓς κατέβη ἡ σκιά.

9 (*)ΠΡΟΣΕΥΧΗ ἘΖΕΚΙΟΥ ΒΑΣΙΛΕΩΣ ΤΗΣ ἸΟΥΔΑΙΑΣ, ἩΝΙΚΑ ἘΜΑΛΑΚΙΣΘΗ, ΚΑΙ ἈΝΕΣΤΗ ἘΚ ΤΗΣ ΜΑΛΑΚΙΑΣ ΑΥΤΟΥ.

10 † Ἐγὼ εἶπα ἐν τῷ ὕψει τῶν ἡμερῶν (*) μου, Πορεύσομαι ἐν πύλαις ᾅδου, καταλείψω τὰ 11 ἔτη τὰ ἐπίλοιπα. † Εἶπα, Οὐκέτι οὐ μὴ ἴδω τὸ σωτήριον τοῦ θεοῦ (ι) ἐπὶ γῆς ζώντων, † οὐκέτι μὴ ἴδω τὸ σωτήριον τοῦ Ἰσραὴλ ἐπὶ γῆς, οὐκέτι μὴ ἴδω ἄνθρωπον. 12 Ἐξέλιπεν ἐκ τῆς συγγενείας μου, † κατέλιπον (κ) τὸ ἐπίλοιπον τῆς ζωῆς μου, ἐξῆλθε ϗ ἀπῆλθεν ἀπ᾽ ἐμοῦ ὥσπερ (λ) ὁ σκηνὴν καταλύων πήξας· † ὡς ἱστὸς τὸ πνεῦμά μου 13 παρ᾽ ἐμοὶ ἐγένετο, ἐρίθου ἐγγιζούσης ἐκτεμεῖν. † Ἐν τῇ ἡμέρᾳ
δόθην ἕως πρωῒ ὡς λέοντι, (μ) οὕτως συνέτριψε πάντα τὰ
† ἀπὸ γὰρ τῆς ἡμέρας ἕως (ν) νυκτὸς παρεδόθην.

MS.A. (λ) ἀποστραφεὶς ἀπῆλθεν βασιλεὺς Ἀσσυρίων, (μ) ἐν
ρὰχ (ν) Σαρασὰ υἱοὶ Κεφ. λη΄. MS.A. (α) ὅτι ἀποθνήσκεις
ρεύου, ϗ εἰπὸν πρὸς Ἐζεκίαν, (γ) τῆς φωνῆς τῆς προσευχῆς
δεκαπέντε, (ε) σώσω σε, ϗ ὑπὲρ τῆς πόλεως ταύτης ὑπερασπιῶ
ποιήσει (η) στρέψω (θ) ὁ ἥλιος τοὺς δέκα ἀναβαθμοὺς τοῦ
σου, (*) ΩΔΗ. (*) μου, Ἐν πύλαις (ι) ἐπὶ τῆς γῆς, οὐκέτι οὐ μὴ ἴδω
ἐκ τῆς συγγενείας μου, (κ) τὸ λοιπὸν (λ) ὁ καταλύων σκηνὴν
πνεῦμά μου παρ᾽ ἐμοὶ ἐγένετο ὡς ἱστὸς, *ἐρίθου ἐγγιζούσης (μ)
μου συνέτριψεν· (ν) τῆς νυκτὸς

Et abiit reverſus Sen
Aſſyriorum, & habi
neve: Et, cùm ipſe ad
mo (z) Naſarach
ſuum; Adramelech &
lii ejus percuſſerunt
ipſi autem ſalvati ſu
niam: & regnavit A
ejus pro eo.

CAP. XXX

FActum eſt autem in
lo, ægrotavit Ezecias
ad mortem. Et veni
ſaias filius Amos,
dixit ad eum; Hæc d
Diſpone de domo tua
nim tu, & non vives.
tit Ezecias faciem ſuam
tem, & oravit ad Dom
cens; Memento, Domine
ambulaverim coram te
tate, in corde vero, &
ram te fecerim. Et plora
cias ploratione magnâ. E
eſt verbum Domini ad E
cens; Vade, & dic Ezec
dicit Dominus Deus Da
tui; Audivi orationem tu
vidi lachrymas tuas:
ad tempus tuum quindecim
Et de manu regis Aſſyrio
am te, & civitatem hanc
tegam ſuper civitatem hanc
autem tibi ſignum à Domino
faciet Deus verbum hoc. E
vertam umbram gradu
deſcendit decem grad⁹ do
tris tui Sol: redire faciam
decem grad⁹. Et aſcendit
gradus quos deſcenderat
(b) ORATIO EZEC
JUDÆÆ, QUANDO
GUIT ET SURREXIT
FIRMITATE SUA.

EGo dixi in (c) excelſo
meorum: (d) Vadam
us inferi: relinquam an
duos. Dixi; Nequaquam
debo ſalutare
tii, nec videbo ultrà ſalutare
ſup terrâ,
minem. Defecit ex cognatione
dereliqui reſiduum vitæ
ivit, & receſſit à me
culum ſolvens, qui fixit
la, ſpiritus meus apud
eſt, texente appropinquante
cidendum. In illa die
uſque manè, ſicut (f) leoni
trivit omnia oſſa mea.
uſque ad noctem tradi
† Ἐν τῇ ἡμέρᾳ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

37 ונטל ואזל ותב סנחריב מלכא דאתור ויתיב בנינוה׃ והוה הוא סגיד בית נסרוך
38 טעותיה ואדרמלך ושראצר בנוהי קטלוהי בחרבא ואנון אשתיזבו לארעא קרדו ומלך
אסרחדון בריה תחותוהי׃

לח

1 ביומיא האנון מרע חזקיה לממת ואתא לותיה ישעיהו בר אמוץ נביא ואמר ליה כדנן
2 אמר יי פקד על אנש ביתך ארי מאת את ולא תחי ממרעך׃ ואסחר חזקיהו אפוהי לכותל
3 בית מקדשא וצלי קדם יי׃ ואמר קבל בעותי יי אדכר כען ית די פלחית קדמך בקשוט
4 ובלב שלם ודתקין בעינך עבדית ובכא חזקיה בכיא סגיאה׃ והוה פתגמי נבואה מן
5 קדם יי עם ישעיה למימר׃ איזיל ותימר לחזקיה כדנן אמר יי אלהיה דדוד אבוך שמיע
6 קדמי צלותך גלי קדמי דמעתך הא אנא מוסיף על יומך חמש עסרי שנין׃ ומיד מלכא
7 דאתור אשזבנך וית קרתא הדא ואגין על קרתא הדא׃ ודין לך אתא מן קדם יי דיעביד
8 יי ית פתגמא הדין די מלל׃ הא אנא מתיב ית טול אבן שעיא דנחתת במסקנא דאחז
9 שמשא לאחורוהי עסר שעין ותב שמשא עסר שעין בצירת אבן שעיא דנחתת׃ כתב
אודאה על נסא דאתעבד לחזקיהו מלך שבטא דבית יהודה כד מרע ואתסי ממרעיה׃
10 11 אנא אמרית בדון יומי אהך בתרעי שאול על דכרני לטב אתוסף על שני׃ אמרית לא
אתחזי עוד קדם דחילא דיי בארעא בית שכנתיה די בה אריכות חיא ולא אפלח
קדמוהי עוד בבית מקדשא דמתמן עתיד למפק חדוא לכל יתבי ארעא מלמדר
12 בירושלם קרתא דקודשא מדורי פסק׃ מבני דרי אתנטילו יומי אתקציצו וגלו מני
אתכפילו כמשכנא דרעי אתקפדו כנול גרדאין דיי מיקר מלכותי אנא גלי יומי ולילותי
13 שלימו׃ נהמית עד צפרא כאריא דנהים ותבר גרמי חיותא כן מתברין מן קדם רונא
כל גרמי יומי ולילותי שלימו׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Et profectus eſt, & abiit; & reverſus eſt Senacherib rex Aſſyriæ, &
tavit in Ninive. Et factum eſt cùm adoraret in domo Neſroch
Adramelech & Saraſſer filii ſui occiderunt eum gladio: & ipſi
in terram Armeniæ. Et regnavit Aſſaradon filius ejus pro eo.

CAP. XXXVIII.

IN diebus illis ægrotavit Ezechias uſque ad mortem: & venit
Eſaias filius Amos, propheta; & dixit ei: Hæc dicit Dñs, Præcipe
domus tuæ, quia morieris, & non vives ab infirmitate tua. Et
Ezechias faciem ſuam ad parietem dom⁹ ſanctuarii, & oravit coram
Et ait, Suſcipe deprecationē meam Dñe; memento obſecro quod
coram te in veritate & in corde perfecto, & quod rectū eſt
cerim. Et flevit Ezechias fletu magno. Et factū eſt verbū prophetiæ
Dñi ad Eſaiam dicens. Vade, & dices Ezechiæ: Hæc dicit Dñs Deus
patris tui, Audita eſt coram me oratio tua: notæ ſunt coram me
tuæ: ecce ego adjiciam ſuper dies tuos quindecim annos. Et de manu
Aſſyriæ eruam te, & civitatē iſtam; & protegam civitatē iſtam. Et
tibi ſignum à facie Dñi, quòd faciet Dñs verbū hoc quod locut⁹
ego reverti faciam umbrā lapidis horarū, quà deſcenderat per
Sol, retrorſum decem horis: & regreſſus eſt Sol decem horis in
dis horarum, quà deſcenderat. Scriptura confeſſionis de mira
factū eſt Ezechiæ regi trib⁹ Juda, quando ægrotavit & ſanat⁹ eſt
mitate ſua. Ego dixi. In mœrore dierū meorū vadam ad portas
quia recordat⁹ eſt mei in bonū, additū eſt ſuper annos meos. Dixi
parebo amplius in conſpectu terribilis Dñi in terra dom⁹ ma
qua eſt longitudo vitæ, & non ſerviam corā eo amplius in domo
unde futurum eſt ut egrediatur gaudiū omnibus habitatorib⁹
morabor in Jeruſalem civitate ſancta, habitaculū meū ſucciſum
generationis meæ ablati ſunt dies mei, & ſucciſi ſunt, & migrave
convoluti ſūt quaſi tabernaculū paſtoris; præciſa eſt, quaſi tela
mea à gloria regni mei, *ego tranſmigro*: dies mei, & noctes meæ
Rugiebā uſq; ad manè ſicut leo qui rugit & cōfringit oſſa
fringūtur præ dolore omnia oſſa mea: dies mei et noctes meæ…

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

37 * ܘܫܩܠ ܣܢܚܪܝܒ. ܘܢܦܩ ܐܙܠ ܝܬܒ ܒܢܝܢܘܐ. * ܘܟܕ ܣܓܕ ܗܘܐ ܒܒܝܬ ܢܫܪܘܟ
38 ܐܠܗܗ. ܐܕܪܡܠܟ ܘܫܪܐܨܪ ܒܢܘܗܝ. ܩܛܠܘܗܝ ܒܣܝܦܐ. ܘܗܢܘܢ ܥܪܩܘ ܠܐܪܥܐ ܕܩܪܕܘ.
ܘܐܡܠܟ ܐܣܪܚܕܘܡ ܒܪܗ ܚܠܦܘܗܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܚ *

1 * ܒܗܘܢ ܒܝܘܡܬܐ ܗܠܝܢ. ܐܬܟܪܗ ܚܙܩܝܐ ܠܡܡܬ. ܘܐܬܐ ܠܘܬܗ ܐܫܥܝܐ ܢܒܝܐ ܒܪ
ܐܡܘܨ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܦܩܕ ܥܠ ܒܝܬܟ. ܡܛܠ ܕܡܐܬ ܐܢܬ. ܘܠܐ ܬܚܐ
2 ܐܢܬ. * ܘܐܗܦܟ ܚܙܩܝܐ ܐܦܘܗܝ ܠܫܘܪܐ. ܘܨܠܝ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ. * ܐܘ ܡܪܝܐ.
3 ܐܬܕܟܪ ܕܗܠܟܬ ܩܕܡܝܟ ܒܩܘܫܬܐ ܘܒܠܒܐ ܫܠܡܐ. ܘܫܦܝܪ ܩܕܡܝܟ ܥܒܕܬ. ܘܒܟܐ
4 ܚܙܩܝܐ ܒܟܝܐ ܪܒܐ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܫܥܝܐ ܢܒܝܐ. ܟܕ ܐܡܪ. * ܙܠ ܐܡܪ
5 ܠܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܕܘܝܕ ܐܒܘܟ. ܫܡܥܬ ܨܠܘܬܟ.
ܘܚܙܝܬ ܕܡܥܝܟ. ܗܐ ܡܘܣܦ ܐܢܐ. ܥܠ ܝܘܡܝܟ. ܚܡܫܥܣܪܐ ܫܢܝܢ. * ܘܡܢ ܐܝܕܗ
6 ܕܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܐܦܨܝܟ ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܐܓܢ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܘܐܦܨܝܗ. * ܘܗܕܐ
7 ܠܟ ܐܬܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܕܥܒܕ ܡܪܝܐ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ ܕܐܡܪ. * ܗܐ ܡܗܦܟ ܐܢܐ ܛܠܐ
8 ܕܕܪܓܐ ܕܢܚܬ ܒܕܪܓܐ ܕܐܚܙ ܐܒܘܟ. ܫܡܫܐ ܠܒܣܬܪܗ. ܒܥܣܪܐ ܕܪܓܝܢ ܒܕܪܓܐ ܕܢܚܬ.

* ܫܠܡ ܐܫܥܝܐ *

9 * ܟܬܒܗ ܕܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܟܕ ܐܬܟܪܗ ܘܚܝܐ ܡܢ ܟܘܪܗܢܗ. * ܐܢܐ ܐܡܪܬ ܕܒܦܠܓܘܬ
10 ܝܘܡܝ ܐܙܠ. ܠܬܪܥܐ ܕܫܝܘܠ ܫܒܩܬ ܫܪܟܐ ܕܫܢܝ. * ܐܡܪܬ. ܕܠܐ ܐܚܙܐ ܠܡܪܝܐ. ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ.
11 ܘܐܦ. ܠܐ ܐܚܙܐ ܐܢܫ ܥܡ ܥܡܘܪܝ ܫܝܘܠ. * ܕܪܝ ܫܩܠ ܘܥܒܪ ܡܢܝ. ܐܝܟ ܡܫܟܢܐ
12 ܕܪܥܘܬܐ. ܐܬܦܟܪܘ ܐܝܟ ܡܫܬܝܐ ܚܝܝ. ܘܐܝܟ ܢܝܪܐ ܕܓܪܕܝܢ ܠܡܩܛܥܗ. ܡܢ ܐܝܡܡܐ
ܘܥܕܡܐ ܠܠܠܝܐ ܐܫܠܡܬܢܝ. **

37 * Quare profectus eſt Sanherib, & egreſſus 38 conſedit in Ninive: Dúmque adoraret in æde Neſroch dei ſui, Edramelech, & Sereſar filii ejus gladio peremerunt eum: & his in terram Keredæorum fugientibus, regnavit Serahdom filius ejus poſt ipſum.

CAP. XXXVIII.

1 * Iiſdem illis dieb⁹ cùm ægrotáſſet Hezecia ad mortem, venit ad eum Eſaia propheta filius Amoſi, dixítque ad eum; Sic ait Dominus; Proſpice domui tuæ, quia moriturus es, nec *ampliùs* victurus. 2 Quapropter Hezecia, vultu ad parietem verſo, precatus eſt Dominum, & 3 ait; Eja Domine, recordare quòd æquo integróque animo coram te ambulârim, & quod rectum coram te erat, geſſerim: flevítque Hezecia fletu magno. 4 Tum fuit ſermo Domini 5 ad Eſaiam prophetam, dicendo; Abi dictum Hezeciæ regi Judæ, Sic dicit Dominus Deus Davidis patris tui; Audivi orationem tuam, & vidi lachrymas tuas: ecce ſuperaddam diebus tuis quindecim annos: 6 De manu quoque regis Aſſyriæ liberabo te & urbem iſtam, protegámque urbem iſtam, & eripiam eam. 7 Atque hoc tibi eſto ſignum à Domino quòd facturus ſit Dominus rem iſtam quam dixit: 8 Ecce reducturus ſum umbram illam graduum, quæ deſcendit per gradus Ahazi patris tui (ſolem *nempe* retrorſum decem gradibus, per gradus *eoſdem* per quos deſcenderat.

Finis Eſaiæ.

9 *Scriptum Hezeciæ regis Judæ, quando ægrotavit, & è morbo ſuo revixit.*

10 Equidem dixeram me in mediis diebus meis abiturum, ad inferni portam relicturum reliquos annos meos, 11 Dixeram non viſurum me Dominum in terra vivorum, & inter habitatores foveæ neminem ampliùs viſurum. 12 Ævum meum migravit & avolavit à me ceu tentorium paſtorum: contracta eſt inſtar vittæ contextæ vita mea, & velut jugum *textorium* mox præcidendum: à die uſque ad noctem tradidiſti me.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

37 * فمضي ورجع سنحاريب ملك الموصليين * وسكن في نينوى * وفيما هو يسجد في
38 بيت نصاراخ رئيس ابائه قتلاه ادراملاخ وساصار ابناه بالسيف * وتخلصا الى ارمينيه *
وملك ناحردان ابنه عوضه *

* الفصل الثامن والثلثون *

1 * وصار في ذلك الزمان مرض حزقيا الى الموت * فاتى اليه اشعياء النبي ابن اموص وقال
2 له * هكذا يقول الرب * اوص من اجل بيتك لانك تموت ولست تعيش * فرد وجهه الى
3 الحايط * وصلي الى الرب قايلا * اذكر يا رب اني سرت امامك بالحق وبقلب كامل *
4 وصنعت المرضيات امامك * وبكي حزقيا بكاء عظيما * وصارت كلمة الرب الى اشعياء قايلا
5 * امض وقل لحزقيا * هكذا يقول الرب اله داود ابيك * سمعت صوت صلاتك * ونظرت
6 دموعك * ها ازيد على زمانك خمسة عشر سنة * ومن يد ملك الموصليين انجيك * واسلم
7 8 على هذه المدينة * وهذه العلامة لك من قبل الرب ان يصنع الله هذه الكلمة * ها انا
ارد في الدرج الذي نزلهم الشمس عشر درجات بيت ابيك * ارد الشمس العشر درجات
التي نزلهم الشمس * وصعدت الشمس العشر درجات التي نزلهم الفي *

9 * صلاة حزقيا ملك يهوذا حين مرض وقام من مرضه *

10 * انا قلت في ارتفاع ايامي * امضي في ابواب الجحيم اترك السنين الباقية * قلت لست
11 انظر بعد خلاص الله على ارض الاحياء * ولست انظر ايضا انسانا من السكان بها * فنيت من
12 ذوي جنسي * تركت بقية حياتي * خرجت ومضت مني مثل من حل خيمة نصبها * روحي
13 صارت عندي مثل حايك سداته قريب ان تقطع * في ذلك اليوم اسلمت الى الغداة
كالاسد هكذا سحق جميع عظامي من النهار الى الليل اسلمت

37 * *Sic abſcedens Senharib rex Aſſyriorum,* 38 *rediit, habitavitque in Ninive: Et dum adoraret in domo Naſarach principis patrum ejus, Adramelech & Saſar filii ejus gladio peremerunt eum, & proripuerunt ſeſe in Armeniam: regnavitque Nachardan filius ejus loco ipſius.*

CAP. XXXVIII.

1 *Contigit præterea iis temporibus ut Hezecia ad mortem ægrotaret; quare veniens ad eum Eſaia propheta filius Amoſi, dixit illi; Sic dicit Dominus, Conſule rei familiari tuæ, quia moriturus es, & nequaquam vives.* 2 *Is itaque converſâ ad parietem facie, Dominum precatus eſt dicens,* 3 *Recordare O Domine quòd ambularim coram te in veritate & corde perfecto, & res tibi gratas egerim: flevitque Hezecia fletu magno.* 4 *Tunc factum eſt verbum Domini ad* 5 *Eſaiam dicentis, Vade & dic Hezeciæ; Sic dicit Dominus Deus Davidis patris tui, Audivi vocem precationis tuæ, & lachrymas tuas reſpexi: ecce adjecturus ſum ad ætatem tuam quindecim annos;* 6 *De manu regis Aſſyriorum aſſerturus te; & hanc urbem protecturus.* 7 *Atque hoc tibi eſto ſignum à Domino, quòd facturus ſit Deus hoc negotium:* 8 *Ecce ego reducam umbram graduum per quos deſcendit ſol, decem gradibus domûs patris tui: ſolem reducam decem gradibus per quos ſol deſcendit: aſcendit ergò ſol decem gradibus, quibus deſcenderat umbra.*

9 Oratio Hezeciæ regis Judæ, cùm ægrotáſſet & revaluiſſet ex ægritudine ſua.

10 *Ego dixi in ademptione dierum meorum, Adibo portas inferi, relinquam annos reſiduos.* 11 *Dixi, Nequaquam videbo ampliùs ſalutem Dei ſuper terram vivorum, nec ulteriùs videbo quemquam habitantium in ea.* 12 *Excidi è cognatis meis, reſiduum vitæ meæ reliqui, expiravit & migravit à me, velut is qui tentorium diſſolvit quod erexerat: ſpiritus meus cenſetur apud me tanquam textor cujus ſtamen brevi ſecandum eſt.* 13 *Et die ex-* [illegible] *ad matutinum* [illegible] *ſic contrivit omnia oſſa mea: à die ad noctem uſque tradidiſti me.*

ישעיה : לח

erant elevati : columba ut *gemebam* ; garriebam ſic ,hirundo grus Sicut

14 כְּסוּס עָגוּר כֵּן אֲצַפְצֵף אֶהְגֶּה כַּיּוֹנָה דַּלּוּ

? loquar Quid *mihi ſponde* ,mihi fecit vim Domine ,excelſum *ad* mei oculi

15 עֵינַי לַמָּרוֹם יְהוָה עָשְׁקָה־לִּי עָרְבֵנִי : מָה־אֲדַבֵּר

amaritudine *ſuper* meis annis omnibus *Vagabor* .fecit ipſe & ,mihi dixit &

וְאָמַר־לִי וְהוּא עָשָׂה אֶדַּדֶּה כָל־שְׁנוֹתַי עַל־מַר

,mei ſpiritus *vitæ* eis in omnibus & : vivent eos *ſuper* Domine .meæ animæ

16 נַפְשִׁי : אֲדֹנָי עֲלֵיהֶם יִחְיוּ וּלְכָל־בָּהֶן חַיֵּי רוּחִי

:amaritudo,mihi amaritudo pace in Ecce .me vivificabis & ,me ſanabis &

17 וְתַחֲלִימֵנִי וְהַחֲיֵנִי : הִנֵּה לְשָׁלוֹם מַר־לִי מָר

projeciſti quia ,*abolitionis* fovea à meã animam *amore es amplexus tu* Et

וְאַתָּה חָשַׁקְתָּ נַפְשִׁי מִשַּׁחַת בְּלִי כִּי הִשְׁלַכְתָּ

,tibi confitebitur *ſepulchrum* non Quia .mea peccata omnia tuũ tergũ poſt

18 אַחֲרֵי גֵוְךָ כָּל־חֲטָאָי : כִּי לֹא שְׁאוֹל תּוֹדֶךָּ

.tua veritate in *ciſternam deſcendentes* ſperabunt nec : te laudabit *mors*

מָוֶת יְהַלְלֶךָּ לֹא־יְשַׂבְּרוּ יוֹרְדֵי־בוֹר אֶל־אֲמִתֶּךָ :

filiis pater : hodie ego ſicut ,tibi confitebitur ipſe vivens Vivens

19 חַי חַי הוּא יוֹדֶךָ כָּמוֹנִי הַיּוֹם אָב לְבָנִים

mea modulamina & :me *ſervandũ ad* Dominus .tuã veritatem *ſuper* faciet notã

20 יוֹדִיעַ אֶל־אֲמִתֶּךָ : יְהוָה לְהוֹשִׁיעֵנִי וּנְגִנוֹתַי

Dixitque .Domini domo in noſtræ vitæ diebus omnibus *modulabimur*

21 נְנַגֵּן כָּל־יְמֵי חַיֵּינוּ עַל־בֵּית יְהוָה : וַיֹּאמֶר

,*inflammationem ſuper cataplaſment* & : ficuum maſſam Tollant : Jeſahjahu

יְשַׁעְיָהוּ יִשְׂאוּ דְּבֶלֶת תְּאֵנִים וְיִמְרְחוּ עַל־הַשְּׁחִין

domum aſcendam quòd ,ſignum Quod ,Chizchijahu dixit Et .*vivet &*

22 וְיֶחִי : וַיֹּאמֶר חִזְקִיָּהוּ מָה אוֹת כִּי אֶעֱלֶה בֵּית

? Domini

יְהוָה :

CAP. XXXIX. לט

rex Baladan filius Baladan Merodach miſit illo tempore In

1 בָּעֵת הַהִיא שָׁלַח מְרֹדַךְ בַּלְאֲדָן בֶּן־בַּלְאֲדָן מֶלֶךְ־

,ægrotâſſet quod audierat & : Chizchijahu ad munus & , literas Babel

בָּבֶל סְפָרִים וּמִנְחָה אֶל־חִזְקִיָּהוּ וַיִּשְׁמַע כִּי חָלָה

eis oſtendit & ,Chizchijahu eis ſuper eſt lætatus Et .convaluiſſet &

2 וַיֶּחֱזָק : וַיִּשְׂמַח עֲלֵיהֶם חִזְקִיָּהוּ וַיַּרְאֵם אֶת־

& , aromata & ,aurum & ,argentum ,*ſuæ pinacothecæ* domũ

בֵּית נְכֹתֹה אֶת־הַכֶּסֶף וְאֶת־הַזָּהָב וְאֶת־הַבְּשָׂמִים וְאֵת ׀

quod omne & ,ſuorũ vaſorũ domum omnem & ,optimum unguentũ

הַשֶּׁמֶן הַטּוֹב וְאֵת כָּל־בֵּית כֵּלָיו וְאֵת כָּל־אֲשֶׁר

eis oſtenderit non quod *verbum* fuit non :ſuis theſauris in eſt inventũ

נִמְצָא בְּאוֹצְרֹתָיו לֹא־הָיָה דָבָר אֲשֶׁר לֹא־הֶרְאָם

Jeſahjahu introivit Et .ſua poteſtate omni in & ,ſua domo in Chizchijahu

3 חִזְקִיָּהוּ בְּבֵיתוֹ וּבְכָל־מֶמְשַׁלְתּוֹ : וַיָּבֹא יְשַׁעְיָהוּ

dixerunt Quid : *eum ad* dixit & : Chizchijahu regem ad propheta

הַנָּבִיא אֶל־הַמֶּלֶךְ חִזְקִיָּהוּ וַיֹּאמֶר אֵלָיו מָה אָמְרוּ ׀

terra De,Chizchijahu dixit & ? te ad venerũt unde & , iſti viri

הָאֲנָשִׁים הָאֵלֶּה וּמֵאַיִן יָבֹאוּ אֵלֶיךָ וַיֹּאמֶר חִזְקִיָּהוּ מֵאֶרֶץ

?tua domo in viderũt Quid ,dixit Et .Babel de me ad venerũt longinqua

4 רְחוֹקָה בָּאוּ אֵלַי מִבָּבֶל : וַיֹּאמֶר מָה רָאוּ בְּבֵיתֶךָ

fuit non : viderunt mea domo in quæ Omnia : Chizchijahu dixit &

וַיֹּאמֶר חִזְקִיָּהוּ אֵת כָּל־אֲשֶׁר בְּבֵיתִי רָאוּ לֹא־הָיָה

Jeſahjahu dixit Et .meis theſauris in eis oſtenderim non quod *verbum*

5 דָבָר אֲשֶׁר לֹא־הִרְאִיתִים בְּאוֹצְרֹתָי : וַיֹּאמֶר יְשַׁעְיָהוּ

dies Ecce .exercituum Domini verbum Audi : Chizchijahu ad

6 אֶל־חִזְקִיָּהוּ שְׁמַע דְּבַר־יְהוָה צְבָאוֹת : הִנֵּה יָמִים

tui patres reconderunt quæ &,tua domo in quod omne tolletur &,*venientes*

בָּאִים וְנִשָּׂא ׀ כָּל־אֲשֶׁר בְּבֵיתֶךָ וַאֲשֶׁר אָצְרוּ אֲבֹתֶיךָ

.Dominus dixit *verbum remanebit* non : Babel hanc diem ad uſque

עַד־הַיּוֹם הַזֶּה בָּבֶל לֹא־יִוָּתֵר דָּבָר אָמַר יְהוָה :

Verſio VUL. LAT.

14 Sicut pullus hirundinis ſic clamabo, meditabor ut columba. Attenuati ſunt oculi mei, ſuſpicientes in excelſum. Dñe, vim 15 patior, reſponde pro me. Quid dicã, aut quid reſpõdebit mihi, cùm ipſe fecerit? Recogitabo tibi omnes annos meos in ama-16 ritudine animæ meæ. Domine, ſi ſic vivitur, & in talibus vita ſpiritûs mei, corripies me, & 17 vivificabis me. Ecce in pace amaritudo mea amariſſima: Tu autem eruiſti animã meam ut non periret, projeciſti poſt tergum tuum omnia peccata mea. 18 Quia non infern⁹ confitebitur tibi, neque mors laudabit te: non exſpectabunt qui deſcen-19 dunt in lacũ, veritatẽ tuã. Vivens vivens ipſe confitebitur tibi, ſicut & ego hodiè: pater filiis notã faciet veritatẽ tuam. 20 Domine, ſalvum me fac, et pſalmos noſtros cantabimus cunctis diebus vitæ noſtræ in do-21 mo Domini. Et juſſit Iſaias ut tollerent maſſam de ficis, et cataplaſmarent ſuper vulnus, & 22 ſanaretur. Et dixit Ezechias; Quod erit ſignum quia aſcendam in domum Domini?

CAP. XXXIX.

1 IN tempore illo miſit Merodach Baladan, fili⁹ Baladan rex Babylonis, libros & munera ad Ezechiã: audierat enim quòd 2 ægrotâſſet & convaluiſſet. Lætatus eſt autem ſuper eis Ezechias, & oſtendit eis cellam aromatum, & argenti, & auri, et odoramentorum, & unguenti optimi, & omnes apothecas ſupellectilis ſuæ, & univerſa quæ inventa ſunt in theſauris ejus. Non fuit verbum quod non oſtenderet eis Ezechias in domo ſua, & in omni poteſtate 3 ſua. Introivit autẽ Iſaias propheta ad Ezechiam regem, & dixit ei; Quid dixerunt viri iſti, & unde venerũt ad te? Et dixit Ezechias; De terra longinqua venerunt ad me, de Babylone. 4 Et dixit; Quid viderunt in domo tua? Et dixit Ezechias; Omnia quæ in domo mea ſunt, viderunt: non fuit res, quam non oſtenderim eis in theſau-5 ris meis. Et dixit Iſaias ad Ezechiam; Audi verbum Dñi exer-6 cituum. Ecce dies venient, & auferentur omnia, quæ in domo tua ſunt, et quæ theſaurizaverunt patres tui uſque ad diẽ hanc, in Babylonem: non relinquetur quidquã, dicit Domin⁹.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

14 † Ὡς χελιδὼν, (ʹ) οὕτω φωνήσω, καὶ ὡς περιστερὰ, (ξ) οὕτω μελετῶ· † ἐξέλιπον γάρ μου οἱ ὀφθαλμοὶ τοῦ βλέπειν εἰς τὸ ὕψος τοῦ οὐρανοῦ πρὸς τὸν κύριον, ὃς ἐξείλατό με, καὶ ἀφείλα-16 τό μου τὴν ὀδύνην τῆς ψυχῆς. † Κύριε, περὶ αὐτῆς γὰρ ἀνηγγέλη σοι, καὶ ἐξήγειράς μου τὴν 17 πνοήν, καὶ παρακληθεὶς ἔζησα. † Εἵλου γάρ μου τὴν ψυχὴν, ἵνα μὴ ἀπόληται, καὶ ἀπέρρι-18 ψας ὀπίσω μου πάσας τὰς (ʹ) ἁμαρτίας. † Οὐ γὰρ οἱ ἐν ᾅδου αἰνέσουσί σε, † οὐδὲ οἱ ἀποθανόντες εὐλογήσουσί σε, † οὐδὲ ἐλπιοῦσιν οἱ 19 ἐν ᾅδου τὴν ἐλεημοσύνην σου. † Οἱ ζῶντες εὐλογήσουσί σε ὃν τρόπον κἀγώ· † ἀπὸ γὰρ τῆς σήμερον παιδία ποιήσω, † ἃ ἀναγγελοῦσι 20 τὴν δικαιοσύνην (ο) σου Θεὲ τῆς σωτηρίας μου, † καὶ οὐ παύσομαι εὐλογῶν σε μετὰ ψαλτηρίου πάσας τὰς ἡμέρας τῆς ζωῆς μου, κατέναντι 21 τοῦ οἴκου τοῦ Θεοῦ. Καὶ εἶπεν Ἡσαΐας πρὸς Ἐζεκίαν, Λάβε παλάθην ἐκ σύκων, καὶ τρῖ-22 ψον, καὶ κατάπλασαι, καὶ ὑγιὴς ἔσῃ. Καὶ εἶπεν Ἐζεκίας, (π) Τοῦτο σημεῖον πρὸς Ἐζεκίαν, ὅτι ἀναβήσομαι εἰς τὸν οἶκον τοῦ Θεοῦ.

MS. A. (ʹ) οὕτως (ξ) οὕτως μελετήσω· (ʹ) ἁμαρτίας μου. (ο) σου Κύριε·

Τοῦτο τὸ σημεῖον, ὅτι ἀναβήσομαι εἰς τὸν οἶκον κυρίου τοῦ Θεοῦ.

ΚΕΦ. λθʹ.

1 ΕΝ τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀπέστειλε Μαρωδὰχ (α) Βαλαδὰν ὁ υἱὸς τοῦ Βαλαδὰν, ὁ βασιλεὺς τῆς Βαβυλωνίας, ἐπιστολὰς καὶ πρέσβεις καὶ δῶρα Ἐζεκίᾳ· ἤκουσε γὰρ, ὅτι ἐμαλακίσθη 2 ἕως θανάτου, καὶ ἀνέστη. Καὶ ἐχάρη ἐπ' αὐτοῖς Ἐζεκίας (β), καὶ ἔδειξεν αὐτοῖς τὸν οἶκον τοῦ νεχωθὰ, καὶ (γ) τοῦ ἀργυρίου, καὶ τοῦ χρυσίου, καὶ τῆς στακτῆς, καὶ τῶν θυμιαμάτων, καὶ τοῦ μύρου, καὶ πάντας τοὺς οἴκους τῶν σκευῶν τῆς γάζης, καὶ πάντα ὅσα ἦν ἐν τοῖς θησαυροῖς αὐτοῦ· καὶ οὐκ ἦν οὐθὲν ὃ οὐκ ἔδειξεν (δ) Ἐζεκίας ἐν τῷ οἴκῳ (ε) αὐτοῦ, καὶ ἐν πάσῃ τῇ 3 ἐξουσίᾳ αὐτοῦ. Καὶ ἦλθεν Ἡσαΐας ὁ προφήτης πρὸς τὸν βασιλέα Ἐζεκίαν, καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, Τί λέγουσιν οἱ ἄνθρωποι οὗτοι; καὶ πόθεν ἥκασι πρὸς σέ; καὶ εἶπεν Ἐζεκίας, Ἐκ γῆς πόρρωθεν ἥκασι πρὸς μὲ, ἐκ Ba-4 βυλῶνος. Καὶ εἶπεν Ἡσαΐας, Τί (ζ) εἴδοσαν ἐν τῷ οἴκῳ σου; καὶ εἶπεν Ἐζεκίας, Πάντα τὰ ἐν τῷ οἴκῳ μου εἴδοσαν, καὶ οὐκ ἔστιν ἐν τῷ οἴκῳ μου ὃ οὐκ εἴδοσαν, ἀλλὰ καὶ 5 τὰ ἐν τοῖς θησαυροῖς μου. Καὶ εἶπεν (η) Ἡσαΐας αὐτῷ, Ἄκουσον τὸν λόγον κυρίου σα-6 βαώθ. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, (θ) καὶ λήψονται πάντα τὰ ἐν τῷ οἴκῳ σου, καὶ ὅσα συνήγαγον οἱ πατέρες σου ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, εἰς Βαβυλῶνα ἥξει, καὶ (ι) οὐδὲν οὐ μὴ καταλείπωσιν. εἶπε δὲ ὁ Θεὸς,

MS. A. (α) υἱὸς τοῦ Ἀλαδὰν, (β) χαρὰν μεγάλην, (γ) τῆς στακτῆς, καὶ τῶν θυμιαμάτων, καὶ τοῦ μύρου, καὶ τοῦ ἀργυρίου, καὶ τοῦ χρυσίου, καὶ πάντας τοὺς [illegible] αὐτοῖς Ἐζεκίας (ε) αὐτοῦ. Καὶ ἦλθεν Ἡσαΐας (ζ) ἴδον (η) αὐτῷ [illegible] (θ) λέγει κύριος, καὶ (ι) οὐ μὴ καταλείπωσιν οὐδέν. εἶπεν

Quaſi hirundo, ſic clamabo, & quaſi columba, ſic meditabor. Defecerunt enim oculi mei aſpiciendo in excelſum cœli ad Dominum, qui eruit me, & abſtulit à me dolorem animæ. Domine, de ipſa enim annuntiatum eſt tibi: & ſuſcitaſti ſpiritum meum: & conſolationem accipiens vixi. Eruiſti enim animam meam, ut non periret: & projeciſti poſt me omnia peccata. Non enim qui in inferno, laudabunt te, neque mortui benedicent te, neque ſperabunt, qui apud inferos ſunt, miſericordiam tuam. Viventes benedicent tibi, ſicut & ego. A die enim filios faciam, qui annuntiabunt juſtitiam tuam, Deus ſalutis meæ, & non ceſſabo benedicens tibi cum pſalterio omnibus diebus vitæ meæ in conſpectu domus Dei. Et dixit Eſaias ad Ezeciam; Sume maſſam de ficis, & tere, & (g) cataplaſma, & ſanus eris. Et dixit Ezecias; Hoc ſignum ad Ezeciam, quia aſcendam in domum Dei.

CAP. XXXIX.

IN tempore illo miſit Merodach Baladan filius Baladan rex Babyloniæ, epiſtolas, & legatos, & munera Ezeciæ: audierat enim quòd ægrotâſſet uſq; ad mortem, & ſurrexiſſet. Lætus que eſt ſuper eis Ezecias, & oſtendit eis domum (a) Nechotha, & argenti, & auri, & ſtactes, & thymiamatum, & unguenti, & omnes domos vaſorum gazæ, & omnia quæcunque erant in theſauris ejus. Et non fuit quicquam, quod non oſtenderit Ezecias, in domo ſua, et in omni poteſtate ſua. Et venit Eſaias propheta ad regem Ezeciam, et dixit ad eum; Quid dicunt homines iſti? Et unde venerunt ad te? Et dixit Ezecias; De terra longinqua venerunt ad me, de Babylone. Et dixit Eſaias; Quid viderunt in domo tua? Et dixit Ezecias, Omnia quæ in domo mea ſunt, viderunt: et non eſt in domo mea, quod non viderunt, ſed etiam, quæ in theſauris meis. Et dixit Eſaias ei; Audi verbum Domini Sabaoth: Ecce dies veniunt, et tollent omnia, quæ in domo tua ſunt; et quæcunque congregaverunt patres tui uſque ad diem hanc, in Babylonem venient: et nihil relinquent. Dixit enim

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 כְּסוּסְיָא דְאָחִיד וּמְנַצֵּף כֵּן נְצִיפִית וְנַהֲמִית כְּיוֹנָה זְקֵפִית עֵינַי דְיֵיתֵי לִי רְוַח מִן קֳדָם

15 דִּשְׁכִנְתֵּיהּ בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא יְיָ קַבֵּל צְלוֹתִי עֲבֵיד בָּעוּתִי : מָה אֲמַלֵּל תּוּשְׁבַּחְתָּא וְאֵימַר

קֳדָמוֹהִי וְהוּא אַסְגֵּי טָבְוָן לְמֶעְבַּד עִמִּי מָה אֶפְלַח וְאֲשַׁלֵּים קֳדָמוֹהִי כָּל שְׁנַיָּא דְאוֹסֵיף עַל

16 חַיַּי וְשֵׁיזֵיב מִמְרִיר נַפְשִׁי : יְיָ עַל כָּל מֵיתַיָּא אֲמַרְתָּא לְאַחֲאָה וְקֳדָם כּוּלְּהוֹן אַחֲיֵיתָא רוּחִי

17 וְאַחֲיֵיתַנִי וְקַיֵּימְתַּנִי : הָא לְעָבְדֵי אוֹרַיְתָא סַגֵּי שְׁלָמָא קֳדָמָךְ וְאַתְּ מַיְתֵי מְרִירָא לְרַשִּׁיעַיָּא

בְּכֵן כַּד יְדַעִית יוֹם מוֹתִי שְׁפָכִית דִּמְעָתִי בִּצְלוֹ קֳדָמָךְ מַר לִי סַגִּי וְאַתְּ אִתְרְעִיתָא בְּחַיַּי בְּדִיל

18 דְּלָא לְחַבָּלָא נַפְשִׁי אֲרֵי אַרְחֵיקְתָּא מִן קֳדָמָךְ כָּל חֲטָאַי : אֲרֵי לָא דִבִשְׁאוֹל מוֹדַן קֳדָמָךְ

19 מֵיתַיָּא לָא מְשַׁבְּחִין לָךְ לָא מְסַבְּרִין נָחֲתֵי גוֹב בֵּית אֲבַדְנָא לְפוּרְקָנָךְ : דְּחַי חַי יוֹדֵי קֳדָמָךְ

20 כְּוָתִי יוֹמָא הָדֵין אֲבָהָן לִבְנֵיהוֹן יְחַוּוֹן גְּבוּרְתָּךְ וְיוֹדוּן לְמֵימַר דְּכָל אִלֵּין קְשׁוֹט : יְיָ

21 לְמִפְרְקָנָא אֲמַר וּנְגוּן תּוּשְׁבַּחְתֵּיהּ נְנַגֵּן כָּל יוֹמֵי חַיָּנָא עַל בֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ : וַאֲמַר יְשַׁעְיָה

22 יִסְּבוּן דִּבְלַת תְּאֵנִין וְיִשׁוּרְטוּן עַל שִׁחְנָא וְאִתַּסֵּי : וַאֲמַר חִזְקִיָּה מָה אָת אֲרֵי אֶסַּק לְבֵית

מַקְדְּשָׁא דַיְיָ :

לט

1 בְּעִדָּנָא הַהִיא שְׁלַח מְרוֹדַךְ בַּלְאֲדָן בַּר בַּלְאֲדָן מַלְכָּא דְבָבֶל אִגְּרִין וְקוּרְבָּנִין לְוָת חִזְקִיָּה

2 כַּד שְׁמַע אֲרֵי מְרַע וְאִתַּסִּי : וַחֲדִי עֲלֵיהוֹן חִזְקִיָּה וְאַחְזִינוּן יָת בֵּית גִּנְזוֹהִי יָת כַּסְפָּא וְיָת

דַּהֲבָא וְיָת בּוּסְמַנָּא וְיָת מִשְׁחָא טָבָא וְיָת כָּל בֵּית מָנוֹהִי וְיָת כָּל דְאִשְׁתְּכַח בְּגִנְזוֹהִי לָא

3 הֲוָה מִדַּעַם דְּלָא אַחְזִינוּן חִזְקִיָּה בְּבֵיתֵיהּ וּבְכָל שׁוּלְטָנֵיהּ : וַאֲתָא יְשַׁעְיָה נְבִיָּא לְוָת

מַלְכָּא חִזְקִיָּה וַאֲמַר לֵיהּ מָה אֲמַרוּ גֻּבְרַיָּא הָאִלֵּין וּמְנַן אֲתוֹ לְוָתָךְ וַאֲמַר חִזְקִיָּה

4 מֵאַרְעָא רְחִיקָא אֲתוֹ לְוָתִי מִבָּבֶל : וַאֲמַר מָה חֲזוֹ בְּבֵיתָךְ וַאֲמַר חִזְקִיָּה יָת כָּל דִּי בְּבֵיתִי

5 חֲזוֹ לָא הֲוָה מִדַּעַם דְּלָא אַחֲזֵיתִנּוּן בְּגִנְזַי : וַאֲמַר יְשַׁעְיָה לְחִזְקִיָּה קַבֵּל פִּתְגָמָא דַיְיָ צְבָאוֹת :

6 הָא יוֹמַיָּא אָתַן וְיִתְנְטֵיל כָּל דִּי בְּבֵיתָךְ וְדִי גְנַזוּ אֲבָהָתָךְ עַד יוֹמָא הָדֵין וְיִתּוֹבַל לְבָבֶל לָא

יִשְׁתְּאַר מִדַּעַם אֲמַר יְיָ :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sicut hirundo quæ comprehenſa eſt garrit, ſic garriebam; & rugiebam ſicut columba: levavi oculos meos, ut veniret mihi ſpatium à facie ejus majeſtas eſt in cœlis excelſis. Dñe ſuſcipe orationem meam & fac cationem meam. Quid laudis loquar & dicam coram eo? ipſe enim tiplicavit benefacere mihi? in quo ſerviam & retribuam coram eo, omnes annos quos adjecit ſuper vitam meam; & liberavit ab amaritudine animã meam? Dñe de omnib⁹ mortuis dixiſti te vivificaturum eos omnes vivificâſti ſpiritũ meum, ſanâſti me & ſuſtentâſti me. Ecce tib⁹ legem multiplicabitur pax coram te; & tu adducis amaritudinem Propterea quando cognovi diem mortis meæ, fudi lachrymas meas in oratione: amaritudo fuit mihi multa: tu autẽ voluiſti vitam meã, diſperderes animã meã, quia projeciſti à facie tua omnia peccata mea enim mortui, qui habitãt in inferno, confitentur corã te; nec laudant ſperant deſcendentes in lacũ perditionis ſalutare tuũ. Vivens vivens confitebitur coram te, ſicut & ego hodie: patres filiis ſuis annunciabunt tentiã tuam, & confitebuntur: dicentes, Quia omnia hæc vera ſunt dixit ſe liberaturũ nos: & canticum laudis ej⁹ cantabimus omnibus vitæ noſtræ in domo ſanctuarii Dñi. Et dixit Eſaias, Tollant maſſam & extendant ſuper ſcabiem, & ſanabitur. Et dixit Ezechias, Quod gnum quòd aſcendam in domum ſanctuarii Dñi?

CAP. XXXIX.

IN tempore illo miſit Merodach Baladan fili⁹ Baladan rex Babylonis ſtolas & munera ad Ezechiam, quando audivit quod ægrotâſſet, & fuiſſet Et lætat⁹ eſt ſup eis Ezechias, & oſtendit eis domũ theſaurorum & argentũ, & aurũ, & aromata, & unguentũ optimũ, & omnem ſorum ſuorũ, & omnia quæ inventa ſunt in theſauris ſuis: nihil fuit oſtenderet eis Ezechias in domo ſua, & in omni dominatione ſua. Eſaias propheta ad regem Ezechiam: & dixit ei, Quid dixerunt unde venerunt ad te? Et dixit Ezechias, De terra longinqua venerunt me, de Babylone. Et ait, Quid viderunt in domo tua? Et dixit Omnia quæ in domo mea ſunt, viderunt: nihil fuit quod non oſtenderim in theſauris meis. Et dixit Eſaias ad Ezechiam, Suſcipe verbum cituum. Ecce dies venient, & auferentur omnia quæ in domo quæ theſaurizaverunt patres tui uſque in diem hanc; & aſportabuntur in Babylonem: non relinquetur quicquam,

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܝܟ ܣܢܘܢܝܬܐ ܕܡܨܦܪܐ. ܨܦܪܬ. ܘܐܝܟ ܝܘܢܐ ܢܗܡܬ. ܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܠܡܪܘܡܐ. ܡܪܝܐ 14
ܦܪܘܩܝܢܝ ܘܐܬܒܣܡ ܥܡܝ. * ܘܡܢܐ ܐܡܠܠ. ܐܡܪ ܠܝ. ܗܘ ܓܝܪ ܥܒܕ. ܘܐܥܒܪ. ܟܠܗ ܫܢܬܝ. ܥܠ 15
ܡܪܝܪܘܬ ܢܦܫܝ. ܡܪܝܐ ܚܘܣ ܥܠܝ. * ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܚܝܐ ܕܪܘܚܝ. ܐܣܝܢܝ ܘܐܚܝܢܝ. 16
* ܗܐ ܠܫܠܡܐ ܡܪܝܪ ܠܝ ܡܪܝܪܐ. ܘܐܢܬ ܨܒܝܬ ܠܢܦܫܝ. ܕܠܐ ܬܐܒܕ ܒܚܒܠܐ. ܡܛܠ ܕܫܕܝܬ 17
ܒܣܬܪ ܦܓܪܟ. ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܝܘܠ ܡܘܕܐ ܠܟ. ܘܠܐ ܡܘܬܐ ܡܫܒܚ ܠܟ. 18
ܘܠܐ ܢܣܒܪܘܢ ܩܘܫܬܟ. ܐܝܠܝܢ ܕܢܚܬܝܢ ܠܓܘܒܐ. * ܐܠܐ ܢܘܕܘܢ ܠܟ ܚܝܐ. ܐܝܟ ܕܐܢܐ ܝܘܡܢܐ. 19
ܘܐܒܐ ܠܒܢܝܐ ܢܘܕܥ ܗܝܡܢܘܬܟ. * ܡܪܝܐ ܢܦܪܩܢ. ܘܬܫܒܚܬܗ ܢܙܡܪ. ܟܠܗܘܢ 20
ܝܘܡܬܐ ܕܚܝܝܢ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܚܙܩܝܐ. ܡܢܐ ܗܝ ܐܬܐ ܕܐܣܩ ܐܢܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. 21
* ܘܐܡܪ ܐܫܥܝܐ. ܢܣܒܘܢ ܦܠܚܐ ܕܬܐܢܐ. ܘܢܛܫܘܢ ܥܠ ܫܘܚܢܐ ܘܢܚܠܡ. 22
* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܛ * ܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܫܕܪ ܡܪܘܕܟ ܒܠܕܢ ܒܪ ܒܠܕܢ ܡܠܟܐ 1
ܕܒܒܠ. ܐܓܪܬܐ ܘܩܘܪܒܢܐ ܠܚܙܩܝܐ. ܡܛܠ ܕܫܡܥ ܕܐܬܟܪܗ ܘܩܡ ܘܐܬܚܠܡ. * ܘܚܕܝ 2
ܒܗܘܢ ܚܙܩܝܐ. ܘܚܘܝ ܐܢܘܢ ܒܝܬ ܓܙܘܗܝ. ܟܣܦܐ ܘܕܗܒܐ. ܘܒܣܡܐ ܘܡܫܚܐ ܛܒܐ.
ܘܠܟܠܗ ܒܝܬ ܡܐܢܘܗܝ. ܘܠܟܠ ܕܐܫܬܟܚ ܒܓܙܘܗܝ. ܘܠܐ ܗܘܐ ܡܕܡ ܕܠܐ ܚܘܝ
ܐܢܘܢ: ܒܒܝܬܗ ܘܒܟܠܗ ܫܘܠܛܢܗ. * ܘܐܬܐ ܐܫܥܝܐ ܢܒܝܐ ܠܘܬ ܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ 3
ܘܐܡܪ ܠܗ. ܡܢܐ ܐܡܪܘ ܠܟ ܓܒܪܐ ܗܠܝܢ. ܘܡܢ ܐܝܟܐ ܐܬܘ ܠܘܬܟ. ܘܐܡܪ ܚܙܩܝܐ. ܡܢ
ܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ ܕܒܒܠ ܐܬܘ ܠܘܬܝ. * ܘܐܡܪ. ܡܢܐ ܚܙܘ ܒܒܝܬܟ. ܘܐܡܪ ܚܙܩܝܐ. ܟܠ 4
ܕܐܝܬ ܒܒܝܬܝ ܚܙܘ. ܘܠܐ ܫܒܩܬ ܡܕܡ ܒܒܝܬܝ. ܕܠܐ ܚܘܝܬ ܐܢܘܢ. * ܘܐܡܪ ܐܫܥܝܐ 5
ܠܚܙܩܝܐ. ܫܡܥ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ. ܘܡܫܬܩܠ 6
ܟܠ ܕܐܝܬ ܒܒܝܬܟ. ܘܡܕܡ ܕܐܨܢܥܘ ܐܒܗܝܟ. ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܠܒܒܠ ܢܐܙܠ. ܘܡܕܡ
ܠܐ ܢܫܬܒܩ ܠܟ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

Ut hirundo garriens pipiebam, & ut columba 14
gemebam. Extuli in ſublime oculos meos, &
dixi, Domine ſerva me, & benignè mecum
utere, Et quid loquar dic mihi: ipſe namque 15
fecit, & amovit totum ſomnum meum. Amaritudinum
animæ miſereatur Dñs; Propter 16
hujuſmodi vitam ſpiritûs mei, ſana me & vivum
me conſerva. Num ad pacem amareſcerent 17
mihi amaritudines? Quare cordi tibi
fuit anima mea ne tabeſceret in corruptione,
quoniam abjeciſti poſt corpus tuum omnia
peccata mea. Non enim infernus gratias tibi 18
agit, neque mors laudabit te, neque veritatem
tuam prædicabunt ii qui deſcendunt in
foveam: Sed gratias tibi agent vivi, qualis 19
ego ſum hodie; & pater filiis patefaciet fidem
tuam. Dominus liberet nos, ut laudes ejus canamus 20
cunctis diebus vitæ noſtræ in domo
Domini. Dixerat autem Hezecia, Quodnam 21
eſt ſignum me aſcenſurum in domū Domini?
Et reſponderat Eſaia, Sumant palatham ficuum, 22
appingant ulceri, & ſanabitur.

CAP. XXXIX.

Eo tempore miſit Merodach-beldan filius 1
Beldanis regis Babelis, epiſtolas & munera
ad Hezeciam; audierat enim eum ægrotâſſe,
tum convaluiſſe, ac ſanum eſſe. Quibus Hezecia 2
hilariter exceptis, oſtendit theſaurum
ſuum, argentū, & aurū, aromata, unguentum
optimū, & omnia armamentaria ſua, & quicquid
extabat in theſauris ſuis: nil deniq; omiſit
Hezecia, quod non oſtenderet eis, in domo
ſua & in tota ditione ſua. Venit autem Eſaia 3
propheta ad Hezeciam regem, & dixit ei;
Quid tibi dixerunt homines illi? & unde venerunt
ad te? Cui dixit Hezecia, E terra longinqua
Babelis ad me venerunt. Rurſus dicenti 4
quid viderunt domi tuæ? reſpondit Hezecia,
Quicquid extat domi meæ viderunt: &
nihil omiſi domi meæ, quod non oſtenderim
eis. Tum dixit Eſaia ad Hezeciam, Audi ſermonem 5
Domini potentiſſimi: Ecce dies venturi
ſunt quibus auferetur quicquid eſt domi 6
tuæ: & theſaurus patrum tuorum, quem ad
hunc uſque diem *condiderunt*, ibit in Babelem,
& nihil tibi relinquetur, ait Dominus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* مثل سنونوة هكذا اصوت * ومثل حمامة هكذا اهدر * لان عيني فنيتا من ان انظر الي علو 14
السماء * نحو الرب الذي خلصني ونزع وجع نفسي [* MS. Ox. وقال لي بمذا اتكلم * وعبر 15
فطير كل رقادي * فعلي مرارة نفسي ينظر الرب فيعافيني منها] * لان يا رب من اجلها 16
اخبروك * وايقظت نسمي نعريت فعشت * لانك خلصت نفسي لكيلا تهلك * وطرحت وراي 17
كل خطاياي * لان ليس الذين في الجحيم يسبحونك يا رب * ولا الميتون يباركونك * ولا الذين 18
في الجحيم يرجون رحمتك * الاحياء تباركك مثلي انا * لاني منذ اليوم اصنع اولادا الذين 19
يخبرون بعدلك يا رب خلاصي * ولست اكف مباركا لك بمزمار جميع ايام حياتي امام بيت 20
الرب الهي * * الاصحاح التاسع عشر * * فقال اشعياء لحزقيا * خذ لك حبة من 21
التين ودقها وتضمد بها * تصير صحيحا * فقال حزقيا * هذه العلامة اني اصعد الي بيت الرب 22
الاله * * الفصل التاسع والثلثون * * وفي ذلك الزمان ارسل ماروداخ ابن 1
بالادان ملك الاعمال البابلية * رسايل وسفعاء وهدايا لحزقيا * لانه مرض حتي الموت وقام *
* ففرح بها حزقيا فرحا عظيما * واراهم بيت ماله * والمبعة والبخورات والطيب * والفضة والذهب * 2
وجميع بيوت اواني خزانته * وكل ما كان في ذخايره * ولم يكن شي في بيته وفي سلطانه الا
واطلعهم * فاتي اشعياء النبي الي حزقيا وقال له * ماذا يقولون هولاء الناس * ومن اين اتوا اليك * 3
فقال حزقيا * من ارض بعيدة اتوا الي * من بابل * فقال اشعياء ما راوا في بيتك * وقال حزقيا * 4
راوا كلما في بيتي * ولم يبق في بيتي شي الا وراوه * هكذا وما في ذخايري * فقال له 5
اشعياء * اسمع قول رب الجنود * ها ايام تاتي يقول الرب ويأخذون كلما في بيتك * وما 6
جمعه اباوك الي هذا اليوم يحمل الي بابل * ولا يتركون ولا شيا *

ut hirundo, ſic pipio; & ut columba, 14
ſic gemo: quoniam oculi mei conſumpti
ſunt aſpiciendo in altitudinem cœli, verſùs
Dominum qui eripuit me & abſtulit
dolorem animæ meæ. [MS. Ox. *Et dixit* 15
mihi, Quid ipſe proferrem: abſtulit,
& amovit ſubitò omnem ſomnum
meum: at in amaritudinem animæ meæ
reſpexit Dominus, & mihi illam levavit.]
Hujus enim cauſâ O Domine te monui, 16
& expergefeciſti auram meam vitalem,
& confortatus revixi: Quandoquidem 17
ſervâſti animam meam ne periret, & à
tergo meo projeciſti omnia peccata mea.
Neque enim qui ſunt in inferis te celebrant 18
O Domine, neque mortui benedicunt
tibi; neque ii qui ſunt in inferis, miſericordiam
tuam ſperant. Vivi te laudant, 19
ut ego: quoniam ab hac impoſterùm die
facturus ſum filios qui tuam prædicabunt
juſtitiam, O Domine ſalutis meæ. Et ego 20
cum pſalterio inceſſanter benedicam tibi
cunctis diebus vitæ meæ ante domum Domini
Dei mei.

Textus decimus nonus.

Dixerat enim Eſaia ad Hezeciam, Sume 21
tibi granum è ficubus (i. ficum unam) *&*
contuſū ulceri tuo applica, eriſque ſanus.
Dixeratque Hezecia, Hoc eſt ſignum quòd 22
aſcenſurus ſim in domum Domini Dei.

CAP. XXXIX.

Eodem tempore miſit Merodach filius 1
Baladanis rex provinciarum Babylonicarum,
literas, & fauſta precantes, atque
munera ad Hezeciam: quoniam cùm ægrotâſſet
ad mortem uſque, reſurrexerat. Gaviſus 2
eſt autem de iis muneribus & literis
Hezecia gaudio magno, & oſtendit illis
ærarium ſuum, guttam, thus, & odoramenta
ſuaviſſima, argentum & aurum,
omnes cellas vaſorum gazæ ſuæ, & quicquid
erat in theſauris ſuis: nihil denique
fuit domi ſuæ & in ditione ſua, quod
non oſtentârit. Quare veniens Eſaia 3
propheta ad Hezeciam, dixit illi. Quid
dicunt homines iſti? & unde venerunt
ad te? Reſpondit Hezecia, E terra longinqua
venerunt ad me, de Babele. Dixit 4
rurſus Eſaia, Quid viderunt domi
tuæ? Reſpondit Hezecia, Viderunt quicquid
eſt domi meæ, nihil enim remanſit domi
meæ, quod non viderint: pari modo
quicquid eſt in theſauris meis. Dixit ad eū
Eſaia, Audi dictū Domini exercituū: Ecce 5
dies venient, dicit Dominus, quibus rapient 6
quicquid eſt domi tuæ: et quicquid condiderunt
majores tui ad hunc uſque diem,
aſportabitur in Babelem, nihilque relinquetur.

יְשַׁעְיָה : מ

erunt & : tollent genueris quos , te de exibunt qui tuis filiis de Et
7 וּמִבָּנֶיךָ אֲשֶׁר יֵצְאוּ מִמְּךָ אֲשֶׁר תּוֹלִיד יִקָּחוּ וְהָיוּ
, Jeſahjahu ad Chizchijahu dixit Et .Babel regis palatio in Eunuchi
8 סָרִיסִים בְּהֵיכַל מֶלֶךְ בָּבֶל : וַיֹּאמֶר חִזְקִיָּהוּ אֶל־יְשַׁעְיָהוּ
, pax erit quia :dixit Et.es locutus quod , Domini verbum Bonum
טוֹב דְּבַר־יְהוָה אֲשֶׁר דִּבַּרְתָּ וַיֹּאמֶר כִּי יִהְיֶה שָׁלוֹם
.meis diebus in veritas &
וֶאֱמֶת בְּיָמָי :

CAP. XL. מ

Loquimini .veſter Deus dicet :meum populum conſolamini ,Conſolamini
1 נַחֲמוּ נַחֲמוּ עַמִּי יֹאמַר אֱלֹהֵיכֶם : דַּבְּרוּ 2
,ejus militia eſt completa quòd ,eam ad clamate & , Jeruſalaim cor ad
עַל־לֵב יְרוּשָׁלִַם וְקִרְאוּ אֵלֶיהָ כִּי מָלְאָה צְבָאָהּ
Domini manu de ſuſcepit nam :ejus iniquitas eſt facta placabilis quia
כִּי נִרְצָה עֲוֺנָהּ כִּי לָקְחָה מִיַּד יְהוָה
Complanate ,deſerto in clamantis Vox .ſuis peccatis omnibus *in* duplicia
3 כִּפְלַיִם בְּכָל־חַטֹּאתֶיהָ : קוֹל קוֹרֵא בַּמִּדְבָּר פַּנּוּ
Omnis .noſtri Dei *ſtratam ſemitam* ſolitudine in facite rectã :Domini viam
4 דֶּרֶךְ יְהוָה יַשְּׁרוּ בָּעֲרָבָה מְסִלָּה לֵאלֹהֵינוּ : כָּל־
pravum erit &:ſe humiliabunt collis &,mons omnis &,ſe exaltabit vallis
גֶּיא יִנָּשֵׂא וְכָל־הַר וְגִבְעָה יִשְׁפָּלוּ וְהָיָה הֶעָקֹב
: Domini gloria ſe revelabit Et .planitiem in *prærupta* & , directionem in
5 לְמִישׁוֹר וְהָרְכָסִים לְבִקְעָה : וְנִגְלָה כְּבוֹד יְהוָה
, dicentis Vox .eſt locutum Dñi os quòd ,pariter caro omnis *videbunt* &
6 וְרָאוּ כָל־בָּשָׂר יַחְדָּו כִּי פִּי יְהוָה דִּבֵּר : קוֹל אֹמֵר
ej⁹ pietas omnis &:herba caro omnis ? clamabo Quid ,dixit & : Clama
קְרָא וְאָמַר מָה אֶקְרָא כָּל־הַבָּשָׂר חָצִיר וְכָל־חַסְדּוֹ
Domini ſpiritus quia,flos cecidit , herba Aruit .agri flos tanquam
7 כְּצִיץ הַשָּׂדֶה : יָבֵשׁ חָצִיר נָבֵל צִיץ כִּי רוּחַ יְהוָה
: flos cecidit , herba Aruit .populus herba verè : eum in ſufflavit
8 נָשְׁבָה בּוֹ אָכֵן חָצִיר הָעָם : יָבֵשׁ חָצִיר נָבֵל צִיץ
excelſum montem Super .ſeculum in ſtabit noſtri Dei verbum &
9 וּדְבַר אֱלֹהֵינוּ יָקוּם לְעוֹלָם : עַל הַר־גָּבֹהַּ
tuam vocem fortitudine in exalta , Sijon evangelizatrix tibi aſcende
עֲלִי־לָךְ מְבַשֶּׂרֶת צִיּוֹן הָרִימִי בַכֹּחַ קוֹלֵךְ
,Jehudah civitatibus dic ; timeas ne ,ex Ita:Jeruſalaim evangelizatrix
מְבַשֶּׂרֶת יְרוּשָׁלִָם הָרִימִי אַל־תִּירָאִי אִמְרִי לְעָרֵי יְהוּדָה
ej⁹ brachiũ & ,veniet forti cum DEUS Domin⁹ Ecce .veſter Deus ecce
10 הִנֵּה אֱלֹהֵיכֶם : הִנֵּה אֲדֹנָי יְהוִה בְּחָזָק יָבוֹא וּזְרֹעוֹ
paſtor Sicut .*ejus facies ad* ejus opus &,eo cum ej⁹ merces ecce : ei *dominans*
11 מֹשְׁלָה לוֹ הִנֵּה שְׂכָרוֹ אִתּוֹ וּפְעֻלָּתוֹ לְפָנָיו : כְּרֹעֶה
:portabit ſuo ſinu in &,*agnellos* cõgregabit ſuo brachio in,paſcet ſuũ gregem
עֶדְרוֹ יִרְעֶה בִּזְרֹעוֹ יְקַבֵּץ טְלָאִים וּבְחֵיקוֹ יִשָּׂא
palmo in cœlos & ,aquas ſuo pugillo in eſt menſus Quis .ducet fœtas
12 עָלוֹת יְנַהֵל : מִי־מָדַד בְּשָׁעֳלוֹ מַיִם וְשָׁמַיִם בַּזֶּרֶת
ſtatera in appendit & ? terræ pulverem *ternaria* menſura in *continuit* &,*direxit*
תִּכֵּן וְכָל בַּשָּׁלִשׁ עֲפַר הָאָרֶץ וְשָׁקַל בַּפֶּלֶס
vir & :Domini ſpiritum *inſtruxit* Quis ? *bilancibus* in colles & ,montes
13 הָרִים וּגְבָעוֹת בְּמֹאזְנָיִם : מִי־תִכֵּן אֶת־רוּחַ יְהוָה וְאִישׁ
, eũ inſtruxit &,eſt conſiliatus quo Cum ? eum *facit* ſcire ejus conſilium
14 עֲצָתוֹ יוֹדִיעֶנּוּ : אֶת־מִי נוֹעָץ וַיְבִינֵהוּ
viam & , ſcientia eum erudivit & : judicium ſemita in eum docuit &
וַיְלַמְּדֵהוּ בְּאֹרַח מִשְׁפָּט וַיְלַמְּדֵהוּ דַעַת וְדֶרֶךְ
: *ſitula a* ſtilla ſicut gentes Ecce *? eum fecit ſcire* intelligentiarum
15 תְּבוּנוֹת יוֹדִיעֶנּוּ : הֵן גּוֹיִם כְּמַר מִדְּלִי
.*protollit minutũ ut* inſulas ecce : ſunt reputatæ *bilãcis* pulvis tenuis ſicut &
וּכְשַׁחַק מֹאזְנַיִם נֶחְשָׁבוּ הֵן אִיִּים כַּדַּק יִטּוֹל :

Verſio VULG. LAT.

7 Et de filiis tuis, qui exibunt de te, quos genueris, tollent, & erunt eunuchi in palatio regis
8 Babylonis. Et dixit Ezechias ad Iſaiam;Bonum verbum Domini quod locutus eſt. Et dixit; Fiat tantùm pax & veritas in diebus meis.

CAP. XL.

1 COnſolamini, conſolamini, popule meus, dicit Deus ve-
2 ſter. Loquimini ad cor Jeruſalem,& advocate eam : quoniam completa eſt malitia ej⁹, dimiſſa eſt iniquitas illius:ſuſcepit de manu Domini duplicia pro omnibus peccatis ſuis.
3 Vox clamantis in deſerto ; Parate viam Domini, rectas facite in ſolitudine ſemitas Dei
4 noſtri. Omnis vallis exaltabitur, & omnis mons & collis humiliabitur, & erunt prava in directa,et aſpera in vias pla-
5 nas. Et revelabitur gloria Domini , & videbit omnis caro pariter quòd os Domini locu-
6 tum eſt. Vox dicentis;Clama. Et dixi;Quid clamabo?Omnis caro fœnum, & omnis gloria
7 ejus quaſi flos agri. Exiccatum eſt fœnum,& cecidit flos,quia ſpiritus Domini ſufflavit in eo.
8 Verè fœnũ eſt populus: Exiccatum eſt fœnum, & cecidit flos : Verbum autem Domini
9 noſtri manet in æternum. Super montem excelſum aſcende tu, qui evangelizas Sion : exalta in fortitudine vocẽ tuam, qui evangelizas Jeruſalem : exalta, noli timere. Dic civitatibus Juda ; Ecce Deus ve-
10 ſter : Ecce Dominus Deus in fortitudine veniet, & brachiũ ejus dominabitur : ecce merces ejus cum eo, & opus illius
11 coram illo. Sicut paſtor gregem ſuum paſcet : in brachio ſuo congregabit agnos, & in ſinu ſuo levabit , fœtas ipſe
12 portabit. Quis menſus eſt pugillo aquas, & cœlos palmo ponderavit?quis appendit tribus digitis molem terræ,& libravit in pondere montes, &
13 colles in ſtatera ? Quis adju-
14 vit ſpiritum Domini ? aut quis conſiliarius ejus fuit,& oſtendit illi?Cum quo iniit conſilium,
ſtruxit eum,& docuit eum ſemitã juſtitiæ, et erudivit eum ſcientiã, et viam prudentiæ oſtend
15 Ecce Gentes quaſi ſtilla ſitulæ,et quaſi momentũ ſtateræ reputatæ ſũt:ecce inſulæ quaſi pulvis ex

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

7 Ὅτι καὶ ἀπὸ τῶν τέκνων σου ὧν (κ) γεννήσεις,
λήψονται, καὶ ποιήσουσι σπάδοντας ἐν τῷ οἴκῳ
8 τοῦ βασιλέως τῶν Βαβυλωνίων. Καὶ εἶπεν
Ἐζεκίας (λ) Ἡσαΐᾳ, Ἀγαθὸς ὁ λόγος κυ-
ρίου, ὃν ἐλάλησε· γενέσθω δὴ εἰρήνη καὶ δι-
καιοσύνη ἐν ταῖς ἡμέραις μου.

MS. A. (κ) ἐγέννησας, (λ) πρὸς Ἡσαΐαν,

ΚΕΦ. μ'.

1 ΠΑρακαλεῖτε παρακαλεῖτε τὸν λαόν μου, λέ-
2 γει (α) ὁ θεός. Ἱερεῖς λαλήσατε εἰς τὴν καρ-
δίαν Ἱερουσαλήμ, παρακαλέσατε αὐτήν, ὅτι
ἐπλήσθη ἡ ταπείνωσις αὐτῆς, λέλυται αὐ-
τῆς ἡ ἁμαρτία, ὅτι ἐδέξατο ἐκ χειρὸς κυ-
3 ρίου διπλᾶ τὰ ἁμαρτήματα αὐτῆς. Φωνὴ
βοῶντος ἐν τῇ ἐρήμῳ, Ἑτοιμάσατε τὴν ὁδὸν
κυρίου, εὐθείας ποιεῖτε τὰς τρίβους τοῦ θεοῦ
4 ἡμῶν. Πᾶσα φάραγξ πληρωθήσεται, καὶ πᾶν
ὄρος καὶ βουνὸς ταπεινωθήσεται· καὶ ἔσται (β)
πάντα τὰ σκολιὰ εἰς εὐθεῖαν, καὶ ἡ τραχεῖα
5 εἰς (γ) πεδία. Καὶ ὀφθήσεται ἡ δόξα κυρίου,
καὶ ὄψεται πᾶσα σὰρξ τὸ σωτήριον τοῦ θεοῦ,
6 ὅτι κύριος ἐλάλησε. Φωνὴ λέγοντος, Βό-
ησον. καὶ εἶπα, Τί βοήσω; Πᾶσα σὰρξ χόρ-
τος, καὶ πᾶσα δόξα ἀνθρώπου ὡς ἄνθος χόρ-
7 του. Ἐξηράνθη ὁ χόρτος, καὶ τὸ ἄνθος ἐξ-
8 έπεσε, Τὸ δὲ ῥῆμα τοῦ θεοῦ ἡμῶν μένει εἰς τὸν
9 αἰῶνα. Ἐπ᾽ ὄρος ὑψηλὸν ἀνάβηθι ὁ εὐαγ-
γελιζόμενος Σιών, ὕψωσον τῇ ἰσχύι τὴν φω-
νήν σου ὁ εὐαγγελιζόμενος Ἱερουσαλήμ· ὑψώ-
σατε, μὴ φοβεῖσθε. εἰπὸν ταῖς πόλεσιν Ἰούδα,
10 Ἰδοὺ ὁ θεὸς ὑμῶν, Ἰδοὺ (δ) κύριος. κύριος
μετὰ ἰσχύος ἔρχεται, καὶ ὁ βραχίων (ε) μετὰ κυ-
ρίας. ἰδοὺ ὁ μισθὸς αὐτοῦ μετ᾽ αὐτοῦ, καὶ τὸ ἔρ-
11 γον ἐναντίον αὐτοῦ. Ὡς ποιμὴν ποιμανεῖ τὸ
ποίμνιον αὐτοῦ, καὶ τῷ βραχίονι αὐτοῦ συν-
άξει ἄρνας, καὶ ἐν γαστρὶ ἐχούσας παρακαλέ-
12 σει. Τίς ἐμέτρησε τῇ χειρὶ τὸ ὕδωρ, καὶ τὸν οὐ-
ρανὸν σπιθαμῇ, καὶ πᾶσαν τὴν γῆν δρακί; τίς
ἔστησε τὰ ὄρη σταθμῷ, καὶ τὰς νάπας ζυγῷ;
13 Τίς ἔγνω νοῦν κυρίου; καὶ τίς (ζ) αὐτοῦ σύμβου-
14 λος ἐγένετο, ὃς (η) συμβιβᾷ αὐτόν; Ἢ
πρὸς τίνα συνεβουλεύσατο, καὶ συνεβίβα-
15 σεν αὐτόν; ἢ τίς ἔδειξεν αὐτῷ κρίσιν; ἢ
ὁδὸν συνέσεως τίς ἔδειξεν αὐτῷ; (θ) Εἰ
πάντα τὰ ἔθνη ὡς σταγὼν ἀπὸ κάδου, καὶ ὡς
ῥοπὴ ζυγοῦ ἐλογίσθησαν, (ι) ὡς σίελος λο-
γισθήσονται;

MS.A. (α) κύριος. (β) τὰ σκολιὰ (γ) ὁδοὺς λείας. (δ) κύριος.
(ε) αὐτοῦ (ζ) σύμβουλος αὐτοῦ (η) συμβιβάσει (θ) ἢ τίς προέδωκεν
καὶ ἀνταποδοθήσεται αὐτῷ; Εἰ (ι) καὶ ὡσεὶ * ἔλαιον

Quia & de filiis tuis,quos gen
ris, tollent, & facient ſpa
domo regis Babyloniorum. E
Ezecias Eſaiæ; Bonum ve
mini, quod locutus eſt: Fia
pax, & juſtitia in diebus mei

CAP. XL.

COnſolamini, conſola
pulum meum,dicit De⁹. (a) Sa
dotes loquimini ad cor Hier
lem,conſolamini eam : quia r
eſt humilitas ejus; ſolutum e
catum illius: quia recepit de m
Domini duplicia peccata ſu
clamantis in deſerto , Parate
Domini: rectas facite ſemita
noſtri. Omnis vallis implebi
omnis mons et collis humilia
& erunt omnia prava in dir
& aſpera in campos. Et app
gloria Domini : & videbit o
caro ſalutare Dei : quia Dom
loquutus eſt. Vox dicentis, Cla
Et dixi, Quid clamabo? O
caro fœnum, & omnis glori
minis, quaſi flos fœni. Aru
num, & flos (b) cecidit: Ve
autem Dei noſtri manet in
ternum. Super montem exce
aſcende, qui evangelizas Si
exalta in fortitudine v
tuam , qui evangelizas Hie
ſalem: exaltate, nolite tim
civitatibus Juda; Ecce De
ſter, Ecce Dominus. Domin
virtute venit, & brachiu
dominatione. Ecce merces
cum eo , & opus in conſpe
lius. Sicut paſtor paſcet g
ſuum, & brachio ſuo con
agnos,& prægnantes conſ
Quis menſus eſt manu a
cœlum palmo , & omnem
pugillo? Quis ſtatuit mo
dere,et rupes ſtateræ? Q
vit mentem Domini
conſiliarius ejus fuit,
eum? Aut cum quo con
et inſtruxit illum? Ve
dit ei judicium? vel
gentiæ quis (c) oſtend
mnes gentes, ſicut ſtill
et quaſi momentum ſta
tæ ſunt,quaſi ſaliva

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 ומבנך דיפקון מנך דתוליד ידברון ויהון רברבין בהיכלא מלכא דבבל : ואמר חזקיה
8 לישעיה תקין פתגמא דיי דמללתא ואמר ארי יהי שלם וקשוט ביומי :

ל

1 נביאיא אתנביאו תנחומין על עמי אמר אלהכון : מלילו על לבא דירושלם ואתנבו עלה 2
ארי עתידא דתתמלי מעם גלותהא ארי אשתביקו לה חובהא ארי קבילת כס תנחומין
3 מן קדם יי כאלו לקת על חד תרין בכל חטאתהא : קל דמכלי במדברא פנו אורח מן
4 קדם עמא דיי כבישו במישרא כבשין קדם כנשתא דאלהנא : כל חיליא יתרמון וכל
5 טור ורמא ימאכון ויהי כפלא למישרא ובית גדודין לבקעה : ויתגלי יקרא דיי ויחזון
6 כל בני בסרא כחדא ארי במימרא דיי גזר כן : קל דאמר אתנבי ומתיב ואמר מה אתנבי
7 כל רשיעיא כעשבא וכל תוקפהון כמוצא דחקלא : יבש עסבא נתר נציה ארי רוחא מן
8 קדם יי נשבת ביה בכן כעסבא חשיבין רשיעיא בעמא : מית רשיעא אבדו עשתונוהי
9 ופתגמא דאלהנא קים לעלמין : על טור רם סקו לכון נבייא די מבסרין לציון ארימו
בחילא קלכון די מבסרין לירושלם ארימו לא תדחלון אמרו לקרויא דבית יהודה
10 אתגליאת מלכותא דאלהכון : הא יי אלהים בתקוף מתגלי ותקוף דרע גבורתיה שלטא
11 קדמוהי הא אגר עבדי מימריה עמיה דכל עובדיהון גלן קדמוהי : כרעיא דעדריה רעי
12 בדרעיה מכניש אמרין ובחיניה מסובר רביכין מיניקתא בניח מדבר : מן אמר אלין
קים אמר ועביד דכל מי עלמא חשיבין קדמוהי כטפא בשעולא ומשחת שמיא כאלו
בזרתא מתקנין ועפרא דארעא כאלו במכילא אתכל וטוריא כאלו מתקל תקילין
13 ורמתא כד במוזניא : מן תקין ית רוח קודשא בפום כל נבייא הלא יי וצדיקיא עבדי
14 מימריה פתגמי רעותיה הודענון : להון דבעו מן קדמוהי אסבר חוכמא ואלפנון אורח
15 דדין ויהב לבניהון אוריתא ואורח דסוכלתנו לבני בניהון הודעין : הא עממיא כטפא
מדול ובעיבל מוזניא חשיבין הא נגותא כדוקא דפרח :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et de filiis tuis qui exibunt ex te, quos genueris, tollent; & er
in palatio regis Babylonis. Et dixit Ezechias ad Eſaiam:Rectum
Dñi quod locutus es: & dixit, Quia erit pax & veritas in diebus

CAP. XL.

PRophetæ prophetate conſolationes ſuper populũ meum,dicit Ds
Loquimini ad cor Jeruſalem,& prophetate ſuper eam; quia futur
impleatur populo tranſmigrationis *ejus*, quia dimittentur ei pe
quia ſuſcepit calicem conſolationũ à facie Dñi,ac ſi percuſſa eſſ
ter pro omnib⁹ peccatis ſuis. Vox clamantis in deſerto, Parate via
populo Domini,ſternite in campeſtri planitie vias corã cœtu Dei
valles elevabuntur,& omnis mons & collis humiliabuntur,& er
in planitiẽ,& aſpera in campum planum. Et revelabitur gloria D
debunt omnes filii carnis ſimul,quia in verbo Dñi decretũ eſt i
centis, Prophetiza : & reſpondit & ait, Quid prophetabo? om
ſunt ſicut herba,& omnis fortitudo eorũ ſicut ſtipula agri. Areſcit
marceſcit flos ejus, quia ſpirit⁹ à facie Dñi ſufflavit in eũ:utiq
exiſtimati ſunt impii populi. Mortu⁹ eſt impi⁹, & perierunt cog
ej⁹.Verbũ autẽ Dei noſtri manet in æternũ. Super montẽ exce
dite vos Prophetæ qui evangelizatis Sion: extollite in fortitu
veſtram,qui evangelizatis Jeruſalem;extollite, ne timeatis: dic
domus Judæ,Revelatum eſt regnũ Dei veſtri. Ecce Dñs De
revelatur, & fortitudo brachii potentiæ ſuæ dominatur corã e
ces facientibus verbum ej⁹ cum eo, quia omnia opera eorũ
coram eo. Sicut paſtor qui paſcit gregem ſuum,& in brachio
agnos, & in ſinu ſuo portat teneros; fœtas leniter ducit. Q
confirmavit ea : & dixit,& fecit; ante cuj⁹ conſpectum omn
habentur quaſi gutta in pugillo, & menſura cœlorum,ac ſi p
palmo; & pulvis terræ ac ſi menſuratus eſſet in menſura; &
eſſent ponderati in pondere; & colles,ac ſi eſſent in ſtateris
ſpiritũ ſanctũ in ore omniũ prophetarũ? Nonne Dñs? & ju
ejus,quib⁹ oſtendit verba voluntatis ſuæ. Qui à facie ej⁹ qu
gere faciã eos ſapientiã; & docebo eos viã judicii. Et dedit
& viã intelligẽtiæ filiis filiorũ eorũ oſtendit. Ecce populi
& quaſi momentũ bilãcis reputati ſũt: ecce inſulæ qua

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܡܢ ܒܢܝܟ ܕܢܦܩܘܢ ܡܢܟ ܕܐܘܠܕܬ ܢܕܒܪܘܢ܂ ܘܢܗܘܘܢ ܡܗܝܡܢܐ ܒܗܝܟܠܗ
ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ܂ * ܘܐܡܪ ܚܙܩܝܐ ܠܐܫܥܝܐ܂ ܫܦܝܪ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪܬ܂ ܢܗܘܐ 8
ܫܠܡܐ ܘܫܪܪܐ ܒܝܘܡܝ܂ * ܫܠܡܘ܂ * ܡ * ܩܪܝܢܐ ܕܥܘܗܕܢܗ ܕܝܘܚܢܢ܂ 1
ܐܡܪ ܐܠܗܟܘܢ܂ * ܡܠܠܘ ܥܠ ܠܒܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܘܩܪܘ ܠܗ܂ ܡܛܠ ܕܐܬܡܠܝܬ ܚܝܠܐ ܘܐܬܪܥܝܬ 2
ܒܚܛܗܐ܂ ܘܢܣܒܬ ܡܢ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܥܦܐ ܕܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝܗ܂ * ܩܠܐ ܕܩܪܐ ܒܡܕܒܪܐ܂ 3
ܦܢܘ ܐܘܪܚܐ ܠܡܪܝܐ܂ ܘܐܪܘܪܘ ܒܦܩܥܬܐ ܫܒܝܠܐ ܠܐܠܗܢ܂ * ܟܠܗܘܢ ܢܚܠܐ ܢܬܡܠܘܢ܂ 4
ܘܟܠܗܘܢ ܛܘܪܐ ܘܪܡܬܐ ܢܬܡܟܟܘܢ܂ ܘܢܗܘܐ ܥܪܡܐ ܠܡܫܪܐ܂ ܘܐܬܪܐ ܥܣܩܐ ܠܦܩܥܬܐ܂
* ܘܢܬܓܠܐ ܐܝܩܪܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܘܢܚܙܘܢܗ ܐܟܚܕܐ ܟܠ ܒܣܪ܂ ܡܛܠ ܕܦܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ܂ 5
* ܩܠܐ ܕܐܡܪ܂ ܩܪܝ܂ ܘܐܡܪ܂ ܡܢܐ ܐܩܪܐ܂ ܟܠ ܒܣܪ ܥܣܒܐ܂ ܘܟܠܗ ܫܘܦܪܗ ܐܝܟ ܗܘܒܐ 6
ܕܚܩܠܐ܂ * ܝܒܫ ܥܣܒܐ ܘܢܦܠ ܗܘܒܐ܂ ܡܛܠ ܕܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܢܫܒܬ ܒܗ܂ ܗܟܢܐ ܗܘ 7
ܥܣܒܐ ܕܥܡܐ ܗܢܐ܂ * ܝܒܫ ܥܣܒܐ ܘܢܦܠ ܗܘܒܐ܂ ܘܡܠܬܗ ܕܐܠܗܢ ܩܝܡܐ 8
ܠܥܠܡ܂ * ܥܠ ܛܘܪܐ ܪܡܐ ܣܩܝ ܡܣܒܪܢܝܬܗ ܕܨܗܝܘܢ܂ ܐܪܝܡܝ ܒܚܝܠ ܩܠܟܝ 9
ܡܣܒܪܢܝܬܗ ܕܐܘܪܫܠܡ܂ ܐܪܝܡܝ ܘܠܐ ܬܕܚܠܝܢ܂ ܐܡܪܝ ܠܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ܂ ܗܐ ܐܠܗܟܘܢ܂ * ܗܐ 10
ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܒܚܝܠܐ ܐܬܐ܂ ܘܕܪܥܗ ܒܥܘܫܢܐ܂ ܗܐ ܐܓܪܗ ܥܡܗ܂ ܘܥܒܕܗ ܩܕܡܘܗܝ܂
* ܐܝܟ ܪܥܝܐ ܕܪܥܐ ܡܪܥܝܬܗ܂ ܘܒܕܪܥܗ ܡܟܢܫ ܐܡܪܐ܂ ܘܒܥܘܒܗ ܛܥܢ ܠܗܘܢ܂ ܘܠܡܝܢܩܬܐ 11
ܡܕܒܪ܂ * ܡܢܘ ܐܟܝܠ ܡܝܐ ܒܫܘܥܠܗ܂ ܘܫܡܝܐ ܡܫܚ ܒܙܪܬܗ܂ ܘܥܦܪܐ ܕܐܪܥܐ ܒܟܝܠܗ 12
ܒܙܪܬܐ܂ ܘܬܩܠ ܛܘܪܐ ܒܡܬܩܠܐ܂ ܘܪܡܬܐ ܒܡܣܐܬܐ܂ * ܡܢܘ ܬܩܢ ܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܐܘ ܡܢܘ ܗܘܐ 13
ܠܗ ܡܠܟܐ ܡܠܟ܂ * ܠܡܢܘ ܐܬܡܠܟ ܘܐܠܦܗ܂ ܘܐܘܕܥܗ ܐܘܪܚܐ ܕܕܝܢܐ܂ ܘܐܠܦܗ 14
ܝܕܥܬܐ܂ ܘܐܘܪܚܐ ܕܣܘܟܠܐ ܚܘܝܗ܂ * ܗܐ ܥܡܡܐ ܐܝܟ ܢܛܦܬܐ ܡܢ ܩܩܒܐ܂ ܘܐܝܟ ܡܚܝܠܐ 15
ܕܡܣܐܬܐ܂ ܘܓܙܪܬܐ ܐܝܟ ܐܒܩܐ ܢܫܬܕܘܢ܂

De filiis etiam tuis qui prodibunt ex te, quos 7
tu genitus es, abducentur, & erunt eunuchi
in palatio regis Babylonici. Dixit Hezecia ad 8
Eſaiam, Optimus eſt ſermo Dñi, quem dixiſti,
futuram pacem & veritatem in diebus meis.

CAP. XL.

Conſolamini, conſolamini populũ meum, 1
dicit Deus veſter: Recreate animũ Jeroſoly- 2
mæ, & clamitate ad eam: repleta eſt enim exercitu, oblectata eſt peccato, & accepit de manu Dñi duplum omniũ peccatorũ ſuorũ. Vox 3
clamans in deſerto, Reſtituite viã Domino, &
adæquate in ſolitudine ſemitas Deo noſtro.
Omnes valles impleantur, omnes montes & 4
colles humilientur, tumidum vertatur in planum, & locus aſper in planitiem: Ut appareat 5
majeſtas Dñi, & videant eam omnis omninò
caro; quandoquidem os Dñi locutũ eſt. Vox 6
dicens, Clama: dixit, Quid clamabo? Omnis
caro gramen eſt, & omnis decor ejus ſimilis
herbæ campi: Exaruit gramen, & emarcuit 7
herba, quia ſpiritus Domini flavit in ipſum.
Tale eſt gramen hujus populi: Exareſcit gramen, & marceſcit herba; verbum autem 8
Dei noſtri eſt perpetuò conſtans. Montes excelſos conſcende Sion prædicatrix; attolle vocem tuam validè Jeruſalem prædicatrix; attolle, & ne timeto: dic civitatibus Judæ, 9
Ecce Dominus Deus eſt cum robore venturus, 10
& brachium ejus cum fortitudine: ecce merces ejus cum ipſo eſt, & opus illius ante
ipſum; Veluti paſtor qui paſcit gregem ſuum, & brachio ſuo congregat agnos, ſuoque 11
ſinu portat, lactantes autem nutrit. Quis menſus eſt aquas volâ ſuâ, & cœlum dimenſus eſt 12
palmo ſuo? terræ pulverem ſuo menſus eſt
pugillo, montes ponderibus expendit & col- 13
les ſtaterâ? Quis direxit ſpiritum Domini? 14
aut quis fuit illi dator conſilii? Quemnam
conſuluit ut doceret eum, & intelligendam
præberet ei viam judicii, doceret eum ſcientiam, & viam intelligentiæ monſtraret illi?
En populi tanquam guttula è cacabo, & ut 15
momentum ſtateræ, & inſulæ ut pulviſculus
projicientur.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وقال الله ان من بنيك الذين ولدتهم ياخذون ويجعلونهم خصيانا في بيت ملك البابليين • 7
* فقال حزقيا لاشعيا • القول الذي تكلم به الرب صالح • لتكن السلامة والعدل في ايامي • 8
• الفصل الاربعون • عزوا عزوا شعبي قال الله ايها الكهنة * تكلموا في قلب 1 2
ايروشليم • عزوها لان تواضعها كمل • انحلت خطيتها لانها قبلت من يد الرب خطاياها
مضعفة * قريان دكران يوحنا *
* صوت صارخ في البرية • اعدوا طريق الرب • اصنعوا سبل الهنا مستقيمة * كل واد يمتلي • 3 4
وكل جبل واكمة يتضع • ويصير جميع المعوجات مستقيمة • والخشنة الى طريق لينة •
* ويظهر مجد الرب • ويعاين كل ذي جسد خلاص الله • لان الرب تكلم * صوت قايل اصرخ • 5 6
فقلت ماذا اصرخ • كل جسد عشب • وكل مجد الانسان مثل زهر عشب * [MS. Ox. يبس 7
العشب وتساقط الزهر • من اجل ان روح الرب هبت به • هكذي يبس حشيش هذا الشعب •]
* يبس العشب وسقطت الزهر • وكلمة الهنا تدوم الى الابد * على جبل عال اصعد يا مبشر 8 9
صهيون • ارفع صوتك بقوة يا مبشر ايروشليم • ارفعوا ولا تخافوا • قل لمدن يهودا ها الهنا •
* ها الرب يقبل بقوة • وذراعه بسيادة • ها اجرته معه • وعمله قدامه * مثل الراعي الذي 10 11
يرعى قطيعه • وبذراعه يجمع الخراف • ويعزي الحبالى * من كال الما بيده • والسما بشبره 12
وكل الارض بقبضته • من اقام الجبال بالمثقال • والروابي بالميزان * من علم ايضا ضمير 13
الرب • ومن كان له مشيرا حتى يعلمه * او من استشار فعلمه • او من اعطاه حكما • 14
او من اظهر له طريق فهم فيعوضه * ان كل الامم مثل نقطة من قادوس • ومثل ميلان 15
الميزان حسبوا • ومثل غاب يحسبون •

Inſuper dixit Deus quòd de filiis tuis quos 7
genuiſti, abducent, & facient eos eunuchos in domo regis Babyloniorum. Dixit 8
Hezecia ad Eſaiam; Sermo quem locutus eſt Dominus, bonus eſt: ſit tranquillitas & juſtitia in diebus meis.

CAP. XL.

Conſolamini, conſolamini populum 1
meum, dicit Deus, O ſacerdotes: Loquimini in corde Jeroſolymæ, conſolamini 2
eam: quoniam dejectio ejus ceſſavit, ſolutum eſt peccatum ejus; recepit enim è manu Domini peccata ſua, duplicia.

Lectio commemorationis
Johannis.

Vox clamans in deſerto, Parate viam 3
Domini, rectas facite ſemitas Dei noſtri.
Omnis vallis implebitur, omniſque mons 4
& collis humiliabitur; contorta quæque fient recta, & ſalebroſa in viam mollem:
Et apparebit gloria Domini, & videbit 5
omnis corpore præditus ſalutem Dei; nam
Dominus locutus eſt. Vox dicens, Clama; & dixi, Quid clamabo? Omne 6
corpus herba eſt, & omnis gloria humana ſimilis eſt flori herbæ: [MS. Ox. *Areſcit herba, & flos decidit; quia ſpiritus* 7
Domini ſufflavit in eum; ita areſcit herba hujuſce populi:] *Areſcit herba, &* 8
flos decidit; verbum autem Dei noſtri manebit in æternum. Super montem ex- 9
celſum aſcende O prædicator Sionis, attolle potentèr vocem tuam O prædicator Jeroſolymæ, attollite inquam; *& ne timete: dic urbibus Judæ, Ecce Deus noſter: Ecce Dominus venturus eſt cum* 10
robore, & brachium ejus cum dominio: ecce merces ejus cum ipſo eſt, & opus ejus ante ipſum, Ceu paſtor qui paſcit 11
gregem ſuum, & brachio ſuo congregat agnos, & fœtas refocillat. Quis men- 12
ſus eſt aquam manu ſuâ, cœlum palmo ſuo, totamque terram pugillo ſuo? quis montes erexit cum pondere, & colles ſtaterâ? Quis etiam novit mentem Domi- 13
ni? & quis fuit conſiliarius ejus, ut doceret eum? Aut quem ipſe conſuluit, 14
ut doceret ſe? aut quis dedit illi judicium? aut quis præbuit ei viam prudentiæ, ut rependat illi: Quandoquidem 15
cuncti populi tanquam gutta è ſitula, & tanquam præponderatio trutinæ cenſentur, & ut ſylvæ reputentur?

O

יְשַׁעְיָה: מא

.ascensioni sufficiens non ejus bestia & incendere sufficiens non Lebanon Et
16 וּלְבָנוֹן אֵין דֵּי בָּעֵר וְחַיָּתוֹ אֵין דֵּי עוֹלָה׃
.ei sunt reputatæ inani & nihilo pro eo coram nihil sicut gentes Omnes
17 כָּל־הַגּוֹיִם כְּאַיִן נֶגְדּוֹ מֵאֶפֶס וָתֹהוּ נֶחְשְׁבוּ־לוֹ׃
? ei *ordinabitis* similitudinis quid & ? Deum assimilabitis *quem ad* Et
18 וְאֶל־מִי תְּדַמְּיוּן אֵל וּמַה־דְּמוּת תַּעַרְכוּ־לוֹ׃
catenas & : illud expandet auro in aurifex & , faber conflavit Sculptile
19 הַפֶּסֶל נָסַךְ חָרָשׁ וְצֹרֵף בַּזָּהָב יְרַקְּעֶנּוּ וּרְתֻקוֹת
: eliget putrescat non lignum *oblatione Depauperatus* .conflans *argenti*
20 כֶּסֶף צוֹרֵף׃ הַמְסֻכָּן תְּרוּמָה עֵץ לֹא־יִרְקַב יִבְחָר
.se movebit non sculptile præparandum ad, ei quæret sapientem artificem
חָרָשׁ חָכָם יְבַקֶּשׁ־לוֹ לְהָכִין פֶּסֶל לֹא יִמּוֹט׃
capite à est annuntiatum nonne ? audietis nonne ? scietis Nonne
21 הֲלוֹא תֵדְעוּ הֲלוֹא תִשְׁמָעוּ הֲלוֹא הֻגַּד מֵרֹאשׁ
globum super *Sedens* ? terræ fundamenta intelligetis nonne ? vobis
22 לָכֶם הֲלוֹא הֲבִינֹתֶם מוֹסְדוֹת הָאָרֶץ׃ הַיֹּשֵׁב עַל־חוּג
, cœlos *tenue* velut *extendens* : locustæ ut , ejus habitatores & , terræ
הָאָרֶץ וְיֹשְׁבֶיהָ כַּחֲגָבִים הַנּוֹטֶה כַדֹּק שָׁמַיִם
gubernatores *Dans* .habitandum ad *tentorium* sicut eos expandit &
23 וַיִּמְתָּחֵם כָּאֹהֶל לָשָׁבֶת׃ הַנּוֹתֵן רוֹזְנִים
,sunt plantati non Etiam .fecit inane velut terræ judices : nihilum in
24 לְאָיִן שֹׁפְטֵי אֶרֶץ כַּתֹּהוּ עָשָׂה׃ אַף בַּל־נִטָּעוּ
: eorum truncum terra in *radicavit* non etiam , sunt sati neque etiam
אַף בַּל־זֹרָעוּ אַף בַּל־שֹׁרֵשׁ בָּאָרֶץ גִּזְעָם
.eos auferet stipulam velut turbo & ; aruerunt & ,eos in flavit insuper &
וְגַם נָשַׁף בָּהֶם וַיִּבָשׁוּ וּסְעָרָה כַּקַּשׁ תִּשָּׂאֵם׃
Levate ? Sanctus *dicet* : æquabor & , me *assimilabitis quem ad* Et
25 26 וְאֶל־מִי תְדַמְּיוּנִי וְאֶשְׁוֶה יֹאמַר קָדוֹשׁ׃ שְׂאוּ־
educens , hæc creaverit quis videte & ,vestros oculos excelsum in
מָרוֹם עֵינֵיכֶם וּרְאוּ מִי־בָרָא אֵלֶּה הַמּוֹצִיא
multitudine præ : *vocabit nomine in* ipsa omnia ad : eorũ exercitũ numero in
בְמִסְפָּר צְבָאָם לְכֻלָּם בְּשֵׁם יִקְרָא מֵרֹב
dices quid Ut .deficiet non *vir* potentia fortis &,fortitudinum
27 אוֹנִים וְאַמִּיץ כֹּחַ אִישׁ לֹא נֶעְדָּר׃ לָמָּה תֹאמַר
, Domino à mea via est Abscondita ? Israel loqueris & , Jahacob
יַעֲקֹב וּתְדַבֵּר יִשְׂרָאֵל נִסְתְּרָה דַרְכִּי מֵיְהוָה
non an , nôsti Nonne .transibit meum judicium meo Deo à &
28 וּמֵאֱלֹהַי מִשְׁפָּטִי יַעֲבוֹר׃ הֲלוֹא יָדַעְתָּ אִם־לֹא
non , terræ *extremitates creans* Dominus *seculi* Deus ? audisti
שָׁמַעְתָּ אֱלֹהֵי עוֹלָם יְהוָה בּוֹרֵא קְצוֹת הָאָרֶץ לֹא
Dans .ejus intelligentiæ investigatio non : laborabit nec ,*fatigabitur*
29 יִיעַף וְלֹא יִיגָע אֵין חֵקֶר לִתְבוּנָתוֹ׃ נֹתֵן
Lassabunturque .*multiplicabit* robur , vires non cui &:fortitudinẽ lasso
30 לַיָּעֵף כֹּחַ וּלְאֵין אוֹנִים עָצְמָה יַרְבֶּה׃ וְיִעֲפוּ
sperantes At *corruent corruendo* electi & : laborabunt & , pueri
31 נְעָרִים וְיִגָעוּ וּבַחוּרִים כָּשׁוֹל יִכָּשֵׁלוּ׃ וְקוֹיֵ
non & current : aquilæ sicut ala ascendent ,robur mutabunt , Domino
יְהוָה יַחֲלִיפוּ כֹחַ יַעֲלוּ אֵבֶר כַּנְּשָׁרִים יָרוּצוּ וְלֹא
.lassabuntur non & *ibunt* ; laborabunt
יִיגָעוּ יֵלְכוּ וְלֹא יִיעָפוּ׃

CAP. XLI. מא

,accedant : fortitudinem innovent *nationes &* , *insulæ me ad* Tacete
1 הַחֲרִישׁוּ אֵלַי אִיִּים וּלְאֻמִּים יַחֲלִיפוּ כֹחַ יִגְּשׁוּ
.accedamus judicium ad pariter ,loquantur tunc
אָז יְדַבֵּרוּ יַחְדָּו לַמִּשְׁפָּט נִקְרָבָה׃

Versio VUL. LAT.

16 Et Liban⁹ non sufficiet ad succendendũ, et animalia ejus non sufficient ad holocaustum. 17 Omnes gentes quasi non sint, sic sunt coram eo, & quasi nihilũ 18 & inane reputatæ sunt ei. Cui ergò similem fecistis Deum? aut quam imaginem ponetis 19 ei? Numquid sculptile conflavit faber? aut aurifex auro figuravit illud, & laminis argenteis argentarius? 20 Forte lignum et imputribile elegit: artifex sapiens quærit quomodò statuat simulachrum quod non moveatur. 21 Numquid non scitis? numquid non audistis? numquid non annuntiatũ est vobis ab initio? Numquid non intellexistis fundamenta terræ? 22 Qui sedet super gyrum terræ, & habitatores ejus sunt quasi locustæ: qui extendit velut nihilũ cœlos, et expandit eos, sicut tabernaculum ad inhabitandũ. 23 Qui dat secretorũ scrutatores quasi non sint, judices terræ velut inane fecit: 24 Et quidẽ neque plantat⁹, neq; satus, neque radicatus in terra truncus eorum: repentè flavit in eos, & aruerunt, & turbo quasi stipulam auferet eos. 25 Et cui assimilastis me, & adæquâstis, dicit 26 Sanctus? Levate in excelsum oculos vestros, & videte quis creavit hæc: qui educit in numero militiam eorũ, & omnes ex nomine vocat: præ multitudine fortitudinis & roboris, virtutisque ejus, neque unum 27 reliquũ fuit. Quarè dicis Jacob, & loqueris Israel; Abscondita est via mea à Domino, & à Deo meo judiciũ meum transivit? 28 Numquid nescis, aut non audîsti? Deus sempiternus Dñs, qui creavit terminos terræ: non deficiet, neque laborabit, nec est investigatio sapientiæ ejus. 29 Qui dat lasso virtutem: & his, qui non sunt, fortitudinem & 30 robur multiplicat. Deficient pueri, & laborabunt, & juvenes in infirmitate cadent. 31 Qui autem sperant in Domino, mutabunt fortitudinem, assument pennas sicut aquilæ, current & non laborabunt, ambulabunt & non deficient.

CAP. XLI.

1 TAceant ad me insulæ, & Gentes mutent fortitudinẽ: accedãt, & tunc loquantur, simul ad judicium propinquemus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

16 Ὁ δὲ Λίβανος οὐχ ἱκανὸς εἰς καῦσιν, καὶ πάντα τὰ τετράποδα οὐχ ἱκανὰ εἰς ὁλοκάρπωσιν. 17 Καὶ πάντα τὰ ἔθνη ὡς οὐδέν εἰσι, 18 καὶ εἰς οὐθὲν ἐλογίσθησαν. Τίνι ὡμοιώσατε κύριον, καὶ τίνι ὁμοιώματι ὡμοιώσατε αὐτόν; 19 Μὴ εἰκόνα ἐποίησε τέκτων, ἢ χρυσοχόος χωνεύσας χρυσίον περιεχρύσωσεν αὐτόν; ὁμοίωμα κατεσκεύασεν 20 αὐτόν; Ξύλον γὰρ ἄσηπτον ἐκλέγεται τέκτων, καὶ σοφῶς (κ) ζητήσει πῶς στήσει (λ) εἰκόνα 21 αὐτοῦ, καὶ ἵνα μὴ σαλεύηται. Οὐ γνώσεσθε; οὐκ ἀκούσεσθε; οὐκ ἀνηγγέλη ἐξ ἀρχῆς ὑμῖν; οὐκ 22 ἔγνωτε τὰ θεμέλια τῆς γῆς; Ὁ κατέχων τὸν γῦρον τῆς γῆς, καὶ οἱ ἐνοικοῦντες ἐν αὐτῇ ὡς ἀκρίδες· ὁ στήσας ὡς καμάραν τὸν οὐρανὸν, 23 καὶ διατείνας ὡς σκηνὴν κατοικεῖν. Ὁ διδοὺς ἄρχοντας (μ) ὡς οὐδὲν ἄρχειν, τὴν δὲ 24 γῆν ὡς οὐδὲν ἐποίησεν. Οὐ γὰρ μὴ (ν) φυτεύσωσιν, οὐδὲ μὴ σπείρωσιν, οὐδὲ μὴ ῥιζωθῇ εἰς τὴν γῆν ἡ ῥίζα αὐτῶν. ἔπνευσεν ἐπ' αὐτοὺς, καὶ ἐξηράνθησαν, καὶ καταιγὶς ὡς 25 φρύγανα (ξ) λήψεται αὐτούς. Νῦν οὖν τίνι με ὡμοιώσατε, καὶ ὑψωθήσομαι; εἶπεν ὁ ἅ-26 γιος. Ἀναβλέψατε εἰς (ο) ὕψος τοὺς ὀφθαλμοὺς ὑμῶν, καὶ ἴδετε, τίς κατέδειξε (π) ταῦτα πάντα; ὁ ἐκφέρων (·) κατ' ἀριθμὸν τὸν κόσμον αὐτοῦ, (ρ) πάντας ἐπ' ὀνόματι καλέσει ἀπὸ (σ) πολλῆς δόξης, καὶ ἐν κράτει 27 ἰσχύος (τ) αὐτοῦ· οὐδέν σε ἔλαθε. Μὴ γὰρ εἴπῃς Ἰακώβ, καὶ τί ἐλάλησας Ἰσραήλ, Ἀπεκρύβη ἡ ὁδός μου ἀπὸ τοῦ θεοῦ, καὶ ὁ θε-28 ός μου τὴν κρίσιν ἀφεῖλε, καὶ ἀπέστη; Καὶ νῦν οὐκ ἔγνως; εἰ μὴ ἤκουσας; θεὸς αἰώνιος, (υ) ὁ θεὸς ὁ κατασκευάσας τὰ ἄκρα τῆς γῆς· οὐ πεινάσει, οὐδὲ κοπιάσει, οὐδὲ ἔστιν ἐξεύ-29 ρεσις τῆς φρονήσεως αὐτοῦ, Διδοὺς τοῖς πεινῶσιν ἰσχὺν, καὶ τοῖς μὴ ὀδυνωμένοις λύπην. 30 Πεινάσουσι γὰρ νεώτεροι, καὶ κοπιάσουσι νεα-31 νίσκοι, καὶ ἐκλεκτοὶ ἀνίσχυες ἔσονται. Οἱ δὲ ὑπομένοντες τὸν θεὸν, ἀλλάξουσιν ἰσχὺν, πτεροφυήσουσιν ὡς ἀετοὶ, δραμοῦνται καὶ οὐ κοπιάσουσι, βαδιοῦνται καὶ οὐ πεινάσουσιν.

Libanus autẽ non suffic
buriendum: & omnia qua
non sufficiunt ad holocau
cunctæ gentes quasi nihil
& in nihilum reputatæ
similem fecistis Domin
simulachro assimilastis
quid imaginem fecit
aurifex fundens aurum
ravit illum? simulachrum
vit eum? Lignum enim
eligit faber, & sapient
quomodò statuat imag
& ut non moveatur. Non
tis? nonne audietis? nonne
tiatum est vobis à princip
cognovistis fundamenta
Qui tenet gyrum terræ
tatores ejus quasi locustæ
tuit, quasi cameram, cœlum
tendit quasi tabernaculum
bitandum: Qui dat princ
nihil præesse; terram
nihil fecit. Siquidem
bunt, neque serent, ne
in terram radix eorum.
per eos, & arefacti sunt
pestas tanquam stipulas
Nunc ergò, cui assimila
exaltabo? dixit Sanctus
in excelsum oculos vest
dete, quis ostendit hæc
educit juxta numerum
suum; omnes in nomine
multa gloria, & in
tudinis (d) suæ:
Non enim dicas Jacob,
loquutus es Israel; A
via mea à Deo: & Deus
dicium abstulit, &
nunc nescis, & non au
æternus, Deus, qui
minos terræ, non esuri
rabit: nec est investig
jus: Qui dat esurientib
dinem, et non dole
rem. Esurient enim
borabunt adolescente
firmi erunt. Qui autem
Deum; mutabunt
sument alas, quasi
et non laborabunt: gradientur, et

MS.A. (κ) ζητεῖ (λ) αὐτοῦ εἰκόνα, (μ) εἰς οὐδὲν (ν) σπείρωσιν, φυτεύσουσιν, (ξ) ἀναλήψεται (ο) τὸ ὕψος (π) πάντα ταῦτα; (·) κα (σ) τῆς πολλῆς (τ) ἰσχύος· οὐδέν σε (υ) θεὸς

ΚΕΦ. μα'.

1 ἘΓκαινίζεσθε πρὸς μὲ νῆσοι, οἱ γὰρ ἄρχοντες ἀλλάξουσιν ἰσχύν. ἐγγισάτωσαν καὶ λαλησάτωσαν ἅμα, τότε (α) κρίσιν ἀναγγειλάτωσαν.

CAP. X
INnovamini
principes enim
num. Appropinqu
simul: tunc judicium

MS.A. (α) κρίσεις

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 17 ואילני לבנן לא יספקון לאדלקא וחיותא דבה לית היא כמסת לעלתא׃ כל עממיא
18 כלמא עובדיהון גמירא ושיצאה אנון חשיבין קדמוהי׃ ולמן אתון מדמן למדן קדם אל
19 ומה דמות אתון מסדרין קדמוהי׃ הא צלמא נגרא עביד וקנאה בדהב מחפי ליה
20 ושלשלן דכסף קינאה מאחיד ליה׃ אורן ברי אעא דלא אחיד בידה רקבא בחר נגר
21 אומן בעיליה לאתקנא צלם דלא יצטלי׃ הלא ידעתון הלא שמעתון הלא אתחוא מן
אולא עובד סדרי בראשית לכון הלא תסתכלון למדחל קדם מן דברא יסודי ארעא׃
22 דאשרי בתקוף רומא שכינת יקריה וכל יתבי ארעא חשיבין קדמוהי כקמצין דמתח
23 כזעיר שמיא ופרסנון כמשכן יקרא לבית שכנתא׃ דמסר שלטונין לחולשא דיני
24 ארעא כלמא עביד׃ אפילו יפשון אפילו יסגון אפילו יתרבון בארעא בניהון ואף רוגזיה
25 ישלח בהון ויבהתון ומימריה כעלעולא לקשא ידבר יתהון׃ ולמן תדמון קדמי ותשוון
26 יימר קדישא׃ זקופו לרומא עיניכון וחזו למדחל קדם מן דברא אלן דאפיק במנין חילי
27 שמיא לכולהון בשמהן קרי מסני גבורן ותקוף חיל חד מסדריה לא מתעכב׃ למה
תימר יעקב ותמלל ישראל מטמרא ארחי מן קדם יי ומן קדם אלהי דיני יעדי׃
28 הלא ידעתא אם לא שמעת אלה עלמא יי די ברא יסודי ארעא לא בעמל ולא
29 בליאו לית סוף לסוכלתנותיה׃ דיהב לצדיקיא דמשלהן לפתגמי אוריתא חוכמא
30 ודלית להון תקוף נכסין מסגי׃ וישתלהון עולימין חיבין וילאון ורוקי רשיעיא
31 אתקלא יתקלון׃ ודסברו לפורקנא דיי יתכנשון מביני גלותהון ויוספון חיל ויתחדתון
לעולמתהון כצמוח דסליק על גדפי נשרין ירהטון ולא ילאון יהכון ולא ישתלהון׃

מא

1 אציתו לממרי נגון ומלכון יספון חיל יתקרבון בכן ימללון כחדא לדינא נתקרב׃

PARAPH CHALD. Versio Latina

Arbores autem Libani non sufficient ad succendendũ, & anima
in eo non sufficient ad holocausta. Omnes populi quasi nihilũ, &
rum velut consumptio, & destructio habentur coram eo. Quem
putatis contendere posse cum Deo? aut quam similitudinem vos
coram eo? Ecce simulacrum facit faber, & aurifex auro operit
catenis argenteis argentari⁹ conjungit illud. *Ornum succidit,* lign
putredo non comprehendit eligit: fabrũ artificem quærit sibi
simulacrum quod non commoveatur. Nónne cognovistis? num
audistis? nunquid non annunciatũ est vobis opus *ordinũ creation*
cipio? nunquid non intelligetis timere eum qui creavit fundam
Qui habitare facit majestatem gloriæ suæ in fortitudine excelsi.
habitatores terræ reputati sunt coram eo quasi locustæ: qui exte
paululum cœlos, & expandit eos quasi habitaculum gloriæ dom
statis. Qui tradit principes in infirmitatem; judices terræ qua
facit. Quamvis invalescant, quamvis crescant, & quamvis e
terra filii eorum, furorem tamen suum mittet in eos, & turba
Verbum ejus *auferet* eos velut tempestas stipulam. Cui autem
lastis me, & adæquâstis; dicit Sanctus. Levate in excelsum ocul
& videte, ut timeatis coram illo qui creavit hæc; qui educ
militiam cœlorum, & omnes nomine suo vocat: præ multitu
dinum & robore virtutis nullus impeditur ab ordine suo.
Jacob & loqueris Israel, Abscondita est via mea à facie Dñi,
Dei mei judicium meum transibit? Nunquid nescis, aut non au
sempiternus est Dñs qui creavit fundamenta terræ, non in labor
in defatigatione; non est finis intellectui ejus. Qui dat justis
ba legis anhelant, sapientiam; & eis qui non habent fortitud
multiplicat. Et defatigabuntur juvenes peccatores & labora
nes impii corruendo corruent. Qui autem sperant in salutare
gregabuntur de medio captivitatis suæ, & addent fortitudinem
buntur juventuti suæ, sicut germen quod crescit: super alas a
rent, & non laborabunt, ambulabunt & non defatigabuntur.

CAP. XLI.

AUsculta te insulæ verbum meum, & regna addant fortitu
dant, & tunc loquantur, simul ad judicium appropinquemus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܒܢܢ ܠܐ ܣܦܩ ܠܗ ܠܡܘܩܕܐ. ܘܚܝܘܬܗ ܠܐ ܣܦܩܐ ܠܗ ܠܥܠܬܐ. * ܘܟܠܗܘܢ 16
ܥܡܡܐ ܐܝܟ ܠܐ ܡܕܡ ܚܫܝܒܝܢ ܠܗ. ܠܐܒܕܢܐ ܘܠܚܪܒܐ ܚܫܝܒܝܢ ܠܗ. * ܠܡܢ ܕܡܝܬܘܢܝܗܝ 17
ܠܐܠܗܐ. ܘܠܐܝܢܐ ܕܡܘܬܐ ܕܡܦܠܬܘܢܝܗܝ. * ܨܠܡܐ ܗܘ ܕܥܒܕ ܢܓܪܐ. ܘܩܝܢܝܐ ܚܦܐ 18
ܦܪܙܠܗ : ܘܫܪܫܠܬܐ ܕܣܐܡܐ ܡܬܟܠ ܠܗ. * ܦܣܩ ܗܘ ܩܝܣܐ ܕܠܐ ܡܬܬܪܩܒ. ܘܢܓܪܐ ܚܟܝܡܐ 19
ܘܡܫܟܠܠ ܠܗ. ܕܢܥܒܕ. ܘܢܬܩܢ ܨܠܡܐ ܕܠܐ ܢܙܘܥ. * ܠܐ ܝܕܥܬܘܢ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ. ܘܠܐ ܐܬܐܡܪ 20
ܠܟܘܢ ܡܢ ܫܘܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܬܘܢ ܫܬܐܣܘܗܝ ܕܐܪܥܐ. * ܘܡܢ ܕܝܬܒ ܥܠ ܚܘܓܗ 21
ܕܐܪܥܐ. ܘܥܡܘܪܝܗ ܐܝܟ ܩܡܨܐ. ܕܡܬܚ ܫܡܝܐ ܐܝܟ ܟܒܪܐ. ܘܡܬܚ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܡܫܟܢܐ 22
ܠܡܥܡܪ. * ܕܝܗܒ ܫܠܝܛܢܐ ܠܐ ܡܕܡ. ܘܕܝܢܐ ܕܐܪܥܐ ܐܝܟ ܕܠܐ ܗܘܘ. * ܠܐ ܢܬܢܨܒܘܢ ܘܠܐ 23
ܢܙܕܪܥܘܢ. ܘܠܐ ܢܫܪܫ ܒܐܪܥܐ ܥܩܪܗܘܢ. ܢܦܘܚ ܒܗܘܢ ܘܢܝܒܫܘܢ. ܘܥܠܥܠܐ ܢܫܩܘܠ ܐܢܘܢ ܐܝܟ 24
ܓܠܐ. * ܠܡܢ ܕܡܝܬܘܢܢܝ ܕܐܫܘܐ ܠܗ. ܐܡܪ ܩܕܝܫܐ. * ܐܪܝܡܘ ܥܝܢܝܟܘܢ 25
ܠܡܪܘܡܐ. ܘܚܙܘ ܡܢܘ ܒܪܐ ܗܠܝܢ. ܕܐܦܩ ܒܡܢܝܢܐ ܚܝܠܘܬܗܘܢ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܩܪܐ 26
ܒܫܡܗܐ. ܒܣܘܓܐܐ ܕܐܝܩܪܗ. ܘܒܥܘܫܢܐ ܕܚܝܠܗ ܐܢܫ ܠܐ ܛܥܐ. * ܠܡܢܐ ܐܡܪܬ ܐܢܬ 27
ܝܥܩܘܒ. ܘܐܡܪ ܐܢܬ ܐܝܣܪܝܠ : ܕܐܬܛܫܝܬ ܐܘܪܚܝ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܕܝܢܝ ܥܒܪ ܡܢ
ܐܠܗܝ. * ܠܐ ܝܕܥܬ. ܘܠܐ ܫܡܥܬ ܕܐܠܗܐ ܕܠܥܠܡ ܡܪܝܐ ܗܘ. ܕܒܪܐ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܠܐ 28
ܡܠܐܐ. ܘܠܐ ܠܐܐ. ܘܠܝܬ ܒܘܨܝܐ ܠܣܘܟܠܗ. * ܝܗܒ ܚܝܠܐ ܠܡܠܐܝܐ. ܘܠܡܟܐܒܐ 29
ܚܝܠܐ ܡܣܓܐ. * ܢܠܐܘܢ ܛܠܝܐ ܘܢܫܬܪܚܦܘܢ. ܘܥܠܝܡܐ ܡܬܬܩܠܘ ܢܬܬܩܠܘܢ. 30
* ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܣܟܝܢ ܠܡܪܝܐ ܢܚܠܦܘܢ ܚܝܠܗܘܢ. ܘܢܪܒܘܢ ܓܦܐ ܐܝܟ ܕܢܫܪܐ. ܢܪܗܛܘܢ 31
ܘܠܐ ܢܠܐܘܢ. ܘܢܗܠܟܘܢ ܘܠܐ ܢܫܬܪܚܦܘܢ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܡܐ *
* ܫܬܘܩܘ ܠܝ ܓܙܪܬܐ. ܘܥܡܡܐ ܢܚܠܦܘܢ ܚܝܠܐ. ܢܬܩܪܒܘܢ. ܘܗܝܕܝܢ ܢܡܠܠܘܢ. ܘܐܟܚܕܐ 1
ܠܕܝܢܐ ܢܬܩܪܒܘܢ.

16 * Libanum dedignatur in pyram, & beſtiam ejus dedignatur in holocauſtum : 17 Omnes populi tanquam nihilum reputantur ab eo, ad exitium & gladium æſtimantur ab eo. 18 Cuinam comparatis Deum? & quam ſimilitudinem tribuitis ei? 19 Eſtne ſimulacrum quod fabrefacit lignarius, quod aurifex obducit auro, vel cui argentum purum affigit? 20 Deſtinat enim faber ſeligitque lignum minimè carioſum, ſapientiâ ſuâ cælat illud, ac tum parat ſimulacrum immobile. 21 An non audiviſtis? an non cognoviſtis? an non dictum fuit vobis ab initio : an non percipitis fundamenta terræ, 22 Et eum qui inſidet globo terræ, cujus habitatores ſunt veluti locuſtæ? qui cœlos extendit velut teſtudinem, & diſtendit eos ut tentorium ad habitationem? 23 Qui potentes in nihilum redigit, & judices terræ ac ſi non eſſent? 24 Non plantabunt, neque ſerent, neque radicem in terra fundabunt : flabit in eos, & areſcent, & turbo ceu ſtipulam abripiet illos. 25 Cùm quo me compararetis ut æqualis ſim ei, dicit Sanctus? 26 Attollite in ſublime oculos veſtros, & videte quis creaverit hæc : qui certo numero producit exercitus eorum, & omnibus imponit nomina : quanvis immenſa ſit ipſius majeſtas, & validiſſima potentia ipſius, nullius *tamen* obliviſcitur. 27 Quare loqueris tu Jacob, tuque Iſrael dicis; Abſconditæ ſunt viæ meæ à Domino, & judicium meum remotum à Deo meo? 28 An non cognoviſti? nonne audiviſti Deum in æternum eſſe Dominum, qui condidit extremitates orbis; non fatigatur, neque laborat, cujus prudentia nullatenus declarari *poteſt*. 29 Suppeditat vires defeſſis, & dolore languentibus auget robur. 30 Fatigantur juvenes ac laborant, & adoleſcentes penitùs impingunt : 31 At qui ſperant in Domino, mutabunt vires ſuas, alas emittent ſimiles columbinis, current, neque fatigabuntur; ambulabunt, neque langueſcent.

CAP. XLI.

1 * Silete inſulæ, & populi novas reſumant vires; accedant, ac tum loquantur, & pariter ad judicium accedant.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولبنان لا يوهل للحريق * وجميع ذوي الاربع قوايم ليس هم اهل للقربان * وجميع الامم 16 17
هم مثل لا شي * والي لا شي حسبوا *

* توبيخ النبي لشعب بني اسرايل * الذين اتخذوا الاصنام *

* فماذا اشبهتم الرب وباي شبه شبهتموه * هل يصورون صنعها النجار او سباك سبك ذهبا طلاه 18 19
وعملا هياه * لان النجار انما يختار خشبة لا تسوس * ويطلب بحكمة كيف يقيم له صورة 20
لكيلا تتزعزع * اما علمتم اما سمعتم * اما اخبر لكم منذ البدو * اما عرفتم اساسات الارض 21
* الماسك بحيط الارض الرب * والسكان فيها مثل الجراد * الذي اقام السماء مثل القنطر 22
ومدها مثل القبة لتسكنها * الذي اسلم الروساء ليدوسوا الي لا شي * وقضاة الارض الي لا 23
شي * لا يزرعون ولا يغرسون * ولا يتاصل في الارض اصلهم * هب عليهم ريح فيبسوا والعاصف 24
ياخذهم كالهشيم * الان ايضا بمن شبهتموني وارتفع * قال القدوس * تطلعوا الان الي العلو 25 26
بعيونكم * وانظروا من افطر هذه كلها * الذي استخرج زينته بعدد * والجميع دعاهم باسماء *
من جل كثير وعظم قوة ما انساه شيا * الان هل تقول يا يعقوب * ولماذا تكلمت يا اسرايل 27
طريقي خفيت على الله * والله ازال قضاي * والان اما عرفت اما سمعت * الله ابدي * الله الذي 28
هيا اطراف الارض * لا يجوع ولا يتعب * ولا تفتيش لعلمه * يعطي الجياع قوة * والذين لا 29
يتوجعون غما * لان الاحداث يجوعون * والشبان يتعبون * والمختارون يصيرون غير اقويا * 30
* والذين يرجون الله يبدلون قوة * وينبتون اجنحة مثل النسور * يسرعون ولا يعيون 31
يسلكون ولا يجوعون * * الفصل الحادي والاربعون *
* تجددوا لي ايها الجزاير لان الروساء يبدلون قوة * ليتقربوا معا جميعا ليخبروا حكما * 1

16 * *Ne Libanus quidem æſtimaretur dignus ad rogum, neque omnia quadrupedia digna eſſent ad holocauſtum.* 17 *Omnes gentes ut nihil ſunt, & nihili cenſentur.*

Objurgatio Prophetæ ad populum Iſraeliticum qui idola ſibi adhibuerat.

18 *Cui rei aſſimulatis Dominum? & cui formæ comparatis eum?* 19 *Num figuræ quam conſtruit faber lignarius, vel fuſorius qui fuſo auro obducit illam & in ſimulacrum aptat?* 20 *Nam lignarius electo ligno quod cariem non gignit, induſtriè ſatagit quomodo componat ſibi figuram, & ne ſit obnoxia motationi.* 21 *Nónne cognoviſtis? nónne audiviſtis? annon ſignificatum vobis eſt à principio? annon cognoviſtis fundamenta terræ?* 22 *Qui tenet & complectitur orbem, Dominus eſt; qui verò habitant in eo, ſunt veluti locuſtæ : qui cœlum ut fornicem erexit, illúdque ceu teſtudinem extendit, ut habitaretur :* 23 *Qui principes redegit ad dominandum in nihilum, & judices terræ in nihilum :* 24 *Non ſerentur, neque plantabuntur, neque firmabitur in humo radix eorum : flabit in eos ventus, & areſient, rapiétque eos turbo ceu ſtipulam.* 25 *Jam ergò cui aſſimilatis me ut extollar, ait Sanctus?* 26 *Reſpicite jam in altum oculis veſtris, et contemplamini quis creaverit hæc omnia : qui produxit ornatum ejus in numero, & ſingulis impoſuit nomina; & nihil plurimam ob gloriam ſummámque potentiam, effugit memoriam ejus.* 27 *Num ergò diceres O Jacob? & quid locutus es O Iſrael? Viæ meæ* inquis *Deum latent, & Deus avertit judicium meum.* 28 *Nónne quæſo cognoviſti? nónne audiviſti? Deus eſt æternus, Deus eſt qui diſpoſuit extrema terræ; non eſuriit, neque fatigatur, neque ulla eſt perveſtigatio ſcientiæ ipſius :* 29 *Dat eſurientibus vires; & his qui non patiuntur dolores, anxietatem.* 30 *Nam adoleſcentes quidem eſurient, & juvenes fatigabuntur, & electiſſimi* quique *fient infirmi :* 31 *Sed qui Deum expectant, novas acquirent vires, & producent alas ut aquilæ : celeres erunt, & non deficientur viribus; ambulabunt, & non eſurient.*

CAP. XLI.

1 *Renovamini mihi O inſulæ, quia principes immutant vires : ſimul accedant, tunc litem exponant.*

ישעיה : מא

? ſuum pedem ad eum vocabit , juſtitiam oriente ab ſuſcitavit Quis
מי העיר ממזרח צדק יקראהו לרגלו : 2
pulverem ut dabit , faciet dominari reges & , gentes ejus *facies ad* dabit
יתן לפניו גוים ומלכים ירד יתן כעפר
tranſibit , eos Perſequetur .ejus arcum *propulſam* ſtipulam ut,ejus gladium
חרבו כקש נדף קשתו : ירדפם יעבור 3
, eſt operatus Quis .ingredietur non ſuis pedibus in ſemitam : pace
שלום ארח ברגליו לא יבוא : מי־פעל 4
DOMINUS Ego ? *capite à* generationes vocans , fecit &
ועשה קרא הדרות מראש אני יהוה
, *inſulæ* Viderunt .ipſe ego noviſſimis cum & , primus
ראשון ואת־אחרנים אני־הוא : ראו איים 5
.venerunt & appropinquaverunt : *ſunt attonita* terræ extrema:timuerunt &
וייראו קצות הארץ יחרדו קרבו ויאתיון :
.Confortare , dicet ſuo fratri & : *auxiliabuntur ſuo ſocio* Vir
איש את־רעהו יעזרו ולאחיו יאמר חזק : 6
contuſione cum malleum *lævigantem* aurificem faber confortavit Et
ויחזק חרש את־צרף מחליק פטיש את־הולם 7
, clavis in ipſum *roboravit & : illud bonum juncturam Ad*:dicens , *incudis*
פעם אמר לדבק טוב הוא ויחזקהו במסמרים
: *te* elegi quem Jahacob ,mi ſerve Iſrael tu Et .moveatur ne
לא ימוט : ואתה ישראל עבדי יעקב אשר בחרתיך 8
extremis ab *te* apprehendi *Qui* .mei amici Abraham ſemen
זרע אברהם אהבי : אשר החזקתיך מקצות 9
: tu meus Servus ,tibi dixi & : te evocavi ejus *ſelectis* à & , terræ
הארץ ומאציליה קראתיך ואמר לך עבדי־אתה
: *ego* tecum quia , timeas Ne .te *reprobavi* non & , te elegi
בחרתיך ולא מאסתיך : אל־תירא כי־עמך אני 10
inſuper , te roboravi : tuus Deus ego quia , *molleſcas* ne
אל־תשתע כי־אני אלהיך אמצתיך אף
.meæ juſtitiæ dextera in te ſuſtentavi inſuper , tibi ſum auxiliatus
עזרתיך אף־תמכתיך בימין צדקי :
: te contra *ſuccenſi* omnes erubeſcent & ,afficientur pudore En
הן יבשו ויכלמו כל הנחרים בך 11
, eos Quæres .*tuæ litis* viri peribunt & , nihil tanquam erunt
יהיו כאין ויאבדו אנשי ריבך : תבקשם 12
, nihil tanquam erunt : *tui jurgii* viros , eos invenies non &
ולא תמצאם אנשי מצתך יהיו כאין
DOMINUS ego Quia .*tuæ pugnæ* viri conſumptio quaſi &
וכאפס אנשי מלחמתך : כי אני יהוה 13
Ne : tibi dicens : tuam dexteram apprehendens tuus Deus
אלהיך מחזיק ימינך האמר לך אל־
, Jahacob vermis formides Ne .te *adjuvi* ego , timeas
תירא אני עזרתיך : אל־תיראי תולעת יעקב 14
, DOMINUS dixit ,tibi ſum auxiliatus ego :Iſrael *pauci viri*
מתי ישראל אני עזרתיך נאם־יהוה
,traham *in* te poſui Ecce .Iſrael Sanctus tuus redemptor &
וגאלך קדוש ישראל : הנה שמתיך למורג 15
, comminues & montes triturabis : ora habentem novam tribulam
חרוץ חדש בעל פיפיות תדוש הרים ותדק
; eos tollet ventus & , eos *Sparges* .pones *glumam* ſicut colles &
וגבעות כמץ תשים : תזרם ורוח תשאם 16
,DOMINO in exultabis tu & : eos diſperget turbo &
וסערה תפיץ אתם ואתה תגיל ביהוה
quærentes egeni & , Afflicti .te laudabis Iſrael Sancto in
בקדוש ישראל תתהלל : העניים והאביונים מבקשים 17
DOMINUS ego : periit ſiti in eorum lingua:non & , aquas
מים ואין לשונם בצמא נשתה אני יהוה
.eos derelinquam non Iſrael Deus , eos exaudiam
אענם אלהי ישראל לא אעזבם :

Verſio VULG. LAT.

2 Quis ſuſcitavit ab Oriente juſtum, vocavit eum ut ſequeretur ſe ? dabit in conſpectu ejus gentes,& reges obtinebit: dabit quaſi pulverem gladio ejus, ſicut ſtipulam vento raptã 3 arcui ejus. Perſequetur eos, tranſibit in pace,ſemita in pe- 4 dibus ejus non apparebit. Quis hæc operatus eſt, & fecit, vocans generationes ab exordio? Ego Dominus, primus & no- 5 viſſimus ego ſum. Viderunt inſulæ,& timuerunt,extrema terræ obſtupuerunt, appropin- 6 quaverunt, & acceſſerunt. Unuſquiſque proximo ſuo auxiliabitur, & fratri ſuo dicet; 7 Confortare. Confortavit faber ærarius percutiens malleo eum, qui cudebat tunc temporis, dicens;Glutino bonum eſt: & confortavit eum clavis, ut 8 non moveretur. Et tu Iſrael ſerve meus, Jacob quem elegi, 9 ſemen Abraham amici mei: In quo apprehendi te ab extremis terræ,et à longinquis ej⁹ vocavi te, & dixi tibi;Servus meus es tu, elegi te,& non abjeci te. 10 Ne timeas,quia ego tecũ ſum: ne declines,quia ego De⁹ tuus: confortavi te,et auxiliatus ſum tibi : & ſuſcepit te dextera ju- 11 ſti mei. Ecce confundentur & erubeſcent omnes,qui pugnant adverſùm te : erunt quaſi non ſint, & peribunt viri,qui con- 12 tradicunt tibi. Quæres eos, et non invenies, viros rebelles tuos : erunt quaſi non ſint : & veluti conſumptio, homines 13 bellantes adverſùm te. Quia ego Dominus Deus tuus, apprehendens manum tuam, dicénſque tibi ; Ne timeas, ego 14 adjuvi te. Noli timere vermis Jacob, qui mortui eſtis ex Iſrael : ego auxiliatus ſum tibi, dicit Dominus ; & redemptor 15 tuus Sanctus Iſrael. Ego poſui te quaſi plauſtrum triturans novum, habens roſtra ſerrantia : triturabis montes,& comminues : & colles quaſi pul- 16 verem pones. Ventilabis eos, & ventus tollet, et turbo diſperget eos : et tu exultabis in Domino,in Sancto Iſrael læta- 17 beris. Egeni et pauperes quærunt aquas, et non ſunt : lingua eorum ſiti aruit. Ego Dominus exaudiam eos, Deus Iſrael non derelinquam eos.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

2 Τίς ἐξήγειρεν ἀπὸ ἀνατολῶν δικαιοσύνην, ἐκάλεσεν αὐτὴν κατὰ πόδας αὐτοῦ, (β) καὶ πορεύσεται; δώσει ἐναντίον ἐθνῶν, καὶ βασιλεῖς ἐκστήσει· καὶ δώσει εἰς γῆν τὰς μαχαίρας αὐτῶν, καὶ ὡς φρύγανα ἐξωσμένα τὰ 3 τόξα αὐτῶν. Καὶ διώξεται αὐτοὺς, (γ) διελεύσεται ἐν εἰρήνῃ ἡ ὁδὸς τῶν ποδῶν αὐτοῦ. 4 Τίς ἐνήργησε, καὶ ἐποίησε ταῦτα; ἐκάλεσεν αὐτὴν ὁ καλῶν αὐτὴν ἀπὸ γενεῶν ἀρχῆς. ἐγὼ θεὸς πρῶτος, καὶ εἰς τὰ ἐπερ- 5 χόμενα ἐγώ εἰμι. Εἴδοσαν ἔθνη καὶ ἐφοβήθησαν, τὰ ἄκρα τῆς γῆς ἤγγισαν, καὶ (δ) ἦλθον 6 ἅμα, Κρίνων ἕκαστος τῷ πλησίον, καὶ τῷ 7 ἀδελφῷ βοηθῆσαι· καὶ ἐρεῖ, Ἴσχυσεν ἀνὴρ τέκτων, καὶ χαλκεὺς τύπτων σφύρῃ, ἅμα ἐλαύνων· (')ποτὲ μὲν ἐρεῖ, Σύμβλημα καλόν ἐστιν, ἰσχύρωσαν αὐτὰ ἐν ἥλοις, θήσουσιν αὐ- 8 τὰ, καὶ οὐ κινηθήσονται. Σὺ δὲ Ἰσραὴλ παῖς μου Ἰακὼβ, (ε) καὶ ὃν ἐξελεξάμην, σπέρμα Ἀ- 9 βραὰμ, ὃν ἠγάπησα· Οὗ ἀντελαβόμην ἀπ' ἄκρων τῆς γῆς, καὶ ἐκ τῶν σκοπιῶν αὐτῆς ἐκάλεσά σε, καὶ εἶπά σοι, Παῖς μου εἶ, ἐξ- 10 ελεξάμην σε, καὶ οὐκ ἐγκατέλιπόν σε. Μὴ φοβοῦ, μετὰ σοῦ γάρ εἰμι, μὴ πλανῶ. ἐγὼ γάρ εἰμι ὁ θεός σου, ὁ ἐνισχύσας σε, καὶ ἐβοήθησά σοι, καὶ ἠσφαλισάμην σε τῇ δεξιᾷ τῇ δι- 11 καίᾳ μου. Ἰδοὺ αἰσχυνθήσονται καὶ ἐντραπήσονται πάντες οἱ ἀντικείμενοί σοι, ἔσονται γὰρ ὡς οὐκ ὄντες, καὶ ἀπολοῦνται πάντες 12 οἱ ἀντίδικοί σου. Ζητήσεις αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ εὕρῃς τοὺς ἀνθρώπους οἳ παροινήσουσιν εἰς σέ· ἔσονται γὰρ ὡς οὐκ ὄντες, καὶ οὐκ ἔσονται 13 οἱ ἀντιπολεμοῦντές σε· Ὅτι ἐγὼ ὁ (ζ) θεός σου, ὁ κρατῶν τῆς δεξιᾶς σου, ὁ λέγων 14 σοι, Μὴ φοβοῦ Ἰακὼβ ὀλιγοστὸς Ἰσραὴλ, ἐγὼ ἐβοήθησά σοι, λέγει (η) ὁ θεός σου, ὁ 15 λυτρούμενός σε Ἰσραήλ. Ἰδοὺ ἐποίησά σε ὡς τροχοὺς ἁμάξης ἀλοῶντας καινοὺς (θ) πριστηροειδεῖς, καὶ ἀλοήσεις ὄρη, καὶ λεπτυνεῖς 16 βουνοὺς, καὶ ὡς (ι) χνοῦν θήσεις, Καὶ λικμήσεις, καὶ ἄνεμος λήψεται αὐτοὺς, καὶ καταιγὶς διασπερεῖ αὐτούς. σὺ δὲ εὐφρανθήσῃ ἐν τοῖς 17 ἁγίοις Ἰσραήλ. Καὶ ἀγαλλιάσονται οἱ πτωχοὶ καὶ οἱ ἐνδεεῖς. ζητήσουσι γὰρ ὕδωρ, καὶ οὐκ ἔσται, ἡ γλῶσσα αὐτῶν ἀπὸ τῆς δίψης ἐξηράνθη. ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς, ἐγὼ ἐπακούσομαι ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, καὶ οὐκ ἐγκαταλείψω αὐτοὺς,

MS.A. (β) πορεύσεται; (γ) καὶ διελεύσεται (δ) ἤλθοσ ἐξελεξάμην (ζ) θεὸς ὁ κρατῶν (η) ὁ θεὸς ὁ λυτρούμενος (θ) πρισ
(ι) χνοῦν

Quis ſuſcitavit de O
tiam, vocavit eam ad
& vadi? Dabit in conſ
tium, & reges ob
dabit in terram gladio
ſicut ſtipulas
rum : Et perſequetur
bit in pace via pedum
operatus eſt, & fecit hæc
eam, qui vocat eam, à gene
num principio. Ego Deus
in ea quæ ventura ſunt,
Viderunt gentes, et timue
mini (δ) terræ acceſſerunt
nerunt ſimul, Judicans un
que proximo, & fratri a
andum: & dicet; P
artifex, & ærarius
malleo, ſimul producens
quidem dicet ; (ε) Solida
eſt : confortaverunt ea,
ponent ea, & non move
autem Iſrael, puer meus
& quem elegi, (ε) ſeme
quem dilexi, Quem
extremis terræ, Et à
ejus vocavi te: & di
meus es: elegi te, et n
te: Noli timere, tecum
non (ſ) fallo. Ego enim
tuus, qui confortavi te
tus ſum tibi, et robor
râ juſtâ meâ. Ecce con
et erubeſcent omnes adv
erunt enim quaſi non
bunt omnes inimici tu
eos, et non invenies,
inſanient in te. Erunt
non ſint : et non erunt
adverſus te: Quia ego
qui teneo dexteram tuam
tib ; Ne timeas (ζ)
Iſrael: ego auxiliatus ſum
cit Deus tuus, qui
el. Ecce feci te, quaſi
triturantes novas
modum: et tritu
comminues colles,
pones, Et ventila
feret eos: et tempeſta
los. Tu autem læta
Iſrael : Et exultabunt
inopes. Quærent enim
non erit: Lingua eorum
aruit. Ego Dominus De
audiam Deus Iſrael: et
linquam eos:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 מן איתי בגלאי ממדנחא אברהם בחיר צדיקיא בקשוט קרביה לאתריה מסר קדמוהי
עממין ומלכין תקיפין תבר רמא כעפרא קטולין קדם חרביה כקשא רדופין קדם
3 קשתיה : רדפנון עדא שלם חילת אורח ברגלוהי לא עלת : מן אמר אלין קים אמר 4
ועביד וסדר דריא מלקדמין אנא יי ברית עלמא מבראשית אף עלמי עלמיא דילי אנון
5 בר מני לית אלהא : חזו נגותא וידחלון דבסיפי ארעא יזועון יתקרבון וייתון : גבר ית 6
7 חבריה יסעדון ולאחוהי יימר תקיף : הלא יבהתון בעובדיהון דמתקיף נגרא עם קנאה
מחי בפטישא עם דמטפח בקורנסא ומנא אמר על דבקא תקין הוא ומתקיף ליה
8 במסמרין דלא יצטלי : ואת ישראל עבדי יעקב דאתרעיתי בך זרעיה דאברהם רחימי :
9 דקריבתך מורעית ארעא וממלכותא בחרתך ואמרית לך עבדי את אתרעיתי בך ולא
10 ארחקנך : לא תדחל ארי בסעדך מימרי לא תתבר ארי אנא אלהך אתקפנך אף אסעדנך
11 אף אחדנך בימין קושטי : הא יבהתון ויתכנעון כל עממיא דהוו מתגרין בך יהון כלמא
12 ויבדון אנשי דינך : תבענון ולא תשכחנון לאנשי מצותך יהון כלמא וכלא מדעם גברין
13 דהוו מתגרין למעבד עמך קרב : ארי אנא יי אלהך מתקיף ימינך דאמרית לך לא תדחל
14 מימרי בסעדך : לא תדחלון שבטיא דבית יעקב זרעיתא דישראל מימרי בסעדכון אמר
15 יי ופריקכון קדישא דישראל : הא שויתיכון למורג תקיף חדת מלי סמפורין תקטיל
16 עממיא ותשיצי ומלכותא כמוצא תשוי : תדרנון ורוחא תטלנון ומימריה כעלעולא
17 לקשא יבדר יתהון ואת תבוע במימרא דיי בקדישא דישראל תשתבח : ענותניא
וחשיכיא דמחמדין לאולפנא הא כצחיא למיא ולא משכחין רוחיהון בסגופא משלהיא
אנא יי אקבל צלותהון אלהא דישראל לא ארחקנון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Quis adduxit publicè ab Oriente Abrahã, electũ juſtorũ in veritate
in locũ ſuũ, tradidit in conſpectu ej⁹ populos, & reges fortes contr
jecit quaſi pulverẽ interfectores ante gladiũ ej⁹, & quaſi ſtipulã
ante arcum ej⁹ ? Perſequebatur eos, tranſivit in pace:via
ej⁹ non introivit. Qui dixit hæc, confirmavit ea; dixit & fec
vit generationes à principio. Ego Dñs creavi ſeculũ à princip
ſeculorũ mea ſunt, & abſq; me non eſt Deus. Viderunt inſulæ
& qui in extremis terræ ſunt, contremiſcent, appropinquabun
Unuſquiſq; proximo ſuo auxiliabitur, & fratri ſuo dicet, Confortare
confundentur in operib⁹ ſuis? quòd fortificat faber cum
malleo cum eo qui concutit malleolo, demũ dicit, Solida
fortificat illud clavis ut non commoveatur. Et tu Iſrael ſerve m
elegi, ſemen Abrahæ dilecti mei : Quem adjunxi de cognation
de regnis elegi te : & dixi tibi, Servus meus es tu, elegi te & non
te. Ne timeas, quia in adjutoriũ tuũ erit Verbum meũ : ne frangaris
niam ego Deus tu⁹: confortavi te & auxiliat⁹ ſum tibi ; etiam
dextera veritatis *meæ*. Ecce confundentur & erubeſcent oẽs popu
ebant in te; erunt quaſi nihilũ, & peribũt viri judicii tui. Quæres
invenies viros objurgantes adverſũ te; erunt quaſi non ſint, & nihil
viri qui irruebant ut pugnarent contra te. Quoniam ego Dñs Deus
confortans manũ dexteram tuam : qui dico tibi, Ne timeas, quia
eſt in adjutorium tuum. Ne timeatis tribus domus Jacob
Iſrael ; Verbum meum eſt in auxilium veſtrum, dicit Dñs &
veſter ſanctus Iſrael. Ecce poſui vos quaſi tribulam fortem nova
dentibus: occides populos, & conſumes regna ; quaſi ſtipulam
Diſperges eos, & ventus abripiet eos; & Verbum ejus diſperget
turbo ſtipulas. Tu autem exultabis in verbo Dñi; & in ſancto
beris. Humiles & pauperes qui deſiderant doctrinam ſi
& non inveniunt; ſpiritus eorum in afflictione fatiſcit : ego
orationem eorum, Deus Iſrael non abjiciam eos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܢܘ ܐܥܝܪ ܙܕܝܩܘܬܐ ܡܢ ܡܕܢܚܐ. ܘܩܪܝܗ̇ ܠܪܓܠܗ. ܢܬܟܢܥܘܢ ܩܕܡܘܗܝ ܥܡܡ̈ܐ:
ܘܡܠܟ̈ܐ ܢܬܕܡܪܘܢ. ܢܬܠ ܐܝܟ ܥܦܪܐ ܣܝܦܗ. ܘܐܝܟ ܩܫܐ ܕܢܬܕܪܐ ܩܫܬܗ. * ܢܪܕܘܦ 2
ܐܢܘܢ. ܘܢܥܒܪ ܫܠܡܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܒܪ̈ܓܠܘܗܝ ܠܐ ܢܥܘܠ. * ܡܢܘ ܥܒܕ ܘܣܥܪ. ܡܢ ܕܩܪܐ ܕܪ̈ܐ 3
ܡܢ ܪܫܝܬܐ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܐܚܪܝܐ. ܐܢܐ ܐܢܐ. * ܚܙܝܢܝ ܓܙܪ̈ܬܐ ܘܕܚܠܘ 4
ܣܘܦ̈ܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܙܥܘ ܘܩܪܒܘ. ܘܐܬܘ. * ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ ܢܥܕܪܝܘܗܝ. ܘܠܐܚܘܗܝ ܢܐܡܪ 5
ܐܬܚܝܠ. * ܘܡܠܒܒ ܢܓܪܐ ܠܨܐܪܐ. ܕܪܩܥ ܒܦܛܝܫܐ ܘܡܫܚܠ. ܘܐܡܪ ܥܠ ܕܒܩܐ 6
ܕܫܦܝܪ ܗܘ. ܘܡܚܕܩܝܢ ܠܗ ܒܣܟ̈ܐ. ܕܠܐ ܢܬܬܙܝܥ. * ܘܐܢܬ ܐܝܣܪܐܝܠ ܥܒܕܝ. ܝܥܩܘܒ 7
ܕܓܒܝܬܟ. ܙܪܥܗ ܕܐܒܪܗܡ ܪܚܡܝ ܕܐܚܝܠܬܟ. * ܡܢ ܣܘܦ̈ܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܡܢ ܪ̈ܘܡܝܗ 8
ܩܪܝܬܟ. ܘܐܡܪܬ ܠܟ. ܥܒܕܝ ܐܢܬ. ܓܒܝܬܟ ܘܠܐ ܐܣܠܝܬܟ. * ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܛܠ 9
ܕܥܡܟ ܐܢܐ. ܘܠܐ ܬܬܪܗܒ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܐܠܗܟ. ܐܚܝܠܬܟ. ܐܦ ܥܕܪܬܟ. ܐܦ 10
ܣܡܟܬܟ ܒܝܡܝܢܐ ܕܙܕܝܩܘܬܝ. * ܢܒܗܬܘܢ ܘܢܚܦܪܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܕܡܬܚܪܝܢ ܥܡܟ. 11
ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܠܐ ܡܕܡ. ܘܢܐܒܕܘܢ ܒܢ̈ܝܢܫܐ ܕܕܝܢܝܢ ܥܡܟ. * ܬܒܥܐ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܬܫܟܚ ܐܢܘܢ. 12
ܠܒܢ̈ܝܢܫܐ ܕܕܝܢܝܢ ܥܡܟ. ܢܗܘܘܢ. ܐܝܟ ܕܠܐ ܗܘܘ. ܒܢ̈ܝܢܫܐ ܕܡܬܟܬܫܝܢ ܥܡܟ.
* ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ ܡܚܝܠܢܐ ܕܝܡܝܢܟ. ܐܡܪܢܐ ܠܟ. ܠܐ ܬܕܚܠ. ܐܢܐ ܐܢܐ 13
ܥܕܘܪܟ. * ܠܐ ܬܕܚܠ ܬܘܠܥܬܐ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܩܠܡܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܥܕܘܪܟ 14
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܦܪܘܩܟ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. * ܗܐ ܥܒܕܬܟ. ܐܝܟ ܥܓܠܬܐ ܚܕܬܐ ܕܕܝܫܐ 15
ܘܡܕܩܐ. ܬܕܘܫ ܛܘܪ̈ܐ ܘܬܕܩ. ܘܪ̈ܡܬܐ ܐܝܟ ܥܘܪܐ ܬܥܒܕ. * ܬܕܪܐ ܐܢܘܢ. ܘܡܥܠܥܠܐ ܬܒܕܪ 16
ܐܢܘܢ. ܘܐܢܬ ܬܚܕܐ ܒܡܪܝܐ. ܘܒܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ ܬܫܬܒܗܪ. * ܘܡܣܟܢ̈ܐ ܘܒܨܝܪ̈ܐ 17
ܕܒܥܝܢ ܡܝ̈ܐ. ܘܠܝܬ. ܘܠܫܢܗܘܢ. ܒܨܗܝܐ ܝܒܫ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܥܢܐ ܐܢܘܢ. ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܘܠܐ ܐܫܒܘܩ ܐܢܘܢ.

* Quis excitavit juſtitiam ab Oriente, & vo- 2
cavit eam ad pedem ſuum? cedant coram eo
populi, & reges obſtupeſcant: ſimilem red-
det pulveri gladium ejus, (*eorum,*) & ſimilem
ſtipulæ labenti arcum ejus. Perſequetur eos, 3
& reſtituet pacem, & viam pedibus ſuis non
introducet. Quis diſpoſuit, ac fecit? qui 4
ſecula vocavit ab initio: ego ſum Dominus,
primus, & ultimus ego ſum. Viderunt me 5
inſulæ, & timuerunt extrema terræ; timue-
runt, acceſſerunt, & venerunt. Quiſque ſo- 6
cium ſuum adjuvat, & fratri ſuo dicit; Forti
ſis animo. Faber lignarius animum dat au- 7
rifici qui malleo tundit ac deſudat, dicítque
de glutine quòd ſit optimum; & firmant il-
lud clavis, ne moveatur. Itaque Iſrael ſerve 8
meus, Jacob quem elegi, ſemen Abrahæ ami-
ci mei, quod roboravi. Quod ab extremis 9
terræ & editioribus locis ejus vocavi, dixíque
tibi; Servus meus es, elegi te, nec ſpernam
te: Ne timeas, quia tecum ſum; & ne ter- 10
rearis, quia ego ſum Deus tuus: corrobora-
bo te, & opem feram tibi, fulciámque te
dexterâ juſtâ meâ. Rubore & ignominiâ 11
perfundentur quicunque adverſantur tibi, e-
runt ut nihilum & peribunt qui tecum de-
certant. Quæres eos, & non invenies ho- 12
mines illos qui tecum decertant: erunt ac
ſi non eſſent homines illi qui te impugnant;
Quoniam ego ſum Dominus Deus tuus 13
corroborator dexteræ tuæ. Ne timeas in-
quam, ego ſum adjutor tuus: Ne timeas 14
vermicule Jacobi, & pedicule Iſraelis; ego
ſum adjutor tuus, ait Dominus; & redem-
ptor tuus Sanctus Iſraelis. Ecce te reddidi 15
quaſi plauſtrum novum conterens et commi-
nuens: triturabis montes atque comminues,
et colles quaſi in glumam rediges: Venti- 16
labis eos, et turbo diſperdet illos: tu autem
exultabis in Domino, et in Sancto Iſraelis
gloriaberis, Pauperes et inopes qui quæ- 17
runt aquas, nec adſunt *eis*, quorum lingua ſiti
areſcit; ego Dominus exaudiam, Deus Iſrae-
lis, nec deſeram eos.

Verſiō ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* من اقام من المشارق عدلا · دعاه عند قدميه · فيسير ويعطي امامه الامم · ويحير الملوك · 2
ويعطي للارض سيوفهم · ومثل الهشيم المقصي قسيهم * ويطردهم ويجوز في السلامة طريق 3
قدميه * من فعل وصنع هذا · الذي دعاها من اجيال الدهور · انا الاله الاول والى الآتيات انا 4
هو * رات الامم وخافت · اطراف الارض ذهلت · اقتربوا وجاوا معا * يدين كل واحد قريبه 5 6
وليعين اخاه ويقول تقوى * الرجل النجار والنحاس الضارب بالمطرقة · ياتي معا يقول ان 7
الرفقة جيدة هي · يثبتوهم بمسامير يضعوهم فلا يتحركون ·

* الاصحاح العشرون ·

* وانت يا اسرائيل عبدي · يعقوب الذي اخترته · زرع ابراهيم الذي احببته وعضدته · 8
* من اطراف الارض ومن مراقبها دعوتك فقلت لك · انت عبدي · واخترتك ولست 9
اتركك * لا تخف لاني انا معك · لا تضل اني انا الهك الذي قويتك واعنتك احرستك 10
بيميني العادلة * ها يفتضحون ويخجلون جميع الذين يعاندونك · لانهم يصيرون كانهم 11
لم يكونوا · ويهلك جميع خصومك * تطلبهم فلا تجد الناس الذين يخامرون عليك · 12
يصيرون كانهم لم يكونوا · ولا يكون الذين يحاربونك * لاني انا الهك الماسك 13
بيمينك · القايل لك لا تخف · انا اعينك * لا تخف يا يعقوب الدودة · اسرائيل القليل · انا 14
اعينك قال الله منقذك قدوس اسرائيل * ها جعلتك مثل البكرات الجدد التي للعجلة 15
شبه المناشير التي تدرس · فتدرس الجبال وتسحق الاكام * وتضعهم مثل التراب وتطحنهم 16
والريح تاخذهم · والعاصف يبددهم وانت تفرح باطهار اسرائيل · ويبتهج المساكين * لان 17
المقلين يطلبون الماء ولا يكون لسانهم ييبس من العطش · انا الرب الاله · انا اله اسرائيل
اسمعك · ولست اتركك ·

* *Qui excitavit ab Oriente juſtitiam, &* 2
vocavit eam ad pedes ſuos, perget, ex-
ponétque ei gentes, & obſtupefaciet reges,
terræ dabit enſes eorum, & ſicut ſtipu-
pulam expulſam arcus eorum: Perſe- 3
quetur eos, tranſigétque incolumis iter pe-
dum ſuorum. Quis operatus eſt & fe- 4
cit iſtud? qui vocavit illud ab ævis æter-
nis. Ego ſum Deus primus, & ad ventura
ſecula ego ſum. Videntes populi timue- 5
runt, extrema terræ obſtupuerunt; acceſ-
ſerunt, ſimulque venerunt, Ad judi- 6
candum quiſque proximum ſuum, & au-
xiliandum fratri ſuo, dicens; Confirmare.
Homo lignarius, & ærarius malleo tun- 7
dens, unà conveniunt et dicunt interdum,
Optima eſt ſocietas: firmant eos clavis, &
collocant eos, ne dimoveantur.

Textus vigeſimus.

At tu O Iſrael ſerve meus, Jacob quem 8
elegi, ſemen Abrahami quem dilexi &
adjuvi. Ab extremitatibus terræ & è 9
ſpeculis ejus vocavi te, dixíque tibi;
Servus meus es, te elegi, nec derelinquam
te: Ne timeto, quia tecum ſum; ne ab- 10
erres, quia Deus tuus ſum qui vires &
opem tibi præſtiti: dexterâ juſtâ meâ te
cuſtodivi. En erubeſcent & pudefient 11
omnes qui te impugnant, fient enim ac ſi
nunquam fuiſſent, & peribunt omnes ad-
verſarii tui. Quæres homines qui te per- 12
turbant, nec invenies: erunt ac ſi non fuiſ-
ſent, & non ſubſiſtent qui te oppugnant:
Quoniam ego ſum Deus tuus tenens dex- 13
teram tuam, dicens tibi; Ne timeto, ego
opem feram tibi; Ne timeto O Jacob 14
vermicule, Iſrael perpauce: ego opem tibi
feram, inquit Deus redemptor tuus, San-
ctus Iſraelis. Ecce reddam te ſimilem 15
rotis novis plauſtri, ſimilem ferris tritu-
rantibus: & triturabis montes, colléſque
comminues: Et in pulverem rediges 16
eos, moles eos, abripiétque eos ventus, &
turbo diſperget illos: tu verò gaudebis in
ſanctis Iſraelis, & exultabunt pauperes:
Quoniam inopes aquam petent, & non 17
areſcet lingua eorum ſiti: ego Dominus
Deus, ego Deus Iſraelis audiam te, &
non derelinquam te;

ישעיה : מב

: fontes camporum medio in & , flumina *editioribus super* Aperiam
18 אפתח על־שפיים נהרות ובתוך בקעות מעינות
exitus in *siccitatis* terram & ,aquarum stagnum in desertum ponam
אשים מדבר לאגם־מים וארץ ציה למוצאי
lignum & ,myrtum & , *Sittah* , cedrum *deserto* in Dabo .aquarum
19 מים : אתן במדבר ארז שטה והדס ועץ
.pariter buxum & , *sapinum* , abietem deserto in ponam : olivæ
שמן אשים בערבה ברוש תדהר ותאשור יחדו :
manus quia pariter intelligant & ,reponant &,sciant &,videant Ut
20 למען יראו וידעו וישימו וישכילו יחדו כי יד־
Appropinquate .illud creavit Israel Sanctus & : hoc fecit Domini
21 יהוה עשתה זאת וקדוש ישראל בראה : קרבו
dicet , *vestra fortia* facite accedere : Dominus *dicet* , *vestram litem*
ריבכם יאמר יהוה הגישו עצמותיכם יאמר
: accident quæ nobis nuntient & , Accedant .Jahacob rex
22 מלך יעקב : יגישו ויגידו לנו את אשר תקרינה
sciemus &,nostrum cor ponemus & ,nuntiate , *ipsa quid* priora
הראשנות מה הנה הגידו ונשימה לבנו ונדעה
ventura Annuntiate .nos audire facite *ventura* aut ,eorum *novissimū*
23 אחריתן או הבאות השמיענו : הגידו האתיות
benefacietis etiam *: vos* Dii quòd sciemus & , posterum in
לאחור ונדעה כי אלהים אתם אף־תיטיבו
vos Ecce .simul videbimus & ,narrabimus & ,malefacietis &
24 ותרעו ונשתעה ונרא יחדו : הן־אתם
.vos *in* eliget *abominatio* : nihilo ex vestrum opus &,nihilo ex
מאין ופעלכם מאפע תועבה יבחר בכם :
:meo nomine in vocabit solis ortu ab ; veniet & ,aquilone ab Suscitavi
25 העירותי מצפון ויאת ממזרח־שמש יקרא בשמי
.lutum conculcabit figulus sicut & , lutum sicut *magistratus invadet &*
ויבא סגנים כמו־חמר וכמו יוצר ירמס־טיט :
,dicemus & , *faciebus* à & ? sciemus & , *capite à* annuntiavit Quis
26 מי־הגיד מראש ונדעה ומלפנים ונאמר
audiens non etiam ,*audire faciens* non etiam ,*indicans* non verùm ? justus
צדיק אף אין־מגיד אף אין משמיע אף אין־שמע
Jerusalam ipsi & : ipsi ecce , ecce ,Sijon ad Primus .vestros sermones
27 אמריכם : ראשון לציון הנה הנם ולירושלם
,ipsis ex & , quispiam non & , videbo Et .dabo evangelistam
28 מבשר אתן : וארא ואין איש ומאלה
.verbum respondebunt & , eos interrogabo & : conflator non &
ואין יועץ ואשאלם וישיבו דבר :
inane & ventus : eorum opera nihil , *iniquitas* ipsi omnes En
29 הן כלם און אפס מעשיהם רוח ותהו
.eorum conflatilia
נסכיהם :

CAP. XLII. מב

dedi *: mea anima voluit* ,meus electus *: eo in* innitar ,meus servus Ecce
1 הן עבדי אתמך־בו בחירי רצתה נפשי נתתי
,clamabit Non .faciet exire gentibus judicium,eum super meū spiritum
2 רוחי עליו משפט לגוים יוציא : לא יצעק
Calamum .suam vocem *plateis in* faciet audire neque ;elevabit non &
3 ולא ישא ולא־ישמיע בחוץ קולו : קנה
: ipsum extinguet non *caligans* linum & ,conteret non quassatum
רצוץ לא ישבור ופשתה כהה לא יכבנה
donec ,frangetur nec caligabit Non .judicium educet veritatem ad
4 לאמת יוציא משפט : לא יכהה ולא ירוץ עד־
.expectabunt *insulæ* ejus legem ad & : judicium *terra in* ponat
ישים בארץ משפט ולתורתו איים ייחלו :

Versio VULG. LAT.

18 Aperiam in supinis collibus flumina, & in medio camporum fontes : ponam desertum in stagna aquarum, & terram inviam in rivos aquarum. 19 Dabo in solitudinem cedrum, & spinam, & myrtum, & lignum olivæ : ponam in deserto abietem, ulmum, & buxum simul : 20 Ut videant, & sciant, & recogitent, & intelligant pariter, quia manus Domini fecit hoc, & Sanctus Israel creavit illud. 21 Propè facite judicium vestrum, dicit Dominus; afferte, si quid fortè habetis, 22 dixit rex Jacob. Accedant, & nuntient nobis quæcunque ventura sunt : priora quæ fuerunt nuntiate : & ponemus cor nostrum, & sciemus novissima eorum, & quæ ventura sunt indicate nobis. 23 Annuntiate quæ ventura sunt in futurū, & sciemus quia Dii estis vos : benè quoque aut malè, si potestis, facite : & loquamur, & videamus simul. 24 Ecce, vos estis ex nihilo, & opus vestrum ex eo quod non est : abominatio est qui elegit vos. 25 Suscitavi ab Aquilone, & veniet ab Ortu Solis : vocabit nomen meum, & adducet magistratus quasi lutū & velut plastes conculcans humum. 26 Quis annuntiavit ab exordio ut sciamus, & à principio ut dicamus; Justus es? non est neque annuntians, neque prædicens, neque audiens sermones vestros. 27 Primus ad Sion dicet ; Ecce adsunt, & Jerusalem evangelistam dabo. 28 Et vidi, & non erat neque ex istis quisquam qui iniret consilium, & interrogatus responderet verbum. 29 Ecce omnes injusti, & vana opera eorum : ventus & inane simulachra eorum.

CAP. XLII.

1 Ecce servus meus, suscipiam eum : electus meus, complacuit sibi in illo anima mea : dedi spiritum meum super eum, judicium Gentibus proferet. 2 Non clamabit, neque accipiet personam, nec audietur vox ejus foris. 3 Calamum quassatum non conteret, & linum fumigans non extinguet : in veritate educet judicium. 4 Non erit tristis, neque turbulentus, donec ponat in terra judicium : & legem ejus insulæ expectabunt.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

18 Ἀλλὰ ἀνοίξω ἐπὶ τῶν ὀρέων ποταμοὺς, ϗ ἐν μέσῳ πεδίων πηγάς· ποιήσω τὴν ἔρημον (·) εἰς ἕλη ὑδάτων, ϗ τὴν διψῶσαν γῆν ἐν ὑδραγωγοῖς. 19 Θήσω εἰς τὴν ἄνυδρον γῆν, κέδρον ϗ πύξον, (ι) μυρσίνην ϗ κυπάρισσον, ϗ λεύκην· 20 Ἵνα ἴδωσι ϗ γνῶσι, ϗ ἐννοηθῶσι ϗ (κ) ἐπιστῶνται ἅμα, ὅτι χεὶρ κυρίου ἐποίησε ταῦτα (λ), ϗ ὁ ἅγιος τοῦ Ἰσραὴλ κατέδειξεν. 21 Ἐγγίζει ἡ κρίσις ὑμῶν, λέγει κύριος ὁ Θεός· ἤγγισαν αἱ βουλαὶ ὑμῶν, 22 λέγει ὁ βασιλεὺς Ἰακώβ. Ἐγγισάτωσαν, ϗ ἀναγγειλάτωσαν ὑμῖν ἃ συμβήσεται, ἢ τὰ (¨) πρότερον τίνα ἦν, εἴπατε, ϗ ἐπιστήσομεν τὸν νοῦν, ϗ γνωσόμεθα τί τὰ ἔσχατα ϗ 23 τὰ ἐπερχόμενα· εἴπατε ἡμῖν, Ἀναγγείλατε (μ) ἡμῖν τὰ ἐπερχόμενα ἐπ᾽ ἐσχάτου, ϗ γνωσόμεθα ὅτι θεοί ἐστε. εὐποιήσατε ϗ κακώσατε, ϗ θαυμασόμεθα, (ν) ϗ ὀψόμεθα 24 ἅμα Ὅτι πόθεν ἐστὲ ὑμεῖς, ϗ πόθεν ἡ ἐργασία ὑμῶν. ἐκ γῆς βδέλυγμα ἐξελέξαντο ὑμᾶς. 25 (ʺ) Ἐγὼ δὲ ἤγειρα τὸν ἀπὸ Βορρᾶ, ϗ τὸν (ξ) ἀφ᾽ ἡλίου ἀνατολῶν· (ο) κληθήσονται τῷ ὀνόματί μου. ἐρχέσθωσαν ἄρχοντες, ϗ ὡς πηλὸς κεραμέως, ϗ ὡς κεραμεὺς καταπατῶν τὸν πηλὸν, (π) οὕτω καταπατηθήσεσθε. 26 Τίς γὰρ ἀναγγελεῖ τὰ ἐξ ἀρχῆς, ἵνα γνῶμεν ϗ τὰ ἔμπροσθεν, ϗ ἐροῦμεν ὅτι ἀληθῆ ἐστιν; οὐκ ἔστιν ὁ προλέγων, (ρ) οὐδὲ ὁ ἀκούων ὑμῶν τοὺς λόγους. 27 Ἀρχὴν Σιὼν δώσω, ϗ Ἱερουσαλὴμ παρακαλέσω (σ) εἰς ὁδόν. 28 Ἀπὸ γὰρ τῶν ἐθνῶν, ἰδοὺ (τ) οὐδείς· ϗ ἀπὸ τῶν εἰδώλων αὐτῶν, οὐκ ἦν ὁ ἀναγγέλλων· ϗ ἐὰν ἐρωτήσω αὐτοὺς, Πόθεν ἐστέ; 29 οὐ μὴ ἀποκριθῶσί μοι. Εἰσὶ γὰρ οἱ ποιοῦντες ὑμᾶς, ϗ μάτην οἱ πλανῶντες ὑμᾶς.

Sed aperiam in montibus flum[illegible]
& in medio camporum fon[illegible]
faciam desertum in palude[illegible]
rum, & sitientem terram in [illegible]
ductus. Ponam in terram [illegible]
aqua cedrum, & (b) buxum, [illegible]
tum, & cyparissum, & popu[illegible]
Ut videant & sciant, & cog[illegible]
& noverint simul ; quia manu[illegible]
Domini fecit hec, & Sanctus [illegible]
rael ostendit. Juxta est judi[illegible]
vestrum, dicit Dominus Deu[illegible]
appropinquaverunt consilia [illegible]
dicit rex Jacob. Appropinqu[illegible]
& annuntient vobis, quæ [illegible]
sunt, aut priora, quæ erant, [illegible]
apponem⁹ sensū et sciem⁹ qu[illegible]
novissima: & ventura dicite [illegible]
Nuntiate nobis, quæ (k) ventu[illegible]
in novissimo: & sciemus, quia
Dii estis. Benefacite, & mal[illegible]
te: & admirabimur: & vid[illegible]
mus simul, unde sitis vos & [illegible]
sit opus vestrum. De terra a[illegible]
nationem elegerunt vos. Eg[illegible]
tem suscitavi eum, qui ab A[illegible]
ne est, & qui ab ortu Solis [illegible]
buntur nomine meo. Venia[illegible]
cipes ; & sicut lutum figu[illegible]
ut figulus conculcans lu[illegible]
conculcabimini. Quis enim [illegible]
tiabit ea quæ à principio [illegible]
cognoscam⁹ et quæ ad[illegible]
& dicemus, quia vera [illegible]
est, qui prædicat, neque [illegible]
verba vest[illegible] Principium S[illegible]
bo, & Hierusalem con[illegible]
[illegible]a. Nam de gentibus [illegible]
est; & de idolis ipsorum [illegible]
qui annunciaret: & si [illegible]
vero eos, unde estis ; [illegible]
debunt mihi. Sunt enim [illegible]
vestri, et frustrà, qui seduc[illegible]

MS.A. (·) εἰς ἕλη, ϗ (ι) ϗ μυρσίνην (κ) * ἐπιστῶνται (λ) πα[illegible] πρότερα (μ) τὰ ἐπερχόμενα (ν) Ὅτι πόθεν (ʺ) Ἐγὼ ἤγειρα (ξ) [illegible] σονται (π) οὕτως (ρ) οὐδ᾽ ἀκούων τοὺς λόγους ὑμῶν. (σ) ἐν ὁδῷ. (τ) [illegible]

ΚΕΦ. μβ′.

1 Ἰακὼβ ὁ παῖς μου, ἀντιλήψομαι αὐτοῦ· Ἰσραὴλ ὁ ἐκλεκτός μου, προσεδέξατο αὐτὸν ἡ ψυχή μου, ἔδωκα τὸ πνεῦμά μου ἐπ᾽ αὐτὸν, κρίσιν τοῖς ἔθνεσιν ἐξοίσει. 2 Οὐ (α) κεκράξεται, οὐδὲ ἀνήσει, οὐδὲ ἀκουσθήσεται 3 ἔξω ἡ φωνὴ αὐτοῦ. Κάλαμον (β) τεθλασμένον οὐ συντρίψει, ϗ λίνον καπνιζόμενον οὐ σβέσει, ἀλλὰ εἰς ἀλήθειαν ἐξοίσει κρίσιν. 4 Ἀναλάμψει, ϗ οὐ θραυσθήσεται, ἕως ἂν θῇ ἐπὶ τῆς γῆς κρίσιν, ϗ ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ ἔθνη ἐλπιοῦσιν.

CAP. XLII.
Jacob (a) puer meus, [illegible]
um : Israel electus meus, [illegible]
eum anima mea. Ded[illegible]
meum super eum : judic[illegible]
tibus proferet : Non cla[illegible]
que (c) dimittet, nec au[illegible]
ris vox ejus. Calamum [illegible]
non conteret : & linum [illegible]
gans non extinguet : [illegible]
te proferet judicium : [illegible]
& non conteretur [illegible]
per terram judicium : [illegible]
ne ejus gentes sperab[illegible]

MS.A. (α) κράξεται, (β) συντεθλασμένον

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 אקרב גלותהון מביני עממיא ואדברנון באורח תקנא ואפתח להון על נגדין נהרין ובגו
19 מישרין מבועין אשוי מדברא לאגמין דמין וארע בית צחינא למבועי מיא : אתן במדברא
20 ארזין שטין והדסין ואעין דמשח ארבי במישרא ברון מורנין ואשכרועין כחדא : בדיל
דיחזון וידעון וישוון דחלתי על לבהון ויסתכלון כחדא ארי גבורתא דיי עבדת דא
21 וקדישא דישראל בראיתה : קריבו דינכון אמר יי אעילו חוותכון אמר מלכיה דיעקב :
22 יתקרבון ויחוון לנא ית דערעננא קדמיתא מה אנון חוו ונשוי לבנא ונדע סופהון או
23 דעתידין למיתי בסרונא : חוו דאתין לסופא ונדע אם לטעון דאית בהון צרוך אתון
24 פלחין אם יכלין אנין לאיטבא ולאבאשא ונסתכל ונדון כחדא : הא אתון למא
25 ועובדיכון לא מדעם תועיבא דאתרעיתון ביה לכון : איתיתי בגלאי מלך דתקיף מרוח
צפונא וייתי כמפק שמשא בגבורתיה ממדנחא אגברניה בשמי וייתי וידוש שלטוני
26 עממיא כמא דדישין ית עפרא וכפחרא דעריך ית טינא : מן חוי מן אולא ונדע ומלקדמין
27 ונימר קשוט אף לית די מחוי אף לית דמבסר אף לית דשמע למלכון : פתגמי נחמתא
28 דאתנביאו נביאיא מלקדמין על ציון הא אתו ולירושלם מבסר אתן : וגלי קדמי ולית גבר
29 דליה עובדין טבין ומאלין לית דמליך מלך ושאלתנון אם יתיבון פתגם : הא כילהון
למא ולא מדעם עובדיהון בזא ותברא עשתוניהון :

מב

1 הא עבדי משיחא אקרבניה בחירי דאתרעי ביה מימרי אתן רוחא דקודשי עלוהי דיני
2 לעממין יגלי : לא יצוח ולא יכלי ולא ירים לברא קליה : ענותניא דאנון דמן לקניא
3 רעיע לא יתברון וחשיכיא דכבוצין עמי לא יטפון לקושטא יפיק דינא : לא ילהי ולא
4 ילאי עד דיתקן בארעא דינא ולאוריתיה נגון יכתרון :

PARAPH. CHALD. Versio Latina

Congregabo transmigrationem eorum de medio populorum ; [illegible]
in via recta ; aperiam eis in torrentibus flumina ; & in medi[illegible]
tes : ponam desertum in stagna aquarum, & terram sitientem [illegible]
nem aquarum. Dabo in solitudine cedros & sethim, & myrtos, & [illegible]
crescere faciam in campestribus abietes, & ulmos, & buxos simu[illegible]
ant & sciant, & ponant timorem mei in corde suo, & intellig[illegible]
quòd potentia Dñi fecerit hoc, & sanctus Israel creaverit illud.
facite judicium vestrū, dicit Dñs : afferte quod vobis videtur, [illegible]
cob. Accedant & indicent nobis quæ accident nobis, & prima [illegible]
annuntiate ; & ponemus cor nostrum, & sciemus finem eorum [illegible]
ventura [illegible] enuntiate nobis. Annuntiate quæ ventura sunt [illegible]
sciam⁹, num vos colatis idola in quibus sit utilitas, & num ea po[illegible]
facere aut malefacere : & attendamus & disceptemus simul. Ecc[illegible]
nihili, & opera vestra nequicquam ; abominatio est id quod vo[illegible]
Adducam publicè regem fortem à plaga Aquilonis, & veniet [illegible]
tur Sol ab Oriente, in fortitudine sua : roboraboeum nomin[illegible]
niet, & conculcabit principes populorum sicut conculcatur p[illegible]
figulus qui disponit lutum. Quis annuntiavit ab initio, ut scia[illegible]
olim, ut dicamus Verum est ? nec est enim, qui annuntiet, ne[illegible]
nec qui audiat sermones vestros. Verba consolationum quæ p[illegible]
prophetæ ab initio super Sion, ecce veniunt : & Jerusalem [illegible]
dabo. Manifestum est coram me non esse quenquam cujus op[illegible]
neque istorum ullum esse qui ineat consilium : & interroga[illegible]
sponderent verbum. Ecce omnes illi sunt vanitas, & nihil [illegible]
direptio, & interitus cogitata eorum.

CAP. XLII.

Ecce servus meus Messias ; applicabo eum : dilectus meu[illegible]
complacuit Verbum meum : dabo spiritum sanctum meu[illegible]
judicium meum populis revelabit. Non clamabit, nec voc[illegible]
elevabit foras vocem suam. *Mansueti*, qui *similes* sunt calam[illegible]
confringentur ; & pauperes, qui sunt quasi linum obscur[illegible]
guentur : In veritate adducet judicium. Non erit lassus, nec laborabit, donec dirigat in terra judicium : & legem ejus [illegible]

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܦܬܚ ܢܗܪܘܬܐ ܒܓܘܪܐ. ܘܡܨܥܬ ܦܩܥܬܐ ܡܒܘܥܐ. ܐܥܒܕ ܡܕܒܪܐ ܠܐܓܡܐ ܕܡܝܐ.
18 ܘܐܪܥܐ ܨܗܝܐ ܠܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. * ܐܬܠ ܒܡܕܒܪܐ ܐܪܙܐ ܘܫܡܫܪܐ ܘܐܣܐ ܘܙܝܬܐ
19 ܕܡܫܚܐ. ܐܣܝܡ ܒܦܩܥܬܐ ܒܪܘܬܐ ܫܦܝܪܐ ܐܟܚܕܐ. * ܕܢܚܙܘܢ ܘܢܕܥܘܢ ܘܢܣܬܟܠܘܢ
20 ܘܢܫܬܘܕܥܘܢ ܐܟܚܕܐ: ܕܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܥܒܕܬ ܗܕܐ: ܘܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ ܒܪܗ. * ܩܪܒܘ
21 ܕܝܢܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܩܪܒܘ ܬܪܥܝܬܟܘܢ ܐܡܪ ܡܠܟܗ ܕܝܥܩܘܒ. * ܢܬܩܪܒܘܢ ܘܢܚܘܘܢ
22 ܠܢ ܕܗܠܝܢ. ܩܕܡܝܬܐ ܡܢܐ ܐܝܢܝܢ ܚܘܐܘܢܢ. ܘܢܣܝܡ ܒܠܒܢ. ܘܢܕܥ ܐܚܪܝܬܗܝܢ.
ܐܘ ܕܐܬܝܢ ܐܫܡܥܘܢܢ. * ܚܘܘ ܐܬܘܬܐ ܕܠܗܠܝܢ. ܘܢܕܥ ܕܐܠܗܐ ܐܢܬܘܢ. ܐܦ ܬܛܝܒܘܢ ܐܢܬܘܢ.
23 ܐܦ ܬܒܐܫܘܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܢܫܬܥܐ ܘܢܚܙܐ ܐܟܚܕܐ. * ܗܐ ܐܢܬܘܢ ܠܐ ܡܕܡ ܐܢܬܘܢ.
24 ܘܥܒܕܝܟܘܢ ܡܢ ܚܪܒܐ. ܘܛܢܦܘܬܐ ܓܒܝܢ ܒܟܘܢ. * ܐܥܝܪܬ ܡܢ ܓܪܒܝܐ ܠܕܐܬܐ
25 ܡܢ ܡܕܢܚ ܫܡܫܐ. ܘܢܩܪܐ ܒܫܡܝ. ܘܢܐܬܘܢ ܫܠܝܛܢܐ. ܘܢܕܘܫܘܢ ܐܝܟ ܛܝܢܐ ܕܕܐܫ ܦܚܪܐ.
* ܡܢܘ ܕܚܘܝ ܡܢ ܫܘܪܝܐ. ܘܢܕܥ ܘܢܐܡܪ ܕܙܕܝܩ. ܠܝܬ ܕܡܚܘܐ ܐܦܠܐ ܕܡܫܡܥ. ܐܦܠܐ
26 ܕܫܡܥ ܡܠܝܟܘܢ. * ܫܘܪܝܐ ܠܨܗܝܘܢ ܗܐ ܐܢܘܢ. ܘܠܐܘܪܫܠܡ ܡܣܒܪܢܐ ܐܬܠ. * ܚܙܝܬ
27 ܘܠܝܬ ܐܢܫ ܕܡܬܪܥܐ ܠܗ ܒܗܠܝܢ. ܘܐܫܐܠܝܢܘܢ ܘܢܦܢܘܢ ܠܝ ܦܬܓܡܐ. * ܗܐ ܟܠܗܘܢ
28 29 ܠܐ ܡܕܡ ܐܢܘܢ. ܘܥܒܕܝܗܘܢ ܣܪܝܩܝܢ. ܘܪܘܚܐ ܘܣܪܝܩܘܬܐ ܥܒܕܝܗܘܢ.

Aperiam fluvios in montibus, & in medio planitierum fontes: vertam deſertum in ſtagna aquarum, & terram ſitibundam in ſcaturigines aquarum: 18 Dabo in ſolitudine cedros & buxos, myrtum, & arborem oleoſam: ponam in planitie abietes decoras pariter: 19 Ut videant, cognoſcant, intelligant, ſimúlque percipiant quòd manus Domini fecerit hoc, & Sanctus Iſraelis id creârit. 20 Producite judicia veſtra, dicit Dominus; producite opiniones veſtras, dicit rex Jacobi. 21 Accedant, indicéntque nobis res futuras: quænam ſint præteritæ indicate mihi, ut in animum noſtrum indamus, & fines earum addiſcamus; aut venturas enarrate mihi? 22 Indicia futurarum, ut ſciamus vos deos eſſe, vos etiam benefacere, etiam malefacere: confabulemur, & videamus ſimul. 23 En vos nihil eſtis, & opera veſtra è gladio, & impuritas ſunt electiſſimi veſtrûm. 24 Excitavi ab Aquilone *eum* qui veniet ab ortu ſolis, & invocabit nomen meum: veniéntque principes, & proculcabuntur ſicut argilla quam proculcat figulus. 25 Quis eſt qui indicet *quæ fuerunt* à principio, ut ſciamus & dicamus eum eſſe juſtum? non eſt qui indicet neque qui narret; neque qui audiat verba veſtra. 26 Primordia Sionis hæc ſunt, & Jeroſolymæ evangelizantem dabo. 27 Reſpexi, & nemo eſt qui de his cogitet, ut interrogem eos & reſponſum mihi reddant. 28 En omnes nihil ſunt, opera eorum vana, & aura inanis actiones eorum. 29

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܒ *

* ܗܐ ܥܒܕܝ ܐܣܬܡܟ ܒܗ. ܓܒܝܝ ܕܨܒܬ ܒܗ ܢܦܫܝ. ܝܗܒܬ ܪܘܚܝ ܥܠܘܗܝ. ܕܢܦܩ
1 ܕܝܢܐ ܠܥܡܡܐ. * ܠܐ ܢܩܥܐ ܘܠܐ ܢܕܘܕ. ܘܠܐ ܢܫܡܥ ܩܠܗ ܒܫܘܩܐ. * ܩܢܝܐ ܪܥܝܥܐ
2 3 ܠܐ ܢܬܒܪ. ܘܫܪܓܐ ܕܡܛܦܛܦ ܠܐ ܢܕܥܟ. ܒܩܘܫܬܐ ܢܦܩ ܕܝܢܐ. * ܠܐ ܢܬܡܟܟ ܘܠܐ
4 ܢܬܬܒܪ. ܥܕܡܐ ܕܢܣܝܡ ܕܝܢܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܠܢܡܘܣܗ ܓܙܪܬܐ ܢܣܟܝܢ.

CAP. XLII.

Ecce ſervum meum ſuſfulſi, & electo meo oblectata eſt anima mea; indidi ei ſpiritum meum, ut proferret judicium gentibus. 1 Non vociferabitur, neque ſtrepitabit, neque audire faciet vocem ſuam in platea. 2 Arundinem quaſſatam non franget, et lucernam crepitantem non extinguet: in veritate proferet judicium. 3 Non extinguetur, neque crepitabit, donec ponat judicium in terra: et legem ejus inſulæ expectabunt. 4

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

18 * لكن افتح على الجبال انهارا ۰ وفي وسط البقاع ينابيع ۰ اجعل البرية غابات ماء ۰ والارض
19 20 العطشانة في جداول الماء * واصنع في العديمة الماء ارز وبقسا وءاسة وسربينة وحور * لكي
21 يروا ويعرفوا ويفهموا ويعلموا معا ان يدا الرب صنعت هذه ۰ وقدوس اسرائيل اظهرها * قربت
22 محاكمتكم قال الرب الاله ۰ قربت افكاركم قال ملك يعقوب * ليقتربوا ويخبرونا ما يلقى او
23 الاوايل او الاتيات ۰ وقولوا شيا ما ۰ ونفهم العقل ونعرف الاواخر والاتيات * وقولوا لنا واخبرونا
24 باتيات الاواخر ۰ ونعلم انكم الهة انتم ۰ احسنوا واسوا ۰ ونتعاجب ونرى معا * انكم من اين
25 تكونون انتم ومن اين عملكم ۰ رذلة من الارض اختاركم * وانا اقمت الذي من
الجربياء والذي من مشرق الشمس ويدعون باسمي ۰ لتقتل الروساء ۰ ومثل طين الفاخوري
26 ومثل دوموصي يطا طينا هكذا تطوون * لان من يخبرنا منذ البدو كي نعرف والتي
27 من قدام ۰ فنعرف انها حقيقية ليس ثم من سبق قال ۰ ولا من يسمع منكم كلامكم * اعطي
28 صهيون رياسة ۰ واعزي اورشليم * لان من الامم ولا واحد ۰ ومن اوثانهم ليس من يخبر ۰
29 وان سألهم من اين انتم فلا يجيبون * لانهم هم صنعوكم ويضلونكم باطلا ۰

Sed aperiam ſuper montes flumina, & in medio convallium fontes: vertam ſolitudinem in ſtagna aquarum, & terram ſiticuloſam in flumina aquarum. 18 *Et ponam in terra aquis carente cedrum, buxum, myrtum, pinum, atque populum:* 19 *ut videant, cognoſcant, intelligant, & percipiant ſimul, quòd manus Domini fecerint iſtud, & Sanctus Iſraelis id patefecerit.* 20 *Adſit cauſa veſtra, ait Dominus Deus, præſtò ſint cogitationes veſtræ, ait rex Jacobi.* 21 *Accedant, indicéntque nobis quæ contingent; ſive præterita, ſive futura: dicite aliquid, ut mentem componamus, & ſciamus poſtrema & ventura.* 22 *Prædicite & indicate nobis exitum futurorum, ut cognoſcamus vos Deos eſſe: benefacite, & nocete; ut admiremur & videamus pariter.* 23 *Nam unde eſtis vos, & unde opus veſtrum? abominationem è terra ſelegit vos.* 24 *Ego vero ſuſcitabo eos qui ſunt in Aquilone, & eos qui ſunt ad ortum ſolis, & invocabunt nomen meum; ut occidantur principes: & velut argilla figuli, & ut foſſor lutum conculcans, ita conculcabimini.* 25 *Quis enim indicabit quæ ſunt inde à principio, ut cognoſcamus? & quæ à priſcis* temporibus, *ut ſciamus ea eſſe certa? nemo eſt enim qui prædixerit, nec qui audiat à vobis ſermones veſtros.* 26 *Dabo Sioni principatum, & conſolabor Jeruſalem:* 27 *Nam ex gentibus nemo quidem, & ex idolis earum nullum eſt quod prænunciet: & cùm ſciſcitaris ab eis, unde eſtis? non reſpondent,* 28 *Quoniam ipſi fecerunt vos, ideò ſeducent vos inaniter.* 29

* الفصل الثاني والاربعون *

* النبوة في السيد المسيح *

1 * يعقوب فتاي اعضده ۰ واسرائيل مختاري قبلته نفسي ۰ اعطي روحي عليه ليخرج الحكم
2 3 للامم * لا يصرخ ولا يصعد ولا يسمع صوته برا * قصبة مرضوضة لا يكسر وسراجا
4 يطفطف لا يطفي ۰ لكن الى الحق يخرج الحكم * لا يسرف ولا يكسر الى ان يضع
الحكم على الارض ۰ وعلى اسمه تتكل الامم ۰

CAP. XLII.

Prophetia de Chriſto Domino.

Jacobum puerum meum ſuſtento, & Iſrael electus meus gratus eſt animæ meæ: dabo ſpiritum meum ſuper illum, ut proferat judicium gentibus. 1 *Non clamabit, neque attollet aut audire faciet vocem ſuam foris.* 2 *Arundinem quaſſatam non confringet, & lucernam crepitantem non extinguet: ſed ad veritatem producet judicium.* 3 *Non debilitabitur, neque frangetur, donec ponat judicium ſuper terram, & nomini ejus expectabunt populi.* 4

ישעיה : מב

expandens ,eos extendens & ,cœlos creans Dominus Deus dixit Sic
5 כה־אמר האל יהוה בורא השמים ונוטיהם רקע
spiritum & ,eam super populo *mentem* dans : ejus germina & ,terram
הארץ וצאצאיה נתן נשמה לעם עליה ורוח
apprehendā & ,justitia in te vocavi Dominus Ego .eam per ambulantibus
6 להלכים בה: אני יהוה קראתיך בצדק ואחזק
lucem in ,populi fœdus in te dabo & ,te custodiam & : tuam manum *in*
בידך ואצרך ואתנך לברית עם לאור
,vinctum *clausura* è *educendum ad* ,cæcos oculos *aperiendum Ad* .*gentium*
7 גוים: לפקח עינים עורות להוציא ממסגר אסיר
: meū nomen hoc ; Dominus Ego .*tenebrositate* sedentes carceris domo è
8 מבית כלא ישבי חשך: אני יהוה הוא שמי
.sculptilibus meam laudem & ;dabo non alteri meam gloriam &
וכבודי לאחר לא־אתן ותהלתי לפסילים:
antequam ,*indicans* ego nova & : venerunt ecce Priora
9 הראשנות הנה־באו וחדשות אני מגיד בטרם
;novum canticum Domino Cantate .vos faciam audire *pullulent*
10 תצמחנה אשמיע אתכם: שירו ליהוה שיר חדש
,ejus plenitudo & ,mare descendentes : terræ extremo ab ejus laus
תהלתו מקצה הארץ יורדי הים ומלאו
;ejus civitates & ,desertum Levabunt .earum habitatores & ,insulæ
11 איים וישביהם: ישאו מדבר ועריו
capite de ,rupis habitatores *ovabunt* : Chedar habitabit *atria*
חצרים תשב קדר ירנו ישבי סלע מראש
ejus laudem & : gloriam Domino Ponent .clamabunt montium
12 הרים יצוחו: ישימו ליהוה כבוד ותהלתו
vir sicut ,egredietur fortis sicut Dominus .nuntiabunt insulis in
13 באיים יגידו: יהוה כגבור יצא כאיש
super ,*exclamabit* etiam ,vociferabitur : zelum suscitabit *bellorum*
מלחמות יעיר קנאה יריע אף־יצריח על־
:me continebā ,silebam ,*olim ab* Tacebam .prævalebit suos inimicos
14 איביו יתגבר: החשיתי מעולם אחריש אתאפק
faciam Desolare .similiter absorbebo & ,desolabo ,*ejulabo* parturiens quasi
15 כיולדה אפעה אשם ואשאף יחד: אחריב
ponam & : faciam siccare eorum herbam omnem & ,colles & montes
הרים וגבעות וכל־עשבם אוביש ושמתי
cæcos faciam ambulare Et .faciam siccare stagna & ,insulas in flumina
16 נהרות לאיים ואגמים אוביש: והולכתי עורים
: eos calcare faciam ,noverunt non semitas per ,noverunt non viam per
בדרך לא ידעו בנתיבות לא־ידעו אדריכם
Hæc .rectum in prava & ,lucem in eos ante *tenebrositatem* ponam
אשים מחשך לפניהם לאור ומעקשים למישור אלה
,retrorsum sunt Conversi .eos dereliqui non & ,eis feci verba
17 הדברים עשיתם ולא עזבתים: נסגו אחור
,conflatili *dicentes* : sculptili in *fidentes* confusione confundentur
יבשו בשת הבטחים בפסל האמרים למסכה
respicite cæci & : audite surdi O .nostri dii Vos
18 אתם אלהינו: החרשים שמעו והעורים הביטו
surdus & : meus servus nisi cæcus Quis .videndum ad
19 לראות: מי עור כי אם־עבדי וחרש
cæcus & ,perfectus sicut cæcus Quis ? sum missurus meum angelum sicut
כמלאכי אשלח מי עור כמשלם ועור
aperire : *observabis* non & ,multa *Videre* ? Domini servus sicut
20 כעבד יהוה: ראית רבות ולא תשמר פקח
: suam justitiam propter *voluit Dominus* .*audiet* non & ,aures
21 אזנים ולא ישמע: יהוה חפץ למען צדקו
.*illustrabit* & ,legem magnificabit
יגדיל תורה ויאדיר:

Versio VULG. LAT.

5 Hæc dicit Dominus Deus, creans cœlos, & extendens eos: firmans terram, & quæ germinant ex ea: dans flatū populo, qui est super eam, & spiritum
6 calcantibus eam. Ego Domin⁹ vocavi te in justitia, & apprehendi manum tuam, & servavi te. Et dedi te in fœdus populi,
7 in lucem Gentium: Ut aperires oculos cæcorum, & educeres de conclusione vinctum, de domo carceris sedentes in te-
8 nebris. Ego Dominus, hoc est nomen meum: gloriam meam alteri non dabo, & laudem
9 meam sculptilibus. Quæ prima fuerunt, ecce venerunt: nova quoque ego annuntio: antequàm oriantur, audita vobis
10 faciam. Cantate Domino canticum novum, laus ejus ab extremis terræ: qui descenditis in mare, & plenitudo ejus; in-
11 sulæ, & habitatores earū. Sublevetur desertum, & civitates ejus: in domibus habitabit Cedar: laudate habitatores Petræ, de vertice montiū clamabunt.
12 Ponent Domino gloriam, & laudem ejus in insulis nuntia-
13 bunt. Dominus sicut fortis egredietur, sicut vir prælíator suscitabit zelum: vociferabitur, & clamabit: super inimi-
14 cos suos confortabitur. Tacui semper, silui, patiens fui, sicut parturiens loquar: dissipabo, et
15 absorbebo simul. Desertos faciam montes, & colles, & omne gramen eorum exiccabo: & ponam flumina in insulas,
16 & stagna arefaciam. Et ducam cæcos in viam, quam nesciunt; & in semitis, quas ignoraverunt, ambulare eos faciam: ponam tenebras coram eis in lucem, & prava in recta: hæc verba feci eis, et non dereli-
17 qui eos. Conversi sunt retrorsum: confundantur confusione, qui confidunt in sculptili, qui dicunt conflatili; Vos dii no-
18 stri. Surdi audite, et cæci in-
19 tuemini ad videndum. Quis cæcus, nisi servus meus: et surdus, nisi ad quem nuntios meos misi? quis cæcus, nisi qui venundatus est? et quis cæcus,
20 nisi servus Domini? Qui vides multa, nónne custodies? qui apertas habes aures, nónne au-
21 dies? Et Dn̄s voluit ut sanctificaret eum: et magnificaret legem, et extolleret.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 Οὕτω λέγει κύριος ὁ θεὸς, ὁ ποιήσας τὸν οὐρανὸν, καὶ πήξας αὐτὸν, ὁ στερεώσας τὴν γῆν, καὶ τὰ ἐν αὐτῇ, καὶ (γ) διδοὺς πνοὴν τῷ λαῷ τῷ ἐπ' αὐτῆς, καὶ πνεῦμα
6 τοῖς πατοῦσιν αὐτήν· Ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς ἐκάλεσά σε ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ κρατήσω τῆς χειρός σου, καὶ ἐνισχύσω σε, καὶ ἔδωκά σε εἰς διαθήκην γένους, εἰς φῶς ἐθνῶν,
7 Ἀνοῖξαι ὀφθαλμοὺς τυφλῶν, ἐξαγαγεῖν ἐκ δεσμῶν δεδεμένους καὶ ἐξ οἴκου φυλακῆς,
8 (δ) καὶ καθημένους ἐν σκότει. Ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς, τοῦτό μου ἐστὶ τὸ ὄνομα, τὴν δόξαν μου ἑτέρῳ οὐ δώσω, οὐδὲ τὰς ἀρετάς
9 μου τοῖς γλυπτοῖς. Τὰ ἀπ' ἀρχῆς ἰδοὺ ἥκασι, καὶ καινὰ (ε) ἃ ἐγὼ ἀναγγέλλω, καὶ
10 πρὸ τοῦ (ζ) ἀναγγεῖλαι ἐδηλώθη ὑμῖν. Ὑμνήσατε τῷ κυρίῳ ὕμνον καινόν· ἡ ἀρχὴ αὐτοῦ, δοξάζετε τὸ ὄνομα αὐτοῦ (η) ἀπ' ἄκρου τῆς γῆς, οἱ καταβαίνοντες εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ πλέοντες αὐτήν, αἱ νῆσοι καὶ οἱ κατοι-
11 κοῦντες αὐτάς. Εὐφράνθητι ἔρημος, καὶ αἱ κῶμαι αὐτῆς, ἐπαύλεις, καὶ οἱ κατοικοῦντες Κηδάρ. εὐφρανθήσονται οἱ κατοικοῦντες πέτραν, ἀπ' ἄκρου τῶν (θ) ὀρέων βοήσουσι,
12 Δώσουσι τῷ θεῷ δόξαν, τὰς ἀρετὰς αὐτοῦ
13 ἐν ταῖς νήσοις ἀναγγελοῦσι. Κύριος ὁ θεὸς τῶν δυνάμεων ἐξελεύσεται, καὶ συντρίψει πόλεμον, ἐπεγερεῖ ζῆλον, καὶ βοήσεται ἐπὶ
14 τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ μετὰ ἰσχύος. Ἐσιώπησα, μὴ καὶ ἀεὶ σιωπήσομαι καὶ ἀνέξομαι; (ι) ὡς ἡ τίκτουσα ἐκαρτέρησα, ἐκστήσω καὶ ξηρα-
15 νῶ (κ) ἅμα· Ἐρημώσω ὄρη καὶ βουνοὺς, καὶ πάντα χόρτον αὐτῶν ξηρανῶ· καὶ θήσω
16 ποταμοὺς εἰς νήσους, καὶ ἕλη ξηρανῶ. Καὶ ἄξω τυφλοὺς ἐν ὁδῷ ᾗ οὐκ ἔγνωσαν, καὶ τρίβους (λ) ἃς οὐκ ᾔδεισαν, πατῆσαι ποιήσω αὐτούς· ποιήσω αὐτοῖς τὸ σκότος εἰς φῶς, καὶ τὰ σκολιὰ εἰς εὐθεῖαν. ταῦτα τὰ ῥήματα (μ) ποιήσω καὶ οὐκ ἐγκαταλείψω αὐ-
17 τούς. Αὐτοὶ δὲ ἀπεστράφησαν εἰς τὰ ὀπίσω. αἰσχύνθητε αἰσχύνην οἱ πεποιθότες ἐπὶ τοῖς γλυπτοῖς, οἱ λέγοντες τοῖς χω-
18 νευτοῖς, Ὑμεῖς ἐστε θεοὶ ἡμῶν. Οἱ κωφοὶ ἀκούσατε, καὶ οἱ τυφλοὶ ἀναβλέψατε ἰδεῖν.
19 Καὶ τίς τυφλὸς ἀλλ' ἢ οἱ παῖδές μου, καὶ κωφοὶ ἀλλ' ἢ οἱ κυριεύοντες αὐτῶν; καὶ ἐτυ-
20 φλώθησαν οἱ δοῦλοι τοῦ θεοῦ. Εἴδετε πλεονάκις, καὶ οὐκ ἐφυλάξασθε· ἠνοιγμένα τὰ
21 ὦτα, καὶ οὐκ ἠκούσατε. Κύριος ὁ θεὸς ἐβουλεύσατο ἵνα δικαιωθῇ, καὶ μεγαλύνῃ αἴνεσιν.

Sic dicit Dominus Deus,
cælum, & defixit illud,
mavit terram, & quæ
dat spirationem populo,
eam, & spiritum calcantibus
Ego Domin⁹ Deus vocavi te in
stitia: & tenebo dexteram
& confortabo te: & dedi te
stamentū (e) generis, in lucem
tium, Ad aperiendum oculos
rum, ad educendum
vinctos, & de domo carceris
& sedentes in tenebris. Ego
minus Deus: hoc meum est
gloriam meam alteri non
neque virtutes meas sculptilibus
Quæ à principio, ecce venerunt
& nova, quæ ego annuntio
antequàm annuntientur
ta sunt vobis. Cantate Domino
ticum novum: (g) principium
glorificate nomen ejus à
te terræ; qui descenditis in
navigant illud; insulæ, &
tores earum. Lætare desertum
(h) vici ejus, villæ, &
Cedar. Lætabuntur, qui
in petra: de summitate
clamabunt; Dabunt Deo
virtutes ejus in insulis
Dominus Deus virtutum
tur, & conteret bellum
zelum, & clamabit super
suos cum fortitudine.
num & semper tacebo,
bo? Sicut pariens, patienter
rumpam, et arefaciam
stabo montes, et colles,
fœnum eorum arefaciam
flumina in insulas, et
cabo. Et adducam cæcos
quam nesciunt; et semitas
ignoraverunt, calcare
faciam eis tenebras in
prava in directum. Hæc
faciam, et non de
Ipsi verò conversi sunt
Confundamini confusione
fiditis super sculptilibus
tis conflatis, Vos estis
Surdi audite, et cæci
videatis. Et quis cæcus
pueri mei? et surdi,
minantur (l) eorum?
sunt servi Dei. Vidistis
non custodistis: aperte
et non audistis. Dominus
(m) cogitavit, ut justi
et magnificaret laudem.

MS.A. (γ) δοὺς (δ) καθημένους (ε) ἐγὼ ἀναγγελῶ, (ζ) ἀνατεῖλαι ἐπ' (θ) ὀρέων, Δώσουσιν (ι) ἐκαρτέρησα ὡς ἡ τίκτουσα, (κ) ἅμα· ποταμοὺς (λ) οὓς (μ) ἃ ποιήσω

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 כדנן אמר אלהא עלמא יי דברא שמיא ותלנון שכליל ארעא ודיירהא
6 יהב נשמתא לעמא די עלה ורוח לדמהלכין בה: אנא יי רביתך בקשוט
7 ואתקפית בידך ואתקננך ואתננך לקים עם לנהור עממין: לפתחא עיני
בית ישראל דאנון כסמן מן אוריתא לאפקא גלותהון מבינֵי עממיא
דאנון דמן לאסירין ולמפרקהון משיעבוד מלכותא דאנון עניגין כאסירי קבר:
8 אנא יי הוא שמי ויקרי דאתגליתי עליכון לעם אוחרן לא אתן ותושבחתי לפלחי צלמיא:
9 קדמיתא הא אתאה וחדתן אנא מחוי עד לא אתין אבסר יתכון: שבחו קדם יי
10 תושבחתא חדתא אמרו תושבחתיה מסיפי ארעא נחתי ימא ומלאה נגון ויתביהון:
11 ישבח מדברא וקרוין דיתבין ביה פציחין יתבין מדבר ערבאי ישבחון מיתיא כד יפקון
12 מבתי עלמיהון מרישי טוריא ירימון קלהון: ישוון קדם יי יקרא ותושבחתיה בנגון
13 יחוון: יי למעבד גבורן אתגלי למעבד גבורא מתגלי ברגז במלול אף בזיע על בעלי
14 דבבוהי מתגלי בגבורתיה: יהבית להון ארכא מעלמא דאם יתובון לאוריתא
15 ולא תבו כחבלין על ילדתא יתגלי דיני עליהון יצדון ויסופון כחדא: אחריב טורין
16 ורמן וכל עסביהון איביש ואשוי נהרין לנגון ואגמין איביש: ואדבר לבית ישראל
דדמין כסמן באורח דלא ידעו בשבילין דלא אליפו אדרכנון אשוי קבל קדמיהון
17 לנהור וכפלא למישרא אלין פתגמיא אעבדנון ולא ארחיקנון: יסתחרון לאחורא
18 יבהתון בהתא פלחי צלמיא דאמרין לצלם מתכא אתון טעותנא: רשיעיא דאנון
כחרשין הלא אודנין לכון שמעו וחיביא דאנון כסמן הלא עינין לכון אסתכלו וחזו:
19 הלא אם יתובון רשיעיא יתקרון עבדי וחיביא דנבייי שלחית עליהון אלא רשיעיא
20 עתידין לאשתלמא פורענות חוביהון ברם אם יתובון יתקרון עבדיא דיי: חזיתון
21 סגיאן ולא נטרתון אתפתחא אודניכון ולא קבילתון אולפן: יי רעי בדיל לזכאותיה
ישראל ירבי לעבדי אוריתיה ויתקיף יתהון:

PARAPH. CHALD. Versio Latina

Hæc dicit Dominus Deus seculi, qui creavit cœlos, & appendit
davit terram & habitatores ejus; dans spiramentum populo qui
est; & spiritum gradientibus in ea. Ego Dominus magnificavi
tate, & apprehendi manum tuam, & direxi te, & posui te in
puli, & in lumen populorum. Ad aperiendos oculos domus Israel
quasi cæci à lege, ut educeres captivitatem eorum de medio po
ubi sunt similes vinctis: & liberares eos de subjectione regnorum
detenti quasi essent vincti in obscuritate. Ego Dominus, hoc est
um; & gloriam meam qua revelatus sum vobis, populo alteri
nec laudem meam cultoribus sculptilium. Quæ prima fuerunt,
runt, nova autem ego annuntio; antequam veniant nuntio vobis
te coram Domino canticum novum; dicite laudem ejus à finibus
descenditis in mare, & plenitudo ejus; insulæ, & habitatores
dabit desertum & civitates quæ habitant in eo; Arabes qui
cis deserti, laudabunt; & mortui quando egredientur de domo
capitibus montium levabunt vocem suam. Ponent coram Dn̄o
laudem ejus in insulis nuntiabunt. Dominus revelabitur ut
lia; ut fortiter agat, prodibit in ira, & sermone furoris, in
tra inimicos suos revelabitur in potentia sua. Dedi eis termin
ut converterentur ad legem, & non sunt conversi: sicut dolores
turientem exeretur in eos judicium meum, disperdentur &
tur simul. Desertos faciam montes & colles, & omnem herbam
iccabo, & ponam flumina in insulas, & stagna arefaciam. Et
Israel qui *similes* sunt *cæcis*, in via quam nescierunt; in
didicerunt, ducam eos: ponam tenebras coram eis in lucem,
planitiem. Hæc verba faciam eis, & non abjiciam eos. Con
trorsum, confundentur confusione colentes simulacra; qui
cris conflatilibus, Vos estis idola nostra. Impii qui estis quasi
aures habetis? audite: & impii qui estis quasi cæci, nonne
tis? intelligite & videte. Nónne si impii convertantur, vo
mei, & peccatores ad quos misi prophetas *meos*? Enimvero
venda erit vindicta peccati sui: si tamen conversi fuerint, vo
Domini. Videtis multa, & non custoditis: apertæ sunt
non suscipitis disciplinam. Dominus voluit ut justificaret
ficavit factores legis suæ, & confortavit eos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܒܪܐ ܫܡܝܐ ܘܡܬܚ ܐܢܘܢ. ܘܩܒܥ ܐܪܥܐ ܘܟܠ ܕܒܗ̇. 5
ܘܝܗܒ ܢܫܡܬܐ ܠܥܡܐ ܕܥܠܝܗ̇. ܘܪܘܚܐ ܠܡܗܠܟܝܢ ܒܗ̇. * ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܩܪܝܬܟ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. 6
ܘܐܚܕܬ ܒܐܝܕܟ. ܘܐܚܝܠܬܟ. ܘܝܗܒܬܟ ܠܩܝܡܐ ܠܥܡܐ. ܘܠܢܘܗܪܐ ܠܥܡ̈ܡܐ. * ܠܡܦܬܚ ܥܝ̈ܢܐ 7
ܕܥܘܝܪ̈ܐ. ܘܠܡܦܩ ܐܣܝܪ̈ܐ ܡܢ ܒܝܬ ܐܣܝܪ̈ܐ. ܘܡܢ ܒܝܬ ܟܠܝܐ ܠܝܬܒܝ ܚܫܘܟܐ.
* ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܗܢܘ ܫܡܝ. ܘܐܝܩܪܝ ܠܐܚܪܢܐ ܠܐ ܐܬܠ. ܘܐܦ ܠܐ ܬܫܒܘܚܬܝ ܠܦܬܟܪ̈ܐ. 8
* ܚܕ̈ܬܐ ܐܢܐ ܡܚܘܐ. ܘܩܕܡܝ̈ܬܐ ܗܐ ܐܬܝ̈. ܘܥܕܠܐ ܢܕܢܚܢ. ܐܫܡܥܬ ܐܢܝܢ ܠܟܘܢ. 9
* ܬܫܒܘܚܬܐ ܕܐܫܥܝܐ * ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ ܬܫܒܘܚܬܐ ܚܕܬܐ. ܬܫܒܘܚܬܗ ܡܢ 10
ܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܢܚ̈ܬܝ ܝܡܐ ܘܡܠܐܗ. ܓܙܪ̈ܬܐ ܘܥܡܘܪ̈ܝܗܝܢ. * ܢܚܕܐ ܡܕܒܪܐ ܘܩܘܪ̈ܝܗ̇. 11
ܘܢܗܘܝܢ ܠܕܝ̈ܬܐ ܩܕܪ. ܢܫܒܚܘܢ ܝܬܒ̈ܝ ܫܘܥܐ. ܘܡܢ ܪܝܫ ܛܘܪ̈ܐ ܢܩܥܘܢ. * ܢܬܠܘܢ 12
ܠܡܪܝܐ ܫܘܒܚܐ. ܘܬܫܒܘܚܬܗ ܒܓܙܪ̈ܬܐ ܢܚܘܘܢ. * ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܢܦܘܩ. 13
ܘܐܝܟ ܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ ܢܥܝܪ ܛܢܢܐ. ܢܝܒܒ ܘܢܬܚܝܠ. ܘܢܩܛܘܠ ܒܒܥܠܕܒܒܘ̈ܗܝ.
* ܫܠܝܬ ܡܢ ܥܠܡ ܐܫܬܘܩ. ܐܣܝܒܪܬ ܐܝܟ ܝܠܕܬܐ. ܐܬܕܡܪ ܘܐܬܗܪ ܐܟܚܕܐ. * ܐܚܪܘܒ 14 15
ܛܘܪ̈ܐ ܘܪ̈ܡܬܐ. ܘܟܠܗ ܥܣܒܗܘܢ ܐܘܒܫ. ܘܐܥܒܕ ܢܗܪ̈ܘܬܐ ܠܓܙܪ̈ܬܐ. ܘܐܓܡ̈ܐ ܐܘܒܫ.
* ܘܐܕܒܪ ܠܥܘܝܪ̈ܐ ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܝܕܥܝܢ ܗܘܘ. ܘܒܫܒܝ̈ܠܐ ܕܠܐ ܝܕܥܝܢ ܐܗܠܟ ܐܢܘܢ. ܐܥܒܕ ܚܫܘܟܐ 16
ܩܕܡܝܗܘܢ ܢܘܗܪܐ. ܘܥܪܩܘ̈ܒܐ ܦܩܥܬܐ. ܗܠܝܢ ܦܬܓܡ̈ܐ ܐܥܒܕ ܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܫܒܘܩ ܐܢܘܢ.
* ܢܗܦܟܘܢ ܠܒܣܬܪܗܘܢ. ܘܢܒܗܬܘܢ ܒܗܬܬܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠ ܦܬܟܪ̈ܐ. 17
ܘܐܡܪܝܢ ܠܢܤܟܐ. ܕܐܢܬܘܢ ܐܢܘܢ ܐܠܗ̈ܝܢ. * ܚܪ̈ܫܐ ܫܡܥܘ. ܘܥܘܝܪ̈ܐ ܐܬܒܩܘ ܘܚܙܘ. 18
* ܡܢܘ ܥܘܝܪܐ ܐܠܐ ܥܒܕܝ. ܘܚܪܫܐ ܐܝܟ ܡܠܐܟܝ ܕܫܕܪܬ. ܡܢܘ ܥܘܝܪܐ ܐܝܟ ܫܠܝܛܐ. ܘܥܘܝܪܐ 19
ܐܝܟ ܥܒܕܗ ܕܡܪܝܐ. * ܣܓܝܐ ܣܟܝܬ. ܘܠܐ ܢܛܪܬܘܢ. ܘܦܬܚܬ ܐܕܢܐ ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ. 20
* ܡܪܝܐ ܨܒܐ ܡܛܠ ܙܕܝܩܘܬܗ. ܕܢܪܒܐ ܢܡܘܣܐ ܘܢܫܒܚܝܘܗܝ. 21

5 Sic dicit Dñs Deus qui cœlos creavit & extendit eos, qui terram firmavit & quicquid eſt in ea, indiditque auram populo ſuper eam exiſtenti, & ſpiritum ambulantibus in ea. 6 Ego Dñs vocavi te in juſtitia, tenui manum tuam & corroboravi te, poſuique te fœdus populo & lucem gentibus; 7 Ut aperias oculos cæcorum, & educas vinctos è clauſtro, & è carcere ſedentes in tenebris. 8 Ego ſum Dñs, atque hoc eſt nomē meum; honorem enim meum alteri non dabo, neque gloriam meam ſculptilibus. 9 Nova ego indico, & priſca jam evenére; & antequam apparerent, enarravi vobis.

Canticum Eſaiæ.

10 Cantate Dño canticum novum, laudem ejus ab extremis terræ; deſcendentes in mare, & quicquid eſt in eo, inſulæ & qui degitis in eis: 11 Lætetur ſolitudo & civitates ejus, & in prata vertatur Cedar: canant incolæ petrarum, è vertice montium clament. 12 Tribuant honorem Dño, & laudes ejus annuntient in inſulis. 13 Dñs velut gigas prodibit, & ut vir bellicoſus zelum excitabit, vociferabitur, convaleſcet, & trucidabit inimicos ſuos. 14 Silui *dicens*, num in ſeculum ſilebo? paſſus ſum ut parturiens: admiratione ſimul atque ſtupore perfundam: 15 Vaſtabo montes & colles, omnemque vigorem eorum exſiccabo: fluvios vertam in inſulas, & ſtagna areſaciam: 16 Ducam cœcos per viam quam non noverāt; & per ſemitas quas ignorabant, ambulare faciam eos: vertam tenebras coram eis in lucem, & ſalebroſum complanabo: has res faciam eis, neque derelinquam eos. 17 Agentur retrorſum, & pudore ſuffundentur qui confidunt ſculptilibus, & dicunt fuſilibus, Vos eſtis dii noſtri. 18 Surdi audite, cæci intelligite & videte: 19 Quis eſt cæcus, niſi ſervus meus? & ſurdus ſicut nuntius meus quem miſſurus ſum? quis cœcus ſicut princeps? cœcus inquam, ſicut ſervus Domini? 20 Diu expectavi, at non obſervatis: aperui aures at non auditis. 21 Dominus voluit propter juſtitiam ſuam magnificare legem eamque commendare.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يقول الرب اله الذي صنع السماء ونصبها وبسط الارض وما عليها واعطي نسمة 5
للشعب الذي عليها ۔ وروحا للذين يطوها * انا الرب الاله دعوتك بالبر ۔ وامسك بيدك 6
واقويك ۔ واعطيتك عهدا للاجناس ونورا للامم * لتفتح اعين العميان ۔ وتخرج المربوطين 7
من الرباطات ۔ والجالسين في الظلمة من بيت الحبس * انا الرب الاله ۔ هذا هو اسمي 8
لا اعطي مجدي لاخر ۔ ولا فضايلي للمنحوتات * ها يسمعون التي منذ البدو والجديدات 9
التي انا اخبر بها ۔ ومن قبل ان اخبر تظهر لكم * سبحوا لله تسبيحا جديدا ۔ رياسته 10
فوق تمجد ۔ اسمه يمجد من طرف الارض ۔ يايها الذين ينزلون الي البحر ويسافرون
فيه ۔ الجزاير والساكنون فيها * افرحي ايتها البرية ۔ وقراها يعطون لله مجدا * تخبر الجزاير 11 12
بفضايله * الرب اله القوات يخرج ۔ ويكسر الحرب ۔ وينهض غيرة ۔ يصول ويصرخ على 13
اعدايه بقوة * صمت منذ دهر ۔ هل دايما اصمت واحتمل ۔ ثبت مثل التي تلد ۔ 14
اخرج واحير وايبس معا * اخرب الجبال والاكام ۔ واجفف كل عشبها ۔ واصنع الانهار جزاير 15
وايبس الغابات * واقود العميان في الطريق التي ليس يعرفوها ۔ والسبل التي لم يعلموها 16
اجعلهم ان يطوها ۔ اصنع لهم الظلمة نورا والمعوجة مستقيمة ۔ هذه الكلمات التي
اصنعها لهم ۔ ولا اتركهم قال الرب * وهم رجعوا الي خلف ۔ اخزوا خزيا ايها المتوكلون 17
على المنحوتات ۔ القايلون للمسبوكات انتم الهتنا * ايها الصم اسمعوا ۔ وايها العمي 18
تطلعوا لتنظروا * ومن الاعمي الا لعبيدي ۔ والصم الا الذين يسودونهم ۔ وعميوا عبيد 19
الله * نظرتم مرارا كثيرة ولم تحفظوا ۔ الاذان مفتوحة ولم تسمعوا * الرب الاله راي ان يبرر 20 21
ويعظم تسبحته وينظرها ۔

5 *Sic dicit Dominus Deus qui cœlum condidit extuitque, firmavit orbem & quicquid extat in illo, indidit auram* vitalem *populo ſuper eum exiſtenti, & ſpiritum conculcantibus eum:* 6 *Ego Dominus Deus vocavi te ad juſtitiam* exercendam, *& tenebo manum tuam, & fortificabo te; daboque te fœdus omnigenis* nationibus, *& lucem populis:* 7 *ut aperias oculos cæcorum, vinctos educas è vinculis, & ſedentes in tenebris è carcere.* 8 *Ego Dominus Deus (hoc eſt nomen meum) non dabo gloriam meam alteri, neq; excellentias meas ſculptilibus.* 9 *En audient quæ fuerunt inde à principio, & nova quæ ego indicabo; & antequam indicem, apparebunt vobis.* 10 *Canite Deo canticum novum, principatus ejus ſurſum glorificetur, nomen ejus celebretur ab extremo terræ, O qui deſcenditis in mare, & navigatis in eo; inſulæ, & habitantes in eis.* 11 *Gaudeas O deſertum, & oppida ejus dent gloriam Deo.* 12 *Prædicent inſulæ præeminentias ejus.* 13 *Dominus Deus virtutum egredietur, bellum confringet, & excitabit æmulationem, irruet & vociferabitur adverſùs hoſtes ſuos potenter.* 14 *Tacui jam diu: num ſemper tacebo, & patiar? conſtans fui ſicut parturiens: egrediar, ſtupefaciam, & areſaciam pariter:* 15 *Montes & colles evertam, & areſaciam omnem herbam eorum: fluvios vertam in inſulas, & areſaciam ſtagna:* 16 *Ducamque cæcos per viam quam non noverunt, & ſemitas quas ignorant, efficiam ut terant: convertam eis tenebras in lucem, & obliqua in recta; hæ ſunt res quas faciam eis, nec deſeram eos, dicit Dominus;* 17 *At ipſi receſſerunt. Pudore ſuffundimini O qui fiditis ſculptilibus, qui dicitis fuſilibus, Vos eſtis dii noſtri.* 18 *O ſurdi audite O cæci aſpicite ut videatis.* 19 *Quis eſt autem cæcus, niſi ſervi mei? & ſurdi niſi qui dominantur eis? obcæcati ſunt ſervi Dei.* 20 *Multis quidem vicibus aſpexiſtis, at non ſervâſtis: apertæ ſunt aures, at non auditis.* 21 *Domino Deo viſum eſt divulgare & magnificare laudem ſuam, quam & viderunt:*

ישעיה : מג

,ipsi omnes foraminibus in illaqueā direptus & ,passus prædā populus ipse Et
22 והוא עם־בזוז ושסוי הפח בחורים כלם
: eruens non & ;rapinam in fuerunt : latitârunt carcerum domibus in &
ובבתי כלאים החבאו היו לבז ואין מציל
percipiet auribus vobis in Quis .Redde ,dicens non & ,direptionem
23 משסה ואין־אמר השב : מי בכם יאזין
direptionem in dedit Quis ? posterum in audiet & ,attendet ? hoc
24 זאת יקשב וישמע לאחור : מי־נתן למשוסה
peccavimus cui : Dominus Nónne ? prædantibus Israel & ,Jahacob
יעקב וישראל לבוזים הלא יהוה זו חטאנו
.ejus lege in audierunt non & ,ambulare ejus viis in noluerunt Et ? ei
לו ולא־אבו בדרכיו הלוך ולא שמעו בתורתו :
: belli fortitudinem & ,sui nasi fervorem eum super effudit Et
25 וישפך עליו חמה אפו ועזוז מלחמה
,eum in succendit & ;cognovit non & ,circuitu à illum inflammavit &
ותלהטהו מסביב ולא ידע ותבער־בו
.cor super posuit non &
ולא־ישים על־לב :

CAP. XLIII. מג

tuus formator & ,Jahacob tuus creator Dominus dixit sic nunc Et
1 ועתה כה־אמר יהוה בראך יעקב ויצרך
mihi : tuum nomen in vocavi ,te redemi quia ,timeas Ne : Israel
ישראל אל־תירא כי גאלתיך קראתי בשמך לי־
non ,flumina per & ;ego tecum ,aquas per transieris Cùm .tu
2 אתה : כי־תעבר במים אתך אני ובנהרות לא
non flamma & ,adurêris non ,ignem per ambulaveris cùm : te inundabunt
ישטפוך כי־תלך במו־אש לא תכוה ולהבה לא
Israel sanctus tuus Deus Dominus ego Quia .te in ardebit
3 תבער־בך : כי אני יהוה אלהיך קדוש ישראל
.te pro Seba & ,Chus ,Ægyptum tuā propitiationem dedi :tuus servator
מושיעך נתתי כפרך מצרים כוש וסבא תחתיך :
: te dilexi ego & ,fuisti gloriosus ,meis oculis in fuisti pretiosus quo Ex
4 מאשר יקרת בעיני נכבדת ואני אהבתיך
,timeas Ne .tua anima pro populos & ,te pro hominem dabo &
5 ואתן אדם תחתיך ולאמים תחת נפשך : אל־תירא
Occidente ab & ,tuum semen adducam Oriente ab :ego tecum quia
כי־אתך אני ממזרח אביא זרעך וממערב
Affer : prohibeas Ne ,austro & : Da ,aquiloni Dicam .te congregabo
6 אקבצך : אמר לצפון תני ולתימן אל־תכלאי הביאי
Omnis .terræ extremo ab meas filias & ,longinquo de meos filios
7 בני מרחוק ובנותי מקצה הארץ : כל
,eum formavi : eum creavi meam gloriam ad & ,meo nomine in vocatus
הנקרא בשמי ולכבודי בראתיו יצרתיו
,surdos & : sunt oculi & ,cæcum populum Educite .eum feci etiam
8 אף־עשיתיו : הוציא עם־עור ועינים יש וחרשים
colligantur & ,simul congregentur gentes Omnes .eis aures &
9 ואזנים למו : כל־הגוים נקבצו יחדו ויאספו
? nos facient audire priora & ,istud annuntiet eos inter quis ,populi
לאמים מי בהם יגיד זאת וראשנות ישמיענו
.veritas ,dicant & ,audiant & evadent justi & ,suos testes dent
יתנו עדיהם ויצדקו וישמעו ויאמרו אמת :
ut : elegi quem meus servus & ,Dominus dixit ,mei testes Vos
10 אתם עדי נאם־יהוה ועבדי אשר בחרתי למען
me ante ,ipse ego quod ,intelligatis & ,mihi credatis & ,sciatis
תדעו ותאמינו לי ותבינו כי־אני הוא לפני
.erit non me post & ,Deus formatus est non
לא־נוצר אל ואחרי לא יהיה :

Versio VULG. LAT.

22 Ipse autem populus direptus, & vastatus: laqueus juvenum omnes, & in domibus carcerum absconditi sunt: facti sunt in rapinam, nec est qui eruat; in direptionem, nec est qui dicat, Redde. 23 Quis est in vobis qui audiat hoc, attendat & auscultet futura? 24 Quis dedit in direptionem Jacob, & Israel vastantibus? nónne Dn̄s ipse, cui peccavimus? Et noluerunt in viis ejus ambulare, & non audierunt legem ejus. 25 Et effudit super eum indignationem furoris sui, & forte bellum, & combussit eum in circuitu, & non cognovit: & succendit eum, & non intellexit.

CAP. XLIII.

1 ET nunc hæc dicit Dominus creans te Jacob, & formans te Israel; Noli timere, quia redemi te, et vocavi te nomine 2 tuo: me⁹ es tu. Cùm transieris p aquas, tecū ero, & flumina non operient te: cùm ambulaveris in igne, non comburēris, & flamma non ardebit in 3 te: Quia ego Dn̄s Deus tuus Sanct⁹ Israel Salvator tu⁹, dedi propitiationē tuā Ægyptū, 4 Æthiopiā & Saba pro te. Ex quo honorabilis factus es in oculis meis, & glorios⁹: ego dilexi te, & dabo homines pro te, & populos pro anima tua. 5 Noli timere, quia ego tecū sū: ab Oriente adducā semen tuū, et ab Occidente congregabo 6 te. Dicā Aquiloni, Da: et Austro, Noli prohibere: affer filios meos de longinquo, et filias meas ab extremis terræ. 7 Et omnem, qui invocat nomen meū, in gloriam meam creavi eum, formavi eum, & feci 8 eum. Educ foràs populū cæcum, et oculos habentem; sur- 9 dum, et aures ei sunt. Omnes gentes congregatæ sunt simul, et collectæ sunt tribus: quis in vobis annuntiet istud, et quæ prima sunt audire nos faciet? dent testes eorum, justificentur, et audiant, et dicant; Ve- 10 ré. Vos testes mei, dicit Dominus, et servus meus, quem elegi: ut sciatis, et credatis mihi, et intelligatis quia ego ipse sum. Ante me non est formatus Deus, et post me non erit.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

22 Καὶ εἶδον, καὶ ἐγένετο ὁ λαὸς πεπρονομευμένος, καὶ διηρπασμένος· ἡ γὰρ παγὶς ἐν τοῖς(ν) ταμείοις πανταχοῦ, καὶ ἐν οἴκοις ἅμα, ὅπου ἔκρυψαν αὐτούς· ἐγένοντο εἰς προνομήν, καὶ οὐκ ἦν(ξ) ἐξαιρούμενος ἅρπαγμα, καὶ οὐκ ἦν ὁ λέγων, Ἀπόδος. 23 Τίς ἐν ὑμῖν ὃς ἐνωτιεῖται ταῦτα; (·) εἰσακούσεται εἰς τὰ ἐπερχόμενα. 24 (ο) Οἷς ἔδωκεν εἰς διαρπαγὴν Ἰακὼβ καὶ Ἰσραὴλ τοῖς προνομεύουσιν αὐτόν; οὐχὶ ὁ θεὸς ᾧ ἡμάρτοσαν αὐτῷ, καὶ οὐκ(¨) ἠβούλοντο ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτοῦ πορεύεσθαι, οὐδὲ ἀκούειν τοῦ νόμου αὐτοῦ; 25 Καὶ ἐπήγαγεν ἐπ' αὐτοὺς ὀργὴν θυμοῦ αὐτοῦ, καὶ κατίσχυσεν (π) αὐτοὺς πόλεμος, καὶ οἱ συμφλέγοντες αὐτοὺς κύκλῳ, καὶ οὐκ ἔγνωσαν ἕκαστος αὐτῶν, οὐδὲ ἔθεντο ἐπὶ ψυχήν.

MS.A. (ν) ταμιείοις (ξ) ὁ ἐξαιρούμενος (·) εἰσακούσεται (ο) Τίς
(¨) ἐβούλοντο (π) ἐπ' αὐτοὺς

ΚΕΦ. μγ'.

1 ΚΑὶ νῦν οὕτως λέγει κύριος ὁ θεὸς ὁ ποιήσας σε Ἰακὼβ, (α) καὶ ὁ πλάσας σε Ἰσραὴλ, Μὴ φοβοῦ, ὅτι ἐλυτρωσάμην σε, 2 ἐκάλεσά σε τὸ ὄνομά σου· ἐμὸς εἶ σύ. Καὶ ἐὰν διαβαίνῃς δι' ὕδατος, μετὰ σοῦ εἰμι, καὶ ποταμοὶ οὐ συγκλύσουσί σε· καὶ ἐὰν διέλθῃς διὰ πυρὸς, οὐ μὴ κατακαυθῇς, φλὸξ 3 οὐ κατακαύσει σε. Ὅτι ἐγὼ κύριος ὁ θεός σου ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ, ὁ σώζων σε· (β) ἐποίησα ἄλλαγμά σου Αἴγυπτον καὶ Αἰ- 4 θιοπίαν, καὶ Σοήνην ὑπὲρ σοῦ. Ἀφ' οὗ ἔντιμος ἐγένου ἐναντίον (γ) ἐμοῦ, ἐδοξάσθης, (δ) καὶ ἐγώ σε ἠγάπησα, καὶ δώσω ἀνθρώπους (ε) ὑπὲρ σοῦ, καὶ ἄρχοντας ὑπὲρ τῆς κε- 5 φαλῆς σου. Μὴ φοβοῦ, ὅτι μετὰ σοῦ εἰμι· ἀπὸ ἀνατολῶν ἄξω τὸ σπέρμα σου, καὶ ἀπὸ 6 δυσμῶν συνάξω σε. Ἐρῶ τῷ Βοῤῥᾷ, Ἄγε, καὶ τῷ Λιβὶ, Μὴ κώλυε· ἄγε τοὺς υἱούς μου ἀπὸ (ζ) τῆς πόῤῥωθεν, καὶ τὰς θυγατέρας 7 μου ἀπ' ἄκρων τῆς γῆς, Πάντας ὅσοι ἐπικέκληνται τῷ ὀνόματί μου· ἐν γὰρ τῇ δόξῃ μου κατεσκεύασα αὐτὸν, (η) καὶ ἔπλασα αὐτὸν, 8 καὶ ἐποίησα αὐτὸν, Καὶ ἐξήγαγον λαὸν τυφλὸν, καὶ ὀφθαλμοί εἰσιν ὡσαύτως τυφλοὶ, 9 καὶ κωφοὶ (θ) τὰ ὦτα ἔχοντες. Πάντα τὰ ἔθνη συνήχθησαν ἅμα, καὶ συναχθήσονται ἄρχοντες ἐξ αὐτῶν. τίς ἀναγγελεῖ ταῦτα; ἢ τὰ ἐξ ἀρχῆς τίς ἀναγγελεῖ ὑμῖν; ἀγαγέτωσαν τοὺς μάρτυρας αὐτῶν καὶ δικαιωθήτωσαν, καὶ (ι) ἀκουσάτωσαν, καὶ εἰπάτωσαν ἀ- 10 ληθῆ. Γένεσθέ μοι μάρτυρες, (κ) καὶ ἐγὼ μάρτυς, λέγει κύριος ὁ θεὸς, καὶ (λ) ὁ παῖς μου ὃν ἐξελεξάμην, ἵνα γνῶτε καὶ πιστεύσητε(μ), καὶ συνῆτε ὅτι ἐγώ εἰμι· ἔμπροσθέν μου οὐκ ἐγένετο ἄλλος θεὸς, καὶ μετ' ἐμὲ οὐκ ἔσται.

MS.A. (α) ὁ πλάσας (β) ἐποίησά σου ἄλλαγμα (γ) μου, (δ)
πολλοὺς ὑπὲρ (ζ) γῆς (η) καὶ ἔπλασα καὶ ἐποίησα (θ) ὦτα
ἀληθῆ, καὶ ἀκουσάτωσαν. Γένεσθέ (κ) κἀγὼ (λ) ὁ παῖς ὃν (μ)

Et vidi; & erat populus
atque direptus. Laqueus
cubilibus ubique, & in
simul, in quibus abscond
Facti sunt in direptionem
qui erueret prædā: et non
diceret, Redde. Quis est in
qui hæc auribus percipiet
audite in futura. (o)
in direptionē Jacob & I
stantib⁹ eum? Nonne De⁹
caverunt ei, & noluerunt
illius ambulare, neque aud
gem ejus? Et induxit super
iram furoris sui: & præval
versus eos bellum, & qui co
rebant eos per circuitum. E
cognoverunt unusquisque
nec posuerunt super anima

CAP. XLIII.

ET nunc sic dicit Domin
us, qui fecit te Jacob, &
mavit te Israel; Noli time
niam redemi te: vocavi te
tuo. Meus es tu: Et, si
per aquam; tecum sum, &
non cooperient te. Et, si
per ignem; non combu
non exuret te: Quia ego
nus Deus tuus, Sanctus
Salvator tuus. Feci commu
tuam Ægyptum, et Æ
et (a) Soënem pro te: Ex
honorabilis factus es in
meo; glorificatus es, et ego
te: et dabo homines pro
cipes pro capite tuo. N
quoniam tecum sum. Ab
adducam semen tuum: et
dente congregabo te. Dicam
loni, Adduc: et Africo, N
bere: adduc filios meos
longinqua, et filias meas
nis terræ, Omnes qui voca
mine meo. In gloria enim
avi illum, et plasmavi
ci illum; Et eduxi popul
et oculi sunt cæci simil
di, qui aures habent. Om
congregatæ sunt simul
ent principes ex eis. Qu
tiabit hæc? aut, quæ
sunt, quis annuntiabit
ducant testes suos, et ju
et audiant, et loquantur
te mihi testes, et ego
Dominus Deus, et puer m
elegi; ut sciatis, et cred
telligatis, quia ego sum.
non fuit alius Deus:
non erit.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 והוא עם בזיז ואניס אתחפיאו בהתא עולמין כולהון ובבתי יסורין עגינין הוו לעדי
ולית דמשיזיב לבזא ולית דאמר אתיב : 23 מן בכון יציית דא יקביל ויסבר לסופא :
24 מן מסר לעדי יעקב וישראל לבזוזין הלא יי מן קדם דחבו קדמוהי ולא אבו למהך
באורחן דתקנן קדמוהי ולא קבילו אולפן אוריתיה : 25 ושפך עליהון חימת רוגזיה
ותקוף עבדי קרביה איתי עליהון וקטלו בהון מסחור סחור ולא ידעו ושליטו בהון
ולא שויאו דחלתיה על לבא :

מג

1 וכען כדנן אמר יי דברך יעקב ודאתקנך ישראל לא תדחל ארי פריקתך רביתך
2 בשמך דילי את : ארי בקדמיתא כד עברתון בימא דסוף מימרי הוה בסעדכון
פרעה ומצראי דסגיאין כמי נהרא לא יכילו לכון ואף בתנינותא כד תהכון לביני
עממיא דתקיפין כאשתא לא יכלון לכון ומלכון דחסינן כשלהוביתא לא ישיצון יתכון :
3 ארי אנא יי אלהך קדישא דישראל פרקך יהבית חליפך מצראי כוש וסבא תחותך :
4 מדאת חביב קדמי אתיקרתא ואנא רחמתך ומסרית עממיא תחותך ומלכותא
5 חלף נפשך : לא תדחל ארי בסעדך מימרי ממדנחא איתי בנך וממערבא אקרב
6 גלותך : אמר לצפונא איתא ולדרומא לא תעכב איתו בני מרחיק וגלות עמי מסיפי
7 ארעא : כל דא בדיל אבהתכון צדיקיא דאתקרי שמי עליהון וליקרי בריתינון אתקנית
8 גלותהון אף עבדית להון נסין : דאפיק עמא ממצרים דאנון כסמן ועינין להון וכחרשין
9 ואודנין להון : כל עממיא יתכנשון כחדא ויתקרבון מלכון מן בהון יחוי דא וקדמיתא
10 יבסרוננא יתנון סהדיהון ויזכון וישמעון ויימרון קשוט : אתון סהדין קדמי אמר יי ועבדי
משיחא דאתרעיתי ביה בדיל דתדעון ותהימנון קדמי ותסתכלון ארי אנא הוא
דמלקדמין אף עלמי עלמיא דילי אנון ובר מני לית אלה :

PARAPH. CHALD. Versio Latin

Ipse autem est populus direptus, & vim patiens; operti sunt con
juvenes sunt omnes, & carceribus clausi: facti sunt in prædam, &
qui eruat; in direptionem, & non est qui dicat, Redde. Quis est
qui auscultet hoc, attendat, & intelligat in finem? Quis tradidit
Jacob; & Israelem direptoribus? nónne Dn̄s? eò quòd peccav
ram eo, & noluerunt ambulare in viis quæ rectæ sunt in conspectu
receperunt disciplinam legis ejus. Et effudit super eum furorem
tionis suæ, & fortitudinem bellatorū suorum adduxit super eos; &
runt eos per circuitum, & nescierunt, & dominationem exercuer
& non proposuerunt animo timorem ejus.

CAP. XLIII.

ET nunc hæc dicit Dn̄s, qui creavit te Jacob, & qui formavit
Ne timeas, quia redemi te: & vocavi te nomine tuo, me⁹ es tu. Q
principio quando transistis mare carectosum, Verbum meum
toriū vestrum. Pharao & Ægyptii qui multi erant sicut aquæ
potuerunt contra vos. Et etiam secundò cùm ieritis inter popu
tes sunt sicut ignis, non prævalebunt contra vos; & regna quæ
sicut flamma, non excindent vos. Quia ego Dn̄s Deus tuus sanct
qui redemi te, dedi in commutationem tuam Ægyptios, Æthiop
ba pro te. Ex quo dilectus factus es coram me, honorificatus
dilexi te, & tradidi populos pro te, & regna pro anima tua.
quia in adjutorium tuum erit Verbum meum: ab Oriente addu
tuos, & ab Occidente congregabo transmigrationem tuam. Dic
ni, Affer; & Austro, Ne moreris: afferte filios meos à longè, &
mei ab extremis terræ. Omnia hæc fient propter patres vestro
per quos invocatum est nomen meum, et in gloriam meam crea
rexi transmigationem eorum, et etiam feci eis miracula. Q
lum meū de Ægypto, qui erant sicut cæci, et habebant oculos
et aures habebant. Omnes populi congregentur simul, et con
quis eorum annuntiabit istud? et quæ prima sunt annuntie
testes suos et justificentur, audiant, et dicant verum. Vos te
dicit Dn̄s, et serv⁹ me⁹ Christus quem elegi, ut sciatis et cred
& intelligatis quia ego sum ab initio, et secula seculorum
absque me non est Deus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܗܘ ܥܡܐ ܒܙܝܙܐ ܘܕܝܫܐ. ܦܚܐ ܐܢܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܥܠܝܡܐ. ܘܒܒܝܬ ܐܣܝܪܐ ܛܫܝܘ ܐܢܘܢ. ܗܘܘ 22
ܠܒܙܬܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܦܨܐ. ܘܠܕܘܫܐ ܘܠܝܬ ܕܐܗܦܟ. * ܡܢܘ ܐܝܬ ܒܟܘܢ ܕܢܫܡܥ ܗܕܐ. 23
ܘܢܨܬ ܘܢܫܡܥ ܠܐܚܪܢܝܬܐ. * ܡܢܘ ܝܗܒ ܠܝܥܩܘܒ ܠܒܙܬܐ: ܘܠܐܝܣܪܐܝܠ ܠܕܘܫܐ. ܠܐ ܗܘܐ 24
ܡܪܝܐ. ܠܗ ܕܚܛܝܢ ܠܗ. ܘܠܐ ܨܒܝܢ ܠܡܗܠܟܘ ܒܐܘܪܚܬܗ. ܘܠܐ ܫܡܥܢ ܠܢܡܘܣܗ. * ܘܐܫܕ 25
ܥܠܝܗܘܢ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. ܘܥܫܝܢܘܬܐ ܕܩܪܒܐ. ܘܐܘܩܕ ܐܢܘܢ. ܡܢ ܚܕܪܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܝܕܥܘ.
ܘܝܩܕܬ ܒܗܘܢ ܢܘܪܐ. ܘܠܐ ܣܡܘ ܠܗ ܥܠ ܠܒܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܓ *

* ܗܫܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܒܪܟ ܝܥܩܘܒ. ܘܓܒܠܟ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܠܐ ܬܕܚܠ. ܕܦܪܩܬܟ 1
ܘܩܪܝܬܟ ܒܫܡܟ. ܕܕܝܠܝ ܐܢܬ. * ܟܕ ܬܥܒܪ ܒܡܝܐ. ܥܡܟ ܐܢܐ. ܘܢܗܪܘܬܐ ܠܐ ܢܫܛܦܘܢܟ. 2
ܘܟܕ ܬܗܠܟ ܒܢܘܪܐ. ܠܐ ܬܬܟܘܐ. ܘܫܠܗܒܝܬܐ ܠܐ ܬܘܩܕܟ. * ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. 3
ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ ܦܪܘܩܟ. ܝܗܒܬ ܚܠܦܝܟ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܟܘܫ ܘܣܒܐ ܚܠܦܝܟ.
* ܡܢ ܕܝܩܪܬ ܒܥܝܢܝ ܐܫܬܒܚܬ. ܘܐܢܐ ܐܚܒܬܟ. ܘܝܗܒܬ ܐܢܫܐ. ܚܠܦܝܟ 4
ܘܥܡܡܐ ܚܠܦ ܢܦܫܟ. * ܠܐ ܬܕܚܠ. ܡܛܠ ܕܥܡܟ ܐܢܐ. ܡܢ ܡܕܢܚܐ ܐܝܬܐ ܙܪܥܟ. ܘܡܢ 5
ܡܥܪܒܐ ܐܟܢܫܟ. * ܐܡܪ ܠܓܪܒܝܐ ܕܗܒ. ܘܠܬܝܡܢܐ ܕܠܐ ܬܟܠܐ. ܐܝܬܐ ܒܢܝ ܡܢ 6
ܪܘܚܩܐ. ܘܒܢܬܝ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܟܠ ܕܩܪܐ ܒܫܡܝ. ܠܐܝܩܪܝ ܒܪܝܬܗ. ܘܓܒܠܬܗ 7
ܘܥܒܕܬܗ. * ܐܦܩ ܥܡܐ ܥܘܝܪܐ ܕܥܝܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ. ܘܐܕܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ. ܘܚܪܫܝܢ 8
* ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܢܬܟܢܫܘܢ ܐܟܚܕܐ. ܘܢܬܟܢܫܘܢ ܐܘܡܘܬܐ. ܡܢܘ ܐܝܬ ܒܟܘܢ ܕܢܚܘܐ 9
ܗܕܐ. ܘܩܕܡܝܬܐ ܢܫܡܥܢܢ. ܢܝܬܘܢ ܣܗܕܝܗܘܢ. ܘܢܙܕܕܩܘܢ ܘܢܫܡܥܘܢ ܘܢܐܡܪܘܢ. * ܫܪܝܪܐ 10
ܐܢܬܘܢ ܣܗܕܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܥܒܕܝ ܕܓܒܝܬ. ܘܬܕܥܘܢ ܘܬܗܝܡܢܘܢ ܒܝ. ܘܬܣܬܟܠܘܢ.
ܕܐܢܐ ܗܘ. ܘܩܕܡܝ ܠܐ ܐܬܒܪܝ ܐܠܗܐ. ܘܒܬܪܝ ܠܐ ܢܗܘܐ.

Verùm populus iſte direptus eſt atque proculcatus; laquei ſunt omnes juvenes, & in domibus vinctos abſconderunt: facti ſunt in prædam nemine eripiente, & in conculcationem nemine repellente. 22
Quis eſt inter vos qui hoc audiat? auſcultet adhuc, & aliud audiet: 23
Quis tradidit Jacobum conculcationi, & Iſraelem direptioni? nónne Dominus, eò quòd peccaverimus in eum, noluerimus ambulare per vias ejus, neque legi ejus obediverimus; 24
Effudit ſuper eos æſtum iræ ſuæ & belli atrocitatem? combuſſit eos undique, & non perceperunt; ſuccendit eos ignis, & non adjecerunt animum. 25

CAP. XLIII.

Itaque ſic dicit Dominus qui te creavit O Jacob, teque formavit O Iſrael; Ne timeto, quia redemi te, & vocavi te nomine tuo, quia meus es. 1
Si per mare tranſieris, tecum ſum, & flumina nequaquam converrent te: ſi ambulaveris ſuper ignem, non uſtulaberis, nec incendet te flamma; 2
Quoniam ego ſum Dominus Deus tuus, Sanctus Iſraelis, redemptor tuus. Tradidi Ægyptum loco tui, & Chus atque Sabam pro te. 3
Eò quòd pretioſus ſis in oculis meis, glorificatus es; & ego amore te proſecutus, homines pro te dedi, & gentes pro anima tua. 4
Ne timeto, quia tecum ſum: ab Oriente reducam ſemen tuum, et ab Occidente colligam te: 5
Edicam Aquiloni, Redde; et Meridiei, Ne prohibeas: reducam filios meos è longinquo, et filias meas ab extremis terræ. 6
Quemcunque nomẽ meũ invocantẽ, in honorem meũ creavi, formavi, et condidi. 7
Produc populũ cæcũ quibus ſunt oculi, et quibus ſunt aures, ſurdi tamen ſunt. 8
Omnes populi congregentur ſimul, congregentur et gentes: quis eſt inter vos qui hoc indicet, et priſtina enarret? producant teſtes ſuos, ſeſeque juſtificent, audiant, et loquantur. 9
Reverà vos teſtes mei eſtis, dicit Dñs, et ſervi mei quos elegi: ſcietis, et credetis in me, et intelligetis quòd ego ſim, et ante me nullus creatus ſit Deus, nec ullus poſt me futurus. 10

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وصار الشعب منهوبا ومخطوفا ۔ لان الفخ في المخادع بكل موضع وفي البيوت معا ۔ 22
حيث اخفوهم صاروا للنهب وليس من يخلص ۔ خطفه وليس من يقول رد * من فيكم 23
ينصت لهذا ويسمع بالآتيات * من اعطى يعقوب للاختطاف ۔ واسرائيل للذين نهبوه ۔ اليس 24
الله الذي له اخطانا ولم يشا ان يسلكوا في طرقه ولا ان يسمعوا ناموسه * فجلب عليهم 25
رجز غضبه ۔ وقوي عليهم الحرب ۔ وحرقوهم حولهم ۔ ولم يعلم كل واحد منهم ۔ ولا وضع
على نفس ۔

الفصل الثالث والاربعون ۔ الاصحاح الحادي والعشرون ۔

* والان هكذا يقول الرب الاله الذي صنعك يا يعقوب وجبلك يا اسرائيل ۔ لا تخف لاني 1
افتديتك ۔ دعوتك باسمك ۔ وانت لي * فان جزت في الماء فانا معك ۔ والانهار لا يغرقونك ۔ 2
وان عبرت في النار لا تحترق ۔ اللهيب لا يحرقك * لاني انا الرب الهك قدوس اسرائيل 3
مخلصك ۔ ها جعلت فديتك مصر ۔ والحبشة واسوان من اجلك * الذي صرت مكرما 4
امامي ۔ تمجدت ۔ وانا احببتك ۔ واعطي اناسا كثيرين عنك ۔ ورؤساء من اجل راسك ۔
* لا تخف لاني انا معك ۔ من المشارق اتي بزرعك ۔ ومن المغارب اجمعك * اقول للجربياء 5 6
هات ۔ وللغربي لا تمنع ۔ هات بني من ارض بعيدة وبناتي من طرف الارض * جميع 7
الذين دعوا باسمي لان تمجيدي هياته وجبلته وصنعته * واخرجت شعبا اعمى ۔ 8
وهم هكذا عيون عمي وصم ولهم اذان * جميع الامم اجتمعت معا ۔ وتجمع الرؤساء 9
معهم ۔ من يخبر بهذا فيهم ۔ او من يجعل التي منذ القديم مسموعة عندهم ۔ ليحضروا
شهودهم وليتبرروا ۔ وليسمعوا وليقولوا صدقا * كونوا لي شهودا ۔ وانا شاهد يقول الرب 10
الاله ۔ وفتاي الذي اخترته ۔ لتعرفوا وتؤمنوا بي ۔ وتفهموا اني انا هو الرب ۔ من قبلي لم
يكن الها اخر ۔ وبعدي لا يكون ۔

Factus enim eſt populus iſte prædatus ac direptus, quia laqueus in penetralibus eſt, ubique & in domibus pariter; ubicunque abſconditi fuerunt, facti ſunt in prædam nemine vendicante; direpti fuerunt nemine dicente, Reſtitue. 22
Quis inter vos hæc auſcultat, & audit ventura? 23
Quis expoſuit Jacobum direptioni, & Iſraelem iis qui diripuerunt eũ? nónne Deus quòd peccaverint in eum, renuentes ambulare in viis ejus & obtemperare legi ipſius; 24
Adduxit ſuper eos iram indignationis ſuæ, durumq; bellum excitavit in eos? & dum qui comburunt eos, cingunt illos, nemo eorum animadvertit nec animum adjicit. 25

CAP. XLIII.

Textus vigeſimus primus.

Nunc autem ſic dicit Dominus Deus qui te fecit O Jacob, teque formavit O Iſrael: Ne timeas, quoniam ego redemi te; impoſui tibi nomen tuum, & tu meus es. 1
Nam ſi tranſieris per aquam, ego tibi adſum, & flumina non obruent te: & ſi tranſieris per ignem, nequaquam ureris, flamma non aduret te; 2
Quoniam ego Dominus Deus tuus Sanctus Iſraelis, ſalvator tuus ſum. Ecce in tui redemptionem expoſui Ægyptum, & Æthiopiam atque Aſuan loco tui, 3
Qui factus es honorandus apud me, glorificatus; & ego dilexi te, & exponam plurimos homines pro te, & principes cauſâ tui. 4
Ne timeas, quoniam adſum tibi: ab Oriente adducam ſemen tuum, & ab Occidente congregabo te: 5
Dicam Aquiloni, Affer; & Auſtro, Ne moreris, adduc filios meos è terra longinqua, & filias meas ab extremo terræ, 6
Omnes qui vocantur de nomine meo: nam gloriæ meæ præparavi, formavi, & feci. Eduxi populum cæcum, adeoque ſunt oculi cæci, & ſurdi quamvis aures habeant. 7 8
Omnes gentes congregatæ ſunt ſimul, & congregantur etiam principes cum eis. Quis hæc nota faciat inter eos? aut quis ea quæ fuerunt ab antiquo, audita faciat apud eos? Producant teſtes ſuos, purgentque ſeſe, audiant, & verum dicant. 9
[illegible] mihi teſtes, atque ego teſtis ſum (dicit Dominus Deus) necnon puer meus quem elegi: ut ſciatis, & credatis in me, & intelligatis me eſſe Dominum, ante me non fuiſſe deum alium, [illegible] ullum poſt me futurum. 10

ישעיה : מד

11 Judicavi Ego .servator me præter non & : Dominus ego Ego
11 אנכי אנכי יהוה ואין מבלעדי מושיע׃ אנכי הגדתי 12
,mei testes vos & : alius vobis in non & ,feci audire & ,servavi &
והושעתי והשמעתי ואין בכם זר ואתם עדי
non & ,ipse ego die à Etiam .Deus ego & ,Dominus dixit
13 נאם־יהוה ואני־אל׃ גם־מיום אני הוא ואין
Dominus dixit Sic ? id avertet quis & ,operabor : eruens mea manu de
14 מידי מציל אפעל ומי ישיבנה׃ כה־אמר יהוה
, Babel in misi vos Propter : Israëlis sanctus vester redemptor
גאלכם קדוש ישראל למענכם שלחתי בבלה
.eorū ovatio navib' in,Chasdim &,ipsos universos fugitivos feci descēdere &
והורדתי בריחים כלם וכשדים באניות רנתם׃
Sic .vester rex , Israel creans : vester sanctus Dominus Ego
15 אני יהוה קדושכם בורא ישראל מלככם׃ כה 16
.semitam vehementibus aquis in & : viam mari in dans Dominus dixit
אמר יהוה הנותן בים דרך ובמים עזים נתיבה׃
non ,decumbent simul : robur & virtutem ,equum & currum Educens
17 המוציא רכב־וסוס חיל ועזוז יחדו ישכבו בל־
memoriā in revocetis Ne.sunt extincti linum sicut,sunt extincti ;exurgent
18 יקומו דעכו כפשתה כבו׃ אל־תזכרו
, novum faciens ego Ecce .consideretis ne antiqua & : priora
ראשנות וקדמניות אל־תתבננו׃ הנני עשה חדשה 19
deserto in ponam Etiam ? illud cognoscetis nonne ,germinabit nunc
עתה תצמח הלוא תדעוה אף אשים במדבר
,dracones , agri fera me Glorificabit .flumina solitudine in , viam
20 דרך בישמן נהרות׃ תכבדני חית השדה תנים
,solitudine in flumina ,aquas deserto in dedi quia : ululæ filiæ &
ובנות יענה כי־נתתי במדבר מים נהרות בישימן
: mihi formavi istum Populum .meo electo ,meo populo potum dandum ad
21 להשקות עמי בחירי׃ עם־זו יצרתי לי
laborâsti cùm : Jahacob invocâsti me non Et .narrabunt meam laudem
22 תהלתי יספרו׃ ולא־אתי קראת יעקב כי־יגעת
,tuarum ascensionum pecus mihi adduxisti Non .Israel me in
23 בי ישראל׃ לא־הביאת לי שה עלתיך
nec , munere in te feci servire non : me honorâsti non tuis victimis &
וזבחיך לא כבדתני לא העבדתיך במנחה ולא
,calamum argento in mihi emisti Non .thure in te feci laborare
24 הוגעתיך בלבונה׃ לא־קנית לי בכסף קנה
me fecisti servire verùm :me fecisti inebriare non tuarū victimarū adipe &
וחלב זבחיך לא הרויתני אך העבדתני
ipse ego , Ego .tuis iniquitatibus in me fecisti laborare ,tuis peccatis in
25 בחטאותיך הוגעתני בעונתיך׃ אנכי אנכי הוא
.recordabor non tuorū peccatorū &:me propter tuas prævaricationes delens
מחה פשעיך למעני וחטאתיך לא אזכר׃
.te justifices ut , tu narra : simul judicemur ,me fac Memorare
26 הזכירני נשפטה יחד ספר אתה למען תצדק׃
.me in sunt prævaricati tui interpretes & : peccavit primus tuus Pater
27 אביך הראשון חטא ומליציך פשעו בי׃
Israel & , Jahacob anathema in dabo & ,sanctitatis principes prophanabo &
28 ואחלל שרי קדש ואתנה לחרם יעקב וישראל
.convicia in
לגדופים׃

CAP. XLIV. מד

dixit Sic .eo in elegi Israel & : mi serve Jahacob audi nunc Et
1 ועתה שמע יעקב עבדי וישראל בחרתי בו׃ כה־אמר 2
ne : tibi auxiliabitur ,utero ab tuus formator & ,tuus factor Dominus
יהוה עשך ויצרך מבטן יעזרך אל־
.eo in elegi recte & ,Jahacob mi serve timeas
תירא עבדי יעקב וישרון בחרתי בו׃

Versio VULG. LAT.

11 Ego sum, ego sum Dñs, & non 12 est absque me salvator. Ego annuntiavi, & salvavi: auditū feci, & non fuit in vobis alienus: vos testes mei, dicit Dñs, 13 & ego Deus. Et ab initio ego ipse, & non est qui de manu mea eruat: operabor, & quis 14 avertet illud? Hæc dicit Dñs redemptor vester, Sanctus Israel; Propter vos misi in Babylonem, & detraxi vectes universos, & Chaldæos in na- 15 vibus suis gloriantes. Ego Dominus sanctus vester, creans 16 Israel rex vester. Hæc dicit Dñs, qui dedit in mari viam, & in aquis torrentibus semi- 17 tam. Qui eduxit quadrigam & equum, agmen & robustum: simul obdormierunt, nec resurgent: contriti sunt quasi linum, & extincti sunt. 18 Ne memineritis priorum, & 19 antiqua ne intueamini. Ecce ego facio nova, & nunc orientur, utique cognoscetis ea: ponam in deserto viam, & in 20 invio flumina. Glorificabit me bestia agri, dracones & struthiones: quia dedi in deserto aquas, flumina in invio, ut darem potum populo meo, 21 electo meo. Populū istū formavi mihi, laudem meam nar- 22 rabit. Non me invocâsti, Jacob; nec laborâsti in me, Isra- 23 el. Non obtulisti mihi arietē holocausti tui, & victimis tuis non glorificâsti me: non te servire feci in oblatione, nec laborem tibi præbui in thure. 24 Non emisti mihi argento calamum, et adipe victimarū tuarū non inebriâsti me. Verūtamen servire me fecisti in peccatis tuis, præbuisti mihi laborē in 25 iniquitatibus tuis. Ego sum, ego sum ipse, qui deleo iniquitates tuas propter me, & peccatorū tuorū non recorda- 26 bor. Reduc me in memoriā, & judicemur simul: narra si quid 27 habes ut justificeris. Pater tu' prim' peccavit, & interpretes 28 tui prævaricati sunt in me. Et contaminavi principes sanctos, dedi ad internecionem Jacob, & Israel in blaspemiā.

CAP. XLIV.

1 ET nunc audi, Jacob, serve 2 me', & Israel, quem elegi: Hæc dicit Dñs faciens & formans te, ab utero auxiliator tu'; Noli timere, serve meus Jacob, et rectissime, quem elegi.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 Ἐγὼ ὁ Θεὸς, καὶ οὐκ ἔστι πάρεξ ἐμοῦ σώζων. 12 (ν) Ἐγὼ ἀνήγγειλα καὶ ἔσωσα, ὠνείδισα καὶ οὐκ ἦν ἐν ὑμῖν ἀλλότριος. ὑμεῖς ἐμοὶ μάρτυρες. (ξ) καὶ ἐγὼ κύριος ὁ Θεὸς 13 Ἔτι ἀπ' ἀρχῆς, καὶ οὐκ ἔστιν ὁ ἐκ τῶν χειρῶν μου (ο) ὁ ἐξαιρούμενος· ποιήσω, καὶ τίς ἀποστρέψει αὐτό; 14 Οὕτως λέγει κύριος ὁ Θεὸς ὁ λυτρούμενος ὑμᾶς, ὁ ἅγιος (π) τοῦ Ἰσραὴλ, Ἕνεκεν ὑμῶν ἀποστελῶ εἰς Βαβυλῶνα, καὶ ἐπεγερῶ (ρ) φεύγοντας πάντας, καὶ Χαλδαῖοι ἐν (σ) πλοίοις δεθήσονται. 15 Ἐγὼ κύριος ὁ Θεὸς ὁ ἅγιος ὑμῶν, ὁ καταδείξας Ἰσραὴλ βασιλέα ὑμῶν. 16 Οὕτως λέγει κύριος, ὁ διδοὺς (τ) ἐν θαλάσσῃ ὁδὸν, καὶ ἐν ὕδατι ἰσχυρῷ τρίβον, 17 Ὁ (υ) ἐξαγαγὼν ἅρματα καὶ ἵππον καὶ ὄχλον ἰσχυρόν· (φ) ἀλλ' ἐκοιμήθησαν, καὶ οὐκ ἀναστήσονται, ἐσβέσθησαν ὡς λίνον ἐσβεσμένον. 18 (χ) Μὴ μνημονεύετε τὰ πρῶτα, καὶ τὰ ἀρχαῖα μὴ συλλογίζεσθε. 19 (ψ) Ἰδοὺ ἐγὼ ποιῶ καινὰ, ἃ νῦν ἀνατελεῖ, καὶ γνώσεσθε αὐτά· καὶ ποιήσω ἐν τῇ ἐρήμῳ ὁδὸν, καὶ ἐν τῇ ἀνύδρῳ ποταμούς. 20 (ω) Εὐλογήσουσί με τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ, σειρῆνες, καὶ θυγατέρες στρουθῶν, ὅτι ἔδωκα ἐν τῇ ἐρήμῳ ὕδωρ, καὶ ποταμοὺς ἐν τῇ ἀνύδρῳ, (α) ποτίσαι τὸ γένος μου τὸ ἐκλεκτὸν, 21 Λαόν μου ὃν περιεποιησάμην τὰς ἀρετάς μου διηγεῖσθαι. 22 Οὐ νῦν ἐκάλεσά σε Ἰακὼβ, (β) οὐδὲ κοπιάσαι σε ἐποίησα Ἰσραήλ. 23 Οὐκ (γ) ἤνεγκάς μοι πρόβατά σου τῆς ὁλοκαρπώσεώς σου, οὐδὲ ἐν ταῖς θυσίαις σου ἐδόξασάς με. (δ) οὐκ ἐδούλωσά σε ἐν θυσίαις, οὐδὲ ἔγκοπον ἐποίησά σε ἐν λιβάνῳ. 24 Οὐδὲ ἐκτήσω μοι ἀργυρίου (ε) θυσίασμα, οὐδὲ τὸ στέαρ τῶν θυσιῶν σου ἐπεθύμησα· ἀλλὰ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις σου 25 (ζ) προέστης μου, καὶ ἐν ταῖς ἀδικίαις σου. Ἐγώ εἰμι ἐγώ εἰμι ὁ ἐξαλείφων τὰς ἀνομίας σου (η) ἕνεκεν ἐμοῦ, καὶ τὰς ἁμαρτίας σου, καὶ 26 οὐ μὴ μνησθήσομαι. Σὺ δὲ μνήσθητι, καὶ κριθῶμεν· λέγε σὺ τὰς ἀνομίας σου πρῶτος, 27 ἵνα δικαιωθῇς. Οἱ πατέρες (θ) ὑμῶν πρῶτοι, καὶ οἱ ἄρχοντες (ι) ὑμῶν ἠνόμησαν εἰς 28 ἐμέ. Καὶ ἐμίαναν οἱ ἄρχοντες τὰ ἅγιά μου· καὶ ἔδωκα ἀπολέσαι Ἰακὼβ, καὶ (κ) Ἰσραὴλ εἰς ὀνειδισμόν.

MS.A. (ν) Ἀνήγγειλα (ξ) κἀγὼ μάρτυς λέγει κύριος ὁ Θεὸς (ο) ἐξ μενος· (π) Ἰσραὴλ, (ρ) πάντας φεύγοντας, (σ) κλοιοῖς (τ) ἐν θα λάσσῃ, (υ) ἐξάγων (φ) ἀλλὰ (χ) Μνημονεύετε (ψ) Ἰδοὺ ποιῶ (ω) Εὐ (α) ποτιῶ (β) οὐ κοπιάσαι (γ) ἐμοὶ πρόβατα τῆς ὁλοκαρπώσεώς (δ) οὐ λώσας ἐν ταῖς θυσίαις σου, (ε) θυμίαμα, οὐδὲ στέαρ (ζ) καὶ ἐν ταῖς ἀδικ προέστην σου. (η) καὶ οὐ μὴ μνησθήσομαι τὰς ἀδικίας σου. Σὺ δὲ μνή ἡμῶν (ι) αὐτῶν (κ) Ἱερουσαλήμ

ΚΕΦ. μδ'.

1 ΝΥν δὲ ἄκουσον (α) Ἰακὼβ ὁ παῖς μου, καὶ 2 Ἰσραὴλ ὃν ἐξελεξάμην. (β) Οὕτω λέγει κύριος ὁ Θεὸς ὁ ποιήσας σε, καὶ ὁ πλάσας σε ἐκ κοιλίας, Ἔτι βοηθηθήσῃ· μὴ φοβοῦ παῖς μου Ἰακὼβ, καὶ (γ) ἠγαπημένος Ἰσραὴλ ὃν ἐξελεξάμην.

MS.A (α) παῖς μου Ἰακὼβ, (β) Οὕτως (γ) ὁ ἠγαπημένος

Ego Deus: & non est præ salvator. Ego annuntiavi, & vavi: (b) exprobravi, & non in vobis alienus. Vos mihi & ego Dominus Deus. A principio: & non est, qui de bus meis eruat. Faciam: & quis vertet illud? Sic dicit Dom Deus, qui redimit vos, Sanctus rael; Propter vos mittam in B lonem: & suscitabo (c) fugien universos: & Chaldæi in na vincientur. Ego Domin' Deus ctus vester, qui ostendi Isra gem vestrum. Sic dicit Domi qui dat in mari viam, & in vehementi semitam: Qui currus, & equum, & multitu nem robustam. Sed dormie non resurgent: extincti sunt linum extinctum. Nolite me se priorum: & vetera ne co tis. Ecce ego facio nova, quæ orientur: & cognoscetis ea ciam in deserto viam, & in quoso flumina. Benedicent m stiæ agri, (d) Sirenes, filiæ struthionum: quia deserto aquam, et flumina quoso: ut bibere faciam gen um electum, Populum m quem acquisivi, ut virtute narret. Non nunc vocavi te, neque laborare te feci, Is attulisti mihi oves tuas ho tui: neque in victimis tuis câsti me: (f) nec servire te hostiis: (g) nec laborem tibi bui in thure: Nec emisti mihi gento thymiama: nec adipem arum tuarum concupivi: peccatis tuis ante me (h) in iniquitatibus tuis. Ego sum, qui deleo iniquitates propter me, & peccata tua recordabor. Tu vero mem judicemur. Dic tu (i) tuas primus, ut justificeris. vestri primi, et principes iquè egerunt in me: Et con verunt principes Sancta m dedi ut perderem Jacob, in opprobrium.

CAP. XLIV.

NUnc autem audi, Ja meus; et Israel, quem el dicit Dominus Deus, q et qui plasmavit te ex ve huc habebis auxilium. re, puer meus Jacob, et Israel, quem elegi.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 אנא אנא יי ולית בר מני פריק׃ אנא חויתי לאברהם אבוכון מה דעתיד למיתי אנא 12
פריקית יתכון ממצרים כמא דקימית ליה בין בתריא ואנא אשמעית יתכון אולפן
אוריתי מסיני ועד אתון קימין ולית בכון נוכרי ואתון סהדין קדמי אמר יי ואנא אלהא׃
13 אף מעלמא אנא הוא ולית דמן ידי משיזיב אעבדנה ולא אתיבנה׃ כדנן אמר יי
14 פריקכון קדישא דישראל בדיל חוביכון אגליתי יתכון לבבל ואחתית במשוטין כולהון
15 וכסדאי בספיני תושבחתהון׃ אנא יי קדישכון דברהי לישראל מלככון׃ כדנן אמר 16
17 יי דאתקין בימא אורחא ובמיין תקיפין שבילא׃ דאפיק רתיכין וסוסון משרין ועם
18 סגי כחדא אתבלעו ולא קמו דעיכו כבוצא עמי טפו׃ לא תדכרון קדמיתא ודמן
19 אולא לא תסתכלון׃ הא אנא עביד חדתא וכען תתגלי הלא תדעונה אף אשוי
20 במדברא אורח בצדיותא נהרון׃ ייקרון קדמי כד איתב מדינן דצדין אתר דהואה
שרין ירודין ובנת נעמין ארי יהבית במדברא מיא נהרין בצדיותא לאשקאה גלות
21 עמי דאתרעיתי בה׃ עמא דין אתקנית לפולחני בתושבחתי יהון משתען׃ אמיר 22
על ידי נבייא ולא בפולחני ערעיתון דבית יעקב ארי לאיתון באולפן אוריתי ישראל׃
23 לא איתיתא קדמי אמרין לעלתא ונכסת קודשך לא יקרתא קדמי לא אסגיתי עלך
24 בקורבנין ולא אתקפית עלך בלבונתא׃ לא זבנתא קדמי בכסף קני בסם ותרב נכסת
25 קודשך לא דהינתא על מדבחי ברם אסגיתא קדמי בחובך ארתקפתא קדמי בעויתך׃
26 אנא אנא הוא שביק לחובך בדיל שמי וחטאך לא ידכרון׃ אמר כען נדון כחדא אשתעי
27 את בדיל אם תכול ותזכי׃ אבוך קדמאה חטא ומלפך מרדו במימרי׃ ואפיס רברבי 28
קודשא ואמסר לקטלא יעקב וישראל לחסודין׃

מד

1 וכען שמע יעקב עבדי וישראל דאתרעיתי ביה׃ כדנן אמר יי דעבדך ודאתקנך ממעין 2
יסעדנך לא תדחל עבדי יעקב וישראל דאתרעיתי ביה׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ego ego Dominus, & non est absque me salvator. Ego annuntiavi patri vestro quæ ventura erant: ego redemi vos ex Ægypto, sic ei inter divisiones. Et ego audire vos feci doctrinam legis meæ de adhuc permanetis, & non est in vobis extraneus: & vos testes cora dicit Dñs: & ego Deus. A seculo etiam ego sum, & non est qui manu mea: faciam illud, & non avertam illud. Sic dicit Domin' re vester sanctus Israel: Propter peccata vestra transtuli vos in Ba & descendere feci in remis universos; & Chaldæos in navibus la Ego Dominus sanctus vester, qui creavi Israelem, rex vester. Sic minus qui direxit in mari viam, & in aquis vehementibus semita eduxit quadrigas & equos, & exercitū, & populum multum: sim sunt, & non surrexerunt; extincti sunt, & sicut linum extinctum sunt. Ne memineritis priorum, et quæ sunt ab antiquo, ne Ecce ego facio novum, et nunc revelabitur: utique scietis illud am in solitudine viam, in deserto flumina. Glorificabunt coram do convertero provincias desertas, et locum ubi manebant dra filiæ struthionum; quia dedi in solitudine aquas, et flumina in de darem potum *transmigrationi populi mei* quem elegi. Populum paravi cultui meo: laudem meam narrabunt. Dictum est per phetarum, quòd non acceditis ad cultum meum viri domus laborâsti Israel in doctrina legis meæ. Non obtulisti corā me ar *caustum*, neque *victimis sanctis tuis* honorâsti coram me: no cavi super te oblationes, neque gravavi te thure. Non emisti co gento calamum aromaticum, neque adipe victimarum tuarum altare meum. Veruntamen multiplicâsti coram me peccata tua me tuis iniquitatibus. Ego, ego sum ipse qui dimitto scelera tu nomen meum, et peccata tua non erunt in memoria. Dic nunc simul, narra si potes ut justificeris. Pater tuus primus pecca res tui prævaricati sunt in Verbum meum. Et profanavi princ tatis, & tradidi in occisionem Jacob, & Israelem in opprobri

CAP. XLIV.

ET nunc audi Jacob serve mi, & Israel quem elegi. Hæc di qui fecit te, et formavit te, ab utero sustentavit te: Ne timeas et Israel quem elegi.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܘܠܝܬ ܐܚܪܝܢ ܣܛܪ ܡܢܝ܂ * ܐܢܐ ܚܘܝܬ ܘܦܪܩܬ܂ ܘܐܫܡܥܬ ܘܠܝܬ
12 ܒܟܘܢ ܢܘܟܪܝܐ܂ ܘܐܢܬܘܢ ܣܗܕܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܘܐܢܐ ܐܠܗܐ܂ * ܘܐܦ ܡܢ ܝܘܡܐ ܩܕܡܝܐ ܐܢܐ
13 ܐܢܐ܂ ܘܠܝܬ ܕܡܫܬܘܙܒ ܡܢ ܐܝܕܝ܂ ܘܡܕܡ ܕܥܒܕ ܐܢܐ ܡܢܘ ܡܗܦܟ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
14 ܦܪܘܩܟܘܢ ܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܡܛܠܬܟܘܢ ܫܕܪܬ ܠܒܒܠ܂ ܘܐܚܬܬ ܠܥܪܘܩܐ ܟܠܗܘܢ܂ ܘܟܠܕܝܐ
ܕܒܐܠܦܐ ܡܫܬܒܗܪܝܢ܂ * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܟܘܢ܂ ܕܒܪܝܬ ܠܐܝܣܪܝܠ
15 ܡܠܟܟܘܢ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܕܝܗܒ ܐܘܪܚܐ ܒܝܡܐ܂ ܘܫܒܝܠܐ ܒܡܝܐ ܥܫܝܢܐ܂
16 * ܕܡܦܩ ܡܪܟܒܬܐ ܘܣܘܣܝܐ܂ ܘܚܝܠܐ ܥܫܝܢܐ܂ ܘܐܟܚܕܐ ܢܫܟܒܘܢ܂ ܘܠܐ ܢܩܘܡܘܢ܂
17 ܘܢܕܥܟܘܢ ܐܝܟ ܫܪܓܐ ܕܡܬܛܦܛܦ܂ * ܠܐ ܬܬܕܟܪܘܢ ܩܕܡܝܬܐ܂ ܘܕܡܢ ܩܕܝܡ ܠܐ ܬܣܬܟܠܘܢ܂
18 * ܗܐ ܥܒܕ ܐܢܐ ܚܕܬܐ܂ ܘܗܫܐ ܬܕܢܚ ܘܬܕܥܘܢܝܗ܂ ܘܐܣܝܡ ܐܘܪܚܐ ܒܡܕܒܪܐ܂ ܘܢܗܪܘܬܐ
19 ܒܝܫܝܡܘܢ܂ * ܢܫܒܚܢܢܝ ܚܝܘܬ ܒܪܐ܂ ܝܪܘܪܐ ܘܒܢܬ ܢܥܡܝܬܐ܂ ܡܛܠ ܕܝܗܒܬ ܡܝܐ
20 ܒܡܕܒܪܐ܂ ܘܢܗܪܘܬܐ ܒܝܫܝܡܘܢ܂ ܕܢܫܬܐ ܥܡܝ ܓܒܝܐ܂ * ܥܡܐ ܗܘ ܕܓܒܝܬ ܠܝ ܢܫܬܘܢ܂
21 * ܠܐ ܗܘܐ ܠܝ ܩܪܝܬ ܝܥܩܘܒ ܕܩܪܝܬܟ ܐܝܣܪܝܠ܂ * ܠܐ ܐܝܬܝܬ ܠܝ ܐܡܪܐ ܕܥܠܘܬܟ܂ ܘܒܕܒܚܝܟ
22 ܠܐ ܝܩܪܬܢܝ܂ ܠܐ ܫܥܒܕܬܟ ܒܩܘܪܒܢܐ܂ ܘܠܐ ܐܠܐܝܬܟ ܒܠܒܘܢܬܐ܂ * ܠܐ ܙܒܢܬ ܠܝ ܒܟܣܦܐ
23 ܩܢܝܐ ܕܒܣܡܐ܂ ܘܒܬܪܒܐ ܕܕܒܚܝܟ ܠܐ ܐܪܘܝܬܢܝ܂ ܐܠܐ ܫܥܒܕܬܢܝ ܒܚܛܗܝܟ܂ ܘܒܥܘܠܟ
24 ܐܠܐܝܬܢܝ܂ * ܐܢܐ ܐܢܐ ܕܡܥܒܪ ܐܢܐ ܥܘܠܟ ܡܛܠܬܝ܂ ܘܚܛܗܝܟ ܠܐ ܐܬܕܟܪ܂ * ܐܬܕܟܪܢܝ
25 ܘܢܬܕܝܢ ܐܟܚܕܐ܂ ܐܡܪ ܐܢܬ ܕܬܙܕܕܩ܂ * ܐܒܘܟ ܩܕܡܝܐ ܚܛܐ܂ ܘܡܦܩܢܝܟ ܐܥܠܘ ܒܝ܂
26 * ܛܢܦܘ ܪܘܪܒܢܝܟ ܩܘܕܫܐ܂ ܘܝܗܒܬ ܠܚܪܡܐ ܝܥܩܘܒ܂ ܘܐܝܣܪܝܠ ܠܚܣܕܐ܂
27
28

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܕ *

1 * ܗܫܐ ܫܡܥܝܢܝ ܝܥܩܘܒ ܥܒܕܝ܂ ܘܐܝܣܪܝܠ ܕܓܒܝܬ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂
2 ܕܥܒܕܟ ܘܓܒܠܟ ܡܢ ܟܪܣܐ ܘܡܥܕܪ ܠܟ܂ ܠܐ ܬܕܚܠ ܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ܂ ܘܐܝܣܪܝܠ ܕܓܒܝܬ܂

Ego ſum Dominus, nec alius eſt præter me. 11
Ego indicavi, ſervavi, & enarravi, nec eſt 12
inter vos alienus: & vos teſtes mei eſtis, dicit
Dominus, & ego ſum Deus. A primo etiam 13
die ego ſum, nec eſt qui effugiat manus meas:
& quod ego facio, quis reſcindat? Sic di- 14
cit Dominus ſervator veſter, Sanctus Iſrae-
lis; Propter vos miſi Babelem, & adduxi
omnes profugas & Chaldæos qui de navibus
gloriantur. Ego ſum Dominus ſanctus veſter 15
qui creavi Iſraelem, rex veſter. Sic ait Do- 16
minus qui viam præbet in mari, & ſemitam
in aquis multis; Qui ejicit currus & equos, 17
& exercitum ingentem, & ſimul occumbunt,
neque reſurgent, ſed extinguuntur veluti lu-
cerna quæ crepitat. Ne recordemini prio- 18
rum, & quæ ab initio fuerunt, ne perpen-
datis. Ecce facturus ſum rem novam, mox 19
enaſcetur, & cognoſcetis eam: ſternam quo-
que viam in deſerto, & fluvios in Aſimon.
Laudabit me beſtia agri, canes ſylveſtres, & 20
pulli ſtruthionum, quòd aquas dederim in
deſerto, & fluvios in Aſimon, ad hoc ut bi-
beret populus meus electus, Populus iſte, 21
quem elegi mihi, biberent. Me nequaquam 22
invocâſti Jacob quem vocavi Iſraelem: Non 23
attuliſti mihi agnos holocauſtorum tuorum,
& ſacrificiis tuis non honorâſti me: non ſub-
egi te muneribus, nec fatigavi te thure: Non 24
emiſti mihi pecuniâ calamum aromaticum,
nec adipe ſacrificiorum tuorum inebriâſti
me: quin ſubegiſti me peccatis tuis, & ini-
quitate tuâ fatigâſti me. Ego ſum qui deleo 25
iniquitatem tuam, propter me, & peccato-
rum tuorum haud recordabor. Memor ſis 26
mei, judicemur ſimul, dico ut te juſtifices.
Primus *ille* pater tuus peccavit, principes tui 27
fraudulenter mecum egerunt, Prophanârunt 28
magnates tui Sanctuarium: *ideo* expoſui Ja-
cobum anathemati, & Iſraelem ignominiæ.

CAP. XLIV.

IGitur, audi me Jacob ſerve meus, & Iſra- 1
el quem elegi: Sic dicit Dominus qui te fe- 2
cit & formavit in utero, teque adjuvit; Ne
timeto ſerve meus Jacob, & Iſrael quē vocavi:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

11 12 * انا هو الله وليس يوجد من يخلص غيري * انا اخبرت وخلصت وعبرت ۔ ولم يكن
13 فيكم اله غريب ۔ انتم لي شهود ۔ وانا الرب الاله ايضا * منذ البدء انا انا ۔ وليس يوجد
14 من يستنقذ من يدي ۔ اصنع ومن يرد * هكذا يقول الرب الاله منقذكم قدوس
اسرايل ۔ من اجلكم ارسل الي بابل واتي بجميع الهاربين ۔ والكلدانيون يربطون في السفن
15 16 * انا الرب الاله قدوسكم ۔ مطهر اسرايل ۔ ملككم * هكذا يقول الرب الاله المعطي طريقا
17 في البحر ۔ وفي الماء القوي سبيلا * المخرج مركبات وفرسا وجمعا قويا ۔ لكنهم رقدوا ولم يقوموا
18 19 طفيوا مثل سراج مطفي * لا تذكروا الاوايل ۔ ولا تفكروا في المبادي * ها اصنع
جديدات التي اخبركم بها الان وتعرفوها ۔ واجعل في البرية طريقا وفي العديمة الماء انهارا
20 * تباركني وحوش الحقل ۔ بنات اوي وبنات النعام ۔ لاني اعطيت في البرية طريقا وانهارا في
21 22 العديمة الماء ۔ لاسقي جنسي المختار * شعبي الذي اقتنيته ليخبروا بفضايلي * الست الان
23 دعوتك يا يعقوب ۔ ولا اجعلك ان تتعب يا اسرايل * اليس لي خراف قربانك ۔ ولم تمجدني
24 بذبايحك ۔ ولم استعبدك بضحاياك ۔ ولم اجعلك تعبا لللبان * ولم تقتن لي بخورا بالفضة ۔
25 ولم اشته شحم ذبايحك ۔ لكن بخطاياك وظلمك وقفت امامك * انا هو انا هو الماحي
26 27 خطاياك ولا اذكرها * وانت فاذكر ونتحاكم ۔ قل انت اثامك اولا لكي تتبرر * اباوكم
28 الاولون ورؤساوكم اعتوا الي * والروساء نجسوا اقداسي ۔ فاسلمت يعقوب ان يهلك واسرايل
للتعيير ۔

الفصل الرابع والاربعون ۔

1 * والان اسمع يا عبدي يعقوب
2 واسرايل المحبوب لي الذي انا اخترته [* MS.Ox. هكذا يقول الرب الذي صنعك وجبلك
في الرحم واعانك ۔ لا خوف عليك يا عبدي يعقوب واسرايل الذي اصطفيت ۔]

Ego ſum Deus, nec reperitur qui ſalvet 11
præter me. Ego indicavi, ſalvavi, & 12
declaravi, dum nullus exiſteret inter
vos deus alienus: vos eſtis mihi teſtes,
& ego quoque Dominus Deus. Inde à 13
principio ego ipſe ſum, neque reperitur
qui eripiat è manu mea: operor, & quis
prohibet? Sic dicit Dominus Deus re- 14
demptor veſter, Sanctus Iſraelis; Pro-
pter vos mittam in Babelem, & redu-
cam profugas omnes; Chaldæi verò li-
gabuntur in navibus. Ego Dominus Deus 15
ſanctus veſter emundans Iſraelem, rex
ſum veſter. Sic dicit Dominus Deus qui 16
dat viam in mari, & in aqua vehementi
ſemitam; Qui educit currus & equos, 17
turbamq; robuſtã; attamen occubuerunt,
nec reſurrexerunt, extincti ſunt veluti
lucerna extincta. Priorum ne recorde- 18
mini, & ne cogitetis de præcedentibus:
Ecce facturus ſum res novas, quas jam 19
indicabo vobis, & cognoſcetis: & diſpo-
nam in deſerto viã, & in aquis carente,
flumina. Benedicent mihi belluæ cam- 20
peſtres, canes ſylveſtres, & pulli ſtru-
thionum, quòd dederim in deſerto viã,
& fluvios in terra aquis carente ad præ-
bendũ potum generi meo ſelecto, Populo 21
meo quem poſſedi; quatenus prædicent
excellentias meas. Annon igitur vocavi 22
te O Jacob? neque permiſi ut fatigeris
O Iſrael. Annon mihi ſunt agni oblationis 23
tuæ? attamen non glorificâſti me ſacrifi-
ciis tuis; non preſſi te ſervitute in victi-
mis tuis, neque laſſum te reddidi cauſâ
thuris: Non comparâſti mihi thus ar- 24
gento, neque concupivi adipem ſacrificio-
rum tuorum; tamen propter peccatũ tuũ
& perverſitatẽ tuã ſteti coram te. Ego 25
ſum, ego ſum qui deleo peccata tua, neque
recordor illorũ: Tu autem recorda me, & 26
diſceptemus: dic tu primùm culpas tuas,
ut juſtificeris. Primi patres veſtri & 27
principes veſtri peccaverunt in me; Et 28
principes contaminaverunt ſancta mea:
ideo tradidi Jacobũ ut periret, & Iſ-
raelem contumeliis.

CAP. XLIV.

JAm verò audi O Jacob ſerve mi, et Iſ- 1
rael mihi dilecte quẽ ego elegi: [MS.Ox. 2
Sic dicit Dominus qui fecit te, et in utero
te formavit, qui tibi auxiliatus eſt,
Ne timeas ſerve mi Jacob, & Iſrael
quem elegi:]

ישעיה : מד

effundam aridam super fluenta & ,sitientem super aquas effundam Quia

3 כִּי אֶצָּק־מַיִם עַל־צָמֵא וְנֹזְלִים עַל־יַבָּשָׁה אֶצֹּק

.tua germina super meā benedictionem & ,tuū semen super meū spiritum

רוּחִי עַל־זַרְעֶךָ וּבִרְכָתִי עַל־צֶאֱצָאֶיךָ׃

.aquarum rivulos juxta salices sicut : herbam inter *in* germinabunt Et

4 וְצָמְחוּ בְּבֵין חָצִיר כַּעֲרָבִים עַל־יִבְלֵי־מָיִם׃

: Jahacob nomine in invocabit iste & ,ego Domini ,dicet Iste

5 זֶה יֹאמַר לַיהוָה אָנִי וְזֶה יִקְרָא בְשֵׁם־יַעֲקֹב

.cognominabit Israel nomine in & ,Domino sua manu scribet iste &

וְזֶה יִכְתֹּב יָדוֹ לַיהוָה וּבְשֵׁם יִשְׂרָאֵל יְכַנֶּה׃

Dominus ejus redemptor & ,Israel rex Dominus dixit Sic

6 כֹּה־אָמַר יְהוָה מֶלֶךְ־יִשְׂרָאֵל וְגֹאֲלוֹ יְהוָה

.Deus non me præter & ,novissimus ego & ,primus Ego :exercituum

צְבָאוֹת אֲנִי רִאשׁוֹן וַאֲנִי אַחֲרוֹן וּמִבַּלְעָדַי אֵין אֱלֹהִים׃

,mihi illud ordinabit & ,hoc annuntiabit & ,vocabit ego sicut quis Et

7 וּמִי־כָמוֹנִי יִקְרָא וְיַגִּידֶהָ וְיַעְרְכֶהָ לִי

annuncient ,sunt ventura quæ & ,*ventura* & : seculi populum *me ponere à*

מִשּׂוּמִי עַם־עוֹלָם וְאֹתִיּוֹת וַאֲשֶׁר תָּבֹאנָה יַגִּידוּ

,te feci audire *tunc* ex nonne : formidetis ne & ,timeatis Ne .eis

8 לָמוֹ׃ אַל־תִּפְחֲדוּ וְאַל־תִּרְהוּ הֲלֹא מֵאָז הִשְׁמַעְתִּיךָ

,*petra non* & ? me præter Deus est an ? mei testes vos & ,annunciavi &

וְהִגַּדְתִּי וְאַתֶּם עֵדָי הֲיֵשׁ אֱלוֹהַּ מִבַּלְעָדַי וְאֵין צוּר

eorū concupiscibilia & ,*inanitas* ipsi omnes sculptilis *Formatores* ? *novi* non

9 בַּל־יָדָעְתִּי׃ יֹצְרֵי־פֶסֶל כֻּלָּם תֹּהוּ וַחֲמוּדֵיהֶם

neque ,videbunt non ipsi eorum testes & : proderunt non

בַּל־יוֹעִילוּ וְעֵדֵיהֶם הֵמָּה בַּל־יִרְאוּ וּבַל־

sculptile & ,Deum *formavit* Quis .confundantur ideo : cognoscent

10 יֵדְעוּ לְמַעַן יֵבֹשׁוּ׃ מִי־יָצַר אֵל וּפֶסֶל

,afficientur pudore ejus socii omnes Ecce .*profuit* nihilum ad : *conflavit*

11 נָסָךְ לְבִלְתִּי הוֹעִיל׃ הֵן כָּל־חֲבֵרָיו יֵבֹשׁוּ

,stabunt ,ipsi omnes *congregabuntur* : hominibus ex ipsi artifices &

וְחָרָשִׁים הֵמָּה מֵאָדָם יִתְקַבְּצוּ כֻלָּם יַעֲמֹדוּ

,*dolabram* ferri Faber .simul afficientur pudore ,pavebunt

12 יִפְחֲדוּ יֵבֹשׁוּ יָחַד׃ חָרַשׁ בַּרְזֶל מַעֲצָד

illud operabitur & : illud figurabit malleis in & ,*carbone* in operabitur &

וּפָעַל בַּפֶּחָם וּבַמַּקָּבוֹת יִצְּרֵהוּ וַיִּפְעָלֵהוּ

bibit non : *vis* non & famelicus etiam ,suæ fortitudinis brachio in

בִּזְרוֹעַ כֹּחוֹ גַּם־רָעֵב וְאֵין כֹּחַ לֹא־שָׁתָה

illud delineabit ,*lineam* extendit *lignorum* Faber .*est defatigatus* & ,aquam

13 מַיִם וַיִּיעָף׃ חָרַשׁ עֵצִים נָטָה קָו יְתָאֲרֵהוּ

: *illud designabit* circino in & ,*asciis in* illud faciet ,*tincto* filo in

בַשֶּׂרֶד יַעֲשֵׂהוּ בַּמַּקְצֻעוֹת וּבַמְּחוּגָה יְתָאֳרֵהוּ

hominis gloriam secundūm ,viri imaginem secundum illud faciet &

וַיַּעֲשֵׂהוּ כְּתַבְנִית אִישׁ כְּתִפְאֶרֶת אָדָם

,*ilicem* tollet & ,cedros sibi succidendū Ad .domum inhabitandū ad

14 לָשֶׁבֶת בָּיִת׃ לִכְרָת־לוֹ אֲרָזִים וַיִּקַּח תִּרְזָה

.*vehet* pluvia & ,*ornum plantavit* : sylvæ *lignis in sibi* roborabit & ,quercū &

וְאַלּוֹן וַיְאַמֶּץ־לוֹ בַּעֲצֵי־יָעַר נָטַע אֹרֶן וְגֶשֶׁם יְגַדֵּל׃

etiam ,se calefaciet & ,eis ex sumet & ,comburendum ad homini erit Et

15 וְהָיָה לְאָדָם לְבָעֵר וַיִּקַּח מֵהֶם וַיָּחָם אַף־

,se incurvabit & ,Deum operabitur etiam : panem coquet & ,succendet

יַשִּׂיק וְאָפָה לָחֶם אַף־יִפְעַל־אֵל וַיִּשְׁתָּחוּ

in comburet ejus Medium .ei se incurvabit & ,sculptile illud faciet

16 עָשָׂהוּ פֶסֶל וַיִּסְגָּד־לָמוֹ׃ חֶצְיוֹ שָׂרַף בְּמוֹ־

:saturabitur & ,assaturam assabit ,comedet carnem ejus mediū super ,igni

אֵשׁ עַל־חֶצְיוֹ בָּשָׂר יֹאכֵל יִצְלֶה צָלִי וְיִשְׂבָּע

.focum vidi ,me calefeci ,Euge ,dicet & ,se calefaciet etiam

אַף־יָחֹם וְיֹאמַר הֶאָח חַמּוֹתִי רָאִיתִי אוּר׃

ESAIAS.

Verſio VULG. LAT.

3 Effundam enim aquas ſuper ſitientem, & fluenta ſuper aridam: effundam ſpiritum meum ſuper ſemen tuum, & benedictionem meam ſuper ſtirpem tuam. 4 Et germinabunt inter herbas, quaſi ſalices juxta præterfluentes aquas. 5 Iſte dicet; Domini ego ſum: & ille vocabit in nomine Jacob, & hic ſcribet manu ſuâ; Domino: & in nomine Iſrael aſſimilabitur. 6 Hæc dicit Dominus rex Iſrael, & redemptor ejus Dominus exercituū Ego primus, & ego noviſſimus, & abſque me non eſt Deus. 7 Quis ſimilis meî? vocet, & annuntiet: & ordinem exponat mihi, ex quo conſtitui populum antiquum: ventura & quæ futura ſunt annuntient eis. 8 Nolite timere, neque conturbemini: ex tunc audire te feci, & annuntiavi: vos eſtis teſtes mei. Numquid eſt Deꝰ abſque me, & formator quem ego non noverim? 9 Plaſtæ idoli omnes nihil ſunt, & amantiſſima eorum non proderunt eis. Ipſi ſunt teſtes eorum, quia nō vident, neque intelligunt, ut confundantur. 10 Quis formavit deum, & ſculptile conflavit ad nihil utile? 11 Ecce omnes participes ejus confundentur: fabri enim ſunt ex hominibus: convenient omnes, ſtabunt & pavebunt, & confundentur ſimul. 12 Faber ferrarius limâ operatus eſt: in prunis & in malleis formavit illud, & operatus eſt in brachio fortitudinis ſuæ: eſuriet & deficiet, non bibet aquam, & laſſeſcet. 13 Artifex lignariꝰ extendit normam, formavit illud in runcina: fecit illud in angularibus, & in circino tornavit illud: & fecit imaginem viri, quaſi ſpecioſū hominem habitantem in domo. 14 Succîdit cedros, tulit ilicem, & quercum, quæ ſteterat inter ligna ſaltûs: plantavit pinum, quam pluvia nutrivit. 15 Et facta eſt hominibus in focum: ſumpſit ex eis, & calefactus eſt: & ſuccendit, et coxit panes: de reliquo autē operatus eſt deū, et adoravit: fecit ſculptile, et curvatus eſt ante illud. 16 Medium ejus combuſſit igni, et de medio ejus carnes comēdit: coxit pulmentum, et ſaturatus eſt, et calefactus eſt, et dixit; Vah, calefactus ſum, vidi focum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Ὅτι ἐγὼ δώσω ὕδωρ ἐν δίψει τοῖς πορευομένοις ἐν ἀνύδρῳ, ἐπιθήσω τὸ πνεῦμά μου ἐπὶ τὸ σπέρμα σου, καὶ τὰς εὐλογίας μου ἐπὶ τὰ τέκνα σου, 4 Καὶ ἀνατελοῦσιν (δ) ὡς ἀναμέσον ὕδατος χόρτος, καὶ ὡς ἰτέα ἐπὶ (ε) παραῤῥέον ὕδωρ. 5 Οὗτος ἐρεῖ, Τοῦ θεοῦ εἰμι, καὶ οὗτος (ε) βοήσεται ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰακώβ· καὶ ἕτερος (ζ) ἐπιγράψει χειρὶ αὐτοῦ, Τοῦ θεοῦ εἰμι, καὶ ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰσραὴλ βοήσεται. 6 Οὕτως λέγει ὁ θεὸς ὁ βασιλεὺς (η) Ἰσραὴλ, καὶ ῥυσάμενος αὐτὸν θεὸς σαβαὼθ, Ἐγὼ πρῶτος, καὶ ἐγὼ μετὰ ταῦτα· πλὴν ἐμοῦ οὐκ ἔστι θεός. 7 Τίς ὥσπερ ἐγώ; (θ) στήτω, καὶ καλεσάτω, καὶ ἀναγγειλάτω, καὶ ἑτοιμασάτω μοι ἀφ' οὗ ἐποίησα ἄνθρωπον εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ τὰ ἐπερχόμενα πρὸ τοῦ ἐλθεῖν ἀναγγειλάτωσαν ὑμῖν. 8 Μὴ παρακαλύπτεσθε, (ι) μηδὲ πλανᾶσθε· οὐκ ἀπ' ἀρχῆς ἠνωτίσασθε, καὶ ἀπήγγειλα ὑμῖν; μάρτυρες ὑμεῖς ἐστε, εἰ ἔστι θεὸς πλὴν ἐμοῦ. 9 Καὶ οὐκ ( ) ἤκουσαν τότε οἱ πλάσσοντες, καὶ (κ) οἱ γλύφοντες, πάντες μάταιοι, (λ) ποιοῦντες τὰ καταθύμια αὐτῶν, ἃ οὐκ ὠφελήσει αὐτούς· ἀλλὰ αἰσχυνθήσονται (μ) 10 Οἱ πλάσσοντες θεὸν, καὶ γλύφοντες (ν) πάντες ἀνωφελῆ, 11 Καὶ πάντες ὅθεν ἐγένοντο ἐξηράνθησαν. καὶ κωφοὶ ἀπὸ ἀνθρώπων συναχθήτωσαν πάντες, καὶ (ξ) στήτωσαν ἅμα· καὶ ἐντραπήτωσαν, καὶ αἰσχυνθήτωσαν ἅμα· 12 Ὅτι ὤξυνε τέκτων σίδηρον, σκεπάρνῳ εἰργάσατο αὐτὸ, καὶ ἐν τερέτρῳ (ο) ἔστησεν αὐτὸ, καὶ εἰργάσατο αὐτὸ ἐν τῷ βραχίονι τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, καὶ πεινάσει, καὶ ἀσθενήσει, καὶ οὐ μὴ πίῃ ὕδωρ. 13 Ἐκλεξάμενος τέκτων ξύλον, ἔστησεν αὐτὸ ἐν μέτρῳ, καὶ ἐν κόλλῃ ἐῤῥύθμισεν αὐτὸ, (π) καὶ ἐποίησεν αὐτὸ ὡς μορφὴν ἀνδρὸς, καὶ ὡς ὡραιότητα ἀνθρώπου, στῆσαι αὐτὸ ἐν οἴκῳ. 14 (ρ) Ἔκοψε ξύλον ἐκ τοῦ δρυμοῦ, ὃ ἐφύτευσεν κύριος, (σ) πίτυν, καὶ ὑετὸς ἐμήκυνεν, 15 Ἵνα ᾖ ἀνθρώποις εἰς καῦσιν· καὶ λαβὼν ἀπ' αὐτοῦ, ἐθερμάνθη, καὶ καύσαντες ἔπεψαν ἄρτους ἐπ' (τ) αὐτῶν· τὸ δὲ λοιπὸν (υ) εἰργάσαντο θεοὺς, καὶ προσκυνοῦσιν (φ) αὐτοῖς· 16 Οὗ τὸ ἥμισυ αὐτοῦ κατέκαυσεν ἐν πυρὶ, (χ) καὶ ἐπὶ τοῦ ἡμίσους αὐτοῦ ἔπεψεν ἐν τοῖς ἄνθραξιν ἄρτους, καὶ ἐπ' αὐτοῦ κρέας ὀπτήσας ἔφαγε, καὶ ἐνεπλήσθη, καὶ θερμανθεὶς εἶπεν, Ἡδύ μοι, ὅτι ἐθερμάνθην, καὶ εἶδον πῦρ.

Quia ego dabo aquam i
qui ambulant in inaqu
nam ſpiritum meum ſupe
tuum, & benedictiones m
per filios tuos. Et orien
medio aquæ fænum, &
lix ſuper præterfluentem aq
Iſte dicet, Dei ſum: &
mabit in nomine Jacob
lius ſcribet in manu ſua, D
& in nomine Iſrael cla
dicit Deus rex Iſrael & er
it eum, Deus Sabaoth, Eg
mus, & ego poſt hæc: p
non eſt Deus. Quis ſic
Stet, & vocet, & an
& paret mihi, ex quo fe
nem in ſeculum: & futu
tequàm veniant, annun
bis. Ne abſcondamini, ne
erretis. Nonne à princ
ribus percepiſtis, & annun
vobis? Teſtes vos eſtis,
Deus præter me. Et ( ) non au
dierunt tunc, qui formaban
ſculpebant, omnes vani, fac
deſideria ſua, quæ non pro
(c) ipſis: ſed confundentur
plaſmant Deum, &
pentes inutilia: Et (d) om
unde facti ſunt, exaruerunt
ſurdi ex hominibus. C
tur omnes, & ſtent ſim
confundantur, & erube
mul: Quoniam acuit fab
rum, limâ operatus eſt illud
in terebro ſtatuit illud, &
ratus eſt illud in brachio
dinis ſuæ: & eſuriet, &
mus erit, & non bibet
Eligens faber lignum, ſta
lud in (e) menſura, &
glutine compoſuit illud, &
ipſum quaſi formam viri,
quam ſpeciem hominis,
tuendum illud in domo.
cīdit lignum de ſilva
plantavit Dominus,
pluvia produxit
nem, ut ſit hominibus
cendendum: &
calefactus eſt: &
xerunt panes ſuper
um autem fabricati
& adorant ( ) eos:
medium ejus combuſſit
ſuper dimidium ejus
bonibus panes, &
ſans carnes comēdit, &
eſt, & calefactus
mi hi, quia calefactus
di ignem.

MS. A. (δ) ὡσεὶ χόρτος ἀναμέσον ὕδατος, ( ) παραρ
τῷ ὀνόματι Ἰακώβ· (ζ) ἐπιγράψει, Τοῦ θεοῦ εἰμι, ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰσρα
πως (η) τοῦ Ἰσραὴλ, ὁ ῥυσάμενος (θ) στήτω, καλεσάτω, καὶ ἑτοιμασάτω
ἀρχῆς ( ) ἦσαν (κ) γλύφοντες, (λ) οἱ ποιοῦντες (μ) πάντες οἱ
φελῆ, (ξ) στήσονται ἅμα· ἐντραπήτωσαν, (ο) ἔτρησεν αὐτὸ,
(π) ἐποίησεν (ρ) Ὃ ἔκοψεν (σ) καὶ ὑετὸς (τ) αὐτοῦ· (υ) εἰργάσα
ὸς, (φ) αὐτοῖς· (χ) καὶ καύσαντες ἔπεψαν ἄρτους ἐπ' αὐτῶν, καὶ

תרגום יונתן TARGUM JONATHAN.

ארי כמא דמתיהבין מיא על ארע בית צחונא ומתנגדין על יבשתא כן אתן רוח
3 קודשי על בנך וברכתי על בני בנך׃ ויתרבון צדיקיא רכיכין ומפנקין כלבלבי
4 עסב כאילן דמשלח שרשוהי על נגדין דמיין׃ דין יימר מדחליא דיי אנא ודין
5 יצלי בשום יעקב ודין יקריב קורבניה קדם יי ובשמא דישראל יתקריב׃ כדנן
6 אמר יי מלכא דישראל ופרקיה יי צבאות אנא הוא דמלקדמין אף עלמי עלמיא
דילי אנון ובר מני לית אלה׃ ומן כותי די ערענה ויחוינה ויסדרנה קדמי
7 משויותי עמא דמן עלמא ודאתין ודעתידין למיתי יחוון לנא׃ לא תדחלון
8 ולא תתברון הלא מבכן בסרתך וחויתי ואתון סהדין קדמי האית אלהא בר מני
ולית דתקיף אלהן דמן קדמי מתיהב ליה תקוף׃ עבדי צלמיא כולהון למא
9 ופלחיהון דלא יהנון להון וסהדין אנון בנפשתיהון דלא חזן ולא ידעין בדיל דיבהתון׃
מן עבד דחלא וצלמא אתיך בדיל דלא להנאה׃ הא כל פלחיהון יבהתון ואומנין
10 עובדין מבני אנשא יתכנשון כולהון יקומון יתברון יבהתון כחדא׃ נפחא מברזלא
הצינא עביד ונפח נור בשיחורין ובמקובין מתקיף ליה ועביד ליה בתקוף חיליה
דאם יכפן עבדיה ולא יכול לאיתהי ביה חיל ואם יצחי ולא ישתי מיא יהי משתלהי׃
נגר אעין נפיץ בחוטא מסר ליה במשקולתא מנני ליה באומליא ובנצורין מאחד ליה
יעבד ליה כדמות גבר כתושבחת איתתא למתב בביתא׃ למקץ ליה ארזין ונסיב תרזא
14 ובלוט ומתקיף ליה באעי חורשא נצב אורנא ומטרא ירבי׃ ויהי לאנשא לאדלקא ונסיב
15 מנהון ושחין אף אזי ואפא לחם אף עביד דחלא וסגיד אתקין צלמא ובעי מניה׃
פלגיה אוקיד בנורא על פלגיה בסרא אכיל טוי טוי וסבע אף שחין ואמר אח
16 שחינית חזיתי נור׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia ſicut dantur aquæ ſuper terram ſitientem, & fluunt ſuper ari
dabo ſpiritum ſanctum meum ſuper filios tuos, & benedictionem
ſuper filios filiorum tuorum. Et creſcent juſti & erunt teneri, &
cati ſicut germen herbæ, ſicut arbor quæ mittit radices ſuas juxta
tes aquas. Hic dicet, De timentibus Dominum ego ſum; & hic ora
nomine Jacob; & iſte offeret oblationem ſuam coram Domino; &
mine Iſrael applicabitur. Hæc dicit Dominus rex Iſrael, & rede
ejus Dominus exercituum: Ego ſum ab initio; *etiam* ſecula ſeculor
ſunt, & abſque me non eſt Deus. Et quis eſt ſicut ego, qui vocet &
tiet illud, & ordinet illud coram me? ex quo poſui populum qu
lo eſt, & quæ ventura ſunt, & futura annuntient nobis. Ne timeat
conſternemini; an non ex illo tempore annuntiavi tibi & indica
teſtes eſtis coram me; num ſit Deus præter me; & num ſit fortis niſi
tur fortitudo à facie mea. Qui ſimulacra faciunt, omnes ſunt va
colunt ea quæ ſibi non proderunt; & teſtes ſunt ſibimet quod
neque intelligunt, eo ut confundantur. Quis fecit deum & ſim
conflavit ad nihil utile? Ecce omnes cultores eorum confundentur
tifices operarii ex filiis hominum; congregentur univerſi, ſtent, co
tur, confundantur ſimul. Sufflator ex ferro bipennim facit; & c
nem in carbonibus: & malleis confirmat illud, & facit illud
ſuis: quod ſi eſurierit qui fecit illud, & non comederit, n
eo virtus; & ſi ſitierit & non biberit aquas, erit laſſus. Fa
rius extendit lineam, ferrat illud perpendiculo, dolat illud
circino format illud; et facit illud in ſimilitudinem viri, et juxta
mulieris, ut habitet in domo. Ut ſuccidat ſibi cedros, et
et quercum, et apprehendit ſibi ligna in ſaltu: plantavit p
pluvia nutrit. Et facta eſt homini ad ſuccendendum: et
et calefactus eſt; et etiam ſuccendit et coxit panem. Fa
illo deum et adorat conflatile ſimulacrum, et deprecat
dium ejus ſuccendit igni, ſuper dimidio ejus carnem com
aſſaturam, et ſatiatur; calefactus quoque eſt: et dixit
vidi ignem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܝܗܒ ܐܢܐ ܡܝܐ ܒܐܬܪܐ ܨܗܝܐ :. ܘܢܗܪܘܬܐ ܒܝܒܝܫܬܐ. ܐܫܘܕ ܪܘܚܝ ܥܠ ܙܪܥܟ. ܘܒܘܪܟܬܝ 3
ܥܠ ܒܢܝܟ. * ܘܢܕܢܚܘܢ ܡܢ ܒܝܬ ܥܣܒܐ ܒܡܝܐ :. ܐܝܟ ܥܪܒܐ ܕܥܠ ܝܒܠܐ ܕܡܝܐ. * ܗܢܐ 4
ܢܐܡܪ ܕܡܪܝܐ ܐܢܐ. ܘܗܢܐ ܢܩܪܐ ܒܫܡܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܗܢܐ ܢܟܬܘܒ ܐܝܕܗ ܠܡܪܝܐ. 5
ܘܒܫܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܢܬܟܢܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܠܟܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܘܦܪܘܩܗ. ܡܪܝܐ 6
ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܐܢܐ ܐܢܐ ܐܚܪܝܐ. ܘܠܝܬ ܐܠܗܐ ܠܒܪ ܡܢܝ.
* ܘܡܢܘ ܕܐܟܘܬܝ. ܢܩܪܐ ܘܢܬܛܝܒ ܘܢܚܘܐ. ܡܢ ܕܣܡܬ ܥܡܐ ܠܥܠܡ. ܘܐܬܘܬܐ ܕܐܬܝܢ 7
ܢܚܘܘܢ. * ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܘܠܐ ܬܬܪܗܒܘܢ. ܠܐ ܐܫܡܥܬܟܘܢ ܡܢ ܩܕܝܡ :. ܘܚܘܝܬܟܘܢ 8
ܐܢܬܘܢ ܣܗܕܝ. ܕܠܝܬ ܐܠܗܐ ܠܒܪ ܡܢܝ :. ܘܠܝܬ ܕܥܫܝܢ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ. * ܣܪܝܩܝܢ 9
ܐܢܘܢ :. ܟܠܗܘܢ ܐܘܡܢܐ ܕܥܒܕܝܢ ܨܠܡܐ. ܘܠܝܬ ܝܘܬܪܢ ܒܥܒܕܝܗܘܢ ܕܨܒܘ ܠܡܥܒܕ.
ܘܣܗܕܝܢ ܐܘܡܢܐ ܕܥܒܕܘ ܐܢܘܢ :. ܕܠܐ ܚܙܝܢ ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ 10
ܢܒܗܬܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܥܒܕܝܢ ܐܠܗܐ. ܘܢܓܠܦܘܢ ܢܣܟܐ ܕܝܘܬܪܢܐ ܠܝܬ ܒܗܘܢ. * ܗܐ ܟܠܗܘܢ 11
ܐܘܡܢܝܗܘܢ :. ܚܪܫܝܢ ܐܢܘܢ ܡܢ ܒܢܝܢܫܐ. ܢܬܟܢܫܘܢ ܟܠܗܘܢ. ܘܢܩܘܡܘܢ. ܘܢܒܗܬܘܢ.
ܘܢܬܚܦܪܘܢ ܐܟܚܕܐ. * ܕܟܘܬ ܦܪܙܠܐ ܢܓܪܐ :. ܘܒܡܥܨܕܐ ܦܣܠܗ. ܘܒܡܩܒܐ ܓܠܦܗ. 12
ܘܥܒܕܗ ܒܚܝܠܐ ܕܕܪܥܗ. ܐܦ ܟܦܢ. ܐܦ ܨܗܐ. ܘܠܐ ܫܬܐ ܡܝܐ. ܘܐܫܬܪܚ. * ܢܓܪܐ ܓܒܐ 13
ܩܝܣܐ. ܘܡܫܚܗ. ܘܒܕܒܩܐ ܕܒܩܗ. ܘܓܠܦܗ. ܘܥܒܕܗ ܒܕܡܘܬܐ ܕܓܒܪܐ. ܐܝܟ
ܕܡܘܬܐ ܕܒܪܢܫܐ. * ܘܐܣܝܡܗ ܒܒܝܬܐ ܠܩܝܣܐ ܕܦܣܩ ܡܢ ܥܒܐ. ܕܡܛܪܐ ܐܪܒܝܗ. 14
ܕܢܗܘܐ ܠܒܢܝܢܫܐ ܠܡܘܩܕܘ. * ܘܢܣܒ ܡܢܗ ܘܫܚܢ. ܘܐܦ ܐܦܐ ܠܚܡܐ. ܘܐܦ ܥܒܕ 15
ܐܠܗܐ. ܘܣܓܕ ܠܗ. ܥܒܕܗ ܦܣܠܐ. ܘܣܓܕ ܠܗ. * ܦܠܓܗ ܐܘܩܕ 16
ܒܢܘܪܐ :. ܘܒܣܪܐ ܥܠ ܓܘܡܪܘܗܝ ܛܐܒ. ܘܐܟܠ ܘܣܒܥ. ܘܐܦ ܫܚܢ ܘܐܡܪ.
ܐܘܚ ܫܚܢܬ ܘܚܙܝܬ ܢܘܪܐ.

Quia daturus ſum aquas in loco ſitibundo, & 3
fluenta in arido : effundam ſpiritum meum
ſuper ſemen tuum, & benedictiones meas ſuper
filios tuos : Et egerminabunt è media 4
herba ſicut ſalix quæ eſt ſecus rivos aquarum.
Hic dicet, Domini ſum ; alius vocabit nomen 5
Jacobi, alius proprium chirographum
Domino ſubſcribet, & Iſraelis nomine ſe
nuncupabit. Sic ait Dominus rex Iſraelis 6
& redemptor ejus, cujus nomen eſt Dominus
potens, Ego ſum primus & ego ſum ultimus, 7
nec ullus eſt Deus præter me. Et quiſquis eſt
mihi ſimilis, clamet, inſtruat ſe & indicet *res
actas* ex quo poſui populum in æternum : &
ſigna ventura indicent. Ne timeatis, neque 8
paveatis, nonne jampridem vobis enarravi,
& indicavi (vos teſtes mei eſtis) quòd nullus
ſit Deus præter me, nec ullus extet potens
quem non cognoſcam ? Vani ſunt omnes artifices 9
qui componunt idola, nec ullum eſt
emolumentum in opficiis quæ fabricare cupierunt ;
ipſi enim artifices qui fabricant ea,
teſtantur ea nec videre, nec audire, nec cognoſcere.
Propterea pudefiant qui deos fabricant, 10
& fuſilia ſculpunt in quibus nullum
eſt emolumentum. En omnes eorum fabri 11
muti : (*incenſati*) ſunt præ *cunctis* hominibus,
congregent ſe omnes, ſtent, erubeſcant,
& pudefiant ſimul. Nam ferrum exacuit faber 12
lignarius, tum dolabrâ complanat illud,
ſcalpro incîdit, & brachii ſui conatu efformat :
fami etiam ſitique laborat, aquam
non bibit, & elanguet. Faber lignarius eligit 13
lignum, ungitque illud, glutine compingit,
ſculpit, formatque in effigiem virilem,
ſpeciem referens humanam : Tum collocat 14
in æde lignum è ſylva exciſum, quod pluviâ
nutritum fuerat, ut homini inſerviret ad comburendum :
Ex hoc inquam ſumentes, partim 15
calefaciunt *furnum*, & panem coquunt;
partim fabricant deum, & adorant illum ; formant
ſculptile, & adorant illud. Mediam ejus 16
partem igne comburunt, carnem aſſant ad
prunas ejus, comedunt, ſaturantur, atque
etiam calefiunt; tum dicunt, Euge, calefeci me,
& vidi ignem:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* إني أعطيكم ماء في العطش السالكين في عدم الماء ۔ وأضع روحي على زرعك 3
وبركاتي على أولادك * فيشرقون مثل عشب وسط الماء ۔ ومثل الصفصاف على الماء الجاري 4
* هذا يقول لله أنا ۔ وهذا يقول بإسم يعقوب ۔ وآخر يكتب لله أنا بإسم إسرائيل * هكذا 5 6
يقول الرب الإله ملك إسرائيل الذي نجاه ۔ إله الجيوش ۔ أنا الأول وأنا بعد هذا ۔ وليس
يوجد إله غيري * من مثلي أنا ليقف ويدعوا ويخبر ويهيي لي منذ صنعت الإنسان 7
إلى الأبد ۔ وليخبروكم بالآتيات قبل أن تأتي لا يخفوها * أما سمعتم منذ البدو وأخبرتكم 8
وأنتم شهود أنتم ۔ هل يوجد إله سوائي ۔ ولم تسمعوا حينئذ * الجابلون والناحتون 9
كلهم باطلون ۔ يصنعون اختياراتهم التي لا تنفعهم * لكن يخزى جميع الذين 10
يجبلون إلها ۔ والناحتون ما لا ينفع * والجميع من حيث صاروا ييبسوا ۔ والصم من 11
الناس ۔ ليجتمعوا جميعا وليقفوا معا ۔ ليخجلوا ويخزوا * لأن النجار حد حديدا وعمله 12
بفأس وبمنقار ۔ وعمله بذراع قوية ۔ ويجوع ويضعف ولا يشرب ماء * خشبة اختارها 13
النجار ۔ وأقامها بمقدار ۔ وسواها بالغري ۔ وصنعها مثل شكل رجل ۔ ليقيمها مثل بها
إنسان في بيت * الخشبة التي قطعها من الغيضة ۔ هاك التي غرسها الرب ۔ وطولها المطر 14
كي تكون للناس للحريق * وأخذ منها فاصطلى ۔ فأحرقوها وخبزوا خبزا عليها 15
وبقيتها عملوه آلهة وسجدوا لهم * الذي نصفها أحرقوه بالنار ۔ فأحرقوه وخبزوا خبزا 16
عليه ۔ وعليه شووا لحما وأكلوه ۔ وامتلى واصطلى وقال ۔ لذيذ لي لأني اصطليت
ونظرت النار ۔

Equidem aquam in ſiti præbebo vobis 3
qui ambulatis in loco aquis carente,
ponamque ſpiritum meum ſuper ſemen
tuum, & benedictiones meas ſuper filios
tuos : Adeoque exorientur velut herba 4
in mediis aquis, & ut ſalices ſecus aquam
decurrentem. Alius dicet, Dei ſum 5
ego : alius dicet, Sub nomine Jacobi :
alius autem ſcribet, Dei ſum ego, ſub
nomine Iſraelis. Sic dicit Dominus 6
Deus rex Iſraelis, qui ſalvavit eum,
Deus exercituum ; Ego ſum primus, &
ego his poſterior, neque reperitur Deus
præter me. Qui ſimilis eſt mihi, ſtet, 7
vocet, annuntiet, diſponatque mihi ex
quo hominem condidi in æternum uſque ;
indicentque vobis ventura antequam
eveniant, nec celent ea. Annon audîſtis 8
inde à principio, & ego vobis indicavi?
voſque metipſi teſtes eſtis num reperiatur
Deus præter me ? at non audîſtis
tunc. Formatores & ſculptores omnes 9
vani ſunt, facientes voluntates ſuas
quæ nihil proſunt eis. Ergò pudefiant 10
omnes qui deum formant, & qui ſculpunt
rem inutilem, Et omnes ex quo facti 11
ſunt, areſcant, & quidem bruti inter
homines : congregentur omnes, & ſimul
conſiſtant, ut pudefiant & erubeſcant.
Nam faber lignarius acuminato ferro, 12
deum illum ſecuri aptat, tum ſcalpro incîdit,
& brachio ſui roboris facit (interim
eſurit, languet, nec bibit aquam) Lignum 13
videlicet quod eligit faber lignarius,
cum proportione componit, & glutine
aptat ; tum reddit illud ſimile figuræ
viri, ut ſtatuat illud juxta pulchritudinem
hominis in æde. Ejus ligni 14
quod amputavit è ſylva, illius
inquam quod Dominus plantaverat, quod
pluvia longum reddiderat, quatenus
uſui eſſet hominibus ad comburendum;
Partem accipiens calefacit ſeſe, & com- 15
burentes eam, panem coquunt ſuper eam:
reſiduam verò partem ipſius componunt
in deos, & adorant illos. Cujus dimidiam 16
partem igne comburunt ; comburentes,
panem coquunt ad prunas
ejus, carnem aſſant, comeduntque : poſtquam
ſaturatus eſt, & calefecit ſeſe,
ait, Jucundum mihi eſt calefeciſſe me &
ignem vidiſſe :

ישעיה : מה

,ei ſe incurvabit : ſuum ſculptile in fecit Deum in ejus reſiduum Et
17 ושאריתו לאל עשה לפסלו יסגוד־לו
meus Deus quia ,me Libera : dicet & ,eum ad orabit & ,ſe proſternet &
וישתחו ויתפלל אליו ויאמר הצילני כי אלי
linendo à oblevit quia ,intellexerunt neque ,cognoverunt Non .tu
18 אתה : לא ידעו ולא יבינו כי טח מראות
,ſuum cor ad reducet non Et .eorum corda intelligendo ab ,eorum oculos
19 עיניהם מהשכיל לבתם : ולא־ישיב אל־לבו
combuſſi ejus Dimidium : dicendo ,intelligentiam neque ,ſcientiam nec
ולא דעת ולא־תבונה לאמר חציו שרפתי
,carnem aſſabo : panem ejus carbones ſuper coxi etiam & , igni in
במו־אש ואף אפיתי על־גחליו לחם אצלה בשר
ligni ramo ,faciam abominatione pro ejus reliquum & : comedam &
ואכל ויתרו לתועבה אעשה לבול עץ
non & : eum fecit declinare ſeductum cor ,cinerem Paſcens .me incurvabo
20 אסגוד : רעה אפר לב הותל הטהו ולא
? mea dextera in mendacium Nonne : dicet nec ,ſuam animam liberabit
יציל את־נפשו ולא יאמר הלוא־שקר בימיני :
: tu meus ſervus quoniam ,Iſrael & ,Jahacob horum Memento
21 זכר־אלה יעקב וישראל כי עבדי־אתה
Delevi .mei obliviſcaris ne ,Iſrael ,tu mihi ſervus ,te formavi
22 יצרתיך עבד־לי אתה ישראל לא תנשני : מחיתי
,me ad revertere :tua peccata nubem veluti & ,tuas prævaricationes nubem ut
כעב פשעיך וכענן חטאתיך שובה אלי
jubilate : Dominus fecit quoniam ,cœli Ovate .te redemi quia
23 כי גאלתיך : רנו שמים כי־עשה יהוה הריעו
: ea in lignum omne & ,ſylva : præconium montes clamate ,terræ inferiora
תחתיות ארץ פצחו הרים רנה יער וכל־עץ בו
dixit Sic .gloriabitur Iſrael in & ,Jahacob Dominus redemit quoniã
24 כי־גאל יהוה יעקב ובישראל יתפאר : כה־אמר
Dominus Ego : utero ex tuus plaſmator & ,tuus redemptor Dominus
יהוה גאלך ויצרך מבטן אנכי יהוה
.mecum à terram expandens ,ego ſolus cœlos extendens,omnia faciens
עשה כל נטה שמים לבדי רקע הארץ מי אתי :
ſapientes Convertens .faciet inſanire divinos & ,vanidicorum ſigna Infringens
25 מפר אתות בדים וקסמים יהולל משיב חכמים
,ſui ſervi verbum Statuens .faciet ſtultam eorum ſcientiam & ,retrorſum
26 אחור ודעתם יסכל : מקים דבר עבדו
;habitaberis ,Jeruſalaim ad Dicens .perficiet ſuorum nuntiorum conſilium &
ועצת מלאכיו ישלים האמר לירושלם תושב
Dicens .ſuſcitabo ejus diruta & ,ædificabimini ,Jehudah civitates ad &
27 ולערי יהודה תבנינה וחרבותיה אקומם : האמר
,Chores ad Dicens .faciam ſiccare tua flumina & : te Sicca , profundo
28 לצולה חרבי ונהרתיך אוביש : האמר לכורש
dicendo & : complebit meam voluntatem omnem & , meus Paſtor
רעי וכל־חפצי ישלם ולאמר
.fundaberis ,templo & ; ædificaberis ,Jeruſalaim ipſi
לירושלם תבנה והיכל תוסד :

CAP. XLV. מה

apprehendi cujus ,Chores ſuo Uncto Dominus dixit Sic
1 כה־אמר יהוה למשיחו לכורש אשר־החזקתי
regum lumbos & ,gentes ejus facies ad ſternendum ad ,ejus dexteram in
בימינו לרד־לפניו גוים ומתני מלכים
.claudentur non portæ & ; januas ejus facies ad aperiendũ ad : diſſolvam
אפתח לפתח לפניו דלתים ושערים לא יסגרו :
æris januas : dirigam tortuoſa & ,ibo tuas facies ad Ego
2 אני לפניך אלך והדורים אישר דלתות נחושה
.concidam ferri vectes & ,conteram
אשבר ובריחי ברזל אגדע :

Verſio VUL. LAT.

17 Reliquum autem ejus deum
fecit & ſculptile ſibi: curvatur
ante illud, & adorat illud, &
obſecrat, dicens; Libera me,
18 quia Deus meus es tu. Neſcie-
runt, neque intellexerunt: ob-
liti enim ſunt ne videant ocu-
li eorum, & ne intelligant
19 corde ſuo. Non recogitant in
mente ſua, neque cognoſcunt,
neque ſentiunt, ut dicant, Me-
dietatem ejus combuſſi igni,
& coxi ſuper carbones ejus
panes: coxi carnes & come-
di, & de reliquo ejus idolum
faciam? ante truncum ligni
20 procidam? Pars ejus cinis eſt:
cor inſipiens adoravit illud,
& non liberabit animam ſuã,
neque dicet; Fortè menda-
21 cium eſt in dextera mea. Me-
mento horum, Jacob, & Iſ-
rael, quoniam ſervus meus es
tu: formavi te, ſervus meus es
tu Iſrael, ne obliviſcaris meî.
22 Delevi ut nubem iniquitates
tuas, & quaſi nebulam peccata
tua: revertere ad me, quoniam
23 redemi te. Laudate cœli, quo-
niam miſericordiã fecit Dñs:
jubilate extrema terræ, reſo-
nate montes laudationem, ſal-
tus & omne lignum ej⁹: quo-
niam redemit Dñs Jacob, &
24 Iſrael gloriabitur. Hæc dicit
Dñs redemptor tuus, & for-
mator tuus ex utero; Ego ſum
Dñs, faciens omnia, extendens
cœlos ſolus, ſtabiliens terram,
25 & nullus mecum. Irrita fa-
ciens ſigna divinorũ, & ario-
los in furorem vertens. Con-
vertens ſapientes retrorſum:
& ſcientiam eorũ ſtultam fa-
26 ciens. Suſcitans verbum ſervi
ſui, & conſiliũ nuntiorum ſu-
orum complens. Qui dico Je-
ruſalem, Habitaberis: & ci-
vitatibus Juda; Ædificabimi-
ni, & deſerta ejus ſuſcitabo.
27 Qui dico profundo; Deſola-
re, & flumina tua arefaciam.
28 Qui dico Cyro; Paſtor meus
es, & omnem voluntatem meã
complebis. Qui dico Jeru-
ſalem, Ædificaberis: & tem-
plo, Fundaberis.

CAP. XLV.

1 HÆc dicit Dñs chriſto meo
Cyro, cuj⁹ apprehendi dexte-
ram, ut ſubjiciam ante faciem
ej⁹ gentes, & dorſa regũ ver-
tam, & aperiã corã eo januas,
2 & portæ non claudentur. Ego
ante te ibo: & glorioſos terræ
humiliabo: portas æreas con-
teram, & vectes ferreos con-
fringam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Τὸ δὲ λοιπὸν ἐποίησεν (♃) εἰς θεὸν γλυπτὸν,
καὶ προσκυνεῖ (ω), καὶ προσεύχεται λέγων, Ἐξ-
18 ελοῦ με, ὅτι θεός μου εἶ σύ. Οὐκ ἔγνωσαν
φρονῆσαι, ὅτι ἀπημαυρώθησαν τοῦ βλέπειν
τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτῶν, καὶ τοῦ νοῆσαι τῇ καρ-
19 δίᾳ αὐτῶν. Καὶ οὐκ ἐλογίσατο τῇ (α) ψυχῇ
αὐτοῦ, οὐδὲ (β) ἔγνω τῇ φρονήσει, ὅτι τὸ ἥ-
μισυ αὐτοῦ κατέκαυσεν ἐν πυρὶ, καὶ ἔπεψεν
ἐπὶ τῶν ἀνθράκων αὐτοῦ ἄρτους, καὶ ὀπτήσας
(˜) κρέα ἔφαγε, καὶ τὸ λοιπὸν αὐτοῦ εἰς βδέλυγ-
20 μα ἐποίησε, καὶ προσκυνοῦσιν αὐτῷ. (γ) Γνῶ-
θι ὅτι σποδὸς ἡ καρδία αὐτῶν, καὶ πλανῶν-
ται, καὶ οὐδεὶς δύναται ἐξελέσθαι τὴν ψυχὴν
αὐτοῦ. ἴδετε, οὐκ ἐρεῖτε, Ὅτι ψεῦδος ἐν τῇ
21 δεξιᾷ μου. Μνήσθητι ταῦτα Ἰακὼβ καὶ Ἰσ-
ραὴλ, ὅτι παῖς μου εἶ σὺ, ἔπλασά σε παῖ-
δά μου, καὶ σὺ Ἰσραὴλ μὴ ἐπιλανθάνου μου.
22 Ἰδοὺ γὰρ ἀπήλειψα ὡς νεφέλην τὰς ἀνομί-
ας σου, καὶ ὡς γνόφον (δ) τὰς ἁμαρτίας σου· (˜)
23 ἐπιστράφηθι πρὸς μὲ, καὶ λυτρώσομαί σε. Εὐ-
φράνθητε οὐρανοὶ, ὅτι ἠλέησεν ὁ θεὸς τὸν
Ἰσραήλ· σαλπίσατε (ε) τὰ θεμέλια τῆς
γῆς, βοήσατε ὄρη εὐφροσύνην, οἱ βουνοὶ καὶ
πάντα τὰ ξύλα τὰ ἐν αὐτοῖς, ὅτι (ζ) ἐλυ-
τρώσατο ὁ θεὸς τὸν Ἰακὼβ, καὶ Ἰσραὴλ δο-
24 ξασθήσεται. (ˢ) Οὕτω λέγει κύριος ὁ (·) λυτρού-
μενός σε, καὶ πλάσσων σε ἐκ κοιλίας, Ἐγὼ
κύριος ὁ συντελῶν (η) πάντα, ἐξέτεινα
τὸν οὐρανὸν μόνος, καὶ ἐστερέωσα τὴν γῆν.
25 Τίς ἕτερος (θ) διασκεδάσει σημεῖα ἐγγα-
στριμύθων, καὶ μαντείας ἀπὸ καρδίας; ἀπο-
στρέφων φρονίμους εἰς τὰ ὀπίσω, καὶ τὴν βου-
26 λὴν αὐτῶν (ι) μωραίνων, Καὶ ἱστῶν ῥῆμα
παιδὸς αὐτοῦ, καὶ τὴν βουλὴν τῶν ἀγγέλων
αὐτοῦ ἀληθεύων· ὁ λέγων (κ) τῇ Ἱερουσα-
λὴμ, Κατοικηθήσῃ, καὶ ταῖς πόλεσι τῆς (λ) Ἰ-
δουμαίας, Οἰκοδομηθήσεσθε, καὶ τὰ ἔρημα
27 αὐτῆς ἀνατελεῖ· Ὁ λέγων τῇ ἀβύσσῳ, Ἐ-
28 ρημωθήσῃ, καὶ τοὺς ποταμούς σου ξηρανῶ. Ὁ
λέγων Κύρῳ φρονεῖν, καὶ πάντα τὰ θελήμα-
τά μου ποιήσει· ὁ λέγων Ἱερουσαλὴμ, Οἰ-
κοδομηθήσῃ, καὶ τὸν οἶκον τὸν ἅγιόν μου θεμε-
λιώσω.

Reſiduum verò fecit i
ſculptum: & adorat, & o
cens; ibera me, quia D
es tu. Neſcierunt ſape
obſcurati ſunt, ne videa
ſuis, & intelligant corde ſu
non cogitavit animo ſuo,
novit per prudentiam;
midium ejus combuſſit in ig
combuſſit ſuper carbone
nes, & aſſatas carnes co
& reſiduum ejus in abom
nem fecit; & adorant eum
to, quia cinis cor eorum,
rant, & nemo poteſt libera
mam ſuam. Videte non
Quia mendacium in dexte
Memento horum Jacob, &
el; quoniam puer meus e
mavi te puerum meum: &
rael ne obliviſcaris mei.
nim delevi, ſicut nubem,
tes tuas; & ſicut caliginem
ta tua. Revertere ad me
imam te. Lætamini cœli,
am miſertus eſt Deus Iſrae
nite tubâ fundamenta terre
mate montes lætitiam, coll
omnia ligna, quæ in eis ſu
niam redemit Deus Jacob
rael glorificabitur. Sic d
minus, qui redimit te, &
te ex utero; Ego Dominu
compleo omnia: extendi
ſolus, & firmavi terram.
alius diſſipabit ſigna pytho
divinationes de corde?
prudentes retrorſum, &
um eorum ſtultum facien
ſtatuens verbum pueri ſui
ſilium angelorum ſuorum
probans: dicens ad Hier
Habitaberis; & civitatib
dumææ, Habitabimini, &
illius germinabunt: Dice
ſo, Deſolaberis, & flumin
refaciam: Dicens Cyro,
& omnes voluntates me
dicens ad Hieruſalem,
beris, & domum ſanctam
fundabo.

MS. A. (♃) θεὸν γλυπτὸν, (ω) αὐτῷ. (α) καρδίᾳ (β) ἂν ἐλογί
τῇ ψυχῇ αὐτοῦ, οὐδὲ ἔγνω (˜) κρέας (γ) Γνῶτε (δ) τὰς ἁμαρτίας (˜)
(ε) θεμέλια (ζ) ἠλέησεν (ˢ) Οὕτως, (·) λυτρώμενος (η) ταῦτα, (θ)
(ι) μωρῶν, Καὶ ἱστῶν ῥήματα παιδῶν αὐτοῦ, (κ) Ἱερουσαλὴμ, (λ)

ΚΕΦ. μς΄.

1 (α) ΟΥτω λέγει κύριος ὁ θεὸς τῷ χριστῷ
μου Κύρῳ, οὗ (β) ἐκράτησα τῆς δεξιᾶς, ἐπα-
κοῦσαι ἔμπροσθεν αὐτοῦ ἔθνη, καὶ ἰσχὺν βασι-
λέων διαρρήξω, ἀνοίξω ἔμπροσθεν αὐτοῦ θύ-
2 ρας, καὶ πόλεις οὐ συγκλεισθήσονται. Ἐγὼ
(γ) ἔμπροσθέν σου πορεύσομαι, καὶ ὄρη ὁμα-
λιῶ, θύρας χαλκᾶς συντρίψω, καὶ μοχλοὺς
σιδηροῦς συγκλάσω.

CAP. XLV.

Sic dicit Dominus De
meo Cyro, cujus apprehen
teram, ut obediant ante fa
gentes: & fortitudinem
diſrumpam: aperiam an
januas: & (a) civitates
dentur. Ego ante te ibo,
tes complanabo, portas æ
teram, & vectes f
fringam.

MS. A. (α) Οὕτως (β) ἐκράτησας (γ) ἔμπροσθεν αὐτοῦ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 ושאריה לדחלא עבד לצלמא סגיד ליה ואשתעבד ליה ובעא מניה ואמר שזבני ארי
18 דחלתי את : לא ידעין ולא מסתכלין ארי מטמטמן מלמחזי עיניהון מלאסתכלא
19 בלבהון : ולא מתיב ללביה ולא מדע ולא סוכלתנו למימר פלגיה אוקדית בנורא
ואף אפיתי על גומרוהי לחם טוית בסרא ואכלית ושאריה לתועבא אעביד ליבלי אעא
20 אסגוד : הא דחלתא פלגיה קטמא לביה שטיא אטעיה ולא ישיזב ית נפשיה ולא
21 ויימר הלא שקרא עבדית בימיני : אדכר אלין יעקב וישראל ארי עבדי את אתקנתך
22 למהוי עבד פלח קדמי את ישראל לא תתנשי דחלתי : מחיתי כעבא חיבך וכעננא עדי
23 כל חטאך תוב לפולחני ארי פרקתך : שבחו שמיא ארי עבד יי פורקן לעמיה יבבו
יסודי ארעא בועו טוריא תושבחתא חורשא וכל אילניא דביה ארי פרק יי יעקב
24 ובישראל ישתבח : כדנן אמר יי דפרקך ודאתקנך ממעיין אנא יי עביד כולא
25 תלית שמיא במימרי שכלליית ארעא בגבורתי : מבטל אתות בדין וקסומין
26 משגש מתיב חכימיא לאחורא ודעתהון מקלקל : מקים פתגמי עבדוהי
צדיקיא ומלך שלוחוהי משלים דאמר לירושלם תתותב ולקרויא דבית יהודה
27 28 יתבנין וחרבתהא אקומם : דאמר על בבל תחרוב ונהרהא איבש : דאמר על
כורש למתן ליה מלכו וכל רעותי יקים ולדאמר לירושלם תתבני והיכלא
ישתכלל :

מה

1 כדנן אמר יי למשיחיה לכורש דאתקפית בימיניה לממסר קדמוהי עממין וחרצי
2 מלכין אשרי לפתחא קדמוהי דשין ותרעין לא יתאחדון : מימרי קדמך יהך ושוריא
אכביש דשין דנחש אתבר ועברין דברזל אקצץ :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Reliquum autem ejus in deum fecit, ſimulacrum cui procidit:
jicitur ei, & deprecatur illud: & dicit, Libera me, quia Deus meus
Neſciunt neque intelligunt, obturati enim ſunt oculi eorum ne c
neque intelligant cordibus ſuis. Nec ad animum ſuum revocat,
eſt ſcientia neque intelligentia, ut dicat, Partem ejus ſuccendi igne
etiam coxi ſuper prunas ejus panem; aſſavi carnem & comedi,
quum in abominationem faciam, germen ligni adorabo. Ecce
um dei ejus in cinerem redactum eſt: cor ejus inſipiens ſeduxit
& non liberavit animam ſuam: neque dicet, An non mendacium
ſum dexterâ meâ? Memento horum Jacob & Iſrael, quia ſervus
tu, formavi te ut ſis ſervus meus ſerviens coram me. Iſrael ne obli
timoris mei. Delevi tanquam nebulam omnia delicta tua, & ſicut
tranſeuntem omnia peccata tua: revertere ad timorem mei quia re
Laudate cœli, quia fecit Dominus ſalutem populo ſuo: exultent
menta terræ, gaudete montes in laude; ſylva & omnia ligna
ſunt: quia redemit Dominus Jacob, & in Iſrael laudabitur. H
Dominus qui ſalvabit te, & formavit te ab utero. Ego Dominus
omnium, appendi cœlos in verbo meo, fundavi terram in potent
Irrita faciens ſigna divinorum, & ariolos in inſaniam vertens: con
ſapientes retrorſum, & ſcientiam eorum ſtultam reddens. Suſcita
ba ſervorum ſuorum juſtorum, & conſilium nuntiorum ſuorum co
Qui dico Hieruſalem, Habitaberis; & civitatibus domus Judæ
buntur; & ſolitudines ejus inſtaurabo. Qui dico Babyloni, Deſo
flumina tua arefaciam. Qui dico *de* Cyro dandum ei regnum, & om
luntatem meam complebit: qui dico Hieruſalem, Ædificaberis, &
fundabitur.

CAP. XLV.

HÆc dicit Dñs chriſto ſuo Cyro, cuj⁹ dexteram confortavi, ut
conſpectu ejus populos, & lumbos regũ diſſolverem, ut aperirem
ſpectu ejus januas, & portæ non claudentur. Verbũ meũ tibi pr
mon æternam portas æreas conteram, & vectes ferreos ſuccid

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܫܪܟܐ ܕܡܢܗ ܠܐܠܗܐ ܥܒܕ ܦܬܟܪܐ. ܘܣܓܕ ܠܗ. ܘܡܨܠܐ ܠܗ. ܘܐܡܪ ܦܨܝ
ܕܐܠܗܢ ܐܢܬ. * ܠܐ ܝܕܥܘ. ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܘ ܡܛܠ ܕܛܚܝܘ ܥܝܢܝܗܘܢ ܕܠܐ ܢܚܙܘܢ. ܘܠܒܗܘܢ
ܕܠܐ ܢܣܬܟܠܘܢ. * ܘܠܐ ܐܬܦܢܝ ܠܠܒܗ. ܘܠܐ ܝܕܥ. ܘܠܐ ܐܣܬܟܠ ܠܡܐܡܪ ܕܦܠܓܗ ܐܘܩܕ
ܒܢܘܪܐ. ܘܐܦܝܬ ܥܠ ܓܘܡܪܘܗܝ ܠܚܡܐ. ܘܛܘܝܬ ܒܣܪܐ ܘܐܟܠܬ. ܘܫܪܟܗ ܠܛܢܦܘܬܐ
ܥܒܕܬ. ܘܠܩܝܣܐ ܣܓܕܬ. * ܕܩܛܡܐ ܗܘ ܠܒܗܘܢ ܘܛܥܝܢ
ܘܠܐ ܡܦܨܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܡܪܝܢ ܕܫܘܩܪܐ ܥܒܕܬ ܝܡܝܢܢ. * ܐܬܕܟܪ
ܗܠܝܢ ܝܥܩܘܒ ܘܐܝܣܪܝܠ ܕܥܒܕܝ ܐܢܬ. ܓܒܠܬܟ ܥܒܕܐ ܠܝ. ܐܝܣܪܝܠ
ܠܐ ܬܛܥܝܢܝ. * ܐܥܒܪܬ ܐܝܟ ܥܢܢܐ ܚܛܗܝܟ ܘܐܝܟ ܥܪܦܠܐ ܣܟܠܘܬܟ. ܬܘܒ ܠܘܬܝ
ܕܦܪܩܬܟ. * ܫܒܚܘ ܫܡܝܐ ܕܡܪܝܐ ܥܒܕ. ܝܒܒܘ ܫܬܐܣܝ ܐܪܥܐ. ܐܬܦܨܚܘ
ܛܘܪܐ ܒܬܫܒܘܚܬܐ. ܥܒܐ ܘܟܠ ܐܝܠܢܐ ܕܒܗ. ܕܦܪܩ ܡܪܝܐ ܠܝܥܩܘܒ. ܘܒܐܝܣܪܝܠ
ܐܫܬܒܚ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܦܪܘܩܟ ܘܓܒܘܠܟ ܡܢ ܟܪܣܐ. ܘܡܥܕܪܢܟ ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ
ܕܥܒܕܬ ܟܠ. ܘܡܬܚܬ ܫܡܝܐ ܒܠܚܘܕܝ. ܘܐܫܪܪܬ ܐܪܥܐ ܡܢ ܠܘܬܝ. * ܘܡܒܛܠ
ܐܢܐ ܐܬܘܬܐ ܕܩܨܘܡܐ. ܘܠܡܢܚܫܢܘܬܗܘܢ ܡܫܛܐ ܐܢܐ. ܘܡܗܦܟ ܐܢܐ ܠܚܟܝܡܐ
ܠܒܣܬܪܗܘܢ. ܘܠܝܕܥܬܗܘܢ ܡܫܛܐ ܐܢܐ. * ܘܡܩܝܡ ܡܠܬܐ ܕܥܒܕܗ. ܘܡܫܠܡ ܬܪܥܝܬܐ ܕܫܠܝܚܘܗܝ.
ܕܐܡܪ ܠܐܘܪܫܠܡ ܬܬܥܡܪ. ܘܠܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܬܬܒܢܝܢ. ܘܚܘܪܒܝܗ ܐܩܝܡ. * ܕܐܡܪ ܠܥܘܡܩܐ
ܚܪܘܒ. ܘܢܗܪܘܬܟܝ ܐܘܒܫ. * ܕܐܡܪ ܠܟܘܪܫ ܪܥܝܐ. ܘܟܠ ܨܒܝܢܝ ܢܫܠܡ. ܘܐܡܪ
ܠܐܘܪܫܠܡ ܬܬܒܢܐ. ܘܗܝܟܠܐ ܢܫܬܟܠܠ.

* ܫܠܡ * ܡܐܐ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܡܫܝܚܗ ܠܟܘܪܫ ܕܐܚܕܬ ܒܝܡܝܢܗ. ܢܫܬܥܒܕܘܢ ܩܕܡܘܗܝ
ܥܡܡܐ ܘܚܨܐ ܕܡܠܟܐ. ܐܫܪܐ ܠܡܦܬܚ ܩܕܡܘܗܝ ܬܪܥܐ. ܘܬܪܥܐ ܠܐ ܢܬܐܚܕܘܢ. * ܐܢܐ
ܩܕܡܝܟ ܐܙܠ. ܘܥܪܡܐ ܐܫܘܐ. ܬܪܥܐ ܕܢܚܫܐ ܐܬܒܪ. ܘܡܘܟܠܐ ܕܦܪܙܠܐ ܐܦܣܩ.

E reſiduo verò deum faciunt ſculptilem, 17 adorant eum, & precantur, dicentes; Libera nos, quia tu es deus noſter. 18 Et non ſentiunt, neque percipiunt (eò quòd illitus ſit viſus oculorum eorum & ſenſus cordis eorum.) 19 Nec mente concipiunt, nec animadvertunt, nec ratiocinantur ac dicunt mediam ejus partem igne ſe ſuccendiſſe, ad prunas ejus panem coxiſſe, carnem aſſaviſſe & comediſſe; & ex reſiduo feciſſe ſibi idolum ligneum, idque adoráſſe. 20 Cinere paſcitur cor eorum, & turpiter errant, non ſalvant animam ſuam, neque dicunt; Falſitatem operata eſt dextera noſtra. 21 Horum memineris Jacob & Iſrael, quòd ſervus meus ſis, formaverim te mihi ſervum: igitur Iſrael, ne obliviſcaris mei. 22 Amovi culpam tuam ut caliginem, & peccata tua ſicut nubem: revertere ad me qui te ſalvavi. 23 Canite cœli, quia Dominus fecit, clangite fundamenta terræ, exhilaramini montes cantu, ſylva & omnes arbores quæ ſunt in ea: quia ſalvavit Dominus Jacobum, & in Iſraele glorificatus eſt. 24 Sic dicit Dominus qui te ſalvavit, formavit in utero, & adjuvit: Ego ſum Dominus qui feci omnia, extendi cœlum ſolus, & terram per me ipſum firmavi: 25 Irrita facio ſigna ariolorum, & divinationes eorum ſtultas reddo: ſapientes retrorſum verto, & ſcientiam eorum inſanam reddo. 26 *Is ſum* qui confirmat verbum ſervi ſui, & conſilium nuntiorum ſuorum perficit: qui dixit Jeroſolymæ, habitandam, & civitatibus Judæ, fore ædificandas; quíque ruinas ejus reſtituam. 27 Qui dixi valli, Deſtruitor; et fluvios tuos arefecit: 28 Qui dixi Cyro paſtori meo, ut omnem voluntatem meam perficiat: dicendo Jeroſolymæ quòd ædificabitur, et templo *quòd* extruetur.

CAP. XLV.

1 SIc dicit Dominus uncto ſuo Cyro; Dexteram ejus prehendi, ſubjicientur illi gentes et regum dorſa: incipiam aperire coram eo portas, & portæ non claudentur. 2 Ego tibi præibo, & ſalebroſum complanabo: portas æneas frangam, & vectes ferreos diſrumpam.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والبقيه عمله الها منحوتا * فيسجد له ويصلي قايلا * خلصني لانك انت الهي * لم يعر
ليعقلوا لانهم بصروا لينظروا بعيونهم ويفهموا بقلوبهم * فلم يتفكر بقلبه ولا بنفسه ولا
عرف بعقله ان نصفها احرقه بالنار وخبز على جمرها خبزا وشوي لحما واكل * وبقيتها صنع
رذاله فيسجدون له * اعلم ان قلبهم رماد * وضلت قلوبهم وعقولهم * ولم يقدروا يخ
انفسهم * ولا يقولوا ان ايدينا عملت الباطل واتخذت الكذب * اذكر هذه الامور يا يعقوب
واعلم يا اسرايل انك عبدي * لاني خلقتك لتعبدني * ولا تنساني * لكي اصرف اثمك مثل
السحاب * وخطاياك مثل الضباب * وارجع الي لاني خلصتك * ايها السماء سبحي من اجل
صنيع الرب * ولتهتف اساسات الجبال له بالشكر * واحدثوا ايها الجبال للرب التسبيح * والغا
وجميع الشجر التي فيها * من اجل ان الرب خلص يعقوب * وامتدح باسراييل * هكذا يق
الرب * انا الذي جبلتك في الرحم * وخلصتك واعنتك * انا انا الرب الذي خلقت الكل
وانا الذي مددت السماء وحدي * وانا الذي ثبتت الارض * وانا الذي ابطل ا
العرافين * واصير كل تعبهم ومعرفتهم جهلا * واردد الحكماء الي خلفهم * واعرف افاعيلهم للنا
* واثبت كلمة عبيدي واتمم قول رسلي * لانهم قالوا ان قرى يهوذا تعمر * واوريسليم تس
وخرابها تعمر * ويقول للغور اخرب * وييبس انهاره * ويقول لكورش ارعا لتتم ارادتي و
ببناء اورسليم * وتتم هيكلها *

* الفصل الخامس والاربعون *

* هكذا يقول الرب لمسيحه كورش * اخذته بيمينه * لتخضع له الشعوب وظهور الملو
ابدا افتح الابواب بين يديه * ولا تغلق الابواب امامه * انا اسير قدامه واسهل له الع
اكسر ابواب النحاس * واحطم اقفال الحديد *

Reſiduum aptat in deum ſculptilem, ado- 17
rat eum, & precatur dicens, Serva me,
quia tu es Deus meus. 18 *Ignorant animadvertere ſe ad hoc præditos eſſe judicio, ut videant oculis ſuis, menteque ſuâ percipiant:* 19 *At neque mente neque animo perpendit, nec intellectu deprehendit quòd dimidiatum ejus partem exuſſerit igne, panem ad prunas ejus coxerit, carnem aſſaverit, & comederit; ex ejus autem reſiduo abominationem confecerit, & adorent eam.* 20 *Noveris cor iſtorum eſſe cinerem, & corda menteſque eorum aberráſſe, animas ſuas ſalvare non poſſe, neq; dicere, Manus quidem noſtræ fecêre vanitatem, & ſumpſêre mendacium.* 21 *Memento rerum iſtarum O Jacob, & ſcito O Iſrael eſſe te ſervum meum: nam ego te creavi ut ſervires mihi. Et ne obliviſcaris meî,* 22 *ut amoveam iniquitatem tuam ceu nubem, & peccata tua ceu nebulam. Revertere itaque ad me, quoniam ego liberavi te.* 23 *O cœlum, laudem dicito pro beneficio Domini, clamentque fundamenta montium cum gratiarum actione: innovate O montes, canticum Domino, ſylvæ & arbores omnes in iis exiſtentes; quia Dominus liberavit Jacobum, & gloriatus eſt in Iſraele.* 24 *Sic dicit Dominus, Ego ſum qui te compegi in vulva, & adjuvi te: ego ſum Dominus qui omnia creavi: ego qui cœlum ſolus extendi: & ego qui terram firmavi:* 25 *Ego qui irrita reddo ſigna divinorum, omneſque labores ac divinationes eorum in delirium converto, ſapientes retrorſum ago, & eorum facinora nota facio hominibus:* 26 *Aſſeram ſermonem ſervorum meorum, & nuntiorum meorum dicta perficiam, Hi enim dixerunt civitates Judæ fore habitabiles, Jeruſalem duraturam, & ruinas ejus reædificandas.* 27 *Dicet valli; Deſtruere, & flumina ejus areſcant.* 28 *Et dicet Cyro; Paſce, ut perficias voluntatem meam: præcipiet ædificium Jeroſolymæ, & templum ejus perficiet.*

CAP. XLV.

1 S*Ic dicit Dominus chriſto ſuo Cyro, Apprehendi eum dexterâ ipſius: ut incurventur ei gentes & dorſa regum, incipiam aperire portas ante ipſum, & non claudentur portæ ante ipſum.* 2 *Ego præcedam eum, & aſperum complanabo ei: frangam portas æneas, vecteſq; ferreos confringã:*

ישעיה : מה

ut , *latibulorum abſcondita & , tenebroſitatis* theſauros tibi dabo Et
3 ונתתי לך אוצרות חשך ומטמני מסתרים למען
.Iſrael Deus , *tuo nomine in vocans* DOMINUS *ego* quod ſcias
תדע כי אני יהוה הקורא בשמך אלהי ישראל:
: meum electum Iſrael & , Jahacob meum ſervum Propter
4 למען עבדי יעקב וישראל בחירי
.me cognoviſti non & ,te cognominavi , tuo nomine in te vocavi &
ואקרא לך בשמך אכנך ולא ידעתני:
:Deus non me præter , amplius non & ,DOMINUS Ego
5 אני יהוה ואין עוד זולתי אין אלהים
ortu ab ſciant Ut .me cognoviſti non & , te accinxi
6 אאזרך ולא ידעתני: למען ידעו ממזרח
,DOMINUS Ego .me præter *nihil* quod , occidente ab & , ſolis
שמש וממערבה כי־אפס בלעדי אני יהוה
faciens ; *tenebroſitatem* creans & , lucem Formans .amplius non &
7 ואין עוד: יוצר אור ובורא חשך עשה
.hæc omnia faciens DOMINUS Ego .malum creans & , pacem
שלום ובורא רע אני יהוה עשה כל אלה:
,terra ſe Aperiat .juſtitiam ſtillent *æthera* & , deſuper cœli Stillate
8 הרעיפו שמים ממעל ושחקים יזלו־צדק תפתח־ארץ
ego : ſimul faciet germinare , juſtitia & ſalus fructificent &
ויפרו־ישע וצדקה תצמיח יחד אני
,ſuo plaſmatore cum contendenti Væ .eum creavi DOMINUS
9 יהוה בראתיו: הוי רב את־יצרו
: ſuo figulo lutum dicet Nunquid .*humi* teſtis cum teſtæ
חרש את־חרשי אדמה היאמר חמר ליצרו
,patri *dicenti* Væ ? *ei* manus non tuo operi & ? *facies* quid
10 מה־תעשה ופעלך אין־ידים לו: הוי אמר לאב
Dominus dixit Sic ? parturis quid , mulieri & ? generas quid
11 מה־תוליד ולאשה מה־תחילין. כה־אמר יהוה
ſuper ,me interrogate ventura : ejus plaſmator & , Iſrael Sanctus
קדוש ישראל ויוצרו האתיות שאלוני על־
Ego .mihi præcipite mearum manuum opus ſuper & ,meos filios
12 בני ועל־פעל ידי תצוני: אנכי
meæ manus ,ego ; creavi eam ſuper hominem & , terram feci
עשית ארץ ואדם עליה בראתי אני ידי
Ego .præcepi eorum exercitui omni & , cœlos tetenderunt
13 נטו שמים וכל־צבאם צויתי: אנכי
ædificabit ipſe : dirigam ejus vias omnes & , juſtitia in eū ſuſcitavi
העירתהו בצדק וכל־דרכיו אישר הוא־יבנה
,pretio in non , dimittet meam captivitatē & , meam civitatem
עירי וגלותי ישלח לא במחיר
dixit Sic .exercituum DOMINUS dixit , munere in nec
14 ולא בשחד אמר יהוה צבאות: כה־אמר
viri , Sebaim & , Chus negotiatio & , Ægypti Labor ,Dominus
יהוה יגיע מצרים וסחר־כוש וסבאים אנשי
: *ibunt* te poſt ; *erunt tibi &* , *tranſibunt* te ſuper menſuræ
מדה עליך יעברו ולך יהיו אחריך ילכו
: *orabunt* te ad , *ſe incurvabunt* te ad & : *tranſibunt* compedibus in
בזקים יעברו ואליך ישתחוו אליך יתפללו
Verè .Deum præter amplius non & , Deus te in Tantùm
15 אך בך אל ואין עוד אפס אלהים: אכן
.ſalvator Iſrael Deus , te abſcondens Deus tu
אתה אל מסתתר אלהי ישראל מושיע:
abierunt ſimul : ipſi omnes *ſunt pudefacti* etiam & , *ſunt affecti* Pudore
16 בושו וגם־נכלמו כלם יחדו הלכו
.*terminum artifices* pudore cum
בכלמה חרשי צירים:

Verſio VULG. LAT.

3 Et dabo tibi theſauros abſconditos, & arcana ſecretorum : ut ſcias quia ego Dominus, qui voco nomen tuum, 4 Deus Iſrael. Propter ſervum meum Iacob, & Iſrael electum meum, & vocavi te nomine tuo: aſſimilavi te, & non cog- 5 noviſti me. Ego Dominus, & non eſt ampliùs : extra me non eſt Deus : accinxi te, & 6 non cognoviſti me : Ut ſciant hi, qui ab Ortu Solis, & qui ab Occidente, quoniam abſque me non eſt. Ego Dominus, & 7 non eſt alter, Formans lucem, & creans tenebras, faciens pacem, & creans malum : ego Dominus faciens omnia hæc. 8 Rorate cœli deſuper, et nubes pluant juſtum : aperiatur terra, et germinet Salvatorem : et juſtitia oriatur ſimul: ego Do- 9 minus creavi eum. Væ qui contradicit fictori ſuo, teſta de ſamiis terræ : numquid dicet lutum figulo ſuo ; Quid facis, et opus tuum abſque manibus 10 eſt ? Væ qui dicit patri, Quid generas ? et mulieri, Quid 11 parturis ? Hæc dicit Dominus Sanctus Iſrael, plaſtes ejus ; Ventura interrogate me, ſuper filios meos, et ſuper opus manuum mearum mandate 12 mihi. Ego feci terram, et hominem ſuper eam creavi ego: manus meæ tetenderunt cœlos, et omni militiæ eorum 13 mandavi. Ego ſuſcitavi eum ad juſtitiam, et omnes vias ej' dirigam : ipſe ædificabit civitatem meam, et captivitatem meam dimittet, non in pretio, neque in muneribus, dicit Do- 14 minus Deus exercituum. Hæc dicit Dominus; Labor Ægypti, et negotiatio Æthiopiæ, et Sabaim viri ſublimes ad te tranſibunt, et tui erunt : Poſt te ambulabunt, vincti manicis pergent : et te adorabunt, téque deprecabuntur : Tantùm in te eſt Deus, et non eſt 15 abſque te Deus. Verè tu es Deus abſconditus, Deus Iſrael 16 Salvator. Confuſi ſunt, et erubuerunt omnes : ſimul abierunt in confuſionem fabricatores errorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καὶ δώσω σοι θησαυροὺς σκοτεινοὺς, ἀποκρύφους, ἀοράτους ἀνοίξω σοι, ἵνα (ε) γνῷς, ὅτι ἐγὼ κύριος ὁ (ζ) θεός σου ὁ 4 καλῶν τὸ ὄνομά σου, (η) ὁ θεὸς Ἰσραήλ. Ἕνεκεν (θ) τοῦ παιδός μου Ἰακὼβ, καὶ Ἰσραὴλ τοῦ ἐκλεκτοῦ μου, ἐγὼ καλέσω σε τῷ ὀνόματί (ι) σου, καὶ προσδέξομαί σε· σὺ δὲ οὐκ 5 ἔγνως με, Ὅτι ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι πλὴν ἐμοῦ θεός· (κ) ἐνίσχυσά σε, 6 καὶ οὐκ ᾔδεις με. Ἵνα γνῶσιν οἱ (˜) ἀπ' ἀνατολῶν ἡλίου καὶ οἱ ἀπὸ δυσμῶν, ὅτι οὐκ ἔστι (λ) θεὸς πλὴν ἐμοῦ. ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς, καὶ οὐκ 7 ἔστιν ἔτι. Ἐγὼ ὁ κατασκευάσας φῶς, καὶ ποιήσας σκότος, ὁ ποιῶν εἰρήνην, καὶ κτίζων κακά. ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς, ὁ ποιῶν (μ) 8 πάντα ταῦτα. Εὐφρανθήτω ὁ οὐρανὸς ἄνωθεν, καὶ αἱ νεφέλαι (ν) ῥανάτωσαν δικαιοσύνην· ἀνατειλάτω ἡ γῆ, καὶ βλαστησάτω ἔλεος, καὶ (ξ) δικαιοσύνην ἀνατειλάτω ἅ- 9 μα. ἐγώ εἰμι κύριος ὁ κτίσας σε. Ποῖον βέλτιον κατεσκεύασα ὡς πηλὸν κεραμέως; μὴ ὁ ἀροτριῶν ἀροτριάσει τὴν (ο) γῆν ὅλην τὴν ἡμέραν; μὴ ἐρεῖ ὁ πηλὸς τῷ κεραμεῖ, Τί ποιεῖς ὅτι οὐκ ἐργάζῃ, οὐδὲ ἔχεις (π) χεῖρας; μὴ ἀποκριθήσεται τὸ πλάσμα πρὸς τὸν 10 πλάσαντα αὐτό; Ὁ λέγων τῷ πατρὶ, Τί γεννήσεις; καὶ τῇ μητρὶ, Τί (ρ) ὠδίνεις; 11 Ὅτι οὕτω λέγει κύριος ὁ θεὸς ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ, ὁ ποιήσας τὰ ἐπερχόμενα, Ἐρωτήσατέ με περὶ τῶν υἱῶν μου, καὶ περὶ τῶν (σ) 12 ἔργων τῶν χειρῶν μου ἐντείλασθέ μοι. Ἐγὼ ἐποίησα γῆν, καὶ ἄνθρωπον ἐπ' αὐτῆς, ἐγὼ τῇ χειρί μου ἐστερέωσα τὸν οὐρανὸν, ἐγὼ 13 πᾶσι τοῖς ἄστροις ἐνετειλάμην. Ἐγὼ ἤγειρα αὐτὸν μετὰ δικαιοσύνης (τ) βασιλέα, καὶ πᾶσαι αἱ ὁδοὶ αὐτοῦ εὐθεῖαι. (υ) οὗτος οἰκοδομήσει τὴν πόλιν μου, καὶ τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ μου ἐπιστρέψει, οὐ μετὰ λύτρων, 14 οὐδὲ μετὰ δώρων, εἶπε κύριος σαβαώθ. (φ) Οὕτω λέγει κύριος σαβαὼθ, Ἐκοπίασεν Αἴγυπτος, καὶ ἐμπορεία Αἰθιόπων, καὶ οἱ (χ) Σαβαεὶμ ἄνδρες ὑψηλοὶ ἐπὶ σὲ διαβήσονται, καὶ σοὶ ἔσονται δοῦλοι, καὶ ὀπίσω σου ἀκολουθήσουσι δεδεμένοι χειροπέδαις, καὶ (ψ) διαβήσονται πρὸς σέ. καὶ προσκυνήσουσί σοι, καὶ ἐν σοὶ προσεύξονται· ὅτι ἐν σοὶ ὁ θεὸς 15 ἐστι, καὶ (ω) οὐκ ἔστι θεὸς πλήν σου. Σὺ γὰρ εἶ θεὸς, καὶ οὐκ ᾔδειμεν, ὁ θεὸς τοῦ Ἰσραὴλ σω- 16 τήρ. Αἰσχυνθήσονται καὶ ἐντραπήσονται πάντες οἱ ἀντικείμενοι αὐτῷ, καὶ πορεύσονται ἐν αἰσχύνῃ. ἐγκαινίζεσθε πρός με νῆσοι.

Et dabo tibi theſauros tene
abſconditos, inviſibiles aper
tibi : ut ſcias, quia ego D
Deus tuus, qui voco nomen
Deus Iſrael. Propter p
meum Jacob, & Iſrael ele
meum, ego vocabo te nomin
& ſuſcipiam te. Tu autem
cognoviſti me : Quia ego
minus Deus : & non eſt a
plius præter me Deus. Co
tavi te : & non noviſti me.
ſciant hi, qui ab Ortu Solis,
qui ab Occidente, quoniam
eſt Deus præter me. Ego Do
nus Deus : & non eſt amp
Ego qui fabricavi lucem, &
tenebras : faciens pacem, &
ans mala : ego Dominus D
faciens omnia hæc. Lætetur
lum deſuper, & nubes ſpa
juſtitiam. Germinet terra,
proferat miſericordiam, &
tiam germinet ſimul. Ego
Dominus, qui creavi te. (o)
melius feci, quàm lutum
Nunquid arans arabit terra
tâ die ? Nunquid dicet lu
figulo; Quid facis, quoniam
operaris, nec habes manus?
Nunquid reſpondebit figme
ad fictorem ſuum? Qui
patri. Quid generabis? &
tri, Quid parturis? Sic
cit Dominus Deus Sanct'
qui fecit ventura; Interroga
de filiis meis, & de operib' m
mearum mandate mihi. Eg
ci terram, & hominem ſu
am : ego manu meâ firma
lum : ego omnibus ſtellis ma
vi. Ego ſuſcitavi eum cum
ſtitia regem : & (d) omnes
illius rectæ. Ipſe ædifica
vitatem meam : & captivita
populi mei convertet, non cum
tio, neque cum muneribus,
Dominus Sabaoth :
Dominus Sabaoth ;
Ægyptus, & negotiatio Æ
pum, & Sabaim viri exce
te tranſibunt, & tui erunt
& poſt te ſequentur vincti m
cis, (e) & tranſibunt ad te
orabunt te, & in te
quoniam in te Deus eſt,
eſt Deus abſque te. Tu
Deus es, & neſciebamus,
Iſrael Salvator. Confunde
& erubeſcent omnes adv
ejus, & ambulabunt in
one. Innovamini ad me

MS.A. (ε) γνώσῃ, (ζ) θεὸς ὁ καλῶν (η) θεὸς (θ) Ἰακὼβ τοῦ παιδ (ι) μου, (κ) καὶ οὐκ ᾔδεισάν με. Ἵνα γνῶσιν (˜) ἀπὸ (λ) πλὴν ἐμοῦ καὶ (μ) ταῦτα πάντα. (ν) ῥανάτωσαν (ξ) δικαιοσύνη (ο) γῆν; μὴ ἐρεῖ (π) Ὁ λέγων τῷ (ρ) ὠδινήσεις; Ὅτι οὕτως (σ) θυγατέρων μου, καὶ περὶ τ (τ) καὶ πᾶσαι αἱ (υ) αὐτὸς (φ) Οὕτως (χ) Σεβωεὶμ (ψ) (ω) ἔρουσιν, Οὐκ ἔστιν ὁ θεὸς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 ואתן לך אוצרין דחשוך וסימן דמטמרן בדיל דתדע ארי אנא יי דרביתי בשמך אלהא
4 דישראל: בדיל עבדי יעקב וישראל בחירי וקרית לך בשמך אתקנתך ולא ידעתא
5 למדחל קדמי: אנא יי ולית עוד יבר מני לית אלהא סעדתיך ולא ידעת למדחל קדמי:
6 בדיל דידעון ממדנח שמשא וממערבא ארי לית בר מני אנא יי ולית עוד: דאתקין 7
8 נהור וברי חשוך עבד שלם וברי ביש אנא יי עבד כל אלין: ישמשון שמיא מלעלא
9 ועננייא יגדון טובא תתפתח ארעא ויחון מיתיא וזכותא תתגלי כחדא אנא יי בריתנון: ווי
די מדמי למדן לקביל פתגמי בריה ורחיץ דיוטבון ליה צלמי פחרא דעבדין מעפר
10 אדמתא האפשר דיימר טינא לעבדיה לא עבדתני ועובדך לית ידין ליה: ווי דאמר לאב
11 מה תוליד ולאתתא מה תעדין: כדנן אמר יי קדישא דישראל ודאתקניה אתיא דעתידין
12 למיתי אתון שאלין מן קדמי על עמי ועל עובד גבורתי תפקדונני: אנא במימרי עבדית
13 ארעא ואנשא עלה בריתי אנא בגבורתי תלית שמיא וכל חיליהון שכלילית: אנא
איתניה בגלי בקשוט וכל אורחתיה אתקין הוא יבני קרתי וגלות עמי ישלח לא בדמין
14 ולא בממון אמר יי צבאות: כדנן אמר יי ליאות מצרים ותגרי כוש ואנשי סבא גברין
דסחורא עלך יעדון ודילך יהון בתר פתגמך יהכון בשלשלן יעדון ולך יסגדון מנך
15 יבעון ויודון למימר בקושטא ביך אלהא ולית עוד אלהא בר מנך: בקושטא את אלהא
16 אשריתא בתקוף רומא שכנתך אלהא דישראל פריק: בהיתו ואף אתכנעו כולהון
כחרא הליכו באתכנעו פלחי צלמיא:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dabo tibi theſauros qui ſunt in tenebris, & obſtruſas opes; ut ſcias ego Dominus qui voco nomen tuum, Deus Iſrael. Propter ſervū meum cob, & Iſrael electum meum vocavi te nomine tuo : direxi te, & non cognoviſti timere ante me. Ego Dominus & non eſt alius, & me non eſt Deus : adjuvi te, & nondum cognoviſti *timere* coram ſciant hi qui ab Ortu Solis ſunt & ab Occidente, quoniam abſque non eſt Deus : ego Dominus, & nullus eſt amplius. Formans & creans tenebras, faciens pacem, & creans malum: ego Dominus ens omnia hæc. Miniſtrent cœli deſuper, & nubes fluant bonum; tur terra, & reviviſcant mortui, & juſtitia reveletur pariter. Ego D creavi ea. Væ qui putat judicio contendere contra verba creatoris confidit quòd ſibi proderunt ſimulacra teſtea, quæ facta ſunt ex terræ. Nunquid dicet lutum factori ſuo, Non feciſti me; & opus tuum nibus caret ? Væ qui dicit patri, Quid generas ? atque mulieri, Qu cipis ? Hæc dicit Dominus ſanctus Iſrael & qui formavit eum: Sign ventura ſunt vos interrogatis à facie mea ; ſuper populum meum, & opus potentiæ meæ mandatis mihi. Ego in verbo meo feci terram, & nem ſuper eam creavi. Ego in potentia mea appendi cœlos, & militiam eorum fundavi. Ego adducam eum palàm in veritate, & vias ejus dirigam : ipſe ædificabit civitatem meam, & captivitatem li mei dimittet, non in pretio neque in pecunia, dicit Dominus tuum. Hæc dicit Dominus, Labor Ægypti, & negotiatores Æthiopiæ viri Sabba, viri negotiationis ad te tranſibunt & tui erunt ; poſt tuum ambulabunt, in catenis tranſibunt, & te adorabunt, téque buntur & confitebuntur, & dicent : In veritate in te eſt Deus, & alius Deus præter *te*. In veritate tu Deus habitare feciſti majeſtatem in excelſa fortitudine, Deus Iſrael ſalvator. Confuſi ſunt, & buerunt omnes ſimul, abierunt in confuſione cultores idolorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܬܠ ܠܟ ܣܝܡܬܐ ܕܚܫܘܟܐ. ܘܡܛܡܪܬܐ ܡܛܫܝܬܐ. ܕܬܕܥ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܩܪܝܬܟ ܒܫܡܟ
ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠ ܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܓܒܝܐ. ܩܪܝܬܟ ܒܫܡܟ
ܘܟܢܝܬܟ. ܘܠܐ ܝܕܥܬܢܝ. * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܠܝܬ ܬܘܒ. ܠܒܪ ܡܢܝ ܠܝܬ ܐܠܗܐ. ܐܣܪܬܟ
ܘܠܐ ܝܕܥܬܢܝ. * ܕܢܕܥܘܢ ܡܢ ܡܕܢܚܝ ܫܡܫܐ. ܘܡܢ ܡܥܪܒܝܗ̇. ܕܠܝܬ ܠܒܪ ܡܢܝ. ܐܢܐ
ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܠܝܬ ܬܘܒ. * ܕܓܒܠܬ ܢܘܗܪܐ. ܘܒܪܝܬ ܚܫܘܟܐ. ܥܒܕ ܫܠܡܐ. ܘܒܪܐ ܒܝܫܬܐ.
ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܥܒܕ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ. * ܐܬܒܣܡܘ ܫܡܝܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܘܥܢܢܐ ܢܪܣܘܢ
ܙܕܝܩܘܬܐ. ܬܬܦܬܚ ܐܪܥܐ. ܘܬܣܓܐ ܦܘܪܩܢܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܐܟܚܕܐ ܬܕܢܚ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܒܪܝܬ
ܗܠܝܢ. * ܘܝ ܠܡܢ ܕܕܐܢ ܥܡ ܓܒܘܠܗ. ܚܨܦܐ ܡܢ ܚܨܦܐ ܕܐܪܥܐ. ܕܠܡܐ ܐܡܪ ܛܝܢܐ ܠܦܚܪܐ
ܡܢܐ ܥܒܕ ܐܢܬ. ܘܠܐ ܗܘܝܬ ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܟ. * ܘܝ ܠܕܐܡܪ ܠܐܒܐ. ܡܢܐ ܡܘܠܕ ܐܢܬ. ܘܠܐܢܬܬܐ
ܡܢܐ ܡܚܒܠܐ ܐܢܬܝ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܘܓܒܘܠܗ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ.
ܫܐܠܘܢܝ ܐܬܘܬܐ ܥܠ ܒܢܝ. ܘܥܠ ܥܒܕ ܐܝܕܝ ܦܩܘܕܘܢܝ. * ܐܢܐ ܥܒܕܬ ܐܪܥܐ. ܘܒܪܢܫܐ
ܥܠܝܗ̇. ܐܢܐ ܒܐܝܕܝ ܡܬܚܬ ܫܡܝܐ. ܘܦܩܕܬ ܠܟܠܗ ܚܝܠܗܘܢ. * ܐܢܐ ܐܩܝܡܬܗ
ܒܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܗ ܐܬܪܨ. ܗܘ ܢܒܢܐ ܡܕܝܢܬܝ. ܘܫܒܝܝ ܢܫܪܐ
ܠܐ ܒܕܡܝܐ ܘܠܐ ܒܫܘܚܕܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐܘܬܗ ܕܡܨܪܝܢ
ܘܬܓܪܘܬܗ ܕܟܘܫ. ܘܣܒܝܐ ܓܒܪܐ ܕܡܫܘܚܬܐ ܥܠܝܟ ܢܥܒܪܘܢ. ܘܕܝܠܟ ܢܗܘܘܢ. ܘܒܬܪܟ
ܢܐܙܠܘܢ. ܘܒܫܫܠܬܐ ܢܥܒܪܘܢ. ܘܠܟ ܢܣܓܕܘܢ. ܘܠܟ ܢܨܠܘܢ. ܕܒܟ ܐܠܗܐ
ܘܠܝܬ ܬܘܒ ܐܠܗܐ ܐܚܪܝܢ. * ܫܪܝܪܐܝܬ ܐܢܬ ܗܘ ܐܠܗܐ ܡܛܫܝܐ. ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ
ܘܦܪܘܩܗ. * ܒܗܬܘ ܘܐܬܟܠܡܘ ܟܠܗܘܢ. ܐܟܚܕܐ ܕܡܬܗܦܟܝܢ. ܣܢܝܐܝܬ. ܘܓܠܦܝܢ
ܦܬܟܪܐ.

Daboque tibi theſauros in tenebris *abditos*, 3
& opes abſtruſas: ut cognoſcas me eſſe Dominum qui te vocavi nomine tuo, Deum Iſraelis. Propter ſervum meum Iacobum, & 4
Iſraelem electum meum, vocavi te nomine tuo, & cognominavi te, quum me non cognoſceres. Ego ſum Dominus, & nullus eſt præ- 5
tereà: præter me nullus eſt Deus: magnificavi te dum me ignorares: Ut cognoſcant 6
ab ortu ſolis & ab occaſu ejus nullum eſſe præter me, me eſſe Dominum, & nullum prætereà: Qui formavi lucem, & creavi 7
tenebras, feci pacem, & creavi malum: me eſſe Dominum qui hæc omnia feci. Jucun- 8
damini cœli supernè, & nubes ſpargant juſtitiam, aperiatur terra, & multiplicetur ſalus, & juſtitia ſimul egerminet: ego ſum Dominus qui creavi hæc. Væ litiganti cum fi- 9
ctore ſuo, teſtæ è teſtulis terræ: num diceret argilla figulo, Quid facis? aut, Non ſum opus manuum tuarum. Væ illi qui dicit patri, 10
Quid generas? & fœminæ, Quid concipis? Sic dicit Dominus, Sanctus Iſraelis & for- 11
mator ejus, cujus nomen eſt Dominus potentiſſimus; Petite à me ſigna de filiis meis, & de opere manuum mearum examinate me. Ego terram feci, & hominem ſuper eam: 12
ego propriis manibus cœlos extendi, & toti exercitui eorum præcepta dedi: Ego ju- 13
ſtè excitavi illum, & omnes vias ejus complanabo: ipſe ædificabit civitatem meam, & captivos meos dimittet ſine pretio et ſine munere, ait Dominus potentiſſimus. Sic dicit 14
Dominus, Labor Ægypti, mercatores Chus et Sabæ, viri *ſpectatæ* dignitatis, prope te tranſibunt, tui erunt, teque ſequentur, catenis *vincti* tranſibunt, te adorabunt, et in te orabunt; eò quòd in te ſit Deus, nec alius ſit prætereà Deus. Verè tu es abditus Deus 15
Iſraelis et redemptor ejus. Erubuerunt et 16
pudefacti ſunt ſimul omnes ii qui turpiter ſe gerunt ſculpentes idola.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* واعطيه الذخاير التي في الظلمات والاشياء المطمورة والمستورة. ليعلم اني انا الرب الذي 3
دعوته من قبل مولده. اله اسرايل * ومن اجلك يا عبدي يعقوب ويا صفيي اسرايل. الذي 4
دعوتك باسمك وكنيتك من قبل ان تعرفني * انا انا الرب ولا اله غيري. انا الذي 5
عظمتك ولم تعرفني * فليعلموا الذين في مشارق الارض وفي مغاربها ان ليس اله غيري. 6
انا الذي صنعت هذه كلها * انا الذي خلقت النور في الظلمة. وامرت بالسلام ونهيت 7
عن الشر. وعملت هذه في مشارق الشمس الى مغاربها * انعمي ايتها السماء من فوق. وانتم 8
ايها السحاب التي ترش البر. وتفرح الارض. وتكثر الصدوقية. والخلاص ينشوا جميعا.
انا انا الرب الذي صنعت هذه الاشياء * ويل الذي يخاصم خالقه. ولا يعلم انه من 9
خزف الطين مصنوع. ألعل طين الفاخوري يقول لصانعه لماذا تصنعني. او لعله يقول
له لست انا من صنعتك * ويل القايل للاب لم تلد. وللام لم تطلقي * لان هكذا يقول
الرب الاله قدوس اسرايل الذي جبله. الصانع الاتيات. سلوني من اجل بني وبناتي
ومن اجل اعمال يدي توصوني * انا صنعت الارض ولا انسان عليها. انا بيدي بنيت
السماء. انا امرت بجميع الكواكب * انا اقمته ملكا بعدل. وطرقه كلها مستقيمة. هذا
يبني مدينتي. ويرد سبي شعبي لا بفديات ولا بهدايا. قال رب الجنود * هكذا يقول رب
الجنود. تعب مصر. ومتاجر الحبشة. واهل سابا الرجال المرتفعون. اليك يجوزون ولك
يصيرون عبيدا. وخلفك يتبعون مربوطون الايادي بالاغلال. ويجيون اليك ويسجدون
لك. وفيك يصلون. لان الله هو فيك. وليس اله غيرك موجودا * لانك انت هو الهنا ولم
نعلم. اله اسرايل ومخلصه * ها يفتضحون ويخجلون جميع الذين يعاندونه. ويسيرون
بالخزي. لتتجدد لي الجزاير.

Et dabo illi theſauros qui ſunt in tenebris, cum rebus humatis & contectis, ut ſciat me Dominum qui vocavi eum priuſquam naſceretur, eſſe Deum Iſraelis: 3
Idque propter te O ſerve mi Jacob, & O mi electe Iſrael, quem nomine tuo vocavi & cognominavi antequam cognoſceres 4
me. Ego ego Dominus, & nullus eſt præter me Deus: ego ſum qui magnificavi te 5
cùm nondum cognoſceres me. Noverint 6
ergò quicunque ſunt in Orientalibus atq; Occidentalibus terræ partibus, nullum præter me extare Deum. Ego ſum qui hæc omnia feci: Ego ſum qui lucem in tene- 7
bris creavi: pacem præcepi, & malum interdixi: feciqne hæc in ortu ſolis ad occaſum ejus uſque. Delectare O cœlum 8
supernè, voſque O nubes quæ ſpargitis juſtitiam: gaudeat etiam terra, multiplicetur probitas, & ſalus pariter creſcat. Ego ego Dominus qui feci res iſtas. Væ 9
illi qui ſuo cum creatore altercatur, nec animadvertit ſe eſſe è teſtis argillæ compoſitum. Num argilla figuli diceret factori ſuo, Quare me facis? an verò diceret ei, Ego non ſum opificii tui? Væ 10
dicenti ad patrem, Cur generas? & ad matrem, Cur parturis? Sic enim dicit 11
Dominus Deus, Sanctus Iſraelis, qui formavit eum, author rerum futurarum; Interrogate me de filiis & filiabus meis, at de operibus manuum mearum mihi præciperetis? Ego feci terram dum nullus 12
extaret homo ſuper eam: ego manibus meis cœlum firmavi: ego ſtellas omnes eſſe præcepi. Ego illum juſtè con- 13
ſtitui regem, nam viæ ejus omnes rectæ ſunt. Hic ædificabit urbem meam, & reſtituet captivos populi mei, non redemptionibus neque muneribus, ait Dominus exercituum. Sic dicit Dominus 14
exercituum, Labor Ægypti, & merces Æthiopiæ, atque Sabæi viri præſtantes, ad te tranſibunt, fientque ſervi tui, teque ſequentur revincti manus vinculis: ad te venient, te adorabunt, & in te preces fundent; quòd Deus in te ſit. Neque enim alius præter te reperi- 15
tur Deus; Nam tu es Deus noſter, nec ſciebamus, Deus ac ſalvator Iſraelis. Ecce pudeſient & erubeſcent omnes 16
qui adverſabuntur ei, & abibunt cum ignominia, ut renoventur mihi inſulæ.

ישעיה : מה

non : feculorum ſalute DOMINO in eſt ſalvatus Iſrael

17 ישראל נושע ביהוה תשועת עולמים לא־

Quia perpetuitatis ſecula in uſque erubeſcetis neque ,afficiemini pudore

18 תבשו ולא־תכלמו עד־עולמי עד׃ כי־

formans Deus ipſe ,cœlos creans DOMINUS dixit ſic

כה אמר־יהוה בורא השמים הוא האלהים יצר

,eam creavit *inanitatem* non) :eam *firmans* ipſe , eam faciens & , terram

הארץ ועשה הוא כוננה לא־תהו בראה

.amplius non & ,DOMINUS Ego (.eam formavit habitandum ad

לשבת יצרה אני יהוה ואין עוד׃

Non *.tenebroſitatis* terræ loco in , ſum locutus abſcondito in Non

19 לא בסתר דברתי במקום ארץ חשך לא

DOMINUS Ego .me quærite *Vane* ,Jahacob ſemini dixi

אמרתי לזרע יעקב תהו בקשוני אני יהוה

,venite & ,vos Congregate .recta annuncians ,juſtitiam loquens

20 דבר צדק מגיד מישרים׃ הקבצו ובאו

extollentes cognoverunt Non .gentium *Liberati* ſimul accedite

התנגשו יחדו פליטי הגוים לא ידעו הנשאים

.ſalvabit non Deum *ad* *orantes* & , ſui ſculptilis lignum

את־עץ פסלם ומתפללים אל־אל לא יושיע׃

fecit audire Quis .ſimul *inibunt cōſiliū* inſuper,facite accedere &,Annuntiate

21 הגידו והגישו אף יועצו יחדו מי השמיע

?DOMINUS ego Nónne ? illud annunciavit *tunc* ex ,*quondam* à hoc

זאת מקדם מאז הגידה הלוא אני יהוה

.me præter non ſalvans & ,juſtus Deus .me præter Deus ultrà non &

ואין־עוד אלהים מבלעדי אל־צדיק ומושיע אין זולתי׃

non & ,Deus ego quia : terræ fines omnes *ſalvamini* & ,me ad *Reſpicite*

22 פנו־אלי והושעו כל־אפסי־ארץ כי אני־אל ואין

non & ,verbum *juſtitia* meo ore de *exiit* : juravi me Per .amplius

23 עוד׃ בי נשבעתי יצא מפי צדקה דבר ולא

omnis jurabit ,genu omne curvabitur mihi quòd : revertetur

ישוב כי־לי תכרע כל־ברך תשבע כל־

: fortitudo & ,*juſtitiæ* ,*dixit* , mihi DOMINO in Utique .lingua

24 לשון׃ אך ביהוה לי אמר צדקות ועז

.eum inſuccenſentes omnes afficientur pudore at , perveniet eum ad uſque

עדיו יבוא ויבשו כל הנחרים בו׃

.Iſrael ſemen *omne* *ſe jactabunt* & ,*juſtificabuntur* DOMINO In

25 ביהוה יצדקו ויתהללו כל־זרע ישראל׃

CAP. XLVI. מו

ipſæ eorum *dolores* fuerunt : Nebo ſe incurvavit , Bel ſe Curvavit

1 כרע בל קרס נבו היו עצביהם לחיה

.laſſitudinem ad onere *onerata* *veſtra geſtatricia* : *jumento &*

ולבהמה נשאתיכם עמוסות משא לעיפה׃

: onus ſalvare potuerunt non ,ſimul ſe incurvaverunt ,ſe Curvaverunt

2 קרסו כרעו יחדו לא יכלו מלט משא

domus me ad Audite .ivit captivitatem in eorum anima &

3 ונפשם בשבי הלכה׃ שמעו אלי בית

, utero ab *onerati* ,Iſrael domus reſiduum omne & ,Jahacob

יעקב וכל־שארית בית ישראל העמסים מני־בטן

, ipſe ego ſenectam ad uſque Et .vulva à *portati*

4 הנשאים מני־רחם׃ ועד־זקנה אני הוא

ego & , feram ego & , feci Ego *.bajulabo* ego caniciem ad uſque &

ועד־שיבה אני אסבל אני עשיתי ואני אשא ואני

? adæquabitis & , me aſſimilabitis Cui .eruam & , *bajulabo*

5 אסבל ואמלט׃ למי תדמיוני ותשוו

? aſſimilabor & ,me comparabitis &

ותמשלוני ונדמה׃

Verſio VULG. LAT.

17 Iſrael ſalvatus eſt in Domino ſalute æternâ : non confundemini,et non erubeſcetis uſq; in 18 ſeculum ſeculi. Quia hæc dicit Dominus creans cœlos , ipſe Deus formans terrã, & faciens eã, ipſe plaſtes ejus : non in vanũ creavit eã : ut habitaretur,formavit eã; Ego Dñs,& 19 non eſt aliꝰ. Non in abſcondito locutus ſum in loco terræ tenebroſo : non dixi ſemini Jacob ; Fruſtrà quærite me: ego Dñs loquens juſtitiã, annun- 20 tians recta. Congregamini, & venite , et accedite ſimul qui ſalvati eſtis ex gentibꝰ: neſcierunt qui levant lignũ ſculpturæ ſuæ,& rogant deũ non ſal- 21 vantem. Annuntiate,& venite, & conſiliamini ſimul: quis auditum fecit hoc ab initio, ex tunc prædixit illud ? numquid non ego Dñs, & non eſt ultrà Deus abſq; me ? Deus juſtus, & ſalvans non eſt præter me. 22 Convertimini ad me, & ſalvi eritis omnes fines terræ : quia 23 ego Deus, & non eſt alius. In memetipſo juravi, egredietur de ore meo juſtitiæ verbum,& 24 non revertetur ; Quia mihi curvabitur omne genu, & ju- 25 rabit omnis lingua. Ergò in Dño, dicet, meæ ſunt juſtitiæ & imperiũ : ad eum venient, & confundentur omnes qui 26 repugnant ei. In Dño juſtificabitur , & laudabitur omne ſemen Iſrael.

CAP. XLVI.

1 CONfractus eſt Bel, contritus eſt Nabo : facta ſunt ſimulachra eorum beſtiis & jumentis , onera veſtra gravi pondere uſque ad laſſitudi- 2 nem. Contabuerunt, & contrita ſunt ſimul : non potuerunt ſalvare portantem,& anima eorum in captivitatẽ ibit. 3 Audite me, domus Jacob, & omne reſiduum domûs Iſrael, qui portamini à meo utero , qui geſtamini à mea 4 vulva. Uſque ad ſenectam ego ipſe & uſque ad canos eo portabo : ego feci , et ego feram : ego portabo , 5 et ſalvabo. Cui aſſimilâſtis me , et adæquâſtis, et comparâſtis me, et feciſtis ſimilem ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

17 Ἰσραὴλ σώζεται ὑπὸ κυρίου σωτηρίαν αἰώνιον· οὐκ αἰσχυνθήσονται, οὐδὲ μὴ ἐντραπῶ-
18 σιν ἕως τοῦ (α) αἰῶνος ἔτι. Οὕτως λέγει κύριος ὁ ποιήσας τὸν οὐρανὸν, οὗτος ὁ θεὸς ὁ καταδείξας τὴν γῆν, καὶ ποιήσας αὐτὴν, αὐτὸς διώρισεν αὐτὴν, οὐκ εἰς κενὸν ἐποίησεν αὐτὴν, ἀλλὰ (β) κατοικεῖσθαι ἔπλασεν αὐ-
19 τὴν, Ἐγώ εἰμι κύριος, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι. Οὐκ ἐν κρυφῇ λελάληκα, οὐδὲ ἐν τόπῳ γῆς σκοτεινῷ. οὐκ εἶπα τῷ σπέρματι Ἰακὼβ, Μάταιον ζητήσατε. ἐγώ εἰμι ἐγώ (γ) εἰμι κύριος ὁ λαλῶν δικαιοσύνην, καὶ ἀναγγέλλων ἀλή-
20 θειαν. Συνάχθητε, καὶ ἥκετε, βουλεύσασθε ἅμα οἱ σωζόμενοι ἀπὸ τῶν ἐθνῶν. οὐκ ἔγνωσαν οἱ αἴροντες τὸ ξύλον γλύμμα αὐτῶν, καὶ (δ) οἱ προσευχόμενοι πρὸς θεοὺς, οἳ οὐ σώ-
21 ζουσιν. Εἰ ἀναγγελοῦσιν, ἐγγισάτωσαν, ἵνα (ε) γνῶσιν ἅμα, τίς ἀκουστὰ ἐποίησε ταῦτα ἀπ' ἀρχῆς· τότε ἀνηγγέλη ὑμῖν. ἐγὼ ὁ θεὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἄλλος πλὴν ἐμοῦ· δί-
22 καιος καὶ σωτὴρ, οὐκ ἔστι (ζ) πάρεξ ἐμοῦ. Ἐπιστράφητε (η) ἐπ' ἐμὲ, καὶ σωθήσεσθε, οἱ ἀπ' ἐσχάτου τῆς γῆς. ἐγώ εἰμι ὁ θεὸς, καὶ
23 οὐκ ἔστιν (θ) ἄλλος. Κατ' ἐμαυτοῦ ὀμνύω, εἰ (ι) μὴ ἐξελεύσεται ἐκ τοῦ στόματός μου δικαιοσύνη, οἱ λόγοι μου οὐκ ἀποστραφήσονται·
24 Ὅτι ἐμοὶ κάμψει πᾶν γόνυ, καὶ (κ) ὀμεῖται
25 πᾶσα γλῶσσα τὸν θεὸν, Λέγων, Δικαιοσύνη καὶ δόξα πρὸς αὐτὸν (λ) ἥξει, καὶ αἰσχυνθήσονται πάντες οἱ (μ) διορίζοντες
26 αὐτούς. Ἀπὸ κυρίου δικαιωθήσονται, καὶ ἐν τῷ θεῷ (ν) ἐνδοξασθήσεται πᾶν τὸ σπέρμα τῶν υἱῶν Ἰσραήλ.

MS.A. (α) αἰῶνος. Οὕτως (β) κατοικεῖσθαι, Ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ (γ) εἰμι ὁ λαλῶν (δ) προσευχόμενοι ὡς πρὸς θεοὺς, οἳ οὐ σώσωσιν. Εἰ ἀναγγέλλουσιν, (ε) γνῶμεν (ζ) ἄλλος πάρεξ (η) πρὸς μὲ, (θ) ἄλλος πλὴν ἐμοῦ· δίκαιος καὶ σωτὴρ οὐκ ἔστιν πάρεξ ἐμοῦ. Κατ' ἐμαυτοῦ (ι) μὴν (κ) ἐξομολογήσεται πᾶσα γλῶσσα τῷ θεῷ, (λ) ἥξουσιν, (μ) ἀφορίζοντες (ν) ἐνδοξασθήσονται, καὶ πᾶν

17 Iſrael ſalvatur à Domino ſalute æternâ: non confunduntur, neque erubeſcent uſque in (g) æternum amplius. Sic dicit Dominus, qui fecit cœlum: iſte Deus, qui oſtendit terram, & fecit eam: ipſe diſtinxit eam: non in vacuum fecit eam, ſed ut habitaretur plaſmavit eam; Ego ſum Dominus, & non eſt ultra. Non in abſcondito loquutus ſum, neque in loco terræ tenebroſo. Non dixi ſemini Jacob, Vanum quærite. Ego ſum, ego ſum Dominus, qui loquor juſtitiam; & annuntio veritatem. Congregamini, & venite: conſulite ſimul, qui ſalvamini de gentibus. Non cognoverunt, qui portant lignum ſculpturam ſuam, & orant deos non ſalvantes. Si annuntiant, appropinquent, ut ſciant ſimul, quis audita fecit hæc ab initio: tunc annuntiatum eſt vobis. Ego Deus, & non eſt alius abſque me: juſtus, & ſalvator non eſt præter me. Convertimini ad me; & ſalvi eritis, qui ab extremis terræ. Ego ſum Deus, & non eſt alius. Per memetipſum juro, niſi egredietur de ore meo juſtitia; ſermones mei non avertentur; Quia mihi incurvabit omne genu, et jurabit omnis lingua Deum; Dicens, Juſtitia & gloria ad eum veniet, & confundentur omnes qui ſeparant ſe. A Domino: (h) juſtificabuntur, & in Deo glorificabuntur omne ſemen filiorum Iſrael.

ΚΕΦ. μϛ'. CAP. XLVI.

1 Ἔπεσε Βὴλ, συνετρίβη (α) Ναβὼ, ἐγένετο τὰ γλυπτὰ αὐτῶν εἰς θηρία, καὶ (β) τὰ κτήνη· αἴρετε αὐτὰ καταδεδεμένα ὡς φορ-
2 τίον κοπιῶντι (γ) ἐκλελυμένῳ, Καὶ πεινῶντι, οὐκ ἰσχύοντι ἅμα, οἳ οὐ δυνήσονται σωθῆναι ἀπὸ πολέμου, αὐτοὶ δὲ αἰχμάλωτοι
3 ἤχθησαν. (˜) Ἀκούετέ μου οἶκος τοῦ Ἰακὼβ, καὶ πᾶν τὸ κατάλοιπον τοῦ Ἰσραὴλ, οἱ αἰρόμενοι ἐκ κοιλίας, καὶ παιδευόμενοι (δ) ἐκ παιδίου
4 Ἕως γήρως. ἐγώ εἰμι, καὶ ἕως ἂν καταγηράσητε, ἐγώ εἰμι, ἐγὼ ἀνέχομαι ὑμῶν, ἐγὼ ἐποίησα, καὶ ἐγὼ ἀνήσω, ἐγὼ ἀναλήψομαι,
5 καὶ σώσω ὑμᾶς. Τίνι με ὡμοιώσατε; ἴδετε, τεχνάσασθε οἱ πλανώμενοι.

MS. A. (α) Δαγὼν, (β) κτήνη· ἔλεγ. (γ) καὶ πινῶντι, καὶ ἐκλελυμένῳ, οὐκ ἰσχύοντι ἅμα, οἳ οὐ μὴ δύνωνται (˜) Ἀκούσατε (δ) ἀπὸ παιδίου ἕως γ

CEcidit Bel, contritus eſt Nabo: facta ſunt ſculptilia eorum in beſtias, & jumenta: portatis ea colligata, quaſi onus laboranti, deficienti, Et eſurienti, nec prævalenti ſimul: qui non potuerunt ſalvari à bello: ipſi autem captivi ducti ſunt. Audite me domus Jacob, & omnes reliqui Iſrael, qui portamini de utero & erudimini à parvulo uſque ad ſenectutem. Ego ſum: & uſque dum ſeneſcatis, ego ſum: ego ſuſtineo vos: ego feci, & ego portabo: ego ſuſcipiam, & ſalvos vos faciam. Cui aſſimilaſtis me? Videte, excogitate, qui erratis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 ישראל יתפריק במימרא דיי פורקן עלמיא לא תבהתון ולא תתכנעון לעלם ולעלמי
18 עלמיא׃ ארי כדנן אמר יי די ברא שמיא הוא אלהים דשכלל ארעא ועבדה הוא אתקנה
לא לריקנו ברה אלהין לאסגאה עלה בני אנשא אתקנה אנא יי ולית עוד׃ 19 לא בסתרא
מללית באתר ארעא קבל ולא אמרית לזרעא דבית יעקב לריקנו תבעו דחלתי אנא
20 יי ממלל קשוט מחוי כיונן׃ אתכנישו ואתו אתקרבו כחדא משיזבי עממיא לא ידעין
21 דנסבין ית אעי צלמיהון ובען מן דחלא דלא יפרוק׃ חוו ואתקרבו אף אתמליכו כחדא
מן בסר דא מלקדמין מבכן חויה הלא אנא יי ולית עוד אלה בר מני אלה דזכי ופריק
22 לית אלא אנא׃ אתפנו למימרי ואתפריקו כל דבסיפי ארעא ארי אנא אלהא ולית עוד׃
23 במימרי קימית נפק מן קדמי בזכו פתגם ולא יבטיל ארי קדמי תכרע כל ברך תקים כל
24 לישן׃ ברם במימרא דיי עלי אמר לאיתאה זכון ותקוף במימריה יודון ויבהתון
25 בטעותהון כל עממיא דהוו מתגרן בעמיה׃ במימרא דיי יזכון וישתבחון כל זרעא
דישראל׃

מו

1 חמיט בל אתקטף נבו הוו צלמניהון דמות חיוא ובעירא מטילי טעותהון יקירין על
2 נטליהון ואנון משלהין׃ אתקצצו ואתקטפו כחדא ולא יכילו לשיזבא נטליהון ופלחיהון
3 בשביא אזלו׃ קבילו למימרי דבית יעקב וכל שארא דבית ישראל דרחימין מכל
4 עממיא וחביבין מכל מלכותא׃ ועד עלמא אנא הוא ועד עלם עלמיא מימרי קים אנא
ברית כל אנשא ואנא בדרית יתהון לביני עממיא אף אנא אשבוק לחוביהון ואסלח׃
5 למן תדמון קדמי ותשוון ותכינון קדמי בקשוט׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Iſrael ſalvatus eſt in verbo Domini ſalute æterna , non confundemini neque erubeſcetis in ſeculum,& in ſecula ſeculorum. Quoniam hæc dicit Dominus, qui creavit cœlos, ipſe eſt Deus qui fundavit terram, & fecit eam ipſe præparavit eam, non in vanum creavit eam ; ſed ut multiplicentur ſuper ea filii hominis, præparavit eam. Ego Dñs nec eſt alius. Non in occulto locutus ſum, in loco terræ tenebroſo : neque dixi ſemini domus Jacob in vanum, Quærite timorem mei. Ego Dñs loquens veritatem, annuntians recta. Congregamini & venite, accedite ſimul qui ſalvati eſtis ex populis; neſciunt enim qui tollunt ligna ſimulacri ſui,& rogant deum qui non ſalvat. Annuntiate, accedite, & inite conſilium ſimul ; quis annuntiavit hoc ab initio ; jam antè narravit illud ? Nónne ego Dñs, & non eſt amplius Deus abſque me? Deus juſtus & Salvator,non eſt alius à me. Aſpicite ad verbum meum, & ſalvamini omnes qui in finibus terræ eſtis: quoniam ego ſum Deus, & non eſt alius. Per verbum meum juravi , exiit à facie mea ſermo in juſtitia,& non erit irritus:quoniam ante me curvabitur omne genu, jurabit omnis lingua. Veruntamen in Verbo Domini dixit ad me, ut adduceret juſtitiam & fortitudinem. In verbo ejus confitebuntur, & confundentur *in idolis ſuis* omnes populi qui irruebant in populum ejus. In verbo Domini juſtificabitur & gloriabitur omne ſemen Iſrael.

CAP. XLVI

INcurvatus eſt Bel, ſucciſus eſt Nabo, fuerunt ſimulacra eorum in ſimilitudinem ſerpentum, & jumentorum. Onera idolorum *ſuorum* gravia ſunt portantibus ea, & ipſi ſunt laſſi. Præciſa ſunt, & reſecta ſunt pariter, & non potuerunt liberare portantes ea, & cultores eorum in captivitatem abierunt. Acquieſcite verbo meo domus Jacob, & omne reſiduum domus Iſrael, qui dilecti eſtis præ omnibus populis, & chari præ omnibus regnis. Et uſque in ſeculum ego ſum ; & uſque in ſecula ſeculorum Verbum meum permanet. Ego creavi omnes homines, & ego diſperſi eos inter populos: ego quoque dimittam peccata eorum, & propitius ero. Quem aſſimilâſtis coram me, & adæquaſtis,& comparaſtis coram me in veritate

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܦܘܪܩܢܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܒܡܪܝܐ ܗܘ ܦܪܘܩܐ ܕܥܠܡܐ. ܠܐ ܬܒܗܬܘܢ ܘܠܐ ܬܬܟܦܪܘܢ ܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܕܒܪܐ ܫܡܝܐ. ܗܘܝܘ ܐܠܗܐ ܕܓܒܠܗ ܠܐܪܥܐ ܘܥܒܕܗ. ܘܗܘܝܘ ܬܩܢܗ. ܠܐ ܗܘܐ ܣܪܝܩܐܝܬ ܒܪܗ. ܐܠܐ ܕܢܬܒܘܢ ܒܗ ܒܪܝܬܗ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܘܠܝܬ ܐܚܪܝܢ ܠܒܪ ܡܢܝ. * ܠܐ ܗܘܐ ܒܛܘܫܝܐ ܡܠܠܬ. ܒܕܘܟܬܐ ܕܐܪܥܐ ܚܫܘܟܬܐ. ܘܠܐ ܐܡܪܬ ܠܙܪܥܐ ܕܝܥܩܘܒ ܕܣܪܝܩܐܝܬ ܒܥܘܢܝ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܡܡܠܠ ܟܐܢܘܬܐ. ܘܡܚܘܐ ܐܢܐ ܬܪܝܨܘܬܐ. * ܐܬܟܢܫܘ ܘܬܘ ܘܐܬܩܪܒܘ ܐܟܚܕܐ. ܦܠܝܛܐ ܕܡܢ ܥܡܡܐ ܘܠܐ ܝܕܥܘ ܕܫܩܠܝܢ ܦܣܝܠܐ ܕܩܝܣܐ. ܘܡܨܠܝܢ ܠܐܠܗܐ ܕܠܐ ܦܪܩ. * ܚܘܘ ܘܐܬܩܪܒܘ ܘܐܬܡܠܟܘ ܐܟܚܕܐ. ܡܢܘ ܐܫܡܥ ܗܕܐ ܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܡܢ ܗܝܕܝܟ ܚܘܝܗ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܠܝܬ ܬܘܒ ܐܠܗܐ ܠܒܪ ܡܢܝ. ܐܠܗܐ ܙܕܝܩܐ. ܘܦܪܘܩܐ. ܘܠܝܬ ܠܒܪ ܡܢܝ. * ܐܬܦܢܘ ܠܘܬܝ ܟܠܗܘܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ ܕܬܬܦܪܩܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܘܠܝܬ ܐܚܪܝܢ ܠܒܪ ܡܢܝ. * ܒܝ ܝܡܝܬ ܘܢܦܩܬ ܡܢ ܦܘܡܝ ܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܡܠܬܝ ܠܐ ܬܗܦܘܟ. ܕܠܝ ܬܬܟܦܦ ܟܠ ܒܘܪܟܐ. ܘܒܝ ܬܐܡܐ ܟܠ ܠܫܢ. * ܘܢܐܡܪܘܢ. ܒܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܥܘܫܢܐ. ܠܘܬܗ ܢܐܬܘܢ. ܘܢܒܗܬܘܢ ܟܠ ܕܣܢܝܢ ܠܗ. * ܒܡܪܝܐ ܢܙܕܕܩܘܢ ܘܢܫܬܒܚܘܢ. ܟܠܗ ܙܪܥܗ ܕܐܝܣܪܝܠ.

Salus Iſraelis in Domino conſiſtit ſervatore ſeculorum: non erubeſcetis, neque pudefietis in ſecula perpetua. 17 Sic enim dicit Dominus qui cœlum creavit, idem ille Deus qui terram finxit ac fecit, idémque firmavit eam, *qui* nequaquam fruſtrà creavit eam, ſed ut inhabitarent eam creaturæ ipſius; Ego ſum Dominus, nec alius eſt præter me. 18 Non ſum equidem clàm locutus, in loco terræ tenebroſæ; neque dixi ſemini Iacobi, In vanum me quærite: quum ego ſim Dominus juſtitiam loquens, & indicans rectitudinem. 19 Congregamini, advenite, & ſimul accedite, qui evaſuri eſtis ex gentibus, & ignoratis tuliſſe vos lignum ſculptum, & oraviſſe deum qui non ſalvat. 20 Indicate, accedite, & ſimul inite conſilium: quis id narravit jampridem, cùm à principio ego ſim Dominus, nec ullus extet præter me Deus? Deus juſtus ac redemptor, & nullus præter me? 21 Accedite ad me omnes extremitates terræ, ut ſalvemini: nam ego ſum Dominus, nec alius eſt præter me. 22 Per me juravi, & egreſſum eſt ex ore meo verbum juſtitiæ, quod non revocabitur; Mihi incurvatum iri omne genu, & per me juraturam omnem linguam, 23 Et dicturos, In Domino eſt juſtitia: potentes ad eum venient, & erubeſcent omnes qui te odio proſequuntur. 24 In me gloriabitur & juſtificabitur univerſum ſemen Iſraelis. 25

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܘ *

CAP. XLVI.

* ܢܦܠ ܒܝܠ. ܘܐܬܬܒܪ ܢܒܘ. ܘܗܘܘ ܦܬܟܪܝܗܘܢ ܡܥܘܢܐ ܠܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. ܚܣܢܐ ܘܠܒܥܝܪܐ ܟܦܢܐ. * ܐܬܡܟܟܘ ܘܢܦܠܘ ܐܟܚܕܐ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ ܠܡܦܠܛܘ ܠܫܩܘܠܝܗܘܢ ܘܐܦ ܗܢܘܢ ܒܫܒܝܬܐ ܐܙܠܘ. * ܫܡܥܘܢܝ ܕܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܟܠܗ ܫܪܟܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܕܡܬܛܥܢܝܢ ܒܟܪܣܐ. ܘܡܬܛܥܢܝܢ ܒܡܪܒܥܐ. * ܥܕܡܐ ܠܣܝܒܘܬܐ ܐܢܐ ܗܘ. ܘܥܕܡܐ ܠܣܝܒܘܬܐ. ܐܢܐ ܐܣܝܒܠ. ܐܢܐ ܥܒܕܬ. ܘܐܢܐ ܐܫܩܘܠ. ܘܐܢܐ ܐܣܝܒܠ ܘܐܦܪܘܩ. * ܠܡܢ ܕܡܝܬܘܢܝ ܘܫܘܝܬܘܢܝ.

COncidit Bil, *(i. Juppiter)* corruit Nebo; *(i. Mercurius)* & ſculpta ipſorum idola facta ſunt ſarcinæ compreſſæ *(i. ponderoſæ)* belluarum & jumentorum famelicorum: 1 Corruerunt, ſimulque ceciderunt, nec potuerunt ſalvare bajulantes ſe, ſed ipſamet abierunt in captivitatem. 2 Audite me filii familiæ Jacobi, totúmque reſiduum Iſraelis, qui geſtamini in ventre, et in utero portamini: 3 Uſque ad ſenectutem equidem ego ſum, et adcanitiem uſque ego tolerabo, ego feci, et ego portabo, ego patiar, et ſalvabo. 4 Cui me aſſimilatis et comparatis? 5

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* اسرايل يخلص من قبل الرب خلاصا ابديا * ولا يخزون ولا يخجلون الي الابد الي الدهر * يقول الرب الضابط الكل * هكذا يقول الرب الذي صنع السماء * هو الله الذي اظهر الارض وصنعها * وهو جددها * ولم يخلقها باطلا * لكن لتسكن * انا انا وليس اخر ايضا * ولا تكلمت في خفية ولا في موضع مظلم من الارض * ولا قلت لزرع يعقوب اطلبوني باطلا * انا هو انا هو الرب المتكلم بالعدل والمخبر بالحق * اجتمعوا وائتوا * تشاوروا معا ايها المخلصون من الامم * لم يعلم الذين يحملون الخشبة نحتهم * ويصلون الي الهة لا تخلص ولا تخبر * ليقتربوا كي يعلموا معا * من صنع هذه مسموعات منذ البدو حينئذ يخبركم * انا الله وليس اخر غيري موجودا * عدل ومخلص ليس احد من سواي * ارجعوا الي فتخلصون الذين من اخر الارض * انا هو الله وليس اخر موجودا * بذاتي احلف حقا * من فمي يخرج العدل * وكلماتي لا ترجع * لان لي تجثوا كل ركبة * وكل لسان يحلف بالله * قايلا العدل والمجد اليه ياتي * ويفتضحون جميع الذين افرزوا ذواتهم من الرب * يتبرر بالله ويتمجد كل زرع بني اسرايل *

Iſrael ſalvabitur à Domino ſalute æternâ: & non pudefient, nec erubeſcent in ſeculum ſempiternum, 17 *Ait Dominus omnia tenens. Sic ait Dominus qui fecit cœlum, ipſe eſt Deus ille qui terram detexit & condidit, idemque reſtauravit eam, nec in vanum creavit illam, ſed ut habitaretur; Ego, ego ſum, & nullus alius præterea.* 18 *Non ſum locutus in occulto, neque in ullo tenebricoſo terræ loco: neque dixi ſemini Jacobi, Quærite me fruſtrà: ego ſum, ego ſum Dominus juſtitiam loquens, & annuntians veritatem.* 19 *Congregamini, & venite, conſilium ſimul inite O ſalvandi ex gentibus:* quandoquidem *ignari ſunt qui lignum portant ad ſculpendum, & orant deos qui nec ſalvare nec prænuntiare* poſſunt; 20 *Accedant, ut ſimul addiſcant. Qui hæc nota fecit inde à principio, tunc indicabit vobis. Ego ſum Deus, nec alius præter me reperitur: juſtus & ſervator nullus eſt præter me.* 21 *Revertimini ad me ut ſalvemini, qui eſtis ab extremo terræ: ego ſum Deus, nec alius exiſtit.* *Per meipſum juro veritatem, ex ore meo prodit juſtitia, & verba mea nequaquam revocantur: mihi enim incurvabitur omne genu, & omnis lingua per Deum jurabit,* 23 *Dicens; Juſtitia & gloria ad eum veniet. Ignominiâ afficientur omnes qui ſeparaverunt ſe ipſos à Domino:* 24 *Omne vero ſemen filiorum Iſraelis juſtificabitur in Deo, atque gloriabitur.* 25

* الفصل السادس والاربعون *

CAP. XLVI.

* سقط بيل * كسر صاغون * صارت منحوتاتهم للوحوش والبهايم * احملوها مكسرة مثل حمل زبل * وجايعون ومنحلون الذين لم يقوموا معا * الذين لم يستطيعوا ان يخلصوا من الحرب هاولاء سبوا مسبيين * اسمعوا يا بيت يعقوب وكل بقية اسرايل * المحمولون من البطن والمودبون من البطن من الصغر والي الكبر * انا هو انا هو * والي ان تهرمون وانا انا انا احملكم * انا صنعت وانا اترك * وانا اخذ واخلصكم * بمن شبهتموني *

COrruit Bil, confractus eſt Sagon, ceſſerunt ſculptilia eorum beſtiis & jumentis, nam *confracta portare fecerunt ea velut onus ſtercoris:* 1 *Et eſurientes ac languidi, qui ſimul conſiſtere, qui bellum evadere non potuerunt, iidem abducti ſunt captivi.* 2 *Audite O domus Jacobi, totumque reſiduum Iſraelis, qui geſtamini ab utero, & erudimini ab utero à pueritia ad ſenium uſque.* 3 *Ego ſum, ego ſum; etiam quoad deceſſeritis ego ipſe ſum: ego tolerabo vos: ego feci, & ego deſererem? imò ſuſcipiam, & liberabo vos.* 4 *Cuinam aſſimilatis me?* 5

ישעיה : מו

: *appendent* calamo in argentum & , loculo de aurum *Vilipendentes*
הזלים זהב מכיס וכסף בקנה ישקלו 6
etiam , procident : Deum *illud* faciet & ,aurificem *conducent* mercede
ישכרו צורף ויעשהו אל יסגדו אף־
,eum gestabunt ,humerum super illum Portabunt .se incurvabunt
ישתחוו : ישאהו על־כתף יסבלהו 7
Insuper .*recedet* non suo loco de , stabit & : *se sub* eum deponent &
ויניחהו תחתיו ויעמד ממקומו לא ימיש אף־
.eum servabit non ejꝰ tribulatione de,respõdebit non & ,eum ad clamabit
יצעק אליו ולא יענה מצרתו לא יושיענו :
super prævaricatores reducite : *vires vos præstate* & , hujus Mementote
זכרו־זאת והתאששו השיבו פושעים על־ 8
, Deus ego quoniam : seculo à , priorum Recordamini .cor
לב : זכרו ראשנות מעולם כי אנכי אל 9
exordio ab Annuntians .ego sicut non & , Deus ultrà non &
ואין עוד אלהים ואפס כמוני : מגיד מראשית 10
meũ Consilium ,dicens : facta sunt non quæ *quondam à* &,novissimum
אחרית ומקדם אשר־לא־נעשו אמר עצתי
oriente ab Vocans .faciam meam voluntatẽ omnem ut , stabit
תקום וכל־חפצי אעשה : קרא ממזרח 11
,sum locutus etiam : mei consilii virum longinqua terra de , *volucrem*
עיט מארץ מרחק איש עצתו אף דברתי
me ad Audite .illud faciam etiam , formavi : illud adducam etiam
אף־אביאנה יצרתי אף אעשנה : שמעו אלי 12
feci Appropinquare .justitia à *longinqui* , corde *fortes*
אבירי לב הרחוקים מצדקה : קרבתי 13
: faciet moram non mea salus & ; se elongabit non , meam justitiam
צדקתי לא תרחק ותשועתי לא תאחר
.meam gloriam Israeli , salutem Sijon in dabo &
ונתתי בציון תשועה לישראל תפארתי :

C A P. XLVII. מז

: terra in sede , Babel filia virgo pulverem super sede &,Descende
רדי ושבי על־עפר בתולת בת־בבל שבי־לארץ 1
,teneram te *vocabunt* adjicies non quia : Chasdim filia solium non
אין־כסא בת־כשדים כי לא תוסיפי יקראו־לך רכה
, *tuam comam detege* : farinam mole & , *molas* Tolle .delicatam &
וענגה : קחי רחים וטחני קמח גלי צמתך 2
,tua *nuditas* Revelabitur .flumina transi ,*coxam* detege ,*talum* discooperi
חשפי־שבל גלי־שוק עברי נהרות : תגל ערותך 3
occurram non & , capiam ultionem : tuum opprobrium videbitur etiam
גם תראה חרפתך נקם אקח ולא אפגע
Sanctus ejus nomen exercituum DOMINUS noster Redemptor .*homo*
אדם : גאלנו יהוה צבאות שמו קדוש 4
: Chasdim filia , *tenebrositatem* in intra & , *tacita* Sede .Israel
ישראל : שבי דומם ובאי בחשך בת־כשדים 5
fui Iratus .regnorum dominam te *vocabunt* , adjicies non quia
כי לא תוסיפי יקראו־לך גברת ממלכות : קצפתי 6
eos dedi & ,meam hæreditatem contaminavi , meum populum contra
על־עמי חללתי נחלתי ואתנם
senem super , misericordias eis posuisti non : tua manu in
בידך לא־שמת להם רחמים על־זקן
ero seculum In : dixisti Et .valde tuum jugum aggravâsti
הכבדת עלך מאד : ותאמרי לעולם אהיה 7
recordareris neque ,tuum cor super hæc poneres non ut adeo : *hera*
גברת עד לא־שמת אלה על־לבך לא זכרת
.hujus novissimi
אחריתה :

Versio VULG. LAT.

6 Qui confertis aurum de sacculo, & argentum staterâ ponderatis: conducentes aurificem, ut faciat deum: & procidunt, & adorant. 7 Portant illum in humeris gestantes, & ponentes in loco suo: & stabit, ac de loco suo non movebitur; sed & cùm clamaverint ad eum, non audiet: de tribulatione non salvabit eos. 8 Mementote istud, & confundamini: redite prævaricatores ad cor. 9 Recordamini prioris seculi, quoniam ego sum Deus, & non est ultrà Deus, 10 nec est similis meî: Annuntians ab exordio novissimum, & ab initio quæ necdum facta sunt, dicens; Consilium meum stabit, & omnis voluntas mea 11 fiet: Vocans ab Oriente avem, & de terra longinqua virum voluntatis meæ, & locutus sum, & adducam illud: 12 creavi, & faciam illud. Audite me duro corde, qui longè 13 estis à justitia. Propè feci justitiam meam, non elongabitur, & salus mea non morabitur. Dabo in Sion salutem, & in Israel gloriam meam.

CAP. XLVII.

1 DEscende, sede in pulvere, virgo filia Babylon, sede in terra: non est solium filiæ Chaldæorum, quia ultrà non voca- 2 beris mollis & tenera. Tolle molam, & mole farinam: denuda turpitudinem tuam, discooperi humerum, revela crura, transi flumina. 3 Revelabitur ignominia tua, & videbitur opprobrium tuum: ultionem capiam, & non resistet 4 mihi homo. Redemptor noster, Dominus exercituum nomen illius, 5 Sanctus Israel. Sede tacens, & intra in tenebras, filia Chaldæorum: quia non vocaberis ultrà Domina regno- 6 rum. Iratus sum super populum meum, contaminavi hæreditatem meam, & dedi eos in manu tua: non posuisti eis misericordias: super senem aggravâsti jugum tuum valdé. 7 Et dixisti; In sempiternum ero domina: non posuisti hæc super cor tuum, neque recordata es novissimi tui.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

6 Οἱ συμβαλλόμενοι χρυσίον ἐκ (˜) μαρσυππίου, καὶ ἀργύριον ἐν ζυγῷ, στήσουσιν ἐν σταθμῷ, καὶ μισθωσάμενοι χρυσοχόον ἐποίησαν χειροποίητα, καὶ κύψαντες προσκυνοῦσιν 7 (ε) αὐτοῖς. Αἴρουσιν αὐτὸ ἐπὶ (ζ) τοῦ ὤμου, καὶ πορεύονται· ἐὰν δὲ θῶσιν αὐτὸ ἐπὶ τοῦ τόπου αὐτοῦ, μένει, οὐ μὴ κινηθῇ· καὶ ὃς (η) ἐὰν βοήσῃ πρὸς αὐτὸν, οὐ μὴ (θ) εἰσακούσῃ, ἀπὸ κακῶν οὐ μὴ (ι) σώσῃ αὐτόν. 8 Μνήσθητε ταῦτα, καὶ στενάξατε, μετανοήσατε οἱ πεπλανημένοι, ἐπιστρέψατε τῇ καρδίᾳ, 9 Καὶ μνήσθητε τὰ πρότερα ἀπὸ τοῦ αἰῶνος, ὅτι ἐγώ εἰμι ὁ θεὸς, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι πλὴν ἐ- 10 μοῦ, Ἀναγγέλλων πρότερον τὰ ἔσχατα πρὶν (κ) γενέσθαι, καὶ ἅμα συνετελέσθη· καὶ εἶπα, (λ) Πᾶσα ἡ βουλή μου στήσεται, καὶ 11 πάντα ὅσα βεβούλευμαι, ποιήσω· Καλῶν (μ) ἀπὸ ἀνατολῶν πετεινὸν, καὶ ἀπὸ γῆς πόρρωθεν περὶ ὧν βεβούλευμαι, ἐλάλησα, καὶ ἤγαγον, ἔκτισα καὶ ἐποίησα, ἤγαγον αὐτὸν, καὶ εὐόδωσα τὴν ὁδὸν αὐτοῦ. 12 Ἀκούσατέ μου οἱ ἀπολωλεκότες τὴν καρδί- 13 αν, οἱ μακρὰν ἀπὸ τῆς δικαιοσύνης. Ἤγγισα τὴν δικαιοσύνην μου, καὶ τὴν σωτηρίαν τὴν παρ' ἐμοῦ οὐ βραδυνῶ. δέδωκα ἐν Σιὼν σωτηρίαν τῷ Ἰσραὴλ εἰς δόξασμα.

MS.A. (˜) μαρσιππίου, (ε) αὐτό. (ζ) τῶν ὤμων, (η) ἂν (θ) ἀκούσῃ, (ι) σω (κ) αὐτὰ γενέσθαι, (λ) Πᾶσά μου ἡ βουλὴ (μ) ἀπ'

Qui conferunt aurum de sacculo, & argentum in statera: (˜) statuent in pondere, & conducentes aurificem fecerunt opera manuum, & incurvati adorant eis. Portant illud super humeros & vadunt: si autem posuerint illud in loco suo; manet, non movebitur: &, quisquis clamaverit ad ipsum, non exaudiet: a malis non salvabit eum. Mementote horum, & ingemiscite: agite pœnitentiam, qui erratis: revertimini corde, Et mementote priorum à seculo: quoniam ego sum Deus; & non est adhuc præter me: Qui annuntio prius novissima, antequàm fiant: & simul completa sunt. Et dixi: Omne consilium meum stabit: & cuncta, quæ deliberavi, faciam: Qui voco ab Oriente avem, & de terra longinqua ea de quibus cogitavi: loquutus sum, & adduxi: creavi, & feci: adduxi illum, & prosperavi viam ejus. Audite me, qui eradicastis cor, qui longè estis à justitia. Propè feci justitiam (d) meam: & salutem, quæ à me est, tardare non faciam. Dedi in Sion salutem Israeli in gloriam.

ΚΕΦ. μζ'.

1 ΚΑτάβηθι, κάθισον ἐπὶ τὴν γῆν παρθένος θυγάτηρ Βαβυλῶνος, (α) κάθισον εἰς τὴν γῆν θυγάτηρ Χαλδαίων, ὅτι οὐκέτι προστεθήσῃ κληθῆναι ἁπαλὴ καὶ τρυφερά. 2 Λάβε μύλον, ἄλεσον ἄλευρον, ἀποκάλυψαι τὸ κατακάλυμμά σου, ἀνακάλυψαι τὰς πολιὰς, ἀνάσυρε τὰς κνήμας, διάβηθι πο- 3 ταμούς· Ἀνακαλυφθήσεται ἡ αἰσχύνη σου, φανήσονται οἱ ὀνειδισμοί σου· τὸ δίκαιον ἐκ σοῦ λήψομαι, οὐκέτι μὴ παραδῶ ἀν- 4 θρώποις. (β) Ὁ ῥυσάμενός σε κύριος σα- 5 βαὼθ, ὄνομα αὐτῷ Ἅγιος Ἰσραήλ. Κάθισον κατανενυγμένη, εἴσελθε εἰς τὸ σκότος (˜) θύγατερ Χαλδαίων, οὐκέτι μὴ κλη- 6 θήσῃ ἰσχὺς βασιλείας. Παρωξύνθην ἐπὶ τῷ λαῷ μου, ἐμίανας τὴν κληρονομίαν μου. ἐγὼ ἔδωκα (γ) αὐτοὺς εἰς τὴν χεῖρά σου, σὺ δὲ οὐκ ἔδωκας αὐτοῖς ἔλεος, τοῦ πρεσβυ- 7 τέρου ἐβάρυνας τὸν ζυγὸν σφόδρα. Καὶ εἶπας, Εἰς τὸν αἰῶνα ἔσομαι ἄρχουσα. οὐκ ἐνόησας ταῦτα ἐν τῇ καρδίᾳ σου, οὐδὲ ἐμνήσθης τὰ ἔσχατα.

MS.A. (α) εἴσελθε εἰς τὸ σκότος θυγάτηρ Χαλδαίων, (β) Εἶπεν ὁ ῥυ- σάμενός (˜) θυγάτηρ (γ) εἰς τὴν χεῖρά

CAP. XLVII.

DEscende, sede super terram, virgo filia Babylonis: sede (a) in terram, filia Chaldæorum: quoniam nequaquàm ultrà apponeris vocari mollis, & tenera. Tolle molam: mole farinam: revela (b) operimentum tuum: denuda canos: discooperi tibias: transi flumina: Revelabitur ignominia tua: apparebunt opprobria tua. Quod justum est, de te auferam: nequaquàm ultrà tradam hominibus. (c) Qui redemit te, Dominus Sabaoth: nomen ei Sanctus Israel. Sede compuncta: ingredere in tenebras, filia Chaldæorum: nequaquam ultrà vocaberis Fortitudo regni. Iratus sum contra populum meum: (d) contaminâsti hæreditatem meam. Ego dedi eos in manum tuam: tu verò non dedisti eis misericordiam: senis aggravâsti jugum valdé. Et dixisti, In æternum ero domina. Non intellexisti hæc in corde tuo, neque recordata es novissimorum.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 הא עממיא גבן דהב מכיס וכספא במאזניא תקלין אגרין קינאה יעביד ליה דחלא סגדין
7 אף משתעבדין : נטלין ליה על כתפיהון סבלין ליה מחתין ליה באתריה וקאם מאתריה
8 לא אפשר ליה דינוד אף יבעי מניה לא יתיבניה מעקתיה לא יפרקניה : אדכרו דא
9 ואתקפו ואתיבו מרודין על לב : אדכרו קדמיתא דמן עלמא ארי אנא אלהא ולית עוד
10 אלהא בר מני : מחוי מן אולא לסופא ומלקדמין דלא אתעבדא אמר מלכי יתקים וכל
11 רעותי אעביד : דאמר לכנשא גלותא ממדנחא לאיתאה בגלי כעוף קליל מארע רחיקא
12 בני אברהם רחימי אף מללית אף איתניה אתקנתה אף אעבדנה : קבילו למימרי תקיפי
13 לבא דרחיקין מזכותא : קריבא זכותי לא תתרחק ופורקני לא יתעכב ואתן בציון פריק
לישראל תושבחתי :

מז

1 חותי ותיבי על עפרא מלכו כנשתא דבבל תיבי לארעא לית כורסי יקר מלכות כסדאי
2 ארי לא תוסיפין דיקרון לך רכיכא ומפנקא : קבילי מרועא ועולי בשיעבוד גלא יקר
3 מלכותיך אתברו שלטוניך אתבדרו עם משריתיך גלו כמי נהרא : תתגלי בהתתיך אף
4 יתחזי קלניך פורענות גמירא אתפרע מניך ואשני דיניך מבני אנשא : פרקנא יי צבאות
5 שמיה קדישא דישראל : תבי שתקא ועולי בקבלא יקר מלכות כסדאי ארי לא תוסיפין
6 דיקרון ליך תקיפת מלכון : רגזית על עמי אפסית אחסנתי ומסרתנון בידיך לא אתמלית
7 עליהון רחמין על סבא אתקפת מרותיך לחדא : ואמרת לעלם אהי תקיפת מלכון
לא שוית אלין על לבך לא אדכרת לסופא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce populi colligunt aurum de marsupio, & argentum in stateris ponderant; conducunt argentarium ut faciat sibi deum; adorant & serviunt ei. Tollunt illum in humeris suis, & portant illum, & deponunt illum in locum suum, in quo sic stat, ut de loco suo nequeat moveri: etiam interrogant eum, & non respondet eis; de tribulatione sua non salvabit eos. Mementote hujus, & confortamini; & revocate prævaricatores in animũ. Recordamini priorum quæ à seculo sunt, quia ego sum Deus, & non est ultrà Deus absque me. Annuntians ab exordio in finem, & ab initio quæ necdum facta sunt: dicens, Consilium meum confirmabitur; & omnem voluntatem meam faciam. Qui dico ut congregarem captivitatem ab Oriente, & adducerem publicè sicut avem velocissimam de terra longinqua filios Abraham dilecti mei: etiam locutus sum & etiam adducam illud, præparabo illud, faciam quoque illud. Obedite verbo meo robusti corde, qui longè estis à justitia. Propè est justitia mea, non elongabitur, & salꝰ mea non impedietur. Dabo enim in Sion salutẽ, in Israel laudẽ meã.

C A P. XLVII.

DEscende & sede super pulverem regnum congregationis Babylonis, sede in terra absque solio inclytõ regnũ Chaldæorum; quia non vocabunt te ultrà tenerã & delicatã. Suscipe *infirmitatem*, & ingredere in servitutẽ, revela gloriã regni tui. Contriti sunt principes tui, dispersi sunt populi exercitus tui, migraverunt sicut aquæ fluminis. Discooperiatur confusio tua, & videatur quoque ignominia tua. Ultionẽ perfectã capiã ex te, & mutabo judiciũ tuum à filiis hominum. Redemptor noster Deꝰ exercituum, nomen ejus, Sanctꝰ Israel. Sede tacens, & ingredere in tenebras, regnum Chaldæorum; quia non addent vocare te fortitudinẽ regnorum. Iratus sum contra populum meum, prophanavi hæreditatem meam, & tradidi eos in manu tua: non es impleta miserationibus sup eos: sup senem aggravâsti subjectionẽ tuam nimis. Et dixisti: In æternum ero fortitudo regnorum: adeo non posuisti hæc super cor tuum, nec recordata es finis eorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕܛܥܝܢ ܘܡܦܩܝܢ ܕܗܒܐ ܡܢ ܟܝܣܗܘܢ܂ ܘܣܐܡܐ ܒܡܣܐܬܐ ܬܩܠܝܢ܂ ܘܐܓܪܝܢ
ܘܥܒܕܝܢ ܠܐܠܗܐ܂ ܘܣܓܕܝܢ ܠܗ܂ ܐܦ ܡܨܠܝܢ ܠܗ܂ * ܘܫܩܠܝܢ ܠܗ ܥܠ
ܘܡܚܕܪܝܢ ܠܗ܂ ܘܡܩܝܡܝܢ ܠܗ ܥܠ ܕܘܟܬܗ܂ ܘܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܩܡ ܡܢ ܕܘܟܬܗ܂ ܐܦ
ܡܨܠܝܢ ܠܗ܂ ܘܠܐ ܥܢܐ ܠܗܘܢ܂ ܘܠܐ ܦܪܩ ܠܗܘܢ ܡܢ ܐܘܠܨܢܗܘܢ܂ * ܐܬܕܟܪܘ ܗܠܝܢ
ܘܐܬܒܝܢܘ܂ ܘܐܬܦܢܘ ܚܛܝܐ܃ ܥܠ ܠܒܟܘܢ܂ * ܐܬܕܟܪܘ ܩܕܡܝܬܐ ܕܡܢ ܥܠܡ܂ ܕܐܢܐ ܐܢܐ
ܘܠܝܬ ܐܠܗܐ ܒܪ ܡܢܝ܂ ܘܠܝܬ ܐܟܘܬܝ܂ * ܘܡܚܘܐ ܐܢܐ ܡܢ ܩܕܝܡ ܐܚܪܝܬܐ܂
ܩܕܡ ܕܠܐ ܢܗܘܝܢ܂ ܐܡܪ ܐܢܐ܂ ܬܪܥܝܬܝ ܡܩܝܡ ܐܢܐ܂ ܘܟܠܗ ܨܒܝܢܝ ܥܒܕ ܐܢܐ܂ *
ܐܢܐ ܡܢ ܡܕܢܚܐ ܦܪܚܬܐ܂ ܘܡܢ ܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ ܓܒܪܐ ܕܬܪܥܝܬܝ܂ ܐܢܐ ܡܠܠܬ ܐܢܐ ܐܦ
ܐܢܐ܂ ܨܪܬܗ܂ ܐܦ ܥܒܕ ܐܢܐ܂ * ܫܡܥܘ ܡܢܝ ܥܫܝܢܝ ܠܒܐ܃ ܕܪܚܝܩܝܢ ܡܢ
* ܩܪܝܒܐ ܙܕܝܩܘܬܝ ܠܡܐܬܐ܂ ܘܦܘܪܩܢܝ ܠܐ ܢܘܚܪ܂ ܘܐܬܠ ܒܨܗܝܘܢ ܦܘܪܩܢܐ܂ ܘܠܐܝܣܪ
ܬܫܒܘܚܬܝ܂ * ܩܦܠܐܘܢ * ܡܙ * * ܚܘܬܝ ܘܬܒܝ ܥܠ ܥܦܪܐ܂ ܒܬܘܠܬܐ
ܒܪܬ ܒܒܠ܂ ܬܒܝ ܥܠ ܐܪܥܐ܂ ܒܪܬ ܟܠܕܝܐ܃ ܠܝܬ ܟܘܪܣܝܐ܂ ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܩܪܘܢܟܝ
ܬܘܒ ܪܟܝܟܬܐ ܘܡܦܢܩܬܐ܂ * ܣܒܝ ܪܚܝܐ ܘܛܚܢܝ ܩܡܚܐ܂ ܓܠܝ
ܣܥܪܟܝ ܚܘܪܐ܂ * ܓܠܝ ܫܩܝܟܝ ܘܢܬܚܙܐ ܨܥܪܟܝ܂ ܐܬܦܪܥ ܡܢܟܝ ܦܘܪܥܢܐ܂ ܘܠܐ ܐܦ
ܒܟܝ ܐܢܫ܂ * ܦܪܘܩܢ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ܂ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ܂ * ܬܒܝ ܒܬܡܗܐ܂
ܒܚܫܘܟܐ܂ ܒܪܬ ܟܠܕܝܐ܃ ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܩܪܘܢܟܝ ܬܘܒ ܥܫܝܢܬ
* ܪܓܙܬ ܥܠ ܥܡܝ܂ ܕܛܡܐܘ ܝܪܬܘܬܝ܂ ܘܐܫܠܡܬ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܝܟܝ܃ ܘܠܐ ܝܗܒܬܝ
ܪܚܡܐ܂ ܘܥܠ ܣܒܐ ܐܝܩܪܬܝ ܢܝܪܟܝ ܛܒ܂ * ܘܐܡܪܬܝ ܕܠܥܠܡ ܐܗܘܐ ܥܫܝܢܬܐ܂
ܗܠܝܢ ܒܠܒܟܝ ܣܡܬܝ܂ ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܬܝ ܚܪܬܐ܂

His qui decepti prodigunt aurum è marſupiis 6
ſuis, aut argentum in bilance appendunt, tum
conflatore mercede conducto, deum conficiunt,
adorant eum, & precantur illum?
Deinde geſtantes eum ſuis humeris, & circumagentes 7
eum, demum collocant in loco
ſuo, ex quo loco ſurgere nequit: oravit etiam
illum, nec exaudit eos, nec eripit illos ex anguſtiis
eorum. Memineritis horum, & animadvertite, 8
mentéque perpendite O ſcelerati.
Memineritis priorum quæ à ſeculo facta 9
ſunt, quòd ego ſim Deus, & nullus præ-
tereà ſit præter me De⁹, nullúſque ſit mihi par:
Quòd à principio indico poſtrema, & ea quæ 10
nondum facta ſunt multò ante prædico, conſilium
meum ratum facio, & omnem voluntatem
meam perficio: Voco ab Oriente volucrem, 11
& à terra remotiſſima virũ conſilii mei:
ego loquor, & quidẽ adducã: formavi, & quidem
faciã. Audite me duri corde, remoti à ju- 12
ſtitia: In procinctu eſt ut veniat juſtitia mea, 13
& ſal⁹ mea nequaquã *diu* morabitur; dabóque
in Sione ſalutem, & Iſraeli gloriam meam.

CAP. XLVII.

DEſcende, ac ſede ſuper pulverem virgo 1
filia Babelis, ſede humi filia Chaldæorum: non
enim adeſt ſolium: quia nequaquam vocabunt
te deinceps Tenerã ac delicatam. Accipe molam, 2
mole farinam; retege velum tuum, tonde
canos tuos: Detege crura tua, & appareat ig- 3
nominia tua: *egomet* ſuppliciũ de te ſumam,
nec ſinam quenquam in te irruere. Servato- 4
ris noſtri nomen eſt Dominus potens, Sanct⁹
Iſraelis. Sede in ſtupore, ingredere in tene- 5
bras filia Chaldæorum; quia nequaquam vocabunt
te deinceps Fortiſſimam regnorum.
Iratus populo meo quòd polluiſſent hæredi- 6
tatem meam, tradideram eos in manus tuas:
tu verò nullâ erga eos uſa es clementiâ, quin
ſuper ſenes aggravâſti jugum tuum vehementer.
Et dixiſti, In perpetuum ero potentiſ- 7
ſima: & hæc animo non perpendiſti, neque
recordata es finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* انظروا ما صنعتم يا ضالون الذين يخرجون الذهب من اوعيتهم ويقومون الفضة في الميزان
بالمثقال * ويستاجرون صايغا صنعوا صنعة الايدي وخروا له سجدا * ويحملونها على اكتافهم
ويمضون * وان وضعوه يقيم على مكانه ولا يتحرك * والذي يصرخ اليه لا يسمعه ولا يخلصه
من الاسواء * اذكروا هذا وتنهدوا وتوبوا يا ضالون * ارجعوا بالقلب واذكروا الاوليات منذ
الدهر * لاني انا هو الله وليس غيري موجودا ايضا * المخبر اولا بالاواخر قبل ان تكون وتكمل
معا * وقلت * كل رايي يقوم * وكلما رويته اصنعه * ادعوا من المشارق طايرا * ومن ارض بعيدة
الذين من اجلهم رويت * تكلمت وجلبت * خلقته وصنعته وجلبته وسهلت طريقه

* الاصحاح الثالث والعشرون * النبوة في بابل وخرابها وما يصيبها *

* اسمعوني ايها الضالون القلب * الذين هم بعيدا من العدل * قربت عدلي وحقي * والخلاص
الذي من قبلي لست اوخره * اعطيت في صهيون خلاصا * لاسرايل الشرف *

* الفصل السابع والاربعون *

* انزلي اجلسي على الارض ايتها العذرى ابنة بابل اجلسي في الظلام يا ابنة الكلدانيين
لانك لست منذ الان تستزيدي ان تدعي ناعمة ومتنعمة * خذي رحا واطحني دقيقا
انفي نقابك * واكشفي شعرك * واخلعي خفافك * جوزي الانهار * ستنكشف فضيحتك
تظهر تعييراتك * اخذ منك الواجب لست اسلمك بعد للناس * قال منجيك رب الجيوش اسمه
قدوس اسرايل * اجلسي ساهية * ادخلي في الظلمة يا ابنة الكلدانيين * لست تدعين
بعد قوة الملك * احتديت على شعبي * نجست ميراثي * وانا دفعتهم في يدك * وانت لم
تعطيهم رحمة * ثقلت نير الشيخ جدا * وقلت اكون رييسة الى الابد * ولم تجعلي هذا
في قلبك * ولا ذكرت الاواخر *

Videte quid agatis O errantes, qui profer- 6
tis aurum è vaſis veſtris, & argentum
ſtaterâ & pondere æſtimatis; tum aurifice
mercede conducto componitis opificium
manuale, eiq; procumbitis adorantes:
Tum humeris ſublato abitis, & ſicubi 7
collocetis illud, manet in loco ſuo, nec movetur;
& ſi quis clamet ad illud, nec audit,
nec liberat eum ab adverſitatibus.
Recordamini hujus, ſuſpirate, & pœni- 8
tentiam agite O errantes: Ex animo re- 9
vertimini, & memento te priorum quæ inde
ab æterno facta ſunt. Nam ego ſum
Deus, & nullus præter me reperitur ul-
trà; Qui noviſſima prænuntio antequam 10
fiant & impleantur pariter; & dixi,
Omne conſilium meum ſtabit, & quicquid
libet, ago: Voco ab Oriente volucrem, & 11
à regione longinqua eos de quibus cogitavi:
locutus ſum, & adduxi: ipſum
creavi, feci & adduxi, & viam ejus
complanavi.

Textus vigeſimus tertius.

Prophetia de Babele, ipſius deſtructione, & his quæ eventura ſunt ei.

Audite me O errantes corde, qui procul 12
abeſtis à juſtitia: Admovi juſtitiam me- 13
am & veritatem meam; & ſalutem à
me futuram non retardabo: dedi in Sione
ſalutem, Iſraeli magnificentiam.

CAP. XLVII.

DEſcende, & ſede humi O virgo filia 1
Babelis, ſede in tenebris O filia Chaldæorum;
quia nequaquam perges impoſterùm
vocari Mollis ac delicata. Accipe 2
molam, & mole farinam, depone velum
tuum, detege crines tuos, exue ocreas
tuas, tranſi flumina. Detegetur turpitu- 3
do tua, apparebunt opprobria tua: exigam
à te pœnam debitam, non tradam te
ampliùs hominibus, Inquit Servator tu- 4
us, Dominus exercituum, cujus nomen
eſt Sanctus Iſraelis. Sede à ſenſibus ali- 5
enata, ingredere in tenebras O filia
Chaldæorum: nequaquam vocaberis im-
poſterùm Robur regni. Excandueram con- 6
tra populum meum, prophanaveram hæreditatem
meam, & ego tradideram eos
in manum tuam; tu verò non exhibuiſti
eis miſericordiam, imò jugum ſenis præter
modum aggravâſti. Et dixiſti, Ero 7
domina in perpetuum: & non conſideraſti
hæc animo tuo, neque meminiſti
poſtrema.

ישעיה: מח

dicens ,fiducia in habitans ,delicata hoc audi nunc Et
8 וְעַתָּה שִׁמְעִי־זֹאת עֲדִינָה הַיּוֹשֶׁבֶת לָבֶטַח הָאֹמְרָה
,vidua ſedebo Non .amplius me præter non & ,Ego :ſuo corde in
בִּלְבָבָהּ אֲנִי וְאַפְסִי עוֹד לֹא אֵשֵׁב אַלְמָנָה
hæc duo tibi venient Et .orbitatem cognoſcam nec
9 וְלֹא אֵדַע שְׁכוֹל׃ וְתָבֹאנָה לָּךְ שְׁתֵּי־אֵלֶּה
ſuam integritatem ſecundùm :viduitas & ,orbitas ,una die in ſubito
רֶגַע בְּיוֹם אֶחָד שְׁכוֹל וְאַלְמֹן כְּתֻמָּם
fortitudine in ,tuorum maleficiorum multitudine in ,te ſuper venient
בָּאוּ עָלַיִךְ בְּרֹב כְּשָׁפַיִךְ בְּעָצְמַת
:dixiſti ;tua malitia in fidiſti Et .vehementer tuorum incantatorum
10 חֲבָרַיִךְ מְאֹד׃ וַתִּבְטְחִי בְרָעָתֵךְ אָמַרְתְּ
.te avertit ipſa tua ſcientia & ,tua Sapientia .me videns Nemo
אֵין רֹאָנִי חָכְמָתֵךְ וְדַעְתֵּךְ הִיא שׁוֹבְבָתֶךְ
veniet Et .ultrà me præter non & ,Ego :tuo corde in dixiſti Et
11 וַתֹּאמְרִי בְלִבֵּךְ אֲנִי וְאַפְסִי עוֹד׃ וּבָא
non ,contritio te ſuper cadet & ,ejus auroram ſcies non ,malum te ſuper
עָלַיִךְ רָעָה לֹא תֵדְעִי שַׁחְרָהּ וְתִפֹּל עָלַיִךְ הֹוָה לֹא
.ſcies non ,deſolatio repentè te ſuper veniet & :eam placare poteris
תוּכְלִי כַּפְּרָהּ וְתָבֹא עָלַיִךְ פִּתְאֹם שֹׁאָה לֹא תֵדָעִי׃
,tuorũ maleficiorũ multitudine cũ & ,tuis incantatoribus cum nunc Sta
12 עִמְדִי־נָא בַחֲבָרַיִךְ וּבְרֹב כְּשָׁפַיִךְ
forte ſi ,proficere poteris fortè ſi ,tuis pueritiis ab laborâſti quibus in
בַּאֲשֶׁר יָגַעַתְּ מִנְּעוּרָיִךְ אוּלַי תּוּכְלִי הוֹעִיל אוּלַי
.tuorum conſiliorum multitudine in Laborâſti .te robores
13 תַּעֲרוֹצִי׃ נִלְאֵית בְּרֹב עֲצָתָיִךְ
,ſtellas in contemplantes ,cœlos ſpeculantes te ſervent & ,nunc Stent
יַעַמְדוּ־נָא וְיוֹשִׁיעֻךְ הֹבְרֵו שָׁמַיִם הַחֹזִים בַּכּוֹכָבִים
Ecce .te ſuper ſunt ventura quæ ab ,menſes facientes cognoſcere
14 מוֹדִיעִם לֶחֳדָשִׁים מֵאֲשֶׁר יָבֹאוּ עָלָיִךְ׃ הִנֵּה
liberabunt non ;eos combuſſit ignis ,ſtipula tanquam fuerunt
הָיוּ כְקַשׁ אֵשׁ שְׂרָפָתַם לֹא־יַצִּילוּ אֶת־
,ſe calefaciendum ad pruna non :flammæ manu de ſuam animam
נַפְשָׁם מִיַּד לֶהָבָה אֵין־גַּחֶלֶת לַחְמָם
.laborâſti quibus tibi fuerunt Sic .eo coram ſedendum ad focus
15 אוּר לָשֶׁבֶת נֶגְדּוֹ׃ כֵּן הָיוּ־לָךְ אֲשֶׁר יָגָעַתְּ
,erraverunt ſuum latus ad unuſquiſque ,tuis pueritiis ab tui Negotiatores
סֹחֲרַיִךְ מִנְּעוּרַיִךְ אִישׁ לְעֶבְרוֹ תָּעוּ
.te ſalvans non
אֵין מוֹשִׁיעֵךְ׃

CAP. XLVIII. מח

,Iſrael nomine in vocati ,Jahacob domus hoc Audite
1 שִׁמְעוּ־זֹאת בֵּית־יַעֲקֹב הַנִּקְרָאִים בְּשֵׁם יִשְׂרָאֵל
,DOMINI nomen per jurantes ,exierunt Jehudah aquis de &
וּמִמֵּי יְהוּדָה יָצָאוּ הַנִּשְׁבָּעִים בְּשֵׁם יְהֹוָה
.juſtitia in nec ,veritate in non ,facient recordari Iſrael Deo in &
וּבֵאלֹהֵי יִשְׂרָאֵל יַזְכִּירוּ לֹא בֶאֱמֶת וְלֹא בִצְדָקָה׃
Iſrael Deo ſuper & ,ſe vocaverunt ſanctitatis civitate de Nam
2 כִּי־מֵעִיר הַקֹּדֶשׁ נִקְרָאוּ וְעַל־אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל
tunc ex Priora .ejus nomen exercituum Dominus :ſunt innixi
3 נִסְמָכוּ יְהֹוָה צְבָאוֹת שְׁמוֹ׃ הָרִאשֹׁנוֹת מֵאָז
,feci Repentè .ea feci audire & ,exierunt meo ore ex & ,annuntiavi
הִגַּדְתִּי וּמִפִּי יָצְאוּ וְאַשְׁמִיעֵם פִּתְאֹם עָשִׂיתִי
ferri nervus & :tu durus quòd mea ſcientia Ex .venerunt &
4 וַתָּבֹאנָה׃ מִדַּעְתִּי כִּי קָשֶׁה אָתָּה וְגִיד בַּרְזֶל
.æs tua frons & ,tua cervix
עָרְפֶּךָ וּמִצְחֲךָ נְחוּשָׁה׃

Verſio VULG. LAT.

8 Et nunc audi hæc delicata, &
habitans confidenter, quæ dicis
in corde tuo; Ego ſum, &
nõ eſt præter me ampliùs: non
ſedebo vidua, & ignorabo ſterilitatem.
9 Venient tibi duo hæc
ſubitò in die una, ſterilitas &
viduitas: univerſa venerunt ſuper
te, propter multitudinem
maleficiorum tuorum, & propter
duritiam incantatorum
10 tuorum vehementem. Et fiduciam
habuiſti in malitia tua,
& dixiſti; Non eſt qui videat
me: ſapientia tua & ſcientia
tua hæc decepit te. Et dixiſti
in corde tuo; Ego ſum, & præter
11 me non eſt altera. Veniet
ſuper te malum, & neſcies ortum
ejus: & irruet ſuper te calamitas,
quam non poteris expiare:
veniet ſuper te repentè
12 miſeria, quam neſcies. Sta cum
incantatoribus tuis, & cum
multitudine maleficiorum tuorum,
in quib⁹ laborâſti ab adoleſcentia
tua, ſi fortè quid proſit
tibi, aut ſi poſſis fieri fortior.
13 Defeciſti in multitudine conſiliorum
tuorum: ſtent, & ſalvent
te augures cœli, qui contemplabantur
ſidera, & ſupputabant
menſes, ut ex eis annun-
14 tiarent ventura tibi. Ecce facti
ſunt quaſi ſtipula, ignis combuſſit
eos: non liberabunt animam
ſuam de manu flammæ:
non ſunt prunæ, quibus calefiant;
nec focus, ut ſedeant ad
15 eum. Sic facta ſunt tibi in quibuſcunque
laboraveras: negotiatores
tui ab adoleſcentia
tua, unuſquiſque in via ſua erraverunt:
non eſt qui ſalvet te.

CAP. XLVIII.

1 Audite hæc dom⁹ Jacob, qui
vocamini nomine Iſrael, & de
aquis Juda exiſtis, qui juratis
in nomine Domini, & Dei Iſrael
recordamini non in veri-
2 tate, neque in juſtitia. De civitate
enim Sancta vocati ſunt,
& ſuper Deum Iſrael conſtabiliti
ſunt: Dominus exerci-
3 tuum nomen ejus. Priora ex
tunc annuntiavi, & ex ore meo
exierunt, & audita feci ea: repentè
operatus ſum, et vene-
4 runt. Scivi enim quia durus
es tu, et nervus ferreus cervix
tua, et frons tua ærea.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Νῦν δὲ (δ) ἄκουε ταῦτα τρυφερὰ, ἡ καθημένη,
ἡ πεποιθυῖα, ἡ λέγουσα ἐν (˙) καρδίᾳ
αὐτῆς, Ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ ἔστιν ἑτέρα, οὐ κα-
9 θιῶ χήρα, οὐδὲ γνώσομαι ὀρφανίαν. Νῦν δὲ
ἥξει (ε) ἐπὶ σὲ τὰ δύο ταῦτα ἐξαίφνης ἐν
ἡμέρᾳ μιᾷ, ἀτεκνία καὶ χηρεία ἥξει ἐξαίφνης
ἐπὶ σέ, ἐν τῇ φαρμακείᾳ σου, ἐν τῇ ἰ-
10 σχύι τῶν ἐπαοιδῶν σου σφόδρα, Τῇ ἐλπίδι
τῆς πονηρίας σου· σὺ γὰρ εἶπας, Ἐγώ
εἰμι, καὶ οὐκ ἔστιν ἑτέρα. γνῶθι, (ζ) ἡ σύνεσις
τούτων ἔσται, καὶ ἡ πορνεία σου σοὶ αἰσχύνη.
καὶ εἶπας τῇ καρδίᾳ σου, Ἐγώ εἰμι, καὶ
11 οὐκ ἔστιν ἑτέρα. Καὶ ἥξει ἐπὶ σὲ ἀπώλεια,
καὶ οὐ μὴ γνῷς· βόθυνος, καὶ ἐμπεσῇ εἰς αὐτόν·
καὶ ἥξει ἐπὶ σὲ ταλαιπωρία, καὶ οὐ μὴ
δυνήσῃ καθαρὰ γενέσθαι· καὶ ἥξει ἐπὶ σὲ
(η) ἐξαπίνης ἀπώλεια, καὶ οὐ μὴ (θ) γνώσῃ.
12 Στῆθι νῦν ἐν ταῖς ἐπαοιδαῖς σου, καὶ ἐν τῇ
πολλῇ φαρμακείᾳ σου, ἃ ἐμάνθανες ἐκ νε-
13 ότητός σου, εἰ δυνήσῃ ὠφεληθῆναι. Κεκοπίακας
ἐν ταῖς βουλαῖς σου· στήτωσαν (ι)
δὴ καὶ σωσάτωσάν σε οἱ ἀστρολόγοι τοῦ οὐρανοῦ,
οἱ ὁρῶντες τοὺς ἀστέρας ἀναγγειλάτω-
14 σάν σοι, τί μέλλει ἐπὶ σὲ ἔρχεσθαι. Ἰδοὺ
πάντες ὡς φρύγανα ἐπὶ πυρὶ (˙˙) κατακαυθήσονται,
καὶ οὐ μὴ ἐξέλωνται τὴν ψυχὴν αὐτῶν
ἐκ φλογός· ὅτι ἔχεις ἄνθρακας πυρὸς,
15 κάθισαι ἐπ' αὐτούς, Οὗτοί ἔσονταί σοι βοήθεια.
ἐκοπίασας ἐν τῇ μεταβολῇ (κ) ἐκ
νεότητος, ἄνθρωπος καθ' ἑαυτὸν ἐπλανήθη,
σοὶ δὲ οὐκ ἔσται σωτηρία.

Nunc autem audi hæc, delicata, quæ ſedes, quæ confidis, quæ dicis in corde tuo: Ego ſum, & non eſt altera: non ſedebo vidua, neque cognoſcam orbitatem. Nunc autem venient ſuper te duo hæc ſubitò in die una: orbitas & viduitas venient repente ſuper te, in maleficio tuo, in fortitudine incantatorum tuorum valde. (e) Spe malitiæ tuæ. Tu enim dixiſti. Ego ſum, & non eſt altera. Scito: (f) intelligentia horum erit, & fornicatio tua tibi confuſio. Et dixiſti in corde tuo, Ego ſum, & non eſt altera. Et veniet ſuper te perditio, & non ſcies: fovea, & incides in eam. Et veniet ſuper te miſeria, & non poteris munda fieri: & veniet ſuper te ſubitò perditio, & neſcies. Sta nunc in incantationibus tuis, & in multo maleficio tuo, quæ diſcebas ab adoleſcentia tua: ſi poteris adjuvari. Laborâſti in conſiliis tuis: ſtent nunc, & ſalvam te faciant aſtrologi cœli: qui contemplantur ſtellas, annuntient tibi, quid venturum ſit ſuper te. Ecce omnes quaſi frygana in igne comburentur, & non eruent animam ſuam de flamma: quia habes carbones ignis, (g) ſede ſuper eos: Hi erunt tibi adjutorium. Laborâſti in commutatione ab adoleſcentia: homo in ſemetipſo erravit; tibi autem non erit ſalus.

MS. A. (δ) ἄκουσον ταῦτα ἡ τρυφερὰ, (˙) τῇ καρδίᾳ (ε) ἐξέφνης τ
δύο ταῦτα ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ, χηρεία καὶ ἀτεκνία (ζ) ὅτι ἡ σύνεσις τούτων, καὶ
ἡ πορνεία σου ἔσται σοι αἰσχύνη. (η) ἐξέφνης (θ) γνῷς. (ι) καὶ σωσάτωσαν
(˙˙) κατακαήσονται (κ) σου ἐκ

ΚΕΦ. μη'.

1 Ἀκούσατε ταῦτα οἶκος Ἰακώβ, οἱ κεκλημένοι
(α) ἐπὶ τῷ ὀνόματι Ἰσραήλ, (β) καὶ
ἐξ Ἰούδα ἐξελθόντες, οἱ ὀμνύοντες τῷ
ὀνόματι κυρίου θεοῦ Ἰσραήλ, μιμνησκόμενοι
2 οὐ μετὰ ἀληθείας, οὐδὲ μετὰ δικαιοσύνης, Καὶ
ἀντεχόμενοι τῷ ὀνόματι τῆς πόλεως τῆς
ἁγίας, καὶ ἐπὶ τῷ θεῷ (γ) Ἰσραὴλ ἀντιστηριζόμενοι·
Κύριος σαβαὼθ ὄνομα αὐτῷ.
3 Τὰ πρότερα ἔτι ἀνήγγειλα, καὶ ἐκ τοῦ στόματός
μου ἐξῆλθε, καὶ (δ) ἀκουστὸν ἐγένε-
4 το· ἐξάπινα ἐποίησα, καὶ ἐπῆλθεν. Γινώσκω
(ε) ὅτι σκληρὸς εἶ, καὶ νεῦρον σιδηροῦν
ὁ τράχηλός σου, καὶ τὸ μέτωπόν
σου χαλκοῦν.

CAP. XLVIII.

Audite hæc domus Jacob, qui vocati eſtis in nomine Iſrael, & de (a) Juda exiiſtis, qui juratis in nomine Domini Dei Iſrael, commemorantes non cũ veritate, neq; cum juſtitia, Et inhærentes nomini civitatis Sanctæ, & ſuper Deum Iſrael innitentes. Dominus Sabaoth nomen ei. Priora adhuc annuntiavi, & de ore meo egreſſa ſunt, & auditum factum eſt. Subitò feci: & advenerunt. Scio, quia durus es, & nervus ferreus collum tuum, & frons tua ænea.

MS. A. (α) τῷ ὀνόματι (β) καὶ οἱ (γ) τοῦ Ἰσραὴλ (δ) ἀκουστὰ (ε) ἐγὼ ὅτι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 וכען שמעי דא מפנקתא דיתבא לרחצן דאמרא בלבהא אנא ולית בר מני עוד לא אתיב
9 ארמלו ולא אדע תכלו׃ ויתין ליך תרתין אלין זמן ביומא חד תכל וארמלו כד שלמן
10 ייתון עלך בסגיאות חרשך בתקוף קסמך לחדא׃ ואתרחיצת בבישתיך אמרת לית
11 דחזי לי חוכמתיך ומדעיך היא קלקלתיך ואמרת בלביך אנא ולית בר מני עוד׃ ותיתי
עלך בישתא לא תדעין למבעי עלה ותפול עלך עקא לא תכלין לאעדיותה ותיתי עלך
12 בתכיף אתרגושא לא תדעין׃ קומי כען בקסמיך ובסגיות חרשיך דהוית מתעסקא
13 בהון מינקותיך מאים תכלין להנאה מאים תכלין למתקף׃ לאית בסגיאות מלכך
יקומון כען ויפרקוניך דמסכן למולדת שמיא ורחזן בכוכביא מהודעין ומניא מטען ליך
14 למימר כן עתיד למיתי עלך ירח בירח׃ הא הוו חלשין כקשא עממיא דתקיפין כאשתא
שציאונון לא ישזבון ית נפשהון מיד קטולין לית שאר ומשיזב אף לא אתר לאשתזבא
15 בידה׃ כן הוו ביך עובדי שקריך דהוית מתעסקא בהון מינקותיך שלטוני תוקפיך גבר
לקביל אפוהי גלו לית דפריק ליך׃

מח

1 שמעו דא בית יעקב דמתקרן בשמא דישראל ומזרעית יהודה נפקו דגזר להון קים
2 בשמא דיי אלהא דישראל לא יפסק דכרנהון הלא קים ממריה בקשוט ובזכו׃ ארי
3 בקרתא דקודשא חולקהון ועל אלהא דישראל רוחצנהון יי צבאות שמו׃ קדמיתא
4 מבכן חותי וממימרי נפקא ומסרתנון בתכף עבדתנון ואתאה׃ גלי קדמי דאת סרבן
וקשי כברזלא קדלך ובית עינך חסין כנחשא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et nunc audi hoc delicata quæ habitas confidenter, dicens in corde ſuo: Ego ſum, & non eſt præter me amplius: non ſedebo vidua, nec ſciam orbationem. Et venient tibi duo hæc ſubitò in die uno, orbatio & viduitas; cum fuerint perfectæ, venient ſuper te, in multitudine maleficiorum tuorum, & in fortitudine incantationũ tuarũ vehementer. Et confiſa es in malitia tua & dixiſti, Non eſt qui videat me: ſapientia tua & ſcientia tua ipſa pervertit te. Et dixiſti in corde tuo: Ego ſum, & præter me non eſt amplius. Et veniet ſuper te malum, & neſcies deprecari ſuper ipſum: & cadet ſuper te tribulatio, & non poteris auferre eam: & veniet ſuper te repentè tumultus quem neſcis. Sta nunc cum divinationibus tuis, & in multitudine maleficiorũ tuorũ, in quibus laborâſti ab infantia tua: ſi fortè poteris prodeſſe, aut ſi fortè poteris confortari. Laborâſti in multitudine conſiliorum tuorum: ſtent nunc & ſalvent te qui contemplantur ſydera cœli, & vident in ſtellis: qui tempora ſcire faciunt, ſeducunt te dicentes: Sic venturum eſt tibi per ſingulos menſes. Ecce facti ſunt infirmi quaſi ſtipula, populi qui erant fortes quaſi ignis: conſumpſerunt eos, & non liberabunt animam ſuam de manu occidentium: nec erit reſiduum, nec qui evadat, nec erit eis locus in quo liberentur. Sic fuerunt in te operantes iniquitates tuas, in quibus laborâſti ab infantia tua; principes fortitudinis tuæ; unuſquiſque migravit contra faciem ſuam; non eſt qui ſalvet te.

CAP. XLVIII.

Audite hoc dom⁹ Jacob, qui vocamini in nomine Iſrael, & de cognatione Juda exiſtis, quibus initum eſt pactum in nomine Dñi Dei Iſrael, non ceſſabit memoria eorum: an non ſtat verbum ejus in veritate & juſtitia? Quoniam in civitate ſancta eſt pars eorum, & in Deo Iſrael confidentia eorum: Dominus exercituum nomen ejus. Quæ prima fuerunt, ex tunc annuntiavi, & de verbo meo exierunt, & tradidi ea: repentè feci ea, & evenerunt. Manifeſtum eſt coram me quòd rebellis ſis, & durum ſicut ferrum collum tuum, & frons tua fortis ſicut æs.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܫܐ ܫܡܥܝ ܗܠܝܢ ܦܢܝܩܬܐ ܕܝܬܒܐ ܒܫܠܝܐ܂ ܘܐܡܪܐ ܒܠܒܗ܂ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܘܠܝܬ
ܠܘܬܝ܂ ܠܐ ܐܬܒ ܐܪܡܠܬܐ܂ ܘܠܐ ܐܕܥ ܬܟܠܐ܂ * ܢܐܬܝܢ ܠܟܝ ܬܪܬܝܗܝܢ ܗܠܝܢ ܠܐܘܠܨܢܐ ܡܚܘܬܐ
ܒܝܘܡܐ ܚܕ܂ ܬܟܠܐ ܘܐܪܡܠܘܬܐ܂ ܡܢ ܫܠܝܐ ܢܐܬܝܢ ܠܟܝ܂ ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܪ̈ܫܝܟܝ
ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܐ̈ܣܘܦܝܟܝ܂ * ܐܬܬܟܠܬܝ ܥܠ ܒܝܫܘܬܟܝ܂ ܘܐܡܪܬܝ܂ ܕܠܝܬ ܕܚܙܐ ܠܝ
ܚܟܡܬܟܝ ܘܝܕܥܬܟܝ܂ ܗܝ ܐܛܥܝܬܟܝ܂ ܘܐܡܪܬܝ ܒܠܒܟܝ܂ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܘܠܝܬ ܠܒܪ ܡܢܝ܂ * ܢܐܬܐ
ܥܠܝܟܝ ܒܝܫܬܐ ܒܨܦܪܐ܂ ܘܠܐ ܬܕܥܝܢ܂ ܘܬܦܠ ܥܠܝܟܝ ܠܗܘܬܐ܂ ܘܠܐ ܬܫܟܚܝܢ ܠܡܥܒܪܘܬܗ܂
ܘܬܐܬܐ ܥܠܝܟܝ ܡܢ ܫܠܝܐ ܫܓܘܫܝܐ܂ ܘܠܐ ܬܪܓܫܝܢ܂ * ܩܘܡܝ ܗܫܐ ܒܚܪ̈ܫܝܟܝ ܘܒܣܘܓܐܐ
ܕܚܪ̈ܫܝܟܝ܂ ܕܠܐܝܬܝ ܒܗܘܢ ܡܢ ܛܠܝܘܬܟܝ܂ ܐܢ ܬܫܟܚܝܢ ܠܡܥܕܪܘ܂ ܐܢ ܬܬܚܝܠܝܢ܂
* ܠܐܝܬܝ ܒܣܘܓܐܐ ܕܡܚܫ̈ܒܬܟܝ܂ ܢܩܘܡܘܢ ܘܢܦܪܩܘܢܟܝ ܟܠܕ̈ܝܐ܂ ܕܚܙܝܢ ܫܡܝܐ
ܘܟܘ̈ܟܒܐ܂ ܘܡܘܕܥܝܢ ܠܟܝ ܒܝܪܚܐ܂ ܡܕܡ ܕܐܬܐ ܠܟܝ܂ * ܗܐ ܗܘܘ ܐܝܟ ܩܫܐ ܕܐܘܩܕܬܗ
ܢܘܪܐ܂ ܘܠܐ ܢܦܨܘܢ ܢܦܫܗܘܢ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܫܠܗܒܝܬܐ܂ ܠܝܬ ܓܘܡܪܐ ܠܫܚܢܘܬܗܘܢ܂
ܘܠܐ ܢܘܗܪܐ ܠܡܬܒ ܠܘܩܒܠܗ܂ * ܗܟܢܐ ܗܘܘ ܠܟܝ ܬܐܓܪ̈ܝܟܝ ܕܠܐܝܬܝ ܥܡܗܘܢ ܡܢ
ܛܠܝܘܬܟܝ܂ ܘܐܢܫ ܠܥܒܪܗ ܛܥܐ܂ ܘܠܝܬ ܕܦܪܩ ܠܟܝ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܚ *

* ܫܡܥܘ ܗܠܝܢ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ ܕܡܬܩܪܝܢ ܒܫܡܗ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܘܡܢ ܡ̈ܝܐ ܕܝܗܘܕܐ
ܢܦܩܘ܂ ܕܝܡܝܢ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܘܠܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܥܗܕܝܢ܂ ܠܐ ܒܫܪܪܐ ܘܠܐ ܒܟܐܢܘܬܐ܂
* ܡܛܠ ܕܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܩܘܕܫܐ ܐܬܩܪܝܘ܂ ܘܥܠ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܣܬܡܟܝܢ܂ ܡܪܝܐ
ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ܂ * ܩܕܡܝܬܐ ܕܡܢ ܩܕܝܡ ܚܘܝܬ܂ ܘܡܢ ܦܘܡܝ ܢܦܩܘ܂ ܘܐܫܡܥܬ
ܐܢܝܢ ܠܟܘܢ܂ ܘܡܢ ܫܠܝܐ ܥܒܕܬ ܐܢܝܢ܂ ܘܐܬܝ܂ * ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܩܫܐ ܐܢܬ܂ ܘܩܕܠܟ
ܓܝܕܐ ܗܘ ܕܦܪܙܠܐ܂ ܘܒܝܬ ܥܝ̈ܢܝܟ ܕܢܚܫܐ܂

Nunc audi hæc O voluptaria, quæ tranquillè 8
ſedes, & in corde tuo dicis, Ego ſum, & nul-
la præter me; non ſedebo vidua, neque expe-
riar orbitatem : Evenient tibi ambo hæc 9
flagella, eodem die : orbitas & viduitas ex
improviſo evenient tibi, nil prohibente mul-
titudine veneficorum tuorum, neque multitu-
dine magorum tuorum. Quia confiſa es 10
malitiæ tuæ, & dixiſti; Non eſt qui me videat,
ſapientia & ſcientia tua ipſa te decepit, &
dixiſti in corde tuo; Ego ſum, & nulla præ-
ter me : Superveniet tibi malum in matu- 11
tino, te ignorante; occupabit te terror quem
non poteris amovere, & veniet ſuper te re-
pentè perturbatio, te non præſentiente. Sta 12
jam cum magis tuis, & veneficiis tuis mul-
tis in quibus deſudâſti à pueritia tua; fortè
proficere poſſes, fortè vires acquireres.
Defatigata es multitudine cogitationum tua- 13
rum : ſtent, ſalvéntque te Chaldæi contem-
platores cœli & ſiderum, & nota faciant tibi
intra menſem quæ eventura ſunt tibi. Ecce 14
facti ſunt tanquam ſtipulæ quas combuſſit
ignis, nec eripient ſe ipſos è manu flammæ :
nullos habebit carbones ignis eorum, neque
fulgorem cujus ex adverſo ſedere quis *poſſit*.
Tales facti ſunt tibi mercatores tui quibuſ- 15
cum laborâſti à pueritia tua : unuſquiſque
ſuam partem verſus aberravit, nec adfuit qui
te liberaret.

CAP. XLVIII.

Audite hæc filii familiâs Jacobi, qui vo- 1
cant ſe de nomine Iſraelis, & ex aqua Judæ
prodierunt; qui jurant per nomen Domini,
& Dei Iſraelis mentionem faciunt mendaci-
ter & injuſtè. Nam à civitate ſancta ſe vo- 2
cant, & Deo Iſraelis innituntur, cujus nomen
eſt Dominus potens. Priora quæ inde ab 3
initio *facta* fuerant, indicavi, prodierunt ex
ore meo, eaque narravi vobis, quæ repentè
ſum effecturus, & eventura ſunt. Noveram 4
te durum eſſe, cervicem tuam nervum fer-
reum, & frontem tuam æneam :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والآن اسمعي هذه ايتها المتنعمة الجالسة المطمئنة * القائلة في قلبها انا انا وليست اخرى
موجودة * لست اجلس ارملة * ولا اعرف يتما * والآن تاتي عليك هاتان الاثنتان بغتة في يوم
واحد * الترمل وعدم الاولاد ياتي عليك بغتة بقوتك في سحر منجميك جدا في رجاء سحرك
* لانك انت قلت انا انا وليست اخرى موجودة * اعلمي ان فهم هولاء وزناك يكون لك خزيا
وقلت في قلبك انا انا وليست اخرى موجودة * وياتي عليك الهلاك ولا تعلمين حضوره
وتسقطين فيه * وياتي عليك الشقاء ولا تستطيعين ان تكوني طاهرة * وياتي عليك الهلاك
بغتة ولا تعلمين * قفي الآن في رقاك وفي سحرك الكثير الذي تعملينه منذ صباك ان قدرت
ان تنتفعي * تعبت بافكارك * ليقوموا ويخلصوك القائلون بنجوم السماء * الذين ينظرون
الكواكب ليخبروك ما هو مزمع ان ياتي عليك * ها جميعهم مثل الهشيم يحترقون بالنار ولا
يخرجون نفوسهم من اللهيب * ايهم لك شرارات نار لتجلسي عليها * هولاء يكونون لك معونة
* تعبت بتجارك منذ صباك * والانسان ضل في ذاته * ولم يكن لك خلاص *

* الفصل الثامن والاربعون *

* النبوة في بني اسرائيل ورد سبيهم * وقول يعيرهم على ما كان منهم من سوء الاعمال *
* اسمعوا هذه يا بيت يعقوب المدعوون باسم اسرائيل * والذين خرجوا من يهوذا * الذين يحلفون
باسم الرب اله اسرائيل * ويتذكرون لا بالحق ولا بالعدل * ويفتكرون ويمسكون باسم المدينة
المقدسة * وباله اسرائيل يستندون * اسمه رب الجيوش * الاوليات اخبرت بها ايضا ومن فمي
خرجت * وصارت مسموعة * صنعتها بغتة وجاءت * انا اعرف انك انت قاس * ورقبتك عصب
حديد * وجبهتك نحاس *

Nunc itaque audi hæc O delicata, quæ ſe- 8
des tuta, & dicis in corde tuo, Ego, ego
ſum, & nulla alia reperitur : non ſedebo
vidua, neque orbitatem experiar. At jam 9
evenient tibi duo iſta repentè in uno die;
viduitas & defectus filiorum evenient
tibi repente cum fortitudine tua, cum
magia aſtrologorum tuorum pluri̇ma, cum
fiducia quam habes in *malitia tua. Quia* 10
tu dixiſti, Ego, ego ſum, nec alia reperi-
tur; noveris quòd iſtorum prudentia &
ſcortatio tua erunt tibi pudori. Dixiſti
in corde tuo, Ego, ego ſum, & alia non
reperitur; Ideo ſuperveniet tibi exitium 11
cujus præſentiam ignorabis, & incides
in illud : venietque ſuper te calamitas,
& non poteris eſſe munda : denique ve-
niet ſuper te exitium repentinum te in-
ſciâ. Sta jam cum incantationibus & 12
magiis tuis multis, quas exerces inde à
pueritia tua, ſi fortè proficere poſſis.
Laborâſti in cogitationibus tuis; ſurgant 13
& liberent te qui futura *præſagiunt ex*
aſtris cœleſtibus : qui ſtellas contemplan-
tur, prædicant tibi quæ tibi ſunt even-
tura. Ecce omnes tanquam ſtipula igne 14
comburentur, & non extrahent ſeipſos
è flamma : hi erunt tibi ſcintillæ ignis in
quibus ſedeas : hi eſſent tibi auxilio?
Laborâſti in negotiatoribus tuis à puer- 15
itia tua; at quiſq; ſeorſum aberravit, nec
fuit tibi ſalus.

CAP. XLVIII.

Prophetia de filiis Iſrael, & redu-
ctione captivitatis eorum. Item
ſermo objurgatorius propter
perpetratas ab eis
actiones iniquas.

Audite hoc O domus Jacobi, qui no- 1
men ſumitis ab Iſraele, & qui originem
ducitis à Juda, qui juratis per nomen Do-
mini Dei Iſraelis, memoriâ tamen neque
veritatem neque juſtitiam recolitis :
Quamvis mente agitetis & teneatis no- 2
men urbis ſanctæ, & in Deo Iſraelis vi-
res collocetis, cujus nomen eſt Dominus
exercituum. Priora quoque indicavi, ex 3
ore meo prodierunt, & facta ſunt publi-
ca : ea feci repentè, & evenerunt. Equi- 4
dem ſcio te durum eſſe, cervicem tuam
nervum ferreum, & frontem tuam
æneam :

ישעיה : מח

fortè ne , te feci audire veniret antequam ,*tunc ex* tibi annuntiavi Et
5 ואגיד לך מאז בטרם תבוא השמעתיך פן־
.ea præcepit meũ conflatile &,meũ ſculptile & ,ea fecit *meus Dolor* : diceres
תאמר עצבי עשם ופסלי ונסכי צום׃
? annuntiabitis nonne vos & ,hoc totum vide , Audiſti
6 שמעת חזה כלה ואתם הלוא תגידו
.ea ſciviſti non & , conſervata & ,*nunc* ex nova te feci audire
השמעתיך חדשות מעתה ונצרות ולא ידעתם׃
: ea audiſti non & ,diem ante & , *tunc* ex non & , ſunt creata Nunc
7 עתה נבראו ולא מאז ולפני־יום ולא שמעתם
etiam , audiſti non Etiam .ea cognovi Ecce , diceres fortè ne
8 פן־תאמר הנה ידעתין׃ גם לא שמעת גם
novi nam : tua auris aperta fuit non *tunc* ex etiam ,cognoviſti non
לא ידעת גם מאז לא־פתחה אזנך כי ידעתי
.*tibi* es vocatus utero ab prævaricator & , prævaricaberis prævaricando
בגוד תבגוד ופשע מבטן קרא לך׃
frænum injiciam mea laude & ,meũ furorem prolongabo meũ nomen Propter
9 למען שמי אאריך אפי ותהלתי אחטם־
: *argento in* non & , te purgavi Ecce .te *ſuccidendum* non *ad* : tibi
10 לך לבלתי הכריתך׃ הנה צרפתיך ולא בכסף
, faciam me propter ,me Propter .afflictionis camino in te elegi
11 בחרתיך בכור עני׃ למעני למעני אעשה
Audi .dabo non alteri meã gloriam & *? prophanabitur quomodo* nam
12 כי־איך יחל וכבודי לאחר לא־אתן׃ שמע
, primus ego ipſe ego *: meus* vocatus Iſrael & , Jahacob me *ad*
אלי יעקב וישראל מקראי אני־הוא אני ראשון
, terram fundavit mea manus Etiam .noviſſimus ego etiam
13 אף אני אחרון׃ אף־ידי יסדה ארץ
.ſimul ſtabunt ,eos *ad ego vocans* : cœlos eſt mẽſa *palmo* mea dextera&
וימיני טפחה שמים קרא אני אליהם יעמדו יחדו׃
? iſta annuntiavit eos inter quis ,audite & ,*vos* omnes vos Congregate
14 הקבצו כלכם ושמעו מי בהם הגיד את־אלה
ej⁹ brachiũ & , Babel in ej⁹ voluntatẽ faciet , eũ dilexit DOMINUS
יהוה אהבו יעשה חפצו בבבל וזרעו
eum adduxi : eũ vocavi etiam ,ſum locutus ego Ego .Chaſdim
15 כשדים׃ אני אני דברתי אף־קראתיו הבאתיו
non , hoc audite ,me ad Appropinquate .ejus via proſperabitur &
16 והצליח דרכו׃ קרבו אלי שמעו־זאת לא
nunc & *: ego* ibi , *illud eſſe* tempore à,ſum locut⁹ abſcõdito in *capite* à
מראש בסתר דברתי מעת היותה שם אני ועתה
dixit Sic .ejus ſpiritus & ,me miſit *Dominus* Dominus
17 אדני יהוה שלחני ורוחו׃ כה־אמר
tuus Deus Dominus Ego : Iſrael Sanctus tuus redemptor Dominus
יהוה גאלך קדוש ישראל אני יהוה אלהיך
Utinam .ambulabis via in te ambulare faciens,*proficiendum ad* ,te docens
18 מלמדך להועיל מדריכך בדרך תלך׃ לוא
tua juſtitia & ; tua pax flumẽ ſicut fuiſſet & :mea mandata ad attendiſſes
הקשבת למצותי ויהי כנהר שלומך וצדקתך
germina & , tuum ſemen arena veluti fuiſſet Et .maris fluctus ſicut
19 כגלי הים׃ ויהי כחול זרעך וצאצאי
deleretur non & , excideretur non : ejus *viſcera* ſicut ,*tuorum viſcerum*
מעיך כמעותיו לא־יכרת ולא־ישמד
, Chaſdim à fugite , Babel de Egredimini *meis faciebus* à ej⁹ nomen
20 שמו מלפני׃ צאו מבבל ברחו מכשדים
extremũ ad uſque illud efferte,hoc facite audire,annuntiate *præconii* voce in
בקול רנה הגידו השמיעו זאת הוציאוה עד־קצה
.Jahacob ſuũ ſervum Dominus Redemit , dicite : terræ
הארץ אמרו גאל יהוה עבדו יעקב׃

Verſio VULG. LAT.

5 Prædixi tibi ex tunc: antequã venirent indicavi tibi, ne fortè diceres; Idola mea fecerunt hæc, & ſculptilia mea & conflatilia mandaverunt iſta. 6 Quæ audîſti, vide omnia : vos autem num annuntiâſtis? Audita feci tibi nova ex tunc, & conſervata ſunt quæ neſcis: 7 Nunc creata ſunt, & non ex tunc: & ante diem, & non audîſti ea, ne fortè dicas; 8 Ecce ego cognovi ea. Neque audîſti, neque cognoviſti, neque ex tunc aperta eſt auris tua : ſcio enim quia prævaricans prævaricaberis, & tranſgreſſorem ex utero vocavi te. 9 Propter nomen meum longè faciam furorem meũ: & laude meâ infrænabo te, ne intereas. 10 Ecce excoxi te, ſed non quaſi argentum, elegi te in camino 11 paupertatis. Propter me, propter me faciam, ut non blaſphemer: & gloriam meam al12 teri non dabo. Audi me Jacob, & Iſrael quem ego voco: ego ipſe, ego primus, 13 et ego noviſſimus. Manus quoque mea fundavit terram, & dextera mea menſa eſt cœlos: ego vocabo eos, & ſtabunt 14 ſimul. Congregamini omnes vos, & audite; quis de eis annuntiavit hæc? Dñs dilexit eum, faciet voluntatem ſuam in Babylone, & brachiũ ſuũ in 15 Chaldæis. Ego ego locut⁹ ſũ, & vocavi eũ : adduxi eũ, & 16 directa eſt via ejus. Accedite ad me, & audite hoc: non à principio in abſcondito locutus ſum : ex tempore antequàm fieret, ibi eram: & nunc Dñs Deus miſit me, & ſpiritus 17 ejus. Hæc dicit Dñs redemptor tuus Sanctus Iſrael; Ego Dñs Deus tu⁹ docens te utilia, gubernans te in via, quâ am18 bulas. Utinam attendiſſes mandata mea : facta fuiſſet ſicut flumen pax tua, & juſtitia 19 tua ſicut gurgites maris. Et fuiſſet quaſi arena ſemen tuũ, & ſtirps uteri tui ut lapilli ej⁹: non interiſſet, & non fuiſſet attritum nomen ejus à facie 20 mea. Egredimini de Babylone, fugite à Chaldæis, in voce exultationis annuntiate : auditum facite hoc, et efferte illud uſque ad extrema terræ. Dicite, Redemit Dominus ſervum ſuum Jacob.

Verſio GRÆCA LXX. Interp,

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Καὶ ἀνήγγειλά σοι (ζ) πάλαι ἃ πρὶν ἐλθεῖν ἐπὶ σὲ· ἀκουστόν σοι ἐποίησα, (η) μή ποτε εἴπῃς, Ὅτι τὰ εἴδωλά μοι ἐποίησε, καὶ εἴπῃς, Ὅτι τὰ γλυπτὰ καὶ τὰ χωνευτὰ ἐνετείλατό μοι. 6 Ἠκούσατε πάντα, καὶ ὑμεῖς οὐκ ἔγνωτε· (θ) ἀλλὰ ἀκουστά σοι ἐποίησα τὰ καινὰ 7 ἀπὸ τοῦ νῦν, ἃ μέλλει γίνεσθαι· Καὶ οὐκ εἶπας, Νῦν γίνεται, καὶ οὐ πάλαι, καὶ οὐ προτέραις ἡμέραις ἤκουσας αὐτά. μὴ εἴπῃς, 8 (ι) Ναὶ γινώσκω αὐτά. Οὔτε ἔγνως, οὔτε ἠπίστω, οὔτε ἀπ᾽ ἀρχῆς (κ) ἤνοιξά σου τὰ ὦτα· ἔγνων γὰρ, ὅτι ἀθετῶν ἀθετήσεις, καὶ 9 ἄνομος ἔτι ἐκ κοιλίας κληθήσῃ. Ἕνεκεν τοῦ ἐμοῦ ὀνόματος δείξω σοι τὸν θυμόν μου, καὶ τὰ ἔνδοξά μου ἐπάξω (λ) ἐπὶ σὲ, ἵνα μὴ 10 ἐξολοθρεύσω σε. Ἰδοὺ πέπρακά σε, (˘) οὐχ ἕνεκεν ἀργυρίου· ἐξειλάμην δέ σε ἐκ καμί11 νου πτωχείας. Ἕνεκεν ἐμοῦ ποιήσω σοι, ὅτι τὸ ἐμὸν ὄνομα βεβηλοῦται, καὶ τὴν δόξαν μου 12 ἑτέρῳ οὐ δώσω. Ἄκουέ μου Ἰακὼβ, καὶ Ἰσραὴλ ὃν ἐγὼ καλῶ· ἐγώ εἰμι πρῶτος, καὶ 13 ἐγώ εἰμι εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἡ χείρ μου ἐθεμελίωσε τὴν γῆν, καὶ ἡ δεξιά μου ἐστερέωσε τὸν οὐρανόν. καλέσω αὐτοὺς, καὶ στήσονται 14 ἅμα, Καὶ συναχθήσονται πάντες, καὶ ἀκούσονται. τίς αὐτοῖς ἀνήγγειλε ταῦτα; ἀγαπῶν σε ἐποίησα (μ) τὸ θέλημά σου ἐπὶ 15 Βαβυλῶνα, τοῦ ἆραι σπέρμα Χαλδαίων. Ἐγὼ ἐλάλησα, ἐγὼ ἐκάλεσα, ἤγαγον αὐτὸν, 16 καὶ (˜) εὐόδωσα τὴν ὁδὸν αὐτοῦ. Προσαγάγετε πρός με, καὶ ἀκούσατε ταῦτα. οὐκ ἀπ᾽ ἀρχῆς ἐν κρυφῇ (ν) λελάληκα· ἡνίκα ἐγένετο, ἐκεῖ ἤμην, καὶ νῦν (ξ) κύριος κύριος ἀπέ17 σταλκέ με, καὶ τὸ πνεῦμα αὐτοῦ. (ο) Οὕτω λέγει κύριος, ὁ ῥυσάμενός σε, (π) ἅγιος Ἰσραὴλ, Ἐγώ εἰμι ὁ θεός σου, δέδειχά σοι τοῦ εὑρεῖν σε τὴν ὁδὸν ἐν ᾗ πορεύσῃ ἐν αὐτῇ. 18 Καὶ εἰ ἤκουσας τῶν ἐντολῶν μου, ἐγένετο ἂν ὡσεὶ ποταμὸς ἡ εἰρήνη σου, καὶ ἡ δικαιο19 σύνη σου ὡς κῦμα θαλάσσης. Καὶ ἐγένετο ἂν (ρ) ὡς ἡ ἄμμος τὸ σπέρμα σου, καὶ τὰ ἔκγονα τῆς κοιλίας σου ὡς ὁ χοῦς τῆς γῆς. οὐδὲ νῦν οὐ μὴ (σ) ἐξολοθρευθῇς, οὐδὲ ἀπο20 λεῖται τὸ ὄνομά σου (¨) ἐνώπιον ἐμοῦ. Ἔξελθε ἐκ Βαβυλῶνος φεύγων ἀπὸ τῶν Χαλδαίων, φωνὴν εὐφροσύνης ἀναγγείλατε, καὶ ἀκουστὸν γενέσθω τοῦτο, ἀναγγείλατε ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς· λέγετε, (τ) Ἐῤῥύσατο κύριος (υ) τὸν δοῦλον αὐτοῦ Ἰακώβ·

Et annuntiavi tibi (b) olim, quæ antequàm venirent ſuper te. Auditum tibi feci: ne forte diceres, Quia idola mihi fecerunt, & dicas, Quia ſculptilia & conflatilia mandaverunt mihi. Audiſtis omnia, & vos non cognoviſtis. Sed audita tibi feci nova à nunc, quæ futura ſunt. Et non dixiſti; Nunc fiunt, & non olim, & non prioribus diebus audiſti ea. Ne dicas, Etiam novi ea. Neque noſti, neque ſciſti: neque à principio aperui aures tuas. Scio enim quoniam prævaricans prævaricaberis, & iniquus adhuc ex utero vocaberis. Propter nomen meum oſtendam tibi furorem meum, & glorioſa mea inferam ſuper te; ut non te interficiam. Ecce vendidi te non propter argentum: eripui autem te de fornace paupertatis. Propter me faciam (c) tibi: quia nomen meum polluitur: & gloriam meam alteri non dabo. Audi me Jacob, & Iſrael, quem ego voco. Ego ſum primus, & ego ſum in ſempiternum: Et manus mea fundavit terram: & dextera mea firmavit cœlum. Vocabo eos, & ſtabunt ſimul, Et congregabuntur omnes, & audient. (d) Quis annuntiavit hæc? Diligens te feci voluntatem tuam ſuper Babylonem; ut auferrem ſemen Chaldæorum. Ego loquutus ſum, ego vocavi: adduxi eum, & proſperam feci viam ejus. Accedite ad me; & audite hæc. (e) Non à principio in abſcondito loquutus ſum: quando fiebat, ibi eram: & nunc Dominus Dominus miſit me, & ſpiritus ejus. Sic dicit Dominus, qui eruit te, Sanctus Iſrael; Ego ſum Deus tuus: oſtendi tibi ut invenires viam, in qua ambulabis in ea. Quòd ſi audiſſes mandata mea; facta eſſet ut flumen pax tua, & juſtitia tua, ſicut gurges maris. Et fuiſſet ſicut arena, ſemen tuum, & fœtus uteri tui, quaſi pulvis terræ. Neque nunc exterminaberis, neque peribit nomen tuum coram me. Egredere de Babylone, fugiens à Chaldæis: vocem lætitiæ annuntiate: & auditum facite hoc: annuntiate uſque ad extremum terræ: dicite, Liberavit Dominus ſervum ſuum Jacob.

MS.A. (ζ) τὰ πάλαι πρὶν (η) μὴ εἴπῃς, Ὅτι τὰ εἴδωλά μοι ἐποίησε, μὴ εἴπῃς, Τὰ (θ) ἀλλὰ καὶ (ι) Ὅτι ναὶ (κ) ἤνοιξα τὰ ὦτά σου· (λ) ἐπὶ σὲ, μὴ ἐξολεθρεύσω σε. (˘) οὐκ (μ) ταῦτα ἐπὶ Βαβυλῶνα, τὸ θέλημά σου τοῦ ἆραι (˜) εὐόδωσα, (ν) ἐλάλησα, οὐδὲ ἐν τόπῳ γῆς σκοτεινῷ· ἡνίκα (ξ) κύριος ἀπέσταλκέν (ο) Οὕτως (π) ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ, Δέδειχά σοι (ρ) ὡσεὶ ἄμμος (σ) ἐξολεθρευθῇς, (¨) ἐνώπιόν μου (τ) Ἐρύσατο (υ) τὸν λαὸν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 וחויתי לך מבכן עד לא ייתין בסרתך דלמא תימר דחלתי עבדתנון וצלמי ומתכי
6 אתכנון׃ שמעתא הא אתגליאת לכל עמא מה דאתגליאת לכון ואתון הלא תחוון
7 בסרתך חדתן מכען ונטירן ולא ידעתנון׃ כען אתבריאה ולא מבכן וקדם יום מיתיהון
8 ולא בסרתנון דלמא תימר הא ידעתנון׃ אף לא שמעת למלי נבייא אף לא קבילתא
אולפן אוריתא אף לפתגמי ברכן ולוטין קימי דאקמית עמכון בחורב לא ארכנתא
9 אודנך לקבלא ארי גלי קדמי דשקרא תשקר ומרוד ממעין יתקרי לך׃ בדיל שמי ארחיק
10 רוגזי ותושבחתי אקים לך בדיל דלא לשיצותך׃ הא צרפתך ולא בכסף בחרתך בדחוק
11 מסכינו׃ בדיל שמי בדיל מימרי אעביד דלא יתחל ויקרי דאתגליתי עליכון לעם אוחרן
12 לא אתן׃ קבילו למימרי דבית יעקב וישראל מזמני אנא הוא אנא הוא דמלקדמין אף
13 עלמי עלמיא דילי אנון ובר מני לית אלהא׃ אף במימרי שכלילית ארעא ובגבורתי
14 תלית שמיא קרית אנא להון קמו כחדא׃ אתכנשו כולכון ושמעו מן בהון חוי ית אלין
15 יי דרחם לה לישראל יעביד רעותיה בבבל ותקוף דרע גבורתיה יגלי בכסדאי׃ אנא
במימרי גזרית קים עם אברהם אבוכון אף רביתיה אעלתיה לארע בית שכנתי ואצלח
16 ית ארחיה׃ אתקרבו למימרי שמעו דא לא מן אולא בסתרא מללית מעדן דאתפרשו
עממיא מדחלתי תמן אברהם אבוכון קרבתיה לפולחני אמר נביא וכען יי אלהים
17 שלחני ומימריה׃ כדנן אמר יי פריקך קדישא דישראל אנא יי אלהך מליף לך להנאה
18 מחוי לך באורח דתהך׃ אלו אציתתא לפקודי והוי פון כשפע נהר פרת שלמך וזכותך
19 כגלי ימא׃ והוו פון סגין כחלא דימא בנך ובני בנך כפרודוהי לא יפסוק ולא ישתצי
20 שמיה דישראל מן קדמי לעלם׃ פוקו מבבל ערוקו ממדינת ארע כסדאי בקל תושבחתא
חוו ובסרו דא אפקוהא עד סיפי ארעא אמרו פרק יי עבדוהי דבית יעקב׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Annuntiavi enim tibi ex tunc : antequàm veniant, indicavi tibi : ne forte dicas; Idolũ meũ fecit illa, & ſimulacrũ meũ, et conflatile meũ firmavit ea. Nunquid audiſti utrùm revelatũ ſit omni populo id ꝙ revelatũ eſt vobis? & vos nonne annuntiabitis? nnntiavi tibi nova deinceps ; & conſervata, quæ neſcis. Nunc creata ſunt, & non ex tunc, & ante diẽ adventus eorum non annuntiavi ea, ne fortè dicas: Ecce ego cognovi ea. Nec enim audiſti verba prophetarũ, nec ſuſcepiſti doctrinã Legis, nec inclinâſti aurem ut ſuſciperes verba benedictionũ et maledictionũ pacti mei ꝙ ſtatui vobis in Horeb : quia manifeſtũ eſt corã me ꝙ prævaricans prævaricaberis, & transgreſſor ex utero vocaberis. Propter nomen meũ, longe faciam furorem meũ; & propter laudẽ meã ſuſtentabo te, ut non cõſumã te. Ecce conflavi te et non in argento; probavi te in anguſtia paupertatis. Propter nomẽ meũ, propter Verbũ meũ faciã ut non violetur: & gloriã meã, quã revelavi vobis, populo alteri non dabo. Obedite verbo meo dom⁹ Jacob, & Iſrael vocati mei: ego ipſe, ego ipſe qui ſum ab initio, etiam ſecula ſeculorũ mea ſunt, & abſque me non eſt De⁹. Etiam in verbo meo fundavi terrã, & in potentia mea appendi cœlos: vocavi eos, et ſteterunt ſimul. Congregamini omnes vos, & audite quis in *eis* annuntiet hæc. Dñs enim, *qui* dilexit Iſrael, faciet voluntatẽ ſuã in Babylonẽ, et fortitudinẽ brachii ſui revelabit in Chaldæos. Ego in verbo meo pepigi pactũ cum Abraham patre veſtro : etiam vocavi eum, & introduxi eum in terrã dom⁹ majeſtatis meæ: & direxi viam ejus. Accedite ad Verbũ meũ, audite hæc: non à principio in occulto locutus ſum: à tempore quo ſeparati ſunt populi à timore mei, indè applicavi Abraham *patrẽ veſtrũ* ad ſervitutẽ meam. Dixit propheta : Et nunc Dñs Deus miſit me, & Verbũ ej⁹. Hæc dicit Dñs redemptor tu⁹ Sanct⁹ Iſraelis: Ego Dñs De⁹ tuus, docens te profutura; indicans tibi viam in qua ambulabis. Si attendiſſes præceptis meis, eſſet utique quaſi inundatio fluminis Euphratis pax tua, & juſtitia tua ſicut fluct⁹ maris. Et eſſent utique filii tui multi ſicut arena maris, & filii filiorũ tuorum ſicut lapilli ej⁹ : non ceſſabit neque conſumetur nomen Iſraelis à facie mea in æternum. Egredimini de Babylone, fugite de provincia terræ Chaldæorũ: in voce laudis annuntiate, narrate hoc, & efferte illud uſque ad extrema terræ : dicite ; Redemit Dominus ſervos ſuos de domo Jacob.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܚܘܝܬܟ ܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܥܕܠܐ ܐܬܬ ܐܫܡܥܬܟ. ܕܠܐ ܬܐܡܪ. ܦܬܟܪ̈ܝ ܥܒܕܘ. ܘܓܠܝܦ̈ܝ
ܘܢܣܟ̈ܝ ܦܩܕܘܢܝ. * ܫܡܥܬ ܘܚܙܝܬ ܟܠܗܝܢ. ܘܐܢܬܘܢ ܠܐ ܚܘܝܬܘܢ. ܐܫܡܥܬܟ
ܚܕ̈ܬܬܐ ܕܡܢ ܗܫܐ ܟܣܝ̈ܢ. ܘܠܐ ܝܕܥܬ. * ܗܠܝܢ ܕܗܫܐ ܐܬܒܪܝ̈. ܘܠܐ ܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܡܢ ܩܕܡ
ܝܘܡܐ ܠܐ ܫܡܥܬ ܐܢܝܢ. ܕܠܐ ܬܐܡܪ. ܕܝܕܥ ܐܢܐ ܠܗܝܢ. * ܠܐ ܫܡܥܬ ܐܦܠܐ ܝܕܥܬ ܐܦ ܠܐ ܡܢ
ܩܕܝܡ ܠܐ ܐܬܦܬܚ ܐܕܢܝܟ. ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܡܕܓܠܘ ܡܕܓܠ ܐܢܬ. ܘܥܘܠܐ ܡܢ ܟܪܣܐ ܐܬܩܪܝܬ.
* ܡܛܠ ܫܡܝ ܐܘܪܟ ܪܘܓܙܝ. ܘܬܫܒܘܚܬܝ ܐܛܪ ܠܟ. ܘܠܐ ܐܘܒܕܟ. * ܗܐ ܨܪܦܬܟ. ܘܠܐ
ܒܟܣܦܐ. ܘܒܚܪܬܟ ܒܟܘܪܐ ܕܡܣܟܢܘܬܐ. * ܡܛܠܬܝ ܐܥܒܕ. ܕܠܐ ܐܬܛܘܫ. ܘܐܝܩܪܝ ܠܐܚܪܢܐ
ܠܐ ܐܬܠ. * ܫܡܥܘܢܝ ܝܥܩܘܒ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܕܩܪܝܬ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܐܢܐ ܐܢܐ ܐܚܪܝܐ. * ܘܐܝܕܝ
ܫܬܐܣܬ ܐܪܥܐ. ܘܝܡܝܢܝ ܬܩܢܬ ܫܡܝܐ. ܩܪܐ ܐܢܐ ܠܗܘܢ. ܘܩܝܡܝܢ ܐܟܚܕܐ.
* ܐܬܟܢܫܘ ܟܠܟܘܢ. ܘܫܡܥܘ. ܡܢܘ ܐܝܬ ܒܟܘܢ ܕܢܚܘܐ ܗܠܝܢ. ܡܪܝܐ ܨܒܐ ܕܢܥܒܕ
ܨܒܝܢܗ ܒܒܒܠ. ܘܒܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. * ܐܢܐ ܡܠܠܬ. ܘܐܦ ܩܪܝܬ. ܘܐܝܬܝܬܗ. ܘܐܨܠܚ
ܐܘܪܚܗ. * ܩܪܘܒܘ ܠܘܬܝ ܘܫܡܥܘ ܗܕܐ. ܕܠܘ ܡܢ ܫܘܪܝܐ ܒܛܘܫܝܐ ܡܠܠܬ. ܘܡܢ ܐܡܬܝ
ܕܗܘܬ ܬܡܢ ܐܢܐ. ܘܗܫܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܫܠܚܢܝ. ܘܪܘܚܗ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܦܪܘܩܟ
ܩܕܝܫܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܡܠܦ ܐܢܐ ܠܟ ܕܠܐ ܬܥܘܠ. ܘܡܚܘܐ ܐܢܐ ܠܟ ܐܘܪܚܐ
ܕܬܐܙܠ ܒܗ. * ܠܘ ܕܝܢ ܨܝܬܐ ܠܦܘܩܕܢܝ. ܘܗܘܐ ܫܠܡܟ ܐܝܟ ܢܗܪܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܟ ܐܝܟ
ܓܠܠܐ ܕܝܡܐ. * ܘܗܘܐ ܙܪܥܟ ܐܝܟ ܚܠܐ. ܘܝܠܕܐ ܕܟܪܣܟ. ܐܝܟ ܩܘܩܝܗ. ܘܠܐ ܢܫܬܘܨܐ
ܘܠܐ ܢܐܒܕ ܫܡܗ ܡܢ ܩܕܡܝ. * ܦܘܩܘ ܡܢ ܒܒܠ. ܥܪܘܩܘ ܡܢ ܟܠܕܝܐ. ܒܩܠܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ.
ܚܘܘ ܗܕܐ. ܘܫܡܥܘܗ ܘܦܩܘܗ ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܐܡܪܘ. ܦܪܩ ܡܪܝܐ
ܠܝܥܩܘܒ ܥܒܕܗ.

Attamen indicavi tibi multò ante, & antequam 5
eveniret, prænuntiavi : ne ergo dicas,
Idola mea fecerunt, & ſculptilia atque fuſilia
mea me ſervârunt. Audiſti et vidiſti omnia, 6
& vos annon annuntiabitis ? narro tibi nova
quæ ex hoc tempore ſunt recondita, & tu
ignoras, Quæ nunc creantur, non autem 7
jamdudum, quæ ante diem *hunc* non audiveras
: ut ne diceres, Noveram illa. Non audiveras, 8
nec noveras ea, neque antehac apertæ
fuerant aures tuæ : novi te eſſe omnino
mendacem, & ſceleratum ab utero vocatum
eſſe. Propter nomen meum prorogabo iram 9
meam, & gloriam meam ſervabo tibi, nec
perdam te. Ecce purgavi te, ſed non inter 10
argentum, probavi te in fornace paupertatis.
Propter me faciam, ne prophaner, & 11
honorem meum alteri ne tribuam. Audi me 12
Jacob, & Iſrael quem vocavi : ego ſum primus,
& ego ſum ultimus : Manus mea firmavit 13
fundamenta terræ, & dextera mea cœlos
aptavit : voco eos, & ſimul adſunt. Congregamini 14
omnes, & audite : Quis eſt inter
vos qui hæc indicet ? Dominus vult perficere
voluntatem ſuam in Babelem & in terram
Chaldæorum. Ego locutus ſum, atque etiam 15
vocavi, adducam rem iſtam, & iter ipſius
fauſtum reddam. Accedite ad me, & audite 16
hoc, quòd ab initio non ſum clàm locutus, et
ex eo tempore quo *id* fuit, ibi aderā : & nunc
Dominus Deus miſit me, & Spiritus ejus. Sic 17
dicit Dominus redemptor tuus, Sanctus Iſraelis
; Ego Dominus Deus tuus doceo te ne te
iniquè geras, & oſtendo tibi viam per quam
incedas. O utinam autem præberes præceptis 18
meis ; eſſet quidem pax tua tanquam flumen,
& juſtitia tua tanquam fluctus maris :
Eſſet ſemen tuum ſicut arena, & ſoboles viſcerum 19
tuorum ut glareæ ejus : & non conſumeretur,
neque periret nomen ejus à conſpectu
meo. Egredimini è Babele, fugite à 20
Chaldæis cum voce cantûs : indicate hoc,
narrate, & ad extremitates uſque terræ divulgate,
& dicite ; Liberavit Dominus Jacobum
ſervum ſuum :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* واخبرتك بما كان قديما قبل ان ياتي عليك · وصيرته لك مسموعا · لا تقل انهم صنعوا لي
الاوثان · ولا تقل ان المنحوتات والمسبوكات امروني * سمعتم بجميعها وانتم لم تعرفوا · بل
وصيرتها لك مسموعات الجديدات منذ الان التي ترمع ان تكون * ولست تقول · الان تكون ·
ولا قديما · ولا في الايام الاولي سمعتها · لا تقل نعم انني اعرفها * ولست تعرفها ولا صدقتها
ولم افتح اذانك منذ البدء · لانني عرفت انك عاص تعصي · وانتم من البطن تدعي * من
اجل اسمي اظهر لك غضبي · واجلب عليك تمجيداتي لكيلا استاصلك * ها عملتك
ليس من اجل فضة · وخلصتك من اتون الفقر * من اجلي اصنع لك لان اسمي تدنس
ومجدي لست اعطيه لاخر * اسمعني يا يعقوب · ويا اسرائيل الذي انا ادعوه · انا هو الاول
وانا انا الي الابد * ويدي اسست الارض · ويميني ثبتت السماء · ادعوهم ويقومون معا
* ويجتمعون جميعا ويسمعون من اخبرهم بهذا · اذ احببتك صنعت هذا على بابل · ارادتي
ان انزع زرع الكلدانيين * انا تكلمت · انا دعوت · جلبته وسهلت طريقه * تقدموا
الي واسمعوا هذا · لم اتكلم منذ البدء في خفية ولا في موضع مظلم من الارض · حين
كان كنت هناك · والان الرب ارسلني وروحه * هكذا يقول الرب منجيك قدوس اسرائيل
انا هو الرب الهك · قد اوضحت لك المنفعة لتجد طريقي التي فيها تسلك * فان سمعت
وصاياي صارت سلامتك اذن مثل النهر · وعدلك مثل امواج البحر * وصار زرعك اذن
مثل الرمل · واولاد بطنك مثل تراب الارض · ولا تستاصل منذ الان · ولا يبيد
اسمك من قدامي * اخرج من بابل · فر من الكلدانيين · اخبروا بصوت السرور
وليصر هذا مسموعا · اخبروا الي اخر الارض · وقولوا ان الرب نجا عبده يعقوب · ولم
يدعه ان يعطش ·

A tamen nuntiavi tibi quod fuerat olim, 5
priuſquam adveniret tibi, fecique tibi
notum. Ne dixeris, Operata ſunt in me
idola : néve dixeris, Sculptilia & fuſilia
præceperunt mihi. Audiveratis 6
omnia, at vos nequaquam reſipuiſtis :
veruntamen nota facio tibi ex hoc tempore
nova quæ ſunt futura : Adeoque 7
dicere non poteris, Nunc fiunt, non
autem olim : neque enim à priſcis diebus
audiveram ea. Ne dixeris, Equidem
noveram ea ; Quum neque noveris, 8
neque credideris ea, nec aperuerim aures
tuas ab initio, quòd ſcirem te rebellem
eſſe rebellantem, & Improbum ex utero
vocari. Propter nomen meum aperio 9
tibi furorem meum, & adducam ſuper
te laudes meas, ne te radicitùs vellam.
Ecce feci te non ob argenti quæſtum ; 10
& liberavi te à fornace miſeriæ. Propter 11
me facio tibi, quia nomen meum conſpurcatum
eſt ; gloriam verò meam alteri
non tribuam. Audi me O Jacob, 12
& O Iſrael quem ego voco : Ego ſum
primus, & ego ſum ego in æternum :
Manus mea terram fundavit, & dextera 13
mea cœlum firmavit : voco ea, ſimulque
ſtant. Unà congregantur, & 14
audiunt eum qui talia indicat eis. Quòd
te dilexerim, hæc ſum facturus contra
Babelem : voluntas mea eſt evellendi ſemen
Chaldæorum. Ego locutus ſum, 15
ego vocavi, adducam eum, & explanabo
viam ejus. Accedite ad me, & audite 16
hoc : Non ſum locutus à principio in
occulto nec in ullo tenebricoſo terræ loco
: quando fuit hoc, illic aderam : &
nunc Dominus miſit me, & Spiritus
ejus. Sic ait Dominus ſalvator tuus, 17
Sanctus Iſraelis ; Ego ſum Dominus Deus
tuus, jam declaravi tibi utilitatem,
ut invenias viam meam in qua ambules.
Quòd ſi acquieveris præceptis meis, 18
fiet ſanè pax tua ſicut fluvius, & juſtitia
tua ut undæ maris. Et erit quidem 19
ſemen tuum ut arena, & filii ventris
tui ut pulvis terræ : non extirpaberis in
poſterum, nec peribit nomen tuum à
conſpectu meo. Exi è Babele, fuge à 20
Chaldæis : læta voce prædicate, &
fiat id publicum, annuntiate uſque ad
extremitatem terræ, dicite, Sanè Dominus
eripuit populum ſuum Jacobum, nec
paſſus eſt eum ſitire :

petra de aquas , eos fecit ambulare deſerta per , ſitierunt non Et
21 ולא צמאו בחרבות הוליכם מים מצור
, pax Non .aquæ fluxerunt & , petram ſcidit & : eis fecit fluere
22 הזיל למו ויבקע־צור ויזבו מים: אין שלום
.impiis ,DOMINUS dixit
אמר יהוה לרשעים:

CAP. XLIX. מט

DOMINUS : longe de *nationes* attendite & ,me *ad inſulæ* Audite
1 שמעו איים אלי והקשיבו לאמים מרחוק יהוה
fecit memorare meæ matris *viſceribus* de , me vocavit utero ab
מבטן קראני ממעי אמי הזכיר
umbra in ,acutum gladium ſicut ,meum os poſuit Et .meum nomen
2 שמי: וישם פי כחרב חדה בצל
, terſam ſagittam in me poſuit & : me abſcondit ſuæ manus
ידו החביאני וישימני לחץ ברור
, tu meus Servus ,mihi dixit Et .me abſcondit ſua pharetra in
3 באשפתו הסתירני: ויאמר לי עבדי־אתה
vacuum In , dixi ego Et .gloriabor te in quia , Iſrael
4 ישראל אשר־בך אתפאר: ואני אמרתי לריק
profectò : conſumpſi meam fortitudinem vanè & *vanum in* ; laboravi
יגעתי לתהו והבל כחי כליתי אכן
.meo Deo cum meum opus & , DOMINO cum meum judicium
משפטי את־יהוה ופעלתי את־אלהי:
, ſibi ſervum in utero ex me formans DOMINUS dixit nunc Et
5 ועתה אמר יהוה יצרי מבטן לעבד לו
ero glorioſus & : *colligetur* non Iſrael & ,eum ad Jahacob *reducendum ad*
לשובב יעקב אליו וישראל לא יאסף ואכבד
.mea fortitudo fuit meus Deus & , DOMINI oculis in
בעיני יהוה ואלהי היה עזי:
tribus ſuſcitandum ad *ſervum* mihi *te eſſe ab* eſt Leve , dixit Et
6 ויאמר נקל מהיותך לי עבד להקים את־שבטי
lucem in te dedi & : convertendum ad Iſrael *ſervatos* & , Jahacob
יעקב ונצירי ישראל להשיב ונתתיך לאור
.terræ extremum ad uſque *meam ſalutem* *exiſtendum ad* , gentium
גוים להיות ישועתי עד־קצה הארץ:
contemptum ad ,ejus ſanctus Iſrael redemptor Dominus dixit Sic
7 כה אמר־יהוה גאל ישראל קדושו לבזה־
, videbunt reges , dominorum ſervum ad ,gentem abominatã ad ,*anima*
נפש למתעב גוי לעבד משלים מלכים יראו
; fidelis quia ,Dominum propter : ſe incurvabunt &,principes;ſurgent &
וקמו שרים וישתחוו למען יהוה אשר נאמן
tempore In ,DOMINUS dixit Sic .te elegit & ,Iſrael Sanctum
8 קדש ישראל ויבחרך: כה אמר יהוה בעת
,te cõſervabo &:tibi ſum auxiliat⁹ ſalutis die in &,te exaudivi *voluntatis*
רצון עניתיך וביום ישועה עזרתיך ואצרך
faciendũ hæreditare ad,terram ſuſcitandũ ad,populi fœdus in te dabo &
ואתנך לברית עם להקים ארץ להנחיל
qui iis :Exite , vinctis dicendum Ad .deſolatas hæreditates
9 נחלות שממות: לאמר לאסורים צאו לאשר
omnibus in & ,paſcentur vias ſuper : vos Manifeſtate , *tenebroſitate* in
בחשך הגלו על־דרכים ירעו ובכל־
non & , ſitient neque eſurient Non .eorum *paſcuum* *locis editis*
10 שפיים מרעיתם: לא ירעבו ולא יצמאו ולא־
ad & eos deducet corũ miſerator quia : ſol nec , æſtus eos percutiet
יכם שרב ושמש כי־מרחמם ינהגם ועל־
: viam *in meos montes omnes* ponam Et .eos ducet aquarum *ſcaturigines*
11 מבועי מים ינהלם: ושמתי כל־הרי לדרך
.exaltabuntur meæ *ſtratæ viæ* &
ומסלתי ירמון:

Verſio VULG. LAT.

21 Non ſitierunt in deſerto , cùm
educeret eos : aquã de petra
produxit eis,& ſcidit petram,
22 & fluxerunt aquæ. Non eſt pax
impiis, dicit Dominus.

CAP. XLIX.

1 Audite inſulæ, & attendite
populi de longè : Dñs ab utero
vocavit me, de ventre matris
meæ recordat⁹ eſt nominis
2 mei. Et poſuit os meum quaſi
gladiũ acutũ : in umbra man⁹
ſuæ protexit me, & poſuit me
ſup ſagittã electã: in pharetra
3 ſua abſcondit me. Et dixit mihi;
Serv⁹ me⁹ es tu Iſrael,quia
4 in te gloriabor. Et ego dixi ;
In vacuũ laboravi, ſine cauſa,
& vanè fortitudinẽ meã conſumpſi:
ergò judiciũ meũ cum
Dño,et op⁹ meũ cũ Deo meo.
5 Et nunc dicit Dominus. formans
me ex utero ſervũ ſibi,
ut reducam Jacob ad eum, &
Iſrael non congregabitur : &
glorificatus ſum in oculis Domini,
& Deus meus factus eſt
6 fortitudo mea. Et dixit ; Parum
eſt ut ſis mihi ſervus ad
ſuſcitandas tribus Jacob , &
fæces Iſrael cõvertendas. Ecce
dedi te in lucem Gentium, ut
ſis ſalus mea uſque ad extre-
7 mum terræ. Hæc dicit Dominus
redemptor Iſrael,Sanctus
ejus, ad contemptibilem animam,
ad abominatam gentẽ,
ad ſervũ dominorũ;Reges videbunt,
& conſurgent principes ,
& adorabunt propter
Dominum, quia fidelis eſt, &
Sanctum Iſrael qui elegit te.
8 Hæc dicit Dominus ; In tempore
placito exaudivi te, &
in die ſalutis auxiliatus ſum
tuî : & ſervavi te, & dedi te
in fœdus populi,ut ſuſcitares
terram, & poſſideres hæredi-
9 tates diſſipatas : Ut diceres
his, qui vincti ſunt; Exite :
& his, qui in tenebris ; Revelamini.
Super vias paſcentur,
& in omnibus planis
10 paſcua eorum. Non eſurient,
neque ſitient, & non percutiet
eos æſtus & Sol : quia
miſerator eorum reget eos ,
& ad fontes aquarum potabit
11 eos. Et ponam omnes montes
meos in viam, & ſemitæ
meæ exaltabuntur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

21 Καὶ ἐὰν διψήσωσι, δι' ἐρήμου ἄξει αὐτοὺς,
ὕδωρ ἐκ πέτρας ἐξάξει αὐτοῖς· σχισθήσεται
πέτρα, ϗ ῥυήσεται ὕδωρ, ϗ πίεται ὁ
22 λαός μου. Οὐκ ἔστι χαίρειν (φ), λέγει κύριος,
τοῖς ἀσεβέσιν.

MS. A. (φ) τοῖς ἀσεβέσιν, λέγει κύριος.

ΚΕΦ. μθ'.

1 Ἀκούσατέ μου νῆσοι, ϗ προσέχετε ἔθνη,
Διὰ χρόνου πολλοῦ στήσεται, λέγει κύριος,
ἐκ κοιλίας μητρός μου ἐκάλεσε τὸ ὄνομά
2 μου, Καὶ ἔθηκε τὸ στόμα μου (α) ὡς μάχαιραν
ὀξεῖαν, ϗ ὑπὸ τὴν σκέπην τῆς χειρὸς
αὐτοῦ ἔκρυψέ με· ἔθηκέ με ὡς βέλος
ἐκλεκτὸν, ϗ ἐν τῇ φαρέτρᾳ αὐτοῦ (β) ἔκρυ-
3 ψέ με. Καὶ εἶπέ μοι, Δοῦλός μου εἶ σὺ
4 Ἰσραὴλ, ϗ ἐν σοὶ () ἐνδοξασθήσομαι. Καὶ ἐγὼ
εἶπα, Κενῶς ἐκοπίασα, (γ) εἰς μάταιον
ϗ εἰς (δ) οὐδὲν ἔδωκα τὴν ἰσχύν μου·
διὰ τοῦτο ἡ κρίσις μου παρὰ (ε) κυρίῳ, ϗ ὁ
5 πόνος μου ἐναντίον τοῦ θεοῦ μου. Καὶ νῦν
(ζ) οὕτω λέγει κύριος, ὁ πλάσας με ἐκ κοιλίας
δοῦλον ἑαυτῷ, τοῦ συναγαγεῖν τὸν Ἰακὼβ
(η) πρὸς αὐτὸν, ϗ Ἰσραήλ. Συναχθήσομαι
ϗ δοξασθήσομαι ἐναντίον κυρίου,
6 ϗ ὁ θεός μου ἔσται (θ) μοι ἰσχύς. Καὶ εἶπέ
μοι, Μέγα σοι ἐστὶ τοῦ κληθῆναί σε παῖδά
μου, τοῦ στῆσαι τὰς φυλὰς Ἰακὼβ, ϗ τὴν διασπορὰν
τοῦ Ἰσραὴλ ἐπιστρέψαι. ἰδοὺ (ι) δέδωκά
σε εἰς διαθήκην γένους, εἰς φῶς ἐθνῶν,
τοῦ εἶναί σε εἰς σωτηρίαν ἕως ἐσχάτου τῆς
7 γῆς. Οὕτως λέγει κύριος, ὁ ῥυσάμενός σε,
ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ἁγιάσατε τὸν φαυλίζοντα
τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, τὸν βδελυσσόμενον ὑπὸ
τῶν ἐθνῶν τῶν δούλων τῶν ἀρχόντων. Βασιλεῖς
ὄψονται αὐτὸν, ϗ ἀναστήσονται ἄρχοντες
ϗ προσκυνήσουσιν αὐτῷ, ἕνεκεν κυρίου·
ὅτι πιστός ἐστιν ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ, ϗ ἐξελε-
8 ξάμην σε. Οὕτως λέγει κύριος, Καιρῷ
δεκτῷ ἐπήκουσά σου, ϗ ἐν ἡμέρᾳ σωτηρίας
ἐβοήθησά σοι, (κ) ϗ ἔπλασά σε, ϗ ἔδωκά
σε εἰς διαθήκην ἐθνῶν τοῦ καταστῆσαι τὴν
γῆν, ϗ κληρονομῆσαι (λ) κληρονομίας ἐ-
9 ρήμους, Λέγοντα τοῖς ἐν δεσμοῖς, Ἐξέλθατε,
ϗ τοῖς ἐν τῷ σκότει, ἀνακαλυφθῆναι.
(μ) ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς βοσκηθήσονται,
ϗ ἐν πάσαις ταῖς τρίβοις ἡ νομὴ αὐ-
10 τῶν. Οὐ πεινάσουσιν, οὐδὲ διψήσουσιν, (ν) οὐδὲ
πατάξει αὐτοὺς ὁ καύσων, οὐδὲ ὁ ἥλιος,
(ξ) ἀλλ' ὁ ἐλεῶν αὐτοὺς παρακαλέσει, ϗ διὰ
11 πηγῶν ὑδάτων ἄξει αὐτούς. Καὶ θήσω πᾶν
ὄρος εἰς ὁδὸν, ϗ πᾶσαν τρίβον εἰς βόσκημα
αὐτοῖς.

MS. A. (α) ὡσεὶ (β) ἐσκέπασέν () δοξασθήσομαι. (γ) ϗ εἰς [illegible] (ε) κυρίου, (ζ) οὕτως (η) ϗ Ἰσραὴλ πρὸς αὐτόν. (θ) μου (ι) τέθεικα εἰς φῶς ἐθνῶν, (κ) ϗ ἔδωκά σε (λ) κληρονομίαν ἐρήμου, (μ) ϗ ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν (ν) οὐδὲ μὴ (ξ) ἀλλὰ

E, [illegible] ſitierint, per deſertum ducet eos, aquam de petra educet [illegible]: ſcindetur petra, & [illegible] aqua, & bibet populus meus. [illegible] eſt gaudere, dicit Dominus, [illegible] piis.

CAP. XLIX.

Audite (a) me inſulæ & attendite gentes. Poſt multum tempus ſtabit, dicit Dominus: Ex utero matris meæ vocavit nomen meum: Et poſuit os meum quaſi gladium acutum: & ſub protectione manus ſuæ abſcondit me. Poſuit me, quaſi ſagittam electam: & in pharetra ſua abſcondit me. Et dixit mihi: Servus meus es tu, Iſrael: & in te glorificabor. Et ego dixi, In vacuum laboravi: in vanum, & in nihilum dedi fortitudinem meam: Propterea judicium meum coram Dominum: & labor meus coram Deo meo. Et nunc ſic dicit Dominus, qui formavit me ex utero ſervum ſibi; ut congregem Jacob ad eum, & Iſrael: Congregabor, & glorificabo coram Domino: & Deus meus erit mihi fortitudo. Et dixit, [illegible] gnum tibi eſt, ut [illegible] us, ut ſuſcites tribus [illegible] diſperſionem Iſrael convertas. Ecce dedi te in (c) teſtamentum generis, in lucem gentium: [illegible] ſalutem uſque ad extremum terræ. Sic dicit Dominus, qui [illegible] te, Deus Iſrael. Sanctificate (d) qui deſpicit animam [illegible] abominatur à gentibus ſervis principum. Reges videbunt eum, & conſurgent principes, & adorabunt eum propter Dominum, quia fidelis eſt Sanctus Iſrael, & (f) elegi te. Sic dicit Dominus, Tempore accepto exaudivi te, & in die ſalutis auxiliatus ſum [illegible] & plaſmavi te, & dedi te in teſtamentum gentium; ut [illegible] eres terram, & poſſideres hæreditates deſertas, Dicens his, qui in vinculis ſunt, Exite; & [illegible] in tenebris, ut revelemini. [illegible] mnibus viis paſcentur: & [illegible] omnibus ſemitis paſcua eorum. Non eſurient, neque ſitient, neque percutiet eos æſtus, neque Sol: [illegible] qui miſeretur eorum, [illegible] eos, & per fontes aquarum [illegible] illos. Ponamque omnem montem [illegible] in viam, & omnem ſemitam in paſcuam eis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

21 ולא אצחנון בחרבתא דדברנון מיא מטינרא אפיק להון ובזע טינרא ונגידו מיא: לית
22 שלם אמר יי לרשיעיא:

מט

1 קבילו נגון למימרי ואציתו מלכון מרחיק יי עד לא הויתי ומנני ממעי אמי אדכר שמי:
2 ושוי פתגמוהי בפומי כחרב חריפא בטלל גבורתיה אגן עלי ושויני כגיר בחיר די בבית
3 4 אונין מסתר: ואמר לי עבדי את ישראל דבך אשתבח: ואנא אמרית לריקנו לאיתי
5 ללמא ולא מדעם חילי שציתי ברם דיני גלי קדם יי ואגר עובדי קדם אלהי: וכען אמר
יי דאתקנני ממעין למהוי עבד פלח קדמוהי לאתבא דבית יעקב לפולחניה וישראל
6 לרחלתיה יתקרב ויקרנא קדם יי ומימר אלהי הוה בסעדי: ואמר הזעיר לכון דאתון
מתקרן עבדי לאקמא ית שבטי יעקב וגלות ישראל לאתבא ואתננך לנהור עממין
7 למהוי פורקני עד סיפי ארעא: כדנן אמר יי פרקיה דישראל קדישיה לדבסירין בני
עממיא לדמטלטלין ביני מלכותא לדהוו עבדין לשלטונין להון מלכין יחזון ויקומון
8 רברבין ויסגדון בדיל יי דמהימן קדישא דישראל ואתרעי בך: כדנן אמר יי בעדן
דאתון עבדין רעותי אנא מקביל צלותכון וביום עקא אנא מקים פורקן וסעד לכון
ואתקננך ואתננך לקים עם לאקמא צדיקיא דשכבין בעפרא לאחסנא ירותין דצדין:
9 למימר לדאסירין ביני עממיא פוקו ולדעגינין ביני מלכותא כד בקבלא אתגלו לנהור
10 על ארחן ישרון ובכל נגדין בית משריהון: לא יכפנון ולא יצחון ולא ילקנון שרבא
11 ושמשא ארי דעתיד לרחמא עליהון ידברנון ועל מבועי מיין ישרנון: ואשוי כל טוריא
כבישין קדמיהון כאורח וכבשיא ירומון:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et non fecit eos ſitire in deſertis; deduxit eos : aquam de petra edu
& ſcidit petram, & fluxerunt aquæ. Non eſt pax, dicit Dominus,

CAP. XLIX.

OBedite inſulæ *verbo meo*, & auſcultent regna à longè: Dominus
quam eſſem præparavit me ; ab utero matris meæ recordatus eſt
mei. Et poſuit verba ſua in ore meo quaſi gladium acutum : in um
tentiæ ſuæ protexit me : & poſuit me quaſi ſagittam electam, quæ
dita eſt in pharetra. Et dixit mihi : Servus meus es tu Iſrael,
laudabor. Et ego dixi : In vacuum laboravi, in vanum & in nihilum
titudinem meam conſumpſi : veruntamen judicium meum mani
coram Domino, & merces operum meorum coram Deo meo. Et
cit Dominus qui præparavit me ex utero, ut ſim ſervus miniſtrans
eo; ut convertam domum Jacob ad ſervitutem ejus : & Iſrael ad
ejus applicabitur, & *glorificabor* coram Domino, & Verbum Dei me
in adjutorium meum. Et dixit : Nunquid parum vobis eſt quod vos
mini ſervi mei ad ſuſcitandas tribus Jacob, & ad convertendam capt
tem Iſrael? Dabo etiam te in lucem populorum, ut ſis ſalus mea uſque
trema terræ. Hæc dicit Dominus redemptor Iſrael, & ſanctus ejus,
contempti ſunt inter populos, & his qui tranſmigraverunt inter reg
qui ſerviebant dominatoribus : hos videbunt reges, & conſurgent; p
pes, & adorabunt, propter Dominum qui fidelis eſt, Sanctus Iſrael, &
te. Hæc dicit Dominus : In tempore quo vos facitis voluntatem mea
ſuſcipio orationes veſtras, & in die tribulationis ego ſuſcito ſalutem
jutorium vobis : præparavi enim & dedi te in pactum populi, ut ſuſ
juſtos qui jacent in pulvere, ut poſſideres hæreditates deſolatas : Et
his qui vincti ſunt inter populos, Exite ; & his qui retenti ſunt inter
ſicut in tenebris, Revelamini in lucem. In viis habitabunt, & in om
rivis erit locus habitationis eorum. Non eſurient nec ſitient, neque
tiet eos æſtus & Sol ; quia qui miſerturus eſt eorum reget eos, et
tes aquarum habitare faciet eos. Ponam omnes montes ſtratos coram eis in viæ morem, et ſemitæ eleva

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܚܘܪܒܐ ܕܒܪ ܐܢܘܢ. ܘܡܝܐ ܡܢ ܫܘܥܐ ܐܦܩ ܠܗܘܢ. ܒܙܥ ܫܘܥܐ. ܘܪܕܘ ܡܝܐ. * ܠܝܬ
ܫܠܡܐ ܠܪܫܝܥܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܡܛ *
* ܫܡܥܘ ܓܙܪܬܐ ܘܨܘܬܘ ܥܡܡܐ : ܡܢ ܪܘܚܩܐ ܡܪܝܐ ܩܪܢܝ. ܘܡܢ ܡܪܒܥܐ ܘܡܢ
ܟܪܣܗ ܕܐܡܝ ܐܬܕܟܪ ܫܡܝ. * ܥܒܕ ܦܘܡܝ ܐܝܟ ܣܦܣܝܪܐ ܚܪܝܦܐ. ܘܒܛܠܠܐ ܕܐܝܕܗ
ܛܫܢܝ. ܥܒܕܢܝ ܐܝܟ ܓܐܪܐ ܓܒܝܐ. ܘܒܩܘܠܒܗ ܛܫܢܝ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܥܒܕܝ ܐܢܬ
ܐܝܣܪܝܠ ܕܒܟ ܡܫܬܒܗܪ ܐܢܐ. * ܘܠܐ ܐܡܪܬ ܠܙܪܥܗ ܕܝܥܩܘܒ ܕܣܪܝܩܐܝܬ ܠܐܝܬ
ܘܚܝܠܝ ܠܣܪܝܩܘܬܐ ܐܫܪܝܬ. ܫܪܝܪܐܝܬ ܕܝܢܝ ܠܘܬ ܡܪܝܐ. ܘܥܒܕܝ ܠܘܬ ܐܠܗܝ. * ܘܗܫܐ
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ . ܕܓܒܠܢܝ ܡܢ ܟܪܣܐ ܕܐܗܘܐ ܠܗ ܥܒܕܐ : ܕܐܦܢܐ ܠܝܥܩܘܒ ܠܘܬܗ
ܘܐܝܣܪܝܠ ܐܟܢܫ. ܘܐܫܬܒܚܬ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܠܗܝ ܗܘܐ ܥܘܫܢܝ. * ܘܐܡܪܬ. ܐܢܘ ܝܬܝܪܐ
ܕܬܗܘܐ ܠܝ ܥܒܕܐ . ܠܡܩܡܘ ܫܒܛܐ ܕܝܥܩܘܒ . ܘܠܡܦܢܝܘ ܢܨܒܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ . ܝܗܒܬܟ
ܢܘܗܪܐ ܠܥܡܡܐ . ܕܬܗܘܐ ܦܘܪܩܢܝ . ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ . * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܘܦܪܘܩܗ . ܠܡܫܝܛܐ ܕܢܦܫܐ . ܠܡܣܠܝܐ ܕܥܡܐ . ܘܥܡ ܥܒܕܐ ܘܥܡ
ܥܒܕܐ ܕܫܠܝܛܢܐ . ܡܠܟܐ ܢܚܙܘܢ ܘܢܩܘܡܘܢ. ܘܫܠܝܛܢܐ ܢܣܓܕܘܢ ܠܗ. ܡܛܠ
ܡܪܝܐ ܕܡܗܝܡܢ. ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܕܓܒܟ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܒܙܒܢܐ ܕܪܥܝܢܐ
ܥܢܝܬܟ. * ܘܒܝܘܡܐ ܕܦܘܪܩܢܐ ܥܕܪܬܟ. ܘܓܒܠܬܟ ܘܝܗܒܬܟ ܩܝܡܐ ܠܥܡܐ. ܘܢܘܗܪܐ
ܠܥܡܡܐ . ܕܬܩܝܡ ܐܪܥܐ . ܘܬܐܪܬ ܝܪܬܘܬܐ ܕܚܘܪܒܐ. * ܘܬܐܡܪ ܠܐܣܝܪܐ . ܦܘܩܘ. ܘܠܕܒܚܫܘܟܐ
ܐܬܓܠܘ. ܥܠ ܐܘܪܚܬܐ ܢܪܥܘܢ. ܘܒܟܠܗܘܢ ܫܒܝܠܐ ܡܪܥܝܬܗܘܢ. * ܠܐ ܢܟܦܢܘܢ ܘܠܐ 10
ܢܨܗܘܢ . ܘܠܐ ܢܡܚܐ ܐܢܘܢ ܫܘܒܐ ܘܫܡܫܐ . ܡܛܠ ܕܡܪܚܡܢܗܘܢ ܢܕܒܪ ܐܢܘܢ . ܘܒܡܒܘܥܐ
ܕܡܝܐ ܢܣܒܠ ܐܢܘܢ. * ܘܐܥܒܕ ܟܠܗܘܢ ܛܘܪܐ ܠܐܘܪܚܐ. ܘܫܒܝܠܐ ܢܬܪܝܡܘܢ. 11

Per ſolitudines duxit eos, & aquas è rupe 21
profudit eis;rupit petrã, & effluxerunt aquæ.
Non eſt pax impiis, dicit Dominus. 22

CAP. XLIX.

Audite inſulæ, & auſcultate populi : A 1
longinquo *tempore* Dominus vocavit me,ab
utero & à ventre matris meæ recordatus eſt
nominis mei : Effecit os meum ut gladium 2
acutum, & umbrâ manus ſuæ abſcondit me :
fecit me tanquam ſagittam electam,& in pha-
retra ſua abdidit me. Tum dixit mihi, Ser- 3
vus meus es : Iſrael, *tu es* in quo glorıabor.
Et non dixi ſemini Jacobi quòd fruſtrà labo- 4
verim, & vires meas expoſuerim vanitati :
verè cauſa mea coram Domino eſt, & opus
meum coram Deo meo. Nunc ita dicit Do- 5
minus qui me formavit in utero ut ſervus ejus
eſſem,ut Jacobum ad eum reducerem, & con-
gregarem Iſraelem (gloriam aſſecutus ſum
apud Dominum, & Deus meus fuit robur
meum,) Dicit, inquam ; Parvine res eſt 6
momenti eſſe te mihi ſervum, tribum Jacobi
reſtaurare, et virgultum Iſraelis reducere?de-
di te lucem gentibus, ut ſis ſalus mea uſque
ad extrema terræ. Sic dicit Dominus, San- 7
ctus Iſraelis, et redemptor ejus ; Eum, cujus
anima deſpicitur, qui abominandus eſt apud
populum et apud ſervos principum ; reges vi-
dentes,aſſurgent;et principes adorabunt eum
propter Dominum qui fidelis eſt, Sanctum
Iſraelis qui elegit te. Sic ait Dominus,Tem- 8
pore placito exaudiam te, et in die ſalutis au-
xiliabor tibi, formabo te, dabóque te in fœ-
dus populo, et lucem gentibus ; ut reſtaures
terram,et acquiras poſſeſſionem ſolitudinum;
Dicáſque vinctis, Egredimini ; et carcere de- 9
tentis, Præbete vos : ſuper vias paſcentur, et
in omnibus ſemitis erunt paſcua eorum :
Non eſurient, neque ſitient, neque nocebit 10
eis æſtus aut ſol : quoniam qui miſeretur eo-
rum, ducet eos ; et ad fontes aquarum per-
ducet illos. Montes omnes efficiam vias, & 11
ſemitæ elevabuntur.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* اقاده في البرية · اخرج له ماء من صخر * انشقت الصخر وسال الماء وشرب شعبي · 21
* وليس للمنافقين ان يفرحوا قال الرب · 22

* الفصل التاسع والاربعون ·

* اسمعن لي ايها الجزاير · انصتوا ايها الامم · لاجل زمن كثير يقوم قال الرب · من بطن 1
امي دعا اسمي * وجعل فمي مثل السيف الحاد · وتحت ستر يده اخفاني · جعلني مثل سهم 2
مختار · وفي جعبته سترني * وقال لي · عبدي انت يا اسرايل وبك امتجد * وانا قلت تعبت 3
باطلا · والى الباطل والى لا شي اعطيت قوتي · لاجل هذا قضايي من قبل الرب 4
وعناي امام الهي * والان هكذا قال الرب الذي جبلني من البطن عبدا له · لاجمع يعقوب 5
والم اسرايل اليه · وامتجد امام الرب · والهي يكون لي قوة * وقال لي عظيم هو لك ان 6
تدعى عبدي · لتقيم قبايل يعقوب وترد تفرق اسرايل · ها اعطيتك عهدا للاجناس ونورا
للامم · لتكون خلاصا الى اخر الارض ·

الاصحاح الرابع والعشرون ·

* هكذا يقول الرب منقذك قدوس اسرايل · قدسوا الذي رذل نفسه المرذول من الامم عبيد 7
الروساء · يروه الملوك ويقوم الروساء ويسجدون له من اجل الرب · لانه امين قدوس اسرايل
واختارك * هكذا يقول الرب · في زمن مقبول استجبت لك · وفي يوم الخلاص اعنتك · وجبلتك 8
واعطيتك وجعلتك عهدا للامم · لتقيم الارض وترث ميراث البرية * قايلا للذين في الرباطات 9
اخرجوا · والذين في الظلام تكشفوا · وفي كل الطرق يرعون · وفي كل السبل مرعى لهم * لا 10
يجوعون ولا يعطشون · ولا يضربهم السموم ولا الشمس · لكن الذي يرحمهم يعزيهم · والى
ينابيع المياه يقتادهم * واصنع كل جبل طريقا · وكل سبيل مرعى لهم · 11

Deduxit eum per deſertum, aquam è pe- 21
tra elicuit ei ; fiſſa eſt petra, & effluxit
aqua, bibitque populus meus : Nec eſt 22
improbis quod lætentur,inquit Dominus.

CAP. XLIX.

Audite me O inſulæ, aures præbete O 1
populi : poſt longum temporis intervallum
exurget, ait Dominus : ab utero matris
meæ vocavit nomen meum. Fecit os me- 2
um ut gladium acuminatum, & ſub pro-
tectione manûs ſuæ abſcondit me : fe-
cit me ut ſagittam electam, & in phare-
tra ſua abſcondit me : Dixitque mihi, 3
Servus meus es O Iſrael,& in te glorior.
Ego verò dixi, Fruſtrà laboro, & in 4
vanum & abs re vires meas inſumo:
propterea à Domino judicium meum eſto,
& cura mea coram Deo meo. Nunc au- 5
tem ſic ait Dominus qui formavit me ab
utero ſervum ſibi, ut congregem Jaco-
bum & colligam Iſraelem ad ipſum, &
gloriam acquiram apud Dominum, Deo
vires mihi ſuppeditante : Ait, inquam, 6
mihi ; Eximia tibi res eſt vocari ſervum
meum ad erigendas tribus Jacobi, &
reſtituendam diſperſionem Iſraelis : ecce
conſtituo te fœdus omnigenis nationibus,
& lucem gentibus, ut ſis ſalus uſque ad
finem terræ.

Textus vigeſimus quartus.

Sic ait Dominus vindex tuus, Sanctus 7
Iſraelis ; Sanctificate eum qui ſprevit
animam ſuam, deſpectum à gentibus ſer-
vis principum : videbunt eum reges, &
aſſurgentes principes adorabunt eum
propter Dominum, quia fidelis eſt San-
ctus Iſraelis,& elegi te.Sic ait Dominus, 8
Tempore accepto exaudivi te, & in die
ſalutis adjuvi te, formavi te, & con-
ſtitui fecique te fœdus populi, ut erigas
terram, & acquiras hæreditatem de-
ſerti : Dicens iis qui ſunt in vinculis, 9
Egredimini ; & iis qui in tenebris, Re-
velamini : in omnibus viis paſcentur,
& in omnibus ſemitis erit eis paſcuum.
Non eſurient neque ſitient, neque feriet 10
eos ventus calidus neque ſol ; ſed is qui
miſeretur eorum, recreabit illos, & ad
fontes aquarum deducet eos. Omnes 11
montes in viam, & omnes ſemitas in
paſcuum diſponam eis.

,mari à & ,aquilone ab isti ecce & : venient longinquo à isti Ecce
12 הִנֵּה־אֵלֶּה מֵרָחוֹק יָבֹאוּ וְהִנֵּה־אֵלֶּה מִצָּפוֹן וּמִיָּם
conclamate & ,terra exulta & , cœli dicit Præconia Sinim terra de isti &
13 וְאֵלֶּה מֵאֶרֶץ סִינִים׃ רָנּוּ שָׁמַיִם וְגִילִי אֶרֶץ יִפְצְחוּ
suorū afflictorū &,suū populū Dominus est consolat⁹ quia : præconio montes
הָרִים רִנָּה כִּי־נִחַם יְהוָה עַמּוֹ וַעֲנִיָּו
Dominus & : Dominus me Dereliquit , Sijon Dixitque .miserebitur
14 יְרַחֵם׃ וַתֹּאמֶר צִיּוֹן עֲזָבַנִי יְהוָה וַאדֹנָי
filii miserendo à ,sui lactentis mulier obliviscetur Nunquid .mei est oblitus
15 שְׁכֵחָנִי׃ הֲתִשְׁכַּח אִשָּׁה עוּלָהּ מֵרַחֵם בֶּן־
Ecce .tui obliviscar non ego at , obliviscantur istæ etiam ? sui uteri
16 בִּטְנָהּ גַּם־אֵלֶּה תִשְׁכַּחְנָה וְאָנֹכִי לֹא אֶשְׁכָּחֵךְ׃ הֵן
Festinaverunt .semper me coram tui muri : te exaravi volis super
17 עַל־כַּפַּיִם חַקֹּתִיךְ חוֹמֹתַיִךְ נֶגְדִּי תָּמִיד׃ מִהֲרוּ
circum Leva .exibunt te à ,te destruentes &,te demolientes :tui structores
18 בָּנָיִךְ מְהָרְסַיִךְ וּמַחֲרִבַיִךְ מִמֵּךְ יֵצֵאוּ׃ שְׂאִי־סָבִיב
Vivens : tibi venerunt ,se congregaverunt isti omnes : vide & ,tuos oculos
עֵינַיִךְ וּרְאִי כֻּלָּם נִקְבְּצוּ בָאוּ־לָךְ חַי־
: te vesties ornamento ut his omnibus quia ,Dominus dixit ego
אָנִי נְאֻם־יְהוָה כִּי כֻלָּם כַּעֲדִי תִלְבָּשִׁי
terra & ,tuæ solitudines & ,tua deserta Quia .sponsa tanquā ,eos ligabis &
19 וּתְקַשְּׁרִים כַּכַּלָּה׃ כִּי חָרְבֹתַיִךְ וְשֹׁמְמֹתַיִךְ וְאֶרֶץ
se elongabunt & , incola ab erit arcta nunc nam : tuæ destructionis
הֲרִסֻתֵךְ כִּי עַתָּה תֵּצְרִי מִיּוֹשֵׁב וְרָחֲקוּ
: tuarū orbitatum filii tuis auribus in dicent Adhuc .te absorbentes
20 מְבַלְּעָיִךְ׃ עוֹד יֹאמְרוּ בְאָזְנַיִךְ בְּנֵי שִׁכֻּלָיִךְ
dices Et .habitabo & ,mihi accede ; locus mihi est angustus
21 צַר־לִי הַמָּקוֹם גְּשָׁה־לִּי וְאֵשֵׁבָה׃ וְאָמַרְתְּ
, solitaria & , orbata ego & ? istos mihi genuit Quis ,tuo corde in
בִּלְבָבֵךְ מִי יָלַד־לִי אֶת־אֵלֶּה וַאֲנִי שְׁכוּלָה וְגַלְמוּדָה
:ego sola remansi ego En ? evexit quis istos & : recedens &,demigrans
גֹּלָה וְסוּרָה וְאֵלֶּה מִי גִדֵּל הֵן אֲנִי נִשְׁאַרְתִּי לְבַדִּי
ad levabo Ecce : Dominus Dominus dixit Sic ? ipsi ubi isti
22 אֵלֶּה אֵיפֹה הֵם׃ כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הִנֵּה אֶשָּׂא אֶל־
tuos filios afferent & :meū vexillū exaltabo populos ad &,meā manū gentes
גּוֹיִם יָדִי וְאֶל־עַמִּים אָרִים נִסִּי וְהֵבִיאוּ בָנַיִךְ
,tui nutritii reges erunt Et .portabūtur humerū super tuæ filiæ & ,sinu in
23 בְּחֹצֶן וּבְנֹתַיִךְ עַל־כָּתֵף תִּנָּשֶׂאנָה׃ וְהָיוּ מְלָכִים אֹמְנַיִךְ
pulverē & ,tibi se incurvabunt terra facies : tuæ lactatrices eorū dominæ &
וְשָׂרוֹתֵיהֶם מֵינִיקֹתַיִךְ אַפַּיִם אֶרֶץ יִשְׁתַּחֲווּ־לָךְ וַעֲפַר
afficietur pudore non quòd Dominus ego quòd scies & :lingent tuor pedū
רַגְלַיִךְ יְלַחֵכוּ וְיָדַעַתְּ כִּי־אֲנִי יְהוָה אֲשֶׁר לֹא־יֵבֹשׁוּ
justi captivitas an & ? captura forti à tolletur Nūquid .me expectantes
24 קוָֹי׃ הֲיֻקַּח מִגִּבּוֹר מַלְקוֹחַ וְאִם־שְׁבִי צַדִּיק
,tolletur fortis captivitas Etiam ,Dominus dixit sic Etenim ? evadet
25 יִמָּלֵט׃ כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה גַּם־שְׁבִי גִבּוֹר יֻקָּח
& , litigabo ego tuo litigatore cum & : evadet violenti captura &
וּמַלְקוֹחַ עָרִיץ יִמָּלֵט וְאֶת־יְרִיבֵךְ אָנֹכִי אָרִיב וְאֶת־
te depopulantes faciam comedere Et servabo ego tuos filios
26 בָּנַיִךְ אָנֹכִי אוֹשִׁיעַ׃ וְהַאֲכַלְתִּי אֶת־מוֹנַיִךְ אֶת־
omnis scient & : se inebriabunt suo sanguine musto tanquā & ,suā carnem
בְּשָׂרָם וְכֶעָסִיס דָּמָם יִשְׁכָּרוּן וְיָדְעוּ כָל־
.Jahacob fortis tuus redemptor & ,te salvans Dominus ego quòd caro
בָּשָׂר כִּי אֲנִי יְהוָה מוֹשִׁיעֵךְ וְגֹאֲלֵךְ אֲבִיר יַעֲקֹב׃

Versio VUL. LAT.

12 Ecce isti de longè venient, & ecce illi ab Aquilone & mari, 13 & isti de terra Australi. Laudate cœli, & exulta terra, jubilate montes laudē: quia consolatus est Dñs populū suum, & pau- 14 perum suorū miserebitur. Et dixit Sion; Dereliquit me Dñs, 15 & Dñs oblitus est meî. Numquid oblivisci potest mulier infantē suum, ut non misereatur filio uteri sui? & si illa oblita fuerit, ego tamen non oblivi- 16 scar tuî. Ecce in manibus meis descripsi te: muri tui corā ocu- 7 lis meis semper. Venerūt structores tui: destruentes te & dis- 18 sipantes, à te exibunt. Leva in circuitu oculos tuos, & vide, omnes isti congregati sunt, venerūt tibi: vivo ego, dicit Dñs; quia omnibus his velut ornamento vestiêris, et circumdabis 19 tibi eos quasi sponsa. Quia deserta tua, & solitudines tuæ, & terra ruinæ tuæ, nunc angusta erūt præ habitatorib⁹, et longè fugabuntur qui absorbebāt te. 20 Adhuc dicent in aurib⁹ tuis filii sterilitatis tuæ; Angust⁹ est mihi locus, fac spatiū mihi ut habi- 21 tē. Et dices in corde tuo, Quis genuit mihi istos? ego sterilis, & non pariens, transmigrata, et captiva: et istos quis enutrivit? ego destituta & sola: et isti 22 ubi erant? Hæc dicit Dñs Deus; Ecce levabo ad Gentes manū meam, & ad populos exaltabo signū meum. Et afferent filios tuos in ulnis, & filias tuas sup 23 humeros portabunt. Et erunt reges nutritii tui, et reginæ nutrices tuæ: vultu in terrā demisso adorabunt te, et pulverē pedum tuorū lingēt. Et scies quia ego Dñs, sup quo non confun- 24 dentur qui expectant eū. Numquid tolletur à forti præda? aut ꝙ captum fuerit à robusto, sal- 25 vum esse poterit? Quia hæc dicit Dñs, Equidem, & captivitas à forti tolletur: et ꝙ ablatū fuerit à robusto, salvabitur. Eos verò, qui judicaverunt te, ego judicabo, et filios tuos 26 ego salvabo. Et cibabo hostes tuos carnib⁹ suis: et quasi musto, sanguine suo inebriabuntur: et sciet omnis caro, quia ego Dñs salvans te, et redemptor tuus fortis Jacob.

Vers GRÆC. LXX. Interp. cum Transl. LAT.

12 Ἰδοὺ οὗτοι πόῤῥωθεν (ο) ἥξουσιν, οὗτοι ἀπὸ Βοῤῥᾶ (π) καὶ θαλάσσης, ἄλλοι δὲ (ρ) ἐκ γῆς 13 Περσῶν. Εὐφραίνεσθε οὐρανοὶ, καὶ ἀγαλλιάσθω ἡ γῆ, ῥηξάτωσαν τὰ ὄρη εὐφροσύνην, ὅτι ἠλέησεν ὁ θεὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ τοὺς 14 ταπεινοὺς τοῦ λαοῦ αὐτοῦ παρεκάλεσεν. Εἶπε δὲ Σιὼν, Ἐγκατέλιπέ με κύριος, καὶ (σ) ὅτι 15 κύριος ἐπελάθετό μου. Μὴ ἐπιλήσεται (τ) γυνὴ τοῦ παιδίου αὐτῆς, (υ) ἢ τοῦ μὴ ἐλεῆσαι τὰ ἔκγονα τῆς κοιλίας αὐτῆς; εἰ δὲ καὶ (φ) ταῦτα ἐπιλάθοιτο γυνὴ, ἀλλ᾽ ἐγὼ οὐκ 16 ἐπιλήσομαί σου, εἶπε κύριος. Ἰδοὺ ἐπὶ τῶν χειρῶν μου (ͺ) ἐζωγράφηκά σου τὰ τείχη, καὶ 17 ἐνώπιόν μου εἶ διαπαντὸς, Καὶ ταχὺ οἰκοδομηθήσῃ ὑφ᾽ ὧν καθῃρέθης, καὶ οἱ ἐρημώσαντές σε (χ) ἐξελεύσονται ἐκ σοῦ, 18 Ἆρον κύκλῳ τοὺς ὀφθαλμούς σου, καὶ ἴδε πάντας, ἰδοὺ συνήχθησαν καὶ ἤλθοσαν πρός σε· Ζῶ ἐγὼ, λέγει κύριος, ὅτι πάντας αὐτοὺς (ψ) ὡς κόσμον ἐνδύσῃ, καὶ περιθήσεις αὐτοὺς ὡς κόσμον 19 ( ) νύμφη. Ὅτι τὰ ἔρημά σου καὶ τὰ (ω) κατεφθαρμένα καὶ πεπτωκότα, ὅτι νῦν στενοχωρήσει ἀπὸ τῶν κατοικούντων, καὶ μακρυνθήσονται 20 ἀπὸ σοῦ οἱ καταπίνοντές σε. Ἐροῦσι γὰρ εἰς τὰ ὦτά σου οἱ υἱοί σου, οὓς (α) ἀπολώλεκας, Στενός μοι ὁ τόπος, ποίησόν μοι τό- 21 πον ἵνα κατοικήσω. Καὶ ἐρεῖς ἐν τῇ καρδίᾳ σου, Τίς ἐγέννησέ μοι τούτους; ἐγὼ δὲ ἄτεκνος καὶ χήρα, τούτους δὲ τίς ἐξέθρεψέ μοι; ἐγὼ δὲ κατελείφθην μόνη, οὗτοι δέ μοι ποῦ 22 ἦσαν; Οὕτως λέγει (β) κύριος κύριος, Ἰδοὺ αἴρω εἰς τὰ ἔθνη τὴν χεῖρά μου, καὶ εἰς τὰς νήσους ἀρῶ (γ) σύσσημόν μου, καὶ ἄξουσι τοὺς υἱούς σου ἐν κόλπῳ, τὰς δὲ θυγατέρας σου 23 ἐπ᾽ ὤμων ἀροῦσι. Καὶ ἔσονται βασιλεῖς τιθηνοί σου, αἱ δὲ ἄρχουσαι (δ) αὐτῶν τροφοί σου· ἐπὶ πρόσωπον τῆς γῆς προσκυνήσουσί (·) σε, καὶ τὸν χοῦν τῶν ποδῶν σου λείξουσι, καὶ γνώσῃ, ὅτι ἐγὼ κύριος, καὶ οὐκ (ε) αἰσχυνθή- 24 σονται οἱ ὑπομένοντές με. Μὴ λήψεταί τις παρὰ γίγαντος σκῦλα; καὶ ἐὰν αἰχμαλω- 25 τεύσῃ τις ἀδίκως, σωθήσεται; (ζ) Ὅτι οὕτω λέγει κύριος, Ἐάν τις αἰχμαλωτεύσῃ γίγαντα, λήψεται σκῦλα· λαμβάνων δὲ παρὰ ἰσχύοντος σωθήσεται· ἐγὼ δὲ τὴν κρίσιν σου κρινῶ, καὶ ἐγὼ τοὺς υἱούς σου ῥύσο- 26 μαι. Καὶ φάγονται οἱ (η) θλίψαντές σε τὰς σάρκας αὐτῶν, καὶ πίονται ὡς οἶνον νέον τὸ αἷμα αὐτῶν, καὶ μεθυσθήσονται· καὶ αἰσθανθήσεται πᾶσα σὰρξ, ὅτι ἐγὼ (θ) κύριος ὁ ῥυσάμενός σε, καὶ ἀντιλαμβανόμενος ἰσχύος Ἰακώβ.

Ecce isti de longè venient, isti ab Aquilone, & mari; alii autem de terra Persarum. Lætamini cœli, & exultet terra: erumpant montes lætitiam: quia misertus est Deus populi sui: & humiles populi sui consolatus est. Dixit autem Sion; Dereliquit me Dominus, & quia Dominus oblitus est mei. Nunquid obliviscetur mulier parvuli sui; ut non misereatur fœtuum uteri sui? Sin autem & horum oblita fuerit mulier; sed ego non obliviscar tuî, dixit Dominus. Ecce super manus meas depinxi muros tuos: & coram me es semper: Citoque ædificaberis, à quibus destructa fuerat: & qui te dissipaverant, egredientur ex te. Leva in circuitu oculos tuos, & vide omnes: ecce congregati sunt, & venerunt ad te. Vivo ego, dicit Dominus quia omnibus his, quasi ornamento vestiêris, & circumdabis tibi eos, sicut ornamentum sponsa: Quoniam deserta tua, & quæ dissipata, & quæ corruerunt, (g) quia nunc angustabuntur præ habitantibus: & longè fient à te, qui te devorabant. Dicent enim in auribus tuis filii tui, quos perdidisti; Angustus mihi locus est: fac mihi locum, ut habitem. Et dices in corde tuo, Quis genuit mihi istos? ego autem absq; liberis, & (h) vidua: & istos quis enutrivit mihi? ego autem derelicta sum sola: & isti mihi ubi erant? Sic dicit Dominus Dominus; Ecce elevo ad gentes manum meam, & ad insulas levabo signum meum: & adducent filios tuos in sinu: & filias tuas super humeros portabunt. Et erunt reges nutritii tui, & (i) principes fœminæ eorum, nutrices tuæ. Super faciem terræ adorabunt te, & pulverem pedum tuorum lingent. Et scies, quia ego Dominus, & non confundentur, qui expectant me. Nunquid accipiet quis à gigante spolia? & si captivum duxerit quis (k) inique, salvabitur? Quoniam sic dicit Dominus, Si quis captivaverit gigantem; accipiet spolia: qui autem accipit à forti, salvabitur. Ego autem judicium tuum judicabo: & ego filios tuos eruam: Et comedent, qui tribulaverunt te, carnes suas; & bibent, quasi vinum novum, sanguinem suum, & inebriabuntur. Et sentiet omnis caro, quia ego Dominus, qui eruo te, & qui adjuvo fortitudinem Jacob.

MS. A. (ο) ἔρχονται, (π) καὶ οὗτοι ἀπὸ θαλάσσης, (ρ) ἐκ γῆς (σ) ὁ θε (τ) μήτηρ (υ) τοῦ μὴ ἐλεῆσαι (φ) ἐπιλάθοιτο ταῦτα, (ͺ) ἐζωγράφησα (χ)* ἐξελεύσονται, (ψ) ἐνδύσῃ καὶ περιθήσῃ ( ) νύμφης. (ω) διεφθαρμένα καὶ πεπτωκότα νῦν στενοχωρήσει ἀπὸ τῶν ἐνοικούντων, (α) ἀπώλεσας, (β) κύριος, Ἰδοὺ (γ) σύνσημόν (δ) τροφοί σου. (·) σοι, (ε) αἰσχυνθήσῃ. Μὴ λήμψεται (ζ) Οὕτως λέγει (η) θλίβοντες (θ) ὁ ῥυσάμενος

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 הָא אִלֵּין מֵרָחִיק יֵיתוּן וְהָא אִלֵּין מִצִּפּוּנָא וּמִמַּעַרְבָא וְאִלֵּין מֵאֲרַע דָּרוֹמָא׃ שַׁבַּחוּ שְׁמַיָּא
13 וּבוּעִי אַרְעָא וְדוּצוּ טוּרַיָּא תּוּשְׁבַּחְתָּא אֲרֵי עָתִיד יְיָ לְנַחָמָא עַמֵּיהּ וְעַל עִנְוְתָנוֹהִי יְרַחֵם׃
14 וַאֲמַרַת צִיּוֹן סְלִיק שְׁכִנְתֵּיהּ יְיָ מִנִּי וַיְיָ רַחֲקַנִי׃ הַאֶפְשַׁר דְּתִתְנְשֵׁי אִתְּתָא בְּרַהּ מִלְּרַחֲמָא
15 עַל בַּר מְעָהָא מְתִיבָא כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל וַאֲמָרַת אִם לֵית קֳדָמוֹהִי אִתְנְשָׁאָה דִּלְמָא לָא
מִתְנְשֵׁי לִי יָת דַּעֲבָדִית עֵגֶל דִּדְהַב אֲמַר לַהּ נְבִיָּא אַף אִלֵּין אִתְנַשְׁיָן מְתִיבָא וַאֲמַרָא לֵיהּ
אִם אִית קֳדָמוֹהִי אִתְנְשָׁאָה דִּלְמָא מִתְנְשֵׁי לִי יָת דַּאֲמָרִית בְּסִינַי נַעְבֵּיד וּנְקַבֵּיל מְתִיב
16 וַאֲמַר לַהּ מֵימְרִי לָא יְרַחֲקִנַּךְ׃ הָא כִּדְעַל יְדִין אַתְּ צִירָא קֳדָמַי שׁוּרַיִךְ לָקֳבְלִי תְּדִירָא׃ יוּחוּן
17 בָּנַיִכִי חָרְבָתִיךְ מְפַגְּרִיךְ וּמְחַרְבִךְ מִנִּיךְ יִגְלוּן׃ זְקוֹפִי יְרוּשְׁלֵם סְחוֹר סְחוֹר עֵינַךְ וַחֲזַאי כָּל
18 בְּנֵי עַם גָּלְוָתִיךְ מִתְכַּנְשִׁין וְאָתַן לְגַוִּיךְ קַיָּם אֲנָא אֲמַר יְיָ אֲרֵי כוּלְהוֹן לִיךְ כִּלְבוּשׁ דִּיקָר
19 וְעוֹבָדֵיהוֹן בְּגַוִּיךְ כִּקְשׁוּט כַּלְּתָא׃ אֲרֵי חָרְבָתִיךְ וְצַדְיוּתִיךְ וַאֲרַע מַפַּגְרוּתִיךְ אֲרֵי כְעַן
20 תִּדְחֲקִין מִיתַּב וְיִתְרַחֲקוּן מְסַלְעֲמִךְ׃ מִכְּעַן יֵימְרוּן חַד חַד בְּגַוִּיךְ בְּנֵי עַם גָּלְוָתִיךְ עַק לִי
21 אַתְרָא רְוַח לִי וְאֵיתֵיב׃ וְתֵימְרִין בְּלִבִּיךְ מַן רַבִּי לִי יָת אִלֵּין וַאֲנָא תְכְלָא וִיחִידָא גָּלְיָא
22 וּמְטַלְטְלָא וְאִלֵּין מַן רַבִּי הָא אֲנָא אִשְׁתְּאָרִית בִּלְחוֹדַי אִלֵּין הֵיכָא הֲווֹ׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
אֱלֹהִים הָא אֲגַלֵּי בְעַמְמַיָּא גְבוּרְתִּי וְעַל מַלְכְוָתָא אָרִים נִסִּי וְיֵיתוּן בְּנַךְ בְּצִיבִין וּבְנָתִךְ עַל
23 פְּרוֹן יִתְנַטְלָן׃ וִיהוֹן מַלְכַיָּא תּוּרְבִּינַךְ וּמַלְכְוָתְהוֹן יְשַׁמְּשׁוּנִיךְ עַל אַפֵּיהוֹן עַל אַרְעָא
יִשְׁתַּטְחוּן לְמִבְעֵי מִנִּיךְ וַעֲפַר רַגְלַךְ יְלַחֲכוּן וְתִדְעִין אֲרֵי אֲנָא יְיָ דְּלָא יִבְהֲתוּן צַדִּיקַיָּא
24 דִּמְסַבְּרִין לְפוּרְקָנִי׃ הֲיִתְנְסֵיב מִגִּבָּרָא עֲדִי וְאִם דִּשְׁבוּ זַכָּאִין יִשְׁתֵּיזְבוּן׃ תָּא אֲמַרַת יְרוּשְׁלֵם
הַאֶפְשַׁר דְּיִתְנְסֵב מֵעֵשָׂו רַשִׁיעָא דַּאֲמִיר עֲלוֹהִי עַל חַרְבָּךְ תֵּיחֵי עֲדָאָה דַּעֲדִי מִנִּי וְאִם שְׁבִיָּא
25 דִּשְׁבָא יִשְׁמָעֵאל דַּאֲמִיר עֲלוֹהִי דְּצַדִּיקַיָּא הוּא יִשְׁתֵּיזֵב׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ אַף דִּשְׁבוּ גִבָּרִין
אָתִיב וּדְעַדּוּ תַקִּיפִין אֲשֵׁיזֵב וְיָת פּוּרְעָנוּתִיךְ אֲנָא אֶתְפְּרַע וְיָת בְּנַךְ אֲנָא אֶפְרוֹק׃ תָּא אֲרֵי
כִדְנַן אֲמַר יְיָ אַף עֲדָאָה דַּעֲדָא מִנִּיךְ עֵשָׂו גִּבָּרָא יִתְנְסֵב מִנֵּיהּ וּשְׁבִיָּא דִּשְׁבָא מִנִּיךְ יִשְׁמָעֵאל
גּוּתְנָא דַּאֲמִיר עֲלוֹהִי עֲרוֹד בַּאֲנָשָׁא יִשְׁתֵּיזֵב וְיָת פּוּרְעָנוּתִיךְ אֲנָא אֶתְפְּרַע וְיָת בְּנַךְ אֲנָא
26 אֶפְרוֹק׃ וְאֶתֵּן יָת בְּסַר דַּהֲווֹ מוֹנַן לִיךְ מֵיכַל לְכָל עוֹפָא דִּשְׁמַיָּא וּכְמָא דְּמִתְרַוַּן מֵחֲמַר
מְרִית כֵּן חֵיוַת בָּרָא מִדְּמְהוֹן תִּתְרְוֵי וְיִדְעוּן כָּל בִּסְרָא אֲרֵי אֲנָא יְיָ פָּרְקִיךְ וּמְשֵׁיזְבִךְ
תְּקִיפָא דְּיַעֲקֹב׃

PARAPH CHALD. Versio Latina.

Ecce isti de longè venient, & ecce hi ab Aquilone & ab Occidente, & isti de terra Australi. Laudate cœli, & exulta terra, & jubilate montes in laude, quia consolatur⁹ est Dñs populū suū: & mansuetorū suorū miserebitur. Et dixit Sion: Abstulit Deus majestatē suā à me; & Dñs abjecit me. Nunquid obliviscetur mulier filii sui, quo minus misereatur filii uteri sui? Respondit cœt⁹ Israel & ait: Si non est coram eo oblivio, fortè non illius obliviscetur mihi, ꝙ fecerim vitulū aureū. Dixit ei Propheta: Etiam hujus obliviscetur. *Respondit* et dixit ei: Si est coram illo oblivio, fortè obliviscetur mihi illi⁹ ꝙ dixerim in Synai, Faciem⁹, & obediem⁹. Respondit & dixit *ei*: Verbū meū non abjiciet te. Ecce quasi in manib⁹ tu signat⁹ es coram me, muri tui in conspectu meo semp. Festinabunt *ædificantes tibi* solitudines tuas: destruentes te & dissipantes te ex te migrabunt. Leva Jerusalē in circuitu oculos tuos, & vide omnes filios populi transmigrationis tuæ qui congregantur & veniunt ad te. Vivo ego, dicit Dñs, quoniā omnes hi erunt tibi quasi vestimentū gloriæ, & opera eorū in medio tui quasi ornamentū sponsæ. Quia solitudines tuæ, & deserta tua, & terra destructionis tuæ, nunc sanè angusta erunt præ habitatorib⁹, & longè erunt qui absorbebant te. Posthac dicent singuli in medio tui filii populi transmigrationis tuæ, Angustus est mihi locus, fac spatiū mihi ut sedeam. Et dices in corde tuo: Quis nutrivit mihi hos, & ego orbata & solitaria, captiva, & transmigrans, & istos quis nutrivit? Ecce ego remansi sola; isti autem ubi erant? Hæc dicit Dñs Deus: Ecce revelabo in populis potentiā meā, & super regna levabo vexillū meū, & afferent filios tuos in lecticis, & filias tuas in humeris portabunt. Et erunt reges nutritii tui, & reginæ eorū ministrabunt tibi; proni in terrā curvabuntur, ut deprecentur te; & pulverē pedum tuorū lingent: & scietis quia ego Dñs, quia non confundentur justi qui sperant in salutē meā. Nunquid tolletur à forti præda, & ꝙ ceperunt justi salvabitur? *Targum aliud:* Dixit Jerusalem: Nunquid possibile est ut auferatur ab Esau impio ꝙ dictū est de eo: In gladio tuo vives? & præda quam abstulit à me, & captivitas quā captivavit Ismael, de qua dictū est, Quod justorū est, eruetur? Hæc enim dicit Dñs: etiā captivitatē, quam ceperunt robusti, reducam, & ꝙ deprædati sunt fortes, eruā: & vindictā tuā ego ulciscar, & filios tuos ego salvabo. *Targum aliud:* Hæc enim dicit Dñs: Etiam præda quā abstulit à te Esau robust⁹, tolletur ab eo, & captivitas quam accepit à te Ismael superb⁹, qui dict⁹ est onager in hominibus, eruetur: & vindictam tuam ego ulciscar, & filios tuos ego salvabo. Dabo carnes eorum qui opprimebant te in escam omni volatili cœli: et sicut inebriantur vino mero, ita bestiæ agri inebriabuntur sanguine eorum: et scient *omnis caro* quia ego Dominus salvans te, et liberans te fortis Jacob.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܠܝܢ ܢܐܬܘܢ܆ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܘܗܠܝܢ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܘܗܠܝܢ ܡܢ ܝܡܐ. ܘܗܠܝܢ ܡܢ ܝܡܐ
ܕܣܝܢܝܡ. * ܫܒܚܘ ܫܡܝܐ܆ ܘܪܘܙܝ ܐܪܥܐ. ܐܬܦܨܚܘ ܛܘܪܐ܆ ܒܬܫܒܘܚܬܐ. ܡܛܠ
ܕܒܝܐܐ ܡܪܝܐ ܠܥܡܗ. ܘܪܚܡ ܥܠ ܡܣܟܢܘܗܝ. * ܘܐܡܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܕܫܒܩܢܝ ܡܪܝܐ ܘܡܪܝܐ
ܛܥܝܢܝ. * ܐܢ ܛܥܝܐ ܐܢܬܬܐ ܠܥܘܠܗ. ܘܠܐ ܡܪܚܡܐ ܥܠ ܒܪ ܟܪܣܗ .· ܐܦܢ ܗܠܝܢ ܢܛܥܝܢ
ܐܢܐ ܠܐ ܐܛܥܝܟܝ. * ܗܐ ܥܠ ܦܣܬ ܐܝܕܝ ܨܪܬܟܝ. ܘܫܘܪܝܟܝ܆ ܩܕܡܝ ܐܢܘܢ ܐܡܝܢܐܝܬ.
* ܥܓܠ ܒܢܝܟܝ ܡܣܚܦܢܝܟܝ ܘܡܚܪܒܢܝܟܝ܆ ܡܢܟܝ ܢܦܩܘܢ. * ܐܪܝܡܝ ܥܝܢܝܟܝ
ܚܕܪܝܟܝ. ܘܚܙܝ ܕܟܠܗܘܢ܆ ܡܬܟܢܫܝܢ ܘܐܬܝܢ ܠܘܬܟܝ. ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ .· ܕܟܠܗܘܢ
ܐܝܟ ܨܒܬܐ ܬܠܒܫܝܢ. ܘܬܬܟܠܠܝܢ ܐܝܟ ܟܠܬܐ. * ܡܛܠ ܕܚܪܒܬܟܝ ܘܨܕܝܘܬܟܝ ܘܐܪܥܐ
ܕܚܘܒܠܟܝ .· ܥܬܝܕܐ ܕܬܬܥܩ ܡܢ ܥܡܪܐ. ܘܢܬܪܚܩܘܢ ܡܒܠܥܢܝܟܝ. * ܘܬܘܒ ܢܐܡܪܘܢ
ܒܐܕܢܝܟܝ ܒܢܝ ܥܩܪܘܬܟܝ. ܕܐܠܝܨ ܠܢ ܐܬܪܐ. ܐܬܦܢܝ ܡܢ ܢܬܒ. * ܘܬܐܡܪܝܢ ܒܠܒܟܝ
ܡܢܘ ܝܠܕ ܠܝ ܗܠܝܢ .· ܘܐܢܐ ܥܩܪܬܐ ܐܢܐ ܘܡܛܠܛܠܬܐ. ܫܒܝܬܐ ܘܡܛܪܕܬܐ. ܘܗܠܝܢ
ܡܢ ܪܒܝ ܠܝ. ܐܢܐ ܗܐ ܐܫܬܚܪܬ ܒܠܚܘܕܝ .· ܗܠܝܢ ܐܝܟܐ ܗܘܘ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ
ܗܐ ܡܪܝܡ ܐܢܐ ܐܝܕܝ ܥܠ ܥܡܡܐ .· ܘܠܥܡܡܐ ܐܩܝܡ ܐܬܐ. ܘܢܝܬܘܢ ܒܢܝܟܝ ܥܠ
ܐܝܕܝܗܘܢ .· ܘܒܢܬܟܝ ܥܠ ܟܬܦܬܗܘܢ ܢܫܩܠܢ. * ܘܢܗܘܘܢ ܡܠܟܐ ܡܪܒܝܢܝܟܝ
ܘܪܘܪܒܢܝܬܗܘܢ ܡܪܒܝܢܝܬܟܝ. ܥܠ ܐܦܝܗܘܢ ܥܠ ܐܪܥܐ ܢܣܓܕܘܢ ܠܟܝ. ܘܥܦܪܐ
ܕܪܓܠܝܟܝ ܢܠܚܟܘܢ. ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ .· ܕܠܐ ܢܒܗܬܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܡܣܟܝܢ ܠܝ. * ܠܡܐ
ܡܬܢܣܒܐ ܒܙܬܐ ܕܓܢܒܪܐ. ܐܘ ܫܒܝܬܗ ܕܓܢܒܪܐ ܡܬܦܨܝܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܕܒܙܬܐ ܕܓܢܒܪܐ ܬܬܢܣܒ. ܘܫܒܝܬܗ ܕܓܢܒܪܐ ܬܬܦܨܐ. ܘܕܝܢܟܝ ܐܢܐ ܐܕܘܢ. ܘܒܢܝܟܝ
ܐܢܐ ܐܦܪܘܩ. * ܘܐܘܟܠ ܠܡܥܠܒܢܝܟܝ ܒܣܪܗܘܢ .· ܘܐܝܟ ܡܪܬܐ ܕܡܗܘܢ ܢܪܘܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܟܠܗ
ܟܠ ܒܣܪ. ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܦܪܘܩܟܝ. ܘܡܫܘܙܒܢܟܝ. ܥܫܝܢܗ ܕܝܥܩܘܒ.

* Iſti venient è longinquo, illi ab Aquilone, 12
iſti à mari, alii à mari Senjam. Canite cœli, 13
exulta terra, exhilaramini montes cum cantico : quia conſolatus Dominus populum ſuum, & miſertus eſt pauperum ſuorum.
Sion autem dixit, Dereliquit me Dominus, & 14
Dominus oblitus eſt mei. Num obliviſcitur 15
mulier infantis ſui, nec miſeretur filii viſcerum ſuorum ? etiamſi iſtæ obliviſcantur, ego
tui non oblviſcar. Ecce ſuper palmas ma- 16
nuum mearum impreſſi te, & mœnia tua è regione mihi perpetuò verſantur. Mox filii 17
tui qui te deſtruunt & evertunt, ex te egredientur. Attolle oculos tuos circumquaque, & 18
aſpice quomodo congregentur omnes & veniant ad te : Per vitam meam, dicit Dominus ; omnibus tanquam ornamento veſtieris,
& ut ſponſa coronaberis, Nam ſolitudines 19
tuæ, inculta *loca* tua, & terra vaſtitatis tuæ anguſta reddetur ob frequentiā *habitatorum*,
& fugient qui te deglutiunt. Et adhuc di- 20
cent in auribus tuis filii ſterilitatis tuæ, Anguſtus eſt nobis locus, recede *à* nobis ut ha-
bitemus. Adeóque dices apud temetipſam, 21
Quis mihi genuit iſtos, cùm ego ſim ſterilis & ſolitaria, captiva & exagitata ? hos quis educavit ? quandoquidem ecce ſola remanſe-
ram, iſti ubinam erant ? Sic dicit Dominus 22
Deus, Ecce ſuſtollam ad gentes manum meam, & ad gentes erigam ſignum, afferéntque filios tuos ſuper manus ſuas, & filias tuas ſuper hu-
meros ſuos portabunt. Et erunt reges nu- 23
tricii tui, et *fœminæ* principes eorum nutrices tuæ : proni ſuper terram adorabunt te, et pulverem pedum tuorum lingent : & ſcies me eſſe Dominum, nec pudefieri eos qui me
expectant. Num auferretur præda gigan- 24
tis ? aut captivitas herois eriperetur ? Imò 25
ſic ait Dominus, Præda gigantis auferetur, & captivitas herois eripietur : cauſas tuas ego
diſceptabo, & filios tuos ego ſervabo, Ef- 26
ficiam ut comedant oppreſſores tui carnem ſuam, & ſanguine ſuo quaſi muſto inebrientur : & ſcient omnes mortales me eſſe Dominum ſalvatorem & protectorem tuum robuſtum Jacobi.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ها هولاء من بعيد ياتون * هاولاء من الجربياء * وهاولاء من البحر * واخر من ارض فارس *
* افرحن ايتها السموات * ولتبتهج الارض * ولتدسو الجبال سرورا والآكام عدلا * لان الله
رحم شعبه وعزى ذليلي شعبه * قالت صهيون تركني الرب * والله نسيني * هل تنسي
الام ولدها * او لا ترحم اولاد جوفها * فلان نست المراة هاك * لكني انا لست انساك قال
الرب * ها على يدي صورت اسوارك * وامامي انت كل حين * وسريعا تبنى من الذين
هدمت منهم * والذين اخربوك منك يخرجون * ارفعي عينيك من حولك * وانظريهم جميعا
ها اجتمعوا واتوا اليك * حي انا قال الرب انك تربطين جميعهم وتتوشحين بهم مثل زينة
العروس * لان خراباتك ومستوحشاتك ومهدوماتك الان تضيق من السكان * ويبتعدون
منك الذين ابتلعوك * لان بنيك يقولون في اذنيك الذين اهلكتهم * الموضع ضيق
بي * اصنعي لي موضعا لكي اسكن * وتقولين في قلبك * من ولد لي هاولاء وانا ثكلي
وارملة * من ربي لي هاولاء * او هاولاء اين كانوا لي * هكذا يقول الرب * ها ارفع يدي للامم
وعلى الجزاير ارفع علامتي * وياتون ببنيك في الحضن * ويرفعون بناتك على الاكتاف *
* ويصير الملوك داياتك * والرييسات مربياتك * على وجه الارض يسجدون لك * ويلحسون
تراب قدميك * وتعلمين اني انا الرب * ولست تخزين * هل ياخذ احد من الجبار غنايم *
وان سبي من يخلص بالظلم * هكذا يقول الرب * ان سبي احد جبارا ياخذ غنايم * وان
احد من القوي يخلص * وانا اقضي قضاءك * وانا انجي بنيك * واكل محزنوك لحومهم
ويشربون مثل الخمر الحديثة دماهم ويسكرون * ويعلم كل ذي جسد اني انا منجيك
وعاضدك بقوة يا يعقوب *

Ecce iſti de longinquo venient, iſti ab 12
Auſtro, iſti à mari, alii è terra Perſiæ.
Lætamini O cœli, exultet terra, edant 13
montes gaudium, & colles juſtitiam; quia Deus miſertus eſt populi ſui, & conſolatus eſt abjectos populi ſui. Di- 14
xit Sion, Dereliquit me Dominus, &
Deus oblitus eſt mei. An obliviſcere- 15
tur mater nati ſui ? aut non moveretur miſeratione erga filios uteri ſui ? verùm licèt horum obliviſcatur fœmina, ego tamen haudquaquam obliviſcar tui,
dicit Dominus. Ecce ſuper manibus 16
meis pinxi muros tuos, & coram me
verſaris omni tempore. Brevi ædifi- 17
caberis ab his à quibus everſa fueras, & qui te deſtruxerant, egredientur ex
te. Attolle circum te oculos tuos, & 18
vide eos omnes ecce congregatos eſſe, & ad te veniſſe. Vivo ego, dicit Dominus, colligabis omnes, iiſque te præ-
cinges ut ornamento ſponſæ. Nam 19
ruinæ tuæ, deſolationes tuæ, & rudera tua mox erunt anguſta præ habitatoribus, & recedent à te qui te ab-
ſorbebant. Nam filii tui quibus orba- 20
ta fueras, audiente te, dicent, Locus eſt mihi anguſtus, cede mihi locum
ut habitem. Dicéſque tecum ipſa, 21
Quis mihi genuit iſtos, quum orba ſim & vidua ? quis hos educavit mihi ? vel iſti ubinam erant mihi ?
Sic dicit Dominus, Ecce levabo 22
manum meam ad gentes, & ad inſulas attollam ſignum meum; afferéntque filios tuos in gremio, & ſuſ-
tollent ſuper humeros filias tuas. E- 23
runtque reges obſtetrices tuæ, & matronæ principes nutrices tuæ : ſuper faciem terræ te adorabunt, & lingent pulverem veſtigiorum tuorum : & experieris me eſſe Dominum, & non
pudefies. An caperet aliquis à gi- 24
gante ſpolia ? aut ſi is prædaretur,
quis violenter eriperet ? Sic ait Domi- 25
nus, Si quis gigantem deprædetur, accipiet ſpolia; & rapiat à robuſto, evadet : ego judicabo cauſam tuam,
& ego ſalvabo filios tuos. Qui te 26
contriſtant, devorabunt carnes ſuas, bibentque ſicut vinum novum, ſanguinem ſuum, & inebriabuntur : ſcientque omnes corpore prædíti me eſſe redemptorem tuum, teque robore fulcientem O Jacob.

יְשַׁעְיָה : נ נא

CAP. L. נ

quam , veſtræ matris *exciſionis* liber iſte *Ubi* : DOMINUS dixit Sic
1 כֹּה אָמַר יְהוָה אֵי זֶה סֵפֶר כְּרִיתוּת אִמְּכֶם אֲשֶׁר
En *?ei* vos vendidi *cui* , *meis fœneratoribꝰ* ex quis aut *? eam* dimiſi
שִׁלַּחְתִּיהָ אוֹ מִי מִנּוֹשַׁי אֲשֶׁר־מָכַרְתִּי אֶתְכֶם לוֹ הֵן
eſt dimiſſa *veſtris prævaricationibus in* &, eſtis venditi *veſtris iniquitatibus in*
בַּעֲוֺנֹתֵיכֶם נִמְכַּרְתֶּם וּבְפִשְׁעֵיכֶם שֻׁלְּחָה
? reſpondens non & ,vocavi *? vir* non & , veni Cur .veſtra mater
2 אִמְּכֶם׃ מַדּוּעַ בָּאתִי וְאֵין אִישׁ קָרָאתִי וְאֵין עוֹנֶה
an & ; redemptione à mea manus ſe abbreviavit ſe abbreviando num
הֲקָצוֹר קָצְרָה יָדִי מִפְּדוּת וְאִם־
faciã ſiccare mea increpatione in Ecce ? eruendũ ad potentia me in non
אֵין־בִּי כֹחַ לְהַצִּיל הֵן בְּגַעֲרָתִי אַחֲרִיב
, aqua *non à* eorum *piſcis fœtebit* ; deſertum flumina ponam , mare
יָם אָשִׂים נְהָרוֹת מִדְבָּר תִּבְאַשׁ דְּגָתָם מֵאֵין מַיִם
ponam ſaccum & *: caligine* cœlos Induam .ſiti *in morietur* &
3 וְתָמֹת בַּצָּמָא׃ אַלְבִּישׁ שָׁמַיִם קַדְרוּת וְשַׂק אָשִׂים
linguam mihi dedit Deus DOMINUS .eorũ operimentum
4 כְּסוּתָם׃ אֲדֹנָי יְהוִה נָתַן לִי לְשׁוֹן
mane in excitabit :verbum *laſſo* *opportunè loqui ſciendum ad*,eruditorum
לִמּוּדִים לָדַעַת לָעוּת אֶת־יָעֵף דָּבָר יָעִיר ׀ בַּבֹּקֶר
.*docti* ſicut audiendum ad aurem mihi excitabit ; *mane in*
בַּבֹּקֶר יָעִיר לִי אֹזֶן לִשְׁמֹעַ כַּלִּמּוּדִים׃
: fui rebellis non ego & , aurem mihi aperuit DEUS Dominus
5 אֲדֹנָי יְהוִה פָּתַח־לִי אֹזֶן וְאָנֹכִי לֹא מָרִיתִי
meas genas &,percutientibꝰ dedi meũ Corpus.ſum reverſus non retrorſum
6 אָחוֹר לֹא נְסוּגֹתִי׃ גֵּוִי נָתַתִּי לְמַכִּים וּלְחָיַי
.ſputo & , ignominiis ab abſcondi non *meas facies* : *decapillantibus*
לְמֹרְטִים פָּנַי לֹא הִסְתַּרְתִּי מִכְּלִמּוֹת וָרֹק׃
: erubui non ideo : mihi auxiliabitur DEUS meus Dominus Et
7 וַאדֹנָי יְהוִה יַעֲזָר־לִי עַל־כֵּן לֹא נִכְלָמְתִּי
.afficiar pudore non quòd novi & ; ſilicem ut *meas facies* poſui ideo
עַל־כֵּן שַׂמְתִּי פָנַי כַּחַלָּמִישׁ וָאֵדַע כִּי־לֹא אֵבוֹשׁ׃
quis : ſimul ſtemus ? mecum contendet quis ,me *juſtificans Propinquus*
8 קָרוֹב מַצְדִּיקִי מִי־יָרִיב אִתִּי נַעַמְדָה יָּחַד מִי־
DOMINUS Dominus En .me ad accedat *? mei judicii auctor*
9 בַעַל מִשְׁפָּטִי יִגַּשׁ אֵלָי׃ הֵן אֲדֹנָי יְהוִה
veſtimentũ ut ipſi omnes Ecce ?me faciat impiũ *ipſe* quis,mihi auxiliabitur
יַעֲזָר־לִי מִי־הוּא יַרְשִׁיעֵנִי הֵן כֻּלָּם כַּבֶּגֶד
,Dominum timens vos inter Quis .eos comedet tinea ,veteraſcent
10 יִבְלוּ עָשׁ יֹאכְלֵם׃ מִי בָכֶם יְרֵא יְהוָה
ſplendor non & , tenebris ambulavit qui : ſui ſervi *voce in audiens*
שֹׁמֵעַ בְּקוֹל עַבְדּוֹ אֲשֶׁר ׀ הָלַךְ חֲשֵׁכִים וְאֵין נֹגַהּ
Ecce ? ſuo Deo *in* innitatur & , DOMINI nomine in ſperet , *ſibi*
11 לוֹ יִבְטַח בְּשֵׁם יְהוָה וְיִשָּׁעֵן בֵּאלֹהָיו׃ הֵן
foco in ambulate , ſcintillis *vos cingentes* , ignem *accendentes* vos omnes
כֻּלְּכֶם קֹדְחֵי אֵשׁ מְאַזְּרֵי זִיקוֹת לְכוּ ׀ בְּאוּר
,vobis hoc fuit mea manu De .incendiſtis ſcintillis in &,veſtri ignis
אֶשְׁכֶם וּבְזִיקוֹת בִּעַרְתֶּם מִיָּדִי הָיְתָה־זֹּאת לָכֶם
.*jacebitis* dolore in
לְמַעֲצֵבָה תִּשְׁכָּבוּן׃

CAP. LI. נא

aſpicite : Dominum quærentes ,juſtitiam ſequentes me ad Audite
1 שִׁמְעוּ אֵלַי רֹדְפֵי צֶדֶק מְבַקְשֵׁי יְהוָה הַבִּיטוּ
.eſtis eruti ciſternæ perforationem ad & , eſtis exciſi petram ad
אֶל־צוּר חֻצַּבְתֶּם וְאֶל־מַקֶּבֶת בּוֹר נֻקַּרְתֶּם׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. L.

1 HÆc dicit Dominus ; Quis
eſt hic liber repudii matris ve-
ſtræ, quo dimiſi eam ? aut quis
eſt creditor meus, cui vendidi
vos ? ecce in iniquitatibus ve-
ſtris venditi eſtis, & in ſceleri-
bus veſtris dimiſi matrem ve-
2 ſtram. Quia veni,& non erat
vir : vocavi, & non erat qui
audiret : numquid abbreviata
et parvula facta eſt manus mea,
ut non poſſim redimere ? aut
non eſt in me virtus ad liberan-
dũ ? Ecce in increpatione mea
deſertum faciam mare, ponam
flumina in ſiccum : computre-
ſcent piſces ſine aqua, & mori-
3 entur in ſiti. Induam cœlos
tenebris, & ſaccum ponam o-
4 perimentum eorum. Dominus
dedit mihi linguam eruditam,
ut ſciam ſuſtentare eum, qui
laſſus eſt verbo : erigit manè,
manè erigit mihi aurem,ut au-
5 diam quaſi magiſtrum. Domi-
nus Deus aperuit mihi aurem,
ego autem non contradico:re-
6 trorſũ non abii. Corpus meũ
dedi percutientibus, & genas
meas vellentibus : faciẽ meam
non averti ab increpantibus,et
7 conſpuentibus in me. Domi-
nus Deus auxiliator meus,ideò
non ſum confuſus : ideò poſui
faciem meam ut petram duriſ-
ſimam , & ſcio quoniam non
8 confundar. Juxta eſt qui juſtifi-
cat me,quis contradicet mihi ?
ſtemus ſimul, quis eſt adverſa-
9 rius meus?accedat ad me. Ecce
Dominꝰ Deus auxiliator meus :
quis eſt qui condemnet me ?
Ecce omnes quaſi veſtimentũ
conterentur , tinea comedet
10 eos. Quis ex vobis timens Do-
minum, audiens vocem ſervi
tui?qui ambulavit in tenebris,
& non eſt lumen ei, ſperet in
nomine Domini, & innitatur
11 ſuper Deum ſuum. Ecce vos
omnes accendentes ignem,ac-
cincti flammis,ambulate in lu-
mine ignis veſtri,& in flammis
quas ſuccendiſtis : de manu
mea factum eſt hoc vobis, in
doloribus dormietis.

CAP. LI.

1 Audite me qui ſequimini ꝙ
juſtum eſt, & quæritis Domi-
num:attendite ad petram unde
exciſi eſtis ; & ad cavernã laci,
de qua præciſi eſtis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ν'.

1 Οὕτως λέγει κύριος, Ποῖον τὸ βιβλίον
τοῦ ἀποστασίου τῆς μητρὸς ὑμῶν, ᾧ ἐξαπέστειλα
αὐτήν; ἢ τίνι ὑποχρέῳ πέπρακα
ὑμᾶς; ἰδοὺ ταῖς ἁμαρτίαις ὑμῶν ἐπράθητε,
καὶ ταῖς ἀνομίαις ὑμῶν ἐξαπέστειλα τὴν
2 μητέρα ὑμῶν. Τί ὅτι ἦλθον, καὶ οὐκ ἦν
ἄνθρωπος; ἐκάλεσα, καὶ (α) οὐκ ἦν ὁ ὑπακούων;
μὴ οὐκ ἰσχύει ἡ χείρ μου τοῦ ῥύσασθαι; ἢ
οὐκ ἰσχύω τοῦ ἐξελέσθαι; ἰδοὺ (β) τῷ ἐλεγμῷ
μου ἐξερημώσω τὴν θάλασσαν, καὶ θήσω
ποταμοὺς ἐρήμους, καὶ ξηρανθήσονται οἱ
ἰχθύες αὐτῶν ἀπὸ τοῦ μὴ εἶναι ὕδωρ, καὶ ἀποθανοῦνται
3 ἐν δίψει. (γ) Ἐνδύσω τὸν οὐρανὸν
σκότος, καὶ (δ) ὡς σάκκον θήσω τὸ περιβόλαιον
4 αὐτοῦ. (ε) Κύριος κύριος δίδωσί
μοι γλῶσσαν (ζ) παιδείας, τοῦ γνῶναι
(η) ἡνίκα δεῖ εἰπεῖν λόγον. ἔθηκέ μοι (θ)
5 πρωΐ, προσέθηκέ μοι ὠτίον ἀκούειν, Καὶ ἡ
παιδεία (ι) κυρίου κυρίου ἀνοίγει μου τὰ
ὦτα· ἐγὼ δὲ οὐκ ἀπειθῶ, οὐδὲ ἀντιλέγω.
6 Τὸν νῶτόν μου (˜) ἔδωκα εἰς μάστιγας, τὰς δὲ
σιαγόνας μου εἰς ῥαπίσματα, τὸ δὲ πρόσωπόν
μου οὐκ ἀπέστρεψα ἀπὸ αἰσχύνης ἐμπτυσμάτων,
7 Καὶ (κ) κύριος κύριος βοηθός
μοι ἐγενήθη. διὰ τοῦτο οὐκ ἐνετράπην, ἀλλὰ
ἔθηκα τὸ πρόσωπόν μου ὡς στερεὰν πέτραν,
8 καὶ ἔγνων ὅτι οὐ μὴ αἰσχυνθῶ, Ὅτι ἐγγίζει
ὁ δικαιώσας με. τίς ὁ κρινόμενός μοι; ἀντιστήτω
μοι ἅμα· καὶ τίς ὁ κρινόμενός μοι;
9 ἐγγισάτω μοι. Ἰδοὺ (λ) κύριος κύριος
βοηθήσει μοι· τίς κακώσει με; ἰδοὺ πάντες
ὑμεῖς ὡς ἱμάτιον παλαιωθήσεσθε, καὶ (μ)
10 σὴς καταφάγεται ὑμᾶς. Τίς ἐν ὑμῖν ὁ φοβούμενος
τὸν κύριον; (ν) ὑπακουσάτω τῆς
φωνῆς τοῦ παιδὸς αὐτοῦ. οἱ πορευόμενοι ἐν
(ξ) σκότει, καὶ οὐκ ἔστιν αὐτοῖς φῶς, πεποίθατε
ἐπὶ τῷ ὀνόματι κυρίου, καὶ ἀντιστηρίσασθε
11 ἐπὶ τῷ θεῷ. Ἰδοὺ πάντες ὑμεῖς πῦρ καίετε,
καὶ κατισχύετε φλόγα· πορεύεσθε τῷ
φωτὶ τοῦ πυρὸς ὑμῶν, καὶ τῇ φλογὶ ᾗ ἐξεκαύσατε.
δι' ἐμὲ ἐγένετο ταῦτα ὑμῖν, ἐν λύπῃ
κοιμηθήσεσθε.

CAP. L.

Sic dicit Dominus ; Qualis eſt liber repudii matris veſtræ, quo dimiſi eam ? aut cui (a) creditori vendidi vos ? Ecce peccatis veſtris venundati eſtis : & in ſceleris iniquitatibus dimiſi matrem veſtram. (b) Quid, quia veni, & non erat homo ; vocavi, & non erat qui obediret ? Nunquid non poteſt manus mea liberare, aut non prævaleo, ut eruam ? Ecce increpatione meâ deſertum faciam mare, & ponam flumina deſerta : & areſcent piſces eorum, eò quòd non ſit aqua, & morientur in ſiti. Induam cælum tenebris, & quaſi cilicium ponam operimentum ejus. Dominus Dominus dat mihi linguam diſciplinæ, ut ſciam quando oporteat loqui verbum. Poſuit (c) mihi manè, addidit mihi aurem ad audiendum : Et diſciplina Domini Domini aperit aures meas. Ego autem non renuo, neque contradico. Dorſum meum dedi ad flagella, & genas meas ad alapas : & faciem meam non averti à confuſione ſputorum, Et Dominus Dominus auxiliator meus factus eſt. Propterea non ſum confuſus, ſed poſui faciem meam ſicut ſolidam petram : & novi quoniam non confundar : Quia juxta eſt, qui juſtificavit me. Quis eſt, qui judicetur mecum ? reſiſtat mihi ſimul : & quis eſt, qui judicium ineat adverſum me ? appropinquet mihi. Ecce Dominus Dominus adjuvabit me, quis affliget me ? Ecce omnes vos quaſi veſtimentum veteraſcetis : & tinea comedet vos. Quis eſt in vobis, qui timeat Dominum ? exaudiat vocem pueri ejus. Qui ambulant in tenebris, & non eſt ei lux : confidite in nomine Domini, & innitimini ſuper Deo. Ecce omnes vos ignem accenditis, & confortatis flammam. Ambulate in lumine ignis veſtri, & in flamma quam ſuccendiſtis. Propter me facta ſunt hæc vobis : in mœrore dormietis.

MS.A. (α) οὐχ ὑπήκουσεν; (β) τῇ ἀπειλῇ μου (γ) Καὶ ἐνδύσω (δ) θήσω ὡς σάκκον (ε) Κύριος δίδωσιν (ζ) σοφίας, τοῦ (η) ἐν καιρῷ ἡνίκα δεῖ (θ) τὸ πρωΐ, (ι) κυρίου ἀνοίγει τὰ ὦτά μου· (˜) δέδωκα (κ) κύριος βοηθός μου (λ) κύριος βοηθεῖ (μ) ὡς σὴς (ν) ἀκουσάτω (ξ) αὐτῇ,

ΚΕΦ. να'.

1 Ἀκούσατέ μου οἱ διώκοντες τὸ δίκαιον,
καὶ ζητοῦντες τὸν κύριον, ἐμβλέψατε εἰς τὴν
στερεὰν πέτραν, ἣν ἐλατομήσατε, καὶ εἰς τὸν
βόθυνον τοῦ λάκκου, ὃν ὠρύξατε.

CAP. LI.

Audite me, qui perſequimini quod juſtum eſt, & quæritis Dominum. Inſpicite in ſolidam petram, quam excidiſtis, & in foveam laci, quam fodiſtis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

נ

1 כדנן אמר יי אידא היא אגרת פטורין דיהבית לכנשתכון ארי אתרחקת או מן גבר דליה
חובא קדמי דזבנית יתכון ליה הא בחוביכון אזדבנתון ובמרדיכון אתרחקת כנישתכון:
2 מא דין שלחית נביי ולא תבו אתנביאו ולא קבילו האתקפדא אתקפדת גבורתי
מלמפרק ואם לית קדמי חיל לשיזבא הא במזופיתי אחריב ימא אשוי נהרין מדברא
3 יסרון נוניהון מבלי מיא וימותון בצחותא: אכסי שמיא כד בקבלא ובסקא אשוי
4 כסותהון: יי אלהים יהב לי לשן דמלפין להודעא לאלפא לצדיקיא דמשלהן לפתגמי
אוריתא חוכמא בכן בצפר בצפר מקדים לשלחא נביאוהי מאים יתפתחן אודני חיביא
5 ויקבלון אולפן: יי אלהים שלחני לאתנבאה ואנא לא סרבית לאחורא לא אסתחרית:
6 גבי יהבית למחן ולסתי למרטן אפי לא טמרית מאתכנעו ורוק: ויי אלהים סעיד לי על
7
8 כן לא אתכנעית על כן שויתי אפי תקיפין כטינרא וידענא ארי לא אתבהית: קריבא
9 זכותי מן ידין עמי נקום כחדא מן בעיל דיני יתקרב לותי: הא יי אלהים סעיד לי מן הוא
10 די יחיבנני הא כולהון כלבושא דבלי וכעשא אכל ליה: [אמר נביא עתיד קודשא
בריך הוא למהוי אמר לעממיא] מן בכון מדחליא דיי די שמע בקל עבדיה נביא דעבד
אוריתא בעקא כגבר דמהלך בקבלא ולית זהור ליה מתרחיץ בשמא דיי ומסתמיך על
11 פורקנא דאלהיה: [מתיבין עממיא ואמרין קדמוהי רבוננא לא אפשר לנא למעסק
באוריתא ארי כל יומנא אתגרינא דין עם דין בקרבא וכד נצחנא דין לדין אוקדנא
בתיהון ושבינא טפלהון ונכסיהון ובהדא גונא שלימו יומנא ולא אפשר לנא למעסק
באוריתא מתיב קודשא בריך הוא ואמר להון] הא כולכון מגרן באשתא מתקפי חרב
אזילו פילו באשתא דגריתון ובחרבא דתקפתון ממימרי הות דא לכון לתקלותכון
תתובון:

נא

קבילו למימרי רדפי קושטא דבען אולפן מן קדם יי אסתכלו די כחציבא מטינרא
אתחצבתון וכפסולא דמגוב ריקן אתפסלתון:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. L.

HÆc dicit Dn̄s: Quis eſt iſte libellus repudii quẽ dedi cœtui veſtro, qui elongatꝰ eſt à me? aut quis *vir* eſt creditor corã me? cui vendidi vos? Ecce propter peccata veſtra venditi eſtis, & propter ſcelera veſtra elongata eſt congregatio veſtra. Quare miſi Prophetas meos, & non ſunt converſi? prophetaverunt, & non obedierunt: nunquid deficiens defuit potentia mea ut non redimeret? aut non eſt corã me virtꝰ ad liberandũ? ecce in increpatione mea ſiccabo mare; ponam flumina in deſertũ, computreſcent piſces eorũ ſine aqua, & morientur in ſiti. Operiam cœlos quaſi tenebris, & quaſi ſaccũ ponã operimentũ eorũ. Dn̄s Deꝰ dedit mihi linguã docentiũ, ut ſciã docere juſtos ſcientiã, qui ad verba Legis anhelant: veruntamẽ mane manè prævenit ut mittat prophetas ſuos, ſi fortè aperiantur aures peccatorũ, & ſuſcipiant diſciplinã. Dn̄s Deus miſit me ad prophetandũ, & ego non contradixi, neq; ſum converſus retrorſũ. Dorſũ meũ dedi percuſſoribꝰ, & genas meas vellentibꝰ: faciẽ meã non abſcondi à confuſione, & ſputo. Dn̄s autẽ Deꝰ auxiliator meus eſt, & ideò non ſum confuſus: ideo poſui faciẽ meam fortẽ ſicut petrã; & ſcio quoniã non confundar. Appropinquat juſtitia mea: quis judicabitur mecũ? ſurgamus ſimul, quis eſt adverſarius meus? accedat ad me. Ecce Dn̄s Deꝰ auxiliator meꝰ eſt: quis eſt qui condemnet me? ecce omnes illi quaſi veſtimentũ ꝙ veteraſcit, ꝙ tinea comedit. Dicit Propheta: Futurũ eſt ut ſanctus & benedictus dicat populis: Quis eſt in vobis ex timentibus Dn̄m, audiens vocẽ *ſervi ſui Prophetæ*, qui eſt factor legis in tribulatione; ſicut vir qui ambulat in tenebris, & non eſt lumẽ ei: ſperet in nomine Dn̄i, & innitatur ſup ſalutare Dei ſui. Reſpondebunt populi & dicent corã eo: Dominator noſter, non poteſt fieri ut laboremꝰ in Lege, quia quotidie irruimꝰ unus contra alterũ in bello, & quando mutuò vincimus alter alterius ſuccendimus domos, & captivos ducimus parvulos eorũ & ſubſtantias eorum: & hoc *pacto* conſumpti ſunt dies noſtri: itaq; non eſt poſſibile nobis ut incumbamus Legi. Reſpondebit ille qui eſt ſanctus & benedictus & dicet eis: Ecce oẽs vos immittentes ignẽ, & tenentes gladium, ite & cadite in ignẽ quem immiſiſtis, et in gladium quem tenuiſtis: à verbo meo factum eſt hoc vobis, in interitum veſtrum revertimini.

CAP. LI.

OBedite verbo meo qui ſequimini veritatem, qui quæritis doctrinam a facie Domini, attendite, ꝙ ſicut id quod exciditur à petra, ſic exciſi eſtis; & ſicut præciſio ciſternæ vacuæ, ſic præciſi eſtis.

Verſio S Y R I A C A cum Interpretatione L A T I N A.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܝܢܘ ܟܬܒܐ ܕܫܘܒܩܢܐ ܕܫܒܩܬ ܠܐܡܟܘܢ. ܐܘ ܡܢܘ ܡܪܐ ܚܘܒܬ
ܕܙܒܢܬܟܘܢ ܠܗ. ܗܐ ܒܚܛܗܝܟܘܢ ܐܙܕܒܢܬܘܢ. ܘܒܥܘܠܟܘܢ ܐܫܬܒܩܬ ܐܡܟܘܢ. * ܠܡܢܐ
ܐܬܝܬ ܘܠܝܬ ܐܢܫ. ܩܪܝܬ ܘܠܝܬ ܕܥܢܐ. ܢܓܝܪܐ ܚܨܕܬ ܐܝܕܝ ܘܐܬܛܠܡܬ. ܐܘ ܠܝܬ ܒܝ ܚܝܠܐ
ܠܡܦܪܩܘ. ܗܐ ܒܟܐܬܝ ܡܚܪܒ ܐܢܐ ܝܡܐ. ܘܥܒܕ ܐܢܐ ܢܗܪܘܬܐ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ. ܘܢܣܪܚܘܢ
ܢܘܢܝܗܘܢ ܡܢ ܕܠܐ ܡܝܐ. ܘܢܡܘܬܘܢ. * ܘܡܠܒܫ ܐܢܐ ܠܫܡܝܐ ܚܫܘܟܐ. ܘܣܩܐ ܥܒܕ 3
ܐܢܐ ܠܒܘܫܗܘܢ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܝܗܒ ܠܝ ܠܫܢܐ ܕܡܪܕܘܬܐ. ܕܐܕܥ ܘܐܚܘܐ ܠܡܠܐܐ 4
ܡܠܬܐ. ܐܥܝܪ ܒܨܦܪܐ. ܒܨܦܪܐ ܢܛܝܒ ܠܝ ܐܕܢܐ ܠܡܫܡܥ ܡܪܕܘܬܐ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܦܬܚ 5
ܠܝ ܐܕܢܐ. ܘܐܢܐ ܠܐ ܗܦܟܬ ܠܒܣܬܪܝ. ܘܠܐ ܩܡܬ ܒܩܘܒܠܐ. * ܓܘܫܡܝ ܝܗܒܬ 6
ܠܡܚܘܬܐ. ܘܦܟܝ ܠܡܚܘܦܬܐ. ܘܐܦܝ ܠܐ ܐܗܦܟܬ ܡܢ ܒܗܬܬܐ ܘܡܢ ܪܘܩܐ. * ܘܡܪܝܐ ܐܠܗܐ 7
ܥܕܪܢܝ. ܡܛܠܗܢܐ ܠܐ ܒܗܬܬ. ܡܛܠܗܢܐ ܣܡܬܗ ܠܦܪܨܘܦܝ ܐܝܟ ܟܐܦܐ. ܘܝܕܥܬ ܕܠܐ ܐܒܗܬ
ܐܢܐ. * ܕܩܪܝܒ ܗܘ ܡܙܕܕܩܢܝ. ܡܢܘ ܕܕܐܢ ܥܡܝ. ܢܩܘܡ ܐܟܚܕܐ. ܐܘ ܡܢܘ ܒܥܠ ܕܝܢܝ 8
ܢܬܩܪܒ ܠܘܬܝ. * ܗܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܡܥܕܪ ܠܝ. ܡܢܘ ܡܚܝܒ ܠܝ. ܗܐ ܟܠܟܘܢ ܐܝܟ 9
ܠܒܘܫܐ ܬܒܠܘܢ. ܘܣܣܐ ܢܐܟܘܠܟܘܢ. * ܡܢܘ ܒܟܘܢ ܕܕܚܠ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܢܫܡܥ ܩܠܐ 10
ܕܥܒܕܗ. ܕܡܗܠܟ ܒܚܫܘܟܐ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܢܘܗܪܐ. ܢܬܟܠ ܥܠ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܬܦܨܐ
ܒܐܠܗܗ. * ܗܐ ܟܠܟܘܢ ܪܡܝ ܢܘܪܐ ܐܢܬܘܢ. ܘܡܓܘܪܝ ܫܠܗܒܝܬܐ. ܗܠܟܘ ܒܢܘܗܪܐ 11
ܕܢܘܪܟܘܢ. ܘܒܫܠܗܒܝܬܐ ܕܐܘܩܕܬܘܢ. ܡܢ ܐܝܕܝ ܗܘܬ ܠܟܘܢ ܗܕܐ. ܕܒܥܩܬܐ ܬܫܟܒܘܢ

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢܐ *

* ܫܡܥܘܢܝ ܕܪܗܛܝܢ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܒܥܝܢ ܠܡܪܝܐ. ܚܘܪܘ ܠܛܘܪܐ ܕܐܬܓܙܪܬܘܢ ܡܢܗ. 1
ܘܠܓܘܒܐ ܕܐܬܚܦܪܬܘܢ ܡܢܗ.

CAP. L.

Sic dicit Dominus, Quinam eſt libellus re- 1
pudii quo matrem veſtram dimiſerim ? aut
quiſnā eſt creditor meus cui vos vendiderim?
Ecce propter peccata veſtra venundati eſtis,
& propter ſcelus veſtrum repudiata fuit ma-
ter veſtra. Cur me veniente nemo adeſt? vo- 2
canti nemo reſpondet ? diu meſſuit manus
mea, & decepta eſt ? an *quia* nullæ ſunt in me
vires ad eripiendum ? ecce increpatione meâ
mare exhaurio, & flumina perinde ac deſer-
tum reddo, ita ut piſces eorum putreſcant ob
aquæ penuriam ac moriantur : Cœlos te- 3
nebris induo, & cilicium facio veſtimentum
eorum. Dominus Deus dedit mihi linguam 4
eruditam, ut notum facerem & indicarem ex-
agitatis verbum : excitavit *me* diluculò, dilu-
culò diſponit mihi aures ad percipiendam
doctrinam. Dominus Deus aperuit mihi au- 5
res, & ego non averti me retrorſum, nec
obſtinatè reſtiti. Corpus meum expoſui pla- 6
gis, & genas meas percuſſionibus, faciem
meam non averti ab ignominia & ſputo.
Dominus Deus adjuvit me, propterea non 7
ſum pudefactus : iccircò compoſui faciem
meam ut lapidem, ſciens quòd non pudefiam,
Eò quòd proximus ſit juſtificator meus. Quis 8
eſt qui mecum litiget? conſiſtamus unà : aut ſi
quis eſt adverſarius meus, accedat ad me. En 9
Dominus Deus auxiliatur mihi, quis eſt me
condemnaturus ? en omnes iſti ut veſtimen-
tum conſumentur, & tinea corrodet eos.
Quicunque eſt inter vos timens Dominum, au- 10
diat vocem ſervi ejus : Qui ambulat in tene-
bris & caret luce, ſperet in nomine Domini,
& ſalvabitur per Deum ſuum. En vos omnes 11
injectores ignis eſtis, & incenſores flammæ ;
incedite in fulgore ignis veſtri, & nitore flam-
mæ veſtræ : è manibus meis contigit hoc vo-
bis, ut in triſtitia dormiatis.

CAP. LI.

Audite me qui curritis in juſtitia, & quæ- 1
ritis Dominum : conſiderate montem è quo
exciſi eſtis, & foveam è qua effoſſi eſtis.

Verſio A R A B I C A cum Interpretatione L A T I N A.

* الفصل الخمسون *

* هكذا يقول الرب * أي كتاب طلاق لأمكم الذي به سرحتها * أو لأي غريم
أبعتكم * ها بخطاياكم ابعتم * وبآثامكم سرحت أمكم * لماذا لأني أتيت وليس إنسان
موجودا * دعوت وليس من يجيب * هل لا تقدر يدي أن تنجي * أو لست أقدر أن أخلص
ها بوعيدي أخرب البحر وأجعل الأنهار براري * وتجف حيتانها من أن لا يكون ماء * وتموت
بالعطش * وأكسو السماء ظلمة * وأضع لباسها مثل المسح * الرب أعطاني لسان التأديب 3 4
لأعرف في وقت حين ينبغي أن أقول قولا وضع لي بالغداة * بالغداة زادني أذنا لأسمع * وأدب 5
الرب يفتح أذني * وأنا لم أعص ولم أمار * أعطيت ظهري للسياط * وخدي للطم * ولم أرد وجهي 6
عن خزي البصاق * والرب صار عوني * لأجل هذا لم أخجل * لكن وضعت وجهي مثل 7
الصخر الصماء وعلمت أني لست أخزى * لأن الذي يبررني قريب * من يحاكمني 8
ليقف معي معا * ومن يخاصمني ليقترب لي * ها الرب يعينني من يسيء إلي * ها أنتم جميعا مثل 9
الثوب تبلون * ومثل السوس يأكلكم * من فيكم يخاف الرب فليسمع صوت عبده 10
الذين يسيرون في الظلمة وليس لهم نور * توكلوا على اسم الرب وتسندوا بالله * ها أنتم 11
جميعكم نار تأكل * فقووا لهيبا وسيروا في ضوء ناركم وفي اللهيب الذي أوقدتموه
لأجلي صارت هذه لكم * في حزن ترقدون *

* الفصل الحادي والخمسون *

* اسمعوني يا طاردوا العدل وطالبوا الرب * انظروا إلى الصخر الصماء التي قطعتموها * وإلى 1
حفر الجب الذي حفرتموه *

CAP. L.

Sic ait Dominus, Quem repudii libel- 1
lum habet mater veſtra, quo repudiârim
eam ? aut cui creditori vos venum expo-
ſui ? en pro peccatis veſtris venum expo-
ſiti eſtis, & pro ſceleribus veſtris repudi-
ata eſt mater veſtra. Quâ de re cùm 2
venio, nemo adeſt ? voco, nec eſt qui re-
ſpondeat ? an non valet manus mea ſal-
vare ? an eripere non poſſum ? en ſolâ *in-*
crepatione meâ mare deſtruo, & fluvios
in ſolitudines converto, ita ut areſcant
piſces eorum eò quòd deſit aqua, & ſiti
pereant : Cœlum tenebris induo, & pono 3
veſtimentum ejus tanquam cilicium. Do- 4
minus conceſſit mihi linguam morigeram,
ut ſciam tempeſtivè quandonam oporte-
at proferre ſermonem quem imponit mihi
diluculò ; nam *diluculò addit mihi au-*
rem, ut audiam. Eruditio Domini ape- 5
rit aurem meam, & ego non rebello, ne-
que ambigo : Sed expono dorſum meum 6
loris, & genas meas colaphis, nec averto
faciem meam ab infamia ſputi. Domi- 7
nus eſt mihi præſidio, ideò non erubeſco,
imò expono faciem meam ut ſilicem du-
rum : & novi me non pudefactum iri,
Quoniam is qui me juſtificat, proximus 8
eſt. Qui mecum litigat, ſtet unà mecum ;
& qui mecum judicio contendit, ad me
accedat. Ecce Dominus opem fert mihi, 9
quis mihi noceat ? ecce vos omnes ceu ve-
ſtis deteremini, & tanquam tinea corro-
det vos. Quiſquis inter vos timet Do- 10
minum, audiat vocem ſervi ipſius : qui
ambulatis in tenebris, nec lucem habetis ;
confidite nomini Domini, & in Deo con-
fortamini. Ecce vos omnes eſtis ignis 11
devorans ; augete jam flammam, & in-
cedite in luce ignis veſtri, & in flamma
quam accendiſtis. Propter me factum eſt
hoc vobis, in mœrore jacebitis.

CAP. LI.

Audite me O ſectatores juſtitiæ & 1
quærentes Dominum : intuemini ad
petram duram quam excidiſtis, & ad fo-
veam putei quem excavâſtis.

ישעיה : נא

: vos *peperit* , Sarah ad & , vestrum patrem Abraham ad Aspicite
2 הַבִּיטוּ אֶל־אַבְרָהָם אֲבִיכֶם וְאֶל־שָׂרָה תְּחוֹלֶלְכֶם ׃
Quia .eum multiplicavi & , ei benedixi & , eum vocavi unum quia
3 כִּי־אֶחָד קְרָאתִיו וַאֲבָרְכֵהוּ וְאַרְבֵּהוּ ׃ כִּי־
,ejꝰ desolationes omnes est consolatus,Sijon DOMINUS est consolatꝰ
נִחַם יְהוָה צִיּוֹן נִחַם כָּל־חָרְבֹתֶיהָ
ejus solitudinem & , *Heden* tanquam ejus desertum posuit &
וַיָּשֶׂם מִדְבָּרָהּ כְּעֵדֶן וְעַרְבָתָהּ
, ea in invenietur lætitia & Gaudium .DOMINI hortus veluti
כְּגַן־יְהוָה שָׂשׂוֹן וְשִׂמְחָה יִמָּצֵא בָהּ
,mi popule me ad Attendite .*cantus* vox & ,actio gratiarum
4 תּוֹדָה וְקוֹל זִמְרָה ׃ הַקְשִׁיבוּ אֵלַי עַמִּי
, exibit me à lex quia : *percipite auribus* me *ad* , mea *natio* &
וּלְאוּמִּי אֵלַי הַאֲזִינוּ כִּי תוֹרָה מֵאִתִּי תֵצֵא
est Propinqua .faciam quiescere populorum lucem in meum judicium &
5 וּמִשְׁפָּטִי לְאוֹר עַמִּים אַרְגִּיעַ ׃ קָרוֹב
.judicabunt, populos mea brachia & ,mea salus est egressa , mea justitia
צִדְקִי יָצָא יִשְׁעִי וּזְרֹעַי עַמִּים יִשְׁפֹּטוּ
Levate .expectabunt meum brachium *ad* & ,expectabunt *insulæ* me *Ad*
6 אֵלַי אִיִּים יְקַוּוּ וְאֶל־זְרֹעִי יְיַחֵלוּן ׃ שְׂאוּ
cœli nam :deorsum terram *ad aspicite* & ,vestros oculos cœlos in
לַשָּׁמַיִם עֵינֵיכֶם וְהַבִּיטוּ אֶל־הָאָרֶץ מִתַּחַת כִּי־שָׁמַיִם
ejꝰ habitatores &,veterascet vestimētū sicut terra &,*sunt cōsumpti* fumꝰ sicut
כֶּעָשָׁן נִמְלָחוּ וְהָאָרֶץ כַּבֶּגֶד תִּבְלֶה וְיֹשְׁבֶיהָ
non mea justitia & , erit *seculum* in mea salus & : *morientur* similiter
כְּמוֹ־כֵן יְמוּתוּן וִישׁוּעָתִי לְעוֹלָם תִּהְיֶה וְצִדְקָתִי לֹא
mea lex populus ,justitiam scientes me *ad* Audite .conteretur
7 תֵחָת ׃ שִׁמְעוּ אֵלַי יֹדְעֵי צֶדֶק עַם תּוֹרָתִי
eorum *convitiis* à & ,*hominis* opprobrium timeatis ne , *eorum corde in*
בְלִבָּם אַל־תִּירְאוּ חֶרְפַּת אֱנוֹשׁ וּמִגִּדֻּפֹתָם
lanam sicut & ,tinea eos comedet vestimentum sicut Quia .*conterremini* ne
8 אַל־תֵּחָתּוּ ׃ כִּי כַבֶּגֶד יֹאכְלֵם עָשׁ וְכַצֶּמֶר
mea salus & , erit *seculum* in mea justitia Et .*sis* eos devorabit
יֹאכְלֵם סָס וְצִדְקָתִי לְעוֹלָם תִּהְיֶה וִישׁוּעָתִי
fortitudinem indue ,te suscita ,te Suscita .generationum generationem in
9 לְדוֹר דּוֹרִים ׃ עוּרִי עוּרִי לִבְשִׁי־עֹז
generationes ,*quondam* dies secundùm te Suscita .DOMINI brachium
זְרוֹעַ יְהוָה עוּרִי כִּימֵי קֶדֶם דֹּרוֹת
?draconem *vulnerans* , *superbum excidens ipsum* tu Nonne.seculorum
עוֹלָמִים הֲלוֹא אַתְּ־הִיא הַמַּחְצֶבֶת רַהַב מְחוֹלֶלֶת תַּנִּין ׃
ponens : *multæ* voraginis aquas,mare exsiccans *ipsum* tu Nonne
10 הֲלוֹא אַתְּ־הִיא הַמַּחֲרֶבֶת יָם מֵי תְּהוֹם רַבָּה הַשָּׂמָה
redempti Et ? *redemptos transeundum ad* , viam maris *profunditates*
11 מַעֲמַקֵּי־יָם דֶּרֶךְ לַעֲבֹר גְּאוּלִים ׃ וּפְדוּיֵי
seculi lætitia & , *præconio* cum Sijon venient & , revertentur DOMINI
יְהוָה יְשׁוּבוּן וּבָאוּ צִיּוֹן בְּרִנָּה וְשִׂמְחַת עוֹלָם
, *mæror* fugient , *assequentur* lætitiam & , Gaudium .eorum caput super
עַל־רֹאשָׁם שָׂשׂוֹן וְשִׂמְחָה יַשִּׂיגוּן נָסוּ יָגוֹן
timeas ut - tu Quæ .vos *consolans* ipse ego , Ego .gemitus &
12 וַאֲנָחָה ׃ אָנֹכִי אָנֹכִי הוּא מְנַחֶמְכֶם מִי־אַתְּ וַתִּירְאִי
es oblitus Et ? dabitur herba , hominis filio à & ? morietur homine ab
13 מֵאֱנוֹשׁ יָמוּת וּמִבֶּן־אָדָם חָצִיר יִנָּתֵן ׃ וַתִּשְׁכַּח
: terram *fundantis* & , cœlos *tendentis* , tui factoris DOMINI
יְהוָה עֹשֶׂךָ נוֹטֶה שָׁמַיִם וְיֹסֵד אָרֶץ
quando,coarctantis excandescentiæ faciebus à die tota jugiter formidâsti &
וַתְּפַחֵד תָּמִיד כָּל־הַיּוֹם מִפְּנֵי חֲמַת הַמֵּצִיק כַּאֲשֶׁר
? *coarctantis* furor ubi Et .corrumpendum ad *paravit*
כּוֹנֵן לְהַשְׁחִית וְאַיֵּה חֲמַת הַמֵּצִיק ׃

Versio VUL. LAT.

2 Attendite ad Abraham patrem vestrum, & ad Saram quæ peperit vos: quia unum vocavi eum, & benedixi ei, & multiplicavi eum. 3 Consolabitur ergò Dominus Sion, & consolabitur omnes ruinas ejus: & ponet desertum ejus quasi delicias, & solitudinem ejus quasi hortum Domini. Gaudium & lætitia invenietur in ea, gratiarum actio & vox laudis. 4 Attendite ad me popule meus, & tribus mea me audite: quia lex à me exiet, et judiciū meum in lucem populorum requiescet. 5 Propè est Justus meus, egressus est Salvator meus, & brachia mea populos judicabunt: me insulæ expectabunt, & brachiū meum sustinebunt. 6 Levate in cœlum oculos vestros, & videte sub terra deorsum: quia cœli sicut fumus liquescent, & terra sicut vestimentum atteretur, & habitatores ejꝰ sicut hæc interibunt: Salus autem mea in sempiternum erit, & justitia mea non deficiet. 7 Audite me qui scitis justum, populꝰ meus lex mea in corde eorum: nolite timere opprobriū hominum, & blasphemias eorum ne metuatis. 8 Sicut enim vestimentum, sic comedet eos vermis: & sicut lanam, sic devorabit eos tinea: Salus autem mea in sempiternum erit, & justitia mea in generationes generationū. 9 Consurge, consurge, induere fortitudinem brachiū Domini: consurge sicut in diebus antiquis, in generationibus seculorum. Numquid non tu percussisti superbū, vulnerâsti draconem? 10 Numquid non tu siccâsti mare, aquam abyssi vehementis: qui posuisti profundū maris viam, 11 ut transirent liberati? Et nunc qui redempti sunt à Dn̄o, revertentur, & venient in Sion laudantes, & lætitia sempiterna super capita eorum, gaudiū & lætitiam tenebūt, fugiet do- 12 lor & gemitus. Ego, ego ipse consolabor vos: quis tu ut timeres ab homine mortali, & à filio hominis, qui quasi fœnum 13 ita arescet? Et oblitus es Domini factoris tui, qui tetendit cœlos, et fundavit terram: et formidâsti jugiter totâ die à facie furoris ejus qui te tribulabat, et paraverat ad perdendū: ubi nunc est furor tribulantis?

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

2 Ἐμβλέψατε εἰς Ἀβραὰμ τὸν πατέρα ὑμῶν, καὶ εἰς Σάῤῥαν τὴν ὠδίνουσαν ὑμᾶς· ὅτι εἷς ἦν, καὶ ἐκάλεσα αὐτὸν, καὶ (·) εὐλόγησα αὐτὸν, καὶ ἠγάπησα αὐτὸν, καὶ ἐπλήθυνα αὐτόν. 3 Καὶ σὲ νῦν παρακαλέσω Σιὼν, καὶ παρεκάλεσα πάντα τὰ ἔρημα αὐτῆς (α), καὶ θήσω τὰ ἔρημα αὐτῆς ὡς παράδεισον, καὶ τὰ πρὸς δυσμὰς αὐτῆς ὡς παράδεισον κυρίου· εὐφροσύνην καὶ ἀγαλλίαμα εὑρήσουσιν ἐν αὐτῇ, ἐξομολόγησιν καὶ 4 φωνὴν αἰνέσεως. Ἀκούσατέ μου, (β) ἀκούσατέ μου λαός μου, καὶ οἱ βασιλεῖς πρός με ἐνωτίσασθε, ὅτι νόμος παρ' ἐμοῦ ἐξελεύσεται, 5 καὶ ἡ κρίσις μου εἰς φῶς ἐθνῶν. Ἐγγίζει ταχὺ ἡ δικαιοσύνη μου, καὶ ἐξελεύσεται (γ) ὡς φῶς τὸ σωτήριόν μου, καὶ εἰς τὸν βραχίονά μου ἔθνη ἐλπιοῦσιν· ἐμὲ νῆσοι ὑπομενοῦσι, καὶ εἰς τὸν βραχίονά μου ἐλπιοῦσιν. 6 Ἄρατε εἰς τὸν οὐρανὸν τοὺς ὀφθαλμοὺς ὑμῶν, καὶ ἐμβλέψατε εἰς τὴν γῆν κάτω· ὅτι ὁ οὐρανὸς ὡς καπνὸς ἐστερεώθη, (δ) ἡ δὲ γῆ ὡς ἱμάτιον παλαιωθήσεται, οἱ δὲ κατοικοῦντες (ε) ὥσπερ ταῦτα ἀποθανοῦνται, τὸ δὲ σωτήριόν μου εἰς τὸν αἰῶνα ἔσται, ἡ δὲ δικαιο- 7 σύνη μου οὐ μὴ ἐκλείπῃ. Ἀκούσατέ μου οἱ εἰδότες κρίσιν, (ζ) λαὸς οὗ ὁ νόμος μου ἐν τῇ καρδίᾳ ὑμῶν· μὴ φοβεῖσθε ὀνειδισμὸν ἀνθρώπων, καὶ τῷ φαυλισμῷ αὐτῶν μὴ ἡτ- 8 τᾶσθε. (η) Ὡς γὰρ ἱμάτιον βρωθήσεται ὑπὸ χρόνου, καὶ (θ) ὡς ἔρια βρωθήσεται ὑπὸ σητός· ἡ δὲ δικαιοσύνη μου εἰς τὸν αἰῶνα ἔσται, τὸ δὲ σωτήριόν μου εἰς γενεὰς γενεῶν. 9 Ἐξεγείρου ἐξεγείρου Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἔνδυσαι τὴν ἰσχὺν τοῦ βραχίονός σου, ἐξεγείρου ὡς ἐν 10 ἀρχῇ ἡμέρας, ὡς γενεὰ αἰῶνος. Οὐ σὺ εἶ ἡ ἐρημοῦσα θάλασσαν, ὕδωρ ἀβύσσου πλῆθος; ἡ θεῖσα τὰ βάθη τῆς θαλάσσης 11 ὁδὸν διαβάσεως ῥυομένοις Καὶ λελυτρωμένοις; ὑπὸ γὰρ κυρίου ἀποστραφήσονται, καὶ ἥξουσιν εἰς Σιὼν μετ' εὐφροσύνης καὶ ἀγαλλιάματος αἰωνίου· ἐπὶ (ι) κεφαλῆς γὰρ αὐτῶν (κ) αἴνεσις καὶ εὐφροσύνη καταλήψεται αὐτούς· ἀπέδρα ὀδύνη καὶ λύπη καὶ στεναγ- 12 μός. Ἐγώ εἰμι, ἐγώ εἰμι ὁ παρακαλῶν σε· γνῶθι (λ) τίς οὖσα ἐφοβήθης ἀπὸ ἀνθρώπου θνητοῦ, καὶ ἀπὸ υἱοῦ ἀνθρώπου, οἳ ὡσεὶ χόρτος 13 ἐξηράνθησαν. Καὶ ἐπελάθου θεὸν τὸν ποιήσαντά σε, τὸν ποιήσαντα τὸν οὐρανὸν καὶ θεμελιώσαντα τὴν γῆν· καὶ ἐφοβοῦ ἀεὶ πάσας τὰς ἡμέρας τὸ πρόσωπον τοῦ θυμοῦ τοῦ θλίβοντός σε. ὃν τρόπον γὰρ ἐβουλεύσατο τοῦ (μ) ἆραί σε, καὶ νῦν ποῦ ὁ θυμὸς τοῦ θλίβοντός σε;

Respicite in Abraam patrem vestrum, & in Sarram, quæ peperit vos: quia unus erat, & vocavi eum, & benedixi eum, & dilexi illum, & multiplicavi eum. Et nunc consolabor Sion: Et consolatus sum omnia deserta ejus, & (a) ponam deserta ejus quasi paradisum; & ea, quæ ad Occidentem ejus sunt, quasi paradisum Domini: Lætitiam, & exultationem invenient in ea, confessionem & vocem laudis. Audite me, audite me populus meus: & (b) reges ad me auribus attendite: quia lex à me egredietur, & judicium meum in lucem gentium. Appropinquat citò justitia mea: & egredietur, sicut lux, salutare meum: & in brachio meo gentes sperabunt. Me insulæ expectabunt, & in brachio meo sperabunt. Levate in cœlum oculos vestros, & inspicite in terram deorsum: quoniam cœlum, sicut fumus, (c) firmatum est: terra autem, sicut vestimentum veterascet: & habitatores ejus, sicut hæc, morientur. Salutare autem meum in sempiternum erit, & justitia mea non deficiet. Audite me, qui scitis judicium; populus, cujus lex mea in corde (d) vestro. Nolite timere opprobrium hominum: & contemptu eorum ne vincamini. Sicut enim vestimentum, comedetur à tempore; & sicut lanæ, comedetur à tinea. Justitia autem mea in æternum erit: & salus mea in generationes generationū. Exurge, exurge (e) Hierusalem, & induere fortitudine brachii tui: exurge, sicut in principio diei, sicut generatio (f) sempiterna. Nonne tu es, quæ desertum fecisti mare, aquam abyssi multam? quæ posuisti profunda maris viam transitûs his qui fuerant liberati, Et redempti? A Domino enim reducentur, & venient in Sion cum lætitia, & exultatione æternâ. Super caput enim eorum laus: & lætitia apprehendet eos: fugit dolor, & mœror, & gemitus. Ego sum, ego sum, qui consolor te. Scito, quæ cum esses, timueris ab homine mortali, et filio hominis; qui quasi fœnum, arefacti sunt. Et oblita es Dei factoris tui, qui fecit cœlum, et fundavit terram: et timebas semper cunctis diebus faciem furoris tribulantis te. (g) Sicut enim cogitavit auferre te; et nunc ubi est furor tribulantis te?

MS.A. (·) ηὐλόγησα (α) ὡς παράδεισον κυρίου· εὐφροσύνην (β) ἀκούσατε λαός μου, (γ) τὸ σωτήριόν μου, καὶ εἰς (δ) καὶ ἡ γῆ (ε) τὴν γῆν (ζ) λαός μου (η) Ὥσπερ (θ) ὥσπερ (ι) γὰρ τῆς κεφαλῆς (κ) ἀγαλλίαμα καὶ αἴνεσις καὶ εὐφροσύνη (λ) τίνα εὐλαβηθεῖσα ἐφοβήθης (μ) ἀρέσαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 אסתכלו באברהם אבוכון ובשרה דעדיאתכון ארי חד הוה אברהם יחידי בעלמא
3 קרבתיה לפולחני וברכתיה ואסגיתיה : ארי עתיד יי לנחמא ציון לנחמא כל
חרבתהא וישוי מדברהא כעדן ומישראה כגנתא דיי ביע וחדוא ישתכח בה מעלי
4 תודתא וקל דמשבחין : קבילו למימרי עמי וכנשתי לפולחני אציתא ארי אוריתא
5 מן קדמי תפוק ודיני כנהור ליה עממין אגלי ישתבחון : קריבא זכותי נפק פורקני
ובתקוף דרע גבורתי עממיא יתדנון למימרי נגון יסברון ולתקוף דרע גבורתי יכתרון :
6 זקופו לשמיא עיניכון ואסתכלו בארעא מלרע ארי שמיא כתננא דעדי כן יעדון
וארעא ככסותא דבליא כן תבלי ויתבהא אף אנון הכן ימותון ופורקני לעלם
7 יהי וזכותי לא תתעכב : קבילו למימרי ידעי קושטא עמא דאולפן אוריתי בלבהון
8 לא תדחלון מחסודי בני אנשא ומאתרברבותהון לא תתברון : ארי כלבושא דאכיל
ליה עשא וכעמרא דאחיד ביה רוקבא זכותי לעלם תהי ופורקני לדר דרין :
9 אתגלא אתגלא לבשי תקוף גבורא מן קדם יי אתגלא כיומי קדם דריא דמלקדמין
הלא בדילך כנשתא דישראל תברית גבריא שיציתי פרעה ומשריתיה דהוו תקיפין
10 כתנינא : הלא בדילך כנשתא דישראל אחרבית ימא מי תהום רבה שויתי עומקי
11 ימא אורח למנו משיזביא : ופריקיא דיי יתכנשון מביני גלותהון ויעלון לציון
בתושבחתא וחדות עלם תהי להון דלא פסקא וענן יקר יהי מטל על רישיהון ביע
12 וחדוא ישכחון ויסוף מנהון מבית ישראל דונא ותינחתא : אנא אנא הוא מנחמכון
13 ממן אתון דחלין מאנשא דמאת ומבר אנשא די כעסבא חשיב : ואתנשיתא פולחנא דיי
דעבדך דמתח שמיא ושכלל ארעא ודחלתא תדירא כל יומא מן קדם חמת מעיקא כמא
דמתקנין לחבלא וכען אן היא חמת דמעיקא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Attendite ad Abraham patrem vestrū, & ad Saram quæ concepit vos; quoniam unꝰ erat Abraham solꝰ in seculo: applicavi eum ad servitutem meam & benedixi ei, & multiplicavi eū. Quia consolaturꝰ est Dn̄s Sion, ut consoletur omnia deserta ejus: & ponet desertū ejus sicut delicias, & solitudinem ejꝰ quasi hortum Dn̄i: gaudiū & exultatio invenientur in ea: offerentes laudem & vox laudantiū. Obedite verbo meo popule mi, & congregatio mea ad servitutē meam ausculta; quoniam lex à facie mea egredietur, & judiciū meū quasi lumen: ipsum populi *me revelante* laudabunt. Prope est justitia mea, egressa est salꝰ mea, & in fortitudine brachii potentiæ meæ populi judicabuntur: Verbū meū insulæ sperabunt, & fortitudinem brachii potentiæ meæ expectabunt. Levate in cœlū oculos vestros, & aspicite terram deorsum, quoniā cœli sicut fumꝰ qui transit, sic pertransibunt; & terra sicut vestimentū quod veterascit; sic veterascet, & habitatores ejꝰ etiam ipsi similiter morientur: salꝰ autem mea in æternū erit, & justitia mea non tar*dabit*. Obedite verbo meo qui nostis veritatem; popule in cujꝰ corde est doctrina Legis *meæ*: ne timeatis ab opprobriis filiorū hominis, & à superbiis eorum ne conteramini. Quoniam sicut vestimentū quod corroditur à tinea, & sicut lana quā apprehendit putredo: justitia autem mea in æternum erit, & salꝰ mea in generationē generationum. Revelare, revelare, induere fortitudinē potentiæ à facie Dn̄i: revelare sicut in diebꝰ antiquis, in generationibꝰ quæ ab initio fuerunt: nonne propter te congregatio Israel contrivi fortes, consumpsi Pharaonem & exercitum ejꝰ, qui erant fortes sicut draco? Nonne propter te cœtus Israel arefeci mare, & aquas abyssi magni: posui in profundis maris viam ut transirent liberati? Et qui redempti sunt à Dn̄o, *congregabuntur* de medio captivitatis suæ, & ingredientur in Sion cum laude; & lætitia sempiterna erit eis, quæ nunquam cessabit: & nubes gloriæ erit obumbrans super capita eorum; gaudiū & lætitiam invenient: & cessabit ab illis qui sunt de domo Israel, mœror & gemitus. Ego, ego sum consolator vester: quem vos timetis? hominem qui moritur, & filium hominis qui quasi fœnū reputatꝰ est? Et oblitꝰ es cultꝰ Dn̄i qui fecit te, qui appendit cœlos & fundavit terrā: & timuisti semp tota die à facie furoris tribulantis, quando parabat disperdere: jam vero ubi est furor tribulantis?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܚܘܪܘ ܠܐܒܪܗܡ ܐܒܘܟܘܢ. ܘܠܣܪܐ ܕܒܛܢܬܟܘܢ. ܕܝܚܝܕ ܗܘܐ. ܘܩܪܝܬܗ ܘܒܪܟܬܗ
ܘܐܣܓܝܬܗ. * ܡܛܠ ܕܒܢܐ ܡܪܝܐ ܠܨܗܝܘܢ. ܘܡܚܕܬ ܠܟܠܗܘܢ ܚܘܪܒܝܗ. ܘܥܒܕ
ܡܕܒܪܗ ܐܝܟ ܥܕܝܢ. ܘܦܩܥܬܗ ܐܝܟ ܦܪܕܝܣܗ ܕܡܪܝܐ. ܚܕܘܬܐ ܘܣܘܥܪܢܐ ܢܫܬܟܚܘܢ ܒܗ.
ܬܘܕܝܬܐ ܘܩܠܐ ܕܙܡܪܐ. * ܫܡܥܘܢܝ ܥܡܡܐ: ܘܐܨܬܘ ܠܝ ܐܡܘܬܐ: ܡܛܠ ܕܢܡܘܣܐ ܡܢ
ܩܕܡܝ ܢܦܩ. ܘܕܝܢܝ ܢܘܗܪܐ ܠܥܡܡܐ. * ܩܪܒܬ ܙܕܝܩܘܬܝ ܘܢܦܩ ܦܘܪܩܢܝ. ܘܒܕܪܥܝ
ܥܡܡܐ ܢܬܕܝܢܘܢ. ܠܝ ܢܣܟܘܢ ܓܙܪܬܐ. ܘܠܕܪܥܝ ܢܣܒܪܘܢ. * ܐܪܝܡܘ ܠܫܡܝܐ
ܥܝܢܝܟܘܢ. ܘܚܘܪܘ ܒܐܪܥܐ ܠܬܚܬ. ܡܛܠ ܕܫܡܝܐ ܐܝܟ ܬܢܢܐ ܢܬܒܕܪܘܢ. ܘܐܪܥܐ ܐܝܟ
ܠܒܘܫܐ ܬܒܠܐ. ܘܥܡܘܖܝܗ ܐܟܘܬܗ ܢܗܘܘܢ. ܘܦܘܪܩܢܝ ܠܥܠܡ ܢܗܘܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܝ
ܠܐ ܬܒܛܠ. * ܫܡܥܘܢܝ ܝܕܥܝ ܙܕܝܩܘܬܐ: ܥܡܐ ܕܢܡܘܣܝ ܒܠܒܗܘܢ. ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܡܢ
ܚܣܕܐ ܕܐܢܫܐ. ܘܡܢ ܓܘܕܦܝܗܘܢ ܠܐ ܬܙܘܥܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܥܡܪܐ ܘܐܝܟ ܠܒܘܫܐ
ܢܐܟܘܠ ܐܢܘܢ ܣܣܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܝ ܠܥܠܡ ܬܗܘܐ. ܘܦܘܪܩܢܝ ܠܕܪ ܕܪܝܢ. * ܐܬܬܥܝܪܝ ܐܬܬܥܝܪܝ
ܨܗܝܘܢ. ܘܠܒܫܝ ܚܝܠܐ ܕܕܪܥܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܬܬܥܝܪܝ ܐܝܟ ܕܒܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܐܝܟ ܕܪܐ
ܕܥܠܡܝܢ. ܐܢܬܝ ܐܢܬܝ ܕܦܣܩܬܝ ܦܣܩܐ ܪܒܐ ܘܩܛܠܬܝ ܠܬܢܝܢܐ. * ܐܢܬܝ ܗܝ ܕܐܚܪܒܬܝ
ܝܡܐ. ܘܡܝܐ ܕܬܗܘܡܐ ܪܒܐ. ܘܥܒܕܬܝ ܥܘܡܩܐ ܕܝܡܐ ܠܫܒܝܠܐ. ܕܢܥܒܪܘܢ ܦܪܝܩܐ
ܦܪܝܩܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. * ܘܢܗܦܟܘܢ ܘܢܐܬܘܢ ܠܨܗܝܘܢ ܒܬܫܒܘܚܬܐ. ܘܠܥܠܡ ܬܗܘܐ ܚܕܘܬܐ
ܥܠ ܪܫܝܗܘܢ. ܒܘܣܡܐ ܘܚܕܘܬܐ ܢܕܪܟܘܢ. ܘܢܥܪܩܘܢ ܟܘܪܗܢܐ ܘܬܢܚܬܐ. * ܐܢܐ ܐܢܐ
ܡܒܝܐܢܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܢ ܐܢܬܝ ܕܕܚܠܬܝ ܡܢ ܐܢܫܐ ܕܡܐܬ. ܘܡܢ ܒܪܢܫܐ ܕܐܝܟ ܥܣܒܐ
ܢܝܒܫ. * ܘܛܥܝܬܝ ܠܡܪܝܐ ܕܥܒܕܟܝ. ܕܡܬܚ ܫܡܝܐ. ܘܫܬܐܣ ܫܬܐܣܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ.
ܘܕܚܠܬܝ ܐܡܝܢܐܝܬ ܟܠܝܘܡ ܡܢ ܩܕܡ ܚܡܬܗ ܕܐܠܘܨܐ. ܕܡܛܝܒ ܗܘܐ ܠܡܚܒܠܘ.
ܘܐܝܟܘ ܚܡܬܗ ܕܐܠܘܨܐ. ܕܡܣܪܗܒ ܗܘܐ ܠܓܢܒܪܐ ܠܡܚܒܠܘ.

Conſiderate Abrahamum patrem veſtrum & 2
Saram quæ vos concepit ; quomodo, cùm u-
nus eſſet, vocaverim eum, benedixerim, &
multiplicaverim. Ædificabit enim Dominus 3
Sionem, & reſtaurabit omnes ruinas ejus, de-
ſertum ejus reddet Edeni ſimile, & planitiem
ejus ſimilem paradiſo Domini : exultatio &
gaudium audietur in ea, gratiarum actio, &
vox cantici. Audite me populi, & auſculta- 4
te me gentes : nam lex à conſpectu meo pro-
dit, et judicium meum lux eſt populorum.
Acceſſit juſtitia mea, jam egreſſa eſt ſal⁹ mea, 5
& brachiis meis judicabuntur populi : me
expectabunt inſulæ, et brachia mea præſtola-
buntur. Attollite in cœlum oculos veſtros, 6
& intuemini quoque deorſum in terram :
nam cœli ut fumus labentur, et terra ut veſti-
mentum conſumetur, & habitatoribus ejus
idem continget : ſalus verò mea in æternum
erit, & juſtitia mea nunquam labetur. Au- 7
dite me qui cognoſcitis juſtitiam, popule in
quorum corde lex mea eſt : ne timeatis contu-
melias hominum, & blaſphemias eorum ne
formidetis : Quoniam ut lanam & ut pan- 8
num corrodet eos tinea : juſtitia verò mea in
æternum erit, et ſalus mea in generationem
generationum. Evigila, evigila Sion, & in- 9
duere fortitudine brachii Domini : evigila ut
priſcis diebus, & ut ævis æternis. Tu, tu *in-
quam* es quæ excidiſti exciſionem magnam,
& occidiſti draconem. Tu es quæ deſtru- 10
xiſti mare et aquas abyſſi magnæ ; et in pro-
fundo aquarum feciſti viam, ut tranſirent red-
empti, redempti *inquam* à Domino. Red- 11
irent, et ingrederentur Sionem cum gloria,
in ſecula maneret gaudium ſuper capita eo-
rum, voluptatem et lætitiam aſſequerentur,
fugeréntque ærumnæ et ſuſpiria. Ego ſum 12
conſolator veſter, ait Dominus : qualis es tu,
quòd timeas hominem mortalem, & hominē
qui tanquam fœnum areſcet ? Et oblita ſis 13
Domini qui te fecit, qui cœlos extendit, et fir-
mavit fundamenta terræ ? et jugiter quotidie
pertimeſcas iram oppreſſoris qui paratus erat
ad vaſtandum ? ubinam eſt ira opprimentis
qui robuſtos accelerabat ad vaſtandum ?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* انظروا الى ابراهيم ابيكم والى سارة التي طلقت بكم * لانه واحد كان ودعوته وباركته :
واحببته وكثرته * والان ادعوك يا صهيون * وادعوا جميع خراباتها * مثل فردوس الرب :
يجدون فيها سرورا وبهجة * اعترافا وصوت تسبيح * اسمعوني اسمعوا يا شعبي * وانصتوا الي
ايها الملوك * لان الناموس من عندي يخرج * وحكمي نور للامم * يقترب سريعا عدلي * ويخرج
خلاصي * وعلى ذراعي تتكل الامم * لي ترجوا الجزاير * وعلى ذراعي يتوكلون * ارفعوا الى السماء
اعينكم * وانظروا الى الارض اسفل * لان السماء مثل دخان تسرب * والارض مثل الثوب
تعتق * وسكان الارض مثل هلك يموتون * وخلاصي الى الابد يكون * وعدلي لا يفنى * اسمعوني
ايها العارفون بالحكم * شعبي الذي ناموسي في قلبكم * لا تخشوا تعيير البشر ولا تغلبوا
لافترايهم * لانهم مثل ثوب يوكل من الزمان * ومثل صوف يوكل من السوس * وعدلي
الى الدهر يكون * وخلاصي الى جيل الاجيال *

* الاصحاح الخامس والعشرون *

* النبوة في رد سبي اورشليم اليها وبشارتها انها ترجع اخير مما كانت *

* انتبهي انتبهي يا اورشليم والبسي قوة ذراعك * انتبهي كما في اول يوم كالجيل الدهر
* اليس انت البحر المخرب * ماء العمق الكبير * الذي صيرت اعماق البحر طريقا للعبور
للمخلصين والمستنقذين من قبل الرب * يرجعون ويوافون الى صهيون بسرور وابتهاج
ابدي * لان على هاماتهم بهجة وتسبحة * ويتسلمهم السرور * تتباعد الوجع والحزن والتنهد * انا
هو انا هو المعزي لك * اعرفي لمن تخافين * اتخافين من انسان مائت ومن ابن انسان الذي
مثل العشب يجفون * وتنسي الله الذي صنعك الذي صنع السماء واسس الارض * وتخشي
دايما كل الايام وجه غضب محزنك * لانه كما راى ان ينزعك * والان اين غضب محزنك *

Intuemini in Abrahamū patrem veſtrum, 2
*et ad Saram quæ peperit vos : hunc enim,
cùm unicus eſſet, vocavi, benedixi, dilexi,
et multiplicavi. Sic jam vocabo te O Si-* 3
*on, & omnes ruinas tuas vocabo, ita ut
quaſi in paradiſo Domini reperiant in te
gaudium et hilaritatem, gratiarum actio-
nem & vocem laudis. Audite me, au-* 4
*dite O popule meus, & attendite ad me O
reges : lex enim à me prodibit, & judici-
um meum lux erit gentibus. Appropin-* 5
*quabit citò juſtitia mea, & egredietur ſa-
lus mea, & in brachio meo fiduciam col-
locabunt gentes, me expectabunt inſulæ, et
brachio meo confident. Attollite in cæ-* 6
*lum oculos veſtros, & intuemini in ter-
ram deorſum : etenim cælum ut fumus
diſſipabitur, terra ut veſtis veteraſcet, &
habitatores terræ eodem modo atque iſta
peribunt : ſalus verò mea in æternum ma-
nebit, et juſtitia mea nunquam deficiet.
Audite me qui judicium agnoſcitis, popule* 7
mi qui legem meam in corde veſtro tene-
tis : *ne pertimeſcatis opprobrium mortali-
um, & contumeliis eorum ne ſuccumba-
tis. Hi enim ſimiles ſunt panno qui tem-* 8
*pore exeditur, & lanæ quæ à tineis cor-
roditur : juſtitia verò mea perpetuò dura-
bit, & ſalus mea in generatione generati-
onum.*

Textus vigeſimus quintus.

Prophetia de reductione captivitatis Jeroſolymæ ad ipſam, & prædictio ad eandem quòd in *ſtatum* priſtino meliorem ſit reſtituenda.

Expergiſcere, expergiſcere O Jeruſalem, 9
*& indue fortitudinem brachii tui ; ex-
pergiſcere ut primâ die, ut ævo ſempi-
terno. Nónne tu es mare illud vaſtans,* 10
*aqua ſummæ profunditatis, quæ conver-
tiſti profunda maris in viam, ut tranſirent
ſalvati & redempti à Domino? Rever-* 11
*tentur, et pervenient ad Sionem cum gau-
dio et lætitiâ ſempiternâ ; quoniam ſupra
verticem eorum exultatio erit et jubilum,
lætitia occupabit eos ; dolor, mæſtitia ac
gemitus recedent. Ego ſum, ego ſum con-* 12
ſolator tuus : dignoſce quem timere debe-
as : *an timeres hominem mortalem & fi-
lium hominis, qui velut herba areſcent ?
Et oblivſceeris Dei qui te fecit, qui cœlū* 13
*condidit, terrámque fundavit? paveréſque
ſemper quotidiè vultum iratum affligen-
tis te, quin te (ut arbitratur) excindat ?
jam verò ubi eſt ira affligentis te ?*

ישעיה: נב

deficiet nec , fovea in morietur non & : *solvi* *demigrans* Festinavit
14 מהר צעה להפתח ולא־ימות לשחת ולא יחסר
personuerunt & , mare *findens* tuus Deus Dominus ego Et .ejus panis
15 לחמו: ואנכי יהוה אלהיך רגע הים ויהמו
,tuo ore in mea verba posui Et.ejus nomen exercituũ Dominus : ejꝰ fluctꝰ
16 גליו יהוה צבאות שמו: ואשם דברי בפיך
fundandum ad &,cœlos *plantandum ad* : te protexi meæ manus umbra in &
ובצל ידי כסיתיך לנטע שמים וליסד
, te Suscita .tu meus populus ,Sijon ad *dicendum ad* & , terram
17 ארץ ולאמר לציון עמי אתה: התעוררי
Domini manu de bibisti quæ , Jerusalaim surge , te suscita
התעוררי קומי ירושלם אשר שתית מיד יהוה את־
.expressisti,bibisti *veneni mortiferi* calicis fæcem : ejꝰ *excandescentiæ* calicem
כוס חמתו את־קבעת כוס התרעלה שתית מצית:
apprehendens non & : genuit filiis omnibus ex ei ductor Non
18 אין־מנהל לה מכל־בנים ילדה ואין מחזיק
,tibi *evenientia* hæc Duo *.magnificavit* filiis omnibus ex,ejus manum *in*
19 בידה מכל־בנים גדלה: שתים הנה קראתיך
quo : gladius & , fames & , contritio & Vastitas ? tibi condolebit quis
מי ינוד לך השד והשבר והרעב והחרב מי
,platearum omniũ capite in jacuerunt,defecerunt tui Filii ? te consolabor
20 אנחמך: בניך עלפו שכבו בראש כל־חוצות
increpatione,Domini *excandescentia* pleni : *retis* sylvestris bos ut
כתוא מכמר המלאים חמת־יהוה גערת
non & ,ebria & , *afflicta* hoc nunc audi Idcircò .tui Dei
21 אלהיך: לכן שמעי־נא זאת עניה ושכרת ולא
litigabit tuus Deus & , Dominus tuus Dominus dixit Sic .vino à
22 מיין: כה־אמר אדניך יהוה ואלהיך יריב
: *mortiferi veneni* calicem , tua manu de tuli Ecce *.suo populo*
עמו הנה לקחתי מידך את־כוס התרעלה את־
.ultrà illum *bibendum ad* adjicies non : mei furoris calicis fæcem
קבעת כוס חמתי לא־תוסיפי לשתותה עוד:
, tuæ animæ dixerunt qui , te depopulantium manu in illum ponam Et
23 ושמתיה ביד מוגיך אשר־אמרו לנפשך
, tuum corpus terram quasi posuisti & : transibimus & , te Incurva
שחי ונעברה ותשימי כארץ גוך
.transeuntibus plateam sicut &
וכחוץ לעברים:

CAP. LII. נב

vestimenta te indue : Sijon tuam fortitudinẽ te indue,te suscita,te Suscita
1 עורי עורי לבשי עזך ציון לבשי בגדי
veniet ,adjiciet non quia : *sanctitatis* civitas Jerusalaim , tuæ gloriæ
תפארתך ירושלם עיר הקדש כי לא יוסיף יבא־
surge , pulvere de te Excute .immundus & , *præputiatus* ultrà te *in*
2 בך עוד ערל וטמא: התנערי מעפר קומי
.Sijon filia captiva , tui colli vinculis te solve : Jerusalaim sede
שבי ירושלם התפתחי מוסרי צוארך שביה בת־ציון:
argento *in non* & : estis venundati Gratis ,Dominus dixit sic Quia
3 כי־כה אמר יהוה חנם נמכרתם ולא בכסף
descendit Ægyptum : *Dominus* Dominus dixit sic Quia .eritis redempti
4 תגאלו: כי כה אמר אדני יהוה מצרים ירד־
nihilo pro Assur & : ibi *peregrinandum ad* principio in meus populus
עמי בראשנה לגור שם ואשור באפס
est ablatus quia?Dominus dixit , hic mihi quid nunc Et .eum oppressit
5 עשקו: ועתה מה־לי־פה נאם־יהוה כי־לקח
, Dominus dixit ,*facient* ululare ejus dominatores : gratis meus populus
עמי חנם משלו יהילילו נאם־יהוה
.*blasphematum* meum nomen die tota jugiter &
ותמיד כל־היום שמי מנאץ:

Versio VUL. LAT.

14 Citò veniet gradiens ad aperiendum, & non interficiet usque ad internecionem, nec de-15 ficiet panis ejus. Ego autem sum Dñs Deus tuus, qui conturbo mare, & intumescunt fluctus ejus: Dominus exercituum 16 nomen meũ. Posui verba mea in ore tuo, & in umbra manûs meæ protexi te, ut plantes cœlos, & fundes terram: & dicas ad Sion, Populus meus es tu. 17 Elevare, elevare, consurge Jerusalem, quæ bibisti de manu Domini calicem iræ ejus: usque ad fundum calicis soporis bibisti, & potâsti usque ad fæces. 18 Non est qui sustentet eam ex omnibus filiis, quos genuit: & non est qui apprehendat manum ejus ex omnibꝰ filiis, quos 19 enutrivit. Duo sunt quæ occurrerunt tibi; quis contristabitur super te? vastitas, & contritio, & fames, & gladius; quis 20 consolabitur te? Filii tui projecti sunt, dormierunt in capite omnium viarum, sicut oryx illaqueatus: pleni indignatione Domini, increpatione Dei tui. 21 Idcircò audi hoc paupercula, 22 & ebria non à vino. Hæc dicit dominator tuus Dominus, & Deus tuus, qui pugnabit pro populo suo; Ecce tuli de manu tua calicem soporis, fundum calicis indignationis meæ, non adjicies ut bibas illum ul-23 trá. Et ponam illum in manu eorũ, qui te humiliaverunt, & dixerunt animæ tuæ; Incurvare, ut transeamus: & posuisti ut terram corpus tuum, et quasi viam transeuntibus.

CAP. LII.

1 Consurge, consurge, induere fortitudine tuâ, Sion; induere vestimentis gloriæ tuæ, Jerusalem, civitas Sancti: quia non adjiciet ultrà, ut pertranseat per te incircumcisꝰ & immun-2 dus. Excutere de pulvere, consurge; sede Jerusalem: solve vincula colli tui, captiva filia 3 Sion. Quia hæc dicit Dominus; Gratis venundati estis, & sine argento redimemini. 4 Quia hæc dicit Dominꝰ Deus; In Ægyptum descendit populus meus in principio, ut colonus esset ibi: & Assur absque ulla causa calumniatus est 5 eum. Et numquid mihi est hîc, dicit Dominus, quoniam ablatus est populus meus gratis? Dominatores ejus iniquè agunt, dicit Dominus, & jugiter totâ die nomen meũ blasphematur.

Versio GRÆC. LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

14 Ἐν γὰρ τῷ σώζεσθαί σε οὐ στήσεται, οὐδὲ χρο-15 νιεῖ, Ὅτι ἐγὼ ὁ θεός σου, ὁ ταράσσων τὴν θάλασσαν, καὶ ἠχῶν τὰ κύματα αὐτῆς· Κύ-16 ριος Σαβαὼθ ὄνομά μοι. Θήσω τοὺς λόγους μου εἰς τὸ στόμα σου, καὶ ὑπὸ τὴν (ν) σκιὰν τῆς χειρός μου σκεπάσω σε, ἐν ᾗ ἔστησα τὸν οὐρανὸν, καὶ ἐθεμελίωσα τὴν γῆν· καὶ ἐρεῖ Σι-17 ὼν, Λαός μου εἶ σύ. Ἐξεγείρου ἐξεγείρου, ἀνάστηθι Ἱερουσαλὴμ, ἡ πιοῦσα (ξ) ἐκ χειρὸς κυρίου τὸ ποτήριον τοῦ θυμοῦ αὐτοῦ· τὸ ποτήριον γὰρ τῆς πτώσεως, τὸ κόνδυ τοῦ θυμοῦ (ο) 18 ἐξέπιες καὶ ἐξεκένωσας, Καὶ οὐκ ἦν ὁ παρακαλῶν σε ἀπὸ πάντων τῶν τέκνων σου ὧν ἔτεκες, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀντιλαμβανόμενος τῆς χειρός σου, οὐδὲ ἀπὸ πάντων τῶν υἱῶν σου ὧν 19 ὕψωσας. (π) Διὸ ταῦτα ἀντικείμενά σοι, τίς (ρ) συλλυπηθήσεταί σοι; πτῶμα καὶ σύντριμμα, λιμὸς καὶ μάχαιρα, τίς (σ) 20 παρακαλέσει σε; Οἱ υἱοί (τ) σου οἱ ἀπορούμενοι, οἱ καθεύδοντες ἐπ᾽ ἄκρου πάσης ἐξόδου ὡς σευτλίον ἡμίεφθον, οἱ πλήρεις θυμοῦ κυρίου, ἐκλελυμένοι διὰ κυρίου τοῦ θεοῦ. 21 Διὰ τοῦτο ἄκουε τεταπεινωμένη, καὶ μεθύουσα 22 οὐκ ἀπὸ οἴνου. (υ) Οὕτω λέγει κύριος ὁ θεὸς ὁ κρίνων τὸν λαὸν αὐτοῦ, Ἰδοὺ εἴληφα ἐκ τῆς χειρός σου τὸ ποτήριον τῆς πτώσεως, τὸ κόνδυ τοῦ θυμοῦ (φ) μου, καὶ οὐ προσθήσῃ ἔτι 23 πιεῖν αὐτό. Καὶ (χ) δώσω αὐτὸ εἰς τὰς χεῖρας τῶν ἀδικησάντων σε καὶ τῶν ταπεινωσάντων σε, οἳ εἶπαν τῇ ψυχῇ σου, Κύψον, ἵνα παρέλθωμεν· καὶ ἔθηκας ἴσα τῇ γῇ τὰ (ψ) μέσα σου ἔξω τοῖς παραπορευομένοις.

Cum enim salva facta fueris, non stabit, neque (h) permanebit: Quia ego Deus tuus, qui conturbo mare, & sonare facio fluctus ejus: Dominus Sabaoth nomen mihi. Ponam verba mea in ore tuo: & in umbra manûs meæ protegam te, in qua statui cœlum, & fundavi terram: & dicet Sion, Populus meus es tu. Exurge, exurge, surge Hierusalem, quæ bibisti de manu Domini calicem furoris ejus. Calicem enim ruinæ, (i) Condy furoris ebibisti, & (k) evacuâsti: Et non erat, qui consolaretur te ex omnibus filiis tuis, quos genuisti: & non erat, qui apprehenderet manum tuam, neque ex omnibus filiis tuis, quos exaltâsti. (l) Quare hæc contraria tibi: quis contristabitur tecum? ruina, & contritio, fames, & gladius: quis consolabitur te? Filii tui, indigentes, dormientes in capite omnis viæ, sicut (m) beta semicocta, pleni furoris Domini, deficientes (n) per Dominum Deum. Propterea audi humiliata, et ebria non à vino. Sic dicit Dominus Deus, qui judicat populum suum, Ecce tuli de manu tua calicem ruinæ, Condy furoris mei: & non adjicies bibere illum ultra: Et dabo eum in manus eorum, qui te inique oppresserunt, & humiliaverunt te: qui dixerũt animæ tuæ, Inclinare, ut transeamus: & posuisti æqualia terræ media tua transeuntibus.

MS.A. (ν) δεξιάν μου σκεπάσω (ξ) τὸ ποτήριον τοῦ θυμοῦ ἐκ χειρὸς κυρίου· (ο) ἔπιες (π) Δύο ταῦτα (ρ) σοι συλλυπηθήσεται; (σ) σε παρακαλέσει; (τ) σοι, (υ) Οὕτως (φ) καὶ οὐ (χ) ἐμβαλῶ (ψ) μετάφρενα

ΚΕΦ. νβʹ.

1 Ἐξεγείρου ἐξεγείρου Σιὼν, ἔνδυσαι τὴν ἰσχύν σου Σιὼν, (α) καὶ σὺ ἔνδυσαι τὴν δόξαν σου Ἱερουσαλὴμ πόλις (β) ἡ ἁγία, οὐκέτι προστεθήσεται διελθεῖν διὰ σοῦ ἀπερίτμητος 2 καὶ ἀκάθαρτος. Ἐκτίναξαι τὸν χοῦν, καὶ ἀνάστηθι, κάθισον Ἱερουσαλὴμ, ἔκδυσαι τὸν δεσμὸν τοῦ τραχήλου σου ἡ αἰχμάλωτος θυ-3 γάτηρ Σιών. Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Δωρεὰν ἐπράθητε, καὶ οὐ μετὰ ἀργυρίου λυτρωθή-4 σεσθε. Οὕτως λέγει κύριος, Εἰς Αἴγυπτον κατέβη ὁ λαός μου τὸ πρότερον παροικῆσαι 5 ἐκεῖ, καὶ εἰς Ἀσσυρίους βίᾳ ἤχθησαν. Καὶ νῦν τί (γ) ἐστε ὧδε; τάδε λέγει κύριος, Ὅτι ἐλήφθη ὁ λαός μου δωρεὰν, θαυμάζετε καὶ ὀλολύζετε. τάδε λέγει κύριος, Δι᾽ ὑμᾶς διαπαντὸς τὸ ὄνομά μου βλασφημεῖται ἐν τοῖς ἔθνεσι.

CAP. LII.

Exurge, exurge, Sion: induere fortitudine tuâ, Sion: & tu induere gloriâ tuâ, Hierusalem, civitas Sancta: nequaquam ultrà adjicietur ut pertranseat per te incircumcisus et immundus. Excute pulverem, et surge: sede Hierusalem, solve vinculum colli tui, captiva filia Sion. Quia hæc dicit Dominus: Gratis venundati estis: et non cum argento redimemini. Sic dicit Dominus; In Ægyptum descendit populus meus prius, ut peregrinaretur ibi; et in Assyrios violenter abducti sunt. Et nunc quid (c) estis hîc? Hæc dicit Dominꝰ, Quia ablatus est populus meus gratis, admiramini: et ululate. Hæc dicit Dominus; Propter vos semper nomen meum blasphematur (in) gentibus.

MS. A. (α) καὶ ἔνδυσαι (β) ἁγία, (γ) ὧδε ἐστε;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 מוחי פורענא לאתגלאה ולא ימותון צדיקיא לחבל ולא יחסרון מזוניהון: ואנא
15 16 יי אלהך דנזיף בימא והמן גלוהי יי צבאות שמיה: ושויתי פתגמי נבואתי בפומך
ובטלל גבורתי אגנית עלך לקימא עמא דאמיר עליהון דיסגון ככוכבי שמיא ולשכללא
כנשתא דאמיר עליהון דיסגון כעפרא דארעא ולמימר לדדירין בציון עמי אתון:
17 אתרבא אתרבא קומי ירושלם דקבלת מן קדם יי ית כסא דחמתיה ית פילי כסא
18 דלוטא שתית אעדית: לית דמנחם לה מכל בנין דילידת ולית דמתקף בידה מכל בנין
19 דרביאת: תרתין עקן אתאה עלך ירושלם לא יכלית למקם כיד ארבע ייתון עלך
20 בזא ותברא וכפנא וחרבא לית די מנחמיך אלהן אנא: בנך יהון מטרפין רמן בריש כל
21 שוקיא כמורקי מצדן מלן חמתא מן קדם יי מזופיתא מן קדם אלהיך: בכן שמעי כען
22 דא מטלטלתא דרויא מן עקא ולא מן חמר: כדנן אמר רבונך יי ואלהיך דעתיד
למעבד פורענות דין עמיה הא קבלית מן ידיך ית כסא דלוטא ית פילי כסא דחמתי
23 לא תוסיפין למשתה עוד: ואמסרנה ביד דהוו מינן ליך דהוו אמרין לנפשך אמאיכי
ונעדי ואמאיכת כארעא יקריך והוית כשוק לעדן:

נב

1 אתגלא אתגלא לבשי תוקפיך ציון לבשי לבושי תושבחתיך ירושלם קרתא דקודשא
2 ארי לא יוספון ויעדון ביך עוד ערלין ומסאבין: אתנפצי מעפרא קומי תבי על כורסי
3 יקרא ירושלם אתפסקו חנקי צוריכון שביה כנשתא דציון: ארי כדנן אמר יי מגן
4 אזדבנתון ולא בכסף תתפרקון: ארי כדנן אמר יי אלהים למצרים נחתו עמי בקדמיתא
5 לאתותבא תמן ואתוראה בלמא אנסיה: וכען עתידנא למפרק אמר יי ארי אזדבן עמי
מגן עממיא דשליטו בהון משתבחין אמר יי ותדירא כל יומא על פולחן שמי מרגזין:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Citò revelabitur vindicta, & non morientur justi in corruptionem, nec deficient cibaria eorum. Ego autem sum Dñs Deus tuus, increpans mare, & sonant fluctus ejus: Dñs exercituum nomen ejus. Et posui verba prophetiæ meæ in ore tuo: & in umbra potentiæ meæ protexi te, ut suscitarem populum de quo dictum est, Quòd multiplicarentur sicut stellæ cœli: & ut fundarem congregationem de qua dictum est, Quòd multiplicarentur sicut pulvis terræ: & dicerem habitantibus in Sion, Populus meus estis vos. Evehere, evehere, consurge Jerusalem, quæ suscepisti à facie Dñi calicem furoris ejus, phialam calicis maledictionis bibisti & detraxisti. Non est qui consoletur eam ex omnibꝰ filiis quos peperit, neque est qui apprehendat manum ejus ex omnibus filiis quos nutrivit. Duæ tribulationes venerunt super te Jerusalem, non potuisti consurgere: cùm *venerint quatuor* super te, præda & contritio, & fames & gladius, non erit qui consoletur te, nisi ego. Filii tui jacent conturbati, projecti in capite omnium viarum quasi lagunculæ contractæ, pleni furore à facie Dñi, increpatione à facie Dei tui. Proptereà audi nunc transmigrans, quæ inebriata es à tribulatione, & non à vino: Hæc dicit dominator tuus: Dñs Deꝰ tuꝰ *qui* facturꝰ est vindictam judicii populi sui: Ecce suscepi de manu tua calicem maledictionis, phialam calicis furoris mei: non addes ut bibas eam amplius. Et tradam eam in manu eorum qui te oppresserunt, qui dicebant animæ tuæ, Humiliare ut transeamus: & humiliasti quasi terram gloriam tuam, & factus es quasi callis transeuntibus.

CAP. LII.

Revelare, revelare, induere fortitudine tua Sion, induere vestimenta gloriæ tuæ Jerusalem civitas sanctitatis: quia non adjicient transire ultrà per te incircumcisi & immundi. Excutere de pulvere, consurge, sede super solio gloriæ tuæ Jerusalem. Scissa sunt vincula colli vestri, captiva congregatio Sion. Quoniam hæc dicit Dñs: Gratis venundati estis, & absq; argento redimemini. Quia hæc dicit Dñs Deus: In Ægyptum descendit populꝰ meus in principio, ut peregrinaretur ibi, & Assur temerè violenter oppressit eum. Et nunc redempturus sum eum, dicit Dñs, quia venundatus est populus meus gratis: populi qui dominati sunt eorum, sese jactitant, dicit Dñs: & semper tota die provocant eos propter cultum nominis

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܐ ܢܡܘܬܘܢ ܠܚܒܠܐ. ܘܠܐ ܢܚܣܪ ܠܚܡܗ. * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ.
ܘܡܬܬܙܝܥܝܢ ܓܠܠܘܗܝ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܘܣܡܬ ܡܠܝ ܒܦܘܡܟ. ܘܒܛܠܠܐ
ܕܐܝܕܝ ܟܣܝܬܟ. ܕܒܗ ܡܬܚܬ ܫܡܝܐ. ܘܐܫܬܐܣܘ ܐܪܥܐ. ܘܐܡܪܬ ܠܨܗܝܘܢ
ܐܢܬ. * ܐܬܬܥܝܪܝ ܐܬܬܥܝܪܝ ܘܩܘܡܝ ܐܘܪܫܠܡ ܕܐܫܬܝܬܝ ܡܢ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ
ܪܘܓܙܗ. ܘܫܬܝܬܝ ܘܡܨܝܬܝ ܟܣܐ ܕܪܘܓܙܐ. * ܘܠܝܬ ܕܡܒܝܐ ܠܗ ܡܢ ܟܠܗܘܢ
ܕܝܠܕܬ. ܘܠܝܬ ܕܐܚܝܕ ܒܐܝܕܗ ܘܡܩܝܡ ܠܗ. ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܒܢܝܐ ܕܪܒܝܬ. *
ܡܬܚܝܒܢ ܒܟܝ ܐܝܢܐ ܢܬܟܪܐ ܠܟܝ. ܒܙܬܐ ܘܬܒܪܐ. ܘܟܦܢܐ ܘܚܪܒܐ. ܡܢ ܢܒܝܐܟܝ. *
ܐܬܪܡܝܘ ܘܫܟܝܒܝܢ ܒܪܝܫ ܟܠܗܘܢ ܫܘܩܐ. ܐܝܟ ܣܠܩܐ ܕܡܒܝܪ. ܘܡܠܝܢ ܪܘܓܙܗ
ܕܡܪܝܐ ܘܟܐܬܐ ܕܐܠܗܟܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܡܥܝ ܗܕܐ ܡܣܟܢܬܐ. ܘܪܘܝܬܐ. ܠܐ ܡܢ
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܟܝ ܡܪܝܐ ܘܐܠܗܟܝ. ܕܕܐܢ ܠܥܡܗ. ܗܐ ܢܣܒܬ ܡܢ ܐܝܕܝܟܝ
ܕܪܘܓܙܝ. ܠܐ ܬܘܣܦܝܢ ܬܘܒ ܠܡܫܬܝܗ. * ܘܐܣܝܡܝܘܗܝ ܒܐܝܕܝ ܡܡܟܟܢܝܟܝ.
ܠܢܦܫܟܝ. ܐܬܟܦܝ ܘܢܥܒܪ. ܘܥܒܕܬܝ ܠܥܡܟܝ ܐܝܟ ܐܪܥܐ. ܘܐܝܟ ܫܘܩܐ

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢܒ *

* ܐܬܬܥܝܪܝ ܐܬܬܥܝܪܝ ܨܗܝܘܢ. ܘܠܒܫܝ ܡܐܢܐ ܕܫܘܒܚܟܝ ܐܘܪܫܠܡ
ܩܕܝܫܬܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܘܣܦ ܬܘܒ ܠܡܥܠ ܒܟܝ ܥܘܪܠܐ ܘܛܢܦܐ. * ܐܬܢܦܨܝ ܡܢ
ܘܩܘܡܝ ܬܒܝ. ܐܘܪܫܠܡ. ܫܪܝ ܢܝܪܐ ܡܢ ܨܘܪܟܝ. ܫܒܝܬܐ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. *
ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܓܢ ܐܙܕܒܢܬܘܢ. ܘܠܐ ܒܟܣܦܐ ܬܬܦܪܩܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ
ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܠܡܨܪܝܢ ܢܚܬ ܥܡܝ ܠܘܩܕܡܝܢ ܠܡܬܬܘܬܒܘ ܬܡܢ. ܘܐܬܘܪܝܐ
ܕܒܪܗ. * ܘܗܫܐ ܡܢܐ ܠܝ ܗܪܟܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܐܬܕܒܪ ܥܡܝ ܡܓܢ. ܫܠܝܛܢܘ
ܡܝܠܠܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܝܢܐܝܬ ܒܟܠܝܘܡ. ܫܡܝ ܡܬܓܕܦ.

Nequaquam morientur ad corruptionem, 14
neque deficiet panis ejus. Ego sum Dominus 15
Deus tuus qui mari interminor, & sedantur
fluctus ejus: Dominus potens est nomen ejus:
Qui posui verba mea in ore tuo, & sub umbra 16
manûs meæ illius te protexi, quâ cœlum
extendi & terræ fundamenta firmavi; dixiq;
Sioni, Populus meus es. Evigila, evigila, & 17
exurge Jerusalem quæ bibisti de manu Domini
calicem furoris ejus, quæ bibisti &
suxisti calicem tremoris; Nemine existente 18
qui consoletur eam, ex omnibus filiis quos
peperit; nec qui teneat manum ejus & erigat
eam, ex omnibus filiis quos enutrivit. Duo 19
ista contigêre tibi; quis condoleat tibi? direptio
& confractio, fames & gladius quis
te consoletur? Filii tui attoniti jacent in compitis 20
omnium platearum, velut beta flaccida,
& pleni sunt furore Domini & increpatione
Dei tui. Propterea audi hæc O misera, quæ 21
ebria es, tametsi non à vino. Sic dicit herus 22
tu⁹, Dominus ac Deus tuus qui judicaturus est
populum suum; Ecce arripio de manibus
tuis calicem tremendum furoris mei, non
perges ampliùs eum bibere: Sed ponam eum 23
in manu deprimentium te, qui cùm dixissent
animæ tuæ, Sternere ut transeamus; redegisti
populum tuum velut humum & velut plateam
transeuntibus.

CAP. LII.

Evigila, evigila Sion, & indue vestimentum 1
gloriosum Jerusalem civitas sancta; quia
non est ampliùs ingressurus in te præputiatus
& immundus. Excute te à pulvere, & 2
surge, sede Jerusalem: solve jugum à collo
tuo captiva filia Sionis. Nam sic ait Dominus, 3
Gratis venundati estis, & absque argento 4
redimemini. Sic enim ait Dominus Deus,
In Ægyptum descendit populus meus olim ad
peregrinandum illic: Assyrius autem per vim
abduxit illum. Nunc itaque quid mihi superest 5
hîc, dicit Dominus, cùm populus meus sit
gratìs abductus; qui præsunt eis, clamitent
(dicit Dominus) & jugiter quotidie nomen
meum blasphement?

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لانه عند ما يخلص ما يقف ولا يبطي * لاني انا الهك المقلق البحر والمهيج امواجه *
الجيوش اسمي * اضع اقوالي في فيك * وتحت عيني استرك * التي بها اقمت السماء
الارض * واقول لصهيون انت شعبي * انتبهي انتبهي وقومي يا ايروسليم التي شربت
الغضب من يد الرب * لان كاس السقطة كاس الغضب شربت وتمصمصت * وليس كان
يعزيك من جميع اولادك الذين ولدتيهم * وليس كان من يدعم يدك * ولا من جميع
الذين رفعتيهم * هاتان الاثنتان مقاومتان لك * من يحزن معك * سقطة وانكسار
وسيف من يعزيك * بنوك فيك حايرون راقدون على طرف كل مخرج مثل سلق
مملوين غضب الرب * متحلين من قبل الرب الاله * لاجل هذا اسمعي ايتها
والسكرانة ليس من خمر * هكذا يقول الرب الاله الذي يدين شعبه * ها اخذت
يدك كاس السقطة كاس الغضب * وليس تستزيدين ان تشربيه بعد * واضعه في
الذين ظلموك * والذين اذلوك * والذين قالوا لنفسك انحني كي نجوز * ووضعت
مساويين للارض للمارين خارجا *

* الفصل الثاني والخمسون *

* انتبهي انتبهي يا صهيون البسي قوتك يا صهيون * والبسي مجدك يا ايروسليم
المقدسة * لا يستزيد ان يعبر فيك ايضا غير مختون ولا نجس * انفضي التراب
واجلسي يا ايروسليم * البسي رباط عنقك ايتها المسبية الابنة صهيون * لان هكذا
الرب * ابعتم مجانا وليس بفضة استفديتم * هكذا يقول الرب * الى مصر نزل شعبي
ليسكن هناك * والى الموصليين سيق بعسف * والآن ما بالي يكون ههنا *
يقول الرب * ان شعبي اخذ مجانا * تعجبوا وولولوا * هكذا يقول الرب * من اجلكم
حين اسمي يجدف عليه في الامم *

Equidem ubi liberatus fuerit, nequaquam 14
subsistet, nec diu morabitur:
Quoniam ego Deus tuus, qui mare conturbo 15
*& fluctus ejus excito, (Dominus
exercituum est nomen meum.)*
Indam verba mea in os tuum, & 16
*protegam te sub dextera mea quâ cœlum
erexi terrámque fundavi; & dicam
Sioni, Tu es populus meus. Expergiscere,* 17
*expergiscere, & surge O
Jerusalem quæ hausisti calicem iræ de
manu Domini: nam calicem ruinæ,
calicem furoris hausisti & exuxisti,*
Et nemo fuit qui te consolaretur ex omnibus 18
*filiis tuis quos peperisti; nemóque
fuit qui manum tuam sustentaret,
ne quidem ex omnibus filiis tuis quos
elevâsti. Hæc duo sunt tibi contraria,* 19
*quis tibi condoleret? ruina &
contritio, fames & gladius: quis te
consolaretur? Filii tui in te attoniti* 20
*jacent ad extremitatem cujuslibet viæ
tanquam beta marcescens, pleni furore
Domini, consternati à Domino Deo.
Iccircò audi O misera & ebria non* 21
ex vino. Sic ait Dominus Deus qui 22
*judicaturus est populum suum; Ecce recepi
de manu tua calicem ruinæ, calicem
furoris, & non perges eum bibere
ulteriùs: Et ponam eum in manus* 23
*eorum qui te oppresserunt, qui te
humiliaverunt, & qui cùm dixissent
animæ tuæ, Incurvare ut transeamus,
tu tuos humeros humo adæquatos stravisti
iis qui foras egrediebantur.*

CAP. LII.

Expergiscere, expergiscere O Sion, 1
*induere fortitudine tuâ O Sion, & induere
gloriâ tuâ O Jerusalem urbs sancta:
non perget amplius transire per
te incircuncisus neque pollutus. Excute* 2
*pulverem & sta, sede O Jerusalem,
induere cingulo colli tui O captiva filia
Sion. Sic enim ait Dominus, Venundati* 3
*estis gratìs, ita sine argento redimemini.
Sic ait Dominus, Cùm in Ægyptum* 4
*descendisset populus meus antehac
ut habitaret illîc, ad Assyrios abductus
fui cum violentia. Et nunc* 5
*quorsum istic esse? Sic ait Dominus,
Populus quidem meus gratìs abductus
fuit: admiramini, & ululate. Sic ait
Dominus, Propter vos incessanter nomen
meum blasphematur inter gentes.*

ישעיה : נג

die in propterea : meum nomen meus populus cognoſcet Propterea
6 לכן ידע עמי שמי לכן ביום
ſunt *decori* Quàm *ego* ecce *loquens* ipſe ego quia , illa
7 ההוא כי־אני־הוא המדבר הנני : מה־נאוו
, pacem facientis audire , evangelizantis pedes montes ſuper
על־ההרים רגלי מבשר משמיע שלום
, Sijon ad dicentis : ſalutem facientis audire , bonum evangelizantis
מבשר טוב משמיע ישועה אמר לציון
, vocem levaverunt tuorum ſpeculatorum Vox .tuus Deus Regnavit
8 מלך אלהיך : קול צפיך נשאו קול
convertendo in , videbunt oculum ad oculo quia : *præconia dicent* ſimul
יחדו ירננו כי עין בעין יראו בשוב
deſerta , ſimul *præconia dicite* , *Exclamate* .Sijon DOMINUS
9 יהוה ציון : פצחו רננו יחדו חרבות
, ſuum populum DOMINUS eſt conſolatus quia : Jeruſalaim
ירושלם כי־נחם יהוה עמו
brachium DOMINUS Denudavit .Jeruſalaim redemit
10 גאל ירושלם : חשף יהוה את־זרוע
omnes videbunt & : gentium omnium oculis in *ſuæ ſanctitatis*
קדשו לעיני כל־הגוים וראו כל־
, recedite , Recedite .noſtri Dei ſalutem terræ fines
11 אפסי־ארץ את ישועת אלהינו : סורו סורו
, ejus medio de exite : tangatis ne pollutum , inde exite
צאו משם טמא אל־תגעו צאו מתוכה
feſtinatione *in* non Quia .DOMINI vaſa *ferentes* vos purificate
12 הברו נשאי כלי יהוה : כי לא בחפזון
vos ante *vadens* quia : ambulabitis non fuga *in* & , exibitis
תצאו ובמנוסה לא תלכון כי־הלך לפניכם
aget prudenter Ecce .Iſrael Deus vos *colligens* & , DOMINUS
13 יהוה ומאספכם אלהי ישראל : הנה ישכיל
Quemadmodũ .valde erit ſublimis &,elevabitur & exaltabitur :me⁹ ſerv⁹
14 עבדי ירום ונשא וגבה מאד : כאשר
: ejus aſpectus viro præ corruptus ſic , multi te ſuper *obſtupuerunt*
שממו עליך רבים כן־משחת מאיש מראהו
eum ſuper : multas gentes aſperget Sic .hominum filiis præ ejus forma &
15 ותארו מבני אדם : כן יזה גוים רבים עליו
eis fuerat narratum non quod *quia* : ſuum os reges *comprimen t*
יקפצו מלכים פיהם כי אשר לא־ספר להם
.intellexerint audierant non quod & , viderint
ראו ואשר לא־שמעו התבוננו :

CAP. LIII. נג

quem ſuper DOMINI brachium & : noſtro auditui credidit Quis
1 מי האמין לשמעתנו וזרוע יהוה על־מי
terra de radix ſicut &,eo coram *ramus tener ut* aſcendit Et ? eſt revelatum
2 נגלתה : ויעל כיונק לפניו וכשרש מארץ
aſpectus non & ,eum vidimus & :decor neque ,ei forma non , *ſiccitatis*
ציה לא־תאר לו ולא הדר ונראהו ולא־מראה
, dolorum vir , *viris* *deſiit* & ,eſt Deſpectus.eum deſideraremus ut
3 ונחמדהו : נבזה וחדל אישים איש מכאבות
non & ,erat deſpectus ,eo ab *facies abſcondens* quaſi & : *ægritudine notus* &
וידוע חלי וכמסתר פנים ממנו נבזה ולא
noſtros dolores & ,tulit ipſe noſtros languores Verè .eum reputavimus
4 חשבנהו : אכן חלינו הוא נשא ומכאבינו
Dei percuſſum , plagatum eum reputavimus nos & : *eos bajulavit*
סבלם ואנחנו חשבנהו נגוע מכה אלהים
.humiliatum &
ומענה :

Verſio VULG. LAT.

6 Propter hoc ſciet popul⁹ meus nomen meum in die illa : quia ego ipſe qui loquebar, ecce adſum.
7 Quàm pulchri ſuper montes pedes annuntiantis & prædicantis pacem ; annuntiantis bonum, prædicantis ſalutem, dicentis Sion ; Regnabit Deus
8 tuus ! Vox ſpeculatorum tuorum : levaverunt vocem, ſimul laudabunt : quia oculo ad oculum videbunt cùm converte-
9 rit Dominus Sion. Gaudete, & laudate ſimul deſerta Jeruſalem : quia conſolatus eſt Dominus populum ſuum, rede-
10 mit Jeruſalem. Paravit Dominus brachium ſanctum ſuum in oculis omnium Gentium : & videbunt omnes fines terræ
11 ſalutare Dei noſtri. Recedite, recedite, exite inde, pollutum nolite tangere : exite de medio ejus, mundamini qui fer-
12 tis vaſa Domini. Quoniam non in tumultu exibitis, nec in fuga properabitis : præcedet enim vos Dominus, & con-
13 gregabit vos Deus Iſrael. Ecce intelliget ſervus meus, exaltabitur, & elevabitur, & ſubli-
14 mis erit valdé. Sicut obſtupuerunt ſuper te multi, ſic inglorius erit inter viros aſpectus ejus, & forma ejus inter
15 filios hominum. Iſte aſperget gentes multas, ſuper ipſum continebunt reges os ſuum : quia quibus non eſt narratum de eo, viderunt ; & qui non audierunt, contemplati ſunt.

CAP. LIII.

1 Quis credidit auditui noſtro ? & brachium Domini cui
2 revelatum eſt ? Et aſcendet ſicut virgultum coram eo, & ſicut radix de terra ſitienti : non eſt ſpecies ei, neque decor : & vidimus eum, & non erat aſpectus, & deſideravimus
3 eum : Deſpectum, & noviſſimum virorum, virum dolorum, & ſcientem infirmitatem : & quaſi abſconditus vultus ejus & deſpectus, unde nec
4 reputavimus eum. Verè languores noſtros ipſe tulit, & dolores noſtros ipſe portavit : & nos putavimus eum quaſi leproſum, et percuſſum à Deo et humiliatum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Διὰ τοῦτο γνώσεται ὁ λαός μου τὸ ὄνομά μου ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὅτι ἐγώ εἰμι αὐτὸς
7 ὁ λαλῶν, πάρειμι. Ὡς ὥρα ἐπὶ τῶν ὀρέων, ὡς πόδες εὐαγγελιζομένου ἀκοὴν εἰρήνης, ὡς εὐαγγελιζόμενος ἀγαθά, ὅτι ἀκουστὴν ποιήσω τὴν σωτηρίαν σου, λέγων, Σιὼν βα-
8 σιλεύσει σου ὁ θεός. Ὅτι φωνὴ τῶν φυλασσόντων σε ὑψώθη, καὶ τῇ φωνῇ ἅμα εὐφρανθήσονται· ὅτι ὀφθαλμοὶ πρὸς ὀφθαλμοὺς ὄψονται, ἡνίκα ἂν (ʺ) ἐλεήσῃ κύριος τὴν
9 Σιών. Ῥηξάτω εὐφροσύνην ἅμα τὰ ἔρημα Ἱερουσαλήμ, ὅτι ἠλέησε κύριος αὐτήν,
10 καὶ ἐρρύσατο Ἱερουσαλήμ. Καὶ ἀποκαλύψει κύριος τὸν βραχίονα (δ) τὸν ἅγιον αὐτοῦ ἐνώπιον πάντων τῶν ἐθνῶν, καὶ ὄψονται πάντα (ε) ἄκρα τῆς γῆς τὴν σωτηρίαν τὴν παρὰ τοῦ
11 (ζ) θεοῦ ἡμῶν. Ἀπόστητε, ἀπόστητε, ἐξέλθατε ἐκεῖθεν, καὶ ἀκάθαρτον μὴ (η) ἅψησθε, ἐξέλθετε ἐκ μέσου αὐτῆς, ἀφορίσθητε οἱ φέροντες τὰ
12 σκεύη κυρίου. Ὅτι οὐ μετὰ ταραχῆς ἐξελεύσεσθε, οὐδὲ φυγῇ πορεύσεσθε· (˙) προπορεύσεται γὰρ πρότερος ὑμῶν κύριος, καὶ ὁ ἐπι-
13 συνάγων ὑμᾶς (θ) θεὸς Ἰσραήλ. Ἰδοὺ συνήσει ὁ παῖς μου, καὶ ὑψωθήσεται, καὶ
14 δοξασθήσεται σφόδρα. Ὃν τρόπον ἐκστήσονται ἐπὶ σὲ πολλοί, οὕτως ἀδοξήσει (ι) ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων τὸ εἶδός σου, καὶ ἡ δόξα
15 σου (κ) ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων. Οὕτω θαυμάσονται ἔθνη πολλὰ ἐπ᾽ αὐτῷ, καὶ (λ) συνέξουσι βασιλεῖς τὸ στόμα αὐτῶν· ὅτι οἷς οὐκ ἀνηγγέλη περὶ αὐτοῦ, ὄψονται, καὶ οἳ οὐκ ἀκηκόασι, συνήσουσι.

Propterea ſciet populus meus nomen meum in die illa : quia ego ipſe, qui loquebar, adſum ; Sicut (c) hora ſuper montes ; (d) ſicut pedes evangelizantis auditum pacis, ſicut (e) evangelizans bona. Quia auditam (f) faciam ſalutem tuam, dicens ; Sion, regnabit Deus tuus : (g) Quia vox cuſtodientium te exaltata eſt : & voce ſimul lætabuntur : quia oculi ad oculos videbunt, quando miſertus fuerit Dominus Sion. Erumpant lætitiam ſimul deſerta Hieruſalem : quia miſertus eſt Dominus ejus, & eruit Hieruſalem. Et revelabit Dominus brachium ſanctum ſuum in conſpectu cunctarum gentium : & videbunt omnes fines terræ ſalutem, quæ à Deo noſtro. Recedite, recedite, egredimini inde : & immundum nolite tangere : exite de medio ejus : ſeparamini, qui portatis vaſa Domini : Quia non cum tumultu exibitis, neque cum fuga ibitis. Præcedet enim præ vobis Dominus, & qui congregat vos, Deus Iſrael. Ecce intelliget puer meus, & exaltabitur, & glorificabitur valdé. Sicut ſtupebunt ſuper te multi ; ſic inglorius erit ab hominibus ſpecies tua, & gloria tua à filiis hominum. Sic mirabuntur gentes multæ ſuper eo : & continebunt reges os ſuum : quia quibus non eſt annuntiatum de eo, videbunt : & qui non audierunt, intelligent.

MS.A. (ʺ) ἐλεήσει (δ) αὐτοῦ τὸν ἅγιον (ε) τὰ ἄκρα (ζ) θεοῦ. Ἀπόστητε, (η) ἅπτεσθε, ἐξέλθατε (˙) πορεύσεσθε (θ) κύριος ὁ θεὸς (ι) ἀπὸ ἀνθρώπων (κ) ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων. Οὕτως (λ) *συνάξουσι

ΚΕΦ. νγʹ.

1 Κύριε τίς ἐπίστευσε τῇ ἀκοῇ ἡμῶν; καὶ ὁ
2 βραχίων κυρίου τίνι ἀπεκαλύφθη; Ἀνηγγείλαμεν (α) ὡς παιδίον ἐναντίον αὐτοῦ, ὡς ῥίζα ἐν γῇ διψώσῃ. οὐκ ἔστιν εἶδος αὐτῷ, οὐδὲ δόξα· καὶ εἴδομεν αὐτόν, καὶ οὐκ
3 εἶχεν εἶδος οὐδὲ κάλλος. Ἀλλὰ τὸ εἶδος αὐτοῦ ἄτιμον, (β) καὶ ἐκλεῖπον παρὰ τοὺς υἱοὺς τῶν ἀνθρώπων. ἄνθρωπος ἐν πληγῇ ὤν, καὶ εἰδὼς φέρειν μαλακίαν, ὅτι ἀπέστραπται τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, ἠτιμάσθη,
4 καὶ οὐκ ἐλογίσθη. Οὗτος τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν φέρει, καὶ περὶ ἡμῶν ὀδυνᾶται, καὶ ἡμεῖς ἐλογισάμεθα αὐτὸν εἶναι ἐν πόνῳ, καὶ ἐν πληγῇ, καὶ ἐν κακώσει.

CAP. LIII.

Domine, quis credidit auditui noſtro ? & brachium Domini cui revelatum eſt ? (a) Annuntiavimus, quaſi (b) parvulum in conſpectu ejus : ſicut radix in terra ſitienti. Non eſt ſpecies ei, neque gloria : & vidimus eum : & non habebat ſpeciem, neque decorem : Sed ſpecies ejus inhonorata, & deficiens præ filiis hominum. Homo in plaga poſitus, & ſciens ferre infirmitatem : quia averſa eſt facies ejus, deſpecta, & non computata. Iſte peccata noſtra portat, & pro nobis dolet : & nos reputavimus eum eſſe in labore, & in (c) plaga, et in afflictione.

MS.A. (α) ἐναντίον αὐτοῦ ὡς παιδίον, (β) ἐκλεῖπον παρὰ πάντας ἀνθρώπους.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 בכן יתרבא בעממיא שמי בכן בעדנא ההיא תדעון ארי אנא הוא דמללית ומימרי
7 קים : מה יאין על טורי ארעא דישראל רגלי מבסר משמע שלם מבסר טב משמע
8 פורקן אמר לכנשתא דציון אתגליאת מלכותא דאלהיך : קל פרנסיך דמרימין קלהון
9 כחדא משבחין ארי בעיניהון יחזון גבורן די עבד יי כד יתיב שכנתיה לציון : בועו
10 ושבחו כחדא חרבת ירושלם ארי עתיד יי לנחמא עמיה פריק ירושלם : גלא יי ית
דרע קודשיה לעיני כל עממיא ויחזון כל דבסיפי ארעא ית פורקנא דאלהנא :
11 אתפרשו אתפרשו פוקו מתמן במסאב לא תקרבון פוקו מגוה אתבחרו נטלי מני בית
12 מקדשא דיי : ארי לא בבהילו תפקון מביני עממיא ובערוקי לא תתובלון לארעכון
13 ארי מדבר קדמיכון יי ועתיד לכנשא גלותכון אלהא דישראל : הא יצלח עבדי
14 משיחא ירום ויסגי ויתקוף לחדא : כמא דסברו ליה בית ישראל יומין סגיאין דהוה
15 חשך ביני עממיא חזוהון וזיוהון מבני אנשא : כן יבדר עממין סגיאין עלוהי ישתקון
מלכין ישוון ידיהון על פומהון ארי דלא אשתעיאו להון חזו ודלא שמעו
אסתכלו :

נג

1 2 מן הימין לבסורתנא דא ותקוף דרע גבורתא דיי כדון על מן אתגליאת : ויתרבא
צדיקא קדמוהי הא כלבלבין דפרחן וכאילן דמשלח שורשוהי על נגדין דמיין כן
יסגון תולדת קודשא בארעא דהוות צריכא ליה לא חזו חולא חזויה ולא אימתיה אימת
3 הדיוט ויהי זיו קודשא זיויה דכל דיחזניה יסתכל ביה : בכן יהי לבוסרן ויפסק יקר
כל מלכותא יהון חלשין ודוון הא כאנש כיבין ומזומן למרעין וכמא דהוות מסלקא
4 אפי שכנתא מננא בסירין ולא חשיבין : בכן על חובנא הוא יבעי ועויתנא בדיליה
ישתבקון ואנחנא חשיבין כתישין מחן מן קדם יי ומענן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Proptereà magnificabitur nomen meum in populis. Ideò in tempore illo ſcietis, quoniam ego ſum qui loquebar, & Verbum meum permanet. Quàm pulchri ſunt ſup montes terræ Iſrael pedes evangelizantis, audire facientis pacẽ ; evangelizantis bonum, audire facientis ſalutẽ ! dicentis cœtui Sion : Revelatũ eſt regnũ Dei tui. Vox gubernatorũ tuorũ, qui elevaverunt vocem ſuã ſimul laudantes : quoniã oculis ſuis videbũt magnalia quæ faciet Dñs, cùm reduxerit majeſtatem ſuã in Sion. Gaudete, & laudate ſimul deſerta Jeruſalem, quoniam conſolatur⁹ eſt Dñs populũ ſuũ, redemptur⁹ Jeruſalem. Revelavit Dñs brachium ſanctũ ſuum in oculis omnium populorum, & videbunt omnes qui in extremis terræ ſunt, ſalutare Dei noſtri. Separamini, ſeparamini, exite indè : immundum ne tangatis : egredimini de medio ejus, electi eſtote, portantes vaſa domus ſanctuarii Domini : Quoniam non in conturbatione exibitis de medio populorum, neque in fuga deducemini in terrã veſtram, quoniam ductor erit Dñs ante vos, & congregaturus eſt captivitatem veſtram Deus Iſrael. Ecce proſperabit ſerv⁹ meus Chriſtus : exaltabitur & *augebitur*, & confortabitur nimis. Sicut ſperaverunt eum domus Iſrael dieb⁹ multis, qui erat pauper inter populos : viſio eorum & ſplendor eorum à filiis hominum. Sic diſperget populos multos, quia ſuper eum conticeſcent reges, admovebunt manus ſuas ſuper os ſuum, quia quod non narraverũt eis, viderunt ; & quod non audierũt, contemplati ſunt.

CAP. LIII.

Quis credidit huic nuntio noſtro ? & fortitudo brachii potentiæ Domini *nunc* cui revelata eſt ? Et magnificabitur juſtus coram eo ſicut ſurculi qui florent, & ſicut arbor quæ mittit radices ſuas juxta torrentes aquarum : ſic multiplicabitur gens ſancta, in terra quæ indigebat eo. Non erit aſpect⁹ ejus ſicut aſpect⁹ communis, nec timor ej⁹ ſicut timor idiotæ ; ſed erit decor ejus decor ſanctitatis, *ut omnis* qui viderit eum, *contempletur* eum. Erit quidem contemptus, verùm auferet gloriam omnium regũ : erunt infirmi & dolentes quaſi vir doloribus & infirmitatib⁹ expoſit⁹. Et cùm ſubtrahebat vultum majeſtatis à nobis, eram⁹ deſpecti & in nihilum reputati. Proptereà ipſe deprecabitur pro peccatis noſtris, & delicta noſtra propter eum remittentur : & nos reputati ſumus vulnerati, percuſſi à facie Dñi, & afflicti.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܕܥ ܥܡܝ ܫܡܝ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܗܘ ܡܡܠܠ. ܘܐܢܐ ܗܐ. ܡܐ
ܫܦܝܪܝܢ ܥܠ ܛܘܪܐ ܪܓܠܘܗܝ ܕܡܣܒܪܢܐ ܕܡܫܡܥ ܫܠܡܐ: ܘܡܣܒܪ ܛܒܬܐ: ܘܡܫܡܥ ܦܘܪܩܢܐ.
ܘܐܡܪ ܠܨܗܝܘܢ. ܕܐܡܠܟ ܐܠܗܟܝ.* ܩܠܐ ܕܕܝܩܘܒܝ ܐܪܝܡܘ ܩܠܐ. ܘܐܟܚܕܐ ܡܫܒܚܝܢ
ܡܛܠ ܕܥܝܢܐ ܒܥܝܢܐ ܢܚܙܘܢ ܟܕ ܡܗܦܟ ܡܪܝܐ ܠܨܗܝܘܢ.* ܕܘܨܘ ܘܫܒܚܘ ܐܟܚܕܐ
ܚܘܪܒܬܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܡܛܠ ܕܒܝܐ ܡܪܝܐ ܠܥܡܗ. ܘܦܪܩ ܠܐܘܪܫܠܡ.* ܓܠܐ ܡܪܝܐ
ܕܪܥܗ ܩܕܝܫܐ. ܠܥܝܢܝ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܢܚܙܘܢ ܟܠܗܘܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ ܦܘܪܩܢܗ
ܕܐܠܗܢ.* ܦܪܘܩܘ ܦܪܘܩܘ ܦܘܩܘ ܡܢ ܬܡܢ. ܘܕܛܡܐܐ ܠܐ ܬܬܩܪܒܘܢ. ܦܘܩܘ ܡܢ ܓܘܗ
ܘܐܬܕܟܘ. ܛܥܢܝ ܡܐܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ.* ܡܛܠ ܕܠܐ ܒܥܘܪܩܢܐ ܬܦܩܘܢ. ܘܒܥܪܘܩܝܐ
ܠܐ ܬܐܙܠܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܐܙܠ ܩܕܡܝܟܘܢ. ܘܡܟܢܫܢܟܘܢ. ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ.* ܗܐ
ܡܣܬܟܠ ܥܒܕܝ. ܘܡܬܪܝܡ ܘܡܫܬܩܠ ܘܡܬܥܠܐ ܛܒ.* ܐܝܟ ܕܬܡܗܘܢ ܥܠܘܗܝ. ܣܓܝܐܐ
ܣܓܝܐܐ. ܗܟܢܐ ܡܫܚܠܦ ܚܙܘܗ ܡܢ ܕܓܒܪܐ. ܘܐܣܟܡܗ ܡܢ ܕܒܢܝܢܫܐ.* ܗܘ
ܢܕܟܐ. ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܥܠܘܗܝ ܢܐܚܕܘܢ ܡܠܟܐ ܦܘܡܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܝܠܝܢ
ܠܗܘܢ. ܚܙܘ. ܘܕܠܐ ܫܡܥܘ ܐܣܬܟܠܘ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢܓ *

ܡܢ ܗܝܡܢ ܠܫܡܥܢ. ܘܕܪܥܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܢ ܐܬܓܠܝ. ܣܠܩ ܐܝܟ ܝܢܘܩܐ
ܩܕܡܘܗܝ. ܘܐܝܟ ܥܩܪܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܨܗܝܐ. ܠܝܬ ܗܘܐ ܠܗ ܚܙܘܐ. ܘܠܐ ܗܕܪܐ. ܘܚܙܝܢܝܗܝ
ܕܠܝܬ ܗܘܐ ܠܗ ܚܙܘܐ. ܘܕܓܠܢܝܗܝ.* ܫܝܛܐ ܘܡܟܝܟܐ ܕܐܢܫܐ. ܓܒܪܐ
ܕܟܐܒܐ. ܘܝܕܥ ܚܫܐ. ܘܐܗܦܟܢ ܐܦܝܢ ܡܢܗ. ܘܫܝܛܢܝܗܝ. ܘܠܐ ܚܫܒܢܝܗܝ.
*ܒܫܪܪܐ ܚܫܝܢ. ܗܘ ܢܣܒ. ܘܟܐܒܝܢ ܗܘ ܣܒܠ. ܘܚܢܢ ܚܫܒܢܝܗܝ ܕܒܟܐܒ
ܘܡܚܝܐ ܕܐܠܗܐ ܘܡܫܬܥܒܕܐ.

Propterea cognoſcet populus meus nomen meum in die illo, quoniam ego loquor & ſum. 6 Quàm decori ſunt ſuper montes, pedes annuntiantis pacem, annuntiantis fauſta, & prædicantis ſalutem, dicentis Sioni, Regnavit Deus tuus. 7 *Quàm decora* vox ſpeculatorum tuorum extollentium vocem & ſimul canentium, cùm oculatim viderint reductam à Domino Sionem. 8 Exultate, & ſimul canite deſolationes Jeruſalem; quia conſolatus eſt Dominus populum ſuum, & redemit Jeruſalem: 9 Manifeſtavit Dominus brachium ſuum ſanctum coram cunctis gentibus, & videbunt omnes fines terræ ſalutem Dei noſtri. 10 Recedite, recedite, exite inde, & immundos ne tangatis: exite è medio ejus, & ſequeſtrate vos qui veſtes Domini portatis. 11 Nam non præcipitanter exibitis, neque ut fugitivi diſcedetis: quia præibit vobis Dominus, & qui vos congregat, eſt Deus Iſraelis. 12 Ecce ſapiet ſervus meus, efferetur, attolletur, & tantopere elevabitur. 13 Ut multi demirentur eum: adeo immutata eſt ſpecies ejus à virili, & aſpectus ejus ab humano. 14 Hic expiabit gentes multas, & de hoc occludent reges os ſuum: quia quod non dictum fuerat eis, viderunt; & quod non audiverant, perceperunt. 15

CAP. LIII.

Quis crediturus eſſet narrationi noſtræ? & brachium Domini cui revelatum eſt? 1 Aſcendit ut infans coram eo, & ut radix è terra ſitibunda, neque formam habens neque decorem: & videntes eum non habere formam, inficiati ſumus eum. 2 Deſpectus eſt & viliſſimus hominum, vir dolorum, et haud ignarus paſſionum: avertimus ab eo facies noſtras, & contempſimus eum, nec æſtimavimus. 3 Verè paſſiones noſtras ipſe pertulit, et dolores noſtros ipſe paſſus eſt: nos tamen reputavimus eum cruciatum, à Deo percuſſum, & humiliatum. 4

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لاجل هذا يعرف شعبي اسمي في ذلك اليوم اني انا هو انا المتكلم حاضر* ما ابهي على
الجبال بالحقيقة اقدام المبشر باسماع السلامة* والمبشر يقينا بالخيرات* اني اصنع خلاصك
مسموعا* قايلا لصهيون يملك الهك* لان صوت حفظتك رفع* ويفرحون بالصوت معا*
لان عيونا الي عيون تحدق حين يرحم الرب صهيون* لتتسع براري ايروسليم سرورا ايضا
معا* لان الرب رحمها ونجى ايروسليم* ويكشف الرب ذراعه القدوس امام جميع الامم
ويعاين جميع اطراف الارض الخلاص الذي من قبل الله* ابعدوا ابعدوا اخرجوا من
هناك* ولا تدنوا من نجس* اخرجوا من وسطها* اعتزلوا يا حاملي آنية الرب* لانكم ليس
تخرجون بقلق* ولا تمضون بهرب لان الرب يسير امامكم ويجمعكم الرب اله اسرايل*

* النبوة على المسيح وصلبه واحتماله للذنوب *

* ها فتاي يفهم ويرتفع ويتمجد ويتعالى جدا* هكذا يتحيرون عليك كثيرون* هكذا
منظرك زري من الناس* ومجدك من بني البشر* هكذا يتعجب منه الامم الكثيرون
والملوك تسد افواهها* لان الذين لم يخبروا به يرونه* والذين لم يسمعوا به يفهمونه*

* الفصل الثالث والخمسون *

* يا رب من آمن بسماعنا* وذراع الرب لمن اعلنت* اخبرنا امامه مثل صبي* مثل اصل
في ارض عطشى* ليس له منظر ولا مجد* ونظرناه فليس له منظر ولا حسن* لكن منظره
مهان وناقص دون جميع البشر انسان هو في جراح* ورأى ان يحتمل وجعا* لانه رد وجهه
اهين ولم يحسب* هو يحمل خطايانا* ومن اجلنا يتوجع* ونحن حسبناه ان يكون في تعب
وجراح وفي اسواء*

Propterea experietur populus meus nomen meum in illa die, quòd ego, ego inquam qui loquor, præſens adſum. 6 *Quàm ſpecioſi re verâ ſunt ſuper montes pedes annuntiantis famam pacis & certò annuntiantis bona. Equidem publicam faciam ſalutem tuam dicens Sioni, Dominabitur tibi Deus tuus.* 7 *Vox enim cuſtodum tuorum elevabitur, & voce ſimul lætabuntur; quoniam oculi oculos intuebuntur quando miſerebitur Dominus Sionis.* 8 *Sanè ſolitudines Jeroſolymæ in gaudium quoque ſimul prorumpent, eò quòd Dominus miſertus ſit earum, & Jeroſolymam liberaverit.* 9 *Retegétque Dominus brachium ſanctum ſuum coram cunctis gentibus, & videbunt omnes extremitates terræ ſalutem quæ erit à Deo.* 10 *Recedite, recedite, egredimini inde, & ne accedatis ad immundum: exite de medio ejus, ſecedite O portantes vaſa Domini.* 11 *Neque verò turbulenter exibitis, neque fugientium more diſcedetis; quia Dominus præibit vobis, & congregabit vos Dominus Deus Iſraelis.* 12

Prophetia de Chriſto, crucifixione ipſius, & ablatione culparum.

Ecce puer meus prudens erit, elevabitur, glorificabitur, & multùm exaltabitur. 13 *Ita mirabuntur te multi: ita aſpectus tuus deſpicietur ab hominibus, & gloria tua à filiis hominum:* 14 *Ita demirabuntur eum gentes multæ, & reges claudent ora ſua; quòd ii quibus nequaquam annuntiatum fuerat de eo, videbunt eum; & qui nihil audierant de ipſo, intelligent eum.* 15

CAP. LIII.

O Domine, quis credidit auditui noſtro? & brachium Domini cui revelatum eſt? 1 *Narramus coram eo ut puerulus, ut radix in terra ſiticuloſa: non eſt ei ſpecies neque majeſtas: & cùm intuemur eum, non ineſt ei forma neque pulchritudo:* 2 *Sed ſpecies ejus contemptiſſima eſt & omnium mortalium imperfectiſſima: homo qui in vulneribus verſatur, & dolorem pati decrevit; quoniam ſi faciem ſuam averteret, deſpiceretur, nec æſtimaretur.* 3 *Ipſe portat peccata noſtra, & pro nobis dolore afficitur: & nos arbitrati ſumus eum verſari in labore, vulneribus, & ærumnis.* 4

יְשַׁעְיָה : נד

: nostris iniquitatibus ab attritus ; nostris prævaricationibus à vulneratus ipse Et
5 וְהוּא מְחֹלָל מִפְּשָׁעֵנוּ מְדֻכָּא מֵעֲוֺנֹתֵינוּ
est medicatum ejus livore in & , eum super nostrarum pacificationum Castigatio
מוּסַר שְׁלוֹמֵנוּ עָלָיו וּבַחֲבֻרָתוֹ נִרְפָּא־
suam viam ad unusquisque ; erravimus ovis tanquam nos Omnes .nobis
6 לָנוּ׃ כֻּלָּנוּ כַּצֹּאן תָּעִינוּ אִישׁ לְדַרְכּוֹ
.nostrû omnium iniquitatem eum in occurrere fecit Dominus &:sumꝰ conversi
פָּנִינוּ וַיהוָה הִפְגִּיעַ בּוֹ אֵת עֲוֺן כֻּלָּנוּ׃
agnus sicut , suum os aperiet non & , est afflictus ipse &,est Oppressus
7 נִגַּשׂ וְהוּא נַעֲנֶה וְלֹא יִפְתַּח־פִּיו כַּשֶּׂה
: obmutuit eam tondentibus coram ovis sicut & , ducetur occisionem ad
לַטֶּבַח יוּבָל וּכְרָחֵל לִפְנֵי גֹזְזֶיהָ נֶאֱלָמָה
& , est sublatus judicio de & ,clausura De.suum os aperiet non &
8 וְלֹא יִפְתַּח פִּיו׃ מֵעֹצֶר וּמִמִּשְׁפָּט לֻקָּח וְאֶת־
;viventium terra de est abscissus quoniam ? eloquetur quis ejus generationē
דּוֹרוֹ מִי יְשׂוֹחֵחַ כִּי נִגְזַר מֵאֶרֶץ חַיִּים
impiis cum dedit Et .ei plaga ,mei populi prævaricationem propter
9 מִפֶּשַׁע עַמִּי נֶגַע לָמוֹ׃ וַיִּתֵּן אֶת־רְשָׁעִים
, fecerit injuriam non super : ejus mortibus in divite cum &,ejus sepulturam
קִבְרוֹ וְאֶת־עָשִׁיר בְּמֹתָיו עַל לֹא־חָמָס עָשָׂה
;fecit ægrotare,eñ contundere voluit Dominus Et .ejus ore in dolus nec
10 וְלֹא מִרְמָה בְּפִיו׃ וַיהוָה חָפֵץ דַּכְּאוֹ הֶחֱלִי
voluntas &:dies prolongabit;semē videbit,sua anima delictum posuerit si
אִם־תָּשִׂים אָשָׁם נַפְשׁוֹ יִרְאֶה זֶרַע יַאֲרִיךְ יָמִים וְחֵפֶץ
, videbit suæ animæ laborem Propter.prosperabitur ejus manū per Dñi
11 יְהוָה בְּיָדוֹ יִצְלָח׃ מֵעֲמַל נַפְשׁוֹ יִרְאֶה
: multos meus servus justus justificabit sua scientia In.saturabitur
יִשְׂבָּע בְּדַעְתּוֹ יַצְדִּיק צַדִּיק עַבְדִּי לָרַבִּים
, multis in ei dabo partem Ideò .bajulabit ipse ipsorum iniquitates &
12 וַעֲוֺנֹתָם הוּא יִסְבֹּל׃ לָכֵן אֲחַלֶּק־לוֹ בָרַבִּים
mortem in effudit quod eo pro , spolium partietur fortibus cum &
וְאֶת־עֲצוּמִים יְחַלֵּק שָׁלָל תַּחַת אֲשֶׁר הֶעֱרָה לַמָּוֶת
peccatum ipse & : est numeratus prævaricatoribus cum & ,suam animam
נַפְשׁוֹ וְאֶת־פֹּשְׁעִים נִמְנָה וְהוּא חֵטְא־
.intercedet prævaricatoribus & , tulit multorum
רַבִּים נָשָׂא וְלַפֹּשְׁעִים יַפְגִּיעַ׃

CAP. LIV. נד

:parturivit non hinni & ,præconium vocifera : peperit non sterilis Præconiza
1 רָנִּי עֲקָרָה לֹא יָלָדָה פִּצְחִי רִנָּה וְצַהֲלִי לֹא־חָלָה
.Dominus dixit , maritatæ filii quàm desolatæ filii plures quia
כִּי־רַבִּים בְּנֵי־שׁוֹמֵמָה מִבְּנֵי בְעוּלָה אָמַר יְהוָה׃
,extendant tuorū tabernaculorum cortinas &,tui tentorii locum Dilata
2 הַרְחִיבִי מְקוֹם אָהֳלֵךְ וִירִיעוֹת מִשְׁכְּנוֹתַיִךְ יַטּוּ
.consolida tuos clavos & , tuos funiculos prolonga : prohibeas ne
אַל־תַּחְשֹׂכִי הַאֲרִיכִי מֵיתָרַיִךְ וִיתֵדֹתַיִךְ חַזֵּקִי׃
civitates & ,hæreditabit gentes tuum semē & : erumpes sinistra & ,dextera Quia
3 כִּי־יָמִין וּשְׂמֹאול תִּפְרֹצִי וְזַרְעֵךְ גּוֹיִם יִירָשׁ וְעָרִים
nec,afficieris pudore non quia , timeas Ne.inhabitare facient desolatas
4 נְשַׁמּוֹת יוֹשִׁיבוּ׃ אַל־תִּירְאִי כִּי־לֹא תֵבוֹשִׁי וְאַל־
tuarum adolescentiarum pudoris quippe : confunderis nec quia , erubesces
תִּכָּלְמִי כִּי־לֹא תַחְפִּירִי כִּי בֹשֶׁת עֲלוּמַיִךְ
.amplius recordaberis non tuarum viduitatum opprobrii & , oblivisceris
תִּשְׁכָּחִי וְחֶרְפַּת אַלְמְנוּתַיִךְ לֹא תִזְכְּרִי־עוֹד׃
: ejus nomen Sebaoth Dominus tuus factor , tuus maritus Quia
5 כִּי בֹעֲלַיִךְ עֹשַׂיִךְ יְהוָה צְבָאוֹת שְׁמוֹ
.vocabitur terræ omnis Deus ,Israel Sanctus tuus redemptor &
וְגֹאֲלֵךְ קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל אֱלֹהֵי כָל־הָאָרֶץ יִקָּרֵא׃

Versio VUL. LAT.

5 Ipse autem vulneratus est propter
iniquitates nostras, attritus
est propter scelera nostra :
disciplina pacis nostræ super
eum, & livore ejus sanati sumus.
6 Omnes nos quasi oves
erravimus, unusquisque in viā
suam declinavit:& posuit Dominus
in eo iniquitatem omnium
7 nostrûm. Oblatus est quia
ipse voluit,& non aperuit os
suum:sicut ovis ad occisionem
ducetur,& quasi agnus coram
tondente se obmutescet,& non
8 aperiet os suum. De angustia,
& de judicio sublatus est : generationem
ejus quis enarrabit
? quia abscissus est de terra
viventium : propter scelus populi
9 mei percussi eum. Et dabit
impios pro sepultura,& divitem
pro morte sua:eò quòd
iniquitatem non fecerit, neque
10 dolus fuerit in ore ejus. Et Dominus
voluit conterere eum in
infirmitate:si posuerit pro peccato
animam suam, videbit semen
longævum , & voluntas
Domini in manu ejꝰ dirigetur.
11 Pro eo quòd laboravit anima
ejus,videbit & saturabitur : in
scientia sua justificabit ipse justus
servus meus multos,& iniquitates
eorum ipse portabit.
12 Ideò dispertiam ei plurimos,
& fortium dividet spolia, pro
eo quòd tradidit in mortem
animam suam, & cum sceleratis
reputatus est : & ipse peccata
multorum tulit, & pro
transgressoribus rogavit.

CAP. LIV.

1 LAuda sterilis quæ non paris
: decanta laudem, & hinni
quæ non pariebas : quoniam
multi filii desertæ magis quàm
ejus quæ habet virum , dicit
2 Dñs.Dilata locum tentorii tui,
& pelles tabernaculorum tuorū
extende, ne parcas:longos
fac funiculos tuos, & clavos
3 tuos consolida. Ad dexterā enim
& ad lævam penetrabis :
& semen tuū Gentes hæreditabit,
& civitates desertas inhabitabit.
4 Noli timere, quia
non confundêris, neque erubesces
: non enim te pudebit,
quia confusionis adolescentiæ
tuæ obliviscêris, & opprobrii
viduitatis tuæ non recordaberis
5 amplius. Quia dominabitur
tuî qui fecit te, Dominus
exercituū nomen ejus:& redemptor
tuus Sanctus Israel,
Deus omnis terræ vocabitur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 Αὐτὸς δὲ ἐτραυματίσθη διὰ τὰς (γ) ἁμαρτίας
ἡμῶν, καὶ (δ) μεμαλάκισαι διὰ τὰς ἀνομίας
ἡμῶν, παιδεία εἰρήνης ἡμῶν ἐπ᾽ αὐτόν,
6 τῷ μώλωπι αὐτοῦ ἡμεῖς ἰάθημεν. Πάντες
ὡς πρόβατα ἐπλανήθημεν· ἄνθρωπος τῇ
ὁδῷ αὐτοῦ ἐπλανήθη· καὶ κύριος παρέδωκεν
7 αὐτὸν ταῖς ἁμαρτίαις ἡμῶν, Καὶ αὐτὸς
διὰ τὸ κεκακῶσθαι οὐκ ἀνοίγει τὸ
(ε) στόμα αὐτοῦ· ὡς πρόβατον ἐπὶ σφαγὴν
ἤχθη, καὶ ὡς ἀμνὸς ἐναντίον τοῦ (ζ) κείροντος
ἄφωνος, οὕτως οὐκ ἀνοίγει (η) τὸ στόμα.
8 Ἐν τῇ ταπεινώσει ἡ κρίσις αὐτοῦ ἤρθη,
τὴν γενεὰν αὐτοῦ τίς διηγήσεται; ὅτι αἴρεται
ἀπὸ τῆς γῆς ἡ ζωὴ αὐτοῦ, ἀπὸ τῶν ἀνομιῶν
9 τοῦ λαοῦ μου ἤχθη εἰς θάνατον. Καὶ δώσω
τοὺς πονηροὺς ἀντὶ τῆς ταφῆς αὐτοῦ, καὶ τοὺς
πλουσίους ἀντὶ τοῦ θανάτου αὐτοῦ· ὅτι ἀνομίαν
οὐκ ἐποίησεν, οὐδὲ (θ) δόλον ἐν τῷ
10 στόματι αὐτοῦ· Καὶ κύριος βούλεται καθαρίσαι
αὐτὸν (ι) τῆς πληγῆς. ἐὰν δῶτε
περὶ ἁμαρτίας, ἡ ψυχὴ ὑμῶν ὄψεται σπέρμα
11 μακρόβιον. καὶ βούλεται κύριος Ἀφελεῖν
ἀπὸ τοῦ πόνου τῆς ψυχῆς αὐτοῦ, δεῖξαι αὐτῷ
φῶς, καὶ πλάσαι τῇ συνέσει, δικαιῶσαι
δίκαιον εὖ δουλεύοντα πολλοῖς, καὶ
12 τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν αὐτὸς ἀνοίσει. Διὰ
τοῦτο αὐτὸς κληρονομήσει πολλούς, καὶ τῶν
ἰσχυρῶν μεριεῖ σκῦλα· ἀνθ᾽ ὧν παρεδόθη
εἰς θάνατον ἡ ψυχὴ αὐτοῦ, καὶ ἐν τοῖς ἀνόμοις
ἐλογίσθη, καὶ αὐτὸς ἁμαρτίας πολλῶν
ἀνήνεγκε, καὶ διὰ τὰς (κ) ἀνομίας αὐτῶν
παρεδόθη.

Ipse autem (d) vulneratus est propter peccata nostra: & infirmatus est propter iniquitates nostras. Disciplina pacis nostræ super eum: livore ejus nos sanati sumus. Omnes quasi oves erravimus: homo in via sua erravit. Et Dominus tradidit eum (e) propter iniquitates nostras: Et ipse (f) propter afflictionem non aperit os suum. Sicut ovis ad victimam (g) ductus est, & sicut agnus coram tondente mutus, sic non aperit os. In humilitate judicium ejus sublatum est. Generationem ejus quis enarrabit? Quia tollitur de terra vita ejus: ab iniquitatibus populi mei ductus est ad mortem. Et (h) dabo pessimos pro sepultura ejus, & divites pro morte illius. Quia iniquitatem non fecit, neque (i) dolum in ore suo: Et Dominus vult mundare eum à plaga. Si (k) dederitis pro peccato, anima vestra videbit semen longævum. Et vult (l) Dominus Auferre de dolore animæ ejus, ostendere ei lucem, & formare intelligentiâ, justificare justum benè servientem multis; & peccata eorum ipse portabit. Propterea ipse possidebit multos, & fortium dividet spolia: pro eo quòd tradita est ad mortem anima ejus: & in iniquis reputatus est: & ipse peccata multorum tulit, & propter iniquitates eorum traditus est.

MS.A. (γ) ἀνομίας (δ) ἐμαλακίσθη διὰ τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν, (ε) στόμα ὡς πρόβατον (ζ) κείραντος αὐτό (η) τὸ στόμα αὐτοῦ. (θ) εὑρέθη δόλος ἐν τῷ (ι) ἀπὸ τῆς πληγῆς. (κ) ἁμαρτίας

ΚΕΦ. νδʹ.

1 Εὐφράνθητι στεῖρα ἡ οὐ τίκτουσα, ῥῆξον
καὶ βόησον ἡ οὐκ ὠδίνουσα, ὅτι πολλὰ τὰ
τέκνα τῆς ἐρήμου, μᾶλλον ἢ τῆς ἐχούσης τὸν
2 ἄνδρα· εἶπε γὰρ κύριος, Πλάτυνον τὸν τόπον
τῆς σκηνῆς σου, καὶ τῶν αὐλαιῶν σου,
πῆξον, μὴ φείσῃ, μάκρυνον τὰ σχοινίσματά
σου, καὶ τοὺς πασσάλους σου κατίσχυσον,
3 Ἔτι εἰς τὰ δεξιὰ καὶ (α) τὰ ἀριστερὰ ἐκπέτασον.
καὶ τὸ σπέρμα σου ἔθνη κληρονομήσει,
καὶ πόλεις ἠρημωμένας (β) κατοικιεῖς.
4 Μὴ φοβοῦ, ὅτι κατῃσχύνθης, μηδὲ
ἐντραπῇς, ὅτι ὠνειδίσθης, ὅτι αἰσχύνην
αἰώνιον ἐπιλήσῃ, καὶ ὄνειδος τῆς χηρείας
5 σου οὐ μὴ (γ) μνησθήσῃ ἔτι. Ὅτι κύριος
ὁ ποιῶν σε, Κύριος σαβαὼθ ὄνομα αὐτῷ·
καὶ ὁ ῥυσάμενός σε, (δ) αὐτὸς Θεὸς
Ἰσραὴλ, πάσῃ τῇ γῇ κληθήσεται.

CAP. LIV.

LÆtare sterilis, quæ non paris: erumpe, & clama, quæ non parturis: quia multi filii desertæ, quàm ejus, quæ habet virum. Dixit enim Dominus; Dilata locum tabernaculi tui, & (a) aulæorum tuorum: fige, ne parcas: prolonga funiculos tuos: & palos tuos conforta: Adhuc in dextris & sinistris dilata. Et semen tuum hæreditabit gentes: & civitates desertas habitare facies. Noli timere, quia confusa es: neque confundaris, quia exprobratum tibi est. Confusionem enim (b) æternam obliviscêris: & opprobrii viduitatis tuæ memor non eris ultrà: Quia Dominus qui facit te, Dominus Sabaoth nomen illi: & qui eruit te, ipse Deus Israel, omni terra vocabitur.

MS.A. (α) εἰς τὰ (β) κατοικήσεις. (γ) μνησθήσῃ. Ὅτι κύριος
Θεὸς αὐτὸς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 והוא יבני בית מקדשא דאתחל בחובנא אתמסר בעויתנא ובאולפניה שלמא יסגי
6 עלנא וכדנציית לפתגמוהי חובנא ישתבקון לנא : כולנא כענא אתבדרנא גבר לקבל
7 אורחיה גלינא ומן קדם יי הות רעוא למשבק חובי כולנא בדיליה : בעי והוא מתתב ועד
לא פתח פומיה מתקבל תקיפי עממיא כאמרא לנכסתא ימסר וכרחלא דקדם גוזהא
8 שתקא ולית לקבליה דפתח פומיה ממלל מלא : מיסורין ומפורענו יקריב גלותנא
ופרישן דיתעבדן לנא ביומוהי מן יכול לאשתעאה ארי יעדי שולטן עממיא מארעא
9 דישראל חובין דחבו עמי עד לותהון ימטו : וימסר ית רשיעיא לגהנם וית עתירי נכסיא
דאנסו במותא דאבדנא בדיל דלא יתקימון עבדי חטאה ולא ימללון נכלין בפומהון :
10 ומן קדם יי הות רעוא למצרף ולדכאה ית שארא דעמיה בדיל לנקאה מחובין נפשהון
יחזון במלכות משיחהון יסגון בנין ובנן יורכון יומין ועבדי אוריתא דיי ברעותיה
11 יצלחון: משעבוד עממיא ישזיב נפשהון יחזון בפורענות סנאיהון יסבעון מבזת מלכיהון
12 בחוכמתיה יזכי זכאין בדיל לשעבדא סגיאין לאוריתא ועל חוביהון הוא יבעי : בכן
אפלג ליה בזת עממין סגיאין וית נכסי כרכין תקיפין יפלג עדאה חלף דמסר למותא
נפשיה וית מרודיא שעביד לאוריתא והוא על חובין סגיאין יבעי ולמרודיא ישתבק
בדיליה :

נד

1 שבחי ירושלם דהות כאתא עקרה דלא ילידת בועי תושבחתא ודוצי דהות כאתא דלא
2 עדיאת ארי סגיאין יהון בני ירושלם צדיתא מבני כרכא יתיבתא אמר יי : אפתא אתר
3 בית מישרך ומקרוי ארעיך יתבי לא תמנעין אסגא עם משריתיך ושלטוניך תקיפי : ארי
4 לדרומא ולצפונא תתקפין ובנך עממין ירתון וקרוין דצדין יתיתבון: לא תדחלין ארי
לא תבהתין ולא תתכנעין ארי לא תתכלמין ארי בהתת עולמותיך תתנשין וחסודי
5 ארמלותיך לא תדכרין עוד : ארי מריך דעבדיך יי צבאות שמיה ופרקיך קדישא
דישראל אלה כל ארעא יתקרי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et ipse ædificabit domum sanctuarii, quod violatum est propter peccata nostra, & traditum est propter iniquitates nostras. Et in doctrina ejꝰ multiplicabitur pax super nos:& cùm obedierimꝰ verbis ejꝰ, dimittentur nobis peccata nostra. Omnes nos quasi oves dispersi sumus, unusquisque versus viam suam migravimus : & à facie Dñi voluntas fuit, ut dimitteret peccata nostra propter eum. Deprecatꝰ est, ipse exauditꝰ est, & antequàm aperiret os suum acceptꝰ est. Robustos populorum quasi agnum ad victimam tradet, & sicut ovem quæ tacet coram tondente se, & non erit qui aperiat os suum in conspectu ejꝰ, & loquatur verbum. Ex infirmitatibꝰ & ultione congregabit captivitatem nostram : & mirabilia quæ fient nobis in diebꝰ ejus quis poterit enarrare? quia auferet dominiū populorū de terra Israel: peccata quæ peccaverunt populꝰ meus, usq; ad eos pervenient. Et tradet impios in gehennam, & divites substantiis qui vim attulerunt morte exitiosa, ut non permaneant facientes peccatum, neq; loquantur dolum in ore suo. A facie Dñi voluntas fuit, ut conflaret & mundaret residuum populi sui, ut purificaret à peccatis animas eorum: videbunt regnum Christi sui, multiplicabuntur filios & filias, prolongabuntur dies eorum: & facientes legem Dñi, in voluntate ejus dirigentur. A subjectione populorum liberabit animas eorum, videbunt ultionem de inimicis suis, saturabuntur præda regū eorum. In sapientia sua justificabit justos, ut subjiciat multos Legi : & pro peccatis eorum ipse deprecabitur. Ideò *dividam ei* prædā populorum multorum, & divitias civitatū fortiū: dividet spolia, eò quòd tradidit morti animam suam, & transgressores subjecit Legi: & ipse pro peccatis multorū deprecabitur, et transgressoribus dimittetur propter eū.

CAP. LIV.

LAuda Jerusalem, quæ eras quasi mulier sterilis quæ non peperit : exulta in laude, et gaude quæ eras quasi mulier quæ non concepit : quoniam plures futuri sunt filii Jerusalem desertæ, quàm filii urbis habitabilis, dixit Dñs. Dilata locū domus habitationis tuæ, et à civitatibus terræ tuæ ne cesses; habitatores arceas: multiplica populū castrorū tuorum, et principes tuos corrobora. Quoniā ad Austrum et ad Aquilonem confortaberis, et filii tui populos hæreditabunt, et civitates quæ desertæ sunt habitabiles reddent. Ne timeas, quia non confundêris; neq; erubescas, quoniam non te pudebit: confusionis adolescentiæ tuæ obliviscêris, et opprobrii viduitatis tuæ non recordaberis amplius. Quia dominator tuus qui fecit te, Dominus exercituum nomen ejus, & redemptor tuus Sanctus Israel, Deus omnis terræ vocabitur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܘ ܡܬܩܛܠ ܡܛܠ ܚܛܗܝܢ. ܘܡܬܡܟܟ ܡܛܠ ܥܘܠܢ. ܡܪܕܘܬܐ ܕܫܠܡܢ
ܥܠܘܗܝ. ܘܒܫܘܡܒܠܘܗܝ ܢܬܐܣܐ. * ܟܠܢ ܐܝܟ ܥܢܐ ܛܥܝܢ. ܘܐܢܫ ܠܨܒܝܢܗ ܦܢܝܢ. ܘܡܪܝܐ
ܐܦܓܥ ܒܗ. ܚܛܗܐ ܕܟܠܢ. * ܩܪܒ ܘܐܬܡܟܟ. ܘܠܐ ܦܬܚ ܦܘܡܗ. ܐܝܟ ܐܡܪܐ ܠܢܟܣܬܐ
ܐܬܕܒܪ. ܘܐܝܟ ܢܩܝܐ ܩܕܡ ܓܙܘܙܗ ܫܬܝܩ ܗܘܐ. ܘܠܐ ܦܬܚ ܦܘܡܗ. * ܡܢ ܚܒܘܫܝܐ ܘܡܢ
ܕܝܢܐ ܐܬܕܒܪ. ܘܫܪܒܬܗ ܡܢܘ ܢܫܬܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܓܙܪ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. ܘܡܛܠ ܥܘܠܐ ܕܥܡ
ܡܛܐ ܠܗ. * ܝܗܒ ܪܫܝܥܐ ܩܒܪܗ. ܘܥܬܝܪܐ ܠܡܘܬܗ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܥܒܕ ܥܘܠܐ. ܘܠܐ ܐܫܬܟܚ ܢܟܠܐ
ܒܦܘܡܗ. * ܘܡܪܝܐ ܨܒܐ ܕܢܡܟܟܝܘܗܝ ܘܢܚܫܫܝܘܗܝ. ܘܐܬܬܣܝܡ ܚܛܗܐ ܒܢܦܫܗ. ܘܢܚܙܐ
ܙܪܥܐ. ܘܢܘܪܟ ܝܘܡܬܐ. ܘܨܒܝܢܗ ܕܡܪܝܐ. ܒܐܝܕܗ ܢܨܠܚ. * ܘܡܢ ܥܡܠܐ ܕܢܦܫܗ ܢܚܙܐ
ܘܢܣܒܥ ܒܝܕܥܬܐ. ܘܢܙܕܩ ܠܙܕܝܩܐ. ܥܒܕܐ ܗܘܐ ܕܣܓܝܐܐ. ܘܚܛܗܝܗܘܢ ܗܘ ܢܣܝܒ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܦܠܓܝܘܗܝ ܒܣܓܝܐܐ. ܘܥܡ ܥܫܝܢܐ ܢܦܠܓ ܒܙܬܐ. ܚܠܦ ܕܐܫܕ ܢܦܫܗ
ܠܡܘܬܐ. ܘܥܡ ܥܘܠܐ ܐܬܡܢܝ. ܘܗܘ ܚܛܗܐ ܕܣܓܝܐܐ ܫܩܠ. ܘܦܓܥ ܒܥܘܠܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢܕ *

* ܫܒܚܝ ܥܩܪܬܐ ܕܠܐ ܝܠܕܬ. ܘܐܬܦܨܚܝ ܒܬܫܒܘܚܬܐ ܘܪܘܙܝ ܕܠܐ ܚܒܠܬ. ܡܛܠ
ܕܣܓܝܐܝܢ ܒܢܝܗ ܕܨܕܝܬܐ. ܝܬܝܪ ܡܢ ܒܢܝܗ ܕܒܥܝܠܬܐ. * ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܦܬܝ ܐܬܪܐ
ܕܡܫܟܢܝܟܝ. ܘܝܪܝܥܬܐ ܕܡܫܟܢܝܟܝ ܡܬܚܘ. ܘܠܐ ܬܚܘܣܝܢ. ܐܘܪܟܝ ܚܒܠܝܟܝ
ܘܣܟܝܟܝ ܚܝܠܝ. * ܡܛܠ ܕܠܝܡܝܢܐ ܘܠܣܡܠܐ ܬܦܬܝܢ. ܘܙܪܥܟܝ ܢܐܪܬ ܥܡܡܐ.
ܘܡܕܝܢܬܐ ܚܪܝܒܬܐ ܢܥܡܪܘܢ. * ܠܐ ܬܕܚܠܝܢ ܡܛܠ ܕܠܐ ܬܒܗܬܝܢ. ܘܠܐ ܬܬܟܡܪܝܢ ܡܛܠ ܕܠܐ
ܬܬܚܦܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܒܗܬܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟܝ ܬܛܥܝܢ. ܘܚܣܕܐ ܕܐܪܡܠܘܬܟܝ ܬܘܒ ܠܐ ܬܐܬܕܟܪܝܢ.
* ܡܛܠ ܕܡܪܟܝ ܥܒܕ ܥܡܟܝ ܗܟܢܐ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. ܘܦܪܘܩܟܝ ܩܕܝܫܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܠܗܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ ܢܬܩܪܐ.

Ipſe occiditur propter peccata noſtra, & 5
humiliatur propter ſcelus noſtrum: caſtigatio pacis noſtræ ipſi imponitur, & cicatricibus ejus curabimur. Omnes ut oves erravi- 6
mus, quiſque in *placitum* ſibi latus nos convertimus; Dominus autem fecit ut irruerent
in eum peccata omnium noſtrûm. Acceſſit, 7
& humiliavit ſe, nec aperuit os ſuum: tanquam agnus ad mactationem ductus eſt, &
velut ovis coram tonſore obmutuit, nec aperuit os ſuum. E carcere & ex judicio raptus 8
eſt; at generationem ejus quis enarrabit? nam ſucciſus eſt è terra viventium, & ex iniquis populi mei tetigerunt eum: Contribuit 9
impius ad ſepulchrum ejus, & dives ad mortem ipſius. Licèt non cõmiſerit iniquitatem,
nec ſit dolus in ore ipſius; Dominus tamen 10
voluit humiliare eum & doloribus afficere. Impoſitũ eſt peccatũ animæ ipſius, ut videret ſemen, & prorogaret dies, & voluntas Dñi
per eum proſperaretur. E ſuimetipſius labore 11
videret, & juſtos ſcientiâ ſaturaret atq; juſtificaret. Servus erit multorũ, & eorũ peccata
ipſe portabit: Idcirco diſtribuam eum inter 12
multos, & inter robuſtos dividet ſpolia; pro eo quòd animã ſuam effuderit in mortem, et cum iniquis connumeratus ſit, idémq; peccata multorũ pertulerit, & obvius fuerit iniquis.

CAP. LIV.

CAne ſterilis quæ non peperit, exhilarare 1
cantu & exulta quæ non parturivit; quia plures futuri ſunt filii deſolatæ quàm conjugatæ.
Dicit Dominus, Dilata locum tentoriorum 2
tuorum, cortinas tabernaculorũ tuorũ extende, & ne parcas; produc funiculos tuos, &
clavos tuos confirma. Nam dextrorſum & ſi- 3
niſtrorſum creſces, & ſemen tuum poſſidebit gentes, & civitates deſolatas reddent habitabiles. Ne timeas, quia non erubeſces; & ne 4
te contegas, quia non pudefies: nam verecundiæ pueritiæ tuæ oblivíſceris, & probri viduitatis tuæ non recordaberis ampliús. Nam Dominus tuus ita tecum acturus eſt, cujus nomen eſt Dominus potentiſſimus; & redemptor tuus Sanctus Iſraelis, totius terræ Deus vocabitur.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وهو جرح لاجل اثامنا * ووجع لاجل خطايانا * ادب سلامتنا عليه * بجراحه نحن شفينا * مثل
خراف ضللنا باجمعنا * والانسان في طريقه ضل * والرب اسلمه لخطايانا * وهو عندما نوجع
لم يفتح فاه * مثل خروف سيق الي الذبح * ومثل حمل امام من يجزه بغير صوت * هكذا لم
يفتح فاه في تواضعه * حكمه رفع * وجيله من يقصه * لان حياته ارتفعت من الارض * ومن
اثام شعبي سيق للموت * واكافي الاشرار عوض دفنه * والاغنياء عوض موته * لانه لم يصنع
اثما * ولم يوجد في فيه غش * وشاء الرب ان يطهره من الجراح * فان اعطيتم لنفوسكم
عن الخطية * ترون ذرية طويلة العمر * والرب شاء بيده ان ينزع من تعب نفسه * ليظهر له
نورا ويجبله بالفهم * ليبرر الصديق ويتعبد حسنا للكثيرين * وهو يضعد خطاياهم * لاجل
هذا هو يرث الكثيرين * ويقسم غنايم الاقوياء * عوض ما اسلمت نفسه للموت وحسب في الاثمة
وهو رفع خطايا كثيرين * ومن اجل خطاياهم اسلم *

* الفصل الرابع والخمسون *   * الاصحاح السادس والعشرون *

* في رد سبي بني اسرايل الي ايروسليم وبشارته لايروسليم *

* افرحي ايتها العاقر التي لم تلد * شقي واصرخي ايتها التي لم تطلق * لان بني
المقفرة اكثر من التي لها رجل * لان الرب قال * وسعي موضع قبتك * وديارك انصبي
لا تشفقي * طولي حبالك * وقوي اوتادك * مدي يمينا وشمالا ايضا * وزرعك يرث الامم
تسكني المدن الخربة * ولا تخشي انك تخزي * ولا تخجلي انك تعيري * لانك تنسي
الخزي الابدي * ولا تذكري عار ترملك * لان الرب الذي صنعك رب الجنود اسمه
وملجيك هو الاه اسرايل يدعي في كل الارض *

Ipſe verò vulneratus eſt propter iniquitates noſtras, & dolores paſſus propter peccata noſtra, caſtigatio pacis noſtræ impoſita eſt ei, per ejus vulnera nos ſanati 5
ſumus. Sicut oves erravimus omnes, 6
& quiſque per viam ſuam erravit; Dominus autem tradidit eum peccatis noſtris. Et ipſe dum pateretur dolores, non 7
aperuit os ſuum: ut ovis ductus eſt ad jugulationem; & ut agnus coram tondente eſt ſine voce, ſic non aperuit os ſuum dum humiliaretur. Judicium e- 8
jus altum eſt, & generationem ejus quis enarret? vita quidem ipſius ablata eſt è terra, & ab iniquitatibus populi mei ductus eſt ad mortem: At rependam ini- 9
quis pro ſepulturâ ejus, & divitibus pro morte ipſius, Quia non fecit iniquitatem, nec inventus eſt in ore ejus dolus; Ideò 10
voluit eum Dominus mundare à vulneribus. Quòd ſi dederitis animas veſtras pro peccato, videbitis generationem longævæ ætatis. Dominus inquam, voluit 11
manu ſuâ eum eripi à labore animæ ipſius, ut oſtenderet ei lucem, & cingeret eum prudentiâ; ad hoc ut juſtificaret juſtum, & decenter ſubderet ſe multis, idémque tolleret peccata eorum. Hac de cauſa 12
multos ipſe poſſidebit, & partietur ſpolia fortium; pro eo ſcilicet quòd tradita ſit anima ejus ad mortem, & annumeratus ſit inter iniquos, quòd tulerit peccata multorum, & propter peccata eorũ traditus ſit.

CAP. LIV.

Textus vigeſimus ſextus.
De reductione captivitatis filiorũ Iſrael Jeroſolymam: ejuſdémque prædictio ad Jeroſolymam.

LÆtare O ſterilis quæ non peperit, e- 1
rumpe & clama quæ non eſt paſſa dolores partûs: quoniam filii ſolitariæ plures erunt quàm ejus quæ habet maritum. Ait 2
enim Dominus, Amplifica locum tentorii tui, domicilium tuum erige, ne parcas, prolonga funiculos tuos, & paxillos tuos confirma; Extende dextrorſum atque ſini- 3
ſtrorſum etiamnam ſemen tuum poſſidebit gentes, habitabis urbes dirutas. Et ne verearis quòd pudefias, neve erubeſcas quòd 4
probris afficienda ſis: quoniam oblivíſcêris priſtinæ verecundiæ, nec recordaberis opprobrii viduitatis tuæ. Nam Domini qui te 5
fecit, nomen eſt Dominus exercituum; & Salvator tuus ipſe Deus Iſraelis vocabitur in tota terra.

ישעיה: נה

: Dominus te vocavit ſpiritu *aſſlictam* & ,derelictam mulierem ſicut Quia
6 כי־כאשה עזובה ועצובת רוח קראך יהוה
momento In.tuus Deus dixit,fuiſti *reprobata* quia ,*adoleſcentiarũ* uxorem &
7 ואשת נעורים כי תמאס אמר אלהיך : ברגע
modico In .te congregabo magnis miſerationibus in &:te dereliqui parvo
8 קטן עזבתיך וברחמים גדולים אקבצך : בשצף
ſeculi miſericordia in & ,te à momento *meas facies* abſcondi iræ
קצף הסתרתי פני רגע ממך ובחסד עולם
hoc Noach *aquæ Quia* .Dominus tuus redemptor dixit : tui ſum miſertus
9 רחמתיך אמר גאלך יהוה : כי־מי נח זאת
ſic : terram ſuper ultrà Noach *aquas tranſeundo à* juravi cui ,mihi
לי אשר נשבעתי מעבר מי־נח עוד על־הארץ כן
montes Nam .te *in increpando ab &* ,te contra *iraſcendo ab* juravi
10 נשבעתי מקצף עליך ומגער־בך : כי ההרים
,recedet non te à mea miſericordia &:nutabunt colles & , *recedent*
ימושו והגבעות תמוטינה וחסדי מאתך לא־ימוש
.Dominus tuus miſerator dixit ,ſe movebit non meæ pacis fœdus &
ובריח שלומי לא תמוט אמר מרחמך יהוה :
accubare faciens ego ecce *: lenita conſolatione non* , *jactata turbine* , *Afflicta*
11 עניה סערה לא נחמה הנה אנכי מרביץ
ponam Et .ſapphiris in te fundabo & , tuos lapides carbunculo in
12 בפוך אבניך ויסדתיך בספירים : ושמתי
: rutilantis gemmæ lapidibus ex tuas portas & ,tuas feneſtras *cryſtallum*
כדכד שמשתיך ושעריך לאבני אקדח
tui filii univerſi Et *.beneplaciti* lapidibus ex tuum terminum omnem &
13 וכל־גבולך לאבני־חפץ : וכל־בניך
: fundaberis juſtitia In .tuorum filiorum *pax multa & : Domini* docti
14 למודי יהוה ורב שלום בניך : בצדקה תכונני
quia , contritione à & ; timebis non quia , oppreſſione ab te elonga
רחקי מעשק כי־לא תיראי וממחתה כי
: me ex non *peregrinabitur peregrinando En* .te ad appropinquabit non
15 לא־תקרב אליך : הן גור יגור אפס מאותי
creavi ego Ecce .cadet ,te contra tecum *peregrinans* quiſquis
16 מי־גר אתך עליך יפול : הן אנכי בראתי
: ſuum opus in vas proferentem & , *prunam* igne in ſufflantem fabrum
חרש נפח באש פחם ומוציא כלי למעשהו
fictum vas Omne *.corrumpendum ad vaſtatorem* creavi ego &
17 ואנכי בראתי משחית לחבל : כל־כלי יוצר
judicio in *tecum* ſurget linguam omnem &,proſperabitur non te contra
עליך לא יצלח וכל־לשון תקום־אתך למשפט
eorum juſtitia & , Domini ſervorum hæreditas hæc : condemnabis
תרשיעי זאת נחלת עבדי יהוה וצדקתם
.Dominus dixit mecum à
מאתי נאם־יהוה :

CAP. LV. נה

, *ite : argentum ei non cui &* ,aquas ad *ite ſitiens omnis* O
1 הוי כל־צמא לכו למים ואשר אין־לו כסף לכו
pretio abſque & , argento abſque emite , *ite &* ,comedite & , emite
שברו ואכלו ולכו שברו בלוא־כסף ובלוא מחיר
, pane non in argentum *appendetis* Quare .lac & , vinum
2 יין וחלב : למה תשקלו־כסף בלוא־לחם
comedite & ,me ad audiendo audite *? ſaturitatem ad non in* veſtrũ laborẽ &
ויגיעכם בלא לשבעה שמעו שמוע אלי ואכלו־
veſtram aurẽ Inclinate .veſtra anima craſſitudine in delectabitur &,bonum
3 טוב ותתענג בדשן נפשכם : הטו אזנכם
pactum *vobis excidam &* : veſtra anima vivet &,audite ; me ad venite &
ולכו אלי שמעו ותחי נפשכם ואכרתה לכם ברית
.ſtabiles David miſericordias *ſeculi*
עולם חסדי דוד הנאמנים :

Verſio VUL. LAT.

6 Quia ut mulierem derelictam & mœrentem ſpiritu vocavit te Dominus, & uxorẽ ab adoleſcentia abjectam, dixit Deus 7 tuus. Ad punctum in modico dereliqui te,& in miſerationi- 8 bus magnis congregabo te. In momento indignationis abſcondi faciem meam parumper à te, & in miſericordia ſempiterna miſertus ſum tuî : dixit 9 redemptor tuus Dominus. Sicut in diebus Noë iſtud mihi eſt, cui juravi ne inducerem aquas Noë ultrà ſupra terram : ſic juravi ut non iraſcar tibi, 10 & non increpem te. Montes enim commovebuntur, & colles contremiſcent : miſericordia autem mea non recedet à te, & fœdus pacis meæ non movebitur : dixit miſerator 11 tuus Dñs. Paupercula, tempeſtate convulſa, abſq; ulla conſolatione. Ecce ego ſternam p ordinem lapides tuos, & fun- 12 dabo te in ſapphiris, Et ponã jaſpidem propugnacula tua:et portas tuas in lapides ſculptos, & omnes terminos tuos in la- 13 pides deſiderabiles : Univerſos filios tuos doctos à Domino;& multitudinem pacis filiis 14 tuis. Et in juſtitia fundaberis: recede procul à calumnia,quia non timebis;& à pavore, quia 15 non appropinquabit tibi. Ecce accola veniet,qui non erat mecum, advena quondã tuus ad- 16 jungetur tibi. Ecce ego creavi fabrũ ſufflantẽ in igne prunas,& proferentem vas in opᵘ ſuum,& ego creavi interfecto- 17 rem ad diſperdendum, Omne vas, quod fictum eſt contra te, non dirigetur : & omnem linguam reſiſtentem tibi in judicio, judicabis. Hæc eſt hæreditas ſervorum Domini, & juſtitia eorum apud me, dicit Dominus.

CAP. L V.

1 OMnes ſitientes venite ad aquas: & qui non habetis argentum, properate, emite, et comedite : venite, emite abſque argento, & abſque ulla commu- 2 tatione vinum & lac. Quarè appenditis argentũ non in panibus,& laborem veſtrum non in ſaturitate? Audite audientes me,& comedite bonum,& delectabitur in craſſitudine ani- 3 ma veſtra. Inclinate aurem veſtram, & venite ad me : audite, & vivet anima veſtra, & feriam vobiſcum pactum ſempiternum, miſericordias David fideles.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Οὐχ ὡς γυναῖκα καταλελειμμένην καὶ ὀλιγόψυχον κέκληκέ σε (ε) ὁ κύριος, οὐδ' ὡς γυναῖκα ἐκ νεότητος μεμισημένην, εἶπεν 7 ὁ θεός σου. Χρόνον μικρὸν κατέλιπόν σε, καὶ 8 (ϛ)μετ' ἐλέους μεγάλου ἐλεήσω σε. Ἐν θυμῷ μικρῷ ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν μου ἀπὸ σοῦ, καὶ ἐν ἐλέει αἰωνίῳ (ζ) ἐλεήσω σε, εἶπεν ὁ 9 ῥυσάμενός σε κύριος. Ἀπὸ τοῦ ὕδατος τοῦ ἐπὶ Νῶε τοῦτό μοί ἐστι· καθότι ὤμοσα αὐτῷ ἐν τῷ χρόνῳ ἐκείνῳ, τῇ γῇ μὴ θυμωθήσεσθαι ἐπὶ σοὶ ἔτι, μηδὲ ἐν ἀπειλῇ σου 10 Τὰ ὄρη μεταστήσεσθαι, (η) οὐδ' οἱ βουνοί σου μετακινηθήσονται· οὕτως οὐδὲ τὸ παρ' ἐμοῦ σοι ἔλεος ἐκλείψει, οὐδὲ ἡ διαθήκη τῆς εἰρήνης σου οὐ μὴ μεταστῇ· εἶπε γὰρ (θ) ἵλεώς 11 σοι κύριος, Ταπεινὴ καὶ ἀκατάστατος οὐ παρεκλήθης. ἰδοὺ ἐγὼ ἑτοιμάζω σοι ἄνθρακα τὸν λίθον σου, καὶ τὰ θεμέλιά σου 12 σάπφειρον, Καὶ θήσω τὰς ἐπάλξεις σου ἴασπιν, καὶ τὰς πύλας σου λίθους κρυστάλλου, 13 καὶ τὸ περίβολόν σου λίθους ἐκλεκτούς. Καὶ πάντας τοὺς υἱούς σου διδακτοὺς θεοῦ, καὶ ἐν 14 πολλῇ εἰρήνῃ τὰ τέκνα σου. Καὶ ἐν δικαιοσύνῃ οἰκοδομηθήσῃ· ἀπέχου ἀπὸ ἀδίκου, καὶ οὐ φοβηθήσῃ, καὶ τρόμος οὐκ ἐγγιεῖ σοι. 15 Ἰδοὺ προσήλυτοι προσελεύσονταί σοι δι' ἐμοῦ, καὶ (ι) παροικήσουσί σοι, καὶ ἐπὶ σὲ 16 καταφεύξονται. Ἰδοὺ ἐγὼ (κ) ἔκτισά σε, οὐχ ὡς χαλκεὺς φυσῶν ἄνθρακας, καὶ ἐκφέρων σκεῦος εἰς ἔργον· ἐγὼ δὲ ἔκτισά σε, 17 οὐκ εἰς ἀπώλειαν φθεῖραι. Πᾶν σκεῦος (λ) σκευαστὸν ἐπὶ σὲ, οὐκ εὐοδώσω· καὶ πᾶσα φωνὴ ἀναστήσεται ἐπὶ σε εἰς κρίσιν, πάντας αὐτοὺς ἡττήσεις, οἱ δὲ ἔνοχοί σου ἔσονται ἐν αὐτῇ. ἔστι κληρονομία τοῖς θεραπεύουσι (μ) κύριον, καὶ ὑμεῖς ἔσεσθέ μοι δίκαιοι, λέγει κύριος.

Non ut mulierem derelictam, & puſillanimem vocavit te Dominus; neque ut mulierem, quæ ab adoleſcentia odioſa eſt, dixit Deus tuus. Tempore modico reliqui te: & cum miſericordia magna miſerebor tuî. In furore parvo averti faciem meam à te: & in miſericordia ſempiterna miſerabor tui, dixit, qui eruit te Dominus. Ab aqua, quæ fuit ſub Noe, hoc mihi eſt: ſicut juravi ei in tempore illo, terræ nequaquam ultrà iraſci ſuper te, neque in comminatione tua Montes transferre: neque colles tui transferentur: Sic neque, quæ à me tibi miſericordia, deficiet: Nec teſtamentum pacis (c) tuæ auferetur. Dixit enim propitius tibi (d) Domine; Humilis, & inſtabilis non habuiſti conſolationem. (e) Ecce ego præparo tibi carbunculum lapidem tuum, & fundamenta tua Sapphirum: Et ponam propugnacula tua Jaſpin: & portas tuas lapides Cryſtalli: & murum tuum lapides electos, Et omnes filios tuos diſcipulos Dei: & in multa pace filii tui: Et in juſtitia ædificaberis. Recede ab iniquo; & non timebis, & tremor non appropinquabit tibi. Ecce proſelyti accedent ad te per me: & coloni erunt tui, & ad te confugient. Ecce ego creavi te; non ut ærarius (f) ſufflans prunas, & proferens vas in opus. Ego autem creavi te, non in perditionem interficere. Omne vas, quod factum eſt contra te, (g) non proſperabo: & omnis vox ſurget contra te in judicium; omnes eos vinces: & obnoxii tuî erunt in ea. Eſt hæreditas ſervientibus Domino: & vos eritis mihi juſti, dicit Dominus.

MS.A. (ε) κύριος, (ϛ) μετὰ (ζ) ἠλέησά σε, (η) οὐδὲ (θ) κύριος ἵλεώς σοι, Ταπεινὴ (ι) ἐπὶ σὲ καταφεύξονται. (κ) κτίζω σε, οὐχ ὡς χαλκεὺς (λ) φθαρτὸν, ἐπὶ δὲ σὲ οὐκ εὐδοκήσω· καὶ πᾶσα φωνὴ ἡ ἀναστήσεται (μ) κυρίῳ,

ΚΕΦ. νε'.

1 Οἱ διψῶντες πορεύεσθε ἐφ' ὕδωρ, καὶ ὅσοι μὴ ἔχετε ἀργύριον, βαδίσαντες ἀγοράσατε, καὶ (α) φάγετε ἄνευ ἀργυρίου καὶ τιμῆς (β) 2 οἶνον καὶ στέαρ. Ἱνατί τιμᾶσθε ἀργυρίου, καὶ τὸν μόχθον ὑμῶν οὐκ εἰς πλησμονήν; ἀκούσατέ μου, καὶ φάγεσθε ἀγαθὰ, καὶ ἐντρυφήσει ἐν 3 ἀγαθοῖς ἡ ψυχὴ ὑμῶν. Προσέχετε τοῖς (γ) ὠσὶν ὑμῶν, καὶ ἐπακολουθήσατε ταῖς ὁδοῖς μου· (δ) εἰσακούσατέ μου, καὶ ζήσεται ἐν ἀγαθοῖς ἡ ψυχὴ (ε) ὑμῶν, καὶ διαθήσομαι ὑμῖν διαθήκην αἰώνιον, τὰ ὅσια Δαυὶδ τὰ πιστά.

CAP. LV.

Qui ſititis, ite ad aquam: & quotquot non habetis pecuniam, euntes emite, & (a) comedite ſine argento et pretio, vinum et adipem. Quarè emitis (b) pecuniâ, et laborem veſtrum non in ſaturitate? Audite me, et comedite bona: et delectabitur in bonis anima veſtra. Attendite auribus veſtris, et ſequimini vias meas: exaudite me, et vivet in bonis anima veſtra. Et conſtituam vobis teſtamentum æternum, ſancta David fidelia.

MS.A. (α) πίετε (β) *οἴνου (γ) ὠτίοις (δ) ἐπακούσατε (ε) ἡμῶν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 ארי כאתא שביקא ועיקת רוח ערעך שכנתא דיי וכאתת עולמין דאתרחקת אמר
7 8 אלהיך : ברגז זעיר רחקתיך וברחמין סגיאין אקרב גלותך : בשעא זעירא סלקית
אפי שכנתי זמן זעירא מניך ובטבות עלם דלא פסקן ארחם עלך אמר פרקיך יי :
9 כיומי נוח דא קדמי דקימית במימרי דלא יעדון מי טופנא דהוו ביומי נוח עוד
10 על ארעא כן קימית במימרי דלא יחול רוגזי עלך ולא אזוף ביך : ארי טוריא יעדון
ורמתא יתפרקון וטובי מניך ירושלם לא יעדי וקים שלמי לא יתרחק אמר דעתיד
11 לרחמא עלך יי : חשיכתא מקבלא עולבן קרתא דאמרין עלה עממיא לא תתנחם
12 הא אנא כביש בצדידא אבני רצפתיך ואשכללניך באבנין טבין : ואשוי במרגלין אעך
13 ותרעיך לאבני גמר וכל תחומך לאבני צרוך : וכל בניך אלפין באוריתא דיי וסגי
14 יהי שלם בנך : בזכותא תתקנין אתרחקי מעושקא ארי לא תדחלין ומתבירא ארי
15 לא יעול עלך : הא אתכנשא יתכנשון ליך גלות עמיך לסופא מלכי עממיא דמתכנשין
16 לאעקא ליך ירושלם בגויך יתרמון : הא אנא ברית נפחא נפח נור בשחורין ומפיק
17 מנא לצורכיה ואנא ברית מחבלא לחבלא: כל זין דיתקן עלך ירושלם לא יצלח וכל לישן
דיקום עמך לדינא תחיבניה דא אחסנת עבדיא דיי וזכותיהון מן קדמי אמר יי :

נה

1 וי כל דצבי למילף ייתי ויליף ודלית ליה כסף אתו שמעו ואליפו אתו שמעו
2 ואליפו בלא בדמין ובלא בממון אולפן דטב מחמר ומחלב : למא תתקלון כספכון
בלא למיכל ולאותכון בלא למסבע קבילו קבלא למימרי ואכלו דטב ותתפנק
3 בדדהן נפשכון: ארכינו אודניכון וקבילו למימרי שמעו ותתקים נפשכון ואגזר לכון קים
עלם טבות דוד דמהימנן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniam ſicut mulierem derelictam & mœſtam animo vocavit te majeſtas Dñi, & ſicut mulierem quæ abjecta eſt ab adoleſcentia, dicit Deᵘ tuus. In furore modico abjeci te, & in miſerationibus multis congregabo captivitatem tuam. In tempore modico abſtuli faciem majeſtatis meæ in momento temporis à te : at benignitatibus ſempiternis, quæ nunquam ceſſabunt, miſerebor tui, dicit redemptor tuus Dñs. Sicut in diebus Noe hoc eſt coram me : cui juravi per verbum meum, quòd non tranſirent aquæ diluvii quæ fuerũt in diebᵒ Noe ultrà ſuper terrã : ſic juravi in verbo meo, quòd non manebit furor meus ſuper te, nec increpabo te. Quoniam montes pertranſibunt, & colles dirumpentur : & benignitas mea non auferetur à te Jeruſalem, & pactum pacis meæ non elongabitur, dicit qui miſerturus eſt tui Dñs. Paupercula, injuria affecta civitas, de qua dicebant populi : Non erit ei conſolatio : ecce ego ſternam in ſtibio lapides pavimenti tui, & fundabo te lapidibus pretioſis : Et ponam in margarit[illegible]ligna tua, & portas tuas in lapides ſculptos, & omnem terminum tuum in lapides utiles. Et omnes filii tui diſcent legem Dñi, & multa erit pax filiis tuis. In juſtitia præparaberis : recede à calumnia, quoniam non timebis, & de interitu, quoniam non veniet tibi. Ecce congregatione congregabuntur ad te tranſmigrationes populi tui : & in fine reges populorum qui congregantur ut tribulent te Jeruſalem, in medio tui cadent. Ecce ego creavi fabrum ferrarium ſufflantem *ignem* in prunas, & diducentem vas in opus ſuum; & ego creavi diſperdentem ad diſperdendum. Omnia arma quæ præparata fuerint contra te Jeruſalem non dirigentur, & omnem linguam quæ inſurrexerit adverſum te in judicio condemnabis. Hæc eſt hæreditas ſervorum Dñi, & juſtitia eorum à facie mea, dicit Dominus.

CAP. LV.

HEus omnis qui vult diſcere, veniat & diſcat; & qui non habetis argentum, venite, audite, & diſcite : venite, audite, et diſcite abſq; pretio et abſq; pecunia doctrinam meliorem vino et lacte. Quare appenditis argentũ veſtrum non in cibum, & laborem veſtrum in [*id quod*] non eſt ſatiando obedite obedientes verbo meo, & comedite bonum, & delectabitur in p[illegible]guedine anima veſtra. Inclinate aures veſtras, & obedite verbo meo; *audite* et ſuſtentabitur anima veſtra : et feriam vobiſcũ pactũ ſempiternũ, benignitates David fideles.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܐܢܬܬܐ ܫܒܝܩܬܐ ܘܟܪܝܬܬ ܪܘܚܐ ܩܪܝܟܝ ܡܪܝܐ. ܘܐܝܟ ܐܢܬܬܐ
ܕܡܣܬܠܝܐ ܐܡܪ ܐܠܗܟܝ. * ܒܪܘܓܙܐ ܙܥܘܪܐ ܫܒܩܬܟܝ. ܘܒܪܚܡܝ ܣܓܝܐܐ
* ܒܪܘܓܙܐ ܪܒܐ ܐܗܦܟܬ ܐܦܝ ܡܢܟܝ. ܘܒܪܚܡܝ ܕܠܥܠܡ ܐܬܪܚܡܬ ܥܠܝܟܝ: ܐܡܪ
ܦܪܘܩܟܝ. * ܗܕܐ ܐܝܟ ܝܘܡܬܗ ܕܢܘܚ. ܕܝܡܝܬ ܕܠܐ ܢܥܒܪܘܢ ܡܝܐ ܕܢܘܚ
ܐܪܥܐ. ܗܟܢܐ ܝܡܝܬ ܕܠܐ ܐܪܓܙ ܥܠܝܟܝ. ܘܠܐ ܐܟܐ ܒܟܝ. * ܡܛܠ ܕܛܘܪܐ ܢܬܡܟܟܘܢ
ܢܬܪܟܢܢ. ܘܛܝܒܘܬܝ ܡܢܟܝ ܠܐ ܬܥܒܪ. ܘܩܝܡܐ ܕܫܠܡܟܝ ܠܐ ܢܥܒܪ: ܐܡܪ ܡܪܝܐ
* ܡܣܟܢܬܐ ܘܡܬܛܪܦܬܐ ܕܠܐ ܒܘܝܐܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܒܕ ܐܢܐ ܒܦܘܟܐ ܟܐܦܝܟܝ. ܘܐ
ܫܬܐܣܝܟܝ ܒܟܐܦܐ ܕܣܦܝܠܐ. * ܘܐܒܢܐ ܫܘܪܝܟܝ ܒܟܐܦܐ ܕܝܫܦܗ. ܘܬܪܥܝܟܝ
ܕܒܪܘܠܐ. ܘܬܚܘܡܝܟܝ ܒܟܐܦܐ ܓܒܝܬܐ. * ܘܟܠܗܘܢ ܒܢܝܟܝ ܢܕܥܘܢܢܝ
ܘܣܓܝ ܫܠܡܐ ܕܒܢܝܟܝ. * ܘܒܙܕܝܩܘܬܐ ܬܬܩܢܝܢ. ܐܬܪܚܩܝ ܡܢ ܥܛܠܘܡܝܐ ܡܛܠ
ܕܠܐ ܬܕܚܠܝܢ. ܘܡܢ ܬܒܪܐ ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܩܪܒ ܠܟܝ. * ܘܟܠ ܕܡܬܬܘܬܒܝܢ ܡܢ ܐܝܕܝ ܒܟܝ
ܘܬܗܘܝܢ ܡܥܠܐ ܠܥܡܘܪܝܟܝ. * ܗܐ ܐܢܐ ܒܪܝܬ ܢܦܚܐ ܕܢܦܚ ܒܢܘܪܐ ܓܘܡܪܐ
ܘܡܦܩ ܡܐܢܐ ܠܥܒܕܘܗܝ. ܘܐܢܐ ܒܪܝܬ ܡܚܒܠܢܐ ܠܡܚܒܠܘ. * ܟܠ ܡܐܢ
ܠܟܝ ܠܐ ܢܨܠܚ. ܘܟܠ ܠܫܢ ܕܢܩܘܡ ܥܡܟܝ ܒܕܝܢܐ ܬܚܝܒܝܢܗ. ܗܕܐ
ܕܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܗܘܢ ܡܢ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܢܗ *
* ܗܘܝ ܟܠ ܨܗܝܐ. ܐܙܠܘ ܠܡܝܐ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܟܣܦܐ. ܐܙܠܘ ܙܒܢܘ
ܟܣܦܐ. ܘܕܠܐ ܕܡܝܐ ܚܡܪܐ ܘܚܠܒܐ. * ܠܡܢܐ ܬܬܠܘܢ ܟܣܦܐ ܕܠܐ
ܘܠܥܡܠܟܘܢ ܕܠܐ ܠܣܒܥܐ. ܫܡܥܘܢܝ ܫܡܥܐ. ܘܐܟܘܠܘ ܛܒܬܐ. ܘܬܬܦܢܩ
ܢܦܫܟܘܢ. * ܨܠܘ ܐܕܢܝܟܘܢ. ܘܬܘ ܠܘܬܝ. ܫܡܥܘܢܝ ܘܬܚܐ ܢܦܫܟܘܢ. ܘܐܩܝܡ
ܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ. ܛܝܒܘܬܗ ܕܕܘܝܕ ܡܗܝܡܢܬܐ.

Ut uxorem enim repudiatam & dolentem ani- 6
mo revocabit te Dñs, & ut uxorem adole-
ſcentiæ derelictam, dicit Deus tuus. Parvam 7
ob iram repudiaveram te, at miſerationibus
meis multis colligam te: Magnam ob iram 8
averteram faciem meam à te, ſed miſeratio-
nibus meis æternis miſertus ſum tui, dicit Do- 9
minus redemptor tuus. Hoc eſto mihi ut die-
bus Noe: *ut* enim juraveram non tranſituras
in poſterum aquas Noë ſuper terram; ſic ju-
ro fore ut non iraſcar tibi, neq; noceam tibi.
Nam montes citiùs humiliarentur, & colles 10
incurvarentur, quàm gratia mea à te tranſe-
at, & fœdus pacis tuæ prætereat, dicit Domi-
nus miſericors. O miſera, procellis agitata, 11
conſolatione deſtituta, en ego facturus ſum
lapides tuos beryllum, & firmaturus funda-
menta tua lapidibus ſapphyri; Ædificaturus 12
parietes tuos lapidibus jaſpidis, portas tuas
lapidibus chryſtalli, & terminos tuos lapidi-
bus electis. Omnes filii tui cognoſcent me, 13
& multa erit pax filiorum tuorum, Tuque ju- 14
ſtitiâ ſtabilieris: longè aberis ab oppreſſione,
quia non timebis, & à contritione, quia non
accedet ad te. Quicunque alieni ſunt à ma- 15
nibus meis, te ingredientur, & eris aſylum
habitatoribus tuis. Ego quidem creavi fa- 16
brum qui follibus excitaret ignem, & perfice-
ret inſtrumentum ad opera ſua; at ego pari-
ter creavi deſtructorem ad deſtruendum.
Omne inſtrumentū quod aptatur contra te, 17
non perducetur ad exitum: & omnem lin-
guam quæ tecum ſteterit in judicio, convin-
ces. Hæc eſt hæreditas ſervorum Domini, &
juſtitia eorum à me; dicit Dominus.

CAP. LV.

HEus omnes ſitientes, ite ad aquas: qui non 1
habetis pecuniam, ite, providete vobis, &
comedite abſque pecunia, & ſine pretio vi-
num & lac. Cur expenditis pecuniam non 2
pro pane, & laborem veſtrum non pro ſaturi-
tate? Audite me ex animo, & comedetis bo-
na, & in pinguedine oblectabit ſe anima
veſtra. Inclinate aures veſtras, & venite ad 3
me: acquieſcite mihi, & vivet anima veſtra:
& ſtatuam vobiſcum pactum ſempiternum,
gratiam Davidis fidelem.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لست مثل امراة متروكة وصغير النفس دعاك الرب * وليس مثل امراة مبغوضة
صباها * قال الهك * ربما قليلا تركتك * وبرحمة عظيمة ارحمك * بغضب يسير صرفت
وجهي عنك * وبرحمة ابدية رحمتك * قال الرب منقذك من الماء الذي على عهد نوح
هذا هو لي * لاني كما حلفت في ذلك الزمان للارض الا اغضب عليك ايضا * ولا انقل جبال
بالوعيد ولا اكامك يحركون * هكذا ولا الرحمة التي لك من قبلي لا تفني * ولا
سلامتك لا ينتقض * لان الرب الراحم لك قال * ايتها الذليلة والساقطة التي لم
ها انا اهيي لك حجرك ياقوتا واساساتك فيروزجا * واصنع شرارفك يشبا وابوابك حجارة
وسورك حجارة مختارة * وجميع بنيك متعلمين من الله * واولادك في السلامة
* وبالعدل تبنين * ابتعدي من الظلم ولا تخافي * والرعدة لا تقرب لك * ها
يدخلون فيك * لاجلي يسكنون فيك * واليك يهربون * ها انا خلقتك ليس مثل
ينفخ جمرا ويخرج اناء للعمل * وانا خلقتك ليس للهلاك لافسد كل اناء فاسد وعليك
ارضي * وكل صوت يقوم عليك للمحاكمة تغلبين جميعهم * ويصيرون
بك * هذا ميراث الذين يخدمون الرب * وانتم تصيرون لي صديقين قال الرب *

* الفصل الخامس والخمسون *

* ايها العطاش اذهبوا الى الماء * ويا الذين ليس لكم فضة اغدوا اشتروا وكلوا
وانطلقوا واشتروا بغير فضة ولا ثمن خمرا وشحما * لماذا تثمنون الفضة لغير خبز
ليس لشبع * اسمعوا مني فتاكلون الخيرات * وتتنعم نفسكم بالخيرات * واصنع
عهدا ابديا * مواعيد داود الصادقة *

Nequaquam ut fœminam derelictam & 6
puſillanimem vocavit te Dominus, neque
ut fœminam inde ab adoleſcentia ſua
exoſam. Ait meus tuus, Ex quo tem- 7
pore dereliqui te, ſed maximâ miſericor-
diâ miſerebor tui: Irâ brevi averti 8
faciem meam à te, ſed miſericordiâ
ſempiternâ ſum tui miſertus. Dicit Do- 9
minus qui te eripuit ex aquis quæ conti-
gêre tempore Noe, Hæc mea res eſt;
Nam quemadmodum tunc temporis ju-
ravi terræ me non ſuccenſurum tibi de-
inceps, Neque tuos montes comminatio- 10
ne tranſituum, neque tuos colles mo-
vendos; ita neque miſericordiam quæ
tibi impendetur à me, unquam de-
futuram, neque fœdus pacis tuæ un-
quam violandum: quoniam Dominus
qui tui miſeretur, hæc locutus eſt. O 11
vilis & dejecta, quæ nullam percipis con-
ſolationem, ecce ego diſponam tibi la-
pides tuos ex hyacintho, & fundamenta
tua ex ſmaragdo, Ponamque pinnas 12
tuas ex jaſpide, portas tuas lapidibus
adamantinis, & murum tuum lapidibus
electis. Omnes filii tui erunt edocti à 13
Deo, & nati tui in pace abundanti, Et 14
juſtitiâ ædificaberis. Recede ab injuſtitia,
& ne timeto, pavor non appropinquet ad
te. En extranei in te ingredientur, pro- 15
pter me habitabunt in te, & ad te con-
fugient. En ego te creavi, non ut fa- 16
ber ærarius qui flans in carbones
producit vas ad uſum; & ego te creavi,
non ad interitum, ut deſtruerem omne
vas corruptum, & te non oblectarer.
Imò omnem clamorem quo uncunque in- 17
ſurgentium contra te ad litigandum, ſu-
perabis, eruntque intra te concluſi. Talis
erit hæreditas eorum qui ſerviunt Domi-
no, & vos eritis mihi juſti, ait Do-
minus.

CAP. LV.

HEus ſitientes, ite ad aquas: & O vos 1
quibus non eſt argentum, ſubſiſtite, emite,
comedite ac bibite; & ite, emite abſque
argento aut pretio vinum & adipem.
Cur æſtimatis argentum aliam ob rem 2
quàm ob panem, & laborem veſtrum non
ob ſaturitatem? Acquieſcite mihi, &
comedetis bona, & oblectabitur anima
veſtra in bonis: Feriamque vobiſcum 3
fœdus perpetuum, promiſſa Davidis ve-
racia.

ישעיה : נה

.popolis præcipientem & ,ducem : eum dedi populis testem En
4 הן עד לאומים נתתיו נגיד ומצוה לאמים׃
te ad ,te cognoverunt non *gens* & , vocabis scies non gentem Ecce
5 הן גוי לא־תדע תקרא וגוי לא־ידעוך אליך
, Israel sanctum *ad* & ,tuum Deum Dominum propter : current
ירוצו למען יהוה אלהיך ולקדוש ישראל
eum invocate *: ipsum inveniri in* Dominum Quærite .te *adornavit* quia
6 כי פארך׃ דרשו יהוה בהמצאו קראהו
vir & ,suam viam impius Derelinquat *.propinquum ipsum existendo in*
7 בהיותו קרוב׃ יעזב רשע דרכו ואיש
,ejus miserebitur & Dominum ad revertatur & :suas cogitationes *iniquitatis*
און מחשבתיו וישב אל־יהוה וירחמהו
non Nam *.parcendum ad* multiplicabit quoniam ,nostrum Deum ad &
8 ואל־אלהינו כי־ירבה לסלוח׃ כי לא
dixit , meæ viæ ,vestræ viæ nec , vestræ cogitationes meæ cogitationes
מחשבותי מחשבותיכם ולא דרכיכם דרכי נאם
sunt altiores sic : terra quàm cœli sunt altiores Quia .Dominus
9 יהוה׃ כי־גבהו שמים מארץ כן גבהו
.vestræ cogitationes quàm meæ cogitationes & ,vestræ viæ quàm meæ viæ
דרכי מדרכיכם ומחשבתי ממחשבתיכם׃
, cœlis de nix & , imber *descendet* quemadmodum Quoniam
10 כי כאשר ירד הגשם והשלג מן־השמים
,eam *fecit* generare & ,terram *inebriavit quin-imo ,revertetur* non illuc &
ושמה לא ישוב כי אם־הרוה את־הארץ והולידה
.comedenti panem & , serenti semen dabit & : eam *fecit* germinare &
והצמיחה ונתן זרע לזרע ולחם לאכל׃
revertetur non ,meo ore de egredietur quod ,meum verbum erit Sic
11 כן יהיה דברי אשר יצא מפי לא־ישוב
prosperabitur & , volui quod faciet *quin-imo* : vacuum me ad
אלי ריקם כי אם־עשה את־אשר חפצתי והצליח
: deducemini pace in & ,egrediemini lætitia in Quia .illud misi *quò*
12 אשר שלחתיו׃ כי־בשמחה תצאו ובשלום תובלון
ligna omnia & ,*præconium* vobis coram *clamabunt* colles & montes
ההרים והגבעות יפצחו לפניכם רנה וכל־עצי
pro , abies ascendet alba spina Pro *.vola* plaudent *agri*
13 השדה ימחאו־כף׃ תחת הנעצוץ יעלה ברוש תחת
signum in ,nomen in Domino erit & : myrtus ascendet urtica
הסרפד יעלה הדס והיה ליהוה לשם לאות
.succidetur non *seculi*
עולם לא יכרת׃

CAP. LVI. נו

quia : justitiam facite & ,judicium Custodite : Dominus dixit Sic
1 כה אמר יהוה שמרו משפט ועשו צדקה כי־
.se *revelandum ad* mea justitia & , *veniendum ad* mea salus propinqua
קרובה ישועתי לבוא וצדקתי להגלות׃
: illud in apprehenderit hominis filius & , hoc fecerit *hominis Beatitates*
2 אשרי אנוש יעשה־זאת ובן־אדם יחזיק בה
faciendo à suā manum *custodiens* & ,illud *polluendo à* , sabbathum *custodiens*
שמר שבת מחללו ושמר ידו מעשות
,*Dominum ad se copulantis* alienigenæ filius dicat ne Et .malum omne
3 כל־רע׃ ואל־יאמר בן־הנכר הנלוה אל־יהוה
ne & : suo populo *desuper* Dominus me dividet Dividendo : dicendo
לאמר הבדל יבדילני יהוה מעל עמו ואל־
dixit sic Quia .aridum lignum *ego* Ecce : eunuchus dicat
4 יאמר הסריס הן אני עץ יבש׃ כי־כה אמר
quibus in eligent & ,mea sabbata servabunt qui , eunuchis Dominus
יהוה לסריסים אשר ישמרו את־שבתותי ובחרו באשר
.meum fœdus *in apprehendentes &* , volui
חפצתי ומחזיקים בבריתי׃

Versio VULG. LAT.

4 Ecce testem populis dedi eum,
ducem ac præceptorem Genti-
5 bus. Ecce gentem, quam nesciebas, vocabis; et Gentes, quæ
te non cognoverunt, ad te current, propter Dominum Deum
tuum, & Sanctum Israel, quia
6 glorificavit te. Quærite Dominum, dum inveniri potest: in-
7 vocate eum, dum propè est. Derelinquat impius viam suam, et
vir iniqu⁹ cogitationes suas, &
revertatur ad Dominum, &
miserebitur ejus, & ad Deum
nostrum : quoniam multus est
8 ad ignoscendum. Non enim
cogitationes meæ, cogitationes
vestræ : neque viæ vestræ, viæ
9 meæ, dicit Dominus. Quia sicut exaltantur cœli à terra, sic
exaltatæ sunt viæ meæ à viis
vestris, & cogitationes meæ à
10 cogitationibus vestris. Et quomodò descendit imber, & nix
de cœlo, & illuc ultrà non revertitur, sed inebriat terram,
& infundit eam, & germinare
eam facit, & dat semen seren-
11 ti, & panem comedenti : Sic
erit verbum meum, quod egredietur de ore meo : non revertetur ad me vacuum, sed faciet
quæcunque volui, & prosperabitur in his, ad quæ misi illud.
12 Quia in lætitia egrediemini, et
in pace deducemini : montes et
colles cantabunt coram vobis
laudem, & omnia ligna regio-
13 nis plaudent manu. Pro saliunca ascendet abies, & pro urtica crescet myrtus : & erit Dominus nominatus in signum æternum, quod non auferetur.

CAP. LVI.

1 HÆc dicit Dominus; Custodite judicium, & facite justitiam : quia juxta est salus mea
ut veniat, & justitia mea ut re-
2 veletur. Beatus vir, qui facit
hoc, & filius hominis, qui apprehendet istud : custodiens
sabbatum ne polluat illud, custodiens manus suas ne faciat
3 omne malum. Et non dicat fili⁹ advenæ, qui adhæret Domino, dicens ; Separatione dividet me Dominus à populo suo :
Et non dicat Eunuchus ; Ecce
4 ego lignum aridum. Quia hæc
dicit Dominus Eunuchis ; Qui
custodierint sabbata mea, &
elegerint quæ ego volui, &
tenuerint fœdus meum ;

Versio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

4 Ἰδοὺ μαρτύριον ἐν ἔθνεσιν (˙)ἔδωκα αὐτὸν,
5 ἄρχοντα ϗ προστάσσοντα ἔθνεσιν. Ἔθνη ἃ
οὐκ (ζ) οἴδασίν σε, ἐπικαλέσονταί σε, ϗ
λαοὶ οἳ οὐκ ἐπίστανταί σε, ἐπὶ σὲ καταφεύξονται, ἕνεκεν (η) κυρίου τοῦ Θεοῦ σου τοῦ ἁγίου
6 Ἰσραὴλ, ὅτι ἐδόξασέ σε. Ζητήσατε τὸν
(θ) κύριον, ϗ ἐν τῷ εὑρίσκειν αὐτὸν, ἐπι-
7 καλέσασθε. ἡνίκα (¨)δ' ἂν ἐγγίζῃ ὑμῖν, Ἀπολιπέτω ὁ ἀσεβὴς τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, ϗ ἀνὴρ
ἄνομος τὰς βουλὰς αὐτοῦ, ϗ ἐπιστραφήτω
ἐπὶ κύριον, ϗ ἐλεηθήσεται, ὅτι ἐπὶ πολὺ
8 ἀφήσει τὰς ἁμαρτίας ὑμῶν. Οὐ γάρ εἰσιν
αἱ βουλαί μου ὥσπερ αἱ βουλαὶ ὑμῶν, (˙˙) οὐδ'
ὥσπερ αἱ ὁδοὶ ὑμῶν αἱ ὁδοί μου, λέγει κύ-
9 ριος. Ἀλλ' ὡς ἀπέχει ὁ οὐρανὸς ἀπὸ τῆς
γῆς, οὕτως ἀπέχει ἡ ὁδός μου ἀπὸ τῶν ὁδῶν
ὑμῶν, ϗ τὰ διανοήματα ὑμῶν ἀπὸ τῆς δι-
10 ανοίας μου. Ὡς γὰρ (ι) ἂν καταβῇ ὁ ὑετὸς
ἢ χιὼν (κ) ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, ϗ οὐ μὴ ἀποστραφῇ ἕως ἂν μεθύσῃ τὴν γῆν, ϗ ἐκτέκῃ, ϗ
(λ) ἐκβλαστήσῃ, ϗ δῷ σπέρμα τῷ σπεί-
11 ροντι, ϗ ἄρτον εἰς βρῶσιν, Οὕτως ἔσται
τὸ ῥῆμά μου ὃ ἐὰν ἐξέλθῃ ἐκ τοῦ στόματός
μου, οὐ μὴ ἀποστραφῇ, ἕως ἂν (μ) συντελεσθῇ ὅσα
ἂν ἠθέλησα, ϗ εὐοδώσω τὰς ὁδούς σου, ϗ
12 τὰ ἐντάλματά μου. Ἐν γὰρ εὐφροσύνῃ ἐξελεύσεσθε, ϗ ἐν χαρᾷ διδαχθήσεσθε· τὰ γὰρ
ὄρη ϗ οἱ βουνοὶ ἐξαλοῦνται προσδεχόμενοι ὑμᾶς ἐν χαρᾷ, ϗ πάντα τὰ ξύλα τοῦ ἀγροῦ
13 ἐπικροτήσει τοῖς κλάδοις. Καὶ ἀντὶ τῆς
στοιβῆς ἀναβήσεται κυπάρισσος, ἀντὶ δὲ τῆς
κονύζης ἀναβήσεται μυρσίνη. ϗ ἔσται κύριος εἰς ὄνομα, ϗ εἰς σημεῖον αἰώνιον,
ϗ οὐκ ἐκλείψει.

Ecce (c) testimonium in gentibus, dedi eum, principem, & præcipientem gentibus. Gentes, quæ nesciebant te, invocabunt te: & populi, qui ignorabant te, ad te confugient: propter Dominum Deum tuum Sanctum Israel, quia glorificavit te. Quærite Dominum, & in inveniendo eum, invocate. Et postquàm vobis appropinquaverit, Relinquat impius vias suas, & vir iniquus cogitationes suas, & convertatur ad Dominum: & misericordiam (d) consequetur: quia multum dimittet peccata vestra. Neque enim sunt cogitationes meæ, sicut cogitationes vestræ; nec, sicut viæ vestræ, viæ meæ, dicit Dominus. Sed sicut distat cœlum à terra; sic distat via mea à viis vestris, & cogitationes vestræ à cogitatione mea. Quomodò enim si descendat pluvia, aut nix de cœlo, & non revertatur, donec inebriet terram, & generet, & germinet, & det semen seminanti, & panem ad comedendum: Sic erit verbum meum, quod exierit de ore meo: (e) non revertetur, donec compleat quæ volui: & prosperas faciam vias (f) tuas, et præcepta mea. In lætitia enim egrediemini, et in gaudio (g) docebimini. Montes enim et colles exilient expectantes vos in gaudio: et omnia ligna agri applaudent ramis. Et pro (h) stiba ascendet cyparissus: et pro conyza ascendet myrtus. Et erit Dominus in nomen, et in signum sempiternum, et non deficiet.

MS. A. (˙) δέδωκα (ζ) ἤδεισάν σε, ἐπικαλέσωνταί σε, (η) τοῦ Θεοῦ
τοῦ ἁγίου (θ) Θεὸν, ϗ (¨) ἂν ἐγγίζῃ (˙˙) οὐδὲ (ι) ἐὰν καταβῇ ὑετὸς (κ) ἀπὸ
βλαστήσῃ, ϗ δώσει (μ) συντελεσθῇ ὅσα ἠθέλησα,

ΚΕΦ. νϛʹ.

1 ΤΑ´δε λέγει κύριος, Φυλάσσεσθε κρίσιν,
(α) ϗ ποιήσατε δικαιοσύνην· (β) ἤγγικε
γὰρ τὸ σωτήριόν μου παραγίνεσθαι, ϗ τὸ ἔ-
2 λεός μου ἀποκαλυφθῆναι. Μακάριος ἀνὴρ
ὁ ποιῶν ταῦτα, ϗ ἄνθρωπος ὁ ἀντεχόμενος αὐτῶν, ϗ φυλάσσων τὰ σάββατα
μὴ βεβηλοῦν, ϗ διατηρῶν τὰς χεῖρας αὐ-
3 τοῦ μὴ ποιεῖν (γ) ἄδικα. Μὴ λεγέτω ὁ
ἀλλογενὴς ὁ προσκείμενος πρὸς κύριον,
Ἀφοριεῖ με ἄρα κύριος ἀπὸ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ·
ϗ μὴ λεγέτω ὁ εὐνοῦχος, Ὅτι (δ) ξύλον
4 ἐγώ εἰμι ξηρόν. Τάδε λέγει κύριος τοῖς
εὐνούχοις, Ὅσοι ἂν φυλάξωνται τὰ σάββατά μου, ϗ ἐκλέξωνται ἃ ἐγὼ θέλω, καὶ
ἀντέχωνται τῆς διαθήκης μου,

CAP. LVI.

HÆc dicit Dominus; Custodite judicium, et facite justitiam: quia juxta est salutare meum, ut veniat; et misericordia mea, ut reveletur. Beatus vir, qui facit hæc; et homo, qui retinet ista, et custodit sabbata, ut non profanet ea; et servat manus suas, ne faciat iniqua. Ne dicat alienigena, qui appositus est Domino: (a) Separabit me utique Dominus à populo suo. Et ne dicat eunuch⁹; Quia ego sum lignum aridum. Hæc dicit Dominus Eunuchis; Quicunque custodierint Sabbata mea, et elegerint, quæ ego volo, et tenuerint testamentum meum;

MS. A. (α) ποιήσατε (β) ἤγγισεν (γ) ἀδίκημα. (δ) ἐγώ εἰμι ξύλον
ξηρόν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 הא רב לעממיא מניתיה מלך ושליט על כל מלכותא׃ הא עם דלא תדע יפלחנך
5 ועם דלא ידעוך ירהטון לאסקא לך מסין בדיל יי אלהך ולקדישא דישראל ארי
6 שבחך׃ תבעו דחלתא דיי עד דאתון חיין בעו מן קדמוהי עד דאתון קימין׃ ישביק
7 רשיעא אורחיה דרשעא וגבר אנס עשתונוהי ויתוב לפולחנא דיי וירחם עלוהי
8 ולדחלתא דאלהנא ארי מסגי לסלחא׃ ארי לא מחשבתי מחשבתכון ולא
9 ארחתכון תקנן כארחת טובי אמר יי׃ ארי כמא דרמין שמיא מן ארעא כן תקנן
10 ארחתי מארחתכון ומחשבתי תקנן ממחשבתכון׃ ארי כמא דנחית מטרא ותלגא
מן שמיא ולתמן לא אפשר ליה דיתוב אלהן מרוי ית ארעא ומרבי לה ומועילה
11 ויהיב בר זרעא כמסת לזרע ולחמא כמסת למיכל׃ כן יהוי פתגם טובי דנפק מן
קדמי לא אפשר דיתוב לקדמי ריקן אלהן עבד ית דרענא ומצלח לדשלחנא ליה׃
12 ארי בחדוא תפקון מבני עממיא ובשלמא תתובלון לארעכון טוריא ורמתא יבועון
13 קדמיכון תושבחא וכל אילני חקלא ישׁענון בענפיהון׃ חלף רשיעיא יתקימון צדיקיא
וחלף חיביא יתקימון דחלי חטאה ויהי קדם יי לשום לאת עלם דלא יפסוק׃

נו

1 כדנן אמר יי טרו דינא עבידו צדקתא ארי קריב פורקני למיתי וזכותי לאתגלאה׃
2 טובי אנש דיעבד דא ובר אנשא דיתקף בדה יטר שבתא מאחלותידה ויטר ידוה
3 מלמעבד כל דביש׃ ולא יימר בר עממין דמתוסף על עמא דיי למימר אפרשא
4 יפרשנני יי מעל עמיה ולא יימר סריסא הא אנא חשיב כאע יביש׃ ארי כדנן אמר
יי לסריסיא דיטרון ית יומי שביא דילי ומתרען בדצבנא ומתקפין בקימי׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce principem populis constitui eum, regem & dominatorē super omnia regna. Ecce popul⁹ quem nesciebas servient tibi; & popul⁹ qui non cognovit te, current ut offerant tibi tributa; propter Dñm Deum tuum, & sanctum Israelis, qui decoravit te. Quærite timorem Dñi dum vos estis vivi: quærite à facie ej⁹ dum vos permanetis. Relinquat impi⁹ viam suā malam, & vir direptor cogitationes suas, & convertatur ad cultum Dñi; & miserebitur ej⁹; & ad timorē Dei nostri, qui mult⁹ est in ignoscendo. Quia non cogitationes meæ sunt cogitationes vestræ, neq; viæ vestræ rectæ sunt sicut *viæ* bonitatis meæ, dicit Dñs. Quia sicut exaltantur cœli à terra, sic rectæ sunt viæ meæ magis quàm viæ vestræ; & cogitationes meæ rectæ magis quàm cogitationes vestræ. Quia sicut descendit pluvia & nix de cœlo, & illuc impossibile est ut revertatur, sed inebriat terrā, & germinare facit eā, & proficit ei, & dat granū sementis ut satis sit serenti; & panem ut satis sit *ad comedendum*: Sic erit verbū bonitatis meæ quod egreditur à facie mea, non potest reverti in conspectū meum vacuum, nisi faciat quod volui, & prosperetur in his ad quæ misi illud. Quia in lætitia egrediemini de medio populorū, & in pace deducemini in terrā vestram: montes et colles exultabunt coram vobis in laude, et omnes arbores agri plaudent ramis suis. Pro impiis consurgent justi, et pro peccatoribus consurgent timentes peccatū: et erit corā Dño in nomen et signū sempiternum, quod non cessabit.

CAP. LVI.

HÆc dicit Dñs: Custodite judiciū, et facite justitiā: quia propè est salus mea ut veniat, et justitia mea ut reveletur. Beat⁹ homo qui fecerit hoc, et fili⁹ hominis qui apprehēderit illud: qui custodierit Sabbatū, ne prophanet illud, et servaverit man⁹ suas ne faciat omne malū. Et non dicat fili⁹ populorū, qui appositus est populo Dñi, dicendo: Separatione separavit me Dñs à populo suo: neq; dicat eunuchus: Ecce ego reputat⁹ sum sicut lignum aridum. Quia hæc dicit Dñs eunuchis, Qui custodiunt dies Sabbathorum meorum, & volunt ea quæ volo, et apprehendunt pactum meum:

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܐ ܣܗܕܐ ܠܥܡܡܐ ܝܗܒܬܟ. ܪܝܫܐ ܘܡܦܩܕܢܐ ܠܥܡܡܐ. * ܐܝܟ ܩܠܐ ܥܡܡܐ ܕܠܐ ܝܕ
ܘܥܡܡܐ ܕܠܐ ܝܕܥܘܟ ܠܘܬܟ ܢܪܗܛܘܢ. ܡܛܠ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܘܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ
ܕܫܒܚܟ. * ܒܥܘ ܠܡܪܝܐ. ܘܟܕ ܐܫܟܚܬܘܢܝܗܝ. ܩܪܘܗܝ. * ܘܟܕ ܢܬܩܪܒ. ܢܫܒܘܩ
ܚܛܝܐ ܐܘܪܚܗ. ܘܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܬܪܥܝܬܗ. ܘܢܬܦܢܐ ܠܘܬܝ. ܘܐܪܚܡ ܥܠܘܗܝ. ܘܠܘܬ
ܐܠܗܢ. ܕܡܣܓܐ ܠܡܫܒܩ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܝܟ ܬܪܥܝܬܟܘܢ. ܠܐ ܗܘܝ ܐܝܟ ܬܪܥܝܬܝ. ܐܦ ܐܘܪܚܬ
ܠܐ ܗܘܝ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܟܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܕܪܡܝܢ ܫܡܝܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܗܟܢ
ܪܡܢ ܐܘܪܚܬܝ ܡܢ ܐܘܪܚܬܟܘܢ. ܘܬܪܥܝܬܝ ܡܢ ܬܪܥܝܬܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܕܢܚܬ
ܡܛܪܐ ܘܬܠܓܐ ܡܢ ܫܡܝܐ. ܘܠܬܡܢ ܠܐ ܗܦܟ: ܐܠܐ ܡܪܘܐ ܠܐܪܥܐ. ܘܡܘܠܕ ܠܗ. ܘܡܦܪܥ
ܠܗ. ܘܝܗܒ ܙܪܥܐ ܠܙܪܘܥܐ. ܘܠܚܡܐ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. * ܗܟܢܐ ܢܗܘܐ ܡܠܬܝ ܕܢܦܩܐ ܡܢ
ܦܘܡܝ. ܘܠܐ ܬܗܦܘܟ ܠܘܬܝ ܣܪܝܩܐܝܬ. ܐܠܐ ܥܒܕܐ ܡܕܡ ܕܨܒܝܬ. ܘܡܫ
ܕܫܕܪܬܗ. * ܡܛܠ ܕܒܚܕܘܬܐ ܬܦܩܘܢ. ܘܒܫܠܡܐ ܬܬܕܒܪܘܢ. ܘܛܘܪܐ ܘܪܡܬܐ ܢܕܘܨ
ܩܕܡܝܟܘܢ. ܘܡܫܒܚܘܬܐ ܕܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܚܩܠܐ ܢܢܩܫܘܢ ܟܦܐ. * ܚܠܦ ܚܘܚܐ ܢܣܩ
ܒܪܘܬܐ. ܘܚܠܦ ܗܘܣܦܐ ܢܣܩ ܐܣܐ. ܘܢܗܘܐ ܠܡܪܝܐ ܠܫܡܐ. ܘܠܐܬܐ ܕܠܥܠܡ ܕܠܐ ܢܦܣܘܩ.

* ܢܘ * ܦܣܘܩܐ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ: ܛܪܘ ܕܝܢܐ. ܘܥܒܕܘ ܙܕܝܩܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܩܪܝܒ ܦܘܪܩܢܝ ܠܡܐ
ܘܙܕܝܩܘܬܝ ܠܡܬܓܠܝܘ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܓܒܪܐ ܕܢܥܒܕ ܗܕܐ. ܘܠܒܪܢܫܐ ܕܢܬܠܒܟ ܒܗ.
ܘܢܛܪ ܫܒܬܐ ܕܠܐ ܢܣܝܒܝܗ. ܘܢܛܪ ܐܝܕܘܗܝ ܕܠܐ ܢܥܒܕ ܒܝܫ. * ܘܠܐ ܢܐܡܪ ܒܪ ܢܘܟܪ
ܕܡܬܩܪܒ ܠܡܪܝܐ: ܕܡܦܪܫܘ ܦܪܫܢܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܥܡܗ. ܘܠܐ ܢܐܡܪ ܡܗܝܡܢܐ:
ܕܗܐ ܐܢܐ ܩܝܣܐ ܝܒܝܫܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܡܗܝܡܢܐ ܕܢܛܪܘܢ ܫܒܬܝ. ܘܢܓܒ
ܡܕܡ ܕܨܒܐ ܐܢܐ. ܘܢܬܠܒܟܘܢ ܒܩܝܡܝ.

4 Ecce teſtem gentibus dedi te, principem & rectorem populis: 5 Ut voces gentes quas non nôſti, & gentes quæ te minimè nôrunt, accurrant ad te, propter Dominium Deum tuum, & Sanctum Iſraelis qui te glorificavit. 6 Quærite Dominum; & cùm inveneritis eum, invocate illum: 7 Et cùm acceſſerit, derelinquat peccator viam ſuam, & vir iniquus conſilium ſuum, & convertatur ad me, & miſerebor ipſius; & ad Deum noſtrum qui largus eſt in parcendo. 8 Nam conſilia mea non ſũt ſimilia conſiliis veſtris, neque viæ meæ ſimiles viis veſtris, dicit Dominus: 9 Nam quemadmodum cœli ſunt terrâ ſublimiores, ita altiores ſunt viæ meæ viis veſtris, & conſilia mea conſiliis veſtris. 10 Quemadmodum enim pluvia & nix è cœlo delapſa, illuc minimè redit, ſed inebriat terram, & parere ac germinare facit illam, præbétque ſemen ſatori, & panem in cibum: 11 Sic erit ſermo meus qui prodit ex ore meo, non revertetur ad me vacuus, quin *priùs* fecerit quod volo, & expleverit id *cujus cauſâ* cum miſero. 12 Nam cum lætitia egrediemini, & cum pace diſcedetis, & montes atque colles exhilarabuntur coram vobis, & laudatiſſimæ quæque arbores campi complodent manus. 13 Pro ſpinoſis frutetis germinabit abies, & pro hyſſopo germinabit myrtus: eritque Domino in nomen & monimentum ſempiternum, quod nunquam deficiet

CAP. LVI.

1 SIc dicit Dominus, Cuſtodite judicium, & facite juſtitiam; quia proximè ſalus mea ventura eſt, & juſtitia mea revelanda. 2 Beatus vir qui fecerit hanc, & filius hominis qui firmus eam tenuerit, ſabbathum quoque obſervaverit ne prophanet illud, & cuſtodierit manus ſuas ne quid mali committat. 3 Neque verò dicat filius alienigenarũ qui adjungit ſe Domino, Planè ſeparavit me Dominus a populo ſuo: neque dicat Eunuchus, Lignum ſum aridum. 4 Nam ita dicit Dominus; Eunuchis qui cuſtodierint ſabbatha mea, elegerint quod mihi placet, & fœdus meum firmiter tenuerint;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ها شهادة للامم اعطيته * للامم رئيسا وآمرا * ها الامم التي لم تعرفك تستغيث بك والشعب
الذين لم يعرفوك اليك يلتجون لاجل الرب الهك وقدوس اسرائيل الذي مجدك * اطلبوا
الله * وعند وجودكم اياه استغيثوا به حين يقرب منكم * فليترك المنافق طرقه * والرجل
الاثيم اراءه * وليرجع الي الرب فيرحم * والي الهنا لانه يغفر خطايانا كثيرا * لان ليست ارائي
هي مثل ارائكم * ولا طرقكم طرقي يقول الرب * لكن كما تبعد السماء من الارض هكذا
تبعد طريقي من طرقكم * وتبعد فهمكم من تمييز فهمي * لانه كما انه اذا نزل المطر
والثلج من السماء لا يرجع الي هناك الي ان يسكر الارض * فتلد وتفرع وتعطي زرعا للزارع
وخبزا للآكل * هكذا تكون كلمتي التي اذا خرجت من فمي لا ترجع الي باطلا الي ان
تكمل كلما اردته * واقوم طرقي ووصاياي * لانكم تخرجون بسرور وتنقلون بفرح
لان الجبال والآكام ترتكص منتظرة لكم بفرح * وجميع اشجار الحقل تصفق باغصانها
* وبدلا من البلان يصعد السروين * وبدلا من السيكران يصعد الآس * ويكون للرب
اسم وعلامة ابدية ولا تفني *

* الفصل السادس والخمسون *

* هكذا يقول الرب * احفظوا الحكم اصنعوا العدل * لان خلاصي قرب ان يحضر
ورحمتي تنكشف * مغبوط الرجل الذي يصنع هذا * والانسان الذي يتمسك بها
ويحترس ان لا ينجس السبوت * ويحفظ يديه ان لا تصنعا ظلما * لا يقول الغريب الجنس
الدخيل الي الرب * اتري الرب يفرزني من شعبه * ولا يقول الخصي اني انا خشبة يابسة
* هكذا يقول الرب * للخصيان الذين يحفظون اذن سبوتي ويختارون ما انا اريده
ويتمسكون بعهدي *

4 *Ecce teſtimonium gentibus dedi eum, gentibus principem & imperatorem.* 5 *En gentes quæ te ignorant, opem tuam implorabunt; & populus qui te non noverunt, ad te confugient, propter Dominum Deum tuum & ſanctum Iſraelis qui te glorificavit.* 6 *Quærite Deum; & cùm repereritis eum, implorate præſidium ejus dum propinquus eſt vobis.* 7 *Ideò derelinquat impius vias ſuas, & vir ſceleratus conſilia ſua; & revertatur ad Dominum, ut miſericordiam conſequatur; et ad Deum noſtrum, quia peccata noſtra multùm ignoſcit.* 8 *Non enim conſilia mea ſunt ut conſilia veſtra, neque viæ veſtræ ſunt viæ meæ, dicit Dominus:* 9 *Sed quantùm diſtat cœlum à terra, tantùm diſtant viæ meæ à viis veſtris, & conceptus mentis veſtræ à conceptu mentis meæ.* 10 *Nam quemadmodum cùm imber aut nix è cœlo deciderit, non revertitur illuc donec terram inebriet, & hæc gignat egerminéque, producátque ſementem ſatori, & panem comedenti:* 11 *Sic erit verbum meum, quod cùm exierit ex ore meo, non redibit ad me vacuum, donec perfecerit quicquid volo, dirigámque vias meas & decreta mea.* 12 *Vos enim egrediemini cum exultatione, & cum lætitia dimittemini; nam montes & colles tripudiabunt expectantes vos cum gaudio, & omnes arbores agri plaudent ramis ſuis.* 13 *Pro dumis aſſurgent pini, & pro ebulis aſſurgent myrti: eritque Domino nomen & ſignum ſempiternum & indelebile.*

CAP. LVI.

1 *SIc ait Dominus, Cuſtodite judicium, facite juſtitiam; quia ſalus mea brevi affutura eſt, & miſericordia mea retegenda.* 2 *Beatus vir qui fecerit hanc, & homo qui adhæſerit ei, caverit ne ſabbatha contaminet, & cuſtodierit manus ſuas ne faciant iniquitatem.* 3 *Non dicat alienigena qui ſe recipit ad Dominum, Putáſne quòd Dominus me ſegreget à populo ſuo? néve dicat Eunuchus, Equidem ſum lignum aridum.* 4 *Sic ait Dominus; Eunuchis qui cuſtodierint ſabbatha mea, quod ego volo delegerint, & adhæſerint fœderi meo;*

יְשַׁעְיָה׃ נו

nomen & ,*manum* meis muris in & , mea domo in eis dabo Et
5 וְנָתַתִּי לָהֶם בְּבֵיתִי וּבְחוֹמֹתַי יָד וָשֵׁם
quod , ei dabo *ſeculi* nomen ;filiabus quàm & , filiis quàm melius
טוֹב מִבָּנִים וּמִבָּנוֹת שֵׁם עוֹלָם אֶתֶּן־לוֹ אֲשֶׁר
,DOMINO *ſuper copulatos alienigenæ* filios Et .*ſuccidetur* non
6 לֹא יִכָּרֵת׃ וּבְנֵי הַנֵּכָר הַנִּלְוִים עַל־יְהוָה
exiſtendum ad , DOMINI nomen *amandum ad* & ,*ei miniſtrandum ad*
לְשָׁרְתוֹ וּלְאַהֲבָה אֶת־שֵׁם יְהוָה לִהְיוֹת
, illud *polluendo à* ,ſabbathum cuſtodientem omnem : *ſervos in* *ei*
לוֹ לַעֲבָדִים כָּל־שֹׁמֵר שַׁבָּת מֵחַלְּלוֹ
montem ad eos adducam Et .meum fœdus *in apprehendentes* &
7 וּמַחֲזִיקִים בִּבְרִיתִי׃ וַהֲבִיאוֹתִים אֶל־הַר
,eorum *aſcenſiones*:meæ orationis domo in eos lætificabo & , *meæ ſanctitatis*
קָדְשִׁי וְשִׂמַּחְתִּים בְּבֵית תְּפִלָּתִי עוֹלֹתֵיהֶם
mea domus quia : meo altari ſuper beneplacitũ ad eorum *ſacrificia* &
וְזִבְחֵיהֶם לְרָצוֹן עַל־מִזְבְּחִי כִּי בֵיתִי
Dominus Ait .populis omnibus vocabitur orationis domus
8 בֵּית־תְּפִלָּה יִקָּרֵא לְכָל־הָעַמִּים׃ נְאֻם אֲדֹנָי
eum ſuper congregabo adhuc : Iſrael *expulſos congregans* *DOMINUS*
יְהוִה מְקַבֵּץ נִדְחֵי יִשְׂרָאֵל עוֹד אֲקַבֵּץ עָלָיו
omnis , devorandum ad venite : agri *fera* *Omnis* .ejus congregatos
9 לְנִקְבָּצָיו׃ כֹּל חַיְתוֹ שָׂדָי אֵתָיוּ לֶאֱכֹל כָּל־
, neſciverunt ipſi omnes , cæci ejus Speculatores *ſylva in* *fera*
10 חַיְתוֹ בַּיָּעַר׃ צֹפָו עִוְרִים כֻּלָּם לֹא יָדָעוּ
,*loquentes deliria* : latrare *poterunt non* , muti canes ipſi univerſi
כֻּלָּם כְּלָבִים אִלְּמִים לֹא־יוּכְלוּ לִנְבֹּחַ הֹזִים
noverunt non animo *fortes* canes Et .dormitare diligentes , *jacentes*
11 שֹׁכְבִים אֹהֲבֵי לָנוּם׃ וְהַכְּלָבִים עַזֵּי־נֶפֶשׁ לֹא יָדְעוּ
ipſi univerſi : intelligere *noverunt non* paſtores ipſi & , ſaturitatem
שָׂבְעָה וְהֵמָּה רֹעִים לֹא יָדְעוּ הָבִין כֻּלָּם
Venite .ejus *extremo* à ſuam *cupiditatem ad vir* ,reſpexerunt ſuam viam ad
12 לְדַרְכָּם פָּנוּ אִישׁ לְבִצְעוֹ מִקָּצֵהוּ׃ אֵתָיוּ
cras diem hunc ſecundùm erit & : ſechar *potabimus* & ,vinum *capiam*
אֶקְחָה־יַיִן וְנִסְבְּאָה שֵׁכָר וְהָיָה כָזֶה יוֹם מָחָר
.valde *abundanter magnus*
גָּדוֹל יֶתֶר מְאֹד׃

CAP. LVII. נז

miſericordiæ viri & : cor ſuper *ponens* quiſquam non & , periit Juſtus
1 הַצַּדִּיק אָבָד וְאֵין אִישׁ שָׂם עַל־לֵב וְאַנְשֵׁי־חֶסֶד
.juſtus *colligitur mali faciebus à* quia ,*intelligente non in* *collecti*
נֶאֱסָפִים בְּאֵין מֵבִין כִּי־מִפְּנֵי הָרָעָה נֶאֱסַף הַצַּדִּיק׃
.eo coram *ambulans* : ſuis cubiculis in requieſcent , *pace* Ingredietur
2 יָבוֹא שָׁלוֹם יָנוּחוּ עַל־מִשְׁכְּבוֹתָם הֹלֵךְ נְכֹחוֹ׃
.eſt fornicata & ,adulterum ſemen:*auguratricis* filii huc *appropinquate* vos Et
3 וְאַתֶּם קִרְבוּ־הֵנָּה בְּנֵי עֹנְנָה זֶרַע מְנָאֵף וַתִּזְנֶה׃
prolongabitis , os *dilatabitis* quem contra , eſtis oblectati quo Super
4 עַל־מִי תִּתְעַנָּגוּ עַל־מִי תַּרְחִיבוּ פֶה תַּאֲרִיכוּ
Incaleſcentes ? falſitatis ſemen ,*prævaricationis nati* *vos* Nónne ? linguam
5 לָשׁוֹן הֲלוֹא־אַתֶּם יִלְדֵי־פֶשַׁע זֶרַע שָׁקֶר׃ הַנֵּחָמִים
torrentibus in *natos mactantes : frondoſo* ligno omni ſub *ulmis in*
בָּאֵלִים תַּחַת כָּל־עֵץ רַעֲנָן שֹׁחֲטֵי הַיְלָדִים בַּנְּחָלִים
ipſi ipſi ,tua pars torrentis *lævibus* In .*petrarum* *ramos* ſubter
6 תַּחַת סְעִפֵי הַסְּלָעִים׃ בְּחַלְּקֵי־נַחַל חֶלְקֵךְ הֵם הֵם
.*munus feciſti aſcendere* , libamen effudiſti ipſis etiam :tua ſors
גּוֹרָלֵךְ גַּם־לָהֶם שָׁפַכְתְּ נֶסֶךְ הֶעֱלִית מִנְחָה
? accipiam conſolationem his ſuper Nunquid
הַעַל אֵלֶּה אֶנָּחֵם׃

Verſio VULG. LAT.

5 Dabo eis in domo mea, & in muris meis locum, & nomen melius à filiis & filiabus : nomen ſempiternum dabo eis, 6 quod non peribit. Et filios advenæ, qui adhærent Domino, ut colant eum, & diligant nomen ejus, ut ſint ei in ſervos : omnem cuſtodientem ſabbatum ne polluat illud, & tenen-7 tum fœdus meum : Adducam eos in montem ſanctum meum, & lætificabo eos in domo orationis meæ: holocauſta eorum, & victimæ eorum, placebunt mihi ſuper altari meo: quia domus mea, domus orationis vo-8 cabitur cunctis populis. Ait Dominus Deus, qui congregat diſperſos Iſrael ; Adhuc congregabo ad eum congregatos 9 ejus. Omnes beſtiæ agri venite ad devorandum, univerſæ 10 beſtiæ ſaltûs. Speculatores ejus cæci omnes, neſcierunt univerſi : canes muti non valentes latrare, videntes vana, dor-11 mientes & amantes ſomnia. Et canes impudentiſſimi neſcierunt ſaturitatem : ipſi paſtores ignoraverunt intelligentiam : omnes in viam ſuam declinaverunt, unuſquiſque ad avaritiam ſuam, à ſummo uſque ad 12 noviſſimum. Venite, ſumam° vinum, & impleamur ebrietate : & erit ſicut hodiè, ſic & cras, & multò ampliùs.

CAP. LVII.

1 Juſtus perit, & non eſt qui recogitet in corde ſuo : & viri miſericordiæ colliguntur, quia non eſt qui intelligat : à facie enim malitiæ collectus eſt ju-2 ſtus. Veniat pax, requieſcat in cubili ſuo, qui ambulavit in di-3 rectione ſua. Vos autem accedite huc filii auguratricis, ſemen adulteri, & fornicariæ. 4 Super quem luſiſtis? ſup quem dilatâſtis os, et ejeciſtis linguа? numquid non vos filii ſceleſti, 5 ſemen mendax? Qui conſolamini in diis ſubter omne lignum frondoſum, immolantes parvulos in torrentibus, 6 ſubter eminentes petras? In partibus torrentis pars tua, hæc eſt ſors tua: & ipſis effudiſti libamen, obtuliſti ſacrificium, numquid ſuper his non indignabor?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Δώσω αὐτοῖς ἐν τῷ οἴκῳ μου, καὶ ἐν τῷ τείχει μου τόπον ὀνομαστὸν, (ε) κρείττω υἱῶν καὶ θυγατέρων, ὄνομα αἰώνιον δώσω αὐ-6 τοῖς, καὶ οὐκ ἐκλείψει· Καὶ τοῖς ἀλλογενέσι τοῖς προσκειμένοις (ζ) κυρίῳ δουλεύειν αὐτῷ, καὶ ἀγαπᾷν τὸ ὄνομα κυρίου, τοῦ εἶναι αὐτῷ εἰς δούλους καὶ δούλας· καὶ πάντας τοὺς φυλασσομένους τὰ σάββατά μου μὴ βεβηλοῦν, καὶ ἀντεχομένους τῆς διαθήκης μου, 7 Εἰσάξω αὐτοὺς εἰς τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου, καὶ εὐφρανῶ αὐτοὺς ἐν τῷ οἴκῳ τῆς προσευχῆς μου· τὰ ὁλοκαυτώματα αὐτῶν, καὶ αἱ θυσίαι αὐτῶν ἔσονται δεκταὶ ἐπὶ (η) τὸ θυσιαστήριόν μου. ὁ γὰρ οἶκός μου, οἶκος προσευχῆς κληθήσεται πᾶσι τοῖς ἔθνεσιν, 8 Εἶπε κύριος ὁ συνάγων τοὺς διεσπαρμένους Ἰσραὴλ, ὅτι συνάξω ἐπ᾽ αὐ-9 τὸν συναγωγήν. Πάντα τὰ θηρία τὰ ἄγρια, δεῦτε, φάγετε, πάντα τὰ θηρία 10 τοῦ δρυμοῦ. Ἴδετε ὅτι (θ) ἐκτετύφλωνται πάντες, οὐκ ἔγνωσαν (ι), κύνες ἐνεοὶ οὐ δυνήσονται ὑλακτεῖν, ἐνυπνιαζόμενοι κοί-11 την, φιλοῦντες νυστάξαι. Καὶ οἱ κύνες ἀναιδεῖς τῇ ψυχῇ, οὐκ εἰδότες πλησμονήν. καί εἰσι πονηροὶ οὐκ εἰδότες σύνεσιν, πάντες (κ) τῆς ὁδοῖς αὐτῶν ἐξηκολούθησαν, ἕκαστος κατὰ τὸ (λ) ἑαυτοῦ.

Dabo eis in domo mea, & in muro meo locum nominatum, meliorem filiis, & filiabus: nomen ſempiternum dabo eis : & non deficiet: Et alienigenis, qui additi ſunt Domino, ſervire ei, & diligere nomen ejus, ut ſint ei in ſervos, & ancillas : & omnes, qui cuſtodiunt ſabbata mea, ut non violent ea, & tenent teſtamentum meum; Inducam illos in montem ſanctum meum, & lætificabo eos in domo orationis meæ. Holocauſtomata eorum, & victimæ eorum erunt acceptabiles ſuper altare meum. Domus enim mea domus orationis vocabitur cunctis gentibus, Dixit Dominus, qui congregat diſperſos Iſrael : quia congregabo ad eum congregationem. Omnes beſtiæ feræ venite, comedite, omnes beſtiæ ſylvæ. Videte, quoniam excæcati ſunt omnes: non cognoverunt: canes muti non poterunt latrare: ſomniantes lectulum, amantes dormitationem. Et canes impudentes animo, ignorantes ſaturitatem. Et ſunt mali, neſcientes intelligentiam: omnes, vias ſuas ſequuti ſunt, unuſquiſque (b) juxta ſuum.

MS.A. (ε) κρείσσων (ζ) πρὸς κύριον (η) τοῦ θυσιαστηρίου μου. (θ) πάντες ἐκτετύφλωνται, (ι) φρονῆσαι, πάντες κύνες (κ) ἐν ταῖς ὁδοῖς (λ) αὐ

ΚΕΦ. νζʹ.

1 Ἴδετε ὡς ὁ δίκαιος ἀπώλετο, καὶ οὐδεὶς ἐκδέχεται τῇ καρδίᾳ, καὶ ἄνδρες δίκαιοι αἴρονται, καὶ οὐδεὶς κατανοεῖ. ἀπὸ γὰρ προσ-2 ώπου ἀδικίας ἦρται ὁ δίκαιος. Ἔσται ἐν εἰρήνῃ ἡ ταφὴ αὐτοῦ, ἦρται ἐκ τοῦ μέ-3 σου. Ὑμεῖς δὲ προσαγάγετε ὧδε υἱοὶ ἄνο-4 μοι, σπέρμα μοιχῶν καὶ πόρνης. Ἐν τίνι ἐνετρυφήσατε; καὶ ἐπὶ τίνα ἠνοίξατε τὸ στόμα ὑμῶν; καὶ ἐπὶ τίνα ἐχαλάσατε τὴν γλῶσσαν ὑμῶν; οὐχ ὑμεῖς ἐστὲ τέκνα ἀπω-5 λείας; σπέρμα ἄνομον, Οἱ παρακαλοῦντες (α) εἴδωλα ὑπὸ δένδρα δασέα, σφάζοντες τὰ τέκνα αὐτῶν ἐν ταῖς φάραγξιν 6 ἀναμέσον τῶν πετρῶν; Ἐκείνη σου ἡ μερὶς, οὗτός σου ὁ κλῆρος, κἀκείνοις ἐξέχεας σπονδὰς, (β) καὶ τούτοις ἀνήνεγκας θυσίας. ἐπὶ τούτοις οὖν οὐκ ὀργισθήσομαι;

CAP. LVII.

Videte, quomodò juſtus periit, & nemo ſuſcipit corde : & viri juſti tolluntur ; & nemo conſiderat. A facie enim iniquitatis ablatus eſt juſtus: Erit in pace ſepultura ejus : ablatus eſt de medio. Vos autem accedite huc filii iniqui, ſemen adulterorum, & meretricis. In quo oblectati eſtis? & ſuper quem aperuiſtis os veſtrum? et ſuper quem ejeciſtis linguam veſtram? Nonne vos eſtis filii perditionis, ſemen iniquum, Qui (a) vocatis idola juxta frondoſas arbores, immolantes filios veſtros in vallibus in medio petrarum? Illa eſt pars tua : hæc eſt ſors tua : et illis effudiſti libamina, et his obtuliſti hoſtias. Super his ergò non iraſcar?

MS.A. (α) τὰ εἴδωλα (β) κἀκείνοις

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 ואתן להון בבית מקדשי ובארע בית שכנתי אתר ושום דטב מבנין ומבנן שום עלם אתן
6 להון דלא יפסוק׃ ובני עממיא דמתוספין על עמיה דיי לשמשותיה ולמרחם ית שמא
7 דיי למהוי ליה לעבדין כל דיטר שבתא לאחלותיה ומתקפין בקימי׃ ואיתינון
לטורא דקודשי ואחדנון בבית צלותי עלותהון ונכסת קודשיהון יתסקון לרעוא על
8 מדבחי ארי בית מקדשי בית צלו יתקרי לכל עממיא׃ אמר יי אלהים דעתיד
9 לכנשא מבדרי ישראל עוד אקריב גלותהון לכנשא יתהון׃ כל מלכי עממיא
דמתכנשין לאעקא ליך ירושלם בגויך יתרמון יהון למיכל לחית ברא תסבע מנהון
10 חיות חורשא׃ סכואיהון סמן כולהון לא ידעין מדעם כולהון כלבין חרשין לא
11 יכלין למנבח נימין שכבין רחמין למדמך׃ וכלביא תקיפי נפשן לא ידעין למסבע
ואנון מבאשין לא ידעין לאסתכלא כולהון גבר לקבל ארחיה גלו גבר למבז
12 ממוניה דישראל׃ אמרין אתו ונסב חמר ונתרוי מן עתיק ותהי שרותנא דמחר
טבא מדיומא דין רבא סגיאה לחדא׃

נז

1 צדיקיא מיתין ולית אנש דמשוי דחלתי על לב וגברי גמלי חסדא מתכנשין ולא
2 מסתכלין ארי קדם בישתא דעתידא למיתי מתכנשין צדיקיא׃ יהכון שלם ינוחון
3 על אתר בית משכביהון עבדי אוריתיה׃ ואתון אתקרבו הלכא עם דרא דעובדיהון
4 בישין דמנצבת קודשא נצבתהון ואנון מנאפין ומזנן׃ על מן אתון מתפנקין וקדם
5 מן תפתחון פומכון תסגון למללא רברבן הלא אתון ילדי מרוד זרעא שקרא׃ דפלחין
6 לטעותא תחות כל אילן עבוף נכסי ינקיא בנחליא תחות שקיפי כיפיא׃ בשעיעות
כיף נחלא חולקיך אף תמן אנון עדבך אף להון נסכת נסכין אסקת קורבנין העל
אלין יתוב מימרי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dabo eis in domo ſanctuarii mei & in terra domus majeſtatis meæ locum, & nomen melius filiis & filiabus ; nomen æternum dabo eis quod non ceſſabit. Et filii populorum qui apponuntur populo Domini, ut miniſtrent ei, & diligant nomen Domini, ut ſint ei in ſervos : quiſquis cuſtodit Sabbathum ne violet illud, & tenet pactum meum ; Adducam eos in montem ſanctum meum, & lætificabo eos in domo orationis meæ: holocauſta eorum & victimæ ſanctificatæ eorum offerentur voluntariè ſuper altari meo: quia domus ſanctuarii mei domus orationis vocabitur omnibus populis. Ait Dominus Deus, qui congregaturus eſt diſperſos Iſrael : Adhuc congregabo captivitatem eorum, ut colligam eos. Omnes reges populorum qui congregantur ut tribulent te Jeruſalem, in medio tui projicientur, erunt in cibum beſtiis agri, ſaturabitur illis beſtia ſylvæ. Speculatores eorum cæci ſunt omnes, nihil ſciunt : omnes illi ſunt canes muti, non valentes latrare, dormientes, cubantes, diligentes dormire : Et canes robuſti animo, neſciunt ſaturitatem : & ipſi malefacientes, neſciunt intelligere : omnes illi unuſquiſque contra viam ſuam migraverunt, ſinguli ut diripiant facultates Iſraelis. *Dicentes*, Venite, ſumamus vinum, & inebriemur vino veteri : & erit prandium noſtrum craſtinum lautius hodierno, amplum & prolixum admodum.

CAP. LVII

Juſti moriuntur, & non eſt vir qui proponat animo mei timorem : & viri retribuentes miſericordiam colliguntur, & non contemplantur quia propter malum quod venturum eſt, colliguntur juſti. Ibunt in pace, & requieſcent in loco domus cubationis ſuæ, qui operantur ſecundùm legem *ejus*, Vos autem accedite huc, popule generationis cujus opera ſunt mala. De plantatione enim ſancta eſt plantatio eorum, ſed ipſi ſunt adulteri & fornicantes. In quo vos delectamini, & ante quem vos aperitis os veſtrum, & multiplicatis loqui magnalia ? nónne vos eſtis filii ſceleſti, ſemen mendax ? Qui adoletis idolis ſub omni ligno frondoſo, immolantes parvulos in torrentibus, ſubter ſcopulos petrarum. In lævibus locis ripæ torrentis eſt pars tua, ibi quoque ea ſunt ſors tua : etiam eis immolaſti victimas, obtuliſti oblationes : nunquid ob hæc pœnitebit Verbum meum ?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܬܠ ܠܗܘܢ ܒܒܝܬܝ ܘܒܫܘܪ̈ܝ ܐܬܪܐ. ܘܫܡܐ ܕܝܬܝܪ ܡܢ ܒܢ̈ܝܐ ܘܡܢ ܒܢ̈ܬܐ.
ܕܥܠܡ ܐܬܠ ܠܗܘܢ. ܕܠܐ ܢܦܣܘܩ. * ܘܠܒܢ̈ܝ ܢܘܟܪ̈ܝܐ ܕܡܬܬܘܣܦܝܢ ܠܡܪܝܐ ܠܡܫܡܫܘܬܗ
ܘܠܡܪܚܡܘ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܗ ܠܥܒ̈ܕܐ. ܟܠ ܕܢܛܪ ܫܒܬܐ ܕܠܐ ܢܣܠܝܗ
ܘܡܬܚܝܠܝܢ ܒܩܝܡܝ. * ܐܝܬܐ ܐܢܘܢ ܠܛܘܪ ܩܘܕܫܝ. ܘܐܚܕܐ ܐܢܘܢ ܒܒܝܬܐ ܕܨܠܘܬܝ
ܥܠܘܬܗܘܢ ܘܕܒܚܝܗܘܢ. ܢܗܘܝܢ ܠܪܘܚܐ ܥܠ ܡܕܒܚܝ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܝ ܒܝܬ ܨܠܘܬܐ ܢܬܩܪܐ
ܠܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ: ܕܡܟܢܫ ܠܡܒܕܪ̈ܝܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܘܕ ܐܟܢܫ
ܥܠܘܗܝ ܟܢܘܫ̈ܝܐ. * ܟܠ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ. ܐܬܝܘ ܐܟܘܠܘ ܟܠܗܝܢ ܚܝܘܬܐ ܕܥܒܐ. *
ܥܘܝܪ̈ܐ ܟܠܗܘܢ ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ. ܟܠܗܘܢ ܟܠܒ̈ܐ ܐܠܡ̈ܐ. ܘܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܠܡܢܒܚ
ܘܪܡܝܢ. ܘܪܚܡܝܢ ܠܡܢܡ. * ܘܟܠܒ̈ܐ ܐܢܘܢ ܕܚܠܝܨܝ ܢܦܫܐ. ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ ܠܡܣܒܥ
ܢܗܘܘܢ ܒܝܫܝܢ. ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ ܣܘܟܠܐ. ܟܠܗܘܢ ܠܐܘܪܚܗܘܢ ܦܢܘ. ܘܐܢܫ ܠܣܛܪܗ. ܘܠܓܒܗ.
* ܐܬܘ ܢܣܒ ܚܡܪܐ ܘܢܣܒ ܫܟܪܐ: ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܝܘܡܢܐ. ܘܢܬܝܬܪ ܠܢ ܣܓܝ ܛܒ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢܙ *

* ܗܐ ܙܕܝܩܐ ܐܒܕ. ܘܠܝܬ ܐܢܫ ܕܣܐܡ ܒܠܒܗ. ܘܓܒܪ̈ܐ ܚܣܝܕ̈ܐ ܡܬܟܢܫܝܢ ܘܠܐ
ܡܣܬܟܠ ܐܢܫ. ܕܡܢ ܩܕܡ ܒܝܫܬܐ ܡܬܟܢܫ ܙܕܝܩܐ. * ܘܬܐܬܐ ܫܠܡܐ ܘܢܬܢܝܚܘܢ ܥܠ
ܡܫܟ̈ܒܝܗܘܢ. ܘܢܗܠܟܘܢ ܩܕܡܝܗܘܢ. * ܘܐܢܬܘܢ ܩܪܘܒܘ ܠܗܠ ܒܢ̈ܝ ܡܫܬܥܒܕܬܐ
ܙܢܝܐ ܘܙܢܝܬܐ. * ܥܠ ܡܢ ܐܬܦܢܩܬܘܢ. ܘܥܠ ܡܢ ܦܬܚܬܘܢ ܦܘܡܟܘܢ
ܘܐܘܪܟܬܘܢ ܠܫܢܟܘܢ. ܗܐ ܐܢܬܘܢ ܝܠܕܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܙܪܥܐ ܕܓܠܐ. *
ܒܦܬܟܪ̈ܐ ܬܚܝܬ ܟܠ ܐܝܠܢ ܥܒܐ. ܘܢܟܣܝܢ ܛܠ̈ܝܐ ܒܢܚ̈ܠܐ ܬܚܝܬ
ܫܘܥ̈ܐ ܕܟܐܦ̈ܐ. * ܦܠܓܘܬܟ ܘܝܪܬܘܬܟ. ܥܡ ܦܠܓܘܬܗܘܢ ܕܢܚ̈ܠܐ. ܐܦ ܥܠܝܗܘܢ ܢܣܟܬ
ܢܣܟ̈ܐ. ܘܐܣܩܬ ܩܘܪ̈ܒܢܐ. ܥܠ ܗܠܝܢ ܐܬܒܣܡ.

5 * Dabo in domo mea & intra muros meos locum & nomen excellentius quàm filiorum & filiarum; nomen *ſcilicet* ſempiternum dabo eis, quod nunquam deficiet. 6 Filios autem alienigenarum, qui Domino ſe adjunxerint ad miniſtrandum ei, & ad diligendum nomen Domini, ut ſint ſervi ejus; quemcunque cuſtodientem ſabbathum ne prophanet illud, & fœdus meum firmiter tenentem: 7 Adducam in montem ſanctum meum, & lætificabo in domo orationis meæ: holocauſta & ſacrificia eorum gratiſſima erunt ad altare meum: quoniam domus mea domus orationis vocabitur cunctis populis. 8 Sic dicit Dominus Deus qui congregat diſperſos Iſraelis, Adhuc aggregabo ei aggregatos. 9 Omnes beſtiæ agri venite, devorate omnes beſtias ſylvæ. 10 Videntes, cæci ſunt omnes & ignari; canes muti ſunt omnes, nec poſſunt latrare; indulgent voluptati, jacent, & amant dormitationem. 11 Sunt autem canes avidi appetitûs, & neſcientes ſaturari: erunt nequiſſimi, & ignari prudentiæ: omnes ad viam ſuam ſe converterunt, & quilibet ad partem & latus ſuum. 12 Venite *inquiunt* ſumamus vinum & ſumamus ſiceram, & ſimus ut hodierna dies, & lucrum faciamus nobis multum admodum.

CAP. LVII.

1 ECce juſtus perit, & nemo eſt qui animum adjiciat: & viri ſancti rapiuntur nemine advertente. A conſpectu quidem malitiæ rapitur juſtus: 2 At veniet pax, & requieſcent ſuper cubili ſuo, & coram ſe gradientur. 3 Vos verò accedite huc filii humiliatæ, ſemen adulterum & fornicarium. 4 Contra quem avidè inhiatis? & contra quem aperitis os veſtrum, & linguam veſtram protrahitis? equidem vos fœtus eſtis iniquus & ſemen falſum: 5 Qui conſolationē veſtrā collocatis in idolis ſubter omnem arborem ſylvæ, & jugulatis pueros in torrentibus ſub rupibus petrarum. 6 Sors tua & hæreditas tua, cum ſorte torrentium erit; nam & ſuper eos libâſti libamina, & obtuliſti ſacrificia: in his oblectarer?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* أعطيهم في بيتي وفي سوري موضعا مسميا أفضل من البنين والبنات * أعطي لهم اسما
ابديا ولا يفني * وللغرباء الجنس الدخلاء الي الرب ليتعبدوا له وليحبوا اسم الرب ليكونوا له
عبيدا واماء * وجميع الذين يحفظون ان لا يدنسوا سبوتي والممسكون بعهدي *
* ادخلهم الي جبلي المقدس * وافرحهم في بيت صلاتي * محرقاتهم وذبائحهم تكون مقبولة
على مذبحي * لان بيتي بيت الصلاة يدعى لجميع الامم * لان جامع مفرقي اسرايل قال
اني اجمع عليه جمعا * يا جميع الوحوش البرية تعالوا كلوا * يا جميع وحوش الغاب * انظروا
انهم جميعهم يعمون لم يعلموا ليتعقلوا * جميعهم كلاب ساهية لا يستطيعون ان ينبحوا
الذين يحلمون في المضاجع * يحبون ان ينعسوا * والكلاب الوقحة النفس لم يعرفوا سبعا وهم
اشرار لم يعرفوا فهما * جميعهم في الطرقات يتبع كل واحد منفعتهم *

* الفصل السابع والخمسون *

* انظروا كيف هلك الصديق وليس احد يفكر
بالقلب * والرجال الصديقون يرفعون ولا واحد يتامل * لان من وجه الظلم رفع الصديق *
* يكون في السلامة دفنه * رفع من الوسط *

* الاصحاح السابع والعشرون *

* توبيخ بني اسرايل * وهو قريان يوم الاحد *

* وانتم تقدموا هاهنا ايها البنون الاثمة * زرع الفاسقين والزانية * بماذا تنعمتم * وعلى من
فتحتم فمكم * وعلى من دليتم لسانكم * اليس انتم تصيرون بني هلاك ذرية اثمة *
* الذين يسالون الاصنام تحت الاشجار المظللة * يذبحون اولادهم في الاودية بين
الصخور * نصيب تلك سهمكم * لاولئك اهرقت القوارير * ولاولئك قدمت الذبائح
بهذا ألست اغضب *

5 * *Dabo in domo mea & intra murum meum, locum celebrem, præſtantiorem quàm filiorum & filiarum: dabo* enim *eis nomen æternum quod nunquam deficiet.* 6 *Et alienigenas qui ſe receperint ad Dominum ut ſerviant ei, & diligant nomen Domini, ut ſint ſervi & ancillæ ipſius; & eos omnes qui caverint ne prophanent ſabbatha mea, quique adhærent fœderi meo;* 7 *Introducam in montem ſanctum meum, & exhilarabo in domo orationis meæ: holocauſta & ſacrificia eorum erunt accepta ſuper altari meo: quia domus mea, domus orationis vocabitur cunctis gentibus.* 8 *Nam congregator diſperſorum Iſraelis, Ego, inquit, aggregabo illi cœtum.* 9 *O omnes beſtiæ campeſtres, venite, comedite; O omnes beſtiæ ſylveſtres,* 10 *Videte ut omnes iſti cæci ſint, neſciant prudenter agere; omnes ſint canes torpidi, latrare nequeant; qui ſomnient in cubili, ament dormitationem:* 11 *Et quidem canes impudentis aviditatis, ſaturitatis neſcii, iidémque flagitioſi, prudentiæ ignari; omnes in viis ſuis, unuſquiſque propriam ſectatur utilitatem.*

CAP. LVII.

1 *VIdete quomodo perierit juſtus, & nemo corde cogitet; viri probi tollantur, & nemo conſideret. Quoniam à facie iniquitatis ablatus eſt juſtus,* 2 *Erit in pace ſepultura ejus, ſublatus eſt è medio.*

Textus vigeſimus ſeptimus.

Objurgatio filiorum Iſraelis : Lectio diei Dominicæ.

3 * *Accedite huc O filii ſcelerati, ſemen adulterorum & ſcortatricis.* 4 *Qua in re oblectati eſtis? contra quem aperuiſtis os veſtrum? & contra quem exeruiſtis linguam veſtram? annon vos eritis filii perditionis, generatio maligna?* 5 * *Qui rogatis idola ſub arboribus umbroſis, jugulatis liberos veſtros in torrentibus inter petras.* 6 *Sors illorum* idolorum *erit portio veſtra. Illis alabaſtra fudiſti, & illis obtuliſti ſacrificia: propter hæc annon iraſcerer?*

ישעיה : נח

illuc etiam : tuum cubile posuisti elevatum & excelsum montem Super
7 עַל הַר־גָּבֹהַּ וְנִשָּׂא שַׂמְתְּ מִשְׁכָּבֵךְ גַּם־שָׁם
posuisti postem & , ostium post Et .victimam immolandum ad ascendisti
8 עָלִית לִזְבֹּחַ זָבַח׃ וְאַחַר הַדֶּלֶת וְהַמְּזוּזָה שַׂמְתְּ
dilatâsti , ascendisti & discooperuisti me à quia : tuum *monimentum*
זִכְרוֹנֵךְ כִּי מֵאִתִּי גִּלִּית וַתַּעֲלִי הִרְחַבְתְּ
.vidisti *manum*,eorum cubile dilexisti ; eis *ex tibi excidisti* & , tuum cubile
מִשְׁכָּבֵךְ וַתִּכְרָת־לָךְ מֵהֶם אָהַבְתְּ מִשְׁכָּבָם יָד חָזִית׃
misisti & : tua pigmenta multiplicâsti & ,oleo *in regem ad es progressa* Et
9 וַתָּשֻׁרִי לַמֶּלֶךְ בַּשֶּׁמֶן וַתַּרְבִּי רִקֻּחָיִךְ וַתְּשַׁלְּחִי
multitudine In.*sepulchrũ* ad usq; te humiliâsti&,*longe de ad usq;* tuos legatos
10 צִרַיִךְ עַד־מֵרָחֹק וַתַּשְׁפִּילִי עַד־שְׁאוֹל׃ בְּרֹב
,invenisti *tuæ manus victum*:est desperatũ ,dixisti nec , laborâsti tuæ viæ
דַּרְכֵּךְ יָגַעַתְּ לֹא אָמַרְתְּ נוֹאָשׁ חַיַּת יָדֵךְ מָצָאת
, *mentiaris* quòd?timuisti & es *verita* quem Et .ægrotâsti non ea propter
11 עַל־כֵּן לֹא חָלִית׃ וְאֶת־מִי דָּאַגְתְּ וַתִּירְאִי כִּי תְכַזֵּבִי
è tacens ego Anne:tuum cor super posuisti nec,es recordata non mei &
וְאוֹתִי לֹא זָכַרְתְּ לֹא־שַׂמְתְּ עַל־לִבֵּךְ הֲלֹא אֲנִי מַחְשֶׁה
& : tuam justitiã annuntiabo Ego *? timebis* non me & ,seculo à &
12 וּמֵעוֹלָם וְאוֹתִי לֹא תִירָאִי׃ אֲנִי אַגִּיד צִדְקָתֵךְ וְאֶת־
,*tuæ congregationes* te liberent,*te clamando* In.tibi proderunt non &,tua opera
13 מַעֲשַׂיִךְ וְלֹא יוֹעִילוּךְ׃ בְּזַעֲקֵךְ יַצִּילֻךְ קִבּוּצַיִךְ
hæreditabit me in *sperans* & : vanitas tollet ,ventus tollet eos omnes &
וְאֶת־כֻּלָּם יִשָּׂא־רוּחַ יִקַּח־הָבֶל וְהַחוֹסֶה בִי יִנְחַל־
:viã *complanate,munite,munite* Dicétq; *meæ sanctitatis* montẽ possidebit &,terrã
14 אֶרֶץ וְיִירַשׁ הַר־קָדְשִׁי׃ וְאָמַר סֹלּוּ־סֹלּוּ פַּנּוּ־דָרֶךְ
, excelsus dixit sic Quia .mei populi via de offendiculum tollite
15 הָרִימוּ מִכְשׁוֹל מִדֶּרֶךְ עַמִּי׃ כִּי כֹה אָמַר רָם
sancto & , excelso : ejus nomen sanctum & ,*perpetuo* habitans sublimis &
וְנִשָּׂא שֹׁכֵן עַד וְקָדוֹשׁ שְׁמוֹ מָרוֹם וְקָדוֹשׁ
spiritum *vivificandum ad* , spiritu humili & , contrito cum & : habitabo
אֶשְׁכּוֹן וְאֶת־דַּכָּא וּשְׁפַל־רוּחַ לְהַחֲיוֹת רוּחַ
,litigabo *seculũ* in non Quia .contritorum cor *vivificandum ad* &,humilium
16 שְׁפָלִים וּלְהַחֲיוֹת לֵב נִדְכָּאִים׃ כִּי לֹא לְעוֹלָם אָרִיב
ego animas &,*se involvet meis faciebus* à spiritu quia : irascar *finem* in nec
וְלֹא לָנֶצַח אֶקְּצוֹף כִּי־רוּחַ מִלְּפָנַי יַעֲטוֹף וּנְשָׁמוֹת אֲנִי
abscondẽdo eũ percussi &,sum iratus ejus *cupiditatis* iniquitatẽ Propter .feci
17 עָשִׂיתִי׃ בַּעֲוֹן בִּצְעוֹ קָצַפְתִּי וְאַכֵּהוּ הַסְתֵּר
, vidi ejus Vias .sui cordis viam per *refractarius* abiit & : sum iratus &
18 וְאֶקְצֹף וַיֵּלֶךְ שׁוֹבָב בְּדֶרֶךְ לִבּוֹ׃ דְּרָכָיו רָאִיתִי
, ei consolationes reddidi & , eum feci requiescere & : eum sanavi &
וְאֶרְפָּאֵהוּ וְאַנְחֵהוּ וַאֲשַׁלֵּם נִחֻמִים לוֹ
longinquo ,pacem pacem : labiorum *germen* Creans .ejus lugentibus &
19 וְלַאֲבֵלָיו׃ בּוֹרֵא נִוב שְׂפָתָיִם שָׁלוֹם שָׁלוֹם לָרָחוֹק
mare veluti impii Et .eum sanavi & , Dominus dixit , propinquo &
20 וְלַקָּרוֹב אָמַר יְהוָה וּרְפָאתִיו׃ וְהָרְשָׁעִים כַּיָּם
, cœno ejus aquæ se impellent & ,*poterit* non quiescere nam : impulsum
נִגְרָשׁ כִּי הַשְׁקֵט לֹא יוּכָל וַיִּגְרְשׁוּ מֵימָיו רֶפֶשׁ
.impiis , meus Deus dixit , pax Non .luto &
21 וָטִיט׃ אֵין שָׁלוֹם אָמַר אֱלֹהַי לָרְשָׁעִים׃

CAP. LVIII. נח

:tuam vocem exalta tuba tanquam , prohibeas ne , gutture in Clama
1 קְרָא בְגָרוֹן אַל־תַּחְשֹׂךְ כַּשּׁוֹפָר הָרֵם קוֹלֶךָ
.eorũ peccata Jahacob domui &,eorũ prævaricationẽ meo populo *indica* &
וְהַגֵּד לְעַמִּי פִּשְׁעָם וּלְבֵית יַעֲקֹב חַטֹּאתָם׃

Versio VUL. LAT.

7 Super montẽ excelsum & sub-
limẽ posuisti cubile tuũ, & il-
luc ascendisti ut immolares ho-
8 stias. Et post ostiũ,& retro po-
stem posuisti memoriale tuum:
quia juxta me discooperuisti,
& suscepisti adulterũ:dilatâsti
cubile tuũ,& pepigisti cum eis
fœdus:dilexisti stratũ eorũ manu
9 apertâ. Et ornâsti te regio un-
guento,& multiplicâsti pigmẽ-
ta tua.Misisti legatos tuos pro-
cul,et humiliata es usque ad in-
10 feros. In multitudine viæ tuæ
laborâsti:non dixisti ; Quiescã:
vitã manûs tuæ invenisti, pro-
11 pterea nõ rogâsti. Pro quo so-
licita timuisti, quia mentita es,
& mei non es recordata,neque
cogitâsti in corde tuo?quia ego
tacens,& quasi non videns, &
12 mei oblita es. Ego annuntiabo
justitiã tuam,& opera tua non
13 proderunt tibi. Cùm clamave-
ris, liberent te congregati tui,
& omnes eos auferet ventus,tol-
let aura : Qui autẽ fiduciã ha-
bet mei, hæreditabit terrã, &
possidebit montẽ sanctũ meũ.
14 Et dicam;Viam facite,præbete
iter,declinate de semita,aufer-
te offendicula de via populi
15 mei. Quia hæc dicit Excelsus,et
sublimis habitans æternitatem:
& sanctũ nomen ejus in excelso
& in sancto habitans, & cum
contrito & humili spiritu : ut
vivificet spiritũ humilium, &
16 vivificet cor contritorũ. Non
enim in sempiternũ litigabo,
neque usq; ad finẽ irascar:quia
spiritus à facie mea egredietur,
17 & flatus ego faciã.Propter ini-
quitatem avaritiæ ejus iratus
sum,& percussi eum:abscondi
à te faciẽ meam, & indignatus
sum:& abiit vagus in via cordis
18 sui. Vias ejus vidi, & sanavi
eum,& reduxi eum,& reddidi
consolationes ipsi,& lugentibus
19 ejus. Creavi fructum labiorũ
pacem,pacem ei,qui longè est,
& qui propè,dixit Dominus,et
20 sanavi eum. Impii autem quasi
mare fervens, quod quiescere
non potest, & redundant flu-
ctus ejus in conculcationem et
21 lutum. Non est pax impiis,di-
cit Dominus Deus.

CAP. LVIII.

1 Clama,ne cesses, quasi tuba
exalta vocẽ tuam, & annuntia
populo meo scelera eorum, et
domui Jacob peccata eorum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

7 Ἐπ' ὄρος ὑψηλὸν καὶ μετέωρον, ἐκεῖ σου ἡ
κοίτη, καὶ ἐκεῖ ἀνεβίβασας (γ) θυσίας σου,
8 Καὶ ὀπίσω τῶν σταθμῶν τῆς θύρας σου ἔθηκας
μνημόσυνά σου. ᾤου, ὅτι ἐὰν ἀπ' ἐμοῦ ἀπο-
στῇς, πλεῖόν τι ἕξεις; ἠγάπησας τοὺς κοιμω-
9 μένους μετὰ σοῦ, Καὶ ἐπλήθυνας τὴν πορνείαν σου
μετ' αὐτῶν, καὶ πολλοὺς ἐποίησας τοὺς μακρὰν
ἀπὸ σοῦ, καὶ ἀπέστειλας πρέσβεις ὑπὲρ τὰ
10 ὅριά σου, (δ) καὶ ἐταπεινώθης ἕως ᾅδου. Ταῖς
πολυοδίαις σου ἐκοπίασας, καὶ οὐκ εἶπας,
Παύσομαι ἐνισχύουσα, ὅτι ἔπραξας ταῦτα,
11 διὰ τοῦτο οὐ κατεδεήθης μου σύ. Τίνα εὐλαβη-
θεῖσα ἐφοβήθης, καὶ ἐψεύσω με, καὶ οὐκ ἐμνή-
σθης (ε), οὐδὲ ἔλαβές με εἰς τὴν διάνοιαν, οὐδὲ
εἰς τὴν καρδίαν σου; (ζ) καὶ ἐγώ σε ἰδὼν
12 παρορῶ, καὶ ἐμὲ οὐκ ἐφοβήθης. (η) Καὶ ἐ-
γὼ ἀπαγγελῶ τὴν δικαιοσύνην (θ) σου, καὶ
13 τὰ κακά σου, ἃ οὐκ (ι) ὠφελήσει σε, Ὅταν
ἀναβοήσῃς, ἐξελέσθωσάν σε ἐν τῇ θλίψει
σου· τούτους γὰρ πάντας ἄνεμος λήψεται, καὶ
ἀποίσει καταιγίς. οἱ δὲ ἀντεχόμενοί μου
κτήσονται γῆν, καὶ κληρονομήσουσι τὸ ὄρος
14 τὸ ἅγιόν μου· Καὶ ἐροῦσι, Καθαρίσατε ἀπὸ
προσώπου αὐτοῦ ὁδοὺς, καὶ ἄρατε σκῶλα ἀπὸ
15 τῆς ὁδοῦ τοῦ λαοῦ μου. Τάδε λέγει (κ) ὁ ὕψιστος,
ἐν ὑψηλοῖς κατοικῶν τὸν αἰῶνα, Ἅγιος ἐν
ἁγίοις, ὄνομα αὐτῷ, (λ) ὕψιστος ἐν ἁγί-
οις ἀναπαυόμενος, καὶ ὀλιγοψύχοις διδοὺς
μακροθυμίαν, καὶ διδοὺς ζωὴν τοῖς συντε-
16 τριμμένοις τὴν καρδίαν, (μ) Οὐκ εἰς τὸν αἰῶνα
ἐκδικήσω ὑμᾶς, οὐδὲ διαπαντὸς ὀργισθή-
σομαι ὑμῖν· πνεῦμα γὰρ παρ' ἐμοῦ ἐξελεύσεται,
17 καὶ πνοὴν πᾶσαν ἐγὼ ἐποίησα. Δι' ἁμαρτίαν
βραχύ τι ἐλύπησα αὐτὸν, καὶ ἐπάταξα αὐτὸν, καὶ
ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν μου ἀπ' αὐτοῦ, καὶ ἐ-
λυπήθη, καὶ ἐπορεύθη στυγνὸς ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐ-
18 τοῦ. Τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ ἑώρακα, καὶ ἰασάμην αὐτὸν,
καὶ παρεκάλεσα αὐτὸν, καὶ ἔδωκα αὐτῷ πα-
19 ράκλησιν ἀληθινήν, Εἰρήνην (ν) ἐπ' εἰ-
ρήνῃ τοῖς μακρὰν καὶ τοῖς ἐγγὺς οὖσι. καὶ εἶπε
20 κύριος, Ἰάσομαι αὐτοὺς, Οἱ δὲ ἄδικοι (ξ)
κλυδωνισθήσονται, καὶ ἀναπαύσασθαι οὐ δυ-
21 νήσονται. Οὐκ ἔστι χαίρειν τοῖς ἀσεβέσιν,
εἶπεν (ο) ὁ θεός.

ΚΕΦ. νη'.

1 ἈΝαβόησον ἐν ἰσχύϊ, καὶ μὴ φείσῃ, ὡς (·)
σάλπιγγι ὕψωσον τὴν φωνήν σου, καὶ ἀνάγγει-
λον τῷ λαῷ μου τὰ ἁμαρτήματα αὐτῶν, καὶ
τῷ οἴκῳ Ἰακὼβ τὰς ἀνομίας αὐτῶν.

Super montem excelsum, & sub-
limem, illic cubile tuum: & illic
ascendere fecisti hostias tuas. Et
post ostii tui postes posuisti memo-
rialia tua. Putabas, quoniam si
recessisses à me, plus aliquid
haberes: dilexisti dormientes tecũ,
Et multiplicâsti fornicationem
tuam cum eis: multosque fecisti
eos, qui procul à te, & misisti le-
gatos ultra terminos tuos: & hu-
miliata es usque ad inferos. Mul-
tis itineribus tuis laborâsti, & non
dixisti,Desinam : (c) confortata,
quia fecisti hæc: propterea non ro-
gâsti me tu. Quẽ timens perter-
rita es? & mentita es mihi, nec
recordata es mei, neque sumpsisti
me in mentem, neque in cor tuum?
Et ego te vidẽs despicio:et me non
timuisti. Et ego annuntiabo justitiã
tuã,et mala tua,quæ non proderũt
tibi: Cùm clamaveris, eximant
in tribulatione tua. Istos enim
omnes tollet ventus, & auferet
tempestas. Qui autem innituntur
mihi, possidebunt terram, & hæ-
reditate consequentur montem
sanctum meum: Et dicent; Mun-
das facite à facie ejus vias,& au-
ferte offendicula de via populi
mei. Hæc dicit Excelsus, in excel-
sis habitans in æternum, Sanctus
in sanctis, nomen illi: excelsus in
sanctis requiescens, & pusillani-
mis dans patientiam,& dans vi-
tam his qui corde contriti(d) sunt.
Non in æternum ulciscar vos,
neque semper irascar vobis: Spiri-
tus enim à me egredietur: & fla-
tum omnem ego feci. Propter pec-
catum ad modicum quid contrista-
vi eum, & percussi eum,& aver-
ti faciem meam ab eo: & contri-
status est, & ambulavit tristis in
viis suis. Vias ejus vidi, & sa-
navi eum, et consolatus sum il-
lum, et dedi ei consolationem ve-
ram, Pacem super pacem his, qui
longè, et qui propè sunt. Et dixit
Dominus, Sanabo eos: Qui autem
iniqui sunt, (e) fluctuabunt, &
quiescere non poterunt. Non est
gaudium impiis, dixit Dom.

CAP. LVIII.

Clama in fortitudine, & ne
parcas : quasi tubâ exalta vocem
tuam: et annuntia populo meo pec-
cata eorum, et domui Jacob ini-
quitates eorum.

MS.A. Κεφ. νζ'. (γ) θυσίας, Καὶ ὀπίσω (δ) καὶ ἀπέστρεψας, καὶ ἐταπεινώθης
(ε) μου, (ζ) κἀγὼ (η) Κἀγὼ ἀπαγγέλλω (θ) μου, (ι) ὠφελήσουσί σε
(κ) κύριος ὁ ὕψιστος, ὁ ἐν ὑψηλοῖς (λ) κύριος ὕψιστος (μ) Καὶ οὐκ (ν) ἐπ' εἰρή-
νην (ξ) οὕτως (ο) κύριος ὁ θεός. MS.A. Κεφ. νη'. (·) σάλπιγγι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 על טור רם ומנטל שוית אתר בית מישריך אף לתמן סלקית לדבחא דבח : ואחורי
8 דשא ומזוזתא שוית דוכרן טעותיך הוית דמיא לאתתא דרחימא על בעלה וטעת בתר
נוכראין אפתית אתר בית מישרך וגזרת ליך מנהון קים רחמת אתר בית משכבהון
9 אתר בחרת : כד עבדת ליך אוריתא אצלחת במלכותא וכדאסגית ליך עובדין טבין
סגיאה משריתיך ושלחת אזגדך עד מרחיק ואמאכת תקיפי עממיא עד לשאול :
10 בסגיאות ארחתיך לאית לא אמרת למתב נכסין סגיאין אסגית על כן לא סברת למתב:
11 וית מן יציפת וקדם מן דחלת ארי אסגית למללא כדבין ופולחני לא אדכרת ולא שוית
דחלתי על לביך הלא אנא יהבית ארכא מעלמא דאם תתובין לאוריתא ולקדמי לא
12 תבת : אנא חויתי לך עובדין טבין דאנון זכון ליך ואת אסגית ליך עובדין בישין דלא
13 יהנון ליך : אצוחי כען אם יפרקוניך עובדי שקרין דהוית מתעסקא בהון מינקותיך
וית כולהון יטול רוחא יהון כלמא ודרחיץ על מימרי יחסין ארעא ויירת טורא דקודשי :
14 ויימר אליפו ואזהרו אפנו לב עמא לאורח תקנא סליקו תקלת רשיעיא מאורח כנשתא
15 דעמי : ארי כדנן אמר רמא ומנטלא דשרי בשמיא וקדיש שמיה ברומא שרי וקדישא
שכנתיה אמר למפרק לתבירי לבא ולמכיכי רוחא לקימא רוח מכיכין ולמסעד לב
16 תבירין: ארי לא לעלמא אתפרע בדין ולא לאפרש יהי רוגזי ארי רוחי מיתיא אנא עתיד
17 לאתבא ונשמתא אנא עבדית : בחובי ממונהון דאנסו הוה רוגזי עליהון ואלקיתנון
18 סלקית שכנתי מנהון וטלטלתנון בדרית גלותהון על דטעו בתר הרהור לבהון : אורח
תיובתהון גליא קדמי ואשבוק להון וארחים עליהון ואשלם תנחומין להון ולמתאבלין
19 עליהון : דברא ממלל ספון בפום כל אנשא אמר נביא שלמא יתעבד לצדיקיא דנטרו
20 אוריתי מלקדמין ושלמא יתעבד לתביא דתבו לאוריתא קריב אמר יי ואשבוק להון :
21 ורשיעיא כימא דטריד דבעי למנח ולא יכיל ועברין מוהי סין וטין : לית שלמא אמר
אלהי לרשיעיא :

נח

1 נביא אכלי בגרונך לא תמנע כקל שופרא ארים קלך וחוי לעמי מרדיהון ולבית יעקב
חוביהון :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

In monte excelso & elevato posuisti locũ mansionis domus tuæ : etiam il-
luc ascendisti ut sacrificares sacrificium. Et post ostiũ & postẽ posuisti me-
moriale idolorum tuorum : similis fuisti mulieri quæ diligitur à marito, &
fornicatur post extraneos : dilatâsti *locũ domus habitaculi tui*,& pepigisti ta-
cũ eis *fœdus*;dilexisti *locũ domus cubiculi* eorum : locum elegisti. Cùm ex-
quereris Legẽ,prospera eras in regno: & cùm multiplicares tibi opera bo-
na, multiplicatus est exercitus tuus,& misisti nuntios tuos procul,& depres-
sisti fortitudinem populorum usq; ad infernũ. In magnitudine viæ tuæ la-
borâsti: non dixisti, Convertar : divitias multas *multiplicâsti*, propterea
non sperâsti quòd ageres pœnitentiam. De quo enim anxia es? & quem ti-
muisti? quia multiplicâsti loqui mendacia, & cultus mei non es recordata,
nec posuisti timorẽ mei in corde tuo: nónne ego dedi terminũ à seculo, ut
convertaris ad Legẽ meã?& non es conversa in conspectu meo. Ego enim
indicavi tibi opera bona,quæ essent justa tibi;& tu multiplicâsti opera ma-
la, quæ non proderũt tibi. Clama nunc,si salvabunt te opera mendacia, in
quibus laborâsti ab infantia tua; & omnia illa tollet ventus;erunt quasi nihi-
lũ: qui autẽ confidit in verbo meo, possidebit terrã, & hæreditabit montẽ
sanctũ meũ. Et dicet:Docete & admonete, præparate cor populi in viam re-
ctã; auferte offendiculum impiorum de via cœtus populi mei. Quia sic
dicit excelsus & elevatus qui habitat in cœlis, & sanctum nomen ejus: in
excelso habitans & sancta majestas ejus,dixit se liberaturum contritos corde
& humiles spiritu,et vivificaturum spiritum humilium, & suscitaturum cor
contritorũ: Quia non in æternũ ulciscar in judicio,nec in perpetuũ erit fu-
ror meus:quoniã spiritũ mortuorũ ego *restituã*,& spiramenta ego feci. Ob
peccata pecuniæ eorũ quã vi abstulerunt, fuit furor meus super eos, & per-
cussi eos:subduxi majestatẽ meam ab eis,& transmigrare feci eos; dispersi
captivitatẽ eorũ, eò quòd erraverunt post cogitationes cordis sui. Via con-
versionis eorũ revelata est corã me,& peperci eis,et misertus sum eorũ, &
reddidi consolationẽ eis, et his qui lugebant super eos. Qui creavi eloquium
labiorũ in ore omniũ hominũ : dixit Propheta:Pax fiet justis,qui custodie-
runt Legẽ meã ab initio,et pax fiet his qui convertentur ad Legẽ meã. Pro-
pè est,dicit Dñs,ut dimittam eis. Impii autem sunt quasi mare commotum
quod quærit quiescere et non potest; et faciunt aquæ ejus cœnũ et lutum.
Non est pax impiis, dicit Deus.

CAP. LVIII.

Clama in gutture tuo Propheta, ne cesses : quasi vocẽ tubæ exalta vo-
cem tuam, et annuntia populo meo scelera eorum, et domui Jacob pec-
cata eorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܥܠ ܛܘܪܐ ܪܡܐ . ܘܡܥܠܝܐ ܣܡܬܝ ܡܫܟܒܟܝ. ܐܦ ܠܬܡܢ ܣܠܩܬܝ ܠܡܕܒܚܘ
ܕܒ̈ܚܐ. * ܘܒܬܪ ܬܪ̈ܥܐ ܥܠ ܦܪܘܣܬܕܐ ܓܠܦܬܝ ܕܘܟܪܢܟܝ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܠܘܬܝ ܓܠܝܬܝ 8
ܘܣܠܩܬܝ. ܘܐܪܘܚܬܝ ܡܫܟܒܟܝ . ܘܗܘܝܬܝ ܠܟܝ ܡܢܗܘܢ. ܘܪܚܡܬܝ ܡܫܟܒܗܘܢ.
* ܘܐܬܪܐ ܚܙܝܬܝ . ܘܐܫܬܒܚܬܝ ܠܡܠ̈ܟܐ ܒܡܫܚܐ. ܘܐܣܓܝܬܝ ܒܣ̈ܡܢܝܟܝ. ܘܫܕܪܬܝ 9
ܐܝܙܓܕ̈ܝܟܝ ܠܪܘܚܩܐ. ܘܐܬܡܟܟܬܝ ܥܕܡܐ ܠܫܝܘܠ. * ܒܣܘܓܐ ܕܐܘܪ̈ܚܬܟܝ ܠܐܝܬܝ 10
ܘܠܐ ܐܡܪܬܝ ܕܐܫܠܐ. ܒܚܘܒܐ ܕܐܝ̈ܕܝܟܝ ܐܚܠܕܬܝ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܠܐ ܐܬܟܫܦܬܝ. * ܡܢ ܡܢ 11
ܐܬܕܚܠܬܝ ܘܐܬܪܗܒܬܝ . ܕܟܕܒܬܝ ܒܝ. ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܬܝܢܝ ܘܠܐ ܣܡܬܝܢܝ ܒܠܒܟܝ. ܗܐ
ܐܢܐ ܗܘ ܩܕܝܫܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܘܡܢܝ ܠܐ ܕܚܠܬܝ. * ܐܢܐ ܐܚܘܐ ܙܕܝܩܘܬܝ . ܘܥܒ̈ܕܝܟܝ ܠܐ 12
ܢܘܬܪܘܢܟܝ. * ܟܕ ܩܥܝܬܝ ܢܦܨܘܢܟܝ ܐܝܠܝܢ ܕܡܬܟܢܫܝܢ ܠܘܬܟܝ. ܠܟܠܗܘܢ. ܢܫܩܘܠ ܐܢܘܢ 13
ܪܘܚܐ . ܘܢܫܒ ܐܢܘܢ ܥܠܥܠܐ . ܘܐܝܠܝܢ ܕܡܣܒܪܝܢ ܒܝ ܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ. ܘܢܐܪܬܘܢ
ܛܘܪ ܩܘܕܫܝ * ܘܢܐܡܪܘܢ. ܟܒܫܘ ܟܒܫܘ ܦܢܘ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܪܝܡܘ ܬܘܩܠܬܐ ܡܢ ܐܘܪܚܗ 14
ܕܥܡܝ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܪܡܐ ܘܡܥܠܝܐ . ܕܫܪܐ ܠܥܠܡܝܢ. ܘܩܕܝܫ ܫܡܗ. 15
ܡܪܘܡܐ ܘܩܕܝܫ ܡܥܡܪܗ. ܠܡܟ̈ܝܟܐ ܘܬ̈ܒܝܪܝ ܪܘܚܐ. ܠܡܚܝܘ ܪܘܚܐ ܕܡܟ̈ܝܟܐ.
ܘܠܡܚܝܘ ܠܒܐ ܕܬ̈ܒܝܪܐ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܠܥܠܡ ܐܬܚܡ ܐܢܐ . ܘܠܐ ܠܥܠܡ ܪܓܝܙ ܐܢܐ. 16
ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܡܢ ܩܕܡܝ ܢܦܩܐ. ܘܢܫܡܬܐ ܐܢܐ ܥܒܕܬ. * ܡܛܠ ܚܛܗܐ ܕܢܟܠܗ ܐܬܚܡܬ ܘܡܚܝܬܗ 17
ܘܐܬܚܡܬ ܬܘܒ. ܘܐܙܠ ܬܢܚܬܗ ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܒܗ. * ܘܐܘܪ̈ܚܬܗ ܚܙܝܬ 18
ܘܐܣܝܬܗ. ܘܒܝܐܬܗ. ܘܐܬܦܢܝܬ ܘܝܗܒܬ ܒܘܝܐܐ ܠܗ ܘܠܐܒܝ̈ܠܘܗܝ. * ܘܐܬܒܪܝ ܡܡܠܐ 19
ܕܣܦܘ̈ܬܐ. ܫܠܡܐ ܫܠܡܐ ܠܪ̈ܚܝܩܐ ܘܠܩ̈ܪܝܒܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܣܝ ܐܢܘܢ. * ܘܪ̈ܫܝܥܐ 20
ܐܝܟ ܝܡܐ ܢܬܬܙܝܥܘܢ. ܡܛܠ ܕܫܠܝܐ ܠܐ ܡܫܟܚܝܢ. ܘܡܪܡܝܢ ܡ̈ܝܘܗܝ ܪ̈ܚܫܐ ܘܣܝܢܐ.
ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܫܠܡܐ ܠܪ̈ܫܝܥܐ. ܐܡܪ ܐܠܗܝ. * ܟܠܗ ܡܠܬܐ ܠܟܐܢ̈ܐ 21
ܐܡܪ ܐܠܗܝ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܢܚ *
* ܩܪܝ ܒܓܪܓܪܬܟ . ܘܠܐ ܬܚܘܣ. ܐܪܝܡ 1
ܩܠܟ ܐܝܟ ܫܝܦܘܪܐ . ܘܚܘܐ ܠܥܡܝ ܥܘܠܗܘܢ. ܘܠܒܝܬ ܝܥܩܘܒ ܚܛܗ̈ܝܗܘܢ.

Super montes altos & ſublimes poſuiſti cubile 7
tuum, & illuc aſcendiſti ad mactandas victimas.
Et poſt januas ſuper paraſtades ſculpſiſti 8
memoriam tuam. Migrans enim à me
aſcendiſti, & ampliâſti cubile tuum, facta es
ex eis (*i. ad eos deſciviſti*) & amâſti concubitum
eorum. Et occaſionē videns, laudabilē 9
te reddidiſti apud reges per unguentum, multiplicâſti
odores tuos, miſiſti nuntios tuos in
longinquum, & humiliata es ad infernum uſque.
Copiâ viarum tuarum laborâſti, nec tamē 10
dixiſti, Ceſſabo: culpâ manuum tuarū contraxiſti
rubiginē, ideo non ſupplicas. Quem 11
timeres aut metueres, quandoquidē me denegâſti,
nec meminiſti mei, nec æſtimas me in
corde tuo? ecce ego ſanctꝰ ſum ab æterno, me
tamē non times. Ego oſtendā *tibi* juſtitiā meā, 12
& facta tua nequaquā proderunt tibi. Cùm 13
clamaveris, eripiéntne te qui congregantur
ad te? hos *quidem* omnes aſportabit ventꝰ, &
abripiet turbo: illi verò qui ſperant in me,
poſſidebunt terrā, & poſſidebunt montē ſanctum
meum: Et dicent, Complanate, complanate, 14
reſtituite viā, & auferte offendicula
ex itinere populi mei. Sic enim dicit ſublimis 15
& excelſus, habitans in æternum, cujus
nomē ſanctum eſt, cujꝰ habitaculum altum eſt
& ſanctum, ad humiles & afflictos animo;
Vivificabo ſpiritum humilium, & cor dolentium
vivificabo. Nam non in perpetuum ſuccenſebo, 16
nec in perpetuum iraſcar: quoniam
ſpiritꝰ à me prodit, & aurā *vitalem* ego feci.
Propter crimē fraudis ejꝰ iratꝰ ſum & percuſſi 17
eā: iterum quoq; ſum iratꝰ, & abiit ſuſpiriū
ejꝰ in via cordis ipſius. Vias ejus conſiderans 18
curavi eā et conſolatus ſum eā, & repédi conſolationē
ipſi & lugentibꝰ ejꝰ. Creatus eſt ſermo 19
labiorum, Pacē, pacē longinquis & propinquis,
inquit Dn̄s, & curabo eos. Improbi 20
verò ceu mare agitabuntur (nam quietē nunquā
reperient) cujus aquæ reptilia atque cœnum
volutant. Nulla pax eſt improbis, inquit 21
Deus meus.

CAP. LVIII.

Clama ex gutture tuo, & ne parcas; attolle 1
vocem tuam inſtar tubæ, & indica populo
meo iniquitatem ſuam, et familiæ Jacobi
peccata ſua.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* على جبل عال وشاهق هناك مضجعك * وهناك اصعدت الذبائح * وخلف قوايم بابك 8
وضعت ذكراناتك * واه لانك ان بعدت عني يكون لك بالاكثر * احببت المضطجعين
معك * وكثرت زناك معهم * وصنعت كثيرين الذين منك بعيدا * وارسلت شفعاء فوق 9
حدودك * ورجعت وذليت الى الجحيم * تعبت في طرقاتك الكثيرة * ولم تقولي اكف انا 10
القوية * لانك فعلت هذه لاجل هذا لم تطلبيني * انت لمن تخشي * خفت وكذبتيني * ولم 11
تذكريني * ولا احدثتني في عبير فهمك ولا في قلبك * وانا اراك واتغافل ولم تخافيني
* انا اخبر بعدلي وشرورك التي لا تنفعك * اذا صرخت لينقذوك في ضيقتك * لان 12 13
هاولاء كلهم ياخذهم الريح ويخرقهم العاصف * والذين يتمسكون بي يقنون الارض
ويرثون جبلي المقدس * ويقولون طهروا السبل من وجهه * وارفعوا العثرات من طريق 14
شعبي * هكذا يقول الرب العلي الساكن في الاعالي الى الابد * القدوس في القديسين 15
اسمه الرب العالي * المستريح في القديسين * والمعطي طول الاناة لصغيري الانفس * المعطي
الحياة للمنكسري القلب * لا انتقم منكم الى الابد * ولا اغضب عليكم كل حين * لان 16
روحا مني ينبثق * وكل نسمة انا صنعت * لاجل خطية قليلة اغضبته وضربته وصرفت 17
وجهي عنه * تحزن ومضى مغمسا في طرقه * رايت طرقه وشفيته وعزيته واعطيته عزا 18
حقيقيا * سلامة على سلامة للبعداء والقرباء * وقال الرب اشفيهم * والظالمون هكذا يغرقون 19 20
ولا يستطيعون ان يسكنوا * وليس للمنافقين سلام قال الرب الاله * 21

* الفصل الثامن والخمسون *

* اصرخ بقوة ولا تشفق * مثل بوق ارفع صوتك * اخبر شعبي بخطاياهم * وبيت يعقوب باثامهم 1

Super montem excelſum & elevatum, illic 7
eſt cubile tuum, ibique ſacrificia obtuliſti;
Et poſt antes oſtii tui collocâſti monimenta 8
tua. Heu, ſi receſſeris à me,
tuâ potiùs intererit: amâſti concumbentes
tecum, & ſcortationem tuam cum
iis multiplicâſti. Multos qui ex te 9
erant, procul egiſti, & advocatos miſiſti
ultra terminos tuos, demum reverſa
dejecta es ad infernum uſque. Fatigata 10
in viis tuis multiplicibus non dixiſti,
Abſtinebo ego fortis. Quoniam hæc
feciſti, propterea me non curâſti. Tu 11
quem formidas? timuiſti, & negâſti
me, non es mei recordata, & ne mentis
quidem tuæ ratiocinatione aut corde
tuo de me cogitâſti: quia te videns conniveo,
non me times. Ego indicabo 12
juſtitiam meam & ſcelera tua, quæ non
proderunt tibi, Cùm clamaveris ut liberent 13
te in anguſtia tua: quoniam hos
omnes abripiet ventus, et turbo diſrumpet:
at verò qui mihi adhæſerint, poſſidebunt
terram, & hæreditario jure obtinebunt
montem ſanctum meum: Et dicent, 14
Emundate ſemitas ante faciem
ejus, & tollite offendicula de via
populi mei. Sic ait Dominus altiſſimus 15
qui in excelſis habitat in æternum
uſque, Sanctus inter ſanctos, cujus nomen
eſt Dominus altiſſimus, qui requieſcit in
ſanctis, qui dat longanimitatem puſillanimis,
qui dat vitam conſternatis animo;
Non ſumam à vobis vindictam 16
in æternum, neque ſemper iraſcar vobis.
Nam ſpiritus qui à me procedit, &
halitus omnis quem ego feci, Cui parvum 17
ob aliquod peccatum ſuccenſuerim,
percuſſerim eum, & faciem ab eo
meam averterim; ſi doluerit, & mœſtus
inceſſerit in viis ſuis: Videbo vias 18
ejus, curabo eum, & conſolabor eum,
daboque illi conſolationem veram; Pacem 19
ſuper pacem tam remotis quàm
propinquis. Dixit etiam Dominus, Curabo
eos. Pari modo ſceleſti demergentur, 20
nec poterunt quieſcere, Nec erit 21
pax impiis, ait Dominus Deus.

CAP. LVIII.

Clama validè, & ne parcas; quaſi
buccina attolle vocem tuam, annuntia populo
meo peccata ſua, & domui Jacob
ſcelera ſua.

ישעיה : נח

gens velut : volent meas vias ſcire & , quærent *die die* me Et
2 ואותי יום יום ידרשון ודעת דרכי יחפצון כגוי
,dereliquerit non ſui Dei judicium & ,fecerit juſtitiam quæ
אשר־צדקה עשה ומשפט אלהיו לא עזב
.volent Dei appropinquationē ,juſtitiæ judicia me interrogabunt
ישאלוני משפטי־צדק קרבת אלהים יחפצון׃
? neſciſti & ,noſtrā animā affliximus ? vidiſti non & ,jejunavimus quid Ut
3 למה צמנו ולא ראית ענינו נפשנו ולא תדע
veſtros labores omnes & , *voluntatem* invenietis *vos jejunare* diein Ecce
הן ביום צמכם תמצאו־חפץ וכל־עצביכם
percutiendum ad & ,*jejunabitis* contentionem & ,*litem* ad Ecce .*exigatis*
תנגשו׃ הן לריב ומצה תצומו ולהכות
4 excelſo in *faciendum audire ad* die ſicut jejunetis non : impiè pugno in
באגרף רשע לא־תצומו כיום להשמיע במרום
hominem affligere die ,*illud* elegi jejunium *erit hoc ſicut* Nunquid . veſtrā vocē
5 קולכם׃ הכזה יהיה צום אבחרהו יום ענות אדם
ſaccum & ,ſuum caput juncum ſicut *incurvandum ad num* ? ſuam animam
נפשו הלכף כאגמן ראשו ושק
beneplaciti diem & ,jejunium vocabis iſtud Nunquid ? ſternat cinerem &
ואפר יציע הלזה תקרא־צום ויום רצון
colligationes *ſolvere* ? *illud* elegi jejunium hoc Nonne ? Domino
6 ליהוה׃ הלוא זה צום אבחרהו פתח חרצבות
, liberos contritos *dimittere &* , jugi faſciculos *ſolvere* ,impietatis
רשע התר אגדות מוטה ושלח רצוצים חפשים
,tuum panem eſurienti *frangere* Nonne .diſrumpatis jugum omne &
7 וכל־מוטה תנתקו׃ הלוא פרס לרעב לחמך
,eū *operies* & ,nudum videris cùm ? domum introducas vagos *afflictos* &
ועניים מרודים תביא בית כי־תראה ערם וכסיתו
,tuā lumen aurora veluti erumpet Tunc .te abſcondas non tua carne à &
8 ומבשרך לא־תתעלם׃ אז יבקע כשחר אורך
gloria :tua juſtitia te coram ibit & : germinabit citò tua *medela* &
וארכתך מהרה תצמח והלך לפניך צדקך כבוד
,clamabis : exaudiet Dominus & ,invocabis Tunc .te colliget Domini
9 יהוה יאספך׃ אז תקרא ויהוה יענה תשוע
,digitum *mittendo* ,jugum tui medio de removeris Si .*ego* ecce ,dicet &
ויאמר הנני אם־תסיר מתוכך מוטה שלח אצבע
, tuam *animam* famelico protuleris Et .iniquitatem *loquendo* &
10 ודבר־און׃ ותפק לרעב נפשך
, tua lux *tenebroſitate* in orietur & : ſaturaveris afflictam animam &
ונפש נענה תשביע וזרח בחשך אורך
, ſemper Dominus te ducet Et .meridies ſicut , tua caligo &
11 ואפלתך כצהרים׃ ונחך יהוה תמיד
: impinguabit tua oſſa & ,tuam animam ſiccitatibus in faciet ſaturari &
והשביע בצחצחות נפשך ועצמתיך יחליץ
non cujus , aquarum *exitus* ſicut & ,irriguus hortus veluti eris &
והיית כגן רוה וכמוצא מים אשר לא
fundamenta ,ſeculi deſerta te à ædificabunt Et .*ejus* aquæ *mentientur*
12 יכזבו מימיו׃ ובנו ממך חרבות עולם מוסדי
ſepiens *tibi* *vocabitur* & : facies ſtare generationis & generationis
דור־ודור תקומם וקרא לך גדר
feceris redire Si .habitandum ad ſemitas faciens reverti ,fracturam
13 פרץ משובב נתיבות לשבת׃ אם־תשיב
: *meæ ſanctitatis* die in *tuam voluntatem faciendo* , *tuum pedem* ſabbatho à
משבת רגלך עשות חפצך ביום קדשי
: glorioſum Domini ſanctum , delicias ſabbathum vocaveris &
וקראת לשבת ענג לקדוש יהוה מכבד
,*tuam voluntatem inveniendo ab* ,tuas vias *faciendo à* ,ipſum glorificaveris &
וכבדתו מעשות דרכיך ממצוא חפצך
.verbum *loquendo &*
ודבר דבר׃

Verſio VULG. LAT.

2 Me etenim de die in diem
quærunt, et ſcire vias meas volunt :
quaſi gens, quæ juſtitiam
fecerit, et judiciũ Dei ſui non
dereliquerit : rogant me judicia
juſtitiæ : appropinquare
3 Deo volunt. Quarè jejunavimus,
et non aſpexiſti : humiliavimus
animas noſtras, et
neſciſti ? Ecce in die jejunii
veſtri invenitur voluntas veſtra,
et omnes debitores ve-
4 ſtros repetitis. Ecce ad lites
& contentiones jejunatis, &
percutitis pugno impiè. Nolite
jejunare ſicut uſq; ad hanc
diem, ut audiatur in excelſo
5 clamor veſter. Numquid tale
eſt jejuniũ ꝙ elegi, ꝑ diem
affligere hominē animam ſuã?
numquid contorquere quaſi
circulũ caput ſuũ, & ſaccũ &
cinerem ſternere ? numquid
iſtud vocabis jejuniũ, & diem
6 acceptabilē Dño? Nónne hoc
eſt magis jejunium, ꝙ elegi ?
diſſolve colligationes impietatis,
ſolve faſciculos deprimentes ;
dimitte eos, qui confracti
ſunt , liberos, & omne
7 onus dirumpe. Frange eſurienti
panem tuũ , & egenos vagóſq;
induc in domũ tuam :
cùm videris nudũ, operi eum,
& carnem tuã ne deſpexeris.
8 Tunc erumpet quaſi manè lumen
tuũ, & ſanitas tua citiùs
orietur , & anteibit faciē tuã
juſtitia tua, et gloria Dñi col-
9 liget te. Tunc invocabis, &
Dñs exaudiet : clamabis, &
dicet ; Ecce adſũ : ſi abſtuleris
de medio tuî catenã, & deſieris
extendere digitũ, & lo-
10 qui ꝙ non prodeſt. Cũ effuderis
eſurienti animã tuã, & animã
afflictã repleveris, orietur
in tenebris lux tua, & tenebræ
11 tuæ erunt ſicut meridies. Et
requiē tibi dabit Dñs ſemꝑ, &
implebit ſplendoribus animã
tuam, & oſſa tua liberabit, &
eris quaſi hort⁹ irrigu⁹, & ſicut
fons aquarũ, cuj⁹ non defi-
12 cient aquæ. Et ædificabuntur in
te deſerta ſeculorũ : fundamenta
generationis & generationis
ſuſcitabis : & vocaberis
ædificator ſepiũ, avertens ſe-
13 mitas in quietē. Si averteris à
ſabbato pedē tuũ , facere voluntatē
tuã in die ſancto meo,
& vocaveris ſabbatũ delicatũ,
et ſanctũ Dñi glorioſũ, et
glorificaveris eũ dũ non facis
vias tuas, et non invenitur volũtas
tua, ut loquaris ſermonē :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

2 Ἐμὲ ἡμέραν ἐξ ἡμέρας (α) ζητοῦσιν, καὶ
γνῶναί μου τὰς ὁδοὺς ἐπιθυμοῦσιν, ὡς λαὸς
δικαιοσύνην (β) πεποιηκὼς, καὶ κρίσιν Θεοῦ
αὐτοῦ μὴ ἐγκαταλελοιπώς. αἰτοῦσί με νῦν
κρίσιν δικαίαν, καὶ ἐγγίζειν Θεῷ ἐπιθυμοῦ-
3 σι, λέγοντες, Τί ὅτι ἐνηστεύσαμεν, καὶ οὐκ
εἶδες; ἐταπεινώσαμεν τὰς ψυχὰς ἡμῶν,
καὶ (γ) οὐκ ἔγνως; ἐν γὰρ ταῖς ἡμέραις τῶν νηστειῶν
ὑμῶν εὑρίσκετε τὰ θελήματα ὑμῶν,
καὶ πάντας τοὺς ὑποχειρίους ὑμῶν ὑπονύσ-
4 σετε. (δ) Εἰ εἰς κρίσεις καὶ μάχας νηστεύετε,
καὶ τύπτετε πυγμαῖς ταπεινὸν, ἱνατί μοι
νηστεύετε ὡς σήμερον, ἀκουσθῆναι ἐν κραυ-
5 γῇ τὴν φωνὴν ὑμῶν; Οὐ ταύτην τὴν νηστείαν
ἐξελεξάμην, καὶ ἡμέραν ταπεινοῦν ἄνθρωπον
τὴν ψυχὴν αὐτοῦ. οὐδ᾽ ἂν κάμψῃς ὡς
κρίκον τὸν τράχηλόν σου, καὶ σάκκον καὶ σποδὸν
ὑποστρώσῃ, οὐδ᾽ (ε) οὕτω καλέσετε
6 νηστείαν δεκτήν. Οὐχὶ τοιαύτην νηστείαν (ζ)
ἐξελεξάμην, λέγει κύριος· ἀλλὰ λῦε πάντα
σύνδεσμον ἀδικίας, διάλυε στραγγαλιὰς
βιαίων συναλλαγμάτων, ἀπόστελλε τεθραυσμένους
ἐν ἀφέσει, καὶ πᾶσαν συγγραφὴν
7 ἄδικον διάσπα. Διάθρυπτε πεινῶντι
τὸν ἄρτον σου, καὶ πτωχοὺς ἀστέγους εἴσαγε εἰς τὸν
οἶκόν σου· ἐὰν ἴδῃς γυμνὸν, περίβαλε, καὶ
ἀπὸ τῶν οἰκείων τοῦ σπέρματός σου οὐχ (´) ὑπερ-
8 όψει. Τότε ῥαγήσεται πρώϊμον τὸ φῶς
σου, καὶ τὰ ἰάματά σου ταχὺ ἀνατελεῖ· καὶ
προπορεύσεται ἔμπροσθέν σου ἡ δικαιοσύ-
9 νη σου, καὶ ἡ δόξα τοῦ Θεοῦ περιστελεῖ σε. Τότε
βοήσῃ, καὶ ὁ Θεὸς εἰσακούσεταί σου, ἔτι
λαλοῦντός σου ἐρεῖ, Ἰδοὺ πάρειμι. ἐὰν ἀφέλῃς
ἀπὸ σοῦ σύνδεσμον, καὶ χειροτονίαν,
10 καὶ ῥῆμα γογγυσμοῦ, Καὶ δῷς πεινῶντι τὸν
(η) ἄρτον ἐκ ψυχῆς σου, καὶ ψυχὴν τεταπεινωμένην
ἐμπλήσῃς, τότε ἀνατελεῖ ἐν
τῷ σκότει τὸ φῶς σου, καὶ τὸ σκότος σου
11 ὡς μεσημβρία, Καὶ ἔσται ὁ Θεός (") σου μετὰ σοῦ
διαπαντός· καὶ ἐμπλησθήσῃ καθάπερ ἐπιθυμεῖ
ἡ ψυχή σου, καὶ τὰ ὀστᾶ σου πιανθήσεται·
καὶ ἔσται ὡς κῆπος μεθύων, καὶ ὡς
12 πηγὴ ἣν μὴ ἐξέλιπεν ὕδωρ· (θ) Καὶ οἰκοδομηθήσονταί
σου αἱ ἔρημοι αἰώνιοι, καὶ ἔσται
(ι) τὰ θεμέλιά σου αἰώνια γενεῶν γενεαῖς,
καὶ κληθήσῃ οἰκοδόμος φραγμῶν, καὶ (κ)
13 τὰς τρίβους σου ἀναμέσον παύσεις. Ἐὰν
ἀποστρέψῃς τὸν πόδα σου ἀπὸ τῶν σαββάτων,
τοῦ μὴ ποιεῖν τὰ θελήματά σου ἐν τῇ ἡμέρᾳ
τῇ ἁγίᾳ, καὶ καλέσεις τὰ σάββατα
τρυφερὰ, ἅγια τῷ (λ) Θεῷ· οὐκ ἀρεῖς τὸν
πόδα σου ἐπ᾽ ἔργῳ, οὐδὲ λαλήσεις λόγον
ἐν ὀργῇ ἐκ τοῦ στόματός σου,

MS.A. (α) ζητήσουσιν, (β) Θεοῦ (γ) οὐ προσέσχες; (δ) Εἰς κρίσεις (ε) (ζ) ἐγὼ ἐξελεξάμην, (´) ὑπερόψῃ. (η) ἄρτον σου (") σου διαπαντός (θ) καὶ τὰ σου ὡς βολάνη ἀνατελεῖ, καὶ πιανθήσεται, καὶ κληρονομήσουσι γενεὰς γενεῶν. Καὶ οἰκοδομηθήσονταί (ι) σου τὰ θεμέλια (κ) τοὺς τρίβους τοὺς ἀναμέσον (λ) Θεῷ

Me de die in diem quærunt : & ſcire vias meas volunt, quaſi gens, quæ juſtitiam fecerit, & judicium Dei ſui non dereliquerit. Petunt me nunc judicium juſtum : & appropinquare Deo cupiunt, dicentes, Quarè jejunavimus, & non vidiſti ? humiliavimus animas noſtras, & non cognoviſti ? In diebus enim jejuniorum veſtrorum (a) invenitis voluntates veſtras : & omnes ſubjectos vobis affligitis. Si ad judicia & jurgia jejunatis, & percutitis pugnis humilem ; ut quid mihi jejunatis, ut hodie audiatur in clamore vox veſtra ? Non tale jejunium elegi, & diem humiliare hominem animam ſuam. Neque, ſi incurvaveris, quaſi circulum, collum tuum, & cilicium & cinerem ſubſtraveris ; nec ſic vocabitis jejunium (b) acceptabile. Non hoc jejunium elegi, dicit Dominus. Sed ſolve omnem colligaturam iniquitatis : diſſolve obligationes violentorum (c) contractuum : dimitte fractos in remiſſionem : & omnem ſcripturam iniquam conſcinde : Frange eſurienti panem tuum : & pauperes ſine tecto induc in domum tuam : ſi videris nudum, operi : & domeſticos ſeminis tui ne deſpexeris. Tunc erumpet matutinum lumen tuum : (d) ſanitates tuæ citò orientur : & præibit in conſpectu tuo juſtitia tua : & gloria Dei circumdabit te. Tunc clamabis, & Deus exaudiet te : adhuc loquente te dicet ; Ecce adſum. Si abſtuleris à te colligationem, & (e) ordinationem, & verbum murmurationis : Et dederis eſurienti panem ex anima tua, & animam humiliatam ſaturaveris ; tunc orietur in tenebris lumen tuum : & tenebræ tuæ erunt ſicut meridies : Et erit Deus tuus tecum ſemper : & implêberis, ſicut deſiderat anima tua : & oſſa tua pingueſcent : & erunt, ſicut hortus ebrius, & ſicut fons, cui non defecit (f) aqua. Et ædificabuntur tibi deſerta à ſeculo : et erunt fundamenta tua ſempiterna generationum generationibus : et vocaberis ædificator ſepium : et ſemitas tuas in medio quieſcere facies. Si averteris pedem tuum à ſabbatis ; ut non facias voluntates tuas in die ſancto, et vocabis Sabbata delicata, ſancta Deo : Non tolles pedem tuum ad opus ; neque loquêris verbum in ira de ore tuo :

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 וקדמי יום יום אולפן תבעין כאלו למדע אורחן דתקנן קדמי צבן כעמא דזכו עבד ומדין
אלהיה לא אתרחק שאלין מן קדמי דין וקשוט כאלו לאתקרבא לדחלתא דיי צבן׃
3 אמרין למא אנחנא צימין וקדמך גלי מסגפין נפשתנא וקדמך ידיע נביא אמר להון
4 הא ביום תעניתכון אתון תבעין צרכיכון וכל תקלתכון אתון מקרבין׃ הן לתחרו
ולמצו אתון צימין ולממחי בכורמיזא דרשעא לא תתענון תענין כאלין לאשמעא
5 במרומא קלכון׃ ההדא הוא תעניתא דרעינא בה יומא דמסגף אנשא נפשיה כפיף
רישיה כאגמון כפיף ועל סקא וקטמא באת הלדא אתון קרן תענית ויומא דרעוא ביה
6 מן קדם יי׃ הלא דא היא תעניתא דרעינא בה פרדו כנישת רשעא שרו קטרי כתבי דין
7 מסטי ופטרו דהוו אנסין בני חורין וכל דין מסטי תסלקון׃ הלא תפרנס לכפנא
מלחמך וחשיכין מטלטלין תעל לגו ביתא ארי תחזי ערטלאה ותכסניה ומקריב
8 בשרך לא תכבוש עינך׃ בכן יתגלי כשפרפרא נהורך ואסות מחתך בפריע תסק ויהכון
9 קדמך זכותך ביקר מן קדם יי תתכנש׃ בכן תצלי ויי יקבל צלותך תבעי מן קדמוהי
10 ויעבד בעותך אם תעדי מבינך אסטיות דין מרמז באצבע וממלל מלן דאונס׃ ותתפח
קדם כפנא נפשך ונפש מסגפא תסבע וידנח בחשוכא נהורך וקבלך יהי כטיהרא׃
11 וידברנך יי תדירא ויסבע בשני בצורתא נפשך וגופך יחיי בחיי עלמא ותהי נפשך
12 מליא תפנוקין כגנת שקיא דמרויא וכמבוע דמיין דלא פסקין מוהי׃ ויבנון מנך
חרבת עלם יסודי דר ודר תקומם ויקרון לך מקים אורחא דתקנא מתיב
13 רשיעיא לאוריתא׃ אם תתיב משבתא רגלך למעבד צורכך ביומא דקודשי
ותערע לשבתא בתפנוקין לקדישא דיי תיקר ותיקר קדמוהי מלמעבד אורחך מלספקא
צורכך ומללא מלין דאונס׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

A facie enim mea de die in diem doctrinam quærunt, ac ſi cupiant ſcire vias quæ rectæ ſunt coram me : ſicut populus qui juſtitiam fecit, & à judicio Dei ſui non receſſit ; interrogant à facie mea judicium *et veritatē* ac ſi vellent accedere ad timorem Domini. *Dicunt*, Quare nos jejunamus, & coram te manifeſtum eſt ; affligimus animas noſtras, & coram te notum eſt ? Propheta *dic* eis : Ecce die jejunii veſtri vos quæritis quæ neceſſaria ſunt vobis, & omnia offendicula veſtra vos adducitis. Ecce ad litem & contentionem vos jejunatis, & ad percutiendum pugno impietatis : ne jejunetis talia jejunia, ut audiatur in excelſis vox veſtra. Hoccine eſt jejunium quod volui : per diem in quo affligit homo animam ſuam ; incurvare caput ſuum ſicut circulum curvum, & in ſacco & in cinere *pernoctare* ? numquid hoc vos vocatis jejunium, & diem acceptabilem à facie Dñi ? Nónne hoc eſt magis jejunium quod elegi ? Separate congregationem impietatis, ſolvite colligationes ſcripturarum judicii depravati, & dimittite eos qui vim patiuntur liberos : denique omne judicium depravatum auferetis. Suſtentabis utique eſurientem pane tuo, & pauperes tranſmigrantes, introduces in domum tuam : cùm videris nudũ, operies eum ; & à proximo carnis tuæ non avertes oculos tuos. Tunc revelabitur quaſi manè lumen tuũ, & ſanitas plagæ tuæ citò creſcet : & ibunt ante te juſtitiæ tuæ : in gloriâ à facie Dñi colligêris. Tunc orabis, & Dñs ſuſcipiet orationē tuam : deprecaberis in conſpectu ej⁹, & faciet deprecationē tuam. Si abſtuleris de medio tui corruptelam judicii, annuentē digito, & loquentē verba rapinæ : Et effuderis corã famelico animã tuã, & animã afflictã ſaturaveris : & orietur in tenebris lux tua, & caligo tua erit ſicut meridies. Et deducet te Dñs ſemp. & ſatiabit animã tuã in annis ſiccitatis : & corp⁹ tuum vivificabit in vita æterna & erit anima tua plena deliciis, quaſi hort⁹ irrigu⁹ qui inebriatus eſt, & ſicut fons aquarũ cuj⁹ aquæ nō deficiũt Et ædificabuntur ex te deſerta ſeculi : fundamenta generationis & generationis ſuſcitabis : et vocabunt te confirmantē viã rectã, convertentē impios ad Legē. Si averteris à Sabbatho pedē tuũ, ut nō facias neceſſaria tua in die ſancto meo : et vocaveris Sabbathũ deliciis, et ſanctũ Dñi honoratis, et honore affeceris eũ ne facias viã tuam, neq; provideas in eo quæ tibi neceſſaria ſũt ; nec loquaris verba violentiæ

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܝ ܟܠܝܘܡ ܒܥܝܢ. ܘܨܒܝܢ ܠܡܕܥ ܐܘܪܚܬܝ. ܐܝܟ ܥܡܐ ܕܥܒܕ ܙܕܝܩܘܬܐ ܘܠܐ ܫܒܩ
ܕܝܢܐ ܕܐܠܗܗ. ܫܐܠܝܢ ܡܢܝ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܨܒܝܢ ܠܡܬܩܪܒܘ ܠܐܠܗܐ. * ܠܡܢܐ
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

Etenim quotidie me requirunt, & ſcire vo- 2
lunt vias meas: velut popul⁹ qui exercuit ju-
ſtitiã, nec dereliquit jus Dei ſui, petunt à me ju-
diciũ & juſtitiã, & accedere volunt ad Deum.
Quare dum jejunam⁹, non reſpicis? dum ani- 3
mam noſtrã humiliam⁹, tu ignoras? Ecce in die
jejunii veſtri cupiditatib⁹ veſtris indulgetis, &
afflictis cuncta idola veſtra. En ad jurgium & 4
contentioné jejunatis, & ad percutiendũ ini-
quiſſimâ cum violentiâ. Ne jejunetis ut hodie,
ut audiri faciatis vocẽ veſtrã in excelſo. Num 5
hujuſmodi jejunium eſt quod elegi, ut *ſcilicet*
humiliet quis animã ſuam, incurvet collum
ſuũ ut hamũ, & ſacco atque cinere ſeipſũ do-
met? num iſtud appellatis jejunium & diem
Dño gratum? Hoc eſt jejunium quod elegi; ut 6
ſolvas nex⁹ iniquitatis, & rumpas vincula frau-
dis, & ſubjectos in libertatem dimittas, omnia
denique vincula rumpatis: Frangas panẽ tu- 7
um eſurienti, peregrinum introducas domum
tuã, cùm videris nudum, operias illum, & non
negligas eãdem ac tu carne præditum. Tunc 8
aperietur velut aurora lux tua, & juſtitia tua
protinus eluceſcet, præcedet te juſtitia tua, &
majeſtas Dñi colliget te. Tunc vocabis, & re- 9
ſpondebit tibi Dñs; clamabis, & dicet, Ecce
me. Si tollas *inquam* è præcordiis tuis frau-
dem, ſubjectos dimittas, & à ſermone falſo re-
cedas; Des panem tuum eſurienti, & animam 10
eſurientem ſaties: ſplendeſcet lux tua in tene-
bris, & tenebræ tuæ ceu meridies: Reget te 11
ſemper Dominus, ſatiabit animam tuam de-
liciis, oſſa tua confirmabit, eriſque velut pa-
radiſus irriguus, & ut fons aquarum cujus
aquæ nunquam deficiunt: Ædificabunt ex 12
te ruinas quæ à ſeculo fuerunt, & fundamen-
ta generationum æternarum eriges: voca-
bunt te rupturarum inſtauratorem, & reſtitu-
torem ſemitarum in habitationem. Si avertas 13
pedem tuum à ſabbatho, quò minùs facias tu-
am voluntatem in die ſanctitatis meæ, ſabba-
thum appelles deliciis plenum & ſanctitatem
Domini honorandam, & honores illud ita ut
non fecteris in eo viam tuam, nec facias in eo
voluntatem tuam, nec verbum loquaris:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* يطلبوني يوما فيوما ويشتهون ان يعرفوا طرقي • مثل شعب صنع عدل الله ولم يترك 2
حكم الهه يسالوني الان حكما وعدلا ويشتهون ان يقتربوا لله * قايلين لماذا انا صمنا ولم 3
تر اذللنا انفسنا ولم تعلم • لان في ايام صوامكم تجدون ارادتكم وتعبدون جميع الذين
تحت ايديكم * تصومون للاحكام والمنازعات والخاصمات • وتضربون الذليل بعقد 4
انامكلكم • لماذا تصومون لي مثل اليوم • ليسمع صوتكم بصراخ * لست اختار انا هذا 5
الصوم ويوما ان يذل الانسان نفسه • ولو انك احنيت عنقك مثل الطوق وفرشت مسحا
ورمادا • فليس هكذا تدعون صوما مقبولا للرب * ليس هذا الصوم انا اخترته قال الرب 6
لكن حل كل رباط الظلم • فك عقد المعاملات الاقتسارية • ارسل المنكسرين بالتخلية •
وخرق كل مكتوب ظالم * فت خبزك للجايع • ادخل المساكين الذين لا سقف لهم 7
الى بيتك • ان رايت عريانا اكسه • ومن خواص زرعك لا تتغافل عنه * حينيذ ينفجر 8
نورك صبحيا • واشفيتك تشرق سريعا • ويتقدم عدلك قدامك • ومجد الله يجللك •
* حينيذ تصرخ والله يسمعك • واذ تتكلم يقول هانذا • وان نزعت عنك الرباط وقبض اليد 9
وكلمة التذمر * وتعطي للجايع خبزك من نفسك • وتشبع النفس الذليلة • حينيذ يشرق 10
في الظلمة نورك • وظلمتك مثل الظهر * ويكون الله معك كل حين • ويملي كما 11
تشتهي نفسك • وعظامك تتدسم وتكون كالبستان السكران ومثل الينبوع الذي لا
ينقطع ماوه • وعظامك تشرق مثل النبات • وتتدسم وترث جيل الاجيال * وتبني خرباتك 12
الدهرية • وتصير اساساتك الدهرية كجيل الاجيال • وتدعى باني السياجات • وتكف
السبل التي في الوسط * وان رددت رجلك عن السبوت ان لا تصنع ارادتك في اليوم 13
المقدس • وتدعوا السبوت المنعمة قدسا لالهك • لا ترفع قدميك بعمل ولا تتكلم كلمة
بغضب من فمك • وتكون متوكلا على الرب •

Quærunt me ſingulis diebus, & cupi- 2
unt ſcire vias meas : non ſecus ac
ſi eſſent populus faciens jus Dei, nec
deſerens judicium Dei ſui, petunt à
me nunc judicium & juſtitiam, & cu-
piunt accedere ad Deum : Dicentes, 3
Quare jejunantibus nobis, non reſpi-
cis? affligentibus animas noſtras, non
animadvertis? Quia in diebus jeju-
niorum veſtrorum adinvenitis cupidita-
tem veſtram, & opprimitis eos omnes
qui ſubditi ſunt vobis. Jejunatis ad 4
lites, jurgia, & contentiones, & humi-
lem percutitis nodis articulorũ digitorũ
veſtrorum. Cur jejunatis mihi ut ho-
die? an ut audiatur veſtra vox cum
clamore? Nequaquam eligo ego tale 5
jejunium & diem; quo quis affligat ani-
mam ſuam : etiamſi retorqueas col-
lum tuum veluti collare, ſternaſque cili-
cium ac cinerem; hujuſmodi tamen ne-
quaquam appellandum eſt à vobis jeju-
nium Domino jucundum. Tale jejunium 6
nequaquam elegi ego, ait Dominus : ſed
ſolve omnia vincula perverſitatis, reſcin-
de nexus contractuum violentorum: con-
fractos dimitte cum remiſſione, & la-
cera omne ſcriptum illicitum : Frange 7
panem tuum eſurienti, pauperes tecto
carentes induc in domum tuam: ſi videris
nudum, veſti eum; & præcipuis ſemi-
nibus tuis ne deſtituas eum. Tunc erum- 8
pet lux tua ut aurora rutilans, & ſa-
nitates tuæ protinus exorientur, præce-
det te juſtitia tua, & gloria Domini
illuſtrem te reddet : Tunc te clamantem 9
Deus exaudiet, & cùm loqueris, dicet,
Ecce me. Demum ſi amoveris à te li-
gamen, manu-captionem, & verbum de-
tractionis; Eſurienti panem tuum ex 10
animo tuo dederis, & animum dejectum
ſatiaveris; tunc fulgebit in tenebris lu-
men tuum, & tenebræ tuæ velut meri-
dies : Alet ſemper tibi Deus, & ex- 11
plebitur prout exoptabis, anima tua;
oſſa tua jucundabuntur, eriſque velut
hortus irriguus; & veluti fons cujus
aqua nunquam deficit : oſſa tua germi-
nabunt ſicut herba, delectaberis, &
poſſidebis generationem generationum :
Reſtaurabuntur ruinæ tuæ æternæ, & 12
atque fundamenta tua erunt in ævum
æviternum : vocaberis Ædificator ſepium,
& vias interjectas abolebis. Tandem ſi 13
avertens pedem tuum à ſabbathis, ita
ut non indulgeas cupiditati tuæ in die
ſacro; ſabbatha delicata, ſanctum Deo
tuo vocaveris, non extuleris pedem tuũ
ad opus: nullum verbum cum iracundia ex
ore tuo pronunciaveris; & Domino ſe-
curus fueris :

ישעיה : נט

: terræ excelsa super te faciam equitare & ,Domino in delectaberis Tunc
14 אָז תִּתְעַנַּג עַל־יְהוָה וְהִרְכַּבְתִּיךָ עַל־בָּמוֹתֵי אָרֶץ
Domini os quia ,tui patris Jahacob hæreditatem te faciam comedere &
וְהַאֲכַלְתִּיךָ נַחֲלַת יַעֲקֹב אָבִיךָ כִּי פִּי יְהוָה
.est locutum
דִּבֵּר׃

CAP. LIX. נט

se aggravavit nec : *salvando à* Domini manus est abbreviata non Ecce
1 הֵן לֹא־קָצְרָה יַד־יְהוָה מֵהוֹשִׁיעַ וְלֹא־כָבְדָה
dividentes fuerunt vestræ iniquitates *Quinimo .audiendo ab* ejus auris
2 אָזְנוֹ מִשְּׁמוֹעַ׃ כִּי אִם־עֲוֺנֹתֵיכֶם הָיוּ מַבְדִּלִים
fecerunt abscondere vestra peccata & : vestrum Deum inter *ad* vos inter
בֵּינֵכֶם לְבֵין אֱלֹהֵיכֶם וְחַטֹּאותֵיכֶם הִסְתִּירוּ
,sanguine *in* sunt pollutæ vestræ *volæ* Nam *.audiendo ab* , vobis à *facies*
3 פָנִים מִכֶּם מִשְּׁמוֹעַ׃ כִּי כַפֵּיכֶם נְגֹאֲלוּ בַדָּם
vestra lingua,*falsitatē* sunt locuta vestra labia :iniquitate *in* vestri digiti &
וְאֶצְבְּעוֹתֵיכֶם בֶּעָוֺן שִׂפְתוֹתֵיכֶם דִּבְּרוּ־שֶׁקֶר לְשׁוֹנְכֶם
:veritate in *judicatus non & ,justitia in vocans* Non *.meditabitur* iniquitatē
4 עַוְלָה תֶהְגֶּה׃ אֵין־קֹרֵא בְצֶדֶק וְאֵין נִשְׁפָּט בֶּאֱמוּנָה
,*laborem* concipiendo ,*mendacium* loquendo & ,*inanitate* super confidendo
בָּטוֹחַ עַל־תֹּהוּ וְדַבֶּר־שָׁוְא הָרוֹ עָמָל
araneæ telas & ,ruperunt *reguli* Ova .iniquitatē pariendo &
5 וְהוֹלִיד אָוֶן׃ בֵּיצֵי צִפְעוֹנִי בִּקֵּעוּ וְקוּרֵי עַכָּבִישׁ
.vipera erumpet ,*compressum* & : morietur eorū ovis de *Comedens .texent*
יֶאֱרֹגוּ הָאֹכֵל מִבֵּיצֵיהֶם יָמוּת וְהַזּוּרֶה תִּבָּקַע אֶפְעֶה׃
.suis operibus in tegentur nec , *vestem in* erunt non eorum Telæ
6 קוּרֵיהֶם לֹא־יִהְיוּ לְבֶגֶד וְלֹא יִתְכַּסּוּ בְּמַעֲשֵׂיהֶם
.eorum *volis* in *rapinæ* opus & , iniquitatis opera eorum Opera
מַעֲשֵׂיהֶם מַעֲשֵׂי אָוֶן וּפֹעַל חָמָס בְּכַפֵּיהֶם׃
sanguinem *effundendum ad* festinabunt & ,current malum ad eorum Pedes
7 רַגְלֵיהֶם לָרַע יָרֻצוּ וִימַהֲרוּ לִשְׁפֹּךְ דָּם
vastitas ; *iniquitatis* cogitationes eorum Cogitationes .innocentem
נָקִי מַחְשְׁבוֹתֵיהֶם מַחְשְׁבוֹת אָוֶן שֹׁד
non & ,cognoverunt non pacis Viam .eorum *stratis* viis in contritio &
8 וָשֶׁבֶר בִּמְסִלּוֹתָם׃ דֶּרֶךְ שָׁלוֹם לֹא יָדָעוּ וְאֵין
Omnis .eis sunt *obliquæ* eorum Semitæ .eorum *orbitis* in judicium
מִשְׁפָּט בְּמַעְגְּלוֹתָם נְתִיבוֹתֵיהֶם עִקְּשׁוּ לָהֶם כֹּל
judicium se elongavit Propterea .pacem nescit ,ea in *calcans*
9 דֹּרֵךְ בָּהּ לֹא יָדַע שָׁלוֹם׃ עַל־כֵּן רָחַק מִשְׁפָּט
ecce & ,lucem *ad* Expectavimus .justitia nos apprehendit non & ,nobis à
מִמֶּנּוּ וְלֹא תַשִּׂיגֵנוּ צְדָקָה נְקַוֶּה לָאוֹר וְהִנֵּה
Palpavimus .ambulavimus *caliginibus* in splendores *: tenebrositas*
10 חֹשֶׁךְ לִנְגֹהוֹת בָּאֲפֵלוֹת נְהַלֵּךְ׃ נְגַשְׁשָׁה
impegimus : attrectavimus oculis absque veluti & , parietem cæci sicut
כַעִוְרִים קִיר וּכְאֵין עֵינַיִם נְגַשֵּׁשָׁה כָּשַׁלְנוּ
Fremuimus .mortui sicut , *locis desolatis* in ; crepusculo ut meridie in
11 בַצָּהֳרַיִם כַּנֶּשֶׁף בָּאַשְׁמַנִּים כַּמֵּתִים׃ נֶהֱמֶה
expectavimus :gemuimus gemendo columbæ tanquā &,nos omnes ursi sicut
כַדֻּבִּים כֻּלָּנוּ וְכַיּוֹנִים הָגֹה נֶהְגֶּה נְקַוֶּה
Quia .nobis à se elongavit , salutem *ad* : non & judicium *ad*
12 לַמִּשְׁפָּט וָאַיִן לִישׁוּעָה רָחֲקָה מִמֶּנּוּ׃ כִּי־
nostra peccata & , te coram nostræ prævaricationes sunt multiplicatæ
רַבּוּ פְשָׁעֵינוּ נֶגְדֶּךָ וְחַטֹּאותֵינוּ
nostras iniquitates & ,nobiscū nostræ iniquitates quia :nos contra *respondit*
עָנְתָה בָּנוּ כִּי־פְשָׁעֵינוּ אִתָּנוּ וַעֲוֺנֹתֵינוּ
post à retrocedere & ,Dominum in mentiri & ,Prævaricari *.eas* cognovim⁹
13 יְדַעֲנוּם׃ פָּשֹׁעַ וְכַחֵשׁ בַּיהוָה וְנָסוֹג מֵאַחַר
meditari & concipere ; *defectionem* & , calumniam loqui : nostro Deo
אֱלֹהֵינוּ דַּבֶּר־עֹשֶׁק וְסָרָה הֹרוֹ וְהֹגוֹ
.falsitatis verba corde de
מִלֵּב דִּבְרֵי־שָׁקֶר׃

Versio VULG. LAT.

14 Tunc delectaberis super Dño, & sustollā te super altitudines terræ, & cibabo te hæreditate Jacob patris tui: os enim Dñi locutum est.

CAP. LIX.

1 Ecce non est abbreviata man⁹ Dñi ut salvare nequeat, neq; aggravata est auris ejus ut 2 non exaudiat: Sed iniquitates vestræ diviserunt inter vos & Deū vestrū, & peccata vestra absconderunt faciē ejus à vo- 3 bis ne exaudiret. Man⁹ enim vestræ pollutæ sūt sanguine, & digiti vestri iniquitate: labia vestra locuta sunt mendacium, & lingua vestra iniquitatē fa- 4 tur. Non est qui invocet justitiam, neq; est qui judicet verè: sed confidunt in nihilo, & loquuntur vanitates: conceperunt laborem, & pepere- 5 runt iniquitatem. Ova aspidum ruperunt, & telas araneæ texuerunt: qui comederit de ovis eorū, morietur: & ꝙ confotū est, erumpet in 6 regulū. Telæ eorū non erunt in vestimentū, neq; operientur operib⁹ suis: opera eorū opera inutilia, & op⁹ iniquitatis in 7 manib⁹ eorū. Pedes eorū ad malū currunt, & festinant ut effundant sanguinē innocentē: cogitationes eorum cogitationes inutiles: vastitas & con- 8 tritio in viis eorū. Viā pacis nescierunt, & non est judiciū in gressib⁹ eorū: semitæ eorū incurvatæ sunt eis: omnis qui calcat in eis, ignorat pacem. 9 Propter hoc elongatū est judiciū à nobis, & non apprehendet nos justitia: exspectavim⁹ lucē, & ecce tenebræ; splendorem, & in tenebris ambulavi- 10 mus. Palpavim⁹ sicut cæci parietē, & quasi absq; oculis attrectavim⁹: impegim⁹ meridiè quasi in tenebris, in caligino- 11 sis quasi mortui. Rugiem⁹ quasi ursi omnes, & quasi columbæ meditantes gemem⁹: exspectavim⁹ judiciū, & non est; salutem, & elongata est à nobis. 12 Multiplicatæ sunt enim iniquitates nostræ corā te, & peccata nostra responderunt nobis: quia scelera nostra nobiscū, & iniquitates nostras cognovi- 13 mus, Peccare et mentiri contra Dñm: et aversi sumus ne irem⁹ post tergū Dei nostri, ut loqueremur calumniā et transgressionem: concepimus, et locuti sumus de corde verba mendacii.

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Translatione LATINA.

14 Καὶ ἔσῃ πεποιθὼς ἐπὶ κύριον· καὶ ἀναβιβάσει σε ἐπὶ τὰ ἀγαθὰ τῆς γῆς, καὶ ψωμιεῖ σε τὴν κληρονομίαν Ἰακὼβ τοῦ πατρός σου· τὸ γὰρ στόμα κυρίου ἐλάλησε ταῦτα.

ΚΕΦ. νθʹ.

1 Μὴ οὐκ ἰσχύει ἡ χεὶρ κυρίου τοῦ σῶσαι; ἢ 2 ἐβάρυνε τὸ οὖς αὐτοῦ τοῦ μὴ εἰσακοῦσαι; Ἀλλὰ τὰ ἁμαρτήματα ὑμῶν (α) διϊστῶσιν ἀναμέσον ὑμῶν (β) καὶ ἀναμέσον τοῦ θεοῦ, καὶ διὰ τὰς ἁμαρτίας ὑμῶν ἀπέστρεψε τὸ πρόσωπον (ϛ) ἀφ᾽ ὑμῶν τοῦ μὴ ἐλεῆσαι. Αἱ γὰρ χεῖρες ὑμῶν (δ) 3 μεμολυσμέναι αἵματι, καὶ οἱ δάκτυλοι ὑμῶν ἐν ἁμαρτίαις, τὰ δὲ χείλη ὑμῶν ἐλάλησεν ἀνομίαν, καὶ ἡ γλῶσσα ὑμῶν ἀδικίαν μελετᾷ. (ε) Οὐθεὶς λαλεῖ δίκαια, οὐδέ ἐστι 4 κρίσις ἀληθινή· πεποίθασιν ἐπὶ ματαίοις, καὶ λαλοῦσι κενά, ὅτι κύουσι πόνον, καὶ τίκτουσιν ἀνομίαν. Ὠὰ ἀσπίδων ἔρρηξαν, 5 καὶ ἱστὸν ἀράχνης ὑφαίνουσιν, καὶ ὁ μέλλων τῶν ὠῶν αὐτῶν φαγεῖν, συντρίψας οὔριον, εὗρε καὶ ἐν αὐτῷ (ζ) βασιλίσκον. Ὁ ἱστὸς αὐ- 6 τῶν οὐκ ἔσται εἰς ἱμάτιον, οὐδὲ μὴ περιβάλωνται ἀπὸ τῶν ἔργων αὐτῶν· τὰ γὰρ ἔργα αὐτῶν, ἔργα ἀνομίας. Οἱ δὲ πόδες αὐτῶν 7 ἐπὶ πονηρίαν τρέχουσι, ταχινοὶ ἐκχέαι αἷμα, καὶ οἱ διαλογισμοὶ αὐτῶν, διαλογισμοὶ (η) ἀπὸ φόνων. σύντριμμα καὶ ταλαιπωρία ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν. Καὶ ὁδὸν 8 εἰρήνης οὐκ (θ) οἴδασι, καὶ οὐκ ἔστι κρίσις ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν. αἱ γὰρ τρίβοι αὐτῶν διεστραμμέναι, ἃς διοδεύουσι, καὶ οὐκ οἴδασιν εἰρήνην. Διὰ τοῦτο ἀπέστη ἡ κρί- 9 σις ἀπ᾽ αὐτῶν, καὶ οὐ μὴ καταλάβῃ αὐτοὺς δικαιοσύνη. ὑπομεινάντων αὐτῶν φῶς ἐγένετο αὐτοῖς σκότος, μείναντες αὐγὴν ἐν ἀωρίᾳ περιεπάτησαν. Ψηλαφήσουσιν ὡς 10 τυφλοὶ τοῖχον, καὶ ὡς οὐχ ὑπαρχόντων ὀφθαλμῶν ψηλαφήσουσι· καὶ πεσοῦνται ἐν μεσημβρίᾳ ὡς ἐν μεσονυκτίῳ, ὡς ἀποθνήσκοντες στενάξουσιν· Ὡς ἄρκος καὶ ὡς περιστερὰ ἅμα 11 πορεύσονται. ἀνεμείναμεν κρίσιν, καὶ οὐκ ἔστι σωτηρία, μακρὰν ἀφέστηκεν ἀφ᾽ ἡμῶν. Πολ- 12 λὴ γὰρ ἡμῶν ἡ ἀνομία ἐναντίον σου, καὶ αἱ ἁμαρτίαι ἡμῶν ἀντέστησαν ἡμῖν· αἱ γὰρ ἀνομίαι ἡμῶν ἐν ἡμῖν, καὶ τὰ ἀδικήματα ἡμῶν ἔγνωμεν. Ἠσεβήσαμεν καὶ ἐψευσάμεθα, 13 καὶ ἀπέστημεν (ι) ὄπισθεν τοῦ θεοῦ ἡμῶν· ἐλαλήσαμεν ἄδικα, καὶ ἠπειθήσαμεν· ἐκύομεν, καὶ ἐμελετήσαμεν ἀπὸ καρδίας ἡμῶν λόγους ἀδίκους·

Et eris confidens super Dominum. Et elevabit te super bona terræ: & cibabit te hæreditate Jacob patris tui. Os enim Domini loquutum est hæc.

CAP. LIX.

Nunquid non valet manus Domini salvos facere? aut gravavit aurem suam, ut non exaudiat? Sed peccata vestra separant inter vos, & Deum: & propter peccata vestra avertit faciem à vobis, ne misereatur. Manus enim vestræ inquinatæ sunt sanguine: & digiti vestri in peccatis: labia autem vestra loquuta sunt (a) iniquitatem: & lingua vestra injustitiam meditatur. Nemo loquitur justa: neque est judicium verum. Fidunt in vanis, & loquuntur inania: quia parturiunt dolorem, & pariunt iniquitatem. Ova aspidum fregerunt, & telam araneæ texunt. (b) Et, qui de ovis eorum comedere voluerit, frangens putridum, reperiit etiam in eo regulum. Tela eorum non erit in vestimentum, neque operientur de operibus suis. Opera enim eorum, opera iniquitatis: Et pedes eorum ad malitiam currunt, veloces ad effundendum (c) sanguinem: & cogitationes eorum, cogitationes (d) de homicidiis. Contritio & miseria in viis eorum: Et viam pacis non cognoverunt: & non est judicium in viis eorum. Semitæ enim eorum perversæ, quas transeunt: & nesciunt pacem. Propterea recessit judicium ab eis: & non apprehendet eos justitia. Cùm expectarent lucem, factæ sunt eis tenebræ: præstolantes (e) splendorem in obscuritate ambularunt: Palpabunt, sicut cæci, parietem; & quasi non habentes oculos, attrectabunt: & cadent in meridie, quasi in nocte media: quasi morientes gement: Quasi ursus, & quasi columba, pariter ambulabunt. Expectavimus judicium, & non est: salus longè recessit à nobis. Multa enim est iniquitas nostra in conspectu tuo: et peccata nostra restiterunt nobis. Iniquitates enim nostræ in nobis sunt: et injustitias nostras cognovimus. Impiè egimus, et mentiti sumus, et recessimus (f) à Deo nostro: loquuti sumus iniqua, et inobedientes fuimus: parturivimus, et meditati sumus de cordibus nostris verba iniqua:

MS.A. (α) διασῶσιν (β) καὶ διὰ τὰς ἁμαρτίας (ϛ) αὐτοῦ ἀφ᾽ (δ) μεμολυμμέναι (ε) Οὐδὶς (ζ) βασιλίσκος. (η) ἀφρόνων. (θ) ἔγνωσαν, (ι) ἀπὸ ὄπισθεν

תרגום יונתן TARGUM JONATHAN.

14 בכן תתפנק קדם יי וישרינך על תוקפי ארעא ויוכלנך פירי אחסנת יעקב אבוך ארי
במימרא דיי גזיר כן׃

נט

1 הא לא מקפידות ידא מן קדם יי לית אתון מתפרקין ולא מדיקיר קדמוהי מלמשמע
2 לא מתקבלא צלותכון׃ אלהן חוביכון הוו מפרשין ביניכון לבין אלהכון וחטאיכון
3 גרמו לסלקא אפי שכנתא מנכון מלקבלא צלותכון׃ ארי ידיכון שותפין בדם זכי
4 ואצבעתכון בחובין ספותכון ממללין שקר לישנכון נכלין מחשב׃ לית דמצלי
בקשוט ולית דמתדן בהמנותא מתרחצין על למא וממללין שקר מוחן ומפקין
5 מלבהון מלין דאונס׃ הא כביעי חיוי חורמנין מפרתין וכקוין דעכוביתא מחיא דמן
6 דאכל מביעיהון מאת ומשחנן ומפקן חיון חרמנין מפרחין׃ הא כקוין דעכוביתא
דלא כשרין לאתכסאה כן לית הנאה בעובדיהון דרשיעיא עובדיהון עובדי אונס
7 וליאות שקר בידהון׃ רגליהון למעבד דביש רהטין ומוחין למשפך דם זכי עשתונהון
8 עשתוני אונס בזא ותברא בכבשיהון׃ אורח שלמא לא ידעין ולית דינא במהכהון
9 שביליהון עקימו להון כל דדריך בהון לא ידע שלמא׃ על כן אתרחק דינא מננא ולא
מערע לנא זכו סברנא לנהור והא חשוך לזהור והא כדבקבלא אנחנא מהלכין׃
10 נמשמש כסמן כותלין וכדלית להון עינין נמשמש אתקלנא בטיהרא כמא דמתקלין
11 בקבלא אתאחד באפנא כמא דאחידין קבריא באפי מיתיא׃ עסנא מן קדם בעלי דבבנא
דמתכנשין עלנא כדובין כולנא וכיונין נהמא נהמנא סברנא לדינא ולית לפירקנא
12 אתרחק מננא׃ ארי סגיאין חובנא קדמך וחטאנא אסהידו בנא ארי חובנא גלן לנא
13 ועויתנא ידענא להון׃ מרדנא וכדיבנא במימרא דיי ואסתחרנא לאחורא מבתר
פולחנא דאלהנא והוינא ממללין שקר וסטיא מוחן ומפקין מלבהון פתגמי שקר׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

14 Tunc delectaberis coram Dño, & collocabit te super munitiones terræ: & comedere te faciet fructum possessionis Jacob patris tui: quoniam in verbo Domini decretum est ita.

CAP. LIX.

1 Ecce non propter defectum manus à facie Dñi non estis salvi: nec quia grave est corā eo audire, non suscipitur oratio vestra: 2 Sed delicta vestra diviserunt inter vos & inter Deum vestrū; & peccata vestra fuerunt in causa quòd averteretur facies majestatis à vobis, ut non susciperetur oratio vestra. 3 Manus enim vestræ inquinatæ sunt sanguine innocentum, & digiti vestri in peccatis: labia vestra loquuntur mendaciū, & lingua vestra dolos cogitat. 4 Non est qui oret in veritate, nec qui judicet in fide. Confidunt in vanitate, & loquuntur mendaciū: festinant & educunt de corde suo verba violentiæ. 5 Ecce sicut ova aspidum *disrumpunt*, & similes sunt telis quas aranea texit: qui comederit de ovis eorum morietur: & calefiunt, & educunt aspides volantes. 6 Ecce sicut telæ araneæ quæ non sunt aptæ ad operiendū, sic nulla est utilitas in operibus impiorum. Opera eorum, opera iniquitatis; & labor mendacii est in manib⁹ eorum. 7 Pedes eorum ad faciendū malum currunt, & festinant ad effundendum sanguinem innocentū: cogitationes eorum cogitationes iniquæ; præda & contritio in viis eorum. 8 Viam pacis non cognoscunt, neque est judicium in itineribus eorum: semitæ suæ pravæ sunt eis: & omnis qui calcaverit in eis, nesciet pacem. 9 Propterea elongatum est judicium à nobis, & non occurrit nobis justitia: expectavimus lucem, & ecce tenebræ: splendorem, & ecce quasi in caligine ambulam⁹. 10 Palpavimus sicut cæci parietes; & sicut illi qui non habent oculos, palpavimus: offendim⁹ in meridie, sicut qui offendunt in tenebris; clausum est ante nos, sicut clauduntur sepulchra ante mortuos. 11 Fremim⁹ propter inimicos nostros, qui congregantur contra nos quasi ursi: & planè omnes nos quasi columbæ gemim⁹: expectavimus judiciū, & non est; salutem, & elongata est à nobis. 12 Quia multiplicata sunt delicta nostra coram te, & peccata nostra testificata sunt contra nos: delicta enim nostra manifesta sunt nobis, & iniquitates nostras cognovimus. 13 Transgressi sumus, & mentiti sumus in verbo Dñi, et conversi sumus retrorsum, ne iremus post timorem Dei nostri: & locuti sumus mendacium & transgressionem, festinantes & educentes de corde verba mendacii.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܝܕܝܢ ܬܬܬܟܠ ܥܠ ܡܪܝܐ. ܕܐܪܟܒܟ ܥܠ ܥܘܫܢܗ ܕܐܪܥܐ.. ܘܐܘܟܠܟ ܝܪܬܘܬܗ ܕܝܥܩܘܒ
ܐܒܘܟ. ܡܛܠ ܕܦܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܢܛ *
* ܗܐ ܠܐ ܕܒܨܝܪܐ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܦܪܩ. ܘܠܐ ܝܩܝܪܐ ܐܕܢܗ ܡܠܡܫܡܥ. * ܐܠܐ ܣܟܠܘܬܟܘܢ
ܦܪܫܘ ܒܝܢܬܟܘܢ ܠܐܠܗܟܘܢ. ܘܚܛܗܝܟܘܢ ܐܗܦܟܘ ܐܦܘܗܝ ܡܢܟܘܢ. ܕܠܐ ܢܫܡܥ. *
ܕܐܝܕܝܟܘܢ ܡܛܫܫܢ ܒܕܡܐ. ܘܨܒܥܬܟܘܢ ܒܥܘܠܐ. ܣܦܘܬܟܘܢ ܡܡܠܠܢ ܫܘܩܪܐ.
ܘܠܫܢܟܘܢ ܥܘܠܐ ܪܢܐ. * ܠܝܬ ܕܩܪܐ ܒܟܐܢܘܬܐ. ܘܠܝܬ ܕܕܐܢ ܒܗܝܡܢܘܬܐ. * ܬܟܝܠܝܢ ܥܠ
ܣܪܝܩܘܬܐ. ܘܡܡܠܠܝܢ ܣܪܝܩܘܬܐ. ܒܛܢܘ ܥܡܠܐ ܘܝܠܕܘ ܥܘܠܐ. * ܒܝܥܐ ܕܚܘܪܢܐ ܐܦܩܘ.
ܘܥܙܠܐ ܕܥܢܟܒܝܬܐ ܢܣܓܘ. ܘܡܢ ܕܐܟܠ ܡܢ ܒܝܥܝܗܘܢ ܢܡܘܬ. ܘܡܢ ܕܡܦܩܥ ܡܢܗܘܢ ܢܫܟܚ ܐܟܕܢܐ. *
ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܠܒܘܫܐ. ܘܠܐ ܢܬܟܣܘܢ ܒܥܒܕܝܗܘܢ. ܥܒܕܝܗܘܢ ܥܒܕܐ ܕܢܟܠܐ.
ܘܥܒܕܐ ܕܥܘܠܐ ܒܐܝܕܝܗܘܢ. * ܪܓܠܝܗܘܢ ܠܒܝܫܬܐ ܪܗܛܢ. ܘܡܣܪܗܒܢ ܠܡܐܫܕ ܕܡܐ
ܙܟܝܐ. ܡܚܫܒܬܗܘܢ ܡܚܫܒܬܐ ܕܢܟܠܐ. ܒܙܬܐ ܘܬܒܪܐ ܒܫܒܝܠܝܗܘܢ. *
ܕܫܠܡܐ ܠܐ ܝܕܥܘ. ܘܠܝܬ ܕܝܢܐ ܒܡܗܠܟܬܗܘܢ. ܫܒܝܠܝܗܘܢ ܥܩܡܘ ܠܗܘܢ. ܘܟܠ ܕܡܗܠܟ
ܒܗܘܢ. ܠܐ ܝܕܥ ܫܠܡܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܪܚܩ ܡܢܢ ܕܝܢܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܠܐ ܐܕܪܟܬܢ. ܣܟܝܢ
ܠܢܘܗܪܐ. ܘܗܘܐ ܚܫܘܟܐ. ܘܠܙܠܝܩܐ ܘܒܥܡܛܢܐ ܗܠܟܝܢ. * ܡܓܫܫܝܢ ܫܘܪܐ.
ܘܡܓܫܫܝܢ ܐܝܟ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܥܝܢܐ. ܐܬܬܩܠܢ ܒܛܗܪܐ ܐܝܟ ܕܒܪܡܫܐ.
ܐܝܟ ܗܢܘܢ ܕܩܪܝܒܝܢ ܠܡܘܬܐ. * ܢܗܡܝܢ ܟܠܢ ܐܝܟ ܕܒܐ. ܘܐܝܟ ܝܘܢܐ ܢܗܓܝܢ. ܣܟܝܢ
ܠܕܝܢܐ. ܘܠܝܬ. ܘܠܦܘܪܩܢܐ. ܘܪܚܩ ܡܢܢ. * ܡܛܠ ܕܣܓܝܘ ܥܘܠܢ ܩܕܡܝܟ
ܘܩܡܘ ܠܘܩܒܠܢ. ܡܛܠ ܕܥܘܠܢ ܥܡܢ. ܘܚܛܗܝܢ ܝܕܥܝܢ ܚܢܢ. * ܐܥܘܠܢ
ܘܟܕܒܢ ܒܡܪܝܐ. ܘܗܦܟܢ ܡܢ ܒܬܪ ܐܠܗܢ. ܡܠܠܢ ܥܘܠܐ. ܘܡܪܕܢ. ܒܛܢܢ
ܘܗܓܝܢ ܡܢ ܠܒܢ ܡܠܐ ܕܫܘܩܪܐ.

Tunc Domino confides qui te vexit ſuper 14
terræ robur, & comedendam tibi dedit hæreditatem
Jacobi patris tui; quia os Domini
locutum eſt.

CAP. LIX.

Ecce non eſt impotens manꝰ Domini ad ſalvandum, 1
neque gravis auris ejꝰ ad audiendum:
Sed culpæ veſtræ diviſionem pepererunt inter 2
vos & Deum veſtrum, & peccata veſtra faciem
ejꝰ averterunt à vobis quò minùs exaudiat,
Nam manꝰ veſtræ contaminatæ ſunt ſanguine, 3
& digiti veſtri iniquitate, labia veſtra loquuntur
falſitatem, & lingua veſtra ſcelus meditatur.
Nemo eſt qui juſtè prædicet, nemo qui 4
fideliter judicet: confidunt rei inani, & loquuntur
vanitatem, concipiunt dolum, & pariunt dolores.
Ova reguli excludunt, & telam 5
araneārū texunt: qui comederit ex ovis eorū,
morietur; & qui ruperit *unum ex* iis, reperiet
anguiculū. Tela eorum non erit *utilis* ad veſtem 6
conficiendam, neque operient ſe factis ſuis:
facta eorum ſunt facta doloſa, & facta iniqua
in manibꝰ eorum. Pedes eorum currunt 7
ad malū, & celeres ſunt ad fundendum ſanguinem
innoxiū: cogitationes eorum ſunt cogitationes
fraudis, & rapina ac vaſtitas in ſemitis
eorū. Viā pacis non agnoſcunt, & nullū eſt jus 8
in greſſibꝰ eorum: ſemitæ eorū *ita* diſtortæ, ut
quiſquis incedit in eis, pacem ignoret. Iccirco 9
receſſit à nobis judiciū, & juſtitia non perveniet
ad nos. Expectamꝰ lucē, & fiunt tenebræ;
ſplendorē, & in caligine ambulamꝰ. Palpamꝰ 10
parietem more cæcorum; palpamꝰ inquā, ut hi
qui non habent oculos: impingimꝰ ipſo meridie
non ſecꝰ ac veſpertino tempore, & ſuſpiramꝰ
ut hi qui proximi ſunt morti. Fremimus 11
omnes tanquā urſi, & tanquā columbæ gemimus:
expectamꝰ judiciū, & non eſt; ſalutē, &
procul abeſt à nobis. Quia multiplicata eſt iniquitas 12
noſtra corā te, & peccata noſtra conteſtata
ſunt nos: quia iniquitas noſtra nobiſcum
eſt, et peccata noſtra nota ſunt: Perfidè egimꝰ, 13
negavimus Dn̄m, et avertimus nos à veſtigiis
Dei noſtri: locuti ſumus oppreſſionem, et rebellavimus:
concepimus, et meditati ſumus ex
animo noſtro verba falſitatis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فيصعدك على خيرات الارض * ويطعمك ميراث يعقوب ابيك * لان فم الرب تكلم هذا

* الفصل التاسع والخمسون *

* هل يد الرب لا تقوى ان تخلص * او سد اذنه ان لا تسمع * لكن خطاياكم افصلت
بينكم * لاجل خطاياكم صرف وجهه عنكم الا يرحم * لان ايديكم متدنسة
بالدم * واصابعكم بالخطايا * وشفاهكم تكلمت اثما * ولسانكم يتلو ظلما * ولا واحد
يتكلم بالعدل * وليس عدل حقيقي موجودا * توكلوا على الاباطيل * وتكلموا بالكذب
لانهم يحبلون وجعا ويلدون اثما * فقعوا بيض الافاعي * ونسجوا نسج العنكبوت
والمزمع ان ياكل من بيضهم كسر بيضة فوجد فيها الحية الجرداء * ونسجهم ليس
يكون للباس * ولا يلتحفون من اعمالهم * لان اعمالهم اعمال اثم * وارجلهم الى الشر
يعجلون مسرعة لتسفك دما * وافكارهم افكار جهال * الكسر والشقوة في سبلهم * وطريق
السلامة ما عرفوها * وليس في طرقهم حكم موجودا * لان سبلهم التي يسلكون فيها
معوجة * ولم يعرفوا السلامة * لاجل هذا بعد الحكم عنهم * وليس يدركهم العدل

* الاصحاح الثامن والعشرون *

واذ هم يرجون نورا صار لهم ظلام * انتظروا ضوءا في نصف الليل * يجسون الحائط مثل
العميان * وكمثل من ليس لهم اعين يجسون * ويسقطون في وسط النهار كانهم في نصف الليل
كمثل مايتين يتنهدون * مثل الدب ومثل الحمامة يسيرون معا. انتظرنا حكما وليس خلاص
موجودا * ووقف عنا بعيدا * لان اثمنا كثير امامك * وخطايانا قاومتنا * لان اثامنا فينا * وعرفنا
ظلاماتنا * لا نعبد وكذبنا وبعدنا من اثر الهنا * تكلمنا ظلما وخالفنا جبلنا * ودرسنا من
قلبنا اقوالا ظالمة *

Præponet te bonis terræ, & comedendam tibi dabit hæreditatem Jacobi patris tui; quoniam os Domini pronuntiavit hæc. 14

CAP. LIX.

Num manus Domini ſalvare non poteſt? an verò aurem ſuam obſtruxit, 1
quò minùs audiat? Imò peccata veſtra ſeparaverunt vos, propter ſcelera 2
veſtra avertit faciem ſuam à vobis, quò minùs miſereatur: Quia manus veſtræ 3
contaminatæ ſunt ſanguine, digiti veſtri peccatis, labia veſtra loquuntur iniquitatem,
& lingua veſtra oppreſſionem meditatur: Nemo loquitur juſtè, neque 4
reperitur vera juſtitia: innituntur vanitatibus, & loquuntur mendacium: concipiunt
enim dolorem, & pariunt iniquitatem. Viperarum ova ruperunt, & 5
araneæ telam texuerunt: at qui accinctus erat ad comedendum ex ovis
earum; fracto ovo, reperit in eo aſpidē. Textura eorū non cedet in veſtimentum, 6
nec operient ſeſe operibus ſuis, quoniā opera eorum opera ſunt iniqua: Pedes 7
ſuos ad malum accelerant, feſtinos ad effundendum ſanguinem: & cogitationes
eorum ſunt cogitationes imprudentum: contritio & miſeria in ſemitis
eorum: Viam pacis minimè cognoſcunt, 8
nec ullum in viis eorum judicium reperitur; ſiquidem ſemitæ eorum in quibus
incedunt, obliquæ ſunt, nec agnoſcunt pacem. Hac de cauſa receſſit 9
judicium ab eis, nec aſſequetur eos juſtitia.

Textus vigeſimus octavus.

Dum lucem ſperarent, advenerunt eis tenebræ, expectārunt lucem in media
nocte. Palpant parietem quaſi cæci; & 10
velut hi qui non habent oculos palpant; & cadunt in meridie, ac ſi eſſent in
media nocte; ut moribundi ſuſpirant: ut urſus ſimul & ut columba incedunt. 11
Expectavimus judicium, at non reperitur ſalus, ſtetit procul à nobis; Eò quòd 12
iniquitas noſtra multa ſit coram te, & peccata noſtra nos impugnent: nam iniquitates
noſtræ in nobis ſunt, & ſcelera noſtra cognoſcimus. Non ſervimus Deo, 13
mentiti ſumus, & receſſimus à veſtigiis Dei noſtri: locuti ſumus oppreſſionem,
abalienati ſumus à monte noſtro, & ex animo ſtuduimus ſermonibus perverſis:

ישעיה : ס

quia : stetit longe à justitia & ,judicium retrorsum est aversum Et
14 והסג אחור משפט וצדקה מרחוק תעמד כי
fuit Et .ingredi potuit non rectum & : veritas platea in impegit
15 כשלה ברחוב אמת ונכחה לא־תוכל לבוא׃ ותהי 14
,Dominus vidit Et .expoliata malo à recessit & , deficiens veritas
האמת נעדרת וסר מרע משתולל וירא יהוה
non quod vidit Et .judicium non quia ,ejus oculis in fuit malum & 15
16 וירע בעיניו כי־אין משפט׃ וירא כי־אין
sibi fecit salutem & : intercedens non quod , obstupuit & ,quispiam
איש וישתומם כי־אין מפגיע ותושע לו
justitiam se induit Et .eum fulcivit ipsa ejus justitia & ,ipsius brachium
17 זרעו וצדקתו היא סמכתהו׃ וילבש צדקה 16
vestimenta se induit & : suo capite in salutis galeam & ,loricam sicut
כשרין וכובע ישועה בראשו וילבש בגדי
propter Quasi .zelum pallium sicut se involvit & , vestem ultionis
18 נקם תלבשת ויעט כמעיל קנאה׃ כעל 17
retributionem ,suis hostibus iram reddet propter quasi ,retributiones
גמלות כעל ישלם חמה לצריו גמול
occidente ab timebunt Et .reddet retributionē insularibus :suis inimicis 18
19 לאיביו לאיים גמול ישלם׃ וייראו ממערב
,venerit cùm : ejus gloriam solis ortu ab & ,Domini nomen
את־שם יהוה וממזרח־שמש את־כבודו כי־יבוא
veniet Et .eum in vexillum erigens Domini spiritus ,hostis ,fluvius veluti
20 כנהר צר רוח יהוה נססה בו׃ ובא 19
dixit ,Jahacob in prævaricatione redeuntes ad & , redemptor Sijon ad
לציון גואל ולשבי פשע ביעקב נאם
.Dominus dixit ,eis cum meum pactum hoc ego Et .Dominus 20
21 יהוה׃ ואני זאת בריתי אותם אמר יהוה
non ,tuo ore in posui quæ mea verba & ,te in qui meus Spiritus
רוחי אשר עליך ודברי אשר־שמתי בפיך לא־ 21
,tui seminis seminis ore de & ,tui seminis ore de & ,tuo ore de recedent
ימושו מפיך ומפי זרעך ומפי זרע זרעך
.seculum in usque & , nunc ex ,Dominus dixit
אמר יהוה מעתה ועד־עולם׃

CAP. LX. ס

te super Domini gloria & : tuum lumen venit quia ,illuminare Surge
1 קומי אורי כי־בא אורך וכבוד יהוה עליך 1
.populos caligo & ,terram operiet tenebrositas ecce Quia .est orta
2 זרח׃ כי־הנה החשך יכסה־ארץ וערפל לאמים 2
.videbitur te super ejus gloria & ,Dominus orietur te super Et
ועליך יזרח יהוה וכבודו עליך יראה׃
.tui ortus splendore in reges & ,tuo lumine in gentes ambulabunt Et 3
3 והלכו גוים לאורך ומלכים לנגה זרחך׃
,se congregaverunt ipsi Omnes .vide & ,tuos oculos circum Leva 4
4 שאי סביב עיניך וראי כלם נקבצו
latus juxta tuæ filiæ & ,venient longe de tui filii : te ad venerunt
באו־לך בניך מרחוק יבאו ובנתיך על־צד
dilatabitur & ,pavebit & ,splendebis & ,videbis Tunc .nutrientur 5
5 תאמנה׃ אז תראי ונהרת ופחד ורחב
fortitudo ,maris tumultus te ad fuerit conversa quando : tuum cor
לבבך כי־יהפך עליך המון ים חיל
dromedarii ,te operiet camelorum Copia .tibi venerint gentium 6
6 גוים יבאו לך׃ שפעת גמלים תכסך בכרי
thus & ,aurum : venient Seba de ipsi omnes : Ephah & ,Midian
מדין ועיפה כלם משבא יבאו זהב ולבונה
.annuntiabunt Domini laudes & , deferent
ישאו ותהלת יהוה יבשרו׃

Versio VULG. LAT.

14 Et conversum est retrorsum judicium, & justitia longè stetit: quia corruit in platea veritas, & æquitas non potuit 15 ingredi. Et facta est veritas in oblivionem: & qui recessit à malo, prædæ patuit: & vidit Dominus, & malum apparuit in oculis ejus, quia non est 16 judicium. Et vidit quia non est vir: & aporiatus est, quia non est qui occurrat: & salvavit sibi brachium suum, & justitia ejus ipsa confirmavit 17 eum. Indutus est justitiâ ut loricâ, & galea salutis in capite ejus: indutus est vestimentis ultionis, & opertus est 18 quasi pallio zeli. Sicut ad vindictam quasi ad retributionem indignationis hostibus suis, & vicissitudinem inimicis suis: insulis vicem reddet. 19 Et timebunt qui ab Occidente, nomen Dñi; & qui ab Ortu Solis, gloriā ejus: cùm venerit quasi fluvius violentus, 20 quem spiritus Dñi cogit: Et venerit Sion redemptor, & eis qui redeunt ab iniquitate 21 in Jacob, dicit Dñs. Hoc fœdus meum cum eis, dicit Dñs; Spiritus meus, qui est in te, & verba mea, quæ posui in ore tuo, non recedent de ore tuo, & de ore seminis tui, & de ore seminis seminis tui, dicit Dominus, amodò & usque in sempiternum.

CAP. LX.

1 Surge, illuminare Jerusalē: quia venit lumen tuum, & 2 gloria Dñi sup te orta est. Quia ecce tenebræ operient terrā, & caligo populos: sup te aut orietur Dñs, & gloria ejus in 3 te videbitur. Et ambulabunt Gentes in lumine tuo, & reges 4 in splendore ortûs tui. Leva in circuitu oculos tuos, & vide: omnes isti congregati sunt, venerunt tibi. filii tui de longè venient, & filiæ tuæ de latere 5 surgent. Tunc videbis, & afflues, & mirabitur & dilatabitur cor tuū, quando conversa fuerit ad te multitudo maris, fortitudo gentium venerit ti6 bi. Inundatio camelorum operiet te, dromedarii Madian et Epha; omnes de Saba venient, aurum & thus deferentes, et laudem Domino annuntiantes.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

14 Καὶ ἀπεστήσαμεν ὀπίσω τὴν κρίσιν, καὶ ἡ δικαιοσύνη μακρὰν ἀφέστηκεν (κ)· ὅτι (λ) κατηναλώθη ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν ἡ ἀλήθεια, καὶ δι' εὐθείας οὐκ (μ) ἐδύναντο διελθεῖν. 15 Καὶ ἡ ἀλήθεια ἦρται, καὶ μετέστησαν τὴν διάνοιαν (ν) τοῦ συνιέναι. καὶ εἶδε κύριος, καὶ οὐκ 16 ἤρεσεν αὐτῷ, ὅτι οὐκ ἦν κρίσις. Καὶ εἶδε, καὶ οὐκ ἦν ἀνήρ, καὶ κατενόησε, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀντιληψόμενος· καὶ ἠμύνατο αὐτοὺς τῷ βραχίονι αὐτοῦ, καὶ τῇ ἐλεημοσύνῃ ἐστηρίσατο. 17 Καὶ ἐνεδύσατο δικαιοσύνην ὡς θώρακα, καὶ περιέθετο περικεφαλαίαν σωτηρίου ἐπὶ τῆς κεφαλῆς, καὶ περιεβάλετο ἱμάτιον ἐκδικήσεως, 18 καὶ τὸ περιβόλαιον (ξ) αὐτοῦ, Ὡς ἀνταποδώσων ἀνταπόδοσιν ὄνειδος τοῖς ὑπεναντίοις. 19 Καὶ φοβηθήσονται οἱ ἀπὸ δυσμῶν τὸ ὄνομα κυρίου, καὶ οἱ (ο) ἀπ' ἀνατολῶν ἡλίου τὸ ὄνομα τὸ ἔνδοξον. ἥξει γὰρ ὡς ποταμὸς βίαιος ἡ ὀργὴ παρὰ κυρίου, ἥξει μετὰ θυ20 μοῦ. Καὶ ἥξει ἕνεκεν Σιὼν ὁ ῥυόμενος, καὶ 21 ἀποστρέψει ἀσεβείας ἀπὸ Ἰακώβ. Καὶ αὕτη αὐτοῖς ἡ παρ' ἐμοῦ διαθήκη, εἶπε κύριος· τὸ πνεῦμα τὸ ἐμὸν, ὅ ἐστιν ἐπὶ σοὶ, καὶ τὰ ῥήματα ἃ ἔδωκα εἰς τὸ στόμα σου, οὐ μὴ ἐκλίπῃ ἐκ τοῦ στόματός σου, καὶ ἐκ τοῦ στόματος τοῦ σπέρματός σου· (π) εἶπε γὰρ κύριος ἀπὸ τοῦ νῦν καὶ εἰς τὸν αἰῶνα.

Et recessimus retrorsùm à judicio, & justitia longè stetit: quia consumpta est in viis eorum veritas: & per rectum non potuerunt transire. Et veritas sublata est: & transtulerunt mentem ab intelligendo. Et vidit Dominus, & non placuit ei: quia non erat judicium. Et vidit, & non erat vir: & consideravit, & non erat, qui defenderet. Et ultus est eos brachio suo, & misericordiâ (h) sustinuit. Et induit justitiam, quasi loricam: & posuit galeam salutaris in capite: & circumdatus est vestimento vindictæ, & pallio suo. Quasi retributurus retributionem opprobrium adversariis. Et timebunt, qui ab Occidente, nomen Domini; & qui ab Ortu Solis, nomen inclytum. Veniet enim quasi fluvius violentus, ira à Domino: veniet cum furore. Et veniet (h) propter Sion, qui liberat: & avertet impietates à Jacob. Et hoc eis à me testamentum, dixit Dominus. Spiritus meus, qui est in te, & verba, quæ dedi in ore tuo, non deficient de ore tuo, & de ore seminis tui: (i) ait enim Dominus ex nunc, & in æternum.

MS. A. (κ) ἀφ' ἡμῶν (λ) κατηναλώθη (μ) ἠδύναντο (ν) αὐτῶν τοῦ * συνιέναι. (ξ) Ὡς ἀνταποδώσων (ο) ἀπὸ (π) εἶπεν κύριος

ΚΕΦ. ξ'.

1 Φωτίζου φωτίζου Ἱερουσαλὴμ, ἥκει γάρ σου τὸ φῶς, καὶ ἡ δόξα κυρίου ἐπὶ σὲ ἀνα2 τέταλκεν. Ἰδοὺ σκότος (α) καλύψει γῆν, καὶ γνόφος ἐπ' ἔθνη, ἐπὶ δὲ σὲ φανήσεται κύ3 ριος, καὶ ἡ δόξα αὐτοῦ ἐπὶ σὲ ὀφθήσεται. Καὶ πορεύσονται βασιλεῖς τῷ φωτί σου, καὶ 4 ἔθνη τῇ λαμπρότητί σου. Ἆρον κύκλῳ τοὺς ὀφθαλμούς σου, καὶ ἴδε συνηγμένα τὰ τέκνα σου. (β) ἥκασι πάντες οἱ υἱοί σου μακρόθεν, καὶ αἱ θυγατέρες σου ἐπ' ὤμων 5 ἀρθήσονται. Τότε ὄψῃ, καὶ φοβηθήσῃ, καὶ ἐκστήσῃ τῇ καρδίᾳ, ὅτι μεταβαλεῖ εἰς σὲ πλοῦτος θαλάσσης, καὶ ἐθνῶν καὶ λαῶν, καὶ 6 ἥξουσί σοι ἀγέλαι καμήλων, καὶ καλύψουσί σε κάμηλοι Μαδιὰμ καὶ (γ) Γαιφά. πάντες ἐκ Σαβὰ ἥξουσι φέροντες χρυσίον, καὶ λίβανον οἴσουσι, (δ) καὶ τὸ σωτήριον κυρίου εὐαγγελιοῦνται.

CAP. LX.

Illuminare, illuminare Hierusalem; venit enim lumen tuum, & gloria Domini super te orta est. Ecce tenebræ operient terram: & caligo super gentes. Super te autem apparebit Dominus: & gloria illius in te videbitur. Et ambulabunt reges in lumine tuo, & gentes in splendore tuo. Leva in circuitu oculos tuos, & vide congregatos filios tuos. Venerunt omnes filii tui de longe, & filiæ tuæ super humeros portabuntur. Tunc videbis, & timebis, & stupebis corde: quoniam transferentur in te divitiæ maris, & gentium, & populorum. Et venient tibi Greges camelorum, & operient te cameli Madian, & Gepha. Omnes de Saba venient ferentes aurum, & (a) thus afferent: & salutare Domini annuntiabunt.

MS. A. (α) καὶ γνόφος καλύψει γῆν ἐπ' ἔθνη, ἐπὶ σὲ (β) ἰδοὺ ἥκασι (γ) Γαιφάς. (δ) καὶ λίθον τίμιον, καὶ τὸ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ואסתחר לאחורא עבדי דינא ועבדי זכותא מרחיק קמן ארי אתקלו ברחובא עבדי קושטא
15 ועבדי הימנותא לא יכלין לאתגלאה׃ והוו עבדי קושטא מטמרין ודסטן מביש מתבזזין
16 וגלי קדם יי ובאיש קדמוהי ארי לית דינא׃ וגלי קדמוהי דלית גבר דליה עובדין טבין
וידיע קדמוהי ולית אנש דיקום ויבעי עליהון ופרקינין בדרע תוקפיה ובמימר רעותיה
17 סעדנון׃ אתגלי למעבד זכון לעמיה תקוף ופורקן איתי במימריה לדחלוהי
18 ויתגלי למעבד לאתפרעא בתקוף מסנאי עמיה ויתיב נקמא לבעלי דבבוהי׃ מרי
גמליא הוא גמלא ישלם פורענותא לסנאוהי גמלא לבעלי דבבוהי לנגותא גמלא
19 ישלם׃ וידחלון ממערבא ית שמא דיי וממדנח שמשא ית יקריה ארי ייתון כשפע
20 נהר פרת מעיקין במימרא דיי יתברון׃ וייתי לציון פריק ולאתבא מרודיא דבית יעקב
21 לאוריתא אמר יי׃ ואנא דין קימי עמהון אמר יי רוח קודשי דעלך ופתגמי נבואתי
דשויתי בפומך לא יעדון מפומך ומפום בני בנך אמר יי מכען ועד עלמא׃

ס

1 קומי אנהרי ירושלם ארי מטא זמן פורקניך ויקרא דיי עלך יתגלי׃ ארי הא חשוכא
2
3 יחפי ארעא וקבלא למלכותא וביך ישרי שכינתא דיי ויקריה עלך יתגלי׃ ויהכון
4 עממיא לנהוריך ומלכיא לקביל זהוריך׃ זקופי ירושלם סחור סחור עינך וחזי
בני עם גלותיך דמתכנשין ואתן לגויך בנך מרחיק ייתון ובנתיך על גססין יתרבבן׃
5 הבין תחזין ותנהרין ותרחלין ויפתי לביך ארי יתהפך לותיך עותר מערבא
6 נכסי עממיא ייתון לגויך׃ שירת ערבאי תחפי סחריך הוגני מדין ועיפה כולהון
מסבא ייתון דהב ולבונה יהון טעינין ודאית עמהון בית שבחיא דיי יהון משבחין׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et conversi sunt retrorsum facientes judiciū, & facientes justitiam longè steterunt: quia impegerunt in platea veraces, & fideles non potuerunt manifestari. Et fuerunt veraces absconditi; & qui declinant à malo direptionem sustinent. Et revelatū est corā Dño, & displicuit corā eo, quia non est judicium. Et manifestū est corā eo, quod non sit vir cuj⁹ opera bona sint: & notum est corā eo, quòd non sit homo qui stet & deprecetur pro eis: & liberavit eos in brachio fortitudinis suæ, & in verbo voluntatis suæ auxiliatus est eis. Revelat⁹ est ut faciat æqua populo suo: fortitudinē & salutem dabit in verbo suo timentib⁹ se, & revelabitur ut faciat ultionem in fortitudine de inimicis populi sui, & reddat vindictā hostibus suis. Dñs retributionum est, retributionē ipse reddet, vindictam inimicis suis; & mercedē hostibus suis insulis retributionē reddet. Et timebunt ab Occidente nomen Dñi, & ab Oriente Solis gloriā ejus. Quoniā venient tribulantes quasi inundatio fluminis Euphratis; & in verbo Dñi contererentur. Et veniet ad Sion redemptor, & ut convertat transgressores dom⁹ Jacob ad Legem, dicit Dñs. Et hoc est pactū meum cum eis, dicit Dñs: Spiritus sanct⁹ me⁹ qui est in te, & verba prophetiæ meæ quæ posui in ore tuo, non auferentur ab ore tuo, & ab ore filiorū tuorū, & nepotum, dicit Dñs, deinceps & usque in æternum.

CAP. LX.

Surge illuminare Jerusalē, quia pervenit temp⁹ redemptionis tuæ, & gloria Dñi super te revelabitur. Quia ecce tenebræ operient terrā, & caligo regna: in te autē habitabit majestas Dñi, & gloria ej⁹ super te revelabitur. Et ambulabunt gentes in lumine tuo, & reges in splendore tuo. Leva in circuitu oculos tuos, & vide omnes filios populi captivitatis tuæ qui congregantur, & veniunt ad te: filii tui de longè venient, & filiæ tuæ [illegible]. Tunc videbis, & illuminaberis, & timebis, & [illegible] quia transferentur tibi divitiæ O[illegible]. Turba Arabū operiet te, [illegible] omnes hi de Saba venient, auro [illegible] laudem Domini narrabunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܗܦܟܢ ܕܝܢܐ ܠܒܣܬܪܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܩܡܬ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܬܩܠܬ
ܒܫܘܩܐ ܆ ܘܬܟܣܝܬܐ ܠܐ ܐܫܟܚܬ ܠܡܥܠ. * ܘܗܘܬ ܫܪܪܐ ܡܛܫܝܐ ܒܛܘܫܝܐ ܆ ܘܥܒܪ
ܡܢ ܪܥܝܢܢ ܆ ܘܚܙܐ ܡܪܝܐ ܕܠܝܬ ܕܝܢܐ. ܘܐܬܒܐܫ ܒܥܝܢܘܗܝ. * ܘܚܙܐ ܕܠܝܬ
ܘܐܬܕܡܪ ܕܠܝܬ ܕܡܥܕܪ. ܘܦܪܩܗ ܕܪܥܗ. ܘܙܕܝܩܘܬܗ ܗܝ ܣܡܟܬܗ. * ܠܒܫ
ܐܝܟ ܫܪܝܢܐ. ܘܣܢܘܪܬܐ ܕܦܘܪܩܢܐ ܒܪܝܫܗ. ܘܠܒܫ ܠܒܘܫܐ ܕܦܘܪܥܢܐ. *
ܡܢ ܣܢܐܘܗܝ. ܘܢܦܪܘܥ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. ܘܠܓܙܪܬܐ ܢܦܪܘܥ ܦܘܪܥܢܐ. *
ܡܢ ܡܥܪܒܐ ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܡܕܢܚ ܫܡܫܐ ܠܐܝܩܪܗ. ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܐܝܟ ܢܗܪܐ
ܠܚܘܪ ܆ ܘܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܬܡܟܟܝܘܗܝ. * ܘܢܐܬܐ ܠܨܗܝܘܢ ܦܪܘܩܐ ܆ ܘܠܕܗܦܟܝܢ
ܒܥܘܠ ܡܢ ܝܥܩܘܒ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܢܐ ܗܢܐ ܩܝܡܝ ܥܡܗܘܢ ܆ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܆
ܕܥܠܝܟ. ܘܡܠܝ ܕܣܡܬ ܒܦܘܡܟ ܆ ܠܐ ܢܥܒܪܢ ܡܢ ܦܘܡܟ ܘܡܢ ܦܘܡܗ
ܕܙܪܥܟ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܆ ܡܢ ܗܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܣ *

* ܩܘܡܝ ܐܢܗܪܝ ܆ ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܢܘܗܪܟܝ. ܘܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܠܝܟܝ ܕܢܚ. *
ܕܗܐ ܚܫܘܟܐ ܡܟܣܐ ܠܐܪܥܐ. ܘܥܪܦܠܐ ܠܐܡܘܬܐ. ܘܥܠܝܟܝ ܕܢܚ ܡܪܝܐ.
ܥܠܝܟܝ ܢܬܚܙܐ. * ܘܢܐܬܘܢ ܥܡܡܐ ܠܢܘܗܪܟܝ. ܘܡܠܟܐ ܠܢܘܗܪܐ ܕܕܢܚܟܝ. *
ܥܝܢܝܟܝ ܠܚܕܪܝܟܝ ܆ ܘܚܙܝ ܕܟܠܗܘܢ ܡܬܟܢܫܝܢ ܘܐܬܝܢ ܠܟܝ. ܒܢܝܟܝ
ܪܘܚܩܐ ܢܐܬܘܢ. ܘܒܢܬܟܝ ܥܠ ܦܪܣܐ ܢܬܪܒܝܢ. * ܗܝܕܝܢ ܬܚܙܝܢ. ܘܬܢܗܪܝܢ. ܘܬܚܕܝܢ
ܘܢܪܘܚ ܠܒܟܝ. ܡܛܠ ܕܢܬܗܦܟ ܥܠܝܟܝ ܥܘܬܪܗ ܕܝܡܐ. ܘܩܢܝܢܐ ܕܥܡܡܐ ܢܐܬܘܢ ܠܟܝ
* ܐܪܟܒܐ ܕܓܡܠܐ ܢܟܣܘܢܟܝ. ܒܘܟܪܐ ܕܡܕܝܢ ܘܕܥܝܦܐ. ܟܠܗܘܢ ܡܢ ܫܒܐ ܢܐܬܘܢ.
ܘܠܒܘܢܬܐ ܢܫܩܠܘܢ. ܘܬܫܒܘܚܬܗ ܕܡܪܝܐ ܢܣܒܪܘܢ.

Judicium retro vertimus, & juſtitiam procul 14
ſtatuimus: quia impegit veritas in platea, &
increpatio venire nequit: Veritas in abdito 15
verſata eſt, & abſceſſit prudentia ab intellectu
noſtro: Ideò videns Dominus nullum
eſſe judicium, ægrè tulit: Et videns nemi- 16
nem adeſſe, & nullum adjutorem adeſſe demiratus;
ſalvavit eum brachium ipſius, &
juſtitia ejus fulcivit eum: Induit juſtitiam 17
quaſi loricam, & galeam ſalutis in capite
ſuo: & induit veſtes retributionis: Ut vin- 18
dictam ſumat ab oſoribus ſuis, & rependat
inimicis ſuis, inſulis etiam retributionem reddat.
Formidabunt ab Occidente nomen 19
Domini, & ab ortu ſolis majeſtatem ejus;
quia veniente ſicut fluvio oppreſſore, ſpiritus
Dñi humiliabit eum: Sioni verò & his qui 20
avertunt iniquitatem à Jacobo, ſalvator adveniet,
dicit Dominus. Meum verò pactum 21
vobiſcum, iſtud erit, dicit Dominus; Spiritus
meus qui ſuper te eſt; & verba mea quæ
poſui in ore tuo, non deficient de ore tuo,
neque ab ore ſeminis progeniei tuæ, dicit Dominus,
ex hoc tempore uſque in ſeculum.

CAP. LX.

Surge, lucem ede; quoniam advenit lumen 1
tuum, & majeſtas Domini ſuper te orietur.
Nam ecce tenebræ operiunt terram, & ca- 2
ligo populos; ſuper te autem orietur
Dominus, & majeſtas ejus ſuper te videbitur:
Et venient gentes ad lumen tuum, & 3
reges ad fulgorem lucis tuæ. Attolle oculos 4
tuos circumquaque, & vide quomodo omnes
congregentur & veniant ad te: filii tui de
lonquinquo venient, & filiæ tuæ ſuper grabatis
nutrientur. Tunc videbis, & ſplen- 5
deſces, gaudebis, & dilatabitur cor tuum;
quoniam ad te convertentur divitiæ maris, &
opes gentium ad te venient: Agmen came- 6
lorum operiet te, primogeniti Madianis &
Ephæ, omnes de Saba venient aurum & thus
afferentes, & laudes Domini prædicabunt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وبعدنا خلف الحكم * والعدل وقف عنا بعيدا * لان الحق باد في طرقهم * ولم
يستطيعوا ان يعبروا باستقامة * والحق رفع * وبدلوا تمييز فهمهم لئلا يفهموا * ونظر الرب
ولم يرضه * لانه لم يكن حكم * ونظر ولم يكن رجل * وتامل ولم يكن ناصر
وانتقم منهم بذراعه * وسدد برحمته * ولبس العدل مثل الدرع * ووضع على راسه
بيضة الخلاص * وسربل ثوب الانتقام * ورداء مثل من يكافي مكافاة العار للمعاندين
* ويخافون الذين من المغارب اسم الرب * والذين من مشارق الشمس الاسم المجيد
لان الغضب من قبل الرب ياتي مثل نهر عاسف ياتي بحنق * وياتي لاجل صهيون المنقذ
ويصرف النفاق عن يعقوب * وهذا هو العهد الذي لهم من لدني قال الرب * روحي
الذي هو عليك وكلماتي التي اعطيتها في فيك لا تفني من فيك ولا من فم زرعك قال
الرب * منذ الان والى الابد *

* الفصل الستون *

* بشارة النبي لايروسليم * وهو قريان لاحد الفصح *

* استنيري يا ايروسليم * لان نورك اتي ومجد الرب اشرق عليك * لان هوذا الظلمة والضباب
يغشيان الارض على الامم وعليك يتجلى الرب ومجده يظهر عليك * ويسير الملوك في نورك
والامم في بهاء اشراقك * ارفعي عينيك حولك وانظري اولادك مجتمعين ها جميع بنيك ياتون
من البعد وبناتك يحملون على الاكتاف * حينئذ تنظرين وتفرحين وتخافين وتذهلين بقلبك
لانه ينقل اليك غنا البحر والامم والشعوب * وياتي اليك قطارات الابل وتغشاك جمال مدين والحف
ياتون جميعا من سابا حاملين ذهبا * ويقدمون لك لبانا وحجرا كريما ويبشرون بخلاص الرب

Retroceſſimus procul à judicio, & juſtitia 14
procul ſtetit à nobis; nam veritas periit
in viis eorum, nec poſſunt rectà incedere:
Veritas ablata eſt, & mutaverunt ratio- 15
nem mentis ſuæ, ne intelligerent. Hæc vi-
dens Dominus improbavit, eò quòd nullum
eſſet judicium. Videns itaque nul- 16
lum eſſe virum, & conſiderans nullum
eſſe adjutorem; vindictam ſumpſit ab
eis brachio ſuo: munivit ſe miſericordiâ
ſuâ, Induit juſtitiam quaſi loricam, im- 17
poſuit capiti ſuo galeam ſalutis, & ami-
civit ſe veſte ultionis, Induitque ſe 18
velut is qui reddit retributionem igno-
minioſam contumacibus. Adeoque ter- 19
rebuntur ii qui ſunt ad Occaſum, no-
men Domini, & qui ab ortu ſolis,
nomen illud glorioſum; quoniam ira
à Domino ventura eſt tanquam flu-
vius rapidus furibundè veniens. Pro 20
Sione verò venturus eſt redemptor,
qui ſcelus avertet à Jacobo. Cæte- 21
rùm, hoc eſt fœdus quod à me cum
illis initur, dicit Dominus; Spiritus
meus qui ſuper te eſt, & verba
mea quæ inſerui in os tuum, non de-
ficient ex ore tuo, neque ex ore ſe-
minis tui, ait Dominus, ex nunc in
ſempiternum uſque.

CAP. LX.

Annuntiatio Prophetæ ad Jeruſalem: legiturque Dominicâ Paſchatis.

Recipe lumen O Jeruſalem; quia 1
venit lumen tuum, & gloria Domini
ſuper te refulſit. Nam ecce tenebræ 2
& caligo terram obruunt ſuper gentes;
ſuper te verò apparebit Dominus, &
gloria ejus ſuper te patebit: Et ambu- 3
labunt reges in lumine tuo, & gentes
in nitore ſplendoris tui. Attolle oculos 4
tuos circum te, & aſpice filios tuos
congregatos: en omnes filii tui veni-
ent è longinquo, & filias tuas portabunt
ſuper humeros. Tunc videbis, & lætabe- 5
ris, timebis, & obſtupeſces in corde tuo;
quia tranferentur ad te divitiæ maris,
gentes, ac populi: Venient ad te greges 6
camelorum & operient te, dromades Me-
dianis & Gephæris venient ſimul de Saba
aurum advehentes; offerentque tibi in-
cenſum & lapillos pretioſos, & prædica-
bunt ſalutem Domini.

ישעיה : ס

Nebajoth arietes , tibi ſe congregabunt Chedar *pecus* *Omne*
7 כָּל־צֹאן קֵדָר יִקָּבְצוּ לָךְ אֵילֵי נְבָיוֹת
domum & , meum altare *voluntatem* ſuper Aſcendent .tibi miniſtrabunt
יְשָׁרְתוּנֶךְ יַעֲלוּ עַל־רָצוֹן מִזְבְּחִי וּבֵית
columbæ ſicut & , volabunt nubes ut iſtæ Quæ .glorificabo meæ gloriæ
8 תִּפְאַרְתִּי אֲפָאֵר׃ מִי־אֵלֶּה כָּעָב תְּעוּפֶינָה וְכַיּוֹנִים
Tarſis naves & , expectabunt *inſulæ* me Quia ? *ſua columbaria* ad
9 אֶל־אֲרֻבֹּתֵיהֶם׃ כִּי־לִי אִיִּים יְקַוּוּ וָאֳנִיּוֹת תַּרְשִׁישׁ
, eorum argentum : longinquo de tuos filios *adducendum ad* , principio in
בָּרִאשֹׁנָה לְהָבִיא בָנַיִךְ מֵרָחוֹק כַּסְפָּם
, Iſrael ſancto & , tui Dei Domini nomini , eis cum eorum aurum &
וּזְהָבָם אִתָּם לְשֵׁם יְהוָה אֱלֹהַיִךְ וְלִקְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל
, tuos muros alienigenæ filii ædificabunt Et .te glorificavit quia
10 כִּי פֵאֲרָךְ׃ וּבָנוּ בְנֵי־נֵכָר חֹמֹתַיִךְ
, te percuſſi mea ira in nam : tibi miniſtrabunt eorum reges &
וּמַלְכֵיהֶם יְשָׁרְתוּנֶךְ כִּי בְקִצְפִּי הִכִּיתִיךְ
, jugiter tuæ portæ aperientur Et .tui ſum miſertus mea voluntate in &
11 וּבִרְצוֹנִי רִחַמְתִּיךְ׃ וּפִתְּחוּ שְׁעָרַיִךְ תָּמִיד
, gentium fortitudinem te ad *afferendum ad* , claudentur non nocte ac die
יוֹמָם וָלַיְלָה לֹא יִסָּגֵרוּ לְהָבִיא אֵלַיִךְ חֵיל גּוֹיִם
tibi ſerverint non quæ regnum & gens Nam *ductos* eorum reges &
12 וּמַלְכֵיהֶם נְהוּגִים׃ כִּי־הַגּוֹי וְהַמַּמְלָכָה אֲשֶׁר לֹא־יַעַבְדוּךְ
te ad Lebanon Gloria .vaſtabuntur vaſtando gentes & : peribunt
13 יֹאבֵדוּ וְהַגּוֹיִם חָרֹב יֶחֱרָבוּ׃ כְּבוֹד הַלְּבָנוֹן אֵלַיִךְ
locum glorificandum ad , ſimul *ulmus &* , *ſapinus* , abies ; veniet
יָבוֹא בְּרוֹשׁ תִּדְהָר וּתְאַשּׁוּר יַחְדָּו לְפָאֵר מְקוֹם
te ad *ibunt* Et .glorificabo meorum pedum locum & , mei ſanctuarii
14 מִקְדָּשִׁי וּמְקוֹם רַגְלַי אֲכַבֵּד׃ וְהָלְכוּ אֵלַיִךְ
plantas ſuper ſe incurvabunt & , te affligentium filii ſe *incurvando*
שְׁחוֹחַ בְּנֵי מְעַנַּיִךְ וְהִשְׁתַּחֲווּ עַל־כַּפּוֹת
Domini civitatem te vocabunt & : te *reprobantes* omnes tuorum pedum
רַגְלַיִךְ כָּל־מְנַאֲצָיִךְ וְקָרְאוּ לָךְ עִיר יְהוָה
non & , *exoſam &* , *derelictam te eſſe* Pro .Iſrael Sancti Sijon
15 צִיּוֹן קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל׃ תַּחַת הֱיוֹתֵךְ עֲזוּבָה וּשְׂנוּאָה וְאֵין
, generationis gaudium , ſeculi *celſitudinem* in te ponam & : *tranſiens*
עוֹבֵר וְשַׂמְתִּיךְ לִגְאוֹן עוֹלָם מְשׂוֹשׂ דּוֹר
: lactaberis regum mamilla & , gentium lac ſuges Et .generationis &
16 וָדוֹר׃ וְיָנַקְתְּ חֲלֵב גּוֹיִם וְשֹׁד מְלָכִים תִּינָקִי
fortis tuus redemptor & , te *ſalvans* Dominus *ego* quòd ſcies &
וְיָדַעַתְּ כִּי־אֲנִי יְהוָה מוֹשִׁיעֵךְ וְגֹאֲלֵךְ אֲבִיר
afferam ferro pro & , aurum afferam ære Pro .Jahacob
17 יַעֲקֹב׃ תַּחַת הַנְּחֹשֶׁת אָבִיא זָהָב וְתַחַת הַבַּרְזֶל אָבִיא
: ferrum lapidibus pro & , æs lignis pro & ; argentum
כֶסֶף וְתַחַת הָעֵצִים נְחֹשֶׁת וְתַחַת הָאֲבָנִים בַּרְזֶל
audietur Non .juſtitiam *tuos exactores* & , pacem *tuum cenſum* ponam &
18 וְשַׂמְתִּי פְקֻדָּתֵךְ שָׁלוֹם וְנֹגְשַׂיִךְ צְדָקָה׃ לֹא־יִשָּׁמַע
: tuis terminis in contritio & , vaſtitas ; tua terra in rapina ultrà
עוֹד חָמָס בְּאַרְצֵךְ שֹׁד וָשֶׁבֶר בִּגְבוּלָיִךְ
Non .laudem tuas portas & , tuos muros ſalutem vocabis &
19 וְקָרָאת יְשׁוּעָה חוֹמֹתַיִךְ וּשְׁעָרַיִךְ תְּהִלָּה׃ לֹא־
non *luna ſplendorem in &* , *die* lucem in ſol amplius tibi erit
יִהְיֶה־לָּךְ עוֹד הַשֶּׁמֶשׁ לְאוֹר יוֹמָם וּלְנֹגַהּ הַיָּרֵחַ לֹא־
tuus Deus & , *ſeculi* lucem in Dominus tibi erit ſed : te illuminabit
יָאִיר לָךְ וְהָיָה־לָךְ יְהוָה לְאוֹר עוֹלָם וֵאלֹהַיִךְ
non tua luna & , tuus ſol ultrà occidet Non .tuam gloriam in
20 לְתִפְאַרְתֵּךְ׃ לֹא־יָבוֹא עוֹד שִׁמְשֵׁךְ וִירֵחֵךְ לֹא
dies finientur & , *ſeculi* lucem in tibi erit Dominus quia : *colligetur*
יֵאָסֵף כִּי יְהוָה יִהְיֶה־לָּךְ לְאוֹר עוֹלָם וְשָׁלְמוּ יְמֵי
.tui luctus
אֶבְלֵךְ׃

Verſio VULG. LAT.

7 Omne pecus Cedar congrega-
bitur tibi, arietes Nabaioth mi-
niſtrabunt tibi: offerentur ſup
placabili altari meo, & domum
majeſtatis meæ glorificabo.
8 Qui ſunt iſti, qui ut nubes vo-
lant, & quaſi columbæ ad fe-
9 neſtras ſuas? Me enim inſulæ
expectant, & naves maris in
principio, ut adducã filios tuos
de longè; argentũ eorum &
aurum eorum cum eis, nomini
Dñi Dei tui, & Sancto Iſrael,
10 quia glorificavit te. Et ædifi-
cabunt filii peregrinorum mu-
ros tuos, & reges eorum mi-
niſtrabunt tibi: in indignatio-
ne enim mea percuſſi te: &
in reconciliatione mea miſer-
11 tus ſum tuî. Et aperientur por-
tæ tuæ jugiter: die ac nocte
non claudentur, ut afferatur
ad te fortitudo Gentium, &
12 reges earum adducantur. Gens
enim & regnum, ꝙ non ſer-
vierit tibi, peribit: & Gentes
13 ſolitudine vaſtabuntur. Gloria
Libani ad te veniet, abies &
buxus, & pinus ſimul, ad or-
nandum locum ſanctificatio-
nis meæ; & locum pedum
14 meorum glorificabo. Et veni-
ent ad te curvi filii eorum qui
humiliaverunt te, & adora-
bunt veſtigia pedum tuorum
omnes qui detrahebant tibi, &
vocabunt te Civitatem Dñi,
15 Sion Sancti Iſrael. Pro eo ꝙ
fuiſti derelicta, & odio habita,
& non erat qui ꝑ te tranſiret,
ponã te in ſuperbiam ſeculo-
rum, gaudium in generationẽ
16 & generationẽ: & Suges lac
Gentium, & mamillâ regum
lactaberis: & ſcies quia ego
Dñs ſalvans te, & redemptor
17 tu⁹ fortis Jacob. Pro ære affe-
ram aurum, & pro ferro affe-
rã argentũ, & pro lignis æs, et
pro lapidib⁹ ferrũ: et ponã vi-
ſitationẽ tuã pacẽ, & præpoſi-
18 tos tuos juſtitiã. Non audietur
ultrà iniquitas in terra tua, va-
ſtitas & contritio in terminis
tuis, & occupabit ſalus muros
19 tuos, et portas tuas laudatio. Nõ
erit tibi ampliùs Sol ad lucen-
dum ꝑ diem, nec ſplendor Lu-
næ illuminabit te: ſed erit tibi
Dñs in lucem ſempiternam, et
20 De⁹ tu⁹ in gloriã tuã. Non oc-
cidet ultrà Sol tuus, et Luna
tua non minuetur: quia erit
tibi Dñs in lucem ſempiternã,
et complebuntur dies luct⁹ tui.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 Καὶ πάντα τὰ πρόβατα Κηδὰρ συναχθή-
σονται, καὶ (ε) κριοὶ Ναβαιὼθ ἥξουσι, καὶ ἀν-
ενεχθήσεται δεκτὰ ἐπὶ τὸ θυσιαστήριόν μου,
καὶ ὁ οἶκος τῆς προσευχῆς μου δοξασθήσεται.
8 Τίνες οἵδε, ὡς νεφέλαι πέτανται, καὶ (ζ) ὡσεὶ
9 περιστεραὶ σὺν νεοσσοῖς ἐπ' ἐμέ; Ἐμὲ αἱ νῆ-
σοι ὑπέμειναν, καὶ πλοῖα Θαρσὶς ἐν πρώτοις,
ἀγαγεῖν τὰ τέκνα σου μακρόθεν, καὶ τὸν ἄρ-
γυρον καὶ τὸν χρυσὸν (η) αὐτῶν μετ' αὐτῶν,
καὶ διὰ τὸ ὄνομα κυρίου τὸ ἅγιον, καὶ διὰ τὸ
10 τὸν ἅγιον τοῦ Ἰσραὴλ ἔνδοξον εἶναι. Καὶ οἰκο-
δομήσουσιν ἀλλογενεῖς τὰ τείχη σου, καὶ οἱ
βασιλεῖς αὐτῶν παραστήσονταί σοι· διὰ γὰρ
ὀργήν μου ἐπάταξά σε, καὶ διὰ (θ) ἔλεον ἠ-
11 γάπησά σε. Καὶ ἀνοιχθήσονται αἱ πύλαι
σου διαπαντὸς, ἡμέρας καὶ νυκτὸς οὐ κλεισθή-
σονται, εἰσαγαγεῖν πρὸς σὲ δύναμιν ἐθνῶν,
12 καὶ (ι) βασιλεῖς αὐτῶν ἀγομένους. Τὰ γὰρ
ἔθνη καὶ οἱ (κ) βασιλεῖς, οἵτινες οὐ δουλεύσου-
σί σοι, (λ) ἀπολοῦνται, καὶ τὰ ἔθνη ἐρημίᾳ
13 (μ) ἐρημωθήσεται. Καὶ ἡ δόξα τοῦ Λιβάνου
πρὸς σὲ ἥξει, ἐν κυπαρίσσῳ καὶ πεύκῃ καὶ κέ-
δρῳ ἅμα, δοξάσαι τὸν τόπον τὸν ἅγιόν μου.
14 Καὶ πορεύσονται πρὸς σὲ δεδοικότες υἱοὶ τα-
πεινωσάντων σε, καὶ παροξυνάντων σε, καὶ
κληθήσῃ Πόλις κυρίου, Σιὼν ἁγίου Ἰσραήλ·
15 Διὰ τὸ γεγενῆσθαί σε ἐγκαταλελειμμένην
καὶ μεμισημένην, καὶ οὐκ ἦν ὁ βοηθῶν. καὶ θή-
σω σε ἀγαλλίαμα αἰώνιον, εὐφροσύνην γενε-
16 ῶν γενεαῖς. Καὶ θηλάσεις γάλα ἐθνῶν, καὶ
πλοῦτον βασιλέων φάγεσαι, καὶ γνώσῃ, ὅτι ἐ-
γὼ κύριος ὁ σώζων σε, καὶ ἐξαιρούμενός σε
17 (ν) θεὸς Ἰσραήλ. Καὶ ἀντὶ χαλκοῦ οἴσω σοι
χρυσίον, ἀντὶ δὲ σιδήρου οἴσω σοι ἀργύρει-
ον, ἀντὶ δὲ (ξ) ξύλων οἴσω σοι χαλκὸν, ἀν-
τὶ δὲ λίθων, σίδηρον. καὶ δώσω τοὺς ἄρχον-
τάς σου ἐν εἰρήνῃ, καὶ τοὺς ἐπισκόπους σου ἐν
18 δικαιοσύνῃ. Καὶ οὐκ ἀκουσθήσεται ἔτι ἀδι-
κία ἐν τῇ γῇ σου, οὐδὲ σύντριμμα, οὐδὲ τα-
λαιπωρία ἐν τοῖς ὁρίοις σου, ἀλλὰ κληθήσε-
ται Σωτήριον τὰ τείχη σου, καὶ αἱ πύλαι
19 σου Γλύμμα. Καὶ οὐκ ἔσται (ο) σοι ἔτι ὁ ἥ-
λιος εἰς φῶς ἡμέρας, οὐδὲ ἀνατολὴ σελή-
νης φωτιεῖ (π) σου τὴν νύκτα, ἀλλ' ἔσται σοι
κύριος φῶς αἰώνιον, καὶ ὁ θεὸς δόξα σου.
20 Οὐ γὰρ δύσεται ὁ ἥλιός (ρ) σοι, καὶ ἡ σελή-
νη σοι οὐκ ἐκλείψει· ἔσται (σ) γάρ σοι κύριος
φῶς αἰώνιον, καὶ ἀναπληρωθήσονται αἱ ἡμέραι
τοῦ πένθους σου.

Et omnes oves Cedar congregabuntur: & arietes Nabaioth venient: & offerentur acceptabilia ſuper altare meum: & domus orationis meæ glorificabitur. Quinam iſti, ut nubes volant, & ſicut columbæ cum pullis ad me? Me inſulæ expectârunt, & naves Tharſis in primis, ut adducant filios tuos de longè, & argentum, & aurum eorum cum eis, & propter nomen Domini ſanctum: & (b) quia Sanctus Iſrael glorificatus eſt. Et ædificabunt alienigenæ muros tuos: & reges eorum aſſiſtent tibi: Propter iram enim meam percuſſi te: & propter miſericordiam dilexi te. Et aperientur portæ tuæ ſemper: die ac nocte non claudentur, ut introducant ad te fortitudinem gentium, & reges eorum, qui adducendi ſunt. Gentes enim & reges, qui non ſervient tibi, peribunt: & gentes ſolitudine deſolabuntur. Et gloria Libani ad te veniet in cypariſſo, & pino, & cedro ſimul, ut glorificetur locus ſanctus (c) meus. Et ibunt ad te timentes filii eorum, qui te humiliaverunt, & irritaverũt te: & vocaberis, (d) Civitas Domini, Sion Sancti Iſrael: Pro eo quòd fuiſti derelicta, & odio habita: & non erat qui auxiliaretur. Et ponam te exultationem æternam, gaudium generationum generationibus. Et ſuges lac gentium, & divitias regum comedes, Et ſcies, quia ego Dominus, qui ſalvabo te, & qui eruo te, Deus Iſrael. Et pro ære afferam tibi aurum: & pro ferro afferam tibi argentum: & pro lignis afferam tibi æs, & pro lapidibus ferrum. Et dabo principes tuos in pace, & epiſcopos tuos in juſtitia: Et non audietur ultrà iniquitas in terra tua: neq; contritio, neq; miſeria in finibus tuis; ſed vocabuntur (e) Salutare muri tui, & portæ tuæ Sculptura. Et non erit tibi Sol ultrà in lucem diei, neq; ortus Lunæ lumen præbebit tibi nocte: ſed erit tibi Dominus lux æterna, & Deus gloria tua. Non enim occidet Sol tibi: & Luna tibi non deficiet. Erit enim tibi Dominus lux ſempiterna: & complebuntur dies luctûs tui.

MS.A. (ε) οἱ κριοὶ Ναβαιὼθ ἥξουσίν σοι, (ζ) ὡς περιστεραὶ σὺν νεοσσοῖς; Ἐμὲ νῆσοι (η) μετ' αὐτῶν, διὰ τὸ ὄνομα (θ) ἔλεος (ι) βασιλεῖς ἀγομένοις. (κ) βασιλεῖς αὐτῶν, (λ) ἀποθανοῦνται, (μ) ἐρημωθήσονται. (ν) ὁ θεὸς (ξ) ξύλου, (ο) σοὶ ὁ ἥλιος (τ) σοι (ρ) σου, (σ) γὰρ κύριός σοι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 כָּל עָאן עַרְבָאֵי יִתְכַּנְשׁוּן לְנַיִךְ דִּכְרֵי נְבָיוֹת יְשַׁמְּשׁוּנִיךְ יִתַּסְקוּן לְרַעֲוָא עַל מַדְבְּחִי
8 וּבֵית תּוּשְׁבַּחְתִּי אֲשַׁבַּח׃ מַן אִלֵּין דְּאָתְיָן בִּגְלֵי כַּעֲנָנִין קַלִּילִין וְלָא אִתְעַכְּבָא גָּלוּתָא
9 דְּיִשְׂרָאֵל דְּמִתְכַּנְּשִׁין וְאָתְיָן לְאַרְעֲהוֹן הָא כְּיוֹנִין דְּתָיְבִין לְגוֹ שׁוֹבְכֵיהוֹן׃ אֲרֵי לְמֵימְרִי נַגְוָן
יְסַבְּרוּן וְנָחֲתֵי סְפִינֵי יַמָּא אִידָא פְּרִסָא קַלְעֲהָא בְּקַדְמֵיתָא לְאַיְתָאָה בְנַיִךְ מֵרָחִיק
10 כַּסְפְּהוֹן וְדַהַבְהוֹן עִמְּהוֹן לִשְׁמָא דַּיְיָ אֱלָהָךְ וּלְקַדִּישָׁא דְּיִשְׂרָאֵל אֲרֵי שַׁבְּחָךְ׃ וְיִבְנוּן בְּנֵי
11 עַמְמַיָּא שׁוּרִךְ וּמַלְכֵיהוֹן יְשַׁמְּשׁוּנִיךְ אֲרֵי בִרְגְזִי אַלְקֵיתִיךְ וּבִרְעוּתִי אֲרַחֵם עֲלָךְ׃ וְיִתְפַּתְּחוּן
תַּרְעַךְ תְּדִירָא יְמָם וְלֵילֵי לָא יִתְאַחֲדוּן לְאַעָלָא לְנַיִךְ נִכְסֵי עַמְמַיָּא וּמַלְכֵיהוֹן זְקִיקִין׃
12 אֲרֵי עַם וּמַלְכוּ דְּלָא יִפְלְחוּנִיךְ יְרוּשְׁלֵם יֵיבְדוּן וְעַמְמַיָּא אִשְׁתֵּיצָאָה יִשְׁתֵּיצוּן׃ יְקַר לִבְנָן
13 לְנַיִךְ יִתְעַל בִּירָן מוֹרְנָן וְאַשְׁכְּרְעִין כַּחְדָא לְשַׁבָּחָא אֲתַר בֵּית מַקְדְּשִׁי וַאֲתַר בֵּית
14 אַשְׁרָיוּת שְׁכִנְתִּי אֵיקַר׃ וִיהָכוּן לְנַיִךְ כְּפִיפִין בְּנֵי מְשַׁעְבְּדַיִךְ וְיִשְׁתַּטְּחוּן לְמִבְעֵי מִנִּיךְ עַל
פַּרְסַת רַגְלַיִךְ כָּל דַּהֲווֹ מַרְגְּזִין לִיךְ וְיִקְרוֹן לִיךְ קַרְתָּא דַּיְיָ צִיּוֹן דְּאִתְרְעִי בַהּ קַדִּישָׁא
15 דְּיִשְׂרָאֵל׃ חֲלָף דַּהֲוֵית שְׁבִיקָא וּמְטַלְטְלָא וְלֵית דַּעֲדֵי וַאֲשַׁוִּנִּךְ לִיקַר עָלַם בֵּית חֶדְוָה דָּר
16 וְדָר׃ וְתִסְבְּעִין נִכְסֵי עַמְמַיָּא וּבְבִזַּת מַלְכִין תִּתְפַּנְּקִין וְתִדְעִין אֲרֵי אֲנָא יְיָ פָּרְקִיךְ וּמְשֵׁיזְבִיךְ
17 תַּקִּיפָא דְּיַעֲקֹב׃ חֲלָף נְחָשָׁא דִּבְזוֹ מִנִּיךְ יְרוּשְׁלֵם אַיְתֵי דַּהֲבָא וַחֲלָף בַּרְזְלָא אַיְתֵי כַּסְפָּא
18 וַחֲלָף אָעַיָּא נְחָשָׁא וַחֲלָף אַבְנַיָּא בַּרְזְלָא וַאֲשַׁוֵּי פַּרְנָסִךְ שְׁלָם וְשִׁלְטוֹנַיִךְ בִּזְכוּ׃ לָא
יִשְׁתְּמַע עוֹד חַטְפָא בְּאַרְעִיךְ בִּזָּא וְתַבִּירָא בִּתְחוּמִיךְ וְיִקְרוֹן פּוּרְקָן עַל שׁוּרִיךְ וְעַל תַּרְעַיִךְ
19 יְהוֹן מְשַׁבְּחִין׃ לָא תִצְטָרְכִין עוֹד לִנְהוֹר שִׁמְשָׁא בִּימָמָא וְאַף לָא לְזִהוֹר סִיהֲרָא בְּלֵילְיָא
20 וִיהֵי לִיךְ יְיָ לִנְהוֹר עָלַם וֶאֱלָהָךְ לְתוּשְׁבַּחְתִּיךְ׃ לָא תִבְטַל עוֹד מַלְכוּתִיךְ וִיקָרִיךְ לָא
יַעְדֵּי אֲרֵי יְיָ יְהֵי לִיךְ לִנְהוֹר עָלַם וְיִשְׁלְמוּן יוֹמֵי אֶבְלִיךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Omnes oves Arabum congregabuntur ad te; arietes Nabajoth miniſtrabunt tibi: offerentur voluntariè ſuper altare meum; & domum laudis meæ decorabo. Qui ſunt iſti qui veniunt pubicè ſicut nubes velociſſimæ, nec demorantur? Tranſmigratio Iſrael, quæ congregatur & venit ad terrã ſuam, quaſi columbæ quæ revertuntur ad columbaria ſua. Verbum enim meum inſulæ expectabunt, & qui deſcendunt in navibus maris, prius manu extenſis velis, ut afferant filios tuos à longè; argentum eorum & aurũ eorum cum eis, propter nomen Dei tui, & ſanctum Iſrael qui decoravit te. Et ædificabunt filii populorum muros tuos, & reges eorum miniſtrabunt tibi: quia in ira mea pecuſſi te, & in voluntate mea miſerebor tui. Et aperientur portæ tuæ ſemper, die ac nocte non claudentur, ut afferantur ad te divitiæ populorum, & reges eorum compediti. Quia popul⁹ & regnũ quæ non ſervierint tibi, Jeruſalem, peribunt; & populi conſummatione conſummabuntur. Decor Libani ad te introducetur, abietes, & buxi & pini ſimul, ad decorandũ locũ dom⁹ ſanctuarii mei; et locũ manſionis majeſtatis meæ glorificabo. Et ibunt ad te incurvi filii eorũ qui ſubjiciebant te; & proni in terra cadent ad plantas pedum tuorum, ut rogent te, omnes qui irritabant te: & vocabunt te Civitatem Dñi Sion, quam elegit Sanctus Iſrael. Pro eo quòd fuiſti derelicta & tranſmigrans, & non erat qui per te tranſiret: ponã te in gloriã ſeculi, domũ lætitiæ generationis & generationis. Et ſatiaberis divitiis populorum, & præda regũ delectaberis: & ſcies quia ego Dñs ſalvator tu⁹, & liberator tuus fortis Jacob. Pro ære quod diripuerunt à te Jeruſalem, afferã aurum, & pro ferro afferã argentũ, & pro lignis æs, & pro lapidib⁹ ferrum: & ponam gubernatores tuos in pace, & principes tuos in juſtitia. Non audietur ultrà rapina in terra tua; neque præda & contritio in terminis tuis. Et proclamabunt ſalutem ſuper muros tuos, & ſuper portas tuas erunt laudantes. Non indigebis ampliùs lumine Solis per diem, neque ſplendore Lunæ per noctem: erit enim tibi Dñs in lucem ſempiternam, & Deus tuus in laudem tuam. Non ceſſabit amplius regnum tuum, et gloria tua non auferetur: quia Dñs erit tibi in lucem ſempiternam, et complebuntur dies luctus tui.

CAP. LX.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܟܠܗ ܥܢܐ ܕܩܕܪ ܢܬܟܢܫܢ ܠܟܝ. ܘܕܟܪܐ ܕܢܒܝܘܬ ܢܫܡܫܘܢܟܝ. ܘܢܣܩܘܢ ܠܪܥܘܬܐ 7
ܥܠ ܡܕܒܚܝ. ܘܒܝܬܐ ܕܬܫܒܘܚܬܝ ܐܫܒܚ. * ܡܢ ܐܢܘܢ ܗܠܝܢ ܕܐܝܟ ܥܢܢܐ ܦܪܚܝܢ 8
ܘܐܝܟ ܝܘܢܐ ܠܟܘܘܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܠܝ ܢܣܟܘܢ ܓܙܪܬܐ. ܘܐܠܦܐ ܕܬܪܫܝܫ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܡܝܬܐ 9
ܠܡܝܬܝܘ ܒܢܝܟܝ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܘܣܐܡܗܘܢ ܘܕܗܒܗܘܢ ܥܡܗܘܢ. ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ
ܐܠܗܟܝ: ܘܠܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܕܫܒܚܟܝ. * ܘܢܒܢܘܢ ܒܢܝ ܢܘܟܪܝܐ ܫܘܪܝܟܝ 10
ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܢܫܡܫܘܢܟܝ. ܡܛܠ ܕܒܪܘܓܙܝ ܡܚܝܬܟܝ. ܘܒܪܥܘܬܝ ܐܬܪܚܡܬ ܥܠܝܟܝ.
* ܢܬܦܬܚܘܢ ܬܪܥܝܟܝ ܐܡܝܢܐܝܬ. ܒܐܝܡܡܐ ܘܒܠܠܝܐ. ܘܠܐ ܢܬܐܚܕܘܢ. ܘܢܥܠܘܢ ܠܟܝ 11
ܚܝܠܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܟܕ ܕܒܝܪܝܢ. * ܡܛܠ ܕܥܡܐ ܘܡܠܟܘܬܐ ܕܠܐ ܢܫܬܥܒܕܘܢ 12
ܠܟܝ ܢܐܒܕܘܢ. ܘܥܡܡܐ ܒܚܪܒܐ ܢܬܚܪܒܘܢ. * ܐܝܩܪܐ ܕܠܒܢܢ ܠܟܝ ܢܐܬܐ. ܒܪܘܬܐ ܫܦܝܪܐ 13
ܥܡ ܫܘܪܒܝܢܐ ܐܟܚܕܐ. ܠܡܫܒܚܘ ܐܬܪܐ ܕܡܩܕܫܝ. ܘܐܬܪܐ ܕܪܓܠܝ ܐܝܩܪ. * ܘܢܐܬܘܢ ܠܟܝ 14
ܟܕ ܡܬܡܟܟܝܢ. ܒܢܝܐ ܕܡܡܟܟܝܢܟܝ. ܘܢܣܓܕܘܢ ܠܟܦܬܐ ܕܪܓܠܝܟܝ. ܟܠܗܘܢ
ܡܪܓܙܢܝܟܝ. ܘܢܩܪܘܢܟܝ ܨܗܝܘܢ ܡܕܝܢܬܗ ܕܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܚܠܦ ܕܗܘܝܬܝ 15
ܫܒܝܩܬܐ ܘܣܢܝܬܐ. ܡܢ ܕܠܐ ܥܒܪ. ܐܥܒܕܟܝ ܫܘܒܗܪܐ ܠܥܠܡ. ܘܚܕܘܬܐ ܠܕܪܕܪܝܢ.
* ܘܬܝܢܩܝܢ ܚܠܒܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܬܐܟܠܝܢ ܥܘܬܪܐ ܕܡܠܟܐ. ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܦܪܘܩܟܝ 16
ܘܡܚܠܨܢܟܝ. ܥܫܝܢܗ ܕܝܥܩܘܒ. * ܚܠܦ ܢܚܫܐ ܐܝܬܐ ܕܗܒܐ. ܘܚܠܦ ܦܪܙܠܐ ܐܝܬܐ 17
ܣܐܡܐ. ܘܚܠܦ ܩܝܣܐ ܢܚܫܐ. ܘܚܠܦ ܟܐܦܐ ܦܪܙܠܐ. ܘܐܥܒܕ ܣܥܘܪܐ ܦܩܘܕܝܟܝ
ܫܠܡܐ. ܘܫܠܝܛܢܝܟܝ ܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܠܐ ܢܫܬܡܥ ܬܘܒ ܥܘܠܐ ܒܐܪܥܟܝ. ܘܒܙܬܐ ܘܬܒܪܐ ܒܬܚܘܡܝܟܝ. 18
ܘܬܩܪܝܢ ܫܘܪܝܟܝ ܦܘܪܩܢܐ. ܘܬܪܥܝܟܝ ܬܫܒܘܚܬܐ. * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܟܝ ܬܘܒ ܫܡܫܐ 19
ܠܢܘܗܪܐ ܕܐܝܡܡܐ. ܘܢܘܗܪܗ ܕܣܗܪܐ. ܠܐ ܢܢܗܪ ܠܟܝ. ܡܛܠ ܕܢܗܘܐ ܠܟܝ ܡܪܝܐ
ܢܘܗܪܐ ܕܠܥܠܡ. * ܘܢܫܠܡܘܢ ܝܘܡܬܐ ܕܐܒܠܟܝ. 20

Omnes Cedaris oves congregabunt tibi, & arietes Nebaoth inſervient tibi, aſcendéntque in *ſacrificium* gratum ſuper altare meum, & domum gloriæ meæ glorioſam reddam. 7

Qui ſunt iſti, *inquies*, qui ut nubes volant, & ut columbæ ad feneſtras ſuas? 8

Me enim expectabunt inſulæ & naves Tharſis ut ab initio, ad adducendum filios tuos è longinquo, & argentum atque aurum eorum cum ipſis, ad nomen Domini Dei tui, & ad Sanctum Iſraelis qui te glorificavit. 9

Et ædificabunt alienigenæ muros tuos, & reges eorum miniſtrabunt tibi: quoniam in ira mea percuſſi te, & placatus miſertus ſum tui. 10

Apertæ ſemper erunt portæ tuæ diu noctúque, nec unquam claudentur; & ingredientur in te exercitus populorum & reges eorum impulſi. 11

Nam populus & regnum quæ non ſervierint tibi, peribunt, & populi gladio trucidabuntur. 12

Gloria Libani ad te veniet, abies decora unà cum pinis, ad laudandum locum ſanctuarii mei, & locum pedum majeſtatis meæ. 13

Et venient ad te humiliati filii humiliantium te, & adorabunt plantas pedum tuorum quicunque ad iram te excitabant; & appellabunt te Sionem civitatem Domini ſancti Iſraelis. 14

Pro eo quòd fuiſti derelicta & exoſa, adeò ut nemo *per te* tranſiret, reddam te glorioſiſſimam in perpetuum, et lætiſſimam in generationes ſempiternas. 15

Et ſuges lac gentium, et ſpolia regum ſuges, et experieris me eſſe Dominum redemptorem ac vindicem tuum, fortem Jacobi. 16

Pro ære adducam aurum, pro ferro adducam argentum, pro lignis æs, et pro lapidibus ferrum: cenſorem tuum conſtituam pacem, et præfectum tuum juſtitiam. 17

Non audietur ampliùs iniquitas in terra tua, direptio aut contritio in terminis tuis: imò vocabunt muros tuos Salutem, et portas tuas Laudem. 18

Non erit tibi ampliùs ſol in lucem diurnam, et ſplendor lunæ non lucebit tibi, quia Dominus erit tibi lux perpetua. 19

Ceſſabunt dies luctûs tui; 20

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وجميع خراف قيدار يجمعون لك * وكباش نابوت يوافون اليك * ويقدم مقبولات على مذبحي 7
ويمجد بيت صلاتي * من هولاء الذين يطيرون مثل السحاب ومثل الحمامات مع فراخهن * لي 8 9
ينتظر الجزاير * وسفن ترسيس في الاوايل * لتحضر اولادك من البعد وفضتهم وذهبهم معهم
لاجل اسم الرب القدوس ولاجل قدوس اسراييل * ليكون ممجودا * وتبني البنون الغرباء 10
الجنس اسوارك * وملوكهم يقفون لك * لاني بغضبي ضربتك * وبرحمتي احببتك * وتفتح 11
ابوابك يا اورشليم كل حين نهارا وليلا * ولا يغلقون * لتدخل قوة الامم وملوكهم مساقون
* لان الامم وملوكهم الذين لا يتعبدون لك يهلكون * والامم كالقفر يخربون * ومجد لبنان 12 13
اليك ياتي بسربين وصنوبر وارز معا * لامجد موضعي المقدس * وامجد موضع قدمي
* ويسير اليك بنو الذين اذلوك او غاظوك خايفين * ويسجدون لك على اثار قدميك 14
جميع الذين اغاظوك * وتدعين صهيون مدينة الرب قدوس اسراييل * لاجل انك كنت 15
مهملة ومبغوضة ولم يكن لك معين * فاجعلك بهجة ابدية سرورا لجيل الاجيال
* وترضعين لبن الامم * وتاكلين غنا الملوك * وتعلمين اني انا هو الرب مخلصك ومنقذك 16
اله اسراييل * وبدل النحاس اقدم لك ذهبا * وبدل الحديد اقدم لك فضة * وبدل الخشب 17
اقدم لك نحاسا * وبدل الحجارة حديدا * واعطي روسايك في السلامة * ومتعهديك في
العدل * ولا يسمع ايضا ظلم في ارضك * ولا انكسار ولا سحوق في حدودك * بل تدعى 18
اسوارك خلاصا وابوابك صيانة * ولا تكون لك الشمس لنور النهار ولا اشراق القمر لنور 19
الليل كله * لكن يصير لك الرب نورا ابديا * والله مجدك * لان شمسك لا تغرب * ويكون 20
قمرك لا ينقص * لان الرب لك نور ابدي * وتكمل ايام حزنك *

Omnes Cedaris pecudes tibi congregabuntur, & arietes Nabaoth ad te venient, & offerentur accepti ſuper altare meum, eritque glorioſa domus orationis meæ. 7

Qui ſunt iſti qui nubium inſtar volant, & quaſi columbæ cum pullis ſuis? 8

Me expectabunt inſulæ & claſſes Tharſis in primis, ut adducant filios tuos è longinquo, & argentum atque aurum eorum unà cum ipſis, pro nomine Domini ſacroſancto, & pro Sancto Iſraelis, ut glorificetur. 9

Et ædificabunt alieni generis filii mœnia tua, & reges eorum aſſurgent tibi: quoniam in indignatione mea te percuſſi, & in miſericordia mea te dilexi. 10

Portæ tuæ O Jeruſalem, jugiter patebunt diu noctuque, & non claudentur; ut ingrediatur fortitudo gentium, & reges earum adacti. 11

Nam populi & reges eorum, qui non ſervierint tibi, morientur: & gentes quaſi deſertum vaſtabuntur. 12

Gloria Libani ad te veniet unà cum pinis abietibus ac cedris, ut glorioſum reddam locum meũ ſanctũ, & glorioſum reddã locum pedum meorum. 13

Teque trepidi adibunt filii eorum qui te depreſſerunt aut contriſtârunt, & adorabunt te ſuper veſtigia pedum tuorum omnes qui te mœrore affecerunt; & vocaberis Sion urbs Domini ſancti Iſraelis. 14

Quia fuiſti derelicta & exoſa, nec adfuit tibi adjutor; efficiam te jucunditatem æternam & gaudium omnium poſteritatum: 15

Et ſuges lac populorum, comedeſque divitias regum, & ſcies me eſſe Dominum ſervatorem ac redemptorem tuum, Deum Iſraelis. 16

Pro ære offeram tibi aurum, & pro ferro offeram tibi argentum, pro ligno offeram tibi æs, & pro lapidibus ferrum: Dabóque prætores tuos in pace, & cenſores tuos in juſtitia: 17

Et non audietur deinceps oppreſſio in terra tua, neque contritio neque calamitas in finibus tuis; ſed mœnia tua vocabuntur Salus, & portæ tuæ Protectio. 18

Non erit tibi ſol iſte in lucem diurnam, neque claritas lunæ in lucem totius noctu; ſed erit tibi Dominus in lucem perpetuam, & Deus in gloriam tuam. 19

Sol enim tuus nequaquam occubiturus eſt, neque luna tua defectum paſſura; quia Dominus tibi erit luci perpetuæ, deſinentque dies mœroris tui: 20

יְשַׁעְיָה : סא

:terram accipiet hæreditate feculum in , justi ipsi omnes tu⁹ popul⁹ Et
21 וְעַמֵּךְ כֻּלָּם צַדִּיקִים לְעוֹלָם יִירְשׁוּ אָרֶץ
.me glorificandum ad, mearũ manuum opus , mearum plantationum virgultum
נֵצֶר מַטָּעַו מַעֲשֵׂה יָדַי לְהִתְפָּאֵר׃
Dominus ego : fortem gentem in pusillus & , mille in erit Parvus
22 הַקָּטֹן יִהְיֶה לָאֶלֶף וְהַצָּעִיר לְגוֹי עָצוּם אֲנִי יְהוָה
.illud faciam accelerare suo tempore in
בְּעִתָּהּ אֲחִישֶׁנָּה׃

CAP. LXI. סא

me Dominus unxit eapropter : me super DOMINI Domini Spiritus
1 רוּחַ אֲדֹנָי יְהוִה עָלָי יַעַן מָשַׁח יְהוָה אֹתִי
,corde contritos fascia ligandum ad me misit : mansuetis evangelizandum ad
לְבַשֵּׂר עֲנָוִים שְׁלָחַנִי לַחֲבֹשׁ לְנִשְׁבְּרֵי־לֵב
.carceris apertionem vinctis & ,libertatem captivis prædicandum ad
לִקְרֹא לִשְׁבוּיִם דְּרוֹר וְלַאֲסוּרִים פְּקַח־קוֹחַ׃
;nostro Deo ultionis diem & ,DOMINO voluntatis annum prædicandũ Ad
2 לִקְרֹא שְׁנַת־רָצוֹן לַיהוָה וְיוֹם נָקָם לֵאלֹהֵינוּ
, Sijon lugentibus ponendum Ad .lugentes omnes consolandum ad
3 לְנַחֵם כָּל־אֲבֵלִים׃ לָשׂוּם לַאֲבֵלֵי צִיּוֹן
amictum , luctu pro gaudii oleum ,cinere pro gloriam eis dandum ad
לָתֵת לָהֶם פְּאֵר תַּחַת אֵפֶר שֶׁמֶן שָׂשׂוֹן תַּחַת אֵבֶל מַעֲטֵה
plantatio , justitiæ arbores eis vocabitur & : stricto spiritu pro laudis
תְהִלָּה תַּחַת רוּחַ כֵּהָה וְקֹרָא לָהֶם אֵילֵי הַצֶּדֶק מַטַּע
, seculi desolationes ædificabunt Et .me glorificandum ad DOMINI
4 יְהוָה לְהִתְפָּאֵר׃ וּבָנוּ חָרְבוֹת עוֹלָם
,solitudinis civitates innovabunt & : erigent priscorum solitudines
שֹׁמְמוֹת רִאשֹׁנִים יְקוֹמֵמוּ וְחִדְּשׁוּ עָרֵי חֹרֶב
pascent & ,alieni stabunt Et .generationis & ,generationis deserta
5 שֹׁמְמוֹת דּוֹר וָדוֹר׃ וְעָמְדוּ זָרִים וְרָעוּ
.vestri vinitores & ,vestri agricolæ alienigenæ filii & : vestrum pecus
צֹאנְכֶם וּבְנֵי נֵכָר אִכָּרֵיכֶם וְכֹרְמֵיכֶם׃
dicetur ,nostri Dei Ministri ,vocabimini DOMINI Sacerdotes vos Et
6 וְאַתֶּם כֹּהֲנֵי יְהוָה תִּקָּרֵאוּ מְשָׁרְתֵי אֱלֹהֵינוּ יֵאָמֵר
.vos prædicabitis eorum gloria in & , comedetis gentium facultatem : vobis
לָכֶם חֵיל גּוֹיִם תֹּאכֵלוּ וּבִכְבוֹדָם תִּתְיַמָּרוּ׃
: sua parte dicent præconia ignominia & , duplex vestro pudore Pro
7 תַּחַת בָּשְׁתְּכֶם מִשְׁנֶה וּכְלִמָּה יָרֹנּוּ חֶלְקָם
.eis erit seculi lætitia ,possidebunt duplex eorũ terra in ideo
לָכֵן בְּאַרְצָם מִשְׁנֶה יִירָשׁוּ שִׂמְחַת עוֹלָם תִּהְיֶה לָהֶם׃
: ascensionem in rapinam odiens ,judicium diligens Dominus ego Quia
8 כִּי אֲנִי יְהוָה אֹהֵב מִשְׁפָּט שֹׂנֵא גָזֵל בְּעוֹלָה
.eis excidam seculi fœdus & , veritate in eorum opus dabo &
וְנָתַתִּי פְעֻלָּתָם בֶּאֱמֶת וּבְרִית עוֹלָם אֶכְרוֹת לָהֶם׃
: populorum medio in eorum genimina &,eorũ semen gentibus in scietur Et
9 וְנוֹדַע בַּגּוֹיִם זַרְעָם וְצֶאֱצָאֵיהֶם בְּתוֹךְ הָעַמִּים
.Dominus benedixit semen ipsi quia ,eos cognoscent eos videntes omnes
כָּל־רֹאֵיהֶם יַכִּירוּם כִּי הֵם זֶרַע בֵּרַךְ יְהוָה׃
: meo Deo in mea anima exultabit ,DOMINO in gaudebo Gaudendo
10 שׂוֹשׂ אָשִׂישׂ בַּיהוָה תָּגֵל נַפְשִׁי בֵּאלֹהַי
:me involvit justitiæ pallio , salutis vestimentis fecit me induere quia
כִּי הִלְבִּישַׁנִי בִּגְדֵי־יֶשַׁע מְעִיל צְדָקָה יְעָטָנִי
.suis vasis ornabit sponsam tanquam & , gloria consecrabit sponsum tanquã
כֶּחָתָן יְכַהֵן פְּאֵר וְכַכַּלָּה תַּעְדֶּה כֵלֶיהָ׃
sua semina hortus sicut & ,suum germen proferet terra sicut Quia
11 כִּי כָאָרֶץ תּוֹצִיא צִמְחָהּ וּכְגַנָּה זֵרוּעֶיהָ
justitiam faciet germinare Dominus Dominus sic , faciet germinare
תַּצְמִיחַ כֵּן אֲדֹנָי יְהוִה יַצְמִיחַ צְדָקָה
.gentibus universis coram , laudem &
וּתְהִלָּה נֶגֶד כָּל־הַגּוֹיִם׃

Versio VULG. LAT.

21 Populus autem tuus omnes justi, in perpetuum hæreditabunt terrã, germen plantationis meæ, opus manûs meæ ad glorificandum. 22 Minimus erit in mille, & parvulus in gentem fortissimam : ego Dominus in tempore ejus subitò faciam istud.

CAP. LXI.

1 Spiritus Domini super me, eò quòd unxerit Dñs me : ad annuntiandũ mansuetis misit me, ut mederer contritis corde, & prædicarem captivis indulgentiam, & clausis apertionem : 2 Ut prædicarem annũ placabilem Dño, & diem ultionis Deo nostro: ut consolarer omnes lugentes : 3 Ut ponerem lugentibus Sion ; & darem eis coronam pro cinere, oleum gaudii pro luctu, pallium laudis pro spiritu mœroris: & vocabuntur in ea fortes justitiæ, plantatio Dñi ad glorificandum. 4 Et ædificabunt deserta à seculo, & ruinas antiquas erigent, & instaurabunt civitates desertas, dissipatas in generationem & generationem. 5 Et stabunt alieni, & pascent pecora vestra : & filii peregrinorum, agricolæ & vinitores vestri erunt. 6 Vos autẽ Sacerdotes Dñi vocabimini : Ministri Dei nostri, dicetur vobis : Fortitudinem Gentiũ comedetis, & in gloria earum superbietis. 7 Pro confusione vestra duplici & rubore, laudabunt partem suam : propter hoc in terra sua duplicia possidebunt, lætitia sempiterna erit eis. 8 Quia ego Dñs diligens judicium, et odio habens rapinã in holocausto : et dabo op⁹ eorũ in veritate, et fœdus perpetuũ feriã eis. 9 Et scient in Gentib⁹ semen eorũ, et germen eorũ in medio populorũ: omnes qui viderint eos, cognoscent illos, quia isti sunt semen, cui benedixit Domin⁹. 10 Gaudens gaudebo in Dño, et exultabit anima mea in Deo meo: quia induit me vestimentis salutis : et indumento justitiæ circumdedit me, quasi sponsum decoratũ coronâ, et quasi sponsã ornatã monilib⁹ suis. 11 Sicut enim terra profert germen suũ, et sicut hort⁹ semen suũ germinat; sic Dñs De⁹ germinabit justitiam et laudem coram universis Gentib⁹.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

21 Καὶ ὁ λαός σου πᾶς δίκαιος, (τ) δι' αἰῶνος κληρονομήσουσι τὴν γῆν, φυλάσσων τὸ φύτευμα ἔργα χειρῶν αὐτοῦ εἰς δόξαν. 22 Ὁ ὀλιγοστὸς ἔσται εἰς χιλιάδας, καὶ ὁ ἐλάχιστος εἰς ἔθνος μέγα. ἐγὼ κύριος κατὰ καιρὸν συνάξω αὐτούς.

MS.A. (τ) καὶ διὰ

ΚΕΦ. ξα'.

1 Πνεῦμα κυρίου ἐπ' ἐμὲ, οὗ εἵνεκεν ἔχρισέ με, εὐαγγελίσασθαι πτωχοῖς ἀπέσταλκέ με, ἰάσασθαι τοὺς συντετριμμένους (α) τὴν καρδίαν, κηρύξαι αἰχμαλώτοις ἄφεσιν, καὶ τυφλοῖς ἀνάβλεψιν, 2 Καλέσαι ἐνιαυτὸν κυρίου δεκτὸν, καὶ ἡμέραν ἀνταποδόσεως, παρακαλέσαι πάντας τοὺς πενθοῦντας, 3 Δοθῆναι τοῖς πενθοῦσι (β) Σιὼν αὐτοῖς δόξαν ἀντὶ σποδοῦ, ἄλειμμα εὐφροσύνης τοῖς πενθοῦσιν, καταστολὴν δόξης ἀντὶ πνεύματος ἀκηδίας· καὶ κληθήσονται γενεαὶ δικαιοσύνης, φύτευμα κυρίου εἰς δόξαν. 4 Καὶ οἰκοδομήσουσιν ἐρήμους αἰωνίας, (γ) ἐξηρημωμένας πρότερον ἐξαναστήσουσι, καὶ καινιοῦσι πόλεις ἐρήμους, (‥)ἐξηρημωμένας εἰς γενεάς. 5 Καὶ ἥξουσιν ἀλλογενεῖς ποιμαίνοντες τὰ πρόβατά σου, καὶ ἀλλόφυλοι ἀροτῆρες, καὶ ἀμπελουργοί. 6 Ὑμεῖς δὲ ἱερεῖς κυρίου κληθήσεσθε, (δ) λειτουργοὶ θεοῦ, ἰσχὺν ἐθνῶν κατέδεσθε, καὶ (‥)ἐν τῷ πλούτῳ αὐτῶν θαυμασθήσεσθε. 7 Οὕτως ἐκ δευτέρας κληρονομήσουσι τὴν γῆν, καὶ εὐφροσύνη αἰώνιος ὑπὲρ κεφαλῆς αὐτῶν. 8 Ἐγὼ γάρ εἰμι κύριος ὁ ἀγαπῶν δικαιοσύνην, καὶ μισῶν ἁρπάγματα ἐξ ἀδικίας. καὶ δώσω τὸν μόχθον αὐτῶν δικαίοις, καὶ διαθήκην αἰώνιον διαθήσομαι αὐτοῖς. 9 Καὶ γνωσθήσεται ἐν τοῖς ἔθνεσι τὸ σπέρμα αὐτῶν, καὶ τὰ ἔκγονα (ε) αὐτῶν ἐν μέσῳ τῶν λαῶν. πᾶς ὁ ὁρῶν αὐτοὺς ἐπιγνώσεται αὐτοὺς, ὅτι οὗτοί εἰσι σπέρμα ηὐλογημένον ὑπὸ θεοῦ, 10 Καὶ (ζ) εὐφροσύνῃ εὐφρανθήσονται ἐπὶ κύριον. Ἀγαλλιάσθω ἡ ψυχή μου ἐπὶ τῷ κυρίῳ· ἐνέδυσε γάρ με ἱμάτιον σωτηρίου, καὶ χιτῶνα εὐφροσύνης, ὡς νυμφίῳ περιέθηκέ μοι μίτραν, καὶ ὡς νύμφην κατεκόσμησέ με κόσμῳ. 11 Καὶ ὡς γῆν αὔξουσαν τὸ ἄνθος αὐτῆς, καὶ ὡς (η) κῆπος τὰ σπέρματα αὐτοῦ, οὕτως (θ) ἀνατελεῖ κύριος κύριος δικαιοσύνην, καὶ ἀγαλλίαμα ἐναντίον πάντων τῶν ἐθνῶν.

MS. A. (α) τῇ καρδίᾳ, (β) Σιὼν δόξαν (γ) ἐξηρημωμένας πρότερον (‥) ἐξηρημωμένας (δ) καὶ λειτουργοὶ θεοῦ, ἰσχὺς ἐθνῶν, (‥) ἐπὶ (ε) αὐτῶν. πᾶς ὁ ὁρῶν (ζ) ἐν εὐφροσύνῃ (η) κῆπον (θ) ἀνατελεῖ κύριος δικαιοσύνην,

Et populus tuus omnis justus, semper possidebunt terram, custodiens plantationem, opera manuum suarum in gloriam. Qui paucissimus est, erit in millia : & qui minimus, in gentem magnam. Ego Dominus in tempore congregabo eos.

CAP. LXI.

Spiritus Domini super me: propter quod unxit me: evangelizare pauperibus misit me, sanare contritos corde, prædicare captivis remissionem, & cæcis visum. Vocare annum Domini acceptabilem, & diem retributionis, consolari omnes lugentes, ut darem lugentibus Sion gloriam pro cinere, unctio lætitiæ lugentibus, (a) secundùm stolam gloriæ pro spiritu mœroris. Et vocabuntur generationes justitiæ, plantatio Domini in gloriam. Et ædificabunt deserta sempiterna; quæ desolata fuerant priùs, suscitabunt: & innovabunt civitates desertas desolatas in generationes. Et venient alienigenæ pascentes oves tuas, & aliarum gentium aratores, & vinitores. Vos autem sacerdotes Domini vocabimini, ministri (b) Dei: fortitudinem gentium comedetis, (c) & in divitiis earum eritis admirabiles. Sic terram secundò possidebunt: & gaudium sempiternum erit super caput eorum. Ego enim sum Dominus, qui diligo justitiam, & odi rapinas ex iniquitate. Et dabo laborem eorum justis: & testamentum æternum disponam eis. Et scietur in gentibus semen eorum, & nepotes eorum in medio populorum. Omnis, qui viderit eos, cognoscet illos: quia isti sunt semen benedictum à Deo: Et lætitiâ lætabuntur super Dominum. Exultet anima mea in Domino: induit enim me vestimento salutis, & tunicâ lætitiæ: sicut (d) sponso, circumposuit mihi mitram, & sicut sponsam ornavit me mundo muliebri: Et sicut (e) terram efferentem florem suum, & sicut hortus semina sua, sic germinare faciet Dominus Dominus justitiam, & exultationem in conspectu omnium gentium.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

21 ועמיך כולהון זכאין לעלם יחסנון ארעא נצבא דחדותי עובד גבורתי לאשתבחא׃
22 דזעיר בהון יהי לאלפא ודחליש לעם תקיף אנא יי בזמנה איתנה׃

סא

1 אמר נביא רוח נבואה מן קדם יי אלהים עלי חלף דרבייתי יי לבשרא ענותניא שלחני
2 לתקפא לתבירי לבא למקרי לדשבן חירו ולדאסירין אתגלו לנהור: למקרי שנת רעוא
3 קדם יי ויום פורענותא קדם אלהנא לנחמא כל אבליא: לשואה לאבילי ציון למתן
להון כליל חלף קטם משח דחדוה חלף אבלא רוח משבחא חלף רוחהון דהות עמיא
4 ויקרון להון רברבי קושטא עמיה דיי לאשתבחא: ויבנון חרבת עלם צדית קדמאי
5 יקוממון ויחדתון קרוין דהואה חרבן צדיא דר ודר: ויקומון נוכראין וירעון ענכון ובני
6 עממיא אכריכון ומפלחי כרמיכון: ואתון כהניא דיי תתקרון דמשמשין קדם אלהנא
7 יתאמר לכון נכסי עממיא תיכלון וביקרהון תתפנקון: חלף דבהתתון ואתכנעתון על
חד תרין בטבון דאמרית לכון איתי לכון ויתבהתון עממיא דהוו משתבחין בחולקהון
8 בכן בארעהון על חד תרין יחסנון חדות עלם תהי להון: ארי אנא יי רחמנא דינא מרחק
9 קדמי שקרא ואונסא ואתן אגר עובדיהון בקשוט וקים עלם אגזר להון: ויתרבון בעממיא
בניהון ובני בניהון בגו מלכותא כל חזאיהון ישתמודענון ארי אנון זרעא דבריך יי׃
10 אמרת ירושלם מחדא אחדי במימרא דיי תבוע נפשי בפורקנא דאלהי ארי אלבשני
לבושין דפורקן מעיל דזכו עטפני כחתנא דמצלח בגנוניה וככהנא רבא דמתקן
11 בלבושוהי וככלתא דמתקשטא בתקונהא: ארי כארעא דמפקא צמחה וכגנת שקיא
דזרועהא מרביא כן יי אלהים יגלי זכותא ותושבחתא דירושלם לקבל כל עממיא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et populus tuus omnes justi, semper hæreditabunt terram: plantatio lætitiæ meæ, opus potentiæ meæ ad gloriandum. Qui minimus fuerit in eis, excrescet in mille; & qui infirmus, in populum fortem: ego Dominus in tempore suo adducam illud.

CAP. LXI.

Dixit Propheta: Spiritus prophetiæ à facie Dñi Dei sup me, eò ꝙ unxit me Dñs ad evãgelizandũ mansuetis; misit me, ut cõfortarẽ contritos corde, ut prædicarẽ captivis libertatẽ, & iis qui vincti sunt, Apparete in lucem: ut prædicarẽ annũ voluntatis corã Dño, & diẽ ultionis corã Deo nostro: ut consolarer omnes lugentes: Ut ponerẽ lugentib' Sion, & eis darẽ coronam pro cinere, oleum lætitiæ pro luctu: spiritũ ovantẽ, pro spiritu eorum qui erat mœrens. Et vocabunt eos principes veritatis, populũ Dñi in laudem. Et ædificabunt ruinas seculi, & solitudines antiquas suscitabunt: & renovabunt civitates quæ erant desertæ, & solitudinẽ generationis & generationis. Et stabunt extranei & pascent pecora vestra, & filii populorũ agricolæ & vinitores vestri erunt. Vos autem sacerdotes Dñi vocabimini, Ministri corã Deo nostro, dicetur vobis. Divitias populorũ comedetis, & in gloria eorũ lætabimini. Pro eo ꝙ confusi estis & erubuistis, duplicia bona quæ dixi vobis, adducam vobis : & confundentur populi qui gloriantur in portione sua. Propterea in terra sua duplicia possidebunt: lætitia sempiterna erit eis. Quia ego Dñs diligens judiciũ, abominabilis est corã me rapacitas & violentia: & dabo mercedẽ operũ suorum in veritate, & pactum sempiternum feriã cum eis. Et magnificabuntur in populis filii eorũ, & filii filiorũ eorũ in medio regnorũ: omnes qui viderint eos cognoscent eos quia isti sunt semen cui benedixit Dñs. Dicit Jerusalem: Gaudens gaudebo in verbo Dñi, & exultabit anima mea in salute Dei mei: quia induit me Dñs vestimento salutis, & pallio justitiæ involvit me : sicut sponsus qui prosperatur in thalamo suo & sicut Sacerdos magnus qui ornatur vestimentis suis; aut sicut sponsa quæ decoratur suis ornamentis. Quoniam sicut terra quæ producit germen suum, & sicut hortus irriguus cujus semina pullulant : sic Dominus Deus revelabit justitiam & laudem Jerusalem, in conspectu omnium populorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܥܡܟ ܟܠܗܘܢ ܙܕܝܩܐ ܠܥܠܡ ܢܐܪܬܘܢ ܐܪܥܐ. ܢܨܒܬܐ ܕܢܨܒܬ ܀ ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝ ܠܡܫܬܒܚܘ
* ܙܥܘܪܐ ܢܗܘܐ ܠܐܠܦܐ ܀ ܘܒܨܝܪܐ ܠܥܡܐ ܥܫܝܢܐ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܒܙܒܢܗ ܐܢܛܪܝܘܗܝ.
* ܩܦܠܐܘܢ * ܫܠܡ * * ܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܥܠܝ. ܡܛܠ ܕܡܫܚܢܝ ܡܪܝܐ
ܘܫܕܪܢܝ ܀ ܠܡܣܒܪܘ ܠܡܟܝܟܐ. ܘܠܡܐܣܝܘ ܠܬܒܝܪܝ ܠܒܐ. ܘܠܡܟܪܙܘ ܠܫܒܝܐ ܚܘܪܐ ܘܫܘܒܩܢܐ
ܠܐܣܝܪܐ. * ܘܠܡܟܪܙܘ ܫܢܬܐ ܡܩܒܠܬܐ ܕܡܪܝܐ. ܘܝܘܡܐ ܕܦܘܪܩܢܐ ܠܐܠܗܢ. ܠܡܒܝܐܘ
ܠܟܠܗܘܢ ܐܒܝܠܐ. * ܠܡܬܠ ܠܐܒܝܠܐ ܕܨܗܝܘܢ ܫܘܒܚܐ. ܚܠܦ ܩܛܡܐ. ܡܫܚܐ ܒܣܝܡܐ
ܚܠܦ ܐܒܠܐ. ܐܣܟܡܐ ܕܬܫܒܘܚܬܐ. ܘܚܠܦ ܪܘܚܐ ܕܟܪܝܘܬܐ ܀ ܢܬܩܪܘܢ ܕܟܪܐ ܕܟܐܢܘܬܐ.
ܢܨܒܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܫܬܒܚܬܐ. * ܘܢܒܢܘܢ ܚܪܒܬܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܘܚܘܪܒܐ ܕܡܢ ܩܕܝܡ
ܢܩܝܡܘܢ. ܘܢܚܕܬܘܢ ܩܘܪܝܐ ܚܪܒܬܐ. ܘܚܘܪܒܐ ܕܕܪܕܪܝܢ. * ܘܢܩܘܡܘܢ ܢܘܟܪܝܐ ܘܢܪܥܘܢ
ܥܢܗܘܢ. ܘܒܢܝ ܢܘܟܪܝܐ ܢܗܘܘܢ ܠܗܘܢ ܐܟܪܐ ܘܟܪܡܐ. * ܘܐܢܬܘܢ ܟܗܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ
ܬܬܩܪܘܢ. ܘܡܫܡܫܢܘܗܝ ܕܐܠܗܢ ܢܬܐܡܪ ܠܟܘܢ. ܢܟܣܝܗܘܢ ܕܥܡܡܐ ܬܐܟܠܘܢ.
ܘܒܫܘܒܚܗܘܢ ܬܫܬܒܚܘܢ. * ܚܠܦ ܒܗܬܬܟܘܢ ܥܦܝܦܬܐ. ܘܚܠܦ ܚܣܕܟܘܢ
ܒܐܪܥܗܘܢ ܬܐܪܬܘܢ. ܘܒܡܢܬܗܘܢ ܬܫܬܒܚܘܢ. ܚܕܘܬܐ ܕܠܥܠܡ ܬܗܘܐ ܠܟܘܢ. * ܡܛܠ
ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܪܚܡ ܐܢܐ ܕܝܢܐ. ܘܣܢܐ ܐܢܐ ܚܛܘܦܝܐ ܘܥܘܠܐ. ܘܐܬܠ ܥܡܠܗܘܢ ܒܩܘܫܬܐ.
ܘܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ ܐܩܝܡ ܥܡܗܘܢ. * ܘܢܬܝܕܥ ܙܪܥܗܘܢ ܒܥܡܡܐ. ܘܙܪܥܐ ܕܙܪܥܗܘܢ ܒܝܬ ܥܡܡܐ.
ܟܠ ܚܙܝܗܘܢ ܢܫܬܘܕܥܘܢ ܠܗܘܢ ܀ ܕܙܪܥܐ ܐܢܘܢ ܕܒܪܟ ܡܪܝܐ. * ܡܚܕܐ ܚܕܝܐ ܐܢܐ
ܒܡܪܝܐ ܀ ܘܬܪܘܙ ܢܦܫܝ ܒܐܠܗܝ. ܡܛܠ ܕܐܠܒܫܢܝ ܢܚܬܐ ܕܦܘܪܩܢܐ. ܘܐܟܣܝܢܝ
ܡܥܝܠܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܐܝܟ ܚܬܢܐ ܡܫܒܚܐ. ܘܐܝܟ ܟܠܬܐ ܡܨܒܬܬܐ. * ܘܐܝܟ ܐܪܥܐ ܕܡܦܩܐ
ܥܣܒܐ: ܘܐܝܟ ܓܢܬܐ ܕܡܨܡܚܐ ܙܪܥܐ ܀ ܗܟܢܐ ܢܦܩ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܙܕܝܩܘܬܐ
ܘܬܫܒܘܚܬܐ ܩܕܡ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ.

Et univerſus populus tuus juſtus poſſidebit 21
terram : in perpetuum ſurculus quem plan-
tavi, opus manuum mearum, glorioſum red-
detur. Minimus erit in millenos, & paucif- 22
ſimus in populum ingentem : ego Dominus
in tempus opportunum id reſervo.

CAP, LXI.

Spiritus Domini Dei ſuper me eſt, eò quòd 1
unxit me Dominus, & miſit me ut humilibus
læta nuntiem, & confractos corde conſoli-
dem, proclamem libertatem captivis, & ſo-
lutionem carcere detentis : Proclamem et- 2
iam annum Domini jucundum, & diem ſalu-
tis Dei noſtri : ad conſolandum omnes lugen-
tes. Ad afferendum lugentibus Sionis glo- 3
riam ; loco cineris unguentum ſuave, loco lu-
ctûs amictum laudis ; & loco ſpiritûs dolen-
tis vocabuntur arictes juſtitiæ, planta Domini
glorioſa. Ædificabunt ruinas antiquas, deſo- 4
lationes priſtinas inſtaurabunt, & renova-
bunt civitates dirutas, & ſolitudines multo-
rum ſeculorum. Surgent extranei, & pa- 5
ſcent oves eorum, & alienigenæ erunt eis a-
gricolæ & vinitores : Vos autem ſacerdo- 6
tes Domini vocabimini, & miniſtri Dei noſtri
dicemini : opes gentium comedetis, & de ma-
gnificentia earum gloriabimini. Pro pudo- 7
re & pro ignominia veſtra, duplam hæredita-
tem poſſidebitis in terra earum, de portione
earum gloriabimini, gaudium vobis erit ſem-
piternum. Quoniam ego ſum Dominus a- 8
mans judicium, & odio habens rapinam &
iniquitatem, & laborem veſtrum cum veri-
tate reddam, & pactum ſempiternum feriam
vobiſcum. Et innoteſcet ſemen veſtrum inter 9
gentes, & ſemen ſeminis veſtri inter populos:
omnes videntes vos, cognoſcent vos eſſe ſe-
men cui benedixit Dominus. Vehementer 10
jucundabor in Domino, & exultabit anima
mea in Deo meo ; quoniam induit me veſte
ſalutis, & amicivit me pallio juſtitiæ tanquam
ſponſum glorioſum & ut ſponſam ornatam.
Sicut enim terra quæ profert herbam, & ſicut 11
hortus qui ſemen producit ; ita producturus
eſt Dominus Deus juſtitiam & laudem coram
univerſis gentibus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وكل شعبك صديق * ومنذ الدهر يرثون الارض * حافظ الغرس اعمال يديه للمجد :
* القليل يصير الوفا * والكثير الي امة عظيمة * انا الرب في زمان اجمعهم *

* الفصل الحادي والستون *

* روح الرب علي الذي من اجله مسحني * ارسلني لابشر المساكين * واشفي منكسري
القلب * وانذر الماسورين بالتخلية والعميان بالنظر * وارسل الي المنكسرين بالاطلاق * وادعوا
بالسنة المقبولة للرب ويوم العوض للرب الهنا لاعزي جميع الحزانا * ليعطي لحزوني صهيون
عوض الرماد دهن السرور * وحلة المجد بدل من روح الضجر * ويدعون اجيال العدل غرس
الرب للمجد * ويبنون الخربات الابدية التي كانت اولا مقفرة يعمروها * ويجددون مدنا خربة
التي كانت مقفرة من جيل وجيل * وياتي الغربا الجنس يرعون خرافك * والغربا القبايل
حراثون وكرامون لكم * وانتم كهنة الرب تدعون * وخدام الهنا يقال لكم * تاكلون قوة الامم
وبغناهم تستغنون * بدل فضيحتكم المضعفة وبدل الخجل يهلل نصيبهم * لاجل هذا
يرثون ارضهم ثانية * والسرور الابدي علي روسهم * لاني انا هو الرب الذي يحب العدل
ويبغض الاختطاف من الظلم * واعطي كدهم للصديقين * واصنع لهم عهدا ابديا * ويعرف
زرعهم في الامم وبنو بنيهم في وسط الشعوب * وكل من يراهم يعرفهم * لان هولاء هم زرع
مبارك من الله * وبسرور يسرون بالرب *

* الاصحاح التاسع والعشرون *

* لتهلل نفسي بالرب * لانه البسني ثوب خلاص وسربلني حلة سرور * مثل عريس وضع علي
تاجا * ومثل عروس زينني بزينة * ومثل ارض تنبت زهرها * وكبستان ينبت بزوره
هكذا يشرق الرب عدلا وبهجة قدام جميع الشعوب *

Totus populus tuus juſtus erit, & à ſe- 21
culo poſſidebunt terram, eritque *cuſtodi-*
ens plantas opus ſcilicet *manuum ſua-*
rum, ad gloriam. Paucus fiet in mille- 22
nos, & abjectus in gentem magnam,
ego Dominus aliquando congregabo
eos.

CAP. LXI.

Spiritus Domini ſuper me, propter 1
quem unxit me : miſit me ut annuntiem
pauperibus, & ſanem corde confractos,
prædicem vinctis dimiſſionem, cæcis
viſum, & nuntium *mittam ad capti-* 2
vos de libertate : Proclamem annum ac-
ceptum Domino, & diem compenſati-
onis Domini Dei noſtri : ut conſoler o-
mnes mœſtos : Dandum eſſe afflictis Si- 3
oni, pro cinere unguentum lætitiæ, &
ſtolam gloriæ pro Spiritu torporis : &
vocabuntur Generationes juſtitiæ, planta
Domini ad gloriam. Ædificabunt rui- 4
nas perpetuas : quæ erant olim deſolata,
inſtaurabunt, & renovabunt urbes di-
rutas quæ erant in ſolitudinem re-
dactæ inde à multis generationibus. Ve- 5
nient alieni generis homines *ad paſcen-*
dum oves tuas, & extraneæ nationis
erunt vobis aratores & vinitores : Vos 6
verò ſacerdotes Domini vocabimini, &
miniſtri Dei noſtri dicemini : comedetis
robur gentium, & divitiis earum fru-
emini. Loco duplicis contumeliæ veſtræ 7
& loco pudoris jubilat ſors illorum :
propterea terram eorum ſecundò poſſide-
bunt, & gaudium æternum erit ſuper
capita eorum : Quoniam ego ſum Do- 8
minus amans juſtitiam, & odio habens
rapinam tyrannicam : & dabo laborem
eorum probis, ponamque eis juſtitiam
ſempiternam. Et notum fiet ſemen eorum 9
inter gentes, & nepotes eorum in medio
populorum : & quicunque viderit eos,
cognoſcet eos ; quoniam hi ſunt ſemen
benedictum à Deo, & cum gaudio ex-
ultabunt in Domino.

Textus vigeſimus nonus.

Jubilet anima mea in Domino, quoniam 10
ipſe me veſtivit indumento ſalutis, &
induit ſtolâ gaudii : ut ſponſo impoſuit
mihi diadema, & ut ſponſam decora-
vit me ornamento : Et ut terra produ- 11
cens florem ſuum, utque hortus emit-
tens ſemina ſua ; ſic oriri faciet Dominus
juſtitiam & hilaritatem coram cunctis
populis.

יְשַׁעְיָה׃ סב סג

CAP. LXII. סב

. quiescam non Jerusalaim propter & , tacebo non Sijon Propter
1 לְמַעַן צִיּוֹן לֹא אֶחֱשֶׁה וּלְמַעַן יְרוּשָׁלַם לֹא אֶשְׁקוֹט
lampas ut ,ejus salus & ;ejus justitia , splendor ut ,egrediatur donec
עַד־יֵצֵא כַנֹּגַהּ צִדְקָהּ וִישׁוּעָתָהּ כְּלַפִּיד
reges cuncti & ,tuam justitiam gentes videbunt Et .se accendat
2 יִבְעָר׃ וְרָאוּ גוֹיִם צִדְקֵךְ וְכָל־מְלָכִים
DOMINI os quod ;novum nomen tibi vocabitur Et .tuam gloriam
כְּבוֹדֵךְ וְקֹרָא לָךְ שֵׁם חָדָשׁ אֲשֶׁר פִּי יְהוָה
;DOMINI manu in gloriæ *diadema* eris Et .*illud* declarabit
3 יִקֳּבֶנּוּ׃ וְהָיִית עֲטֶרֶת תִּפְאֶרֶת בְּיַד־יְהוָה
,ultrà tibi dicetur Non .tui Dei *vola* in regni *cidaris* &
4 וּצְנוֹף מְלוּכָה בְּכַף־אֱלֹהָיִךְ׃ לֹא־יֵאָמֵר לָךְ עוֹד
vocabitur tibi Sed .Desolata ampliùs dicetur non tuæ terræ & ,Derelicta
עֲזוּבָה וּלְאַרְצֵךְ לֹא־יֵאָמֵר עוֹד שְׁמָמָה כִּי לָךְ יִקָּרֵא
Dominus complacuit quia : *Maritata tuæ terræ* & , ea in mea Voluntas
חֶפְצִי־בָהּ וּלְאַרְצֵךְ בְּעוּלָה כִּי־חָפֵץ יְהוָה
,virgine cum juvenis *maritabitur Quia* .*maritata* erit tua terra & ,te in
5 בָּךְ וְאַרְצֵךְ תִּבָּעֵל׃ כִּי־יִבְעַל בָּחוּר בְּתוּלָה
gaudebit ,sponsam super sponso gaudium & : tui filii *tibi maritabuntur*
יִבְעָלוּךְ בָּנָיִךְ וּמְשׂוֹשׂ חָתָן עַל־כַּלָּה יָשִׂישׂ
, custodes constitui Jerusalaim tuos muros Super .tuus Deus te super
6 עָלַיִךְ אֱלֹהָיִךְ׃ עַל־חוֹמֹתַיִךְ יְרוּשָׁלַם הִפְקַדְתִּי שֹׁמְרִים
rememorantes : tacebunt non jugiter nocte tota & die tota
כָּל־הַיּוֹם וְכָל־הַלַּיְלָה תָּמִיד לֹא יֶחֱשׁוּ הַמַּזְכִּירִים אֶת־
,ei silentium detis ne Et .vobis silentium ne , *Dominum*
7 יְהוָה אַל־דֳּמִי לָכֶם׃ וְאַל־תִּתְּנוּ דֳמִי לוֹ
Juravit .terra in laudem Jerusalaim ponat donec & ,stabiliat donec
8 עַד־יְכוֹנֵן וְעַד־יָשִׂים אֶת־יְרוּשָׁלַם תְּהִלָּה בָּאָרֶץ׃ נִשְׁבַּע
dedero si : suæ fortitudinis *brachio in & sua dextera in* Dominus
יְהוָה בִּימִינוֹ וּבִזְרוֹעַ עֻזּוֹ אִם־אֶתֵּן אֶת־
alieni filii biberint si & ,tuis inimicis cibum ultrà tuum triticum
דְּגָנֵךְ עוֹד מַאֲכָל לְאֹיְבַיִךְ וְאִם־יִשְׁתּוּ בְנֵי־נֵכָר
,illud comedent ,illud *colligentes* Sed .*eo in* laborâsti quo tuum vinum
9 תִּירוֹשֵׁךְ אֲשֶׁר יָגַעַתְּ בּוֹ׃ כִּי מְאַסְפָיו יֹאכְלֻהוּ
atriis in illud bibent illud congregantes & : Dominum laudabunt &
וְהִלְלוּ אֶת־יְהוָה וּמְקַבְּצָיו יִשְׁתֻּהוּ בְּחַצְרוֹת
: populi viam *complanate* ,portas per transite ,Transite .meæ sanctitatis
10 קָדְשִׁי׃ עִבְרוּ עִבְרוּ בַּשְּׁעָרִים פַּנּוּ דֶּרֶךְ הָעָם
.populos super vexillū attollite ,*lapide è elapidate,viā stratam munite,munite*
סֹלּוּ סֹלּוּ הַמְסִלָּה סַקְּלוּ מֵאֶבֶן הָרִימוּ נֵס עַל־הָעַמִּים׃
,Sijon filiæ dicite , terræ extremum ad *fecit* audire Dominus Ecce
11 הִנֵּה יְהוָה הִשְׁמִיעַ אֶל־קְצֵה הָאָרֶץ אִמְרוּ לְבַת־צִיּוֹן
.*ejus facies ad* ejus opus &,eo cum ejus merces ecce : *veniens* tua salus ecce
הִנֵּה יִשְׁעֵךְ בָּא הִנֵּה שְׂכָרוֹ אִתּוֹ וּפְעֻלָּתוֹ לְפָנָיו׃
,*vocabitur tibi &* :*Domini* redemptos ,sanctitatis populū eos vocabunt Et
12 וְקָרְאוּ לָהֶם עַם־הַקֹּדֶשׁ גְּאוּלֵי יְהוָה וְלָךְ יִקָּרֵא
.derelicta non civitas , Quæsita
דְרוּשָׁה עִיר לֹא נֶעֱזָבָה׃

CAP. LXIII. סג

iste ? Bosrah de vestes *rubefactus* , Edom de *veniens* iste Quis
1 מִי־זֶה בָּא מֵאֱדוֹם חֲמוּץ בְּגָדִים מִבָּצְרָה זֶה
loquens ego : suæ potentiæ multitudine in festinus ,sua stola in *decoratus*
הָדוּר בִּלְבוּשׁוֹ צֹעֶה בְּרֹב כֹּחוֹ אֲנִי מְדַבֵּר
.servandum ad magnus justitia in
בִּצְדָקָה רַב לְהוֹשִׁיעַ׃

Versio VUL. LAT.

CAP. LXII.

1 PRopter Sion non tacebo, & propter Jerusalem non quiescā, donec egrediatur ut splendor justus ejus, & salvator ejus 2 ut lampas accendatur. Et videbunt Gentes justum tuum, & cuncti reges inclytum tuū : & vocabitur tibi nomen novum, quod os Domini nominabit. 3 Et eris corona gloriæ in manu Domini, & diadema regni in 4 manu Dei tui. Non vocaberis ultrà Derelicta : & terra tua non vocabitur ampliùs Desolata : sed vocaberis Voluntas mea in ea, & terra tua Inhabitata : quia complacuit Domino in te ; & terra tua inhabi- 5 tabitur. Habitabit enim juvenis cum virgine, & habitabūt in te filii tui. Et gaudebit sponsus super sponsam, & gaude- 6 bit super te Deus tuus. Super muros tuos, Jerusalem, constitui custodes, totâ die & totâ nocte in perpetuum non tacebunt. Qui reminiscimini Do- 7 mini, ne taceatis, Et ne detis silentium ei, donec stabiliat, & donec ponat Jerusalem laudē 8 in terra. Juravit Dominus in dextera sua, & in brachio fortitudinis suæ ; Si dedero triticum tuum ultrà cibum inimicis tuis : & si biberint filii alieni vinum tuum, in quo 9 laborâsti. Quia qui congregant illud, comedent, & laudabunt Dominum : et qui comportant illud, bibent in atriis 10 sanctis meis. Transite, transite per portas, præparate viam populo, planum facite iter, eligite lapides, & elevate signū 11 ad Populos. Ecce Dominus auditum fecit in extremis terræ, dicite filiæ Sion ; Ecce Salvator tuus venit : ecce merces ejus cum eo, et opus ejus 12 coram illo. Et vocabunt eos, Populus sanctus, redempti à Domino. Tu autem vocaberis ; Quæsita civitas, et non Derelicta.

CAP. LXIII.

1 QUis est iste, qui venit de Edom, tinctis vestibus de Bosra ? iste formosus in stola sua, gradiens in multitudine fortitudinis suæ. Ego qui loquor justitiam, et propugnator sum ad salvandum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. ξβʹ.

1 ΔΙὰ Σιὼν οὐ σιωπήσομαι, καὶ διὰ Ἱερουσαλὴμ οὐκ ἀνήσω, ἕως ἂν ἐξέλθῃ ὡς φῶς ἡ δικαιοσύνη (α) αὐτῆς, τὸ δὲ σωτήριόν μου 2 ὡς λαμπὰς καυθήσεται. Καὶ ὄψονται ἔθνη τὴν δικαιοσύνην σου, καὶ βασιλεῖς τὴν δόξαν σου, καὶ καλέσει σε (β) τὸ ὄνομα τὸ 3 καινὸν, ὃ ὁ κύριος ὀνομάσει αὐτό. Καὶ ἔσῃ στέφανος κάλλους ἐν χειρὶ κυρίου, καὶ διά- 4 δημα βασιλείας ἐν χειρὶ θεοῦ σου. Καὶ οὐκέτι κληθήσῃ Καταλελειμμένη, καὶ ἡ γῆ σου οὐ κληθήσεται (γ) ἔτι Ἔρημος· σοὶ γὰρ κληθήσεται, Θέλημα ἐμὸν, καὶ τῇ γῇ σου, Οἰκουμένη, (δ) ὅτι εὐδόκησε κύριος 5 ἐν σοὶ, καὶ ἡ γῆ σου συνοικισθήσεται. Καὶ ὡς συνοικῶν νεανίσκος παρθένῳ, (˝) οὕτω κατοικήσουσιν οἱ υἱοί σου (ε). καὶ ἔσται ὃν τρόπον εὐφρανθήσεται νυμφίος ἐπὶ νύμφῃ, οὕτως 6 εὐφρανθήσεται κύριος ἐπὶ σοί. Καὶ ἐπὶ τῶν (-) τειχῶν σου Ἱερουσαλὴμ κατέστησα φύλακας ὅλην τὴν ἡμέραν καὶ ὅλην τὴν νύκτα, οἳ διὰ τέλους οὐ σιωπήσονται μιμνησκόμενοι κυρί- 7 ου. Οὐκ ἔστι γὰρ ὑμῖν ὅμοιος· ἐὰν διορθώσῃ, καὶ ποιήσῃ Ἱερουσαλὴμ (ζ) γαυρίαμα 8 ἐπὶ τῆς γῆς. Ὤμοσε κύριος κατὰ τῆς δόξης αὐτοῦ, καὶ κατὰ τῆς ἰσχύος τοῦ βραχίονος αὐτοῦ, Εἰ ἔτι δώσω τὸν σῖτόν σου, καὶ τὰ βρώματά σου τοῖς ἐχθροῖς σου, (η) καὶ εἰ ἔτι πίονται υἱοὶ ἀλλότριοι τὸν οἶνόν σου, 9 ἐφ' ᾧ ἐμόχθησας. (θ) Ἀλλ' οἱ (˝) συνάγοντες φάγονται αὐτὰ, καὶ αἰνέσουσι κύριον, καὶ οἱ (˜) συνάγοντες πίονται αὐτὰ ἐν ταῖς ἐπ- 10 αύλεσι ταῖς ἁγίαις (ι) μου. Πορεύεσθε διὰ τῶν πυλῶν μου, καὶ ὁδοποιήσατε τῷ λαῷ μου, καὶ τοὺς λίθους (κ) ἐκ τῆς ὁδοῦ διαῤῥί- 11 ψατε, ἐξάρατε σύσσημον εἰς τὰ ἔθνη. Ἰδοὺ γὰρ κύριος ἐποίησεν ἀκουστὸν ἕως ἐσχάτου τῆς γῆς. εἴπατε τῇ θυγατρὶ Σιὼν, Ἰδοὺ (λ) ὁ σωτήρ σοι παραγέγονεν ἔχων τὸν ἑαυτοῦ μισθὸν, καὶ τὸ (μ) ἔργον αὐτοῦ πρὸ προσ- 12 ώπου αὐτοῦ. Καὶ καλέσει αὐτὸν Λαὸν ἅγιον, λελυτρωμένον ὑπὸ κυρίου· σὺ δὲ κληθήσῃ Ἐπιζητουμένη πόλις, καὶ οὐκ Ἐγκαταλελειμμένη.

MS.A. (α) μου, (β) τὸ ὄνομά σου (γ) Ἔρημος· σοὶ (δ) Καὶ ὡς συνοικῶν (˝) οὕτως (ε) μετὰ σοῦ. (-) τειχέων (ζ) ἀγαυρίαμα (η) καὶ ἔτι (θ) [illegible] ἢ οἱ (˝) συνάγοντες (˜) συνάγοντες (ι) σου. (κ) τοὺς ἐκ (λ) σοὶ ὁ σωτὴρ παραγίνεται (μ) ἔργον πρὸ προσώπου

CAP. LXII.

PRopter Sion non tacebo: & propter Hierusalem non quiescam: donec egrediatur sicut lumen justitia (a) ejus. Salutare meum, sicut lampas ardebit: Et videbunt gentes justitiam tuam, & reges gloriam tuam: & vocabit te nomen novum, quod (b) Dominus nominabit illud. Et eris corona decoris in manu Domini, & diadema regni in manu Dei tui. Et nequaquam ultrà vocaberis Derelicta: & terra tua non vocabitur ampliùs Deserta. Tibi (c) enim vocabitur, Voluntas mea, & terra tua Habitata: (d) quia complacuit Domino in te: & terra tua cohabitabitur. Et sicut habitat juvenis cum virgine; sic habitabunt filii (e) tui. Et quomodò lætabitur sponsus super sponsa; sic lætabitur super te Dominus. Et super muros tuos Hierusalem, constitui custodes totâ die, & totâ nocte: quæ nunquam tacebant recordantes Domini. Non est enim vestri similis. Si correxerit, & fecerit Hierusalem gaudium super terram. Juravit Dominus per (f) gloriam suam, & per fortitudinem brachii sui; Si ultrà dedero triticum tuum, & cibos tuos inimicis tuis: & si ultrà biberint filii alieni vinum tuum, in quo laborâsti: Sed qui congregaverint, comedent ea, & laudabunt Dominum: & qui congregaverint, bibent ea in atriis sanctis meis. Ite per portas meas, & viam facite populo meo, & lapides de via projicite. Levate signum in gentes. Ecce enim Dominus fecit auditum usque ad extremum terræ. Dicite filiæ Sion; Ecce Salvator tuus adest habens mercedem (g) suam, & opus suum ante faciem suam: Et vocabit eum, Populum sanctum, redemptum à Domino. Tu autem vocaberis; Requisita civitas, & non Derelicta.

ΚΕΦ. ξγʹ.

1 ΤΙ'ς οὗτος ὁ (α) παραγινόμενος ἐξ Ἐδώμ, ἐρύθημα ἱματίων ἐκ Βοσόρ; οὕτως ὡραῖος ἐν στολῇ, βίᾳ μετ' ἰσχύος; Ἐγὼ διαλέγομαι δικαιοσύνην καὶ κρίσιν σωτηρίου.

MS. A. (α) ὁ παραγινόμενος ἐξ Ἐδέμ, ἐρυθήματα

CAP. LXIII.

QUis est iste, qui venit ab Edom, (a) rubor vestium de Bosor? (b) sic formosus in stola, (d) violentia cum fortitudine? (e) Ego loquor justitiam & judicium salutare.

תַּרְגּוּם יוֹנָתָן Targum JONATHAN.

סב

1 עד דאעבד פורקן לציון לא אניח לעממיא ועד דאיתי נחמא לירושלם לא אשקיט
2 למלכותא עד דיתגלי כשפרפרא נהורא ופורקנה כבעור יבער׃ ויחזון עממיא זכותיך
3 וכל מלכיא יקריך ויקרון ליך שמא חדתא די במימריה דיי יפרשניה׃ ותהון כליל
4 דחדוא קדם יי וכתר דתושבחא קדם אלהיך׃ לא יתאמר ליך עוד שביקא ולארעיך לא
יתאמר עוד צדיא ארי ליך יתקרי עבדי רעותי בה ולארעיך יתבא ארי תהי רעוא מן
5 קדם יי ביך וארעיך תתיתב׃ ארי כמא דמתיתב עולם עם בתולתא כן יתיתבון בגויכי
6 בניכי וכמא דחדי חתנא עם כלתא יחדי עלך אלהיך׃ הא על עובדי אבהתך צדיקיא
קרתא דירושלם מתקנין נטרין קדמי כל יממא וכל ליליא תדירא לא פסקין מתאמר
7 דכרן טבותיך קדם יי לא פסיק לכון׃ ולא יפסוק דכרנהון מן קדמוהי עד דיתקן ועד
8 דישוי ית ירושלם תשבחתא בארעא׃ קים יי בימיניה ובדרע תוקפיה אם אתן ית עבוריך
9 עוד מיכל לבעלי דבבך ואם ישתון בני עממיא חמריך דלאית ביה׃ ארי דכנשוהי
10 לעבורא ייכלוניה וישבחון קדם יי ודעצרוהי לחמרא ישתוניה בדרת קודשי׃ אמר נביא
עברו ותובו בתרעיא אפנו לב עמא לאורח תקנא בשרו בסורן טבן ונחמן לצדיקיא
11 דסליקו הירהור יצרא דהוא כאבן תקלא ארימו אתא על עממיא׃ הא יי אשמע לסיפי
ארעא אמרו לכנשתא דציון הא פרקיך מתגלי הא אגר עבדי מימריה עמיה וכל
12 עובדיהון גלן קדמוהי׃ ויקרון להון עמא דקודשא פריקיא דיי וליך יתקרי תביעתא
קרתא דלא אתרחקת׃

סג

1 מן אמר אלין עתיד לאיתאה מחא על אדום פרענא תקיפא על בצרה למעבד פורענות
דין עמיה כמא דקים להון במימריה אמר הא אנא מתגלי כמא דמללית בזכו סגיא
קדמי חיל למפרק׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. LXII.

DOnec faciam salutē Sion, non dabo requiē populis : & donec veniat consolatio Jerusalem, non faciā quiescere regna, donec reveletur sicut [illegible]luculū lumen ejꝰ, & salꝰ ejus ut lampas accendatur. Et videbunt populi justitiā tuā, & oēs reges gloriā tuam. Et vocabunt te nomine novo, quod verbo Dñi declarabitur. Et eris corona lætitiæ corā Dño, et diadema laudis coram Deo tuo. Non dicetur tibi ampliꝰ, Derelicta ; & terra tua non dicetur ampliùs deserta; sed tu vocaberis [*Civitas*] in qua sunt facientes voluntatem meā; & terra tua habitata, quoniā erit voluntas à facie Dñi in te: & terra tua inhabitabitur. Sicut enim inhabitat juvenis cum virgine, sic habitabunt in medio tui filii tui: & sicut lætatur sponsus cum sponsa, gaudebit super te Deus tuus. Ecce *super* opera patrum tuorum justorum, civitas Jerusalem, *constituti sunt custodes* coram me, omni die ac nocte semper non cessant : *dicitur memoria* bonitatum tuarum coram Domino, non cessat vobis. Neque cessabit memoria eorum à facie ejus, donec præparet & donec ponat Jerusalē laudabilē in terra. Juravit Dñs in dextera sua, & in brachio fortitudinis suæ, Si dedero frumentū tuū ultrà cibū inimicis tuis, & si biberint filii populorū vinū tuum in quo laborâsti. Sed qui collegerint frumentū, comedent illud, & laudabunt corā Dño : & qui calcaverint vinum, bibent illud in atrio sancto meo. *Dixit Propheta*, transite et revertimini per portas: convertite cor populi ad viā rectā ; annuntiate annunciationes bonas, & consolationes justis, qui abstulerunt cogitationē libidinis, quæ erat quasi lapis offendiculi : levate signū ad populos. Ecce Dñs auditū faciet in extremis terræ. Dicite cœtui Sion: Ecce salvator tuꝰ revelatur : ecce merces facientibꝰ verbū ejus cum eo ; quorum omnia opera manifesta sunt coram eo. Et vocabunt eos populum sanctum, redemptos à Domino: & tu vocaberis requisita civitas, quæ non est abjecta.

CAP. LXIII.

QUis dixit hæc, qui adducturꝰ est plagā super Idumæā, ultionē fortē super Bosram; ut faciat ultionem judicii populi sui, sicut juravit eis in verbo suo. Dicit: Ecce ego appareo sicut locutus sum in justitia: multa virtus est coram me ad salvandum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܣܒ *

* ܡܛܠ ܨܗܝܘܢ ܠܐ ܐܫܬܘܩ. ܘܡܛܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܠܐ ܐܫܠܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܦܘܩ ܙܕܝܩܘܬܗ ܐܝܟ ܢܘܗܪܐ. ܘܦܘܪܩܢܗ ܐܝܟ ܠܡܦܐܕܐ ܢܕܠܩ. * ܘܢܚܙܘܢ ܥܡܡܐ ܙܕܝܩܘܬܟܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܐܝܩܪܟܝ. ܘܢܬܩܪܐ ܠܟܝ ܫܡܐ ܚܕܬܐ. ܕܦܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܢܣܝܡܝܘܗܝ. * ܘܬܗܘܝܢ ܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ ܒܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܬܐܓܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܒܐܝܕܗ ܕܐܠܗܟܝ. * ܘܠܐ ܬܬܩܪܝܢ ܬܘܒ ܫܒܝܩܬܐ. ܘܐܪܥܟܝ ܠܐ ܬܬܩܪܐ ܬܘܒ ܨܕܝܬܐ. ܐܠܐ ܬܬܩܪܝܢ ܨܒܝܢܝ. ܘܐܪܥܟܝ ܒܥܝܠܬܐ. ܡܛܠ ܕܨܒܐ ܒܟܝ ܡܪܝܐ. ܘܐܪܥܟܝ ܬܬܒܥܠ. * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܕܒܥܠ ܥܠܝܡܐ ܠܒܬܘܠܬܐ. ܗܟܢܐ ܢܒܥܠܘܢ ܠܟܝ ܒܢܝܟܝ. ܘܐܝܟ ܕܚܕܐ ܚܬܢܐ ܒܟܠܬܐ. ܗܟܢܐ ܢܚܕܐ ܒܟܝ ܐܠܗܟܝ. * ܥܠ ܫܘܪܝܟܝ ܐܘܪܫܠܡ ܐܩܝܡܬ ܢܛܘܪܐ ܟܠܗ ܝܘܡܐ ܘܟܠܗ ܠܠܝܐ. ܐܡܝܢܐܝܬ ܠܐ ܢܫܬܩܘܢ. ܕܡܥܗܕܝܢ ܠܡܪܝܐ ܠܐ ܬܫܠܘܢ. * ܘܠܐ ܬܬܠܘܢ ܫܠܝܐ ܠܗ. ܥܕܡܐ ܕܢܬܩܢ. ܘܥܕܡܐ ܕܢܣܝܡ ܠܐܘܪܫܠܡ ܫܘܒܚܐ ܒܐܪܥܐ. * ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܒܝܡܝܢܗ. ܘܒܕܪܥܐ ܕܥܘܫܢܗ. ܕܠܐ ܐܬܠ ܬܘܒ ܥܒܘܪܟܝ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟܝ. ܘܠܐ ܢܫܬܘܢ ܒܢܝ ܢܘܟܪܝܐ ܚܡܪܟܝ ܕܠܐܝܬܝ ܒܗ. * ܐܠܐ ܐܝܠܝܢ ܕܟܢܫܘܗܝ ܢܐܟܠܘܢܝܗܝ. ܘܢܫܒܚܘܢ ܠܡܪܝܐ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܟܢܫܘܗܝ ܢܫܬܘܢܝܗܝ ܒܕܪܬܐ ܕܩܘܕܫܝ. * ܥܒܪܘ ܥܒܪܘ ܒܬܪܥܐ. ܘܬܩܢܘ ܐܘܪܚܐ ܠܥܡܐ. ܟܒܘܫܘ ܫܒܝܠܐ. ܘܓܒܘ ܟܐܦܐ ܡܢܗ. ܘܐܪܝܡܘ ܐܬܐ ܠܥܡܡܐ. * ܗܐ ܡܪܝܐ ܐܫܡܥ ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܐܡܪܘ ܠܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܗܐ ܦܪܘܩܟܝ ܐܬܐ. ܗܐ ܐܓܪܗ ܥܡܗ. ܘܥܒܕܗ ܩܕܡܘܗܝ. * ܘܢܩܪܘܢ ܐܢܘܢ ܥܡܐ ܩܕܝܫܐ. ܦܪܝܩܐ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܢܬܝ ܬܬܩܪܝܢ ܬܒܥܬܐ. ܡܕܝܢܬܐ ܕܠܐ ܫܒܝܩܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܣܓ *

* ܡܢܘ ܗܢܐ ܕܐܬܐ ܡܢ ܐܕܘܡ. ܘܣܡܩܝܢ ܢܚܘܬܗ ܡܢ ܒܘܨܪܐ. ܘܗܕܝܪ ܒܠܒܘܫܗ. ܘܥܫܝܢ ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܗ. ܐܢܐ ܡܡܠܠ ܒܟܐܢܘܬܐ. ܘܡܣܓܐ ܠܡܦܪܩܘ.

CAP. LXII.

Propter Sionem non tacebo, & propter 1
Jeruſalem non ſilebo: donec prodeat juſtitia
ejus ſicut lumen, & ſalus ejus ut lampas ſplen-
deſcat. Videbunt enim gentes juſtitiam 2
tuam, & omnes reges gloriam tuam: & vo-
cabitur tibi nomen novum quod os Domini
imponet: Eriſque corona laudis in manu 3
Domini, & diadema regni in manu Dei tui:
Non vocaberis ampliùs Repudiata, & terra 4
tua non vocabitur ampliùs Sterilis; ſed tu
vocaberis Delitiæ meæ, & terra tua Maritata:
quoniam grata es Domino, ideò terra tua ma-
ritabitur. Nam quemadmodum ſe maritat 5
adoleſcens virgini, ita maritabunt ſe tibi filii
tui: & quemadmodum ſponſus oblectatur
ſponſâ, te oblectabitur Deus tuus. Super 6
muros tuos Jeruſalem, conſtitui cuſtodes quo-
tidie, diu noctúque jugiter, qui non tacebunt,
neque ſilebunt commemorantes coram Do-
mino: Quibus non dabis requiem, donec 7
ſtabiliat te, & donec reddat te Jeruſalem,
glorioſiſſimam in terra. Juravit Dominus 8
per dexteram ſuam & per brachium ſuum ro-
buſtum, *dicens*; Non dabo ampliùs frumen-
tum tuum in cibum hoſtibus tuis, neque bi-
bent filii exterorum vinum tuum pro quo la-
boraveris: Sed colligentes illud comedent 9
illud, & laudabunt Dominum; & colligen-
tes hoc bibent illud in atriis ſanctis meis.
Tranſite, tranſite per portam, reſtituite viam 10
populo, terite ſemitam & purgate lapides
ejus, erigite ſignum gentibus. Ecce Domi- 11
nus promulgavit uſque ad extrema terræ,
Dicite filiæ Sionis, Ecce venit Salvator tuus,
ecce merces ejus cum eo, & opus ejus cum
ipſo. Et vocabunt eos Populum ſanctum, 12
libertos Domini; & tu vocaberis Vindicata,
civitas non Derelicta.

CAP. LXIII.

Quis hic eſt qui venit ex Adum, rubeis ve- 1
ſtibus de Boſar, decorus indumentis ſuis, &
multitudine roboris ſui potens? Ego ſum qui
juſtè loquor, & abundo ſalute.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثاني والستون *

* لاجل صهيون لست اسكن * ولاجل ايروسليم لست اتعاصي الي ان يخرج مثل النور عدلي
وخلاصي مثل مصباح يتوقد * ويعاين الامم عدلك وجميع ملوك الارض مجدك ويدعوك
باسمك الجديد الذي يسميه الرب * وتكوني اكليل حسن في يد الرب وتاج ملك في يد
الهك * ولست تدعين بعد مهملة وارضك لا تدعي قفر * لانك انت تدعين ارادتي وارضك
مسكونة * لان الرب يسر بك وارضك مسكونة * وكما يسكن الشاب مع العذري هكذا تسكن
بنوك معك * ويكون كما يفرح العريس بعروسه هكذا يفرح بك * وعلي اسوارك يا ايروسليم اقمت
حفظة النهار كله والليل كله الذين لا يسكتون * الي النهاية يذكرون الرب * لان ليس لكم
شبيه ان تقومي وتصنعي يا ايروسليم سماحة علي الارض * حلف الرب بمجده وبقوة ذراعه
لا اعطي ايضا قمحك واطعمتك لاعدائك ولا تشرب ايضا البنون الغرباء خمرك الذي تعبت
فيه * لكن الذين يجمعون ياكلونها ويسبحون الرب والذين يجمعون يشربونها في دياري
المقدسة * اذهبوا جوزوا من ابوابي هيئوا الطريق واصنعوا طريقا اصنعوا طريقا لشعبي
وانقلوا الحجارة من الطريق ارفعوا علامة للامم * لان ها الرب صنع مسموعا الي
اخر الارض قولوا للابنة صهيون ها خلاصك حضر واجرته معه وعمله قدام
وجهه * ويدعوه شعبا مقدسا مفديا من الرب وانت تدعين مدينة مطلوبة
ولست مهملة

CAP. LXII.

Propter Sionem non quieſcam, & 1
propter Jeruſalem non connivebo: donec
egrediatur ut ſplendor juſtitia mea, &
ſalus mea ſicut fax ardeat: Aſpiciant 2
gentes juſtitiam tuam, & omnes reges
terræ gloriam tuam: vocentque te no-
mine tuo novo quod Dominus imponet:
Et ſis corona decoris in manu Domini, 3
& diadema regni in manu Dei tui:
Nequaquam vocaberis deinceps Derelicta, 4
neque terra tua vocabitur Solitudo:
quia tu vocaberis Voluntas mea, & ter-
ra tua Habitata, Dominus enim te ob-
lectabitur, & terra tua erit habitata.
Et quemadmodum cohabitat juvenis cum 5
virgine, ita cohabitabunt filii tui te-
cum: & erit quemadmodum gaudet
ſponſus de ſua ſponſa, ita de te gau-
debit. Porrò ſuper mœnia tua O Je- 6
ruſalem, collocavi cuſtodes totâ die to-
tâque nocte, qui non tacebunt, in finem
uſque recordabuntur Domini. Non e- 7
nim erit par vobis, modò te corrigas
& facias O Jeruſalem excelſum opus
ſuper terram. Juravit Dominus per glo- 8
riam ſuam & per brachii ſui robur,
Non dabo ampliùs frumentum tuum &
cibos tuos inimicis tuis, neque bibent
ampliùs alienigenæ vinum tuum in quo
laboraveris: Sed filii tui qui congrega- 9
buntur, comedent eos, & laudabunt
Dominum; & qui congregabuntur,
bibent illud in atriis tuis ſan-
ctis. Ite, tranſite per portas meas, pa- 10
rate viam, & facite viam, facite in-
quam viam populo meo, & aſportate
lapides è via, attollite ſignum ad popu-
los. Quoniam ecce Dominus auditum 11
fecit uſque ad extremum terræ, Dicite
huic filiæ Sioni, Ecce redemptor tuus
adeſt, & merces ejus cum ipſo, & opus
ejus ante faciem ipſius. Et vocabit eum 12
Populum ſanctum, redemptum à Do-
mino; tu verò vocaberis urbs Requiſita,
non autem Derelicta.

* الفصل الثالث والستون *

* من هذا الجاي من ادوم وصبغ ثيابه من بوصار هكذا بهي في لباسه يجوز بقوة
كثيرة * انا اتكلم بالعدل وحكم الخلاص *

CAP. LXIII.

Quis eſt iſte veniens ex Edom, in- 1
tinctis veſtibus de Boſar, adeo ſplendi-
dus in veſtimento ſuo, gradiens multo
cum robore? Ego loquor juſtitiam & ju-
dicium ſalutare.

ישעיה : סג

calcantis sicut tua vestimenta & , *tuo vestimento* rubrum Quare
2 מדוע אדם ללבושך ובגדיך כדרך
:mecum *vir* non populis de & ,ego solus calcavi Torcular ?torculari in
3 בגת : פורה דרכתי לבדי ומעמים אין איש אתי
spargetur & : mea ira in eos conculcabo & ,meo *naso* in eos calcabo &
ואדרכם באפי וארמסם בחמתי ויז
.inquinavi mea indumenta omnia & ,mea vestimenta super eorum *victoria*
נצחם על־בגדי וכל־מלבושי אגאלתי :
.venit meorũ redemptorũ annus & : meo corde in ultionis dies Quia
4 כי יום נקם בלבי ושנת גאולי באה :
mihi salvavit & : *fulciens* nõ & , *obstupui* & : auxiliator non &,aspexi Et
5 ואביט ואין עזר ואשתומם ואין סומך ותושע לי
populos conculcabo Et .me fulcivit *ipse* *meus æstus &* ,meũ brachium
6 זרעי וחמתי היא סמכתני : ואבוס עמים
terram in faciam descendere & ,mea ira in eos inebriabo & ,meo furore in
באפי ואשכרם בחמתי ואוריד לארץ
laudes ; faciam memorare Domini Miserationes .eorum *victoriam*
7 נצחם : חסדי יהוה אזכיר תהלת
multitudinẽ & : Dominus nobis reddidit quæ omnib⁹ super *quasi* Domini
יהוה כעל כל־אשר־גמלנו יהוה ורב־
, *suas misericordias* secundũ eis reddidit quod , Israel domui boni
טוב לבית ישראל אשר־גמלם כרחמיו
Verè : dixit Et .suarum miserationum multitudinem secundùm &
8 וכרב חסדיו : ויאמר אך־
.*salvatorem in* eis est factus & : mentientur non filii , *ipsi* me⁹ popul⁹
עמי המה בנים לא ישקרו ויהי להם למושיע :
:eos fecit salvos ejus *faciei* angelus &,angustia *non* eorũ angustia omni In
9 בכל־צרתם לא צר ומלאך פניו הושיעם
: eos redemit ipse suã indulgentiã propter & , suam dilectionẽ propter
באהבתו ובחמלתו הוא גאלם
,fuerũt rebelles ipsi Et .seculi diebus cũctis eos portavit & ,eos tulit &
10 וינטלם וינשאם כל־ימי עולם : והמה מרו
ipse ,*inimicum in* eis est *versus* & : ej⁹ sanctitatis spiritũ *affecerunt dolore* &
ועצבו את־רוח קדשו ויהפך להם לאויב הוא
: sui populi ,Moseh seculi dierũ est recordat⁹ Et .eos contra pugnavit
11 נלחם־בם : ויזכר ימי־עולם משה עמו
ponens Ubi ? sui *pecoris* pastorib⁹ cum ,mari de eos *faciens ascendere* Ubi
איה המעלם מים את רעי צאנו איה השם
brachio,Moseh dexterã ad *Deducens* ? suæ sanctitatis spiritum ej⁹ medio in
12 בקרבו את־רוח קדשו : מוליך לימין משה זרוע
? *seculi* nomen sibi *faciendum ad,eorum faciebus* à aquas *scindentis*:suæ gloriæ
תפארתו בוקע מים מפניהם לעשות לו שם עולם :
.*impingerent non* , desertum per *equum* sicut , abyssos per eos *Deducens*
13 מוליכם בתהמות כסוס במדבר לא יכשלו :
: *cum deducet* D O M I N I spiritus , *descendet* vallem per animal Veluti
14 כבהמה בבקעה תרד רוח יהוה תניחנו
.gloriæ nomen tibi *faciendum ad* , tuum populum duxisti sic
כן נהגת עמך לעשות לך שם תפארת :
: tuæ gloriæ & ,tuæ sanctitatis habitaculo de vide & , cœlis è Aspice
15 הבט משמים וראה מזבל קדשך ותפארתך
, tuorum viscerum *tumultus* , tuæ fortitudines & , tuus zelus ubi
איה קנאתך וגבורתיך המון מעיך
:noster pater tu Nam ? se continuerunt *me erga* ? tuarũ miserationũ &
16 ורחמיך אלי התאפקו : כי־אתה אבינו
Domine Tu .nos agnovit non Israel & , nos nescivit Abraham quia
כי אברהם לא ידענו וישראל לא יכירנו אתה יהוה
.tuum nomen seculo à : noster redemptor ,noster pater
אבינו גאלנו מעולם שמך :

Versio VUL. LAT.

2 Quarè ergò rubrum est indu-
mentũ tuum, & vestimenta tua
sicut calcantium in torculari ?
3 Torcular calcavi solus, & de
Gentibus non est vir mecum :
calcavi eos in furore meo, &
conculcavi eos in ira mea : &
aspersus est sanguis eorum sup
vestimenta mea, & omnia in-
4 dumenta mea inquinavi. Dies
enim ultionis in corde meo, an-
nus redemptionis meæ venit.
5 Circumspexi, & non erat auxi-
liator : quæsivi, & non fuit qui
adjuvaret: et salvavit mihi bra-
chiũ meum, & indignatio mea
6 ipsa auxiliata est mihi. Et con-
culcavi populos in furore meo,
& inebriavi eos in indignatio-
ne mea, & detraxi in terrã vir-
7 tutem eorũ. Miserationũ Dñi
recordabor, laudem Dñi super
omnibus quæ reddidit nobis
Dñs, & super multitudinẽ bo-
norũ domui Israel, quæ largit⁹
est eis secundùm indulgentiam
suam, et secundùm multitudinẽ
8 misericordiarũ suarum. Et di-
xit ; Veruntamen popul⁹ meus
est, filii non negantes: & factus
9 est eis Salvator. In omni tribu-
latione eorũ non est tribulat⁹,
& angelus faciei ejus salvavit
eos: in dilectione sua, & in in-
dulgentia sua ipse redemit eos:
& portavit eos, et elevavit eos
10 cunctis diebus seculi. Ipsi autẽ
ad iracundiã provocaverũt, &
afflixerũt spiritũ Sancti ej⁹: &
convers⁹ est eis in inimicũ, &
11 ipse debellavit eos. Et recor-
dat⁹ est dierum seculi Moysi, et
populi sui : Ubi est qui eduxit
eos de mari cum pastorib⁹ gre-
gis sui? ubi est qui posuit in me-
12 dio ej⁹ spiritũ Sancti sui ? Qui
eduxit ad dexterã Moysen bra-
chio majestatis suæ, qui scidit
aquas ante eos, ut faceret sibi
13 nomen sempiternum: Qui edu-
xit eos per abyssos, quasi equũ
in deserto non impingentem.
14 Quasi animal in campo descen-
dens, spirit⁹ Domini ductor ej⁹
fuit : sic adduxisti populũ tuũ,
ut faceres tibi nomen gloriæ.
15 Attende de cœlo, et vide de
habitaculo sancto tuo, et glo-
riæ tuæ : ubi est zelus tuus, et
fortitudo tua, multitudo visce-
rum tuorum, et miserationum
tuarum ? super me continuerũt
16 se. Tu enim pater noster, &
Abraham nescivit nos, et Is-
rael ignoravit nos: tu, Domine,
pater noster, redemptor noster,
à seculo nomen tuum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

2 Διατί σου ἐρυθρὰ τὰ ἱμάτια, ϗ τὰ ἐνδύ-
3 ματά σου ὡς ἀπὸ πατητοῦ ληνοῦ; Πλήρης
καταπεπατημένης, ϗ τῶν ἐθνῶν οὐκ ἔστιν ἀ-
νὴρ μετ' ἐμοῦ, ϗ κατεπάτησα αὐτοὺς ἐν (β)
θυμῷ μου, ϗ κατέθλασα αὐτοὺς ὡς γῆν,
4 ϗ κατήγαγον τὸ αἷμα αὐτῶν εἰς γῆν. Ἡ-
μέρα γὰρ ἀνταποδόσεως ἐπῆλθεν αὐτοῖς,
5 ϗ ἐνιαυτὸς λυτρώσεως πάρεστι. Καὶ ἐπέβλε-
ψα, ϗ (γ) οὐκ ἦν βοηθός· ϗ προσενόησα,
ϗ οὐθεὶς ἀντελαμβάνετο. ϗ ἐρρύσατο αὐ-
τοὺς ὁ βραχίων μου, ϗ ὁ θυμός μου ἐπέστη.
6 Καὶ κατεπάτησα αὐτοὺς τῇ ὀργῇ μου, καὶ
7 κατήγαγον τὸ αἷμα αὐτῶν εἰς γῆν. Τὸν ἔ-
λεον κυρίου ἐμνήσθην, τὰς ἀρετὰς κυρίου ἐν
πᾶσιν οἷς (δ) ἡμῖν ἀνταποδίδωσι. κύριος
κριτὴς ἀγαθὸς τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ, ἐπάγει ἡ-
μῖν κατὰ τὸ ἔλεος αὐτοῦ, ϗ κατὰ τὸ πλῆθος
8 τῆς δικαιοσύνης αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν, Οὐχ ὁ
λαός μου; τέκνα (ε) οὐ μὴ ἀθετήσωσι. ϗ
9 ἐγένετο αὐτοῖς εἰς σωτηρίαν Ἐκ πά-
σης (ζ) θλίψεως αὐτῶν. οὐ πρέσβις, οὐδὲ
ἄγγελος, ἀλλ' (η) αὐτὸς ἔσωσεν αὐτοὺς,
διὰ τὸ ἀγαπᾶν αὐτοὺς ϗ φείδεσθαι αὐτῶν·
(θ) αὐτὸς ἐλυτρώσατο αὐτοὺς, ϗ ἀνέλα-
βεν αὐτοὺς, ϗ ὕψωσεν αὐτοὺς πάσας τὰς ἡ-
10 μέρας τοῦ αἰῶνος. Αὐτοὶ δὲ ἠπείθησαν, καὶ
παρώξυναν τὸ πνεῦμα τὸ (ι) ἅγιον αὐτοῦ· ϗ
ἐστράφη αὐτοῖς εἰς ἔχθραν, (κ) αὐτὸς ἐπολέ-
11 μησεν αὐτούς. Καὶ ἐμνήσθη ἡμερῶν αἰωνί-
ων· (λ) Ποῦ ὁ ἀναβιβάσας ἐκ τῆς θαλάσ-
σης τὸν ποιμένα τῶν προβάτων; ποῦ ἐστιν ὁ
12 θεὶς ἐν αὐτοῖς τὸ πνεῦμα τὸ ἅγιον; Ὁ ἀ-
γαγὼν τῇ δεξιᾷ Μωσῆν, ὁ βραχίων τῆς
δόξης αὐτοῦ; κατίσχυσεν ὕδωρ ἀπὸ προσώπου
αὐτοῦ, ποιῆσαι (μ) ἑαυτῷ ὄνομα αἰώνιον. (ν)
13 Ἤγαγεν αὐτοὺς δι' ἀβύσσου, ὡς ἵππον δι'
14 ἐρήμου, ϗ οὐκ ἐκοπίασαν, Καὶ ὡς κτήνη διὰ
πεδίου. (ξ) κατέβη πνεῦμα παρὰ κυρίου,
ϗ ὡδήγησεν αὐτούς· οὕτως ἤγαγες τὸν λαόν
15 σου ποιῆσαι σεαυτῷ ὄνομα δόξης. Ἐπί-
στρεψον ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, ϗ ἴδε ἐκ τοῦ οἴκου τοῦ
ἁγίου σου, ϗ (ο) δόξης σου. ποῦ ἐστιν ὁ ζῆ-
λός σου ϗ ἡ ἰσχύς σου; ποῦ ἐστι τὸ πλῆθος
τοῦ ἐλέους σου, ϗ (π) οἰκτιρμῶν σου, ὅτι ἀν-
16 έσχου ἡμῶν; Σὺ γὰρ (ρ) εἶ πατὴρ ἡμῶν,
ὅτι Ἀβραὰμ οὐκ ἔγνω ἡμᾶς, ϗ Ἰσραὴλ οὐκ
ἐπέγνω ἡμᾶς, ἀλλὰ σὺ κύριε πατὴρ ἡμῶν
ῥῦσαι ἡμᾶς, ἀπ' ἀρχῆς τὸ ὄνομά σου (σ) ἐφ'
ἡμᾶς ἐστι.

Quarè rubra sunt vestimenta tua, & indumenta tua, sicut de calcatu torcularis? (f) Plenus perculcatione, & de gentibus non est vir mecum: & conculcavi eos in furore meo, & confregi eos, quasi terram: & deduxi sanguinem eorum in terram. Dies enim retributionis venit eis: & annus redemptionis adest. Et aspexi; & non erat auxiliator: & consideravi, & nullus prohibebat auxilium. Et eruit eos brachium meum: & furor meus ( ) advenit: Et conculcavi eos in ira mea: & deduxi in terram sanguinem eorum. Misericordiæ Domini recordatus sum, virtutum Domini in omnibus, quæ retribuit nobis. Dominus judex bonus domui Israel, adducit nobis secundum misericordiam suam, & secundum multitudinem justitiæ suæ. Et dixit; Nonne populus meus? filii non reprobabunt. Et factus est eis in salutem Ex omni tribulatione eorum: non legatus, neque angelus, sed (i) ipse salvavit eos, quòd diligeret eos, et parceret eis. Ipse redemit eos, et suscepit illos, & exaltavit eos omnibus diebus seculi. Ipsi autem non crediderunt, & exacerbaverunt spiritum sanctum ejus. Et conversus est eis in inimicitiam: ipse pugnavit contra eos. Et recordatus est dierum antiquorum. ubi est, qui eduxit è (k) mari pastorem ovium? ubi est qui posuit in eis spiritum sanctum? Qui eduxit dexterâ Mosen, (l) brachium gloriæ suæ? superavit aquam à facie ejus, ut faceret sibi nomen sempiternum. Adduxit eos per abyssum, sicut equum per solitudinem, & non laboraverunt: Et sicut jumenta per campũ. Descendit spiritus à Domino, & dux eorum fuit. Sic adduxisti populum tuum; ut faceres tibi nomen gloriæ. Convertere de cœlo, & vide de domo sancta tua, & gloriæ tuæ. ubi est zelus tuus, & fortitudo tua? Ubi est multitudo misericordiæ tuæ, et miserationũ tuarũ, quia sustinuisti nos? Tu enim es pater noster: quia Abraam non cognovit nos: & Israel non cognovit nos. Sed tu, Domine pater noster, libera nos: à principio nomen tuum super nos est.

MS.A. (β) θυμῷ, ϗ κατέθλασα (γ) οὐδεὶς βοηθός· (δ) ὁ κύριος ἡμῖν (ε) ϗ οὐ μὴ (ζ) θλίψεως. οὐ πρέσβεις, (η) αὐτὸς κύριος ἔσωσεν (θ) ϗ αὐτὸς (ι) ἅγιον· ϗ ἐστράφη (κ) ϗ αὐτὸς (λ) Ὁ ἀναβιβάσας ἐκ τῆς γῆς τὸν (μ) αὐτῷ (ν) Καὶ ἤγαγεν αὐτοὺς διὰ τῆς ἀβύσσου, (ξ) ϗ κατέβη (ο) δόξης. ποῦ ἐστι (π) τῶν οἰκτιρμῶν (ρ) ἡμῶν εἶ πατήρ, (σ) ἐστιν ἐν ἡμῖν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 מא דין יסמקון טורין מדם קטילין ומישרין יפקון כחמר במעצרא : הא כבעוט דמתבעט
3 במעצרא כן יסגי קטול במשרית עממיא ולא יהא להון תקוף קדמי ואקטלנין ברוגזי
ואדושנון בחמתי ואתבר תקוף תקיפיהון קדמי וכל חכימיהון אסלעם : 4 ארי יום
פרענותא קדמי ושנת פורקן עמי מטת : 5 וגלי קדמי ולית גבר דליה עובדין טבין וידיע
קדמי ולית אנש דיקום ויבעי עליהון ופרקתנון בדרע תקפי ובמימר רעותי סעדתנין :
6 ואקטל עממיא ברוגזי ואדושנון בחמתי וארמי לארע ארעיתא קטילי גבריהון : 7 אמר
נביא טיבותא דיי אנא מדכר תושבחתא דיי כעל כל דגמלנא יי וסגי טוביה לבית
8 ישראל דגמלנון כרחמוהי וכסגיות טוביה : ואמר ברם עמי אנון בניא דלא ישקרון
9 והוה מימריה להון פריק : בכל עדן דחבו קדמוהי לאיתאה עליהון עקא לא אעיק
להון ומלאך שליח מן קדמוהי פרקנון ברחמתיה ובמחסיה עליהון הא שיזבנון
10 ונטלנון וסוברנין כל יומי עלמא : ואנון סריבו וארגיזו על מימר נביי קודשיה ואתהפך
11 מימריה להון לבעל דבב הוא אגיח קרבא בהון : וחס על יקר שמיה בדיל דוכרן
טבותיה דמן עלמא גבורן דעבד על ידי משה לעמיה דלמא יימרון אן דאסקנון מן ימא
12 אן דדברנון במדברא כרעיא לעניה אן דאשרי ביניהון ית מימר נביי קודשיה : דבר
לימינא דמשה דרע תושבחתיה בזע מי ימא דסוף מן קדמיהון למעבד ליה שום עלם :
13 דברנון בין תהומיא כסוסיא די במדברא לא מתקל כן אף אנון לא אתקילו : 14 כבעירא
די במישרא מדברא מימרא דיי דברנון כן דברתיה לעמך למעבד לך שום דתושבחא :
15 אסתכי מן שמיא ואתגלי ממדור קודשך ותושבחתך אן פורענותך וגברותך המון טבותך
16 וסגיות רחמך עלי יתחסנון : ארי את הוא דרחמך עלנא סגיאין כאב על בנין ארי אברהם
לא אסקנא ממצרים וישראל לא עבד לנא פרישן במדברא את הוא יי דרחמך עלנא
סגיאין כאב על בנין פרקנא מעלם שמך :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quare rubescunt montes sanguine occisorum, & valles defluunt quasi vinum in torculari ? Ecce sicut calcantur in torculari uvæ, sic multiplicabitur occisio in castris populorũ : & non erit eis fortitudo corã me; & occidã eos in furore meo, & triturabo eos in ira mea; & conterã fortitudinem robustorum eorum coram me et omnes sapientes eorum absorbebo. Quia dies ultionis corã me, & ann⁹ redemptionis populi mei pervenit. Et manifestũ est corã me, quòd non sit vir cuj⁹ opera sint bona: et notũ est corã me, quòd non sit vir qui stet & deprecetur pro eis: & salvavi eos brachio fortitudinis meæ, & verbo voluntatis meæ auxiliat⁹ sum eis. Et occidã populos in furore meo, & conculcabo eos in indignatione mea: & projiciam in terrã inferiorẽ occisos fortiũ eorũ. Dicit Propheta: Benignitatis Domini recordabor, & laudis Dñi, pro omnib⁹ quæ retribuit nobis Dñs; & multitudine bonitatis ej⁹ domui Israel, quib⁹ retribuit secundũ miserationes suas, & secundùm multitudinem benignitatis suæ. Et ait: Veruntamen populus meus sunt filii qui non mentiuntur: & fuit Verbum ej⁹ eis in redemptionẽ. In omni tempore quo peccaverunt coram eo, ut adduceret super eos tribulationẽ, non tribulavit eos; & angelus missus à facie ej⁹ redemit eos; sua in eos dilectione & miseratione *ecce* liberavit eos, & tulit eos, & sustinuit eos cunctis diebus seculi. Ipsi autem noluerunt obedire: sed irritaverunt Prophetas super verbũ sanctũ ejus, & conversũ est Verbũ ejus eis in inimicũ, ipse debellavit eos. Et misertus est propter gloriã nominis sui, & propter memoriã benignitatis suæ, quæ à seculo est, & magnalia quæ fecit per manus Moysi populo suo, ne fortè dicant : Ubi est qui ascendere fecit eos de mari ? ubi est qui duxit eos per solitudinẽ, sicut pastor oves suas ? ubi est qui habitare fecit in medio eorum verbũ prophetarũ sanctorum suorum ? Qui deduxit ad dexterã Moysis, brachium laudis suæ ; divisit aquas maris carectosi à facie eorum, ut faceret sibi nomen sempiternũ. Deduxit eos per abyssos, sicut equũ qui in deserto non impegit, sic etiam ipsi non impegerunt. Quasi animal quod in campo ducitur, Verbũ Dñi deduxit eos : sic deduxisti populũ tuum, ut faceres tibi nomẽ inclytũ. Aspice de cœlo, & revelare de habitaculo sancto tuo, & laudis tuæ: ubi est ultio tua & potentia tua? copia benignitatis tuæ, & multitudo miserationũ tuarũ super me confortatæ sunt. Quia tu es, & miserationes tuæ tam copiosæ sunt in nos, quàm patris in filios. Quia Abraham non eduxit nos de Ægypto, & Israel non fecit nobis mirabilia in deserto. Tu es Dominus, & misericordiæ tuæ tam copiosæ sunt super nos, quàm patris in filios : Redemptor noster à seculo nomen tuum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܡܢܐ ܣܘܡܩܝܢ ܢܚܬܝܟ ܘܠܒܘܫܝܟ. ܐܝܟ ܗܘ ܕܕܪܟ ܒܡܥܨܪܬܐ. * ܡܥܨܪܬܐ ܕܪܟ
ܒܠܚܘܕܝ. ܘܐܢܫ ܡܢ ܥܡܡܐ ܠܝܬ ܗܘܐ ܥܡܝ. ܕܫܬ ܐܢܘܢ ܒܪܘܓܙܝ. ܘܕܫܬ ܐܢܘܢ
ܒܚܡܬܝ. ܘܢܬܙ ܕܡܗܘܢ ܥܠ ܠܒܘܫܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܢܚܬܝ ܛܘܫܬ. * ܡܛܠ ܕܝܘܡܐ
ܕܬܒܥܬܐ ܒܠܒܝ. ܘܫܢܬܐ ܕܦܘܪܩܢܝ ܡܛܬ. * ܚܪܬ ܘܠܝܬ ܕܡܥܕܪ. ܘܐܬܕܡܪܬ
ܘܠܝܬ ܕܣܡܟ. ܘܦܪܩܢܝ ܕܪܥܝ. ܘܚܡܬܝ ܗܝ ܣܡܟܬܢܝ. * ܕܫܬ ܥܡܡܐ ܒܪܘܓܙܝ
ܘܕܪܫܬ ܐܢܘܢ ܒܚܡܬܝ. ܘܐܚܬܬ ܠܐܪܥܐ ܚܝܠܗܘܢ. * ܛܝܒܘܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܬܕܟܪ
ܘܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܠ ܟܠ ܕܦܪܥܢܝ ܡܪܝܐ. ܘܐܣܓܝ ܛܝܒܘܬܗ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ.
ܕܦܪܥܢܝ. ܐܝܟ ܪܚܡܘܗܝ. ܘܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܛܝܒܘܬܗ. * ܘܐܡܪ. ܕܥܡܝ ܐܢܘܢ ܒܢܝܐ ܕܠܐ
ܡܕܓܠܝܢ. ܘܗܘܐ ܠܗܘܢ ܦܪܘܩܐ. * ܒܟܠ ܐܘܠܨܢܗܘܢ. ܠܐ ܐܘܠܨ ܐܢܘܢ. ܘܡܠܐܟܐ ܕܦܪܨܘܦܗ
ܦܪܩ ܐܢܘܢ. ܒܚܘܒܗ ܘܒܚܘܣܢܗ ܦܪܩ ܐܢܘܢ. ܘܐܪܝܡ ܐܢܘܢ ܘܫܩܠ ܐܢܘܢ. ܟܠܗܘܢ
ܝܘܡܬܐ ܕܥܠܡܐ. * ܘܗܢܘܢ ܡܪܡܪܘ. ܘܐܟܪܝܘ ܠܪܘܚܐ ܕܩܘܕܫܗ. ܘܗܦܟ ܗܘܐ ܠܗܘܢ
ܠܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܗܘ ܡܬܟܬܫ ܗܘܐ ܥܡܗܘܢ. * ܘܐܬܕܟܪ ܝܘܡܬܐ ܕܥܠܡܐ ܕܡܘܫܐ ܥܒܕܗ. ܐܝܟ
ܕܐܣܩ ܡܢ ܝܡܐ ܠܪܥܝܐ ܕܥܢܗ. ܘܐܝܟ ܕܣܡ ܒܗ ܪܘܚܐ ܕܩܘܕܫܗ. * ܕܕܒܪ ܠܝܡܝܢܗ ܕܡܘܫܐ
ܕܪܥܐ ܕܫܘܒܚܗ. ܨܪܐ ܝܡܐ ܡܢ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܘܥܒܕ ܠܗܘܢ ܫܡܐ
ܠܥܠܡ. * ܕܕܒܪ ܐܢܘܢ ܒܬܗܘܡܐ. ܐܝܟ ܣܘܣܝܐ ܒܡܕܒܪܐ. * ܘܠܐ ܐܬܬܩܠܘ. ܐܝܟ ܒܥܝܪܐ
ܕܢܚܬܐ ܠܦܩܥܬܐ. ܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܕܒܪܬ ܐܢܘܢ. ܗܟܢܐ ܕܒܪܬ ܠܥܡܟ. ܘܥܒܕܬ
ܠܟ ܫܡܐ ܕܫܘܒܚܐ. * ܚܘܪ ܡܢ ܫܡܝܐ. ܘܚܙܝ ܡܢ ܡܥܡܪܐ ܕܩܘܕܫܟ ܘܫܘܒܚܟ. ܐܝܟܐ
ܛܢܢܟ ܘܓܢܒܪܘܬܟ. ܘܗܡܝܡܐ ܕܡܥܝܟ ܘܪܚܡܝܟ ܕܥܠܝܢ. * ܡܛܠ ܕܐܢܬ
ܐܒܘܢ. ܐܒܪܗܡ ܠܐ ܝܕܥܢ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܠܐ ܐܫܬܘܕܥܢ. ܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܒܘܢ ܦܪܘܩܢ.
ܘܫܡܟ ܥܠܝܢ. ܡܢ ܥܠܡ.

* Quare rubicundæ ſunt veſtes tuæ & indumenta 2
tua, velut ej⁹ qui *muſtum* in lacu preſſit ?
Lacum calcavi ſolus,& nemo ex populis 3
aderat mecum:preſſi eos in ira mea,& calcavi
eos in æſtu meo;ideò ſanguine eorum ſuper
indumenta mea erumpente, omnes meas
veſtes cruentavi. Dies enim ultionis mihi 4
eſt in animo, & annus ſalutis meæ pervenit.
Cùm autem reſpexiſſem, & nullus opem ferret; 5
obſtupuiſſem, & nemo fulciret ; ſalvavit
me brachium meum, & æſtus meus ipſe me
fulcivit. Calcavi populos in ira mea, & exagitavi 6
eos in æſtu meo, adeóque in terram
dejeci robur eorum. Beneficium Domini et 7
laudem Domini memorabo pro omnibus quæ
contulit mihi Dominus,& *quòd* multiplicârit
benignitatem ſuam erga Iſraelitas,quòd retribuerit
mihi ſecundùm miſerationes ſuas, &
ſecundùm amplitudinē benignitatū ſuarum :
Dixerit, Populus meus ſunt, filii minimè fallaces: 8
fuerit Salvator eorum : Et in cunctis 9
calamitatibus eorum non afflixerit eos ; ſed
Angelus faciei ejus liberaverit eos,benignitate
& clementiâ ſuâ redemerit eos,extulerit et
evexerit eos cunctis diebus ſeculi. Ipſis quidem 10
exaſperantib⁹ & dolore afficientibus ſpiritum
ſanctitatis ejus,converſus fiebat eis inimicus,
& ipſe pugnabat contra eos: At recordabatur 11
priſcorum dierum Moſis ſervi ſui,
quomodo eduxerat è mari paſtorem gregis
ſui, & qnomodo indiderat in eum ſpiritum
ſanctitatis ſuæ ; Rexerat dexteram Moſis brachium 12
ejus glorioſū, perruperat mare à conſpectu
eorum,& comparaverat eis nomen æternum :
Duxerat eos per abyſſum, tanquā 13
equum per deſertum, Nec impegerant more 14
jumenti deſcendentis in planitiem:(Spirit⁹
enim Domini regebat illos) Ita duxiſti populum
tuum;& comparâſti tibi nomen glorioſū.
Intuere de cœlo,& reſpice ex habitaculo tuo 15
ſancto & glorioſo : ubi eſt zelus tuus,& fortitudo
tua, & commotio viſcerum & miſerationū
tuarum quæ commovebantur erga nos?
Tu enim pater noſter es : Abrahamum ignoramus,& 16
Iſraelem non cognovimus : tu quidem
Domine, pater noſter es, vindex noſter ;
& nomen tuum ſuper nos eſt à ſeculo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ما بال ثيابك حمر ولباسك كدواس المعصر المملوه المداسة * دست المعصر وحدي
وليس معي رجل من الامم موجودا * ودستهم بغضبي * ووطيتهم مثل الارض * وانزلت دمهم
على الارض * وانصبغت ثيابي بدمهم * ودنسوا جميع لباسي * لان يوم المجازاة جاء لهم
وسنة الانقاذ حضرت * ونظرت ولم يكن معين * وتاملت وليس من يسند *
ذراعي * وغضبي هو وقف * ودستهم برجزي * واسكرتهم بغضبي * وانزلت دمهم
الارض * ذكرت رحمة الرب * وساذكر فضايل الرب * تسبحة الرب على كل ما كافانا به
الرب * الرب حاكم صالح لبيت اسرايل يجلب علينا كرحمته وكثرة عدله * وقال
اليس هم شعب لي وبنون ولا يجحدون * وصار لهم خلاصا من كل حزنهم * ليس شفيع
ولا ملاك * لكن هو الرب خلصهم * من اجل انه يحبهم ويشفق عليهم * وهو افتداهم
وقبلهم ورفعهم جميع ايام الدهر * وهم عصوا واغاظوا الروح القدس * فرجع لهم عدوا
وهو حاربهم * وذكر الايام الدهرية * اين هو المصعد من البحر راعي خرافه * اين هو
الواضع فيهم الروح القدس * المصعد موسى بيمينه وذراع مجده * شق الماء عن وجهه
ليصنع له اسما ابديا * واهداهم في العمق مثل فرس في البرية ولم يتعبوا * ومثل
بهايم في الفلاة ولم يجزعوا * نزل روح من الرب وهداهم * هكذا اهديت شعبك لتصنع
لذاتك اسم مجد * ارجع يا رب من السماء * وانظر من مسكن مجدك المقدس * اين هي
غيرتك وقوتك * اين هي كثرة رحمتك ورافاتك * لانك تغضي يا رب * لانك انت هو
ابونا * لان ابرهيم لم يعرفنا * واسرايل لم يتعرف بنا * لكن انت يا رب ابونا * نجنا * واسمك
هو علينا منذ البدء *

Unde veſtes tuæ rubræ ſunt,& indumentum 2
tuum veluti conculcantis lacum
muſto *plenum & conculcatum* ? Conculcavi 3
lacū ſolus,nullo viro ex populis mecum
præſente:conculcavi autem eos in furore
meo,& preſſi eos ceu terram,& ſanguinem
eorum in terram fluere feci, proinde
veſtes meas eorum ſanguine reſperſi,ita
ut contaminârint totum indumentum
meum.Nam dies retributionis advenit 4
eis, & annus redemptionis inſtat . Et 5
vidente me nullum eſſe adjutorem,et conſiderante
quòd nemo fulciret;ſalvavit eos
brachium meum : furor verò meus perſtitit,
Et conculcavi eos in indignatione mea, 6
& inebriavi eos in ira mea,& ſanguinem
eorum in terram uſq; decurrere feci. Commemoravi 7
miſericordiam Domini, & beneficia
Domini commemorabo,laudem Domini
pro omnibus quæ retribuit nobis
Dominus. Dominus judex optimus domui
Iſraelis diſponit nobis ſecundùm clementiam
ſuam & abundantiam æquitatis
ſuæ. Et dixit, An non ſunt mihi populus 8
& filii haud negaturi ? & factus eſt eis
ſaluti ab omni afflictione eorum. Non 9
advocatus, neque angelus , ſed Dominus
ipſe liberavit eos ; eò quòd amet illos, &
clemens ſit erga eos : ipſeque redemit eos,
ſuſcepit, & exaltavit eos omnibus ſeculi
diebus. Ipſi quidem rebellârunt,& Spiritum 10
ſanctum exaſperârunt ; quare hoſtiliter
ad eos reverſus eſt , & ipſemet
pugnavit adverſùs eos. Sed recordatus 11
eſt dierum antiquorum, ubinam eſſet qui
eduxerat è mari paſtorem ovium ſuarum ;
ubinam eſſet qui poſuerat inter eos
Spiritum ſanctum ; Qui Moſen extraxerat 12
dexterâ ſuâ et brachio gloriæ ſuæ;
aquam diffidit à facie ejus, ut compararet
ſibi nomen perpetuum ; Et duxerat illos 13
in pelago, velut equum in deſerto,neque
fatigati ſunt. Et velut jumenta per 14
ſolitudinem, nec defecerunt viribus ; deſcenderat
Spiritus à Domino, & rexerat
eos : hoc modo duxiſti populum tuum,ut
comparares tibi nomen glorioſum. Revertere 15
O Domine de cœlo,& reſpice ex habitatione
ſancta gloriæ tuæ. Ubi eſt zelus
tuus & potentia tua ? ubi eſt abundantia
miſericordiæ & clementiæ tuæ ? negligis
enim O Domine. Tu quidem pater noſter 16
es:nam Abraham non novit nos, neque
Iſrael cognovit nos; ſed tu O Domine
pater noſter es: ſalva nos,nam nomen tuum
ſuper nos eſt ab initio.

ישעיה : סד סה

noſtrum cor feciſti indurare ,tuis viis de Domine nos *facies* errare Quare

17 לָמָּה תַתְעֵנוּ יְהוָה מִדְּרָכֶיךָ תַּקְשִׁיחַ לִבֵּנוּ

.tuæ hæreditatis tribus ,tuos ſervos propter Convertere ? tuo timore à

מִיִּרְאָתֶךָ שׁוּב לְמַעַן עֲבָדֶיךָ שִׁבְטֵי נַחֲלָתֶךָ׃

conculcaverũt noſtri hoſtes :tuæ ſanctitatis populus poſſederunt breve Ad

18 לַמִּצְעָר יָרְשׁוּ עַם־קָדְשֶׁךָ צָרֵינוּ בּוֹסְסוּ

nec ;*eos in* es dominatus non ,ſeculo à Fuimus .*tuum ſanctuarium*

19 מִקְדָּשֶׁךָ׃ הָיִינוּ מֵעוֹלָם לֹא־מָשַׁלְתָּ בָּם לֹא־

.eos ſuper tuum nomen eſt invocatum

נִקְרָא שִׁמְךָ עֲלֵיהֶם

CAP. LXIV. סד

.defluerent montes *tuis faciebus à* ,deſcenderes ,cœlos diſrumperes Utinam

1 לוּא־קָרַעְתָּ שָׁמַיִם יָרַדְתָּ מִפָּנֶיךָ הָרִים נָזֹלּוּ׃

manifeſtandum ad ,*ignis bulliet aquas,liquefactionum ignem atacere Secundum*

2 כִּקְדֹחַ אֵשׁ הֲמָסִים מַיִם תִּבְעֶה־אֵשׁ לְהוֹדִיעַ

te faciendo In .formidabunt gentes *tuis faciebus* à : tuis hoſtibus tuũ nomen

3 שִׁמְךָ לְצָרֶיךָ מִפָּנֶיךָ גּוֹיִם יִרְגָּזוּ׃ בַּעֲשׂוֹתְךָ

.defluxerunt montes *tuis faciebus* à ,deſcendiſti : *expectabimus* non,terribilia

נוֹרָאוֹת לֹא נְקַוֶּה יָרַדְתָּ מִפָּנֶיךָ הָרִים נָזֹלּוּ׃

vidit non oculus :auribus perceperũt neque ,audierũt non ſeculo à Et

4 וּמֵעוֹלָם לֹא־שָׁמְעוּ לֹא הֶאֱזִינוּ עַיִן לֹא־רָאָתָה

;gaudenti Occurriſti .ipſum expectanti faciat ,te præter Deum

5 אֱלֹהִים זוּלָתְךָ יַעֲשֶׂה לִמְחַכֵּה־לוֹ׃ פָּגַעְתָּ אֶת־שָׂשׂ

,*es iratus tu* Ecce .tui recordabantur tuis viis in : juſtitiam facienti &

וְעֹשֵׂה צֶדֶק בִּדְרָכֶיךָ יִזְכְּרוּךָ הֵן־אַתָּה קָצַפְתָּ

immundus ut fuimus Et .nos ſalvabamur & ,ſeculum eis in *peccavimus &*

6 וַנֶּחֱטָא בָּהֶם עוֹלָם וְנִוָּשֵׁעַ׃ וַנְּהִי כַטָּמֵא

decidimus & :noſtræ juſtitiæ omnes *centonum* veſtimentum ut & ,nos omnes

כֻּלָּנוּ וּכְבֶגֶד עִדִּים כָּל־צִדְקֹתֵינוּ וַנָּבֶל

.nos abſtulerũt ventus tanquã noſtræ iniquitates &,nos omnes foliũ veluti

כֶּעָלֶה כֻּלָּנוּ וַעֲוֹנֵנוּ כָּרוּחַ יִשָּׂאֻנוּ׃

Nam .te *in* apprehendendũ ad ſe *excitans* ,*tuo nomine in invocans* non Et

7 וְאֵין־קוֹרֵא בְשִׁמְךָ מִתְעוֹרֵר לְהַחֲזִיק בָּךְ כִּי־

.noſtrarũ iniquitatũ *manu in* nos diſſolviſti &,nobis à *tuas facies* abſcondiſti

הִסְתַּרְתָּ פָנֶיךָ מִמֶּנּוּ וַתְּמוּגֵנוּ בְּיַד־עֲוֹנֵנוּ׃

,noſter fictor tu & , lutum nos : tu noſter pater ,Domine nunc Et

8 וְעַתָּה יְהוָה אָבִינוּ אָתָּה אֲנַחְנוּ הַחֹמֶר וְאַתָּה יֹצְרֵנוּ

, valde uſque Domine iraſcaris Ne .nos omnes tuæ manus opus &

9 וּמַעֲשֵׂה יָדְךָ כֻּלָּנוּ׃ אַל־תִּקְצֹף יְהוָה עַד־מְאֹד

tuus populus ,quæſo reſpice ,ecce :iniquitatis memineris *perpetuum* in ne &

וְאַל־לָעַד תִּזְכֹּר עָוֹן הֵן הַבֶּט־נָא עַמְּךָ

deſertum Sijon ,deſertum fuerunt tuæ ſanctitatis Civitates .nos omnes

10 כֻלָּנוּ׃ עָרֵי קָדְשְׁךָ הָיוּ מִדְבָּר צִיּוֹן מִדְבָּר

.ſanctificationis Domus .deſolata Jeruſalaim ,fuit

11 הָיָתָה יְרוּשָׁלִַם שְׁמָמָה׃ בֵּית קָדְשֵׁנוּ

combuſtionem in fuit ,noſtri patres te laudaverunt qua ,noſtræ gloriæ &

וְתִפְאַרְתֵּנוּ אֲשֶׁר הִלְלוּךָ אֲבֹתֵינוּ הָיָה לִשְׂרֵפַת

ſuper Nunquid .deſolationem in fuit *noſtra deſiderabilia omnia* & : ignis

12 אֵשׁ וְכָל־מַחֲמַדֵּינוּ הָיָה לְחָרְבָּה׃ הַעַל־

? valde uſque nos affliges & , tacebis ? Domine te continebis his

אֵלֶּה תִתְאַפַּק יְהוָה תֶּחֱשֶׁה וּתְעַנֵּנוּ עַד־מְאֹד׃

CAP. LXV. סה

:me quæſierant non iis ſum inventus ;interrogaverant non iis ſum *Quæſitus*

1 נִדְרַשְׁתִּי לְלוֹא שָׁאָלוּ נִמְצֵאתִי לְלֹא בִקְשֻׁנִי

.*meo nomine in vocantem* non gentem ad ,ego ecce ,ego ecce : dixi

אָמַרְתִּי הִנֵּנִי הִנֵּנִי אֶל־גּוֹי לֹא־קֹרָא בִשְׁמִי׃

Verſio VUL. LAT.

17 Quarè errare nos feciſti, Dñe, de viis tuis : induràſti cor noſtrũ ne timerem⁹ te? convertere propter ſervos tuos, trib⁹ hæ-
18 reditatis tuæ. Quaſi nihilũ poſſederunt populũ ſanctũ tuum: hoſtes noſtri conculcaverunt
19 ſanctificationẽ tuã. Facti ſum⁹ quaſi in principio, cùm nõ dominareris noſtrî, neque invocaretur nomen tuũ ſuper nos.

CAP. LXIV.

1 UTinam dirumperes cœlos, & deſcẽderes : à facie tua mon-
2 tes defluerent. Sicut exuſtio ignis tabeſcerẽt, aquæ arderent igni, ut notũ fieret nomen tuũ inimicis tuis : à facie tua gentes
3 turbarentur. Cùm feceris mirabilia, non ſuſtinebimus : deſcendiſti, & à facie tua montes
4 defluxerunt. A ſeculo non audierunt, neque auribus perceperunt : ocul⁹ non vidit, Deus abſque te, quæ præparâſti ex-
5 pectantib⁹ te. Occurriſti lætanti, & facienti juſtitiam : in viis tuis recordabuntur tuî : ecce tu iratus es, & peccavim⁹ : in ipſis fuimus ſemper, & ſalvabimur.
6 Et facti ſumus ut immundus omnes nos, & quaſi pann⁹ menſtruatæ univerſæ juſtitiæ noſtræ : & cecidimus quaſi folium univerſi, & iniquitates noſtræ quaſi ventus abſtulerunt nos.
7 Non eſt qui invocet nomen tuũ, qui conſurgat, et teneat te : abſcondiſti faciẽ tuam à nobis, & alliſiſti nos in manu iniqui-
8 tatis noſtræ. Et nunc, Dñe, pater noſter es tu, nos verò lutũ : et fictor noſter tu, et opera ma-
9 nuum tuarũ omnes nos. Ne iraſcaris Dñe ſatìs, & ne ultrà memineris iniquitatis noſtræ : ecce reſpice, populus tuus omnes
10 nos. Civitas Sancti tui facta eſt deſerta, Sion deſerta facta eſt,
11 Jeruſalẽ deſolata eſt. Dom⁹ ſanctificationis noſtræ, & gloriæ noſtræ, ubi laudaverũt te patres noſtri, facta eſt in exuſtionẽ ignis, et omnia deſiderabilia no-
12 ſtra verſa ſunt in ruinas. Numquid ſup his continebis te, Domine, tacebis, & affliges nos vehementer?

CAP. LXV.

1 QUæſierũt me qui antè non interrogabant, invenerũt qui non quæſierunt me : dixi ; Ecce ego, ecce ego ad Gentem, quæ non invocabat nomen meum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Τί ἐπλάνησας ἡμᾶς κύριε ἀπὸ τῆς ὁδοῦ σου; ἐσκλήρυνας (τ) τὰς καρδίας ἡμῶν, τοῦ μὴ φοβεῖσθαί σε; ἐπίστρεψον διὰ τοὺς δούλους σου,
18 διὰ τὰς φυλὰς τῆς κληρονομίας σου, Ἵνα μικρὸν κληρονομήσωμεν τοῦ ὄρους τοῦ ἁγίου (υ) σου.
19 Ἐγενόμεθα ὡς τὸ ἀπ᾽ ἀρχῆς ὅτε οὐκ ἦρξας ἡμῶν, οὐδὲ (φ) ἐκλήθη τὸ ὄνομά σου ἐφ᾽ ἡμᾶς.

Quarè ſeduxiſti nos, Domine, de via tua? induràſti corda noſtra, ne timeremus te? Convertere propter ſervos tuos, propter tribus hæreditatis tuæ: ut modicum poſſideamus montis ſancti (υ) tui. Facti ſumus, quaſi à principio, cùm non dominareris noſtri, neque invocatum eſſet nomen tuum ſuper nos.

MS. A. (τ) ἡμῶν τὰς καρδίας, (υ) σου· οἱ ὑπεναντίοι ἡμῶν κατεπάτησαν τὸ ἁγίασμά σου. Ἐγενόμεθα ὡς τὸ ἀπ᾽ ἀρχῆς (φ) ἐπεκλήθη

ΚΕΦ. ξδ'.

1 ἘΑν ἀνοίξῃς τὸν οὐρανόν, τρόμος λήψεται
2 ἀπὸ σοῦ ὄρη, καὶ τακήσονται, Ὡς κηρὸς ἀπὸ προσώπου πυρὸς τήκεται, καὶ κατακαύσει πῦρ τοὺς ὑπεναντίους, καὶ φανερὸν ἔσται τὸ (α) ὄνομά σου ἐν τοῖς ὑπεναντίοις. ἀπὸ προσώπου
3 σου ἔθνη ταραχθήσονται, Ὅταν ποιῇς τὰ ἔν-
4 δοξα· τρόμος λήψεται ἀπὸ σοῦ ὄρη. Ἀπὸ τοῦ αἰῶνος οὐκ ἠκούσαμεν, οὐδὲ οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν εἶδον θεὸν πλήν σου, καὶ τὰ ἔργα σου, ἃ
5 ποιήσεις τοῖς ὑπομένουσιν ἔλεον. Συναντήσεται γὰρ τοῖς ποιοῦσι τὸ δίκαιον, καὶ τῶν ὁδῶν σου μνησθήσονται. ἰδοὺ σὺ ὠργίσθης, καὶ ἡμεῖς ἡμάρ-
6 τομεν· διὰ τοῦτο ἐπλανήθημεν, Καὶ ἐγενήθημεν ὡς ἀκάθαρτοι πάντες ἡμεῖς, ὡς ῥάκος ἀποκαθημένης πᾶσα ἡ δικαιοσύνη ἡμῶν· καὶ (β) ἐξερρύημεν ὡς φύλλα διὰ τὰς ἀνομίας
7 ἡμῶν· οὕτως ἄνεμος οἴσει ἡμᾶς. Καὶ οὐκ ἔστιν ὁ ἐπικαλούμενος τὸ ὄνομά σου, καὶ ὁ μνησθεὶς ἀντιλαβέσθαι σου· ὅτι ἀπέστρεψας τὸ πρόσωπόν σου ἀφ᾽ ἡμῶν, καὶ παρέδωκας ἡμᾶς διὰ
8 τὰς ἁμαρτίας ἡμῶν. Καὶ νῦν κύριε πατὴρ ἡμῶν σύ, ἡμεῖς δὲ πηλός, (γ) ἔργα τῶν χειρῶν
9 σου πάντες. Μὴ ὀργίζου ἡμῖν σφόδρα, καὶ μὴ ἐν καιρῷ μνησθῇς ἁμαρτιῶν ἡμῶν· καὶ νῦν ἐπίβλεψον, ὅτι λαός σου πάντες ἡμεῖς.
10 Πόλις τοῦ ἁγίου σου ἐγενήθη ἔρημος, Σιὼν ὡς ἔρημος ἐγενήθη, Ἱερουσαλὴμ εἰς κατά-
11 ραν. Ὁ οἶκος τὸ ἅγιον ἡμῶν, καὶ ἡ δόξα ἣν (δ) εὐλόγησαν οἱ πατέρες ἡμῶν, ἐγενήθη πυρίκαυστος, καὶ πάντα (ε) ἔνδοξα ἡμῶν
12 συνέπεσε. Καὶ ἐπὶ πᾶσι τούτοις ἀνέσχου κύριε, καὶ ἐσιώπησας, καὶ ἐταπείνωσας ἡμᾶς σφόδρα.

CAP. LXIV.

SI aperueris cœlum; tremor apprehendet ex te montes: & liqueſcent, Sicut cera à facie ignis liqueſcit; & comburet ignis adverſarios: & manifeſtum erit nomen tuum in adverſariis. A facie tua gentes turbabuntur, Cum feceris glorioſa: tremor apprehendet ex te montes. A ſeculo non audivimus: neque oculi noſtri viderunt Deum præter te, & opera tua, quæ facies expectantibus miſericordiam. Occurret enim facientibus juſtitiam: & viarum tuarum recordabuntur. Ecce tu iratus es: & nos peccavimus. Idcircò erravimus, Et facti ſumus quaſi immundi, omnes nos: ut pannus (a) ſedentis, omnis juſtitia noſtra: & defluximus quaſi folia propter iniquitates noſtras: Sic ventus auferet nos. Et non eſt qui invocet nomen tuum, & qui recordatus apprehendat te. Quoniam avertiſti faciem tuam à nobis: & tradidiſti nos propter peccata noſtra. Et nunc, Domine, pater noſter tu: nos autem lutum: opera manuum tuarum omnes: Ne iraſcaris nobis nimis, & ne in tempore memineris peccatorum noſtrorum. Et nunc reſpice; quoniam populus tuus omnes nos: Civitas Sancti tui facta eſt deſerta: Sion quaſi ſolitudo facta eſt: Hieruſalem in maledictionem. Domus ſanctuarium noſtrum, & gloria, cui benedixerunt patres noſtri, facta eſt igni combuſta: & omnia glorioſa noſtra conciderunt. Et ſuper omnibus his ſuſtinuiſti, Domine, & tacuiſti, & humiliaſti nos valdè.

MS. A. (α) ὄνομα κυρίου (β) ἐξερρύημεν (γ) ἔργον (δ) ηὐλόγ (ε) τὰ ἔνδοξα συνέπεσεν.

ΚΕΦ. ξε'.

1 ἘΜφανὴς (α) ἐγενήθην τοῖς ἐμὲ μὴ (β) ἐπερωτῶσιν, εὑρέθην τοῖς ἐμὲ μὴ (γ) ζητοῦσιν. εἶπα, Ἰδού εἰμι τῷ ἔθνει, (δ) οἳ οὐκ ἐκάλεσάν μου τὸ ὄνομα.

CAP. LXV.

MAnifeſtus factus ſum (a) interrogantibus me: inventus ſum ab his, qui me non quærebant. Dixi, Ecce ego genti, qui non invocaverunt nomen meum.

MS. A. (α) ἐγενόμην (β) ζητοῦσιν, (γ) ἐπερωτῶσιν. (δ) οἳ οὐκ ἐκάλεσέ τὸ ὄνομά μου.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 למה תרחקננא יי למטעי מארחן דתקנן קדמך כעממיא דלית להון חולק באולפן
אוריתך לא יתפני לבנא מדחלתך אתיב שכנתך לעמך בדיל עבדך צדיקיא דקימתא
18 להון במימרך למעבד ביניהון שבטי אחסנתך׃ בזעיר דירתו עמא דקודשך בעלי
19 דבבנא דושישו מקדשך׃ הא אנחנא עמך דמן עלמא לא לעממיא יהבת אולפן אוריתך
לא אתקרי שמך עליהון לא להון ארכנתא שמיא אתגליתא מן קדמך טוריא זעו׃

סד

1 כד שלחתא רוגזך כאשתא ביומי אליהו אתמסיא ימא מיא מלחכא אשתא להודעא
2 שמך לסנאי עמך מן קדמך עממיא זעו׃ במעבדך פרישן לא סברנא להון אתגליתא מן
3 קדמך טוריא זעו׃ ומעלמא לא שמעת אודן קל גבורן לא אציתת למלול זיע עין לא חזת
מא דחזו עמך שכינת יקרך יי ארי לית בר מנך דאת עתיד למעבד לעמך צדיקיא דמן
4 עלמא דמסברין לפורקנך׃ מתערעין קדמך עובדי אבהתנא צדיקיא דחדיאו למעבד
רעותך בקשוט ובזכו באורח טובך ורחמך הוו דכירין לדחלתך הא בכל עדן דהוה רגז
מן קדמך עלנא על דחבנא בהון בעובדי אבהתנא צדיקיא דמן עלמא אנחנא מתפרקין׃
5 והוינא כמסאב כולנא וכלבוש מרחק כל זכותנא ונתרנא כמתר טרף כולנא ובחובנא
6 כרוחא אתנטלנא׃ ולית דמצלי בשמך מתרעי לאתקפא בדחלתך ארי סלקתא אפי
7 שכנתך מננא ומסרתנא ביד חובנא׃ ואת יי רחמך עלנא סגיאין כאב על בנין אנחנא
8 טינא ואת בריתנא ועובד גבורתך כולנא׃ לא יהי רגז מן קדמך יי בנא עד לחדא ולא
9 לעלמא תדכר חובין הא גלי קדמך דעמך אנחנא כולנא׃ קרוי קדשך הואה מדברא
10 ציון מדברא הות וירושלם צדיא׃ בית קדשנא ותושבחתנא אתר דפלחו קדמך
11 אבהתנא הוה ליקידת נור וכל בית רגגנא הוה לחרבה׃ העל אלין תתחסן יי ואת יהיב
ארכא לרשיעיא דמשעבדין בנא עד עלמא׃

סה

1 אשתאלית במימרי לדלא שאילו מן קדמי תבעית אולפן אוריתי לדלא תבעו דחלתי׃
אמרית הא אנא משתאיל תדירא כל יומא לעם דלא מצלי בשמי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quare abjeciſti nos Dñe ut aberrem⁹ de viis quæ rectæ ſunt corã te *populi* qui non habent partẽ *in doctrina* Legis *tuæ*? ne avertatur cor à timore tui : converte majeſtatẽ tuã ad populũ tuũ propter ſerv juſtos; quib⁹ juràſti in verbo tuo, te facturũ inter eos trib⁹ hæredita Ad modicũ poſſederunt popul⁹ ſanct⁹ tuus : inimici noſtri conculca ſanctuariũ tuũ. Ecce nos popul⁹ tu⁹ à ſeculo ſum⁹: non enim populis ſti *diſciplinã Legis tuæ*, neq; invocatũ eſt ſup eos nomẽ tuũ. Non enim pter eos inclinaſti cœlos & revelat⁹ es : à facie tua montes contremu

CAP. LXIV.

CUm miſiſti irã tuã ſicut ignẽ *in dieb⁹ Eliæ*, liquefactum eſt mare, lambuit ignis, ut notũ faceres nomen tuũ inimicis populi tui. A facie populi contremuerunt. Cum faceres mirabilia, non expectavim⁹ ea, revela es; à facie tua montes contremuerunt. Et à ſeculo non audivit auris voce fortiũ factorũ, neq; auſcultavit eloquiũ tremoris: neq; ocul⁹ vidit quæ rũt populi tui, majeſtatẽ gloriæ tuæ, Dñe; quia null⁹ eſt abſq; te; quæ factur⁹ es juſtis populi tui qui à ſeculo ſunt, qui expectãt ſalutẽ tuã. *Obverſantur* corã te opera patrũ noſtrorũ juſtorũ, qui lætati ſunt ut facerent voluntatẽ tuã in veritate & juſtitia: in ſemita bonitatis *tuæ* & miſerationũ tuarũ, recor dati ſunt timoris tui in omni tempore quo fuit ira à facie tua ſup nos, eo quod peccavim⁹ in ipſis: & propter opera patrũ noſtrorũ juſtorũ qui à ſecu lo ſunt, nos ſum⁹ ſalvi. Et facti ſum⁹, ut immund⁹, oẽs nos, & ſicut veſtimen tum abjectũ, oẽs juſtitiæ noſtræ: & defluim⁹, ſicut defluit foliũ, oẽs nos, & propter peccata noſtra quaſi vent⁹ ſublati ſum⁹. Non eſt qui oret in nomi ne tuo, volens apprehendere timorẽ tui : quia tuliſti faciẽ majeſtatis tuæ à nobis, & tradidiſti nos in manũ peccatorũ noſtrorũ. Et *tu* Dñe, tam multæ ſunt miſerationes tuæ in nos, quã patris in filios: nos ſum⁹ lutũ, tu verò nos condidiſti: & op⁹ potentiæ tuæ ſum⁹ oẽs nos. Ne iraſcaris in nos Dñe ſupra modũ, neque perpetuò recorderis delictorũ: en tibi apertũ eſt nos oẽs po pulũ tuũ eſſe. Civitates ſanctitatis tuæ factæ ſunt in deſertũ: Sion in deſer tum redacta eſt; & Jeruſalẽ deſolata eſt. Dom⁹ ſanctuarii noſtri & lauda lia noſtra, & loc⁹ in quo ſerviverũt corã te patres noſtri, facta ſunt in incen diũ ignis; & omnis domus noſtra deſiderabilis facta eſt in deſolationem. Nunquid ſuper his confortaberis Domine? Tu enim das terminum impiis qui ſubjiciunt nos uſque *in ſeculum*.

CAP. LXV.

INterrogat⁹ ſum in verbo meo ab iis qui antè non interrogabant à mea: quæſivi doctrinam Legis *meæ* ab iis qui antè non quærebant timorẽ mei. Dixi, Ecce ego interrogat⁹ ſum ſemp tota die à populo, qui non orabat in nomine

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܡܢܐ ܐܛܥܝܬܢ ܡܪܝܐ ܡܢ ܐܘܪܚܟ. ܘܩܫܝܬ ܠܒܢ ܡܢ ܕܢܕܚܠܟ. ܐܬܦܢܐ ܡܛܠ
ܥܒܕܝܟ ܫܒܛܐ ܕܝܪܬܘܬܟ. * ܩܠܝܠ ܝܪܬܘ ܥܡܐ ܕܩܘܕܫܟ. ܒܥܠܕܒܒܝܢ. ܕܫܘ ܡܩܕܫܟ
* ܗܘܝܢ ܡܢ ܥܠܡ. ܟܕ ܠܐ ܫܠܝܛܬ ܒܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܬܩܪܝ ܫܡܟ ܥܠܝܗܘܢ.
* ܩܦܠܐܘܢ * ܫܠܡ * * ܠܘ ܦܬܚܬ ܫܡܝܐ ܘܢܚܬܬ. ܘܛܘܪܐ ܡܢ ܩܕܡܝܟ. ܐܝܟ
ܘܐܬܦܫܪܘ ܐܝܟ ܕܡܬܦܫܪܐ ܫܥܘܬܐ ܡܢ ܩܕܡ ܢܘܪܐ. * ܘܬܐܟܘܠ ܢܘܪܐ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟ. ܘܢ
ܫܡܟ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟ. ܘܢܬܙܝܥܘܢ ܥܡܡܐ ܡܢ ܩܕܡܝܟ. * ܟܕ ܥܒܕܬ ܕܚܝܠܬܐ ܕܠܐ ܣ
ܠܟ. ܢܚܬܬ. ܘܡܢ ܩܕܡܝܟ ܐܬܙܝܥܘ ܛܘܪܐ. * ܡܢ ܥܠܡ ܠܐ ܫܡܥܘ ܘܠܐ ܐܨܬܘܬܘ. ܘܥܝܢ ܠܐ
ܐܠܗܐ ܒܪ ܡܢܟ. ܕܥܒܕ ܐܝܟ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܣܟܝܢ ܠܗ. * ܘܦܓܥܬ ܐܝܟ ܒܚܕܘܬܐ ܠܕܥ
ܕܥܒܕܝܢ ܟܐܢܘܬܐ. ܕܒܐܘܪܚܬܟ ܢܥܗܕܘܢܟ. ܗܐ ܐܢܬ ܪܓܙܬ. ܘܚܛܝܢ ܒܗܝܢ ܠܥܠܡ
ܘܢܦܪܘܩ. * ܘܗܘܝܢ ܐܝܟ ܛܡܐܐ ܟܠܢ. ܘܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܕܣܬܢܝܬܐ. ܟܠܗ ܙܕܝܩܘ
ܢܬܪܢ ܐܝܟ ܛܪܦܐ ܟܠܢ. ܘܐܝܟ ܪܘܚܐ ܫܩܠܘܢ ܚܛܗܝܢ. * ܘܠܝܬ ܕܩܪܐ ܒܫܡܟ. ܘܐ
ܕܡܬܥܗܕ ܠܟ. ܕܢܬܬܟܠ ܥܠܝܟ. ܘܐܗܦܟܬ ܐܦܝܟ ܡܢܢ. ܘܐܫܠܡܬܢ ܒܐܝܕܝ ܚܛܗܝܢ. * ܘܗ
ܡܪܝܐ. ܐܒܘܢ ܐܢܬ. ܚܢܢ ܛܝܢܐ. ܘܐܢܬ ܓܒܠܢ. ܘܥܒܕ ܐܝܕܝܟ ܚܢܢ ܟܠܢ. * ܠܐ
ܡܪܝܐ .. ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. ܘܠܐ ܬܬܕܟܪ ܠܥܠܡ ܚܛܗܝܢ. ܚܙܝ ܕܥܡܟ ܚܢܢ ܟܠܢ. * ܩܘ
ܕܩܘܕܫܟ. ܗܘܝ ܡܕܒܪܐ. ܘܨܗܝܘܢ ܗܘܬ ܡܕܒܪܐ. ܘܐܘܪܫܠܡ ܚܪܒܐ. * ܒܝܬ ܩܘܕ
ܘܬܫܒܘܚܬܢ. ܕܫܒܚܘܟ ܐܒܗܝܢ. ܗܘܐ ܠܝܩܕܢܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܟܠܗ ܪܓܬܢ ܗܘܬ ܠܚܘܪ
* ܥܠ ܗܠܝܢ ܐܬܚܝܨܬ ܡܪܝܐ. ܘܫܬܩܬ ܘܡܟܟܬܢ ܛܒ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܫܠܡ *
* ܐܬܚܙܝܬ ܠܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܫܐܠܘܢܝ. ܘܐܫܬܟܚܬ ܠܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܒܥܘܢܝ. ܐܡܪܬ ܗܐ
ܐܢܐ. ܗܐ ܐܢܐ. ܠܥܡܐ ܕܠܐ ܩܪܐ ܫܡܝ.

Cur abduxiſti nos Domine à via tua, & induràſti cor noſtrum quò minùs timeremus te? 17
convertere propter ſervos tuos, tribû hæreditatis tuæ. Parû poſſidet popul⁹ ſanctitatis tuæ. 18
Oppreſſores noſtri conculcaverunt ſanctuariû tuum. Jam olim eramus antequam domi- 19
nareris in eos: & nomen tuum non eſt invocatum ſuper eos.

CAP. LXIV.

ANnon cœlos aperires ac deſcenderes? à 1
conſpectu tuo contremiſcerent montes, & liquefierent quemadmodû liquefit cera à conſpectu ignis? Combureret ignis inimicos tuos? 2
& notû fieret nomen tuû hoſtib⁹ tuis? & conturbarentur gentes à conſpectu tuo? Quando 3
feciſti terribilia quæ non expectabam⁹ à te, deſcendiſti; & à conſpectu tuo contremuerunt
montes. A ſeculo non audierunt, nec auribus 4
perceperût, nec ocul⁹ vidit Deû præter te, qui
bene facis iis qui te expectant. Et cum delitiis 5
occurris iis qui faciunt juſtitiâ, *quique* in viis
tuis tui ſunt memores: ecce te irato peccavimus in eas in perpetuû. *At* liberemur. Quia 6
facti ſumus ut immundi omnes, & ut panniculus menſtruatæ omnis juſtitia noſtra: defluxim⁹
omnes ut folia, & tu binis inſtar abripuerunt
nos peccata noſtra: Nec eſt qui invocet nomen 7
tuû, aut qui recordetur tibi firmiter confidere;
quoniâ avertiſti faciê tuam à nobis, & tradidiſti nos in manû peccatorû noſtrorum. Jam 8
verò Domine, pater noſter tu es; nos argilla, tu
verò plaſtes noſter, & opus manuû tuarum ſumus omnes. Ne plurimû iraſcaris Dñe in per- 9
petuû, neque memineris in perpetuû peccatorum noſtrorum: vide ꝙ populus tuus ſum⁹ omnes. Civitates ſanctitatis tuæ redactæ ſunt 10
in deſertum, & Sion redacta eſt in ſolitudinê,
& Jeruſalem in ruinâ. Sanctuarium noſtrû et 11
laus noſtra quâ te laudaverunt patres noſtri,
igne conflagravit, & omnes delitiæ noſtræ
verſæ ſunt in ſolitudinê. Hæc paſſus es Do- 12
mine, et tacuiſti, et nos vehementer humiliâſti.

CAP. LXV.

QUæſitus ſum ab iis qui me non require- 1
bant, & inventus ſum ab iis qui me non quærebant: Ecce me, ecce me, dixi populo qui
non invocabat nomen meum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لماذا اضللتنا يا رب عن طريقك * وقسيت قلوبنا الا نخافك * ارجع لاجل عبيدك ولاجل
قبايل ميراثك * لكي نرث قليلا من جبلك المقدس * معاندونا داسوا قدسك * وصرنا كما كنا
منذ البدء * لما لم ترؤس علينا ولا دعي اسمك علينا * * الفصل الرابع والستون *
* ان فتحت السماء تاخذ الجبال منك الرعدة ويذوبون كما يذوب الشمع من وجه النار * وتحرق
النار معانديك * ويصير اسمك ظاهرا لمعانديك * من وجهك يضطربون الامم * اذا صنعت
عجايبات تاخذ الجبال منك الرعدة * منذ الدهر ما سمعنا ولا رات اعيننا الها سواك * واعمالك
حقيقية * وتصنع الرحمة بالصابرين لك * لان الذين يعملون العدل تلتقيهم رحمتك
ويذكرون طرقك * ها انت سخطت ونحن اخطانا * لاجل هذا ضللنا * وصرنا مثل الانجاس نحن
باجمعنا * وكل عدلنا مثل خرقة الطامث * وانتثرنا نحن باجمعنا مثل الورق لاجل اثامنا
هكذا الريح تحملنا * وليس من يدعوا باسمك ولا يذكر معاضدتك لنا * لانك صرفت
وجهك عنا واسلمتنا لاجل خطايانا * والان يا رب انت هو ابونا * ونحن طين وانت جابلنا
ونحن باجمعنا اعمال يديك * لا تزجر علينا يا رب الى الغاية * ولا تذكر خطايانا في وقتها لكن
انظر يا رب لاننا نحن باجمعنا شعبك مدينة قدسك * صارت صهيون قفراء مثل البرية * صارت
ايروسليم لعنة * بيت قدسنا ومجدنا الذي باركه اباونا صار محرقا بالنار * وكل الم
سقط * وفي هذه كلها تعصي يا رب * وسكت واذللتنا جدا *

* الاصحاح الثلاثون * * الفصل الخامس والستون *

* نبوة في انفاء شعبه * واتخاذ الله الشعوب بدلهم واحمارهم لما اخرجوا * ودخلت الشعوب بدلهم
* صرت ظاهرا للذين لم يطلبوني * ووجدت للذين لم يسالوا عني * قلت للامم ها انا ها
القوم الذين لم يدعوا باسمي *

Cur nos aberrare ſineres O Domine à via 17
tua, & obdurares corda noſtra ne timeamus te? revertere propter ſervos tuos, &
propter trib⁹ hæreditatis tuæ; ut vel exi- 18
guâ partem generationis tuæ ſanctæ poſſideas. Adverſarii noſtri conculcaverunt
ſanctuarium tuum; Et redacti ſumus in 19
priſtinum ſtatû: eò quòd non dominaris in nos, neq; invocetur nomen tuum ſuper nos.

CAP. LXIV.

SI cœlum aperires, montes propter te tre- 1
mor occuparet, & liqueſcerent quemadmodum liqueſcit cera à facie ignis. Adu- 2
reret ignis adverſarios tuos, fieretque nomen tuum notum inimicis tuis; à facie tua
conturbarentur populi; Glorioſâ te præ- 3
ſtante, montes propter te tremor occuparet.
Inde à ſeculo non audivimus, neque vi- 4
derunt oculi noſtri Deum præter te, quippe opera tua certiſſima ſunt, & miſeri-
cordiam exerces in expectantes te. Iis 5
enim qui faciunt juſtitiam, occurrit miſericordia tua, & memores ſunt viarum
tuarum: ecce tu iratus es, & nos peccavi-
mus; iccirco aberravimus. Et facti ſu- 6
mus velut immundi nos omnes, & omnis juſtitia noſtra tanquam panniculus men-
ſtrua patientis: & effluximus nos omnes ut folia, propter iniquitates noſtras. Ideo
aſportat nos ventus. Nec eſt qui invocet 7
nomen tuum, neque recordetur auxilii tui erga nos: quoniam avertiſti faciem tuam
à nobis, & tradidiſti nos propter peccata
noſtra: At nunc O Domine, tu pater no- 8
ſter es, nos lutum, & tu fictor noſter, &
nos omnes opera manuum tuarum. Ne 9
ſuccenſeas nobis O Domine in finem uſq;, neq; recorderis peccatorum noſtrorum in tempore eorum: ſed conſidera O Domine
quòd nos omnes popul⁹ tuus ſumus, urbs
ſanctitatis tuæ. Facta eſt Sion ſolitaria 10
ceu deſertum, facta eſt Jeruſalem maledictio. Dom⁹ ſanctitatis & gloriæ noſtræ, 11
cui benedixerunt patres noſtri, ſuccenſa
eſt igni, & omnis ſplendor decidit. Et in 12
his omnibus connives O Domine, ſiluiſti,
& nos quamplurimùm depreſſiſti.

CAP. LXV.

Textus trigeſimus.

Prophetia de expulſione populi ſui, & *quomodo* adoptaverit Deus Gentes pro eis, & elegerit eas illis ejectis, & ſubierint Gentes loco illorum.

FActus ſum conſpicuus iis qui me non 1
quærebant, & inventus ſum ab iis qui de me non interrogabant: dixi populis,
Ecce me O gens quæ non invocabas nomen meum.

Y

ישעיה : סה

eis ambulantes contumacem populū ad die tota meas manꝰ Expandi
פרשתי ידי כל־היום אל־עם סורר ההלכים הדרך 2
super me irritantes Populum .suas cogitationes post , bona non
לא־טוב אחר מחשבתיהם : העם המכעסים אתי על־ 3
.lateres super adolentes & ,hortis in sacrificantes : semper meis faciebus
פני תמיד זבחים בגנות ומקטרים על־הלבנים :
carnem comedentes : pernoctabunt monumentis in & ,sepulchris in Manentes
הישבים בקברים ובנצורים ילינו האכלים בשר 4
Accede : Dicentes .eorum vasis prophanatorum jus & , porci
החזיר ופרק פגלים כליהם : האמרים קרב 5
fumus Isti .te sanctificavi quia , me in appropinques ne , te ad
אליך אל־תגש־בי כי קדשתיך אלה עשן
meis faciebus ad scriptum Ecce .die tota ardens ignis , meo naso in
באפי אש יקדת כל־היום : הנה כתובה לפני 6
.eorum sinu in reddam & , reddam quinimò , tacebo non
לא אחשה כי־אם שלמתי ושלמתי על־חיקם :
dixit , simul .vestrorum patrum iniquitates & ,vestras Iniquitates
עונתיכם ועונת אבותיכם יחדו אמר 7
colles super & ,montes super suffiverunt qui : DOMINUS
יהוה אשר קטרו על־ההרים ועל־הגבעות
.corā sinum in primum eorum opus remetiar & :me affecerunt probris
חרפוני ומדתי פעלתם ראשנה על־חיקם :
,botro in mustum invenitur cùm Sicut : Dominus dixit Sic
כה־אמר יהוה כאשר ימצא התירוש באשכול 8
propter faciam sic : illo in benedictio quoniā, illud corrumpas Ne ,dixit &
ואמר אל־תשחיתהו כי ברכה בו כן אעשה למען
Jahacob de deducam Et .totum corrumpendum non ad , meos servos
עבדי לבלתי השחית הכל : והוצאתי מיעקב 9
eam possidebunt & : meos montes possidentem Jehudah de & ,semen
זרע ומיהודה יורש הרי וירשוה
Saron erit Et .ibi habitabunt mei servi & ,mei electi
בחירי ועבדי ישכנו־שמה : והיה השרון 10
meo populo , bovis accubitum in ,Hachor vallis & , pecoris habitaculum in
לנוה־צאן ועמק עכור לרבץ בקר לעמי
obliviscentes , Dominum derelinquentes vos Et .me requisierunt qui
אשר דרשוני : ואתם עזבי יהוה השכחים 11
Meni implentes & ,mensam Jovi parantes : meæ sanctitatis montis
את־הר קדשי הערכים לגד שלחן והממלאים למני
jugulationi vos omnes & ,gladio vos Numeraboque .libamen
ממסך : ומניתי אתכם לחרב וכלכם לטבח 12
non & ,sum locutus;respōdistis non & , vocavi quòd eo,vos incurvabitis
תכרעו יען קראתי ולא עניתם דברתי ולא
nolui quæ in & , meis oculis in malum fecistis & : audistis
שמעתם ותעשו הרע בעיני ובאשר לא־חפצתי
mei servi Ecce : Deus Dominus dixit sic Propterea .elegistis
בחרתם : לכן כה־אמר אדני יהוה הנה עבדי 13
.sitietis vos & , bibent mei servi Ecce .esurietis vos &,comedent
יאכלו ואתם תרעבו הנה עבדי ישתו ואתם תצמאו
Ecce .afficiemini pudore vos & , lætabuntur mei servi Ecce
הנה עבדי ישמחו ואתם תבשו : הנה 14
,cordis dolore præ clamabitis vos & : cordis bono à [illegible] mei servi
עבדי ירנו מטוב לב ואתם תצעקו מכאב לב
vestrū nomen dimittetis Et .ululabitis spiritus contritione præ &
ומשבר רוח תילילו : והנחתם שמכם 15
suos servos & : Deus Dominus te interficiet &,meis electis juramentum in
לשבועה לבחירי והמיתך אדני יהוה ולעבדיו
.alio nomine vocabit
יקרא שם אחר :

Verſio VULG. LAT.

2 Expandi manus meas totâ die ad populū incredulū, qui graditur in via non bona poſt co- 3 gitationes ſuas. Populꝰ qui ad iracundiam provocat me ante faciē meā ſemp: qui immolant in hortis, & ſacrificant ſu- 4 per lateres: Qui habitant in ſepulchris, & in delubris idolorū dormiunt: qui comedunt carnem ſuillam, & jus profa- 5 nū in vaſis eorum, Qui dicunt; Recede à me, non appropinques mihi, quia immundus es: iſti fumus erunt in furore meo, 6 ignis ardens totâ die. Ecce ſcriptū eſt coram me: non tacebo, ſed reddam & retribuam 7 in ſinum eorum Iniquitates veſtras, & iniquitates patrum veſtrorum ſimul, dicit Dñs, qui ſacrificaverunt ſup montes, & ſuper colles exprobraverunt mihi, & remetiar opus eorum 8 primum in ſinu eorum. Hæc dicit Dñs; Quomodò ſi inveniatur granum in botro, & dicatur; Ne diſſipes illud, quoniam benedictio eſt: ſic faciam propter ſervos meos, ut non 9 diſperdam totum. Et educam de Jacob ſemen, & de Juda poſſidentem montes meos: & hæreditabunt eam electi mei, & ſervi mei habitabunt ibi. 10 Et erunt campeſtria in caulas gregum, & vallis Achor in cubile armentorum, populo meo 11 qui requiſierunt me. Et vos, qui dereliquiſtis Dominū, qui obliti eſtis montem ſanctum meum, qui ponitis Fortunæ menſam, & libatis ſuper eam. 12 Numerabo vos in gladio, et omnes in cæde corruetis: pro eo ꝙ vocavi, et non reſpondiſtis: locutus ſum, et non audiſtis: et faciebatis malum in oculis meis, et quæ nolui ele- 13 giſtis. Propter hoc hæc dicit Dñs Deus; Ecce ſervi mei comedent, et vos eſurietis: ecce ſervi mei bibent, et vos 14 ſitietis; Ecce ſervi mei lætabuntur, et vos confundemini: ecce ſervi mei laudabunt præ exultatione cordis, et vos clamabitis præ dolore cordis, et præ contritione ſpiritûs 15 ululabitis. Et dimittetis nomen veſtrum in juramentum electis meis: et interficiet te Dominus Deus, et ſervos ſuos vocabit nomine alio:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Ἐξεπέτασα τὰς χεῖράς μου ὅλην τὴν ἡμέραν πρὸς λαὸν ἀπειθοῦντα ϗ ἀντιλέγοντα, (ε) τοῖς πορευομένοις ὁδῷ οὐ καλῇ, ἀλλ' ὀπίσω τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν. 3 Ὁ λαὸς ὁ παροξύνων με ἐναντίον ἐμοῦ διαπαντός· αὐτοὶ (ζ) θυσιάζουσιν ἐν τοῖς κήποις, ϗ θυμιῶσιν ἐπὶ ταῖς πλίνθοις τοῖς δαιμονίοις, ἃ οὐκ (η) ἔστιν· 4 Ἐν τοῖς μνήμασι, ϗ ἐν τοῖς σπηλαίοις κοιμῶνται (θ) διὰ ἐνύπνια, (ι) οἱ ἔσθοντες κρέας ὕειον, ϗ ζωμὸν θυσιῶν, μεμολυμένα πάντα τὰ σκεύη αὐτῶν, 5 Οἱ λέγοντες, Πόρρω ἀπ' ἐμοῦ, μὴ ἐγγίσῃς (κ) μοι, ὅτι καθαρός εἰμι. οὗτος καπνὸς τοῦ θυμοῦ μου, πῦρ καίεται ἐν αὐτῷ πάσας τὰς ἡμέρας. 6 Ἰδοὺ γέγραπται ἐνώπιόν μου, οὐ (λ) σιωπήσω 7 ἕως ἂν ἀποδώσω εἰς τὸν κόλπον αὐτῶν. Τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν, ϗ τῶν πατέρων αὐτῶν, λέγει κύριος. οἳ ἐθυμίασαν ἐπὶ τῶν ὀρέων, ϗ ἐπὶ τῶν βουνῶν ὠνείδισάν με, ἀποδώσω τὰ 8 ἔργα αὐτῶν εἰς τὸν κόλπον αὐτῶν. Οὕτως λέγει κύριος, Ὃν τρόπον εὑρεθήσεται ὁ ῥὼξ ἐν τῷ βότρυϊ, ϗ ἐροῦσι, Μὴ λυμήνῃ αὐτὸν, ὅτι εὐλογία (μ) ἐστὶν ἐν αὐτῷ, οὕτως ποιήσω ἕνεκεν τοῦ δουλεύοντός μοι, τούτου ἕνεκεν οὐ 9 μὴ ἀπολέσω πάντας. Καὶ ἐξάξω τὸ ἐξ Ἰακὼβ σπέρμα ϗ (ν) ἐξ Ἰούδα, ϗ κληρονομήσει τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου, ϗ κληρονομήσουσιν οἱ ἐκλεκτοί μου, ϗ οἱ δοῦλοί (ξ) μου, ϗ 10 κατοικήσουσιν ἐκεῖ. Καὶ ἔσονται ἐν τῷ δρυμῷ ἐπαύλεις ποιμνίων, ϗ φάραγξ Ἀχὼρ εἰς ἀνάπαυσιν βουκολίων τῷ λαῷ μου, οἳ ἐζήτησάν με. 11 Ὑμεῖς δὲ οἱ ἐγκαταλιπόντες με, ϗ ἐπιλανθανόμενοι τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου, καὶ ἑτοιμάζοντες τῷ δαιμονίῳ τράπεζαν, καὶ πληροῦντες τῇ τύχῃ κέρασμα, 12 Ἐγὼ παραδώσω ὑμᾶς εἰς μάχαιραν, πάντες ἐν σφαγῇ πεσεῖσθε· ὅτι ἐκάλεσα ὑμᾶς, ϗ οὐχ ὑπηκούσατε· ἐλάλησα, ϗ παρηκούσατε, ϗ ἐποιήσατε τὸ πονηρὸν ἐναντίον ἐμοῦ, ϗ ἃ οὐκ ἐβουλόμην, ἐξελέξασθε. 13 Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ οἱ δουλεύοντές μοι φάγονται, ὑμεῖς δὲ πεινάσετε· ἰδοὺ οἱ δουλεύοντές μοι πίονται, ὑμεῖς δὲ (ο) διψήσετε· 14 Ἰδοὺ οἱ δουλεύοντές μοι εὐφρανθήσονται, ὑμεῖς δὲ αἰσχυνθήσεσθε· ἰδοὺ οἱ δουλεύοντές μοι ἀγαλλιάσονται ἐν εὐφροσύνῃ, ὑμεῖς δὲ κεκράξεσθε διὰ τὸν πόνον τῆς καρδίας ὑμῶν, ϗ ἀπὸ συντριβῆς πνεύματος (π) ὑμῶν ὀλολύξετε. 15 Καταλείψετε γὰρ τὸ ὄνομα ὑμῶν εἰς πλησμονὴν τοῖς ἐκλεκτοῖς μου, ὑμᾶς δὲ ἀνελεῖ κύριος· τοῖς δὲ δουλεύουσί (ρ) μοι κληθήσεται ὄνομα καινὸν,

MS.A. (ε) οἱ οὐκ ἐπορεύθησαν ὁδῷ ἀληθινῇ, ἀλλ' (ζ) θυσιάζου (η) ἔσται· Καὶ ἐν (θ) δι' (ι) ἔσθοντες κρέα ὕεια, (κ) μου, (λ) σιωπήσομαι ἕως ἂν ἀποδῶ (μ) κυρίου ἐστὶν (ν) τὸ ἐξ (ξ) μου, κατοικήσουσιν ψήσεσθαι· (π) ὀλολύξετε. (ρ) αὐτῷ

Expandi manus meas totâ die ad populum incredulum & contradicentem, qui non ambulabant in via bona, ſed poſt peccata ſua. Populus hic qui exacerbat me in conſpectu meo ſemper: ipſi immolant in hortis, & adolent incenſum ſuper lateres dæmoniis, quæ non ſunt: In ſepulchris & in ſpeluncis dormiunt propter ſomnia: qui comedunt carnem ſuillam & jus hoſtiarum: inquinata omnia vaſa eorum, Qui dicunt, Longè à me: ne appropinques mihi, quoniam mundus ſum. Iſte fumus furoris mei: ignis ardet in eo cunctis diebus. Ecce ſcriptum eſt in conſpectu meo: non tacebo donec retribuam in ſinum eorum. Peccata ſua, & patrum ſuorum, dicit Dominus. Qui adoleverunt incenſum ſuper montes, et ſuper colles exprobraverunt mihi: reddam opera eorum in ſinum eorum. Sic dicit Dominus; Quemodo invenietur acinum in botro, & dicent: Ne perdas illud, quia benedictio eſt in eo: ſic faciam propter ſervientem mihi: propter hoc non diſperdam omnes. Et educam, quod de Jacob, ſemen, & de Juda: & hæreditabit montem ſanctum meum: & hæreditabunt electi mei, & ſervi mei habitabunt ibi: Et erunt in [illegible] ovilia gregum, & valles Achor in requiem armentorum populo meo, qui requiſierunt me. Vos autem qui dereliquiſtis me, & obliti eſtis montis ſancti mei, & paratis (b) dæmoni menſam, & impletis Fortunæ potionem; Ego tradam vos in gladium: omnes in mactatione cadetis: Quia vocavi vos, & non obediſtis: loquutus ſum, & contempſiſtis: & fecistis malum in conſpectu meo: & quæ nolebam elegiſtis. Propterea hæc dicit Dominus: Ecce, qui ſerviunt mihi, manducabunt; vos autem eſurietis: ecce, qui ſerviunt mihi, bibent: vos autem ſitietis: ecce, qui ſerviunt mihi, lætabuntur, vos autem confundemini: ecce qui ſerviunt mihi, exultabunt in [illegible] vos autem clamabitis propter dolorem cordis veſtri: & contritione ſpiritûs ululabitis. Relinquetis enim nomen veſtrum in (c) [illegible] electis meis. Vos autem [illegible] Dominus: ſervientibus [illegible] mihi vocabitur nomen [illegible]

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

שלחית נביאי כל יומא לעמא מסרבנא דאזלין באורח דלא תקנא בתר עשתוניהון : 2
עמא דרגזין על מימרי קדמי תדירא דבחין בגנן טעותא ומסקין בסמיא על לבניא : 3
דיתבין בבתיא דבנן מעפר קבריא ועם פגרי בני אנשא דירין דאכלין בשר חזירא ורטב 4
פגול במניהון : דאמרין רחיק להלא לא תקרב בי ארי דכינא מנך אלין רוגזיהון כתננא 5
קדמי פורענותהון בגיהנם דאשתא דלקא בה כל יומא : הא כתיבא קדמי לא אתן להון 6
ארכא בחייא אלהן אשלם להון פורענות חוביהון ואמסור למותא תנינא ית גויתהון :
חוביכון וחובי אבהתכון גלן קדמי כחדא אמר יי דאסיקו בוסמין על טוריא ועל רמתא 7
חסידו קדמי ואתן אגר עובדיהון בקדמיתא על חנהון : כדנן אמר יי כמא דאשתכח 8
נח זכי בדרא דטופנא ואמרת דלא לחבלותיה בדיל לקימא עלמא מניה כן אעביד
בדיל עבדי צדיקיא בדיל דלא לחבלא כלא : ואפיק מיעקב זרעא ומיהודה ירית טורי 9
ויחסנונה בחירי ועבדי צדיקיא ישרון תמן : ויהי שרונא לבית משרי עדרין דען ומישר 10
עכור לבית ארבעה בקרן דתורין לעמי דתבעו דחלתי : ואתון בית ישראל שבקתון 11
פולחנא דיי אתנשיתון ית פולחן טורא דקדשי דמסדרין לטעון פתורין וממזגין
לדחלתהון אגנין : ואמסר יתהון לחרבא וכלכון לקטלא תתמסרון חלף דשלחית נביי 12
ולא תבתון אתנביאו ולא קבלתון ועבדתון דביש קדמי ובדלא צבינא אתרעיתון : בכן 13
כדנן אמר יי אלהים הא עבדי צדיקיא יכלון ואתון רשיעיא תכפנון הא עבדי צדיקיא
ישתון ואתון רשיעיא תצחון הא עבדי צדיקיא יחדון ואתון רשיעיא תבהתון . הא עבדי 14
צדיקיא ישבחון מטוב לב ואתון תציחון מכאב לב ומתבר רוח תילילון : ותשבקון 15
שומכון לקימא לבחירי וימיתכון יי אלהים מותא תנינא ולעבדוהי צדיקיא יקרי שום
אחרנא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Miſi enim prophetas meos oñi die ad populū rebellé, qui ambulat non recta, poſt cogitationes ſuas; Populū qui provocat ad iracun me Verbū meū ſemp. In hortis ſacrificant idolis, & adolent aroma lateres. Qui habitant in domibꝰ quæ ædificantur de pulvere ſepulchror et cum cadaveribꝰ filiorū hominū morantur: qui comedūt carnē ſuillā & jus immundū eſt in vaſis eorū. Qui dicunt: *Abſcede* illuc, non approp ques ad me, quia purior te ſum. Furor iſtorū eſt ſicut fumꝰ ante me, eorū erit in gehenna, ubi ignis ardet oñi die. Ecce ſcriptū eſt corā me: dabo eis terminū in vita, ſed reddā eis ultioné peccatorū ipſorū tradā morti ſecundæ corpora eorū. Peccata veſtra & peccata patrū veſtro rum ſimul manifeſta ſunt corā me, dicit Dñs: qui adoleverunt thymiamata ſuper montes, & ſuper colles probro me affecerunt. Itaq; dabo mercedem factorū ipſorū principio in ſinū ipſorū. Sic dicit Dñs: Sicut invent Noe juſtꝰ in generatione diluvii, & dixi ꝙ non diſperderé illū, ut rem ſeculū ab eo; ſic faciam propter ſervos meos juſtos, ut non diſperdam omnia. Et educā de Jacob ſemen, & de Juda poſſidenté montes meos: hæreditabunt eam electi mei, & ſervi mei juſti habitabunt ibi. Et erit ronitis in domū manſionis gregū oviū, et vallis Achor in domū accub onis armentorū boum, populo meo qui quæſierunt timoré mei. Vos tem domꝰ Iſrael dereliquiſtis cultum Domini; obliti eſtis culturā mont ſancti mei: qui ordinatis idolis menſas, & libatis diis eorū *ſcyphos*. Et dam *eos* gladio, & oēs vos occiſioni trademini, pro eò ꝙ miſi Prophetas *meos*, & non eſtis converſi: prophetaverunt, et non obediſtis, et fecist malum eſt coram me; et quod nolui, elegiſtis. Propterea hæc dicit Do nus Deus: Ecce ſervi mei juſti comedent, et vos impii eſurietis: ecce mei juſti bibent, et vos impii ſitietis: ecce ſervi mei juſti lætabun tur, & vos impii confundemini. Ecce ſervi mei juſti laudabunt hilaritate cordis; et vos clamabitis præ dolore cordis, et præ contritione ſpiritus ululabitis. Et dimittetis nomen veſtrum in juramentum electis meis: et interficiet vos Dominus Deus morte ſecunda, et ſervos ſuos ſtos vocabit nomine alio.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܦܫܛܬ ܐܝܕܝ ܝܘܡܐ ܟܠܗ܂ ܠܘܬ ܥܡܐ ܕܠܐ ܡܬܛܦܝܣ܂ ܕܡܗܠܟܝܢ ܒܬܪ ܬܪܥܝܬܗܘܢ
ܒܐܘܪܚܐ ܕܠܐ ܫܦܝܪܐ܀ * ܥܡܐ ܕܡܪܓܙ ܠܝ ܐܡܝܢܐܝܬ܂ ܕܕܒܚܝܢ ܒܓܢܬܐ܂ ܘܡܣܩܝܢ
ܒܣܡܐ ܥܠ ܐܓܘܪܐ܀ * ܘܝܬܒܝܢ ܒܩܒܪܐ܂ ܘܒܡܥܪܐ ܒܝܬܝܢ܂ ܘܐܟܠܝܢ ܒܣܪܐ ܕܚܙܝܪܐ
ܘܡܬܛܡܐܝܢ ܒܡܝܬܐ ܡܐܢܝܗܘܢ܀ * ܘܐܡܪܝܢ ܦܪܘܩ ܡܢܝ܂ ܠܐ ܬܬܩܪܒ ܠܘܬܝ܂ ܡܛܠ
ܕܩܕܝܫ ܐܢܐ܂ ܗܠܝܢ ܗܘܝ ܬܢܢܐ ܒܪܘܓܙܝ܂ ܘܢܘܪܐ ܝܩܕܐ ܒܟܠܝܘܡ܀ * ܗܐ ܟܬܝܒܐ ܩܕܡܝ
ܠܐ ܐܫܬܘܩ ܥܕܡܐ ܕܐܦܪܘܥ ܐܢܘܢ ܐܥܦܐ ܒܥܘܒܗܘܢ܀ * ܚܛܗܝܗܘܢ ܘܚܛܗܝ
ܕܐܒܗܝܗܘܢ܂ ܢܩܝܡܝܢ ܠܘܩܒܠܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܕܣܡܘ ܒܣܡܐ ܥܠ ܛܘܪܐ܂ ܘܥܠ ܪܡܬܐ
ܘܟܠܝܠ ܐܢܐ ܥܒܕܝܗܘܢ ܒܥܘܒܗܘܢ ܩܕܡܝܬ܀ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܐܝܟ
ܕܡܫܬܟܚ ܥܢܒܐ ܒܩܛܘܦܐ܂ ܘܐܡܪ ܐܢܫ ܠܚܒܪܗ܂ ܠܐ ܬܚܒܠܝܘܗܝ܂ ܡܛܠ
ܕܒܘܪܟܬܐ ܐܝܬ ܒܗ܂ ܗܟܢܐ ܐܥܒܕ ܡܛܠ ܥܒܕܝ܂ ܘܠܐ ܐܚܒܠ ܠܟܠܗܘܢ܀ * ܘܐܦܩ
ܙܪܥܐ ܡܢ ܝܥܩܘܒ܂ ܘܡܢ ܝܗܘܕܐ ܝܪܬܐ ܕܛܘܪܝ܂ ܘܢܐܪܬܘܢܗ ܓܒܝ܂ ܘܥܒܕܝ ܢܥܡܪܘܢ
ܬܡܢ܀ * ܘܢܗܘܐ ܫܪܘܢ ܕܝܪܐ ܠܥܢܐ܂ ܘܥܘܡܩܐ ܕܥܟܘܪ܂ ܠܡܪܒܥܐ ܕܬܘܪܐ ܠܥܡܝ ܕܒܥܘ
ܢܝ܀ * ܘܐܢܬܘܢ ܕܫܒܩܬܘܢ ܠܡܪܝܐ܂ ܘܛܥܝܬܘܢ ܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܗ܂ ܘܡܠܝܬܘܢ
ܦܬܘܪܐ ܠܓܕܐ܂ ܘܡܠܝܬܘܢ ܠܡܢܐ ܡܙܓܐ܀ * ܘܐܫܠܡܟܘܢ ܠܚܪܒܐ܂ ܘܟܠܟܘܢ ܠܩܛܠܐ
ܬܬܪܟܢܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܩܪܝܬ ܠܟܘܢ܂ ܘܠܐ ܥܢܝܬܘܢ܂ ܘܡܠܠܬ ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ܂ ܘܥܒܕܬܘܢ ܒܝܫ
ܩܕܡܝ܂ ܘܕܠܐ ܨܒܝܬ ܓܒܝܬܘܢ܀ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ܂ ܗܐ
ܥܒܕܝ ܢܐܟܠܘܢ܂ ܘܐܢܬܘܢ ܬܟܦܢܘܢ܂ ܗܐ ܥܒܕܝ ܢܫܬܘܢ܂ ܘܐܢܬܘܢ ܬܨܗܘܢ܂ ܗܐ ܥܒܕܝ
ܢܚܕܘܢ܂ ܘܐܢܬܘܢ ܬܒܗܬܘܢ܀ * ܗܐ ܥܒܕܝ ܢܫܒܚܘܢ ܡܢ ܛܝܒܘܬ ܠܒܗܘܢ܂ ܘܐܢܬܘܢ
ܬܓܥܘܢ ܡܢ ܟܐܒܐ ܕܠܒܟܘܢ܂ ܘܡܢ ܬܒܪܐ ܕܪܘܚܟܘܢ܀ * ܘܬܫܒܩܘܢ ܫܡܟܘܢ ܠܡܘܡܬܐ
ܠܓܒܝܝ܂ ܘܢܩܛܠܟ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ܂ ܘܠܥܒܕܘܗܝ ܢܩܪܐ ܫܡܐ ܐܚܪܢܐ܀

* Expanderam manus meas totâ die ſuper populum contumacem, gradientem poſt cogitationes ſuas per viam dedecentem: 2
Populum qui me ſemper ad iram provocant, qui ſacrificant in hortis, & thura ponunt ſuper titulos: 3
Sedent in ſepulchris, pernoctant in ſpeluncis, edunt carnem porcinam, & polluunt cadaveribus indumenta ſua: 4
Tum dicunt; Recede procul, nec acceſſeris ad me, quia ſum ſanctificatus: hæc ſunt fumus in ira mea, & ignis quotidie ardens. 5
Ecce ſcriptum eſt coram me: non deſiſtam donec rependam illis duplum in ſinum eorum: 6
Peccata eorum & peccata parentum eorum, ex adverſo ſtant, ait Dominus; eorum qui thura poſuerant ſuper montes, & ſuper colles probro me affecerunt, opera quamprimum remetiar in ſinum eorum. 7
Sic dicit Dominus, Quemadmodum reperto acino in racemo, dicit quis ſocio ſuo, Ne corrumpas eum, quia benedictio eſt in illo; ita facturus ſum propter ſervos meos, & non corrumpam omnes: 8
Sed eximam ſemen è Jacobo, & è Juda hæredem montis mei, & poſſidebunt eum electi mei, & ſervi mei habitabunt illic. 9
Fietque Saron in caulam ovium, & vallis Achor in cubile boum, populo qui me quæſierunt. 10
Vos autem qui dereliquiſtis Dominum, obliti eſtis montis ſancti ejus, implevistis menſas *in honorem* Fortunæ, & temperâſtis ei lagenas; 11
Gladio percutiam, & vos omnes nece confringam: quia vocavi vos, & non reſpondiſtis; locutus ſum, & non audîſtis; & feciſtis quod malum erat coram me, & elegiſtis quod mihi diſplicet. 12
Propterea ſic dicit Dominus Deus, Ecce ſervi mei comedent, vos autem eſurietis: ecce ſervi mei bibent, vos autem ſitietis: ecce ſervi mei lætabuntur, vos autem lugebitis: 13
Ecce ſervi mei canent præ jucunditatibus animi ſui, vos autem clamabitis præ dolore cordis veſtri & fractione ſpiritûs veſtri: 14
Et relinquetis nomen veſtrum in juramentum electis meis; nam morte afficiet te Dominus Deus, ſervis autem ſuis nomen aliud imponet. 15

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسطت يدي النهار كله الي شعب عاص منافق * الذين لم يمضوا في الطريق الحقيقة لكن
خلف خطاياهم * هذا الشعب الذي اغاظني امامي كل حين . هاولاء يذبحون في البساتين
ويبخرون على اللبن للشياطين التي لم تكن * وفي الاجداث وفي المغاير يرقدون لاجل
الاحلام . ياكلون لحم الخنزير ومرق ذبايحهم . جميع اوانيهم منجسه * القايلون ابعد عني
لا تقربني لاني انا طاهر . هذا دخان غضبي . نار تحرق به جميع الايام * ها مكتوب امامي
لست اسكت الي ان اكافي بخطاياهم في حضنهم * وخطايا اباهم يقول الرب . الذين بخروا
على الجبال وعلى الاكام عيروني . ساكافيهم باعمالهم في حضنهم * هكذا يقول الرب
كما يوجد حبه عنب في العنقود فيقولون لا تفسده لان بركه الرب كاينه فيه . هكذا اصنع
من اجل الذي تعبد لي . من اجل هذا لا اهلك الجميع * واخرج ذريه من يعقوب ومن
يهودا . وترث جبلي المقدس . ويرثه اصفياي . وعبيدي يسكنون هناك * وتصير في الغيضة
ديار الرعايا . ووادي اخور لراحة اذواد البقر . لشعبي الذين طلبوني * وانتم الذين
اهملتموني ونسيتم جبلي المقدس وهيئتم مايدة للاصنام وكملتم مزاجا للجان * انا اسلمكم
للسيف جميعا . بالذبح تسقطون . لاني دعوتكم ولم تسمعوا . تكلمت فعصيتم . وصنعتم
الشر امامي . واخترتم ما لا اريد * لاجل هذا هكذا يقول الرب . ها الذي تعبدوا لي
ياكلون وانتم تجوعون * MS. Oxon. [وعبيدي يشربون وانتم تعطشون]
الذين تعبدوا لي يفرحون وانتم تخزون * ها الذين تعبدوا لي يهللون بسرور قلبا
وانتم تصرخون لاجل وجع قلبكم . ومن انكسار الروح تولولون * لان اسمكم
يترك هزوه لاصفياي . ويبيدكم الرب الاله . ويدعي اسم جديد للذين يتعبدون لي

Tetendi ***manus meas*** *totâ die populo rebelli improbo, non ambulanti in via vera, ſed poſt peccata ſua.* 2
Is eſt populus qui me jugiter in conſpectu meo provocat ad iram: hi ſacrificant in hortis, & ſuper lateres ibus adolent dæmonibus qui non ſunt. 3
Et in ſepulchris atq; cavernis dormiunt ſomniorū causâ: edunt carnem ſuillam & juſculum ſacrificiorum ſuorum: quorum vaſa omnia ſunt immunda: 4
Qui dicunt, Procul abſcede à me, ne me tangas, quia mundus ſum, hic fumus eſt iræ meæ, ignis in eo ardens omnibus diebus. 5
Ecce ſcriptum eſt coram me: non tacebo donec rependam peccata eorum in ſinum ipſorum, 6
Et peccata patrum eorum, dicit Dominus. His qui adoleverunt ſuper montibus, & ſuper collibus contumeliis affecerunt me, propria rependam opera in ſinum eorum. 7
Sic ait Dominus, ut cùm reperitur acinus uvæ in botro, dicunt, Ne corrumpas eum, quia benedictio Domini exiſtit in eo; ita faciam propter eum qui cultui meo ſe dediderit. Idcirco non perdam omnes; 8
Sed eximam progeniem è Jacobo et è Juda, quæ hæreditate poſſidebit montem ſanctum meum: poſſidebunt enim eum electi mei, & ſervi mei habitabunt ibi: 9
Et fient in ſaltu caulæ gregum, & vallis Achor cedet in ſtationem præſepiorum boum, populo meo qui me quæſierint. 10
Vos autem qui dereliquiſtis me, & obliti eſtis montis ſancti mei, inſtruxiſtis menſam idolis, & perfeciſtis (conſecrâſtis) *vinum temperatum dæmonibus;* 11
Ego vos omnes gladio tradam, mactatione corruetis: quia me vocantem non audiviſtis; me loquente, rebellâſtis; coram me malum feciſtis, & elegiſtis quod nolo. 12
Idcirco ſic dicit Dominus, Ecce qui ſe mihi mancipârint, comedent, vos autem eſurietis: [MS. Ox. *& ſervi mei bibent; vos autem ſitietis:*] *ecce qui ſe mihi mancipârint, gaudebunt; vos autem contriſtabimini:* 13
Ecce qui ſe mihi mancipârint, hilari corde jubilabunt; vos autem clamitabitis præ dolore cordis veſtri, & præ contritione ſpiritûs ejulabitis. 14
Nam nomen veſtrum ludibrio relinquetur electis meis, perdetque vos Dominus Deus, nomen verò novum indetur iis qui ſe mihi mancipârint, 15

ישעיה : סו

jurans & : Amen Deo in se benedicet , terra in se *benedicens* Qui
16 אשר המתברך בארץ יתברך באלהי אמן והנשבע
angustiæ sunt traditæ oblivioni quia : Amen Deo in jurabit ,terra in
בארץ ישבע באלהי אמן כי נשכחו הצרות
ego ecce Quia .meis oculis ab se abscondent quia & , priores
17 הראשנות וכי נסתרו מעיני : כי הנני
memorabuntur non & : novam terram & , novos cœlos *creans*
בורא שמים חדשים וארץ חדשה ולא תזכרנה
, gaudete *Quinimo* .cor super ascendent nec , priores
18 הראשנות ולא תעלינה על לב : כי אם שישו
creans ego ecce Quia .*creans* ego quæ *perpetuum* in exultate &
וגילו עדי עד אשר אני בורא כי הנני בורא את
exultabo Et .gaudium ejus populum & ,exultationem Jerusalaim
19 ירושלם גילה ועמה משוש : וגלתי
ultrà ea in audietur non & : meo populo in gaudebo & , Jerusalaim in
בירושלם וששתי בעמי ולא ישמע בה עוד
infans ultrà *inde* erit Non .clamoris vox & , fletus vox
20 קול בכי וקול זעקה : לא יהיה משם עוד עול
puer quoniam : suos dies impleverit non qui ,senex neque,dierum
ימים וזקן אשר לא ימלא את ימיו כי הנער
.maledicetur *annorum centum filius* peccator &,morietur *annorum centum filius*
בן מאה שנה ימות והחוטא בן מאה שנה יקלל :
comedent & , vineas plantabunt & : habitabunt & ,domos ædificabunt Et
21 ובנו בתים וישבו ונטעו כרמים ואכלו
, plantabunt non ;habitabit alius & ,ædificabunt Non .earum fructum
22 פרים : לא יבנו ואחר ישב לא יטעו
, mei populi dies , *ligni* dies secundùm quia : comedet alius &
ואחר יאכל כי כימי העץ ימי עמי
laborabunt Non .mei electi inveterabunt suarum manuum opus &
23 ומעשה ידיהם יבלו בחירי : לא יגעו
benedictorum semen quia : *turbationem ad* generabunt nec , vacuum in
לריק ולא ילדו לבהלה כי זרע ברוכי
antequam ,erit Et .eis cum eorum *genimina &* , *ipsi* DOMINI
24 יהוה המה וצאצאיהם אתם : והיה טרם
.audiam ego & ,loquentibus ipsis adhuc : exaudiam ego & , clament
יקראו ואני אענה עוד הם מדברים ואני אשמע :
;paleam comedet bos sicut leo & ,*unus sicut* pascentur agnus & Lupus
25 זאב וטלה ירעו כאחד ואריה כבקר יאכל תבן
omni in *corrumpent* nec ,*malefacient* non : *ejus* panis pulvis *serpens* &
ונחש עפר לחמו לא ירעו ולא ישחיתו בכל
.DOMINUS dixit ,meæ sanctitatis monte
הר קדשי אמר יהוה :

CAP. LXVI. סו

scabellum terra & ,meū solium Cœli : DOMINUS dixit Sic
1 כה אמר יהוה השמים כסאי והארץ הדם
ille ubi & ,mihi ædificabitis quam domus ista ubi : meorum pedum
רגלי אי זה בית אשר תבנו לי ואי זה
fuerunt & , fecit mea manus hæc omnia Et ? meæ quietis locus
2 מקום מנוחתי : ואת כל אלה ידי עשתה ויהיו
,*afflictum ad respiciam illud ad* Et .DOMINUS dixit , hæc omnia
כל אלה נאם יהוה ואל זה אביט אל עני
bovem *Mactans* .meum verbum super trementē & ,spiritu contritū &
3 ונכה רוח וחרד על דברי : שוחט השור
munus faciens ascendere :canem *decervicans agnum immolans* : virum *percutiens*
מכה איש זובח השה ערף כלב מעלה מנחה
elegerunt hæc etiam : *vanitati benedicens* thus *memorans* : *porci* sanguinē
דם חזיר מזכיר לבנה מברך און גם המה בחרו
.*voluit* eorum anima suis *contaminationibus* in & , suis viis in
בדרכיהם ובשקוציהם נפשם חפצה :

Versio VUL. LAT.

16 In quo qui benedictus est super
terram, benedicetur in Deo Amen: & qui jurat in terra, jurabit in Deo Amen : quia oblivioni traditæ sunt angustiæ
priores, & quia absconditæ sũt
17 ab oculis meis. Ecce enim ego
creo cœlos novos, & terrã novam: & non erunt in memoria
priora, & non ascendent super
18 cor. Sed gaudebitis & exultabitis usque in sempiternum, in
his quæ ego creo : quia ecce ego creo Jerusalem exultationem, & populum ejus gaudiũ.
19 Et exultabo in Jerusalem, &
gaudebo in populo meo: & nõ
audietur in eo ultrà vox fletûs
20 & vox clamoris. Non erit ibi
amplius infans dierũ, & senex
qui non impleat dies suos: quoniam puer centum annorum
morietur, & peccator centum
21 annorum maledictus erit. Et
ædificabunt domos, & habitabunt: & plantabunt vineas, &
22 comedent fructus earum. Non
ædificabunt, & alius habitabit:
non plantabunt, & alius comedet : secundùm enim dies ligni, erunt dies populi mei, &
opera manuum eorum inveterabunt : Electi mei non labo-
23 rabunt frustrà, neq; generabũt
in conturbatione : quia semen
benedictorum Domini est, &
24 nepotes eorum cum eis. Eritque antequàm clament, ego
exaudiam: adhuc illis loquen-
25 tibus, ego audiam. Lupus et agn⁹ pascentur simul, leo et bos
comedent paleas : et serpenti
pulvis panis ejus: non nocebunt, neque occident in omni
monte sancto meo, dicit Dñs.

CAP. LXVI.

1 HÆc dicit Dominus; Cœlũ
sedes mea, terra autem scabellum pedum meorum : quæ est
ista Domus, quam ædificabitis
mihi? & quis est iste locus qui-
2 etis meæ? Omnia hæc manus mea fecit, et facta sunt
universa ista, dicit Dominus: ad
quem autem respiciam, nisi ad
pauperculum, et contritum spiritu, et trementem sermones
3 meos? Qui immolat bovem,
quasi qui interficiat virum: qui
mactat pecus, quasi qui excerebret canem: qui offert oblationem, quasi qui sanguinem
suillum offerat : qui recordatur thuris, quasi qui benedicat idolo. Hæc omnia elegerunt in viis suis, et in abominationibus suis anima eorum
delectata est.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

16 Ὃ εὐλογηθήσεται ἐπὶ τῆς γῆς, εὐλογήσουσι
γὰρ τὸν θεὸν τὸν ἀληθινόν· καὶ οἱ ὀμνύοντες ἐπὶ τῆς γῆς, ὀμοῦνται τὸν θεὸν τὸν ἀληθινόν. ἐπιλήσονται γὰρ τὴν θλῖψιν (σ) τὴν
πρώτην, καὶ οὐκ ἀναβήσεται αὐτῶν ἐπὶ τὴν
17 καρδίαν. Ἔσται γὰρ ὁ οὐρανὸς καινὸς, καὶ ἡ γῆ
καινή, καὶ οὐ μὴ μνησθῶσι τῶν προτέρων, οὐδ'
18 οὐ μὴ ἐπέλθῃ αὐτῶν ἐπὶ τὴν καρδίαν, Ἀλλ'
εὐφροσύνην καὶ ἀγαλλίαμα εὑρήσουσιν ἐν αὐτῇ· (τ) ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ποιῶ ἀγαλλίαμα Ἱερουσαλὴμ, καὶ τὸν λαόν μου εὐφροσύνην.
19 Καὶ ἀγαλλιάσομαι ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ εὐφρανθήσομαι ἐπὶ τῷ λαῷ μου. καὶ οὐκέτι μὴ
ἀκουσθῇ ἐν αὐτῇ φωνὴ κλαυθμοῦ, (υ) καὶ φω-
20 νὴ κραυγῆς, (φ) Οὐδ' οὐ μὴ γένηται ἔτι ἐκεῖ
ἄωρος καὶ πρεσβύτης, ὃς οὐκ ἐμπλήσει τὸν
χρόνον αὐτοῦ· ἔσται γὰρ ὁ νέος ἑκατὸν ἐτῶν,
ὁ δὲ ἀποθνήσκων ἁμαρτωλὸς ἑκατὸν ἐτῶν, καὶ
21 (χ) ἐπικατάρατος ἔσται. Καὶ οἰκοδομήσουσιν οἰκίας, καὶ αὐτοὶ ἐνοικήσουσι· καὶ καταφυτεύσουσιν ἀμπελῶνας, καὶ αὐτοὶ φάγονται
22 τὰ (ψ) γεννήματα αὐτῶν. Οὐ μὴ οἰκοδομήσουσι, καὶ ἄλλοι ἐνοικήσουσι, καὶ οὐ μὴ φυτεύσουσι, καὶ ἄλλοι φάγονται· κατὰ γὰρ τὰς
ἡμέρας τοῦ ξύλου τῆς ζωῆς ἔσονται αἱ ἡμέραι τοῦ λαοῦ μου· (ω) τὰ γὰρ ἔργα τῶν πό-
23 νων αὐτῶν παλαιώσουσιν. (α) Οἱ ἐκλεκτοί μου οὐ κοπιάσουσιν εἰς κενὸν, οὐδὲ (β) τεκνοποιήσουσιν εἰς κατάραν, ὅτι σπέρμα (γ)
εὐλογημένον ὑπὸ θεοῦ ἐστι, καὶ τὰ ἔκγονα αὐ-
24 τῶν μετ' αὐτῶν (δ). Καὶ ἔσται πρὶν ἢ κεκράξαι αὐτοὺς, ἐγὼ (ε) ὑπακούσομαι αὐτῶν·
25 ἔτι λαλούντων αὐτῶν, ἐρῶ, Τί ἐστι; Τότε
λύκοι καὶ ἄρνες βοσκηθήσονται ἅμα, καὶ λέων
ὡς βοῦς φάγεται ἄχυρα, ὄφις δὲ γῆν ὡς ἄρτον. οὐκ ἀδικήσουσιν, (ζ) οὐδὲ λυμανοῦνται
ἐπὶ τῷ ὄρει τῷ ἁγίῳ μου, λέγει κύριος.

MS.A. (σ) αὐτῶν τὴν (τ) ἰδοὺ ἐγὼ ποιῶ Ἱερουσαλὴμ ἀγαλλίαμα, (υ) [illegible] φωνὴ (φ) Καὶ οὐ μὴ γένηται ἐκεῖ (χ) ἐπικατάρατός ἐστιν. (ψ) γενήματα αὐτῶν. Καὶ οὐ μὴ (ω) τὰ ἔργα (α) Οἱ δὲ ἐκλεκτοί (β) τέκνα ποιήσουσιν (γ) [illegible]γημένον ὑπὸ τοῦ θεοῦ (δ) ἔσονται. (ε) ἐπακούσομαι (ζ) οὐδὲ μὴ

Cui benedicetur super terram, benedicent enim Deum (d) verum: & qui jurant super terram, jurabunt Deum verum. Obliviscentur enim tribulationis prioris: & non ascendet super cor eorum. Erit enim cœlum novum, & terra nova: & non recordabuntur priorum: & non venient super cor eorum: Sed gaudium & exultationem invenient in ea: Quia ecce ego facio exultationem Hierusalem, & populum meum lætitiam: Et exultabo super Hierusalem: & lætabor super populo meo. Et non ultra audiatur in ea vox fletûs, & vox clamoris. Neque fiet ibi ultrà immaturus, & senex, qui non impleat tempus suum. Erit enim adolescens, centum annorum: qui autem moritur peccator centenarius, & etiam maledictus erit. Et ædificabunt domos, & ipsi inhabitabunt: & plantabunt vineas, & ipsi comedent genimina earum: Non ædificabunt, & alii inhabitabunt: & non plantabunt, alii vero comedent. Etenim secundum dies ligni vitæ erunt dies populi mei. Opera enim laborum eorum inveterascere facient Electi mei non laborabunt in vacuum: neque filios generabunt in maledictionem: quia semen benedictum à Deo est, & nepotes eorum cum eis. Et erit, antequam clament, ego exaudiã eos: adhuc loquentibus illis, dicam, Quid est? Tunc lupi & agni pascentur simul; & leo, quasi bos, comedet paleas; & serpens terram, quasi panem. Non nocebunt, neque corrumpent in monte sancto meo, dicit Dominus.

ΚΕΦ. ξς'.

1 ΟΥτως λέγει κύριος, Ὁ οὐρανός (α) μου
θρόνος, (β) καὶ ἡ γῆ ὑποπόδιον τῶν ποδῶν
μου. ποῖον οἶκον οἰκοδομήσετέ μοι; (γ) καὶ
2 ποῖος τόπος τῆς καταπαύσεώς μου; Πάντα γὰρ ταῦτα ἐποίησεν ἡ χείρ μου, καὶ ἔστιν ἐμὰ πάντα ταῦτα, λέγει κύριος. καὶ ἐπὶ τίνα
ἐπιβλέψω, ἀλλ' ἢ ἐπὶ τὸν ταπεινὸν καὶ ἡσύ-
3 χιον, καὶ τρέμοντα τοὺς λόγους μου; Ὁ δὲ ἄνομος ὁ θύων μοι μόσχον, ὡς ὁ ἀποκτέννων
κύνα· ὁ δὲ ἀναφέρων σεμίδαλιν, ὡς αἷμα
ὕειον· ὁ διδοὺς λίβανον εἰς μνημόσυνον, ὡς
βλάσφημος. καὶ (δ) αὐτοὶ ἐξελέξαντο τὰς
ὁδοὺς αὐτῶν, καὶ τὰ βδελύγματα αὐτῶν (˜) ἡ
ψυχὴ αὐτῶν ἠθέλησε,

MS.A. (α) μοι (β) ἡ δὲ γῆ (γ) ἢ ποῖος (δ) οὗτοι (˜) ἃ ἡ ψυχὴ

CAP. LXVI.

SIc dicit Dominus; Cœlum thronus meus: & terra scabellum pedum meorum. Quam mihi domum ædificabitis? aut quis locus requietis meæ? Omnia enim ista fecit manus mea: & mea sunt omnia ista, dicit Dominus. Et super quem respiciam, nisi super humilem, & quietum, & trementem sermones meos? Iniquus autem, qui immolat mihi vitulum, quasi qui occidat canem: qui autem offert similam, quasi sanguinem suillum: qui dat thus in memoriale; quasi blasphemus. Et ipsi elegerunt vias suas: & abominationes suas anima eorum voluit:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 דמברך בארעא יברך באלהא קימא ודמקיים בארעא יקיים באלהא קימא ארי יתנשין
17 עקתא קדמיתא וארי מסתרן מן קדמי : ארי הא אנא ברא שמיא חדתין וארעא חדתא
18 ולא ידכרן קדמיתא ולא יתסקין על לב : אלהן יחדון ויבועון בעלם עלמיא דאנא ברי
19 ארי הא אנא ברית ירושלם ביעא ועמה חדי : ואבוע בירושלם ויחדון בה עמי ולא
20 ישתמע בה עוד קל דבכן וקל דמצוחין : ולא יהי מתמן עוד יניק יומין וסבא דלא ישלם
21 ית יומוהי ארי דחיב עולים בר מאה שנין יהי מאת ודחטי בר מאה שנין יתרך : ויבנון
22 בתין ויתבון ויצבון כרמין ויכלון אבהון : לא יבנון ואחרנין יתבון לא יצבון ואחרנין
23 יכלון ארי כיומי אילן חייא יומי עמי ועובד ידיהון יבלון בחירי : לא יהלון לריקן ולא
24 ירבון למותא ארי זרעא דברכיה יי אנון ובני בניהון עמהון : ויהי עד לא יצלון קדמי
25 ואנא אקבל צלותהון עד לא יבעון מן קדמי אעבד בעותהון : דיבא ואמרא ירעון כחדא
ואריא כתורא ייכול תבנא וחויא עפרא מוניה לא יבאשון ולא יחבלון בכל טורא
דקודשי אמר יי :

סו

1 כדנן אמר יי שמיא כורסי יקרי וארעא כבש קדמי אידין ביתא דתבנון קדמי ואידין אתר
2 בית אשריות שכנתי : וית כל אלין גבורתי עבדת והלא הואה כל אלין אמר יי ובדין
3 רעוא קדמי לאסתכלא ביה בדענותן ומכיך רוח ומשתוי לקביל פתגמי : נכיס תורא
כקטיל גבר דבח אמר כנקיף כלב מסק קורבן דם חזירא קורבן מתנתהון מתנת אונס
אף אנון אתרעיאו בארחתהון ובשקוציהון נפשהון אתרעיאת :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Qui benedicetur in terra, benedicetur in Deo vivo, & qui juraverit in terra, jurabit in Deo vivo : quia oblivioni traditæ sunt angustiæ priores & quia occultatæ sunt à facie mea. Quia ecce ego creo cœlos novos & terram novam: & non erunt in memoria priora, neque ascendent super cor. Sed gaudebunt & exultabunt in seculo seculorum quod ego creabo : quia ecce ego creo Jerusalem exultationem, & populum ejus gaudium. Et exultabo in Jerusalem, & gaudebunt in ea populus meus : & non audietur in ea ultrà vox flentium & vox clamantium. Et non erit ibi ampliùs infans dierum, & senex qui non impleat dies suos: quoniam puer qui deliquerit ætate centum annorum , morietur; & qui peccaverit ætate centum annorum , exulabit. Et ædificabunt domos & habitabunt : & plantabunt vineas , & comedent fructus earum. Non ædificabunt, & alii habitabunt; non plantabunt, & alii comedent : quoniam sicut dies arboris vitæ erunt dies populi mei : & opus manuum suarum inveterabunt electi mei. Non laborabunt in vanum, neque nutrient ad mortem ; quoniam semen cui benedixit Dominus, sunt, & filii filiorum suorum cum eis. Et erit antequàm orent coram me, & ego suscipiam orationem eorum ; & antequam deprecentur à facie mea, *faciam* deprecationem eorũ. Lupus & agnus pascentur simul, & leo sicut bos comedet paleam: & serpentis pulvis erit panis ejus : non malè facient , neque nocebunt in omni monte sancto meo, dicit Dominus.

C A P, LXVI.

SIc dicit Dominus : Cœli sunt solium gloriæ meæ, & terra scabellum coram me: quæ est ista domus quam ædificabitis mihi? & quis est iste locus domus mansionis majestatis meæ? Et omnia hæc potentia mea fecit; facta sunt que sunt universa hæc, dicit Dominus: & in isto est voluntas coram me respiciendum ad eum, [*nempe*] mansuetum & contritum spiritu, & *trem*entem propter sermonem meum. Qui immolat bovem quasi qui interficit virum: qui sacrificat agnum, quasi qui excoriat canem: qui offert *oblationem* quasi qui offerat sanguinem suillum. Oblatio munerum eorum est munus rapinæ: ipsi quoque elegerunt vias suas, et abominationes suas anima eorum delegit.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕܡܬܒܪܟ ܒܐܪܥܐ. ܢܬܒܪܟ ܒܐܠܗܐ ܫܪܝܪܐ. ܘܕܝܡܐ ܒܐܪܥܐ ܢܐܡܐ ܒܐܠܗܐ ܫܪܝܪܐ. ܡܛܠ
ܕܢܬܛܥܝܢ ܐܘܠܨܢܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܢܬܛܫܘܢ ܡܢ ܩܕܡܝ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܐܢܐ ܒܪܐ ܐܢܐ ܫܡܝܐ ܚܕܬܐ
ܘܐܪܥܐ ܚܕܬܐ. ܘܠܐ ܢܬܕܟܪܢ ܩܕܡܝܬܐ. ܘܠܐ ܢܣܩܢ ܥܠ ܠܒܐ. * ܐܠܐ ܢܚܕܘܢ ܘܢܪܘܙܘܢ ܠܥܠܡ
ܥܠܡܝܢ ܕܒܪܐ ܐܢܐ. ܡܛܠ ܕܗܐ ܒܪܐ ܐܢܐ ܠܐܘܪܫܠܡ ܪܘܙܐ. ܘܥܡܗ ܚܕܘܬܐ. * ܘܐܚܕܐ ܒܐܘܪܫܠܡ
ܘܐܪܘܙ ܒܥܡܝ. ܘܠܐ ܢܫܬܡܥ ܒܗ ܬܘܒ ܩܠܐ ܕܒܟܝܐ ܘܩܠܐ ܕܓܥܬܐ. * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܬܡܢ
ܛܠܝܐ ܕܝܘܡܬܐ. ܘܣܒܐ ܕܠܐ ܢܡܠܐ ܝܘܡܘܗܝ. ܡܛܠ ܕܛܠܝܐ ܒܪ ܡܐܐ ܫܢܝܢ ܢܡܘܬ. ܘܚܛܝܐ
ܕܒܪ ܡܐܐ ܫܢܝܢ ܢܬܠܛܛ. * ܘܢܒܢܘܢ ܒܬܐ ܘܢܥܡܪܘܢ. ܘܢܢܨܒܘܢ ܟܪܡܐ. ܘܢܐܟܠܘܢ
ܦܐܪܝܗܘܢ. * ܠܐ ܢܒܢܘܢ ܘܐܚܪܢܐ ܢܥܡܪܘܢ. ܘܠܐ ܢܢܨܒܘܢ ܘܐܚܪܢܐ ܢܐܟܠܘܢ. ܡܛܠ ܕܝܘܡܬܗ
ܕܥܡܝ. ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܐܝܠܢܐ. ܘܥܒܕ ܐܝܕܝܗܘܢ ܢܐܟܠܘܢ. * ܓܒܝܝ ܠܐ ܢܠܐܘܢ
ܠܣܪܝܩܘܬܐ. ܘܠܐ ܢܘܠܕܘܢ ܠܠܘܛܬܐ. ܡܛܠ ܕܙܪܥܐ ܐܢܘܢ ܕܒܪܝܟܐ ܕܡܪܝܐ. ܗܢܘܢ ܘܒܢܝܗܘܢ
ܥܡܗܘܢ. * ܘܥܕܠܐ ܢܩܪܘܢ ܐܢܐ ܐܥܢܝܘܢ. ܘܥܕܠܐ ܢܡܠܠܘܢ ܐܢܐ ܐܫܡܥ ܐܢܘܢ. * ܕܐܒܐ ܘܐܡܪܐ
ܐܟܚܕܐ ܢܪܥܘܢ. ܘܐܪܝܐ ܐܝܟ ܬܘܪܐ ܢܐܟܘܠ ܬܒܢܐ. ܘܚܘܝܐ ܥܦܪܐ ܠܚܡܗ. ܘܠܐ
ܢܒܐܫܘܢ ܘܠܐ ܢܚܒܠܘܢ ܒܟܠܗ ܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܫܠܡ * ܣܗ *
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܫܡܝܐ ܟܘܪܣܝܐ. ܘܐܪܥܐ ܟܘܒܫܐ ܕܪܓܠܝ. ܐܝܢܘ ܒܝܬܐ ܕܒܢܝܢ ܐܢܬܘܢ
ܠܝ. ܐܘ ܐܝܢܘ ܐܬܪܐ ܕܢܘܚܬܝ. * ܘܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܐܝܕܝ ܥܒܕܬ. ܘܕܝܠܝ ܐܢܝܢ ܗܠܝܢ
ܟܠܗܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܡܢ ܐܚܘܪ ܘܐܥܡܪ. ܐܠܐ ܒܢܝܚܐ ܘܒܡܟܝܟܐ ܪܘܚܐ ܕܙܐܥ ܡܢ ܡܠܬܝ.
ܕܢܟܣ ܬܘܪܐ. ܐܝܟ ܗܘ ܕܩܛܠ ܓܒܪܐ. ܕܕܒܚ ܐܡܪܐ ܐܝܟ ܗܘ ܕܩܛܠ ܟܠܒܐ. ܕܡܩܪܒ
ܣܡܝܕܐ. ܐܝܟ ܕܡܐ ܕܚܙܝܪܐ. ܕܡܩܪܒ ܠܒܘܢܬܐ ܐܝܟ ܗܘ ܕܡܒܪܟ ܠܦܬܟܪܐ. * ܐܦ ܗܢܘܢ
ܐܬܪܥܝܘ ܒܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܨܒܬ ܢܦܫܗܘܢ ܒܦܬܟܪܝܗܘܢ.

Qui benedicitur in terra, per Deum ſanè benedicetur; & qui jurat in terra, per Deum 16
ſanè jurabit: quoniam oblivioni tradentur afflictiones præteritæ, & abſcondentur à conſpectu meo. Nam ecce ego creaturus ſum cœlos 17
novos & terram novam, neque recordabuntur rerum præteritarū, neque mentē ſubibunt; Sed lætabuntur & exultabunt in ſeculum 18
ſeculorū in his quæ ego creabo. Ecce enim creabo Jeroſolymæ exultationē, & in ea gaudebo: Gaudebo inquam, in Jeruſalem, & 19
exultabo in populo meo; & non audietur ampliùs in ea vox fletûs, aut vox ululatûs. Nec 20
erit ampliùs ibi puer ætate, aut ſenex qui non expleat ætatem ſuam: puer enim, centum nat' annos morietur; & quicunque peccaverit centeſimum annum agens, maledicetur. Ædificabunt 21
domos, & inhabitabunt eas; plantabunt vineas, & comedent fructus earum. Non 22
ædificabunt, & alii inhabitabunt; neque plantabunt, & alii comedent: quoniā dies populi mei erunt ut dies arborū, & opus manuū ſuarum comedent. Electi mei non laborabunt in 23
vanum, neque gignent in maledictionē: ſunt enim ſemen benedictū à Dño, tam ipſi quàm prognati eorū cum ipſis. Antequā clament, 24
reſpondebo eis; & antequam loquantur, audiā illos. Lupus & agnus unà paſcentur, leo ſic- 25
ut bos comedet paleā, et ſerpentis cibus erit pulvis: non nocebunt, neque corrumpent in toto monte ſanctitatis meæ, dicit Dominus.

CAP. LXVI.

Sic dicit Dñs, Cœlum ſoliū meum eſt, terra 1
verò ſcabellū pedum meorū: quænā eſſet domus quam ædificaretis mihi? aut quinā locus quietis meæ? Hæc *quidem* omnia manus mea 2
fecit, et mea ſunt hæc omnia, dicit Dominus. In quem ergò reſpiciam, et *in quo* habitabo, niſi in tranquillo et humili ſpiritu, qui ad verbum meum contremiſcit? Qui bovem 3
jugulat, perinde eſt ac ſi hominem interficeret; qui mactat agnum, perinde ac ſi canem occideret; qui ſimilam offert perinde ac ſi ſanguinem porci; qui thus offert, perinde ac ſi benediceret idolis. Quemadmodum iſti 4
excogitaverunt vias ſuas, & ſuis idolis oblectatus eſt animus eorum;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ٱلَّذِي يُبَارِكُ عَلَى ٱلْأَرْضِ لِأَنَّهُمْ يُبَارِكُونَ ٱللّٰهَ ٱلْحَقِيقِيَّ * وَٱلَّذِينَ يَحْلِفُونَ عَلَى ٱلْأَرْضِ
يَحْلِفُونَ بِٱللّٰهِ ٱلْحَقِيقِيِّ * لِأَنَّهُمْ يَنْسَوْنَ ضِيقَهُمُ ٱلْأُولَى وَلَا تَصْعَدُ عَلَى قَلْبِهِمْ * لِأَنَّ ٱلسَّمَاءَ تَكُونُ
جَدِيدَةً وَٱلْأَرْضُ جَدِيدَةً * وَلَا يَذْكُرُونَ ٱلْأَوَّلِيِّينَ وَلَا يَخْطُرُ عَلَى قَلْبِهِمْ * لَكِنْ يَجِدُونَ فِيهَا
سُرُورًا وَبَهْجَةً * هَا أَنَا أَصْنَعُ أَيْرُوشَلِيمَ بَهْجَةً وَشَعْبِي سُرُورًا * وَأَبْتَهِجُ بِأَيْرُوشَلِيمَ وَأُسَرُّ
بِشَعْبِي * وَلَا يُسْمَعُ فِيهَا صَوْتُ بُكَاءٍ أَصْلًا وَلَا صَوْتُ صُرَاخٍ * وَلَا يَكُونُ أَيْضًا هُنَاكَ غَيْرُ كَامِلِ
ٱلْأَيَّامِ وَلَا شَيْخٌ لَمْ يُكَمِّلْ زَمَانَهُ * لِأَنَّ ٱلشَّابَّ يَكُونُ بْنَ مِايَةِ سَنَةٍ * وَٱلَّذِي يَمُوتُ خَاطِئًا بَعْدَ
مِايَةِ سَنَةٍ فَمَلْعُونٌ هُوَ * وَيَبْنُونَ بُيُوتًا وَهُمْ يَسْكُنُونَ * وَيَغْرِسُونَ كُرُومًا وَهُمْ يَأْكُلُونَ غَلَّاتِهَا
* وَلَا يَبْنُونَ وَآخَرُونَ يَسْكُنُونَ * وَلَا يَغْرِسُونَ وَآخَرُونَ يَأْكُلُونَ * لِأَنَّ كَأَيَّامِ شَجَرَةِ ٱلْحَيَاةِ تَكُونُ
أَيَّامُ شَعْبِي * وَأَعْمَالُ أَيْدِيهِمْ يُخْلِقُونَ * وَأَصْفِيَائِي لَا يَتْعَبُونَ بَاطِلًا وَلَا يَصْنَعُونَ أَوْلَادًا لِلَّعْنَةِ
لِأَنَّهُمْ زَرْعٌ مُبَارَكٌ مِنَ ٱللّٰهِ * وَبَنُو بَنِيهِمْ مَعَهُمْ يَكُونُونَ * وَيَكُونُ قَبْلَ أَنْ يَصْرُخُوا أَنَا أَسْتَجِيبُ
لَهُمْ * وَإِذْ يَتَكَلَّمُونَ أَقُولُ مَا هُوَ * حِينَئِذٍ تَرْعَى ٱلذِّيَابُ وَٱلْخِرَافُ مَعًا * وَٱلْأَسَدُ مِثْلُ ٱلْبَقَرِ
يَأْكُلُ ٱلتِّبْنَ * وَٱلْحَيَّةُ تَأْكُلُ ٱلْأَرْضَ مِثْلَ ٱلْخُبْزِ * وَلَا يَضُرُّونَ وَلَا يُفْسِدُونَ فِي جَبَلِي ٱلْمُقَدَّسِ
يَقُولُ ٱلرَّبُّ *

Quod ſuper terram benedicetur; eò quòd Deum verum benedicant: & qui juraverint ſuper terram, per Deum verum jurabunt; eò quòd ſint oblivioni daturi 16
præcedentem afflictionē ſuam, ita ut nunquam veniat in mentem eorum. Cœlum 17
enim erit novum, & terra nova; & non recordabuntur præteritorum, nec venient illis in mentem; Sed invenient in eis gau- 18
dium & jucunditatem. Ecce ego faciam ut Jeruſalem ſit jucunditas, & populus meus gaudium: Et jucundabor in Jeru- 19
ſalem, & gaudebo in populo meo: nec audietur penitus in ea vox fletûs, neque vox clamoris. Nec erit ampliùs illic ado- 20
leſcens imperfectus ætate, neque ſenex qui non peragat tempus ſuum: nam adoleſcens annos centum explebit: qui autem mortuus fuerit peccator poſt annos centum, erit maledictus. Ædificabunt do- 21
mum, ipſique inhabitabunt; plantabunt vineas & ipſi comedent proventus earum. Nequaquam ædificabunt, & alii inhabi- 22
tabunt; neque plantabunt, & alii comedent: quoniam ut dies arboris vitæ, erunt dies populi mei, & opus manuum ſuarum conſument. Electi mei non laborabunt 23
in caſſum, neque progignent filios in execrationem; quoniam ſunt ſemen benedictum à Deo, & nepotes eorum cum ipſis erunt. Eritque nondum clamantibus 24
ipſis, ut ego reſpondeam; & ſtatim atque loquentur, dicam, Quid eſt? Tunc pa- 25
ſcentur lupi & agni ſimul, & leo boum inſtar comedet paleam, & ſerpens terram quaſi panem comedet, & non lædent neq; corrumpent in monte ſancto meo, dicit Dominus.

* ٱلْفَصْلُ ٱلسَّادِسُ وَٱلسِّتُّونَ *

* هٰكَذَا يَقُولُ ٱلرَّبُّ * ٱلسَّمَاءُ كُرْسِيِّ * وَٱلْأَرْضُ مَوْطِئُ قَدَمِي * فَأَيُّ بَيْتٍ تَبْنُونَ لِي * وَأَيُّ
مَوْضِعٍ رَاحَتِي * لِأَنَّ هَاوُلَاءِ كُلَّهُمْ صَنَعَتْهُمْ يَدِي * وَهَاوُلَاءِ كُلُّهُمْ لِي يَقُولُ ٱلرَّبُّ * فَعَلَى مَنْ
أَنْظُرُ إِلَّا عَلَى ٱلْمُتَوَاضِعِ ٱلْهَادِي وَٱلْمُرْتَعِدِ مِنْ كَلَامِي * وَٱلْأَثِيمُ ٱلَّذِي يَذْبَحُ لِي عِجْلًا
كَمَنْ يَقْتُلُ كَلْبًا * وَٱلَّذِي يُقَدِّمُ سَمِيذًا كَدَمِ خِنْزِيرٍ * وَٱلَّذِي يُعْطِي لُبَانًا لِلتَّذْكَارِ
كَمُجَدِّفٍ * وَهَاوُلَاءِ ٱخْتَارُوا طُرُقَهُمْ وَبِآثَامِهِمُ ٱلَّتِي أَرَادَهَا نَفْسُهُمْ *

CAP. LXVI.

Sic ait Dominus, Cœlum eſt ſedes mea, 1
& terra ſcabellum pedum meorum: quam ergò domum ædificaretis mihi? & quis eſſet locus ſtationis meæ? Nam 2
hos omnes condidit manus mea, & hi omnes mei ſunt, ait Dominus: in quem itaque reſpiciam, niſi in humilem, manſuetum, & ad verba mea trepidantem? Iniquus autem qui mihi vitulum 3
ſacrificat, eſt ut is qui canem interficit: qui ſimilam offert, ac ſi ſanguinem porci: quique thus in memoriam offert, idem ac blaſphemans. Quando 4
quidem iſti elegerunt vias ſuas et abominationes ſuas, quas optavit animus eorum;

ישעיה : סו

adducam *eorum timores* & ,eorum *adinventionibus* in eligam ego Etiam
4 גם־אני אבחר בתעלליהם ומגורתם אביא
: audierunt non &,ſum locutus ; *reſpondens* non & ,vocavi quòd eò , eis
להם יען קראתי ואין עונה דברתי ולא שמעו
.elegerunt volui non *quo in* & , meis oculis in malum fecerúntque
ויעשו הרע בעיני ובאשר לא־חפצתי בחרו :
dixerunt : ejus verbum ad *contremiſcentes* ,DOMINI verbum Audite
5 שמעו דבר־יהוה החרדים אל־דברו אמרו
:meum nomen propter vos *elongantes* , vos habentes odio veſtri fratres
אחיכם שנאיכם מנדיכם למען שמי
.afficiētur pudore ipſi &,veſtra lætitia in cōſpicietur at:Domin⁹ *ſit glorioſus*
יכבד יהוה ונראה בשמחתכם והם יבשו :
reddentis DOMINI vox ,templo de vox ,civitate de ſonitus Vox
6 קול שאון מעיר קול מהיכל קול יהוה משלם
antequam : peperit ,parturiret Antequàm .ſuis inimicis retributionem
7 גמול לאיביו : בטרם תחיל ילדה בטרם
quis , *hoc ſicut* audivit Quis .maſculum *eſt enixa* & , ei dolor veniret
8 יבוא חבל לה והמליטה זכר : מי־שמע כזאת מי
gens parietur num ? una die in terra eſt parta nūquid ? *hæc ſicut* vidit
ראה כאלה היוחל ארץ ביום אחד אם־יולד גוי
.ſuos filios Sijon peperit etiam ,*fuit ægra* quia ? una vice
פעם אחת כי־חלה גם־ילדה ציון את־בניה :
? Dominus dixit ,faciam parere non & , *frangam matricem* ego Num
9 האני אשביר ולא אוליד יאמר יהוה
Lætamini ? tuus Deus dixit , *claudar &* , *faciens generare* ego Num
10 אם־אני המוליד ועצרתי אמר אלהיך : שמחו
gaudete : eam *diligentes* omnes ea in exultate & , Jeruſalaim cum
את־ירושלם וגילו בה כל־אהביה שישו
, ſugatis Ut .eam ſuper *lugentes* univerſi gaudio ea cum
11 אתה משוש כל־המתאבלים עליה : למען תינקו
, mulgeatis ut : ejus conſolationum ubere ab ſaturemini &
ושבעתם משד תנחמיה למען תמצו
dixit ſic Nam .ejus gloriæ *ſplendore à* delectemini &
12 והתענגתם מזיז כבודה : כי־כה אמר
, pacem ,fluvium tanquam eam ad *declinans* ego Ecce : DOMINUS
יהוה הנני נטה־אליה כנהר שלום
: ſugetis & , gentium gloriam , inundantem torrentem tanquam &
וכנחל שוטף כבוד גוים וינקתם
quem vir Sicut .*oblectabimini* genua ſuper & ,portabimini latus ſuper
13 על־צד תנשאו ועל־ברכים תשעשעו : כאיש אשר
Jeruſalaim in & , vos conſolabor ego ſic , *eum conſolabitur* ſua mater
אמו תנחמנו כן אנכי אנחמכם ובירושלם
, veſtrum cor gaudebit & ,videbitis Et .conſolationem accipietis
14 תנחמו : וראיתם ושש לבכם
manus cognoſcetur & : germinabunt herba tanquam veſtra oſſa &
ועצמותיכם כדשא תפרחנה ונודעה יד־
Quia .ſuis inimicis *indignabitur* & ,*ſuis ſervis cum* DOMINI
15 יהוה את־עבדיו וזעם את־איביו : כי־
: ejus quadrigæ turbo tanquā & , veniet igne in DOMINUS ecce
הנה יהוה באש יבוא וכסופה מרכבתיו
.ignis *flammis* in ſuam increpationē & ,ſuū *naſum* ira in reddendū ad
להשיב בחמה אפו וגערתו בלהבי־אש :
omnem ſuo gladio in & , *contendens judicio* Dominus igne in Quia
16 כי באש יהוה נשפט ובחרבו את־כל־
, ſe *Sanctificantes* .*DOMINI vulnerati* erunt multi & : carnem
17 בשר ורבו חללי יהוה : המתקדשים
carnē comedētes : medio in *unam* poſt hortis in ſe *purificantes* &
והמטהרים אל הגנות אחר אחד בתוך אכלי בשר
.Dominus dixit , *finientur* ſimul : murem &,abominationem & , *porci*
החזיר והשקץ והעכבר יחדו יספו נאם־יהוה :

Verſio VULG. LAT.

4 Unde & ego eligam illuſiones eorum : & quæ timebant, adducam eis: quia vocavi, & non erat qui reſponderet : locutus ſum, & non audierunt : fecerúntque malum in oculis meis, 5 & quæ nolui elegerunt. Audite verbum Domini, qui tremitis ad verbū ejus: dixerunt fratres veſtri odientes vos, & abjicientes propter nomen meū ; Glorificetur Dominus, et videbimus in lætitia veſtra: ipſi autem confundentur. 6 Vox populi de civitate, vox de templo, vox Domini reddentis retributionem inimicis ſuis. 7 Antequàm parturiret, peperit : antequàm veniret part⁹ ejus, peperit maſculum. 8 Quis audivit unquam tale? et quis vidit huic ſimile? numquid parturiet terra in die una? aut parietur gens ſimul, quia parturivit et peperit Sion filios ſuos? 9 Numquid ego, qui alios parere facio, ipſe non pariam, dicit Dominus? ſi ego, qui generationē cæteris tribuo, ſterilis ero, ait Dñs Deus tuus? 10 Lætamini cum Jeruſalem, & exultate in ea omnes qui diligitis eam: gaudete cum ea gaudio univerſi, qui lugetis ſuper eam, 11 Ut ſugatis, et repleamini ab ubere conſolationis ejus: ut mulgeatis, et deliciis affluatis ab omnimoda gloria ej⁹. 12 Quia hæc dicit Dominus; Ecce ego declinabo ſuper eam quaſi fluvium pacis, & quaſi torrentem inundantem gloriam Gentiū, quam ſugetis: ad ubera portabimini, et ſuper genua blandientur vobis. 13 Quomodò ſi cui mater blandiatur, ita ego conſolabor vos, et in Jeruſalem conſolabimini. 14 Videbitis, et gaudebit cor veſtrum, et oſſa veſtra quaſi herba germinabunt, et cognoſcetur manus Domini ſervis ejus, & indignabitur inimicis ſuis. 15 Quia ecce Dñs in igne veniet, et quaſi turbo quadrigæ ejus: reddere in indignatione furorem ſuum, & increpationem ſuam in flamma ignis: 16 Quia in igne Dominus dijudicabit, & in gladio ſuo ad omnem carnem, & multiplicabuntur interfecti à Domino, 17 Qui ſanctificabantur, & mundos ſe putabant in hortis poſt januam intrinſecús: qui comedebant carnem ſuillā, & abominationem, & murem : ſimul conſumentur, dicit Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 (ε) Καὶ ἐγὼ ἐκλέξομαι τὰ (ζ) ἐμπαίγματα αὐτῶν, καὶ τὰς ἁμαρτίας (η) ἀνταποδώσω αὐτοῖς· ὅτι ἐκάλεσα αὐτοὺς, καὶ οὐχ ὑπήκουσάν μου· ἐλάλησα καὶ οὐκ ἤκουσαν, καὶ ἐποίησαν τὸ πονηρὸν ἐναντίον (θ) ἐμοῦ, καὶ ἃ οὐκ ἐβουλόμην, 5 ἐξελέξαντο. Ἀκούσατε (ι) ῥήματα κυρίου οἱ τρέμοντες τὸν λόγον αὐτοῦ· εἴπατε ἀδελφοὶ ἡμῶν τοῖς μισοῦσιν (κ) ὑμᾶς καὶ βδελυσσομένοις, ἵνα τὸ ὄνομα κυρίου δοξασθῇ, καὶ ὀφθῇ ἐν τῇ εὐφροσύνῃ αὐτῶν, (λ) καὶ ἐκεῖνοι αἰσχυνθήσονται. 6 Φωνὴ κραυγῆς ἐκ πόλεως, φωνὴ ἐκ ναοῦ, φωνὴ κυρίου ἀνταποδιδόντος ἀνταπόδοσιν τοῖς ἀντικειμένοις. 7 (μ) Πρὶν τὴν ὠδίνουσαν τεκεῖν, (ν) πρὶν ἐλθεῖν τὸν πόνον τῶν ὠδίνων, ἐξέφυγε καὶ ἔτεκεν ἄρσεν. 8 Τίς ἤκουσε τοιοῦτο, καὶ τίς ἑώρακεν οὕτως; εἰ ὤδινε γῆ (ξ) ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ, (ο) ἢ καὶ ἐτέχθη ἔθνος εἰς ἅπαξ, ὅτι ὤδινε καὶ 9 ἔτεκε Σιὼν τὰ παιδία αὐτῆς. Ἐγὼ δὲ ἔδωκα τὴν προσδοκίαν ταύτην, καὶ οὐκ ἐμνήσθης μου, εἶπε κύριος. οὐκ ἰδοὺ ἐγὼ γεννῶσαν καὶ στεῖραν ἐποίησα; εἶπεν ὁ (π) θεός σου. 10 Εὐφράνθητι Ἱερουσαλὴμ, καὶ (ρ) πανηγυρίσατε ἐν αὐτῇ πάντες οἱ ἀγαπῶντες αὐτὴν, χάρητε ἅμα αὐτῇ χαρᾷ πάντες ὅσοι πενθεῖτε ἐπ' αὐτῇ, 11 Ἵνα θηλάσητε, καὶ ἐμπλησθῆτε ἀπὸ μαστοῦ παρακλήσεως αὐτῆς, ἵνα ἐκθηλάσαντες τρυφήσητε ἀπὸ εἰσόδου δό12ξης αὐτῆς. Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐκκλίνω εἰς αὐτοὺς ὡς ποταμὸς εἰρήνης, καὶ ὡς χειμάῤῥους ἐπικλύζων δόξαν ἐθνῶν· τὰ παιδία αὐτῶν ἐπ' ὤμων ἀρθήσονται, καὶ 13 ἐπὶ γονάτων παρακληθήσονται. Ὡς εἴ τινα μήτηρ παρακαλέσει, (σ) οὕτω κἀγὼ παρακαλέσω ὑμᾶς, καὶ ἐν Ἱερουσαλὴμ παρακληθή14σεσθε. Καὶ (τ) ὄψεσθε, καὶ χαρήσεται ἡ καρδία ὑμῶν, καὶ τὰ ὀστᾶ ὑμῶν ὡς βοτάνη ἀνατελεῖ. καὶ γνωσθήσεται ἡ χεὶρ κυρίου τοῖς (υ) φοβουμένοις αὐτὸν, καὶ ἀπειλήσει τοῖς ἀπειθοῦ15σιν. Ἰδοὺ γὰρ κύριος ὡς πῦρ ἥξει, καὶ ὡς καταιγὶς τὰ ἅρματα αὐτοῦ, ἀποδοῦναι ἐν θυμῷ (φ) ἐκδίκησιν αὐτοῦ, καὶ ἀποσκορακισμὸν αὐτοῦ 16 ἐν φλογὶ πυρός. Ἐν γὰρ τῷ πυρὶ κυρίου (χ) κριθήσεται πᾶσα ἡ γῆ, καὶ ἐν τῇ ῥομφαίᾳ αὐτοῦ πᾶσα σάρξ· πολλοὶ τραυματίαι ἔσονται 17 ὑπὸ κυρίου. Οἱ ἁγνιζόμενοι καὶ καθαριζόμενοι εἰς τοὺς κήπους, καὶ ἐν τοῖς προθύροις ἔσθοντες (ψ) κρέας ὕειον, καὶ τὰ βδελύγματα, καὶ τὸν μῦν, ἐπὶ τὸ αὐτὸ (ω) ἀναλωθήσονται, εἶπε κύριος.

Et ego eligam illuſiones eorum, & peccata retribuam eis. Quia vocavi eos; & non obedierunt mihi: loquutus ſum; & non audierunt: & fecerunt malum in conſpectu meo; & quæ nolebam, elegerunt. Audite verba Domini, qui tremitis ſermonem ejus: dicite fratres (b) noſtri iis qui oderunt vos, & abominantur; ut nomen Domini glorificetur, & appareat in lætitia eorum: & illi confundentur. Vox clamoris de civitate, vox de templo, vox Domini retribuentis retributionem adverſariis. Antequàm parturiens pareret, antequàm veniret labor parturiginum; effugit, & peperit maſculum. Quis audivit tale, & quis vidit ſic? Si parturivit terra in die una, aut etiam nata eſt gens tota ſimul: quia parturivit, & peperit Sion parvulos ſuos? Ego autem dedi (a) expectationem hanc: & non recordata es mei, dicit Dominus. Nonne ego parientem & ſterilem feci, dixit Dominus tuus? Lætare Hieruſalem; & conventum facite in ea omnes, qui diligitis eam: gaudete ſimul cū ea gaudio, omnes qui lugetis ſuper eā: ut ſugatis, & impleamini ab ubere conſolationis ejus: ut poſtquàm ſuxeritis, delectemini ab (c) introitu gloriæ ejus: Quia hæc dicit Dominus: Ecce ego declino ad eos quaſi fluvius pacis, & quaſi torrens inundans gloriam gentium. Parvuli eorum in umeris portabuntur & ſuper genua conſolabuntur. Quomodò, ſi quem mater conſoletur; ita & ego conſolabor vos. Et in Hieruſalem conſolabimini: Et videbitis: & gaudebit cor veſtrum: & oſſa veſtra, ſicut herba germinabunt. Et cognoſcetur manus Domini timentibus eum, & minabitur contumacibus. Ecce enim Dominus, ſicut ignis veniet. & ſicut procella, currus ejus, reddere in furore ultionem ſuam, & increpationem ſuā in flamma ignis. In igne enim Domini judicabitur omnis terra; & in gladio illius univerſa caro: multi vulnerati erunt à Domino. (d) Qui purificantur, & mundantur in hortis, & in liminibus, comedentes carnem porcinam, & abominationes, & murem; ſimul conſumentur, dixit Dominus.

MS.A. (ε) Κἀγὼ (ζ) ἐνπαίγματα (η) αὐτῶν (θ) μου, (ι) τὸ ῥῆμα (κ) ἡμᾶς (λ) κἀκεῖνοι (μ) Πρὶν ἢ (ν) πρὶν ἢ (ξ) ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ, (ο) εἰ ἐτέχθη ἔθνος (π) θεός. Εὐφράνθητι (ρ) πανηγυρίσατε πάντες οἱ ἐνοικοῦντες ἐν αὐτῇ, χάρητε χαρὰν πάντες ὅσοι πενθεῖτε ἐπ' αὐτῇ, (σ) ὅτι οὕτως καὶ ἐγὼ (τ) ὄψεσθε, καὶ χαρήσεται ὑμῶν ἡ καρδία, (υ) σεβομένοις (φ) ἐκδίκησιν καὶ ἀποσκορακισμὸν ἐν φλογὶ (χ) καταναλωθήσεται (ψ) κρέα (ω) καταναλωθήσονται,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 אף אנא אצבי בתברהון ומטה דיצפן לא ישתיזבון חלף דשלחית נביי ולא תבו אתנביאו
5 ולא קבילו ועבדו דביש קדמי ובדלא צבינא אתרעיאו : קבילו פתגמא דיי צדיקיא
דמשתון לקביל פתגמי רעותיה אמרין אחיכון סנאיכון מרחקיכון בדיל שמי יסגי יקרא
6 דיי ונחזי בחדותכון ואנון יבהתון : קל אתרגושא מקרתא דירושלם קלא מהיכלא קל
7 מימרא דיי דמשלם גמלא לבעלי דבבוהי : עד לא מיתי עקא לה תתפרק עד לא ייתי
8 לה זיע כחבלין על ילידה יתגלי מלכה : מן שמע כהדא ומן חזא כאלן האפשר
דתתעבד ארעא ביומא חד אם יתברי עמא ומן חדא ארי עתידא דתתנחם ציון ותתמלי
9 מעם שבי גלותהא : אנא אלהא ברית עלמא מבראשית אמר יי אנא ברית כל אנשא
10 אנא בדרית יתהון לביני עממיא אף אנא עתיד לכנשא גלותיך אמר אלהיך : חדו
11 בירושלם ובועו בה כל רחמהא דוצו עמה דיץ כל דהוו מתאבלין עלה : בדיל
12 דתתפנקון ותשבעון מבזת תנחומתהא בדיל דתשתון ותתרוון מחמר יקרה : ארי כדנן
אמר יי הא אנא מיתי לה כשפע נהר פרת שלם וכנחל מגבר יקר עממיא ותתפנקון על
13 גססין תתנטלון ועל רכובין תתרבון : כגבר דאמיה מנחמא ליה כן מימרי ינחם יתכון
14 ובירושלם תתנחמון : ותחזון ויחדי לבכון וגויתכון כדתאין יזהרון ותתגלי גבורתא
15 דיי לאוטבא לעבדוהי צדיקיא וייתי לוט לבעלי דבבוהי : ארי הא יי באשתא מתגלי
16 וכעלעולין רתיכוהי לאתבא בתקוף רוגזיה ומזופיתיה בשלהובית אשתא : ארי באשתא
17 עתיד יי למדן ובחרביה ית כל בסרא וסגיאין קטיליא קדם יי : דמזדמנין ודמדכן לגנן
דטעותא סיעא בתר סיעא אכלי בשר חזירא ושקצא ועכברא כחדא יסופון אמר יי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ego quoque cupiam interitū eorū; & de quo ſolliciti ſunt, non liberabuntur: eò quòd miſi Prophetas meos, & non ſunt converſi : prophetaverunt, & non obedierunt : & fecerunt quod malum eſt coram me, & quod nolui elegerunt. Suſcipite verbum Dñi, juſti, qui *trepidatis* propter ſermones voluntatis ej⁹. Dixerunt fratres veſtri inimici veſtri qui vos averſantur propter nomen meum, Magnificabitur gloria Dñi; & videbim⁹ in lætitia veſtra: at ipſi confundentur. Vox ſonit⁹ de civitate Jeruſalem, vox de templo, vox *verbi* Dñi reddentis retributionē inimicis ſuis. Antequā veniat ei tribulatio, redempta erit: antequā veniat ei tremor, ſicut dolores parturientis, revelabitur rex ej⁹. Quis audivit rē hujuſcemodi? quis vidit talia? nunquid poteſt fieri terra in die uno? nū creatur popul⁹ in momento uno? quia futurū eſt ut conſolationē accipiat Sion, & impleatur populo captivo ſuorū exulū. Ego Dñs creavi ſeculum à principio, dicit Dñs: ego creavi omnes homines, ego diſperſi eos inter populos : ego quoque congregatur⁹ ſum captivitatem tuam, dicit De⁹ tu⁹. Lætamini in Jeruſalem, & exultate in ea omnes qui diligitis eam: gaudete cum ea gaudio omnes qui lugetis ſup eam : Ut delectemini & ſaturemini de præda conſolationū ej⁹; ut bibatis & inebriemini de vino gloriæ ej⁹. Quoniā hæc dicit Dñs: Ecce ego adducā ei quaſi fluentem fluminis Euphratis pacem, & quaſi torrentē inundantē, gloriā populorum: & delectabimini, ad ubera portabimini, & ſup genua nutriemini. Sicut vir cujus mater conſolatur eum, ſic Verbū meū conſolabitur vos. Et in Jeruſalem conſolabimini, Et videbitis, & lætabitur cor veſtrū, & corpora veſtra quaſi herbæ ſplendebunt. Et revelabitur potentia Dñi, ut benefaciat ſervis ſuis juſtis : & inducet maledictionem inimicis ſuis. Quia ecce Dñs in igne revelabitur, & quaſi turbines quadrigæ ejus, ut convertat in iram indignationem ſuam, & increpationē ſuam in flammā ignis : Quoniam in igne judicaturus eſt Dñs, & in gladio ſuo omnem carnem : & multi erunt occiſi coram Dño. Qui ſeſe præparant & luſtrant in hortis idolorum, turba poſt turbam, comedentes carnem ſuillam, & abominationem, & murem, ſimul conſumentur, dicit Dominus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܐܦ ܐܢܐ ܐܨܒܐ ܒܡܒܙܚܢܘܬܗܘܢ. ܘܐܦܪܘܥ ܐܢܘܢ. ܒܥܒܕܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܩܪܝܬ. ܘܠܝܬ ܕܥܢܐ.
ܘܡܠܠܬ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ .. ܘܥܒܕܘ ܕܒܝܫ ܩܕܡܝ .. ܘܓܒܘ ܡܕܡ ܕܠܐ ܨܒܝܬ. * ܫܡܥܘ
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܝܠܝܢ ܕܙܝܥܝܢ .. ܡܢ ܡܠܘܗܝ. ܐܡܪܘ ܠܐܚܝܟܘܢ. ܣܢܐܝܟܘܢ
ܘܡܣܠܝܢܟܘܢ .. ܡܛܠ ܫܡܝ. ܢܫܬܒܚ ܡܪܝܐ ܘܢܚܙܐ ܒܚܕܘܬܟܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܢܒܗܬܘܢ.
* ܩܠܐ ܕܫܓܘܫܝܐ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܩܠܐ ܡܢ ܗܝܟܠܐ. ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܦܪܥ ܦܘܪܥܢܐ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ.
* ܥܕܠܐ ܬܚܒܠ ܕܝܠܕܐ. ܘܥܕܠܐ ܢܐܬܘܢ ܚܒܠܝܗ̇. ܘܬܐܠܕ ܕܟܪܐ. * ܡܢ ܫܡܥ ܐܝܟ ܗܕܐ.
ܘܡܢ ܚܙܐ ܐܝܟ ܗܠܝܢ. ܕܬܚܒܠ ܐܪܥܐ ܒܝܘܡܐ ܚܕ. ܘܢܬܝܠܕ ܥܡܐ ܒܙܒܢܐ ܚܕܐ. ܡܛܠ
ܕܚܒܠܬ ܘܝܠܕܬ ܨܗܝܘܢ ܠܒܢܝܗ̇. * ܐܢܐ ܝܗܒܬ ܣܘܒܪܐ ܗܢܐ .. ܘܠܐ ܡܘܠܕ ܐܢܐ. ܐܡܪ
ܡܪܝܐ .. ܕܠܡܐ .. ܠܐ ܗܘܐ ܐܢܐ ܡܘܠܕ ܐܢܐ. ܘܟܠܐ ܐܢܐ. ܐܡܪ ܐܠܗܟܝ .. * ܚܕܝ ܐܘܪܫܠܡ
ܘܪܘܙܘ ܒܗ̇. ܟܠ ܪܚܡܝܗ̇ .. ܐܬܦܨܚܘ ܥܡܗ̇ ܒܦܨܝܚܘܬܐ. ܟܠ ܕܗܘܝܬܘܢ ܡܬܐܒܠܝܢ ܥܠܝܗ̇.
* ܕܬܐܢܩܘܢ ܘܬܣܒܥܘܢ ܡܢ ܬܕܝܐ ܕܒܘܝܐܗ̇. ܘܬܐܢܩܘܢ ܘܬܬܦܢܩܘܢ ܡܢ ܫܘܒܚܐ ܕܐܝܩܪܗ̇.
* ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܨܠܐ ܐܢܐ ܥܠܝܗ̇ ܫܠܡܐ. ܐܝܟ ܢܗܪܐ. ܘܐܝܟ ܢܚܠܐ ܕܫܒܝܩ.
ܘܐܝܩܪܐ ܕܥܡܡܐ ܬܐܢܩܘܢ. ܘܥܠ ܥܪܣܬܐ ܬܬܛܥܢܘܢ. ܘܥܠ ܒܘܪܟܐ ܬܬܪܒܘܢ. * ܐܝܟ
ܓܒܪܐ ܕܡܒܝܐܐ ܠܗ ܐܡܗ .. ܗܟܢܐ ܐܢܐ ܐܒܝܐܟܘܢ. ܘܒܐܘܪܫܠܡ ܬܬܒܝܐܘܢ. * ܘܬܚܙܘܢ
ܘܢܚܕܐ ܠܒܟܘܢ. ܘܓܪܡܝܟܘܢ ܐܝܟ ܬܕܐܐ ܢܦܪܥܘܢ. ܘܬܬܝܕܥ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܠܥܒܕܘܗܝ.
ܘܢܣܘܦ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܪܝܐ ܒܢܘܪܐ ܐܬܐ. ܘܐܝܟ ܥܠܥܠܐ
ܡܪܟܒܬܗ. ܕܢܗܦܘܟ ܒܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. ܘܟܐܝܘܬܗ ܒܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ. * ܡܛܠ ܕܒܢܘܪܐ
ܕܐܢ ܡܪܝܐ .. ܘܒܚܪܒܗ ܠܟܠܗ ܒܣܪ. ܘܢܣܓܘܢ ܩܛܝܠܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. * ܕܡܬܩܕܫܝܢ
ܘܡܬܕܟܝܢ ܒܓܢܬܐ .. ܚܕ ܒܬܪ ܚܕ ܒܡܨܥܬܐ. ܘܐܟܠܝܢ ܒܣܪܐ ܕܚܙܝܪܐ ܘܫܪܨܐ ܘܥܘܟܒܪܐ.
ܐܟܚܕܐ ܢܣܘܦܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

etiam ego delectabor illuſione eorum, &
rependam eis opera eorum : quia vocavi, &
nemo reſpondit ; locutus ſum, & non audierunt ;
fecerunt quod malum eſt coram me, &
elegerunt quod mihi diſplicet. Audite ſermonem 5
Domini vos qui ad verbum ejus contremiſcitis :
dicite fratribus veſtris, odio habentibus
vos, deſpicientibus vos propter nomen
meum ; Glorificabitur Dominus, & lætabimur
gaudio veſtro ; illi verò pudefient.
Vox perturbationis è civitate, & vox è templo, 6
vox Domini rependentis retributionem
hoſtibus ſuis, Antequam parturiat quæ paritura 7
eſt, & antequam adveniant dolores ejus,
& pariat maſculum. Quis audivit rem 8
hujuſmodi ? aut quis talia vidit ? terram parturire
uno die, & naſci populum unâ horâ ?
parturivit enim peperítque Sion filios ſuos.
Ego dedi ſpem (*facultatem*) iſtam, & non 9
parerem, ait Dominus ? annon ego parere facio
& impedio, dicit Deus tuus ? Lætamini 10
in Jeruſalem, & exultate in ea omnes amantes
eam : jucundè exhilaramini cum ea
omnes qui eratis in luctu propter eam : Ut 11
ſugatis & ſaturemini ab ubere conſolationis
ejus, ſugatis & delicias capiatis à magnificentia
honoris ipſius. Nam ita dicit Dominus, 12
Ecce pacem derivabo ſuper eam tanquam
fluvium, & ut torrentem rapidum :
honorem gentium ſugetis, ſuper grabatis
portabimini, & ſuper genibus nutriemini.
Uti quempiam mater ſua conſolatur, ita ego 13
vos conſolabor, & in Jeruſalem conſolationem
capietis. Videbitis, & gaudebit cor 14
veſtrum, & oſſa veſtra ut gramen vernum
exultabunt, & cognoſcetur manus Domini
erga omnes ſervos ſuos, hoſtes verò ſuos conſumet.
Nam ecce Dominus in igne venturus 15
eſt, & quaſi turbo currus ejus ; ut æſtu furoris
ſui ſubvertat, & increpatio ejus erit flamma
ignis. Igne enim judicaturus eſt Dominus, 16
eoque omnem carnem exploraturus ; & multiplicabuntur
occiſi à Domino. Qui ſanctificant 17
& purificant ſe alter poſt alterum mediis
in hortis, & comedunt carnem porcinam,
inſecta, & mures ; pariter conſumentur, dicit
Dominus ;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

وانا اختار مهازيهم وساكافيهم خطاياهم * لاني دعوتهم فلم يطيعوني * تكلمت فلم يسمعوا
وصنعوا الشر امامي * واختاروا ما لم اشاه * اسمعوا كلمة الرب ايها المرتعدون من كلامه
قولوا يا اخوتنا للذين يبغضوننا والمرذولين * كي يمجد اسم الرب ويظهر في سرورهم
واوليك يخزون * صوت صراخ من المدينة وصوت من الهيكل * صوت الرب المكافي مكافاة 6
للمقاومين * قبل ان تطلق قبل ان ياتيها وجع الطلقات هربت وولدت ذكرا * من سمع 8
بمثل هذا ومن راي هكذا * ان الارض طلقت في يوم واحد وقد ولدت امة في مرة
واحدة * لان صهيون طلقت وولدت بنيها * وانا اعطيت هذا الرجاء ولم تذكريني قال 9
الرب * اليس انا الذي صنعت التي تلد والعاقر قال الرب * افرحي يا اورشليم معا 10
وعيدوا فيها يا جميع محبيها * افرحوا بها فرحا يا جميع الذين حزنتم عليها * لكي 11
ترضعوا وتمتلوا من اثدية تعزيتها * كي اذا رضعتم تتنعمون من مدخل مجدها * لان 12
هكذا يقول الرب * ها انا اميل اليهم مجد الامم كانهار سلامة ومثل واد مندفق * وتحمل
اولادهم على الاكتاف * وعلى الركب يعزون مثل من تعزيه امه * لاني هكذا وانا اعزيهم * 13
ويتعزون باورشليم * وترون ويفرح قلبكم * وعظامكم تزهر مثل النبات * وتعرف يد 14
الرب لعابديه * ويصول على العصاة * لان ها الرب مثل نار ياتي * ومركباته مثل العاصف * 15
ويعطي انتقامه بغضب وتسريك بلهيب نار * لان كل الارض تدان بنار الرب وبحربته كل 16
جسد * كثيرون يصيرون جرحا من قبل الرب * المتقدسون والمتطهرون في البساتين 17
وقدام الابواب وفي السياجات * الذين ياكلون لحم الخنازير والرذالات واليربوع * جميعا
يبيدون قال الرب *

*etiam ego eligam illuſiones eorum, & rependam
eis peccata ſua : quoniam vocanti
mihi non acquieverunt, loquentem non
audierunt ; ſed malum coram me perpetrârunt,
& elegerunt quæ nolo. Audite* 5
*verbum Domini O qui ad ipſius verba
trepidatis : dicite O fratres noſtri, iis qui
nos odio proſequuntur, & deſpectis ; ut
glorificetur nomen Domini, & patefiat in
hilaritate eorum ; illi autem erubeſcant.
Vox clamoris ab urbe, & vox de templo,* 6
*vox Domini reddentis retributionem adverſariis.
Antequam parturiret, ante-* 7
*quam adveniret ei dolor partûs, fugit
peperitque marem. Quis audivit ſimi-* 8
*lem huic rem ? aut quis tale vidit ? terram
ſcilicet uno die parturiiſſe, & gentem
unâ vice peperiſſe ? nam Sion parturivit
ac peperit filios ſuos. Ego dedi* 9
*ſpem iſtam, & non meminiſti mei, ait Dominus :
annon ego ſum qui feci fœcundam
& ſterilem, ait Dominus ? Lætare* 10
*O Jeruſalem ſimul, & feſtum agite in
ea O omnes amantes eam : gaudio perfundimini
in ea O omnes qui de illa dolueratis :
Ut lac ſugatis & expleamini ab* 11
*uberibus conſolationis ejus : ut cùm ſuxeritis,
delicias percipiatis è lumine gloriæ
ipſius. Sic enim ait Dominus, Ecce* 12
*ego reflectam ad eos gloriam gentium
tanquam fluvios pacis & quaſi torrentem
inundantem : filii eorum ſuper humeros
portabuntur, & ſuper genua blandimentis
mulcebuntur ut is cui mater ſua
blanditur. Nam eodem ego etiam modo* 13
*conſolabor eos : & conſolatione perfundemini
in Jeruſalem : Et videbitis, &* 14
*gaudebit cor veſtrum, & oſſa veſtra ceu
gramen florebunt : & nota fiet manus Domini
apud colentes eum, irruet autem in
rebelles. Ecce enim Dominus ut ignis* 15
*venturus eſt, & aurigæ ejus turbini ſimiles
erunt, reddetque vindictam ſuam
cum furore, & exprobrationem ſuam cum
flamma ignis. Nam orbis univerſus* 16
*judicandus eſt igne Domini, ejuſq; lanceâ
quodcunque corpus, multi erunt vulnerati
à Domino. Qui ſanctificant &* 17
*mundant ſe in hortis, & ante januas,
& in ſepibus, qui comedunt carnem porcinam,
abominationes, & mures agreſtes ;
ſimul peribunt, ait Dominus.*

ירמיה : א

congregandum ad veniens ,eorum cogitationes & ,eorum opera ego Et
18 וְאָנֹכִי מַעֲשֵׂיהֶם וּמַחְשְׁבֹתֵיהֶם בָּאָה לְקַבֵּץ
.meam gloriam videbunt & ,venient & :linguas & ,gentes omnes
אֶת־כָּל־הַגּוֹיִם וְהַלְּשֹׁנוֹת וּבָאוּ וְרָאוּ אֶת־כְּבוֹדִי׃
gentes ad *evasos* eis ex mittam & ,signum eis in ponam Et
19 וְשַׂמְתִּי בָהֶם אוֹת וְשִׁלַּחְתִּי מֵהֶם ׀ פְּלֵיטִים אֶל־הַגּוֹיִם
insulas ; Javan & ,Tubal ,arcum trahentes ,Lud & ,Pul ,Tharsis
תַּרְשִׁישׁ פּוּל וְלוּד מֹשְׁכֵי קֶשֶׁת תֻּבַל וְיָוָן הָאִיִּים
viderunt non & ,meum auditum audierunt non quæ ,longinquas
הָרְחֹקִים אֲשֶׁר לֹא־שָׁמְעוּ אֶת־שִׁמְעִי וְלֹא־רָאוּ
.gentibus in meam gloriam annuntiabunt & :meam gloriam
אֶת־כְּבוֹדִי וְהִגִּידוּ אֶת־כְּבוֹדִי בַּגּוֹיִם׃
munus gentibus cunctis de vestros fratres omnes adducent Et
20 וְהֵבִיאוּ אֶת־כָּל־אֲחֵיכֶם מִכָּל־הַגּוֹיִם ׀ מִנְחָה ׀
,mulis in & ,lecticis in & ,*curru* in & ,equis in DOMINO
לַיהוָה בַּסּוּסִים וּבָרֶכֶב וּבַצַּבִּים וּבַפְּרָדִים
dixit ,Jerusalaim *meæ sanctitatis* montem ad *velocibus animalibus in* &
וּבַכִּרְכָּרוֹת עַל הַר קָדְשִׁי יְרוּשָׁלִַם אָמַר
vase in munus Israel filii adducent quēadmodū :Dominus
יְהוָה כַּאֲשֶׁר יָבִיאוּ בְנֵי יִשְׂרָאֵל אֶת־הַמִּנְחָה בִּכְלִי
,sacerdotes in assumam eis ex etiam Et .Domini domum ,mundo
21 טָהוֹר בֵּית יְהוָה׃ וְגַם־מֵהֶם אֶקַּח לַכֹּהֲנִים
cœli sicut Quia .DOMINUS dixit ,Levitas in
22 לַלְוִיִּם אָמַר יְהוָה׃ כִּי כַאֲשֶׁר הַשָּׁמַיִם
stantes ,*faciens* ego quos ,nova terra & ,novi
הַחֲדָשִׁים וְהָאָרֶץ הַחֲדָשָׁה אֲשֶׁר אֲנִי עֹשֶׂה עֹמְדִים
.vestrū nomen &,vestrum semen stabit sic : Dominus dixit ,*meæ facies ad*
לְפָנַי נְאֻם־יְהוָה כֵּן יַעֲמֹד זַרְעֲכֶם וְשִׁמְכֶם׃
sabbathi tempore de & ,ejus *mense in mensis tempore* à erit Et
23 וְהָיָה מִדֵּי־חֹדֶשׁ בְּחָדְשׁוֹ וּמִדֵּי שַׁבָּת
,*meas facies ad se incurvandū ad* caro omnis veniet : ej⁹ sabbathum in
בְּשַׁבַּתּוֹ יָבוֹא כָל־בָּשָׂר לְהִשְׁתַּחֲוֹת לְפָנַי
virorum cadavera *in* videbunt & ,egredientur Et .Dominus dixit
24 אָמַר יְהוָה׃ וְיָצְאוּ וְרָאוּ בְּפִגְרֵי הָאֲנָשִׁים
eorū ignis & ,morietur non eorum vermis quia : me in prævaricantium
הַפֹּשְׁעִים בִּי כִּי תוֹלַעְתָּם לֹא תָמוּת וְאִשָּׁם
.carni omni *nausea* erunt & ;extinguetur non
לֹא תִכְבֶּה וְהָיוּ דֵרָאוֹן לְכָל־בָּשָׂר׃

Versio VULG. LAT.

18 Ego autem opera eorum, & cogitationes eorum, venio ut congregem cum omnibus gentibus & linguis : & venient et 19 videbunt gloriā meam. Et ponam in eis signum, & mittam ex eis qui salvati fuerint, ad Gentes in mare, in Africam, & Lydiam tendentes sagittam; in Italiam & Græciam, ad insulas longè, ad eos qui non audierunt de me, & non viderunt gloriā meam. Et annuntiabunt 20 gloriam meam Gentibus, Et adducent omnes fratres vestros de cunctis Gentibus donum Domino, in equis, & in quadrigis, & in lecticis, & in mulis, & in carrucis, ad montē sanctum meum Jerusalem, dicit Dominus, quomodò si inferant filii Israel munus in vase mundo in 21 domum Domini. Et assumā ex eis in Sacerdotes, et Levitas, 22 dicit Dominus; Quia sicut cœli novi, & terra nova, quæ ego facio stare coram me, dicit Dominus; sic stabit semen ve23strum, & nomen vestrum. Et erit mensis ex mense, & sabbatum ex sabbato : veniet omnis caro ut adoret coram fa24cie mea, dicit Dominus. Et egredientur, & videbunt cadavera virorum, qui prævaricati sunt in me : vermis eorum non morietur, & ignis eorum non extinguetur : & erunt usque ad satietatem visionis omni carni.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

18 Κἀγὼ τὰ ἔργα αὐτῶν καὶ τὸν λογισμὸν αὐτῶν· ἔρχομαι συναγαγεῖν πάντα τὰ ἔθνη καὶ τὰς γλώσσας, καὶ ἥξουσι καὶ ὄψονται τὴν 19 δόξαν μου. Καὶ καταλείψω ἐπ᾽ αὐτῶν (α) σημεῖον, καὶ ἐξαποστελῶ ἐξ αὐτῶν σεσωσμένους εἰς τὰ ἔθνη, εἰς Θαρσὶς, καὶ Φοὺδ, καὶ Λοὺδ, καὶ Μοσὸχ, (β) καὶ εἰς Θοβὲλ, καὶ εἰς τὴν Ἑλλάδα, καὶ εἰς τὰς νήσους τὰς πόρρω, οἳ οὐκ ἀκηκόασί μου τὸ ὄνομα, (γ) οὔτε ἑωράκασί μου τὴν δόξαν. καὶ (δ) ἀναγγελοῦσι 20 τὴν δόξαν μου ἐν τοῖς ἔθνεσι, Καὶ ἄξουσι τοὺς ἀδελφοὺς ὑμῶν ἐκ πάντων τῶν ἐθνῶν δῶρον κυρίῳ, μεθ᾽ ἵππων καὶ ἁρμάτων ἐν λαμπήναις ἡμιόνων μετὰ σκιαδίων εἰς τὴν ἁγίαν πόλιν Ἱερουσαλὴμ, εἶπε κύριος, ὡς ἀνενέγκαισαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ (ε) τὰς θυσίας αὐτῶν ἐμοὶ μετὰ ψαλμῶν εἰς τὸν οἶκον κυρί21ου. Καὶ ἀπ᾽ αὐτῶν λήψομαι (ζ) ἱερεῖς καὶ 22 Λευίτας, εἶπε κύριος. Ὃν τρόπον γὰρ ὁ οὐρανὸς καινὸς καὶ ἡ γῆ καινὴ, ἃ ἐγὼ ποιῶ, μένει (η) ἐνώπιον ἐμοῦ, λέγει κύριος, (θ) οὕτω στήσεται τὸ σπέρμα ὑμῶν, καὶ τὸ ὄνομα 23 ὑμῶν. Καὶ ἔσται (ι) μὴν ἐκ μηνὸς, καὶ σάββατον ἐκ σαββάτου, ἥξει πᾶσα σὰρξ (κ) τοῦ προσκυνῆσαι ἐνώπιον ἐμοῦ ἐν Ἱερουσα24λὴμ, εἶπε κύριος. Καὶ ἐξελεύσονται, καὶ ὄψονται τὰ κῶλα τῶν ἀνθρώπων τῶν παραβεβηκότων ἐν ἐμοί· ὁ γὰρ σκώληξ αὐτῶν οὐ (λ) τελευτήσει, καὶ τὸ πῦρ αὐτῶν οὐ σβεσθήσεται, καὶ ἔσονται εἰς ὅρασιν πάσῃ σαρκί.

Et ego opera eorum, & cogitationem (e) eorum; venio congregare, omnes gentes, & linguas: & venient, & videbunt gloriam meam: Et dimittam super eos signum: & emittam ex eis, qui salvati fuerint ad gentes in Tharsis, & Phud, & Lud, & Mosoch, & in Thobel, & in Græciam, & in insulas, quæ longè, qui non audierunt nomen meum, neque viderunt gloriam meam. Et annuntiabunt gloriam meam in gentibus: Et adducent fratres vestros de omnibus nationibus, donum Domino cum equis, & rhedis, in lampenis mulorum cū (g) umbraculis in sanctā civitatem Hierusalem, dixit Dominus; quasi afferant filii Israel victimas suas mihi cum psalmis in domum Domini. Et ex eis sumam Sacerdotes, & Levitas, dixit Dominus. Sicut enim cælum novum, & terra nova, quæ ego facio, permanent in conspectu meo, dicit Dominus; sic stabit semen vestrum, & nomen vestrum. Et erit mensis ex mense, & sabbatum ex sabbato; veniet omnis caro, ut adoret in conspectu meo in Hierusalem, dixit Dominus. Et egredientur, & videbunt cadavera hominum, qui prævaricati sunt in me. Vermis enim eorum non morietur, & ignis eorum non extinguetur : & erunt in visionem omni carni.

MS. A. (α) σημεῖα, (β) καὶ Θοβὲλ, (γ) οὐδὲ ἑωράκασιν τὴν δόξαν μου. (δ) ἀναγγελοῦσίν μου τὴν δόξαν (ε) ἐμοὶ τὰς θυσίας αὐτῶν μετὰ (ζ) ἑαυτῷ ἱερεῖς (η) ἐνώπιόν μου, (θ) οὕτως (ι) μῆνα (κ) ἐνώπιόν μου προσκυνῆσαι (λ) τελευτᾷ, Ἡσαΐας προφήτης.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 וקדמי גלן עובדיהון ועשתוניהון עתידנא לכנשא ית כל עממיא אומיא ולישניא וייתון
19 ויחזון ית יקרי׃ ואשוי בהון אתא ואשלח מנהון משיזבין לביני עממיא למדינת ימא
פולאי ולודאי דנגדין ומחן בקשתא למדינת תובל ויון נגותא רחיקן דלא שמעו ית שמע
20 גבורתי ולא חזו ית יקרי ויחוון ית יקרי בעממיא׃ וייתון ית כל אחיכון מכל עממיא
קורבנא קדם יי בסוסון וברתיכין וברחלין ובכודנון ובתושבחן על טורא דקודשי
21 לירושלם אמר יי כמא דייתון בני ישראל ית קורבנא במנא דכי לבית מקדשא דיי׃ ואף
22 מנהון אקריב למהוי כהניא וליואי אמר יי׃ ארי כמא דשמיא חדתין וארעא חדתא
23 דאנא עביד קימין קדמי אמר יי כן יתקים זרעכון ושומכון׃ ויהי בזמן ריש ירח בירח
24 ובזמן שבא בשבא ייתון כל בסרא למסגד קדמי אמר יי׃ ויפקון ויחזון בפגרי גבריא
חיביא דמרדו במימרי ארי נשמתהון לא ימותון ואשתהון לא תטפי ויהון מתדנין
רשיעיא בגיהנם עד דימרון עליהון צדיקיא מסת חזינא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et coram me manifesta sunt opera eorum, & cogitationes eorum. Congregaturus sum omnes populos, *gentes* & linguas; & venient & videbunt gloriam meam: Et ponam in eis signum, & mittam ex eis qui salvati fuerint, ad populos, ad provincias maritimas, in Aphros & Lydos, tendentes & percutientes arcu, ad provinciam Italiæ, & Græciam, ad insulas longinquas, quæ non audierunt famam potentiæ meæ, neque viderunt gloriam meam: & nuntiabunt gloriam meam inter populos. Et adducent omnes fratres vestros ex omnibus populis; oblationem coram Domino in equis & in quadrigis, & in lecticis, & in dromedariis, & in laudibus ad montem sanctum meum in Jerusalem, dicit Dominus : sicut adducebant filii Israel oblationem in vase mundo, in domum sanctuarii Domini. Et etiam ex eis applicabo ut sint Sacerdotes & Levitæ, dicit Dominus. Quia sicut cœli novi & terra nova quæ ego facio, permanebunt coram me, dicit Dominus; sic stabilietur semen vestrum & nomen vestrum. Et erit in tempore *initii* mensis in mense, & in tempore Sabathi in Sabatho veniet omnis caro, ut adoret coram me, dicit Dominus. Et egredientur & videbunt cadavera virorum peccatorum, qui prævaricati sunt in verbum meum : quia animæ eorum non morientur, & ignis eorum non extinguetur : & erunt impii judicati in gehenna, donec dicant super eos justi : Satis vidimus.

ספר ירמיהו

CAPUT I. א

Hanathoth in qui sacerdotibus de Chilchijahu filii Irmejahu Verba
1 דִּבְרֵי יִרְמְיָהוּ בֶּן־חִלְקִיָּהוּ מִן־הַכֹּהֲנִים אֲשֶׁר בַּעֲנָתוֹת
,eum ad DOMINI verbum fuit Quod .Binjamin terra in
2 בְּאֶרֶץ בִּנְיָמִן׃ אֲשֶׁר הָיָה דְבַר־יְהוָה אֵלָיו
anno decimo tertio in : Jehudah regis Amon filii Josijahu diebus in
בִּימֵי יֹאשִׁיָּהוּ בֶן־אָמוֹן מֶלֶךְ יְהוּדָה בִּשְׁלֹשׁ־עֶשְׂרֵה שָׁנָה
.eum regnare
לְמָלְכוֹ׃

Versio VUL. LAT.

PROPHETIA JEREMIÆ.

CAP. I.

1 VErba Jeremiæ filii Helciæ, de sacerdotibus qui fuerunt in Anathoth, in terra 2 Benjamin. Quod factum est verbum Domini ad eum in diebus Josiæ filii Amon regis Juda, in tertiodecimo anno regni ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΙΕΡΕΜΙΑΣ. HIEREMIAS.

ΚΕΦ. α΄.

1 ΤΟ ῥῆμα τοῦ θεοῦ ὃ ἐγένετο (α) ἐπὶ Ἱερεμίαν τὸν τοῦ Χελκίου, ἐκ τῶν ἱερέων, ὃς κατῴκει 2 ἐν Ἀναθὼθ ἐν γῇ Βενιαμὶν, (β) Ὡς ἐγενήθη λόγος τοῦ θεοῦ πρὸς αὐτὸν, ἐν ταῖς ἡμέραις Ἰωσία υἱοῦ Ἀμὼς βασιλέως Ἰούδα, ἔτους τρισκαιδεκάτου ἐν τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ.

CAP. I.

VERBUM Dei, quod factum est ad Hieremiam filium Chelciæ, de sacerdotibus, qui habitabat in Anathoth in terra Benjamin : Sicut factum est verbum Dei ad illum in diebus Josiæ filii Amos regis Juda, anno tertiodecimo in regno ejus.

MS. A. Ἱερεμίας. (α) ἐπ᾽ Ἰηρεμίαν (β) Ὃς ἐγενήθη λόγος

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 פתגמי נבואת ירמיהו בר חלקיה מן רישי מטרת כהניא מן אמרכליא דהוו בירושלם
2 גברא דקביל אחסנתיה בענתות בארע שבטא בנימן׃ דהוה פתגם נבואה מן קדם יי
עמיה ביומי יאשיה בר אמון מלך שבטא דבית יהודה בתלת עשרי שנין למלכיה׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAPUT I.

VErba prophetiæ Jeremiæ filii Helchiæ de principibus custodiæ Sacerdotum, ex præpositis qui erant in Jerusalem : vir qui suscepit hæreditatem suam in Anathoth in terra tribus Benjamin. Quod factum est verbum prophetiæ à facie Domini ad eum in diebus Josiæ filii Amon regis tribus domus Juda, in tertiodecimo anno regni ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܒܥܒܕܝܗܘܢ ܘܒܡܚܫܒܬܗܘܢ. ܟܕ ܐܬܐ ܐܢܐ ܠܡܟܢܫܘ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ
ܘܠܫܢܐ. ܘܢܐܬܘܢ ܘܢܚܙܘܢ ܐܝܩܪܝ. * ܘܐܣܝܡ ܒܗܘܢ ܐܬܐ. ܘܐܫܕܪ ܡܢܗܘܢ ܦܠܝܛܐ
ܠܥܡܡܐ. ܠܬܪܫܝܫ ܘܠܦܘܠ ܘܠܠܘܕ ܕܢܓܕܝܢ ܩܫܬܐ. ܘܠܬܘܒܝܠ ܘܠܝܘܢ. ܘܠܓܙܪܬܐ
ܪܚܝܩܬܐ. ܕܠܐ ܫܡܥܘ ܫܡܥܝ. ܘܠܐ ܚܙܘ ܐܝܩܪܝ. ܘܢܚܘܘܢ ܐܝܩܪܝ ܒܥܡܡܐ. * ܘܢܝܬܘܢ ܠܟܠܗܘܢ
ܐܚܝܟܘܢ. ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܩܘܪܒܢܐ ܠܡܪܝܐ. ܒܪܟܫܐ ܘܒܡܪܟܒܬܐ ܘܒܡܫܘܢܝܬܐ
ܠܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܕܡܩܪܒܝܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܣܡܝܕܐ ܒܡܐܢܐ
ܕܟܝܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܐܦ ܡܢܗܘܢ. ܐܣܒ ܟܗܢܐ ܘܠܘܝܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܝܟ
ܫܡܝܐ ܚܕܬܐ ܘܐܪܥܐ ܚܕܬܐ. ܕܥܒܕ ܐܢܐ. ܕܡܩܝܡܝܢ ܩܕܡܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܟܢܐ ܢܩܘܡ
ܙܪܥܟܘܢ ܘܫܡܟܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܡܢ ܝܪܚܐ ܠܝܪܚܐ. ܘܡܢ ܫܒܬܐ ܠܫܒܬܐ. ܢܐܬܐ
ܟܠܗ ܒܣܪ ܠܡܣܓܕ ܩܕܡܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܢܦܩܘܢ ܘܢܚܙܘܢ. ܫܠܕܝܗܘܢ ܕܓܒܪܐ
ܕܡܪܕܘ ܒܝ. ܕܬܘܠܥܬܗܘܢ ܠܐ ܡܝܬܐ. ܘܢܘܪܗܘܢ ܠܐ ܕܥܟܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܬܗܪܐ ܠܟܠ ܒܣܪ.

* ܫܠܡ ܟܬܒܐ ܕܐܫܥܝܐ *

18 Ego enim novi opera eorum, & cogitationes eorum. Quando veniam ad congregandum omnes populos & linguas, venient etiam iſti, & videbunt majeſtatem meam; 19 Ponámque ſignum in eis, & ex eis mittam illos qui evaſerint, ad gentes; in Tharſis, Pul, & Lud trahentes arcum; & in Thubil, & Javan, & ad inſulas remotas, quæ non audierunt nomen meum, neque viderunt majeſtatem meam: Et promulgabunt gloriam meam inter gentes, 20 Et afferent omnes fratres veſtros ex omnibus gentibus oblationem Domino; in equis, curribus, & carrucis, ad montem ſanctitatis meæ, in Jeruſalem, dicit Dominus; quemadmodum afferunt Iſraelitæ ſimilam in vaſis mundis ad ædem Domini. 21 Ex iis etiam accipiam ſacerdotes & Levitas, ait Dominus. 22 Quemadmodum cœli novi & terra nova quæ conditurus ſum, perſiſtent coram me, dicit Dominus; ita ſubſiſtet ſemen veſtrum & nomen veſtrum. 23 Eritque ut ſingulis quibuſq; menſibus, & ſingulis quibúſq; ſabbathis, veniat omnis caro ad adorandũ corã me, dicit Dñs. 24 Et egredientur, ac videbunt cadavera virorum illorum qui perfidè mecum egerunt, quòd vermis eorũ non moriatur, nec ignis eorũ extinguatur, et ſint admirationi omni carni.

Libri Eſaiæ Finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وانا اعلم اعمالهم وفكرهم * وساجازيهم * ها انا اتي لاجمع جميع الامم والالسن * ويوافون
ويعاينون مجدي * واترك عليهم علامة * وارسل منهم مخلصين الي الامم * الي ترسيس
وفول ولود وموصوح * والي توبال والي اللادة * والي الجزاير البعيدة التي لم تسمع باسمي ولم
يعاينوا مجدي * ويذيعون مجدي في الامم * ويقتادون اخوتكم من جميع الامم قربانا
للرب * بخيل ومركبات في هوادج البغال بظلالات * الي المدينة المقدسة ايروسليم قال الرب
كما كان بنو اسرائيل يقدمون لي ضحاياهم بترتيل في بيت الرب * ومنهم اخذ لذاتي كهنة
ولاويين قال الرب * كما انه تكون السماء الجديدة والارض الجديدة اللتين انا اصنعهما
يثبتان امامي قال الرب * هكذا يقوم زرعكم واسمكم * ويكون كل بشر يجي شهرا بشهر
وسبتا بسبت يسجد امامي في ايروسليم قال الرب * ويخرجون وينظرون عظام الذين
عصوني * ان دودهم لا يموت ونارهم لا تطفا * ويصيرون منظرا لكل جسد *

* كملت نبوة اشعياء النبي * والحمد لله حق حمده *

18 *Equidem novi opera & cogitationem eorum, & rependam eis: ecce ego venturus ſum ad congregandas omnes gentes & linguas, & venient ac videbunt gloriam meam.* 19 *Ponámque ſignum ſuper eos, & ex eis mittam ſalvatores ad gentes, in Tharſis, Phul, Lud, Moſoch, Thubal, Lada, ad inſulas denique remotiſſimas, quæ nec audierunt nomen meum, neque gloriam meam viderunt. Hi gloriam meam promulgabunt inter gentes,* 20 *Et fratres veſtros adducent ex omnibus gentibus in oblationem Domino, in equis & curribus, in lecticis mulorum, ſub umbellis, ad urbem ſanctam Jeruſalem, ait Dominus; quemadmodum offerebant mihi Iſraelitæ ſacrificia ſua cum jubilo in æde Domini.* 21 *Et ex iiſdem accipiam mihi ipſi Sacerdotes & Levitas, ait Dominus.* 22 *Quemadmodum cœlum novum & terra nova quæ ego conditurus ſum, perdurabunt coram me, ait Dominus; ita perſiſtet ſemen veſtrum & nomen veſtrum.* 23 *Et erit ut quiſque mortalis veniat de menſe in menſem, & de ſabbatho in ſabbathum, adorare coram me in Jeruſalem, ait Dominus.* 24 *Et egreſſi videbunt oſſa eorum qui contra me rebellârunt, quòd vermes eorum non moriantur, nec ipſorum ignis extinguatur, adeóque ſiant ſpectaculo omni corpori.*

Prophetiæ Eſaiæ Prophetæ
FINIS.
Laus Deo verè laudando.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܢܒܝܘܬܗ ܕܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ * * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܐܪܡܝܐ ܒܪ ܚܠܩܝܐ. ܡܢ ܟܗܢܐ ܕܒܥܢܬܘܬ ܕܒܐܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ. * ܗܘܐ
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠܘܗܝ. ܒܝܘܡܘܗܝ ܕܝܘܫܝܐ ܒܪ ܐܡܘܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܗܘܐ
ܒܬܠܬܥܣܪܐ ܫܢܝܢ ܠܡܠܟܘܬܗ.

PROPHETIA
JEREMIÆ PROPHETÆ.
CAPUT I.

1 SErmones Jeremiæ filii Helciæ de ſacerdotibus qui erat in Anathoth quæ eſt in terra Benjaminis; 2 Ad quem fuit ſermo Domini in diebus Joſiæ filii Amon regis Juda, anno tertiodecimo regni ejus:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الرحمن الرحيم * وبه نثق *

* نبدا بترجمة كتاب نبوة ارمياء النبي * بركاته علينا امين *

* الفصل الاول * * الاصحاح الاول

* كلمة الرب التي صارت على ارمياء بن شلكيو من الكهنة * الذي سكن في اناثوث
في ارض بنيامين * هذا صارت كلمة الله اليه في ايام يوسيا بن عاموص ملك يهودا في
السنة الثالثة عشر من ملكه *

IN NOMINE DEI
Miſericordis clementiſſimi,
cui confido.

Aggredior interpretationem libri Prophetiæ JEREMIÆ Prophetæ, cujus benedictiones ſint ſuper nos, Amen.

CAP. I.
Textus primus.

1 *VErbum Domini, quod factum eſt ad Jeremiam Selciæ filium, ex ſacerdotibus, qui habitabat in Anathoth in terra Benjaminis.* 2 *Ad hunc factum eſt verbum Domini in diebus Joſiæ filii Amonis regis Judæ, anno tertiodecimo regni ejus.*

ירמיה : א

ad uſq; ,Jehudah regis Joſijahu filii Jehojachim diebus in fuit Et
3 וַיְהִי בִּימֵי יְהוֹיָקִים בֶּן־יֹאשִׁיָּהוּ מֶלֶךְ יְהוּדָה עַד־
regis Joſijahu filii Sidchijahu *annos* *undecim* *conſummandum*
תֹּם עַשְׁתֵּי עֶשְׂרֵה שָׁנָה לְצִדְקִיָּהוּ בֶן־יֹאשִׁיָּהוּ מֶלֶךְ
fuit Et .quinto menſe in Jeruſalaim *tranſmigrandum* ad uſq; ,Jehudah
4 יְהוּדָה עַד־גְּלוֹת יְרוּשָׁלַםִ בַּחֹדֶשׁ הַחֲמִישִׁי׃ וַיְהִי
,utero in te formarem Priuſquam : dicendo me ad Domini verbum
5 דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בְּטֶרֶם אֶצּוֹרְךָ בַבֶּטֶן
prophetam , te ſanctificavi , vulva de exires antequam & : te novi
יְדַעְתִּיךָ וּבְטֶרֶם תֵּצֵא מֵרֶחֶם הִקְדַּשְׁתִּיךָ נָבִיא
non Ecce .Deus Domine Ahah : dixi Et .te dedi gentibus
6 לַגּוֹיִם נְתַתִּיךָ׃ וָאֹמַר אֲהָהּ אֲדֹנָי יְהוִה הִנֵּה לֹא־
Ne : me ad Dominus dixit Et .*ego* puer quia ,loqui novi
7 יָדַעְתִּי דַּבֵּר כִּי־נַעַר אָנֹכִי׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלַי אַל־
& :ibis , te mittam *quò* omnia ad quia :*ego* puer , dicas
תֹּאמַר נַעַר אָנֹכִי כִּי עַל־כָּל־אֲשֶׁר אֶשְׁלָחֲךָ תֵּלֵךְ וְאֵת
quia:eorum *faciebus* à timeas Ne .loquêris,tibi præcipiam quæ univerſa
8 כָּל־אֲשֶׁר אֲצַוְּךָ תְּדַבֵּר׃ אַל־תִּירָא מִפְּנֵיהֶם כִּי־
Dominus miſit Et .Dominus dixit , te *eripiendum ad* ,ego tecum
9 אִתְּךָ אֲנִי לְהַצִּלֶךָ נְאֻם־יְהוָה׃ וַיִּשְׁלַח יְהוָה אֶת־
dedi Ecce :me ad Dominus dixit &:meum os *ſuper* tetigit &,ſuā manū
יָדוֹ וַיַּגַּע עַל־פִּי וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלַי הִנֵּה נָתַתִּי
, gentes ſuper hac die te *legavi* , Vide .tuo ore in mea verba
10 דְבָרַי בְּפִיךָ׃ רְאֵה הִפְקַדְתִּיךָ הַיּוֹם הַזֶּה עַל־הַגּוֹיִם
:deſtruēdū ad &,diſperdēdū ad &,diruēdū ad &,evellendū ad ,regna ſuper &
וְעַל־הַמַּמְלָכוֹת לִנְתוֹשׁ וְלִנְתוֹץ וּלְהַאֲבִיד וְלַהֲרוֹס
Quid :dicendo,me ad Domini verbum fuit Et .*plantandū ad &,ædificandū ad*
11 לִבְנוֹת וְלִנְטוֹעַ׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר מָה־
dixit Et .*videns ego amygdali* Virgam : dixi Et ?Irmejahu *videns* tu
12 אַתָּה רֹאֶה יִרְמְיָהוּ וָאֹמַר מַקֵּל שָׁקֵד אֲנִי רֹאֶה׃ וַיֹּאמֶר
,meum verbū ſuper ego *feſtinans* nam : *videndo Bonificaſti* : me ad Domin⁹
יְהוָה אֵלַי הֵיטַבְתָּ לִרְאוֹת כִּי־שֹׁקֵד אֲנִי עַל־דְּבָרִי
Quid:dicendo ſecundò me ad Domini verbum fuit Et .illud *faciendum ad*
13 לַעֲשֹׂתוֹ׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי שֵׁנִית לֵאמֹר מָה
faciebus à ejus *facies* & ,*videns* ego *exſufflatam* Ollam : dixi & ?*videns* tu
אַתָּה רֹאֶה וָאֹמַר סִיר נָפוּחַ אֲנִי רֹאֶה וּפָנָיו מִפְּנֵי
malum pandetur Aquilone Ab :me ad Dominus dixit Et .Aquilonis
14 צָפוֹנָה׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלָי מִצָּפוֹן תִּפָּתַח הָרָעָה
omnes *ad* *vocans* ego ecce Quia .terræ habitatores omnes ſuper
15 עַל כָּל־יֹשְׁבֵי הָאָרֶץ׃ כִּי הִנְנִי קֹרֵא לְכָל־
: DOMINUS dixit , Aquilonis regnorum *familiis*
מִשְׁפְּחוֹת מַמְלְכוֹת צָפוֹנָה נְאֻם־יְהוָה
portarum *oſtio* ſuum ſolium unuſquiſque *dabunt* & , venient &
וּבָאוּ וְנָתְנוּ אִישׁ כִּסְאוֹ פֶּתַח שַׁעֲרֵי
ſuper & , *circum* ejus muros omnes ſuper & , Jeruſalaim
יְרוּשָׁלַםִ וְעַל כָּל־חוֹמֹתֶיהָ סָבִיב וְעַל
ſuper eis cum mea judicia loquar Et .Jehudah urbes univerſas
16 כָּל־עָרֵי יְהוּדָה׃ וְדִבַּרְתִּי מִשְׁפָּטַי אוֹתָם עַל
diis ſuffierunt & ,me dereliquerunt qui ; eorum malitiam omnem
כָּל־רָעָתָם אֲשֶׁר עֲזָבוּנִי וַיְקַטְּרוּ לֵאלֹהִים
tu Et .ſuarum manuum operibus ſe incurvaverunt & ; alienis
17 אֲחֵרִים וַיִּשְׁתַּחֲווּ לְמַעֲשֵׂי יְדֵיהֶם׃ וְאַתָּה
omnia eos ad loquêris & , ſurges & , tuos lumbos accinges
תֶּאְזֹר מָתְנֶיךָ וְקַמְתָּ וְדִבַּרְתָּ אֲלֵיהֶם אֵת כָּל־
fortè ne , eorum *faciebus* à *conſterneris* ne : tibi præcipiam ego quæ
אֲשֶׁר אָנֹכִי אֲצַוֶּךָּ אַל־תֵּחַת מִפְּנֵיהֶם פֶּן־
.*eorum facies ad te conſternem*
אֲחִתְּךָ לִפְנֵיהֶם׃

Verſio VULG. LAT.

3 Et factum eſt in diebus Joakim filii Joſiæ regis Juda, uſque ad conſummationē undecimi anni Sedeciæ filii Joſiæ regis Juda, uſque ad tranſmigrationē 4 Jeruſalem, in menſe quinto. Et factum eſt verbum Domini ad 5 me, dicens; Priuſquàm te formarem in utero, novi te: & antequàm exires de vulva, ſanctificavi te, & prophetā in Gen-6 tibus dedi te. Et dixi, A, a, a, Domine Deus: ecce neſcio lo-7 qui, quia puer ego ſum. Et dixit Dominus ad me, Noli dicere; Puer ſum, quoniam ad omnia, quæ mittam te, ibis: & univerſa, quæcunque mandave-8 ro tibi, loquêris. Ne timeas à facie eorum: quia tecum ego ſum, ut eruam te, dicit Domin⁹. 9 Et miſit Dominus manum ſuā, & tetigit os meum: & dixit Dominus ad me; Ecce dedi 10 verba mea in ore tuo: Ecce conſtitui te hodiè ſuper Gentes, & ſuper regna, ut evellas, & deſtruas, & diſperdas, & diſſipes, & ædifices, & plantes. 11 Et factum eſt verbum Domini ad me, dicens; Quid tu vides, Jeremia? Et dixi, Virgam vigi-12 lantem ego video. Et dixit Dominus ad me, Benè vidiſti, quia vigilabo ego ſup verbo meo 13 ut faciam illud. Et factum eſt verbum Domini ſecundò ad me, dicens; Quid tu vides? Et dixi; Ollam ſuccenſam ego video, & faciem ejus à facie A-14 quilonis. Et dixit Dominus ad me; Ab Aquilone pandetur malum ſuper omnes habitato-15 res terræ. Quia ecce ego convocabo omnes cognationes regnorum Aquilonis, ait Dominus: & venient & ponent unuſquiſque ſolium ſuum in introitu portarum Jeruſalem, & ſuper omnes muros ejus in circuitu, & ſuper univerſas urbes 16 Juda. Et loquar judicia mea cum eis, ſuper omnem malitiam eorum qui dereliquerunt me, et libaverunt diis alienis, et adoraverunt opus manuū ſua-17 rum. Tu ergò accinge lumbos tuos, & ſurge, & loquere ad eos omnia quæ ego præcipio tibi. Ne formides à facie eorū: nec enim timere te faciam vultum eorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καὶ ἐγένετο ἐν ταῖς ἡμέραις Ἰωακεὶμ υἱοῦ Ἰωσία βασιλέως Ἰούδα, ἕως ἑνδεκάτου ἔτους (γ) τοῦ Σεδεκία υἱοῦ Ἰωσία βασιλέως Ἰούδα, ἕως τῆς αἰχμαλωσίας Ἱερουσαλὴμ ἐν τῷ 4 πέμπτῳ μηνί. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου 5 (δ) πρὸς αὐτόν· Πρὸ τοῦ με πλάσαι σε (ε) ἐν κοιλίᾳ, ἐπίσταμαί σε, καὶ πρὸ τοῦ (ϛ) σε ἐξελθεῖν ἐκ μήτρας, ἡγίακά σε, προφήτην 6 εἰς ἔθνη τέθεικά σε. Καὶ εἶπα, Ὁ Ὢν δέσποτα κύριε, ἰδοὺ οὐκ ἐπίσταμαι λαλεῖν, ὅτι 7 νεώτερος ἐγώ εἰμι. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Μὴ λέγε, Ὅτι νεώτερος ἐγώ εἰμι, ὅτι πρὸς πάντας οὓς ἐὰν ἐξαποστείλω σε, πορεύσῃ, καὶ κατὰ πάντα ὅσα (ζ) ἐὰν ἐντείλωμαί 8 σοι, λαλήσεις. Μὴ (η) φοβηθῇς ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, ὅτι μετὰ σοῦ ἐγώ εἰμι τοῦ ἐξαι-9 ρεῖσθαί σε, λέγει κύριος. Καὶ ἐξέτεινε κύριος τὴν χεῖρα αὐτοῦ πρὸς μὲ, καὶ ἥψατο τοῦ στόματός μου, καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Ἰδοὺ δέδωκα τοὺς λόγους μου εἰς τὸ στόμα (θ) σου. 10 Ἰδοὺ καθέστακά σε σήμερον ἐπὶ ἔθνη καὶ ἐπὶ (ι) βασιλείας, ἐκριζοῦν, καὶ κατασκάπτειν, καὶ (κ) ἀπολύειν, καὶ ἀνοικοδομεῖν, καὶ 11 καταφυτεύειν. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Τί σὺ (λ) ὁρᾷς; καὶ εἶπα, 12 Βακτηρίαν καρυΐνην. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Καλῶς ἑώρακας, διότι ἐγρήγορα ἐγὼ ἐπὶ τοὺς λόγους μου τοῦ ποιῆσαι αὐτούς. 13 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου (μ) ἐκ δευτέρου πρὸς μὲ, λέγων, Τί σὺ ὁρᾷς; καὶ εἶπα, Λέβητα ὑποκαιόμενον, καὶ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀπὸ 14 προσώπου Βορρᾶ. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Ἀπὸ προσώπου Βορρᾶ ἐκκαυθήσεται τὰ κακὰ 15 ἐπὶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν. Διότι ἰδοὺ ἐγὼ συγκαλῶ πάσας τὰς βασιλείας (ν) τῆς γῆς ἀπὸ Βορρᾶ, λέγει κύριος· καὶ ἥξουσι καὶ θήσουσιν ἕκαστος τὸν θρόνον αὐτοῦ ἐπὶ τὰ πρόθυρα τῶν πυλῶν Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ πάντα τὰ τείχη τὰ κύκλῳ αὐτῆς, καὶ 16 ἐπὶ πάσας τὰς πόλεις Ἰούδα. Καὶ λαλήσω πρὸς αὐτοὺς (ξ) μετὰ κρίσεως, περὶ πάσης τῆς κακίας αὐτῶν, ὡς ἐγκατέλιπόν με, καὶ ἔθυσαν θεοῖς ἀλλοτρίοις, καὶ προσεκύνησαν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν αὐ-17 τῶν. Καὶ σὺ περίζωσαι τὴν ὀσφύν σου, καὶ ἀνάστηθι, καὶ εἰπὸν (ο) πάντα ὅσα ἂν ἐντείλωμαί σοι. μὴ φοβηθῇς ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, μηδὲ πτοηθῇς ἐναντίον αὐτῶν, ὅτι μετὰ σοῦ (π) εἰμι, τοῦ ἐξαιρεῖσθαί σε, λέγει κύριος.

Et factum eſt in diebus Joachim filii Joſiæ regis Juda, uſque ad undecimum annum Sedeciæ filii Joſiæ regis Juda, uſque ad (a) captivitatem Hieruſalem in quinto menſe. Et factum eſt verbum Domini ad eum; Antequàm formarem te in utero, novi te: & antequàm exires de vulva, ſanctificavi te: prophetam in gentes poſui te. Et dixi, (b) O On dominator Domine: ecce neſcio loqui; quia junior ego ſum. Et dixit Dominus ad me; Noli dicere, Quia junior ego ſum: quoniam ad omnes ad quos miſero te, ibis: & juxta omnia, quæ mandavero tibi, loqueris. Ne timeas à facie eorum: quia ego tecum ſum, ut eruam te, dicit Dominus. Et extendit Dominus manum ſuam ad me, & tetigit os meum, & dixit Dominus ad me; Ecce dedi verba mea in os tuum. Ecce conſtitui te hodie ſuper gentes, & ſuper regna, ut eradices, & deſtruas, & diſperdas, & reædifices, & plantes. Et factum eſt verbum Domini ad me, dicens, Quid tu vides? Et dixi, (c) Baculum nuceum. Et dixit Dominus ad me, Benè vidiſti: quia vigilavi ego ſuper verba mea, ut faciam ea. Et factū eſt verbū Domini ſecundò ad me, dicens, Quid tu vides? Et dixi; Ollā ſuccenſā, & faciem ejus à facie Aquilonis. Et dixit Dominus ad me; A facie Aquilonis exardeſcent mala ſuper omnes habitatores terræ. Quia ecce ego convoco omnia regna terræ ab Aquilone, ait Dominus. Et venient & ponent unuſquiſque ſolium ſuum ſuper veſtibula portarum Hieruſalem, & ſuper omnes muros, qui in circuitu ejus, & ſuper univerſas urbes Judæ. Et loquar ad eos cum judicio de omni malitia eorum, quomodò dereliquerunt me, & ſacrificaverunt diis alienis, & adoraverunt opera manuum ſuarum. Et tu accinge lumbum tuum, & ſurge, & dic omnia, quæcunque mandavero tibi. Ne timeas à facie eorum, (d) neque expaveſcas coram eis: quia tecum ſum, ut liberem te, dicit Dominus.

MS.A. (γ) Σεδεκίου υἱοῦ Ἰωσείου (δ) πρὸς μὲ, λέγων, (ε) ἐκ κοιλίας, (ϛ) ἐξελθεῖν σε (ζ) ἂν (η) φοβηθῇς (θ) σου. Καθέστακα (ι) βασιλεῖς, (κ) ἀπολλύειν Καὶ ἐγ (λ) ὁρᾷς, Ἱερεμία; (μ) πρὸς μὲ ἐκ δευτέρου, (ν) ἀπὸ προσώπου Βορρᾶ τῆς γῆς (ξ) περὶ πάσης τῆς κακίας αὐτῶν μετὰ κρίσεως, (ο) πρὸς αὐτοὺς πάντα (π) ἐγώ εἰμι,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 והוה ביומי יהויקים בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה עד דשלימא חדא עשרי שנין
לצדקיה אחוהי בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה עד דאתא נבוכד נצר מלכא דבבל
4 וצר על ירושלם תלת שנין ואגלי עמא דבה בירחא חמישאה : והוה פתגם נבואה מן
5 קדם יי עמי למימר : עד לא בריתך במעין אתקנתך ועד לא אתיתא לעלמא זמנתך נבי
6 משקי כס דלוט לעממיא מניתך : ואמרית קביל בעותי יי אלהים הא ליתי אנא ידע
7 לאתנבאה ארי רבי אנא ומשירותי עקא וגלו אנא מתנבי על עמא הדין : ואמר יי לי לא
8 תימר רבי אנא ארי כל אתר דאשלחנך תהך וית כל דאפקדנך תתנבי : לא תדחל מן
9 קדמיהון ארי בסעדך מימרי לשיזבותך אמר יי : ושלח יי ית פתגמי נבואתיה וסדר
10 בפומי ואמר יי לי הא שויתי פתגמי נבואתי בפומך : חזי דמניתך יומא הדין על עממיא
11 ועל מלכותא למעקר ולתרעא ולאבדא ולפגרא ועל בית ישראל למבני ולקימא : והוה
פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר מה את חזי ירמיה ואמרית מלך דמוחי לאבאשא
12 13 אנא חזי : ואמר יי לי יאות חזיתא ארי מוחי אנא על פתגמי למעבדיה : והוה
פתגם נבואה מן קדם יי עמי תנינות למימר מה את חזי ואמרית מלך דרתח כדוד
14 אנא חזי וטקוס משריתיה דמדברן ואתין מאפי צפונא : ואמר יי לי מצפונא תשרי
15 בישתא למיתי על כל יתבי ארעא : ארי הא אנא מכלי לכל זרעית מלכות צפונא
אמר יי ויתון וירמון גבר כורסויהי לקבל תרעי ירושלם ועל כל שורהא סחור סחור
16 ועל כל קרויא דבית יהודה : ואמלל פורענות דיני מנהון על כל בישתהון דשבקו
17 פולחני ואסיקו בוסמין לטעוות עממיא ואשתעבדו לעובדי ידיהון : ואת תתקף
חרצך ותקום ותתנבי להון ית כל דאנא מפקד לך לא תתמנע מלאוכחותהון דלמא
אתברנך קדמיהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et factum eſt in diebus Joachim filii Joſiæ regis tribus domus Juda, donec impletus eſt undecimus annus Sedechiæ fratris ejus filii Joſiæ regis tribus domus Juda, donec venit Nabuchodonoſor rex Babylonis, & obſedit Jeruſalem tribus annis, & tranſmigrare fecit populum qui in ea erat, in menſe quinto. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: Antequàm crearem te in utero præparavi te, & antequàm venires in mundum paravi te: Prophetam propinantem calicem maledictionis populis conſtitui te. Et dixi: Suſcipe deprecationem meam Dñe Deus: ecce neſcio prophetare, quia puer ego ſum: & à principio meo tribulationem & captivitatem ego prophetizo contra populum hunc. Et dixit Dñs mihi: Ne dicas, Puer ego ſum: quia ad omnem locum ad quem mittam te, ibis: & univerſa quæcunque mandavero, prophetabis. Ne timeas à facie eorum: quia in adjutorium tuum erit Verbum meum ut eruat te, dicit Dñs. Et miſit Dñs verba prophetiæ ſuæ, & ordinavit ea in ore meo: & dixit Dominus mihi: Ecce poſui verba prophetiæ meæ in ore tuo. Vide quod conſtituerim te hodie ſuper populos & ſuper regna, ut evellas, & deſtruas, & diſperdas, & diſſipes; & ſuper domū Iſrael, ut ædifices & confirmes. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me dicens: Quid tu vides Jeremia? & dixi: Regē feſtinantem ad malefaciendum ego video. Et dixit Dñs mihi: Bene vidiſti: quia feſtinabo ego ſuper verbū meum ut faciam illud. Et factum eſt verbū prophetiæ à facie Dñi ad me ſecundò dicens: Quid tu vides? & dixi, Regem ferventem quaſi lebetem ego video. & vexillum exercit⁹ ej⁹ qui ducitur & venit à facie Aquilonis. Et dixit Dñs mihi: ab Aquilone incipiet venire malum ſuper omnes habitatores terræ. Quoniam ecce ego convoco omnes cognationes regnorum Aquilonis, dicit Dñs: & venient & projicient unuſquiſq; foliū ſuum contra portas Jeruſalem, & ſuper omnes muros ej⁹ in circuitu, & ſuper univerſas urbes dom⁹ Judæ. Et loquar ultionem judiciorū meorū cum eis ſuper omnem malitiam eorū, qui dereliquerunt cultū meū, & adoleverunt aromata idolis populorū, et ſervierunt operib⁹ manuū ſuarū. Tu autem confortabis lumbos tuos, & ſurges, et prophetabis eis omnia quæ præcipio tibi: ne deſinas corripere eos, ne forte conteram te coram eis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܗܘܐ ܒܝܘܡܬܗ ܕܝܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܥܕܡܐ ܕ
ܚܕܥܣܪܐ ܫܢܝܢ ܠܨܕܩܝܐ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܫܬܒܝܬ
ܐܘܪܫܠܡ ܒܝܪܚܐ ܚܡܝܫܝܐ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ
* ܥܕܠܐ ܐܨܘܪܟ. ܒܟܪܣܐ ܝܕܥܬܟ. ܘܥܕܠܐ ܬܦܘܩ ܡܢ ܡܪܒܥܐ. ܩܕܫܬܟ. ܘܢܒܝ
ܠܥܡܡܐ ܝܗܒܬܟ. * ܘܐܡܪܬ: ܐܘܗ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ
ܠܡܡܠܠܘ. ܡܛܠ ܕܛܠܝ ܐܢܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܬܐܡܪ ܕܛܠܝ ܐܢܐ. ܡܛܠ
ܕܠܟܠ ܕܐܫܕܪܟ ܬܐܙܠ. ܘܟܠ ܕܐܦܩܕܟ ܬܡܠܠ. * ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܩܕܡܝܗܘܢ
ܡܛܠ ܕܥܡܟ ܐܢܐ ܠܡܦܨܝܘܬܟ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܘܫܛ ܡܪܝܐ ܐܝܕܗ. ܘܩܪܒ
ܠܦܘܡܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܝܗܒܬ ܦܬܓܡܝ ܒܦܘܡܟ. * ܚܙ
ܕܫܠܛܬܟ ܝܘܡܢܐ. ܥܠ ܥܡܡܐ ܘܥܠ ܡܠܟܘܬܐ. ܠܡܥܩܪ ܘܠܡܣܚܦ. ܘܠܡܘܒܕ
ܘܠܡܒܢܐ ܘܠܡܢܨܒ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. ܡ
ܚܙܐ ܐܢܬ ܐܪܡܝܐ. ܘܐܡܪܬ: ܫܒܛܐ ܕܠܘܙܐ ܚܙܐ ܐܢܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܫܦ
ܚܙܝܬ. ܡܛܠ ܕܫܩܕ ܐܢܐ ܥܠ ܦܬܓܡܝ ܠܡܥܒܕܗ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓ
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ. ܘܐܡܪ: ܡܢܐ ܚܙܐ ܐܢܬ. ܘܐܡܪܬ. ܩܕ
ܕܢܦܝܚܐ ܚܙܐ ܐܢܐ ܘܐܦܘܗܝ. ܡܢ ܐܦܝ ܓܪܒܝܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܓܪ
ܬܬܦܬܚ ܒܝܫܬܐ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝ ܐܪܥܐ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܩܪܐ ܐܢܐ ܠܟ
ܐܢܐ. ܠܟܠܗܝܢ ܫܪܒܬܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܢܐܬܘܢ ܘܢܣܝܡ
ܟܘܪܣܝܗ ܒܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܫܘܪܝܗ ܚܕܪܝܗ
ܘܥܠ ܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܘܐܡܠܠ ܥܡܗܘܢ ܕܝܢܐ. ܥܠ ܟܠܗ ܒ
ܒܝܫܘܬܗܘܢ. ܕܫܒܩܘܢܝ ܘܣܡܘ ܒܣܡܐ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܣܓܕܘ ܠܥ
ܠܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܗܘܢ. * ܘܐܢܬ ܐܣܘܪ ܚܨܝܟ. ܘܩܘܡ ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ
ܟܠ ܕܐܢܐ ܡܦܩܕ ܐܢܐ ܠܟ. * ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܩܕܡܝܗܘܢ
ܠܐ ܐܬܒܪ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܕܥܡܟ ܐܢܐ ܠܡܦܨܝܘܬܟ.

* Fuit etiam in diebus Jojacimi filii Joſiæ 3
regis Juda, donec exacti eſſent undecim
anni Sedeciæ filii Joſiæ regis Juda, donec
capta fuiſſet Jeruſalem menſe quinto. 4
Fuit igitur ad me ſermo Domini, dicendo;
Quum nondum te finxiſſem in utero, novi 5
te; & quum nondum prodiiſſes è vulva,
ſanctificavi te, & prophetam gentibus conſtitui
te. Me autem dicente, Quæſo Do- 6
mine Deus, ecce neſcio loqui, quia puer
ſum: Dixit mihi Dominus, ne dicas, Puer 7
ſum, quoniam ad omnia propter quæ te miſſurus
ſum, ibis; & quicquid præcepturus
ſum tibi, loquêris. Ne timeto ab iſtis, quo- 8
niam adſum tibi ad eripiendum te, dicit
Dominus. Tum extenſâ Dominus manu ſuâ, 9
tetigit os meum, dixítque mihi Dominus;
Ecce poſui ſermones meos in os tuum. Vide 10
quòd poteſtatem do tibi hodie ſuper gentes
& ſuper regna, ad extirpandum & demoliendum,
ad deſtruendum & perdendum, & ad
ædificandum & plantandum. Fuit rurſus ad 11
me ſermo Domini, dicendo, Quid vides
Jeremia? Cui dixi, Baculum amygdalinum
video. Tum dixit mihi Dominus, Rectè vi- 12
des: nam acceleraturus ſum ſermonem meum
ut efficiam illum. Fuit etiam ad me ſermo
Domini ſecundâ vice, dixítque, Quid 13
vides? Et dixi, Ollam foco impoſitam video,
cujus facies eſt Aquilonem verſús. Tum 14
dixit mihi Dominus, Ab Aquilone erumpet
malum in omnes incolas terræ: Nam ecce 15
ego miſſurus ſum evocatum omnes familias
regnorum Aquilonarium, dicit Dominus;
ut venientes ponant quiſque ſolium
ſuum in veſtibulo portarum Jeruſalem,
& ſuper omnes muros ejus circunquaque, &
ſuper omnes civitates Juda. Et loquar judi- 16
cia mea (1. *rationes inſtituam*) cum eis de
cunctis malitiis eorum; quod me derelicto
thura adoleverint diis alienis, & adoraverint
opus manuum ſuarum. Tu itaque ac- 17
cinge lumbos tuos, & ſurgens dic eis quicquid
præcepturus ſum tibi: ne timeto ab
eis, ne te conteram in conſpectu eorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وكان في ايام يواقيم بن يوسيا ملك يهودا الي السنة الحادية عشر لصادقيا بن يوسيا
ملك يهودا الي سبي ايروسليم * في الشهر الخامس * فكانت كلمة الرب الي قايلا * من
قبل ان اجبلك من البطن عرفتك * من قبل ان تخرج من الرحم قدستك وصيرتك
نبيا للامم * فقلت ايها الكاين السيد الرب * لست اعرف ان اتكلم لاني انا شاب انا
* فقال لي الرب * لا تقل اني انا شاب انا * لانك الي جميع الذين ارسلك اليهم اذن
تمضي * وبكل ما امرك اذن تتكلم * لا تخف من وجوههم * لاني انا معك انا لانقذك
يقول الرب * ومد الرب يده الي ولمس فاي وقال الرب لي * ها اعطيت كلماتي في فيك
* واقمتك اليوم على امم وعلي ملوك * لتستاصل وتهدم وتهلك * وصارت كلمة الرب
الي قايلا * ماذا تري انت يا ارميا * فقلت انا اري قضيبا جوزيا * فقال الرب لي
حسنا رايت * من اجل اني انا مستيقظ على كلماتي لاصنعها * وصارت كلمة الرب الي ثانيا
قايلا * ماذا تري انت * فقلت انا اري مرجلا تحته وقيدا * ووجهه من وجه الجربياء
* فقال الرب لي * من وجه الجربياء تتوقد الشرور على جميع سكان الارض * من اجل
ها انا ادعوا جميع مملكات الملوك من وجه جربياء الارض يقول الرب * فياتون ويضعون
كل واحد كرسيه في مداخل ابواب ايروسليم * وعلي جميع الاسوار التي حولها * وعلي جميع
مدن يهودا * واتكلم معهم بالحكم من اجل جميع شرهم * لانهم تركوني وذبحوا لالهة غريبة
وسجدوا لاعمال ايديهم * وانت منطق حقوك وقم فقل لهم كلما امرك به اذن * لا تخف من
وجوههم ولا تذعر قدامهم * لاني انا معك انا لانقذك يقول الرب *

* *Fuit etiam in diebus Joacimi filii Joſiæ* 3
regis Judæ uſque ad annum undecimum
Sedeciæ filii Joſiæ regis Juda, uſque ad
captivitatem Jeroſolymæ in menſe quinto.
Fuit ergò verbum Domini ad me 4
dicentis, Priuſquam te plaſmarem ex 5
utero, novi te; priuſquam exires è vulva,
ſanctificavi te, fecique te prophetam
gentibus. Dicenti verò mihi, O qui 6
es, here Domine, neſcio loqui; nam
adoleſcens ego ſum: Ait Dominus, 7
*Ne dicas, Adoleſcens ego ſum; quoniam
ad omnes eos ad quos mittam*
*te, equidem ibis; & quicquid præcipiam
tibi, equidem loquêris. Ne ve-* 8
*rearis vultus eorum, quoniam ego tecum
ero, ut liberem te, ait Dominus.*
Deinde extendens Dominus manum ſuam 9
*ad me, tetigit os meum, dixitque Dominus
mihi; Ecce dedi verba mea in*
os tuum, Et præfeci te hodiè genti- 10
*bus & regibus, ut evellas, & deſtruas,
ac perdas. Factum eſt etiam* 11
verbum Domini ad me dicentis, Quid
vides tu O Jeremia? Dixi, Ego vi-
deo virgam nuceam. Et dixit mihi 12
Dominus, Rectè vidiſti: nam ego vigi-
lo pro verbis meis, ut exequar illa. Et 13
factum eſt verbum Domini ad me ſe-
cundò dicentis, Quid tu vides? Et
dixi, Ego video cacabum ignémque illi
ſubjectum, cujus facies verſa eſt ad pla-
gam Aquilonarem. Dixitque mihi Do- 14
minus, Ab Aquilonari plaga erit incen-
dium malorum adversùs omnes habita-
tores terræ: Quoniam ecce ego advo- 15
caturus ſum cuncta regum regna ab A-
quilonari terræ plaga, dicit Dominus; qui
venient, ponéntque unuſquiſque ſolium
ſuum in veſtibulis portarum Jeroſolymæ,
& ſuper cunctis mœnibus quibus am-
bitur, & ſuper cunctis urbibus Judæ.
Litémque cum eis inſtituam pro omnibus 16
eorum flagitiis, & quòd me dereliquerint,
& ſacrificaverint diis alienis, & adora-
verint opificia manuum ſuarum. Tu 17
ergò præcinge lumbum tuum, & ſta, dic
*eis quicquid præcepturus ſum tibi: ne vereatis
vultum eorum, neve formides præ-*
ſentiam eorum; quoniam ego tibi adero,
ut liberem te, dicit Dominus.

,ferream columnam in & ,munitam civitatē in hodie te dedi ecce ego Et
18 וַאֲנִי הִנֵּה נְתַתִּיךָ הַיּוֹם לְעִיר מִבְצָר וּלְעַמּוּד בַּרְזֶל
,ejº principibº ,Jehudah regibus ,terram omnem ſuper æris muros in &
וּלְחֹמוֹת נְחֹשֶׁת עַל־כָּל־הָאָרֶץ לְמַלְכֵי יְהוּדָה לְשָׂרֶיהָ
non & ,te contra bellabunt Et .terræ populo & ,ejus ſacerdotibus
לְכֹהֲנֶיהָ וּלְעַם הָאָרֶץ׃ וְנִלְחֲמוּ אֵלֶיךָ וְלֹא־ 19
.te liberandum ad,Dominus ait ,ego tecum quia : tibi prævalebunt
יוּכְלוּ לָךְ כִּי־אִתְּךָ אֲנִי נְאֻם־יְהוָה לְהַצִּילֶךָ׃

CAP. II. ב

auribus in clamabis & ,Vade : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ הָלֹךְ וְקָרָאתָ בְאָזְנֵי 2
miſericordiæ,tui ſum Recordatº ,Dñs dixit Sic : dicendo ,Jeruſalaim
יְרוּשָׁלַםִ לֵאמֹר כֹּה אָמַר יְהוָה זָכַרְתִּי לָךְ חֶסֶד
,deſerto in me poſt te eundo ,tuarum deſponſationũ charitatis ,tuarum pueritiarum
נְעוּרַיִךְ אַהֲבַת כְּלוּלֹתָיִךְ לֶכְתֵּךְ אַחֲרַי בַּמִּדְבָּר
ejus proventus initium ,Domino Iſrael Sanctitas .ſata non terra in
בְּאֶרֶץ לֹא זְרוּעָה׃ קֹדֶשׁ יִשְׂרָאֵל לַיהוָה רֵאשִׁית תְּבוּאָתֹה 3
.Dominus dixit ,eos ad veniet malum;deſolabuntur eū devorãtes omnes
כָּל־אֹכְלָיו יֶאְשָׁמוּ רָעָה תָּבֹא אֲלֵיהֶם נְאֻם־יְהוָה׃
domus familiæ omnes & ,Jahacob domus Domini verbum Audite
4 שִׁמְעוּ דְבַר־יְהוָה בֵּית יַעֲקֹב וְכָל־מִשְׁפְּחוֹת בֵּית
me in veſtri patres invenerunt Quid : Dominus dixit Sic .Iſrael
5 יִשְׂרָאֵל׃ כֹּה אָמַר יְהוָה מַה־מָּצְאוּ אֲבוֹתֵיכֶם בִּי
,vanitatē poſt ambulaverunt &,me deſuper ſe elongaverũt quia,iniquitatis
עָוֶל כִּי רָחֲקוּ מֵעָלָי וַיֵּלְכוּ אַחֲרֵי הַהֶבֶל
nos faciens aſcendere,Dominus Ubi : dixerunt non Et ? ſunt facti vani &
6 וַיֶּהְבָּלוּ׃ וְלֹא אָמְרוּ אַיֵּה יְהוָה הַמַּעֲלֶה אֹתָנוּ
deſertam terram per ,deſertum per nos deducens ,Ægypti terra è
מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם הַמּוֹלִיךְ אֹתָנוּ בַּמִּדְבָּר בְּאֶרֶץ עֲרָבָה
ea in tranſiit non terrã per,mortis umbræ & ariditatis terram per ,vaſtam &
וְשׁוּחָה בְּאֶרֶץ צִיָּה וְצַלְמָוֶת בְּאֶרֶץ לֹא־עָבַר בָּהּ
,Charmel terram in vos induxi Et .ibi homo habitavit neque ,vir
7 אִישׁ וְלֹא־יָשַׁב אָדָם שָׁם׃ וָאָבִיא אֶתְכֶם אֶל־אֶרֶץ הַכַּרְמֶל
contaminaſtis &,eſtis ingreſſi &:ejº boni &,ejº fructum comedendum ad
לֶאֱכֹל פִּרְיָהּ וְטוּבָהּ וַתָּבֹאוּ וַתְּטַמְּאוּ אֶת־
non Sacerdotes .abominationem in poſuiſtis meam hæreditatē &,meã terrã
8 אַרְצִי וְנַחֲלָתִי שַׂמְתֶּם לְתוֹעֵבָה׃ הַכֹּהֲנִים לֹא
paſtores &,me noverũt non legem tractantes &?Dominus Ubi : dixerunt
אָמְרוּ אַיֵּה יְהוָה וְתֹפְשֵׂי הַתּוֹרָה לֹא יְדָעוּנִי וְהָרֹעִים
non poſt & ,Bahal in prophetaverũt prophetæ &:me in ſunt prævaricati
פָּשְׁעוּ בִי וְהַנְּבִאִים נִבְּאוּ בַבַּעַל וְאַחֲרֵי לֹא־
,Dominus dixit ,vobiſcum litigabo adhuc Propterea .ambulaverũt ,proderunt
9 יוֹעִלוּ הָלָכוּ׃ לָכֵן עֹד אָרִיב אִתְּכֶם נְאֻם־יְהוָה
, Chittim inſulas tranſite Siquidem .litigabo veſtrorum filiorum filiis cum &
10 וְאֶת־בְּנֵי בְנֵיכֶם אָרִיב׃ כִּי עִבְרוּ אִיֵּי כִתִּיִּים
fuit En,videte & :vehementer conſiderate &,mittite Cedar &;videte &
וּרְאוּ וְקֵדָר שִׁלְחוּ וְהִתְבּוֹנְנוּ מְאֹד וּרְאוּ הֵן הָיְתָה
meº populus & : Dii non ipſi & ? Deos gens mutavit Num .hoc ſicut
11 כָּזֹאת׃ הַהֵימִיר גּוֹי אֱלֹהִים וְהֵמָּה לֹא אֱלֹהִים וְעַמִּי
: hoc ſuper cœli Obſtupeſcite .proderit non in ſuam gloriam mutavit
12 הֵמִיר כְּבוֹדוֹ בְּלוֹא יוֹעִיל׃ שֹׁמּוּ שָׁמַיִם עַל־זֹאת
mala duo Nam.Dominus dixit,vehementer deſolamini,horreſcite &
13 וְשַׂעֲרוּ חָרְבוּ מְאֹד נְאֻם־יְהוָה׃ כִּי־שְׁתַּיִם רָעוֹת
.aquas continebunt non quæ ,fractas ciſternas ,ciſternas ſibi excidendū ad ,viventium aquarum venam dereliquerunt Me:meus populº fecit
עָשָׂה עַמִּי אֹתִי עָזְבוּ מְקוֹר מַיִם חַיִּים לַחְצֹב לָהֶם בֹּארוֹת בֹּארֹת נִשְׁבָּרִים אֲשֶׁר לֹא־יָכִלוּ הַמָּיִם׃

Verſio VUL. LAT.

18 Ego quippe dedi te hodiè in civitatem munitam, & in columnã ferreã, & in murum æreũ, ſuper omnẽ terrã, regibº Juda, principibº ejus, et ſacerdotibº, 19 & populo terræ. Et bellabunt adverſum te, & non prævalebunt: quia ego tecum ſum, ait Dominus, ut liberem te.

CAP. II.

1 ET factũ eſt verbum Dñi ad 2 me, dicens; Vade, & clama in auribº Jeruſalẽ, dicens; Hæc dicit Dñs; Recordatº ſum tuî, miſerans adoleſcentiam tuam, & charitatẽ deſponſationis tuæ, quando ſecuta es me in deſerto, in terra quæ non ſeminatur. 3 Sanctus Iſrael Dño, primitiæ frugũ ejº: omnes, qui devorant eum, delinquunt: mala venient 4 ſup eos, dicit Dñs. Audite verbum Domini domº Jacob, & omnes cognationes domº Iſrael: 5 Hæc dicit Dñs; Quid invenerunt patres veſtri in me iniquitatis, quia elongaverũt à me, et ambulaverunt poſt vanitatẽ, et 6 vani facti ſunt? Et non dixerũt; Ubi eſt Dñs, qui aſcendere nos fecit de terra Ægypti: qui traduxit nos per deſertũ, per terrã inhabitabilẽ et inviam, ꝑ terrã ſitis, et imaginẽ mortis, ꝑ terrã, in qua non ambulavit vir, neq; 7 habitavit homo? Et induxi vos in terrã Carmeli, ut comederetis fructũ ejus, & optima illiº: & ingreſſi contaminâſtis terrã meam, & hæreditatẽ meam po- 8 ſuiſtis in abominationẽ. Sacerdotes non dixerũt; Ubi eſt Dñs? & tenentes legẽ neſcierũt me, & paſtores prævaricati ſunt in me: & prophetæ prophetaverũt in Baal, et idola ſecuti ſunt. 9 Propterea adhuc judicio contendam vobiſcum, ait Dñs, & cum filiis veſtris diſceptabo. 10 Tranſite ad inſulas Cethim, & videte: & in Cedar mittite, et conſiderate vehementer: et vi- 11 dete ſi factũ eſt hujuſcemodi. Si mutavit gens deos ſuos, et certè ipſi non ſunt Dii: populus verò meus mutavit gloriã ſuã 12 in idolum. Obſtupeſcite cœli ſuper hoc, et portæ ejus deſolamini vehementer, dicit Dominus. 13 Duo enim mala fecit populus meus: Me dereliquerunt fontem aquæ vivæ, et foderunt ſibi ciſternas, ciſternas diſſipatas, quæ continere non valent aquas.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

18 Ἰδοὺ τέθεικά σε ἐν τῇ σήμερον ἡμέρᾳ ὡς πόλιν ὀχυρὰν, ϗ ὡς τεῖχος (η) χαλκοῦν, ὀχυρὸν πᾶσι τοῖς βασιλεῦσιν Ἰούδα, ϗ τοῖς ἄρχουσιν (θ) αὐτοῦ, ϗ τῷ λαῷ τῆς γῆς. 19 Καὶ πολεμήσουσί σε, ϗ οὐ μὴ δύνωνται πρὸς σὲ, διότι (ι) μετὰ σοῦ ἐγώ εἰμι, τοῦ ἐξαιρεῖσθαί σε, (κ) εἶπε κύριος. MS.A.(η) χαλκοῦ, ὀχυρὸν ἅπασιν (θ) αὐτῆς, (ι) ἐγὼ μετὰ σοῦ εἰμι, (κ) λέγει

ΚΕΦ. β΄.

1 ΚΑὶ εἶπε, Τάδε λέγει κύριος, 2 Ἐμνήσθην ἐλέους νεότητός σου, ϗ ἀγάπης τελειώσεώς σου, τοῦ ἐξακολουθῆσαί σε τῷ ἁγίῳ Ἰσραὴλ, λέγει κύριος. 3 (α) Ὁ ἅγιος Ἰσραὴλ τῷ κυρίῳ, ἀρχὴ (β) γεννημάτων αὐτοῦ· πάντες οἱ ἔσθοντες αὐτὸν πλημμελήσουσι, κακὰ ἥξει ἐπ' αὐτοὺς, φησὶ κύριος. 4 Ἀκούσατε λόγον κυρίου οἶκος Ἰακὼβ, ϗ πᾶσα πατριὰ οἴκου Ἰσραήλ. 5 Τάδε λέγει κύριος, Τί (γ) εὕροσαν οἱ πατέρες ὑμῶν ἐν ἐμοὶ πλημμέλημα, ὅτι ἀπέστησαν μακρὰν ἀπ' ἐμοῦ, ϗ ἐπορεύθησαν ὀπίσω τῶν 6 ματαίων, ϗ ἐματαιώθησαν; Καὶ οὐκ εἶπαν, Ποῦ ἐστι κύριος, ὁ ἀναγαγὼν (δ) ἡμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ὁ καθοδηγήσας ἡμᾶς ἐν τῇ ἐρήμῳ ἐν γῇ (ε) ἀπείρῳ ϗ ἀβάτῳ, ἐν γῇ ἀνύδρῳ ϗ ἀκάρπῳ, ἐν γῇ (ζ) ᾗ οὐ διώδευσεν ἐν αὐτῇ (η) ἀνὴρ οὐθὲν, ϗ οὐ κατῴκησεν ἄνθρω- 7 πος ἐκεῖ; Καὶ ἤγαγον ὑμᾶς εἰς τὸν Κάρμηλον, τοῦ φαγεῖν ὑμᾶς τοὺς καρποὺς αὐτοῦ, ϗ τὰ ἀγαθὰ αὐτοῦ. ϗ (·) εἰσήλθετε, ϗ ἐμιάνατε τὴν γῆν μου, ϗ τὴν κληρονομίαν (θ) μου ἔθεσθε εἰς 8 βδέλυγμα. Οἱ ἱερεῖς οὐκ εἶπαν, Ποῦ ἐστι κύριος; ϗ οἱ ἀντεχόμενοι τοῦ νόμου (ι), οὐκ ἠπίσταντό με, ϗ οἱ ποιμένες ἠσέβουν εἰς ἐμὲ, ϗ οἱ προφῆται (κ) ἐπροφήτευον τῇ Βάαλ, ϗ ὀπίσω 9 ἀνωφελοῦς ἐπορεύθησαν. Διατοῦτο ἔτι κριθήσομαι πρὸς ὑμᾶς, (λ) ϗ πρὸς τοὺς υἱοὺς τῶν υἱῶν 10 ὑμῶν κριθήσομαι. Διότι ἔλθετε εἰς νήσους Χεττιείμ, ϗ ἴδετε, ϗ εἰς Κηδὰρ ἀποστείλατε, ϗ νοήσατε σφόδρα, ϗ ἴδετε εἰ γέγονε 11 τοιαῦτα· (μ) Εἰ ἀλλάξονται ἔθνη θεοὺς αὐτῶν, ϗ οὗτοι οὐκ εἰσὶ θεοί· ὁ δὲ λαός μου ἠλλάξατο τὴν δόξαν αὐτοῦ, ἐξ ἧς οὐκ ὠφεληθήσονται. 12 Ἐξέστη ὁ οὐρανὸς ἐπὶ τούτῳ, ϗ ἔφριξεν ἐπὶ 13 πλεῖον σφόδρα, λέγει κύριος. Ὅτι δύο ϗ πονηρὰ ἐποίησεν ὁ λαός μου· ἐμὲ ἐγκατέλιπον πηγὴν ὕδατος (ν) ζωῆς, ϗ ὤρυξαν ἑαυτοῖς λάκκους συντετριμμένους, οἳ οὐ δυνήσονται ὕδωρ συνέχειν.

MS.A.(α) Ἅγιος (β) γεννημάτων (γ) εὕροισαν οἱ πατέρες ἡμῶν (δ) ὑμᾶς (ε) τῳ ϗ ἀπείρῳ, (ζ) ἐν ᾗ (η) οὐθὲν, (·) εἰσήλθατε, (θ) ϗ ἔθεσθαί (ι) μου, (κ) ἐπροφήτευον τῷ (λ) λέγει κύριος, ϗ (μ) Εἰ ἀλλάξονται τὰ ἔθνη (ν) ζῶντος,

Cum Tranſ. LAT.

Ecce poſui te in hodierna die vitatē munitã, & ut murũ æreũ, munitum omnibº regibº Juda, & principibus ejus, & populo terræ. Et bellabunt adverſum te, & non prævalebunt adverſum te, quia cum ego ſũ, ut liberem te, ait Dñs.

CAP. II.

ET *(a) dixit, Hæc dicit Dominus; Recordatus ſum miſericordiæ adoleſcentiæ tuæ, & dilectionis perfectionis tuæ, quando tu ſequuta es Sanctũ Iſrael, dicit Dominus. (b) Sanctus Iſrael Domino, principiũ genimini ejº: Omnes, qui comedent eum, delinquent: mala venient ſuper eos, dicit Dominº. Audite verbũ Domini domº Jacob, & omnis cognatio domûs Iſrael. Hæc dicit Dominus; Quid invenerunt patres veſtri in me delictum; quia receſſerunt longè à me, et ambulaverũt poſt vana, et vani facti ſunt? Et non dixerunt; ubi eſt Dominus, qui eduxit nos de terra Ægypti, qui deduxit nos in deſerto, in terra inuſitata, & invia, in terra inaquoſa, et infructuoſa, in terra, in qua non pertranſivit in ea vir quiſquã, (c) neque habitavit homo illic? Et duxi vos in Carmelum, ut comederetis fructº ejº, et bona ejº. Et ingreſſi eſtis, et contaminaſtis terrã meã; & hæreditatẽ meã poſuiſtis in abominationẽ. Sacerdotes non dixerunt; ubi eſt Dominus? & tenentes legẽ, neſcierunt me: et paſtores impiè egerunt in me: & prophetæ prophetabant in Baal, & poſt inutile ambulaverunt. Propterea adhuc judicio contendã vobiſcum, & cum filiis filiorũ veſtrorũ judicio contendã. Idcircò venite in inſulas Chettiim, & videte: & in Cedar mittite, et conſiderate vehementer: & videte, ſi facta ſunt hujuſmodi; Si mutaverint gentes deos ſuos: & iſti non ſunt Dii. Populus verò meus mutavit gloriã ſuã in id, ex quo nihil juvabuntur. Obſtupuit cœlũ ſuper hoc: & horruit extra modũ vehementer, dicit Dominus. Duo enim, (d) & mala fecit populus meus: Me dereliquerunt fontẽ aquæ vivæ: et foderunt ſibi ciſternas contritas, quæ non poterunt continere aquam.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 ואנא הא יהבתך יומא דין תקיף כקריה כריכא וכעמודא דברזל וכשור דנחש לאשקאה
כס דלוט לכל יתבי ארעא למלכא דבית יהודה לרברבהא לכהנהא ולעמא דארעא׃
19 ויהון דינין ומגיחין לקבלך למסתר ית פתגמי נבואתך ולא יכלין לך ארי בסעדך מימרי
אמר יי לשיזבותך׃

ב

1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ 2 אזיל ותתנבי קדם עמא די בירושלם למימר
כדנן אמר יי דכירנא לכון טבות יומי קדם רחמת אבהתכון דהימנו במימרי ואזלו בתר
תרין שליחי בתר משה ואהרן במדברא ארבעין שנין בלא זוודין בארעא דלא מזדרעא׃
3 קודשא אנון בית ישראל קדם יי ועל בזזיהון כדמעא ארמות עללא דמן דאכיל מניה
חיב לממרת וכשירו חצד עומר ארמותא דעד לא מקרבין מניה כהניא בני אהרן
קורבניא על מדבחא מן דאכיל מניה מתחיב אף כן כל בזזיהון דבית ישראל יחובון
4 בישתא תיתי עליהון אמר יי׃ קבילו פתגמא דיי בית יעקב וכל זרעית בית ישראל׃
5 כדנן אמר יי מה אשכחו אבהתכון במימרי שקר ארי אתרחקו מדחלתי וטעו בתר
6 טעותא והוו ללמא׃ ולא אמרו נדחל מן קדם יי דאסיק יתנא מארעא דמצרים דדבר
יתנא במדברא בארע מישר וחרוב בארע צדיא וטולימותא בארע דלא עדא בה אנש
7 ולא אתותב אנשא תמן׃ ואעלית יתכון לארע דישראל דהות מנצבא ככרמלא למיכל
אבה וטובה ועלתון וסאבתון ית ארע בית שכנתי ואחסנתי שויתון לפולחן טעותא׃
8 כהניא לא אמרו נדחל מן קדם יי ומלפי אוריתא לא אליפו למידע דחלתי ומלכיא
9 מרדו במימרי ונביאי שקרא מתנבן בשום טעותא ובתר דלא יהנון להון אזלו׃ בכן אנא
עתיד לאתפרעא מנכון אמר יי ומן בני בניכון דאם יעבדון כעובדיכון אנא עתיד
10 לאתפרעא׃ ארי עברו לנגות כתאי וחזו ולמדינת ערבאי שלחו ואסתכלו לחדא וחזו
עממיא דגלו מכרך לכרך וממדינה למדינה נטלין ית טעותהון ומובלין להון עמהון
ובאתר דאנון שרן פרסין ית משכניהון ומקימין ית טעותהון וסגדין להון אידא היא
11 אומא ולישן דעבדת כותכון בית ישראל׃ הא עממיא לא שבקו פולחן טעותא ואנון
טעון דלית בהון צרוך ועמי שבקו פולחני די בדיליה אנא מיתי עליהון יקרא ואזלו בתר
12 דלא יהנון להון׃ אתאבלו שמיא על כדין על ארעא דישראל דעתידא למחרב ועל
13 בית מקדשא דעתיד לאצטדאה ועל דעובדין בישין עבדו עמי לחדא אמר יי׃ ארי
תרתין בישין עבדו עמי פולחני שבקו די בדיליה אנא מיתי עליהון יקרא כמבוע דמיין
דלא פסיק ושעו בתר טעותא דאנון להון כגובין תבירין דלא יכלין לקימא מיא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ego ecce dedi te hodie fortem ſicut civitatem munitam, & ſicut columnam ferream, & ſicut murum æreum, ad propinandum calicem maledictionis omnibus habitatoribus terræ, & *regi* domus Juda, & principibus ejus, & ſacerdotibus ejus, & populo terræ. Et erunt contendentes & bellantes adverſum te, ut celent verba prophetiæ tuæ, & non prævalebunt tibi; quia in auxilium tuũ erit Verbum meum, dicit Dominus, ut eruam te.

CAP. II.

ET factũ eſt verbũ prophetiæ à facie Dñi ad me dicẽs: Vade & vaticinare corã populo qui eſt in Jeruſalem, dicens: Hæc dicit Dñs: Memor ſum vobis beneficiorũ dierũ antiquorũ, & dilectionis patrũ veſtrorũ, qui crediderunt verbo meo, & ambulaverunt poſt duos nuntios meos, Moyſen & Aaron, in deſerto quadraginta annis, abſq; cibariis in terra non ſeminata. San*ctitates ſunt* domº Iſrael corã Dño, & adverſus direptores ſuos ſicut primitiæ oblationis frugum: quicunque cõederit ex eis, reº erit mortis: & ſicut principiũ meſſis manipuli oblationis; ex quo ſi aliquis comederit, antequã offerãt Sacerdotes filii Aaron oblationes ſup altari, condemnatur; ſic omnes qui deprædantur domũ Iſrael, condemnabuntur; malũ veniet ſup eos, ait Dñs. Suſcipe verbũ Dñi domº Jacob, & omnis cognatio domº Iſrael. Hæc dicit Dñs: Quid invenerunt patres veſtri in verbo meo falſitatis, quia elongaverunt ſe à timore mei, & erraverunt poſt idola, & abierunt in vanitate? Nec dixerunt: Timeamº à facie Dñi, qui aſcẽdere nos fecit de terra Ægypti: qui duxit nos ꝑ deſertũ ꝑ terrã ſolitudinis & deſolatã, ꝑ terrã vaſtã & umbrã mortis, ꝑ terrã ꝑ quã non tranſierat homo, nec ibi habitaverat quiſquã. Et introduxi vos in terrã Iſrael, quæ erat plantata ſicut Carmelº, ut cõederetis fructº ejº & delicias ejº: & intraſtis & contaminaſtis terrã domº majeſtatis meæ, & hæreditatẽ meã dicaſtis cultui idolorũ. Sacerdotes non dixerunt: Timeamº à facie Dñi: & doctores Legis non didicerunt ſcire timorẽ mei, & reges rebellarunt in verbum meum, & prophetæ falſi prophetarunt in nomine idolorũ, & poſt ea quæ non proderunt eis ambulaverunt. Propterea ego ſumã vindictã de vobis, dicit Dñs, & de filiis filiorũ veſtrorũ: ꝙ ſi fecerint juxta opera veſtra, itidẽ ego ulciſcar. Tranſite enim ad inſulas Cethim, et videte; ad provincias Arabũ mittite, et contẽplamini diligẽter, et videte populos qui migraverunt de arce in arcẽ, et de provincia in provinciã, portantes idola ſua et ducentes ea *ſecũ*: et in loco in quo ſunt, extendunt tabernacula ſua, et ſtatuunt idola ſua, et adorãt ea: quæ eſt enim gẽs et lingua quæ fecerit ſicut vos, *Domus Iſrael?* Ecce populi non reliquerunt cultũ idolorũ, cùm ſint idola in quibº nulla eſt utilitas: et populº meº deſeruit cultũ meũ; propter quẽ ego induco ſup eos gloriã: et abierunt poſt ea quæ non proſunt eis. Lugete cœli propter hoc, propter terrã Iſrael quæ futura eſt in deſolationẽ, et propter domũ ſanctuarii quæ futura eſt in deſtructionẽ, et propter *quod* opera valdè mala fecit populus meus, dicit Dñs. Quia duo mala cõmiſit populº meº, cultũ meũ reliquit, cuius cauſa adducebã ſup eos *gloriã*, ſicut fontẽ aquarũ qui non deficit, et erraverunt poſt idola, quæ ſunt quaſi ciſternæ cõfractæ, quæ non poſſũt cõtinere aquas.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܢܐ ܗܐ ܝܗܒܬܟ ܝܘܡܢܐ ܐܝܟ ܡܕܝܢܬܐ ܥܫܝܢܬܐ. ܘܐܝܟ ܥܡܘܕܐ ܕܦܪܙܠܐ. ܘܐܝܟ ܫܘܪܐ
ܕܢܚܫܐ. ܠܘܩܒܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܠܘܩܒܠ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܠܘܩܒܠ ܪܘܪܒܢܝܗܘܢ. ܘܠܘܩܒܠ ܟܗܢܝܗܘܢ. ܘܠܘܩܒܠ
ܢܒܝܝܗܘܢ. ܘܠܘܩܒܠ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܢܬܟܬܫܘܢ ܥܡܟ. ܘܠܐ ܢܙܟܘܢܟ. ܡܛܠ ܕܥܡܟ
ܐܢܐ. ܠܡܦܪܩܟ ܐܡܪ ܡܪܝܐ * [illegible] * ܒ * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ
ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܙܠ ܩܪܝ ܒܐܕܢܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܬܕܟܪܬ ܠܟܝ
ܛܝܒܘܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟܝ: ܘܚܘܒܐ ܕܡܣܝܒܪܢܘܬܟܝ. ܕܐܙܠܬܝ ܒܬܪܝ ܒܡܕܒܪܐ. ܒܐܪܥܐ ܕܠܐ
ܡܙܕܪܥܐ. * ܩܕܝܫ ܐܝܣܪܝܠ ܠܡܪܝܐ ܪܫ ܥܠܠܬܗ. ܟܠ ܕܐܟܠܝܢ ܠܗ ܢܚܘܒܘܢ. ܒܝܫܬܐ
ܐܬܝܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܫܡܥܘ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܟܠܗܝܢ ܫܪ̈ܒܬܐ
ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܢܐ ܥܘܠܐ ܐܫܟܚܘ ܒܝ ܐܒܗ̈ܝܟܘܢ. ܕܐܬܪܚܩܘ
ܡܢܝ. ܘܐܙܠܘ ܒܬܪ ܣܪܝܩܘܬܐ ܘܣܪܝܩܝܢ. * ܘܠܐ ܐܡܪܘ. ܐܝܟܘ ܡܪܝܐ ܕܐܣܩܢ ܡܢ ܐܪܥܐ
ܕܡܨܪܝܢ. ܘܕܒܪܢ ܒܡܕܒܪܐ. ܒܐܪܥܐ ܚܪܒܬܐ ܘܫܚܝܩܬܐ. ܒܐܪܥܐ ܨܗܝܐ ܘܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ. ܒܐܪܥܐ
ܕܠܐ ܥܒܪ ܒܗ ܓܒܪ. ܘܠܐ ܝܬܒ ܒܗ ܒܪܢܫܐ. * ܘܐܝܬܝܬܟܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܟܪܡܠܐ. ܠܡܐܟܠ
ܦܐܪܗ ܘܛܒܬܗ. ܘܐܬܝܬܘܢ ܘܛܡܐܬܘܢ ܠܐܪܥܝ. ܘܝܘܪܬܢܝ ܣܡܬܘܢ ܠܛܢܦܘܬܐ. * ܟܗ̈ܢܐ
ܠܐ ܐܡܪܘ ܐܝܟܘ ܡܪܝܐ. ܘܐܚܝܕܝ ܢܡܘܣܐ ܠܐ ܝܕܥܘܢܝ. ܘܪ̈ܥܘܬܐ ܐܥܠܘ ܒܝ. ܘܢܒܝ̈ܐ ܐܬܢܒܝܘ
ܒܒܥܠܐ. ܘܒܬܪ ܡܕܡ ܕܠܐ ܡܘܬܪ ܐܙܠܘ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܬܘܒ ܐܬܕܝܢ ܥܡܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܘܥܡ ܒܢܝ̈ ܒܢܝ̈ܟܘܢ ܐܬܕܝܢ. * ܥܒܪܘ ܠܓܙܪ̈ܬܐ ܕܟܬܝܐ. ܘܚܙܘ. ܘܠܩܝܕܪ ܫܕܪܘ. ܘܐܬܒܩܘ
ܛܒ. ܘܚܙܘ ܐܢ ܗܘܬ ܐܝܟ ܗܕܐ. * ܐܢ ܡܫܚܠܦܝܢ ܥܡܡ̈ܐ ܠܐܠܗܝܗܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܠܐ ܗܘܘ
ܐܠܗܐ. ܘܥܡܝ ܫܚܠܦ ܐܝܩܪܗ ܒܡܕܡ ܕܠܐ ܡܘܬܪ. * ܬܡܗܘ ܫܡܝܐ ܒܗܕܐ. ܘܐܬܪܗܒܘ ܘܐܬܒܗܠܘ
ܛܒ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܬܪܬܝܢ ܒܝ̈ܫܢ ܥܒܕ ܥܡܝ. ܠܝ ܫܒܩܘ ܡܒܘܥܐ ܕܡ̈ܝܐ ܚ̈ܝܐ.
ܘܐܙܠܘ ܚܦܪܘ ܠܗܘܢ ܓܘܒܐ. ܓܘܒܐ ܬܒ̈ܝܪܐ. ܕܠܐ ܡܨܝܢ ܠܡܚܒܫܘ ܡ̈ܝܐ.

18 Cæterùm ecce ego reddo te hodie ut civitatẽ munitã, ut columnã ferreã, & ut murum æneum contra terrã univerſam, contra reges Juda, contra principes eorum, contra ſacerdotes & prophetas eorum; denique contra totum terræ populum. 19 Pugnabunt quidem contra te, ſed non ſuperabunt te; quoniam adſum tibi ut eripiam te, dicit Dominus.

CAP. II.

1 Fuit etiam ad me ſermo Domini, dicendo; 2 Vade prædicatum in aures Jeruſalem, & dic; Sic ait Dñs, Recordor tibi benefactum pueritiæ tuæ, amorẽ patientiæ tuæ; quòd ſecuta ſis me per deſertũ, per terrã haud ſeminabilem; 3 Conſecraverit Iſrael Dño primitias frugum ſuarũ; quicunque comediſſent eas, delinquebant & malum eveniebat eis, dicit Domin⁹. 4 Audite ſermonẽ Dñi, domus Jacobi, et omnes familiæ Iſraeliticæ. 5 Sic dicit Dñs, Quænam eſt iniquitas quam deprehenderunt in me patres veſtri, ut recedentes à me ſectati ſint nihilũ, nihilq; profecerint? 6 Neque dixerint, Ubi eſt Dñs qui extraxit nos è terra Ægypti; duxit nos per deſertum, per terrã vaſtã ac ſolitariã, terrã ſterilẽ, & umbræ mortis, terrã per quam nemo tranſierat, & ubi nemo habitabat? 7 Imò cùm adduxiſſem vos ad regionem vinearum, ut comederetis fructus & bona illius, Vos venientes polluiſtis terrã meã, et hæreditatẽ meam expoſuiſtis abominationi. 8 Sacerdotes non dixerunt, Ubi eſt Dñs? tractantes legem non cognoverunt me, paſtores negaverunt me, prophetæ per Baalem prophetaverunt, & id in quo nullum eſt emolumentum, ſectati ſunt. 9 Hac de re judicio contendã vobiſcum, dicit Dñs: & cum filiis filiorũ veſtrorũ contendã. 10 Tranſite ad inſulas Chithæorum, ac perſpicite; & ad Cedarẽ mittite, ac diligenter conſiderate, ac videte num quidquam ſimile factũ ſit: 11 Num mutent gentes deos ſuos, qui tamẽ non ſunt Dii: popul⁹ autẽ me⁹ mutavit gloriam ſuam in rem inutilem. 12 Obſtupeſcite cœli de hac re, contremiſcite, & vehementer extimeſcite, ait Dñs, 13 Nam duo crimina perpetrârunt popul⁹ meus: Me dereliquerunt fontem aquarum vivarum, & abeuntes foderunt ſibi ciſternas, ciſternas quaſſatas, in quibus aquas conſervare nequeunt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ها انا وضعتك في نهار اليوم مثل مدينة حصينة * مثل عمود حديد * ومثل سور نحاس 18
حصين * لجميع ملوك يهوذا ولروسايهم ولشعب الارض * ويحاربونك ولا يقدرون عليك * من 19
اجل اني انا معك انا لانقذك يقول الرب * الفصل الثاني *
** وقال هكذا يقول الرب * ذكرت رحمة شبابك ومحبة نهايتك * عند ما تبعت قدوس 1
اسرايل يقول الرب * قدس اسرايل للرب بدو غلاته * جميع الذين ياكلونها ياثمون وياتي 3
عليهم الشرور قال الرب * اسمعوا كلام الرب يا بيت يعقوب وكل ابوة بيت اسرايل * هكذا يقول 4
الرب * اي اثم وجدوا في اباؤكم لانهم تباعدوا عني بعيدا * ومضوا خلف الاباطيل وبطلوا
* ولم يقولوا اين هو الرب الذي اصعدنا من ارض مصر * الذي هدانا في البرية في ارض
غير مسلوكة وغير مخبون * في ارض عديمة الماء وغير مثمر وظلال الموت * في الارض التي
لم يسلك فيها احد * ولم يسكن هناك ابن انسان * وادخلنا الي الكرمل لناكل ثمرته
وخيراته * ودخلتم ونجستم ارضي وميراثي * وصيرتم رذالة * الكهنة لم يقولوا اين هو الرب *
والمتمسكون بناموسي لم يعرفوني * والرعاة نافقوا علي * والانبياء تنبوا للباعل * وخلف
ما لا ينفع سلكوا * لاجل هذا احاكم معكم يقول الرب ايضا * ومع بني بنيكم 9
احاكم من اجل هذا * جوزوا الي جزاير سثيم وانظروا * الي قيذار ارسلوا * وتاملوا 10
جدا وانظروا ان كان صار مثل هذا * ايبدلون الامم الهتهم وهاولاء ليس هم الهة * 11
وشعبي بدل مجده بما لا ينفعون * دهشت السماء لهذا ورهبت جدا بالاكثر يقول الرب * 12
* لان شعبي صنع اثنين شريرين * تركوني انا ينبوع الماء الحي * وحفروا لهم جبابا مشققة 13
التي لا تستطيع ان تمسك ماء *

18 *Ecce ego poſui te hodernâ die velut urbem munitam, velut columnam ferream, & velut murum æneum fortem, cunctis regibus Judæ, & principibus eorum, populóque terræ:* 19 *Qui te quidem oppugnabunt, at non poterunt ſuperare te; quoniam ego tecum ero, ut liberem te, dicit Dominus.*

CAP. II.

1 *Dixit præterea, Sic ait Dominus;* 2 *Recordor benignitatis adoleſcentiæ tuæ, & ſupremæ dilectionis tuæ. Quando ſequebaris Sanctum Iſraelis, ait Dominus,* 3 *Conſecrabat Iſrael Domino primitias proventuum ſuorum; quicunque comediſſent eas, delinquebant, & contingebant eis mala, ait Dominus.* 4 *Audite verba Domini, O domus Jacobi, & univerſæ paternæ familiæ domûs Iſraelis.* 5 *Sic ait Dominus, Quam culpam invenerunt in me patres veſtri, quòd procul abſceſſerunt à me, & vanitates ſecuti indulſerunt vanitati?* 6 *Et non dixerunt, ubi eſt Dominus qui eduxit nos è terra Ægypti; qui rexit nos in deſerto, in terra impervia & ignota; in terra aquarum experte, infructuoſâ, & umbrâ lethali; in terra per quam nemo inceſſerat, & ubi nullus mortalium habitabat?* 7 *Et introduxit nos in Charmelum, ut comederemus fructus ejus & bona illius? Imò ingreſſi contaminâſtis terram meam & hæreditatem meam, & facti eſtis abominatio.* 8 *Sacerdotes non dixerunt, ubi eſt Dominus? & qui tenebant legem meam, ignoraverunt me; paſtores perfidè mecum egerunt; prophetæ Baali prophetaverunt, & quod inutile eſt, ſecuti ſunt.* 9 *Ob hoc judicium inſtituam vobiſcum, ait etiam Dominus: & cum filiis filiorum veſtrorum judicium hac de re inſtituam.* 10 *Tranſite ad inſulas Settim, & videte; ad Cedarem mittite, diligenter contemplamini, & conſiderate num ſimile quid factum ſit;* 11 *Num mutent gentes deos ſuos, licèt illi non ſint Dii: meus tamen populus mutavit gloriam ſuam in id ex quo nullum percipiunt emolumentum.* 12 *Obſtupeſcat hac de re cœlum, & magis magiſque paveſcat, ait Dominus:* 13 *Quòd populus meus duas res peſſimas fecerit; reliquerint me ſcatebram aquæ vivæ, foderintque ſibi puteos diſruptos, aquam continere nequeuntes.*

ירמיה : ב

eū Sup?prædā in ſuit quare ? ipſe domus natus an , Iſrael ſerv⁹ Nūquid
14 העבד ישראל אם־יליד בית הוא מדוע היה לבז׃ עליו
,ſolitudinē in ej⁹ terrā poſuerunt &:ſuā vocem dederunt ,leunculi rugient
15 ישאגו כפרים נתנו קולם וישיתו ארצו לשמה
,Tachpanches &,Noph filii Etiā,habitatore abſq; ſunt exuſtæ ej⁹ civitates
16 עריו נצתה מבלי ישב׃ גם־בני־נף ותחפנס
Dñm te relinquendo tibi facies hoc Nonne .verticem tibi confringent
17 ירעוך קדקד׃ הלוא־זאת תעשה־לך עזבך את־יהוה
via in tibi quid nunc Et ? viam p te deducentis tempore in tuum Deum
18 אלהיך בעת מולכך בדרך׃ ועתה מה־לך לדרך
bibendum ad ,Aſſur via in tibi quid & ? Sichor aquas bibendum ad ,Ægypti
מצרים לשתות מי שחור ומה־לך לדרך אשור לשתות
,ſcito &;te increpabūt tuæ averſiones&,tua malitia te Corripiet?fluminis aquas
19 מי נהר׃ תיסרך רעתך ומשבותיך תוכחך ודעי
non & ,tuum Deum Dominum te reliquiſſe eſt amarū & malū quod,vide &
וראי כי־רע ומר עזבך את־יהוה אלהיך ולא
ſeculo à Quia .exercituum DEUS Dominus dicit , te in meum pavorem
20 פחדתי אליך נאם־אדני יהוה צבאות׃ כי מעולם
nam ;ſerviam Non : dixiſti & , tua vincula rupi ,tuum jugum confregi
שברתי עלך נתקתי מוסרותיך ותאמרי לא אעבוד כי
pervagans tu frondoſo ligno omni ſub & ,ſublimem collem omnem ſuper
על־כל־גבעה גבהה ותחת כל־עץ רענן את צעה
quomodo &;veritatis ſemen ipſam totā Sorec te plantavi ego Et .meretrix
21 זנה׃ ואנכי נטעתיך שורק כלה זרע אמת ואיך
,nitro in te laveris ſi Quia ? alienæ vitis ramos declinantes mihi es converſa
22 נהפכת לי סורי הגפן נכריה׃ כי אם־תכבסי בנתר
dixit , me coram tua iniquitas eſt ſignata ;Borith tibi multiplicaveris &
ותרבי־לך ברית נכתם עונך לפני נאם־
Behalim poſt ,ſum polluta Non : dices Quomodo .Dominus Domin⁹
23 אדני יהוה׃ איך תאמרי לא נטמאתי אחרי הבעלים
levis dromedaria:feceris quid ſcito;valle in tuā viam vide?ambulavi non
לא הלכתי ראי דרכך בגיא דעי מה עשית בכרה קלה
ſorbuit ſuæ animæ deſiderio in deſertum doctus Onager .ſuas vias implicans
24 משרכת דרכיה׃ פרה למד מדבר באות נפשו שאפה
,laſſabuntur non eam quærentes omnes?eā avertet quis ,ſuæ occaſionis ventum
רוח תאנתה מי ישיבנה כל־מבקשיה לא ייעפו
tuū guttur &,diſcalceatione à tuū pedē Prohibe.eam invenient ſuo menſe in
25 בחדשה ימצאונה׃ מנעי רגלך מיחף וגורנך
, alienos adamavi quippe:nequaquam?eſt Deſperatū :dixiſti Et .ſiti à
מצמאה ותאמרי נואש לוא כי־אהבתי זרים
ſic , invenitur quando , furis pudorem Secundum .ibo eos poſt &
26 ואחריהם אלך׃ כבשת גנב כי ימצא כן
, eorum principes ,eorum reges , ipſi , Iſrael domus ſunt affecti pudore
הבישו בית ישראל המה מלכיהם שריהם
; tu meus Pater:ligno Dicentes .eorum prophetæ &,eorum ſacerdotes &
27 וכהניהם ונביאיהם׃ אמרים לעץ אבי אתה
: faciem non & ,cervicem me ad verterunt quia : nos genuiſti Tu : lapidi &
ולאבן את ילדתני כי־פנו אלי ערף ולא פנים
, tui Dii ubi Et .nos ſerva & , Surge : dicent ſui mali tempore in &
28 ובעת רעתם יאמרו קומה והושיענו׃ ואיה אלהיך
nam ? tui mali tempore in te ſervabunt Num.Surgant?tibi feciſti quos
אשר עשית לך יקומו אם־יושיעוך בעת רעתך כי
.Jehudah tui Dii fuerunt tuarum civitatum numerus
מספר עריך היו אלהיך יהודה׃

Verſio VUL. LAT.

14 Numquid ſervus eſt Iſrael, aut vernacul⁹? quare ergò fact⁹ eſt 15 in prædā? Sup eum rugierunt leones, & dederunt vocē ſuam, poſuerunt terrā ejus in ſolitudinē: civitates ejus exuſtæ ſunt, 16 & non eſt qui habitet in eis. Filii quoque Mempheos & Taphnes conſtupraverunt te uſq; 17 ad verticē. Numquid non iſtud factum eſt tibi, quia dereliquiſti Dñm Deum tuum eo tempore, 18 quo ducebat te p viā? Et nunc quid tibi vis in via Ægypti, ut bibas aquam turbidā? & quid tibi cum via Aſſyriorū, ut bibas 19 aquā fluminis? Arguet te malitia tua, & averſio tua increpabit te. Scito, & vide, quia malū & amarū eſt reliquiſſe te Dñm Deū tuum, & non eſſe timorē meî apud te, dicit Dñs De⁹ ex- 20 ercituum. A ſeculo confregiſti jugū meū, rupiſti vincula mea, & dixiſti; Non ſerviā. In omni enim colle ſublimi, & ſub omni ligno frondoſo, tu proſter- 21 nebaris meretrix. Ego autem plantavi te vineā electā, omne ſemen verum: quomodò ergò converſa es mihi in pravū vi- 22 nea aliena? Si laveris te nitro, & multiplicaveris tibi herbā borith, maculata es in iniquitate tua corā me, dicit Dñs Deus. 23 Quomodò dicis; Non ſum polluta, poſt Baalim non ambulavi? vide vias tuas in convalle, ſcito quid feceris: curſor levis 24 explicans vias ſuas. Onager aſſuetus in ſolitudine, in deſiderio animæ ſuæ, attraxit ventum amoris ſui: null⁹ avertet eam: omnes qui quærunt eam, non deficient: in menſtruis ejus in- 25 venient eam. Prohibe pedem tuum à nuditate, & guttur tuū à ſiti. Et dixiſti; Deſperavi, nequaquā faciā: adamavi quippe alienos, & poſt eos ambula- 26 bo. Quomodò confunditur fur quando deprehenditur, ſic confuſi ſunt dom⁹ Iſrael, ipſi, et reges eorū, principes, & ſacerdo- 27 tes, & prophetæ eorū, Dicentes ligno, Pater me⁹ es tu; & lapidi, Tu me genuiſti. Verterunt ad me tergū, & non faciē, & in tempore afflictionis ſuæ dicent; 28 Surge, & libera nos. Ubi ſunt dii tui, quos feciſti tibi? ſurgāt & liberent te in tempore afflictionis tuæ: ſecundùm numerū quippe civitatum tuarum erant dii tui, Juda.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Μὴ δοῦλός ἐστιν Ἰσραὴλ, ἢ οἰκογενής ἐστι; διατί εἰς προνομὴν ἐγένετο; 15 Ἐπ' αὐτὸν ὠρύοντο λέοντες, καὶ ἔδωκαν τὴν φωνὴν αὐτῶν, οἳ ἔταξαν τὴν γῆν αὐτοῦ εἰς ἔρημον, καὶ αἱ πόλεις αὐτοῦ 16 κατεσκάφησαν, παρὰ τὸ μὴ κατοικεῖσθαι. Καὶ υἱοὶ Μέμφεως καὶ Τάφνας ἔγνωσάν σε, καὶ (ξ) 17 κατέπαιζόν σου. Οὐχὶ ταῦτα ἐποίησέ σοι τὸ καταλιπεῖν σε ἐμέ; λέγει κύριος ὁ θεός σου. 18 Καὶ νῦν τί σοι καὶ (ο) τῇ ὁδῷ Αἰγύπτου τοῦ πιεῖν ὕδωρ Γηῶν; καὶ τί σοι καὶ (π) τῇ ὁδῷ Ἀσσυρίων τοῦ πιεῖν ὕδωρ ποταμῶν; 19 Παιδεύσει σε ἡ ἀποστασία σου, καὶ ἡ κακία σου ἐλέγξει σε. καὶ γνῶθι, καὶ ἴδε, ὅτι πικρόν σοι τὸ καταλιπεῖν σε ἐμὲ, λέγει κύριος ὁ θεός σου· καὶ οὐκ (ρ) εὐδόκησα ἐπὶ σοὶ, λέγει κύριος ὁ θεός σου. 20 Ὅτι ἀπ' αἰῶνος συνέτριψας τὸν ζυγόν σου, καὶ διέσπασας τοὺς δεσμούς σου, καὶ εἶπας, Οὐ (σ) δουλεύσω σοι, ἀλλὰ πορεύσομαι ἐπὶ πάντα βουνὸν ὑψηλὸν, καὶ ὑποκάτω παντὸς ξύλου κατασκίου, ἐκεῖ διαχυθήσομαι ἐν τῇ πορνείᾳ 21 μου. Ἐγὼ δὲ ἐφύτευσά σε ἄμπελον καρποφόρον (τ) πᾶσαν ἀληθινήν· πῶς (υ) ἐστράφης εἰς 22 πικρίαν ἡ ἄμπελος ἡ ἀλλοτρία; Ἐὰν (φ) ἀποπλύνῃ ἐν νίτρῳ, καὶ πληθύνῃς σεαυτῇ (χ) πόαν, κεκηλίδωσαι (ψ) ἐν ταῖς ἀδικίαις σου 23 ἐναντίον ἐμοῦ, λέγει κύριος. Πῶς ἐρεῖς, Οὐκ ἐμιάνθην, καὶ ὀπίσω τῆς Βάαλ οὐκ ἐπορεύθην; ἴδε τὰς ὁδούς σου ἐν τῷ πολυανδρίῳ, καὶ γνῶθι 24 τί ἐποίησας. ὀψὲ φωνὴ αὐτῆς ὠλόλυξε· τὰς ὁδοὺς αὐτῆς ἐπλάτυνεν ἐφ' ὕδατα ἐρήμου, ἐν ἐπιθυμίαις ψυχῆς αὐτῆς ἐπνευματοφορεῖτο, παρεδόθη, τίς ἐπιστρέψει αὐτήν; πάντες οἱ ζητοῦντες αὐτὴν οὐ κοπιάσουσιν, ἐν τῇ ταπει- 25 νώσει αὐτῆς εὑρήσουσιν αὐτήν. Ἀπόστρεψον τὸν πόδα σου ἀπὸ ὁδοῦ τραχείας, καὶ τὸν φάρυγγά σου ἀπὸ δίψους. ἡ δὲ εἶπεν, Ἀνδριοῦμαι, ὅτι ἠγαπήκει ἀλλοτρίους, καὶ ὀπίσω αὐτῶν ἐπο- 26 ρεύετο. Ὡς αἰσχύνη κλέπτου ὅταν ἁλῷ, οὕτως αἰσχυνθήσονται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, αὐτοὶ καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν, καὶ οἱ (ω) ἄρχοντες αὐτῶν, 27 καὶ οἱ ἱερεῖς αὐτῶν, καὶ οἱ προφῆται αὐτῶν. Τῷ ξύλῳ εἶπαν, Ὅτι πατήρ μου εἶ σὺ, καὶ τῷ λίθῳ, Σὺ ἐγέννησάς με· καὶ ἔστρεψαν ἐπ' ἐμὲ νῶτα, καὶ οὐ πρόσωπα αὐτῶν. καὶ ἐν τῷ καιρῷ τῶν κακῶν αὐτῶν ἐροῦσιν, Ἀνάστα καὶ σῶσον ἡμᾶς. 28 Καὶ ποῦ εἰσὶν οἱ θεοί σου, οὓς ἐποίησας σεαυτῷ; εἰ ἀναστήσονται καὶ (α) σώσουσιν ἐν καιρῷ τῆς κακώσεώς σου. ὅτι (β) κατ' ἀριθμὸν τῶν πόλεών σου ἦσαν θεοί σου Ἰούδα, καὶ (γ) κατ' ἀριθμὸν διόδων τῆς Ἱερουσαλὴμ ἔθυον τῇ Βάαλ.

Nunquid ſerv⁹ eſt Iſrael, aut vernacul⁹ eſt? quarè factus eſt in prædā? Super eū rugierunt leones, & dederunt vocem ſuā, qui poſuerunt terrā ejus in ſolitudinē: & civitates illius deſtructæ ſunt, eò quòd non habitentur. Et filii Mempheos & Taphnas cognoverunt te, & illuſerunt tibi. Nónne hæc fecit tibi (c) illud, quòd dereliquiſti me, dicit Dominus Deus tuus? Et nunc quid tibi, & viæ Ægypti, ut bibas aquā Geon? Et quid tibi, & viæ Aſſyriorū, ut bibas aquā fluminū? Corripiet te rebellio tua, et malitia tua arguet te. Et ſcito, et vide quia amarū tibi, quòd dereliqueris me, dicit Dominus Deus tuus: & non complacui in te, dicit Dominus Deus tuus: Quia à ſeculo confregiſti jugum tuum, & dirupiſti vincula tua, & dixiſti, non ſerviā tibi: ſed ibo ad omnem collē excelſum, & ſubter omne lignū umbroſū: ibi diffundar in fornicatione mea. Ego autē plantavi te vitē fructiferā omnē verā: quomodò converſa es in amaritudinē vitis aliena? Si laveris te in nitro, & multiplicaveris tibi (f) herbā, maculata es in tuis iniquitatibus corā me, dicit Domin⁹. Quomodo dices, Non ſum polluta, & poſt Baal non ambulavi? Vide vias tuas in (g) ſepulchro multitudinis, et noſce, quid feceris. Ad veſperā vox ejus (h) ululavit: Vias ſuas dilatavit ſuper aquas ſolitudinis: in deſiderio animæ ſuæ (i) ſpiritu portabatur: tradita eſt: quis convertet eam? Omnes, qui quærunt illā, non laborabunt: in (k) humilitate illius reperient illā. Averte pedem tuū à via aſpera, & guttur tuum à ſiti. Illa vero dixit, (l) Viriliter agam: quia dilexit alienos, et poſt eos ambulabat. Sicut confuſio furis, cum deprehenſus fuerit: ſic confundentur filii Iſrael, ipſi, & reges eorum, & principes eorū, et ſacerdotes eorū, et prophetæ eorum. Ligno dixerunt, Quia pater me⁹ es tu, et lapidi, Tu genuiſti me. Et converterunt ad me dorſa, et non facies ſuas: et in tempore malorū ſuorū dicent: Surge, et ſalva nos. Et ubi ſunt dii tui, quos feciſti tibi? ſi ſurgent, et ſalvabunt in tempore afflictionis tuæ? Quia juxta numerū civitatū tuarū erant dii tui, Judæa: juxta numerū viarū Hieruſalem immolabant Baal.

MS.A. (ξ) κατέπεξάν σου. (ο) γῆ Αἰγύπτου (π) τῇ γῇ (ρ) ηὐδόκησα ἐν σοί, (σ) δουλεύσω, ἀλλὰ πορεύσομαι (τ) ἀληθινὴν πᾶσαν· (υ) ἐστράφη (φ) ἀποπλύνῃ (χ) πόαν, (ψ) ἐναντίον ἐμοῦ ἐν ταῖς ἀδικίαις σου, λέγει κύριος ὁ θεὸς σου. (ω) ἄρχοντες, καὶ οἱ ἱερεῖς (α) σώσουσίν σε ἐν (β) κατὰ (γ) κατὰ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 15 הכעבדא הוה ישראל אם יליד ביתא הוא מדין אתמסר לבזוזין׃ עלוהי יכלון מלכיא
16 ירימון קלהון ושוו ארעיה לצדו קרווהי צדין מבלי יתיב׃ אף בני מפיס ותחפנחס
17 יקטלון גברך ויבזון נכסך׃ הלא דא פורענותא תתעבד מניך על דשבקתא ית פולחנא
18 דיי אלהך דאחזיך אורחא תקנא ולא הלכתא בה׃ וכען מה לכון לאתחברא לפרעה
מלכא דמצרים למרמי דכוריכון בנהרא ומה לכון למגזר קים עם אתוראה לאגלאה
19 יתכון להלאה מעבר פרת׃ איתיתי עלך יסורין ולא מנעת מבישתיך ועל דלא תבתא
לאוריתא פורענותא תתעבד מניך ודעי וחזי ארי בישתא ומרירא איתי עלך ירושלם על
דשבקתא ית פולחנא דיי אלהך ולא שויתא דחלתי לקבל עינך אמר יי אלהים צבאות׃
20 ארי מעלמא תברית ניר עממיא מצוריכון פסקית חניקיכון ואמרתון לא נוסף עוד
למעבר על מימרך ארי על כל רמא מנטלא ותחות כל אילן עבוף את פלחא לטעותא׃
21 ואנא קימתכון קדמי כמנצב גפנא בחירא כולכון עבדי קשוט ואיכדין אשתניתון קדמי
22 בעובדיכון מקלקליא סטיתון מבתר פולחני הויתון כגפן דלית ביה הנאה׃ ארי אכם
תדמין לאתנקאה מחוביך כמא דמנקן בנתרא ומחורין בבוריתא הא כרושם כתמא
23 דלא דכי כן סגאו חוביך קדמי אמר יי אלהים׃ איכדין תימרין לא אסתאבית ובתר
טעות עממיא לא הלכית זקופי עינך על ארחתיך כד הוית יתבא בחילתא לקבל בית
24 פעור דעי מה עבדת הוית דמיא לינקא קלילא דמקלקלא ארחתהא׃ כערודא דמדוריה
במדברא ברעות נפשה שתיא רוחא כירודא כן כנשתא דישראל מרדת וטעת מן
אוריתא ולא צביא למתב נביא אמר לה כל בעדא דאוריתי לא ישתלהון בזמנה
25 ישכחונה׃ מנעי רגליך מלאתחברא לעממיא ופומיך מלמפלח לטעות עממיא ואמרת
תבירת מבתר פלחנך לא ארי רחימית לאתחברא לעממיא ובתר פולחן טעותהון
26 אהך׃ כבהתת גבר דמתחשב מהימן ומשתכח גניב כן בהיתו בית ישראל אנון מלכיהון
27 רברביהון וכהניהון ונביהון דשקרא׃ אמרין לצלם אעא אבונא את ולמה דמתעבד מן
אבנא אמרין ליה את בריתנא ארי אחזרו בפולחני קדל ולא שויאו דחלתי לקבל
אפיהון ובעדן דבישתא אתיא עליהון כפרין בטעותהון ומודן קדמי ואמרין רחם עלנא
28 ופרוקנא׃ ואן דחלתכון דעבדתון לכון יקומון אם יכלין למפרקכון בעדן בישתכון ארי
מנין קרויכון הואה דחלתכון דבית יהודה׃

PARAPH. CHALD Verſio Latina

Nunquid ſerv⁹ factus eſt Iſrael? num domi nat⁹ verna eſt? quare traditus eſt direptoribus? Adverſus eū clamant reges, tollunt vocē ſuā, ponunt terrā ej⁹ in deſolationē, civitates ej⁹ deſertæ ſunt abſq; habitatore. Filii quoque Mempheos & Taphnis occidūt fortes tuos, & diripiūt facultates tuas. Nónne hæc ultio fit in te, eò quòd dereliquiſti cultū Dñi Dei tui, qui oſtendit tibi viam rectā, & non ambulâſti in ea? Nunc autem quid vobis eſt ut conſortium jungatis cum Pharaone rege Ægypti, ad projiciendū maſculos veſtros in fluvium? & quid vobis eſt ut ineatis pactum cum Aſſur, ad transferendum vos ultra flumen Euphratē? Induxi ſuper te afflictiones, & non ceſſâſti à malitia tua: & quia non es converſa ad Legē, ultio fiet de te: & vide & cognoſce quia malū & amaritudinē induxi ſuper te Jeruſalem, quòd dereliquiſti cultum Dñi Dei tui, & non poſuiſti timorem mei ante oculos tuos, dicit Dñs Deus exercituum. Quia à ſeculo confregi jugum populorum de collo veſtro, ſuccidi vincula veſtra: & dixiſtis: Non addemus ultrà tranſgredi verbum tuū, quia in omni colle ſublimi, & ſub omni ligno frondoſo tu colebas idola. Ego autē ſtatuerā vos coram me ſicut plantam vitis electæ, omnes facientes veritatem; & quomodo mutati eſtis coram me in operib⁹ veſtris corruptis? declinâſtis à timore mei, facti eſtis ſicut vitis in qua nulla eſt utilitas. Quoniam ſi putatis mundari à peccatis veſtris ſicut mundant nitro, & dealbant ſapone; ecce quaſi nota maculæ quæ non eſt munda: ſic multiplicata ſunt peccata tua corā me, dicit Dñs De⁹. Quomodo dicis, Non ſum polluta, & poſt idola populorum non ambulavi? leva oculos tuos ſuper vias tuas, quando habitabas in valle contra Bethphegor: ſcito quid feceris: ſimilis fuiſti camelæ juvenculæ velociſſimæ quæ depravat vias ſuas. Sicut onager qui moratur in deſerto, in voluntate animæ ſuæ, bibens ventum ſicut draco; ſic cœtus Iſrael tranſgreſſus eſt & aberravit à Lege; & noluit agere pœnitentiam. Propheta dic ei: Omnes qui quærunt Legem meam non fatigabuntur, in tempore ſuo invenient eam. Prohibe pedem tuum ne te jungas populis; et os tuum, ne colas idola populorū: & dixiſti; Averſus ſum à cultu tuo. Nequaquam, ſed amavi conjungi populis, & poſt cultum idolorum eorum ibo. Sicut confuſio viri qui cum habitus eſſet fidelis, invenitur latro; ſic confuſi ſunt domus Iſrael, ipſi & reges eorum, & principes eorum, et Sacerdotes eorum, et falſi prophetæ eorum. Dicunt ſimulacro ligneo; Pater noſter es: et ei quod ex lapide factum eſt, Tu creâſti nos: quoniam averterunt terga cultui meo, & non poſuerunt timorē mei ante faciē ſuam; et in tempore quo venit malum ſuper eos, negant idola ſua, et confitentur corā me, et dicunt, Miſerere noſtri, et ſalva nos. Et ubi ſunt dii veſtri quib⁹ ſerviſtis? conſurgant ſi poſſunt, et ſalvent vos in tempore mali veſtri: quoniā ſecundùm numerum civitatum veſtrarum facti ſunt dii veſtri, viri domus Juda.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܥܒܕܐ. ܥܒܕܐ ܗܘ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܢ ܝܠܝܕ ܒܝܬܐ ܗܘ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܗܘܐ ܠܒܙܬܐ. * ܥܠܘܗܝ
ܢܗܡܘܢ ܐܪܝܘܬܐ. ܘܝܗܒܘ ܩܠܗܘܢ. ܘܣܡܘ ܐܪܥܗ ܠܚܘܪܒܐ. ܘܩܘܪܝܘܗܝ ܐܬܚܪܒ ܡܢ
ܕܠܐ ܥܡܘܪܐ. * ܐܦ ܒܢܝ ܡܦܝܣ ܘܬܚܦܢܚܣ. ܢܪܥܘܢ ܩܕܩܕܟܝ. * ܗܐ ܗܟܢܐ ܢܗܘܐ
ܠܟܝ. ܥܠ ܕܫܒܩܬܝ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܟܝ ܒܙܒܢܐ ܕܡܕܒܪ ܗܘܐ ܠܟܝ ܒܐܘܪܚܐ. * ܘܗܫܐ ܡܢܐ
ܠܟܝ ܠܐܘܪܚܐ ܕܡܨܪܝܢ ܠܡܫܬܐ ܡܝܐ ܕܫܝܚܘܪ. ܘܡܢܐ ܠܟܝ ܠܐܘܪܚܐ ܕܐܬܘܪ
ܠܡܫܬܐ ܡܝܐ ܕܢܗܪܐ. * ܬܪܕܝܟܝ ܒܝܫܘܬܟܝ. ܘܬܟܣܝܟܝ ܬܘܝܘܬܟܝ. ܘܕܥܝ ܘܚܙܝ ܕܒܝܫܐ
ܘܡܪܝܪܐ. ܕܫܒܩܬܝ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܟܝ. ܘܠܐ ܕܚܠܬܝ ܡܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ.
* ܡܛܠ ܕܡܢ ܥܠܡ ܬܒܪܬ ܢܝܪܟܝ. ܘܦܣܩܬ ܐܣܘܪܝܟܝ. ܘܐܡܪܬܝ ܕܠܐ ܐܦܠܘܚ ܠܐܠܗܐ ܐܚܪܢܐ.
ܦܠܚܬ. ܗܘܝܬܝ ܠܐ ܥܠ ܟܠ ܪܡܬܐ ܪܡܬܐ. ܘܬܚܝܬ ܟܠ ܐܝܠܢ ܥܒܝܐ. ܐܝܬܝܟܝ ܛܥܝܐ ܘܙܢܝܐ.
* ܘܐܢܐ ܢܨܒܬܟܝ ܫܒܘܫܬܐ ܕܟܠܗ ܙܪܥܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܘܐܝܟܢܐ ܐܬܗܦܟܬܝ ܠܘܬܝ. ܘܡܪܕܬܝ ܐܝܟ
ܓܦܬܐ ܢܘܟܪܝܬܐ. * ܐܢ ܬܬܚܘܪܝܢ ܒܢܬܪܐ. ܘܬܣܓܐܝܢ ܠܟܝ ܒܟܘܒܪܝܬܐ. ܡܟܬܒܢ ܗܘܝ
ܚܛܗܝܟܝ ܩܕܡܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܐܝܟܢܐ ܐܡܪܬܝ ܕܠܐ ܐܬܛܡܐܬ. ܘܒܬܪ ܒܥܠ
ܠܐ ܐܙܠܬ. ܚܙܝ ܐܘܪܚܬܟܝ ܒܢܚܠܐ. ܘܕܥܝ ܡܢܐ ܥܒܕܬܝ. * ܐܪܝܡܬܝ ܩܠܟܝ ܡܥܩܡܬ
ܐܘܪܚܬܐ. ܐܝܟ ܥܪܕܐ ܕܡܬܢܟܦ ܒܡܕܒܪܐ ܒܪܓܝܓܬ ܢܦܫܗ. ܫܬܝܬܝ ܪܘܚܐ ܐܝܟ ܟܠܒܐ. ܡܢ
ܢܗܦܟܝܗ. ܟܠܗܘܢ ܕܒܥܝܢ ܠܗ. ܠܐ ܢܬܥܪܩܘܢ. ܒܐܘܪܚܬܗ ܢܫܟܚܘܢܗ. * ܟܠܝ ܪܓܠܝܟܝ ܡܢ
ܥܪܛܠܝܘܬܐ. ܘܓܓܪܬܟܝ ܡܢ ܨܗܝܐ. ܘܐܡܪܬܝ ܐܬܚܝܠܬ. ܠܐ ܨܒܝܢܐ ܐܢܐ. ܡܛܠ ܕܪܚܡܬ
ܢܘܟܪܝܐ. ܘܒܬܪܗܘܢ ܐܙܠ. * ܐܝܟ ܕܒܗܬ ܓܢܒܐ ܟܕ ܡܫܬܟܚ. ܗܟܢܐ ܢܒܗܬܘܢ ܒܢܝ
ܐܝܣܪܝܠ. ܗܢܘܢ ܘܡܠܟܝܗܘܢ. ܘܪܘܪܒܢܝܗܘܢ. ܘܟܘܡܪܝܗܘܢ. ܘܢܒܝܝܗܘܢ. * ܕܐܡܪܝܢ
ܠܩܝܣܐ ܐܒܘܢ ܐܢܬ. ܘܠܟܐܦܐ ܕܐܢܬ ܝܠܕܬܢܝ. ܡܛܠ ܕܐܗܦܟܘ ܠܝ ܩܕܠܗܘܢ.
ܘܠܐ ܐܦܝܗܘܢ. ܘܒܥܕܢܐ ܕܒܝܫܬܗܘܢ ܐܡܪܝܢ. ܩܘܡ ܥܕܪܝܢ. ܘܦܪܘܩܝܢ. * ܘܐܝܟܐ
ܐܢܘܢ ܐܠܗܝܟܝ ܕܥܒܕܬܝ ܠܟܝ. ܢܩܘܡܘܢ ܘܢܦܪܩܘܢܟܝ ܒܥܕܢܐ ܕܒܝܫܬܟܝ. ܡܛܠ ܕܐܝܟ
ܡܢܝܢܐ ܕܩܘܪܝܟܝ. ܗܘܘ ܐܠܗܝܟܝ ܝܗܘܕܐ.

An ſervus eſt Iſrael? quòd ſi filius familiâs eſt, 14
cur factus eſt in prædam? Contra eum rugiunt 15
leones, & attollunt vocem ſuam, terram
ejus redigunt in ſolitudinem, & civitates
ejus civium penuriâ deſolantur? Quin 16
etiam cives Mephis & Tahphis capita quæq;
tua contundent. Ecce ſic tibi fiet, eò quòd 17
dereliqueris Dominum Deum tuum, quo tempore
te per viam ducebat. Jam verò quid te 18
movet ad eundum per viam Ægypti, ut bibas
aquas Sihoris? aut quid te movet ad eundum
per viam Aſſur, ut bibas aquas fluminis? Puniet 19
te malitia tua, & pœnitudo tua te arguet:
agnoſce verò & conſidera quòd peſſimum
hoc ſit & amariſſimum: eò quòd dereliqueris
Dominum Deum tuum, & me non
timueris, ait Dominus Deus potentiſſimus.
Nam jam olim frangente me jugum tuum, & 20
diſrumpente lora tua, dixeras; Nulli alii Deo
ſum ulteriùs ſervitura: ecce tamen ſuper
omnem collē ſublimem, & ſubter quancunq;
arborem condenſam tu errabunda ſcortaris.
Equidem plantaveram te virgultum quod totum 21
erat ſemen fidele: quomodo ergò in me
converſa es, & rebellâſti ut vitis aliena?
Etiamſi nitro te dealbes, & plurimum ſulphuris 22
adhibeas tibi; cicatrices *tamen* impreſſerunt
in te peccata tua coram me, dicit
Dominus Deus. Quomodo diceres, Non pollui 23
me, & Baalem non ſum ſecuta? Vide vias
tuas in vallibus, & agnoſce quid feceris. Extuliſti 24
vocem tuam ô viis perverſa, tanquam
onager qui in deſerto ſeſe exercet in appetitibus
animæ ſuæ: hauſiſti ventum ut canis
ſylveſtris: quis abducat eam? quicunque
quærit eam, anxius ne ſit; in viis ejus inveniet
illam. Cohibe pedes tuos à nuditate & 25
guttur tuum à ſiti: tu verò dicis, Valida ſum,
nolo: nam alienos amo, ſequar eos. Ut 26
erubeſcit fur ubicunque extiterit, ſic erubeſcent
Iſraelitæ, tam ipſi quam reges ac
principes eorum, ſacerdotes ac prophetæ
eorum. Qui dicunt ligno, Pater noſter es; & 27
lapidi, Tu me genuiſti: quia obverterunt
mihi cervicem ſuam, non autem faciem ſuam:
tempore verò calamitatis ſuæ dicunt,
Surge, adjuva nos, & libera nos. At ubi ſunt 28
dii tui quos feciſti tibi? ſurgant, & liberent
te in tempore calamitatis tuæ: nam quot ſunt
civitates tuæ, tot ſunt dii tui ô Juda.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هل اسرايل هو عبد ام خصيص * لماذا صار للنهب * اسد زارت واعطت صوتها الذين
ربدوا ارضه للخراب * ومدنه خسفت من ان لا تسكن * وبنو منف وطحفاس عرفوك وهزوا
بك * اليس هذه صنعتها لك لتركك اياي يقول الرب الاهك * والان ما لك وارض مصر لتسقي
ماء جيحون وما لك وارض الموصليين لتسقي ماء الانهار * يودبك عدوك * وشرك يبكتك
فاعلمي وانظري انه مر لك تركك اياي يقول الرب الاهك * ولم اسر بك يقول الرب الهك *
* لانك منذ الدهر كسرت نيرك وقطعت رباطاتك * وقلت لا استعبد لكن امضي الى كل
اكمة مرتفعة وتحت كل شجرة ظليلة هناك افرح بزناي * وانا غرستك كرمة مثمرة حقيقة
كلها * كيف رجعت كالكرمة الغريبة مرارة * ان اغتسلت بالبورق واكثرت لك الغاسول
لادنسنك امامي بظلاماتك يقول الرب الهك *

الاصحاح الثاني *

* كيف تقولين لم اتدنس * وخلف بعال لم امض * انظري طرقك في الوادي واعلمي
ما تصنعين * صوتها ولول عشاء * وسعت طرقها على مياه القفر بشهوات نفسها * لبست
روحا * اسلمت * من ذا يردها * جميع طالبيها لا يتعبون * في ذلتها يجدونها * ردي قدمك
من الطريق الخشنة وحنجرتك من العطش * فقالت استرجع * لانها احبت الغرباء * وخلفهم
ذهبت * مثل خزي اللص اذا اخذ * هكذا تخزى بنو اسرايل * هم وملوكهم ورؤساؤهم
وكهنتهم وانبياؤهم * قالوا للعود انك انت هو ابي * وللحجر انت ولدتني وادارو الي ظهورهم
لا وجوههم * وفي زمن شرورهم يقولون قم وخلصنا * فاين هي الهتك التي صنعتها لك *
ايقومون ويخلصوك في زمن شرك * لان كعدد مدنك صارت الهتك يا يهوذا وكعدد
مسالك اورشليم ذبحوا لبعال *

Num ſervus Iſrael, an peculiaris eſt? 14
cur expoſitus eſt direptioni? Leones rugentes 15
& vocem ſuam edentes ſunt ii
qui redegerunt terram ejus in ruinam, &
urbes ejus in humum demerſæ ſunt, quò
minùs habitarentur. Filii Memphis & 16
Daphnis cognoverunt te & deriſerunt te.
Nonne hæc feci tibi, quòd me dereliqueris, 17
ait Dominus Deus tuus? Nunc etiam 18
quid negotii tibi eſt cum terra Ægypti,
ut bibas aquas Gihonis? & quid
tibi cum terra Aſſyriorum, ut bibas aquam
fluviorum? Erudiet te pervicacia 19
tua, & malitia tua te arguet: ſcito
ergo & vide quòd amarum tibi ſit me
dereliquere, dicit Dominus Deus tuus;
meque te minimè delectare, ait Dominus
Deus tuus: Eò quòd à ſeculo fregeris 20
jugum tuum, & vincula tua diſruperis, et
dixeris; Non me ſubjiciam, ſed ibo ad omnem
collem excelſum, & ſub omni arbore
umbrifera ibi delectabor in fornicatione
mea. Atqui ego plantaveram te vitem 21
fructiferam, omnino fidelem: quomodo degenerâſti
ſicut vitis aliena in amaritudinem? 22
Quamvis te nitro abſterſeris, &
multum ſmegmatis adhibueris tibi; nihilominus
contaminabo te coram me perverſitatibus
tuis, ait Dominus Deus tuus.

Textus ſecundus.

Quo pacto dicis, Non pollui me, & poſt 23
Baalem non abii? Conſidera vias tuas in
valle, & adverte quid agas. Vox ejus 24
ingemuit ſub veſperum, dilatavit vias
ſuas ſuper aquas deſerti cupiditatibus animæ
ſuæ, induit ſpiritum, dedidit ſeſe,
quis revocabit eam? omnes quærentes
eam, non fatigantur; in abjectione ipſius
invenient eam. Dicenti; *Revoca pedem* 25
tuum à via aſpera, & guttur tuum à ſiti;
reſpondet, Agam generosè: adamavit
enim exteros, eoſque ſecuta eſt. Quemadmodum 26
pudore ſuffunditur fur cùm
captus fuerit, ſic pudeſcent Iſraelitæ: ipſi
etiam & reges ac principes eorum, ſacerdotes
atque prophetæ eorum. Dicentes 27
ligno, Sanè tu pater meus es; &
lapidi, Tu me genuiſti. Obverterunt mihi
terga ſua, non facies; tempore tamen
malorum ſuorum dicunt, Exurge, libera
nos. At ubinam ſunt dii tui quos feciſti 28
tibi? num ſurgent, & liberabunt te
tempore adverſitatis tuæ? nam pro numero
urbium tuarum ſunt dii tui O Juda,
& pro numero compitorum Jeruſalem
ſacrificaverunt Baali.

ירמיה : ג

[illegible] contra [illegible] quid Ut
29 למה תריבו אלי כלכם פשעתם בי נאם
[illegible] *percussi tamen In* .Dominus
30 יהוה: לשוא הכיתי את בניכם מוסר לא לקחו
.generatio O [illegible] tanquam vestros prophetas vester gladius *comedit*
31 אכלה חרבכם נביאיכם כאריה משחית: הדור
[illegible] Israeli [illegible] Nunquid .Domini verbum videte vos
אתם ראו דבר יהוה המדבר הייתי לישראל אם
non jam Dominati meus populus dixerunt quare ? *[illegible] caliginis* terra
ארץ מאפליה מדוע אמרו עמי רדנו לוא
sponsa ,sui ornamenti virgo obliviscetur Nunquid .te ad ultrà veniemus
32 נבוא עוד אליך: התשכח בתולה עדיה כלה
.numero absque diebus mei sunt obliti meus populus & ? *suorum collariorum*
קשריה ועמי שכחוני ימים אין מספר:
malas etiam Ideo ?dilectione quærendũ ad ,tuã viam *bonificabis* Cur
33 מה תיטבי דרכך לבקש אהבה לכן גם את הרעות
animarum *sanguis* sunt inventi *tuis alis* in Etiam .tuas vias docuisti
34 למדתי את דרכיך: גם בכנפיך נמצאו דם נפשות
super sed ,*eos* invenisti perfossorio cum non : innocentum *egenorum*
אביונים נקיים לא במחתרת מצאתים כי על
ejus *nasus* est aversus *certè* ,sum innocens Quia : dixisti Et .his omnibus
35 כל אלה: ותאמרי כי נקיתי אך שב אפו
.peccavi Non *: te dicere super* *tecum subiens judicium* ego Ecce .me à
ממני הנני נשפט אותך על אמרך לא חטאתי:
Ægypto ab Etiam ? tuam viam *mutandum ad* *valde* *abibis* Cur
36 מה תזלי מאד לשנות את דרכך גם ממצרים
Etiam .Assur ab es affecta pudore quemadmodũ ,afficieris pudore
37 תבשי כאשר בשת מאשור: גם מאת
Dominus reprobavit quia : tuũ caput super tuæ manus & ,egredieris hinc
זה תצאי וידיך על ראשך כי מאס יהוה
.eis prosperaberis non & ,tuas confidentias *in*
במבטחיך ולא תצליחי להם:

CAP. III. ג

erit & ,eo *cum* ab *abibit* & ,suã uxorem vir *dimittet* *En* : *Dicendo*
1 לאמר הן ישלח איש את אשתו והלכה מאתו והיתה
prophanando Nónne ? amplius eam ad revertetur nunquid ,alterius viri
לאיש אחר הישוב אליה עוד הלוא חנוף
revertere sed : *multis* *sociis* es fornicata tu Et ? ista terra est *prophanata*
תחנף הארץ ההיא ואת זנית רעים רבים ושוב
: vide & ,loca *edita* ad tuos oculos Leva .Dominus dixit ,me ad
2 אלי נאם יהוה: שאי עיניך על שפים וראי
Harabs sicut ,eis sedisti viis *Super* ? *fueris constuprata* non ubi
איפה לא שגלת על דרכים ישבת להם כערבי
.*tua malitia in &* ,*tuis fornicationibus in* terram *prophanâsti* & ,deserto in
במדבר ותחניפי ארץ בזנותיך וברעתך:
mulieris frons & :fuerit non serotina pluvia & ,imbres sunt prohibiti Et
3 וימנעו רבבים ומלקוש לוא היה ומצח אשה
:me vocabis *nunc* ex Nónne .*pudefieri* renuisti ,tibi fuit meretricis
4 זונה היה לך מאנת הכלם: הלוא מעתה קראתי לי
,seculum in *observabit* Nunquid ? tu *mearũ adolescentiarũ* dux :meus Pater
5 אבי אלוף נערי אתה: הינטר לעולם
.potuisti & ,mala fecisti & ,es locuta Ecce ? æternum in servabit num
אם ישמר לנצח הנה דברתי ותעשי הרעות ותוכל:
vidisti Nunquid : regis Josijahu diebus in ,me ad Dominus dixit Et
6 ויאמר יהוה אלי בימי יאשיהו המלך הראית
montem omnem super ipsa *vadens* : Israel *refractaria* fecit quæ
אשר עשתה משבה ישראל הלכה היא על כל הר
.ibi est fornicata & ,frondosum lignum omne sub *ad* & ,excelsum
גבה ואל תחת כל עץ רענן ותזני שם:

Versio VUL. LAT.

29 Quid vultis mecũ judicio contendere? omnes dereliquistis 30 me, dicit Dñs. Frustrà pcussi filios vestros, disciplinã non receperunt: devoravit gladi⁹ vester prophetas vestros, quasi leo 31 vastatur Generatio vestra. Videte verbũ Dñi: Numquid solitudo fact⁹ sum Israeli, aut terra serotina? quarè ergò dixit popul⁹ me⁹; Recessim⁹, non venie32mus ultrà ad te? Numquid obliviscetur virgo ornamenti sui, aut sponsa fasciæ pectoralis suæ? popul⁹ verò me⁹ oblit⁹ est 33 mei dieb⁹ innumeris. Quid niteris bonã ostendere viã tuã ad quærendã dilectionẽ, quæ insup & malitias tuas docuisti vias 34 tuas, Et in alis tuis invent⁹ est sanguis animarũ pauperum & innocentũ? non in fossis inveni eos, sed in omnibus quæ suprà 35 memoravi. Et dixisti; Absque peccato & innocẽs ego sum: & propterea avertatur furor tu⁹ à me Ecce ego judicio contendã tecũ, eò ꝙ dixeris; Non pecca36vi. Quàm vilis facta es nimis, iterans vias tuas! & ab Ægypto confundêris, sicut confusa es ab 37 Assur. Nam & ab ista egredieris, & man⁹ tuæ erunt super caput tuum: quoniã obtrivit Dñs confidentiã tuam, & nihil habebis prosperum in ea.

CAP. III.

1 Vulgò dicitur; Si dimiserit vir uxorẽ suam, & recedens ab eo, duxerit virum alterũ: numquid revertetur ad eam ultrà? numquid non polluta et contaminata erit mulier illa? tu autẽ fornicata es cũ amatorib⁹ multis: tamen revertere ad me, di2cit Dñs, & ego suscipiã te. Leva oculos tuos in directũ, et vide ubi non prostrata sis: in viis sedebas, expectans eos quasi latro in solitudine: & polluisti terrã in fornicationib⁹ tuis, & 3 in malitiis tuis. Quam ob rem prohibitæ sunt stillæ pluviarũ, & serotin⁹ imber nõ fuit: frons mulieris meretricis facta est 4 tibi, noluisti erubescere. Ergò saltem amodò voca me; Pater me⁹, dux virginitatis meæ tu es: 5 Numquid irascêris in ppetuũ, aut pseverabis in finẽ? Ecce locuta es, et fecisti mala, et potui6sti. Et dixit Dñs ad me in dieb⁹ Josiæ regis; Numquid vidisti quæ fecerit aversatrix Israel? abiit sibimet super omnẽ montẽ excelsum, & sub omni ligno frondoso, & fornicata est ibi.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

29 Ἵνα τί λαλεῖτε πρός με; πάντες ὑμεῖς (δ) ἠσεβήσατε, καὶ πάντες ὑμεῖς ἠνομήσατε εἰς 30 ἐμέ, λέγει κύριος. Μάτην ἐπάταξα τὰ τέκνα ὑμῶν, παιδείαν οὐκ ἐδέξασθε, μάχαιρα κατέφαγε τοὺς προφήτας ὑμῶν ὡς λέ31ων (ε) ὀλοθρεύων, καὶ οὐκ ἐφοβήθητε. Ἀκούσατε (ζ) λόγον κυρίου· τάδε λέγει κύριος, Μὴ ἔρημος (η) ἐγενόμην τῷ Ἰσραὴλ ἢ γῆ κεχερσωμένη; διατί εἶπεν ὁ λαός μου, Οὐ (θ) κυριευθησόμεθα, καὶ οὐχ ἥξομεν πρὸς σὲ 32 ἔτι; Μὴ ἐπιλήσεται νύμφη τὸν κόσμον αὐτῆς, καὶ παρθένος τὴν στηθοδεσμίδα αὐτῆς; ὁ δὲ λαός μου ἐπελάθετό μου ἡμέρας ὧν οὐκ ἔ33στιν ἀριθμός. Τί ἔτι καλὸν ἐπιτηδεύσεις ἐν ταῖς ὁδοῖς σου, τοῦ ζητῆσαι ἀγάπησιν; οὐχ οὕτως· ἀλλὰ καὶ σὺ ἐπονηρεύσω τοῦ μι34ᾶναι τὰς ὁδούς σου, Καὶ ἐν ταῖς χερσί σου (ι) εὑρέθησαν αἵματα ψυχῶν ἀθῴων. οὐκ ἐν διορύγμασιν εὗρον αὐτούς, ἀλλ' (κ) ἐπὶ 35 πάσῃ δρυΐ. Καὶ εἶπας, Ἀθῷός εἰμι, ἀλλὰ ἀποστραφήτω ὁ θυμὸς αὐτοῦ ἀπ' ἐμοῦ. ἰδοὺ ἐγὼ κρίνομαι πρὸς σέ, ἐν τῷ λέγειν σε, 36 Οὐχ ἥμαρτον. Ὅτι κατεφρόνησας σφόδρα τοῦ δευτερῶσαι τὰς ὁδούς σου. καὶ ἀπὸ Αἰγύπτου καταισχυνθήσῃ, καθὼς κατῃσχύν37θης ἀπὸ Ἀσσούρ. Ὅτι καὶ ἐντεῦθεν ἐξελεύσῃ, καὶ αἱ χεῖρές σου ἐπὶ τῆς κεφαλῆς σου· ὅτι ἀπώσατο κύριος τὴν ἐλπίδα σου, καὶ οὐκ εὐοδωθήσῃ ἐν αὐτῇ.

MS.A. (δ) ἠνομήσατε εἰς (ε) ὀλεθρεύων, (ζ) τὸν λόγον (η) ἐγενόμην (θ) δουλευθησόμεθα, καὶ οὐκ (ι) εὑρέθη (κ) ἐν

ΚΕΦ. γ'.

1 Ἐὰν ἐξαποστείλῃ ἀνὴρ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ, καὶ ἀπέλθῃ ἀπ' αὐτοῦ, καὶ γένηται ἀνδρὶ ἑτέρῳ, μὴ ἀνακάμπτουσα ἀνακάμψει πρὸς αὐτὸν ἔτι; οὐ μιαινομένη μιανθήσεται ἡ γυνὴ ἐκείνη; καὶ σὺ ἐξεπόρνευσας ἐν ποιμέσι πολλοῖς, καὶ ἀνέκαμπτες πρός με, 2 λέγει κύριος. Ἆρον (α) τοὺς ὀφθαλμούς σου εἰς εὐθεῖαν, καὶ ἴδε, ποῦ οὐχὶ ἐξεφύρθης. ἐπὶ ταῖς ὁδοῖς (β) ἐκάθισας αὐτοῖς ὡσεὶ κορώνη (γ) ἐρημουμένη, καὶ ἐμίανας τὴν γῆν ἐν ταῖς πορνείαις (δ) σου καὶ ἐν ταῖς κακίαις σου. 3 Καὶ ἔσχες ποιμένας πολλοὺς εἰς πρόσκομμα σεαυτῇ. ὄψις πόρνης ἐγένετό (ε) σου, 4 ἀπηναισχύντησας πρὸς πάντας. Οὐχ ὡς οἶκόν με ἐκάλεσας, καὶ πατέρα καὶ ἀρχηγὸν 5 τῆς παρθενίας σου; Μὴ διαμενεῖ εἰς τὸν αἰῶνα, ἢ (ζ) φυλαχθήσεται εἰς νῖκος; ἰδοὺ ἐλάλησας, καὶ ἐποίησας τὰ πονηρὰ ταῦτα, καὶ 6 ἠδυνάσθης. Καὶ εἶπε κύριος πρός με ἐν ταῖς ἡμέραις (η) Ἰωσίου τοῦ βασιλέως, Εἶδες ἃ ἐποίησέ μοι ἡ κατοικία τοῦ Ἰσραήλ; ἐπορεύθησαν ἐπὶ πᾶν ὄρος ὑψηλόν, καὶ ὑποκάτω παντὸς ξύλου ἀλσώδους, καὶ ἐπόρνευσαν ἐκεῖ.

MS.A. (α) εἰς εὐθεῖαν τοὺς ὀφθαλμούς σου, λέγει κύριος, καὶ ἴδε, (β) ἐκάθισας (γ) ἠρημωμένη, (δ) σου. Καὶ ἔσχες (ε) σοι, ἀπηναισχύντησας (ζ) διαφυλαχθήσεται (η) Ἰωσία, Ἴδες

Ut quid loquimini ad me? Omnes vos impiè egistis, & omnes vos inique egistis in me dicit Dominus. Frustrà percussi filios vestros: disciplinam non recepistis. Gladius devoravit prophetas vestros, quasi leo vastator; & non timuistis. Audite verbum Domini: Hæc dicit Dominus; Nunquid solitudo facta sum Israeli; aut terra plena spinis? Cur dixit populus meus, Non serviemus, nec veniemus ultrà ad te? Nunquid obliviscetur sponsa ornamenti sui, & virgo fasciæ pectoralis suæ? Populus autem meus oblitus est mei diebus, quorum non est numerus. Quod adhuc bonum adinvenies in viis tuis ad quærendam dilectionem? Non sic. Sed & tu malignata es polluendo vias tuas: Et in manibus tuis inventi sunt sanguines animarum innocentium. Non in fossis inveni eos, sed in omni quercu. Et dixisti, Innocens sum: sed avertatur furor ejus à me. Ecce ego judicio contendo tecum, in dicendo te, Non peccavi: Quia contempsisti valdè, iterando vias tuas. Et ab Ægypto confunderis, sicut confusa es ab Assur: Quia & hinc egredieris, & manus tuæ super caput tuum: quoniam repulit Dominus spem tuam: & non prosperaberis in ea.

CAP. III.

Si (a) dimiserit vir uxorem suam, & recesserit ab eo, & facta fuerit viro alteri; nunquid revertens revertetur ad eum ultrà? Nónne inquinata inquinabitur mulier illa? Et tu fornicata es in pastoribus multis, & revertebaris ad me, dicit Dominus. Leva oculos tuos in directum, & vide, ubi non fueris permista. In viis sedebas, (b) eis quasi cornix deserta. Et (c) polluisti terram in fornicationibus tuis, & in malitiis tuis: Et habuisti pastores multos in offensionem tibi. Facies tua facta est meretricis: sine pudore facta es ad omnes. Nónne tanquam domum me vocasti, & patrem, & ducem virginitatis tuæ? Nunquid permanebit in perpetuum, aut conservabitur in victoriam? Ecce loquuta es, & fecisti mala hæc, & potuisti. Et dixit Dominus ad me in diebus Josiæ regis; Vidisti, quæ fecit mihi domus Israel? Ivere super omnem montem excelsum, & subter omne lignum frondosum, & fornicati sunt ibi.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

29 למה אתון מדמן למדן לקבל פתגמי כולכון מרדתון במימרי אמר יי: למגן אלקיתי ית
30 בניכון אולפן לא קבילו קטלת חרבכון נבייכון כאריא דמחבל: עם דרא אתון קבילו
31 פתגמא דיי הא כמדבר צדי דלית ביה הנאה הוה מימרי לישראל אם כארע חורבא
32 מה דין אמרו עמי אטלטלנא לא נתוב עוד לפולחנך: האפשר דתתנשי בתולתא
33 תקונה כלתא קשוטהא ועמי שבקו פלחני יומין דלא מנין: מה את משתפרא בארחתיך
34 למעבד רחמי לאתחברא בעממיא בכן אף ית בישן אלפת מן ארחתיך: אף בסתרא
אשתכחת דאשדת דם זכי דם נפשת דמסכנין זכאין לא כמה דמשכחין במחתרתא
35 אלהן על כל אלין עבדת: ואמרת ארי זכיתי ברם תב רוגזיה מני הא אנא עביד עמך
36 פורענות דין על דאמרת לא חטיתי: מה את מסתכלא לחדא לקלקלא ית אורחתיך
37 אף ממצרים תבהתין כמה דבהתת מאתוראה: אף מלות דין תפקין ובהתת חוביך
על רישיך ארי רחיק יי רוחצניך ולא תצלחין להון:

ג

1 למימר הא יפטר גבר ית אתתיה ותהך מלותיה ותהי לגבר אוחרן האפשר דיתוב
לותה עוד הלא מחב תחוב ארעא ההיא ואת טעית ואתחברת לעממין סגיאין
2 ותובי מכען לפולחני אמר יי: זקופי עינך על נגדין וחזא היכא לא אתחברת ליך
למפלח לטעותא על אורחת בית משריהון אורכת להון כערבאי דשרן בשכונין
3 במדברא וחיבת ארעא בטעותיך ובבשתיך: ואתמנעו רסיסיא ומלקושא לא
4 הוה וחוצפא כאתתא נפקת ברא הוה ליך מסרבת לאתכנעא: הלא מכען תצלן
5 קדמי רבוני את פרקי דמן עלמא: האפשר דתנטרון ליך חוביך לעלם אם תתקף
6 עלך מחא לאפריש הא מללת ועבדת בישין ואסגית: ואמר יי לי ביומי יאשיהו
מלכא החזיתא מה דעבדו דמתחסנין למתב לפולחני דבית ישראל אזלין אנון על
כל רמא מנטלא ולתחות כל אילן עבוף ופלחין אנון לטעותא:

PARAPH CHALD. Versio Latina.

Quare vos putatis judicio contendere adversus verba mea? omnes vos prævaricati estis in Verbũ meũ, dicit Dñs. Frustrà percussi filios vestros, disciplinã non susceperunt: occîdit gladius vester prophetas vestros quasi leo qui devastat. Popule generationis, vos suscipite verbũ Dñi: nunquid sicut solitudo deserta in qua nulla est utilitas, fuit Verbũ meũ Israeli, aut sicut terra vasta? quare dixerunt popul⁹ me⁹, Migravimus, non revertemur ultrà ad cultũ tuũ? Num fieri potest ut obliviscatur virgo ornamenti sui, aut sponsa ornat⁹ sui? & popul⁹ me⁹ reliquerunt timorẽ mei diebus sine numero. Et quid gloriaris in viis tuis, *ut facias amores*, ut jungaris populis? insup & mala docuisti ex viis tuis. In occulto quoque inventa es effudisse sanguinẽ innocentẽ, sanguinẽ animarũ pauperũ innocentũ: non sicut inveniunt in fossa, sed ob hæc omnia fecisti. Et dixisti, Quoniam innocens sum, veruntamẽ aversus est furor ejus à me. Ecce ego faciã tecũ ultionẽ judicii eò quod dixisti, Non peccavi. Quare tu contemplaris admodũ ad commutandã viã tuã? etiã ab Ægypto confundêris, sicut confusa es ab Assur. Etiam ex hoc egredieris, & confusio peccati tui super caput tuum: quia procul summovit Dominus fiduciam tuam, & non prosperaberis in eis.

CAP. III.

Dicendo: Si dimiserit vir uxorẽ suã, & abierit ab eo, & nupserit viro alteri, nunquid revertetur ad eã ultrà? nónne peccando peccabit terra illa? & tu fornicata es & adjunxisti te populis multis: tamẽ revertere jam ab hoc tempore ad cultũ meũ, dicit Dñs. Tolle oculos tuos ad loca edita, & vide ubi non te junxisti ut coleres idola: sup viã dom⁹ mansionis eorũ expectabas ea, sicut Arabes qui morantur in tabernaculis in deserto, & polluisti terrã in idolis tuis, & in malitia tua. Et prohibitæ sunt guttæ pluviæ & serotinus imber non fuit: & impudentia quasi mulieris meretricis fuit tibi: noluisti tete humiliare. Ab hoc tempore utique orabis corã me *cens:*] Dñs me⁹ es tu, redẽptor me⁹, qui à seculo es. Num fieri potest ut reserventur tibi peccata *tua* in æternũ, aut roborabitur sup te plaga in finem? ecce locuta es, & fecisti mala, & multiplicasti. Et dixit Dominus ad me in diebus Iosiæ regis: Nunquid vidisti quid fecerit domus Israel, quæ induratur ut convertatur ad cultum meum? Abeunt ipsi super omnem collem excelsum & sub omne lignum frondosum, & colunt *lignea idola*.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܠܡܢܐ ܕܝܢܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܡܝ܂ ܟܠܟܘܢ ܟܦܪܬܘܢ ܒܝ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܡܣܪܝܩܐܝܬ ܡܚܝܬ
ܠܒܢܝܟܘܢ܂ ܘܡܪܕܘܬܐ ܠܐ ܩܒܠܘ܂ ܘܐܟܠܬ ܚܪܒܐ ܠܢܒܝܝܟܘܢ܂ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܡܚܒܠܐ
* ܫܪܒܬܐ ܚܙܘ܂ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܕܠܡܐ ܡܕܒܪܐ ܗܘܝܬ ܠܐܝܣܪܝܠ܂ ܐܘ ܐܝܟ ܐܪܥ
ܨܕܝܐ܂ ܡܛܠ ܡܢܐ ܐܡܪܘ ܥܡܝ܂ ܢܚܬܢ܂ ܠܐ ܢܐܬܐ ܬܘܒ ܠܘܬܟ܂ * ܕܠܡܐ ܛܥܝܐ ܒܬܘܠܬܐ ܨܒܬ
ܬܨܒܝܬܗ܂ ܘܟܠܬܐ ܩܘܫܪܝܗ܂ ܥܡܝ ܕܝܢ ܛܥܝܢܝ܂ ܝܘܡܬܐ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܡܢܝܢܐ܂ * ܡܢ
ܗܘ ܡܬܩܢܢ ܐܘܪܚܬܟܝ ܠܡܒܥܐ ܪܚܡܬܐ܂ ܗܐ ܐܦ ܒܝܫܬܐ ܝܠܦܬܝ ܒܐܘܪܚܬܟܝ܂
* ܐܦ ܒܐܝܕܝܟܝ ܐܫܬܟܚ ܕܡܐ ܕܢܦܫܬܐ ܕܡܣܟܢܐ ܙܟܝܐ܂ ܠܐ ܗܘܐ ܒܡܚܬܪܬܐ ܐܫܟܚܬ
ܐܢܘܢ܂ ܐܠܐ ܬܚܝܬ ܟܠ ܐܝܠܢ܂ * ܘܐܡܪܬܝ ܕܙܟܝܬ ܐܢܐ܂ ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܦܟ ܪܘܓܙܗ ܡܢ
ܡܢܝ܂ ܗܐ ܐܢܐ ܕܐܢ ܐܢܐ ܥܡܟܝ܂ ܥܠ ܕܐܡܪܬܝ ܠܐ ܚܛܝܬ܂ * ܡܢܐ ܛܒ ܐܙܠܬܝ ܠܡܫܢܝܘ
ܐܘܪܚܬܟܝ܂ ܐܦ ܡܢ ܡܨܪܝܢ ܬܒܗܬܝܢ܂ ܐܝܟ ܕܒܗܬܬܝ ܡܢ ܐܬܘܪ܂ * ܐܦ ܡܢ ܗܢܐ
ܬܦܩܝܢ ܟܕ ܐܝܕܝܟܝ ܥܠ ܪܫܟܝ܂ ܡܛܠ ܕܣܠܝ ܡܪܝܐ ܠܬܘܟܠܢܟܝ܂ ܘܠܐ ܬܨܠܚܝܢ ܒܗܘܢ܂ * ܩܦܠܐܘܢ ܓ *
* ܘܐܢ ܢܫܒܘܩ ܓܒܪܐ ܐܢܬܬܗ܂ ܘܬܐܙܠ ܡܢ ܠܘܬܗ ܘܬܗܘܐ ܠܓܒܪܐ ܐܚܪܢܐ܂ ܘܬܗܦܘܟ ܬܘܒ
ܠܘܬܗ܂ ܗܐ ܡܛܢܦܘ ܡܛܢܦܐ ܐܪܥܐ ܗܝ܂ ܘܐܢܬܝ ܙܢܝܬܝ ܥܡ ܪܥܘܬܐ
ܣܓܝܐܐ܂ ܗܦܘܟܝ ܠܘܬܝ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܐܪܝܡܝ ܥܝܢܝܟܝ ܠܫܒܝܠܐ܂ ܘܚܙܝ ܐܝܟܐ ܠܐ
ܐܬܛܢܦܬܝ܂ ܥܠ ܐܘܪܚܬܐ ܝܬܒܬܝ ܠܗܘܢ܂ ܐܝܟ ܦܪܚܬܐ ܒܡܕܒܪܐ܂ ܘܛܢܦܬܝ ܐܪܥܐ
ܒܙܢܝܘܬܟܝ܂ ܘܒܒܝܫܘܬܟܝ܂ * ܘܐܬܟܠܝܘ ܪܣܣܐ܂ ܘܥܣܒܐ ܠܐ ܗܘܐ܂ ܘܒܝܬ ܥܝܢܐ ܕܐܢܬܬܐ
ܙܢܝܬܐ ܗܘܐ ܠܟܝ܂ ܘܠܐ ܨܒܝܬܝ ܠܡܬܟܣܘ܂ * ܗܐ ܡܟܝܠ ܩܪܝܬܝ ܐܒܝ ܐܢܬ܂ ܘܡܪܒܝܢܝ
ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ ܐܢܬ܂ * ܕܠܡܐ ܢܛܪ ܠܥܠܡ܂ ܐܘ ܢܛܪ ܠܥܠܡܝܢ ܚܪܝܢܟܝ܂
ܗܐ ܡܠܠܬܝ ܘܥܒܕܬܝ ܒܝܫܬܐ܂ ܘܐܬܚܝܠܬܝ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ ܒܝܘܡܝ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ܂ ܚܙܝܬ
ܡܕܡ ܕܥܒܕܬ ܡܫܘܒܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܐܙܠܬ ܗܝ ܥܠ ܟܠ ܛܘܪ ܪܡ܂ ܘܬܚܝܬ
ܟܠ ܐܝܠܢ ܥܒܝܛ܂ ܘܙܢܝܬ ܬܡܢ܂

Quare contenditis mecum? omnes me dene-
gaſtis, ait Dominus. Fruſtrà percuſſi filios 29
veſtros, nam diſciplinam haud receperunt: 30
conſumpſit gladius prophetas veſtros tan-
quam leo vaſtans. Vos ô generatio, audite
ſermonem Domini; Nunquid ſolitudo factus 31
ſum Iſraeli, aut ſicut terra deſerta? quam ob
rem dicunt populus meus, Deſcendimus, non
ſumus ampliùs ad te venturi? Num oblivi-
ſcitur virgo blanditiarum ſuarum, aut ſponſa 32
ornamenti ſui? populus verò meus obliti
ſunt mei diebus innumeris. Cur adhuc paras
vias tuas ad quærendum amorem, cùm ecce 33
tum malum didiceris in viis tuis, Tum etiam
in manibus tuis inventus ſit ſanguis anima- 34
rum pauperculorum innocentium, quos ne-
quaquam in furto deprehendiſti, ſed ſub qua-
cunq; arbore? Quia tamē dicis, Innoxia ſum,
ideoq; avertit iram ſuā à me; ecce te judico, 35
eò quòd dicas, Non peccavi. Quorſum gravi-
oribus implicaris obſcœnitatibus repetendo 36
vias tuas? etiam ab Ægypto erubeſces, quem-
admodum erubuiſti ab Aſſur. Etiam ab hoc
diſcedes manibus tuis capiti tuo impoſitis: 37
quia iratus eſt Dominus fiduciam tibi præ-
bentibus, neque proſpera eris per eos.

CAP. III.

ET verò ſi quis dimittat uxorem ſuam, &
illa diſcedens ab eo nubat viro alteri, ſi de- 1
nuo revertatur ad eam, ecce planè polluere-
tur terra illa. Tu verò licèt ſcortata ſis cum
paſtoribus multis, revertere ad me, dicit Do-
minus. Attolle oculos tuos in compita, & vi- 2
de ubi vitiata fueris: juxta vias ſediſti illis
tanquam corvus in deſerto. Polluiſti terram
ſcortatione tuâ; Et propter malitiam tuam
cohibiti ſunt rores, nec fuit gramen: frons 3
mulieris ſcortantis fuit tibi, & argui noluiſti.
Ecce poſthac vocatura es me, *dicens*, Pater
meus, educator meus à pueritia mea tu es. 4
Nunquid ſervabitur in æternum, aut in ſecula
aſſervabitur *pertinacia tua*? ecce locuta es 5
& feciſti malum, & prævaluiſti. Dixitque
mihi Dominus in diebus Joſiæ regis, Vi- 6
diſtine quid fecerit habitatrix Iſraelis? abiit
hac ad omnem montem ſublimem & ſub-
ter omnem arborem condenſam, ibíque ſcor-
tata eſt:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لماذا تتكلمون علي جميعا * أثمتم إلي يقول الرب * ضربت أولادكم باطلا ولم يقبلوا أدبا
السيف أكل أنبياءكم مثل أسد ضار ولم تخافوا * اسمعوا كلمة الرب * هكذا يقول الرب
هل صرت برية لإسرائيل أو أرضا بورا * لماذا قال شعبي لا نستعبد ولا نأتي إليك أيضا * هل
تنسي العروس زينتها والعذري رباط صدرها فأما شعبي نسيني أياما ليس لها عدد * لماذا
تعملين جيدا في طرقاتك أيضا لتطلبي حبا * ليس هكذا لكن أنت زنيت لتنجسي
طرقاتك * وفي يديك وجد دم نفوس الأزكياء * لا في ثقوب وجدتهم لكن في كل بلوطة
* وقلت أنا بريئة هكذا ليرجع غضبه عني * ها أنا أحاكمك معك عند ما قلت لم أخط
* لأنك ازدريتي جدا لتنسي طرقاتك ومن مصر تخزي كما خزيت من الموصل * لأنك
هناك خرجت ويداك على رأسك * لأن الرب أقصى رجاك فلم تقوم طرقك *

* الفصل الثالث *

* إذا سرح رجل امرأته وبانت عنه وصارت لرجل آخر * هل تعود إليه راجعة أيضا * أ
تنجس تلك المرأة وتصير نجسة * وأنت زنيت برعاة كثيرين وترجعين إلي يقول
* ارفعي لحاظك باستقامة يقول الرب وانظري أين أليس عجبت في الطرقات التي
فهن مثل غداف بري * ونجست الأرض بزناك * وسكت رعاة كثيرين عن
صار لك وجه زانية وصفيقة للكل * أليس مثل بنت تدعوني أنا وربيبا لبدو
* هل تدوم إلى الأبد أو تحفظ للغاية * ها تكلمت وصنعت هذه الشرور وقويت *
الرب في أيام يوسيا * نظرت ما صنعت في ساكنة إسرائيل * مضوا على كل ج
وتحت كل شجرة ظليلة وزنوا هناك *

*Quarè de me loquimini vos omnes? 29
peccâſtis in me, dicit Dominus. Fru-
ſtrà percuſſi filios veſtros, non acce- 30
perunt eruditionem: gladius devoravit
prophetas veſtros ut leo perniciosus, at-
tamen non timetis. Audite verbum Do- 31
mini: Sic ait Dominus, An factus ſum
deſertum Iſraelis? an tellus inculta? cur
dixit populus meus, Nequaquam ſubji-
ciemus nos, nec ultrà veniemus ad te?
Num obliviſcitur ſponſa ornatûs ſui, aut 32
virgo faſciæ pectoris ſui? at populus
meus oblitus eſt mei diebus innumeris.
Cur adhuc bonum facis in viis tuis, ut 33
quæras amicitiam? Non ita, ſed tu ſcor-
tata es, ut contaminares vias tuas; Et 34
in manibus tuis inventus eſt ſanguis ani-
marum innocentium, quos non in rimis
inveniſti, ſed in omni quercu: Attamen 35
dicis, Innoxia ſum hoc pacto, avertatur
à me ira ejus. Ecce ego litigaturus ſum
tecum, eò quòd dicas, Non peccavi.
Nam plurimum te negligis, ut obliviſca- 36
ris viarum tuarum, & ab Ægypto repor-
tes pudorem, uti pudefacta es ab Aſſy-
ria: Nam illinc egreſſa es manibus tuis 37
capiti tuo impoſitis. Quia Dominus pro-
cul removit ſpem tuam, ideò non erunt
rectæ viæ tuæ.*

CAP. III.

*SI dimiſerit quis uxorem ſuam, & illa 1
ab eo ſeparata nupſerit alteri viro, num
denuò rediens ad eum reverteretur? an
non contaminaretur illa mulier, fierétque
polluta? Tu igitur quæ multis cum paſto-
ribus fornicata es, ad me reverteris,
dicit Dominus? Tuos intuitus rectà eri- 2
ge, dicit Dominus, & aſpice ubinam. Nón-
ne conflata es in viis in quibus ſedebas
tanquam corvus ſylveſtris, & contami-
naſti te una fornicationibus tuis, Et ad 3
hæſiſti paſtoribus multis in offendiculum?
Propterea facta eſt tibi frons meretricia,
& impudenter cum omnibus te geſſiſti.
Annon ut filia vocabis me patrem & du- 4
cem virginitatis tuæ? Num æternùm du- 5
rabit, aut in finem uſque aſſervabitur hæc
impudentia tua? ecce locuta es & tan-
ta mala commiſiſti, atque invaluiſti. Præ- 6
terea dixit mihi Dominus in diebus Jo-
ſiæ, Vidiſtine quid fecerit mihi habitatrix
Iſraelis? Iverunt ſuper omnem montem
excelſum, & ſub omnem arborem um-
broſam, ibique fornicatæ ſunt.*

ירמיה׃ ג

non & ,revertaris me Ad : hæc omnia eam facere poſt , dixi Et
7 וָאֹמַר אַחֲרֵי עֲשׂוֹתָהּ אֶת־כָּל־אֵלֶּה אֵלַי תָּשׁוּב וְלֹא־
ſuper quòd vidi Et .Jehudah ejus ſoror prævaricatrix vidit Et .eſt reverſa
8 שָׁבָה וַתִּרְאֶה בָּגוֹדָה אֲחוֹתָהּ יְהוּדָה׃ וָאֵרֶא כִּי עַל־
,eam dimiſi , Iſrael *refractaria adulterium commiſit* quibus ,cauſas omnes
כָּל־אֹדוֹת אֲשֶׁר נִאֲפָה מְשֻׁבָה יִשְׂרָאֵל שִׁלַּחְתִּיהָ
prævaricatrix timuit non & : eam ad ejus *excidiorum* libellum dedi &
וָאֶתֵּן אֶת־סֵפֶר כְּרִיתֻתֶיהָ אֵלֶיהָ וְלֹא יָרְאָה בֹּגֵדָה
levitate à fuit Et .ipſa etiam eſt fornicata &,abiit &,ejus ſoror Jehudah
9 יְהוּדָה אֲחוֹתָהּ וַתֵּלֶךְ וַתִּזֶן גַּם־הִיא׃ וְהָיָה מִקֹּל
lapide cum eſt mœchata & : terram *prophanavit* &,ſuæ fornicationis
זְנוּתָהּ וַתֶּחֱנַף אֶת־הָאָרֶץ וַתִּנְאַף אֶת־הָאֶבֶן
me ad eſt reverſa non hoc omni cum etiam Et .ligno &
10 וְאֶת־הָעֵץ׃ וְגַם־בְּכָל־זֹאת לֹא־שָׁבָה אֵלַי
, *falſitate in quimimo* ,ſuo corde toto in Jehudah ejus ſoror prævaricatrix
בָּגוֹדָה אֲחוֹתָהּ יְהוּדָה בְּכָל־לִבָּהּ כִּי אִם־בְּשֶׁקֶר
ſuam animam Juſtificavit:me ad Dominus dixit Et .Dominus dixit
11 נְאֻם־יְהוָה׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלַי צִדְּקָה נַפְשָׁהּ
clamabis & , Vade .Jehudah *prævaricatrice præ* , Iſrael *refractaria*
12 מְשֻׁבָה יִשְׂרָאֵל מִבֹּגֵדָה יְהוּדָה׃ הָלֹךְ וְקָרָאתָ
refractaria Revertere : *dices* & , Aquilonem ad iſtos ſermones
אֶת־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה צָפֹנָה וְאָמַרְתָּ שׁוּבָה מְשֻׁבָה
quia : vos in *meas facies* cadere faciam non : Dominus dixit , Iſrael
יִשְׂרָאֵל נְאֻם־יְהוָה לוֹא־אַפִּיל פָּנַי בָּכֶם כִּי־
Veruntamen .ſeculum in ſervabo non : Dominus dixit , *ego benignus*
13 חָסִיד אֲנִי נְאֻם־יְהוָה לֹא אֶטּוֹר לְעוֹלָם׃ אַךְ
: es prævaricata tuum Deum Dominum in quia ,tuam iniquitatem ſcito
דְּעִי עֲוֹנֵךְ כִּי בַּיהוָה אֱלֹהַיִךְ פָּשָׁעַתְּ
mea voce in &,*frondoſo* ligno omni ſub alienis tuas vias ſparſiſti &
וַתְּפַזְּרִי אֶת־דְּרָכַיִךְ לַזָּרִים תַּחַת כָּל־עֵץ רַעֲנָן וּבְקוֹלִי
dixit ,*refractarii* filii Convertimini .Dominus ait ,audiſtis non
14 לֹא־שְׁמַעְתֶּם נְאֻם־יְהוָה׃ שׁוּבוּ בָנִים שׁוֹבָבִים נְאֻם־
unum , vos aſſumam & : vobis in *fui patronus* ego quia : Dominus
יְהוָה כִּי אָנֹכִי בָּעַלְתִּי בָכֶם וְלָקַחְתִּי אֶתְכֶם אֶחָד
dabo Et .Sijon vos introducam & ,familia de duos &,civitate de
15 מֵעִיר וּשְׁנַיִם מִמִּשְׁפָּחָה וְהֵבֵאתִי אֶתְכֶם צִיּוֹן׃ וְנָתַתִּי
.intellectu & ſcientia vos paſcent &:meum cor juxta paſtores vobis
לָכֶם רֹעִים כְּלִבִּי וְרָעוּ אֶתְכֶם דֵּעָה וְהַשְׂכֵּיל׃
diebus in , terra in *fructificati fueritis* &,fueritis multiplicati cùm ,erit Et
16 וְהָיָה כִּי תִרְבּוּ וּפְרִיתֶם בָּאָרֶץ בַּיָּמִים
,Domini fœderis Arca : ultrà dicent non , Dominus dixit , illis
הָהֵמָּה נְאֻם־יְהוָה לֹא־יֹאמְרוּ עוֹד אֲרוֹן בְּרִית יְהוָה
nec ,viſitabunt nec ,*eo in* recordabuntur neque ,cor ſuper aſcendet nec
וְלֹא יַעֲלֶה עַל־לֵב וְלֹא יִזְכְּרוּ־בוֹ וְלֹא יִפְקֹדוּ וְלֹא
,Domini ſolium Jeruſalaim vocabunt illo tempore In .ultrà fiet
17 יֵעָשֶׂה עוֹד׃ בָּעֵת הַהִיא יִקְרְאוּ לִירוּשָׁלַםִ כִּסֵּא יְהוָה
.Jeruſalaim in Domini nomine in gentes omnes eam ad ſe congregabũt &
וְנִקְווּ אֵלֶיהָ כָל־הַגּוֹיִם לְשֵׁם יְהוָה לִירוּשָׁלִָם
diebus In .mali ſui cordis *obſtinationem* poſt ultrà ambulabunt non Et
18 וְלֹא־יֵלְכוּ עוֹד אַחֲרֵי שְׁרִרוּת לִבָּם הָרָע׃ בַּיָּמִים
ſimul venient & : Iſrael domum ad Jehudah domus ibunt illis
הָהֵמָּה יֵלְכוּ בֵית־יְהוּדָה עַל־בֵּית יִשְׂרָאֵל וְיָבֹאוּ יַחְדָּו
.veſtros patres feci ſortiri quam terram ad Aquilonis terra de
מֵאֶרֶץ צָפוֹן עַל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר הִנְחַלְתִּי אֶת־אֲבוֹתֵיכֶם׃
tibi tribuam & , filios in te ponam Quomodo : dixi ego Et
19 וְאָנֹכִי אָמַרְתִּי אֵיךְ אֲשִׁיתֵךְ בַּבָּנִים וְאֶתֶּן־לָךְ
: dixi Et ?gentium exercituum *elegantiæ* hæreditatem , *deſiderii* terram
אֶרֶץ חֶמְדָּה נַחֲלַת צְבִי צִבְאוֹת גּוֹיִם וָאֹמַר
.retrocedes non me *poſt* à & ,me vocabis meum Patrem
אָבִי תִּקְרְאִי־לִי וּמֵאַחֲרַי לֹא תָשׁוּבִי׃

Verſio VULG. LAT.

7 Et dixi, cùm feciſſet hæc omnia;
Ad me revertere: & non eſt reverſa.
Et vidit prævaricatrix ſoror
8 ejus Juda, Quia pro eo, quòd
mœchata eſſet averſatrix Iſrael,
dimiſiſſem eam, & dediſſem ei
libellum repudii: & non timuit
prævaricatrix Juda ſoror ejus,
ſed abiit, & fornicata eſt etiam
9 ipſa. Et facilitate fornicationis
ſuæ contaminavit terram, &
mœchata eſt cum lapide & ligno.
10 Et in omnibus his non
eſt reverſa ad me prævaricatrix
ſoror ejus Juda in toto corde ſuo,
ſed in mendacio, ait Dominus.
11 Et dixit Dominus ad me; Juſtificavit
animam ſuam averſatrix
Iſrael, comparatione prævaricatricis
12 Judæ. Vade, & clama ſermones
iſtos contra Aquilonem,
& dices; Revertere averſatrix
Iſrael, ait Dominus, & non avertam
faciem meam à vobis:
quia ſanctus ego ſum, dicit Dominus,
& non iraſcar in perpetuum.
13 Veruntamen ſcito iniquitatem
tuam, quia in Dominum
Deum tuum prævaricata es:
& diſperſiſti vias tuas alienis
ſub omni ligno frondoſo, & vocem
meam non audiſti, ait Dominus.
14 Convertimini filii revertentes,
dicit Dominus; quia
ego vir veſter: & aſſumam vos
unum de civitate, & duos de
cognatione, & introducam vos
15 in Sion. Et dabo vobis paſtores
juxta cor meum, & paſcent
16 vos ſcientiâ & doctrinâ. Cúmque
multiplicati fueritis, & creveritis
in terra in diebus illis,
ait Dominus: non dicent ultrà,
Arca teſtamenti Domini: neque
aſcendet ſuper cor, neque recordabuntur
illius: nec viſitabitur,
17 nec fiet ultrá. In tempore
illo vocabunt Jeruſalem, Solium
Domini: & congregabuntur
ad eam omnes Gentes in nomine
Domini in Jeruſalem, &
non ambulabunt poſt pravitatem
18 cordis ſui peſſimi. In diebus
illis ibit domus Juda ad domum
Iſrael, & venient ſimul
de terra Aquilonis, ad terram
quam dedi patribus veſtris.
19 Ego autem dixi; Quomodò ponam
te in filios, & tribuam tibi
terram deſiderabilem, hæreditatem
præclaram exercituum Gentium?
Et dixi; Patrem vocabis
me, & poſt me ingredi non ceſſabis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 Καὶ εἶπα, μετὰ τὸ πορνεῦσαι αὐτὴν (θ)
ταῦτα πάντα, Πρός με ἀνάστρεψον. καὶ
οὐκ ἀνέστρεψε· καὶ εἶδε τὴν ἀσυνθεσίαν αὐτῆς
8 ἡ ἀσύνθετος Ἰούδα. Καὶ εἶδον, (ι)
ὅτι περὶ πάντων ὧν κατελήφθη ἐν οἷς
ἐμοιχᾶτο ἡ κατοικία (κ) Ἰσραὴλ, καὶ
ἐξαπέστειλα αὐτὴν, καὶ ἔδωκα αὐτῇ βιβλίον
ἀποστασίου εἰς τὰς χεῖρας αὐτῆς·
καὶ οὐκ ἐφοβήθη ἡ ἀσύνθετος Ἰούδα, καὶ
9 ἐπορεύθη, καὶ ἐπόρνευσε καὶ αὐτή. Καὶ ἐγένετο
εἰς οὐθὲν ἡ πορνεία αὐτῆς, καὶ ἐμοίχευσε
10 τὸ ξύλον καὶ τὸν λίθον. Καὶ ἐν πᾶσι
τούτοις οὐκ (ʺ)ἐπεστράφη πρός με ἡ ἀσύνθετος
Ἰούδα ἐξ ὅλης τῆς καρδίας αὐτῆς,
11 ἀλλ᾽ ἐπὶ ψεύδει. Καὶ εἶπε κύριος πρός
με, Ἐδικαίωσε τὴν ψυχὴν αὐτοῦ Ἰσραὴλ
12 ἀπὸ τῆς ἀσυνθέτου Ἰούδα. (λ) Πορεύου καὶ
ἀνάγνωθι τοὺς λόγους τούτους (μ) πρὸς Βοῤῥᾶν,
καὶ ἐρεῖς, Ἐπιστράφηθι πρός με ἡ
κατοικία τοῦ Ἰσραὴλ, λέγει κύριος. καὶ
(ν) μὴ στηριῶ τὸ πρόσωπόν μου ἐφ᾽ ὑμᾶς,
ὅτι (ξ) ἐλεήμων ἐγώ εἰμι, λέγει κύριος,
13 καὶ οὐ μηνιῶ ὑμῖν εἰς τὸν αἰῶνα. Πλὴν,
γνῶθι τὴν ἀδικίαν σου, ὅτι εἰς κύριον τὸν
θεόν σου ἠσέβησας, καὶ διέχεας τὰς ὁδούς
σου εἰς ἀλλοτρίους ὑποκάτω παντὸς
ξύλου ἀλσώδους, τῆς δὲ φωνῆς μου (ο) οὐχ
14 ὑπήκουσας, λέγει κύριος. Ἐπιστράφητε
υἱοὶ ἀφεστηκότες, λέγει κύριος, διότι (π)
ἐγὼ κατακυριεύσω ὑμῶν, καὶ λήψομαι ὑμᾶς
ἕνα ἐκ πόλεως καὶ δύο ἐκ πατριᾶς,
15 καὶ εἰσάξω ὑμᾶς εἰς Σιὼν, Καὶ δώσω ὑμῖν
ποιμένας κατὰ τὴν καρδίαν μου, καὶ ποιμανοῦσιν
ὑμᾶς (ρ) ποιμαίνοντες μετ᾽ ἐπιστήμης.
16 Καὶ ἔσται ἐὰν πληθυνθῆτε, καὶ αὐξηθῆτε
ἐπὶ τῆς γῆς, (σ) λέγει κύριος, ἐν ταῖς ἡμέραις
ἐκείναις οὐκ ἐροῦσιν ἔτι, Κιβωτὸς
διαθήκης ἁγίου Ἰσραὴλ, οὐκ ἀναβήσεται
ἐπὶ καρδίαν, (τ) οὐκ ὀνομασθήσεται, οὐδὲ
17 ἐπισκεφθήσεται, καὶ οὐ ποιηθήσεται ἔτι. Ἐν ταῖς
ἡμέραις ἐκείναις, καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ
καλέσουσι τὴν Ἱερουσαλὴμ, Θρόνον κυρίου·
καὶ συναχθήσονται (υ) πάντα τὰ ἔθνη εἰς
αὐτὴν, καὶ οὐ πορεύσονται ἔτι ὀπίσω τῶν (¯)ἐνθυμημάτων
τῆς καρδίας αὐτῶν τῆς πονηρᾶς.
18 (φ) Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις (χ) συνελεύσονται
ὁ οἶκος Ἰούδα ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ,
καὶ ἥξουσιν ἐπὶ τὸ αὐτὸ ἀπὸ γῆς Βοῤῥᾶ
(ψ) καὶ ἀπὸ πασῶν τῶν χωρῶν ἐπὶ τὴν
γῆν, ἣν (ω) κατεκληρονόμησα τοὺς πατέρας
19 αὐτῶν· Καὶ ἐγὼ εἶπα, Γένοιτο κύριε·
ὅτι τάξω σε εἰς τέκνα, καὶ δώσω
σοι γῆν ἐκλεκτὴν, κληρονομίαν θεοῦ
παντοκράτορος ἐθνῶν· (a) καὶ εἶπα, Πατέρα
καλέσετέ με, καὶ ἀπ᾽ ἐμοῦ οὐκ ἀποστραφήσεσθε.

Et dixi, poſtquàm fornicata eſt
ipſa hæc omnia; Ad me revertere.
Et non eſt reverſa. Et vidit præ-
varicationem ejus prævaricatrix Ju-
da. Et (g) viderunt, quia pro o-
mnibus, in quibus deprehenſa eſt,
in quibus mœchata eſt domus Iſ-
rael; & dimiſi eam, & dedi ei
libellum repudii, in manus ejus.
Et non timuit prævaricatrix Ju-
da: & ivit, & fornicata eſt eti-
am ipſa: Et facta eſt in nihilum
fornicatio ipſius: & mœchata eſt
lignum, & lapidem. Et in omni-
bus his non eſt reverſa ad me præ-
varicatrix Juda ex toto corde
ſuo, ſed in mendacio. Et dixit
Dominus ad me; Juſtificavit ani-
mam ſuam Iſrael præ prævarica-
trice Juda: Vade, & lege ſer-
mones iſtos contra Aquilonem, &
dices; Revertere ad me domus
Iſrael, dicit Dominus: & non fir-
mabo faciem meam ſuper vos:
quia miſericors ego ſum, dicit Do-
minus, & non iraſcar vobis in
perpetuum. Veruntamen ſcito in-
juſtitiam tuam: quoniam in Do-
minum Deum tuum impie egiſti,
& effudiſti vias tuas ad alienos
ſub omni ligno frondoſo: vocem
autem meam non obediſti, dicit
Dominus. Convertimini filii, qui
receſſiſtis, dicit Dominus: quia
ego dominabor veſtri, & aſſumam
vos, unum de civitate, & duos
ex cognatione: & introducam vos
in Sion: Et dabo vobis paſtores
juxta cor meum: & paſcent vos
paſcentes cum ſcientia. Et erit
ſi multiplicati eritis, & creveritis
ſuper terram, ait Dominus; in
diebus illis non dicent ultrà, Arca
teſtamenti, Sancti Iſrael: neque
aſcendet ſuper cor: non nominabi-
tur, neque viſitabitur, neque fiet
ultrà. In diebus illis, et in tem-
pore illo vocabunt Hieruſalem
Solium Domini: et congregabun-
tur omnes gentes ad eam: non
ambulabunt ultrà poſt cogitatio-
nes cordis ſui peſſimi. In diebus
illis convenient domus Juda ad
domum Iſrael: et venient ſimul
de terra Aquilonis, et de omnibus
regionibus ad terram, quam dedi
in hæreditatem patribus eorum.
(Et ego dixi: Fiat Domine.)
(b) Quia ponam te in filios, &
dabo tibi terram electam, (
hæreditatem Dei omnipotentis
gentium. Et dixi; Patrem vo-
cabitis me, et à me non con-
temini.

MS.A. (θ) πάντα ταῦτα, (ι) διότι (κ) τοῦ Ἰσραὴλ, (ʺ) ἀπεστρ
Πορεύθητι καὶ ἀνάγνωσον (μ) πρὸς Βοῤῥᾶν, καὶ ἐρεῖς, Ἐπιστράφητι
λεῶν (ο) οὐκ ἤκουσας, (π) ἰδοὺ ἐγὼ (ρ) ποιμαίνες (σ) ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις,
λέγει κύριος, οὐκ (τ) καὶ οὐκ (υ) εἰς αὐτὴν πάντα τὰ ἔθνη, (¯) ἐπιθυμημάτων
(φ) Καὶ ἐν (χ) συνελεύσεται οἶκος Ἰσραὴλ ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰούδα, (ψ)
πασῶν (ω) κατεκληρονόμησαν οἱ πατέρες αὐτῶν· (a) καὶ * ἡ πατ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 וְאָמְרִית בָּתַר דַעֲבַדוּ יָת כָּל אִלֵּין לְפוּלְחָנִי יְתוּבוּן וְלָא תָבוּ וַחֲזוֹ מְשַׁקְרַיָא אֲחֵיהוֹן דְבֵית
8 יְהוּדָה׃ וּגְלֵי קֳדָמַי אֲרֵי עַל כָּל עֵסַק דִטְעוֹ דְמִתְחַסְנִין לְמֵתַב לְפוּלְחָנִי דְבֵית יִשְׂרָאֵל
אַגְלֵיתִנּוּן כְּמָה דִיהֲבִין אִגְרַת גֵט פְּטוּרִין וּמְשַׁלְחִין וְלָא דְחִילוּ מְשַׁקְרַיָא דְבֵית יְהוּדָה
9 אֲחֵיהוֹן וַאֲזַלוּ וּטְעוֹ אַף אִנּוּן׃ וַהֲוָה מִדְקְלִילָא בְּעֵינַהָא טַעֲוָתַהָא וְחַיֵבַת יָת אַרְעָא וּטְעַת
10 עִם פָּלְחֵי אַבְנַיָא וְאָעַיָא׃ וְאַף בְּכָל דָא לָא תָבוּ לְפוּלְחָנִי מְשַׁקְרַיָא אֲחֵיהוֹן דְבֵית יְהוּדָה
11 בְּכָל לִבְּהוֹן אֱלָהֵן בְּשִׁקְרָא אֲמַר יְיָ׃ וַאֲמַר יְיָ לִי זַכִּיאוּ נַפְשֵׁיהוֹן דְמִתְחַסְנִין לְמֵתַב לְפוּלְחָנִי
12 דְבֵית יִשְׂרָאֵל מִמְשַׁקְרַיָא דְבֵית יְהוּדָה׃ אֱזֵיל וְתִתְנַבֵּי יָת פִּתְגָמַיָא הָאִלֵּין בְּאַרַע צִפּוּנָא
וְתֵימַר תּוּבוּ דְמִתְחַסְנִין לְמֵתַב לְפוּלְחָנִי דְבֵית יִשְׂרָאֵל אֲמַר יְיָ כַּד תְּתוּבוּן לָא אֲשַׁלַּח
13 רוּגְזִי בְּכוֹן אֲרֵי מַסְגֵי לְמֶעְבַּד טָבְוָן אֲנָא אֲמַר יְיָ וְלָא יִתְנַטְרוּן לִיךְ חוֹבִיךְ לְעָלַם׃ בְּרַם
דְעִי חוֹבִיךְ אֲרֵי בְּמֵימְרָא דַיְיָ אֱלָהִיךְ מְרַדְתְּ וְקַלְקֵלְתְּ יָת אוֹרְחָתִיךְ אִתְחַבַּרְתְּ לְעַמְמַיָא
14 פָּלְחֵי טַעֲוָתָא תְּחוֹת כָּל אִילָן עֲבוֹף וּלְמֵימְרִי לָא קַבֵּלְתּוּן אֲמַר יְיָ׃ תּוּבוּ בְּנַיָא דְמִתְחַסְנִין
לְמֵתַב אֲמַר יְיָ אֲרֵי אֲנָא אִתְרְעִיתִי בְּכוֹן וַאֲקָרֵב יָתְכוֹן כְּאִלּוּ אַתּוּן מִשְׁתָּאֲרִין חַד מִקַּרְתָּא
15 וּתְרֵין מִזַרְעִיתָא וְאָעֵיל יָתְכוֹן לְצִיוֹן׃ וַאֲמַנֵּי עֲלֵיכוֹן פַּרְנְסִין עָבְדֵי רְעוּתִי וִיפַרְנְסוּן יָתְכוֹן
16 בְּמַדַע וּבְחוּכְמָה׃ וִיהֵי אֲרֵי תִסְגּוּן וְתִפְשׁוּן בְּאַרְעָא בְּיוֹמַיָא הָאִנּוּן אֲמַר יְיָ לָא יֵימְרוּן עוֹד
אֲרוֹן קְיָמָא דַיְיָ וְלָא יִסַּק עַל לֵב וְלָא יִדְכְּרוּן עוֹד בֵּיהּ וְלָא יְזוּעוּן וְלָא יְגִיחוּן בֵּיהּ עוֹד קְרָב׃
17 בְּעִדָּנָא הַהִיא יִקְרוֹן לִירוּשְׁלֶם אֲתַר בֵּית שְׁכִנְתָּא דַיְיָ וְיִתְנַהוֹן לְמִפְלַח בַּהּ כָּל עַמְמַיָא
18 לִשְׁמָא דַיְיָ לִירוּשְׁלֶם וְלָא יְהָכוּן עוֹד בָּתַר הִרְהוּר לִבְּהוֹן בִּישָׁא׃ בְּיוֹמַיָא הָאִנּוּן יִתְחַבְּרוּן
דְבֵית יְהוּדָה עִם בֵּית יִשְׂרָאֵל וְיֵיתוֹן כַּחֲדָא מֵאַרַע צִפּוּנָא לְאַרְעָא דְאַחְסֵנִית יָת אֲבָהָתְהוֹן׃
19 וַאֲנָא אֲמָרִית אֵיכְדֵין אֲצַלְחִנִיךְ בִּבְנַיָא וְאֶתֵּן לִיךְ אֲרַע חֶמְדְתָא אַחְסָנַת חֶדְוַת תּוּשְׁבְּחַת
עַמְמַיָא וַאֲמָרִית רִבּוֹנִי תְּצַלֵּין קֳדָמַי וּמִבָּתַר פּוּלְחָנִי לָא תְתוּבִין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixi poſtquã fecerũt omnia hæc: Ad cultũ meũ convertentur: & non ſunt
converſi; & viderũt falſarii fratres eorũ viri dom⁹ Juda. Et manifeſtũ eſt
corã me, quia pro eo quòd erraverunt, & inducati ſunt ut converterentur ad
cultũ meũ viri dom⁹ Iſrael, tranſmigrare feci eos, ſicut dant literas libelli
repudii & dimittunt [*uxores.*] Et non timuerunt falſarii dom⁹ Juda fratres
eorũ, ſed abierunt & erraverunt etiã ipſi. Et factũ eſt ex eo quod levi vi-
debantur in oculis ej⁹ idola ej⁹; reã fecit terrã, & fornicata eſt cum culto-
rib⁹ lapidũ & lignorũ. Et in omnib⁹ his non ſunt converſi ad cultũ meũ
falſarii dom⁹ Juda fratres eorum in toto corde ſuo, niſi in mendacio, dicit
Dñs. Et dixit Dñs ad me: *Juſtificaverunt* animã ſuã *illi qui ſeſe obfirmant*
ne *redeant* ad cultũ meũ dom⁹ Iſrael, magis quàm *falſarii* dom⁹ Juda. Vade
& prophetiza verba hæc in terra Aquilonis, & dicas: Convertimini vos qui
vos obfirmatis, ne convertamini ad cultũ meũ, dom⁹ Iſrael, dicit Dñs: quia ſi
enim converſi fueritis, non immittam furorẽ meum in vos, quia ego miſericors
cõfero beneficia, dicit Dñs: & non reſervabũtur peccata *tua* tibi in æternũ.
Veruntamen ſcito peccata tua, quia in Verbũ Dñi Dei tui prævaricata es
& corrupiſti viã tuã: adjunxiſti te populis colentib⁹ idola, ſub omni ligno
frondoſo; & verbo meo non obediſtis, dicit Dñs. Convertimini filii qui
vos obfirmatis ne convertamini, dicit Dñs, quia ego elegi vos, & applicabo
vos ac ſi relicti ſitis, unum de civitate, & duo de cognatione, & introducam
vos in Sion: Et conſtituam vobis gubernatores facientes voluntatẽ meam
& gubernabũt vos in ſcientia & in ſapientia. Et erit cùm multiplicati fue-
ritis & creveritis in terra, in dieb⁹ illis, dicit Dñs, non dicent amplius, Arca
fœderis Dñi, nec aſcendet in cor, nec ultrà ej⁹ recordabuntur, nec commo-
vebũtur, nec in ea ampli⁹ inibũt prælũ. In tempore illo vocabũt Jeruſalem
locũ dom⁹ majeſtatis Dñi, et diſcẽt colere in ea oẽs populi nomẽ Dñi in Je-
ruſalẽ, et non ambulabũt ultrà poſt cogitationẽ cordis ſui peſſimi. In diebus
illis conjungẽtur dom⁹ Juda cum domo Iſrael, et veniẽt ſimul de terra Aqui-
lonis, in terrã quã poſſidere feci patres veſtros. Et ego dixi: Quomodo
ſperabo te in filiis? et dabo tibi terrã deſiderabilẽ, hæreditatẽ lætitiæ
populorũ? et dixi: Dñm meũ invocabis corã me, et à cultu meo nõ

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܘܐܡܪܬ ܡܢ ܒܬܪ ܕܥܒܕܬ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܕܬܬܦܢܝܢ ܠܘܬܝ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܬ. ܘܚܙܬ ܡܫܩܪܢܘܬܗ ܚܬܗ *
ܝܗܘܕܐ. ܘܚܙܬ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܗ. * ܘܡܛܠ ܕܓܪܬ ܡܥܡܪܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܫܒܩܬܗ
ܘܝܗܒܬ ܠܗ ܟܬܒܐ ܕܫܘܒܩܢܐ. ܘܠܐ ܕܚܠܬ ܡܫܩܪܬܐ ܚܬܗ ܝܗܘܕܐ. ܘܙܢܝܬ ܐܦ ܗܝ. * ܘܡܛܠ
ܕܨܚܝܐ ܗܘܬ ܙܢܝܘܬܗ. ܛܡܐܬ ܐܪܥܐ. ܘܓܪܬ ܒܟܐܦܐ ܘܒܩܝܣܐ. * ܘܐܦ ܡܢ ܒܬܪ ܗܠܝܢ
ܟܠܗܝܢ. ܠܐ ܐܬܦܢܬ ܠܘܬܝ ܡܫܩܪܬܐ ܚܬܗ ܝܗܘܕܐ. ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܗ. ܐܠܐ ܒܕܓܠܘܬܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܙܕܩܬ ܢܦܫܗ ܡܥܡܪܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܢ ܡܫܩܪܬܐ ܚܬܗ
ܝܗܘܕܐ. * ܙܠ ܘܐܟܪܙ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܒܓܪܒܝܐ. ܘܐܡܪ. ܬܘܒܝ ܡܥܡܪܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܩܫܐ ܐܦܝ ܒܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܛܒ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܛܪ ܐܢܐ ܠܥܠܡ. * ܒܪܡ
ܕܥܝ ܣܟܠܘܬܟܝ. ܕܠܡܪܝܐ ܐܠܗܟܝ ܣܟܠܬܝ. ܘܒܕܪܬܝ ܐܘܪܚܬܟܝ ܠܢܘܟܪܝܐ ܬܚܝܬ
ܟܠ ܐܝܠܢ ܕܥܒܝܢ. ܘܒܩܠܝ ܠܐ ܫܡܥܬܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܬܘܒܘ ܒܢܝܐ ܬܝܒܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܕܐܢܐ ܨܒܝܬ ܒܟܘܢ. ܘܕܒܪܬܟܘܢ. ܚܕ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܬܪܝܢ ܡܢ ܫܪܒܬܐ. ܘܐܝܬܝܬܟܘܢ ܠܨܗܝܘܢ
* ܘܐܬܠ ܠܟܘܢ ܪܥܘܬܐ ܐܝܟ ܠܒܝ. ܘܢܪܥܘܢܟܘܢ ܒܝܕܥܬܐ ܘܒܣܘܟܠܐ. * ܘܢܗܘܐ ܡܐ
ܕܦܪܝܬܘܢ ܘܣܓܝܬܘܢ ܒܐܪܥܐ. ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܬܘܒ ܩܒܘܬܐ
ܕܕܝܬܩܐ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܣܩ ܥܠ ܠܒܐ. ܘܠܐ ܢܬܕܟܪܘܢܗ. ܘܠܐ ܢܣܥܪܘܢܗ. ܘܠܐ ܬܬܥܒܕ ܬܘܒ.
* ܒܗܘ ܙܒܢܐ ܗܘ. ܢܩܪܘܢܗ ܠܐܘܪܫܠܡ ܟܘܪܣܝܐ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܣܟܘܢ ܠܗ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ
ܠܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܐܙܠܘܢ ܬܘܒ ܒܬܪ ܪܓܝܓܬܐ ܕܠܒܗܘܢ ܒܝܫܐ. * ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ
ܢܐܙܠܘܢ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. ܥܡ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܐܬܘܢ ܐܟܚܕܐ ܡܢ ܐܪܥܐ
ܕܓܪܒܝܐ. ܠܐܪܥܐ ܕܐܘܪܬܬ ܠܐܒܗܝܗܘܢ. * ܘܐܢܐ ܐܡܪܬ ܕܐܣܝܡܟܝ ܒܝܬ ܒܢܝܐ. ܘܐܬܠ
ܠܟܝ ܐܪܥܐ ܓܒܝܬܐ. ܘܝܪܬܘܬܐ ܕܚܝܠܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܐܡܪܬ. ܐܒܐ ܬܩܪܘܢܢܝ.
ܘܡܢ ܒܬܪܝ ܠܐ ܬܗܦܟܘܢ.

* Cúmque dixiſſem poſtquam feciſſet hæc 7
omnia, Revertere ad me; non eſt reverſa:
vidit autem perfidiam ejus ſoror ejus Juda,
vidítque res ejus omnes. Quoniam ergò 8
adulterium commiſit habitatrix Iſraelis, repudiavi
eam, dedique ei libellum repudii:
nec tamen timuit perfida ſoror ejus Juda, ſed
ipſa quoque fornicata eſt. Quia turpiſſima 9
erat ſcortatio ejus, terram polluit, & adulterata
eſt cum lapidibus & lignis. Quin etiam 10
poſt hæc omnia non eſt ad me reverſa perfida
ſoror ejus Juda ex toto corde ſuo, ſed falſò,
ait Dominus. Quapropter dixit mihi Dominus, 11
Juſtiorem ſe prædicat habitatrix Iſraelis
perfidâ ſorore ſuâ Juda: Abi, & prædica 12
ſermones iſtos in Aquilone, & dic; Revertere
habitatrix Iſraelis, dicit Dominus, nec
obdurabo faciem meam contra vos; quia
bonus ſum, dicit Dominus, nec iram ſervo
in perpetuum. Verùm agnoſce peccata tua 13
quæ in Dominum Deum tuum commiſiſti,
quòd diſperſeris vias tuas alienis ſub quacunque
arbore denſa, & vocem meam non
audieritis, ait Dominus. Convertimini filii 14
revertentes, ait Dominus; quoniam ego vobis
oblectatus aſſumpſi vos unum ex civitate,
& duos ex familia, & adduxi vos in Sionem; 15
Ubi daturus ſum vobis paſtores juxta
cor meum, qui paſcant vos cum ſcientia &
prudentia. Eritque cùm fœtificaveritis & 16
creveritis in terra dieb⁹ illis, dicit Dominus;
ut non dicant ampliùs, Arca fœderis Domini,
nec veniat in animum, neque recordentur
illius, neque recenſeant eam, neque fiat ampliùs.
Eodem illo tempore vocabunt Jeroſolymam, 17
Solium Dñi; & expectabunt omnes
gentes nomen Domini, neque ſectabuntur
ampliùs appetitus animi ſui pravi. Iis diebus 18
euntes Judæi cum Iſraelitis, venient ſimul è
terra Aquilonari in terram quam hæreditariam 19
dedi patribus eorum. Adeóque dixeram;
Annumerabo te inter filios, dabóque
tibi terram electam, & hæreditatem virium
exercituum gentium: & dixeram, Pater mi
vocabitis me, & à me ſequendo nequaquam
recedetis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وقلت بعد ان زنت بهذه كلها ارجعي الي . فلم ترجع . ونظرت خاينة يهودا خيانتها * ورايت
جميع الذين اخذت من اجلهم الذي زنت بهم ساكنة اسرايل . وسرحتها واعطيتها
كتاب طلاقها في يديها . ولم تخف خاينة يهودا . ومضت هذه وزنت * وصار زناها الي لا شي
وزنت بالخشبة والحجر * وفي هذه كلها لم ترجع الي خاينة يهودا من كل قلبها بل
بالكذب * وقال لي الرب بررت نفسها ساكنة اسرايل من خاينة يهودا * امض فاقرا هذه
الاقوال عند الجربيا . وتقول ارجعي الي يا ساكنة اسرايل يقول الرب . ولا اشدد وجهي
عليكم . لاني انا رحيم انا يقول الرب . ولا احقد عليكم الي الابد * لكن اعرفي ظلمك
لانك نافقت على الرب الهك . وابذلت طرقك للغربا تحت كل شجرة ذات افنان . ولم
تسمعي صوتي يقول الرب * ارجعوا ايها الابنا المتباعدون يقول الرب . من اجل اني ها انا
اسود عليكم واخذكم واحدا من مدينة واثنين من ابوة . واتي بكم الي صهيون
* واعطيكم رعاة كقلبي . ويرعونكم الرعاة بفطنة * ويكون اذا كثرتم ونموتم
على الارض * في تلك الايام يقول الرب لا تقولون اين تابوت عهد قدوس اسرايل . ولا
يصعد على قلبكم . ولا يسمي . ولا يفتقد . ولا يصنع ايضا * في تلك الايام وفي ذلك
الزمان يدعون ايروسليم كرسي الرب . ويجتمعون اليها كل الامم . ولا يمضون ايضا
خلف شهوات قلبهم الخبيث * وفي تلك الايام يجتمع بيت اسرايل على بيت يهودا . وياتون
جميعا من ارض الجربيا ومن جميع الكور الي الارض التي ورثوا اباوهم * وانا قلت يكون
يا رب . لاني ربيتك لاولاد . واعطيتك الارض المنتخبة ميراث اله الامم ضابط الكل . وان
كنتم تدعوني ابا ولم ترجعوا عني .

* *Attamen, quamvis fornicata eſſet cum omnibus* 7
iſtis, dixi; Revertere ad me, &
non eſt reverſa: viditque perfida Judæ
hanc ejus perfidiam. Quarè cùm vidiſſem 8
eos omnes quorum amore capta
eſt, quibuſcum fornicata eſt habitatrix
Iſraelis; dimiſi eam, dedique libellum
repudii ſui in manus ejus: attamen non
timuit perfida Judæ, ſed eadem abiens
fornicata eſt. Fuit autem fornicatio 9
ejus cum nihilo; fornicata enim eſt cum
ligno & cum lapide. At in his quidem 10
omnibus non eſt ad me reverſa perfida
Judæ ex toto corde ſuo, ſed fictè. Quapropter 11
dixit mihi Dominus, Juſtificat
ſeipſam habitatrix Iſraelis præ perfida
Judæ: Vade, recita ſermones iſtos 12
apud Aquilonem, dicáque; Revertere ad
me O habitatrix Iſraelis, ait Dominus;
nec obdurabo faciem meam contra vos,
quoniam ego miſericors ſum, dicit Dominus;
nec odium ſervabo contra vos in
perpetuum. Verùm agnoſce impietatem 13
tuam, impiè namque geſſiſti in Dominum
Deum tuum, & proſtituiſti vias tuas
ſub quacunque arbore denſorum ramorum,
nec audiſti vocem meam, dicit Dominus.
Revertimini O filii abalienati, dicit 14
Dominus; quoniam ecce ego dominatus
ſum vobis, & accepi vos, unum
ex urbe una, & duos de familia una
paterna, voſque adducturus ad Sionem;
Et daturus vobis paſtores menti meæ 15
conformes, qui paſtores prudenter vos paſcent.
Eritque, cùm multi fueritis & 16
creveritis ſuper terram, ut iis diebus
(ait Dominus) non dicatis, ubi eſt arca
fœderis Sancti Iſraelis? neque ſubeat
menti veſtræ, non nominetur, neque inquiratur,
neque fiat ampliùs. Iis diebus 17
eóque tempore vocabunt Jeroſolymam, Solium
Domini, & confluent ad eam univerſæ
gentes, neque ſequentur deinceps
libidinem improbi cordis ſui. Iiſdem 18
quoque diebus conjunget ſe domus Iſraelis
cum domo Judæ, veniéntque pariter
è terra Aquilonari, & ex omnibus regionibus
ad terram quam poſſederant patres
eorum. Et ego dixi, Sit hoc O Domine, 19
quia deſtinavi te ad filios procreandos,
dedique tibi terram electam, hæreditatem
Dei gentium omnipotentis. Quòd ſi vocatis
me patrem, quare ergo receditis à
me?

ירמיה : ד

domus me *in eſtis prævaricati* ſic ,*ſuo ſocio à* mulier *eſt prævaricata* ut Siquidem
20 אָכֵן בָּגְדָה אִשָּׁה מֵרֵעָהּ כֵּן בְּגַדְתֶּם בִּי בֵּית
fletus ,eſt audita *loca edita* ſuper Vox .Dominus dixit ,Iſrael
21 יִשְׂרָאֵל נְאֻם־יְהוָה׃ קוֹל עַל־שְׁפָיִים נִשְׁמָע בְּכִי
ſunt obliti ,ſuam viam *pervertêre* quia ,Iſrael filiorum deprecationum
תַּחֲנוּנֵי בְּנֵי יִשְׂרָאֵל כִּי הֶעֱווּ אֶת־דַּרְכָּם שָׁכְחוּ
ſanabo ,*refractarii* filii Convertimini .ſui Dei Domini
22 אֶת־יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם׃ שׁוּבוּ בָּנִים שׁוֹבָבִים אֶרְפָּה
Dominus tu quia ,te ad venimus nos Ecce :veſtras *averſiones*
מְשׁוּבֹתֵיכֶם הִנְנוּ אָתָנוּ לָךְ כִּי אַתָּה יְהוָה
verè :montibus ,*turba* ,collibus à *vanum in* Verè .noſter Deus
23 אֱלֹהֵינוּ׃ אָכֵן לַשֶּׁקֶר מִגְּבָעוֹת הָמוֹן הָרִים אָכֵן
comedit confuſio Et .Iſrael ſalus noſtro Deo Domino in
24 בַּיהוָה אֱלֹהֵינוּ תְּשׁוּעַת יִשְׂרָאֵל׃ וְהַבֹּשֶׁת אָכְלָה אֶת־
,eorũ *bovem* & ,eorũ *pecus,noſtris adoleſcentiis ab* noſtrorũ patrũ laborem
יְגִיעַ אֲבוֹתֵינוּ מִנְּעוּרֵינוּ אֶת־צֹאנָם וְאֶת־בְּקָרָם
,noſtro pudore in *Jacebimus* .eorum filias & ,eorum filios
25 אֶת־בְּנֵיהֶם וְאֶת־בְּנוֹתֵיהֶם׃ נִשְׁכְּבָה בְּבָשְׁתֵּנוּ
,peccavimus noſtro Deo Domino quia :noſtra ignominia nos operiet &
וּתְכַסֵּנוּ כְּלִמָּתֵנוּ כִּי לַיהוָה אֱלֹהֵינוּ חָטָאנוּ
non & :hanc diem ad uſque & ,*noſtris pueritiis à* noſtri patres & ,nos
אֲנַחְנוּ וַאֲבוֹתֵינוּ מִנְּעוּרֵינוּ וְעַד־הַיּוֹם הַזֶּה וְלֹא
.noſtri Dei Domini *voce in audivimus*
שָׁמַעְנוּ בְּקוֹל יְהוָה אֱלֹהֵינוּ׃

CAP. IV. ד

ſi & :revertere me ad ,Dominus dixit ,Iſrael fueris reverſus Si
1 אִם־תָּשׁוּב יִשְׂרָאֵל נְאֻם־יְהוָה אֵלַי תָּשׁוּב וְאִם־
jurabis Et .*vagaberis* non &,*meis faciebus* à tuas abominationes abſtuleris
2 תָּסִיר שִׁקּוּצֶיךָ מִפָּנַי וְלֹא תָנוּד׃ וְנִשְׁבַּעְתָּ
ſe benedicent & :juſtitia in & ,judicio in ,veritate in Dominus *Vivens*
חַי־יְהוָה בֶּאֱמֶת בְּמִשְׁפָּט וּבִצְדָקָה וְהִתְבָּרְכוּ
Dominus dixit ſic Quia .ſe laudabunt eo in & ,gentes eo in
3 בוֹ גּוֹיִם וּבוֹ יִתְהַלָּלוּ׃ כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה
ſeratis ne & :*novale* vobis *Novate* :Jeruſalaim & ,Jehudah viro
לְאִישׁ יְהוּדָה וְלִירוּשָׁלַםִ נִירוּ לָכֶם נִיר וְאַל־תִּזְרְעוּ
præputia auferte &,DOMINO vos Circuncidite .ſpinas *ad*
4 אֶל־קוֹצִים׃ הִמֹּלוּ לַיהוָה וְהָסִרוּ עָרְלוֹת
egrediatur fortè ne :Jeruſalaim habitatores & ,Jehudah *vir* ,veſtri cordis
לְבַבְכֶם אִישׁ יְהוּדָה וְיֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלָםִ פֶּן־תֵּצֵא
malitiæ faciebus à ,*extinguens* non & ,ſuccendatur & ,mea ira ignis ut
כָאֵשׁ חֲמָתִי וּבָעֲרָה וְאֵין מְכַבֶּה מִפְּנֵי רֹעַ
,facite audire Jeruſalaim in &,Jehudah in Annuntiate .veſtrorũ *conatuum*
5 מַעַלְלֵיכֶם׃ הַגִּידוּ בִיהוּדָה וּבִירוּשָׁלַםִ הַשְׁמִיעוּ
:dicite & ,*complete* ,clamate ;terra in tuba Clangite :dicite &
וְאִמְרוּ וְתִקְעוּ שׁוֹפָר בָּאָרֶץ קִרְאוּ מַלְאוּ וְאִמְרוּ
vexillum Levate .*munitionis* civitates in ingrediamur & ,*Colligamini*
6 הֵאָסְפוּ וְנָבוֹאָה אֶל־עָרֵי הַמִּבְצָר׃ שְׂאוּ־נֵס
adducens ego malum quia :ſtetis ne ,*aufugite* ,Sijon in
צִיּוֹנָה הָעִיזוּ אַל־תַּעֲמֹדוּ כִּי רָעָה אָנֹכִי מֵבִיא
,ſuo umbraculo de leo Aſcendit .magnam contritionem &,Aquilone ab
7 מִצָּפוֹן וְשֶׁבֶר גָּדוֹל׃ עָלָה אַרְיֵה מִסֻּבְּכוֹ
ponendum ad ,ſuo loco de eſt egreſſus ,eſt profectus gentium *corruptor &*
וּמַשְׁחִית גּוֹיִם נָסַע יָצָא מִמְּקֹמוֹ לָשׂוּם
abſque *deſtruentur* tuæ civitates :ſolitudinem in tuam terram
אַרְצֵךְ לְשַׁמָּה עָרַיִךְ תִּצֶּינָה מֵאֵין
quia :ululate & plangite ,ſaccis vos accingite hoc Super .habitatore
8 יוֹשֵׁב׃ עַל־זֹאת חִגְרוּ שַׂקִּים סִפְדוּ וְהֵילִילוּ כִּי
.eo ab Domini *naſi* ira eſt averſa non
לֹא־שָׁב חֲרוֹן אַף־יְהוָה מִמֶּנּוּ׃

Verſio VULG. LAT.

20 Sed quomodò ſi contemnat mulier amatorem ſuum, ſic contempſit me domus Iſrael, dicit Dominus. 21 Vox in viis audita eſt, ploratus & ululatus filiorum Iſrael: quoniam iniquam fecerunt viam ſuam, obliti ſunt Domini Dei ſui. 22 Convertimini filii revertentes, & ſanabo averſiones veſtras. Ecce nos venimus ad te: tu enim es Dominus Deus noſter. 23 Verè mendaces erant colles, & multitudo montium: verè in Domino Deo noſtro ſalus Iſrael. 24 Confuſio comedit laborem patrum noſtrorum ab adoleſcentia noſtra, greges eorum, & armenta eorum, filios eorum, & filias eorum. 25 Dormiemus in confuſione noſtra, & operiet nos ignominia noſtra: quoniam Domino Deo noſtro peccavimus nos, & patres noſtri, ab adoleſcentia noſtra uſque ad diem hanc: & non audivimus vocem Domini Dei noſtri.

CAP. IV.

1 SI reverteris Iſrael, ait Dominus, ad me convertere: ſi abſtuleris offendicula tua à facie mea, non commoveberis. 2 Et jurabis; Vivit Dominus, in veritate, & in judicio, & in juſtitia, & benedicent eum Gentes, ipſumque laudabunt. 3 Hæc enim dicit Dominus viro Juda & Jeruſalem; Novate vobis novale, & nolite ſerere ſuper ſpinas: 4 Circumcidimini Domino, & auferte præputia cordium veſtrorum, viri Juda, & habitatores Jeruſalem: ne fortè egrediatur ut ignis indignatio mea, & ſuccendatur, & non ſit qui extinguat, propter malitiam cogitationum veſtrarum. 5 Annuntiate in Juda, & in Jeruſalem auditum facite: loquimini, & canite tubâ in terra: clamate fortiter, & dicite; Congregamini, & ingrediamur civitates munitas, 6 Levate ſignum in Sion. Confortamini, nolite ſtare: quia malum ego adduco ab Aquilone, & contritionem magnam. 7 Aſcendit leo de cubili ſuo, & prædo Gentium ſe levavit: egreſſus eſt de loco ſuo, ut ponat terram tuam in ſolitudinem: civitates tuæ vaſtabuntur, remanentes abſque habitatore. 8 Super hoc accingite vos ciliciis, plangite & ululate: quia non eſt averſa ira furoris Domini à nobis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

20 Πλὴν ὡς ἀθετεῖ γυνὴ εἰς τὸν συνόντα αὐτῇ, οὕτως ἠθέτησεν εἰς ἐμὲ (β) ὁ οἶκος 21 Ἰσραήλ, λέγει κύριος. (γ) Φωνὴ ἐκ χειλέων ἠκούσθη κλαυθμοῦ καὶ δεήσεως υἱῶν Ἰσραήλ, ὅτι ἠδίκησαν ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν, 22 ἐπελάθοντο θεοῦ ἁγίου αὐτῶν. Ἐπιστράφητε υἱοὶ ἐπιστρέφοντες, καὶ (δ) ἰάσομαι τὰ συντρίμματα ὑμῶν. Ἰδοὺ δοῦλοι (ʹ) ἡμεῖς ἐσόμεθά σοι, ὅτι (ε) σὺ κύριος ὁ θεὸς 23 ἡμῶν εἶ. Ὄντως εἰς ψεῦδος ἦσαν οἱ βουνοί, καὶ ἡ δύναμις τῶν ὀρέων, πλὴν διὰ κυρίου θεοῦ ἡμῶν ἡ σωτηρία (ζ) τοῦ Ἰσ-24 ραήλ. Ἡ δὲ αἰσχύνη (η) κατηνάλωσε τοὺς μόχθους τῶν πατέρων ἡμῶν, ἀπὸ νεότητος (θ) ἡμῶν, τὰ πρόβατα αὐτῶν καὶ τοὺς (ʹ) μόσχους αὐτῶν, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτῶν καὶ τὰς 25 θυγατέρας αὐτῶν. Ἐκοιμήθημεν ἐν τῇ αἰσχύνῃ ἡμῶν, καὶ ἐπεκάλυψεν ἡμᾶς ἡ ἀτιμία ἡμῶν, διότι ἔναντι τοῦ θεοῦ (ι) ἡμῶν ἡμάρτομεν ἡμεῖς, καὶ οἱ πατέρες ἡμῶν, ἀπὸ νεότητος ἡμῶν ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης· καὶ (κ) οὐχ ὑπηκούσαμεν τῆς φωνῆς κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν.

MS.A. (β) λέγει κύριος, ὁ οἶκος Ἰσραήλ. (γ) Φωναί (δ) ἰάσομαι αὐτοὺς. Ἰδοὺ (ʹ) *ὑμεῖς (ε) κύριος ὁ θεὸς (ζ) τῷ Ἰσραήλ. (η) κατανάλωσεν (θ) αὐτῶν, (ʹ) *μόσχους (ι) ἡμάρτομεν, καὶ οἱ πατέρες (κ) οὐκ ἠκούσαμεν

Veruntamè, ſicut prævaricatur mulier in cohabitantem ei; ſic prævaricata eſt in me domus Iſrael, dicit Dominus. Vox de labiis audita eſt, ploratûs, & deprecationis filiorum Iſrael: quoniam injuſte egerunt in viis ſuis, obliti ſunt Dei ſancti ſui. Revertimini filii revertentes: & ſanabo contritiones veſtras. Ecce ſervi nos erimus tibi: tu enim es Dominus Deus noſter. Verè in mendacium erant colles, & fortitudo montium: verùm per Dominum Deum noſtrum ſalus Iſrael. Confuſio autem conſumpſit labores patrum noſtrorum ab adoleſcentia (k) noſtra, oves eorum, & vitulos eorum, & filios eorum, & filias eorum. Dormivimus in confuſione noſtra: & cooperuit nos ignominia noſtra: quoniam coram Deo noſtro peccavimus nos, & patres noſtri ab adoleſcentia noſtra uſque in diem hanc: & non obedivimus voci Domini Dei noſtri.

ΚΕΦ. δʹ.

1 Ἐὰν ἐπιστραφῇ (α) Ἰσραήλ, λέγει κύριος, πρὸς μέ, ἐπιστραφήσεται. (β) Καὶ ἐὰν περιέλῃ τὰ βδελύγματα (γ) αὐτοῦ ἐκ στόματος αὐτοῦ, καὶ ἀπὸ τοῦ προσώπου μου εὐλαβηθῇ, 2 Καὶ ὀμόσῃ, Ζῇ κύριος, μετὰ ἀληθείας (δ) ἐν κρίσει καὶ ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ εὐλογήσουσιν ἐν αὐτῷ ἔθνη, καὶ ἐν αὐτῷ 3 αἰνέσουσι τῷ θεῷ ἐν (ε) Ἱερουσαλήμ. Ὅτι τάδε λέγει κύριος τοῖς ἀνδράσιν Ἰούδα, καὶ τοῖς κατοικοῦσιν Ἱερουσαλήμ, Νεώσατε ἑαυτοῖς νεώματα, καὶ μὴ σπείρητε ἐπ' ἀκάν-4 θαις. (ζ) Περιτμήθητε τῷ θεῷ ὑμῶν, καὶ (η) περιτέμεσθε τὴν σκληροκαρδίαν ὑμῶν ἄνδρες Ἰούδα καὶ οἱ κατοικοῦντες (ʹ) Ἱερουσαλήμ, μὴ ἐξέλθῃ ὡς πῦρ ὁ θυμός μου, καὶ ἐκκαυθήσεται, καὶ οὐκ ἔσται ὁ σβέσων, ἀπὸ προσώπου 5 πονηρίας ἐπιτηδευμάτων ὑμῶν. Ἀναγγείλατε ἐν τῷ Ἰούδᾳ, καὶ ἀκουσθήτω ἐν Ἱερουσαλήμ· εἴπατε, Σημάνατε ἐπὶ τῆς γῆς σάλπιγγι, κεκράξατε μέγα· (θ) εἴπατε, Συνάχθητε, καὶ (ι) εἰσέλθωμεν εἰς τὰς πόλεις τὰς 6 (κ) τειχήρεις. Ἀναλαβόντες φεύγετε εἰς Σιών· σπεύσατε, μὴ στῆτε, ὅτι (λ) κακὰ ἐγὼ ἐπάγω ἀπὸ Βορρᾶ, καὶ συντριβὴν μεγά-7 λην. Ἀνέβη λέων ἐκ τῆς μάνδρας αὐτοῦ, (ʹ) ἐξολοθρεύων ἔθνη ἐξῆρε, καὶ ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ, τοῦ θεῖναι τὴν γῆν εἰς ἐρήμωσιν· (μ) καὶ αἱ πόλεις καθαιρεθήσονται, 8 παρὰ τὸ μὴ κατοικεῖσθαι αὐτάς. Ἐπὶ τούτοις περιζώσασθε σάκκους, καὶ κόπτεσθε, καὶ (ν) ἀλαλάξατε, διότι οὐκ ἀπεστράφη ὁ θυμὸς κυρίου ἀφ' ὑμῶν.

MS.A. (α) Ἰσραὴλ πρὸς μέ, λέγει κύριος, (β) ἐὰν περιέλῃ (γ) αὐτοῦ, προσώπου αὐτοῦ (δ) καὶ ἐν (ε) Ἱερουσαλήμ. *Νεώσατε ἑαυτοῖς (ζ) Περιτμήθητε (η) περιτέμεσθαι (ʹ) ἐν Ἱερουσαλήμ, (θ) καὶ εἴπατε, (ι) εἰσέλθατε (κ) ὀχυράς ἐγὼ κακὰ (ʹ) ἐξολεθρεύων (μ) καὶ πόλεις (ν) *ἀλλάξατε,

CAP. IV.

SI converſus fuerit Iſrael, dicit Dominus, ad me; convertetur: & ſi abſtulerit abominationes ſuas de ore ſuo, & à facie mea reveritus fuerit, Et juraverit, Vivit Dominus, cum veritate in judicio, & in juſtitia; & benedicent in eo gentes, & in eo laudem dicent Deo in Hieruſalem. Hæc enim dicit Dominus viris Juda, & habitatoribus Hieruſalem; Novate vobis novalia, & nolite ſerere ſuper ſpinas. Circuncidimini Deo veſtro, & circuncidite (a) duritiam cordis veſtri, viri Juda, & habitatores Hieruſalem: ne egrediatur ut ignis, indignatio mea; & incendetur, (& non erit, qui extinguat,) à facie nequitiæ adinventionum veſtrarum. Annunciate in Juda, & audiatur in Hieruſalem: dicite, Significate ſuper terram tubâ: Clamate fortiter: dicite; Congregamini, & ingrediamur in civitates muratas: Aſſumentes fugite in Sion: feſtinate, nolite ſtare: quia mala ego adduco ab Aquilone, & contritionem magnam. Aſcendit leo de cubili ſuo, exterminans gentes levavit ſe, et egreſſus eſt de loco ſuo, ut ponat (b) terram in ſolitudinem: & civitates deſtruentur, eò quod non habitentur ipſæ. Super his accingite vos ciliciis, et plangite, & ululate; quia non eſt averſus furor Domini à vobis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 בכן כמה דמשקרא אתתא בבעלא כן שקרתון במימרי בית ישראל אמר יי : קלא
21 על נגדין אשתמע דבכן ומתאנחין בני ישראל ארי קלקילו ית אורחתהון אתנשיאו ית
22 פולחנא דיי אלההון : תובו בניא דמתחסנין למתב אשבוק לכון כד תתובון הא בכל
23 עדן אתון אמרין תבנא לפולחנך פרוקנא ארי את יי אלהנא : בכן לשקרא פלחנא
על רמתא ולא להנאה אתרגשנא על טוריא ברם במימרא דיי אלהנא פורקן ישראל :
24 ובהתת חובין אסיפת ית ליאות אבהתנא מועורנא ית ענהון וית תוריהון וית בניהון
25 וית בנתהון : נשכוב בבהתת חובנא ותחפננא אתכנעותנא ארי קדם יי אלהנא חבנא
אנחנא ואבהתנא מועורנא ועד יומא הדין ולא קבלנא למימרא דיי אלהנא :

ד

1 אם תתוב ישראל לפולחני אמר יי תתקבל תיובתך עד לא תתחתם גזרתך ואם תעדי
2 שקצך מן קדמי לא תטלטל : אם תקים בשמי קים הוא יי בקושטא בדינא ובזכותא
3 ויתברכון עממיא בישראל וביה ישתבחון : ארי כדנן אמר יי לאנש יהודה וליתבי
4 ירושלם עבידו לכון עובדין טבין ולא תבעון פורקן בחובין : תובו לפולחנא דיי
ואעדו רשע לבכון אנש יהודה ויתבי ירושלם דלמא ידלק כאשתא רוגזי וישיצי ולא יהי
5 חיס מן קדם בישות עובדיכון : חוו ביהודה ובירושלם בסרו ואמרו תקעו שופרא
6 בארעא אכלו אסנו ואמרו אתכנשו ונעול לקרוין כריכן : זקופו אתא על ציון גלו לא
7 תתעכבון ארי בשתא אנא מיתי מצפונא ותבירא רבא : גלא מלכא מכרכיה ומחבל
עממיא נטל במשריתיה נפק מאתריה לשואה ארעיך לצדו קרויך יצדין מבלי יתב :
8 על דא ייסרון סקין יספדון ויללון ארי לא תב תקוף רוגזא דיי מננא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Propterea ſicut prævaricatur mulier in maritum ſuum; ſic prævaricati in Verbum meum domus Iſrael, dicit Dñs. Vox juxta torrentes audita plorantium & gementiũ filiorum Iſrael, quia corruperunt vias ſuas, obliti ſunt cultus Dñi Dei ſui. Convertimini filii qui obfirmatis vos ad converſionem, dimittam vobis ſi converſi fueritis: ecce in omni tempore vos dicitis, Converſi ſumus ad cultum tuum, *ſalva nos*, quoniam tu es Dñs Deus noſter. Utiq; in vanum coluim⁹ ſuper colles, & in nullum uſum congregati ſum⁹ ſuper montes; veruntamen in verbo Dñi Dei noſtri ſal⁹ Iſrael. Confuſio autem peccatorum conſumpſit laborem patrum noſtrorum ab adoleſcentia noſtra; oves eorũ, & boves eorũ; filios eorũ, & filias eorũ. Jacemus in confuſione peccatorum noſtrorum, & cooperiet nos verecundia noſtra: quia coram Dño Deo noſtro peccavim⁹ nos & patres noſtri ab adoleſcentia noſtra & uſq; in præſentẽ diẽ, & non obedivim⁹ verbo Dñi Dei noſtri.

CAP. IV.

SI converteris Iſrael ad cultum meum, dicit Dñs, acceptabilis erit converſio tua, antequàm ſignetur ſententia tua: & ſi abſtuleris abominationes tuas à facie mea non commoveberis. Et ſi juraveris *in nomine meo*, Viv⁹ eſt Dñs in veritate, in judicio & in juſtitia; & benedicentur populi in Iſrael, & in ipſo laudabuntur. Quia ſic dicit Dñs viro Juda & habitatorib⁹ Jeruſalem: Facite vobis opera bona, & non quæratis ſalutẽ in peccatis. Convertimini ad cultũ Dñi, & auferte impietatem cordis veſtri viri Juda, & habitatores Jeruſalem, ne fortè *ardeat* quaſi ignis furor me⁹, & conſumat abſq; miſericordia, propter malitiam operũ veſtrorum. Annuntiate in Juda & in Jeruſalem, narrate & dicite, clangite tuba in terra, clamate, multiplicate & dicite: Congregamini, & ingrediamur in civitates munitas. Levate ſignum ſuper Sion, migrate & non moremini, quia malum ego adveho ab Aquilone, & contritionem magnam. Migravit rex de arce ſua, & diſperdens populos profect⁹ eſt cum exercitu ſuo: egreſſus eſt de loco ſuo, ut ponat terrã tuam in deſolationẽ. Civitates tuæ deſertæ erunt abſq; habitatore. Sup hoc accingetur ſaccis, plangẽt & ululabũt: quia non eſt averſus furor iræ Dñi à nobis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܒܪܡ ܐܝܟ ܕܡܫܩܪܐ ܐܢܬܬܐ ܒܚܒܪܗ܂ ܗܟܢܐ ܫܩܪܘ ܒܝ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂
* ܩܠܐ ܥܠ ܫܦܝܐ ܐܫܬܡܥ܂ ܒܟܝܐ ܘܒܥܘܬܐ ܕܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܕܐܥܘܝܘ ܐܘܪܚܬܗܘܢ܂ ܘܛܥܘ
ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ܂ * ܬܘܒܘ ܒܢܝܐ ܬܝܒܐ܂ ܘܐܣܐ ܬܘܬܒܘܬܟܘܢ܂ ܘܐܡܪܘ ܗܢܘܢ܂ ܗܐ ܐܢܚܢ
ܕܝܠܟ܂ ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ܂ * ܫܪܝܪܐܝܬ ܠܕܓܠܘܬܐ ܪܡܬܐ܂ ܘܥܘܫܢܐ ܕܛܘܪܐ܂
ܫܪܝܪܐܝܬ ܒܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܦܘܪܩܢܗ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ * ܘܒܗܬܬܐ ܐܟܠܬ ܠܥܡܠܐ ܕܐܒܗܬܢ ܡܢ
ܛܠܝܘܬܗܘܢ܂ ܥܢܗܘܢ ܘܬܘܪܝܗܘܢ܂ ܘܒܢܝܗܘܢ ܘܒܢܬܗܘܢ܂ * ܢܫܟܘܒ ܒܒܗܬܬܢ܂
ܘܬܟܣܝܢ ܚܣܕܢ܂ ܡܛܠ ܕܠܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܚܛܝܢ܂ ܚܢܢ ܘܐܒܗܝܢ ܡܢ ܛܠܝܘܬܢ܂ ܘܥܕܡܐ
ܠܝܘܡܢܐ܂ ܘܠܐ ܫܡܥܢ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܐܢ ܬܬܘܒ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܘܬܝ ܬܬܘܒ܂ ܘܐܢ ܬܥܒܪ ܛܢܦܘܬܟ ܡܢ ܩܕܡܝ ܠܐ ܬܙܘܥ܂
ܘܬܐܡܐ ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ܂ ܒܩܘܫܬܐ ܘܒܕܝܢܐ ܘܒܙܕܝܩܘܬܐ܂ ܘܢܬܒܪܟܘܢ ܒܗ ܥܡܡܐ܂ ܘܒܗ
ܢܫܬܒܚܘܢ܂ * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܠܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܠܥܡܘܪܘܗܝ ܕܐܘܪܫܠܡ܂
ܐܢܗܪܘ ܠܟܘܢ ܢܘܗܪܐ܂ ܘܠܐ ܬܙܪܥܘܢ ܥܠ ܟܘܒܐ܂ * ܓܙܘܪܘ ܠܡܪܝܐ܂ ܘܐܥܒܪܘ ܥܘܪܠܘܬܐ
ܕܠܒܟܘܢ܂ ܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܥܡܘܪܘܗܝ ܕܐܘܪܫܠܡ܂ ܕܠܡܐ ܬܦܘܩ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܚܡܬܝ܂
ܘܬܐܩܕ ܘܠܝܬ ܕܡܕܥܟ܂ ܡܛܠ ܒܝܫܘܬܐ ܕܥܒܕܝܟܘܢ܂ * ܚܘܘ ܒܝܗܘܕܐ܂ ܘܒܐܘܪܫܠܡ
ܐܫܡܥܘ ܘܐܡܪܘ܂ ܩܥܘ ܒܫܝܦܘܪܐ ܒܐܪܥܐ܂ ܩܥܘ ܒܩܠܐ ܪܡܐ ܘܐܡܪܘ܂ ܐܬܟܢܫܘ ܘܢܥܘܠ ܠܟܪܟܐ
ܚܣܝܢܐ܂ * ܐܩܝܡܘ ܐܬܐ ܒܨܗܝܘܢ܂ ܐܬܥܫܢܘ ܘܠܐ ܬܩܘܡܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܒܝܫܬܐ ܡܝܬܐ
ܐܢܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ܂ ܘܬܒܪܐ ܪܒܐ܂ * ܡܠܟܐ ܐܚܝܕ ܣܠܩ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܡܢ ܥܒܗ܂ ܘܡܚܒܠܢܐ
ܕܥܡܡܐ܂ ܫܩܠ ܘܢܦܩ ܡܢ ܐܬܪܗ܂ ܠܡܣܡ ܐܪܥܟ ܠܚܘܪܒܐ: ܘܩܘܪܝܟܝ ܢܬܚܪܒܢ ܡܢ
ܕܠܐ ܥܡܘܪܐ܂ * ܥܠ ܗܕܐ ܐܬܟܣܘ ܣܩܐ ܘܐܪܩܕܘ ܘܐܝܠܠܘ܂ ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܦܟܬ
ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ ܡܢܟܘܢ܂

20 *Sed* verè quemadmodum fallit mulier amicum ſuum, ita me fefellerunt Iſraelitæ, dicit Dominus. 21 Vox in ſemitis audita eſt, fletus & obſecratio Iſraelitarum, quòd perverterint vias ſuas, & obliti ſint Domini Dei ſui. 22 Convertimini filii revertentes, & ſanabo reverſiones veſtras. Ipſi verò dixerunt, Ecce nos tui ſumus; quoniam tu es Dominus Deus noſter. 23 Verè mendaces ſunt colles & montium moles: verè in Domino Deo noſtro eſt ſalus Iſraelis. 24 Ignominia devoravit laborem patrum noſtrorum ab eorum pueritia, greges & armenta eorum, filios ac filias eorum. 25 Nos in ignominia noſtra jacebimus, & pudor obruet nos, eò quòd in Dominum Deum noſtrũ peccaverimus tam nos quàm patres noſtri à pueritia noſtra ad hunc uſq; diem, nec audierimus vocem Domini Dei noſtri.

CAP. IV.

1 SI ad me revertaris Iſrael, ait Dominus, revertaris; & ſi amoveris abominationem tuam à conſpectu meo, non timebis: 2 Et in veritate, judicio, atque juſtitiâ jurabis per Deum vivum, & benedicent ſibi gentes in ipſo, & in ipſo gloriabuntur. 3 Sic enim dicit Dominus ad viros Judæ & habitatores Jeruſalem, Accendite vobis lucernã, & ne feratis ſuper ſpinas: 4 Circuncidite vos Domino, & amovete præputium cordis veſtri, viri Judæ & habitatores Jeruſalem; ne prodiens tanquam ignis excandeſcentia mea, comburat ita ut nemo extinguat, propter malitiam actionum veſtrarum. 5 Notum facite in Juda, & in Jeruſalem promulgate, ac dicite; Clangite tubâ in terra, altâ voce proclamate, ac dicite, Congregamini ut ingrediamur in civitates munitas: 6 Attollite ſignum Sioni, ſumite animos, & ne deſidete: nam malũ adducturus ſum ab Aquilone, & contritionem magnam. 7 Rex quidam potentiſſimus aſcenſurus eſt quaſi leo de ſylva ſua, gentéſque conſumpturus: profectus eſt & prodivit è loco ſuo, ut terram tuam redigat in deſertum: & civitates tuæ deſolabuntur ob penuriam incolarum. 8 Ob hoc cingite vos ciliciis, plangite, & ululate, quia nondum receſſit à vobis æſtus iræ Domini.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* لكن كما تغدر المراة بالكاين معها * هكذا غدرني بيت اسرايل يقول الرب * اصوات
بكاء وطلبة سمعت من شفاه بني اسرايل * لانهم ظلموا في طرقهم * نسوا الله قدوسهم *
* ارجعوا ايها الابناء الراجعون فاشفيكم * ها نحن عبيد نكون لك * لانك الرب الهنا *
* ان كانت الاكام بالحقيقة للكذب وقوة الجبال * لكن من قبل الرب الخلاص لاسرايل *
* والخزي اباد اتعاب اباينا منذ شبابهم * خرافهم وعجاجهم * وبنيهم وبناتهم * رقدنا في
خزينا وغطانا هواننا * من اجل انا امام الله اخطانا نحن واباونا منذ شبابنا والى هذا اليوم
ولم نسمع صوت الرب الهنا *

* الفصل الرابع *   * الاصحاح الثالث *

* ان كان يرجع اسرايل الي يقول الرب فليرجع * ان كان يزيل رذالاته فيخاف من وجهه *
* ويقسم حي هو الرب بالحكم والحق والعدل * فيباركون به الامم وبه يسبحون لله في
ايروسليم * فلحدوا لهم فلاحات * ولا يزرعوا على الاشواك * تختنون لالهنا وتزيلون
قسوة قلوبكم يا رجال يهودا والسكان في ايروسليم * ليلا يخرج مثل النار غضبي ويتوقد
ولا يكون من يطفي * من وجه سوء اعمالكم * اخبروا في يهودا * وليسمع في ايروسليم *
وقولوا * اعملوا علامات على الارض * اصرخوا عظيما ببوق وقولوا * اجتمعوا وادخلوا الى
المدن الحصينة * خذوا واهربوا الى صهيون * اسرعوا ولا تقفوا * لاني انا اجلب شرورا من
الجربياء وانكسارا عظيما * صعد الاسد من غابته ليفسد الامم ظعن وخرج من موضعه
ليصنع الارض خرابا * وتهدم المدن من ان لا تسكن * لاجل هذا اتزروا مسوحا ونوحوا
وولولوا * من اجل انه لا يرجع غضب الرب عنكم *

20 *Verùm quemadmodum fraudat uxor comitem ſuum, ita fraudavit me domus Iſraelis, ait Dominus.* 21 *Voces fletûs & deprecationis auditæ ſunt è labiis Iſraelitarum, eò quòd impiè ſe geſſerint in viis ſuis, obliti ſint Dei ſancti ſui.* 22 *Revertimini O filii averſantes, ut ſanem vos. Ecce nos ſervi tui erimus, quoniam tu es Dominus Deus noſter.* 23 *Quandoquidem colles & montium robur ſunt reverà mendacium, igitur à Domino eſt ſalus Iſraelis,* 24 *Et ignominia conſumpſit labores patrum noſtrorum inde ab eorum juventute, oves ac pecudes eorum, & filios ac filias eorum:* 25 *Jacuimus in turpitudine noſtra, & operuit nos vituperium noſtrum; eò quòd coram Deo peccaverimus tam nos quàm patres noſtri inde à juventute noſtra ad hodiernum uſque diem, nec audierimus vocem Domini Dei noſtri.*

CAP. IV.

Textus tertius.

1 *SI revertatur ad me Iſrael, dicit Dominus, revertatur: ſi amoveat vitia ſua, vultum ejus reverebitur:* 2 *Jurabit dicens, Vivat Dominus, in judicio, veritate, & juſtitiâ; ut ita benedicant per eum gentes, & per ipſum laudent Deum in Jeruſalem:* 3 *Arabunt ſibi arva, & non ſerent ſuper ſpinas:* 4 *Circuncideris vos Deo noſtro, & amovebitis duritiem cordis veſtri, O viri Judæ & habitantes in Jeruſalem: ne egrediatur velut ignis furor meus, & ardeat nemine extinguente, propter nequitiam operum veſtrorum.* 5 *Annunciate in Juda, & promulgetur in Jeruſalem, dicite; Ponite ſigna ſuper terram, altè exclamate buccinâ, & dicite; Congregamini, & ingredimini urbes munitas:* 6 *Capite fugam ad Sionem, feſtinate, ne moremini: quoniam ego adducturus ſum mala ab Aquilone, & cladem magnam.* 7 *Aſcendit leo de ſylva ſua, ut conſumat gentes; proceſſit, & exivit è loco ſuo, ut terram deſolatam reddat, urbéſque deſtruantur eò quòd non habitentur.* 8 *Proptereà accingite vos ciliciis, plangite, & ejulate; quia non receſſit à vobis ira Domini.*

ירמיה : ד

:principiũ cor & , regis cor peribit , Dñs dixit , illa die in erit Et
9 והיה ביום ההוא נאם־יהוה יאבד לב־המלך ולב השרים
Ahah : dixi Et .admirabuntur prophetæ & ,sacerdotes obstupescent &
10 ונשמו הכהנים והנביאים יתמהו: ויאמר אהה
:dicendo ,Jerusalaim & , *isti populo imposuisti imponendo* verè ,*Domine* Dñe
אדני יהוה אכן השא השאת לעם הזה ולירושלם לאמר
illo tempore In .animam ad usq; gladius *pertigit* & : vobis erit Pax
11 שלום יהיה לכם ונגעה חרב עד־הנפש: בעת ההיא
,deserto in *locis editis* siccus Ventus : Jerusalaim & ,huic populo dicetur
יאמר לעם־הזה ולירושלם רוח צח שפים במדבר
plenus Ventus.purgandũ ad neq; ventilandum ad non,mei populi filiæ via
12 דרך בת־עמי לוא לזרות ולוא להבר: רוח מלא
Ecce .eis cum judicia loquar ego etiam nunc:mihi veniet *illis ab*
13 מאלה יבוא לי עתה גם־אני אדבר משפטים אותם: הנה
aquilis *præ sunt leves* ,ejus currus turbo veluti &,ascendet nubes tanquã
כעננים יעלה וכסופה מרכבותיו קלו מנשרים
tuum cor malitia à Lava .sumus *devastati* quoniam ,nobis Væ .ejus equi
14 סוסיו אוי לנו כי שדדנו: כבסי מרעה לבך
tuo interiori in facies morari quo usque : sis salva ut , Jerusalaim
ירושלם למען תושעי עד־מתי תלין בקרבך
facientis audire & :Dan à annuntiantis vox Nam?tuæ *injuriæ* cogitationes
15 מחשבות אונך: כי קול מגיד מדן ומשמיע
super facite audire ecce : *gentibus* Memorate .Ephraim monte de iniquitate
16 און מהר אפרים: הזכירו לגוים הנה השמיעו על־
civitates sup dabunt & : longinqua terra è venientes custodes Jerusalaim
ירושלם נצרים באים מארץ המרחק ויתנו על־ערי
:circuitu à eam juxta fuerũt agrorũ custodes Veluti.suam vocem Jehudah
17 יהודה קולם: כשמרי שדי היו עליה מסביב
: tibi hæc fecerũt *tua studia* & tua Via .Dominus dixit,*exacerbavit* me quia
18 כי־אתי מרתה נאם־יהוה: דרכך ומעלליך עשו אלה לך
,*mei* Viscerib⁹ .tuũ cor ad usque *pertigit* quia,*amarum* quia:tua malitia ista
19 זאת רעתך כי מר כי נגע עד־לבך: מעי
non,meũ cor *mihi tumultuans*,mei cordis parietes , *torquebor meis visceribus*
מעי אחולה קירות לבי המה־לי לבי לא
.belli clamorẽ,mea anima audisti tubæ vocem quoniam ,tacebo
אחריש כי קול שופר שמעתי נפשי תרועת מלחמה:
repentè : terra omnis est vastata quia,est vocata cõtritionẽ super Cõtritio
20 שבר על־שבר נקרא כי־שדדה כל־הארץ פתאם
: vexillũ videbo Usquequo .meæ cortinæ subitò ,mea *tentoria* sunt vastata
21 שדדו אהלי רגע יריעתי: עד־מתי אראה־נס
,cognoverunt non me me⁹ popul⁹ stultus Quia ? tubæ vocem audiam
22 אשמעה קול שופר: כי אויל עמי אותי לא ידעו
,malefaciẽdũ ad *illi* sapientes ,*ipsi* intelligẽtes nõ & ,*ipsi* insipiẽtes filii
בנים סכלים המה ולא נבונים המה חכמים המה להרע
:vacua &,*inanitas* ecce & ,terram Vidi .noverũt non benefacere at
23 ולהיטיב לא ידעו: ראיתי את־הארץ והנה תהו ובהו
:*cõtremiscẽtes* ecce & ,montes Vidi .eorũ lux non & , cœlos *ad* &
24 ואל־השמים ואין אורם: ראיתי ההרים והנה רעשים
:homo non ecce& ,Vidi .*concutiebantur* colles omnes &
25 וכל־הגבעות התקלקלו: ראיתי והנה אין האדם
Charmel ecce & , Vidi .*avolarant* cœli *volatile omne* &
26 וכל־עוף השמים נדדו: ראיתי והנה הכרמל
,DOMINI *faciebus* à erant destructæ ejus urbes omnes & : desertum
המדבר וכל־עריו נתצו מפני יהוה
.ejus *nasi* iræ *faciebus* à
מפני חרון אפו:

Versio VULG. LAT.

9 Et erit in die illa, dicit Domi-
nus; Peribit cor regis, & cor
principũ: & obstupescent sacer-
dotes,et prophetæ consternabun-
10 tur. Et dixi; Heu, heu, heu,Do-
mine Deus, ergóne decepisti po-
pulum istum & Jerusalem,dicens;
Pax erit vobis: & ecce pervenit
11 gladius usque ad animã? In tem-
pore illo dicetur populo huic &
Jerusalem; Ventus urens in viis,
quæ sunt in deserto viæ filiæ po-
puli mei, non ad ventilandum et
12 ad purgandum.Spiritus plenus ex
his veniet mihi: & nunc ego lo-
13 quar judicia mea cum eis. Ecce
quasi nubes ascendet, & quasi
tempestas currus ejus: velocio-
res aquilis equi illius: væ nobis
14 quoniam vastati sumus. Lava à
malitia cor tuum, Jerusalem, ut
salva fias: usquequò morabuntur
15 in te cogitationes noxiæ? Vox
enim annuntiantis à Dan, & no-
tum facientis idolum de monte
16 Ephraim. Dicite gentibus; Ecce
auditum est in Jerusalem custodes
venire de terra longinqua,& da-
re super civitates Juda vocem
17 suam. Quasi custodes agrorum
facti sunt super eam in gyro: quia
me ad iracundiam provocavit, di-
18 cit Dominus. Viæ tuæ,& cogita-
tiones tuæ fecerunt hæc tibi: ista
malitia tua,quia amara,quia teti-
19 git cor tuum. Ventrem meum,
ventrem meum doleo,sensus cor-
dis mei turbati sunt in me: non
tacebo,quoniam vocem buccinæ
audivit anima mea, clamorem
20 prælii.Contritio super contritio-
nem vocata est, & vastata est o-
mnis terra: repentè vastata sunt
tabernacula mea, subitò pelles
21 meæ. Usquequò videbo fugien-
tem, audiam vocem buccinæ?
22 Quia stultus populus meus me
non cognovit: filii insipientes
sunt,& vecordes: sapientes sunt
ut faciant mala: benè autem face-
23 re nescierunt. Aspexi terram, &
ecce vacua erat,& nihili; & cœ-
24 los, & non erat lux in eis. Vidi
montes, & ecce movebantur: &
omnes colles conturbati sunt.
25 Intuitus sum, & non erat homo:
& omne volatile cœli recessit.
26 Aspexi, & ecce Carmelus deser-
tus: & omnes urbes ejus destru-
ctæ sunt à facie Domini, & à fa-
cie iræ furoris ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

9 Καὶ ἔσαι ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, λέγει κύριος,
ἀπολεῖται ἡ καρδία τοῦ βασιλέως, καὶ ἡ
καρδία τῶν ἀρχόντων, καὶ οἱ ἱερεῖς (ξ) ἐκστή-
10 σονται, καὶ οἱ προφῆται θαυμάσονται. Καὶ
εἶπα, Ὦ δέσποτα κύριε, ἆρά γε ἀπατῶν ἠ-
πάτησας τὸν λαὸν τοῦτον καὶ τὴν Ἱερουσαλήμ,
λέγων, Εἰρήνη (ο) ἔσαι, καὶ ἰδοὺ ἥψατο ἡ
11 μάχαιρα ἕως τῆς ψυχῆς αὐτῶν; Ἐν τῷ
καιρῷ (π) ἐκείνῳ ἐροῦσι τῷ λαῷ τούτῳ καὶ
τῇ Ἱερουσαλήμ, Πνεῦμα πλανήσεως ἐν
τῇ ἐρήμῳ, ὁδὸς τῆς θυγατρὸς τοῦ λαοῦ μου, οὐκ
12 εἰς καθαρὸν, οὐδ᾽ εἰς ἅγιον. Πνεῦμα πλη-
ρώσεως ἥξει μοι· νῦν δὲ ἐγὼ λαλῶ (ρ) κρί-
13 ματά μου πρὸς αὐτούς. Ἰδοὺ ὡς νεφέλη ἀ-
ναβήσεται, καὶ ὡς καταιγὶς τὰ ἅρματα (σ)
αὐτοῦ, κουφότεροι ἀετῶν οἱ ἵπποι (τ) αὐτοῦ.
14 οὐαὶ ἡμῖν, ὅτι ταλαιπωροῦμεν. Ἀπόπλυνε
ἀπὸ κακίας τὴν καρδίαν σου Ἱερουσαλήμ,
ἵνα σωθῇς. ἕως πότε (υ) ὑπάρχουσιν ἐν
15 σοὶ διαλογισμοὶ πόνων σου; Διότι φωνὴ
(φ) ἀγγέλλοντος ἐκ Δὰν ἥξει, καὶ ἀκουσθή-
16 σεται πόνος ἐξ ὄρους Ἐφραίμ. Ἀναμνή-
σατε ἔθνη, ἰδοὺ ἥκασιν· ἀναγγείλατε ἐν
Ἱερουσαλήμ, συστροφαὶ ἔρχονται ἐκ γῆς μα-
κρόθεν, καὶ ἔδωκαν ἐπὶ τὰς πόλεις Ἰού-
17 δα φωνὴν αὐτῶν. Ὡς φυλάσσοντες ἀγρὸν,
ἐγένοντο ἐπ᾽ αὐτὴν κύκλῳ, ὅτι ἐμοῦ ἠ-
18 μέλησας, λέγει κύριος. Αἱ ὁδοί σου καὶ
τὰ ἐπιτηδεύματά σου ἐποίησε ταῦτά
σοι· αὕτη ἡ κακία σου, ὅτι πικρὰ, ὅτι ἥ-
19 ψατο ἕως τῆς καρδίας σου. Τὴν κοιλίαν
μου, τὴν κοιλίαν μου ἀλγῶ, καὶ τὰ αἰσθητή-
ρια τῆς καρδίας μου, μαιμάσσει ἡ ψυχή μου,
σπαράσσεται ἡ καρδία μου. οὐ σιωπήσομαι,
ὅτι φωνὴν σάλπιγγος ἤκουσεν ἡ ψυχή μου,
20 κραυγὴν πολέμου Καὶ (χ) ταλαιπωρίας,
συντριμμὸν ἐπικαλεῖται, ὅτι τεταλαιπώ-
ρηκε πᾶσα ἡ γῆ, ἄφνω τεταλαιπώρηκεν
(ψ) ἡ σκηνὴ, διεσπάσθησαν αἱ δέρρεις μου.
21 Ἕως πότε ὄψομαι φεύγοντας ἀκούων
22 φωνὴν σαλπίγγων; Διότι οἱ ἡγούμενοι τοῦ
λαοῦ μου ἐμὲ οὐκ ᾔδεισαν· υἱοὶ ἄφρονές εἰσι
καὶ οὐ συνετοί, σοφοί εἰσι τοῦ κακοποιῆσαι,
τὸ δὲ (ω) καλῶς ποιῆσαι οὐκ ἐπέγνωσαν.
23 Ἐπέβλεψα ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἰδοὺ οὐθὲν, καὶ εἰς
24 τὸν οὐρανὸν, καὶ οὐκ ἦν τὰ φῶτα αὐτοῦ. Εἶδον
τὰ ὄρη, καὶ ἦν τρέμοντα, καὶ πάντας τοὺς βουνοὺς
25 ταρασσομένους. Ἐπέβλεψα, καὶ ἰδοὺ οὐκ ἦν
ἄνθρωπος, καὶ πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρα-
26 νοῦ ἐπτοεῖτο. Εἶδον, καὶ ἰδοὺ ὁ Κάρμηλος ἔ-
ρημος, καὶ πᾶσαι αἱ πόλεις ἐμπεπυρισμέναι πυρὶ ἀπὸ προσώπου κυ-
ρίου, καὶ ἀπὸ προσώπου ὀργῆς θυμοῦ αὐτοῦ ἠφανίσθησαν.

MS.A. (ξ) ἐκστήσονται Καὶ εἶπαν, (ο) ἔσαι ὑμῖν, καὶ ἥψατο (π) τούτῳ
(ρ) κρίματα πρὸς αὐτούς. (σ) αὐτῶν, (τ) αὐτῶν. οὐαὶ ὑμῖν, (υ) ὑπάρχου-
σιν (φ) ἀναγγέλλοντος (χ) ταλαιπωρείαν (ψ) συντριμμὸν (ψ) σκηνὴ
(ω) καλὸν ποιοῦντες οὐκ ἔγνωσαν.

Cum Translatione LATINA.

Et erit in die illa, dicit Dominus: peribit cor regis, & cor principum: & obstupescent sacerdotes, & prophetæ mirabuntur. Et dixi; O (e) Dominator Domine: ergone decipiens decepisti populum istum, & Hierusalem, dicens, Pax erit; & ecce tetigit gladius usque ad animam eorum? In tempore illo dicent populo huic, & Hierusalem; Spiritus erroris in deserto: via filiæ populi mei non ad purum, neque ad sanctum: Spiritus repletionis veniet mihi. Nunc autem ego loquor judicia mea adversus eos. Ecce quasi nubes ascendet, et quasi tempestas, currus ejus: leviores aquilis equi ejus. Væ nobis, quia miserè vexamur. Lava à malitia cor tuum Hierusalem, ut salva fias. Usquequò subsistunt in te cogitationes (f) laborum tuorũ? Vox enim annuntiantis è Dan veniet: & audietur dolor de monte Ephræm. Commonefacite gentes, ecce venerunt: annuntiate in Hierusalem, catervæ veniunt de terra longinqua: & dederunt super civitates Juda vocem suam: Quasi custodes agri facti sunt super eam in circuitu: quia me neglexisti, dicit Dominus. Viæ tuæ, & adinventiones tuæ fecerunt hæc tibi: ista malitia tua: quia amara, quia tetigit usque ad cor tuum. Ventrem meum, ventrem meum doleo, & sensoria cordis mei: (g) fluctuat anima mea, dilaceratur cor meum: non tacebo; quoniam vocem tubæ audivit anima mea, clamorem prælii, Et miseriæ: contritionem advocat; quia vastata est omnis terra: repentè vastatum est tabernaculum, dilaceratæ sunt pelles meæ. Usquequò videbo fugientes, audiens vocem tubarum? Quia duces populi mei me non cognoverunt. Filii insipientes sunt, & non intelligentes: sapientes sunt, ut faciant mala: benè autem facere nescierunt. Aspexi super terram; & ecce (h) nihil: & in cœlum; & non erant lumina ejus. Vidi montes; & erant trementes: & omnes colles turbatos. Aspexi, et ecce non erat homo: et omnia volatilia cœli pavebant. Vidi, et ecce Carmelus desertus, et omnes civitates inflammatæ igni à facie Domini; & à facie iræ furoris ejus deletæ erant.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

9 ויהי בעדנא ההיא אמר יי יתבר לבא דמלכא ולבא דרברביא ויצדון כהניא ונביי שקרא
10 ישתעממון: ואמרית קביל בעותי יי אלהים בכן הא נביי שקרא מטען לעמא הדין
11 וליתבי ירושלם למימר שלמא יהי לכון וכען הא חרבא מקטלא בעמא: בעדנא ההיא
יתאמר לעמא הדין וליתבי ירושלם כרוח טיהרין על רישי נגדין דמיין במדברא כן
12 אורח כנשתא דעמי לא למדרי ולא לבדרא: על דטעו בתר נביי שקרא דמתנבן להון
ברוח דשקר בכן משרית עממיא מאלין קלילין כרוחא ייתון עליהון כען אף במימרי
13 איתנון ואמלל פורענות דיני מנהון: הא מלך במשריתיה יסק עליהון כעננא דסליק
וחפי ית ארעא וכעלעולין רתיכוהי קלילין מנשריא סוסותיה ווי לנא ארי אתי למבזנא:
14 אתחורי מלמעבד בישא לבך ירושלם בדיל דתתפרקין עד אימתי יורכון ויתקימון עבדי
15 אונס די בגויך: ארי קל נבייא דמתנבן עליהון דיגלון על דפלחו לעגלא די בדן ומבסרי
בסורן בישן ייתון עליהון על דאשתעבדו לצלמא דאקים מיכה בטורא דבית אפרים:
16 אדכרו לעממיא הא בשרו על ירושלם אמרו משרית עממין חטופין כקטופין אתן
17 מארע רחיקא ושרון על קרויא דבית יהודה וירימון עליהון קלהון: כנטרי חקלן הוו
18 עלה מסחור סחור ארי על מימרי סרבת אמר יי: ארחתך בישתא ועובדך מקלקליא
19 גרמו אלין ליך דא בישתא ומררא איתי עלך ירושלם עד דאתבר רשע לביך: אמר נביא
מעי מעי כיבין לי זע סמך לבי המי לי לבי לא שתק ארי קל צוחת קרנא שמעת נפשי
20 21 יבבות עבדי קרבא: תברא על תברא יתערע ארי אתבזיזת כל ארעא בתכף חרובת
22 ארעי זמן חדא כל קרוי: עד אימתי אנא חזי סימון אשמע קל קרנא: ארי אטפשו עמי
מדע דחלתי לא אליפו בנין טפשין אנון ולא סוכלתנין אנון חכימין אנון לאבאשא
23 ולאוטבא לית אנון ידעין: חזיתי ית ארעא הא צדיא ורקניא אסתכלית בשמיא והא לא
24 25 מזהרין נהוריהון: חזיתי טוריא והא זיעין וכל רמתא אתפרקא: חזיתי והא לית עמא שרי
26 עלה וכל עופא דשמיא אטלטלו: חזיתי והא ארעא דישראל דהות מנצבא כברמלא
חבת למהוי כמדברא וכל קרוהא צדיאה מן קדם יי מן קדם תקוף רוגזיה:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et erit in tempore illo, dicit Dñs, conteretur cor regis & cor principum, & vastabuntur sacerdotes, & prophetæ falsi conturbabuntur. Et dixi: Suscipe deprecationem meam Dñe Deus: certè ecce prophetæ *falsi* decipiunt populũ istum & *habitatores* Jerusalem dicentes: Pax erit vobis: & nunc ecce gladi⁹ occidit in populo. In tempore illo dicetur populo huic, & *habitatorib⁹* Jerusalem; Quasi ventus meridian⁹ super capita fluentorũ aquarum in deserto, sic est via congregationis populi mei, non ad ventilandũ nec ad aspergendum: Pro eo quod erraverunt, sequentes falsos prophetas, qui prophetabant eis in spiritu falsitatis: propterea exercit⁹ populorũ leviores sicut vent⁹ venient contra eos. Nunc enim in verbo meo adducam eos, & loquar ultionem judiciorũ meorũ de eis. Ecce rex cum exercitu suo ascendet super eos sicut nubes quæ ascendit & operit terram: & quasi turbines curr⁹ ejus, & velociores aquilis equi ej⁹: væ nobis, quia venit ad vastandum nos. Munda cor tuũ ne facias malũ, Jerusalem, ut salva fias: quousque durabunt & stabiles erunt violenti qui sunt in te? Quia vox prophetarũ qui prophetant adversùm eos qui migraverunt *eò quòd coluerunt* vitulũ qui est in Dan, & *nuntiantes* annuntiationes malas venient super eos, eò quod servierunt simulachro quod erexerat Michæas in monte dom⁹ Ephraim. Commemorate populis, & annuntiate Jerusalem: dicite; Exercit⁹ populorũ diripientiũ quasi vindemiatores veniunt de terra longinqua, & castrametabuntur super civitates dom⁹ Juda; & tollent super eas vocẽ suã. Quasi custodes agrorũ fuerũt super eam per circuitũ, quia contra Verbũ meum rebellaverunt, dicit Dñs. Viæ tuæ pessimæ, & opera tua causata sũt hæc tibi: Ista malitia & amaritudo induxit super te Jerusalẽ, donec contereretur impietas cordis tui. Dicit Propheta: Viscera mea, viscera mea dolent mihi: mota est sustentatio cordis mei; rugit in me cor meũ, nec tacet, quia vocẽ clamoris tubæ cornu audivit anima mea, ululationẽ bellatorũ. Contractio super contractionem accidit, quia direpta est omnis terra; subitò desolata est terra mea, in tempore uno oẽs civitates meæ. Quando videbo ego signa, audiam vocẽ cornu? Quia insipientes facti sunt popul⁹ me⁹; scire timorẽ meũ non didicerũt: insipientes sunt, & non intelligẽtes: sapientes sũt ut malè faciãt, benè autem facere nesciũt. Vidi terrã, & ecce deserta & vacua: contemplat⁹ sum in cœlos, & ecce non splendebãt luminaria eorũ. Vidi montes, et ecce movebãtur, & oẽs colles subvertebãtur. Vidi, & ecce non erat popul⁹ habitans in ea, & omnia volatilia cœli migraverant. Vidi, & ecce terra Israel quæ erat plantata sicut Carmelus, conversa est ut esset sicut desertum, & omnes urbes ejus vastatæ sunt à facie Domini, à facie iræ furoris ejus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܢܐܒܕ ܠܒܐ ܕܡܠܟܐ ܘܠܒܐ ܕܫܠܝܛܢܐ܂ ܘܢܬܡܗ
ܟܗܢܐ ܘܢܒܝܐ ܢܬܕܡܪܘܢ܂ * ܘܐܡܪܬ܂ ܒܒܥܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ܂ ܡܛܥܝܘ ܐܛܥܝܬܗ ܠܥܡ
ܗܢܐ ܘܠܐܘܪܫܠܡ܂ ܘܐܡܪܬ܂ ܫܠܡܐ ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ܂ ܘܗܐ ܡܛܬ ܚܪܒܐ ܥܕܡܐ ܠܢܦܫ
* ܒܗܘ ܙܒܢܐ ܗܘ܂ ܢܬܐܡܪ ܠܥܡܐ ܗܢܐ ܘܠܐܘܪܫܠܡ܂ ܐܝܟ ܪܘܚܐ ܛܥܝܬܐ ܕܒܫܒܝܠ
ܕܡܕܒܪܐ܂ ܐܘܪܚܗ ܕܒܪܬ ܥܡܝ܂ ܠܐ ܠܡܕܪܝܘ܂ ܘܠܐ ܠܡܟܢܫܘ܂ * ܪܘܚܐ ܕܡܠܝܐ ܡܢ ܗܠܝܢ ܬܐܬܐ ܠ
ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܦ ܐܢܐ ܐܡܠܠ ܕܝܢܐ ܥܡܗܘܢ܂ * ܗܐ ܐܝܟ ܥܢܢܐ ܢܣܩ܂ ܘܐܝܟ ܥܠܥܠܐ ܡܪܟܒܬܗ܂
ܩܠܝܠܝܢ ܡܢ ܢܫܪܐ ܣܘܣܘܗܝ܂ ܘܝ ܠܢ ܕܐܬܒܙܝܢ܂ * ܚܠܠܝ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܠܒܟܝ ܐܘܪܫܠܡ
ܕܬܬܦܪܩܝܢ܂ ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܢܒܘܬܘܢ ܒܓܘܟܝ ܡܚܫܒܬܐ ܕܒܝܫܬܐ܂ * ܡܛܠ
ܕܩܠܐ ܕܡܒܣܪܐ ܡܢ ܕܢ܂ ܘܡܫܡܥ ܟܐܒܐ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܐܦܪܝܡ܂ * ܐܕܟܪܘ ܠܥܡܡܐ܂ ܘܐܫܡܥܘ
ܠܐܘܪܫܠܡ܂ ܗܐ ܓܝܣܐ ܕܥܡܡܐ ܐܬܝܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ܂ ܘܢܪܝܡܘܢ ܩܠܗܘܢ ܥܠ ܩܘܪܝܐ
ܕܝܗܘܕܐ܂ * ܐܝܟ ܢܛܘܪܝ ܚܩܠܐ ܗܘܘ ܥܠܝܗ ܡܢ ܚܕܪܝܗ܂ ܡܛܠ ܕܐܡܪܬܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
* ܐܘܪܚܬܟܝ ܘܥܒܕܝܟܝ܂ ܥܒܕܘ ܠܟܝ ܗܠܝܢ܂ ܗܕܐ ܒܝܫܘܬܟܝ܂ ܕܡܪܝܪܐ ܘܡܛܬ ܥܕܡܐ
ܠܠܒܟܝ܂ * ܡܥܝ ܡܥܝ ܟܐܒܝܢ ܠܝ܂ ܘܠܒܘܬܝ܂ ܠܒܝ܂ ܡܬܥܙܙ ܠܒܝ ܘܠܐ ܫܠܐ
ܡܛܠ ܕܩܠܐ ܕܫܝܦܘܪܐ ܫܡܥܬ ܢܦܫܝ܂ ܘܩܘܠܐ ܕܩܪܒܐ܂ * ܬܒܪܐ ܥܠ ܬܒܪܐ܂ ܡܛܠ
ܕܐܬܒܙܬ ܟܠܗ ܐܪܥܐ܂ ܡܢ ܫܠܝ ܐܬܒܙܘ ܡܫܟܢܝ܂ ܘܦܪܣܝ ܢܦܠܘ܂ * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܐܚܙܐ
ܠܥܪܘܩܐ܂ ܘܐܫܡܥ ܩܠܐ ܕܫܝܦܘܪܐ܂ * ܡܛܠ ܕܣܟܠܘ ܥܡܝ ܘܠܝ ܠܐ ܝܕܥܘ܂ ܒܢܝܐ ܐܢܘܢ
ܣܟܠܐ܂ ܘܠܐ ܗܘܘ ܚܟܝܡܐ܂ ܚܟܝܡܝܢ ܐܢܘܢ ܠܡܒܐܫܘ܂ ܘܠܡܛܒܘ ܠܐ ܝܕܥܝܢ܂ * ܚܙܝܬ ܠܐܪܥ
ܘܗܐ ܗܘܬ ܬܘܗ ܘܒܘܗ܂ ܘܠܫܡܝܐ ܘܠܝܬ ܢܘܗܪܗܘܢ܂ * ܚܙܝܬ ܠܛܘܪܐ ܘܗܐ ܙܝܥܝܢ܂ ܘܟܠܗܘ
ܪܡܬܐ ܐܬܦܪܩܘ܂ * ܚܙܝܬ ܘܠܐ ܐܝܬ ܒܪܢܫܐ܂ ܘܟܠܗ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܦܪܚ
* ܚܙܝܬ ܘܗܐ ܟܪܡܠܐ ܚܪܒ܂ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ܂ ܘܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܘܗܝ ܐܬܚܪܒ܂ ܡܢ ܩܕܡ
ܡܪܝܐ܂ ܘܡܢ ܩܕܡ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ܂

Erit enim illo die, dicit Dñs, interibit animus 9
regis & animus principum, obſtupeſcent ſa-
cerdotes, & prophetæ mirabuntur. Ego verò 10
dixi, Obſecro DñeDeus, profectò *dicar* omni-
no decepiſſe populum hunc & Jeroſolymam:
dixeram enim. Pax erit vobis; ecce tamen
pertigit gladius ad animam uſque. Eodem 11
tempore dicetur huic populo & Jeroſolymæ,
Qualis eſt ſpiritus oberrans per ſemitas de-
ſerti *talis* eſt via filiæ populi mei, non ad ven-
tilandum, neque ad recondendum *fruges*.
Spiritus hiſce perfectior adveniet mihi: qua- 12
propter ego etiam proponam eis lites meas.
Ecce tanquam nubes aſcenſurus eſt, & turbi- 13
ni ſimiles erunt currus ejus, celeriores aquilis
equi ejus: væ nobis quia direpti ſumus, Ab- 14
lue à malitia cor tuum Jeruſalem, ut ſerveris:
quouſq; tandem pernoctabunt in præcordiis
tuis cogitationes tuæ malignæ? Nam vox quæ 15
indicat è Dan, dolorem etiam prædicat è
monte Aphremi. Commemorate gentibus, 16
& prædicate Jeroſoymæ, *quòd* ecce turbæ po-
pulorum venient è terra longinqua, & attol-
lent vocem ſuam contra civitates Judæ. Ut 17
cuſtodes agrorum undique obſederunt eam,
quia exaſperavit me, dicit Dominus. Viæ tuæ 18
& actiones tuæ hæc tibi produxerunt: hæc
eſt nequitia tua, quæ amara facta pervenit
uſque ad cor tuum, Viſcera mea, viſcera mea 19
doleo, & præcordia mea: cor meum ſubſilit
mihi, cor *inquam* meũ indeſinenter; quia tubæ
ſonitum audivit anima mea, & clangorem
belli. Contritio ſuper contritionem veniet; 20
nam diripienda eſt univerſa terra, repentina
præda capietur tentorium meum, & corruent
aulæa mea. Quouſq; viſurus ſum fugientem, 21
& tubæ ſonitum auditurus? Eò quòd deſi- 22
puerint populus meus, & me non cognove-
rint, filii ſint ſtulti, non autem ſapientes; ſa-
pientes quidem ſint ad malum, bonum au-
tem non agnoſcant: Aſpexi terram, & ecce 23
vacua eſt atque deſerta; cœlos, & abeſt
lumen eorum: Aſpexi montes, & ecce con- 24
tremiſcunt, & omnes colles procul abſceſſe-
runt. Intuitus ſum, & nullus eſt homo: imò 25
omnes cœli volucres ſeceſſerunt. Aſpexi, & 26
ecce Charmelus vaſtatus eſt quaſi deſertum,
& omnes civitates ejus abraſæ: *idque* à fa-
cie Domini, & à facie æſtûs furoris ejus.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ويكون في ذلك اليوم يقول الرب يهلك قلب الملك وقلب الروساء والكهنة يتحيرون * وقالوا
ايها السيد الرب خداعا اخدعت هذا الشعب اذن ولايروشليم قايلا يكون لكم السلم
فلمس السيف حتى نفسهم * في هذا الوقت يقولون لهذا الشعب ولايروشليم روح ضلالة في
البرية طريق ابنة شعبي ليست للطهر ولا للقدس * روح كامل ياتي لي والان انا اتكلم معهم
بالاحكام * ها مثل سحابة يصعد ومثل عاصف مركباته خيوله اخف من النسور الويل لنا
لانا تعسنا * اغسلي من الشر قلبك يا ايروشليم لكي تخلصي الى متى افكار اوجاعك موجودة
فيك * من اجل ان صوت المخبر ياتي من دان ويسمع الوجع من جبل افرام * اذكروا ايها
الامم ها اتوا اخبروا في ايروشليم الترجيعات تاتي من ارض بعيدة واعطوا على مدن يهوذا
صوتهم * مثل حارس حقل صاروا عليها من حولها لانك تكاسلت عني يقول الرب * طرقك
واعمالك صنعت هذه لك وهذا شرك لانه مر انه لمس حتى قلبك * بطني بطني اتوجع وحواس
قلبي تعض نفسي اتصرع قلبي لست اسكت لان نفسي سمعت صوت البوق صرخة
الحرب * وسحقا وانكسارا يدعوا لان الارض كلها شقيت بغتة شقيت قبابي مرة وسقائفي
* الى متى انظر الهاربين واسمع صوت الابواق * من اجل ان مقدمي شعبي لم يعرفوني
بنون جهال هم وليسوا فهماء هم حكماء ليصنعوا الشر ولم يعرفوا ان يصنعوا الخير * نظرت
الارض واذا لا شي والى السماء فلم تكن انوارها * نظرت الجبال وهي مرتعدة وجميع
الاكام قلقة * ونظرت واذا لم يكن انسان وجميع طيور السماء جزعت * نظرت واذا
الكرمل برية وجميع المدن محرقة بالنار من وجه الرب ومن رجز غضبه فنيوا

Erit ſiquidem illâ die, dicit Dominus, ut 9
pereat animus regis & animus principum,
& ſacerdotes obſtupeſcant, Ac dicant, 10
Heus here Domine, ergóne planè dece-
piſti populum iſtum & Jeruſalem, di-
cens; Erit vobis ſalus; quum tetigerit
gladius vel ipſam animam eorum? Tunc 11
temporis dicent huic populo & Jeroſoly-
mæ, Spiritus eſt erroris in deſerto viâ
filiæ populi mei, non ad puritatem, neque
ad ſanctitatem. Spiritus perfectionis 12
adveniet mihi, ac jam pronuntiabo eis ju-
dicia: Ecce nubis inſtar aſcenſurus eſt, 13
& turbinis inſtar erunt currus ejus, equi
ejus velociores aquilis: væ nobis, quia ve-
xandi ſumus. Lava pravitate cor tuum O 14
Jeruſalem, ut evadas; quouſque cogitatio-
ne, dolorum tuorum te occupabunt? Nam 15
vox præconis ventura eſt è Dan, &
prædicabitur dolor è monte Aphremi.
Recordamini O populi: ecce venerunt: 16
annuntiate in Jeruſalem: repercuſſiones
vocis veniunt è terra longinqua: edide-
runt contra urbes Judæ vocem ſuam:
ut agri cuſtos circundederunt eam un- 17
dique. Quia me neglexiſti, dicit Domi-
nus, Viæ tuæ & actiones tuæ hæc tibi 18
fecerunt: & hæc malitia tua, quia ama-
ra eſt, vel ipſum cor tuum tetigit. Ven- 19
trem meum, ventrem meum doleo, &
præcordia cordis mei mordent animam
meam, conſternatus eſt animus meus, haud
ſileo; quia anima mea audivit clangorem
buccinæ, clamorem belli, Miſeriam & 20
contritionem proclamari; quòd tota ter-
ra affligenda ſit repentè, affligenda ten-
toria mea, & aulæa mea laceranda. Quo- 21
uſque viſurus ſum fugientes, & clango-
rem buccinarum auditurus? Quia præ- 22
poſiti populi mei me minimè nôrunt, fi-
lii ſunt inſipientes, non autem prudentes;
ſunt periti in agendis malis, ignari ve-
rò benefaciendi. Terram aſpexi, & ec- 23
ce nihil; cœlum, & non aderant ejus lu-
mina. Cum aſpicio montes, trepidi 24
ſunt, omneſque colles perturbati. Aſpexi 25
quoque, & ecce nullus erat homo, quin
omnes cœli volucres conterritæ ſunt.
Aſpexi, & ecce Charmelus erat ſolitu- 26
do, & omnes urbes igni exuſtæ; à fa-
cie Domini, & à facie iræ furoris ejus
conſumpti ſunt.

ירמיה: ה

: terra omnis erit Deserta : Dominus dixit sic Nam
27 כי־כה אמר יהוה שממה תהיה כל־הארץ
, terra *lugebit* hoc Propter .faciam non consummationem sed
28 וכלה לא אעשה׃ על־זאת תאבל הארץ
non & , cogitavi, sum locutus quod *super* : desuper cœli *nigrescent* &
וקדרו השמים ממעל על כי־דברתי זמתי ולא
, arcu jacientis & *equitis* voce A .eo ab avertar nec , me pœnituit
29 נחמתי ולא־אשוב ממנה׃ מקול פרש ורמה קשת
. ascenderunt rupes ad & , *condensa* in sunt ingressi ; *civitas* omnis *fugiens*
ברחת כל־העיר באו בעבים ובכפים עלו
tu Et .quisquam eis in *habitans* non & , est derelicta civitas Omnis
30 כל־העיר עזובה ואין־יושב בהן איש׃ ואתי
ornamento te *ornabis* quia : coccino te *indues* quia ? facies quid vastata
שדוד מה־תעשי כי־תלבשי שני כי־תעדי עדי־
reprobaverunt : te decorabis vanum in , tuos oculos *fuco in* *scindes* quia , *auri*
זהב כי־תקרעי בפוך עיניך לשוא תתיפי מאסו־
parturientis tanquam vocem Quippe .quærent tuam animā , amatores te *in*
31 בך עגבים נפשך יבקשו׃ כי קול כחולה
expandet, *conqueretur* ; Sijon filiæ vocem .*primiparæ* ut angustiam , audivi
שמעתי צרה כמבכירה קול בת־ציון תתיפח תפרש
.*interfectoribus* mea anima *est lassata* quia , mihi nunc Væ : suas *volas*
כפיה אוי־נא לי כי־עיפה נפשי להרגים׃

CAP. V. ה

quærite & , scitote & , nunc videte & , Jerusalaim plateis in *Discursate*
1 שוטטו בחוצות ירושלם וראו־נא ודעו ובקשו
, judicium *faciens* sit an , virum inveniatis an , ejus plateis in
ברחובותיה אם־תמצאו איש אם־יש עשה משפט
, dixerint Dominus *vivens* si Et .ei parcam & : veritatem *quærens*
2 מבקש אמונה ואסלח לה׃ ואם חי־יהוה יאמרו
? *veritatem* ad nonne tui oculi Domine .jurabunt *vanum in ideo*
3 לכן לשקר ישבעו׃ יהוה עיניך הלוא לאמונה
accipere renuerunt, eos consumpsisti : doluerunt non & , eos percussisti
הכיתה אתם ולא־חלו כליתם מאנו קחת
ego Et .reverti renuerunt ; petra *præ suas* facies *roboraverunt* : disciplinam
4 מוסר חזקו פניהם מסלע מאנו לשוב׃ ואני
viam noverunt non quia : sunt facti stulti ; *ipsi tenues Verumtamen* , dixi
אמרתי אך־דלים הם נואלו כי לא ידעו דרך
, *magnates* ad mihi Ibo .sui Dei judicium , Domini
5 יהוה משפט אלהיהם׃ אלכה־לי אל־הגדלים
judicium , Domini viam cognoverunt ipsi quippe ; eos alloquar &
ואדברה אותם כי המה ידעו דרך יהוה משפט
.vincula *exsulserunt*, jugum confregerunt simul ipsi *veruntamen* : sui Dei
אלהיהם אך המה יחדו שברו על נתקו מוסרות׃
, eos vastabit *a sylvarum* lupus , sylva de leo eos percussit Idcirco
6 על־כן הכם אריה מיער זאב ערבות ישדדם
: rapietur eis ex *egrediens* omnis , eorum civitates super *vigilans* pardus
נמר שקד על־עריהם כל־היוצא מהנה יטרף
.eorum *aversiones invaluerunt*, suæ prævaricationes se multiplicaverunt quia
כי רבו פשעיהם עצמו משובותיהם׃
juraverunt & , me dereliquerunt tui filii ? tibi parcam hoc *ad Ubi*
7 אי לזאת אסלוח־לך בניך עזבוני וישבעו
domo & : commiserunt adulterium & , eos saturavi & : *Deum* non per
בלא אלהים ואשבע אותם וינאפו ובית
, erant manè *pasti* Equi .*turmatim* se congregabant meretricis
8 זונה יתגודדו׃ סוסים מוזנים משכים היו
.hinniebant sui *socii* uxorem ad unusquisque
איש אל־אשת רעהו יצהלו׃

Versio VULG. LAT.

27 Hæc enim dicit Dominus; Deserta erit omnis terra, sed tamen 28 consummationē non faciam. Lugebit terra, & mœrebunt cœli desupér: eò quòd locutus sum, cogitavi, & non pœnituit me, 29 nec aversus sum ab eo. A voce equitis & mittentis sagittam, fugit omnis civitas: ingressi sunt ardua, & ascenderunt rupes: universæ urbes derelictæ sunt, et non 30 habitat in eis homo. Tu autem vastata quid facies? cùm vestieris te coccino, cùm ornata fueris monili aureo, & pinxeris stibio oculos tuos, frustrà componéris; contempserunt te amatores tui, 31 animam tuam quærent. Vocem enim quasi parturientis audivi, angustias ut puerperæ: vox filiæ Sion intermorientis, expandentisque manus suas; Væ mihi, quia defecit anima mea propter interfectos.

CAP. V.

1 Circuite vias Jerusalem, & aspicite, & considerate, & quærite in plateis ejus, an inveniatis virum facientem judicium, & quærentem fidem: & propitius 2 ero ei. Quòd si etiam, Vivit Dominus, dixerint: & hoc falso 3 jurabunt. Domine, oculi tui respiciunt fidem: percussisti eos, & non doluerunt: attrivisti eos, & renuerunt accipere disciplinam: induraverunt facies suas supra petram, & noluerunt re-4 verti. Ego autem dixi; Forsitan pauperes sunt & stulti, ignorantes viam Domini, judicium Dei 5 sui. Ibo igitur ad optimates, & loquar eis: ipsi enim cognoverunt viam Domini, judicium Dei sui: & ecce magis hi simul confregerunt jugum, ruperunt 6 vincula. Idcirco percussit eos leo de sylva, lupus ad vesperam vastavit eos, pardus vigilans super civitates eorum: omnis, qui egressus fuerit ex eis, capietur; quia multiplicatæ sunt prævaricationes eorum, confortatæ sunt 7 aversiones eorum. Super quo propitius tibi esse potero? filii tui dereliquerunt me, & jurant in his qui non sunt dii: saturavi eos, & mœchati sunt, & in domo meretricis luxuriabantur. 8 Equi amatores & emissarii facti sunt: Unusquisque ad uxorem proximi sui hinniebat.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

27 Τάδε λέγει κύριος, Ἔρημος ἔσαι πᾶσα ἡ γῆ, συντέλειαν δὲ οὐ μὴ ποιήσω. 28 Ἐπὶ τούτοις πενθείτω ἡ γῆ, καὶ συσκοτασάτω ὁ οὐρανὸς ἄνωθεν· διότι ἐλάλησα, καὶ οὐ μετανοήσω, ὥρμησα, καὶ οὐκ ἀποστρέψω ἀπ' 29 αὐτῆς. Ἀπὸ φωνῆς ἱππέως, καὶ ἐντεταμένου τόξου ἀνεχώρησε (α) πᾶσα ἡ χώρα· εἰσέδυσαν εἰς τὰ σπήλαια, καὶ εἰς τὰ ἄλση ἐκρύβησαν, καὶ (β) ἐπὶ τὰς πέτρας ἀνέβησαν. πᾶσα πόλις ἐγκατελείφθη, οὐ (γ) κατοι-30 κεῖ ἐν αὐταῖς ἄνθρωπος. Καὶ σὺ τί ποιήσεις; ἐὰν περιβάλῃ κόκκινον, καὶ κοσμήσῃ κόσμῳ χρυσῷ· (δ) ἐὰν ἐγχρίσῃ στίβι τοὺς ὀφθαλμούς σου, (ε) εἰς μάταιον ὡραϊσμός σου. ἀπώσαντό σε οἱ ἐρασταί σου, τὴν ψυ-31 χήν σου (ζ) ζητοῦσιν. Ὅτι φωνὴν ὡς ὠδινούσης ἤκουσα τοῦ στεναγμοῦ σου, ὡς πρωτοτοκούσης. φωνὴ θυγατρὸς Σιὼν ἐκλυθήσεται, καὶ παρήσει τὰς χεῖρας αὐτῆς· (η) Οἴμοι ἐγώ, ὅτι ἐκλείπει ἡ ψυχή μου ἐπὶ τοῖς ἀνῃρημένοις.

MS.A. (α) πᾶσα χώρα· (β) εἰς (γ) κατοικήσει (δ) καὶ ἐὰν ἐγχρίσῃ στίμμι (ε) εἰς μάτην ὁ ὡραϊσμός (ζ) ζητήσουσιν. (η) Οἴμοι

27 Hæc dicit Dominus; Deserta erit omnis terra: consummationem autem non faciam. Super his lugeat terra, & contenebrescat cælum desuper: eò quòd loquutus sum, & non me pœnitebit: aggressus sum, & non avertam me ab ea. A voce equitis, & intenti arcus, recessit omnis regio. Ingressi sunt in speluncas, & in lucos se absconderunt, & super petras ascenderunt: Omnis civitas derelicta est, non (γ) habitabat in eis homo. Et tu, quid facies? si circumdederis tibi coccinum, & ornata fueris ornatu aureo, si unxeris stibio oculos tuos; in vanum pulchritudo tua. Repulerunt te amatores tui, animam tuam quærunt: Quia vocem quasi parturientis audivi, gemitum tuum quasi primò parientis. Vox filiæ Sion dissolvetur: & demittet manus suas; Heu mihi, quia deficit anima mea super interfectis.

ΚΕΦ. ε'.

1 Περιδράμετε ἐν ταῖς ὁδοῖς Ἱερουσαλήμ, καὶ ἴδετε, καὶ γνῶτε, καὶ ζητήσατε ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς, ἐὰν εὕρητε, εἰ ἔστι ποιῶν κρίμα, καὶ ζητῶν πίστιν, καὶ ἵλεως ἔσο-2 μαι αὐτοῖς, λέγει κύριος. Ζῇ κύριος, λέγουσι, διὰ τοῦτο οὐκ (α) ἐν ψεύδεσιν ὀμνύ-3 ουσι. (β) Κύριε οἱ ὀφθαλμοί σου εἰς πίστιν· ἐμαστίγωσας αὐτούς, καὶ (γ) οὐκ ἐπόνεσαν, συνετέλεσας αὐτούς, καὶ οὐκ ἠθέλησαν δέξασθαι παιδείαν· (δ) ἐστερέωσαν τὰ πρόσωπα αὐτῶν ὑπὲρ πέτραν, καὶ οὐκ ἠθέλησαν 4 ἐπιστραφῆναι. Καὶ ἐγὼ εἶπα, Ἴσως πτωχοί εἰσι, (ε) διότι οὐκ ἐδυνάσθησαν, ὅτι οὐκ 5 ἔγνωσαν ὁδὸν κυρίου, καὶ κρίσιν θεοῦ. Πορεύσομαι πρὸς τοὺς ἁδρούς, καὶ λαλήσω (ζ) αὐτοῖς, ὅτι αὐτοὶ ἐπέγνωσαν ὁδὸν κυρίου, καὶ κρίσιν θεοῦ· καὶ ἰδοὺ ὁμοθυμαδὸν συνέ-6 τριψαν ζυγόν, διέρρηξαν δεσμούς. Διὰ τοῦτο ἔπαισεν αὐτοὺς λέων (η) ἐκ τοῦ δρυμοῦ, καὶ λύκος ἕως τῶν οἰκιῶν (θ) ὠλόθρευσεν αὐτούς, καὶ πάρδαλις ἐγρηγόρησεν ἐπὶ τὰς πόλεις αὐτῶν. πάντες οἱ ἐκπορευόμενοι ἀπ' αὐτῶν (ι) θηρευθήσονται, ὅτι ἐπλήθυναν ἀσεβείας αὐτῶν, (κ) ἴσχυσαν ἐν 7 ταῖς ἀποστροφαῖς αὐτῶν. Ποία τούτων ἵλεως γένωμαί σοι. οἱ υἱοί σου ἐγκατέλιπόν με, καὶ ὤμνυον ἐν τοῖς οὐκ οὖσι θεοῖς· καὶ ἐχόρτασα αὐτούς, καὶ (λ) ἐμοιχῶντο, καὶ 8 ἐν οἴκοις πορνῶν (μ) κατέλυον. Ἵπποι θηλυμανεῖς ἐγενήθησαν, ἕκαστος ἐπὶ τὴν γυναῖκα τοῦ πλησίον αὐτοῦ ἐχρεμέτιζον.

MS.A. (α) ἐπὶ ψεύδεσιν (β) Καὶ οἱ ὀφθαλμοί (γ) οὐχ (δ) [illegible]θησαν (ε) διὰ τοῦτο οὐκ ἠδυνήθησαν, (ζ) πρὸς αὐτούς, (η) ἐκ δρυμοῦ, (θ) ὠλέθρευσεν (ι) θηρεύσονται (κ) καὶ ἴσχυσαν (λ) * ἐμοιχῶντο, (μ) κατ[illegible]

CAP. V.

Circumcurrite in viis Hierusalem, & videte, & cognoscite, & quærite in plateis ejus, si inveniatis: si est faciens judicium, & quærens fidem: & propitius ero eis, dicit Dominus. Vivit Dominus, dicunt: nihilominus in mendaciis jurant. Domine, oculi tui ad fidem: flagellasti eos, & non doluerunt: consummasti eos, & noluerunt recipere disciplinam: firmaverunt facies suas super petram: et noluerunt reverti. Et ego dixi; Forsitan inopes sunt, quia non potuerunt: quia non cognoverunt viam Domini, et judicium Dei: Ibo ad optimates, & loquar eis, quia ipsi cognoverunt viam Domini, et judicium Dei. Et ecce unanimiter confregerunt jugum, diruperunt vincula. [illegible] percussit eos leo de [illegible] usque ad domos vastavit [illegible] pardus vigilavit super civitates eorum. Omnes egredientes ab eis capientur: quia multiplicaverunt impietates suas, confortati sunt in aversionibus suis. (a) Quâ in his propitius fiam tibi? Filii tui dereliquerunt me: et juraverunt in diis, qui non sunt: et saturavi eos, et mœchabantur, et in domibus meretricum diversabantur. Equi (b) furentes in fœminas facti sunt: unusquisque super uxorem proximi sui hinniebant.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

27 ארי כדנן אמר יי צדו תהי כל ארעא וגמירא לא אעביד׃ על דא תחרוב ארעא ויקבלון
28 נהורי שמיא מלעלא על דגזרית במימרי חשבית בעצתי אעבדנה ולא אתיבנה׃
29 מקל פרשין ודנגרין בקשתא גלו כל יתבי ארעא עלו למערק בחורשיא סליקו לאטמרא
30 בכיפיא כל קרויהון שביקן ולית דיתיב בהון אנש׃ ואת האמבזזא מה אית ביך
חיל למעבד ארי אתרחצת על לבשי צבענין ועל דמתקנן בתקונין דדהב ארי תכחלין
31 בצדידא עינך לא להנאה תתקנין קצו ביך רחמך מקטלין נפשך בען׃ ארי קל כמעדיא
שמעית עקא כאתתא דמשריא למילד בכור קל כנשתא דציון דמשתטחא ופרסא ידהא
אמרא וי כען לי ארי משלהיא נפשי מן קדם קטולין׃
ה
1 הליכו בשוקי ירושלם וחזו כען ודעו ובעו ברחובהא אם תשכחון גבר דליה עובדין
2 טבין אם אית עבד דין דקשוט בעי הימנותא ואשבוק להון׃ ואם בשמא דיי ימן בכן
3 לשקרא אנון משתבעין׃ יי הלא גלי קדמך לאוטבא לעבדי הימנותא רשיעיא אלקיתא
יתהון ולא תבו שציתנון סריבו לקבלא אולפן אתקיפו אפיהון מטינרא מסרבין למתב׃
4 ואנא אמרית ברם מדמסכנין אנון אטפשו ארי לא אליפו למדע ארחן דתקנן קדם יי
5 למעבד דין דקשוט קדם אלההון׃ איהך לי לות רברביא ואמלל עמהון ארי אנון
אליפו למידע ארחן דתקנן קדם יי למעבד דין דקשוט קדם אלההון ברם אנון כחדא
6 מרדו מן אוריתא אתרחקו מן אולפנא׃ על כן מלך במשריתיה יסק עליהון כאריא
מחורשא ויקטלנון עממיא דתקיפין כדיבי רמשא יבוזונין שלטונין וחסינין כנמרא
7 כמנין על קרויהון כל דיפוק מנהון יתקטל ארי סגיאין מרדיהון תקיפין תיובתהון׃ נביא
אמר לידה כנשתא דישראל על אידא אשבוק לכון אנא קריתי לכון בנין ואנון שבקו
פולחני ומקימין בשום טעותא עוד שבעית יתהון טובא ואנון תבו למרדיא ובית
8 נפקת ברא מסתיעין׃ סוסון אגריתין אחרון הוו גבר על איתת חבריה מצהלין׃

PARAPH CHALD. Versio Latina.

Quoniā sic dicit Dñs: Vastitas erit ōis terra, & consummationē non faciam. Propter hoc desolabitur terra, & obscurabûtur luminaria cœli sursū [illegible] decrevi in verbo meo, cogitavi in consilio meo: faciā illud, & non [illegible] vocabo. A voce equitū & tēdentiū arcū migraverūt oēs habitatores [illegible] ingressi sunt ut fugiant in sylvas, ascenderunt ut abscondantur in rupibus [illegible] omnes civitates eorū derelictæ sunt, & non est homo qui habitet in eis. [illegible] autē ecce direpta es; quæ est in te virtꝰ ut facias? quia confidisti iis qui [illegible] duuntur variis coloribꝰ, & iis qui ornantur ornamentis aureis, quia [illegible] stibio oculos tuos; in nullū usū ornas te. Detestati sunt te amatores tui, [illegible] sores quærūt animā tuā. Quia vocē quasi prægnantis audivi, angustiā [illegible] mulieris quæ incipit parere primogenitū: vocē cœtꝰ Sion qui prosternitur [illegible] & expandit manꝰ suas, dicens: Væ nunc mihi, quia lassa est anima mea propter interfectores.

CAP. V.

Ambulate p vicos Jerusalē, & videte nunc, & scitote, & quærite in plateis ejꝰ, si inveneritis virū cujꝰ opera sint bona, si est faciens judicium rectū, & quærens fidē, & dimittam eis. Si autē in nomine Dñi jurant, [illegible] falso ipsi jurant. Dñe nonne revelatū est corā te ut benefacias fidelibus [illegible] impios autē pcussisti, & non sunt conversi: consumpsisti eos, renuerūt recipere disciplinā, obfirmarūt faciē suā magis quàm rupes, renuūt redire. [illegible] autē dixi, Pro eo quòd pauperes sunt, insipientes facti sūt, quia non [illegible] runt *cognoscere* vias quæ rectæ sunt corā Dño, ut facerent judiciū veritatis [illegible] ram Deo suo. Vadam ego ad principes & loquar cum eis, quia ipsi [illegible] runt cognoscere vias quæ rectæ sunt corā Dño, ut faciant judiciū veritatis [illegible] ram Deo suo: sed hi simul prævaricati sunt à Lege, & elongati sunt à [illegible] plina. Propterea rex cum exercitu suo ascendet super eos quasi leo de [illegible] va, & occidēt eos populi qui fortes sunt sicut lupi vespertini: deprædabuntur eos dominatores qui robusti sunt sicut *pardus* insidiantes civitatibus eorum: quicunq; egredietur ex illis, interficietur, quia multæ sunt rebelliones eorū, validæ aversiones eorū. Propheta dic cœtui Israel: Propter [illegible] mittam vobis? *ego* vocavi eos filios, & ipsi reliquerunt cultū meum, & [illegible] in nomine idolorum: rursus satiavi eos bono, & ipsi conversi sunt ad [illegible] micentur; & in domo meretricis congregantur. Equi emissarii [illegible] cientes fuerunt, unusquisque ad uxorem proximi sui hinniebant.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܠܚܘܪܒܐ ܬܗܘܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܓܡܝܪܘܬܐ ܠܐ ܐܥܒ-
ܕ * ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܬܬܐܒܠ ܐܪܥܐ. ܘܢܚܫܟܘܢ ܫܡܝܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܡܛܠ ܕܡܠܠܬ ܘܐܬܪܥܝܬ
ܠܐ ܐܬܬܘܝ. ܘܠܐ ܐܗܦܘܟ ܡܢܗ. * ܡܢ ܩܠܐ ܕܦܪܫܐ ܘܫܕܝ ܓܐܪܐ ܒܩܫܬܐ. ܥܪܩܬ. ܟܠܗ ܩܪܝ-
ܬܐ ܥܠܘ ܠܥܒܐ ܘܠܟܐܦܐ ܣܠܩܘ. ܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܐ ܐܫܬܒܩ. ܘܠܝܬ ܐܢܫ ܕܥܡܪ ܒܗܝܢ.
* ܘܐܢܬܝ ܒܙܝܙܬܐ. ܡܢܐ ܐܠܒܫܬܝ ܠܒܘܫܐ ܙܚܘܪܝܬܐ.. ܘܡܬܨܒܬܝ ܨܒܬܐ ܕܕܗ-
ܒܐ.. ܘܐܢ ܬܟܚܠܝܢ ܒܟܘܚܠܐ ܥܝܢܝܟܝ.. ܠܣܪܝܩܘܬܐ ܗܘܐ ܫܘܦܪܟܝ. ܐܣܠܝܘܟܝ ܪܚܡܝܟܝ.
ܢܦܫܟܝ ܒܥܝܢ. * ܡܛܠ ܕܩܠܐ ܐܝܟ ܕܟܪܝܗܬܐ ܫܡܥܬ. ܘܥܩܬܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ
ܒܘܟܪܐ. ܩܠܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ ܕܡܬܬܢܚܐ. ܘܦܫܛܐ ܐܝܕܝܗ. ܘܐܡܪܐ. ܘܝ ܠܝ
ܕܐܬܛܪܦܬ ܢܦܫܝ ܠܩܛܘܠܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *
* ܐܬܟܪܟܘ ܒܫܘܩܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܚܙܘ ܘܕܥܘ. ܘܒܥܘ ܒܦܬܘܬܗ. ܐܢ ܬܫܟܚܘܢ ܓܒܪܐ. ܐܢ ܐܝܬ ܕܥܒܕ ܕܝܢܐ ܘܒܥܐ
ܗܝܡܢܘܬܐ ܕܐܫܒܘܩ ܠܗ. * ܘܐܢ ܚܝ ܡܪܝܐ ܢܐܡܪܘܢ. ܫܘܩܪܐ ܡܫܬܒܥܝܢ. ܡܪܝܐ ܥܝܢܝܟ ܠܗܝܡܢܘܬܐ. *
ܒܩܛܠܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܐܬܟܪܝ ܠܗܘܢ. ܫܝܨܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܨܒܘ ܠܡܬܦܢܝܘ. ܐܥܫܢܘ
ܦܪܨܘܦܝܗܘܢ ܡܢ ܟܐܦܐ. ܘܠܐ ܨܒܘ ܠܡܬܦܢܝܘ. * ܘܐܢܐ ܐܡܪܬ. ܡܛܠ ܕܡܣܟܢܐ ܐܢܘܢ.
ܛܥܘ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܐܘܪܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܕܝܢܗ ܕܐܠܗܗܘܢ. * ܐܙܠ ܠܘܬ ܪܘܪܒܢܐ
ܘܐܡܠܠ ܥܡܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܗܢܘܢ ܝܕܥܘ ܐܘܪܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܕܝܢܗ ܕܐܠܗܗܘܢ. ܗܢܘܢ ܕܝܢ
ܟܚܕܐ ܬܒܪܘ ܢܝܪܐ. ܘܦܣܩܘ ܐܣܘܪܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܚܐ ܠܗܘܢ ܐܪܝܐ ܡܢ ܥܒܐ.
ܘܕܐܒܐ ܕܪܡܫܐ ܢܒܙܙ ܐܢܘܢ. ܘܢܡܪܐ ܫܩܕ ܥܠ ܩܘܪܝܗܘܢ. ܟܠ ܕܢܦܩ ܡܢܗܘܢ
ܢܬܬܒܙ. ܡܛܠ ܕܣܓܝܘ ܚܛܗܝܗܘܢ. ܘܥܫܢܘ ܕܠܐ ܢܬܦܢܘܢ. * ܥܠ ܐܝܕܐ ܐܫܒܘܩ ܠܟܝ.
ܒܢܝܟܝ ܫܒܩܘܢܝ. ܘܝܡܘ ܒܗܠܝܢ ܕܠܐ ܗܘܘ ܐܠܗܐ. ܘܣܒܥܬ ܐܢܘܢ. ܘܓܪܘ. ܘܒܒܝܬ
ܙܢܝܬܐ ܐܬܟܢܫܘ. * ܐܝܟ ܣܘܣܘܬܐ ܥܠܝܢ ܗܘܘ ܘܓܒܪ ܓܒܪ ܠܐܢܬܬܐ ܕܚܒܪܗ ܡܨܗܠ ܗܘܐ.

Nam ita dicit Domin⁹ De⁹, Corrumpenda eſt universa terra, at conſummationem nondum faciã : Propter hæc lugeat terra, & cœli obſcurentur ſuperné. Rerum omniũ quas locut⁹ ſum & cogitavi, nulli⁹ me pœnitet, nec *quicquam* ex iis diminuam. 27 28

A voce equitum & jaculantium arcu fugiet universa civitas, ingredientur in ſylvas, & in petras aſcendent: civitates omnes derelinquentur, & nemo erit qui habitet in eis. 29

Tu ergò direpta, quid facis induendo te coccino, ornando te ornamentis aureis, collinendo collyrio oculos tuos? In vanum ſanè te ornas : dereliquerunt te amici tui, & animam tuam quærunt. 30

Nam vocem ut ægrotæ audivi, & dolorem ut mulieris parere nitentis: vocem *nimirum* filiæ Sionis agitantis ſeſe, manuſque pandentis, ac dicentis ; Væ mihi, quoniam conturbata eſt anima mea propter interfectos meos. 31

CAP. V.

1 CIrcuite per vicos Jeruſalem, videte, & cognoſcite, & diſquirite in plateis ej⁹ : ſi virũ inveniatis, ſi quempiã facientẽ judiciũ, & amantem fidei; condonabo illi. 2 At ſi quando, Vivit Dñs, dicant; proculdubio falſò jurant. 3 Domine, oculi tui ad fidẽ *ſpectant*, percuſſiſti eos, at nõ doluerunt ; conſumpſiſti eos, at reverti noluerunt : obfirmaverunt facies ſuas pluſquã petrã: 4 nolũt converti. Quamobrẽ ego dixi, Quia pauperes ſunt, aberraverunt : non enim nôrunt viam Dñi, neque judicium Dei ſui. 5 Ibo ad magnates, & alloquar eos, quoniã ipſi nôrunt viã Dñi, & judiciũ Dei ſui : verùm omnes pariter fregerunt jugũ, & diruperunt vincula. 6 Propterea confringet eos leo de ſylva, & lupi veſpertini dilaniabunt eos ; pardus inſidiabitur ad civitates eorum, quotquot egredientur ex eis, erunt in prædam : quia multiplicata ſunt delicta eorum, & *adeo* creverunt, ut minimè convertantur. 7 Cujus rei cauſâ parcerem tibi? filii tui dereliquerunt me, & jurârunt per eos qui non ſunt Dii : ſatiavi eos, & adulterati ſunt, & in domo meretricum pugnaverunt : 8 Ut equi admiſſarii, libidinoſi erant, & quiſque ad uxorem ſocii ſui adhinniebat.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

هكذا يقول الرب * تصير كل الارض بريه * ولست اصنع جرما * علي هذا لتحزن الارض وتظلم
السماء من فوق * من اجل اني تكلمت ولا ارجع * وثبت ولا ارد عنها * من صوت الفارس
والقوس الموتر انفصلت كل كورة * ودخلوا الي المغاير * واختبوا في الشعاري * وصعدوا
الي الصخور * كل مدينة تركت * وليس يسكن فيها انسان * وانت ما تصنعين ان
لبست احمرا وتزينت بزينة ذهبية * وان اكتحلت عينيك بالاثمد تباهيك باطلا للباطل
اقصوك اصحابك ويطلبون نفسك * لاني سمعت تنهدك مثل صوت الطالقة ومثل التي تلد
بكرا * صوت ابنة صهيون تنحل وترخي يديها * الويل لي انا لان نفسي فنيت بالمقتولين *

* الفصل الخامس *

* طوفوا في طرق اورشليم * وانظروا واعلموا واطلبوا في شوارعها * ان كنتم تجدون هل
صانع حكم موجود وطالب ايمان * فاصير لهم راحما يقول الرب * وحي هو الرب يقولون
لاجل هذا لا يحلفون بالكذب * واعينك للايمان * جلدتهم ولم يتوجعوا افنيتهم فلم
يريدوا ان يقبلوا ادبا * صلبوا وجوههم اكثر من الصخر ولم يريدوا ان يرجعوا * وانا
قلت * لعلهم مساكين لاجل هذا لم يقتدروا * لانهم لم يعرفوا طريق الرب وحكم الله *
* اذهب الي الاغنياء واتكلم معهم * لان هولاء عرفوا طريق الرب وحكم الله * واذا هم كسروا
النير بنفس واحدة وخرقوا الرباطات * لاجل هذا اسقطهم اسد من الغاب * وذيب استاصلهم الي
بيوتهم * ونمر سهر علي مدنهم * جميع المارين يصطادون منهم * لانهم اكثروا نفاقهم وقووا
بتصرفاتهم * بايه هذه اصير راحما لك * بنوك تركوني وحلفوا بالتي لم تكن الهة * اشبعتهم
فسقوا وفي بيوت الزواني احلوا * وصاروا خيل مهارة * كل واحد في امراة صاحبه يصهل *

27 *Sic ait Dominus, Redigetur univerſa terra in ſolitudinem, at excidium nondum fecero.* 28 *De his terra contriſtetur, & obtenebreſcat cœlum superné: quia pronuntiavi, neque retractabo* ſententiam ; *aſſerui, neque recedam ab ea.* 29 *A voce equitis, & arcu tenſo diviſæ ſunt omnes provinciæ, ingreſſæ ſunt cavernas, abdiderunt ſe in ſpeluncis, & conſcenderunt petras : omnes urbes derelictæ ſunt, & nemo habitat in eis:* 30 *Tu ergò quid factura es? Etiamſi rubro te* colore *veſtias, & aureis ornamentis componas, & licèt ſtibio fuligines oculos tuos, tua tamen pompa otioſa eſt & in vanum: procul amoverunt te amaſii tui, & quærunt animam tuam.* 31 *Gemitus enim tuos ut vocem parturientis audivi, & ut ejus quæ primogenitum parit : vox filiæ Sionis liqueſcet, & manus ejus remittet : væ* inquiet *mihi, quoniam conſumpta eſt anima mea propter interfectos.*

CAP. V.

1 P*Erluſtrate vias Jeroſolymæ, videte, & cognoſcite, & perquirite in vicis ejus : ſi quem repereritis extare qui faciat judicium & quærat fidem, ero illis propitius, dicit Dominus.* 2 *Vivus eſt Dominus, dicunt ; annon tamen mendacitèr jurant ;* 3 *Cùm oculi tui fidem reſpiciant? Flagellâſti eos, ſed non doluerunt ; conſumpſiſti eos, ſed noluerunt accipere eruditionem ; obdurârunt facies ſuas pluſquam lapides, & reverti noluerunt.* 4 *Quapropter ego dixi, Fortaſſe quia ſunt pauperes, ideo nequeunt : non enim cognoſcunt viam Domini & jus Dei.* 5 *Pergam ad divites, & loquar cum eis ; ſiquidem iſti nôrunt viam Domini & jus Dei : at ecce iſti fregerunt jugum pari conſenſu, & vincula diruperunt.* 6 *Ideo deturbabit eos leo de ſylvis, lupus exterminabit eos uſque ad domos eorum, & pardus vigilabit ad urbes eorum : omnes tranſeuntes capientur ab eis, eò quòd multiplicârint impietatem ſuam, & invaluerint in pravis inſtitutis ſuis.* 7 *Propter quam harum rerum eſſem tibi propitius? filii tui dereliquerunt me, & jurârunt per ea quæ Dii nequaquam ſunt : ſaturavi eos, & adulterati ſunt, & in domibus meretricum eſſœnes fuerunt :* 8 *Et facti ſunt equi admiſſarii, quiſque in uxorem ſocii ſui hinniebat.*

ירמיה : ה

quæ gente in an & ? Dominus dixit ,visitabo non his super Nunquid

9 העל אלה לוא אפקד נאם יהוה ואם בגוי אשר

ulciscetur non ,hæc sicut ? mea anima ulciscetur non ,hæc sicut

ultabi faltate &,ej° muros in Ascendite ? mea anima ulciscetur non ,hæc sicut

10 כזה לא תתנקם נפשי : עלו בשרותיה ושחתו

Domini non quia ,ej°(murorū) mini auferte : faciatis ne consūmatione &

וכלה אל תעשו הסירו נטישותיה כי לוא ליהוה

domus & , Israel domus me in sunt prævaricati prævaricādo Quia ipsæ

11 המה : כי בגוד בגדו בי בית ישראל ובית

: ipse Non :dixerunt & ,Dominum in sunt Mentiti .Dominus ait ,Jehudah

12 יהודה נאם יהוה : כחשו ביהוה ויאמרו לוא הוא

.videbimus non famem & gladium & ,malum nos super veniet non &

ולא תבוא עלינו רעה וחרב ורעב לוא נראה :

.eis fiet Sic .eis in non sermo & ,ventum in erunt prophetæ Et

13 והנביאים יהיו לרוח והדבר אין בהם כה יעשה להם :

vos loqui Pro : exercituum Deus Dominus dixit sic Propterea

14 לכן כה אמר יהוה אלהי צבאות יען דברכם את

populum & ,ignem in tuo ore in mea verba dans ego ecce : hoc verbum

הדבר הזה הנני נתן דברי בפיך לאש והעם

longinquo de gente vos super adducens ego Ecce .eos comedet & ,ligna hunc

15 הזה עצים ואכלתם : הנני מביא עליכם גוי ממרחק

,ipsa seculo à gens ,ipsa robusta gens ,Dominus ait , Israel domus

בית ישראל נאם יהוה גוי איתן הוא גוי מעולם הוא

ejus Pharetra .loquatur quid audies nec ,ejus linguā cognosces non gens

16 גוי לא תדע לשנו ולא תשמע מה ידבר : אשפתו

,tuā messem comedet Et .fortes ipsi universi ,patens sepulchrum veluti

17 כקבר פתוח כלם גבורים : ואכל קצירך

,tuū bovem &,tuū pecus comedet,tuas filias &,tuos filios comedēt,tuū panē &

ולחמך יאכלו בניך ובנותיך יאכל צאנך ובקרך

quibus ,tuarū munitionum urbes depauperabit :tuā ficum &,tuā vitem comedet

יאכל גפנך ותאנתך ירשש ערי מבצריך אשר

, Dñs dixit , ipsis diebus in etiam Et .gladio in ,eis in fidens tu

18 אתה בטח בהנה בחרב : וגם בימים ההמה נאם יהוה

quid Propter ,dixeritis si erit Et .consūmatione vobiscum faciam non

19 לא אעשה אתכם כלה : והיה כי תאמרו תחת מה

: eos ad dices & ? hæc omnia nobis noster Deus Dominus fecit

עשה יהוה אלהינו לנו את כל אלה ואמרת אלהם

sic : vestra terra in,alienigenæ Deo servistis & , me dereliquistis Sicut

כאשר עזבתם אותי ותעבדו אלהי נכר בארצכם כן

: Jahacob domo in hoc Annuntiate .vobis non terra in alienis servietis

20 תעבדו זרים בארץ לא לכם : הגידו זאת בבית יעקב

,stulte popule hoc nunc Audite .dicendo ,Jehudah in hoc facite audire &

21 והשמיעוה ביהודה לאמר : שמעו נא זאת עם סכל

.audient non & , eis aures : videbunt non & ,eis oculi : cor non &

ואין לב עינים להם ולא יראו אזנים להם ולא ישמעו :

non meis faciebus à An ? Dominus ait , timebitis non me Nunquid

22 האותי לא תיראו נאם יהוה אם מפני לא

non & ,seculi statutum ,mari terminū arenam posui qui ? dolebitis

תחילו אשר שמתי חול גבול לים חק עולם ולא

tumultuabuntur & ; prævalebunt non & ,se commovebunt Et .illud præteribit

יעברנהו ויתגעשו ולא יוכלו והמו

contumax cor fuit huic populo Et .illud transibunt non & ,ejus fluctus

23 גליו ולא יעברנהו : ולעם הזה היה לב סורר

: suo corde in dixerunt non Et .abierunt & ,declinaverunt : rebelle &

24 ומורה סרו וילכו : ולוא אמרו בלבבם

,temporaneā & pluviam dantem nostrū Deum Dominum nunc Metuamus

נירא נא את יהוה אלהינו הנתן גשם וירה

nobis custodiet messis statutarum septimanas ? suo tempore in serotinam &

ומלקוש בעתו שבעת חקות קציר ישמר לנו :

Versio VULG. LAT.

9 Numquid super his non visitabo, dicit Dominus; & in gente tali
10 non ulciscetur anima mea? Ascendite muros ejus, & dissipate, consummationem autem nolite facere: auferte propagines ejus,
11 quia non sunt Domini. Prævaricatione enim prævaricata est in me domus Israel, & domus
12 Juda, ait Dominus. Negaverunt Dominum, & dixerunt; Non est ipse: neque veniet super nos malum: gladium & famem non
13 videbimus. Prophetæ fuerunt in ventum locuti, & responsum non fuit in eis: hæc ergò evenient
14 illis. Hæc dicit Dominus Deus exercituum; Quia locuti estis verbum istud: ecce ego do verba mea in ore tuo in ignem, & populum istum in ligna, & vo-
15 rabit eos. Ecce ego adducam super vos gentem de longinquo domus Israel, ait Dominus; gentem robustam, gentem antiquam, gentem, cujus ignorabis linguam, nec intelliges quid lo-
16 quatur. Pharetra ejus quasi sepul-
17 chrum patens, universi fortes. Et comedet segetes tuas, & panem tuum: devorabit filios tuos, & filias tuas: comedet gregē tuū, & armenta tua: comedet vineam tuam, & ficum tuam: & conteret urbes munitas tuas, in quib'
18 tu habes fiduciā, gladio. Veruntamen in diebus illis, ait Dominus, non faciam vos in consum-
19 mationem. Quòd si dixeritis; Quarè fecit nobis Domin' Deus noster hæc omnia? dices ad eos; Sicut dereliquistis me, & servîstis deo alieno in terra vestra, sic servietis alienis in terra non ve-
20 stra. Annuntiate hoc domui Jacob, & auditum facite in Juda,
21 dicentes; Audi popule stulte, qui non habes cor: qui habentes oculos, non videtis; & aures, & non
22 auditis. Me ergò non timebitis, ait Dñs: & à facie mea non dolebitis? Qui posui arenam terminum mari, præceptum sempiternum, quod non præteribit: & commovebuntur, & non poterunt: & intumescent fluct' ejus,
23 & non transibunt illud: Populo autem huic factū est cor incredulum & exasperans, recesserunt
24 & abierunt. Et non dixerunt in corde suo; Metuam' Dominum Deū nostrū, qui dat nobis pluviā temporaneam & serotinam in tempore suo; plenitudinem annuæ messis custodientem nobis:

Versio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

9 Μὴ ἐπὶ τούτοις οὐκ (μ) ἐπισκέψομαι; λέγει κύριος· ἢ ἐν ἔθνει τοιούτῳ οὐκ ἐκδι-
10 κήσει ἡ ψυχή μου; Ἀνάβητε ἐπὶ τοὺς προμαχῶνας αὐτῆς, καὶ κατασκάψατε, συντέλειαν δὲ (ν) μὴ ποιήσητε· ὑπολίπεσθε τὰ ὑποστηρίγματα αὐτῆς, ὅτι τοῦ κυρίου
11 εἰσίν. Ὅτι ἀθετῶν ἠθέτησεν εἰς ἐμὲ, (ξ) λέγει κύριος, οἶκος Ἰσραὴλ, καὶ οἶκος
12 Ἰούδα. Ἐψεύσατο τῷ κυρίῳ αὐτῶν, καὶ εἶπαν, Οὐκ ἔστι ταῦτα· οὐχ ἥξει ἐφ' ἡμᾶς κακὰ, καὶ μάχαιραν καὶ λιμὸν (ο) οὐκ
13 ὀψόμεθα. Οἱ προφῆται ἡμῶν ἦσαν εἰς ἄνεμον, καὶ λόγος κυρίου οὐχ ὑπῆρχεν ἐν
14 αὐτοῖς. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἀνθ' ὧν ἐλαλήσατε τὸ ῥῆμα τοῦτο, ἰδοὺ ἐγὼ δέδωκα τοὺς λόγους μου εἰς τὸ στόμα σου πῦρ, καὶ τὸν λαὸν τοῦτον
15 ξύλα, καὶ καταφάγεται αὐτούς. Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐφ' ὑμᾶς ἔθνος πόῤῥωθεν οἶκος Ἰσραὴλ, λέγει κύριος, ἔθνος οὗ οὐκ (π)
16 ἀκούσῃ τῆς φωνῆς τῆς γλώσσης αὐτοῦ. Πάν-
17 τες ἰσχυροὶ, Καὶ κατέδονται τὸν θερισμὸν (ρ) ὑμῶν, καὶ τοὺς ἄρτους ὑμῶν, καὶ κατέδονται τοὺς υἱοὺς ὑμῶν, καὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν, καὶ κατέδονται τὰ πρόβατα ὑμῶν, καὶ τοὺς (σ) μόσχους ὑμῶν, καὶ κατέδονται τοὺς ἀμπελῶνας ὑμῶν, καὶ τοὺς συκῶνας ὑμῶν, καὶ τοὺς ἐλαιῶνας ὑμῶν· καὶ ἀλοήσουσι τὰς πόλεις τὰς ὀχυρὰς ὑμῶν, ἐφ' αἷς ὑμεῖς πεποίθατε ἐπ'
18 αὐταῖς, ἐν ῥομφαίᾳ. Καὶ ἔσται ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, λέγει κύριος ὁ θεός σου, οὐ
19 μὴ ποιήσω ὑμᾶς εἰς συντέλειαν. Καὶ ἔσται ὅταν εἴπητε, Τίνος ἕνεκεν ἐποίησε κύριος ὁ θεὸς ἡμῶν ἡμῖν ( ) πάντα ταῦτα; καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, Ἀνθ' ὧν ἐδουλεύσατε θεοῖς (τ) ἀλλοτρίοις ἐν τῇ γῇ ὑμῶν, οὕτως δουλεύσετε ἀλλοτρίοις ἐν τῇ γῇ
20 οὐχ ὑμῶν. Ἀναγγείλατε ταῦτα εἰς τὸν οἶκον Ἰακὼβ, καὶ ἀκουσθήτω ἐν (υ) τῷ
21 οἴκῳ Ἰούδα. Ἀκούσατε δὴ ταῦτα λαὸς μωρὸς καὶ ἀκάρδιος, ὀφθαλμοὶ αὐτοῖς καὶ οὐ βλέπουσιν, ὦτα αὐτοῖς καὶ οὐκ ἀκούουσι.
22 Μὴ ἐμὲ οὐ φοβηθήσεσθε, λέγει κύριος; (φ) ἢ ἀπὸ προσώπου μου οὐκ εὐλαβηθήσεσθε; τὸν τάξαντα ἄμμον ὅριον τῇ θαλάσσῃ, πρόσταγμα αἰώνιον, καὶ οὐχ ὑπερβήσεται αὐτὸ, καὶ ταραχθήσεται, καὶ οὐ (χ) δυνήσεται· καὶ ἠχήσουσι τὰ κύματα αὐτῆς, καὶ οὐχ ὑπερ-
23 βήσεται αὐτό. Τῷ δὲ λαῷ τούτῳ ἐγενήθη καρδία ἀνήκοος καὶ ἀπειθὴς, καὶ ἐξέ-
24 κλιναν καὶ ἀπήλθοσαν, Καὶ οὐκ (ψ) εἶπον ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῶν, Φοβηθῶμεν δὴ κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν, τὸν διδόντα (ω) ἡμῖν ὑετὸν (α) πρώϊμον καὶ ὄψιμον, κατὰ καιρὸν πληρώσεως προστάγματος θερισμοῦ, καὶ ἐφύλαξεν ἡμῖν.

MS. A. (μ) ἐπισκέψωμαι; (ν) οὐ μὴ (ξ) οἶκος Ἰσραὴλ, καὶ (ο) οὐχ (π) ἀκούσῃ τῆς φωνῆς αὐτοῦ. (ρ)* αὐτῶν, (σ) μόσχους, καὶ κατέδονται ( ) ἅπαντα (τ) ἑτέροις *ἐν γῇ οὐχ ὑμῶν, Ἀναγγείλατε (υ) τῷ Ἰούδα. (φ) μὴ ἀπὸ (χ) δυνηθῶσιν. (ψ) εἶπαν ἐν τῇ καρδίᾳ αὐτῆς, (ω) ὑμῖν (α) πρόϊμον

Nunquid super his non visi[tabo]
dicit Dominus? aut in gente ta-
lem non ulciscetur anima me[a]
Ascendite super propugnacula
ejus, et destruite: consummatio[nem]
autem ne faciatis: relinquite
sustentacula ejus, quia Domini
sunt. Prævaricans enim præva[ri-]
cata est in me, dicit Dominus, do-
mus Israel: & domus Juda
Mentita est Domino suo: & dixe[runt]
Non sunt hæc: non veniet su[per]
nos mala: & gladium, & fame[m]
non videbimus: Prophetæ n[ostri]
fuerunt in ventum: & verbum
Domini non fuit in eis. Hæc
dicit Dominus omnipotens: P[ro]
eo quòd loquuti estis verbum
istud; ecce ego dedi verba mea [in]
os tuum, ignem: & populum istum
ligna: & devorabit eos. Ecce
adduco super vos gentem de lon[ginquo]
domus Israel, dicit (d) Dominus
gentem, cujus non audies vocem
linguæ ejus: Omnes fortes
Et devorabunt messem vestram, & pa-
nes vestros: et devorabunt filios ve-
stros, et filias vestras: et devorabunt
oves vestras, & vitulos vestros: &
devorabunt vineas vestras &
ceta vestra, & oliveta vestra: &
triturabunt civitates munitas ve-
stras, in quibus vos fidistis in
in gladio. Et erit in diebus illis, di-
cit Dominus Deus tuus, non faciam
vos in consummationem. Et erit
quando dixeritis, Cur fecit Domi-
nus Deus noster nobis omnia hæc?
et dices eis; Pro eo, quod servi-
istis diis alienis in terra vestra,
sic servietis alienis in terra non
vestra. Annuntiate hæc in domo
Jacob: et audiatur in domo Juda.
Audite nunc hæc populus stultus
et sine corde: oculi eis, et non vi-
dent: aures eis, et non audiunt.
Nunquid me non timebitis, ait
Dominus? aut à facie mea non
verebimini? qui posui arenam
terminum mari, præceptum æter-
num, et non supergredietur illud:
et turbabitur, et non poterunt: re-
sonabunt fluctus ejus, et non su-
pergredientur illud. Populo autem
huic factum est cor non audiens
et contumax: et declinaverunt, et
abierunt. Et non dixerunt in corde
suo; Timeamus nunc Dominum
Deum nostrum, qui dat nobis plu-
viam temporaneam, et serotinam,
secundùm tempus impletionis
præcepti messis; et custodivit
nobis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

9 העל אלן לא אסער לאיתאה עליהון בישתא אמר יי ואם מן עמא דכדין עובדוהי לא
10 אתפרע מנהון כרעותי : סקו בקרוהא וחבילו וגמירא לא תעבדון פגרו ברניתהא ארי
11 לא רעוא קדם יי בהון : ארי שקרא שקרו במימרי בית ישראל ובית יהודה אמר יי :
12 כדיבו במימרא דיי ואמרו לא מן קדמוהי אתיא עלנא טבתא ואף לא תיתי עלנא
13 בישתא ודקטלין בחרבא ובכפנא לא נחזי : ונביי שקרא יהון ללמא ונבואת שקריהון
14 לא תתקים דא פורענותא תתעבד מנהון : בכן כדנן אמר יי אלהים צבאות חלף
דאתנביתון ית פתגמא הדין הא אנא יהיב פתגמי נבואתי בפומך תקיפין כאשתא ועמא
15 הדין חלשין כקשא ויקטלונון : הא אנא מיתי עליכון עם מרחיק בית ישראל אמר יי
עם תקיף הוא עמא דמעלמא הוא עמא לא תידע לישניה ולא תשמע מה דימלל :
16 בית אוניה כקברא פתיח כולהון גברין : ויבוז חצדך ומיכלך יקטלון בנך ובנתך
17 ישבי ענך ותורך יבוז פרי גופנך ותינך יפגר קרוי ארעך כריכתא דאת רחיץ
18 לאשתזבא בהון מן קדם דקטלין בחרבא : ואף ביומיא האנון אמר יי לא אעביד
19 עמכון גמירא : ויהי ארי תימרון חלף מה עבד יי אלהנא לנא ית כל אלן ותימר
להון כמה דשבקתון פולחני ופלחתון לטעוות עממיא בארעכון כן תשתעבדון
20 לעממיא פלחי טעותא בארעא דלא דילכון : חוו דא בבית יעקב ובשרוהא בדבית
21 יהודה למימר : שמעו כען דא עמא טפשא ולית ליה לב דעינין להון ולא חזן אודנין
22 להון ולא שמעין : המן קדמי לא תדחלון אמר יי אם מן קדם מימרי לא תזועון
דשויתי חלא תחומא לימא קים עלם ולא עדי ליה ומיטרפין ולא יכלין יהמון גלוהי
23 ולא עדן ליה : ולעמא הדין הוה לב סטי ומריד על דסטו מבתר פולחני גלו : ולא
24 אמרו בלבהון נדחל כען קדם יי אלהנא דמחית מטר בכיר ולקיש בעדניה בזמן קים
שבועיא דבזמן חצדא נטר לנא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

An ob ista non visitabo ut adducā super eos malum, dicit Dñs, aut de po-
lo cujus talia sunt opera, non sumā ultionem ex eis juxta voluntatem m[eam]
Ascendite in civitates ej°, et dissipate, & consummationem non fac[iatis]
destruite palatia ej° .quia non est voluntas corā Dño in eis. Quia præva[ri-]
cationē prævaricati sunt in Verbū meū dom° Israel et dom° Juda, dicit D[ñs]
Mentiti sunt in Verbū Dñi, & dixerunt: Non venit sup nos bonū à fa[cie]
ejus, nec veniet super nos malū: & eos qui occidunt gladio, & famem [non]
videbim°. Prophetæ autē falsi erunt in nihilū, & prophetia falsa eorū n[on]
confirmabitur: hæc ultio fiet de eis. Propterea hæc dicit Dñs De° exer[cituum]
tuū, Pro eò quòd prophetâstis verbū illud, ecce ego dabo verba prop[hetiæ]
meæ in ore tuo fortia instar ignis, & populū hunc infirmū sicut stipul[am]
occident eos. Ecce ego adducā sup vos, dom° Israel, populū à longe, d[icit]
Dñs, populum fortē, populum qui à seculo est, populū cuj° linguā ignor[a-]
bis, & non audies quid loquatur. Pharetra ej° quasi sepulchrū patens, [uni-]
versi fortes. Et deprædabitur messē tuam, & cibos tuos: occidet filios tu[os]
& filias tuas; capiet oves tuas, & boves tuos; & diripiet fruct° vitis tuæ [&]
ficus tuæ: destruet urbes munitas terræ tuæ in quibus tu confidebas ut [sal-]
vus fieres in eis à facie eorū qui occidunt gladio. Et etiā in diebus illis, d[icit]
Dñs, non faciā vobiscū consummationē. Et erit cùm dixeritis, Propter q[uid]
fecit Dñs De° noster nobis hæc omnia? & dices eis: Sicut reliquistis cul[tum]
meū, & coluistis idola populorū in terra vestra; sic servietis populis col[en-]
tibus idola in terra non vestra. Annuntiate hoc in domo Jacob, & narr[ate]
ea in domo Juda, dicentes: Audite nunc hoc popule insipiens & cor[de ca-]
rens; quibus sunt oculi, & non vident, & quibus sunt aures, & non audiu[nt]
An à facie mea non timebitis, dicit Dominus, aut à facie Verbi mei n[on]
contremiscetis? qui posui arenam terminum mari præcepto semp[iterno]
quod non transgreditur; & commoventur, & non possunt; & tum[ultu-]
antur fluctus ejus, & non transeunt illud. Populo autem huic [fuit]
cor declinans & rebelle: pro eo quòd declinaverunt à cultu meo, m[igra-]
verunt. Et non dixerunt in corde suo: Timeamus nunc coram Do[mino]
Deo nostro, qui demittit pluviam temporaneam & serotinam tempo[re]
suo: qui statuto tempore hebdomadas, quæ sunt tempore messis, cu[stodit]
nobis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܥܠ ܗܠܝܢ ܠܐ ܐܣܥܘܪ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܒܥܡܐ ܕܗܟܢܐ ܠܐ ܬܬܦܪܥ ܢܦܫܝ. * ܣܩܘ ܒܫܘܪܝܗ ܘܣܚܘܦܘ. ܘܫܘܡܠܝܐ ܠܐ ܬܥܒܕܘܢ. ܫܒܘܩܘ ܫܬܐܣܝܗ. ܡܛܠ ܕܕܡܪܝܐ ܐܢܘܢ. * ܡܛܠ ܕܡܒܓܕܘ ܒܓܕܘ ܒܝ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܘܒܢܝ ܝܗܘܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܟܕܒܘ ܒܡܪܝܐ ܘܐܡܪܘ. ܠܐ ܗܘܐ ܗܘ. ܘܠܐ ܬܐܬܐ ܥܠܝܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܚܪܒܐ ܘܟܦܢܐ ܠܐ ܢܚܙܐ. * ܘܢܒܝܐ ܗܘܘ ܠܪܘܚܐ. ܘܡܠܬܐ ܠܝܬ ܒܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܚܠܦ ܕܡܠܠܬܘܢ ܡܠܬܐ ܗܕܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܝܗܒ ܡܠܝ ܒܦܘܡܟ ܢܘܪܐ. ܘܥܡܐ ܗܢܐ ܩܝܣܐ. ܘܬܐܟܘܠ ܐܢܘܢ. * ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ .. ܥܡܐ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܡܐ ܥܫܝܢܐ. ܥܡܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܥܡܐ ܕܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ ܠܫܢܗ. ܘܠܐ ܬܫܡܥ ܡܕܡ ܕܡܡܠܠ. * ܐܝܟ ܩܒܪܐ ܦܬܝܚܐ ܓܪܓܪܬܗܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܢܒܪܐ. * ܢܐܟܘܠ ܚܨܕܟ ܘܠܚܡܟ. ܢܐܟܘܠ ܒܢܝܟ ܘܒܢܬܟ. ܢܐܟܘܠ ܥܢܟ ܘܬܘܪܝܟ. ܢܐܟܘܠ ܓܦܢܝܟ ܘܬܐܢܝܟ. ܢܚܪܒ ܩܘܪܝܟ ܥܫܝܢܬܐ ܕܐܢܬ ܬܟܝܠ ܒܗܝܢ ܒܚܪܒܐ. * ܘܐܦ ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܐܫܡܠܝܟܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܡܐ ܕܐܡܪܬܘܢ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܥܒܕ ܠܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ. ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܐܝܟ ܕܫܒܩܬܘܢ ܠܝ ܘܦܠܚܬܘܢ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ ܒܐܪܥܟܘܢ. ܗܟܢܐ ܬܦܠܚܘܢ ܠܢܘܟܪܝܐ ܒܐܪܥܐ ܕܠܐ ܕܝܠܟܘܢ. * ܚܘܘ ܗܕܐ ܒܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܐܫܡܥܘ ܒܝܗܘܕܐ ܘܐܡܪܘ. * ܫܡܥܘ ܗܕܐ ܥܡܐ ܣܟܠܐ .. ܕܠܝܬ ܠܗ ܠܒܐ. ܕܥܝܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܚܙܝܢ. ܘܐܕܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ. * ܠܝ ܠܐ ܕܚܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ .. ܘܡܢ ܩܕܡܝ ܠܐ ܙܝܥܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܕܣܡܬ ܚܠܐ ܬܚܘܡܐ ܠܝܡܐ. ܦܘܩܕܢܐ ܕܠܥܠܡ. ܕܠܐ ܢܥܒܪܝܘܗܝ. ܘܡܬܪܓܫ ܘܠܐ ܡܫܟܚ. ܘܡܪܬܚܝܢ ܓܠܠܘܗܝ. ܘܠܐ ܥܒܪܝܢ ܠܗ. * ܠܥܡܐ ܕܝܢ ܗܢܐ ܗܘܐ ܠܗ ܠܒܐ ܡܪܘܕܐ ܘܡܡܪܡܪܢܐ. ܘܣܛܘ ܘܐܙܠܘ. * ܘܠܐ ܐܡܪܘ ܒܠܒܗܘܢ. ܢܕܚܠ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܕܝܗܒ ܡܛܪܐ ܒܟܝܪܐ ܘܐܪܝܐ ܒܙܒܢܗ. ܘܚܨܕܐ ܕܩܝܛܐ ܠܣܬܘܐ ܢܛܪ ܠܢ.

* Propter hæc non viſitarem, ait Dominus? & 9
de hujuſmodi gente non ulciſceretur anima
mea? Conſcendite muros ejus, & demolimini; 10
at conſummationem ne facitote: relinquite
fundamenta ejus, quia Domini ſunt.
Quandoquidem omnino denegârunt me filii 11
Iſraelis & filii Judæ, ait Dominus; Negaverunt
Dominum, dicentes, Non eſt ipſe; nequaquam 12
adveniet nobis calamitas; gladium &
famem nequaquam experiemur; Prophetæ in 13
turbinem abibunt, nam iis quorum ſermo non
conſtat, ſic fiet: Propterea ſic dicit Dominus 14
Deus potentiſſimus, Quia tale verbum locuti
eſtis, ecce ego redditurus ſum ſermones meos
in ore tuo ignem, & populum iſtum ligna,
& devorabit eos. Ecce adducturus ſum contra 15
vos domus Iſraelis, populum è longinquo,
dicit Dominus: Is populus robuſtus eſt, populus
eſt antiquiſſimus, populus cujus linguam
ignoras, nec intelliges quod loquetur: Cujus 16
guttura ſunt aperta velut ſepulchra, omneſque
gigantes: Comedet meſſem tuam & panem 17
tuum, comedet filios tuos & filias tuas, comedet
oves tuas & boves tuos, comedet vites
tuas & ficus tuas; civitates tuas munitas quibus
tu confidis, gladio depauperabit. Attamen 18
iis diebus, dicit Dominus, non exterminabo
vos: Sed erit, quum dixeritis, Qua de 19
cauſa fecit nobis Dominus Deus noſter hæc
omnia? ut reſpondeas eis, Ita ait Dominus;
Quemadmodum dereliquiſtis me, & ſerviviſtis
diis alienis in terra veſtra, ita ſervietis
exteris in terra non veſtra. Nuntiate hoc in 20
domo Jacobi, & prædicate in Juda, ac dicite,
Audite hoc popule ſtolide & excors, qui oculos 21
habetis, & non videtis; aures habetis, nec
auditis: Me non metuitis, dicit Dominus? & 22
à facie mea non contremiſcitis? qui arenam
præſcripſi terminũ mari lege perpetuâ, neque
prætergreditur eam; reluctatur quidem, at non
poteſt, intumeſcunt fluctus ejus, at non excedunt
illum. Verùm populi iſtius cor factum 23
eſt rebelle & exaſperans, deflexerunt, & abierunt, 24
Neque dixerunt in corde ſuo, Metuamus
Dominum Deum noſtrum, qui dat pluviam
properam & ſerotinam, ſuo tempore: & fruges
æſtivas in hyemem ſervat nobis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هل لا اتعهدهم يقول الرب * أمن أمة هذا فعلها لا تنتقم نفسي * اصعدوا على سورها 10
واهدموهن ولا تصنعوا جرما * اتركوا اساساتها لانهم للرب * لان بيت اسرائيل عصاني 11
عصيانا * وبيت يهودا كذب لربهم * وقالوا ليست هذه تكون * ولا تأتي علينا شرور 12
ولا نعاين سيفا وجوعا * انبياؤنا صاروا للريح * وكلمة الرب لم تأت فيهم * لاجل هذا هكذا 13
يقول الرب الضابط الكل * لاجل انكم تكلمتم بهذه الكلمة ها انا اعطيت كلامي في 14
فيك نارا وهذا الشعب حطبا فتحرقهم *

An propter hæc non viſitarem eos, dicit 9
Dominus? an de gente cujus talis eſt
agendi ratio, non ulciſceretur anima
mea? Aſcendite ad pinnas ejus, & evertite 10
eas; verùm ne faciatis exitium:
relinquite fundamenta ejus, quia
Domini ſunt. Quia domus Iſraëlis 11
planè rebellavit contra me, & domus
Judæ mentita eſt in Dominum ſuum,
Et dixerunt, Nequaquam hæc erunt, 12
neque contingent nobis mala, neque
gladium aut famem experiemur; Prophetæ 13
noſtri in ventum abierunt, & verbum
Domini nequaquam venit per eos:
Idcirco ſic ait Dominus omnipotens,
Quia locuti eſtis hujuſmodi verbum, 14
ecce ego poſui verba mea in ore tuo
ignem, & populum iſtum ligna, ut
comburat eos.

* الاصحاح الرابع *

* ها انا اجلب عليكم امة من البعد يا بيت اسرائيل يقول الرب * امة لم تسمع صوتها 15
* جميعهم اقوياء * وياكلون زرعكم وخبزكم * وياكلون بنيكم وبناتكم * وياكلون 16 17
غنمكم وعجولكم * وياكلون كرومكم وتينكم وزيتونكم * ويستاصلون مدنكم
الحصينة بالسيف التي انتم متوكلون عليها * ويكون في تلك الايام يقول الرب الهك لا 18
اجعلكم للفناء * ويكون اذا قلتم من اجل ماذا صنع الرب الهنا بنا هذه كلها * فتقول 19
لهم من اجل انكم تعبدتم لالهة غرباء في ارض ليست لكم * اخبروا بهذه لبيت يعقوب * 20
واسمعوا في يهودا * اسمعوا هذه ايها الشعب الجاهل العديم القلب لهم اعين ولا يبصرون * 21
ولهم اذان ولا يسمعون * هل لا تخافوني يقول الرب * هل من وجهي لا تفزعون انا المرتب الرمل 22
حدا للبحر امرا ابديا فلا يتجاوزه * ويضطرب ولا يقدر وتعج امواجه ولا يتجاوزنه * وصار 23
لهذا الشعب قلب غير سامع وعاص * وحادوا وانصرفوا * ولم يقل في قلبه * نخشى الرب 24
الهنا المعطي لنا مطرا صباحيا ومسائيا الى وقت كمال امر الحصاد * وحفظه لنا *

Textus quartus.

Ecce ego adducam ſuper vos gentem de 15
longinquo O domus Iſraelis, ait Dominus,
gentem cujus vocem non audiſti; 16
Omnes fortiſſimi ſunt: Comedentque ſementem 17
veſtram & panem veſtrum,
comedent filios & filias veſtras, comedent
oves & vitulos veſtros, comedent
vineas, ficus, & oleas veſtras; &
exterminabunt gladio urbes veſtras munitas,
quibus vos freti eſtis. Erit autem 18
iis diebus, ait Dominus Deus tuus, ut
non exponam vos exterminio. Fietque 19
cùm dixeritis, Quam ob rem fecit Dominus
Deus noſter nobis hæc omnia?
ut dicas eis, Quia ſerviviſtis diis alienis
in terra non veſtra. Significate hæc 20
domui Jacobi, & nota fiant in Juda;
Audite hæc popule ſtulte & expers cordis, 21
qui oculos habetis, nec videtis; habetis
aures, nec auditis: An me non metuetis, 22
ait Dominus? an vultum meum
non reverebimini? mei qui diſpoſui arenam
terminum mari, ſtatuto perpetuo,
neque tranſgreditur illum: licèt intumeſcat,
nil tamen poteſt; & licèt fremant
fluctus ejus, non tamen excedit illum.
At factum eſt huic populo cor inobediens 23
ac rebelle, declinaverunt, & abierunt;
Neque dixerunt apud ſemetipſos, Vereamur 24
Dominum Deum noſtrum, qui dat
nobis imbrem matutinum ac veſpertinum,
quoad perficiatur tempus rei meſſoriæ;
idque perpetuò ſervaverat nobis.

ירמיה : ו

bonū ꝓhibuerūt veſtra peccata & :hæc fecerūt declinare veſtræ Iniquitates
25 עונותיכם הטו־אלה וחטאותיכם מנעו הטוב
expoſitionē ſecundū intuebitur :impii meo populo in ſunt inventi Quia .vobis à
26 מכם: כי־נמצאו בעמי רשעים ישור כשך
,volatili plena cavea Sicut .capient homines,exterminatoriū ſtatuerunt,laqueorum
27 יקושים הציבו משחית אנשים ילכדו: ככלוב מלא עוף
.ſunt ditati & ſunt magnificati ideo : dolo plenæ eorum domus ſic
כן בתיהם מלאים מרמה על־כן גדלו ויעשירו:
non judicium : mali verba ſuperaverūt etiam ,nituere ,ſunt Impinguati
28 שמנו עשתו גם עברו דברי־רע דין לא
egenorum judicium & :proſperaverūt & ,pupilli judiciū ,judicaverūt
דנו דין יתום ויצליחו ומשפט אביונים
? Dominus dicit , viſitabo non his ſuper Nunquid .judicaverunt non
29 לא שפטו: העל־אלה לא־אפקד נאם־יהוה
Stupor ? mea anima ulciſcetur non ,hæc ſicut quæ gente in Num
30 אם בגוי אשר־כזה לא תתנקם נפשי: שמה
,falſitate in prophetaverunt Prophetæ .terra in eſt facta fœditas &
31 ושערורה נהיתה בארץ: הנבאים נבאו בשקר
: ſic dilexerunt meus populus &,eorum manus ſuper dominabuntur ſacerdotes &
והכהנים ירדו על־ידיהם ועמי אהבו כן
? ejus noviſſimo in facietis quid &
ומה־תעשו לאחריתה:

CAP. VI. ו

,buccina clangite Tecoah in &,Jeruſalaim interiori de Binjamin filii Fugite
1 העזו בני בנימן מקרב ירושלם ובתקוע תקעו שופר
,Aquilone ab eſt viſum malum quia : facem elevate Hacherem-Beth ſuper &
ועל־בית הכרם שאו משאת כי רעה נשקפה מצפון
eam Ad .Sijon filiam aſſimilavi delicatæ & Venuſtæ .magna contritio &
2 3 ושבר גדול: הנוה והמענגה דמיתי בת־ציון: אליה
paverunt ,circum tentoria ea in fixerunt :eorū greges & ,paſtores venient
יבאו רעים ועדריהם תקעו עליה אהלים סביב רעו
,ſurgite , bellum eam adverſus Sacrate .ſuam manum unuſquiſque
4 איש את־ידו: קדשו עליה מלחמה קומו
quia : dies declinavit quia : nobis Væ .Meridie in aſcendamus &
ונעלה בצהרים אוי לנו כי־פנה היום כי
labefactemus & ,nocte in aſcendamus & ,Surgite .veſperæ umbræ ſe extenderūt
5 ינטו צללי־ערב: קומו ונעלה בלילה ונשחיתה
,lignum Succidite : exercituū Dominus dixit ſic Quia .ejus palatia
6 ארמנותיה: כי כה אמר יהוה צבאות כרתו עצה
ipſa tota ,eſt viſitata civitas Hæc .aggerem Jeruſalaim juxta effundite &
ושפכו על־ירושלם סללה היא העיר הפקד כלה
fecit ſcaturire ſic :ſuas aquas puteum ebullire Secundū.ejꝰ interiori in oppreſſor
7 עשק בקרבה: כהקיר בור מימיה כן הקרה
ſemper meas facies ſuper ,ea in audietur vaſtitas & Direptio .ſuā malitiam
רעתה חמס ושד ישמע בה על־פני תמיד
avellatur fortè ne , Jeruſalaim teipſam Erudi .percuſſio & ægritudo
8 חלי ומכה: הוסרי ירושלם פן־תקע
.habitatam non terram deſertam te ponam fortè ne : te à mea anima
נפשי ממך פן־אשימך שממה ארץ לוא נושבה:
vineam velut racemabunt Racemando : exercituum Dominus dixit Sic
9 כה אמר יהוה צבאות עולל יעוללו כגפן
.caniſtra ad vindemiator ſicut tuā manū Converte .Iſrael reſiduum
שארית ישראל השב ידך כבוצר על־סלסלות:
incircumciſa Ecce ? audient & ,conteſtabor & , loquar quem Super
10 על־מי אדברה ואעידה וישמעו הנה ערלה
Domini verbum Ecce .attendere poterunt non & , eorum auris
אזנם ולא יוכלו להקשיב הנה דבר־יהוה
.eo in volent non ,opprobrium in eis fuit
היה להם לחרפה לא יחפצו־בו:

Verſio VULG. LAT.

25 Iniquitates veſtræ declinaverunt hæc : & peccata veſtra prohibuerunt bonum à vobis.
26 Quia inventi ſunt in populo meo impii inſidiantes quaſi aucupes, laqueos ponentes & pedicas ad capiendos viros.
27 Sicut decipula plena avibꝰ, ſic domus eorum plenæ dolo : ideò
28 magnificati ſunt & ditati. Incraſſati ſunt & impinguati : et prætericrunt ſermones meos peſſimé. Cauſā viduæ non judicaverunt, cauſā pupilli non direxerunt, et judiciū pauperū
29 non judicaverunt. Numquid ſup his non viſitabo, dicit Dominꝰ? aut ſup gentē hujuſcemodi non ulciſcetur anima mea?
30 Stupor & mirabilia facta ſunt
31 in terra : Prophetæ prophetabant mendaciū, & ſacerdotes applaudebant manibꝰ ſuis: & populꝰ meꝰ dilexit talia : quid igitur fiet in noviſſimo ejus ?

CAP. VI.

1 COnfortamini, filii Benjamin, in medio Jeruſalem, & in Thecua clangite buccinā, & ſup Bethacarē levate vexillū : quia malū viſum eſt ab Aqui-
2 lone, & contritio magna. Spe-
ciofæ & delicatæ aſſimilavi fi-
3 liā Sion. Ad eā venient paſtores, & greges eorū : fixerunt in ea tētoria in circuitu: paſcet unuſquiſq; eos, qui ſub manu ſua
4 ſunt. Sanctificate ſup eam bellum: conſurgite, & aſcendamꝰ in meridie: væ nobis, quia declinavit dies, quia longiores
5 factæ ſunt umbræ veſperi. Surgite, & aſcendamꝰ in nocte, &
6 diſſipemꝰ domos ejꝰ. Quia hæc dicit Dn̄s exercituum; Cædite lignū ejꝰ, et fundite circa Jeruſalē aggerē: hæc eſt civitas viſitationis, omnis calumnia in
7 medio ejus. Sicut frigidā fecit ciſterna aquā ſuā, ſic frigidam fecit malitiā ſuā : iniquitas & vaſtitas audietur in ea, corā me
8 ſemp infirmitas & plaga. Erudire Jeruſalē, ne fortè recedat anima mea à te, ne fortè ponā
9 te deſertā, terrā inhabitabilem. Hæc dicit Dn̄s exercituū; Uſq; ad racemū colligēt quaſi in vinea reliquias Iſrael: converte manum tuā quaſi vindemiator
10 ad cartallū. Cui loquar? & quē conteſtabor ut audiat? ecce incircumciſæ aures eorū, et audire non poſſunt: ecce verbum Dn̄i factū eſt eis in opprobrium, et non ſuſcipient illud.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

25 Αἱ ἀνομίαι ὑμῶν ἐξέκλιναν ταῦτα, καὶ αἱ ἁμαρτίαι ὑμῶν (β) ἀπέστησαν τὰ ἀγαθὰ ἀφ' ὑμῶν.
26 Ὅτι εὑρέθησαν ἐν τῷ λαῷ μου (γ) ἀσεβεῖς, καὶ παγίδας ἔστησαν τοῦ διαφθεῖραι ἄνδρας, καὶ συνελαμβάνοντο.
27 Ὡς παγὶς (δ) ἐφεσταμένη πλήρης πετεινῶν, οὕτως οἱ οἶκοι αὐτῶν πλήρεις δόλου· διὰ τοῦτο ἐμεγαλύνθησαν, καὶ ἐπλούτησαν,
28 Καὶ παρέβησαν κρίσιν, οὐκ ἔκριναν κρί-
29 σιν ὀρφανοῦ, καὶ κρίσιν χήρας οὐκ ἐκρίνοντο. Μὴ ἐπὶ τούτοις οὐκ ἐπισκέψομαι; λέγει κύριος· (ε) ἢ ἐν ἔθνει τῷ τοιούτῳ οὐκ ἐκδικήσει ἡ ψυ-
30 χή μου; Ἔκστασις καὶ φρικτὰ ἐγενήθη ἐπὶ τῆς γῆς.
31 Οἱ προφῆται προφητεύουσιν ἄδικα, καὶ οἱ ἱερεῖς ἐπεκρότησαν ταῖς χερσὶν αὐτῶν, καὶ ὁ (ζ) λαός μου ἠγάπησεν οὕτως. καὶ τί ποιήσετε εἰς τὰ μετὰ ταῦτα;

Iniquitates veſtræ declinaverunt hæc: & peccata veſtra repulerunt bona à vobis. Quia inventi ſunt in populo meo impii: & laqueos ſtatuerunt ad perdendos viros, & ceperunt. Sicut laqueus ſuſpenſus plenus avium: ſic domus eorum plenæ dolo. Ideò magnificati ſunt, & ditati, Et tranſgreſſi ſunt judicium: non judicaverunt judicium pupilli: & judicium viduæ non judicaverunt. Nunquid ſuper his non viſitabo? dicit Dominus: aut in gentē talē non ulciſcetur anima mea? Stupor, & horribilia facta ſunt ſuper terrā. Prophetæ prophetant iniqua, & ſacerdotes applauſerunt manibus ſuis: & populus meus dilexit ſic. Et quid facietis poſt hæc?

MS.A. (β) ἐξαπέστησαν (γ) ἀσεβεῖς, παγίδας ἔστησαν διαφθεῖραι (δ) ἐπεσταμένη (ε) ἢ ἔθνει τοιούτῳ (ζ) λαὸς ἠγάπησεν

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 ἘΝισχύσατε υἱοὶ Βενιαμὶν ἐκ μέσου τῆς Ἱερουσαλήμ, καὶ (α) ἐν Θεκουὲ σημάνατε σάλπιγγι, καὶ ὑπὲρ (β) Βαιθαχαρμὰ ἄρατε σημεῖον, ὅτι κακὰ ἐκκέκυφεν ἀπὸ Βορρᾶ, καὶ
2 συντριβὴ μεγάλη γίνεται. Καὶ ἀφαιρεθήσεται
3 τὸ ὕψος (γ) θύγατερ Σιών. Εἰς αὐτὴν ἥξουσι ποιμένες, καὶ τὰ ποίμνια αὐτῶν· καὶ πήξουσιν ἐπ' αὐτὴν σκηνὰς κύκλῳ, καὶ ποι-
4 μανοῦσιν ἕκαστος τῇ χειρὶ (δ) αὐτοῦ. Παρασκευάσασθε ἐπ' αὐτὴν εἰς πόλεμον, ἀνάστητε, καὶ ἀναβῶμεν ἐπ' αὐτὴν μεσημβρίας. οὐαὶ ἡμῖν, ὅτι κέκλικεν ἡ ἡμέρα, ὅτι ἐκλείπουσιν αἱ σκιαὶ (ε) τῆς ἡμέ-
5 ρας. Ἀνάστητε, καὶ (ζ) ἀναβῶμεν ἐπ' αὐτὴν νυκτί, καὶ διαφθείρωμεν τὰ θεμέλια αὐτῆς.
6 Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Ἔκκοψον τὰ ξύλα αὐτῆς, ἔκχεον ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ δύναμιν. ὦ πόλις ψευδής, ὅλη καταδυναστεία
7 ἐν αὐτῇ. Ὡς ψύχει λάκκος ὕδωρ, (η) οὕτω ψύχει κακία αὐτῆς, ἀσέβεια καὶ ταλαιπωρία ἀκουσθήσεται ἐν αὐτῇ ἐπὶ πρόσωπον αὐ-
8 τῆς διαπαντός. πόνῳ καὶ μάστιγι παιδευθήσῃ Ἱερουσαλήμ, μὴ ἀποστῇ ἡ ψυχή μου ἀπὸ σοῦ, μὴ ποιήσω σε ἄβατον γῆν, ἥτις οὐ (θ) κατοι-
9 κισθῇ. Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Καλαμᾶσθε, καλαμᾶσθε ὡς ἄμπελον τὰ κατάλοιπα τοῦ Ἰσραήλ, ἐπιστρέψατε ὡς ὁ τρυγῶν ἐπὶ τὸν κάρ-
10 ταλλον αὐτοῦ. Πρὸς τίνα λαλήσω, καὶ (ι) διαμαρτύρωμαι, καὶ εἰσακούσεται; ἰδοὺ ἀπερίτμητα τὰ ὦτα (κ) αὐτῶν, καὶ οὐ δυνήσονται ἀκούειν· ἰδοὺ τὸ ῥῆμα κυρίου ἐγένετο αὐτοῖς εἰς ὀνειδισμόν, (λ) οὐ μὴ βουληθῶσιν (μ) αὐτό.

CAP. VI.

COnfortamini, filii Benjamin, de medio Hieruſalem: & in Thecue ſignificate tubā: & ſuper Bethachatma levate ſignum: quia mala incubuerunt ab Aquilone: & contritio magna fit: Et auferetur celſitudo tua, filia Sion. In eam venient paſtores, & greges eorum & figent ſuper eam tabernacula in circuitu; et paſcent unuſquiſque manu ſuâ. Paramini ſuper eam in bellum: conſurgite, et aſcendamus ſuper eam meridie: væ nobis, quia declinavit dies, quia deficiunt umbræ (a) diei. Surgite, et aſcendamus ſuper eam nocte; et diſſipemus fundamenta illius. Quia hæc dicit Dominus; Cæde ligna ejus, effunde ſuper Hieruſalem virtutem. O civitas mendax: tota oppreſſio in ea. Sicut frigidam facit ciſterna aquam; ſic frigidam facit malitia ejus. Impietas, et miſeria audietur in ea ſuper faciem ejus ſemper. Dolore, et flagello Erudieris, Hieruſalē: Ne recedat anima mea à te: ne faciam te inviam terram, quæ non habitetur. Quia hæc dicit (b) Dominus; Racemate, racemate quaſi vineam, reliquias Iſrael: convertimini, quaſi vindemiator ad cartallum ſuum. Ad quem loquar, et conteſtabor; et exaudiet? Ecce incircumciſæ aures eorum; et non poterunt audire. Ecce verbum Domini factum eſt eis in opprobrium: non volunt illud.

MS.A. (α) ἐκ Θεκουὲ (β) Βηθαχὰρ (γ) σου θυγάτηρ (δ) αὐτῶν. (ε) ἑσπέρας. (ζ) διαβῶμεν ἐν τῇ νυκτί, (η) οὕτως (θ) κατοικηθήσεται. (ι) διαμαρτύρομαι, καὶ ἀκούσεται; (κ) ὑμῶν, καὶ οὐ δύνανται (λ) καὶ οὐ μὴ (μ) αὐτὸ ἀκοῦσαι. Καὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

25 חוביכון גרמו אלין לכון וחטאיכון מנעו טובא מנכון: 26 ארי אשתכחו בעמי חיבין בנכלין
אשדין דם זכי כלבוש צידין דמחי וקטיל מתעשתין לחבלא נפשין קטלין: 27 כבית פטמא
דמלי עופא כן בתיהון מלן נכלין על כן סגיאו ועתירו: 28 עתרו אף קנו נכסין אף עברו
על פתגמי אוריתא עבדו דביש דין דקשוט לא דינין ואלו הוו דינין דין יתמא הוו
מצליחין ודין חשיכיא בקושטא לית אנון דינין: 29 העל אלין לא אסער לאיתאה עליהון
בישא אמר יי אם מן עמא דכדין עובדוהי לא אתפרע מנהון כרעותי: 30 תימה ושנו הוו
בארעא: 31 נביי שקרא מתנבן שקר וכהניא מסיעין על ידיהון ועמי רחימו כן ומה
תעבדון לסופא:

ו

1 גלו בני בנימן מגו ירושלם ארי קל צוחת קרנא אשתמעת בארעא ועל בית בקעת
כרמיא זקפו עממיא סמותא ארי בישתא אסתכיאת מצפונא ותבירא רבא: 2 יאתא
ומפנקתא איכדין קלקילת ית אורחתיך בכן בהיתת כנשתא דציון: 3 לה ייתון מלכין
ומשריתיהון יגדון עלה משכנין סחור סחור וסיעין גבר ית חבריה: 4 זמינו עלה עבדי
קרבא קומו ונסק בטיהרא וי לנא ארי פנא יומא ארי נגדו טולי רמשא: 5 קומו ונסק
בליליא ונחבל ברניתהא: 6 ארי כדנן אמר יי צבאות קצו אעא וצברו על ירושלם מליתא
היא קרתא דאתפקידו לה חובהא כולהון אנסין בגוה: 7 כנובא דמקים מוהי כן אוריכו
ואתקימו בגוה עבדי בישתא קל חטופין ובזוזין משתמע בה קדמי תדירא על כן
איתיתי עלה מרע ומחא: 8 אתרדא ירושלם דלמא ירחק מימרי יתיך דלמא אשוינך צדיא
כארע סדום דלא אתותבת: 9 כדנן אמר יי צבאות אתבוננא יתבזון כמא דמהלכין
על שולי גפן למקטף שארא דישראל ותתיב מחתך עליהון כדקטף על סלסלין:
10 על מן אמלל ואסהד ויקבלון אולפן הא אטפשת אודנהון ולא יכלין למצית הא
פתגמא דיי הוה להון לחסודין מולא צבן ביה:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Iniquitates veſtræ cauſantur hæc vobis, & delicta veſtra prohibuerunt bonum à vobis. Quia inventi ſunt in populo meo peccatores, & in dolo effundentes ſanguinem innocentem : quaſi indumentum venatorum, quod percutit & occidit, cogitant diſperdere animas interfectores. Sicut domus ſaginationis quæ plena eſt avibus, ſic domus eorum plenæ ſunt dolo ; proptereà multiplicati ſunt & ditati ſunt : Divites facti ſunt & poſſederunt divitias, tranſgreſſi quoque ſunt ſermones Legis, fecerunt quod malum eſt. Judicium verum non judicant : ſi autem judicaſſent judicium pupilli, proſperati fuiſſent ; & judicium pauperum in veritate non judicant. An ob iſta non viſitabo ut adducam ſuper eos mala, dicit Dn̄s ? aut de populo qui talis eſt in operibꝰ ſuis, non ſumam ex eo vindictam pro voluntate mea ? Admiratio & fœditas facta *ſunt* in terra. Prophetæ falſi prophetant falſa, & ſacerdotes auxiliantur manibus eorum, & populus meus dilexit ſic : & quid facietis in noviſſimo ejus ?

CAP. VI.

MIgrate filii Benjamin de medio Jeruſalem, quia vox clamoris tubæ corneæ audita eſt in terra: & ſup campū vinearū levate populi ſigna, quia malū viſum eſt ab Aquilone, & contritio magna. Pulchra & delicata quomodo corrupiſti vias tuas? proptereà confuſꝰ eſt cœtꝰ Sion. Ad eā venient reges & exercitꝰ eorū : extendent ſup eā tabernacula per circuitū, & adjuvabunt unuſquiſq; proximū ſuū. Præparate contra eā bellatores: ſurgite et aſcendamꝰ in Meridie. Væ nobis quia declinavit dies, quia longiores factæ ſunt umbræ veſpertinæ. Surgite & aſcendamꝰ in nocte, & diſſipemꝰ palatia ejꝰ. Quia hæc dicit Dn̄s exercituū: Succidite ligna & comportate ſuper Jeruſalē aggerē: iſta eſt civitas cujꝰ peccata viſitantur: omnes ſunt violenti in medio ejꝰ. Sicut ciſterna quæ ſuſtentat aquas ſuas, ſic expectaverunt & ſuſtentati ſunt in medio ejꝰ operantes malū. Vox raptorū & deprædatorū audita eſt in ea corā me ſemp: proptereà adduxi ſup eā infirmitatē et percuſſionē. Erudire Jeruſalē, ne fortè abjiciat te Verbū meum, ne fortè ponā te deſertā ſicut terrā Sodomæ quæ nō habitatur. Hæc dicit Dn̄s exercituū: Direptione diripientur, ſicut qui ambulant ad radices vitis ad vindemiandum, reſiduum Iſrael : et *converte plagam tuam* ad eos, ſicut vindemiator ad caniſtra. Ad quem loquar, & quem conteſtabor, ut ſuſcipiant diſciplinam? Ecce obturata eſt auris eorum, & non poſſunt audire: ecce verbum Domini factum eſt eis in opprobrium, eo quòd nolunt illud.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܚܘܒܝܟܘܢ ܐܦܢܘ ܗܠܝܢ ܥܠܝܟܘܢ. ܘܚܛܗܝܟܘܢ ܟܠܘ ܛܒܬܐ ܡܢܟܘܢ. * ܡܛܠ
ܕܐܫܬܟܚܘ ܒܥܡܝ ܚܛܝܐ. ܘܐܪܡܘ ܦܚܐ ܐܝܟ ܣܝܓܐ. ܕܢܬܨܝܕܘܢ ܒܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ.
* ܘܐܝܟ ܩܦܣܐ ܕܡܠܝܐ ܦܪܚܬܐ. ܗܟܢܐ ܒܬܝܗܘܢ ܡܠܝܢ ܢܟܠܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܪܒܘ
ܘܥܬܪܘ. ܘܥܒܪܘ ܥܠ ܕܝܢܐ. ܕܝܢܐ ܠܐ ܕܢܘ. ܘܕܝܢܐ ܕܝܬܡܐ ܠܐ ܬܪܨܘ. ܘܕܝܢܐ ܕܡܣܟܢܐ ܠܐ ܕܢܘ.
* ܠܐ ܥܠ ܗܠܝܢ ܠܐ ܐܦܩܘܕ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܥܡܐ ܕܐܝܟ ܗܢܐ ܠܐ ܬܬܦܪܥ ܢܦܫܝ. * ܬܡܗܐ ܘܫܛܝܘܬܐ
ܗܘܬ ܒܐܪܥܐ. * ܢܒܝܐ ܐܬܢܒܝܘ ܫܘܩܪܐ. ܘܟܗܢܐ ܐܚܕܘ ܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܥܡܝ ܪܚܡ ܗܘܐ.
ܘܡܢܐ ܥܒܕܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܚܪܬܐ. * ܫܠܡ * ܗ *

* ܥܪܘ ܒܢܝ ܒܢܝܡܝܢ ܡܢ ܓܘ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܒܩܠܐ ܩܪܘ ܫܝܦܘܪܐ. ܘܥܠ ܒܝܬ ܟܪܡ
ܐܩܝܡܘ ܢܝܫܐ. ܡܛܠ ܕܒܝܫܬܐ ܐܬܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܘܬܒܪܐ ܪܒܐ. * ܠܡܦܢܩܬܐ
ܘܡܦܢܩܬܐ ܐܬܕܡܝܬ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. * ܥܠܝܟܝ ܢܐܬܘܢ ܪܥܘܬܐ. ܘܥܢܗܘܢ ܥܡܗܘܢ. ܘܢܩܒܥܘܢ
ܥܠܝܟܝ ܡܫܟܢܝܗܘܢ ܚܕܪܝܟܝ. ܘܢܪܥܘܢ ܐܢܫ ܕܒܐܝܕܗ. * ܛܝܒܘ ܥܠܝܗ̇
ܩܪܒܐ. ܘܐܡܪܘ. ܩܘܡܘ ܢܣܩ ܒܛܗܪܐ. ܘܝ ܠܢ ܕܦܢܐ ܝܘܡܐ. ܘܐܬܢܓܕܘ ܛܠܠܐ ܕܪܡܫܐ. * ܩܘܡܘ
ܢܣܩ ܥܠܝܗ̇ ܒܠܠܝܐ. ܘܢܚܒܠ ܗܝܟܠܝܗ̇. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܦܣܘܩܘ
ܩܝܣܝܗ̇. ܘܐܟܡܢܘ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܟܡܐܢܐ. ܗܝ ܡܕܝܢܬܐ ܕܐܬܦܩܕܬ. ܘܟܠܗ̇ ܥܫܘܩܝܐ
ܒܓܘܗ̇. * ܐܝܟ ܕܟܢܫ ܓܘܒܐ ܡܝܘܗܝ. ܗܟܢܐ ܟܢܫܬ ܒܝܫܬܗ̇. ܚܛܘܦܝܐ ܘܒܙܬܐ ܐܫܬܡܥ
ܒܗ̇ ܩܕܡ ܐܦܝ ܐܡܝܢܐܝܬ. * ܒܟܐܒܐ ܘܒܡܚܘܬܐ ܐܬܪܕܝ ܐܘܪܫܠܡ. ܕܠܐ ܬܩܘܛ
ܢܦܫܝ ܡܢܟܝ. ܘܕܠܐ ܐܥܒܕܟܝ ܚܘܪܒܐ. ܐܝܟ ܐܪܥܐ ܕܠܐ ܡܬܥܡܪܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܚܝܠܬܢܐ. ܥܘܠܠܐ ܢܥܘܠܠܘܢ. ܐܝܟ ܓܦܬܐ ܫܪܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܗܦܟ ܐܝܕܟ ܐܝܟ ܩܛܘܦܐ
ܠܘܬ ܥܘܠܠܐ. * ܠܡܢ ܐܡܠܠ ܘܐܣܗܕ ܕܢܫܡܥܘܢ. ܗܐ ܐܕܢܝܗܘܢ ܥܘܪܠܢ. ܘܠܐ ܡܫܟܚܝܢ
ܠܡܫܡܥ. ܗܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܚܣܕܐ. ܘܠܐ ܨܒܝܢ ܒܗ.

Culpæ veſtræ reflexerunt hæc in vos, & pec- 25
cata veſtra averterunt bona à vobis. Inventi 26
ſunt enim in populo meo peccatores, qui la-
queos ceu ſepes erexerunt, ut iis caperentur
homines: Et veluti cavea plena avibus, ita 27
domus eorum plenæ ſunt dolo. Propterea 28
magni ac divites effecti ſunt, & transgreſſi
ſunt judicium: jus non dixerunt, & cauſam
pupillorum haud rectè diſpoſuerunt, neque
judicaverunt cauſam egenorum. An propter 29
iſta non viſitarem, dicit Dominus? & de hu-
juſmodi populo non ſumeret ultionem anima
mea? Stupiditas & ſtultitia facta eſt in terra: 30
Prophetæ falſitatem vaticinabantur, & ſacer- 31
dotes tenebant manus eorum, & populo meo
placuerunt iſta: ecquid tandẽ facturi eſſetis?

CAP. VI.

Defecerunt filii Benjaminis è Jeruſalem; 1
nam cum ſonitu clanxerunt *Aſſyrii* buccinâ
& ſuper Beth-herem vexillum erexerunt: ma-
lum enim adductus ſum ex Aquilone, & con-
tritionem magnam. Voluptuoſæ ac delicatæ ſi- 2
milis facta es filia Sion: Contra te venient pa- 3
ſtores unà cum gregibus ſuis, figentque cir-
cum te tentoria ſua circunquaque, & paſcent
quiſque latus quod occupabit. Præparate ad- 4
versùs eam bellum, & dicite; Surgite, aſcen- 5
damus ipſo meridie: væ nobis, quia receſſit
dies, & inclinârunt umbræ veſpertinæ: Sur-
gite, aſcendamus adversùs eam noctu, & de-
moliamur palatia ejus. Sic enim dicit Domi- 6
nus potentiſſimus, Succidite ligna ejus, & in-
ſidias tendite contra Jeruſalem civitatem il-
lam, quæ cùm viſitata eſt, tota oppreſſio ejus
inventa eſt in medio ipſius: Quemadmodum 7
congerit puteus aquas ſuas, ita congeſſit mali-
tiam ſuam: rapina & deprædatio auditur in ea
coram facie mea jugiter. Doloribus ac plagis 8
erudire Jeruſalem, ne te nauſeet anima mea,
ne te redigam in ſolitudinem ceu terram
quæ nunquam fuit habitata. Sic dicit Domi- 9
nus potentiſſimus, Accuratè racemabuntur,
ut vitis, reliquiæ Iſraelis: reduc manum tu-
am, ut vindemiator, ad racemationem. Quos 10
alloquar & conteſtabor ut audiant? en aures
eorum ſunt præputiatæ, nec poſſunt auſculta-
re: en ſermo Domini factus eſt apud eos in
probrum, nec oblectantur illo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* آثامنا امالت هذه * وخطايانا ابعدت الخيرات عنا * لان النفاق وجد في هذا الشعب * اقاموا
فخاخا ليفسدوا رجالا واخذوهم * مثل فخ منصوب مملوء طيورا * هكذا بيوتهم مملوءة
غشا * لاجل هذا عظموا واستغنوا وتجاوزوا القضاء * ولم يحكموا حكم اليتيم * ولم يقضوا
قضاء الارملة * هل بهذه لا اتعهدهم يقول الرب * او لامة بهذه الحال لا تنتقم نفسي
* حيرة ورهبة صارت على الارض * الانبياء تنباوا ظلما * والكهنة سفقوا بايديهم * والشعب
احب هكذا * وماذا يصنع فيما بعد هذه *

الفصل السادس *

* تقووا يا بني بنيامين من وسط ايروشليم * ومن تاكوا اعلنوا بالبوق * ومن اجل بيت تاخار
ارفعوا علامة * لان الشرور طلعت من الجربياء * ويكون انكسار عظيم * وينزع ارتفاعك يا
ابنة صهيون * اليها تاتي الرعاة وقطعانهم * وينصبون عليها خياما من حولها * ويرعون كل
واحد بيده * استعدوا لها للحرب * قوموا فنصعد عليها نصف النهار * ويل لنا ان النهار مال
وزال ظل المساء * قوموا ونعبر في الليل * ونفسد اساساتها * لان هكذا يقول الرب * اقطعوا
حسبها * صيروا على ايروشليم حبسا * ايتها المدينة الكاذبة كلها بقوة فيها * كما يبرز الجب ماء
هكذا تبرز شرها * نفاق وشقوة يسمعان فيها على وجهها كل حين * بوجع وضربة تتادبين
يا ايروشليم * لا تبعد نفسي عنك * ولا اجعلك ارضا غير مسكونة التي لا تسكن
* لان هكذا يقول الرب فتشوا فتشوا مثل كرمة بقايا اسرائيل * ارجعوا مثل القاطف الى
سلته * مع من اتكلم واشهد ويسمع * ها اذانكم غير مختونة ولا تستطيعون ان تسمعوا
ها كلمة الرب صارت لهم للتعيير ولم يشاوا ان يسمعوها *

*Sed ſcelera noſtra hæc averterunt, & 25
peccata noſtra proſperitates amoverunt à
nobis. Etenim perverſitas inventa eſt in 26
iſto populo: tetenderunt laqueos ad per-
dendos viros, & ceperunt eos. Ut la- 27
queus tenſus, plenus avibus, ita domus
eorum plenæ ſunt dolo. Hac de cauſa 28
magni & divites effecti transgredi-
untur judicium, cauſam pupilli non
judicant, neque dirimunt litem vi-
duæ. At propter hæc non viſitarem 29
eos, ait Dominus? an de gente quæ
talis eſt conditionis, non ulciſceretur ani-
ma mea? Stupenda res & horrenda 30
facta eſt ſuper terram: Prophetæ fal- 31
ſum prædixerunt, & ſacerdotes applau-
ſerunt manibus, populo autem placent
hujuſmodi res: & quid poſt hæc facere
poſſit?*

CAP. VI.

*Corroboramini O filii Benjaminis de 1
medio Jeruſalem, & de Tecua promul-
gate buccinâ, & propter Beth-techer
attollite ſignum: quia mala comparue-
runt ex Aquilone, & futurum eſt ingens
excidium: Et auferetur ſuperbia tua O 2
filia Sionis. Ad eam venient paſtores 3
cum gregibus ſuis, figentque tabernacula
circum ipſam, paſcentque unuſquiſque
ad manum ſuam.* (i. ad libitum.) *Parate 4
vos contra eam ad prælium: ſurgite,
aſcendamus contra eam meridie: væ no-
bis, quia reflexit ſe dies, & receſſit um-
bra veſpertina: Surgite, & tranſeamus 5
noctu, & demoliamur fundamenta ipſius.
Sic enim ait Dominus, Cædite ligna 6
ejus, collocate circum Jeruſalem exer-
citum. Heus urbs, tota mendax cum
robore quod in ipſa eſt; Quemadmo- 7
dum profert puteus aquam, ita pro-
fert ſcelus ſuum: impietas & miſeria
audiuntur in ea ſuper faciem ejus omni
tempore. Dolore & flagello ſi erudia- 8
ris O Jeruſalem, non recedet à te ani-
mus meus, neque reddam te terram in-
cultam quæ non habitatur. Nam ita 9
dicit Dominus; Amputate, amputate
ceu vitim reliquias Iſraelis: revertimini
ut vindemiator ad caniſtrum ſuum.
Quem alloquar & conteſtabor, ut au- 10
diat? ecce aures veſtræ ſunt incircunci-
ſæ, nec poteſtis audire: ecce verbum
Domini factum eſt eis in opprobrium,
nec volunt illud audire.*

ירמיה : ו

super effundere ,continere laboravi ,sum plenus Domini ira Et
11 ואת חמת יהוה מלאתי נלאיתי הכיל שפך על־
maritus etiam quia : pariter juvenum *secretum* super & ,*platea in* parvulum
עולל בחוץ ועל סוד בחורים יחדו כי־גם־איש
vertentur Et .dierum pleno cum senex ,capientur uxore cum
12 עם־אשה ילכדו זקן עם־מלא ימים: ונסבו
extendam quia : pariter *feminæ* & , agri ; alteros ad eorum domus
בתיהם לאחרים שדות ונשים יחדו כי־אטה
Nam .Dominus dicit , terram habitantes super meam manum
13 את־ידי על־ישבי הארץ נאם־יהוה: כי
,*cupiditate concupiscens* ipse omnis ,eorũ magnum ad usque & ,eorum parvo à
מקטנם ועד־גדולם כלו בוצע בצע
curabãt Et .mendaciũ *faciens* ipse omnis,sacerdotẽ ad usq; & ,propheta à &
14 ומנביא ועד־כהן כלו עשה שקר: וירפאו
non & , pax , Pax : dicendo levi *super* ,mei populi contritionem
את־שבר עמי על־נקלה לאמר שלום שלום ואין
pudendo etiam ? fecerint abominationẽ quòd ,sunt affecti Pudore .pax
15 שלום: הובישו כי־תועבה עשו גם־בוש
Quamobrem .nesciverunt erubescere etiam : sunt suffusi pudore non
לא־יבושו גם־הכלים לא ידעו לכן
.Dominus dixit , corruent , eos visitabo tempore in *cadentes in* cadent
יפלו בנפלים בעת־פקדתים יכשלו אמר יהוה:
interrogate & , videte & , vias super State ,Dominus dixit Sic
16 כה אמר יהוה עמדו על־דרכים וראו ושאלו
; ea in ambulate & , bona via *ipsa ubi* ,*seculi* semitis *in*
לנתבות עולם אי־זה דרך הטוב ולכו־בה
.ambulabimus Non ; dixerunt & : vestræ animæ requiem invenietis &
ומצאו מרגוע לנפשכם ויאמרו לא נלך:
: buccinæ voci intendite : speculatores vos super constituam Et
17 והקמתי עליכם צפים הקשיבו לקול שופר
cognosce & : gentes audite Ideo .intendemus Non : dixerunt &
18 ויאמרו לא נקשיב: לכן שמעו הגוים ודעי
adducens ego Ecce : terra Audi .eis in quæ *cœtus*
19 עדה את־אשר־בם: שמעי הארץ הנה אנכי מביא
super quia : eorum cogitationum fructum ,istum populum *ad* malum
רעה אל־העם הזה פרי מחשבותם כי על־
.*ea in* reprobaverunt *&* meam legem & ,intenderunt non meis verbis
דברי לא הקשיבו ותורתי וימאסו־בה:
terra de optimus calamus & ,veniet Seba de thus mihi jam quid Ut
20 למה־זה לי לבונה משבא תבוא וקנה הטוב מארץ
vestra sacrificia & : beneplacitum ad non *vestræ Ascensiones* ? longinqua
מרחק עלותיכם לא לרצון וזבחיכם
dans ego Ecce : Dominus dixit sic Propterea .mihi dulcuerunt non
21 לא־ערבו לי: לכן כה אמר יהוה הנני נתן
filii & , patres eis in ruent & : ruinas *hunc populum ad*
אל־העם הזה מכשלים וכשלו בם אבות ובנים
Ecce : Dominus dixit Sic .peribunt ejus *socius* & vicinus , pariter
22 יחדו שכן ורעו יאבדו: כה אמר יהוה הנה
suscitabitur magna gens & , Aquilonis terra de *veniens* populus
עם בא מארץ צפון וגוי גדול יעור
non & ,*ipsa crudelis* , *prehendent parmam* & Arcum .terræ lateribus à
23 מירכתי־ארץ: קשת וכידון יחזיקו אכזרי הוא ולא
:equitabunt equos super & ; *edet tumultum* mare ut eorũ Vox .miserebitur
ירחמו קולם כים יהמה ועל־סוסים ירכבו
Audivimus .Sion filia ,te adversum prælium ad vir tanquam *instructi*
24 ערוך כאיש למלחמה עליך בת־ציון: שמענו
;nos apprehendit tribulatio : nostræ manus sunt *remissæ* ,ejus *auditum*
את־שמעו רפו ידינו צרה החזיקתנו
.parturientis ut *angor*
חיל כיולדה:

Versio VULG. LAT.

11 Idcircò furore Domini plenus sum, laboravi sustinens: effunde super parvulum foris, & super consilium juvenum simul: vir enim cum muliere capietur, 12 senex cũ pleno dierũ. Et transibunt domus eorũ ad alteros, agri & uxores pariter: quia extendam manum meam super habitantes terram, dicit Dominus. 13 A minore quippe usq; ad majorem omnes avaritiæ student: & à propheta usque ad sacerdotem cuncti faciunt 14 dolum. Et curabant contritionem filiæ populi mei cum ignominia, dicentes, Pax, pax: 15 & non erat pax. Confusi sunt, quia abominationẽ fecerunt: quin potiùs confusione non sunt confusi, & erubescere nescierunt: quam ob rem cadent inter ruentes: in tempore visitationis suæ corruent, dicit 16 Dñs. Hæc dicit Dñs; State super vias, & videte, & interrogate de semitis antiquis, quæ sit via bona, & ambulate in ea: & invenietis refrigerium animabus vestris. Et dixerunt, 17 Non ambulabimus. Et constitui super vos speculatores. Audite vocem tubæ. Et dixe- 18 runt, Non audiemus. Ideò audite Gentes, & cognosce congregatio, quanta ego faci- 19 am eis; Audi terra; Ecce ego adducam mala super populum istum, fructum cogitationum ejus: quia verba mea non audierunt, & legem meam pro- 20 jecerunt. Ut quid mihi thus de Saba affertis, & calamũ suave olentem de terra longinqua? holocautomata vestra non sunt accepta, & victimæ vestræ non 21 placuerunt mihi. Propterea hæc dicit Dñs; Ecce ego dabo in populũ istũ ruinas, & ruent in eis patres & filii simul, vicinus & proximus peribunt. 22 Hæc dicit Dñs; Ecce populus venit de terra Aquilonis, & gens magna consurget à fini- 23 bus terræ. Sagittam & scutum arripiet: crudelis est, et non miserebitur: vox ejus quasi mare sonabit: & super equos ascendent, præparati quasi vir ad prælium, adversùm te, 24 filia Sion. Audivimus famam ejus, dissolutæ sunt manus nostræ: tribulatio apprehendit nos, dolores ut parturientem.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 Καὶ τὸν θυμόν μου ἔπλησα, καὶ ἐπέσχον, καὶ οὐ συνετέλεσα αὐτούς. ἐκχεῶ ἐπὶ νήπια ἔξωθεν, καὶ ἐπὶ συναγωγὴν νεανίσκων ἅμα· ὅτι ἀνὴρ καὶ γυνὴ συλληφθήσονται, 12 πρεσβύτερος (ν) μετὰ πλήρους ἡμερῶν. Καὶ μεταστραφήσονται αἱ οἰκίαι αὐτῶν εἰς ἑτέρους, ἀγροὶ καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν ἐπιτοαυτό· ὅτι ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας 13 τὴν γῆν ταύτην, λέγει κύριος. Ὅτι ἀπὸ μικροῦ αὐτῶν (ξ) καὶ ἕως μεγάλου πάντες (ο) συνετελέσαντο ἄνομα, ἀπὸ ἱερέως καὶ ἕως ψευδο- 14 προφήτου πάντες ἐποίησαν ψευδῆ. Καὶ ἰῶντο (π) σύντριμμα τοῦ λαοῦ μου, ἐξουθενοῦντες καὶ λέγοντες, Εἰρήνη εἰρήνη· καὶ ποῦ 15 ἐστὶν εἰρήνη; Κατῃσχύνθησαν, ὅτι ἐξέλιποσαν· καὶ οὐδ᾽ ὡς καταισχυνόμενοι (ρ) κατῃσχύνθησαν, καὶ τὴν ἀτιμίαν αὐτῶν οὐκ ἔγνωσαν. διὰ τοῦτο πεσοῦνται ἐν τῇ πτώσει αὐτῶν, καὶ ἐν καιρῷ ἐπισκοπῆς (σ) ἀπολοῦνται, εἶπε κύ- 16 ριος. Τάδε λέγει κύριος, Στῆτε ἐπὶ ταῖς ὁδοῖς, καὶ ἴδετε, καὶ ἐρωτήσατε τρίβους κυρίου αἰωνίους· καὶ ἴδετε ποία ἐστὶν ἡ ὁδὸς ἡ ἀγαθή, καὶ (ʹ) βαδίζετε ἐν αὐτῇ, καὶ εὑρήσετε (τ) ἁγνισμὸν ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν. καὶ εἶπαν, Οὐ 17 πορευσόμεθα. (ʹ) Καθέστακα ἐφ᾽ ὑμᾶς σκοπούς· Ἀκούσατε τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος. καὶ εἶ- 18 παν, Οὐκ ἀκουσόμεθα. Διὰ τοῦτο ἤκουσαν τὰ ἔθνη, καὶ οἱ ποιμαίνοντες τὰ ποίμνια 19 αὐτῶν. Ἄκουε (υ) γῆ, ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον κακά, τὸν καρπὸν ἀποστροφῆς αὐτῶν, ὅτι (φ) τῶν λόγων μου οὐ προσέσ- 20 χον, καὶ τὸν νόμον μου ἀπώσαντο. Ἵνα τί μοι λίβανον ἐκ Σαβὰ φέρετε, καὶ (χ) κινάμωμον ἐκ γῆς μακρόθεν; τὰ ὁλοκαυτώματα ὑμῶν οὐκ εἰσὶ δεκτά, καὶ αἱ θυσίαι ὑμῶν 21 οὐχ ἥδυνάν μοι. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον ἀσθένειαν, καὶ ἀσθενήσουσι (ψ) πατέρες καὶ υἱοὶ ἅμα, γείτων καὶ ὁ πλησίον αὐτοῦ ἀπολοῦνται. 22 Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ λαὸς ἔρχεται ἀπὸ Βορρᾶ, καὶ (ω) ἔθνη ἐξεγερθήσονται ἀπ᾽ ἐσχάτου 23 τῆς γῆς· Τόξον καὶ ζιβύνην κρατήσουσιν. ἰταμός ἐστι, καὶ οὐκ ἐλεήσει· φωνὴ αὐτοῦ, ὡς θάλασσα κυμαίνουσα· ἐφ᾽ ἵπποις καὶ ἅρμασι παρατάξεται ὡς πῦρ εἰς πόλεμον πρὸς σέ, 24 θύγατερ Σιών. Ἠκούσαμεν τὴν ἀκοὴν αὐτῶν, παρελύθησαν αἱ χεῖρες ἡμῶν, θλίψις κατέσχεν ἡμᾶς, ὠδῖνες ὡς τικτούσης.

Et furorem meum implevi, & sustinui, & (c) non consumpsi eos: Effundam super parvulos foris, & super congregationem juvenum simul: quia vir, & uxor capientur, senior cum pleno dierum: Et transibunt domus eorum ad alteros, agri & uxores eorum pariter: quia extendam manum meam super habitantes terrã hanc, dicit Dominus. A parvo enim eorum, & usque ad magnũ omnes consummaverunt iniqua: à sacerdote, & usque ad pseudoprophetam omnes fecerunt mendacia. Et curabant contritionem populi mei, spernentes, & dicentes, Pax, pax. Et ubi est pax? Confusi sunt, quia defecerunt: & neque sicut qui confunduntur, confusi sunt: & inhonorationem suam non cognoverunt. Quamobrem cadent in ruina sua, & in tempore visitationis peribunt, dicit Dominus. Hæc dicit Dominus; State super vias, & videte, & interrogate semitas Domini, quæ à seculo: & videte, qualis est via bona, & ambulate in ea: & invenietis purificationem animabus vestris. Et dixerunt; Non ibimus. Constitui super eos speculatores: audite vocem tubæ. Et dixerunt; Non audiemus. Ideò audierunt gentes, & qui pascunt greges suos. Audi terra; Ecce ego adduco super populum hunc mala, fructum aversionis eorum: quia sermonibus meis non attenderunt, & legem meam projecerunt. Ut quid mihi thus de Saba affertis, & cinnamomum de terra longinqua? Holocaustomata vestra non sunt accepta, & sacrificia vestra non mihi jucunda fuerunt. Propterea hæc dicit Dominus; Ecce ego do super populum istum infirmitatem: & infirmabuntur patres & filii simul: vicinus & proximus ejus peribunt. Hæc dicit Dominus; Ecce populus venit ab Aquilone: & gentes exsurgent ab extremo terræ: Arcum & Zibynam tenebunt. Impudens est, & non miserebitur: vox ejus, quasi mare fluctuans: in equis & curribus instruetur quasi ignis ad bellum adversùs te, filia Sion. Audivimus famam eorum: dissolutæ sunt manus nostræ: tribulatio apprehendit nos: dolores quasi parturientis.

MS.A. (ν) καὶ μετὰ (ξ) καὶ μεγάλου (ο) συνετέλεσαν (π) τὸ σύντριμμα (ρ) ᾐσχύνθησαν, (σ) αὐτῶν ἀπολοῦνται, (ʹ) βαδίσατε (τ) [illegible] (ʹ) Κατέστακα (υ) γῆ Ἰούδα, ἐγὼ (φ) τοῖς λόγοις, (χ) κιννάμωμον αὐτῇ πατέρες (ω) ἔθνος μέγα ἐξεγερθήσεται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 וית נבואת דיי בתקוף מן קדם יי אתמליתי לאיתי לסוברא ולא יכילתא למשפך
על ינקין בשוקא ועל סיעת עולימין כחדא ארי אף גבר עם אתתא יתאחדו סב עם
12 דשבע יומין: ויסתחרון בתיהון לאוחרנין חקלן ונשין כחדא ארי ארים ית מחת
13 גבורתי על יתבי ארעא אמר יי: ארי מזעירהון ועד רבהון כולהון אנסי ממון
14 ומספר ועד כהן כולהון עבדי שקר: ואסיאו ית תבר כנשתא דעמי במלי שקריהון
15 למימר שלמא שלמא ולית שלם: עליהון למבהת ארי תועבתא עבדו אף
מבהת לית אנון בהתין אף אתכנעא לית אנון ידעין בכן יתרמון קטילין בעדן
16 דאסער עליהון חוביהון יתקלון אמר יי: כדנן אמר יי קומו על אורחן וחזו ושאילו
לשבילין דמן עלמא אידא אורחא דתקנא והליכו בה ואשכחו ניח לנפשכון ואמרו
17 18 לא ניזיל: ואקימית עליכון מלפין קבילו למלי נביא ואמרו לא נקביל: בכן שמעו
19 עממיא ודעי כנשתא דישראל ית חוביהון: שמעי ארעא דישראל הא אנא מיתי בישתא
על עמא הדין תושלמת עובדיהון ארי לפתגמי עבדי נבייא לא קבילו ואוריתי וקצו
20 בה: למה דנן קדמי לבונתא דמשבא תיתי וקני טבתא מארע רחיקא עלותכון לא
21 לרעוא ונכסת קודשיכון לא יתקבלון קדמי: בכן כדנן אמר יי הא אנא מיתי על עמא
22 הדין תקלן ויתקלון בהון אבהן ובנין כחדא מגיר וקריביה יבדון: כדנן אמר יי הא
23 עמא אתי מצפונא ועממין רברבין ייתון בגלי מסיפי ארעא: קשתן ותריסין אחידין
אכזראין אנון ולית להון רחמין קלהון כימא באתרגושיה ועל סוסותא רכיבין
24 מסדרין אנון כגבר עביד קרבין עלך כנשתא דציון: שמענא ית שמעהון אתרשלא
ידנא עקא אחדתנא הא כחבלין לילדתא:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Prophetia autem *Domini* in furore à facie Domini repletus sum: laboravi sustinens, & non potui effundere super lactentes in platea, & super turbam juvenum simul: quia etiam vir cum uxore comprehensi sunt, senex cum eo qui est satur diebus. Et transferentur domus eorum ad alios, agri & uxores simul: quia levabo plagam potentiæ meæ super habitatores terræ, dicit Domin⁹. Quia à minimo eorum usque ad maximum eorum omnes inhiant divitiis; & à scriba usque ad sacerdotem omnes operantur mendacium. Et curarunt contritionem cœtus populi mei verbis mendaciorum suorum, dicentes; Pax, pax: & non erat pax. Eorum erat pudore suffundi, quia abominationem fecerunt: confusione quoque non confunduntur & humiliari nesciunt. Propterea projicientur occisi; in tempore quo visitavero super eos peccata eorum corruent, dicit Dominus. Hæc dicit Dñs: State super vias & videte, & interrogate de semitis quæ à seculo sunt, quæ est ista via quæ recta sit, & ambulate in ea, & invenietis requiem animabus vestris: & dixerunt, Non ambulabim⁹. Et suscitavi super vos doctores, [*dicens*:] Obedite verbis *Prophetæ*: & dixerunt, Non obediemus. Propterea audite populi, & cognoscat cœt⁹ Israel peccata eorum. Audi terra Israel: Ecce ego adducam malum super populum istum, retributionem operum suorum: quia verbis servorum meorum prophetarum non obedierunt, & Legem meam detestati sunt. Ut quid coram me thus de Saba affertur, & calam⁹ aromatic⁹ de terra longinqua? holocausta vestra non sunt grata, & victimæ sanctificatæ vestræ non erunt acceptæ coram me. Propterea sic dicit Dñs: Ecce adducam super populum istum offendicula, & offendent in eis patres & filii simul, vicinus & proximus ej⁹, & peribunt. Hæc dicit Domin⁹: Ecce *populus* venit ab Aquilone, & populi multi venient publicè de finib⁹ terræ. Arc⁹ & scuta tenent: crudeles sunt, nec est illis miseratio. Vox eorum sicut mare in fremitu, et super equos insistent; ordinati sunt, quasi vir committens prælium, contra te cœtus Sion. Audivimus famam eorum: dissolutæ sunt manus nostræ: angustia apprehendit nos quasi dolores parturientis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܘܐܢܬܝ ܡܠܝܬܝ ܚܡܬܗ ܕܡܪܝܐ ܘܐܬܠܐܝܬܝ. ܐܫܘܕ ܘܐܫܘܕ ܥܠ ܥܘܠܐ ܒܫܘܩܐ.
ܘܥܠ ܟܢܘܫܬܐ ܕܥܠܝܡܐ ܐܟܚܕܐ. ܡܛܠ ܕܐܦ ܓܒܪܐ ܥܡ ܐܢܬܬܐ ܢܬܐܚܕܘܢ. ܘܣܒܐ ܥܡ
ܝܠܘܕܐ. *ܢܬܗܦܟܘܢ ܒܬܝܗܘܢ ܠܢܘܟܪܝܐ. ܘܚܩܠܬܐ ܘܢܫܐ ܐܟܚܕܐ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܡ
ܐܢܐ ܐܝܕܝ ܥܠ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. *ܡܛܠ ܕܡܢ ܙܥܘܪܗܘܢ ܘܥܕܡܐ ܠܪܒܗܘܢ.
ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܢ ܢܟܠܐ. ܘܡܢ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܘܥܕܡܐ ܠܟܗܢܐ. ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܢ ܫܘܩܪܐ.
*ܘܡܐܣܝܢ ܠܬܒܪܐ ܕܒܪܬ ܥܡܝ ܒܡܒܣܪܢܘܬܐ. ܘܐܡܪܝܢ. ܫܠܡܐ ܫܠܡܐ ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ. *ܒܗܬܘ 14
ܡܛܠ ܕܛܢܦܘܬܐ ܥܒܕܘ. ܘܒܗܬܬܐ ܠܐ ܒܗܬܘ. ܘܡܪܬܝܢܘܬܐ ܠܐ ܝܕܥܘ. ܡܛܠ ܗܢܐ
ܢܦܠܘܢ ܥܡ ܢܦܠܐ. ܘܒܙܒܢܐ ܕܡܣܥܪܢܘܬܗܘܢ ܢܬܚܪܒܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. *ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 16
ܩܘܡܘ ܥܠ ܐܘܪܚܬܐ ܘܚܙܘ. ܘܫܐܠܘ ܥܠ ܫܒܝܠܐ ܕܥܠܡܐ. ܘܚܙܘ ܐܝܢܐ ܐܘܪܚܐ ܛܒܬܐ ܐܝܬܝܗ
ܘܗܠܟܘ ܒܗ. ܘܐܫܟܚܘ ܢܝܚܐ ܠܢܦܫܬܟܘܢ. ܘܐܡܪܬܘܢ. ܠܐ ܐܙܠܝܢ ܚܢܢ. *ܘܐܩܝܡܬ ܥܠܝܟܘܢ ܕܘܩܐ
ܕܬܫܡܥܘܢ ܩܠܐ ܕܫܝܦܘܪܐ. ܘܐܡܪܬܘܢ. ܠܐ ܫܡܥܝܢܢ. *ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܡܥܘ ܥܡܡܐ. 18
ܘܕܥܘ ܟܢܘܫܬܐ ܕܒܗܘܢ. *ܫܡܥܝ ܐܪܥܐ. ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܥܡܐ ܗܢܐ ܐܝܟ 19
ܦܐܪܐ ܕܡܚܫܒܬܗܘܢ. ܕܠܡܠܝ ܠܐ ܫܡܥܘ. ܘܢܡܘܣܝ ܐܣܠܝܘ. *ܠܡܢܐ ܗܘܐ ܠܝ
ܠܒܘܢܬܐ ܕܡܝܬܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢ ܫܒܐ. ܘܩܢܝܐ ܕܒܣܡܐ ܕܡܢ ܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ. ܥܠܘܬܟܘܢ
ܠܐ ܨܒܝܢ. ܘܕܒܚܝܟܘܢ ܠܐ ܒܣܝܡܝܢ ܠܝ. *ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܝܗܒ ܐܢܐ ܠܥܡܐ
ܗܢܐ ܬܘܩܠܬܐ. ܘܢܬܬܩܠܘܢ ܒܗܘܢ ܐܒܗܐ ܘܒܢܝܐ ܐܟܚܕܐ. ܘܫܒܒܐ ܘܪܚܡܗ ܢܐܒܕܘܢ.
*ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܥܡܐ ܐܬܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܥܡܐ ܪܒܐ ܢܬܬܙܝܥ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ.
*ܒܩܫܬܐ ܘܒܪܘܡܚܐ ܡܙܝܢܝܢ. ܥܒܝܛܝܢ ܐܢܘܢ ܘܠܐ ܡܪܚܡܝܢ. ܘܩܠܗܘܢ ܐܝܟ ܝܡܐ ܕܡܬܚܫܠ.
ܘܥܠ ܪܟܫܐ ܪܟܝܒܝܢ. ܘܡܛܝܒܝܢ ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܠܩܪܒܐ. ܥܠܝܟܝ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. *ܫܡܥܢ
ܫܡܥܗܘܢ. ܐܬܪܦܝ ܐܝܕܝܢ. ܘܥܩܬܐ ܐܚܕܬܢ. ܘܚܒܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ.

Proinde tu furore Domini repleta es, & fatigata: 11
exhauri, & effunde ſuper pueros in plateis,
& ſuper cœtus adoleſcentium pariter:
nam tum viri cum mulieribus capientur, tum
ſenex cum teneræ ætatis puero: Tradentur 12
domus eorum alienis, et agri ſimul, atque mulieres.
Ego enim exaltaturꝰ ſum manum meam
ſuper habitatores terræ, dicit Dominus; Eo 13
quòd à minimo inter ipſos ad maximũ uſque,
omnes doloſe agunt: & à prophetis mendacibus
ad ſacerdotes uſque, omnes falſitati ſtudent:
Curántque fractionem filiæ populi 14
mei illuſione, & dicunt; Pax, pax; nec ulla
eſt pax. Erubuerúntne quòd abominationem 15
fecerint? imò infames iſti non erubeſcunt,
nec monita admittere nòrunt: ideò cadent
cum occumbentibus? & quo tempore
viſitabuntur, deſtruentur, ait Dominus. Domino 16
ſic dicente, Contemplamini vias, & inſpicite;
interrogate de ſemitis mundi, &
videte quænam via ſit optima, & in illa incedite,
ut inveniatis requiem animabus veſtris,
reſpondiſtis, Nequaquam incedemus. Me 17
etiam conſtituente ſuper vos ſpeculatores ut
audiretis ſonitum buccinæ, dixiſtis; Nequaquam
audiemꝰ. Iccircò audite gentes, & ſcito 18
cœtꝰ qui in iis eſt; Audi terra, ecce ego 19
adducturꝰ ſum malum ſuper hunc populum
ſecundùm fructꝰ cogitationum eorum, quia
ſermones meos non audierunt, & legem meã
ſpreverunt. Quanti eſt apud me thus quod 20
affertis de Saba, & calamus aromaticꝰ quem
de terra longinqua? holocauſtis veſtris non
delector, ſacrificia veſtra non ſunt mihi jucunda.
Propterea ſic dicit Dominus, Ecce daturus 21
ſum huic populo offendicula, in quibꝰ offendent
patres unà cum filiis, vicinꝰ & amicus
ejus peribunt. Sic dicit Dominus, Ecce 22
populus veniet è terra Aquilonari, & populus
ingens movebitur ab extremis terræ. Arcubus 23
& haſtis erunt armati, tetri ſunt & immites,
& vox eorum quaſi maris ſævientis: equis
inſident, & inſtructi ſunt velut gigantes
ad bellum, contra te filia Sionis. Audientibus 24
nobis famam eorum, remittentur manus
noſtræ, triſtitia occupabit nos & dolores ut
parturientis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

11 *وملأت غضبي وامسكت * ولم يكملوا الدين * افيضه على الاطفال من خارج وعلى
مجمع الاحداث معا * لان رجلا وامراة يوخذون وشيخ مع ممتلي من الايام * ويتحول 12
مساكنهم الى آخرين * حقولهم ونساهم جميعا * لاني امدّ يدي على سكان هذه الارض
كقول الرب * لان من صغيرهم الى كبيرهم اكملوا الاثم جميعا ومن الكاهن الى النبي الكذاب 13
جميعهم صنعوا كذبا * ويشفون انكسار شعبي محتقرين وقايلين سلامة سلامة * واين 14
هي السلامة * خزيوا لانهم بادوا * وخزيون وكانهم لم يخزوا ولم يعرفوا هوانهم * لاجل هذا 15
يسقطون بسقطتهم * وفي زمان افتقادهم يهلكون قال الرب * هكذا يقول الرب * قفوا 16
في الطرقات وانظروا واسألوا عن سبل الرب الابدية * وانظروا اي الطريق الصالحة هي
واعملوا فيها * فتجدون تقديسا لنفوسكم فقالوا لا نمضي * اقمت عليكم رقباء اسمعوا 17
صوت البوق * فقالوا لا نسمع * لاجل هذا سمعت الامم والذين يرعون قطعانهم 18
*اسمعي يا ارض يهودا * انا اجلب على هذا الشعب شرورا ثمر رجوعهم لانهم لم يصغوا 19
لكلامي وابعدوا ناموسي * لماذا تقدموا لي لبانا من سابا ودارصيني من ارض بعيدة 20
قربانكم ليست هي مقبوله * وذبايحكم لا تلذ لي * لاجل هذا هكذا يقول الرب ها 21
انا اعطي على هذا الشعب مرضا يمرضون به الاباء والبنون معا * الجار وقريبه يهلكون
*هكذا يقول الرب * ها شعب ياتي من الجربياء * وامة عظيمة تنهض من اخر الارض 22
*يحملون قوسا ومزراقا * جافية هي ولا ترحم * صوتها مثل البحر المموج * على الخيل والمركبات 23
تصطف مثل نار للحرب لك يا ابنة صهيون * سمعنا سماعهم * انحلت ايدينا اخذنا ضيقة 24
مثل طلقات التي تلد *

Plenus ſum irâ meâ, at continui me: 11
quia tamen non perſolverunt debitum,
effundam eam ſuper infantes foris,
& ſuper cœtum puerorum ſimul: vir
enim atque mulier capientur, & ſenex
cum pleno dierum: Et devolventur domus 12
eorum ad alienos, agri, & uxores
eorum ſimul. Nam extenſurus ſum
manum meam contra hujus terræ incolas
juxta dictum Domini: Eò quòd 13
à maximo ad minimum eorum, expleverint
omnes iniquitatem; & à ſacerdote
ad falſum prophetam ſtuduerint
omnes falſitati; Sanentque fractionem 14
populi mei cum deſpectu, dicentes, Pax,
pax: at ubi eſt pax? Pudore ſuffuſi 15
ſunt, quia perierunt: & pudore ſuffuſi,
ſe geſſerunt *ac ſi non fuiſſent pudefacti;*
neque ſenſerunt ignominiam ſuam:
propterea ſuo caſu corruent; & tempore
quo viſitabuntur, peribunt, ait
Dominus. Sic dicit Dominus, Subſiſtite 16
in viis & aſpicite, & interrogate
de ſemitis Domini ſempiternis, videte
quænam via ſit optima, & in ea
perſiſtite, ut inveniatis ſanctificationem
animabus veſtris: ipſi verò dixerunt,
Nequaquam ibimus. Conſtitui ſuper vos 17
exploratores qui dicerent, *Audite ſonitum*
buccinæ: dixerunt autem, Nequaquam
audiemus. Iccirco audierunt gentes, 18
& ii qui paſcunt greges ſuos.
Audi O terra Judæ; Ego adducam 19
ſuper hunc populum calamitates, fructum
averſionis eorum; eò quòd non
attenderunt ad verba mea, & legem
meam repulerint. Quorſum offertis 20
mihi thus de Saba, & cinnamomum de
terra longinqua? holocauſta veſtra non
ſunt accepta, neque victimæ veſtræ
ſunt mihi gratæ. Iccirco ſic ait Dominus, 21
Ecce ego immiſſurus ſum in hunc
populum morbum, quo laborabunt patres
atque filii pariter, vicinus atque proximus
ejus peribunt. Sic dicit Dominus, 22
Ecce populus veniet ex Aquilone, &
gens magna ſurget ab extremo terræ.
Arcum geſtabunt & jaculum; crudelis 23
eſt & immiſericors, vox ejus ut maris
procelloſi; ſuper equos & currus inſilient
ſeſe velut ignis, ad bellum
contra te O filia Sionis. Auditâ illorum 24
famâ, remiſſæ ſunt manus noſtræ,
comitata eſt nos anguſtia talis quales
ſunt dolores parturientis.

ירמיה : ז

,inimici gladius quoniā :ambules ne viam per & , agrum exeas Ne
25 אל־תצאי השדה ובדרך אל־תלכי כי חרב לאיב
,cinere in te volve & ,facco te accinge mei populi Filia .circuitu à pavor
26 מגור מסביב: בת־עמי חגרי־שק והתפלשי באפר
veniet repentè quia :amaritudinū planctum ,tibi fac unici luctum
אבל יחיד עשי־לך מספד תמרורים כי פתאם יבא
: munitionē ,meo populo in te dedi *Propugnaculum* .nos ſuper vaſtator
27 השדד עלינו: בחון נתתיך בעמי מבצר
ambulantes,*contumacium apostatæ* ipſi Omnes .eorū viam probabis & ſcies &
28 ותדע ובחנת את־דרכם: כלם סרי סוררים הלכי
follis eſt Exuſtus .*ipſi* corruptores ipſi omnes :ferrum & , æs ,*delatoriè*
29 רכיל נחשת וברזל כלם משחיתים המה: נחר מפח
mali & ,conflando conflavit vanum in :plumbum eſt conſumptū,igne ab
מאשתם עפרת לשוא צרף צרוף ורעים
reprobavit quia , *eis vocârunt* reprobatum Argentum .ſunt avulſi non
30 לא נתקו: כסף נמאס קראו להם כי־מאס
.*eis in* Dominus
יהוה בהם:

CAP. VII. ז

Sta : dicendo ,Domino à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 2 הדבר אשר־היה אל־ירמיהו מאת יהוה לאמר: עמד
: *dices* & ,iſtud verbum ibi *prædicabis* & ,Domini domus porta in
בשער בית יהוה וקראת שם את־הדבר הזה ואמרת
, *iſtas* portas per *ingredientes* ,Jehudah omnis Domini verbum Audite
שמעו דבר־יהוה כל־יהודה הבאים בשערים האלה
: Iſrael Deus exercituū Dominus dixit Sic .Domino vos *incurvandū ad*
3 להשתחות ליהוה: כה־אמר יהוה צבאות אלהי ישראל
loco in vos faciā habitare & ,veſtra *ſtudia* & ,veſtras vias facite Bonas
היטיבו דרכיכם ומעלליכם ואשכנה אתכם במקום
Templum :dicendo ,mendacii verbis *in vobis* fidatis Ne .iſto
4 הזה: אל־תבטחו לכם אל־דברי השקר לאמר היכל
ſi Quoniam .*ipſi* Domini templum ,Domini templum ,Domini
5 יהוה היכל יהוה היכל יהוה המה: כי אם־
faciendo ſi : veſtra *ſtudia* & ,veſtras vias feceritis bonas faciendo bonas
היטיב תיטיבו את־דרכיכם ואת־מעלליכם אם־עשו
,pupillum ,Peregrinum .ejus *ſocium* inter & virum inter judicium feceritis
6 תעשו משפט בין איש ובין רעהו: גר יתום
loco in effuderitis non innocentē ſanguinē &,oppreſſeritis non viduam &
ואלמנה לא תעשקו ודם נקי אל־תשפכו במקום
: vobis malum in ambulaveritis non alienos Deos poſt & , iſto
הזה ואחרי אלהים אחרים לא תלכו לרע לכם:
dedi quam terra in , iſto loco in vos faciam habitare Et
7 ושכנתי אתכם במקום הזה בארץ אשר נתתי
fidentes vos Ecce .ſeculum in uſque & ſeculo à ,veſtris patribus
8 לאבותיכם למן־עולם ועד־עולם: הנה אתם בטחים
,furandum Nunquid .*proficiendum non ad* ,mendacii verbis in *vobis*
9 לכם על־דברי השקר לבלתי הועיל: הגנב
eundū & ,Bahal adolendū & ,*falſum in* jurandū &,adulterādū &,occidendū
רצח ונאף והשבע לשקר וקטר לבעל והלך
ſtetiſtis & veniſtis Et ?nôſtis non quos , alienos Deos poſt
10 אחרי אלהים אחרים אשר לא־ידעתם: ובאתם ועמדתם
:dixiſtis &,*ea ſuper* meū nomen eſt invocatū qua ,hac domo in *meas facies ad*
לפני בבית הזה אשר נקרא־שמי עליו ואמרתם
ſpelunca Nūquid .iſtas abominationes omnes *faciendum ad* ſumº Liberati
11 נצלנו למען עשות את כל־התועבת האלה: המערת
ea ſuper meū nomen eſt invocatum qua , hæc domus fuit *effractorum*
פרצים היה הבית הזה אשר־נקרא־שמי עליו
.Dominus dixit , vidi ecce ego etiam ? veſtris oculis in
בעיניכם גם אנכי הנה ראיתי נאם־יהוה:

Verſio VULG. LAT.

25 Nolite exire ad agros,& in via ne ambuletis : quoniam gladius inimici, pavor in circuitu. 26 Filia populi mei,accingere cilicio, & conſpergere cinere : luctum unigeniti fac tibi, planctum amarum, quia repentè veniet vaſtator ſuper nos. 27 Probatorem dedi te in populo meo robuſtum : & ſcies, & probabis viam eorum. 28 Omnes iſti principes declinantes,ambulantes fraudulenter, æs & ferrum : univerſi corrupti 29 ſunt. Defecit ſufflatorium , in igne conſumptum eſt plumbum, fruſtrà conflavit conflator : malitiæ enim eorum non ſunt con-30 ſumptæ. Argentum reprobum vocate eos, quia Dominus projecit illos.

CAP. VII.

1 VErbum, quod factum eſt ad 2 Jeremiam à Domino, dicens; Sta in porta domûs Domini,& prædica ibi verbum iſtud, & dic ; Audite verbū Dñi, omnis Juda, qui ingredimini per portas has, 3 ut adoretis Dñm. Hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael ; Bonas facite vias veſtras, & ſtudia veſtra : & habitabo vobiſcū 4 in loco iſto. Nolite confidere in verbis mendacii, dicentes ; Templum Dñi, templum Dñi, tem-5 plum Dñi eſt. Quoniam ſi benè direxeritis vias veſtras, & ſtudia veſtra : ſi feceritis judicium inter 6 virū & proximum ejus, Advenæ, & pupillo, & viduæ non feceritis calumniam,nec ſanguinem innocentem effuderitis in loco hoc, & poſt deos alienos non ambulaveritis in malum vobiſ-7 metipſis : Habitabo vobiſcum in loco iſto ; in terra quam dedi patribus veſtris à ſeculo & uſque in 8 ſeculum. Ecce vos confiditis vobis in ſermonibº mendacii, qui 9 non proderunt vobis ; Furari , occidere , adulterari , jurare mendaciter, libare Baalim,& ire poſt deos alienos quos ignoratis. 10 Et veniſtis,& ſtetiſtis corā me in domo hac, in qua invocatum eſt nomen meum, & dixiſtis ; Liberati ſumus, eò quòd fecerimus omnes abominationes iſtas. 11 Numquid ergò ſpelunca latronum facta eſt domus iſta, in qua invocatum eſt nomen meum in oculis veſtris ? ego, ego ſum : ego vidi, dicit Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

25 Μὴ ἐκπορεύεσθε εἰς ἀγρὸν, καὶ ἐν ταῖς ὁδοῖς μὴ βαδίζετε, ὅτι ῥομφαία τῶν ἐχθρῶν παροικεῖ κυκλόθεν. 26 Θύγατερ λαοῦ μου περίζωσαι σάκκον, (α) κατάπασαι ἐν σποδῷ, πένθος ἀγαπητοῦ ποίησαι σεαυτῇ κοπετὸν οἰκτρὸν, ὅτι ἐξαίφνης ἥξει ταλαιπωρία ἐφ' 27 ὑμᾶς. Δοκιμαστὴν δέδωκά σε ἐν λαοῖς δεδοκιμασμένοις, καὶ γνώσῃ με ἐν τῷ δοκιμά-28 σαι με τὴν ὁδὸν αὐτῶν, Πάντες ἀνήκοοι πορευόμενοι σκολιῶς· χαλκὸς καὶ (β) σί-29 δηρος, πάντες διεφθαρμένοι εἰσίν. Ἐξέλιπε φυσητὴρ (γ) ἀπὸ πυρὸς, ἐξέλιπε μόλιβος. εἰς κενὸν ἀργυροκόπος ἀργυρο-30 κοπεῖ, πονηρία αὐτῶν οὐκ ἐτάκη. Ἀργύριον ἀποδεδοκιμασμένον καλέσατε αὐτοὺς, ὅτι ἀπεδοκίμασεν αὐτοὺς κύριος.

Nolite exire in agrum, & in viis ne ambuletis : quoniam gladius inimicorum accolit in circuitu. Filia populi mei, accinge te cilicio, & conſpergere in cinere : luctum dilecti fac tibi planctum miſerabilem : quia repente veniet miſeria ſuper vos. Probatorem dedi te (a) in populis probatis : & cognoſces me, in probando me viam eorum : Omnes inobedientes, ambulantes perverſe. Æs, & ferrum, univerſi corrupti ſunt. Defecit ſufflatorium ab igne: defecit plumbum. Fruſtrà argentum conflat argenti conflator : malitia eorum non eſt conſumpta. Argentum reprobatum vocate eos : quia reprobavit eos Dominus.

MS. A. (α) καὶ κατάπασαι σποδὸν, (β) σίδηρος, καὶ πάντες (γ) ἀπὸ τῆς γῆς,

ΚΕΦ. ζ'.

2 ἈΚούσατε λόγον κυρίου πᾶσα (α) Ἰουδαία. 3 Τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Διορθώσατε τὰς ὁδοὺς ὑμῶν, καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν, καὶ (β) κατοικιῶ ὑμᾶς ἐν τῷ 4 τόπῳ τούτῳ. Μὴ πεποίθατε ἐφ' ἑαυτοῖς ἐπὶ λόγοις ψευδέσιν, ὅτι τὸ παράπαν οὐκ ὠφελήσουσιν ὑμᾶς, λέγοντες, Ναὸς κυρίου, 5 ναὸς κυρίου ἐστίν. Ὅτι ἐὰν διορθοῦντες διορθώσητε τὰς ὁδοὺς (γ) ὑμῶν καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν, καὶ ποιοῦντες ποιήσητε κρίσιν ἀναμέσον ἀνδρὸς, καὶ ἀναμέσον τοῦ 6 πλησίον αὐτοῦ, Καὶ προσήλυτον καὶ ὀρφανὸν καὶ χήραν μὴ καταδυναστεύσητε, καὶ αἷμα ἀθῷον μὴ ἐκχέητε ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, καὶ ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων μὴ (δ) πορεύησθε εἰς 7 κακὸν ὑμῖν, Καὶ κατοικιῶ ὑμᾶς ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ ἐν γῇ ᾗ ἔδωκα τοῖς πατράσιν ὑ-8 μῶν ἐξ αἰῶνος καὶ ἕως αἰῶνος. Εἰ δὲ ὑμεῖς πεποίθατε ἐπὶ λόγοις ψευδέσιν, ὅθεν οὐκ 9 ὠφεληθήσεσθε, Καὶ φονεύετε, καὶ μοιχᾶσθε, καὶ κλέπτετε, καὶ ὀμνύετε ἐπ' ἀδίκῳ, καὶ θυμιᾶτε τῇ Βάαλ, (ε) καὶ ἐπορεύεσθε ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων, ὧν οὐκ οἴδατε, τοῦ κα-10 κῶς εἶναι ὑμῖν, Καὶ (ζ) ἤλθετε καὶ ἔστητε (η) ἐνώπιον ἐμοῦ ἐν τῷ οἴκῳ οὗ ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ' αὐτῷ, καὶ εἴπατε, Ἀπεσχήμεθα τοῦ μὴ ποιεῖν πάντα τὰ βδε-11 λύγματα ταῦτα, Μὴ σπήλαιον λῃστῶν ὁ οἶκός μου, οὗ ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ' αὐτῷ ἐκεῖ ἐνώπιον ὑμῶν; καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἑώρακα, λέγει κύριος.

CAP. VII.

Audite (a) verbum Domini, omnis Judæa. Hæc dicit Dominus Deus Iſrael ; Dirigite vias veſtras, & ſtudia veſtra : & habitare vos faciam in loco iſto. Nolite confidere in vobis ipſis, in verbis mendacibus, quoniam omnino non proderunt vobis, dicentes ; Templum Domini, (b) templum Domini eſt. Quoniam ſi dirigentes direxeritis vias veſtras, & ſtudia veſtra, & facientes feceritis judicium inter virum, & proximum ejus, Et advenam, & pupillum, & viduam non oppreſſeritis, nec ſanguinem innocentem effuderitis in loco hoc, & poſt deos alienos non ambulaveritis in malum vobis : Et habitare vos faciam in loco iſto, in terra, quam dedi patribus veſtris à ſeculo, & uſque in ſeculum. Si autem confiditis vos in verbis mendacibus, unde non erit vobis utilitas, Et occiditis, & mœchamini, & furamini, & juratis ſuper iniquo, & adoletis ipſi Baal, & ambulabatis poſt deos alienos, quos non noviſtis, ut malè ſit vobis, Et veniſtis, & ſtetiſtis coram me in domo, in qua invocatum eſt nomen meum in ea, & dixiſtis, (c) Abſtinuimus, ne faceremus omnes abominationes has ; Numquid ſpelunca latronū eſt domus mea, ubi invocatum eſt nomen meum in ea, ibi coram vobis? Et ecce ego vidi, dicit Dominus.

MS. A. (α) ἡ Ἰουδαία. (β) * οὐ κατοικιῶ (γ) ὑμῶν, καὶ ποιοῦντες ποιήσητε κρίμα (δ) πορεύσησθε (ε) καὶ ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων πορεύεσθε, (ζ) ἤλθατε (η) ἐν τῷ οἴκῳ ἐνώπιόν μου

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

25 לא תפקון לחקלא ובאורחא לא תהכון ארי חרבא דסנאה מקטלא למתכנשין מסחור
26 סחור : כנשתא דעמי אסרו סקין וחפו רישכון בקטמא אבל כיחיד עבידו לכון מספד
27 במרר ארי בתכף ייתון בזוזין עלנא : בחיר יהבתך בעמי בכרך תקיף ותהודע ותחזי
28 להון ית אורחתהון : כל רברביהון מרדין מהלכין בנכילו כמא דמערב נחש עם פרזלא
29 כולהון מחבלין אנון : הא כמשב נפחין דחריך בגוא דנורא כן חשא קלהון דנבייא
דמתנבן להון תובו לאוריתא ולא תבו וכאברא דמתמסי בגו כורא כן הואה בטילין
בעיניהון מלי נבייא דמתנבן להון לא להנאה אליפונון מלפיהון ועובדיהון בישיא לא
30 שבקו : הא מכסף פסולא מרחקין קרו להון ארי רחיק יי יתהון : ז
1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה מן קדם יי למימר : קום בתרע בית מקדשא דיי ותתנבי
2 תמן ית פתגמא הדין ותימר קבילו פתגמא דיי כל דבית יהודה דעלין בתרעיא האלין
3 למסגד קדם יי : כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל אתקינו ארחתכון ועובדיכון
4 ואשרי יתכון באתרא הדין : לא תתרחצון לכון על פתגמי נביי שקרא דאמרין
קדם היכלא דיי אתון פלחין קדם היכלא דיי אתון דבחין קדם היכלא דיי אתון
5 סגדין תלת זמנין בשתא אתון מתחזן קדמוהי : ארי אם אתקנא תתקנון ית ארחתכון
6 וית עובדיכון אם מעבד תעבדון דין דקשוט בין גברא ובין חבריה : גיור יתום
וארמלא לא תניסון ודם זכי לא תשדון באתרא הדין ובתר טעות עממיא לא תהכון
7 לאבאשא לכון : ואשרי יתכון באתרא הדין בארעא דיהבית לאבהתכון למן עלמא
8 ועד עלמא : הא אתון מתרחצין לכון על פתגמי נביי שקרא בדיל דלא להנאה : גנבין
9 קטילי נפשן וניפין ומשתבעין לשקר ומסקין בוסמין לבעלא ואזלין בתר טעות עממיא
10 דלא ידעתון : ואתן אתון וקימין קדמי בביתא הדין דאתקרי שמי עלוהי ואמרין אתון
11 שיזבנא בדיל למעבד ית כל תועבתא האלין : הבית כנשת רשיעין הוה ביתא
הדין דאתקרי שמי עלוהי בעיניכון אף קדמי כן גלי אמר יי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ne egrediamini in agrum, & in viam ne eatis,quia gladiº inimici occidit eos qui congregantur undequaque. Cœtº populi mei accingimini ſacco & operite capita veſtra cinere:luctū *velut* unici facite vobis, planctum in amaritudine;quia repentè venient vaſtatores ſup nos. Electū dedi te in populo meo *in civitate fortiſſima*,& notificabis & annuntiabis eis vias ſuas. Omnes principes eorū rebellant,ambulantes in dolo,ut qui miſcet æs cum ferro,univerſi corruptores ſunt. Ecce ſicut ſufflatoriū ſufflatoris quod combuſtum eſt in medio ignis, ſic ſiluit vox Prophetarū qui prophetant eis: Convertimini ad Legem meam,& non ſunt converſi: & ſicut plumbū quod liqueſcit in medio fornacis,ſic ocioſa facta ſunt in oculis ſuis verba prophetarum qui prophetant eis, & nihil prodeſt eis quod docent eos doctores eorum, & opera ſua mala non reliquerunt. Ecce *præ argento reprobato* abjectos vocate eos,quia projecit eos Dominus.

CAP. VII.

VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam coram Dño dicendo: Sta in porta domus ſanctuarii Dñi, & prophetabis ibi verbū iſtud, & dices: Suſcipite verbū Dñi omnes viri domº Juda,qui ingredimini per portas iſtas,ut adoretis corā Dño. Hæc dicit Dñs exercitū Deº Iſrael: Rectas facite vias veſtras, & opera veſtra,& habitare faciā vos in loco iſto. Nolite confidere in verbis prophetarū mendacii,qui dicūt: Corā templo Dñi vos colitis,corā templo Dñi vos ſacrificatis,corā templo Dñi vos adoratis,ter in anno vos apparetis corā eo. Quoniā ſi dirigendo direxeritis vias veſtras,et opera veſtra;ſi faciendo feceritis judiciū rectū inter virū & inter proximū ejus; Et advenæ & pupillo & viduæ vim non feceritis, & ſanguinem innocentem non effuderitis in loco iſto, & poſt idola populorum non ambulaveritis in malum vobis; Collocabo vos in loco iſto in terra quam dedi patribº veſtris à ſeculo & uſque in ſeculum. Et ecce vos confiditis in verbis prophetarum mendacii,ita ut non proſit vobis. Latrones,homicidæ & adulteri,& jurantes falſo,& adolentes aromata idolo Baal,& ambulantes poſt idola populorum quæ ignoratis. Et venitis vos & ſtatis coram me in domo iſta,in qua invocatum eſt nomen meum, & dicitis;Liberati ſumus ut faciatis omnes abominationes iſtas. Nunquid ſicut domº congregationis impiorum eſt domº iſta, in qua invocatum eſt nomen meum in oculis veſtris? coram me quoque ſic manifeſtum eſt, dicit Dominus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܠܐ ܬܦܩܘܢ ܠܚܩܠܐ. ܘܒܐܘܪܚܐ ܠܐ ܬܐܙܠܘܢ. ܡܛܠ ܚܪܒܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ ܕܚܕܪܐ ܠܟܝ
ܒܪܬ ܥܡܝ :. * ܐܣܘܪܝ ܣܩܐ ܘܐܬܦܠܦܠܝ ܒܩܛܡܐ. ܐܒܠܐ ܐܝܟ ܕܥܠ ܝܚܝܕܝܐ ܥܒܕܝ ܠܟܝ
ܘܡܪܩܕܐ ܡܪܝܪܐ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܫܠܝ ܢܐܬܘܢ ܥܠܝܟܝ ܒܙܘܙܐ. * ܒܚܘܪܐ ܝܗܒܬܟ ܒܥܡܝ
ܚܣܝܢܐ. ܕܬܕܥ ܘܬܒܚܘܪ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. * ܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܝܗܘܢ ܡܪܘܕܝܢ ܘܡܗܠܟܝܢ ܒܢܟܠܐ
ܘܐܝܟ ܢܚܫܐ ܘܦܪܙܠܐ ܟܠܗܘܢ. ܡܚܒܠܝܢ. * ܓܡܪܘ ܡܦܘܚܐ ܡܢ ܢܘܪܗܘܢ. ܘܐܒܪܐ
ܘܠܣܪܝܩܘܬܐ ܨܪܦ ܨܪܘܦܐ. ܘܒܝܫܬܗܘܢ ܠܐ ܐܬܦܢܝܬ. * ܟܣܦܐ ܡܣܠܝܐ. ܩܪܘ ܐܢܘܢ ܡܛܠ
ܕܐܣܠܝ ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ. * ܦܘܠܐ. * ܙ * ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܡܪܝܐ
ܠܡܐܡܪ. * ܩܘܡ ܒܬܪܥܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܩܪܝ ܬܡܢ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. ܘܐܡܪ. ܫܡܥܘ
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܠܟܘܢ ܝܗܘܕܝܐ. ܕܥܐܠܝܢ ܒܬܪܥܐ ܗܠܝܢ ܠܡܣܓܕ ܠܡܪܝܐ.
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܬܩܢܘ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܘܥܒܕܝܟܘܢ.
ܘܐܥܡܪܟܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. * ܠܐ ܬܬܟܠܘܢ ܥܠ ܡܠܐ ܕܕܓܠܘܬܐ ܕܐܡܪܝܢ ܠܟܘܢ. ܗܝܟܠܗ
ܕܡܪܝܐ. ܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. * ܐܢܬܘܢ ܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܢ ܬܬܩܢܘܢ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܘܥܒܕܝܟܘܢ.
ܘܐܢ ܬܥܒܕܘܢ ܕܝܢܐ ܒܝܢ ܓܒܪܐ ܠܚܒܪܗ. * ܘܬܘܬܒܐ ܘܝܬܡܐ ܘܐܪܡܠܬܐ ܠܐ ܬܛܠܡܘܢ:
ܘܠܐ ܬܥܫܩܘܢ. ܘܕܡܐ ܙܟܝܐ ܠܐ ܬܐܫܕܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ
ܠܐ ܬܐܙܠܘܢ ܕܒܝܫ ܠܟܘܢ. * ܘܐܥܡܪܟܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܡܢ
ܥܠܡ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܘܗܐ ܐܢܬܘܢ ܡܬܬܟܠܝܢ ܥܠ ܡܠܐ ܕܕܓܠܘܬܐ. ܕܠܐ ܡܘܬܪܢ.
* ܓܢܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܘܩܛܠܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܓܝܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܝܡܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܫܘܩܪܐ. ܘܡܣܩܝܢ
ܐܢܬܘܢ ܒܣܡܐ ܠܒܥܠܐ. ܘܐܙܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬܘܢ. * ܘܐܬܝܢ ܐܢܬܘܢ
ܘܩܝܡܝܢ ܐܢܬܘܢ ܩܕܡܝ ܒܒܝܬܐ ܗܢܐ ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܦܪܘܩ
ܡܦܪܩܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܥܒܕܝܢ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܐ. * ܕܠܡܐ ܡܥܪܬܐ ܕܓܝܣܐ ܗܘܐ ܒܝܬܐ ܗܢܐ
ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܝ ܥܠܘܗܝ ܒܥܝܢܝܟܘܢ. ܘܐܦ ܐܢܐ ܗܐ ܚܙܝܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* Ne exeatis ad agrum & iter ne ſuſcipiatis, 25
propter gladium inimicorum, qui te circuncingit filia populi mei. Accinge te ciliciis, 26
& in cinere te voluta, luctum ut de unico *filio* age tibi, & planctum amariſſimum; quoniam ex improviſo venient contra te prædones. Speculatorem te conſtitui in popu- 27
lo meo præduro, ut cognoſcas & explores vias eorum. Omnes principes eorum ſunt 28
rebelles, & cum dolo ambulant ſicut æs & ferrum omnes corrupti. Conſumpti ſunt 29
folles ab igne eorum, & plumbum; adeóque fruſtrà conflat conflator, nam malitia eorum non conſumitur. Argentum reprobum vo- 30
caverunt eos, quia reprobavit eos Dominus.

CAP. VII.

SErmo qui fuit ad Jeremiam à Domino, di- 1
cendo; Sta in oſtio domûs Domini, ibíque 2
proclama ſermonem iſtum, & dic; Audite ſermonem Domini omnes Judæi qui ingredimini per portas iſtas ad adorandum Dominum. Sic ait Dominus potens, Deus Iſrae- 3
lis; Emendate vias veſtras & actiones veſtras, tum efficiam ut habitetis in loco iſto.
Ne collocetis fiduciam veſtram in ſermoni- 4
bus falſis dicentium vobis, Templum Domini, templum Domini. Vos eſtis templum 5
Domini, ſi emendetis vias veſtras & actiones veſtras; ſi jus reddatis inter virum & ſocium ejus; Advenas, pupillos, & viduas 6
non defraudetis, neque opprimatis; ſanguinem innocentem non effundatis in loco iſto; & poſt deos alienos non abeatis, quin malum contingat vobis. Tum efficiam ut habi- 7
tetis in loco iſto, in terra quam dedi patribus veſtris, à ſeculo in ſeculum uſque. Vos verò 8
fiduciam collocatis in ſermonibus falſis & inutilibus, Fures eſtis, homicidæ, adulteri, falsò 9
juratis, adoletis thura Baali, et ſequimini deos alienos quos minimè nôſtis: Deinde venien- 10
tes ſtatis corã me in domo iſta ſuper quam invocatum eſt nomen meum, ac dicitis; Libera nos, dum hæc omnia crimina ꝑpetratis. Num 11
ſpelunca latronum eſt in oculis veſtris domus hæc ſuper quam invocatum eſt nomen meum? en ego quoque vidi, dicit Dominus.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* لا تخرجوا الى الحقل * ولا تسلكوا في الطرقات * لان حربة الاعداء تستعر من حولنا * يا ابنة
شعبي البسي مسحا وافرشي رمادا * لتصنعي لذاتك حزن الحبيب نوحا ومرثية * لان الشقا
ياتي عليكم بغتة كثيرا * اعطيتك في شعوب كثيرين * وتعرفني عند ما تختبر طريقهم
* جميعهم غير سامعين * يسيرون باعوجاج * نحاس وحديد * وهم فاسدون جميعا * باد المنفخ
من الارض * باد الرصاص * صايغ الفضة يصيغ الفضة باطلا * شرهم لا يذوب * فضة مرذولة
ادعوهم * لان الرب رذلهم * الاصحاح الخامس * الفصل السابع * [*MS.Ox. قول
الرب الذي كان على ارميا ليقول * قوم في باب بيت الرب * وقول هناك هذه الاقوال
وتكلم] * اسمعي قول الرب يا كل اليهودية * هكذا يقول الرب اله اسرايل * قوموا طرقكم
واعمالكم * واسكنكم في هذا الموضع * لا تتوكلوا على الكلمات الكاذبة * لان الانبياء الكذبة
لا ينفعوكم بشي * القايلين هيكل الرب هيكل الرب هو * لانكم ان اصلحتم وقومتم
طرقاتكم * وصاروا تصنعون حكما بين الرجل وبين قريبه * ولا تقهرون الملتجي واليتيم
والارملة * ولا تهرقوا دما زكيا في هذا الموضع * ولا تذهبوا خلف الالهة الغريبة * فانه شر
لكم * واسكنكم في هذا الموضع في الارض التي اعطيت لابايكم منذ الدهر والى الدهر
* وان انتم وتقدم بالكلمات الكاذبة * فلهذا لا تنتفعون * وتقتلون وتفسقون وتسرقون
وتحلفون بالظلم * وتبخرون للباعال * وتذهبون خلف الالهة الغريبة التي لم تعرفوها * لتكون
لكم الشر * وتاتون وتقفون في البيت امامي حيث دعي اسمي عليه * وتقولون ابعدنا من
ان لا نصنع هذه الرذالات كلها * هل بيتي مغارة للصوص حيث دعي اسمي هناك عليه
امامكم * وها انا رايت يقول الرب *

Ne egrediamini in agrum, néve ambule- 25
tis in viis; quia lancea hoſtium circunſtat nobis. O filia populi mei, induere ci- 26
licio, & ſterne tibi *cinerem, ut facias tibi luctum dilecti, gemitum, & næniam; quia calamitas adorietur vos repentè, ad probandum* vos. *Poſui te inter populos pro-* 27
batos, & cognoſces me, cùm probaveris viam eorum. Omnes ſunt inobedientes, 28
obliquè incedentes, ænei atque ferrei, omnes demum corrupti. Conſumptus eſt 19
follis è terra, conſumptum eſt plumbum; opifex argenti in vanum conflat argentum, nequitia illorum non liquefit. Ar- 30
gentum reprobum vocate eos, quia Dominus reprobavit illos.

CAP. VII.

Textus quintus.

MS. Ox. *VErbũ Domini quod fuit ad Jere-* 1
miam, dicendo, Sta in oſtio domûs Domini & loquere ibi iſthæc verba, diceſq;,] 2
Audi dictum Domini O tota Judæa: Sic 3
dicit Dominus Deus Iſraelis, Corrigite vias veſtras & actiones veſtras, ut habitare vos faciam in loco iſto. Ne confida- 4
tis verbis mendacibus, quia prophetæ falſi non proderunt vobis ulla in re, dicentes, Templum Domini, templum Domini eſt. Nam ſi vos emendaveritis, & cor- 5
rexeritis vias veſtras; ſedulò exercueritis judicium inter virum ejuſq; proximum; Non oppreſſeritis confugientem 6
ad vos, *pupillum, ac viduam; non effuderitis ſanguinem innoxium hoc in loco; nec abieritis poſt deos alienos; hoc enim perniciosum vobis eſt: Equidem habitare* 7
vos faciam hoc in loco, in terra quam dedi majoribus veſtris, à ſeculo ad ſeculum uſque. At verò vos confiditis 8
verbis mendacibus, ideoque nihil proficitis: Occiditis, adulteramini, furamini, 9
falſò juratis, thus adoletis Baali, & ſectamini deos alienos quos ignoratis, ut contingat vobis malum: Tum venientes 10
ſtatis coram me hac in æde ſuper quam invocatum eſt nomen meum, ac dicitis, Receſſimus ab agendo has omnes abominationes. Num ſpelunca latronum eſt 11
apud vos ædes mea ſuper quam invocatum eſt nomen meum? nam ecce ego vidi, ait Dominus.

ירמיה : ז

meũ nomẽ feci habitare *quo* , Siloh in qui ,meũ locũ ad nunc ite Sed

12 כי לכו־נא אל־מקומי אשר בשילו אשר שכנתי שמי

malitiæ faciebus à ei fecerim quæ videte & :principio in *ibi*

שם בראשונה וראו את אשר־עשיתי לו מפני רעת

opera omnia *vos facere propter* nunc Et .Israel mei populi

13 עמי ישראל: ועתה יען עשותכם את־כל־המעשים

,loquẽdo &,surgẽdo manè vos ad sum locut⁹ &:Domin⁹ dixit ,hæc

האלה נאם־יהוה ואדבר אליכם השכם ודבר

domui faciam Et .respõdistis non & ,vos vocavi & : audistis non &

14 ולא שמעתם ואקרא אתכם ולא עניתם: ועשיתי לבית

,*ea in fidentes* vos cui ,*ea super* meũ nomen est invocatum qua

אשר נקרא־שמי עליו אשר אתם בטחים בו

.Siloh feci sicut ,vestris patrib⁹ & vobis dedi quem loco &

ולמקום אשר־נתתי לכם ולאבתיכם כאשר עשיתי לשלו:

omnes projeci sicut , *meis faciebus desuper* vos projiciam Et

15 והשלכתי אתכם מעל פני כאשר השלכתי את־כל־

ores ne tu Et .Ephraim semen universum ,vestros fratres

16 אחיכם את כל־זרע אפרים : ואתה אל־תתפלל

,orationẽ & ,*præconium* eis pro assumas ne & , isto populo pro

בעד־העם הזה ואל־תשא בעדם רנה ותפלה

videns tu Nónne .te *audiens ego* non quia : me *in intercedas* ne &

17 ואל־תפגע־בי כי־אינני שמע אתך : האינך ראה

? Jerusalaim plateis in & ,Jehudah civitatibus in *facientes* isti quid

מה המה עשים בערי יהודה ובחוצות ירושלם:

, ignem *succendentes* patres & , ligna *colligentes* Filii

18 הבנים מלקטים עצים והאבות מבערים את־האש

,cœli *reginæ* placentas *faciendum ad,conspersionem subigentes* mulieres&

והנשים לשות בצק לעשות כונים למלכת השמים

.me *irritandum ad* alienis diis libamina *libandum* &

והסך נסכים לאלהים אחרים למען הכעסני :

ad seipsos non an ? DOMINUS dixit , *irritantes* ipsi me Nónne

19 האתי הם מכעסים נאם־יהוה הלוא אתם למען

: *Dominus* Dominus dixit sic Ideo ? eorum vultus pudorem

בשת פניהם : לכן כה־אמר אדני יהוה

,*hominem* super istum locum in *effusa* mea ira &,meus *nasus* Ecce

20 הנה אפי וחמתי נתכת אל־המקום הזה על־האדם

: *humi* fructum super & , agri *lignum* super & , *animal* super &

ועל־הבהמה ועל־עץ השדה ועל־פרי האדמה

Deus exercituũ Dominus dixit Sic .extinguetur non &,succendetur &

ובערה ולא תכבה : כה אמר יהוה צבאות אלהי

.carnẽ comedite &,vestris victimis *super* addite *vestras Ascensiones* : Israel

21 ישראל עלותיכם ספו על־זבחיכם ואכלו בשר:

die in eis præcepi nec ,vestris patribus cum sum locutus non Quia

22 כי לא־דברתי את־אבותיכם ולא צויתים ביום

.victimæ & *ascensionis* verbis super , Ægypti terra è eos *me educere*

הוציא אתם מארץ מצרים על־דברי עולה וזבח :

,*mea voce in Audite* : dicendo , eis præcepi hoc verbum *Quinimò*

23 כי אם־את־הדבר הזה צויתי אתם לאמר שמעו בקולי

: populum in mihi eritis vos & , Deum in vobis ero &

והייתי לכם לאלהים ואתם תהיו־לי לעם

.vobis sit bene ut , vobis *præcipiam* quam via omni in *ambulabitis* &

והלכתם בכל־הדרך אשר־אצוה אתכם למען ייטב לכם:

abierunt *&* ,suam aurem inclinaverunt nec *audiverunt* non Et

24 ולא שמעו ולא־הטו את־אזנם וילכו

.*facies ad* non &,*retrorsum sunt facti* & : mali sui cordis *obstinatione* in cõsiliis in

במעצות בשררות לבם הרע ויהיו לאחור ולא לפנים :

ad usque , Ægypti terra è vestri patres sunt egressi qua die A

25 למן־היום אשר יצאו אבותיכם מארץ מצרים עד

prophetas meos servos omnes vos ad misi & ; hanc diem

היום הזה ואשלח אליכם את־כל־עבדי הנביאים

.mittendo & surgendo manè , *die*

יום השכם ושלח :

Verſio VULG. LAT.

12 Ite ad locum meum in Silo, ubi habitavit nomen meum à principio : & videte quæ fecerim ei propter malitiam populi mei Iſrael: 13 Et nunc, quia feciſtis omnia opera hæc, dicit Dñs : & locutus ſum ad vos manè conſurgens, & loquens, & non audiſtis : & vocavi vos, & non reſpondiſtis : 14 Faciam domui huic, in qua invocatum eſt nomen meum, & in qua vos habetis fiduciam ; & loco, quem dedi vobis & patribus veſtris, 15 ſicut feci Silo. Et projiciam vos à facie mea, ſicut projeci omnes fratres veſtros, 16 univerſum ſemen Ephraim. Tu ergò noli orare pro populo hoc, nec aſſumas pro eis laudem & orationem, & non obſiſtas mihi: 17 quia non exaudiam te. Nónne vides quid iſti faciunt in civitatibus Juda, & in plateis Jeruſa-18 lem? Filii colligunt ligna, & patres ſuccendunt ignem, & mulieres conſpergunt adipem, ut faciant placentas reginæ cœli, & libent diis alienis, & me ad ira-19 cundiam provocent. Numquid me ad iracundiam provocant, dicit Domin⁹? nónne ſemetipſos 20 in confuſionem vultûs ſui? Ideò hæc dicit Dñs Deus ; Ecce furor meus, & indignatio mea conflatur ſuper locũ iſtũ, ſup viros, & ſup jumenta, et ſuper lignũ regionis, et ſuper fruges terræ, et ſuccendetur, et non extinguetur. 21 Hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael ; Holocautomata veſtra addite victimis veſtris, 22 et comedite carnes. Quia non ſum locutus cum patribus veſtris, et non præcepi eis, in die quâ eduxi eos de terra Ægypti, de verbo holocautomatum, et 23 victimarum. Sed hoc verbum præcepi eis, dicens ; Audite vocem meam, et ero vobis Deus, et vos eritis mihi populus : et ambulate in omni via, quam mandavi vobis, ut benè ſit vo-24 bis. Et non audierunt, nec inclinaverunt aurem ſuam : et abierunt in voluntatibus, et in pravitate cordis ſui mali : factíque ſunt retrorſum et non in 25 antè, A die quâ egreſſi ſunt patres eorum de terra Ægypti, uſque ad diem hanc. Et miſi ad vos omnes ſervos meos prophetas per diem conſurgens diluculò, et mittens.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 (θ) Ὅτι πορεύθητε εἰς τὸν τόπον μου τὸν ἐν (ι) Σηλὼ, οὗ κατεσκήνωσα τὸ ὄνομά μου ἐκεῖ ἔμπροσθεν, ϗ ἴδετε ἃ ἐποίησα αὐτῷ ἀπὸ προσώπου κακίας λαοῦ μου Ἰσραήλ. 13 Καὶ νῦν ἀνθ' ὧν ἐποιήσατε πάντα τὰ ἔργα ταῦτα, ϗ ἐλάλησα πρὸς ὑμᾶς καὶ οὐκ ἠκούσατέ μου, ϗ ἐκάλεσα ὑμᾶς ϗ οὐκ ἀπεκρίθητε, 14 Τοίνυν κἀγὼ ποιήσω (κ) τῷ οἴκῳ ᾧ ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ' αὐτῷ, ἐφ' ᾧ ὑμεῖς πεποίθατε ἐπ' αὐτῷ, ϗ τῷ τόπῳ ᾧ (λ) ἔδωκα ὑμῖν ϗ τοῖς πατράσιν ὑμῶν, 15 καθὼς ἐποίησα τῇ Σηλώ. Καὶ (ˢ) ἀπορρίψω ὑμᾶς ἀπὸ προσώπου μου, καθὼς ἀπέρριψα τοὺς ἀδελφοὺς ὑμῶν, πᾶν τὸ σπέρμα Ἐφραίμ. 16 Καὶ σὺ μὴ προσεύχου (μ) περὶ τοῦ λαοῦ τούτου, ϗ μὴ ἀξίου τοῦ ἐλεηθῆναι (ν) αὐτοὺς, καὶ μὴ εὔχου, ϗ μὴ προσέλθῃς μοι περὶ 17 αὐτῶν, ὅτι οὐκ εἰσακούσομαι. Ἦ οὐχ ὁρᾷς, τί αὐτοὶ ποιοῦσιν ἐν ταῖς (ξ) πόλεσιν Ἰ-18 ούδα, ϗ ἐν ταῖς ὁδοῖς Ἱερουσαλήμ; Οἱ υἱοὶ αὐτῶν συλλέγουσι ξύλα, ϗ οἱ πατέρες αὐτῶν καίουσι πῦρ, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν τρίβουσι σταῖς, τοῦ ποιῆσαι (˙) χαυῶνας τῇ στρατιᾷ τοῦ οὐρανοῦ, ϗ (ο) ἔσπεισαν σπονδὰς θε-19 οῖς ἀλλοτρίοις, ἵνα παροργίσωσί με. Μὴ ἐμὲ αὐτοὶ παροργίζουσι, λέγει κύριος; (π) οὐχὶ ἑαυτοὺς, ὅπως καταισχυνθῇ τὰ 20 πρόσωπα αὐτῶν; Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ὀργὴ ϗ θυμός μου (ρ) χεῖται ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον, ϗ ἐπὶ τοὺς ἀνθρώπους, ϗ ἐπὶ τὰ κτήνη, ϗ ἐπὶ πᾶν ξύλον τοῦ ἀγροῦ αὐτῶν, ϗ ἐπὶ (σ) τὰ γεννήματα τῆς γῆς, 21 ϗ καυθήσεται ϗ οὐ (τ) σβεσθήσεται. Τάδε λέγει κύριος, Τὰ ὁλοκαυτώματα ὑμῶν συναγάγετε μετὰ τῶν θυσιῶν ὑμῶν, ϗ φά-22 γετε κρέα. (υ) Ὅτι οὐκ ἐλάλησα πρὸς τοὺς πατέρας ὑμῶν, ϗ οὐκ ἐνετειλάμην αὐτοῖς ἐν ἡμέρᾳ, ᾗ ἀνήγαγον αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, περὶ ὁλοκαυτωμάτων ϗ (φ) θυ-23 σίας. Ἀλλ' ἢ τὸ ῥῆμα τοῦτο ἐνετειλάμην αὐτοῖς, λέγων, Ἀκούσατε τῆς φωνῆς μου, ϗ ἔσομαι (χ) ὑμῖν εἰς θεὸν, ϗ ὑμεῖς ἔσεσθέ μοι εἰς λαὸν, ϗ πορεύεσθε ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς μου, αἷς ἂν ἐντείλωμαι ὑμῖν, ὅπως ἂν εὖ ᾖ 24 ὑμῖν. Καὶ οὐκ (ψ) ἤκουσάν μου, ϗ οὐ προσέσχε τὸ οὖς αὐτῶν, ἀλλ' ἐπορεύθησαν ἐν τοῖς (ω) ἐνθυμήμασι τῆς καρδίας αὐτῶν τῆς κακῆς, καὶ ἐγενήθησαν εἰς τὰ ὀπίσω, ϗ οὐκ εἰς τὰ ἔμ-25 προσθεν, Ἀφ' ἧς ἡμέρας ἐξήλθοσαν οἱ πατέρες αὐτῶν ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ϗ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης. ϗ ἐξαπέστειλα πρὸς ὑμᾶς πάντας τοὺς δούλους μου, τοὺς προφήτας, ἡμέρας ϗ ὄρθρου, (α) ϗ ἀπέστειλα,

Quarè ite ad locum meum, qui in Selo, ubi collocavi nomen meum ibi anteà: & videte, quæ fecerim ei à facie malitiæ populi mei Iſrael. Et nunc pro eo quod feciſtis omnia opera hæc, & locutus ſum ad vos, & non audiſtis me, & vocavi vos, & non reſpondiſtis; Igitur & ego faciam domui, in qua invocatum eſt nomen meum in ea, in qua vos confidiſtis in ea, & loco, quem dedi vobis, & patribus veſtris, ſicut feci Selo: Et projiciam vos à facie mea, ſicut projeci fratres veſtros, omne ſemen Ephræm. Et tu noli orare pro populo iſto, neque poſtules ut miſereantur illorum: & ne ores, & ne accedas ad me pro his: quia non exaudiam. Nunquid non vides, quid ipſi faciunt in civitatibus Juda, & in viis Jeruſalem? Filii eorum colligunt ligna, & patres eorum accendunt ignem, & mulieres eorum terunt ſimilam, ut faciant chauonas militiæ cœli: & libaverunt libamina diis alienis, ut me ad iracundiam provocarent. Nunquid me ipſi ad iram provocant, dicit Dominus? nonne ſemetipſos, ut confundantur facies eorum? Ideò hæc dicit Dominus; Ecce ira & furor meus funditur ſuper locum iſtum, & ſuper homines, & ſuper jumenta, & ſuper omne lignum agri eorum, & ſuper genimina terræ, & accendetur, & non extinguetur. Hæc dicit Dominus; Holocauſtomata veſtra congregate cum ſacrificiis veſtris, & comedite carnes: Quia non ſum locutus ad patres veſtros, & non mandavi eis in die, quâ eduxi eos de terra Ægypti, de holocauſtis, & ſacrificio: Sed verbum hoc mandavi eis, dicens; Audite vocem meam, & ero vobis in Deum: & vos eritis mihi in populum: & ambulate in omnibus viis meis, quaſcunque mandavero vobis; ut benè vobis ſit. Et non audierunt me, & non attendit auris eorum: ſed iverunt in deſideriis cordis ſui mali, & facti ſunt in poſteriora, & non in anteriora; Ex qua die exierunt patres eorum è terra Ægypti, & uſque in diem hanc. Et miſi ad vos, omnes ſervos meos prophetas, die & diluculo: & miſi,

MS.A. (θ) Πορεύθητε (ι) Σηλώμ, (κ) τῷ τόπῳ τούτῳ ᾧ (λ) [illegible]λησα (ˢ) ἀπορρίψω (μ) ὑπὲρ τοῦ (ν) αὐτοὺς, ὅτι οὐκ εἰσακούσομαι. (ξ) [illegible] Ἱερουσαλήμ; Οἱ (˙) χαυῶνας (ο) σπεῖσαι (π) οὐχ (ρ) ἐκχεῖται (σ) πάντα τὰ γεννήματα αὐτῆς, (τ) σβεσθήσεται ϗ οὐκ ἔσται ὁ σβέσων. (υ) Καὶ οὐκ [illegible]σιῶν. (χ) ὑμῶν (ψ) εἰσήκουσάν μου, ϗ οὐ προσέσχον (ω) [illegible]σιν (α) ἀπέστειλα,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 ארי אזילו כען לאתר בית שכנתי די בשילו דאשריתי שכנתי תמן בקדמיתא וחזו ית
13 דעבדית ליה מן קדם בישת עמי ישראל : וכען חלף דעבדתון ית כל עובדיא האלין
אמר יי ושלחית לותכון ית כל עבדי נבייא מקדים וממלל ולא קבלתון ואתנביאו לכון
14 ולא תבתון : ואעבד לביתא דאתקרי שמי עלוהי דאתון רחיצין ביה ולאתרא דיהבית
15 לכון ולאבהתכון כמא דעבדית לשילו : ואגלי יתכון מארעא בית שכנתי כמא דאגליתי
16 ית כל אחיכון ית כל זרעא דישראל : ואת לא תצלי על עמא הדין ולא תתחנן עליהון
17 בבעו וצלו ולא תבעי מן קדמי ארי לא רעוא קדמי לקבלא צלותך : הלית את חזי מא
18 דאנון עבדין בקרויא דבית יהודה ובשוקי ירושלם : בניא מלקטין אעא ואבהתא
מדלקין ית נורא ונשיא לישן לישא למעבד כרדוטין לכוכבת שמיא ולנסכא נסכין
19 לטעות עממיא בדיל לארגזא קדמי : המרגזן די קדמי אנון מרגזין אמר יי הלא לאבאשא
20 להון בדיל דיבהתון בעובדיהון : בכן כדנן אמר יי אלהים הא רוגזי וחמתי חל באתרא
21 הדין על אנשא ועל בעירא ועל אילן חקלא ועל אבא דארעא וישצי ולא יהי חיס : כדנן
22 אמר יי צבאות אלהא דישראל עלותכון אוסיפו על נכסת קודשיכון ואכלו בסרא : ארי
לא מללית עם אבהתכון ולא פקדתנון ביומא דאפקית יתהון מארעא דמצרים על עסקי
23 עלון ונכסת קודשין : אלהין ית פתגמא הדין פקדית יתהון למימר קבילו למימרי ואהוי
לכון לאלהא ואתון תהון קדמי לעם ותהכון בכל ארחא דאפקד יתכון בדיל דייטב
24 לכון : ולא קבילו ולא ארכינו ית אודניהון ואזלו בעצתהון בהרהור לבהון בישא
25 ואחזרו בפולחני קדל ולא שויאו דחלתי לקביל אפיהון : למן יומא דנפקו אבהתכון
מארעא דמצרים עד יומא הדין ושלחית לותכון ית כל עבדי נבייא יום מקדים ומשלח :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ite enim nunc ad locum domus majeſtatis meæ qui eſt in Silo, in quo habitare feci majeſtatẽ meã in principio: & videte quid fecerim ei propter malitiã populi mei Iſrael. Et nunc pro eo ꝙ feciſtis omnia opera hæc, dicit Dñs, & miſi ad vos *omnes ſervos meos Prophetas*, manè conſurgens, & loquens, & non obediſtis; & prophetaverunt vobis, & non eſtis converſi: Et faciã domui ſup qua invocatũ eſt nomen meũ, & in qua vos confiditis, & loco quẽ dedi vobis & patrib⁹ veſtris, ſicut feci Silo. Et tranſmigrare vos faciam de terra dom⁹ majeſtatis meæ, ſicut tranſmigrare feci oẽs fratres veſtros, omne ſemen Iſrael. Tu autẽ ne ores pro populo hoc, nec depreceris pro eis in deprecatione & oratione, neque roges corã me, quia non eſt voluntas corã me ad ſuſcipiendã orationẽ tuã. Nonne tu vides quid ipſi faciunt in civitatib⁹ dom⁹ Juda, & in vicis Jeruſalẽ? Filii colligunt ligna, et patres ſuccendunt ignẽ ; & mulieres conſpergunt maſſã ut faciant placentas ſyderi cœli, & libent libationes idolis populorũ, ut irritent me. Nunquid ipſi putant ꝙ irritent me, dicit Dñs? nonne in malũ ſibimet ut confundantur in operib⁹ ſuis? Propterea ſic dicit Dñs: Ecce furor me⁹ & indignatio mea reſidet ſuper locũ iſtũ, ſuper homines, & ſuper jumenta, & ſuper arbores agri, & ſuper fruct⁹ terræ ; et exterminabit ea, et non erit ei miſeratio. Hæc dicit Dñs exercituũ Deus Iſrael: Holocauſtomata veſtra addite victimis ſanctificatis veſtris, & comedite carnes: Quia non ſum locut⁹ cum patrib⁹ veſtris, nec præcepi eis in die qua eduxi eos de terra Ægypti ſuper negotio holocauſtorũ et victimarũ ſanctarũ. Sed hoc verbũ præcepi eis, dicens: Obedite verbo meo, et ero vobis in Deũ, et vos eritis corã me in populũ : et ambulabitis in omni via quã mandavero vobis, ut bene ſit vobis. Et non *obedierunt*, nec inclinaverunt aures ſuas : et ambulaverunt in conſiliis ſuis, in cogitatione cordis ſui peſſimi: et averterunt in cultu meo dorſum, et non poſuerunt timorem mei ante faciem ſuam: A die qua egreſſi ſunt patres veſtri de terra Ægypti uſque in diem hanc : et miſi ad vos omnes ſervos meos Prophetas, quotidiè manè conſurgens, et mittens.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠܗܢܐ ܙܠܘ ܠܐܬܪܝ ܕܒܫܝܠܘ܂ ܕܐܫܪܝܬ ܫܡܝ ܬܡܢ ܡܢ ܩܕܡܝܢ. ܘܚܙܘ ܡܢܐ ܥܒܕܬ 12
ܠܗ܂ ܡܛܠ ܒܝܫܘܬܗ ܕܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܗܫܐ ܚܠܦ ܕܥܒܕܬܘܢ ܟܠܗܝܢ ܥܒܕܐ 13
ܗܠܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ: ܘܡܠܠܬ ܘܐܩܕܡܬ ܥܡܟܘܢ܂ ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ: ܘܩܪܝܬ ܠܟܘܢ܂ ܘܠܐ ܥܢܝܬܘܢ܂ 14
* ܐܥܒܕ ܠܒܝܬܐ ܗܢܐ ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܝ ܥܠܘܗܝ܂ ܕܐܢܬܘܢ ܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ܂
ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܕܝܗܒܬ ܠܟܘܢ ܘܠܐܒܗܝܟܘܢ܂ ܐܝܟ ܕܥܒܕܬ ܠܫܝܠܘ. * ܘܐܫܕܝܟܘܢ ܡܢ 15
ܩܕܡ ܐܦܝ. ܐܝܟ ܕܫܕܝܬ ܠܟܠܗܘܢ ܐܚܝܟܘܢ܂ ܠܟܠܗ ܙܪܥܗ ܕܐܦܪܝܡ. * ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܨܠܐ 16
ܥܠ ܥܡܐ ܗܢܐ. ܘܠܐ ܬܒܥܐ ܥܠܝܗܘܢ܂ ܘܠܐ ܬܦܓܥ ܒܝ܂ ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥ ܐܢܐ ܠܟ. * ܠܐ ܚܙܐ ܐܢܬ 17
ܡܢܐ ܥܒܕܝܢ ܒܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ܆ ܘܒܫܘܩܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܒܢܝܐ ܡܠܩܛܝܢ ܩܝܣܐ܂ 18
ܘܐܒܗܬܐ ܡܘܩܕܝܢ ܢܘܪܐ. ܘܢܫܐ ܠܫܢ ܠܫܐ. ܠܡܥܒܕ ܓܪܝܨܬܐ ܠܚܝܠܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܡܢܣܟܝܢ
ܢܘܣܟܐ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܕܢܪܓܙܘܢܢܝ. * ܠܐ ܗܘܐ ܠܝ ܡܪܓܙܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܠܐ ܠܢܦܫܗܘܢ 19
ܕܢܒܗܬܘܢ ܐܦܝܗܘܢ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܪܘܓܙܝ ܘܚܡܬܝ 20
ܫܪܝܢ ܥܠ ܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܥܠ ܒܢܝܢܫܐ. ܘܥܠ ܒܥܝܪܐ܂ ܘܥܠ ܐܝܠܢܐ ܕܚܩܠܐ܂ ܘܥܠ ܦܐܪܐ ܕܐܪܥܐ.
ܘܬܐܩܕ ܘܠܐ ܬܕܥܟ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܠܘܬܗܘܢ ܐܘܣܦܘ 21
ܥܠ ܕܒܚܝܗܘܢ. ܘܐܟܠܘ ܒܣܪܐ ܕܠܐ ܐܡܪܬ ܠܐܒܗܝܗܘܢ. * ܘܠܐ ܦܩܕܬ ܐܢܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܐܦܩܬ 22
ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܥܠ ܥܠܘܬܐ ܘܠܐ ܥܠ ܕܒܚܐ. * ܐܠܐ ܗܕܐ ܗܘ ܡܠܬܐ ܦܩܕܬ 23
ܐܢܘܢ܂ ܘܐܡܪܬ. ܫܡܥܘ ܠܩܠܝ. ܘܐܗܘܐ ܠܟܘܢ ܠܐܠܗܐ. ܘܐܢܬܘܢ ܬܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ.
ܘܗܠܟܘ ܒܟܠܗ ܐܘܪܚܐ ܕܦܩܕܬ ܠܟܘܢ܆ ܕܢܫܦܪ ܠܟܘܢ. * ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܘܠܐ ܐܪܟܢܘ 24
ܐܕܢܗܘܢ ܠܡܫܡܥ. ܐܠܐ ܐܙܠܘ ܒܬܪ ܡܚܫܒܬܗܘܢ܂ ܘܒܬܪ ܪܓܬ ܠܒܗܘܢ ܒܝܫܐ. ܘܗܦܟܘ
ܠܒܣܬܪܗܘܢ܂ ܘܠܐ ܠܩܕܡܝܗܘܢ. * ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܢܦܩܘ ܐܒܗܝܗܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ܂ 25
ܘܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܘܫܕܪܬ ܠܘܬܗܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܢܒܝܐ. ܒܟܠ ܝܘܡ.

Iccircò ite in locum meum qui erat in Silo, 12
ubi habitare feceram nomen meum antea, &
videte quid fecerim ei propter nequitiam po-
puli mei Iſraelis. Nunc igitur, quia perpe- 13
traſtis hæc omnia facinora, dicit Dominus;
prædixi vobis, & non audiſtis; vocavi vos,
& non reſpondiſtis: Faciam huic domui ſu- 14
per quam invocatum eſt nomen meum, in qua
vos fiduciam collocatis, & civitati huic quam
dedi vobis & patribus veſtris; quemadmodú
feci Silo: Et abjiciam vos à conſpectu meo, 15
quemadmodum abjeci omnes fratres veſtros,
univerſum ſemen Aphremi. Tu ergò ne ores 16
pro populo iſto, neque preceris pro eis, & ne
me depreceris; quoniam nequaquam exaudiã
te. An non vides quid faciant in civitati- 17
bus Judæ, & in plateis Jeruſalem? Filii col- 18
ligunt ligna, & parentes *eorum* accendunt i-
gnem, fœminæ verò depſunt maſſam; ad fa-
ciendum placentas militiæ cœleſti, & liban-
dum libamina diis alienis, ut me ad iracun-
diam provocent. Non me quidem irritant, 19
ait Dominus; ſed ſemetipſos, ut pudefiant
vultus eorum. Iccircò ſic ait Dominus Deus, 20
Ecce ira mea & furor meus requieſcent ſuper
locum iſtum, ſuper homines & ſuper jumen-
ta, ſuper arbores campeſtres, & ſuper fructus
terræ; comburétque, & non extinguetur.
Sic dicit Dominus potens, Deus Iſraelis; Ho- 21
locauſta ſua accumulârunt ſacrificiis ſuis, &
comederunt carnem de qua non dixeram pa-
tribus eorum. Nihil enim præceperam eis, 22
quo die extraxi eos de terra Ægypti, de holo-
cauſto neque de ſacrificiis: Sed hunc ego 23
ſermonem præceperam eis, & dixeram; Au-
ſcultate voci meæ, eróque vobis Deus, & vos
eritis mihi populus: & ambulate in tota via
quam præcipio vobis, ut benè ſit vobis. At 24
non auſcultârunt, nec aurem ſuam præbue-
runt ad audiendum; ſed abierunt poſt cogi-
tationes ſuas & poſt appetitus cordis ſui peſſi-
mi: & retroceſſerunt, non proceſſerunt: *Id-* 25
que ab eo die quo egreſſi ſunt patres eorum è
terra Ægypti ad hunc uſque diem: cùm tamen
ad eos mitterem omnes ſervos meos prophe-
tas, ſingulis diebus:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* اذهبوا الي موضعي الذي في شيلوم حيث اسكنت اسمي هناك من قبل * وانظروا ما 12
صنعت به من وجه شر شعبي اسرائيل * والان من اجل انكم صنعتم هذه الاعمال كلها 13
وكلمتكم فلم تسمعوني * ودعوتكم فلم تجيبوا * الان وانا اصنع بهذا الموضع الذي دعي 14
اسمي عليه الذي انتم تثقون به * والموضع الذي تكلمت به معكم ومع اباىكم كما صنعت
بشيلوم * واصرفكم من وجهي كما اصرفت اخوتكم كل زرع افرام * وانت لا تصل من اجل 15
هذا الشعب ولا تطلب ليرحموا * فاني لا استجيب * اوما رايت ما هولاء يصنعون في طرقات 16
اورسليم * بنوهم يجمعون حطبا * واباوهم يقدون نارا * ونساوهم يدقن دقيقا ليعملن قرابين 17
لاجناد السماء * ويرقون قوارير للالهة الغريبة لكي يغضبوني * هل يسخطوني هولاء يقول الرب 18
اليس نفسهم * كي تخزي وجوههم * لاجل هذا هكذا يقول الرب * ها رجزي وغضبي يراق علي 19
هذا الموضع * وعلي الناس والبهائم * وعلي كل شجر حقلهم * وعلي كل غلاتهم * ويتوقد ولا 20
يطفا * ولا يكون من يطفي * هكذا يقول الرب * اجمعوا محرقاتكم مع ذبائحكم وكلوا لحما 21
* ولم اتكلم مع اباىكم ولم اوصهم في اليوم الذي اصعدتهم فيه من ارض 22
مصر من اجل المحرقات والذبائح * لكن بهذه الكلمة اوصيتهم قائلا * اسمعوا صوتي 23
واكون لكم الها وانتم تكونون لي شعبا * وسيروا في جميع طرقي التي اوصيتكم
بها اذن * لكي يكون لكم الخير * فلم يسمعوا لي ولا صغوا باذانهم * لكن 24
ساروا بشهوات قلبهم الردي * وصاروا الي خلف وليس الي قدام * منذ يوم خرجوا 25
اباوهم من ارض مصر والي هذا اليوم * ارسلت اليكم جميع عبيدي الانبياء
نهارا وارسلتهم سحرا

Ite in locum meum illum qui eſt in Silo- 12
me, ubi habitare feceram nomen meum
olim, & videte quid fecerim ei cauſâ
malitiæ populi mei Iſraelis. Nunc itaque, 13
cùm feceritis omnes hujuſmodi actiones;
allocutus ſim vos, nec audieritis me;
vocaverim vos, nec reſponderitis:
Nunc, inquam, ego faciam huic loco ſuper 14
quem invocatum eſt nomen meum, cui
vos confiditis, loco in quo locutus ſum
vobiſcum & cum patribus veſtris;
quemadmodum feci Silomi: Et repel- 15
lam vos à facie mea, quemadmodum re-
puli fratres veſtros, totum ſcilicet *ſe-*
men Aphremi. Tu verò ne ores pro popu- 16
lo iſto, neque petas ut miſericordiâ u-
tar cum eis: non enim exauditurus eſſem.
An non vides quid iſti faciant in vicis 17
Jeroſolymæ? Filii eorum ligna colli- 18
gunt, patres eorum accendunt ignem, &
eorum fœminæ contundunt ſimilam ut
conficiant ſacrificia copiis cœleſtibus;
& effundunt alabaſtra diis alienis, ad
irritandum me. Num me ad iram con- 19
citant iſti, dicit Dominus? an non ſei-
pſos, ut pudefiant vultus eorum? Hanc 20
ob rem ita dicit Dominus, En ira mea
& excandeſcentia mea effundetur ſu-
per hunc locum, & ſuper homines at-
que jumenta, ſuper omnes arbores agri
eorum, & ſuper omnes proventus eo-
rum: ardebit autem, & non extingue-
tur, nec erit qui extinguat. Sic ait Do- 21
minus, Conjungite holocauſta veſtra
cum ſacrificiis veſtris, & comedite car-
nem. Neque enim locutus ſum cum ma- 22
joribus veſtris, aut præcepi eis quâ die
eduxi eos de terra Ægypti, de holocau-
ſtis & ſacrificiis: Sed hoc verbum præ- 23
cepi illis, dicens, Acquieſcite voci meæ,
eroque vobis Deus, & vos eritis mihi
populus: & ambulate in omnibus viis
meis quas præſcripſi vobis, ut benè ſit
vobis. Verùm non acquieverunt mihi, nec 24
admoverunt aures ſuas; ſed ſecuti ſunt
libidines cordis ſui depravati, & re-
trogreſſi ſunt, non progreſſi, Inde ab 25
ea die quâ exierunt majores eorum è
terra Ægypti ad hodiernam uſque diem.
Et quanvis miſerim ad vos omnes ſer-
vos meos prophetas interdiu, miſerimque
eos tempore matutino;

induraverũt & :ſuã aurem inclinaverũt nec ,me ad obaudierunt non Et
26 ולוא שמעו אלי ולא הטו את־אזנם ויקשו
eos ad loquêris Et .ſuis patribus præ malefecerunt ; ſuã cervicem
27 את־ערפם הרעו מאבותם : ודברת אליהם
,eos ad vocabis & : te ad obaudient non & , hæc verba omnia
את כל־הדברים האלה ולא ישמעו אליך וקראת אליהם
quæ gens Hæc : eos ad dices Et .tibi reſpondebunt non &
28 ולא יענוכה : ואמרת אליהם זה הגוי אשר
: diſciplinam receperunt nec , ſui Dei DOMINI voce in audierunt non
לוא־שמעו בקול יהוה אלהיו ולא לקחו מוסר
,tuum nazareatum Tonde .ipſorũ ore de eſt abſciſa & , veritas periit
29 אבדה האמונה ונכרתה מפיהם : גזי נזרך
,Dominus reprobavit quia : lamentum edita loca ſuper tolle & , projice &
והשליכי ושאי על־שפים קינה כי מאס יהוה
malum Jehudah filii fecerunt Quia .ſui furoris generationẽ dimiſit &
30 ויטש את־דור עברתו : כי־עשו בני־יהודה הרע
,domo in ſuas abominationes poſuerunt : Dominus dixit ,meis oculis in
בעיני נאם־יהוה שמו שקוציהם בבית
ædificaverunt Et .eã polluendum ad ea ſuper meũ nomen eſt invocatũ qua
31 אשר־נקרא שמי־עליו לטמאו : ובנו
,ſuos filios comburendum ad,Hinnom filii valle in quæ ,Topheth excelſa
במות התפת אשר בגיא בן־הנם לשרף את־בניהם
.meũ cor ſuper aſcendit nec,præcepi non quod : igni in ſuas filias &
ואת־בנתיהם באש אשר לא צויתי ולא עלתה על־לבי :
,Topheth ultrà dicetur nõ &,Dominus dicit ,venientes dies ecce Ideo
32 לכן הנה־ימים באים נאם־יהוה ולא־יאמר עוד התפת
ſepelient & : interfectionis Vallis quinimò , Hinnom filii Vallis &
וגיא בן־הנם כי אם־גיא ההרגה וקברו
volatili cibum in hujus populi cadaver erit Et .loco abſque Topheth in
33 בתפת מאין מקום : והיתה נבלת העם הזה למאכל לעוף
urbib⁹ de faciã ceſſare Et .exterrens non & : terræ jumento & , cœli
34 השמים ולבהמת הארץ ואין מחריד : והשבתי מערי
, lætitiæ vocem & , gaudii vocem Jeruſalaim plateis de & , Jehudah
יהודה ומחוצות ירושלם קול ששון וקול שמחה
.terra erit deſolationem in nam :ſponſæ vocem & ,ſponſi vocem
קול חתן וקול כלה כי לחרבה תהיה הארץ :

CAP. VIII. ח

regum oſſa Educent : Dominus ait illo tempore In
1 בעת ההיא נאם־יהוה ויוציאו את־עצמות מלכי־
,ſacerdotum oſſa & ,ej⁹ principum oſſa & ,Jehudah
יהודה ואת־עצמות שריו ואת־עצמות הכהנים
Jeruſalaim habitantium oſſa & , prophetarum oſſa &
ואת עצמות הנביאים ואת עצמות יושבי־ירושלם
omnẽ ad & ,lunam ad & ,ſolem ad ea diſtendent Et .ſuis ſepulchris de
2 מקבריהם : ושטחום לשמש ולירח ולכל
quæ & ,eis ſervierunt quibus & ,ea dilexerunt quæ , cœli exercitum
צבא השמים אשר אהבום ואשר עבדום ואשר
ſe incurvaverũt quibus & ,ipſa quæſierũt quæ & , ea poſt ambulaverũt
הלכו אחריהם ואשר דרשום ואשר השתחוו
facies ſuper ſterquiliniũ in ; ſepelientur nec , colligentur non ;eis
להם לא יאספו ולא יקברו לדמן על־פני
reſiduo omni vitis præ mors eligetur Et .erunt humi
3 האדמה יהיו : ונבחר מות מחיים לכל השארית
locis univerſis in , hac mala familia de ,reſiduorum
הנשארים מן־המשפחה הרעה הזאת בכל־המקמות
.exercituum Dominus dixit , illuc eos propellam quò , reſiduis
הנשארים אשר הדחתים שם נאם יהוה צבאות :
non & ,cadent Nunquid : Dominus dixit Sic : eos ad dices Et
4 ואמרת אליהם כה אמר יהוה היפלו ולא
? convertetur non & ,avertetur Nunquid ? reſurgent
יקומו אם־ישוב ולא ישוב :

Verſio VULG. LAT.

26 Et non audierunt me, nec in-
clinaverunt aurem ſuã: ſed in-
duraverunt cervicem ſuã: &
pej⁹ operati ſunt quàm patres
27 eorum. Et loquêris ad eos
omnia verba hæc, & non au-
dient te: & vocabis eos, & non
28 reſpondebunt tibi. Et dices ad
eos; Hæc eſt gens, quæ non
audivit vocẽ Dñi Dei ſui, nec
recepit diſciplinã: periit fides,
29 & ablata eſt de ore eorũ. Ton-
de capillũ tuum, & projice, &
ſume in directũ planctũ: quia
projecit Dñs, & reliquit gene-
30 rationẽ furoris ſui, Quia fece-
runt filii Juda malũ in oculis
meis, dicit Dñs. Poſuerunt of-
fendicula ſua in domo, in qua
invocatum eſt nomen meũ, ut
31 polluerent eam: Et ædificave-
runt excelſa Topheth, quæ eſt
in valle filii Ennom: ut incen-
derent filios ſuos, & filias ſuas
igni: quæ non præcepi, nec
32 cogitavi in corde meo. Ideò
ecce dies venient, dicit Dñs, &
non dicetur ampliùs, Topheth,
& Vallis filii Ennom: ſed Val-
lis interfectionis: & ſepelient
in Topheth, eò quòd non ſit
33 locus. Et erit morticinũ populi
huj⁹ in cibos volucribus cœli,
& beſtiis terræ, & non erit qui
34 abigat. Et quieſcere faciam de
urbib⁹ Juda, & de plateis Jeru-
ſalem, vocẽ gaudii, & vocem
lætitiæ, vocem ſponſi, & vocẽ
ſponſæ: in deſolationem enim
erit terra.

CAP. VIII.

1 IN illo tempore, ait Domin⁹;
Ejicient oſſa regum Juda, &
oſſa principum ejus, & oſſa
ſacerdotum, & oſſa prophe-
tarum, & oſſa eorum qui ha-
bitaverunt Jeruſalem, de ſepul-
2 chris ſuis: Et expandent ea ad
Solem, & Lunã, & omnem mi-
litiam cœli, quæ dilexerunt, et
quibus ſervierunt, et poſt quæ
ambulaverunt, et quæ quæſie-
runt, et adoraverunt: non col-
ligentur, et non ſepelientur:
in ſterquiliniũ ſup faciem ter-
3 ræ erunt. Et eligent magis
mortem quàm vitam omnes
qui reſidui fuerint de cogna-
tione hac peſſima in univerſis
locis, quæ derelicta ſunt, ad
quæ ejeci eos, dicit Dominus
4 exercituum. Et dices ad eos,
Hæc dicit Dominus; Num-
quid qui cadit, non reſurget?
et qui averſus eſt, non rever-
tetur?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

26 Καὶ οὐκ εἰσήκουσάν μου, καὶ οὐ προσέσχε τὸ οὖς
αὐτῶν, καὶ ἐσκλήρυναν τὸν τράχηλον αὐτῶν
27 ὑπὲρ τοὺς πατέρας αὐτῶν. Καὶ ἐρεῖς αὐ-
28 τοῖς (·) τοῦτον τὸν λόγον, Τοῦτο τὸ ἔθνος ὃ οὐκ
ἤκουσε τῆς φωνῆς κυρίου, οὐδὲ ἐδέξατο παι-
δείαν, ἐξέλιπεν ἡ πίστις ἐκ στόματος αὐ-
29 τῶν. Κεῖραι τὴν κεφαλήν σου, καὶ ἀπόρριπτε,
καὶ ἀνάλαβε ἐπὶ χειλέων θρῆνον, ὅτι ἀπεδο-
κίμασε (β) κύριος, καὶ ἀπώσατο τὴν γενεὰν
30 τὴν ποιοῦσαν ταῦτα. Ὅτι ἐποίησαν οἱ υἱοὶ
Ἰούδα (γ) τὸ πονηρὸν ἐναντίον ἐμοῦ, λέγει
κύριος· ἔταξαν τὰ βδελύγματα αὐτῶν ἐν
τῷ οἴκῳ, οὗ ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ'
31 αὐτὸν, τοῦ μιᾶναι αὐτόν. Καὶ ᾠκοδόμησαν
τὸν βωμὸν τοῦ Ταφὲθ, ὅς ἐστιν ἐν φάραγγι
υἱοῦ Ἐννὸμ, τοῦ κατακαίειν τοὺς υἱοὺς αὐτῶν,
καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῶν ἐν πυρὶ, ὃ οὐκ ἐνε-
τειλάμην αὐτοῖς, (δ) καὶ οὐ διενοήθην ἐν τῇ
32 καρδίᾳ μου. Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχον-
ται, λέγει κύριος, καὶ οὐκ ἐροῦσιν ἔτι, Βωμὸς
τοῦ Ταφὲθ καὶ φάραγξ υἱοῦ Ἐννὸμ, ἀλλ' Ἡ
φάραγξ τῶν ἀνῃρημένων· καὶ θάψουσιν (ε)
ἐν τῷ Ταφὲθ, διὰ τὸ μὴ ὑπάρχειν τόπον.
33 Καὶ ἔσονται οἱ νεκροὶ τοῦ λαοῦ τούτου (ζ) εἰς
βρῶσιν τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, καὶ τοῖς θη-
34 ρίοις τῆς γῆς, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἀποσοβῶν. Καὶ
καταλύσω ἐκ (η) πόλεων Ἰούδα καὶ ἐκ διόδων
Ἱερουσαλὴμ φωνὴν εὐφραινομένων, καὶ φωνὴν
χαιρόντων, φωνὴν νυμφίου, καὶ φωνὴν νύμ-
φης, ὅτι εἰς ἐρήμωσιν ἔσται πᾶσα ἡ γῆ.

MS.A. (·) τὸν λόγον τοῦτον (β) καὶ ἀπώσατο κύριος τὴν (γ) τὰ πονηρὰ
ἐνώπιον ἐμοῦ, (δ) οὐδὲ (ε) ἐν τῷ τάφῳ Ταφὲθ, (ζ) εἰς κατάβρωμα
τοῖς (η) πόλεως

ΚΕΦ. η'.

1 ἘΝ τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, λέγει κύριος,
ἐξοίσουσι τὰ ὀστᾶ τῶν βασιλέων Ἰούδα, καὶ
τὰ ὀστᾶ τῶν ἀρχόντων αὐτοῦ, καὶ τὰ ὀστᾶ τῶν
ἱερέων, καὶ τὰ ὀστᾶ (α) προφητῶν, καὶ τὰ
ὀστᾶ τῶν (β) κατοικούντων ἐν Ἱερουσα-
2 λὴμ ἐκ τῶν τάφων αὐτῶν, Καὶ ψύξου-
σιν αὐτὰ πρὸς τὸν ἥλιον καὶ τὴν σελή-
νην, καὶ πρὸς πάντας τοὺς ἀστέρας, καὶ
πρὸς πᾶσαν τὴν στρατιὰν τοῦ οὐρανοῦ, ἃ
ἠγάπησαν, καὶ οἷς ἐδούλευσαν, καὶ ὧν
ἐπορεύθησαν ὀπίσω αὐτῶν, καὶ ὧν ἀντ-
είχοντο, καὶ οἷς προσεκύνησαν αὐτοῖς. οὐ
κοπήσονται, καὶ οὐ ταφήσονται, καὶ ἔσον-
ται εἰς παράδειγμα ἐπὶ προσώπου τῆς
3 γῆς, Ὅτι (γ) εἵλοντο τὸν θάνατον ἢ
τὴν ζωὴν, καὶ πᾶσι τοῖς καταλοίποις τοῖς
καταλειφθεῖσιν ἀπὸ τῆς γενεᾶς ἐκείνης, ἐν
παντὶ τόπῳ (δ) οὗ ἐὰν ἐξώσω αὐτοὺς
4 ἐκεῖ. Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Μὴ ὁ
πίπτων οὐκ ἀνίσταται; ἢ ὁ ἀποστρέφων οὐκ
(ε) ἀναστρέφει;

MS.A. (α) τῶν προφητῶν αὐτῶν, (β) κατοικούντων Ἱερουσαλὴμ (γ)
λαντο τὸν θάνατον μᾶλλον ἢ (δ) ὧν ἐὰν (ε) ἐπιστρέψῃ;

Et non exaudierunt me, & non
attendit auris eorum: & indu-
raverunt cervicem ſuam ſuper
patres ipſorum. Et dices eis hunc
(e) ſermonem; Hæc eſt gens, quæ
non audivit vocem Domini, ne-
que accepit diſciplinam: defecit
fides ex ore eorum. Tonde ca-
tuum, & projice, & aſſume
per labia lamentationem: quia
reprobavit Dominus, & repulit
generationem facientem hæc.
Quia fecerunt filii Juda malum
coram me, dicit Dominus, po-
ſuerunt abominationes ſuas in do-
mo, ubi invocatum eſt nomen
meum ſuper eam, ad polluendum
eam: Et ædificaverunt aram
(f) Topheth, quæ eſt in valle fi-
lii Ennom, ad comburendum fi-
lios ſuos, & filias ſuas in igni
quod non mandavi eis, neque co-
gitavi in corde meo. Ideò ec-
ce dies veniunt, dicit Dominus,
& non dicent amplius, ara To-
pheth, & Vallis filii Ennom, ſed
Vallis interfectorum: & ſepe-
[illegible] in Topheth, eò quod non
locus. Et erunt mortui de po-
pulo hoc in eſcam volatilibus
li, & beſtiis terræ: & non erit
qui abigat. Et ceſſare faciam ex
civitatibus Juda, & de viis Hie-
ruſalem vocem lætantium, &
vocem gaudentium, vocem ſpon-
ſi, & vocem ſponſæ: quia in de-
ſolationem erit univerſa terra.

CAP. VIII.

IN tempore illo, dicit Domi-
nus, efferent oſſa regum Juda,
& oſſa principum ejus, & oſ-
ſa ſacerdotum, & oſſa prophe-
tarum, & oſſa habitantium in
Hieruſalem, de ſepulchris eo-
rum, Et (a) torrebunt ea ad
Solem, & Lunam, & ad omnia
ſydera, & ad omnem militiam
cæli, quæ dilexerunt, & quibus
ſervierunt, & poſt quæ ambula-
verunt poſt ea, & quibus adhæ-
ſerunt, & quæ adoraverunt ea.
Non plangentur, & non ſepeli-
entur: & erunt in exemplum ſu-
per faciem terræ. Quia elege-
runt mortem, quàm vitam, &
iam de omnibus reſiduis, qui
relicti fuerint de generatione il-
la, in omni loco, quocunque ex-
pulero eos illuc. Quia hæc di-
cit Dominus; Nunquid qui ca-
dit, non reſurgit? aut, qui a-
vertit ſe, non revertitur?

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

26 ולא קבילו למימרי ולא ארכינו ית אודניהון ואקשיאו ית קדלהון אבאישו מאבהתהון :
27 ותמלל עמהון ית כל פתגמיא האלין ולא יקבלון מנך ותתנבי להון ולא יתיבונך :
28 ותימר להון דין עמא די לא שמעו למימרא דיי אלההון ולא קבילו אולפן פסקת
29 הימנותא ואתמנעת מפומהון : תלישי על רברבך דיגלון וטולי על נגדין אליא ארי
30 רחיק יי ורטיש ית דרא דעברו על מימריה : ארי עבדו בני יהודה דביש קדמי אמר יי
31 שויאו שקוציהון בביתא דאתקרי שמי עלוהי לסאבותיה : ובנו במת תופת די בחילת
32 בר הנם לאוקדא ית בניהון וית בנתיהון בנורא דלא פקדית באוריתי ולא רעוא קדמי :
33 בכן הא יומיא אתן אמר יי ולא יתאמר עוד תופת וחילת בר הנם אלהן חילת קטיליא
34 ויקברון בתופת מבלי אתר : ותהי נבלתא דעמא הדין משגרא למיכל לעופא דשמיא
ולבעירא דארעא ולית דמניד : ואבטל מקרויא דבית יהודה ומשוקי ירושלם קל ביע
וקל חדוא קל חתנין וקל כלן ארי לחורבא תהי ארעא :

ח

1 בעדנא ההיא אמר יי יפקון ית גרמי מלכיא דבית יהודה וית גרמי רברביהון וית גרמי
2 כהניא וית גרמי נביי שקרא וית גרמי יתבי ירושלם מקבריהון : וישטחונון לקבל
שמשא וסיהרא ולכל חילי שמיא דרחמונון ודפלחונון ודטעו בתריהון ודתבעונון
3 ודסגידו להון לא יתכנשון ולא יתקברון לזיבל מבדר על אפי ארעא יהון : ויתרעון
במותא מדבחיא לכל שארא דישתארון מן זרעיתא בישתא הדא בכל אתריא
4 דישתארון דאגליתנון לתמן אמר יי צבאות : ותימר להון כדנן אמר יי היפלון ולא
יקומון אם למתב גלי קדמי דלא יתובון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et non obedierunt verbo meo, nec inclinaverunt aures ſuas; ſed induraverunt cervicem ſuam; pejus egerunt quàm patres eorum. Et loquêris cum eis omnia verba hæc, nec acquieſcent tibi: et prophetabis eis, & non reſpondebunt tibi. Et dices eis: Iſte eſt populus qui non audivit verbum Dñi Dei ſui, nec ſuſcepit diſciplinam: ceſſavit fides, & ablata eſt de ore eorum. Evelle capillos propter principes tuos qui captivi ducentur, & tolle propter duces lamentationem, quia projecit Dominus, & reliquit generationem qui tranſgreſſi ſunt verbũ ſuum. Quia fecerunt filii Juda quod malum eſt coram me, dicit Dñs: poſuerunt abominationes ſuas in domo in qua invocatum eſt nomen meum, ut contaminarent eam. Et conſtruxerunt excelſum Topheth, quod eſt in valle filii Hennom, ut incenderent filios ſuos & filias ſuas igni: quod non præcepi in Lege mea, nec talis voluntas eſt coram me. Propterea ecce dies veniunt, dicit Dñs, & non dicetur amplius, Topheth & vallis filii Hennom; ſed Vallis occiſorum: & ſepelient in Topheth, eò quòd non ſit locus. Et erit cadaver populi hujus projectum in cibum volucribus cœli & beſtiis terræ: & non erit qui amoveat. Et ceſſare faciã de civitatib⁹ dom⁹ Juda, & de vicis Jeruſalẽ vocẽ gaudii et vocẽ lætitiæ, vocem ſponſorũ & vocem ſponſarũ: quia in deſolationẽ erit terra.

CAP. VIII.

IN tempore illo, dicit Dñs, educent oſſa regũ dom⁹ Juda, & oſſa principum eorum, et oſſa ſacerdotũ, & oſſa falſorum prophetarũ, et oſſa habitatorum Jeruſalẽ de ſepulcris ſuis: Et expandent ea contra Solem & Lunam, et omnem militiam cœli, quæ dilexerunt, & quibus ſervierunt, & poſt quæ erraverunt, & quæ quæſierunt, & adoraverunt: non colligentur nec ſepelientur, in ſtercus diſperſum ſup faciem terræ erunt. Et eligetur mors magis quàm vita; omnibus reliquiis quæ remanſerint de cognatione hac peſſima; in omnibus locis in quibus remanſerint, ad quæ tranſmigrare eos feci, dicit Dominus exercituum. Et dices eis: Hæc dicit Dominus: Nunquid cadent & non reſurgent? aut de averſione notum eſt coram me ꝙ non convertẽtur

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܕܡܬ ܘܫܕܪܬ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ. ܘܠܐ ܐܪܟܢܘ ܐܕܢܝܗܘܢ ܠܘܬܝ. ܘܩܫܝܘ ܩܕܠܗܘܢ. ܝܬܝܪ ܡܢ 26
ܐܒܗܝܗܘܢ. * ܘܬܐܡܪ ܠܗܘܢ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ. ܘܠܐ ܢܫܡܥܘܢܟ. ܘܬܩܪܐ ܐܢܘܢ 27
ܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܥܢܘܢܟ. * ܐܒܕܬ ܗܝܡܢܘܬܐ. ܘܦܣܩܬ ܡܢ ܦܘܡܗܘܢ. * ܓܙܝ ܣܥܪܟܝ 28
ܘܫܕܝ. ܘܫܩܘܠܝ ܥܠ ܫܒܝܠܐ ܐܘܠܝܬܐ. ܕܪܓܙ ܡܪܝܐ. ܘܫܒܩܗ ܠܫܪܒܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. * ܡܛܠ 29
ܕܥܒܕܘ ܒܢܝ ܝܗܘܕܐ ܕܒܝܫ ܩܕܡܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܣܡܘ ܛܢܦܘܬܗܘܢ ܒܒܝܬܐ ܕܐܬܩܪܝ 30
ܫܡܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܛܢܦܘܗܝ. * ܘܒܢܘ ܒܡܘܬܐ ܕܬܘܦܬ ܕܒܢܚܠܐ ܕܒܪ ܗܢܘܡ. ܠܡܘܩܕܘ 31
ܒܢܝܗܘܢ ܘܒܢܬܗܘܢ ܒܢܘܪܐ. ܕܠܐ ܦܩܕܬ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܣܠܩܬ ܥܠ ܠܒܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ 32
ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܬܐܡܪ ܬܘܒ ܬܘܦܬ ܘܢܚܠܐ ܕܒܪ ܗܢܘܡ. ܐܠܐ ܢܚܠܐ ܕܩܛܝܠܐ.
ܘܢܩܒܪܘܢ ܒܬܘܦܬ ܡܢ ܕܠܝܬ ܐܬܪܐ. * ܘܢܗܘܘܢ ܫܠܕܝܗܘܢ ܕܥܡܐ ܗܢܐ. ܡܐܟܘܠܬܐ 33
ܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܠܝܬ ܡܦܨܐ. * ܘܐܒܛܠ ܡܢ ܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܡܢ 34
ܫܘܩܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܩܠܐ ܕܚܕܘܬܐ ܘܩܠܐ ܕܒܣܝܡܘܬܐ. ܩܠܐ ܕܚܬܢܐ ܘܩܠܐ ܕܟܠܬܐ. ܡܛܠ ܕܠܚܘܪܒܐ
ܬܗܘܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ.

* ܫܠܡ * ܙ *

* ܒܙܒܢܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܢܦܩܘܢ ܓܪܡܐ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܓܪܡܐ ܕܪܘܪܒܢܘܗܝ. 1
ܘܓܪܡܐ ܕܟܗܢܝܗܘܢ. ܘܓܪܡܐ ܕܢܒܝܝܗܘܢ. ܘܓܪܡܐ ܕܥܡܘܪܘܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ ܡܢ
ܩܒܪܝܗܘܢ. * ܘܢܫܛܚܘܢ ܐܢܘܢ ܠܫܡܫܐ ܘܠܣܗܪܐ ܘܠܟܠܗ ܚܝܠܐ ܕܫܡܝܐ. ܕܪܚܡܘ 2
ܐܢܘܢ. ܘܦܠܚܘ ܐܢܘܢ. ܘܐܙܠܘ ܒܬܪܗܘܢ. ܘܫܐܠܘ ܠܗܘܢ. ܘܣܓܕܘ ܠܗܘܢ. ܠܐ ܢܬܟܢܫܘܢ.
ܘܠܐ ܢܬܩܒܪܘܢ. ܐܠܐ ܐܝܟ ܙܒܠܐ ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ ܢܗܘܘܢ. * ܘܢܓܒܘܢ ܠܗܘܢ ܡܘܬܐ ܡܢ 3
ܚܝܐ. ܟܠ ܫܪܟܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܡܢ ܫܪܒܬܐ ܗܕܐ ܒܝܫܬܐ. ܒܟܠ ܐܬܪܐ ܕܒܕܪܬ ܐܢܘܢ
ܬܡܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܬܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܢܦܠܘܢ. ܘܠܐ 4
ܢܩܘܡܘܢ. ܘܐܢ ܢܬܘܒܘܢ. ܠܐ ܢܬܘܒܘܢ.

Prætervertebam, mittebámque; ſed non obtemperârunt, 26
neque præbuerunt aurem ſuam
mihi; imò obdurârunt cervicem ſuam multò
magis quàm patres eorum. Tu quoque dices 27
eis omnes ſermones iſtos, at non auſcultabunt
tibi; vocabis eos, & non reſpondebunt
tibi. Periit fides, & defecit ex ore eorum. 28
Tonde comam tuam, & abjice, & ſume ſecus 29
ſemitas lamentationem; quoniam iratus eſt
Dominus, & deſeruit generationem prævaricatricem.
Quia perpetrârunt filii Judæ 30
ſcelus coram me, dicit Dominus; poſuerunt
abominationem ſuam in æde ſuper quam invocatum
eſt nomen meum, & contaminaverunt
eam: Et ædificaverunt altaria in Topheth 31
quæ eſt in valle filii Hennom, ut filios
filiáſque ſuas igni comburerent; quod non
præceperam eis, neque in animum meum ſubierat:
Proptereà ecce dies venturi ſunt, dicit 32
Dominus, quum non dicetur ampliùs Topheth
& vallis filii Hennom, ſed vallis interfectorum:
& ſepelient in Topheth præ loci
penuria: Et erunt cadavera populi iſtius 33
eſcæ volatilibus cœli, & beſtiæ terræ, nemine
eripiente. Ita ceſſare faciam ex civitatibus 34
Judæ & ex plateis Jeroſolymæ, vocem exultationis,
& vocem lætitiæ, vocem ſponſi, &
vocem ſponſæ; quandoquidem in ſolitudinem
redigenda eſt tota terra.

CAP. VIII.

Tunc temporis, ait Dominus, extrahentes 1
oſſa regum Judæ, & oſſa principum eorum,
oſſa ſacerdotum, & oſſa prophetarum eorum,
oſſa denique civium Jeruſalem, è ſepulchris
ipſorum; Expandent ea ſoli & lunæ, totíque 2
militiæ cœleſti, quæ dilexerũt, coluerunt,
ſectati ſunt, conſuluerunt, & adoraverunt:
non colligentur, neque ſepelientur, ſed ut fimus
erunt in ſuperficie terræ: Eligéntque 3
ſibi mortem potiùs quàm vitam reſidui omnes
qui ſupererunt ex hac familia peſſima cunctis
in locis in quæ diſperſi eos, ait Dominus potentiſſimus.
Prætereà dices eis, Sic ait Dominus; 4
Cadent, & non reſurgent; & licèt
pœniteat eos, non *tamen* pœnitet illos.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولم يسمعوا لي ولا تصدوا باذانهم * وصعبوا رقابهم اكثر من ابايهم * * ويقول لهم هذا 26 27
القول * هذه الامة التي لم تسمع صوت الرب ولم تقبل ادبا * فني الايمان من فمهم * جزي راسك 28 29
واطرحي وخذي على شفتيك نوحا * لان الرب نبذ واقصى الجيل الذي يصنع هذه * لان 30
بني يهودا صنعوا الشر امامي يقول الرب * ونصبوا رذالهم في البيت حيث دعي اسمي عليه
لينجسوه * وبنوا هيكل طافات الذي هو في وادي بن انوم ليحرقوا بنيهم وبناتهم بالنار هذا 31
الذي لم امرهم به ولم افتكر فيه بقلبي * لاجل هذا تاتي ايام يقول الرب * فلا تقولون اين 32
هيكل طافات ووادي بن انوم لكن وادي المقتولين * ويدفنوهم في قبر طافات من اجل
انه لا يكون لهم موضع * ويكون اموات هذا الشعب طعاما لجميع طيور السماء ووحوش 33
الارض * ولا يكون منقذ * وابطل من مدينة يهودا ومن مسالك ايروسليم صوت المسرورين 34
وصوت الفرحين * صوت العريس وصوت العروس * لان كل الارض تكون للخراب *

* الفصل الثامن *

* في ذلك الزمان يقول الرب يخرجون عظام ملوك يهودا * وعظام روسايه * وعظام الكهنة * وعظام 1
انبيايهم * وعظام سكان ايروسليم من قبورهم * ويبسطوها للشمس والقمر * ولجميع 2
الكواكب * ولجميع اجناد السماء هذه التي احبوها * وتعبدوا لها وساروا خلفها
وتمسكوا بها وسجدوا لها * لا يجمعوهم ولا يدفنوهم * ويصير شهرة على وجه الارض * لانهم
اختاروا الموت بالحري اكثر من الحياة * وجميع البقية التي تبقى من هذا الجيل 3
في كل الموضع الذي اقصيهم اذن هناك * ان هكذا يقول الرب * هل الساقط 4
لا يقوم * والمنصرف لا يعود *

Tamen non acquieverunt mihi, nec au- 26
*res ſuas admoverunt: imò obduraverunt
cervicem ſuam pluſquam majores
ſui. 27 & 28 Dices etiam eis hunc
ſermonem; Hæc eſt gens quæ non acquievit
voci Domini, nec eruditionem
ſuſcepit; defecit fides ex ore eorum.
Tonde caput tuum, & proſterne te, &* 29
*ſume ſuper labia tua lamentationem;
quia Dominus abjecit repulitque generationem
talia perpetrantem. Quia filii* 30
*Judæ malum operati ſunt coram me
dicit Dominus; diſpoſuerunt abominationem
ſuam in domo ſuper quam invocatum
eſt nomen meum, ut polluerent
eam; Et ædificaverunt templum Ta-* 31
*phathis, quod eſt in valle filii Ennomis,
ut filios filiaſque ſuas igne comburerent;
rem* ſanè *quam neque præceperam eis,
neque mente cogitaveram: Idcirco dies* 32
*venient, ait Dominus, quibus non dicetis,
Ubi eſt templum Taphathis, &
vallis filii Ennomis, ſed vallis occiſorum?
& ſepelient eos in ſepultura Taphathis,
eò quòd nullus ſuperſit eis locus.
Eruntque mortui iſtius populi, eſca* 33
*cunctis volucribus cœli & beſtiis terræ;
nec erit qui redimat: Et abolebo* 34
*ex urbe Judæ & ex vicis Jeroſolymorum
vocem exultantium & vocem gaudentium,
vocem ſponſi & vocem ſponſæ;
quia tota terra vaſtabitur.*

CAP. VIII.

Tempore illo, dicit Dominus, extrahent 1
*oſſa regum Judæ, & oſſa principum ejus,
oſſa ſacerdotum, oſſa prophetarum eorum,
& oſſa civium Jeroſolymæ, è ſepulchris
eorũ; Et exponent ea ſoli & lunæ, omni-* 2
*buſq; ſyderibus, et cunctis cœli exercitibꝰ,
quos amaverunt, quibus ſervierunt,
quos ſectati ſunt, quibus adhæſerunt,
quoſque adoraverunt. Non colligent,
neque ſepelient eos, ſed erunt ſpectaculo
ſuper faciem terræ; Eò quòd elege-* 3
*rint mortem potiùs quàm vitam. Ad
omnes autem reſiduos qui ſuperſunt
ex hac generatione quocunque in loco
ad quem depulero eos, ſic dicit Dominus;
Num qui cadit, non reſurgit? an qui diſ-* 4
cedit, non revertitur?

ירמיה : ח

? *pertinaci aversione* Jerusalaim iste populus est *refractarius* Quare
מדוע שובבה העם הזה ירושלם משבה נצחת 5
,audivi & , Attendi .reverti renuerunt ,dolum *in* Apprehenderunt
החזיקו בתרמית מאנו לשוב : הקשבתי ואשמע 6
: dicendo , *suo malo super pœnituit vir* non ,loquentur rectum non
לוא־כן ידברו אין איש נחם על־רעתו לאמר
equus tanquam ,suum cursum in est conversus ipse Omnis ? feci Quid
מה עשיתי כלה שב במרצותם כסוס
;*sua (statuta) tempora* cognovit cœlo in ciconia Etiam .prælium in *exundans*
שוטף במלחמה : גם חסידה בשמים ידעה מועדיה 7
: sui adventus tempus custodierunt hirundo & ,grus & ,turtur &
ותור וסוס ועגור שמרו את־עת באנה
: *dicetis* Quomodo .Domini judicium *noverunt* non meus populus &
ועמי לא ידעו את משפט יהוה : איכה תאמרו 8
ecce Verè ? nobiscum Domini lex & ,*nos* Sapientes
חכמים אנחנו ותורת יהוה אתנו אכן הנה
, sapientes sunt affecti Pudore .scribæ *falsitas* ,stylus fecit *vanum in*
לשקר עשה עט שקר ספרים : הבשו חכמים 9
,reprobaverunt Domini *verbo in ecce* : sunt capti & ,sunt *consternati*
חתו וילכדו הנה בדבר־יהוה מאסו
eorum uxores dabo Propterea ? eis quid sapientia &
וחכמת מה להם : לכן אתן את־נשיהם 10
magnum ad usque & parvo à quia ,hæredibus eorum agros , aliis
לאחרים שדותיהם ליורשים כי מקטן ועד־גדול
sacerdotem ad usque & propheta à : *cupiditatem concupiscens ipse totus*
כלה בצע בצע מנביא ועד־כהן
mei populi filiæ contritionem *curabant* Et .mendacium *faciens ipse totus*
כלה עשה שקר : וירפו את־שבר בת־עמי 11
.pax non & , pax Pax : dicendo , *levi super*
על־נקלה לאמר שלום ׀ שלום ואין שלום :
pudendo Etiam ? fecerunt abominationem quoniam ,sunt affecti Pudore
הבישו כי תועבה עשו גם־בוש 12
cadent Idcirco .nescierunt erubescere & , sunt affecti pudore non
לא־יבושו והכלם לא ידעו לכן יפלו
.Dominus dixit , *corruent* suæ visitationis tempore in , *cadentes in*
בנפלים בעת פקדתם יכשלו אמר יהוה :
nec , vite in uvæ non ,Dominus dixit , eos *colligam Colligendo*
אסף אסיפם נאם־יהוה אין ענבים בגפן ואין 13
.eis *transibunt* , eis dedi & ,*defluxit* folium & , ficu in ficus
תאנים בתאנה והעלה נבל ואתן להם יעברום :
civitates in ingrediamur & ,vos *Colligite* ? *sedentes nos* quid Propter
על־מה אנחנו ישבים האספו ונבוא אל־ערי 14
,nos fecit *silere* noster Deus Dominus quia , ibi *silebimus* & ,*munitionis*
המבצר ונדמה־שם כי יהוה אלהינו הדמנו
.Domino peccavimus nam : fellis aquam nobis dedit potum &
וישקנו מי־ראש כי חטאנו ליהוה :
.terror ecce & ,medelæ tempus *ad* : bonum non & ,pacem *ad* Expectare
קוה לשלום ואין טוב לעת מרפה והנה בעתה : 15
hinnituum *voce* à , ejus equorum fremitus est auditus Dan A
מדן נשמע נחרת סוסיו מקול מצהלות 16
,terram devoraverunt & ,venerunt & : terra omnis tremuit ,ejus fortiũ
אביריו רעשה כל־הארץ ויבואו ויאכלו ארץ
ego ecce Quia .ea in habitantes & ; urbem ? ejus plenitudinem &
ומלואה עיר וישבי בה : כי הנני 17
: incantatio *eis* non quibus , regulos serpentes vos in *mittens*
משלח בכם נחשים צפענים אשר אין־להם לחש
,*mœrorem* super *mea Confortatio* .Dominus ait , vos mordebunt &
ונשכו אתכם נאם־יהוה : מבליגיתי עלי־יגון 18
.*mœrens* meum cor me in
עלי לבי דוי :

Versio VULG. LAT.

5 Quarè ergò aversus est populus iste in Jerusalem aversione contentiosâ ? Apprehenderunt mendacium, & noluerunt reverti. 6 Attendi, & auscultavi : nemo quod bonum est loquitur, nullus est qui agat pœnitentiam super peccato suo, dicens; Quid feci ? omnes conversi sunt ad cursum suum, quasi equus impetu vadens 7 ad prælium. Milvus in cœlo cognovit tempus suum : turtur, & hirundo, & ciconia, custodierunt tempus adventûs sui : populus autem meus non cognovit judicium Domini. 8 Quomodò dicitis; Sapientes nos sumus, & lex Domini nobiscum est ? verè mendacium operatus est stylus mendax scribarum. 9 Confusi sunt sapientes, perterriti & capti sunt : verbum enim Domini projecerunt, & sapientia nulla est in eis. 10 Propterea dabo mulieres eorum exteris, agros eorum hæredibus : quia à minimo usque ad maximum omnes avaritiam sequuntur : à propheta usque ad sacerdotem cuncti faciunt mendacium. 11 Et sanabant contritionem filiæ populi mei ad ignominiam, dicentes; Pax, pax : cùm non esset pax. 12 Confusi sunt, quia abominationem fecerunt : quinimò confusione non sunt confusi, & erubescere nescierunt : idcircò cadent inter corruentes, in tempore visitationis suæ corruent, dicit Dominus. 13 Congregans congregabo eos, ait Dominus ; non est uva in vitibus, & non sunt ficus in ficulnea, folium defluxit: & dedi eis quæ prætergressa sunt. 14 Quarè sedemus ? convenite, & ingrediamur civitatem munitam, & sileamus ibi : quia Dominus Deus noster silere nos fecit, & potum dedit nobis aquam fellis : peccavimus enim Domino. 15 Expectavimus pacem, & non erat bonum ; tempus medelæ, & ecce formido. 16 A Dan auditus est fremitus equorum ejus, à voce hinnituum pugnatorum ejus, commota est omnis terra : & venerunt, et devoraverunt terram, & plenitudinem ejus ; urbem et habitatores ejus. 17 Quia ecce ego mittam vobis serpentes regulos, quibus non est incantatio : & mordebunt vos, ait Dominus. 18 Dolor meus super dolorem, in me cor meum mœrens.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 Διατί ἀπέστρεψεν (ζ) ὁ λαός μου οὗτος ἀποστροφὴν ἀναιδῆ, καὶ κατεκρατήθησαν (η) ἐν τῇ προαιρέσει αὐτῶν, καὶ οὐκ (θ) ἠθέλησαν τοῦ ἐπιστρέψαι; 6 Ἐνωτίσασθε δὴ, καὶ ἀκούσατε. οὐχ (ι) οὕτω λαλήσουσιν, Οὐκ ἔστιν (κ) ἄνθρωπος ὁ μετανοῶν ἀπὸ τῆς κακίας αὐτοῦ, λέγων, Τί ἐποίησα; διέλιπεν ὁ τρέχων (λ) ἀπὸ τοῦ δρόμου αὐτοῦ, ὡς ἵππος κάθιδρος ἐν χρεμετισμῷ αὐτοῦ. 7 Καὶ ἡ ἀσίδα ἐν τῷ οὐρανῷ ἔγνω τὸν καιρὸν αὐτῆς, τρυγὼν καὶ χελιδὼν ἀγροῦ, στρουθία ἐφύλαξαν καιροὺς (μ) εἰσόδων ἑαυτῶν, ὁ δὲ λαός (ν) μου 8 οὗτος οὐκ ἔγνω τὰ κρίματα κυρίου. Πῶς ἐρεῖτε, Ὅτι σοφοί ἐσμεν ἡμεῖς, καὶ νόμος κυρίου μεθ' ἡμῶν ἐστιν, εἰς μάτην ἐγενήθη 9 σχοῖνος ψευδὴς γραμματεῦσιν. Ἠσχύνθησαν σοφοὶ, καὶ ἐπτοήθησαν καὶ ἑάλωσαν, ὅτι τὸν (ξ) νόμον κυρίου ἀπεδοκίμασαν. σο-10 φία τίς ἐστιν ἐν αὐτοῖς; Διατοῦτο δώσω τὰς γυναῖκας αὐτῶν ἑτέροις, καὶ τοὺς ἀγροὺς αὐτῶν τοῖς κληρονόμοις, καὶ συνάξουσι τὰ 13 (ο) γεννήματα αὐτῶν, λέγει κύριος. Οὐκ ἔστι σταφυλὴ ἐν ταῖς ἀμπέλοις, καὶ οὐκ ἔστι σῦκα ἐν ταῖς συκαῖς, καὶ τὰ φύλλα κατερ-14 ρύηκεν. Ἐπὶ τί ἡμεῖς καθήμεθα; συνάχθητε, καὶ εἰσέλθωμεν εἰς τὰς πόλεις τὰς ὀχυρὰς, καὶ (π) ἀπορριφῶμεν ἐκεῖ, ὅτι ὁ θεὸς ἀπέρριψεν ἡμᾶς, καὶ ἐπότισεν ἡμᾶς ὕδωρ χολῆς, ὅτι ἡμάρτομεν ἐναντίον 15 αὐτοῦ. Συνήχθημεν εἰς εἰρήνην, καὶ οὐκ ἦν ἀγαθὰ, εἰς καιρὸν ἰάσεως, καὶ ἰδοὺ 16 σπουδή. Ἐκ Δὰν (ρ) ἀκουσόμεθα φωνὴν ὀξύτητος ἵππων αὐτοῦ· ἀπὸ φωνῆς χρεμετισμοῦ ἱππασίας ἵππων αὐτοῦ ἐσείσθη (σ) πᾶσα ἡ γῆ, καὶ ἥξει καὶ καταφάγεται τὴν γῆν, καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς, 17 πόλιν καὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ. Διότι ἰδοὺ ἐγὼ ἐξαποστέλλω (τ) εἰς ὑμᾶς ὄφεις θανατοῦντας, οἷς οὐκ ἔστιν (υ) ἐπᾶ-18 σαι, καὶ δήξονται ὑμᾶς Ἀνίατα μετ' ὀδύνης καρδίας ὑμῶν ἀπορουμένης.

Quarè aversus est populus meus hic aversione impudenti, & confirmati sunt in electione sua, & noluerunt reverti? Auribus percipite nunc, & audite. Nonne sic loquentur, Non est homo, qui pœnitentiam agat à peccato suo, dicens; Quid feci? (b) Defecit currens à cursu suo, quasi equus defessus in hinnitu suo. Et (c) asida in cœlo cognovit tempus suum: turtur, & hirundo agri, passeres custodierunt tempora ingressuum suorum: populus autem meus hic non cognovit judicia Domini. Quomodo dicetis; Quia sapientes sumus nos, & lex Domini nobiscum est? Frustrà factus est (d) juncus mendax scribis. Confusi sunt sapientes, & perterriti, & capti sunt: quia legem Domini reprobaverunt. Sapientia quæ est in eis? Propterea dabo uxores eorum aliis, & agros eorum (e) hæredibus, Et colligent genimina eorum, dicit Dominus. Non est uva in vitibus: & non sunt ficus in ficis, & folia defluxerunt. Quarè nos sedemus? Convenite, & ingrediamur in civitates munitas, & projiciamur ibi: quoniam Deus projecit nos, & potum dedit nobis aquam fellis: quia peccavimus coram eo. Congregati sumus ad pacem, & non fuerunt bona; ad tempus medelæ, & ecce trepidatio. E Dan audiemus vocem fremitûs equorum ejus: à voce hinnitûs equitatûs equorum ejus commota est omnis terra: & veniet, & devorabit terram, & plenitudinem ejus; urbem, & habitantes in ea. Quia ecce ego mitto in vos serpentes mortiferos, quibus non est incantatio: & mordebunt vos Insanabiliter cum dolore cordis vestri deficientis.

MS.A. (ζ) ὁ λαὸς οὗτος (η) τῇ προαιρέσει (θ) ἠθέλησαν ἐπιστρέψαι; (ι) οὕτως λαλοῦσιν, (κ) ἄνθρωπος μετανοῶν (λ) ἐκ τοῦ (μ) εἰσόδου αὐτῶν, (ν) μου οὐκ (ξ) λόγον (ο) γεννήματα (π) ἀπορριφῶμεν, ὅτι ὁ θεὸς (ρ) ἀκούσομαι (σ) ἀπ' αὐτοῦ πᾶσα (τ) ἐφ' ὑμᾶς (υ) ἐπᾶσαι,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

מה דין מתחסנין למתב לפולחני עמא הדין יתבי ירושלם תבו למרד מן אוריתא ולא 5
צבן למתב אתקיפו בנכלין מסרבין למתב : אציתת וגלי קדמי לא כדכשר ממללין לית 6
גבר דתתיב מן בישתיה למימר מה עבדית כולהון מסגן ברעות נפשהון כסוסיא דנגר
בקרבא : אף חוריתא בשמיא ידעא זמנהא ושפנינא וכורכיא וסנוניתא נטרין ית עדן 7
מעלהון ועמי לא הוו ידעין למעבד ית קימא דיי : איכדין תימרון חכימין אנחנא ועל 8
אוריתא דיי אנחנא רחיצין בכן הא לשקרא עבד ספר קולמס דשקר לזיפא : בהיתו 9
חכימיא אתברו ואתאחידו הא בפתגמא דיי קצו וחולק בחוכמתא לית להון : בכן אתן 10
ית נשיהון לאוחרנין חקלתהון לירותין ארי מן זעירא ועד רבא כולהון אנסי ממון
מספר ועד כהן כולהון עבדי שקר : ואסיאו ית תבר כנשתא דעמי במלי שקריהון 11
למימר שלמא שלמא ולית שלם : עליהון למבהת ארי תועבה עבדו אף מבהת לית 12
אנון בהתין ואתכנעו לית אנון ידעין בכן יתרמון קטילין בעדן דאסער עליהון חוביהון
יתקלון אמר יי : שצאה אשצנון אמר יי ויסופון כמסף ענבין מגפן וכנבלא מתינא 13
וכטרף מאילן על דיהבית להון אוריתי מסיני ועברו עלה : על מה אנחנא יתבין 14
אתכנשו ונעול לקרוין כריכן ונשתוק תמן ארי יי אלהנא איתי עלנא תבר ואבהתנא
ואשקנא כס דלוט ביש כרישי חיון ארי חבנא קדם יי : סברנא לשלם ולית טב ולעדן 15
סליחות חובין והא פורענות חטאין : על די פלחו לעגלא דבדן מלך במשריתיה יסק 16
עליהון ויגלי יתהון מקל פסיעות גברוהי יזועון כל יתבי ארעא וייתון ויבזון ארעא
ומלואה קרויא ודיתבין בהון : ארי הא אנא מגרי בכון עממין קטולין כחיון חורמנין 17
דלית להון לחשא ויקטלון יתכון אמר יי : על דהוו מלעיגין לקבל נבייא דמתנבן להון 18
דונא ותנחתא איתי עליהון מן קדם חוביהון עליהון אמר נביא לבי דוי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quare obfirmant se populꝰ iste, habitatores Jerusalẽ, ut non convertantur ad cultũ meum ? sed aversi sunt ut recedant à Lege, & noluerunt redire sed apprehenderunt dolos, renuentes converti. Auscultavi & manifestum est corã me, quia non rectè loquuntur : non est vir qui convertatur à malitia sua, dicens: Quid feci? omnes multiplicant voluntatẽ animæ suæ, sicut equꝰ qui confligit. Etiã ciconia in cœlo novit tempꝰ suũ, & turtur, & grus, & hirundo custodierunt tempꝰ adventꝰ sui: populꝰ autẽ meꝰ nescierunt facere *statutum* Dñi. Quomodo dicitis : Sapientes sumꝰ, & in Lege Dñi nos confidimꝰ? Ecce igitur frustrà fecit scriba calamũ mendacii ad falsandam scripturã. Confusi sunt sapientes, contriti sunt & apprehensi sunt: ecce Verbũ Dñi detestati sunt, & nulla pars est eis in sapientia. Propterea dabo uxores eorũ aliis, & agros eorũ hæredibꝰ : quia à minimo usq; ad maximũ omnes violenter accipiunt pecunias ; & à scriba usq; ad sacerdotem omnes faciunt mendaciũ. Et sanabant contritionẽ cœtꝰ populi mei verbis mendacibꝰ suis, dicentes, Pax pax, & non erat pax. Confundi debuerant, quia abominationẽ fecerunt; tamen confusione non sunt confusi, & erubescere nescierunt: idcircò projicientur occisi; in tempore quo visitavero super eos peccata sua, corruent, dicit Dñs. Perdendo perdã eos, dicit Dñs & deficient sicut deficiunt uvæ de vite , & sicut ficus defluens de ficulnea, & sicut foliũ ab arbore: eo ꝙ dedi eis Legẽ meã ex Synai, & transgressi sunt eam. Quare nos sedemꝰ ? congregamini & ingrediamur civitates munitas, & sileamꝰ ibi : quia Dñs Deus noster adduxit super nos contritionẽ & pudefecit nos ; & potavit nos calice maledictionis pessimæ, tanquam capitibus serpentũ ; quia peccavimꝰ coram Dño. Expectavimꝰ pacem, & non erat bonũ ; tempus propitiationis peccatorum, & ecce vindicta delictorum. Pro eo quod coluerunt vitulũ qui est in Dan: rex cum exercitu suo ascendet super eos, & transmigrare eos faciet : à voce conculcationis fortiũ eorũ commovebuntur oẽs habitatores terræ : venient & deprædabuntur terrã & plenitudinẽ ejꝰ, civitates et habitantes in eis. Quoniã ecce ego excito in vos populos occidentes sicut serpentes regulos, quibꝰ non est incantatio; & occident vos, dicit Dñs. Pro eo ꝙ subsannaverunt contra Prophetas qui prophetabant eis , adducam eis dolorem & gemitum propter peccata eorum: super eos, dicit Propheta, cor meum dolet.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܡܢܐ ܗܦܟ ܥܡܐ ܗܢܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܗܦܟܬܐ ܚܨܝܦܬܐ. ܐܬܚܝܕܘ ܒܢܟܠܐ. ܘܠܐ ܨܒܘ 5
ܠܡܬܦܢܝܘ. * ܨܘܬܬ ܘܫܡܥܬ. ܘܠܐ ܗܘܐ ܬܪܝܨܐܝܬ ܡܡܠܠܝܢ. ܠܝܬ ܓܒܪ ܕܬܘܐ ܠܗ ܥܠ ܒܝܫܬܗ. 6
ܘܐܡܪ: ܡܢܐ ܥܒܕܬ. ܟܠܗܘܢ ܡܗܠܟܝܢ ܒܪܓܬܗܘܢ. ܐܝܟ ܣܘܣܝܐ ܕܡܕܒܪ ܠܩܪܒܐ. * ܐܦ 7
ܚܘܪܕܐ ܒܫܡܝܐ. ܝܕܥܐ ܙܒܢܗ. ܘܫܘܦܢܝܢܐ ܘܟܘܪܟܝܐ ܘܣܢܘܢܝܬܐ: ܢܛܪܝܢ ܙܒܢܐ
ܕܡܥܠܢܗܘܢ. ܘܥܡܝ ܠܐ ܝܕܥ ܕܝܢܗ ܕܡܪܝܐ. * ܐܝܟܢܐ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܚܟܝܡܐ ܚܢܢ. 8
ܘܢܡܘܣܗ ܕܡܪܝܐ ܥܡܢ. ܫܪܝܪܐܝܬ ܠܕܓܠܘܬܐ ܥܒܝܕ ܩܢܝܐ ܕܓܠܐ ܠܣܦܪܐ. * ܒܗܬܘ 9
ܚܟܝܡܐ. ܐܬܬܒܪܘ ܘܐܬܬܚܕܘ. ܡܛܠ ܕܒܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܣܠܝܘ. ܘܚܟܡܬܐ ܠܐ ܗܘܬ ܒܗܘܢ.
* ܡܛܠܗܢܐ ܐܬܠ ܢܫܝܗܘܢ ܠܢܘܟܪܝܐ. ܘܚܩܠܬܗܘܢ ܠܝܪܬܐ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܙܥܘܪܗܘܢ ܘܥܕܡܐ ܠܪܒܗܘܢ 10
ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܢ ܢܟܠܐ. ܘܡܢ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܘܥܕܡܐ ܠܟܗܢܐ.
ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܢ ܫܘܩܪܐ. * ܘܠܬܒܪܐ ܕܒܪܬ ܥܡܝ ܡܒܣܪܝܢ. ܘܐܡܪܝܢ. 11
ܫܠܡܐ ܫܠܡܐ. ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ. * ܒܗܬܘ ܕܛܢܦܘܬܐ ܥܒܕܘ. ܐܦܠܐ ܒܗܬܬܐ ܒܗܬܘ. 12
ܘܠܡܬܟܒܫܘ ܠܐ ܝܕܥܘ. ܡܛܠܗܢܐ ܢܦܠܘܢ ܒܝܬ ܢܦܠܐ. ܘܒܙܒܢܐ ܕܡܬܦܩܕܝܢ
ܢܬܚܪܒܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܚܪܒܘ ܐܚܪܒ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܠܝܬ ܥܢܒܐ ܒܓܦܬܐ. ܘܠܝܬ 13
ܬܐܢܐ ܒܬܐܢܬܐ. ܘܐܦ ܛܪܦܐ ܢܬܪܘ. ܘܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܘܥܒܪܘ ܡܢܗܘܢ. * ܘܐܡܪܝܢ ܠܡܢܐ ܚܢܢ ܝܬܒܝܢ. 14
ܐܬܟܢܫܘ ܘܢܥܘܠ ܠܩܘܪܝܐ ܚܣܝܢܬܐ. ܘܢܫܬܘܩ ܬܡܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܫܬܩܢ.
ܘܐܫܩܝܢ ܡܝܐ ܡܪܝܪܐ. ܡܛܠ ܕܚܛܝܢ ܠܡܪܝܐ. * ܣܟܝܢ ܠܫܠܡܐ. ܘܠܝܬ ܛܒܬܐ. ܘܠܙܒܢܐ 15
ܕܐܣܝܘܬܐ. ܘܗܐ ܫܓܘܫܝܐ. * ܡܢ ܕܢ ܐܫܬܡܥܬ ܢܚܝܪܬܐ ܕܣܘܣܘܬܗ. ܡܢ ܩܠܐ ܕܡܡܠܠܐ 16
ܕܓܢܒܪܘܗܝ. ܙܥܬ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܐܬܘ ܘܐܟܠܘ ܐܪܥܐ ܘܡܠܝܗ. ܩܪܝܬܐ ܘܥܡܘܪܝܗ. * ܡܛܠ 17
ܕܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܒܟܘܢ ܚܘܘܬܐ ܪܘܪܒܬܐ ܕܠܐ ܡܬܠܚܫܢ ܒܠܘܚܫܐ. ܘܢܢܟܬܢܟܘܢ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܫܠܡܬ ܒܟܪܝܘܬܝ. ܘܟܪܝܐ ܠܒܝ ܥܠܝ. 18

Quarè averſus eſt populus iſte Jeroſolymitanus 5
averſione impudenti, perſeverant in dolo,
nec volunt converti ? Attendi & audivi, 6
& nequaquam rectè loquuntur : nemo eſt
enim quem pœniteat malitiæ ſuæ, dicátque ;
Quid egi ? omnes incedunt in appetitu proprio
velut equus abducens *equitem* in prælio.
Equidé ciconia in cœlo novit tempus ſuum, 7
& turtur, grus, atque hirundo, obſervant
tempus introitûs ſui; populus verò meus ignorant
judicium Domini. Quomodo dicitis ; 8
Sapientes ſumus, & lex Domini penes nos eſt?
Verè ad fallendum inſervit perito calamus
mendax. Pudefacti ſunt ſapientes, fracti, captíque; 9
eò quòd ſermoné Domini ſpreverint,
neque ſapientia ſit in eis. Propterea tradam 10
uxores eorum alienis, & agros eorum in direptionem;
quia tam minimus quàm maximus
inter eos, omnes doloſè agunt ; & falſi prophetæ
æquè ac ſacerdotes, omnes falſitati ſtudent;
Et fractionem filiæ populi mei nugis 11
curant, dicentes ; Pax, pax ; cùm non ſit pax.
Pudefactíne ſunt quòd abominationem perpetrârint? 12
imò pudendos iſtos non pudet, ſeſéque
compeſcere minimè nôrunt: iccircò inter
occumbentes corruent, & quo tempore viſitabuntur,
deſtruentur, ait Dominus; planè conſumam
eos, ait Dominus. Non ſunt uvæ in 13
viti, neque fic⁹ extant in ficu, quin etiam folia
defluxerunt: dederam quidem illis, at præterierunt
ab ipſis. Dicéntque, Quorſum deſidemus? 14
Congregamini, & ingrediamur civitates
munitas; ibíque conticeamus, (i. *intereamus*)
quandoquidem Dominus Deus noſter
ſilere (*perire*) nos fecit, & bibendas dedit
nobis aquas amaras, quia peccavimus in Deū.
Expectavimus pacem, & nihil boni *contigit*; 15
temp⁹ curationis, & contigit nobis infœlicitas.
E Dane auditus eſt hinnitus equorum ejus, 16
à voce locutionis gigantum ejus contremuit
univerſa terra : venientes, terram devorârunt
et quicquid in ea continetur, civitatem
& habitatores ejus. Nam ecce immittam in 17
vos ſerpentes immanes incantationum incapaces,
mordebúntque vos, ait Dominus.
Conſumptus ſum mœrore meo, & angit me 18
cor meum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لاجل ماذا هذا الشعب انصرف انصرافا وقحا * وتمسكوا ببدعهم * ولم يريدوا ان يرجعوا 5
* انصتوا الآن واسمعوا * ليس هكذا يتكلمون * ليس انسان يتوب من شره قايلا ما الذي 6
صنعت * الذي يجري انكف عن جريه مثل حصان عرقان من صهيله * والعقعق في السماء 7
عرفت وقتها * اليمامة وسنونوه الحقل والعصافير حفظوا اوقات دخولهم * وشعبي لم يعرف
احكام الرب * الاصحاح السادس * كيف تقولون انا نحن حكماء 8
وناموس الرب هو معنا * صار التقويم الكاذب للكتبة باطلا * خزيوا الحكماء وخدعوا واخذلوا 9
لانهم نبذوا كلمة الرب * اين هي الحكمة التي فيهم * لاجل هذا اعطي نساهم لآخرين وحقولهم 10
للوارثين * ويجمعون غلاتهم يقول الرب * [MS.Ox. لان من صغيرهم والي كبيرهم مكروا مكرا
ومن انبياهم الكذبة والي كهنتهم جميعهم يرتكبون البلا والزور * ويشبهون انكسار شعبي
بالمزح * ويقولوا سلام سلام * وليس سلام * خزوا لانفسهم لانهم عملوا النجاسة * ولا يخزون من 11 12
الخزي * والكفاف لا يعرفوا * من اجل ذلك يسقطوا مع الصرعا * وفي الوقت الذي ينزلهم
ينكبون يقول الرب * اهلكهم هلاكا يقول الرب] * ليس عنب موجودا في الكرمات * ولا تين 13
موجود في شجر تين * والاوراق تساقطت * لماذا نحن جلوس * اجتمعوا فندخل في المدن 14
الحصينة ونطرح * لان الله طرحنا واسقانا ماء مرار لانا اخطانا امامه * اجتمعنا للسلامة فلم 15
تكن الصالحات في وقت الشفا * وها الصرعة من دان * اسمع صوت حث خيوله من صوت 16
صهيل فروسية خيله * تزلزلت منه كل الارض * ويأتي ويأكل الارض بكمالها * المدينة والسكان
فيها * من اجل اني ها انا ارسل عليكم حيات مميتة التي ليس يمكن ان ترقى * ويلدغونكم 17
وليس لكم شفا * ويحير قلبكم بالوجع . 18

Qua de cauſa populus iſte averſus eſt 5
averſione pervicaci, & adhæſerunt hæreſi
ſuæ, nec reverti volunt ? Attendite 6
jam, & audite quòd *non ita loquuntur :*
nemo eſt quem pœniteat ſceleris ſui dicens,
Quid feci ? qui currebat, deſtitit à
ſuo curſu velut equus proprio hinnitu
ſudabundus. Vel grus in cœlo cognoſcit 7
tempus ſuum ; turtur, hirundo campeſtris,
& aves, obſervant ſtata ingreſſûs ſui tempora;
populus verò meus ignorat judicia
Domini.

Textus ſextus.

Quo pacto dicitis, Nos quidem ſapientes 8
ſumus, & lex Domini apud nos eſt ?
directio falſa ſcribis fruſtranea facta eſt,
Pudefacti ſunt ſapientes, decepti, & ope 9
deſtituti ; quia rejecerunt verbum Domini:
ubinam eſt ſapientia illis indita ?
Icciгco daturus ſum uxores eorum aliis, 10
& agros eorum poſſidentibus, qui *& proventus*
eorum colligent, dicit Dominus ;
[MS.Ox. *quia à parvo uſq; ad magnū omninò*
doloſè agunt: et à falſis eorū prophetis
etiā uſq; ad ſacerdotes, calamitates &
mendacia machinantur omnes. Et fractionem 11
populi mei in jocos vertunt dicendo,
Pax, pax, cùm non ſit pax. Num pudefacti 12
ſunt apud ſeipſos quòd abominationem
fecerint ? imò ne minimo quidem
pudore affecti ſunt, neq; ullam cohibitionem
nôrunt : idcirco inter proſtratos
corruent, & quo tempore deijciet illos
confringentur, dicit Dominus, penitùs
diſperdam, eos inquit Dominus.] Nullæ 13
reperiuntur uvæ in vitibus, neq; ficus reperiuntur
in arbore ficulnea, ſed *& folia*
defluxerunt. Quare deſidemus ? congregamini 14
ut ingrediamur urbes munitas, &
procumbamus ; quandoquidem Deus abjecit
nos, & potavit nos aquâ amaritudinis,
eò quòd coram ipſo peccaverimus.
Congregati ſumus pacis gratiâ, ſed non 15
contigerunt bona in tempore curationis,
imò ecce profligatio de Dane. Audi 16
ſonitum fervoris equorum ejus ob vocem
hinnitûs equitatûs equorum ejus : contremuit
ab eo tota terra : & veniet, terramque
funditùs comedet, urbem &
habitantes in ea. Nam ecce ego immiſſurus 17
ſum in vos ſerpentes mortiferos
qui incantari nequibunt, mordebuntque
vos, nec erit vobis medela ; Et cor veſtrum 18
dolore ſtupefiet.

ירמיה : ט

.distantiarum terra de mei populi filiæ clamoris vox Ecce
19 הִנֵּה־קוֹל שַׁוְעַת בַּת־־עַמִּי מֵאֶרֶץ מַרְחַקִּים
? ea in non ejus rex an , Sijon in non DOMINUS Nunquid
הַיהוָה אֵין בְּצִיּוֹן אִם־מַלְכָּהּ אֵין בָּהּ
? alienigenæ vanitatibus in,suis sculptilibus in me fecerunt irasci Quare
מַדּוּעַ הִכְעִסוּנִי בִּפְסִלֵיהֶם בְּהַבְלֵי נֵכָר׃
Super .sumus salvati non nos & , æstas est finita ,messis Transivit
20 21 עָבַר קָצִיר כָּלָה קָיִץ וַאֲנַחְנוּ לוֹא נוֹשָׁעְנוּ׃ עַל־
.me apprehendit stupor,sum denigratus:sum cõtrit° mei populi filiæ cõtritionẽ
שֶׁבֶר בַּת־עַמִּי הָשְׁבָּרְתִּי קָדַרְתִּי שַׁמָּה הֶחֱזִקָתְנִי׃
Sed ? ibi non medicus num ? Ghilhad in non resina Nunquid
22 הַצֳרִי אֵין בְּגִלְעָד אִם־רֹפֵא אֵין שָׁם כִּי
? mei populi filiæ cicatrix conscendit non cur
מַדּוּעַ לֹא עָלְתָה אֲרֻכַת בַּת־עַמִּי׃

CAP. IX. ט

flebo & .lachrymæ vena me° oculus & ,aquas meum caput det Quis
1 מִי־יִתֵּן רֹאשִׁי מַיִם וְעֵינִי מְקוֹר דִּמְעָה וְאֶבְכֶּה
deserto in mihi det Quis .mei populi filiæ saucios nocte ac die
2 יוֹמָם וָלַיְלָה אֵת חַלְלֵי בַת־עַמִּי׃ מִי־יִתְּנֵנִי בַמִּדְבָּר
quia : eis ab abibo & ,meũ populũ derelinquã & ,viatorũ diversoriũ
מְלוֹן אֹרְחִים וְאֶעֶזְבָה אֶת־עַמִּי וְאֵלְכָה מֵאִתָּם כִּי
fecerunt ejaculari Et .prævaricatorum retentio , adulteri ipsi universi
3 כֻּלָּם מְנָאֲפִים עֲצֶרֶת בֹּגְדִים׃ וַיַּדְרְכוּ אֶת־
:terra in se roboraverũt;veritatẽ ad non &,mendaciũ suũ arcũ ,suã linguã
לְשׁוֹנָם קַשְׁתָּם שֶׁקֶר וְלֹא לֶאֱמוּנָה גָּבְרוּ בָאָרֶץ
.Dominus dixit,cognoverũt non me &,sunt egressi malum ad malo de quia
כִּי מֵרָעָה אֶל־רָעָה יָצָאוּ וְאֹתִי לֹא־יָדָעוּ נְאֻם־יְהוָה׃
quia : fidatis ne fratre omni super & ,cavete suo socio à Unusquisque
4 אִישׁ מֵרֵעֵהוּ הִשָּׁמֵרוּ וְעַל־כָּל־אָח אַל־תִּבְטָחוּ כִּי
fraudulenter sodalis omnis & ,supplantabit supplantando frater omnis
כָל־־אָח עָקוֹב יַעְקֹב וְכָל־־רֵעַ רָכִיל
non veritatem &,fallacia utentur suum socium in unusquisque Et .incedet
5 יַהֲלֹךְ׃ וְאִישׁ בְּרֵעֵהוּ יְהָתֵלּוּ וֶאֱמֶת לֹא
.laboraverũt agendo pravè,mendacium loqui suã linguã docuerunt :loquẽtur
יְדַבֵּרוּ לִמְּדוּ לְשׁוֹנָם דַּבֶּר־־שֶׁקֶר הַעֲוֵה נִלְאוּ׃
.Domin° dixit ,me scire renuerũt dolo in , doli medio in tuũ Sedere
6 שִׁבְתְּךָ בְּתוֹךְ מִרְמָה בְּמִרְמָה מֵאֲנוּ דַעַת־אוֹתִי נְאֻם־יְהוָה׃
,eos excoquens ego Ecce : exercituum Dominus dixit sic Propterea
7 לָכֵן כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת הִנְנִי צוֹרְפָם
? mei populi filiæ faciebus à faciam quomodo quia : eos probabo &
וּבְחַנְתִּים כִּי־־אֵיךְ אֶעֱשֶׂה מִפְּנֵי בַּת־עַמִּי׃
cum pacem suo ore In .est locuta dolum,eorum lingua extensa Sagitta
8 חֵץ שׁוֹחֵט לְשׁוֹנָם מִרְמָה דִבֵּר בְּפִיו שָׁלוֹם אֶת־
his super Nunquid .suã insidiam ponet suo intimo in & ,loquetur suo socio
9 רֵעֵהוּ יְדַבֵּר וּבְקִרְבּוֹ יָשִׂים אָרְבּוֹ׃ הַעַל־־אֵלֶּה
,hæc sicut quæ gente in an ? Dominus dixit , eis in visitabo non
לֹא־אֶפְקָד־בָּם נְאֻם־יְהוָה אִם בְּגוֹי אֲשֶׁר־כָּזֶה
,lamentũ & ,fletum tollam montes Super ? mea anima ulciscetur non
10 לֹא תִתְנַקֵּם נַפְשִׁי׃ עַל־הֶהָרִים אֶשָּׂא בְכִי וָנֶהִי
,trãseunte viro non à ,sunt incẽsa quoniã:planctũ deserti pascua amœna sup &
וְעַל־נְאוֹת מִדְבָּר קִינָה כִּי נִצְּתוּ מִבְּלִי־אִישׁ עֹבֵר
,sunt vagati jumentũ ad usq; & ,cœli volatili à,pecoris vocem audierũt nõ &
וְלֹא שָׁמְעוּ קוֹל מִקְנֶה מֵעוֹף הַשָּׁמַיִם וְעַד־בְּהֵמָה נָדְדוּ
,draconum habitaculum ,acervos in Jerusalaim dabo Et .abierunt
11 הָלָכוּ׃ וְנָתַתִּי אֶת־יְרוּשָׁלַםִ לְגַלִּים מְעוֹן תַּנִּים
.habitatore absque desolationem dabo , Jehudah civitates &
וְאֶת־עָרֵי יְהוּדָה אֶתֵּן שְׁמָמָה מִבְּלִי יוֹשֵׁב׃

Versio VUL. LAT.

19 Ecce vox clamoris filiæ populi mei de terra longinqua: Numquid Dominus non est in Sion, aut rex ejus non est in ea? Quarè ergò me ad iracundiam concitaverunt in sculptilibus suis, & in
20 vanitatib° alienis? Transiit messis, finita est æstas, & nos salvati
21 non sum°. Super contritione filiæ populi mei contrit° sum, & contristatus, stupor obtinuit me.
22 Numquid resina non est in Galaad? aut medicus non est ibi? quarè igitur non est obducta cicatrix filiæ populi mei:

CAP. IX.

1 Quis dabit capiti meo aquam, & oculis meis fontem lachrymarum? & plorabo die ac nocte in-
2 terfectos filiæ populi mei. Quis dabit me in solitudine diversorium viatorum, & derelinquam populum meum, & recedam ab eis? quia omnes adulteri sunt,
3 cœtus prævaricatorum. Et extenderunt linguam suam quasi arcum mendacii & non veritatis? confortati sunt in terra, quia de malo ad malum egressi sunt, & me non cognoverunt, dicit Do-
4 minus. Unusquisque se à proximo suo custodiat, & in omni fratre suo non habeat fiduciam: quia omnis frater supplantans supplantabit, & omnis amicus
5 fraudulenter incedet. Et vir fratrem suum deridebit: & veritatem non loquentur: docuerunt enim linguam suam loqui mendacium: ut iniquè agerent,
6 laboraverunt. Habitatio tua in medio doli: in dolo renuerunt
7 scire me, dicit Dominus. Propterea hæc dicit Dominus exercituum; Ecce ego conflabo, & probabo eos: quid enim aliud faciam à facie filiæ populi mei?
8 Sagitta vulnerans lingua eorum, dolum locuta est: in ore suo pacem cum amico suo loquitur, &
9 occultè ponit ei insidias. Numquid super his non visitabo, dicit Dominus? aut in gente hujusmodi non ulciscetur anima
10 mea? Super montes assumam fletum ac lamentum, & super speciosa deserti planctum: quoniam incensa sunt, eò quòd non sit vir pertransiens: & non audierunt vocem possidentis: à volucre cœli usque ad pecora trans-
11 migraverunt & recesserunt. Et dabo Jerusalem in acervos arenæ, & cubilia draconum: & civitates Juda dabo in desolationem, eò quòd non sit habitator.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

19 Ἰδοὺ φωνὴ κραυγῆς θυγατρὸς λαοῦ μου ἀπὸ γῆς μακρόθεν. μὴ κύριος οὐκ ἔστιν ἐν Σιών; ἢ βασιλεὺς οὐκ ἔστιν ἐκεῖ; διότι παρώργισάν με ἐν τοῖς γλυπτοῖς αὐτῶν, καὶ
20 ἐν ματαίοις ἀλλοτρίοις. Διῆλθε θέρος, παρῆλθεν ἀμητὸς, καὶ ἡμεῖς οὐ διεσώθημεν.
21 Ἐπὶ συντρίμματι θυγατρὸς λαοῦ μου (φ) ἐσκοτώθην· ἐν ἀπορίᾳ κατίσχυσάν με
22 ὠδῖνες ὡς (χ) τικτούσης. Καὶ μὴ ῥητίνη οὐκ ἔστιν ἐν Γαλαάδ, ἢ ἰατρὸς οὐκ ἔστιν ἐκεῖ; διατί οὐκ ἀνέβη ἴασις θυγατρὸς λαοῦ μου;

Ecce vox clamoris filiæ populi mei de terra longinqua. Nunquid Dominus non est in Sion? aut rex non est ibi? Quoniam ad iracundiam concitaverunt me in sculptilibus suis, & in vanitatibus alienis. Transiit æstas, præteriit messis: & nos salvati non sumus. Super contritione filiæ populi mei obtenebratus sum in afflictione: tenuerunt me dolores quasi parientis. Et nunquid resina non est in Galaad, aut medicus non est ibi? Quare non ascendit sanatio filiæ populi mei?

MS. A. (φ) ἐσκοτώθην· ἀπορίᾳ (χ) τικτούσης. Μὴ * ῥητίνη

ΚΕΦ. θʹ.

1 Τίς δώσει κεφαλῇ μου ὕδωρ, καὶ ὀφθαλμοῖς μου πηγὴν δακρύων; καὶ κλαύσομαι τὸν λαόν μου τοῦτον ἡμέρας καὶ νυκτὸς, (α) τοὺς τετραυματισμένους θυγατρὸς λαοῦ μου.
2 Τίς δῴη μοι ἐν τῇ ἐρήμῳ σταθμὸν ἔσχατον, καὶ καταλείψω τὸν λαόν μου, καὶ ἀπελεύσομαι ἀπ' αὐτῶν, ὅτι πάντες μοιχῶνται, σύνοδος ἀθετούντων, Καὶ ἐνέτειναν τὴν γλῶσσαν αὐτῶν ὡς τόξον. ψεῦδος, καὶ οὐ πίστις ἐνίσχυσεν ἐπὶ τῆς γῆς, ὅτι ἐκ κακῶν εἰς κακὰ ἐξήλθοσαν, καὶ ἐμὲ οὐκ (β) ἔ-
4 γνωσαν, φησὶ κύριος. Ἕκαστος ἀπὸ τοῦ πλησίον αὐτοῦ (γ) φυλάξασθε, καὶ ἐπ' ἀδελφοῖς (δ) αὐτῶν μὴ πεποίθατε, ὅτι πᾶς ἀδελφὸς πτέρνῃ πτερνιεῖ, καὶ πᾶς φίλος δο-
5 λίως πορεύσεται. Ἕκαστος κατὰ τοῦ φίλου (ε) αὐτοῦ καταπαίξεται, ἀλήθειαν οὐ μὴ λαλήσωσι· μεμάθηκεν ἡ γλῶσσα αὐτῶν λαλεῖν ψευδῆ, ἠδίκησαν, καὶ οὐ διέλιπον
6 τοῦ ἐπιστρέψαι. Τόκος ἐπὶ τόκῳ, καὶ δόλος ἐπὶ δόλῳ· οὐκ ἤθελον εἰδέναι (ζ) με, φη-
7 σὶ κύριος. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ πυρώσω αὐτοὺς, καὶ δοκιμῶ αὐτούς. ὅτι ποιήσω ἀπὸ προσώπου πονηρίας
8 θυγατρὸς λαοῦ μου. Βολὶς τιτρώσκουσα ἡ (η) γλῶσσα αὐτῶν, δόλια τὰ ῥήματα τοῦ στόματος αὐτῶν· τῷ πλησίον αὐτοῦ λαλεῖ εἰρηνικὰ, καὶ ἐν ἑαυτῷ ἔχει τὴν ἔχθραν.
9 Μὴ ἐπὶ τούτοις οὐκ ἐπισκέψομαι; λέγει κύριος· ἢ ἐν λαῷ τοιούτῳ οὐκ ἐκδικήσει ἡ
10 ψυχή μου; Ἐπὶ τὰ ὄρη λάβετε κοπετὸν, καὶ ἐπὶ τὰς τρίβους τῆς ἐρήμου θρῆνον, ὅτι ἐξέλιπον παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἀνθρώπους. οὐκ ἤκουσαν φωνὴν ὑπάρξεως ἀπὸ πετεινῶν τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἕως (θ) κτηνῶν, ἐξέστη-
11 σαν, ᾤχοντο. Καὶ δώσω τὴν Ἱερουσαλὴμ εἰς μετοικίαν, καὶ εἰς (ι) κατοικητήριον δρακόντων, καὶ τὰς πόλεις Ἰούδα εἰς ἀφανισμὸν θήσομαι, παρὰ τὸ μὴ κατοικεῖσθαι.

CAP. IX.

Quis dabit capiti meo aquam, & oculis meis fontem lachrymarum? & plorabo populum meum hunc die ac nocte, interfectos filiæ populi mei. Quis det mihi in solitudine mansionem novissimam; & relinquam populum meum, & recedam ab eis? Quia omnes mœchantur: cœtus prævaricatorum: Et intenderunt linguam suam quasi arcum: mendacium, & non fides invaluit super terram: quia de malis in mala egressi sunt, & me non cognoverunt, dicit Dominus. Unusquisque à proximo suo vos custodite, & super fratribus suis non habeatis fiduciam: quia omnis frater supplantatione supplantabit: & omnis amicus dolosè incedet: Unusquisque contra fratrem suum illudet: veritatem non loquentur. Didicit lingua eorum loqui mendacia: iniquè egerunt: & non intermiserunt, ut converterentur. Usura super usuram, & dolus super dolum: noluerunt scire me, dicit Dominus. Propterea hæc dicit Dominus; Ecce ego igne examinabo eos, & probabo eos. Quia faciam à facie malitiæ filiæ populi mei. Sagitta vulnerans lingua eorum: dolosa verba oris eorum: proximo suo loquitur pacifica, & in seipso habet inimicitiam. Nunquid super his non visitabo? dicit Dominus; aut in populo hujuscemodi non ulciscetur anima mea? Super montes assumite planctum, & super semitas deserti lamentationem: quoniam defecerunt, eò quòd non sint homines. Non audierunt vocem substantiæ: à volucribus cœli usque ad pecora, obstupuerunt, recesserunt. Et dabo Hierusalem in transmigrationem, & in habitaculum draconum: & civitates Juda ponam in desolationem; eò quòd non habitentur.

MS. A. (α) καὶ τετραυματισμένους (β) ἔγνωσαν. Ἕκαστος (γ) φυλάξασθε, (δ) ἑαυτῶν (ε) ἑαυτοῦ (ζ) με. Διατοῦτο τάδε λέγει (η) καρδία αὐτῶν, (θ) τῶν κτηνῶν, (ι) κατοικητήρια

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 הא קל צוחת כנשתא דעמי מארעא רחיקא נביא אוכח יתהון השכנתא דיי לית בציון
20 אם מלכה לית בה מא דין מרגזין קדמי בצלמניהון בפולחן טעותא ׃ אמרת כנשתא
21 דישראל עדא זמנא שלים קצא ואנחנא לא מתפרקין ׃ אמרת ירושלם על תבר כנשתא
22 דעמי אודעזעית אתחפיאו אפי אכרום אוכמין כקדרא אשתממו אחדתני ׃ אמר ירמיה
נביא דלמא לא אית בי עובדין טבין למבעי על בית ישראל הלא מהימיד הויתי
לאולפניה דאליה נביא דמגלעד דפתגמוהי אנון אסותא ארי על דלא תבו בכן לא
סליקת אסו למחת כנשתא דעמי ׃
ט
1 מן יתן רישי כנחל דמין ועיני כמבועא דמעין ואבכי יממ ולילי על קטילי כנשתא דעמי ׃
2 מן יתנני במדברא בית מבתת עדי אורחן ואשבוק ית כנשתא דעמי ואהך מלותהון
3 ארי כולהון זנאין סיעת שקרין ׃ ואליפו ית לישנהון פתגמי שקר דמן אנון כקשתא
נכילא ולא להימנותא תקיפו בארעא ארי מבישתא לבישתא נפקו ומדע דחלתי לא
4 אליפו אמר יי ׃ גבר מחבריה אסתמרו ועל כל אחא לא תתרחצון ארי כל אחא מכמן
5 כמין וכל רחים בנכילו מהליך ׃ וגבר בחבריה משקרין וקושטא לא ממללין אליפו
6 לישנהון פתגמי שקר אטפשו טעו ׃ יתבין בבית כנשתהון ומשתען על עויתהון בנכילו
7 מסרבין למדע דחלתי אמר יי ׃ בכן כדנן אמר יי צבאות הא אנא מיתי עליהון עקא
8 וצריף להון ובחר להון ארי איכדין אעביד מן קדם חובי כנשתא דעמי ׃ כגיר די מחריף
לישנהון נכלין מחשב בפומהון שלמא גבר עם חבריה ממללין ובמעוהי משוי כמנתיה ׃
9 העל אלין לא אסער לאיתאה עליהון בישתא אמר יי אם מן עמא דכדין עובדוהי לא
10 אתפרע מנהון כרעותי ׃ על טוריא אנא מרים קלי ובכי ומצוח ועל דירת מדברא אליא
ארי צדיאו מבלי אנש דעדי ולא אשתמע קל בעירא בארעהון מעופא דשמיא ועד
בעירא אטלטלו גלו ׃ ואתן ית ירושלם ליגרין מדור ירודין וית קרויא דבית יהודה אתן
לצדו מבלי יתיב ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce vox clamoris cœt° populi mei de terra longinqua. Tu Propheta, increpa eos, [*dicens:*] Nunquid majestas Dñi non est in Sion? aut rex ejus non est in ea? quare irritant me simulacris suis, et cultu idolorũ? Dixit cœtus Israel: Transivit temp°, implet° est finis, et nos non sum° salvati. Dixit Jerusalẽ: Sup contritionẽ cœt° populi mei contremui, opertæ sunt facies meæ nigredine, atræ quasi olla; stupor obtinuit me. Dixit Jeremias propheta: Forte non sunt mihi opera bona ad deprecandũ pro domo Israel: considerabã utiq; doctrinã Eliæ prophetæ, qui fuit de Galaad; cuj° verba erant medicina: quia pro eo ꝙ non sunt conversi, ideò non crevit medicina plagæ cœtus populi mei.

CAP. IX.

Quis dabit caput meũ quasi torrentẽ aquarũ, & oculos meos quasi fontem *scaturientem*, & plorabo die ac nocte sup interfectos cœt° populi mei. Quis dabit me in solitudine domũ mansionis viatorũ, & relinquã cœtum populi mei, & ibo ab eis? quia omnes sunt fornicatores & turba falsariorum. Et docuerunt linguas suas verba mendacii; similes sunt arcui doloso & non in fide confortati sunt in terra, quia de malo ad malũ egressi sunt, & scientiã timoris mei non didicerunt, dicit Dñs. Unusquisque custodiat se à socio suo, & in omni fratre nolite confidere: quia omnis frater insidiando insidiatur; & omnis amic° in dolo ambulat. Et unusquisque fratri suo mentiuntur, & veritatẽ non loquuntur: docuerunt linguã suã verba mendacii, insipientes facti sunt & erraverunt. Sedent in domo congregationis suæ, & narrant sup iniquitates suas in dolis: renuunt scire timorẽ meũ, dicit Dñs. Propterea hæc dicit Dñs exercituũ: Ecce ego inducã super eos angustiã, & conflabo eos, & probabo eos. Quomodo enim faciã à facie peccatorũ cœt° populi mei? Sicut sagitta acuta lingua eorũ dolos agitat: ore suo pacẽ unusquisque loquitur cum proximo suo, & in visceribus suis ponit insidias suas. Nunquid propter hæc non visitabo, ut adducã sup eos mala? dicit Dominus: aut de populo cuj° opera talia sunt, non sumam vindictã juxta voluntatẽ meã? Sup montes ego attollo vocẽ *meam*, & fletum & clamorẽ, & sup habitacula deserti lamentationẽ: quia deserta facta sunt absque homine transeunte, nec auditur vox pecoris in terra eorum: à volucri cœli usque ad pecora mota sunt & transmigraverunt. Et dabo Jerusalem in acervos, habitaculum draconum; & civitates domus Juda dabo in solitudinem, ita ut non sit habitator.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܐ ܩܠܐ ܕܓܥܬܐ ܕܒܪܬ ܥܡܝ ܡܢ ܐܪܥܐ ܪܚܝܩܬܐ. ܕܐܡܪܝܢ. ܡܪܝܐ ܠܝܬ ܒܨܗܝܘܢ. ܐܘ 19
ܡܠܟܗ ܠܝܬ ܒܗ. ܡܛܠ ܕܐܪܓܙܘܢܝ ܒܦܬܟܪܝܗܘܢ. ܘܒܣܪܝܩܘܬܐ ܢܘܟܪܝܬܐ. * ܥܒܪ
ܚܨܕܐ ܘܫܠܡ ܩܛܦܐ. ܘܚܢܢ ܠܐ ܐܬܦܪܩܢ. * ܡܛܠ ܬܒܪܐ ܕܒܪܬ ܥܡܝ ܐܬܬܒܪܬ. ܐܬܟܡܪܬ ܘܬܗܪܐ ܐܚܕܢܝ.
* ܩܪܘܛܐ ܠܝܬ ܒܓܠܥܕ. ܐܘ ܐܣܝܐ ܠܝܬ ܬܡܢ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܠܐ ܣܠܩܬ ܐܣܝܘܬܗ ܕܒܪܬ ܥܡܝ.

* ܫܠܡ * ܚ *

* ܡܢ ܢܬܠ ܪܝܫܝ ܡܝܐ. ܘܥܝܢܝ ܡܒܘܥܐ ܕܕܡܥܐ. ܘܐܒܟܐ ܐܝܡܡܐ ܘܠܠܝܐ ܩܛܝ 1
ܠܐ ܕܒܪܬ ܥܡܝ. * ܡܢ ܢܬܠ ܒܡܕܒܪܐ ܒܝܬ ܡܫܪܝܐ ܕܐܘܪܚܬܐ. ܘܐܫܒܘܩ
ܠܥܡܝ. ܘܐܙܠ ܠܝ ܡܢ ܠܘܬܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܓܝܪܝܢ. ܘܟܢܘܫܬܐ ܕܢܟܠܐ.
* ܘܡܬܚܘ ܠܫܢܗܘܢ. ܐܝܟ ܕܩܫܬܗܘܢ. ܕܓܠܐ ܘܠܐ ܒܗܝܡܢܘܬܐ. ܚܝܠܘ ܒܐܪܥܐ. ܡܛܠ
ܕܡܢ ܒܝܫܬܐ ܠܒܝܫܬܐ ܢܦܩܘ. ܘܠܝ ܠܐ ܝܕܥܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܓܒܪ ܡܢ ܚܒܪܗ ܐܙܕܗܪܘ 4
ܘܥܠ ܐܚܐ ܠܐ ܬܬܟܠܘܢ. ܡܛܠ ܕܟܠ ܐܚ ܢܟܠܐ ܢܟܠ. ܘܟܠ ܪܚܡܐ ܒܢܟܠܐ ܡܗܠܟ.
* ܓܒܪ ܒܚܒܪܗ ܡܒܙܚ. ܘܫܪܪܐ ܠܐ ܡܡܠܠܝܢ. ܐܠܦܘ ܠܫܢܗܘܢ ܠܡܡܠܠܘ 5
ܫܘܩܪܐ. ܘܐܥܘܠܘ ܘܐܠܐܘ. * ܡܘܬܒܟ ܒܓܘ ܢܟܠܐ. ܒܢܟܠܗܘܢ ܠܐ ܨܒܘ ܠܡܕܥܢܝ ܐܡܪ 6
ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܨܪܦ ܐܢܐ ܠܗܘܢ. ܘܒܚܪ ܐܢܐ ܠܗܘܢ. 7
ܡܛܠ ܕܐܝܟܢܐ ܐܥܒܕ ܡܢ ܩܕܡ ܒܝܫܬܐ ܕܒܪܬ ܥܡܝ. * ܐܝܟ ܓܐܪܐ ܚܪܝܦܐ ܠܫܢܗܘܢ. ܘܒܢܟܠܐ ܡܡܠܠ. 8
ܘܒܦܘܡܗܘܢ ܫܠܡܐ ܓܒܪ ܥܡ ܚܒܪܗ ܡܡܠܠ. ܘܒܓܘܗ ܣܐܡ ܟܡܐܢܐ. * ܠܐ 9
ܥܠ ܗܠܝܢ ܠܐ ܐܦܩܘܕ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܥܡܐ ܕܗܟܢܐ ܠܐ ܬܬܦܪܥ ܢܦܫܝ. * ܥܠ ܛܘܪܐ ܫܩܘܠܘ 10
ܒܟܝܐ ܘܐܘܠܝܬܐ. ܘܥܠ ܕܝܪܐ ܕܡܕܒܪܐ ܐܘܠܝܬܐ. ܕܚܪܒܘ ܡܢ ܕܠܐ ܐܢܫ ܕܥܒܪ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܩܠ
ܩܢܝܢܐ. ܡܢ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܒܥܝܪܐ ܐܬܒܕܪܘ ܘܐܙܠܘ. * ܘܐܬܠ ܠܐܘܪܫܠܡ 11
ܚܪܒܬܐ. ܡܥܡܪܐ ܠܬܢܝܢܐ. ܘܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܐܬܠ ܠܚܘܪܒܐ. ܡܢ ܕܠܐ ܝܬܒܐ.

Ecce vocem clamoris filiæ populi mei de terra longinqua, dicentium; An Dominus non eſt in Sione? an rex ejus non eſt in ea? quia *nimirum* irritaverunt me ſculptilibus ſuis, & numinibus peregrinis. 19 Præteriit meſſis, & finita eſt vindemia; & nos haud liberati ſumus. 20 Propter contritionem filiæ populi mei, mœrore confectus ſum, & ſtupor occupavit me. 21 Num cera nulla eſt in Gelaad? num medicus non adeſt ibi? quare non *proſperè* ſucceſſit curatio filiæ populi mei? 22

CAP. IX.

O Utinam verteretur caput meum in aquam, & oculi mei in fontes lachrymarum: deflerem equidem interdiu noctúque occiſos filiæ populi mei. 1 O utinam ponerer in deſerto in diverſorio viatorum: relinquerem ſanè populum meum, & abſcederem ab eis; quia ſunt omnes adulteri & cœtus mendacium: 2 Linguam ſuam quaſi arcu ſuo ſunt jaculati: falſitate & perfidiá magnificati ſunt in terra: quoniam de ſcelere in ſcelus progreſſi ſunt, & me non cognoverunt, dicit Dominus. 3 Quiſque à ſocio ſuo cavete, & ulli fratri ne confidite: omnis enim frater doloſè agit, & omnis amicus fraudulenter incedit: 4 Quiſque ſocium ſuum decipit, ac veritatem non loquuntur: docuerunt linguam ſuam loqui falſitatem: agitantur & laborant. 5 Tua habitatio eſt in medio dolo, præ dolo ſuo renuerunt cognoſcere me, dicit Dominus. 6 Propterea ſic ait Dominus potens, Ecce conflaturus ſum eos, & probaturus illos: quomodo enim agerem ſpectatâ *nequitiâ* filiæ populi mei? 7 Sagittæ acutæ ſimilis eſt lingua eorum, fraudémque loquitur: ore tenus pacem quiſque cum ſocio ſuo loquitur, at in præcordiis ejus latent inſidiæ. 8 Has ob res non viſitarem, dicit Dominus? & de populo qui talis eſt, non ulciſceretur anima mea? 9 Ob montes attollite fletum & ejulatum, & ob caulas deſerti lamentationem; quia deſolabuntur ob penuriam hominis qui tranſeat, nec audient vocem pecoris: tam volucres cœli quàm jumenta diſſipabuntur & abibunt. 10 Reddámque Jeruſalem dirutam, habitationem canum ſylveſtrium; & civitates Judæ redigam in ſolitudinem ob penuriam incolarum. 11

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ها صوت صراخ ابنة شعبي من ارض بعيدة * هل الرب ليس هو في صهيون * او ملك ليس 19
هو هناك * من اجل انهم اغضبوني بمنحوتاتهم وبالاباطيل الغريبة * عبر الصيف ذهب الحصاد 20
ونحن لم نخلص * بانكسار ابنة شعبي اظلمت بالحين * قويت بي الاوجاع مثل التي تلد 21
* هل ليس موجود في جلعاد فلعوبية * او طبيب ليس هو هناك * لماذا لم يصعد شفا ابنة 22
شعبي *

* الفصل التاسع *

* من يعطي لراسي ماء وعيني ينبوع دموع * فاندب شعبي نهارا وليلا ومهشمين ابنة 1
شعبي * من يعطيني في البرية حرزا اخيرا * واترك شعبي واذهب عنهم * لانهم جميعهم يزنون * 2
جمع عصاة * واوتروا السنتهم بالكذب مثل القوس * وليس ايمان قوي على الارض * لانهم 3
خرجوا من شرور الى شرور ولم يعرفوني يقول الرب * كل واحد من قريبه احفظوا * وباخوتكم 4
لا تثقوا * لان كل اخ يعرقب العقب * وكل صديق يسير بغش * وكل واحد على صديقه يهزي 5
ولا يتكلمون بالحق * تعلم لسانهم ان يتكلم بالكذب * ظلموا ولم يكفوا ليرجعوا * ربا على 6
ربا * وغش على غش * ولم يريدوا ان يعرفوني * لاجل هذا هكذا يقول الرب * ها انا اذيبهم 7
وامتحنهم * لاني ماذا اصنع من وجه شر ابنة شعبي * قلبهم نصلة ناخس * كلمات فمهم 8
غاشة * يتكلم مع قريبه بالسلامة * وله في ذاته العداوة * هل لهذا لا اتعهدهم يقول الرب * 9
او من شعب هذه حاله لا تنتقم نفسي * على الجبال خذوا عويلا * وعلى اكام البرية نوحا * 10
لانهم فنيوا من ان تكون البشر * لم يسمعوا صوت وجود من طيور السماء * وحتى البهائم جازوا
ونفروا * واعطي ايروشليم للخلوة ومساكن الثعالب * واجعل مدن يهوذا للتلاف من 11
ان لا تسكن *

Ecce clamor vociferationis filiæ populi mei de terra longinqua, Nam Dominus non eſt in Sione? aut nullus eſt ibi rex? quoniam ad iracundiam concitaverunt me ſculptilibus ſuis & vanitatibus alienis. 19 *Præteriit æſtas, elapſa eſt meſſis; & nos minimè ſervamur.* 20 *Ob fractionem filiæ populi mei ſtupore tenebreſco, invaluerunt in me dolores ut parturientis.* 21 *An non reperitur in Galaad reſina? aut medicus non eſt illic? quare non proficit valetudo filiæ populi mei?* 22

CAP. IX.

Quis det capiti meo aquam, & oculis meis fontem lachrymarum, ut populum meum & conquaſſatos filiæ populi mei diu noctuque lugeam? 1 *Quis concedat mihi in deſerto munitionem ultimam, ut deſtituto populo meo recedam ab eis? Omnes enim fornicantur, ſunt cœtus rebellium:* 2 *Linguas ſuas mendacio velut arcum tetenderunt, & invaluit perfidia ſuper terram: quia de flagitiis in flagitia proceſſerunt, non cognoſcentes me, dicit Dominus.* 3 *Quiſque à proximo ſuo cavetote, & fratribus veſtris ne confiditote; nam omnis frater ſupplantat calcaneum, & omnis amicus doloſè ambulat:* 4 *Quiſque amico ſuo illudit, neque loquuntur veritatem: didicit eorum lingua loqui mendacium: perfidè agunt, neque deſiſtunt ut ſeſe retrahant:* 5 *uſuram uſuræ, & dolum dolo accumulant, nec volunt cognoſcere me.* 6 *Icci rco ſic dicit Dominus, Ecce ego excoquam eos, & probabo illos: ecquid enim agerem à facie malignitatis filiæ populi mei?* 7 *Cor eorum cuſpis pungens, verba oris eorum doloſa: loquitur cum proximo ſuo pacem, at ſervat ei in animo ſuo inimicitiam.* 8 *An propter iſta non viſitarem eos, dicit Dominus? an ab hujuſmodi cõditionis gente non ſumeret ultionem anima mea?* 9 *De montibus ſumite gemitum, & de collibus deſerti lamentum; quia deſinent eſſe ibi homines, nec audient vocem ullius volucris cœli, quin & jumenta abibunt & diſpergentur.* 10 *Et redigam Jeroſolymam in deſolationem & luſtra draconum, urbeſque Judæ exponam ruinæ, eò quòd non habitentur.* 11

ירמיה : ט

Domini os est locutū quem & ? hoc intelliget & ,sapiens vir Quis
12 מי־האיש החכם ויבן את־זאת ואשר דבר פי־יהוה
desertū veluti,est exusta ,terra periit quid Super? illud nūtiabit &,eū ad
אליו ויגדה על־מה אבדה הארץ נצתה כמדבר
,meā legem *eos dereliquere Super* : Dominus dixit Et ? *transeunte* *absque*
13 מבלי עבר : ויאמר יהוה על־עזבם את־תורתי
ambulaverūt nec ,*mea voce in* audierūt non & ;*eorum facies ad* dedi quam
אשר נתתי לפניהם ולא־שמעו בקולי ולא־הלכו
quos ,Behalim post & ,sui cordis *obstinatione* post abierunt Et .ea in
14 בה : וילכו אחרי שררות לבם ואחרי הבעלים אשר
exercituū Dominus dixit sic Idcirco .eorum patres *eos* docuerunt
15 למדום אבותם : לכן כה־אמר יהוה צבאות
,absinthio hunc populum *eos cibans* ego Ecce : Israel Deus
אלהי ישראל הנני מאכילם את־העם הזה לענה
quas , gentes in eos dispergam Et .fellis aquam eis potum dabo &
16 והשקיתים מי־ראש : והפיצותים בגוים אשר
gladium eos post mittam & : eorū patres & ipsi noverunt non
לא ידעו המה ואבותם ושלחתי אחריהם את־החרב
Considerate : exercituū Dominus dixit Sic .eos *me consumere ad usque*
17 עד כלותי אותם : כה אמר יהוה צבאות התבוננו
, mittite sapientes ad & : veniant & ,lamentatrices *ad* vocate &
וקראו למקוננות ותבואינה ואל־החכמות שלחו
demittant &,*querimoniam* nos super *tollant* & festinent Et .veniant &
18 ותבואנה : ותמהרנה ותשנה עלינו נהי ותרדנה
querimoniæ vox Quia.aquis defluant nostræ palpebræ &,*lachrymā* nostri oculi
19 עינינו דמעה ועפעפינו יזלו־מים : כי קול נהי
!vehemēter sum⁹ affecti pudore!sum⁹ vastati Quomodo.Sijon de est audita
נשמע מציון איך שדדנו בשנו מאד
audite Sed.nostra habitacula projecerūt quia:terram dereliquim⁹ quia
20 כי־עזבנו ארץ כי השליכו משכנותינו : כי־שמענה
: ejus oris verbum vestra auris assumat & ,Domini verbum mulieres
נשים דבר־יהוה ותקח אזנכם דבר־פיו
.planctum suam *sociam* unaquæque & ,*querimoniam* vestras filias docete &
ולמדנה בנתיכם נהי ואשה רעותה קינה :
,nostra palatia in intravit , nostras fenestras *in* mors ascendit Quia
21 כי־עלה מות בחלונינו בא בארמנותינו
,Loquere .plateis de juvenes , platea de parvulum *succidendum ad*
22 להכרית עולל מחוץ בחורים מרחבות : דבר
stercus tanquam hominis *cadaver* cadet & ,DOMINUS dixit Sic
כה נאם־יהוה ונפלה נבלת האדם כדמן
non & ,metentem post *à* manipulus veluti & : agri *faciebus super*
על־פני השדה וכעמיר מאחרי הקוצר ואין
,sua sapientia in sapiens se laudet Ne : Dominus dixit Sic .*colligens*
23 מאסף : כה אמר יהוה אל־יתהלל חכם בחכמתו
dives se laudet neque : sua potentia in potens se laudet neque
ואל־יתהלל הגבור בגבורתו אל־יתהלל עשיר
,*intelligendo se laudans* se laudet hoc in *Quinimò* .*sua opulentia* in
24 בעשרו : כי אם־בזאת יתהלל המתהלל השכל
,judicium ,misericordiam *faciens* Dominus ego quia : me *sciendo &*
וידע אותי כי אני יהוה עשה חסד משפט
dies Ecce .Dominus dixit , *volui illis in quia* : terra in justitiā &
25 וצדקה בארץ כי־באלה חפצתי נאם־יהוה : הנה ימים
.*præputio in* circūcisum omnē *super* visitabo & ,Dominus dixit , *venientes*
באים נאם־יהוה ופקדתי על־כל־מול בערלה :
,Hamon filios *super* & , Edom *super* & ,Jehudah *super* & ,Ægyptum *Super*
26 על־מצרים ועל־יהודה ועל־אדום ועל בני עמון
; deserto in *habitantes* , *anguli extremificatos* omnes *super* & ,Moab *super* &
ועל־מואב ועל כל־קצוצי פאה הישבים במדבר
corde præputiati Israel domus omnis & , *præputiatæ* gentes omnes quia
כי כל־הגוים ערלים וכל־בית ישראל ערלי־לב :

Versio VULG. LAT.

12 Quis est vir sapiens, qui intelli-
gat hoc, & ad quem verbum oris
Domini fiat ut annuntiet istud,
quarè perierit terra, & exusta sit
quasi desertum, eò quòd non sit
13 qui pertranseat? Et dixit Domi-
nus; Quia dereliquerunt legem
meam, quam dedi eis, & non au-
dierunt vocem meam, & non am-
14 bulaverunt in ea: Et abierunt
post pravitatē cordis sui, & post
Baalim: quod didicerunt à pa-
15 tribus suis. Idcircò hæc dicit
Domin⁹ exercituū Deus Israel;
Ecce ego cibabo populum istum
absinthio, & potū dabo eis aquā
16 fellis. Et dispergam eos in Gen-
tib⁹, quas non noverunt ipsi &
patres eorum: & mittam post eos
17 gladiū, donec consumantur. Hæc
dicit Dominus exercituum Deus
Israel; Contemplamini, & vo-
cate lamentatrices, & veniant:
& ad eas, quæ sapientes sunt,
18 mittite, & properent: Festinent,
& assumant super nos lamentū:
deducant oculi nostri lachrymas,
& palpebræ nostræ defluant
19 aquis. Quia vox lamentationis
audita est de Sion; Quomodò
vastati sumus & confusi vehe-
menter? quia dereliquimus ter-
ram, quoniam dejecta sunt ta-
20 bernacula nostra. Audite ergò
mulieres verbum Domini: &
assumant aures vestræ sermonem
oris ejus: & docete filias vestras
lamentum, & unaquæque proxi-
21 mam suā planctum. Quia ascen-
dit mors per fenestras nostras,
ingressa est domos nostras, dis-
perdere parvulos deforis, juve-
22 nes de plateis. Loquere; Hæc
dicit Dominus; Et cadet morti-
cînū hominis quasi stercus super
faciem regionis, & quasi fœnum
post tergum metentis, & non
23 est qui colligat. Hæc dicit Do-
minus; Non glorietur sapiens in
sapientiâ suâ, & non glorietur
fortis in fortitudine suâ, et non
glorietur dives in divitiis suis:
24 Sed in hoc glorietur, qui glo-
riatur, scire et nôsse me, quia
ego sum Dominus, qui facio
misericordiam, et judicium, et
justitiam in terra: hæc enim
25 placent mihi, ait Dominus. Ecce
dies veniunt, dicit Dominus:
et visitabo super omnem qui
circumcisum habet præputium,
26 Super Ægyptum, et super Juda,
et super Edom, et super filios Am-
mon, et sup Moab, et super omnes
qui attonsi sunt in comam, ha-
bitantes in deserto: quia omnes
gentes habent præputiū, omnis
autem domus Israel incircum-
cisi sunt corde.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

12 (κ) Τίς ὁ ἄνθρωπος ὁ συνετὸς, καὶ συνέτω
τοῦτο; καὶ ᾧ λόγος στόματος κυρίου πρὸς
αὐτὸν, ἀναγγειλάτω (λ) ὑμῖν, ἕνεκεν τί-
νος ἀπώλετο ἡ γῆ, ἀνήφθη, ὡς ἔρημος,
13 παρὰ τὸ μὴ (μ) διοδεύεσθαι αὐτήν; Καὶ
εἶπε κύριος πρός με, Διὰ τὸ ἐγκαταλι-
πεῖν αὐτοὺς τὸν νόμον μου, ὃν ἔδωκα πρὸ
προσώπου αὐτῶν, καὶ οὐκ ἤκουσαν τῆς φω-
14 νῆς μου, Ἀλλ᾽ ἐπορεύθησαν ὀπίσω τῶν (ν)
ἀρεστῶν τῆς καρδίας αὐτῶν τῆς κακῆς, καὶ
ὀπίσω τῶν εἰδώλων ἃ ἐδίδαξαν αὐτοὺς οἱ
15 πατέρες αὐτῶν· Διατοῦτο τάδε λέγει κύ-
ριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ἰδοὺ ἐγὼ (ξ) ψωμιῶ
αὐτοὺς ἀνάγκας, καὶ ποτιῶ αὐτοὺς ὕδωρ χο-
16 λῆς, Καὶ διασκορπιῶ αὐτοὺς ἐν τοῖς ἔθνε-
σιν, εἰς οὓς οὐκ ἐγίνωσκον αὐτοὶ καὶ οἱ πατέ-
ρες αὐτῶν, καὶ ἐπαποστελῶ ἐπ᾽ αὐτοὺς τὴν
μάχαιραν, ἕως τοῦ ἐξαναλῶσαι αὐτοὺς ἐν
17 αὐτῇ. Τάδε λέγει κύριος, Καλέσατε τὰς
θρηνούσας, καὶ (ο) ἐλθέτωσαν, καὶ πρὸς τὰς
18 σοφὰς ἀποστείλατε, καὶ φθεγξάσθωσαν, Καὶ
λαβέτωσαν ἐφ᾽ ὑμᾶς θρῆνον, καὶ καταγαγέ-
τωσαν οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν δάκρυα, καὶ τὰ
19 βλέφαρα ὑμῶν ῥείτω ὕδωρ, Ὅτι φωνὴ οἰ-
κτοῦ ἠκούσθη ἐν Σιών· Πῶς ἐταλαιπωρή-
σαμεν, κατῃσχύνθημεν σφόδρα, ὅτι ἐγκα-
τελίπομεν τὴν γῆν, καὶ ἀπερρίψαμεν τὰ
20 σκηνώματα ἡμῶν; Ἀκούσατε δὴ γυναῖ-
κες λόγον (π) θεοῦ, καὶ δεξάσθω τὰ ὦτα ὑ-
μῶν λόγους στόματος αὐτοῦ, καὶ διδάξατε τὰς
θυγατέρας ὑμῶν (ρ) οἶκτον, καὶ γυνὴ τὴν
21 πλησίον (σ) αὐτῆς θρῆνον. Ὅτι ἀνέβη
θάνατος (τ) διὰ τῶν θυρίδων ὑμῶν, εἰσ-
ῆλθεν εἰς τὴν γῆν ὑμῶν, τοῦ ἐκτρῖψαι νή-
πια ἔξωθεν, καὶ νεανίσκους ἀπὸ τῶν πλατει-
22 ῶν. Καὶ ἔσονται οἱ νεκροὶ τῶν ἀνθρώπων
εἰς παράδειγμα ἐπὶ προσώπου τοῦ πεδίου
τῆς γῆς ὑμῶν, (υ) ὡς χόρτος ὀπίσω θε-
ρίζοντος, καὶ οὐκ ἔσται ὁ συνάγων. Τάδε
23 λέγει κύριος, Μὴ καυχάσθω ὁ σοφὸς ἐν τῇ
σοφίᾳ αὐτοῦ, καὶ μὴ καυχάσθω ὁ ἰσχυρὸς ἐν
τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ, καὶ μὴ καυχάσθω ὁ πλούσιος ἐν
24 τῷ πλούτῳ αὐτοῦ, Ἀλλ᾽ ἢ ἐν τούτῳ καυχά-
σθω ὁ καυχώμενος, συνιεῖν καὶ γινώσκειν, ὅ-
τι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ ποιῶν ἔλεος καὶ κρί-
μα καὶ δικαιοσύνην ἐπὶ τῆς γῆς, ὅτι ἐν τού-
25 τοις τὸ θέλημά μου, λέγει κύριος. Ἰδοὺ
ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος, καὶ ἐπισκέ-
ψομαι ἐπὶ πάντας (φ) περιτετμημένους ἀ-
26 κροβυστίας αὐτῶν· Ἐπ᾽ Αἴγυπτον, καὶ ἐπὶ
(χ) Ἰδουμαίαν, καὶ ἐπὶ Ἐδὼμ, καὶ ἐπὶ (ψ)
υἱοὺς Ἀμμὼν, καὶ ἐπὶ υἱοὺς Μωὰβ, καὶ ἐπὶ πάν-
τα περικειρόμενον τὰ κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ,
τοὺς κατοικοῦντας ἐν τῇ ἐρήμῳ, ὅτι πάντα
τὰ ἔθνη (ω) ἀπερίτμητα σαρκὶ, καὶ πᾶς
οἶκος Ἰσραὴλ (α) ἀπερίτμητοι καρδίας
αὐτῶν.

Quis est homo intelligens, & intelligat hoc? Et cui sermo oris Domini ad eum, annuntiet vobis, quarè periit terra, exusta est quasi desertum, eò quod non sit qui pertranseat eam? Et dixit Dominus ad me; Quia ipsi dereliquerunt legem meam, quam dedi ante faciem eorum, & non audierunt vocem meam: Sed abierunt post placita cordis sui mali, & post idola, quæ docuerunt eos patres eorum. Idcircò hæc dicit Dominus Deus Israel; Ecce ego cibabo eos angustiis, & potum dabo eis aquam fellis: Et dispergam eos in gentibus, quas non noverunt ipsi, & patres eorum: & immittam super eos gladium, donec ipsi consumantur in eo. Hæc dicit Dominus; Vocate lamentatrices, & (c) & veniant: & ad eas, quæ sapientes sunt, mittite; & loquantur: Et assumant super vos lamentum: & deducant oculi vestri lachrymas: & palpebræ vestræ fluant aquam: Quoniam vox lamentationis audita est in Sion; Quomodò misere vexati sumus, confusi sumus vehementer; quoniam dereliquimus terram, & abjecimus tabernacula nostra? Audite nunc mulieres verbum Dei, & assumant aures vestræ sermones oris ejus: & docete filias vestras lamentum: & mulier proximam suam planctum. Quia ascendit mors per fenestras vestras: ingressa est in terram vestram, disperdere parvulos deforis, & juvenes de (d) plateis: Et erunt morticina hominum in exemplum super faciem campi terræ vestræ, quasi fœnum post metentem: & non erit, qui colligat. Hæc dicit Dominus; Non glorietur sapiens in sapientia sua: & non glorietur fortis in fortitudine sua: & non glorietur dives in divitiis suis: Sed in hoc glorietur, qui gloriatur, intelligere, & (e) nôsse, quia ego sum Dominus faciens misericordiam, & judicium, & justitiam super terram: quia in istis est voluntas mea, dicit Dominus. Ecce dies veniunt, dicit Domin⁹, & visitabo super omnes, qui circumcisa habent præputia sua: Super Ægyptum, & super (f) Judæam, & super Edom, & super filios Ammon, & super filios Moab, & super omnem attonsum circa faciem suam, habitantes in deserto; quia omnes gentes incircuncisæ carne: & omnis domus Israel, incircuncisi cordibus suis.

MS.A. (κ) Τίς ἄνθρωπος συνετὸς καὶ συνιεῖτε τοῦτο; καὶ ὁ λόγος (λ) ἡμῖν, τίνος ἕνεκεν, (μ) διοδεύεσθαι; Καὶ εἶπεν (ν) ἐραστῶν (ξ) ὑμᾶς αὐτοὺς (ο) ἐλθέτωσαν, (π) κυρίου, (ρ) οἰκτρὸν, (σ) ἑαυτῆς (τ) τὴν γῆν ὑμῶν, καὶ ἦλθεν διὰ τῶν θυρίδων ὑμῶν, τοῦ ἐκτρῖψαι (υ) ὡς (φ) περιτετετμημένους (χ) τὴν Ἰδουμαίαν, (ψ) πάντας τοὺς υἱοὺς Ἀμμων, καὶ ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Μωὰβ, καὶ ἐπὶ πᾶν περικειρόμενον (ω) ἀπερίτμη- (α) ἀπερίτμητος

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 מן גברא דחכים ויסבר ית דא ודאתמלל מן קדם יי עמיה ויחוינה על מה חרובת ארעא
13 צדיאת כמדברא מבלי יתיב : ואמר יי על די שבקו ית אוריתי דיהבית קדמיהון ולא
14 קבילו למימרי ולא הליכו בה : ואזלו בתר הרהור לבהון ובתר בעליא דאליפונון
15 אבהתהון : בכן כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל הא אנא מיתי עקא על עמא הדין
16 מרר כנידין ואשקנון כס דלוט כרישי חוין : ואבדרנון בין עממיא דלא ידעו אנון
17 ואבהתהון ואגרי בתריהון דקטלין בחרבא עד דאשיצי יתהון : כדנן אמר יי צבאות
18 אסתכלו וקרו לאליתא וייתין ולחכימתא שלחו ויתין : ויוחין ויטלן עלנא אליא וישגרן
19 עיננא דמעין ונלגלי עיננא יגרון מיא : ארי קל אליא אשתמע מציון אכדין אתבזזנא
20 בהתנא לחדא ארי חרובת ארעא ארי צדיאה ברניתהא : ארי שמעא נשיא פתגמא דיי
21 ותצית אודנכון למלי נביוהי ואלפנא לבנתיכון אליא ואתתא לחברתה עניא : ארי
22 סליק מותא בחרכנא על בברניתנא לשיצאה ינקין משוקא עולימין מרחובין : אתנבי
כדנן אמר יי ותתרמי נבלתא דאנשא כזבל מבדר על אפי חקלא וכעמירא מבתר חצדא
23 וליתדמכניש : כדנן אמר יי לא ישתבח שלמה בר דוד חכימא בחוכמתיה ולא ישתבח
24 שמשון בר מנוח גברא בגבורתיה ולא ישתבח אחאב בר עמרי עתירא בעותריה : אלהן
בדא ישתבח דמשתבח דחכים ואליף למדע דחלתי ארי אנא יי עבידנא חסדא ודין
25 דקשוט וזכו בארעא ארי באלן רעוא קדמי אמר יי : הא יומיא אתן אמר יי ואסער על
26 כל עממיא ערליא ועל בית ישראל דדמן עובדיהון לעובדי ערליא : על מצראי ועל
יהודה ועל אדומאי ועל בני עמון ועל מואבאי ועל כל מקפי פתא דשרן בשכונין
במדברא ארי כל עממיא ערלין בבשרהון וכל בית ישראל ערלין בלבהון :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quis est vir sapiens, & intelligat hoc? & cum quo locut' est Dñs, & an- nuntiet illud, quare desolata sit terra, & deserta sit sicut solitudo absque *habitatore?* Et dixit Dñs: Quia dereliquerunt legem meam quam dedi corā eis, & non obedierunt verbo meo, et non ambulaverunt in ea. Sed abierunt post cogitationē cordis sui, et post Baalim, quæ docuerunt eos patres eorū. Propterea sic dicit Dñs exercituū Deus Israel: Ecce ego adducam tribulationē sup populū istum amarā quasi absinthiū, & potū dabo eis calicē maledictionis, quasi capita serpentum. Et dispergā eos inter populos quos non cognoverunt ipsi & patres eorum; & immittā post eos occisores gladio, donec consumā eos. Hæc dicit Dñs exercituū: Contemplamini, & vocate lamentratices, ut veniant: & ad eas quæ sapientes sunt mittite, ut veniant. Et festinent & assumant sup nos lamentū; & defluant oculi nostri lachrymis, et palpebræ oculorū nostrorū decurrant aquis. Quia vox lamentationis audita est ex Sion: Quomodo vastati sum⁹, confusi sum⁹ vehementer? quia deserta est terra, quia desolata sunt palatia nostra. Audite ergo mulieres verbū Dñi, & auscultet auris vestra verba prophetarū ej⁹, & docete filias vestras lamentū, & unaquæq; proximā suā planctū. Quia ascendit mors p fenestras nostras: ingressa est palatia nostra, ut consumat infantes de vico, juvenes de plateis. Vaticinare: Hæc dicit Dñs: Et projicietur cadaver hominis quasi sterc⁹ dispersū sup faciē agri, & sicut manipul⁹ post messorē, & non erit qui colligat. Hæc dicit Dñs: Ne sibi placeat Salomon filius David *sapiens* in sapientia sua, nec sibi placeat Sampson fili⁹ Manue fortis in fortitudine sua, nec sibi placeat Achab fili⁹ Ameri *dives* in divitiis suis. Sed in hoc sibi bene placeat qui sibi placet ꝙ sapiens sit, et didicerit timorē mei. Quia ego sum Dominus faciens misericordiam, & judicium verū, & justitiā in terra; quia in his est voluntas corā me, dicit Dñs. Ecce dies veniunt, dicit Dñs, & visitabo super omnes populos incircumcisos, & *super domum Israel, quorum opera similia sunt operibus incircumcisorum.* Super Ægyptios & super Judam, & super Idumæos, et sup filios Ammon, et super Moabitas, et super omnes attonsos coma, qui morantur in taculis in deserto; quia omnes populi incircumcisi sunt in carne sua, et omnis domus Israel incircumcisi sunt in corde.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܢܘ ܓܒܪܐ ܕܚܟܝܡ ܢܣܬܟܠ ܗܕܐ. ܘܕܡܠܠ ܦܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬܗ ܢܚܘܝܘܗܝ. 12
ܥܠ ܡܢܐ ܐܒܕܬ ܐܪܥܐ. ܘܐܬܚܪܒܬ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ ܡܢ ܕܠܐ ܥܒܘܪ̈ܐ. * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܕܫܒܩܘ 13
ܢܡܘܣܝ ܕܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐܒܗ̈ܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܒܩܠܝ ܘܠܐ ܗܠܟܘ ܒܗ. * ܘܐܙܠܘ 14
ܒܬܪ ܪ̈ܓܝܓܬ ܠܒܗܘܢ ܒܝܫܐ. ܘܒܬܪ ܦܬܟܪ̈ܐ ܕܐܠܦܘ ܐܢܘܢ ܐܒܗ̈ܝܗܘܢ. * ܡܛܠܗܢܐ 15
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܡܘܟܠ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܠܥܡܐ ܗܢܐ ܓܕܐ.
ܘܐܫܩܐ ܐܢܘܢ ܡ̈ܝܐ ܡܪ̈ܝܪܐ. * ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܒܥܡ̈ܡܐ. ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܐܢܘܢ ܗܢܘܢ ܘܐܒܗ̈ܝܗܘܢ. 16
ܘܐܫܕܪ ܒܬܪܗܘܢ ܚܪܒܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܓܡܪ ܐܢܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܩܪܘ ܠܐܠܝ̈ܬܐ 17
ܘܢܐܬܝܢ. ܘܠܘܬ ܚܟܝ̈ܡܬܐ ܫܕܪܘ ܘܢܐܬܝܢ. * ܘܢܣܪܗܒܢ. ܘܢܥܒܕܢ ܥܠܝܢ ܐܠܝܬܐ 18
ܘܢܚܬܢ ܥܝ̈ܢܝܢ ܕܡ̈ܥܐ. ܘܓܒ̈ܝܢ ܢܪܕܝܢ ܡ̈ܝܐ. * ܡܛܠ ܕܩܠܐ ܕܐܘܠܝܬܐ ܐܫܬܡܥ ܡܢ ܨܗܝܘܢ 19
ܕܐܡܪ. ܐܝܟܢܐ ܐܬܒܙܙܢ. ܒܗܬܢ ܛܒ ܛܒ. ܡܛܠ ܕܫܒܩܢ ܐܪܥܐ. ܘܣܚܦܘ ܡܫܟ̈ܢܝܢ.
* ܡܛܠܗܢܐ. ܫܡܥܝܢ ܢܫ̈ܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܬܩܒܠܢ ܐܕ̈ܢܝܟܝܢ ܡܠܬܐ ܕܦܘܡܗ. 20
ܘܐܠܦܝܢ ܠܒ̈ܢܬܟܝܢ ܐܘܠܝܬܐ. ܘܐܢܬܬܐ ܠܚܒܪܬܗ̇ ܩܝܢܬܐ. * ܡܛܠ ܕܣܠܩ ܡܘܬܐ 21
ܒܟܘ̈ܝܢ. ܘܥܠ ܒܒܝܪ̈ܢܝܬܢ. ܠܡܘܒܕܘ ܥܘ̈ܠܐ ܡܢ ܫܘܩܐ. ܘܥܠܝ̈ܡܐ ܡܢ ܦܠܛܝ̈ܐ. * ܡܛܠ 22
ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܢܦܠܢ ܫܠ̈ܕܝܗܘܢ ܕܒܢܝ̈ܢܫܐ ܐܝܟ ܙܒܠܐ ܥܠ ܐܦܝ̈ ܚܩܠܐ. ܘܐܝܟ ܥܡܝܪܐ
ܒܬܪ ܚܨܘܕܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܟܢܫ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܢܫܬܒܗܪ ܚܟܝܡܐ ܒܚܟܡܬܗ. 23
ܘܠܐ ܢܫܬܒܗܪ ܓܢܒܪܐ ܒܓܢܒܪܘܬܗ. ܘܠܐ ܢܫܬܒܗܪ ܥܬܝܪܐ ܒܥܘܬܪܗ. * ܐܠܐ ܒܗܕܐ 24
ܢܫܬܒܗܪ ܡܢ ܕܡܫܬܒܗܪ. ܡܢ ܕܡܣܬܟܠ ܘܝܕܥ ܠܝ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܕܥܒܕ ܛܝܒܘܬܐ
ܘܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܒܗܠܝܢ ܨܒܝܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܐ ܝܘܡ̈ܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 25
ܘܐܦܩܘܕ. ܥܠ ܟܠ ܕܓܙܝܪ ܒܥܘܪܠܘܬܐ. * ܥܠ ܡܨܪܝܢ. ܘܥܠ ܝܗܘܕܐ. ܘܥܠ ܐܕܘܡ. ܘܥܠ ܒܢ̈ܝ 26
ܥܡܘܢ. ܘܥܠ ܡܘܐܒ. ܘܥܠ ܟܠ ܡܩܦܚܝ ܦܐܬܐ ܕܝܬܒܝܢ ܒܡܕܒܪܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ
ܥܡ̈ܡܐ ܥܪ̈ܠܝܢ ܒܒܣܪܗܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܥܪ̈ܠܝܢ ܒܠܒܗܘܢ.

Vir qui ſapiens eſt, intelligat hoc; & is ad 12
quem ſermo oris Domini eſt, indicet eum,
Qua de cauſa periit *hæc* terra, & deſolata eſt
veluti deſertum propter penuriam viatorum?
Et dixit Dominus, Quia dereliquerunt legem 13
meam quam dedi eis & patribus eorum, non
auſcultaverunt voci meæ, nec ambulaverunt
in illa; Sed ſectati ſunt libidines animi ſui 14
pravi, & idola quæ docuerunt eos patres
eorum: Idcircò ſic ait Dominus potens, 15
Deus Iſraelis; Ecce cibaturus ſum populum
hunc abſinthio, & potaturus eos aquis amaris:
Diſperſurus eos inter gentes quas nec 16
ipſi nec patres eorum cognoverunt, & miſſurus
poſt eos gladium donec abſumam eos.
Sic dicit Dominus potentiſſimus, Advocate 17
lamentatrices ut adveniant, & ad *mulieres*
ſapientes mittite ut veniant, Et feſtinent, 18
componántque de nobis lamentationes; demittant
oculi noſtri lachrymas, & pupillæ noſtræ
aquas emanent: Quia vox lamentationis 19
audita eſt è Sione, dicens; Quomodo direpti
ſumus? maximo pudore ſuffuſi ſumus?
dereliquimus enim terram, & corruerunt habitationes
noſtræ. Propterea, audite mulieres 20
ſermonem Domini, & percipiant aures veſtræ
verbum oris ejus; & docete filias veſtras
lamenta, & quælibet ſociam ſuam cantum.
Nam aſcendit mors ad feneſtras noſtras, & 21
ingreſſa eſt in palatia noſtra, ad conſumendos
pueros è vicis, & juvenes è plateis. Sic enim 22
ait Dominus, Cadent hominum cadavera ſicut
fimus ſuper faciem terræ, & ſicut fœnum
poſt meſſorem, nec ullus erit collector. Sic 23
dicit Dominus, Ne gloriator ſapiens in ſapientia
ſua, néve gloriator gigas in robore
ſuo, neque gloriator dives in divitiis ſuis:
Sed in hoc glorietur qui gloriatur, quòd *nimirum* 24
intelligat & agnoſcat me eſſe Dominum
exercentem beneficium, judicium, & juſtitiam
erga terram; & his me delectari, dicit
Dominus. Ecce dies venturi ſunt, ait Dominus; 25
quibus viſitabo omnem circuncisum cum
præputio, Ægyptios, & Judæos, Adumæos, 26
& Ammonitas, Moabitas, & omnes barbitonſos
qui degunt in ſolitudine: nam omnes hi
populi ſunt præputiati in carne ſua: omnes
autem Iſraelitæ præputiati in corde ſuo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*من انسان فهم فيفهم هذا * وكلمة فم الرب اليه ليخبرنا من اجل ماذا هلكت الارض 12
اسودست مثل البرية من ان لا تسلك * وقال الرب من اجل انهم تركوا ناموسي الذي 13
اعطيت قبل وجوههم * ولم يسمعوا صوتي * لكن مضوا خلف مراضي قلبهم الردي وخلف 14
الاصنام التي علمهم اباوهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب اله اسرايل ها انا اطعمهم الشدايد 15
واسقيهم ماء مرارة * وامررهم في الامم التي لم يعرفوها ولا اباوهم * وارسل عليهم السيف الي 16
ان ابيدهم به * هكذا يقول الرب ادعوا النايحات وليأتوا * وارسلوا الي الحكيمات * ولينطقوا 17 18
وليأخذوا عليكم نوحا وليهمل عيونكم دموعا * وليسل اجفانكم ماء * لان صوت المرثية سمع 19
في صهيون * كيف شقينا وخزينا جدا لانا تركنا الارض واطرحنا مساكننا * اسمعن ايتها
النسوة كلمة الرب ولتقبل اذانكم كلمات فمه * وعلمن بناتكن مرثية * والمراة صاحبتها 20
نوحا * لان الموت صعد ارضكم * واتي من كواكم ليكسر الاطفال من خارج والشباب من 21
السوارع * وتصير اموات الناس سهن علي وجه بقعة ارضكم * ومثل العشب خلف الحاصد 22
وليس يكون من يجمع * هكذا يقول الرب لا يفتخر الحكيم بحكمته * ولا يفتخر 23
القوي بقوته * ولا يفتخر الغني بغناه * لكن بهذا فليفتخر المفتخر * ان يفهم ويعرف 24
اني انا هو الرب صانع الرحمة والحكم والعدل علي الارض * لان بهذا ارادتي يقول الرب * ها 25
ايام تاتي يقول الرب * واتعهد علي جميع المختونين قلفاتهم * علي مصر * وعلي اليهودية 26
وعلي ادوم * وعلي جميع بني عمون * وعلي بني مواب * وعلي كل من يجز ما علي وجهه
السكان في البرية * لان كل الامم غير مختونة بالجسد * وكل بيت اسرايل غير
مختونين بقلوبهم *

Si quis prudens eſt, & hæc intelligit, & 12
verbum oris Domini ad ipſum eſt; indicet
nobis qua de cauſa perierit hæc terra, deſolata
ſit quaſi deſertum, nemoque illic
ambulet. Dixitque Dominus, Quia de- 13
ſeruerunt legem meam quam dedi ipſis
aſpicientibus, nec audierunt vocem
meam; Sed abierunt poſt placita cordis 14
ſui peſſimi, & poſt idola quæ docuerunt
eos majores ipſorum: Propterea ſic dicit 15
Dominus Deus Iſraelis; Ecce ego cibabo
eos calamitatibus, & potabo illos aquâ
amaritudinis. Et dilacerabo eos inter 16
gentes quas nec ipſi nec patres eorum
cognoverunt: & immittam in eos gladium,
donec eos ipſo conſumam. Ita di- 17
cit Dominus, Convocate lamentatrices,
& veniant; mittite ad mulieres ſapientes,
ut pronuntient edantque de vobis 18
carmen lugubre; demittant oculi veſtri
lachrymas, & ex palpebris veſtris affluat
aqua: Nam vox lamentationis 19
audita eſt in Sione; Quomodo ſummâ
miſeriâ & pudore perculſi ſumus? dereliquimus
enim terram, & abjecimus habitationes
noſtras. Audite O fœminæ ver- 20
bum Domini, & percipiant aures veſtræ
verba oris ejus: docete filias veſtras
carmen lugubre, & altera alteram lamentum:
Quia mors ad terram veſtram 21
aſcendit, & venit per feneſtras veſtras,
ut pueros foris confringat, & juvenes è
plateis: Eruntque cadavera humana 22
publica ſuper faciem regionis terræ veſtræ,
& quaſi gramen poſt meſſorem, nec
erit qui colligat. Sic ait Dominus, Ne ſe 23
jactet ſapiens ob ſapientiam ſuam, neque
ſe jactet robuſtus ob robur ſuum, neque
ſe jactet dives propter divitias ſuas:
Sed ob hoc ſe jactet glorius, quòd in- 24
telligat ſciatque me eſſe Dominum exercentem
miſericordiam, judicium, &
juſtitiam ſuper terram; in his enim eſt
voluptas mea, dicit Dominus. Ecce dies 25
venient, dicit Dominus, quibus viſitabo
omnes circuncisos præputiis, Ægyptum, 26
& Judæam, Edom, & omnes filios
Ammon, filios Moab, & omnes tondentes
quod ſuper faciem ſuam eſt,
degentes in deſerto: omnes enim gentes
corpore ſunt incircuncisæ, tota verò domus
Iſraelis ſunt incircuncisi cordibus.

ירמיה : י

CAP. X. י

domus , vos super DOMINUS est locutus quod verbum Audite

1 שִׁמְעוּ אֶת־הַדָּבָר אֲשֶׁר דִּבֶּר יְהוָה עֲלֵיכֶם בֵּית

, discatis ne gentium viam *In* : Dominus dixit Sic .Israel

2 יִשְׂרָאֵל׃ כֹּה אָמַר יְהוָה אֶל־דֶּרֶךְ הַגּוֹיִם אַל־תִּלְמָדוּ

.eis ab gentes *consternentur* sed : *consternemini* ne cœlorum signis à &

וּמֵאֹתוֹת הַשָּׁמַיִם אַל־תֵּחָתּוּ כִּי־יֵחַתּוּ הַגּוֹיִם מֵהֵמָּה׃

,illud præcidit sylva de lignum quia : *ipsa* vanitas populorum statuta Quia

3 כִּי־חֻקּוֹת הָעַמִּים הֶבֶל הוּא כִּי עֵץ מִיַּעַר כְּרָתוֹ

auro *in* & , argento *In* .ascia in artificis manuum opus

4 מַעֲשֵׂה יְדֵי־חָרָשׁ בַּמַּעֲצָד׃ בְּכֶסֶף וּבְזָהָב

.*prodibit* non & ,*illa* confortaverunt malleis in & clavis In .illud decoravit

יְיַפֵּהוּ בְּמַסְמְרוֹת וּבְמַקָּבוֹת יְחַזְּקוּם וְלוֹא יָפִיק׃

non quia ,*portabuntur* portando ;*loquentur* non & , *ipsa* *æquabilitatis* palma Sicut

5 כְּתֹמֶר מִקְשָׁה הֵמָּה וְלֹא יְדַבֵּרוּ נָשׂוֹא יִנָּשׂוּא כִּי־לֹא

non *benefacere* etiam & ,*malefacient* non quia , *eis ab timeatis* ne : *incedent*

יִצְעָדוּ אַל־תִּירְאוּ מֵהֶם כִּי־לֹא יָרֵעוּ וְגַם־הֵיטֵיב אֵין

tuũ nomen magnũ & , *tu* Magnus .Domine tu sicut non A .*eis*

6 אוֹתָם׃ מֵאֵין כָּמוֹךָ יְהוָה גָּדוֹל אַתָּה וְגָדוֹל שִׁמְךָ

quia ,convenit tibi quia ,gentium rex te timebit non Quis .fortitudine in

7 בִּגְבוּרָה׃ מִי לֹא יִרָאֲךָ מֶלֶךְ הַגּוֹיִם כִּי לְךָ יָאָתָה כִּי

.tu sicut non *à* eorum *regno omni in* & , gentium *sapientibus omnibus in*

בְכָל־חַכְמֵי הַגּוֹיִם וּבְכָל־מַלְכוּתָם מֵאֵין כָּמוֹךָ׃

.*ipsum* lignum vanitatum Eruditio .agent stultè & ,desipient *uno in* Et

8 וּבְאַחַת יִבְעֲרוּ וְיִכְסָלוּ מוּסַר הֲבָלִים עֵץ הוּא׃

,artificis opus ,Uphaz de aurum & ,afferetur Tarsis de extensum Argentum

9 כֶּסֶף מְרֻקָּע מִתַּרְשִׁישׁ יוּבָא וְזָהָב מֵאוּפָז מַעֲשֵׂה חָרָשׁ

sapientum opus ,eorũ indumentũ purpura &,hyacinthus : aurificis manus &

וִידֵי צוֹרֵף תְּכֵלֶת וְאַרְגָּמָן לְבוּשָׁם מַעֲשֵׂה חֲכָמִים

rex & , vivens Deus , *ipse* veritas Deus Dominus Et .*ipsa* universa

10 כֻּלָּם׃ וַיהוָה אֱלֹהִים אֱמֶת הוּא־אֱלֹהִים חַיִּים וּמֶלֶךְ

.ej⁹ *indignationem* gentes sustinebunt non & ,terra contremiscet ejus ira ab :*seculi*

עוֹלָם מִקִּצְפּוֹ תִּרְעַשׁ הָאָרֶץ וְלֹא־יָכִלוּ גוֹיִם זַעְמוֹ׃

,fecerunt non terram & *cœlos* qui Dii : eis dicetis *hoc Secundum*

11 כִּדְנָה תֵּאמְרוּן לְהוֹם אֱלָהַיָּא דִּי־שְׁמַיָּא וְאַרְקָא לָא עֲבַדוּ

,sua potẽtia in terram *Faciens* .hi cœlo sub de & ,terra è pereant

12 יֵאבַדוּ מֵאַרְעָא וּמִן־תְּחוֹת שְׁמַיָּא אֵלֶּה׃ עֹשֵׂה אֶרֶץ בְּכֹחוֹ

.cœlos extendit sua prudentia in & ,sua sapientia in orbem *stabiliens*

מֵכִין תֵּבֵל בְּחָכְמָתוֹ וּבִתְבוּנָתוֹ נָטָה שָׁמָיִם׃

extremo ab *vapores faciet ascendere &* , cœlo in aquarũ *strepitum eũ dare vocem Ad*

13 לְקוֹל תִּתּוֹ הֲמוֹן מַיִם בַּשָּׁמַיִם וַיַּעֲלֶה נְשִׂאִים מִקְצֵה

omnis *Brutescit* .suis thesauris de ventũ *eduxit &* ,*fecit pluviæ* fulgura : terræ

14 אֶרֶץ בְּרָקִים לַמָּטָר עָשָׂה וַיּוֹצֵא רוּחַ מֵאֹצְרֹתָיו׃ נִבְעַר כָּל־

falsitas quia : sculptili à *fusor* omnis est affect⁹ Pudore .scientiã propter homo

אָדָם מִדַּעַת הֹבִישׁ כָּל־צוֹרֵף מִפָּסֶל כִּי שֶׁקֶר

tẽpore in : *errorum* opus *ipsa* Vanitas .*eis* in spirit⁹ non &,ej⁹ cõflatile

15 נִסְכּוֹ וְלֹא־רוּחַ בָּם׃ הֶבֶל הֵמָּה מַעֲשֵׂה תַּעְתֻּעִים בְּעֵת

plasmator quia ,Jahacob pars hæc sicut Non .peribunt *eorum* visitationis

16 פְּקֻדָּתָם יֹאבֵדוּ׃ לֹא־כְאֵלֶּה חֵלֶק יַעֲקֹב כִּי־יוֹצֵר

exercituum Dominus : ejus hæreditatis virga Israel & , ipse omnium

הַכֹּל הוּא וְיִשְׂרָאֵל שֵׁבֶט נַחֲלָתוֹ יְהוָה צְבָאוֹת

.*munitione in habitans* ,*tuam negotiationem* terra de *Collige* .ejus nomen

17 שְׁמוֹ׃ אִסְפִּי מֵאֶרֶץ כִּנְעָתֵךְ יוֹשַׁבְתִּי בַּמָּצוֹר׃

Versio VUL. LAT.

CAP. X.

1 Audite verbum, quod locutus
2 est Dñs sup vos, dom⁹ Israel. Hæc dicit Dñs; Juxta vias Gentium nolite discere : & à signis cœli nolite metuere, quæ timent Gen-
3 tes: Quia leges populorum vanæ sunt : quia lignũ de saltu præcidit opus man⁹ artificis in ascia.
4 Argento & auro decoravit illud: clavis et malleis compegit, ut non
5 dissolvatur. In similitudinẽ palmæ fabricata sunt, & non loquentur : portata tollentur, quia incedere non valent; nolite ergò timere ea, quia nec malè pos-
6 sunt facere, nec benè. Non est similis tuî, Dñe : magnus es tu, & magnũ nomen tuum in fortitu-
7 dine. Quis non timebit te, ô rex Gentium ? tuũ est enim decus : inter cunctos sapientes Gentium, & in universis regnis eorum nul-
8 lus est similis tuî. Pariter insipientes & fatui probabuntur : doctrina vanitatis eorum lignũ est.
9 Argentum involutum de Tharsis affertur, & aurũ de Ophaz: opus artificis, & man⁹ ærarii : hyacinthus & purpura indumentum eorum ; opus artificum universa
10 hæc. Dominus autem Deus verus est : ipse Deus vivens, & rex sempitern⁹ : ab indignatione ej⁹ commovebitur terra : & non sustinebunt Gentes comminatio-
11 nem ejus. Sic ergò dicetis eis; Dii, qui cœlos & terram non fecerunt, pereant de terra, & de his, quæ sub cœlo sunt.
12 Qui facit terram in fortitudine sua, præparat orbem in sapientia sua, & prudentiâ suâ
13 extendit cœlos. Ad vocem suam dat multitudinem aquarum in cœlo, & elevat nebulas ab extremitatibus terræ : fulgura in pluviam facit, & educit ventum
14 de thesauris suis. Stultus factus est omnis homo à scientia, confusus est artifex omnis in sculptili: quoniam falsũ est ꝙ confla-
15 vit, & non est spirit⁹ in eis. Vana sunt, & op⁹ risu dignũ : in tempore visitationis suæ peribunt.
16 Non est his similis pars Jacob : qui enim formavit omnia, ipse est : & Israel virga hæreditatis ejus : Dominus exercituum no-
17 men illi. Congrega de terra confusionem tuam, quæ habitas in obsidione.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. ι΄.

1 Ἀκούσατε (α) τὸν λόγον κυρίου, ὃν (β) ἐλάλησεν ἐφ' ὑμᾶς οἶκος Ἰσραήλ. 2 Τάδε λέγει κύριος, Κατὰ τὰς ὁδοὺς τῶν ἐθνῶν μὴ (γ) μανθάνετε, καὶ ἀπὸ τῶν σημείων τοῦ οὐρανοῦ μὴ φοβεῖσθε, ὅτι φοβοῦνται αὐτὰ τοῖς προσώποις αὐτῶν. 3 Ὅτι τὰ νόμιμα τῶν ἐθνῶν μάταια. ξύλον ἐστὶν ἐκ τοῦ δρυμοῦ ἐκκεκομμένον, ἔργον τέκτονος, 4 καὶ χώνευμα, Ἀργυρίῳ καὶ χρυσίῳ κεκαλλωπισμένα (δ), ἐν σφύραις καὶ ἥλοις ἐστερέωσαν (¨) αὐτά· Θήσουσιν αὐτά, καὶ οὐ κινηθήσονται. 5 ἀργύριον τορευτόν ἐστιν, οὐ πορεύσονται, ἀργύριον (ε) προσβλητόν ἐστι. 9 Ἀπὸ Θαρσὶς ἥξει χρυσίον Μωφάζ, καὶ (ζ) χεὶρ χρυσοχόων, ἔργα τεχνιτῶν πάντα, ὑάκινθον καὶ πορφύραν ἐνδύσουσιν αὐτά. 5 Αἰρόμενα ἀρθήσονται, ὅτι οὐκ ἐπιβήσονται. μὴ φοβηθῆτε αὐτά, ὅτι (η) οὐ μὴ κακοποιήσωσιν, καὶ ἀγαθὸν οὐκ ἔστιν ἐν αὐτοῖς. 11 Οὕτως ἐρεῖτε αὐτοῖς, Θεοὶ οἳ τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν οὐκ ἐποίησαν, ἀπολέσθωσαν (θ) ἐκ τῆς γῆς, καὶ ὑποκάτωθεν τοῦ οὐρανοῦ τούτου. 12 Κύριος ὁ ποιήσας τὴν γῆν ἐν τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ, ὁ ἀνορθώσας τὴν οἰκουμένην ἐν τῇ σοφίᾳ αὐτοῦ, καὶ τῇ φρονήσει αὐτοῦ ἐξέτεινε τὸν οὐρανόν, 13 Καὶ πλῆθος ὕδατος ἐν οὐρανῷ· καὶ ἀνήγαγε νεφέλας ἐξ ἐσχάτου τῆς γῆς, ἀστραπὰς εἰς ὑετὸν ἐποίησε, καὶ ἐξήγαγε φῶς ἐκ θησαυρῶν αὐτοῦ. 14 Ἐμωράνθη πᾶς ἄνθρωπος ἀπὸ γνώσεως, κατῃσχύνθη πᾶς χρυσοχόος ἐπὶ τοῖς γλυπτοῖς αὐτοῦ, ὅτι ψευδῆ ἐχώνευσεν, οὐκ ἔστι πνεῦμα ἐν αὐτοῖς. 15 Μάταιά ἐστιν ἔργα ἐμπεπαιγμένα, ἐν καιρῷ 16 ἐπισκοπῆς αὐτῶν ἀπολοῦνται. Οὐκ ἔστι τοιαύτη μερὶς τῷ Ἰακώβ, ὅτι ὁ πλάσας τὰ πάντα, αὐτὸς κληρονομία 17 αὐτοῦ, Κύριος ὄνομα (ι) αὐτῷ. Συνήγαγεν ἔξωθεν τὴν ὑπόστασίν σου, (κ) κατοικοῦσαν ἐν ἐκλεκτοῖς.

CAP. X.

Audite verbum Domini, quod locutus est super vos, domus Israel. Hæc dicit Dominus; Juxta vias gentium nolite discere: & à signis cœli nolite metuere: (a) quia timent ea faciebus suis: Quia legitima gentium vana sunt. Lignum est de saltu præcisum, opus artificis, et conflatio. Argento, & auro decorata: in malleis & clavis firmaverunt illa: Collocabunt ea, & non movebuntur: argentum tornatile est: non ambulabunt: argentum productum est. A Tharsis veniet aurum Mophaz, & manus aurificum: opera artificum omnia: hyacintho & purpurâ induent ea: Portata tollentur: quia non conscendent. Ne timeatis ea, quia non malefacient; & bonum non est (b) in eis. Sic dicetis eis; Dii, qui cœlum & terram non fecerunt, dispereant de terra, & ex subter cœlo hoc. Dominus qui fecit terram in fortitudine sua, qui erexit orbem in sapientia sua, & prudentiâ suâ extendit cœlum: & multitudinem aquæ in cœlo: & eduxit nubes ab extremo terræ: fulgura in pluviam fecit: & eduxit (c) lumen ex thesauris suis. Stultus factus est omnis homo à scientia: confusus est omnis aurifex in sculptilibus suis: quia falsa conflavit: non est spiritus in eis. Vana sunt opera, ridicula: in tempore visitationis suæ peribunt. Non est talis pars Jacob. Qui enim formavit omnia; (d) ipse est hereditas ejus: Dominus nomen illi. Congregavit de foris substantiam suam, quæ habitas (e) in electis.

MS. A. (α) λόγον (β) ἐλάλησεν κύριος ἐφ' ὑμᾶς (γ) πορεύεσθε (δ) ἐστίν, (¨) αὐτά, καὶ οὐ (ε) προσβλητόν. Ἀπὸ Θαρσεὶς (ζ) χεῖρες (η) οὐ κακοποιήσουσιν, (θ) ἀπὸ τῆς γῆς, (ι) αὐτοῦ. (κ) κατοικοῦσα

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

י

1 2 קבילו ית פתגמא דמלל יי עליכון בית ישראל: כדנן אמר יי מאורחת עממיא לא תילפון
3 ומאתון דמשתנין בשמיא לא תתברון ארי מתברין עממיא מנהון: ארי גזרת עממיא
4 למה אנון ארי אעא מחורשא קיץ ליה עובד ידי נגר בחצינא: בכספא ובדהבא חפי ליה
5 במסמרין ובמקבין מתקיף ליה דלא יצטלי: עובד נגיד זקיפין אנון ולא ממללין
אתנטלא יתנטלון ארי לית בהון רוחא להלכא לא תדחלון מנהון ארי לא מבאשין ואף
6 7 לאיטבא לית אנון ידעין: לית בר מנך יי רב את ורב שמך בגבורתא: מן לא ידחל מן
קדמך מלך על כל עממיא ארי דילך היא מלכותא ארי בכל חכימי עממיא ובכל
8 מלכותהון לית בר מנך: ובחדא יחובון עממיא על דאטפשו על דפלחו לטעותא דלמא
9 אנון: כספא דמחפן מאפריקא מיתן ודהבא מאופיר עובד נגר וידי קיני תכלא וארגונא
10 לבושהון עובד חכימין כולהון: ויי אלהים קשוט הוא אלה קים ומלך עלמין מרוגזיה
11 תזוע ארעא ולא יכלין עממיא לסוברא רוגזיה: דנא פרשגן אגרתא דשלח ירמיה נביא
לות שאר סבי גלותא די בבבל ואם ימרון לכון עממיא דאתון ביניהון פלחו לטעותא
בית ישראל כדין תתיבון וכדין תימרון להון טעון דאתון פלחין להון טעון דלית בהון
צרוך אנון מן שמיא לא יכלין לאחתא מטרא ומן ארעא לא יכלין לצמחא פרין אנון
12 ופלחיהון ייבדו מארעא וישתצון מן תחות שמיא אלין: וכדנא תימרון להון אנחנא
פלחין לדעביד ארעא בחיליה שכלל תבל בחוכמתיה בסוכלתנותיה תלא שמיא:
13 לקל מתניה רכפת דמיין בשמיא ומסיק עננין מסיפי ארעא ברקין לזמן מטרא עבד
14 ומפק רוחין מבית גנזוהי: אתברו כל עממיא מלמדע חכמא בהית כל קיני מלמעבד
15 צלם ארי שקרא אתכונין ולא רוחא בהן: למה אנון עובד תלעבא בעדן
16 דאסעד עליהון חוביהון ייבדון: לא כאלן חולקיה דיעקב ארי דברא כולא הוא
17 וישראל שבטא דאחסנתיה יי צבאות שמיה: כנשי מארעא סחורתיך דיתבא בתוקפא
בקריון כריכן:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. X.

Suscipite verbum quod loquitur Dominus super vos domus Israel. Hæc dicit Dominus: De viis gentium nolite discere, & de signis quæ mutantur sunt in cœlis, ne conterreamini, à quibus populi conterrentur. Quia decreta populorum vana sunt, quia lignum de sylva præciditur ei: op⁹ manuum fabri lignarii in ascia. Argento & auro cooperit illud, clavis & malleis corroborat illud, ut non inclinetur. Opere ductili eriguntur ea, & non loquuntur, portando portantur, quia non habent spiritum ad ambulandum. Ne timeatis ab eis, quia non malefaciunt, nec sciunt benefacere. Non est præter te Domine; magnus es tu, & magnum nomen tuum in fortitudine. Quis non timebit à facie tua, Rex omnium populorum? tuum est enim regnum; quia in omnib⁹ sapientibus populorum, & in universis regnis eorum nullus est absque te. Et pariter populi delinquunt, eò quòd insipientes facti sunt dum colunt idola quæ vana sunt. Argentum involutum ex Africa afferunt, & aurum ex Ophir, opus fabri lignarii & manuum argentarii: hyacinth⁹ & purpura indumentum eorum, opus sapientum universa hæc. Et Dominus Deus verus est, ipse est Deus vivus, & rex sæculorum. A furore ejus commovebitur terra, & non poterunt populi sustinere iram ejus. Hoc est exemplar epistolæ quam misit Jeremias propheta ad reliquos seniores transmigrationis, qui erant in Babylonia. Si enim dixerint vobis populi inter quos vos habitatis: Domus Israel servite idolis; sic respondebitis, & sic dicetis eis: Idola quibus vos servitis, errores sunt in quibus nulla est utilitas : ex cœlo non possunt deducere pluviam, & ex terra non possunt producere fruct⁹: ipsa & cultores eorum peribunt de terra, & consumentur de his, quæ sub cœlis istis sunt. Et sic dicetis eis: Nos colimus eum qui fecit terram in virtute sua, fundavit orbem in sapientia sua, & in prudentia sua appendit cœlos. Ad vocem suam dat impetum aquarum in cœlis, & ascendere facit nubes ab extremitatibus terræ: fulgura in tempore pluviæ fecit, & educit ventos de thesauris suis. *Facti* sunt omnes populi nescientes sapientiam : *confusus est omnis argentarius* à faciendo sculptile: quia frustra conflarunt ea, & non est spiritus in eis. Vana sunt, opus subsannatione dignum: in tempore quo visitavero super eos peccata eorum peribunt. Non est sicut hæc pars Jacob; quia qui creavit omnia, ipse est: & Israel virga hæreditatis ejus, Dominus exercituum nomen ejus. Congrega de terra mercimonia tua quæ habitas in *munitione*, in civitatibus munitis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *

* ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܝܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܀ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܘܪܚܐ
ܕܥܡܡܐ ܠܐ ܬܐܠܦܘܢ. ܘܡܢ ܐܬܘܬܐ ܕܫܡܝܐ ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ. ܡܛܠ ܕܥܡܡܐ ܗܘ ܕܚܠܝܢ ܡܢܗܘܢ.
* ܡܛܠ ܕܕܚܠܬܐ ܕܥܡܡܐ ܠܐ ܡܕܡ ܐܢܝܢ. ܡܛܠ ܕܩܝܣܐ ܡܢ ܥܒܐ ܦܣܝܩ. ܥܒܕ ܐܝܕܝ
ܢܓܪܐ ܒܢܥܨܕܐ. * ܒܟܣܦܐ ܘܒܕܗܒܐ ܡܨܒܬܝܢ. ܒܡܩܒܬܐ ܘܒܣܡܪܐ ܡܫܪܪܝܢ ܠܗܘܢ 4
ܕܠܐ ܢܬܦܪܩܘܢ. * ܐܝܟ ܕܩܠܐ ܙܩܝܦܝܢ ܘܠܐ ܡܡܠܠܝܢ. ܘܡܫܩܠ ܡܫܩܠܝܢ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ 5
ܡܗܠܟܝܢ. ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܡܢܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܒܐܫܝܢ ܘܐܦܠܐ ܡܛܐܒܝܢ. * ܠܝܬ ܕܕܡܐ ܠܟ 6
ܡܪܝܐ: ܪܒ ܐܢܬ ܘܪܒ ܫܡܟ ܒܓܢܒܪܘܬܐ. * ܡܢ ܠܐ ܢܕܚܠܟ ܡܠܟܐ ܕܥܠܡܐ. ܕܠܟ ܝܐܐ 7
ܐܝܩܪܐ. ܕܒܟܠܗܘܢ ܚܟܝܡܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܒܟܠܗܘܢ ܡܠܟܘܬܗܘܢ
ܠܝܬ ܕܕܡܐ ܠܟ. * ܘܐܟܚܕܐ ܢܐܒܕܘܢ ܘܢܫܬܠܡܘܢ. ܡܪܕܘܬܐ ܣܪܝܩܬܐ ܕܕܚܠܬܐ ܕܩܝܣܐ. * ܣܐܡܐ 8
ܓܒܝܐ ܡܢ ܬܪܫܝܫ ܡܬܝܬܐ. ܘܕܗܒܐ ܡܢ ܐܘܦܝܪ. ܥܒܕ ܢܓܪܐ ܘܐܝܕܝ ܨܝܪܐ. ܬܟܠܬܐ ܘܐܪܓܘܢܐ 9
ܠܒܘܫܗܘܢ. ܥܒܕܐ ܕܚܟܝܡܐ. * ܘܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܗܘܝܘ ܐܠܗܐ ܚܝܐ ܘܡܠܟܐ 10
ܕܥܠܡܐ. ܡܢ ܪܘܓܙܗ ܬܙܘܥ ܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܡܣܝܒܪܝܢ ܥܡܡܐ ܪܘܓܙܗ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪܘ ܠܗܘܢ. 11
ܐܠܗܐ ܕܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ ܠܐ ܥܒܕܘ. ܢܐܒܕܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܘܡܢ ܬܚܝܬ ܫܡܝܐ ܗܠܝܢ. * ܡܪܝܐ 12
ܥܒܕ ܐܪܥܐ ܒܚܝܠܗ. ܘܬܩܢ ܬܒܝܠ ܒܚܟܡܬܗ. ܘܒܣܘܟܠܗ ܡܬܚ ܫܡܝܐ. ܢܬܠ ܩܠܐ 13
ܕܪܘܥܡܐ ܕܡܝܐ ܒܫܡܝܐ. ܘܡܣܩ ܥܢܢܐ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܒܪܩܐ ܠܡܛܪܐ ܥܒܕ. ܘܡܦܩ
ܪܘܚܐ ܡܢ ܓܙܘܗܝ. * ܫܛܝܘ ܟܠ ܒܢܝ ܐܢܫܐ ܡܢ ܝܕܥܬܐ. ܒܗܬܘ ܟܠ ܨܐܪܝ ܕܗܒܐ ܡܢ 14
ܨܠܡܐ ܕܥܒܕܘ. ܡܛܠ ܕܫܘܩܪܐ ܢܣܟܘ ܘܪܘܚܐ ܠܝܬ ܒܗܘܢ. * ܠܐ ܡܕܡ ܐܢܘܢ. 15
ܘܥܒܕܐ ܐܢܘܢ ܡܨܚܝܢ. ܒܙܒܢܐ ܕܣܘܥܪܢܗܘܢ ܢܐܒܕܘܢ. * ܠܐ ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܡܢܬܗ ܕܝܥܩܘܒ 16
ܡܛܠ ܕܗܘ ܕܒܪܐ ܟܠ. ܗܘܝܘ ܡܢܬܗܘܢ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܫܒܛܐ ܕܝܪܬܘܬܗ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ
ܫܡܗ. * ܟܢܫܝ ܡܢ ܐܪܥܐ ܨܥܪܟܝ ܝܬܒܬܐ ܒܐܘܠܨܢܐ. 17

CAP. X.

Audite ſermonem quem protulit de vobis 1
Dominus O Iſraelitæ : Sic dicit Dominus ; 2
Viam gentium ne addiſcatis, ſigna cœleſtia
ne colatis, quia gentes quidem colunt ea :
Nam idola gentium nihil ſunt : ſunt enim lignum 3
è ſylva cæſum, opus manuum fabri aſciâ
dolatum, Argento & auro ſunt obducta, 4
laminis ferreis claviſque firmant illa ne diſjungantur :
Tanquam palmæ ſunt erecta, ſed 5
non loquuntur ; & portando portant ea, quia
non incedunt. Ne colatis iſta, quia nec obſunt,
nec proſunt. Nullus eſt par tibi Domine, 6
quia maxim⁹ es & maximum nomen tuum
potentiâ. Quis non revereatur te rex omnium 7
ſeculorum, quandoquidem te decet honor
? cùm inter omnes gentium ſapientes, &
in toto regno ipſorum nemo par ſit tibi :
Simul ergò pereant ac deficiant documenta 8
vana idolorum ligneorum. Argentum optimum 9
è Tharſis advehitur, & aurum ex Ophir :
artificio fabri & manibus conflatoris *parantur*
: hyacinthus & purpura veſtimentum
eorum, textura peritorum. Dominus autem 10
Deus veritatis, Deus eſt vivorum & rex ſeculorum
; cujus ab ira contremiſcit terra, cujus
indignationem ſuſtinere nequeunt populi.
Sic dicito illis ; dii qui cœlum ac terram 11
non condiderunt, pereant hujuſmodi de
terra & de ſub cœlo. Dominus terram fecit 12
potentiâ ſuâ, condidit orbem ſapientiâ ſuâ,
mentéque ſuâ cœlum extendit : Edit ſonitum 13
fragoris aquarum in cœlo, elicit nubes
ab extremitatibus terræ, fulgura ad pluviam
facit, ventóſque depromit de theſauris ſuis.
Deſipuerunt (i. *aberrârunt*) omnes homines 14
à ſcientia, pudefacti ſunt omnes aurifices à
ſculptilibus quæ fecerunt : falſitaté enim conflaverunt,
& non eſt ſpiritus in eis: Nihil ſunt, 15
ſed opificia ſtulta ſunt : quo tempore viſitabuntur,
peribunt. Non eſt ut iſtorum pars 16
Jacobi ; quoniam is qui creavit omnia, idem
eſt pars eorum, & Iſrael *viciſſim* tribus hæreditatis
ejus, Dominus potentiſſimus eſt nomen
ejus. Congrega de terra ignominiam 17
tuam tu quæ ſedes in anguſtia :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل العاشر * * الاصحاح السابع *

* اسمعوا قول الرب الذي تكلم به عليكم يا بيت اسرائيل * هكذا يقول الرب : في 1 2
طرقات الامم لا تسلكوا * ومن علامات السماء لا تخافوا * لانهم يخافوها بوجههم * لان 3
شرايع الامم باطلة * عود هو من الغيضة مقطوع * عمل نجار وسبيك * بفضة وذهب 4
مزينان هما * بمطرقات ومسامير سددوهما فلا يتحركان [MS. Oxon.* ليس مثلك يا 6
رب العظيم * وعظيم هو اسمك بالجبروت * فمن لا يخافك من ملوك جميع الارض * لان 7
الملك لك يصلح * لان ليس في جميع حكما الشعوب * وجميع الممالك مثلك * فاما 8
تعليم رهبة الالهة الخشب * وعبادتها فيبطل ويهلك جميعا * فضة مخروطة هما فلا 9
يذهبان * فضة مفرغة من ترسيس تاتي * ذهب موفاز وايادي الصياغ * جميع اعمال
الصناع * يكسوها ياقوتا وبرفيرا * محمولة ترفع لانها لا تمشي [MS. Oxon.* والرب هو اله 10
الحق * وهو اله الحياة * وملك عالم * من غضبه ترتعد الارض * ولا تصبر الشعوب
لغضبه] * لا تخافوها * لانها لا تصنع سوا وليس فيها صلاح * هكذا يقال لهم * الهة التي 5 11
لم تصنع السماء والارض ليهلكوا من الارض ومن تحت هذه السماء * الرب صنع الارض بقوته 12
وقوم العالمين بحكمته * وبفهمه مد السماء وكثر ماء في السماء * واصعد سحبا من آخر الارض 13
صنع بروقا للمطر * واخرج نورا من كنوزه * جهل كل انسان من المعرفة * خزي كل صايغ 14
بمنحوتاته * لانهم سبكوا الكذب * ليس فيها روح * باطلة هي * اعمال لعبية * في زمان 15
تعهدكم يهلكون * ليس هذا النصيب بعينه ليعقوب * لان جابل الكل هو ميراثه 16
الرب اسمه * جمع قواتك من خارج ايتها الساكنة في المحتارين * 17

CAP. X.

Textus ſeptimus.

Audite dictum Domini quod pronuntiavit de vobis O domus Iſraelis : 1
Sic ait Dominus, In viis gentium ne incedatis, 2
& à ſignis cæleſtibus ne timeatis,
quoniam illæ facie tenus ea formidunt :
Nam ceremoniæ gentium vanæ ſunt ; lignum 3
eſt è ſylva reſectum, opus fabri
lignarii, aut fuſura : Argento & auro 4
exornant utrumque, & malleis claviſque
confirmant, ne moveantur.
[MS.Ox. *Non eſt ſimilis tui Domine,* 6
maximus es, & maximum nomen tuum
potentiâ. Et quiſnam eſt ex omnibus regibus 7
terræ qui te non revereatur: cùm tibi
convenit regnum : nam inter omnes ſapientes
gentium, & inter omnia regna
non eſt par tibi. Doctrina verò timendi 8
deos ligneos, & cultus eorum, & ceſſabit
& peribit ſimul.] *Argentum ſunt inciſum,* 9
ideo non ambulant ; argentum ſolidum
è Tharſis advectum, aut aurum
Mophaz, manus aurificis, omnia artificum
opificia : veſtiunt ea hyacintho & purpurâ,
& geſtata vehuntur, quia non gradiuntur.
[MS.Ox. *Dominus autem Deus* 10
veritatis : & ille vivorum Deus eſt, &
rex ſeculorum : ab ira ejus contremiſcet
terra, neque ſuſtinebunt gentes indignationem
ejus.] *Ne timeatis hæc, quia* 5
neq; malum inferunt, neque ullum eſt in
eis emolumentum. Ita dicatur illis, dii 11
qui cœlum ac terram non fecerunt, pereant
de terra & de ſub cœlo iſto. Dominus 12
terram fecit virtute ſuâ, ſtabilivit
orbem habitabilem ſapientiâ ſuâ, ſuoq;
intellectu cœlum extendit, & aquæ copiam
in cœlo : Extrahit nubes ab extremo 13
terræ, facit imbri fulgura, &
profert fulgorem de theſauris ſuis.
Cognitionis imperitus eſt omnis homo, 14
pudefactus eſt omnis aurifex ſculptilibus
ſuis : mendacium enim conflaverunt,
res in quibus non eſt ſpiritus, Quæ 15
vanæ ſunt, opera ludicra : tempore viſitationis
veſtræ peribunt. Non eſt hæc 16
eadem portio Jacobi ; nam plaſmator
omnium eſt hæreditas ejus, Dominus
nomen ejus. Recipe facultates tuas extrinſecùs 17
O quæ habitas inter attonitos.

ירמיה : יא

vice in terræ habitatores *jaciens funda ego* Ecce :Dominus dixit ſic Quia
18 כי־כה אמר יהוה הנני קולע את־יושבי הארץ בפעם
ſuper mihi Væ .inveniant ut *eis faciam anguſtiam* & : hac
19 הזאת והצרותי להם למען ימצאו : אוי־לי על־
hanc Profectò : *dixi* ego & : mea plaga eſt *doloroſa* ,mea contritione
שברי נחלה מכתי ואני אמרתי אך זה
mei funiculi omnes & ,eſt vaſtatũ meũ *Tentorium* .*eam feram &* infirmitatẽ
20 חלי ואשאנו : אהלי שדד וכל־מיתרי
,meũ tẽtoriũ ultrà *extẽdens* non:*ipſi* nõ *&*,me *ſunt egreſſi* mei filii:ſunt dirupti
נתקו בני יצאני ואינם אין־נטה עוד אהלי
non Dominum &,paſtores ſunt effecti *bruti* Quia .meas cortinas *erigens* &
21 ומקים יריעותי : כי נבערו הרעים ואת־יהוה לא
Vox .eſt *diſperſa* eorũ *paſcua* omnis &,intellexerũt non Propterea.quæſierũt
22 דרשו על־כן לא השכילו וכל־מרעיתם נפוצה: קול
ponendum ad,Aquilonis terra de magna cõmotio & ,venit ecce auditionis
שמועה הנה באה ורעש גדול מארץ צפון לשום
quòd Domine Novi .draconũ habitaculũ,ſolitudinẽ Jehudah civitates
23 את־ערי יהודה שממה מעון תנים : ידעתי יהוה כי
.ſuũ greſſum *præparare &* ,ambulantis viri nec : ejus via hominis non
לא לאדם דרכו לא־לאיש הלך והכין את־צעדו :
fortè ne ,tuo *naſo* in non ,judicio in veruntamen ,Domine me Corripe
24 יסרני יהוה אך במשפט אל־באפך פן־
quæ gentes ſuper tuam *excandeſcentiam* Effunde .me facias diminuere
25 תמעטני : שפך חמתך על־הגוים אשר
:invocaverunt nõ *tuo nomine in* quæ *familias* ſuper &,te cognoverũt non
לא־ידעוך ועל משפחות אשר בשמך לא קראו
,eũ conſumpſerunt &,eum devoraverunt & , Jahacob comederunt quia
כי־אכלו את־יעקב ואכלהו ויכלהו
.fecerunt deſolare ejus habitaculum &
ואת־נוהו השמו :

C A P. XI. יא

Audite *:dicendũ ad*,Domino à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הדבר אשר־היה אל־ירמיהו מאת יהוה לאמר : שמעו
2 *ſuper* & ,Jehudah *virum* ad *loquemini* & , hujus pacti verba
את־דברי הברית הזאת ודברתם אל־איש יהודה ועל־
Deus Dominus dixit Sic , eos ad dices Et .Jeruſalaim habitatores
3 ישבי ירושלם: ואמרת אליהם כה־אמר יהוה אלהי
pacti verbis *audierit* non *qui vir* Maledict⁹ : Iſrael
ישראל ארור האיש אשר לא ישמע את־דברי הברית
eos *me educere* die in veſtris patribus præcepi Quod .hujus
4 הזאת: אשר צויתי את־אבותיכם ביום הוציאי־אתם
facite & ,*mea voce in* Audite :dicẽdo,ferrea fornace è,Ægypti terra è
מארץ־מצרים מכור הברזל לאמר שמעו בקולי ועשיתם
,populũ in mihi eritis & , vobis præcepero quæ omnia juxta ea
אותם ככל אשר־אצוה אתכם והייתם לי לעם
juramentũ *ſtatuere Pro* .Deum in vobis ero ego &
5 ואנכי אהיה לכם לאלהים : למען הקים את־השבועה
lacte fluentẽ terram eis *dandum ad* veſtris patribus juravi quod
אשר־נשבעתי לאבותיכם לתת להם ארץ זבת חלב
dixit Et.Domine Amen : dixi & ,reſpondi Et .hanc diẽ ſecundũ,melle &
6 ודבש כיום הזה ואען ואמר אמן יהוה : ויאמר
,Jehudah civitatib⁹ in hæc verba omnia Prædica :me ad Domin⁹
יהוה אלי קרא את־כל־הדברים האלה בערי יהודה
, hujus pacti verba Audite :dicendo,Jeruſalaim plateis in &
ובחצות ירושלם לאמר שמעו את־דברי הברית הזאת
veſtros patres in ſum conteſtatus conteſtando Quia .ea *facietis* &
7 ועשיתם אתם : כי העד העדתי באבותיכם
,hanc diem ad uſque ,Ægypti terra è eos *me facere* aſcendere die in
ביום העלותי אותם מארץ מצרים עד־היום הזה
.*mea voce in* Audite : dicendo,conteſtando &,ſurgendo manè
השכם והעד לאמר שמעו בקולי :

Verſio VULG. LAT.

18 Quia hæc dicit Dominus ; Ecce
ego longè projiciam habitatores
terræ in hac vice : & tribulabo
19 eos ita ut inveniantur. Væ mihi
ſuper contritione mea , peſſimâ
plagâ meâ. Ego autem dixi ; Planè
hæc infirmitas mea eſt,& portabo
20 illam. Tabernaculũ meum
vaſtatum eſt, omnes funiculi mei
dirupti ſunt, filii mei exierunt à
me, & non ſubſiſtunt : non eſt
qui extendat ultrà tentorium
meum, & erigat pelles meas.
21 Quia ſtultè egerunt paſtores, &
Dominum non quæſierunt : propterea
non intellexerunt, & omnis
grex eorum diſperſus eſt.
22 Vox auditionis ecce venit , &
commotio magna de terra Aquilonis:ut
ponat civitates Juda ſolitudinem,&
habitaculum draconum.
23 Scio,Domine,quia non eſt
hominis via ejus : nec viri eſt ut
ambulet, & dirigat greſſus ſuos,
24 Corripe me, Domine, veruntamen
in judicio ; & non in furore
tuo, ne fortè ad nihilum redigas
25 me. Effunde indignationẽ tuam
ſuper Gentes, quæ non cognoverunt
te ; & ſuper provincias,quæ
nomen tuum non invocaverunt:
quia comederunt Jacob & devoraverunt
eum, & conſumpſerunt
illum,et decus ejus diſſipaverunt.

CAP. XI.

1 Verbum, quod factum eſt à
Domino ad Jeremiam, dicens;
2 Audite verba pacti hujus, & loquimini
ad viros Juda, & habitatores
3 Jeruſalem, Et dices ad
eos ; Hæc dicit Dominus Deus
Iſrael ; Maledictus vir, qui non
4 audierit verba pacti hujus,Quod
præcepi patribus veſtris, in die
quâ eduxi eos de terra Ægypti,
de fornace ferrea, dicens ; Audite
vocem meam, & facite omnia
quæ præcipio vobis,et eritis mihi
in populum, & ego ero vobis in
5 Deum : Ut ſuſcitem juramentũ :
quod juravi patribus veſtris, daturum
me eis terram fluentẽ lacte
& melle, ſicut eſt dies hæc.Et reſpondi,
& dixi ; Amen,Domine.
6 Et dixit Dominus ad me ; Vociferare
omnia verba hæc in civitatibus
Juda, & foris Jeruſalem,
dicens ; Audite verba pacti hujus,
7 & facite illa : Quia conteſtans
conteſtatus ſum patres veſtros,
in die quâ eduxi eos de
terra Ægypti , uſque ad diem
hanc : manè conſurgens conteſtatus
ſum, & dixi ; Audite vocem
meam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

18 Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ σκελίζω
τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν ταύτην ἐν θλίψει,
19 ὅπως εὑρεθῇ ἡ πληγή σου. Οὐαὶ ἐπὶ
συντρίμματί σου, ἀλγηρὰ ἡ πληγή
σου· (λ) κἀγὼ εἶπα, Ὄντως τοῦτο τὸ (μ)
20 τραῦμά σου, καὶ κατέλαβέ σε. Ἡ σκηνή
σου ἐταλαιπώρησεν, ὤλετο· καὶ πᾶσαι αἱ
δέρρεις σου διεσπάσθησαν. οἱ υἱοί μου καὶ τὰ
πρόβατά μου οὐκ εἰσίν, οὐκ ἔστιν ἔτι τόπος
τῆς σκηνῆς μου, τόπος τῶν δέρρεών μου.
21 Ὅτι οἱ (ν) ποιμένες ἠφρονεύσαντο, καὶ
τὸν κύριον οὐκ (ξ) ἐζήτησαν· διὰ τοῦτο οὐκ
ἐνόησε πᾶσα ἡ νομὴ, καὶ διεσκορπίσθησαν.
22 Φωνὴ ἀκοῆς ἰδοὺ ἔρχεται καὶ σεισμὸς μέγας
ἐκ γῆς Βορρᾶ, τοῦ τάξαι τὰς πόλεις Ἰούδα
εἰς ἀφανισμὸν, καὶ κοίτην στρουθῶν. Οἶδα
23 κύριε ὅτι οὐχὶ τοῦ ἀνθρώπου ἡ ὁδὸς αὐτοῦ, οὐδὲ
ἀνὴρ πορεύσεται καὶ κατορθώσει πορείαν
24 αὐτοῦ. Παίδευσον ἡμᾶς κύριε, πλὴν ἐν κρίσει,
καὶ μὴ ἐν θυμῷ, ἵνα μὴ ὀλίγους ἡμᾶς
25 ποιήσῃς. Ἔκχεον (ο) τὸν θυμόν σου ἐπὶ
ἔθνη τὰ μὴ (π) εἰδότα σε, καὶ ἐπὶ γενεὰς
αἳ τὸ ὄνομά σου οὐκ ἐπεκαλέσαντο, ὅτι κατέφαγον
τὸν Ἰακὼβ καὶ ἐξανήλωσαν (ρ) αὐτὸν,
καὶ τὴν νομὴν αὐτοῦ ἠρήμωσαν.

Quia hæc dicit Dominus; Ecce ego ſupplantabo habitatores terræ hujus in tribulatione; ut inveniatur plaga tua. Væ ſuper contritione tua: doloroſa eſt plaga tua. Et ego dixi; Planè hoc eſt vulnus (ſ) tuum: & apprehendit te. Tabernaculum tuum vaſtatum eſt, periit, & omnes pelles tuæ conſciſſæ ſunt. Filii mei, & oves meæ non ſunt: non eſt locus ultrà tabernaculi mei, locus pellium mearum. Quia paſtores ſtultè egerunt; & Dominum non quæſierunt. Propterea non intellexit omnis grex: & diſperſi ſunt: Vox auditionis ecce venit, & commotio magna de terra Aquilonis, ut ponat civitates Juda in ſolitudinem, & cubile ſtruthionum. Scio, Domine; quia non eſt hominis via ejus: neque vir ibit, & diriget greſſum ſuum. Corripe nos, Domine, veruntamen in judicio, & non in furore: ut paucos non facias nos: Effunde indignationem tuam ſuper gentes, quæ non cognoverunt te, & ſuper generationes, quæ nomen tuum non invocaverunt: quia devoraverunt Jacob, & conſumpſerunt eum, & paſcuam ejus ad ſolitudinem redegerunt.

MS.A. (λ) καὶ ἐγὼ (μ) τραῦμα, οὐκ ἐκατέλαβέν με. (ν) ποιμαίνες μου
*ηὐφρονεύσαντο, (ξ) ἐξεζήτησαν· (ο) τὴν ὀργήν (π) ἰδόντα (ρ) τὸν Ἰσραὴλ,

ΚΕΦ. ιαʹ. CAP. XI.

1 Ὁ ΛΟ'ΓΟΣ 'Ο ΓΕΝΟ'ΜΕΝΟΣ ΠΑΡ'Α ΚΥΡΙ'ΟΥ ΠΡΟ'Σ 'ΙΕΡΕΜΙ'ΑΝ,
2 ΛΕ'ΓΩΝ, Ἀκούσατε τοὺς λόγους τῆς διαθήκης ταύτης, καὶ λαλήσεις πρὸς ἄνδρας Ἰούδα,
(α) καὶ πρὸς τοὺς κατοικοῦντας ἐν Ἱερουσαλὴμ,
3 Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε
λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ἐπικατάρατος
ὁ ἄνθρωπος, ὃς οὐκ ἀκούσεται τῶν λόγων
4 τῆς διαθήκης ταύτης, (β) Ἧς ἐνετειλάμην
τοῖς πατράσιν (¨) ὑμῶν, ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἀνήγαγον
αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἐκ καμίνου
τῆς σιδηρᾶς, λέγων, Ἀκούσατε τῆς φωνῆς
μου, καὶ ποιήσατε πάντα (γ) ὅσα ἐὰν
ἐντέλλωμαι ὑμῖν, καὶ ἔσεσθέ μοι εἰς λαὸν, καὶ
5 ἐγὼ ἔσομαι ὑμῖν εἰς θεόν· Ὅπως στήσω
τὸν ὅρκον μου, ὃν ὤμοσα τοῖς πατράσιν
(δ) ὑμῶν, τοῦ δοῦναι αὐτοῖς γῆν ῥέουσαν
γάλα καὶ μέλι, (ε) καθὼς ἡ ἡμέρα αὕτη. καὶ
6 ἀπεκρίθην, καὶ εἶπα, Γένοιτο κύριε. Καὶ
εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Ἀνάγνωθι τοὺς λόγους
τούτους ἐν πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἔξωθεν
Ἱερουσαλὴμ, λέγων, Ἀκούσατε τοὺς λόγους
τῆς διαθήκης ταύτης, καὶ ποιήσατε αὐτούς.

VERBUM, quod factum eſt à Domino ad Hieremiam, dicens; Audite verba teſtamenti hujus: Et loquêris ad viros Juda, & ad habitatores Hieruſalem: Et dices ad eos; Hæc dicit Dominus Deus Iſrael; Maledictus homo, qui non audiet verba teſtamenti hujus. Quod mandavi patribus veſtris, in die, quâ eduxi eos de terra Ægypti, de fornace ferrea, dicens; Audite vocem meam, & facite omnia quæcunque mandavero vobis: & eritis mihi in populum: & ego ero vobis in Deum: Ut ſtatuam juramentum meum, quod juravi patribus veſtris, daturum me eis terram fluentem lacte, & melle, ſicut eſt dies hæc. Et reſpondi, & dixi, Fiat, Domine. Et dixit Dominus ad me; Lege verba hæc in civitatibus Juda, & foris Hieruſalem, dicens; Audite verba teſtamenti hujus & facite (a) illa.

MS.A. (α) καὶ τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλὴμ, (β) Ἣν (¨) * ἡμῶν
(γ) ὅσα ἐντέλλωμαι (δ) * ἡμῶν, (ε) ὡς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 ארי כדנן אמר יי הא אנא מיתי עקא על עמא הדין וכמה דשדן אבנא בקלעא כן אבדר
19 ית יתבי ארעא בזמנא הדא ואעיק להון בדיל דיקבלון פורענות חוביהון : וי לי על תברי
20 ממרעא מחתי ואנא אמרית ברם דין מרעי ואסובריניה: ארעי חרובת וכל קרוי אתבזיזא
21 עמי גלו וליתנון לית דמתח עוד משכני ומקים יריעתי : ארי אטפשו מלכיא ואולפן מן
22 קדם יי לא תבעו על כן לא יצלחון וכל עמהון יתבדרון : קל בסורתא הא אתיא ותברא
23 רבא מארע צפונא לשואה ית קרויא דבית יהודה לצדו מדור ירודין : ידענא יי ארי לא
24 לאנשא אורחיה ולא לגבר דאזיל ומתקן ית פסיעתיה : איתא עליהון יסורין יי ברם
25 בדין חשוך לא יתקף רוגזך בהון דלמא יזערון : שפוך חמתך על עממיא דלא אליפו
למידע דחלתך ועל מלכותא די בפלחן שמך לא תבעו ארי שליטו בדבית יעקב ובזו
נכסיהון ושיציאונון וית מדורהון אצדיאו : יא
1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה מן קדם יי למימר : קבילו ית פתגמי קימא הדין ותמללון
2
3 עם אנש יהודה ועל יתבי ירושלם : ותימר להון כדנן אמר יי אלהא דישראל ליט גברא
4 דלא יקבל ית פתגמי קימא הדין : דפקדית ית אבהתכון ביומא דאפקית יתהון מארעא
דמצרים מכורא דברזלא למימר קבילו למימרי ותעבדון יתהון ככל דאפקד יתכון
5 ותהון קדמי לעם ואנא אהוי לכון לאלה : בדיל לקימא ית קימא דקיימית לאבהתכון
6 למתן להון ארעא עבדא חלב ודבש כיומא הדין ואתיבית ואמרית אמן יי : ואמר יי לי
אתנבי ית כל פתגמיא האלין בקרויא דבית יהודה ובשוקי ירושלם למימר קבילו ית
7 פתגמי קימא הדין ותעבדון יתהון : ארי אסהדא אסהדית באבהתכון ביומא דאסקית
יתהון מארעא דמצרים ועד יומא הדין מקדם ומסהד למימר קבילו למימרי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia hæc dicit Dñs: Ecce ego adducam tribulationem ſuper populũ iſtũ: & ſicut projiciunt lapidem funda,ſic diſpergam habitatores terræ hoc tempore: & tribulabo eos ut recipiant tribulationem peccatorũ ſuorũ. Væ mihi ſuper confractionẽ meã: infirmata eſt plaga mea: & ego dixi: Certè hæc eſt infirmitas mea, & ſuſtinebo illam. Terra mea deſerta eſt, & omnes urbes meæ direptæ ſunt;popul⁹ me⁹ migravit,&non comparet:nec eſt qui extendat ultrà tabernaculũ meũ, et erigat cortinas meas. Quia inſipientes facti ſunt reges,& doctrinã à facie Dñi non quæſierunt. Propterea non proſperabuntur, & omnes populi eorũ diſpergentur. Vox annuntiationis ecce venit, & confractio magna de terra Aquilonis,ut ponã civitates domus Juda in ſolitudinẽ, habitaculũ draconũ. Scio Dñe quia non eſt hominis via ej⁹,nec hominis eſt qui ambulat & dirigit greſſus ſuos. Adduc ſuper eos infirmitates,veruntamen in judicio *modico*:ne iraſcatur furor tu⁹ contra eos, ne fortè minuantur. Effunde iram tuã ſup populos qui non didicerunt ſcire timorẽ tui, et ſup regna quæ non quæſierunt cultũ nominis tui; quia dominati ſunt domui Jacob, & diripuerunt ſubſtantias eorum, & conſumpſerunt eos, & habitacula eorum vaſtarunt.

CAP. XI.

Verbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam,à facie Dñi dicendo: Suſcipite verba pacti huj⁹,& loquimini ad viros Juda,& ad habitatores Jeruſalem. Et dices eis : Hæc dicit Dñs De⁹ Iſrael: Maledictus vir qui non *ſuſceperit* verba pacti hujus. Quod præcepi patrib⁹ veſtris in die quo eduxi eos de terra Ægypti ex fornace ferrea, dicens: Obedite verbis meis, & facite ea juxta omnia quæ præcepi vobis, & eritis coram me in populũ, & ego ero vobis in Deũ. Ut confirmẽ juramentũ ꝙ juravi patrib⁹ veſtris, ꝙ darem eis terram producentẽ lac & mel, ſicut eſt dies hic. Et reſpondi, & dixi: Amen Dñe. Et dixit Dñs ad me: Prophetiza omnia verba iſta in civitatibus domus Juda, & in vicis Jeruſalẽ, dicens: Suſcipite verba pacti hujus, & facite ea. Quia conteſtans conteſtatus ſum patres veſtros quo die eduxi eos ex terra Ægypti, uſque in diem hanc, manè conſurgens & conteſtans, dicens: Obedite verbo meo.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܟܪܟ ܐܢܐ ܠܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ ܗܕܐ ܒܙܒܢܐ ܗܢܐ
ܕܢܒܥܘܢܢܝ ܘܢܫܟܚܘܢܢܝ. * ܘܝ ܠܝ ܥܠ ܬܒܪܝ ܕܟܪܝܗ ܡܚܘܬܝ. ܘܐܢܐ ܐܡܪܬ ܗܢܐ
ܟܐܒܝ ܘܐܣܝܒܪܝܘܗܝ. * ܡܫܟܢܝ ܐܬܒܙܙ. ܘܟܠܗܘܢ ܐܛܘܢܝܗܘܢ ܐܬܦܣܩܘ. ܒܢܝ ܢܦܩܘ
ܡܢܝ ܘܠܝܬ ܐܢܘܢ. ܠܝܬ ܕܢܨܠܒ ܬܘܒ ܡܫܟܢܝ. ܘܢܩܝܡ ܝܪܝܥܬܝ. * ܡܛܠ ܕܐܫܬܛܝܘ
ܪܥܘܬܐ ܘܠܡܪܝܐ ܠܐ ܒܥܘ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܣܬܟܠܘ. ܘܟܠܗ ܡܪܥܝܬܗܘܢ ܐܬܒܕܪܬ. * ܩܠ
ܫܡܥܬܐ ܗܐ ܐܬܬ. ܘܙܘܥܐ ܪܒܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܠܡܣܡ ܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܠܚܘܪܒܐ
ܡܥܡܪܐ ܠܬܢܝܢܐ. * ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܐܘܪܚܗ ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܗܘܬ ܐܝܟ ܕܒܪܢܫܐ. ܘܠܐ ܐܝܟ ܕܓܒܪܐ ܕܐܙܠ
ܘܡܬܩܢ ܗܠܟܬܗ. * ܪܕܝܢܝ ܡܪܝܐ ܒܕܝܢܐ. ܘܠܐ ܒܪܘܓܙܟ. ܕܠܡܐ ܠܙܥܘܪܐ. * ܐܫܘܕ ܚܡܬܟ
ܥܠ ܥܡܡܐ ܕܠܐ ܝܕܥܘܟ. ܘܥܠ ܫܪܒܬܐ ܕܒܫܡܟ ܠܐ ܩܪܘ. ܕܐܟܠܘܗܝ ܠܝܥܩܘܒ. ܘܐܟܠܘܗܝ
ܘܫܠܡܘܗܝ. ܘܠܕܝܪܬܗ ܐܚܪܒܘ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܐ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܐ ܕܩܝܡܐ ܗܢܐ
ܘܐܡܪ ܠܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܠܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܝܛ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܢܫܡܥ ܦܬܓܡܐ ܕܩܝܡܐ ܗܢܐ. * ܕܦܩܕܬ
ܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܐܦܩܬ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܡܢ ܟܘܪܐ ܕܦܪܙܠܐ. ܘܐܡܪܬ. ܫܡܥܘ
ܒܩܠܝ. ܘܥܒܕܘ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܟܠ ܕܦܩܕܬܟܘܢ. ܘܬܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܟܘܢ ܐܠܗܐ.
* ܘܐܩܝܡ ܡܘܡܬܐ ܕܝܡܝܬ ܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܕܐܬܠ ܠܗܘܢ ܐܪܥܐ ܕܡܪܕܝܐ ܚܠܒܐ ܘܕܒܫܐ ܐܝܟ
ܕܝܘܡܢܐ. ܘܥܢܝܬ ܘܐܡܪܬ. ܐܡܝܢ ܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܩܪܝ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ
ܒܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܫܘܩܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܡܪ. ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܐ ܕܩܝܡܐ ܗܢܐ
ܘܥܒܕܘ ܐܢܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܣܗܕܘ ܐܣܗܕܬ ܒܐܒܗܝܟܘܢ ܩܕܡܝܐ. ܒܝܘܡܐ ܕܐܣܩܬ ܐܢܘܢ
ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܩܕܡܬ ܘܫܕܪܬ. ܘܐܡܪܬ. ܫܡܥܘ ܒܩܠܝ.

Nam ſic dicit Dominus, Ecce irretiam habitatores hujus terræ hoc tempore, ut quærant me & inveniant. 18
Hei mihi propter fractionem meam, nam dolorifica eſt plaga mea: ego verò dixi, Hic eſt dolor meus, perferam illum. 19
Tentorium meum direptum eſt, & omnes funiculi ejꝰ dirupti: filii mei egreſſi ſunt à me, & non extant; non eſt qui denuo figat tentorium meum, & erigat aulæa mea. 20
Nam deſipuerunt paſtores, & Dominum non quæſierunt: quia non fuerunt ſolertes, totus grex eorum diſſipatus eſt. 21
Vox rumoris funeſti ecce venit, et commotio magna de terra Aquilonis, ad redigendas civitates Judæ in ſolitudinem, *in* habitationem draconum. 22
Scio vias Domini non eſſe ſicut hominis, neque ut hominis qui vadit diſponitque negotium ſuum. 23
Caſtiga me Domine cum modo, non autem in furore tuo, ne fortè ad exiguum numerum me redigas. 24
Effunde iram tuam in gentes quæ te non noverunt, & in nationes quæ nomen tuum non invocant: comederunt enim Jacobum, comederunt eum et conſumpſerunt, & habitationem ejus vaſtaverunt. 25

CAP. XI.

SErmo qui factus eſt ad Jeremiam à Domino, dicendo; 1
Audi ſermonem fœderis hujus, & dic viris Judæ & civibus Jeruſalem: 2
Dic *inquam eis*, Sic ait Dominus potentiſſimus, Deus Iſraelis; Maledictus vir ille qui non auſcultaverit ſermones fœderis hujus, 3
Quod præcipiens majoribus veſtris die quâ eduxi eos de terra Ægypti de fornace ferri, dixi; Auſcultate voci meæ, & facite quicquid præcipio vobis, eritíſque mihi populus, & ego ero vobis Deus; 4
Et præſtabo jusjurandum quod juravi majoribus veſtris, me daturum vobis terram lacte & melle manantem, ut eſt hodiernâ die. Cui reſpondens dixi; Amen, Domine. 5
Tum dixit mihi Dominus, Recita omnes ſermones iſtos in civitatibus Judæ & in vicis Jeroſolymæ, & dic; Audite ſermones fœderis hujus, & facite eos. 6
Nam conteſtans conteſtatus ſum priſcos majores veſtros quâ die evexi eos de terra Ægypti, ad hanc uſque diem, præmiſi, & dixi; Auſcultate voci meæ: 7

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لان هكذا يقول الرب * ها انا اعرقل سكان هذه الارض بشدة * لكي توجد ضربتك * ويل
على انكسارك * ضربتك موجعة * وانا قلت يقينا هذا الجرح لم يدركني * مسكنك شقي
وهلك * وكل سقافك تمزقت * بني وخرافي ليسوا موجودين * ليس موضع موجودا بعد لخبائي
ولا موضع لسقافي * لان رعاتي جهلوا ولم يطلبوا الرب * لاجل هذا لم ينفعهم كل المرعى
وتفرقوا * صوت سماع ها اقبل وزلزلة عظيمة من ارض الجربياء * لترتيب بلدان يهودا للفناء
ومرقدا للنعام * علمت يا رب ان ليس للانسان طريقه * ولا رجل يسير ويقوم بمسلكه * ادبنا يا
رب لا بحكم ولا بغضب * لكيلا تجعلنا قليلين * افض غضبك على الامم التي لم تعرفك
وعلى الاجيال التي لم تدع اسمك * لانهم اكلوا يعقوب وابادوا اسرايل وخربوا دياره *

* الفصل الحادي عشر *

* القول الصاير من قبل الرب الى ارميا قايلا * اسمعوا كلمات هذا العهد * وتكلم مع
رجال يهودا وسكان ايروسليم وتقول لهم * هكذا يقول الرب اله اسرايل * ملعون الانسان الذي
لا يسمع كلام هذا العهد * الذي به اوصيت لابايكم في اليوم الذي اصعدتهم فيه من
ارض مصر من اتون الحديد * قايلا اسمعوا صوتي واسمعوا كلما اوصيكم به * وتكونون
لي شعبا وانا اكون لكم الها * لكي اقيم قسمي الذي اقسمت به لابايكم * ان اعطيهم
ارضا تفيض لبنا وعسلا مثل هذا اليوم * فاجبت وقلت يكون يا رب * وقال الرب لي * اقرا
هذه الكلمات في مدن يهودا ومن خارج ايروسليم * قايلا اسمعوا كلمات هذا العهد واعملوا
بهن * فلم يعملوا [* MS. Ox. لانني ناشدت اباكم واوعزت اليهم من يوم اخرجتهم من
ارض مصر * والى يومنا * وتقدمت وبعثت اليهم * وقلت اسمعوا قولي *

Sic enim dicit Dominus, Ecce ego terræ hujus incolas calamitate involvam, ut inveniatur plaga tua. 18
Heu de contritione tua: plaga tua dolore plena eſt: ego autem dicebam, Certè vulnus hoc non attinget me. 19
Tabernaculum tuum miſerè periit, & omnia aulæa tua dilacerata ſunt: filii mei & agni mei non extant; non extat ampliùs locus tentorio meo, neque locus aulæis meis. 20
*Nam paſtores mei deſipuerunt, nec Dominum quæſierunt; icci*r*co nullum paſcuum profuit eis, & diſperſi ſunt.* 21
Vox ſonora ecce advenit magno cum tremore de terra Aquilonari, ut diſponat regiones Judæ in exitium & cubile quadrupedium. 22
Novi O Domine, quòd non ſit homini via, nec quiſquam incedat iterque ſuum dirigat. 23
Caſtiga nos O Domine, non in judicio neque cum furore, ne paucos nos reddas. 24
Effunde furorem tuum ſuper gentes quæ te minimè nôrunt, & ſuper nationes quæ non invocaverunt nomen tuum; quia comederunt Jacobum, & conſumpſerunt Iſraelem, & habitationes ejus deſtruxerunt. 25

CAP. XI.

SErmo factus à Domino ad Jeremiam, dicens; 1
Audite verba hujus fœderis, & alloquere viros Judæ & habitatores Jeruſalem, dicaſque ad eos; 2
Sic ait Dominus Deus Iſraelis, Maledictus homo qui non acquieverit verbis hujus fœderis, 3
Quod mandavi patribus veſtris quo die extraxi eos è terra Ægypti de fornace ferri, dicens; Acquieſcite voci meæ, & auſcultate quicquid præcipio vobis, eritiſque mihi populus, & ego ero vobis Deus: 4
ut tuear juramentum meum quod juravi patribus veſtris, daturum me ipſis terram affluentem lacte & melle, ut hodiernâ die. Cui reſpondi ac dixi, Sit O Domine. 5
Deinde dixit mihi Dominus, Recita hæc urbibus Judæ & in foris Jeroſolymæ, dicens; Audite verba hujus fœderis, & facite ea: ſed non fecerunt. 6
[MS. Ox. *Quia conteſtatus ſum ego patres veſtros, & declaravi eis, quo tempore evexi eos de terra Ægypti, ad hanc uſque diem noſtram, antevertendo, & mittendo ad eos, dicendoque; Auſcultate voci meæ:* 7

unusquisq; abierunt *&* :suam aurem inclinaverunt nec *audiverunt* non Et

8 ולא שמעו ולא־הטו את־אזנם וילכו איש

verba omnia eos super induxi & : mali sui cordis *pertinacia* in

בשרירות לבם הרע ואביא עליהם את־כל־דברי

dixit Et .fecerunt non & ,*faciendum ad* præcepi quod , hujus pacti

9 הברית־הזאת אשר־צויתי לעשות ולא עשו : ויאמר

habitatoribꝰ in &,Jehudah viro in conjuratio est Inventa :me ad Dominꝰ

יהוה אלי נמצא־קשר באיש יהודה ובישבי

qui , priorum suorũ patrũ iniquitates ad sunt Reversi .Jerusalaim

10 ירושלם : שבו על־עונת אבתם הראשנים אשר

Deos post abierunt hi Et .meis verbis obtemperare renuerunt

מאנו לשמוע את־דברי והמה הלכו אחרי אלהים

domus & , Israel domus dissipaverunt : eis *serviendum ad* alienos

אחרים לעבדם הפרו בית־ישראל ובית

.eorum patribus cum *excidi* quod , meum pactum Jehudah

יהודה את־בריתי אשר כרתי את־אבותם :

,malum eos *ad adducens* ego Ecce : Dominus dixit sic Quamobrem

11 לכן כה אמר יהוה הנני מביא אליהם רעה

non & ,me ad clamabunt & *: ipso ab* exire poterunt non quo

אשר לא־יוכלו לצאת ממנה וזעקו אלי ולא

habitatores & , Jehudah civitates ibunt Et .eos *ad* audiam

12 אשמע אליהם : והלכו ערי יהודה וישבי

suffientes ipsi quibus , Deos ad clamabunt & , Jerusalaim

ירושלם וזעקו אל־האלהים אשר הם מקטרים

.eorum mali tempore in eos servabunt non servando & *; eis*

להם והושע לא־יושיעו להם בעת רעתם :

numerum & : Jehudah tui Dii fuerunt tuarum civitatum *numerus* Quia

13 כי מספר עריך היו אלהיך יהודה ומספר

aras , confusionis aras posuistis Jerusalaim platearum

חצות ירושלם שמתם מזבחות לבשת מזבחות

, hoc populo pro ores ne tu Et .Bahal suffiendum ad

14 לקטר לבעל : ואתה אל־תתפלל בעד־העם הזה

audiens ego non quia : orationem & *præconium* eis pro *leves* ne &

ואל־תשא בעדם רנה ותפלה כי אינני שמע

meo dilecto Quid .suo malo super me ad *eos clamare* tempore *in*

15 בעת קראם אלי בעד רעתם : מה לידידי

sanctuarii *caro* & , *multas cogitationes scelestas ipsam faciendo* ,mea domo in

בביתי עשותה המזמתה הרבים ובשר־קדש

Olivam .exultâsti tunc tua malitia quia : te *desuper* transibunt

16 יעברו מעליך כי־רעתכי אז תעלזי : זית

: tuum nomen Dominus vocavit *formæ* fructu pulchram *frondosam*

רענן יפה פרי־תאר קרא יהוה שמך

confregerunt & : eam super *ignem accendit* grandis loquelæ vocem ad

לקול המולה גדלה הצית אש עליה ורעו

te super est locutus , te *plantans* exercituum Dominus Et .ejus ramos

17 דליותיו : ויהוה צבאות הנוטע אותך דבר עליך

quod , Jehudah domus & , Israel domus malum propter ,malum

רעה בגלל רעת בית־ישראל ובית יהודה אשר

Dominus Et .Bahal *ipsi suffiendo* ,me irritandum ad sibi fecerunt

18 עשו להם להכעסני לקטר לבעל : ויהוה

ego Et .eorum *conatus* me fecisti videre tunc : scivi & ,me fecit scire

19 הודיעני ואדעה אז הראיתני מעלליהם : ואני

quòd cognovi non & ,jugulandum ad *ducetur* bos ,agnus tanquam

ככבש אלוף יובל לטבוח ולא־ידעתי כי־

,ejus *pane in lignum* Corrumpamus .cogitationes cogitaverunt me contra

עלי חשבו מחשבות נשחיתה עץ בלחמו

memoretur non ejus nomen & ,viventium terra è eum excindamus &

ונכרתנו מארץ חיים ושמו לא־יזכר

.amplius

עוד :

Versio VULG. LAT.

8 Et non audierunt, nec inclinaverunt aurem suam: sed abierunt unusquisque in pravitate cordis sui mali: & induxi super eos omnia verba pacti hujꝰ, quod præcepi ut facerent, & non fecerunt. 9 Et dixit Dominus ad me; Inventa est conjuratio in viris Juda, & 10 in habitatoribus Jerusalem. Reversi sunt ad iniquitates patrum suorum priores, qui noluerunt audire verba mea: & hi ergò abierunt post deos alienos, ut servirent eis: irritum fecerunt domus Israel et domus Juda pactum meum, quod pepigi cum patri-11 bus eorum. Quam ob rem hæc dicit Dominus; Ecce ego inducam super eos mala, de quibus exire non poterunt: & clamabunt 12 ad me, & non exaudiam eos. Et ibunt civitates Juda, & habitatores Jerusalem, & clamabunt ad deos, quibus libant, & non salvabunt eos in tempore afflictio-13 nis eorum. Secundùm numerum enim civitatum tuarum erant dii tui, Juda: & secundùm numerum viarum Jerusalem, posuisti aras confusionis, aras ad libandum 14 Baalim. Tu ergò noli orare pro populo hoc, & ne assumas pro eis laudem & orationem: quia non exaudiam in tempore clamoris eorum ad me, in tempore affli-15 ctionis eorum. Quid est, quòd dilectus meus in domo mea fecit scelera multa? numquid carnes sanctæ auferét à te malitias tuas, 16 in quibus gloriata es? Olivam uberem, pulchram, fructiferam, speciosam, vocavit Dominus nomen tuum: ad vocem loquelæ, grandis exarsit ignis in ea, & 17 combusta sunt fruteta ejus. Et Dominus exercituum qui plantavit te, locutus est super te malum, pro malis domûs Israel & domûs Juda, quæ fecerunt sibi ad irritandum me, libantes 18 Baalim. Tu autem, Domine, demonstrâsti mihi, & cognovi: tunc ostendisti mihi studia eo-19 rum. Et ego quasi agnus mansuetus, qui portatur ad victimam: & non cognovi quia cogitaverunt super me consilia, dicentes; Mittamus lignum in panem ejus, & eradamus eum de terra viventium, & nomen ejus non memoretur ampliùs.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

8 9 Καὶ οὐκ ἐποίησαν. Καὶ εἶπε κύριος πρός με, Εὑρέθη σύνδεσμος (ζ) ἐν ἀνδράσιν Ἰούδα, καὶ ἐν τοῖς (η) κατοικοῦσιν ἐν 10 Ἱερουσαλήμ. Ἐπεστράφησαν ἐπὶ τὰς ἀδικίας τῶν πατέρων αὐτῶν τῶν πρότερον, οἳ οὐκ (θ) ἠθέλησαν εἰσακοῦσαι τῶν λόγων μου, καὶ ἰδοὺ αὐτοὶ (ι) πορεύονται ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων, τοῦ δουλεύειν αὐτοῖς. καὶ διεσκέδασεν οἶκος Ἰσραὴλ καὶ οἶκος Ἰούδα τὴν διαθήκην μου, ἣν δι-11 εθέμην πρὸς τοὺς πατέρας αὐτῶν. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον κακά, ἐξ ὧν οὐ δυνήσονται ἐξελθεῖν ἐξ αὐτῶν· καὶ κεκράξονται πρός με, καὶ οὐκ εἰσακούσομαι 12 αὐτῶν. Καὶ πορεύσονται πόλεις Ἰούδα καὶ οἱ κατοικοῦντες Ἱερουσαλήμ, καὶ κεκράξονται πρὸς τοὺς (κ) θεούς, οἷς αὐτοὶ θυμιῶσιν αὐτοῖς, (λ) οἳ μὴ σώσουσιν αὐτοὺς ἐν 13 τῷ καιρῷ τῶν κακῶν αὐτῶν. Ὅτι (μ) κατ' ἀριθμὸν τῶν πόλεών σου ἦσαν θεοί σου Ἰούδα, καὶ (ν) κατ' ἀριθμὸν ἐξόδων τῆς Ἱερουσαλήμ, (ξ) ἐτάξατε βωμοὺς θυ-14 μιᾶν τῇ Βάαλ. Καὶ σὺ μὴ προσεύχου (ο) περὶ τοῦ λαοῦ τούτου, καὶ μὴ ἀξίου περὶ αὐτῶν ἐν δεήσει καὶ προσευχῇ, ὅτι οὐκ εἰσακούσομαι ἐν τῷ (π) καιρῷ ἐν ᾧ ἐπικα-15 λοῦνταί με, ἐν καιρῷ κακώσεως αὐτῶν. Τί ἡ ἠγαπημένη ἐν τῷ οἴκῳ μου ἐποίησε βδέλυγμα; μὴ εὐχαὶ καὶ κρέα ἅγια ἀφελοῦσιν ἀπὸ σοῦ τὰς κακίας σου, ἢ τούτοις διαφεύ-16 ξῃ; Ἐλαίαν ὡραίαν εὔσκιον τῷ εἴδει ἐκάλεσε κύριος τὸ ὄνομά σου, εἰς φωνὴν περιτομῆς αὐτῆς, ἀνήφθη πῦρ (ρ) ἐπ' αὐτήν, μεγάλη ἡ θλῖψις ἐπὶ σέ, (¨) ἠχρειώθησαν οἱ 17 κλάδοι αὐτῆς. Καὶ κύριος ὁ καταφυτεύσας σε, ἐλάλησεν ἐπὶ σὲ κακὰ ἀντὶ τῆς κακίας οἴκου Ἰσραὴλ καὶ οἴκου Ἰούδα, ὅ,τι ἐποίησαν (σ) ἑαυτοῖς τοῦ παροργίσαι με 18 ἐν τῷ θυμιᾶν αὐτοὺς τῇ Βάαλ. Κύριε γνώρισόν μοι, καὶ γνώσομαι. τότε εἶδον 19 τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτῶν· (τ) Ἐγὼ δὲ ὡς ἀρνίον ἄκακον ἀγόμενον τοῦ θύεσθαι, οὐκ ἔγνων. ἐπ' ἐμὲ ἐλογίσαντο λογισμὸν πονηρόν, (υ) λέγοντες, Δεῦτε καὶ (˜) ἐμβάλωμεν ξύλον εἰς τὸν (φ) ἄρτον αὐτοῦ, καὶ ἐκτρίψωμεν αὐτὸν ἀπὸ γῆς ζώντων, (χ) καὶ τὸ ὄνομα αὐτοῦ οὐ μὴ μνησθῇ (ψ) οὐκέτι.

Et non fecerunt. Et dixit Dominus ad me; Inventa est colligatio in viris Juda, & in habitatoribus Hierusalem: Reversi sunt ad iniquitates patrum suorum priores: qui noluerunt exaudire verba mea: & ecce ipsi abeunt post deos alienos, ad serviendum eis. Et dissipavit domus Israel, & domus Juda, testamentum meum, quod disposui ad patres eorum. Propterea hæc dicit Dominus; Ecce ego induco super populum hunc mala, ex quibus exire non poterunt ex eis: & clamabunt ad me, & non exaudiam eos. Et ibunt civitates Juda, & habitatores Hierusalem; & clamabunt ad deos, quibus ipsi adolent eis: qui non salvabunt eos in tempore malorum eorum. Quia juxta numerum civitatum tuarum erant dii tui, Juda: & juxta numerum viarum Hierusalem posuistis aras ad incensum adolendum Baal. Et tu noli orare pro populo hoc: & noli postulare pro eis in oratione, & deprecatione: quia non exaudiam in tempore quo invocabunt me; in tempore afflictionis suæ. Quid dilecta in domo mea fecit abominationem? Nunquid vota, & carnes sanctæ auferent à te malitias, aut propter ista effugies? Olivam pulchram, (c) bene umbrosam specie, vocavit Dominus nomen tuum, ad vocem circumcisionis ejus, accensus est ignis super eam: magna tribulatio super te: inutiles facti sunt rami ejus: Et Dominus, qui plantavit te, loquutus est super te mala, pro malitia domûs Israel, & domûs Juda: quicquid fecerunt sibi ad irritandum me, in adolendo ipsos Baal. Domine, notum fac mihi, & cognoscam. Tunc vidi studia eorum. Ego autem quasi agnus innocens ductus ad immolandum, non cognoscebam. Super me cogitaverunt cogitationem malam, dicentes; Venite, & mittamus lignum in panem ejus, & exteramus eum de terra viventium, & nomen ejus non memorietur amplius.

MS. A. (ζ) ἐν πόλεσιν (η) κατοικοῦσιν Ἱερουσαλήμ, (θ) ἤθελον ἀκοῦσαι (ι) βαδίζουσιν (κ) θεοὺς αὐτῶν, (λ) * μὴ σώσουσιν αὐτοὺς ἐν καιρῷ (μ) κατὰ (ν) κατὰ (ξ) ἔταξαν βωμοὺς τοῦ θυμιᾶν (ο) ὑπὲρ (π) καιρῷ ᾧ (ρ) ἐν αὐτῇ, (¨) ἠχρειώθησαν (σ) αὐτοῖς (τ) Ἐγὼ δὲ (υ) κατὰ σοῦ λέγοντες, (˜) ἐμβάλωμεν (φ) * ἄρτον τράχηλον αὐτοῦ, (χ) καὶ ὄνομα (ψ) ἔτι.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 ולא קבילו ולא ארכינו ית אודנהון ואזלו גבר בהרהור לבהון בישא ואיתיתי עליהון
9 פורענותא על דלא קבילו פתגמי קימא הדין דפקדית למעבד ולא עבדו : ואמר יי לי
10 אשתכח דמרדו במימרי אנש יהודה ויתבי ירושלם : תבו לחובי אבהתהון קדמאי
דסריבו לקבלא ית פתגמי ואנון טעו בתר טעות עממיא למפלחהון אשניאו בית
11 ישראל ובית יהודה ית קימי דגזרית ית אבהתכון : בכן כדנן אמר יי הא אנא מיתי
12 עליכון בישתא דלא יכלון לאשתיזבא מנה ויצלון קדמי ולא אקבל צלותהון : ויהכון
אנש קרויא דבית יהודה ויתבי ירושלם ויבעון מן טעותא דאנון מסקין בוסמין להן
13 האם יכלן למפרקהון בעדן בישתהון : ארי מנין קרויכון הואה דחלתכון דבית יהודה
14 ומנין שוקי ירושלם שויתון אגורין לבהתא ואגורין לאסקא בוסמין לבעלא : ואת לא
תצלי על עמא הדין ולא תתחנן עליהון בבעו ובצלו ארי לא רעוא קדמי בעדן דאת
15 מצלי עליהון קדמי בעדן בישתהון : מה לעמא דהוה חביב קדמי שבקו פולחן בית
מקדשי עבדו עצה לחטאין סגיאין מערבין בשר שקוצין עם בשר קודשא יגלון מנך
16 מן קדם בשתיך בכן הויתא תקיפא : האכאלן זיתא דשפיר בריויה ויאי בחזויה וסוכיה
מטלן באילניא כן רבי יי שמיך בעממיא וכדו דעברת על אוריתא משרית עממין
17 דתקיפין כאשתא ייתון עלך ויתחברון להון סומכון : ויי צבאות דקים יתיך גזר לאיתאה
18 עלך בישא בדיל חובי בית ישראל ובית יהודה דעבדו להון לארגזא קדמי לאסקא
19 בוסמין לבעלא : ויי אלפני ואליפית בכן אחזיתני עובדיהון : ואנא כאמר בחיר
דלנכסתא מתובל ולא ידעית ארי עלי חשיבו עשתונין בישין אמרין נרמי סמא דמותא
במיכליה ונשיצניה מארעא דישראל ושמיה לא ידכר עוד :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et non obedierũt, nec inclinaverunt aures suas: sed ambulaverũt unusquisque in cogitatione cordis sui mali, & adduxi super eos ultionem, eo quod non suscepissent verba pacti hujus quod præcepi ut facerent, & non fecerunt. Et dixit Dñs ad me: *Inventum* est *quòd rebellàrunt in verbum meum viri* Juda, & *habitatores* Jerusalem. Reversi sunt ad iniquitates patrum suorũ priorum, qui noluerunt suscipere verba mea, & ipsi erraverunt post idola populorum, ut colerent ea. Irritum fecerunt domꝰ Israel & domꝰ Juda pactum meum quod pepegi cum patribꝰ *vestris*. Propterea hæc dicit Dominꝰ: Ecce ego inducam super *vos* malum, & non poterunt liberari ex eo: & orabunt corã me, & non suscipiã orationes eorũ. Ibúntque viri civitatum domꝰ Juda, & habitatores Jerusalem, & deprecabuntur idola quibus adolebant aromata, si fortè possint salvare eos in tempore mali sui. Quia secundũ numerũ civitatũ vestrarũ fuerunt dii vestri viri domꝰ Juda, & secundũ numerũ viarũ Jerusalẽ posuistis aras confusioni, aras ad adolendum aromata ipsi Baal. Tu autẽ ne ores pro populo isto, nec depreceris pro eis in deprecatione et oratione; quoniã non erit voluntas corã me, quo tempore tu orabis pro eis corã me, in tempore mali eorũ. Quid est populo meo qui erat dilectꝰ coram me? reliquerunt cultũ domꝰ sanctuarii mei: iniverunt consiliũ ad peccandũ multũ: cõmiscent carnẽ abominationũ cum carne sanctificata: migrabunt à te; propter malitiã tuam tunc eras fortis. Sicut arbor olea pulchra forma, & speciosa aspectu, cujꝰ rami obumbrant arbores; sic magnificavit Dñs nomen tuũ in populis. Et nunc cùm transgressa es legẽ, exercitꝰ populorum qui fortes sunt sicut ignis, venient contra te, & conjungentur eis auxilia. Et Dominꝰ exercituum qui sustinuit te, decrevit inducere super te malum, propter peccata domꝰ Israel & domꝰ Juda, quæ fecerunt sibi ad irritandum coram me, ut adolerent aromata Baal. Dominus autem docuit me, & didici: tunc ostendisti mihi opera eorum. Et ego sicut agnꝰ electꝰ qui ducitur ad victimam, & nescivi quia contra me cogitaverunt cogitationes malas: dicentes: Mittamus venenum mortiferum in cibo ejus, & disperdamus eum de terra Israel, & nomen ejus non memorabitur ampliùs.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܐ ܫܡܥܘ. ܘܠܐ ܐܪܟܢܘ ܐܕܢܗܘܢ. ܘܐܙܠܘ ܓܒܪ ܒܪ̈ܓܝܓܬܐ ܕܠܒܗܘܢ ܒܝܫܐ. ܘܐܝܬܝܬ
ܥܠܝܗܘܢ ܟܠܗܘܢ ܦܬ̈ܓܡܐ ܕܩܝܡܐ ܗܢܐ. ܕܦܩܕܬ ܠܡܫܡܥ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ. * ܘܐܡܪ ܠܝ
ܡܪܝܐ. ܐܫܬܟܚ ܩܛܪܐ ܒܓܒܪ̈ܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܒܥܡܘܡܝ̈ܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܗܦܟܘ ܠܚܛ̈ܗܐ
ܕܐܒܗ̈ܝܗܘܢ ܩܕܡܝ̈ܐ. ܘܠܐ ܨܒܘ ܠܡܫܡܥ ܦܬ̈ܓܡܝ. ܘܗܢܘܢ. ܐܙܠܘ ܒܬܪ ܐܠܗ̈ܐ ܢܘܟܪ̈ܝܐ
ܠܡܦܠܚܘ ܐܢܘܢ. ܘܒܛܠܘ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܘܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܩܝܡܝ. ܕܐܩܝܡܬ
ܥܡ ܐܒܗ̈ܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ
ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ ܒܝܫܬܐ. ܕܠܐ ܢܫܟܚܘܢ ܠܡܦܩ ܡܢܗ. ܘܢܩܥܘܢ ܠܘܬܝ. ܘܠܐ ܐܫܡܥ
ܐܢܘܢ. * ܘܢܐܙܠܘܢ ܩܘܪ̈ܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܥܡܘܡܝ̈ܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܢܩܥܘܢ ܠܘܬ ܐܠܗ̈ܐ
ܕܡܣܩܝܢ ܗܘܘ ܠܗܘܢ ܒܣܡ̈ܐ. ܘܡܦܪܩܘ ܠܐ ܢܦܪܩܘܢ ܐܢܘܢ ܒܙܒܢܐ ܕܒܝܫܬܗܘܢ
* ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܡܢܝܢܐ ܕܩܘܪ̈ܝܟܝ ܗܘܘ ܐܠܗ̈ܝܟܝ ܝܗܘܕܐ. ܘܐܝܟ ܡܢܝܢܐ ܕܫܘܩ̈ܝܗ
ܕܐܘܪܫܠܡ. ܣܡܬܘܢ ܡܕܒܚ̈ܐ ܠܒܗܬܬܐ. ܡܕܒܚ̈ܐ ܠܡܣܩܘ ܒܣܡ̈ܐ ܠܒܥܠܐ. * ܘܐܢܬ
ܠܐ ܬܨܠܐ ܥܠ ܥܡܐ ܗܢܐ. ܘܠܐ ܬܬܠ ܥܠܝܗܘܢ ܒܥܘܬܐ ܘܨܠܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥ ܐܢܐ ܟܕ ܩܪܝܢ
ܠܝ ܒܙܒܢܐ ܕܒܝܫܬܗܘܢ. * ܠܚܒܝܒܬܝ ܒܒܝܬܝ ܥܒܕܬ ܛܢܦܘܬܐ ܣܓܝ̈ܐܬܐ.
ܘܒܣܪܐ ܩܕܝܫܐ ܢܥܒܪܘܢ ܡܢܟܝ. ܡܛܠ ܒܝܫܘܬܟܝ ܕܣܓܝܐܐ. * ܙܝܬܐ ܥܒܝܬܐ. ܫܦܝܪܬ
ܦܐܪ̈ܐ ܘܫܦܝܪܬ ܚܙܘܐ. ܩܪܐ ܡܪܝܐ ܫܡܟܝ. ܠܩܠܐ ܕܓܙܪܬܐ ܪܒܬܐ. ܫܒܘܩܘ ܢܘܪܐ ܒܗ̇
ܘܢܬܚܒܠܘܢ ܣܘܟܝ̈ܗ̇. * ܘܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܢܨܒܟܝ. ܡܠܠ ܥܠܝܟܝ ܒܝܫܬܐ. ܡܛܠ ܒܝܫܘܬܐ
ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܘܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. ܕܥܒܕܘ ܠܗܘܢ ܠܡܪܓܙܘܬܢܝ. ܟܕ ܡܣܩܝܢ ܒܣܡ̈ܐ ܠܒܥܠܐ.
* ܡܪܝܐ ܐܘܕܥܢܝ. ܘܐܕܥ. ܗܝܕܝܢ ܚܙܝܬ ܥܒ̈ܕܝܗܘܢ. * ܘܐܢܐ ܐܝܟ ܐܡܪܐ ܬܡܝܡܐ ܕܡܬܕܒܪ
ܠܢܟܣܬܐ. ܘܠܐ ܝܕܥܬ ܕܐܬܚܫܒܘ ܥܠܝ ܡܚܫܒܬܐ. ܘܐܡܪܘ. ܢܚܒܠ ܩܝܣܐ ܒܡܐܟܘܠܬܗ.
ܘܢܥܩܪܝܘܗܝ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܚܝ̈ܐ. ܘܫܡܗ ܬܘܒ ܠܐ ܢܬܕܟܪ.

* Ipſi verò non auſcultaverunt, nec aurem ſuam 8
admoverunt, ſed ambulaverunt quiſque pro
libidinib⁹ animi ſui peſſimi: ideò adduxi ſuper
eos omnes ſermones fœderis hujus, cui
præceperam ut auſcultarent, & non auſcultaverunt.
Et dixit mihi Dn̄s, Deprehenſa eſt re- 9
bellio in viris Judæ & civibus Jeruſalem: Re- 10
verſi ſunt ad peccata majorū ſuorū priſcorū,
& noluerunt auſcultare ſermonibus meis, ſed
abierunt ipſi poſt deos alienos ad colendum
eos: & irritum fecerunt filii Iſraelis & filii
Judæ teſtamentū meū quod pepigeram cum
majorib⁹ eorū. Propterea ſic ait Dn̄s poten- 11
tiſſimus, Deus Iſraelis; Ecce adducā ſuper eos
calamitatē è qua emergere non poterunt: &
clamabunt ad me, at non exaudiam eos. Tunc 12
abeuntes civitates Judæ & cives Jeroſolymorum;
clamabunt ad deos quibus adolebant incenſum;
at non ſervabunt eos tempore calamitatis
eorū. Nam quot erant civitates tuæ, 13
tot erant dii tui Juda; & quot ſunt vici Jeroſolymorum,
totidem altaria poſuiſtis, ad
ignominiam; altaria *inquam* ad adolendum
thura Baali. Tu igitur ne ores pro populo 14
iſto, neque fundas pro eis precem & orationem;
quia non exaudiam quando clamabunt
ad me tempore calamitatis ſuæ. Quare ô 15
mihi dilecta, in domo mea feciſti abominationem
multam? ideò carnem ſacram amovebunt
à te, propter crimen tuum quod graviſſimum
eſt. Oleam opacam, pulchram fru- 16
ctibus, & aſpectu decoram vocaverat Dominus
nomen tuum: ad vocem ſupremi decreti
dimittite ignem in illam, & conſumantur rami
ejus. Nam Dominus exercituum qui te 17
plantaverat, pronuntiavit contra te malum,
propter malitiam domûs Iſraelis & domûs
Judæ, quam exercuerunt ad irritandum me
adhibendo thura Baali. Domine, oſtende 18
mihi ut ſciam: verè oſtendiſti mihi actiones
eorum. At ego tanquam agnus ſimplex qui 19
ducitur ad jugulationem, ignorabam eos in
me molitos eſſe cogitationem, & dixiſſe,
Corrumpamus lignum *(arborem)* cum cibo
(fructu) ſuo, & extinguamus illud è terra
viventium, ut nominis ejus nulla fiat in poſterum
mentio.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

8 * ولم يسمعوا ولا امالوا مسامعهم ولكن سلك كل امرء منهم بمشية نفسه الردي * وانزلت بهم جميع
9 ما قلت في هذا العهد * حين امرتهم يسمعوا ولم يسمعوا] * وقال الرب لي * وجد رباط في مدن
10 يهودا وفي سكان ايروسليم * عادوا الي ظلامات ابايهم الاولين الذين لم يشاوا ان يسمعوا
اقوالي * وها هم يعملون خلف الالهة الغريبة ليعبدوا لها * وابطل بيت اسرايل وبيت يهودا
11 عهدي الذي عهدت لابايهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب * ها انا اجلب على هذا
12 الشعب شرورا لا يستطيعون ان يخرجوا منها * ويصرخون الي فلا استجيب لهم * ويذهب مدن
يهودا وسكان ايروسليم ويصرخون لالهتهم التي هم يبخرون لها ليعينوهم في زمن شرورهم *
13 * لان كعدد مدنك صارت الهتك يا يهودا * وكعدد مخارج ايروسليم ربوا هياكل
14 ليبخروا لباعال * وانت لا تصل من اجل هذا الشعب ولا تتضرع من اجلهم بطلبة وصلاة *
15 لاني لست استجيب في الوقت الذي يدعوني فيه في زمان بلايهم * لماذا المحبوبة في بيتي
16 عملت رذالة * هل الصلوات واللحوم المقدسة يزيلون عنك شرورك * او بهذا تهربي * زيتونة
هنية حسنة الظل بالمنظر دعا الرب اسمك بصوت ختانها التهبت النار فيها * عظيمة الشدة
17 عليك * اغصانها فسدت * والرب الذي غرسك تكلم عليك شرورا بدل شر بيت اسرايل
وبيت يهودا * لانهم صنعوا لهم ان يغضبوني عند تبخيرهم لباعال *

A tamen non auſcultârunt, neque incli- 8
naverunt aures ſuas, ſed ambulaverunt
unuſquiſque juxta placitum animi ſui
peſſimi: quapropter adduxi ſuper eos o-
mnia quæ locutus fueram in iſthoc fœde-
re, quando præceperam eis ut auſcultarent,
& non auſcultaverunt.] Quapropter di- 9
xit mihi Dominus, Deprehenſa eſt conju-
ratio in urbibus Judæ & inter cives Je-
ruſalem; Relapſi ſunt in impietates præ- 10
teritorum patrum ſuorum, qui noluerunt
acquieſcere dictis meis; & ecce iſti per-
ſiſtunt poſt deos peregrinos ut adorent e-
os; & violaverunt domus Iſraelis et do-
mus Judæ fœdus meum quod pepigeram
cum patribus eorum. Idcirco ſic dicit 11
Dominus, Ecce ego inducturus ſum ſu-
per hunc populum mala è quibus evadere
nequibunt: clamabúntque ad me, ſed
non exaudiam eos. Ibúntque urbes Ju- 12
dæ & cives Jeruſalem, & clamabunt
ad deos ſuos quibus adolent, ut opem fe-
rant eis tempore miſeriarum ſuarum. Nam 13
juxta numerum urbium tuarum ſunt dii
tui O Juda; & juxta numerum exitu-
um Jeroſolymæ, templa diſpoſuerunt ut
adolerent Baali. Tu ergò ne ores pro hu- 14
juſmodi populo, neque precibus aut ora-
tione ſupplices pro illis; quia nequaquam
exauditurus ſum tempore quo me invoca-
bunt, tempore calamitatis eorum. Quare 15
dilecta domi meæ fecit abominationem?
num orationes & carnes ſanctæ averte-
rent à te miſerias tuas? an per hæc effu-
geres? Olivam formoſam, ſpecie pulcher- 16
rimè umbroſam vocaverat Dominus no-
men tuum: ad vocem circunciſionis ejus
exarſit ignis in ea (maxima tibi calamitas
impendet) rami ejus corrupti ſunt. Nam 17
Dominus qui te plantavit, locutus eſt de
te mala, pro ſcelere domûs Iſraelis et do-
mûs Juda; ſtuduerunt enim excitare me
ad iram adolendo Baali.

* الاصحاح الثامن *

Textus octavus.

18 * يا رب عرفني فاعرف * حينيذ نظرت اعمالهم * وانا مثل خروف لا شر فيه مساق ليذبح ولم
19 اعلم لانهم تشاوروا علي مشورة رديه قايلين * تعالوا فنضع خشبة في خبزه ونهلكه من
ارض الاحياء * واسمه لا يذكر بعد *

O Domine, doce me ut ſciam: tunc vidi 18
facinora illorum. Ego verò ſicut agnus 19
etiam in quo nulla eſt malitia ductus ut
immoletur, neſciebam eos nefarium iniiſſe
contra me conſilium, dicentes; Agite, po-
namus lignum in panem ejus, & per-
damus eum de terra viventium, & nomen
ejus non memoretur ampliùs.

videam , cor & renes *probans* ,justitiam *judicans* exercituum Domine *Et*
20 וַיהוָה צְבָאוֹת שֹׁפֵט צֶדֶק בֹּחֵן כְּלָיוֹת וָלֵב אֶרְאֶה
ſic Propterea .meam *litem* revelavi *te ad* quia : eis de tuam ultionem
21 נִקְמָתְךָ מֵהֶם כִּי אֵלֶיךָ גִּלִּיתִי אֶת־רִיבִי׃ לָכֵן כֹּה־
:dicendo,tuam animam *quærentes* , Hanathoth viros ad Domin⁹ dixit
אָמַר יְהוָה עַל־אַנְשֵׁי עֲנָתוֹת הַמְבַקְשִׁים אֶת־נַפְשְׁךָ לֵאמֹר
Propterea.noſtras man⁹ p morieris non & ,Dñi nomine in vaticineris Ne
22 לֹא תִנָּבֵא בְּשֵׁם יְהוָה וְלֹא תָמוּת בְּיָדֵנוּ׃ לָכֵן
juvenes : eos *ſuper viſitans* ego Ecce : exercituum Dominus dixit ſic
כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת הִנְנִי פֹקֵד עֲלֵיהֶם הַבַּחוּרִים
reſiduum Et .fame in morientur eorũ filiæ & eorũ filii,gladio in moriẽtur
23 יָמֻתוּ בַחֶרֶב בְּנֵיהֶם וּבְנוֹתֵיהֶם יָמֻתוּ בָּרָעָב׃ וּשְׁאֵרִית
annus ,Hanathoth *viros in* , malum inducam quia : eis erit non
לֹא תִהְיֶה לָהֶם כִּי־אָבִיא רָעָה אֶל־אַנְשֵׁי עֲנָתוֹת שְׁנַת
.eorum viſitationis
פְּקֻדָּתָם׃

CAP. XII. יב

loquar judicia Veruntamen:*te contra litigabo cùm* ,Domine *tu* Juſtus
1 צַדִּיק אַתָּה יְהוָה כִּי אָרִיב אֵלֶיךָ אַךְ מִשְׁפָּטִים אֲדַבֵּר
prævaricãtes omnes *fuerũt ſecuri*,eſt proſperata impiorũ via Quare .tecum
אוֹתָךְ מַדּוּעַ דֶּרֶךְ רְשָׁעִים צָלֵחָה שָׁלוּ כָּל־בֹּגְדֵי
:fructũ fecerunt etiã,*iverunt*,ſunt radicati etiã,eos Plãtâſti ?prævaricationẽ
2 בָגֶד׃ נְטַעְתָּם גַּם־שֹׁרָשׁוּ יֵלְכוּ גַּם־עָשׂוּ פֶרִי
Domine tu Et .eorum renibus à *longinquus* & ,eorum *ore in tu propinquus*
3 קָרוֹב אַתָּה בְּפִיהֶם וְרָחוֹק מִכִּלְיוֹתֵיהֶם׃ וְאַתָּה יְהוָה
pecus ſicut eos evelle : tecum meum cor probâſti & ,me vidiſti , me nôſti
יְדַעְתָּנִי תִּרְאֵנִי וּבָחַנְתָּ לִבִּי אִתָּךְ הַתִּקֵם כְּצֹאן
lugebit quo Uſque .occiſionis diem ad eos *ſanctifica* & ; jugulationẽ ad
4 לְטִבְחָה וְהַקְדִּשֵׁם לְיוֹם הֲרֵגָה׃ עַד־מָתַי תֶּאֱבַל
ea in habitantium malitiã propter?areſcet agri omnis herba & , terra
הָאָרֶץ וְעֵשֶׂב כָּל־הַשָּׂדֶה יִיבָשׁ מֵרָעַת יֹשְׁבֵי־בָהּ
.*noſtrum noviſſimum* videbit Non:dixerũt quoniã,*volatile* &,animalia *perit*
סָפְתָה בְהֵמוֹת וָעוֹף כִּי אָמְרוּ לֹא יִרְאֶה אֶת־אַחֲרִיתֵנוּ׃
contendes quomodo &:te fecerũt laborare &,cucurriſti peditib⁹ cum *Quia*
5 כִּי אֶת־רַגְלִים רַצְתָּה וַיַּלְאוּךָ וְאֵיךְ תְּתַחֲרֶה
facies quomodo & , *fidens* tu pacis terra in Et ?equis cum
אֶת־הַסּוּסִים וּבְאֶרֶץ שָׁלוֹם אַתָּה בוֹטֵחַ וְאֵיךְ תַּעֲשֶׂה
ipſi etiam tui patris dom⁹ &,tui fratres etiam Nam?Jarden altitudine in
6 בִּגְאוֹן הַיַּרְדֵּן׃ כִּי גַם־אַחֶיךָ וּבֵית־אָבִיךָ גַּם־הֵמָּה
Ne :*implendo* te poſt clamaverunt ipſi etiam ; te contra ſunt prævaricati
בָּגְדוּ בָךְ גַּם־הֵמָּה קָרְאוּ אַחֲרֶיךָ מָלֵא אַל־
,meam domũ Reliqui .bona te ad fuerint locuti quum,eis *in* credas
7 תַּאֲמֵן בָּם כִּי־יְדַבְּרוּ אֵלֶיךָ טוֹבוֹת׃ עָזַבְתִּי אֶת־בֵּיתִי
vola in meæ animæ dilectionem dedi : meam hæreditatem dimiſi
נָטַשְׁתִּי אֶת־נַחֲלָתִי נָתַתִּי אֶת־יְדִדוּת נַפְשִׁי בְּכַף
dedit:ſylva in leo tanquam mea hæreditas mihi Fuit .ejus inimicorum
8 אֹיְבֶיהָ׃ הָיְתָה־לִּי נַחֲלָתִי כְּאַרְיֵה בַיָּעַר נָתְנָה
mea hæreditas tincta avis Nunquid .eam odi ideo , *ſua voce in* me contra
9 עָלַי בְּקוֹלָהּ עַל־כֵּן שְׂנֵאתִיהָ׃ הַעַיִט צָבוּעַ נַחֲלָתִי
fera omnis vos congregate , *Ite* ?eam contra *circum* avis Nunquid ? *mihi*
לִי הַעַיִט סָבִיב עָלֶיהָ לְכוּ אִסְפוּ כָּל־חַיַּת
ſunt demoliti multi Paſtores .devorandum ad venite , agri
10 הַשָּׂדֶה הֵתָיוּ לְאָכְלָה׃ רֹעִים רַבִּים שִׁחֲתוּ
portionem *dederunt* : meam partem conculcaverunt , meam vineam
כַרְמִי בֹּסְסוּ אֶת־חֶלְקָתִי נָתְנוּ אֶת־חֶלְקַת
.ſolitudinis deſertum in *mei deſiderii*
חֶמְדָּתִי לְמִדְבַּר שְׁמָמָה׃

JEREMIAS.

Verſio VULG. LAT.

20 Tu autem,Domine Sabaoth, qui judicas juſtè, & probas renes & corda, videam ultionem tuam ex eis : tibi enim revelavi cauſam 21 meam. Propterea hæc dicit Domin⁹ ad viros Anathoth,qui quærunt animam tuam, & dicunt ; Non prophetabis in nomine Domini, & non morieris in manib⁹ 22 noſtris. Propterea hæc dicit Dominus exercituum ; Ecce ego viſitabo ſuper eos : juvenes morientur in gladio, filii eorum & fi- 23 liæ eorum morientur in fame. Et reliquiæ non erunt ex eis:inducã enim malũ ſuper viros Anathoth, annum viſitationis eorum.

CAP. XII.

1 Juſtus quidem tu es,Domine, ſi diſputem tecum : veruntamen juſta loquar ad te : Quarè via impiorum proſperatur : benè eſt omnibus qui prævaricantur & ini- 2 què agunt? Plantâſti eos, & radicem miſerunt: proficiunt & faciunt fructum : propè es tu ori eo- 3 rum, & longè à renibus eorum. Et tu,Domine, nôſti me,vidiſti me,et probâſti cor meum tecũ : congrega eos quaſi gregem ad victimam, & ſanctifica eos in die occiſio- 4 nis. Uſquequò lugebit terra, & herba omnis regionis ſiccabitur, propter malitiam habitantium in ea ? conſumptum eſt animal, & volucre, quoniam dixerunt ; Non 5 videbit noviſſima noſtra. Si cum peditibus currens laborâſti :quomodò contendere poteris cum equis ? cùm autem in terra pacis ſecurus fueris, quid facies in ſu- 6 perbia Jordanis ? Nam & fratres tui, & domus patris tui, etiam ipſi pugnaverunt adverſùm te, & clamaverunt poſt te plenâ voce : ne credas eis cùm locuti fue- 7 rint tibi bona. Reliqui domum meam, dimiſi hæreditatem meã: dedi dilectam animam meam in 8 manu inimicorum ejus: Facta eſt mihi hæreditas mea quaſi leo in ſylva: dedit contra me vocẽ,ideò 9 odivi eam. Numquid avis diſcolor hæreditas mea mihi?numquid avis tincta p totum?venite, congregamini omnes beſtiæ terræ, 10 properate ad devorandũ.Paſtores multi demoliti ſunt vineã meam, conculcaverunt partẽ meam:dederunt portionem meam deſiderabilem in deſertum ſolitudinis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

20 Κύριε κρίνων δίκαια, δοκιμάζων νεφροὺς καὶ καρδίας, ἴδοιμι τὴν παρὰ σοῦ ἐκδίκησιν ἐξ αὐτῶν, ὅτι πρὸς σὲ ἀπεκάλυψα τὸ δικαί- 21 ωμά μου. Διατοῦτο τάδε λέγει (ω) κύριος ἐπὶ τοὺς ἄνδρας Ἀναθὼθ τοὺς ζητοῦντας τὴν ψυχήν μου, τοὺς λέγοντας, Οὐ μὴ (α) προφητεύσεις ἐπὶ τῷ ὀνόματι κυρίου, εἰ δὲ μή, ἀ- 22 ποθανῇ ἐν ταῖς χερσὶν ἡμῶν· Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπισκέψομαι ἐπ' αὐτούς· οἱ νεανίσκοι αὐτῶν ἐν μαχαίρᾳ (β) ἀποθανοῦνται, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῶν τελευτήσουσιν ἐν 23 λιμῷ. Καὶ ἐγκατάλειμμα οὐκ ἔσται αὐτῶν, ὅτι ἐπάξω κακὰ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν Ἀναθώθ, ἐν ἐνιαυτῷ ἐπισκέψεως αὐτῶν.

MS.A. (ω) κύριος ὁ θεὸς (α) προφητεύσῃς (β) πεσοῦνται,

ΚΕΦ. ιβʹ.

1 Δίκαιος εἶ κύριε, ὅτι ἀπολογήσομαι πρὸς σέ. πλὴν κρίματα λαλήσω πρὸς σέ· τί ὅτι ὁδὸς ἀσεβῶν εὐοδοῦται; εὐθήνησαν 2 πάντες οἱ ἀθετοῦντες (α) ἀθετήματα; Ἐφύτευσας αὐτούς, καὶ (β) ἐρριζώθησαν· ἐτεκνοποιήσαντο, καὶ ἐποίησαν καρπόν. ἐγγὺς εἶ σὺ τοῦ στόματος αὐτῶν, καὶ πόρρω ἀπὸ τῶν 3 νεφρῶν αὐτῶν. Καὶ σὺ κύριε γινώσκεις με, (γ) δεδοκίμακας τὴν καρδίαν μου ἐναντίον σου. ἅγνισον αὐτοὺς εἰς ἡμέραν σφαγῆς αὐτῶν. 4 Ἕως πότε πενθήσει ἡ γῆ, καὶ πᾶς (δ) ὁ χόρτος τοῦ ἀγροῦ ξηρανθήσεται ἀπὸ κακίας τῶν κατοικούντων (ε) ἐν αὐτῇ; (ζ) ἠφανίσθησαν κτήνη καὶ πετεινά, (η) ὅτι εἶπαν, Οὐκ ὄψεται ὁ 5 θεὸς ὁδοὺς ἡμῶν. Σοῦ οἱ πόδες τρέχουσι, καὶ (θ) ἐκλύουσί σε· πῶς παρασκευάσῃ ἐφ' ἵπποις; καὶ ἐν γῇ εἰρήνης σὺ πέποιθας· πῶς 6 ποιήσεις ἐν φρυάγματι τοῦ Ἰορδάνου; Ὅτι (ι) καὶ οἱ ἀδελφοί σου καὶ ὁ οἶκος τοῦ πατρός σου, (κ) καὶ οὗτοι ἠθέτησάν σε, καὶ αὐτοὶ ἐβόησαν, ἐκ τῶν ὀπίσω σου ἐπισυνήχθησαν· μὴ πιστεύσῃς ἐν αὐτοῖς, ὅτι λαλήσουσι (λ) 7 πρὸς σὲ καλά. (μ) Ἐγκαταλέλοιπα τὸν οἶκόν μου, ἀφῆκα τὴν κληρονομίαν μου, ἔδωκα τὴν ἠγαπημένην ψυχήν μου εἰς χεῖρας ἐχθρῶν 8 αὐτῆς. Ἐγενήθη ἡ κληρονομία μου ἐμοὶ ὡς λέων ἐν δρυμῷ, ἔδωκεν ἐπ' ἐμὲ τὴν φωνὴν 9 αὐτῆς, διατοῦτο ἐμίσησα αὐτήν. Μὴ σπήλαιον (ν) ὑαίνης ἡ κληρονομία μου (ξ) ἐμοί, ἢ σπήλαιον κύκλῳ αὐτῆς; βαδίσατε, συναγάγετε πάντα τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ, καὶ (ο) 10 ἐλθέτωσαν τοῦ φαγεῖν αὐτήν. Ποιμένες πολλοὶ διέφθειραν τὸν ἀμπελῶνά μου, ἐμόλυναν τὴν μερίδα μου, ἔδωκαν (π) τὴν μερίδα τὴν ἐπιθυμητήν μου εἰς ἔρημον ἄβατον,

MS.A. (α) ἀθετήσει; (β) ἐρριζώθησαν· ἐτεκνοποίησαν, (γ) ἐδοκίμασας (δ) χόρτος ξηρανθήσεται (ε) * αὐτῶν; (ζ) ἠφάνισας (η) καὶ εἶπαν, (θ) ἐκλύουσι (ι) οἱ ἀδελφοί (κ) ἠθέτησάν (λ) ἐπὶ σὲ (μ) Ἐγκαταλέλοιπα (ν) λῃστοῦ ἢ (ξ) ἐμοί; βαδίσατε καὶ συναγάγατε (ο) ἐλθέτωσαν τοῦ καταφαγεῖν (π) μερίδα μου ἐπιθυμητὴν εἰς

(ω) *Domine, judicans juſta, probans renes, & corda, videam, quæ à te, ultionem ex eis: quoniam ad te revelavi juſtificationem meam. Ideò hæc ait Dominus ſuper viros Anathoth, qui quærunt animam meam, dicentes, Non prophetabis in nomine Domini: alioqui morieris in manibus noſtris; Ecce ego viſitabo ſuper eos. Juvenes eorum in gladio morientur: et filii eorum, et filiæ eorum morientur in fame: Et reliquiæ non erunt eorum. Inducam enim mala ſuper habitatores Anathoth, in anno viſitationis eorum.*

CAP. XII.

Juſtus es, Domine: quia ſatisfaciam tibi: Veruntamen judicia loquar ad te. Quid eſt, quod via impiorum proſperatur? abundaverunt omnes, qui prævaricantur prævaricationes? Plantâſti eos, & radicem miſerunt: filios fecerunt, & fecerunt fructum. Propè es tu ori eorum, & longè à renibus eorum. Et tu, Domine, cognoſcis me: probâſti cor meum corã te. (a) Purifica eos in die occiſionis eorum. *Uſquequo lugebit terra, et omnis herba agri ſiccabitur à malitia habitantium in ea? Deleta ſunt jumenta, & volatilia: quia dixerunt, Non videbit Deus vias noſtras. (b) Tui pedes currunt, & diſſolvunt te: quomodò præparaberis in equis? & in terra pacis* tuæ *confidis: (c) quomodo facies in fremitu Jordanis? Nam et fratres tui, & domus patris tui, etiam ipſi ſpreverunt te: & ipſi clamaverunt: ex poſterioribus tuis congregati ſunt: ne credas in eis; quia loquentur ad te bona. Reliqui domum meam, dimiſi hereditatem meam: dedi dilectam animam meam in manus inimicorum ejus. Facta eſt hereditas mea mihi, quaſi leo in ſylva: dedit ſuper me vocem ſuam: ideò odivi eam. Nônne ſpelunca hyænæ hereditas mea mihi? an ſpelunca in circuitu (d) ejus? Pergite, congregate omnes beſtias agri: & veniant ad comedendam eam: Paſtores multi diſperdiderunt vineam meam: polluerunt partem meam: dederunt portionem meã deſiderabilem in deſertum invium:*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 וַיי צְבָאוֹת דַיָן קְשׁוֹט גְלַן קֳדָמוֹהִי כֻלְיָן וְלִב אַחְזֵי פוּרְעָנוּת דִינָךְ מִנְהוֹן אֲרֵי קֳדָמָךְ
21 אֲמָרִית יַת עֻלְבָּנִי׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל אֱנָשֵׁי עֲנָתוֹת דְבָעַן לְמִקְטְלָךְ דְאָמְרִין לָא תִתְנַבֵּי
22 בִּשְׁמָא דַייָ וְלָא תְמוּת בִּידַנָא׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת הָאֲנָא מַסְעַר עֲלֵיהוֹן עוּלֵמֵיהוֹן
23 יִתְקַטְלוּן בְּחַרְבָּא בְּנֵיהוֹן וּבְנָתֵיהוֹן יְמוּתוּן בְּכַפְנָא׃ וּשְׁאָרָא לָא יְהֵי לְהוֹן אֲרֵי אַיְתֵי
בִּישְׁתָא עַל אֱנָשֵׁי עֲנָתוֹת שְׁנַת סוֹעֲרַן חוֹבֵיהוֹן׃ יב
1 זַכַּי אַתְּ יְיָ מִלְמִדַּן לָקֳבֵל פִּתְגָמָךְ בְּרַם שְׁאֵילַת דִינִין אֲנָא שָׁאֵל מִן קֳדָמָךְ מַדִין אוֹרְחַת
2 רַשִׁיעַיָא מַצְלְחָא שְׁלַן שַׁלְוָא כָּל מְשַׁקְּרֵי שְׁקַר׃ קַיֵמְתִּנוּן אַף תְקִיפוּ עֲתַרוּ אַף קְנוֹ נִכְסִין
3 קְרִיבִין פִּתְגָמֵי אוֹרָיְתָךְ בְּפוּמְהוֹן וּרְחִיקָא דַחַלְתָּךְ מִכֻּלְיָתְהוֹן׃ וְאַתְּ יְיָ כּוֹלָא יְדִיעַ וּגְלֵי קֳדָמָךְ
דְאַתְּ בָּחַר לִבְבַיָא דְרָעַן בְּדַחַלְתָּךְ רַשִׁיעַיָא אַתְקְנִנּוּן כְּעָנָא לְנִכְסְתָא וְזַמְנִנּוּן לְיוֹם קְטוֹלֵי׃
4 עַד אֵימָתַי תֶּחֱרוּב אַרְעָא וְעִשְׂבָּא דְכָל חַקְלָא יִיבַשׁ מֵחוֹבֵי רַשִׁיעַיָא דְיָתְבִין בַּהּ סַף בְּעִירָא
5 וְעוֹפָא אֲרֵי אֲמַרוּ לָא גְלֵי קֳדָמוֹהִי סוֹפַנָא׃ דְנָא תְיוּבְתָּא לְיִרְמְיָה נְבִיָא עַל בָּעוּתֵיהּ נְבִיָא
אַתְּ דָמֵי לִגְבַרָא דִרְהַט עִם רַגְלָאָה וְלָאֵי וְאֵיכְדֵין אַתְּ מְדַמֵי לְמִרְהַט כָּל קֳבֵל סוּסְוָתָא
בְּבִקְעֲתָא וּבְאַרְעָא שַׁלְמָא אַתְּ מִתְבְּטַח וְנָפֵיל וְאֵיכְדֵין אַתְּ מְדַמֵי לְמֶעְבַּד כָּל קֳבֵל חֵיוַת
בָּרָא בִּגְרוּת יַרְדְנָא וְאִם עַל טָבְוָן דַאֲנָא מוֹטֵב לִנְבוּכַד נֶאצַר מַלְכָּא דְבָבֶל רַגְלָאָה נְבִיָא
אַתְּ חָזֵי וּמִתְמַהּ וּמָן פּוֹן דַאֲחַזֵיךְ מַה דַאֲנָא עָתִיד לְמֶעְבַּד לַאֲבָהָתָךְ צַדִּיקַיָא דְמִן עָלְמָא
דִרְהַטוּ כְּסוּסְוָתָא לְמֶעְבַּד עוֹבָדִין טָבִין קֳדָמַי וְאַף אֲמָרִית לְהוֹן דְאַיְתֵי עַל בְּנֵיהוֹן בִּרְכָן
6 וְנֶחָמָן הָא כְּמַיָא דְנָחֲתִין שְׁטוֹף לְיַרְדְנָא׃ וּדְאַתְּ יִרְמְיָה בָּעֵי עֲלֵיהוֹן רַחֲמִין אֲרֵי יַת אַחָךְ
וּבֵית אֲבוּךְ אַף אִנּוּן שְׁקַרוּ בָךְ אַף אִנּוּן אֲמַרוּ עֲלָךְ מִלִּין בִּישִׁין לָא תְהֵימַן בְּהוֹן אֲרֵי
7 יֵימְרוּן עִמָךְ פִּתְגָמִין תְקַנִין׃ שְׁבַקִית יַת בֵּית מַקְדְשִׁי רְטַשִׁית יַת אַחְסָנְתִּי מְסָרִית יַת עַמָא
8 דַהֲוָה חֲבִיב קֳדָמַי בְּיַד סַנְאוֹהִי׃ הֲוַת קֳדָמַי אַחְסָנְתִּי כְּאַרְיָא בְּחוּרְשָׁא סְלִיקַת עֲלַי
9 אִתְרְגוּשְׁתַּהּ עַל כֵּן רַחֲקִיתַהּ׃ כְּעוֹפָא דְמִתְבַּדַר כֵּן אִתְבַּדְרַת אַחְסָנְתִּי קֳדָמַי וּכְעוֹפָא
דְמִשְׁתְּדֵי כֵּן יִתְכַּנְשׁוּן עֲלַהּ דְקָטְלִין בְּחַרְבָּא מִסְחוֹר סְחוֹר מַלְכֵי עַמְמַיָא וּמַשְׁרְיָתֵיהוֹן
10 יֵיתוּן עֲלַהּ לְמִבְזַהּ׃ מַלְכִין סַגִיאִין קְטָלוּ עַמִי דָשׁוּ יַת אַחְסָנְתִּי יְהַבוּ יַת אַחְסָנַת
חֶמְדְתִּי לְמַדְבַּר צְדֵי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et Dñs exercituũ judex veritatis,in cuj⁹ conſpectu manifeſta ſunt renes & cor. Videbo ultionẽ judicii tui ex eis:quia corã te dixi injuriã meã. Propterea hæc dicit Dñs ſup viros Anathoth,qui quærunt occidere te,qui dicunt:Non prophetabis in nomine Dñi,& non morieris in manib⁹ noſtris. Propterea hæc dicit Dñs exercituũ : Ecce ego viſitabo ſup eos. Juvenes eorũ occidẽtur gladio: filii eorũ & filiæ eorũ morientur fame. Et reliquiæ non erunt eis ; quia inducam malũ ſuper viros Anathoth, annũ viſitationis peccatorũ ſuorum.

CAP. XII.

Juſtior es Dñe,quàm ut contendã ante Verbũ tuũ:veruntamen interrogatione judicii ego interrogo à facie tua,quare *via* impiorum *proſperatur* & pacificè degũt oẽs qui prævaricãtur prævaricationẽ?Suſtentâſti eos,etiã roborati ſunt;divites facti ſunt : & etiã poſſederũt ſubſtantias : propè ſunt verba legis tuæ in ore eorũ,& longè eſt timor tui à renib⁹ eorũ. Tu autem Dñe omnia ſcis,& manifeſtũ eſt corã te, ꝙ tu eligis corda quæ ſibi placent in timore tui. Præpara impios quaſi oves ad victimã,& præpara eos in die occiſionis. Uſquequo deſerta erit terra,& herba omnis agri ſiccabitur,propter peccata impiorũ qui habitant in ea?Conſumptũ eſt animal & volucre: quia dixerũt,Non eſt revelat⁹ corã eo finis noſter. Hæc eſt reſponſio quæ facta eſt ad Jeremiam prophetã ſuper interrogationẽ ſuã:Propheta,ſimilis es tu viro qui currit pedibus & laſſatur. Quomodo ergo tu putas currere contra equos ? in planitie & terra pacis tu fidis & cadis : & quomodo tu putas facere contra beſtias agri in elatione Jordanis ? Et ſi ſup bona quib⁹ ego benefeci Nabuchodonoſor regi Babylonis pediti,ô propheta tu vides & miraris ; quid ubi primũ ego oſtendero tibi ꝙ ego factur⁹ ſum patrib⁹ tuis juſtis qui à ſeculo fuerũt,qui cucurrerũt ſicut equi ut facerẽt opera bona corã me?Etiã dixi eis, ꝙ adducerẽ ſup filios eorũ benedictiones & conſolationes,ſicut aquas, quæ deſcendũt cum inundatione in Jordanem. Et tu *Jeremia* quæris pro illis miſericordiã ? quia etiã fratres tui & dom⁹ patris tui,etiã ipſi iniquè egerunt contra te:ipſi quoq; dixerũt adverſum te verba mala.Ne credas eis cùm dixerint de te verba recta. Reliqui domũ ſanctuarii mei,abjeci hæreditatẽ meã,tradidi populũ qui erat dilect⁹ corã me,in manum inimicorũ ſuorũ. Facta eſt corã me hæreditas mea quaſi leo in ſylva: aſcendit *contra me* tumultus ejus,propterea projeci eam. Sicut avis quæ diſperſa eſt,ſic diſperſa eſt hæreditas mea corã me : & ſicut avis quæ volat, ſic cõgregabũtur contra eã *occidẽtes gladio undiquaq;:reges populorũ & exercit⁹ eorum venient contra eam*,ut diripiant eam. Reges multi occiderunt populum meum, conculcaverunt hæreditatem meam, poſuerunt portionem deſiderii mei in deſertum deſolationis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܕܝܢܐ ܕܩܘܫܬܐ. ܒܚܪ ܟܘܠܝܬܐ ܘܠܒܐ. ܐܚܙܐ ܦܘܪܥܢܟ ܡܢܗܘܢ.
ܡܛܠ ܕܠܟ ܓܠܝܬ ܕܝܢܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܐܢܫܐ ܕܥܢܬܘܬ ܕܒܥܝܢ
ܢܦܫܟ. ܘܐܡܪܝܢ ܠܐ ܬܬܢܒܐ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܡܘܬ ܒܐܝܕܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܐ ܦܩܕ ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܥܠܝܡܐ ܢܡܘܬܘܢ ܒܣܝܦܐ. ܘܒܢܝܗܘܢ
ܘܒܢܬܗܘܢ ܢܡܘܬܘܢ ܒܟܦܢܐ. * ܘܫܪܟܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܝܬܐ ܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܥܠ
ܐܢܫܐ ܕܥܢܬܘܬ. ܫܢܬܐ ܕܣܘܥܪܢܗܘܢ.

* ܦܘܠܓܐ * ܝܒ *

* ܙܕܝܩ ܐܢܬ ܡܪܝܐ. ܕܐܕܘܢ ܥܡܟ. ܒܪܡ ܕܝܢܐ ܡܡܠܠ ܐܢܐ ܥܡܟ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܐܘܪܚܗ
ܕܪܫܝܥܐ ܡܨܠܚܐ. ܘܫܠܝܢ ܟܠܗܘܢ ܥܘܠܐ. * ܢܨܒܬ ܐܢܘܢ. ܘܐܥܩܪܘ ܥܩܪܝܗܘܢ. ܘܗܘ
ܘܥܒܕܘ ܦܐܪܐ. ܩܪܝܒ ܐܢܬ ܒܦܘܡܗܘܢ. ܘܪܚܝܩ ܐܢܬ ܡܢ ܟܘܠܝܬܗܘܢ. * ܘܐܢܬ
ܡܪܝܐ ܝܕܥܬܢܝ ܘܚܙܝܬܢܝ. ܘܒܚܪܬ ܠܒܝ ܩܕܡܝܟ. ܩܢܝ ܐܢܘܢ. ܐܝܟ ܥܢܐ ܠܢܟܣܬܐ. ܘܥܬܕ
ܐܢܘܢ ܠܝܘܡܐ ܕܩܛܠܐ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܬܬܐܒܠ ܐܪܥܐ. ܘܥܣܒܐ ܕܟܠܗ ܚܩܠܐ ܢܝܒܫ ܡܢ ܒܝܫܘܬܐ
ܕܥܡܘܪܝܗ. ܣܦܘ ܒܥܝܪܐ ܘܦܪܚܬܐ. ܕܐܡܪܘ ܠܐ ܢܚܙܐ ܚܪܬܢ. * ܐܢ ܥܡ ܪܓܠܝܐ ܪܗܛܬ ܘܐܠܐܘܟ
ܘܠܐܝܬ. ܘܐܝܟܢܐ ܡܬܟܬܫ ܐܢܬ ܥܡ ܣܘܣܘܬܐ. ܘܒܐܪܥܐ ܕܫܠܡܐ ܬܬܟܠ ܐܢܬ. ܘܐܝܟܢܐ ܬܥܒܪ
ܐܢܬ ܒܫܘܒܗܪܗ ܕܝܘܪܕܢܢ. * ܡܛܠ ܕܐܦ ܐܚܝܟ ܘܒܝܬ ܐܒܘܟ. ܐܦ ܗܢܘܢ ܐܬܢܟܠܘ ܒܟ.
ܗܢܘܢ ܐܡܪܘ ܥܠܝܟ ܡܠܐ. ܠܐ ܬܗܝܡܢ ܐܢܘܢ ܟܕ ܢܡܠܠܘܢ ܥܡܟ ܛܒܬܐ. * ܫܒܩܬ ܒܝܬܝ
ܫܒܩܬ ܝܪܬܘܬܝ. ܝܗܒܬ ܚܒܝܒܬܗ ܕܢܦܫܝ ܒܐܝܕܝ ܒܥܠܕܒܒܝܗ. * ܗܘܬ ܠܝ ܝܪܬܘܬܝ ܐܝܟ
ܐܪܝܐ ܒܥܒܐ. ܘܝܗܒܬ ܥܠܝ ܩܠܗ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܣܢܝܬܗ. * ܨܦܪܐ ܨܒܘܥܐ ܗܘܬ ܠܝ ܝܪܬܘܬܝ.
ܘܦܪܚܬܐ ܬܚܕܪܝܗ. ܙܠܘ ܟܢܫܘ ܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ. ܘܐܝܬܘ ܠܡܐܟܠܗ. * ܪܥܘܬܐ ܣܓܝܐܐ
ܚܒܠܘ ܟܪܡܝ. ܕܫܘ ܦܠܓܘܬܝ. ܥܒܕܘ ܦܠܓܘܬܐ ܕܪܓܬܝ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ ܚܪܒܐ.

Verùm Domine potentiſſime, judex veritatis, 20
renum cordiſque ſcrutator, *fac* videam
ultionem tuam de illis; quia tibi revelavi
judicia mea. Propterea ſic dicit Dominus, In 21
cives Anathoth qui quærunt animam tuam,
& dicunt, Ne vaticineris in nomine Domini,
et ne moriaris manibus noſtris: Propterea 22
inquam ſic dicit Dominus exercituum, Ecce
animadverſurus ſum in eos: juvenes gladio
occumbent, & filii ac filiæ eorum fame morientur.
Nec *fælicem* exitum conſequentur; 23
adducturus enim ſum calamitatem ſuper cives
Anathoth anno viſitationis eorum.

CAP. XII.

Juſtiſſimus quidem es Domine, ut judicio 1
contendam tecum: attamen cauſam hanc tibi
proponam. Qua de re via impii proſpera
eſt, & locupletes ſunt omnes perfidi? Plantas 2
eos, & firmas demittunt radices, proficiunt,
& fructus etiam producunt, propinquus es
in ore ipſorum, at longinquus à renibus eorum.
Tu autem Domine *qui* me cognoſcis, 3
me vides, & cor meum exploras apud te;
præpara eos tanquam oves ad jugulationem,
& appara eos ad diem occiſionis. Quouſq; 4
lugebit terra? nam tota agri herba exaruit,
propter nequitiam habitantium in ea defecerunt
jumenta & volucres; quia dixerunt,
Non videbit finem noſtrum. Ecce cum pedi- 5
tibus cucurriſti, & laſſum te reddidére; quomodo
ergò certares cum equis, & terræ pacis
confideres? & quomodo tranſires per
vaſtitatem Jordanis? Quandoquidem etiam 6
fratres tui & familia patris tui, vel ipſi te
deceperunt, vel ipſimet *mala* de te verba
dixerunt; ne credas iſtis licèt bene de te loquantur.
Dereliqui domum meam, deſerui 7
hæreditatem meam, tradidi dilectam animæ
meæ in manus inimicorũ ejus. Facta eſt mihi 8
hæreditas mea ſicut leo in ſylva, extulit contra
me vocem ſuam; iccirco odi eam. Avis 9
picta facta eſt mihi hæreditas mea, ideo avis
circundabit eam. Ite, congregate omnes beſtias
deſerti, & adducite ad devorandã illã. Paſtores 10
multi corruperunt vineã meã, conculcaverunt
portionẽ meã, reddiderunt portionẽ
mihi gratiſſimã quaſi ſolitudinem deſertam,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* رب القوات يحكم بالعدل. يختبر الكلى والقلوب. انظر الانتقام الذي من قبلك فيهم. ::
لاني كشفت لك عدلي * لاجل هذا هكذا يقول الرب الاله على رجال اناثوث الذين يطلبون ::
نفسي القائلين لا تتنبا باسم الرب ولا تموت في ايدينا * لاجل هذا هكذا يقول رب القوات. ::
ها انا اطلع عليهم. شبابهم يموتون بالسيف. وبنوهم وبناتهم يموتون بالجوع * ولا يكون ::
لهم بقية. لاني اجلب شرورا على السكان في اناثوث في سنة تعهدهم.

* الفصل الثاني عشر *

* عدل انت يا رب. لاني انا اجاوب معك لا اتكلم معك بالاحكام. لماذا ان طريق المنافقين 1
مستقيمة. جميع الذين يعصون عصيانا مخصبين * غرستهم غرسا فتاصلوا. صنعوا اولادا 2
وصنعوا ثمرا. قريب انت من فمهم وبعيد من كلاهم * وانت يا رب عرفتني ورايتني وامتحنت 3
قلبي امامك. اجمعهم مثل خراف للذبح. وطهرهم ليوم ذبحهم * الى متى تحزن الارض. وكل 4
عشب الارض ييبس من شر الساكنين في الارض. هلكت البهائم والطيور. لانهم قالوا لا
يعاين الله طرقنا * رجلاك تسرع ويحلوك. كيف تستعد على الخيل. وفي ارض سلامتك وثقت 5
كيف تصنع في ارتجاج الاردن * لان اخوتك وبيت ابيك والاخر غدروا بك. وهم صرخوا 6
من خلفك واجتمعوا. لا تامنهم لانهم يتكلمون عليك شرورا * اهملت بيتي. تركت ميراثي 7
اعطيت نفسي المحبوبة في ايدي اعدائها * صار ميراثي لي مثل اسد في الغاب. اعطت على 8
صوتها. لاجل هذا ابغضتها * هل مغار لصوص ميراثي لي. امضوا واجمعوا جميع وحوش 9
الحقل. وليأتوا ليأكلوها * الرعاة الكثيرين افسدوا كرمي. داسوا نصيبي. اعطوا قسمي 10
المشتهي لبرية غير مسلوكة *

Dominus virtutum juſtè judicat, renes 20
& corda ſcrutatur: videam precor *ultionem*
quæ per te ſumenda eſt *ab eis, quoniam*
tibi retexi jus meum. Iccirco ſic 21
ait Dominus Deus de civibus Anathoth
qui quærunt animam meam, qui dicunt,
Ne vaticineris in nomine Domini, ne moriaris
per manus noſtras: Iccirco inquam 22
ſic ait Dominus virtutum, Ecce
ego reviſam eos: juvenes eorum gladio
morientur, filii & filiæ eorum fame interibunt;
Nec erit eis reſiduum; quoniam 23
inducam mala ſuper habitantes in Anathoth
anno viſitationis eorum.

CAP. XII.

Juſtiſſimus es O Domine: quandoquidem 1
ego ſum tecum diſcepturus, annon
loquerer tecum judicia? Quarè via
impiorum eſt recta? omnes qui contumaciſſimè
rebellant, fœcundi ſunt? Plantando 2
plantas eos, & radicantur? producunt
liberos, & edunt fructus? propinquus
es ori eorum, & longinquus à
renibus eorum. Et tu O Domine, noſti 3
me, vides me, & probaſti cor meum coram
te: congrega eos tanquam agnos ad
jugulationem, & expia illos ad diem
mactationis eorum. Quouſque mœrebit 4
terra, & omnis herba terræ ſiccabitur ob
nequitiam habitantium in terra? interierunt
jumenta & volatilia; quia dicunt,
Nequaquam intuetur Deus vias noſtras.
Pedes tui ſunt celeres, attamen labore 5
te conficiunt, quomodo curſu certares cum
equis? Tu qui terræ pacis tuæ confidis,
quomodo faceres in concitatione Jordanis?
Nam fratres tui, & domus tua 6
paterna cum aliis, perfide tecum egerunt,
ipſique à tergo tuo exclamaverunt &
congregati ſunt: ne credas illis quia locuti
ſunt de te mala. Neglexi domum meam, 7
deſerui hereditatem meam, tradidi animam
meã dilectam in manus inimicorum
ejus. Facta eſt hereditas mea mihi ſicut 8
leo in ſylva, edidit contra me vocem ſuam,
propterea odio proſequor eam. Nam 9
ſpelunca latronum eſt hereditas mea mihi?
Agite, congregate omnes agri belluas:
veniant, & comedant eam. Paſtores 10
multi depravârunt vineam meam,
polluerunt ſortem meam, redegerunt partem
meã optatiſſimã in deſertum imperviũ,

ירמיה : יג

est Desolata .desolata me contra luxit , desolationem in eam Posuit
11 שָׂמָהּ לִשְׁמָמָה אָבְלָה עָלַי שְׁמֵמָה נָשַׁמָּה
loca *edita* omnia Super : cor super *ponens* *vir* non quia : terra omnis
12 כָּל־הָאָרֶץ כִּי אֵין אִישׁ שָׂם עַל־לֵב׃ עַל־כָּל־שְׁפָיִם
extremo ab *devorans* Domini gladius quia : vastatores venerunt deserto in
בַּמִּדְבָּר בָּאוּ שֹׁדְדִים כִּי חֶרֶב לַיהוָה אֹכְלָה מִקְצֵה־
carni universæ pax non : terræ extremum ad usque & , terræ
אֶרֶץ וְעַד־קְצֵה הָאָרֶץ אֵין שָׁלוֹם לְכָל־בָּשָׂר׃
:profecerũt non, ægrotaverunt, messuerunt spinas & ,frumenta Seminaverũt
13 זָרְעוּ חִטִּים וְקֹצִים קָצָרוּ נֶחְלוּ לֹא יוֹעִלוּ
Sic .Domini *nasi* iram propter vestris *proventibus* à afficiemini pudore &
14 וּבֹשׁוּ מִתְּבוּאֹתֵיכֶם מֵחֲרוֹן אַף־יְהוָה׃ כֹּה
,hæreditatẽ *in tangentes* ,pessimos meos vicinos omnes adversum Dñs dixit
אָמַר יְהוָה עַל־כָּל־שְׁכֵנַי הָרָעִים הַנֹּגְעִים בַּנַּחֲלָה
desuper eos *evellens* ego Ecce : Israel meum populum feci hæreditare quam
אֲשֶׁר־הִנְחַלְתִּי אֶת־עַמִּי אֶת־יִשְׂרָאֵל הִנְנִי נֹתְשָׁם מֵעַל
post erit Et .eorum medio è evellam Jehudah domum & , sua *humo*
15 אַדְמָתָם וְאֶת־בֵּית יְהוּדָה אֶתּוֹשׁ מִתּוֹכָם׃ וְהָיָה אַחֲרֵי
unumquemque,eos reducam &:eorũ miserebor &,revertar , eos *me evellere*
נָתְשִׁי אוֹתָם אָשׁוּב וְרִחַמְתִּים וַהֲשִׁבֹתִים אִישׁ
discendo si ,erit Et .suam terram ad unumquemq; &,suam hæreditatẽ ad
16 לְנַחֲלָתוֹ וְאִישׁ לְאַרְצוֹ׃ וְהָיָה אִם־לָמֹד
Vivens , meo nomine in *jurandum ad* , mei populi vias didicerint
יִלְמְדוּ אֶת־דַּרְכֵי עַמִּי לְהִשָּׁבֵעַ בִּשְׁמִי חַי־
, Bahal in jurare meum populum docuerunt sicut : Dominus
יְהוָה כַּאֲשֶׁר לִמְּדוּ אֶת־עַמִּי לְהִשָּׁבֵעַ בַּבָּעַל
evellam & ,audierint non si Et .mei populi medio in ædificabuntur *&*
17 וְנִבְנוּ בְּתוֹךְ עַמִּי׃ וְאִם לֹא יִשְׁמָעוּ וְנָתַשְׁתִּי
.Dominus ait ,perdendo & evellendo ,illam gentem
אֶת־הַגּוֹי הַהוּא נָתוֹשׁ וְאַבֵּד נְאֻם־יְהוָה׃

CAP. XIII. יג

,*linorum* cingulum tibi *emes* & , Vade : me ad Dominus dixit Sic
1 כֹּה־אָמַר יְהוָה אֵלַי הָלוֹךְ וְקָנִיתָ לְּךָ אֵזוֹר פִּשְׁתִּים
emi Et .illud inferes non aquam in &:tuos lumbos super illud pones &
2 וְשַׂמְתּוֹ עַל־מָתְנֶיךָ וּבַמַּיִם לֹא תְבִאֵהוּ׃ וָאֶקְנֶה
fuit Et .meos lumbos super posui & : Domini verbum juxta cingulum
3 אֶת־הָאֵזוֹר כִּדְבַר יְהוָה וָאָשִׂם עַל־מָתְנָי׃ וַיְהִי
quod cingulum Tolle : dicendo ,secundò me ad Domini verbum
4 דְבַר־יְהוָה אֵלַי שֵׁנִית לֵאמֹר׃ קַח אֶת־הָאֵזוֹר אֲשֶׁר
, Euphratem ad vade , surge & : tuos lumbos super quod , emisti
קָנִיתָ אֲשֶׁר עַל־מָתְנֶיךָ וְקוּם לֵךְ פְּרָתָה
illud abscondi & , *abii* Et .petræ foramine in ibi illud absconde &
5 וְטָמְנֵהוּ שָׁם בִּנְקִיק הַסָּלַע׃ וָאֵלֵךְ וָאֶטְמְנֵהוּ
dierum fine à fuit Et .mihi Dominus præceperat sicut , Euphrate in
6 בִּפְרָת כַּאֲשֶׁר צִוָּה יְהוָה אוֹתִי׃ וַיְהִי מִקֵּץ יָמִים
, Euphratem ad vade , Surge : me ad Dominus dixit & , multorum
רַבִּים וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלַי קוּם לֵךְ פְּרָתָה
illud abscondendum ad,tibi præcepi quod cingulum inde tolle &
וְקַח מִשָּׁם אֶת־הָאֵזוֹר אֲשֶׁר צִוִּיתִיךָ לְטָמְנוֹ־
de cingulum tuli & , fodi & , Euphratem ad *ivi* Et .ibi
7 שָׁם׃ וָאֵלֵךְ פְּרָתָה וָאֶחְפֹּר וָאֶקַּח אֶת־הָאֵזוֹר מִן־
, cingulum *erat corruptum* ecce & : *ibi* illud absconderam *quo* loco
הַמָּקוֹם אֲשֶׁר־טְמַנְתִּיו שָׁמָּה וְהִנֵּה נִשְׁחַת הָאֵזוֹר
: dicendo , me ad Domini verbum fuit Et .*cuiquam prosperabatur* non
8 לֹא יִצְלַח לַכֹּל׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃
& , Jehudah superbiam *corrumpam* Sic : Dominus dixit Sic
9 כֹּה אָמַר יְהוָה כָּכָה אַשְׁחִית אֶת־גְּאוֹן יְהוּדָה וְאֶת־
.multam Jerusalaim superbiam
גְּאוֹן יְרוּשָׁלִַם הָרָב׃

Versio VULG. LAT.

11 Posuerunt eam in dissipationem,
luxitque super me : desolatione
desolata est omnis terra : quia
nullus est qui recogitet corde.
12 Super omnes vias deserti venerunt
vastatores, quia gladius Domini
devorabit ab extremo terræ
usque ad extremum ejus : non
13 est pax universæ carni. Seminaverunt
triticum, & spinas messuerunt
: hæreditatem acceperunt,
& non eis proderit : confundemini
à fructibus vestris,
propter iram furoris Domini.
14 Hæc dicit Dominus adversùm
omnes vicinos meos pessimos,
qui tangunt hæreditatem, quam
distribui populo meo Israel;
Ecce ego evellam eos de terra
sua, & domum Juda evellam de
15 medio eorum. Et cùm evulsero
eos, convertar, & miserebor
eorum : & reducam eos, virum
ad hæreditatem suam, & virum
16 in terram suam. Et erit : si eruditi
didicerint vias populi mei,
ut jurent in nomine meo, Vivit
Dominus, sicut docuerunt populum
meum jurare in Baal : ædificabuntur
in medio populi mei.
17 Quòd si non audierint. evellam
gentem illam evulsione & perditione,
ait Dominus.

CAP. XIII.

1 HÆc dicit Dominus ad me;
Vade, & posside tibi lumbare
lineum, & pones illud super
lumbos tuos, & in aquam non
2 inferes illud. Et possedi lumbare
juxta verbum Domini, &
3 posui circa lumbos meos. Et
factus est sermo Domini ad me,
4 secundò, dicens; Tolle lumbare,
quod possedisti, quod est circa
lumbos tuos, & surgens vade
ad Euphraten, & absconde ibi
5 illud in foramine petræ. Et abii,
& abscondi illud in Euphrate,
sicut præceperat mihi
6 Dominus. Et factum est post
dies plurimos, dixit Dominus
ad me; Surge, vade ad Euphraten
: & tolle inde lumbare, quod
præcepi tibi ut absconderes illud
7 ibi. Et abii ad Euphraten,
& fodi, & tuli lumbare de loco,
ubi absconderam illud : & ecce
computruerat lumbare, ita ut nulli
8 usui aptum esset. Et factum est
verbum Domini ad me, dicens;
9 Hæc dicit Dominus; Sic putrescere
faciam superbiam Juda, &
superbiam Jerusalem multam :

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 (ρ) Ἐτέθη εἰς ἀφανισμὸν ἀπωλείας. Δι᾽ ἐμὲ
ἀφανισμῷ ἠφανίσθη πᾶσα ἡ γῆ, ὅτι οὐκ
12 ἔστιν ἀνὴρ τιθέμενος ἐν καρδίᾳ. Ἐπὶ πᾶσαν
διεκβολὴν ἐν τῇ ἐρήμῳ (σ) ἦλθον
ταλαιπωροῦντες, ὅτι μάχαιρα τοῦ κυρίου (τ)
καταφάγεται ἀπ᾽ ἄκρου τῆς γῆς (υ) ἕως ἄκρου
13 τῆς γῆς· οὐκ ἔστιν εἰρήνη πάσῃ σαρκί. Σπείρατε
πυρούς, καὶ ἀκάνθας (φ) θερίζετε, οἱ
κλῆροι αὐτῶν οὐκ ὠφελήσουσιν (χ) αὐτούς.
αἰσχύνθητε (ψ) ἀπὸ καυχήσεως ὑμῶν, ἀπὸ
14 ὀνειδισμοῦ ἔναντι κυρίου. Ὅτι τάδε λέγει
κύριος περὶ πάντων τῶν γειτόνων τῶν (ω) πονηρῶν,
τῶν ἁπτομένων τῆς κληρονομίας μου, ἧς
ἐμέρισα τῷ λαῷ μου Ἰσραήλ, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀποσπῶ
αὐτοὺς ἀπὸ τῆς γῆς αὐτῶν, καὶ τὸν Ἰούδαν
15 ἐκβαλῶ ἐκ μέσου αὐτῶν. Καὶ ἔσται μετὰ
τὸ ἐκβαλεῖν (α) με αὐτούς, ἐπιστρέψω καὶ
ἐλεήσω αὐτούς, καὶ κατοικιῶ αὐτούς, ἕκαστον
εἰς τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ, καὶ ἕκαστον εἰς τὴν
16 γῆν αὐτοῦ. Καὶ ἔσται ἐὰν (β) μαθόντες
μάθωσι (γ) τὴν ὁδὸν τοῦ λαοῦ μου, τοῦ ὀμνύειν
τῷ ὀνόματί μου, Ζῇ κύριος, καθὼς ἐδίδαξαν
τὸν λαόν μου ὀμνύειν τῇ Βάαλ, καὶ (δ)
17 οἰκοδομηθήσονται ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ μου. Ἐὰν
δὲ μὴ ἐπιστρέψωσι, (ε) καὶ ἐξαρῶ τὸ ἔθνος
ἐκεῖνο (ζ) ἐξάρσει καὶ ἀπωλείᾳ.

Posita est in dissipationem [illegible] tionis. Propter me dissipatione dissipata est univ[illegible] non est vir, qui ponat in [illegible] Ad omne (e) [illegible] deserto venerunt [illegible] quia gladius Domini [illegible] ab extremo terræ usque ad [illegible] mum terræ: non est pax [illegible] carni. (f) Seminate [illegible] spinas metite: [illegible] eorum proderunt eis. Confundimini [illegible] gloriatione vestra, ab [illegible] conspectu Domini. Quia hæc [illegible] cit Dominus de omnibus [illegible] pessimis, qui tangunt hæredita tem meam, quam distribui populo meo Israel; Ecce [illegible] eos de terra sua: & Judam [illegible] jiciam de medio eorum. Et [illegible] postquàm ejecero eos; [illegible] & miserebor eorum, & [illegible] faciã eos, unumquemq; in [illegible] tate sua, & unumquemq; [illegible] ra sua. Et erit si discentes [illegible] cerint viam populi mei, [illegible] randum in nomine meo, [illegible] Dominus, sicut docue[illegible] lum meum jurare in Baal, & ædificabitur in medio popul[illegible] Si autem non fuerint rever[illegible] auferam gentem illam ab[illegible] & perditione.

MS.A. (ρ) Ἐγενήθη εἰς (σ) ἤλθοσαν (τ) κατέφαγεν (υ) καὶ ἕως (φ)
θερίσατε, (χ) ἑαυτούς. (ψ) αἰσχύνην ἀπὸ (ω) σκληρῶν, (α) αὐτοὺς
μανθάνοντες (γ) τὴν ὁδόν μου, (δ) ᾠκοδομηθήσονται (ε) ἐξαρῶ
ἐξάρξει

ΚΕΦ. ιγ΄.

1 Τάδε λέγει κύριος, Βάδισον καὶ κτῆσαι
σεαυτῷ περίζωμα λινοῦν, καὶ περίθου περὶ τὴν
2 ὀσφύν σου, καὶ ἐν ὕδατι οὐ διελεύσεται. Καὶ
ἐκτησάμην τὸ περίζωμα κατὰ τὸν λόγον κυρίου,
3 καὶ περιέθηκα περὶ τὴν ὀσφύν μου. Καὶ
(α) ἐγενήθη λόγος κυρίου πρός με, λέγων,
4 Λάβε τὸ περίζωμα τὸ περὶ τὴν ὀσφύν
σου, καὶ ἀνάστηθι, καὶ βάδισον ἐπὶ τὸν
Εὐφράτην, καὶ κατάκρυψον αὐτὸ ἐκεῖ ἐν
5 τῇ τρυμαλιᾷ τῆς πέτρας. Καὶ ἐπορεύθην,
καὶ ἔκρυψα αὐτὸ ἐν τῷ Εὐφράτῃ, καθὼς
6 ἐνετείλατό μοι κύριος. Καὶ ἐγένετο μεθ᾽
ἡμέρας πολλάς, καὶ εἶπε κύριος πρός με,
Ἀνάστηθι, (β) βάδισον ἐπὶ τὸν Εὐφράτην,
καὶ λάβε ἐκεῖθεν τὸ περίζωμα, ὃ ἐνετειλάμην
7 σοι τοῦ κατακρύψαι ἐκεῖ. Καὶ ἐπορεύθην
ἐπὶ τὸν Εὐφράτην ποταμόν, καὶ ὤρυξα,
καὶ ἔλαβον τὸ περίζωμα ἐκ τοῦ τόπου οὗ
κατώρυξα αὐτὸ ἐκεῖ, καὶ ἰδοὺ διεφθαρμένον
8 ἦν, ὃ οὐ μὴ χρησθῇ εἰς οὐθέν. Καὶ ἐγενήθη
9 λόγος κυρίου πρός με, λέγων, Τάδε
λέγει κύριος, (γ) Οὕτω φθερῶ τὴν ὕβριν
Ἰούδα καὶ τὴν ὕβριν Ἱερουσαλήμ, τὴν πολλὴν
ταύτην ὕβριν,

CAP. XIII.

HÆc dicit Dominus; Vade [illegible] posside tibi cinctorium lineum, & pone circa lumbum tuum; & per aquam non transibit. Et possedi cinctorium juxta verbum Domini; & posui circa lumbum meum. Et factus est sermo Domini ad (α) me dicens; Tolle cinctorium, [illegible] circa lumbum tuum, & [illegible] & vade ad Euphratem: & abs conde illud ibi in foramine pe træ. Et ivi, & abscondi illud [illegible] Euphrate, sicut præceperat [illegible] Dominus. Et factum est p[illegible] multos; & dixit Dominus ad me: Surge, vade ad Euphratem, & tolle inde cinctorium, quod [illegible] cepi tibi, ut absconderes [illegible] abii ad Euphratem fluvium, & fodi, & tuli cinct[illegible] ubi defoderam illud [illegible] corruptum erat; ita ut [illegible] sui aptum esset. Et factum [illegible] verbum Domini ad me, d[illegible] Hæc dicit Dominus; S[illegible] rumpam contumeliam Juda, & contumeliam Hierusalem, [illegible] contumeliam hanc,

MS.A. (α) ἐγένετο (β) καὶ βάδισον (γ) Οὕτως

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 שויוהא לצדו אתאבלת קדמי חרובת צדיאת כל ארעא ארי לית אנש דמשוי דחלתי
12 על לבא : על כל נגדין במדברא אתו בזוזין ארי חרבא קדם יי מקטלא מסיפי ארעא
13 ועד סיפי ארעא לית שלמא לכל בסרא : לא תהון דמן לדזרעו חטין על בור ולא
משכחין למכנש אלהן כובין ומעללתהון לית להון הנאה ותבהתון בעובדיכון במיתי
14 עליכון תקוף רוגזא דיי : כדנן אמר יי על כל מגריא בישיא דמנזקין באחסנתא
דאחסנית ית עמי ית ישראל הא אנא מטלטל להון מעל ארעהון וית דבית יהודה
15 אטלטל מביניהון : והוה בתר דאטלטל יתהון אתוב במימרי וארחם עליהון ואתבנון
16 גבר לאחסנתיה וגבר לארעיה : ויהי אם מילף יילפון מאורחת כנשתא דעמי לקימא
17 בשמי קים הוא יי כמא דאליפו ית עמי לקימא בשום טעותא ויתקימון בגו עמי : ואם לא
יקבלון אולפן ואטלטל ית עמא הדין טלטול דאבדן אמר יי :

יג

1 כדנן אמר יי לי איזיל ותזבן לך זרז דכתן ותשוניה על חרצך ובמיא לא תעלניה :
2 וזבינית ית זרזא כפתגמא דיי ושויתיה על חרצי : והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי
3 4 תנינות למימר : סב ית זרזא די זבנתא די על חרצך וקום איזיל לפרת וטמריהי תמן
5 6 בשעיעות כיף גלי : ואזלית וטמרתיה בפרת כמא די פקיד יי יתי : והוה מסוף יומין
סגיאין ואמר יי לי קום איזיל לפרת וסב מתמן ית זרזא די פקדתך לטמריה תמן :
7 ואזלית לפרת וחפרית ונסיבית ית זרזא מן אתרא דטמרתיה תמן והא אתחבל זרזא
8 9 לית ביה צרוך לכל מדעם : והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : כדנן אמר יי
כדין אחבל ית תקוף אנש יהודה וית תקוף יתבי ירושלם דהוה סגי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Posuerunt eam in desolationem: luxit coram me; deserta est & desolata omnis terra; quia non est homo qui proponat animo timorem meũ. Super omnia excelsa deserti venerunt deprædatores, quia gladius coram Dño occîdit ab extremis terræ : & usque ad extrema terræ non est pax ulli carni. Nolite esse similes his qui seminant triticum in agro inculto, & non inveniunt quod colligant nisi spinas, & ex fructu eorum non est illis utilitas. Et confundemini in peribꝰ vestris, cùm venerit super vos ira furoris Dñi. Hæc dicit Dñs super omnes vicinos malos, qui nocent hæreditati quam possidere feci populum meum Israel. Ecce ego transmigrare eos faciam de terra sua, & viros domus Juda transmigrare faciam de medio eorum. Et erit postquàm transmigrare fecero eos, convertar in verbo meo, & miserebor eorum, & reducam eos, unumquemq; ad hæreditatem suam, & unumquemque in terrã suam. Et erit si discendo didicerint de viis cœtus populi mei, ut jurent in nomine meo: Vivꝰ est Dñs, sicut docuerunt populũ meũ jurare in nomine idolorum, & stabilientur in medio populi mei. Et si non susceperint disciplinam, transmigrare faciam populum istum transmigratione perditionis, dicit Dominus.

CAP. XIII.

HÆc dicit Dñs mihi: Vade, & eme tibi cingulum lineum, & pones illud super lumbos tuos, & in aquam non inferes illud. Et emi cingulum juxta verbum Dñi, & posui super lumbos meos. Et factum est verbum prophetiæ à facie Dñi ad me secundò, dicens: Tolle cingulũ quod emisti, quod est in lumbis tuis, & surge, vade ad Euphratem, & absconde illud ibi in lim[illegible]sima petra conspicua. Et abii & abscondi illud in Euphrate, sicut præcepit Dñs mihi. Et factum est post multos dies, & dixit Dñs ad me: Surge, vade in Euphratẽ, & tolle inde cingulũ quod præcepi tibi ut absconderes illud ibi. Et abii in Euphratẽ, et fodi, et tuli cingulũ de loco in quo absconderam illud : & ecce corruptũ erat cingulũ, ita ut inutile esset omni rei. Et factum est verbũ prophetiæ à facie Dñi ad me, dicẽs: Hæc dicit Dñs: Sic corrumpam fortitudinẽ virorũ Juda, & fortitudinẽ habitatorũ Jerusalẽ, quæ erat

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܪܡܝܘܗ ܘܚܪܒܘܗ. ܐܬܐܒܠܬ ܥܠܝ ܚܪܝܒܬܐ. ܚܪܒܬ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܐܢܫ ܕܣܐܡ ܥܠ
ܠܒܗ. * ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܫܒܝܠܐ ܕܡܕܒܪܐ. ܐܬܘ ܒܙܘܙܐ. ܡܛܠ ܕܚܪܒܗ ܕܡܪܝܐ ܐܟܠܐ. ܡܢ
ܣܘܦܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܣܘܦܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ ܠܟܠ ܒܣܪ. * ܙܪܥܘ ܚܛܐ
ܘܚܨܕܘ ܟܘܒܐ. ܘܠܐܘ. ܘܡܕܡ ܠܐ ܐܘܬܪܘ ܠܗܘܢ. ܘܒܗܬܘ ܡܢ ܥܠܠܬܗܘܢ. ܡܛܠ
ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܫܒܒܝ ܒܝܫܐ. ܕܩܪܒܘ
ܠܝܪܬܘܬܐ ܕܐܘܪܬܬ ܠܥܡܝ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܩܪ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܐܬܪܗܘܢ. ܘܠܒܝܬܗ ܕܝܗܘܕܐ
ܐܥܩܘܪ ܡܢ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܕܐܥܩܘܪ ܐܢܘܢ. ܐܬܘܒ ܘܐܪܚܡ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܐܗܦܟ
ܐܢܘܢ ܓܒܪ ܠܝܪܬܘܬܗ ܘܓܒܪ ܠܐܪܥܗ. * ܘܢܗܘܐ ܐܢ ܝܠܦܘ ܢܐܠܦܘܢ ܐܘܪܚܬܗ ܕܥܡܝ: ܕܢܐܡܘܢ ܒܫܡܝ
ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ: ܐܝܟ ܕܐܠܦܘ ܠܥܡܝ ܕܢܐܡܘܢ ܒܒܥܠ. ܢܬܒܢܘܢ ܒܓܘ ܥܡܝ. * ܘܐܢ ܠܐ
ܢܫܡܥܘܢ. ܐܥܩܘܪ ܠܥܡܐ ܗܘ ܡܢ ܥܩܪܗ. ܘܐܘܒܕܝܘܗܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* ܫܠܡ * ܝܒ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܙܠ ܩܢܝ ܠܟ ܐܣܪܐ ܕܟܬܢܐ. ܘܐܣܘܪܝܗܝ ܒܚܨܝܟ. ܘܒܡܝܐ ܠܐ
ܬܥܠܝܘܗܝ. * ܘܩܢܝܬ ܐܣܪܐ ܐܝܟ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܣܪܬ ܒܚܨܝ. * ܘܗܘܬ ܥܠܝ
ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ. ܘܐܡܪ ܠܝ. * ܣܒ ܐܣܪܐ ܕܙܒܢܬ ܕܒܚܨܝܟ.
ܘܩܘܡ ܙܠ ܠܦܪܬ. ܘܛܫܝܘܗܝ ܬܡܢ ܒܢܩܥܐ ܕܟܐܦܐ. * ܘܐܙܠܬ ܘܛܫܝܬܗ ܒܦܪܬ.
ܐܝܟ ܕܦܩܕܢܝ ܡܪܝܐ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܝܘܡܬܐ ܣܓܝܐܐ. ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܩܘܡ ܙܠ ܠܦܪܬ.
ܘܣܒ ܡܢ ܬܡܢ ܐܣܪܐ ܕܦܩܕܬܟ ܕܬܛܫܝܘܗܝ ܬܡܢ. * ܘܐܙܠܬ ܠܦܪܬ. ܘܚܦܪܬ
ܘܢܣܒܬܗ ܠܐܣܪܐ ܡܢ ܐܬܪܐ ܕܛܫܝܬܗ. ܘܗܘܐ ܕܐܬܚܒܠ ܐܣܪܐ ܘܠܡܕܡ ܠܐ ܫܦܪ. * ܘܗܘܬ
ܥܠܝ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܘܐܡܪ ܠܝ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܗܟܢܐ
ܐܚܒܠ ܫܘܒܗܪܗ ܕܝܗܘܕܐ ܘܫܘܒܗܪܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܣܓܝܐܐ.

Deſolaverunt eam, vaſtaverunt illam, luxit 11
de me vaſtata, deſolata eſt univerſa terra;
quia nemo eſt qui animum adjiciat. In 12
omnes deſerti ſemitas venerunt prædones,
quia gladius Domini conſumpturus eſt ab
extremitatibus terræ uſque ad extremitates 13
terræ, nec erit pax ulli carni. Seretis triticum,
& metetis ſpinas; fatigabimini, & nihil proficietis,
ſed erubeſcetis ob *paucitatem* proventuũ
veſtrorum, propter æſtum furoris Do- 14
mini. Sic dicit Dñs de omnibus vicinis meis
paſtoribus qui contrectant hæreditatẽ quam
hæreditario jure poſſidendam tradidi populo
meo Iſraeli; Ecce convellam eos è loco ſuo, & 15
filios familiàs Judæ convellam de medio eorum.
Et poſtquam convulſero eos, convertar,
& miſerebor ipſorum, & reducam eos quenque
in hæreditatem ſuam, & quenq; in patriã
ſuam. Præterea ſi vias meas docuerint popu- 16
lum meũ, ut jurent per nomẽ meũ, *dicántque*;
Per Deum vivum; quemadmodum docuerunt
cos jurare per Baalem; ſedebunt in medio 17
populi mei. Quòd ſi non auſcultaverint, populum
hunc radicitùs evellam & planè perdam,
dicit Dominus.

CAP. XIII.

ITa dixit mihi Dominus, Vade, eme tibi ſu- 1
dariũ lineum, cóque præcinge lumbos tuos;
verùm in aquas ne mergito illud. Empto 2
igitur ſudario ſecundùm ſermonem Domini,
præcinxi lumbos meos. Tum factus eſt ad me 3
ſermo Domini ſecundâ vice, dixítque mihi;
Sume ſudarium quod emiſti, quod eſt impo- 4
ſitum lumbis tuis: ſurgens perge ad Euphratem,
ibíque abſconde illud in fiſſura petræ.
Tum abiens abſcondi illud ad Euphratem, 5
quemadmodum præceperat mihi Dominus,
Multis autem exactis diebus, dixit mihi Do- 6
minus, Surge, vade ad Euphratem, & reſume
inde ſudarium quod illic abſcondere te juſſeram.
Quapropter pergens ad Euphratem, ef- 7
fodi, reſumpſiq; ſudariũ è *loco* ubi abſconderam
illud: ſed ecce corruptum erat ſudarium
ita ut nulli rei inſerviret. Tum fact⁹ eſt ad me 8
ſermo Dñi, dixítque; Sic dicit Dominus po- 9
tens, Deus Iſraelis; Hoc modo corrumpã faſtuoſos
Judæ & faſtuoſos Jeroſolymæ multos.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* صار لفناء الهلاك * لاجلي تفنا كل الارض فناء * لانه ليس رجل وضع في قلبه * 11
* علي كل مخرج في البرية اتوا الاشقياء * لان سيف الرب اكل من اطراف الارض الي اطراف 12
الارض * وليس تكون سلامة لكل ذي لحم * زرعتم حنطة وحصدتم شوكا * مواريثهم لا 13
تنفعهم * اخزوا خزيا من افتخاركم * من التعيير امام الرب * لان هكذا يقول الرب من
اجل جميع الجيوان الاشرار اللامسين ميراثي الذي اقسمته لشعبي اسرايل * ها انا انزعهم 14
من ارضهم * وبيت يهودا اخرجه من وسطهم * ويكون من بعد ما اخرجهم ارجع 15
وارحمهم واسكنهم كل واحد في ميراثه وكل واحد في ارضه * ويكون اذا تعلموا يتعلمون 16
طرقي ليحلفوا باسمي حي الرب * كما علموا شعبي ان يحلف بباعال * ويبنون في وسط شعبي
* وان لم يرجعوا انزع تلك الامة بفناء وهلاك * 17

الفصل الثالث عشر *

* هكذا يقول الرب * اعمد واقتن لك منطقة كتان * وشدها علي حقوك * ولا يجوز في ماء * 1
* فاقتنيت منطقة ككلمة الرب * وشددتها علي حقوي * وكانت كلمة الرب الي قايلا * 2 3
* خذ المنطقة التي علي حقوك * وقم واعمد الي الفرات وخبها هناك في ثقب الصخر 4
* فمضيت واخفيتها في الفرات كما امرني الرب * وكان بعد ايام كثيرة قال لي الرب * قم واعمد 5 6
الي الفرات وخذ من هناك المنطقة التي امرتك ان تخبيها هناك * فمضيت الي نهر الفرات 7
فحفرت واخذت المنطقة من الموضع الذي حفرته * واذا هي فاسدة لا تصلح لشي
* وكانت كلمة الرب الي قايلا * هكذا يقول الرب * هكذا افسد كبرياء يهودا وكبرياء 8 9
اورشليم * هذه الكبرياء الكثيرة *

Facta eſt in ruinam exitialem, pro- 11
pter me funditus everteur tota ter-
ra, quia nemo repoſuit in animo ſuo.
Ad omne iter quod eſt in deſerto, ve- 12
nerunt miſeri, quia gladius Domini de-
vorabit ab extrema terra uſque ad ex-
tremam terram, nec erit pax ulli mor-
tali. Frumentum ſeretis, & ſpinas 13
metetis; prædia eorum non proderunt
eis. Pudore ſuffundimini propter ſuper-
biam veſtram, propter probrum coram Do-
mino commiſſum: *Sic enim ait Domi-* 14
nus de cunctis belluis pernicioſis attingen-
tibus hæreditatem meam quam diſpertitus
ſum inter populum meum Iſraelem:
Ecce ego evellam eos de terra eorum, &
domum Judæ ejiciam de medio eorum.
Eritque poſtquam ejecero eos, ut rur- 15
ſus miſerear illorum, & habitare faciam
illos quenque in hæreditate ſua, &
quenque in terra ſua. Erit etiam cùm 16
diſcendo didicerint vias meas ita ut ju-
rent per nomen meum, Vivus eſt Do-
minus, quemadmodum docuerunt popu-
lum meum jurare per Baalem; ut ædifi-
centur in medio populi mei. Quòd ſi 17
minimè convertantur, evellam gentem
illam cum exterminio & perditione.

CAP. XIII.

SIc ait Dominus; Age, compara tibi 1
cingulum lineum, & applica lumbo
tuo; per aquam autem ne tranſeat. Qua- 2
rè comparatum juxta verbum Domini
cingulum applicui lumbo meo. Rurſus 3
fuit ad me verbum Domini dicentis; Ac- 4
cipe cingulum quod eſt ſuper lumbum
tuum & ſurgens abi ad Euphratem, ibi-
que abſconde illud in foramine petræ.
Abiens itaque abſcondi illud ad Euphra- 5
tem, quemadmodum præceperat mihi Do-
minus. Fuit autem poſt multos dies ut 6
diceret mihi Dominus; Surge, & abi ad
Euphratem, & recipe inde cingulum
quod præceperam tibi ut abſconderes illic.
Quarè abiens ad fluviũ Euphratem, effo- 7
di, recepique cingulum illud è loco quo in
effoderam; & ecce corruptum ita fue-
rat, ut nulli prodeſſet uſui. Tum fuit 8
ad me verbum Domini dicentis; Sic 9
ait Dominus, Hoc modo corrumpam inſo-
lentiam Judæ & inſolentiam Jeroſolymæ,
inſolentiam hanc immanem:

ירמיה : יג

ambulantes mea verba audire renuentes ,pessimum istum Populum
10 העם הזה הרע המאנים לשמוע את־דברי ההלכים
,eis serviendũ ad ,alienos Deos post abierũntque,sui cordis pertinacia in
בשררות לבם וילכו אחרי אלהים אחרים לעבדם
prosperabitur non quod ,hoc cingulũ sicut erit & : eis se incurvandũ ad &
ולהשתחות להם ויהי כאזור הזה אשר לא־יצלח
feci adhærere sic ,viri lumbos ad cingulũ adhærebit sicut Nam .unquam
11 לכל : כי כאשר ידבק האזור אל־מתני איש כן הדבקתי
dixit ,Jehudah domum omnem & ,Israel domum omnem me ad
אלי את־כל־בית ישראל ואת־כל־בית יהודה נאם־
:gloriam in &,laudẽ in &,nomen in &,populũ in mihi existendũ ad:Domin⁹
יהוה להיות לי לעם ולשם ולתהלה ולתפארת
dixit Sic : istud verbum eos ad dices Et .audierunt non &
12 ולא שמעו : ואמרת אליהם את־הדבר הזה כה־אמר
: te ad dicent Et .vino implebitur uter Omnis : Israel Deus Dominus
יהוה אלהי ישראל כל־נבל ימלא יין ואמרו אליך
dices Et ? vino implebitur uter omnis quòd nesciemus sciendo Nunquid
13 הידע לא נדע כי כל־נבל ימלא יין : ואמרת
habitatores omnes implens ego Ecce : Dominus dixit Sic : eos ad
אליהם כה־אמר יהוה הנני ממלא את־כל־ישבי
,ejus solio super Davidi sedentes reges & ,hujus terræ
הארץ הזאת ואת־המלכים הישבים לדוד על־כסאו
, Jerusalaim habitatores omnes & ,prophetas & ,sacerdotes &
ואת־הכהנים ואת־הנביאים ואת כל־ישבי ירושלם
,pariter filios & patres & ,suũ fratrem ad virum eos collidã Et .ebrietate
14 שכרון : ונפצתים איש אל־אחיו והאבות והבנים יחדו
, miserebor nec ,ignoscam neque parcam non : Dominus ait
נאם־יהוה לא־אחמול ולא־אחוס ולא ארחם
.est locut⁹ Dñs quia : vos elevetis ne auscultate &,Audite .eos corrũpendo à
15 מהשחיתם : שמעו והאזינו אל־תגבהו כי יהוה דבר :
antequã &,faciat cõtenebrescere antequã ,gloriã vestro Deo Domino Date
16 תנו ליהוה אלהיכם כבוד בטרם יחשיך ובטרם
,lucem ad expectabitis & : crepusculi montes super vestri pedes offendant
יתנגפו רגליכם על־הרי נשף וקויתם לאור
,hoc audieritis non si Et .caliginem in ponet ,mortis umbrã in eã ponet &
17 ושמה לצלמות ישית לערפל : ואם לא תשמעוה
Jachrymando & : superbiæ faciebus à mea anima plorabit occultis in
במסתרים תבכה־נפשי מפני גוה ודמע
est ductus captivus quia :lachrymam meus oculus descendet &,lachrymabitur
תדמע ותרד עיני דמעה כי נשבה
quoniã : sedete ,vos Humiliate : heræ & regi Dic .Domini grex
18 עדר יהוה : אמר למלך ולגבירה השפילו שבו כי
Meridiei Civitates .vestræ gloriæ diadema vestræ principalitates descendit
19 ירד מראשותיכם עטרת תפארתכם : ערי הנגב
est translata ,ipsa tota Jehudah est translata : aperiens non & ,sunt clausæ
סגרו ואין פתח הגלת יהודה כלה הגלת
ubi : Aquilone ab venientes videte & ,vestros oculos Levate .perfectionibus
20 שלומים : שאו עיניכם וראו הבאים מצפון איה
visitaverit cùm dices Quid .tuæ gloriæ pecus tibi est datus grex
21 העדר נתן־לך צאן תפארתך : מה־תאמרי כי־יפקד
Nonne .caput in duces te super eos docuisti tu & ? te super
עליך ואת למדת אתם עליך אלפים לראש הלוא
dixeris cùm Et ? parturientem mulierem ut te apprehendent dolores
22 חבלים יאחזוך כמו אשת לדה : וכי תאמרי
multitudinem propter ? hæc mihi evenerunt Quare : tuo corde in
בלבבך מדוע קראני אלה ברב
.tuæ plantæ sunt afflictæ vi ,tuæ fimbriæ sunt discoopertæ ,tuæ iniquitatis
עונך נגלו שוליך נחמסו עקביך :

Versio VULG. LAT.

10 Populum istum pessimum, qui nolunt audire verba mea, & ambulant in pravitate cordis sui: abierúntque post deos alienos ut servirent eis, & adorarent eos: & erunt sicut lumbare istud, quod 11 nulli usui aptum est. Sicut enim adhæret lumbare ad lumbos viri, sic agglutinavi mihi omnem domum Israel, & omnem domum Juda, dicit Dominus: ut essent mihi in populum, & in nomen, & in laudem, & in glori- 12 am: & non audierunt. Dices ergò ad eos sermonem istum; Hæc dicit Dominus Deus Israel; Omnis laguncula implebitur vino. Et dicent ad te; Numquid ignoramus quia omnis laguncula 13 implebitur vino? Et dices ad eos; Hæc dicit Dominus; Ecce ego implebo omnes habitatores terræ hujus, & reges qui sedent de stirpe David super thronum ejus, & sacerdotes, & prophetas, & omnes habitatores Jerusalem, 14 ebrietate: Et dispergam eos virum à fratre suo, & patres & filios pariter, ait Dominus: non parcam, & non concedam: neque miserebor ut non disperdam 15 eos. Audite, & auribus percipite. Nolite elevari, quia Domi- 16 nus locutus est. Date Domino Deo vestro gloriam antequàm contenebrescat, & antequàm offendant pedes vestri ad montes caliginosos: expectabitis lucem, & ponet eam in umbram 17 mortis, & in caliginem. Quòd si hoc non audieritis, in abscondito plorabit anima mea à facie superbiæ: plorans plorabit, & deducet ocul⁹ meus lachrymam, 18 quia captus est grex Domini. Dic regi, & dominatrici; Humiliamini, sedete: quoniam descendit de capite vestro corona gloriæ 19 vestræ. Civitates Austri clausæ sunt, & non est qui aperiat: translata est omnis Juda transmigrati- 20 one perfectâ. Levate oculos vestros, & videte qui venitis ab Aquilone: ubi est grex, qui datus est tibi, pecus inclytum tuum? 21 Quid dices cùm visitaverit te? tu enim docuisti eos adversùm te, & erudisti in caput tuum: numquid non dolores apprehendent te, quasi mulierem partu- 22 rientem? Quòd si dixeris in corde tuo; Quarè venerunt mihi hæc? Propter multitudinem iniquitatis tuæ revelata sunt verecundiora tua, pollutæ sunt plantæ tuæ.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

10 Τοὺς μὴ βουλομένους ὑπακούειν τῶν λόγων μου, καὶ πορευθέντας ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων τοῦ δουλεύειν αὐτοῖς, καὶ τοῦ προσκυνεῖν αὐτοῖς· καὶ ἔσονται ὥσπερ τὸ περίζωμα τοῦτο, (δ) 11 ὃ οὐ χρησθήσεται εἰς οὐθέν. Ὅτι καθάπερ κολλᾶται τὸ περίζωμα περὶ τὴν ὀσφὺν τοῦ ἀνθρώπου, οὕτως ἐκόλλησα πρὸς ἐμαυτὸν τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ πάντα (ε) οἶκον Ἰούδα, τοῦ γενέσθαι μοι εἰς λαὸν ὀνομαστὸν, καὶ εἰς καύχημα, καὶ εἰς δόξαν· καὶ οὐκ 12 (ζ) εἰσήκουσάν μου. Καὶ ἐρεῖς πρὸς τὸν λαὸν τοῦτον, Πᾶς ἀσκὸς πληρωθήσεται οἴνου. καὶ ἔσται ἐὰν εἴπωσι πρὸς σὲ, Μὴ γνόντες οὐ γνωσόμεθα, ὅτι πᾶς ἀσκὸς 13 πληρωθήσεται οἴνου; Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ πληρῶ τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν ταύτην, καὶ τοὺς βασιλεῖς αὐτῶν τοὺς καθημένους υἱοὺς (η) τοῦ Δαυὶδ ἐπὶ τοῦ θρόνου αὐτῶν, καὶ τοὺς ἱερεῖς καὶ τοὺς προφήτας, καὶ τὸν Ἰούδαν καὶ πάντας τοὺς (θ) κατοικοῦντας ἐν 14 Ἱερουσαλὴμ, μεθύσματι· Καὶ διασκορπιῶ αὐτοὺς ἄνδρα καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ τοὺς πατέρας αὐτῶν, καὶ τοὺς υἱοὺς αὐτῶν ἐν τῷ αὐτῷ. οὐκ ἐπιποθήσω, λέγει κύριος, καὶ οὐ φείσομαι, καὶ οὐκ οἰκτειρήσω 15 ἀπὸ διαφθορᾶς αὐτῶν. Ἀκούσατε, καὶ ἐνωτίσασθε, καὶ μὴ ἐπαίρεσθε, ὅτι κύριος 16 ἐλάλησε. Δότε τῷ κυρίῳ θεῷ (ι) ὑμῶν δόξαν πρὸ τοῦ συσκοτάσαι, καὶ πρὸ τοῦ προσκόψαι πόδας ὑμῶν ἐπ' ὄρη σκοτεινά· καὶ ἀναμενεῖτε εἰς φῶς, καὶ ἐκεῖ σκιὰ θανάτου, καὶ τεθήσονται εἰς σκότος. (κ) 17 Ἐὰν δὲ μὴ ἀκούσητε, κεκρυμμένως κλαύσεται ἡ ψυχὴ ὑμῶν ἀπὸ προσώπου ὕβρεως, καὶ κατάξουσιν οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν δάκρυα, 18 ὅτι συνετρίβη τὸ ποίμνιον κυρίου. Εἴπατε τῷ βασιλεῖ καὶ τοῖς δυναστεύουσι, Ταπεινώθητε (λ) καὶ καθίσατε, ὅτι καθῃρέθη ἀπὸ κεφαλῆς ὑμῶν στέφανος δόξης 19 ὑμῶν. Πόλεις αἱ πρὸς Νότον, συνεκλείσθησαν, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἀνοίγων· (μ) ἀπῳκίσθη Ἰούδας, συνετέλεσαν ἀποικίαν τε- 20 λείαν. Ἀνάλαβε (ν) ὀφθαλμούς σου Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἴδε τοὺς ἐρχομένους ἀπὸ Βοῤῥᾶ. ποῦ ἐστι τὸ ποίμνιον ὃ ἐδόθη σοι, 21 πρόβατα δόξης σου; Τί ἐρεῖς ὅταν ἐπισκέπτωνταί σε, καὶ σὺ ἐδίδαξας αὐτοὺς ἐπὶ σὲ (ξ) μαθήματα εἰς ἀρχήν. (ο) οὐκ ὠδῖνες καθέξουσί σε (π) καθὼς γυναῖκα 22 τίκτουσαν; Καὶ ἐὰν εἴπῃς ἐν τῇ καρδίᾳ σου, (ρ) Διατί ἀπήντησέ μοι ταῦτα; διὰ τὸ πλῆθος τῆς (σ) ἀδικίας σου ἀνεκαλύφθη τὰ ὀπίσθιά σου, παραδειγματισθῆναι τὰς πτέρνας σου.

MS. A. (δ) ὃ οὐ μὴ (ε) τὸν οἶκον (ζ) ἤκουσάν (η) Δαυὶδ ἐπὶ θρόνους αὐτῶν, (θ) καθημένους (ι) ἡμῶν (κ) Ἐὰν μὴ (λ) ὅτι καθῃρέθη ἀπὸ τῆς κεφαλῆς ὑμῶν στέφανος δόξης. Πόλεις (μ) ἀπῳκίσθη Ἰούδας, συνετέλεσαν (ν) τοὺς ὀφθαλμούς σου Ἰσραὴλ, (ξ) μαθητὰς (ο) οὐχ (π) οὐχ ὡς (ρ) ἀπήντησέν (σ) κακίας

Eos qui nolunt obedire verbis meis, & ambulaverunt post deos alienos; ut serviant eis, & adorent eos: & erunt, sicut cinctorium istud, quod nulli erit usui. Sicut enim adhæret cinctorium circa lumbum hominis; sic agglutinavi ad me domum Israel, & omnem domum Juda; ut esset mihi in populum nominatum, & in gloriationem, & in gloriam. Et non exaudierunt me. Et dices ad populum (c) istum; Omnis (d) uter implebitur vino. Et erit, si dixerint ad te; Nonne cognoscentes cognoscemus, quia omnis uter implebitur vino? Et dices ad eos; Hæc dicit Dominus; Ecce ego impleo habitatores terræ hujus, & reges eorum sedentes filios David super thronum (e) ipsorum, & sacerdotes, & prophetas, & Judam, & omnes habitatores Hierusalem, ebrietate: Et dispergam eos, virum, & fratrem ejus, & patres eorum, & filios eorum pariter. Non desiderabo, ait Dominus, & non parcam, & non miserebor à perditione eorum. Audite, & auribus percipite, & nolite elevari; quia Dominus loquutus est. Date Domino Deo vestro gloriam; antequàm contenebrescat, & antequàm offendant pedes vestri ad montes tenebrosos. Et expectabitis ad lucem: & ibi umbra mortis: & (f) ponentur in tenebris. Quòd si non audieritis, in abscondito plorabit anima vestra à facie superbiæ: & deducent oculi vestri lachrymas, quia contritus est grex Domini. Dicite regi, et potentibus; Humiliamini, et sedete: quia sublata est de capite vestro corona gloriæ vestræ. Civitates, quæ ad Austrum, conclusæ sunt: et non est, qui aperiat. Translatus est Judas: consummaverunt transmigrationem perfectam. Leva oculos tuos Hierusalem, et vide venientes ab Aquilone. ubi est grex, qui datus est tibi, oves gloriæ tuæ? Quid dices, cùm visitaverint te? Et tu docuisti eos adversùm te doctrinas in principatum: Nunquid non dolores apprehendent te, quasi mulierem parturientem? Quòd si dixeris in corde tuo, Quare occurrerunt mihi hæc? propter multitudinem iniquitatis tuæ revelata sunt posteriora tua, (g) ut dehonestentur calcanei tui.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 עמא הדין דעובדיהון בישין דסריבו לקבלא ית פתגמי דאזלין בתר הרהור לבהון
וטעו בתר טעות עממיא למפלחהון ולמסגד להון ויהון כזרזא הדין דלית בהון צרוך
11 לכל מדעם : ארי כמא דמדבק זרזא בחרצא דגברא כן קרבית לפולחני ית כל בית
ישראל וית כל בית יהודה אמר יי למהוי קדמי לעם ולשום ולתושבחא ולרבו ולא
12 קבילו : ותימר להון ית פתגמא הדין כדנן אמר יי אלהא דישראל כל גרב יתמלי חמר
13 ויימרון לך המדע לא הוינא ידעין ארי כל גרב יתמלי חמר : ותימר להון כדנן אמר יי
הא אנא ממלי ית כל יתבי ארעא הדא וית מלכא דיתבין לדוד על כורסוהי וית כהניא
14 וית נבייא דשקרא וית כל יתבי ירושלם עקא ויהון דמן לרויא : ואגרנון גבר באחוהי
15 ואבהן ובנין כחדא אמר יי לא אחמול ולא אחוס ולא ארחם מלחבלותהון : קבילו ואציתו
16 לא תתרברבון ארי במימרא דיי גזיר כן : הבו יקר קדם יי אלהכון יקרא עד לא תיתי עליכון
עקא ותהון דמין לדמהלכין כרבקבלא ועד לא יתנגפון רגליכון על טורי קבל ותסברון
17 לנהור ויהי עליכון חשוך לזהור והא כדבקבלא תהון מהלכין אתון : ואם לא תקבלון
אולפן כד בסתרא תבכי נפשי מן קדם דיעדי מנכון יקרכון ומדמע תדמע ותשגר עיני
18 דמעין ארי אשתבי עמא דיי : אמר למלכא ולמלכתא אמאיכו תבו ארי גלא יקרכון
19 מנכון נפל כליל תושבחתכון : קרוי דרומא אתאחידו ולית דפתח גלו דבית יהודה
20 כולהון גלו שלמא אתקבלו תושלימת עובדיכון : זקופו עיניכון וחזו דאתן מצפונא אן
21 עמא דאתמסר ליך עם תושבחתיך : מה תימרין ארי יסער עלך חובך ואת אליפת יתהון
למעבד בישין עלך הוו רברבין כדמן אולא הלא עקא וחבלין יחדונך הא כחבלין
22 לילדתא : ואדי תימרין בלבך מא דין ערעוני כל אלין על סגיאו חובך אתגליאו
בהתתיך אתחזי קלניך :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Popul⁹ hic cuj⁹ opera sunt mala, qui noluit suscipere verba mea, qui ambulant post cogitationẽ cordis sui, & erraverunt post idola populorũ ut colerent ea, & adorarent ea, erit sicut cingulũ istud ꝙ nulli usui est utile. Quia sicut adhæret cingulũ lumbis viri, sic applicavi ad cultũ meũ omnẽ domũ Israel, & omnẽ domũ Juda, dicit Dñs, ut essẽt corã me in populũ, & in nomen, & in laudẽ, & in magnitudinẽ; & non obedierũt. Et dices ad eos verbũ istud: Hæc dicit Dñs De⁹ Israel; Omnis uter implebitur vino. Et dicent tibi: Nunquid plane ignoram⁹ quod omnis uter implebitur vino? Et dices ad eos: Hæc dicit Dñs; Ecce ego implebo omnes habitatores terræ hujus & reges, qui sedent super soliũ David, & sacerdotes, & pseudoprophetas, & omnes habitatores Jerusalẽ tribulatione; & erunt similes ebrio. Et irruere faciam eos unumquemq; in fratrẽ suũ, patres & filios pariter, ait Dñs: non parcã, nec miserebor, nec clemens ero ut nõ disperdã eos. Audite & auscultate, & nolite elevari: quia in verbo Dñi decretũ est ita. Date corã Domino Deo vestro gloriã, antequã veniat sup vos tribulatio, & similes sitis his qui ambulãt in caligine, & antequã offendant pedes vestri ad montes caliginis & expectetis lucẽ, & sint sup vos tenebræ; & splendorẽ, & ecce sitis quasi in tenebris ambulantes. Si autẽ non susceperitis disciplinam, quasi in occulto plorabit anima mea, pro eo ꝙ ablata est à vobis gloria vestra, & lachrymando lachrymabitur, & deducet ocul⁹ me⁹ lachrymas; quia captiv⁹ duct⁹ est populus Dñi. Dic regi & reginæ: Humiliamini, sedete; quia migravit gloria vestra à vobis; cecidit corona laudis vestræ. Civitates Austri clausæ sunt, & non est qui aperiat: migraverunt omnes de domo Juda migratione perfecta; recepta est retributio operũ vestrarũ. Levate oculos vestros, & videte eos qui veniunt ab Aquilone; ubi est popul⁹ qui traditus est tibi, populus laudis tuæ? Quid dices cũ visitaverit sup te peccatum tuũ? Tu enim docuisti eos ut facerent mala: adversum te magnificantur sicut ab initio. Nonne tribulatio & dolores apprehendent te sicut dolores parturientẽ? Et si dixeris in corde tuo: Quare acciderunt mihi omnia hæc? propterea quod multiplicata sunt peccata tua, revelata est confusio tua, conspicua est ignominia tua.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܥܡܐ ܗܢܐ ܒܝܫܐ ܕܠܐ ܨܒܐ ܠܡܫܡܥ ܦܬܓܡܝ. ܘܗܠܟܝܢ ܒܨܒܝܢܐ ܕܠܒܗܘܢ. ܘܐܙܠܘ
ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܠܡܦܠܚ ܐܢܘܢ ܘܠܡܣܓܕ ܠܗܘܢ. ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܣܘܕܪܐ ܗܢܐ
ܕܠܡܕܡ ܠܐ ܦܐܫ. * ܡܛܠ ܕܐܝܟܢܐ ܕܢܩܦ ܣܘܕܪܐ ܠܚܨܘܗܝ ܕܓܒܪܐ. ܗܟܢܐ ܐܩܦܬ ܠܝ
ܠܟܠܗ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܘܠܟܠܗ ܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ: ܕܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܠܫܡܐ
ܘܠܐܝܩܪܐ. ܘܠܬܫܒܘܚܬܐ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܟܠ ܕܢ ܢܬܡܠܐ ܚܡܪܐ. ܗܐ ܐܡܪܝܢ ܠܟ. ܡܛܠ ܕܠܐ
ܝܕܥܝܢܢ. ܕܟܠܗܘܢ ܕܢܐ ܡܬܡܠܝܢ ܚܡܪܐ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܡܠܐ
ܐܢܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܘܗ̇ ܕܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܘܠܡܠܟܐ ܕܝܬܒܝܢ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܕܕܘܝܕ. ܘܠܟܗܢܐ
ܘܠܢܒܝܐ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܘܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ ܪܘܝܘܬܐ. * ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ. ܓܒܪ ܡܢ ܐܚܘܗܝ
ܐܚܘܗܝ: ܘܐܒܗܬܐ ܘܒܢܝܐ ܐܟܚܕܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܐܪܚܡ. ܘܠܐ ܐܬܪܐܦ ܘܠܐ ܐܚܘܣ ܠܡܚܒܠܘ
ܐܢܘܢ. * ܫܡܥܘ ܘܨܘܬܘ. ܘܠܐ ܬܬܪܝܡܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ. * ܗܒܘ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ
ܐܝܩܪܐ. ܥܕܠܐ ܢܚܫܟ. ܘܥܕܠܐ ܢܬܬܩܠܢ ܪܓܠܝܟܘܢ ܥܠ ܛܘܪܐ ܚܫܘܟܐ: ܘܬܣܟܘܢ ܠܢܘܗܪܐ
ܘܢܣܝܡܝܘܗܝ ܒܚܫܘܟܐ ܘܒܛܠܠܝ ܡܘܬܐ. * ܘܐܢ ܠܐ ܬܫܡܥܘܢܝܗܝ. ܒܛܘܫܝܐ ܬܒܟܐ ܢܦܫܝ
ܡܢ ܩܕܡ ܫܘܚܪܐ. ܘܡܪܝܪܐܝܬ ܐܒܟܐ. ܘܢܚܘܬܢ ܥܝܢܝ ܕܡܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܫܬܒܝ ܥܢܗ ܕܡܪܝܐ.
* ܐܡܪ ܠܡܠܟܐ ܘܠܪܘܪܒܢܐ ܐܬܡܟܟܘ. ܘܬܘܒܘ. ܡܛܠ ܕܢܦܠ ܡܢ ܪܫܝܟܘܢ ܟܠܝܠܐ
ܕܬܫܒܘܚܬܟܘܢ. * ܩܘܪܝܐ ܕܓܪܒܝܐ ܐܬܚܕܝ. ܘܠܝܬ ܕܦܬܚ. ܐܫܬܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܟܠܗ
ܫܒܝܬܐ ܫܠܡܬܐ. * ܐܪܝܡܘ ܥܝܢܝܟܘܢ ܘܚܙܘ ܠܐܝܠܝܢ ܕܐܬܝܢ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܐܝܢܐ ܥܢܐ ܕܐܬܝܗܒ
ܠܟܝ. ܥܢܐ ܕܫܘܒܚܟܝ. * ܡܢܐ ܐܡܪܐ ܐܢܬܝ ܡܐ ܕܡܦܩܕ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܢܬܝ ܐܠܦܬܝ
ܐܢܘܢ ܡܪܕܘܬܐ ܕܢܗܘܘܢ ܠܕܝܫܐ. ܗܐ ܚܒܠܐ ܢܐܚܕܘܢܟܝ. ܐܝܟ ܐܢܬܬܐ ܕܝܠܕܐ
ܒܡܚܒܠܗ. * ܘܐܢ ܬܐܡܪܝܢ ܒܠܒܟܝ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܥܪܥܢܝ ܗܠܝܢ. ܡܛܠ ܣܘܓܐ
ܕܥܘܠܟܝ ܐܬܓܠܝܘ ܫܘܦܠܝܟܝ. ܘܐܬܚܙܝܘ ܥܩܒܝܟܝ.

Populus hic malignus qui noluerunt auſcultare 10
ſermonibus meis, qui ambulant ex arbitrio
cordis ſui, & ſectati ſunt deos alienos ad
colendum & adorandum eos; erunt ſimiles
huic ſudario quod nulli rei aptum eſt. Nam 11
quemadmodum adhæreſcit ſudarium lumbis
viri, ita agglutinaveram mihi totam domum
Iſraelis & totam domum Judæ, dicit Dominus,
ut eſſent mihi populus, & ad nomen, &
ad honorem, & ad laudem: at non acquieverunt.
Quapropter dic eis ſermonem iſtum, 12
Sic ait Dominus potentiſſimus, Deus Iſraelis;
Omne dolium implendum eſt vino. Ecce dicturi
ſunt tibi, An verò neſcimus omnia dolia
vina impleri? Reſponde illis, Sic ait Dominus, 13
Ecce repleturus ſum cunctos habitatores
hujus terræ, & reges inſidentes ſolio Davidis,
& ſacerdotes, atque prophetas, omneſque cives
Jeroſolymorum, ebrietate; Et diſperſurus 14
eos quemque à fratre ſuo, cùm patres, tum
filios pariter, ait Dominus: non miſerebor,
neque indulgebo, neque parcam corrumpere
eos. Audite, & auſcultate, & ne elevemini: 15
nam Dominus loquitur. Exhibete Domino 16
Deo veſtro honorem, priuſquam tenebreſcat,
& priuſquam frangantur pedes veſtri ſuper
montes in tenebris; expectetis lucem, &
vertat eam in tenebras & umbras lethales.
Quòd ſi non auſcultaveritis ei, latenter flebit 17
anima mea propter afflictionem, acerbè lachrymabor,
& emittent oculi mei lachrymas,
quia captivus abducendus eſt grex Domini.
Dic regibus & magnatibus, Humiliamini, & 18
pœniteat vos; quia decidit è capite veſtro
diadema gloriæ veſtræ: Civitates Aquilonares 19
clauſæ ſunt, nec eſt qui aperiat: captiva
facta eſt univerſa Judæa captivitate omnimodâ.
Attollite oculos veſtros, & videte eos 20
qui veniunt ab Aquilone. Qualis eſt grex
ille qui traditus fuerat tibi? oves gloriæ tuæ?
Quid dictura es quando viſitabit te, cùm tu 21
erudieris eos documento ut ſint conculcationi?
ecce dolores corripient te, ceu mulierem
partu laborantem. Quòd ſi dicas apud te- 22
metipſam, Quare contingerent mihi talia?
Propter multitudinem delictorum tuorum
retectæ ſunt fimbriæ tuæ, & conſpecti ſunt
tali tui.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لانهم لم يريدوا ان يسمعوا كلماتي * ومضوا خلف الالهة الغرباء ليتعبدوا لها ويسجدوا لها
ويصيرون مثل هذه المنطقة التي لا تصلح لشي * لانّ كما تقرب المنطقة الى حقو الانسان
هكذا التصق بي بيت اسرايل وجميع بيت يهودا ليكونوا لي شعبا مسمى وللفخر وللشرف
فلم يسمعوا لي * وتقول لهذا الشعب كل زق يمتلي خمرا * ويكون اذ يقولون لك غير عارفين
لك لا نعرف ان كل زق يمتلي خمرا * فتقول لهم هكذا يقول الرب * ها انا املا سكان
هذه الارض وملوكهم بني داود الجالسين على كراسيهم * والكهنة والانبياء ويهودا وجميع
الحلول في ايروشليم بالسكر * وافرقهم رجلا واخاه واباوهم وابناءهم بهذا بعينه * لا اعطف
يقول الرب ولا اشفق ولا اتراءف من فسادهم * اسمعوا وانصتوا ولا ترتفعوا لان الرب تكلم
* اعطوا للرب الهنا مجدا من قبل ان تظلموا وقبل ان تعثر ارجلكم على جبال مظلمة
وتتوقعون نورا وهناك ظلال الموت * ويغشاكم الظلام ان لم تسمعوا * تبكي نفسكم سرا
من وجه الكبرياء * وتهمل عيونكم دموعا لان قطيع الرب انكسر * قولوا للملك وللاولياء
تواضعوا لان اكليل المجد نزع من على راسكم * المدن التي عند التيمن غلقت ولم
يكن من يفتح * طرد يهودا اكمل جلوة كاملة *

الاصحاح التاسع

* ارفع عينيك يا اسرايل وانظر الاتيين اليك من الجربياء * اين هو القطيع الذي
اعطي لك خراف مجدك * ماذا تقول اذا تعهدوك * وانت علمتهم بديا عليك تلاميذ ليس
هي طلقات باحدويك * ليس مثل امراة تلد * وان قلت في قلبك لماذا اصابني هذا
لاجل كثرة شرك كشف ما خلفك لتشهر عقباك *

Quia noluerunt auſcultare verbis meis, 10
ſed abierunt poſt deos alienos, ut iis ſervirent,
& eos adorarent: Fient inquam
ſimiles huic cingulo quod eſt prorſus inutile.
Quemadmodum enim cingulum 11
tangit lumbum humanum, ſic adhæſerat
mihi domus Iſraelis, totaque domus Judæ,
ut eſſent mihi populus celebris, & ad
gloriam, & ad nobilitatem: ſed non auſcultârunt
mihi. Tum dices huic populo, 12
Omnis uterculus impletur vino. Eritque
cùm tibi dixerint, te ignorantes, An neſcimus
omnem utercul um vino impleri?
ut dicas eis, Sic ait Dominus; Ecce ego 13
repleturus ſum incolas hujus terræ, &
reges eorum filios Davidis ſedentes ſuper
thronos ſuos, & ſacerdotes atque prophetas,
Judam, & omnes degentes in Jeruſalem,
ebrietate; Eóſque diſperſurus 14
unum cum altero, & patres eorum, & filios
eorum hoc eodem modo: Nequaquam
miſerebor, inquit Dominus, neque parcam,
neque indulgebo, propter corruptelam
eorum. Audite, & auſcultate, néve 15
exaltemini, quia Dominus locutus eſt.
Reddite Domino Deo noſtro gloriam an- 16
tequam tenebris involvamini, et antequam
impingant pedes veſtri ſuper montes tenebricoſos;
& expectantibus vobis lucem,
ſit illic umbra mortis; obruant vos
tenebræ, niſi obtemperetis. Fleat anima 17
veſtra in occulto, propter inſolentiam, &
profundant oculi veſtri lachrymas; quia
grex Domini prædâ captus eſt. Dicite 18
regi & potentibus, Humiliamini, quia corona
gloriæ detracta eſt è capite veſtro:
Urbes quæ ſunt ad Aquilonem, clauſæ 19
ſunt, nec eſt qui aperiat: expulſus eſt Juda,
explevit tranſmigrationem perfectam.

Textus nonus.

Attolle oculos tuos O Iſrael, & contem- 20
plare eos qui veniunt ad te ex Aquilone.
Ubi eſt grex qui traditus tibi fuerat? agni
gloriæ tuæ? Quid dicturus es quando te 21
viſitabunt, cùm tu in principio inſtruxeris
eos contra te diſcipulos? nequaquam
erunt dolores partûs qui te corripient, nequaquam
ut mulieris parturientis. Quòd 22
ſi dixeris apud animum tuum, Qua de
cauſa contingent hæc mihi? Propter multitudinem
criminis tui retecta ſunt poſteriora
tua, ut pateant calcanei tui

ירמיה : יד

etiam ? ſuas maculas pardus & ſuam pellem Æthiops vertet Nunquid
23 היהפך כושי עורו ונמר חברברתיו גם־
eos diſpergere faciam Et ? malefacere docti benefacere poteritis vos
24 אתם תוכלו להיטיב למדי הרע : ואפיצם
pars tua ſors Hæc .deſerti ventum ad, tranſeuntem ſtipulam tanquã
25 כקש עובר לרוח מדבר : זה גורלך מנת־
fidiſti & , mei es oblita quæ : Dominus dixit ,me à *tuarum menſurarũ*
מדיך מאתי נאם־יהוה אשר שכחת אותי ותבטחי
apparuit & : *tuas facies ſuper* tuas fimbrias *detexi* ego etiam Et .*falſitate* in
26 בשקר : וגם־אני חשפתי שוליך על־פניך ונראה
tuæ fornicationis fœditas , *tui hinnitus* & ,tua Adulteria .tua ignominia
27 קלונך : נאפיך ומצהלותיך זמת זנותך
, Jeruſalaim tibi væ : tuas abominationes vidi , agro in colles ſuper
על־גבעות בשדה ראיתי שקוציך אוי לך ירושלם
.adhuc quando , poſthac te mundabis non
לא תטהרי אחרי מתי עד :

CAP. XIV. יד

.prohibitionum verba ſuper Irmejahu ad Domini verbum fuit Quod
1 אשר היה דבר־יהוה אל־ירמיהו על־דברי הבצרות :
; terra in *nigruere* , ſunt *infirmata* ejus portæ & , Jehudah *Luxit*
2 אבלה יהודה ושעריה אמללו קדרו לארץ
ſuos minores miſerunt eorum *illuſtres* Et .aſcendit Jeruſalaim clamor &
3 וצוחת ירושלם עלתה : ואדריהם שלחו צעוריהם
ſunt reverſi : aquas invenerunt non , foſſas ad venerunt : aquam ad
למים באו על־גבים לא־מצאו מים שבו
operuerunt & ,erubuerunt & , ſunt affecti pudore , *vacuè* ſuis vaſis
כליהם ריקם בשו והכלמו וחפו
pluvia fuit non quia : *contritam humum* Propter .ſuum caput
4 ראשם : בעבור האדמה חתה כי לא־היה גשם
Nam .ſuum caput operuerunt , agricolæ ſunt affecti pudore : terra in
5 בארץ בשו אכרים חפו ראשם : כי
.herba erat non quia ,*relinquere* & , peperit agro in cerva etiam
גם־אילת בשדה ילדה ועזוב כי לא־היה דשא :
:dracones tanquam ventum *ſorbuerunt* : *locis editis ſuper* ſteterunt onagri Et
6 ופראים עמדו על־שפים שאפו רוח כתנים
noſtræ iniquitates Si .herba non quia , eorum oculi defecerunt
7 כלו עיניהם כי־אין עשב : אם־עונינו
quia : tuum nomen propter fac , Domine ,nos contra ſunt teſtificatæ
ענו בנו יהוה עשה למען שמך כי־
Iſrael Expectatio .peccavimus tibi ,noſtræ *averſiones ſunt multiplicatæ*
8 רבו משובתינו לך חטאנו : מקוה ישראל
,terra in peregrinus veluti eris quare:afflictionis tempore in ejus ſervator
מושיעו בעת צרה למה תהיה כגר בארץ
vir veluti es futurus Quare ? pernoctandum ad *declinavit* viator tanquã &
9 וכארח נטה ללון : למה תהיה כאיש
noſtro interiori in tu & ? facere ſalvum *poterit* non fortis tanquam,attonitus
נדהם כגבור לא־יוכל להושיע ואתה בקרבנו
Sic .nos *dimittas* ne,eſt invocatum nos ſuper tuum nomen &,Domine
10 יהוה ושמך עלינו נקרא אל־תנחנו : כה־
ſuos pedes , ſe movere dilexerunt ita : huic populo Dominus dixit
אמר יהוה לעם הזה כן אהבו לנוע רגליהם
recordabitur nunc : eos noluit Dominus & : prohibuerunt non
לא חשכו ויהוה לא רצם עתה יזכר
: me ad Dominus dixit Et .eorum peccata viſitabit & ,eorũ iniquitatis
11 עונם ויפקד חטאתם : ויאמר יהוה אלי
.bonum in iſto populo pro ores Ne
אל־תתפלל בעד־העם הזה לטובה :

Verſio VULG. LAT.

23 Si mutare poteſt Æthiops pellem ſuam, aut pardus varietates ſuas: & vos poteritis benefacere, cùm 24 didiceritis malum. Et diſſeminabo eos quaſi ſtipulam, quæ 25 vento raptatur in deſerto. Hæc fors tua, parſque menſuræ tuæ à me, dicit Dominus; quia oblita es meî, & confiſa es in men-26 dacio. Unde & ego nudavi femora tua contra faciem tuam, & 27 apparuit ignominia tua, Adulteria tua, & hinnitus tuus, ſcelus fornicationis tuæ: ſuper colles in agro vidi abominationes tuas. Væ tibi, Jeruſalem, non mundaberis poſt me: uſquequò adhuc?

CAP. XIV.

1 Quod factum eſt verbum Domini ad Jeremiam de ſermoni-2 bus ſiccitatis. Luxit Judæa, & portæ ejus corruerunt, & obſcuratæ ſunt in terra, & clamor Je-3 ruſalem aſcendit. Majores miſerunt minores ſuos ad aquam: venerunt ad hauriendum, non invenerunt aquam, reportaverunt vaſa ſua vacua: confuſi ſunt & afflicti, & operuerunt ca-4 pita ſua. Propter terræ vaſtitatem, quia non venit pluvia in terram, confuſi ſunt agricolæ, 5 operuerunt capita ſua. Nam & cerva in agro peperit, & reli-6 quit: quia non erat herba. Et onagri ſteterunt in rupibus, traxerunt ventum quaſi dracones, defecerunt oculi eorum, quia 7 non erat herba. Si iniquitates noſtræ reſponderint nobis: Domine, fac propter nomen tuum, quoniam multæ ſunt averſiones 8 noſtræ, tibi peccavimus. Expectatio Iſrael, ſalvator ejus in tempore tribulationis: quarè quaſi colonus futurus es in terra, & quaſi viator declinans ad ma-9 nendum? Quarè futurus es velut vir vagus, ut fortis qui non poteſt ſalvare? tu autem in nobis es, Domine, & nomen tuum invocatum eſt ſuper nos, ne de-10 relinquas nos. Hæc dicit Dominus populo huic, qui dilexit movere pedes ſuos, & non quievit, & Domino non placuit: Nunc recordabitur iniquitatum eorum, 11 & viſitabit peccata eorum. Et dixit Dominus ad me; Noli orare pro populo iſto in bonum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

23 Εἰ ἀλλάξεται Αἰθίοψ τὸ (τ) δέρμα αὐτοῦ, καὶ πάρδαλις τὰ ποικίλματα αὐτῆς, καὶ ὑμεῖς (υ) δυνήσεσθε εὖ ποιῆσαι μεμαθηκότες τὰ κακά. 24 Καὶ (φ) διέσπειρα αὐτοὺς, ὡς φρύγανα φερόμενα ὑπὸ ἀνέμου εἰς (χ) ἔρημον. 25 Οὕτως ὁ κλῆρός σου, καὶ μερὶς τοῦ ἀπειθεῖν ὑμᾶς ἐμοὶ, λέγει κύριος. ὡς ἐπελάθου 26 (ψ) μου, καὶ ἤλπισας ἐπὶ ψεύδεσι, Κἀγὼ ἀποκαλύψω τὰ (ω) ὀπίσω σου ἐπὶ τὸ πρόσ-27 ωπόν σου, καὶ ὀφθήσεται ἡ ἀτιμία σου, Καὶ (α) ἡ μοιχεία σου, καὶ χρεμετισμός σου, καὶ ἡ ἀπαλλοτρίωσις τῆς πορνείας σου. ἐπὶ τῶν βουνῶν, καὶ ἐν τοῖς ἀγροῖς ἑώρακα τὰ βδελύγματά σου. οὐαί σοι Ἱερουσαλὴμ, ὅτι οὐκ ἐκαθαρίσθης ὀπίσω μου ἕως τίνος ἔτι;

MS.A. (τ) δέρμα, καὶ πάρδαλεις (υ)* δυνήσεσθε (φ) διέφθειρα (χ) ἔρημον τόπον. Οὗτος (ψ) νόμου μου, (ω) ὀπίσθιά σου κατὰ πρόσωπόν σου, (α) αἱ μοιχίαι σου, καὶ ὁ χρεμετισμός

Si mutabit Æthiops pellem ſuã, & pardus varietates ſuas; & vos poteritis benefacere, cùm didiceritis mala. E diſſeminavi eos, quaſi ſtipulas, quæ feruntur à vento in deſertum. Sic ſors tua, & pars inobedientiæ veſtræ adverſùm me, dicit Dominus. Sicut oblita es mei, & ſperâſti in mendaciis; Et ego nudabo poſteriora tua ſuper faciem tuam: & videbitur ignominia tua, Et adulterium tuum, & hinnitus tuus, & alienatio fornicationis tuæ. Super colles, & in agris vidi abominationes tuas. Væ tibi, Hieruſalem: quia non es mundata poſt me uſquequò adhuc.

ΚΕΦ. ιδʹ.

1 (α) ΚΑῚ ἘΓΈΝΕΤΟ ΛΌΓΟΣ ΚΥΡΊΟΥ ΠΡῸΣ ἹΕΡΕΜΊΑΝ ΠΕΡῚ ΤΗ͂Σ ἈΒΡΟΧΊΑΣ.

2 Ἐπένθησεν ἡ Ἰουδαία, καὶ αἱ πύλαι αὐτῆς ἐκενώθησαν, καὶ ἐσκοτώθησαν ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἡ κραυγὴ τῆς Ἱερουσαλὴμ ἀνέβη. 3 Καὶ οἱ μεγιστᾶνες αὐτῆς ἀπέστειλαν τοὺς νεωτέρους (β) αὐτῶν ἐφ᾽ ὕδωρ· ἤλθοσαν ἐπὶ τὰ φρέατα, καὶ οὐχ (γ) εὕροσαν ὕδωρ, (δ) καὶ ἀπέστρεψαν τὰ ἀγγεῖα αὐτῶν κενά. 4 Καὶ τὰ ἔργα τῆς γῆς ἐξέλιπεν, ὅτι οὐκ ἦν ὑετός. ᾐσχύνθησαν (ε) οἱ γεωργοὶ, ἐπεκάλυψαν τὰς κεφαλὰς αὐτῶν. 5 Καὶ ἔλαφοι ἐν ἀγρῷ (ζ) ἔτεκον, καὶ ἐγκατέλιπον, ὅτι οὐκ ἦν βοτάνη. 6 Ὄνοι ἄγριοι ἔστησαν ἐπὶ νάπας, καὶ εἵλκυσαν ἄνεμον, ἐξέλιπον οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν, ὅτι οὐκ ἦν 7 χόρτος (η). Αἱ ἁμαρτίαι ἡμῶν ἀντέστησαν ἡμῖν· κύριε ποίησον ἡμῖν ἕνεκεν σοῦ, ὅτι πολλαὶ αἱ ἁμαρτίαι ἡμῶν ἐναντίον σου, ὅτι σοὶ 8 ἡμάρτομεν. Ὑπομονὴ Ἰσραὴλ κύριε, καὶ σώζεις ἐν καιρῷ κακῶν. ἵνα τί ἐγενήθης ὡσεὶ πάροικος ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ὡς αὐτόχθων ἐκ-9 κλίνων εἰς κατάλυμα; Μὴ ἔσῃ ὥσπερ ἄνθρωπος ὑπνῶν, ἢ ὡς ἀνὴρ οὐ δυνάμενος σώζειν; καὶ σὺ ἐν ἡμῖν εἶ κύριε, καὶ τὸ ὄνομά σου ἐπικέκληται ἐφ᾽ ἡμᾶς, μὴ ἐπιλάθῃ ἡ-10 μῶν. Οὕτως λέγει κύριος τῷ λαῷ τούτῳ, Ἠγάπησαν κινεῖν πόδας αὐτῶν, καὶ οὐκ ἐφείσαντο, καὶ ὁ θεὸς οὐκ (θ) εὐώδωσεν ἐν αὐτοῖς, 11 νῦν μνησθήσεται (ι) τῆς ἀδικίας αὐτῶν. Καὶ εἶπε κύριος πρός με, Μὴ προσεύχου περὶ τοῦ λαοῦ τούτου εἰς ἀγαθά,

Et factum eſt verbum Domini ad Hieremiam, de ſiccitate. Luxit Judæa, & portæ ejus vacuæ factæ ſunt, & contenebratæ ſunt ſuper terram: & clamor Hieruſalem aſcendit: Et magnates ejus miſerunt juniores ſuos ad aquam: venerunt ad puteos, & non invenerunt aquam: & reportaverunt vaſa ſua (a) vacua: Et opera terræ defecerunt, quia non erat pluvia. Confuſi ſunt agricolæ: operuerunt capita ſua: Et cervæ in agro pepererunt, & reliquerunt; quia non erat herba. Onagri ſteterunt in rupibus, & traxerunt (b) ventum: defecerunt oculi eorum; quia non erat fœnum. (c) Peccata noſtra reſtiterunt nobis: Domine, fac nobis propter te: quoniam multa ſunt peccata noſtra coram te: quia tibi peccavimus. Expectatio Iſrael, Domine: & ſalvabis in tempore malorum. Quarè factus es, ſicut advena in terra, & quaſi (d) indigena divertens ad diverſorium? Nunquid eris quaſi homo dormiens, vel quaſi vir, qui (e) ſalvare non poſſit? Et tu in nobis es, Domine: & nomen tuum invocatum eſt ſuper nos: ne obliviſcaris noſtri. Sic dicit Dominus populo huic: Dilexerunt movere pedes ſuos, & non pepercerunt: & Deus non proſperavit in eis: nunc recordabitur iniquitatis eorum. Et dixit Dominus ad me; Noli orare pro populo iſto in bona:

MS.A. (α) Ὁ ΛΌΓΟΣ Ὁ ΓΕΝΆΜΕΝΟΣ ΠΡῸΣ ἹΕΡΕΜΊΑΝ ΠΑΡᾺ ΚΥΡΊΟΥ ΠΕΡῚ ΤΗ͂Σ ἈΒΡΟΧΊΑΣ. (β) αὐτῆς (γ) [illegible] (δ) ἀπέστρεψαν (ε) γεωργοὶ, ἐπεκάλυψαν τὴν κεφαλὴν (ζ) [illegible] (η) ἀπὸ λαοῦ ἀδικίας. Αἱ (θ) ηὐδόκησεν (ι) τῶν ἀδικιῶν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

23 האפשר דישני הנדואה משכיה ונמרא שלטי רקמתיה אף אתון תכלון לאוטבא
24 דהויתון מלפין למעבד בישין : ואבדרנון כקשא דעדי מן קדם רוחא למדברא : 25 דין
עדביך וחולק אחסנתיך מן קדמי אמר יי דשבקת פולחני ואתרחצת על שקרא :
26 ואף אנא אגלי בהתת חובך על אפך ויתחזי קלנך : 27 טפשותיך ושטותיך ועצת חטאי
ינקותיך על רמתא בחקלא גלי קדמי שקוציך וי ליך ירושלם לא תדכין עד כען ליך
ארכא יומין סגיאין :

יד

1 דהוה פתגם נבואה מן קדם יי עם ירמיה על עסקי בוצרתא : 2 אתאבלו דבית יהודה
וקרויהון חרובא אתחפיאו אפיהון אכרום אוכמין כקדרא אתרטישו לארעא וצוחת
3 יתבי ירושלם סליקת : ותקיפיהון שלחו תניניהון למיא אתו על פצידיא ולא אשכחו
4 מיא תבו מניהון ריקן בהיתו ואתכנעו וחפו רישיהון : בדיל חובי יתבי ארעא אתברו
5 ארי לא הוה מטרא בארעא בהיתו אכריא וחפו רישיהון : ארי אף אילתא במדברא
6 ילידת ושבקא ארי לא הוו דתאין דעסבא : ועדרין קמו על נגדין שתן רוחא כירודין
7 קמא עיניהון ארי לית עסבא : אם חובנא אסהידו בנא יי עבד בדיל שמך ארי סגיאין
8 תיובתנא קדמך חבנא : סיבור ישראל פרקיה בעדן עקא למה יחול רוגזך עלנא ואנחנא
9 כתותבין בארעא וכעדי אורחא דסטא למבתא : למה יחול רוגזך עלנא ואנחנא
מטלטלין ושביקין ואת גבר יכיל למפרק ואת שכנתך בינגא יי ושמך עלנא אתקרי לא
10 תשבקננא : כדנן אמר יי לעמא הדין כמה דרחימו כן אתפרע מנהון לאגלותהון
מארע בית שכנתי וכמה דהוו מערבין לפולחן טעותא ומבית מקדשי רגליהון לא מנעו
11 וקדם יי לא רעוא בהון כען יסער עליהון חוביהון ויתפרע עויתהון : ואמר יי לי לא
תצלי על עמא הדין לטבא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Nunquid mutabit Æthiops pellem ſuam; aut pardus maculas picturæ ſuæ? & vos quoque poteſtis benefacere cùm ſitis aſſueti ad malè faciendũ? Et diſpergam eos ſicut ſtipulam quæ pertranſit à facie venti in deſertum. Hæc eſt ſors tua, & pars hæreditatis tuæ à facie mea, dicit Dñs; quia reliquiſti cultum meum, & confiſa es in mendacio. Ego quoque revelabo confuſionem peccati tui ſuper faciem tuam, & apparebit ignominia tua. Inſipientia tua & ſtultitia tua & conſiliũ *peccatorũ* adoleſcentiæ tuæ: ſuper colles in agro revelatæ ſunt coram me abominationes tuæ. Væ tibi Jeruſalem, non mundaberis: hactenus prorogatio eſt tibi multis diebus.

CAP. XIV.

Quod factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad Jeremiam de negotiis ſiccitatis. Luxerunt viri domus Juda, & civitates eorum deſertæ ſunt, & coopertæ ſunt facies eorum nigredine, atræ quaſi olla; projecti ſunt in terram, & clamor habitatorum Jeruſalem aſcendit. Et fortes eorum miſerunt ſubditos ſibi ad aquam; venerũt ad ciſternas, & non invenerũt aquam; reverſi ſunt cum vaſis ſuis vacuis; confuſi ſunt & erubuerunt, & operuerunt capita ſua. Propter peccata habitatorum terræ contriti ſunt; quia non fuit pluvia in terra: confuſi ſunt agricolæ, operuerunt capita ſua. Quoniam etiam cerva in agro peperit & reliquit; quia non erant germina herbæ. Et onagri ſteterunt ſuper torrentes: biberunt ventum quaſi dracones; defecerunt oculi eorum, quia non erat herba. Si iniquitates noſtræ teſtificatæ ſunt contra nos, Dñe fac propter nomen tuum, quoniam multæ ſunt averſiones noſtræ: coram te peccavimus. Expectatio Iſrael, ſalvator ejus in tempore tribulationis, quare reſidet ira tua ſuper nos? & nos ſumus tanquam peregrini in terra, & ſicut viator qui divertit ad pernoctandũ. Quare reſidet ira tua ſuper nos? & nos ſumus tranſmigrantes & derelicti, tu autẽ fortis potens ad ſalvandum, & majeſtas tua inter nos eſt Dñe, & nomen tuum invocatum eſt ſuper nos, ne derelinquas nos. Hæc dicit Dñs populo huic: Sicut dilexerunt, ſic vindictam ſumam ex eis, ut tranſmigrare faciam eos de terra domus majeſtatis meæ: & ſicut oblectarunt ſe in cultu idolorum, & de domo ſanctuarii mei non prohibuerunt pedes ſuos; & non erat voluntas coram Dño in eis. Nunc viſitabit peccata eorum, & vindictam ſumet iniquitatum eorum. Et dixit Dominus ad me: Ne ores pro populo iſto in bonum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܝܟ ܕܠܐ ܡܫܟܚ ܗܢܕܘܝܐ ܕܢܫܚܠܦ ܡܫܟܗ ܘܢܡܪܐ ܡܚܘܬܗ. ܐܦ ܐܢܬܘܢ
ܡܫܟܚܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܡܛܐܒܘ: ܡܛܠ ܕܝܠܦܬܘܢ ܒܝܫܬܐ. * ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ. ܐܝܟ ܚܠܐ ܕܥܒܪ
ܩܕܡ ܪܘܚܐ ܒܡܕܒܪܐ. * ܗܢܐ ܗܘ ܦܣܬܟܝ ܘܡܢܬܐ ܕܝܪܬܘܬܟܝ ܡܢ ܩܕܡܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ
ܕܛܥܝܬܝܢܝ ܘܐܬܬܟܠܬܝ ܥܠ ܫܘܩܪܐ. * ܐܦ ܐܢܐ ܐܓܠܐ ܫܘܦܠܝܟܝ. ܘܐܪܡܐ ܐܢܘܢ ܥܠ
ܐܦܝܟܝ ܘܢܬܚܙܐ ܨܥܪܟܝ. * ܓܘܪܟܝ ܘܨܗܠܟܝ. ܘܙܢܝܘܬܐ ܕܙܢܝܘܬܟܝ. ܥܠ ܪ̈ܡܬܐ ܒܚܩܠܐ
ܚܙܝܬ ܛܢܦܘܬܟܝ. ܘܝ ܠܟܝ ܐܘܪܫܠܡ: ܕܠܐ ܐܬܕܟܝܬܝ. ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܬܘܒܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܓ *

* ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܥܠ ܟܠܝܢܐ ܕܡܛܪܐ. * ܐܬܐܒܠܬ ܝܗܘܕ. ܘܬܪ̈ܥܝܗ
ܚܪܒ. ܘܐܬܟܪܝܘ ܠܐܪܥܐ. ܘܨܘܚܬܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܣܠܩܬ. * ܘܪܘܪ̈ܒܢܝܗܘܢ. ܫܕܪܘ ܠܙܥܘܪ̈ܝܗܘܢ
ܠܡܝܐ. ܐܬܘ ܠܓܘܒܐ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ ܡܝܐ. ܗܦܟܘ ܡܐܢܝ̈ܗܘܢ ܣܪ̈ܝܩܐ. ܒܗܬܘ
ܘܐܬܟܡܪܘ. ܘܚܦܘ ܪܫܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܥܒܕܘܗ ܕܐܪܥܐ. ܠܐ ܗܘܐ ܡܛܪܐ. ܒܗܬܘ ܐܟ̈ܪܐ
ܘܚܦܘ ܪܫܝܗܘܢ. * ܘܐܦ ܐܝܠܬܐ ܒܡܕܒܪܐ ܝܠܕܝ. ܘܫܒܩܘ ܒܢܝ̈ܗܝܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ
ܬܐܠܐ. * ܘܦܪ̈ܐ ܩܡܘ ܥܠ ܫܒܝ̈ܠܐ. ܫܐܦܘ ܪܘܚܐ ܐܝܟ ܬܢܝܢܐ. ܣܡܝ ܥܝܢܝ̈ܗܘܢ. ܡܛܠ
ܕܠܝܬ ܥܣܒܐ. * ܐܢ ܚܛܗܝܢ ܣܗܕܘ ܒܢ. ܡܪܝܐ ܚܘܣ ܡܛܠ ܫܡܟ. ܡܛܠ
ܕܣܓܝܐܐ ܗܝ ܛܝܒܘܬܟ. ܘܠܟ ܚܛܝܢ. * ܣܒܪܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܘܦܪܘܩܗ ܒܥܕܢܐ
ܕܐܘܠܨܢܐ. ܠܐ ܬܗܘܐ ܐܝܟ ܬܘܬܒܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܐܝܟ ܐܪܚܐ ܕܣܛܐ ܠܡܒܬ. * ܠܐ ܬܗܘܐ ܐܝܟ ܓܒܪܐ
ܕܪܦܝܐ. ܘܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܦܪܩ. ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܒܝܢܬܢ ܐܝܬܝܟ. ܘܫܡܟ ܐܬܩܪܝ
ܥܠܝܢ. ܠܐ ܬܫܒܩܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܥܡܐ ܗܢܐ. ܗܢܘܢ ܪܚܡܘ ܠܡܛܥܐ. ܘܪ̈ܓܠܝܗܘܢ
ܠܐ ܟܠܘ. ܘܡܪܝܐ ܠܐ ܪܥܐ ܒܗܘܢ. ܡܟܝܠ ܢܥܗܕ ܥܘܠܗܘܢ. ܘܢܦܩܘܕ ܚܛܗܝܗܘܢ.
* ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܬܨܠܐ ܥܠ ܥܡܐ ܗܢܐ ܠܛܒܬܐ.

Et quemadmodum non poteſt Indus mutare 23
cutem ſuam, aut pardus maculas ſuas; ita ne-
que vos benefacere poteſtis, quòd aſſueti ſitis
malo. Itaque diſperdam eos veluti glumam 24
quæ tranſit coram vento in deſerto. Hæc eſt 25
ſors tua & pars hæreditatis tuæ à me, dicit
Dominus. Quandoquidem oblita es mei, &
freta es falſitate; Ego viciſſim retegam fim- 26
brias tuas, & rejiciam eas ſuper faciem tuam,
ut conſpiciatur ignominia tua. Adulterium 27
tuum, hinnitus tuus, & fornicatio ſcortatio-
nis tuæ: ſuper colles in deſerto vidi abomi-
nationem tuam. Væ tibi Jeruſalem, quia non
mundas te: quouſque tandem? convertere.

CAP. XIV.

ET factus eſt ſermo Domini ad Jeremiam 1
de pluviæ defectu. Lugebit Judæa, & portæ 2
ejus deſolabuntur, & corruent in terram, &
gemitus Jeroſolymæ aſcendet. Magnates eo- 3
rum mittent plebeios ſuos ad aquas; veni-
entes ad ciſternam non invenient aquas, re-
vertentur ſuis vaſis vacuis, erubeſcent, & pu-
dore ſuffuſi operient capita ſua. Propter fa- 4
cinora terræ non erit pluvia: erubeſcentes
agricolæ operient capita ſua. Quin etiam 5
cervæ in deſerto parient, & derelinquent hin-
nulos ſuos, eò quòd non ſit gramen: Et ona- 6
gri adſtabunt, ſemitis, ventum aſpirabunt ut
canes ſylveſtres, obtenebreſcent oculi eorum,
quia non erit fœnum. Si peccata noſtra con- 7
tra nos teſtantur, *tu* Domine parce propter
nomen tuum: nam plurima eſt bonitas tua, &
in te peccavimus. Spes Iſraelis, & ſervator 8
ejus in tempore anguſtiæ, ne ſis ut peregri-
nus in terra, & tanquam viator qui divertit
ad pernoctandum. Ne ſis ut homo imbecillis, 9
& ut homo non valens ſervare. Tu quidem
Domine, in medio noſtri es, & nomen tuum
invocatum eſt ſuper nos; ne derelinquas nos.
Sic dicit Dominus huic populo, iſti dilexe- 10
runt evagari, pedes ſuos non continuerunt;
ideò Domino diſplicent, mox recordabitur
iniquitatis eorum, & viſitabit peccata eo-
rum. Deinde dixit mihi Dominus, Ne ora- 11
veris pro populo iſto in bonum:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ايبدل الحبشي جلده والنمر ببقعه * فانتم تقدرون ان تصنعوا الردي الذي تعلمتموه
جيدا * وافسدهم مثل الهشيم المحمول من الريح الي موضع خراب * هذا سهمك ونصيبك
ان عصيتموني يقول الرب * كما نسيت ناموسي وتوكلت على الكذب * ساكشف ما خلفك
اسفل تجاه وجهك ويظهر اهانتك * وفسقك وصهيلك وعربدة زناك على الاكام وفي الحقول
رايت رذالاتك * الويل لك يا ايروسليم لانك لم تنقي خلفي * الي متي ايضا

* الفصل الرابع عشر *

* القول الصاير الي ارمياء من قبل الرب من اجل عدم المطر *

* خربت اليهودية * وابوابها استفرغت واظلمت على الارض * وصراخ ايروسليم صعد
* وعظماوها ارسلوا شبانها الي الماء * اتوا الي الابار فلم يجدوا ماء * ردوا اوعيتهم فارغة
* واعمال الارض فنيت لانه لم يكن مطر * خزيوا الفلاحون * كسوا راسهم * والايائل
في الحقل ولدن وتركوا لانه لم يكن نبات * الحمير الحقلية وقفوا على الروابي واجتذبوا
ريحا * فنيت اعينهم لانه لم يكن عشب * من ظلم الشعب * خطايانا وقفت بنا * يا رب
اصنع لنا من اجلك * لان خطايانا كثيرة امامك * لانا اخطانا اليك * يا رجاء اسرائيل
يا رب * خلص في زمن الاسواء * لماذا صرت مثل غريب على الارض * مثل متاهل يميل الي
موضع المبيت * لا تكن مثل انسان نايم * ولا مثل رجل لا يستطيع ان يخلص
وانت فينا يا رب انت * واسمك دعي علينا * لا تنسنا * هكذا يقول الرب لهذا الشعب
احبوا ان يحركوا ارجلهم ولم يشفقوا * الله لم يسر بهم * الان يذكر مظالمهم * وقال الرب
لي * لا تصل عن هذا الشعب للخيرات *

An mutaret Æthiops pellem ſuam, aut 23
pardus maculas ſuas? ita vos malum
quod didiciſtis, in bonum vertere poteſtis?
Ideò corrumpam eos ceu ſtipulam à vento 24
in locum deſertum aſportatam. Hæc erit 25
portio tua & ſors tua, ſi contra me rebel-
laveritis, ait Dominus. Quemadmodum
oblitus es legis meæ, & fiduciam collo-
câſti in mendacio; Ita retegam poſterio- 26
res fimbrias tuas ante faciem tuam, ut
appareat turpitudo tua, Adulterium tu- 27
um, hinnitus tuus, & extraordinaria
ſcortatio tua ſuper colles & in agris:
Vidi abominationes tuas. Væ tibi O Jeru-
ſalem, quia non mundas te ſequendo me:
Quouſque tandem?

CAP. XIV.

SErmo factus ad Jeremiam à Do- 1
mino de pluviæ penuria.

Mœrore conficietur Judæa, portæ ejus 2
evacuabuntur, obſcura ſuper terram eva-
det, & clamor Jeroſolymorum aſcendet.
Magnates enim ejus mittent juvenes ejus 3
ad aquam; qui venientes ad puteos, nec
invenientes aquam, vaſa ſua vacua re-
portabunt. Terræ culturæ ceſſabunt, quia 4
non erit pluvia: pudefacti agricolæ de-
tegent caput ſuum. Cervæ quoque in a- 5
gro parientes deſtituent fœtum, quia non
erit herba: Aſini ſylveſtres ſtantes ſu- 6
per colles haurient ventum, deficient ocu-
li eorum, quia nullum erit fœnum propter
populi perverſitatem. Peccata noſtra de- 7
nuntiârunt nos; O Domine, age nobiſcum
propter teipſum, quia peccata noſtra plu-
rima ſunt coram te; nam tibi peccavimus.
O ſpes Iſraelis, O Domine, ſalva tem- 8
pore calamitoſo. Quarè factus es ut
peregrinus ſuper terram? ut viator qui
digreditur ad locum diverſorii? Ne 9
ſis ut homo dormitans, neque ut vir im-
potens ad ſalvandum. Quandoquidem
tu es inter nos O Domine, & nomen tuum
invocatum eſt ſuper nos; ne obliviſcaris
noſtri. Sic ait Dominus huic populo, 10
Dilexerunt movere pedes ſuos, nec pe-
percerunt: non oblectatur illis Deus: jam-
jam recordaturus eſt impietatem eorum.
Tum dixit mihi Dominus, Ne preceris 11
huic populo proſpera:

ירמיה : יד

cùm & : eorum præconium ad audiens ego non , jejunaverint Cùm
12 כִּי יָצֻמוּ אֵינֶנִּי שֹׁמֵעַ אֶל־רִנָּתָם וְכִי
, gladio in quia : ea volens ego non , munus & ascensionem fecerint ascendere
יַעֲלוּ עֹלָה וּמִנְחָה אֵינֶנִּי רֹצָם כִּי בַּחֶרֶב
Domine Ahah : dixi Et .eos consumens ego peste in & ,fame in &
13 וּבָרָעָב וּבַדֶּבֶר אָנֹכִי מְכַלֶּה אוֹתָם׃ וָאֹמַר אֲהָהּ אֲדֹנָי
videbitis Non :eis dicentes vates Ecce : DOMINE
יֱהֹוִה הִנֵּה הַנְּבִיאִים אֹמְרִים לָהֶם לֹא־תִרְאוּ
dabo veritatis pacem quippe : vobis erit non fames & ,gladium
חֶרֶב וְרָעָב לֹא־יִהְיֶה לָכֶם כִּי־שְׁלוֹם אֱמֶת אֶתֵּן
: me ad DOMINUS dixit Et .isto loco in vobis
14 לָכֶם בַּמָּקוֹם הַזֶּה׃ וַיֹּאמֶר יְהֹוָה אֵלַי
neque , eos misi non ,meo nomine in vaticinantes vates Falsum
שֶׁקֶר הַנְּבִיאִים נִבְּאִים בִּשְׁמִי לֹא שְׁלַחְתִּים וְלֹא
,divinationem &,falsitatis visionem : eos ad sum locutus nec , eis præcepi
צִוִּיתִים וְלֹא דִבַּרְתִּי אֲלֵיהֶם חֲזוֹן שֶׁקֶר וְקֶסֶם
.vobis vaticinantes ipsi sui cordis seductionem & , nihil &
וֶאֱלוּל וְתַרְמוּת לִבָּם הֵמָּה מִתְנַבְּאִים לָכֶם׃
vaticinantes vates super DOMINUS dixit sic Idcirco
15 לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהֹוָה עַל־הַנְּבִאִים הַנִּבְּאִים
Gladius : dicentes ipsi & , eos misi non ego & ,meo nomine in
בִּשְׁמִי וַאֲנִי לֹא־שְׁלַחְתִּים וְהֵמָּה אֹמְרִים חֶרֶב
consumentur fame in & ,gladio in : ista terra in erit non fames &
וְרָעָב לֹא יִהְיֶה בָּאָרֶץ הַזֹּאת בַּחֶרֶב וּבָרָעָב יִתַּמּוּ
erunt , eis vaticinantes ipsi quibus populus Et .illi vates
16 הַנְּבִאִים הָהֵמָּה׃ וְהָעָם אֲשֶׁר־הֵמָּה נִבְּאִים לָהֶם יִהְיוּ
non & , gladii & , famis faciebus à , Jerusalaim plateis in projecti
מֻשְׁלָכִים בְּחֻצוֹת יְרוּשָׁלַם מִפְּנֵי הָרָעָב וְהַחֶרֶב וְאֵין
: eorum filiæ & , eorum filii & , eorum uxores , ipsi , ipsis sepeliens
מְקַבֵּר לָהֵמָּה הֵמָּה נְשֵׁיהֶם וּבְנֵיהֶם וּבְנֹתֵיהֶם
verbum eos ad dices Et .suum malum eos super effundam &
17 וְשָׁפַכְתִּי עֲלֵיהֶם אֶת־רָעָתָם׃ וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם אֶת־הַדָּבָר
: taceant ne & , die ac nocte lachrymam mei oculi Descendant : istud
הַזֶּה תֵּרַדְנָה עֵינַי דִּמְעָה לַיְלָה וְיוֹמָם וְאַל־תִּדְמֶינָה
plaga ,mei populi filia virgo est contrita magna contritione quoniam
כִּי שֶׁבֶר גָּדוֹל נִשְׁבְּרָה בְּתוּלַת בַּת־עַמִּי מַכָּה
: gladio vulnerati ecce & , agrum fuero egressus Si .valde infirma
18 נַחְלָה מְאֹד׃ אִם־יָצָאתִי הַשָּׂדֶה וְהִנֵּה חַלְלֵי־חֶרֶב
vates etiam quia : fame infirmati ecce & ,civitatem introiero si &
וְאִם בָּאתִי הָעִיר וְהִנֵּה תַּחֲלוּאֵי רָעָב כִּי־גַם־נָבִיא
reprobando Nunquid.cognoverūt non &,terram in circuierunt sacerdos etiam
19 גַם־כֹּהֵן סָחֲרוּ אֶל־אֶרֶץ וְלֹא יָדָעוּ׃ הֲמָאֹס
Quare ? tua anima est abominata Sijon in an ? Jehudah reprobasti
מָאַסְתָּ אֶת־יְהוּדָה אִם־בְּצִיּוֹן גָּעֲלָה נַפְשֶׁךָ מַדּוּעַ
non & , pacem ad expecta ? sanitas nobis non & , nos fecisti percutere
הִכִּיתָנוּ וְאֵין לָנוּ מַרְפֵּא קַוֵּה לְשָׁלוֹם וְאֵין
Cognovimus .turbatio ecce & , sanitatis tempus ad & ; bonum
20 טוֹב וּלְעֵת מַרְפֵּא וְהִנֵּה בְעָתָה׃ יָדַעְנוּ
quia ,nostrorum patrum iniquitatem , nostram impietatem DOMINE
יְהֹוָה רִשְׁעֵנוּ עֲוֹן אֲבוֹתֵינוּ כִּי
solium dejicias ne ,tuum nomen propter reprobes Ne .tibi peccavimus
21 חָטָאנוּ לָךְ׃ אַל־תִּנְאַץ לְמַעַן שִׁמְךָ אַל־תְּנַבֵּל כִּסֵּא
sunt Nunquid .nobiscum tuum pactum irrites ne ,recordare :tuæ gloriæ
22 כְבוֹדֶךָ זְכֹר אַל־תָּפֵר בְּרִיתְךָ אִתָּנוּ׃ הֲיֵשׁ
? imbres dabunt cœli si & , facientes pluere gentium vanitatibus in
בְּהַבְלֵי הַגּוֹיִם מַגְשִׁמִים וְאִם־הַשָּׁמַיִם יִתְּנוּ רְבִבִים
,te expectabimus Et ? noster Deus DOMINUS ipse tu Nonne
הֲלֹא אַתָּה־הוּא יְהֹוָה אֱלֹהֵינוּ וּנְקַוֶּה־לָּךְ
.hæc omnia fecisti tu quia
כִּי־אַתָּה עָשִׂיתָ אֶת־כָּל־אֵלֶּה׃

Verſio VULG. LAT.

12 Cùm jejunaverint, non exaudiam preces eorum: & ſi obtulerint holocautomata, & victimas, non ſuſcipiam ea: quoniam gladio, & fame, & peſte conſumam 13 eos. Et dixi, A a a, Domine Deus: Prophetæ dicunt eis; Non videbitis gladium, & fames non erit in vobis, ſed pacem veram dabit vobis in loco iſto. 14 Et dixit Dominus ad me; Falsò prophetæ vaticinantur in nomine meo: non miſi eos, & non præcepi eis, neque locutus ſum ad eos: viſionem mendacem, & divinationem, & fraudulentiam, & ſeductionem cordis ſui pro15phetant vobis. Idcircò hæc dicit Dominus de prophetis, qui prophetant in nomine meo, quos ego non miſi, dicentes; Gladius & fames non erit in terra hac; In gladio & fame conſumentur 16 prophetæ illi. Et populi, quibus prophetant, erunt projecti in viis Jeruſalem præ fame & gladio, & non erit qui ſepeliat eos, ipſi & uxores eorum, filii & filiæ eorum: & effundam ſuper 17 eos malum ſuum. Et dices ad eos verbum iſtud; Deducant oculi mei lachrymam per noctem & diem, & non taceant: quoniam contritione magnâ contrita eſt virgo filia populi mei, pla18gâ peſſimâ vehementer. Si egreſſus fuero ad agros, ecce occiſi gladio: & ſi introiero in civitatem, ecce attenuati fame. Propheta quoque & ſacerdos abierunt in terram, quam igno19rabant. Numquid projiciens abjeciſti Judam? aut Sion abominata eſt anima tua? quarè ergò percuſſiſti nos, ita ut nulla ſit ſanitas? Expectavimus pacem, & non eſt bonum: & tempus cu20rationis, & ecce turbatio. Cognovimus, Domine, impietates noſtras, iniquitates patrum noſtrorum, quia peccavimus tibi. 21 Ne des nos in opprobrium propter nomen tuum, neque facias nobis contumeliam ſolii gloriæ tuæ: recordare, ne irritum facias fœdus tuum nobiſcum. 22 Numquid ſunt in ſculptilibus Gentium qui pluant? aut cœli poſſunt dare imbres? nónne tu es Dominus Deus noſter, quem expectavimus? tu enim feciſti omnia hæc.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 Ὅτι ἐὰν (ι) νηστεύσωσιν, οὐκ εἰσακούσομαι τῆς δεήσεως αὐτῶν, καὶ ἐὰν προσενέγκωσιν ὁλοκαυτώματα καὶ θυσίας, οὐκ εὐδοκήσω ἐν αὐτοῖς, ὅτι ἐν (κ) μαχαίρᾳ καὶ ἐν λιμῷ καὶ ἐν θανάτῳ ἐγὼ συντελέσω αὐτούς. 13 Καὶ εἶπα, Ὁ (λ) Ὢν κύριε, ἰδοὺ οἱ προφῆται αὐτῶν προφητεύουσι, καὶ λέγουσιν, Οὐκ ὄψεσθε μάχαιραν, οὐδὲ λιμὸς ἔσται ἐν (μ) ὑμῖν, ὅτι ἀλήθειαν καὶ εἰρήνην δώσω ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ. 14 Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Ψευδῆ οἱ προφῆται προφητεύουσιν ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου, οὐκ ἀπέστειλα αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἐνετειλάμην αὐτοῖς, καὶ οὐκ ἐλάλησα πρὸς αὐτούς· ὅτι ὁράσεις ψευδεῖς, καὶ μαντείας, καὶ οἰωνίσματα, καὶ προαιρέσεις καρδίας αὐτῶν αὐτοὶ προφητεύουσιν ὑμῖν. 15 Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος περὶ τῶν προφητῶν τῶν προφητευόντων (ν) ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου ψευδῆ, (ξ) καὶ ἐγὼ οὐκ ἀπέστειλα αὐτοὺς, οἳ (ο) λέγουσι, Μάχαιρα καὶ λιμὸς οὐκ ἔσται ἐπὶ τῆς γῆς ταύτης· Ἐν θανάτῳ νοσερῷ ἀποθανοῦνται, καὶ ἐν λιμῷ 16 συντελεσθήσονται οἱ προφῆται, Καὶ ὁ λαὸς, οἷς αὐτοὶ προφητεύουσιν αὐτοῖς, καὶ ἔσονται ἐρριμμένοι ἐν ταῖς (π) ὁδοῖς Ἱερουσαλὴμ, ἀπὸ προσώπου (ρ) μαχαίρας καὶ τοῦ λιμοῦ, καὶ οὐκ ἔσται ὁ θάπτων αὐτοὺς, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν, καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῶν, καὶ ἐκχεῶ 17 ἐπ' αὐτοὺς τὰ κακὰ αὐτῶν. Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς τὸν λόγον τοῦτον, Καταγάγετε ἐπ' ὀφθαλμοὺς ὑμῶν δάκρυα ἡμέρας καὶ νυκτὸς, καὶ μὴ διαλιπέτωσαν, ὅτι συντρίμματι συνετρίβη (ς) θυγάτηρ λαοῦ μου, 18 καὶ πληγῇ ὀδυνηρᾷ σφόδρα. Ἐὰν ἐξέλθω εἰς τὸ πεδίον, καὶ ἰδοὺ τραυματίαι (σ) μαχαίρας· καὶ ἐὰν εἰσέλθω εἰς τὴν πόλιν, καὶ ἰδοὺ πόνος λιμοῦ· ὅτι ἱερεὺς καὶ προφήτης ἐπορεύθησαν (τ) εἰς γῆν, ἣν οὐκ 19 ᾔδεισαν. Μὴ ἀποδοκιμάζων ἀπεδοκίμασας τὸν Ἰούδαν, καὶ ἀπὸ Σιὼν ἀπέστη ἡ ψυχή σου; ἵνατί ἔπαισας ἡμᾶς, καὶ οὐκ ἔστιν ἡμῖν ἴασις; ὑπεμείναμεν εἰς εἰρήνην, καὶ οὐκ ἦν ἀγαθὰ, εἰς καιρὸν ἰάσεως, 20 καὶ ἰδοὺ ταραχή. Ἔγνωμεν κύριε ἁμαρτήματα ἡμῶν, ἀδικίας πατέρων ἡμῶν, 21 ὅτι ἡμάρτομεν ἐναντίον σου. Κόπασον διὰ τὸ ὄνομά σου, μὴ ἀπολέσῃς θρόνον δόξης σου· μνήσθητι, μὴ διασκεδάσῃς τὴν 22 διαθήκην σου (υ) τὴν μεθ' ἡμῶν. Μὴ ἔστιν ἐν εἰδώλοις τῶν ἐθνῶν ὑετίζων; καὶ εἰ ὁ οὐρανὸς δώσει πλησμονὴν αὐτοῦ, οὐχὶ σὺ εἶ αὐτός; καὶ ὑπομενοῦμέν (φ) σε κύριε, ὅτι σὺ ἐποίησας πάντα ταῦτα.

Quoniam, ſi jejunaverint, non exaudiam orationem eorum: & ſi obtulerint holocauſtomata & ſacrificia; non placebunt mihi eis: quoniam in gladio, & in fame, & in morte ego conſumabo eos. Et dixi: O Domine. Ecce prophetæ eorum prophetant, & dicunt: Non videbitis gladium: & fames non erit in vobis: quia veritatem & pacem dabo ſuper terram & in loco iſto. Et dixit Dominus ad me; Falſa prophetæ prophetant in nomine meo: non miſi eos, & non præcepi eis, & non ſum loquutus ad eos. Viſiones enim mendaces, & divinationes, & auguria, & ſeductiones cordis ſui ipſi prophetant vobis. Ideo hæc dicit Dominus de prophetis, qui prophetant in nomine meo falſa, & ego non miſi eos, qui dicunt; Gladius, & fames non erit in terra hac; In morte morboſa morientur: & in fame conſumentur prophetæ. Et populus, quibus ipſi prophetant eis: & projecti erunt in viis Hieruſalem à facie gladii, & famis, (& non erit, qui ſepeliat eos) et filii eorum, et filiæ eorum: et effundam ſuper eos mala ſua. Et dices ad eos verbum iſtud; Deducite ſuper oculos veſtros lachrymas die ac nocte, et non ceſſent: quoniam contritione contrita eſt filia populi mei: et plaga doloroſa valdé. Si egreſſus fuero in campum; et ecce occiſi gladio: et ſi introiero in civitatem; et ecce dolor famis: quia ſacerdos et propheta abierunt in terram, quam ignorabant. Nunquid probans reprobâſti Judam, et à Sion receſſit anima tua? Quarè percuſſiſti nos, et non eſt nobis ſanatio? Suſtinuimus ad pacem, et non fuerunt bona: in tempus ſanationis, et ecce turbatio. Cognovimus, Domine, peccata noſtra, iniquitates patrum noſtrorum: quia peccavimus coram te. Ceſſa propter nomen tuum: ne perdas thronum gloriæ tuæ. Recordare; ne diſſipes teſtamentum tuum, quod nobiſcum. Nunquid eſt in idolis gentium, qui pluat? Et ſi cœlum dabit ſaturitatem ſuam; nonne tu es ipſe? Et ſuſtinebimus te, Domine; quia feciſti omnia hæc.

MS.A. (ι) νηστεύσουσιν (κ) μαχαίρῃ (λ) Ὢν δέσποτα κύριε, (μ) ἡμῖν τῷ ὀνόματι (ξ) κἀγὼ (ο) λέγοντες. (π) διόδοις (ρ) μαχαίρης γάτηρ (σ) ῥομφαίας· (τ) ὁδὸν ἣν οὐκ ᾔδεισαν· (υ) μεθ' ἡμῶν. (φ, σ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 ארי יצומון לא רעוא קדמי לקבלא צלותהון וארי יסקון עלתא ומנחתא לא רעוא קדמי
13 בהון ארי בחרבא ובכפנא ובמותא אנא משיצי יתהון׃ ואמרית קבל בעותי יי אלהים
הא נביי שקרא אמרין להון לא תחזון דקטלין בחרבא וכפנא לא יהי לכון ארי שלם
14 דקשוט אתן לכון באתרא הדין׃ ואמר יי לי שקרא אמרין נביי שקרא דמתנבן בשמי
לא שלחתנון ולא פקדתנון ולא מללית עמהון נבואת שקר ואולפן וכדבין ורשע לבהון
15 אנון מתנבן לכון׃ בכן כדנן אמר יי על נביי שקרא דמתנבן בשמי ואנא לא שלחתנון
ואנון אמרין חרבא וכפנא לא יהי בארעא הדא בחרבא ובכפנא יסופון נביי שקרא
16 האנון׃ ועמא דאנון מתנבן להון יהון מטרפין רמן בשוקי ירושלם מן קדם כפנא
וחרבא ולית דקבר להון אנון נשיהון בניהון ובנתיהון ואשפוך עליהון ית בישתהון׃
17 ותימר להון ית פתגמא הדין ישגרן עיני דמען לילי ויומם ולא ישתקן ארי תברא רבא
18 אתברת מלכות כנשתא דעמי מחא ממרעא לחדא׃ אם נפקית לחקלא והא קטילי
חרבא ואם עלית לקרתא והא ממרעי כפנא ארי אף ספר אף כהן אתפניאו לסחורתהון
19 על די מה בארעא ולא בקרו׃ המרטש רטשתא ית דבית יהודה ואם יתבי ציון רחיק
ממרך מה דין אלקיתנא ולית לנא אסא סברנא לשלם ולית טב ולעדן סליחת
20 חובין והא פורענות חטאין׃ ידענא יי חובנא וחובי אבהתנא ארי חבנא קדמך׃
21 לא תרחקננא בדיל שמך לא תנבל אתר בית כורסי יקרך יעול דוכרן קים אבהתנא
22 קדמך לא תשני קימך עמנא׃ האלית צרוך בטעות עממיא לאחתא מטרא ואם שמיא
לא יתנון רסיסין אלהן על מימרך הלא את הוא יי אלהנא ונסבר קדמך ארי את
עבדת ית כל אלין׃

PARAPH CHALD. Verſio Latina.

Cùm jejunaverint, non eſt voluntas coram me ad ſuſcipiendam orationem eorum: & cùm obtulerint holocauſta & munus, non eſt voluntas coram me in eis. Quia in gladio, & fame, & morte ego diſperdam eos. Et dixi: Suſcipe deprecationem meam Dñe Deus. Ecce prophetæ falſi dicunt eis: Non videbitis eos qui occidunt gladio; & fames non erit vobis; quia pacem veram dabo vobis in loco iſto. Et dixit Dñs ad me: Falſum tamen dicunt prophetæ falſi qui prophetant in nomine meo Non miſi eos, nec præcepi eis, nec locutus ſum eis prophetiam & doctrinam falſam; & mendacia, & impietatem cordis ſui ipſi prophetant vobis. Propterea hæc dicit Dñs de prophetis falſis, qui prophetant in nomine meo, & ego non miſi eos: & ipſi dicunt: Gladius & fames non erit in terra hac; In gladio & fame conſumentur illi prophetæ falſi. Populus autem quibus prophetant, erūt diſcerpti & projecti per vicos Jeruſalem à facie famis & gladii, & non erit qui ſepeliat eos; ipſi & uxores eorum, & filii & filiæ eorum; & effundam ſuper eos mala eorum. Et dices ad eos: Propter verbum iſtud deducent oculi mei lachrymas nocte ac die, & non tacebunt; quia contritione magna contritum eſt regnum cœtus populi mei: plaga infirmata vehementer. Si egreſſus fuero ad agrum, ecce occiſi gladio: & ſi introiero in civitatem, ecce infirmi fame. Quoniam etiam ſcriba & ſacerdos converſi ſunt ad negotiationes ſuas, ad id quod eſt in terra, nec requiſierunt. Nunquid abjiciendo abjeciſti domum Juda? aut habitatores Sion ſummovit Verbum tuum? quare percuſſiſti nos, & non eſt nobis ſanitas? Expectavimus pacem, & non eſt bonum; & tempus remiſſionis peccarum, & ecce vindicta peccatorum. Cognovimus Dñe peccata noſtra, & peccata patrum noſtrorum: quia peccavimus coram te. Ne projicias nos propter nomen tuum, nec vilem facias locum ſolii gloriæ tuæ. Veniat memoria pacti patrum noſtrorum ante te: ne irritum facias pactum tuum nobiſcum. Ecce non eſt utilitas in diis populorum ad deducendam pluviam; nec cœli dabunt rores, niſi juxta verbum tuum. Nonne tu es ipſe Deus noſter? & expectavimus coram te, quia tu feciſti hæc omnia.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܡܛܠ ܕܐܢ ܢܨܘܡܘܢ. ܠܐ ܫܡܥ ܐܢܐ ܒܥܘܬܗܘܢ. ܘܐܢ ܢܩܪܒܘܢ ܥܠܘܬܐ ܘܩܘܪܒܢܐ. ܠܐ ܨܒܐ ܐܢܐ
ܒܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ. ܘܒܡܘܬܢܐ ܐܢܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܗܘܢ. * ܘܐܡܪܬ
ܒܒܥܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܢܒܝܐ ܐܡܪܝܢ ܠܗܘܢ. ܕܠܐ ܬܚܙܘܢ ܚܪܒܐ. ܘܟܦܢܐ ܠܐ ܢܗܘܐ
ܠܟܘܢ. ܐܠܐ ܫܠܡܐ ܘܫܝܢܐ ܐܬܠ ܠܟܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܕܓܠܐ
ܢܒܝܐ ܡܬܢܒܝܢ ܒܫܡܝ. ܕܐܢܐ ܠܐ ܫܕܪܬ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܦܩܕܬ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܐܡܪܬ ܠܗܘܢ. ܚܙܘܐ
ܕܓܠܐ ܘܩܣܡܐ ܘܢܚܫܐ. ܘܢܟܠܐ ܕܠܒܗܘܢ. ܗܢܘܢ ܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܢܒܝܐ ܕܡܬܢܒܝܢ ܒܫܡܝ. ܕܐܢܐ ܠܐ ܫܕܪܬ ܐܢܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܐܡܪܝܢ
ܚܪܒܐ ܘܟܦܢܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܢܫܬܠܡܘܢ ܢܒܝܐ ܗܢܘܢ. * ܘܥܡܐ
ܕܗܢܘܢ ܡܬܢܒܝܢ ܠܗܘܢ. ܢܗܘܘܢ ܫܕܝܢ ܒܫܘܩܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܡܢ ܩܕܡ ܚܪܒܐ ܘܟܦܢܐ
ܘܡܘܬܢܐ. ܘܠܝܬ ܕܩܒܪ ܠܗܘܢ. ܗܢܘܢ ܘܢܫܝܗܘܢ. ܘܒܢܝܗܘܢ. ܘܒܢܬܗܘܢ. ܘܐܫܕ
ܥܠܝܗܘܢ ܒܝܫܬܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. ܢܪܕܝܢ ܥܝܢܝܢ ܕܡܥܐ
ܒܐܝܡܡܐ ܘܒܠܠܝܐ. ܘܠܐ ܢܫܠܝܢ. ܡܛܠ ܕܬܒܪܐ ܪܒܐ ܐܬܬܒܪܬ ܒܬܘܠܬܐ ܒܪܬ ܥܡܝ
ܡܚܘܬܐ ܕܟܪܝܐ ܛܒ. * ܐܢ ܢܦܩܬ ܠܚܩܠܐ. ܗܐ ܩܛܝܠܝ ܚܪܒܐ. ܘܐܢ ܥܠܬ
ܠܡܕܝܢܬܐ. ܗܐ ܡܬܡܚܩܝ ܟܦܢܐ. ܡܛܠ ܕܐܦ ܢܒܝܐ ܘܐܦ ܟܗܢܐ. ܚܕܪܘ ܠܐܪܥܐ
ܘܠܐ ܝܕܥܘ. * ܡܣܠܐ ܐܣܠܝܬ ܠܝܗܘܕܐ. ܐܘ ܒܨܗܝܘܢ ܓܥܠܬ ܢܦܫܟ. ܡܛܠ
ܡܢܐ ܡܚܝܬܢ. ܘܠܝܬ ܠܢ ܐܣܝܘܬܐ. ܣܟܝܢ ܠܫܠܡܐ. ܘܠܝܬ ܛܒܬܐ.
ܘܠܙܒܢܐ ܕܐܣܝܘܬܐ. ܘܗܐ ܫܓܘܫܝܐ. * ܝܕܥܝܢ ܡܪܝܐ ܚܛܗܝܢ ܘܚܛܗܐ
ܕܐܒܗܝܢ. ܡܛܠ ܕܚܛܝܢ ܠܟ. * ܠܐ ܬܪܓܙ ܡܪܝܐ ܡܛܠ ܫܡܟ ܘܠܐ ܬܒܣܪ ܟܘܪܣܝܐ ܕܐܝܩܪܟ.
ܐܬܕܟܪ ܘܠܐ ܬܒܛܠ ܩܝܡܟ ܕܥܡܢ. * ܠܐ ܓܝܪ ܡܫܟܚܝܢ ܦܬܟܪܐ ܕܥܡܡܐ ܕܢܚܬܘܢ
ܡܛܪܐ. ܐܦ ܠܐ ܫܡܝܐ ܢܬܠܘܢ ܪܣܣܐ. ܐܠܐ ܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܘܢܣܟܐ ܠܟ.
ܕܐܢܬ ܥܒܕ ܐܢܬ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ.

Quoniam licèt jejunent, non exaudiam 12
orationem eorum; & quanvis offerant ho-
locauſta & oblationes, non delectabor eis:
nam gladio, famæ, ac peſte conſumpturus
ſum eos. Dicenti verò mihi, Quæſo Domine 13
Deus, Ecce prophetæ dicunt eis, Nequa-
quam experiemini gladium, & fames non
erit vobis; imò pacem & ſecuritatem dabo
vobis in loco iſto: Reſpondit Dominus, 14
Falsò vaticinantur iſti prophetæ in nomine
meo, cùm ego nec miſerim eos, nec præce-
perim eis, nec allocutus ſim eos: viſiones
falſas, omina, divinationes, atque dolum
cordis ſui, vaticinantur iſti vobis. Propterea 15
ſic dicit Dominus de prophetis qui vaticinan-
tur in nomine meo, quos ego non miſi, qui-
que dicunt, Gladius & fames non erit in ter-
ra iſta; Gladio & fame peribunt hujuſmodi
prophetæ: Et populus cui iſti vaticinantur, 16
erunt projecti in plateis Jeruſalem præ gla-
dio, fame, ac peſte, nemine ſepeliente; tam
ipſi, quàm uxores, & filii ac filiæ ipſorum;
adeóque refundam in eos malitiam ſuam.
Dic igitur eis ſermonem iſtum, Stillent oculi 17
noſtri lachrymas diu noctúque indeſinenter,
quia contritione magnâ contrita eſt virgo
filia populi mei, plagâ admodum dolorificâ.
Sive ad campum egrediar, ecce gladio con- 18
foſſos *cerno*; ſive urbem ingrediar, ecce fa-
me languentes: nam tum prophetæ tum ſa-
cerdotes per orbem vagantur, nec animad-
vertunt. Prorſúſne abominatus es Judam? 19
an Sionem faſtidivit anima tua? quare nos
percuſſiſti, nulláque nobis eſt medela? ex-
pectavimus pacem, & nullum adeſt bonum?
tempus curationis, & ecce terror? Agnoſci- 20
mus Domine peccata noſtra & peccata pa-
trum noſtrorum, etenim peccavimus in te.
Ne iraſcaris, propter nomen tuum, néve 21
dedecores ſolium majeſtatis tuæ: recordare,
& ne violes pactum tuum quod nobiſcum
pepigiſti. Non enim poſſunt idola gentium 22
demittere pluviam, neque cœli ſuppedi-
tare ſtillas, ſed tu Domine Deus noſter:
ideò te expectabimus, quia tu facis hæc
omnia.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* لانهم ان صاموا لا استجيب طلبتهم * وان قدموا محرقات وذبائح لا اسر بهم * لان بسيف 12
وبجوع وبموت انا افنيهم * فقلت ايها الكاين السيد الرب * ها انبياوهم يتنبون ويقولون لا 13
تعاينون سيفا ولا يكون فيكم جوع * لاني اعطي حقا وسلامة على الارض وفي هذا الموضع *
* وقال الرب لي * انبياوهم يتنبون كذبا باسمي * لم ارسلهم ولم اوصهم ولا كلمتهم * 14
لانهم يتنبون بمناظر كاذبة وتنجيم وتطيرات وبدع قلوبهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب 15
من اجل الانبياء الذين يتنبون باسمي كذبا وانا لم ارسلهم * الذين يقولون لا يكون
سيف وجوع على هذه الارض * بموت صعب يموتون وبجوع يهلكون الانبياء * والشعب 16
الذين يتنبون لهم بهذا * ويصيرون مطرحين في مسالك اورشليم من وجه السيف والجوع
ولا يكون من يدفنهم * [هم] ونساوهم وبنوهم وبناتهم * واسكب عليهم شرورهم * وتقول لهم هذا 17
القول * اهملوا من عيونكم دموعا نهارا وليلا ولا تكف * لان بانكسار انكسرت ابنة
شعبي * وبضربة موجعة جدا * ان خرجت الى الصحراء فها جرحا السيف * وان دخلت الى 18
المدينة فها وجع الجوع * لان الكاهن والنبي سلكوا طريقا لم يعرفوها * هل رذلت يهوذا 19
رذالا * ومن صهيون تباعدت نفسك * لماذا سقطنا ولم يكن لنا شفا * رجونا سلامة ولم
يكن لنا خير * واذا اضطراب في زمن الشفا * علمنا يا رب خطايانا وظلم ابائنا * لانا 20
اخطانا امامك * كف لاجل اسمك * لا تهلك كرسي مجدك * اذكر لا تبطل عهدك 21
معنا * ليس في الهة الامم من يمطر * ولا السما تعطي شبعها * اليس انت هو انت ونرجوك 22
لانك صنعت هذه كلها *

Nam etſi jejunaverint, non exaudiam pe- 12
titionem eorum, & quanvis obtulerint
holocauſta & ſacrificia, non oblectabor e-
is; imo gladio, & fame, ac lue conſum-
pturus ſum eos. Me autem dicente, O qui 13
es, here, Domine, ecce prophetæ eorum
prophetant ac dicunt, Non experiemini
gladium, nec erit fames inter vos; imò
veritatem & pacem daturus ſum ſuper
terram & in loco iſto: Dixit mihi Domi- 14
nus, Prophetæ eorum mendacium prophe-
tant illis in nomine meo, quum nec miſe-
rim eos, neque præceperim eis, neque allo-
cutus ſim eos: prophetant enim viſiones
falſas, aſtrologiam, auguria, & commenta
cordium ſuorum. Idcirco ſic ait Domi- 15
nus de prophetis qui falſò prophetant in
nomine meo, quos ego non miſi, qui dicunt
neque gladium neque famem futuram in
hac terra; Atroci morte morientur, et fa-
me peribunt tam prophetæ, Quàm po- 16
pulus cui talia prophetant: eruntque pro-
jecti in vicis Jeruſalem præ gladio et fa-
me, nec erit qui ſepeliat eos; ipſi inquam
& uxores, & filii filiæque illorum: et ef-
fundam ſuper eos ſcelera ipſorum. Hunc 17
etiam ſermonem dices eis, Profundite ex
oculis veſtris lachrymas diu noctúque in-
ceſſanter, quia fractione confracta eſt filia
populi mei & percuſſione admodum dolo-
rificâ. Si exeam in deſertum, ecce gla- 18
dio vulnerati; ſin autem urbem ingrediar,
ecce dolor famis: quia tam ſacerdos,
quàm propheta ambulaverunt in via
quam ignorabant. Nam penitùs deteſta- 19
tus es Judam, & à Sione abalienatus eſt
animus tuus? quare cecidimus, nec ſu-
pereſt nobis curatio? ſperavimus pacem,
nec ullum nobis adeſt bonum; ſed ecce
turbatio in tempore curationis? Cognovi- 20
mus O Domine, peccata noſtra & perver-
ſitatem patrum noſtrorum, quòd coram
te peccaverimus. Abſtine propter nomen 21
tuum, ne perdas ſolium gloriæ tuæ: re-
cordare, ne irritum facias fœdus tuum
nobiſcum. Non eſt inter deos gentium 22
qui pluviam demittat, neque cœlum dat
ſaturitatem ſuam: nonne tu ipſe es,
téque expectaremus, quum tu feceris hæc
omnia?

CAP. XV. טו

non ,*meas facies* ad Semuel & , Moſcheh *ſteterit* Si:me ad Dominus dixit Et
1 ויאמר יהוה אלי אם־יעמד משה ושמואל לפני אין
,erit Et.egrediātur&,*meis facieb⁹ aſuper* Emitte.iſtum populum ad mea *anima*
2 נפשי אל־העם הזה שלח מעל־פני ויצאו: והיה
dixit Sic : eos ad dices & ? egrediemur Quò : te ad dixerint *cùm*
כי־יאמרו אליך אנה נצא ואמרת אליהם כה־אמר
;gladium ad ,gladium ad qui & : mortem ad ,mortem ad Qui ,Dominus
יהוה אשר למות למות ואשר לחרב לחרב
.captivitatem ad,captivitatem ad qui & : famem ad ,famem ad qui &
ואשר לרעב לרעב ואשר לשבי לשבי:
Gladium : Dominus dixit , *genera* quatuor eis *ſuper viſitabo* Et
3 ופקדתי עליהם ארבע משפחות נאם־יהוה את־החרב
& , cœlorum *volatile* & ,trahendum ad canes & ,occidendum ad
להרג ואת־הכלבים לסחב ואת־עוף השמים ואת־
commotionē in eos dabo Et.*corrumpendū ad & edendum* ad terræ *beſtiam*
4 בהמת הארץ לאכל ולהשחית: ונתתים לזועה
regis Jechizchijahu filiū Menaſſeh propter , terræ regnis univerſis
לכל ממלכות הארץ בגלל מנשה בן־יחזקיהו מלך
te ſuper indulgebit quis Quia .Jeruſalaim in fecit quæ *ſuper* , Jehudah
5 יהודה על אשר־עשה בירושלם: כי מי־יחמל עליך
pacem *ad* poſtulandū ad *recedet* quis & ? tibi condolebit quis & ?Jeruſalaim
ירושלם ומי ינוד לך ומי יסור לשאל לשלם
extendam & ,abiiſti retrorſum,Dominus dicit ,me dereliquiſti Tu *? tibi*
6 לך: את נטשת אתי נאם־יהוה אחור תלכי ואט
eos diſpergam Et .*pœnitere ſum laſſus* ,te *corrumpam* & ,te ſuper meam manū
7 את־ידי עליך ואשחיתך נלאיתי הנחם: ואזרם
, meum populum perdidi , orbavi : terræ portas in ventilabro in
במזרה בשערי הארץ שכלתי אבדתי את־עמי
:mariū arena præ ejus viduæ mihi *Denſuere*.ſunt reverſi non ſuis viis à
8 מדרכיהם לוא שבו: עצמו־לי אלמנותו מחול ימים
feci cadere : meridie in vaſtatorem *electi matrem* ſuper eos ad adduxi
הבאתי להם על־אם בחור שדד בצהרים הפלתי
,ſeptem *pariens* eſt Infirmata .*terrores & civitatem* repentè eam ſuper
9 עליה פתאם עיר ובהלות: אמללה ילדת השבעה
,eſt affecta pudore : die adhuc *in* ejus ſol *eſt ingreſſus*,ejus anima *anhelavit*
נפחה נפשה באה שמשה בעד יומם בושה
ait ,eorum *inimicorū facies ad* dabo gladium in ejus reſiduum &:erubuit &
וחפרה ושאריתם לחרב אתן לפני איביהם נאם־
virum & , *litis* virum me genuiſti quia,mea mater mihi Væ .Dominus
10 יהוה: אוי־לי אמי כי ילדתני איש ריב ואיש
,*me in* ſunt fœnerati nec ,ſum fœneratus non : terra univerſa in *contentionis*
מדון לכל־הארץ לא־נשיתי ולא־נשו־בי
:bonū in *tuum reſiduum* non Si : Domin⁹ Dixit .mihi *maledicens ipſe omnis*
11 כלה מקללוני: אמר יהוה אם לא שרותך לטוב
anguſtiæ tempore in &,malo tempore in *te in* feci occurrere non ſi
אם־לוא הפגעתי בך בעת־רעה ובעת צרה את־
tuam Facultatē ? æs & Aquilone ab ferrum ferrum cōteret Numquid .inimicū
12 13 האיב: הירע ברזל ברזל מצפון ונחשת: חילך
omnia propter & : pretio *in* non ,dabo direptionem in tuos theſauros &
ואוצרותיך לבז אתן לא במחיר ובכל־
tuos inimicos faciam tranſire Et .tuis terminis omnib⁹ in &,tua peccata
14 חטאותיך ובכל־גבוליך: והעברתי את־איביך
vos ſuper , meo *naſo* in eſt ſuccenſus ignis quia : nôſti non terram in
בארץ לא ידעת כי־אש קדחה באפי עליכם
vindica & ,me viſita &,mei recordare,Domine nôſti Tu .ardebit
15 תוקד: אתה ידעת יהוה זכרני ופקדני והנקם
.opprobrium te propter *me ferre* ſcito :me-ſuſcipias tui furoris longanimitate in ne , meis *perſecutoribus* de me
לי מרדפי אל־לארך אפך תקחני דע שאתי עליך חרפה:

Verſio VULG. LAT.

CAP. XV.

1 ET dixit Dñs ad me ; Si ſteterit
Moyſes & Samuel coram me,non
eſt anima mea ad populū iſtum :
ejice illos à facie mea,& egredi-
2 antur. Quòd ſi dixerint ad te;Quò
egrediemur?dices ad eos;Hæc di-
cit Dñs;Qui ad morté, ad morté:
& qui ad gladiū,ad gladium : &
qui ad famē, ad famem:& qui ad
3 captivitaté, ad captivitatem. Et
viſitabo ſup eos quatuor ſpecies,
dicit Dñs;Gladium ad occiſionē,
& canes ad lacerandū,& volati-
lia cœli & beſtias terræ ad devo-
4 randum & diſſipandū. Et dabo
eos in fervorem univerſis regnis
terræ:propter Manaſſen filiū Eze-
chiæ regis Juda,ſup omnibus quæ
5 fecit in Jeruſalé. Quis enim miſe-
rebitur tuî,Jeruſalē?aut quis con-
triſtabitur pro te?aut quis ibit ad
6 rogandum pro pace tua?Tu reli-
quiſti me, dicit Dñs;retrorſū ab-
iiſti:& extendā manū meam ſup
te, & interficiam te:laboravi ro-
7 gans. Et diſpergā eos ventilabro
in portis terræ : interfeci & diſ-
perdidi populū meum, & tamen
8 à viis ſuis non ſunt reverſi. Multi-
plicatæ ſunt mihi viduæ ejus ſup
arenā maris:induxi eis ſuper ma-
trem adoleſcentis vaſtatoré me-
ridie : miſi ſup civitates repentè
9 terroré. Infirmata eſt quæ peperit
ſepté, defecit anima ejus:occidit
ei Sol,cùm adhuc eſſet dies:con-
fuſa eſt,& erubuit:& reſiduos e-
jus in gladium dabo in conſpectu
10 inimicorū eorū,ait Dñs. Væ mihi,
mater mea:quarè genuiſti me,vi-
rum rixæ, virū diſcordiæ in uni-
verſa terra ? non fœneravi, nec
fœneravit mihi quiſquā : omnes
11 maledicunt mihi. Dicit Dñs ; Si
non reliquiæ tuæ in bonū, ſi non
occurri tibi in tempore afflictio-
nis, & in tempore tribulationis
12 adverſùs inimicū. Numquid fœ-
derabitur ferrū ferro ab Aquilo-
13 ne,& æs?Divitias tuas & theſau-
ros tuos in direptionē dabo gra-
tìs,in omnib⁹ peccatis tuis, & in
14 omnib⁹ terminis tuis. Et adducā
inimicos tuos de terra, quam ne-
ſcis:quia ignis ſuccenſ⁹ eſt in fu-
15 rore meo, ſuper vos ardebit. Tu
ſcis,Dñe,recordare meî,& viſita
me;& tuere me ab his qui perſe-
quuntur me, noli in patientia tua
ſuſcipere me : ſcito quoniā ſuſti-
nui propter te opprobrium.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ιε΄.

1 ΚΑὶ εἶπε κύριος πρός με, Ἐὰν στῇ Μω-
σῆς καὶ (α) Σαμουὴλ πρὸ προσώπου μου, οὐκ
ἔστιν ἡ ψυχή μου πρὸς αὐτούς. ἐξαπόστειλον
2 τὸν λαὸν τοῦτον, καὶ (β) ἐξελθέτωσαν. Καὶ ἔσται
ἐὰν εἴπωσι πρὸς σέ, Ποῦ ἐξελευσόμεθα; καὶ
ἐρεῖς πρὸς αὐτούς, Τάδε λέγει κύριος (γ),
Ὅσοι εἰς θάνατον, εἰς θάνατον· καὶ ὅσοι εἰς
μάχαιραν, εἰς μάχαιραν· καὶ ὅσοι εἰς λι-
μόν, εἰς λιμόν· καὶ ὅσοι εἰς αἰχμαλωσίαν,
3 εἰς αἰχμαλωσίαν. Καὶ ἐκδικήσω ἐπ᾽ αὐτοὺς
(′) τέσσαρα εἴδη, λέγει κύριος· τὴν μάχαι-
ραν εἰς σφαγήν, καὶ τοὺς κύνας εἰς διασπα-
σμόν, καὶ τὰ θηρία τῆς γῆς, καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ
4 οὐρανοῦ εἰς βρῶσιν καὶ (″) διαφθοράν. Καὶ πα-
ραδώσω αὐτοὺς εἰς ἀνάγκας πάσαις ταῖς βα-
σιλείαις τῆς γῆς, διὰ Μανασσῆ υἱὸν (δ) Ἐζε-
κίου βασιλέως Ἰούδα, περὶ πάντων ὧν ἐποί-
5 ησεν ἐν Ἱερουσαλήμ. Τίς φείσεται ἐπὶ σοὶ
Ἱερουσαλήμ; καὶ τίς δειλιάσει ἐπὶ σοί; ἢ τίς
6 ἀνακάμψει εἰς εἰρήνην σοι; Σὺ ἀπεστράφης
με, λέγει κύριος, ὀπίσω (ε) πορεύσῃ· καὶ ἐκ-
τενῶ τὴν χεῖρά μου (ζ), καὶ διαφθερῶ σε, καὶ
7 οὐκέτι ἀνήσω αὐτούς. Καὶ (η) διασπερῶ αὐ-
τοὺς ἐν διασπορᾷ, ἐν πύλαις λαοῦ μου ἠτε-
κνώθησαν, ἀπώλεσαν τὸν λαόν μου διὰ τὰς κα-
8 κίας αὐτῶν. Ἐπληθύνθησαν (θ) αἱ χῆραι αὐ-
τῶν ὑπὲρ τὴν ἄμμον τῆς θαλάσσης· ἐπήγαγον
ἐπὶ μητέρα νεανίσκους, ταλαιπωρίαν ἐν με-
σημβρίᾳ, ἐπέρριψα ἐπ᾽ αὐτὴν ἐξαίφνης τρό-
9 μον καὶ σπουδήν. Ἐκενώθη ἡ τίκτουσα ἑπτά,
ἀπεκάκησεν ἡ ψυχὴ αὐτῆς, ἐπέδυ ὁ ἥλιος
αὐτῇ ἔτι μεσούσης τῆς ἡμέρας, κατῃσχύνθη
καὶ ὠνειδίσθη. τοὺς καταλοίπους αὐτῶν εἰς μά-
χαιραν δώσω ἐναντίον τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν. (ι)
10 Οἴμοι ἐγώ, μῆτερ, ὡς τίνα με ἔτεκες; ἄνδρα
δικαζόμενον, καὶ διακρινόμενον (κ) πάσῃ τῇ
γῇ; οὔτε ὠφέλησα, οὔτε ὠφέλησέ με οὐδείς. ἡ
ἰσχύς μου ἐξέλιπεν ἐν τοῖς καταρωμένοις
11 με. Γένοιτο δέσποτα κατευθυνόντων αὐτῶν εἰ
μὴ παρέστην σοι ἐν καιρῷ τῶν κακῶν αὐ-
τῶν, καὶ ἐν καιρῷ θλίψεως αὐτῶν, εἰς ἀγαθὰ
12 πρὸς τὸν ἐχθρόν. Εἰ γνωσθήσεται σίδηρος,
13 καὶ περιβόλαιον χαλκοῦν ἡ ἰσχύς σου. Καὶ τοὺς
θησαυρούς σου εἰς προνομὴν δώσω ἀντάλ-
λαγμα, διὰ πάσας τὰς (λ) ἁμαρτίας σου,
14 καὶ ἐν πᾶσι τοῖς ὁρίοις σου. Καὶ (μ) κατα-
δουλώσω σε κύκλῳ τοῖς ἐχθροῖς σου, ἐν τῇ
γῇ ᾗ οὐκ ᾔδεις· ὅτι πῦρ ἐκκέκαυται ἐκ τοῦ
15 θυμοῦ μου, ἐφ᾽ ὑμᾶς καυθήσεται. Κύριε μνή-
σθητί μου, καὶ ἐπίσκεψαί με, καὶ (ν) ἀθῴωσόν
με ἀπὸ τῶν καταδιωκόντων με, μὴ εἰς μα-
κροθυμίαν· γνῶθι, ὡς ἔλαβον περὶ σοῦ
ὀνειδισμόν

CAP. XV.

ET dixit Dominus ad me; Si ſteterit Moyſes & Samuel ante faciem meam non eſt anima mea ad eos. Emitte populum (a) iſtum, & egrediantur. Et erit ſi dixerint ad te, quò egrediemur? & dices ad eos; Hæc dicit Dominus; Quicunque ad mortem, ad mortem: & quicunque ad gladium, ad gladium: & quicunque ad famem, ad famem: & quicunque ad captivitatem, ad captivitatem. Et ulciſcar ſuper eos quatuor ſpecies, dicit Dominus: gladium ad occiſionem, & canes ad laniationem; & beſtias terræ, et volatilia cœli, ad comeſtionem, & corruptionem. Et tradam eos in anguſtias omnibus regnis terræ propter Manaſſen filium Ezechiæ regis Juda, pro omnibus quæ fecit in Hieruſalem. Quis parcet ſuper te, Hieruſalē? et quis contriſtabitur ſuper te? aut quis convertet ſe ad pacē tibi? Tu averſata es me, dicit Dñs; retrorſum ibis. Et extendā manum meā, et diſperdam te: & nequaquàm ultrà dimittam eos: Et diſpergam eos in diſperſionem in portu populi mei orbati filiis ſunt, (b) diſperdiderunt populum meum propter malitias ſuas: Multiplicatæ ſunt viduæ eorum ſuper arenam maris: induxi ſuper matrem, (c) adoleſcentes, miſeriam in meridie: miſi ſuper eam repentè tremorem & trepidationem. (d) Vacuata eſt, quæ parit ſeptem: defecit eſt anima ejus: ſubiit Sol, [illegible] adhuc medius dies: confuſa eſt, & maledicta: reliquos eorum in gladium dabo in conſpectu inimicorum ſuorum. Heu me mater, quare genuiſti me virum, qui judicer, et diſcernar omni terræ? Non (e) profui, nec profuit mihi quiſquam. Fortitudo mea defecit in iis, qui maledicunt mihi. Fiat, Domine, dirigentibus illis: ſi non aſtiti tibi in tempore malo [illegible], et in tempore tribulationis eorum in bona contra inimicum. Si cognoſcetur ferrū, et operimentum æneum (f) fortitudo tua? Et theſauros tuos in direptionem dabo, (g) commutationem pro omnia peccata tua, et in cunctis terminis tuis. Et ſervire te faciam in circuitu inimicis tuis, in terra, quam non noviſti: quia ignis accenſus eſt è furore meo: ſuper vos ardebit. Domine, recordare mei: & viſita me, et tuere me ab his qui perſequuntur me, (h) non in longanimitate. Scito, quoniam accepi pro te opprobrium

MS. A. (α) Ἀαρὼν πρὸ προσώπου (β) ἐξελθάτωσαν. (γ) ὁ θεός, (′) τέσσαρα (″) εἰς διαφθοράν. (δ) Ἐζεκία βασιλέ[illegible] μου (ζ) ἐπὶ σέ, (η) διαφθερῶ ἐν διαφθορᾷ, (θ) χῆραι (ι) Οἴμμοι (κ) τῇ γῇ; (λ) κακίας (μ) καταδουλώσουσιν (ν) ἀθῴω[illegible]

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

טו

1 ואמר יי לי אם יקום משה ושמואל למבעי מן קדמי לא רעוא קדמי בעמא הדין שלח
2 מארע בית שכנתי ויגלון: ויהי ארי יימרון לך לאן נגלי ותימר להון כדנן אמר יי
3 דלמותא למותא ודלחרבא לחרבא ודלכפנא לכפנא ודי לשביא לשביא: ואסער עליהון
ארבע פורענין בישן אמר יי ית דקטלין בחרבא למקטל וית כלביא לגררא וית עופא
4 דשמיא וית בעירא דארעא למיכל ולחבלא: ואתנינון לזיע לכל מלכות ארעא על דלא
5 תבו כמנשה בר יחזקיה מלך שבטא דבית יהודה על דאסני למעבד בירושלם: ארי מן
6 יחוס עלך ירושלם ומן ידוי עלך ומן יזור למשאל לשלמא לך: את שבקת פולחני אמר
יי לאחורא אסתחרת וארים ית מחת גבורתי עלך ואחבלנך על דהוית יכלא למתב ולא
7 תברת: וכמא דדרן במדיריא כן אבדר ית עמי בקרוי ארעא תכלית אבדית ית עמי
8 מארחתהון לא תבו: סגיאת קדמי ארמלתהון מחל יממין איתיתי עליהון על סיעת
9 עולימיהון בזוזין כד בטהרא איתיתי עליהון משרין בתכף וחבילא קרויהון: צדיאת
ארעהון מבלי עמא הוו למפחת נפש גלא יקרהון בחייהון ועד דאנין קימין בהיתו
10 ואתכנעו ושארהון לחרבא אמסר קדם בעלי דבביהון אמר יי: ווי לי אמי ארי ילידתני
למהוי גבר דין ואנש מצו לכל יתבי ארעא לא רשן בי ומא דאנא רשינא לא תבע מנהון
11 כלהון מלטטין לי: אמר יי אם לא סופך יהי לטב אם לא ייתון ויבעון מנך בעדן דאיתי
12 עליהון סנאה ויעיק להון בעיל דבבא: מלך דתקיף כברזלא יסק לסעד מלך דתקיף
13 כברזלא וכנחשא יתי מצפונא עלה לתברה: נכסיכון ובית גנזיכון לביזא אמסר לא
14 בדמין בחובין דהויתון פלחין לטעותא ובכל תחומיכון: ותשתעבדון לבעלי דבביכון
15 בארעא דלא ידעתון ארי קדום תקיף כאשתא נפק מן קדמי ברגז עליכון יחול: אתגלי
קדמך יי יעול דוכרני ופקדני לאוטבא לי ואסער על בעלי דבבי ואתפרע לי מרדפי לא
התן ארכא לעלבני גלי קדמך דקבלית חסודין על מימרך:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XV.

ET dixit Dñs ad me: Si ſteterint Moyſes & Samuel ad deprecādū in cōſpectu meo, non eſt mihi beneplacitū in populo iſto. Mitte eos de terra dom⁹ majeſtatis meæ, ut tranſmigrēt. Et erit, cùm dixerint tibi: Quò migrabimus? & dices ad eos: Hæc dicit Dñs; Qui ad morté ad mortem: & qui ad gladiū ad gladiū: & qui ad famé, ad famē: & qui ad captivitaté, ad captivitatem. Et viſitabo ſup eos quatuor ultiones peſſimas, dicit Dñs: Occiſores gladii ad occidendū, & canes ad dilacerandū; & aves cœli & beſtias terræ ad comedendū & ad diſſipandū. Et dabo eos in commotioné omnib⁹ regnis terræ, eò ꝙ non ſunt converſi ſicut Manaſſes fili⁹ Ezechiæ regis trib⁹ dom⁹ Juda, propter multa [*mala*] quæ fecit in Jeruſalē. Quis enim miſerebitur tui Jeruſalē? aut quis contriſtabitur ſup te? & quis divertet ad ſalutandū te? Tu deſeruiſti cultū meū, dicit Dñs; retrorſū converſa es: & levabo plagam fortitudinis meæ ſuper te, & diſperdam te, eò quòd poteras converti, & non es converſa. Et ſicut ventilāt in ventilabris, ſic diſpergā populū meum per civitates terræ: orbavi liberis & diſperdidi populum meū: à ſemitis ſuis non ſunt converſi. Multiplicatæ ſunt corā me viduæ eorū plus quam arena mariū: induxi ſup eos ſup cœtū adoleſcentū eorū, deprædatores velut meridie: induxi ſup eos repentè exercitū, & diſſipavit civitates eorū. Deſerta eſt terra eorū abſq; populo: fuerūt in exhalationē animæ, migravit gloria eorū in vita eorū: & interea dū ipſi ſtār, confuſi ſunt, & erubuerūt. Et reſiduos eorū gladio tradā corā inimicis eorū, dicit Dñs. Væ mihi mater mea quia progenuiſti me ut ſim vir litis, & homo contētionis omnib⁹ habitatorib⁹ terræ. Null⁹ fœneravit mihi, & nihil ex his quæ mutuavi ego, quæro [illegible] eis: oēs maledicūt mihi. Dicit Dñs: Si non finis tu⁹ erit in bonū, ſi non veniēt & deprecabūtur te in tēpore quo adduxero ſup eos hoſtē, & arctav[illegible] eos inimic⁹. Et rex qui fortis eſt ſicut ferrū, aſcēdet ut fulciat regē rob[illegible] ſicut ferrū & ſicut æs, veniet ab Aquilone cōtra eā ut cōterat eā. Subſtantiā eorū & domū theſaurorū eorū in direptionē tradā, non in pretio, [illegible] pro peccatis, quib⁹ colebatis idola, *etiā* in omnib⁹ terminis veſtris. Et [illegible] inimicis veſtris in terra quam ignorabatis. Quia vent⁹ fortis [illegible] quaſi ignis egreſſ⁹ eſt à facie mea in furore, & ſuper vos reſidebit. Manifeſtum eſt coram te Dñe, veniat mei recordatio, & viſita me, ut benefacias mihi, & viſita ſuper inimicos meos, & ulciſcere me à perſequentib⁹ me, ne [illegible] dilationem injuriæ meæ : manifeſtum eſt enim coram te, quod ſuſceperim opprobria propter verbum [illegible]

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܦܘܠܓܐ * ܝܗ * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܐܢ ܢܩܘܡ ܡܘܫܐ ܘܫܡܘܐܝܠ ܩܕܡܝ.
ܠܐ ܪܥܝܐ ܢܦܫܝ ܒܥܡܐ ܗܢܐ. ܐܦܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܐܦܝ ܘܢܦܩܘܢ. * ܘܐܢ ܢܐܡܪܘܢ ܠܟ ܠܐܝܟܐ
ܢܦܘܩ. ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܠܡܘܬܐ ܠܡܘܬܐ. ܘܕܠܚܪܒܐ ܠܚܪܒܐ. ܘܕܠܟܦܢܐ
ܠܟܦܢܐ. ܘܕܠܫܒܝܐ ܠܫܒܝܐ. * ܘܐܦܩܘܕ ܥܠܝܗܘܢ. ܐܪܒܥ ܡܚܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܣܝܦܐ
ܠܡܩܛܠ. ܘܟܠܒܐ ܠܡܓܪܪ. ܘܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܘܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ ܠܡܐܟܠ ܘܠܡܚܒܠܘ.
* ܘܐܬܠܝܘܢ ܠܙܘܥܬܐ ܠܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܚܛܗܘܗܝ ܕܡܢܫܐ ܒܪ ܚܙܩܝܐ
ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܥܠ ܟܠܡܕܡ ܕܥܒܕ ܒܐܘܪܫܠܡ. * ܡܢܘ ܢܚܘܣ ܥܠܝܟܝ ܐܘܪܫܠܡ.
ܘܡܢܘ ܢܬܟܪܐ ܠܗ ܥܠܝܟܝ. ܘܡܢܘ ܢܬܦܢܐ ܠܡܫܐܠ ܒܫܠܡܟܝ. * ܐܢܬܝ ܫܒܩܬܝܢܝ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. ܘܠܒܣܬܪܟܝ ܐܙܠܬܝ. ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܫܠܡܟܝ ܘܠܘ. ܠܐ ܐܚܘܣ
ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܐܕܪܐ ܐܢܘܢ ܒܡܕܪܝܐ ܒܡܕܝܢܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܐܬܟܠܬ ܘܐܘܒܕܬ ܠܥܡܝ. ܘܡܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ
ܠܐ ܬܒܘ. * ܣܓܝ ܐܪܡܠܬܗܘܢ ܡܢ ܚܠܐ ܕܝܡܐ. ܐܝܬܝܬ ܥܠܝܗܘܢ. ܥܠ ܐܡܐ ܘܥܠ ܥܠܝܡܐ
ܒܙܘܙܐ ܒܛܗܪܐ. ܐܪܡܝܬ ܥܠܝܗܘܢ ܡܢ ܫܠܝܐ ܕܚܘܠܐ ܘܙܘܥܬܐ. * ܐܬܟܪܝܬ ܝܠܕܬ ܫܒܥܐ.
ܢܦܫܗ ܢܦܚܬ. ܥܪܒܬ ܫܡܫܗ ܒܦܠܓܗ ܕܝܘܡܐ. ܒܗܬܬ ܘܐܬܚܦܪܬ. ܘܫܪܟܢܗܘܢ
ܠܚܪܒܐ ܐܫܠܡ ܩܕܡ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܝ ܠܝ ܐܡܝ ܕܝܠܕܬܝܢܝ. ܓܒܪ ܕܝܢܐ
ܘܓܒܪ ܡܟܣܢܐ ܠܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܠܐ ܚܝܒ ܐܢܐ ܘܠܐ ܚܝܒܝܢ ܠܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܡܨܚܝܢ ܠܝ. * ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. ܠܐ ܐܫܒܩܟ ܒܛܒܬܐ. ܐܠܐ ܐܦܓܥ ܒܟ ܒܥܠܕܒܒܐ. ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܒܙܒܢܐ ܕܐܘܠܨܢܐ
ܒܙܒܢܐ ܕܒܝܫܬܐ. * ܕܩܫܐ ܐܝܟ ܦܪܙܠܐ. ܘܐܝܟ ܢܚܫܐ. * ܢܟܣܝܟ ܘܓܙܝܟ. ܘܟܠܗ ܬܚܘܡܝܟ
ܠܒܙܬܐ ܐܬܠ. ܡܛܠ ܚܛܗܝܟ. * ܘܐܫܥܒܕܟ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟ ܒܐܪܥܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܐܢܬ. ܡܛܠ
ܕܢܘܪܐ ܝܩܕܬ ܒܪܘܓܙܝ. ܥܠܝܟܘܢ ܬܐܩܕ. * ܐܢܬ ܡܪܝܐ ܝܕܥܬ ܐܢܬ. ܐܬܕܟܪܢܝ ܘܦܪܘܩܝܢܝ.
ܘܐܬܒܥ ܠܝ ܡܢ ܪܕܘܦܝ. ܠܐ ܒܢܓܝܪܘܬ ܪܘܚܟ ܬܕܒܪܢܝ. * ܕܥ ܕܡܛܠܬܟ ܩܒܠܬ ܚܣܕܐ.

CAP. XV.

Dixit autem mihi Dominus; Etiamſi Moſes & Samuel ſtarent coram me, nequaquam placaretur animus meus erga populum iſtum: ejice eos à facie mea, & exeant. 1
Quòd ſi dixerint tibi, Quò exibimus? dic eis; Sic dicit Dn̄s, Qui ad mortem, ad mortem *exeat*; qui ad gladium, ad gladium; qui ad famem, ad famem; & qui ad captivitatem, ad captivitatem. 2
Animadverſurus enim ſum in eos quatuor flagellis, dicit Dominus; gladio ad interficiendum, canibus ad trahendum, et volatilibus cœli ac beſtiis terræ ad devorandum atq; conſumendum: 3
Denique dabo eos divagationi inter omnia regna terræ, propter ſcelera Manaſſis filii Hezeciæ regis Judæ, ob ea omnia quæ perpetravit in Jeruſalem. 4
Quis tui miſereſceret Jeruſalem? & quis de te doleret? aut quis diverteret ad ſalutandum te? 5
Tu me dereliquiſti, dicit Dn̄s, & retrorſum abiiſti: ideo levabo manum meam contra te, & conſumam te, nec ampliùs parcã illis: 6
Sed ventilabro diſpergam illos per civitates terræ. Orbavi, adeoq; conſumpſi populũ meũ; attamen à viis ſuis non ſunt reverſi. 7
Multiplicabuntur viduæ eorũ pluſquam arena maris: adducam ſuper eos, tam ſuper matrem quàm ſuper adoleſcentes, prædones ipſo meridie: injiciam in eos repentè perturbationem & tremorem: 8
Ejulabit quæ peperit ſeptem, inflabit ventrẽ ſuũ, occidet ſol ejus in medio dierum ejus, erubeſcet & pudefiet; reliquas autem eorum gladio exponã coram hoſtibus eorum, dicit Dominus. 9
Hei mihi mater mea, quod me genueris virum judicem & virum objurgatorẽ in tota terra: non ſum obnoxius, neque ſunt obnoxii mihi, omnes tamen contumelis me afficiunt. 10
Dicit Dominus, Non ſinam te in proſperitate, ſed irruere faciam in te hoſtẽ ex Aquilone, tempore anguſtiæ, tempore calamitatis, 11
Quod duriſſimum erit ſicut ferrũ & ſicut æs. 12
Opes tuas, theſauros tuos, omnéſque terminos tuos direptioni exponam propter peccata tua: 13
Subjiciámque te hoſtibus tuis in terra quam ignoras: quoniam ignis accenſus eſt in ira mea, ſuper vos ardebit. 14
Tu Dn̄e nôſti, recordare mei, et libera me, & ulciſcere me de perſequentib⁹ me: noli me juxta longanimitatẽ tuã protrahere. 15
Agnoſce quòd opprobrium propter te ſuſtinuerim, 16

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الخامس عشر * وقال الرب لي إن قام موسي وهارون امام وجهي لا
تكن نفسي معهم * ارسل هذا الشعب وليخرجوا * وان قالوا لك الي اين نخرج * فقول لهم
هكذا يقول الرب الاله * الذين للموت للموت * والذين للسيف للسيف * والذين للجوع للجوع
والذين للسبي للسبي * واجلب عليهم اربعة انواع يقول الرب * السيف للذبح * والكلاب
للتمسيح * وسباع الارض وطيور السماء للاكل وللفساد * واسلمهم للشدايد في جميع ممالك
الارض * لاجل منسي بن حزقيا ملك يهودا * من اجل ما صنع في ايروسليم * من يشفق عليك
يا ايروسليم * ومن يجزع عليك او يرد لك سلامتك * انت انصرفت عني يقول الرب * سلكت
خلفي * فامد يدي عليك وافسدك * ولا اريحهم بعد * وافسدهم بفساد في ابواب الارض * شعبي
اثكلوا * اهلكوا شعبي لاجل شرورهم * كثرت اراملهم اكثر من رمل البحر جلبت على الام
والشبان شقوة في نصف النهار * طرحت عليها بغتة رعدة ورجفة * افزعت التي تلد سبعة *
توحشت نفسها * غابت الشمس عنها ايضا نصف النهار خزيت وعيرت * سادفع بقاياهم للسيف
امام اعدايهم * الويل لي انا ايتها الام * كيف ولدتني رجلا مقسطا حاكما في الارض * لم
انتفع ولم ينفعني ولا واحد فنيت قوتي بالذين يلعنوني * يكون يا سيد * اذ هم مقومون *
لولا وقفت لك في زمن شرورهم وفي زمن ضيقهم بالخير عند العدو * ايعرف الحديد ورداء
نحاس قوتك * وادفع كنوزك للنهب فداء عن جميع شرورك وفي جميع حدودك لاعدايك
* الذين يستعبدونك من حولك في الارض التي لم تعرفها * لان نارا توقدت من غضبي
تتقد عليكم * الاصحاح العاشر * يا رب اذكرني وتعهدني وزكني من الطاردين لي
لا يطول روحي * اعرف كيف احتملت من اجلك تعييرا

CAP. XV.

Sed dixit mihi Dominus; Etiamſi ſteterint Moſes & Haron ante faciem meam, nequaquam erit animus meus erga iſtos: amanda populum iſtum, & egrediantur. 1
Quòd ſi tibi dicant, Quò egrediemur? dices eis; Sic ait Dominus Deus, Qui ad mortem deſtinati ſunt, *ad mortem* exeunto; *& qui ad gladium, ad gladium; qui ad famem, ad famem; & qui ad captivitatem, ad captivitatem.* 2
Adducam enim ſuper iſtos quatuor genera, dicit Dominus; gladium ad jugulandum, canes ad dilaniandum, & feras terræ atque volatilia cœli ad devorandum & conſumendum: 3
Et exponam eos miſeriis in omnibus regnis terræ, propter Manaſſem filium Hezeciæ regis Judæ, ob ea quæ perpetravit in Jeruſalem. 4
Quis tui miſereatur O Jeruſalem? aut quis ægrè ferat cauſâ tui? aut reſtituat tibi pacem tuam? 5
Tu à me diſceſſiſti, ait Dominus; ambulâſti ex adverſo mei: ideò extendam ſuper te manum meam, & conſumam te, nec requiem dabo illis in poſterum; 6
Sed penitùs corrumpam illos in portis terræ. Populum meum orbabunt, perdent populum meum propter ſcelera ipſius. 7
Multiplicabuntur viduæ eorum pluſquam arena maris: inducam ſuper matrem & juvenes afflictionem ipſo meridie, injiciam in eam repentinum terrorem atque tremorẽ: 8
Vexabo eam quæ parit ſeptenos, ſolitaria fiet anima ejus, occidet ſol ab ea vel ipſo meridie, pudore & ignominiâ afficietur: tradam reliquias eorum gladio coram hoſtibus eorum. 9
Hei mihi O mater, quomodo peperiſti me virum jus atque judicium decernentem in terra, qui nullam percepi utilitatem, & ne unus quidem profuit mihi, ſed conſumptæ ſunt vires meæ in iis qui maledicunt mihi? 10
Contingat O Domine maledictum eorum, *(dummodo ipſi recti ſint) ſi non aſtiti tibi tempore malorum eorum & tempore anguſtiæ ipſorum, in bonum apud inimicum.* 11
Num cognoſceret ferrum aut operimentum æneum potentiam tuam? 12
Quapropter dabo theſauros tuos in direptionem pro omnibus ſceleribus tuis, idque in omnibus terminis tuis, hoſtib⁹ tuis, 13
Qui te ſervitute prement undiq; in terra quam nunquã cognoviſti: nam ignis qui accenſus eſt à furore meo, ſuper vos ardebit. 14

Textus decimus

O Domine, recordare mei, & viſita me, neque inſontem redde à perſequentibus me ſine dilatione. 15
Agnoſce quomodo ſuſceperim cauſâ tui contumelias 16

ירמיה : יו

mihi tuum verbum fuit & : eos comedi & , tui ſermones ſunt Inventi
16 נִמְצְאוּ דְבָרֶיךָ וָאֹכְלֵם וַיְהִי דְבָרְךָ לִי
eſt in vocatum quia : mei cordis lætitiam in & , gaudium in
לְשָׂשׂוֹן וּלְשִׂמְחַת לְבָבִי כִּי־נִקְרָא
Non .exercituum Deus DOMINE , me ſuper tuum nomen
שִׁמְךָ עָלַי יְהוָה אֱלֹהֵי צְבָאוֹת׃ לֹא־ 17
tuæ manus faciebus à : exultavi nec , ludentium *ſecreto* in ſedi
יָשַׁבְתִּי בְסוֹד־מְשַׂחֲקִים וָאֶעְלֹז מִפְּנֵי יָדְךָ
fuit quid Ut .me repleſti *indignatione* quoniam : ſedi ſolus
18 בָּדָד יָשַׁבְתִּי כִּי־זַעַם מִלֵּאתָנִי׃ לָמָּה הָיָה
eſſendo ? curari renuit , deſperata mea plaga & , *perpetuus* meus dolor
כְאֵבִי נֶצַח וּמַכָּתִי אֲנוּשָׁה מֵאֲנָה הֵרָפֵא הָיוֹ
Propterea .*fuere* fideles non , aquæ , mendax velut mihi eris
19 תִהְיֶה לִי כְּמוֹ אַכְזָב מַיִם לֹא נֶאֱמָנוּ׃ לָכֵן
, te convertam & , fueris converſus Si : DOMINUS dixit ſic
כֹּה־אָמַר יְהוָה אִם־תָּשׁוּב וַאֲשִׁיבְךָ
meum os tanquam , *ſordido à* pretioſum eduxeris ſi & : ſtabis *meas facies ad*
לְפָנַי תַּעֲמֹד וְאִם־תּוֹצִיא יָקָר מִזּוֹלֵל כְּפִי
.eos ad converteris non tu & , te ad ipſi convertentur : eris
תִהְיֶה יָשֻׁבוּ הֵמָּה אֵלֶיךָ וְאַתָּה לֹא־תָשׁוּב אֲלֵיהֶם׃
bellabunt & , munitum , *æris* murum in huic populo te dabo Et
20 וּנְתַתִּיךָ לָעָם הַזֶּה לְחוֹמַת נְחֹשֶׁת בְּצוּרָה וְנִלְחֲמוּ
, te *ſervandum ad* *ego* tecum quia : tibi prævalebunt non & , te contra
אֵלֶיךָ וְלֹא־יוּכְלוּ לָךְ כִּי־אִתְּךָ אֲנִי לְהוֹשִׁיעֲךָ
: peſſimorum manu de te eruam Et .DOMINUS dixit, te *eruendum* &
21 וּלְהַצִּילֶךָ נְאֻם־יְהוָה׃ וְהִצַּלְתִּיךָ מִיַּד רָעִים
.*terribilium vola* de te redimam &
וּפְדִתִיךָ מִכַּף עָרִיצִים׃

CAP. XVI. יו

, uxorem tibi accipies Non : dicendo , me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ לֹא־תִקַּח לְךָ אִשָּׁה
2 dixit ſic Quia .iſto loco in filiæ & filii tibi erunt nec
3 וְלֹא־יִהְיוּ לְךָ בָּנִים וּבָנוֹת בַּמָּקוֹם הַזֶּה׃ כִּי־כֹה אָמַר
loco in *natos* filias ſuper & filios Super : Dominus
יְהוָה עַל־הַבָּנִים וְעַל־הַבָּנוֹת הַיִּלּוֹדִים בַּמָּקוֹם
eorum patres ſuper & , eos *parientes* eorum matres ſuper & ; iſto
הַזֶּה וְעַל־אִמֹּתָם הַיֹּלְדוֹת אוֹתָם וְעַל־אֲבוֹתָם
ægrotationum Mortibus .iſta terra in eos *generantes*
4 הַמּוֹלִדִים אוֹתָם בָּאָרֶץ הַזֹּאת׃ מְמוֹתֵי תַחֲלֻאִים
ſuper ſterquilinium in ; ſepelientur neque , plangentur non , morientur
יָמֻתוּ לֹא יִסָּפְדוּ וְלֹא יִקָּבֵרוּ לְדֹמֶן עַל־
erit & , conſumentur fame in & gladio in & : erunt *humi* *facies*
פְּנֵי הָאֲדָמָה יִהְיוּ וּבַחֶרֶב וּבָרָעָב יִכְלוּ וְהָיְתָה
Nam .terræ *animali* & , cœlorum *volatili* eſcam in eorum *cadaver*
5 נִבְלָתָם לְמַאֲכָל לְעוֹף הַשָּׁמַיִם וּלְבֶהֱמַת הָאָרֶץ׃ כִּי־
vadas nec , *feralis epuli* domum ingrediaris Ne : Dominus dixit ſic
כֹה אָמַר יְהוָה אַל־תָּבוֹא בֵּית מַרְזֵחַ וְאַל־תֵּלֵךְ
à meam pacem *collegi* quia : eis *commovearis* neque , plangendũ ad
לִסְפּוֹד וְאַל־תָּנֹד לָהֶם כִּי־אָסַפְתִּי אֶת־שְׁלוֹמִי מֵאֵת
.miſerationes & , miſericordiam , Dominus dixit , iſto populo
הָעָם הַזֶּה נְאֻם־יְהוָה אֶת־הַחֶסֶד וְאֶת־הָרַחֲמִים׃
nec : ſepelientur non , hac terra in parvi & magni morientur Et
6 וּמֵתוּ גְדֹלִים וּקְטַנִּים בָּאָרֶץ הַזֹּאת לֹא יִקָּבֵרוּ וְלֹא־
expandent non Et .*eis decalvabitur* neque , *incidetur* *nec* , eos plangent
7 יִסְפְּדוּ לָהֶם וְלֹא יִתְגֹּדַד וְלֹא יִקָּרֵחַ לָהֶם׃ וְלֹא־יִפְרְסוּ
potu dabunt neque : mortuo ſuper *eum* conſolandũ ad luctum ſuper *ſibi*
לָהֶם עַל־אֵבֶל לְנַחֲמוֹ עַל־מֵת וְלֹא־יַשְׁקוּ
.ſua matre ſuper & , ſuo patre ſuper , conſolationum calicem eis
אוֹתָם כּוֹס תַּנְחוּמִים עַל־אָבִיו וְעַל־אִמּוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

16 Inventi ſunt ſermones tui, & comedi eos, & factum eſt mihi verbum tuum in gaudium & in lætitiam cordis mei: quoniam invocatum eſt nomen tuum ſuper me, Domine Deus exercituum. 17 Non ſedi in concilio ludentium, & gloriatus ſum à facie manûs tuæ: ſolus ſedebam, quoniam 18 comminatione replêſti me. Quarè factus eſt dolor meus perpetuus, & plaga mea deſperabilis renuit curari? facta eſt mihi quaſi mendacium aquarum infi-19 delium. Propter hoc hæc dicit Dominus; Si convertêris, convertam te, & ante faciem meam ſtabis: & ſi ſeparaveris pretioſum à vili, quaſi os meum eris: convertentur ipſi ad te, & tu 20 non convertêris ad eos. Et dabo te populo huic in murum æreum, fortem: & bellabunt adverſùm te, & non prævalebunt: quia ego tecum ſum ut ſalvem te, & eruam te, dicit Dominus. 21 Et liberabo te de manu peſſimorum, & redimam te de manu fortium.

CAP. XVI.

1 ET factum eſt verbum Domi-2 ni ad me, dicens; Non accipies uxorem, & non erunt tibi fi-3 lii & filiæ in loco iſto. Quia hæc dicit Dominus ſuper filios & filias, qui generantur in loco iſto, & ſuper matres eorum, quæ genuerunt eos: & ſuper patres eorum, de quorum ſtirpe ſunt 4 nati in terra hac; Mortibus ægrotationum morientur: non plangentur, & non ſepelientur, in ſterquilinium ſuper faciem terræ erunt: & gladio & fame conſumentur: & erit cadaver eorum in eſcam volatilibus cœli, 5 & beſtiis terræ. Hæc enim dicit Dominus; Ne ingrediaris domum convivii, neque vadas ad plangendum, neque conſoleris eos: quia abſtuli pacem meam à populo iſto, dicit Dominus; miſericordiam & miſerationes. 6 Et morientur grandes & parvi in terra iſta: non ſepelientur neque plangentur, & non ſe incîdent, neque calvitium fiet pro 7 eis. Et non frangent inter eos lugenti panem ad conſolandum ſuper mortuo: & non dabunt eis potum calicis ad conſolandum ſuper patre ſuo & matre.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

16 Ὑπὸ τῶν ἀθετούντων τοὺς λόγους σου· συντέλεσον αὐτούς. καὶ ἔσται ὁ λόγος σου ἐμοὶ εἰς εὐφροσύνην καὶ χαρὰν καρδίας μου, ὅτι ἐπικέκληται τὸ ὄνομά σου ἐπ᾽ ἐμοὶ κύριε 17 παντοκράτωρ. Οὐκ ἐκάθισα ἐν συνεδρίῳ αὐτῶν παιζόντων, ἀλλὰ εὐλαβούμην ἀπὸ προσώπου χειρός σου· κατὰ μόνας ἐκαθή-18 μην, ὅτι πικρίας ἐνεπλήσθην. Ἱνατί οἱ λυποῦντές με κατισχύουσί μου; ἡ πληγή μου στερεὰ, πόθεν (ξ) ἰαθήσομαι; γινομένη ἐγενήθη μοι ὡς ὕδωρ ψευδὲς, οὐκ ἔχον πίστιν. 19 Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἐὰν ἐπιστρέψῃς, καὶ ἀποκαταστήσω σε, καὶ πρὸ προσώπου μου στήσῃ· καὶ ἐὰν ἐξαγάγῃς τίμιον (ο) ἀπὸ ἀναξίου, ὡς τὸ στόμα μου ἔσῃ· καὶ ἀναστρέψουσιν αὐτοὶ πρὸς σὲ, καὶ σὺ οὐκ ἀνα-20 στρέψεις πρὸς αὐτούς. Καὶ δώσω σε τῷ λαῷ τούτῳ, ὡς τεῖχος ὀχυρὸν, χαλκοῦν· καὶ (π) πολεμήσουσι πρὸς σὲ, καὶ οὐ μὴ δύνωνται πρὸς σὲ, διότι μετὰ σοῦ εἰμι τοῦ σώ-21 ζειν σε, Καὶ (ρ) τοῦ ἐξαιρεῖσθαί σε ἐκ χειρὸς πονηρῶν, καὶ λυτρώσομαί σε ἐκ χειρὸς λοιμῶν.

Ab his qui reprobant ſermones tuos: conſumma eos. Et erit mihi verbum tuum in lætitiam, & gaudium cordis mei: quoniam invocatum eſt nomen tuum ſuper me, Domine omnipotens. Non ſedi in conſeſſu (i) illorum ludentium: ſed metuebam à facie manus tuæ. Solus ſedebam; quoniam amaritudine repletus ſum. Ut quid qui contriſtant me, prævalent adverſum me? Plaga mea ſolida eſt: unde ſanabor? Dum fit, facta eſt mihi quaſi aqua mendax, non habens fidem. Ideò hæc dicit Dominus; Si reverteris, & reſtituam te, & ante faciem meam ſtabis. Et, ſi eduxeris pretioſum à vili; quaſi os meum eris. Et convertentur ipſi ad te: & tu non converteris ad eos. Et dabo te populo iſto, quaſi murum munitum, æneum: & bellabunt adverſum te, & non poterunt adverſum te: quia tecum ſum, ut ſalvem te: Et eruam te de manu peſſimorum, & redimam te de manu peſtilentium.

MS.A. (ξ) ἰάσομαι; γινομένη μοι ἐγενήθη ὡς ὕδωρ * ψευδὲς, οὐκ ἔχον πίστιν. (ο) ἀπὸ ἀξίου, ὡς στόμα (π) πολεμήσουσίν σε, (ρ) ἐξερεῖσθαι

ΚΕΦ. ιϛʹ.

2 1 ΚΑὶ σὺ μὴ λάβῃς γυναῖκα, λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, 2 Καὶ οὐ γεννηθήσεταί σοι υἱὸς, οὐδὲ θυγάτηρ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ. 3 Ὅτι τάδε λέγει κύριος περὶ τῶν υἱῶν (α) καὶ περὶ τῶν θυγατέρων τῶν γεννωμένων ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, καὶ περὶ τῶν μητέρων αὐτῶν τῶν τετοκυιῶν αὐτοὺς, καὶ περὶ τῶν πατέρων αὐτῶν τῶν γεγεννηκότων αὐτοὺς ἐν τῇ γῇ ταύ-4 τῃ, Ἐν θανάτῳ νοσερῷ ἀποθανοῦνται, οὐ κοπήσονται, (β) καὶ οὐ ταφήσονται· εἰς παράδειγμα ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς ἔσονται· καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς (γ) ἔσονται καὶ τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ· ἐν (δ) μαχαίρᾳ πεσοῦνται, καὶ ἐν λιμῷ συντελεσθήσονται. 5 Τάδε λέγει κύριος, Μὴ εἰσέλθῃς εἰς θίασον αὐτῶν, καὶ μὴ πορευθῇς τοῦ κόψασθαι, (ε) καὶ μὴ πενθήσῃς αὐτοὺς, ὅτι (ζ) ἀφέστακα τὴν εἰρήνην μου ἀπὸ τοῦ λαοῦ τούτου. 6 Οὐ μὴ (ʺ) κόψονται αὐτοὺς, οὐδὲ ἐντομίδας οὐ μὴ ποιήσουσι, (η) καὶ οὐ ξυρηθήσονται, 7 Καὶ οὐ μὴ κλασθῇ ἄρτος ἐν πένθει αὐτῶν εἰς παράκλησιν ἐπὶ τεθνηκότι· οὐ ποτιοῦσιν αὐτὸν ποτήριον εἰς παράκλησιν ἐπὶ πατρὶ (θ) καὶ μητρὶ αὐτοῦ.

CAP. XVI.

ET tu ne accipias uxorem, Dicit Dominus Deus Iſrael, Et non gignetur tibi filius, neque filia in loco iſto. Quia hæc dicit Dominus de filiis, & de filiabus, qui naſcuntur in loco iſto, & de matribus eorum, quæ pepererunt eos, & de patribus eorum, qui genuerunt eos in terra iſta; In morte morboſa morientur: non plangentur, & non ſepelientur: in exemplum ſuper faciem terræ erunt: (a) & beſtiis terræ erunt, & volatilibus cœli: in gladio cadent, & in fame conſummabuntur. Hæc dicit Dominus, Ne ingrediaris in (b) thiaſum eorum, & non vadas ad plangendum, neque lugeas eos: quia abſtuli pacem meam à populo (c) iſto: Non plangent ſe, neque inciſiones facient, neque radentur, Neque frangetur panis in luctu eorum in conſolationem ſuper mortuum: non dabunt ei potum calicis in conſolationem ſuper patrem, & matrem ejus.

MS.A. (α) καὶ τῶν (β) οὐδὲ (γ) καὶ τοῖς (δ) μαχαίρῃ (ε) καὶ [illegible] (ζ) ἀφέστηκα (ʺ) κόψωνται (η) οὐδὲ μὴ ξυρήσονται, (θ) αὐτοῦ ἢ ἐπὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 קַבֵּלִית לְפִתְגָמָךְ וְקַיֵּמְתִּנוּן וַהֲוָה מֵימְרָךְ לִי לְבִיעַ וּלְחֶדְוַת לִבִּי אֲרֵי אִתְקְרֵי שְׁמָךְ עֲלַי
17 יְיָ אֱלֹהִים צְבָאוֹת׃ לָא יְתֵבִית בְּסִיעַת מְשַׁבְּחִין וְלָא חֲדֵיתִי מִן קֳדָם מֵימְרָךְ פְּרִישׁ
18 יְתֵבִית אֲרֵי נְבוּאָה דִּלְוָט מַלֵּיתָנִי׃ לְמָה הֲוָה כֵּיבִי לְאַפְרֵשׁ וּמַחְתִּי תַקִּיפָא לְמִסְרְבָא
19 לְאִתַּסָּאָה לָא יְהֵי מֵימְרָךְ לִי כַּדְבִין כְּמַבּוּעַ דְּמַיִן דִּפְסְקִין מוֹהִי׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
אִם תְּתוּב וְאֲתִיבִנָּךְ קֳדָמַי תְּשַׁמֵּשׁ וְאִם תְּתִיב רַשִׁיעַיָּא לְמֶהֱוֵי צַדִּיקַיָּא רְעוּת מֵימְרִי
20 תְּקַיֵּם יְתוּבוּן אִנּוּן לְפִתְגָמָךְ וְאַתְּ לָא תְתוּב לְמִטְעֵי בָּתְרֵיהוֹן׃ וְאֶתְּנִנָּךְ לְעַמָּא הָדֵין
כְּשׁוּר דִּנְחָשׁ כְּרִיךְ וִיגִיחוּן לְקִבְלָךְ וְלָא יִכְלוּן לָךְ אֲרֵי בְּסַעֲדָךְ מֵימְרִי לְמִפְרְקָךְ
21 וּלְשֵׁיזָבוּתָךְ אֲמַר יְיָ׃ וְאֶשֵׁיזְבִנָּךְ מִיַּד מַבְאֲשִׁין וְאֶפְרְקִנָּךְ מִיַּד תַּקִּיפִין׃

יו

1 2 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר׃ לָא תִסַּב לָךְ אִתְּתָא וְלָא יְהוֹן לָךְ בְּנִין
3 וּבְנָן בְּאַתְרָא הָדֵין׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ עַל בְּנִין וְעַל בְּנָן דְּמִתְיַלְּדִין בְּאַתְרָא הָדֵין וְעַל
4 אִמְּהָתְהוֹן דִּילְדָן יָתְהוֹן וְעַל אֲבָהַתְהוֹן דְּמוֹלְדִין יָתְהוֹן בְּאַרְעָא הָדָא׃ מִמּוֹת מַמְרְעֵי
כַּפְנָא יְמוּתוּן לָא יִסְתַּפְדוּן וְלָא יִתְקַבְּרוּן לִזְבַל מְבַדַּר עַל אַפֵּי אַרְעָא יְהוֹן וּבְחַרְבָּא וּבְכַפְנָא
5 יְסוּפוּן וּתְהֵי נְבִלְתְּהוֹן מִשְׁגְּרָא לְמֵיכַל לְעוֹפָא דִּשְׁמַיָּא וּלְבְעִירָא דְּאַרְעָא׃ אֲרֵי כִדְנַן
אֲמַר יְיָ לָא תֵעוֹל לְבֵית מַרְזְחָא וְלָא תְהָךְ לְמִסְפַּד וְלָא תְחַדֵּי לְהוֹן אֲרֵי כְנַשִׁית יָת
6 שְׁלָמִי מִן עַמָּא הָדֵין אֲמַר יְיָ יָת חִסְדָּא וְיָת רַחֲמֵי׃ וִימוּתוּן רַבְרְבִין וְזַעֲרִין בְּאַרְעָא
7 הָדָא לָא יִתְקַבְּרוּן וְלָא יִסְפְּדוּן לְהוֹן וְלָא יִתְהַמְּמוּן וְלָא יִמְרְטוּן לְהוֹן׃ וְלָא יִפְרְסוּן
לְהוֹן עַל אֶבְלָא לְנַחָמוּתְהוֹן עַל מִיתָא וְלָא יַשְׁקוּן יָתְהוֹן כָּס תַּנְחוּמִין גְּבַר עַל אֲבוּהִי
וְעַל אִמֵּיהּ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Suſcepi verba tua, & ſtabilivi ea: & factum eſt verbum tuum mihi in gaudium & lætitiam cordis mei: quia invocatum eſt nomen tuum ſuper me Dñe Deus exercituum. Non ſedi cum turba cantantium, nec delectat' ſum; à facie verbi tui ſeparatus ſedebam, quia prophetiâ maledictionis implêſti me. Quare factus eſt dolor meus in perpetuum? & plaga mea fortis, renuat curari? Ne ſit Verbum tuum mihi in mendacium, ſicut fons aquarum cujus aquæ deficiunt. Propterea hæc dicit Dñs: Si converteris, & convertam te; coram me miniſtrabis: & ſi revocaris impios ut ſint juſti, voluntatem verbi mei implebis. *Revertantur* ipſi *ad verba tua*, & tu non revertêris ut erres poſt eos. Et dabo te populo huic quaſi murum æreum, fortem: & pugnabunt adverſum te, & non prævalebunt tibi; quia in adjutorium tuum eſt Verbum meum, ut ſalvem te, & ut liberem te, Dicit Dñs. Et eruam te de manu malignantium, & ſalvabo te de manu fortium.

CAP. XVI.

ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: Ne accipias tibi uxorem, nec ſint tibi filii & filiæ in loco iſto. Quia hæc dicit Dñs ſuper filios & ſuper filias qui naſcuntur in loco iſto, & ſuper matres eorum quæ pariunt eos, & ſuper patres eorum qui generant eos in terra iſta: Morte ægrotationum famis morientur; non plangentur, neque ſepelientur; in ſtercus diſperſum ſuper faciem terræ erunt: & in gladio & fame peribunt: & erit cadaver eorum projectum in eſcam volatilibus cœli & beſtiis terræ. Quia hæc dicit Dominus: ne egrediaris in domum convivii, nec vadas ad plangendum, nec contriſteris cum eis: quia collegi pacem meam à populo iſto, dicit Dominus: miſericordiam & miſerationes. Et morientur grandes & parvi in terra iſta: non ſepelientur, nec plangent eos, nec ſeſe incîdent, nec facient calvitium propter eos. Nec frangent eis [*panem*] in luctu ut conſolentur eos ſuper mortuum, nec propinabunt eis calicem conſolationis *quiſque* ſuper patre ſuo, & ſuper matre ſua.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܘܢܛܪܬ ܦܘܩܕܢܝܟ. ܘܥܒܕܬ ܐܢܘܢ. ܘܗܘܐ ܠܝ ܦܬܓܡܟ ܠܚܕܘܬܐ. ܘܠܒܣܝܡܘܬܐ ܕܠܒܝ.
ܡܛܠ ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܟ ܥܠܝ. * ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܠܐ ܝܬܒܬ ܒܟܢܘܫܬܐ ܕܡܒܙܚܢܐ.
ܐܠܐ ܕܚܠܬ ܡܢ ܩܕܡ ܐܝܕܟ. ܘܠܚܘܕܝ ܝܬܒܬ. ܡܛܠ ܕܪܘܓܙܐ ܡܠܝܬܢܝ. * ܠܡܢܐ ܗܘܐ
ܟܐܒܝ ܠܥܠܡ. ܘܡܚܘܬܝ ܚܠܝܨܐ. ܘܠܐ ܨܒܝܐ ܠܡܬܐܣܝܘ. ܘܗܘܝܬ ܠܝ. ܐܝܟ ܡܝܐ ܕܓܠܐ
ܕܠܐ ܡܬܗܝܡܢܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢ ܬܬܘܒ ܐܦܢܝܟ. ܘܩܕܡܝ ܬܩܘܡ.
ܘܐܢ ܬܦܩ ܝܩܝܪܐ ܡܢ ܨܥܝܪܐ. ܐܝܟ ܦܘܡܝ ܬܗܘܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܢܘܢ ܢܬܦܢܘܢ ܠܘܬܟ.
ܘܐܢܬ. ܠܐ ܬܬܦܢܐ ܠܘܬܗܘܢ. * ܘܐܬܠܟ ܠܥܡܐ ܗܢܐ. ܐܝܟ ܫܘܪܐ ܕܢܚܫܐ ܚܣܝܢܐ.
ܘܢܬܟܬܫܘܢ ܥܡܟ. ܘܠܐ ܢܙܟܘܢܟ. ܡܛܠ ܕܥܡܟ ܐܢܐ ܠܡܦܪܩܟ. ܘܠܡܫܘܙܒܘܬܟ. ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. * ܘܐܦܨܝܟ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܒܝܫܐ. ܘܐܦܪܩܟ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܥܫܝܢܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܘ *

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܠܐ ܬܣܒ ܠܟ ܐܢܬܬܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܠܟ
ܒܢܝܐ ܘܒܢܬܐ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܒܢܝܐ ܘܥܠ ܒܢܬܐ
ܕܡܬܝܠܕܝܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܥܠ ܐܡܗܬܗܘܢ ܕܝܠܕܢ ܠܗܘܢ. ܘܥܠ ܐܒܗܝܗܘܢ ܕܡܘܠܕܝܢ
ܠܗܘܢ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. * ܒܡܘܬܐ ܕܡܬܟܪܗܝܢ ܢܡܘܬܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܪܩܕܘܢ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܠܐ
ܢܬܩܒܪܘܢ. ܐܠܐ ܐܝܟ ܙܒܠܐ ܢܗܘܘܢ ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ. ܘܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܢܫܬܠܡܘܢ.
ܘܢܗܘܝܢ ܫܠܕܝܗܘܢ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. * ܡܛܠ
ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܬܥܘܠ ܠܒܝܬ ܐܒܠܐ. ܘܠܐ ܬܐܙܠ ܠܡܪܩܕܘ. ܘܠܐ ܬܬܘܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܥܒܪܬ ܫܠܡܝ
ܡܢ ܥܡܐ ܗܢܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܛܝܒܘܬܐ ܘܪܚܡܐ. * ܘܢܡܘܬܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܘܙܥܘܪܐ
ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܠܐ ܢܬܩܒܪܘܢ. ܘܠܐ ܢܪܩܕܘܢ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܓܠܚܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܓܙܙܘܢ ܥܠܝܗܘܢ.
* ܘܠܐ ܢܦܪܣܘܢ ܠܚܡܐ ܥܠܝܗܘܢ ܒܐܒܠܗܘܢ. ܠܒܘܝܐܗܘܢ ܥܠ ܡܝܬܐ. ܘܠܐ ܢܫܩܘܢ ܐܢܘܢ ܟܣܐ
ܕܒܘܝܐܐ. ܥܠ ܐܒܘܗܝܗܘܢ. ܘܥܠ ܐܡܗܬܗܘܢ.

mandata tua cuſtodierim ac fecerim fueritq;
mihi ſermo tuus jucunditati & lætitiæ cordis
mei; quia invocatum eſt ſuper me nomen tu-
um. Domine Deus potentiſſime, non ſedi in- 17
ter cœtum irriſorum, ſed extimui manum
tuam, & ſeorſum ſedi, eò quòd irâ me reple-
veris. Quare factus eſt dolor meus ingens, & 18
plaga mea vehemens, nec vult curari ? & fa-
ctus es mihi velut aquæ fallaces quibus cre-
di non poteſt ? Propterea ſic dicit Dominus ; 19
Si convertaris, reſtituam te, & coram me ſta-
bis: & ſi eduxeris pretioſum ex obſcœno, ſicut
os meum eris, dicit Dominus : & ipſi conver-
tentur ad te, tu autem non converteris ad eos:
Opponam te huic populo tanquam fortiſ- 20
ſimum murum æneum, & bellabunt adver-
ſùm te, at non ſuperabunt te; quia tecum
ſum ad liberandum & eruendum te, dicit Do-
minus : Eripiam te de manu improborum, 21
& ſervabo te de manu potentium.

CAP. XVI.

ET factꝰ eſt ad me ſermo Domini, dicendo, 1
Ne ducas tibi uxorem, & ne ſint tibi filii aut 2
filiæ in loco iſto : Quoniam ſic ait Dominus 3
de filiis & filiabus naſcituris in loco iſto, &
de matribus eorum quæ parituræ ſunt eos,
deque patribus eorum qui genituri ſunt ipſos
in loco iſto ; Morte languentium fame mo- 4
rientur, non plangentur, neque ſepelientur,
ſed ut fimus erunt ſuper faciem terræ : gla-
dio & fame conſumentur, eruntque cadave-
ra eorum cibo volatilibus cœli & beſtiis ter-
ræ. Nam ſic ait Dominus, Ne abeas ad plan- 5
gendum, neque loco movearis propter eos :
quoniam abſtuliſti pacem meam ab hujuſce-
modi populo, dicit Dominus, & benignita-
tem atque miſericordiam. Morientur magni 6
æquè ac parvi in terra iſta, non ſepelien-
tur, neque plangentur ; non lugebunt, neque
pilos avellent ſibi propter eos, Neque *pilos* 7
tondebunt propter eos in luctu ad capien-
dam conſolationem de mortuo, neque pota-
bunt eos calice conſolationis de patribus &
matribus eorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

من الذين يعصون لك * افنهم ويكون كلمتك الي للسرور وفرحا لقلبي لان اسمك دعي
علي * ايها الرب ضابط الكل * لم اجلس في مجمع المستهزيين لكن اتقيت من وجه يدك
جلست وحدي لاني امتليت مرارة * لماذا الذين يحزنوني يقوون علي * ضربتي شديدة
من اين انتعافا * صايرة صارت لي مثل ماء كذب ليس له صدق * لاجل هذا هكذا
يقول الرب * ان انصرفت فاردك وتقف امام وجهي * وان اخرجت الكريم من الذليل
فتكون مثل فمي * ويرجعون هولاء اليك وانت فلا ترجع اليهم * واعطيك لهذا الشعب
مثل سور نحاس حصين * ويحاربون ولا يقدرون عليك * من اجل اني معك لاخلصك
* وانجيك من يد الاشرار * وانقذك من يد المفسدين *

* الفصل السادس عشر *

* * وانت لا تاخذ امراة يقول الرب اله اسراييل * ولا يكون لك ابن ولا ابنة في هذا
الموضع * لانه هكذا يقول الرب من اجل البنين والبنات المولودين في هذا الموضع
ومن اجل امهاتهم اللاتي تلدهم ومن اجل اباهم الذين يولدونهم في هذه الارض * بموت
صعب يموتون * لا يندبون ولا يدفنون * بل يكونون للسهن على وجه الارض * بالسيف
يسقطون * وبالجوع يفنون * وتكون جثثهم طعاما لطيور السماء وسباع الارض * هكذا
يقول الرب لا تدخل الي جمعهم ولا تمض لتندبهم وتنوح عليهم لاني صرفت سلامي عن
هذا الشعب * لا يندبونهم ولا يصنعون تشريطاتهم * ولا ينتفون عليهم شعرا * ولا يكسر
خبز في مناحتهم للعزاء على الميت ولا يسقون لبنيهم كاسا للعزاء على ابيه ولا على امه

ab iis qui ſunt tibi rebelles : conſume 16
illos, ſitque mihi verbum tuum exulta-
tioni, & gaudio cordi meo ; quando-
quidem nomen tuum invocatum eſt ſuper
me. O Domine omnia tenens, non ſedi 17
in concilio irriſorum ; ſed manum tuam
pertimeſcens ſedi ſolus, quia repletus ſum
amaritudine. Cur ii qui me affligunt, 18
contra me invaleſcunt ? plaga mea atrox
eſt, unde recuperabo ſanitatem ? facta
mihi eſt omnino velut aqua fallax cui
nulla eſt firmitas. Iccirco ſic ait Do- 19
minus ; Si abieris, reducam te, ſtabiſque
coram facie mea ; & ſi eduxeris hone-
ſtum à vili, eris tanquam os meum ; &
iſti convertentur ad te, non tu reverteris
ad eos : Dabóque te huic populo velut 20
murum æneum munitum ; ut pugnantes
non prævaleant tibi ; quoniam adero
tibi ut ſervem te, Et eruam te de manu 21
ſceleſtorum, eripiámque te de manu cor-
ruptorum.

CAP. XVI.

Tu autem ne ducas uxorem, dicit 1 2
Dominus Deus Iſraelis, neque ſit tibi fi-
lius aut filia hoc in loco : Quia ſic ait 3
Dominus de filiis & filiabus in iſto loco
gignendis, déque matribus eorum quæ pa-
rituræ ſunt eos, & de patribus eorum qui
genituri ſunt eos in hac regione : Dirâ 4
morte morientur, non plangentur, neque
ſepelientur, ſed erunt publicè expoſiti ſu-
per faciem terræ : gladio corruent, & fa-
me interibunt, eruntque cadavera eorum
cibo volatilium cœli & beſtiis terræ. Sic 5
ait Dominus, Ne ingrediaris in cœtum eo-
rum, neque abeas ad plangendum & lu-
gendum eos : quoniam abſtuli pacem meam
ab hoc populo. Non plangent eos, neque 6
facient diſſectiones eorum, neque vellent
pro eis pilos, Neque frangetur panis in 7
exequiis eorum in conſolationem pro mor-
tuo, neque potandum præbebunt eis cali-
cem in conſolationem pro patre ſuo aut
matre ſuâ.

ירמיה : יו

,comedendum ad , eis *assidendum ad* ,ingrediaris non convivii domum Et
8 ובית־משתה לא־תבוא לשבת אתם לאכל
: Israel Deus exercituum Dominus dixit sic Nam .bibendū ad &
9 ולשתות: כי כה אמר יהוה צבאות אלהי ישראל
,vestris diebꝰ in &,vestris oculis in isto loco de *faciens* cessare ego Ecce
הנני משבית מן־המקום הזה לעיניכם ובימיכם
,erit Et .sponsæ vocem & sponsi vocem ,lætitiæ vocem & gaudii vocem
10 קול ששון וקול שמחה קול חתן וקול כלה: והיה
dixerint & ,hæc verba omnia huic populo annuntiaveris cùm
כי תגיד לעם הזה את כל־הדברים האלה ואמרו
malum omne nos super Dominus est locutus quid Propter *: te ad*
אליך על־מה דבר יהוה עלינו את כל־הרעה
quod ,nostrū peccatū quod & ,nostra iniquitas quæ & , hoc grande
הגדולה הזאת ומה עוננו ומה חטאתנו אשר
quòd Propterea : eos ad dices Et ? nostro Deo Domino peccavimus
11 חטאנו ליהוה אלהינו: ואמרת אליהם על אשר־
Deos post abierunt & ,Dominus ait , me vestri patres dereliquerūt
עזבו אבותיכם אותי נאם־יהוה וילכו אחרי אלהים
,dereliquerunt me & : eis se incurvaverūt &,eis servierunt & ,alienos
אחרים ויעבדום וישתחוו להם ואתי עזבו
faciendo *malefecistis* vos Et .custodierunt non meam legem &
12 ואת־תורתי לא שמרו: ואתם הרעתם לעשות
sui cordis *obstinationem* post unusquisq; *euntes* vos ecce & *:vestris patribus præ*
מאבתיכם והנכם הלכים איש אחרי שררות לבו־
terra *desuper* vos *protelabo* Et *.me ad audire non pro* , mali
13 הרע לבלתי שמע אלי: והטלתי אתכם מעל הארץ
: vestri patres & ,vos cognovistis non quam terram *super* hac
הזאת על־הארץ אשר לא ידעתם אתם ואבותיכם
non quia ,nocte ac die alienis diis ibi servietis &
ועבדתם־שם את־אלהים אחרים יומם ולילה אשר לא־
,Dominꝰ dixit ,*venientes* dies ecce Propterea .misericordiā vobis dabo
14 אתן לכם חנינה: לכן הנה־ימים באים נאם־יהוה
Israel filios fecit ascēdere qui ,Dominus *Vivens* :ultrà dicetur non &
ולא־יאמר עוד חי־יהוה אשר העלה את־בני ישראל
fecit ascendere qui Dominus *vivens Quinimo* .Ægypti terra è
15 מארץ מצרים: כי אם־חי־יהוה אשר העלה את־
quas terris universis de & ,Aquilonis terra de Israel filios
בני ישראל מארץ צפון ומכל הארצות אשר
dedi quam ,suā *humum super* eos faciā reducere & *:illuc* eos fecit expellere
הדיחם שמה והשבתים על־אדמתם אשר נתתי
,Dominus dixit ,multos piscatores ad *mittens* ego Ecce .eorum patribus
16 לאבותם: הנני שלח לדוגים רבים נאם־יהוה
eos venabūtur &,venatores multos ad mittam ea post & :eos piscabūtur&
ודיגום ואחרי־כן אשלח לרבים צידים וצדום
.petrarum *foraminibus* de & ,colle omni *desuper* & ,monte omni *desuper*
מעל כל־הר ומעל כל־גבעה ומנקיקי הסלעים:
:meis faciebꝰ à sunt occultatæ non ;eorum vias omnes super mei oculi Quia
17 כי עיני על־כל־דרכיהם לא נסתרו מלפני
.meorum oculorum conspectu à eorum iniquitas est abscondita neque
ולא־נצפן עונם מנגד עיני:
eos polluere super eorū *peccati* & ,eorū *iniquitatis duplum initio* reddam Et
18 ושלמתי ראשונה משנה עונם וחטאתם על חללם
suis abominationibus & ,suarū abominationū *cadavere* in meā terram
את־ארצי בנבלת שקוציהם ותועבותיהם
,meum robur & ,mea fortitudo Domine .meā hæreditatem impleverunt
19 מלאו את־נחלתי: יהוה עזי ומעזי
, terræ *finibus à* venient gentes te ad *: angustiæ* die in meū refugiū &
ומנוסי ביום צרה אליך גוים יבאו מאפסי־ארץ
eis in non & ,vanitatē ;nostri patres possederunt *falsitatem* Verè :dicent &
ויאמרו אך־שקר נחלו אבותינו הבל ואין־בם
? Dii non ipsi & , Deos homo sibi faciet Nūquid *.faciens profectū*
20 מועיל: היעשה־לו אדם אלהים והמה לא אלהים:

Versio VULG. LAT.

8 Et domum convivii non ingrediaris, ut sedeas cum eis, & 9 comedas & bibas: Quia hæc dicit Dominus exercituum Deus Israel; Ecce ego auferam de loco isto in oculis vestris, & in diebus vestris, vocem gaudii, & vocem lætitiæ, vocem 10 sponsi, & vocem sponsæ. Et cùm annuntiaveris populo huic omnia verba hæc, & dixerint tibi; Quarè locutus est Dominus super nos omne malum grande istud? quæ iniquitas nostra: & quod peccatum nostrum, quod peccavimus Domino Deo no- 11 stro? Dices ad eos; Quia dereliquerunt me patres vestri, ait Dominus: & abierunt post deos alienos, & servierunt eis, & adoraverunt eos: & me dereliquerunt, & legem meam non 12 custodierunt. Sed & vos pejus operati estis, quàm patres vestri: ecce enim ambulat unusquisque post pravitatem cordis sui mali, 13 ut me non audiat. Et ejiciam vos de terra hac, in terram, quam ignoratis vos, & patres vestri: & servietis ibi diis alienis die ac nocte, qui non dabunt vobis 14 requiem. Propterea ecce dies veniunt, dicit Dominus, & non dicetur ultrà; Vivit Dominus, qui eduxit filios Israel de terra 15 Ægypti: Sed, Vivit Dominus, qui eduxit filios Israel de terra Aquilonis, & de universis terris, ad quas ejeci eos: & reducam eos in terram suam, quam dedi 16 patribus eorum. Ecce ego mittam piscatores multos, dicit Dominus, & piscabuntur eos: & post hæc mittam eis multos venatores, & venabuntur eos de omni monte, & de omni colle, & 17 de cavernis petrarum. Quia oculi mei super omnes vias eorum: non sunt absconditæ à facie mea, & non fuit occultata iniquitas eorum ab oculis meis. 18 Et reddam primùm duplices iniquitates, & peccata eorum: quia contaminaverunt terram meam in morticinis idolorum suorum, & abominationibus suis imple- 19 verunt hæreditatem meam. Domine, fortitudo mea, & robur meum, & refugium meum in die tribulationis: ad te Gentes venient ab extremis terræ, & dicent; Verè mendacium possederunt patres nostri, vanitatem, 20 quæ eis non profuit. Numquid faciet sibi homo deos, & ipsi non sunt Dii?

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Translatione LATINA.

8 Εἰς οἰκίαν πότου οὐκ εἰσελεύσῃ σὺ, (ι) συγκαθίσαι μετ᾽ αὐτῶν τοῦ φαγεῖν καὶ πιεῖν. 9 Διότι τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ἰδοὺ ἐγὼ καταλύω ἐκ τοῦ τόπου τούτου ἐνώπιον τῶν ὀφθαλμῶν ὑμῶν, (κ) καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ὑμῶν, φωνὴν χαρᾶς, καὶ φωνὴν εὐφροσύνης, φωνὴν νυμφίου, καὶ 10 φωνὴν νύμφης. Καὶ ἔσται ὅταν ἀναγγείλῃς τῷ λαῷ (λ) τούτῳ ἅπαντα τὰ ῥήματα ταῦτα, καὶ εἴπωσι πρὸς σὲ, Διατί ἐλάλησε κύριος ἐφ᾽ ἡμᾶς πάντα τὰ κακὰ ταῦτα; τίς ἡ ἀδικία ἡμῶν; καὶ τίς ἡ ἁμαρτία ἡμῶν, ἣν ἡμάρτομεν (μ) ἔναντι κυρίου τοῦ 11 θεοῦ ἡμῶν; Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Ἀνθ᾽ ὧν ἐγκατέλιπόν με οἱ πατέρες (ν) ὑμῶν, λέγει κύριος, καὶ ᾤχοντο ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων, καὶ ἐδούλευσαν αὐτοῖς, (ξ) καὶ προσεκύνησαν αὐτοῖς, καὶ ἐμὲ ἐγκατέλιπον, καὶ τὸν νόμον μου οὐκ ἐφυλάξαντο· 12 Καὶ ὑμεῖς ἐπονηρεύσασθε ὑπὲρ τοὺς πατέρας ὑμῶν· καὶ ἰδοὺ ὑμεῖς πορεύεσθε ἕκαστος ὀπίσω τῶν (ο) ἀρεστῶν τῆς καρδίας ὑμῶν τῆς πονηρᾶς, τοῦ μὴ ὑπακούειν μου. 13 Καὶ ἀπορρίψω ὑμᾶς ἀπὸ τῆς γῆς ταύτης, εἰς τὴν γῆν ἣν οὐκ ᾔδειτε ὑμεῖς καὶ οἱ πατέρες ὑμῶν, καὶ δουλεύσετε (π) ἐκεῖ θεοῖς ἑτέροις, οἳ οὐ δώσουσιν ὑμῖν ἔλεος. 14 Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος, καὶ οὐκ ἐροῦσιν ἔτι, Ζῇ κύριος, ὁ ἀναγαγὼν τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰ- 15 γύπτου, Ἀλλὰ, Ζῇ κύριος, ὃς ἀνήγαγε τὸν οἶκον Ἰσραὴλ ἀπὸ γῆς Βορρᾶ, καὶ ἀπὸ πασῶν τῶν χωρῶν οὗ ἐξώσθησαν ἐκεῖ. καὶ ἀποκαταστήσω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν αὐτῶν, 16 ἣν ἔδωκα τοῖς πατράσιν αὐτῶν. Ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω τοὺς ἁλιεῖς τοὺς πολλοὺς, λέγει κύριος, καὶ ἁλιεύσουσιν αὐτούς· καὶ μετὰ ταῦτα (ρ) ἀποστελῶ τοὺς (σ) πολλοὺς θηρευτὰς, καὶ θηρεύσουσιν αὐτοὺς ἐπάνω παντὸς ὄρους, καὶ ἐπάνω παντὸς (τ) βουνοῦ, καὶ 17 ἐκ τῶν τρυμαλιῶν τῶν πετρῶν. Ὅτι οἱ ὀφθαλμοί μου ἐπὶ πάσας τὰς ὁδοὺς αὐτῶν, καὶ οὐκ ἐκρύβη τὰ ἀδικήματα αὐτῶν ἀπ- 18 έναντι τῶν ὀφθαλμῶν μου. Καὶ ἀνταποδώσω διπλᾶς τὰς (υ) κακίας αὐτῶν, καὶ τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν, ἐφ᾽ αἷς ἐβεβήλωσαν τὴν γῆν μου ἐν τοῖς θνησιμαίοις τῶν βδελυγμάτων αὐτῶν, καὶ ἐν ταῖς ἀνομίαις αὐτῶν, ἐν αἷς ἐπλημμέλησαν τὴν κληρονο- 19 μίαν μου. Κύριε (φ) σὺ ἰσχύς μου, καὶ βοήθειά μου, καὶ καταφυγή μου ἐν ἡμέραις κακῶν· πρὸς σὲ ἔθνη ἥξουσιν ἀπ᾽ ἐσχάτου τῆς γῆς, καὶ ἐροῦσιν, Ὡς ψευδῆ ἐκτήσαντο οἱ πατέρες ἡμῶν εἴδωλα, καὶ οὐκ ἔστιν ἐν αὐτοῖς ὠφέ- 20 λημα; Εἰ ποιήσει ἑαυτῷ ἄνθρωπος θεοὺς, καὶ οὗτοι οὐκ εἰσὶ θεοί.

In domum convivii non ingredieris tu, ut sedeas cum eis ad comedendum, & bibendum. Quia hæc dicit Dominus Deus Israel; Ecce ego abire facio de loco isto coram oculis vestris, & in diebus vestris, vocem gaudii, & vocem lætitiæ, vocem sponsi, & vocem sponsæ. Et erit cùm annuntiaveris populo huic omnia verba hæc, & dixerint ad te, Quarè loquutus est Dominus super nos omnia mala ista? quæ iniquitas nostra, & quod peccatum nostrum, quod peccavimus coram Domino Deo nostro? Et dices ad eos, Propter quòd dereliquerunt me patres vestri, dicit Dominus, & abierunt post deos alienos, & servierunt eis, & adoraverunt eos, & me dereliquerunt, & legem meam non custodierunt: Et vos malè egistis super patres vestros. Et ecce vos ambulatis unusquisque post placita cordis vestri pessimi, ad non obediendum mihi. Et abjiciam vos de terra hac in terram, quam non novistis vos, & patres vestri: & servietis ibi diis (d) aliis, qui non dabunt vobis misericordiam. Propterea ecce dies veniunt, dicit Dominus: & non dicent ultrà; Vivit Dominus, qui eduxit filios Israel de terra Ægypti: Sed, Vivit Dominus, qui eduxit domum Israel de terra Aquilonis, & de universis regionibus, quò expulsi sunt illuc. Et restituam eos in terram suam, quam dedi patribus eorum. Ecce ego mitto piscatores multos, dicit Dominus; & piscabuntur eos: & post hæc mitto multos venatores; & venabuntur eos desuper omni monte, et desuper omni colle, et de cavernis petrarum: Quia oculi mei super omnes vias (e) eorum: et non sunt absconditæ iniquitates eorum ab oculis meis. Et reddam duplices malitias eorum, et peccata eorum, in quibus contaminaverunt terram meam in morticinis abominationum suarum, et in suis iniquitatibus, in quibus (f) delinquere fecerunt hæreditatem meam. Domine, tu fortitudo mea, et auxilium meum, et refugium meum in diebus malorum. Ad te gentes venient ab extremo terræ, et dicent, Quàm falsa possederunt patres nostri idola, et non est in eis utilitas? Si faciet sibi homo deos, et ipsi non sunt Dii.

MS.A. (ι) τοῦ καθῆσαι (κ) ἐν ταῖς (λ) πάντα τὰ (μ) ἐναντίον (ν) αὐτῶν, (ξ) καὶ ἐμὲ ἐγκατέλειπον (ο) ἐραστῶν (π) θεοῖς (ρ) ἀποστελῶ σοφοὺς θηρευτὰς, (τ) βουνοῦ ὑψηλοῦ, (υ) ἀδικίας (φ) ἰσχύς μου,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 ובית אסחרותא לא תעול לאסחרא עמהון למיכל ולמשתי: ארי כדנן אמר יי צבאות
9 אלהא דישראל הא אנא מבטל מן אתרא הדין לעיניכון וביומיכון קל ביע וקל חדוא
10 קל חתנין וקל כלן: ויהי ארי תחוי לעמא הדין ית כל פתגמיא האלין וימרון לך על מה
גזר יי עלנא ית כל בישתא רבתא הדא ומה חובנא ומה סורחננא דחבנא קדם יי
11 אלהנא: ותימר להון על דשבקו אבהתכון פולחני אמר יי וטעו בתר טעות עממיא
12 ופלחונון וסגידו להון ופולחני שבקו וית אוריתי לא נטרו: ואתון אבאשתון למעבד
מאבהתכון והא אתון אזלין גבר בתר הרהור לביה בישא בדיל דלא לקבלא למימרי:
13 ואטלטל יתכון מעל ארעא הדא לארעא דלא ידעתון אתון ואבהתכון ותפלחון תמן
14 לעממיא פלחי טעותא יממא ולילי דלא יהי לכון רחמין: בכן הא יומיא אתאן אמר יי
15 ולא יהון משתען עוד בגבורתא דיי דאסיק ית בני ישראל מארעא דמצרים: אלהן יהון
משתען בגבורתא דיי דאסק ית בני ישראל מארע צפונא ומכל מדינתא דאגלינון לתמן
16 ואתיבנון לארעהון דיהבית לאבהתכון: הא אנא שלח לעממין קטולין אמר יי
ויקטלונון ובתר כן אשלח לסניאין צידין ויצדונונון מעל כל טור ומעל כל רמתא
17 ומשקיפי כיפיא: ארי קדמי גלן כל אורחתהון לא מסתרן מן קדמי ולא מטמרן חוביהון
18 מלקבל מימרי: ואשלם לתנינין כקדמאין על חד תרין חוביהון וחטאיהון על דאחילו
19 ית ארע בית שכנתי בנבלת שקוציהון ותועבתהון מלו ית אחסנתי: יי תוקפי ורחצני
ומשיזבי בעדן עקא לשמע גבורתך עממין יתון מסיפי ארעא וימרון ברם לשקרא פלחו
20 אבהתנא ללמא ולית בהון הנאה: האפשר דיעבד ליה אנש דחלן ואנון טעון דלית
בהון צרוך:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et domum convivii non ingrediaris ut discumbas cum eis ad comedendum & ad bibendum. Quia hæc dicit Dñs exercituum, Deus Israel: Ecce ego cessare faciam de loco isto in oculis vestris & in diebus vestris vocem gaudii & vocem lætitiæ, vocem sponsorum & vocem sponsarum. Eritque cùm annuntiaveris populo huic omnia verba hæc, & dixerint tibi; Quare decrevit Dñs super nos omne malum grande hoc? & quod est peccatum nostrum, & quæ est iniquitas nostra quam commisimus coram Dño Deo nostro? Et dices ad eos: Pro eo quòd dereliquerunt patres vestri cultum meum, dicit Dñs; & erraverunt post idola populorum, & servierunt eis, & adoraverunt ea, & cultum meum dereliquerunt, & legem meam non custodierūt. Et vos pejꝰ operati estis quàm patres vestri: & ecce ipsi ambulatis unusquisq; post cogitationem cordis sui mali, ut non obediatis verbo meo. Et transmigrare vos faciam de terra hac in terram quam non cognovistis vos & patres vestri, & servietis ibi populis colentibus idola die ac nocte, qui non erūt vobis misericordes. Propterea ecce dies venient, ait Dñs, & non erūt ultrà narrantes potentiā Dñi, qui ascendere fecit filios Israel de terra Ægypti. Sed erūt narrantes potentiā Dñi, qui ascendere fecit filios Israel de terra Aquilonis, & de omnibus provinciis ad quas transmigrare eos feci: & reducam eos in terram suam, quam dedi patribꝰ vestris. Ecce ego mandabo populis occisoribꝰ, dicit Dñs, ut occidant eos: & post hæc mandabo multis venatoribꝰ ut venētur eos ab omni monte, & ab omni colle, & de cavernis petrarū. Quia corā me notæ sunt omnes viæ eorū, non sunt opertæ à facie mea; nec sūt abscondita peccata eorū à conspectu verbi mei. Et reddā secundis sicut & primis *duplices* iniquitates eorū, & peccata eorū: quia violaverunt terrā domꝰ majestatis meæ; & cadaveribꝰ immunditiarū suarū, & abominationibꝰ suis impleverunt hæreditatē meam. Dñs robur meū, fiducia mea, & liberator meꝰ in tempore angustiæ. Ad famam potentiæ tuæ populi veniēt à finibꝰ terræ, & dicent: Veruntamen mendaciū coluerūt patres nostri, & vanitatē, quæ eis non profuit. Nunquid *potest ut faciat* homo sibi deos? & ipsi sunt idola in quibꝰ non est utilitas.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܒܝܬ ܡܫܬܝܐ ܠܐ ܬܥܘܠ ܠܡܬܒ ܥܡܗܘܢ ܠܡܐܟܠ ܘܠܡܫܬܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܡܒܛܠ ܐܢܐ ܡܢ ܐܬܪܐ ܗܢܐ ܠܥܝܢܝܟܘܢ ܘܒܝܘܡܝܟܘܢ
ܩܠܐ ܕܚܕܘܬܐ ܘܩܠܐ ܕܒܣܝܡܘܬܐ. ܩܠܐ ܕܚܬܢܐ. ܘܩܠܐ ܕܟܠܬܐ. * ܘܐܢ ܬܚܘܐ ܠܥܡܐ ܗܢܐ
ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ. ܢܐܡܪܘܢ ܠܟ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠܝܢ ܒܝܫܬܐ ܗܕܐ ܪܒܬܐ ܘܡܢܐ
ܣܟܠܢ. ܘܡܢܘ ܚܛܗܢ ܕܚܛܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ
ܕܫܒܩܘܢܝ ܐܒܗܝܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܙܠܘ ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܦܠܚܘ ܐܢܘܢ ܘܣܓܕܘ
ܠܗܘܢ. ܘܠܝ ܫܒܩܘ ܘܢܡܘܣܝ ܠܐ ܢܛܪܘ. * ܘܐܢܬܘܢ ܐܒܐܫܬܘܢ ܠܡܥܒܕ ܝܬܝܪ ܡܢ
ܐܒܗܝܟܘܢ. ܘܗܐ ܐܢܬܘܢ ܐܙܠܝܢ ܐܢܫ ܒܬܪ ܪܓܬܐ ܕܠܒܗ ܒܝܫܐ. ܕܠܐ ܠܡܫܡܥܢܝ.
* ܘܐܫܕܝܟܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܠܐܪܥܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬܘܢ ܐܢܬܘܢ ܘܐܒܗܝܟܘܢ. ܘܬܦܠܚܘܢ ܬܡܢ
ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ ܒܐܝܡܡܐ ܘܒܠܠܝܐ. ܘܠܐ ܐܬܠ ܠܟܘܢ ܪܚܡܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ 14
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܬܐܡܪ ܬܘܒ ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ ܕܐܣܩ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ.
* ܐܠܐ ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ. ܕܡܣܩ ܘܡܦܢܐ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܡܢ ܟܠ
ܐܬܪܘܬܐ ܕܐܕܚܬ ܐܢܘܢ ܠܬܡܢ. ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܐܪܥܗܘܢ. ܕܝܗܒܬ ܠܐܒܗܝܗܘܢ. * ܗܐ ܡܫܕܪ 16
ܐܢܐ ܨܝܕܐ ܣܓܝܐܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܢܨܘܕܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܡܢ ܒܬܪ ܗܕܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܨܝܕܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܢܨܘܕܘܢ ܐܢܘܢ
ܡܢ ܟܠ ܛܘܪ. ܘܡܢ ܟܠ ܪܡܐ. ܘܡܢ ܢܩܥܐ ܕܫܘܥܐ. * ܡܛܠ ܕܥܝܢܝ ܥܠ ܟܠܗܝܢ 17
ܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܠܐ ܛܫܝܢ ܡܢ ܩܕܡܝ. ܘܠܐ ܡܬܟܣܝܐ ܥܘܠܗܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܥܝܢܝ. * ܘܐܦܪܘܥ ܐܢܘܢ 18
ܩܕܡܝܐ ܚܕ ܬܪܝܢ ܚܛܗܝܗܘܢ ܘܥܘܠܗܘܢ. ܥܠ ܕܛܡܐܘ ܐܪܥܝ ܒܕܒܚܝ ܦܬܟܪܝܗܘܢ.
ܘܒܛܢܦܘܬܗܘܢ ܡܠܘ ܝܪܬܘܬܝ. * ܡܪܝܐ ܚܝܠܝ ܘܡܥܕܪܢܝ. ܘܡܢܘܣܝ ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ 19
ܠܘܬܟ ܢܐܬܘܢ ܥܡܡܐ. ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܐܡܪܘܢ. ܫܪܝܪܐܝܬ ܕܓܠܐ
ܝܪܬܘ ܐܒܗܝܢ ܣܪܝܩܐ. ܘܠܐ ܐܝܬ ܒܗܘܢ ܝܘܬܪܢܐ. * ܗܐ ܥܒܕܝܢ ܠܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ 20
ܠܗܘܢ ܐܠܗܐ. ܘܗܢܘܢ. ܠܐ ܗܘܘ ܐܠܗܐ.

* Denique domum convivii ne ingrediaris ut ſedeas cum eis ad edendum & bibendum.
Nam ſic ait Dñs Deus Iſraelis, Ecce facturus 9
ſum ut ceſſet è loco iſto coram vobis, & in diebus veſtris, vox exultationis & vox lætitiæ,
vox ſponſi & vox ſponſæ. Quòd ſi indicanti 10
tibi huic populo omnes ſermones iſtos, dixerint, Qua de cauſa pronuntiavit Dñs contra nos malum hoc maximum? quam culpam commiſimus, aut quod crimen perpetravimus
in Dñm Deum noſtrum? Reſponde illis, Quia 11
derelinquentes me patres veſtri ſecuti ſunt deos alienos, coluerũt et adoraverũt eos, me autẽ deſeruerunt, & legem meam non ſervaverunt:
Vos etiam multò pejùs feciſtis quàm patres 12
veſtri, & ecce ſectamini quiſq; libidines pravi cordis veſtri, ita ut non acquieſcatis mihi:
Ideo ejecturus ſum vos è terra iſta, in terram 13
quam ignoràſtis vos & patres veſtri, ibique coletis deos alienos die nocteque, nec reddam
vos clementià dignos. Propterea ecce dies 14
venturi ſunt, inquit Dñs, quibus non dicetur ampliùs, Per Dominum vivum qui extraxit
Iſraelitas è terra Ægypti: Sed, Per Domi- 15
num vivum qui extracturus & reducturus eſt Iſraelitas è terra Aquilonari, vel è quibuſcunque locis quò depulerim eos: reducturus enim ſum eos in terram ipſorum quam dederam pa-
tribus eorum. Ecce miſſurus ſum piſcatores 16
multos, dicit Dominus, & piſcabuntur eos: & poſtmodum miſſurus ſum venatores multos, & venabuntur eos ex omni monte, & ex omni colle, & à latibulis petrarum: Quia 17
oculi mei ad omnes vias eorum *advertunt*, nec abſconduntur à me, nec latet iniquitas
eorum oculos meos. Et rependam eis priùs 18
duplicata ſcelera, & peccata eorum, eò quòd contaminaverint terram meam ſacrificiis idololorum ſuorum, & ſpurcitià ſuà impleve-
rint hæreditatem meam. Domine robur me- 19
um & auxiliator meus, & perfugium meum in die calamitatis, ad te gentes accedent è finibus terræ, dicentque, Reverà idola falſa quæ hæreditaria reliquerunt nobis patres no-
ſtri, nihil ſunt, & nulla eſt in eis utilitas. En 20
mortales faciunt ſibi deos, qui tamen non ſunt Dii:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* إلى بيت الشرب لا تدخل انت فتجلس معهم لتاكل وتشرب * من أجل أنه هكذا 8 9
يقول الرب اله اسرايل * ها انا مبطل من هذا الموضع امام اعينكم في ايامكم صوت
الفرح وصوت السرور * وصوت العريس وصوت العروس * ويكون اذا اخبرت الشعب بجميع 10
هذه الكلمات * فيقولون لك لماذا تكلم علينا الرب بجميع هذه الشرور * ما هو ظلمنا
وما هي خطيتنا التي اخطانا امام الرب الهنا * فتقول لهم من أجل ان اباءهم اجتنبوني 11
يقول الرب * وذهبوا خلف الالهة الغريبة وتعبدوا لها * وتركوني ولم يحفظوا ناموسي
* وانتم تشاررتم اكثر من ابايكم * وها انتم تمضون كل واحد خلف اهوية قلبه 12
الردي الا تطيعوني * فاطردكم من هذه الارض الى الارض التي لم تعرفوها انتم ولا 13
اباوكم * فتعبدون الهة اخر الذين لا يعطونكم رحمة * لاجل هذا ها ايام تاتي يقول 14
الرب * فلا يقولون ايضا حي الرب الذي اصعد بني اسرايل من ارض مصر * لكن حي 15
الرب الذي اصعد بيت اسرايل من الجربياء ومن جميع الكور حيث اقصيوا هناك *
واردهم الى ارضهم التي اعطيتها لابايهم * ها انا ارسل صيادين كثيرين يقول الرب 16
فيصيدونهم * وبعد هذا ارسل صيادين حكماء فيصطادونهم فوق كل جبل وفوق
كل تل عال * ومن انقاب الصخور * لان عيني على جميع طرقهم * ولم تخف ظلاماتهم 17
امام عيني * واكافيهم بظلاماتهم مضعفة * وخطاياهم التي دنسوا بها ارضي بجيف 18
رذالاتهم وباثامهم التي خطا بها ميراثي * ايها الرب قوتي ومعونتي وملجاي في ايام الاسوا 19
اليك تاتي الامم من اخر الارض * ويقولون حقا اقتنت اباونا الاصنام كذبا * وليس
فيهم منفعة * ايصنع الانسان له الهة وليست هي بالهة 20

Domum compotationis ne ingrediaris tu, 8
ſedeaſque cum eis ad edendum & bi- 9
bendum: Quoniam ſic dicit Dominus Deus Iſraelis, Ecce ego aboliturus ſum ab hoc loco coram oculis veſtris, in diebus veſtris, vocem lætitiæ & vocem exultationis, vocem ſponſi & vocem
ſponſæ. Erit autem cùm annuntiàveris 10
huic populo omnia verba iſta, ut dicant tibi, Quare locutus eſt Dominus contra nos tanta mala? quænam eſt perverſitas noſtra, & quod peccatum noſtrum quod commiſimus coram Do-
mino Deo noſtro? Tum dices eis, 11
Quia patres eorum receſſerunt à me, dicit Dominus, & abierunt poſt deos alienos, iiſque ſe mancipàrunt, me autem dereliquerunt, & non cuſtodierunt
legem meam: Vos etiam deteriores 12
eſtis patribus veſtris, & ecce ſequimini quilibet appetitus animi ſui peſſimi, ne
obtemperetis mihi: Iccirco ejiciam vos 13
ex hac terra in regionem quam nec vos cognoviſtis nec patres veſtri, & ſervietis diis aliis qui non præbebunt vobis mife-
ricordiam. Hanc ob rem ecce dies ve- 14
nient, dicit Dominus, quibus non dicent ampliùs, Vivit Dominus qui eduxit
filios Iſraelis è terra Ægypti: Sed, vi- 15
vit Dominus qui eduxit domum Iſraelis ex Aquilone & ex omnibus regionibus in quas relegati fuerint: reducturus enim ſum eos ad terram ſuam
quam dedi patribus eorum. Ecce ego 16
mittam venatores multos, ait Dominus, ut venentur eos: tum poſtea mittam venatores peritos ut venentur eos ſuper omnem montem, & ſuper omnem collem excelſum, & è foraminibus petrarum.
Nam oculi mei intuentur omnes vias 17
eorum, & non deliteſcunt perverſitates
eorum coram oculis meis: Et retribuam 18
eis pro ſceleribus eorum duplum, & pro peccatis eorum, quibus conſpurcaverunt terram meam putredinibus abominationum ſuarum, & pro iniquitatibus eorum quas perpetravit hæreditas
mea. Eja Domine virtus mea, auxilium 19
& refugiũ meũ in diebus adverſis, ad te venient gentes ab extremo terræ, dicentque, Sanè iniquè poſſiderunt idola patres
noſtri, cùm nulla ſit in iis utilitas. Num 20
faceret homo ſibi deos, qui nequaquam Dii ſunt?

ירמיה : יז

eos faciam scire , hac vice in eos faciens scire ego ecce Idcirco
21 לכן הנני מודיעם בפעם הזאת אודיעם את־
meum nomen quod scient & : meam fortitudinem & ,meam manum
ידי ואת־גבורתי וידעו כי־שמי
.Dominus
יהוה :

CAP. XVII. יז

,adamantis ungue in ,ferri stylo in scriptum Jehudah Peccatum
1 חטאת יהודה כתובה בעט ברזל בצפרן שמיר
.eorum ararum cornibus in & ,eorum cordis tabula in sculptum
חרושה על־לוח לבם ולקרנות מזבחותיכם :
juxta suorum lucorum & ,suarum ararum eorum filios recordari Secundum
2 כזכר בניהם מזבחותם ואשריהם על־
agro in Montane .excelsos colles juxta ,frondosum lignum
3 עץ רענן על גבעות הגבהות : הררי בשדה
tua excelsa , dabo direptionem in tuos thesauros omnes tuam facultatem
חילך כל־אוצרותיך לבז אתן במתיך
te in & facies remissionem Et .tuis confinibus universis in peccato in
4 בחטאת בכל־גבוליך : ושמטתה ובך
terra in ,tuis inimicis te faciã servire &,tibi dedi quam tua hæreditate ab
מנחלתך אשר נתתי לך והעבדתיך את־איביך בארץ
in usque ,meo naso in succendistis ignem quoniam : nôsti non quam
אשר לא־ידעת כי־אש קדחתם באפי עד־
qui vir Maledictus : Dominus dixit Sic .ardebit seculum
5 עולם תוקד : כה אמר יהוה ארור הגבר אשר
recedet Domino à & ,suũ brachium carnem ponens & , homine in confidet
יבטח באדם ושם בשר זרעו ומן־יהוה יסור
cùm videbit non & ,planitie in juniperus tanquam erit Et .ejus cor
6 לבו : והיה כערער בערבה ולא יראה כי־
,salsa terra , deserto in loca exusta habitabit & , bonum veniret
יבוא טוב ושכן חררים במדבר ארץ מלחה
erit & ,Domino in fidet qui vir Benedictus .habitabis non &
7 ולא תשב : ברוך הגבר אשר יבטח ביהוה והיה
,aquas super plantatum lignum tanquam erit Et .ejus fiducia Dominus
8 יהוה מבטחו : והיה כעץ שתול על־מים
, æstus venerit cùm videbit non & ,suas radices mittet rivum super &
ועל־יובל ישלח שרשיו ולא ירא כי־יבא חם
nec ,erit solicitum non siccitatis anno in & ,viride ejus folium erit &
והיה עלהו רענן ובשנת בצרת לא ידאג ולא
anxium & omnibus præ cor Supplantativũ .fructum faciendo à recedet
9 ימיש מעשות פרי : עקב הלב מכל ואנש
probans ,cor scrutans Dominus Ego ? illud cognoscet quis , ipsum
10 הוא מי ידענו : אני יהוה חקר לב בחן
.suorũ studiorũ fructũ juxta ,suã viã juxta unicuiq; dandum ad & , renes
כליות ולתת לאיש כדרכו כפרי מעלליו :
: judicio in non & ,opulentiam faciens , peperit non & ,colligit Perdix
11 קרא דגר ולא ילד עשה עשר ולא במשפט
.insipiens erit suo novissimo in & ,eam derelinquet suorũ dierũ dimidio in
בחצי ימו יעזבנו ובאחריתו יהיה נבל :
.nostri sanctuarii locus , principio à altitudo gloriæ Solium
12 כסא כבוד מרום מראשון מקום מקדשנו :
: afficientur pudore te derelinquentes omnes ,Domine Israel Expectatio
13 מקוה ישראל יהוה כל־עזביך יבשו
aquarum venam dereliquerunt quoniam : scribentur terra in mei apostatæ
יסורי בארץ יכתבו כי עזבו מקור מים־
,me fac salvum : sanabor & ,Domine me Sana .Dominum viventium
14 חיים את־יהוה : רפאני יהוה וארפא הושיעני
.tu mea laus quoniam : ero salvus &
ואושעה כי תהלתי אתה :

Verſio VULG. LAT.

21 Idcircò ecce ego oſtendam eis per vicem hanc, oſtendam eis manum meam, & virtutem meam: & ſcient quia nomen mihi Dominus.

CAP. XVII.

1 Peccatum Juda ſcriptum eſt ſtylo ferreo in ungue adamantino, exaratum ſuper latitudinem cordis eorum, & in cornibus 2 ararum eorum. Cùm recordati fuerint filii eorum ararũ ſuarũ, & lucorũ ſuorum, lignorúmque frondentiũ, in montibus excelſis, 3 Sacrificantes in agro: fortitudinem tuam, & omnes theſauros tuos in direptionem dabo, excelſa tua propter peccata in uni- 4 verſis finibus tuis. Et relinquéris ſola ab hæreditate tua, quam dedi tibi: & ſervire te faciam inimicis tuis in terra, quam ignoras: quoniam ignem ſuccendiſti in furore meo, uſque in æternum 5 ardebit. Hæc dicit Dñs; Maledictus homo, qui confidit in homine, & ponit carnem brachium ſuum, & à Dño recedit cor ejus. 6 Erit enim quaſi myricæ in deſerto, & non videbit cùm venerit bonum: ſed habitabit in ſiccitate in deſerto, in terra ſalſugi- 7 nis, & inhabitabili. Benedictus vir, qui confidit in Dño, & erit 8 Dñs fiducia ejus. Et erit quaſi lignum quod tranſplantatur ſuper aquas, quod ad humorem mittit radices ſuas: & non timebit cùm venerit æſtus. Et erit foliũ ejus viride, & in tempore ſiccitatis non erit ſolicitum, nec aliquando deſinet facere fructũ. 9 Pravum eſt cor omnium, & inſcrutabile: quis cognoſcet illud? 10 Ego Dñs ſcrutans cor, & probans renes: qui do unicuique juxta viam ſuam, & juxta fructum 11 adinventionum ſuarum. Perdix fovit quæ non peperit: fecit divitias, & non in judicio: in dimidio dierum ſuorũ derelinquet eas, & in noviſſimo ſuo erit in- 12 ſipiens. Solium gloriæ altitudinis à principio, locus ſanctificationis noſtræ. 13 Expectatio Iſrael, Domine: omnes, qui te derelinquunt, confundentur: recedentes à te, in terra ſcribentur: quoniã dereliquerunt venam aquarum 14 viventium, Dñm. Sana me, Dñe, & ſanabor: ſalvum me fac, et ſalvus ero: quoniam laus mea tu es.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

21 Διὰ τοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ δηλώσω αὐτοῖς ἐν τῷ καιρῷ τούτῳ τὴν χεῖρά μου, καὶ γνωριῶ αὐτοῖς τὴν δύναμίν μου, καὶ γνώσονται, ὅτι ὄνομά μοι Κύριος.

Idcircò ecce ego oſtendam eis in tempore illo manum meam: & notam faciam eis virtutem meam: & ſcient, quia nomen mihi Dominus.

ΚΕΦ. ιζ'.

5 Ἐπικατάρατος ὁ ἄνθρωπος, ὃς τὴν ἐλπίδα ἔχει ἐπ' ἄνθρωπον, καὶ στηρίσει σάρκα βραχίονος αὐτοῦ ἐπ' αὐτὸν, καὶ ἀπὸ κυρίου ἀποστῇ ἡ καρδία αὐτοῦ. 6 Καὶ ἔσται ὡς ἡ ἀγριομυρίκη ἡ ἐν τῇ ἐρήμῳ, (α) οὐκ ὄψεται ὅταν ἔλθῃ τὰ ἀγαθὰ, καὶ κατασκηνώσει ἐν ἁλίμοις, καὶ ἐν (β) ἐρήμῳ, ἐν γῇ ἁλμυρᾷ ἥτις οὐ κατοικεῖται. 7 Καὶ εὐλογημένος ὁ ἄνθρωπος, ὃς πέποιθεν ἐπὶ τῷ κυρίῳ, καὶ ἔσται κύριος ἐλπὶς αὐτοῦ. 8 Καὶ ἔσται ὡς ξύλον εὐθηνοῦν παρ' ὕδατα, καὶ ἐπὶ ἰκμάδα βαλεῖ (γ) ῥίζαν αὐτοῦ· οὐ φοβηθήσεται ὅταν ἔλθῃ καῦμα, καὶ ἔσται (δ) ἐπ' αὐτῷ στελέχη ἀλσώδη, ἐν ἐνιαυτῷ ἀβροχίας οὐ φοβηθήσεται, καὶ οὐ διαλείψει ποιῶν καρπόν. 9 Βαθεῖα ἡ καρδία παρὰ πάντα, καὶ ἄνθρωπός ἐστι, καὶ τίς γνώσεται αὐτόν; 10 Ἐγὼ κύριος ἐτάζων καρδίας, καὶ δοκιμάζων νεφροὺς, τοῦ δοῦναι ἑκάστῳ κατὰ τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, καὶ κατὰ τοὺς καρποὺς τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτοῦ. 11 Ἐφώνησε πέρδιξ, συνήγαγεν ἃ οὐκ ἔτεκε, ποιῶν πλοῦτον αὐτοῦ οὐ μετὰ κρίσεως· ἐν ἡμίσει ἡμερῶν αὐτοῦ ἐγκαταλείψουσιν αὐτὸν, καὶ ἐπ' ἐσχάτων αὐτοῦ ἔσται ἄφρων. 12 Θρόνος δόξης (ε) ὑψωμένος, ἁγίασμα ἡμῶν, 13 Ὑπομονὴ Ἰσραήλ. κύριε, πάντες οἱ καταλιπόντες σε καταισχυνθήτωσαν, ἀφεστηκότες ἐπὶ τῆς γῆς γραφήτωσαν, ὅτι ἐγκατέλιπον πηγὴν ζωῆς, τὸν κύριον. 14 Ἴασαί με κύριε, καὶ ἰαθήσομαι· σῶσόν με, καὶ σωθήσομαι, (ζ) ὅτι καύχημά μου σὺ εἶ.

CAP. XVII.

*Maledictus (a) homo, qui ſpem habet in homine, & firmabit carnem brachii ſui (b) ſuper ſe: & à Domino diſcedit cor ejus. Et erit ſicut (c) myrica ſylveſtris, quæ in deſerto eſt: non videbit, cùm venient bona: & habitabit in (d) ſalſis, & in deſerto, in terra ſalſa, quæ non habitabitur. Et benedictus homo, qui fidit in Domino, & erit Dominus ſpes ejus. Et erit tanquam lignum fructiferum ſecus aquas, & ad humorem mittet radicem ſuam: non timebit, cùm venerit æſtus: & erunt in eo propagines nemoroſæ: in anno ſiccitatis non timebit: & non deficiet faciens fructum. Profundum eſt cor ſuper omnia: & homo eſt, (e) & quis cognoſcet eum? Ego Dominus ſcrutans corda, & probans renes, ad dandum unicuique juxta vias ejus, & ſecundùm fructus adinventionum ejus. Clamavit perdix, congregavit, quæ non peperit: faciens divitias ſuas non cum judicio: in (f) dimidio dierum ſuorum relinquent eum, & in noviſſimis ſuis erit inſipiens. Solium gloriæ * elevatum, ſanctificatio noſtra, Expectatio Iſrael, Domine, omnes qui te dereliquerint, confundantur; qui receſſerint, in terra ſcribantur: quoniam dereliquerunt fontem vitæ, Dominum. Sana me, Domine, & ſanabor: ſalva me, & ſalvabor: quoniam gloriatio mea tu es.*

MS.A. (α) ἢ οὐκ ὄψεται (β) τῇ ἐρήμῳ, (γ) ῥίζας αὐτοῦ· καὶ οὐ (δ) ἐν αὐτῷ (ε) ὑψούμενος, (ζ) καύχημά μου εἶ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

21 בכן הא אנא מחוי להון בזמנא הדא אחוינון ית פורענותי וית מחת גבורתי וידעון ארי
שמי יי :
יז
1 חובי בית יהודה כתיבין בעט דברזל בטפר שמיר חריתין על לוח לבהון ולקרנת
2 אגוריכון : כאדכרא בניהון אגוריהון ואשריהון תחות כל אילן עבוף ועל רמתא
3 מנטלתא : על דפלחתון על טוריא בחקלא נכסיכון וכל בית גנזיכון לבזא אמסר בחובין
4 דהויתון פלחין לטעותא בכל תחומיכון : ואיתי סנאה על ארעכון ותהי צדיא כשמטתא
ובכון אעבד פורענות דינין עד דאגלי יתכון מאחסנתכון דיהבית לכון ותשתעבדון
לבעלי דבביכון בארעא דלא ידעתון ארי קדום תקיף כאשתא נפק מן קדמי ברגזי עד
5 עלמא יהול : כדנן אמר יי ליט גברא דאתרחיץ באנשא וישוי בשרא רחצניה ומן מימרא
6 דיי יעדי לביה : ויהי כעכוביתא במישרא ולא יחזי ארי ייתי טבא וישרי דלא ולד
7 במדברא בארע סדום דלא אתיתבת : בריך גברא דאתרחיץ במימרא דיי ויהי מימרא
8 דיי רוחצניה : ויהי כאילן דשתיל על מבוע דמיין ועל נגדין ישלח שורשוהי ולא יחזי
ארי ייתי חומא ויהון טרפוהי עביף ובשנת בצורתא לא יתר ולא יפסוק מלמעבד פירין :
9 10 נכיל לבא מכולא ותקיף הוא מן ידעניה : אנא יי חקר לבא בחר כליתא ולמתן לאנש
11 כארחתיה כפרי עובדוהי : הא כקוראה דמכנש בעין דלא דיליה ומשחן אפרוחין
דבתרוהי לא יהכון כן כל גבר רשיע דקני נכסין דלא בדינא בפלגות יומוהי שביק יתהון
12 ובסופיה מתקרי רשיעא : פורענותא תתעבד מניה מן קדם דשכנתיה על כורסי יקרא
13 בשמי מרומא עיל מן אולא מקבל אתר בית מקדשנא : סבור ישראל יי כל דשבקו
פולחנך יבהתון ורשיעיא דעברו על מימרך בגיהנם אנון עתידין למפל ארי שבקו
14 פולחנך יי דבדיליה את מיתי עליהון יקרא כמבוע דמיין דלא פסקין מוהי : אסיני יי
ואתסי פרוקני ואתפרק ארי תושבחתי את :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Propterea ego annuntiabo eis hoc tempore, oſtendam eis ultionem meam & plagam potentiæ meæ: & ſcient quia nomen meum eſt Dominus.

CAP. XVII.

Peccata domus Judæ ſcripta ſunt ſtylo ferreo, & ungue adamantino, ſculpta ſuper tabula cordis eorũ, & in cornib⁹ ararum eorum. Cùm recordati fuerint filii eorum ararũ ſuarum & lucorum ſuorũ, ſub omni ligno frondoſo, & ſup collib⁹ elevatis. Pro eo quod *coluiſtis* idola ſup montes in agro ſubſtantiã veſtrã & omnem domum theſaurorum veſtrorum direptioni tradam in peccatis, quib⁹ coluiſtis idola in omnib⁹ terminis veſtris. Et adducam hoſtẽ ſuper terrã veſtrã, eritque deſolata ſicut in anno remiſſionis, & *vobiſcum* faciã vindictam judicii, donec tranſmigrare vos faciã de hæreditate veſtra quã dedi vobis: & ſervietis inimicis veſtris in terra quam ignoratis: quia ſpiritus urens fortis ſicut ignis, egreſſus eſt à facie mea in ira, uſque in ſeculũ reſidebit. Hæc dicit Dñs: Maledictus vir qui confidit in homine, & ponit carnẽ fiduciã ſuã, & à verbo Dñi aufert cor ſuum. Et erit ſicut myrica in ſolitudine, & non videbit cùm venerit bonum: & morabitur abſque generatione in deſerto, ſicut in terra Sodomæ quæ non habitatur. Benedict⁹ vir qui confidit in Verbo Dñi, & erit Verbũ Dñi fiducia ej⁹. Et erit ſicut arbor quæ plantata eſt juxta fontes aquarum; & juxta fluenta mittet radices ſuas; & non videbit cum venerit æſt⁹, & erunt folia ej⁹ viridia, & in anno ſiccitatis non defluent, & non ceſſabit facere fructũ. Doloſũ eſt cor præ omnib⁹, & validũ eſt: quis cognoſcet illud? Ego Dñs ſcrutans cor, & probans renes, ut dem unicuiq; juxta viã ſuã, & juxta fructum operum ſuorum. Ecce ſicut perdix quæ congregat ova quæ non ſunt ſua, & fovet pullos qui eam non ſecuturi ſint; ſic omnis vir impius qui poſſidet divitias præter jus, in dimidio dierum ſuorum relinquit eas, & in fine vocatur impi⁹. Ultio fiet de eo à facie ej⁹, cujus majeſtas habitat in ſolio gloriæ, in cœlis excelſis à principio, è regione domus ſanctuarii noſtri. Expectatio Iſrael Dñe: omnes qui derelinquunt cultum tuum confundentur. Et impii, qui tranſgrediuntur verbum tuum, futurum eſt, ut cadant in gehennam, quia dereliquerunt cultum tuum Dñe, propter quem tu adducebas ſuper eos pluviam ſicut fontem aquarum cujus aquæ non deficiunt. Sana me Domine, et ſanabor: ſalva me, et ſalvus ero; quia laus mea tu es.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܡܘܕܥ ܐܢܐ ܠܗܘܢ. ܘܡܘܕܥ ܐܢܐ ܗܫܐ ܐܝܕܝ ܘܓܢܒܪܘܬܝ 21
ܘܢܕܥܘܢ ܕܡܪܝܐ ܫܡܝ. *ܩܦܠܐܘܢ *ܝܙ*

*ܚܛܗܘܗܝ ܕܝܗܘܕܐ ܟܬܝܒܝܢ ܒܩܢܝܐ ܕܦܪܙܠܐ. ܘܒܛܦܪܐ ܕܫܡܝܪܐ. ܘܓܠܝܦܝܢ ܥܠ ܠܘܚܐ 1
ܕܠܒܗܘܢ. ܘܥܠ ܩܪܢܬܐ ܕܡܕܒܚܝܗܘܢ ܘܕܦܬܟܪܝܗܘܢ. *ܬܚܝܬ ܟܠ ܐܝܠܢ ܥܒܘܬ. ܘܥܠ 2
ܟܠ ܪܡܬܐ ܪܡܬܐ. ܘܒܛܘܪܐ ܘܒܚܩܠܐ. *ܢܟܣܝܟ ܘܟܠܗܘܢ ܓܙܝܟ ܘܬܚܘܡܝܟ. ܠܒܙܬܐ 3
ܐܬܠ ܡܛܠ ܚܛܗܝܟ. *ܘܐܥܒܪܟ ܡܢ ܝܪܬܘܬܐ ܕܝܗܒܬ ܠܟ. ܘܐܫܥܒܕܟ ܠܒܥܠܕܒܒܝܟ 4
ܒܐܪܥܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܠܗ. ܡܛܠ ܕܢܘܪܐ ܐܘܩܕܬܘܢ ܒܪܘܓܙܝ. ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ ܬܐܩܕ. *ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܝܛ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܬܟܝܠ ܥܠ ܒܪܢܫܐ. ܘܥܒܕ ܡܢ ܒܣܪܐ ܕܪܥܗ. ܘܡܢ 5
ܡܪܝܐ ܢܣܛܐ ܠܒܗ. *ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܥܪܥܪܐ ܒܡܫܪܐ. ܘܠܐ ܢܚܙܐ ܡܐ ܕܐܬܐ ܛܒܬܐ. ܘܢܫܪܐ 6
ܒܡܥܪܐ ܒܡܕܒܪܐ. ܒܐܪܥܐ ܡܠܝܚܬܐ ܕܠܐ ܡܬܝܬܒܐ. *ܒܪܝܟ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܬܟܝܠ ܥܠ 7
ܡܪܝܐ. ܘܢܗܘܐ ܡܪܝܐ ܬܘܟܠܢܗ. ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܐܝܠܢܐ ܕܢܨܝܒ. ܥܠ ܡܝܐ. ܘܥܠ ܝܒܠܐ 8
ܡܫܕܪ ܥܩܪܘܗܝ. ܘܠܐ ܢܕܚܠ ܡܢ ܕܐܬܐ ܫܪܒܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܛܪܦܘܗܝ ܪܥܝܢܐ. ܘܒܫܢܬܐ
ܕܒܨܪܐ ܡܛܪܐ. ܠܐ ܢܕܚܠ. ܘܠܐ ܢܬܟܠܐ ܡܢ ܕܢܥܒܕ ܦܐܪܐ. *ܥܡܝܩ ܠܒܐ ܡܢ ܟܠ 9
ܐܢܫܐ ܗܘ. ܡܢܘ ܢܕܥܝܘܗܝ. *ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܒܨܐ ܠܒܐ ܘܒܚܢ ܟܘܠܝܬܐ. ܘܦܪܥ ܠܒܪܢܫܐ 10
ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܐܝܟ ܦܐܪܐ ܕܥܒܕܘܗܝ. *ܐܝܟ ܩܩܒܢܐ ܕܩܪܐ ܠܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܝܠܕ. ܗܢܘ ܗܘ 11
ܕܩܢܐ ܥܘܬܪܐ ܕܠܐ ܒܕܝܢܐ. ܒܦܠܓܘܬ ܝܘܡܘܗܝ ܢܫܒܩܝܘܗܝ. ܘܒܚܪܬܗ ܢܗܘܐ ܣܟܠܐ.
*ܟܘܪܣܝܐ ܕܫܘܒܚܐ ܐܬܥܠܝ ܡܢ ܠܘܩܕܡ. ܡܢ ܐܬܪܐ ܕܡܩܕܫܢ. ܣܒܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ 12
ܡܪܝܐ ܗܘ. *ܟܠ ܕܫܒܩܘܟ ܢܒܗܬܘܢ. ܘܡܪܘܕܐ ܒܐܪܥܐ ܢܬܟܬܒܘܢ. ܡܛܠ ܕܫܒܩܘ 13
ܠܡܪܝܐ ܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ ܚܝܐ. *ܐܣܝܢܝ ܡܪܝܐ ܘܐܬܐܣܐ. ܦܪܘܩܝܢܝ ܘܐܬܦܪܩ. ܡܛܠ 14
ܕܬܫܒܘܚܬܝ ܐܢܬ ܗܘ.

21 Propterea ecce oſtendam eis, & hoc tempore notam faciam illis manum meam & potentiam meam, & ſcient quòd Dominus eſt nomen meum.

CAP. XVII.

1 PEccatum Judæ ſcriptum eſt calamo ferreo & ungue adamantino, ſculptúmque in tabulis cordis eorum, in cornib⁹ altarium eorum, 2 & numinib⁹ eorum, Subter omnem arborem opacam, & ſuper omnem collem excelſum, in montibus, & in deſerto. 3 Opes tuas, omnéſque theſauros ac terminos tuos direptioni exponam propter peccata tua: 4 Et amovebo te ex hæreditate quam dedi tibi, ſervúmque te reddam hoſtib⁹ tuis in terra quam ignoras: quandoquidem ignem accendiſtis in ira mea, in æternum ardebit. 5 Sic ait Domin⁹, Maledictus ſit vir ille qui fiduciam collocat in homine, qui carne præditum efficit brachium ſuum, & cuj⁹ cor à Domino declinat. 6 Similis erit ſtipiti in loco campeſtri, nec ſentiet cùm advenerit bonum, degétque in hiatibus in deſerto, in terra ſalſuginoſa quæ nunquam fuit habitata. 7 Benedictus ſit vir ille qui Domino fidit, cujus fiducia Dominus eſt. 8 Similis erit arbori quæ ad aquas plantata, ſecus algam mittit radices ſuas, nec timet adveniente æſtu, ſed hilaria ſunt folia ejus; & quo anno deeſt pluvia, nequaquam timet, nec ab edendis fructibus deſiſtit. 9 Durus corde præ omnibus homo eſt, quis agnoſcat eum? 10 Ego Dominus cor perſcrutor, & renes exploro, & homini rependo ſecundùm vias ejus, & ſecundùm fructus operum ejus. 11 Ut perdix quæ vocitat quos non peperit, ſic ille qui opes injuſtè comparat: mediis diebus ſuis derelinquet eas, & finis ejus erit infamis. 12 Solium gloriæ ſublatum eſt jam olim è loco ſanctuarii noſtri: *at* ſpes Iſraelis, Dominus eſt. 13 Quicunque te dereliquerint, pudefient: & rebelles in terra ſcribentur; quia dereliquerunt Dominum fontem aquarum viventium. 14 Sana me Domine, & ſanabor; ſerva me, & ſervabor: quia laus mea tu es.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*لاجل هذا ها انا اعلن لهم في ذلك الزمان يدي واعرفهم قوتي ويعرفون ان اسمي الرب 21
الفصل السابع عشر
1 [MS. Ox. * خطية يهوذا مكتوبة بقلم
حديد واظفار مطرقة موسومة علي الواح قلوبهم وعلي قرون مذابحهم * اذا ما 2
ذكروا بقلوبهم مذابحهم وخافتهم لها التي عملوها تحت كل شجرة عالية وعلي
كل اكمة مرتفعة والجبال والسحاري *اموالكم ومواشيكم للنهب اجعلها من اجل خطاياك 3
يقول الرب * واصرفك من الميراث الذي اعطيتك واستعبدك لاعداك في الارض التي 4
لا تعرفها لان النار تقدحت بغضبي ولا تزال متقدة الي الابد * هكذا يقول الرب] 5
ملعون الانسان الذي له التوكل علي انسان ويسند لحم ذراعه عليه وقلبه بعيد من
الرب * فيصير مثل الطرفا الحقلية التي في البرية هناك لا تعاين الخير اذا اتي ويسكن 6
في السباخ وفي البرية وفي ارض مالحة التي لا تسكن * ومبارك الانسان الذي وثق بالرب 7
ويكون الرب رجاوه * فيصير مثل العود الخصيب عند المياه وفي النداوة يفرع اصوله 8
ولا يخاف اذا اتي الحر ويصير فيه اغصان ظليلة ولا يخاف في سنة عدم المطر ولا ينقص
يصنع ثمر * القلب العميق اكثر من كل فهو الانسان ومن يعرفه * انا الرب افحص 9 10
القلوب وامتحن الكلي لاعطي كل واحد كطرقه وكثمار اعماله

الاصحاح الحادي عشر * صوت الحجلة جمعت ما لم تلد الصانع غناه ليس 11
بحكم في نصف ايامه يتركه وفي اواخره يصير جاهلا * كرسي مرتفع مقدسنا رجاء اسرائيل 12
الرب * جميع الذين يحيدون عنك ليخزوا المتباعدون منك علي الارض ليكتبوا لانهم 13
تركوا الرب ينبوع الحياة * اشفني يا رب فاشفا خلصني فاخلص انت فخري 14

21 *Propterea ecce declarabo eis tunc temporis manum meam, & notam faciam fortitudinem meam, ſcientque nomen meum eſſe Dominum.*

CAP. XVII.

1 [Ms. Ox. *Peccatũ Judæ ſcriptũ eſt calamo ferri, & cælaturis malleoli, impreſſum ſuper tabulas cordis eorum, & ſuper cornua altarium eorum.* 2 *Cùm recordentur in cordibus ſuis ararum ipſorum, & numinum ipſorum: quæ nempe fecerunt ſibi ſub omni arbore alta, & ſuper omnem collem excelſum, in montibus & in campis.* 3 *Opes veſtras, & armenta veſtra direptioni exponam propter peccata, tua dicit Dominus.* 4 *Et ejiciam te ex hæreditate quam dedi tibi, & ſervire te faciam inimicis tuis in terra quam ignoras: quoniam ignis erumpit in furore meo, qui permanebit ardere in æternum.* 5 *Sic dicit Dominus,] Maledictus homo qui fiduciam habet in homine, eoque fulcit carnem brachii ſui, animus autem ejus remotus eſt à Domino.* 6 *Is enim erit inſtar tamaricis campeſtris exiſtentis in deſerto, quæ non fruitur bono cùm evenit: habitabitque in paludoſis, & in deſerto, & in terra ſalſuginoſa quæ habitari non poteſt.* 7 *E contra benedictus ille qui Domino confidit, cujus ſpes Dominus eſt.* 8 *Is enim erit uberrimæ arboris inſtar quæ ſecus aquas & in humiditate protendit radices ſuas, nec timet cùm accidit æſtus, imò creſcunt in ea rami umbriferi: non pertimeſcit annum pluviæ penuriâ laborantem, nec deſinit producere fructum.* 9 *Cor omni re magis profundum, eſt humanum; quis illud agnoſcat?* 10 *Ego Dominus corda perveſtigo & renes exploro, ut cuique dem ſecundùm vias ejus & ſecundum fructus operum ejus.*

Textus undecimus.

11 *Clamat perdix, & congregat quod non peperit: ita qui divitias ſuas iniquè comparat, mediis diebus ſuis relinquet eas, & poſtremò ſtultus evadet.* 12 *Solium ſublime ſanctuarium noſtrum, ſpes Iſraelis Dominus eſt.* 13 *Omnes qui te devitant, pudore ſuffundantur; qui à te recedunt, ſuper terram ſcribantur: quia dereliquerunt Dominum fontem vitæ.* 14 *Sana me O Domine, & ſanabor; ſalva me & ſalvabor: tu enim es gloria mea.*

ירמיה : יז

.nunc veniat! ,Domini verbum Ubi : me ad *dicentes* ipsi Ecce
15 הנה המה אמרים אלי איה דבר־יהוה יבוא נא׃
, desideravi non *anxium* diem & , te post *pastore à accelerari* non ego Et
16 ואני לא־אצתי מרעה אחריך ויום אנוש לא התאויתי
tis Ne .fuit *tuis faciebus coram ,meorū labiorū prolatio* : nosti tu
17 אתה ידעת מוצא שפתי נכח פניך היה׃ אל־תהיה־
afficientur Pudore .mala die in , tu mea spes *: consternationi* mihi
18 לי למחתה מחסי־אתה ביום רעה׃ יבשו
non & , ipsi *consternabuntur* : ego afficiar pudore non & ,me persequentes
רדפי ואל־אבשה אני יחתו המה ואל־
contritione duplici & ,malam diem eos super Adduc .ego *consternabor*
אחתה אני הביא עליהם יום רעה ומשנה שברון
porta in *stabis* & ,Vade : me ad Dominus dixit Sic .eos contere
19 שברם׃ כה־אמר יהוה אלי הלך ועמדת בשער
quam & ,Jehudah reges *eam per ingredientur* quam ,populi filiorum
בני־עם אשר יבאו בו מלכי יהודה ואשר
: eos ad dices Et .Jerusalaim portis omnibus in atque,*eam per egredientur*
20 יצאו בו ובכל שערי ירושלם׃ ואמרת אלהם
omnes & ,Jehudah omnis & ,Jehudah reges Domini verbum Audite
שמעו דבר־יהוה מלכי יהודה וכל־יהודה וכל
dixit Sic .has portas per *ingredientes* , Jerusalaim habitatores
21 ישבי ירושלם הבאים בשערים האלה׃ כה אמר
die in *onus* portetis ne & *:vestris animabus in estote Circumspecti* :Domin⁹
יהוה השמרו בנפשותיכם ואל־תשאו משא ביום
onus efferatis Neque .Jerusalaim portas per inferatis nec , sabbati
22 השבת והבאתם בשערי ירושלם׃ ולא־תוציאו משא
,faciatis non opus omne & , sabbati die in vestris domibus de
מבתיכם ביום השבת וכל־מלאכה לא תעשו
.vestris patribus præcepi quemadmodū ,sabbati diem *sanctificabitis* &
וקדשתם את־יום השבת כאשר צויתי את־אבותיכם׃
induraverunt sed ,suam aurem inclinaverunt nec ,audiverunt non Et
23 ולא שמעו ולא הטו את־אזנם ויקשו
,erit Et .disciplinam *accipere non pro &* , *audire non pro* suam cervicem
24 את־ערפם לבלתי שומע ולבלתי קחת מוסר׃ והיה
inferre non pro : Dominus dixit , me *ad* audieritis audiendo si
אם־שמע תשמעון אלי נאם־יהוה לבלתי הביא
sanctificando & , sabbati die in hujus civitatis portas per onus
משא בשערי העיר הזאת ביום השבת ולקדש את־
ingrediontur Et .opus omne eo in *faciendum non ad* , sabbati diem
25 יום השבת לבלתי עשות־בה כל־מלאכה׃ ובאו
solium super sedentes ,principes & reges hujus civitatis portas per
בשערי העיר הזאת מלכים ושרים ישבים על־כסא
vir ,eorum principes & , ipsi equis in & , curru in equitantes ,David
דוד רכבים ברכב ובסוסים המה ושריהם איש
.seculum in hæc civitas habitabitur & : Jerusalaim habitatores &,Jehudah
יהודה וישבי ירושלם וישבה העיר הזאת לעולם׃
terra de & ,Jerusalaim circuitibus de & ,Jehudah civitatib⁹ de venient Et
26 ובאו מערי־יהודה ומסביבות ירושלם ומארץ
adducentes ,*Meridie* ab & ,monte de & , *planitie* de & ,Binjamin
בנימן ומן־השפלה ומן־ההר ומן־הנגב מבאים
confessionem adducentes & : thus & ,*munus* & ,sacrificium & ,*ascensionem*
עלה וזבח ומנחה ולבונה ומבאי תודה
sanctificandum ad me ad *audieritis* non si Et .Domini domum
27 בית יהוה׃ ואם־לא תשמעו אלי לקדש את־
portas per *ingrediendum &* ,onus *portandum* non ad & , sabbati diem
יום השבת ולבלתי שאת משא ובא בשערי
,ejus portis in ignem faciam succendere & , sabbati die in Jerusalaim
ירושלם ביום השבת והצתי אש בשעריה
.extinguetur non & ,Jerusalaim palatia devorabit &
ואכלה ארמנות ירושלם ולא תכבה׃

Versio VULG. LAT.

15 Ecce ipsi dicunt ad me, Ubi est 16 verbum Domini? veniat. Et ego non sum turbatus, te pastorem sequens: & diem hominis non desideravi, tu scis. Quod egressum est de labiis meis, rectum in 17 conspectu tuo fuit. Non sis tu mihi formidini, spes mea tu in die 18 afflictionis. Confundantur qui me persequuntur, & non confundar ego: paveant illi, & non paveam ego: induc super eos diem afflictionis, & duplici con-19 tritione contere eos. Hæc dicit Dominus ad me; Vade, & sta in porta filiorum populi, per quam ingrediuntur reges Juda, & egrediuntur, & in cunctis portis Je-20 rusalem: Et dices ad eos; Audite verbū Dñi reges Juda, et omnis Juda, cunctiq; habitatores Jerusalem, qui ingredimini per portas 21 istas. Hæc dicit Dñs; Custodite animas vestras, & nolite portare pondera in die sabbati, nec in-22 feratis per portas Jerusalem. Et nolite ejicere onera de domibus vestris in die sabbati, & omne opus non facietis: sanctificate diem sabbati, sicut præcepi pa-23 tribus vestris. Et non audierunt, nec inclinaverunt aurem suam: sed induraverunt cervicem suam, ne audirent me, & ne accipe-24 rent disciplinam. Et erit: Si audieritis me, dicit Dominus, ut non inferatis onera p portas civitatis hujus in die sabbati: & si sanctificaveritis diem sabbati, 25 ne faciatis in eo omne opus: Ingredientur per portas civitatis hujus reges & principes, sedentes super solium David, & ascendentes in curribus & equis, ipsi & principes eorum, viri Juda, & habitatores Jerusalem: & habitabitur civitas hæc in sempi-26 ternum. Et venient de civitatibus Juda, & de circuitu Jerusalem, & de terra Benjamin, & de campestribus, & de montuosis, & ab Austro, portantes holocaustum, & victimam, & sacrificium, & thus, et inferent oblationem in domum Domini. 27 Si autem non audieritis me ut sanctificetis diem sabbati, et ne portetis onus, et ne inferatis per portas Jerusalem in die sabbati: succendam ignem in portis ejus: et devorabit domos Jerusalem, et non extinguetur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

15 Ἰδοὺ αὐτοὶ λέγουσι πρὸς μὲ, Ποῦ ἐστιν ὁ 16 λόγος κυρίου; (η) ἐλθέτω. Ἐγὼ δὲ οὐκ ἐκοπίασα κατακολουθῶν ὀπίσω σου. καὶ ἡμέραν ἀνθρώπου οὐκ ἐπεθύμησα· σὺ (θ) ἐπίστῃ· τὰ ἐκπορευόμενα διὰ τῶν χειλέων μου, πρὸ 17 προσώπου (ι) σού ἐστι. Μὴ γενηθῇς μοι εἰς ἀλλοτρίωσιν, φειδόμενός μου ἐν ἡμέρᾳ πονη-18 ρᾷ. Καταισχυνθήτωσαν οἱ διώκοντές με, (κ) καὶ μὴ καταισχυνθείην ἐγώ· πτοηθείησαν αὐτοὶ, καὶ μὴ πτοηθείην ἐγώ. ἐπάγαγε ἐπ' αὐτοὺς (λ) ἡμέραν πονηρὰν, δισσὸν σύν-19 τριμμα σύντριψον αὐτούς. Τάδε λέγει κύριος, Βάδισον, καὶ στῆθι (μ) ἐν ταῖς πύλαις υἱῶν λαοῦ σου, ἐν αἷς εἰσπορεύονται ἐν αὐταῖς βασιλεῖς Ἰούδα, καὶ ἐν αἷς ἐκπορεύονται ἐν αὐταῖς, καὶ ἐν πάσαις ταῖς πύλαις Ἱερουσα-20 λήμ, Καὶ ἐρεῖς (ν) αὐτοῖς, Ἀκούσατε τὸν λόγον κυρίου βασιλεῖς Ἰούδα, καὶ πᾶσα (ξ) Ἰουδαία, καὶ πᾶσα Ἱερουσαλὴμ, οἱ εἰσπορευ-21 όμενοι ἐν ταῖς πύλαις ταύταις· Τάδε λέγει κύριος, Φυλάσσεσθε τὰς (ο) ψυχὰς ὑμῶν, καὶ μὴ αἴρετε βαστάγματα ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων, καὶ μὴ ἐκπορεύεσθε ταῖς πύλαις 22 Ἱερουσαλὴμ, Καὶ μὴ ἐκφέρετε βαστάγματα ἐξ (π) οἰκιῶν ὑμῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων, καὶ πᾶν ἔργον οὐ ποιήσετε. ἁγιάσατε τὴν ἡμέραν τῶν σαββάτων, καθὼς ἐνετειλά-23 μην τοῖς πατράσιν (ρ) ὑμῶν. Καὶ οὐκ ἤκουσαν, καὶ οὐκ ἔκλιναν τὸ οὖς αὐτῶν, καὶ ἐσκλήρυναν τὸν τράχηλον αὐτῶν ὑπὲρ τοὺς πατέρας αὐτῶν, τοῦ μὴ (σ) ἀκοῦσαί μου, 24 καὶ τοῦ μὴ δέξασθαι παιδείαν. Καὶ ἔσται, ἐὰν (τ) εἰσακούσητέ μου, λέγει κύριος, τοῦ μὴ εἰσφέρειν βαστάγματα διὰ τῶν πυλῶν τῆς πόλεως ταύτης ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων, καὶ ἁγιάζειν τὴν ἡμέραν τῶν σαβ-25 βάτων, τοῦ μὴ ποιεῖν πᾶν ἔργον, Καὶ εἰσελεύσονται διὰ τῶν πυλῶν τῆς πόλεως ταύτης βασιλεῖς καὶ ἄρχοντες καθήμενοι ἐπὶ θρόνου Δαυὶδ, καὶ ἐπιβεβηκότες ἐφ' ἅρμασι καὶ ἵπποις αὐτῶν, αὐτοὶ καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν, ἄνδρες Ἰούδα καὶ οἱ κατοικοῦντες (υ) ἐν Ἱερουσαλὴμ· καὶ (φ) κατοικισθήσεται ἡ πόλις αὕ-26 τη εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ ἥξουσιν ἐκ τῶν πόλεων Ἰούδα, καὶ κυκλόθεν Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐκ γῆς Βενιαμὶν, καὶ ἐκ ( ) γῆς πεδινῆς, καὶ ἐκ τοῦ ὄρους, καὶ ἐκ τῆς πρὸς Νότον, φέροντες ὁλοκαυτώματα καὶ (χ) θυσίας καὶ θυμιάματα καὶ μάννα καὶ λίβανον, φέροντες αἴνεσιν εἰς 27 οἶκον κυρίου. Καὶ ἔσται ἐὰν μὴ (ψ) ἀκούσητέ μου τοῦ ἁγιάζειν τὴν ἡμέραν τῶν σαββάτων, τοῦ μὴ αἴρειν βαστάγματα, (ω) καὶ μὴ εἰσπορεύεσθαι ταῖς πύλαις Ἱερουσαλὴμ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων, καὶ ἀνάψω πῦρ ἐν ταῖς πύλαις αὐτῆς, καὶ καταφάγεται ἄμφοδα Ἱερουσαλὴμ, καὶ οὐ σβεσθήσεται.

MS. A. (η) ἐλθάτω. (θ) ἐπίστασαι· (ι) μου (κ) καὶ μὴ πτοηθείην ἐγώ· πτοηθείησαν αὐτοὶ, καὶ μὴ ἐγώ. (λ) λιμὸν * πονηρὰν, (μ) ἐν πύλαις (ν) πρὸς αὐτούς. Ἀκούσατε λόγον (ξ) Ἱερουσαλὴμ, (ο) φυλακὰς (π) οἴκων (ρ) * ἡμῶν. (σ) εἰσακοῦσαί μου, * Καὶ ἔσται, (τ) ἀκούσητέ μου, (υ) Ἱερουσαλὴμ· (φ) κατοικισθήσεται ( ) τῆς πεδινῆς, (χ) θυσίαν καὶ θυμίαμα (ψ) εἰσακούσητε (ω) εἰσπορεύεσθαι

Ecce ipsi dicunt ad me, Ubi est verbum Domini? veniat. Ego autem non laboravi sequens post te: & diem hominis non desideravi, tu scis. Quæ egrediuntur per labia mea, ante faciem tuam sunt. Non fias mihi (ς) in alienationem, parcens mihi in die mala. Confundantur, qui persequuntur me; & non confundar ego: paveant illi; & non paveam ego: induc super eos diem pessimum: duplici contritione contere eos. Hæc dicit Dominus; Vade, & sta in portis filiorum populi tui, in quibus ingrediuntur in eis reges Juda, & in quibus egrediuntur in eis, & in omnibus portis Hierusalem: Et dices eis; Audite verbum Domini reges Juda, & omnis Judæa, & omnis Hierusalem, qui ingredimini in portis his: Hæc dicit Dominus; Custodite animas vestras, & nolite portare pondera in die sabbatorum, (b) neque egredimini portis Hierusalem, Neque efferatis pondera è domibus vestris in die sabbatorum: & omne opus non facietis. Sanctificate diem sabbatorum, sicut præcepi patribus vestris. Et non audierunt, nec inclinaverunt aurem suam, & induraverunt cervicem suam super patres suos; ne audirent me, & ne acciperent disciplinam. Et erit, si exaudieritis me, dicit Dominus, ut non inferatis onera per portas civitatis hujus in die sabbatorum, et sanctificetis diem sabbatorum, non faciendo omne opus; Et introibunt per portas civitatis hujus reges, & principes sedentes super solium David, & ascendentes in curribus, & equis suis, ipsi & principes eorum, viri Juda, & habitatores Hierusalem: & habitabitur civitas hæc in æternum. Et venient de civitatibus Juda, et de circuitu Hierusalem, et de terra Benjamin, et de campestri, et de montana, et de quæ ad Austrum, portantes holocaustomata, et sacrificia, et thymiamata, et (i) manna, et thus, afferentes (k) laudem in domum Domini. Et erit, si non audieritis me, ut sanctificetis diem sabbatorum, non portando onera et non ingrediendo portis Hierusalem in die sabbatorum; et accendam ignem in portis ejus: et devorabit (l) bivia Hierusalem: et non extinguetur.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 16 הא אנון אמרין לי אן דאתנביתא בשמא דיי יתקים כען׃ ואנא לא עכבית על מימרך
מלאתנבאה עליהון לאותבותהון לדחלתך וליום ביש דאת מיתי עליהון לא חמדית
17 את גלי קדמך אפקות שפותי גלי קדמך הוה׃ לא יהי מימרך לי כדבין רחצני את בעדן
18 עקא׃ יבהתון רדפי ולא אבהית אנא יתכלמון אנון ולא אתכלם אנא איתא עליהון יום
19 ביש ועל חד תרין תברא תברנון׃ כדנן אמר יי לי איזל ותקום בתרע בני עמא דיעלון
20 ביה מלכיא דבית יהודה ודיפקון ביה ובכל תרעי ירושלם׃ ותימר להון קבילו פתגמא
דיי מלכיא דבית יהודה וכל דבית יהודה וכל יתבי ירושלם דעלין בתרעיא האלין׃
21 כדנן אמר יי אסתמרו בנפשתכון ולא תטלון מטול ביומא דשבתא ותעלון בתרעי
22 ירושלם׃ ולא תפקון מטול מבתיכון ביומא דשבתא וכל עבדתא לא תעבדון ותקדשון
23 ית יומא דשבתא כמה דפקדית ית אבהתכון׃ ולא קבילו ולא ארכינו ית אודניהון
24 ואקשיאו ית קדלהון בדיל דלא למשמע ובדיל דלא לקבלא אולפן׃ ויהי אם קבלא
תקבלון למימרי אמר יי בדיל דלא לאעלא מטול בתרעי קרתא הדא ביומא דשבתא
25 ולקדשא ית יומא דשבתא בדיל דלא למעבד ביה כל עבידתא׃ ויעלון בתרעי קרתא
26 הדא מלכין ורברבין יתבין על כורסי דוד רכיבין ברתיכין ובסוסין אנון ורברבניהון
אנש יהודה ויתבי ירושלם ותתיב קרתא הדא לעלם׃ ויתון מקרויא דבית יהודה
27 ומסחרני ירושלם ומארע שבט בנימן ומן שפילתא ומן טורא ומן דרומא מיתן עלון
ונכסת קודשין וקורבנין ולבונתא ומעלי תודתא לבית מקדשא דיי׃ ואם לא תקבלון
למימרי לקדשא ית יומא דשבתא ובדיל דלא למטל מטול ומעל בתרעי ירושלם
ביומא דשבתא ואדליק אשתא בתרעהא ותשיצי בירנית ירושלם ולא תטפי׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce ipsi dicunt mihi: Ubi est quod prophetâsti in nomine Dñi? confirmetur nunc. Ego autem non sum cunctat⁹ super verbum tuum ut non prophetarem eis, ut convertam eos ad timorem tui: & diem malam quam tu adduces super eos, non desideravi. Manifestum est enim corā te; quod egressum est de labiis meis, notum coram te fuit. Non sit Verbum tuum mihi [illegible]*dacia*: fiducia mea es tu in tempore tribulationis. Pudefiant persequentes me, & non pudefiam: confundantur & non confundar ego: adduc super eos diem mali, & duplici contritione contere eos. Hæc dixit Dñs mihi: Vade & sta in porta filiorū populi, per quā ingrediuntur reges dom⁹ Juda, & per quā egrediuntur, & in omnib⁹ portis Jerusalē. Et dices eis: Suscipite verbum Dñi reges dom⁹ Juda, & omnis dom⁹ Juda, & omnes habitatores Jerusalē qui ingrediuntur per portas istas. Hæc dicit Dñs: Custodite animas vestras, & non portetis on⁹ in die sabbathi, nec inferatis per portas Jerusalem. Neque efferatis on⁹ ex domib⁹ vestris in die sabbathi, & nullum op⁹ faciatis: & sanctificetis diem sabbathi, sicut præcepi patrib⁹ vestris. Nec obedierunt nec inclinaverunt aures suas, sed induraverunt cervicem suam ut non audirent, & ut non reciperent disciplinam. Et erit si obediendo obedieritis verbo meo, dicit Dñs, ut non inferatis on⁹ per portas civitatis huj⁹ in die sabbathi, & ut sanctificetis diē sabbathi, ut non faciatis in eo omne op⁹. Et ingredientur per portas civitatis huj⁹ reges & principes, sedentes super solium David, ascendentes in quadrigis & in equis, ipsi & principes eorum, viri Juda, & habitatores Jerusalem; & habitabitur civitas hæc in æternum. Et venient de civitatib⁹ dom⁹ Judæ, & de circuitu Jerusalem, & de terra trib⁹ Benjamin, & de campestrib⁹, et de montanis, et ab Austro, adducentes holocausta et victimas sanctificatas, et oblationes, et thus, et offerentes sacrificium confessionis in domo sanctuarii Dñi. Quòd si non obedieritis verbo meo, ut sanctificetis diem sabbathi, et ut non portetis on⁹, et inferatis per portas Jerusalem in die sabbathi, succendam ignem in portis ejus, et consumet palatia Jerusalem, et non extinguetur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܐ ܗܢܘܢ ܐܡܪܝܢ ܠܝ. ܐܝܟܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܢܐܬܐ ܗܫܐ. * ܘܐܢܐ ܒܒܝܫܬܐ ܠܐ ܫܒܩܬ
ܒܬܪܟ. ܐܢܬ ܝܕܥ ܐܢܬ ܕܝܘܡܗ ܕܒܪܢܫܐ ܠܐ ܪܓܬ. ܘܡܕܡ ܕܢܦܩ ܡܢ ܣܦܘܬܝ ܩܕܡ
ܐܦܝܟ ܗܘܐ. * ܠܐ ܬܗܘܐ ܠܝ ܠܬܒܪܐ. ܐܠܐ ܚܘܣ ܥܠܝ ܒܝܘܡܐ ܒܝܫܐ. * ܢܒܗܬܘܢ ܪܕܘܦܝ
ܘܠܐ ܐܒܗܬ ܐܢܐ. ܢܬܬܒܪܘܢ ܗܢܘܢ. ܘܠܐ ܐܬܬܒܪ ܐܢܐ. ܐܝܬܐ ܥܠܝܗܘܢ ܝܘܡܐ ܕܒܝܫܬܐ.
ܘܬܒܪܝܢ ܥܦܝܦܐ ܬܒܪ ܐܢܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܙܠ ܩܘܡ ܒܬܪܥܐ ܕܒܢܝ ܥܡܐ.
ܕܥܐܠܝܢ ܒܗ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܢܦܩܝܢ ܒܗ. ܘܒܟܠܗܘܢ ܬܪܥܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܘܐܡܪ
ܠܗܘܢ. ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܟܠܗ ܝܗܘܕܐ. ܘܟܠܗܘܢ
ܥܡܘܪܘܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ ܕܥܐܠܝܢ ܒܬܪܥܐ ܗܠܝܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܙܕܗܪܘ ܒܢܦܫܟܘܢ.
ܘܠܐ ܬܫܩܠܘܢ ܡܘܒܠܐ ܒܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ. ܘܬܥܠܘܢ ܒܬܪܥܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܘܠܐ ܬܦܩܘܢ
ܡܘܒܠܐ ܡܢ ܒܬܝܟܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ. ܘܟܠ ܥܒܕܐ ܠܐ ܬܥܒܕܘܢ. ܘܬܩܕܫܘܢ ܝܘܡܐ
ܕܫܒܬܐ. ܐܝܟ ܕܦܩܕܬ ܠܐܒܗܬܟܘܢ. * ܘܠܐ ܫܡܥܘ. ܘܠܐ ܐܪܟܢܘ ܐܕܢܗܘܢ. ܘܐܩܫܝܘ
ܩܕܠܗܘܢ ܕܠܐ ܢܫܡܥܘܢ. ܘܠܐ ܢܩܒܠܘܢ ܡܪܕܘܬܐ. * ܘܐܢ ܡܫܡܥ
ܬܫܡܥܘܢܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܠܐ ܬܥܠܘܢ ܡܘܒܠܐ ܒܬܪܥܝܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܒܝܘܡܐ
ܕܫܒܬܐ. ܘܬܩܕܫܘܢ ܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ. ܘܠܐ ܬܥܒܕܘܢ ܒܗ ܟܠ ܥܒܕܐ. * ܢܥܠܘܢ
ܒܬܪܥܝܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܡܠܟܐ ܘܪܘܪܒܢܐ. ܕܝܬܒܝܢ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܕܕܘܝܕ. ܟܕ ܪܟܝܒܝܢ
ܒܡܪܟܒܬܐ ܘܒܪܟܫܐ. ܗܢܘܢ ܘܪܘܪܒܢܝܗܘܢ. ܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܥܡܘܪܘܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ.
ܘܬܬܒ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܠܥܠܡ. * ܘܢܐܬܘܢ ܡܢ ܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܡܢ ܚܕܪܝ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܡܢ
ܐܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ ܘܡܢ ܫܦܝܠܬܐ. ܘܡܢ ܛܘܪܐ ܘܡܢ ܬܝܡܢܐ. ܕܡܝܬܝܢ ܕܒܚܐ ܘܩܘܪܒܢܐ
ܘܒܣܡܐ. ܘܡܝܬܝܢ ܬܘܕܝܬܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܢ ܠܐ ܬܫܡܥܘܢܢܝ ܠܡܩܕܫܘ
ܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ. ܕܠܐ ܬܫܩܠܘܢ ܡܘܒܠܐ ܘܬܥܠܘܢ ܒܬܪܥܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܒܝܘܡܐ
ܕܫܒܬܐ. ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܬܪܥܝܗ. ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܠܐ ܬܕܥܟ.

En iſti dicunt mihi, Ubinam eſt ſermo Domi- 15
ni? eveniat jam. Atqui ego in adverſitate 16
non deſtitui te: tu nôſti quòd humanum di-
em nequaquam expetiverim, & quicquid è
labiis meis prodiit, coram facie tua factum
ſit. Ne ſis mihi fractioni, ſed protege me in 17
die calamitoſo. Pudefiant perſecutores mei, 18
& ne pudefiam ego: frangantur ipſi, & ne
frangar ego: adduc ſuper eos diem malum,
& duplà fractione frange eos. Ita dixit mi- 19
hi Dominus, Vade, ſta in porta filiorum po-
puli, per quam ingrediuntur reges Judæ, &
per quam egrediuntur, atque in omnib⁹ por-
tis Jeruſalem: Et dic eis, Audite ſermonem 20
Domini reges Judæ, & univerſa domus Judæ,
omneſque cives Jeruſalem, qui per has por-
tas ingredimini. Sic dicit Dominus, Cave- 21
te vobis ipſis, & ne geſtetis onus die ſabba-
thi & inferatis per portas Jeroſolymæ: Ne- 22
que educatis onus è domibus veſtris die ſab-
bathi, neque ullum opus exerceatis: ſed ſan-
ctificetis diem ſabbathi, quemadmodum præ-
ceperam majoribus veſtris. At *illi* nec ob- 23
temperaverunt, nec aurem ſuam præbuerunt
ad audiendum: imò cervicem ſuam obdurâ-
runt, ne obtemperarent, & ne reciperent
diſciplinam. Vos autem ſi obedienter audi- 24
eritis me, dicit Dominus, ut nullum onus in-
feratis in portas urbis hujus die ſabbathi, ſed
ſanctificaveritis diem ſabbathi, nullumque
exercueritis in eo opus; Ingredientur per 25
hujus ejuſdem urbis portas reges atque ma-
gnates qui ſedent ſuper ſolium Davidis, ve-
cti curribus & equis tam ipſi & magnates eo-
rum, quàm viri Judæ & cives Jeruſalem, erit-
que civitas hæc perpetuò habitata: Et ex ci- 26
vitatibus Judæ circunjacentibus Jeroſolymæ,
è terra Benjaminis, ex planitie, ex monte, &
ab Auſtro venient qui afferant ſacrificia, ob-
lationes, & incenſum, quique afferant grati-
arum actionem in domum Domini. Quòd ſi 27
me non audieritis ſanctificando diem ſabba-
thi, quò minùs geſtetis onus & intretis per
portas Jeroſolymæ die ſabbathi; ignem di-
mittam in portas ejus, devorabitque palatia
Jeroſolymæ, nec extinguetur.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ها هاولاء يقولون اين هي كلمة الرب. لتأتي * وانا لم اتعب تابعا خلفك. ولم اشته يوم
انسان. انت تعلم بالبارزات من شفتي امام وجهك * انت لا تصر لي للغربة. اشفق علي
في يوم الشرير * ليخز الذين يطردوني ولا اخزى انا. ليجزعوا هم ولا انا. اجلب عليهم يوما
شريرا. اكسرهم كسرين مضعفة * هكذا يقول الرب. امض وقف في ابواب بني شعبك
الذين يدخلون فيهم ملوك يهوذا. والذين يخرجون منهم. وفي جميع ابواب ايروشليم.
* وتقول لهم اسمعوا قول الرب يا ملوك يهوذا. وكل ايروشليم الداخلون في هذه الابواب.
* هكذا يقول الرب. احتفظوا بنفوسكم ولا ترفعوا احمالا في يوم السبوت. ولا تدخلوا في
ابواب ايروشليم * ولا تخرجوا احمالا من بيوتكم في يوم السبوت. ولا تصنعوا كل عمل.
قدسوا يوم السبوت كما اوصيت اباءهم * ولم يسمعوا ولم يميلوا اذانهم. وغلظوا رقابهم اكثر
من ابائهم الا يسمعوني * ويكون ان سمعتم مني يقول الرب. الا تحملوا احمالا في ابواب هذه
المدينة في يوم السبوت. وان تقدسوا يوم السبوت الا تصنعوا كل عمل * ويدخلوا من
ابواب هذه المدينة الملوك والرؤساء الجلوس على كرسي داود والراكبون على مراكبهم
هاولاء ورؤساؤهم. رجال يهوذا وسكان ايروشليم. فلتسكن هذه المدينة الى الابد * ويأتون من
مدن يهوذا ومن حول ايروشليم. ومن ارض بنيامين. ومن الصحراء ومن الجبل. ومن
الارض نحو التيمن يحملون محرقات وذبيحة. وبخورا ومنا ولبانا يحملون تسبحة الى بيت الرب.
* ويكون ان لم تسمعوا مني لتقدسوا يوم السبوت. الا ترفعوا احمالا وتدخلوا في ابواب
ايروشليم في يوم السبوت. فاشعل نارا في ابوابها. وتأكل ازقة ايروشليم ولا تطفا.

En iſti dicunt, ubi eſt verbum Do- 15
mini? veniat. At ego non ſum de- 16
feſſus te ſequendo, nec optavi diem
hominis: tu nôſti prodeuntia de labiis
meis coram facie tua. Tu ne ſis mi- 17
hi peregrinationi, parce mihi in die
malo. Pudefiant qui me perſequun- 18
tur, & non terrear ego: formident
illi, non ego: induc ſuper eos lucem
pernicioſam: contere illos contritione
duplici. Sic ait Dominus, Sta & con- 19
ſiſte in portis illis popularium tuorum,
per quas ingrediuntur reges Judæ, &
è quibus egrediuntur, atque in omni-
bus portis Jeroſolymæ: Et dicas illis, Au- 20
dite ſententiam Domini O reges Judæ,
& omnes Jeroſolymitani ingredientes
per has portas. Sic ait Dominus, Ad- 21
vertite cautè, & ne ſublatis oneribus
in die ſabbathorum exeatis per portas
Jeroſolymæ: Neque extrahatis onera è 22
domibus veſtris in die ſabbathorum, ne-
que faciatis ullum opus; ſanctificate
diem ſabbathorum, quemadmodum præ-
ceperam patribus eorum. Verùm iſti 23
nec audierunt, nec admoverunt aures
ſuas; imò obdurârant cervices ſuas
pluſquàm patres ſui, quò minùs audi-
rent me. Erit autem ſi obtemperave- 24
ritis mihi, dicit Dominus, non ferentes
onera per portas hujus urbis in die ſab-
bathorum, ſique ſanctificaveritis diem
ſabbathorum, quò minùs faciatis ullum
opus; ut intrent per portas hujus urbis, 25
reges ac principes ſedentes ſuper ſolio
Davidis, & curribus ſuis inſidentes;
tam iſti quàm principes eorum, viri
Judæ & habitatores Jeroſolymæ; ut-
que habitetur hæc urbs in æternum:
Et veniant ex urbibus Judæ, & ex 26
locis adjacentibus Jeroſolymæ, è terra
Benjaminis, è deſerto, & ex monte; &
de terra quæ eſt Meridiem verſus affe-
rant holocauſta, ſacrificium, & incen-
ſum; & munus cum thure, afferant
inquam laudem in domum Domini. Ve- 27
rùm ſi non auſcultaveritis mihi ut
ſanctificetis diem ſabbathorum ita ut
minimè tollatis onera & ingrediamini
per portas Jeroſolymæ die ſabbathorum;
ignem accendam in portis ejus, qui
comedet vicos Jeroſolymæ, & non ex-
tinguetur.

ירמיה : יח

CAP. XVIII. יח

.dicendum ad ,Domino à Irmejahu ad fuit quod Verbum
הדבר אשר היה אל־ירמיהו מאת יהוה לאמר׃ 1
.mea verba te faciam audire ibi & ,figuli domum deſcendes & ,Surge
קום וירדת בית היוצר ושמה אשמיעך את־דברי׃ 2
.formas ſuper opus faciens ipſe ecce & ,figuli domum deſcendi Et
וארד בית היוצר והנהו עשה מלאכה על־האבנים׃ 3
: figuli manu in lutum velut faciens ipſe quod vas eſt corruptum Et
ונשחת הכלי אשר הוא עשה כחמר ביד היוצר 4
fuit rectum quemadmodū ,alterum vas illud fecit & ,eſt converſus Et
ושב ויעשהו כלי אחר כאשר ישר
: dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .faciendum ad figuli oculis in
בעיני היוצר לעשות׃ ויהי דבר־יהוה אלי לאמור׃ 5
,Iſrael domus vobis facere potero non iſte figulus ſicut Nūquid
הכיוצר הזה לא־אוכל לעשות לכם בית ישראל 6
,mea manu in vos ſic ,figuli manu in lutum ſicut Ecce ? Dominus ait
נאם־יהוה הנה כחמר ביד היוצר כן־אתם בידי
,regnum adverſus & ,gentem adverſus loquar Repentè .Iſrael domus
בית ישראל׃ רגע אדבר על־גוי ועל־ממלכה 7
gens convertetur Et .diſperdendum ad & ,demoliendum ad & ,evellendum ad
לנתוש ולנתוץ ולהאביד׃ ושב הגוי 8
ſuper me pœnitebit & : illud ſuper ſum locutus quod ſuo malo à ipſa
ההוא מרעתו אשר דברתי עליו ונחמתי על־
ſuper loquar repentè Et .ei facere cogitavi quod ,malo
הרעה אשר חשבתי לעשות לו׃ ורגע אדבר על־ 9
faciet Et .plantandum ad & ,ædificandum ad ,regnum ſuper & ,gentem
גוי ועל־ממלכה לבנות ולנטוע׃ ועשה 10
me pœnitebit & : mea voce in audiendum non ad ,meis oculis in malum
הרעה בעיני לבלתי שמע בקולי ונחמתי
dic ,nunc Et .ei benefaciendū ad dixi quod ,bono ſuper
על־הטובה אשר אמרתי להיטיב אותו׃ ועתה אמר־ 11
: dicendo ,Jeruſalaim habitatores ſuper & ,Jehudah virum ad quæſo
נא אל־איש־יהודה ועל־יושבי ירושלם לאמר
cogitans & ,malum vos ſuper fingens ego Ecce : Dominus dixit Sic
כה אמר יהוה הנה אנכי יוצר עליכם רעה וחשב
,mala ſua via à unuſquiſq; nunc Revertimini .cogitationem vos ſuper
עליכם מחשבה שובו נא איש מדרכו הרעה
: eſt Deſperatū : dixerunt Et .veſtros conatus & ,veſtras vias facite bonas &
והיטיבו דרכיכם ומעלליכם׃ ואמרו נואש 12
elationem unuſquiſque & ,ibimus noſtras cogitationes poſt ſiquidem
כי־אחרי מחשבותינו נלך ואיש שררות
Interrogate : Dominus dixit ſic Ideo .faciemus mali ſui cordis
לבו־הרע נעשה׃ לכן כה אמר יהוה שאלו־ 13
,valde fecit turpitudinem ? hæc ſicut audivit Quis : gentibus in nunc
נא בגוים מי שמע כאלה שערורת עשתה מאד
? Lebanon nivem agri petra de relinquet Nunquid .Iſrael virgo
בתולת ישראל׃ היעזב מצור שדי שלג לבנון 14
mei ſunt obliti Quia ? defluentes frigidæ alienæ aquæ deſerentur Num
אם־ינתשו מים זרים קרים נוזלים׃ כי־שכחני 15
eorū viis in eos fecerunt impingere & : adolebunt vanum in,meus populus
עמי לשוא יקטרו ויכשלום בדרכיהם
.calcatæ non viæ ſemitas perambulandum ad ,ſeculi ſemitis
שבילי עולם ללכת נתיבות דרך לא סלולה׃
tranſiens Omnis .ſeculi ſibilos ſtuporem in eorum terram ponendum Ad
לשום ארצם לשמה שרוקת עולם כל עובר 16
Orientalis ventus Sicut .ſuo capite in movebit & ,obſtupeſcet ,eam juxta
עליה ישם ויניד בראשו׃ כרוח־קדים 17
eis oſtendam facies non & ,cervicem : inimici facies ad eos diſpergam
אפיצם לפני אויב ערף ולא־פנים אראם
.eorum exitii die in
ביום אידם׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. XVIII.

1 VErbum, quod factum eſt ad Jeremiam à Domino, dicens; 2 Surge, & deſcende in domum figuli, & ibi audies verba mea. 3 Et deſcendi in domum figuli, & ecce ipſe faciebat opus ſuper 4 rotam. Et diſſipatum eſt vas, quod ipſe faciebat è luto manibus ſuis: converſúſque fecit illud vas alterum, ſicut placuerat 5 in oculis ejus ut faceret. Et factū eſt verbū Dn̄i ad me, dicens; 6 Numquid ſicut figulus iſte, non potero vobis facere, domus Iſrael, ait Dominus? ecce ſicut lutum in manu figuli, ſic vos 7 in manu mea, domus Iſrael. Repentè loquar adverſùm gentem & adverſùs regnum, ut eradicem, & deſtruam, & diſperdam 8 illud. Si pœnitentiam egerit gens illa à malo ſuo, quod locutus ſum adverſùs eam: agam & ego pœnitentiam ſuper malo, 9 quod cogitavi ut facerem ei. Et ſubitò loquar de gente & de regno, ut ædificem & plantem 10 illud. Si fecerit malum in oculis meis, ut non audiat vocem meam: pœnitentiam agam ſuper bono, quod locutus ſum 11 ut facerem ei. Nunc ergò dic viro Juda, & habitatoribus Jeruſalem, dicens; Hæc dicit Dominus; Ecce ego fingo contra vos malū, & cogito contra vos cogitationē: revertatur unuſquiſque à via ſua mala, & dirigite vias veſtras et ſtudia veſtra. 12 Qui dixerunt; Deſperavimus: poſt cogitationes enim noſtras ibimus, & unuſquiſque pravitatem cordis ſui mali faciemus. 13 Ideò hæc dicit Dominus; Interrogate Gentes; Quis audivit talia horribilia, quæ fecit nimis 14 virgo Iſrael? Numquid deficiet de petra agri nix Libani? aut evelli poſſunt aquæ erumpentes 15 frigidæ, & defluentes? Quia oblitus eſt meî populus meus, fruſtrà libantes, & impingentes in viis ſuis, in ſemitis ſeculi, ut ambularent p eas in itinere non 16 trito: Ut fieret terra eorum in deſolationem, & in ſibilum ſempiternum: omnis qui præterierit per eam obſtupeſcet, & mo- 17 vebit caput ſuum. Sicut ventus urens diſpergam eos coram inimico: dorſum, & non faciem oſtendam eis in die perditionis eorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ιη΄.

1 Ὁ λόγος ὁ γενόμενος παρὰ κυρίου πρὸς 2 Ἱερεμίαν, λέγων, Ἀνάστηθι, ϗ κατάβηθι εἰς οἶκον τοῦ κεραμέως, ϗ ἐκεῖ ἀκούσῃ τοὺς 3 λόγους μου. Καὶ κατέβην εἰς τὸν οἶκον τοῦ κεραμέως, καὶ ἰδοὺ αὐτὸς ἐποίει ἔργον ἐπὶ 4 τῶν λίθων. Καὶ ἔπεσε τὸ ἀγγεῖον, ὃ αὐτὸς ἐποίει ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ· ϗ πάλιν (α) αὐτὸς ἐποίησεν αὐτὸ ἀγγεῖον ἕτερον, καθ- 5 ὼς ἤρεσεν ἐνώπιον αὐτοῦ (β) ποιῆσαι. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, 6 Εἰ καθὼς ὁ κεραμεὺς οὗτος οὐ δυνήσομαι τοῦ ποιῆσαι ὑμᾶς οἶκος Ἰσραήλ; ἰδοὺ, ὡς ὁ πηλὸς τοῦ κεραμέως, ὑμεῖς ἐστε (γ) ἐν χερ- 7 σίν μου. Πέρας λαλήσω ἐπὶ ἔθνος, ἢ ἐπὶ (δ) βασιλείαν τοῦ ἐξᾶραι αὐτοὺς, ϗ τοῦ ἀ- 8 πολλύειν, Καὶ (ε) ἐπιστραφῇ τὸ ἔθνος ἐκεῖνο ἀπὸ πάντων τῶν (ζ) κακῶν αὐτῶν, ϗ μετανοήσω περὶ τῶν κακῶν, ὧν ἐλογισά- 9 μην τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς. Καὶ πέρας λαλήσω ἐπὶ (η) ἔθνος ϗ βασιλείαν, τοῦ ἀνοικο- 10 δομεῖσθαι ϗ τοῦ καταφυτεύεσθαι, Καὶ ποιήσωσι τὰ πονηρὰ ἐναντίον μου, τοῦ μὴ ἀκούειν (θ) τῆς φωνῆς μου, ϗ μετανοήσω περὶ τῶν ἀγαθῶν ὧν ἐλάλησα, τοῦ ποιῆσαι αὐ- 11 τοῖς. Καὶ νῦν εἰπὸν πρὸς ἄνδρας Ἰούδα, ϗ πρὸς τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλὴμ, Ἰδοὺ ἐγὼ πλάσσω ἐφ' ὑμᾶς κακὰ, ϗ λογίζομαι ἐφ' ὑμᾶς λογισμόν· ἀποστραφήτω δὴ ἕκαστος ἀπὸ (ι) ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, ϗ καλλίονα ποιήσατε τὰ ἐπιτηδεύματα ὑ- 12 μῶν. Καὶ εἶπαν, Ἀνδριούμεθα, ὅτι ὀπίσω τῶν ἀποστροφῶν ἡμῶν πορευσόμεθα, ϗ ἕκαστος τὰ ἀρεστὰ τῆς καρδίας αὐτοῦ τῆς πονη- 13 ρᾶς ποιήσομεν. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἐρωτήσατε δὴ ἐν ἔθνεσι, τίς ἤκουσε τοιαῦτα φρικτὰ ἃ (κ) ἐποίησε σφό- 14 δρα παρθένος (λ) Ἰσραήλ; Μὴ ἐκλείψουσιν ἀπὸ πέτρας μαστοὶ, ἢ χιὼν ἀπὸ τοῦ Λιβάνου; μὴ ἐκκλίνῃ ὕδωρ βιαίως ἀνέμῳ 15 φερόμενον; Ὅτι ἐπελάθοντό μου (μ) λαός μου, εἰς κενὸν ἐθυμίασαν ϗ ἀσθενήσουσιν ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν σχοίνους αἰωνίους, τοῦ ἐπιβῆναι τρίβους οὐκ ἔχοντας (ν) ὁδὸν 16 εἰς πορείαν, Τοῦ τάξαι τὴν γῆν αὐτῶν εἰς ἀφανισμὸν, (ξ) ϗ σύριγμα αἰώνιον· πάντες οἱ (ο) διαπορευόμενοι δι' αὐτῆς ἐκστήσονται, ϗ κινήσουσι (π) τὴν κεφαλὴν 17 αὐτῶν. Ὡς ἄνεμον καύσωνα διασπερῶ αὐτοὺς κατὰ πρόσωπον (ρ) ἐχθρῶν αὐτῶν, δείξω αὐτοῖς ἡμέραν ἀπωλείας αὐτῶν.

CAP. XVIII.

VErbum, quod factum eſt à Domino ad Hieremiam, dicens; Surge, & deſcende in domum figuli: & ibi audies verba mea. Et deſcendi in domum figuli: & ecce ipſe faciebat opus ſuper lapides: Et (a) cecidit vas, quod ipſe faciebat in manibus ſuis: & rurſus ipſe fecit illud vas alienum, ſicut placuerat in conſpectu ſuo facere. Et factum eſt verbum Domini ad me; dicens; Si, quemadmodum figulus iſte, non potero facere vos, domus Iſrael? Ecce, ſicut lutum figuli, vos eſtis in manibus meis. Ad ſummam loquar ſuper gentem, aut ſuper regnum, ut auferam illos, & diſperdam, Et convertetur gens illa ab omnibus malis ſuis; & agam pœnitentiam de malis, quæ cogitaveram facere eis. Et ad ſummam loquar ſuper gentem, & regnum, ad reædificandum, & plantandum, Et facient mala coram me, non audiendo vocem meam; & pœnitentiam agam de bonis, quæ locutus eram facere eis. Et nunc dic ad viros Juda, & ad habitatores Hieruſalem; Ecce ego fingo ſuper vos mala, & cogito ſuper vos cogitationem. Avertatur nunc unuſquiſque à via ſua mala, & meliora facite ſtudia veſtra. Et dixerunt; (b) Confortabimur; quia poſt averſiones noſtras ibimus, & unuſquiſque placita cordis ſui mali faciemus. Ideò hæc dicit Dominus; Interrogate nunc in gentibus; quis audivit talia horribilia, quæ fecit nimis virgo Iſrael? Nunquid deficient de petra ubera, aut nix de Libano? nunquid declinabit aqua violenter ſublata vento? Quia obliti ſunt meî populus meus: in vacuum adoleverunt, & infirmabuntur in viis ſuis, (c) funiculos ſempiternos, ad conſcendendum ſemitas non habentes viam ad iter, Ad ponendum terram ſuam in deſolationem, & ſibilum ſempiternum. Omnes tranſeuntes per eam obſtupeſcent, & movebunt caput ſuum. Sicut ventum urentem, diſpergam eos ad faciem inimicorum ſuorum: (d) oſtendam eis diem perditionis eorum.

MS.A. (α) αὐτὸ ἐποίησεν ἀγγεῖον (β) τοῦ ποιῆσαι. (γ) ἐν ταῖς χερσί (δ) βασιλείας (ε) ἀποστρέψῃ (ζ) κακῶν, ϗ μετανοήσω περὶ πάντων τῶν κακῶν, ὧν ἐλάλησα τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς. (η) ἔθνη ϗ ἐπὶ βασιλείας, (θ) τῆς φωνῆς (ι) τῆς ὁδοῦ (κ) ἐποίησέν μοι (λ) Ἱερουσαλήμ; (μ) ὁ λαός (ν) ὁδὸν πορείας, (ξ) ϗ εἰς σύρριγμα (ο) παραπορευόμενοι (π) τὰς κεφαλὰς (ρ) τῶν ἐχθρῶν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

יח

1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה מן קדם יי למימר׃ 2 קום ותיחות לבית פחרא ותמן
אשמענך ית פתגמי׃ 3 ונחתית לבית פחרא והא הוא עבד עבידתא על סדנא׃ 4 ואתחבל
מנא דהוה עביד דטינא ביד פחרא ותב ועבדיה מן אוחרן כמא דכשר בעיני פחרא
למעבד׃ 5 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ 6 הכפחרא הדין הלא יוכלא קדמי
למעבד לכון בית ישראל אמר יי הא כמא דטינא ביד פחרא כן אתון חשיבין קדמי
בית ישראל׃ 7 ומן אמליך על עמא ועל מלכותא למעקר ולתרעא ולאבדא׃
8 ויתוב עמא ההוא מבשתיה דגזרית עלוהי ואתיב מן בישתא דחשבית למעבד ליה׃
9 וזמן אמליך על עמא ועל מלכותא למבני ולקימא׃ 10 ויעבד דביש קדמי בדיל דלא
לקבלא למימרי ואתיב מן טבתא דאמרית לאיטבא ליה׃ 11 וכען אמר כען לאנש
יהודה וליתבי ירושלם למימר כדנן אמר יי הא אנא ברי עליכון בישא ומחשב עליכון
מחשבא תובו כען גבר מאורחיה בישתא ואתקינו אורחתכון ועובדיכון׃ 12 ואמרו
תבנא מבתר פולחנך ארי בתר עשתוננא נהך וגבר הרהור לביה בישא נעביד׃ 13 בכן
כדנן אמר יי שאילו כען בעממיא מן שמע כאלין שנן עבדת לחדא כנישתא דישראל׃
14 הא כמא דלית אפשר דיפסוק מי תלג דנחת על חקלי לבנן כן לא יפסקון ממטר נחתין
15 ומי מבוע נבעין׃ ארי שבקו פולחני עמי לא להנאה אסיקו בוסמין יאטעאינון
באורחתהון בישתא משבילין תקנן דמן עלמא למיזל באורחן דלא תקנן בשבילין דלא
מכבשין׃ 16 לשואה ארעהון לצדו ואשתממות עלם כל דיעבר עלה יכלי ויניד ברישיה׃
17 כבדור רוח קדומא כן אבדרנון קדם בעלי דבביהון קדל ולא אפין אחזינון ביום
תבריהון׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XVIII.

VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam à facie Domini dicentis: Surge & deſcende in domum figuli, & ibi audire te faciam verba mea. Et deſcendi in domum figuli; & ecce ipſe faciebat opus ſuper rotam. Et diſſipatum eſt vas quod fiebat ex luto in manu figuli: & reverſus eſt, & fecit vas aliud, ſicut placuit in oculis figuli ut faceret. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: Nunquid ſicut figulus iſte, non poſſum vobis facere domꝰ Iſrael; dicit Dominus? Ecce ſicut lutum in manu figuli, ſic vos habemini coram me domꝰ Iſrael. Tempore quodam loquar ſuper populū & ſuper regnum, ut evellam & confringā & diſperdam. Si autem converſus fuerit populꝰ ille à malo ſuo, ꝙ decrevi contra eum: & avertar ego à malo quod cogitavi ut facerē ei. Alio tempore loquar ſuper populum & ſuper regnū ut ædificē, & ut ſuſtentem. Et ſi fecerit quod malum eſt in conſpectu meo, ut non obediat verbo meo; & avertar ego à bono quod dixi ut benefacerem ei. Nunc ergo age, dic viro Juda & habitatoribꝰ Jeruſalē, dicendo: Hæc dicit Dn̄s: Ecce ego creo ſup vos malum, & cogito contra vos cogitationem: convertimini nunc unuſquiſque à via ſua mala, & dirigite vias veſtras & opera veſtra. Et dixerunt: Averſi ſumus à cultu tuo; quia poſt cogitationes noſtras ibimus, & quiſque cogitationem cordis ſui pravam faciemus. Propterea hæc dicit Dn̄s: Interrogate nunc in populis, quis audivit talia? Rem alienam admodum fecit cœtus Iſrael. Ecce ſicut fieri non poteſt ut deficiat *aqua nivalis* quæ deſcendit ſuper agros Libani; ſic non deficient pluviæ deſcendentes, & aquæ fontis manantes. Quia dereliquerunt cultum meum populus meus, in nullum uſum accenderunt aromata, & errare eos fecerunt in viis ſuis peſſimis à ſemitis rectis quæ à ſeculo fuerunt, ut ambularent in viis non rectis, in ſemitis non ſtratis. Ut poneretur terra eorum in vaſtitatem & deſolationem perpetuam: omnis qui tranſierit per eam, clamabit, & movebit caput ſuum. Juxta diſperſionem venti Orientalis diſpergam eos ante inimicos ſuos: dorſum & non faciem oſtendam eis in die interitus eorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܚܝ * ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܩܘܡ
ܢܚܘܬ ܠܒܝܬܗ ܕܦܚܪܐ. ܘܬܡܢ ܐܫܡܥܟ ܦܬܓܡܝ. * ܘܢܚܬܬ ܠܒܝܬܗ ܕܦܚܪܐ. ܐܝܟ ܦܬܓܡܗ
ܕܡܪܝܐ. ܘܗܐ ܗܘ ܥܒܕ ܥܒܕܐ ܥܠ ܩܒܝܠܐ. * ܘܐܬܚܒܠ ܗܘܐ ܡܐܢܐ ܕܛܝܢܐ ܕܥܒܕ ܗܘܐ
ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܦܚܪܐ. ܘܗܦܟ ܘܥܒܕܗ ܡܐܢܐ ܐܚܪܢܐ. ܐܝܟ ܕܫܦܪ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ
ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܝܟ ܦܚܪܐ ܗܢܐ. ܠܐ ܡܫܟܚ ܐܢܐ ܕܐܥܒܕ ܠܟܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܗܐ ܐܝܟ ܛܝܢܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܦܚܪܐ. ܗܟܢܐ ܐܢܬܘܢ ܒܐܝܕܝ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܐܢ ܡܢ ܫܠܝ
ܐܡܪ ܐܢܐ ܥܠ ܥܡܐ ܘܥܠ ܡܠܟܘܬܐ: ܠܡܥܩܪ. ܘܠܡܣܚܦ. ܘܠܡܬܪܥܘ ܘܠܡܘܒܕܘ:
* ܘܢܬܘܒ ܥܡܐ ܗܘ ܡܢ ܒܝܫܬܗ. ܐܗܦܘܟ ܡܢܗ ܒܝܫܬܐ ܕܐܬܚܫܒܬ ܠܡܥܒܕ ܠܗ.
* ܘܐܢ ܐܡܪ ܥܠ ܥܡܐ ܘܥܠ ܡܠܟܘܬܐ ܠܡܒܢܐ ܘܠܡܢܨܒ: * ܘܢܥܒܕ ܒܝܫܐ ܩܕܡܝ ܘܠܐ ܢܫܡܥ
ܒܩܠܝ. ܐܗܦܘܟ ܡܢܗ ܛܒܬܐ ܕܐܡܪܬ ܠܡܛܝܒܘ ܠܗ. * ܘܗܫܐ ܐܡܪ ܠܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ
ܘܠܥܡܘܪܝ ܐܘܪܫܠܡ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܐܝܬܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܬܚܫܒ ܐܢܐ
ܥܠܝܟܘܢ ܡܚܫܒܬܐ. ܬܘܒܘ ܗܫܐ ܐܢܫ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܬܪܨܘ ܐܘܪܚܬܟܘܢ
ܘܥܒܕܝܟܘܢ. * ܘܐܡܪܘ ܗܢܘܢ. ܢܬܚܝܠ. ܘܒܬܪ ܡܚܫܒܬܢ ܢܐܙܠ. ܘܐܢܫ ܒܪܓܝܓܬ ܠܒܗ
ܒܝܫܐ ܢܥܒܕ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܫܐܠܘ ܒܝܢ ܥܡܡܐ ܡܢܘ ܥܒܕ ܐܝܟ ܗܠܝܢ.
ܫܛܝܘܬܐ ܪܒܬܐ ܥܒܕܬ ܒܬܘܠܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܐܢ ܬܚܣܪ ܡܢ ܛܘܪ ܬܕܝܐ ܬܠܓܐ ܘܡܢ
ܠܒܢܢ. ܐܘ ܢܦܣܩܘܢ ܡܝܐ ܩܪܝܪܐ ܢܘܟܪܝܐ ܕܪܕܝܢ. * ܡܛܠ ܕܐܛܥܝܘܢܝ ܥܡܝ.
ܠܣܪܝܩܘܬܐ ܣܡܘ ܒܣܡܐ. ܘܐܬܬܩܠܘ ܒܐܘܪܚܬܗܘܢ ܒܫܒܝܠܐ ܕܥܠܡ. ܠܡܐܙܠ
ܒܫܒܝܠܐ ܕܐܘܪܚܐ ܠܐ ܕܫܝܐ. * ܠܡܣܡ ܐܪܥܗܘܢ ܠܬܡܗܐ ܘܠܡܫܪܘܩܝܬܐ ܕܥܠܡ.
ܘܟܠ ܕܢܥܒܪ ܒܗ. ܢܬܕܡܪ. ܘܢܢܝܕ ܒܪܫܗ. * ܐܝܟ ܪܘܚܐ ܕܩܕܝܡܐ ܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܩܕܡ
ܒܥܠܕܒܒܐ. ܩܕܠܐ ܘܠܐ ܐܦܐ ܐܚܘܐ ܐܢܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܬܒܪܗܘܢ.

CAP. XVIII.

SErmo qui factus eſt ad Jeremiam à Dño, 1
dicendo; Surge, deſcende in domum figuli, 2
ibique declarabo tibi ſermones meos. Quare 3
cùm deſcendiſſē in domū figuli juxta ſermonē
Dñi, ecce is navabat opᵘ ſup incude (*rotâ:*)
At illo vaſe luteo quod faciebat, in manu figuli 4
corrupto, iterum compoſuit illud in aliud
vas quale voluit. Tum fuit ad me ſermo Domini, 5
dicendo; An ſicut figulus iſte non poſſem 6
facere vobis Iſraelitæ, dicit Dominus?
Ecce qualis eſt argilla inter manus figuli, tales
eſtis vos inter manus meas Iſraelitæ. Si 7
repentè decernam populum aliquem aut regnum
convellere, demoliri, deturbare, ac perdere;
Is autem populus convertatur à malitia 8
ſua, avertam ab eo malum quod illi facere
propoſueram. Similiter ſi populum aliquem 9
aut regnum ædificare & plantare ſtatuam;
Is autem quod malum eſt coram me, perpetraverit, 10
nec audierit vocem meam; avertam
ab eo bonum quo illum afficere decreveram.
Jam ergò dic viris Judæ & civibus Jeroſolymæ; 11
Sic dicit Dominus, Ecce malum
contra vos creo, & conſilium contra vos
molior: pœnitentiam agite, & revertimini
quiſque à via ſua peſſima, & corrigite vias
veſtras & actiones veſtras. Ipſi verò dixerunt, 12
Obſtinemus *animum*, ſequamur cogitationes
noſtras, & quiſque libidinibus cordis
ſui peſſimi indulgeat. Iccirco ſic ait Dominᵘ, 13
Diſquirite inter gentes quis talia fecerit: ſtultitiam
maximam commiſit virgo Iſraelis. An 14
deficeret nix à Monte uberum & à Libano?
& an deſiſterent aquæ frigidæ peregrinæ quæ
fluunt? Quòd oblivioni me tradiderint populus 15
meus, vanitati thura adoleverint, & impegerint
in viis ſuis, in ſemitis æternis, eundo
per ſemitas per viam non tritam: Ut terram 16
ſuam exponant admirationi atque ſibilo
perpetuo, & quicunque per eam tranſierit,
obſtupeſcat, & agitet caput ſuum. Ut ventus 17
calidus diſſipabo illos coram inimicis:
cervicem, non autem faciem oſtendam eis die
calamitatum ipſorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثامن عشر *

* القول الصاير من قبل الرب الي ارمياء قايلا *

* قم وانزل الي بيت الفاخوري * وهناك تسمع اقوالي * فنزلت الي بيت الفاخوري وها هو صانع
عملا على الحجارة * وسقط الاناء الذي صنعه بيده * وصنعه ثانية اناء اخر كما رضي ان
يصنعه امامه * وكان قول الرب الي قايلا * اليس مثل هذا الفاخوري لا استطيع ان اصنعكم
يا بيت اسرايل * ها مثل طين الفاخوري انتم تكونون في يدي * اذا تكلمت بنهاية
على امة او على مملكة لاستاصلهم واهلكهم * فترجع تلك الامة عن جميع الشرور فارجع
عن جميع الشرور التي تكلمت بها ان اصنعها بهم * واذا تكلمت بنهاية على امم وعلى
ممالك ان ابنيها واغرسها * فيصنعون الشرور امامي الا يسمعوا صوتي * فارجع عن جميع
الخيرات التي تكلمت بها ان اصنعها لهم * والان قلت عن رجال يهودا وعلى سكان ايروسليم
وها انا اجلب عليكم شرورا وافكر عليكم فكرا * فليرجع كل واحد من طريقه
الردية واصنعوا اعمالكم جيدا * فقالوا نتشجع لانا خلف تركيباتنا نمضي ويصنع
كل واحد مرضيات قلبه الردي * لاجل هذا هكذا يقول الرب * اسالوا في الامم
من سمع مثل هذه المرهوبات التي صنعتها العذرى ايروسليم جدا * هل تفنى الثدي
من الصخرة والثلج من لبنان او يميل الماء المحمول بريح عاصف * لان شعبي نسيني
بخروا للباطل * ويعثرون في طرقاتهم ليسلكوا سبلا معوجة دهرية * وليس لهم طريق
مسلك * ليبيدوا ارضهم للفناء وللصفير الابدي جميع المارين بها يتحيرون ويحركون
روسهم * مثل ريح سموم ابددهم لوجه اعدايهم * اظهرهم يوم هلاكهم

CAP. XVIII.

SErmo habitus à Domino cum 1
Jeremia, dicendo;

Surge, & deſcende in domum figuli, 2
ibique audies ſermones meos. Cùm ergò 3
deſcendiſſem in domum figuli, ecce
is opus fecerat ſuper lapides: Cadente 4
autem vaſe quod manu ſuâ fecerat,
denuo compoſuit illud in aliud vas,
prout illud componere ſibi placuit. Tunc 5
fuit ad me ſermo Domini dicentis;
Num ut figulus iſte non poſſem vos 6
facere O domus Iſrael? ecce tanquam
lutum figuli vos eſtis inter manus meas.
Quum facilè pronuntiavero de gente 7
aut de regno aliquo extirpando & perdendo; 8
Si revertatur gens illa ab omnibus
ſceleribus, ſimiliter ego revertar ab
omnibus malis quibus eos afficere ſtatueram.
Rurſus quum facilè locutus 9
fuero de gentibus ac regnis ædificandis
ac plantandis; Si mala perpetrent coram 10
me, ita ut non audiant vocem meam; deſiſtam
ab omnibus bonis quibus eos afficere
decreveram. Jam verò cùm dixerim 11
de viris Judæ & habitatoribus
Jeruſalem, En ego quoque adducturus
ſum contra vos mala, & cogito contra
vos cogitationem; ideo revertatur unuſquiſque
à via ſua prava, & bonas reddite
actiones veſtras: Dicunt ipſi, Sumamus 12
animos, etenim converſationes
noſtras proſequemur, & faciamus quiſque
placita animi ſui peſſimi. Hac de 13
cauſa ſic dicit Dominus, Interrogate
inter populos quis audierit talia horrenda
qualia atrociter in me perpetravit
virgo Jeroſolyma. Num deficiant 14
ubera à rupe, & nix à Libano? an
divertantur aquæ vento impetuoſo abreptæ?
Nam populus meus oblitus eſt mei, 15
adoleverunt vanitati, & languent in
viis ſuis, ut incedant per ſemitas rectas
perpetuas, cùm non ſit eis iter pervium:
Ut deſolent terram ſuam exitio & 16
ſibilo perpetuo: omnes qui tranſierint
per eam, obſtupeſcant & agitent capita
ſua. Ut ventus urens diſperdam 17
eos ante faciem hoſtium ſuorum, tergo
poſtponam eos die perditionis eorum.

ירמיה : יט

non nam : cogitatus Irmeiahu super cogitemus & Venite : dixerunt Et
18 ויאמרו לכו ונחשבה על־ירמיהו מחשבות כי לא
.propheta à verbum & ,sapiente a consilium & ,sacerdote à lex peribit
תאבד תורה מכהן ועצה מחכם ודבר מנביא
universa ad attendamus ne & ,lingua in eum percutiamus & ,Venite
לכו ונכהו בלשון ואל־נקשיבה אל־כל־
.mecū litigantiū vocem ad audi & ,me ad Domine Attende .ejus verba
19 דבריו : הקשיבה יהוה אלי ושמע לקול יריבי :
?meæ animæ foveam foderūt quia : malum bono pro redditur Nunquid
20 הישלם תחת־טובה רעה כי־כרו שוחה לנפשי
avertendum ad ,bonum eis super loquendum ad ,tuas facies ad me stare Recordare
זכר עמדי לפניך לדבר עליהם טובה להשיב
,famem in eorum filios da Propterea .eis ab tuam iram
21 את־חמתך מהם : לכן תן את־בניהם לרעב
, orbatæ eorum uxores sint & , gladii manus super eos fluere fac &
והגרם על־ידי־חרב ותהינה נשיהם שכלות
percussi eorum juvenes : morte occisi sint earum viri & , viduæ &
ואלמנות ואנשיהם יהיו הרגי מות בחוריהם מכי־
adduces nam : eorū domibus de clamor Audiatur .prœlio in gladio
22 חרב במלחמה : תשמע זעקה מבתיהם כי־תביא
,me capiendum ad foveam foderunt quia : repentè agmen eos super
עליהם גדוד פתאם כי־כרו שיחה ללכדני
omne nōsti Domine tu Et .meis pedibus absconderunt laqueos &
23 ופחים טמנו לרגלי : ואתה יהוה ידעת את־כל־
,eorū iniquitatem super expies ne : mortem in me super eorū consilium
עצתם עלי למות אל־תכפר על־עונם
,tuas facies ad offensi sint Et .deleas ne tuis faciebus à eorū peccatum &
וחטאתם מלפניך אל־תמחי והיו מכשלים לפניך
.eis cum fac tui nasi tempore in
בעת אפך עשה בהם :

CAP. XIX. יט

, testæ figuli lagenam emes & ,Vade : Dominus dixit Sic
1 כה אמר יהוה הלוך וקנית בקבק יוצר חרש
ad exibis Et .sacerdotum senioribus de & , populi senioribus de &
2 ומזקני העם ומזקני הכהנים : ויצאת אל־
prædicabis & ,solaris portæ ostio quæ , Hinnom filii vallem
גיא בן־הנם אשר פתח שער החרסות וקראת
Audite : dices Et .te ad loquar quæ , verba ibi
3 שם את־הדברים אשר־אדבר אליך : ואמרת שמעו
dixit Sic : Jerusalaim habitatores & ,Jehudah reges Domini verbum
דבר־יהוה מלכי יהודה וישבי ירושלם כה־אמר
super malum adducens ego Ecce : Israel Deus exercituum Dominus
יהוה צבאות אלהי ישראל הנני מביא רעה על־
Eò .ejus aures tinnient ,illud audientis omnis quod ,istum locum
4 המקום הזה אשר כל־שמעה תצלנה אזניו : יען
adoleverunt & ,istum locum alienaverunt & ,me dereliquerūt quòd
אשר עזבני וינכרו את־המקום הזה ויקטרו־
,eorū patres & , ipsi ,eos noverunt non quos , alienis Diis eo in
בו לאלהים אחרים אשר לא־ידעום המה ואבותיהם
.innocentū sanguine istum locum repleverūt & : Jehudah reges &
ומלכי יהודה ומלאו את־המקום הזה דם נקים :
igni in suos filios comburendū ad , Bahal excelsa ædificaverūt Et
5 ובנו את־במות הבעל לשרף את־בניהם באש
ascendit nec ,sum locutus nec ,præcepi non quod : Bahal ipsi ascensiones
עלות לבעל אשר לא צויתי ולא דברתי ולא עלתה
,Dominus dixit ,venientes dies ecce Propterea .meum cor super
6 על־לבי : לכן הנה־ימים באים נאם־יהוה
filii vallis & , Topheth amplius isti loco , vocabitur non &
ולא־יקרא למקום הזה עוד התפת וגיא בן
.occisionis Vallis quinimo : Hinnom
הנם כי אם־גיא ההרגה :

Versio VULG. LAT.

18 Et dixerunt; Venite, & cogitemus contra Jeremiam cogitationes: non enim peribit lex à sacerdote, neque consilium à sapiente, nec sermo à propheta: venite, & percutiamus eum lingua, & non attendamus ad universos
19 sermones ejus. Attende, Domine, ad me, & audi vocem adversari-
20 orum meorū. Numquid redditur pro bono malum, quia foderunt foveā animæ meæ? Recordare ꝙ steterim in conspectu tuo, ut loquerer pro eis bonum, & averterem indignationem tuam ab eis.
21 Propterea da filios eorum in famem, & deduc eos in manus gladii: fiant uxores eorum absque liberis, & viduæ: & viri earum interficiantur morte: juvenes eorum confodiantur gladio in
22 prælio. Audiatur clamor de domibus eorum: adduces enim super eos latronem repentè: quia foderunt foveam ut caperent me, & laqueos absconderunt pedib⁹
23 meis. Tu autem, Domine, scis omne consilium eorum adversum me in mortem: ne propitieris iniquitati eorum, & peccatum eorum à facie tua non deleatur: fiant corruentes in conspectu tuo, in tempore furoris tui abutere eis.

CAP. XIX.

1 HÆc dicit Dominus, Vade, & accipe lagunculam figuli testeam à senioribus populi, & à senio-
2 ribus sacerdotum: Et egredere ad vallem filii Ennom, quæ est juxta introitum portæ fictilis: & prædicabis ibi verba, quæ ego
3 loquar ad te. Et dices; Audite verbum Domini, reges Juda, & habitatores Jerusalem: hæc dicit Dominus exercituū Deus Israel; Ecce ego inducā afflictionē sup locū istū, ita ut omnis, qui audie-
4 rit illā, tinniant aures ejus: Eò quòd dereliquerint me, & alienū fecerint locum istum: & libaverunt in eo diis alienis, quos nescierunt ipsi, & patres eorum, & reges Juda: & repleverunt locum istum sanguine innocen-
5 tum. Et ædificaverunt excelsa Baalim, ad comburendos filios suos igni in holocaustū Baalim: quæ non præcepi, nec locutus sum, nec ascenderunt in cor me-
6 um. Propterea ecce dies veniunt, dicit Dominus: & non vocabitur amplius locus iste, Topheth, et Vallis filii Ennom, sed Vallis occisionis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

18 Καὶ εἶπαν, (σ) Δεῦτε ϗ λογισώμεθα ἐπὶ Ἱε-
ρεμίαν λογισμὸν, ὅτι οὐκ ἀπολεῖται νόμος ἀ-
πὸ ἱερέως, ϗ βουλὴ ἀπὸ συνετοῦ, ϗ λόγος
ἀπὸ προφήτου· δεῦτε ϗ πατάξωμεν (τ) αὐ-
τὸν ἐν γλώσσῃ, ϗ ἀκουσόμεθα πάντας τοὺς
19 λόγους αὐτοῦ. Εἰσάκουσόν μου κύριε, ϗ (υ) εἰσ-
20 άκουσον τῆς φωνῆς τοῦ δικαιώματός μου. Εἰ
ἀνταποδίδοται ἀντὶ ἀγαθῶν κακὰ, ὅτι συν-
ελάλησαν ῥήματα κατὰ τῆς ψυχῆς μου, ϗ
τὴν κόλασιν αὐτῶν (φ) ἔκρυψάν μοι. μνήσθη-
τι ἑστηκότος μου κατὰ πρόσωπόν σου, τοῦ λα-
λῆσαι ὑπὲρ αὐτῶν ἀγαθὰ, τοῦ ἀποστρέψαι τὸν
21 θυμόν σου ἀπ' αὐτῶν. Διατοῦτο δὸς τοὺς
υἱοὺς αὐτῶν εἰς λιμὸν, ϗ ἄθροισον αὐτοὺς εἰς
χεῖρας (χ) μαχαίρας· γενέσθωσαν αἱ γυναῖ-
κες αὐτῶν (ψ) ἄτεκνοι ϗ χῆραι, ϗ οἱ ἄν-
δρες αὐτῶν (ω) γενέσθωσαν ἀνῃρημένοι θανά-
τῳ, ϗ οἱ νεανίσκοι αὐτῶν πεπτωκότες (α)
22 μαχαίρᾳ ἐν πολέμῳ. Γενηθήτω κραυγὴ ἐν
ταῖς οἰκίαις αὐτῶν· (β) ἐπάξεις ἐπ' αὐτοὺς
λῃστὰς ἄφνω, ὅτι ἐνεχείρησαν λόγον εἰς σύλ-
ληψίν μου, ϗ παγίδας ἔκρυψαν ἐπ' ἐμέ.
23 Καὶ σὺ (γ) κύριε ἔγνως ἅπασαν τὴν βουλὴν
(δ) αὐτῶν ἐπ' ἐμὲ εἰς θάνατον· μὴ (ε) ἀ-
θῳώσῃς τὰς ἀδικίας αὐτῶν, ϗ τὰς (ζ) ἁμαρ-
τίας αὐτῶν ἀπὸ προσώπου σου (η) μὴ ἐξαλεί-
ψῃς. γενέσθω ἡ ἀσθένεια αὐτῶν ἐναντίον σου,
ἐν καιρῷ θυμοῦ σου (θ) ποίησον ἐν αὐτοῖς.

MS. A. (σ) Δεῦτε, λογισώμεθα (τ) αὐτὸν γλώσσῃ, (υ) ἐπάκουσον (φ) ἔκρυψαν. μνήσθητι (χ) μαχαίρης· (ψ) ἄτεκνοι χῆραι, (ω) ἔστωσαν ἀνῃρημένοι ἐν θανάτῳ, (α) ἐν μαχαίρῃ (β) ἐπάγαγε (γ) κύριε κύριε (δ) αὐτῶν ἣν ἐβουλεύσαντο ἐπ' ἐμὲ (ε) ἀθῳώσῃς (ζ) ἁμαρτίας τῶν πατέρων αὐτῶν (η) ϗ μὴ ἐξαλείψῃς. (θ) ποίησον αὐτοῖς.

Et dixerunt; Venite, & cog
super Hieremiam cogitation
non enim peribit lex à facer
neq; consilium à sapiente, ser
mo à propheta. Venite, & p
tiamus eum in lingua: & (
diemus universos sermones
Exaudi me, Domine, & ex
vocem justificationis meæ. S
duntur pro bonis mala; qu
loquuti sunt verba contra a
meam, (f) & punitionem suam
cultarunt mihi? Recordare
steterim ego ad faciem tuam,
loquerer pro eis bona, ut aver
indignationem tuam ab eis.
pterea da filios eorum in fam
& congrega eos in manus g
Fiant uxores eorum absq; lib
& viduæ: & viri earum
lati morte, & juvenes eorum
centes gladio in prælio. Fiat c
mor in domibus eorum. Addu
super eos repentè latrones; qu
aggressi sunt verbum in ca
nem mei, & laqueos absc
runt super me. Et tu, Domine,
omne consilium eorum super m
in mortem: ne mundes iniqu
tates eorum: & peccata e
rum à facie tua ne deleas. F
at infirmitas eorum coram te: i
tempore furoris tui fac in eu

ΚΕΦ. ιθ'.

1 ΤΟ'τε εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Βάδισον, ϗ
κτῆσαι βικὸν πεπλασμένον ὀστράκινον, ϗ
ἄξεις ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων τοῦ (α) λαοῦ ϗ
2 ἀπὸ τῶν ἱερέων, Καὶ ἐξελεύσῃ εἰς τὸ πολυ-
άνδρειον υἱῶν τῶν τέκνων αὐτῶν, ὅ ἐστιν ἐπὶ
τῶν προθύρων (β) πύλης τῆς Χαρσείθ· ϗ
ἀνάγνωθι ἐκεῖ πάντας τοὺς (γ) λόγους τού-
3 τους, οὓς ἂν λαλήσω πρὸς σὲ, Καὶ ἐρεῖς αὐ-
τοῖς, Ἀκούσατε (δ) τὸν λόγον κυρίου βασιλεῖς
(ε) Ἰούδα, ϗ ἄνδρες Ἰούδα, ϗ οἱ κατοικοῦντες
ἐν Ἱερουσαλὴμ, ϗ οἱ εἰσπορευόμενοι ἐν ταῖς πύ-
λαις ταύταις· τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσ-
ραὴλ, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον
κακὰ, ὥστε παντὸς (ζ) ἀκούοντος αὐτὰ ἠ-
4 χήσει τὰ ὦτα αὐτοῦ. Ἀνθ' ὧν ἐγκατέλι-
πόν με, ϗ ἀπηλλοτρίωσαν τὸν τόπον τοῦτον,
ϗ ἐθυμίασαν ἐν αὐτῷ θεοῖς ἀλλοτρίοις, οἷς
οὐκ ᾔδεισαν αὐτοὶ ϗ οἱ πατέρες αὐτῶν· ϗ
οἱ βασιλεῖς Ἰούδα ἔπλησαν τὸν τόπον τοῦτον
5 αἱμάτων ἀθῴων, Καὶ ᾠκοδόμησαν ὑψηλὰ
τῇ Βάαλ, τοῦ κατακαίειν τοὺς υἱοὺς αὐτῶν ἐν
πυρὶ, ἃ οὐκ ἐνετειλάμην, (η) οὐδὲ διενοήθην
6 ἐν τῇ καρδίᾳ μου. Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρ-
χονται, λέγει κύριος, ϗ οὐ κληθήσεται (θ) τῷ
τόπῳ τούτῳ ἔτι Διάπτωσις ϗ Πολυάνδρειον
υἱοῦ (ι) Ἐννὼμ, ἀλλ' ἢ Πολυάνδρειον τῆς
σφαγῆς.

MS. A. (α) λαοῦ σου ϗ ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων τῶν ἱερέων, (β) τῆς πύλ
(γ) λόγους, οὓς ἐὰν (δ) λόγους (ε) Ἰούδα, ϗ οἱ κατοικοῦντες Ἱερουσαλὴμ, (ζ) ἀκούοντος ἠχήσει (η) οὐδὲ ἐλάλησα, οὐδὲ (θ) ἐπὶ τῷ τόπῳ τούτῳ Διάπτωσις (ι) Ἐννώμ,

CAP. XIX.
Tunc dixit Dominus ad me:
Vade, & posside doliolum fictum
testeum: & adduces de senior
bus populi, & de sacerdotibus. E
exibis in (a) polyandrion (b) f
liorum filiorum eorum, quod e
super vestibula portæ Charsi
& lege ibi omnia verba hæc, quæ
cunque loquutus fuero ad te: E
dices eis; Audite verbū Domi
reges Juda, & viri Juda, & ha
tatores Hierusalem, (c) & qui in
gredimini in portis his. Hæc d
cit Dominus Deus Israel; E
ce ego induco super locum istum
mala, ut omnis, qui audi
la, tinniant aures ejus: Pro
quòd dereliquerunt me, & ali
num fecerunt locum istum, &
adoleverunt in eo diis alienis, quos
nescierunt ipsi, & patres eorum:
& reges Juda repleverunt lo
cum istum sanguinibus innocen
tibus: Et ædificaverunt exce
sa Baal, ad comburendos fili
suos in igne: quæ non (d) præ
cepi, neque cogitavi in cor
meo. Idcircò ecce dies veniunt,
dicit Dominus; & non voca
tur locus iste amplius (e) Ru
& Polyandrion filii Ennom, s
Polyandrion occisionis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 ואמרו אתו ונחשב על ירמיה מחשבן ארי לא תפסוק אוריתא מכהן ומלך מחכימ
19 ואולפן מספר אתו ונסהדניה סהדון דשקר ולא נצית לכל פתגמוהי : גלי קדמך
20 יי דיני ושמע קדמך עולבני : האפשר לשלמא חלף טבתא בישתא ארי כרו פחת
למקטלי יעול דוכרן מקמי קדמך למללא עליהון פתגמין תקנין לאתבא ית חמתך
21 מנהון : בכן הב ית בניהון לכפנא ותבבנון על ידי קטולי חרבא ויהוין נשיהון תכלן
22 וארמלן וגבריהון יהון קטילי מותא עולמיהון מטעני חרבא בקרבא : תשתמע
צוחתא מבתיהון ארי תיתי עליהון משרין בתכף ארי כרו פחית למקטלי וקולין צלו
23 לפרסת רגלי : ואת יי ידיע וגלי קדמך ית כל אתמלוכיהון עלי למקטלי לא תכפר על
חוביהון וחטאיהון מן קדמך לא יתמחון ויהון מתכלין דמן קדמך בעדן פורענות
רוגזך אתפרע מנהון :

יט

1 כדנן אמר יי לי אזל ותזבון זלוע דחסף פחר ותדבר עמך מסבי עמא ומסבי כהניא :
2 ותפוק לחילת בר הנם דקדם תרע קלקלתא ותתנבי תמן ית פתגמא דאמלל
3 עמך : ותימר קבילו פתגמא דיי מלכיא דבית יהודה ויתבי ירושלם כדנן אמר יי
צבאות אלהא דישראל הא אנא מיתי בשתא על אתרא הדין דכל דישמעניה יצלן
4 אודנוהי : חלף דשבקו פולחני וסאיבו ית אתרא הדין ואסיקו ביה בוסמין לטעות
עממיא דלא ידעונון אנון ואבהתהון ומלכיא דבית יהודה ומלו ית אתרא הדין דם
5 זכאין : ובנו ית במת בעלא לאוקדא ית בניהון בנורא עלון לבעלא דלא פקידית באוריתי
6 ודלא שלחית ביד עבדי נבייא ולא רעוא קדמי : בכן הא יומיא אתן אמר יי ולא
יתקרי לאתרא הדין עוד תופת וחילת בר הנם אלהין חילת קטיליא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et dixerunt: Venite & cogitem⁹ contra Jeremiam cogitationes. Non e deficiet lex à sacerdote, & consilium à sapiente, nec doctrina à scriba. Ve nite & testificemur contra eum falsa testimonia, & non auscultemus om verba ej⁹. Notū est corā te Dñe judicium meum, & audita est corā injuria mea. Nunquid reddi potest pro bono malum? Quia foderunt fove am ut occidant me: recordare quomodo steterim corā te ad loquen pro eis verba recta, ut averterem irā tuā ab eis. Propterea da filios eorum in famē, & trade eos in man⁹ occidentium gladio, & sint uxores eorum o batæ & viduæ; & viri earum sint interfecti morte: juvenes eorum sint pe cussi gladio in prælio. Audietur clamor de domibus eorum, cùm adduxer contra eos exercitus repentè; qui foderunt foveā ut interficerent me, & la queos extenderunt plantis pedum meorum. Tu autem Dñe scis, & manif sta sunt corā te omnia consilia eorum contra me, ad interficiendum me propitieris iniquitatib⁹ eorum, & peccata eorum à facie tua ne deleantur sint corruentes corā te; in tempore ultionis furoris tui vindictā sume ex

CAP. XIX.

HÆc dicit Dñs: Vade & eme tibi laguneulam testaceam figuli, & tol tecum de seniorib⁹ populi, & de senioribus sacerdotum. Et egredere a vallem filii Hennon quæ est ante Portam sterquilinii: & prophetabis verba quæ loquar tecum. Et dices: Suscipite verbum Dñi reges domus da & habitatores Jerusalem: Hæc dicit Dñs exercituum Deus Israel, Ec ego adducam malum super locum istum, ita ut omnis qui illud audie tinniant aures ejus. Pro eo quòd dereliquerunt cultum meum, & con quinaverunt locum istum, & adoleverunt in eo aromata idolis popu rum, quæ non cognoverunt ipsi & patres eorum & reges domus Ju & impleverunt locum istum sanguine innocentum. Et ædificaverunt ex celsa Baal, ad comburendos filios suos igne in holocausta Baal: quod præcepi in lege mea, nec misi per manum servorum meorum propheta rum; nec est voluntas coram me. Propterea ecce dies venient, dicit Do minus. & non vocabitur locus iste ultra Thopheth, et vallis filii Henn sed vallis occisorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪܘ ܬܘ ܢܬܚܫܒ ܡܚܫܒܬܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܀ ܕܠܐ ܢܐܒܕ ܢܡܘܣܐ ܡܢ ܟܗܢܐ.
ܘܡܠܟܐ ܡܢ ܚܟܝܡܐ ܀ ܘܡܠܬܐ ܡܢ ܢܒܝܐ. ܬܘ ܢܡܚܝܘܗܝ ܒܠܫܢܗ ܀ ܘܠܐ ܢܨܘܬ
ܠܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܘܗܝ. * ܐܨܬ ܠܘܬܝ ܡܪܝܐ ܘܫܡܥ ܩܠܐ ܕܥܠܘܒܝ. * ܐܦܪܥܐ ܒܝܫܬܐ
ܚܠܦ ܛܒܬܐ ܀ ܕܟܪܘ ܓܘܡܐ ܠܢܦܫܝ. ܐܬܕܟܪ ܕܩܡܬ ܩܕܡܝܟ ܘܡܠܠܬ ܥܠܝܗܘܢ
ܛܒܬܐ ܀ ܠܡܗܦܟܘ ܚܡܬܟ ܡܢܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܒ ܒܢܝܗܘܢ ܠܟܦܢܐ ܀ ܘܐܫܠܡ
ܐܢܘܢ ܠܐܝܕܝ ܣܝܦܐ. ܢܗܘܝܢ ܢܫܝܗܘܢ ܬܟܠܢ ܘܐܪܡܠܢ. ܘܓܒܪܝܗܘܢ. ܢܗܘܘܢ ܩܛܝܠܝ
ܣܝܦܐ ܒܩܪܒܐ. * ܢܫܬܡܥ ܩܥܬܐ ܡܢ ܒܬܝܗܘܢ ܀ ܟܕ ܬܝܬܐ ܥܠܝܗܘܢ ܓܝܣܐ ܡܢ ܫܠܝ.
ܡܛܠ ܕܟܪܘ ܓܘܡܐ ܠܢܦܫܝ ܠܡܐܚܕܢܝ. ܘܦܚܐ ܛܫܘ ܠܪܓܠܝ. * ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ
ܝܕܥ ܐܢܬ ܟܠܗ ܡܠܟܗܘܢ ܕܥܠܝ ܠܡܘܬܐ. ܘܠܐ ܬܚܣܐ ܥܠ ܥܘܠܗܘܢ ܀ ܘܚܛܗܝܗܘܢ ܡܢ
ܩܕܡܝܟ ܠܐ ܬܥܛܐ. ܢܗܘܘܢ ܬܒܝܪܝܢ ܩܕܡܝܟ ܀ ܘܒܙܒܢ ܪܘܓܙܟ ܥܒܕ ܒܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܛ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܙܠ ܘܙܒܢ ܀ ܩܘܠܬܐ ܕܦܚܪܐ.
ܘܕܒܪ ܥܡܟ ܡܢ ܣܒܐ ܕܥܡܐ ܘܡܢ ܣܒܐ ܕܟܗܢܐ. * ܘܦܘܩ ܠܚܝܠܐ ܕܒܪ ܗܢܘܡ. ܕܥܠ ܡܥܠܢܐ
ܕܬܪܥܐ ܕܚܪܣܝܬ ܀ ܘܐܟܪܙ ܬܡܢ ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ ܠܟ. * ܘܐܡܪ ܀ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ
ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܢܝ ܐܘܪܫܠܡ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ.
ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܐܬܪܐ ܗܢܐ ܀ ܕܟܠ ܕܢܫܡܥܝܗ ܢܨܠܢ ܐܕܢܘܗܝ.* ܡܛܠ ܕܫܒܩܘܢܝ.
ܘܛܢܦܘܗܝ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܣܡܘ ܒܗ ܒܣܡܐ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܐܢܘܢ ܗܢܘܢ
ܘܐܒܗܝܗܘܢ ܘܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܀ ܘܡܠܘܗܝ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ ܕܡܐ ܙܟܝܐ ܀ * ܘܒܢܘ ܒܡܘܬܐ
ܠܒܥܠ ܀ ܠܡܘܩܕܘ ܒܢܝܗܘܢ ܒܢܘܪܐ ܝܩܕܐ ܠܒܥܠ. ܕܠܐ ܦܩܕܬ. ܘܠܐ ܐܡܪܬ. ܘܠܐ ܣܠܩܬ
ܥܠ ܠܒܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܀ ܕܠܐ ܢܬܩܪܐ ܬܘܒ ܐܬܪܐ ܗܢܐ
ܬܘܦܬ ܘܚܝܠܐ ܕܒܪ ܗܢܘܡ. ܐܠܐ ܚܝܠܐ ܕܩܛܝܠܐ.

Præterea dixerunt; Adeſte, conſilium ſtrua- 18
mus contra Jeremiā, ne pereat lex à ſacerdo-
tibus, conſilium à ſapientibus, & verbum à
prophetis: adeſte, percutiamus linguam ipſius,
ne auſcultemus tot ſermones ejus. Attende 19
ad me Domine, & audi vocem oppreſſionis
meæ. An rependendum eſt mihi malum pro 20
bono, quòd foderint foveam animæ meæ? Re-
cordare quòd ſteterim coram te, & bene ſim
locutus de eis, ut averterem iram tuam ab eis.
Propterea expone filios eorum fami, & trade 21
illos in manus gladii: fiant uxores eorum or-
bæ ac viduæ, & viri eorum gladio confoſſi in
prælio. Audiatur clamor è domibus eorum, 22
quum adduxeris contra eos turmam repentè:
quia foderunt foveam animæ meæ ad capien-
dum me, & laqueos abdiderunt pedibus meis.
Jam tu Domine cognoſcens omnes qui mihi 23
necem machinantur, & ne parcas ſceleri eo-
rum, & peccata eorum à conſpectu tuo ne de-
leas: ſint proſtrati coram te, & tempore in-
dignationis tuæ age contra eos.

CAP. XIX.

Sic dixit mihi Dominus, Abi, & eme lagun- 1
culam teſtaceam: tum ductis tecum de ſeni-
oribus populi, & de ſenioribus ſacerdotum,
Egredere ad vallem filii Hennom quæ eſt in 2
ingreſſu portæ Hadſith, ibique prædica ſer-
mones quos tibi dicam. Dic ergò, Audite 3
ſermonem Domini reges Judæ, & cives Jero-
ſolymæ: Sic dicit Dominus potentiſſimus
Deus Iſraelis, Ecce ego adducturus ſum ma-
lum ſuper locum iſtum, quod quiſquis audie-
rit, tinnient aures ejus. Quia dereliquerunt 4
me, & polluerunt locum iſtum, & poſuerunt
in eo thura diis alienis quos nec ipſi nove-
rant, neque patres eorum, neque reges Judæ:
impleverunt locum iſtum ſanguine innoxio:
Et ædificaverunt altaria Baali ad comburen- 5
dum filios ſuos igne, holocauſtum Baali: quod
non præceperam, neque dixeram; neque ſub-
ierat in mentem meam? Propterea ecce 6
dies venturi ſunt, ait Dominus; ut non vo-
cetur ampliùs locus iſte Topheth aut Vallis
filii Hennom, ſed Vallis occiſorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فقالوا تعالوا نتفكر على ارميا فكرا * لانه لا يبيد الناموس من الكاهن والراي من الفهيم 18
والقول من النبي * تعالوا فنضربه باللسان ونسمع جميع اقواله * اسمعني يا رب واستجب صوت 19
معاندي * ايكافى عوض الخيرات شرورا * لانهم تكلموا كلاما على نفسي واخفوا عقوبتهم 20
اذكر قيامي لوجهك لاتكلم عنهم بالصالحات لترد غضبك عنهم * لاجل هذا اعطيهم للجوع 21
واجمعهم لايدي السيف * لتصر نساوهم ارامل ثكالى * ورجالهم قياما قتلى بالموت * وشبانهم
ساقطين بالسيف في الحرب * لتكن الصرخة في بيوتهم * اجلب عليهم اللصوص بغتة لانهم 22
تخيروا قولا لمسكي * واخفوا لي فخاخا * وانت يا رب عرفت كل رايهم الذي راوه علي للموت 23
لا تبري ظلاماتهم * وخطايا آبائهم من وجهك لا تمحهم * ليكن ضعفهم امامك * في زمن
غضبك اصنعه لهم *

الفصل التاسع عشر * الاصحاح الثاني عشر *

* حينئذ قال الرب لي * اعمد واقتن كوزا مجبولا خزفيا * وهات من شيوخ شعبك ومن شيوخ 1
الكهنة * واخرج الى وادي بني هنم الذي هو قبالة باب حرسيت * واقرا هناك جميع الاقوال 2
التي اتكلم بها معك اذن * وتقول لهم اسمعوا كلمات الرب يا ملوك يهودا وسكان اورشليم 3
والداخلون في هذه الابواب * هكذا يقول الرب اله اسرائيل * ها انا اجلب على هذا الموضع
شرورا * حتى كل من سمع تطن اذناه * من اجل انهم اجتنبوني وغربوا هذا الموضع * وبخروا 4
فيه للالهة الغريبة التي لم يعرفوها هم ولا اباوهم ولا ملوكهم * وملوا هذا الموضع من الدماء
الزكية * وبنوا مشارف للبعال ليحرقوا بنيهم بالنار * ما لم امرهم به ولم اقله * ولا تفكرت به في 5
قلبي * لاجل هذا ها ايام تاتي يقول الرب * فلا يدعى معبر على هذا الموضع * ولا وادي 6
بن انوم * لكن وادي الذبح *

Dixerunt autem, Agite, cogitemus contra 18
Jeremiam cogitationem: neque enim per-
ibit lex à ſacerdote, & conſilium à ſa-
piente, neque ſermo à propheta: agite,
percutiamus cum linguâ, & audia-
mus omnes ſermones ipſius: Audi 19
me O Domine, & exaudi vocem litis
meæ. Nam rependuntur pro bonis mala, 20
quòd locuti ſunt verba contra animam
meam, & abſconderunt pœnam quam in
me machinantur? *Recordare aſſiſtentiæ*
meæ coram facie tua ad loquendum pro
eis bona, ut averteres indignationem tuam
ab eis. Ideirco trade eos fami, & con- 21
grega illos in manus gladii; fiant uxores
eorum viduæ orbæ, & viri eorum mane-
ant nece extincti, et juvenes eorum gladio
proſtrati in bello. Sit clamor in domibus 22
eorum, adduc in eos latrones ex improvi-
ſo: quia ſelegerunt ſermonem ad capi-
endum me, & abſconderunt mihi laqueos.
Itaque tu O Domine qui *nôſti omne con-* 23
ſilium eorum quod excogitaverunt contra
me ad mortem, ne expies impietates eo-
rum, & peccata patrum ipſorum à con-
ſpectu tuo ne deleas: ſit infirmitas eorum
coram te, eâq; tempore furoris tui affice
illos.

CAP. XIX.
Textus duodecimus.

Tunc dixit mihi Dominus, Surge, & 1
compara tibi lagenā fictilem teſtaceā:
& adhibitis è ſenioribus populi tui & è
ſenioribus ſacerdotum, Exivis ad vallem 2
filiorum Hennom, quæ eſt ex adverſo portæ
Harſith, ibiq; recita ſermones omnes quos
tibi ſum dicturus: Et dices eis, Audite 3
verba Domini O reges Judæ, & habitato-
res Jeruſalem, & quotquot ingredimini
per has portas. Sic ait Dominus Deus Iſ-
raelis, Ecce ego adducā ſuper hunc locum
talia mala, ut quiſquis audierit tinniant
aures ejus. Eò quòd receſſerunt à me, ali- 4
enum reddiderunt hunc locum, & adole-
verunt in ipſo diis extraneis quos nec ipſi
cognoſcebant, nec patres eorum, nec reges
eorum; impleverunt hunc locum ſangui-
nibus innoxiis; Et ædificaverunt excelſa 5
Baali, ut filios ſuos igne comburerent:
quod non præceperam eis, neque dixeram,
neq; animo conceperam: Idcirco ecce dies 6
venient, dicit Dominus, cùm non voca-
bitur Tranſitus locus iſte, neque Vallis
filii Ennom, ſed Vallis jugulationis.

ירמיה : כ

, iſto loco in Jeruſalaim & , Jehudah conſilium *evacuabo* Et
7 וּבַקֹּתִי אֶת־עֲצַת יְהוּדָה וִירוּשָׁלַםִ בַּמָּקוֹם הַזֶּה
quærentiū manu in & ,*ſuorū inimicorū facies ad*,gladio in eos faciam cadere &
וְהִפַּלְתִּים בַּחֶרֶב לִפְנֵי אֹיְבֵיהֶם וּבְיַד מְבַקְשֵׁי
,cœlorum *volatili* eſcam in eorū *cadaver* dabo & : eorum *animam*
נַפְשָׁם וְנָתַתִּי אֶת־נִבְלָתָם לְמַאֲכָל לְעוֹף הַשָּׁמַיִם
,ſtuporem in hanc civitatem ponam Et .terræ *beſtiæ* &
8 וּלְבֶהֱמַת הָאָרֶץ׃ וְשַׂמְתִּי אֶת־הָעִיר הַזֹּאת לְשַׁמָּה
ſuper ſibilabit & ,obſtupeſcet ,eam per *tranſiens* Omnis .ſibilum in &
וְלִשְׁרֵקָה כֹּל עֹבֵר עָלֶיהָ יִשֹּׁם וְיִשְׁרֹק עַל־
& ,ſuorū filiorū carnem eos faciam comedere Et .ejus plagis univerſis
9 כָּל־מַכֹּתֶהָ׃ וְהַאֲכַלְתִּים אֶת־בְּשַׂר בְּנֵיהֶם וְאֵת
,obſidione in,*comedent* ſui *ſocii* carnem unuſquiſque & ,ſuarū filiarū carnem
בְּשַׂר בְּנֹתֵיהֶם וְאִישׁ בְּשַׂר־רֵעֵהוּ יֹאכֵלוּ בְּמָצוֹר
.eorū animā quærentes &,eorū inimici eos *coarctabunt* qua ,*coarctatione* in &
וּבְמָצוֹק אֲשֶׁר יָצִיקוּ לָהֶם אֹיְבֵיהֶם וּמְבַקְשֵׁי נַפְשָׁם׃
10 *dices* Et .tecum *euntium* virorum oculis in *lagenam* conteres Et
11 וְשָׁבַרְתָּ הַבַּקְבֻּק לְעֵינֵי הָאֲנָשִׁים הַהֹלְכִים אוֹתָךְ׃ וְאָמַרְתָּ
conteram Sic : exercituum Dominus dixit Sic : eos ad
אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת כָּכָה אֶשְׁבֹּר
vas *contereret* ſicut , iſtam civitatem & , iſtum populum
אֶת־הָעָם הַזֶּה וְאֶת־הָעִיר הַזֹּאת כַּאֲשֶׁר יִשְׁבֹּר אֶת־כְּלִי
,ſepelientur Topheth in & : ultrà *ſanari poterit* non quod , figuli
הַיּוֹצֵר אֲשֶׁר לֹא־יוּכַל לְהֵרָפֵה עוֹד וּבְתֹפֶת יִקְבְּרוּ
ait , huic loco faciam Sic .ſepeliendum ad *loco non à*
12 מֵאֵין מָקוֹם לִקְבּוֹר׃ כֵּן־אֶעֱשֶׂה לַמָּקוֹם הַזֶּה נְאֻם־
.Topheth ſicut hanc civitatem *dandum ad* &,ej⁹ habitatorib⁹ &,Dominus
יְהוָה וּלְיוֹשְׁבָיו וְלָתֵת אֶת־הָעִיר הַזֹּאת כְּתֹפֶת׃
Topheth locus ſicut Jehudah regum domus &,Jeruſalaim domus erunt Et
13 וְהָיוּ בָּתֵּי יְרוּשָׁלַםִ וּבָתֵּי מַלְכֵי יְהוּדָה כִּמְקוֹם הַתֹּפֶת
earum tectis *ſuper* adoleverunt quarum ,domos omnes propter ,immundæ
הַטְּמֵאִים לְכֹל הַבָּתִּים אֲשֶׁר קִטְּרוּ עַל־גַּגֹּתֵיהֶם
.alienis Diis libamina *libare* & , cœlorum militiæ omni
לְכֹל צְבָא הַשָּׁמַיִם וְהַסֵּךְ נְסָכִים לֵאלֹהִים אֲחֵרִים׃
illuc Dominus eum miſerat quò , Topheth de Irmejah venit Et
14 וַיָּבֹא יִרְמְיָהוּ מֵהַתֹּפֶת אֲשֶׁר שְׁלָחוֹ יְהוָה שָׁם
omnē ad dixit & ,Domini domus atrio in ſtetit & : *vaticinandum ad*
לְהִנָּבֵא וַיַּעֲמֹד בַּחֲצַר בֵּית־יְהוָה וַיֹּאמֶר אֶל־כָּל־
ego Ecce : Iſrael Deus exercituum Dominus dixit Sic .populum
15 הָעָם׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הִנְנִי
,malum omne ,ej⁹ urbes omnes ſuper & , iſtam civitatem *ad adducens*
מֵבִי אֶל־הָעִיר הַזֹּאת וְעַל־כָּל־עָרֶיהָ אֵת כָּל־הָרָעָה
,ſuā cervicem induraverunt quoniam : eam contra ſum locutus quod
אֲשֶׁר דִּבַּרְתִּי עָלֶיהָ כִּי הִקְשׁוּ אֶת־עָרְפָּם
.mea verba *audiendum non ad*
לְבִלְתִּי שְׁמוֹעַ אֶת־דְּבָרָי׃

CAP. XX. כ

dux præpoſitus ipſe &) ,ſacerdos Immer filius Paſchur audivit Et
1 וַיִּשְׁמַע פַּשְׁחוּר בֶּן־אִמֵּר הַכֹּהֵן וְהוּא־פָקִיד נָגִיד
.iſta verba prophetantem Irmejahu (Domini domo in
בְּבֵית יְהוָה אֶת־יִרְמְיָהוּ נִבָּא אֶת־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה׃
, *cryptam* in eum *dedit* & :prophetā Irmejahu Paſchur percuſſit Et
2 וַיַּכֶּה פַשְׁחוּר אֵת יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא וַיִּתֵּן אֹתוֹ עַל־הַמַּהְפֶּכֶת
.Domini domo in quæ , ſuperiori Binjamin porta in *quæ*
אֲשֶׁר בְּשַׁעַר בִּנְיָמִן הָעֶלְיוֹן אֲשֶׁר בְּבֵית יְהוָה׃
: *crypta* de Irmejahu Paſchur eduxit & ,craſtino *à* fuit Et
3 וַיְהִי מִמָּחֳרָת וַיֹּצֵא פַשְׁחוּר אֶת־יִרְמְיָהוּ מִן־הַמַּהְפָּכֶת
,tuū nomē Dominus vocavit Paſchur Non : Irmejahu eum ad dixit &
וַיֹּאמֶר אֵלָיו יִרְמְיָהוּ לֹא פַשְׁחוּר קָרָא יְהוָה שְׁמֶךָ
.Miſſabib Maghor *quinimò*
כִּי אִם־מָגוֹר מִסָּבִיב׃

Verſio VULG. LAT.

7 Et diſſipabo conſilium Juda &
Jeruſalem in loco iſto: & ſubvertam
eos gladio in conſpectu inimicorum
ſuorum, & in manu quærentium
animas eorum: & dabo
cadavera eorum, eſcam volatilibus
8 cœli, & beſtiis terræ. Et
ponam civitatem hanc in ſtuporem,
& in ſibilum: omnis qui
præterierit per eam, obſtupeſcet,
& ſibilabit ſuper univerſa plaga
9 ejus. Et cibabo eos carnibus filiorum
ſuorum, & carnibus filiarū
ſuarum: & unuſquiſque carnem
amici ſui comedet in obſidione,
& in anguſtia, in qua concludent
eos inimici eorum, & qui quærunt
10 animas eorum. Et conteres
lagunculam in oculis virorum,
11 qui ibunt tecum. Et dices ad
eos; Hæc dicit Dn̄s exercituum;
Sic conteram populum iſtum, &
civitatem iſtam, ſicut conteritur
vas figuli, quod non poteſt ultrà
inſtaurari: & in Topheth ſepelientur,
eò quòd non ſit alius locus
12 ad ſepeliendū. Sic faciā loco
huic, ait Dn̄s, & habitatorib⁹
ejus: & ponam civitatem iſtam
13 ſicut Topheth. Et erunt domus
Jeruſalem, & domus regum Juda,
ſicut locus Topheth, immundæ;
omnes domus, in quarum
domatibus ſacrificaverunt omni
militiæ cœli, & libaverunt libamina
14 diis alienis. Venit autē
Jeremias de Topheth, quò miſerat
eum Dn̄s ad prophetandum,
& ſtetit in atrio dom⁹ Dn̄i:
15 & dixit ad omnem populū; Hæc
dicit Dn̄s exercituū Deus Iſrael;
Ecce ego inducam ſuper civitatem
hanc, & ſuper omnes urbes
ejus, univerſa mala, quæ locutus
ſum adverſum eam: quoniam
induraverunt cervicem ſuam, ut
non audirent ſermones meos.

CAP. XX.

1 ET audivit Phaſſur filius Emmer
ſacerdos, qui conſtitutus erat
princeps in domo Domini, Jeremiam
prophetantem ſermones
2 iſtos. Et percuſſit Phaſſur Jeremiam
prophetam, & miſit eum
in nervum, quod erat in porta
Benjamin ſuperiori, in domo
3 Domini. Cùmque illuxiſſet in
craſtinum, eduxit Phaſſur Jeremiam
de nervo: & dixit ad eum
Jeremias; Non Phaſſur vocavit
Dominus nomen tuum, ſed Pavorem
undique.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 Καὶ σφάξω τὴν βουλὴν Ἰούδα καὶ τὴν βουλὴν
Ἱερουσαλὴμ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ, καὶ
καταβαλῶ αὐτοὺς (κ) ἐν μαχαίρᾳ ἐναντίον
τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν, καὶ ἐν χερσὶ τῶν ζητούντων
τὰς ψυχὰς αὐτῶν· καὶ δώσω τοὺς
νεκροὺς αὐτῶν εἰς βρῶσιν τοῖς πετεινοῖς τοῦ
8 οὐρανοῦ καὶ τοῖς θηρίοις τῆς γῆς· Καὶ (λ)
κατάξω τὴν πόλιν ταύτην εἰς ἀφανισμὸν,
(·) καὶ εἰς συρισμόν· πᾶς ὁ παραπορευόμενος
ἐπ' αὐτῆς σκυθρωπάσει, καὶ συριεῖ ὑπὲρ
9 πάσης τῆς πληγῆς αὐτῆς. Καὶ ἔδονται
τὰς σάρκας τῶν υἱῶν αὐτῶν, καὶ τὰς σάρκας
τῶν θυγατέρων αὐτῶν· καὶ ἕκαστος τὰς σάρκας
τοῦ πλησίον αὐτοῦ ἔδονται ἐν τῇ περιοχῇ,
καὶ (μ) ἐν τῇ πολιορκίᾳ ᾗ πολιορκήσουσιν
10 αὐτοὺς οἱ ἐχθροὶ αὐτῶν. Καὶ συντρίψεις
τὸν (ν) βικὸν κατ' ὀφθαλμοὺς τῶν
11 ἀνδρῶν τῶν ἐκπορευομένων μετὰ σοῦ, Καὶ
ἐρεῖς, Τάδε λέγει κύριος, Οὕτως συντρίψω
τὸν λαὸν τοῦτον, καὶ τὴν πόλιν ταύτην,
καθὼς συντρίβεται ἄγγος ὀστράκινον, ὃ οὐ
12 δυνήσεται ἰαθῆναι ἔτι. Οὕτως ποιήσω (ξ),
λέγει κύριος, τῷ τόπῳ τούτῳ, καὶ τοῖς
κατοικοῦσιν ἐν αὐτῷ, τοῦ δοθῆναι τὴν πόλιν
13 (ο) ταύτην, ὡς τὴν διαπίπτουσαν. Καὶ
οἶκοι Ἱερουσαλὴμ, καὶ οἶκοι βασιλέων Ἰούδα
ἔσονται καθὼς ὁ τόπος ὁ διαπίπτων, ἀπὸ
τῶν (π) ἀκαθαρσιῶν αὐτῶν ἐν πάσαις ταῖς
οἰκίαις, ἐν αἷς (ρ) ἐθυμίασαν ἐπὶ τῶν (σ)
δωμάτων αὐτῶν πάσῃ τῇ στρατιᾷ τοῦ οὐρανοῦ,
καὶ ἔσπεισαν σπονδὰς θεοῖς ἀλλοτρίοις.
14 Καὶ ἦλθεν (τ) Ἱερεμίας ἀπὸ τῆς διαπτώσεως
(υ), οὗ ἀπέστειλεν αὐτὸν κύριος ἐκεῖ,
τοῦ προφητεῦσαι· καὶ ἔστη (φ) ἐν τῇ αὐλῇ οἴκου
15 κυρίου, καὶ εἶπε πρὸς πάντα τὸν λαὸν, Τάδε
λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ τὴν πόλιν
(χ) ταύτην, καὶ ἐπὶ πάσας τὰς πόλεις
αὐτῆς, καὶ ἐπὶ τὰς κώμας αὐτῆς, ἅπαντα
τὰ κακὰ ἃ ἐλάλησα ἐπ' (ψ) αὐτὴν, ὅτι
ἐσκλήρυναν τὸν τράχηλον αὐτῶν, τοῦ μὴ εἰσακούειν
τῶν (ω) ἐντολῶν μου.

Et jugulabo conſilium Juda, & conſilium Hieruſalem, in loco iſto: & ſubvertam eos in gladio in conſpectu inimicorum ſuorum, & in manibus quærentium animas eorum: & dabo mortuos eorum in eſcam volatilibus cœli, & beſtiis terræ. Et (ſ) detraham civitatem hanc in deſolationem, & in ſibilum. Omnis, qui præterit per eam, contriſtabitur, & ſibilabit ſuper univerſa plaga ejus. Et edent carnes filiorum ſuorum, & carnes filiarum ſuarum: & unuſquiſque carnes proximi ſui comedent in anguſtia, & in obſidione, qua obſidebunt eos inimici eorum. Et conteres doliolum ad oculos virorum egredientium tecum. Et dices; Hæc dicit Dominus; Sic conteram populum iſtum, & civitatem iſtam, ſicut conteritur vas teſtaceum, quod non poterit ultrà (ç) ſanari. Sic faciam, ait Dominus, loco huic, & habitantibus in eo; ut detur civitas iſta, ſicut quæ corruit. Et domus Hieruſalem, & domus regum Juda erunt, ſicut locus corruens, ab immunditiis eorum in omnibus domibus, in quibus ſacrificaverunt ſuper tectis earum omni militiæ cœli, & libaverunt libamina diis alienis. Et venit Hieremias de ruina quò miſerat eum Dominus illuc ad prophetandum: & ſtetit in atrio domûs Domini: & dixit ad omnem populum; Hæc dicit Dominus; Ecce ego induco ſuper civitatem hanc, & ſuper omnes urbes ejus, & ſuper pagos ejus, univerſa mala, quæ loquutus ſum ſuper eam: quoniam induraverunt cervicem ſuam; ut non exaudirent mandata mea.

MS. A. (κ) ἐν μαχαίρῃ (λ) τάξω (·) καὶ συριγμόν· (μ) ἐν πολιορκίᾳ (ν) βικ
τοῦτον καί (ξ) τῷ τόπῳ τούτῳ, λέγει κύριος, * τοῖς κατοικοῦσιν (ο) ὡς
(π) ἀκαθαρσιῶν ἐν πάσαις (ρ) ἐθυμίασαν (σ) δωμάτων πάσῃ τῇ (τ) Ἱερεμίας (υ) τοῦ τόπου Ταφὲθ, οὗ ἀπέστειλεν αὐτὸν κύριος τοῦ προφητεῦσαι (φ) ἐν αὐλῇ (χ) ταύτην κακὰ, καὶ ἐπὶ τὰς πόλις πάσας, καὶ ἐπὶ (ψ) αὐτὴν, καὶ ἐπὶ τὰς πόλεις αὐτῆς, ὅτι (ω) λόγων μου.

ΚΕΦ. κ'. CAP. XX.

1 ΚΑὶ ἤκουσε Πασχὼρ (α) ὁ υἱὸς Ἐμμὴρ ὁ
ἱερεὺς, καὶ οὗτος ἦν καθεσταμένος ἡγούμενος
οἴκου κυρίου, τοῦ Ἱερεμίου προφητεύοντος
2 τοὺς λόγους τούτους. Καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν,
καὶ ἐνέβαλεν αὐτὸν εἰς τὸν καταράκτην,
ὃς ἦν ἐν πύλῃ οἴκου ἀποτεταγμένου τοῦ
3 ὑπερῴου, ὃς ἦν ἐν οἴκῳ κυρίου. Καὶ ἐξήγαγε
Πασχὼρ τὸν Ἱερεμίαν ἐκ τοῦ καταράκτου.
καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἱερεμίας, Οὐχὶ Πασχὼρ
ἐκάλεσε κύριος τὸ ὄνομά σου, ἀλλ'
ἢ Μέτοικον.

ET audivit Paſchor filius Emmer ſacerdos (& hic conſtitutus erat præfectus domus Domini,) Hieremiam prophetantem ſermones iſtos. Et percuſſit eum, & miſit eum in (a) cataractam, quæ erat in porta domûs (b) aſſignatæ ſuperioris, quæ erat in domo Domini. (c) Et eduxit Paſchor Hieremiam de cataracta. Et dixit ei Hieremias: Non Paſchor vocavit Dominus nomen tuū, ſed (e) M

MS. A. (α) υἱὸς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 ואקלקל ית מלך אנש יהודה ויתבי ירושלם באתרא הדין וארמנון בחרבא קדם בעלי
דבביהון וביד דבען למקטלהון ואתן ית נבלתהון משגרא למיכל לעופא דשמיא
8 ולבעירא דארעא׃ ואשוי ית קרתא הדא לצדו ולאשתממו כל דיעבר עלה יכלי ויניד על
9 כל מחתהא׃ ואוכלנון ית בשר בניהון וית בשר בנתהון וגבר נכסי קריביה יבזון בצירא
10 ובעקתא דיעיקון להון בעלי דבביהון ודבען למקטלהון׃ ותתבר זלוע לעיני גבריא
11 דאזלין עמך׃ ותימר להון כדנן אמר יי צבאות כדין אתבר ית עמא הדין וית קרתא הדא
כמא דמתבר ית מנא דפחרא דלא אפשר לאתסאה ליה עוד ובתופת יקברון מבלי
12 אתר למקבר׃ כן אעבד לאתרא הדין אמר יי וליתבוהי ולמתן ית קרתא הדא כתופת׃
13 ויהון בתי ירושלם ובתי מלכיא דבית יהודה כאתר תופת דמסאב לכל בתיא דאסיקו
14 בוסמין על אגוריהון לכל חילי שמיא ונסיכו נסכין לטעות עממיא׃ ואתא ירמיה
15 מתופת דשלחיה יי תמן לאתנבאה וקם בדרת בית מקדשא דיי ואמר לכל עמא׃ כדנן
אמר יי צבאות אלהא דישראל הא אנא מיתי על קרתא הדא ועל כל קרווהא ית כל
בישתא דגזרית עלה ארי אקשיאו ית קדלהון בדיל דלא לקבלא ית פתגמי׃

כ

1 ושמע פשחור בר אמר כהנא והוא ממנא סגן כהניא בבית מקדשא דיי דירמיה מתנבי
2 ית פתגמיא האלין׃ ואלקי פשחור ית ירמיה נביא ויהב יתיה לכיפתא דבתרע שבטא
3 בנימין עלאה די בבית מקדשא דיי׃ והוה ביומא דבתרוהי ואפיק פשחור ית ירמיה מן
כיפתא ואמר ליה ירמיה לא פשחור רבי יי שמך אלהן יתכנשון עלך דקטלין בחרבא
מסחור סחור׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et diſſipabo conſilium virorū Juda, et habitatorum Jeruſalem in loco iſto, & cadere faciā eos in gladio corā inimicis ſuis, & in manu eorū qui quærunt occidere eos: et dabo cadavera eorū projecta in cibū volatilib⁹ cœli, & beſtiis terræ. Et ponā civitatē hanc in ſolitudinē & deſolationē: omnis qui tranſierit p̱ eam, clamabit, & movebit caput ſuum ſup̄ omnes plagas ejus. Et cibabo eos carne filiorum ſuorum, & carne filiarū ſuarū; & unuſquiſque ſubſtantiam proximi ſui diripient in obſidione & tribulatione qua arctabunt eos inimici ſui, & qui quærunt occidere eos. Et confringes lagunculam ante oculos virorum qui gradiuntur tecum. Et dices eis: Hæc dicit Dn̄s exercituū; Sic conteram populum iſtum & civitatē hanc, ſicut conteritur vas figuli, ꝗ non poteſt ultrà inſtaurari; & in Thopheth ſepelientur, eò ꝗ non erit locus ad ſepeliendum. Sic faciam loco iſti, dicit Dn̄s, & habitatoribus ejus, ut ponam civitatem iſtam ſicut Thopheth. Et erunt domus Jeruſalem, & domus regum domus Juda ſicut locus Thopheth, qui immundus eſt, propter omnes domus in quarum tectis adoleverunt aromata omni militiæ cœli, & libaverunt libamina idolis populorū. Et venit Jeremias de Thopheth; miſerat enim illuc Dn̄s ut prophetaret; et ſtetit in atrio domus ſanctuarii Dn̄i, & dixit omni populo: Hæc dicit Dn̄s exercituum Deus Iſrael: Ecce ego inducam ſuper civitatem hanc, & ſuper omnes urbes ejus univerſa mala quæ decrevi contra eam. Quia obduraverunt cervicem ſuam, ut non obedirent verbis meis.

CAP. XX.

ET audivit Phaſur filius Emer ſacerdos; & ipſe erat conſtitutus princeps ſacerdotum in domo ſanctuarii Dn̄i, quando Jeremias prophetabat verba hæc. Et percuſſit Phaſur Jeremiam prophetā, & conjecit eum in carcerem qui erat in porta ſuperiori tribus Benjamin in domo ſanctuarii Dn̄i. Et factúmque eſt ſubſequenti die, eduxit Phaſur Jeremiam ex cippo. Et dixit Jeremias: Non Phaſur vocavit Dominus nomen tuum; ſed congregatos contra te qui occident gladio per circuitum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܒܛܠ ܬܪܥܝܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܐܪܡܐ ܐܢܘܢ ܒܚܪܒܐ ܩܕܡ
ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܒܐܝܕܐ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܐܬܠ ܫܠܕܝܗܘܢ ܡܐܟܘܠܬܐ
ܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܣܝܡܝܗ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܠܬܡܗܐ ܘܠܫܪܘܩܝܬܐ.
ܘܟܠ ܡܢ ܕܥܒܪ ܥܠܝܗ. ܢܬܡܗ ܘܢܫܪܘܩ. ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܡܚܘܬܗ. * ܘܐܘܟܠܝܢܘܢ
ܒܣܪܐ ܕܒܢܝܗܘܢ. ܘܕܒܢܬܗܘܢ. ܘܓܒܪ. ܒܣܪ ܚܒܪܗ ܢܐܟܘܠ. ܒܐܘܠܨܢܐ ܘܒܥܨܝܪܘܬܐ
ܕܢܐܠܨܘܢ ܐܢܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. * ܘܬܬܒܪܝܘܗܝ ܠܩܢܩܢܐ
ܠܥܝܢܝ ܓܒܪܐ ܕܐܙܠܝܢ ܥܡܟ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܟܢܐ
ܐܬܒܪܝܘܗܝ ܠܥܡܐ ܗܢܐ ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܐܝܟ ܕܡܬܬܒܪ ܡܐܢܐ ܗܢܐ ܕܦܚܪܐ. ܕܠܐ ܡܫܟܚ ܗܘܐ
ܠܡܬܐܣܝܘ. ܘܒܬܘܦܬ ܢܩܒܪܘܢ. ܡܢ ܕܠܝܬ ܐܬܪܐ ܠܡܩܒܪ. * ܗܟܢܐ ܐܥܒܕ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ
ܘܠܥܡܘܪܘܗܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܬܠ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܐܝܟ ܬܘܦܬ. * ܘܢܗܘܘܢ ܒܬܐ
ܕܐܘܪܫܠܡ ܘܒܬܐ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܐܝܟ ܐܬܪܐ ܕܬܘܦܬ ܛܡܐܐ. * ܘܟܠܗܘܢ ܒܬܐ
ܕܐܣܩܘ ܒܣܡܐ ܥܠ ܐܓܪܝܗܘܢ ܠܟܠܗ ܚܝܠܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܢܣܟܘ ܢܣܟܐ
ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. * ܘܐܬܐ ܐܪܡܝܐ ܡܢ
ܬܘܦܬ ܕܫܕܪܗ ܡܪܝܐ ܠܡܬܢܒܝܘ ܬܡܢ. ܘܩܡ ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܟܠܗ
ܥܡܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ
ܘܥܠ ܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܗ. ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܡܠܠܬ ܥܠܝܗ. ܡܛܠ ܕܩܫܝܘ ܩܕܠܗܘܢ ܕܠܐ ܢܫܡܥܘܢ
ܦܬܓܡܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟ *

* ܘܫܡܥ ܦܫܚܘܪ ܒܪ ܐܡܪ ܟܗܢܐ.
ܘܗܘ ܦܩܝܕܐ ܗܘܐ. ܡܫܠܛܐ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܟܕ ܡܬܢܒܐ ܒܦܬܓܡܐ
ܗܠܝܢ. * ܘܡܚܝܗܝ ܦܫܚܘܪ ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܘܐܪܡܝܗ ܒܣܝܓܐ ܕܒܬܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ ܥܠܝܐ
ܕܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ ܠܝܘܡܐ ܐܚܪܢܐ. ܘܐܦܩܗ ܦܫܚܘܪ ܠܐܪܡܝܐ ܡܢ ܣܝܓܐ.
ܘܐܡܪ ܠܗ ܐܪܡܝܐ. ܠܐ ܗܘܐ ܦܫܚܘܪ ܩܪܐ ܡܪܝܐ ܫܡܟ. ܐܠܐ ܬܘܬܒܐ ܘܢܕܘܕܐ.

Et irritum faciam conſilium Judæ & Jeroſolymæ 7
in loco iſto : & proſternam eos gladio
coram hoſtibus ſuis, & per manũ illorum qui
quærunt animam ipſorum : tradámque cadavera
eorum eſcam volucribus cœli & beſtiis
terræ : Et exponam civitatem iſtam admirationi 8
& ſibilo, & quiſquis tranſierit prope illam,
mirabitur, ac ſibilabit propter tantas plagas
ejus. Faciámque ut comedant carnem filiorum 9
ſuorum, & filiarum ſuarum, & quiſque
carnem ſocii ſui comedent in anguſtia &
afflictione quá affligent eos hoſtes ipſorum
& hi qui quærunt animam eorum. Deinde 10
frange lagunculam coram viris qui tecum ituri
ſunt ; Et dic eis ; Sic dicit Dominus potentiſſimus, 11
Ita frangam populum hunc &
civitatem iſtam, quemadmodum fractum eſt
hoc vas teſtaceum quod denuò ſanum reddi
non poteſt : & in Topheth ſepelient, propter
penuriam loci ad ſepeliendum. Ita faciam 12
loco iſti & habitatoribus ejus, dicit Dominus,
reddámque civitatẽ iſtam ut Topheth :
Et erunt domus Jeroſolymæ & domus regum 13
Judæ ut locus Topheti, immundæ ; omnes
domus illæ ſuper quarum tecta adoleverint
thura cunctis cœli exercitibus, & libaverint
libamina diis alienis. Deinde reverſus Jeremia 14
de Topheth quò miſerat eum Dominus
ad prophetandum, ſtetit in atrio domûs Domini,
dixitque univerſo populo ; Sic ait Dominus 15
potentiſſimus Deus Iſraelis, Ecce adducturus
ſum ſuper hanc urbem & ſuper omnia
ipſius oppida totum illud malum quod locutꝰ
ſum contra eam : eò quòd obduraverint cervicem
ſuam ne audirent ſermones meos.

CAP. XX.

Cum autem audiſſet Peſhur filius Amariæ 1
ſacerdotis (is autem inſpector erat & præfectus
in æde Domini) Jeremiam prophetam
ſermones hujuſcemodi prophetantem, Percuſſit 2
Peſhur Jeremiam prophetam ; conjecitque
eum in ambitum qui erat in ſuprema
Benjaminitarum janua quæ in æde Domini.
Cúmque poſtridie eduxiſſet Peſhur Jeremiam 3
ex illo ambitu, dixit ad eum Jeremia ; Nequaquam
Peſhurem vocavit Dominus nomen
tuum, ſed Peregrinum & Errabundum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وادبح راي يهودا وراي ايروسليم في هذا الموضع ۔ واطردهم بالسيف امام اعدايهم وفي
ايدي طالبي انفسهم ۔ وادفع موتاهم طعاما لطيور السماء ولوحوش الارض * واربب هذه
المدينة للفناء وللصفير * كل من يمر عليها يعبس ويصفر من اجل كل ضربها * وياكلون
لحوم بنيهم ولحوم بناتهم * وكل واحد ياكل لحوم قريبه في المرم وفي الحصار الذي يحاصرهم
به اعداوهم * وتكسر هذا الكراز لعيني الرجال الخارجين معك * وتقول هكذا يقول الرب
هكذا اكسر هذا الشعب وهذه المدينة * كما كسر الاناء الخزف الذي لا يمكن ان يجبر
بعد * هكذا اصنع بهذا الموضع يقول الرب والسكان فيه ۔ لادفع المدينة مثل ساقطة
* وبيوت ايروسليم وبيوت ملوك يهودا يصيرون كمثل الموضع الساقط من النجاسات التي
في جميع البيوت التي فيها بخروا على الاسطحة لكل اجناد السماء ۔ واراقوا القوارير للالهة
الغريبة * واتى ارمياء من معبر موضع طافات حيث ارسله الرب ليتنبا ۔ ووقف في دار بيت
الرب ۔ وقال لجميع الشعب * هكذا يقول الرب ۔ ها انا اجلب على هذه المدينة شرورا وعلي
جميع المدن وعلي قراها ۔ كل الشرور التي تكلمت بها عليها وعلي مدنها ۔ لانهم غلظوا
رقبهم الا يسمعوا كلماتي ۔

Nam jugulabo conſilium Judæ & conſilium 7
Jeroſolymæ hoc in loco ; & faciam
ut gladio cadant coram inimicis ſuis
& in manus quærentium animas eorum;
dabóque mortuos eorum eſcam volatilibus
cœli & beſtiis terræ : Et 8
exponam hanc urbem exitio & ſibilo ;
quicunque tranſierit ſuper eam, mœrenti
vultu ſibilabit ob tantam ipſius plagam.
Comedent quoque carnes filiorum ſuorum, 9
& filiarum ſuarum, & unuſquiſque
comedet carnes proximi ſui in anguſtia
& obſidione quâ prement illos inimici
eorum. Tum franges lagenam illam 10
ob oculos virorum qui tecum exituri ſunt;
Diceſque, Sic ait Dominus : Eodem modo 11
frangam hunc populum & hanc
urbem, quo fractum eſt vas teſtaceum
quod ampliùs conſolidari nequit. Ita 12
faciam huic loco, dicit Dominus, & habitantibus
in eo ; ut hanc urbem redigam
ſicut dirutam. Et domus Jeroſolymæ, 13
domuſque regum Judæ reddentur ut locus
dirutus, propter turpitudines quæ
extant in cunctis domibus in quibus
adoleverunt ſuper tecta omnibus copiis
cœleſtibus, & fuderunt lenticulas diis
alienis. Itaque regreſſus Jeremia de 14
Tranſitu loci Taphtæ quò miſerat illum
Dominus ut prophetaret, ſubſtitit in atrio
domûs Domini, & ait univerſo populo :
Sic dicit Dominus, Ecce ego illaturus 15
ſum ſuper hanc urbem calamitates,
& ſuper omnes urbes & earum oppida
miſerias omnes quas locutus ſum
contra ipſam & contra urbes ipſius :
quia cervicem ſuam obdurârunt, ut non
auſcultarent verbis meis.

۔ الفصل العشرون ۔

* وسمع فشحور بن امير الكاهن ۔ وهذا كان اقيم مقدم بيت الرب ۔ ارمياء يتنبا بهذه الكلمات
* فضربه والقاه في الممرق الذي كان في باب البيت المرتب الاعلى ۔ الذي كان في بيت
الرب * واخرج فشحور ارمياء من الممرق ۔ فقال له ارمياء ۔ ليس دعا الرب اسمك فشحور
لكن تخليا

CAP. XX.

Audiens autem Phebſor filius Emmiris 1
ſacerdotis (hic autem conſtitutus
fuerat princeps domûs Domini) Jeremiam
talia verba prophetantem, Percuſſit 2
eum, detruſitque in penetrale quod
erat in porta domûs ſuperiùs ſitæ, quæ
erat in æde Domini. Deinde cùm eduxiſſet 3
Phebſor Jeremiam è penetrali,
dixit illi Jeremia ; Nequaquam vocavit
Dominus nomen tuum Phebſorem,
ſed Migratorem.

ירמיה : כ

omnibus &,tibi pavorem in te *dans* ego Ecce : Dominus dixit sic Quia
4 כי־כה אמר יהוה הנני נתנך למגור לך ולכל־
: *videntes* tui oculi & ,suorū inimicorū gladio in corruent & ,te diligentib⁹
אהביך ונפלו בחרב איביהם ועיניך ראות
,Babel in eos traducet & ,Babel regis manu in dabo Jehudah omnē &
ואת־כל־יהודה אתן ביד מלך־בבל והגלם בבלה
,hujus civitatis *robur omne* dabo Et .gladio in eos percutiet &
5 והכם בחרב: ונתתי את־כל־חסן העיר הזאת
cunctos & ,ejus pretiosum omne & ,ejus laborem omnem &
ואת־כל־יגיעה ואת־כל־יקרה ואת־כל־
,eorum inimicorum manu in dabo Jehudah regum thesauros
אוצרות מלכי יהודה אתן ביד איביהם
tu Et .Babel in eos adducent & ,eos tollent & , eos diripient &
6 ובזזום ולקחום והביאום בבלה: ואתה
: captivitatem in ibitis ,tuæ domus habitatores omnes & , Paschur
פשחור וכל ישבי ביתך תלכו בשבי
omnes & , tu ,sepelieris ibi & ,morieris ibique ,ingredieris Babel &
ובבל תבוא ושם תמות ושם תקבר אתה וכל־
me Seduxisti .*falsitate in eis* es vaticinatus quibus , te diligentes
7 אהביך אשר־נבאת להם בשקר: פתיתני
fui : prævaluisti & ,me fuisti fortior ; sum seductus & , Domine
יהוה ואפת חזקתני ותוכל הייתי
sufficienti ex Quia .me *subsannans ipse omnis* , die omni derisum in
8 לשחוק כל־היום כלה לעג לי: כי־מדי
Domini verbum fuit quia : *clamabo* vastitatē & , *vim* ; *vociferabor* , *loquar*
אדבר אזעק חמס ושד אקרא כי־היה דבר־יהוה
,ej⁹ recordabor Non : dixi Et .die omni *vituperium* & ,*probrum in* mihi
9 לי לחרפה ולקלס כל־היום: ואמרתי לא־אזכרנו
ignis tanquam meo corde in fuit & : ejus nomine in ultrà loquar nec
ולא־אדבר עוד בשמו והיה בלבי כאש
Nam .*potero* nec ,*sustinendo* laboravi & : meis ossibus in clausus , ardens
10 בערת עצר בעצמתי ונלאיתי כלכל ולא אוכל: כי
,Annuntiate : undique pavorem , multorum detractionem audivi
שמעתי דבת רבים מגור מסביב הגידו
,*meā claudicationē observantes,meæ pacis* homo Omnis .illud annuntiabimus &
ונגידנו כל אנוש שלמי שמרי צלעי
.eo de nostrā ultionē accipiamus &,ei prævaleamus & ,decipiatur fortè si
אולי יפתה ונוכלה לו ונקחה נקמתנו ממנו:
me persequentes idcirco :*tremendus* potens tanquam mecum Dominus Et
11 ויהוה אותי כגבור עריץ על־כן רדפי
non quia : vehementer *sunt affecti* pudore : prævalebunt non & ,impingent
יכשלו ולא יכלו בשו מאד כי־לא
Domine Et .tradetur oblivioni non *seculi* ignominia ; *egerunt prudenter*
12 השכילו כלמת עולם לא תשכח: ויהוה
tuā ultionē videam : cor & , renes *videns* ,justum *probans* ,exercituum
צבאות בחן צדיק ראה כליות ולב אראה נקמתך
laudate ,Domino Cantate .meā *litem* revelavi *te ad* quia : eis de
13 מהם כי אליך גליתי את־ריבי: שירו ליהוה הללו
.malorum manu de *egeni* animam liberavit quia ; Dominum
את־יהוה כי הציל את־נפש אביון מיד מרעים:
mea mater me peperit qua dies ; *ea in* sum nat⁹ qua dies Maledicta
14 ארור היום אשר ילדתי בו יום אשר־ילדתני אמי
:dicendo,meo patri annuntiavit qui vir Maledictus .benedicta sit ne
15 אל־יהי ברוך: ארור האיש אשר בשר את־אבי לאמר
vir sit Et .eū lætificavit lætificando ; masculus filius tibi est Natus
16 ילד־לך בן זכר שמח שמחהו: והיה האיש
: eum pœnituit non &,DOMINUS subvertit quas civitates sicut ,ille
ההוא כערים אשר־הפך יהוה ולא נחם
.*meridiei* tempore in vociferationem & ,mane in clamorem audiat &
ושמע זעקה בבקר ותרועה בעת צהרים:

Verſio VUL. LAT.

4 Quia hæc dicit Dominus ; Ecce ego dabo te in pavorem, te & omnes amicos tuos : & corruent gladio inimicorum ſuorum, & oculi tui videbunt : & omnem Judam dabo in manum regis Babylonis : & traducet eos in Babylonem, & 5 percutiet eos gladio. Et dabo univerſam ſubſtantiam civitatis hujus, & omnem laborem ejus, omnéque pretium, & cunctos theſauros regum Juda dabo in manu inimicorū eorū: & diripient eos, & tollent, & ducent in 6 Babylonem. Tu autem Phaſſur, & omnes habitatores dom⁹ tuæ, ibitis in captivitatem : & in Babylonem venies, & ibi morieris, ibíque ſepeliêris tu, & omnes amici tui, quibus prophetâſti 7 mendacium. Seduxiſti me, Domine, & ſeductus ſum : fortior me fuiſti, & invaluiſti: factus ſum in deriſum totâ die, omnes ſub- 8 ſannant me. Quia jam olim loquor, vociferans iniquitatem, & vaſtitatem clamito : & factus eſt mihi ſermo Domini in oppro- 9 brium, & in deriſum totâ die. Et dixi ; Non recordabor ejus, neq; loquar ultrà in nomine illius : & factus eſt in corde meo quaſi ignis exæſtuans, clauſúſque in oſſibus meis : & defeci, ferre 10 non ſuſtinens. Audivi enim contumelias multorum, & terrorem in circuitu ; Perſequimini, & perſequamur eum: ab omnibus viris, qui erant pacifici mei, & cuſtodientes latus meum : ſi quo modo decipiatur, & prævaleamus adverſùs eum, & conſequamur 11 ultionem ex eo. Dominus autem mecum eſt quaſi bellator fortis : idcircò qui perſequuntur me, cadent, & infirmi erunt : confuntur vehementer, quia non intellexerunt opprobrium ſempiternum, quod nunquam delebitur. 12 Et tu, Domine exercituū probator juſti, qui vides renes & cor : videam, quæſo, ultionem tuam ex eis : tibi enim revelavi cauſam 13 meam. Cantate Domino, laudate Dñm: quia liberavit animā pau- 14 peris de manu malorum. Maledicta dies, in qua natus ſum : dies, in qua peperit me mater 15 mea, non ſit benedicta. Maledictus vir, qui annuntiavit patri meo, dicens ; Natus eſt tibi puer maſculus : et quaſi gaudio lætifi- 16 cavit eum. Sit homo ille ut ſunt civitates, quas ſubvertit Dominus, et non pœnituit eum: audiat clamorem manè, & ululatum in tempore meridiano :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

4 (β) Διότι τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμί σε εἰς μετοικίαν σὺν πᾶσι τοῖς φίλοις σου· ϗ πεσοῦνται ἐν (γ) μαχαίρᾳ ἐχθρῶν αὐτῶν, ϗ οἱ ὀφθαλμοί σου ὄψονται· ϗ σὲ ϗ πάντα (δ) Ἰούδα δώσω εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος, ϗ μετοικιοῦσιν αὐτοὺς, ϗ (ε) κατακόψουσιν ἐν μαχαίραις. 5 Καὶ δώσω τὴν πᾶσαν ἰσχὺν τῆς πόλεως ταύτης, ϗ πάντας τοὺς πόνους αὐτῆς, ϗ πάντας τοὺς θησαυροὺς τοῦ βασιλέως Ἰούδα εἰς χεῖρας ἐχθρῶν (ζ) αὐτοῦ, ϗ ἄξουσιν αὐτοὺς 6 εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ σὺ ϗ πάντες οἱ κατοικοῦντες ἐν τῷ οἴκῳ σου, πορεύσεσθε ἐν αἰχμαλωσίᾳ, ϗ ἐν Βαβυλῶνι ἀποθανῇ, καὶ ἐκεῖ ταφήσῃ σὺ ϗ πάντες οἱ φίλοι σου, οἷς 7 ἐπροφήτευσας αὐτοῖς ψευδῆ. Ἠπάτησάς με κύριε, ϗ ἠπατήθην, ἐκράτησας, ϗ ἠδυνάσθης· ἐγενόμην εἰς γέλωτα, πᾶσαν 8 ἡμέραν διετέλεσα μυκτηριζόμενος. Ὅτι πικρῷ λόγῳ μου γελάσομαι, ἀθεσίαν ϗ ταλαιπωρίαν ἐπικαλέσομαι, ὅτι ἐγενήθη λόγος κυρίου εἰς ὀνειδισμὸν ἐμοὶ ϗ εἰς 9 χλευασμὸν πᾶσαν ἡμέραν μου. Καὶ εἶπα, Οὐ μὴ ὀνομάσω τὸ ὄνομα κυρίου, ϗ οὐ μὴ (η) λαλήσω ἔτι ἐπὶ τῷ ὀνόματι αὐτοῦ. ϗ ἐγένετο ὡς πῦρ καιόμενον φλέγον ἐν τοῖς (θ) ὀστοῖς μου, ϗ παρεῖμαι πάντοθεν, ϗ οὐ 10 δύναμαι φέρειν, Ὅτι ἤκουσα ψόγον πολλῶν συναθροιζομένων κυκλόθεν, Ἐπισύστητε, ϗ ἐπισυστῶμεν (ι) ἐπ᾽ αὐτῷ πάντες ἄνδρες φίλοι αὐτοῦ· τηρήσατε τὴν ἐπίνοιαν αὐτοῦ, εἰ ἀπατηθήσεται, ϗ δυνησόμεθα αὐτῷ, ϗ ληψόμεθα τὴν ἐκδίκησιν ἡμῶν ἐξ 11 αὐτοῦ. (κ) Ὁ δὲ κύριος μετ᾽ ἐμοῦ καθὼς (λ) μαχητὴς ἰσχύων· διὰ τοῦτο ἐδίωξαν, ϗ νοῆσαι οὐκ ἠδύναντο. ᾐσχύνθησαν σφόδρα, ὅτι οὐκ ἐνόησαν ἀτιμίας αὐτῶν, αἳ δι᾽ αἰῶ- 12 νος οὐκ ἐπιλησθήσονται. Κύριε δοκιμάζων δίκαια, συνιῶν νεφροὺς ϗ καρδίας, ἴδοιμι τὴν παρὰ σοῦ ἐκδίκησιν ἐν αὐτοῖς, ὅτι πρὸς 13 σὲ ἀπεκάλυψα τὰ ἀπολογήματά μου. Ἄσατε τῷ κυρίῳ, αἰνέσατε αὐτῷ, ὅτι (μ) ἐξείλατο τὴν ψυχὴν πένητος ἐκ χειρὸς 14 (ν) πονηρευομένων. Ἐπικατάρατος ἡ (ξ) ἡμέρα, ἐν ᾗ ἐτέχθην ἐν αὐτῇ· ἡ ἡμέρα ἐν ᾗ ἔτεκέν με ἡ μήτηρ μου, μὴ 15 ἔστω εὐκτή. Ἐπικατάρατος ὁ ἄνθρωπος ὁ εὐαγγελισάμενος τῷ πατρί μου λέγων, Ἐτέχθη σοι ἄρσην. εὐφραινόμενος 16 (ο) Ἔστω ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος, ὡς αἱ πόλεις ἃς κατέστρεψε κύριος ἐν θυμῷ, ϗ οὐ μετεμελήθη· ἀκουσάτω κραυγῆς (π) τῷ πρωΐ, ϗ ἀλαλαγμοῦ μεσημβρίας,

Quia hæc dicit Dominus ; Ec
ego do te in migrationem cum o
mnibus amicis tuis : & cade
in gladio inimicorum suorum
& oculi tui videbunt : & [illegible]
& omnem Judam dabo in ma-
nus regis Babylonis : & mig
facient eos, & trucidabu
gladiis. Et dabo omnem forti
dinem civitatis hujus, & om
labores ejus, & omnes the
ros regis Juda in manus ini
corum ejus : & ducent eo
Babylonem : Et tu, & omne
habitantes in domo tua ibitis
captivitatem : & in Babylone
morieris : & ibi sepelieris tu, &
omnes amici tui, quibus prop
tâsti eis falsa. Decepisti me Do
mine, & deceptus sum : conti
isti, & potuisti : factus sum i
derisum, totâ die perse
subsannatus : Quia amaro se
bo meo (f) ridebo prævarica
onem, & miseriam invoca
quia factus est sermo Domi
opprobrium mihi, & in con
totâ die meâ. Et dixi: No
nominabo nomen Domini, ne
quar ultrà in nomine ipsius.
factus est, quasi ignis a
rens in ossibus meis : & dissolu
tus sum undique, & non p
sum ferre : Quia audi
vituperationem multorum cong
gatorum undique ; Insur
& insultemus in eum omnes v
ri amici ejus : observate me
tem ejus, si decipietur : & præ
valebimus ei, & sumemus vin
dictam nostram ex eo : Domin
autem mecum, quasi bellator f
tis. Idcircò persequuti sunt, e
intelligere non potuerunt : con
fortati sunt valdè, quia non
tellexerunt ignominias suas, quæ
per seculum non tradentur obli
vioni. Domine, probans justa
intelligens renes, & corda, vi
deam ultionem, quæ à te in
quia ad te revelavi (g) afflictio
nes meas. Cantate Domino, la
date eum: quia liberavit anim
pauperis, de manu (h) maligna
tium. Maledicta dies, in qua
natus sum in ea : dies, in qua pe
perit me mater mea, non sit
dicta. Maledictus homo, qui e
vangelizavit patri meo, dicen
Natus est tibi masculum. [illegible]
tans Sit homo ille, sicut civita
tes, quas subvertit Dominus
furore, & non pœnituit e
Audiat clamorem mane, &
lulatum meridie :

MS. A. (β) Διὰ τοῦτο (γ) μαχαίρῃ (δ) Ἰούδαν (ε) κατακόψουσιν αὐτοὺς ἐν μαχαίρᾳ. Καὶ δώσω πᾶσαν τὴν ἰσχὺν (ζ) αὐτῶν (η) λαλήσω ἐπὶ τῷ ὀνόματι τούτῳ. (θ) ὀστέοις (ι) ἐπ᾽ αὐτὸν (κ) Καὶ κύριος (λ) * μαθητὴς ἰσχυρός· (μ) ἐξείλατο ψυχὴν (ν) [illegible] τέρων αὐτοῦ. (ξ) ἡμέρα ᾗ ἐγεννήθην ἐν αὐτῇ· (ο) ἔσται (π) τὸ πρωΐ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 ארי כדנן אמר יי הא אנא מסר לך לתבר לך ולכל רחמך ויתקטלון בחרב בעלי
דבביהון ועינך חזין וית כל דבית יהודה אמסר ביד מלכא דבבל ויגלנון לבבל וימחנון
5 בחרבא : ואתן ית כל עותר ארעא הדא וית כל עמלה וית כל ליאותה וית כל אוצרי
6 מלכיא דבית יהודה אמסר ביד בעלי דבביהון ויבזונון וישבונון ויובלנון לבבל : ואת
פשחור וכל יתבי ביתך תהכון בשביא ולבבל תתובל ותמן תמות ותמן תתקבר את וכל
7 רחמיך דאתנביתא להון בשקרא : שבשתני יי ואשתבשית תקפתני ויכלת לי הויתי
8 ללעיב כל יומא כולהון מחיכין בי : ארי בזמן דאנא מתנבי אנא מרים קלי בכי ומצוח
ועל חטופין ובזוזין אנא מתנבי ארי הוה פתגמא דיי לי לחסודין וללעג כל יומא :
9 ואמרית לא אדכרניה ולא אמלל עוד בשמיה והוון פתגמוהי בלבי כאשא בערא שטפין
10 ית גרמי ולאיתי לסוברא ולא יכלית : ארי שמעית מלי סגיאיא דמתכנשין מסחור
סחור חוו ונחוניה כל אנש שלמי כמנין לאבאשא לי מאים יטעי ונכול ליה ונתפרע
11 פורענותנא מניה : ויי מימריה בסעדי כגבר תקיף על כן רדפי יתקלון ולא יכלון למקם
12 יבהתון לחדא ארי לא יצלחון ויתחפון אתכנעות עלם דלא תפסוק : ויי צבאות בחר
קשוט גלין קדמוהי כולין ולבא אחזי פורענות דינך מנהון ארי קדמך אמרית ית עולבני :
13 14 שבחו קדם יי אודו קדם יי ארי שזיב ית נפש מסכן מיד מבאשין : ליט יומא דאתילדית
15 ביה יומא דילדתני ביה אמי לא יהי בריך : ליט גברא דבשר ית אבא למימר אתיליד
16 לך בר דכר חדאה חדיה : ויהי גברא ההוא כקרויא דהפך יי ברוגזיה ולא אתותבא
וישמע צוחתא בצפרא ויבבא בעדן טיהרא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia hæc dicit Dñs: Ecce ego tradā te in interitū, te & omnes amicos
os,& occidentur gladio inimicorū ſuorū, & oculi tui videbunt: & omnes
viros dom⁹ Juda tradā in manū regis Babylonis, & abducet eos in Bab
lonē, & *percutiet* eos gladio. Et dabo omnes divitias terræ huj⁹, & om
laborē ejus,& omnia in quib⁹ laboraverunt,& omnes theſauros regi
mus Juda tradā in manū inimicorū ſuorū, & diripient ea,& in captivi
ducent, & aſportabunt ea in Babylonē. Tu autē Phaſur,& omnes habita
tores domus tuæ ibitis in captivitatē,& in Babylonē ducēris,& ibi morie
ris,ibíque ſepelieris tu & omnes amici tui,quib⁹ prophetâſti in menda
Seduxiſti me Dñe, & ſeduct⁹ ſum: robuſtior me fuiſti, & invaluiſti con
tra me :fui ſubſannationi quotidie, omnes me rident. Quia in tempore
ego prophetizo,ego tollo vocē meam plorans, & exclamans : & contra
ptores & direptores ego prophetizo:factū eſt enim mihi verbū Dñi in op
probriū & in deriſum tota die. Et dixi :Non recordabor ej⁹,nec loquar ul
trà in nomine ej⁹: & facti ſunt ſermones ejus in corde meo quaſi ignis ar
dens, inundantes oſſa mea: & laboravi ſuſtinens & non potui. Quia au
divi verba multorū qui congregantur in circuitu: Annuntiate & denunti
abim⁹ illud:omnes viri pacis meæ inſidiantur ut malefaciant mihi,Forte er
rabit, et prævalebim⁹ adverſùs eum, et ultionē noſtrā ſumem⁹ ex eo. Ver
autē Dñi eſt in adjutoriū meum,ſicut heros robuſt⁹. Propterea qui me per
ſequuntur,corruent, et non poterunt ſurgere: confundentur vehemen
quia non proſperabuntur,et operiet eos verecundia æterna, quæ nunquam
ceſſabit. Dñs autē exercituū eligens veritatē, revelati ſunt coram eo re
et cor; videbo ultionē judicii tui ex eis; quia coram te dixi injuriam mea
Cantate coram Dño, confitemini coram Dño, quia liberavit animam pau
peris de manu malignorū. Maledicta dies in qua nat⁹ ſum: dies in qua pe
perit me mater mea,non ſit benedicta. Maledict⁹ vir qui annuntiavit pa
meo,dicens: Natus eſt tibi filius maſculus, lætitia lætificavit eum. Sit
vir ille ſicut civitates quas ſubvertit Dominus in furore ſuo,et non pœni
bitatæ : et audiat clamorem manè,et ululatum in tempore meridiano

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܝܗܒ ܐܢܐ ܠܟ ܠܬܘܬܒܘܬܐ ܠܟ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܪ̈ܚܡܝܟ. ܘܢܦܠܘܢ
ܒܚܪܒܐ ܕܒܥܠܕܒ̈ܒܝܗܘܢ. ܘܥ̈ܝܢܝܟ ܚܙ̈ܝܢ. ܘܠܟܠܗ ܝܗܘܕܐ ܐܫܠܡ ܒܐܝܕܐ
ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܫܒܐ ܐܢܘܢ ܠܒܒܠ. ܘܢܩܛܠ ܐܢܘܢ ܒܚܪܒܐ. * ܘܐܫܠܡ ܟܠܗܘܢ
ܚܣ̈ܢܝ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܟܠܗ ܥܡܠܗ ܘܟܠܗ ܝܩܪܗ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܙ̈ܐ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ
ܐܫܠܡ ܒܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒ̈ܒܝܗܘܢ. ܘܢܒܙܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܢܕܒܪܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܢܝܬܘܢ ܐܢܘܢ
ܠܒܒܠ. * ܘܐܢܬ ܦܫܚܘܪ ܘܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܒܝܬܟ ܬܐܙܠܘܢ ܒܫܒܝܐ. ܘܠܒܒܠ ܬܐܙܠ
ܘܬܡܢ ܬܡܘܬ ܘܬܡܢ ܬܬܩܒܪ ܐܢܬ ܘܟܠܗܘܢ ܪ̈ܚܡܝܟ ܕܐܬܢܒܝܬ ܠܗܘܢ ܒܫܘܩܪܐ. * ܐܛܥܝܬܢܝ
ܡܪܝܐ ܘܐܛܥܝܬ. ܚܣܢܬ ܘܙܟܝܬܢܝ. ܗܘܝܬ ܓܘܚܟܐ ܟܠܝܘܡ. ܘܟܠܗܘܢ
ܡܒܙܚܝܢ ܒܝ. * ܡܛܠ ܕܡܡܠܠ ܗܘܝܬ ܘܩܥܐ ܗܘܝܬ. ܥܠ ܚܛܘܦܐ ܘܥܠ ܒܙܘܙܐ ܩܥܐ
ܗܘܝܬ. ܡܛܠ ܕܗܘܬ ܠܝ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܚܣܕܐ ܘܠܡܘܩܐ ܟܠܝܘܡ. * ܘܐܡܪܬ ܕܠܐ
ܐܥܗܕܝܘܗܝ ܘܠܐ ܐܡܠܠ ܬܘܒ ܒܫܡܗ. ܘܗܘܐ ܒܠܒܝ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܝܩܕܬܐ ܘܡܫܓܪܐ ܒܓܪ̈ܡܝ.
ܘܠܐܝܬ ܠܡܣܝܒܪܘ ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ. * ܡܛܠ ܕܫܡܥܬ ܢܟܠܐ ܕܣܓܝܐܐ ܕܡܬܟܢܫܝܢ ܥܠ
ܚܕܪܝ. * ܘܐܡܪܝܢ ܟܠܗܘܢ ܕܫܐܠܝܢ ܒܫܠܡܝ ܒܦܘܡܗܘܢ. ܘܣܢܝܢ ܠܝ ܒܠܒܗܘܢ.
ܚܘܘܗܝ ܠܢ. ܘܢܩܘܡ ܥܠܘܗܝ. ܟܒܪ ܢܬܛܥܐ ܠܢ. ܘܢܣܒ ܬܒܥܬܢ ܡܢܗ. * ܘܡܪܝܐ
ܥܡܝ ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܟܠܗܘܢ ܪ̈ܕܘܦܝ ܢܒܗܬܘܢ. ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢ.
ܢܒܗܬܘܢ ܛܒ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܣܬܟܠܘ. ܒܗܬܬܐ ܕܥܠܡ ܕܠܐ ܡܬܛܥܝܐ. * ܘܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ
ܒܚܘܪ ܙܕܝܩܐ. ܚܙܐ ܟܘ̈ܠܝܬܐ ܘܠܒܐ. ܐܚܙܐ ܦܘܪܥܢܟ ܡܢܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܟ ܓܠܝܬ ܕܝܢܝ.
* ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ. ܫܒܚܘ ܠܡܪܝܐ. ܕܦܪܩ ܢܦܫܗ ܕܡܣܟܢܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܒܝ̈ܫܐ. * ܠܝܛ ܗܘ
ܝܘܡܐ ܕܐܬܝܠܕܬ ܒܗ. ܝܘܡܐ ܕܝܠܕܬܢܝ ܐܡܝ ܠܐ ܢܗܘܐ ܒܪܝܟ. * ܠܝܛ ܗܘ ܓܒܪܐ ܕܐܣܒܪ ܠܐܒܝ.
ܘܐܡܪ ܠܗ ܕܐܬܝܠܕ ܠܟ ܒܪܐ ܕܟܪܐ. ܘܡܚܕܐ ܚܕܝܗ. * ܢܗܘܐ ܓܒܪܐ ܗܘ. ܐܝܟ ܩܘܪܝܐ
ܕܗܦܟ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܬܬܘܝ ܥܠܝܗܝܢ. ܢܫܡܥ ܩܥܬܐ ܒܨܦܪܐ. ܘܝܒܒܬܐ ܒܛܗܪܐ.

Propterea ſic dicit Dominus; Ecce reddam 4
te peregrinum, te *inquam* & omnes amicos
tuos, qui corruent gladio inimicorum ſuorum
oculis tuis cernentibus: totum quoque Judam
tradam in manum regis Babelis, qui captivos
abducet eos in Babelē, gladióque trucidabit.
Tradam etiam omnes arces hujus civitatis, to- 5
tum laborem, totúmque ſplendorem ipſius;
omnes denique theſauros regis Judæ tradam
in manū inimicorū ſuorum, ut capiant & di-
ripiant eos, & abducant eos in Babelem. Tu 6
quoque Peſhur & omnes domeſtici tui abibi-
tis in captivitatem, Babylonem abibis; & illic
morieris, ibique ſepeliêris tu & omnes ami-
ci tui quibus falſò prophetâſti. Pellexiſti me 7
Domine, & pellectus ſum: ſuperaſti & viciſti
me: factus ſum deriſioni quotidie, & omnes
me ſubſannant. Quoties loquebar & voci- 8
ferabar, adversùs rapaces & direptores cla-
mitabam. Quia ceſſit mihi ſermo Domini in
opprobrium atque deriſum quotidie; Ideò 9
ſtatueram nullam ejus mentionem me factu-
rum, nec ampliùs locuturum nomine ipſius:
at factus eſt in corde meo velut ignis ardens
& incenſus in oſſibus meis. Tentavi quidem
patienter ferre, ſed non potui? Quoniam 10
audiebam machinationem multorum qui cir-
cum me congregabantur: & dicebant omnes
qui precabantur mihi pacem ore ſuo tenus,
animo autem ſuo me oderant; Oſtendite eum
nobis ut inſurgamus in eum: fortè pellicietur
à nobis, & ſumemus ab eo vindictam noſtrā.
Atqui Dominus mecum eſt tanquam gigas ro- 11
buſtiſſimus, ideò omnes perſecutores mei pu-
deſient & non ſubſiſtent: erubeſcent admodū,
eò quòd non fuerint prudentes, ignominiâ
ſempiternâ quæ nunquam oblivioni tradetur.
Itaque Domine potentiſſime, inveſtigator ju- 12
ſtitiæ, inſpector renū et cordis, videam ultionē
tuam de iſtis; quia tibi revelavi cauſas meas.
Laudate Dominum, laudate *inquam* Domi- 13
num, quia liberavit animam pauperis de ma-
nu maleficorum. Maledictus ſit ille dies quo 14
genitus ſum: dies ille quo peperit me mater
mea, ne ſit benedictus. Maledict' ſit homo ille 15
qui nuntiavit patri meo dixítque ei; Natus eſt
tibi filius mas, exiſtimans ingenti eum afficere
lætitiâ. Sit homo ille ſimilis civitatibus quas 16
Dñs implacabiliter evertit: audiat clamorem
in matutino, & clangorem in meridie:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لاجل هذا هكذا يقول الرب * ها انا ادفعك للجلوة مع جميع اصدقايك ويسقطون بسيف
اعدايهم * وعيناك تنظران * وادفع كل يهودا الي ايدي ملك بابل * ويجلونهم ويقطعونهم
بالسيف * وادفع كل قوة هذه المدينة وجميع اتعابها وجميع كنوز ملك يهودا الي ايدي
اعدايهم * ويسوقونهم الي بابل * وانت وجميع السكان في بيتك تمضون في السبي. وفي بابل تموت
وهناك تدفن انت وجميع اصحابك الذين تنبيت لهم بالكذب * خدعتني يا رب فانخدعت
امسكتني فغلبت * صرت ضحكة * كملت كل النهار مهزوا بي * لاني بقولي المر ارعد * ادعوا
حربا وسحقا * لان كلمة الرب صارت لي للتعيير وللهزء كل نهاري * وقلت لا اسمي باسم الرب ولا
اتكلم بهذا الاسم * وصار مثل نار متوقدة ملتهبة في عظامي * واصبر من كل ناحية ولم
اطق ان احتمل * لاني سمعت ذم الكثيرين المجتمعين من حولي * بينوا ونبيت عليه يا جميع
الرجال اصدقايه * احفظوا فكرته ان كان يخدع * ونقتدر عليه وناخذ انتقامنا منه * والرب
معي كمثل تايد قوي * لاجل هذا طردوا ولم يقدروا ان يفهموا * خزيوا جدا لانهم لم
يفهموا اهانتهم التي لا تنسي منذ الدهر * ايها الرب خبير العدل متفهم الكلي والقلوب
اري من قبلك الانتقام فيهم * لاني كشفت لك شكاواتي * انشدوا للرب وسبحوا له * لانه خلص
نفس المسكين من يد من هو اقوي منه * ملعون اليوم الذي ولدت فيه * اليوم الذي
فيه ولدتني امي لا يكون مباركا * ملعون الانسان الذي بشر ابي قايلا ولد لك ذكر
وظن ذلك الانسان انه يكون مسرورا * يكون ذلك الانسان مثل المدن التي دفعها الرب
بغضب ولم يندم * ليسمع الصراخ باكرا والرنين وسط النهار

Iccirco ſic ait Dominus, Ecce ego traditu- 4
rus ſum te migrationi cum omnibus ami-
cis tuis, atque hi corruent gladio inimi-
corum ſuorum oculis tuis videntibus:
tradamque totum Judam in manus regis
Babylonici, qui captivos abducent eos, &
gladio concîdent: Tradam etiam totum 5
robur hujus urbis, omneſque labores ejus,
& omnes theſauros regis Judæ in manus
inimicorum ſuorum, & abducent eos
Babelem. Tu denique & omnes habitan- 6
tes in domo tua ibitis in captivitatem,
& Babele morieris, ibique ſepeliêris tu
& omnes amici tui quibus mendacium
prophetâſti. Decepiſti me Domine, & 7
deceptus ſum: apprehendiſti me, & vi-
ctus ſum: factus ſum irriſioni: exegi to-
tam diem illuſus. Nam ego ſermone meo 8
amaro vociferor, mœrorem atque miſe-
riam proclamo, quia verbum Domini
verſum eſt mihi in improperium &
deriſum totâ die meâ. Quare dixi, Non 9
nominabo nomen Domini, neque loquar
de hoc nomine: verùm factum eſt velut
ignis ardens, incendens oſſa mea. Pati-
enter ago ex omni parte, ſed ferre ne-
queo: Quoniam audio criminationem 10
multorum circum me congregatorum,
dicentium, *Patefacite, & contra ipſum*
patefaciamus, O omnes viri amici ipſius:
obſervate cogitationem ejus, ſi fortè
decipiatur, & prævaleamus ei, & ſuma-
mus ultionem noſtram de ipſo. Verùm 11
Dominus mecum eſt ut ſubſidium for-
tiſſimum, propterea perſecuti ſunt, ſed
non potuerunt intelligere: pudefacti ſunt
vehementer, quia non intellexerunt con-
temptum ſuum qui nequaquam oblivi-
oni tradetur in ſeculū. Eja Domine pro- 12
bans juſtitiam, intelligens renes & cor-
da, videam à te vindictam de iſtis;
quia tibi propoſui defenſiones meas. Ca- 13
nite carmen Domino, eumque laudate;
quoniam eripuit animam pauperis ex
ejus manu qui fortior erat ipſo, Male- 14
dictus dies quo natus ſum; dies quo me
genuit mater mea, non ſit benedictus.
Maledictus homo qui retulit patri meo 15
dicens; Natus eſt tibi maſculus, & arbi-
tratus eſt homo ille eum eſſe lætaturum.
Contingat homini illi quod urbibus quas 16
Dominus in imum cum furore detruſit,
nec pœnituit eum: audiat clamorem mane,
& ſtrepitum meridie:

ירמיה : כא

,meū ſepulchrū mea mater mihi fuiſſet &,vulva à me interfecit non *Quod*
17 אֲשֶׁר לֹא־מוֹתְתַנִי מֵרֶחֶם וַתְּהִי־לִי אִמִּי קִבְרִי
,ſum egreſſus vulva de jam quid Ut *ſeculi* conceptio ejus vulva &
18 וְרַחְמָה הֲרַת עוֹלָם׃ לָמָּה זֶּה מֵרֶחֶם יָצָאתִי
? mei dies pudore in deficerent & ;*mæſtitiam* & laborem *videndum ad*
לִרְאוֹת עָמָל וְיָגוֹן וַיִּכְלוּ בְּבֹשֶׁת יָמָי׃

CAP. XXI. כא

eum ad *mittendo in* , Domino à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הַדָּבָר אֲשֶׁר־הָיָה אֶל־יִרְמְיָהוּ מֵאֵת יְהוָה בִּשְׁלֹחַ אֵלָיו
filium Sephaniah & ,Malchijah filium Paſchur , Sidchijahu rex
הַמֶּלֶךְ צִדְקִיָּהוּ אֶת־פַּשְׁחוּר בֶּן־מַלְכִּיָּה וְאֶת־צְפַנְיָה בֶן־
:Dominum nobis pro nunc *Inquire : dicendum ad* ,ſacerdotē Mahaſejah
2 מַעֲשֵׂיָה הַכֹּהֵן לֵאמֹר׃ דְּרָשׁ־נָא בַעֲדֵנוּ אֶת־יְהוָה
faciat fortè ſi ,nos adverſum *prælians* Babel rex Nebuchadreſar quia
כִּי נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל נִלְחָם עָלֵינוּ אוּלַי יַעֲשֶׂה
.nobis *deſuper* aſcendat &,ſua mirabilia omnia ſecundū nobiſcum Dominus
יְהוָה אוֹתָנוּ כְּכָל־נִפְלְאֹתָיו וְיַעֲלֶה מֵעָלֵינוּ׃
dixit Sic : Sidchijahu ad dicetis Sic :eos ad Irmejahu dixit Et
3 וַיֹּאמֶר יִרְמְיָהוּ אֲלֵיהֶם כֹּה תֹאמְרֻן אֶל־צִדְקִיָּהוּ׃ כֹּה־אָמַר
4 quæ , *belli vaſa convertens* ego Ecce : Iſrael Deus Domin⁹
יְהוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הִנְנִי מֵסֵב אֶת־כְּלֵי הַמִּלְחָמָה אֲשֶׁר
, Babel rege cum ,*eis in pugnantes* vos quibus ,veſtris manibus in
בְּיֶדְכֶם אֲשֶׁר אַתֶּם נִלְחָמִים בָּם אֶת־מֶלֶךְ בָּבֶל
colligam & :murum extra vos *ſuper coanguſtantes* , Chaſdim &
וְאֶת־הַכַּשְׂדִּים הַצָּרִים עֲלֵיכֶם מִחוּץ לַחוֹמָה וְאָסַפְתִּי
vobiſcum ego pugnabo Et .hujus civitatis medium *ad* ea
5 אוֹתָם אֶל־תּוֹךְ הָעִיר הַזֹּאת׃ וְנִלְחַמְתִּי אֲנִי אִתְּכֶם
,*excandeſcentia* in & , *naſo* in & , forti brachio in & ,extenta manu in
בְּיָד נְטוּיָה וּבִזְרוֹעַ חֲזָקָה וּבְאַף וּבְחֵמָה
, hujus civitatis habitatores percutiam Et .magna ira in &
6 וּבְקֶצֶף גָּדוֹל׃ וְהִכֵּיתִי אֶת־יוֹשְׁבֵי הָעִיר הַזֹּאת
.morientur magna peſtilentia in , *animal* & ,*hominem* &
וְאֶת־הָאָדָם וְאֶת־הַבְּהֵמָה בְּדֶבֶר גָּדוֹל יָמֻתוּ׃
,Jehudah regem Sidchijahu Dabo :DOMINI *effatum ſic* poſt Et
7 וְאַחֲרֵי־כֵן נְאֻם־יְהוָה אֶתֵּן אֶת־צִדְקִיָּהוּ מֶלֶךְ־יְהוּדָה
hac civitate in *reſiduos* & , populum & ,ej⁹ ſervos &
וְאֶת־עֲבָדָיו וְאֶת־הָעָם וְאֶת־הַנִּשְׁאָרִים בָּעִיר הַזֹּאת
regis Nebuchadreſar manu in , fame à & , gladio à , peſte à
מִן־הַדֶּבֶר מִן־הַחֶרֶב וּמִן־הָרָעָב בְּיַד נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־
:eorū animam quærentium manu in & ,eorū inimicorū manu in & , Babel
בָּבֶל וּבְיַד אֹיְבֵיהֶם וּבְיַד מְבַקְשֵׁי נַפְשָׁם
neque , parcet nec , eis *ſuper* ignoſcet non ,gladii *os ad* eos percutiet &
וְהִכָּם לְפִי־חֶרֶב לֹא־יָחוּס עֲלֵיהֶם וְלֹא יַחְמֹל וְלֹא
: Dominus dixit Sic : dices hunc populum ad Et .miſerebitur
8 יְרַחֵם׃ וְאֶל־הָעָם הַזֶּה תֹּאמַר כֹּה אָמַר יְהוָה
.mortis viam & , *vitarum* viam *veſtras facies ad dans* ego Ecce
הִנְנִי נֹתֵן לִפְנֵיכֶם אֶת־דֶּרֶךְ הַחַיִּים וְאֶת־דֶּרֶךְ הַמָּוֶת׃
: peſte *in* & ,fame *in* & ,gladio *in* morietur , hac urbe in *Habitans*
9 הַיֹּשֵׁב בָּעִיר הַזֹּאת יָמוּת בַּחֶרֶב וּבָרָעָב וּבַדָּבֶר
; vivet & , vos *ſuper coanguſtantes* , Chaſdim ad *fuerit delapſus & egreſſus &*
וְהַיּוֹצֵא וְנָפַל עַל־הַכַּשְׂדִּים הַצָּרִים עֲלֵיכֶם יִחְיֶה
meam facies poſui Et .ſpolium in ſua anima ei erit &
10 וְהָיְתָה־לּוֹ נַפְשׁוֹ לְשָׁלָל׃ כִּי שַׂמְתִּי פָנַי
: DOMINUS ait , bonum in non & ,malum in hanc civitatem *in*
בָּעִיר הַזֹּאת לְרָעָה וְלֹא לְטוֹבָה נְאֻם־יְהוָה
.igni in eam comburet & , dabitur Babel regis manum in
בְּיַד־מֶלֶךְ בָּבֶל תִּנָּתֵן וּשְׂרָפָהּ בָּאֵשׁ׃
.DOMINI verbum Audite :Jehudah regis domui Et
11 וּלְבֵית מֶלֶךְ יְהוּדָה שִׁמְעוּ דְּבַר־יְהוָה׃

Verſio VULG. LAT.

17 Qui non me interfecit à vulva,ut
fieret mihi mater mea ſepulchrū,
& vulva ejus conceptus æternus.
18 Quarè de vulva egreſſus ſum, ut
viderem laborem & dolorem, &
conſumerentur in confuſione dies mei?

CAP. XXI.

1 VErbum, quod factum eſt ad
Jeremiam à Domino,quando miſit
ad eum rex Sedecias Phaſſur
filium Melchiæ, & Sophoniam
filium Maaſiæ ſacerdotem, dicens;
2 Interroga pro nobis Dominum,
quia Nabuchodonoſor
rex Babylonis præliatur adverſùm
nos : ſi fortè faciat Dominus
nobiſcum ſecundùm omnia
mirabilia ſua, & recedat à nobis.
3 Et dixit Jeremias ad eos;
4 Sic dicetis Sedeciæ; Hæc dicit
Dominus Deus Iſrael ; Ecce ego
convertam vaſa belli, quæ in manibus
veſtris ſunt, & quibus vos
pugnatis adverſùm regem Babylonis,
& Chaldæos, qui obſident
vos in circuitu murorum : &
congregabo ea in medio civitatis
5 hujus. Et debellabo ego
vos in manu extenta, & in brachio
forti, & in furore, & in
indignatione, & in ira grandi.
6 Et percutiam habitatores civitatis
hujus : homines & beſtiæ
peſtilentiâ magnâ morientur.
7 Et poſt hæc, ait Dominus ; Dabo
Sedeciam regem Juda, & ſervos
ejus, & populum ejus, & qui
derelicti ſunt in civitate hac à
peſte, & gladio, & fame, in manu
Nabuchodonoſor regis Babylonis,
& in manu inimicorum
eorum, & in manu quærentium
animam eorum, & percutiet
eos in ore gladii, & non
flectetur, neque parcet, nec miſerebitur.
8 Et ad populum hunc
dices ; Hæc dicit Dominus ; Ecce
ego do coram vobis viam vitæ,
9 & viam mortis. Qui habitaverit
in urbe hac, morietur gladio,
& fame, & peſte : qui autem
egreſſus fuerit, & transfugerit
ad Chaldæos , qui obſident
vos, vivet, & erit ei anima ſua,
10 quaſi ſpolium. Poſui enim faciem
meam ſuper civitatem hanc
in malum, & non in bonum, ait
Dominus ; in manu regis Babylonis
dabitur,& exuret eam igni.
11 Et domui regis Juda ; Audite
verbum Domini,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Ὅτι οὐκ ἀπέκτεινέ με (ϛ) ἐν μήτρᾳ, καὶ
ἐγένετό μοι ἡ μήτηρ μου τάφος μου, καὶ ἡ
18 μήτρα συλλήψεως αἰωνίας. Ἵνα τί τοῦτο
ἐξῆλθον ἐκ μήτρας, τοῦ βλέπειν κόπους καὶ
πόνους, καὶ διετέλεσαν ἐν αἰσχύνῃ αἱ ἡμέραι
μου;

MS.A. (ϛ) ἐν μήτρᾳ μητρὸς,

ΚΕΦ. κα΄.

1 Ὁ ΛΟΓΟΣ Ὁ ΓΕΝΟΜΕΝΟΣ ΠΑΡΑ
ΚΥΡΙΟΥ ΠΡΟΣ (α) ἹΕΡΕΜΙΑΝ,
ὍΤΕ ἈΠΕΣΤΕΙΛΕ ΠΡΟΣ ΑΥΤΟΝ
Ὁ ΒΑΣΙΛΕΥΣ ΣΕΔΕΚΙΑΣ
ΤΟΝ ΠΑΣΧΩΡ ὙΙΟΝ ΜΕΛΧΙΟΥ,
ΚΑΙ ΣΟΦΟΝΙΑΝ ὙΙΟΝ (β) ΒΑΣΑΙΟΥ
2 ΤΟΝ ἹΕΡΕΑ, ΛΕΓΩΝ, Ἐπερώτησον
περὶ ἡμῶν τὸν κύριον· ὅτι (˜) βασιλεὺς
Βαβυλῶνος ἐφέστηκεν ἐφ᾽ ἡμᾶς· εἰ ποιήσει
κύριος κατὰ πάντα τὰ θαυμάσια αὐτοῦ, καὶ
3 ἀπελεύσεται ἀφ᾽ ἡμῶν. Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς
Ἱερεμίας, Οὕτως ἐρεῖτε πρὸς Σεδεκίαν
4 βασιλέα Ἰούδα, Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ
ἐγὼ μεταστρέφω τὰ ὅπλα τὰ πολεμικὰ,
ἐν οἷς ὑμεῖς πολεμεῖτε ἐν αὐτοῖς πρὸς τοὺς
Χαλδαίοις τοὺς (γ) συγκεκλεικότας ὑμᾶς
ἔξωθεν τοῦ (δ) τείχους. καὶ συνάξω αὐτοὺς
5 εἰς τὸ μέσον τῆς πόλεως ταύτης, Καὶ πολεμήσω
ἐγὼ ὑμᾶς ἐν χειρὶ (ε) ἐκτεταμένῃ,
καὶ ἐν βραχίονι κραταιῷ μετὰ θυμοῦ καὶ
6 (ζ) ὀργῆς μεγάλης. Καὶ πατάξω πάντας
τοὺς κατοικοῦντας ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, τοὺς
ἀνθρώπους καὶ τὰ κτήνη ἐν θανάτῳ μεγάλῳ,
7 καὶ ἀποθανοῦνται. Καὶ μετὰ ταῦτα οὕτως
λέγει κύριος, Δώσω τὸν Σεδεκίαν βασιλέα
Ἰούδα, καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ, καὶ τὸν λαὸν
(η) καταλειφθέντα ἐν τῇ πόλει ταύτῃ
ἀπὸ τοῦ θανάτου καὶ ἀπὸ τοῦ λιμοῦ καὶ ἀπὸ τῆς
μαχαίρας, εἰς χεῖρας ἐχθρῶν αὐτῶν, τῶν ζητούντων
τὰς ψυχὰς αὐτῶν, καὶ κατακόψουσιν
αὐτοὺς ἐν στόματι μαχαίρας· οὐ φείσομαι
(θ) ἐπ᾽ αὐτοῖς, καὶ οὐ μὴ οἰκτειρήσω αὐτούς.
8 Καὶ πρὸς τὸν λαὸν τοῦτον ἐρεῖς, Τάδε λέγει
κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ δέδωκα πρὸ προσώπου
ὑμῶν τὴν ὁδὸν τῆς ζωῆς, καὶ τὴν ὁδὸν
9 τοῦ θανάτου. Ὁ καθήμενος ἐν τῇ πόλει
ταύτῃ, ἀποθανεῖται ἐν μαχαίρᾳ καὶ ἐν λιμῷ·
καὶ ὁ ἐκπορευόμενος προσχωρῆσαι πρὸς
τοὺς Χαλδαίους τοὺς συγκεκλεικότας ὑμᾶς,
ζήσεται, καὶ ἔσται ἡ ψυχὴ αὐτοῦ εἰς σκῦλα, καὶ
10 ζήσεται. Διότι (ι) ἐστήρικα τὸ πρόσωπόν
μου ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην εἰς κακὰ, καὶ οὐκ
εἰς ἀγαθά· εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος
παραδοθήσεται, καὶ κατακαύσει αὐτὴν
11 ἐν πυρί. Ὁ οἶκος βασιλέως Ἰούδα, ἀκούσατε λόγον κυρίου·

MS.A. (α) ἹΗΡΕΜΙΑΝ, ὍΤΙ (β) ΜΑΣΣΑΙΟΥ (˜) ὁ βασιλ (γ) συγκλείοντας ἡμᾶς (δ) τείχους εἰς τὸ μέσον (ε) ἐντεταμ (ζ) ὀργῆς καὶ παροργισμοῦ μεγάλου. (η) τὸν καταλειφθέντα (θ) ἐπ᾽ αὐτούς, (ι) ἐστήρισα

Quia non interfecit me in vulva, & facta eſt mihi mater mea ſepulchrum meum, & vulva conceptionis æternæ. Ut quid egreſſus ſum e vulva, ut viderem labores, & dolores, & conſummati ſunt in confuſione dies mei?

CAP. XXI.

VERBUM, quod factum eſt à Domino ad Hieremiam, quando miſit ad eum rex Sedecias Paſchor filium Melchiæ, & Sophoniam filium Baſææ ſacerdotem, dicens; Interroga pro nobis Dominum: quia rex Babylonis inſurrexit ſuper nos: ſi faciet Dominus ſecundum omnia mirabilia ſua, & recedet à nobis? Et dixit ad eos Hieremias; Sic dicetis ad Sedeciam regem Juda; Hæc dicit Dominus; Ecce ego converto arma bellica, in quibus vos pugnatis in eis adverſus Chaldæos, qui concluſerunt vos extra murum. Et congregabo eos in medio civitatis hujus. Et debellabo ego vos in manu extenta, & in brachio forti cum furore, & ira magna: Et percutiam omnes habitantes in civitate hac, homines & jumenta, in morte magna: & morientur. Et poſt hæc ſic ait Dominus; Dabo Sedeciam regem Juda, & pueros ejus, & populum derelictum in civitate hac à morte, & à fame, & à gladio, in manus inimicorum eorum, quærentium animas eorum: & trucidabunt eos in ore gladii. Non parcam ſuper eis, & non miſerebor eorum. Et ad populum hunc dices; Hæc dicit Dominus; Ecce ego dedi ante faciem veſtram, viam vitæ, & viam mortis. Sedens in urbe hac, morietur in gladio, & in fame: & egrediens accedere ad Chaldæos, qui concluſerunt vos, vivet, & erit anima ejus in ſpolia, & vivet. Obfirmavi enim faciem meam ſuper civitatem hanc in mala, & non in bona. In manus regis Babylonis tradetur: & comburet eam in igni. Domus regis Juda, audite verbum Domini,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 לוי דלא אמיר עלי דמתית ממעין והות לי פון אמי קברי והוית כדלא הוית׃ למה דנן
18 מבטנא נפקית למחזי עמל ודון וספו בבהתא יומי׃

כא

1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה מקדם יי כד שלחלותיה מלכא צדקיה ית פשחור בר
2 מלכיה וית צפניה בר מעשיה כהנא למימר׃ צלי כען עלנא קדם יי ארי נבוכדרצר
3 מלכא דבבל מגיח קרבא בנא מאים יעבד יי עמנא ככל פרישתיה ויסתלק מננא׃ ואמר
4 ירמיה להון כדין תימרון לצדקיה׃ כדנן אמר יי אלהא דישראל האנא מסחר ית מאני
קרבא דבידכון דאתון מגיחין קרבא בהון עם מלכא דבבל ועם כשדאי דצירין עליכון
5 מברא לשורא ואכנש יתהון לגו קרתא הדא׃ ואגיח אנא עמכון ביד מרממא ובדרע
6 תקיפא וברגז ובחמה ובתקוף רב׃ ואמחי ית יתבי קרתא הדא וית אנשא וית בעירא
7 במותא סגיאה ימותון׃ ובתר כן אמר יי אמסר ית צדקיה מלך שבטא דבית יהודה וית
עבדוהי וית עמא וית דאשתארו בקרתא הדא מן מותא ומן חרבא ומן כפנא ביד נבוכד
ראצר מלכא דבבל וביד בעלי דבביהון וביד דבען למקטלהון וימחנון לפתגם דחרב
8 לא יחוס עליהון ולא יחמול ולא ירחם׃ ולעמא הדין תימר כדנן אמר יי האנא יהב
9 קדמיהון ית אורח חיי וית אורח מותא׃ דיתיב בקרתא הדא יתקטל בחרבא ובכפנא
10 ובמותא ודיפוק וישתמע לכשדאי דצירין עליכון ויחי ותהי ליה נפשיה לשיבא׃ ארי
חל רוגזי בקרתא הדא לבישא ולא לטבא אמר יי בידא דמלכא דבבל תתמסר
11 ויוקדניה בנורא׃ ולבית מלך שבטא דבית יהודה קבילו פתגמא דיי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Utinam non dictum fuiſſet de me:ſed quòd mortu⁹ eſſem ab utero,& eſſ mihi mater mea ſepulchrum meum, & eſſem quaſi non eſſem. Quare ventre egreſſus ſum;ut viderem laborem et dolorem, et conſumpti ſunt confuſione dies mei?

CAP. XXI.

VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam à facie Dñi, qua miſit ad eum rex Sedechias Phaſur filium Melchiæ, & Sophoniam fili Maaſiæ ſacerdotem, dicens : Ora nunc pro nobis coram Dño, quia Nab chodonoſor rex Babylonis præliatur adverſùm nos;fortaſſe faciet Dñs no biſcum juxta omnia mirabilia ſua, & diſcedet à nobis. Et dixit ad eos Je mias:Hæc dicetis Sedechiæ; Hæc dicit Dñs Deus Iſrael: Ecce ego conv tam inſtrumenta belli quæ ſunt in manibus veſtris, quibus vos pugna contra regē Babylonis,& contra Chaldæos,qui obſident vos extra mur & congregabo ea in medio civitatis hujus. Et pugnabo ego vobiſcum manu excelſa,et in brachio forti,et in furore,et in indignatione,et in ira g di. Et percutiam habitatores civitatis hujus: & homines & jumenta pe magna morientur.Et poſt hæc,dicit Dñs, tradam Sedechiam regem tribu domus Juda,& ſervos ejus,& populum & quicunque remanſerit in civi te iſta,à morte,& à gladio,& à fame,in manum Nabuchodonoſor regis Ba bylonis,& in manum inimicorum ſuorum,& in manum quærentium occi dere eos,& percutiet eos in ore gladii : non parcet eis , nec ignoſcet, ne miſerebitur.Populo autem huic dices:Hæc dicit Dñs ; Ecce ego dabo co ram vobis viam vitæ & viam mortis. Qui habitaverit in urbe hac, int ficietur gladio, & fame, & peſte : & qui egreſſus fuerit, et qui obed Chaldæis qui obſident vos, vivet,et erit ei anima ejus in evaſionem. Q reſidet furor meus contra civitatem iſtam in malum, et non in bonum cit Dominus. In manum regis Babylonis tradetur , qui eam ſucc igni. Et domui regis tribus domus Juda, Suſcipite verbum Dom

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕܠܐ ܐܡܝܬܢܝ ܒܡܪܒܥܬܐ. ܘܗܘܬ ܠܝ ܐܡܝ ܩܒܪܐ. ܘܡܪܒܥܬܐ ܕܒܛܢܘܬܝ ܠܥܠܡ. * ܠܡܢܐ ܢܦܩܬ ܡܢ ܡܪܒܥܬܐ. ܠܡܚܙܐ ܥܡܠܐ ܘܟܘܪܗܢܐ. ܘܢܫܠܡܘܢ ܒܒܗܬܬܐ ܝܘܡܬܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܐ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܟܕ ܫܕܪ ܠܘܬܗ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ. ܠܦܫܚܘܪ ܒܪ ܡܠܟܝܐ ܘܠܨܦܢܝܐ ܒܪ ܡܥܣܝܐ ܟܗܢܐ. ܟܕ ܐܡܪܝܢ. * ܒܥܝ ܥܠܝܢ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܡܬܟܬܫ ܥܡܢ. ܕܠܡܐ ܢܥܒܕ ܥܡܢ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܟܠܗܝܢ ܬܕܡܪܬܗ. ܘܢܣܬܠܩ ܡܢܢ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܐܪܡܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪܘ ܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܡܗܦܟ ܐܢܐ ܡܐܢܝ ܩܪܒܐ ܕܒܐܝܕܝܟܘܢ. ܕܡܬܟܬܫܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܗܘܢ. ܥܡ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ : ܘܥܡ ܟܠܕܝܐ. ܕܐܚܝܕܝܢ ܠܟܘܢ ܠܒܪ ܡܢ ܫܘܪܐ. ܘܐܟܢܫ ܐܢܘܢ ܠܓܘ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. * ܘܐܬܟܬܫ ܐܢܐ ܥܡܟܘܢ. ܒܐܝܕܐ ܥܫܝܢܬܐ. ܘܒܕܪܥܐ ܪܡܐ. ܒܪܘܓܙܐ ܘܒܚܡܬܐ. * ܘܒܪܘܓܙܐ ܪܒܐ ܐܡܚܐ ܠܥܡܘܪܝ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܠܒܢܝܢܫܐ ܘܠܒܥܝܪܐ. ܒܡܘܬܢܐ ܪܒܐ ܢܡܘܬܘܢ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܗܟܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܫܠܡܝܘܗܝ ܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܠܥܒܕܘܗܝ. ܘܠܥܡܐ ܕܐܫܬܚܪ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ : ܡܢ ܚܪܒܐ ܘܡܢ ܟܦܢܐ. ܘܡܢ ܡܘܬܢܐ. ܐܫܠܡ ܒܐܝܕܐ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܒܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܒܐܝܕܐ ܕܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܢܩܛܘܠ ܐܢܘܢ. ܒܦܘܡܐ ܕܚܪܒܐ. ܘܠܐ ܢܚܘܣ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܪܐܦ. ܘܠܐ ܢܪܚܡ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܠܥܡܐ ܗܢܐ ܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܝܗܒ ܐܢܐ ܩܕܡܝܟܘܢ. ܐܘܪܚܐ ܕܚܝܐ. ܘܐܘܪܚܐ ܕܡܘܬܐ. * ܡܢ ܕܝܬܒ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܢܡܘܬ ܒܚܪܒܐ. ܘܒܟܦܢܐ. ܘܒܡܘܬܢܐ. ܘܡܢ ܕܢܦܩ ܢܦܠ ܥܠ ܟܠܕܝܐ ܕܐܚܝܕܝܢ ܠܟܘܢ. ܢܚܐ. ܘܬܗܘܐ ܠܗ ܢܦܫܗ. * ܡܛܠ ܕܣܡܬ ܐܦܝ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܠܒܝܫܬܐ. ܘܠܐ ܠܛܒܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܬܫܬܠܡ. ܘܢܘܩܕܝܗ ܒܢܘܪܐ. ܘܠܒܝܬ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܒܝܬ ܕܘܝܕ.

Quòd morte non affecerit me in vulva, ut 17
eſſet mihi mater mea ſepulchrum,& in vulva
conceptus meus perpetuus. Cur egreſſus 18
ſum è vulva, ut aſpicerem laborem & mole-
ſtiam, & conſumerentur in pudore dies mei?

CAP. XXI.

SErmo qui fuit ad Jeremiam à Domino,cùm 1
miſiſſet ad eum rex Sedecia Peſhurem filium
Melachiæ, & Sephaniam filium Maaſiæ ſa-
cerdotes, ut dicerent; Precare pro nobis 2
Dominum, quia Nebuchadnoſar rex Babelis
pugnat contra nos: ſi fortè agat nobiſcum
Dominus juxta tot mirabilia ſua, & arceat
illum à nobis. Dixit autem eis Jeremia, Sic 3
dicetis regi Sedeciæ; Ita ait Dominus Deus 4
Iſraelis, Ecce averſurus ſum inſtrumenta bel-
lica quæ manibus tenetis, quibus dimicatis
contra regem Babelis & contra Chaldæos
qui vos obſident extra civitatem, & congre-
gaturus eos intra civitatem iſtam; Et præ- 5
liaturus egomet contra vos manu potenti &
brachio excelſo, cum ira & æſtu: Et magna 6
cum ira percuſſurus habitatores civitatis hu-
jus homines & jumenta magnâ clade mori-
entur. Tum poſtea, dicit Dominus; tradam 7
Sedeciam regem Judæ, & ſervos ejus; &
populum qui ſuperſtes in hac civitate fuerit à
gladio, à fame, & à peſte; tradam in manum
Nebuchadnoſaris regis Babelis, in manum
hoſtium ſuorum, & in manum eorum qui
quærunt animam ipſorum: & percutiet eos
acie gladii, neque parcet eis, neque clemen-
tiâ utetur, neque miſerebitur illorum. Po- 8
pulo autem iſti dic, Sic ait Dominus; Ecce
propono vobis viam vitæ & viam mortis:
Qui manſerit in hac civitate, morietur gla- 9
dio, fame, & peſte, qui autem egreſſus fue-
rit ad Chaldæos qui vos obſident, vivet, eri-
piétque animam ſuam. Poſui enim faciem 10
meam contra civitatem iſtam in malum, &
non in bonum, dicit Dominus; & in manum
regis Babelis tradetur, qui tum ipſam tum do-
mum regis Judæ, igne comburet. Audite 11
ſermonem Domini O domeſtici Davidis:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لانه لم يقتلني في رحم الام * وتصير لي امي قبري ورحم حبل ابدي * لماذا خرجت من الرحم لانظر الاتعاب والاوجاع * وكملت بالخزي ايامي *

* الفصل الحادي والعشرون * الاصحاح الثالث عشر *

* القول الصاير من قبل الرب الي ارمياء لما ارسل اليه صداقيا الملك فحسور بن ملكيو وصفونيا بن ماسياوو الكاهن قايلا * اسال من اجلنا الرب * لان ملك بابل وقف بنا * هل يصنع الرب كجميع عجايبه ويصرف عنا * فقال لهم ارمياء * هكذا قولوا لصداقيا ملك يهودا * هكذا يقول الرب * ها انا انقل الاسلحة الحربية التي انتم تحاربون بها * الي الكلدانيين الذين يحبسونكم * من خارج السور الي وسط هذه المدينة * وانا احاربكم بيد ممدودة وبذراع عزيز * بغضب ورجز وغيظ عظيم * واضرب جميع السكان في هذه المدينة الناس والبهايم بموت عظيم ويموتون * ومن بعد هذه هكذا يقول الرب * ادفع صداقيا ملك يهودا واولاده * والشعب المبقي في هذه المدينة من الموت ومن الجوع ومن السيف * الي ايدي اعدايهم الذين يطلبون نفوسهم ويقطعونهم بفم السيف * ولا اشفق عليهم ولا اتراف عليهم * وتقول لهذا الشعب * هكذا يقول الرب * ها انا اعطي امام وجوهكم طريق الحياة وطريق الموت * الجالس في هذه المدينة يموت بالسيف والجوع * والذي يخرج لينتمي للكلدانيين الذين حبسوكم يعيش * وتكون نفسه للغنايم ويعيش * من اجل اني شددت وجهي على هذه المدينة للشرور ولا للخيرات في ايدي ملك بابل تدفع * ويحرقها بالنار * يا بيت ملك يهودا اسمعوا قول الرب *

Quòd non occiderit me in utero matris, 17
ut eſſet mihi mater mea ſepulchrum me-
um, & uterus conceptionis perpetuæ.
Quare de vulva prodivi ut viderem la- 18
bores ac dolores, & finirent in pudore
dies mei?

CAP. XXI.

Textus decimus tertius.

SErmo habitus à Domino ad Je- 1
remiam, quando miſit ad eum
Sedecia rex Phehſurem Malachiæ
filium, & Sephoniam filium Maa-
ſiæ ſacerdotem, dicens; Conſu- 2
le pro nobis Dominum, quia rex
Babelis circunſtat nos, an factu-
rus ſit Dominus ſecundùm omnia
miracula ſua, ut abſcedat à nobis.
Itaque dixit eis Jeremia, Ita dicite Sede- 3
ciæ regi Judæ; Sic dicit Dominus, 4
Ecce ego transferam arma bellica quibus
vos pugnatis, ad Chaldæos qui vos co-
arctant, ab extrinſeco mœnium ad medi-
um iſtius urbis; Et ego expugnabo vos 5
manu extentâ & brachio robuſto, cum
ira, indignatione, & furore maximo:
Et percutiam omnes habitantes in hac 6
urbe, tam homines quàm jumenta, ingen-
ti peſte, & morientur. Et poſt hæc, ſic 7
dicit Dominus, tradam Sedeciam re-
gem Judæ, & filios ejus, nec non popu-
lum quem reliquum fecerit hæc in urbe
peſtis, inedia, & gladius; in manus ini-
micorum ſuorum quærentium animas
eorum, qui concîdent eos acie gladii: &
non miſerebor eorum, neque clementiâ
utar in eos. Dices etiam huic populo, 8
Sic ait Dominus; Ecce ego pono ob oculos
veſtros viam vitæ & viam mortis.
Qui commoratus fuerit in hac urbe, 9
morietur gladio & fame: qui autem
egreſſus fuerit ut ſe conferat ad Chaldæ-
os qui concluſerunt vos, vivet, ſerva-
bitur anima ejus ad ſpolia, & evadet.
Nam ego reddidi ſeverum vultum me- 10
um contra hanc urbem in mala, non in
bona: in manus regis Babylonii trade-
tur, & igne comburet illam. O do- 11
mus regis Judæ, audite ſententiam
Domini.

ירמיה : כב

eruite &,judicium mane in Judicate :Dominus dixit ſic ,David Domus
12 בית דוד כה אמר יהוה דינו לבקר משפט והצילו
,mea *excandeſcentia* ignis ut egrediatur fortè ne:opprimētis manu de *direptũ*
גזול מיד עושק פן־תצא כאש חמתי
.*corum ſtudiorum malitiæ faciebus à extinguens* non & , ſuccendatur &
ובערה ואין מכבה מפני רע מעלליהם :
:DOMINUS ait ,*planitiei* petra vallis habitatrix te ad *ego* Ecce
13 הנני אליך ישבת העמק צור המישר נאם־יהוה
?noſtra habitacula in ingredietur quis&,nos *ſuper* cõfringet Quis ; *dicentes*
האמרים מי־יחת עלינו ומי יבוא במעונותינו :
:Dominus dixit , veſtrorũ *ſtudiorum* fructum juxta vos ſuper viſitabo Et
14 ופקדתי עליכם כפרי מעלליכם נאם־יהוה
.*ejus circuitus omnes comedet* & ,ejus ſylva in ignem faciam ſuccendere &
והצתי אש ביערה ואכלה כל־סביביה :

CAP. XXII. כב

loquêris &,Jehudah regis domum Deſcende : Dominus dixit Sic
1 כה אמר יהוה רד בית־מלך יהודה ודברת
rex ,Domini verbum Audi : *dices* Et .hoc verbum ibi
2 שם את־הדבר הזה : ואמרת שמע דבר־יהוה מלך
,tuus populus &,tui ſervi & , tu ,David ſolium ſuper *ſedens* ,Jehudah
יהודה הישב על־כסא דוד אתה ועבדיך ועמך
judicium Facite : Dominus dixit Sic .has portas *in ingredientes*
3 הבאים בשערים האלה : כה אמר יהוה עשו משפט
,*peregrinum* & : opprimentis manu de *direptum* liberate & ; juſtitiam &
וצדקה והצילו גזול מיד עשוק וגר
innocentē ſanguinē & , rapiatis ne *fraudetis* ne viduam & ,pupillum
יתום ואלמנה אל־תנו אל־תחמסו ודם נקי
feceritis faciendo ſi Nam .iſto loco in effundatis ne
4 אל־תשפכו במקום הזה : כי אם־עשו תעשו
reges hujus domus portas *in* ingredientur & , hoc *verbum*
את־הדבר הזה ובאו בשערי הבית הזה מלכים
,equis in & ,curru in equitantes ,ejus ſolium ſuper David *ipſi* ſedentes
ישבים לדוד על־כסאו רכבים ברכב ובסוסים
audieritis non ſi Et .ejus populus & ,ejus ſervi & , ipſe
5 הוא ועבדו ועמו : ואם לא תשמעו את־
quia : Dominus dixit , juravi me *in* , hæc verba
הדברים האלה בי נשבעתי נאם־יהוה כי־
Dominus dixit ſic Quia .hæc domus erit ſolitudinem in
6 לחרבה יהיה הבית הזה : כי־כה אמר יהוה
: Lebanon caput mihi tu Ghilhad : Jehudah regis domum ſuper
על־בית מלך יהודה גלעד אתה לי ראש הלבנון
ſanctificabo Et .*ſunt habitatæ* non urbes ,*deſertum* te poſuero non ſi
7 אם־לא אשיתך מדבר ערים לוא נושבה : וקדשתי
electionem ſuccident & ,ejus inſtrumenta & *virum* ,*corrumpentes* te ſuper
עליך משחתים איש וכליו וכרתו מבחר
multæ gentes tranſibunt Et .ignem ſuper facient cadere & ,*tuarũ cedrorum*
8 ארזיך והפילו על־האש : ועברו גוים רבים
quid Propter :ſuũ *ſocium* ad unuſquiſque dicent & ,iſtam civitatem *ſuper*
על העיר הזאת ואמרו איש אל־רעהו על־מה
quod *Super* :dicent Et ? huic grandi civitati ſic Domin⁹ fecit
9 עשה יהוה ככה לעיר הגדולה הזאת : ואמרו על אשר
ſe incurvaverunt & , ſui Dei Domini pactum dereliquerunt
עזבו את־ברית יהוה אלהיהם וישתחוו
ne & ,*mortuo in* defleatis Ne .eis ſervierunt & ,alienis Diis
10 לאלהים אחרים ויעבדום : אל־תבכו למת ואל־
,ultrà revertetur non quia : *abeunti* flendo flete : *ei commoveamini*
תנדו לו בכו בכו להלך כי לא ישוב עוד
.ſuæ nativitatis terram videbit &
וראה את־ארץ מולדתו :

Verſio VULG. LAT.

12 Domus David, hæc dicit Dominus; Judicate manè judicium,& eruite vi oppreſſum de manu calumniantis : ne fortè egrediatur ut ignis indignatio mea, & ſuccendatur, & non ſit qui extinguat, propter malitiam ſtudiorum veſtrorum. 13 Ecce ego ad te habitatricem vallis ſolidæ atque campeſtris, ait Dominus : qui dicitis, Quis percutiet nos?& quis 14 ingredietur domos noſtras? Et viſitabo ſuper vos juxta fructum ſtudiorum veſtrorum, dicit Dominus : & ſuccendam ignem in ſaltu ejus : & devorabit omnia in circuitu ejus.

CAP. XXII.

1 Hæc dicit Dominus; Deſcende in domum regis Juda, & loquêris ibi verbum hoc, 2 Et dices; Audi verbum Domini rex Juda, qui ſedes ſuper ſolium David ; tu & ſervi tui, & populus tuus, qui 3 ingredimini per portas iſtas. Hæc dicit Dominus ; Facite judicium & juſtitiam, & liberate vi oppreſſum de manu calumniatoris: & advenam, & pupillum, et viduam nolite contriſtare, neque opprimatis iniquè : & ſanguinem innocentem ne effundatis in 4 loco iſto. Si enim facientes feceritis verbum iſtud : ingredientur per portas domûs hujus, reges ſedentes de genere David ſuper thronum ejus , & aſcendentes currus et equos, ipſi & 5 ſervi, & populus eorum. Quòd ſi non audieritis verba hæc : in memetipſo juravi , dicit Dominus ; quia in ſolitudinem erit domus hæc. 6 Quia hæc dicit Dominus ſuper domum regis Juda ; Galaad,tu mihi caput Libani : ſi non poſuero te ſolitudinem, ur7bes inhabitabiles. Et ſanctificabo ſuper te, interficientem virum, & arma ejus : & ſuccîdent electas cedros tuas, & præcipita8bunt in ignem. Et pertranſibunt gentes multæ per civitatē hanc : & dicet unuſquiſque proximo ſuo ; Quarè fecit Dominus ſic 9 civitati huic grandi? Et reſpondebunt ; Eò quòd dereliquerint pactum Domini Dei ſui, & adoraverint deos alienos, & 10 ſervierint eis. Nolite flere mortuum, neque lugeatis ſuper eum fletu : plangite eum, qui egreditur : quia non revertetur ultrà, nec videbit terram nativitatis ſuæ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 Οἶκος Δαυίδ, τάδε λέγει κύριος, Κρίνατε πρωῒ κρίμα, καὶ κατευθύνατε, καὶ ἐξέλεσθε διηρπασμένον ἐκ χειρὸς ἀδικοῦντος αὐτόν, ὅπως μὴ ἀναφθῇ ὡς πῦρ ἡ ὀργή μου, καὶ καυθήσεται, (κ) καὶ οὐκ ἔσται ὁ 13 σβέσων. Ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς σὲ τὸν κατοικοῦντα τὴν κοιλάδα Σὸρ, τὴν πεδινὴν, τοὺς λέγοντας, Τίς πτοήσει ἡμᾶς; ἢ τίς εἰσελεύσεται πρὸς τὸ κατοικητήριον ἡμῶν; 14 Καὶ ἀνάψω πῦρ ἐν τῷ (λ) δρυμῷ αὐτῆς, καὶ (μ) ἔδεται πάντα τὰ κύκλῳ αὐτῆς.

Domus David; Hæc dicit Dominus; Judicate mane judicium, & dirigite, & liberate direptum de manu opprimentis eum; ut non accendatur, quaſi ignis, ira mea, & ardebit, & non erit qui extinguat. Ecce ego ad te inhabitantem vallem (a) Sor, campeſtrem, qui dicitis, Quis terrebit nos, aut quis ingredietur in habitaculum noſtrum? Et ſuccendam ignem in ſaltu ejus, & devorabit omnia quæ in circuitu ejus.

MS. A. (κ) καὶ οὐκ ἔσται * καὶ οὐκ ἔσται (λ) * θυμῷ (μ) κατέδεται

ΚΕΦ. κβʹ.

1 Τάδε λέγει κύριος, Πορεύου καὶ κατάβηθι εἰς τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως Ἰούδα, καὶ 2 λαλήσεις ἐκεῖ τὸν λόγον τοῦτον, Καὶ ἐρεῖς, Ἄκουε λόγον κυρίου βασιλεῦ Ἰούδα, ὁ καθήμενος ἐπὶ θρόνου Δαυίδ, σὺ καὶ ὁ οἶκός σου καὶ ὁ λαός σου, καὶ οἱ εἰσπορευόμενοι (α) ταῖς πύλαις ταύταις. 3 Τάδε λέγει κύριος, Ποιεῖτε κρίσιν καὶ δικαιοσύνην, καὶ ἐξαιρεῖσθε διηρπασμένον ἐκ χειρὸς ἀδικοῦντος αὐτόν, καὶ προσήλυτον καὶ ὀρφανὸν καὶ χήραν μὴ καταδυναστεύετε, καὶ μὴ ἀσεβεῖτε, καὶ αἷμα ἀθῷον μὴ ἐκχέητε ἐν 4 τῷ τόπῳ τούτῳ. Διότι ἐὰν ποιοῦντες ποιήσητε τὸν λόγον τοῦτον, καὶ εἰσελεύσονται ἐν ταῖς πύλαις τοῦ οἴκου τούτου βασιλεῖς (β) καθήμενοι ἐπὶ θρόνου Δαυίδ, καὶ ἐπιβεβηκότες ἐφ' ἁρμάτων καὶ ἵππων, αὐτοὶ καὶ οἱ παῖδες αὐτῶν, καὶ ὁ λαὸς αὐτῶν. 5 Ἐὰν δὲ μὴ ποιήσητε τοὺς λόγους τούτους, κατ' ἐμαυτοῦ ὤμοσα, λέγει κύριος, ὅτι εἰς 6 ἐρήμωσιν ἔσται ὁ οἶκος οὗτος. Ὅτι τάδε λέγει κύριος κατὰ τοῦ οἴκου βασιλέως Ἰούδα, Γαλαὰδ σύ μοι ἀρχὴ τοῦ Λιβάνου, ἐὰν μὴ θῶ σε εἰς ἔρημον, πόλεις μὴ κατ7οικηθησομένας, Καὶ (γ) ἐπάξω ἐπὶ σὲ ὀλοθρεύοντα ἄνδρα, καὶ τὸν πέλεκυν αὐτοῦ, καὶ ἐκκόψουσι τὰς ἐκλεκτὰς κέδρους σου, καὶ 8 ἐμβαλοῦσιν εἰς τὸ πῦρ. Καὶ διελεύσονται ἔθνη διὰ τῆς πόλεως ταύτης, καὶ (δ) ἐρεῖ ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, Διατί ἐποίησε κύριος οὕτως τῇ πόλει (ε) ταύτῃ 9 τῇ μεγάλῃ, Καὶ ἐροῦσιν, Ἀνθ' ὧν ἐγκατέλιπον τὴν διαθήκην κυρίου (ζ) θεοῦ αὐτῶν, καὶ προσεκύνησαν θεοῖς ἀλλο10τρίοις, καὶ ἐδούλευσαν αὐτοῖς. Μὴ κλαίετε τὸν τεθνηκότα, μηδὲ θρηνεῖτε αὐτόν· κλαύσατε κλαυθμῷ τὸν ἐκπορευόμενον, ὅτι οὐκ (η) ἐπιστρέψει ἔτι, οὐδὲ ὄψεται τὴν γῆν πατρίδος αὐτοῦ.

CAP. XXII.

Hæc dicit Dominus; Vade, & deſcende in domum regis Juda, & loqueris ibi verbum hoc, Et dices; Audi verbum Domini, rex Juda, qui ſedes ſuper ſolium David, tu, & domus tua, & populus tuus, & qui ingredimini per portas iſtas. Hæc dicit Dominus; Facite judicium, & juſtitiam: & liberate direptum de manu injuriantis eum: & advenam, & pupillum, & viduam non opprimatis: neque impie agatis: & ſanguinem innocentem ne effundatis in loco iſto. Si enim facientes feceritis verbum iſtud, & ingredientur in portis domus hujus reges ſedentes ſuper thronum David, & aſcendentes ſuper currus, & equos; ipſi, & pueri eorum, & populus eorum. Quod ſi non feceritis verba hæc: per memetipſum juravi, dicit Dominus, quia in ſolitudinem erit domus hæc. Quia hæc dicit Dominus ſuper domum regis Juda; Galaad, tu mihi principium Libani, ſi non poſuero te in ſolitudinem, urbes non habitandas. Et * inducam ſuper te exterminantem virum, & ſecurim ejus: & ſuccîdent electas cedros tuas, & mittent in ignem. Et pertranſibunt (a) gentes per civitatem hanc: & dicet unuſquiſque ad proximum ſuum; Quarè fecit Dominus ſic civitati huic magnæ? Et dicent; Pro eo, quod dereliquerunt teſtamentum Domini Dei ſui, & adoraverunt deos alienos, & ſervierunt eis. Nolite flere mortuum, neque lamentemini eum: plorate ploratu eum, qui egreditur, quia non revertetur ultrà, nec videbit terram patriæ ſuæ.

MS. A. (α) ἐν ταῖς (β) καὶ ἄρχοντες καθήμενοι (γ) ἐπάξω ἐπὶ ἄνδρα ὀλεθρεύοντα, (δ) ἐροῦσιν (ε) τῇ μεγάλῃ ταύτῃ; (ζ) τοῦ (η) ἀναστρέψει

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 בית דוד כדנן אמר יי דינו לצפרא דינא ושיזבו אניסא מיד דאניס ליה דלמא ידלק
13 כאשתא רוגזי וישיצי ולא יהי חיס מן קדם בישות עובדיכון : האנא שלח רוגזי עלך
דיתבא בתוקפא בקרוין כריכן אמר יי דאמרין מן יחות עלנא ומן יעול בברניתנא :
14 ואסער עליכון כפרי עובדיכון אמר יי ואדליק אשתא בקרוהא ותשיצי בכל סחרנהא :

כב

1 כדנן אמר יי חות לבית מלך שבטא דבית יהודה ותתנבי תמן ית פתגמא הדין : ותימר
2 קביל פתגמא דיי מלך שבטא דבית יהודה דיתב על כורסי דוד את ועבדך ועמך דעלין
3 בתרעיא האלין : כדנן אמר יי עבידו דינא וצדקתא ושיזבו אניסא מיד דאניס ליה וגיור
4 יתם וארמלא לא תונון ולא תינסון ודם זכי לא תישדון באתרא הדין : ארי אם מעבד
תעבדון ית פתגמא הדין ויעלון בתרעי ביתא הדין מלכין יתבין לדוד על כורסוהי
5 רכיבין ברתיכין ובסוסין הוא ועבדוהי ועמיה : ואם לא תקבלון ית פתגמיא האלין
6 במימרי קימית אמר יי ארי לחורבא יהי ביתא הדין : ארי כדנן אמר יי על בית מלך
שבטא דבית יהודא אלו את חביב קדמי מבית מקדשא דרם בריש טוריא אם לא אשוינך
7 מדברא קרוין דלא אתיתבא : ואזמן עלך מחבלין גבר וזיניה ויקטלון שפר גברך כמה
8 דקצצין אעי חורשא ורמן לנורא : ויעברון עממין סגיאין על קרתא הדא ויימרון גבר
9 לחבריה על מה עבד יי כדין לקרתא רבתא הדא : ויימרון על דשבקו ית קימא דיי
10 אלההון וסגידו לטעוות עממיא ופלחונין : לא תבכון על מית ולא תדון עלוהי בכו
מבכא לדגלי ארי לא יתוב עוד ויחזי ית ארעא דילדותיה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Domus David, hæc dicit Dominus: Judicate manè judicium, & eruite patientem de manu violenti; ne fortè ſuccendatur ut ignis indignatio & conſumat, & non ſit qui miſereatur propter malitiam operum rum. Ecce ego mitto furorem meum contra te quæ habitas in in civitatibus munitis, dicit Dominus: qui dicitis, Quis deſcendet nos, & quis ingredietur palatia noſtra? Et viſitabo ſuper vos juxta operum veſtrorum, dicit Dominus, & ſuccendam ignem in urbibus conſumet omnia quæ in circuitu ejus ſunt.

CAP. XXII.

Hæc dicit Dñs : Deſcende in domũ regis tribus dom' Juda, & bis ibi verbũ hoc. Et dices: Suſcipe verbũ Dñi rex tribus domus habitas ſuper ſolium David, tu, & ſervi tui, et populi tui qui untur per portas iſtas. Hæc dicit Dominus: Facite judicium & liberate vim patientem de manu ejus qui vim infert ei ; & peregrinum pupillum, & viduam ne contriſtetis, nec vi opprimatis : & ſanguinem nocentem ne effundatis in loco iſto. Quòd ſi faciendo feceritis verbũ ingredientur per portas domus hujus reges ſedentes ſuper ſolium aſcendentes in curribus & in equis ipſe & ſervi & populus ejus. Et ſi ſuſceperitis verba hæc, per verbum meum juravi, dicit Dominus, quia ſolitudine erit domus hæc. Quia ſic dicit Dominus ſuper domum regis bus domus Juda : Quamvis tu ſis dilectus coram me *præ domo ſanctuarii* quæ excelſa eſt in cacumine montium; ſi non ponam te deſertum, urbes habitabiles. Et præparabo contra te vaſtantes, virum & arma ejus. Et dent pulchritudinem fortium tuorum, ſicut ſucciduntur ligna ſaltus, & jiciuntur in ignem. Et pertranſibunt populi multi juxta civitatem hanc dicet unuſquiſque proximo ſuo : Quamobrem fecit Dominus ſic civitati huic grandi? Et dicent : Pro eo quòd dereliquerunt pactum Domini ſui, & adoraverunt idola populorum, & ſervierunt eis. Ne ploretis mortuum, ne contriſtemini ſuper eum : plorando plorate eum qui ptivitatem ducitur : quia non revertetur ultrà , nec videbit terram nativitatis

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܘܢܘ ܒܨܦܪܐ ܕܝܢܐ. ܘܦܪܘ ܠܡܛܠܡܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܡܛܠܡ ܠܗ: ܕܠܡܐ
ܬܦܘܩ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܚܡܬܝ. ܘܬܝܩܕ ܘܠܝܬ ܕܡܛܦܐ. ܡܛܠ ܒܝܫܘܬܐ ܕܥܒܕܝܟܘܢ. * ܗܐ
ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ ܝܬܒܬ ܒܥܘܡܩܐ: ܥܡܝܩܬ ܦܩܥܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܐܡܪܝܢ ܡܢ ܢܚܘܬ
ܥܠܝܢ. ܘܡܢܘ ܢܥܘܠ ܠܡܥܡܪܢ. * ܐܦܩܘܕ ܥܠܝܟܘܢ. ܐܝܟ ܦܐܪܐ ܕܥܒܕܝܟܘܢ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. ܘܐܘܩܕ ܢܘܪܐ ܒܩܘܪܝܗ. ܘܬܐܟܘܠ ܟܠܗܘܢ ܚܕܪܝܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܒ *

1 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܚܘܬ ܠܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܡܠܠ ܬܡܢ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ
ܘܐܡܪ. * ܫܡܥ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܝܬܒ ܥܠ ܟܘܪܤܝܗ ܕܕܘܝܕ. ܐܢܬ
ܘܥܒܕܝܟ. ܘܥܡܟ ܕܥܐܠܝܢ ܒܬܪܥܐ ܗܠܝܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܒܕܘ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ.
ܘܦܪܘ ܠܡܛܠܡܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܡܛܠܡ ܠܗ. ܘܠܬܘܬܒܐ ܘܠܝܬܡܐ ܘܠܐܪܡܠܬܐ. ܠܐ ܬܛܠܡܘܢ.
ܘܠܐ ܬܥܠܒܘܢ. ܘܕܡܐ ܙܟܝܐ. ܠܐ ܬܐܫܕܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. * ܐܢ ܡܥܒܕ ܬܥܒܕܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. 4
ܢܥܠܘܢ ܒܬܪܥܘܗܝ ܕܒܝܬܐ ܗܢܐ. ܡܠܟܐ ܘܫܠܝܛܢܐ. ܕܝܬܒܝܢ ܥܠ ܟܘܪܤܝܗ ܕܕܘܝܕ. ܘ
ܪܟܒܝܢ ܒܡܪܟܒܬܐ ܘܒܪܟܫܐ. ܗܘ ܘܥܒܕܘܗܝ ܘܥܡܗ: * ܘܐܢ ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܦܬܓܡܐ 5
ܗܢܐ. ܒܝ ܝܡܝܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܠܚܘܪܒܐ ܢܗܘܐ ܒܝܬܐ ܗܢܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ 6
ܥܠ ܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܓܠܥܕ ܐܢܬ ܠܝ ܪܫܗ ܕܠܒܢܢ. ܐܠܐ ܐܥܒܕܝܟ ܚܘܪܒܐ. ܐܝܟ ܩܘܪܝܐ
ܕܠܐ ܡܬܝܬܒܢ. * ܘܐܥܬܕ ܥܠܝܟܝ ܡܚܒܠܢܐ. ܓܒܪܐ ܘܢܪܓܗ ܒܐܝܕܗ. ܘܢܦܤܩܘܢ ܓܘܒܝ 7
ܐܪܙܝܟܝ. ܘܢܪܡܘܢ ܠܢܘܪܐ. * ܘܢܥܒܪܘܢ ܥܡܡܐ ܤܓܝܐܐ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܪܒܬܐ. ܘܢܐܡܪܘܢ 8
ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ. ܥܠ ܡܢܐ ܥܒܕ ܡܪܝܐ ܗܟܢܐ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܪܒܬܐ. * ܘܢܐܡܪܘܢ. ܥܠ 9
ܕܫܒܩܘ ܩܝܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܐܠܗܗܘܢ. ܘܤܓܕܘ ܠܐܠܗܐ ܐܚܪܢܐ ܘܦܠܚܘ ܐܢܘܢ. * ܠܐ ܬܒܟܘܢ 10
ܥܠ ܡܝܬܐ. ܘܠܐ ܬܬܢܝܕܘܢ ܠܗ. ܡܒܟܐ ܒܟܘ ܥܠ ܗܘ ܕܐܙܠ ܘܠܐ ܗܦܟ. ܘܠܐ ܚܙܐ ܐܪܥܐ ܕܐܬܝܠܕ ܒܗ.

Sic dicit Dominus, Exercete in matutino judicium, & eripite oppreſſum ab eo qui op- 12
primit illum; ne prodeat velut ignis excandeſcentia mea, & ardeat nemine extinguente, propter nequitiam actionum veſtrarum.
Ecce me contra te quæ habitas in convallibus, quæ profundam habes planitiem, dicit 13
Dominus; qui dicitis, Quis veniat contra nos? aut quis ingrediatur habitationem noſtram?
Animadvertam in vos ſecundùm fructus actionum veſtrarum, dicit Dominus; & injiciam 14
ignem in oppida ejus, & devorabit omnia confinia ipſius.

CAP. XXII.

Sic dicit Dominus, Deſcende in domum regis Judæ, ibique loquere ſermonem iſtum, ac 1
dicito; Audi ſermonem Domini rex Judæ 2
qui ſedes ſuper ſolio Davidis; tu ſervique tui, & popul⁹ tuus qui ingrediuntur per has portas.
Sic dicit Dominus, Exercete judicium 3
& juſtitiam, & eripite oppreſſum ab eo qui opprimit illum: peregrinos, pupillos, atque viduas ne aff[i]ceritis injuriâ, neve oppreſſeritis; & ſanguinem innoxium ne fuderitis in loco iſto.
Nam ſi diligenter exequ[a]mini ſer- 4
monem iſtum, ingredientur per oſtia hujus ædis reges ac principes qui ſedent ſuper ſolio Davidis, vecti curribus & equis; tam ipſe rex quàm ſervi ac populus ejus.
At ſi non auſcul- 5
taveritis ſermonem iſtum, per me juravi, dicit Dominus; in ſolitudinem redigendam eſſe hanc ædem.
Nam ſic ait Dominus de domo 6
regis Judæ; Gelaad, tu es caput Libani, ſed redigam te in deſertū, ut civitates inhabitatas:
Et comparabo adverſùm te vaſtatores, quen- 7
que ſecurim ſuā manu ſuā *geſtantem*, ut præcîdant ſelectiſſimas cedrorū tuarū, & in ignē projiciant.
Ita ut tranſeuntibus variis gen- 8
tibus ſuper civitatem hanc magnam, & altero alteri dicentibus; Qua de re egit Domin⁹ hoc
modo cum civitate iſta maxima? Respon- 9
deatur, Quia dereliquerūt fœdus Domini Dei ſui, & adoraverunt deos alienos, & coluerunt eos.
Ne defleatis mortuum, neque commo- 10
veamini propter eum: impenſè flete pro eo qui abiturus eſt, nec ampliùs reverſurus, neque reviſurus terram in qua natus eſt.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 * يا بيت داود هكذا يقول الرب * احكموا بالغداة حكما وقوموا * واستخلصوا المختطف من يد
13 الذي ظلمه * لئلا يشتعل مثل النار غضبي * ويتوقد ولا يكون من يطفي * ها انا اليك يا
14 ساكن الغور صور المرجية * القايلين من يخيفنا او من يدخل الي مسكننا * سأشعل نارا في
غيضها * وتأكل كل ما حولها *

* الفصل الثاني والعشرون *

1 * هكذا يقول الرب امض وانزل الي بيت ملك يهوذا * وتكلم هناك بهذا القول وتقول * اسمع
2 قول الرب يا ملك يهوذا الجالس على كرسي داود * انت وبنوك وشعبك والداخلون في هذه
3 الابواب * هكذا يقول الرب * اصنعوا حكما وعدلا * واستخلصوا المختطف من يد الذي
ظلمه * والملتجي واليتيم والارملة لا تتعدوا عليهم * ولا تنافقوا * ولا تهرقوا دما زكيا في
4 هذا الموضع * ان كنتم صانعين تصنعون هذا القول * ويدخلون في ابواب هذا البيت الملوك
والروساء الجالسون على كرسي داود والراكبون على المركبات والخيول * هؤلاء واولادهم
5 وشعبهم * وان لم تصنعوا هذه الكلمات * اقسمت بذاتي يقول الرب * ان هذا البيت يصير
6 للخراب * لان هكذا يقول الرب على بيت ملك يهوذا * يا جلعاد انت لي رئيسة لبنان * ان لم
7 اصيرك للخراب * مدنا غير مسكونة * وادخل عليك رجلا مفسدا وفاسه * ويقطعون ارزيك
8 المختارة ويلقونهن في النار * ويعبر الامم هذه المدينة * ويقولون كل واحد لقرينه * لماذا صنع
9 الرب هكذا بهذه المدينة العظيمة * فيقولون من اجل انهم اجحدوا عهد الرب الههم * وسجدوا
10 للالهة الغريبة وعبدوا لها * لا تبكوا على الميت ولا تندبوه * ابكوا بكاء على الذاهب * لانه
لا يعود ايضا ولا يعاين ارض بلدته *

O Domus Davidis, ita dicit Dominus; 12
Jus dicite in matutino, & corrigite vos, & eripite vim patientem de manu ejus qui opprimit ipſum: ut non incendatur velut ignis furor meus, exardeſcat nec ſit qui extinguat.
Ecce me ad te O qui de- 13
gis in convalle, picturis pratenſibus; qui dicitis, Quis terreret nos? aut quis intraret in habitaculum noſtrum?
Accendam 14
ignem in ſylva ipſius, ut conſumat quicquid adjacet illi.

CAP. XXII.

Sic ait Dominus, Vade, & deſcende in 1
domum regis Judæ, ibique referas hujuſmodi ſermonem, ac dicas; Audi ſer- 2
monem Domini O rex Judæ qui ſedes ſuper ſolium Davidis; tu & filii tui, populuſque tuus, & qui per has portas ingrediuntur.
Sic ait Dominus, Facite ju- 3
dicium & juſtitiam, & liberate vim patientem de manu ejus qui opprimit illum: ad vos ſeſe recipienti, pupillo, ac viduæ, vim ne inferatis; impiè ne agatis, néve effundatis ſanguinem innocentem hoc in loco.
Si hunc ſermonem omnino perfe- 4
ceritis, utique ingrediuntur per portas hujus domûs reges & principes qui ſedent ſuper ſolium Davidis, quique curribus et equis vehuntur; tam iſti quàm filii & populus eorum.
Quòd ſi hæc verba mi- 5
nimè perfeceritis, per me ipſum juro, dicit Dominus, hanc domum in ruinam abituram.
Sic enim ait Dominus de domo re- 6
gis Judæ; O Galaad, tu es mihi primaria Libani, mentiar niſi redigam te in ruinam, in civitates inhabitabiles;
Et intro- 7
ducam adverſùm te virum vaſtantem cum ſua ſecuri, præſcindentque cedros tuas electas, & projicient eas in ignem.
Cùmque tranſierint gentes per hanc 8
urbem, & dixerint alter ad alterum, Quare ſic fecit Dominus huic urbi ingenti?
Dicent, Quia deſciverunt à fœdere 9
Domini Dei ſui, & adoraverunt deos alienos, & ſervituti ſe mancipâ[r]unt eis.
Ne fleatis pro mortuo, neque lamentamini 10
eum: acerbè flete pro abeunte, quia non eſt ampliùs reverſurus, neque viſurus ſolum patrium ſuum.

ירמיה : כב

regis Josijahu filium Sallum ad DOMINUS dixit sic Quia
11 כי־כה אמר־יהוה אל־שלם בן־יאשיהו מלך
de est egressus qui ,suo patre Josijahu pro regnantem Jehudah
יהודה המלך תחת יאשיהו אביו אשר יצא מן־
quò loco in Nam .amplius huc revertetur non ,isto loco
12 המקום הזה לא־ישוב שם עוד : כי במקום אשר־
videbit non istam terram & ;morietur illic ,eum transtulerunt
הגלו אתו שם ימות ואת־הארץ הזאת לא־יראה
sua cœnacula & ,justitia non in suam domum ædificanti Væ .amplius
13 עוד : הוי בנה ביתו בלא צדק ועליותיו
.ei dabit non ejus opus & , gratis serviet suo socio in : judicio non in
בלא משפט ברעהו יעבד חנם ופעלו לא יתן־לו :
,exposita vento cœnacula &,mensurarum domum mihi Ædificabo : Dicens
14 האמר אבנה־לי בית מדות ועליות מרוחים
.minio in ungendo & , cedro in tecta & , fenestras ei excindit &
וקרע לו חלוני וספון בארז ומשוח בששר :
nónne tuus Pater ? cedrum in te concitans tu quia , regnabis Nunquid
15 התמלך כי אתה מתחרה בארז אביך הלוא
? ei bonum tunc ,justitiam & judicium fecit & , bibit & , comedit
אכל ושתה ועשה משפט וצדקה אז טוב לו :
scire hoc Nonne .bonum tunc ,egeni & afflicti judicium Judicavit
16 דן דין־עני ואביון אז טוב הלא־היא הדעת
nisi ,tuū cor & ,tui oculi non Sed ?DOMINUS dixit , me
17 אתי נאם־יהוה : כי אין עיניך ולבך כי אם־
,fundendum ad innocentem sanguinem super & ,tuam concupiscentiam super
על־בצעך ועל דם־הנקי לשפוך
Propterea .faciendam ad contritionem super & ,oppressionem super &
18 ועל־העשק ועל־המרוצה לעשות : לכן
:Jehudah regem Josijahu filium Jehojachim ad DOMINUS dixit sic
כה־אמר יהוה אל־יהויקים בן־יאשיהו מלך יהודה
: eum plangent non :soror væ & ,mi frater væ : eum plangent Non
לא־יספדו לו הוי אחי והוי אחות לא־יספדו לו
trahendo,sepelietur asini Sepultura .ejus decori væ & , Domine væ
19 הוי אדון והוי הדה : קבורת חמור יקבר סחוב
,clama &,Lebanon Ascende .Jerusalaim portas ultra projiciendo &
20 והשלך מהלאה לשערי ירושלם : עלי הלבנון וצעקי
sunt contriti quia : transitibus è clama & ; tuā vocem da Basan in &
ובבשן תני קולך וצעקי מעברים כי נשברו
: Dixisti .tuis securitatibus in te ad sum Locutus .te diligentes omnes
21 כל־מאהביך : דברתי אליך בשלותיך אמרת
.mea voce in audisti non quia : tuis pueritiis à tua via Hæc .audiam Non
לא אשמע זה דרכך מנעוריך כי לא־שמעת בקולי :
:ibunt captivitatē in tui amatores &,ventus depascet tuos pastores Omnes
22 כל־רעיך תרעה־רוח ומאהביך בשבי ילכו
.tuam malitiam omnem propter erubesces & ,afficieris pudore tunc nam
כי אז תבשי ונכלמת מכל רעתך :
veniendo in ,eris gratiosa quàm : cedris in nidificans ,Lebanon in Habitans
23 ישבתי בלבנון מקננתי בארזים מה־נחנת בבא־
: Dominus dixit ,ego Vivens .parturientis tanquam tormen,dolores tibi
24 לך חבלים חיל כילדה : חי־אני נאם־יהוה
annulus Jehudah regis Jehojachim filius Chonjahu esset si quia
כי אם־יהיה כניהו בן־יהויקים מלך יהודה חותם
te dabo Et .te evellam inde quia : mea dextera manu super
25 על־יד ימיני כי משם אתקנך : ונתתיך
timebis tu quorum manum in & ,tuam animam quærentium manum in
ביד מבקשי נפשך וביד אשר־אתה יגור
manum in & ,Babel regis Nebuchadnesar manum in & ; eorum faciebus à
מפניהם וביד נבוכדראצר מלך־בבל וביד
.Chasdim
הכשדים :

Versio VULG. LAT.

11 Quia hæc dicit Dominus ad Sellum filium Josiæ regem Juda, qui regnavit pro Josia patre suo, qui egressus est de loco isto; Non 12 revertetur huc amplius : Sed in loco, ad quē transtuli eū, ibi morietur, & terram istā non videbit 13 amplius. Væ qui ædificat domū suam in injustitia, & cœnacula sua non in judicio: amicum suum opprimet frustrà, & mercedem 14 ejus non reddet ei. Qui dicit; Ædificabo mihi domum latam, & cœnacula spatiosa, qui aperit sibi fenestras, & facit laquearia cedrina, pingitque sinopide. 15 Numquid regnabis, quoniam confers te cedro? pater tuus numquid non comêdit & bibit, & fecit judicium & justitiam 16 tunc cùm benè erat ei? Judicavit causam pauperis & egeni in bonum suum : numquid non ideò quia cognovit me, dicit 17 Dominus? Tui verò oculi & cor ad avaritiam, & ad sanguinem innocentem fundendum, & ad calumniam, & ad cursum 18 mali operis. Propterea hæc dicit Dominus ad Joakim filium Josiæ regem Juda; Non plangent eum; Væ frater, & væ soror : non concrepabunt ei; Væ 19 domine, & væ inclyte. Sepulturâ asini sepelietur, putrefactus & projectus extra portas Jerusa- 20 lem. Ascende Libanum, & clama: & in Basan da vocem tuam, & clama ad transeuntes, quia contriti sunt omnes amatores tui. 21 Locutus sum ad te in abundantia tua : & dixisti; Non audiam : hæc est via tua ab adolescentia tua, quia non audîsti vocem meā. 22 Omnes pastores tuos pascet ventus, et amatores tui in captivitatem ibunt : et tunc confundêris, et erubesces ab omni mali- 23 tia tua. Quæ sedes in Libano, et nidificas in cedris, quomodò congemuisti, cùm venissent tibi dolores, quasi dolores parturi- 24 entis? Vivo ego, dicit Dominus : quia si fuerit Jechonias filius Joakim regis Juda, annulus in manu dextera mea, inde 25 evellam eum. Et dabo te in manu quærentium animam tuam, et in manu quorum tu formidas faciem, et in manu Nabuchodonosor regis Babylonis, et in manu Chaldæorum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 Διότι τάδε λέγει κύριος ἐπὶ Σελλὴμ υἱὸν (θ) Ἰωσία τὸν βασιλεύοντα ἀντὶ Ἰωσίου τοῦ πατρὸς αὐτοῦ, ὃς ἐξῆλθεν ἐκ τοῦ τόπου 12 τούτου, Οὐκ ἀναστρέψει ἐκεῖ (ι) ἔτι, Ἀλλ' ἢ ἐν τῷ (κ) τόπῳ τούτῳ οὗ μετῴκισα αὐτὸν, ἐκεῖ ἀποθανεῖται, καὶ τὴν γῆν ταύτην οὐκ ὄψεται ἔτι. 13 (λ) Ὁ οἰκοδομῶν οἰκίαν αὐτοῦ οὐ μετὰ δικαιοσύνης, καὶ τὰ ὑπερῷα αὐτοῦ οὐκ ἐν κρίματι, παρὰ τῷ πλησίον αὐτοῦ ἐργᾶται δωρεὰν, καὶ τὸν μισθὸν αὐτοῦ οὐ μὴ ἀποδώσει αὐτῷ. 14 Ὠκοδόμησας σεαυτῷ οἶκον σύμμετρον, ὑπερῷα ῥιπιστὰ διεσταλμένα θυρίσι, καὶ ἐξυλωμένα ἐν κέδρῳ, καὶ κεχρισμένα ἐν 15 μίλτῳ. Μὴ βασιλεύσῃς, ὅτι σὺ παροξύνῃ ἐν (μ) Ἄχαζ τῷ πατρί σου; οὐ φάγονται, καὶ οὐ πίονται. (ν) βέλτιόν σε ποιεῖν κρίμα 16 καὶ (ξ) δικαιοσύνην. Οὐκ ἔγνωσαν, οὐκ ἔκριναν κρίσιν (ο) ταπεινῷ, οὐδὲ κρίσιν πένητος. οὐ (π) τοῦτό ἐστιν τὸ μὴ γνῶναί σε ἐμὲ, λέγει 17 κύριος; Ἰδοὺ οὐκ εἰσὶν οἱ ὀφθαλμοί σου, οὐδὲ ἡ καρδία σου καλὴ, ἀλλὰ εἰς τὴν πλεονεξίαν σου, καὶ εἰς τὸ αἷμα τὸ ἀθῷον τοῦ (ρ) ἐκχέαι αὐτὸ, καὶ εἰς ἀδικήματα καὶ εἰς 18 φόνον, τοῦ ποιεῖν (σ) αὐτά. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος ἐπὶ Ἰωακεὶμ υἱὸν Ἰωσία βασιλέα Ἰούδα, (τ) καὶ ἐπὶ τὸν ἄνδρα τοῦτον, (υ) Οὐ κόψονται αὐτὸν, Ὦ ἀδελφὲ, οὐδὲ μὴ κλαύσονται αὐτὸν, Οἴμοι κύριε. 19 Ταφὴν ὄνου ταφήσεται, (φ) συμψησθεὶς ῥιφήσεται ἐπέκεινα τῆς πύλης Ἱερουσαλήμ. 20 Ἀνάβηθι εἰς τὸν Λίβανον, καὶ (χ) κέκραξον, καὶ εἰς τὴν Βασὰν δὸς τὴν φωνήν σου, καὶ βόησον εἰς τὸ (ψ) πέρας τῆς θαλάσσης, ὅτι συνετρίβησαν πάντες οἱ ἐρασταί σου. 21 (ω) Ἐλάλησα πρὸς σὲ ἐν τῇ παραπτώσει (α) σου, καὶ εἶπας, Οὐκ ἀκούσομαι. αὕτη ἡ ὁδός σου ἐκ νεότητός σου, οὐκ ἤκουσας 22 τῆς φωνῆς μου. Πάντας τοὺς ποιμένας σου ποιμανεῖ ἄνεμος, (β) καὶ οἱ ἐρασταί σου ἐν αἰχμαλωσίᾳ ἐξελεύσονται, ὅτι τότε αἰσχυνθήσῃ καὶ (γ) ἀτιμωθήσῃ ἀπὸ πάν- 23 των τῶν φιλούντων σε. Κατοικοῦσα ἐν τῷ Λιβάνῳ, ἐννοσσεύουσα ἐν ταῖς κέδροις, καταστενάξεις ἐν τῷ ἐλθεῖν σοι (δ) ὠδῖνας ὡς 24 τικτούσης. Ζῶ ἐγὼ, λέγει κύριος, ἐὰν γενόμενος γένηται (ε) Ἰεχονίας υἱὸς Ἰωακεὶμ βασιλεὺς Ἰούδα ἀποσφράγισμα ἐπὶ τῆς χειρὸς τῆς δεξιᾶς μου, ἐκεῖθεν ἐκ- 25 σπάσω σε, Καὶ παραδώσω σε εἰς χεῖρας τῶν ζητούντων τὴν ψυχήν σου, ὧν σὺ εὐλαβῇ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, εἰς χεῖρας τῶν Χαλδαίων,

Quia hæc dicit Dominus ad (b) Sellem filium Josiæ regnantem pro Josia patre ejus, qui egressus est de loco isto; Non revertetur huc amplius: Sed in loco quò transtuli eum, ibi morietur, & terram hanc non videbit amplius. (c) Qui ædificat domum suam non cum justitia, & cœnacula sua non in judicio (d) apud proximum suum operatur gratis; & mercedem ejus non reddet ei. Ædificasti domum (e) commensuratam, cœnacula (f) perflatilia distincta fenestris, & contignata in cedro, & linita in sinopide. (g) Numquid regnabis, quia tu contendis in Achaz patre tuo? non comedent, & non bibent. Melius tibi erat facere judicium, & justitiam. Non cognoverunt, non judicaverunt judicium humili, neque judicium pauperis. Nonne hoc est, te ignorare me, dicit Dominus? Ecce non sunt oculi (h) tui, neque cor tuum bonum, sed ad avaritiam tuam & ad sanguinem innocentem, ut effundas illum, & ad iniquitates, & in homicidium, ut facias ea. Propterea hæc dicit Dominus ad Joacim filium Josiæ regem Juda, (i) & super virum istum; Non plangent eum, O frater: neque plorabunt eum, Heu mihi, domine: Sepulchro asini (k) sepelietur: raptatus projicietur ultra portam Hierusalem. Ascende in Libanum, & clama, & in Basan da vocem tuam, & clama trans mare: quia contriti sunt omnes amatores tui. (l) Loquutus sum ad te in ruina tua: & dixisti; Non audiam. Hæc est via tua ab adolescentia tua: non audisti vocem meam. Omnes pastores tuos pascet ventus: & amatores tui in captivitatem egredientur. Quia tunc confunderis, & inhonoraberis ab omnibus diligentibus te. Quæ habitas in Libano, quæ nidificas in cedris: ingemisces, cùm venerint tibi dolores, quasi parientis. Vivo ego, dicit Dominus; si factus fuerit Jechonias filius Joacim rex Juda (m) sigillum super manum dexteram meam, indè evellam te, Et tradam te in manus quærentium animam tuam, quorum tu formidas à facie (n) eorum: in manus Chaldæorum:

MS.A. (θ) Ἰωσίου * τῷ βασιλεύοντι ἀντὶ Ἰωσία (ι) οὐκέτι, (κ) τόπ… μετῴκισα (λ) Ὦ ὁ οἰκοδομῶν τὴν οἰκίαν αὐτοῦ οὐκ ἐν δικαιοσύνῃ, ( ) βασιλεύσ… (μ) * Ἀχαάβ (ν) βέλτιον ἦν σε (ξ) δικαιοσύνην καλήν. Οὐκ (ο) ταπειν… (π) τοῦτό σοι ἐστὶν (ρ) ἐκχέειν (σ) ταῦτα. (τ) Οὐαὶ ἐπὶ (υ) οὐ μὴ κόψωνται αὐτὸν, Οὐαὶ ἀδελφέ. Ταφὴν ὄνου (φ) συμψησθεὶς (χ) κέκραξον, (ψ) πέρ… (ω) Ἐλάλησαν (ω) σου, Οὐκ ἤκουσας τῆς φωνῆς μου. (β) καὶ ἐν αἰχμαλωσίᾳ (γ) ἀτιμασθήσῃ (δ) ὠδῖνας (ε) Ἰωακεὶμ υἱὸς Ἰεχονία

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 ארי כדנן אמר יי על שלום בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה דמלך תחות יאשיה
12 אבוהי דגלא מן אתרא הדין לא יתוב לתמן עוד : אלהן באתרא דאגליאו יתיה תמן
13 ימות וית ארעא הדא לא יחזי עוד : וי דבני ביתיה בלא קשוט ועליתיה בלא דינא כדחזי
14 בחבריה מפלח מגן ואגריה לא יהב ליה : דאמר אבני לי בתין דמשחן ועלין מרוחן
15 ופציב ליה חרכין ומטלל בכיורי ארזיא ומציר בסממנין : האת מדמי למהוי כמלכא
16 קדמאה אבוך הלא אכל ושתא ועבד דין דקשוט וזכו בכן טב ליה : דן דין מסכן וחשיך
17 בכן הוה טב הלא היא דעתא דרעינא בה אמר יי : ארי לית עינך ולבך אלהן על ממונא
18 למינס ועל דם זכי למשפך ועל עושקא ועל דברעות נפשך למעבד: בכן כדנן אמר יי על
יהויקים בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה לא יספדון ליה וי על אחי וי על אחתא לא
19 יספדון ליה וי על מלכא וי על מלכותיה : כמה דמשגרן ית נבלת חמרא כן ישגרון
20 ית נבלתיה יתגרר וישתרו להלאה לתרעי ירושלם: סקי לבית מקדשא וצוחי ובתרעי
21 טור ביתא ארימי קליך וצוחי על מגיזתא ארי אתברו כל רחמך : שלחית לותיך ית כל
עבדי נבייא כד הוית יתבא שליא אמרת לית אנא מקבלא אולפן דא ארחתיך מעוריך
22 ארי לא קבילת למימרי : כל פרנסך יתבדרון לכל רוח ורחמך בשביא יהכון ארי בכן
23 תבהתין ותתכנעין מכל בישתך : דיתבא בבית מקדשא ביני מלכיא מרביא בנהא מה
24 תעברין במיתי לך עקא וזיע הא כחבלין לילדתא: קים אנא אמר יי ארי אם יהי כניה בר
יהויקים מלך שבטא דבית יהודה כגלף דעזקא על יד ימיני ארי מתמן במימרי אגלנך :
25 ואתננך ביד דבען למקטלך וביד דאת דחיל מן קדמיהון וביד נבוכד רצר מלכא דבבל
ובידא דכשדאי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quia sic dicit Dñs sup Sallū filiū Josiæ regis trib⁹ dom⁹ Juda, qui regnavit pro Josia patre suo, Qui migravit de loco isto, non revertetur huc ampli⁹. Sed in loco ad quē transmigrare fecerunt eum, ibi morietur, & terram hanc non videbit ampli⁹. Væ qui ædificat domū suā absque veritate, et cœnacula sua injusta ratione: in servitutē redigit amicū suū frustra, & mercedē non dat ei. Qui dicit: Ædificabo mihi domos mensurarū, & cœnacula spatiosa; & aperit sibi fenestras, & contegit trabib⁹ cedrinis, pingitque sinopide. Num censes te esse *quasi* regē primū? pater tu⁹ nonne comedit & bibit, & fecit judiciū verū & justitiā, & tunc bene erat ei? Judicabat judiciū pauperis & egeni; tunc enim bonū erat ei. Nonne ista est scientia quā volo, dicit Dñs? Quia non sunt oculi tui & cor tuū, nisi ad auferendā pecuniā, et ad effundendū sanguinē innocentē, & ad faciendā calumniā secundum voluntatē animi tui. Propterea hæc dicit Dñs de Joachim filio Josiæ regis trib⁹ dom⁹ Juda : Non plangent eum; Væ ob fratrē meū, væ ob sororē, non plangent eum: væ ob regē, væ ob regnū ej⁹. Sicut projiciunt cadaver asini, sic projicient cadaver ej⁹; lacerabitur & projicietur ultra portas Jerusalem. Ascende in domū sanctuarii, & clama, & in portis montis dom⁹ eleva vocem tuā, & clama ad vada, quia contriti sunt omnes amatores tui. Misi ad te omnes servos meos prophetas, cùm sederes tranquilla. Dixisti: Non suscipiā *disciplinā*. Hæc est via tua ab adolescentia tua; quia non obedisti verbo meo. Omnes gubernatores tui dispergentur in omnem ventum, & amatores tui in captivitatē ibunt : tunc enim confundêris & erubesces ab omni malitia tua. Quæ habitas in domo sanctuarii, & *inter reges nutriens* filios tuos; quid facies cùm venerit tibi tribulatio & commotio quasi dolores parturientis? Vivo ego, dicit Dñs; quia si fuerit Chonias filius Joachim rex trib⁹ dom⁹ Juda quasi sculptura annuli in manu dextera mea; quia inde per verbū meū transferā te. Et dabo te in manum quærentium occidere te, & in manum eorum à quorum facie tu times, & in manum Nabuchodonosor regis Babylonis, & in manum Chaldæorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܫܠܘܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܕܐܡܠܟ ܚܠܦ ܝܘܫܝܐ ܐܒܘܗܝ،
ܕܢܦܩ ܡܢ ܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܠܐ ܢܗܦܘܟ ܠܬܡܢ ܬܘܒ. * ܐܠܐ ܒܐܬܪܐ ܕܐܫܬܒܝ ܬܡܢ ܢܡܘܬ. ܘܐܪܥܐ
ܗܕܐ ܬܘܒ ܠܐ ܢܚܙܐ. * ܘܝ ܠܕܒܢܐ ܒܝܬܗ ܕܠܐ ܒܟܐܢܘܬܐ. ܘܥܠܝܬܗ ܕܠܐ ܒܕܝܢܐ. ܚܒܪܗ ܦܠܚ
ܠܗ ܡܓܢ. ܘܐܓܪܗ ܠܐ ܢܦܪܘܥ ܠܗ. * ܘܐܡܪ ܐܒܢܐ ܠܝ ܒܝܬܐ ܕܡܫܘܚܬܐ. ܘܥܠܝܬܐ
ܡܪܘܚܬܐ. ܘܦܬܚ ܠܗܘܢ ܟܘܐ. ܘܡܛܠܠ ܠܗܘܢ ܒܐܪܙܐ. ܘܨܪ ܠܗܘܢ ܨܘܪܬܐ. * ܕܡܠܟ
ܐܢܬ. ܕܡܬܚܢܢ ܐܢܬ ܒܐܪܙܐ. ܐܒܘܟ ܐܟܠ ܘܫܬܐ. ܘܥܒܕ ܕܝܢܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ. ܡܛܠ ܗܢܐ
ܐܛܐܒ ܠܗ. * ܕܢ ܕܝܢܐ ܕܡܣܟܢܐ ܘܕܒܝܫܐ. ܘܥܒܕ ܕܬܪܝܨ. ܗܘ ܕܗܠܝܢ ܥܒܕ. ܝܕܥ ܠܝ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܕܝܠܟ ܕܝܢ ܥܝܢܝܟ ܘܠܒܟ. ܠܐ ܠܡܕܡ ܐܚܪܝܢ. ܐܠܐ ܠܩܢܝܢܟ. ܘܠܐ
ܕܡܐ ܙܟܝܐ ܠܡܐܫܕ. ܘܠܐ ܠܥܘܠܐ ܘܠܛܠܘܡܝܐ ܠܡܥܒܕ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. ܥܠ ܝܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܠܐ ܢܪܩܕܘܢܝܗܝ. ܘܠܐ ܢܐܡܪܘܢ. ܘܝ
ܐܚܝ ܘܝ ܐܚܝ. ܘܠܐ ܢܪܩܕܘܢܝܗܝ. ܘܝ ܡܪܝ ܘܝ ܡܪܝ. * ܩܒܘܪܬܐ ܕܚܡܪܐ ܢܬܩܒܪ. ܢܫܚܒܘܢܝܗܝ
ܘܢܫܕܘܢܝܗܝ. ܠܒܪ ܡܢ ܬܪܥܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܣܩܝ ܠܠܒܢܢ. ܘܐܩܥܝ. ܘܒܒܝܫܢ ܐܪܝܡܝ
ܩܠܟܝ. ܘܐܩܥܝ ܡܢ ܥܒܪܝ ܝܡܐ. ܕܐܬܬܒܪܘ ܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܟܝ. * ܘܡܠܠܬ ܥܡܟܝ
ܒܫܝܢܘܬܟܝ. ܘܐܡܪܬܝ ܕܠܐ ܐܫܡܥ. ܗܢܐ ܗܘܐ ܥܝܕܟܝ ܡܢ ܛܠܝܘܬܟܝ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܝ
ܒܩܠܝ. * ܠܟܠܗܘܢ ܪܥܘܬܟܝ ܬܪܥܐ ܪܘܚܐ. ܘܪܚܡܝܟܝ ܒܫܒܝܬܐ ܢܐܙܠܘܢ. ܗܝܕܝܢ
ܬܒܗܬܝܢ ܘܬܬܟܠܡܝܢ ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܟܝ. * ܝܬܒܬ ܠܒܢܢ. ܡܩܢܢܬ ܒܐܪܙܐ. ܟܡܐ
ܡܬܬܢܚܬܝ ܐܡܬܝ ܕܢܐܬܘܢ ܥܠܝܟܝ ܚܒܠܐ ܘܪܥܠܬܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ. * ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܐܠܗܐ. ܐܢ ܢܗܘܐ ܝܘܟܢܝܐ ܒܪ ܝܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܥܙܩܬܐ ܥܠ ܐܝܕܝ ܕܝܡܝܢܐ.
ܐܠܐ ܡܢ ܬܡܢ ܐܫܡܛܢܟ. * ܘܐܫܠܡܟ ܒܐܝܕܝ ܐܢܫܐ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܟ. ܘܒܐܝܕܝܐ ܕܐܢܫܐ
ܕܕܚܠ ܐܢܬ ܡܢ ܦܪܨܘܦܗܘܢ. ܒܐܝܕܝܐ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܒܐܝܕܝܐ ܕܟܠܕܝܐ.

Nam ſic ait Dominus de Salum filio Joſiæ qui 11
regnabat loco Joſiæ patris ſui, qui egreſſus eſt
è loco iſto; Non eſt ampliùs huc reverſurus;
Sed in loco in quem captivus abductus eſt, 12
ibidem morietur, & terram hanc non eſt re-
viſurus. Væ ædificanti domum ſuam iniquè, 13
& cœnacula ſua injuſtè, cui proximus ſuus
gratis ſervivit nullâ ipſi mercede ſolutâ:
Qui dicit; Ædificabo mihi domos amplas 14
& cœnacula ſpatioſa, aperit eis feneſtras,
cedris tegit illas, ornátque picturis. An re- 15
gnaturus es? an cedris fruiturus? Pater qui-
dem tuus comedit ac bibit: exercuit judici-
um & juſtitiam, ideò benefeci ei: Jus dixit 16
pauperibus & egenis, & fecit quod rectum
erat. Qui talia facit, cognoſcit me, dicit Do-
minus. Tui verò oculi & cor tuum ad nul- 17
lam rem aliam *intenti* ſunt, niſi ad poſſeſſio-
nem *augendam*, ad ſanguinem innoxium fun-
dendum, & ad violentiam atque oppreſſio-
nem exercendam. Sic enim ait Dominus de 18
Joacimo filio Joſiæ regis Judæ, Non lamenta-
buntur eum, neque dicent; Eheu frater mi,
eheu frater mi: neque lamentabuntur eum,
dicentes; Eheu domine, eheu domine. Sepul- 19
turâ aſini ſepelietur, trahent enim & proji-
cient eum ultra portas Jeroſolymæ. Con- 20
ſcende Libanum & vocifera, & in Baiſane at-
tolle vocem tuam & exclama ab ulteriori-
bus maris littoribus, quòd confracti ſunt o-
mnes amici tui. Allocutus ſum te *dum eſſes* 21
in affluentia tua, tu verò dixiſti; Non acquie-
ſcam: (hæc eſt conſuetudo tua à pueritia tua)
& non acquieviſti voci meæ. Omnes paſto- 22
res tuos depaſcet ventus, & amatores tui in
captivitatem abibunt: ac tunc erubeſces, &
compeſcêris ab omnibus nequitiis tuis. Quæ 23
ſedes in Libano, quæ nidificas in cedris, quan-
tùm gemes cùm venerint ſuper te dolores ac
tremor ut parturientis! Vivo ego, dicit Do- 24
minus Deus; etiamſi eſſet Jechonia filius Jo-
jacimi regis Judæ annulus ſuper manũ meam
dexteram, inde tamen evellam te: Tradám- 25
que te in manum hominum quærentium ani-
mam tuam, & in manum eorum quorum aſpe-
ctum formidas; in manum Nebuchadnoſaris
regis Babelis, & in manum Chaldæorum:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* من اجل انه هكذا يقول الرب علي سلّيم بن يوسيو المملّك عوض يوسيا ابيه الذي خرج 11
من هذا الموضع * لا يعود الي هناك ايضا * لكن في الموضع حيث سبي هناك يموت * ولا 12
يعاين هذه الارض ايضا * يا باني بيته ليس بالعدل * وعلاليه ليس بالحكم * عند قريبه 13
يعمل رسا * ولا يعطي له اجرته * تبنيت لذاتك بيتا مقدرا وعلالي واسعة بكوى 14
وسقفه بالارز ومدهونة بتماثيل * لا تملك لانك انت مماريء بحسب احاب ابيك * لا 15
ياكلون ولا يشربون * لم يعرفوا ان يصنعوا حكما جيدا وعدلا حسنا * لم يحكموا حكم 16
المتواضعين ولا حكم المساكين * اليس هذا هو لك * الا تعرفني يقول الرب * ها ليس 17
عيناك ولا قلبك جيدا * لكن في شرهك وفي الدم الزكي لتريقه * وفي الظلامات وفي
القتل لتصنعهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب علي يواقيم بن يوسيا ملك يهودا * ويل علي 18
هذا الرجل * لا ينوحون عليه * ويل يا اخي * ولا يبكون عليه * الويل يا سيد الويل لي
يا اخي * لا يدفنوه دفنا * يجر ويرمي خارجا من باب اورشليم * اصعدي الي لبنان 19 20
واصرخي * والي بيسان اعطي صوتك واهتفي الي عبر البحر * لان جميع اصحابك انكسروا
* تكلموا عليك في سقطتك * لم تسمعي صوتي * جميع رعاتك يرعاهم الريح * وفي 21 22
السبي يخرجون * لانك حينيذ تخزين وتهانين من جميع محبيك * ايتها الساكنة في لبنان 23
المعششة في الارزات * تتنهدي عند ما ياتي لك الطلقات مثل التي تلد * حي انا يقول الرب 24
ان كان يكون يواقيم بن يوحانيا ملك يهودا خاتما علي يدي اليمني * من هناك اطرحك
* وادفعك الي ايدي الذين يطلبون نفسك * الذين انت تتقي من وجههم * الي ايدي 25
الكلدانيين *

Nam ſic ait Dominus de Sallimo Joſiæ 11
filio qui regnum occupaverat loco Joſiæ
patris ſui, qui egreſſus eſt è loco iſto: Non
eſt reverſurus huc ampliùs; Sed in loco 12
quò captivus abductus eſt, illic morietur,
nec ampliùs reviſet terram iſtam O qui 13
domum tuam extruis haud juſtè, & cœ-
nacula tua haud æquè; apud proximum
tuum contrahis fœnus, nec reddis ei mer-
cedem ſuam; Extruxiſti tibi ædem am- 14
plam & cœnacula ſpatioſa cum feneſtris,
laqueata cedris, figuris depicta: Nequa- 15
quam regnabis, quia imitaris originem
Achabi patris tui. Non comedent, neque
bibent; neſciunt enim *bonum exercere ju-*
dicium & juſtitiam rectam: Non judi- 16
caverunt cauſam humilium neque cauſam
pauperis. An non hæc tua res eſt? an non
cognoſcis me, dicit Dominus? Ecce neq; oculi 17
tui neq; cor tuum rectum eſt; ſed avidi-
tatem tuam ſpectant, *& ſanguinem in-*
nocentem ut effundas eum, & tyranni-
des atque cædem ut exerceas illas.
Propterea ſic dicit Dominus de Joacimo 18
Joſiæ filio, rege Judæ; Infœlicem hunc
virum, non plangent eum, dicentes, *Heu*
frater mi: neque deplorabunt eum,
dicentes, *Heu O domine, heu mihi O mi*
frater. Non mandabunt eum ſepulturæ, 19
ſed *raptabitur & abjicietur extra portam*
Jeroſolymæ. Aſcende Libanum & cla- 20
ma, & ad Baiſanem uſque ede vocem
tuam & ad adverſum uſque littus ma-
ris vocifera, quia contriti ſunt omnes
amatores tui: Locuti ſunt de te in ruina 21
tua: non auſcultâſti voci meæ. Omnes 22
paſtores tuos depaſcet ventus, & in
captivitatem egredientur: tunc enim
pudefies, & deſpicieris ab omnibus a-
matoribus tuis. O quæ habitas in Libano, 23
quæ nidificas in cedris, ſuſpira quum
advenerint tibi dolores ut parturienti.
Vivo ego, dicit Dominus, etiamſi eſ- 24
ſet Joacim Jochaniæ filius rex Judæ,
annulus in manu mea dextera; inde pro-
jiciam te, Et tradam te in manus eorum 25
qui quærunt animam tuam, quorum
faciem tu formidas, nempe *in manus*
Chaldæorum:

,alienam terram *super* ,te genuit quæ tua matrem & ,te *protelabo* Et
26 וְהֵטַלְתִּי אֹתְךָ וְאֶת־אִמְּךָ אֲשֶׁר יְלָדַתְךָ עַל הָאָרֶץ אַחֶרֶת
quam terram ad Et .moriemini ibique : *ibi* estis nati non *quo*
27 אֲשֶׁר לֹא־יֻלַּדְתֶּם שָׁם וְשָׁם תָּמוּתוּ׃ וְעַל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר־
.revertentur non illuc ,illuc *redeundum ad* ,suam animam *elevantes* ipsi
הֵם מְנַשְּׂאִים אֶת־נַפְשָׁם לָשׁוּב שָׁם שָׁמָּה לֹא יָשׁוּבוּ׃
non vas an ,Chonjahu iste vir est *dispersus minutim vilis dolor* Num
28 הַעֶצֶב נִבְזֶה נָפוּץ הָאִישׁ הַזֶּה כָּנְיָהוּ אִם־כְּלִי אֵין
sunt projecti & ,ejus semen & ,ipse sunt projecti Quare ? *eo in* voluntas
חֵפֶץ בּוֹ מַדּוּעַ הוּטְלוּ הוּא וְזַרְעוֹ וְהֻשְׁלְכוּ
audi ,terra ,terra ,Terra ? noverunt non quam terram super
29 עַל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר לֹא־יָדָעוּ׃ אֶרֶץ אֶרֶץ אָרֶץ שִׁמְעִי
,*prole carentem* istum virum Scribite : Dominus dixit Sic : Domini verbum
30 דְּבַר־יְהוָה׃ כֹּה אָמַר יְהוָה כִּתְבוּ אֶת־הָאִישׁ הַזֶּה עֲרִירִי
ej° semine de prosperabitur non nam : suis diebus in *prosperabitur* non virum
גֶּבֶר לֹא־יִצְלַח בְּיָמָיו כִּי לֹא יִצְלַח מִזַּרְעוֹ
.Jehudah in ultrà dominans & ,David solium super sedens vir
אִישׁ יֹשֵׁב עַל־כִּסֵּא דָוִד וּמֹשֵׁל עוֹד בִּיהוּדָה׃

CAP. XXIII. כג

.Dominus dixit ,meæ pascuæ *pecus dispergentib° ac perdentibus* pastorib° Væ
1 הוֹי רֹעִים מְאַבְּדִים וּמְפִצִים אֶת־צֹאן מַרְעִיתִי נְאֻם־יְהוָה׃
:meũ populũ *pascentes* ,pastores ad Israel Deus Dominus dixit sic Ideo
2 לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל עַל־הָרֹעִים הָרֹעִים אֶת־עַמִּי
: eas visitâstis non & ,eas *propulistis* atque,*meum pecus* dispersistis Vos
אַתֶּם הֲפִצֹתֶם אֶת־צֹאנִי וַתַּדִּחוּם וְלֹא פְקַדְתֶּם אֹתָם
.Dominus dixit ,vestrorum *studiorum* malitiam vos super *visitans* ego ecce
הִנְנִי פֹקֵד עֲלֵיכֶם אֶת־רֹעַ מַעַלְלֵיכֶם נְאֻם־יְהוָה׃
expuli quò ,terris omnib° de *mei pecoris residuum* cõgregabo ego Et
3 וַאֲנִי אֲקַבֵּץ אֶת־שְׁאֵרִית צֹאנִי מִכֹּל הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר־הִדַּחְתִּי
.multiplicabũtur &,crescẽt &,sua habitacula ad eas faciã redire &,*illuc* eas
אֹתָם שָׁם וַהֲשִׁבֹתִי אֶתְהֶן עַל־נְוֵהֶן וּפָרוּ וְרָבוּ׃
neque,ultrà timebunt non & : eas pascent & ,pastores eas super suscitabo Et
4 וַהֲקִמֹתִי עֲלֵיהֶם רֹעִים וְרָעוּם וְלֹא־יִירְאוּ עוֹד וְלֹא־
dixit ,*venientes* dies Ecce .*Domini effatum* ,deficient neque ,*consternabuntur*
5 יֵחַתּוּ וְלֹא יִפָּקֵדוּ נְאֻם־יְהוָה׃ הִנֵּה יָמִים בָּאִים נְאֻם־
,*aget intelligenter* &,rex regnabit &,justum germen David ipsi suscitabo&,Domin°
יְהוָה וַהֲקִמֹתִי לְדָוִד צֶמַח צַדִּיק וּמָלַךְ מֶלֶךְ וְהִשְׂכִּיל
Israel & ,Jehudah erit salv° ej° dieb° In .terra in justitiã & judicium faciet &
6 וְעָשָׂה מִשְׁפָּט וּצְדָקָה בָּאָרֶץ׃ בְּיָמָיו תִּוָּשַׁע יְהוּדָה וְיִשְׂרָאֵל
.*nostra justitia* Domin°, eũ vocabunt quod ,ej° nomen hoc & ,*fiducia in* habitabit
יִשְׁכֹּן לָבֶטַח וְזֶה־שְּׁמוֹ אֲשֶׁר־יִקְרְאוֹ יְהוָה צִדְקֵנוּ׃
,Domin° *Vivens* :ultrà dicent non &,Domin° dixit,*venientes* dies ecce Ideo
7 לָכֵן הִנֵּה־יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה וְלֹא־יֹאמְרוּ עוֹד חַי־יְהוָה
Domin° *vivens Quinimo* .Ægypti terra è Israel filios fecit ascendere qui
8 אֲשֶׁר הֶעֱלָה אֶת־בְּנֵי יִשְׂרָאֵל מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם׃ כִּי אִם־חַי־יְהוָה
,Aquilonis terra de Israel dom° semen adduxit qui & fecit ascẽdere qui
אֲשֶׁר הֶעֱלָה וַאֲשֶׁר הֵבִיא אֶת־זֶרַע בֵּית יִשְׂרָאֵל מֵאֶרֶץ צָפוֹנָה
.sua *humo* in habitabunt & ,*illuc* eos *propuli quò* terris omnib° de &
וּמִכֹּל הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר הִדַּחְתִּים שָׁם וְיָשְׁבוּ עַל־אַדְמָתָם׃
omnia *motitârunt* ,*meo interiori* in meum cor est contritum prophetas Propter
9 לַנְּבִאִים נִשְׁבַּר לִבִּי בְקִרְבִּי רָחֲפוּ כָּל־
faciebus à ,vinum *eum pertransivit* vir veluti &,ebrius vir tanquã fui :mea ossa
עַצְמוֹתַי הָיִיתִי כְּאִישׁ שִׁכּוֹר וּכְגֶבֶר עֲבָרוֹ יָיִן מִפְּנֵי
adulteris Quia .ejus *sanctitatis* verborum *faciebus* à & ,Domini
10 יְהוָה וּמִפְּנֵי דִּבְרֵי קָדְשׁוֹ׃ כִּי מְנָאֲפִים
loca amœna aruerunt ,terra *luxit perjurii faciebus à* quia : terra est repleta
מָלְאָה הָאָרֶץ כִּי־מִפְּנֵי אָלָה אָבְלָה הָאָרֶץ יָבְשׁוּ נְאוֹת
.*sic* non eorũ fortitudo & ,malus eorũ cursus fuit & ,deserti
מִדְבָּר וַתְּהִי מְרוּצָתָם רָעָה וּגְבוּרָתָם לֹא־כֵן׃

Versio VULG. LAT.

26 Et mittam te, & matrem tuam
quæ genuit te, in terram alienã,
in qua nati non estis, ibique mo-
27 riemini: Et in terram, ad quam
ipsi levant animã suã ut rever-
tantur illuc, non revertentur.
28 Numquid vas fictile atq; contri-
tum vir iste Jechonias? numquid
vas absq; omni voluptate? quarè
abjecti sunt ipse & semen ejus, &
projecti in terrã, quã ignorave-
29 runt? Terra, terra, terra, audi ser-
30 moné Dñi. Hæc dicit Dñs; Scribe
virũ istũ sterilẽ, virũ qui in dieb°
suis non prosperabitur: nec enim
erit de semine ejus vir, qui sedeat
super soliũ David, & potestatẽ
habeat ultrà in Juda.

CAP. XXIII.

1 VÆ pastoribus, qui disperdunt
et dilacerant gregẽ pascuæ meæ,
2 dicit Dñs. Ideò hæc dicit Dñs
De° Israel ad pastores, qui pascũt
populũ tuũ; Vos dispersistis gre-
gem meũ, & ejecistis eos, & non
visitâstis eos: ecce ego visitabo
sup vos malitiã studiorũ vestro-
3 rum, ait Dñs. Et ego congrega-
bo reliquias gregis mei de omni-
bus terris, ad quas ejecero eos
illuc: & convertam eos ad rura
sua: & crescent & multiplica-
4 buntur. Et suscitabo sup eos pa-
stores, & pascent eos: non for-
midabunt ultrà, & non pave-
bunt: & nullus quæretur ex nu-
5 mero, dicit Dñs. Ecce dies ve-
niunt, dicit Domin°: & suscita-
bo David germen justum: & re-
gnabit rex, & sapiens erit: & fa-
ciet judiciũ & justitiã in terra.
6 In dieb° illis salvabitur Juda, &
Israel habitabit confidenter: &
hoc est nomen, ꝙ vocabunt eum,
7 Dñs justus noster. Propter hoc
ecce dies veniunt, dicit Dñs, et
non dicent ultrà; Vivit Dñs, qui
eduxit filios Israel de terra Ægy-
8 pti: Sed, Vivit Dñs, qui eduxit
et adduxit semen domûs Israel de
terra Aquilonis, et de cunctis ter-
ris, ad quas ejecerã eos illuc: et
9 habitabunt in terra sua. Ad pro-
phetas: Contritũ est cor meũ in
medio meî, cõtremuerunt omnia
ossa mea: fact° sum quasi vir ebri-
us, et quasi homo madid° à vino,
à facie Dñi, et à facie verborum
10 sanctorũ ejus. Quia adulteris re-
pleta est terra, quia à facie male-
dictionis luxit terra, arefacta sunt
arva deserti: fact° est cursus eorũ
mal°, et fortitudo eorũ dissimilis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

26 Καὶ (ζ) ἀπορρίψω σε καὶ τὴν μητέρα
σου τὴν τεκοῦσάν σε εἰς γῆν, οὗ οὐκ
27 ἐτέχθης ἐκεῖ, καὶ ἐκεῖ ἀποθανεῖσθε. Εἰς δὲ
τὴν γῆν ἣν αὐτοὶ εὔχονται ταῖς ψυχαῖς αὐ-
28 τῶν, οὐ μὴ (η) ἀποστρέψωσιν. Ἠτιμώθη Ἰ-
εχονίας ὡς σκεῦος οὗ οὐκ ἔστι χρεία αὐτοῦ, ὅτι
(θ) ἐξερρίφη, καὶ ἐξεβλήθη εἰς γῆν ἣν
29 οὐκ ᾔδει. Γῆ, γῆ ἄκουε λόγον κυρίου,
30 Γράψον τὸν ἄνδρα τοῦτον ἐκκήρυκτον ἄν-
θρωπον, ὅτι οὐ μὴ αὐξηθῇ ἐκ τοῦ σπέρ-
ματος αὐτοῦ (ι) καθήμενος ἐπὶ θρόνου
Δαυίδ, ἄρχων ἔτι ἐν (κ) τῷ Ἰούδα.

MS. A. (ζ) παραδώσω σε (η) ἐπιστρέψωσιν. (θ) ἐξερρίφη, (ι) ἀ-
νὴρ καθήμενος (κ) τῷ οἴκῳ Ἰούδα.

Et projiciam te, & matrem tuam, quæ peperit te, in terram, ubi non es natus illic: & ibi moriemini: In terram autem, quam ipsi optant animabus suis, non revertentur. (e) Inhonoratus est Jechonias, quasi vas, cujus non est utilitas ejus: quia abjectus est, & ejectus in terram, quam ignoravit. Terra, terra, audi sermonem Domini; Scribe virum istum, abdicatum (f) hominem, quia non crescet de semine ejus, qui sedeat super thronum David, princeps ultrà in Juda.

ΚΕΦ. κγʹ.

1 (α) Ὦ Ποιμένες οἱ ἀπολλύοντες καὶ
διασκορπίζοντες τὰ πρόβατα τῆς νομῆς
2 (β) αὐτῶν. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος
ἐπὶ τοὺς ποιμαίνοντας τὸν λαόν μου· Ὑμεῖς
διεσκορπίσατε τὰ πρόβατά μου, καὶ (γ)
ἐξώσατε αὐτὰ, καὶ οὐκ ἐπεσκέψασθε αὐ-
τὰ, ἰδοὺ ἐγὼ (δ) ἐκδικῶ ἐφʼ ὑμᾶς κατὰ
3 τὰ πονηρὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν. (ε) Καὶ
ἐγὼ εἰσδέξομαι τοὺς καταλοίπους τοῦ λαοῦ
μου ἀπὸ πάσης τῆς γῆς, οὗ ἐξῶσα αὐτοὺς
ἐκεῖ, καὶ καταστήσω αὐτοὺς εἰς τὴν νομὴν
αὐτῶν, καὶ αὐξηθήσονται, καὶ πληθυνθήσον-
4 ται. Καὶ ἀναστήσω αὐτοῖς ποιμένας (ζ)
οἳ ποιμανοῦσιν αὐτοὺς, καὶ οὐ φοβηθήσον-
ται ἔτι, (η) οὐδὲ πτοηθήσονται, λέγει κύ-
5 ριος. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύρι-
ος, καὶ ἀναστήσω τῷ Δαυὶδ ἀνατολὴν
δικαίαν, καὶ βασιλεύσει βασιλεὺς, καὶ συν-
ήσει, καὶ ποιήσει κρίμα καὶ δικαιοσύνην ἐπὶ
6 τῆς γῆς. Ἐν ταῖς (θ) ἡμέραις αὐτοῦ καὶ
σωθήσεται Ἰούδας, καὶ Ἰσραὴλ κατα-
σκηνώσει πεποιθὼς, καὶ τοῦτο τὸ (ι) ὄ-
νομα αὐτοῦ, ὃ καλέσει αὐτὸν κύριος, Ἰ-
9 ωσεδέκ. Ἐν τοῖς προφήταις. συνετρί-
βη ἡ καρδία μου (κ) ἐν ἐμοὶ, ἐσαλεύθη
πάντα τὰ ὀστᾶ μου, ἐγενήθην ὡς (λ) ἀνὴρ
συντετριμμένος, καὶ ὡς ἄνθρωπος
συνεχόμενος ἀπὸ οἴνου ἀπὸ προσ-
ώπου κυρίου καὶ ἀπὸ προσώπου εὐπρε-
10 πείας δόξης αὐτοῦ. Ὅτι ἀπὸ προσώπου
τούτων ἐπένθησεν ἡ γῆ, ἐξηράνθησαν αἱ
νομαὶ τῆς ἐρήμου καὶ ἐγένετο ὁ δρόμος αὐ-
τῶν πονηρὸς, καὶ ἡ ἰσχὺς αὐτῶν (μ) οὕτως.

MS. A. (α) Ὦ οἱ ποιμαίνες οἱ διασκορπίζοντες, καὶ ἀπολλύοντες (β) μου. (γ) ἀπώσατε αὐτὰ, καὶ οὐκ ἐπεσκέψασθε (δ) ἐκδικήσω (ε) Κἀγὼ εἰσδέξομαι τὸ κατάλοιπον τοῦ λαοῦ μου ἀπὸ πάσης (ζ) καὶ ποιμανοῦσιν (η) καὶ οὐ πτοηθήσονται ἔτι, (θ) ἡμέραις ἐκείναις, καὶ (ι) ὄνομα, ὃ καλέσει (κ) σὺν ἐμοί, (λ) ἄνθρωπος [illegible] οὕτως.

CAP. XXIII.

O Pastores, qui disperditis, & dissipatis oves pascuæ (a) eorum: Ideo hæc dicit Dominus super pascentes populum meum; Vos dispersistis oves meas, & expulistis eas, & non visitâstis eas. Ecce ego ulciscar super vos juxta pessimas adinventiones vestras: Et ego suscipiam residuos populi mei super omnem terram, quò expuli eos illuc: & constituam illos in pascua ipsorum: & crescent, & multiplicabuntur. Et suscitabo eis pastores, qui pascent eos: & non formidabunt ultrà, neque pavebunt, dicit Dominus. Ecce dies veniunt dicit Domin°, & suscitabo ipsi David (b) Orientem justum: & regnabit rex, & intelliget, & faciet judicium, & justitiam super terram, In diebus ejus: (c) & salvabitur Judas: & Israel habitabit confidenter. Et hoc est nomen ejus, quod vocabit eum Dominus, Josedec; (d) In prophetis. Contritum est cor meum in me, commota sunt omnia ossa mea; factus sum quasi vir contritus, & quasi homo captus à vino à facie Domini, & à facie decoris gloriæ ejus: (e) Quia à facie (f) horum luxit terra, arefacta sunt pascua deserti: & factus est cursus eorum malus, & fortitudo eorum (g) sic.

תרגום יונתן Targum JOHATNAN.

26 ואטלטל יתך וית אמך דילידתך לארע אוחרי דלא אתילידתון תמן ותמן תמותון׃
27 ולארעא דאנון מטען ית נפשהון למתב תמן לתמן לא יתובון׃ בסירא חלשא מטלטלא
28 גברא הדין כניה כמנא דלית צרוך ביה מה דין אטלטלו הוא ובנוהי ואתגליאו לארעא
29 דלא ידעו׃ מארעיה אגלוהי לארע אחרי ארעא דישראל קבילי פתגמי דיי׃ כדנן אמר
30 יי כתובו ית גברא הדין דלא ולד גברא דלא יצלח ביומוהי ארי לא יצלח מזרעיה גבר
יתיב על כורסי דוד ועבד שולטן על דבית יהודה׃

כג

1 וי פרנסיא דמאבדין ומבדרין ית עם דאתקרי שמי עלוהי אמר יי׃ בכן כדנן אמר יי
2 אלהא דישראל על פרנסיא דמפרנסין ית עמי אתון בדרתון ית עמי וטלטלתנון ולא
3 תבעתון יתהון האנא מסער עליכון ית בישות עובדיכון אמר יי׃ ואנא אכניש ית
שארא דעמי מכל מדינתא דאגליתי יתהון לתמן ואתיב יתהון לאתריהון ויפשון ויסגון׃
4 ואקים עליהון פרנסין ויפרנסונון ולא ידחלון עוד ולא יתברון ולא יזועון אמר יי׃ הא
5 יומיא אתן אמר יי ואקים לדוד משיח דצדיקיא וימלוך מלכא ויצלח ויעבד דין דקשוט
6 וזכו בארעא׃ ביומוהי יתפרקון דבית יהודה וישראל ישרי לרחצן ודין שמיה דיהון
7 קרן ליה יתעבדן לנא זכון מן קדם יי ביומוהי׃ בכן הא יומיא אתן אמר יי ולא יהון
8 משתען עוד בגבורתא דיי דאסיק ית בני ישראל מארעא דמצרים׃ אלהן יהון משתען
בגבורתא דיי דאסק ודאיתי ית זרעא דבני ישראל מארע צפונא ומן מדינתא דאגליתנון
9 לתמן ויתבון על ארעהון׃ מן קדם נביי שקרא אתבר לבי במעי זעו כל גרמי הויתי
10 כגבר רוי וכגברא דמשתטי מן קדם חמריה מן קדם יי ומן קדם פתגמי קודשיה׃ ארי
זנאין אתמליאת ארעא ארי מן קדם מומי דשקר חרובת ארעא יבישו דירות מדברא
ועל דמסגן ברעות נפשהון בישתא תיתי עליהון וגבריהון לא יצלחון׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et transmigrare te faciam & matrem tuam quæ genuit te, in terram alienam in qua nati non estis, ibique moriemini. Et ad terram quò ipsi seducunt animas suas ut revertantur, illuc non revertentur. Contemptus, infirm°, vagus est vir iste Chonias, sicut vas in quo non est utilitas; quare translati sunt ipse & filii ej°, & captivi ducti sunt in terram quam ignoraverunt. De terra sua transmigrare eum fecerunt in terram aliam. Terra Israel suscipe *verba* Domini. Hæc dicit Dominus: Scribite virum istum absque liberis, virum qui in dieb° suis non prosperabitur: nec enim prosperabitur de semine ejus vir sedens super solium David, & habens potestatem super domum Juda.

CAP. XXIII.

VÆ gubernatorib° qui disperdunt & dispergunt populum super quem invocatum est nomen meum, dicit Domin°. Propterea hæc dicit Dominus Deus Israel de gubernatoribus qui gubernant populum meum: Vos dispersistis oves meas, & vagari eas fecistis, & non quæsistis eas. Ecce ego visitabo super vos malitiam operum vestrorum, dicit Domin°. Et ego congregabo reliquias populi mei ex omnib° provinciis ad quas transmigrare eos feci, & reducam eos ad loca sua, & crescent & multiplicabuntur. Et constituam super eos gubernatores, & gubernabunt eos, & non timebunt ultrà, nec conterentur, nec commovebuntur, dicit Dñs. Ecce dies veniunt dicit Dñs, & suscitabo David Messiam *justorum*, & regnabit rex, & prosperabitur, & faciet judicium verum, & justitiam in terra. In dieb° ej° salvabuntur viri domus Juda, & Israel habitabit confidenter; & hoc erit nomen ej° quo vocabunt eum: Fient nobis justitiæ à facie Domini in diebus ejus. Propterea ecce dies veniunt, dicit Dominus, & non erunt narrantes ultrà potentiam Domini qui ascendere fecit filios Israel de terra Ægypti. Sed erunt narrantes potentiam Domini qui ascendere fecit & adduxit semen *filiorum* Israel de terra Aquilonis, et de provinciis ad quas transmigrare eos feci, et habitabunt in terra sua. Propter pseudoprophetas contritum est cor meum in visceribus meis, contremuerunt omnia ossa mea; factus sum quasi vir ebrius, et sicut vir qui factus est insanus vino suo, à facie Domini, et à facie verborum sanctitatis ejus. Quia fornicariis repleta est terra; quia propter juramentum falsum deserta est terra, arefacta sunt habitacula deserti: et eò quòd multiplicant voluntatem animæ suæ, malum veniet super eos, et fortes eorum non prosperabuntur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܫܕܝܟ ܠܟ ܘܠܐܡܟ ܕܝܠܕܬܟ. ܠܐܪܥܐ ܢܘܟܪܝܬܐ ܕܠܐ ܐܬܝܠܕܬܘܢ ܬܡܢ. ܘܬܡܢ ܬܡܘܬܘܢ. * ܘܠܐܪܥܐ
ܕܡܣܒܪܝܢ ܢܦܫܬܟܘܢ ܠܡܬܦܢܝܘ. ܠܬܡܢ ܠܐ ܬܬܦܢܘܢ. * ܫܝܛܐ ܘܡܣܠܝܐ ܓܒܪܐ ܗܢܐ
ܝܘܟܢܝܐ. ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܚܫܚܘ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܫܬܩܠ ܗܘ ܘܙܪܥܗ .. ܘܐܫܬܕܝܘ
ܠܐܪܥܐ ܕܠܐ ܝܕܥܝܢ. * ܐܪܥܐ ܐܪܥܐ .. ܐܪܥܐ ܫܡܥܝ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܟܬܘܒܘ ܠܓܒܪܐ ܗܢܐ ܟܪܘܙܐ ܕܠܐ ܒܢܝܐ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܙܪܥܗ ܕܓܒܪܐ ܗܢܐ .. ܠܐ ܢܨܠܚ ܟܠ
ܙܪܥܗ ܓܒܪܐ ܕܝܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܕܕܘܝܕ .. ܘܡܫܠܛ ܬܘܒ ܒܝܗܘܕܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܓ * * ܘܝ ܠܪܥܘܬܐ ܕܡܘܒܕܝܢ ܘܡܒܕܪܝܢ ܥܢܐ ܕܡܪܥܝܬܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ .. ܥܠ ܪܥܘܬܐ ܕܪܥܝܢ ܠܥܡܝ. ܐܢܬܘܢ
ܒܕܪܬܘܢ ܥܢܝ. ܘܐܛܥܝܬܘܢ ܐܢܝܢ. ܘܠܐ ܣܥܪܬܘܢ ܐܢܝܢ. ܗܐ ܐܢܐ ܣܥܪ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ ܐܝܟ
ܒܝܫܘܬ ܥܒܕܝܟܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܢܐ ܐܟܢܫ ܫܪܟܐ ܕܥܢܝ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܬܪܘܬܐ ܕܒܕܪܬ
ܐܢܝܢ ܬܡܢ .. ܘܐܗܦܟ ܐܢܝܢ ܠܕܝܪܬܗܝܢ. ܘܢܦܫܢ ܘܢܣܓܐܢ. * ܘܐܩܝܡ ܥܠܝܗܝܢ
ܪܥܘܬܐ. ܘܢܪܥܘܢ ܐܢܝܢ. ܘܠܐ ܢܕܚܠܢ ܬܘܒ. ܘܠܐ ܢܬܒܕܪܢ. ܘܠܐ ܢܛܥܝܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. *
ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ .. ܘܐܩܝܡ ܠܕܘܝܕ ܕܢܚܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܢܡܠܟ ܡܠܟܘܬܐ
ܘܢܣܬܟܠ. ܘܢܥܒܕ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܐܪܥܐ. * ܒܝܘܡܬܗ ܢܬܦܪܩ ܝܗܘܕܐ. ܘܐܝܣܪܐܝܠ
ܢܫܪܐ ܒܬܘܟܠܢ. ܘܗܢܘ ܫܡܗ ܕܢܩܪܘܢܝܗܝ ܡܪܝܐ ܙܕܝܩܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ .. ܘܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܬܘܒ ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ ܕܐܣܩ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܐܝܠ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. *
ܐܠܐ ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ. ܕܢܦܩ ܘܢܝܬܐ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܐܝܠ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܬܪܘܬܐ
ܕܒܕܪ ܐܢܘܢ ܬܡܢ. ܘܢܬܒܘܢ ܒܐܪܥܗܘܢ. * ܥܠ ܢܒܝܐ ܐܬܬܒܪ ܠܒܝ ܒܓܘܝ. ܘܙܥܘ ܟܠܗܘܢ
ܓܪܡܝ. ܘܗܘܝܬ ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܪܘܝܐ. ܘܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܚܡܪܐ ܢܨܚܝܗܝ. ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܘܡܢ ܩܕܡ
ܦܬܓܡܐ ܕܩܘܕܫܗ. * ܡܛܠ ܕܓܝܪܐ ܘܡܚܛܘܦܐ ܡܠܝܬ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܐܬܚܒܠܬ
ܐܪܥܐ .. ܘܝܒܫ ܕܝܪܐ ܕܡܕܒܪܐ. ܘܗܘܐ ܪܗܛܗܘܢ ܒܝܫܐ. ܘܚܝܠܗܘܢ ܠܐ ܐܨܠܚ.

Et ejicã te matremque tuam quæ te genuit, in terrã alienam ubi nati non fuiſtis, ibique moriemini: 26 Et in terrã ad quam arbitrati ſunt animi veſtri vos reverſuros, nequaquã revertemini. 27 Deſpectus atque contemptus eſt vir iſte Jechonia, ut vas quod nullius eſt uſûs: idcircò ſublat⁹ eſt ipſe & ſemen ejus, ejectique ſunt in terrã quam ignorant. 28 O terra, terra, terra, audi ſermonē Domini. 29 Sic dicit Dominus, Scribite virum iſtum proclamatũ ſine liberis: nam ex hujus viri ſemine, quandiu vixerit, nemo proſperabitur qui ſedeat ſuper ſoliũ Davidis, & dominetur poſthac in Judam. 30

CAP. XXIII.

HEus paſtores qui perditis & diſpergitis oves paſcui mei, dicit Dominus. 1 Propterea ſic ait Dominus Deus Iſraelis de paſtoribus qui paſcunt populum meum, Vos diſperſiſtis oves meas, ſeduxiſtis eas, nec viſitâſtis eas: ecce animadverſurus ſum in vos juxta malignitatẽ actionum veſtrarum, dicit Dominus. 2 Ego deinde congregabo reliquias ovium mearum ex omnibus locis quò diſperſeram eas, & reducam eas in caulã ſuam, & creſcent ac multiplicabuntur. 3 Et conſtituam ſuper eas paſtores, qui ita paſcent eas, ut non timeant ampliùs, neque diſpergantur, neque aberrent, ait Dominus. 4 Ecce dies venturi ſunt, dicit Dominus; quibus excitabo Davidi radium juſtitiæ, qui regnabit in regno, prudenter aget, faciétque judicium & juſtitiã in terra. 5 Diebus ejus ſalvabitur Juda, & Iſrael habitabit ſecurè: atque hoc eſt nomen ejus quo vocabunt eum, Dominus juſtitia noſtra. 6 Propterea ecce dies venturi ſunt, ait Dominus; quibus non dicetur ampliùs, Vivit Dominus qui extraxit Iſraelitas è terra Ægypti; 7 Sed, Vivit Domin⁹ qui extrahet reducétque Iſraelitas è terra Aquilonari, & ex omnibus locis in quæ diſperſi fuerant: & reſidebunt in terra ſua. 8 Propter prophetas confractum eſt cor meum in præcordiis meis, & contremuerunt omnia oſſa mea, factúſque ſum ſimilis viro ebrio, & viro quem proprium vinum ſuperavit: idque à conſpectu Domini & à conſpectu ſermonum ſanctitatis ejus. 9 Nam adulteris & raptoribus impleta eſt terra, propter iſtos corrupta eſt terra, & exaruerunt caulæ deſerti: facta eſt negotiatio eorum peſſima, et potentiâ ſuâ haud proſperè egerunt. 10

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وادفعك وامك التي ولدتك الي ارض حيث لم تولد هناك * وهناك تموتون * والي الارض
التي هم يظنون عنها * لا يعودون اليها بنفوسهم * وهان يوخانيا مثل اناء ليس به حاجة
لانه طرح والقي الي ارض لم يعرفها * الارض الارض اسمعي قول الرب * اكتبي هذا
الرجل رجلا مرذولا * لانه لا ينمي من زرعه رجل يجلس علي كرسي داود * ولا رئيس في
بيت يهودا ايضا *

Et propulſabo te matremque tuam quæ te genuit, in terram in qua non es natus, ibique ambo moriemini: 26 Ad terram autem quam putant, nequaquam redibunt ipſimet. 27 Et deſpectus eſt Jochania tanquam vas inutile, quia ejectus & expulſus eſt in terram quam ignorabat. 28 Terra, terra, audi ſermonem Domini: 29 Scribe hunc virum, virum deſpectum; quia non procreabitur ampliùs ejus ſemine quiſquam ſedens ſuper ſolium Davidis, neque princeps in domo Judæ. 30

الفصل الثالث والعشرون *

* الاصحاح الرابع عشر *

CAP. XXIII.

Textus decimus quartus.

* ايها الرعاة الذين بددوا واهلكوا غنم رعيتهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب علي
الذين يرعون شعبي * انتم بددتم خرافي وشردتموها ولا تعهدتموها * ها انا انتقم منكم
كاعمالكم الشريرة * وانا اقبل بقايا شعبي الذين بددتهم هناك * من كل الارض حيث
اقصيتهم هناك * واردهم الي مرعاهم * وينمون ويكثرون * واقيم لهم رعاة فيرعونهم
ولا يخافون ايضا ولا يجزعون ايضا يقول الرب * ها ايام تاتي يقول الرب * واقيم
لداود مشرقا عادلا * ويملك ملك عادل * ويفهم ويصنع حكما وعدلا في الارض
* في ايامه يخلص يهودا * واسرائيل يسكن مطمئنا * وهذا الاسم الذي يدعوه به
الرب يوصادك ** في الانبياء كسر قلبي في * ترعشت جميع عظامي * صرت كرجل
منهزم ومثل انسان مذهول من الخمر * من وجه الرب ومن وجه بهاء مجده * لان من
وجه هولاء خربت الارض وجفت مراعي البرية * وصار سعيهم شريرا * وقوتهم ليست
هكذا *

*E*ja paſtores qui diſpergunt ac perdunt oves paſcui ſui. 1 Iccirco ſic ait Dominus de iis qui paſcunt populum meum, Vos diſperſiſtis agnos meos, & aberrare feciſtis eos, neque viſitâſtis illos: ecce ego ultionem ſumam à vobis juxta facinora veſtra peſſima: 2 Et ego recipiam reliquias populi mei quem ibi diſperſeram, ex omnibus regionibus in quas ablegaveram eos, & reducam illos ad paſcuum ſuum, & creſcent ac multiplicabuntur. 3 Et conſtituam eis paſtores qui paſcant eos, & non metuent deinceps, neque poſthac formidabunt, dicit Dominus. 4 Ecce dies venient, dicit Dominus, quibus excitabo Davidi Orientem juſtum, qui regnabit rex juſtus, prudens erit, & exercebit judicium & juſtitiam ſuper terram. 5 In diebus ejus ſervabitur Juda, & Iſrael habitabit ſecurus: & iſtud eſt nomen quo nuncupabunt eum, Dominus Joſedec. 6

Verſus 7. & 8. habentur in fine Cap. poſt Verſ. 40.

Quoad prophetas contritum eſt cor meum intra me, concuſſa ſunt omnia oſſa mea, factus ſum ut vir confractus, & ſicut homo vino potus, à facie Domini & à facie ſplendoris gloriæ ipſius. 9 *Propter hos enim doluit terra, & areſacta ſunt paſcua deſerti; factus eſt populus eorum malignus, & eorum fortitudo non eſt eadem* 10

ירמיה : כג

mea domo in etiam : *fuerunt hypocritæ* ſacerdos *etiam* ,propheta *etiam* Quia
11 כי־גם־נביא גם־כהן חנפו גם־בביתי
eis eorum via erit Idcirco .Dominus ait ,eorum malum inveni
12 מצאתי רעתם נאם־יהוה: לכן יהיה דרכם להם
adducam nam : ea in corruent & impellẽtur ,caligine in *lubricitates* tanquã
כחלקלקות באפלה ידחו ונפלו בה כי־אביא
prophetis in Et .Dominus ait ,eorũ viſitationis annum ,malum eos ſuper
13 עליהם רעה שנת פקדתם נאם־יהוה: ובנביאי
fecerũt errare & ,Bahal in prophetaverũt : *inſulſum* vidi Someron
שמרון ראיתי תפלה הנבאו בבעל ויתעו את־
: *turpitudinem* vidi Jeruſalaim prophetis in Et .Iſrael meũ populũ
14 עמי את־ישראל: ובנביאי ירושלם ראיתי שערורה
,malorum manus confortaverũt & ,mendacio in *ambulare* & ,*adulterare*
נאוף והלך בשקר וחזקו ידי מרעים
ipſi univerſi mihi fuerunt :ſua malitia à unuſquiſq; convertãtur non ut
לבלתי־שבו איש מרעתו היו־לי כלם
Dominus dixit ſic Propterea .Hamorah ut,ejus habitatores &,Sedom ut
15 כסדם וישביה כעמרה: לכן כה־אמר יהוה
eos potabo & ,*abſinthio* eos *cibans* ego Ecce :prophetas ad exercituũ
צבאות על־הנבאים הנני מאכיל אותם לענה והשקתים
omnẽ in *prophanatio* eſt egreſſa Jeruſalaim prophetis à nam : *capitis aquis*
מי־ראש כי מאת נביאי ירושלם יצאה חנפה לכל־
verba *ſuper* audiatis Ne : exercituum Dominus dixit Sic .terram
16 הארץ: כה־אמר יהוה צבאות אל־תשמעו על־דברי
: vos *illorum* vaneſcere *facientium* : vobis *prophetantium* prophetarum
הנבאים הנבאים לכם מהבלים המה אתכם
dicendo *Dicentes* .Domini ore de non *loquentur* ſui cordis viſionem
17 חזון לבם ידברו לא מפי יהוה: אמרים אמור
omni & : vobis erit Pax ,Dominus eſt Locutus :me *parvipendentibus*
למנאצי דבר יהוה שלום יהיה לכם וכל
.malum vos ſuper veniet Non :dixerũt ſui cordis *obſtinatione* in ambulanti
הלך בשררות לבו אמרו לא־תבוא עליכם רעה:
? ejus verbum audivit & ,vidit & ,Domini ſecreto in ſtetit quis Etenim
18 כי מי עמד בסוד יהוה וירא וישמע את־דברו
excandeſcentia Domini turbo Ecce ? audivit & ,ejus verbo attendit quis
19 מי־הקשיב דברו וישמע: הנה סערת יהוה חמה
Non .*manebit* impiorum caput ſuper , *imminens* turbo & ,egredietur
20 יצאה וסער מתחולל על ראש רשעים יחול: לא
ipſum ſtatuendũ ad uſque & ,*ipſum faciendum ad uſque* Domini *naſus* revertetur
ישוב אף־יהוה עד־עשתו ועד־הקימו
.intelligentiã ea in intelligetis dierum noviſſimo in:ſui cordis cogitationes
מזמות לבו באחרית הימים תתבוננו בה בינה:
ſum locutus non : cucurrerunt ipſi & , prophetas miſi Non
21 לא־שלחתי את־הנביאים והם רצו לא־דברתי
,meo ſecreto in ſtetiſſent ſi Et .prophetabant ipſi & , eos ad
22 אליהם והם נבאו: ואם־עמדו בסודי
eos feciſſent averti & ,meum populum mea verba feciſſent audire &
וישמעו דברי את־עמי וישבום
propinquo de Deus Nũquid .eorum *ſtudiorum* malitia à & ,mala ſua via à
23 מדרכם הרע ומרע מעלליהם: האלהי מקרב
ſe occultabit Num ? longinquo de Deus non & ,Dominus dixit , ego
24 אני נאם־יהוה ולא אלהי מרחק: אם־יסתר
Nónne ? Dominus dixit ,eum videbo non ego & , occultis in quiſpiam
איש במסתרים ואני לא־אראנו נאם־יהוה הלא
Audivi ? Dominus dixit ,*implens* ego terram & cœlos
25 את־השמים ואת־הארץ אני מלא נאם־יהוה: שמעתי
,mendaciũ meo nomine in prophetantes prophetæ dixerunt quæ
את אשר־אמרו הנבאים הנבאים בשמי שקר
.ſomniavi , Somniavi : dicendo
לאמר חלמתי חלמתי:

Verſio VULG. LAT.

11 Propheta namque & ſacerdos
polluti ſunt: & in domo mea inveni
malum eorum, ait Dominꝰ.
12 Idcircò via eorum erit quaſi lubricum
in tenebris: impellentur
enim, & corruent in ea: afferam
enim ſuper eos mala, annum viſitationis
13 eorum, ait Dominꝰ. Et
in prophetis Samariæ vidi fatuitatem:
prophetabant in Baal, &
decipiebant populum meum Iſrael.
14 Et in prophetis Jeruſalem
vidi ſimilitudinem adulterantium,
& iter mendacii: & confortaverunt
manus peſſimorum,
ut non converteretur unuſquiſque
à malitia ſua: facti ſunt mihi
omnes ut Sodoma, & habitatores
ejus quaſi Gomorrha.
15 Propterea hæc dicit Dominꝰ exercituum
ad prophetas; Ecce
ego cibabo eos abſinthio, & potabo
eos felle: à prophetis enim
Jeruſalem, egreſſa eſt pollutio ſuper
16 omnem terram. Hæc dicit
Dominus exercituum; Nolite
audire verba prophetarum, qui
prophetant vobis, & decipiunt
vos: viſionem cordis ſui loquuntur,
17 non de ore Domini. Dicunt
his, qui blaſphemant me;
Locutus eſt Dominus; Pax erit
vobis: & omni, qui ambulat in
pravitate cordis ſui, dixerunt;
Non veniet ſuper vos malum.
18 Quis enim affuit in conſilio Domini,
& vidit & audivit ſermonem
ejus? quis conſideravit verbum
19 illiꝰ & audivit? Ecce turbo
Dominicæ indignationis egredietur,
& tempeſtas erumpens
ſuper caput impiorum veniet.
20 Non revertetur furor Domini,
uſque dum faciat, & uſque
dum compleat cogitationem cordis
ſui: in noviſſimis diebꝰ intelligetis
21 conſilium ejus. Non
mittebam prophetas, & ipſi currebant:
non loquebar ad eos,
22 & ipſi prophetabant. Si ſtetiſſent
in conſilio meo, & nota feciſſent
verba mea populo meo,
avertiſſem utique eos à via ſua
mala, & à cogitationibꝰ ſuis peſſimis.
23 Putâſne Deus è vicino
ego ſum, dicit Dominꝰ? & non
24 Deus de longè? Si occultabitur
vir in abſconditis: & ego
non videbo eum, dicit Dominꝰ?
numquid non cœlum & terram
ego impleo, dicit Dominus?
25 Audivi quæ dixerunt prophetæ,
prophetantes in nomine meo
mendacium, atque dicentes; Somniavi,
ſomniavi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

11 Ὅτι ἱερεὺς, καὶ προφήτης ἐμολύνθησαν, καὶ ἐν
12 τῷ οἴκῳ μου εἶδον πονηρίας αὐτῶν. Διατοῦτο
γενέσθω ἡ ὁδὸς αὐτῶν αὐτοῖς εἰς ὀλίσθημα
ἐν γνόφῳ, καὶ ὑποσκελισθήσονται, καὶ πεσοῦνται
ἐν αὐτῇ· διότι ἐπάξω ἐπ' αὐτοὺς
κακὰ, ἐν ἐνιαυτῷ ἐπισκέψεως (ν) αὐτῶν.
13 Καὶ ἐν τοῖς προφήταις Σαμαρείας εἶδον ἀνομήματα·
(ξ) ἐπροφήτευσαν διὰ τῆς Βάαλ,
14 καὶ ἐπλάνησαν τὸν λαόν μου Ἰσραήλ. Καὶ
ἐν τοῖς προφήταις Ἱερουσαλὴμ ἑώρακα
φρικτὰ, μοιχωμένους, καὶ πορευομένους ἐν
ψεύδεσι, καὶ ἀντιλαμβανομένους χειρῶν (ο)
πολλῶν, τοῦ μὴ ἀποστραφῆναι ἕκαστον ἀπὸ τῆς
ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς. ἐγενήθησάν μοι πάντες
ὡς Σόδομα, καὶ οἱ κατοικοῦντες αὐτὴν,
15 (π) ὥσπερ Γόμορρα. Διατοῦτο τάδε λέγει
κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ (ρ) ψωμιῶ αὐτοὺς ὀδύνην,
καὶ ποτιῶ αὐτοὺς ὕδωρ πικρὸν, ὅτι ἀπὸ
τῶν προφητῶν Ἱερουσαλὴμ ἐξῆλθε μολυσμὸς
16 πάσῃ τῇ γῇ. Οὕτως λέγει κύριος
παντοκράτωρ, Μὴ ἀκούετε τοὺς λόγους τῶν
προφητῶν, ὅτι ματαιοῦσιν (σ) ἑαυτοῖς ὅρασιν,
ἀπὸ καρδίας (ʹ) αὐτῶν λαλοῦσι, καὶ οὐκ ἀπὸ
17 στόματος κυρίου. Λέγουσι τοῖς ἀπωθουμένοις
τὸν λόγον κυρίου, Εἰρήνη ἔσται ὑμῖν, καὶ
πᾶσι τοῖς πορευομένοις τοῖς θελήμασιν
αὐτῶν, καὶ παντὶ τῷ πορευομένῳ πλάνῃ καρδίας
(τ) αὐτοῦ, εἶπαν, Οὐκ ἥξει ἐπὶ σὲ κακά.
18 (υ) Ὅτι τίς ἔστη ἐν ὑποστήματι κυρίου, καὶ
εἶδε τὸν λόγον αὐτοῦ; τίς (φ) ἠνωτίσατο, καὶ
19 ἤκουσεν; Ἰδοὺ σεισμὸς παρὰ κυρίου, καὶ ὀργὴ
(χ) ἐκπορεύεται εἰς συσσεισμὸν, συστρεφομένη
20 (ψ) ἐπὶ τοὺς ἀσεβεῖς ἥξει. Καὶ οὐκ ἔτι ἀποστρέψει
ὁ θυμὸς κυρίου, (ω) ἕως ποιήσῃ αὐτὸ,
καὶ ἕως ἂν στήσῃ αὐτὸ, ἀπὸ ἐγχειρήματος
καρδίας αὐτοῦ. ἐπ' (α) ἐσχάτου τῶν ἡμερῶν
21 νοήσουσιν (β) αὐτό. Οὐκ ἀπέστελλον
τοὺς προφήτας, καὶ αὐτοὶ ἔτρεχον· (˜) οὐδὲ ἐλάλησα
πρὸς αὐτοὺς, καὶ αὐτοὶ ἐπροφήτευον.
22 Καὶ εἰ ἔστησαν ἐν τῇ ὑποστάσει μου, καὶ εἰ ἤκουσαν
τῶν λόγων μου, καὶ τὸν λαόν (γ) μου ἂν ἀπέστρεφον
αὐτοὺς ἀπὸ τῶν πονηρῶν ἐπιτηδευμάτων
23 αὐτῶν. Θεὸς ἐγγίζων ἐγώ εἰμι, λέγει
24 κύριος, (δ) καὶ οὐχὶ θεὸς πόρρωθεν. Εἰ
(ε) κρυβήσεταί τις ἐν κρυφαίοις, καὶ ἐγὼ οὐκ
ὄψομαι αὐτόν; μὴ οὐχὶ τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν
25 γῆν ἐγὼ πληρῶ; λέγει κύριος. Ἤκουσα
ἃ λαλοῦσιν οἱ προφῆται, ἃ προφητεύουσιν ἐπὶ
τῷ ὀνόματί μου, ψευδῆ λέγοντες, (ϛ) Ἠνυπνιασάμην
ἐνύπνιον.

Quia ſacerdos & propheta polluti ſunt: & in domo mea vidi nequitias eorum. Idcirco fiat via eorum ipſis in lubricum in caligine: & ſupplantabuntur, & cadent in ea: quia inferam ſuper eos mala in anno viſitationis eorum. Et in prophetis Samariæ vidi iniquitates. Prophetârunt per Baal, & ſeduxerunt populum meum Iſrael. Et in prophetis Hieruſalem vidi horribilia, adulterantes, & ambulantes in mendaciis, & ſuſcipientes manus (h) multorum, ut non averteretur unuſquiſque à via ſua peſſima. Facti ſunt mihi omnes, quaſi Sodoma; & habitatores ejus, quaſi Gomorra. Propterea hæc dicit Dominus; Ecce ego cibabo eos (i) dolore, & potabo eos aquâ amarâ: quia à prophetis Hieruſalem egreſſa eſt pollutio omni terræ. Sic dicit Dominus omnipotens; Nolite audire verba prophetarum: quia vanam faciunt (k) vobis viſionem: de corde ſuo loquuntur, & non ex ore Domini. Dicunt iis qui abjiciunt verbum Domini; Pax erit vobis: & omnibus ambulantibus in voluntatibus ſuis, & omni ambulanti in errore cordis ſui dixerunt; Non venient ſuper te mala. Quoniam quis ſtetit in (l) ſubſiſtentia Domini, & vidit ſermonem ejus? Quis auribus percepit, & audivit? Ecce commotio à Domino, & ira egreditur in commotionem: conferta ſuper impios veniet: Et non ultrà avertetur furor Domini, donec fecerit illud, & donec ſtatuerit illud ab aggreſſione cordis ſui. In noviſſimo dierum intelligent illud. Non mittebam prophetas, & ipſi currebant, neque loquutꝰ eram ad eos; & ipſi prophetabant. Quòd ſi ſtetiſſent in ſubſiſtentia mea, &, ſi audiſſent verba mea; & populum meum avertiſſent (m) eos à peſſimis ſtudiis eorum. Deus appropinquans ego ſũ, dicit Dominꝰ, & non Deꝰ de longè. Si abſcondetur (n) quis in abſconditis, & ego non videbo eum? Nunquid non cœlum & terram ego impleo? dicit Dominus. Audivi, quæ loquuntur prophetæ, quæ prophetant in nomine meo, mendacia dicentes, Somniavi ſomnium.

MS.A. (ν) αὐτῶν, φησὶν κύριος. Καὶ ἐν (ξ) ἐπροφήτευσαν ἐν ὀνόματί μου διὰ τῆς (ο) πονηρῶν, τοῦ (π) ὡς (ρ) ψωμίζω αὐτοὺς ὀδύνας, (σ) αὐτοῖς ὁράσεις, καὶ ἀπὸ (ʹ) ἑαυτῶν (τ) αὐτοῦ, Οὐχ ἥξει (υ) Ὅτι ἔστι (φ) ἐνωτίσατο, (χ) ἐκπορευομένη εἰς συσσεισμὸν, (ψ) ἥξει ἐπὶ τοὺς ἀσεβεῖς (ω) ἕως ἂν (α) ἐσχάτων (β) αὐτά. (˜) οὐκ (γ) μου ἀποστρέψειν αὐτοὺς ἀπὸ τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν τῶν πονηρῶν. (δ) καὶ οὐ (ε) κρυβήσεται ἄνθρωπος ἐν (ϛ) Ἐνυπνιασάμην

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 ארי אף ספר אף כהן גניבו אורחתהון אף בבית מקדשי גלין קדמי בישתהון אמר יי:
12 בכן תהי אורחתהון להון כמשרועין בקבלא יתקלון ויפלון בה ארי איתי עליהון
13 בישתא שנת סעורן חוביהון אמר יי: ובנביי שמרון חזיתי רשע מתנבן בשום טעותא
14 ומטען ית עמי ית ישראל: ובנביי ירושלם חזיתי שנו זנאין ומהלכין בשקר ומתקפין יד
מבאשין בדיל דלא למתב גבר מן בישתיה הוו קדמי כולהון כסדום ויתבהא כעמורה:
15 בכן כדנן אמר יי צבאות על נביי שקרא האנא מיתי עליהון עקא מרר כנידין ואשקנון
16 כס דלוט ביש כרישי חיוון ארי מן נביי ירושלם נפקת חנפתא לכל יתבי ארעא: כדנן
אמר יי צבאות לא תקבלון לפתגמי נביי שקרא דמתנבן לכון מטען אנון לכון רשע
17 לבהון ממללין לא במימרא דיי: אמרין בנבואת שקריהון לדמרגזין קדמי מלל יי
18 שלמא יהי לכון וכל דאזיל בהרהור לביה אמרין לא תיתי עליכון בישתא: ארי לא
קמו דאתגלי להון רז מן קדם יי ולא חזו ולא שמעו ית פתגמוהי ולא אציתו למימריה
19 ולא קבילו: הא מזופיתא מן קדם יי ברגז נפקת ועלעול משתגש על ריש רשיעין יחול:
20 לא יתוב רוגזא דיי עד דיעבד ועד דיקים מחשבת רעותיה בסוף יומיא תסתכלון בה
21 אסתכלא: לא שלחית ית נביי שקרא ואנון רהטין לאבאשא ולא מללית עמהון ואנון
22 מתנבן שקר: ואלו קמו אתגלי להון רז מן קדם יי ואשמעו פתגמי ית עמי ואתיבנין
23 מאורחתהון בישתא ומבישות עובדיהון: אנא אלהא ברית עלמא מבראשית אמר יי
24 אנא אלהא עתידנא לחדתא עלמא לצדיקיא: אם ידמי גבר לאטמרא כד בסתרא
25 וקדמי הלא גלי אמר יי הלא ית שמיא וית ארעא יקרי מלי אמר יי: שמיע קדמי ית
דאמרין נביי שקרא דמתנבן בשמי שקרא למימר פתגם נבואה בחלמא אתחזא לי:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniã etiã ſcriba & ſacerdos ſuffurati ſunt vias ſuas; in domo quoq; ſanctuarii mei revelata ſunt corã me mala eorũ, dicit Dñs. Idcirco erit via eorum eis quaſi lubricitates in tenebris: impingent & cadent in ea; quia adducã ſup eos malũ, annum viſitationum peccatorum eorum, dicit Dñs. Et in prophetis Samariæ vidi impietatẽ; prophetant in nomine idolorũ, & ſeducunt populũ meũ Iſrael. Et in prophetis Jeruſalẽ vidi mutationẽ adulterantiũ & ambulantiũ in mendacio, & confortantiũ manꝰ malignorũ, ut nullꝰ vir convertatur à malitia ſua; facti ſunt omnes corã me quaſi Sodoma & habitatores ejꝰ quaſi Gomorra. Propterea hæc dicit Dñs exercituũ ſuper pſeudoprophetas: Ecce ego adducã ſup eos anguſtiã amarã ſicut abſinthium, & potabo eos calice maledictionis peſſimæ, quaſi capitibꝰ draconum: quia à prophetis Jeruſalem egreſſa eſt adulatio in omnes habitatores terræ. Hæc dicit Dñs exercituũ: Ne recipiatis verba pſeudoprophetarũ qui prophetant vobis; decipiunt enim vos; impietatẽ cordis ſui loquuntur, non ex verbo Dñi. Dicunt in prophetia mendacia ſua his qui irritant corã me: Locutꝰ eſt Dñs, Pax erit vobis: & omnibꝰ qui ambulant in cogitatione cordis ſui, dicunt: Non veniet ſup vos malũ. Non enim ſteterunt ut revelaretur ſibi ſecretũ à facie Dñi; nec viderunt, nec audierunt ſermones ejꝰ, nec auſcultaverunt verba ejꝰ, nec obedierunt. Ecce increpatio à facie Dñi egredietur in ira, & tempeſtas conturbans ſup caput impiorũ reſidebit. Non avertetur ira Dñi donec fecerit & impleverit cogitationes voluntatis ſuæ: In fine dierũ intelligetis hoc intelligendo. Non miſi pſeudoprophetas, et ipſi currebant ad malè faciendũ; nec locutꝰ ſum cum eis, & ipſi prophetabant falſũ. Et ſi ſtetiſſent ut revelaretur ſibi ſecretũ à facie Dñi, & audire feciſſent populũ meũ verba mea; *avertiſſem* utique eos à via ſua mala, & à malitia operũ ſuorũ. Ego Deꝰ creavi orbẽ à principio, dicit Dñs. Ego Dñs renovaturꝰ ſum mundũ juſtis. Num putat homo ſe latitare cùm in occulto eſt, an non corã me revelatꝰ eſt, dicit Dñs? Nonne cœlũ et terrã impleo gloria mea, dicit Dñs? Auditũ eſt à me ꝙ dicũt pſeudoprophetæ, qui prophetant in nomine meo falſa, dicẽtes: Verbũ prophetiæ in ſomnio annũtiatũ eſt mihi.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܐܦ ܢܒܝܐ ܐܦ ܟܗܢܐ ܐܬܛܢܦܘ. ܐܦ ܒܒܝܬܝ ܐܫܟܚܬ ܒܝܫܘܬܗܘܢ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܠܡܫܥܠܘܬܐ. ܘܒܚܫܘܟܐ ܢܬܕܚܦܘܢ
ܘܢܦܠܘܢ ܒܗܝܢ. ܡܛܠ ܕܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ ܒܝܫܬܐ. ܫܢܬܐ ܕܣܘܥܪܢܗܘܢ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. * ܘܒܢܒܝܐ ܕܫܡܪܝܢ ܚܙܝܬ ܫܘܪܩܐ. ܐܬܢܒܝܘ ܒܒܥܠܐ. ܘܐܛܥܝܘ ܠܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ.
* ܘܒܢܒܝܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܚܙܝܬ ܣܟܠܘܬܐ. ܓܝܪܝܢ ܘܡܗܠܟܝܢ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܘܡܥܫܢܝܢ
ܐܝܕܝܗܘܢ ܡܢ ܚܒܪܝܗܘܢ. ܕܠܐ ܢܬܦܢܘܢ ܓܒܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܗܘܘ ܠܝ ܟܠܗܘܢ
ܐܝܟ ܣܕܘܡ. ܘܥܡܘܪܝܗ ܐܝܟ ܥܡܘܪܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܠ ܢܒܝܐ.
ܗܐ ܡܘܟܠ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܡܪܪܐ. ܘܡܫܩܐ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܡܝܐ ܡܪܝܪܐ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܠܘܬ ܢܒܝܐ ܕܐܘܪܫܠܡ
ܢܦܩܬ ܛܢܦܘܬܐ ܠܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܠܡܠܝܗܘܢ
ܕܢܒܝܐ ܕܓܠܐ. ܕܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ. ܘܡܛܥܝܢ ܠܟܘܢ. ܚܙܘܐ ܕܠܒܗܘܢ ܡܡܠܠܝܢ. ܘܠܐ
ܗܘܐ ܡܢ ܦܘܡ ܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪܝܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܪܓܙܝܢ ܠܝ. ܒܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܫܠܡܐ ܢܗܘܐ
ܠܟܘܢ. ܘܠܟܠ ܕܡܗܠܟ ܒܪܓܬܐ ܕܠܒܗ. ܐܡܪܝܢ ܠܗ. ܠܐ ܬܐܬܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܝܫܬܐ.
* ܡܢܘ ܓܝܪ ܩܡ ܒܐܪܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܚܙܝܗ ܘܫܡܥ ܡܠܬܗ. ܐܘ ܡܢܘ ܨܬ ܠܡܠܬܗ
ܘܫܡܥܗ. * ܗܐ ܡܥܒܕܢܘܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܒܚܡܬܐ ܢܦܩܬ. ܘܡܥܒܕܢܘܬܐ ܡܬܚܪܟܐ. ܥܠ ܪܫܐ
ܕܪܫܝܥܐ ܬܫܪܐ. * ܠܐ ܬܗܦܘܟ ܚܡܬܐ ܕܡܪܝܐ ܥܕܡܐ ܕܢܥܒܕ. ܘܥܕܡܐ ܕܢܩܝܡ
ܬܪܥܝܬܐ ܕܠܒܗ. ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ ܬܬܒܝܢܘܢ ܒܗ. * ܠܐ ܫܕܪܬ ܠܢܒܝܐ ܘܗܢܘܢ ܪܗܛܘ.
ܠܐ ܡܠܠܬ ܥܡܗܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܐܬܢܒܝܘ. * ܘܠܐ ܩܡܘ ܒܐܪܙܝ. ܘܠܐ ܐܫܡܥܘ ܡܠܝ ܠܥܡܝ.
ܘܐܦܢܝܘ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܢ ܒܝܫܘܬ ܥܒܕܝܗܘܢ. * ܐܠܗܐ ܐܢܐ ܕܡܢ
ܩܪܝܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܠܗܐ ܕܡܢ ܪܚܝܩ. * ܐܢ ܢܬܛܫܐ ܓܒܪܐ ܒܡܛܫܝܬܐ. ܐܢܐ
ܚܙܐ ܐܢܐ ܠܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ ܡܠܝܢ ܠܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܫܡܥܬ
ܡܕܡ ܕܐܡܪܘ ܢܒܝܐ ܕܡܬܢܒܝܢ ܒܫܡܝ ܕܓܠܘܬܐ. ܘܐܡܪܝܢ ܚܠܡܐ ܚܠܡܬ.

Tum enim prophetæ tum ſacerdotes impiè 11
egerunt, & vel domi meæ inveni malignitatem
eorum, dicit Dominus. Proptereà erunt 12
iis viæ ſuæ *loca* lubrica, in tenebras impellentur,
& cadent in illis: adducturus enim ſum
ſuper eos malum, annum viſitationis eorum,
dicit Dominus. Ut in prophetis Samariæ deprehenderam 13
mendaciū, prophetabant *enim*
per Baalem, & ſeducebant populum meum Iſraelem:
Ita in prophetis Jeroſolymæ deprehendi 14
ſtultitiam: adulteri ſunt, & ambulant in
falſitate, & contrahunt manus ſuas ab amicis
ſuis, ut non revertantur quiſque à via ſua prava:
denique facti ſunt mihi omnes ut Sodoma,
& habitatores hujus *urbis* ut Gomorra. Proptereà 15
ſic ait Dominus exercituū de *his* prophetis;
Ecce cibabo eos abſinthio, & potabo
eos aquis amaris: quoniam à prophetis Jeroſolymæ
prodivit impietas in totam terram.
Ita dicit Dominus exercituū, Ne audiatis ſermones 16
falſorum prophetarū qui prophetantes
vobis ſeducunt vos. Viſionē quidem cordis
ſui loquuntur, non autem ex ore Domini:
Dicunt iis qui *me* exaſperant, Ex oraculo Domini 17
pax erit vobis: & quibuſvis pro animi
ſui libidine ambulantibus dicunt, Non eveniat
vobis malum. Quis enim interfuit ſecreto 18
Dei, aut vidit eum, aut audivit ſermonem
ejus? aut quis auſcultavit ſermonem ejus,
& audivit illum? En effectus Domini 19
cum furore proditur’ eſt, & effectus ardebit;
ſuper impiorum caput requieſcet: Non avertetur 20
æſtus furoris Domini, donec perfecerit,
& donec præſtiterit cogitationem cordis
ſui: in fine dierum animadvertetis eum.
Non miſi prophetas iſtos, ipſi tamen abierunt: 21
non ſum allocutus eos, ipſi tamen prophetaverunt:
Non adfuerunt ſecreto meo, 22
meos tamen ſermones annuntiaverunt populo
meo, eóſque revocâſſe à viis ſuis pravis &
à malignitate actionum ſuarum *ſeſe jactant*.
An Deus è propinquo ſum, ait Dominus; ac 23
non Deus è longinquo? Etiamſi quis in abdito 24
deliteſcat, ipſum ego video, inquit Dominus;
en cœlum ac terra plena me ſunt, inquit
Dominus potentiſſim’. Audivi quid dixerint 25
prophetæ qui meo nomine falſum prophetant,
ac dicunt; Somnium ſomniavi,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لان الكاهن والنبي تدنسا * وفي بيتي نظرت شرورهم * لاجل هذا لتكن طريقهم لهم
زلقا بضباب * ويعرقلون ويسقطون فيها * من اجل اني اجلب عليهم شرورا في سنة افتقادهم
قال الرب * وفي انبياء سامرة رايت الاثام * تنبوا باسمي لبعال * واضلوا شعبي اسرائيل * وفي
انبياء ايروشليم رايت مرهوبات فسقه وسائرين بالكذب * ومعاضدين الايدي الشريرين * الا
يرجع كل واحد من طريقه الشرير * صاروا لي جميعهم مثل سدوم * وسكانها مثل عامورا
* لاجل هذا هكذا يقول الرب * ها انا اطعمهم اوجاعا واسقيهم ماء مرا * لان من انبياء
ايروشليم خرج الدنس لكل الارض * هكذا يقول الرب ضابط الكل * لا تسمعوا اقوال
الانبياء * لانهم يتباطلون لكم بالرويا * ومن قلبهم يتكلمون وليس من فم الرب * يقولون
للمتباعدين عن قول الرب * السلم يكون لكم * ولجميع الذين يسيرون بارادتهم ولكل
سائر بضلالة قلبه * ليس ياتي عليك شرور * لان من ياتي بسر الرب * وراي قوله من نصت
وسمع * ها زلزلة من قبل الرب * وغضب خارج للزلزل يدور على المنافقين * وليس ينصرف
غضب الرب بعد * الي ان يصنعه والي ان يتممه * من سويداء قلبهم الي آخر الايام يعقلونه
* لم ارسل الانبياء وهم اسرعوا * ولم اتكلم معهم وهم تنباوا * ولم يقفوا على اسراري ولم
يسمعوا اقوالي * ولم يرجعوا شعبي عن اعمالهم الشريرة * اله قريب انا انا يقول الرب
وليس اله بعيد * ايختفي انسان في خفايا وانا لا اعاينه * كلا * اليس انا املا السماء
والارض يقول الرب * سمعت ما تكلمت به الانبياء وما تنباوه باسمي قائلين الكذب
حلمت حلما *

Quia ſacerdos & propheta contaminaverunt 11
ſeſe, & in domo mea vidi ſcelera
eorum; Idcirco ſit eis via ſua lubricitas 12
in caligine, implicentur & cadant in ea;
quoniam illaturus ſum eis mala in anno
viſitationis eorum, ait Dominus. In 13
prophetis quidem Samariæ vidi ſcelera;
prophetaverunt in nomine meo Baali, &
ſeduxerunt populum meum Iſraelem. At 14
in prophetis Jeroſolymorum horrenda video,
adulteros, ambulantes in mendacio,
& ſceleratas manus roborantes, quò
minùs deſiſtat quiſque à via ſua mala:
facti ſunt mihi omnes iſti ut Sodoma, &
hujus urbis *incolæ ut Gomorra. Idcirco* 15
ſic ait Dominus, Ecce ego cibaturus ſum
iſtos doloribus, & potaturus eos aquâ
amarâ: quandoquidem à prophetis Jeroſolymorum
egreſſa eſt contaminatio in
totam terram. Sic ait Dominus omnipotens, 16
Ne auſcultetis dictis prophetarum
iſtorum, quoniam effingunt vobis viſiones,
& ex propria mente, non ex ore
Domini loquuntur: Recedentibus à ſermone 17
Domini dicunt, Pax erit vobis; &
omnibus iis qui ambulant pro ſuopte arbitrio,
& omni incedenti in errore cordis
ſui, Nequaquam advenient tibi mala.
Quis enim intervenit ſecreto Domini? 18
& conſilium ſermonis ejus quis auſcultavit
aut audivit? Ecce terræmotus 19
à Domino cum furore proceſſurus ad
incutiendum tremitum, circumaget ſe
ſuper impios: Neque ceſſabit unquam 20
furor Domini, quoad id perficiat, &
quoad id præſtet: ex intimo corde ſuo
hæc tandem percipient. Non miſi hos 21
prophetas, ipſi tamen cucurrerunt; non
ſum allocutus eos, attamen ipſi prophetaverunt:
Non interfuerunt arcanis meis, 22
nec audierunt ſermones meos, nec
avocârunt populum meum à pravis actionibus
eorum. Deus propinquus ego ſum, 23
ait Dominus, non Deus longinquus. An
abderet ſe aliquis in latebras, & ego
non viderem eum? minimè veró. An 24
non ego cœlum ac terram impleo, dicit
Dominus? Audivi quid locuti ſint hi 25
prophetæ, quidve prophetârint nomine
meo, referentes mendacium, dicentes; Somniavi ſomnium.

,mendacium prophetantium prophetarum corde in est nunquid ? Usquequo
26 עד־מתי היש בלב הנבאים נבאי השקר
faciendum oblivisci ad Cogitantium ? sui cordis *doli vatum* &
27 ונביאי תרמת לבם: החשבים להשכיח את־
unusquisque *narrabunt* quæ ,suis somniis in mei nominis meū populum
עמי שמי בחלומתם אשר יספרו איש
.Bahal *in* mei nominis eorum patres sunt obliti sicut ;suo *socio*
לרעהו כאשר שכחו אבותם את־שמי בבעל:
meū verbum quo & ,somnium narret ,somnium *eo cum* quo Propheta
28 הנביא אשר־אתו חלום יספר חלום ואשר דברי
dixit ,*tritico cum* paleæ quid :*veritate* meum verbum loquatur ,*eo cum*
אתו ידבר דברי אמת מה־לתבן את־הבר נאם־
,Dominus dixit ,ignis tanquam meum verbum sic Nonne ? Dominus
29 יהוה: הלוא כה דברי כאש נאם־יהוה
ad ego ecce Propterea .petram *dispergit contritam* malleus veluti &
30 וכפטיש יפצץ סלע: לכן הנני על־
.suo *socio cum* à unusquisque,mea verba *furantes*,Dominus ait ,prophetas
הנביאים נאם־יהוה מגנבי דברי איש מאת רעהו:
,*suam linguam assumentibus* ,Dominus ait ,prophetas ad ego Ecce
31 הנני על־הנביאים נאם־יהוה הלקחים לשונם
ait ,*falsitatis* somnia prophetantes ad ego Ecce .Dicit :*dixere* &
32 וינאמו נאם: הנני על־נבאי חלמות שקר נאם־
,suis mendaciis in meū populum fecerūt errare &,ea narraverūt &,Dominꝰ
יהוה ויספרום ויתעו את־עמי בשקריהם
proficiendo & ,eis præcepi nec ,eos misi non ego & :*sua levitate* in &
ובפחזותם ואנכי לא־שלחתים ולא צויתים והועיל
te interrogaverit *cùm* Et .Dominus dixit ,huic populo profuerunt non
33 לא־יועילו לעם־הזה נאם־יהוה: וכי־ישאלך
? Domini *onus Quod* :dicendo,sacerdos vel,propheta vel , iste populus
העם הזה או־הנביא או־כהן לאמר מה־משא יהוה
.Dominus dicit ,vos derelinquam & :*onus Quod* :eos ad dices &
ואמרת אליהם את מה־משא ונטשתי אתכם נאם־יהוה:
,Domini *Onus* :dixerit qui ,populus & ,sacerdos & ,propheta Et
34 והנביא והכהן והעם אשר יאמר משא יהוה
dicetis Sic .ejus domum *super* & , illum virum *super* visitabo &
35 ופקדתי על־האיש ההוא ועל־ביתו: כה תאמרו
Quid :suum fratrem ad unusquisque & ,suum *socium* ad unusquisque
איש על־רעהו ואיש אל־אחיו מה־
Domini *onus* Et ?Dominus est locutus quid & ,Dominus respondit
36 ענה יהוה ומה־דבר יהוה: ומשא יהוה
;suum verbum unicuique erit *onus* quia :ultrà *memorabitis* non
לא תזכרו־עוד כי המשא יהיה לאיש דברו
.nostri Dei exercituū Domini ,viventis Dei verba pervertistis &
והפכתם את־דברי אלהים חיים יהוה צבאות אלהינו:
quid & ,Dominus tibi respondit Quid :prophetam ad dices Sic
37 כה תאמר אל־הנביא מה־ענך יהוה ומה־
sic Propterea ?dicetis Domini *onus* num Et ?Dominus est locutus
38 דבר יהוה: ואם־משא יהוה תאמרו לכן כה
,Domini *Onus* ,istud verbum *vos dicere Propter* :Dominus dixit
אמר יהוה יען אמרכם את־הדבר הזה משא יהוה
Propterea .Domini *onus* dicatis Non :dicendo , vos ad misi &
39 ואשלח אליכם לאמר לא תאמרו משא יהוה: לכן
,civitatē & , vos *deseram* & ,obliviscēdo vestri obliviscar & ego ecce
הנני ונשיתי אתכם נשא ונטשתי אתכם ואת־העיר
.*meis faciebus desuper* vestris patribus & ,vobis dedi quam
אשר־נתתי לכם ולאבותיכם מעל פני:
quæ ,*seculi* ignominiam & ,*seculi* opprobrium vos super dabo Et
40 ונתתי עליכם חרפת עולם וכלמות עולם אשר
.tradetur oblivioni non
לא תשכח:

Versio VULG. LAT.

26 Usquequò istud est in corde prophetarum vaticinantium mendacium, & prophetantium seductiones cordis sui? 27 Qui volunt facere ut obliviscatur populus meus nominis mei propter somnia eorū, quæ narrat unusquisque ad proximum suum: sicut obliti sunt patres eorum nominis mei propter Baal. 28 Propheta, qui habet somnium, narret somnium: & qui habet sermonem meum, loquatur sermoné meum veré: quid paleis ad triticum, 29 dicit Dominus? Numquid non verba mea sunt quasi ignis, dicit Dominus; & quasi malleus conterens petram? 30 Propterea ecce ego ad prophetas, ait Dominus, qui furantur verba mea unusquisque à proximo suo. 31 Ecce ego ad prophetas, ait Dominus, qui assumunt linguas suas, & aiunt; Dicit Dominus. 32 Ecce ego ad prophetas somniantes mendacium, ait Dominus, qui narraverunt ea, & seduxerunt populum meum in mendacio suo, & in miraculis suis: cùm ego non misissem eos, nec mandassem eis, qui nihil profuerunt populo huic, dicit Dominus. 33 Si igitur interrogaverit te populꝰ iste, vel propheta, aut sacerdos, dicens; Quod est onus Domini? dices ad eos, Vos estis onꝰ: projiciam quippe vos, dicit Dominus. 34 Et propheta, & sacerdos, & populꝰ qui dicit; Onus Domini: visitabo super virum illum, & super domum ejꝰ. 35 Hæc dicetis unusquisque ad proximum, & ad fratrem suum; Quid respondit Dominus? & quid locutus est Dominꝰ? 36 & onꝰ Domini ultrà non memorabitur: quia onus erit unicuique sermo suus: & pervertistis verba Dei viventis, Domini exercituum Dei nostri. 37 Hæc dices ad prophetam, Quid respondit tibi Dominꝰ? & quid locutꝰ est Dominꝰ? 38 Si autem onus Domini dixeritis: propter hoc hæc dicit Dominꝰ: Quia dixistis sermonem istum, Onus Domini: & misi ad vos, dicens; Nolite dicere, Onus Domini: 39 Propterea ecce ego tollam vos portans, & derelinquam vos, & civitatem quam dedi vobis & patribꝰ vestris, à facie mea. 40 Et dabo vos in opprobrium sempiternū, & ignominiam æternam, quæ nunquam oblivione delebitur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

26 Ἕως πότε ἔσται ἐν καρδίᾳ τῶν προφητῶν τῶν προφητευόντων ψευδῆ, (ζ) ἐν τῷ προφητεύειν αὐτοὺς τὰ θελήματα τῆς καρδίας αὐτῶν, 27 Τῶν λογιζομένων τοῦ ἐπιλαθέσθαι τοῦ νόμου μου ἐν τοῖς ἐνυπνίοις αὐτῶν, ἃ (η) διηγοῦντο ἕκαστος τῷ πλησίον αὐτοῦ, καθάπερ ἐπελάθοντο οἱ πατέρες αὐτῶν τοῦ ὀνόματός μου 28 ἐν τῇ Βάαλ; Ὁ προφήτης ἐν ᾧ τὸ ἐνύπνιόν ἐστι, διηγησάσθω τὸ ἐνύπνιον αὐτοῦ, ϗ ἐν ᾧ ὁ λόγος μου πρὸς αὐτὸν, διηγησάσθω τὸν λόγον μου ἐπ' ἀληθείας. τί τὸ ἄχυρον πρὸς τὸν σῖτον; οὕτως οἱ λόγοι μου, λέγει κύριος. (θ) 29 Οὐκ ἰδοὺ οἱ λόγοι μου, ὥσπερ πῦρ, λέγει κύριος, ϗ ὡς πέλυξ κόπτων πέτραν; 30 (ι) Ἰδοὺ ἐγὼ διατοῦτο πρὸς τοὺς προφήτας, λέγει κύριος ὁ θεὸς, τοὺς κλέπτοντας τοὺς λόγους μου (κ) 31 ἕκαστον παρὰ τοῦ πλησίον αὐτοῦ. Ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς τοὺς προφήτας τοὺς ἐκβάλλοντας (λ) προφητείας γλώσσης, ϗ νυστάζοντας νυσταγμὸν 32 (μ) αὐτῶν. Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς τοὺς προφήτας τοὺς προφητεύοντας (ν) ἐνύπνια ψευδῆ, ϗ οὐ διηγοῦντο αὐτὰ, ϗ ἐπλάνησαν τὸν λαόν μου ἐν τοῖς ψεύδεσιν αὐτῶν, ϗ ἐν τοῖς πλάνοις αὐτῶν, ϗ ἐγὼ οὐκ ἀπέστειλα αὐτοὺς, ϗ οὐκ ἐνετειλάμην αὐτοῖς, ϗ ὠφέλειαν οὐκ ὠφελήσουσι τὸν 33 λαὸν τοῦτον. Καὶ ἐὰν (ξ) ἐρωτήσωσιν ὁ λαὸς οὗτος, ἢ ἱερεὺς, ἢ προφήτης, Τί τὸ λῆμμα κυρίου; ϗ ἐρεῖς αὐτοῖς, Ὑμεῖς ἐστε τὸ λῆμμα, 34 ϗ ῥάξω ὑμᾶς, λέγει κύριος. Ὁ προφήτης, ϗ (ʼ) οἱ ἱερεῖς, ϗ ὁ λαὸς, οἳ ἂν εἴπωσι, Λῆμμα κυρίου, ϗ ἐκδικήσω τὸν ἄνθρωπον ἐκεῖνον, ϗ 35 τὸν οἶκον αὐτοῦ. (ο) Οὕτως ἐρεῖτε ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, ϗ ἕκαστος πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, Τί ἀπεκρίθη (π) κύριος, ϗ τί ἐλάλησε κύριος; 36 Καὶ λῆμμα κυρίου μὴ (ρ) ὀνομάζετε ἔτι, ὅτι τὸ λῆμμα τῷ ἀνθρώπῳ ἔσται ὁ λόγος αὐτοῦ. 37 Καὶ διατί ἐλάλησε κύριος 38 ὁ θεὸς ἡμῶν; Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος ὁ (σ) θεὸς ἡμῶν, Ἀνθ' ὧν εἴπατε τὸν λόγον τοῦτον, 39 Λῆμμα κυρίου, ϗ ἀπέστειλα πρὸς ὑμᾶς, λέγων, Οὐκ ἐρεῖτε, Λῆμμα κυρίου, Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ λαμβάνω, ϗ ῥάσσω ὑμᾶς, ϗ τὴν πόλιν ἣν ἔδωκα ὑμῖν ϗ τοῖς πατράσιν ὑμῶν. 40 Καὶ δώσω ἐφ' ὑμᾶς ὀνειδισμὸν αἰώνιον, ϗ ἀτιμίαν αἰώνιον, (¨) ἥτις οὐκ ἐπιλησθήσεται. 7 Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος, ϗ οὐκ ἐροῦσιν ἔτι, Ζῇ κύριος, ὃς ἀνήγαγε 8 τὸν οἶκον Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου, Ἀλλὰ, Ζῇ κύριος, ὃς συνήγαγε (τ) πᾶν τὸ σπέρμα Ἰσραὴλ ἀπὸ γῆς Βοῤῥᾶ, ϗ ἀπὸ πασῶν τῶν χωρῶν, οὗ ἐξῶσεν αὐτοὺς ἐκεῖ, ϗ ἀποκατέστησεν αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν αὐτῶν.

Usquequò erit in corde prophetarum prophetantium falsa, dum ipsi prophetant voluntates cordis sui, Cogitantium, ut oblivioni fiat legis meæ in somniis suorum, quæ narrant unusquisque proximo suo, sicut obliti sunt patres eorum nominis mei in Baal? Propheta, in quo somnium est, narret somnium suum: & in quo sermo meus ad eum; narret sermonem meum in veritate. Quid palea ad triticum? Sic verba mea, dicit Dominus. Nonne ecce verba mea, sicut (θ) ignis, dicit Dominus, & sicut securis cædens petram? Ecce ego propterea ad prophetas, dicit Dominus Deus, qui furantur verba mea, unusquisque à proximo suo. Ecce ego ad prophetas qui (q) emittunt prophetias linguæ & dormitant dormitationem suam. Propterea ecce ego ad prophetas, qui prophetant somnia falsa, & (r) non narrant ea & seduxerunt populum meum in mendaciis suis, & in erroribus suis: & ego non miseram eos, & non mandaveram eis: & adjumento non adjuvabunt populum hunc. Quòd si interrogaverint populus iste, vel sacerdos, vel propheta, Quæ est assumptio Domini? & dices eis, Vos estis assumptio, & allidam vos, dicit Dominus. Propheta & sacerdotes, & populus, quicunque dixerint: Assumptio Domini: & ulciscar hominem illum & domum ejus. Sic dicetis unusquisque ad proximum suum, & unusquisque ad fratrem suum; Quid respondit Dominus, & quid locutus est Dominꝰ? Et assumptionem Domini nolite nominare ultrà: quia assumptio homini erit sermo ejus. (t) Et quare locutus est Dominꝰ Deꝰ noster? Propterea hæc dicit Dominus Deus noster; Pro eo, quòd dixistis sermonem istum, Assumptio Domini, & misi ad vos, dicens; Non dicetis Assumptio Domini: Propterea ecce ego assumo, & allido vos, & civitatem, quam dedi vobis & patribꝰ vestris. Et dabo super vos opprobrium sempiternū, & ignominiam sempiternā, quæ oblivioni non tradetur. Idcircò ecce dies veniunt, dicit Dominus: & non dicent ultrà, Vivit Dominus qui eduxit domum Israel de terra Ægypti: Sed Vivit Dominus qui congregavit omne semen Israel à terra Aquilonis, & ab omnibus regionibus, quò expulerat eos, & restituit eos in terram ipsorum.

MS. A. (ζ) ϗ ἐν τῷ (η) διηγοῦνται (θ) Οὐχ οἱ λόγοι μου, ὥσπερ [illegible]γον πῦρ, λέγει κύριος, ϗ ὡς πέλεκυς (ι) Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ (κ) [illegible] προφητείαν γλώσσῃ, (μ) ἑαυτῶν. Ἰδοὺ ἐγὼ (ν) ψευδῆ ἐνύπνια, [illegible]γοῦντο (ξ) ἐρωτήσωσίν σε ὁ λαὸς (ʼ) ὁ ἱερεὺς, (ο) Ὅτι [illegible] Καὶ λῆμμα (ρ) ὀνομάζεται, ὅτι λῆμμα κυρίου ἔσται τῷ ἀνθρώπῳ λόγος (σ) θεὸς, Ἀνθ' ὧν (¨) εἴπῃς (τ) ἅπαν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

26 27 עד אימתי אית בלבהון דנביי שקרא דמתנבן שקר ומתנבן רשע לבהון: דמחשבין
לאנשאה ית עמי שמי בחלמהון דמשתען גבר לחבריה כמה דשבקו אבהתהון ית
28 פולחן שמי ומקימין בשום טעותא: נביאה דעמיה חלמא ישתעי חלמא ודפתגמי עמיה
ימלל פתגמי קשוט הא כמה דפריש בין תבנא לעבורא כן פריש בין צדיקיא לרשיעיא
29 30 אמר יי: הלא כל פתגמי תקיפין כאשתא אמר יי וכפטישא דמפצע כיפא: בכן הא אנא
31 שלח רוגזי על נביי שקרא אמר יי מגנבין פתגמי גבר מן חבריה: בכן הא אנא שלח רוגזי
32 על נביי שקרא אמר יי דמתנבן כרעות לבהון ואמרין כן אמר: הא אנא שלח רוגזי על
דמתנבן חלמא דשקר אמר יי ומשתען ומטען ית עמי בשקריהון ובבקרותהון ואנא לא
33 שלחתנון ולא פקדתנון והנאה לא יהנון לעמא הדין אמר יי: וארי ישאלנך עמא הדין
או ספר או כהן למימר מה נבואתא בשמא דיי ותימר להון כדין נבואתא וארטוש יתכון
34 אמר יי: וספר וכהן ועמא דימר נבואתא בשמא דיי ואסער על גברא ההוא ועל ביתיה:
35 36 כדין תימרון גבר לחבריה וגבר לאחוהי מה אתיב יי ומה מלל יי: ונבואה בשמא דיי
לא תדכרון עוד ארי נבואתא תהי לגבר דמקים פתגמי רעותיה ואתון מדמן לבטלא ית
37 פתגמי אלהא קימא דיי צבאות אלהנא: כדין תימר לנביא מה אתיבך יי ומה מלל יי:
38 ואם נבואה בשמא דיי תימרון בכן כדנן אמר יי חלף דאמרתון ית פתגמא הדין נבואה
39 בשמא דיי ושלחית לותכון למימר לא תימרון נבואתא מקדם יי: בכן הא אנא שלח רוגזי
40 וארטוש יתכון מרטש וארחיק יתכון וית קרתא דיהבית לכון ולאבהתכון מקביל
מימרי: ואתן עליכון חסודי עלם ותחפנון אתכנעות עלם דלא תפסוק:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quousque est istud in corde pseudoprophetarum, qui prophetant falsa, & prophetant impietatem cordis sui? Qui cogitant efficere ut obliviscatur populꝰ meꝰ nominis mei per somnia sua, quæ narrant unusquisque socio suo, sicut reliquerunt patres eorum cultum nominis mei, jurantes per nomina idolorum. Propheta apud quem est somnium, narret somnium; & apud quem est verbum meum, loquatur verbum meum verè. Ecce sicut qui separat paleam à tritico, sic separo impios à justis, dicit Dominꝰ. Nonne omnia verba mea sunt fortia sicut ignis, dicit Dñs? & sicut malleus conterens petram? Propterea ecce ego mitto furoré meum super pseudoprophetas, dicit Dñs, qui suffurantur verba mea quisque à socio suo. *Ideo* ecce mitto furorem meum super pseudoprophetas, dicit Dominꝰ, qui prophetant juxta voluntatem cordis sui, & dicunt: Sic dicit [*Dominus.*] Ecce ego immitto furorem meum super *eos* qui prophetant *somnium falsum*, dicit Dominꝰ: & narrant & seducunt populū meum mendaciis suis & temeritate sua. Ego enim non misi eos, nec præcepi eis, qui nihil profuerunt populo huic, dicit Dominus. Et cùm interrogaverit te populꝰ hic, aut scriba, aut sacerdos, dicens; Quæ est prophetia in nomine Domini? Et dices ei: Talis est prophetia; Projiciam vos, dicit Dominus. Scriba enim & sacerdos, & populus qui dixerit, Prophetia in nomine Domini: & visitabo super virum illum, & super domum ejus. Sic dicetis unusquisque proximo suo, & unusquisque fratri suo: Quid respondit Dominus, & quid locutus est Dominus? Et prophetiam in nomine Domini non recordabimini amplius: quia prophetia erit viro qui stabilierit verba voluntatis ejus. Vos autem putatis irrita facere verba Dei viventis, Domini exercituū Dei nostri. Sic dices prophetæ: Quid respondit tibi Dominꝰ, aut quid locutꝰ est Dominꝰ? Et si, Prophetia in nomine Domini, dixeritis; propterea hæc dicit Dominꝰ: Pro eo quòd dixistis sermonem istum, Prophetia in nomine Domini, cùm misissem ad vos, dicendo, Ne dicatis, Prophetia *à conspectu* Domini. Propterea ecce ego immitto furorem meum, & derelinquam vos derelinquendo, & projiciam vos & civitatem quam dedi vobis, & patribus vestris, à conspectu Verbi mei, Et *dabo* super vos *opprobria sempiterna*, & cooperiet vos ignominia sempiterna, nunquam

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܐܝܬ ܒܦܘܡܗܘܢ ܕܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܢܒܝܘܬܐ ܕܓܠܬܐ. ܢܒܝܘܬܐ ܕܢܟܠܐ
ܕܠܒܗܘܢ.* ܕܡܬܚܫܒܝܢ ܠܡܛܥܝܘ ܠܥܡܝ ܒܫܡܝ. ܒܚܠܡܝܗܘܢ ܕܡܫܬܥܝܢ
ܠܚܒܪܗ. ܐܝܟ ܕܛܥܘ ܐܒܗܝܗܘܢ ܫܡܝ. ܘܦܠܚܘ ܠܒܥܠܐ.* ܢܒܝܐ ܕܚܙܐ ܚܠܡܐ ܢܫܬܥܐ
ܚܠܡܐ. ܘܕܦܬܓܡܝ ܠܘܬܗ. ܢܡܠܠ ܦܬܓܡܝ ܒܩܘܫܬܐ. ܡܢܐ ܚܠܛܝܬܘܢ ܬܒܢܐ
ܥܡ ܚܛܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.* ܗܐ ܦܬܓܡܝ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܢܦܩܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܝܟ
ܦܪܙܠܐ ܕܦܣܩ ܟܐܦܐ.* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܐܢܐ ܥܠ ܢܒܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܓܢܒܝܢ ܦܬܓܡܝ ܐܢܫ
ܡܢ ܚܒܪܗ.* ܗܐ ܐܢܐ ܥܠ ܢܒܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܡܥܒܕܝܢ ܠܫܢܝܗܘܢ ܘܐܡܪܝܢ. ܡܪܝܐ ܐܡܪ
ܗܟܢܐ.* ܗܐ ܐܢܐ ܥܠ ܢܒܝܐ ܕܚܙܝܢ ܚܠܡܐ ܕܓܠܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܡܫܬܥܝܢ ܠܗܘܢ. ܘܡܛܥܝܢ
ܠܥܡܝ ܒܕܓܠܘܬܗܘܢ. ܘܒܦܚܙܘܬܗܘܢ. ܘܐܢܐ ܠܐ ܦܩܕܬ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܫܕܪܬ ܐܢܘܢ. ܘܡܘܬܪ
ܡܘܬܪܝܢ ܠܥܡܐ ܗܢܐ.* ܘܡܐ ܕܢܫܐܠܟ ܥܡܐ ܗܢܐ ܐܘ ܢܒܝܐ ܐܘ ܟܗܢܐ: ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܟ
ܡܢܘ ܡܫܩܠܐ ܕܡܪܝܐ. ܐܡܪ ܠܗܘܢ ܐܝܟ. ܗܢܘ ܡܫܩܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܥܩܪܟܘܢ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ.* ܘܢܒܝܐ ܐܘ ܟܗܢܐ ܐܘ ܥܡܐ. ܕܢܐܡܪ ܡܫܩܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܬܦܪܥ ܡܢ ܓܒܪܐ ܗܘ
ܘܠܒܝܬܗ.* ܗܟܢܐ ܬܐܡܪܘܢ ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ ܘܓܒܪ ܠܐܚܘܗܝ. ܡܢܐ ܥܢܐ ܡܪܝܐ
ܘܡܢܐ ܡܠܠ ܡܪܝܐ.* ܘܡܫܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܬܬܕܟܪܘܢ ܬܘܒ. ܡܛܠ ܕܡܫܩܠܐ ܗܘܐ
ܠܓܒܪܐ ܕܡܠܬܗ. ܘܐܢܬܘܢ ܗܦܟܬܘܢ ܦܬܓܡܐ ܕܐܠܗܐ ܚܝܐ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ
ܐܠܗܢ.* ܗܟܢܐ ܬܐܡܪܘܢ ܠܢܒܝܐ. ܡܢܐ ܥܢܟ ܡܪܝܐ. ܘܡܢܐ ܡܠܠ ܡܪܝܐ.* ܘܐܢ
ܡܫܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܬܐܡܪܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܚܠܦ ܕܐܡܪܬܘܢ ܡܫܩܠܐ ܗܢܐ: ܘܫܠܚܬ
ܠܟܘܢ. ܕܠܐ ܬܐܡܪܘܢ.* ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܩܠ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܫܩܠܐ. ܘܫܕܐ ܐܢܐ ܠܟܘܢ. ܘܠܡܕܝܢܬܐ
ܕܝܗܒܬ ܠܟܘܢ ܘܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܡܢ ܩܕܡܝ.* ܘܐܬܠ ܥܠܝܟܘܢ ܚܣܕܐ ܕܠܥܠܡ
ܘܨܥܪܐ ܕܠܥܠܡ ܕܠܐ ܢܬܛܥܐ.

* Quouſque tandem erunt in ore falſorum prophetarum iſtorum prophetiæ falſæ, prophetiæ doli cordis eorum, 26
Quorum conſilium eſt nomine meo populum meum ſeducere per ſomnia ſua quæ narrant alter alteri; quemadmodum obliti ſunt patres eorum nominis mei, & coluerunt Baalem? 27
Propheta qui ſomnium videt, narret ſomnium: & is penes quem ſunt ſermones mei, referat ſermones meos fideliter: quorſum miſcetis paleam cum tritico, dicit Dominus? 28
Ecce ſermones mei velut ignis egrediuntur, ait Dñs; & veluti chalybs qui cædit lapidem: 29
Propterea en præſtò ſum contra prophetas, dicit Dominus, qui ſuffurantur ſermones meos alter ab altero. 30
Ecce me contra prophetas, dicit Domin⁹ qui pervertunt linguas ſuas ac dicunt, Dominus ita dicit. 31
Ecce me contra prophetas qui vident ſomnia falſa, dicit Dominus, eáque narrant, ſeducúntque populum meum falſitate & laſciviâ ſuâ: cùm ego non præceperim eis, nec miſerim eos, nihílq; proſint huic populo. 32
Cùm ergò poſtulaverit à te populus iſte, aut propheta, aut ſacerdos *aliquis*, dixerítq; tibi, Qualis eſt ſermo Domini? tu illis dicito, Is eſt ſermo Domini; Evellam vos, dicit Dominus. 33
In prophetam verò illum, ſive ſacerdotem, ſive populum qui dixerit, Sermo Domini; animadvertam in ejuſmodi hominem, & in domum ipſius. 34
Ita dicetis quiſque ſocio ſuo & quiſque fratri ſuo, Quid reſpondit Dominus? &, Quid locut⁹ eſt Dñs? 35
Sermonis autem Domini ne memineritis poſthac; nam ſermo, eſto homini prophetia ejus (*Domini*): vos autem pervertitis ſermones Dei vivi, Domini potentiſſimi, Dei noſtri. 36
Ita dicetis alicui, Quid reſpondit tibi Domin⁹, &, Quid locutus eſt Domin⁹? 37
Quòd ſi, Domini ſermo, dixeritis, ſic ait Domin⁹; Quia ſermonem hunc locuti eſtis, licèt mandâſſem vobis ne loqueremini; 38
Propterea tollendo vos tollam, tum projiciã vos unà cum civitate quam dedi vobis & patribus veſtris, à conſpectu meo: 39
Imponámque vobis opprobrium ſempiternum & ignominiam perpetuam quæ nunquam oblivioni tradetur. 40

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الى متى يكون قلب الانبياء الذين يتنبؤن بالكذب * وعند ما يتنبأون بارادات قلبهم *
* الظانين ان ينسوا ناموسي باحلامهم بما يخبر كل واحد قريبه * كما نسي اباوهم اسمي ببعال *
* النبي الذي له حلم فليتحدث بحلمه * والذي اليه كلمتي فليتحدث بكلمتي بالحق اين
التبن من الحنطة * هكذا كلماتي يقول الرب * اليس كلماتي مثل نار متوقدة يقول الرب *
ومثل معول يقطع الصخر * لاجل هذا ها انا الى الانبياء يقول الرب الاله الذين يسرقون
اقوالي كل واحد من قريبه * ها انا الى الانبياء الذين يخرجون نبوة لسان وينعسون نعاسهم *
* ها انا الى الانبياء الذين يتنبؤن احلاما كاذبة ويخبرون بها * واضلوا شعبي بكذبهم
وبضلالهم * وانا لم ارسلهم ولم امرهم ولم ينفعوا شعبي هذا منفعة * وان سالك هذا الشعب
او الكاهن او النبي ما وحي الرب فتقول لهم انتم وحي الرب * وانتقم من ذلك الانسان
ومن بيته * لان هكذا تقولون كل واحد لقريبه وكل واحد لاخيه * ماذا اجاب الرب وماذا
تكلم الرب * ووحي الرب لا يسمى ايضا * لان وحي الرب يكون للانسان كلمته * ولاجل
ماذا تكلم الرب الهنا * لاجل هذا هكذا يقول الرب الاله * من اجل انكم تقولون هذا
القول وحي الرب * وارسلت اليكم قايلا لا تقولوا وحي الرب * لاجل هذا ها انا اخذلكم
واستاصلكم وهذه المدينة التي اعطيتها لابايكم * وارفع عليكم تعييرا ابديا
واهانة ابدية هذه لا تنسى * لاجل هذا ها ايام تاتي يقول الرب * فلا يقولون ايضا
حي الرب الذي اصعد بني اسرايل من ارض مصر * لكن حي الرب الذي جمع كل
زرع اسرايل من ارض الجربياء ومن جميع الكور حيث اقصاهم هناك * وردهم الى ارضهم *

Quouſque cor prophetarum qui prophetant, hærebit falſitati? & quouſque prophetabunt voluntates animi ſui, 26
Putantes ſe oblivioni daturos legem meam per ſomnia ſua, et *per ea quæ alter alteri narrat; quemadmodum obliti fuerant, patres eorum nominis mei per Baalem?* 27
Propheta qui ſomnium habuerit, referat ſomnium ſuum; & is ad quem fuerit verbum meum, ſincerè loquatur verbum meum. Quænam eſt inter paleam & triticum proportio? eodem modo verba mea, dicit Dominus. 28
An non ſunt verba mea ſicut ignis ardens, dicit Dominus; & ſicut bipennis lapidem ſecans? 29
Idcircò ecce me ad prophetas, ait Dominus Deus; qui ſermones meos alter ab altero furantur. 30
Ecce me ad prophetas qui prophetiã linguæ proferunt, & ſomnia ſua effutiunt. 31
Ecce me ad prophetas qui ſomnia falſa prophetant, eaque narrantes populum meum ſuis mendaciis & errore ſuo ſeducunt: cùm ego nec miſerim eos, nec præceperim eis, nec ullam attulerint huic populo meo utilitatem. 32
Quòd ſi te interrogaverit hic populus, ſacerdos, aut propheta, quænam ſit revelatio Domini, dices eis; Vos eſtis revelatio Domini. 33
At vindictam ſumam ab ejuſmodi homine & à domo ipſius. 34
Nam ſic dicetis quilibet proximo ſuo & quilibet fratri ſuo, Quid reſpondit Dominus? &, Quid locutus eſt Dominus? 35
At revelatio Domini ne nominetur ampliùs: nam alioqui *revelatio Domini foret homini verbum ſuum:* 36
Et quorſum loqueretur Dominus Deus noſter? 37
Quare ſic ait Dominus Deus, Quandoquidem hujuſmodi ſermonẽ profertis, Revelatio Domini; cùm ad vos miſerim qui diceret; Ne dicatis, Revelatio Domini: 38
Idcircò ecce ego deſerã vos, & evellam vos cum hac urbe quam dederam patribus veſtris: 39
Et inferam vobis vituperium æternum deſpectúmque perpetuum, talem ut nunquam oblivioni tradatur. 40
vers. 7. *Idcircò ecce dies venient, dicit Dominus; quibus nequaquam dicent poſthac, Vivat Dominus qui eduxit filios Iſraelis de terra Ægypti;* 7
Sed vivat Dominus qui collegit totum ſemen Iſraelis de terra Aquilonari, & ex omnibus regionibus in quas ablegaverat eos, reduxitque eos in terram eorum. 8

ירמיה : כד כה

CAP. XXIV. כד

ante parata ficuum caniſtra duo ecce & ,Dominus me fecit Videre
1 הראני יהוה והנה שני דודאי תאנים מועדים לפני
Babel *regem* Nebuchadreſar *transferre* *poſt* ,Domini templum
היכל יהוה אחרי הגלות נבוכדראצר מלך־בבל את־
,Jehudah principes & ,Jehudah regem Jehojachim filium Jechonjahu
יכניהו בן־יהויקים מלך־יהודה ואת־שרי יהודה
.Babel eos adduxit & , Jeruſalaim de *incluſorem* & , *artificem* &
ואת־החרש ואת־המסגר מירושלם ויבאם בבל׃
caniſtrũ & : præcoquas ficus ſicut ,valde bonas ficus unum Caniſtrum
2 הדוד אחד תאנים טבות מאד כתאני הבכרות והדוד
.malitiam propter *comedentur* non quæ ,valde malas ficus *unum*
אחד תאנים רעות מאד אשר לא־תאכלנה מרע׃
: dixi Et ? Irmejahu *videns* tu Quid : me ad Dominus dixit Et
3 ויאמר יהוה אלי מה־אתה ראה ירמיהו ואמר
, valde malas , malas & : valde bonas ,bonas ficus : Ficus
תאנים התאנים הטבות טבות מאד והרעות רעות מאד
Domini verbum fuit Et .malitiam propter *comedentur* non quæ
4 אשר לא־תאכלנה מרע׃ ויהי דבר־יהוה
ficus ſicut , Iſrael Deus Dominus dixit Sic : dicendo ,me ad
5 אלי לאמר׃ כה־אמר יהוה אלהי ישראל כתאנים
,Jehudah tranſmigrationem faciam cognoſcere ſic : hæ bonæ
הטבות האלה כן־אכיר את־גלות יהודה
.bonum in Chaſdim terram iſto loco de emiſi quam
אשר שלחתי מן־המקום הזה ארץ כשדים לטובה׃
terram in eos reducam & ,bonum in eos ſuper meũ oculum ponam Et
6 ושמתי עיני עליהם לטובה והשבתים על־הארץ
.evellam non & ,eos plantabo & :deſtruam non & ,eos ædificabo & ; hanc
הזאת ובניתים ולא אהרס ונטעתים ולא אתוש׃
erunt & ,Dominus *ego* quòd , me *ſciendum ad* cor eis dabo Et
7 ונתתי להם לב לדעת אתי כי אני יהוה והיו־
revertentur quia : Deum in eis ero ego & ,populum in mihi
לי לעם ואנכי אהיה להם לאלהים כי־ישבו
comedentur non quæ , malæ ficus ſicut Et .ſuo corde toto in me ad
8 אלי בכל־לבם׃ וכתאנים הרעות אשר לא־תאכלנה
Sidchijahu dabo Sic : Dominus dixit ſic quia ,malitiã propter
מרע כי־כה אמר יהוה כן אתן את־צדקיהו
, Jeruſalaim reſiduum & ,ejus principes & , Jehudah regem
מלך־יהודה ואת־שריו ואת שארית ירושלם
.Ægypti terra in *habitantes* & , hac urbe in *remanentes*
הנשארים בארץ הזאת והישבים בארץ מצרים׃
; terræ regnis omnibus ,malum in ,commotionem in eos dabo Et
9 ונתתים לזועה לרעה לכל ממלכות הארץ
omnibus in maledictionem & ,*dicterium* in ,parabolam in & ,opprobrium in
לחרפה ולמשל לשנינה ולקללה בכל־
eis in mittam Et .*illuc* eos *expuli* *quò* locis
10 המקמות אשר־אדיחם שם׃ ושלחתי בם את־
deſuper eos conſumere ad uſque ,peſtem & , famem , gladium
החרב את־הרעב ואת־הדבר עד־תמם מעל
.eorum patribus & , eis dedi quam , *humo*
האדמה אשר־נתתי להם ולאבותיהם׃

CAP XXV. כה

, Jehudah populum omnem ſuper Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הדבר אשר־היה על־ירמיהו על־כל־עם יהודה
, Jehudah regis Joſijahu filii Jehojachim quarto anno in
בשנה הרבעית ליהויקים בן־יאשיהו מלך יהודה
.Babel regis Nebuchadreſar primus annus ipſe
היא השנה הראשנית לנבוכדראצר מלך בבל׃
populum omnem ad propheta Irmejahu eſt locutus Quod
2 אשר דבר ירמיהו הנביא על־כל־עם
: dicendo , Jeruſalaim habitatores univerſos ad & , Jehudah
יהודה ואל כל־ישבי ירושלם לאמר׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXIV.

1 Oſtendit mihi Dominus : & ecce duo calathi pleni ficis, poſiti ante templum Domini, poſtquàm tranſtulit Nabuchodonoſor rex Babylonis Jechoniam filium Joakim regem Juda, & principes ejus, & fabrum, & incluſorem, de Jeruſalem, & adduxit eos in Babylonem. 2 Calathus unus ficus bonas habebat nimis, ut ſolent ficus eſſe primi temporis: & calath⁹ unus ficus habebat malas nimis, quæ comedi non poterant, eò quòd eſſent malæ. 3 Et dixit Dominus ad me ; Quid tu vides, Jeremia ? Et dixi ; Ficus, ficus bonas, bonas valdè ; & malas, malas valdè, quæ comedi non poſſunt, eò quòd ſint malæ. 4 Et factum eſt verbum Domini ad me, dicens ; 5 Hæc dicit Dominus De⁹ Iſrael ; Sicut fic⁹ hæ bonæ : ſic cognoſcam tranſmigrationem Juda, quam emiſi de loco iſto in terram Chaldæorum, 6 in bonum. Et ponam oculos meos ſuper eos ad placandum, & reducam eos in terram hanc : & ædificabo eos, & non deſtruam : & plantabo eos, & non 7 evellam. Et dabo eis cor ut ſciant me, quia ego ſum Domin⁹: & erunt mihi in populum, & ego ero eis in Deum : quia revertentur ad me in toto corde 8 ſuo. Et ſicut ficus peſſimæ, quæ comedi non poſſunt, eò quòd ſint malæ : hæc dicit Dominus ; Sic dabo Sedeciam regem Juda, & principes ejus, & reliquos de Jeruſalem , qui remanſerunt in urbe hac, & qui habitant in ter- 9 ra Ægypti. Et dabo eos in vexationem , afflictionémque omnibus regnis terræ ; in opprobrium, & in parabolam, & in proverbium, & in maledictionem in univerſis locis, ad quæ 10 ejeci eos. Et mittam in eis gladium, & famem, & peſtem ; donec conſumantur de terra, quam dedi eis, & patribus eorum.

CAP. XXV.

1 Verbum, quod factum eſt ad Jeremiam de omni populo Juda, in anno quarto Joakim filii Joſiæ regis Juda, (ipſe eſt annus primus Nabuchodonoſor regis 2 Babylonis,) Quod locutus eſt Jeremias propheta ad omnem populum Juda, & ad univerſos habitatores Jeruſalem, dicens ;

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. κδ'.

1 (α) Ἔδειξέ μοι κύριος δύο καλάθους σύκων, κειμένους κατὰ πρόσωπον ναοῦ κυρίου, μετὰ τὸ ἀποικίσαι Ναβουχοδονόσορ βασιλέα Βαβυλῶνος τὸν Ἰεχονίαν υἱὸν Ἰωακεὶμ βασιλέα Ἰούδα, ϗ τοὺς ἄρχοντας (β), ϗ τοὺς τεχνίτας, ϗ τοὺς δεσμώτας, ϗ τοὺς πλουσίους ἐξ Ἱερουσαλὴμ, ϗ ἤγαγεν 2 αὐτοὺς εἰς Βαβυλῶνα. Ὁ κάλαθος ὁ εἷς σύκων χρηστῶν σφόδρα, ὡς τὰ σῦκα τὰ πρώϊμα· ϗ ὁ κάλαθος ὁ ἕτερος σύκων πονηρῶν σφόδρα, ἃ οὐ βρωθήσεται ἀπὸ 3 πονηρίας αὐτῶν. Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Τί σὺ ὁρᾷς Ἱερεμία; ϗ εἶπα, Σῦκα· (γ) σῦκα τὰ χρηστὰ, χρηστὰ λίαν· ϗ τὰ πονηρὰ, πονηρὰ λίαν, ἃ οὐ βρωθή- 4 σεται ἀπὸ πονηρίας αὐτῶν. Καὶ ἐγένετο 5 λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ὡς τὰ σῦκα τὰ χρηστὰ ταῦτα, οὕτως ἐπιγνώσομαι τοὺς ἀποικισθέντας (δ) Ἰουδαίους, οὓς (ε) ἐξαπέσταλκα ἐκ τοῦ τόπου τούτου εἰς 6 γῆν Χαλδαίων εἰς ἀγαθά. Καὶ στηριῶ τοὺς ὀφθαλμούς μου ἐπ' αὐτοὺς εἰς ἀγαθά. ϗ ἀποκαταστήσω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν ταύτην εἰς ἀγαθά· ϗ ἀνοικοδομήσω αὐτοὺς, ϗ οὐ μὴ καθελῶ αὐτοὺς, ϗ κατα- 7 φυτεύσω αὐτοὺς, ϗ οὐ μὴ ἐκτίλω. Καὶ δώσω αὐτοῖς καρδίαν τοῦ εἰδέναι αὐτοὺς ἐμὲ, ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, ϗ ἔσονταί μοι εἰς λαὸν, ϗ ἐγὼ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς θεὸν, ὅτι ἐπιστραφήσονται ἐπ' ἐμὲ ἐξ 8 ὅλης τῆς καρδίας αὐτῶν. Καὶ ὡς τὰ σῦκα τὰ πονηρὰ, ἃ οὐ (ζ) βρωθήσονται ἀπὸ πονηρίας αὐτῶν, τάδε λέγει κύριος, Οὕτως παραδώσω τὸν Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα, ϗ τοὺς μεγιστᾶνας αὐτοῦ, ϗ τὸ κατάλοιπον Ἱερουσαλὴμ τοὺς ὑπολελειμμένους ἐν τῇ (η) γῇ ταύτῃ ϗ τοὺς κατοικοῦντας ἐν 9 Αἰγύπτῳ. Καὶ δώσω αὐτοὺς εἰς διασκορπισμὸν εἰς πάσας τὰς βασιλείας τῆς γῆς, ϗ ἔσονται εἰς ὀνειδισμὸν, ϗ εἰς παραβολὴν, ϗ εἰς μῖσος, ϗ εἰς κατάραν ἐν 10 παντὶ τόπῳ οὗ ἐξῶσα αὐτοὺς ἐκεῖ. Καὶ ἀποστελῶ εἰς αὐτοὺς (θ) τὸν λιμὸν, ϗ τὸν θάνατον, ϗ τὴν μάχαιραν, ἕως ἂν ἐκλείπωσιν ἀπὸ τῆς γῆς, ἧς ἔδωκα αὐτοῖς.

MS.A. (α) Καὶ ἔδειξέν (β) βασιλέως Ἰούδα, ϗ (γ) ϗ τὰ σῦκα
Ἰούδα, (ε) ἐξαπέσταλκας (ζ) βρωθήσεται (η) πόλει (θ) τὸ

ΚΕΦ. κε'.

1 Ὁ ΛΟΓΟΣ Ὁ (α) ΓΕΝΟΜΕΝΟΣ ΠΡΟΣ ΙΕΡΕΜΙΑΝ ἐπὶ πάντα τὸν λαὸν Ἰούδα, ἐν τῷ ἔτει τῷ τετάρ- 2 τῳ τοῦ Ἰωακεὶμ υἱοῦ Ἰωσία βασιλέως Ἰούδα, Ὃν ἐλάλησε πρὸς πάντα τὸν λαὸν Ἰούδα, ϗ πρὸς τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλὴμ, λέγων,

MS.A. (α) ΓΕΝΑΜΕΝΟΣ

CAP. XXIV.

Oſtendit mihi Dominus duos calathos ficuum poſitos ad faciem templi Domini; poſtquam tranſtulit Nabuchodonoſor rex Babylonis Jechoniam filium Joacim regem Juda, & principes, & artifices, & vinctos, & divites ex Hieruſalem, & adduxit eos in Babylonem. Calathus unus ficuum bonarum valdè, ſicut ficus primi temporis; & calathus alter ficuum malarum valdè, quæ non comedentur præ malitia ſua. Et dixit Dominus ad me; Quid tu vides, Hieremia? Et dixi, Ficus, ficus bonas, bonas nimis: & malas, malas nimis, quæ non comedentur præ malitia ſua. Et factum eſt ad me verbum Domini, dicens; Hæc dicit Dominus Deus Iſrael; Sicut ficus hæ bonæ, ſic cognoſcam Judæos, qui tranſmigrarunt, quos emiſi de loco iſto in terram Chaldæorum, in bona. Et firmabo oculos meos ſuper eos in bona: & reſtituam eos in terram hanc in bona: & reædificabo eos, & non deſtruam eos: & plantabo eos, & non evellam. Et dabo eis cor, ut ſciant me; quia ego ſum Dominus: & erunt mihi in populum: & ego ero eis in Deum: quia revertentur ad me ex toto corde ſuo. Et ſicut ficus peſſimæ, quæ non comedentur præ malitia ſua, hæc dicit Dominus; Sic tradam Sedeciam regem Juda, & principes ejus, & reſiduum Hieruſalem, qui remanſerunt in terra hac, & qui habitant in Ægypto. Et dabo eos in diſperſionem in omnia regna terræ: & erunt in opprobrium, et in parabolam, et in odium, et in maledictionem in omni loco, quò ejeci eos illuc. Et mittam in eos famem, et mortem, et gladium; donec deficiant de terra, quam dedi (a) eis.

CAP. XXV.

Verbum, quod factum eſt ad Hieremiam ſuper omnem populum (a) Juda, in anno quarto Joacim filii Joſiæ regis Juda. Quod loquutus eſt ad omnem populum Juda, et ad habitantes Hieruſalem, dicens;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כד

1 אחזיני יי והא תרין סלי תינין מחתין מקדם היכלא דיי בתר דאגלי נבוכד נצר מלכא
דבבל ית יכניה בר יהויקים מלך שבטא דבית יהודה וית רברבי יהודה וית אומניא
2 וית תרעיא מירושלם ואובילנון לבבל׃ סלא חדא תינין טבא לחדא כתינין בכירין
3 וסלא חד תינין בישין לחדא ודבישין בישן לחדא דלא מתאכלן מבישו׃ ואמר יי לי
מה את חזי ירמיה ואמרית תיניא טבתא טבן לחדא ודבישן בישן לחדא דלא
4 5 מתאכלין מבישו׃ והוה פתגם נבואה מקדם יי עמי למימר׃ כדנן אמר יי אלהא
דישראל כתיניא טבתא האלן כן אשתמודע ית גלות יהודה דאגליתי מן אתרא הדין
6 לארע כסדאי לטבתא׃ ואשוי מימרי עליהון לטבא ואתיבנון לארעא הדא ואבננון
7 ולא אפגר ואקימנון ולא אטלטל׃ ואתן להון לבא למידע דחלתי ארי אנא יי ויהון
8 קדמי לעם ואנא אהוי להון לאלה ארי יתובון לפולחני בכל לבהון׃ וכתיניא בישתא
דלא מתאכלא מבישו ארי כדנן אמר יי כן אתן ית צדקיה מלך שבטא דבית יהודה
וית רברבוהי וית שארא דירושלם דאשתארו בארעא הדא ודיתבין בארעא דמצרים׃
9 ואתננון לזיע ולבישא לכל מלכות ארעא לחסודין ולמתל ולשועי וללוטא בכל
10 אתריא דאגלנון לתמן׃ ואגרי בהון ית דקטלין בחרבא בכפנא ובמותא עד דיסופון
מעל ארעא דיהבית להון ולאבהתהון׃

כה

1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה על כל עמא דבית יהודה בשתא רביעיתא ליהויקים
בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה היא שתא קדמיתא לנבוכד נצר מלכא דבבל׃
2 דאתנבי ירמיה נביא על כל עמא דבית יהודה ועל כל יתבי ירושלם למימר׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXIV.

Oſtendit mihi Dñs ; & ecce duo calathi pleni ficubus poſiti erant coram templo Dñi, poſtquam tranſtulit Nabuchodonoſor rex Babylonis Jechoniam filium Joachim, regem trib⁹ dom⁹ Juda, & principes Juda, & artifices, & janitores de Jeruſalem, & adduxit eos in Babylonem. Calath⁹ unus habebat ficus bonas valde, ſicut ficus primitiarum : & calathus alter ficus valde malas habebat ; quæ *vero malæ erant, valde malæ erant ut non poſſent* comedi præ malitia. Et dixit Dñs ad me : Quid tu vides Jeremia? Et dixi : Ficus, ficus bonas, bonas valdè ; & malas, malas valdè, quæ comedi non poſſunt præ malitia. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens : Hæc dicit Dñs Deus Iſrael : Sicut ficus bonæ iſtæ sic cognoſcam tranſmigrationem Juda, quam tranſmigrare feci à loco iſto in terram Chaldæorum in bonum. Et ponam ſuper eos verbum meum in bonum : & reducam eos in terram hanc, & ædificabo eos & non deſtruam, & ſtabiliam eos, & non transferam eos. Et dabo eis cor ut ſciant timorem mei ; quia ego Dñs. Et erunt coram me in populum, & ego ero eis in Deum ; quia convertentur ad cultum meum in toto corde ſuo. Et ſicut fic⁹ malæ quæ comedi non poſſunt præ malitia; hæc enim dicit Dñs: Sic dabo Sedechiam regem tribus domus Juda, & principes ejus, & reliquias Jeruſalem, quæ remanſerunt in terra hac, & quæ habitant in terra Ægypti. Et dabo eos in commotionem, & in malum omnibus regnis terræ ; in opprobria & in parabolam, in fabulam, & in maledictionem in omnibus locis, ad quæ tranſmigrare eos feci. Et immittam in eos occidentes gladio & *fame*, & *peſte*, donec conſumantur de terra, quam dedi eis & patrib⁹ eorum.

CAP. XXV.

Verbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam ſuper omnem populum domus Juda in anno quarto Joachim filii Joſiæ regis tribus domus Juda, ipſe eſt annus primus Nabuchodonoſor regis Babylonis. Quod prophetavit Jeremias propheta ſuper omnem populum domus Juda, & ſuper omnes habitatores Jeruſalem, dicens :

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܕ * ܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ ܬܪܬܝܢ ܡܦܣܬܐ ܕܬܐܢܐ ܣܝܡܢ ܩܕܡ
ܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܡܢ ܒܬܪ ܕܫܒܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ: ܠܝܘܟܢܝܐ ܒܪ ܝܘܝܩܝܡ
ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܠܐܘܡܢܐ ܘܠܓܢܒܪܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ: ܘܐܘܒܠ ܐܢܘܢ ܠܒܒܠ. * ܘܡܦܣܬܐ
ܚܕܐ ܕܬܐܢܐ ܕܛܒܢ ܛܒ. ܐܝܟ ܬܐܢܐ ܒܟܘܪܐ. ܘܡܦܣܬܐ ܐܚܪܬܐ ܕܬܐܢܐ ܕܒܝܫܢ ܛܒ. ܕܠܐ ܡܬܐܟܠܢ
ܡܢ ܒܝܫܘܬܗܝܢ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܡܢܐ ܚܙܐ ܐܢܬ ܐܪܡܝܐ. ܘܐܡܪܬ. ܬܐܢܐ. ܬܐܢܐ ܕܛܒܢ ܛܒ
ܛܒ. ܘܕܒܝܫܢ ܒܝܫܢ ܛܒ. ܕܠܐ ܡܬܐܟܠܢ ܡܢ ܒܝܫܘܬܗܝܢ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ
ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܐܝܟ ܬܐܢܐ ܛܒܬܐ ܗܠܝܢ. ܗܟܢܐ
ܐܫܬܘܕܥ ܠܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܫܕܪܬ ܡܢ ܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܠܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܠܛܒܬܐ. * ܘܐܣܝܡ
ܥܝܢܝ ܥܠܝܗܘܢ ܠܛܒܬܐ ܘܠܐ ܠܒܝܫܬܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܐܒܢܐ
ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܐܣܚܘܦ. ܘܐܢܨܒ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܐܥܩܘܪ. * ܘܐܬܠ ܠܗܘܢ ܠܒܐ ܕܢܕܥܘܢܢܝ ܕܐܢܐ
ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܐܠܗܐ. ܟܕ ܢܬܘܒܘܢ ܠܘܬܝ ܡܢ ܟܠܗ
ܠܒܗܘܢ. * ܘܐܝܟ ܬܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܕܠܐ ܡܬܐܟܠܢ ܡܢ ܒܝܫܘܬܗܝܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܟܢܐ
ܐܫܠܡܝܘܗܝ ܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܠܪܘܪܒܢܘܗܝ. ܘܠܫܪܟܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܐܪܥܐ
ܗܕܐ. ܘܕܝܬܒܝܢ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܐܬܠ ܐܢܘܢ ܠܙܘܥܐ ܘܠܒܝܫܬܐ. ܒܟܠ
ܡܠܟܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܠܚܣܕܐ ܘܠܡܬܠܐ ܘܠܡܘܒܕܢܐ ܘܠܠܘܛܬܐ. ܒܟܠܗܘܢ ܐܬܪܘܬܐ
ܕܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܬܡܢ. * ܘܐܫܕܪ ܒܗܘܢ ܚܪܒܐ ܘܟܦܢܐ ܘܡܘܬܢܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܣܘܦܘܢ
ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐܒܗܝܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܗ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܥܠ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܒܫܢܬܐ ܕܐܪܒܥ ܕܝܘܝܩܝܡ ܒܪ
ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܝ ܗܝ ܫܢܬܐ ܩܕܡܝܬܐ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܕܡܠܠ ܐܪܡܝܐ
ܢܒܝܐ ܥܠ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܟܕ ܐܡܪ.

CAP. XXIV.

Oſtendit mihi Dominus duas ficuum fiſcellas 1
poſitas ante templum Domini, poſtquam captivos duxiſſet Nebuchadnoſar rex
Babelis Jochaniam filium Jojacimi regis Judæ, & artifices, atque milites de Jeruſalem,
& perduxiſſet eos in Babelem. Fiſcella una 2
erat ficuum optimarum, quales ſunt ficus
præcoces: altera verò fiſcella ficuum peſſimarum, quæ comedi nequibant præ ſua pravitate.
Tum dixit mihi Dominus, Quid vidiſti 3
Jeremia? Reſpondi, Ficus; quarum bonæ,
optimæ ſunt; malæ verò, peſſimæ, ita ut
comedi nequeant præ ſua pravitate. Deinde 4
factus eſt ad me ſermo Domini, dicendo; Sic 5
dicit Dominus Deus Iſraelis, Ut ficus bonas
iſtas, ita captivitatem Judæ quam ex hoc loco
amandavi in terram Chaldæorum, in bonum
recognoſcam: Adjiciam oculos meos ad illos 6
in bonum, non in malum, dicit Dominus: reducam
eos in locum iſtum: ædificabo eos,
non demoliar: plantabo eos, non evellam.
Inditurus enim ſum illis cor ad cognoſcendum 7
me, quòd ego ſim Dominus: eruntque
mihi populus, & ego ero illis Deus: quum
reverſi fuerint ad me ex toto corde ſuo. E 8
contra, ut ficus malas quæ præ ſua pravitate
comedi nequeunt, (ita dicit Dominus) ita
tradam Sedeciam regem Judæ, principes ejus,
& reliquum populũ, tam eos qui remanent in
in hac civitate, quam qui cõmorantur in terra
Ægypti: Et exponam eos motui, tranſmigrationi, 9
& malo inter omnia regna terræ;
ignominiæ & fabulæ, vituperio, & maledictioni
in cunctis locis per quæ diſperſero eos:
Mittámq; poſt eos gladium, famẽ, ac peſtem, 10
donec abſumam eos de terra quam dedi ipſis
& patribus eorum.

CAP. XXV.

SErmo qui fuit ad Jeremiam de toto populo 1
Judæ, anno quarto Jojacimi filii Joſiæ regis
Judæ; (is eſt annus primus Nebuchadnoſaris
regis Babelis) Quem locutus eſt Jeremia 2
propheta apud univerſum populum Judæ, &
apud omnes cives Jeroſolymæ, dicendo;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الرابع والعشرون * الاصحاح الخامس عشر *

* واراني الرب سلتين موضوعتين لوجه هيكل الرب من بعد ما سبي بختنصر ملك بابل
يوحانيا بن يواقيم ملك يهودا ورؤساء ملك يهودا والصناع والاسري والاغنياء من ايروشليم
وساقهم الي بابل * السلة الواحدة تينا طيبا جدا مثل التين البدري الصبحي والسلة
الثانية تينا رديا جدا لا يوكل من رداءته * وقال الرب لي ماذا تري انت يا ارميا فقلت
تينا والتين الطيب طيبا جدا والتين الردي ردي جدا لا يوكل من رداءته * وكان
قول الرب لي قايلا * هكذا يقول الرب اله اسرايل مثل هذا التين الطيب هكذا اعرف
الذين سبيوا من يهودا الذين ارسلتهم من هذا الموضع الي ارض الكلدانيين للخيرات
* واثبت عيني عليهم للخيرات واردهم الي هذه الارض للخيرات وابنيهم ولا اهدمهم واغرسهم
ولا اقلعهم * واعطيهم قلبا ليعرفوني اني انا الرب ويكونون لي شعبا واكون انا لهم الها
لانهم يرجعون الي من كل قلبهم * ومثل هذا التين الردي الذي لا يوكل من رداءته
هكذا يقول الرب هكذا اسلم صدقيا ملك يهودا وعظماءه وبقية اسرايل المتبقين
في هذه المدينة والسكان بمصر * وادفعهم للتفرق في كل مملكات الارض * ويصيرون للتعيير
والمثل وللبغضة وللعنة بكل موضع حيث اقصيهم هناك * وارسل عليهم الجوع والموت
والسيف * الي ان يفنوا من الارض التي اعطيتها لهم *

* الفصل الخامس والعشرون *

* القول الصاير الي ارميا على كل شعب يهودا في السنة الرابعة ليواقيم بن يوشيا ملك يهودا
* الذي تكلم به مع كل يهودا ومع كل السكان بايروشليم قايلا *

CAP. XXIV.

Textus decimus quintus.

DEinde oſtendit mihi Dominus duos 1
*calathos expoſitos faciei templi Domini,
poſtquam captivum duxit Bochtonaſſar
rex Babelis Jochaniam Joacimi filium
regem Judæ unà cum principibus
regis Judæ, opificibus, mancipiis, atque divitibus
è Jeruſalem, & abduxit eos in
Babelem. Calathus unus* continebat *ficus* 2
*jucundiſſimas, quales ſunt ficus antelucanæ
matutinæ: calathus autem ſecundus,
ficus admodum ingratas, ob pravitatem
ſuam incomeſtibiles. Dicenti autem* 3
*Domino mihi, Quid vides tu O Jeremia?
Dixi, Ficus; ac bonas quidem ficus,
jucundiſſimas; malas autem ficus,
ingratiſſimas, ob pravitatem ſuam incomeſtibiles.
Tum fuit ad me ſermo Domini* 4
dicentis; Sic ait Dominus Deus Iſraelis; 5
*Ut has ficus jucundas, ita illos
qui captivi abducti ſunt ex Juda, quos
ablegavi ex hoc loco in terram Chaldæorum,
ad bona recognoſcam: Et firmos* 6
*habebo oculos meos ſuper illos in bona:
reducam illos in terram iſtam in bona: ædificabo
illos, ac non deſtruam: plantabo,
ac non evellam: Et dabo illis cor ut cog-* 7
*noſcant me, me eſſe Dominũ: & erunt mihi
populus, eróque ego ipſis Deus; quia reverſuri
ſunt ad me ex toto corde ſuo.
Quemadmodum verò has ficus malas,* 8
*quæ comedi nequeunt ob pravitatẽ ſuam,
(ſic ait Dominus) ita tradam Sedeciam
regem Judæ, principes ejus, & reliquias
Iſraelitarum remanentium hac in urbe &
habitantium in Ægypto; Tradam, inquam,* 9
*eos diſperſioni in omnia regna terræ;
& exponentur infamiæ, proverbio,
odio, & maledictioni in omni loco in
quem diſperdam illos: Et mittam in* 10
*eos famem, mortem, & gladium, quoad
conſumantur de terra quam dedi eis.*

CAP. XXV.

SErmo habitus ad Jeremiam de 1
univerſo populo Judæ, anno quarto
Joacimi filii Joſiæ regis Judæ,
Quem retulit univerſis Judæis, 2
& omnibus habitantibus in Jeruſalem,
dicens;

ירמיה: כה

, Jehudah regis Amon filii Josijahu anno decimo tertio A
3 מן־שלש עשרה שנה ליאשיהו בן־אמון מלך יהודה
fuit , anno vigesimo & tertio jam , hanc diem ad usque &
ועד ׀ היום הזה זה שלש ועשרים שנה היה
, surgendo manè , vos ad sum locutus & , me ad Domini verbum
דבר־יהוה אלי ואדבר אליכם אשכים
vos ad Dominus misit Et .audistis non & , loquendo &
4 ודבר ולא שמעתם: ושלח יהוה אליכם
non & , mittendo & ,surgendo mane , prophetas suos servos omnes
את־כל־עבדיו הנביאים השכם ושלח ולא
:*dicendum Ad*.audiendum ad vestram aurem inclinâstis neque , audistis
5 שמעתם ולא־הטיתם את־אזנכם לשמע: לאמר
,vestrorum *studiorū* malitia à & ,mala sua via à quisque nunc Revertimini
שבו־נא איש מדרכו הרעה ומרע מעלליכם
, vobis Dominus dedit quam *humum* super habitabitis &
ושבו על־האדמה אשר נתן יהוה לכם
ambuletis ne Et .seculum in usque &,seculo à , vestris patribus &
6 ולאבתיכם למן־עולם ועד־עולם: ואל־תלכו
: eis vos incurvetis & , eis *serviendum ad* alienos Deos post
אחרי אלהים אחרים לעבדם ולהשתחות להם
non & , vestrarum manuum *facto in* me faciatis irasci ne &
ולא־תכעיסו אותי במעשה ידיכם ולא
, Dominus dixit , *me ad* *audivistis* non Et .vobis malefaciam
7 ארע לכם: ולא־שמעתם אלי נאם־יהוה
malum in vestrarum manuum *opere in* me faceretis irasci ut
למען הכעסוני במעשה ידיכם לרע
quod eo Pro : exercituum Dominus dixit sic Propterea .vobis
8 לכם: לכן כה אמר יהוה צבאות יען אשר
assumam & , *mittens* ego Ecce : *mea verba* *audivistis* non
9 לא־שמעתם את־דברי: הנני שלח ולקחתי את־
Nebuchadresar ad & , Dominus ait ,Aquilonis *familias* universas
כל־משפחות צפון נאם־יהוה ואל־נבוכדראצר
,istam terram ad eos adducam & , meum servum Babel regem
מלך־בבל עבדי והבאתים על־הארץ הזאת
: *circum* istas *gentes* omnes ad & , ejus habitatores ad &
ועל־ישביה ועל כל־הגוים האלה סביב
solitudines in &,sibilū in & ,stuporē in eos ponā &,eos *internecione delebo* &
והחרמתים ושמתים לשמה ולשרקה ולחרבות
, lætitiæ vocem & , gaudii vocem eis ex perdere faciam Et .*seculi*
10 עולם: והאבדתי מהם קול ששון וקול שמחה
.lucernæ lumen & ,molarum vocem , sponsæ vocem & , sponsi vocem
קול חתן וקול כלה קול רחים ואור נר:
servient & ,stuporem in ,solitudinē in hæc terra universa erit Et
11 והיתה כל־הארץ הזאת לחרבה לשמה ועבדו
erit Et .annis septuaginta Babel regi istæ gentes
12 הגוים האלה את־מלך בבל שבעים שנה: והיה
super & ,Babel regem *super* visitabo ,*annos* septuaginta *implere secundum*
כמלאות שבעים שנה אפקד על־מלך־בבל ועל־
terram *super* & ,eorum iniquitatem,Dominus dixit , ipsam gentem
הגוי ההוא נאם־יהוה את־עונם ועל־ארץ
adducam Et .*seculi* solitudines in illam ponam & : Chasdim
13 כשדים ושמתי אתו לשממות עולם: והבאותי
; eam *super* sum locutus quæ mea verba omnia ipsam terram super
על־הארץ ההיא את־כל־דברי אשר־דברתי עליה
Irmejahu prophetavit quod , hoc libro in scriptum omne
את כל־הכתוב בספר הזה אשר־נבא ירמיהו
.gentes omnes adversum
על־כל־הגוים:

Versio VULG. LAT.

3 A tertio decimo anno Josiæ filii Ammon regis Juda usque ad diem hanc, iste tertius & vigesimus annus; factum est verbum Domini ad me, & locutus sum ad vos de nocte consurgens, & 4 loquens: & non audîstis. Et misit Dominus ad vos omnes servos suos prophetas, consurgens diluculò, mitténsque: & non audîstis, neque inclinâstis aures 5 vestras ut audiretis, Cùm diceret; Revertimini unusquisque à via sua mala, & à pessimis cogitationibus vestris: & habitabitis in terra, quam dedit Dominus vobis, & patribus vestris, à se6culo & usque in seculum. Et nolite ire post deos alienos, ut serviatis eis, adoretísque eos: neque me ad iracundiam provocetis in operibus manuum vestrarum, & non affligam vos. 7 Et non audîstis me, dicit Dominus, ut me ad iracundiam provocaretis in operibus manuum vestrarum, in malum vestrum. 8 Propterea hæc dicit Dominus exercituum; Pro eo quòd non 9 audîstis verba mea: Ecce ego mittam, & assumam universas cognationes Aquilonis, ait Dominus, & Nabuchodonosor regem Babylonis servum meum: & adducam eos super terram istam, & super habitatores ejus, & super omnes nationes, quæ in circuitu illius sunt: & interficiam eos, & ponam eos in stuporem & sibilum, & in solitudi10nes sempiternas. Perdámque ex eis vocem gaudii, & vocem lætitiæ, vocem sponsi, & vocem sponsæ, vocem molæ, & lumen 11 lucernæ. Et erit universa terra hæc in solitudinem, & in stuporem: & servient omnes gentes istæ regi Babylonis septua12ginta annis. Cúmque impleti fuerint septuaginta anni, visitabo super regem Babylonis, & super gentem illam, dicit Dominus, iniquitatem eorum, & super terram Chaldæorum: & ponam illam in solitudines sempi13ternas. Et adducam super terram illam, omnia verba mea, quæ locutus sum contra eam, omne quod scriptum est in libro isto, quæcunque prophetavit Jeremias adversùm omnes gentes:

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

3 Ἐν τρισκαιδεκάτῳ ἔτει (β) Ἰωσία, υἱοῦ Ἀμὼς, βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης εἴκοσι καὶ τρία ἔτη, καὶ ἐλάλησα πρὸς ὑμᾶς 4 ὀρθρίζων, καὶ λέγων, Καὶ ἀπέστελλον πρὸς ὑμᾶς τοὺς δούλους μου τοὺς προφήτας, ὄρθρου ἀποστέλλων, καὶ οὐκ εἰσηκούσατε, καὶ οὐ προσέχετε 5 τοῖς ὠσὶν ὑμῶν, Λέγων, Ἀποστράφητε ἕκαστος ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, καὶ ἀπὸ τῶν πονηρῶν ἐπιτηδευμάτων ὑμῶν, καὶ κατοικήσετε ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς ἔδωκα ὑμῖν καὶ τοῖς πατράσιν ὑμῶν, ἀπ' 6 αἰῶνος καὶ ἕως (γ) αἰῶνος. Μὴ πορεύεσθε ὀπίσω θεῶν ἀλλοτρίων, τοῦ δουλεύειν αὐτοῖς, καὶ τοῦ προσκυνεῖν αὐτοῖς, ὅπως μὴ παροργίζητέ με ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν 7 ὑμῶν, τοῦ κακῶσαι ὑμᾶς. Καὶ οὐκ 8 (δ) ἠκούσατέ μου. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἐπειδὴ οὐκ ἐπιστεύ9σατε τοῖς λόγοις μου, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω, καὶ λήψομαι (ε) πατριὰν ἀπὸ Βοῤῥᾶ, καὶ ἄξω αὐτοὺς ἐπὶ τὴν γῆν ταύτην, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας αὐτὴν, καὶ ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη τὰ κύκλῳ αὐτῆς, (ζ) καὶ ἐξερημώσω αὐτοὺς, καὶ δώσω αὐτοὺς εἰς ἀφανισμὸν, καὶ εἰς συριγμὸν, 10 καὶ εἰς ὀνειδισμὸν αἰώνιον. Καὶ ἀπολῶ ἀπ' αὐτῶν φωνὴν (η) χαρᾶς, καὶ φωνὴν (θ) εὐφροσύνης, φωνὴν νυμφίου, καὶ φωνὴν νύμφης, ὀσμὴν 11 μύρου, καὶ φῶς λύχνου. Καὶ ἔσται πᾶσα ἡ γῆ εἰς ἀφανισμὸν, καὶ δουλεύσουσιν ἐν τοῖς ἔθνεσιν 12 ἑβδομήκοντα ἔτη. Καὶ ἐν τῷ (ι) πληρωθῆναι τὰ ἑβδομήκοντα ἔτη, ἐκδικήσω τὸ ἔθνος ἐκεῖνο, (κ) καὶ θήσομαι αὐτοὺς εἰς ἀφανισμὸν 13 αἰώνιον, Καὶ (λ) ἐπάξω ἐπὶ τὴν γῆν ἐκείνην (μ) πάντας τοὺς λόγους μου, οὓς ἐλάλησα κατ' αὐτῆς, πάντα τὰ γεγραμμένα ἐν τῷ βιβλίῳ τούτῳ·

In tertiodecimo anno Josiæ, filii Amos, regis Juda, & usque ad diem hanc, viginti & tres (b) anni: & loquutus sum ad vos ante lucem surgens, & dicens; Et mittebam ad vos servos meos prophetas, diluculo mittens, (& non exaudistis, & non attendebatis auribus vestris;) Dicens; Avertimini unusquisque à via sua pessima, & à pessimis studiis vestris: & habitabitis super terram quam dedi vobis, & patribus vestris, à seculo, & usque in seculum. Nolite ire post deos alienos, ut serviatis eis, adoretisque eos; ne me ad iracundiam provocetis in operibus manuum vestrarum, ad affligendum vos: Et non audîstis me. Propterea hæc dicit Dominus; Quoniam non credidistis verbis meis; Ecce ego mitto, & sumam cognationem ab Aquilone: et adducam eos super terram istam, & super habitatores ejus, & super omnes nationes, quæ in circuitu illius sunt: & desolabo eos, & dabo eos in perditionem, & in sibilum, & in opprobrium sempiternum: Et perdam ex eis vocem gaudii, & vocem lætitiæ, vocem sponsi, & vocem sponsæ, (c) odorem unguenti, et lumen lucernæ. Et erit universa terra in solitudinem: et servient in gentibus annos septuaginta. Cùmque impleti fuerint septuaginta anni; ulciscar gentem illam, et ponam eos in perditionem sempiternam: Et inducam super terram illam omnia verba mea, quæ loquutus sum contra eam, omnia quæ scripta sunt in libro isto.

MS.A. (β) τοῦ βασιλέως (γ) τοῦ αἰῶνος. (δ) ἠκούσατε (ε) τὴν πατριὰν (ζ) ἐξερημώσω (η) εὐφροσύνης, (θ) χαρᾶς, (ι) συμπληρωθῆναι (κ) φησὶν κύριος, καὶ (λ) *παράξω (μ) ἅπαντας

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 מן תלת עשרי שנין ליאשיה בר אמון מלך שבטא דבית יהודה ועד יומא
הדין דנן עשרין ותלת שנין הוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי ומללית עמכון
4 מקדם וממלל ולא קבלתון: ושלח יי לותכון ית כל עבדוהי נביאיא מקדם ומשלח
5 ולא קבלתון ולא ארכנתון ית אודנכון לקבלא: למימר תובו כען גבר מאורחיה
בישתא ומבישות עובדיכון ותיבו על ארעא דיהב יי לכון ולאבהתכון למן עלמא
6 ועד עלמא: ולא תהכון בתר טעות עממיא למפלחהן ולמסגד להן ולא תרגזון
7 קדמי בעובדי ידיכון ולא אבאש לכון: ולא קבלתון למימרי אמר יי בדיל דלא
8 לארגזא קדמי בעובדי ידיכון לאבאשא לכון: בכן כדנן אמר יי צבאות חלף
9 דלא קבלתון ית פתגמי: הא אנא שלח ואדבר ית כל מלכות צפונא אמר יי
ולנבוכד נצר מלכא דבבל עבדי ואיתנון על ארעא הדא ועל יתבהא ועל כל
עממיא האלין סחור סחור ואגמרנון ואשוינון לצדו ולאשתממו ולחרבת עלם:
10 ואובד מנהון קל ביע וקל חדוא וקל חתנין וקל כלן קל סיען דמשבחין בנהור
11 בוצין: ותהי כל ארעא הדא לחרבא לצדו ויפלחון עממיא האלין ית מלכא
12 דבבל שבעין שנין: ויהי כמשלם שבעין שנין אסער על מלכא דבבל ועל עמא
13 ההוא אמר יי ית חוביהון ועל ארע כסדאי ואשוי יתיה לצדות עלם: ואיתי על
ארעא ההיא ית כל פתגמיא דגזרית עלה ית כל דכתיב בספרא הדין דאתנבי
ירמיה על כל עממיא:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

A tertio decimo anno Josiæ filii Amon regis tribus domus Juda, & usque in diem hanc, iste est vigesimus & tertius annus; factum est verbum prophetiæ à facie Domini ad me, & locutus sum vobiscum manè consurgens & loquens, & non obedîstis. Et misit Dominus ad vos omnes servos suos prophetas, manè consurgens & mittens, & non obedîstis, nec inclinâstis aures vestras ut obediretis. Dicendo: Convertimini nunc unusquisque à via sua mala, & à malitia operum vestrorum, & habitate in terra quam dedit Dominus vobis, & patribus vestris à seculo & usque in seculum. Et non ambuletis post idola populorum, ut serviatis eis & adoretis ea, nec irritetis me operibus manuum vestrarum, & non malefaciam vobis. Et non obedîstis verbo meo, dicit Dominus, ut non irritaretis me operibus manuum vestrarum ad malefaciendum vobis. Propterea hæc dicit Dñs exercituum: Pro eo quòd non suscepistis verba mea; Ecce ego mittam, & accipiam omnia regna Aquilonis, dicit Dominus, & Nabuchodonosor regem Babylonis servum meum, & adducam eos super terram istam, & super habitatores ejus, & super omnes populos istos per circuitum, & excîdam eos, & ponam eos in vastitatem, & stuporem, & in desolationes perpetuas. Et perdam ex eis vocem gaudii & vocem lætitiæ, vocem sponsorum & vocem sponsarum, & vocem cœtuum cantantium ad lumen lucernarum. Et erit omnis terra hæc in desolationem & in vastitatem. Et servient populi isti regi Babylonis septuaginta annis. Et erit cùm impleti fuerint septuaginta anni, visitabo super regem Babylonis, & super populum illum peccata eorum, & super terram Chaldæorum, dicit Dominus: & ponam illam in vastitates sempiternas. Et adducam super terram illam omnia verba quæ decrevi contra eam, omne quod scriptum est in libro isto, quod prophetavit Jeremias contra omnes populos.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܡܢ ܠܬܠܬܥܣܪܐ ܫܢܝܢ ܠܝܘܫܝܐ ܒܪ ܐܡܘܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ: ܘܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ ܗܢܐ. ܗܐ
ܥܣܪܝܢ ܘܬܠܬ ܫܢܝܢ ܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܠܠܬ ܥܡܟܘܢ. ܩܕܡܬ ܡܠܠܬ
ܘܡܠܠܬ ܥܡܟܘܢ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ. * ܘܫܕܪ ܡܪܝܐ ܠܘܬܟܘܢ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܢܒܝܐ. ܘܠܐ
ܐܪܟܢܬܘܢ ܐܕܢܝܟܘܢ ܠܡܫܡܥ. ܘܠܡܐܡܪ. * ܬܘܒܘ ܗܫܐ ܐܢܫ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܢ ܒܝܫܘܬ
ܥܒܕܝܟܘܢ. ܘܬܬܒܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܒ ܡܪܝܐ ܠܟܘܢ ܘܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܡܢ ܥܠܡ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ.
* ܘܠܐ ܬܐܙܠܘܢ ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܠܡܦܠܚ ܐܢܘܢ ܘܠܡܣܓܕ ܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܬܪܓܙܘܢܢܝ
ܒܥܒܕ ܐܝܕܝܟܘܢ. ܕܠܐ ܐܒܐܫ ܠܟܘܢ. * ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ ܠܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܠܐ ܐܪܓܙܬܘܢܢܝ ܒܥܒܕ
ܐܝܕܝܟܘܢ. ܕܢܒܐܫ ܠܟܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥܬܘܢ
ܠܡܠܝ. * ܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܘܕܒܪ ܐܢܐ. ܠܟܠܗܘܢ ܫܪܒܬܐ ܕܓܪܒܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܘܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܒܕܝ. ܘܐܝܬܐ ܐܢܘܢ ܥܠ ܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܘܥܠ ܥܡܘܪܝܗ. ܘܥܠ
ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܗ. ܘܐܚܪܒ ܐܢܘܢ. ܘܐܣܝܡ ܐܢܘܢ ܠܬܗܪܐ ܘܠܫܘܪܩܐ ܘܠܚܘܪܒܐ
ܕܥܠܡ. * ܘܐܘܒܕ ܡܢܗܘܢ ܩܠܐ ܕܚܕܘܬܐ. ܘܩܠܐ ܕܣܘܫܝܐ. ܘܩܠܐ ܕܚܬܢܐ. ܘܩܠܐ ܕܟܠܬܐ.
ܘܩܠܐ ܕܪܚܝܐ. ܘܢܘܗܪܐ ܕܫܪܓܐ. * ܘܬܗܘܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܗܕܐ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܬܗܪܐ. ܘܢܦܠܚܘܢ
ܥܡܡܐ ܗܠܝܢ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. * ܘܡܐ ܕܡܠܝ ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. ܐܦܩܘܕ
ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܥܠ ܥܡܗ. ܚܛܗܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ.
ܘܐܣܝܡܝܗ ܠܚܘܪܒܐ ܕܥܠܡ. * ܘܐܝܬܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܗܝ. ܟܠܗܘܢ ܡܠܝ ܕܡܠܠܬ
ܥܠܝܗ. ܟܠ ܡܕܡ ܕܟܬܝܒ ܒܟܬܒܐ ܗܢܐ. ܕܐܬܢܒܝ ܐܪܡܝܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ.

* Ab anno tertio decimo Joſiæ filii Amonis 3
regis Judæ in præſentem uſq; diem, ecce vi-
ginti trib⁹ annis fuit ad me ſermo Dñi, quem
& retuli vobis: antevertebam quotidie, dice-
bámq; vobis; at non auſcultâſtis. Miſit etiam 4
Dñs ad vos omnes ſervos ſuos prophetas, at
ne inclinâſtis quidem aurem veſtram ad au-
diendum, & dicendum; Convertimini quiſq; 5
à via ſua prava, & à malignitate facinorum
veſtrorum, atq; *ita* manete in terra quam de-
dit Dñs vobis & patribus veſtris, à ſeculo in
ſeculũ uſque: Et ne proſequamini deos alie- 6
nos, colendo & adorando eos: neq; me irri-
tetis opere manuum veſtrarũ, ut non malefa-
ciam vobis: At non auſcultâſtis mihi, dicit 7
Dñs; ſed irritâſtis me opere manuum veſtra-
rum, ut malum vobis eveniret. Propterea ſic 8
ait Dñs Deus exercituum; Quia non acquie-
viſtis ſermonib⁹ meis, Ecce miſſurus ſum & 9
aſſumpturus cunctas nationes regni Aquilo-
naris dicit Dñs, cum Nebuchadnoſare rege
Babelis ſervo meo, & adducturus eos contra
terrã iſtã, contra habitatores ejus, & contra
omnes populos qui circunjacent illi, & vaſta-
bo eos, & exponã eos ſtupori, ſibilo, atq; va-
ſtitati in perpetuũ: Et abolebo ab eis vocem 10
exultationis, & vocẽ lætitiæ, vocem ſponſi, &
vocem ſponſæ, vocẽ molæ, & lumen lucernæ:
Erítq; tota hæc terra vaſtitati atque ſtupori: 11
& ſervient hi populi regi Babelis ſeptuaginta
annis. Cúmque tranſacti fuerint ſeptuaginta 12
anni, recenſebo contra regem Babelis & con-
tra populũ ejus iniquitates eorum, dicit Dñs,
nec non contra terram Chaldæorum, quam
exponam ſtupori perpetuo: Et adducam ſu- 13
per eandem terrã cunctos ſermones quos dixi
de illa, quicquid ſcriptum extat in libro iſto,
quæ prophetavit Jeremia de cunctis gen-
tibus:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* في السنة الثالثة عشر للملك يوسيا بن اموص ملك يهودا والي هذا اليوم ثلاث وعشرين
سنة * وتكلمت معكم دالجا وقايلا * وارسلت اليكم عبيدي الانبيا * دلجه ارسلهم ولم
تسمعوا ولم تصغوا باذانكم * قايلا * ارجعوا كل واحد من طريقه الرديه ومن اعمالكم
الشريره * فتسكنون علي الارض التي اعطيتها لكم ولابايكم منذ الدهر والي الدهر * ولا
تمضوا خلف الالهة الغريبة لتعبدوا لها ولتسجدوا لها * ليلا تغضبوني باعمال ايديكم * لا
اضر بكم * فلم تسمعوا لي * [MS. Ox. ولم تطيعوا يقول الرب * ولكن اغضبتموني باعمالكم
لاجعلتكم الي الحرب *] * لاجل هذا هكذا يقول الرب * من اجل انكم لم توقنوا باقوالي *
* ها انا ارسل واخذ امة من الجربيا * واسوقهم الي هذه الارض وعلي ساكنيها وعلي جميع
الامم التي حولها * واخربهم وادفعهم للفنا وللصفير وللتعيير الابدي * واهلك منهم صوت
السرور وصوت الفرح * صوت العريس وصوت العروس * رايحة الطيب ونور السراج * ويصير كل
الارض للفنا * ويتعبدون في الامم سبعين سنة * وعند تمام السبعين سنة انتقم من تلك الامة
قال الرب * واجعلهم للفنا الابدي * واجلب علي تلك الارض جميع كلماتي التي تكلمت
بها عليها * جميع المكتوبات في هذا السفر * [MS. Oxon. وما تنبا ارميا علي جميع الشعوب *]

* *Ab anno tertiodecimo regis Joſiæ filii A-* 3
mos regis Judæ ad hunc uſque diẽ, viginti
tribus annis mox allocutus ſum vos manè
ſurgens ac prædicans, Mox ad vos miſi 4
ſervos meos prophetas: diluculò mittebam
eos, & non audîſtis, imò nec aures veſtras
præbuiſtis dicenti, Revertimini quiſque à 5
via ſua peſſima & ab operibus veſtris ſce-
leſtis, ut habitetis ſuper terram quam dedi
vobis & majoribus veſtris, à ſeculo in ſe-
culum uſque: Et ne ſectemini deos alie- 6
nos, ut ſerviatis eis & adoretis eos; ne ex-
aſperantibus me operibus manuũ veſtrarũ,
noceam vobis; Sed non acquieviſtis mihi, 7
[MS. Ox. *neq; obtemperaviſtis, dicit Do-*
minus; ſed ad iracundiam provocâſtis me
operibus veſtris, ut vos gladio expone-
rem.] *Iccircò ſic ait Dominus; Quia non* 8
adhibuiſtis fidem dictis meis, Ecce ego mit- 9
tens accipiam gentem quandam ab Aqui-
lone, & adducam eos ad hanc terram, con-
tra habitatores ejus, & contra omnes gen-
tes ipſi adjacentes: & deſtruam eos, & ex-
ponã excidio, ſibilo, & vituperio ſempiter-
no: Et perdã ab eis vocem exultationis et 10
vocem lætitiæ, vocẽ ſponſi & vocem ſpon-
ſæ, odorem aromatum, & lumen lucernæ:
Et abibit tota hæc terra in excidium, fi- 11
éntque ſervi inter gentes ſeptuaginta an-
nis. Cúmque completi fuerint ſeptuagin- 12
ta anni, vindictam ſumam ab illa gente,
ait Dominus; & exponam illos exitio
perpetuo: Et adducam contra terram il- 13
lam cuncta verba mea quæ locutus ſum
de ipſa, omnia quæ ſcripta ſunt in hoc
libro, [MS. Ox. *et quæ prophetavit Jere-*
mia de cunctis gentibus.]

Advertat Lector, plurimas eſſe capitum & verſiculorum tranſpoſitiones in verſione Græca, & quæ cum ipſa concordat Arabicâ, Edit. Par. à cap. 25. ver. 13. uſque ad finem cap. 51. hujus libri, adeò ut verſiones iſtæ, cum Hebræo, cæteriſque verſionibus per columnas ſibi invicèm reſpondentes aptè diſponi non poſſint, ſine textûs Græci & Arab. dilaceratione: quem tamen Græcorum codicum ordinem ab ipſo Hieronymo, aliiſque veteribus ſervatum, & cum pleriſque vetuſtis Græcis exemplaribus congruentem, immutare haud æquum duximus: Viſum eſt itaque Tabulam ſequentem apponere, quæ tum differentias prædictas, tum harmoniam verſionum iſtarum cum textu Hebræo per capita & verſiculos primo aſpectu Lectori exhibeat, unde nullo negotio collationem inſtituere poſſit. De iis verò quæ in Græca verſione non habentur, quæque ex Theodoreto & aliis conſarcinârunt Complutenſes, vide Nobilii notas, & noſtras varias Lectiones Tomo ultimo.

JEREMIÆ CAPITA.

dùm Heb.Syr. & Vulg.Lat.	Secundùm Græcam τῶν 70. & Arab.
ad verſ.14.	Cap.25. ad ver.14.
ad finẽ.	32
	33
ver.19.	34
ad finem.	deſunt.
	35
	36
	37
	38
	39
verſ.14.	40
ad finẽ.	deſunt.

Secundùm Heb.Syr. Chald.& Vulg Lat.	Secundùm Græcam τῶν 70. & Arab.
34	41
35	42
36	43
37	44
38	45
39, verſus tres priores, & 5. poſtremi.	46
à ver.3. ad 14.	deſunt.
40	47
41	48
42	49
43	52

Secundùm Heb.Syr. Chald.& Vulg.Lat.	Secundùm Græcam τῶν 70.& Arab.
Cap.44.	Cap.51. ad ver.31.
45	51. à ver.31. ad finem.
46	26
47	29. verſ.7. priores.
48. ad verſ. 45.	31
à ver.45. ad finẽ.	deſunt.
49. verſ.5. priores	30. ver.5. priores.
à ver.7. ad 23.	29. à ver.7. ad finem.
à ver.23. ad 28.	30. ver.5. poſtremi.
à ver.28. ad 34.	30. poſt ver.5. ſex ſequentes.
à ver.34. ad finẽ.	25. à v.13. ad finem.

Secundùm Heb.Syr. Chald.& Vulg.Lat.	Secundùm Græcam τῶν 70.& Arab.
50	27
51	28
52	52

Quæ in verſione Græca, ut & in Arabica Pariſienſi deſunt, ſupplevimus in Arab. ex MS. Oxon. vetuſtiſſ.

ירמיה: כה

regibus & , *multis gentibus ipsis* etiam eis in *servire* Quia
14 כי עבדו־בם גם־המה גוים רבים ומלכים
opus juxta & , eorum opus secundùm eis reddam & , *magnis*
גדולים ושלמתי להם כפעלם וכמעשה
Israel Deus Dominus dixit sic Quia .eorum manuum
15 ידיהם: כי כה אמר יהוה אלהי ישראל
, mea manu de hujus furoris vini calicem Sume : me ad
אלי קח את־כוס היין החמה הזאת מידי
mittens ego quas gentibus omnibus illum facies propinare &
והשקית אותו את־כל־הגוים אשר אנכי שלח
faciebus à insanient & ,*commovebuntur* & ,bibent Et .*eas ad* te
16 אותך אליהם: ושתו והתגעשו והתהללו מפני
calicem accepi Et .eos inter *mittens* ego quem , gladii
17 החרב אשר אנכי שלח בינתם: ואקח את־הכוס
quas , gentibus omnibus feci propinare & , Domini manu de
מיד יהוה ואשקה את־כל־הגוים אשר־
civitatibus & , Jerusalaim .*eas ad* Dominus me misit
18 שלחני יהוה אליהם: את־ירושלם ואת־ערי
eas *dandum ad* , ejus principibus & , ejus regibus & , Jehudah
יהודה ואת־מלכיה ואת־שריה לתת אתם
maledictionem in & , sibilum in , stuporem in , solitudinem in
לחרבה לשמה לשרקה ולקללה
& , Ægypti regi Parhoh .hanc diem secundùm
19 כיום הזה: את־פרעה מלך־מצרים ואת־
universæ Et .ejus populo omni & , ejus principibus & ,ejus servis
20 עבדיו ואת־שריו ואת־כל־עמו: ואת כל־
omnibus & , Hus terræ regibus omnibus & , *miscellaneæ*
הערב ואת כל־מלכי ארץ העוץ ואת כל־
& , Hazzah & , Aschelon & , Pelistim terræ regibus
מלכי ארץ פלשתים ואת־אשקלון ואת־עזה ואת־
, Moab & , Edom .Asdod residuo & , Hecron
21 עקרון ואת שארית אשדוד: את־אדום ואת־מואב
universis & , Sor regibus omnibus Et .Hammon filiis &
22 ואת־בני עמון: ואת כל־מלכי צר ואת כל־
, Dedan .mare trans *in* qui *insulæ* regibus & , Sidon regibus
23 מלכי צידון ואת מלכי האי אשר בעבר הים: את־דדן
Et .anguli *extremificatis* universis & , Buz & , Tema &
24 ואת־תימא ואת־בוז ואת כל־קצוצי פאה: ואת
habitantibus , *Occidentis* regibus omnibus & , Harabiæ regibus cunctis
כל־מלכי ערב ואת כל־מלכי הערב השכנים
regibus universis & , Zimri regibus cunctis Et .deserto in
25 במדבר: ואת כל־מלכי זמרי ואת כל־מלכי
regibus cunctis Et .Madai regibus omnibus & , Helam
26 עילם ואת כל־מלכי מדי: ואת כל־מלכי
omnibus & , *suum fratrem ad viro* remotis & , propinquis Aquilonis
הצפון הקרבים והרחקים איש אל־אחיו ואת כל־
Sesach rex & *: humi faciebus super* quæ , terræ regnis
הממלכות הארץ אשר על־פני האדמה ומלך ששך
Dominus dixit Sic : eos ad dices Et .eos post bibet
27 ישתה אחריהם: ואמרת אליהם כה־אמר יהוה
, vomite & ,inebriamini & ,Bibite : Israel Deus exercituum
צבאות אלהי ישראל שתו ושכרו וקיו
mittens ego quem , gladii *faciebus* à , resurgatis non & , cadite &
ונפלו ולא תקומו מפני החרב אשר אנכי שלח
, tua manu de calicem accipere renuerint *cùm* , erit Et .vos inter
28 ביניכם: והיה כי ימאנו לקחת־הכוס מידך
: exercituum Dominus dixit Sic : eos ad dices & , *bibendum ad*
לשתות ואמרת אליהם כה אמר יהוה צבאות
.bibetis Bibendo
שתו תשתו:

Versio VULG. LAT.

14 Quia servierunt eis, cùm essent gentes multæ, & reges magni: & reddam eis secundùm opera eorum, & secundùm facta manuum suarum. 15 Quia sic dicit Dominus exercituum Deus Israel; Sume calicem vini furoris hujus de manu mea: & propinabis de illo cunctis gentibus, ad quas ego mittam te. 16 Et bibent, & turbabuntur, & insanient à facie gladii, quem ego mittam inter eos. 17 Et accepi calicem de manu Domini, & propinavi cunctis gentibus, ad quas misit me Dominus: 18 Jerusalem, & civitatibus Juda, & regibus ejus, & principibus ejus: ut darem eos in solitudinem, & in stuporem, & in sibilum, & in maledictionem, sicut est dies ista: 19 Pharaoni regi Ægypti, & servis ejus, & principibus ejus, & omni populo ejus, 20 Et universis generaliter: cunctis regibus terræ Ausitidis, & cunctis regibus terræ Philisthiim, & Ascaloni, & Gazæ, & Accaron, & reliquiis Azoti, 21 Et Idumææ, & Moab, & filiis Ammon: 22 Et cunctis regibus Tyri, & universis regibus Sidonis: & regibus terræ insularum, qui sunt trans mare: 23 Et Dedan, et Thema, et Buz, et universis qui attonsi sunt in comam: 24 Et cunctis regibus Arabiæ, et cunctis regibus Occidentis, qui habitant in deserto: 25 Et cunctis regibus Zambri, et cunctis regibus Elam, et cunctis regibus Medorum: 26 Cunctis quoque regibus Aquilonis de propè et de longè, unicuique contra fratrem suum: et omnibus regnis terræ, quæ super faciem ejus sunt: et rex Sesach bibet post eos. 27 Et dices ad eos; Hæc dicit Dominus exercituum Deus Israel; Bibite, et inebriamini, et vomite: et cadite, neque surgatis à facie gladii, quem ego mittam inter vos. 28 Cúmque noluerint accipere calicem de manu tua ut bibant, dices ad eos; Hæc dicit Dominus exercituum; Bibentes bibetis:

Versio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

34 Cap.49.Vulg.Lat. Ἃ ἘΠΡΟΦΉΤΕΥΣΕ (ν) ἹΕΡΕΜΊΑΣ ἘΠῚ ΤᾺ 35 ἜΘΝΗ ΤᾺ ἈΙΛΆΜ. Τάδε λέγει κύριος, (ξ) Συντριβήτω τὸ τόξον Αἰλὰμ, ἀρχὴ δυναστείας αὐτῶν. 36 Καὶ ἐπάξω ἐπὶ Αἰλὰμ τέσσαρας ἀνέμους ἐκ τῶν τεσσάρων ἄκρων τοῦ οὐρανοῦ, καὶ διασπερῶ αὐτοὺς ἐν πᾶσι τοῖς ἀνέμοις τούτοις, καὶ οὐκ ἔσται ἔθνος ὃ οὐχ 37 ἥξει ἐκεῖ, οἱ ἐξωσμένοι Αἰλάμ. Καὶ πτοήσω αὐτοὺς ἐναντίον τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν, τῶν ζητούντων τὴν ψυχὴν αὐτῶν, καὶ ἐπάξω ἐπ' αὐτοὺς κατὰ τὴν ὀργὴν τοῦ θυμοῦ μου, καὶ (ο) ἐπαποστελῶ ὀπίσω αὐτῶν τὴν μάχαιράν μου, ἕως τοῦ ἐξαναλῶσαι αὐτούς. 38 Καὶ θήσω τὸν θρόνον μου ἐν Αἰλὰμ, καὶ ἐξαποστελῶ ἐκεῖθεν βασιλέα καὶ μεγιστᾶνας. 39 Καὶ ἔσται ἐπ' (π) ἐσχάτου τῶν ἡμερῶν, καὶ ἀποστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν Αἰλὰμ, λέγει κύριος.

MS.A. (ν) ἸΗΡΕΜΙ'ΑΣ (ξ) Συντριβήτω (ο) ἐξαποστελῶ (π) ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν ἀποστρέψω

QUÆ prophetavit Hieremias super gentes, (d) quæ Ælam. Hæc dicit Dominus, (i) Contritus est arcus Ælam, principium potentatûs eorum. Et inducam super Ælam quatuor ventos à quatuor extremis cœli: & dispergam eos omnibus ventis istis: & non erit gens, quæ non veniet illuc, expulsi Ælam. Et terrefaciam eos coram inimicis eorum, quærentibus animam eorum: & inducam super (e) eos secundum iram furoris mei: & immittam post eos gladium meum; donec absumpsero eos. Et ponam thronum meum in Ælam, & (f) emittam inde regem, & magnates. Et erit in novissimo dierum, & reducam captivitatem Ælam, dicit Dominus.

Cap. 46. Vulg.Lat. ΚΕΦ. κϛʹ.

1 ἘΝ ἀρχῇ βασιλεύοντος (ʹ) Σεδεκίου βασιλέως, ἐγένετο ὁ λόγος οὗτος (α) 2 περὶ Αἰλάμ. ΤΗ͂ ἈΙΓΥ'ΠΤΩ ἘΠῚ ΔΥ'ΝΑΜΙΝ ΦΑΡΑῺ ΝΕΧΑῺ (β) ΒΑΣΙΛΕ'ΩΣ ἈΙΓΥ'ΠΤΟΥ, ὃς ἦν ἐπὶ (γ) τῷ ποταμῷ Εὐφράτῃ ἐν Χαρμεῖς, ὃν ἐπάταξε Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, ἐν τῷ ἔτει τῷ τετάρτῳ Ἰωακεὶμ βασιλέως Ἰούδα. 3 Ἀναλάβετε ὅπλα καὶ ἀσπίδας, (δ) καὶ προσαγάγετε εἰς πόλεμον, 4 (ʺ) Καὶ ἐπισάξατε τοὺς ἵππους, ἐπίβητε οἱ ἱππεῖς, καὶ καταστῆτε ἐν ταῖς περικεφαλαίαις ὑμῶν, προβάλετε τὰ δόρατα (ε), 5 καὶ ἐνδύσασθε τοὺς θώρακας ὑμῶν. Τί ὅτι αὐτοὶ (ζ) πτοοῦνται, καὶ ἀποχωροῦσιν (η) εἰς τὸ ὀπίσω; διότι οἱ ἰσχυροὶ αὐτῶν κοπήσονται, φυγῇ ἔφυγον, καὶ οὐκ ἀνέστρεψαν περιεχόμενοι κυκλόθεν, λέγει 6 κύριος. Μὴ φευγέτω ὁ κοῦφος, καὶ μὴ (θ) ἀνασωζέσθω ὁ ἰσχυρὸς ἐπὶ Βορρᾶν· τὰ παρὰ τὸν Εὐφράτην (ι) ἠσθένησε, καὶ πεπτώκασι. 7 Τίς οὗτος ὡς ποταμὸς ἀναβήσεται, καὶ ὡς ποταμοὶ (ʺ) κυμαίνουσιν ὕδωρ; 8 Ὕδατα Αἰγύπτου ὡς ποταμὸς ἀναβήσεται. καὶ εἶπεν, Ἀναβήσομαι, καὶ κατακαλύψω τὴν γῆν, καὶ ἀπολῶ (κ) τοὺς κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ. 9 Ἐπίβητε ἐπὶ τοὺς ἵππους, (λ) παρασκευάσατε τὰ ἅρματα, ἐξέλθατε οἱ (μ) μαχηταὶ Αἰθιόπων, καὶ Λίβυες καθωπλισμένοι ὅπλοις, καὶ Λυδοὶ ἀνάβητε, ἐντείνατε τόξον. 10 Καὶ ἡ ἡμέρα ἐκείνη κυρίῳ τῷ θεῷ ἡμῶν ἡμέρα ἐκδικήσεως, τοῦ ἐκδικῆσαι τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ· καὶ καταφάγεται ἡ μάχαιρα κυρίου, καὶ ἐμπλησθήσεται, καὶ μεθυσθήσεται ἀπὸ τοῦ αἵματος αὐτῶν, ὅτι θυσία τῷ κυρίῳ (ν) ἀπὸ 11 γῆς Βορρᾶ ἐπὶ ποταμῷ Εὐφράτῃ. Ἀνάβηθι Γαλαὰδ, καὶ λάβε ῥητίνην τῇ παρθένῳ θυγατρὶ Αἰγύπτου· (ξ) εἰς τὸ κενὸν ἐπλήθυνας ἰάματά σου, ὠφέλεια οὐκ (ο) ἔστιν ἐν σοί.

CAP. XXVI.

IN (a) principio regnantis Sedeciæ regis, factum est verbum hoc de Ælam. IPSI ÆGYPTO super virtutem Pharaonis Nechao regis Ægypti, qui erat ad flumen Euphratem in Charmis: quem percussit Nabuchodonosor rex Babylonis in anno quarto Joacim regis Juda. Assumite arma, & scuta: & accedite ad bellum: Et insternite equos, ascendite equites, & state in galeis vestris, (b) applicate lanceas, & induimini loricis vestris. Quid, quòd ipsi pavent, & recedunt in posteriora? quia fortes eorum cædentur: fugâ fugerunt, et non sunt reversi, obsessi undique, dicit Dominus. Non fugiat levis, et non evadat fortis ad Aquilonem. Quæ ad Euphratem, infirmata sunt, et ceciderunt. Quis iste, quasi flumen ascendet, (c) et velut flumina, fluctuant aquam? Aquæ Ægypti, quasi flumen, ascendent. Et dixit; Ascendam, et operiam terram, et perdam (d) habitantes in ea. Ascendite super equos, præparate currus: egredimini pugnatores Æthiopum, et Libyes armati armis, et Lydi ascendite, intendite arcum. Et dies illa Domino Deo nostro, dies ultionis, ut sumat vindictam de inimicis suis: et devorabit gladius (e) Domini, et saturabitur, et inebriabitur de sanguine eorum: quia sacrificium (f) Domino de terra Aquilonis super flumen Euphratem. Ascende Galaad, & sume resinam virgini filiæ Ægypti: in vanum multiplicasti medicamina tua: utilitas non est in te.

MS.A. (ʹ) Σεδεκίου, ἐγένετο (α) ἐπὶ Αἰλάμ. (β)* ΒΑΣΙΛΕ'Α (γ) τοῦ ποταμοῦ Εὐφράτου (δ) προσαγάγετε (ʺ) Ἐπισάξατε (ε) ὑμῶν, (ζ) πτοοῦνται, (η) ὀπίσω (θ) ἀνασωζέτω (ι) ἠσθένησαν, πεπτώκασιν. (ʺ) κυμανοῦσιν (κ) κατοικοῦντας (λ) καὶ κατασκευάσατε (μ) μαχηταὶ (ν) Σαβαὼθ ἀπὸ (ξ) εἰς κενὸν (ο) ἔστιν σοί.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ארי פלחו בהון אף אנון עממין סגיאין ומלכין רברבין ואשלם להון כאגוריהון
15 וכעובדי ידיהון: ארי כדנן אמר יי אלהא דישראל לי קבל ית כסא דחמר לוטא
16 הדין מן קדמי ותשקי יתיה ית כל עממיא דאנא שלח יתך עליהון: וישתון
17 וישתגשון ויטרפון מן קדם דקטלין בחרבא דאנא שלח ביניהון: וקבלית ית כסא
18 מן קדם יי ואשקיתי ית כל עממיא דשלחני יי לותכון: ית ירושלם וית קרויא
דבית יהודה וית מלכהא וית רברבהא למתן יתהון לחרבא לצדו לאשתממו
19 וללוטא כיומא הדין: ית פרעה מלכא מצרים וית עבדוהי וית רברבוהי וית כל
20 עמיה: וית כל מלכי סומכותא וית כל מלכי ארע עוץ וית כל מלכי ארע פלשתאי
21 וית אשקלון וית עזה וית עקרון וית שארא דאשדוד: ית אדום וית מואב וית בני
22 עמון: וית כל מלכי צור וית כל מלכי צידון וית כל מלכי ניסא די בעברא דימא:
23 24 וית דדן וית תימא וית בוז וית כל מקפי פתא: וית כל מלכי ערב וית כל מלכי
25 ערבאי דשרן בשכונין במדברא: וית כל מלכי זמרי וית כל מלכי עילם וית כל
26 מלכי מדי: וית כל מלכי צפונא דקריבין ודרחיקין גבר לאחוהי וית כל מלכות
27 עממיא דעל אפי ארעא ומלכא דבבל ישתי בתריהון: ותימר להון כדנן אמר
יי צבאות אלהא דישראל שתו ורוו ואשתגישו ונפלו ולא תקומון מן קדם דקטלין
28 בחרבא דאנא שלח ביניכון: ויהי ארי יסרבון לקבלא כסא מן ידך למשתי ותימר
להון כדנן אמר יי צבאות משתא תשתון:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quia etiam ipsos ad servitutem adigent populi multi, & reges magni, & retribuam eis juxta mercedem eorum, & juxta opera manuum suarum. Quia sic dixit mihi Dominus Deus Israel: Recipe calicem vini maledictionis hujus à facie mea, & propinabis eum cunctis populis contra quos ego mitto te. Et bibent & insanient, & conturbabuntur à facie eorum qui occidunt gladio, quos ego mitto inter eos. Et suscepi calicem à facie Dñi, & potum dedi omnibus populis, ad quos misit me Dñs. Jerusalem, & civitatibus domus Juda, & regibus ejus, & principibus ejus, ad redigendos eos in desolationem, & in vastitatem, & in stuporem, & in maledictionem, sicut hodie. Pharaoni regi Ægypti, & servis ejus, & principibus ejus, & omni populo ejus. Et omnibus regibus finitimis, & omnibus regibus terræ Huts, & omnibus regibꝰ terræ Philistinorum, & Ascaloni, Gazæ, & Acharoni, & reliquiis Azoti. Idumeæ & Moab, & filiis Ammon. Et omnibꝰ regibꝰ Tyri, & omnibꝰ regibꝰ Sidonis, & omnibꝰ regibꝰ insularum qui sunt trans mare. Dedan, & Theman, & Bus, & omnibus circumdantibus angulum. Et cunctis regibꝰ Arabiæ, & omnibꝰ regibꝰ Arabum qui habitant in tentoriis in deserto. Et cunctis regibꝰ Zamri, & cunctis regibꝰ Elam, & cunctis regibꝰ Medorum. Et cunctis regibꝰ Aquilonis, qui propinqui sunt, & qui remoti sunt, quisque à fratre suo; & cunctis regibꝰ populorum qui sunt super faciem terræ. Et rex Babylonis bibet post eos. Et dices ad eos: Hæc dicit Dñs exercituum Deus Israel; Bibite & inebriamini, & conturbamini, & cadite; & non surgatis à facie eorum qui occidunt gladio, quos ego mitto inter vos. Et erit, si noluerint accipere calicem de manu tua, ad bibendum: hæc dices eis; Hæc dicit Dominꝰ exercituum: Bibendo bibetis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܡܛܠ ܕܫܥܒܕܘ ܐܢܘܢ ܐܦ ܗܢܘܢ. ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܘܡܠܟܐ ܪܘܪܒܐ. ܘܐܦܪܘܥ ܐܢܘܢ
ܐܝܟ ܥܒܕܝܗܘܢ. ܘܐܝܟ ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܣܒ ܟܣܐ ܕܚܡܪܐ ܕܚܡܬܐ ܗܕܐ ܡܢ ܐܝܕܝ. ܘܐܫܩܝܘܗܝ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ
ܕܐܢܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܠܟ ܠܘܬܗܘܢ. * ܘܢܫܬܘܢ ܘܢܬܕܠܚܘܢ. ܘܢܫܬܓܘܫܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܚܪܒܐ
ܕܡܫܕܪ ܐܢܐ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܘܢܣܒܬ ܟܣܐ ܡܢ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܐܫܩܝܬ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ
ܕܫܕܪܢܝ ܡܪܝܐ ܠܘܬܗܘܢ. * ܠܐܘܪܫܠܡ ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܠܡܠܟܝܗ̇ ܘܠܪܘܪܒܢܝܗ̇
ܠܡܬܠ ܐܢܘܢ ܠܚܘܪܒܐ. ܘܠܬܗܪܐ ܘܠܡܫܪܘܩܝܬܐ. ܐܝܟ ܝܘܡܢܐ ܗܢܐ. * ܠܦܪܥܘܢ
ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܘܠܪܘܪܒܢܘܗܝ. ܘܠܟܠܗ ܥܡܗ. ܘܠܟܠܗܘܢ
ܬܚܘܡܘܗܝ. * ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ ܕܥܘܨ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ ܕܦܠܫܬܝܐ.
ܠܐܫܩܠܘܢ. ܘܠܥܙܐ. ܘܠܥܩܪܘܢ. ܘܠܫܪܟܐ ܕܐܫܕܘܕ. * ܘܠܐܕܘܡ ܘܠܡܘܐܒ ܘܠܒܢܝ ܥܡܘܢ.
* ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܨܘܪ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܨܝܕܢ. ܘܠܡܠܟܐ ܕܓܙܪܬܐ ܕܒܥܒܪܐ
ܕܝܡܐ. * ܘܠܕܕܢ. ܘܠܬܝܡܢ ܘܠܒܘܙ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܩܪܝܚܝ ܦܐܬܐ: * ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܡܚܠܛܝܢ
ܥܡ ܚܕ ܚܕ: ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܥܪܒܝܐ ܕܫܪܝܢ ܒܡܕܒܪܐ: * ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܙܡܪܝ.
ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܥܝܠܡ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܡܕܝ. * ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܕܓܪܒܝܐ
ܕܪܚܝܩܝܢ ܘܕܩܪܝܒܝܢ ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܡܠܟܘܬܐ ܕܐܪܥܐ ܕܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ
ܟܠܗ. ܘܡܠܟܐ ܕܫܫܟ ܢܫܬܐ ܒܬܪܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ
ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܫܬܘ ܘܪܘܘ ܘܐܬܬܙܝܥܘ ܘܦܠܘ. ܘܠܐ ܬܩܘܡܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܚܪܒܐ ܕܐܢܐ ܡܫܕܪ
ܐܢܐ ܒܝܢܬܟܘܢ. * ܘܐܢ ܠܐ ܢܨܒܘܢ ܠܡܣܒ ܟܣܐ ܡܢ ܐܝܕܟ ܠܡܫܬܐ. ܐܡܪ ܠܗܘܢ.
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܫܬܐ ܬܫܬܘܢ.

Eò quòd redegerint ſibi etiam iſti in ſervitu- 14
tem populos multos & reges magnos: & re-
pendam eis ſecundùm actiones ſuas, & ſe-
cundùm opus manuum ſuarum. Sic enim ait 15
Dominus potentiſſimus, Deus Iſraelis; Sume
calicem vini furoris hujus de manu mea, &
da illum bibendum cunctis gentibus contra
quas ſum te miſſurus; Ut bibentes obſtupe- 16
ſcant & conturbentur à conſpectu gladii
quem miſſurus ſum inter eas. Quare ſumpſi 17
calicem de manu Domini, & bibendum dedi
cunctis gentibus contra quas miſit me Domi-
nus: Jeroſolymæ, & civitatibus Judæ, & re- 18
gibus ac principibus ejus; ut redigerentur in
vaſtitatem, ſtuporem, ac ſibilum ad hodier-
num uſque diem: Pharaoni regi Ægypti, & 19
omnibus ſervis ejus, principibus ejus, toti
populo ipſius, omnibúſque terminis ejus:
Omnibus regibus terræ Us, & omnibus regi- 20
bus terræ Paleſtinorum: Aſcaloni; & Azæ,
Ecroni, & reliquo Aſdodi: Adumæis, Mo- 21
abitis, & Ammonitis: Omnibus regibus 22
Tyri, omnibus regibus Sidonis, & regibus
Inſularum tranſmarinis: Item Darani, Tæ- 23
mani, & Buzo, omnibúſque barbitonſis:
Cunctis regibus quorum limites ſunt com- 24
munes, cunctíſque regibus Arabum qui de-
gunt in deſerto: Cunctis regibus Zemranis, 25
cunctis regibus Ilamis, cunctíſque regibus
Mediæ: Item cunctis regibus Aquilonis, 26
tam diſſitis quàm ſibi invicem propinquis:
omnibus denique regnis quæ ſunt ſuper fa-
ciem univerſæ terræ: demum rex monarcha
poſt hos bibet. Et dic eis, Sic ait Dominus 27
potentiſſimus, Deus Iſraelis; Bibite & in-
ebriamini, exagitamini & cadite nunquam
ſurrecturi à conſpectu gladii quem miſſurus
ſum inter vos. Quòd ſi noluerint ſumere ca- 28
licem de manu tua ad bibendum, dic eis; Sic
ait Dominus potentiſſimus, Deus Iſraelis;
Omnino bibendum vobis eſt.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* هذا ما تنبي به ارمياء على امم الاهواز *
* هكذا يقول الرب * ليتكسر قوس الاهواز رئيسة قوتهم * واجلب على الاهواز اربع ارياح
من اربعة اطراف السماء * وابددهم في جميع هذه الرياح * ولا تكون امة الا ويأتي هناك
المقصيون من الاهواز * وافزعهم امام اعدايهم الذين يطلبون نفسهم * واجلب عليهم
كرجز غضبي * وارسل وراهم سيفي الي ان يفنوا * واضع كرسي في الاهواز * وارسل من
هناك ملكا وعظماء * ويكون في آخر الايام ارد سبي الاهواز يقول الرب *
* الفصل السادس والعشرون * * في بدو ملك صدقيا كان هذا القول على الاهواز
* في مصر على جيش فرعون ناخاو ملك مصر * الذي كان على نهر الفرات في كرميس
الذي ضربه بختنصر ملك بابل في السنة الرابعة ليوقيم ملك يهوذا *
* خذوا اسلحة ودرقات * تقدموا للحرب * اسرجوا الخيل * اركبوا ايها الفرسان * قفوا بخوذكم
والبسوا جواشنكم * لماذا لانهم يجزعون ويرجعون الي خلف من اجل ان اقوياءهم يقطعون
هربوا هربا ولم يرجعوا * احيطوا من حولهم يقول الرب * لا يهرب الخفيف ولا يخلص القوي
الي الجربياء * الذين عند الفرات ضعفوا وسقطوا * من هذا الذي يصعد مثل النهر
ومثل انهار يموجون ماء * مياه مصر مثل نهر تصعد * وقال اصعد واغطي الارض وابيد
السكان فيها * اركبوا على الخيول * وهيئوا المركبات * اخرجوا يا تلاميذ الحبش والنوبة
متسلحين بالاسلحة * واللوذانيون اصعدوا اوتروا قوسا * وذلك اليوم للرب الهنا يوم
الانتقام لينتقم من اعدايه * وياكل سيف الرب ويمتلي ويسكر من دمايهم * لانها ذبيحة
للرب الجيوش من ارض الجربياء على نهر الفرات * اصعدي لجلعاد وخذي ولهويه
للعذري ابنة مصر كثرت ادويتك باطلا وليس لك منفعة *

Hæc ſunt quæ prophetavit Jeremia 34
de populis Alahuaz (*i.* Elamitis.)
Sic dicit Dominus, Profectò frangetur 35
arcus Elam præcipui roboris eorum: Et 36
adducam in Elamitas quatuor ventos è
quatuor extremitatibus cœli, diſpergámque
eos in omnes hos ventos: nec erit ulla
gens, quo non abeant depulſi ex Elam:
Et pavidos reddam illos coram inimicis 37
eorum quærentibus animam eorum: &
adducam ſuper eos juxta furorem indi-
gnationis meæ: mittámque poſt eos gla-
dium meum, donec abſumantur. Et po- 38
nam ſolium meum in Elam, & emittam
inde regem atque principes: Tum fiet 39
ultimis temporibus ut reducam captivita-
tem Elamitarum, dicit Dominus.

CAP. XXVI.

INitio regni Sedeciæ fuit hic ſermo con- 1
tra Elamitas.
De Ægypto, contra copias Phara- 2
onis Nechao regis Ægypti, qui
erat ſecus flumen Euphratem in
Charmis, quem occîdit Bochtonaſ-
ſar rex Babelis anno quarto Joaci-
mi regis Judæ.
Arripite arma & clypeos, accedite ad 3
pugnam: Sternite equos, conſcendite O 4
equites, adeſte cum galeis veſtris, & in-
duite loricas veſtras. Quarè? quia pa- 5
vore correpti terga vertunt, eò quòd for-
tiſſimi illorum exciduntur: fugâ fugi-
unt, neque perſpiciunt: Cingite eos undi-
que, ait Dominus. Non fugiet velociſ- 6
ſimus; nec evadet fortiſſimus Aquilonem
verſus: qui ſunt prope Euphratem, debi-
litati corruerunt. Quis eſt hic qui ut 7
flumen aſcendit, & velut flumina undis
fluctuantia? Aquæ Ægypti ſicut flu- 8
men aſcendunt. Dixit enim, Aſcendam,
operiam terram, & perdam habitantes in
ea. Conſcendite equos, inſtruite currus; 9
prodite O heroes Æthiopum & Nubarum
armis accincti: & vos Lydii aſcendite,
arcum tendite: Nam dies illa Domino 10
Deo noſtro erit dies ultionis, ut ulciſcatur
de inimicis ſuis: comedétque gladius Do-
mini & explebitur, atque inebriabitur
ſanguinibus eorum, quoniam victima erit
Domino exercituum à terra Aquilonari
ſecus flumen Euphratem. Aſcende ad 11
Galaad, & ſume reſinam pro virgine
filia Ægypti: multiplicas medicinas tuas
in vanum, & nulla tibi eſt utilitas.

ירמיה: כו

, *eam super* meum nomen est invocatum quam *civitate in* ecce Quia
29 כי הנה בעיר אשר־נקרא שמי עליה
Non ? eritis innoxii *essendo mundi* vos & ,malefacere *incipiens* ego
אנכי מחל להרע ואתם הנקה תנקו לא
habitatores omnes super *vocans* ego gladium nam : innoxii eritis
תנקו כי חרב אני קרא על־כל־ישבי
eos *ad* prophetabis tu Et .exercituum Dominus dixit , terræ
30 הארץ נאם יהוה צבאות: ואתה תנבא אליהם
DOMINUS : illos ad dices & : hæc verba omnia
את כל־הדברים האלה ואמרת אליהם יהוה
.suam vocem dabit *suæ sanctitatis* habitaculo de & , rugiet excelso de
ממרום ישאג וממעון קדשו יתן קולו
calcantium veluti celeusma ,suum habitaculũ super rugiet Rugiendo
שאג ישאג על־נוהו הידד כדרכים
extremũ ad usque sonitus Venit .terræ *habitatores omnes ad resonabit*
31 יענה אל כל־ישבי הארץ: בא שאון עד־קצה
omni ipse judicio contendens ,gentibus cũ Domino *lis* quia : terræ
הארץ כי ריב ליהוה בגוים נשפט הוא לכל־
dixit Sic .Dominus dixit , gladio *eos* tradet impios : *carni*
32 בשר הרשעים נתנם לחרב נאם־יהוה: כה אמר
: gentem in gente à *egrediens* malum Ecce : exercituum Dominus
יהוה צבאות הנה רעה יצאת מגוי אל־גוי
interfecti erunt Et .terræ lateribus à suscitabitur magnus turbo &
33 וסער גדול יעור מירכתי־ארץ: והיו חללי
extremum ad usque & , terræ extremo ab illa die in *DOMINI*
יהוה ביום ההוא מקצה הארץ ועד־קצה
fimum in, sepelientur neque , colligentur nec ,plangentur Non .terræ
הארץ לא יספדו ולא יאספו ולא יקברו לדמן
,clamate & , pastores Ululate .erunt *humi faciebus super*
34 על־פני האדמה יהיו: הילילו הרעים וזעקו
,vestri dies sunt completi quia : *pecoris insignes cinere* vos involvite &
והתפלשו אדירי הצאן כי־מלאו ימיכם
.*desiderii* vas veluti cadetis & , vestræ dispersiones & , jugulandum ad
לטבוח ותפוצותיכם ונפלתם ככלי חמדה:
.*pecoris insignioribus* ab evasio & , pastoribus à fuga peribit Et
35 ואבד מנוס מן־הרעים ופליטה מאדירי הצאן:
vastavit quia : *pecoris eximiorum* ululatus & , pastorum clamoris Vox
36 קול צעקת הרעים ויללת אדירי הצאן כי־שדד
faciebus à , *pacis habitacula* sunt succisa Et .eorum *pascuum* Dominus
37 יהוה את־מרעיתם: ונדמו נאות השלום מפני
:suum *latibulum* leunculus tanquam Dereliquit .Domini *nasi iræ*
38 חרון אף־יהוה: עזב ככפיר סכו
,*depopulatoris iræ faciebus à* ,desolationem in eorũ terra fuit quia
כי־היתה ארצם לשמה מפני חרון היונה
.ejus *nasi iræ faciebus à &*
ומפני חרון אפו:

CAP. XXVI. כו

,Jehudah regis Josijahu filii Jehojachim regni principio In
1 בראשית ממלכות יהויקים בן־יאשיהו מלך יהודה
dixit Sic *: dicendum ad* , Domino à istud verbum fuit
2 היה הדבר הזה מאת יהוה לאמר: כה אמר
loquèris & , DOMINI domus atrio in Sta : Dominus
יהוה עמד בחצר בית־יהוה ודברת
domo se incurvandum ad *venientes* , Jehudah civitates omnes ad
על־כל־ערי יהודה הבאים להשתחות בית־
, eos ad *loquendum ad* ;tibi præcepi quæ verba universa , Domini
יהוה את כל־הדברים אשר צויתיך לדבר אליהם
.verbum *diminuas* ne
אל־תגרע דבר:

Versio VULG. LAT.

29 Quia ecce in civitate, in qua invocatum est nomen meum, ego incipiam affligere, & vos quasi innocentes & immunes eritis? non eritis immunes: gladium enim ego voco super omnes habitatores terræ, dicit Dominus
30 exercituum. Et tu prophetabis ad eos omnia verba hæc, & dices ad illos; Dominus de excelso rugiet, & de habitaculo sancto suo dabit vocem suam: rugiens rugiet super decorem suum: celeuma quasi calcantium concinetur adversùs omnes habitatores
31 terræ. Pervenit sonitus usque ad extrema terræ: quia judicium Domino cum gentibus: judicatur ipse cum omni carne, impios tradidi gladio, dicit Dominus.
32 Hæc dicit Dominus exercituum; Ecce afflictio egredietur de gente in gentem: & turbo magnus egredietur à summitatibus terræ.
33 Et erunt interfecti Domini in die illa, à summo terræ usque ad summum ejus: non plangentur, & non colligentur, neque sepelientur: in sterquilinium super
34 faciem terræ jacebunt. Ululate pastores, & clamate: & aspergite vos cinere, optimates gregis: quia completi sunt dies vestri, ut interficiamini; & dissipationes vestræ, & cadetis quasi
35 vasa pretiosa. Et peribit fuga à pastoribus, & salvatio ab opti-
36 matibus gregis. Vox clamoris pastorum, & ululatus optimatum gregis: quia vastavit Domi-
37 nus pascua eorum. Et conticuerunt arva pacis à facie iræ
38 furoris Domini. Dereliquit quasi leo umbraculum suum, quia facta est terra eorum in desolationem à facie iræ columbæ, & à facie iræ furoris Domini.

CAP. XXVI.

1 IN principio regni Joakim filii Josiæ regis Juda, factum est verbum istud à Domino, dicens;
2 Hæc dicit Dominus; Sta in atrio domûs Domini: & loquéris ad omnes civitates Juda, de quibus veniunt ut adorent in domo Domini, universos sermones, quos ego mandavi tibi ut loquaris ad eos: noli subtrahere verbum,

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

12 Ἤκουσαν ἔθνη φωνήν σου, καὶ τῆς κραυγῆς
σου ἐπλήσθη ἡ γῆ, ὅτι μαχητὴς πρὸς
μαχητὴν (π) ἠσθένησαν, ἐπὶ τὸ αὐτὸ ἔπεσον
13 ἀμφότεροι. Ἃ ἘΛΆΛΗΣΕ ΚΎΡΙΟΣ
ἐν χειρὶ Ἱερεμίου, τοῦ ἐλθεῖν (ρ) τὸν βασιλέα
Βαβυλῶνος (σ) τοῦ κόψαι γῆν Αἰγύπτου.
14 Ἀναγγείλατε εἰς Μαγδωλὸν, καὶ
παραγγείλατε εἰς Μέμφιν· εἴπατε, Ἐπίστηθι,
καὶ ἑτοίμασον, ὅτι κατέφαγε μάχαιρα
15 τὴν σμίλακά σου. Διατί ἔφυγεν (τ)
ἀπὸ σοῦ ὁ Ἆπις; ὁ μόσχος ὁ ἐκλεκτός
σου οὐκ ἔμεινεν· ὅτι (υ) κύριος παρέλυσεν
16 αὐτόν. Καὶ τὸ πλῆθός σου ἠσθένησε,
καὶ (φ) ἔπεσε· καὶ ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον
αὐτοῦ (χ) ἐλάλει, Ἀναστῶμεν, καὶ (") ἀναστρέψωμεν
πρὸς τὸν λαὸν ἡμῶν (ψ) εἰς
τὴν πατρίδα ἡμῶν, ἀπὸ προσώπου μαχαίρας
17 Ἑλληνικῆς. Καλέσατε τὸ ὄνομα
Φαραὼ Νεχαὼ βασιλέως Αἰγύπτου,
18 Σαὼν ἐσβιὲ μωήδ. Ζῶ ἐγὼ, λέγει
κύριος ὁ θεὸς, ὅτι ὡς τὸ Ἰταβύριον ἐν
τοῖς ὄρεσι, καὶ ὡς ὁ Κάρμηλος (ω) ὁ ἐν τῇ
19 θαλάσσῃ, ἥξει. Σκεύη ἀποικισμοῦ ποίησον
σεαυτῇ κατοικοῦσα θύγατερ Αἰγύπτου,
ὅτι Μέμφις εἰς ἀφανισμὸν ἔσται,
καὶ κληθήσεται Οὐαὶ, διὰ τὸ μὴ
20 ὑπάρχειν κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ. Δάμαλις
κεκαλλωπισμένη Αἴγυπτος, ἀπόσπασμα
ἀπὸ Βορρᾶ ἦλθεν ἐπ' αὐτήν,
21 Καὶ οἱ μισθωτοὶ αὐτῆς ἐν αὐτῇ, ὥσπερ
μόσχοι σιτευτοὶ τρεφόμενοι ἐν αὐτῇ·
διότι καὶ (α) αὐτοὶ ἐπεστράφησαν, καὶ ἔφυγον
ὁμοθυμαδόν· οὐκ ἔστησαν, ὅτι ἡμέρα
ἀπωλείας ἦλθεν ἐπ' (β) αὐτοὺς, καὶ καιρὸς
22 ἐκδικήσεως αὐτῶν. Φωνὴ (γ) αὐτῶν
ὡς ὄφεως συρίζοντος, ὅτι ἐν ἄμμῳ
(δ) πορεύονται, ἐν ἀξίναις ἥξουσιν
23 ἐπ' αὐτήν· ὡς κόπτοντες ξύλα Ἐκκόψουσι
τὸν δρυμὸν αὐτῆς, λέγει (") κύριος,
ὅτι οὐ μὴ εἰκασθῇ, ὅτι (ε) πληθύνει ὑπὲρ
ἀκρίδα, καὶ οὐκ ἔστιν αὐτοῖς ἀριθμός.
24 Κατῃσχύνθη ἡ θυγάτηρ Αἰγύπτου, παρεδόθη
25 εἰς χεῖρας λαοῦ ἀπὸ Βορρᾶ. Ἰδοὺ
ἐγὼ ἐκδικῶ τὸν Ἀμμὼν τὸν υἱὸν αὐτῆς
ἐπὶ Φαραὼ, καὶ ἐπὶ τοὺς πεποιθότας
27 ἐπ' αὐτῷ. Σὺ δὲ μὴ φοβηθῇς δοῦλός
μου Ἰακὼβ, μηδὲ πτοηθῇς Ἰσραήλ·
διότι ἐγὼ (ζ) ἰδοὺ σώζων σε μακρόθεν,
καὶ τὸ σπέρμα σου ἐκ τῆς αἰχμαλωσίας
αὐτῶν. καὶ ἀναστρέψει Ἰακὼβ,
καὶ ἡσυχάσει καὶ ὑπνώσει, καὶ οὐκ ἔσται
ὁ παρενοχλῶν αὐτόν.

Audierunt gentes vocem tuam: & clamore tuo impleta est terra: quia pugnator adversus pugnatorem infirmatus est: in idipsum ceciderunt utrique. QUÆ loquutus est Dominus in manu Heremiæ, cum veniret rex Babylonis ad percutiendam terram Ægypti. (g) Annuntiate in Magdolum, & annuntiate in Memphim: dicite; Sta, & præpara te: quia devoravit gladius (h) smilacem tuam. Quare fugit à te (i) Apis, vitulus electus tuus? non permansit; quia Dominus dissolvit eum: Et multitudo tua infirmata est, & cecidit: & unusquisque ad proximum suum loquebatur; Surgamus, & revertamur ad populum nostrum in patriam nostram à facie gladii Græci. Vocate nomen Pharaonis Nechao regis Ægypti, (k) Saon Esbie Moed. Vivo ego, dicit Dominus Deus, (l) quia, sicut Itabyrium in montibus, & sicut Carmelus in mari, veniet. Vasa transmigrationis fac tibi, habitatrix filia Ægypti: quoniam Memphis in solitudinem erit, & vocabitur Væ, eo quòd non sint habitantes in ea. Vitula adornata Ægyptus: excidium ab Aquilone venit super eam: Et mercenarii ejus in ea, quasi vituli saginati nutriti in (m) ea: nam & ipsi conversi sunt, & fugerunt unanimiter: non steterunt: quia dies perditionis venit super eos, & tempus ultionis eorum. Vox eorum, quasi serpentis sibilantis: quia in arena ambulant, in securibus venient super eam: quasi cædentes ligna Excident sylvam ejus, dicit Dominus: quoniam non supputabitur, quoniam multiplicavit super locustam: & non est eis numerus. Confusa est filia Ægypti, tradita est in manus populi ab (n) Aquilone. Ecce ego ulciscar Ammon filium ejus (o) super Pharaonem, & super eos qui fiderunt (p) in eo. Tu autem ne timueris, serve meus Jacob, neque paveas, Israel: quia ecce ego salvans te de longe, & semen tuum ex captivitate eorum. Et revertet Jacob, & quiescet, & dormiet: & non erit, qui perturbet eum.

MS.A. (π) ἠσθένησεν, (ρ) Ναβουχοδονόσορ τὸν (σ) καὶ ἐκκόψαι τὴν γῆν αὐτοῦ. (τ) ὁ Ἆπις; (υ) ὁ κύριος (φ) ἔπεσον· (χ) ἐλάλουν, (") ἀποστρέψωμεν εἰς τὸν λαὸν (ψ) ἀπὸ προσώπου (ω) ἐν τῇ (α) οὗτοι ἀπεστράφησαν, (β) αὐτοῖς, (γ) ὡς ὄφεως (δ) πορεύσονται, (") κύριος ὁ θεὸς, (ε) ἐπλήθυνεν ὑπὲρ ἀκρίδας, (ζ) σώζω

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

29 ארי הא בקרתא דאתקרי שמי עלה אנא משרי לאבאשא ואתון מדמן דמזכא
תזכון לא תזכון ארי דקטלין בחרבא אנא מכלי על כל יתבי ארעא אמר יי צבאות:
30 ואת תתנבי להון ית כל פתגמיא האלין ותימר להון יי ממרומא יכלי וממדור קודשיה
ירים מימריה אכלאה יכלי דייתון בזוין על ארע בית שכנתיה הא כנחתי מעצרא
31 דמרימין קלהון כן ייתי זועה לכל יתבי ארעא: מטא אתרגושא עד סיפי ארעא ארי
דינא קדם יי בעממיא מתפרע הוא לכל בשרא רשיעיא דבהון מסרנון לקטלא אמר יי:
32 כדנן אמר יי צבאות הא בישתא נפקא מעם לעם ועממין רברבין ייתון בגלי מסיפי
33 ארעא: ויהון קטיליא רמן קדם יי ביומא ההוא מסיפי ארעא ועד סיפי ארעא לא
34 יסתפדון ולא יתכנשון ולא יתקברון לזיבל מבדר על אפי ארעא יהון: אלילו מלכיא
וצוחו וחפו רישיכון בקטמא תקיפי עמא ארי שלימו יומיכון לקטלא ותתבדרון ותפלון
35 36 דהויתון רגיגין כמני חמדתא: וייבד בית ערוקי מן מלכיא ושיזבא מתקיפי עמא: קל
37 צוחת מלכיא ויללת תקיפי עמא ארי אבזי יי ית עמהון: ויצדון מדורי שלמהון מקדם
38 תקוף רוגזא דיי: גלא מלכא מכרכיה ארי הות ארעהון לצדו מן קדם חרב סנאה
דהיא כחמר מרויא ומן קדם תקוף רוגזיה:

כו

1 בריש מלכות יהויקים בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה הוה פתגמא הדין מן קדם
2 יי למימר: כדנן אמר יי קום בדרת בית מקדשא דיי ותתנבי על כל קרויא דבית יהודה
דעלין למסגד בבית מקדשא דיי ית כל פתגמיא דפקדתך לאתנבאה להון לא תמנע
פתגם:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quia ecce in civitate super quam invocatum est nomen meum, ego incipio affligere: & vos putatis prorsus esse immunes? Non eritis immunes: quia eos qui occidunt gladio ego voco super omnes habitatores terræ, dicit Dominus exercituum. Tu autem prophetabis eis omnia verba hæc, & dices eis: Dominus de excelso clamabit, & de habitaculo sancto suo attollet verbum suum: clamando clamabit ut veniant direptores super terram domus majestatis suæ, sicut qui descendunt in torcular, qui tollunt vocem suam, sic veniet conturbatio omnibus habitatoribus terræ. Pervenit tumultus usque ad extrema terræ: quia judicium coram Domino cum populis: retribuet ipse omni carni; impios qui in eis sunt, tradet morti, dicit Dominus. Hæc dicit Dominus exercituum: Ecce malum egredietur à populo in populum, & populi multi venient apertè à finibus terræ. Et erunt occisi *projecti* à facie Domini in tempore illo à finibus terræ usque ad extrema terræ: non plangentur, nec colligentur, nec sepelientur: in stercus dispersum super faciem terræ erunt. Ululate reges, & clamate, & operite capita vestra cinere fortes in populo; quia impleti sunt dies vestri ut occidamini: et dispergemini, et cadetis qui eratis *delicati* quasi vasa desiderabilia. Et peribit domus fugitivorum à regibus, & liberatio à fortibus populi. Vox clamoris regum, & ululatio fortium populi: quia vastavit Dominus populos eorum. Et desolabuntur habitacula pacifica eorum, à facie furoris iræ Domini. Migravit rex ex arce sua; quia fuit terra eorum in desolationem à facie gladii inimici, qui inebriat sicut vinum, & à facie iræ furoris ejus.

CAP. XXVI.

IN principio regni Joachim filii Josiæ regis tribus domus Juda, factum est verbum istud à facie Domini, dicendo: Hæc dicit Dominus, Sta in atrio domus sanctuarii Domini, & prophetabis in omnes civitates domus Juda, quæ veniunt ut adorent in domo sanctuarii Domini, omnia verba quæ præcepi tibi, ut prædiceres eis: ne dimittas verbum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܝ ܥܠܝܗ̇. ܡܫܪܐ ܐܢܐ ܠܡܒܐܫܘ ܠܗ̇. ܘܐܢܬܘܢ
ܡܙܟܐ ܬܙܕܟܘܢ. ܠܐ ܬܙܕܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܚܪܒܐ ܩܪܐ ܐܢܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܚܝܠܬܢܐ: * ܘܐܢܬ ܐܬܢܒܐ ܠܗܘܢ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܡܪܝܐ
ܡܢ ܡܪܘܡܐ ܢܢܗܡ. ܘܡܢ ܡܥܡܪܐ ܕܩܘܕܫܗ ܢܬܠ ܩܠܗ. ܢܗܡܐ: ܢܢܗܘܡ ܥܠ ܕܝܪܗ.
ܗܘܝ ܗܘܝ ܐܝܟ ܥܨܘܪܐ ܕܥܢܒܐ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܡܛܐ ܐܫܘܫܝܐ ܥܕܡܐ
ܠܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܕܝܢܐ ܠܡܪܝܐ ܥܡ ܥܡܡܐ. ܘܐܦ ܗܘ. ܕܐܢ ܠܟܠ ܒܣܪ. ܘܪܫܝܥܐ
ܢܫܠܡ ܐܢܘܢ ܠܚܪܒܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ
ܒܝܫܬܐ ܢܦܩܐ ܡܢ ܥܡܐ ܠܥܡܐ. ܘܡܥܠܥܠܐ ܪܒܐ ܬܬܥܝܪ ܡܢ ܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܘܢܗܘܘܢ
ܩܛܝܠܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܡܢ ܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܠܐ
ܢܐܠܠܘܢ. ܘܠܐ ܢܪܩܕܘܢ. ܘܠܐ ܢܒܟܘܢ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܟܢܫܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܩܒܪܘܢ. ܐܠܐ ܐܝܟ ܙܒܠܐ
ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ ܢܗܘܘܢ. * ܐܝܠܠܘ ܪܥܘܬܐ: ܘܙܥܩܘ. ܘܐܬܦܠܦܠܘ ܚܝܠܬܢܝ ܥܢܐ:
ܕܫܠܡܘ ܝܘܡܝܟܘܢ ܠܡܬܢܟܣܘ. ܘܬܬܒܪܘܢ. ܘܬܦܠܘܢ ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܪܓܝܓܐ. * ܘܢܐܒܕ ܡܥܪܩ
ܡܢ ܪܥܘܬܐ. ܘܦܠܛܐ ܡܢ ܕܟܪܝ ܕܥܢܐ. * ܩܠܐ ܕܓܥܬܐ ܕܪܥܘܬܐ. ܘܝܠܠܬܐ ܕܕܟܪܝ ܕܥܢܐ.
ܕܒܙ ܡܪܝܐ ܡܪܥܝܬܗܘܢ. * ܘܢܬܒܛܠܘܢ ܕܝܪܐ ܕܫܠܡܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ
ܕܫܒܩ ܕܝܪܗ. ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܕܫܒܩ ܡܥܪܬܗ ܡܛܠ ܕܗܘܬ ܐܪܥܗܘܢ ܠܚܘܪܒܐ. ܡܢ ܩܕܡ
ܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܘ *

* ܒܪܫ ܡܠܟܘܬܗ ܕܝܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ ܠܘܬ
ܐܪܡܝܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܩܘܡ ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ.
ܘܐܡܪ ܠܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܐܬܝܢ ܠܡܣܓܕ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ
ܕܦܩܕܬܟ ܠܡܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܠܐ ܬܒܨܪ. ܐܦܠܐ ܚܕܐ ܡܠܬܐ.

* Quandoquidē en ab ipſa civitate ſuper quam 29
invocatū eſt nomen meum, initium facio nocendi
ei, vos immunes eſſetis? haudquaquam
eritis immunes, quoniam gladium advoco in
omnes habitatores terræ, dicit Dñs potentiſſimus.
Tu itaq; prophetabis eis omnes ſermones 30
iſtos, & dices eis; Dñs ab excelſo rugiet,
& ex habitaculo ſanctitatis ſuæ vocem ſuam
edet, horrendè rugiet contra domiciliū ſuum,
hem hem ut *uvarum* calcator reſonabit adverſùs
omnes habitatores terræ, Pervadet 31
ſtrepitus uſq; ad extrema terræ: Quia diſceptatio
eſt Dño cum gentibus, & ipſe judicat
omnem carnem; ideo impios gladio tradam,
dicit Dñs. Sic ait Dñs potentiſſimus, Deus Iſraelis, 32
Ecce malum progredietur de gente in
gentem, & procella magna excitabitur ab extremis
terræ: Eruntque qui interficientur à 33
Domino in die illa, ab extremis terræ uſq, ad
extrema terræ: nemo lugebit, nemo lamentabitur,
nemóque deplorabit eos: non colligentur,
neq; ſepelientur; ſed ut ſtercus in ſuperficie
terræ manebunt. Ululate paſtores, & 34
exclamate; & volutate vos *in pulvere* potentiores
in grege: quoniā expleti ſunt dies veſtri
ut mactemini, frangamini, & cadatis ut vaſa
expetibilia. Et peribit perfugium à paſtoribus, 35
& evadendi loc⁹ ab arietib⁹ gregis: Vox 36
clamoris paſtorum, & ululat⁹ arietum gregis
audietur, eò quòd diripuerit Dñs greges eorum:
Et rumpentur domicilia tuta à conſpe- 37
ctu æſtuantis iræ Dñi, Quia dereliquit domicilium 38
ſuum ut leo qui cubile ſuum derelinquit,
quia redactus eſt terra eorum in ſolitudinem
à conſpectu iræ Domini, & à conſpectu
ferventis furoris ejus.

CAP. XXVI.

INitio regni Jojacimi filii Joſiæ regis Judæ 1
factus eſt ſermo iſte ad Jeremiam à Domino,
hiſce verbis; Sic dicit Dominus, Sta in atrio 2
domûs Domini, & dic omnibus civitatibus
Judæorum venientium ad adorandum in domo
Domini, omnes ſermones quos illis dicendum
præcepi tibi: ne ullum quidem verbum
ſubtrahito:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* سمعوا الامم صوتك * ومن صراخك امتلات الارض * لان محاربا على محارب ضعف جميعا
سقطا كلاهما *

* الاصحاح السادس عشر *

* هذا ما تكلم به الرب بيد ارمياء * اذ اتى بختنصر ملك بابل ليستاصل ارضه *
* اخبروا في مجدول وخبروا في منف قولوا قف وتهيا لان السيف اكل معاركك * لماذا هرب لماذا
فر عجلك المختار هاربا ولم يثبت * لان الرب ازاله * وكثرتك ضعفت * وسقطوا كل واحد
على قريبه * قالوا نقوم ونمضي الى شعبنا من وجه سيف يوناني * ادعوا اسم فرعون ناخاو
ملك مصر صاآون اسبي اموعيد * حي انا يقول الرب الاله انه كما ايطابيريون في الجبال
ومثل الكرمل في البحر ياتي انية السبي * اصنعي لذاتك ايها الساكنة ابنة مصر * لان
منف تصير للفناء وتدعي ويل من اجل انه لا يكون سكان فيها * مصر العجلة المنقشة
ياتي عليها الانكسار من الجربياء * واجراؤها فيها مثل عجول مسمنة مربية فيها * من اجل
انه وهولاء انصرفوا وهربوا معا ولم يقفوا * لان يوم الهلاك اتى عليهم * وزمان انتقامهم بصوت
مثل حية تصفر * لانهم في الرمل يسيرون * وبفوس يوافون لها * مثل قطاعي الخشب يقطعون
غابها * يقول الرب الاله انها لا تشفى * لانهم كثروا اكثر من الجراد وليس لهم عدد * خزيت
ابنة مصر * دفعت في ايدي شعب من الجربياء * ها انا انتقم من امون ابنها على فرعون
وعلى الواثقين به [* MS.Oxon. وادفعهم الى اعدايهم الذين يطلبون انفسهم * في يد
بختنصر ملك بابل وفي ايدي عبيده * ومن بعد ذلك يحل ويسكن كالايام الاولى يقول الرب.]
* وانت لا تخف يا عبدي يعقوب * ولا تجزع يا اسرائيل * من اجل اني انا اخلصك من البعد
وذريتك من السبي * ويرجع يعقوب * ويسكن وينام * ولا يكون من يوذيه *

* *Audient populi vocem tuam, & clamore* 12
tuo implebitur terra; quia bellator ſuper
bellatorem, uterque debilitatus, corruent
ambo.

Textus decimus ſextus.

Hæc ſunt quæ locutus eſt Dominus 13
per Jeremiam, quando venit
Bochtonaſſar rex Babelis ad evertendam
terram ipſius.

Annuntiate in Magdol, & notum facite 14
in Menphi; dicite, Siſte & compara te,
quia gladius voravit roſtrum tuum. Ad 15
quid aufugit, quâ de causâ vitulus tuus
electus fugiens erupit, nec ſubſtitit? quia
Dominus depulit illum. Multitudo quoque 16
tua conſternata eſt, et cadentes quiſq;
ſuper proximum ſuum; dicebant, Surgamus,
& eamus ad populares noſtros à conſpectu
gladii Græci. Vocate nomen Pharaonis 17
Nechao regis Ægypti, Saon esbi
Hammoed. Vivus ego ſum, ait Dominus 18
Deus, quòd ut Itabyrion in montibus, et ut
Charmelus in mari, venient instrumenta
populationis. Tui ipſius curam age O o- 19
tioſa filia Ægypti: nam Menphis erit in
exitium, & vocabitur, Infœlicitas; quia
nulli manebunt habitatores in ea. Super 20
Ægyptum vitulam cælatam irruet contritio
ab Aquilone, Dum mercenarii ejus in 21
ipſa tanquam vituli ſaginati nutriuntur
in ea: nam etiam iſti diſcedent fugientesq;
ſimul, & non ſubſiſtent; quia dies exitii
veniet ſuper illos, et tempus ultionis eorum
cum voce ſimili ſerpentis ſibilantis. Nam 22
per arenas incedentes pervenient ad eam
cum ſecuribus, ut lignorum cæſores cædent
ſylvas ejus. Dicit Dominus Deus eam mi- 23
nimè ſanandam, quòd ii plurimi ſint,
plures locuſtis, imò innumeri. Pudefiet 24
filia Ægypti, tradetur in manus populi
Aquilonaris: Ecce ego vindictam de Am- 25
mone filio ipſius capiam, à Pharaone & à
fidentibus ipſo. [MS. Ox. *Et tradam* 26
eos hoſtibus ſuis, qui quærunt animas
ipſorum: nempe in manus Bochtonaſſaris
regis Babyloniæ, & in manus ſervorum
ejus: poſtmodùm autem quieſcet, & habitabunt
ſicut diebus priſcis, dicit Dominus.] *Tu verò ne timeto ſerve mi* 27
Jacob, neque formidato O Iſrael; quoniam
ego vindicabo te è loco remoto, &
progeniem tuam è captivitate: & revertetur
Jacob, & quieſcet, dormiétque nemine
lædente.

me pœniteat & ,mala ſua via à unuſquiſq; convertãtur &,audiant fortè Si
3 אולי ישמעו וישבו איש מדרכו הרעה ונחמתי
malitiam propter ,eis facere *cogitans* ego quod ,*malum* ad
אל־הרעה אשר אנכי חשב לעשות להם מפני רע
non Si : Dominus dixit Sic : eos ad dices Et .eorum *ſtudiorum*
4 מעלליהם: ואמרת אליהם כה אמר יהוה אם־לא
.*veſtras facies ad* dedi quam ,mea lege in *ambulandum ad* ,*me ad audieritis*
תשמעו אלי ללכת בתורתי אשר נתתי לפניכם:
mittens ego quos ,prophetarum meorũ ſervorũ verbis *ſuper audiendũ Ad*
5 לשמע על־דברי עבדי הנבאים אשר אנכי שלח
dabo Et .*audiviſtis* non & ,mittendo & ,ſurgendo mane & , vos ad
6 אליכם והשכם ושלח ולא שמעתם: ונתתי
dabo hanc urbem & , Siloh ſicut iſtam domum
את־הבית הזה כשלה ואת־העיר הזאתה אתן
ſacerdotes audierunt Et .terræ gentibus cunctis maledictionem in
7 לקללה לכל גויי הארץ: וישמעו הכהנים
verba loquentem Irmejahu populus omnis & ,prophetæ &
והנביאים וכל־העם את־ירמיהו מדבר את־הדברים
Irmejahu *conſummare ſecundùm* fuit Et .Domini domo in hæc
8 האלה בבית יהוה: ויהי ככלות ירמיהו
,populum omnem ad *loqui* Dominus præceperat quæ omnia loqui
לדבר את כל־אשר־צוה יהוה לדבר אל־כל־העם
,populus omnis & , prophetæ & , ſacerdotes eum apprehenderunt &
ויתפשו אתו הכהנים והנביאים וכל־העם
,Domini nomine in prophetâſti Quare .morieris Moriendo : dicendo
9 לאמר מות תמות: מדוע נבית בשם־יהוה
deſolabitur iſta urbs & , iſta domus erit Siloh Sicut : dicendo
לאמר כשלו יהיה הבית הזה והעיר הזאת תחרב
Irmejahu adverſus populus omnis eſt congregatus & ? *habitatore non à*
מאין יושב ויקהל כל־העם אל־ירמיהו
verba Jehudah principes audierunt Et .Domini domo in
10 בבית יהוה: וישמעו שרי יהודה את הדברים
ſederunt & : Domini domum regis domo de aſcenderunt & ,hæc
האלה ויעלו מבית־המלך בית יהוה וישבו
prophetæ & ſacerdotes dixerunt Et .novæ Domini portæ oſtio in
11 בפתח שער־יהוה החדש: ויאמרו הכהנים והנביאים
mortis Judicium : dicendo ,populum omnem ad & ,principes ad
אל־השרים ואל־כל־העם לאמר משפט־מות
ſicut , iſtam civitatem contra prophetavit quia : huic viro
לאיש הזה כי נבא אל־העיר הזאת כאשר
.principes omnes ad Irmejahu ait Et .veſtris auribus *in* audiſtis
12 שמעתם באזניכם: ויאמר ירמיהו אל־כל־השרים
prophetandum ad me miſit Dominus : dicendo ,populum univerſum ad &
ואל־כל־העם לאמר יהוה שלחני להנבא
verba omnia hanc civitatem *ad* & ,iſtam domum *ad*
אל־הבית הזה ואל־העיר הזאת את כל־הדברים
,veſtra *ſtudia* & ,veſtras vias facite bonas nunc Et .audiſtis quæ
13 אשר שמעתם: ועתה היטיבו דרכיכם ומעלליכם
ad Dominum pœnitebit & : veſtri Dei Domini *voce in audite &*
ושמעו בקול יהוה אלהיכם וינחם יהוה אל־
,veſtra manu in *ego ecce* ego Et .vos adverſum eſt locutus quod *malum*
14 הרעה אשר דבר עליכם: ואני הנני בידכם
Veruntamen .veſtris oculis in rectum ſicut & ,bonum ſicut mihi facite
15 עשו־לי כטוב וכישר בעיניכם: אך ׀
innocentẽ ſanguinẽ quòd me *vos interficientes* ſi quia ,ſciatis ſciendo
ידע תדעו כי אם־ממתים אתם אתי כי־דם נקי
:ejus habitatores *ad* & ,iſtam civitatem *ad* & , vos ſuper *dantes vos*
אתם נתנים עליכם ואל־העיר הזאת ואל־ישביה
loquendum ad , vos ad Dominus me miſit veritate in nam
כי באמת שלחני יהוה עליכם לדבר
.hæc verba omnia veſtris auribus in
באזניכם את כל־הדברים האלה:

Verſio VULG. LAT.

3 Si fortè audiant & convertantur unuſquiſque à via ſua mala : & pœniteat me mali, quod cogito facere eis propter malitiam ſtu- 4 diorum eorum. Et dices ad eos; Hæc dicit Dominus; Si non audieritis me, ut ambuletis in lege 5 mea, quam dedi vobis, Ut audiatis ſermones ſervorum meorum Prophetarum, quos ego miſi ad vos de nocte conſurgens, & 6 dirigens, & non audîſtis : Dabo domum iſtam ſicut Silo, & urbem hanc dabo in maledictionẽ cun- 7 ctis gentibus terræ. Et audierunt ſacerdotes, & prophetæ, & omnis populus, Jeremiam loquentem verba hæc in domo Domini. 8 Cúmque compléſſet Jeremias, loquens omnia quæ præceperat ei Dominus ut loqueretur ad univerſum populum, apprehenderunt eum ſacerdotes, & prophetæ, & omnis populus, dicens; 9 Morte moriatur. Quarè prophetavit in nomine Domini, dicens; Sicut Silo erit domus hæc: & urbs iſta deſolabitur, eò quòd non ſit habitator? Et congregatus eſt omnis populus adverſùs 10 Jeremiam in domo Domini. Et audierunt principes Juda verba hæc : & aſcenderunt de domo regis in domum Domini, & ſederunt in introitu portæ domûs 11 Domini novæ. Et locuti ſunt ſacerdotes & prophetæ ad principes, & ad omnem populum, dicentes; Judicium mortis eſt viro huic : quia prophetavit adverſùs civitatem iſtam, ſicut audîſtis 12 auribus veſtris. Et ait Jeremias ad omnes principes, & ad univerſum populum, dicens; Dominus miſit me, ut prophetarem ad domum iſtam, & ad civitatem hanc, omnia verba quæ audîſtis. 13 Nunc ergò bonas facite vias veſtras, & ſtudia veſtra, & audite vocem Domini Dei veſtri : & pœnitebit Dominum mali, quod 14 locutus eſt adverſùm vos. Ego autem ecce in manibus veſtris ſum : facite mihi quod bonum et rectum eſt in oculis veſtris : 15 Veruntamen ſcitote et cognoſcite, quòd ſi occideritis me, ſanguinem innocentẽ tradetis contra voſmetipſos, et contra civitatem iſtam, et habitatores ejus: in veritate enim miſit me Dominus ad vos, ut loquerer in auribus veſtris omnia verba hæc.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

28 (η) Μὴ φοβοῦ παῖς μου Ἰακὼβ, λέγει κύριος, ὅτι μετὰ σοῦ ἐγώ εἰμι. ἡ ἀπτόητος ϗ τρυφερὰ παρεδόθη. ὅτι ποιήσω (θ) ἔθνει συντέλειαν ἐν παντὶ ἔθνει εἰς οὓς ἐξῶσά σε ἐκεῖ, σὲ δὲ οὐ μὴ ποιήσω ἐκλιπεῖν, ϗ παιδεύσω σε εἰς (ι) κρίμα, ϗ ἀθῷον οὐκ (κ) ἀθῳώσω σε.

Ne timeas puer meus Jacob, dicit Dominus : quia tecum ego ſum. (q) Intrepida & delicata tradita eſt. Quia faciam genti conſummationem in omni gente, ad quos expuli te illuc : te autem non faciam deficere : et caſtigabo te in judicio, et innocentem faciens non faciam innocentem te.

MS.A. (η) Καὶ σὺ μὴ (θ) Συντέλειαν ἐν παντὶ (ι) κρίσιν, (κ) ἀθῳώσω

Cap. 50.
1 Vulg.Lat.

ΚΕΦ. κζʹ.

(α) ΛΟ´ΓΟΣ ΚΥΡΙ´ΟΥ ὋΝ ἘΛΑ´ΛΗΣΕ ἘΠῚ ΒΑΒΥΛΩ͂- 2 ΝΑ. Ἀναγγείλατε ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ ἀκουστὰ ποιήσατε, ϗ μὴ κρύψητε· εἴπατε, Ἑάλωκε Βαβυλὼν, κατῃσχύνθη (β) Βῆλος, ἡ ἀπτόητος, ἡ τρυφερὰ παρεδόθη 3 (γ) Μαιρωδὰχ, Ὅτι ἀνέβη ἐπ᾽ αὐτὴν ἔθνος ἀπὸ Βοῤῥᾶ, οὗτος θήσει τὴν γῆν αὐτῆς εἰς ἀφανισμὸν, ϗ οὐκ ἔσται ὁ κατοικῶν ἐν αὐτῇ ἀπὸ ἀνθρώπου (δ) ϗ ἕως 4 κτήνους. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, ϗ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ἥξουσιν οἱ υἱοὶ (ε) Ἰσραὴλ αὐτοὶ, ϗ οἱ υἱοὶ Ἰούδα ἐπὶ τὸ αὐτὸ, βαδίζοντες ϗ κλαίοντες πορεύσονται, τὸν 5 κύριον θεὸν αὐτῶν ζητοῦντες. Ἕως (ζ) Σιὼν ἐρωτήσουσι τὴν ὁδὸν, ὧδε γὰρ τὸ πρόσωπον αὐτῶν δώσουσι, ϗ ἥξουσι, ϗ καταφεύξονται πρὸς κύριον (η) τὸν θεόν· δια- 6 θήκη γὰρ αἰώνιος οὐκ ἐπιλησθήσεται. Πρόβατα ἀπολωλότα ἐγενήθη ὁ λαός μου, οἱ ποιμένες αὐτῶν ἐξῶσαν αὐτοὺς, ἐπὶ τὰ ὄρη ἀπεπλάνησαν αὐτοὺς, ἐξ ὄρους ἐπὶ βουνὸν ᾤχοντο, ἐπελάθοντο κοίτης αὐ- 7 τῶν. Πάντες οἱ εὑρίσκοντες αὐτοὺς, (θ) ἀνήλισκον αὐτούς. οἱ ἐχθροὶ αὐτῶν εἶπαν, Μὴ ἀνῶμεν αὐτοὺς, ἀνθ᾽ ὧν ἥμαρτον τῷ κυρίῳ. νομὴ δικαιοσύνης τῷ συν- 8 αγαγόντι τοὺς πατέρας αὐτῶν. (ι) Ἀπαλλοτριώθητε ἐκ μέσου Βαβυλῶνος ϗ ἀπὸ γῆς Χαλδαίων, ϗ ἐξέλθατε, ϗ γένεσθε ὥσπερ 9 δράκοντες κατὰ πρόσωπον προβάτων. Ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐγείρω ἐπὶ Βαβυλῶνα συναγωγὰς ἐθνῶν ἐκ γῆς Βοῤῥᾶ, ϗ παρατάξονται αὐτῇ· ἐκεῖθεν (κ) ἁλώσεται, ὡς βολὶς μαχητοῦ συνετοῦ οὐκ ἐπιστρέψει κενή. 10 Καὶ ἔσται ἡ Χαλδαία εἰς προνομὴν, πάντες οἱ (λ) προνομεύοντες αὐτὴν ἐμπλησθή- 11 σονται. Ὅτι ηὐφραίνεσθε, ϗ κατεκαυχᾶσθε, διαρπάζοντες τὴν κληρονομίαν μου, διότι ἐσκιρτᾶτε, ὡς βοΐδια ἐν βοτάνῃ, 12 ϗ ἐκερατίζετε ὡς ταῦροι. Ἠσχύνθη ἡ μήτηρ (μ) ὑμῶν σφόδρα, ἐνετράπη ἡ τεκοῦσα (ν) ὑμᾶς μήτηρ ἐπ᾽ ἀγαθά, ἐσχάτη 13 ἐθνῶν, ἔρημος. Ἀπὸ ὀργῆς κυρίου, οὐ κατοικηθήσεται (ξ)· ϗ ἔσται εἰς ἀφανισμὸν πᾶσα· ϗ πᾶς ὁ διοδεύων διὰ Βαβυλῶνος σκυθρωπάσει, ϗ συριοῦσιν ἐπὶ πᾶσαν τὴν πληγὴν αὐτῆς.

CAP. XXVII.

VErbum Domini, quod locutus eſt ſuper (a) Babylonem. Annuntiate in gentibus, & audita (b) facite, & ne abſcondatis. Dicite; Capta eſt Babylon: Confuſus eſt (c) Belus; interrita, delicata tradita eſt Merodach. Quia aſcendit ſuper eam gens ab Aquilone. Hic ponet terram ejus in deſolationem : & non erit, qui habitet in ea ab homine, & uſque ad pecus. In diebus illis, & in tempore illo, venient filii Iſrael, ipſi, & filii Juda in idipſum: euntes, & plorantes ibunt, Dominum Deum ſuum quærentes. Uſque ad Sion interrogabunt viam : huc enim faciem ſuam dabunt : & venient, & confugient ad Dominum Deum. Teſtamentum enim æternum oblivioni non tradetur. Oves perditæ factus eſt populus meus : paſtores eorum expulerunt eos in montes, ſeduxerunt eos, de monte in collem abierunt : obliti ſunt cubilis ſui. Omnes invenientes eos abſumebant eos. Inimici eorum dixerunt, Ne dimittamus eos, eò quòd peccaverunt Domino. Paſcua juſtitiæ ei, qui congregavit patres (d) eorum. Abalienamini de medio Babylonis : & de terra Chaldæorum, & egredimini : & eſtote velut (e) dracones ante faciem ovium. Quia ecce ego ſuſcito ſuper Babylonem congregationes gentium de terra Aquilonis, & aciem opponent ei : inde capietur : quaſi jaculum pugnatoris intelligentis non redibit vacuum. Et erit Chaldæa in direptionem : omnes diripientes eam implebuntur. Quia lætabamini, & gloriabamini diripientes hæreditatem meam : quia geſtiebatis quaſi vituli in herba, & cornupetebatis, velut tauri. Confuſa eſt mater veſtra valde : (f) pudefacta eſt mater, quæ peperit vos ad bona : noviſſima gentium, (g) deſerta, Præ ira Domini, non habitabitur : et erit univerſa in ſolitudinem; et omnis, qui tranſibit per Babylonem, triſtabitur, et ſibilabunt ſuper omnem plagam ejus.

MS.A. (α) Ὁ ΛΟ´ΓΟΣ ὋΝ ἘΛΑ´ΛΗΣΕΝ ΚΥ´ΡΙΟΣ ἘΠῚ (β) Βὴλ, (γ) Μερωδὰχ, (δ) ἕως κτήνους. (ε) Ἰακὼβ, ϗ οἱ (ζ) εἰς Σιὼν (η) θεόν (θ) κατανάλισκον (ι) Ἀπηλλοτριώθητε (κ) ἁλώσονται, (λ) προνομεύσαντες (μ) ὑμῶν (ν) ἡμᾶς (ξ) εἰς τὸν αἰῶνα· ϗ ἔσται εἰς ἀφανισμὸν πᾶσα ἡ γῆ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 מאים ישמעון ויתובון גבר מאורחיה בישא ואתיב מן בישתא דאנא חשיב למעבד
4 להון מקדם בישות עובדיהון : ותימר להון כדנן אמר יי אם לא תקבלון למימרי
5 למהך באוריתי דיהבית קדמיכון : לקבלא לפתגמי עבדי נביא דאנא שלח לותכון
6 מקדם ומשלח ולא קבלתון : ואתן ית ביתא הדין כשילו וית קרתא הדא אתן
7 ללוטא לכל עממי ארעא : ושמעו כהניא וספריא וכל עמא דירמיה מתנבי ית פתגמיא
8 האלין בבית מקדשא דיי : והוה כד שיצי ירמיה לאתנבאה ית כל דפקיד יי למללא
9 עם כל עמא ואחדו יתיה כהניא וספריא וכל עמא למימר ממת תמות : מדין
אתנביתא בשמא דיי למימר כשילו יהי ביתא הדין וקרתא הדא תחרוב מבלי יתיב
10 ואתכנש כל עמא על ירמיה בבית מקדשא דיי : ושמעו רברבי יהודה ית פתגמיא האלין
וסליקו מבית מלכא לבית מקדשא דיי ויתיבו במעלנא דתרע בית מקדשא דיי
11 מדינחאה : ואמרו כהניא וספריא לרברביא ולכל עמא למימר חובת דין דקטול לגברא
12 הדין ארי אתנבי על קרתא הדא כמה דשמעתון באודניכון : ואמר ירמיה לכל
רברביא ולכל עמא למימר יי שלחני לאתנבאה על ביתא הדין ועל קרתא הדא ית כל
13 פתגמיא דשמעתון : וכען אתקינו אורחתכון ועובדיכון וקבלו למימרא דיי אלהכון
14 ויתוב יי מן בישתא דמליל עליכון : ואנא האנא מסיר בידכון עבידו לי כמה דתקן
15 וכמה דכשר בעיניכון : ברם מידע תידעון ארי אם קטלין אתון יתי ארי דם זכי אתון
יהבין עליכון ועל קרתא הדא ועל יתבהא ארי בקשוט שלחני יי עליכון לאתנבאה
קדמיכון ית כל פתגמיא האלין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Fortè audient & convertentur unuſquiſque à via ſua mala, & avertar ego à malo quod cogito facere eis propter malitiam operum ipſorum. Et dices ad eos : Hæc dicit Dominus; Si non receperitis verbum meum ut ambuletis in lege mea quam dedi coram vobis : Ut obediatis verbis ſervorum meorum prophetarum, quos ego miſi ad vos, manè conſurgens & mittens, & non obediſtis. Et dabo domum iſtam ſicut Silo, & civitatem iſtam dabo in maledictionem omnibus populis terræ. Et audierunt ſacerdotes & ſcribæ & omnis populus Jeremiam prophetantem omnia verba hæc, in domo ſanctuarii Domini. Et factum eſt cùm conſummaſſet Jeremias prophetare omnia quæ præcepit ei Dominus ut loqueretur cum omni populo, apprehenderunt eum ſacerdotes & ſcribæ, & omnis populus, dicendo : Morte morieris. Quare prophetâſti in nomine Domini, dicens : Sicut Silo erit domus iſta? & civitas hæc deſolabitur abſque habitatore? Et congregatus eſt omnis populus contra Jeremiam in domo ſanctuarii Domini. Et audierunt principes Juda verba hæc, & aſcenderunt de domo regis in domum ſanctuarii Domini, & ſederunt in introitu portæ orientalis domus ſanctuarii Domini. Et dixerunt ſacerdotes & ſcribæ principibus & omni populo, dicentes : Peccatum judicii mortis eſt viro huic; quia prophetavit adverſùs civitatem iſtam : ſicut audiſtis auribus veſtris. Et ait Jeremias ad omnes principes, & ad omnem populum dicens : Dñs miſit me ut prophetarem contra domum iſtam, & contra civitatem hanc omnia verba quæ audiſtis. Et nunc rectas facite vias veſtras, & opera veſtra, & obedite verbo Dñi Dei veſtri, & avertetur Dñs à malo quod locutus eſt contra vos. Et *ego* ecce ego traditus ſum in manum veſtram; facite mihi ſicut rectum eſt, & ſicut placuerit oculis veſtris. Veruntamen ſciendo ſcitote, quia ſi occiditis me, ſanguinem innocentem vos dabitis ſuper vos, & ſuper civitatem hanc, & ſuper habitatores ejus. Quia verè miſit me Dñs ad vos, ut prophetarem in conſpectu veſtro omnia verba hæc.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܕܠܡܐ ܢܫܡܥܘܢ. ܘܢܬܦܢܘܢ ܐܢܫ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܬܬܘܐ ܥܠ ܒܝܫܬܐ ܕܐܬܪܥܝܬ
ܠܡܥܒܕ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܒܝܫܘܬܐ ܕܥܒܕܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢ
ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܠܝ ܘܬܗܠܟܘܢ ܒܢܡܘܣܝ ܕܝܗܒܬ ܩܕܡܝܟܘܢ: * ܘܬܫܡܥܘܢ ܠܡܠܘܗܝ
ܕܥܒܕܝ ܢܒܝܐ ܕܐܢܐ ܡܫܕܪ ܠܘܬܟܘܢ. ܩܕܡܬ ܘܫܕܪܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ.
* ܐܬܠܝܗܝ ܠܒܝܬܐ ܗܢܐ ܐܝܟ ܫܝܠܘ. ܘܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܐܬܠ ܠܠܘܛܬܐ. ܠܟܠܗܘܢ 6
ܥܡܡܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܫܡܥܘ ܟܗܢܐ ܘܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܘܟܠܗ ܥܡܐ. ܠܐܪܡܝܐ ܟܕ ܡܡܠܠ 7
ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܟܕ ܫܠܡ ܐܪܡܝܐ ܠܡܡܠܠܘ ܟܠܡܕܡ ܕܦܩܕܗ ܡܪܝܐ 8
ܠܡܡܠܠܘ ܠܟܠܗ ܥܡܐ. ܐܚܕܘܗܝ ܟܗܢܐ ܘܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܘܟܠܗ ܥܡܐ ܘܐܡܪܘ. * ܢܬܩܛܠ 9
ܕܐܬܢܒܝ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ: ܘܐܡܪ ܕܐܝܟ ܫܝܠܘ ܢܗܘܐ ܒܝܬܐ ܗܢܐ. ܘܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܬܚܪܒ ܡܢ ܕܠܐ
ܥܡܘܪܐ. ܘܐܬܟܢܫܘ ܟܠܗ ܥܡܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܫܡܥܘ ܪܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ 10
ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ. ܘܤܠܩܘ ܡܢ ܒܝܬ ܡܠܟܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܝܬܒܘ ܒܡܥܠܢܐ
ܕܬܪܥܐ ܚܕܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪܘ ܟܗܢܐ ܘܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܠܪܘܪܒܢܐ ܘܠܟܠܗ ܥܡܐ 11
ܟܕ ܐܡܪܝܢ. ܕܝܢܐ ܕܡܘܬܐ ܚܝܒ ܓܒܪܐ ܗܢܐ. ܕܐܬܢܒܝ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܘܥܠ ܥܡܘܪܝܗ.
ܐܝܟ ܡܐ ܕܫܡܥܬܘܢ ܒܐܕܢܝܟܘܢ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܘܠܟܠܗ ܥܡܐ. 12
ܡܪܝܐ ܫܕܪܢܝ ܠܡܬܢܒܝܘ ܥܠ ܒܝܬܐ ܗܢܐ ܘܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ
ܕܫܡܥܬܘܢ. * ܘܗܫܐ ܐܬܩܢܘ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܘܥܒܕܝܟܘܢ. ܘܫܡܥܘ ܠܩܠܗ ܕܡܪܝܐ 13
ܐܠܗܟܘܢ. ܘܢܬܬܘܐ ܡܪܝܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܕܐܡܪ ܥܠܝܟܘܢ. * ܘܐܢܐ ܗܐ ܒܐܝܕܝܟܘܢ ܐܢܐ. 14
ܥܒܕܘ ܠܝ ܐܝܟ ܕܫܦܪ. ܘܐܝܟ ܕܬܩܢ ܒܥܝܢܝܟܘܢ. * ܒܪܡ ܡܕܥ ܕܥܘ. ܕܐܢ ܩܛܠܝܢ ܐܢܬܘܢ 15
ܠܝ. ܕܡܐ ܙܟܝܐ ܝܗܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܠܝܟܘܢ ܘܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܘܥܠ ܥܡܘܪܝܗ. ܡܛܠ
ܕܒܩܘܫܬܐ ܫܕܪܢܝ ܡܪܝܐ ܠܘܬܟܘܢ. ܕܐܡܪ ܒܐܕܢܝܟܘܢ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ.

* Si fortè acquieſcant, & revertantur quiſque à via ſua mala, ut deſiſtam à malo quod eis inferre decreverã propter nequitiã actionũ eorum: 3 Itaq; dic eis; Sic dicit Dñs, niſi acquieveritis mihi, & ambulaveritis in lege mea quã propoſui vobis; 4 Et acquieveritis ſermonib' ſervorũ meorum prophetarũ quos ego mitto ad vos (ſingulis *enim* diebus diluculò miſi, & nondũ acquieviſtis.) 5 Reddã domũ iſtam ſimilem Silo, & civitatẽ iſtam maledictioni tradam apud omnes populos terræ. 6 Audierunt autem ſacerdotes, & prophetæ falſi, totúſque populus Jeremiam ſermones hujuſmodi loquentẽ in domo Dñi. 7 Quare cùm finem feciſſet Jeremia dicendi quicquid præceperat ei Dñs proloqui apud univerſum populũ, tenuerunt eum, ſacerdotes, & falſi prophetæ, totúſq; popul' ille, & dixerũt; 8 Occidatur qui prophetavit in nomine Dñi, dixítque ſimilem Silo fore domũ iſtam, & civitatẽ hanc ruiturã ob defectũ incolarũ: adeóq; congregatus fuerat univerſus populus contra Jeremiam in domo Dñi. 9 Audientes autem principes Judæ ſermones iſtos, aſcenderunt è domo regia in domũ Domini, & ſederunt in veſtibulo portæ novæ domûs Dñi. 10 Tum locuti ſunt ſacerdotes falſique prophetæ ad principes & univerſum populũ, hiſce verbis; Sententiâ mortis dignus eſt vir iſte, quia prophetavit contra civitatem iſtam & contra habitatores ejus, quemadmodum auribus veſtris audiviſtis. 11 Dixit autem Jeremia cunctis principibus totíque populo, Dominus quidem me miſit ad prophetandum contra domum hanc, & contra civitatem iſtã omnes ſermones quos audîſtis. 12 Nunc itaque corrigite vias veſtras & actiones veſtras, & obtemperate voci Dñi Dei veſtri, ut deſiſtat Dñs à malo quod in vos decrevit. 13 Quod autem ad me, ecce ſum inter man' veſtras, facite prout libuerit placuerítque vobis. 14 Veruntamen certò ſcitote, quòd ſi me interfeceritis, ſanguinem innocentem aſcribetis contra vos, contra civitatem iſtam, & contra habitatores ejus: quoniam reverà miſit me Dominus ad vos, ut referrem in aures veſtras omnes ſermones iſtos. 15

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وأنت لا تخف يا عبدي يعقوب يقول الرب * لأني أنا معك أنا * الغير خايفة المنعمة أسلمت * 28
لأني أصنع هلاكا بكل أمة أقصيتك إليهم هناك * وأما أنت أصنعك أن لا تفني * وأؤدبك
بالحكم ولا أتركك تزكية *

* الفصل السابع والعشرون *

* القول الذي تكلم به الرب على بابل * أخبروا في الأمم وأسمعوا مسمعات ولا تخفوا قولوا 1 2
أهلكت بابل * خزي بيل ماروصاخ * الغير خايفة المنعمة أسلمت * لأن أمة من الجربياء 3
صعدت عليها * هذه تصنع أرضها للفناء * ولا يكون من يسكن فيها من الإنسان إلى
البهيمة * في تلك الأيام وفي ذلك الزمان تأتي بنو يعقوب وبنو يهودا جميعا يمشون ويبكون 4
يقصون طالبين الرب إلههم إلى صهيون يسألون الطريق * لأنهم يعطون وجوههم هاهنا 5
ويأتون ويلتجون إلى الرب الإله * لأنه عهد أبدي لا ينسى * صار شعبي خرافا ضالة * رعاتهم 6
أقصوهم * على الجبال أضلوهم * يعبرون من جبل إلى تل * نسوا مضاجعهم * جميع الذين 7
يجدونهم يأكلونهم * أعداؤهم قالوا لا ندعهم لأنهم أخطأوا للرب مرعى العدل الجامع آبائهم *
* تغربوا من وسط بابل * ومن أرض الكلدانيين اخرجوا * وصيروا مثل تنانين لوجه الخراف 8
* لأني ها أنا أثير على بابل مجامع أمم من أرض الجربياء * ويصطفون عليها * من هناك يهلكون 9
مثل نصل المحارب الفهم لا يرجع فارغا * وتكون الكلدانية للنهب * وجميع الذين ينهبونها 10
يشبعون * لأنكم فرحتم وافتخرتم يا خاطفي ميراثي * من أجل أنكم طربتم مثل عجاجيل 11
في النبات * وتناطحتم مثل الثيران * افتضحت أمكم جدا * خجلت الأم التي ولدتكم 12
للخيرات * آخرة الأمم خراب من غضب الرب لا يسكن إلى الأبد * وتكون كل الأرض للفناء * 13
وكل من يمر ببابل يعبس * ويصفرون على كل ضربتها *

* *Tu igitur ne timeto ſerve mi Jacob, ait Dominus; quoniam ego tecum ſum: impavida illa et delicata tradetur;* 28 *quoniam excidium facturus ſum in omnibus gentibus ad quas te depuli; te autem efficiam ut non conſumaris: verùm puniam te in judicio, nec omnino inſontem relinquam.*

CAP. XXVII.

SErmo quem locutus eſt Dominus contra Babelem. 1

Annuntiate inter gentes, publicum facite, & ne celetis: dicite, Periit Babel, pudefactus eſt Bil-merodach, intrepida illa et voluptuaria dedit manus. 2 *Quoniam gens quædam ex Aquilone contra ipſam aſcendit; hæc terram ejus tantum ad exitium rediget, ut nullus ſit vel homo vel jumentum qui habitet in ea.* 3 *Iis diebus eóque tempore filii Jacobi & filii Judæ ſimul venient, ſtabunt, ac flebunt: quærentes Dominum Deum ſuum, pergent ad Sionem interrogantes de via.* 4 *Huc enim vertent faciem ſuam, & venient, confugiéntque ad Dominum Deum; quia fœdus eſt perpetuum quod nunquam oblivioni tradetur.* 5 *Factus eſt populus meus oves perditæ, paſtores earum depulerunt eas, ſuper montes perdiderunt eas, aberrant de monte ad collem, oblitæ ſunt cubilis ſui:* 6 *Quicunque inveniunt eas, comedunt eas. Hoſtes eorum dicunt, Ne dimittamus eos, quia peccaverunt in Dominum paſcuum juſtitiæ, congregantem patres eorum.* 7 *Migrate de medio Babelis, et de terra Chaldæorum exite et eſtote veluti dracones ante agnos.* 8 *Nam ecce concitabo contra Babelem turbas gentium de terra Aquilonari, quæ ſe diſponent contra eam (exinde peribunt) tanquam cuſpis ſagittæ bellatoris periti qui non revertitur vacuus.* 9 *Eritque Chaldæa in prædam, et omnes qui prædabuntur eam, implebuntur.* 10 *Quia lætati & gloriati eſtis O raptores hæreditatis meæ; quia exſultâſtis ut vituli in gramine, & quaſi tauri invicèm cornu petîſtis:* 11 *Maximâ ignominiâ affecta eſt mater veſtra, erubuit mater quæ vos ad bona genuit.* 12 *Finis gentium, ob iram Domini, ruina erit nunquam habitabilis; redigetur enim tota terra in deſolationem, & quicunque ſecus Babelem tranſierint, frontem contrahent & ſibilabunt propter tantam ejus plagam.* 13

,prophetas ad & ,ſacerdotes ad populus omnis & ,principes dixerunt Et
16 וַיֹּאמְרוּ הַשָּׂרִים וְכָל־הָעָם אֶל־הַכֹּהֲנִים וְאֶל־הַנְּבִיאִים
Domini nomine in quia :mortis judicium huic viro non
אֵין־לָאִישׁ הַזֶּה מִשְׁפַּט־מָוֶת כִּי בְּשֵׁם יְהוָה
ſenioribus de viri Surrexeruntque .nos ad eſt locutus noſtri Dei
17 אֱלֹהֵינוּ דִּבֶּר אֵלֵינוּ : וַיָּקֻמוּ אֲנָשִׁים מִזִּקְנֵי
Michah : dicendo ,populi *concionem* omnem ad dixerunt & ,terræ
18 הָאָרֶץ וַיֹּאמְרוּ אֶל־כָּל־קְהַל הָעָם לֵאמֹר : מִיכָה
dixit & ,Jehudah regis Chizchijahu diebus in *vaticinans fuit* Moraſtites
הַמּוֹרַשְׁתִּי הָיָה נִבָּא בִּימֵי חִזְקִיָּהוּ מֶלֶךְ־יְהוּדָה וַיֹּאמֶר
: exercituum Dominus dixit Sic : dicendo ,Jehudah populū omnem ad
אֶל־כָּל־עַם יְהוּדָה לֵאמֹר כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת
domus mons & ,erit tumuli Jeruſalaim & ,arabitur ager Sijon
צִיּוֹן שָׂדֶה תֵחָרֵשׁ וִירוּשָׁלַם עִיִּים תִּהְיֶה וְהַר הַבַּיִת
Chizchijahu eum interfecerunt interficiendo Nunquid .ſylvæ excelſa *in*
19 לְבָמוֹת יָעַר : הֶהָמֵת הֱמִתֻהוּ חִזְקִיָּהוּ
,Dominum timuit Nonne ? Jehudah omnis & ,Jehudah rex
מֶלֶךְ־יְהוּדָה וְכָל־יְהוּדָה הֲלֹא יָרֵא אֶת־יְהוָה
malum ad Dominum pœnituit & ,Domini *facies* eſt precatus &
וַיְחַל אֶת־פְּנֵי יְהוָה וַיִּנָּחֶם יְהוָה אֶל־הָרָעָה
grande malum *facientes* nos & ? eos adverſus erat locutus quod
אֲשֶׁר־דִּבֶּר עֲלֵיהֶם וַאֲנַחְנוּ עֹשִׂים רָעָה גְדוֹלָה
Domini nomine in *vaticinans fuit* vir etiam Et .noſtras animas contra
20 עַל־נַפְשׁוֹתֵנוּ : וְגַם־אִישׁ הָיָה מִתְנַבֵּא בְּשֵׁם יְהוָה
adverſus prophetavit & , Jeharim Chiriath de Semahajahu filius Urijahu
אוּרִיָּהוּ בֶּן־שְׁמַעְיָהוּ מִקִּרְיַת הַיְּעָרִים וַיִּנָּבֵא עַל־
verba omnia juxta ,hanc terram adverſus & , iſtam civitatem
הָעִיר הַזֹּאת וְעַל־הָאָרֶץ הַזֹּאת כְּכֹל דִּבְרֵי
omnes & ,ejus potentes omnes & ,Jehojachim rex audivit Et .Irmejahu
21 יִרְמְיָהוּ : וַיִּשְׁמַע הַמֶּלֶךְ־יְהוֹיָקִים וְכָל־גִּבּוֹרָיו וְכָל־
audivit & : eum interficere rex quæſivit & ,ejus verba principes
הַשָּׂרִים אֶת־דְּבָרָיו וַיְבַקֵּשׁ הַמֶּלֶךְ הֲמִיתוֹ וַיִּשְׁמַע
miſit Et .Ægyptum eſt ingreſſus & ,fugitque ,timuit & , Urijahu
22 אוּרִיָּהוּ וַיִּרָא וַיִּבְרַח וַיָּבֹא מִצְרָיִם : וַיִּשְׁלַח
,Hachbor filium Elnathan ,Ægyptum viros Jehojachim rex
הַמֶּלֶךְ יְהוֹיָקִים אֲנָשִׁים מִצְרָיִם אֶת־אֶלְנָתָן בֶּן־עַכְבּוֹר
,Ægypto de Urijahu eduxerunt Et .Ægyptum in eo cum viros &
23 וַאֲנָשִׁים אִתּוֹ אֶל־מִצְרָיִם : וַיּוֹצִיאוּ אֶת־אוּרִיָּהוּ מִמִּצְרַיִם
,gladio *in* eum percuſſit & ,Jehojachim regem ad eum adduxerunt &
וַיְבִאֻהוּ אֶל־הַמֶּלֶךְ יְהוֹיָקִים וַיַּכֵּהוּ בֶּחָרֶב
Veruntamen .populi filiorum ſepulchra in ejus cadaver projecit &
24 וַיַּשְׁלֵךְ אֶת־נִבְלָתוֹ אֶל־קִבְרֵי בְּנֵי הָעָם : אַךְ
dandum non ad ,Irmejahu cum erat Saphan filii Achicam manus
יַד אֲחִיקָם בֶּן־שָׁפָן הָיְתָה אֶת־יִרְמְיָהוּ לְבִלְתִּי תֵּת־
.eum interficiendum ad , populi manu in eum
אֹתוֹ בְיַד־הָעָם לַהֲמִיתוֹ :

CAP. XXVII. כז

fuit ,Jehudah regis Joſijahu filii Jehojachim regni principio In
1 בְּרֵאשִׁית מַמְלֶכֶת יְהוֹיָקִם בֶּן־יֹאושִׁיָּהוּ מֶלֶךְ יְהוּדָה הָיָה
dixit Sic :dicendo ,Domino à Irmejah ad iſtud verbum
2 הַדָּבָר הַזֶּה אֶל־יִרְמְיָה מֵאֵת יְהוָה לֵאמֹר : כֹּה־אָמַר
.tuū collū ſuper ea *dabis* & ,vectes & , vincula tibi Fac :me ad Dominꝰ
יְהוָה אֵלַי עֲשֵׂה לְךָ מוֹסֵרוֹת וּמֹטוֹת וּנְתַתָּם עַל־צַוָּארֶךָ :
regem ad & ,Moab regem ad & , Edom regem ad ea mittes Et
3 וְשִׁלַּחְתָּם אֶל־מֶלֶךְ אֱדוֹם וְאֶל־מֶלֶךְ מוֹאָב וְאֶל־מֶלֶךְ
manum per , Sidon regem ad & ,Sor regem ad & ,Hammon filiorum
בְּנֵי עַמּוֹן וְאֶל־מֶלֶךְ צֹר וְאֶל־מֶלֶךְ צִידוֹן בְּיַד
.Jehudah regem Sidchijahu ad ,Jeruſalaim *venientium* nuntiorum
מַלְאָכִים הַבָּאִים יְרוּשָׁלַם אֶל־צִדְקִיָּהוּ מֶלֶךְ יְהוּדָה :

Verſio VULG. LAT.

16 Et dixerunt principes, & omnis populus, ad ſacerdotes, & ad prophetas; Non eſt viro huic judicium mortis: quia in nomine Domini Dei noſtri locutus eſt 17 ad nos. Surrexerunt ergò viri de ſenioribus terræ: & dixerunt ad omnem cœtū populi, loquen-18 tes; Michæas de Moraſthi fuit propheta in diebus Ezechiæ regis Juda, & ait ad omnem populum Juda, dicens; Hæc dicit Dominus exercituum, Sion quaſi ager arabitur: & Jeruſalem in acervum lapidum erit: & mons 19 domûs in excelſa ſylvarum. Numquid morte condemnavit eum Ezechias rex Juda, & omnis Juda? numquid non timuerunt Dominum, & deprecati ſunt faciem Domini: & pœnituit Dominum mali, quod locutus fuerat adverſùm eos? Itaque nos facimus malum grande contra 20 animas noſtras. Fuit quoque vir prophetans in nomine Domini, Urias filius Semei de Cariathiarim: & prophetavit adverſùs civitatem iſtam, & adverſùs terram hanc, juxta omnia verba Je-21 remiæ. Et audivit rex Joakim, & omnes potentes, & principes ejus, verba hæc: & quæſivit rex interficere eum. Et audivit Urias, & timuit, fugitque & ingreſſus 22 eſt Ægyptum. Et miſit rex Joakim viros in Ægyptum, Elnathan filium Achobor, & viros cum 23 eo in Ægyptum. Et eduxerunt Uriam de Ægypto: & adduxerunt eum ad regem Joakim, & percuſſit eum gladio: & projecit cadaver ejus in ſepulchris 24 vulgi ignobilis. Igitur manus Ahicam filii Saphan fuit cum Jeremia, ut non traderetur in manus populi, & interficerent eum.

CAP. XXVII.

1 IN principio regni Joakim filii Joſiæ regis Juda, factum eſt verbum iſtud ad Jeremiam à Domi-2 no, dicens; Hæc dicit Dominus ad me; Fac tibi vincula, & catenas: & pones eas in collo tuo.
3 Et mittes eas ad regem Edom, & ad regem Moab, & ad regem filiorum Ammon, & ad regem Tyri, & ad regem Sidonis, in manu nuntiorum, qui venerunt Jeruſalem ad Sedeciam regem Juda.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

14 Παρατάξασθε ἐπὶ Βαβυλῶνα κύκλῳ πάντες τείνοντες τόξον, τοξεύσατε ἐπ' αὐτὴν, μὴ φείσησθε ἐπὶ τοῖς τοξεύμασιν 15 ὑμῶν, Καὶ κατακρατήσατε (ο) αὐτήν. παρελύθησαν αἱ χεῖρες αὐτῆς, ἔπεσαν αἱ ἐπάλξεις αὐτῆς, (π) καὶ κατεσκάφη τὸ τεῖχος αὐτῆς, ὅτι ἐκδίκησις παρὰ θεοῦ ἐστιν· ἐκδικεῖτε ἐπ' αὐτὴν, καθὼς ἐποίησε, ποι-16 ήσατε αὐτῇ. (ρ) Ἐξολοθρεύσατε σπέρμα ἐκ Βαβυλῶνος, κατέχοντα δρέπανον ἐν καιρῷ θερισμοῦ ἀπὸ προσώπου μαχαίρας Ἑλληνικῆς, ἕκαστος εἰς τὸν (σ) λαὸν αὐτοῦ ἀποστρέψουσι, καὶ ἕκαστος εἰς (τ) τὴν 17 γῆν αὐτοῦ φεύξεται. Πρόβατον πλανώμενον Ἰσραὴλ, λέοντες ἐξῶσαν αὐτόν· ὁ πρῶτος ἔφαγεν αὐτὸν βασιλεὺς Ἀσσοὺρ, καὶ οὗτος ὕστερον τὰ ὀστᾶ αὐτοῦ βασιλεὺς Βαβυλῶνος. 18 Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐκδικῶ ἐπὶ τὸν βασιλέα Βαβυλῶνος, καὶ ἐπὶ τὴν γῆν αὐτοῦ, καθὼς ἐξεδίκησα ἐπὶ 19 τὸν βασιλέα Ἀσσούρ. Καὶ ἀποκαταστήσω τὸν Ἰσραὴλ εἰς τὴν νομὴν αὐτοῦ, καὶ νεμήσεται ἐν τῷ Καρμήλῳ, καὶ ἐν ὄρει Ἐφραίμ, καὶ ἐν (υ) τῷ Γαλαὰδ, καὶ πλησθήσεται ἡ 20 ψυχὴ αὐτοῦ. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, (φ) ζητήσουσι τὴν ἀδικίαν Ἰσραὴλ, καὶ οὐχ ὑπάρξει, καὶ τὰς ἁμαρτίας Ἰούδα, καὶ οὐ μὴ εὑρεθῶσιν, ὅτι ἵ-21 λεως ἔσομαι τοῖς ὑπολελειμμένοις Ἐπὶ τῆς γῆς, λέγει κύριος. πικρῶς ἐπίβηθι ἐπ' αὐτὴν, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας (χ) ἐπ' αὐτήν· ἐκδίκησον μάχαιρα, καὶ ἀφάνισον, λέγει κύριος, καὶ ποίει κατὰ πάντα ὅσα ἐν-22 τέλλομαί σοι. Φωνὴ πολέμου καὶ συντρι-23 βὴ μεγάλη ἐν γῇ Χαλδαίων. Πῶς (ψ) ἐκλάσθη καὶ συνετρίβη ἡ σφῦρα πάσης τῆς γῆς; πῶς ἐγενήθη εἰς ἀφανισμὸν Βαβυλὼν ἐν ἔθνεσιν; 24 Ἐπιθήσονταί σοι, (ω) καὶ οὐ γνώσῃ, ὦ Βαβυλὼν καὶ ἁλώσῃ· εὑρέθης, καὶ ἐλήφθης, ὅτι τῷ κυρίῳ ἀν-25 τέστης. Ἤνοιξε κύριος τὸν θησαυρὸν αὐτοῦ, καὶ ἐξήνεγκε τὰ σκεύη ὀργῆς αὐτοῦ, ὅτι ἔργον τῷ (α) κυρίῳ θεῷ ἐν γῇ Χαλδαίων, 26 Ὅτι ἐληλύθασιν οἱ καιροὶ αὐτῆς. ἀνοίξατε τὰς ἀποθήκας αὐτῆς, (β) ἐρευνήσατε αὐτὴν ὡς σπήλαιον, καὶ (γ) ἐξολοθρεύσατε αὐτήν· μὴ γενέσθω αὐτῆς κατά-27 λειμμα· Ἀναξηράνατε αὐτῆς πάντας τοὺς καρποὺς, καὶ καταβήτωσαν εἰς σφαγήν. οὐαὶ αὐτοῖς, ὅτι ἥκει ἡ ἡμέρα αὐτῶν, καὶ και-28 ρὸς ἐκδικήσεως αὐτῶν. Φωνὴ φευγόντων, καὶ ἀνασωζομένων ἐκ γῆς Βαβυλῶνος, τοῦ ἀναγγεῖλαι εἰς Σιὼν (δ) τὴν ἐκδίκησιν παρὰ κυρίου θεοῦ (ε) ἡμῶν.

Inſtruimini ſuper Babylonem in circuitu omnes, qui tenditis arcum: jaculamini ſuper eam: ne parcatis in jaculis veſtris, (h) Et ſubjicite eam. Diſſolutæ ſunt manus ejus, ceciderunt propugnacula ejus, & ſuffoſſus eſt murus ejus: quia ultio à Deo eſt: ulciſcimini ſuper eam: ſicut fecit, facite ei. Exterminate ſemen de (i) Babylone, tenentem falcem in tempore meſſis: à facie gladii Græci, unuſquiſque ad populum ſuum revertentur, & unuſquiſque in terram ſuam fugiet. Ovis errans Iſrael: leones expulerunt eum. Primus comedit eum rex Aſſur, & hic poſteriùs oſſa ejus rex Babylonis. Proptereà hæc dicit Dominus; Ecce ego ulciſcor ſuper regem Babylonis, et ſuper terram ejus, ſicut ultus ſum ſuper regem Aſſur. Et reſtituam Iſrael in paſcuam ſuam, & paſcet in (k) Carmelo, & in monte Ephræm, & in Galaad: & implebitur anima ejus. In diebus illis, & in tempore illo quærent iniquitatem Iſrael; & non erit: & peccata Judæ; & non invenientur: quia propitius ero reſiduis (l) Super terram, dicit Dominus. Amarè aſcende ſuper eam, & ſuper habitantes in ea: ulciſcere gladie, & dele, dicit Dominus, & fac ſecundùm omnia quæ mandavero tibi. Vox belli, & contritio magna in terra Chaldæorum. Quomodò fractus & contritus eſt malleus univerſæ terræ? quomodò facta eſt in ſolitudinem Babylon in gentibus? (m) Aſcendent in te, & (n) non cognoſces quia Babylon, et capieris. Inventa es, et capta; quia Domino reſtitiſti. Aperuit Dominus theſaurum ſuum, & protulit vaſa iræ ſuæ: quoniam opus Domino Deo in terra Chaldæorum: Quoniam venerunt tempora ejus. Aperite apothecas ejus: ſcrutamini eam, velut ſpeluncam, et exterminate eam: non ſint ejus reliquiæ: Exiccate omnes ejus fructus: et deſcendant in occiſionem. Væ eis, quia venit dies ipſorum, et tempus ultionis eorum. Vox fugientium et evadentium de terra Babylonis, ad annuntiandum in Sion ultionem à Domino Deo (o) noſtro.

MS.A. (ο) ἐπ' αὐτήν. (π) κατεσκάφη (ρ) Ἐξολεθρεύσατε (σ) τόπον (τ) τὸν οἶκον (υ) γῇ Γαλαὰδ, καὶ ἐμπλησθήσεται (φ) φησὶν κύριος, (χ) αὐτήν. (ψ) Συνεκλάσθη (ω) καὶ ἁλώσῃ, καὶ οὐ γνώσῃ ὡς Βαβυλὼν, καὶ εὑρέθης, (α) κυρίῳ ἐν γῇ (β) καὶ ἐραυνήσατε (γ) ἐξολεθρεύσατε (δ) ἐκδίκησιν (ε) αὐτῶν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 ואמרו רברביא וכל עמא לכהניא ולספריא לית לגברא הדין חובת דין דקטול ארי
17 בשמא דיי אלהנא מלל עמנא : וקמו גבריא מסבי ארעא ואמרו לכל קהלא דעמא
18 למימר : מיכה דממרשא הוה מתנבי ביומי חזקיה מלך שבטא דבית יהודה ואמר לכל
עמא דבית יהודה למימר כדנן אמר יי צבאות ציון חקל תתרדי וירושלם ליגרין תהי
19 וטור בית מקדשא דיי לחישת חורשא : המקטל קטלוהי חזקיה מלך שבטא דבית
יהודה וכל דבית יהודה הלא דחיל מן קדם יי וצלי קדם יי ותב יי מן בישתא דמלל
20 עליהון ואנחנא גרמין לאיתאה בישתא רבתא על נפשתנא : ואף גברא הוה מתנבי
בשמא דיי אוריה בר שמעיה מקרית יערים ואתנבי על קרתא הדא ועל ארעא הדא ככל
21 פתגמי ירמיה : ושמע מלכא יהויקים וכל גברוהי וכל רברביא ית פתגמוהי ובעא
22 מלכא למקטליה ושמע אוריה ודחיל וערק ואתא למצרים : ושלח מלכא יהויקים
23 גברין למצרים ית אלנתן בר עכבור וגברין עמיה למצרים : ואפיקו ית אוריה ממצרים
24 ואיתיוהי לות מלכא יהויקים וקטליה בחרבא ורמא ית נבלתיה לקברי גליא : ברם יד
אחיקם בר שפן הות עם ירמיה בדיל דלא למסר יתיה בידא דעמא למקטליה :

כז

1 בריש מלכות יהויקים בר יאשיהו מלך שבטא דבית יהודה הות פתגמא הדין עם ירמיה
2 3 מן קדם יי למימר : כדנן אמר יי לי עביד לך חנקין ונירין ותתנינין על צורך : ותשלחנין
לות מלכא דאדום ולות מלכא דמואב ולות מלכא דבני עמון ולות מלכא דצור
ולות מלכא דצידון ביד אזגדיא דאתן לירושלם לות צדקיה מלך שבטא דבית
יהודה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixerunt principes & omnis populꝰ ſacerdotibus & ſcribis: Non eſt reatus judicii mortis viro huic; quia in nomine Dñi Dei noſtri locutus eſt nobiſcum. Et ſurrexerunt viri de ſenioribꝰ terræ, & dixerunt omni eccleſiæ populi, dicendo: Micheas de Mareſa prophetavit in diebꝰ Ezechiæ regis tribus domus Juda, & ait omni populo domus Juda, dicendo: Sic dicit Dñs exercituum: Sion quaſi ager arabitur, & Jeruſalem in acervos erit, & mons domus ſanctuarii in ſilentia ſylvæ. Num occidendo occiderunt eum Ezechias rex tribus domus Juda, & omnes [*viri*] domus Juda? Nónne timuit à facie Domini? & oravit coram Domino? & averſus eſt Dominus à malo quod locutus fuerat ſuper eos. Et nos ſumus in cauſa ut adducamus malum grande ſuper animas noſtras. Et etiam alius vir prophetavit in nomine Domini, Urias nomine, filiꝰ Semeiæ de Cariathiarim, & prophetavit adverſum civitatem iſtam, & adverſùs terram hanc, juxta omnia verba Jeremiæ. Et audivit rex Joachim, & omnes potentes ejus, & omnes principes, verba ejus: & quæſivit rex interficere eum. Et audivit Urias, & timuit, & fugit, & venit in Ægyptum. Et miſit rex Joachim viros in Ægyptum, Elnathan filium Achbor, & alios viros cum eo in Ægyptum. Et eduxerunt Uriam de Ægypto, & adduxerunt eum ad regem Joachim: & interfecit eum gladio, & projecit cadaver ejus in ſepulchra tranſmigrantium. Veruntamen manus Achicam filii Saphan fuit cum Jeremia, ut non traderent eum in manus populi ad occidendum eum.

CAP. XXVII.

IN principio regni Joachim filii Joſiæ regis tribus domus Juda, factum eſt verbum iſtud cum Jeremia à facie Domini, dicendo: Hæc dicit Dominus mihi: Fac tibi vincula & juga, & pones ea ſuper collum tuum. Et mittes ea ad regem Edom, & ad regem Moab, & ad regem filiorum Ammon, & ad regem Tyri, & ad regem Sydon per manum nuntiorum qui veniunt in Jeruſalem ad Sedechiam regem tribus domus Juda.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܐܡܪܘ ܪܘܪܒܢܐ ܘܟܠܗ ܥܡܐ ܠܟܗܢܐ ܘܠܢܒܝ̈ܐ ܕܓܠܐ. ܠܐ ܚܝܒ ܓܒܪܐ ܗܢܐ ܡܘܬܐ.
ܡܛܠ ܕܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܡܠܠ ܥܡܢ. * ܘܩܡܘ ܓܒܪܐ ܡܢ ܩܫܝܫܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܐܡܪܘ
ܠܟܠܗ ܟܢܘܫܐ ܕܥܡܐ. * ܡܝܟܐ ܡܪܫܬܝܐ. ܐܬܢܒܝ ܗܘܐ ܒܝܘܡܬܗ ܕܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ
ܕܝܗܘܕܐ: ܘܐܡܪ ܠܟܠܗ ܥܡܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܨܗܝܘܢ
ܚܩܠܐ ܬܬܕܒܪ. ܘܐܘܪܫܠܡ ܚܪܒܐ ܬܗܘܐ. ܘܛܘܪ ܒܝܬܐ ܠܥܒܐ ܕܥܒܐ. * ܕܩܛܠܐ: ܩܛܠܗ
ܩܛܠܗ ܗܘܐ ܚܙܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܟܠܗ ܝܗܘܕܐ. ܐܠܐ ܕܕܚܠܘ ܡܢ ܡܪܝܐ ܘܒܥܘ
ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܐܬܬܘܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܕܐܡܪ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܚܢܢ ܗܫܐ ܥܒܕܝܢ ܚܢܢ
ܒܝܫܬܐ ܪܒܬܐ ܥܠ ܢܦܫܢ. * ܘܐܦ ܓܒܪܐ ܐܝܬ ܗܘܐ ܕܡܬܢܒܐ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܘܪܝܐ
ܒܪ ܫܡܥܝܐ ܡܢ ܩܪܝܬ ܢܥܪܝܢ. ܘܐܬܢܒܝ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܐܝܟ ܟܠܗܘܢ
ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܐܪܡܝܐ. * ܘܫܡܥ ܡܠܟܐ ܝܘܝܩܝܡ ܘܥܒܕܘܗܝ ܟܠܗܘܢ
ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ ܦܬܓܡܘܗܝ. ܘܒܥܐ ܡܠܟܐ ܠܡܩܛܠܗ. ܘܫܡܥ ܐܘܪܝܐ ܘܕܚܠ. ܘܥܪܩ
ܘܐܙܠ ܠܡܨܪܝܢ. * ܘܫܕܪ ܡܠܟܐ ܝܘܝܩܝܡ ܠܐܢܫܐ ܡܨܪܝܐ. ܠܐܠܝܬܢ ܒܪ ܥܟܒܘܪ ܘܐܢܫܐ
ܥܡܗ ܠܡܨܪܝܢ. * ܘܐܦܩܘܗܝ ܠܐܘܪܝܐ ܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܘܐܝܬܝܘܗܝ ܠܘܬ ܡܠܟܐ ܝܘܝܩܝܡ
ܘܩܛܠܗ ܒܣܝܦܐ. ܘܐܪܡܝ ܫܠܕܗ ܥܠ ܩܒܪܐ ܕܒܢܝ ܥܡܐ. * ܒܪܡ ܐܝܕܗ ܕܐܚܝܩܡ ܒܪ
ܫܦܢ ܗܘܬ ܥܡ ܐܪܡܝܐ. ܕܠܐ ܢܫܠܡܘܢܝܗܝ ܒܐܝܕܐ ܕܥܡܐ ܠܡܩܛܠܗ.

* Tum dixerunt principes totúſque populus 16
ad ſacerdotes & falſos prophetas, Nequaquam
dignus eſt vir iſte morte, cùm nomine
Domini Dei noſtri ſit nos allocutus. Deinde 17
ſurgentes viri quidem è ſenioribus terræ,
dixerunt univerſo cœtui populi; Micha Ma- 18
reſithes prophetavit in diebus Hezeciæ regis
Judæ, dixítque toti populo Judæ; Sic
ait Dominus exercituum Deus Iſraelis, Sion
in agrum redigetur, Jeruſalem deſolata fiet,
& mons *hujus* domûs in ſaltum. Num verò 19
morte affecit illum Hezecia rex Judæ totúſque
Juda? Quin potiùs timuerunt Dominum,
& exoraverunt eum, deſtitítque Dominus
a malo quod contra eos decreverat:
& nos jam crimen atrox nobis ipſis inferre
ſtuderemus? Fuit etiam vir quidam qui pro- 20
phetavit in nomine Domini, Uria Semeiæ
filius de civitate Naarin; prophetavit, inquam,
de civitate iſta, prorſus juxta ſermones
Jeremiæ: Cúmque audiſſet rex Jojacim, 21
& omnes ſervi omnéſque principes ejus ſermones
ipſius; voluit quidem rex interficere
eum: quod audiens Uria timuit, fugiénſque
recepit ſe in Ægyptum. Sed miſit rex Jojacim 22
quendam Ægyptium, *nempe* Eliathanem filium
Abchoris, & quoſdam cum eo in Ægyptum;
Qui Uriam educentes ex Ægypto, ad- 23
duxerunt eum ad regem Jojacim; & is interfecit
eum gladio, projecítque cadaver ejus
ſupra ſepulchra popularium. At verò manus 24
Ahicami filii Saphanis fuit cum Jeremia, ne
traderetur in manum plebis ut occideretur.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܙ *

CAP. XXVII.

* ܒܪܫ ܡܠܟܘܬܗ ܕܨܕܩܝܐ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ
ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܥܒܕ ܠܟ ܢܝܪܐ ܘܣܘܪ̈ܐ. ܘܐܪܡܐ ܐܢܘܢ ܥܠ ܨܘܪܟ. * ܘܫܕܪ ܐܢܘܢ ܠܡܠܟܐ
ܕܐܕܘܡ. ܘܠܡܠܟܐ ܕܡܘܐܒ. ܘܠܡܠܟܐ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܘܠܡܠܟܐ ܕܨܘܪ. ܘܠܡܠܟܐ ܕܨܝܕܢ.
ܒܐܝܕܐ ܕܐܝܙܓܕܐ ܕܐܬܝܢ ܠܐܘܪܫܠܡ ܠܘܬ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ.

* INitio regni Sedeciæ filii Joſiæ regis Judæ: 1
fuit ſermo iſte ad Jeremiam à Domino:
Fac tibi jugum & lora, eáque aptato collo 2
tuo. Deinde mitte illa ad regem Adum ad 3
regem Moab, ad regem filiorum Amon, ad
regem Tyri, & ad regem Sidonis; per legatos
qui Jeroſolymam veniunt ad Sedeciam
regem Judæ;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* اصطفوا على بابل من حولها * يا جميع الموترين قوسا ارموا عليها لا تشفقوا على سهامكم
واقبضوا عليها * استرخت يداها * سقطت شرافاتها * لان النقمة من قبل الله هي * انتقموا
منها * كما صنعت اصنعوا بها * استاصلوا الزرع من بابل * الماسك منجلا في زمن الحصاد * من
وجه سيف يوناني يرجع كل واحد الى موضعه * وكل واحد يهرب الى بيته * خروف ضال اسرايل
الاسد اقصوه * الاول اكله ملك الموصل * وهذا اخيرا اكل عظامه ملك بابل * لاجل
هذا هكذا يقول الرب * ها انا احكم على ملك بابل وعلى ارضه * كما حكمت على ملك
الموصل * وارد اسرايل الى مرعاه * ويرعى في الكرمل وفي جبل افرام وفي ارض جلعاد * ويملي
نفسه * في تلك الايام وفي ذلك الزمان قال الرب * يطلبون ظلم اسرايل فلا يوجد * وخطايا
يهودا فلا يوجدون * لاني اصير راحما للمتبقين على الارض * يقول الرب بمرارة اركب عليها
وعلى سكانها * انتقم ايها السيف وافنها يقول الرب * واصنع كلما امرك به * صوت حرب
وانكسار عظيم في ارض الكلدانيين * كيف فسخت وكسرت مطرقة كل الارض *
كيف صارت بابل للفناء في الامم * يثبون عليك وتهلكين ولا تعلمين * مثل بابل وجدت
واخذت * لانك قاومت الرب *

Diſponite aciem contra Babelem circun- 14
quaque: O omnes arcum tendentes, jaculamini
in eam, ne parcatis ſagittis veſtris,
capite illam: Remiſſæ ſunt ma- 15
nus ejus, pinnæ ejus ceciderunt. Quandoquidem
ultio hæc à Deo eſt, ulciſcimini
de ea: quemadmodum fecit, facite ei:
Evellite ſemen ex Babele, tenentem 16
falculam tempore meſſis: à conſpectu
gladii Græci revertatur quiſque ad locum
ſuum, & quiſque fugiat in domum
ſuam. Agnus errans fuit Iſrael, 17
leones depulerunt eum; prior comêdit
eum rex Aſſyriæ, hic autem poſtremò
comêdit ejus oſſa rex Babelis. Iccir- 18
co ſic ait Dominus, Ecce ego condemnabo
regem Babelis ejúſque terram,
quemadmodum condemnavi regem Aſſyriæ;
Et reſtituam Iſraelem in paſcuum 19
ſuum, paſcétque in Charmelo, & in monte
Aphremi, atque in terra Galaad, &
explebitur anima ipſius. Iis diebus eoque 20
tempore, ait Dominus, quærent impietatem
Iſraelis, & non reperietur; & peccata
Judæ, nec invenientur: quia propitius
ero reſiduis ſuper terram. Dicit 21
Dominus, Cum acerbitate inſiliam in eam
& in cives ejus: ulciſcere O gladie, &
abſume illam dicit Dominus, & fac quicquid
præcipiam tibi. Strepitus pugnæ, 22
& contritio magna in terra Chaldæorum.
Quomodo diſcerptus fractúſque es mal- 23
lee totius terræ? quomodo abiit Babel in
excidium inter gentes? Irruent in te, 24
ac peribis te neſciente: ut Babel invenieris,
& capieris; quia oppoſuiſti te Domino.

الاصحاح السابع عشر

Textus decimus ſeptimus.

* فتح الرب كنزه واخرج اوعية غضبه * لان العمل للرب في ارض الكلدانيين * لان
اوقاتها بلغت * افتحوا اهراءها * وفتشوها مثل مغارة * واستاصلوها * لا يكن لها
بقية * يبسوا جميع ثمرها وليهبطوا للذبح * ويل لهم لان يومهم اتى وزمان انتقامهم
* صوت الهاربين المتخلصين من ارض بابل * ليخبروا في صهيون الانتقام من قبل
الرب الههم *

Aperuit Dominus repoſitorium ſuum, 25
protulítque inſtrumenta furoris ſui; quia
opus hoc eſt Domini in terra Chaldæorum.
Quandoquidem tempora ejus 26
advenerunt, aperite granaria ejus, ſcrutamini
eam ut ſpeluncam, eámque funditus
evertite, non ſuperſint illi reliquiæ:
Abſcindite omnes fructus ejus: 27
& ad mactationem deſcendant. Væ
illis, quoniam advenit dies eorum, &
tempus ultionis eorum, Vox fugien- 28
tium & evadentium de terra Babelis,
ut annuntient in Sione ultionem illatam
à Domino Deo ſuo.

ירמיה : כז

exercituum Dominus dixit Sic : *dicere suos dominos ad* eis præcipies Et
4 וצוית אתם אל־אדניהם לאמר כה־אמר יהוה צבאות
Ego *vestros dominos ad* dicetis Sic : Israel Deus
אלהי ישראל כה תאמרו אל־אדניכם : אנכי 5
faciebus super quod , *animal* & , hominem , terram feci
עשיתי את־הארץ את־האדם ואת־הבהמה אשר על־פני
,eam dedi & ; extento meo brachio in &,magna mea potentia in ,terræ
הארץ בכחי הגדול ובזרועי הנטויה ונתתיה
dedi ego nunc Et .meis oculis in *fuit rectum* cui
לאשר ישר בעיני : ועתה אנכי נתתי את־ 6
Babel regis Nebuchadneſar manu in has terras omnes
כל־הארצות האלה ביד נבוכדנאצר מלך־בבל
.ei *ſerviendum ad* , ei dedi agri *beſtiam* etiam & , mei ſervi
עבדי וגם את־חית השדה נתתי לו לעבדו :
,ejus filii filio & ,ejus filio & , gentes omnes ei ſervient Et
7 ועבדו אתו כל־הגוים ואת־בנו ואת־בן־בנו
gentes *eo in* ſervient & ,ipſius etiam , ejus terræ tempus *venire uſque*
עד בא־עת ארצו גם־הוא ועבדו בו גוים
quæ regnum & , gens erit Et .magni reges & ,multæ
8 רבים ומלכים גדלים : והיה הגוי והממלכה אשר
& , Babel regi Nebuchadneſar ipſi ſervierint non
לא־יעבדו אתו את־נבוכדנאצר מלך־בבל ואת
, gladio *in* : Babel regis jugo *in* ſuum collum *dederit* non qui
אשר לא־יתן את־צוארו בעל מלך בבל בחרב
,DOMINUS ait , illam gentem *ſuper* viſitabo peſte *in* & ,fame *in* &
וברעב ובדבר אפקד על־הגוי ההוא נאם־יהוה
ad audiatis ne vos Et .ej⁹ manum per eos *me conſumere ad uſque*
9 עד־תמי אתם בידו : ואתם אל־תשמעו אל־
ad & ,veſtra ſomnia *ad* & ,veſtros divinos *ad* & , veſtros prophetas
נביאיכם ואל־קסמיכם ואל־חלמתיכם ואל־
,*vos ad dicentes ipſi* qui ,veſtros maleficos *ad* & ,veſtros augures
ענניכם ואל־כשפיכם אשר־הם אמרים אליכם
ipſi mendacium Quia .Babel regi ſervietis Non : dicendo
10 לאמר לא תעבדו את־מלך בבל : כי שקר הם
propellam &,veſtra *humo deſuper* vos *elongandum ad* , vobis *vaticinantes*
נבאים לכם למען הרחיק אתכם מעל אדמתכם והדחתי
ſuũ collum introduxerit quæ gens Et .pereatis & , vos
11 אתכם ואבדתם : והגוי אשר יביא את־צוארו
ſuper eum faciam dimitti & ; ei ſervierit & , Babel regis jugum in
בעל מלך־בבל ועבדו והנחתיו על־
.ea in habitabit & ,eam colet & , DOMINUS dixit , ſua terra
אדמתו נאם־יהוה ועבדה וישב בה :
verba omnia ſecundùm ſum locutus Jehudah regem Sidchijahu ad Et
12 ואל־צדקיה מלך־יהודה דברתי ככל־הדברים
, Babel regis jugum in veſtra colla Introducite :dicendo , hæc
האלה לאמר הביאו את־צואריכם בעל מלך בבל
, tu ,moriemini quid Ut .vivetis & ,ejus populo & , ei ſervite &
13 ועבדו אתו ועמו וחיו : למה תמותו אתה
eſt locutus quemadmodum ,peſte in & ,fame in ,gladio in tuus popul⁹ &
ועמך בחרב ברעב ובדבר כאשר דבר
ne Et ? Babel regi ſervierit non quæ gentem ad Dominus
14 יהוה אל־הגוי אשר לא־יעבד את־מלך בבל : ואל־
: dicendo , *vos ad* dicentium prophetarum verba *ad* audiatis
תשמעו אל־דברי הנבאים האמרים אליכם לאמר
.vobis *vaticinantes ipſi* mendaciũ quia :Babel regi ſervietis Non
לא תעבדו את־מלך בבל כי שקר הם נבאים לכם :
meo nomine in *vaticinantes* ipſi & ;Dominus ait , eos miſi non Quia
15 כי לא שלחתים נאם־יהוה והם נבאים בשמי
prophetæ & , vos pereatis & , vos *me expellere propter* ,*mendacio in*
לשקר למען הדיחי אתכם ואבדתם אתם והנביאים
.vobis *vaticinantes*
הנבאים לכם :

Verſio VULG. LAT.

4 Et præcipies eis ut ad dominos ſuos loquantur; Hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael; Hæc dicetis ad dominos veſtros; 5 Ego feci terram, & homines, & jumenta, quæ ſunt ſuper faciem terræ, in fortitudine mea magna, & in brachio meo extento: & dedi eam ei, qui placuit in 6 oculis meis. Et nunc itaque ego dedi omnes terras iſtas in manu Nabuchodonoſor regis Babylonis ſervi mei: inſuper & beſtias agri dedi ei ut ſerviant 7 illi. Et ſervient ei omnes gentes, & filio ejus, & filio filii ejus: donec veniat tempus terræ ejus & ipſius: & ſervient ei gentes multæ, & reges magni. 8 Gens autem & regnum, quod non ſervierit Nabuchodonoſor regi Babylonis, & quicunque non curvaverit collum ſuum ſub jugo regis Babylonis: in gladio, & in fame, & in peſte viſitabo ſuper gentem illam, ait Dominus, donec conſumam 9 eos in manu ejus. Vos ergò nolite audire prophetas veſtros, & divinos, & ſomniatores, & augures, & maleficos, qui dicunt vobis; Non 10 ſervietis regi Babylonis. Quia mendacium prophetant vobis, ut longè vos faciant de terra veſtra, & ejiciant vos, & per- 11 eatis. Porrò gens, quæ ſubjecerit cervicem ſuam ſub jugo regis Babylonis, & ſervierit ei; dimittam eam in terra ſua, dicit Dominus: & colet eam, 12 & habitabit in ea. Et ad Sedeciam regem Juda locutus ſum ſecundùm omnia verba hæc, dicens; Subjicite colla veſtra ſub jugo regis Babylonis, & ſervite ei, & populo ejus, 13 & vivetis. Quarè moriemini tu & populus tuus gladio, & fame, & peſte, ſicut locutus eſt Dominus ad gentem, quæ ſervire noluerit regi Babylonis? 14 Nolite audire verba prophetarum dicentium vobis; Non ſervietis regi Babylonis: quia mendacium ipſi loquuntur vo- 15 bis. Quia non miſi eos, ait Dominus: & ipſi prophetant in nomine meo mendaciter: ut ejiciant vos, & pereatis tam vos, quàm prophetæ, qui vaticinantur vobis.

Verſio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

29 Παραγγείλατε ἐπὶ Βαβυλῶνα πολλοῖς, παντὶ ἐντείνοντι τόξον, (ϛ)παρεμβάλλετε ἐπ᾽ αὐτὴν κυκλόθεν· μὴ ἔστω αὐτῆς ἀνασωζόμενος· ἀνταπόδοτε αὐτῇ κατὰ τὰ ἔργα αὐτῆς, κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησε, ποιήσατε αὐτῇ, ὅτι πρὸς (ζ) κύριον ἀντέστη θεὸν 30 ἅγιον τοῦ Ἰσραήλ. Διατοῦτο πεσοῦνται οἱ νεανίσκοι αὐτῆς ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες οἱ πολεμισταὶ αὐτῆς 31 ῥιφήσονται, εἶπε κύριος. Ἰδοὺ ἐγὼ (η) ἐπὶ σὲ τὴν ὑβρίστριαν, λέγει κύριος· ὅτι ἥκει ἡ ἡμέρα σου, καὶ ὁ καιρὸς (˝)ἐκδικήσεώς 32 σου. Καὶ ἀσθενήσει ἡ ὕβρις σου, καὶ πεσεῖται, καὶ (θ) οὐδεὶς ἔσται ὁ ἀνιστῶν αὐτήν. καὶ ἀνάψω πῦρ ἐν τῷ δρυμῷ αὐτῆς, καὶ κατα- 33 φάγεται πάντα τὰ κύκλῳ αὐτῆς. Τάδε λέγει κύριος, Καταδεδυνάστευνται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ οἱ υἱοὶ Ἰούδα, ἅμα πάντες οἱ αἰχμαλωτεύσαντες αὐτοὺς, κατεδυνάστευσαν αὐτοὺς, ὅτι οὐκ ἠθέλησαν ἐξα- 34 ποστεῖλαι αὐτούς. Καὶ ὁ λυτρούμενος αὐτοὺς ἰσχυρὸς, Κύριος παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ· κρίσιν κρινεῖ πρὸς τοὺς ἀντιδίκους αὐτοῦ, ὅπως ἐξάρῃ τὴν γῆν· καὶ παροξυνεῖ 35 τοῖς κατοικοῦσιν Βαβυλῶνα, Μάχαιραν ἐπὶ τοὺς Χαλδαίους, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Βαβυλῶνα, καὶ ἐπὶ τοὺς μεγιστᾶνας αὐ- 36 τῆς, καὶ ἐπὶ τοὺς συνετοὺς αὐτῆς· Μάχαιραν ἐπὶ τοὺς μαχητὰς αὐτῆς, καὶ παραλυ- 37 θήσονται· Μάχαιραν ἐπὶ τοὺς ἵππους αὐτῶν, καὶ ἐπὶ τὰ ἅρματα αὐτῶν· μάχαιραν ἐπὶ τοὺς μαχητὰς αὐτῶν, (ι) καὶ ἐπὶ τὸν σύμμικτον τὸν ἐν μέσῳ αὐτῆς, καὶ ἔσονται (κ) ὡσεὶ γυναῖκες· μάχαιραν ἐπὶ τοὺς 38 θησαυροὺς (λ), καὶ διασκορπισθήσονται. Ἐπὶ τῷ ὕδατι αὐτῆς (μ), καὶ καταισχυνθήσονται, ὅτι γῆ τῶν γλυπτῶν ἐστι, καὶ ἐν 39 ταῖς (ν) νήσοις, οὗ κατεκαυχῶντο. Διατοῦτο κατοικήσουσιν ἰνδάλματα ἐν ταῖς νήσοις, καὶ κατοικήσουσιν ἐν αὐτῇ θυγατέρες σειρήνων, οὐ μὴ κατοικηθῇ οὐκέτι εἰς τὸν αἰῶνα. 40 Καθὼς κατέστρεψεν ὁ θεὸς Σόδομα καὶ Γόμοῤῥα, καὶ τὰς (ξ) ὁμορούσας αὐταῖς, εἶπε κύριος, οὐ μὴ κατοικήσει ἐκεῖ ἄνθρωπος, καὶ οὐ μὴ (ο) παροικήσει ἐκεῖ υἱὸς ἀνθρώπου. 41 Ἰδοὺ λαὸς ἔρχεται ἀπὸ (π) Βοῤῥᾶ, καὶ ἔθνος μέγα, καὶ βασιλεῖς πολλοὶ ἐξεγερθήσονται 42 ἀπ᾽ ἐσχάτου τῆς γῆς, Τόξον καὶ ἐγχειρίδιον ἔχοντες, ἰταμός ἐστι, καὶ οὐ μὴ ἐλεήσῃ· (ρ) ἡ φωνὴ αὐτῶν ὡς θάλασσα ἠχήσει, ἐφ᾽ ἵπποις ἱππάσονται, παρεσκευασμένοι, ὥσπερ πῦρ, εἰς πόλεμον, πρὸς σὲ, (σ) 43 θύγατερ Βαβυλῶνος. Ἤκουσε βασιλεὺς Βαβυλῶνος τὴν ἀκοὴν αὐτῶν, καὶ (τ) παρελύθησαν αἱ χεῖρες αὐτοῦ· θλίψις κατεκράτησεν αὐτοῦ, ὠδῖνες ὡς τικτούσης.

Annuntiate ſuper Babylonẽ multis, omni intendenti arcum: caſtrametamini ſuper eam in circuitu: non ſit ex ea qui evadat: retribuite ei ſecundum opera ejus: juxta omnia, quæcunque fecit, facite ei: quoniam adverſùs Dominum ſtetit, Deum ſanctum Iſrael. Propter hoc cadent adoleſcentes ejus in plateis ſuis, & omnes viri ejus bellatores projicientur, dixit Dominus. Ecce ego ſuper te (p) ſuperbiam contumelioſam, dicit Dominus: quia venit dies tua, & tempus ultionis tuæ: Et infirmabitur ſuperbia tua, & cadet; & nemo erit qui reſtituat eam. Et accendam ignem in ſylva ejus: & devorabit omnia, quæ in circuitu ejus. Hæc dicit Dominus; Oppreſſi fuerunt filii Iſrael, & filii Juda ſimul: omnes, qui captivaverunt eos, oppreſſerunt eos: quia noluerunt emittere eos. Et qui redemit eos fortis; Dominus omnipotens nomen ei: judicium judicabit contra adverſarios ejus, ut liberet terram: & acuet habitantibus Babylonem: Gladium ſuper Chaldæos, & ſuper habitantes Babylonem, & ſuper magnates ejus, & ſuper ſapientes (q) ejus: Gladium ſuper pugnatores ejus: & diſſolventur. Gladium ſuper equos eorum, & ſuper currus eorum: Gladium ſuper pugnatores eorum, & ſuper commiſtum, qui in medio ejus: et erunt quaſi mulieres: Gladium ſuper theſauros, et diſpergentur Super aquam ejus et confundentur; quia terra ſculptilium eſt: et in inſulis, ubi gloriabantur. Propter hoc habitabunt phantaſmata in inſulis: et habitabunt in ea filiæ Sirenum: non habitabitur ultrà in ſæculum. Sicut evertit Deus Sodomam, et Gomorram, et vicinas eis, ait Dominus; non habitabit ibi homo, et non incolet ibi filius hominis. Ecce populus venit ab Aquilone, et gens magna, et reges multi excitabuntur ab extremo terræ, Arcum et gladium habentes. Crudelis eſt, et non miſerebitur. Vox eorum, quaſi mare, ſonabit: in equis equitabunt, præparati, quaſi ignis, ad prælium, adverſus te filia Babylonis. Audivit rex Babylonis famam eorum: et diſſolutæ ſunt manus ejus: tribulatio obtinuit eum, dolores, quaſi parientis.

MS.A. (ϛ) παρεμβάλατε (ζ) τὸν κύριον (η) πρὸς σὲ τὴν ὑβρίστ ἐκδικήσεώς (θ) οὐκ ἔσται (ι) καὶ τὸ (κ) ὡς (λ) αὐτῆς, καὶ (μ) ἐπιστη (ν) νήσοις κατεκαυχῶντο. (ξ) ὁμοῤῥούσας (ο) κατοικήσῃ (π) γῆς Βορ (ρ) φωνὴ αὐτοῦ (σ) θυγάτηρ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 ותפקיד יתהון לות רבונהון למימר כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל כדנן תימרון
5 לרבונכון : אנא במימרי עבדית ית ארעא ית אנשא וית בעירא דעל אפי ארעא
6 בחילי רבא ובאדרעי מרממא ויהבתה לדכשר קדמי : וכען אנא יהבית ית כל מדינתא
האלין ביד נבוכדנאצר מלכא דבבל עבדי ואף ית חית ברא יהבית ליה למפלחיה :
7 ויפלחון יתיה כל עממיא וית בריה וית בר בריה עד דימטי עדן תבר ארעיה אף הוא
8 ויפלחון ביה עממין סגיאין ומלכין רברבין : ויהי עם ומלכו דלא יפלחון יתיה ית
נבוכדנאצר מלכא דבבל וית דלא יתן ית צוריה בניר מלכא דבבל בחרבא ובכפנא
9 ובמותא אסער על עמא ההוא אמר יי עד דאמסר יתהון בידיה : ואתון לא תקבלון מן
נבייכון דשקרא ומן קסמיכון ומן חלמי חלמכון ומן עוננכון ומן חרשיכון דאנון
10 אמרין לכון למימר לא תפלחון ית מלכא דבבל : ארי שקרא אנון מתנבן לכון בדיל
11 לארחקא יתכון מעל ארעכון ואטלטל יתכון ותיבדון : ועמא דיעיל ית צוריה בניר מלכא
12 דבבל ויפלחניה ואשרניה על ארעיה אמר יי ויפלחנה ויתיב בה : ועם צדקיה מלך
שבטא דבית יהודה מלליתי כל פתגמא האלין למימר אעילו ית צואריכון בניר
13 מלכא דבבל ופלחו יתיה ועמיה ואתקימו : למא תתקטלון את ועמך בחרבא ובכפנא
14 ובמותא כמא דמלל יי על עמא דלא יפלח ית מלכא דבבל : ולא תקבלון לפתגמי
נביי שקרא דאמרין לכון למימר לא תפלחון ית מלכא דבבל ארי שקרא אנון מתנבן
15 לכון : ארי לא שלחתנון אמר יי ואנון מתנבן בשמי שקרא בדיל דאטלטל יתכון
ותיבדון אתון ונביי שקרא דמתנבן לכון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Et præcipies eis ut dicant ad dominos ſuos in hunc modum: Hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael: Sic dicetis ad dominos veſtros: Ego verbo meo feci terram, homines, & jumenta, quæ ſunt ſuper faciem terræ, in virtute mea magna, & in brachio meo excelſo: & dedi eam ei qui placuit coram me. Et nunc ego dedi omnes provincias iſtas in manu Nabuchodonoſor regis Babylonis ſervi mei; beſtias quoque agri dedi ut ſerviant ei. Et ſervient ei omnes populi, & filio ejus, & filio filii ejus, donec veniat tempus interitus terræ ejus, etiam ipſius; & ſervient ei populi multi & reges magni. Fietq; ut quicunq; popul⁹ & regnum non ſervierit ipſi Nabuchodonoſor regi Babylonis, & qui non ſubmiſerit collum ſuum jugo regis Babylonis gladio & fame & peſte viſitabo ſuper populum illum, dicit Dominus, donec tradam eos in manum ejus. Vos autem ne obediatis pſeudoprophetis veſtris, & divinis veſtris, & ſomniatoribus *ſomniorum* veſtris, & auguribus veſtris, & maleficis veſtris, qui dicunt vobis, dicendo: Ne ſerviatis regi Babylonis, Quia mendacium ipſi prophetant vobis, ut elongem vos de terra veſtra, tranſmigrare vos faciam & pereatis. Populus autem qui induxerit collum ſuum in jugum regis Babylonis, & ſervierit ei; habitare faciam eum in terra ſua, dicit Dominus, & colet eam, & habitabit in ea. Et cum Sedechia rege tribus domus Juda *locutus ſum* omnia verba hæc, dicens: Inducite colla veſtra in jugum regis Babylonis, & ſervite ei, & populo ejus; & vivetis. Quare occidemini tu & popul⁹ tuus gladio, & fame, & peſte? ſicut locut⁹ eſt Dominus ad populum qui non ſervierit regi Babylonis. Et non obediatis verbis pſeudoprophetarum, qui dicunt vobis, dicendo: Ne ſerviatis regi Babylonis; quia mendacium ipſi prophetant vobis. Quia non miſi eos, dicit Dominus, & ipſi prophetant in nomine meo mendacium, ut tranſmigrare faciam vos, & pereatis vos & pſeudoprophetæ qui prophetant vobis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܦܩܘܕ ܐܢܘܢ ܕܢܐܡܪܘܢ ܠܡܪܝܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ.
ܗܟܢܐ ܐܡܪܘ ܠܡܪܝܟܘܢ. * ܐܢܐ ܥܒܕܬ ܐܪܥܐ ܘܒܢܝܢܫܐ. ܘܒܥܝܪܐ ܕܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ.
ܒܚܝܠܝ ܪܒܐ ܘܒܕܪܥܝ ܪܡܐ. ܘܝܗܒܬܗ ܠܡܢ ܕܫܦܪ ܒܥܝܢܝ. * ܘܗܫܐ ܐܢܐ ܝܗܒܬ
ܟܠܗܝܢ ܐܪܥܬܐ ܗܠܝܢ. ܒܐܝܕܝ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܒܕܝ.
ܘܢܦܠܚܘܢܝܗ. ܘܐܦ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܝܗܒܬ ܠܗ ܠܡܦܠܚܘܢܝܗ. * ܘܢܦܠܚܘܢܝܗ ܟܠܗܘܢ
ܥܡܡܐ ܠܗ ܘܠܒܪܗ ܘܠܒܪ ܒܪܗ. ܥܕܡܐ ܕܢܐܬܐ ܙܒܢܐ ܕܐܪܥܗ ܐܦ ܗܘ. ܘܢܦܠܚܘܢܝܗ
ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܘܡܠܟܐ ܪܘܪܒܐ. * ܘܥܡܐ ܘܡܠܟܘܬܐ ܕܠܐ ܢܦܠܚܘܢܝܗ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ
ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܡܢ ܕܠܐ ܢܬܠ ܨܘܪܗ ܒܢܝܪܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ
ܘܒܡܘܬܢܐ ܐܦܩܘܕ ܥܠ ܥܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܫܠܡ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܘܗܝ. * ܘܐܢܬܘܢ ܠܐ
ܬܫܡܥܘܢ ܠܢܒܝܝܟܘܢ ܕܓܠܐ. ܘܠܩܨܘܡܝܟܘܢ. ܘܠܚܠܡܝܟܘܢ. ܘܠܚܪܫܝܟܘܢ
ܘܠܐܣܘܦܝܟܘܢ. ܕܐܡܪܝܢ ܠܟܘܢ. ܠܐ ܬܦܠܚܘܢ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܡܛܠ ܕܫܘܩܪܐ
ܗܢܘܢ ܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ. ܕܐܪܚܩܟܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܘܬܐܒܕܘܢ. * ܘܥܡܐ ܕܢܬܠ ܨܘܪܗ
ܒܢܝܪܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܘܢܦܠܚܘܢܝܗ. ܐܫܒܘܩܝܘܗܝ ܒܐܪܥܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܘܢܦܠܚܝܘܗ ܘܢܬܒ ܒܗ. * ܘܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܐܡܪܬ ܐܝܟ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ
ܗܠܝܢ. ܘܐܡܪܬ. ܐܥܠܘ ܨܘܪܝܟܘܢ ܒܢܝܪܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܦܠܘܚܘ ܠܗ ܘܠܥܡܗ.
* ܘܚܝܘ ܘܠܐ ܬܡܘܬܘܢ: ܐܢܬ ܘܥܡܟ ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ. ܐܝܟ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܠܥܡܐ ܕܠܐ ܢܦܠܘܚ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܘܐܢܬܘܢ ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܠܡܠܝ ܢܒܝܐ
ܕܓܠܐ. ܕܐܡܪܝܢ ܠܟܘܢ ܠܐ ܬܦܠܚܘܢ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܡܛܠ ܕܫܘܩܪܐ ܗܢܘܢ
ܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ. * ܠܐ ܫܕܪܬ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܗܢܘܢ ܡܬܢܒܝܢ ܒܫܡܝ ܒܫܘܩܪܐ.
ܕܐܪܚܩܟܘܢ. ܘܬܐܒܕܘܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܢܒܝܐ ܕܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ.

* Et hortare eos ut dicant dominis ſuis, Sic 4
ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, ita
dicatis dominis veſtris; Terram & homines, 5
atque jumenta quæ ſuper faciem terræ ſunt,
ego feci potentiâ meâ maximâ & brachio
meo excelſo, eámque dedi cui rectum viſum
eſt in oculis meis. Et nunc omnes regiones 6
iſtas trado ut ſerviant Nebuchadnoſari regi
Babelis ſervo meo, & *quidem* ſervient illi:
quin etiam beſtiâ deſerti trado illi ut ſerviat
ei. Eique ſervient populi, & filio ejus, ac 7
nepoti ipſius; donec ipſius etiam terræ tempus
adveniat; ſervient, inquam, ei populi
multi & reges magni. Et populus aut regnū 8
quod non ſervierit Nebuchadnoſari regi Babelis,
& quicunque non ſubdiderit collum
ſuum jugo regis Babelis; gladio, fame, &
peſte animadvertam in ejuſmodi populum,
dicit Dominus, donec tradam eos in manum
ipſius. Vos ergò ne præbeatis aures prophetis 9
veſtris falſis, neque divinis veſtris, neque
ſomniatoribus veſtris, neque præſtigiatoribus
veſtris, neque veneficis veſtris, qui dicunt
vobis, Nequaquam ſervietis regi Babelis:
Quia falſum iſti prophetant vobis, ut 10
ejiciam vos ex *hac* terra, & pereatis. Populum 11
verò qui ſubdiderit collum ſuum regi
Babelis, & ſervierit ei; relinquet eum in
terra ſua, dicit Dominus, ut colat eam, & habitet
in ea. Etiam Sedeciam regem Judæ al- 12
locutus ſum ſimilibus omnino ſermonibus, &
dixi; Subdite collum veſtrum jugo regis Babelis,
eique ſervite ac populo ipſius. Ita 13
vivetis ac non moriemini tu & populus tuus
gladio, fame, & peſte, quemadmodum prædixit
Dominus de populo qui non ſervierit
regi Babelis. Vos inquam, ne præbeatis 14
aures ſermonibus falſorum prophetarum qui
dicunt vobis, Nequaquam ſervietis regi Babelis:
nam falſum iſti prophetant vobis.
Hos non miſi, dicit Dominus, tamen ipſi 15
nomine meo falſum prophetant, ut expellam
vos, & pereatis vos ac prophetæ qui
prophetant vobis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* حبروا على بابل لكثيرين لكل موتر قوسا ٭ عسكروا عليها من حولها ٭ لا يكن من يخلص
منها * كافوها كاعمالها * كجميع ما صنعت اصنعوا بها ٭ لانها عاندت الرب الاله قدوس
اسرايل * لاجل هذا تسقط شبانها في شوارعها ٭ وجميع رجالها المحاربين يطرحون قال الرب ٭
* ها انا اليك ايتها المتكبرة يقول الرب ٭ لان يومك اتي وزمان انتقامك * وعظمتك تضعف
وتسقط ولا يكون من يقيمها ٭ واشعل نارا في غابها وتاكل كلما حولها * هكذا يقول
الرب على المقهورين بني اسرايل وبني يهودا معا ٭ يا جميع الذين سبوهم وقهروهم لان لم
يريدوا ان يرسلوهم * ومنقذهم قوي ٭ الرب ضابط الكل اسمه ٭ يحكم حكما مع خصومه
كي يزعزع الارض ويسخط سكان بابل * سيفا على الكلدانيين وعلى سكان بابل ٭ وعلى عظمائها
وعلى فهمائها * سيفا على محاربيها ويسترخون * سيفا على خيولهم وعلى مركباتهم سيفا على
محاربيهم والمختلط الذي في وسطها ٭ ويصيرون مثل النساء ٭ سيفا على كنوزهم ويبددون ٭
* على مائها ويجف ويخربون ٭ لانها ارض المنحوتات وفي الجزاير افتخروا * لاجل هذا تسكن
اصنامها في الجزاير ٭ وتسكن فيها بنات اوي ٭ ولا تسكن بعد الى الابد * كما خسف
الله بسدوم وعامورا واهلها قال الرب ٭ لا يسكن هناك انسان ولا يسكن هناك ابن
انسان * ها شعب اقبل من الجربياء ٭ وامة عظيمة وملوك كثيرون ينهضون من اقاصي
الارض * معهم قوس وسكين ٭ جافية هي ولا ترحم ٭ صوتها مثل بحر يعج ٭ يفترسون على
الخيل ٭ مستعدين مثل نار للحرب ٭ اليك يا ابنة بابل * سمع ملك بابل بسماعهم واسترخت
يداه ٭ ضبطته الشدة والطلقات مثل التي تلد ٭

* *Indicite multis contra Babelem, omnibus* 29
*arcum tendentibus: caſtra figite adverſùs
eam undequaque: nemo ſit qui evadat
ex ea: rependite illi ſecundùm actiones
ejus: juxta omnia quæ fecit, facite
illi. Quia adverſata eſt Domino Deo
ſancto Iſraelis;* *Ideò corruent juvenes* 30
*ejus in vicis ejus, & omnes viri ejus bellatores
proſternentur, ait Dominus.* *Ecce* 31
*me tibi O ſuperba, dicit Dominus; jam
enim advenit dies tua, & tempus ultionis
tuæ.* *Magnificentia tua debilitata cor-* 32
*ruet, nec erit qui erigat illam: & accendam
ignem in ſylvis ejus, qui devorabit
quicquid adjacet ei.* *Sic dicit Domi-* 33
*nus de oppreſſis filiis Iſraelis & filiis Judæ
pariter, O quicunque captivos abduxiſtis
eos, opprimitis eos, nec dimittere
vultis;* *Equidem vindex eorum for-* 34
*tiſſimus eſt, Dominus omnipotens nomen
ejus; ipſe cauſam inſtituet cum adverſariis
ſuis, ut terram vaſtet, & execretur
cives Babelis.* *Gladium ſuper Chaldæos* 35
*& ſuper cives Babelis, ſuper principes, &
ſuper prudentes ejus:* *Gladium ſuper* 36
bellatores ejus, ut emolleſcant: *Gladi-* 37
*um in equos & aurigas eorum: gladium
in milites eorum, & miſcellaneam turbam
quæ eſt in ipſa, ut ſint ſicut fœminæ:
gladium in theſauros eorum, ut diſſipentur:*
In aquam ejus, ut areſcat, & pu- 38
*di fiant. Quia terra ſculptilium eſt, & in
inſulis gloriati ſunt;* *Propterea commo-* 39
*rabuntur idola ejus in inſulis, & habitabunt
in ea canes ſylveſtres, nec habitabitur
deinceps in æternum.* *Quemadmodum* 40
*obruit Deus Sodomam & Gomorrham,
& habitatores earum, ait Dominus; nullus
habitaturus eſt illic homo, nec ullus
moraturus ibi filius hominis.* *Ecce po-* 41
*pulus advenit ex Aquilone; & gens magna
regeſque multi ſurgent ab extremo
terræ:* *Arcum & cultrum geſtant, ru-* 42
*dis eſt & inhumana, vox ejus ut maris
fremebundi, equis conſcendendis aſſueti
ſunt, ad prælium expediti velut ignis,
contra te O filia Babelis.* *Auditâ à rege* 43
*Babelis famâ eorum, remiſſæ ſunt manus
ejus, occupârunt eum angustia & dolores
ut parturientem.*

ירמיה : כח

:dicendo ,sum locutus istum populum omnem ad & ,sacerdotes ad Et
16 וְאֶל־הַכֹּהֲנִים וְאֶל־כָּל־הָעָם הַזֶּה דִּבַּרְתִּי לֵאמֹר
vestrorum prophetarum verba *ad* audiatis Ne :Dominus dixit Sic
כֹּה אָמַר יְהוָה אַל־תִּשְׁמְעוּ אֶל־דִּבְרֵי נְבִיאֵיכֶם
conversa Domini domus vasa Ecce : dicendo ,vobis *prophetantium*
הַנִּבְּאִים לָכֶם לֵאמֹר הִנֵּה כְלֵי בֵית־יְהוָה מוּשָׁבִים
Ne .vobis *prophetantes ipsi* mendacium quia : citò nunc Babel de
17 מִבָּבֶלָה עַתָּה מְהֵרָה כִּי שֶׁקֶר הֵמָּה נִבְּאִים לָכֶם׃ אַל־
erit quid ut :vivetis &,Babel regi servite : eos *ad* audiatis
תִּשְׁמְעוּ אֲלֵיהֶם עִבְדוּ אֶת־מֶלֶךְ־בָּבֶל וִחְיוּ לָמָּה תִהְיֶה
Domini verbum est si & ,*ipsi* prophetæ si Et ?solitudo hæc civitas
18 הָעִיר הַזֹּאת חָרְבָּה׃ וְאִם־נְבִאִים הֵם וְאִם־יֵשׁ דְּבַר־יְהוָה
vasa eant non ut , exercituum *Domino in* nunc *occurrent* :eis cum
אִתָּם יִפְגְּעוּ־נָא בַּיהוָה צְבָאוֹת לְבִלְתִּי־בֹאוּ הַכֵּלִים
, Jerusalaim in & ,Jehudah regis domo & ,Domini domo in *remanentia*
הַנּוֹתָרִים בְּבֵית־יְהוָה וּבֵית מֶלֶךְ יְהוּדָה וּבִירוּשָׁלִַם
super & ,columnas ad exercituum Dominus dixit sic Quia .Babel in
19 בָּבֶלָה׃ כִּי כֹה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֶל־הָעַמֻּדִים וְעַל־
urbe in *remanentium* vasorum residuum *super* & ,*fulcimenta super* & ,mare
הַיָּם וְעַל־הַמְּכֹנוֹת וְעַל יֶתֶר הַכֵּלִים הַנּוֹתָרִים בָּעִיר
, Babel rex Nebuchadnesar *ea* tulit non Quæ .hac
20 הַזֹּאת׃ אֲשֶׁר לֹא־לְקָחָם נְבוּכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ בָּבֶל
Jehudah regem Jehojachim filium Jechonjah *eo transferendo in*
בַּגְלוֹתוֹ אֶת־יְכוֹנְיָה בֶן־יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה
.Jerusalaim & Jehudah *ingenuos* omnes & , Babel in Jerusalaim de
מִירוּשָׁלִַם בָּבֶלָה וְאֵת כָּל־חֹרֵי יְהוּדָה וִירוּשָׁלִָם׃
vasa *super* Israel Deus exercituum Dominus dixit sic Quia
21 כִּי כֹה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל עַל־הַכֵּלִים
.Jerusalaim & ,Jehudah regis domo & ,Domini domo *remanentia*
הַנּוֹתָרִים בֵּית יְהוָה וּבֵית מֶלֶךְ־יְהוּדָה וִירוּשָׁלִָם׃
me visitare diem ad usque erunt ibi & , adducentur Babel In
22 בָּבֶלָה יוּבָאוּ וְשָׁמָּה יִהְיוּ עַד יוֹם פָּקְדִי
ea faciam redire & , ea faciam ascendere & ; Dominus dixit , eos
אֹתָם נְאֻם־יְהוָה וְהַעֲלִיתִים וַהֲשִׁבֹתִים
.hunc locum ad
אֶל־הַמָּקוֹם הַזֶּה׃

CAP. XXVIII. כח

,Jehudah regis Sidchijah regni principio in ipso anno in fuit Et
1 וַיְהִי בַּשָּׁנָה הַהִיא בְּרֵאשִׁית מַמְלֶכֶת צִדְקִיָּה מֶלֶךְ־יְהוּדָה
Chananjah me ad dixit , quinto mense in , quarto anno in
בִּשְׁנַת הָרְבִעִית בַּחֹדֶשׁ הַחֲמִישִׁי אָמַר אֵלַי חֲנַנְיָה
oculis in ,Domini domo in ,Ghibhon de qui , propheta Hazur filius
בֶן־עַזּוּר הַנָּבִיא אֲשֶׁר מִגִּבְעוֹן בְּבֵית יְהוָה לְעֵינֵי
Dominus dixit Sic : dicendo , populi omnis & , sacerdotum
2 הַכֹּהֲנִים וְכָל־הָעָם לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה
regis jugum Confregi : dicendo , Israel Deus exercituum
צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל לֵאמֹר שָׁבַרְתִּי אֶת־עֹל מֶלֶךְ
locum ad *convertens* ego , dierum *annis duobus adhuc* In .Babel
3 בָּבֶל׃ בְּעוֹד שְׁנָתַיִם יָמִים אֲנִי מֵשִׁיב אֶל־הַמָּקוֹם
Nebuchadnesar tulit quæ , Domini domus vasa omnia hunc
הַזֶּה אֶת־כָּל־כְּלֵי בֵּית יְהוָה אֲשֶׁר לָקַח נְבוּכַדְנֶאצַּר
Et .Babel ea adduxit & , isto loco de Babel rex
4 מֶלֶךְ־בָּבֶל מִן־הַמָּקוֹם הַזֶּה וַיְבִיאֵם בָּבֶל׃ וְאֶת־
transmigratione omnem & , Jehudah regem Jehojachim filium Jechonjah
יְכָנְיָה בֶן־יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה וְאֶת־כָּל־גָּלוּת
, istum locum ad *convertens* ego , Babel in *ingredientium* , Jehudah
יְהוּדָה הַבָּאִים בָּבֶלָה אֲנִי מֵשִׁיב אֶל־הַמָּקוֹם הַזֶּה
.Babel regis jugum conteram nam : Dominus ait
נְאֻם־יְהוָה כִּי אֶשְׁבֹּר אֶת־עֹל מֶלֶךְ בָּבֶל׃

Verſio VULG. LAT.

16 Et ad ſacerdotes, & ad populum iſtum locutus ſum, dicens; Hæc dicit Domin⁹; Nolite audire verba prophetarum veſtrorum, qui prophetant vobis, dicentes; Ecce vaſa Domini revertentur de Babylone nunc citó: mendacium 17 enim prophetant vobis. Nolite ergò audire eos, ſed ſervite regi Babylonis, ut vivatis: quarè datur hæc civitas in ſolitudinem? 18 Et ſi prophetæ ſunt, & eſt verbum Domini in eis: occurrant Domino exercituum, ut non veniant vaſa, quæ derelicta fuerant in domo Domini, & in domo regis Juda, & in Jeruſalem, in 19 Babylonem. Quia hæc dicit Dominus exercituum ad columnas, & ad mare, & ad baſes, & ad reliqua vaſorum, quæ remanſe-20 runt in civitate hac: Quæ non tulit Nabuchodonoſor rex Babylonis, cùm transferret Jechoniam filium Joakim regem Juda de Jeruſalem in Babylonem, & omnes optimates Juda & Jeruſalem. 21 Quia hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael ad vaſa, quæ derelicta ſunt in domo Domini, & in domo regis Juda & Jeruſa-22 lem; In Babylonem transferentur, & ibi erunt uſque ad diem viſitationis ſuæ, dicit Dominus; & afferri faciam ea, & reſtitui in loco iſto.

CAP. XXVIII.

1 ET factum eſt in anno illo, in principio regni Sedeciæ regis Juda, in anno quarto, in menſe quinto, dixit ad me Hananias fili⁹ Azur propheta de Gabaon, in domo Domini, coram ſacerdotibus & omni populo, dicens; 2 Hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael; Contrivi jugum re-3 gis Babylonis. Adhuc duo anni dierum, & ego referri faciam ad locum iſtum omnia vaſa domûs Domini, quæ tulit Nabuchodonoſor rex Babylonis de loco iſto, 4 & tranſtulit ea in Babylonem. Et Jechoniam filium Joakim regem Juda, & omnem tranſmigrationem Juda, qui ingreſſi ſunt in Babylonem, ego convertam ad locum iſtum, ait Dominus: conteram enim jugum regis Babylonis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

44 Ἰδοὺ ὥσπερ λέων ἀναβήσεται ἀπὸ τοῦ Ἰορδάνου εἰς (τ) Γαιθὰν, ὅτι ταχέως ἐκδιώξω αὐτοὺς ἀπ᾽ αὐτῆς, ϗ πάντα νεανίσκον ἐπ᾽ αὐτὴν ἐπιστήσω. ὅτι τίς ὥσπερ ἐγώ; ϗ τίς ἀντιστήσεταί μοι; ϗ τίς οὗτος 45 ποιμὴν ὃς στήσεται κατὰ πρόσωπόν μου; Διατοῦτο ἀκούσατε τὴν βουλὴν κυρίου ἣν βεβούλευται ἐπὶ Βαβυλῶνα, ϗ (υ) λογισμοὺς αὐτοῦ οὓς ἐλογίσατο ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Χαλδαίους· ἐὰν μὴ (φ) διαφθαρῇ τὰ ἀρνία τῶν προβάτων αὐτῶν, ἐὰν μὴ ἀφανισθῇ 46 νομὴ ἀπ᾽ αὐτῶν. Ὅτι ἀπὸ φωνῆς ἁλώσεως Βαβυλῶνος σεισθήσεται ἡ γῆ, ϗ κραυγὴ ἐν ἔθνεσιν ἀκουσθήσεται.

MS.A. (τ) τόπον Αἰθὰμ, (υ) διαλογισμοὺς οὓς διελογίσατο (φ) διαφθίρω

Cap. 51. Vulg.Lat. ΚΕΦ. κη´.

1 Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω ἐπὶ Βαβυλῶνα ϗ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Χαλδαίους ἄνεμον καύσωνα 2 διαφθείροντα. Καὶ ἐξαποστελῶ εἰς Βαβυλῶνα ὑβριστὰς, ϗ (α) καθυβριοῦσιν αὐτὴν, ϗ λυμανοῦνται τὴν γῆν αὐτῆς. οὐαὶ ἐπὶ Βαβυλῶνα κυκλόθεν ἐν ἡμέρᾳ κακώσε-3 ως αὐτῆς. Τεινέτω ὁ τείνων τὸ τόξον αὐτοῦ, ϗ περιθέσθω ᾧ ἐστιν ὅπλα αὐτοῦ, ϗ μὴ φείσησθε (β) ἐπὶ τοὺς νεανίσκους αὐτῆς, ϗ ἀφανίσατε πᾶσαν τὴν δύναμιν αὐτῆς. 4 Καὶ πεσοῦνται τραυματίαι ἐν γῇ Χαλδαίων, ϗ κατακεκεντημένοι ἔξωθεν αὐτῆς. (γ) 5 Διότι οὐκ ἐχήρευσεν Ἰσραὴλ ϗ Ἰούδας ἀπὸ (δ) θεοῦ αὐτῶν, ἀπὸ κυρίου παντοκράτορος, ὅτι ἡ γῆ αὐτῶν ἐπλήσθη ἀδικίας 6 ἀπὸ τῶν ἁγίων Ἰσραήλ. Φεύγετε ἐκ μέσου Βαβυλῶνος, ϗ ἀνασώζετε ἕκαστος τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, ϗ μὴ (ε) ἀπορριφῆτε ἐν τῇ ἀδικίᾳ αὐτῆς, ὅτι καιρὸς ἐκδικήσεως αὐτῆς ἐστι παρὰ κυρίου, ἀνταπόδομα αὐ-7 τὸς ἀνταποδίδωσιν αὐτῇ. Ποτήριον χρυσοῦν Βαβυλὼν ἐν χειρὶ κυρίου, μεθύσκον πᾶσαν τὴν γῆν, ἀπὸ τοῦ οἴνου αὐτῆς ἐπίο-8 σαν ἔθνη, διατοῦτο ἐσαλεύθησαν. Καὶ ἄφνω ἔπεσε Βαβυλὼν, ϗ συνετρίβη. θρηνεῖτε αὐτὴν, λάβετε (ζ) ῥητίνην τῇ δια-9 φθορᾷ αὐτῆς, εἴπως ἰαθήσεται. Ἰατρεύσαμεν τὴν Βαβυλῶνα, ϗ οὐκ ἰάθη· ἐγκαταλίπωμεν αὐτὴν, ϗ ἀπέλθωμεν ἕκαστος εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ, ὅτι (η) ἤγγικεν εἰς οὐρανὸν τὸ κρίμα αὐτῆς, ἐξῆρεν ἕως τῶν ἄ-10 στρων. Ἐξήνεγκε κύριος τὸ κρίμα αὐτοῦ. δεῦτε, ϗ ἀναγγείλωμεν (θ) ἐν Σιὼν τὰ 11 ἔργα κυρίου (ι) τοῦ θεοῦ ἡμῶν. Παρασκευάζετε τὰ τοξεύματα, πληροῦτε τὰς φαρέτρας. ἤγειρε κύριος τὸ πνεῦμα βασιλέως Μήδων, ὅτι εἰς Βαβυλῶνα ἡ ὀργὴ αὐτοῦ, τοῦ (κ) ἐξολοθρεῦσαι αὐτὴν, ὅτι ἐκδίκησις κυρίου ἐστὶν, ἐκδίκησις λαοῦ αὐτοῦ ἐστιν.

MS.A. (α) καθυβρίσουσιν (β) ἐπὶ νεανίσκους (γ) Διατί (δ) κυρίου θεοῦ αὐτῶν, κυρίου (ε) ἀπορίφηται (ζ) ῥιτίνην (η) ἤγγισεν (θ) εἰς Σιὼν (ι) θεοῦ ἡμῶν. Παρασκευάσατε (κ) ἐξολεθρεῦσαι

Ecce, ſicut leo, aſcendet de Jordane in Gæthan: quia citò expellam eos ab illa: & omnem adoleſcentem ſuper eam ſtatuam. Quoniam, quis ſicut ego? & quis reſiſtet mihi? Et quis iſte paſtor, qui ſtabit contra faciem meam? Propter hoc audite conſilium Domini, quod decrevit ſuper Babylonem, & cogitationes ejus, quas cogitavit ſuper habitatores Chaldæos, ſi non corrumpantur agni ovium eorum, ſi non diſperdantur paſcua ab eis. Quia à voce captivitatis Babylonis commovebitur terra: & clamor in gentibus audietur.

CAP. XXVIII.

*HÆc (a) dicit Dominus; Ecce ego ſuſcito ſuper Babylonem, & ſuper habitatores * Chaldæos ventum urentem corrumpentem. Et emittam in Babylonem contumelioſos, & contumelia afficient eam, & vaſtabunt terram ejus. Væ ſuper Babylonem in circuitu in die afflictionis ejus. Tendat, qui tendit arcum ſuum; & circumponat, cui ſunt, arma ſua: & ne parcatis ſuper adoleſcentibus ejus, & delete omnem virtutem ejus. Et cadent interfecti in terra Chaldæorum, & confoſſi deforis ejus. Quia non fuit viduatus Iſrael & Judas à Deo ſuo, à Domino omnipotente: quia terra eorum repleta eſt iniquitate à ſanctis Iſrael. Fugite de medio Babylonis, & ſalvate unuſquiſque animam ſuam, & ne projiciamini in iniquitate ejus: quoniam tempus ultionis ejus eſt à Domino: retributionem ipſe retribuit ei. Calix aureus Babylon in manu Domini, inebrians omnem terram: de vino ejus biberunt gentes: ideò commotæ ſunt. Et repentè cecidit Babylon, & contrita eſt. Lamentamini eam, ſumite reſinam corruptioni ejus, ſi quomodo ſanabitur. Curavimus Babylonem, & non eſt ſanata: derelinquamus eam, & abeamus unuſquiſque in terram ſuam: quoniam appropinquavit ad cælum judicium ejus: elevatum eſt uſque ad aſtra. Protulit Dominus judicium ſuum. Venite, & annuntiemus in Sion opera Domini Dei noſtri. Parate arcus, implete pharetras. Suſcitavit Dominus ſpiritum regis Medorum: quoniam in Babylonem ira ejus ad diſperdendum eam: quia ultio Domini eſt, ultio (b) populi ejus eſt.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 ולכהניא ולכל עמא הדין מלילית למימר כדנן אמר יי לא תקבלון לפתגמי נביכון
דשקרא דמתנבן לכון למימר הא מני בית מקדשא דיי מתותבין מבבל כען בפריע
17 ארי שקרא אנון מתנבן לכון : לא תקבלון מנהון פלחו ית מלכא דבבל ואתקיימו למא
18 תהי קרתא הדא חורבא : ואם מתנבן אנון ואם אית פתגמא דיי עמהון יבעון כען
במימרא דיי צבאות בדיל דלא יתובלון מניא דאשתארו בבית מקדשא דיי ובית מלך
19 שבטא דבית יהודה ובירושלם לבבל : ארי כדנן אמר יי צבאות על עמודיא ועל ימא
20 ועל בסיסיא ועל שאר מניא דאשתארו בקרתא הדא : דלא שבנון נבוכד נצר מלכא
דבבל כד אגלי ית יכניה בר יהויקים מלך שבטא דבית יהודה מירושלם לבבל וית כל
21 רברבי יהודה וירושלם : ארי כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל על מניא דאשתארו
22 בית מקדשא דיי ובית מלך שבטא דבית יהודה ובירושלם : לבבל יתובלון ותמן יהון
עד יומא דיעול דכרנהון קדמי אמר יי ואסיקנון ואתיבנון לאתרא הדין :

כח

1 והוה בשתא ההיא בריש מלכות צדקיה מלך שבטא דבית יהודה בשתא רביעיתא
בירחא חמישאה אמר לי חנניה בר עזור נביא שקרא דמגבעון בבית מקדשא דיי לעיני
2 כהניא וכל עמא למימר : כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל למימר תברית ית ניר
3 מלכא דבבל : בסוף תרתין שנין אנא מתיב לאתרא הדין ית כל מני בית מקדשא דיי
4 דשבא נבוכד נאצר מלכא דבבל מן אתרא הדין ואובלנון לבבל : וית יכניה בר
יהויקים מלך שבטא דבית יהודה וית כל גלות יהודה דאתגליאו לבבל אנא מתיב
לאתרא הדין אמר יי ארי אתבר ית ניר מלכא דבבל :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sacerdotibus autem & omni populo huic locutus ſum dicens: Hæc dicit Dominus; Ne obediatis verbis pſeudoprophetarum veſtrorum prophetantium vobis, dicendo: Ecce vaſa domus ſanctuarii Domini revertentur de Babylonia nunc citò; quia mendacium ipſi prophetant vobis. Ne obediatis eis: ſed ſervite regi Babylonis, & vivite. Quare erit civitas hæc deſolata? Et ſi prophetæ ſunt, & eſt verbum Domini cum eis, deprecentur nunc in verbo Domini exercituum, ut non efferantur vaſa quæ remanſerunt in domo ſanctuarii Domini, & in domo regis tribus domus Juda, & in Jeruſalem, in Babylonem. Quia hæc dicit Dominus exercituum de columnis & de mari, & de baſibus & reliquis vaſis quæ remanſerunt in civitate hac: Quæ non cepit Nabuchodonoſor rex Babylonis cum tranſmigrare fecerat Jechoniam filium Joachim, regem tribus domus Juda de Jeruſalem in Babylonem, & omnes principes Juda & Jeruſalem. Quia hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael de vaſis quæ remanſerunt in domo ſanctuarii Domini, & in domo regis tribus domus Juda & in Jeruſalem. In Babylonem transferentur, & ibi erunt uſque in diem quo ſubibit memoria eorum in conſpectu meo, dicit Dominus; & aſcendere faciam, & reducam ea in locum iſtum.

CAP. XXVIII.

ET factum eſt anno illo in principio regni Sedechiæ regis tribus domus Juda, anno quarto, menſe quinto, dixit ad me Ananias filius Azor pſeudopropheta de Gabaon, in domo ſanctuarii Dñi, in oculis ſacerdotũ & omnis populi, dicens: Hæc dicit Dñs exercituum Deus Iſrael, dicendo: Confregi jugum regis Babylonis. In fine duorum annorum ego reducam ad locum iſtum omnia vaſa domus ſanctuarii Dñi, quæ cepit Nabuchodonoſor rex Babylonis de loco iſto, & tranſtulit ea in Babylonem. Et Jechoniam filium Joachim regem tribus domus Juda, & omnem tranſmigrationem Juda, quæ tranſmigravit in Babylonem, ego reducam in locum iſtum, dicit Dominus: quia contringam jugum regis Babylonis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܟܗܢܐ ܘܠܟܠܗ ܥܡܐ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܠܦܬܓܡܝ ܢܒܝܐ ܕܝܠܟܘܢ
ܕܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ ܘܐܡܪܝܢ. ܗܐ ܡܐܢܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܗܦܟܝܢ ܡܢ ܒܒܠ ܥܓܠ.
ܡܛܠ ܕܫܘܩܪܐ ܗܢܘܢ ܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ. * ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܦܠܘܚܘ ܠܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ. ܘܚܝܘ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܩܪܝܬܐ ܗܕܐ ܚܪܒܐ. * ܘܐܢ ܢܒܝܐ ܐܢܘܢ. ܘܐܝܬ ܦܬܓܡܗ
ܕܡܪܝܐ ܥܡܗܘܢ. ܢܬܟܫܦܘܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܕܠܐ ܢܐܙܠܘܢ ܡܐܢܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ
ܘܒܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܐܘܪܫܠܡ ܠܒܒܠ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܥܠ ܥܡܘܕܐ ܘܥܠ ܝܡܐ ܘܥܠ ܡܟܘܢܝܬܐ. ܘܥܠ ܫܪܟܐ ܕܡܐܢܐ ܕܐܫܬܚܪܘ
ܒܩܪܝܬܐ ܗܕܐ: * ܕܠܐ ܢܣܒ ܐܢܘܢ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܟܕ ܫܒܐ ܠܝܘܟܢܝܐ ܒܪ
ܝܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܠܒܒܠ: ܘܠܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ.
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܥܠ ܡܐܢܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ
ܘܒܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ. * ܠܒܒܠ ܢܐܙܠܘܢ. ܘܬܡܢ ܢܗܘܘܢ. ܥܕܡܐ
ܠܝܘܡܐ ܕܐܣܥܘܪ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܣܩ ܐܢܘܢ. ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܚ *

* ܘܗܘܐ ܒܫܢܬܐ ܗܝ. ܒܪܫ ܡܠܟܘܬܗ ܕܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܒܫܢܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ ܒܝܪܚܐ
ܚܡܝܫܝܐ. ܐܡܪ ܠܝ ܚܢܢܝܐ ܒܪ ܥܙܘܪ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܕܡܢ ܓܒܥܘܢ. ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܥܝܢ
ܟܗܢܐ ܘܟܠܗ ܥܡܐ. ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܬܒܪܬ ܢܝܪܗ
ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܥܕܡܐ ܠܬܪܬܝܢ ܫܢܝܢ. ܡܗܦܟ ܐܢܐ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܠܟܠܗܘܢ ܡܐܢܐ
ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܕܢܣܒ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܡܢ ܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܐܘܒܠ ܐܢܘܢ ܠܒܒܠ.
ܥܡ ܝܘܟܢܝܐ ܒܪ ܝܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܘܠܟܠܗ ܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܐܙܠܘ
ܠܒܒܠ. ܡܗܦܟ ܐܢܐ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܬܒܪ ܐܢܐ ܢܝܪܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ.

Similiter ad ſacerdotes totumque populum 16
iſtum ſic dicit Dominꝰ, Ne auſcultetis ſermo-
monibus prophetarum veſtrorum qui prophe-
tant vobis ac dicunt, Ecce vaſa domus Domi-
ni brevi reditura ſunt ex Babele : nam falſum
iſti prophetant vobis. Ne auſcultetis eis, di- 17
cit Dominꝰ : ſervite regi Babelis, ut vivatis,
& non fiat civitas iſta deſolata. Quòd ſi pro- 18
phetæ ſunt, & ineſt illis ſermo Domini ; pre-
centur Dñm potentiſſimũ ut vaſa quæ reman-
ſerunt in domo Dñi, in domo regis Judæ, & in
Jeruſalem, non abeant in Babelem. Sic enim 19
ait Dominus potentiſſimꝰ Deus Iſraelis de co-
lumnis, de mari, de phialis, deque cæteris va-
ſis quæ remanſerunt in hac civitate, Quæ 20
non aſportavit Nebuchadnoſar rex Babelis
quando captivum duxit Jochaniam filium Jo-
jacimi regis Judæ è Jeruſalem in Babelem,
unà cum omnibꝰ principibꝰ Judæ & Jeruſa-
lem. Sic *inquam*, ait Dominꝰ potentiſſimus 21
Deꝰ Iſraelis de vaſis quæ ſuperſunt in domo
Domini, & in domo regis Judæ & Jeruſa-
lem : In Babelem abibunt, & illic manebunt 22
ad eum uſque diem quo viſitavero ea, dicit
Dominus, extraxero, atque reduxero ea in
locum iſtum.

CAP. XXVIII.

Contigit etiam anno illo, in principio re- 1
gis Judæ, anno quarto, menſe quinto ; ut di-
ceret mihi Hanania filiꝰ Azuris propheta fal-
ſus qui erat è Gebeone, in domo Domini,
præſentibꝰ ſacerdotibꝰ & præſente univerſo
populo , Ita dicit Dominꝰ potentiſſimꝰ Deꝰ 2
Iſraelis, Fregi jugum regis Babyloniæ. In- 3
tra biennium reſtituam in locum iſtum cun-
cta vaſa domꝰ Domini, quæ rapuit Nebuchad-
noſar rex Babyloniæ è loco iſto , tranſve-
xitque Babyloniam, unà cum Jochania filio
Jojacimi regis Judæ. Omnes etiam capti- 4
vos Judæ qui abierunt Babyloniam , redu-
cam in locum iſtum, dicit Dominus ; quia
fracturus ſum jugum regis Babyloniæ.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ها مثل أسد يصعد من الاردن الي موضع أثام لاني بسرعة أستكدهم منها . وكل
شاب أقيمه عليها . لان من مثلي انا . ومن ذا يقاومني . ومن ذا الراعي الذي يقف
لوجهي * لاجل هذا اسمعوا راي الرب الذي رواه علي بابل . والافكار التي فكرها
علي السكان الكلدانيين . ان لم افسد خراف غنمهم . ان لم يفن مرعاهم * لان من
صوت هلاك بابل تتزلزل الارض . ويسمع الصراخ في الامم .

. الفصل الثامن والعشرون . * هكذا يقول الرب . ها انا اثير علي بابل وعلي
السكان الكلدانيين ريحا محرقة مهلكة * وارسل الي بابل معتدين ويعتدون عليها ويفسدون
ارضها . ويل علي بابل من حولها في يوم ضرها * ليمد الماد قوسه وليلبس اسلحته . ولا
تشفقوا علي شبانها . وافنوا كل جيشها * ويسقطون جرحا في ارض الكلدانيين . ومطعونين
من خارجها * من اجل ماذا . لم يترمل اسرايل ويهودا من الرب الههم الرب ضابط الكل
لان ارضهم امتلات ظلما من اقداس اسرايل * فروا من وسط بابل . وخلصوا كل واحد
نفسه . ولا تنطرحوا في ظلمها . لان زمن انتقامها حضر من قبل الرب . وهو يكافيها مكافاة .
* كاس ذهب بابل في يد الرب . اسكر كل الارض من خمرها . شربت الامم . لاجل هذا
تزعزعوا * سقطت بابل بغتة وانكسرت . نوحوا عليها . خذوا فلهونيه لفسادها لعل
تشفي * طببنا بابل فلم تشفي . تركناها وذهبنا كل واحد في طريقه . لان حكمها اقترب
الي السماء . ارتفع الي الكواكب * ابرز الرب حكمه . تعالوا فنخبر في صهيون باعمال الرب
الهنا * هيئوا السهام . املئوا الكعاب . اقام الرب روح ملك الماديين . لان غضبه علي بابل
ليستاصلها . لان انتقام الرب حضر . انتقام شعبه هو .

Ecce tanquam leo aſcendet è Jordane 44
ad locum Ethan : nam brevi exhauriam
eos ex ipſa, & quemcunque juvenem
præficiam ipſi. Quis enim mihi ſimilis
eſt ? aut quis mecum certet ? aut quis
eſt paſtor qui mihi reſiſtat ? Hanc ob 45
rem audite quid animo conceperit Do-
minus contra Babelem, & quas cogita-
tiones cogitavit de civibus Chaldæis :
mentiar niſi corrumpam agnos gregum
eorum, niſi pereat paſcuum eorum.
Nam præ fragore excidii Babelis ter- 46
ra contremiſcet, & auditur clamor in-
ter gentes.

CAP. XXVIII.

Sic dicit Dominus, Ecce ego con- 1
citaturus ſum in Babelem & in cives
Chaldæos ventum urentem pernicioſum:
Et miſſurus in Babelem contumelioſos 2
qui contumeliis afficient eam, & ter-
ram ejus vaſtabunt. Væ Babeli unde-
quaque in die calamitatis ejus. Tendat 3
qui tendit arcum ſuum, & induat ar-
ma ſua : ne parcatis juvenibus ejus,
ſed extinguite omnes copias ejus ; ut 4
cadant ſaucii in terra Chaldæorum, &
transfixi ab iis qui ſunt extra ipſam.
Qua de cauſa ? Num viduati ſunt 5
Iſrael & Juda Domino Deo ſuo, Do-
mino omnipotente, quòd eorum terra
impleta ſit iniquitate à ſanctis Iſrae-
lis ? Fugite de medio Babelis, & eri- 6
pite quiſque ſeipſum, neque præcipite-
tis vos in iniquitatem ejus : nam tem-
pus ultionis ejus adeſt à Domino, &
ipſe rependet illi vices. Calix aureus 7
eſt Babel in manu Domini, è cujus
vino inebriavit univerſam terram ; bi-
berunt gentes, ideo vacillârunt. Cecidit 8
Babel ſubitò, & fracta eſt : deplorate
eam, accipite reſinam pro corruptione
ejus, ſi fortè ſanetur. Remedium ad- 9
hibuimus Babeli ; ſed quia non eſt ſa-
nata, reliquimus eam, & abivimus
quiſque via ſuâ : judicium enim ejus
ad cœlum appropinquavit, extulit ſe ad
aſtra. Patefecit Dominus judicium 10
ſuum. Agite annunciemus in Sione
opera Domini Dei noſtri. Parate ſagit- 11
tas, implete pharetras : excitavit Do-
minus ſpiritum regis Medorum, quia
furor ejus eſt contra Babelem, ut eam
funditus evertat : nam ultio Domini ad-
eſt, ultio populi ſui eſt.

יִרְמְיָה : כח

ceulis in ,prophetam Chananjah ad propheta Irmejah dixit Et
5 וַיֹּאמֶר יִרְמְיָה הַנָּבִיא אֶל־חֲנַנְיָה הַנָּבִיא לְעֵינֵי
.Domini domo in *stantium* ,populi omnis oculis in & ,sacerdotum
הַכֹּהֲנִים וּלְעֵינֵי כָּל־הָעָם הָעֹמְדִים בְּבֵית יְהוָה׃
suscitet :Dominus faciat Sic .Amen :propheta Irmejah ait Et
6 וַיֹּאמֶר יִרְמְיָה הַנָּבִיא אָמֵן כֵּן יַעֲשֶׂה יְהוָה יָקֵם
domus vasa *convertendum ad* prophetâsti quæ ,tua verba Dominus
יְהוָה אֶת־דְּבָרֶיךָ אֲשֶׁר נִבֵּאתָ לְהָשִׁיב כְּלֵי בֵית־
.istum locum ad Babel de transmigrationem omnem & ,Domini
יְהוָה וְכָל־הַגּוֹלָה מִבָּבֶל אֶל־הַמָּקוֹם הַזֶּה׃
loquens ego quod ,hoc verbum nunc audi Veruntamen
7 אַךְ־שְׁמַע־נָא הַדָּבָר הַזֶּה אֲשֶׁר אָנֹכִי דֹּבֵר
fuerunt qui Prophetæ .populi universi auribus in & ,tuis auribus in
8 בְּאָזְנֶיךָ וּבְאָזְנֵי כָּל־הָעָם׃ הַנְּבִיאִים אֲשֶׁר הָיוּ
,multas terras *ad* prophetaverunt & ,seculo à te ante & ,me ante
לְפָנַי וּלְפָנֶיךָ מִן־הָעוֹלָם וַיִּנָּבְאוּ אֶל־אֲרָצוֹת רַבּוֹת
.peste & ,*malo* & ,prælio de ,magna regna *super* &
וְעַל־מַמְלָכוֹת גְּדֹלוֹת לְמִלְחָמָה וּלְרָעָה וּלְדָבֶר׃
scietur ,prophetæ verbum *veniendo in* ,pace de *prophetabit* qui Propheta
9 הַנָּבִיא אֲשֶׁר יִנָּבֵא לְשָׁלוֹם בְּבֹא דְּבַר הַנָּבִיא יִוָּדַע
Chananjah tulit Et .veritate in Dominus *eum* misit quem propheta
10 הַנָּבִיא אֲשֶׁר־שְׁלָחוֹ יְהוָה בֶּאֱמֶת׃ וַיִּקַּח חֲנַנְיָה
.eã confregit & ,prophetæ Irmejah collo *desuper* vectem propheta
הַנָּבִיא אֶת־הַמּוֹטָה מֵעַל צַוַּאר יִרְמְיָה הַנָּבִיא וַיִּשְׁבְּרֵהוּ׃
dixit Sic :dicendo ,populi omnis oculis in Chananjah ait Et
11 וַיֹּאמֶר חֲנַנְיָה לְעֵינֵי כָל־הָעָם לֵאמֹר כֹּה אָמַר
Babel regis Nebuchadnesar jugum confringam Sic :Dominus
יְהוָה כָּכָה אֶשְׁבֹּר אֶת־עֹל ׀ נְבֻכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל
abiit & :gentium omnium collo *desuper* dierum *duobus annis adhuc in*
בְּעוֹד שְׁנָתַיִם יָמִים מֵעַל צַוַּאר כָּל־הַגּוֹיִם וַיֵּלֶךְ
ad Domini verbum fuit Et .suam viam in propheta Irmejah
12 יִרְמְיָה הַנָּבִיא לְדַרְכּוֹ׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֶל־
desuper vectem propheta Chananjah *confringere post* Irmejahu
יִרְמְיָהוּ אַחֲרֵי שְׁבוֹר חֲנַנְיָה הַנָּבִיא אֶת־הַמּוֹטָה מֵעַל
,Chananjah ad *dices* & ,Vade :dicendo ,prophetæ Irmejah collo
13 צַוַּאר יִרְמְיָה הַנָּבִיא לֵאמֹר׃ הָלוֹךְ וְאָמַרְתָּ אֶל־חֲנַנְיָה
facies & ,confregisti *ligni* Vectes :Dominus dixit Sic :dicendo
לֵאמֹר כֹּה אָמַר יְהוָה מוֹטֹת עֵץ שָׁבָרְתָּ וְעָשִׂיתָ
Deus exercituū Dominus dixit sic Quia .*ferri* vectes eis pro
14 תַחְתֵּיהֶן מֹטוֹת בַּרְזֶל׃ כִּי כֹה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי
gentium cunctarum collum super *dedi* *ferri* Jugum :Israel
יִשְׂרָאֵל עֹל בַּרְזֶל נָתַתִּי עַל־צַוַּאר ׀ כָּל־הַגּוֹיִם
;ei servient & ,Babel regi Nebuchadnesar *serviendum ad* ,istarum
הָאֵלֶּה לַעֲבֹד אֶת־נְבֻכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל וַעֲבָדֻהוּ
propheta Irmejah dixit Et .ei dedi agri *feram* insuper &
15 וְגַם אֶת־חַיַּת הַשָּׂדֶה נָתַתִּי לוֹ׃ וַיֹּאמֶר יִרְמְיָה הַנָּבִיא
te misit non ,Chananjah nunc Audi :prophetam Chananjah ad
אֶל־חֲנַנְיָה הַנָּבִיא שְׁמַע־נָא חֲנַנְיָה לֹא־שְׁלָחֲךָ
.mendacio in istum populum fecisti fidere tu & ,Dominus
יְהוָה וְאַתָּה הִבְטַחְתָּ אֶת־הָעָם הַזֶּה עַל־שָׁקֶר׃
faciebus desuper te *mittens* ego Ecce :Dominus dixit sic Idcirco
16 לָכֵן כֹּה אָמַר יְהוָה הִנְנִי מְשַׁלֵּחֲךָ מֵעַל פְּנֵי
ad es locutus *defectionem* quia *:mortuus* *tu* anno hoc *:humi*
הָאֲדָמָה הַשָּׁנָה אַתָּה מֵת כִּי־סָרָה דִבַּרְתָּ אֶל־
,ipso anno in propheta Chananjah est mortuus Et .Dominum
17 יְהוָה׃ וַיָּמָת חֲנַנְיָה הַנָּבִיא בַּשָּׁנָה הַהִיא
.septimo mense in
בַּחֹדֶשׁ הַשְּׁבִיעִי׃

Versio VULG. LAT.

5 Et dixit Jeremias propheta ad Hananiam prophetam, in oculis sacerdotum, & in oculis omnis populi, qui stabat in 6 domo Domini. Et ait Jeremias propheta; Amen, sic faciat Dominus: suscitet Dominus verba tua, quæ prophetâsti: ut referantur vasa in domum Domini, & omnis transmigratio de 7 Babylone ad locum istum. Veruntamen audi verbum hoc, quod ego loquor in auribus tuis, & in aurib⁹ universi populi: 8 Prophetæ, qui fuerunt ante me & ante te ab initio, & prophetaverunt super terras multas, & super regna magna, de prælio, & de afflictione, & de fame. 9 Propheta, qui vaticinatus est pacem: cùm venerit verbum ejus, scietur propheta, quem 10 misit Dominus in veritate. Et tulit Hananias propheta catenam de collo Jeremiæ prophe- 11 tæ, & confregit eam. Et ait Hananias in conspectu omnis populi, dicens; Hæc dicit Dominus; Sic confringam jugum Nabuchodonosor regis Babylonis post duos annos dierum de 12 collo omnium gentium. Et abiit Jeremias propheta in viam suã. Et factum est verbum Domini ad Jeremiam, postquàm confregit Hananias propheta catenam de collo Jeremiæ prophetæ, di- 13 cens; Vade, & dices Hananiæ; Hæc dicit Dominus; Catenas ligneas contrivisti: & facies 14 pro eis catenas ferreas. Quia hæc dicit Dominus exercituum Deus Israel; Jugum ferreum posui super collum cunctarum gentium istarum, ut serviant Nabuchodonosor regi Babylonis, & servient ei: insuper & 15 bestias terræ dedi ei. Et dixit Jeremias propheta ad Hananiam prophetam; Audi Hanania: non misit te Dominus, & tu confidere fecisti populum istum in 16 mendacio. Idcircò hæc dicit Dominus; Ecce ego mittam te à facie terræ: hoc anno morieris: adversùm enim Domi- 17 num locutus es. Et mortuus est Hananias propheta in anno illo, mense septimo.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

12 Ἐπὶ τειχέων Βαβυλῶνος ἄρατε σημεῖον, ἐπιστήσατε φαρέτρας, (λ) ἐγείρατε φυλακὰς, ἑτοιμάσατε ὅπλα, ὅτι (μ) ἐνεχείρισε, καὶ ποιήσει κύριος ἃ ἐλάλησεν ἐπὶ τοὺς κατοι- 13 κοῦντας Βαβυλῶνα, Κατασκηνοῦντας ἐφ' ὕδασι πολλοῖς, καὶ ἐπὶ (״) πλήθη θησαυρῶν αὐτῆς. ἥκει τὸ πέρας σου ἀληθῶς (ν) εἰς τὰ 14 σπλάγχνα σου. Ὅτι ὤμοσε κύριος κατὰ τοῦ βραχίονος αὐτοῦ, Διότι πληρώσω σε ἀνθρώπων ὡσεὶ ἀκρίδων, καὶ φθέγξονται ἐπὶ 15 σὲ οἱ (ξ) καταβαίνοντες. Κύριος ποιῶν γῆν ἐν τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ, ἑτοιμάζων οἰκουμένην ἐν τῇ σοφίᾳ αὐτοῦ, ἐν τῇ συνέσει αὐτοῦ ἐξέτεινε τὸν οὐρανὸν, 16 Εἰς φωνὴν ἔθετο ἦχος ὕδατος ἐν (ο) οὐρανῷ, καὶ ἀνήγαγε νεφέλας ἀπ' ἐσχάτου τῆς γῆς, ἀστραπὰς εἰς ὑετὸν ἐποίησε, καὶ ἐξή- 17 γαγε φῶς ἐκ τῶν θησαυρῶν αὐτοῦ. (π) Ἐματαιώθη πᾶς ἄνθρωπος ἀπὸ γνώσεως, κατῃσχύνθη πᾶς χρυσοχόος ἀπὸ τῶν γλυπτῶν αὐτοῦ, ὅτι ψευδῆ (ρ) ἐχώνευσαν, οὐκ ἔστι 18 πνεῦμα ἐν αὐτοῖς. Μάταιά ἐστιν ἔργα μεμωκημένα, ἐν καιρῷ ἐπισκέψεως αὐτῶν 19 ἀπολοῦνται. Οὐ τοιαύτη μερὶς τῷ Ἰακὼβ, ὅτι ὁ πλάσας τὰ πάντα, αὐτός ἐστιν κληρονομία αὐτοῦ, Κύριος ὄνομα αὐτῷ. 20 Διασκορπίζεις σύ μοι σκεύη πολέμου, (σ) καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ ἔθνη, καὶ ἐξαρῶ ἐκ σοῦ 21 βασιλεῖς. Καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ ἵππον καὶ (τ) ἐπιβάτην αὐτοῦ, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ 22 ἅρματα καὶ ἀναβάτας αὐτῶν. Καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ (υ) νεανίσκον καὶ παρθένον, καὶ δια- 23 σκορπιῶ ἐν σοὶ ἄνδρα καὶ γυναῖκα. Καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ ποιμένα καὶ τὸ ποίμνιον αὐτοῦ, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ γεωργὸν καὶ τὸ γεώργιον αὐτοῦ, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ (φ) ἡγε- 24 μόνας καὶ στρατηγούς σου. Καὶ ἀνταποδώσω τῇ (χ) Βαβυλῶνι καὶ πᾶσι τοῖς κατοικοῦσι Χαλδαίοις πάσας τὰς (ψ) κακίας αὐτῶν, ἃς ἐποίησαν ἐπὶ Σιὼν κατ' ὀφθαλμοὺς ὑμῶν, λέ- 25 γει κύριος. Ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς σὲ τὸ ὄρος τὸ διεφθαρμένον, τὸ διαφθεῖρον πᾶσαν τὴν γῆν, καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ σὲ, καὶ (ω) κατακυλιῶ σε ἐπὶ τῶν πετρῶν, καὶ δώ- 26 σω σε ὡς ὄρος ἐμπεπυρισμένον· Καὶ οὐ μὴ λάβωσιν ἀπὸ σοῦ λίθον εἰς γωνίαν, καὶ λίθον εἰς θεμέλιον, ὅτι εἰς ἀφανισμὸν 27 ἔσῃ εἰς τὸν αἰῶνα, λέγει κύριος. Ἄρατε σημεῖον ἐπὶ τῆς γῆς, σαλπίσατε ἐν ἔθνεσι σάλπιγγι, ἁγιάσατε ἐπ' αὐτὴν ἔθνη, παραγγείλατε ἐπ' αὐτὴν (α), βασιλεῖς ἄρατε παρ' ἐμοῦ, καὶ τοῖς (β) Ἀχαναζέοις· ἐπιστήσατε ἐπ' αὐτὴν βελοστάσεις, ἀναβιβάσατε ἐπ' αὐτὴν ἵππον ὡς ἀκρίδων πλῆθος.

MS. A. (λ) ἐγείρετε (μ) ἐνεχείρησεν (״) πλήθη (ν) ἐπὶ (ξ) κατεβαίνοντες. Ποιῶν γῆν (ο) τῷ οὐρανῷ, (π) Ἐμωράνθη (ρ) ἐχώνευσεν, (σ) καὶ (τ) ἀναβάτην (υ) ἄνδρα καὶ γυναῖκα, καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ νεανίσκον καὶ παρθένον. Καὶ διασκορπιῶ ἐν σοὶ ποιμένα (φ) ἡγεμόνα (χ) Βαβυλωνίᾳ (ψ) ἀδικίας (ω) κατακυλίσω σε ἀπὸ τῶν (α) βασιλείαις Ἀραρ παρ' (β) Ἀχαναζαίοις·

Super muros Babylonis leva… signum, (e) statuite phar… suscitate custodias, præpa… quoniam aggressus est, & … ciet Dominus, quæ locutus … super habitatores Babylonis. (…) Habitantes in aquis multis, & in multitudine thesaurorum … Venit finis tuus verè in vi… tua: Quia juravit Dominus … brachium suum; Quia im… hominibus, sicut locustis: & … quentur super te descenden… Dominus faciens terram in … titudine sua, parans orbem … sapientia sua; in intellectu … extendit cœlum, Ad voce… posuit sonum aquæ in cœlo, & eduxit nubes ab extremo terræ, fulgura in pluviam fecit, & … duxit lumen de thesauris … Stultus factus est omnis homo … scientia: Confusus est omnis au… rifex à sculptilibus suis, qu… falsa conflaverunt: non est sp… ritus in eis. Vana sunt oper… ridicula: in tempore visitatio… nis ipsorum peribunt. Non tal… pars ipsi Jacob: quoniam … plasmavit omnia, ipse est … hæreditas ejus: Dominus nomen illi. (f) Dispergis tu mihi vasa belli: & dispergam in te gentes & (g) tollam de te reges. & dispergam in te equum, & ascensorem ejus: & dispergam in te currus, & ascensores eorum. Et dispergam in te (h) adolescentem, & virginem: & dispergam in te virum, & mulierem: Et dispergam in te pastorem, & gregem ejus: & dispergam in te agricolam, & agriculturam ejus: & dispergam in te præfectos, & duces militiæ tuæ. Et retribuam Babyloni, & omnibus habitatoribus Chaldæis omnes malitias eorum, quas fecerunt super Sion ante oculos vestros, dicit Dominus. Ecce ego ad te montem corruptum, qui corrumpis universam terram: & extendam manum meam super te: et devolvam te super petras, et dabo te sicut montem combustum: Et non accipient de te lapidem in angulum, et lapidem in fundamentum: quia in desolationem eris in seculum, dicit Dominus. Levate signum super terram: clangite in gentibus tuba: sanctificate super eam gentes: annuntiate super eam, (i) regna … lite à me, et Achanazeis: … tuite super eam machinas: … te ascendere super eam equum quasi locustarum multitudinem.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 וַאֲמַר יִרְמְיָה נְבִיָא לַחֲנַנְיָה נְבִיא שִׁקְרָא לְעֵינֵי כַּהֲנַיָא וּלְעֵינֵי כָּל עַמָא דְקָיְמִין בְּבֵית
6 מַקְדְשָׁא דַיְיָ׃ וַאֲמַר יִרְמְיָה נְבִיָא אָמֵן כֵּן יְהֵא רַעֲוָא מִן קֳדָם יְיָ יְקַיֵם יְיָ יָת
פִּתְגָמָךְ דְאִתְנַבֵּיתָא לַאֲתָבָא מָנֵי בֵית מַקְדְשָׁא דַיְיָ וְכָל גָלוּתָא מִבָּבֶל לְאַתְרָא
7 הָדֵין׃ בְּרַם שְׁמַע כְּעַן פִּתְגָמָא הָדֵין דִי אֲנָא מְמַלֵל קֳדָמָךְ וּקְדָם כָּל עַמָא׃
8 נְבִיַיָא דַהֲווֹ קֳדָמַי וּקְדָמָךְ מִן עָלְמָא וְאִתְנַבִּיאוּ עַל מְדִינָן סַגִיאָן וְעַל מַלְכְוָן רַבְרְבָן
9 לִקְרָבָא וּלְבִישְׁתָא וּלְמוֹתָא׃ נְבִיָא דְיִתְנַבֵּי לִשְׁלָמָא בְּמֵיתֵי פִּתְגָם נְבִיָא יִתְיְדַע נְבִיָא
10 דִשְׁלָחֵיהּ יְיָ בִּקְשׁוֹט׃ וּנְסֵיב חֲנַנְיָה נְבִיָא שִׁקְרָא יָת נִירָא מֵעַל צַוַר יִרְמְיָה נְבִיָא
11 וְתַבְרֵיהּ׃ וַאֲמַר חֲנַנְיָה לְעֵינֵי כָל עַמָא לְמֵימַר כִּדְנַן אֲמַר יְיָ כְּדֵין אֶתְבַר יָת נִיר נְבוּכַד
נֶצַר מַלְכָּא דְבָבֶל בְּסוֹף תַרְתֵּין שְׁנִין מֵעַל צַוַר כָּל עַמְמַיָא וַאֲזַל יִרְמְיָה נְבִיָא לְאוֹרְחֵיהּ׃
12 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה בָּתַר דִתְבַר חֲנַנְיָה נְבִיָא שִׁקְרָא יָת נִירָא מֵעַל
13 צַוַר יִרְמְיָה נְבִיָא לְמֵימַר׃ אֵיזֵיל וְתֵימַר לַחֲנַנְיָה לְמֵימַר כִּדְנַן אֲמַר יְיָ נִירִין דְאָעָא
14 תַבַרְתָּא וְתַעֲבֵיד חִלּוּפֵיהוֹן נִירִין דְבַרְזֶל׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל
נִיר דְבַרְזֶל יְהָבֵית עַל צַוַר כָּל עַמְמַיָא הָאִלֵין לְמִפְלַח יָת נְבוּכַד נֶצַר מַלְכָּא דְבָבֶל
15 וְיִפְלְחוּנֵיהּ וְאַף יָת חֵיוַת בָּרָא יְהָבֵית לֵיהּ׃ וַאֲמַר יִרְמְיָה נְבִיָא לַחֲנַנְיָה נְבִיָא שִׁקְרָא
16 שְׁמַע כְּעַן חֲנַנְיָה לָא שַׁלְחָךְ יְיָ וְאַתְּ אַרְחֵצְתָּא יָת עַמָא הָדֵין עַל שִׁקְרָא׃ בְּכֵן כִּדְנַן
אֲמַר יְיָ הָא אֲנָא מַגְלֵיךְ מֵעַל אַפֵּי אַרְעָא בְּשַׁתָּא הָדָא אַתְּ מָאֵת וּלְשַׁתָּא אוּחְרַנְתָּא אַתְּ
17 מִתְקְבַר אֲרֵי סְטְיָא מַלֶלְתָּא קֳדָם יְיָ׃ וּמִית חֲנַנְיָה נְבִיָא שִׁקְרָא בְּשַׁתָּא הַהִיא
וְאִתְקְבַר בְּיַרְחָא שְׁבִיעָאָה׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et dixit Jeremias propheta ad Ananiam *pseudoprophetam*, in oculis sacerdotum, & in oculis omnis populi qui stabat in domo sanctuarii Do… Et ait Jeremias propheta: Amen, sic placeat coram Dño: confirmet Dñs verba tua quæ prophetâsti, ut reducantur vasa dom⁹ sanctuarii Domini, & omnis transmigratio de Babylonia in locum istum. Veruntamen audi nunc verbum istud quod ego loquor coram te, & coram omni populo. Prophetæ qui fuerunt ante me, & ante te à seculo, & prophetaverunt super provincias multas, & super regna magna, de prælio, & de malo & de peste. Propheta qui prophetaverit de pace, cùm venerit verbum prophetæ, cognoscetur propheta quem miserit Domin⁹ in veritate. Et tulit Ananias pseudopropheta jugum de collo Jeremiæ prophetæ, & confregit illud. Et ait Ananias in oculis omnis populi, in hunc modum: Hæc dicit Dominus: Sic frangam jugum Nabuchodonosor regis Babylonis in fine duorum annorum de collo omnium populorum. Et abiit Jeremias propheta in viam suam. Et factum est verbum prophetiæ à facie Domini cum Jeremia postquam confregit Ananias *pseudopropheta* jugum de collo Jeremiæ prophetæ, dicens: Vade, & dic Ananiæ dicendo: Hæc dicit Dominus; Juga lignea confregisti, & facies pro eis juga ferrea. Quoniam hæc dicit Dominus exercituum Deus Israel: Jugum ferreum ponam super collum omnium populorum istorum, ut serviant Nabuchodonosor regi Babylonis, & servient ei: & etiam bestias agri dedi ei. Et ait Jeremias propheta ad Ananiam *pseudoprophetam*: Audi nunc Anania; Non misit te Dominus, & tu confidere fecisti populum hunc in mendacio. Propterea hæc dicit Dominus: Ecce ego transmigrare te faciam à superficie terræ: anno isto tu morieris, *& anno altero sepelieris*; quia perversum locutus es coram Domino. Et mortuus est Ananias pseudopropheta anno illo, & sepultus est in mense septimo.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܚܢܢܝܐ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ. ܩܕܡ ܟܗܢܐ. ܘܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܩܝܡܝܢ 5
ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܐܡܝܢ. ܗܟܢܐ ܢܥܒܕ ܡܪܝܐ. ܢܩܝܡ ܡܪܝܐ ܦܬܓܡܝܟ 6
ܕܐܬܢܒܝܬ. ܠܡܗܦܟܘ ܡܐܢܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܟܠܗ ܫܒܝܬܐ ܡܢ ܒܒܠ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ.
* ܒܪܡ. ܫܡܥ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ ܕܐܡܪ ܐܢܐ ܩܕܡܝܟ. ܘܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܐ ܗܢܐ. * ܢܒܝܐ 7 8
ܕܗܘܘ ܩܕܡܝ ܘܩܕܡܝܟ ܡܢ ܥܠܡ: ܘܐܬܢܒܝܘ ܥܠ ܐܪܥܬܐ ܣܓܝܐܬܐ ܘܥܠ ܡܠܟܘܬܐ
ܪܘܪܒܬܐ: ܩܪܒܐ ܘܡܚܘܫܬܐ ܘܡܘܬܢܐ. * ܢܒܝܐ ܕܡܬܢܒܐ ܫܠܡܐ. ܡܐ ܕܐܬܐ 9
ܦܬܓܡܗ ܕܢܒܝܐ. ܢܬܝܕܥ ܢܒܝܐ ܗܘ ܕܫܕܪܗ ܡܪܝܐ ܒܩܘܫܬܐ. * ܘܢܣܒ ܚܢܢܝܐ ܢܒܝܐ 10
ܕܓܠܐ ܣܝܩܐ ܡܢ ܨܘܪܗ ܕܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܘܬܒܪ ܐܢܘܢ. * ܘܐܡܪ ܚܢܢܝܐ ܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܐ. 11
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܗܟܢܐ ܐܬܒܪ ܢܝܪܗ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܡܢ
ܒܬܪ ܬܪܬܝܢ ܫܢܝܢ. ܡܢ ܨܘܪܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܐܙܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܐܘܪܚܗ. * ܘܗܘܐ 12
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܡܢ ܒܬܪ ܕܬܒܪ ܚܢܢܝܐ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܣܝܩܐ ܡܢ ܨܘܪܗ
ܕܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. * ܙܠ ܘܐܡܪ ܠܚܢܢܝܐ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܣܝܩܐ ܕܩܝܣܐ 13
ܬܒܪܬ. ܥܒܕ ܚܠܦܝܗܘܢ ܢܝܪܐ ܕܦܪܙܠܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ 14
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܢܝܪܐ ܕܦܪܙܠܐ ܝܗܒܬ ܥܠ ܨܘܪܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܗܠܝܢ. ܠܡܦܠܚ
ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܦܠܚܘܢܝܗܝ. ܘܐܦ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܝܗܒܬ ܠܗ
ܠܡܦܠܚܘܢܝܗܝ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܚܢܢܝܐ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ. ܫܡܥ ܚܢܢܝܐ: ܠܐ ܫܕܪܟ 15
ܡܪܝܐ. ܘܐܢܬ ܐܬܟܠܬܗ ܠܥܡܐ ܗܢܐ ܥܠ ܫܘܩܪܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 16
ܗܐ ܐܢܐ ܫܕܪ ܠܟ ܡܢ ܐܦܝ ܐܪܥܐ. ܫܢܬܐ ܗܕܐ ܡܐܬ ܐܢܬ ܡܛܠ ܕܡܠܠܬ ܣܛܝܐ ܥܠ ܡܪܝܐ. * ܘܡܝܬ 17
ܚܢܢܝܐ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܒܫܢܬܐ ܗܝ ܒܝܪܚܐ ܕܫܒܥܐ.

5 Tum dixit Jeremia propheta Hananiæ falſo prophetæ coram ſacerdotibus & coram univerſo populo qui aſtabant in domo Domini; 6 Dixit, inquam, Jeremia; Amen, faxit ita Dominus: afferat Dominus ſermones quos prophetâſti, reducendo vaſa domûs Domini & omnes captivos, è Babylonia in locum iſtum. 7 Verùm audi ſermonem iſtum quem dico te præſente, & præſente toto hoc populo. 8 Prophetæ qui fuerunt ante me & ante te inde à ſeculo, prædixerunt terris multis & regnis magnis bellum, calamitatem, & peſtem; 9 *Jam verò* prophetam qui pacem prædicit, cùm evenerit ſermo hujus prophetæ, notum fiet hujuſmodi prophetam verè miſſum eſſe à Domino. 10 Tum Hanania falſus propheta raptis è collo Jeremiæ prophetæ loris, fregit ea: 11 Dixitque Hanania coram toto populo, Sic ait Dominus, Ita frangã jugum Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ intra biennium, è collo omnium gentium. Abiit ergò Jeremia viam ſuam. 12 Sed fuit ſermo Domini ad Jeremiam prophetam, poſtquam fregiſſet Hanania propheta falſus lora illa è collo Jeremiæ prophetæ: 13 Vade dictum Hananiæ prophetæ falſo; Sic ait Dominus, Pro loris ligneis quæ fregiſti, fac jugum ferreum. 14 Nam ſic ait Dominus exercituum Deus Iſraelis, Jugum ferreum imponam collo omnium iſtorum populorum, ut ſerviant Nebuchadnoſari regi Babyloniæ; & quidem ſervient ei: quin etiam beſtiam deſerti tradam illi ut ſerviat ei. 15 Dixit ergò Jeremia propheta ad Hananiam falſam prophetam, Audi Hanania: Non miſit te Dominus, nihilominus tu populum illum inani ſpe lactâſti. 16 Iccirco ſic ait Dominus, Ecce diſſoluturus ſum te de ſuperficie terræ: hoc anno moriturus es, quòd iniquitatem ſis locutus coram Domino. 17 Et mortuus eſt Hanania falſus propheta eodem anno, menſe ſeptimo.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ارفعوا علامة على اسوار بابل * اوثقوا الجعاب * انهضوا الحراس * هيوا الاسلحة * لان الرب 12
احضار * ويصنع كلما تكلم به على سكان بابل * الساكنة على المياه الكثيرين وعلى 13
كثرة كنوزها * بلغ انتهاوك بالحقيقة على احشائك * لان الرب اقسم بذراعه من اجل 14
اني املاك اناسا مثل الجراد ويسمعون عليك الهابطون * الصانع الارض بقوته * مهيي 15
المسكونة بحكمته * وبفهمه مد السماء * وصنع عجيج الماء بصوت في السماء * واصعد 16
السحب من آخر الارض * صنع البرق للمطر * واخرج النور من كنوزه * جهل كل انسان 17
من المعرفة * خزي كل صانع ذهب من منحوتاته * لانه سبك كذبا * ليست فيهم
روح موجودة * معمولة هي للباطل موضوعة * في زمن افتقادهم يهلكون * ليس نصيب 18 19
يعقوب مثل هذه * لان الجابل الكل هذا هو ميراثه * الرب اسمه * انت تفرق لي اواني 20
الحرب * وانا افرق فيك امما * وانزع منك ملوكا * وافرق فيك فرسا وراكبه وافرق 21
فيك مركبات وركابهن * وافرق فيك رجلا وامراة * وافرق فيك شابا وعذري * وافرق 22 23
فيك راعيا وقطيعه * وافرق فيك فلاحا وفلاحته * وافرق فيك قايدا وجندك * واكافي 24
لبابل ولكل السكان الكلدانيين بجميع ظلاماتهم التي صنعوها على صهيون لعيونكم
يقول الرب *

* الاصحاح الثامن عشر *

* ها انا اليك ايها الجبل المفسود الذي افسد كل الارض * وامد يدي عليك واطرحك 25
من الصخور * وادفعك مثل جبل محترق * فلا ياخذون منك حجرا للزاوية ولا حجرا للاساس 26
لانك تكون للفناء الى الابد يقول الرب * ارفعوا علامة على الارض * بوقوا في الامم ببوق 27
قدسوا الامم عليها * خبروا عليها مملكات فردا من قبلي * والاكرنيين * اقيموا عليها
مرامي * اصعدوا عليها خيلا مثل كثرة الجراد *

12 *Attollite ſignum ſuper mœnia Babelis, erigite pharetras, excitate cuſtodes, arma parate; quia Domini arbitrium eſt, factumque eſt quicquid locutus eſt contra cives Babelis.* 13 *Quæ habitas ſuper aquas multas & ſuper copiam theſaurorum tuorum, advenit finis tuus verè ſuper viſcera tua.* 14 *Nam Dominus juravit per brachium ſuum, quòd implebo te hominibus ut locuſtis, & cantabunt de te hi qui deſcendent.* 15 *Ejus qui terram fecit potentiâ ſuâ, præparavit orbem ſapientiâ ſuâ, & prudentiâ ſuâ cœlum extendit,* 16 *Fremitum aquæ cum fragore ponit in cœlo, extrahit nubes ab extremo terræ, fulgur ad pluviam componit, protulitque lucem è theſauris ſuis;* 17 *Cognitione caret omnis homo. Pudeat omnem aurifabrum ſculptilium ſuorum, quia mendacium fundit; nullus in iis ſpiritus reperitur,* 18 *Ad falſitatem ſunt fabrefacta & collocata: tempore viſitationis eorum peribunt.* 19 *Haudquaquam ſors Jacobi hiſce ſimilis eſt: nam omnium plaſmator, is eſt hæreditas ipſius, Dominus nomen ejus.* 20 *Tu diſtribuis mihi vaſa bellica, & ego diſtribuam in te gentes, & auferam à te reges:* 21 *Diſtribuam in te equum cum equite, & diſtribuam in te currus cum ſeſſoribus eorum:* 22 *Diſpergam in te virum ac mulierem, & diſpergam in te juvenem ac virginem:* 23 *Diſpergam in te paſtorem & gregem ejus, & diſpergam in te aratorem & arvum ejus, diſperdámque in te ducem & exercitum ejus:* 24 *Denique rependam Babeli omnibuſque civibus Chaldæis cunctas ipſorum iniquitates quas exercuerunt in Sionem, ob oculos veſtros, dicit Dominus.*

Textus decimus octavus.

25 *En me tibi mons corruptor, qui totam terram corrupiſti: ut extendens contra te manum meam, devolvam te de petris, reddamque te ut montem exuſtum,* 26 *Ita ut non accipiant ex te lapidem ad angulum, aut lapidem ad fundamenta: nam eris in perpetuum exterminium, dicit Dominus.* 27 *Erigite ſignum ſuper terram, clangite inter gentes buccinâ, ſanctificate ſuper eam gentes: narrate de ea in regnis Carda meo nomine, & inter Chanzinæos: erigite adverſus eam aggeres ad comprehendum jacula, adducite contra illam equos multitudine pro locuſtis.*

יִרְמְיָה : כט

CAP. XXIX. כט

,Jeruſalaim de propheta Irmejah miſit *quæ* ,*libri* verba hæc Et
1 וְאֵלֶּה דִּבְרֵי הַסֵּפֶר אֲשֶׁר שָׁלַח יִרְמְיָה הַנָּבִיא מִירוּשָׁלָםִ
ad & , ſacerdotes ad & ,tranſmigrationis ſeniorum reſiduum ad
אֶל־יֶתֶר זִקְנֵי הַגּוֹלָה וְאֶל־הַכֹּהֲנִים וְאֶל־
fecerat tranſmigrare quem , populum omnem ad & , prophetas
הַנְּבִיאִים וְאֶל־כָּל־הָעָם אֲשֶׁר הֶגְלָה
,*regem* Jechonjah *egredi* *Poſt* .Babel in Jeruſalaim de Nebuchadneſar
2 נְבוּכַדְנֶאצַּר מִירוּשָׁלַםִ בָּבֶלָה׃ אַחֲרֵי צֵאת יְכָנְיָה־הַמֶּלֶךְ
,*fabrum* & , Jeruſalaim & ,Jehudah principes , *eunuchos* & , *heram* &
וְהַגְּבִירָה וְהַסָּרִיסִים שָׂרֵי יְהוּדָה וִירוּשָׁלַםִ וְהֶחָרָשׁ
Ghemarjah & ,Saphan filii Elhaſah manũ Per .Jeruſalaim de *incluſorem* &
3 וְהַמַּסְגֵּר מִירוּשָׁלָםִ׃ בְּיַד אֶלְעָשָׂה בֶן־שָׁפָן וּגְמַרְיָה
ad Jehudah rex Sidchijah miſit quos) Chilchijah filii
בֶּן־חִלְקִיָּה אֲשֶׁר שָׁלַח צִדְקִיָּה מֶלֶךְ־יְהוּדָה אֶל־
dixit Sic .dicendo (Babel in , Babel regem Nebuchadneſar
4 נְבוּכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ בָּבֶל בָּבֶלָה לֵאמֹר׃ כֹּה אָמַר
quam ,tranſmigrationi omni , Iſrael Deus exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל לְכָל־הַגּוֹלָה אֲשֶׁר־
: habitate & ,domos Ædificate .Babel in Jeruſalaim de feci tranſmigrare
5 הִגְלֵיתִי מִירוּשָׁלַםִ בָּבֶלָה׃ בְּנוּ בָתִּים וְשֵׁבוּ
, uxores Accipite .eorum fructus comedite & ,hortos plantate &
6 וְנִטְעוּ גַנּוֹת וְאִכְלוּ אֶת־פִּרְיָן׃ קְחוּ נָשִׁים
& , uxores veſtris filiis accipite & , filias & , filios generate &
וְהוֹלִידוּ בָּנִים וּבָנוֹת וּקְחוּ לִבְנֵיכֶם נָשִׁים וְאֶת־
vos multiplicate & :filias &,filios pariant & , viris date veſtras filias
בְּנוֹתֵיכֶם תְּנוּ לַאֲנָשִׁים וְתֵלַדְנָה בָּנִים וּבָנוֹת וּרְבוּ־
quam ,civitatis pacem quærite Et .vos diminuatis non & , ibi
7 שָׁם וְאַל־תִּמְעָטוּ׃ וְדִרְשׁוּ אֶת־שְׁלוֹם הָעִיר אֲשֶׁר
: Dominum ad ea pro orate & ; *illuc* vos feci tranſmigrare
הִגְלֵיתִי אֶתְכֶם שָׁמָּה וְהִתְפַּלְלוּ בַעֲדָהּ אֶל־יְהוָה
Dominus dixit ſic Nam .pax vobis erit illius pace in quia
8 כִּי בִשְׁלוֹמָהּ יִהְיֶה לָכֶם שָׁלוֹם׃ כִּי כֹה אָמַר יְהוָה
qui ,veſtri prophetæ vobis *imponant* Ne : Iſrael Deus exercituum
צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל אַל־יַשִּׁיאוּ לָכֶם נְבִיאֵיכֶם אֲשֶׁר־
, veſtra ſomnia *ad* audiatis ne & :veſtri divini & ,*veſtro interiori in*
בְּקִרְבְּכֶם וְקֹסְמֵיכֶם וְאַל־תִּשְׁמְעוּ אֶל־חֲלֹמֹתֵיכֶם
vobis *vaticinantes* ipſi *falſitate in* Quia .*ſomniantes* vos quæ
9 אֲשֶׁר אַתֶּם מַחְלְמִים׃ כִּי בְשֶׁקֶר הֵם נִבְּאִים לָכֶם
dixit ſic Nam .Dominus dixit , eos miſi non : meo nomine in
10 בִּשְׁמִי לֹא שְׁלַחְתִּים נְאֻם־יְהוָה׃ כִּי־כֹה אָמַר
viſitabo , anni ſeptuaginta Babel in *implere os ad Quia* : Dominus
יְהוָה כִּי לְפִי מְלֹאת לְבָבֶל שִׁבְעִים שָׁנָה אֶפְקֹד
reducendum ad , bonum meum verbum vos ſuper ſuſcitabo & , vos
אֶתְכֶם וַהֲקִמֹתִי עֲלֵיכֶם אֶת־דְּבָרִי הַטּוֹב לְהָשִׁיב
,cogitationes novi ego Nam .iſtum locum ad vos
11 אֶתְכֶם אֶל־הַמָּקוֹם הַזֶּה׃ כִּי אָנֹכִי יָדַעְתִּי אֶת־הַמַּחֲשָׁבֹת
cogitationes : Dominus dixit , vos ſuper *cogitans* ego quas
אֲשֶׁר אָנֹכִי חֹשֵׁב עֲלֵיכֶם נְאֻם־יְהוָה מַחְשְׁבוֹת
.ſpem & ,noviſſimum vobis *dandum ad* : *malum in* non & , pacis
שָׁלוֹם וְלֹא לְרָעָה לָתֵת לָכֶם אַחֲרִית וְתִקְוָה׃
exaudiam & : me *ad* orabitis & , ibitis & , me invocabitis Et
12 וּקְרָאתֶם אֹתִי וַהֲלַכְתֶּם וְהִתְפַּלַּלְתֶּם אֵלָי וְשָׁמַעְתִּי
toto in me quæſieritis cùm ,invenietis & ,me quæretis Et .vos *ad*
13 אֲלֵיכֶם׃ וּבִקַּשְׁתֶּם אֹתִי וּמְצָאתֶם כִּי תִדְרְשֻׁנִי בְּכָל־
reducam & , Dominus dixit , vobis inveniar Et .veſtro corde
14 לְבַבְכֶם׃ וְנִמְצֵאתִי לָכֶם נְאֻם־יְהוָה וְשַׁבְתִּי אֶת־
cunctis de & ,gentibus univerſis de vos congregabo & ,veſtrã captivitatẽ
שְׁבִיתְכֶם וְקִבַּצְתִּי אֶתְכֶם מִכָּל־הַגּוֹיִם וּמִכָּל־
faciã reverti & : Dñs dixit ,*illuc* vos feci expelli *quò* , locis
הַמְּקוֹמוֹת אֲשֶׁר הִדַּחְתִּי אֶתְכֶם שָׁם נְאֻם־יְהוָה וַהֲשִׁבֹתִי
.*inde* vos feci tranſmigrare *quò* , locum ad vos
אֶתְכֶם אֶל־הַמָּקוֹם אֲשֶׁר־הִגְלֵיתִי אֶתְכֶם מִשָּׁם׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXIX.

1 ET hæc ſunt verba libri, quem
miſit Jeremias propheta de Je-
ruſalem ad reliquias ſeniorum
tranſmigrationis, & ad ſacerdo-
tes, & ad prophetas, & ad omnẽ
populum, quem traduxerat Na-
buchodonoſor de Jeruſalem in
2 Babylonem: Poſtquàm egreſſus
eſt Jechonias rex, & domina, &
eunuchi, & principes Juda &
Jeruſalem, & faber & incluſor
3 de Jeruſalem: In manu Elaſa
filii Saphan, & Gamariæ filii
Helciæ, quos miſit Sedecias rex
Juda ad Nabuchodonoſor regem
Babylonis in Babylonem, di-
4 cens; Hæc dicit Dominus exer-
cituum Deus Iſrael omni tranſ-
migrationi, quam tranſtuli de
5 Jeruſalem in Babylonem; Ædi-
ficate domos, & habitate: &
plantate hortos, & comedite
6 fructum eorum. Accipite uxores,
& generate filios & filias: &
date filiis veſtris uxores, & filias
veſtras date viris, & pariant fi-
lios & filias: & multiplicamini
ibi, & nolite eſſe pauci numero.
7 Et quærite pacem civitatis, ad
quam tranſmigrare vos feci: &
orate pro ea ad Dominum:
quia in pace illius erit pax vo-
8 bis. Hæc enim dicit Dominus
exercituum Deus Iſrael; Non
vos ſeducant prophetæ veſtri,
qui ſunt in medio veſtrûm, &
divini veſtri: & ne attendatis
ad ſomnia veſtra, quæ vos ſomni-
9 atis: Quia falſò ipſi prophetant
vobis in nomine meo: & non
10 miſi eos, dicit Dñs. Quia hæc
dicit Dñs; Cùm cœperint im-
pleri in Babylone ſeptuaginta
anni, viſitabo vos: & ſuſcitabo
ſuper vos verbum meum bonũ,
ut reducam vos ad locum iſtũ.
11 Ego enim ſcio cogitationes, quas
ego cogito ſuper vos, ait Do-
minus, cogitationes pacis, &
non afflictionis, ut dem vobis
12 finem et patientiam. Et invoca-
bitis me, et ibitis: et orabitis
13 me, et ego exaudiam vos. Quæ-
retis me, et invenietis: cùm quæ-
ſieritis me in toto corde veſtro.
14 Et inveniar à vobis, ait Domin⁹:
et reducam captivitatem veſtrã,
et congregabo vos de univerſis
gentibus, et de cunctis locis, ad
quæ expuli vos, dicit Dominus:
et reverti vos faciam de loco,
ad quem tranſmigrare vos feci.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

28 Ἀναβιβάσατε ἐπ᾽ αὐτὴν ἔθνη, τὸν βασι-
λέα τῶν Μήδων καὶ πάσης τῆς γῆς, τοὺς (γ)
ἡγουμένους αὐτοῦ, καὶ πάντας τοὺς στρατηγοὺς
29 (δ) αὐτοῦ. Ἐσείσθη ἡ γῆ, καὶ ἐπόνεσε, διό-
τι ἐξανέστη ἐπὶ Βαβυλῶνα λογισμὸς κυ-
ρίου, τοῦ θεῖναι τὴν γῆν Βαβυλῶνος εἰς ἀφα-
30 νισμὸν, καὶ μὴ κατοικεῖσθαι αὐτήν. Ἐξέλι-
πε μαχητὴς Βαβυλῶνος τοῦ πολεμεῖν,
(ε) καθήσονται ἐκεῖ ἐν περιοχῇ, ἐθραύσθη ἡ
δυναστεία αὐτῶν, ἐγενήθησαν ὡσεὶ γυναῖκες.
ἐνεπυρίσθη τὰ σκηνώματα αὐτῆς, συνε-
31 τρίβησαν οἱ μοχλοὶ αὐτῆς. Διώκων εἰς
(ζ) ἀπάντησιν διώκοντος διώξεται, καὶ ἀν-
αγγέλλων εἰς ἀπάντησιν ἀναγγέλλοντος,
τοῦ ἀναγγεῖλαι τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος,
32 ὅτι ἑάλωκεν ἡ πόλις αὐτοῦ. Ἀπ᾽ ἐσχάτου
τῶν διαβάσεων αὐτοῦ ἐλήφθησαν, καὶ τὰ (η)
συστήματα αὐτῶν ἐνέπρησαν ἐν πυρὶ, καὶ ἄν-
33 δρες αὐτοῦ οἱ πολεμισταὶ ἐξέρχονται. Διότι
τάδε λέγει κύριος, Οἶκοι βασιλέως Βα-
βυλῶνος, ὡς ἅλων ὥριμος (θ) ἀλοηθή-
σονται· ἔτι μικρὸν, καὶ ἥξει ὁ ἀμητὸς αὐ-
34 τῆς. Κατέφαγέ με, ἐμερίσατό με, κατέ-
λαβέ με σκότος λεπτὸν, Ναβουχοδονόσορ
βασιλεὺς Βαβυλῶνος κατέπιέ με, ὡς
δράκων ἔπλησε τὴν κοιλίαν αὐτοῦ ἀπὸ τῆς
35 τρυφῆς μου· ἐξῶσάν με Οἱ μόχθοι μου
καὶ αἱ ταλαιπωρίαι μου εἰς Βαβυλῶνα, ἐρεῖ
κατοικοῦσα Σιὼν, καὶ τὸ αἷμά μου ἐπὶ τοὺς
κατοικοῦντας Χαλδαίους, (ι) ἐρεῖ Ἱερουσαλήμ.
36 Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ
κρινῶ τὴν ἀντίδικόν σου, καὶ (κ) ἐκδικήσω τὴν
ἐκδίκησίν σου, καὶ ἐρημώσω τὴν θάλασσαν
αὐτῆς, καὶ ξηρανῶ (λ) τὴν πηγὴν αὐτῆς.
37 Καὶ ἔσται Βαβυλὼν εἰς ἀφανισμὸν, καὶ οὐ
38 κατοικηθήσεται. (μ) Ὅτι ἅμα ὡς λέοντες
39 ἐξηγέρθησαν, καὶ ὡς σκύμνοι λεόντων. Ἐν
τῇ θερμασίᾳ αὐτῶν δώσω πότημα αὐτοῖς,
καὶ μεθύσω αὐτοὺς, ὅπως καρωθῶσι, καὶ (ν)
ὑπνώσωσιν ὕπνον αἰώνιον, καὶ οὐ μὴ ἐξεγερ-
40 θῶσι, λέγει κύριος. (ʌ) Καὶ καταβίβασον
αὐτοὺς ὡς ἄρνας εἰς σφαγὴν, καὶ ὡς κριοὺς
41 μετ᾽ ἐρίφων. Πῶς ἑάλω καὶ ἐθηρεύθη τὸ
καύχημα πάσης τῆς γῆς; πῶς ἐγένετο
Βαβυλὼν εἰς ἀφανισμὸν ἐν τοῖς ἔθνεσιν;
42 Ἀνέβη ἐπὶ Βαβυλῶνα ἡ θάλασσα ἐν ἤ-
χῳ κυμάτων αὐτῆς, καὶ κατεκαλύφθη.
43 Ἐγενήθησαν αἱ πόλεις αὐτῆς (ξ) ὡς γῆ ἄν-
υδρος καὶ ἄβατος, οὐ κατοικήσει ἐν
αὐτῇ οὐδὲ εἷς, οὐδὲ μὴ καταλύσει ἐν αὐ-
44 τῇ υἱὸς ἀνθρώπου. Καὶ ἐκδικήσω ἐπὶ Βα-
βυλῶνα, καὶ ἐξοίσω ἃ κατέπιεν ἐκ τοῦ στό-
ματος αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ συναχθῶσι (ο) πρὸς
αὐτὴν ἔτι τὰ ἔθνη,

MS.A. (γ) ἡγεμόνας (δ) αὐτοῦ, καὶ πάσης τῆς γῆς ἐξουσίας αὐτοῦ. Ἐσει
(ε) καὶ καθήσονται (ζ) ἀπαντὴν (η) συστήματα αὐτοῦ ἐνεπρήσθησαν (θ) ἀ-
λοηθήσεται· (ι) * ἐπὶ Ἱερουσαλήμ. (κ) ἐρημώσω τὴν θάλασσαν (λ) τὴν γ
(μ) Ὡς λέοντες ἐξηγέρθησαν ἅμα, (ν) ὑπνώσουσιν (ʌ) Καταβίβασ
(ξ) γῆ ἄνυδρος (ο) ἔτι πρὸς αὐτὴν τὰ ἔθνη,

Facite aſcendere ſuper eam gen-
tes, regem Medorum, & uni-
verſæ terræ, præfectos ejus, &
omnes duces ejus. Commota eſt
terra, & laboravit: quia in ſ-
rexit ſuper Babylonem cogitatio
Domini, ad ponendam terram
Babylonis in deſolationem, & ut
ea non habitetur. Defecit pugna-
tor Babylonis à bellando: ſede-
bunt illic in præſidio: quaſſata
eſt potentia eorum: facti ſunt
quaſi mulieres. Combuſta ſunt
tabernacula ejus: contriti ſunt
vectes ejus. Perſequens in occur-
ſum perſequentis perſequetur, &
nuntians in occurſum nuntiantis,
ad nuntiandum regi Babylonis,
quia capta eſt civitas ejus. Ab
extremo tranſituum ejus capti
ſunt, & (k) collectiones eorum
incenſæ ſunt in igni, & viri ejus
bellatores egrediuntur. Quia
hæc dicit Dominus; Domus re-
gis Babylonis, quaſi area matura
triturabuntur: adhuc modicum,
& veniet meſſis ejus. Comedit
me, diviſit me, apprehenderunt
me tenebræ tenues: Nabuchodo-
noſor rex Babylonis abſorbuit me,
quaſi draco, implevit ventrem
ſuum de teneritudine mea: ex-
pulerunt me. Labores mei et
vexationes meæ in Babylonem,
dicet habitatrix Sion: & ſan-
guis meus ſuper habitatores Chal-
dæos, dicet Hieruſalem. Ideo
hæc dicit Dominus; Ecce ego
judicabo adverſariam tuam, &
ulciſcar ultionem tuam, & de-
ſolabo mare ejus, & areſaciam
fontem ejus: Et erit Babylon
in (l) ſolitudinem, & non ha-
bitabitur. Simul enim ut leones ex-
citati ſunt, et ſicut catuli leonum.
In calore eorum dabo potum eis,
& inebriabo eos, ut ſopiantur,
& dormiant ſomnum ſempiter-
num, et non conſurgant, dicit
Dominus. Et (m) deduc eos
quaſi agnos ad mactationem, &
quaſi arietes cum hædis. Quo-
modò capta (n) eſt, et per vena-
tionem occupata gloriatio uni-
verſæ terræ? Quomodò facta
eſt Babylon in deſolationem in
gentibus? Aſcendit ſuper Ba-
bylonē mare in ſonitu fluctuum
ejus, (o) et cooperta eſt. Factæ
ſunt civitates ejus, quaſi terra
ſine aqua, et invia: nemo ha-
bitabit in ea: neque divertet in
ea filius hominis. Et ulciſcar (p)
ſuper Babylonem, et extraham
quæ abſorbuit, ex ore ejus: et non
congregabuntur ad eam gentes
(q) ultrà:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כט

1 ואלין פתגמי ספרא דשלח ירמיה נביא מירושלם לות שאר סבי גלותא ולות כהניא
2 ולות ספריא ולות כל עמא דאגלי נבוכד נצר מירושלם לבבל׃ בתר דגלא יכניה
3 מלכא ומלכתא ורברביא רברבי יהודה וירושלם ואומניא ותרעיא מירושלם׃ ביד
אלעשה בר שפן וגמריה בר חלקיה דשלח צדקיה מלך שבטא דבית יהודה לות נבוכד
4 נצר מלכא דבבל לבבל למימר׃ כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל לכל גלותא
5 דאגליתי מירושלם לבבל׃ בנו בתין ותיבו וצובו גנין ואכולו ית אביהן׃ סבו נשין
6 ואולידו בנין ובנן וסבו לבניכון נשין וית בנתיכון הבו לגבריא וילידן בנין ובנן וסגו
7 תמן ולא תזערון׃ ותבעו ית שלם קרתא דאגליתי יתכון לתמן וצלו עלה קדם יי ארי
8 בשלמה יהי לכון שלם׃ ארי כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל לא יטעון לכון
נביאיכון דשקרא דביניכון וקסמיכון ולא תקבלון מן חלמי חלמיכון דאתון מחלמין׃
9 10 ארי בשקרא אנון מתנבן לכון בשמי לא שלחתנון אמר יי׃ ארי כדנן אמר יי ארי לפום
משלם לבבל שבעין שנין יעול דכרנכון קדמי ואקים עליכון ית פתגמי תקנא לאתבא
11 יתכון לאתרא הדין׃ ארי קדמי גלין ית מחשבתא די אנא מחשב עליכון אמר יי
12 מחשבת שלמא ולא לבישא למתן לכון סוף וסבור׃ ותצלון קדמי ואקביל צלותכון
13 ותבעון מן קדמי ואעביד בעותכון׃ ותתבעון דחלתי ותשכחון ארי תבעון מן קדמי
14 בכל לבכון׃ ואשתאל לכון במימרי אמר יי ואתיב ית גלותכון ואכנוש יתכון מכל עממיא
ומכל אתריא דאגליתי יתכון לתמן אמר יי ואתיב יתכון לאתרא דאגליתי יתכון מתמן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXIX.

ET hæc ſunt verba libri quem miſit Jeremias propheta de Jeruſalem ad reliquos ſeniores tranſmigrationis & ad ſacerdotes, & ad ſcribas, & ad omnem populum quem tranſmigrare fecit Nabuchodonoſor de Jeruſalem in Babyloniã. Poſtquam migravit Jechonias rex, & regina, & principes, principes Juda, & Jeruſalem, & artifices, & janitores de Jeruſalem: Per manum Elghaſa filii Saphan, & Gamariæ filii Helchiæ, quos miſit Sedechias rex trib⁹ dom⁹ Juda ad Nabuchodonoſor regem Babylonis in Babyloniam, dicens: Hæc dicit Dñs exercituum, Deus Iſrael, ad omnem tranſmigrationem quam tranſmigrare feci de Jeruſalem in Babylonem. Ædificate domos & habitate; & plantate hortos, & comedite fruct⁹ eorum. Accipite uxores, & generate filios & filias: & accipite filiis veſtris uxores, & filias veſtras tradite viris, & pariant filios & filias: & multiplicamini ibi, & non minuamini. Et quærite pacem civitatis ad quam tranſmigrare vos feci & orate pro ea corã Dño; quia in pace illi⁹ erit vobis pax. Quia hæc dicit Dñs exercituum De⁹ Iſrael: Ne ſeducant vos pſeudoprophetæ veſtri qui ſũt inter vos, et divini veſtri: nec attendatis ad ſomnia veſtra quæ vos ſomniatis. Quia falſò ipſi prophetant vobis in nomine meo: non miſi eos, dicit Dñs. Ita enim inquit Dñs: Cùm impleti fuerint in Babylone ſeptuaginta anni, ſubibit recordatio veſtri corã me; & ſuſcitabo ſup vos verbũ meum rectũ, ut reducam vos in locũ iſtum. Quia coram me manifeſtæ ſunt cogitationes quas ego cogito ſup vos, dicit Dñs, cogitationes pacis et non in malum, ut dem vobis finẽ et ſpem. Et orabitis coram me; et ſuſcipiam orationem veſtrã: et quæretis à facie mea, et faciã deprecationem veſtram. Et requiretis timorem mei, et invenietis cùm poſtulabitis à facie mea toto corde veſtro. Et quæſit⁹ ero à vobis in verbo meo, dicit Domin⁹: et reducam tranſmigrationem veſtram, et congregabo vos ex omnib⁹ populis et ex omnib⁹ locis ad quæ tranſmigrare vos feci, dicit Domin⁹. Et reducam vos in locum de quo tranſmigrare vos feci.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܛ *

* ܘܗܠܝܢ ܦܬܓܡܝܗ ܕܐܓܪܬܐ ܕܫܕܪ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܠܒܒܠ: ܠܘܬ ܫܪܟܐ
ܕܩܫܝܫܐ ܕܫܒܝܬܐ. ܘܠܘܬ ܟܗܢܐ ܘܠܘܬ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ. ܘܠܘܬ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܫܒܐ
ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܠܒܒܠ. * ܡܢ ܒܬܪ ܕܢܦܩ ܝܘܟܢܝܐ ܡܠܟܐ: 2
ܘܡܠܟܬܐ. ܘܡܗܝܡܢܐ ܘܪܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܘܡܢܐ ܘܦܪܫܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ.
* ܒܝܕ ܐܠܥܣܐ ܒܪ ܫܦܢ. ܘܓܡܪܝܐ ܒܪ ܚܠܩܝܐ. ܕܫܕܪ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܠܘܬ 3
ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܒܒܠ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ: 4
ܠܟܠܗ ܫܒܝܬܐ ܕܐܫܬܒܝܬ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܠܒܒܠ. * ܒܢܘ ܒܬܐ ܘܬܒܘ. ܘܢܨܒܘ 5
ܓܢܐ. ܘܐܟܘܠܘ ܦܐܪܝܗܝܢ. * ܣܒܘ ܢܫܐ ܘܐܘܠܕܘ ܒܢܝܐ ܘܒܢܬܐ. ܣܒܘ ܠܒܢܝܟܘܢ 6
ܢܫܐ. ܘܒܢܬܟܘܢ ܗܒܘ ܠܓܒܪܐ. ܘܢܝܠܕܢ ܒܢܝܐ ܘܒܢܬܐ. ܘܣܓܘ ܬܡܢ. ܘܠܐ
ܬܙܥܪܘܢ. * ܘܫܐܠܘ ܫܠܡܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܕܐܫܒܝܬܟܘܢ ܬܡܢ. ܘܨܠܘ ܥܠܝܗ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. 7
ܕܒܫܠܡܗ ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܫܠܡܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ 8
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܐ ܢܛܥܘܢܟܘܢ ܢܒܝܐ ܕܒܝܢܬܟܘܢ. ܘܩܨܘܡܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܠܚܠܡܝܟܘܢ
ܕܚܠܡܝܢ ܐܢܬܘܢ. * ܡܛܠ ܕܒܫܘܩܪܐ ܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ ܒܫܡܝ. ܘܐܢܐ ܠܐ ܫܕܪܬ ܐܢܘܢ 9
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܡܬܝ ܕܡܠܝܢ ܠܒܒܠ ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ 10
ܐܦܩܕܟܘܢ. ܘܐܩܝܡ ܠܟܘܢ ܦܬܓܡܐ ܛܒܐ. ܠܡܗܦܟܘܬܟܘܢ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ. * ܡܛܠ 11
ܕܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܡܚܫܒܬܐ ܕܡܬܚܫܒ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܚܫܒܬܐ ܕܫܠܡܐ ܘܠܐ
ܕܒܝܫܬܐ. ܠܡܬܠ ܠܟܘܢ ܚܪܬܐ ܘܣܒܪܐ. * ܘܬܩܪܘܢܢܝ. ܘܬܐܙܠܘܢ ܘܬܨܠܘܢ. * ܘܬܒܥܘܢܢܝ 12 13
ܘܬܫܟܚܘܢܢܝ. ܡܛܠ ܕܬܒܥܘܢܢܝ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܟܘܢ. * ܘܐܬܚܙܐ ܠܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܟܘܢ. ܘܐܟܢܫܟܘܢ 14
ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܬܪܘܬܐ ܕܒܕܪܬܟܘܢ ܠܬܡܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܗܦܟܟܘܢ
ܠܐܬܪܐ ܕܐܫܒܝܬܟܘܢ ܡܢ ܬܡܢ.

CAP. XXIX.

HOc autem eſt argumentum epiſtolæ quam 1
Jeroſolymis Babylonem miſit Jeremia propheta ad reliquos ſeniores captivos, ad ſacerdotes, ad falſos prophetas, & ad univerſum populum quem Nebuchadnoſar rex Babylonis deportaverat Jeroſolymis Babylonem,
Poſteaquam Jochania rex cum regina, eunu- 2
chis, principibus Judæ & Jeroſolymorum, artificib⁹, atque militib⁹, eſſet è Jeruſalem
egreſſus: Per Elaſam filium Saphanis, & 3
Gemariam filium Helciæ, quos Babylonem miſit Sedecia rex Judæ ad Nebuchadnoſarem regem Babylonium.
Ita dicit Domin⁹ 4
exercituum Deus Iſraelis ad omnes captivos qui Jeroſolymis Babylonem abducti ſunt;
Ædificate domos, & inhabitate: plantate 5
hortos, & comedite fruct⁹ eorum:
Uxores 6
ducite, & filios filiaſque generate: ducite uxores filiis veſtris, & filias veſtras date maritis, ut gignant filios & filias: & illìc augeſcite, ac ne minuamini:
Fauſta precami- 7
ni civitati quò vos captivos abegi, & pro ipſa Dominum orate; quoniam ab ej⁹ proſperitate pendet proſperitas veſtra.
Nam ſic 8
ait Domin⁹ potentiſſim⁹ De⁹ Iſraelis, Ne ſeducant vos prophetæ qui ſunt inter vos, & divini veſtri; neque attendatis ſomniis veſtris quæ vos ſomniatis:
Quia falſum ii 9
prophetant vobis nomine meo, neque illos ego miſi, dicit Domin⁹.
Sic enim ait Domi- 10
nus, Cùm expleti fuerint Babeli ſeptuaginta anni, ſalvabo vos, & ratos faciam de vobis ſermones jucundos, reducendo vos in
locum iſtum.
Ego enim ſcio cogitationem 11
quam de vobis cogito, dicit Domin⁹, cogitationem ſalubrem, non pernicioſam; dare *ſcilicet* vobis tandem ſpem,
Ut invocetis me, 12
méque precemini:
Et cùm quæſiveritis me 13
toto corde veſtro, invenietis me, dicit Do-
min⁹: Et reducam captivos veſtros, colli- 14
gamque vos ex omnib⁹ gentib⁹ et ex omnibus terris quò vos diſperſi, ait Dominus, et reducam vos ad locum unde vos captivos abegi.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* أصعدوا عليها أمما * ملك الماديين وقواد كل أرضه * وجميع قواد جيوش كل أرضه
وسلطانه * تزلزلت الأرض وتوجعت * من أجل أن فكر الرب نهضت على بابل * ليصنع أرض
بابل للفناء ولا تسكن * فني محارب بابل أن يحارب * ويجلسون هناك في المرم * كسر
قوتهم * صاروا مثل النساء * أحرقت مساكنها * سحقت متاريسها * الطارد يطرد للقاء
الطارد والمخبر لالتقاء المخبر * ليخبر ملك بابل أن مدينته هلكت * من آخر طرقاته
أخذوا * وأحرقت تاجاته بالنار * ورجاله المحاربون يخرجون * من أجل أنه هكذا يقول الرب
بيوت ملك بابل مثل البيدر البالغ الذي يداس بعد قليل ويأتي قطافه * أكلني
ورعني أدركني ظلام خفيف بختنصر ملك بابل * ابتلعني مثل تنين * ملأ بطنه من
نعيمي * أقصتني أتعابي وشقوتي إلى بابل تقول الساكنة صهيون * ودمي على السكان
الكلدانيين قالت أورشليم * لأجل هذا هكذا يقول الرب * ها أنا أدين غريمتك وأخرب
بحرها * وتصير بابل للفناء ولا تسكن * مثل أسودة نهضوا معا * ومثل أشبال اللبوة
* في حرارتهم أعطيهم مشربا وأسكرهم كي يسكرون وينامون نوما أبديا ولا يستيقظون
يقول الرب * أنزلهم مثل خراف للذبح * ومثل كباش مع جداء * كيف هلكت وأصيد
فخر كل الأرض * كيف صارت بابل للفناء في الأمم * صعد على بابل البحر بعجيج
أمواجه وغطيت * صارت مدنها أرضا عديمة الماء وغير مسلوكة * ولا يسكن فيها
واحد * ولا تمر بها ابن إنسان * وأقضي على بابل * وأخرج ما ابتلعته من فمها * ولا تجتمع
إليها الأمم بعد *

Adducite contra eam gentes, regem 28
Medorum, & duces totius terræ ipſius, omneſque duces turmarum totius regionis ac dominii ipſius.
Tremuit do- 29
luitque terra, quia cogitatio Domini concitata eſt contra Babelem, ut redigat terram Babelis in deſtructionem, nec habitetur.
Deſinet miles Babylonis pu- 30
gnare, & deſidebunt ibi in obſidione: fracta eſt magnanimitas eorum, facti ſunt ſicut fœminæ, exuſtæ ſunt habitationes ejus, vectes ejus contriti.
Cur- 31
ſor curret obviàm curſori, & nuntius obviàm nuntio, ut indicet regi Babelis urbem ejus periiſſe:
Ab extremis aditibus 32
ejus eos eſſe occupatos, tiaras ejus igne combuſtas, & viros ejus bellatores exire.
Sic enim dicit Dominus, Do- 33
mus regis Babelis ſunt velut area matura, quæ paulò poſt trituranda eſt, & cujus inſtat vindemia.
Exedit me, 34
laceravit me, comprehendit me ceu tenebræ veloces Bochtonaſſar rex Babelis, deglutivit me ut draco, ventrem ſuum implevit delitiis meis:
Depulerunt 35
me ærumnæ & miſeriæ meæ in Babelem, dicit habitatrix Sionis: & ſanguis meus ſuper habitatores Chaldeos, inquit Jeruſalem.
Iccirco ſic dicit Dominus, 36
Ecce ego judicabo adverſariam tuam, ejuſque mare vaſtabo:
Et abibit Babel 37
in excidium, nec habitabitur.
Ut leones 38
pariter ſurrexerunt, & ut leænæ.
In 39
æſtu eorum præbebo illis potum, & inebriabo eos; ut inebriati dormiant ſomnum æternum, neque expergiſcantur, ait Dominus.
Deducam eos ut agnos ad 40
jugulationem, & velut arietes cum hædis.
Quomodo periit & venatione captus 41
eſt faſtus univerſæ terræ? quomodo redacta eſt Babel in deſtructionem inter gentes?
Superavit Babelem mare 42
cum fremitu fluctuum ſuorum, & obruta eſt?
Factæ ſunt urbes ejus terra 43
carens aquis & invia, quam nemo inhabitet, nullusque mortalium incolat?
Et ſententiam feram contra Babelem, 44
extrahamque quod deglutivit, ex ejus ore; & non confluent ampliùs ad eam gentes:

ירמיה : כט

sic Nam .Babel in prophetas Dominus nobis Suscitavit : dixistis Quia
15 כִּי אֲמַרְתֶּם הֵקִים לָנוּ יְהוָה נְבִאִים בָּבֶלָה׃ כִּי־כֹה 16
omnem ad & .David solium *ad sedentem* ,regem ad Dominus dixit
אָמַר יְהוָה אֶל־הַמֶּלֶךְ הַיּוֹשֵׁב אֶל־כִּסֵּא דָוִד וְאֶל־כָּל־
vobiscum sunt egressi non qui ,vestros fratres ,hac urbe in *habitantem* populũ
הָעָם הַיּוֹשֵׁב בָּעִיר הַזֹּאת אֲחֵיכֶם אֲשֶׁר לֹא־יָצְאוּ אִתְּכֶם
mittens ego Ecce : exercituum Dominus inquit Sic .transmigrationem in
בַּגּוֹלָה׃ 17 כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת הִנְנִי מְשַׁלֵּחַ
ficus sicut eos dabo & : pestem & ,famem ,gladium eos in
בָּם אֶת־הַחֶרֶב אֶת־הָרָעָב וְאֶת־הַדָּבֶר וְנָתַתִּי אוֹתָם כַּתְּאֵנִים
,gladio in eos *post* persequar Et .malitia præ *comedentur* non quæ ,turpes
18 הַשֹּׁעָרִים אֲשֶׁר לֹא־תֵאָכַלְנָה מֵרֹעַ׃ וְרָדַפְתִּי אַחֲרֵיהֶם בַּחֶרֶב
,terræ regnis universis commotionẽ in eos dabo & : peste in & ,fame in
בָּרָעָב וּבַדָּבֶר וּנְתַתִּים לְזוֹעָה לְכֹל מַמְלְכוֹת הָאָרֶץ
,gentibus cunctis in opprobriũ in & ,sibilum in & ,stuporem in & ,*execrationẽ* in
לְאָלָה וּלְשַׁמָּה וְלִשְׁרֵקָה וּלְחֶרְפָּה בְּכָל־הַגּוֹיִם
,mea verba *ad* audierunt non quòd *eo* Pro *.illuc eos expuli quò*
19 אֲשֶׁר־הִדַּחְתִּים שָׁם׃ תַּחַת אֲשֶׁר לֹא־שָׁמְעוּ אֶל־דְּבָרַי
,prophetas meos servos eos ad misi quæ ,Dominus dixit
נְאֻם־יְהוָה אֲשֶׁר שָׁלַחְתִּי אֲלֵיהֶם אֶת־עֲבָדַי הַנְּבִאִים
vos Et .Dominus dixit ,audistis non & ; mittendo & ,surgendo manè
20 הַשְׁכֵּם וְשָׁלֹחַ וְלֹא שְׁמַעְתֶּם נְאֻם־יְהוָה׃ וְאַתֶּם
Jerusalaim de misi quam transmigratio omnis ,Domini verbum audite
שִׁמְעוּ דְבַר־יְהוָה כָּל־הַגּוֹלָה אֲשֶׁר־שִׁלַּחְתִּי מִירוּשָׁלִַם
Achab ad Israel Deus exercituum Dominus dixit Sic .Babel in
21 בָּבֶלָה׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל אֶל־אַחְאָב
vobis *prophetantes* ,Mahasejah filium Sidchijahu ad & ,Cholajah filium
בֶּן־קוֹלָיָה וְאֶל־צִדְקִיָּהוּ בֶן־מַעֲשֵׂיָה הַנִּבְּאִים לָכֶם
regis Nebuchadresar manu in eos *dans* ego Ecce : *falso* meo nomine in
בִּשְׁמִי שָׁקֶר הִנְנִי נֹתֵן אֹתָם בְּיַד נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־
omni maledictio eis ex assumetur Et .vestris oculis in eos percutiet & ,Babel
22 בָּבֶל וְהִכָּם לְעֵינֵיכֶם׃ וְלֻקַּח מֵהֶם קְלָלָה לְכֹל
Dominus te Ponat : dicendo ,Babel in quæ ,Jehudah *transmigrationi*
גָּלוּת יְהוּדָה אֲשֶׁר בְּבָבֶל לֵאמֹר יְשִׂמְךָ יְהוָה
eo Pro .igni in Babel rex *eos torruit* quos ,Achab sicut & ,Sidchijahu sicut
23 כְּצִדְקִיָּהוּ וּכְאֶחָב אֲשֶׁר־קָלָם מֶלֶךְ־בָּבֶל בָּאֵשׁ׃ יַעַן
uxoribus cum commiserunt adulterium & ,Israel in nefas fecerunt quòd
אֲשֶׁר עָשׂוּ נְבָלָה בְּיִשְׂרָאֵל וַיְנַאֲפוּ אֶת־נְשֵׁי
eis præcepi non quod ,*falso* meo nomine in verbũ sunt locuti & ,suorũ *sodalium*
רֵעֵיהֶם וַיְדַבְּרוּ דָבָר בִּשְׁמִי שֶׁקֶר אֲשֶׁר לוֹא צִוִּיתִם
Nechelamitem Semahjahu ad Et .Dominus dixit ,*testis & cognoscens* ego *&*
24 וְאָנֹכִי הַיּוֹדֵעַ וָעֵד נְאֻם־יְהוָה׃ וְאֶל־שְׁמַעְיָהוּ הַנֶּחֱלָמִי
,Israel Deus exercituum Dominus dixit Sic : dicendo ,dices
25 תֹּאמַר לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל
omnem ad literas tuo nomine in misisti tu quòd eo Pro : dicendo
לֵאמֹר יַעַן אֲשֶׁר אַתָּה שָׁלַחְתָּ בְשִׁמְכָה סְפָרִים אֶל־כָּל־
,sacerdotem Mahasejah filium Sephanjah ad & ,Jerusalaim in qui ,populum
הָעָם אֲשֶׁר בִּירוּשָׁלִַם וְאֶל־צְפַנְיָה בֶן־מַעֲשֵׂיָה הַכֹּהֵן
pro sacerdotem te dedit Dominus : dicendo ,sacerdotes universos ad &
26 וְאֶל כָּל־הַכֹּהֲנִים לֵאמֹר׃ יְהוָה נְתָנְךָ כֹהֵן תַּחַת
,furioso viro omni Domini domo *præfectos existendum ad* ,sacerdote Jehojadah
יְהוֹיָדָע הַכֹּהֵן לִהְיוֹת פְּקִדִים בֵּית יְהוָה לְכָל־אִישׁ מְשֻׁגָּע
,nunc Et .nervum in & ,*subversionem* in eum *dabis &* ,prophetans &
27 וּמִתְנַבֵּא וְנָתַתָּה אֹתוֹ אֶל־הַמַּהְפֶּכֶת וְאֶל־הַצִּינֹק׃ וְעַתָּה
Quia ?vobis prophetantem Antothitem Irmejahu *in* increpâsti non quid ut
28 לָמָּה לֹא גָעַרְתָּ בְּיִרְמְיָהוּ הָעַנְּתֹתִי הַמִּתְנַבֵּא לָכֶם׃ כִּי
ædificate ; *ipsum* Longum : dicendo ,Babel nos ad misit *propterea*
עַל־כֵּן שָׁלַח אֵלֵינוּ בָּבֶל לֵאמֹר אֲרֻכָּה הִיא בְּנוּ
.eorum fructus comedite & ,hortos plantate & : habitate & ,domos
בָתִּים וְשֵׁבוּ וְנִטְעוּ גַנּוֹת וְאִכְלוּ אֶת־פְּרִיהֶן׃

Verſio VULG. LAT.

15 Quia dixiſtis ; Suſcitavit nobis Dominus Prophetas in Babylone. 16 Quia hæc dicit Dominus ad regem, qui ſedet ſup ſoliũ David, et ad omnem populum habitatorem urbis hujus, ad fratres veſtros, qui non ſunt egreſſi vobiſcum in tranſmigrationẽ. 17 Hæc dicit Dominus exercituum; Ecce mittam in eos gladium, & famem, & peſtem : & ponam eos quaſi ficus malas, quæ comedi non poſſunt, eò quòd peſſimæ 18 ſint. Et perſequar eos in gladio, & in fame, & in peſtilentia: & dabo eos in vexationem univerſis regnis terræ; in maledictionem, & in ſtuporem, & in ſibilum, & in opprobrium cunctis gentibus, ad quas ego ejeci eos : 19 Eò quòd non audierint verba mea, dicit Dñs : quæ miſi ad eos per ſervos meos prophetas, de nocte conſurgens, & mittens : & 20 non audîſtis, dicit Dominus. Vos ergò audite verbum Domini, omnis tranſmigratio, quam emiſi de Jeruſalem in Babylonem. 21 Hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael ad Achab filium Goliæ, & ad Sedeciam filium Maaſiæ, qui prophetant vobis in nomine meo mendaciter; Ecce ego tradam eos in manus Nabuchodonoſor regis Babylonis: & percutiet eos in oculis ve-22 ſtris. Et aſſumetur ex eis maledictio omni tranſmigrationi Juda, quæ eſt in Babylone, dicentium ; Ponat te Dominus ſicut Sedeciam, & ſicut Achab, quos 23 frixit rex Babylonis in igne: Pro eo quòd fecerint ſtultitiam in Iſrael, & mœchati ſunt in uxores amicorum ſuorum, & locuti ſunt verbum in nomine meo mendaciter, ꝙ non mandavi eis: ego ſum judex et teſtis, dicit Dñs. 24 Et ad Semeian Nehelamiten di-25 ces; Hæc dicit Dñs exercituum, Deus Iſrael; Pro eo quòd miſiſti in nomine tuo libros ad omnem populum, qui eſt in Jeruſalem, & ad Sophoniam filium Maaſiæ ſacerdotem, & ad univerſos ſacer-26 dotes, dicens ; Dñs dedit te ſacerdotem pro Joiade ſacerdote, ut ſis dux in domo Domini ſuper omnem virũ arreptitium & prophetantem, ut mittas eum in 27 nervum & in carcerem. Et nunc quarè non increpâſti Jeremiam Anathothiten, qui prophetat vo-28 bis? Quia ſuper hoc miſit in Babylonem ad nos, dicens; Longũ eſt : ædificate domos, & habitate : et plantate hortos, et comedite fructus eorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

49 Καὶ ἐν Βαβυλῶνι πεσοῦνται τραυματίαι 50 πάσης τῆς γῆς. Ἀνασωζόμενοι ἐκ γῆς (π) πορεύεσθε, καὶ μὴ ἵστασθε· οἱ μακρόθεν μνήσθητε τοῦ κυρίου, καὶ Ἱερουσαλὴμ ἀναβήτω ἐπὶ τὴν καρδίαν (ρ) ὑμῶν. 51 Ἠσχύνθημεν ὅτι ἠκούσαμεν ὀνειδισμὸν ἡμῶν, κατεκάλυψεν ἀτιμία τὸ πρόσωπον ἡμῶν, εἰσῆλθον ἀλλογενεῖς εἰς τὰ 52 ἅγια ἡμῶν, εἰς οἶκον κυρίου. Διὰ τοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος, καὶ ἐκδικήσω ἐπὶ τὰ γλυπτὰ αὐτῆς, καὶ ἐν πάσῃ τῇ γῇ αὐτῆς πεσοῦνται τραυματίαι. 53 Ὅτι ἐὰν ἀναβῇ Βαβυλὼν ὡς ὁ οὐρανὸς, καὶ ὅτι ἐὰν (σ) ὀχυρώσῃ τὰ τείχη ἰσχύι αὐτῆς, παρ' ἐμοῦ ἥξουσιν (τ) ἐξολοθρεύοντες αὐτὴν, λέγει κύριος. 54 Φωνὴ κραυγῆς ἐν Βαβυλῶνι, καὶ 55 συντριβὴ μεγάλη (υ) ἐν γῇ Χαλδαίων, Ὅτι ἐξωλόθρευσε κύριος τὴν Βαβυλῶνα, καὶ ἀπώλεσεν ἀπ' αὐτῆς φωνὴν μεγάλην ἠχοῦσαν ὡς ὕδατα πολλά· 56 ἔδωκεν εἰς ὄλεθρον φωνὴν αὐτῆς. Ὅτι ἦλθεν ἐπὶ Βαβυλῶνα ταλαιπωρία, ἑάλωσαν οἱ μαχηταὶ αὐτῆς, ἐπτόηται τὸ τόξον αὐτῶν, ὅτι ὁ θεὸς ἀνταποδίδωσιν αὐτοῖς. κύριος (φ) ἀνταπο-57 δίδωσιν, Καὶ μεθύσει μέθῃ τοὺς ἡγεμόνας αὐτῆς, καὶ τοὺς σοφοὺς (χ) αὐτῆς, καὶ τοὺς στρατηγοὺς αὐτῆς, λέγει ὁ βασιλεὺς, Κύριος παντοκράτωρ ὄνομα 58 αὐτῷ. Τάδε λέγει κύριος, Τεῖχος Βαβυλῶνος ἐπλατύνθη, κατασκαπτόμενον κατασκαφήσεται, καὶ αἱ πύλαι αὐτῆς αἱ ὑψηλαὶ ἐμπυρισθήσονται, καὶ οὐ κοπιάσουσι λαοὶ εἰς κενὸν, καὶ ἔθνη 59 ἐν ἀρχῇ ἐκλείψουσιν. Ὁ ΛΟ'ΓΟΣ 'ΟΝ 'ΕΝΕΤΕ'ΙΛΑΤΟ ΚΥ'ΡΙΟΣ 'ΙΕΡΕΜΙ'Α ΤΩ͂ ΠΡΟΦΗ'ΤΗ εἰπεῖν τῷ Σαραίᾳ (ψ) υἱῷ Νηρείου, υἱοῦ Μαασαίου, ὅτε ἐπορεύετο παρὰ Σεδεκίου βασιλέως Ἰούδα εἰς Βαβυλῶνα, ἐν (ω) τῷ ἔτει τῷ τετάρτῳ τῆς βασιλείας αὐτοῦ· καὶ Σαραίας ἄρχων δώρων. 60 Καὶ ἔγραψεν (ª) Ἱερεμίας πάντα τὰ κακὰ ἃ ἥξει ἐπὶ Βαβυλῶνα ἐν (α) βιβλίῳ, πάντας τοὺς λόγους τούτους τοὺς γεγραμμένους ἐπὶ Βαβυλῶνα.

Et in Babylone cadent interfecti universæ terræ. Qui evaditis de (π) terra, ite & non subsistatis. Qui de longè, recordamini Domini: & Hierusalem ascendat super cor vestrum. Confusi sumus, quia audivimus opprobrium nostrum: cooperuit ignominia faciem nostram: intraverunt alienigenæ in sancta nostra, in domum Domini. Propter hoc ecce dies veniunt, dicit Dominus; & ulciscar super sculptilia ejus: & in omni terra ejus cadent interfecti. Quia si ascenderit Babylon tanquam cœlum, & quia munierit (s) muros fortitudine suâ; à me venient qui exterminent eam, dicit Dominus. Vox clamoris in Babylone, & contritio magna in terra Chaldæorum: Quia exterminavit Dominus Babylonem & disperdidit ex ea vocem magnam sonantem, quasi aquas multas: dedit in perditionem vocem ejus: Quoniam venit super Babylonem calamitas, capti sunt pugnatores ejus, timuit arcus eorum: quia Deus retribuit eis. Dominus retribuit, Et inebriabit ebrietate præfectos ejus, & sapientes ejus, & duces ejus, dicit rex, Dominus omnipotens nomen illi. Hæc dicit Dominus: Murus Babylonis dilatatus est, effodiendo effodietur: & portæ ejus excelsæ comburentur: & (t) non laborabunt populi in vacuum: & gentes in principio deficient. VERBUM, quod mandavit Dominus Hieremiæ prophetæ, ut diceret Saræ filio Neriæ filii Maasiæ; quando ivit à Sedecia rege Juda in Babylonem in anno quarto regni ejus: & Saraas princeps donorum. Et scripsit Hieremias omnia mala, quæ venient super Babylonem, in libro, omnia verba hæc scripta super Babylonem.

MS. A. (π) πορεύεσθε, μὴ ἵστασθε· (ρ) ἡμῶν. (σ) ὀχυρώσῃ ὕψος ἰσχύος αὐτῆς, (τ) ἐξολεθρεύοντες (υ) ἐκ γῆς Χαλδαίων, Ὅτι ἐξωλέθρευσεν (φ) ἀνταποδίδωσιν αὐτῇ τὴν ἀνταπόδοσιν, Καὶ (χ) λέγει ὁ βασιλεὺς, (ψ) * υἱοῦ Νηρείου, υἱοῦ Μαασαίου, (ω) τῷ τετάρτῳ ἔτει (ª) Ἱερεμίας (α) βιβλίῳ ἐπὶ πάντας τοὺς λόγους τοὺς ἐγγεγραμμένους

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 אֲרֵי אֲמַרְתּוּן אֲקִים לָנָא יְיָ מַלְפִין בְּבָבֶל׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ עַל מַלְכָּא דְיָתִיב עַל 16
כּוּרְסֵי דָוִד וְעַל כָּל עַמָּא דְיָתִיב בְּאַרְעָא הָדָא אֲחֵיכוֹן דְלָא נְפַקוּ עִמְּכוֹן בְּגָלוּתָא׃
17 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת הָאֲנָא מְגָרֵי בְהוֹן יָת דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא וּבְכַפְנָא וּמוֹתָא וְאֶתֵּן יָתְהוֹן
18 כִּתְאֵנַיָא בִישָׁתָא דְלָא מִתְאַכְלָן מִבִּישׁוּ׃ וְאֶרְדּוֹף בַּתְרֵיהוֹן בְּחַרְבָּא בְּכַפְנָא וּבְמוֹתָא
וְאֶתְּנִנּוּן לְזִיעַ לְכָל מַלְכְוָת אַרְעָא לְמוֹמֵי וּלְצָדוּ וּלְאִשְׁתְּמָמוּ וּלְחִסּוּדִין בְּכָל עַמְמַיָא
19 דְּאַגְלֵיתִנּוּן לְתַמָּן׃ חֲלַף דְּלָא קַבִּילוּ לְפִתְגָמַי אֲמַר יְיָ דִּשְׁלָחִית לְוָתְהוֹן יָת עַבְדַי
20 נְבִיַּיָא מַקְדִּים וּמְשַׁלַּח וְלָא קַבֵּלְתּוּן אֲמַר יְיָ׃ וְאַתּוּן קַבִּילוּ פִתְגָמָא דַיְיָ כָּל גָּלוּתָא
21 דְּאַגְלֵיתִי מִירוּשְׁלֵם לְבָבֶל׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל עַל אַחְאָב בַּר
קוֹלָיָה וְעַל צִדְקִיָה בַּר מַעֲשֵׂיָה דְאִתְנַבִּיאוּ לְכוֹן בִּשְׁמִי שִׁקְרָא הָאֲנָא מָסַר יָתְהוֹן בְּיַד
22 נְבוּכַדְרֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל וְיִקְטְלִנּוּן לְעֵינֵיכוֹן׃ וְיִתְנְסֵב מִנְּהוֹן לְוָטָא לְכָל גָּלוּת יְהוּדָה
23 דִּי בְּבָבֶל לְמֵימַר יְשַׁוְּנָךְ יְיָ כְּצִדְקִיָה וּכְאַחְאָב דִּקְלָנוּן מַלְכָּא דְבָבֶל בְּנוּרָא׃ חֲלַף
דַּעֲבַדוּ קְלָנָא בְּיִשְׂרָאֵל וְזַנִּיאוּ יָת נְשֵׁי חַבְרֵיהוֹן וּמַלִּילוּ פִתְגָמָא בִּשְׁמִי שִׁקְרָא דְלָא
24 פַקֵּדְתִּנּוּן וְקֳדָמַי גְּלֵי וּמֵימְרִי סָהִיד אֲמַר יְיָ׃ וְלִשְׁמַעְיָה דְמִן חֵלָם תֵּימַר לְמֵימָר׃
25 כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל לְמֵימָר חֲלַף דִּשְׁלַחְתְּ בִּשְׁמָךְ אִגְרָן לְוָת
כָּל עַמָּא דִּי בִירוּשְׁלֵם וּלְוָת צְפַנְיָה בַּר מַעֲשֵׂיָה כַּהֲנָא וּלְוָת כָּל כַּהֲנַיָא לְמֵימָר׃
26 יְיָ מַנְּיָךְ כַּהֵן חֲלַף יְהוֹיָדָע כַּהֲנָא לְמֶהֱוֵי מְמַנָּא סְגַן כַּהֲנַיָא בְּבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ לְכָל
27 גְּבַר דִּמְשַׁתֵּלִי וּמִטַּפַּשׁ וְתִתֵּן יָתֵיהּ לְכִיפְתָּא וּלְגוֹ צִינוֹקָא׃ וּכְעַן לְמָה לָא נְזֵפְתְּ בְּיִרְמְיָה
28 דְּמִן עַנְּתוֹת דְּמִתְנַבֵּי לְכוֹן׃ אֲרֵי עַל כֵּן שְׁלַח לְוָתַנָא לְבָבֶל לְמֵימַר אֲרִיכָא הִיא
בְּנוּ בָתִּין וְתִיבוּ וְצוּבוּ גִנִּין וְאֱכוּלוּ יָת אִבְּהֵין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia dixiſtis : Suſcitavit nobis Dñs doctores in Babylone. Quia hæc dicit Dñs ad regẽ qui ſedet ſuper ſoliũ David, & ad populũ qui habitat in terra hac, ad fratres veſtros qui non ſunt egreſſi vobiſcum in tranſmigrationem: Hæc dicit Dñs exercituum: Ecce ego immittam in eos occidentes gladio & famẽ, & peſtẽ; & dabo eos ſicut fic⁹ malas, quæ comedi non poſſunt præ malitia. Et perſequar eos occidentib⁹ gladio, fame & peſte. Et dabo eos in commotionẽ omnib⁹ regnis terræ, in maledictionẽ, & in deſolationẽ, & in ſtuporẽ, & in opprobriũ omnib⁹ populis ad quos tranſmigrare eos feci: Pro eo quòd non obedierunt verbis meis, dicit Dñs, ad quos miſi ſervos meos prophetas, manè conſurgens & mittens; & non obediſtis, dicit Dñs. Vos autem ſuſcipite verbum Dñi, omnis tranſmigratio quã tranſmigrare feci de Jeruſalem in Babylonem. Hæc dicit Dñs exercituũ De⁹ Iſrael ad Achab filium Choliæ, & ad Sedechiã filium Maaſiæ, qui prophetant vobis in nomine meo mendaciter : Ecce ego tradam eos in manum Nabuchodonoſor regis Babylonis, & occidet eos corã oculis veſtris. Et aſſumetur ex eis maledictio omni tranſmigrationi Juda quæ eſt in Babylone, dicendo : Ponat te Dñs ſicut Sedechiam & ſicut Achab quos torruit rex Babylonis igni. Pro eo quòd fecerunt ignominiã in Iſrael, & fornicati ſunt cum uxoribus ſociorum ſuorum, & locuti ſunt verbum in nomine meo mendaciter, quod non præcepi eis. Et coram me manifeſtum eſt, & Verbum meum eſt teſtis, dicit Domin⁹. Et Semeiæ Helamitæ loquêris, dicens : Hæc dicit Domin⁹ exercituum De⁹ Iſrael, in hunc modum: Pro eo quòd miſiſti in nomine tuo epiſtolas ad omnem populum qui eſt in Jeruſalem, & ad Sophoniã filium Maaſiæ ſacerdotem, & ad omnes ſacerdotes, dicens : Domin⁹ conſtituit te ſacerdotem pro Jehojada ſacerdote, ut ſis conſtitut⁹ princeps ſacerdotum in domo ſanctuarii Domini, omni viro ſtulto & inſipienti, ut mittas eum in nervũ & in carcerẽ. Et nunc, quare non increpâſti Jeremiam qui eſt de Anathoth, qui prophetat vobis? Quia propterea miſit ad nos in Babylonem, dicens; Longum eſt; ædificate domos, & habitate; & plantate hortos, & comedite fructum eorum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܡܛܠ ܕܐܡܪܬܘܢ ܕܐܩܝܡ ܠܢ ܡܪܝܐ ܢܒܝܐ ܒܒܒܠ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠ ܡܠܟܐ 15
ܕܝܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܕܕܘܝܕ. ܘܥܠ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܝܬܒ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܐܚܝܟܘܢ ܕܠܐ 16
ܢܦܩܘ ܥܡܟܘܢ ܒܫܒܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܒܗܘܢ. ܚܪܒܐ 17
ܘܟܦܢܐ ܘܡܘܬܢܐ. ܘܐܥܒܕ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܬܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܕܠܐ ܡܬܐܟܠܢ ܡܢ ܒܝܫܘܬܗܝܢ. * ܘܐܪܕܘܦ 18
ܒܬܪܗܘܢ ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ. ܘܐܬܠ ܐܢܘܢ ܠܙܘܥܬܐ. ܠܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ
ܕܐܪܥܐ. ܠܬܡܗܐ ܘܠܠܘܛܬܐ. ܘܠܚܣܕܐ ܘܠܫܪܘܩܝܬܐ ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܒܕܪܬ ܐܢܘܢ
ܠܬܡܢ. * ܚܠܦ ܕܠܐ ܫܡܥܘ ܠܡܠܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܫܕܪܬ ܠܘܬܗܘܢ ܠܥܒܕܝ ܢܒܝܐ. ܡܩܕܡ 19
ܫܕܪܬ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܢܬܘܢ ܫܡܥܘ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܟܠܟܘܢ. ܫܒܝܐ 20
ܕܐܫܬܒܝܬܘܢ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܠܒܒܠ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܠ ܐܚܒ ܒܪ 21
ܩܘܠܝܐ. ܘܥܠ ܨܕܩܝܐ ܒܪ ܡܥܣܝܐ. ܕܡܬܢܒܝܢ ܠܟܘܢ ܒܫܡܝ ܒܫܘܩܪܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ
ܠܗܘܢ ܒܐܝܕܝ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܩܛܠ ܐܢܘܢ ܒܚܪܒܐ ܠܥܝܢܝܟܘܢ. * ܘܢܣܒܘܢ 22
ܠܘܛܬܐ. ܒܟܠܗ ܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܒܒܒܠ. ܘܢܐܡܪܘܢ. ܢܥܒܕܟ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܨܕܩܝܐ ܘܐܝܟ
ܐܚܒ. ܕܩܠܐ ܐܢܘܢ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܒܢܘܪܐ. * ܚܠܦ ܕܥܒܕܘ ܥܘܠܐ ܒܐܝܣܪܝܠ. ܘܓܪܘ ܢܫܐ 23
ܕܚܒܪܝܗܘܢ. ܘܡܠܠܘ ܡܠܬܐ ܒܫܡܝ ܒܫܘܩܪܐ ܕܠܐ ܦܩܕܬ ܐܢܘܢ. ܘܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ. ܘܣܗܕ ܐܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܠܫܡܥܝܐ ܢܚܠܡܝܐ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. 24 25
ܫܕܪ ܒܫܡܗ ܐܓܪܬܐ ܠܟܠܗ ܥܡܐ ܕܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܠܨܦܢܝܐ ܒܪ ܡܥܣܝܐ ܟܗܢܐ ܘܠܟܗܢܐ.
* ܡܪܝܐ ܐܩܝܡܟ ܟܗܢܐ ܚܠܦ ܝܘܝܕܥ ܟܗܢܐ. ܕܬܗܘܐ ܦܩܘܕܐ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܠ ܟܠܗ 26
ܕܡܬܢܒܐ ܘܡܫܬܪܚ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܘܬܪܡܝܘܗܝ ܒܝܬ ܐܣܝܪܐ ܘܒܚܒܘܫܝܐ. * ܘܗܫܐ ܠܡܢܐ 27
ܠܐ ܟܐܐ ܐܢܬ ܒܐܪܡܝܐ ܕܡܢ ܥܢܬܘܬ. ܕܡܬܢܒܐ ܠܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܘܐ ܫܕܪ ܠܢ ܠܒܒܠ. 28
ܕܢܓܝܪܐ ܗܝ ܐܟܘܢ ܬܡܢ. ܒܢܘ ܒܬܐ ܘܬܒܘ. ܘܢܨܒܘ ܓܢܬܐ ܘܐܟܘܠܘ ܦܐܪܝܗܝܢ.

Quia dixiſtis, Excitavit nobis Dominus prophetas in Babele. 15 Sic enim dicit Dominus 16 de rege ſedente ſuper ſolium Davidis, & de toto populo habitante in hac civitate, fratribus veſtris qui non ſunt egreſſi vobiſcum tempore captivitatis : Sic *inquam*, dicit Dominus potentiſſimus, 17 Ecce mittam in eos gladium, famem, & peſtem ; & ſimiles reddam eos ficubus malis quæ comedi nequeunt præ ſua pravitate : Et inſectabor eos gladio, fame, ac peſte : 18 & formidini proponam eos univerſis regnis terræ, ſtupori, & maledictioni, ignominiæ, & ſibilo inter omnes gentes quò diſperſero eos : Eò quòd non acquieverint ſermonibus meis, 19 miſi enim ad eos omnes ſervos meos prophetas ; præmaturè miſi, at non acquieverunt eis, dicit Dominus. Vos autem audite ſermonẽ Domini, 20 O omnes captivi qui abducti eſtis Jeroſolymis Babylonem. Sic ait Dominus Deus Iſraelis de Ahabo filio 21 Coliæ, & de Sedecia filio Maaſiæ, qui vobis meo nomine falſò prophetant ; Ecce tradam eos in manum Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ, ut eos coram vobis gladio trucîdet, Sintque execrationi apud omnes captivos qui 22 ſunt in Babele ; ita ut dicatur, Faciat te Dominus ſimilem Sedeciæ & Ahabo, quos igne frixit rex Babelis : Eò quòd crimen commiſerint in Iſraele, 23 uxores ſociorum ſuorum ſtupraverint, meoque nomine falſò locuti ſint ſermones quos non præceperam eis : atque *horum* quidem conſcius ego ſum ac teſtis ait Dominus. Porrò Semeia Nehemalites 24 reſpondit ; Sic dicit Dñs potentiſſimus Deus 25 Iſraelis ; (miſit enim ſuo nomine epiſtolam ad univerſum populum qui erat Jeroſolymis, & ad Sephaniam filium Maaſiæ ſacerdotem, & *reliquos* ſacerdotes) Domin⁹ conſtituit 26 te ſacerdotem loco Jojadai ſacerdotis, ut eſſes cenſor in domo Domini contra quenque prophetantem & in mendaciis delirantem, eumque conjiceres in carcerem & in ergaſtulum : Cur ergò non increpas Jeremiam Anathothiten 27 qui prophetat vobis ? Ecce enim 28 miſit ad nos in Babelem *dicens*, Diu futuri eſtis illic, ædificate domos, & inhabitate ; hortos plantate, & veſcimini fructibus eorum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

[MS. Ox.* اخرج يا شعبي منها * وينقذ كل امرء نفسه هاربًا من شدة غضب الرب . 45
* ليلا منكسر قلوبهم ويفزعون من الخبر الذي يسمع في الارض * ويثب والٍ علي والٍ . 46
* من اجل ذلك ستاتي ايام يقول الرب امر فيها باصنام بابل المنحوتة * وتهلك الارض 47
كلها * وتسقط قتلاها كلها * وتفرح لبابل السمآء والارض * وجميع ما فيها * سياتيها 48
المنتهبون من الجربي يقول الرب] * وفي بابل يسقطون جرحا كل الارض * ايها المخلصون 49 50
من الارض انطلقوا لا تقفوا * ايها البعدآء اذكروا الرب * وليصعد ايروسليم علي قلبنا .
* افتضحنا لانا سمعنا تعييرا * غطت الاهنه وجهنا * دخلت الغربآء الجنس الي مقادسنا الي 51
بيت الرب * لاجل هذا ايام تاتي يقول الرب * وافتقد علي منحوتاتها * وفي كل ارضها يسقطون 52
الجرحا * لانه ان تعالت بابل مثل السمآء * وان حصنت ارتفاع قوتها * من قبلي تاتي 53
مفسدوها يقول الرب * صوت صراخ في بابل * وانكسار عظيم من ارض الكلدانيين . 54
* لان الرب استاصل بابل واهلك منها الصوت العظيم الذي يصوت مثل مياه كثير 55
اعطي للفساد صوتها * لان سطوه اتت علي بابل * هلكت محاربوها * جرح قوسهم * لان الله 56
كافاهم * الرب كافاها مكافاة * ويسكر ولاتها سكرا وحكماءها يقول الرب * الملك الضابط الكل 57
اسمه * هكذا يقول الرب * سور بابل عرض يهدم انهداما * وابوابها المرتفعات يحرقون . 58
ولا تتعب الشعوب باطلا * والامم في البدء يفنون *
* القول الصاير من قبل الرب الي ارميا ليقوله لصارآء بن نيريا بن معسيا * لما انطلق من 59
عند صداقيا ملك يهودا الي بابل في السنة الرابعة من مملكته * وصارآء رييس الهدايا .
* وكتب ارميا جميع الشرور التي تاتي علي بابل في سفر واحد * جميع هذه الاقوال 60
المكتوبة علي بابل .

[MS. Oxon. Egredimini ex illa popule mi, 45 *& fugâ eripite unuſquiſq; animam ſuam, ab æſtu furoris Domini : Ne fortè con-* 46 *ſternetur animus eorum, & percellantur propter rumorem qui auditur in terra, quum contigerit dominator adverſùs dominatorem. Propterea dies veniunt, di-* 47 *cit Dominus, quibus pronuntiavit de ſculptilibus Babylonis idolis : & tota illa terra peribit, & omnes confoſſi ejus cadent in ea. Gaudebunt de Babele cœli* 48 *& terra, & quæcunq; ſunt in eis, ſiquidem ab Aquilone venient in eam direptores, dicit Dominus.] Et in Babele* 49 *corruent vulnerati totius terræ. O qui* 50 *ex hac terra evaſiſtis, abite, ne moremini : O longinqui, recordamini Domini, & Jeruſalem nobis in mentem veniat. Erubeſcimus, quoniam audimus oppro-* 51 *brium noſtrũ, operit ignominia faciem noſtrã : ingreſſi ſunt alienigenæ in ſanctuaria noſtra, in domum Domini. Iccirco dies ve-* 52 *nient, dicit Dominus, quum judiciũ feram adverſùs ſculptilia ejus, & per totam terram ejus cadent vulnerati. Nam* 53 *licèt efferret ſe Babel æquè ac cœlum, & licèt muniret eminentiam roboris ſui ; à me venient vaſtatores ejus, dicit Dominus. Vox clamoris in Babele, &* 54 *conquaſſatio magna de terra Chaldæorum : Nam Dominus exterminavit Ba-* 55 *belem, & perdidit ex ea vocem prægrandem quæ fremebat more aquarum multarum, tradidit corruptioni vocem ejus. Calamitate enim ſuper Babelem* 56 *veniente, perierunt bellatores ejus, extimuit arcus eorum ; quia Deus rependit eis, Dominus reddidit illi retributionem. Et ebrietate inebriabuntur antiſtites &* 57 *ſapientes ejus, dicit Dominus, cujus nomen eſt Rex omnipotens. Sic dicit Do-* 58 *minus, Murus Babelis qui dilatatus fuit, funditùs evertetur, & portæ ejus altiſſimæ comburentur ; nec fruſtrà laborabunt populi, & gentes ipſo initio conſumentur.*

Sermo qui factus eſt à Domino ad 59 Jeremiam, ut referret Saraæ filio Neriæ filii Maaſiæ, quum à Sedecia rege Judæ Babelem eſt profectus, anno quarto regni ipſius : erat autem Saraa præpoſitus muneribus.

Et ſcripſit Jeremia cuncta mala quæ 60 *eventura erant Babeli, in libello uno, omnes hos ſermones ſcriptos contra Babelem.*

ירמיה : ל

Irmejahu auribus in ,hanc epistolam sacerdos Sephaniah legit Et

29 ויקרא צפניה הכהן את־הספר הזה באזני ירמיהו

Mitte :dicendo ,Irmejahu ad Domini verbum fuit Et .prophetæ

30 הנביא : ויהי דבר־יהוה אל־ירמיהו לאמר : שלח 31

ad Dominus dixit Sic :dicendo ,transmigrationem omnem ad

על־כל־הגולה לאמר כה אמר יהוה אל־

,Semahjahu vobis prophetavit quòd eo Pro : Nechalamitem Semahjah

שמעיה הנחלמי יען אשר נבא לכם שמעיה

Idcirco .mendacio *super* vos fecit fidere & ,eum misi non ego &

32 ואני לא שלחתיו ויבטח אתכם על־שקר : לכן

,Nechalamitem Semahjah *super visitans* ego Ecce : Dominus dixit sic

כה־אמר יהוה הנני פקד על־שמעיה הנחלמי

populi medio in habitans vir ei erit non ,ejus semen *super* &

ועל־זרעו לא־יהיה לו איש ׀ יושב ׀ בתוך־העם

dixit ,meo populo *faciens* ego quod ,*bono in* videbit non & ,hujus

הזה ולא־יראה בטוב אשר־אני עשה־לעמי נאם־

.Dominum *super* est locutus *defectionem* quia : Dominus

יהוה כי־סרה דבר על־יהוה :

CAP. XXX. ל

:dicendo ,Domino à Irmeiahu ad fuit quod Verbum

1 הדבר אשר היה אל־ירמיהו מאת יהוה לאמר :

tibi Scribe :dicendo ,Israel Deus Dominus dixit Sic

2 כה־אמר יהוה אלהי ישראל לאמר כתב־לך

:libro in te ad sum locutus quæ ,*verba* omnia

את כל־הדברים אשר־דברתי אליך אל־ספר :

convertam & ,Dominus dixit ,*venientes* dies ecce Etenim

3 כי הנה ימים באים נאם־יהוה ושבתי

:Dominus dixit ,Jehudah & ,Israel mei populi captivitatem

את־שבות עמי ישראל ויהודה אמר יהוה

,eorum patribus dedi quam ,terram ad eos faciam redire &

והשבתים אל־הארץ אשר־נתתי לאבותם

Dominus est locutus quæ verba hæc Et .eam possidebunt &

4 וירשוה : ואלה הדברים אשר דבר יהוה

:Dominus dixit sic Quoniam .Jehudah ad & ,Israel ad

5 אל־ישראל ואל־יהודה : כי־כה אמר יהוה

Interrogate .pax non & ,formido :audivimus terroris vocem

6 קול חרדה שמענו פחד ואין שלום : שאלו־

virum omnem vidi quare :masculus *pariens* si ,videte & ,nunc

נא וראו אם־ילד זכר מדוע ראיתי כל־גבר

sunt conversæ & ,parturientem tanquam suos lumbos super suas manus

ידיו על־חלציו כיולדה ונהפכו

;*illa sicut non* à ,illa dies magna quia ,Væ ? pallorem in facies omnes

7 כל־פנים לירקון : הוי כי גדול היום ההוא מאין כמהו

die in erit Et .servabitur eo ab & ,Jahacob ipsi *ipsa angustiæ* tempus &

8 ועת־צרה היא ליעקב וממנה יושע : והיה ביום

,tuo collo *desuper* ejus jugum conteram ,exercituū Dominus dixit ,illa

ההוא נאם ׀ יהוה צבאות אשבר עלו מעל צוארך

servient Et .extraneis ultra *eo in* servient non & ,rumpam tua vincula &

9 ומוסרותיך אנתק ולא־יעבדו־בו עוד זרים : ועבדו

.eis suscitabo quem ,suo regi David & ,suo Deo Domino

את יהוה אלהיהם ואת דוד מלכם אשר אקים להם :

consterneris nec ,Dominus dixit ,Jahacob mi serve timeas ne tu Et

10 ואתה אל־תירא עבדי יעקב נאם־יהוה ואל־תחת

terra de tuum semen & ,longè à te salvificans ego ecce quia : Israel

ישראל כי הנני מושיעך מרחוק ואת־זרעך מארץ

,erit pacatus & ,requiescet & Jahacob revertetur & ,eorum captivitatis

שבים ושב יעקב ושקט ושאנן

.*exterrens* non &

ואין מחריד :

Versio VULG. LAT.

29 Legit ergò Sophonias sacerdos librum istum in auribus Jeremiæ prophetæ. 30 Et factum est verbum Domini ad Jeremiam, 31 dicens; Mitte ad omnem transmigrationem, dicens; Hæc dicit Dominus ad Semeian Nehelamiten: Pro eo quòd prophetavit vobis Semeias, & ego non misi eum: & fecit vos confidere 32 in mendacio: Idcircò hæc dicit Dominus; Ecce ego visitabo super Semeian Nehelamiten, & super semen ejus: non erit ei vir sedens in medio populi hujus, & non videbit bonum, quod ego faciam populo meo, ait Dominus: quia prævaricationem locutus est adversùs Dominum.

CAP. XXX.

1 Hoc verbum, quod factum est ad Jeremiam à Domino, dicens; 2 Hæc dicit Dominus Deus Israel, dicens; Scribe tibi omnia verba, quæ locutus sum ad te, in 3 libro. Ecce enim dies veniunt, dicit Dominus: & convertam conversionem populi mei Israel & Juda, ait Dominus: & convertam eos ad terram, quam dedi patribus eorum: & pos- 4 sidebunt eam. Et hæc verba, quæ locutus est Dominus ad Is- 5 rael & ad Judam: Quoniam hæc dicit Dominus; Vocem terroris audivimus: formido, & non 6 est pax. Interrogate, & videte si generat masculus: quarè ergò vidi omnis viri manum super lumbum suum, quasi parturientis, & conversæ sunt uni- 7 versæ facies in auruginem? Væ, quia magna dies illa, nec est similis ejus: tempúsque tribulationis est Jacob, & ex ipso 8 salvabitur. Et erit in die illa, ait Dominus exercituum: conteram jugum ejus de collo tuo, & vincula ejus dirumpam, & non dominabuntur ei ampliùs 9 alieni: Sed servient Domino Deo suo, & David regi suo, 10 quem suscitabo eis. Tu ergò ne timeas serve meus Jacob, ait Dominus, neque paveas Israel: quia ecce ego salvabo te de terra longinqua, & semen tuum de terra captivitatis eorum: & revertetur Jacob, & quiescet, & cunctis affluet bonis, & non erit quem formidet:

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

61 Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας πρὸς Σαραίαν, Ὅταν ἔλθῃς εἰς Βαβυλῶνα, καὶ ὄψῃ καὶ ἀναγνώσῃ 62 πάντας τοὺς λόγους τούτους, Καὶ ἐρεῖς, Κύριε κύριε, σὺ ἐλάλησας ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον, τοῦ (β) ἐξολοθρεῦσαι αὐτὸν, καὶ τοῦ μὴ εἶναι ἐν αὐτῷ κατοικοῦντας ἀπὸ ἀνθρώπου ἕως κτήνους, 63 ὅτι ἀφανισμὸς εἰς τὸν αἰῶνα ἔσται. Καὶ ἔσται ὅταν (γ) παύσῃ τοῦ ἀναγινώσκειν τὸ βιβλίον τοῦτο, καὶ ἐπιδήσεις (δ) ἐπ᾽ αὐτὸ λίθον, 64 καὶ ῥίψεις αὐτὸ εἰς μέσον τοῦ Εὐφράτου, Καὶ ἐρεῖς, Οὕτως καταδύσεται Βαβυλὼν, (ε) καὶ οὐ μὴ ἀναστῇ ἀπὸ προσώπου τῶν κακῶν, ὧν ἐγὼ ἐπάγω ἐπ᾽ αὐτήν.

Et dixit Hieremias ad Saræam: Cum veneris in Babylonem, & videris & legeris omnia verba hæc: Et dices; Domine Domine, tu locutus es super locum istum ad disperdendum eum, & ut non sint in eo habitantes ab homine usque ad pecus: quia solitudo in seculum erit. Et erit, cum cessaveris legere librum hunc; & ligabis lapidem ad eum, & projicies eum in medium Euphratis, Et dices; Sic demergetur Babylon, & non [illegible] à facie malorum, quæ ego induco super eam.

MS. A. (β ἐξολεθρεῦσαι (γ) παύσῃ ἀναγινώσκων (δ) αὐτῷ (ε) [illegible]

Cap. 47. Vulg. Lat. ΚΕΦ. κθ´.

1–2 ΕΠΙ` ΤΟΥ`Σ ἈΛΛΟΦΥ´ΛΟΥΣ ΤΑ´ΔΕ ΛΕ´ΓΕΙ ΚΥ´ΡΙΟΣ· Ἰδοὺ ὕδατα (α) ἀναβαίνει ἀπὸ Βοῤῥᾶ, καὶ ἔσται εἰς χειμάῤῥουν κατακλύζοντα, καὶ κατακλύσει γῆν καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς, πόλιν καὶ τοὺς (β) κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ. καὶ κεκράξονται οἱ ἄνθρωποι, καὶ (γ) ἀλαλάξουσιν ἅπαντες 3 οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν. Ἀπὸ φωνῆς ὁρμῆς αὐτοῦ, ἀπὸ τῶν ὅπλων τῶν ποδῶν αὐτοῦ, καὶ ἀπὸ σεισμοῦ τῶν ἁρμάτων αὐτοῦ, (δ) ἤχου τροχῶν αὐτοῦ. οὐκ ἐπέστρεψαν πατέρες (ε) ἐφ᾽ υἱοὺς αὐτῶν ἀπὸ ἐκλύσεως χειρῶν αὐτῶν. 4 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ (ζ) ἐπερχομένῃ τοῦ ἀπολέσαι πάντας τοὺς ἀλλοφύλους. καὶ ἀφανιῶ τὴν Τύρον, καὶ τὴν Σιδῶνα, καὶ πάντας τοὺς καταλοίπους τῆς βοηθείας αὐτῶν, ὅτι (η) ἐξολοθρεύσει 5 κύριος (θ) τοὺς καταλοίπους τῶν νήσων. Ἥκει φαλάκρωμα ἐπὶ Γάζαν, (ι) ἀπεῤῥίφη Ἀ- 6 σκάλων, καὶ οἱ κατάλοιποι Ἐνακίμ. Ἕως τίνος κόψεις ἡ (κ) μάχαιρα τοῦ κυρίου; ἕως τίνος (λ) οὐχ ἡσυχάσεις; ἀποκατάστηθι εἰς 7 τὸν κολεόν σου, ἀνάπαυσαι, καὶ ἐπάρθητι. Πῶς (μ ἡσυχάσει, καὶ κύριος ἐνετείλατο αὐτῇ ἐπὶ τὴν Ἀσκάλωνα, καὶ ἐπὶ τὰς παραθαλασσίους, ἐπὶ τὰς καταλοίπους ἐπεγερθῆναι;

Super (a) Allophylos: Hæc dicit Dominus; Ecce aquæ ascendunt ab Aquilone, & erunt in torrentem inundantem: & inundabunt terram, & plenitudinem ejus, civitatem, & habitantes in ea. Et clamabunt homines, & ululabunt omnes habitatores terræ. A voce impetus ejus, ab armis pedum ejus, & à concussione curruum ejus, sonitu rotarum ejus. Non converterunt patres super filios suos præ dissolutione manuum suarum, In die supervenienete ad perdendum omnes Allophylos. Et delebo Tyrum, & Sidonem, & omnes reliquos auxilii eorum: Quia exterminabit Dominus reliquos (b) insularum. Venit calvitium super Gazam: projecta est Ascalon, & reliqui Enacim. Usquequò concides gladius Domini? usquequò non quiesces? Reconde te in vaginam tuam, requiesce, & tollere. Quomodò quiescet? & Dominus mandavit ei super Ascalonem, & adversus maritimas, (c) super reliquas ut insurgat?

7 Cap. 49. Vulg. Lat. ΤΗ῀ ἸΔΟΥΜΑΙ´Α, τάδε λέγει κύριος, Οὐκ ἔστιν ἔτι σοφία ἐν Θαιμὰν, (ν) ἀπώλετο βουλὴ ἐκ 8 συνετῶν, ᾤχετο σοφία αὐτῶν, Ἠπατήθη ὁ τόπος αὐτῶν· βαθύνατε (ξ) εἰς κάθισιν οἱ κατοικοῦντες ἐν (ο) Δαιδὰμ, ὅτι δύσκολα ἐποίησεν· ἤγαγον ἐπ᾽ αὐτὸν ἐν χρόνῳ, ᾧ 9 (π) ἐπεσκεψάμην ἐπ᾽ αὐτόν. Ὅτι τρυγηταὶ (ρ) ἦλθον, οἳ οὐ καταλείψουσίν σοι κατάλειμμα· ὡς κλέπται ἐν νυκτὶ, ἐπιθήσουσι 10 (σ) χεῖρα αὐτῶν. Ὅτι ἐγὼ κατέσυρα τὸν Ἡσαῦ, ἀνεκάλυψα τὰ κρυπτὰ αὐτῶν, κρυβῆναι οὐ μὴ δύνωνται, ὤλοντο διὰ χεῖρα ἀ- 11 δελφοῦ αὐτοῦ, (τ) γείτονός μου, καὶ οὐκ ἔστιν Ὑπολείπεσθαι ὀρφανόν σου, ἵνα ζήσηται· καὶ ἐγὼ ζήσομαι, καὶ αἱ χῆραι ἐπ᾽ ἐμὲ πεποίθασιν.

(d) IDUMÆÆ. hæc dicit Dominus; Non est [illegible] sapientia in Thæman: [illegible] consilium à prudentibus: [illegible] sapientia eorum: Conculcatus est locus eorum. (e) Demergite in sessionem, qui habitatis in Dædan: quia dura fecit. Adduxi super eum in tempore, quo visitavi super eum: Quia vindemiatores venerunt; qui non relinquent tibi reliquias: quasi fures in nocte imponent manum suam: Quia ego detraxi Esau, revelavi abscondita eorum, abscondi non poterunt. Perierunt per manum fratris sui, (f) vicini mei, & non est Relinque pupillum tuum, ut vivat: Et ego *faciam vivere, & viduæ super me confident.

MS. A. (α) ἀναβέννει (β) ἐνοικοῦντας (γ) ἀλαλάξονται πάντες (δ) [illegible] ἤχου τῶν τροχῶν αὐτοῦ. (ε) ἐπὶ (ζ) ἐρχομένῃ (η) ἐξολεθρεύσει (θ) τοὺς καταλοίπους (ι) ἀπερρίφη Ἀσκάλων, καὶ τὰ κατάλοιπα (κ) μάχαιρα κυρίου; (λ) οὐκ (μ) ἡσυχάσεις, (ν) ἐπώλετο (ξ) ἑαυτοῖς εἰς κάθισιν (ο) Δαιδὰν, (π) ἐπεσκεψάμην αὐτόν. (ρ) ἦλθόν σοι, οὐ καταλείψουσί σοι καταλίμματα· ὥσπερ κλέπται (σ) χεῖρας αὐτῶν. Ὅτι ἐγὼ κατηρεύνησα (τ) καὶ γίτονος αὐτοῦ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

29 וקרא צפניה כהנא ית אגרתא הדא קדם ירמיה נביא : והוה פתגם נבואה מן
30 קדם יי עם ירמיה למימר : שלח לות כל בני גלותא למימר כדנן אמר יי על שמעיה
31 דמן חלם חלף דאתנבי לכון שמעיה ואנא לא שלחתיה וארחיץ יתכון על שקרא :
32 בכן כדנן אמר יי הא אנא מסער על שמעיה דמן חלם ועל בנוהי לא
יהי ליה גבר יתיב בגו עמא הדין ולא יחזי בטובא דאנא עביד לעמי אמר יי ארי
סטיא מלל קדם יי :

ל

1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה מן קדם יי למימר : כדנן אמר יי אלהא דישראל
2 למימר כתב לך ית כל פתגמיא דמללית עמך על ספרא : ארי הא יומיא אתן אמר
3 יי ואתיב ית גלות עמי ישראל ויהודה אמר יי ואתבנון לארעא דיהבית לאבהתהון
4 ויחסנונה : ואלן פתגמיא דמליל יי על ישראל ויהודה : ארי כדנן אמר
5 יי קל זועא שמענא דחלא ולית שלם : שאילו כען וחזו אם יליד דכר מדין
6 חזיתי כל גבר ידוהי מחתן על חרציה כילדתא ומשתנין כל אפי למהוי כירקנא :
7 וי ארי רב יומא ההוא לית דכותיה ועדן עקא הוא ליעקב ומניה יתפרק : ויהי
8 בעדנא ההיא אמר יי צבאות אתבר ניר עממיא מציריכון ותקוריכון אפסק
9 ולא ישתעבדון בישראל עוד עממיא : ויפלחון קדם יי אלההון וישתמעון למשיחא
10 בר דויד מלכהון דאקים להון : ואת לא תדחל עבדי יעקב אמר יי ולא תתבר ישראל
ארי האנא פריק לך מרחיק וית בנך מארע גלותהון ויתובון דבית יעקב וישקטין
וישרון לרחצן ולית דמניד :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et legit Sophonias sacerdos epistolam hanc coram Jeremia prophe[illegible] Et factum est verbum prophetiæ à facie Domini cum Jeremia, dicens: Mitte ad omnes filios transmigrationis, dicens: Hæc dicit Domi[illegible] ad Semeiam Helamitem: Pro eo quòd prophetavit vobis Semeias, [illegible] ego non misi eum, & confidere vos fecit in mendacio. Idcirco hæc [illegible] Dominus: Ecce ego visitabo super Semeiam Helamitem, & super fi[illegible] ejus, & non erit ei vir sedens in medio populi hujus, & non videbit [illegible] num quod ego faciam populo meo, dicit Dominus. Quia perversum locu[illegible] tus est coram Domino.

CAP. XXX.

Verbum prophetiæ quod factum est ad Jeremiam à facie Domini [illegible] cens: Hæc dicit Dominus Deus Israel, in hunc modum: Scribe [illegible] omnia verba quæ locutus sum tecum, in libro. Quia ecce dies ven[illegible] dicit Dominus; & convertam transmigrationem populi mei Israel & [illegible] da, dicit Dominus; & reducam eos ad terram quam dedi patribus eorum [illegible] & possidebunt eam. Et hæc sunt verba quæ locutus est Dominus super [illegible] Israele & Juda. Quia hæc dicit Dominus: Vocem commotionis [illegible] divimus; terroris, & non erat pax. Interrogate nunc & videte [illegible] pariat masculus. Quare vidi omnis viri manus demissas super lumbos suos, more parturientis; & mutatas universas facies, ut sint quasi [illegible] rugo? Væ, quia magna est dies illa, & non est ei similis; & tempus [illegible] bulationis est Jacob, & ex ipsa salvabitur. Et erit in tempore illo, [illegible] Dominus exercituum; conteram jugum populorum de cervicibus ve[illegible] & vincula vestra dirumpam; & non subjicietur Israel ultrà popul[illegible] servient coram Domino Deo suo, & obedient Christo filio David re[illegible] quem suscitabo eis. Tu autem ne timeas serve mi Jacob, dicit Do[illegible] nec conteraris Israel: quia ecce ego salvabo te de longinquo, & [illegible] os de terra transmigrationis eorum, & revertentur via domus [illegible] quiescent, & habitabunt confidenter, & non erit qui ex[illegible]

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܘܩܪܐ ܨܦܢܝܐ ܟܗܢܐ ܐܓܪܬܐ ܗܕܐ ܒܐܕܢܘܗܝ ܕܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ
ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܫܠܘܚ ܠܟܠܗ ܫܒܝܬܐ. ܘܐܡܪ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܫܡܥܝܐ
ܢܚܠܡܝܐ. ܥܠ ܕܐܬܢܒܝ ܠܟܘܢ ܫܡܥܝܐ ܟܕ ܐܢܐ ܠܐ ܫܕܪܬܗ: ܘܐܬܟܠܟܘܢ ܥܠ ܫܘܩܪܐ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܦܩܕ ܐܢܐ ܥܠ ܫܡܥܝܐ ܢܚܠܡܝܐ ܘܥܠ ܙܪܥܗ. ܘܠܐ
ܢܗܘܐ ܠܗ ܓܒܪ ܕܝܬܒ ܒܓܘ ܥܡܐ ܗܢܐ. ܘܠܐ ܢܚܙܐ ܠܛܒܬܐ ܕܥܒܕ ܐܢܐ ܠܥܡܝ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܥܘܠܐ ܡܠܠ ܥܠ ܡܪܝܐ.

* ܦܣܘܩܐ * ܠ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܟܬܘܒ ܠܟ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪܬ ܠܟ ܥܠ ܟܬܒܐ. * ܡܛܠ ܕܗܐ
ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܗܦܟ ܫܒܝܬܐ ܕܥܡܝ ܐܝܣܪܐܝܠ ܘܝܗܘܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܐܒܗܝܗܘܢ ܘܢܐܪܬܘܢܗ. * ܘܗܠܝܢ ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܥܠ ܐܝܣܪܐܝܠ ܘܥܠ ܝܗܘܕܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܩܠܐ ܕܙܘܥܬܐ ܫܡܥܢ ܕܚܠܬܐ
ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ. * ܫܐܠܘ ܘܚܙܘ ܐܢ ܝܠܕ ܕܟܪܐ. ܡܛܠܡܢܐ ܚܙܝܬ ܟܠ ܓܒܪ
ܐܝܕܘܗܝ ܥܠ ܚܨܘܗܝ ܐܝܟ ܝܠܕܬܐ. ܘܐܬܗܦܟܘ ܟܠܗܘܢ ܐܦܐ ܠܝܘܪܩܢܐ. * ܘܝ
ܕܪܒ ܝܘܡܐ ܗܘ ܘܠܝܬ ܕܕܡܐ ܠܗ. ܘܙܒܢܐ ܕܐܘܠܨܢܐ ܗܘ ܠܝܥܩܘܒ. ܘܡܢܗ ܢܬܦܪܩ.
* ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܬܒܪ ܢܝܪܗ ܡܢ ܨܘܪܟ. ܘܐܣܘܪܝܟ ܐܦܣܩ. ܘܠܐ
ܢܦܠܚܘܢ ܬܘܒ ܠܗܘܢ ܢܘܟܪܝܐ. * ܐܠܐ ܢܦܠܚܘܢ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܘܠܕܘܝܕ ܡܠܟܗܘܢ
ܕܐܩܝܡ ܠܗܘܢ. * ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܕܚܠ ܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܬܒܪ ܐܝܣܪܐܝܠ.
ܡܛܠ ܕܗܐ ܦܪܩ ܐܢܐ ܠܟ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܘܠܙܪܥܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܫܒܝܬܗܘܢ. ܘܢܗܦܘܟ ܝܥܩܘܒ
ܘܢܫܠܐ. ܘܢܫܝܢ ܘܢܬܢܝܚ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܡܥܘܪܢܐ.

Legit autem Sephania ſacerdos hanc epiſtolam audiente Jeremiâ prophetâ. 29 Fuit itaque ſermo Domini ad Jeremiam prophetam his verbis; 30 Mitte ad omnes captivos, Sic dicit Dominus ad Semeiam Nehemaliten, Quia vobis prophetavit Semeia res pro quibus ego non miſeram eum, & inani ſpe vos lactavit: 31 Idcircò ſic ait Dominus, Ecce animadverſurus ſum in Semeiam Nehemaliten & in ſemen ejus, ita ut non remaneat ipſi quiſquam habitans inter populum iſtum, neque videat bonum quod facturus ſum populo meo, dicit Dominus; eò quòd flagitium ſic locutus contra Dominum. 32

CAP. XXX.

SErmo qui factus eſt ad Jeremiam à Domino. Dixit ergò; 1 Sic ait Dominus Deus Iſraelis, Scribe tibi omnes ſermones quos tibi dixi, in volumine: 2 Nam ecce dies venturi ſunt, ait Dominus, quibus reducam captivos populi mei Iſraelis & Judæ, ait Dominus; reducam inquam, eos in terram quam dedi patribus eorum, & poſſidebunt eam. 3 Hi ergò ſunt ſermones quos locutus eſt Dominus de Iſraele & de Juda. 4 Sic ait Dominus, Vocem tremoris audivimus, pavorem, ac nullam ſecuritatem. 5 Sciſcitamini & videte num pariat mas: cur video cujuſcunque viri manus lateribus ſuis appoſitas more parturientis *fœminæ*, & omnes vultus in aduſtæ rei *colorem* verſos? 6 Heu quàm magnus futurus eſt ille dies, neque enim erit illi ſimilis: tempus quidem calamitoſiſſimum erit Jacobo, ſed eripietur ex eo. 7 Erit enim illo die, dicit Dominus exercituum, ut frangam jugum ejus à collo tuo, & lora tua diſrumpam; neque ſervitute premant eos inpoſterùm alieni, 8 Sed ſerviant Domino Deo ſuo, & Davidi regi ſuo quem ſuſcitabo eis. 9 Tu itaque ne timeto ſerve mi Jacob, dicit Dominus, néve conſternator O Iſrael; quoniam ecce liberaturus te ſum è *loco* remoto, & ſemen tuum è terra captivitatis ſuæ; & habitabit Jacob ſecurus, quieſcet, ac tranquillus erit, nec erit illi *quiſquam* inſenſus. 10

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وقال ارميا لصارا * اذا اتيت الي بابل وتعاين وتقرا جميع هذه الاقوال وتقول * يا رب يا رب انت 61 62
تكلمت على هذا الموضع لتستاصله * والا يكون فيه سكان من الانسان الي البهيمة * لانه يكون
فسادا الي الدهر * ويكون اذا فرغت تقرا هذا السفر * فتربط فيه حجرا وتلقيه في وسط الفرات * 63
* وتقول * هكذا تسقط بابل ولا تقوم * تطفا من وجه الكلدانيين مما انا اجلب عليهم * 64

* الفصل التاسع والعشرون * الاصحاح التاسع عشر *

* القول على القبايل الغرباء * هكذا يقول الرب * ها مياه تصعد من الجربياء وتصير فايضة 1 2
الي الوادي * وتغرق الارض بكمالها المدينة والسكان فيها * وتصرخ الناس * وتهلك جميع سكان
الارض * من صوت وثبته * من اسلحة قدميه * ومن زلزلة مركباته وصوت بكراته * لم ترجع 3
الاباء على بنيهم * من انحلال ايديهم في اليوم المقبل * لاهلك جميع القبايل الغريبة * وافني 4
صور وصيدا وجميع بقايا معونتهما * لان الرب يستاصل بقايا الجزاير * القرع ياتي على غزة 5
طرحت عسقلان والبقايا في اكيم * الي من تنجذبين * سيف الرب تقطع * الي متي لا تسكن 6
عد الي غمدك واسترح واربع * كيف تسكن والرب امر على عسقلان وعلي سواحل البحرية 7
لينهض على البقايا *

* في ادوم *

* هكذا يقول الرب * ليس في تامان حكمة موجودة بعد * هلك الراي من الحكماء * وبرد حكمتهم 7
* خدع موضعهم * عمقوا لهم جلسة السكان في دادان * لانه صنع عثرات جلبت عليه في 8
الزمان لما تطلعت عليها * لان القطافون اتوا الذين لا يتركون لك بقية * مثل السراق في 9
الليل يضعون عليهم * لاني انا جذبت خفياتهم لا يستطيعون ان يختفوا * هلكوا بيد اخيهم 10
وجاري * ولا يتركون يتيمك كي يعيش * وانا اعيش * والارامل على يتوكلن * 11

Deinde dixit Jeremia Saraæ, Quum perveneris Babelem, tum inſpicies legeſque omnes hos ſermones, ac dices; 61 *O Domine, O Domine, tu locutus es contra locum iſtum, te penitùs everſurum eum, neque manſuros in eo habitatores ullos ex humano aut belluino* genere, *quippe qui futurus eſt deſtructioni perpetuæ.* 62 *Et ubi abſolveris legere libellum iſtum, alligabis ei lapidem, projicieſque in medium Euphratis,* 63 *Ac dices; Hoc modo ruat Babel, neque reſurgat: obruatur ab aſpectu Chaldæorum ob ea quæ ego inducturus ſum adverſùs eos.* 64

CAP. XXIX.

Textus decimus nonus.

SErmo contra nationes exteras. 1 *Sic dicit Dominus, En aquæ aſcendent ex Aquilone, & inundabunt ad torrentem uſque, operientque totam planè terram, urbem & habitantes in ea: & exclamabunt homines, & peribunt omnes habitatores terræ,* 2 *A fragore irruptionis ejus, ab armis pedum ejus, & à terræmotu curruum ejus, & ſtrepitu rotarum ejus: non convertentur patres ad filios ſuos, præ remiſſione manuum ſuarum in die venturo.* 3 *Equidem perdam omnes nationes exteras, & conſumam Tyrum ac Sydonem, omneſque reliquias ſubſidii earum: nam Dominus extirpaturus eſt reliquias Inſularum.* 4 *Porrigo obveniet Gizæ, proſternetur Aſcalon, & reliquiæ* quæ ſuperſunt *in Acchim: ad quem te contrahes?* 5 *Gladie Domini amputabiſne? quouſque non requieſces? revertere in vaginam tuam, quieſce, & abſcede.* 6 *Quomodo quieſceret, quum Dominus præceperit ei ut inſurgeret in reliquias Aſcalonis & orarum maritimarum?* 7

Contra Edom.

Sic dicit Dominus, Non extat ampliùs in Themane ſapientia, defecit conſilium à ſapientibus, friguit ſapientia eorum: 7 *Excidus eſt locus eorum, profundam ſibi fecerunt ſeſſionē habitantes in Dadane. Quia dura perpetravit, adducam ſuper eam* calamitatem *quo tempore inviſam eam.* 8 *Nam vindemiatores venient, qui nullas relinquent tibi reliquias: ut fur in nocte obſidebunt eos:* 9 *Quoniam ego ſubtraxi abdita eorum, non poterunt abdere ſeſe: peribunt per manum fratris ſui ac vicini mei.* 10 *Et non permittent pupillo tuo ut vivat: ſed ego vivificabo, & viduæ mihi confident.* 11

ירמיה: לא

faciam nam: te *salvandum ad* ,DOMINUS ait ,ego tecum Quoniam
11 כִּי־אִתְּךָ אֲנִי נְאֻם־יְהוָה לְהוֹשִׁיעֶךָ כִּי אֶעֱשֶׂה
veruntamē *: illuc* te dispersi *quò* ,gentibus cunctis in consummationē
כָלָה בְּכָל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר הֲפִצוֹתִיךָ שָׁם אַךְ
mundando & , judicio in te castigabo *&*,cōsummationē faciam non te
אֹתְךָ לֹא־אֶעֱשֶׂה כָלָה וְיִסַּרְתִּיךָ לַמִּשְׁפָּט וְנַקֵּה
,tua contritio *Desperata* : Dominus dixit sic Nam .te *mundabo non*
12 לֹא אֲנַקֶּךָּ׃ כִּי כֹה אָמַר יְהוָה אָנוּשׁ לְשִׁבְרֵךְ
curationis medicinæ *:medelam* ad tuū judiciū *judicans* Non .tua plaga *dolorifica*
13 נַחְלָה מַכָּתֵךְ׃ אֵין־דָּן דִּינֵךְ לְמָזוֹר רְפֻאוֹת תְּעָלָה
: quærent non te ,tui sunt obliti tui amatores Omnes .tibi non
14 אֵין לָךְ׃ כָּל־מְאַהֲבַיִךְ שְׁכֵחוּךְ אוֹתָךְ לֹא יִדְרֹשׁוּ
multitudinem propter :crudeli castigatione te percussi inimici plaga quia
כִּי מַכַּת אוֹיֵב הִכִּיתִיךְ מוּסַר אַכְזָרִי עַל רֹב
,tua cōtritione super *clamabis* Quid .tua peccata *invaluerunt* tuæ iniquitatis
15 עֲוֺנֵךְ עָצְמוּ חַטֹּאתָיִךְ׃ מַה־תִּזְעַק עַל־שִׁבְרֵךְ
invaluerunt tuæ iniquitatis multitudinē propter ? tuū dolorem *desperatum*
אָנוּשׁ מַכְאֹבֵךְ עַל רֹב עֲוֺנֵךְ עָצְמוּ
,te devorantes omnes Propterea .tibi hæc feci ,tua peccata
16 חַטֹּאתַיִךְ עָשִׂיתִי אֵלֶּה לָךְ׃ לָכֵן כָּל־אֹכְלַיִךְ
erūt &:ibunt captivitatē in ipsi universi tui hostes universi &;devorabūtur
יֵאָכֵלוּ וְכָל־צָרַיִךְ כֻּלָּם בַּשְּׁבִי יֵלֵכוּ וְהָיוּ
.prædam in dabo te prædantes cunctos & ,direptionem in te diripientes
שֹׁאסַיִךְ לִמְשִׁסָּה וְכָל־בֹּזְזַיִךְ אֶתֵּן לָבַז׃
: Dominus dixit,te sanabo tuis plagis à &,*tibi emplastrum faciā ascendere* Quia
17 כִּי אַעֲלֶה אֲרֻכָה לָךְ וּמִמַּכּוֹתַיִךְ אֶרְפָּאֵךְ נְאֻם־יְהוָה
dixit Sic *.eam non quærens ipsa* Sijon ,te vocaverunt *expulsam* quia
18 כִּי נִדָּחָה קָרְאוּ לָךְ צִיּוֹן הִיא דֹּרֵשׁ אֵין לָהּ׃ כֹּה אָמַר
ej⁹ habitaculorū &,Jahacob *tentoriorū captivitatē convertens* ego Ecce: Dominus
יְהוָה הִנְנִי־שָׁב שְׁבוּת אָהֳלֵי יַעֲקוֹב וּמִשְׁכְּנֹתָיו
super palatium & ,ejus cumulum super civitas ædificabitur & : miserebor
אֲרַחֵם וְנִבְנְתָה עִיר עַל־תִּלָּהּ וְאַרְמוֹן עַל־
: *ludentium* vox & ,*confessio* eis ex egredietur Et *.sedebit ejus normam*
19 מִשְׁפָּטוֹ יֵשֵׁב׃ וְיָצָא מֵהֶם תּוֹדָה וְקוֹל מְשַׂחֲקִים
non & ,eos honorabo & ; minuentur non & ,eos faciam multiplicare &
וְהִרְבִּתִים וְלֹא יִמְעָטוּ וְהִכְבַּדְתִּים וְלֹא
me coram ejus cœtus & ,*quondam* sicut ejus filii erunt Et *.evilescent*
20 יִצְעָרוּ׃ וְהָיוּ בָנָיו כְּקֶדֶם וַעֲדָתוֹ לְפָנַי
ejus *præstans* erit Et *.eum opprimentes* omnes *super* visitabo & : disponetur
21 תִּכּוֹן וּפָקַדְתִּי עַל כָּל־לֹחֲצָיו׃ וְהָיָה אַדִּירוֹ
,eū ap,ppinquare faciā & ,egredietur ej⁹ *interiori* de ej⁹ dominator & ,eo ex
מִמֶּנּוּ וּמֹשְׁלוֹ מִקִּרְבּוֹ יֵצֵא וְהִקְרַבְתִּיו
accedendum ad suum cor *edulcavit hic* iste quis quia : me ad accedet &
וְנִגַּשׁ אֵלָי כִּי מִי הוּא־זֶה עָרַב אֶת־לִבּוֹ לָגֶשֶׁת
ero ego &,populum in mihi eritis Et ? Dominus dixit *,me ad*
22 אֵלַי נְאֻם־יְהוָה׃ וִהְיִיתֶם לִי לְעָם וְאָנֹכִי אֶהְיֶה
turbo ;est egressus furore Domini turbo Ecce .Deum in vobis
23 לָכֶם לֵאלֹהִים׃ הִנֵּה סַעֲרַת יְהוָה חֵמָה יָצְאָה סַעַר
ira revertetur Non *.residebit* impiorum caput super ; *imminens*
24 מִתְגּוֹרֵר עַל רֹאשׁ רְשָׁעִים יָחוּל׃ לֹא יָשׁוּב חֲרוֹן
: sui cordis *molimina ipsum statuere ad usque &,eum facere ad usque*,Domini *nasi*
אַף־יְהוָה עַד־עֲשֹׂתוֹ וְעַד־הֲקִימוֹ מְזִמּוֹת לִבּוֹ
.eo in intelligetis dierum novissimo in
בְּאַחֲרִית הַיָּמִים תִּתְבּוֹנְנוּ בָהּ׃

CAP. XXXI. לא

familiis universis Deum in Ero ,Dominus dixit , illo tempore In
1 בָּעֵת הַהִיא נְאֻם־יְהוָה אֶהְיֶה לֵאלֹהִים לְכֹל מִשְׁפְּחוֹת
.populum in mihi erunt ipsi & , Israel
יִשְׂרָאֵל וְהֵמָּה יִהְיוּ־לִי לְעָם׃

Versio VULG. LAT.

11 Quoniam tecum ego sum, ait Dominus, ut salvem te: faciam enim consummationē in cunctis gentibus, in quibus dispersi te: te autem non faciam in consummationem: sed castigabo te in judicio, ut non videaris tibi innoxius. 12 Quia hæc dicit Dominus; Insanabilis fractura tua, pessima plaga tua. 13 Non est qui judicet judicium tuum ad alligandum: curationum utilitas non est tibi. 14 Omnes amatores tui obliti sunt tuî, téque non quærent: plagâ enim inimici percussi te castigatione crudeli: propter multitudinem iniquitatis tuæ dura facta sunt peccata tua. 15 Quid clamas super contritione tua? insanabilis est dolor tuus: propter multitudinem iniquitatis tuæ, & propter dura peccata tua, feci hæc tibi. 16 Propterea omnes, qui comedunt te, devorabuntur: & universi hostes tui in captivitatē ducētur: & qui te vastant, vastabuntur, cunctósq; prædatores tuos dabo in prædā. 17 Obducam enim cicatricem tibi, & à vulneribus tuis sanabo te, dicit Dominus. Quia Ejectam vocaverunt te, Sion: Hæc est, quæ non habebat requirentem. 18 Hæc dicit Dominus; Ecce ego convertam conversionem tabernaculorum Jacob, & tectis ejus miserebor, & ædificabitur civitas in excelso suo, & templum juxta ordinem suum fundabitur. 19 Et egredietur de eis laus, vóxq; ludentium: & multiplicabo eos, & non minuentur: & glorificabo eos, & non attenuabuntur. 20 Et erunt filii ejus sicut à principio, & cœtus ejus coram me permanebit: & visitabo adversùm omnes qui tribulant eum. 21 Et erit dux ejus ex eo: & princeps de medio ejus producetur: & applicabo eum, & accedet ad me. Quis enim iste est, qui applicet cor suum ut appropinquet mihi, ait Dñs? 22 Et eritis mihi in populū, & ego ero vobis in Deum. 23 Ecce turbo Dñi, furor egrediens, procella ruens, in capite impiorum conquiescet. 24 Non avertet iram indignationis Dñs, donec faciat & compleat cogitationem cordis sui: in novissimo dierum intelligetis ea.

CAP. XXXI.

1 In tempore illo, dicit Domin⁹: Ero Deus universis cognationibus Israel, & ipsi erunt mihi in populum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

12 Ὅτι τάδε (υ) εἶπε κύριος, Οἷς οὐκ ἦν νόμος πιεῖν τὸ ποτήριον, ἔπιον· ϗ σὺ (φ) ἀθῳωμένη οὐ μὴ ἀθῳωθῇς, 13 Ὅτι κατ' ἐμαυτοῦ ὤμοσα, λέγει κύριος, ὅτι εἰς ἄβατον, ϗ εἰς ὀνειδισμὸν, ϗ εἰς (χ) κατάρασιν ἔσῃ ἐν μέσῳ αὐτῆς, ϗ πᾶσαι αἱ πόλεις αὐτῆς ἔσονται ἔρημοι (ψ) εἰς αἰῶνα. 14 Ἀκοὴν ἤκουσα παρὰ κυρίου, ϗ ἀγγέλους εἰς ἔθνη ἀπέστειλεν· Συνάχθητε, ϗ παραγένεσθε εἰς αὐτὴν, ἀνάστητε εἰς πόλεμον. 15 (ω) Μικρὸν ἔδωκά σε ἐν ἔθνεσιν, (α) εὐκαταφρόνητον ἐν ἀνθρώποις. 16 Ἡ παιγνία σου ἐνεχείρησέ σοι, ἰταμία καρδίας σου κατέλυσε τρυμαλιὰς πετρῶν, συνέλαβεν ἰσχὺν βουνοῦ ὑψηλοῦ. (β) ὅτι ὕψωσεν ὥσπερ ἀετὸς (γ) νοσσιὰν αὐτοῦ, ἐκεῖθεν καθελῶ σε. 17 Καὶ ἔσται ἡ Ἰδουμαία εἰς ἄβατον, πᾶς ὁ παραπορευόμενος ἐπ' αὐτὴν συριεῖ. 18 Ὥσπερ κατεστράφη Σόδομα ϗ Γόμορρα, ϗ αἱ πάροικοι αὐτῆς, εἶπε κύριος παντοκράτωρ, οὐ μὴ (δ) καθίσῃ ἐκεῖ ἄνθρωπος, ϗ οὐ μὴ (ε) κατοικήσῃ ἐκεῖ υἱὸς ἀνθρώπου. 19 Ἰδοὺ ὥσπερ λέων ἀναβήσεται ἐκ μέσου τοῦ Ἰορδάνου (ζ) εἰς τόπον Αἰθάμ, ὅτι ταχὺ ἐκδιώξω αὐτοὺς ἀπ' αὐτῆς, ϗ τοὺς νεανίσκους ἐπ' αὐτὴν (η) ἐπιστήσατε· ὅτι τίς ὥσπερ ἐγώ; ϗ τίς ἀντιστήσεταί μοι; ϗ τίς οὗτος ποιμὴν, ὃς στήσεται κατὰ πρόσωπόν μου; 20 Διατοῦτο ἀκούσατε βουλὴν κυρίου, ἣν ἐβουλεύσατο ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν, ϗ λογισμὸν αὐτοῦ ὃν ἐλογίσατο ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Θαιμὰν, Ἐὰν μὴ (θ) συμψηθῶσι τὰ ἐλάχιστα τῶν προβάτων, ἐὰν μὴ ἀβατωθῇ 21 ἐπ' (ι) αὐτοὺς κατάλυσις αὐτῶν. Ὅτι ἀπὸ φωνῆς πτώσεως αὐτῶν (κ) ἐφοβήθη ἡ γῆ, 22 (λ) ϗ κραυγὴ θαλάσσης οὐκ ἠκούσθη. Ἰδοὺ ὥσπερ ἀετὸς ὄψεται, ϗ ἐκτενεῖ τὰς πτέρυγας ἐπ' ὀχυρώματα αὐτῆς. ϗ ἔσται ἡ καρδία τῶν ἰσχυρῶν τῆς Ἰδουμαίας ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὡς καρδία γυναικὸς ὠδινούσης.

Quia hæc dicit Domin
Quibus non erat lex bibe
cem; biberunt: & tu ab
non (b) absolveris: Q
per meipsum juravi, dicit Do-
minus, quoniam in invium, &
in opprobrium, & in maledi
nem eris in medio ejus: &
omnes civitates ejus erunt de-
sertæ in seculum. Auditum au-
divi à Domino; & (c)
los ad gentes misit: Congr
mini, & advenite ad eam, ex
gite in bellum. Parvum
te in gentibus, contemptu
hominibus. Lusio tua mol
tibi, impudentia cordis tui:
bitavit cavernas petrarum,
prehendit fortitudinem colli
celsi. Quoniam (k) exaltavit
quasi aquila, nidum suum,
detraham te. Et erit Idumæa
invium: omnis præteriens
eam (l) sibilabit. Sicut
sa est Sodoma, & Gomorrha
vicinæ ejus, dixit Dominus om
potens; non sedebit ibi homo
non habitabit ibi filius hom
Ecce quasi leo ascendet de me
Jordanis, in locum Æthan, qu
citò expellam eos ab ea: & ju-
venes super eam state. Nam qu
sicut ego? & quis resistet mi
Et quis iste pastor, qui stabit
faciem meam? Propterea aud
consilium Domini, quod del
vit super Idumæam, & cog
tionem ejus, quam cogitav
per habitantes Theman, Si
(m) abripiantur minima ov
si non invia fiet super eos
tatio ipsorum: Quoniam à v
ce ruinæ eorum timuit terra, &
clamor maris (n) non est au
tus. Ecce, sicut aquila
& extendet alas super mun
nes ejus. Et erit cor fortium Id
mææ in die illa quasi cor mu
ris parturientis.

MS. A. (υ) λέγει (φ) ἀθῳουμένη οὐ μὴ ἀθῳωθῇς, ὅτι πίνων πίεσα (χ) κατάραν (ψ) εἰς τὸν αἰῶνα. (ω) Ἰδοὺ μικρὸν δέδωκα (α) ϗ εὐκατα φρόνητον (β) ὅτι ἐὰν ὑψώσεις (γ) νοσσιάν σου, (δ) κατοικήσῃ (ε) κα (ζ) εἰς τὸν τόπον Ἠθάμ, (η) ἐπιστήσατε· (θ) συμψηφισθῶσι (ι) (κ) ἐσείσθη (λ) ϗ κραυγή σου ἐν θαλάσσῃ ἠκούσθη.

Cap. 49. ΚΕΦ. λ'.
Vulg.Lat.

1 Τοῖς υἱοῖς Ἀμμὼν οὕτως εἶπε κύριος, Μὴ υἱοὶ οὐκ εἰσὶν ἐν Ἰσραὴλ, ἢ παραληψόμενος οὐκ ἔστιν (α) αὐτοῖς; διατί παρέλαβε Μελχὸλ τὴν Γαλαὰδ, ϗ ὁ λαὸς αὐτῶν ἐν πόλεσιν αὐτῶν (β) ἐνοικήσει; 2 Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, φησὶ κύριος, ϗ ἀκουτιῶ ἐπὶ Ῥαββὰθ θόρυβον (γ) πολέμων, ϗ ἔσονται εἰς ἄβατον ϗ εἰς ἀπώλειαν, ϗ (δ) βωμοὶ αὐτῆς ἐν πυρὶ κατακαυθήσονται, ϗ παραλήψεται Ἰσραὴλ τὴν ἀρχὴν αὐτοῦ.

CAP. XXX.
Filiis (a) Ammon sic a
Dominus; Nunquid fi
sunt in Israel? vel, (b)
cipiat hæreditate, non est
Cur hæreditate accepit (c) Mel-
chol ipsam Galaad, & popul
eorum in civitatibus eorum ha-
bitabit? Propterea ecce
veniunt, ait Dominus, &
tum faciam super (d) Rab
tumultum bellorum: &
in invium, & in perditionem
aræ ejus in igne combure
assumet Israel principatum

MS.A. (α) ἐν αὐτοῖς; διότι (β) ἐνοικεῖ; (γ) πολέμου, (δ) αἱ βω

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 ארי בסעדך מימרי אמר יי למפרקך ארי אעביד גמירא בכל עממיא דבדרתך לתמן
ברם עמך לא אעבד גמירא ואיתי עלך יסורין לאלפותך ברם בדין חסיך ושיצאה לא
12 אשיצנך: ארי כדנן אמר יי תקיף תבריך ממרעא מחתיך: לית דדאין דינך לרחמא
13 עליך אסו לא סליקת ליך: כל רחמיך אנשיוך משאל בשלמך לא תבעו ארי מחת
14 סנאה אלקתיך יסור אכזראין על דסגיאו חוביך תקיפו חטאיך: מה את מצוחא על
15 תבריך ממרעא מחתיך על דסגיאו חוביך תקיפו חטאיך עבדית אלין ליך: בכן כל
16 אנסיך יתאנסון וכל סנאיך כולהון בשביא יהכון ויהון עדיך לעדי וכל בוזיך אמסר
17 לבזא: ארי איתי אסו ליך וממחתיך אסיניך אמר יי ארי מטלטלתא קרו ליך ציון היא
18 תבע לית לה: כדנן אמר יי האנא מתיב גלות ארעיה דיעקב ועל קרוהי ארחם ותתבני
19 קרתא ירושלם באתרה ובית מקדשא כדחזי ליה ישתכלל: ויסגון בהון מעלי
20 תודתא וקל דמשבחין ואסגנון ולא יזערון ואתקיפנון ולא יהון חלשין: ויסגון בניהון
21 כדמלקדמין וכנשתהון קדמי תתקן ואסער בישתא על כל דחקיהון: ויתרבא
מלכיהון מנהון ומשיחיהון מביניהון יתגלי ואקרבנון ויתנהון לפלחני ארי מן הוא
22 דין דאתרעי לביה לאתקרבא לפלחני אמר יי: ותהון קדמי לעם ואנא אהוי לכון
23 לאלה: הא מזופיתא מן קדם יי ברגז נפקא ועלעול מתכנש על ריש רשיעין יחול:
24 לא יתוב תקוף רוגזא דיי עד דיעבד ועד דיקים מחשבת רעותיה בסוף יומיא
תסתכלון בה:

לא

1 בעדנא ההיא אמר יי אהוי לאלהא לכל זרעית ישראל ואנון יהון קדמי לעם:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quia in adjutorium tuum est Verbum meum, dicit Domin⁹, ut salvet te: fac am enim consummationem in omnib⁹ populis ad quos dispersi te. Veruntamen tecum non faciam consummationem; sed adducam super te ægrotationes, ut doceam te, *attamen* in judicio misericordiæ, & perdendo non te perdam. Quia hæc dicit Domin⁹: Fortis est confractio tua, gravis est plaga tua. Non est qui judicet causam tuam ut misereatur tui: medicina non est tua tibi. Omnes amici tui obliti sunt tui; rogare de pace tua non quæsierunt. Quia plaga inimici percussi te, castigatione crudelium; propterea quòd multiplicata sunt scelera tua, & invaluerunt peccata tua. Quid clamas ob contritionem tuam? quòd gravis sit plaga tua? pro eo quòd multiplicata sunt scelera tua, & invaluerunt peccata tua, feci hæc tibi. Propterea omnes qui te opprimunt, vi opprimentur; & omnes inimici tui in captivitatem ibunt; et erunt hi qui te deprædati sunt, in prædam; & omnes diripientes te tradam in direptionem. Quia adducam sanitatem tibi, & à plagis tuis sanabo te, dicit Dominus. Quia vagam vocaverunt te Sion, ipsa est quæ non habebat requirentem. Hæc dicit Dñs: Ecce ego reducam transmigrationem terræ Jacob, et civitatis ejus miserebor. Et ædificabitur civitas Jerusalem in loco suo, & domus sanctuarii, sicut decet eam, fundabitur. Et multiplicabuntur in eis offerentes confessionem, & vox cantantium: & multiplicabo eos, & non minuentur: & confortabo eos, & non erunt infirmi. Et *multiplicabuntur* filii eorum sicut à principio, & cœtus eorum coram me dirigetur. Et visitabo malum super omnes qui tribulant eos. Et inungetur rex eorum ex illis, & Christus eorum è medio eorum revelabitur; et appropinquare faciam eos ut discant cultum meum. Quoniam quis est iste qui vult *corde suo* accedere ad cultum meum, dicit Dominus? Et eritis coram me in populum, & ego ero vobis in Deum. Ecce increpatio à facie Dñi egrediens in ira, & procella collecta super caput impiorum residebit. Non avertetur ira furoris Domini, donec faciat & donec compleat cogitationes voluntatis suæ. In fine dierum intelligetis istud.

CAP. XXXI.

In tempore illo, dicit Dominus, ero in Deum omnibus cognationibus Israel, & ipsi erunt coram me in populum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܕܚܠ ܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܥܡܟ ܐܢܐ ܠܡܦܪܩܟ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. 11
ܡܛܠ ܕܐܥܒܕ ܓܡܘܪܐ ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܒܕܪܬܟ ܬܡܢ. ܒܟ ܕܝܢ ܠܐ ܐܥܒܕ ܓܡܘܪܐ.
ܐܠܐ ܐܪܕܝܟ ܒܕܝܢܐ. ܘܡܙܟܐ ܠܐ ܐܙܟܝܟ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܟܪܝܗܘ ܠܬܒܪܟܝ ܘܡܚܘܬܟܝ 12
ܡܚܘܠܬܐ. * ܠܝܬ ܕܕܐܢ ܕܝܢܟܝ. ܕܢܐܣܘܢ ܘܢܥܕܪܘܢ. * ܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܟܝ ܛܥܘܟܝ 13
ܘܒܥܘܟܝ ܠܟܝ. ܡܛܠ ܕܡܚܘܬܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ ܡܚܝܬܟܝ. ܘܡܪܕܘܬܐ ܐܟܙܪܝܬܐ. ܥܠ 14
ܕܣܓܝܘ ܚܛܗܝܟܝ ܘܥܫܢܘ ܥܘܠܝܟܝ ܕܠܐ ܬܬܘܒܝܢ. * ܡܢܐ ܡܩܥܝܐ ܐܢܬܝ ܥܠ ܬܒܪܟܝ. 15
ܟܪܝܗܘ ܟܐܒܟܝ. ܥܠ ܣܘܓܐܐ ܕܚܛܗܝܟܝ ܘܥܫܢܘ ܥܘܠܝܟܝ. ܥܒܕܬ ܠܟܝ ܗܠܝܢ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܟܠ ܐܟܠܝܟܝ ܢܬܐܟܠܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܟܝ. ܒܫܒܝܐ ܢܐܙܠܘܢ. 16
ܘܢܗܘܘܢ ܕܫܝܦܝܟܝ ܠܕܘܫܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܒܙܘܙܝܟܝ ܐܬܠ ܠܒܙܬܐ. * ܡܛܠ ܕܐܣܩ ܠܟܝ 17
ܐܘܪܟܐ. ܘܡܢ ܡܚܘܬܟܝ ܐܐܣܝܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܛܪܝܕܬܐ ܩܪܘܟܝ. ܨܗܝܘܢ ܗܝ
ܕܠܝܬ ܠܗ ܬܒܥܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܗܦܟ ܐܢܐ ܫܒܝܬܐ ܕܡܫܟܢܘܗܝ ܕܝܥܩܘܒ 18
ܘܡܩܝܡ ܐܢܐ ܠܗ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܥܠ ܡܫܟܢܘܗܝ ܐܪܚܡ. ܘܬܬܒܢܐ ܩܪܝܬܐ ܥܠ ܬܠܗ.
ܘܗܝܟܠܐ ܒܬܩܢܗ ܢܬܬܩܢ. * ܘܢܦܩܘܢ ܡܢܗܘܢ ܬܘܕܝܬܐ. ܘܩܠܐ ܕܡܫܒܚܢܐ. ܘܐܣܓܐ ܐܢܘܢ 19
ܘܠܐ ܢܒܨܪܘܢ. ܘܐܪܒܐ ܐܢܘܢ ܘܠܐ ܢܙܥܪܘܢ. * ܘܢܗܘܘܢ ܒܢܝܗܘܢ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܟܢܘܫܬܗܘܢ 20
ܩܕܡܝ ܬܬܩܢ. ܘܐܣܥܘܪ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܠܚܘܨܝܗܘܢ. * ܘܢܗܘܐ ܡܠܟܗܘܢ ܡܢܗܘܢ. 21
ܘܫܠܝܛܗܘܢ ܡܢ ܡܨܥܬܗܘܢ ܢܦܘܩ. ܘܐܩܪܒܝܘܗܝ ܘܢܬܩܪܒ ܠܘܬܝ. ܡܛܠ ܕܐܦܢܐ
ܠܒܗ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܬܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܟܘܢ ܠܐܠܗܐ. * ܗܐ ܥܠܥܠܗ 22 23
ܕܡܪܝܐ ܒܚܡܬܐ ܢܦܩܐ. ܥܠܥܠܐ ܡܬܓܘܪܐ. ܥܠ ܪܫܐ ܕܪܫܝܥܐ ܬܩܘܡ. * ܠܐ ܢܗܦܘܟ 24
ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܥܒܕ. ܘܥܕܡܐ ܕܢܩܝܡ ܬܪܥܝܬܐ ܕܠܒܗ. ܒܚܪܬܐ
ܕܝܘܡܬܐ ܬܣܬܟܠܘܢ ܒܗ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܐ * * ܒܙܒܢܐ ܗܘ ܐܡܪ 1
ܡܪܝܐ. ܐܗܘܐ ܠܐܠܗܐ ܠܟܠܗܝܢ ܫܪܒܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܗܢܘܢ ܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ.

Tu ergò ne timeto ſerve mi Jacob, inquit Dominus; quia tibi adſum ut liberem te, dicit Dñs. Nam exterminio utar in omnes gentes inter quas te diſperſi, in te autem non utar exterminio: caſtigabo te cum moderatione, at non ſinam te prorſus impunem. 11

Sic enim ait Dominus, Dolorifica eſt confractio tua, & vehemens percuſſio tua. 12

Non eſt qui cauſæ tuæ patrocinetur, qui te adjuvet, tibiq; medeatur. 13

Omnes amici tui oblivioni te tradiderunt, & animam tuam quærunt, quia plagâ inimici percuſſi te & pœnâ ſæviſſimâ, eò quòd multiplicatæ ſint culpæ tuæ, & gravia facta ſint ſcelera tua, ut non agas pœnitentiam. 14

Cur exclamas ob confractionem tuam? dolorificus eſt ſanè dolor tuus: ob multitudinem culparum tuarũ, & quia gravia facta ſunt crimina tua, hæc feci tibi. 15

Propterea omnes qui te devorant, devorabuntur; & omnes inimici tui in captivitatẽ abibunt: conculcantes te erunt conculcationi, & omnes diripientes te prædæ exponam. 16

Nam eliciam tibi medelam, & à plaga tua curabo te, dicit Domin⁹; etenim Depulſam te vocaverunt, Sionem illam cui non eſt vindex. 17

Ita dicit Dominus, Ecce reducturus ſum captivitatem tabernaculi Jacobi, & reſtituturus illud ut erat antea, & tabernaculorum ejus miſerebor: & reædificabitur civitas ſuper acervum ſuum, & templum decenter reparabitur. 18

Et prodibit ex eis gratiarum actio, & voces cantorum: & multiplicabo eos, ac non minuentur; magnificabo eos, & non decreſcent: 19

Erunt filii eorum quales antea, & eccleſia eorum in conſpectu meo perſiſtet: animadvertam in omnes oppreſſores eorum: 20

Et rex eorum ex ipſis erit, & princeps eorum è medio ipſorum prodibit: & admovebo eum, & accedet ad me; quia convertam cor ejus ad me, dicit Dominus: 21

Denique eritis mihi populus, & ego ero vobis Deus. 22

Ecce procella Domini cum furore proditura eſt, procella inquam, flammivoma: ſuper caput impiorum ſe ſiſtet. 23

Non avertetur æſtus furoris Domini, donec perficiat & donec eventu comprobet conſilium cordis ſui: in fine dierum animadvertetis illum. 24

CAP. XXXI.

Tempore illo, dicit Dñs, ero Deus omnibus familiis Iſraelis, & ipſi erunt mihi populus. 1

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لان هكذا يقول الرب * الذين لم يكن لهم ناموس ليشربوا يشربون كاسا * وانت ايها المزكية 12
لن تزكي * لاني اقسمت بذاتي يقول الرب انك تصيري لغير مسلك وللتعيير وللعنة في 13
وسطها * وجميع مدنهم يصيرون براري الي الابد * سمعت سماعا من الرب * وارسل ملايكه الي 14
الامم * اجتمعوا واحضروا اليها * قوموا للحرب * دفعتك صغيرا في الامم وحقيرا في الناس * لعبك 15 16
رسم لك * جفاوة قلبك * حللت اثقبة الصخور * اخذ قوة التل العالي * لانك رفعت عشك مثل
النسر * من هناك اهدمك * وتصير ادوم غير مسلوكة * وكل من يمر عليها يصفر * خسفا 17 18
مثل سدوم وعامورا وقريناتها قال الرب الضابط الكل * لا يجلس هناك انسان ولا ابن انسان *
* ها مثل اسد يصعد من وسط الاردن الي موضع ايثام * لاني اطردهم سريعا منها * فاقيموا شبانها 19
لان من مثلي انا * ومن ذا يقاومني * ومن هو الراعي الذي يقوم لوجهي * لاجل هذا 20
اسمعوا راي الرب الذي رواه على ادوم * وفكرته الذي تفكر بها على سكان تيمان * ان لم
تطبخ حقيرات الغنم * ان كان لم يصح عليهم في القفر محلاتهم * لان من صوت سقطهم تزلزلت 21
الارض * وسمعت صراخك في البحر * ها مثل نسر تعاين * وتمد يديها على حصونها ويكون قلب 22
اقوياء ادوم في ذلك اليوم مثل قلب امراة تطلق *

* الفصل الثلثون *

* في بني عمون *

* هكذا قال الرب * هل بنون ليس تكون في اسرايل * وليس فيهم وارث * لماذا اخذ ملكول 1
جلعاد * وشعبهم يسكن في المدن * لاجل هذا ها ايام تاتي قال الرب * واسمع على رباث قلق 2
الحرب * ويصيرون للقفر والهلاك * ويهلكهم حرق بالنار * وياخذ اسرايل بدايته *

Sic enim ait Dominus, Ii quos non erat legitimum bibere, biberunt calicem; ergò tu quæ teipſam juſtificas, nullo modo inſons eris. 12

Nam per meipſum juro dicit Dominus, te fore inviam, & opprobrio, atq; maledicto in medio ipſius; & omnes urbes eorum ſolitudines in æternum futuras. 13

Famam audivi à Domino, quin & angelos miſit ad gentes hiſce mandatis, *Congregamini, & convenite ad eam, ſtate ad pugnam.* 14

Dedi te minimam inter gentes, & abjectiſſimam inter homines: 15

Deriſio tua hoc *tibi deſtinavit,* & *duritia cordis tui: Inhabitavit foramina petrarum, occupavit fortitudinem collis ſublimis. Quoniam elevâſti nidum tuum ſicut aquila, inde te deſtruam:* 16

Et erit Idumæa impervia, & quicunque tranſierit prope illam, ſibilabit. 17

Obruetur ut Sodoma & Gomorrha & vicinæ iis urbes, *ait Dominus omnipotens; non habitabit illic homo neque filius hominis.* 18

Ecce ſicut leo aſcendet è medio Jordanis ad locum Etham; quia citò expellam eos ex ipſa: inſtituite ergò juvenes ejus. Nam quis mihi ſimilis eſt? quis mihi reſiſtat? aut quis eſt paſtor qui inſurgat adversùm me? 19

Propterea audite conſilium Domini, quod contra Idumæã decrevit, et cogitationem quam cogitavit adversùs incolas Themanis: mentiar *niſi coquendæ ſint tenuiſſimæ pecudum, niſi redigendæ ſint apud eos in ſolitudinem habitationes eorum.* 20

Nam præ ſonitu ruinæ eorum contremuit terra, & auditus eſt clamor tuus in mari. 21

Ecce velut aquila inſpiciet, & extendet manus ſuas in arces ejus; eritque cor fortiſſimorum Idumææ in die illa, ſicut cor mulieris dolores patientis. 22

Contra Ammonitas.

CAP. XXX.

Sic ait Dominus, An filii nulli ſunt in Iſraele, nulluſq; eſt in eis hæres? cur uſurpavit Melchol Galaadem, & populus eorum habitat in urbibus? 1

Idcirco ecce dies venient, ait Dominus, quibus efficiam ut audiatur ſuper Rabbath belli tumultus, & redigantur in ſolitudinem & exitium, templaque eorum igne comburantur, & obtineat Iſrael principatum ſuum. 2

ירמיה : לא

populus deſerto in gratiam Invenit :DOMINUS dixit Sic
2 כֹּה אָמַר יְהוָה מָצָא חֵן בַּמִּדְבָּר עָם
.Iſraelem ipſum *faciendum* quieſcere *ad eundo* , gladii *ſuperſtites*
שְׂרִידֵי חָרֶב הָלוֹךְ לְהַרְגִּיעוֹ יִשְׂרָאֵל׃
perpetua Charitate : Et .mihi apparuit DOMINUS *longinquo* A
3 מֵרָחוֹק יְהוָה נִרְאָה לִי וְאַהֲבַת עוֹלָם
,te ædificabo *Adhuc* .miſericordia te attraxi ideo , te dilexi
4 אֲהַבְתִּיךְ עַל־כֵּן מְשַׁכְתִּיךְ חָסֶד׃ עוֹד אֶבְנֵךְ
,tuis tympanis ornaberis Adhuc .Iſrael virgo ædificaberis &
וְנִבְנֵית בְּתוּלַת יִשְׂרָאֵל עוֹד תַּעְדִּי תֻפַּיִךְ
vineas plantabis Adhuc .ludentium choro in egredieris &
5 וְיָצָאת בִּמְחוֹל מְשַׂחֲקִים׃ עוֹד תִּטְּעִי כְרָמִים
.prophanabunt & , plantantes plantabunt : Someron montibus in
בְּהָרֵי שֹׁמְרוֹן נָטְעוּ נֹטְעִים וְחִלֵּלוּ׃
: Ephraim monte in cuſtodes *clamaverunt* dies eſt Quia
6 כִּי יֶשׁ־יוֹם קָרְאוּ נֹצְרִים בְּהַר אֶפְרָיִם
.noſtrum Deum DOMINUM ad Sijon aſcendamus & ,Surgite
קוּמוּ וְנַעֲלֶה צִיּוֹן אֶל־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ׃
exultate & , lætitia Jahacob *in Ovate* : Dominus dixit ſic Nam
7 כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה רָנּוּ לְיַעֲקֹב שִׂמְחָה וְצַהֲלוּ
Domine fac Salvum:dicite &,laudate ,facite auditum : gentium capite in
בְּרֹאשׁ הַגּוֹיִם הַשְׁמִיעוּ הַלְלוּ וְאִמְרוּ הוֹשַׁע יְהוָה
adducens ego Ecce .Iſrael reſiduum tuum populum
8 אֶת־עַמְּךָ אֵת שְׁאֵרִית יִשְׂרָאֵל׃ הִנְנִי מֵבִיא
: terræ lateribus de eos congregabo & , Aquilonis terra de eos
אֹתָם מֵאֶרֶץ צָפוֹן וְקִבַּצְתִּים מִיַּרְכְּתֵי־אָרֶץ
magnus cœtus : ſimul pariens & prægnans , claudus & cæcus eos inter
בָּם עִוֵּר וּפִסֵּחַ הָרָה וְיֹלֶדֶת יַחְדָּו קָהָל גָּדוֹל
miſericordiis cum & , venient fletu Cum .huc revertentur
9 יָשׁוּבוּ הֵנָּה׃ בִּבְכִי יָבֹאוּ וּבְתַחֲנוּנִים
via in aquarum torrentes ad eos faciã ambulare : eos adducere faciam
אוֹבִילֵם אוֹלִיכֵם אֶל־נַחֲלֵי מַיִם בְּדֶרֶךְ
Ephraim & , patrem in Iſraeli ero quia *:ea in* impingent non ,recta
יָשָׁר לֹא יִכָּשְׁלוּ בָּהּ כִּי־הָיִיתִי לְיִשְׂרָאֵל לְאָב וְאֶפְרַיִם
, gentes DOMINI verbum Audite *.ipſe* meus primogenitus
10 בְּכֹרִי הוּא׃ שִׁמְעוּ דְבַר־יְהוָה גּוֹיִם
, Iſrael *Spargens* : dicite & *: longè à* inſulis in annuntiate &
וְהַגִּידוּ בָאִיִּים מִמֶּרְחָק וְאִמְרוּ מְזָרֵה יִשְׂרָאֵל
.ſuum gregem paſtor ſicut eum cuſtodiet & ; eum congregabit
יְקַבְּצֶנּוּ וּשְׁמָרוֹ כְּרֹעֶה עֶדְרוֹ׃
manu de eum redemit & , Jahacob Dominus redemit Quoniam
11 כִּי־פָדָה יְהוָה אֶת־יַעֲקֹב וּגְאָלוֹ מִיַּד
confluent & , Sijon excelſo in *ovabunt* & , venient Et .eo *præ fortis*
12 חָזָק מִמֶּנּוּ׃ וּבָאוּ וְרִנְּנוּ בִמְרוֹם־צִיּוֹן וְנָהֲרוּ
ſuper & , *muſtum* ſuper & ,frumentum ſuper Domini bonitatem ad
אֶל־טוּב יְהוָה עַל־דָּגָן וְעַל־תִּירֹשׁ וְעַל־
eorum anima eritque , *bovis & pecoris* filios ſuper & ,*recens* oleum
יִצְהָר וְעַל־בְּנֵי־צֹאן וּבָקָר וְהָיְתָה נַפְשָׁם
.amplius *dolendum ad* addent non & , irriguus hortus quaſi
כְּגַן רָוֶה וְלֹא־יוֹסִיפוּ לְדַאֲבָה עוֹד׃
: ſimul ſenes & , juvenes & , choro in virgo lætabitur Tunc
13 אָז תִּשְׂמַח בְּתוּלָה בְּמָחוֹל וּבַחֻרִים וּזְקֵנִים יַחְדָּו
eos lætificabo &,eos conſolabor & ,gaudium in eorũ luctum convertam &
וְהָפַכְתִּי אֶבְלָם לְשָׂשׂוֹן וְנִחַמְתִּים וְשִׂמַּחְתִּים
.ſuo *mœrore* à
מִיגוֹנָם׃

Verſio VULG. LAT.

2 Hæc dicit Dominus ; Invenit
gratiam in deſerto populus, qui
remanſerat à gladio : vadet ad
3 requiem ſuam Iſrael. Longè
Dominꝰ apparuit mihi. Et in
charitate perpetua dilexi te: ideò
4 attraxi te, miſerans. Rurſúmque
ædificabo te, & ædificaberis, virgo
Iſrael : adhuc ornaberis tympanis
tuis, & egredieris in choro
5 ludentium. Adhuc plantabis
vineas in montibus Samariæ :
plantabunt plantantes, & donec
tempus veniat , non vindemiabunt :
6 Quia erit dies, in qua clamabunt
cuſtodes in monte Ephraim ;
Surgite , & aſcendamus
in Sion ad Dominum Deum
7 noſtrũ. Quia hæc dicit Dominꝰ ;
Exultate in lætitia Jacob , &
hinnite contra caput Gentium :
perſonate, & canite, & dicite ;
Salva, Domine, populum tuum,
8 reliquias Iſrael. Ecce ego adducam
eos de terra Aquilonis,
& congregabo eos ab extremis
terræ : inter quos erunt cæcus
& claudꝰ, prægnans & pariens
ſimul, cœtus magnus revertentium
9 huc. In fletu venient, &
in miſericordia reducam eos :
& adducam eos per torrentes
aquarum in via recta, & non
impingent in ea : quia factus
ſum Iſraeli pater, & Ephraim
10 primogenitus meus eſt. Audite
verbum Domini Gentes, & annuntiate
in inſulis quæ procul
ſunt, & dicite ; Qui diſperſit
Iſrael, congregabit eum : &
cuſtodiet eum ſicut paſtor gregem
11 ſuum. Redemit enim Dominus
Jacob, & liberavit eum
12 de manu potentioris. Et venient,
& laudabunt in monte
Sion : & confluent ad bona
Domini , ſuper frumento , &
vino, & oleo, & fœtu pecorum
& armentorum : eritque
anima eorum quaſi hortus irriguus ,
& ultrà non eſurient.
13 Tunc lætabitur virgo in choro,
juvenes & ſenes ſimul : & convertam
luctum eorum in gaudium ,
& conſolabor eos , &
lætificabo à dolore ſuo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Ἀλάλαξον Ἐσεβὼν, ὅτι (ε) ὤλετο Γαί·
κεκράξατε θυγατέρες Ῥαββὰθ, περιζώσασθε
σάκκοις (ζ) καὶ κόψασθε, ὅτι Μελχὸλ
βαδιεῖται ἐν ἀποικίᾳ, οἱ ἱερεῖς αὐτοῦ καὶ οἱ
4 ἄρχοντες αὐτοῦ ἅμα. (η) Τί ἀγαλλιᾶσθε ἐν
τοῖς πεδίοις Ἐνακείμ; (θ) θύγατερ ἰταμίας,
ἡ πεποιθυῖα (ι) ἐπὶ θησαυροῖς, ἡ λέ-
5 γουσα, Τίς εἰσελεύσεται ἐπ᾽ ἐμέ; Ἰδοὺ ἐ-
γὼ φέρω φόβον ἐπὶ σὲ, εἶπε κύριος, ἀπὸ
πάσης τῆς (κ) περιοίκου σου, καὶ διασπαρήσεσθε
ἕκαστος (λ) εἰς τὸ πρόσωπον αὐτοῦ, καὶ
οὐκ ἔστιν ὁ συνάγων.
28 Cap. 49. Vulg. Lat. ΤῊ ΚΗΔΑ'Ρ
ΤῊ ΒΑΣΙΛΙ'ΣΣΗ ΤΗ͂Σ ΑΥ'ΛΗ͂Σ,
ἫΝ ἘΠΑ'ΤΑΞΕ ΝΑΒΟΥΧΟΔΟΝΟ'-
ΣΟΡ (˜) ΒΑΣΙΛΕΥ'Σ ΒΑΒΥΛΩ͂ΝΟΣ, οὕ-
τως εἶπε κύριος, Ἀνάστητε, καὶ ἀνάβητε ἐπὶ
29 Κηδὰρ, καὶ πλήσατε τοὺς υἱοὺς Κεδέμ. Σκηνὰς
αὐτῶν, καὶ τὰ πρόβατα αὐτῶν λήψονται·
ἱμάτια αὐτῶν, καὶ πάντα τὰ σκεύη αὐτῶν, καὶ
καμήλους (μ) αὐτῶν λήψονται ἑαυτοῖς· καὶ
(ν) καλέσατε ἐπ᾽ αὐτοὺς ἀπώλειαν κυκλό-
30 θεν. Φεύγετε, λίαν (ξ) ἐμβαθύνατε εἰς κάθισιν,
καθήμενοι ἐν τῇ αὐλῇ, ὅτι ἐβουλεύσατο ἐφ᾽
ὑμᾶς βασιλεὺς Βαβυλῶνος βουλὴν, καὶ (ο)
31 ἐλογίσατο λογισμόν. Ἀνάστηθι, καὶ ἀνάβη-
θι (π) ἐπ᾽ ἔθνος εὐσταθοῦν, καθήμενον
εἰς ἀναψυχὴν, οἷς οὐκ εἰσὶ θύραι, (ρ) οὐ βά-
32 λανοι, οὐ μοχλοὶ, μόνοι καταλύουσι. Καὶ ἔ-
σονται (σ) κάμηλοι αὐτῶν εἰς προνομὴν,
καὶ πλῆθος κτηνῶν αὐτῶν εἰς ἀπώλειαν, καὶ
λικμήσω αὐτοὺς παντὶ πνεύματι (τ) κεκαρ-
μένους πρὸ προσώπου αὐτῶν, ἐκ παντὸς
(υ) πέραν αὐτῶν οἴσω τὴν τροπὴν αὐτῶν, εἶ-
33 πε κύριος. Καὶ ἔσται ἡ αὐλὴ διατριβὴ στρου-
θῶν, καὶ ἄβατος ἕως αἰῶνος, οὐ μὴ καθ-
ίσῃ ἐκεῖ ἄνθρωπος, καὶ οὐ μὴ κατοικήσῃ ἐκεῖ
υἱὸς ἀνθρώπου.
23 Cap. 49. Vulg. Lat. ΤῊ ΔΑΜΑ-
ΣΚΩ͂· Κατῃσχύνθη Ἡμὰθ, καὶ Ἀρφὰθ,
ὅτι ἤκουσαν ἀκοὴν πονηρὰν, ἐξέστησαν, (φ)
ἐθυμώθησαν, ἀναπαύσασθαι οὐ μὴ δύνωνται.
24 Ἐξελύθη Δαμασκὸς, ἀπεστράφη εἰς φυ-
25 γὴν, τρόμος ἐπελάβετο αὐτῆς. Πῶς οὐ-
χὶ (χ) ἐγκατέλιπεν πόλιν ἐμὴν, κώμην
26 ἠγάπησαν; Διατοῦτο πεσοῦνται νεανίσκοι
ἐν πλατείαις σου, καὶ πάντες οἱ ἄνδρες
οἱ πολεμισταί (ψ) σου πεσοῦνται, φησὶ κύ-
27 ριος. Καὶ καύσω πῦρ ἐν τείχει Δαμασκοῦ,
καὶ καταφάγεται ἄμφοδα υἱοῦ Ἄδερ.

Ulula Eſebon, quia periit
Gai : Clamate filiæ Rabbath, ac-
cingimini ſaccis, & (f) plan-
gite ; quia Melchol ibit in
tranſmigrationem, ſacerdotes
ejus, & principes ejus ſimul.
Quid (g) exultatis in campis
Enacim? filia impudentiæ, quæ
confidiſti in (h) theſauris, quæ
dicebas, Quis ingredietur ad
me? Ecce ego porto timorem ſu-
per te, ait Dominus, ab omni cir-
cuitu tuo : & diſpergemini u-
nuſquiſque in faciem ſuam, &
non eſt qui congreget.
(i) IPSI CEDAR
(k) Reginæ Aulæ, quam percuſſit
Nabuchodonoſor rex Babylonis,
dixit Dominus ; Surgite, & a-
ſcendite ſuper Cedar, & re-
plete filios (m) Cedem. Ta-
bernacula eorum, & oves eo-
rum tollent : veſtimenta eo-
rum, & omnia vaſa eorum,
& camelos eorum tollent ſi-
bi. Et vocate ſuper eos perditionem
undique. Fugite, valdè demer-
gite vos in ſeſſionem, qui ſeda-
tis in Aula: quoniam conſiliatus eſt
ſuper vos rex Babylonis conſili-
um, & cogitavit cogitationem.
Surge, & aſcende ſuper gentem
tranquillam ſedentem in refri-
gerio, quibus non ſunt portæ,
non feræ, non vectes : ſoli ha-
bitant. Et erunt cameli eorum in
direptionem, & multitudo jumen-
torũ eorũ in perditionẽ: & venti-
labo eos omni ſpiritui (o) attonſos
ante faciem ipſorum : ex omni
(p) termino eorum afferam re-
verſionem eorum, ait Dominus.
Et erit Aula commoratio ſtru-
thionum, & invia in ſeculum:
non ſedebit ibi homo : & non
habitabit ibi filius hominis.
(q) DAMASCO. Confu-
ſa eſt Emath, & Arphath, quia
audierunt auditum peſſimum:
obſtupuerunt, indignati ſunt,
quieſcere non poterunt. Diſſolu-
ta eſt Damaſcus: averſa eſt in
fugam : tremor apprehendit
eam. Quomodo non [illegible]
quit civitatem meam, pagum di-
lexerunt? Propter hoc cadent
juvenes in plateis tuis: & o-
mnes viri bellatores tui cadent,
ait Dominus ; Et ſuccendam i-
gnem in muro Damaſci ; & de-
vorabit bivia filii Ader.

MS. A. (ε) ὤλετο Καί· κεκράξατε (ζ) καὶ ἐπιλημπτεύεσθε καὶ κόψ
Μελχὸμ ὅτι ἐν ἀποικίᾳ βαδιεῖται, οἱ (η) Ὅτι ἀγαλλιάσῃ (θ) θυγάτ
τοῖς θησαυροῖς αὐτῆς, ἡ λέγουσα (κ) περιοίκου (λ) εἰς πρόσωπον αὐ
καὶ οὐκ ἔσται (˜) Ὁ ΒΑΣΙΛΕΥ'Σ (μ) ἑαυτῶν λήμψονται αὐτοῖς (ν) καλέσ
αὐτοὺς (ξ) ἐβαθύνατε εἰς κάθισιν, (ο) ἐλογίσατο ἐφ᾽ ὑμᾶς λογισ
(π) ἐπὶ (ρ) οὐδὲ (σ) οἱ κάμηλοι (τ) κεκαρμένους (υ) μέρους (φ) ἐθυμώθη-
σαν, ἀναπαύσασθαι (χ) ἐγκατέλειπον (ψ) σου, φησὶν κύριος.

תרגום יונתן Targum JOHATNAN.

2 כדנן אמר יי דיהב רחמין לעמא דנפק ממצרים ספיק צרכיהון במדברא כד הוו
3 מערקין מן קדם דקטלין בחרבא דבר במימריה לאשראה בית ניחא ישראל : אמרת
ירושלם מלקדמין יי אתגלי על אבהתנא נביא אמר להון הא רחמת עלמא רחמית
4 יתכון על כן דברית יתכון בטבון : עוד אקימנך ותתקימין כנשתא דישראל עוד
5 תתקנין בתקוניך ותפקין בסיעת משבחין : עוד תצבין כרמין בטורי שומרון צובו
6 שתלין ואחילו : ארי אית אריכות יומיא וסגי טובא דעתיד למיתי לצדיקיא דנטרו
אוריתי מלקדמין חולקהון בארעא דישראל דהוו מחמדין לשני נחמתא דאתין
7 דאמרין אימתי נקום ונסק לציון ונתחזי קדם יי אלהנא : ארי כדנן אמר יי שבחו דבית
יעקב בחדוא ודוצו בריש גלי לעיני כל עממיא בשרו שבחו ואמרו פריק יי ית עמיה ית
8 שארא דישראל : האנא מיתי להון מארע צפונא ואכנשנון מסיפי ארעא דהוו בהון
9 עורין וחגרין יסנין בהון מעדין וילדן כחדא במשרין סגיאן יתובון הלכא : במגלהון
כד הוו בכן גלו ובמתבהון מביני גלותהון ברחמין סגיאין אקרבנון אדברנון על
פצידי מיא באורח תקנא לא יתקלון בה ארי הוה מימרי לישראל כאב ואפרים חביב
10 הוא קדמי : קבילו פתגמא דיי עממיא וחוו בנגון מרחיק ואמרו מן דבדריה לישראל
11 יכנשניה ויטרניה כרעיא לעדריה : ארי פריק יי ית דבית יעקב ושזיבנון מיד דתקיפין
12 מנהון : וייתון וישבחון בטור בית מקדשא דאתבני בציון ויתפנקון בטובא דיהב
להון יי בעבורא ובחמרא ובמשחא ובני עאן ותורין ותהי נפשהון מליא תפנוקין
13 כגנת שקיא דמרויא ולא יוספון ליצפא עוד : בכן תחדין כנשתא דישראל כד בחנגין
ועולמין וסבין כחדא ואהפוך אבלהון לביע ואנחמנון ואחדנון מדוונהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dñs, qui dedit miſericordias populo, *qui egreſſus eſt* de Æg
neceſſaria tribuit eis in deſerto, quando fugiebant à facie eorum qui occ
bant gladio, duxit verbo ſuo,ut collocaret Iſraelẽ in loco quietis. Dixit
ſalem: Jam olim revelatus eſt Dñs patribus noſtris. Propheta dic eis: Ecce
lectione ſempiterna dilexi vos, ideo duxi vos in benignitate. Adhuc con
mabo te, & confirmaberis cœtus Iſrael : adhuc ornaberis ornamentis tu
egredieris cum cœtu canentium. Adhuc plantabis vineas in montibus Sa
riæ. Plantate plantantes, & publicate. Nam eſt longitudo dierum, & mu
bonum eventurum eſt juſtis qui ſervaverunt legem meam ab initio: pars eo
erit in terra Iſrael, qui deſiderabant annos conſolationis *venturos*, dicen
Quando ſurgemꝰ et aſcendemꝰ in Sion,& apparebimꝰ coram Dño Deo no
Quia hæc dicit Dñs: Laudate viri domꝰ Jacob in lætitia,& exultate capite mu
to in oculis omnium populorum: annuntiate,laudate, & dicite : Redemit D
populum ſuum, reliquias Iſrael. Ecce ego adducam eos de terra Aquilonis
congregabo eos à finibus terræ: qui cæci & claudi ſunt in eis,*ambulatur*
eis erunt prægnantes & parientes ſimul,in exercitibus magnis revertentur
In tranſmigratione ſua cùm flerent, migrârunt: at cùm reverſi fuerint de me
dio tranſmigrationis ſuæ,in miſerationibus multis appropinquare faciam
& adducam eos ad rivos aquarum, via recta, in qua non impingent: Q
fuit Verbum meum Iſraeli quaſi pater, & Ephraim dilectus eſt coram m
Suſcipite verbum Domini populi, & annuntiate in inſulis quæ longè ſu
dicite: Qui diſperſit Iſraelem congregabit eum, & cuſtodiet eum ſicut pa
gregem ſuum. Quia redemit Dominus viros domus Jacob, & liberavit eos
manu fortiorum eis. Et venient & laudabunt in *monte domus* ſanctuarii q
ædificabitur in Sion : & delectabuntur bono quod dedit eis Dominus, fr
mento & vino & oleo, & filiis ovium & boum : & erit anima eorum ple
delitiis ſicut hortus irriguus qui irrigatus eſt ; et non addent ut ſint ultra
liciti. Tunc lætabitur cœtus Iſrael ſicut in choris, et juvenes et ſenes ſim
et convertam luctum eorum in exultationem ; et conſolabor eos, et ex
bo eos à *mæſtitia ſua*.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܫܟܚ ܪܚܡܐ ܒܡܕܒܪܐ ܥܡܐ ܕܐܫܬܘܙܒ ܡܢ ܚܪܒܐ. ܐܙܠ ܠܫܒܝܐ 2
ܐܝܣܪܝܠ. * ܡܢ ܪܘܚܩܐ ܡܪܝܐ ܐܬܚܙܝ ܠܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܘܚܘܒܐ ܕܥܠܡܐ ܐܚܒܬܟܝ 3
ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܓܕܬܟܝ ܠܛܝܒܘܬܐ. * ܬܘܒ ܐܒܢܝܟܝ ܘܬܬܒܢܝܢ ܒܬܘܠܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. 4
ܬܘܒ ܬܬܨܒܬܝܢ ܒܬܦܐ. ܘܬܦܩܝܢ ܒܚܝܓܐ ܕܡܫܒܚܢܐ. * ܬܘܒ ܬܢܨܒܝܢ ܟܪܡܐ 5
ܒܛܘܪܐ ܕܫܡܪܝܢ. ܙܪܘܥ ܢܨܒܬܐ ܘܫܒܚܝ. * ܡܛܠ ܕܐܝܬܝܗ ܝܘܡܐ ܕܩܥܝܢ ܢܛܘܪܐ 6
ܒܛܘܪܐ ܕܐܦܪܝܡ ܘܐܡܪܝܢ. ܩܘܡܘ ܢܣܩ ܠܨܗܝܘܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. * ܡܛܠ 7
ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܫܒܚܘ ܕܒܝܬ ܝܥܩܘܒ ܒܚܕܘܬܐ. ܘܙܡܪܘ ܒܪܫ ܥܡܡܐ. ܐܫܡܥܘ
ܘܫܒܚܘ ܘܐܡܪܘ. ܦܪܘܩ ܡܪܝܐ ܠܥܡܟ ܫܪܟܢܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܠܗܘܢ 8
ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܐܟܢܫ ܐܢܘܢ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܐܦ ܚܓܝܪܐ ܘܣܡܝܐ ܕܐܝܬ
ܒܗܘܢ. ܘܒܛܢܬܐ ܘܝܠܕܬܐ ܐܟܚܕܐ. ܟܢܫܐ ܪܒܐ ܢܗܦܟܘܢ ܠܗܪܟܐ. * ܒܒܟܝܐ ܢܐܙܠܘܢ 9
ܘܒܬܟܫܦܬܐ ܢܬܘܢ. ܐܕܒܪ ܐܢܘܢ. ܥܠ ܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. ܒܐܘܪܚܐ ܬܪܝܨܬܐ. ܕܠܐ ܢܬܬܩܠܘܢ
ܒܗ. ܡܛܠ ܕܗܘܝܬ ܠܐܝܣܪܝܠ ܠܐܒܐ. ܘܐܦܪܝܡ ܗܘܐ ܒܘܟܪܝ. * ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ 10
ܕܡܪܝܐ ܥܡܡܐ. ܘܚܘܘ ܒܓܙܪܬܐ ܪܚܝܩܬܐ ܘܐܡܪܘ. ܡܢ ܕܒܕܪܗ ܠܐܝܣܪܝܠ ܢܟܢܫܝܘܗܝ.
ܘܢܛܪܝܘܗܝ. ܐܝܟ ܪܥܝܐ ܠܥܢܗ. * ܡܛܠ ܕܦܪܩܗ ܡܪܝܐ ܠܝܥܩܘܒ ܥܒܕܗ. 11
ܘܦܨܝܗ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܥܫܝܢ ܡܢܗ. * ܘܢܐܬܘܢ ܘܢܫܒܚܘܢ ܒܪܘܡܗ ܕܨܗܝܘܢ. ܘܢܬܒܣܡܘܢ 12
ܡܢ ܛܒܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܡܢ ܥܒܘܪܐ ܘܡܢ ܚܡܪܐ. ܘܡܢ ܡܫܚܐ. ܘܡܢ ܒܢܝ ܥܢܐ ܘܬܘܪܐ.
ܘܬܗܘܐ ܢܦܫܗܘܢ. ܐܝܟ ܓܢܬܐ ܪܘܝܬܐ. ܘܠܐ ܢܘܣܦܘܢ ܬܘܒ ܠܡܣܟܢܘ. * ܗܝܕܝܢ 13
ܬܚܕܐ ܒܬܘܠܬܐ ܒܚܕܘܬܐ. ܘܥܠܝܡܐ ܘܣܒܐ ܐܟܚܕܐ. ܘܐܗܦܘܟ ܐܒܠܗܘܢ ܠܚܕܘܬܐ.
ܘܐܒܝܐ ܐܢܘܢ. ܘܐܚܕܐ ܐܢܘܢ ܡܢ ܟܘܪܗܢܗܘܢ.

2 Sic ait Dominus, Nactus eſt clementiam in deſerto populus qui gladium evaſerat, abiit in captivitatem Iſrael. 3 Dominus à longinquo *tempore* apparuit mihi, dixítque mihi; Amore perpetuo dilexi te, ideò attraxi te ad gratiam. 4 Rurſum ædificabo te, & inſtauraberis virgo Iſraelis: rurſum ornamento decoraberis, & procedes cum choro cantorum: 5 Rurſum plantabis vineam in monte Samariæ. Conſere plantam, & cane; 6 Quia præſto eſt dies quo clamabunt cuſtodes in monte Aphremi, dicéntque; Surgite, aſcendamus in Sionem ad Dominum Deum noſtrum. 7 Nam ita dicit Dominus, Canite familia Jacobi cum lætitia, & exultate in fronte gentium: annuntiate, canite, ac dicite; Libera Domine populum tuum, reſiduum Iſraelis. 8 Ecce reducturus ſum eos de terra Aquilonari, & collecturus eos ab extremis terræ: tam claudi & cæci qui extant inter illos, quàm gravida & puerpera ſimul, magnâ catervâ huc revertentur. 9 Cùm fletu diſcedent, & cum deprecatione revertentur: ducam eos ſuper ſemitas aquarum, per vias planas in quibus non impingant: quia ſum Iſraeli pater, & Aphrem eſt primogenitus meus. 10 Audite ſermonem Domini, populi ejus, & indicate in inſulis remotis, ac dicite; Qui diſperſit Iſraelem, colliget eum, & defendet illum ut paſtor gregem ſuum. 11 Redemit enim Dominus Jacobum ſervum ſuum, & eripuit eum de manibus ejus qui ipſo potentior erat. 12 Venient itaque, & cantabunt in vertice Sionis, & oblectabuntur bonis Domini, frumento, vino, oleo, & fœtibus ovium atque boum: erítque anima eorum ſimilis horto irriguo, nec redigentur ampliùs in paupertatē. 13 Tunc geſtiet virgo lætitiâ, & adoleſcentes ac ſenes unà lætabuntur: vertam enim triſtitiam eorum in gaudium, & conſolabor atque exhilarabo eos ab ipſorum dolore:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هلل يا اسابون لان عاي هلك * اصرخن يا بنات ربات * اتزروا بالمسوح واندبوا على 3
ملحول * لانه يمضي في الجلوة * كهنته ورؤساؤه يهللون تهليلا في البقاع في اكيم * يا 4
ابنة القاسية المتوكلة على كنوزها * القايلة لي من يدخل الي * ها انا اجلب عليك 5
خوفا يقول الرب من جميع من حولك * ويتفرقون كل واحد على وجهه * ولا يكون
من يجمع *

Ulula O Heſebon, quia Ghai periit: clamate O filiæ Rabbath: accingimini ſaccis, & lamentamini Melcholem, quia abiturus eſt in captivitatem, ſacerdotes ejus & principes ejus ejulantes plorabunt in planitie in Acchim. 4 *O filia crudelis, quæ theſauris tuis freta dicis mihi, Quis ingredietur ad me?* 5 *Ecce ego allaturus ſum tibi metum, ait Dominus, ab omnibus adjacentibus tibi; ita ut diſpergantur quiſque ſeorſim, nec ſit qui congreget.*

* في قيدار ملكة الدار التي ضربها بختنصر ملك بابل *

Contra Cedar reginam Aulæ,
quam percuſſit Bochtonaſſar
rex Babelis.

* هكذا قال الرب * قوموا واصعدوا على قيدار * وكدروا بني كادام * ياخذون خيمهم وغنمهم 28
وثيابهم وانيتهم * وياخذون جمالهم لهم * وادعوا عليهم هلاكا من حولهم * فروا جدا 29
عمقوا جلسة ايها الجلوس في الدار * لان ملك بابل روى عليكم رايا * وفكر عليكم فكرا 30
* قم واصعد الى امة سكينة جالسة في الانتعاش * ليس لها ابواب ولا اغلاق ولا متاريس 31
يسكنون وحدهم * وتصير بقاياهم للنهب * وكثرة دوابهم للهلاك * واذريهم بكل 32
ريح مقرعي الرؤوس * قبل وجوههم من كل نواحيهم اجلب خجلهم قال الرب * وتصير 33
الدار ماوى النعام * وغير مسلوكة الى الدهر * لا يجلس هناك انسان * ولا يسكن هناك
ابن انسان *

28 *Sic dixit Dominus; Surgite, & aſcendite contra Cedarem, & multiplicate filios Kedemi.* 29 *Tollent eorum tentoria, pecudes, veſtes, ac vaſa; tollentque camelos eorum ſibi. Et proclamate contra eos cladem undequaque.* 30 *Fugite valdè, profundam petiſtis ſeſſionem O qui habitatis in Aula: quia rex Babelis conſilium decrevit contra vos, & cogitationem contra vos cogitavit,* dicens, 31 *Surge, & aſcende ad gentem tranquillam, proſpero ſtatu fruentem, portis, ſeris, vectibuſque carentem, ſolam habitantem:* 32 *Sintque reliquiæ eorum in prædam, & multitudo jumentorum eorum in perditionem: & diſpergam eos in omnem ventum porriginem capitibus gignentem: ante facies eorum ex omni parte afferam ignominiam eorum, dixit Dominus.* 33 *Et erit Aula receptus ſtruthionum, & invia in ſempiternum: non commorabitur illic homo, nec habitabit illic filius hominis.*

* الاصحاح العشرون *

* في دمشق *

Textus vigeſimus.

Contra Damaſcum.

* خزيت حماة وارفاد لانهما سمعا خبرا سوءا * ذهلا غضبا لانهما لا يستطيعان ان يسكنا * 23
* انحلت دمشق * رجعت الى خلف * اخذتها الرعدة * كيف * اليس تركت مدينتي واحببت 24
القرية * لاجل هذا يسقطون الشبان في شوارعك * وجميع رجالك المحاربين يسقطون قال الرب * 25
* واشعل نارا في سور دمشق * فتاكل دارات بن اذار * 26 27

23 *Pudefactæ ſunt Hamath & Arphad, quoniam audierunt nuntium infœlicem: obſtupuerunt, iratæ ſunt, quia requieſcere non poſſunt.* 24 *Conſternata eſt Damaſcus, terga dedit, tremor occupavit eam.* 25 *Quâ ratione? nonne dereliquit urbem meam, & pagum dilexit?* 26 *Propterea cadent juvenes in vicis tuis, & omnes viri tui bellatores cadent, ait Dominus:* 27 *Et ignem accendam in muro Damaſci, conſumetque regiones filii Ader*

ירמיה : לא

mea bonitate me⁹ popul⁹ &,pinguedine ſacerdotum animam inebriabo Et
14 וְרִוֵּיתִי נֶפֶשׁ הַכֹּהֲנִים דָּשֶׁן וְעַמִּי אֶת־טוּבִי
excelſo in Vox :Dominus dixit Sic .Dominus dixit ,ſaturabuntur
15 יִשְׂבָּעוּ נְאֻם־יְהוָה׃ כֹּה אָמַר יְהוָה קוֹל בְּרָמָה
,ſuos filios ſuper plorante Rachel,amaritudinũ fletus ,querimonia,eſt audita
נִשְׁמָע נְהִי בְּכִי תַמְרוּרִים רָחֵל מְבַכָּה עַל־בָּנֶיהָ
:Dominus dixit Sic .ipſe non quia ,ſuis filiis ſuper conſolari renuit
16 מֵאֲנָה לְהִנָּחֵם עַל־בָּנֶיהָ כִּי אֵינֶנּוּ׃ כֹּה אָמַר יְהוָה
merces eſt quia : lachryma à tuos oculos & ,fletu à tuam vocem Prohibe
מִנְעִי קוֹלֵךְ מִבֶּכִי וְעֵינַיִךְ מִדִּמְעָה כִּי יֵשׁ שָׂכָר
eſt Et .inimici terra de revertentur & ,Dominus ait , tuo operi
17 לִפְעֻלָּתֵךְ נְאֻם־יְהוָה וְשָׁבוּ מֵאֶרֶץ אוֹיֵב׃ וְיֵשׁ־
.ſuũ terminum ad filii revertentur &,Dominus ait ,tuo noviſſimo ſpes
תִּקְוָה לְאַחֲרִיתֵךְ נְאֻם־יְהוָה וְשָׁבוּ בָנִים לִגְבוּלָם׃
,ſum caſtigatus &,me Caſtigâſti :plangentem Ephraim audivi Audiendo
18 שָׁמוֹעַ שָׁמַעְתִּי אֶפְרַיִם מִתְנוֹדֵד יִסַּרְתַּנִי וָאִוָּסֵר
Dominus tu quia :convertar &,me fac converti : doctus non vitulus ut
כְּעֵגֶל לֹא לֻמָּד הֲשִׁבֵנִי וְאָשׁוּבָה כִּי אַתָּה יְהוָה
,mihi eſſe notum poſt & : me pœnituit,me converti poſt Nam .meus Deus
19 אֱלֹהָי׃ כִּי־אַחֲרֵי שׁוּבִי נִחַמְתִּי וְאַחֲרֵי הִוָּדְעִי
ſuſtinui quoniã ,erubui etiam &,ſum confuſus : femur ſuper percuſſi
סָפַקְתִּי עַל־יָרֵךְ בֹּשְׁתִּי וְגַם־נִכְלַמְתִּי כִּי נָשָׂאתִי
? Ephraim mihi pretioſus filius Nonne .mearum pueritiarum opprobrium
20 חֶרְפַּת נְעוּרָי׃ הֲבֵן יַקִּיר לִי אֶפְרַיִם
recordando,eo cum me loquendi ſufficientia ex quia ? deliciarum natus nonne
אִם יֶלֶד שַׁעֲשֻׁעִים כִּי־מִדֵּי דַבְּרִי בּוֹ זָכֹר
miſerendo , ei mea viſcera ſonuerunt idcirco : adhuc ejus recordabor
אֶזְכְּרֶנּוּ עוֹד עַל־כֵּן הָמוּ מֵעַי לוֹ רַחֵם
,altos cumulos tibi pone , titulos tibi Statue .Dominus ait,ej⁹ miſerebor
21 אֲרַחֲמֶנּוּ נְאֻם־יְהוָה׃ הַצִּיבִי לָךְ צִיֻּנִים שִׂמִי לָךְ תַּמְרוּרִים
, Iſrael virgo Revertere .ambulâſti viam ſtratam ad .tuũ cor pone
שִׁתִי לִבֵּךְ לַמְסִלָּה דֶּרֶךְ הָלָכְתִּי שׁוּבִי בְּתוּלַת יִשְׂרָאֵל
huc & illuc te vertes quo Uſque .iſtas tuas civitates ad revertere
22 שֻׁבִי אֶל־עָרַיִךְ אֵלֶּה׃ עַד־מָתַי תִּתְחַמָּקִין
Fœmina ,terra in novum Dominus creavit quia ? refractaria filia
הַבַּת הַשּׁוֹבֵבָה כִּי־בָרָא יְהוָה חֲדָשָׁה בָּאָרֶץ נְקֵבָה
Deus exercituum Dominus dixit Sic .virum circundabit
23 תְּסוֹבֵב גָּבֶר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי
, Jehudah terra in iſtud verbum dicent Adhuc : Iſrael
יִשְׂרָאֵל עוֹד יֹאמְרוּ אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה בְּאֶרֶץ יְהוּדָה
tibi benedicat ,eorum captivitatem me convertendo in ,ejus urbibus in &
וּבְעָרָיו בְּשׁוּבִי אֶת־שְׁבוּתָם יְבָרֶכְךָ
habitabunt Et .ſanctitatis mons , juſtitiæ habitaculum Dominus
24 יְהוָה נְוֵה־צֶדֶק הַר הַקֹּדֶשׁ׃ וְיָשְׁבוּ
proficiſcentur &,agricolæ , ſimul ejus civitates omnes & ,Jehudah ea in
בָהּ יְהוּדָה וְכָל־עָרָיו יַחְדָּו אִכָּרִים וְנָסְעוּ
animam omnem & , laſſam animam feci inebriare Quia .grege in
25 בַּעֵדֶר׃ כִּי הִרְוֵיתִי נֶפֶשׁ עֲיֵפָה וְכָל־נֶפֶשׁ
me⁹ ſomnus & ; vidi & ,ſum expergefactus hoc Propter .implevi dolentem
26 דָּאֲבָה מִלֵּאתִי׃ עַל־זֹאת הֱקִיצֹתִי וָאֶרְאֶה וּשְׁנָתִי
,Dominus dixit , venientes dies Ecce .mihi fuit dulcis
27 עָרְבָה לִּי׃ הִנֵּה יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה
,hominis ſemine ,Jehudah domum & , Iſrael domum ſeminabo &
וְזָרַעְתִּי אֶת־בֵּית יִשְׂרָאֵל וְאֶת־בֵּית יְהוּדָה זֶרַע אָדָם
.animalis ſemine &
וְזֶרַע בְּהֵמָה׃

Verſio VULG. LAT.

14 Et inebriabo animam ſacerdotum pinguedine : & populus meus bonis meis adimplebitur, 15 ait Dominus. Hæc dicit Dominus ; Vox in excelſo audita eſt lamentationis, luctus, & fletus Rachel plorantis filios ſuos, & nolentis conſolari ſuper eis, quia 16 non ſunt. Hæc dicit Dominus ; Quieſcat vox tua à ploratu, & oculi tui à lachrymis:quia eſt merces operi tuo, ait Dominus : & 17 revertentur de terra inimici. Et eſt ſpes noviſſimis tuis, ait Dominus : & revertentur filii ad 18 terminos ſuos. Audiens audivi Ephraim transmigrantem ; Caſtigâſti me,& eruditus ſum, quaſi juvenculus indomitus : converte me, & convertar : quia tu Domi- 19 nus Deus meus. Poſtquàm enim convertiſti me, egi pœnitentiam : & poſtquàm oſtendiſti mihi, percuſſi femur meum. Confuſus ſum, & erubui, quoniam ſuſtinui opprobrium adoleſcen- 20 tiæ meæ. Si filius honorabilis mihi Ephraim, ſi puer delicatus : quia ex quo locutus ſum de eo, adhuc recordabor ejus. Idcircò conturbata ſunt viſcera mea ſuper eum : miſerans miſerebor e- 21 jus, ait Dominus. Statue tibi ſpeculam, pone tibi amaritudines : dirige cor tuum in viam rectam, in qua ambulâſti : revertere virgo Iſrael, revertere ad 22 civitates tuas iſtas. Uſquequò deliciis diſſolvêris filia vaga ? quia creavit Dominus novum ſuper terram: FOEMINA CIRCUMDABIT VI- 23 RUM. Hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael ; Adhuc dicent verbum iſtud in terra Juda, & in urbibus ejus, cùm convertero captivitatem eorum:Benedicat tibi Dominus,pulchritu- 24 do juſtitiæ, mons ſanctus : Et habitabunt in eo Judas & omnes civitates ejus ſimul, agricolæ & 25 minantes greges. Quia inebriavi animam laſſam, & omnem a- 26 nimam eſurientem ſaturavi. Ideò quaſi de ſomno ſuſcitatus ſum : & vidi, & ſomnus meus dulcis 27 mihi. Ecce dies veniunt, dicit Dominus : & ſeminabo domum Iſrael & domum Juda ſemine hominum, & ſemine jumentorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

Cap. 48. ΚΕΦ. λα'.

1 Vulg.Lat. ΤΗ͂ ΜΩΑ΄Β οὕτως εἶπε κύριος, Οὐαὶ ἐπὶ Ναβαῦ, ὅτι ὤλετο, ἐλήφθη Καριαθὲμ, 2 ᾐσχύνθη (α) ἀμὰθ καὶ ἀγάθ. Οὐκ ἔστιν ἔτι ἰατρεία Μωὰβ, γαυρίαμα ἐν Ἐσεβὼν, ἐλογίσατο ἐπ' αὐτὴν κακά· ἐκόψαμεν αὐτὴν ἀπὸ ἔθνους, καὶ παῦσιν παύσεται. ὄπισθέν σου βαδιεῖται μάχαιρα, 3 Ὅτι φωνὴ κεκραγότων ἐξ Ὡρωναὶμ, (β) ὄλεθρον καὶ σύντριμμα μέγα. 4 Συνετρίβη Μωὰβ, ἀναγγείλατε εἰς Ζογόρα, 5 Ὅτι ἐπλήσθη (*) Ἀλὼθ ἐν κλαυθμῷ. ἀναβήσεται κλαίων ἐν ὁδῷ Ὡρωναὶμ, κραυγὴν συντρίμματος ἠκούσατε. 6 Φεύγετε καὶ σώσατε τὰς ψυχὰς (γ) ὑμῶν, καὶ ἔσεσθε ὥσπερ ὄνος 7 ἄγριος ἐν ἐρήμῳ. Ἐπειδὴ ἐπεποίθεις ἐν (δ) ὀχυρώματί σου, καὶ σὺ συλληφθήσῃ· καὶ ἐξελεύσεται Χαμὼς ἐν ἀποικίᾳ, καὶ οἱ ἱερεῖς 8 αὐτοῦ, καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτοῦ ἅμα. Καὶ ἥξει ὄλεθρος ἐπὶ πᾶσαν (ε) πόλιν, οὐ μὴ σωθῇ, καὶ ἀπολεῖται ὁ αὐλὼν, καὶ (ζ) ἐξολοθρευθήσεται 9 ἡ πεδινὴ, καθὼς εἶπε κύριος. Δότε (η) σημεῖα τῇ Μωὰβ, ὅτι ἁφῇ ἀφθήσεται, καὶ πᾶσαι αἱ πόλεις αὐτῆς εἰς ἄβατον ἔσονται (θ). πό- 10 θεν ἔνοικος αὐτῇ; Ἐπικατάρατος ὁ ποιῶν τὰ ἔργα κυρίου ἀμελῶς, ἐξαίρων μάχαιραν 11 αὐτοῦ ἀφ' αἵματος. Ἀνεπαύσατο Μωὰβ ἐκ παιδαρίου, καὶ πεποιθὼς ἦν ἐπὶ τῇ δόξῃ αὐτοῦ, οὐκ ἐνέχεεν ἐξ ἀγγείου εἰς ἀγγεῖον, καὶ εἰς ἀποικισμὸν οὐκ ᾤχετο· διὰ τοῦτο ἔστη γεῦμα αὐτοῦ ἐν αὐτῷ, καὶ ὀσμὴ αὐτοῦ οὐκ (ι) ἐξέλιπε. 12 Διὰ τοῦτο ἰδοὺ (κ) ἡμέραι αὐτοῦ ἔρχονται, φησὶ κύριος, καὶ ἀποστελῶ αὐτῷ κλίνοντας, καὶ κλινοῦσιν αὐτὸν, καὶ τὰ σκεύη αὐτοῦ λεπτυνοῦσι, καὶ 13 τὰ κέρατα αὐτοῦ συγκόψουσι. Καὶ καταισχυνθήσεται Μωὰβ ἀπὸ Χαμὼς, ὥσπερ (λ) κατῃσχύνθη οἶκος Ἰσραὴλ ἀπὸ Βαιθὴλ ἐλπί- 14 δος αὐτῶν πεποιθότες ἐπ' αὐτοῖς. Πῶς ἐρεῖτε, Ἰσχυροί ἐσμεν, καὶ ἄνθρωπος ἰσχύων 15 εἰς τὰ πολεμικά; Ὤλετο Μωὰβ πόλις αὐτοῦ, καὶ ἐκλεκτοὶ νεανίσκοι αὐτοῦ κατέβησαν εἰς 16 σφαγήν. Ἐγγὺς ἡμέρα Μωὰβ ἐλθεῖν, καὶ 17 πονηρία αὐτοῦ ταχεῖα σφόδρα. Κινήσατε (μ) αὐτῷ πάντες κυκλόθεν αὐτοῦ, πάντες εἰδότες ὄνομα αὐτοῦ· εἴπατε, Πῶς συνετρίβη βακτηρία εὐκλεὴς, ῥάβδος μεγαλώματος; 18 Κατάβηθι ἀπὸ δόξης, καὶ κάθισον ἐν ὑγρασίᾳ καθημένη (ν). Δαιβὼν ἐκτριβήσεται, ὅτι ὤλετο Μωὰβ, ἀνέβη εἰς σὲ λυμαινόμενος (ξ) ὀχύρωμά σου.

CAP. XXXI.

AD Moab ſic dixit Do-
minus ; Væ ſuper Nabau, qu
periit: capta eſt Cariathaim: Con-
fuſa eſt (b) Amath, & Aga
Non eſt ultrà (c) medicamen Mo-
ab, exultatio in Eſebon: co
tavit ſuper eam mala:
dimus eam de gente : &
quieſcet. Poſt te vadet
Quia vox clamantium ex O
nim . perditio & contritio ma-
gna. Contrita eſt Moab : annun-
tiate in (f) Zogoram: Quia
pleta eſt Aloth in pl
du plorans in via Oronaim : cla-
morem contritionis (g) audiſtis.
Fugite, & ſalvate animas ve-
ſtras: & eritis quaſi aſinus agre-
ſtis in deſerto. Quoniam confi-
ſti in (h) munitione tua, &
capieris: & egredietur Chamos
in transmigrationem, & ſacerdo-
tes ejus, & principes ejus ſi
Et veniet vaſtatio ſuper omnem
civitatem: (i) non ſalvabitur
peribit vallis, & exterminabitur
campeſtris ſicut dixit Dominus.
Date (k) ſigna Moab; quia
tangetur : & omnes civitates e-
jus in invium erunt. (l) Unde ha-
bitator ei? Maledictus, qui
opera Domini negligenter,
ſubtrahit gladium ſuũ à ſangui-
ne. Quievit Moab à pueritia,
fidens erat ſuper gloria ſua,
effundebat de vaſe in vas, &
transmigrationem non abiit:
manſit guſtus ej⁹ in ipſo: &
ejus non defecit. Propterea
dies ejus veniunt, ait Dominus:
mittam ei (n) inclinantes, &
nent eũ, & vaſa ejus commin-
ent, & (o) cornua ejus con
Et confundetur Moab à Cha
ſicut confuſa eſt domus I
Bethel ſpe (p) ſuâ. Fi
pſi, Quomodo dicetis: F
ſumus, & ho
lica? Periit Moab civitas
electi juvenes ejus d
in (q) occiſionem. Prope
Moab ad veniendum : &
tia ejus velox valde.
vete ei omnes, qui in circu
jus, omnes ſcientes nomen
cite; Quomodo contrit⁹ eſt
lus glorioſus, virga mag
tiæ? Deſcende de gloria
de in humilitate (r) ſedens
bon exteretur: quia periit M
aſcendit ad te vaſtans munitionem

MS.A. (α) ἀμὰθ τὸ κεφάλαιωμα, καὶ ἡττήθη. Καὶ γὰρ οὐκ ἔστιν ἰατρεία ἐν Μωὰβ, ἀγαυρίαμα (β) ὄλεθρος (*) Ἀλαὼθ (γ) (δ) ὀχυρώμασίν σου καὶ συλλημφθήσῃ· (ε) πόλιν, καὶ πόλεις οὐ (ζ) ἐξολοθρευθήσεται (η) σημεῖον τῷ Μωὰβ, ὅτι ἁφῇ ἀναφθήσεται, (θ) ἀπὸ των αὐτάς. Ἐπικατάρατος (ι) ἐκλείπει. (κ) ἡμέραι ἔρχονται, (λ) κατῃσχύνθη ὁ οἶκος (μ) αὐτὸν (ν) θυγάτηρ Δαιβὼν, ἐκτρίβητε, (ξ)

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ואשבע נפש כהניא תפנוקין ועמי בית ישראל ית טובי דיהבית להון ישבעון אמר יי׃
15 כדנן אמר יי קלא ברום עלמא אשתמע בית ישראל דבכן ומתאנחן בתר ירמיה נביא
כד שלח יתיה נבוזר אדן רב קטוליא מרמתא אליא ודבכן במרר ירושלם מבכיא על
16 בנהא מסרבא לאתנחמא על בנהא ארי גלו׃ כדנן אמר יי מנעי קליך מלמבכי ועיניך
מלשגרא דמען ארי אית אגר לעובדי אבהתך צדיקיא אמר יי ויתובון מארע בעלי
17 18 דבביהון׃ ואית סבר לסופיך אמר יי ויתובון בניא לתחומהון׃ שמיע וגלי קדמי בית
ישראל דבכן ומתאנחין על דאטלטלו אמרין איתיתא עלן יסורין ולא אלפנא כעגל
19 לא מליף ניר כדו אתיבנא לפולחנך ונתוב ארי את יי אלהנא׃ ארי כד אנחנא תיבין
לאוריתא מתנחם עלנא וכדו דאתגלי לנא טפחנא על ירכנא בהיתנא ואף אתכנענא
20 ארי קבלנא חסודי חובנא דמלקדמין׃ הכבר חביב קדמי ישראל הלא רבי רחים הוא
ארי בזמן דמשוי פתגמי אוריתי על לביה למעבדהון מדכר דכרנא לאוטבא ליה
21 עוד על כן אתגוללו רחמי עליהון רחמא ארחם עליהון אמר יי׃ כנשתא
דישראל אדכרי ליך עובדי אבהתיך תקניא שפוכי רתחנונין במרר שואי לביך
אסתכלי בעובדין דעבדת אם תקנין דכן גלית לאורח רחיקא כדו תובו כנשתא
22 דישראל ותתובין לקרוך אלין׃ עד אימתי את מתחסנא למתב כנשתא דסגיאין
23 תיובתהא ארי הא יי ברי חדתא בארעא ועמא בית ישראל יתנהון לאוריתא׃ כדנן
אמר יי צבאות אלהא דישראל עוד יימרון ית פתגמא הדין בארעא דבית יהודה
24 ובקרוהי כד אתיב ית גלותהון יברכנך יי מדור קושטיה טורא קדישא׃ ויתבון בה
25 דבית יהודה וכל קרויהון כחדא אכרין ודנטלין בסיען׃ ארי שבעית נפש משלהיא
26 וכל נפש יצפא מליתי כל טוב׃ אמר נביא על דא בשורתא דיומי נחמתא דעתידין
27 למיתי אתערית וחזית תבית דמכית ושנתי הנאתני׃ הא יומיא אתן אמר יי ואקים ית
דבית ישראל וית דבית יהודה אסגנון באנשא ואצלחנון בבעירא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſatiabo animam ſacerdotum deliciis, & populus meus, domus Iſrael,bo
meo quod dedero eis,ſatiabitur,dicit Dñs. Hæc dicit Dominus: Vox in ex
ſo mundi audita eſt,domus Iſrael flentis & gementis poſt Jeremiam pro
tam, quando miſit eum Nabuzaradan princeps occidentium ex Ra
lamentatio & plorantes ob amaritudinem ; Jeruſalem plorat propter fili-
os, & renuit conſolari ſuper filiis ſuis,quia migraverunt. Hæc dicit Domi
Prohibe vocem tuam à fletu, & oculos tuos, ne deducant lachrymas, quia
merces operibus patrum tuorum juſtorum, dicit Dominus : & revertentur
terra inimicorum ſuorum. Et eſt ſpes fini tuo, dicit Dominus, & revertentur
filii ad terminos ſuos. Auditum & manifeſtum eſt coram me quòd domus
rael plorat & gemit pro eo quòd transmigraverunt. Dicit enim: Induxiſti
per nos correptiones; nec edocti ſumus,quaſi vitulus non aſſuetus jugo. N
autem converte nos ad cultum tuum, & convertemur : quia tu es Domi
Deus noſter. Quando enim nos redim⁹ ad legem, conſolationem accipim
nunc cùm notum fuit nobis , percuſſimus femur noſtrum, confuſi ſumus
rubore ſuffuſi ; quia recepimus opprobrium peccatorum noſtrorum,
principio ſunt. Ecce ſicut fili⁹ dilect⁹ coram me eſt Iſrael; utique puer
bilis eſt. Quo enim tempore pono verba legis meæ in corde ejus ut fac
recordando recordor ut bene faciam ei adhuc: propterea commota ſunt
ſcera mea ſuper eos,miſerans miſerebor eorum, dicit Dominus. Cœt⁹ Iſ
recordare tibi operum patrum tuorum rectorum, effunde preces, in ama
dine pone cor tuum: contemplare opera quæ feciſti an recta ſint, cùm
migraveris in viam longinquã: nunc autem convertere cœt⁹ Iſrael ad leg
reverteris ad civitates tuas has. Quouſq; tu te obfirmas quò min⁹ redeas
cuj⁹ averſiones ſunt multæ ? Quia ecce creavit Domin⁹ novum in terra
popul⁹ dom⁹ Iſrael incumbet Legi. Hæc dicit Domin⁹ exercituum De
el : Adhuc dicent verbum iſtud in terra dom⁹ Juda, & in civitatib⁹ ej
reduxero captivitatem eorum : Benedicat tibi Domin⁹ habitaculum ve
ej⁹ mons ſancte. Et habitabunt in ea viri dom⁹ Juda, & in omnib⁹ civitati
ſimul agricolæ, & qui proficiſcuntur cum gregib⁹. Quia ſatiabo anima
lam, & omnem animam ſolicitam implebo omni bono. Dixit propheta
pter hanc annuntiationem dierum conſolationis qui venturi ſunt, ſuſcita
& vidi ; iterum dormivi, & ſomnium meum profuit mihi. Ecce dies ve
dicit Domin⁹, & ſuſcitabo domum Iſrael & domum Juda : multiplica
hominibus, & proſperabo eos pecoribus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܪܘܐ ܢܦܫܐ ܕܟܗܢܐ ܕܘܫܢܐ. ܘܥܡܝ ܡܢ ܛܘܒܝ ܢܣܒܥܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ 14
ܡܪܝܐ. ܩܠܐ ܒܪܡܬܐ ܐܫܬܡܥ. ܐܠܝܐ ܘܒܟܬܐ ܡܪܝܪܬܐ. ܪܚܝܠ ܒܟܝܐ ܥܠ ܒܢܝܗ. ܘܠܐ 15
ܨܒܝܐ ܠܡܬܒܝܐܘ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܐܢܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܟܠܝ ܩܠܟܝ ܡܢ ܒܟܝܐ 16
ܘܥܝܢܝܟܝ ܡܢ ܕܡܥܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܐܓܪܐ ܠܥܡܠܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܢܗܦܟܘܢ ܡܢ
ܐܪܥܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ. * ܘܐܝܬ ܣܒܪܐ ܠܚܪܬܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܢܗܦܟܘܢ ܒܢܝܐ ܠܬܚܘܡܗܘܢ. 17
* ܡܫܡܥ ܫܡܥܬ ܠܐܦܪܝܡ ܕܐܠܐ. ܘܐܡܪ. ܪܕܝܬܢܝ ܡܪܝܐ. ܘܐܬܪܕܝܬ. ܐܝܟ ܥܓܠܐ ܗܘܝܬ ܠܐ 18
ܡܠܦܐ. ܐܦܢܝܢܝ ܘܐܬܦܢܐ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܒܬܪ ܕܬܒܬ 19
ܐܬܒܝܐܬ. ܘܡܢ ܒܬܪ ܕܝܕܥܬ ܐܬܬܢܝܚܬ. ܒܗܬܬ ܘܐܦ ܐܬܟܠܡܬ. ܡܛܠ ܕܩܒܠܬ ܚܣܕܐ
ܕܛܠܝܘܬܝ. * ܒܪܐ ܗܘ ܠܝ ܚܒܝܒܐ ܐܦܪܝܡ. ܘܝܠܝܕܐ ܡܚܒܒܐ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܕܡܡܠܠ ܐܢܐ 20
ܥܡܗ. ܡܥܗܕ ܐܢܐ ܠܗ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܘܘ ܪܓܫܘ ܡܥܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܐܪܚܡ ܥܠܘܗܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
* ܐܩܝܡܝ ܠܟܝ ܐܬܐ ܘܬܒܝ ܒܡܕܒܪܐ. ܗܒܝ ܠܒܟܝ ܠܐܘܪܚܐ ܬܪܝܨܬܐ. ܘܗܦܘܟܝ ܒܬܘܠܬܐ 21
ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܬܒܝ ܒܩܘܪܝܟܝ ܗܠܝܢ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܬܦܠܓܐ ܐܢܬܝ 22
ܒܪܬܐ ܡܗܦܟܬܐ. ܡܛܠ ܕܒܪܐ ܡܪܝܐ ܚܕܬܐ ܒܐܪܥܐ. ܢܩܒܬܐ ܬܚܕܪ ܠܓܒܪܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ 23
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܟܝܠ ܢܐܡܪܘܢ ܡܠܬܐ ܗܕܐ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ
ܘܒܩܘܪܝܗ. ܡܐ ܕܐܗܦܟ ܐܢܐ ܫܒܝܬܗܘܢ. ܢܒܪܟܟ ܡܪܝܐ ܕܝܪܐ ܕܙܕܝܩܐ ܛܘܪܐ
ܩܕܝܫܐ. * ܘܢܬܒܘܢ ܒܗ ܝܗܘܕܐ ܘܟܠܗܘܢ ܩܘܪܝܗ ܐܟܚܕܐ. ܐܟܪܐ ܘܪܥܝܐ ܕܥܢܐ. 24
* ܡܛܠ ܕܐܪܘܝܬ ܢܦܫܐ ܕܨܗܝܐ. ܘܟܠ ܢܦܫܐ ܕܟܦܢܐ ܣܒܥܬ. * ܡܛܠ ܗܢܐ 25 26
ܐܬܬܥܝܪܬ ܘܚܙܝܬ. ܘܫܢܬܝ ܒܣܝܡܐ ܠܝ. * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ 27
ܡܪܝܐ. ܘܐܙܪܘܥ ܠܒܝܬ ܕܐܝܣܪܝܠ ܘܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. ܙܪܥܐ ܕܒܢܝܢܫܐ
ܘܙܪܥܐ ܕܒܥܝܪܐ.

Animam ſacerdotum ſuavitate inebriabo, & 14
populus meus jucunditate meâ ſaturabuntur,
ait Dominus. Sic dicit Dominus, Vox in 15
Rama audita eſt ejulatûs & fletûs amariſſi-
mi : Rahel deflet filios ſuos, nec vult conſo-
lationem admittere, quia non adſunt. Sic 16
dicit Dominus, Cohibe vocem tuam à fletu,
& oculos tuos à lachrymis; quoniam erit mer-
ces lachrymis tuis, ait Dominus, & reverten-
tur è terra inimicorum : Eritque ſpes tan- 17
dem tibi, & revertentur filii ad terminum
ſuum. Planè audio Aphremum ejulantem 18
ac dicentem, Caſtigâſti me Domine, & cor-
rexi me ; eram ut vitulus indomitus. Con-
verte me, & convertar ; quia tu es Dominus
Deus meus. Nam poſtquam converti me, 19
conſolationem ſenſi ; & poſtquam cognovi,
quievi : pudore ſum atque ignominiâ ſuffu-
ſus, quòd pueritiæ meæ turpitudine ſim affe-
ctus. Filius eſt mihi charus Aphrem, & 20
natus dilectus ; nam eodem tempore quo
contra eum loquor, recordor ipſius : idcircò
viſcera mea ſunt erga ipſum *commota*, &
miſerebor ejus, dicit Dominus. Erige tibi 21
vexillum, & habita in deſerto : adverte ani-
mum tuum ad viam rectam : revertere virgo
Iſraelis, dicit Dominus, & habita in civita-
tibus tuis iſtis. Quouſque dubia eris filia 22
averſa ? nam patraturus eſt Dominus rem no-
vam ſuper terram ; Fœmina amplectetur vi-
rum. Sic ait Dominus potentiſſimus Deus 23
Iſraelis, Deinceps dicturi ſunt ſermonem
hunc in terra Judæ & in civitatibus ejus,
quum reduxero captivos eorum ; Benedicat
tibi Dominus O habitaculum juſtorum, mons
ſacroſancte : Et habitent in te Juda & o- 24
mnes civitates ejus ſimul, tam agricolæ
quàm paſtores gregum. Etenim inebriabo 25
animam ſitientem, & omnem animam eſuri-
entem ſaturabo. Propter hoc evigilavi & 26
vidi, & ſomnus meus jucundus fuit mihi.
Ecce dies venturi ſunt, dicit Dominus ; qui- 27
bus ſeminabo Iſraelitis & Judæis ſemen ho-
minum & ſemen jumentorum :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الحادي والثلثون *

* في مواب *

1 * هكذا قال الرب * ويل على نابو لانها هلكت * اخذت كاريانام * خزي اماث وعاث * ليس يكون 2
لمواب دواء بعد * السماحة في ساوون * صبوا عليهم شرورا * قطعناها من الامم ولا تستريح راحة *
3 * السيف يعدو لان صوت الصارخين من جبل نامان * هلاك وانكسار عظيم * كسرت مواب * 4
اخبروا في زوغورا * لان حصرون امتلات * بالبكاء يصعد الباكي في طريق حرنيم * سمعتم 5
6 صراخ الكسر * اهربوا وخلصوا نفوسكم * وتصيرون مثل الحمار الوحشي في البرية * من اجل 7
انك وثقت بحصونك فلم تؤخذي * ويخرج خاموس في السبي * وكهنته ورؤساؤه معا * ويأتي 8
الهلاك على كل الارض ولا تخلص * ويهلك الوادي ويستاصل الوادي قال الرب * اعطوا 9
علامة لمواب * لانها باللمس تشتعل * وجميع مدنها تصير للهلاك من سكانها * ملعون من 10
يصنع اعمال الرب بكسل * الرافع سيفه عن الدم * استراح مواب منذ صباه * وكان متوكلا 11
على شرفه * ولم يفرغ من اناء الى اناء * ولم يمض الى السبي * لاجل هذا ثبت ذوقه فيه * ورائحته
لم تفن * لاجل هذا ها ايام تاتي قال الرب * وارسل له حكاما يدينونه * ويسحقون انيته 12
ويقطعون قرونه * ويخزى مواب من خاموس * كما خزي بيت اسرائيل من خاموس رجاهم اذ 13
14 توكلوا عليه * كيف تقولون * نحن اقوياء وانسان قوي للمحاربات * هلكت مواب مدينته * 15
16 وشبانه المختارون نزلوا للذبح * الشر قريب ليأتي مواب * وشرور مسرعة جدا * حركوه جميعا 17
18 من حوله * جميعا ادعوا اسمه * وقولوا انكسر قضيب الفخر عصا العظمة * انزلي
من الشرف * واجلسي في الرطوبة يا جالسة دابون * لان مواب هلكت * صعد عليك
مفسد حصنك *

CAP. XXXI.

Contra Moab.

Ita dicit Dominus; Væ Nabao, quia per- 1
iit : capta eſt Cariatham, erubuit Amath
& Gath. Non eſt ampliùs medicina Mo- 2
abo, neque *inſolentia in Eſcone : fuderunt*
ſuper eos mala : excidimus eam de gen-
tibus, nec ullâ fruetur quiete. Gladius 3
curret, quia vox clamantium auditur *è*
monte Neman, Clades, & contritio ma- 4
gna: contrita eſt Moab: annuntiate in Zo-
gora, Quòd Eſſeron impleta eſt, cum 5
ploratu aſcendit plorabundus per viam
Hornim : audîſtis clamorem contritionis.
Fugite, & voſipſos eripite, & eritis ut 6
aſinus ſylveſtris in deſerto. Quia confiſa 7
es arcibus tuis, an non capieris ? imò
egredietur Chamos in captivitatem, unà
cum ſacerdotibus & principibus ſuis : Et 8
veniet exitium ſuper univerſam terram,
nec evadet : & peribit vallis, & exter-
minabitur convallis, ait Dominus. Date 9
ſignum Moabo, quòd tactu flagrabit, & 10
omnes urbes ejus jacturam patientur ci-
vium ſuorum. Maledictus qui fecerit
opera Domini oſcitanter, quique ſubtra-
xerit gladium ſuum à ſanguine. Tranquil- 11
lus fuit Moab à pueritia ſua, eratque
fretus nobilitate ſuâ, non effuderat è vaſe
in vas, neq; in captivitatem exierat: pro-
pterea manet ſapor ejus in ipſo, & odor
ipſius non defecit. Hac de re ecce dies 12
venturi ſunt, dixit Dominus, quum mit-
tam ei judices, qui condemnabunt eum,
vaſa ejus comminuent, & reſecabunt cor-
nua ejus. Et erubeſcet Moab propter Cha- 13
moſum, quemadmodum erubuit domus
Iſraelis propter Chamoſum ſpem ſuam,
quando confiſi ſunt ei. Quomodo dicitis, 14
Nos ſtrenui ſumus & homo fortis ad
certamina ? Periit Moab urbs ejus, & 15
electi juvenes ejus mactatione corruerunt:
Malum brevi adveniet Moabo, & miſe- 16
riæ ejus quamcitiſſimæ ſunt. Concutite 17
eum omnes undique, omnes explodite no-
men ejus : dicite, Fracta eſt virga gloriæ,
baculus magnificentiæ. Deſcende ab al- 18
titudine, & ſede in humiditate O habi-
tatrix Debonis quia Moab periit, aſcen-
dit contra te arcis tuæ vaſtator.

ירמיה : לא

,diruendũ ad &,evellendũ ad eos ſuper fui *vigil* quemadmodum erit Et
28 והיה כאשר שקדתי עליהם לנתוש ולנתוץ
ero *pervigil* ſic ,malefaciendum ad & ,perdendum ad & ,*deſtruendum* ad &
ולהרס ולהאביד ולהרע כן אשקד
diebus In .Dominus dixit ,plantandum ad &,ædificandum ad eos ſuper
29 עליהם לבנות ולנטוע נאם יהוה: בימים
dentes & ,acerbam uvam comederunt Patres : ultrà dicent non illis
ההם לא־יאמרו עוד אבות אכלו בסר ושני
.morietur *iniquitate ſua in* unuſquiſque *Quinimo* .obſtupuerunt filiorum
30 בנים תקהינה: כי אם־איש בעונו ימות
.*ejus* dentes obſtupeſcent , acerbam uvam *comedentis* hominis Omnis
כל־האדם האכל הבסר תקהינה שניו:
domo cum *excidam* & , DOMINUS dixit , *venientes* dies Ecce
31 הנה ימים באים נאם־יהוה וכרתי את־בית
fœdus ſecundũ Non .novum fœdus Jehudah domo cum & ,Iſrael
32 ישראל ואת־בית יהודה ברית חדשה: לא כברית
,eorum manũ *in me apprehendere* die in ,eorũ patribus cum *excidi* quod
אשר כרתי את־אבותם ביום החזיקי בידם
fecerunt irritum ipſi quia : Ægypti terra è eos *educendum ad*
להוציאם מארץ מצרים אשר־המה הפרו את־
.DOMINUS dixit , *eos in* ſum dominatus ego & ,meum pactum
בריתי ואנכי בעלתי בם נאם־יהוה:
poſt Iſrael domo cum *excidam* quod fœdus hoc Sed
33 כי זאת הברית אשר אכרת את־בית ישראל אחרי
,eorũ *interiori* in meã legẽ Dabo : Dominus dixit , ipſos dies
הימים ההם נאם־יהוה נתתי את־תורתי בקרבם
erunt ipſi & , Deum in eis ero & : eã ſcribam eorũ corde *ſuper* &
ועל־לבם אכתבנה והייתי להם לאלהים והמה יהיו־
unuſquiſq; & ſuũ *ſocium* unuſquiſque ultrà docebunt non Et.populũ in mihi
34 לי לעם: ולא־ילמדו עוד איש את־רעהו ואיש
ipſi omnes nam : Dominum Cognoſcite : dicendo ,ſuum fratrem
את־אחיו לאמר דעו את־יהוה כי כולם
:Dominus dixit,eorũ maximum ad uſq; &,eorũ mimimo à me cognoſcent
ידעו אותי למקטנם ועד־גדולם נאם־יהוה
.amplius memorabor non eorũ peccati &,eorũ iniquitati propitiabor quia
כי אסלח לעונם ולחטאתם לא אזכר־עוד:
, lunæ ſtatuta ; diei lumine in ſolem *dans* , Dominus dixit Sic
35 כה אמר יהוה נתן שמש לאור יומם חקת ירח
Dominus,ejus fluctus ſonarunt &,mare *findens* :noctis lumine in ſtellarum &
וכוכבים לאור לילה רגע הים ויהמו גליו יהוה
,*mei faciebus* à iſta ſtatuta *receſſerint* Si .ejus nomen exercituum
36 צבאות שמו: אם־ימשו החקים האלה מלפני
meas facies ad gentem eſſe ab ceſſabunt Iſrael ſemen etiam,Dominus dixit
נאם־יהוה גם זרע ישראל ישבתו מהיות גוי לפני
, ſurſum de cœli *metiantur* Si :Dominus dixit Sic .diebus cunctis
37 כל־הימים: כה אמר יהוה אם־ימדו שמים מלמעלה
omne *in reprobabo* ego etiam ,deorſum terræ fundamenta *inveſtigentur* &
ויחקרו מוסדי־ארץ למטה גם־אני אמאס בכל־
.DOMINUS dixit ,fecerunt quæ omnia *ſuper* , Iſrael ſemen
זרע ישראל על־כל־אשר עשו נאם־יהוה:
,Domino civitas ædificabitur & ,Dominus dixit ,*venientes* dies Ecce
38 הנה ימים נאם־יהוה ונבנתה העיר ליהוה
ultrà exibit Et .anguli portam ad uſque Chananeel turre à
39 ממגדל חננאל עד־שער הפנה: ויצא עוד
.Ghobath circuibit & ,Ghareb collem ſuper eo coram menſuræ *linea*
קוה המדה נגדו על גבעת גרב ונסב געתה:
torrentẽ ad uſque *arva omnia* &,cineris & ,cadaverum vallem omnẽ Et
40 וכל־העמק הפגרים והדשן וכל־השרמות עד־נחל
:Domino ſanctitas,Orientem ad equorum portæ angulũ ad uſque,Chidron
קדרון עד־פנת שער הסוסים מזרחה קדש ליהוה
.ſeculum in ultrà deſtruetur neque,evelletur non
לא־ינתש ולא־יהרס עוד לעולם:

Verſio VULG. LAT.

28 Et ſicut vigilavi ſuper eos ut evellerem, & demolirer, & diſſiparem, & diſperderem, & affligerem : ſic vigilabo ſuper eos ut ædificem, & plantem, ait Dominus. 29 In diebus illis non dicent ultrà ; Patres comederunt uvam acerbam, & dentes filiorum obſtupuerunt. 30 Sed unuſquiſque in iniquitate ſua morietur : omnis homo, qui comederit uvam acerbam, obſtupeſcent dentes ejus. 31 Ecce dies venient, dicit Domin⁹ : & feriam domui Iſrael & domui Juda fœdus novum : 32 Non ſecundùm pactum, quod pepigi cum patrib⁹ eorum, in die quâ apprehendi manum eorum, ut educerem eos de terra Ægypti ; pactum, quod irritum fecerunt, & ego dominatus ſum eorum, dicit Dominus. 33 Sed hoc erit pactum, quod feriam cum domo Iſrael poſt dies illos, dicit Domin⁹ : Dabo legem meam in viſceribus eorum, & in corde eorum ſcribam eam : & ero eis in Deum, & ipſi erunt mihi in populum. 34 Et non docebit ultrà vir proximum ſuum, & vir fratrem ſuum, dicens ; Cognoſce Dominum : omnes enim cognoſcent me, à minimo eorum uſque ad maximum, ait Domin⁹ : quia propitiabor iniquitati eorum, & peccati eorum non memorabor ampliùs. 35 Hæc dicit Domin⁹, qui dat Solem in lumine diei, ordinẽ Lunæ & ſtellarum in lumine noctis : qui turbat mare, et ſonant fluctus ejus, Domin⁹ exercituum nomen illi. 36 Si defecerint leges iſtæ coram me, dicit Dominus : tunc & ſemen Iſrael deficiet, ut non ſit gens coram me cunctis diebus. 37 Hæc dicit Dominus ; Si menſurari potuerint cœli ſurſũ, & inveſtigari fundamenta terræ deorſum : et ego abjiciam univerſum ſemen Iſrael, propter omnia quæ fecerunt, dicit Dominus. 38 Ecce dies veniunt, dicit Dominus : & ædificabitur civitas Domino, à turre Hananeel 39 uſque ad portam anguli. Et exibit ultrà norma menſuræ in conſpectu ejus ſuper collẽ Gareb : et 40 circuibit Goatha, Et omnem vallem cadaverum, & cineris, & univerſam regionem mortis, uſque ad torrentem Cedron, & uſque ad angulum portæ equorum Orientalis, Sanctum Domini : non evelletur, & non deſtruetur ultrà in perpetuum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Ἐφ' ὁδοῦ στῆθι, ϗ ἔπιδε καθημένη (ο) ἐν Ἀρὴρ, ϗ ἐρώτησον φεύγοντα, ϗ σωζόμενον, 20 ϗ εἰπὸν, Τί ἐγένετο; Κατῃσχύνθη Μωάβ, ὅτι συνετρίβη. ὀλόλυξον ϗ κέκραξον, ἀνάγγειλον ἐν (π) Ἀρνὼν, Ὅτι ὤλετο Μωάβ, 21 Καὶ κρίσις ἔρχεται εἰς τὴν γῆν (ρ) Μισὼρ ἐπὶ Χελὼν, ϗ (σ) Ῥεφὰς, ϗ Μωφὰς, 22 Καὶ ἐπὶ Δαιβὼν, ϗ ἐπὶ Ναβαῦ, ϗ ἐπ' οἶκον (τ) Δαιθλαθαὶμ, 23 Καὶ ἐπὶ Καριαθαὶμ, ϗ (υ) ἐπ' οἶκον Γαιμὼλ, ϗ ἐπ' οἶκον Μαὼν, 24 Καὶ ἐπὶ Καριὼθ, ϗ ἐπὶ Βοσὸρ, ϗ ἐπὶ πάσας τὰς πόλεις Μωὰβ τὰς πόῤῥω ϗ τὰς ἐγγύς. 25 Κατεάχθη κέρας Μωὰβ, 26 ϗ τὸ ἐπίχειρον αὐτοῦ συνετρίβη· Μεθύσατε αὐτὸν, ὅτι ἐπὶ κύριον ἐμεγαλύνθη· 27 ϗ ἐπικρούσει Μωὰβ ἐν χειρὶ αὐτοῦ, Καὶ ἔσται εἰς γέλωτα ϗ αὐτός. (φ) ϗ εἰ μὴ εἰς γελοιασμὸν ἦν σοι Ἰσραὴλ, ϗ ἐν κλοπαῖς σου εὑρέθη, ὅτι ἐπολέμεις αὐτόν. 28 Κατέλιπον τὰς πόλεις, ϗ ᾤκησαν ἐν (χ) πέτραις οἱ κατοικοῦντες Μωάβ· ἐγενήθησαν (ψ) ὥσπερ περιστεραὶ (῀) νοσσεύουσαι ἐν πέτραις, (ω) στόματι βοθύνου. 29 Καὶ ἤκουσα ὕβριν Μωάβ, (α) ὕβρισε λίαν, ὕβριν αὐτοῦ, ϗ ὑπερηφανίαν αὐτοῦ ϗ ὑψώθη ἡ καρδία αὐτοῦ. 30 Ἐγὼ δὲ ἔγνων (῀) ἔργα αὐτοῦ· οὐχὶ τὸ ἱκανὸν (β) αὐτῷ οὐχ οὕτως ἐποίησε; 31 Διὰ τοῦτο ἐπὶ Μωὰβ ὀλολύζετε πάντοθεν· βοήσατε ἐπ' ἄνδρας (γ) κειράδας αὐχμοῦ, 32 Ὡς κλαυθμὸν Ἰαζὴρ (δ) ἀποκλαύσομαί σοι ἄμπελος Ἀσερημὰ, κλήματά σου διῆλθε θάλασσαν, πόλεις Ἰαζὴρ ἥψαντο, ἐπὶ ὀπώραν σου, (ε) ἐπὶ τρυγηταῖς σου ὄλεθρος (ζ) ἐπέπεσε. 33 (η) Συνεψήσθη χαρμοσύνη ϗ εὐφροσύνη ἐκ τῆς Μωαβίτιδος, ϗ οἶνος ἦν ἐπὶ ληνοῖς σου· πρωῒ οὐκ (ι) ἐπάτησαν, οὐδὲ δείλης οὐκ ἐποίησαν, αἰδέ. 34 Ἀπὸ κραυγῆς Ἐσεβὼν (κ) ἕως Αἰτὰμ αἱ πόλεις αὐτῶν ἔδωκαν φωνὴν αὐτῶν, ἀπὸ Ζογὸρ ἕως Ὡρωναὶμ, καὶ (λ) ἀγγελίαν σαλασία, ὅτι ϗ τὸ ὕδωρ (μ) Νεβρεὶν εἰς κατάκαυμα ἔσται. 35 Καὶ ἀπολῶ τὸν Μωὰβ, φησὶ κύριος, (ν) ἀναβαίνοντα ἐπὶ τὸν βωμὸν, ϗ θυμιῶντα θεοῖς αὐτοῦ. 36 Διὰ τοῦτο καρδία τοῦ Μωὰβ, ὥσπερ αὐλοὶ βομβήσουσι, (ξ) καρδία μου ἐπ' ἀνθρώποις (ο) κειράδας ὥσπερ αὐλὸς βομβήσει· διὰ τοῦτο ἃ περιεποιήσατο, ἀπώλετο ἀπὸ ἀνθρώπου. 37 Πᾶσαν κεφαλὴν ἐν παντὶ τόπῳ (π) ξυρηθήσονται, ϗ πᾶς πώγων ξυρηθήσεται, ϗ πᾶσαι χεῖρες κόψονται, ϗ ἐπὶ πάσης ὀσφύος σάκκος.

In via ſta, & proſpice ſeden in Aer, & interroga fugientem, & evadentem, & dic, Quid factum eſt? Confuſus eſt Moab, quoniam contritus eſt. ulula, & clama, annuntia in Arnon Quia periit Moab, Et judicium venit in terram Mi ſuper Chelom, & Riphas, & Mophas, Et ſuper Daibon, & ſuper Nabau, & ſuper domum Dæblatham, Et ſuper Caria tham, & ſuper domum Gam & ſuper domum Maon, Et ſuper Carioth, & ſuper Bo & ſuper omnes civitates Moab, quæ procul, & quæ prope. Confractum eſt cornu Moab, & brachium ejus contritum eſt. Inebriate eum, quia ſuper Dominum ſe magnificavit : & pulſabit Moab in manu ſua : & erit in riſum etiam ipſe : Et quidem in deriſum erat tibi Iſrael, & in furtis tuis inventum eſt, quia oppugnabas (y) eum. Reliquerunt civitates, & habitaverunt in petris habitatores Moab : facti ſunt quaſi columbæ nidificantes in petris, ore foveæ. Et audivi contumeliam Moa (contumelioſus eſt valde.) contumeliam ejus, & ſuperbiam e jus. Et exaltatum eſt cor ejus Ego autem cognovi opera ejus (z) non quod ſatis erat, non ſic fecit. Ideò ſuper Moab ulula te undiq;. Clamate ſuper (aa) viros (aa) tonſos ſqualoris : Quaſi plorationem Jazer plorabo tibi vi (bb) Aſerema : propagines tuæ transierunt mare : civitates Jazer attigerunt : ſuper tempus fructuum tuorum, ſuper vindemi tuas pernicies irruit. (cc) Con ſum eſt gaudium, & lætitia ex Moabitide. Et vinum erat in torcularibus tuis : manè non calcarunt, & veſperè non fecerunt (dd) hede. A clamore Eſebon (ee) uſq; Ælbam civitates eorum dederunt vocem ſuam, à Zogor uſq; Oronam, & (ff) Angeliam Salaſia : quoniam & aqua Nebrin in combuſtionem erit. Et diſperdam Moab, ait Dominus, aſcendentem ſuper aram, & adolentem diis ejus. Ideò cor Moab, quaſi tibiæ bombos edet : cor meum ſuper viros tonſos, quaſi tibia ſonabit : ideò, quæ acquiſivit, perierunt ab homine. Omne caput in omni loco raſum & omnis barba radetur, & omnes manus incidentur, & ſuper omnem lumbum cilicium.

MS. A. (ο) ἐν Ἀροὴρ, (π) Ἀρνὼν, (ρ) τοῦ Μισὼρ (σ) ἐπὶ Ῥεφὰς, ϗ Μωφὰθ, (τ) Δεβλαθαὶμ, (υ) ἐπὶ οἶκον Γαμῶλα, (φ) ϗ μὴ εἰς γελοιασμὸν σοι Ἰσραὴλ εἰ ἐν *κολοπαῖς σου (χ) πέτραις οἰκοῦντες (ψ) ὡς (῀) ἐνοσσευσαν (ω) βοθύνου στόματι. Ἤκουσα (α) ὕβρισεν σφόδρα, ϗ ὕβριν (῀) τὰ ἔργα τοῦ (γ) κιδάρας (δ) ἀποκλαύσομαι ἄμπελος (ε) ϗ ἐπὶ (ζ) ἔπεσεν. (η) Συνεψήθη (ι) ἐπατήθησαν, (κ) ἕως Ἐλεαλὴ, ϗ ἕως Ἰασὰ αἱ πόλεις (λ) ἀγγελία σαλισία, (μ) Ἐβεὶμ (ν) ἀναβαίνοντα ἐπὶ Μωὰβ, ϗ καρδία (ο) κιδάρεις (π) ξυρήσονται,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

28 ויהי כמא דחשבית עליהון למעקר ולתרעא ולפגרא ולאבדא ולאבאשא כן יחדי
29 מימרי עליהון למבני ולקימא אמר יי: ביומיא האנון לא ימרון עוד אבהתנא חטן
30 ובניא לקן: אלהן אנש בחוביה ימות כל אנש דיחטי הוא ימות: הא יומיא אתן
31 אמר יי ואגזר עם דבית ישראל ועם דבית יהודה קימא חדתא: לא כקימא דגזרית עם
32 אבהתכון ביומא דאתקפית בידיהון למפקהון מארעא דמצרים דאנון אשניאו ית
33 קימי ואנא אתרעיתי בהון אמר יי: ארי דין קימא דאגזר עם בית ישראל בתר יומיא
האנון אמר יי אתן ית אוריתי במעיהון ועל לבהון אכתבנה ואהוי להון לאלהא ואנון
34 יהון קדמי לעם: ולא יילפון עוד גבר ית חבריה וגבר ית אחוהי למימר דעו למדחל
מן קדם יי ארי כולהון ילפון למדע דחלתי למזעירהון ועד רבהון אמר יי ארי אשבוק
35 לחוביהון וחטאיהון לא יתדכרון עוד: כדנן אמר יי דיהב שמשא לאנהרא ביממא
36 גזירת סיהרא וכוכביא לאנהרא בליליא נזף בימא והמן גלוהי יי צבאות שמיה: כמה
דלית אפשר דיעידון קימיא האלין מן קדמי אמר יי אף זרעא דישראל לא יבטלון
37 מלמהוי עם משמש קדמי כל יומיא: כדנן אמר יי כמה דלית אפשר דידע אנש
משחת שמיא מלעילא ואף לא למבדק יסודי ארעא מלרע אף מימרי לא ירחק בכל
38 זרעא דישראל על כל דעבדו קדמי אמר יי: הא יומיא אתן אמר יי ותתבני קרתא
39 דירושלם קדם יי ממגדל פקוס ועד תרע זויתא: ויהי נפק עוד חוט משח בנינא לקבלה
40 עד מטי לגבעתא דסמיכא לגרב ויהי מסתחר לבריכת עגלה: וכל מישרא אתר
דנפלו תמן פגרי משרית אתוראה וכל אריתא עד נחלא דקדרון עד זוית תרע בית
ריסא דמלכא מדינחא קודשא קדם יי לא יתעקר ולא יתפגר עוד לעלם:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et erit, ſicut cogitavi ſuper eos ut evellerem,& ut contererem, & ut deſtru erem, & ut perderem, & ut malefacerem; ſic lætabitur Verbum meum ſuper eos, ut ædificem,& ut ſuſcitem, dicit Dñs. In diebus illis non dicent amplius Patres peccaverunt, & filii percuſſi ſunt. Sed unuſquiſque in peccato ſuo morietur. Omnis homo qui peccaverit, ipſe morietur. Ecce dies veniunt, dicit Dñs,& feriam cum domo Iſrael & domo Juda pactum novum. Non ſicut pa ctum quòd pepigi cum patribus eorum in die qua apprehendi manum eorum ut educerem eos de terra Ægypti ; quia ipſi irritum fecerunt pactum meum & ego complacui mihi in eis, dicit Dñs. Quia hoc eſt pactum quòd feriam cum *domo* Iſrael : Poſt dies illos, dicit Dñs, dabo legem meam in viſceribus eorum,& in corde eorum ſcribam eam ; & ero eis in Deum, & ipſi erunt coram me in populum. Et non docebunt ultrà vir proximum ſuum & vir fratrem ſu um,dicendo: Scitote timere Dñm Quia omnes diſcent ut ſciant timorem me à minimo eorum uſque ad maximum eorum, dicit Dñs. Quia dimittam de cta eorum & peccata eorum non erunt in memoria amplius. Hæc dicit Domi nus, qui dedit Solem ad lucendum die, ſtatuta Lunæ & ſyderum ad lucend nocte;increpat mare,& ſonant fluctus ejus, Dñs exercituum nomen ejus. Si fieri non poteſt ut pertranſeant pacta hæc à facie mea,dicit Dñs; ſemen quo que Iſrael non deſinet eſſe populus miniſtrans coram me omnibus diebus. Hæc dicit Dñs: Sicut non poteſt fieri ut ſciat homo menſuram cœli deſuper, etiam inveſtigare fundamenta terræ deorſum ; ſic Verbum meum non aver bitur omnem cognationem Iſrael pro iis omnibus quæ fecerunt coram me, di cit Dñs. Ecce dies venient, dicit Dñs, & ædificabitur civitas Jeruſalem coram Dño à turre Pechos uſque ad portam anguli. Et egredietur adhuc filum men ſuræ ædificii è regione ejus donec perveniat ad vallem, quæ eſt vicina Gi & erit circumiens *piſcinam* rotundam. Et omnis vallis ubi ceciderunt ca vera exercitus Aſſyriorum ; & omnes aquæ ductus uſque ad torrentem C dron, & uſque ad angulum portæ domus ſtadii regis, Orientem verſus, ctitas coram Domino, non evelletur, nec deſtruetur ultrà in perpetuum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܘܐܝܟ ܕܐܬܬܥܝܪܬ ܥܠܝܗܘܢ ܠܡܥܩܪ ܘܠܡܣܚܦ ܘܠܡܣܬܪ: ܘܠܡܘܒܕܘ ܘܠܡܒܐܫܘ
ܗܟܢܐ ܐܬܬܥܝܪ ܥܠܝܗܘܢ ܠܡܒܢܐ ܘܠܡܢܨܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܒܝܘܡܬܐ
ܗܢܘܢ. ܠܐ ܢܐܡܪܘܢ ܬܘܒ ܐܒܗܐ ܐܟܠܘ ܒܣܪܐ. ܘܫܢܝܗܘܢ ܕܒܢܝܐ ܩܗܝ. *ܐܠܐ ܐܢܫ ܒܚܛܗܘܗܝ
ܢܡܘܬ. ܟܠ ܕܐܟܠ ܒܣܪܐ ܢܩܗܝܢ ܫܢܘܗܝ. * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. ܘܐܩܝܡ ܩܝܡܐ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܘܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܕܝܬܩܐ ܚܕܬܐ. *ܠܐ ܐܝܟ ܗܘ ܕܝܬܩܐ
ܕܐܩܝܡܬ ܥܡ ܐܒܗܝܗܘܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܐܚܕܬ ܒܐܝܕܝܗܘܢ ܘܐܦܩܬ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ.
ܡܛܠ ܕܗܢܘܢ ܒܛܠܘ ܕܝܬܩܝ. ܘܐܦ ܐܢܐ ܒܣܝܬ ܒܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܠܐ ܗܢܘ
ܕܝܬܩܐ ܕܐܩܝܡ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܒܬܪ ܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܬܠ ܢܡܘܣܝ
ܒܡܥܝܗܘܢ ܘܥܠ ܠܒܗܘܢ ܐܟܬܒܝܗ. ܘܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. ܘܗܢܘܢ
ܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. * ܘܠܐ ܢܠܦܘܢ ܬܘܒ ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ ܘܓܒܪ ܠܐܚܘܗܝ. ܘܢܐܡܪܘܢ ܕܕܥܘ
ܠܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܢܕܥܘܢܢܝ. ܡܢ ܙܥܘܪܗܘܢ ܘܥܕܡܐ ܠܪܒܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܡܛܠ ܕܐܫܒܘܩ ܠܚܘܒܝܗܘܢ. ܘܠܚܛܗܝܗܘܢ ܠܐ ܐܬܕܟܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܕܝܗܒ ܫܡܫܐ ܠܢܘܗܪܐ ܕܐܝܡܡܐ. ܘܣܗܪܐ ܘܟܘܟܒܐ ܠܢܘܗܪܐ ܕܠܠܝܐ. ܕܓܥܐ
ܝܡܐ ܘܢܒܥܘܢ ܓܠܠܘܗܝ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܐܢ ܢܥܒܪܘܢ ܢܡܘܣܐ ܗܠܝܢ ܡܢ ܩܕܡܝ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܦ ܙܪܥܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܢܫܠܘܢ. ܠܐ ܢܗܘܘܢ ܥܡܐ ܩܕܡܝ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ.
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢ ܢܬܡܫܚܘܢ ܫܡܝܐ ܡܢ ܠܥܠ: ܘܢܬܒܨܘܢ ܫܬܐܣܘܗܝ ܕܐܪܥܐ ܡܢ
ܠܬܚܬ. ܐܦ ܐܢܐ ܐܣܠܐ ܠܟܠܗ ܙܪܥܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܛܠ ܟܠܗܝܢ ܕܥܒܕܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
* ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܬܬܒܢܐ ܡܕܝܢܬܐ ܠܡܪܝܐ. ܡܢ ܡܓܕܠܐ ܕܚܢܢܐܝܠ. ܥܕܡܐ
ܠܬܪܥܐ ܕܙܘܝܬܐ. * ܘܢܦܘܩ ܬܘܒ ܚܘܛܐ ܕܡܫܘܚܬܐ ܠܩܘܒܠܗ. ܥܠ ܪܡܬܐ ܕܓܪܒ. ܘܢܬܟܪܟ
ܠܥܘܬܐ. * ܘܟܠܗ ܥܘܡܩܐ ܕܫܕܝܢ ܒܗ ܦܓܪܐ ܘܩܛܡܐ. ܘܟܠܗ ܚܩܠܐ ܕܩܕܪܘܢ. ܘܥܕܡܐ
ܠܙܘܝܬܐ ܕܬܪܥܐ ܕܪܟܫܐ ܕܡܕܢܚܐ. ܩܘܕܫܐ ܠܡܪܝܐ. ܠܐ ܢܬܥܩܪ ܘܠܐ ܢܬܣܚܦ ܬܘܒ ܠܥܠܡ.

Et quemadmodum ſtatueram eos evellere, 28
demoliri, deſtruere, perdere, & malis affice-
re; ita recordabor eorum ut ædificem ac plan-
tem *eos*, ait Dominus. Iis diebus non dicent 29
ampliùs, Patres comederunt uvas acerbas, &
dentes filiorum obſtupuerunt: Sed quiſque 30
pro peccatis ſuis morietur, quicunque come-
derit uvas acerbas, hujus dentes obſtupeſcent.
Ecce dies venturi ſunt, ait Dominus, quibus 31
ſtatuam Iſraelitis & Judæis fœdus novum,
Haud ſimile fœderi illi quod pepigeram cum 32
majoribus eorum, quo die prehendi manus
eorum & eduxi eos è terra Ægypti: (quoni-
am ipſi irritum fecerunt fœdus meum, ego
pariter aſpernatus ſum eos, dicit Dominus.)
Sed hoc eſt fœdus quod imponam Iſraelitis: 33
Poſt dies illos, dicit Dominus, indam legem
meam in præcordia eorum, & in cordibus
eorum ſcribam illam; & ero eis Deus, & ipſi
erunt mihi populus. Et non docebunt am- 34
pliùs quiſque fratrē ſuum & quiſque ſocium
ſuum, dicéntque; Agnoſcite Dominum: nam
omnes agnoſcent me à minimo ad ſenem uſ-
que, dicit Dominus; dimittam quippe culpas
eorum, & peccata eorum non recordabor
ampliùs. Sic ait Dominus qui ſolem diſpo- 35
ſuit in lucem diurnam, & adminiſtrationem
lunæ ac ſiderum in lucem nocturnam; quo
mari interminante ſedantur fluctus ejus; cui
nomen eſt Dominus potentiſſimus: Si ceſ- 36
ſârint adminiſtrationes iſtæ à conſpectu meo,
dicit Dominus, etiam ſemen Iſraelis ceſſa-
bunt eſſe populus in conſpectu meo cunctis
diebus. Sic dicit Dominus, Si menſurentur 37
cœli ſupernè, & pateſiant fundamenta terræ
infernè; etiam ego ſpernam totum ſemen Iſ-
raelis propter omnia quæ fecerunt, dicit Do-
minus. Ecce dies venturi ſunt, ait Domi- 38
nus, quum ædificabitur civitas *hæc* Domino
à turri Hananaelis uſque ad portam anguli:
Et procedet adhuc filum menſorium è regio- 39
ne illius verſùs collem Gareb, & reflectetur
ad Rama: Et tota vallis in quam projici- 40
unt fimum ac cinerem, uſque ad torrentem
Cedron, & uſque ad angulum portæ equo-
rum Orientalem, erit ſanctuarium Domino,
quod non evelletur, neque deſtruetur ampliùs
in perpetuum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* قفي على الطريق وانظري ايتها الجالسة في اروير * واسألي هاربا ومتخلصا * وقولي لماذا انها
انكسرت * أي شي كان * خزيت مواب * ولولي واخبري في ارنون ان مواب هلكت * والقضا
اتى الى ارض ميشور على سالون وعلى موفار وعلى رافاس * وعلى رابون وعلى ناباو وعلى بيت
دبلاتا * وعلى كرياثام وعلى بيت غامولا وعلى بيت ماوون * وعلى كاريوث وعلى بوصر وعلى
جميع مدن مواب البعيدة والقريبة * انكسر قرن مواب * وانسحق ذراعه * اسكروه لان الرب
قال * عظمة ومواري مواب في يديه * ويصير ضحكة وهو * كما كان اسرائيل لك للهزو وان كانوا
وجدوا في سرقاتك لما حاربتهم * تركوا المدن وسكنوا في الصخور وسكان مواب صاروا مثل
الحمام المعشش في الصخور في فم الكهف * سمعت بعظمة مواب * تكبرت جدا كبرياه وارتفع
قلبه * وانا عرفت اعماله * اليس هكذا كفوه * اليس هكذا صنع * لاجل هذا ولولوا على
مواب * اصرخوا جميعا على رجال القحط * مثل بكاء يعزير ابكي عليك يا كرمة سابما *
اغصانك جازت البحر * مدن يعزير لمسوا * على فاكهتك نزل الهلاك * على قطافك * زال
السرور والفرح من الموابية * والخمر الذي كان في معاصرك باكرا لم يداسوا * ولا عشية لم
يصنعوا * واه من صراخ اساون * الى الالي والى اطان مدنهم اعطوا صوتهم * من مكابس دم
اعياث واخبار سالاسيا * لان ماء نبريم يصير برية * واهلك مواب قال الرب * الصاعد على
المذبح المبخر لالهته * لاجل هذا قلب مواب مثل زمور يزمرون * لاجل هذا ما اقتنوه هلك من
الانسان * يجزون كل راس بكل موضع * وكل لحية تنتف * وكل الايدي تقطع * والمسوح
على كل حقو *

Ad viam conſiſte & aſpice O quæ ha- 19
bitas in Aröere, interroga fugientem &
evadentem, & dicito, Cur iſta contrita
eſt? quid rei factum eſt? Erubuit Moab, 20
ulula & annuntia in Arnone periiſſe
Moabum, Et judicium perveniſſe ad ter- 21
ram Miſoris, ſuper Selonem, ſuper
Mophazem, & ſuper Rephaſem, Super 22
Rabonem, ſuper Nabaum, & ſuper Beth-
diblathaim, Super Keriathamum, ſuper 23
Bethghemolam, & ſuper Bethmaonem,
Super Karioth, ſuper Boſorem, demum 24
ſuper omnes urbes Moabi remotas &
propinquas. Confractum eſt cornu Mo- 25
abi, & contritum eſt brachium ejus. Ine- 26
briate eum, quia Dominus dixit: magni-
ficentia & celſitudo Moabi in manu ejus,
eritque riſui etiam ipſe, Quemadmo- 27
dum fuerunt Iſraelitæ tibi in deriſum;
etiamſi inventi fuerint in furtis tuis,
quam oppugnares eos. Derelictis urbibus 28
habitaverunt in petris, ita habitatores
Moabi ſimiles erunt columbis nidifican-
tibus in petris, in ore foveæ. Audivi ſu- 29
perbiam Moabi, crevit admodum arro-
gantia ejus, & elevatum eſt cor ejus; &
ego novi opera ejus. Annon hujuſmodi 30
eſſet retributio ejus? annon ita fecit?
Propterea ululate ſuper Moabum, cla- 31
mate omnes ſuper viros penuriâ laboran-
tes. Ut fletu Jazeris defleo te, O vitis 32
Sebemæ; propagines tuæ mare penetrâ-
runt, urbes Jazeris attigerunt: ſuper
fructus tuos irruit pernicies, & ſuper
vindemiam tuam. Deſiit gaudium & 33
lætitia à Moabitide: & vina quæ erant
in lacubus tuis tempore matutino, haud
calcabuntur, nec veſpere conficientur.
Eheu, propter clamorem Eſeonis; ad Ele- 34
alam & ad Etanem urbes ſuas uſque,
vocem ſuam ediderunt, ob torcularia
ſanguinis Aghiath & nuntia Salaſiæ:
quoniam aqua Nebrim vertetur in deſer-
tum. Perdamque Moabum, dixit Do- 35
minus, aſcendentem ſuper aram, adolen-
tem diis ejus. Idcirco cor Moabi buc- 36
cinarum inſtar tinniet: idcirco quicquid
poſſidebant, periit ab homine: Tonde- 37
bitur omne caput in omni loco, omnis
barba vellicabitur, omnes manus amputa-
buntur: & ſacci ſuper omnem lumbum,

ירמיה : לב

CAP. XXXII. לב

decimo anno in ,Domino à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הדבר אשר־היה אל־ירמיהו מאת יהוה בשנת העשרית
anni decimus octavus annus ipſe ,Jehudah regis Sidchijahu
לצדקיהו מלך יהודה היא השנה שמנה עשרה שנה
:Jeruſalaim *ſuper coarctantes* Babel regis *virtus* tunc Et .Nebuchadneſar
2 לנבוכדראצר׃ ואז חיל מלך בבל צרים על־ירושלם
domo quæ ,cuſtodiæ atrio in clauſus erat propheta Irmejahu &
וירמיהו הנביא היה כלוא בחצר המטרה אשר בית־
:dicendo ,Jehudah rex Sidchijahu eum clauſerat Quòd .Jehudah regis
3 מלך יהודה׃ אשר כלאו צדקיהו מלך־יהודה לאמר
dans ego Ecce :Dominus dixit Sic : dicendo *vaticinans* tu Quare
מדוע אתה נבא לאמר כה אמר יהוה הנני נתן
Sidchijahu Et ?eā capiet & ,Babel regis manū in hanc civitatem
4 את־העיר הזאת ביד מלך־בבל ולכדה׃ וצדקיהו
tradendo tradetur ſed ,Chaſdim manu de evadet non Jehudah rex
מלך יהודה לא ימלט מיד הכשדים כי־הנתן ינתן
ejus oculi &,illius ore cum ejus os loquetur & , Babel regis manum in
ביד מלך־בבל ודבר־פיו עם־פיו ועיניו
; Sidchijahu faciet ire Babel in Et .videbunt illius oculos
5 את־עיניו תראינה׃ ובבל יולך את־צדקיהו
dimicaveritis *Cùm* .Dominus dixit ,eum *me viſitare uſque* erit ibi &
ושם יהיה עד־פקדי אתו נאם־יהוה כי תלחמו
verbum Fuit : Irmejahu dixit Et .proſperabimini non , Chaſdim cum
6 את־הכשדים לא תצליחו׃ ויאמר ירמיהו היה דבר־
tui patruelis Sallum filius Chanamel Ecce :dicendo ,me ad Domini
7 יהוה אלי לאמר׃ הנה חנמאל בן־שלם דדך
:Hanathoth in qui ,meū agrum tibi Eme : dicendo ,te ad *veniens*
בא אליך לאמר קנה לך את־שדי אשר בענתות
Chanamel me ad venit Et .*emendum ad* redemptionis judicio *tibi* quia
8 כי לך משפט הגאלה לקנות׃ ויבא אלי חנמאל
ait & ,cuſtodiæ atrium ad ,Domini verbi juxta mei patrui filius
בן־דדי כדבר יהוה אל־חצר המטרה ויאמר
terra in quæ ,Hanathoth in qui meū agrum quæſo Eme : me ad
אלי קנה נא את־שדי אשר־בענתות אשר בארץ
:tibi eme :redemptio *tibi* & , *hæreditatis* jure *tibi* quia :Binjamin
בנימין כי לך משפט הירשה ולך הגאלה קנה־לך
agrum emi Et *ipſum* Domini verbum quod cognovi &
9 ואדע כי דבר־יהוה הוא׃ ואקנה את־השדה
ei appendi & ,Hanathoth in qui , mei patrui filio Chanamel à
מאת חנמאל בן־דדי אשר בענתות ואשקלה־לו
ſcripſi Et .argenteos decem & , ſiclum ſeptem , argentum
10 את־הכסף שבעה שקלים ועשרה הכסף׃ ואכתב
argentum appendi & : teſtes feci teſtificari & , ſignavi & , libro in
בספר ואחתם ואעד עדים ואשקל הכסף
, ſignatum emptionis librum accepi Et .*bilancibus* in
11 במאזנים׃ ואקח את־ספר המקנה את־החתום
librum dedi Et .*patentem* & , *jurium* & *præcepti*
12 המצוה והחקים ואת־הגלוי׃ ואתן את־הספר
Chanamel oculis in Machſejah filio Nerijah filio Baruch emptionis
המקנה אל־ברוך בן־נריה בן־מחסיה לעיני חנמאל
, emptionis libro in *ſcribentium* teſtium oculis in & , mei patrui
דדי ולעיני העדים הכתבים בספר המקנה
præcepi Et .cuſtodiæ atrio in *manentium* ,Jehudæorum omniū oculis in
13 לעיני כל־היהודים הישבים בחצר המטרה׃ ואצוה
exercituū Dominus dixit Sic :dicendo, eorum oculis in Baruch
14 את־ברוך לעיניהם לאמר׃ כה־אמר יהוה צבאות
emptionis librum , iſtos libros *Tollendo* : Iſrael Deus
אלהי ישראל לקוח את־הספרים האלה את ספר המקנה
eos *dabis* & , hunc apertum librum & , ſignatum & , hunc
הזה ואת החתום ואת ספר הגלוי הזה ונתתם
.multis diebus ſtent ut , *teſtæ* vaſe in
בכלי־חרש למען יעמדו ימים רבים׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXXII.

1 VErbum, quod factum eſt ad Jeremiam à Domino, in anno decimo Sedeciæ regis Juda: ipſe eſt annus decimus octavus Na- 2 buchodonoſor. Tunc exercitus regis Babylonis obſidebat Jeruſalem: & Jeremias Propheta erat clauſus in atrio carceris, qui 3 erat in domo regis Juda. Clauſerat enim eum Sedecias rex Juda, dicens; Quarè vaticinaris, dicens; Hæc dicit Dominus; Ecce ego dabo civitatē iſtam in manᵘ regis Babylonis, & capiet eam? 4 Et Sedecias rex Juda non effugiet de manu Chaldæorum: ſed tradetur in manᵘ regis Babylonis: & loquetur os ejus cum ore illiᵘ, & oculi ejus oculos illiᵘ videbunt. 5 Et in Babylonem ducet Sedeciā: & ibi erit donec viſitem eum, ait Dñs: ſi autem dimicaveritis adverſùm Chaldæos, nihil proſperū 6 habebitis. Et dixit Jeremias; Factum eſt verbum Domini ad me, 7 dicens; Ecce Hanameel filius Sellum patruelis tuᵘ veniet ad te, dicens; Eme tibi agrum meū, qui eſt in Anathoth: tibi enim competit ex propinquitate ut 8 emas. Et venit ad me Hanameel filiᵘ patrui mei ſecundùm verbum Domini ad veſtibulum carceris, & ait ad me, Poſſide agrum meum, qui eſt in Anathoth in terra Benjamin: quia tibi competit hæreditas, & tu propinquᵘ es ut poſſideas. Intellexi autem 9 quòd verbum Domini eſſet. Et emi agrum ab Hanameel filio patrui mei, qui eſt in Anathoth: & appendi ei argentum ſeptem 10 ſtateres, & decem argenteos. Et ſcripſi in libro, & ſignavi, & adhibui teſtes: & appendi argen- 11 tum in ſtatera. Et accepi librum poſſeſſionis ſignatum, & ſtipulationes, & rata, & ſigna fo- 12 riſecᵘ. Et dedi librum poſſeſſionis Baruch filio Neri filii Maaſiæ in oculis Hanameel patruelis mei, in oculis teſtium, qui ſcripti erant in libro emptionis, & in oculis omnium Judæorum, qui ſede- 13 bant in atrio carceris. Et præcepi Baruch coram eis, dicens; 14 Hæc dicit Dominᵘ exercituum, Deus Iſrael; Sume libros iſtos, librum emptionis hunc ſignatū, & librum hunc qui apertus eſt: & pone illos in vaſe fictili, ut permanere poſſint diebus multis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

38 Καὶ ἐπὶ πάντων τῶν δωμάτων Μωὰβ, καὶ (ρ) ἐπὶ ταῖς πλατείαις αὐτῆς, ὅτι συνέτριψα, φησὶ κύριος, (σ) ὡς ἀγγεῖον, ὃ οὐκ ἔστιν χρεία αὐτοῦ. 39 Πῶς κατήλλαξε; πῶς ἔστρεψε νῶτον Μωάβ; ᾐσχύνθη, καὶ ἐγένετο Μωὰβ εἰς γέλωτα, καὶ ἐγκότημα πᾶσι τοῖς κύκλῳ (τ) αὐτῆς. 40 Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, 41 Ἐλήφθη (υ) Καριὼθ, καὶ τὰ ὀχυρώματα συνελήφθη, 42 Καὶ ἀπολεῖται Μωὰβ ἀπὸ ὄχλου, ὅτι ἐπὶ τὸν κύριον ἐμεγαλύνθη. 43 Παγὶς καὶ φόβος καὶ βόθυνος (φ) ἐπὶ σὲ καθήμενος (χ) Μωάβ. 44 Ὁ φεύγων ἀπὸ προσώπου τοῦ φόβου, ἐμπεσεῖται εἰς τὸν βόθυνον· καὶ ὁ ἀναβαίνων ἐκ τοῦ βοθύνου, (ψ) καὶ συλληφθήσεται ἐν τῇ παγίδι· (ω) ὅτι ἐπάξω ταῦτα ἐπὶ Μωὰβ ἐν ἐνιαυτῷ ἐπισκέψεως (α) αὐτῶν.

Et ſuper omnia tecta Moab, & in plateis (gg) ejus: quia contrivi, ait Dominus, ſicut quàm vas, cujus non eſt uſus ejus. Quomodo commutavit, quomodo vertit dorſum Moab? Confuſus eſt, & factus eſt Moab in riſum, & odium omnibus, qui in circuitu ejus. Quia ſic dixit (hh) Dominus; Capta eſt Carioth, & munitiones ejus captæ (ii) ſunt: Et peribit Moab à turba; quia ſuper Dominum ſe magnificavit. Laqueus, & pavor, & fovea ſuper te, ſedes (kk) Moab. Qui fugit à facie timoris, incidet in foveam: & qui aſcendit ex fovea, & capietur in laqueo: quoniam inducam hæc ſuper Moab in anno viſitationis ejus.

MS. A. (ρ) ἐπὶ πλατείαις (σ) τὸν Μωὰβ ὡς (τ) αὐτοῦ. (υ) Ἀκαριώθ, (φ) ἐπὶ σοὶ (χ) ἐπὶ Μωάβ. (ψ) Συλλημφθήσεται (ω) διότι (α) αὐτῆς.

ΚΕΦ. λβ'.

CAP. XXXII.

Cap. 25. Vulg.Lat. (·) Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Λάβε τὸ ποτήριον τοῦ οἴνου τοῦ ἀκράτου τούτου ἐκ χειρός μου, καὶ ποτιεῖς πάντα τὰ ἔθνη, πρὸς ἃ ἐγὼ ἀποστέλλω σε πρὸς αὐτούς. 16 Καὶ πίονται, καὶ ἐξεμοῦνται, καὶ (α) ἐκμανήσονται ἀπὸ προσώπου τῆς (β) μαχαίρας, ἧς ἐγὼ ἀποστέλλω ἀναμέσον αὐτῶν. 17 Καὶ ἔλαβον τὸ ποτήριον ἐκ χειρὸς κυρίου, καὶ ἐπότισα τὰ ἔθνη πρὸς ἃ ἀπέστειλέ με κύριος (γ) πρὸς αὐτὰ, 18 Τὴν Ἱερουσαλὴμ, καὶ τὰς πόλεις Ἰούδα, καὶ βασιλεῖς Ἰούδα, καὶ ἄρχοντας αὐτοῦ, τοῦ θεῖναι αὐτὰς εἰς ἐρήμωσιν, καὶ εἰς ἄβατον, καὶ εἰς συριγμὸν, 19 Καὶ τὸν Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ, καὶ τοὺς μεγιστᾶνας αὐτοῦ, καὶ πάντα τὸν λαὸν αὐτοῦ, 20 Καὶ πάντας τοὺς (δ) συμμίκτους, καὶ πάντας τοὺς βασιλεῖς (ε) ἀλλοφύλων, καὶ τὴν Ἀσκάλωνα, καὶ τὴν Γάζαν, καὶ τὴν Ἀκκάρων, καὶ τὸ ἐπίλοιπον Ἀζώτου, 21 Καὶ τὴν Ἰδουμαίαν, καὶ τὴν Μωαβῖτιν, καὶ τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν, 22 Καὶ (ζ) βασιλεῖς Τύρου, καὶ βασιλεῖς Σιδῶνος, καὶ βασιλεῖς τοὺς ἐν τῷ πέραν τῆς θαλάσσης,

Sic (a) dixit Dominus Deus Iſrael; Sume calicem vini meri hujus de manu mea, & potabis facies omnes gentes, ad quas ego mitto te ad eos. Et bibent, & evoment, & inſanient à facie gladii, quem ego mitto inter eos. Et accepi calicem de manu Domini, & propinavi gentibus, ad quas miſit me Dominus ad eas: Hieruſalem, & civitatibus Juda, & regibus Juda, & principibus ejus, ad ponendum eas in deſolationem, & in invium, & in (b) ſibilum: Et Pharaoni regi Ægypti, & pueris ejus, & principibus ejus, & omni populo ejus, Et omnibus (c) miſtis, & omnibus regibus Allophylorum, & Aſcaloni, & Gazæ, & Accaron, & reliquiis Azoti, Et Idumææ, & Moabitidi, & filiis Ammon, Et regibus Tyri, & regibus Sidonis, & regibus, (d) qui trans mare,

MS.A. (·) ὍΣΑ ἘΠΡΟΦΉΤΕΥΣΕΝ ἹΕΡΕΜΊΑΣ ἘΠῚ ΠΆΝΤΑ ΤᾺ ἜΘΝΗ. (α) μανήσονται (β) μαχαίρης, (γ) ἐπ' αὐτὰ (δ) συμμίκτους αὐτοῦ, (ε) πάντων τῶν ἀλλοφύλων, (ζ) πάντας βασιλεῖς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

לב

1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה מן קדם יי בשתא עשירתא לצדקיה מלך שבטא דבית
2 יהודה היא שתא תמני עשרי שנין לנבוכדנצר׃ בכן משרית מלכא דבבל צרין על
ירושלם וירמיה נביא הוה כלי בדרת בית אסיריא די בבית מלך שבטא דבית יהודה׃
3 דאסריה צדקיה מלך שבטא דבית יהודה למימר מדין את מתנבי למימר כדנן אמר יי
4 האנא מסר ית קרתא הדא ביד מלכא דבבל ויכבשנה׃ וצדקיה מלך שבטא דבית
יהודה לא ישתיזב מידא דכסדאי ארי אתמסרא יתמסר ביד מלכא דבבל וימליל
5 פומיה עם פומיה ועינוהי ית עינוהי יחזין׃ ולבבל יובל ית צדקיה ותמן יהי עד דיעול
6 דוכרניה קדמי אמר יי ארי תגיחון קרב עם כסדאי לא תצלחון׃ ואמר ירמיה הוה פתגם
7 נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ הא חנמאל בר שלום אחבוך אתי לותך למימר זבון לך
8 ית חקל דבענתות ארי לך חזיא אחסנתא למזבן׃ ואתא לותי חנמאל בר אחבי
כפתגמא דיי לדרת בית אסיריא ואמר לי זבון כען ית חקלי דבענתות דבארע שבטא
9 בנימין ארי לך חזיא ירותא ולך אחסנתא זבון לך וידעית ארי פתגמא דיי הוא׃ וזבנית
ית חקלא מן חנמאל בר אחבי דבענתות ותקלית ליה ית כספא שבעא מנן ועשר סלעין
10 דכסף׃ וכתבית בשטרא וחתמית ואסהדית סהדין ותקלית כספא במוזניא׃ ונסבית
11 12 ית שטרא דזבינא ית דכתיב וחתים כהלכתא וכיד חזוא וית שטרא פתיחא׃ ויהבית ית
שטרא דזבינא לברוך בר נריה בר מחסיה לעיני חנמאל אחבי ולעיני סהדיא דכתיבין
13 בשטרא דזבינא לעיני כל יהודאי דיתבין בדרת בית אסיריא׃ ופקדית ית ברוך לעיניהון
14 למימר׃ כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל סב ית שטריא האלין ית שטרא דזבינא
הדין וית דכתיב וחתים וית שטרא פתיחא הדין ותתננון במן דחסף בדיל דיתקימון יומין סגיאין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXXII.

VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam à facie Domini in anno decimo Sedechiæ regis tribus domus Juda; ipſe eſt annus decimus octavus Nabuchodonoſor. Et tunc copiæ regis Babylonis obſidebant Jeruſalem: & Jeremias propheta erat clauſus in atrio carceris, qui eſt in domo regis tribus domus Juda. Quem vinctum tenebat Sedechias rex tribus domus Juda: dicens, Quare tu prophetas; dicendo, Hæc dicit Dominus, Ecce ego tradam civitatem iſtam in manum regis Babylonis, & ſubjiciet eam? Et Sedechias rex domus Juda non evadet è manu Chaldæorum; ſed tradendo tradetur in manum regis Babylonis, & loquetur os ejus cum ore illius, & oculi ejus oculos illius videbuntur. Et in Babylonem ducet Sedechiam, ubi erit donec ſubeat memoria ejus coram me, dicit Dominus. Etiam ſi pugnaveritis adverſùm Chaldæos, nihil proficietis. Et dixit Jeremias, Factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: Ecce Hanameel filius Salum patrui tui venit ad te dicens, Eme tibi agrum meum qui eſt in Anathoth: quia tibi convenit hæreditas ut emas. Venitque ad me Hanameel filius patrui mei juxta verbum Domini ad atrium domus vinctorū; & dixit mihi, Eme nunc agrum meum, qui in Anathoth quæ eſt in terra tribus Benjamin, quia tibi competit hæreditas, et tibi eſt poſſeſſio, eme tibi. Et cognovi quod verbum Domini eſſet. Emi itaq; agrum ab Hanameel filio patrui mei qui erat in Anathoth: et appendi ei argentum ſeptem minas, & decem ſiclos argenti. Et ſcripſi in chirographo, & ſignavi, & adhibui teſtes, & appendi argentū ſtateris. Et tuli chirographum emptionis quod ſcriptum erat, & ſignatū juxta morem, & ſicut decet, chirographum apertum. Et dedi chirographū emptionis Baruch filio Neriæ filii Maaſiæ in conſpectu Hanameel [*filii*] fratris patris mei, et in conſpectu teſtiū qui ſubſcripſerant in chirographo emptionis & in conſpectu omnium Judæorum, qui ſedebant in atrio vinctorū. Et præcepi Baruch in oculis eorum, dicens; Sic dicit Dñs Deus Iſrael: Tolle chirographa iſta, libellum emptionis iſtum, & ſignatum, & chirographum apertum iſtud, & pones ea in vaſe fictili, ut permaneant diebus multis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܦܘܠܓܐ * ܠܒ * ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܒܫܢܬܐ 1
ܕܥܣܪܝܬܐ ܕܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܘܝܘ ܫܢܬ ܬܡܢܬܥܣܪܐ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ. * ܘܗܝܕܝܢ ܚܝܠܐ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܟܪܝܟܝܢ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܟܠܝܐ 2
ܗܘܐ ܒܕܪܬܐ ܕܡܛܪܬܐ ܕܒܝܬ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܕܟܠܝܗܝ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܐܡܪ. 3
ܡܛܠ ܡܢܐ ܡܬܢܒܐ ܐܢܬ ܘܐܡܪ ܐܢܬ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܗ
ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܘܢܟܒܫܝܗ. * ܘܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܠܐ 4
ܢܦܠܛ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܡܛܠ ܕܡܫܠܡܘ ܢܫܬܠܡ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ.
[illegible]

CAP. XXXII.

Sermo qui factus eſt ad Jeremiam à Domino, anno decimo Sedeciæ regis Judæ: is erat annus decimus octavus Nebuchadnoſari regi Babyloniæ. 1 Tunc autem copiæ regis Babyloniæ obſidebant Jeroſolymam, & Jeremia propheta detentus erat in atrio cuſtodiæ domûs regis Judæ: 2 Clauſerat enim illum Sedecia rex Judæ, dicens; Qua de cauſa vaticinaris, ac dicis; Sic ait Dominus, Ecce traditurus ſum civitatem iſtam in manus regis Babyloniæ, & capiet eam? 3 Et Sedecia rex Judæ non effugiet manum Chaldæorum, quia proculdubiò tradetur in manus regis Babyloniæ, & hujus os alloquetur os illius, & hujus oculi illius oculos videbunt? 4 Et Babylonem abducet Sedeciam, ibique manebit uſque ad diē illum quo viſitavero eum, dicit Dominus; pugnabitis enim contra Chaldæos, & non ſuperabitis? 5 Factus eſt inquam, ſermo Domini ad Jeremiam, hiſce verbis. 6 Ecce Nahmael filius Salumi patrui tui venturus eſt ad te, & dicturus; Eme tibi agrum meum qui eſt in Anathoth in terra Benjaminis, ad te enim pertinet jus hæreditatis *hujus* emendæ. 7 Venit ergò ad me Nahmael filius patrui mei, juxta ſermonem Domini, in atrium cuſtodiæ; dixítque mihi, Eme tibi agrum meum qui eſt in Anathoth in terra Benjaminis; quoniam ad te pertinet jus hæreditatis, tibíque debetur: eme illam tibi. 8 Quoniam autem noveram ſermonem hunc eſſe Domini, emi agrum à Nahmaele filio patrui mei, qui erat in Anathoth, & appendi ei pecuniam, ſeptendecim ſiclos argenti: 9 Scripſi ſyngraphas, & obſignavi, teſtes adhibui, & pecuniam trutinâ appendi: 10 Deinde accepi ſyngraphas emptionis, tam illam quæ obſignata erat ſecundùm præceptum ac legem, quàm illam quæ non erat obſignata: 11 Et utramque ſyngrapham emptionis dedi Barucho filio Neriæ filii Maaſiæ, præſente Nahmaele filio patrui mei, & præſentibus teſtibus qui ſcripti fuerant in ſyngraphis emptionis, præſentibus denique cunctis Judæis qui aderant in atrio cuſtodiæ: 12 Tum Barucho præcepi his præſentibus, ac dixi; 13 Sic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, Accipe ſyngraphas iſtas, ſyngrapham hanc emptionis obſignatam, & ſyngrapham hanc minimè obſignatā; & utramque reponito in vaſe teſtaceo, ut ſerventur multis diebus. 14

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

38 * وعلي جميع اسطحة مواب وفي سوارعها كلها * لاني كسرت مواب قال الرب مثل اناء ليس به
39 حاجة * كيف ولي ظهرا مواب * خزي مواب * وصار ضحكة وانكسارا لجميع من حولها * لان
40 هكذا قال الرب * اخذت عقرون * وحصونها قبضت * وهلكت مواب من الجمع * لانها تعظمت
41 علي الرب * فخ وخوف وحفرة عليك ايها الجالس في مواب * الهارب من وجه الخوف يسقط في
42 الحفر * والصاعد من الحفر يقبض في الفخ * من اجل اني اجلب هذه علي مواب في سنة
43 افتقادها * [MS. Ox. يقول الرب * من اجل ان النار خرجت من حشبون * واللهيب من
44 مدينة سيحون * لتحرق شعاري مواب وتبيد ريسا بني شاول * الويل لك يا مواب * قد هلكت
45 يا شعب كاموش * لان بنيك وبناتك تفرقوا في السبي * فاما في اخر الايام فاني ارد سبي مواب
46 يقول الرب * الي هاهنا القول في نقمة مواب *]
47

* الفصل الثاني والثلاثون *

* هذا ما تنبي به ارميا علي جميع الامم *

14 [MS.Ox.* من اجل ان اهل بابل تعبدوهم واستعبدوا شعوبا كثيرة * وملوكا عظيمة
15 واجزهم بما فعلوا وكما قدمت ايديهم *] * هكذا قال الرب اله اسرايل * خذ كاس الخمر
16 الصرف الذي بيدي * وسقه لجميع الامم الذي انا ارسلك اليهم * فيتحيرون ويختبون من
17 وجه السيف الذي انا ارسله بينهم * واخذت الكاس من يد الرب * واسقيته الامم الذي
18 ارسلني الرب اليهم * اورشليم ومدن يهودا وملوكهم ورؤساهم * ليكونوا للخراب وللقفر
19 وللصفير * وفرعون ملك مصر وعبيده وعظماءه * وكل شعبه وكل المختلطين به * وجميع ملوك
20 القبايل الغريبة * عسقلان وغزة وعقرون وبقية ازدود * والادومية والموابية وبني عمون
21 * وملوك صور وملوك صيدا * والملوك الذين في عبر البحر *
22

Et ſuper omnia tecta Moabi, & in omnibus vicis ejus: quia fregi Moabum, dixit Dominus, ut vas quod nullius eſt utilitatis. 38 *Quomodo terga vertit Moab? pudefactus eſt Moab, & expoſitus ludibrio atq; contritioni omnibus circunjacentibus?* 39 *Nam ita dixit Dominus, Capta eſt Acron,* 40 *& arces ejus occupatæ;* 41 *Periitque Moab à congregatione, quia ſuperbivit contra Dominum.* 42 *Laqueus, pavor, & fovea ſuper te O qui degis in Moabo:* 43 *Qui pavorem effugerit, incidet in foveam; & qui emerſerit è fovea, laqueo capietur: hæc enim adducturus ſum ſuper Moabum anno viſitationis ejus,* 44 [MS.Oxon. *dicit Dominus. Quoniam ignis egredietur ex Heſbbon, & flamma ex urbe Sihonis, ut comburat crines Moabi, et conſumat principes filiorum Shaul.* 45 *Væ tibi Moab, jam periturus es popule Chamos, quoniam filii tui, filiæque tuæ in captivitatem diſpergentur.* 46 *Attamen reducam captivitatem Moabi ultimis temporibus, dicit Dominus. Hactenus ſermo de vindicta Moabi.*] 47

CAP. XXXII.

Hæc ſunt quæ prophetavit Jeremia de cunctis gentibus.

[MS.Oxon. *Eò quod Babylonii ſubegerint, & ſibi etiam in ſervitutem redegerint gentes multas, & reges magnos; ideo rependam eis ſecundùm actiones eorum, & ſecundùm illud quod priùs operatæ erant manus eorum.*] 14 *Sic dixit Dominus Deus Iſraelis, Accipe calicē vini meri qui eſt in manu mea, cumque propina cunctis gentibus ad quas te mitto;* 15 *ut attoniti abdant ſeſe à conſpectu gladii quem miſſurus ſum inter eos.* 16 *Quare acceptum de manu Domini calicem propinavi cunctis gentibus ad quas miſit me Dominus:* 17 *Jeroſolymæ, & urbibus Judæ, & regibus ac principibus eorum; ut eſſent deſtructioni, ſolitudini, & ſibilo:* 18 *Pharaoni regis Ægypti, & ſervis ejus, magnatibus ejus, totique populo ipſius,* 19 *& omnibus inter eum mixtis: Omnibus regibus nationum exterarum: Aſcaloni, Gazæ, Acroni, & reliquæ Azdodi:* 20 *Idumææ, Moabitidi, & filiis Ammon:* 21 *Regibus Tyri, regibus Sidonis, & regibus qui ſunt trans mare:* 22

ירמיה: לב

emerentur Adhuc : Israel Deus exercituum Dominus dixit sic Quia
15 כי כה אמר יהוה צבאות אלהי ישראל עוד יקנו
,Dominum ad oravi Et .ista terra in vineæ & , agri & , domus
16 בתים ושדות וכרמים בארץ הזאת: ואתפלל אל־יהוה
: dicendo ,Nerijah *filium* Baruch *ad* emptionis librum *me dedisse post*
אחרי תתי את־ספר המקנה אל־ברוך בן־נריה לאמר:
& cœlos fecisti tu Ecce .Deus Domine Ahah
17 אהה אדני יהוה הנה אתה עשית את־השמים ואת־
non : extento tuo brachio in & , magna tua potentia in terram
הארץ בכחך הגדול ובזרעך הנטויה לא
,millibus in misericordiam *Faciens .verbum omne te à mirificabitur*
18 יפלא ממך כל־דבר: עשה חסד לאלפים
: eos post eorum filiorum sinum in patrum *iniquitatem retribuens* &
ומשלם עון אבות אל־חיק בניהם אחריהם
,consilio Magnus .ej⁹ nomen exercituũ Dominus, potens, magnus Deus
19 האל הגדול הגבור יהוה צבאות שמו: גדל העצה
filiorũ vias omnes super aperti tui oculi quia : *adinventione* multus &
ורב העליליה אשר־עיניך פקחות על־כל־דרכי בני
fructum secundum & ,suas vias secundùm unicuique *dandum ad* ,*hominis*
אדם לתת לאיש כדרכיו וכפרי
, Ægypti terra in portenta & signa posuisti Qui .suorũ *studiorum*
20 מעלליו: אשר־שמת אתות ומפתים בארץ־מצרים
nomen tibi fecisti & : homine in & : Israel in & ,hanc diem ad usque
עד־היום הזה ובישראל ובאדם ותעשה־לך שם
terra è Israel tuũ populum eduxisti Et .hanc diem secundũ
21 כיום הזה: ותצא את־עמך את־ישראל מארץ
brachio in & robusta manu in & portentis in & signis in , Ægypti
מצרים באתות ובמופתים וביד חזקה ובאזרוע
, hanc terram eis dedisti Et .magno terrore in & , extento
22 נטויה ובמורא גדול: ותתן להם את־הארץ הזאת
,lacte fluentem terram , eis *dandum ad* ,eorũ patribus jurâsti quam
אשר־נשבעת לאבותם לתת להם ארץ זבת חלב
,*tua voce in* audierunt non & ,eam possederunt &, sunt ingressi Et .melle &
23 ודבש: ויבאו וירשו אתה ולא־שמעו בקולך
eis præcepisti quæ omnia : ambulaverunt non tua lege in &
ובתורותך לא־הלכו את־כל־אשר צויתה להם
.hoc malum omne eis *fecisti evenire &* ;fecerũt non ,*faciendum ad*
לעשות לא עשו ותקרא אתם את כל־הרעה הזאת:
est data urbs & ,eã capiendum ad ,civitatem *venerunt tormenta* Ecce
24 הנה הסללות באו העיר ללכדה והעיר נתנה
,*famis &* , *gladii faciebus à* ,eam *super præliantium* Chasdim manũ in
ביד הכשדים הנלחמים עליה מפני החרב והרעב
,*me ad* dixisti tu Et .*videns* tu ecce &,*fuit* es locut⁹ quod & : *pestis &*
25 והדבר ואשר דברת היה והנך ראה: ואתה אמרת אלי
: testes testificare fac & ,argento *in* agrum tibi Eme ,*Domine* Domine
אדני יהוה קנה־לך השדה בכסף והעד עדים
,Irmejahu ad Domini verbũ fuit Et .Chasdim manu in dabitur urbs &
26 והעיר נתנה ביד הכשדים: ויהי דבר־יהוה אל־ירמיהו
me à nunquid ,carnis universæ Deus Dominus *ego* Ecce : dicendo
27 לאמר: הנה אני יהוה אלהי כל־בשר הממני
dans ego Ecce :Dominus dixit sic Propterea *? verbum omne mirificabitur*
28 יפלא כל־דבר: לכן כה אמר יהוה הנני נתן
regis Nebuchadresar manũ in & ,Chasdim manũ in hanc civitatem
את־העיר הזאת ביד הכשדים וביד נבוכדראצר מלך־
urbem *super præliantes* Chasdim venient Et .eam capiet & , Babel
29 בבל ולכדה: ובאו הכשדים הנלחמים על־העיר
:eam comburent & ,igni in hanc civitatem succendent & , hanc
הזאת והציתו את־העיר הזאת באש ושרפוה
,Bahal *ipsi earum* tecta *super* adoleverunt quarum domos &
ואת־הבתים אשר קטרו על־גגותיהם לבעל
.me *iram ad concitandum ad* , alienis diis libamina libaverunt &
והסכו נסכים לאלהים אחרים למען הכעסני:

Versio VULG. LAT.

15 Hæc enim dicit Dominus exercituum,
Deus Israel; Adhuc
possidebuntur domus, & agri,
16 & vineæ in terra ista. Et oravi
ad Dominum, postquàm tradidi
librum possessionis Baruch filio
17 Neri, dicens; Heu, heu, heu,
Domine Deus: ecce tu fecisti
cœlum & terram in fortitudine
tua magna, & in brachio tuo extento:
non erit tibi difficile
18 omne verbum: Qui facis misericordiam
in millibus, & reddis
iniquitatem patrum in sinum
filiorum eorum post eos: Fortissime,
magne, & potens, Dominus
exercituum nomen tibi.
19 Magnus consilio, & incomprehensibilis
cogitatu: cujus oculi
aperti sunt super omnes vias
filiorum Adam, ut reddas unicuique
secundũ vias suas, & secundùm
fructũ adinventionum ejus.
20 Qui posuisti signa & portenta
in terra Ægypti usque ad diem
hanc, & in Israel, & in hominibus,
& fecisti tibi nomen sicut
21 est dies hæc. Et eduxisti populum
tuum Israel de terra Ægypti,
in signis, & in portentis, &
in manu robusta, & in brachio
22 extento, & in terrore magno. Et
dedisti eis terram hanc, quam
jurâsti patribus eorum ut dares
eis terram fluentem lacte &
23 melle. Et ingressi sunt, & possederunt
eam: & non obedierunt
voci tuæ, & in lege tua non ambulaverunt:
omnia quæ mandâsti
eis ut facerent, non fecerunt:
& evenerunt eis omnia
24 mala hæc. Ecce munitiones extructæ
sunt adversùm civitatem,
ut capiatur: & urbs
data est in manus Chaldæorum,
qui præliantur adversùs eam, à
facie gladii, & famis, & pestilentiæ:
& quæcunque locutus es
25 acciderunt, ut tu ipse cernis. Et
tu dicis mihi, Domine Deus;
Eme agrum argento, & adhibe
testes: cùm urbs data sit in manus
26 Chaldæorum? Et factum est
verbum Domini ad Jeremiam,
27 dicens; Ecce ego Dominus Deus
universæ carnis: numquid mihi
difficile erit omne verbum?
28 Propterea hæc dicit Dominus;
Ecce ego tradam civitatem istã
in manus Chaldæorum, & in
manus regis Babylonis, & capient
29 eam. Et venient Chaldæi
præliantes adversũ urbem hanc,
& succendent eam igni, & comburent
eam, & domos, in quarũ
domatibus sacrificabant Baal, &
libabant diis alienis libamina ad
irritandum me.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

23 Καὶ τὴν Δαιδὰν, καὶ τὴν Θαιμὰν, καὶ
τὴν Ῥὼς, καὶ πᾶν περικεκαρμένον κατὰ
24 πρόσωπον αὐτοῦ, Καὶ πάντας τοὺς (η)
συμμίκτους τοὺς καταλύοντας ἐν τῇ ἐρήμῳ,
25 Καὶ πάντας βασιλεῖς (θ) Αἰλὰμ,
26 καὶ πάντας βασιλεῖς Περσῶν, Καὶ πάντας
βασιλεῖς (ι) ἀπὸ ἀπηλιώτου τοὺς
πόῤῥω καὶ τοὺς ἐγγὺς, ἕκαστον πρὸς τὸν
ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ πάσας (κ) βασιλείας
27 τὰς ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς. Καὶ ἐρεῖς
αὐτοῖς, Οὕτως εἶπε κύριος παντοκράτωρ,
Πίετε, (λ) μεθύσθητε, καὶ ἐξεμέσατε,
καὶ πεσεῖσθε, καὶ οὐ μὴ ἀναστῆτε ἀπὸ
προσώπου τῆς μαχαίρας, ἧς ἐγὼ ἀποστέλλω
28 ἀναμέσον ὑμῶν. Καὶ ἔσται ὅταν
μὴ βούλωνται δέξασθαι τὸ ποτήριον ἐκ
τῆς χειρός σου, ὥστε πιεῖν, καὶ ἐρεῖς,
Οὕτως εἶπε κύριος, Πίοντες πίεσθε,
29 Ὅτι ἐν πόλει (μ) ἐν ᾗ ὠνομάσθη τὸ ὄνομά
μου (") ἐπ' αὐτὴν, ἐγὼ ἄρχομαι κακῶσαι,
καὶ ὑμεῖς καθάρσει οὐ μὴ καθαρισθῆτε,
ὅτι μάχαιραν ἐγὼ (ν) καλῶ
ἐπὶ πάντας τοὺς καθημένους ἐπὶ τῆς γῆς.
30 Καὶ σὺ προφητεύσεις (ξ) ἐπ' αὐτοὺς τοὺς
λόγους τούτους, καὶ ἐρεῖς, Κύριος ἀφ' ὑψηλοῦ
χρηματιεῖ, ἀπὸ τοῦ ἁγίου αὐτοῦ
δώσει φωνὴν αὐτοῦ, λόγον χρηματιεῖ (ο) ἐπὶ
τοῦ τόπου αὐτοῦ. καὶ οἶδε ὥσπερ τρυγῶντες
ἀποκριθήσονται· καὶ ἐπὶ (π)
31 καθημένους τὴν γῆν ἥκει ὄλεθρος Ἐπὶ
μέρος τῆς γῆς, ὅτι κρίσις τῷ
κυρίῳ ἐν τοῖς ἔθνεσι· κρίνεται αὐτὸς
πρὸς πᾶσαν σάρκα, οἱ δὲ ἀσεβεῖς ἐδόθησαν
32 εἰς μάχαιραν, λέγει κύριος. Οὕτως
εἶπε κύριος, Ἰδοὺ κακὰ ἔρχεται
ἀπὸ ἔθνους (") ἐπὶ ἔθνος, καὶ λαῖλαψ μεγάλη
ἐκπορεύεται ἀπ' ἐσχάτου τῆς γῆς.
33 Καὶ ἔσονται τραυματίαι ὑπὸ κυρίου ἐν
ἡμέρᾳ κυρίου, ἐκ μέρους τῆς γῆς, καὶ
ἕως εἰς μέρος τῆς γῆς· οὐ μὴ (ρ) κατορυγῶσιν,
εἰς κόπρια ἐπὶ προσώπου
34 τῆς γῆς ἔσονται. Ἀλαλάξατε ποιμένες,
καὶ (σ) κεκράξατε, καὶ κόπτεσθε οἱ
κριοὶ τῶν προβάτων, ὅτι ἐπληρώθησαν αἱ
ἡμέραι (τ) ὑμῶν εἰς σφαγὴν, καὶ πεσεῖσθε
35 ὥσπερ οἱ κριοὶ οἱ ἐκλεκτοὶ, Καὶ ἀπολεῖται
φυγὴ ἀπὸ τῶν ποιμένων, καὶ σωτηρία
ἀπὸ τῶν κριῶν τῶν προβάτων.
36 Φωνὴ κραυγῆς τῶν ποιμένων, καὶ ἀλαλαγμὸς
τῶν προβάτων καὶ τῶν κριῶν,
ὅτι (υ) ὠλόθρευσε κύριος τὰ βοσκήματα αὐτῶν·

Et Dadã, et Theman, et (e) Ros, et & omni circuntonso secundum faciem (f) suam, Et omnibus mistitiis habitantibus in (g) deserto, Et omnibus regibus Ailam, & omnibus regibus (h) Persarum, Et omnibus regibus à Subsolano, qui longè, & qui propè, unicuique adversus proximum suum, & omnibus regnis, quæ super faciem (i) terræ. Et dices eis; Sic dixit Dominus omnipotens; Bibite, inebriamini, & vomite, & cadetis: & non resurgatis à facie gladii, quem ego mitto inter vos. Et erit, cùm noluerint accipere calicem de manu tua, ut bibant: & dices; Sic dixit Dominus; Bibentes bibetis: Quia in civitate, in qua nominatum est nomen meum super eam, ego incipio affligere: & (k) vos mundati non mundabimini: Gladium enim ego voco super omnes sedentes super terram. Et tu prophetabis ad eos verba hæc, & dices; Dominus de excelso responsum dabit: de Sancto suo dabit vocem suam: verbum respondebit super locum suum. Illi (l) autem, quasi vindemiantes, respondebunt: & super habitatores terræ venit interitus, Super partem terræ; quoniam judicium Domino in gentibus: judicatur ipse cum omni carne: impii autem dati sunt in gladium, dicit Dominus. Sic dixit Dominus; Ecce mala veniunt de gente in gentem: & tempestas magna egreditur ab extremo terræ: Et erunt vulnerati à Domino in die Domini, de parte terræ, & usque ad partem terræ: (m) non desodientur: in sterquilinia super faciem terræ erunt. (n) Ululate pastores, & clamate, & plangite arietes ovium: quia completi sunt dies vestri ad interfectionem, & cadetis, quasi arietes electi: Et peribit fuga à pastoribus, & salus ab arietibus ovium. Vox clamoris pastorum, & ululatus ovium, & arietum: quia vastavit Dominus pascua eorum:

MS. A. (η) συμμίκτους αὐτοῦ τοὺς (θ) Δαιδὰν, (ι) τοῦ ἀπηλιώτου (κ) τὰς βασιλείας (λ) καὶ μεθύσθητε καὶ ἐξεμέσατε, (μ) ἐφ' ᾗ (") ἐπ' αὐτῆς, ἐγὼ ἔρχομαι (ν) καλέσω ἐπὶ τοὺς (ξ) τοὺς λόγους τούτους ἐπ' αὐτοὺς, καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, (ο) ἀπὸ τοῦ τόπου τούτου. καὶ οἶδε ὥσπερ τρυγῶντες (π) πάντας τοὺς καθημένους ἐπὶ τὴν γῆν (") εἰς (ρ) κατορύξωσι (σ) κεκράξετε, (τ) ἡμῶν (υ) ὠλόθρευσεν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 ארי כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל עוד יזדבנון בתין וחקלין וכרמין בארעא
16 17 הדא: וצליתי קדם יי בתר דיהבית ית שטרא דזביני לברוך בר נריה למימר: קביל
בעותי יי אלהים הא את עבדתא ית שמיא וית ארעא בחילך רבא ובדרעך מרממא
18 לא יתכסי מן קדמך כל פתגם: עבד טיבו לאלפי דרין ומשלם חובי אבהתא לבניא
19 כד משלמין למחטי בתריהון אלהא רבא גברא יי צבאות שמיה: דרברבין מלכוהי
וסגיאין עובדוהי די קדמך גלין כל אורחת בני אנשא למתן לאנש כאורחתיה וכפרי
20 עובדוהי: דשויתא אתין ומופתין בארעא דמצרים עד יומא הדין ולישראל עבדתא
21 פרישן בגו בני אנשא ועבדתא לך שום כיומא הדין: ואפקתא ית עמך ית ישראל
22 מארעא דמצרים באתין ובמופתין וביד תקיפא ובאדרע מרמם ובחזונא רבא: ויהבת
23 להון ית ארעא הדא דקימתא לאבהתהון למתן להון ארע עבדא חלב ודבש: ועלו
ואחסינו יתה ולא קבילו למימרך ובאורייתך לא הליכו ית כל דפקדתא להון למעבד
24 לא עבדו וערעת יתהון ית כל בישתא הדא: הא מליתא עלו על קרתא למכבשה
וקרתא אתמסרת בידא דכשדאי דמגיחין קרבא עלה מן קדם דקטלין בחרבא ובכפנא
25 ומותא ודמללתא הוה וקדמך גלי: ואת אמרת לי יי אלהים זבון לך חקלא בכספא
26 27 ואסהד סהדין וקרתא אתמסרת בידא דכסדאי: והוה פתגם נבואה מן קדם יי עם
28 ירמיה למימר: הא אנא יי אלהא כל בשרא המן קדמי יתכסי כל פתגם: בכן כדנן אמר
יי הא אנא מסר ית קרתא הדא בידא דכסדאי וביד נבוכדנצר מלכא דבבל ויכבשנה:
29 ויעלון כסדאי דמגיחין קרבא על קרתא הדא וידלקון ית קרתא הדא בנורא ויוקדונה
וית בתיא דאסיקו בוסמין על אגוריהון לבעלא ונסיכו נסכין לטעות עממיא בדיל לארגזא קדמי:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quia hæc dicit Dominus exercituum Deus Israel: Adhuc comparabuntur domus & agri & vineæ in terra ista. Et oravi coram Domino, postquàm dedissem libellum emptionis Baruch filio Neriæ, dicens: Suscipe deprecationem meam Domine Deus: Ecce tu fecisti cœlos & terram virtute tua magna, & brachio tuo excelso, & nullum verbum te latet. Faciens benignitatem in mille ætates, & reddens peccata patrum filiis, quando pergunt peccare post illos: Deus magne, fortis, Dominus exercituum nomen ejus. Cujus consilia sunt magna, & multa opera ejus; in cujus conspectu revelatæ sunt omnes viæ filiorum hominum, ut des unicuique juxta vias suas, & secundùm fructum operum suorum. Quia posuisti signa & portenta in terra Ægypti usque in diem hanc, & Israeli fecisti mirabilia in medio filiorum hominum; & fecisti tibi nomen quale est hodie. Et eduxisti populum tuum Israel de terra Ægypti in signis, & portentis, & in manu forti & in brachio excelso, & in visione magna. Et dedisti eis terram istam pro qua jurâsti patribus eorum, ut dares eis terram producentem lac & mel. Et ingressi sunt & possederunt eam, & non obedierunt verbo tuo, & in lege tua non ambulaverunt: omnia quæ eis præcepisti ut facerent, non fecerunt; & accidit eis omne malum hoc. Ecce aggeres constructi sunt contra civitatem ad eam subjiciendam, & civitas tradita est in manum Chaldæorum, qui præliantur adversùm eam, à facie eorum qui occidunt gladio, & fame, & pestilentia: & quod locutus es, factum est, & tibi apertum est. Et tu Domine Deus dicis mihi, Eme tibi agrum argento, et adhibe testes, cùm civitas sit tradita in manum Chaldæorum. Et factum est verbum prophetiæ à facie Domini ad Jeremiam, dicens: Ecce ego Dominus Deus universæ carnis: An mihi quicquam erit abstrusum? Propterea hæc dicit Dominus, Ecce ego tradam civitatem istam in manum Chaldæorum, & in manum Nabuchodonosor regis Babylonis, & subjiciet eam. Et ingredientur Chaldæi qui præliantur adversum urbem hanc, & succendent urbem igni, & comburent eam, & domos super quarum tectis adoleverunt Baal aromata, & libaverunt libamina idolis populorum, ut irritarent me.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܬܘܒ ܢܬܙܒܢܘܢ ܒܬܐ ܘܩܘܪܝܐ 15
ܘܟܪܡܐ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. * ܘܨܠܝܬ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܡܢ ܒܬܪ ܕܝܗܒܬ ܟܬܒܐ ܕܙܒܢܬܐ ܠܒܪܘܟ 16
ܒܪ ܢܪܝܐ. ܘܨܠܝܬ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܪܬ. * ܒܒܥܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܐܢܬ ܥܒܕܬ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ 17
ܒܚܝܠܟ ܪܒܐ. ܘܒܕܪܥܟ ܪܡܐ. ܘܠܐ ܡܬܛܫܐ ܡܢܟ ܡܕܡ ܟܠ ܨܒܘ. * ܥܒܕ ܛܝܒܘܬܐ ܠܐܠܦܐ 18
ܕܪܐ. ܦܪܥ ܚܛܗܐ ܕܐܒܗܬܐ ܒܥܘܒܐ ܕܒܢܝܗܘܢ ܒܬܪܗܘܢ. ܐܠܗܐ ܪܒܐ ܘܓܢܒܪܐ ܘܕܚܝܠܐ.
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܪܒ ܡܠܟܗ. ܘܣܓܝܐܝܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܕܥܝܢܘܗܝ ܦܬܝܚܢ ܥܠ 19
ܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܠܡܬܠ ܠܟܠ ܐܢܫ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܗ. ܘܐܝܟ ܦܐܪܐ ܕܥܒܕܘܗܝ.
* ܕܥܒܕܬ ܐܬܘܬܐ ܘܬܕܡܪܬܐ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܠܐܝܣܪܝܠ ܘܒܒܢܝ 20
ܐܢܫܐ. ܘܥܒܕܬ ܠܟ ܫܡܐ ܐܝܟ ܕܝܘܡܢܐ. * ܘܐܦܩܬ ܠܥܡܟ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. 21
ܒܐܬܘܬܐ ܘܒܬܕܡܪܬܐ. ܘܒܐܝܕܐ ܚܝܠܬܢܝܬܐ ܘܒܕܪܥܐ ܪܡܐ ܘܒܚܙܘܐ ܪܒܐ. * ܘܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܐܪܥܐ 22
ܗܕܐ ܕܝܡܝܬ ܠܐܒܗܝܗܘܢ ܠܡܬܠ ܠܗܘܢ. ܐܪܥܐ ܕܡܪܕܝܐ ܚܠܒܐ ܘܕܒܫܐ. * ܘܐܬܘ ܘܝܪܬܘܗ. 23
ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܒܩܠܟ. ܘܒܢܡܘܣܟ ܠܐ ܗܠܟܘ. ܘܟܠ ܕܦܩܕܬ ܐܢܘܢ ܠܡܥܒܕ. ܠܐ ܥܒܕܘ.
ܘܩܪܝܬ ܐܢܘܢ ܟܠܗ ܗܕܐ ܒܝܫܬܐ. * ܗܐ ܟܡܝܢܐ ܐܬܘ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܠܡܫܒܩܗ. ܘܡܕܝܢܬܐ 24
ܐܫܬܠܡܬ ܒܐܝܕܝ ܟܠܕܝܐ ܕܡܩܪܒܝܢ ܒܗ. ܡܢ ܩܕܡ ܚܪܒܐ ܘܟܦܢܐ ܘܡܘܬܢܐ.
ܘܡܕܡ ܕܐܡܪܬ ܗܘܐ. ܘܗܐ ܚܙܐ ܐܢܬ. * ܘܐܢܬ ܐܡܪܬ ܠܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܩܢܝ ܠܟ 25
ܚܩܠܐ ܒܟܣܦܐ. ܘܐܣܗܕ ܣܗܕܐ. ܘܗܐ ܡܕܝܢܬܐ ܐܫܬܠܡܬ ܒܐܝܕܝ ܟܠܕܝܐ. * ܘܗܘܐ 26
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܟܠ ܒܣܪ. ܕܠܡܐ 27
ܡܢ ܡܛܫܐ ܡܢܝ ܡܕܡ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܗ 28
ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܒܐܝܕܝ ܟܠܕܝܐ. ܘܒܐܝܕܘܗܝ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܟܒܫܝܗ.
* ܘܢܐܬܘܢ ܟܠܕܝܐ. ܘܢܩܪܒܘܢ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܢܥܩܪܘܢܗ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ 29
ܘܢܘܩܕܘܢܗ ܒܢܘܪܐ. ܘܥܡ ܒܬܐ ܕܣܡܘ ܒܣܛܚܝܗܘܢ ܠܒܣܡܐ ܠܒܥܠ. ܘܢܣܟܘ ܢܘܣܟܐ
ܠܐܠܗܐ ܐܚܪܢܐ ܕܢܪܓܙܘܢܢܝ.

Nam ſic ait Dominus exercituum Deus Iſraelis, Poſthac ementur domus, & prædia atque vineæ in terra iſta. 15

Oravi autem Dominum poſtquam dediſſem ſyngraphas emptionis Barucho filio Neriæ; oravi inquam, Dominum, ac dixi; 16

Quæſo Domine Deus, Ecce tu cœlum terrámque condidiſti potentiâ tuâ magnâ & brachio tuo excelſo, neque te latet res ulla: 17

Qui benignitatem exerces in millia progenierum, rependis peccata patrum in ſinum filiorum eorum poſt ipſos: Deus maxime, fortiſſime, ac formidabilis: cujus nomen eſt Dominus potentiſſimus: 18

Cujus conſilium maximum, & plurima facta: cujus oculi ſunt aperti ſuper omnes hominum vias, ut reddas cuique ſecundùm vias ejus, & ſecundùm fructus actionum ipſius: 19

Qui maxima ſigna atque portenta edidiſti in terra Ægypti ad hanc uſque diem, pro Iſraele inter filios hominum; & comparâſti tibi nomen quale eſt hodierno die: 20

Eduxiſti populum tuum Iſraelem è terra Ægypti ſignis, miraculis, manu robuſtâ, brachio excelſo, & ſpectaculo magno: 21

Et dediſti eis terram iſtam quam juraveras patribus eorum te daturum eis, terram manantem lacte & melle. 22

Et quidem venerunt, ac poſſederunt eam: ſed *quia* non auſcultaverunt voci tuæ, nec ambulaverunt in lege tua, & quæcunque præceperas eis facere, non fecerunt; ideò contigit eis tantum hoc malum. 23

Ecce inſidiæ venerunt contra civitatem iſtam ad capiendum eam; et civitas jam tradita eſt in manum Chaldæorum oppugnantium eam, præ gladio, fame, ac peſte; & quod prædixeras, evenit, ut ecce vides: 24

Tu tamen dicis mihi Domine Deus potentiſſime, Eme tibi agrum pecuniâ, & adhibe teſtes; quum civitas ecce tradita jam ſit in manum Chaldæorum. 25

Tum factus eſt ſermo Domini ad Jeremiam hiſce verbis; 26

Ego ſum Dominus Deus omnis carnis: an me lateret ulla res? 27

Propterea ſic ait Dominus Deus, Ecce traditurus ſum hanc civitatem in manum Chaldæorum & in manum Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ, & ſubjugabit eam: 28

Et venientes Chaldæi expugnabunt hanc civitatem, & evellent hanc civitatem, & igne ſuccendent unà cum domibus ſuper quarum tectis adoleverunt thura Baali, & libaverunt libamina diis alienis, ut me ad iram provocarent. 29

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ودادان وتيمان وروس * وكل مجزوز قدام وجهه * وجميع المختلطين الكائنين في البرية * 23 24
* وجميع ملوك الفرس * وجميع الملوك من مشرق الشمس القرباء والبعداء * كل واحد مع اخيه * 25 26
وجميع الممالك الذين على وجه الارض * وتقول لهم * هكذا قال الرب الضابط الكل * اشربوا 27
واسكروا وقيئوا * وتسقطون ولا تقومون من وجه السيف الذي انا ارسله بينكم * ويكون اذا 28
لم يريدوا ان يقبلوا الكاس من يدك حتى يشربوا * فتقول هكذا قال الرب * تشربون شاربين *
* لان في المدينة التي دعي اسمي عليها انا ابتدي ان اسيء * وانتم لم تطهروا بطهر اني 29
انا ادعوا سيفا على الجلوس على الارض * وانت تتنبا بهذه الاقوال وتقول * الرب من العلي 30
يوحي * من قدسه * يعطي صوته * يوحي قولا من هذا الموضع * والذين مثل القاطفين
يجاوبون * وعلى الجلوس على الارض ياتي الهلاك * على جزء الارض * لان جزوا للرب في الامم * 31
ويدين كل ذي لحم * والمنافقون تجدوا للسيف قال الرب *

* الاصحاح الحادي والعشرون *

* هكذا قال الرب * ها شرور تاتي من امة الى امة * وعاصف عظيم يخرج من آخر الارض * 32
* ويصير جرحا من قبل الرب في يوم الرب من جزء الارض والى جزء الارض * لا يدفنوا * 33
للمزابل على وجه الارض يكونون * هللوا ايها الرعاة * واصرخوا ونوحوا يا كباش الغنم * لان 34
ايامكم كملت للذبح * وتسقطون مثل الكباش الحبان * ويهلك الملجاء من الرعاة * 35
والخلاص من كباش الغنم * صوت صراخ الرعاة * ورنين الخراف والكباش * لان الرب 36
اهلك مراعيها *

Dadani, Themani, & Robos: omni facie detonſo, 23

Cunctiſque miſcellaneis degentibus in deſerto: 24

Omnibus regibus Perſarum, 25

Et omnibus regibus qui ſunt *ad orientem ſolem, tam propinquis quàm remotis, unicuique cum fratre ſuo: demum cunctis regnis quæ extant ſuper faciem terræ.* 26

Et dices eis, Sic dixit Dominus omnipotens, Bibite, inebriamini, & vomite, ut cadentes non reſurgatis à facie gladii quem ego miſſurus ſum inter vos. 27

Quòd ſi contingat ut renuant accipere calicem de manu tua ut bibant, dices; Ita dixit Dominus, Omnino bibetis. 28

Quoniam in urbe ſuper quam invocatum eſt nomen meum, incipiam nocere; vos nullo modo inſontes eritis: nam ego mucronem advocabo in habitantes ſuper terram. 29

Tu quoque prophetabis hoſce ſermones, ac dices; Dominus ab alto revelabit, è ſanctuario ſuo, vocem edet, revelabit ſermonem ex hoc loco: tam illos qui ceu vindemiatores invicèm reſpondent; quàm habitantes ſuper terram invadet interitus; 30

Partem ſcilicet *terræ: nam pars eſt Domino in gentibus, & judicabit omnem carnem præditum, & impii diſponentur ad gladium, dixit Dominus.* 31

Textus vigeſimus primus.

Ita dixit Dominus, Ecce mala procedent à gente in gentem, & tempeſtas magna egredietur ab extremo terræ: 32

Fientque vulnerati à Domino in die Domini, ab una *terræ parte ad* aliam *terræ partem: non ſepelientur,* ſed *in ſterquilinia ſuper faciem terræ erunt.* 33

Ululate O paſtores, clamate, & lamentamini O arietes ovium: quoniam adeſt finis dierum veſtrorum ut jugulemini: cadetis ut arietes electi, 34

Et peribit aſylum à paſtoribus, & ſalus ab arietibus ovium. 35

Vox clamoris paſtorum, & ovium arietumque balatus auditur, *quia Dominus vaſtavit paſcua eorum.* 36

ירמיה: לב

malum *facientes* profectò Jehudah filii & Iſrael filii *fuerunt* Nam
30 כִּי־הָיוּ בְנֵי־יִשְׂרָאֵל וּבְנֵי יְהוּדָה אַךְ עֹשִׂים הָרַע
profectò Iſrael filii quia *: ſuis pueritiis à* meis oculis in
בְּעֵינַי מִנְּעֻרֹתֵיהֶם כִּי בְנֵי־יִשְׂרָאֵל אַךְ
.DOMINUS dixit ,ſuarum manuum opere in me *irritantes*
מַכְעִסִים אֹתִי בְּמַעֲשֵׂה יְדֵיהֶם נְאֻם־יְהוָה׃
hæc civitas mihi fuit mea ira *ſuper* & ,meo *naſo* *ſuper* Quia
31 כִּי עַל־אַפִּי וְעַל־חֲמָתִי הָיְתָה לִּי הָעִיר הַזֹּאת
: hanc diem ad uſque & ,eam ædificaverunt qua die à
לְמִן־הַיּוֹם אֲשֶׁר בָּנוּ אוֹתָהּ וְעַד הַיּוֹם הַזֶּה
malitiam omnem Propter .*meis faciebus deſuper* eam *amovendum ad*
32 לַהֲסִירָהּ מֵעַל פָּנָי׃ עַל כָּל־רָעַת
,me *irritandum ad* fecerunt quam ,Jehudah filiorum & ,Iſrael filiorum
בְּנֵי־יִשְׂרָאֵל וּבְנֵי יְהוּדָה אֲשֶׁר עָשׂוּ לְהַכְעִסֵנִי
,eorũ prophetæ & ,eorũ ſacerdotes ,eorũ principes ,eorum reges ,ipſi
הֵמָּה מַלְכֵיהֶם שָׂרֵיהֶם כֹּהֲנֵיהֶם וּנְבִיאֵיהֶם
verterunt Et .Jeruſalaim habitatores & ,Jehudah *vir* &
33 וְאִישׁ יְהוּדָה וְיֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלִָם׃ וַיִּפְנוּ
,ſurgendo manè eos *docendo* & : facies non & ,cervicem me *ad*
אֵלַי עֹרֶף וְלֹא פָנִים וְלַמֵּד אֹתָם הַשְׁכֵּם
.diſciplinam *capiendum ad audientes ipſi* non & ,docendo &
וְלַמֵּד וְאֵינָם שֹׁמְעִים לָקַחַת מוּסָר׃
eſt invocatum qua domo in ſuas abominationes poſuerunt Et
34 וַיָּשִׂימוּ שִׁקּוּצֵיהֶם בַּבַּיִת אֲשֶׁר־נִקְרָא
excelſa ædificaverunt Et .eam *polluendam ad* ,*ea ſuper* meũ nomen
35 שְׁמִי עָלָיו לְטַמְּאוֹ׃ וַיִּבְנוּ אֶת־בָּמוֹת
ſuos filios *faciendum tranſire ad* ,Hinnom filii valle in quæ ,Bahal
הַבַּעַל אֲשֶׁר בְּגֵיא בֶן־הִנֹּם לְהַעֲבִיר אֶת־בְּנֵיהֶם
aſcendit nec ,eis præcepi non quod ,Molech *ipſi* ſuas filias &
וְאֶת־בְּנוֹתֵיהֶם לַמֹּלֶךְ אֲשֶׁר לֹא־צִוִּיתִים וְלֹא עָלְתָה
faciendum peccare *ad* ,hanc abominationem *faciendum ad* ,meum cor *ſuper*
עַל־לִבִּי לַעֲשׂוֹת הַתּוֹעֵבָה הַזֹּאת לְמַעַן הַחֲטִי
Deus Dominus dixit ſic propterea nunc Et .Jehudah
36 אֶת־יְהוּדָה׃ וְעַתָּה לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי
Datur : dicentes vos qua ,hanc civitatem ad ,Iſrael
יִשְׂרָאֵל אֶל־הָעִיר הַזֹּאת אֲשֶׁר אַתֶּם אֹמְרִים נִתְּנָה
ego Ecce .peſte in & ,fame in & ,gladio in ,Babel regis manu in
37 בְּיַד מֶלֶךְ־בָּבֶל בַּחֶרֶב וּבָרָעָב וּבַדָּבֶר׃ הִנְנִי
,meo *naſo* in ,*illuc* eos *propuli quò* terris univerſis de eos *congregans*
מְקַבְּצָם מִכָּל־הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר הִדַּחְתִּים שָׁם בְּאַפִּי
locum ad eos faciam redire & ,magna *iracundia in* & ,mea ira &
וּבַחֲמָתִי וּבְקֶצֶף גָּדוֹל וַהֲשִׁבֹתִים אֶל־הַמָּקוֹם
,populum in mihi erunt Et .*fiducia in* eos faciam habitare& ,iſtum
38 הַזֶּה וְהֹשַׁבְתִּים לָבֶטַח׃ וְהָיוּ לִי לְעָם
,unum cor eis dabo Et .Deum in eis ero ego &
39 וַאֲנִי אֶהְיֶה לָהֶם לֵאלֹהִים׃ וְנָתַתִּי לָהֶם לֵב אֶחָד
,eis *bonum in* ,diebus omnibus me *timendum ad* ,unam viam &
וְדֶרֶךְ אֶחָד לְיִרְאָה אוֹתִי כָּל־הַיָּמִים לְטוֹב לָהֶם
,*ſeculi* pactum eis *excidam* Et .eos poſt eorum filiis &
40 וְלִבְנֵיהֶם אַחֲרֵיהֶם׃ וְכָרַתִּי לָהֶם בְּרִית עוֹלָם
& : eis *me benefaciendum ad*,eorum *poſterioribus* à revertar non quia
אֲשֶׁר לֹא־אָשׁוּב מֵאַחֲרֵיהֶם לְהֵיטִיבִי אוֹתָם וְאֶת־
.me *deſuper recedere non pro* ,eorum corde in dabo meum timorem
יִרְאָתִי אֶתֵּן בִּלְבָבָם לְבִלְתִּי סוּר מֵעָלָי׃
terra in eos plantabo & : eis benefaciendo eos ſuper gaudebo Et
41 וְשַׂשְׂתִּי עֲלֵיהֶם לְהֵטִיב אוֹתָם וּנְטַעְתִּים בָּאָרֶץ
.mea anima tota in & ,meo corde omni in ,veritate in hac
הַזֹּאת בֶּאֱמֶת בְּכָל־לִבִּי וּבְכָל־נַפְשִׁי׃

Verſio VULG. LAT.

30 Erant enim filii Iſrael, & filii
Juda, jugiter facientes malum in
oculis meis ab adoleſcentia ſua :
filii Iſrael qui uſque nunc exacerbant
me in opere manuum
31 ſuarum, dicit Dominus. Quia
in furore & in indignatione mea
facta eſt mihi civitas hæc, à die
quâ ædificaverunt eam, uſque ad
diem iſtam quâ auferetur de conſpectu
32 meo. Propter malitiam
filiorum Iſrael, & filiorum Juda,
quam fecerunt ad iracundiam
me provocantes, ipſi & reges
eorum, principes eorum, & ſacerdotes
eorum, & prophetæ
eorum, viri Juda & habitatores
33 Jeruſalem. Et verterunt ad me
terga & non facies : cùm docerem
eos diluculò, & erudirem,
& nollent audire ut acciperent
34 diſciplinam. Et poſuerunt idola
ſua in domo, in qua invocatum
eſt nomen meum, ut polluerent
35 eam. Et ædificaverunt
excelſa Baal, quæ ſunt in valle
filii Ennom, ut initiarent filios
ſuos & filias ſuas Moloch : quod
non mandavi eis, nec aſcendit
in cor meum ut facerent abominationem
hanc, & in peccatum
36 deducerent Judam. Et nunc
propter iſta, hæc dicit Dominus
Deus Iſrael ad civitatem hanc,
de qua vos dicitis quòd tradetur
in manus regis Babylonis in gladio
37 & in fame, & in peſte; Ecce
ego congregabo eos de univerſis
terris, ad quas ejeci eos
in furore meo, & in ira mea, &
in indignatione grandi : & reducam
eos ad locum iſtum, &
habitare eos faciam confidenter.
38 Et erunt mihi in populum, &
39 ego ero eis in Deum. Et dabo
eis cor unum, & viam unam,
ut timeant me univerſis diebus:
& benè ſit eis, & filiis eorum
40 poſt eos. Et feriam eis pactum
ſempiternum, & non deſinam
eis benefacere : & timorem
meum dabo in corde eorum, ut
41 non recedant à me. Et lætabor
ſuper eis, cùm benè eis fecero :
& plantabo eos in terra iſta in
veritate, in toto corde meo, &
in tota anima mea.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

37 Καὶ παύσεται τὰ κατάλοιπα τῆς εἰρήνης
38 ἀπὸ προσώπου ὀργῆς θυμοῦ μου. (φ) Ἐγκατέλιπεν
ὥσπερ λέων κατάλειμμα αὐτοῦ,
ὅτι ἐγενήθη ἡ γῆ αὐτῶν εἰς ἄβατον ἀπὸ
προσώπου (χ) τῆς μαχαίρας τῆς μεγάλης.

MS. A. (φ) Κατέλειπέν με ὥσπερ λέων κάλυμα αὐτοῦ, (χ) μαχαίρας

Et ceſſabunt (o) reſidua pacis à facie iræ furoris mei. Dereliquit quaſi leo diverſorium ſuum: quia facta eſt terra eorum in invium, à facie gladii magni.

ΚΕΦ. λγ΄.

Cap. 26. Vulg.Lat.

1 ἘΝ ἈΡΧΗ͂ ΒΑΣΙΛΕ΄ΩΣ
ἸΩΑΚΕῚΜ ΥἹΟΥ͂ ἸΩΣΙ΄Α, (α) ἘΓΕΝΗ΄ΘΗ
Ὁ ΛΟ΄ΓΟΣ ΟὟΤΟΣ ΠΑΡᾺ
2 ΚΥΡΙ΄ΟΥ· Οὕτως εἶπε κύριος,
Στῆθι ἐν αὐλῇ οἴκου κυρίου, καὶ χρηματιεῖς
(β) ἅπασι τοῖς Ἰουδαίοις, καὶ πᾶσι τοῖς
ἐρχομένοις προσκυνεῖν ἐν οἴκῳ κυρίου, ἅπαντας
τοὺς λόγους, οὓς συνέταξά σοι (γ) χρηματίσαι
3 αὐτοῖς, μὴ ἀφέλῃς ῥῆμα. Ἴσως
ἀκούσονται, καὶ ἀποστραφήσονται ἕκαστος (δ)
ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, καὶ παύσομαι
ἀπὸ τῶν κακῶν ὧν ἐγὼ λογίζομαι τοῦ
ποιῆσαι αὐτοῖς ἕνεκεν τῶν πονηρῶν ἐπιτηδευμάτων
4 αὐτῶν. Καὶ ἐρεῖς, Οὕτως εἶπε
κύριος, Ἐὰν μὴ ἀκούσητέ μου, τοῦ πορεύεσθαι
ἐν τοῖς (ε) νομίμοις μου οἷς ἔδωκα
5 κατὰ πρόσωπον ὑμῶν, Εἰσακούειν τῶν
(ζ) λόγων τῶν παίδων μου τῶν προφητῶν,
οὓς ἐγὼ ἀποστέλλω πρὸς ὑμᾶς ὄρθρου, καὶ
6 ἀπέστειλα, καὶ οὐκ (η) ἠκούσατέ μου. Καὶ δώσω
τὸν οἶκον τοῦτον ὥσπερ (θ) Σηλώ, καὶ
τὴν (ι) πόλιν δώσω εἰς κατάραν πᾶσι
7 τοῖς ἔθνεσι πάσης τῆς γῆς. Καὶ ἤκουσαν
οἱ ἱερεῖς, καὶ οἱ ψευδοπροφῆται, καὶ πᾶς ὁ
λαὸς τοῦ Ἱερεμίου λαλοῦντος τοὺς λόγους
8 τούτους ἐν οἴκῳ κυρίου. Καὶ ἐγένετο Ἱερεμίου
παυσαμένου λαλοῦντος πάντα (κ) ἃ
συνέταξε κύριος αὐτῷ λαλῆσαι παντὶ τῷ
λαῷ, καὶ συνελάβοσαν αὐτὸν οἱ ἱερεῖς, καὶ
οἱ ψευδοπροφῆται, καὶ πᾶς ὁ λαός, λέγων,
9 Θανάτῳ ἀποθανῇ, Ὅτι ἐπροφήτευσας
τῷ ὀνόματι κυρίου, λέγων, Ὥσπερ (λ) Σηλὼ
ἔσται ὁ οἶκος οὗτος, καὶ ἡ πόλις αὕτη ἐρημωθήσεται
ἀπὸ (μ) κατοικούντων. καὶ ἐξεκκλησιάσθη
πᾶς ὁ λαὸς ἐπὶ Ἱερεμίαν ἐν οἴκῳ
10 κυρίου. Καὶ ἤκουσαν οἱ ἄρχοντες Ἰούδα (ν)
τὸν λόγον τοῦτον, καὶ ἀνέβησαν ἐξ οἴκου τοῦ
βασιλέως εἰς οἶκον κυρίου, καὶ ἐκάθισαν ἐν
11 προθύροις (ο) πύλης τῆς καινῆς. Καὶ εἶπαν
οἱ ἱερεῖς, καὶ οἱ ψευδοπροφῆται πρὸς τοὺς
ἄρχοντας, καὶ παντὶ τῷ λαῷ, Κρίσις θανάτου
τῷ ἀνθρώπῳ τούτῳ, ὅτι ἐπροφήτευσε
κατὰ τῆς πόλεως ταύτης, καθὼς ἠκούσατε
12 ἐν τοῖς ὠσὶν ὑμῶν. Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας
πρὸς τοὺς ἄρχοντας, καὶ παντὶ τῷ λαῷ, λέγων,
Κύριος ἀπέστειλέ με προφητεῦσαι ἐπὶ
τὸν οἶκον τοῦτον, καὶ ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην
πάντας τοὺς (π) λόγους οὓς ἠκούσατε.

CAP. XXXIII.

IN (a) principio regni Joacim filii Joſiæ factum eſt verbum iſtud à Domino. Sic dixit Dominus; Sta in atrio domus Domini: & reſpondebis omnibus Judæis, & omnibus venientibus adorare in domo Domini, univerſos ſermones, quos mandavi tibi reſpondere eis: noli ſubtrahere verbum. Forſitan audient, & avertentur unuſquiſque à via ſua mala: & ceſſabo à malis, quæ ego cogito facere eis propter peſſima ſtudia eorum. Et dices, Sic dixit Dominus; Si non audieritis me, ambulando in legitimis meis, quæ dedi ante faciem veſtram, Exaudiendo verba puerorum meorum prophetarum, quos ego mitto ad vos diluculò, & miſi, & non audiſtis me; Et dabo domum hanc ſicut Selo; & civitatem dabo in maledictionem cunctis gentibus univerſæ terræ. Et audierunt ſacerdotes, & pſeudoprophetæ, & univerſus populus Hieremiam loquentem verba hæc in domo Domini. Et factum eſt, cùm Hieremias conſummâſſet loquens omnia, quæ præceperat ei Dominus loqui univerſo populo, & apprehenderunt eum ſacerdotes, & pſeudoprophetæ, & omnis populus, dicens; Morte moriaris: Quia prophetâſti nomine Domini, dicens; Sicut Selo, erit domus hæc, & urbs iſta deſolabitur ab habitantibus. Et convenit Eccleſia univerſi populi ſuper Hieremiam in domo Domini. Et audierunt principes Juda verbum hoc: & aſcenderunt de domo regis in domum Domini: & ſederunt in veſtibulis (b) portæ novæ. Et dixerunt ſacerdotes, & pſeudoprophetæ ad principes, & omni populo; Judicium mortis homini huic, quia prophetavit adverſus civitatem iſtam ſicut audiſtis in auribus veſtris. Et dixit Hieremias ad principes, & omni populo, dicens; Dominus miſit me prophetare ſuper domum iſtam, & ſuper civitatem hanc omnia verba, quæ audiſtis.

MS.A. (α) ἘΓΕ΄ΝΗ (β) πᾶσι (γ) αὐτοῖς χρηματίσαι, (δ) ἀπὸ
αὐτῶν (ε) νόμοις (ζ) λόγων μου καὶ τῶν (η) εἰσηκούσατε (θ) Σηλώμ, (ι)
λιν ταύτην δώσω (κ) ὅσα συνέταξε αὐτῷ κύριος (λ) Σηλώμ (μ) ἐνοικούντων.
καὶ ἐξεκλησιάσθη (ν) τῶν λόγων τούτων, (ο) πύλης κυρίου τῆς (π) λόγους τούτους οὓς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

30 ארי הוו בני ישראל ובני יהודה ברם עבדין דביש קדמי מזעוריהון ארי בני ישראל
31 ברם מרגזין קדמי בעובדי ידיהון אמר יי׃ ארי רוגזי וחמתי חל בקרתא הדא למן יומא
32 דבנו יתה ועד יומא הדין לאגליותה מקביל מימרי׃ על כל בישת בני ישראל ובני
יהודה דעבדו לארגזא קדמי אנון מלכיהון רברבניהון ונבייהון דשקרא ואנש
33 יהודה ויתבי ירושלם׃ ואחזרו בפולחני קדל ולא שויאו דחלתי לקבל אפיהון
ושלחית לותהון ית כל עבדי נבייא מקדם ומליף ולית אנון צבן לקבלא אולפן׃
34 ושויאו שקוציהון בביתא דאתקרי שמי עלוהי לסאבותיה׃ ובנו ית במת בעלא
35 די בחילת בר הנם לאעברא ית בניהון וית בנתהון למולך דלא פקדית באוריתי
ולא רעוא קדמי למעבד תועבתא הדא בדיל לחיבא ית דבית יהודה׃
36 וכען בכן כדנן אמר יי אלהא דישראל על קרתא הדא דאתון אמרין אתמסרת
37 בידא דמלכא דבבל בחרבא ובכפנא ובמותא׃ הא אנא מכנש להון מכל
מדינתא דאגליתנון לתמן ברוגזי ובחמתי ובתקוף רב ואתיבנון לאתרא הדין
38 39 ואשרנון לרחצן׃ ויהון קדמי לעם ואנא אהוי להון לאלה׃ ואתן להון לבא חד
40 ואורח חד למדחל קדמי כל יומיא דייטב להון ולבניהון בתריהון׃ ואגזר להון קים
עלם דלא יתוב מימרי מבתריהון לאיטבא להון וית דחלתי אתן בלבהון בדיל דלא
41 יסטון מבתר פולחני׃ ויחדי מימרי עליהון לאיטבא להון ואקימנון בארעא הדא
בקשוט במימרי וברעותי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Fuerunt enim filii Iſrael & filii Juda facientes utique malum in conſpectu meo ab adoleſcentia ſua: quia filii Iſrael irritant utique me operibus manuum ſuarum, dicit Dominus. Quia ira mea & furor meus reſedit in civitate hac à die qua conſtruxerunt eam uſque in diem hanc, ut tranſmigrare facerem eam à conſpectu Verbi mei: Propter omnia mala filiorum Iſrael, & filiorum Juda, quæ fecerunt ut irritarent me ipſi & reges eorum, & principes eorum, & pſeudoprophetæ eorum, & viri Juda, & habitatores Jeruſalem. Et verterunt in cultu meo cervicem, & non poſuerunt timorem mei in conſpectu vultus ſui. Et miſi ad eos omnes prophetas ſervos meos, manè conſurgens & docens: & noluerunt ſuſcipere diſciplinam. Et poſuerunt abominationes ſuas in domo in qua invocatum eſt nomen meum ut polluerent eam: Et conſtruxerunt excelſa Baal, quæ ſunt in valle filii Hinnom, ut traducerent filios ſuos & filias ſuas idolo Moloch; quod non præcepi in lege mea, nec eſt voluntas coram me ut facerent abominationem hanc, ut in peccatum deducerent domum Juda. Nunc ergo propterea ſic dicit Dominus Deus Iſrael ſuper civitate hac, de qua vos dicitis, Tradita eſt in manum regis Babylonis, gladio & fame, & peſte. Ecce ego congregabo eos de omnibus provinciis, ad quas tranſmigrare feci eos in ira mea, & in indignatione mea, & in furore grandi; & reducam eos ad locum iſtum, & habitare eos faciam confidenter. Et erunt coram me in populum, & ego ero eis in Deum. Et dabo eis cor unum et viam unam, ut timeant coram me omnibus diebus, et bene ſit eis, et filiis eorum poſt eos. Et feriam cum eis pactum ſempiternum; et non revertetur Verbum meum ab eis, ut non deſinam bene faciam eis: et timorem mei dabo in cordibus eorum, ut non declinent à cultu meo. Et lætabitur Verbum meum ſuper illos, ad bene faciendum eis, et ſtabiliam eos in terra iſta, in veritate, in verbo meo et voluntate mea.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܗܘܘ ܒܢܝ ܐܝܣܪܐܝܠ ܘܒܢܝ ܝܗܘܕܐ .• ܥܒܕܝܢ ܒܝܫܬܐ ܩܕܡܝ ܡܢ ܛܠܝܘܬܗܘܢ
ܡܛܠ ܕܒܢܝ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܡܪܓܙܝܢ ܠܝ ܒܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܡܛܠ ܗܢܐ ܗܘܬ
ܪܘܓܙܝ ܘܚܡܬܝ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܒܢܘܗ ܘܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܠܡܥܒܪܗ
ܡܢ ܩܕܡ ܐܦܝ. * ܡܛܠ ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܐ ܕܒܢܝ ܐܝܣܪܐܝܠ ܘܕܒܢܝ ܝܗܘܕܐ ܕܥܒܕ
ܠܡܪܓܙܘܬܝ. ܗܢܘܢ ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܘܪܘܪܒܢܝܗܘܢ ܘܟܗܢܝܗܘܢ ܘܢܒܝܝܗܘܢ .• ܘܓܒ
ܝܗܘܕܐ ܘܥܡܘܪܝ ܐܘܪܫܠܡ. * ܘܐܗܦܟܘ ܠܝ ܩܕܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܦܝܗܘܢ. ܘܐܠܦܬ ܐܢܘ
ܡܩܕܡ ܘܐܠܦܬ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܠܡܩܒܠܘ ܡܪܕܘܬܐ. * ܘܣܡܘ ܛܢܦܘܬܗܘܢ ܒܒܝ
ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܛܢܦܘܗܝ. * ܘܒܢܘ ܐܓܘܪܐ ܠܒܥܠܐ ܒܬܘܦܬ ܕܒܢܚܠܐ ܕܒܪ
ܗܢܘܡ .• ܠܡܥܒܪܘ ܒܢܝܗܘܢ ܘܒܢܬܗܘܢ ܠܡܠܟܘܡ. ܕܠܐ ܦܩܕܬ. ܘܠܐ ܣܠܩܬ ܥܠ ܠܒ
ܕܢܥܒܕܘܢ ܛܢܦܘܬܐ ܗܕܐ ܘܢܚܛܘܢ ܠܝܗܘܕܐ. * ܗܫܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ
ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܕܐܢܬܘܢ ܐܡܪܝܢ ܕܡܫܬܠܡܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ .• ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢ
ܘܒܡܘܬܢܐ. * ܗܐ ܡܟܢܫ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܐܪܥܬܐ ܕܒܕܪܬ ܐܢܘܢ ܬܡܢ .• ܒܪܘܓ
ܘܒܚܡܬܝ ܘܒܪܘܓܙܐ ܪܒܐ. ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܘܐܘܬܒ ܐܢܘܢ ܒܬܘܟܠܢܐ. * ܘܢܗܘܘܢ ܠܝ
ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. * ܘܐܬܠ ܠܗܘܢ ܠܒܐ ܚܕܬܐ. ܘܪܘܚܐ ܚܕܬܐ. ܠܡܕܚܠ
ܡܢܝ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ. ܘܢܛܐܒ ܠܗܘܢ. ܘܠܒܢܝܗܘܢ ܒܬܪܗܘܢ. * ܘܐܩܝܡ ܠܗܘܢ
ܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ. ܕܠܐ ܐܗܦܘܟ ܡܢ ܒܬܪܗܘܢ ܠܡܛܐܒܘ ܠܗܘܢ. ܘܕܚܠܬܝ ܐܬܠ ܒܠܒܗܘܢ ܕܠ
ܢܣܛܘܢ ܡܢܝ. * ܘܐܚܕܐ ܒܗܘܢ. ܘܐܛܐܒ ܠܗܘܢ. ܘܐܢܨܒ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ ܒܩܘܫܬܐ.
ܒܟܠܗ ܠܒܝ. ܘܒܟܠܗ ܢܦܫܝ.

Quia filii Iſraelis & filii Judæ mala perpe- 30
trarunt coram me à pueritia ſua: quia filii Iſ-
raelis irritant me opere manuum ſuarum, ait
Dominus: Ideò incubuit ira mea & furor 31
meus ſuper hanc civitatem inde ab illo die
quo ædificaverunt eam ad præſentem uſque
diem, ut aboleam eam à conſpectu meo;
Propter omnia ſcelera filiorum Iſraelis & fi- 32
liorum Judæ, quæ ad irritandum me perpe-
trarunt ipſi, & reges ac principes eorum, ſa-
cerdotes ac prophetæ eorum, viri Judæ, & ci-
ves Jeroſolymorum; Et verterunt mihi cer- 33
vicem, non autem faciem ſuam. Equidem eos
docui, & prædocui; at non auſcultant ad
capeſſendam diſciplinam: Sed poſuerunt 34
abominationem ſuam in æde ſuper quam in-
vocatum eſt nomen meum, & polluerunt eam:
Et ædificaverunt aras Baali in Topheth quæ 35
eſt in valle filii Hennom, ut filios filiáſque
ſuas comburerent Amelecho, quod neque
mandaveram, neque in meum ſubierat ani-
mum, ut committerent abominationem tan-
tam, & ad peccatum inducerent Judam. Nunc 36
ita dicit Dominus Deus Iſraelis de hac civi-
tate quam dicitis traditam eſſe in manum re-
gis Babyloniæ, per gladium, famem, ac pe-
ſtem; Ecce collecturus ſum eos ex omni- 37
bus regionibus quò illos in ira & excande-
ſcentia mea magno cum furore diſperſero: &
reducens eos in locum iſtum, facturus ſum ut
habitent ſecuré. Erunt mihi denique popu- 38
lus, & ego ero illis Deus: Daboque eis cor 39
novum & ſpiritum novum ad reverendum me
cunctis diebus, ut bene cedat eis & filiis corũ
poſt ipſos: Et ſtatuam illis fœdus perpetuũ, 40
non deſtiturum me à proſequendo eos bene-
ficiis: reverentiam mei indam cordi eorum, ut
non deflectant à me: Lætificabo eos, & bene 41
cedet eis: firméque plantabo illos hac in ter-
ra, ex toto corde meo, totóque animo meo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وينكف بقايا السلامة من وجه رجز غضبي * ترك مثل الاسد مظلته . لان ارضه صارت للقفر
من وجه السيف العظيم *

Et deficient reliquiæ pacis à facie æſtûs 37
iræ meæ. Deſeruit ſicut leo umbracu- 38
lum ſuum, quoniam terra ipſius redacta
eſt in ſolitudinem à facie gladii ma-
gni.

الفصل الثالث والثلثون

* في بدو ملك يواقيم صار هذا القول من قبل الرب . * هكذا قال الرب . قف في دار
بيت الرب * وتوحي لجميع اليهود ولجميع الاتيين ليسجدوا في بيت الرب . جميع
الاقوال التي اريتها لك ان توحيها اليهم . لا تنقص كلمة * لعلهم يسمعون ويرجعون
كل واحد من طريقه السوء * واكف من الشرور التي انا اذكر فيها ان اصنعها
بهم من اجل اعمالهم السوء * وتقول هكذا قال الرب . ان لم تسمعوا لتسيروا في
شرايعي التي اعطيتها لوجهكم * لتسمعوا اقوال عبيدي الانبياء الذي انا ارسلهم
اليكم باكرا وارسلتهم فلم تسمعوني * وادفع هذا البيت مثل سيلوم * وادفع هذه
المدينة للعنة في جميع امم الارض * فسمعت الكهنة والانبياء الكذبة وكل الشعب ارميا
يتكلم بهذه الاقوال في بيت الرب * وكان لما كف ارميا ان يتكلم بجميع ما امر الرب
ليتكلم به الشعب * فقبض عليه الكهنة والانبياء الكذبة وكل الشعب قايلا * بالموت
تموت * لانك تنبيت باسم الرب قايلا . مثل سيلوم يصير هذا البيت . وهذه المدينة تخرب
من السكان * واجتمع كل الشعب على ارميا في بيت الرب * وسمعت روساء يهودا هذه الاقوال
وصعدوا الى بيت الملك الى بيت الرب . وجلسوا قبالة ابواب بيت الرب الجديدة * فقالت
الكهنة والانبياء الكذبة للروساء ولكل الشعب . حكم الموت لهذا الانسان
لانه تنبا على هذه المدينة كما سمعتم باذانكم * فقال ارميا للروساء ولكل الشعب
قايلا . الرب ارسلني لاتنبا على هذا البيت وعلى هذه المدينة . بجميع هذه الاقوال
التي سمعتموها

CAP. XXXIII.

IN principio regni Joacimi factus 1
eſt hic ſermo à Domino.

Sic dixit Dominus, Sta in atrio domûs 2
Domini, & revela omnibus Judæis o-
mnibuſque venientibus ad adorandum in
domo Domini, cunctos ſermones quos tibi
diſpono ut reveles eis: ne ſubtrahas ver-
bum: Si fortè audiant, & revertan- 3
tur quiſque à via ſua peſſima, & deſi-
ſtam à malis quibus ego eos afficere
molior propter peſſimas actiones eorum.
Dices ergò, Sic dixit Dominus; Niſi 4
audieritis, ut ambuletis in legibus meis
quas poſui ob oculos veſtros, ut obtem- 5
peretis ſermonibus ſervorum meorum
prophetarum, quos ego mittam ad vos
diluculò; (miſi enim illos, & non au-
dîſtis me) Reddam hanc domum ſimi- 6
lem Silomi, & exponam hanc urbem
maledictioni inter omnes terræ populos.
Audierunt autem ſacerdotes, prophetæ 7
falſi, totúſque populus Jeremiam lo-
quentem hujuſcemodi ſermones in domo
Domini. Et fuit, cùm finem feciſſet 8
Jeremia loquendi quicquid præceperat
ei Dominus ut loqueretur ad populum;
ut apprehenderent eum ſacerdotes, &
prophetæ falſi, totúſque populus, dicen-
tes; Morte afficieris, quia prophe- 9
tâſti in nomine Domini, dicens, Simi-
lis Silomi fiet hæc domus, & urbs
iſta civibus deſolabitur. Cùmque con-
gregatus eſſet univerſus populus adver-
ſus Jeremiam in domo Domini, Et au- 10
diſſent principes Judæ res iſtas; aſcen-
derunt ad domum regiam, in domum
Domini: & cùm ſediſſent è regione
januarum domûs Domini novarum:
Dixerunt ſacerdotes illi, & prophetæ 11
mendaces, ad principes & univerſum
populum, Sententia mortis huic homini
debetur, quia prophetavit contra hanc
urbem qualia audîſtis auribus veſtris.
Tunc allocutus eſt Jeremia principes 12
totumque populum, dicens; Dominus
me miſit ad prophetandum contra domum
iſtam & contra hanc urbem hos omnes
ſermones quos audîſtis:

iſtum populum in adduxi Sicut : DOMINUS dixit ſic Quia
42 כִּי־כֹה אָמַר יְהוָה כַּאֲשֶׁר הֵבֵאתִי אֶל־הָעָם הַזֶּה
eos ſuper *adducens* ego ſic , hoc grande malum omne
אֵת כָּל־הָרָעָה הַגְּדוֹלָה הַזֹּאת כֵּן אָנֹכִי מֵבִיא עֲלֵיהֶם
poſſidebitur Et .eos ſuper *loquens* ego quod , bonum omne
43 אֶת־כָּל־הַטּוֹבָה אֲשֶׁר אָנֹכִי דֹּבֵר עֲלֵיהֶם׃ וְנִקְנָה
Deſerta : *dicentes* vos qua , iſta terra in ager
הַשָּׂדֶה בָּאָרֶץ הַזֹּאת אֲשֶׁר אַתֶּם אֹמְרִים שְׁמָמָה
.Chaſdim manu in eſt data , *animali & homine abſque ipſa*
הִיא מֵאֵין אָדָם וּבְהֵמָה נִתְּנָה בְּיַד הַכַּשְׂדִּים׃
conteſtari & , *ſignare* & , libro in *ſcribere* & , ement argento *in* Agros
44 שָׂדוֹת בַּכֶּסֶף יִקְנוּ וְכָתוֹב בַּסֵּפֶר וְחָתוֹם וְהָעֵד
civitatibus in & ,Jeruſalaim *circuitibus* in & , Binjamin terra in teſtes
עֵדִים בְּאֶרֶץ בִּנְיָמִן וּבִסְבִיבֵי יְרוּשָׁלַםִ וּבְעָרֵי
civitatibus in & , *planitiei* civitatibus in &,*montis* civitatib⁹ in & Jehudah
יְהוּדָה וּבְעָרֵי הָהָר וּבְעָרֵי הַשְּׁפֵלָה וּבְעָרֵי
.DOMINUS dixit ,eorum captivitatem faciam redire quia :*Meridiei*
הַנֶּגֶב כִּי־אָשִׁיב אֶת־שְׁבוּתָם נְאֻם־יְהוָה׃

CAP. XXXIII. לג

ipſe adhuc ipſe Et) .ſecundò Irmejahu ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ שֵׁנִית וְהוּא עוֹדֶנּוּ
DOMINUS dixit Sic : dicendo (,cuſtodiæ atrio in clauſus
2 עָצוּר בַּחֲצַר הַמַּטָּרָה לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה
,illā *conſtabiliendum ad* , illam *formans* DOMINUS , *eam faciens*
עֹשָׂהּ יְהוָה יוֹצֵר אוֹתָהּ לַהֲכִינָהּ
: tibi reſpondebo & , me ad Clama .ejus nomen DOMINUS
3 יְהוָה שְׁמוֹ׃ קְרָא אֵלַי וְאֶעֱנֶךָּ
Quia .*ea* cognoviſti non , munita & grandia tibi annuntiabo &
4 וְאַגִּידָה לְךָ גְּדֹלוֹת וּבְצֻרוֹת לֹא יְדַעְתָּם׃ כִּי
urbis domos *ſuper* Iſrael Deus DOMINUS dixit ſic
כֹה אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל עַל־בָּתֵּי הָעִיר
, *aggeribus in dirutas* Jehudah regum domos *ſuper* & , hujus
הַזֹּאת וְעַל־בָּתֵּי מַלְכֵי יְהוּדָה הַנְּתֻצִים אֶל־הַסֹּלְלוֹת
, Chaſdim cum dimicandum ad *Venientes* .*gladio* in &
5 וְאֶל־הֶחָרֶב׃ בָּאִים לְהִלָּחֵם אֶת־הַכַּשְׂדִּים
feci percutere quos , hominum cadaveribus eas implendum ad &
וּלְמַלְאָם אֶת־פִּגְרֵי הָאָדָם אֲשֶׁר־הִכֵּיתִי
, hac civitate à *meas facies* abſcondi *quod* &,mea ira in & ,meo *naſo* in
בְאַפִּי וּבַחֲמָתִי וַאֲשֶׁר הִסְתַּרְתִּי פָנַי מֵהָעִיר הַזֹּאת
ei *faciens aſcendere* ego Ecce .eorum malitiam omnem propter
6 עַל כָּל־רָעָתָם׃ הִנְנִי מַעֲלֶה־לָּהּ
affluentiam eis revelabo & : eos curabo & , medicinam & ,*emplaſtrum*
אֲרֻכָה וּמַרְפֵּא וּרְפָאתִים וְגִלֵּיתִי לָהֶם עֲתֶרֶת
, Jehudah captivitatem faciam redire Et .veritatis & pacis
7 שָׁלוֹם וֶאֱמֶת׃ וַהֲשִׁבֹתִי אֶת־שְׁבוּת יְהוּדָה
.principio in ſicut eos ædificabo & : Iſrael captivitatem &
וְאֵת שְׁבוּת יִשְׂרָאֵל וּבְנִתִים כְּבָרִאשֹׁנָה׃
, *mihi* peccaverunt qua , ſua iniquitate omni ab illos emundabo Et
8 וְטִהַרְתִּים מִכָּל־עֲוֺנָם אֲשֶׁר חָטְאוּ־לִי
, *mihi* peccaverunt quibus , eorum iniquitatibus omnibus parcam &
וְסָלַחְתִּי לְכוֹל־עֲוֺנוֹתֵיהֶם אֲשֶׁר חָטְאוּ־לִי
,nomen in mihi erit Et .me contra ſunt prævaricati quibus &
9 וַאֲשֶׁר פָּשְׁעוּ בִי׃ וְהָיְתָה לִּי לְשֵׁם
quæ , terræ gentibus cunctis , gloriam in & , laudem in , gaudium
שָׂשׂוֹן לִתְהִלָּה וּלְתִפְאֶרֶת לְכֹל גּוֹיֵ הָאָרֶץ אֲשֶׁר
;pavebunt & , eis *faciens* ego quod bonum omne audierint
יִשְׁמְעוּ אֶת־כָּל־הַטּוֹבָה אֲשֶׁר אָנֹכִי עֹשֶׂה אוֹתָם וּפָחֲדוּ
ego quam pace omni ſuper & , bono omni ſuper trement &
וְרָגְזוּ עַל כָּל־הַטּוֹבָה וְעַל כָּל־הַשָּׁלוֹם אֲשֶׁר אָנֹכִי
.ei *faciens*
עֹשָׂה לָּהּ׃

Verſio VULG. LAT.

42 Quia hæc dicit Dominus; Sicut
adduxi ſuper populum iſtum omne
malum hoc grande: ſic adducam
ſuper eos omne bonum,
43 quod ego loquor ad eos. Et poſſidebuntur
agri in terra iſta: de
qua vos dicitis quòd deſerta ſit,
eò quòd non remanſerit homo
& jumentum, & data ſit in manus
44 Chaldæorum. Agri ementur
pecuniâ, & ſcribentur in libro,
& imprimetur ſignum, &
teſtis adhibebitur: in terra Benjamin,
& in circuitu Jeruſalem,
in civitatibus Juda, & in civitatibus
montanis, & in civitatibus
campeſtribus, & in civitatibus
quæ ad Auſtrum ſunt: quia
convertam captivitatem eorum,
ait Dominus.

CAP. XXXIII.

1 ET factum eſt verbum Domini
ad Jeremiam ſecundò, cùm adhuc
clauſus eſſet in atrio carceris,
2 dicens; Hæc dicit Dominus
qui facturus eſt, & formaturus
illud, & paraturus, Dominus nomen
3 ejus; Clama ad me, & exaudiam
te: & annuntiabo tibi
grandia, & firma quæ neſcis.
4 Quia hæc dicit Dominus Deus
Iſrael ad domos urbis hujus, &
ad domos regis Juda, quæ deſtructæ
ſunt, & ad munitiones,
5 & ad gladium Venientium ut
dimicent cum Chaldæis, & impleant
eas cadaveribus hominū,
quos percuſſi in furore meo &
in indignatione mea, abſcondens
faciem meam à civitate hac,
propter omnem malitiam eorum.
6 Ecce ego obducam eis cicatricem
& ſanitatem, & curabo eos:
& revelabo illis deprecationem
7 pacis & veritatis. Et convertā
converſionem Juda, & converſionem
Jeruſalem: & ædificabo
8 eos ſicut à principio. Et emundabo
illos ab omni iniquitate
ſua, in qua peccaverunt mihi:
& propitius ero cunctis iniquitatibus
eorum, in quibus deliquerunt
9 mihi, & ſpreverunt me. Et
erit mihi in nomen, & in gaudium,
& in laudem, & in exultationem
cunctis gentibus terræ,
quæ audierint omnia bona, quæ
ego facturus ſum eis: & pavebunt,
& turbabuntur in univerſis
bonis, & in omni pace, quam
ego faciam eis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

13 Καὶ νῦν βελτίους ποιήσατε τὰς ὁδοὺς ὑμῶν,
καὶ τὰ ἔργα ὑμῶν, καὶ (˜)ἀκούσατε τῆς
φωνῆς κυρίου, καὶ παύσεται κύριος ἀπὸ
14 τῶν κακῶν ὧν ἐλάλησεν ἐφ᾽ ὑμᾶς. Καὶ
ἰδοὺ ἐγὼ ἐν χερσὶν ὑμῶν, ποιήσατέ μοι
15 ὡς συμφέρει, καὶ ὡς βέλτιον ὑμῖν. Ἀλλ᾽
ἢ γνόντες γνώσεσθε, ὅτι εἰ ἀναιρεῖτέ με,
αἷμα ἀθῷον δίδοτε ἐφ᾽ ὑμᾶς, καὶ ἐπὶ τὴν
πόλιν ταύτην, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας ἐν
αὐτῇ· ὅτι ἐν ἀληθείᾳ (ρ) ἀπέσταλκέ με
κύριος πρὸς ὑμᾶς λαλῆσαι εἰς τὰ ὦτα ὑμῶν
16 πάντας τοὺς λόγους τούτους. Καὶ (σ)
εἶπον οἱ ἄρχοντες καὶ πᾶς ὁ λαὸς πρὸς τοὺς
ἱερεῖς (˜) καὶ πρὸς τοὺς ψευδοπροφήτας, Οὐκ ἔστι
τῷ ἀνθρώπῳ τούτῳ κρίσις θανάτου, ὅτι ἐπὶ
τῷ ὀνόματι κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν ἐλάλησε
17 πρὸς ἡμᾶς. Καὶ ἀνέστησαν ἄνδρες τῶν
πρεσβυτέρων τῆς γῆς, καὶ εἶπαν πάσῃ τῇ
18 συναγωγῇ τοῦ λαοῦ, Μιχαίας ὁ Μωρασθίτης
ἦν ἐν ταῖς ἡμέραις Ἐζεκίου βασιλέως
Ἰούδα, καὶ εἶπε παντὶ τῷ λαῷ Ἰούδα,
(¨)Οὕτως εἶπε κύριος, Σιὼν ὡς ἀγρὸς ἀροτριαθήσεται,
καὶ Ἱερουσαλὴμ (τ) εἰς ἄβατον
ἔσται, καὶ τὸ ὄρος τοῦ οἴκου (υ) εἰς ἄλσος
19 δρυμοῦ. Μὴ (φ) ἀνελὼν ἀνεῖλεν αὐτὸν
Ἐζεκίας καὶ πᾶς Ἰούδα; (χ) οὐχ ὅτι ἐφοβήθησαν
τὸν κύριον, καὶ ὅτι ἐδεήθησαν τοῦ
(ψ) προσώπου κυρίου, καὶ ἐπαύσατο κύριος
ἀπὸ τῶν κακῶν ὧν ἐλάλησεν ἐπ᾽ αὐτούς;
καὶ ἡμεῖς ἐποιήσαμεν κακὰ μεγάλα
20 ἐπὶ (ω) ψυχὰς ἡμῶν. Καὶ ἄνθρωπος ἦν
προφητεύων (α) τῷ ὀνόματι κυρίου, Οὐρίας
υἱὸς Σαμαίου ἐκ Καριαθιαρείμ, καὶ ἐπροφήτευσε
περὶ τῆς γῆς ταύτης κατὰ
21 πάντας τοὺς (˜) λόγους Ἱερεμίου· Καὶ ἤκουσεν
ὁ βασιλεὺς Ἰωακεὶμ καὶ πάντες οἱ
ἄρχοντες πάντας τοὺς λόγους αὐτοῦ, καὶ ἐζήτουν
ἀποκτεῖναι αὐτόν· καὶ ἤκουσεν Οὐρίας,
22 καὶ εἰσῆλθεν εἰς Αἴγυπτον. Καὶ ἐξαπέστειλεν
ὁ βασιλεὺς ἄνδρας εἰς Αἴγυπτον,
23 (β) Καὶ ἐξηγάγοσαν αὐτὸν ἐκεῖθεν,
καὶ εἰσηγάγοσαν αὐτὸν πρὸς τὸν βασιλέα,
καὶ ἐπάταξεν αὐτὸν ἐν (γ) μαχαίρᾳ, καὶ ἔρριψεν
αὐτὸν εἰς τὸ (δ) μνῆμα υἱῶν λαοῦ αὐτοῦ.
24 Πλὴν χεὶρ Ἀχικὰμ υἱοῦ Σαφὰν ἦν μετὰ (ε)
Ἱερεμίου, τοῦ μὴ παραδοῦναι αὐτὸν εἰς χεῖρας
τοῦ λαοῦ, (ζ) μὴ ἀνελεῖν αὐτόν.

Et nunc meliores facite vias veſtras, & opera veſtra, & audite vocem Domini: & ceſſabit Dominus à malis quæ loquutus eſt ſuper vos. Et ecce ego in manibus veſtris: facite mihi, ſicut expedit, & ſicut melius vobis. Verumtamen cognoſcentes cognoſcetis; quòd ſi occiditis me, ſanguinem innocentem datis ſuper vos, & ſuper civitatem hanc, & ſuper habitantes ejus: Quia in veritate miſit me Dominus ad vos, loqui in aures veſtras omnia verba hæc. Et dixerunt principes, & omnis populus ad ſacerdotes, & ad pſeudoprophetas; Non eſt homini huic judicium mortis, quia in nomine Domini Dei noſtri locutus eſt ad nos. Et ſurrexerunt viri de ſenioribus terræ, & dixerunt omni ſynagogæ populi; Michæas Morathites erat in diebus Ezechiæ regis Judæ, & dixit omni populo Judæ; Sic dixit Dominus; Sion quaſi ager arabitur: & Hieruſalem in inviam erit, & mons domus in lucum ſylvæ. Numquid interficiens interfecit eum Ezechias & omnis Juda? Nonne quia timuerunt Dominum, & quia deprecati ſunt faciem Domini; & ceſſavit Dominus à malis quæ loquutus fuerat ſuper eos? Et nos fecimus mala magna ſuper animas noſtras. Et homo fuit prophetans nomine Domini, Urias filius Samææ ex Cariathiarim, & prophetavit de terra hac juxta omnia verba Hieremiæ: Et audivit rex Joacim, & omnes principes, omnia verba ejus: & quærebant interficere eum. Et audivit (ſ) Urias, & ingreſſus eſt in Ægyptum. Et emiſit rex viros in (f) Ægyptum: & eduxerunt eum inde, Et adduxerunt eum ad regem: & percuſſit eum in gladio: & projecit eum in monumentum filiorum populi ſui. Verumtamen manus Achicam filii Saphan erat cum Hieremia, ut non traderetur in manus populi, ut interficerent eum.

MS.A. (˜)ἀκούσετε (ρ)ἀπέστειλέν (σ)εἶπαν (˜) καὶ τοὺς (¨)λέγων, Οὕτως (τ) εἰς ὀπωροφυλάκιον ἔσται, καὶ (υ) ὡς (φ) ἀναιρῶν (χ) οὐχὶ (ψ) προσώπου αὐτοῦ, (ω) ψυχαῖς (α) ἐπὶ τῷ (˜) Ἱερεμίου· (β) Καὶ συνελάβοσαν αὐτὸν, καὶ ἐξήγαγον αὐτὸν ἐκεῖθεν, καὶ εἰσήγαγον (γ) μαχαίρῃ, (δ) μνημεῖον (ε) Ἱερεμίου, (ζ) τοῦ [illegible]

ΚΕΦ. λδʹ.

CAP. XXXIV.

Cap. 27. Vulg. Lat.

2 ΟΥτως εἶπε κύριος, (α) Ποίησον σεαυτῷ δεσμοὺς καὶ κλοιούς, καὶ περίθου περὶ τὸν τράχηλόν σου.

SIc (a) dixit Dominus; Fac tibi vincula, & (b) catenas, & circumpone circa collum tuum.

MS. A. (α)Ποίησον δεσμοὺς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

42 ארי כדנן אמר יי כמה דאיתיתי על עמא הדין ית כל בישתא רבתא הדא כן אנא מיתי
43 עליהון ית כל טבתא דאנא ממלל עליהון : ויזדבנון חקלין בארעא הדא דאתון אמרין
44 צדיא היא מבלי אנשא ובעירא אתמסרת בידא דכסדאי : חקלין בכספא יזבנון ויכתבון
בשטרא ויחתמון ויסהדון סהדין בארע שבטא דבנימין ובסחרני ירושלם ובקרויא
דבית יהודה ובקרוי טורא ובקרוי שפלתא ובקרוי דרומא ארי אתיב ית גלותהון
אמר יי :

לג

1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עם ירמיה תנינות והוא עוד כען כלי בדרת בית אסיריא
2 למימר : כדנן אמר יי דעבדה יי ברא יתיה לאתקנותא יי שמיה : 3 צלי קדמי ואקבל
4 צלותך ואחוי לך רברבן ונטירן דלא ידעתנון : ארי כדנן אמר יי אלהא דישראל על
בתי קרתא הדא ועל בתי מלכיא דבית יהודה דמתרעין להון וצברין מליתא לתקפא
5 שורא מן קדם דקטלין בחרבא : אתן לאגחא קרבא עם כסדאי ולמליותהון ית פגרי
בני אנשא דאלקיתי ברוגזי ובחמתי ודסלקית שכנתי מן קרתא הדא על כל בישתהון:
6 הא אנא מיתי להון אסו ופורקן ואסינון ואגלי להון תרע תיובא ואחוינון דיהכון
7 באורח שלם וקשוט : ואתיב ית גלות יהודה וית גלות ישראל ואקימנון כדבקדמיתא :
8 ואדכינון מכל חוביהון דחבו קדמי ואשבוק לכל חוביהון דחבו קדמי ודמרדו במימרי:
9 ויהון קדמי לשום דחדוא לתושבחא וליקר לכל עממי ארעא די ישמעון על כל טבתא
די אנא עביד עמהון ויזועין וידחלון על כל טבתא ועל כל שלמא דאנא עביד להון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quia hæc dicit Dominus, Sicut adduxi ſuper populum iſtum omne malum hoc grave, ſic adducam ſuper eos omne bonum quod locutus ſum cum eis. Et ementur agri in terra iſta, de qua vos dicitis, Deſerta eſt abſque homine & jumento, & tradita eſt in manum Chaldæorum. Agros argento ement, & ſcribent in chirographo, & ſignabunt, & adhibebunt teſtes in terra tribus Binjamin, & in circuitu Jeruſalem, & in civitatibus domus Juda, & in civitatibus montanis, & in civitatibus campeſtribus, & in civitatibus Auſtri: quia convertam captivitatem eorum, ait Dominus.

CAP. XXXIII.

ET factum eſt verbum prophetiæ ad Jeremiam à facie Domini ſecundò, & ipſe erat adhuc clauſus in atrio domus vinctorum; dicendo: Hæc dicit Dominus qui fecit illud, Dominus qui creavit ut pararet illud: Dominus nomen ejus. Ora coram me, & ſuſcipiam orationem tuam, & annuntiabo tibi grandia, & reſervata quæ neſcis. Quia hæc dicit Dominus Deus Iſraelis: Super domos urbis hujus, & ſuper domos regum domus Juda, quas diruunt, & congerunt aggeres ad muniendum murum à facie eorum qui occidunt gladio. Veniebant ad dimicandum cum Chaldæis, & ad implendas eas cadaveribus filiorum hominum, quos percuſſi in ira mea, & in furore meo, & propter quos abſtuli majeſtatem meam de civitate iſta, propter omnem malitiam eorum. Ecce ego adducam ſuper eos medicinam & ſalutem, & ſanabo eos, & revelabo eis portam pœnitentiæ, & ſignificabo eis quomodo ambulent in via pacis & veritatis. Et reducam tranſmigrationem Juda, & tranſmigrationem Iſraelis, & ſuſtinebo eos ſicut in principio. Et mundabo eos ab omnibus peccatis ſuis quibus peccaverunt coram me, ac remittam omnia peccata eorum quæ admiſerunt coram me, & quibus prævaricati ſunt in Verbum meum. Et erunt coram me in nomen lætitiæ, in laudem, & in gloriam omnibus populis terræ, qui audierint omnia bona quæ ego facturus ſum eis, & contremiſcent & timebunt ſuper omnia bona, & ſuper omnem pacem quam ego faciam eis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܕܐܝܬܝܬ ܥܠ ܥܡܐ ܗܢܐ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܗܕܐ ܪܒܬܐ. ܗܟܢܐ ܡܝܬܐ 42
ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ ܟܠܗ ܛܒܬܐ ܕܐܡܪ ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܢܙܕܒܢܘܢ ܚܩܠܐ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܕܐܡܪܝܢ 43
ܐܢܬܘܢ ܕܚܪܒܐ ܗܝ ܡܢ ܒܢܝܢܫܐ ܘܡܢ ܒܥܝܪܐ. ܘܐܫܬܠܡܬ ܒܐܝܕܝܐ ܕܟܠܕܝܐ. * ܚܩܠܐ ܒܟܣܦܐ 44
ܢܙܒܢܘܢ. ܘܢܟܬܒܘܢ ܫܛܪܐ ܘܢܚܬܡܘܢ. ܘܢܣܗܕܘܢ ܣܗܕܐ. ܒܐܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ ܘܒܚܕܪܝ
ܐܘܪܫܠܡ. ܘܒܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܒܩܘܪܝܐ ܕܛܘܪܐ. ܘܒܩܘܪܝܐ ܕܫܦܠܬܐ. ܘܒܩܘܪܝܐ ܕܬܝܡܢܐ.
ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܓ *

* ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ. ܟܕ ܗܘ ܟܠܝܠ ܗܘܐ ܒܕܪܬܐ 1
ܕܒܝܬ ܡܛܪܬܐ ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܥܒܕܗ ܘܓܒܠܗ ܘܐܬܩܢܗ. ܡܪܝܐ ܫܡܗ. 2
* ܩܪܝܢܝ ܘܐܥܢܝܟ. ܘܐܚܘܝܟ ܪܘܪܒܬܐ ܘܚܣܝܢܬܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ 3 4
ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܠ ܒܬܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܥܠ ܒܬܐ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܣܚܦܘ ܐܢܘܢ ܓܝܣܐ
ܒܚܪܒܐ. * ܕܐܬܘ ܠܡܩܪܒ ܩܪܒܐ ܥܡ ܟܠܕܝܐ. ܘܠܡܡܠܐ ܐܢܘܢ ܦܓܪܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܕܩܛܠܬ 5
ܒܪܘܓܙܝ ܘܒܚܡܬܝ. ܘܐܗܦܟܬ ܐܦܝ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܥܠ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܥܒܕܘ ܩܕܡܝ.
* ܗܐ ܡܣܩ ܐܢܐ ܠܗ ܠܚܪܬܐ ܐܣܝܐ. ܘܐܣܐ ܐܢܘܢ. ܘܐܓܠܐ ܠܗܘܢ ܫܒܝܠܐ ܕܫܠܡܐ 6
ܘܕܫܝܢܐ. * ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܫܒܝܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܒܢܝܘܢ ܐܝܟ ܕܡܢ 7
ܩܕܝܡ. ܘܐܛܐܒ ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܕܡܢ ܥܠܡ. * ܘܐܕܟܐ ܐܢܘܢ ܡܢ ܟܠܗ ܚܘܒܝܗܘܢ ܕܚܛܘ 8
ܠܝ. ܘܐܫܒܘܩ ܠܟܠܗܘܢ ܥܘܠܝܗܘܢ ܕܐܣܟܠܘ ܒܝ. ܘܐܥܘܠܘ ܒܝ. * ܘܬܗܘܐ ܠܝ 9
ܠܫܡܐ ܘܠܒܘܣܡܐ. ܘܠܚܕܘܬܐ ܘܠܫܘܒܗܪܐ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܕܢܫܡܥܘܢ
ܟܠܗ ܛܒܬܐ ܕܥܒܕ ܐܢܐ ܠܗܘܢ. ܘܢܕܚܠܘܢ ܘܢܪܓܙܘܢ ܥܠ ܟܠܗ ܛܒܬܐ. ܘܥܠ
ܟܠܗ ܫܠܡܐ ܕܥܒܕ ܐܢܐ ܠܗܘܢ.

Sic dicit Dominus, Quemadmodum adduxi ſuper hunc populum totum malum hoc ingens, ita adductus ſum ſuper eos totũ bonum quod de ipſis dico. 42 Et ementur agri in terra iſta quam vos dicis exhauſtam hominibus & jumentis, & traditam in manum Chaldæorum. 43 Agros ement pecuniâ, ſcribent ſyngraphas & obſignabunt, & teſtes adhibebunt in terra Benjaminis, & in circunjacentibus Jeroſolymæ *locis*, in civitatibus Judæ, & in oppidis montium, in oppidis planitierum, & in oppidis Auſtri, quum reduxero captivos eorum, dicit Dominus. 44

CAP. XXXIII.

Rurſum factus eſt ſermo Domini ad Jeremiam prophetam dum adhuc detineretur in atrio carceris, ac dixit; 1 Sic ait Dominus qui te fecit, plaſmavit, condiditque cujus nomen Dominus eſt; 2 Invoca me, & reſpondebo tibi magna & fortia quæ ignoratis. 3 Nam ſic ait Dominus Deus Iſraelis de domibus civitatis hujus, & de domibus regum Judæ, quas gladio extirpârunt turmæ 4 Quæ venerunt ad pugnandum cum Chaldæis, & implendum eas cadaveribus hominum quos ego peremi in ira & furore meo, quum averti faciem meam ab hac civitate propter tot mala quæ coram me perpetrârunt: 5 Ecce producam iſti *civitati* longo poſt tempore medicum, & ſanabo eos, & revelabo eis ſemitas pacis & ſecuritatis: 6 Reducam captivos Judæ & captivos Iſraelis, & ædificabo eos ut antea, 7 & benefaciam eis ut antiquitùs: Mundabo eos ab omni iniquitate quâ peccaverunt in me, & dimittam cuncta ſcelera quibus in me deliquerunt, & perversè mecum egerunt: 8 Quod mihi vertetur in nomen, jucunditatem, gaudium, atque gloriam apud omnes terræ gentes, quæ cùm audierint omne bonum quo uſurus ſum erga illos, timebunt, & iraſcentur ob totum bonum totámque pacem quibus affecturus ſum illos. 9

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والان اجعلوا طرقكم جيدات واعمالكم * واسمعوا صوت الرب ويكف الرب من الشرور 13
التي تكلم بها عليكم * وها انا في ايديكم اصنعوا بي ما يرضيكم ويحسن عندكم 14
* لكن تعلمون عالمين انكم ان قتلتموني تجلب عليكم دم زكي وعلى هذه المدينة وعلى 15
السكان فيها لاني بالحق ارسلني الرب اليكم لاتكلم في اذانكم بجميع هذه الاقوال * فقالت 16
الروساء وكل الشعب للكهنة وللانبياء الكذبة ليس يكون لهذا الانسان حكم الموت
لانه باسم الرب الهنا تكلم معنا * وقامت رجال مشايخ الارض وقالوا لجمع الشعب قايلين 17
* ميخا المارثي كان في ايام حزقيا ملك يهودا وقال لجميع شعب يهودا هكذا قال الرب 18
صهيون مثل حقل تحرث وايروسليم تصير مثل كرس فاكهة وجبل البيت يصير مثل
غيضة الغاب * هل بهلاك اهلكه حزقيا وكل يهودا اليس لما خافوا الرب ولما طلبوا وجه 19
الرب فكف الرب من الشرور التي تكلم بها عليهم * ونحن صنعنا شرورا عظيمة على انفسنا
* وانسان كان يتنبا باسم الرب اوريا بن صاماآس من كرياثياريم ويتنبا من اجل هذه 20
الارض بجميع كلمات ارميا * وسمع الملك يواقيم وجميع الروساء جميع هذه الاقوال وطلبوا 21
ان يقتلوه وسمع اوريا ودخل الى مصر * وارسل الملك رجالا الى مصر * واخرجوه من هناك 22 23
وادخلوه الى الملك فضربه بالسيف وطرحه في قبر بني شعبه * لكن يد اخيكام بن 24
صافان مع ارميا الا يسلموه الى ايدي الشعب ليقتلوه

* الفصل الرابع والثلثون *

[MS.Oxon. * في اول ملك صادقيا ابن يوشيا ملك يهودا اوحي الرب الي ارميا وقال] 1
* هكذا قال الرب اصنع رباطات واطواقا وشدهم على عنقك 2

Quapropter bonas reddite vias & actiones veſtras, & audite vocem Domini; ut deſiſtat Dominus à malis quæ locutus eſt contra vos. 13 *Ego quidem ecce ſum in manibus veſtris, facite de me quicquid libuerit placueritque vobis.* 14 *Verum certò ſcitote quòd ſi me occideritis, adducetur ſuper vos ſanguis innoxius, ſuper hanc urbem, & ſuper habitantes in ea; quia verè miſit me Dominus ad vos, ut loquerer in aures veſtras omnes hos ſermones.* 15 *Tunc dixerunt principes & universus populus ad ſacerdotes falſoſque prophetas, Nequaquam debetur huic homini ſententia mortis, cùm nomine Domini Dei noſtri ſit nos allocutus.* 16 *Et ſurgentes viri ſeniores terræ, allocuti ſunt populi cœtum dicentes;* 17 *Michæ Marathites qui erat in diebus Hezeciæ regis Judæ, quum dixiſſet univerſo populo Judæ; Sic ait Dominus, Sion ut ager arabitur, Jeruſalem fiet ut conditorium fructuum, & mons domûs fiet ut ſaltus ſylvæ:* 18 *Nunquid nece extinxit illum Hezecia totuſque Juda? an non cùm timuiſſent Dominum, cúmque vultum Domini exoráſſent, deſtitit Dominus à malis quæ locutus fuerat contra ipſos? & verò nos atrocia perpetravimus flagitia contra animas noſtras.* 19 *Quidam etiam prophetabat nomine Domini, Uria Samææ filius, de Cariathjarim: is quoque prophetavit de hac terra omnia verba Jeremiæ:* 20 *Audiens autem rex Joacim & omnes principes cunctos hoſce ſermones, voluerunt interficere eum. Id quum audiſſet Uria, ingreſſus eſt Ægyptum:* 21 *Sed rex miſit viros in Ægyptum,* 22 *Qui inde extractum introduxerunt ad regem; iſque gladio percuſſum illum injecit in ſepulchrum popularium ejus.* 23 *Verùm manus Achicami filii Saphanis erat cum Jeremia, ne traderetur in manus populi ad occidendum eum.* 24

CAP. XXXIIII.

[MS.Ox. *In principio regni Zedeciæ filii Joſiæ regis Judæ, revelavit Dominus Jeremiæ, & dixit;*] 1 *Sic dixit Dominus, Fac vincula & numellas, iiſque aſtringe collum tuum:* 2

ירמיה : לג

vos quo ,iſto loco in audietur Adhuc : DOMINUS dixit Sic
10 כה אמר יהוה עוד ישמע במקום־הזה אשר אתם
civitatibus in ,*animali abſque &* ,*homine abſque ipſe* Deſertus : *dicentes*
אמרים חרב הוא מאין אדם ומאין בהמה בערי
,*habitatore abſque &* ,*homine abſque deſolatis* Jeruſalaim plateis in & ,Jehudah
יהודה ובחצות ירושלם הנשמות מאין אדם ומאין יושב
,ſponſæ vox & ,ſponſi vox ,lætitiæ vox & ,gaudii Vox .*jumento abſque &*
11 ומאין בהמה: קול ששון וקול שמחה קול חתן וקול כלה
,Dominus bonus quoniam ,exercituum Domino Confitemini : dicentium vox
קול אמרים הודו את־יהוה צבאות כי־טוב יהוה
,Domini domum confeſſionem adducentium ,ejus miſericordia ſeculum in quoniam
כי־לעולם חסדו מבאים תודה בית יהוה
.Dominus dixit ,principio in ſicut ,terræ captivitatem faciam reducere quia
כי־אשיב את־שבות־הארץ כבראשנה אמר יהוה:
deſerto iſto loco in erit Adhuc : exercituum Dominus dixit Sic
12 כה אמר יהוה צבאות עוד יהיה במקום הזה החרב
,paſtorum *tugurium*,ejus civitatib⁹ cunctis in & ,animal ad uſque & ,homine abſque
מאין־אדם ועד־בהמה ובכל־עריו נוה רעים
civitatibus in &,*depreſſionis* civitatibus in,*montis* civitatibus In.*pecus facientium accubare*
13 מרבצים צאן: בערי ההר בערי השפלה ובערי
, Jehudah civitatibus in & , Jeruſalaim *circuitibus* in &,Binjamin terra in & ,*Meridei*
הנגב ובארץ בנימן ובסביבי ירושלם ובערי יהודה
Ecce .Dominus dixit ,numerantis manus ad *pecus* tranſibunt adhuc
14 עד תעברנה הצאן על־ידי מונה אמר יהוה: הנה
, bonum verbum confirmabo & ,Dominus dixit ,*venientes* dies
ימים באים נאם־יהוה והקמתי את־הדבר הטוב
.Jehudah domum *ſuper* & , Iſrael domum ad ſum locutus quod
אשר דברתי אל־בית ישראל ועל־בית יהודה:
germen David ipſi faciam germinare illo tempore in & ,illis diebus In
15 בימים ההם ובעת ההיא אצמיח לדוד צמח
ipſis diebus In .terra in juſtitiam & ,judicium faciet & ,juſtitiæ
16 צדקה ועשה משפט וצדקה בארץ: בימים ההם
qui iſte & : *fiducia in* habitabit Jeruſalaim & , Jehudah ſervabitur
תושע יהודה וירושלם תשכון לבטח וזה אשר־
: Dominus dixit ſic Quia .*noſtra juſtitia* Dominus ,eam vocabit
17 יקרא־לה יהוה צדקנו: כי־כה אמר יהוה
.Iſrael domus ſolium ſuper ſedens ,vir David ipſi excidetur Non
לא־יכרת לדוד איש ישב על־כסא בית־ישראל:
faciens aſcendere ,*meis faciebus* à vir excidetur non Levitis ſacerdotibus Et
18 ולכהנים הלוים לא־יכרת איש מלפני מעלה
.diebus omnibus ſacrificium faciens & ,*munus* adolens & ,*aſcenſionem*
עולה ומקטיר מנחה ועשה זבח כל־הימים:
dixit Sic : dicendo ,Irmejahu ad Domini verbum fuit Et
19 20 ויהי דבר־יהוה אל־ירמיהו לאמור: כה אמר
meum pactum & ,diei meum pactum *infringatis* Si : Dominus
יהוה אם־תפרו את־בריתי היום ואת־בריתי
Etiam .ſuo tempore in *noctem & diem eſſe non ad &* ,noctis
21 הלילה ולבלתי היות יומם־ולילה בעתם: גם־
regnantem filium ei exiſtendo ab ,meo ſervo David cum *diſſipabitur* meum pactum
בריתי תפר את־דוד עבדי מהיות־לו בן מלך
non *Quia* .meis miniſtris ſacerdotibus Levitis cum &,ejus thronum ſuper
22 על־כסאו ואת־הלוים הכהנים משרתי: אשר לא־
multiplicabo ſic : maris arena *menſurabitur* nec ,cœlorum exercitus *numerabitur*
יספר צבא השמים ולא ימד חול הים כן ארבה
verbum fuit Et .mihi miniſtrantes Levitas & , mei ſervi David ſemen
23 את־זרע דוד עבדי ואת־הלוים משרתי אתי: ויהי דבר־
: dicendo ,Irmejahu ad Domini
יהוה אל־ירמיהו לאמר:

Verſio VULG. LAT.

10 Hæc dicit Dominus; Adhuc audietur in loco iſto (quem vos dicitis eſſe deſertum, eò quòd non
ſit homo nec jumentum: in civitatibus Juda, & foris Jeruſalem,
quæ deſolatæ ſunt abſque homine,& abſque habitatore, & abſque pecore)
11 Vox gaudii & vox lætitiæ, vox ſponſi & vox ſponſæ,
vox dicentium;Confitemini Domino exercituum, quoniam bon⁹
Dominus, quoniam in æternum
miſericordia ejus:& portantium
vota in domum Domini : reducã
enim converſionem terræ ſicut à
12 principio, dicit Dominus. Hæc
dicit Dominus exercituũ ; Adhuc
erit in loco iſto deſerto abſque
homine,& abſque jumento,& in
cunctis civitatibus ejus,habitaculum paſtorum accubantium gregum.
13 In civitatibus montuoſis,
& in civitatibus campeſtribus,&
in civitatibus quæ ad Auſtrum
ſunt; & in terra Benjamin, & in
circuitu Jeruſalem,& in civitatibus Juda, adhuc tranſibũt greges
ad manum numerantis,ait Dominus.
14 Ecce dies veniunt,dicit Dominus ; & ſuſcitabo verbum bonum, quod locutus ſum ad domũ
15 Iſrael & ad domum Juda. In diebus illis, & in tempore illo, germinare faciam David germen juſtitiæ:& faciet judicium & juſtitiam in terra.
16 In diebus illis ſalvabitur Juda, & Jeruſalem habitabit confidenter : & hoc eſt nomen, quod vocabunt eum,Dominus juſtus noſter.
17 Quia hæc dicit
Dominus ; Non interibit de David vir,qui ſedeat ſuper thronum
18 domûs Iſrael. Et de Sacerdotib⁹
& de Levitis non interibit vir à
facie mea,qui offerat holocautomata, & incendat ſacrificium,&
cædat victimas omnibus diebus.
19 Et factum eſt verbum Domini ad
20 Jeremiam,dicens; Hæc dicit Dominus ; Si irritum poteſt fieri pactum meum cum die, & pactum
meum cum nocte, ut non ſit dies
21 & nox in tempore ſuo : Et pactum meum irritum eſſe poterit
cum David ſervo meo, ut non ſit
ex eo filius qui regnet in throno
ejus, & Levitæ & Sacerdotes mi-
22 niſtri mei. Sicuti enumerari non
poſſunt ſtellæ cœli,& metiri arena maris:ſic multiplicabo ſemen
David ſervi mei, & Levitas mi-
23 niſtros meos. Et factum eſt verbum Domini ad Jeremiam, dicens;

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καὶ ἀποστελεῖς αὐτοὺς πρὸς (β) βασιλέα Ἰδουμαίας, καὶ πρὸς βασιλέα Μωὰβ, καὶ πρὸς βασιλέα υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ πρὸς (ʹ) τὸν βασιλέα Τύρου, καὶ πρὸς βασιλέα Σιδῶνος, ἐν χερσὶν (γ) ἀγγέλων αὐτῶν τῶν ἐρχομένων εἰς ἀπάντησιν αὐτῶν εἰς Ἱερουσαλὴμ πρὸς Σεδεκίαν βασιλέα
4 Ἰούδα. Καὶ συντάξεις αὐτοῖς πρὸς τοὺς κυρίους αὐτῶν εἰπεῖν, Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Οὕτως ἐρεῖτε (δ) πρὸς τοὺς κυρίους ὑμῶν,
5 Ὅτι ἐγὼ ἐποίησα τὴν γῆν ἐν τῇ ἰσχύϊ μου τῇ μεγάλῃ, καὶ ἐν τῷ ἐπιχείρῳ μου τῷ ὑψηλῷ, καὶ δώσω αὐτὴν ᾧ ἐὰν δόξῃ ἐν ὀφθαλ-
6 μοῖς μου· Ἔδωκα τὴν γῆν (ε) τῷ Ναβουχοδονόσορ βασιλεῖ Βαβυλῶνος δουλεύειν αὐτῷ, καὶ τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ ἐργάζεσθαι αὐτῷ.
8 Καὶ τὸ ἔθνος καὶ ἡ βασιλεία, ὅσοι (ζ) ἐὰν μὴ ἐμβάλωσι τὸν τράχηλον αὐτῶν (η) ὑπὸ τὸν ζυγὸν βασιλέως Βαβυλῶνος, (θ) ἐν μαχαίρᾳ καὶ ἐν λιμῷ ἐπισκέψομαι αὐτοὺς, εἶπε κύριος, (ι) ἕως ἐκ-
9 λίπωσιν ἐν χειρὶ αὐτοῦ. Καὶ ὑμεῖς μὴ ἀκούετε τῶν ψευδοπροφητῶν ὑμῶν, καὶ τῶν μαντευομένων ὑμῖν, καὶ τῶν ἐνυπνιαζομένων ὑμῖν, καὶ τῶν οἰωνισμάτων ὑμῶν, καὶ τῶν φαρμακῶν ὑμῶν, τῶν λεγόντων, Οὐ μὴ ἐργάσησθε τῷ βασιλεῖ
10 Βαβυλῶνος. Ὅτι ψευδῆ αὐτοὶ προφητεύουσιν ὑμῖν, πρὸς τὸ μακρῦναι ὑμᾶς ἀπὸ τῆς γῆς ὑμῶν.
11 Καὶ τὸ ἔθνος (κ) ὃ ἐὰν εἰσαγάγῃ τὸν τράχηλον αὐτοῦ ὑπὸ τὸν ζυγὸν βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ ἐργάσηται αὐτῷ, καὶ καταλείψω αὐτὸν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτοῦ, καὶ ἐργᾶται
12 αὐτῷ, καὶ ἐνοικήσει ἐν αὐτῇ. Καὶ πρὸς Σεδεκίαν βασιλέα Ἰούδα ἐλάλησα κατὰ πάντας τοὺς λόγους τούτους, λέγων, Εἰσαγάγετε τὸν τράχηλον ὑμῶν, καὶ (ʺ) ἐργάσασθε τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος,

Et mittes ea ad regem Idumææ, & ad regem Moab, & ad regem filiorum Ammon, & ad regem Tyri, & ad regem Sidonis, in manibus nunciorum eorum venientium in (c) occursu suo in Hierusalem ad Sedeciam regem Juda. Et præcipies eis 4 *ad dominos suos dicere, Sic dixit Dominus Deus Israel; Sic dicetis ad dominos vestros; (d) Quia* 5 *ego feci terram in fortitudine mea magna, & in (e) brachio meo excelso: & dabo eam, cuicunque visum fuerit in oculis meis: Dedi terram Nabuchodonosor regi Babylonis* 6 *(f) ad serviendum ei, et bestias agri ad operandum ei. (g) Et gens, & regnum, quicunque non injecerint collum suum sub jugum regis Babylonis;* 8 *in (h) gladio, & in fame visitabo eos, dixit* Dominus, *donec deficiant in manu ejus. Et vos nolite audire pseudoprophetas* 9 *vestros, & qui divinant vobis, & qui somniant vobis, & auguria vestra, & maleficos vestros, qui dicunt; Non operabimini regi Babylonis; Quia* 10 *mendacia ipsi prophetant vobis, ad elongandos vos à terra (i) vestra. Et* 11 *gens, quæ injecerit cervicem suam sub jugo regis Babylonis, & operata fuerit ei; & relinquam eam in terra sua: & operabitur ei, & inhabitabit in ea. Et ad* 12 *Sedeciam regem Judæ loquutus sum juxta omnia verba hæc, dicens, Injicite collum (k) vestrum, & operamini regi Babylonis.*

MS.A. (β) τὸν βασιλέα (ʹ) βασιλέα (γ) τῶν ἀγγέλων (δ) τοῖς κυρίοις (ε) πᾶσαν τῷ (ζ) ἂν (η) ὑπὸ ζυγὸν (θ) καὶ δουλεύσωσιν αὐτῷ, ἐν μαχαίρᾳ πεσοῦν), καὶ ἐν λιμῷ (ι) ἕως ἂν (κ) ὅσοι ἂν εἰσαγάγωσιν τὸν τράχηλον αὐτῶν (ʺ) ἐργάζεσθαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 כדנן אמר יי עוד ישתמע באתרא הדין דאתון אמרין חרוב הוא מבלי אנשא ומבלי
בעירא בקרויא דבית יהודה ובשוקי ירושלם דצדין מבלי אנשא ומבלי יתיב ומבלי
11 בעירא: קל ביע וקל חדוא קל חתנין וקל כלן קל דאמרין אודו קדם יי צבאות ארי
טב יי ארי לעלמא טבותיה מעלי תודתא לבית מקדשא דיי ארי אתיב ית גלות
12 ארעא כדבקדמיתא אמר יי: כדנן אמר יי צבאות עוד יהי באתרא הדין דחרוב מבלי
13 אנשא ומבלי בעירא וכל קרויהון דירות בית מישרי רעין וחוטרין דען: בקרוי
טורא בקרוי שפלתא ובקרוי דרומא ובארע שבט בנימן ובסחרני ירושלם ובקרויא
14 דבית יהודה עוד יתנה עמא על ידי משיחא אמר יי: הא יומיא אתן אמר יי ואקים
15 ית פתגמא תקנא דמללית על בית ישראל ועל בית יהודה: ביומיא האנון ובעדנא
16 ההיא אקים לדוד משיח דצדקא ויעביד דין דקשוט וזכו בארעא: ביומיא האנון
יתפרקון דבית יהודה וירושלם תשרי לרוחצן ודין שמה דיהון קרן לה יתעבדן לנא
17 זכון מן קדם יי בגוה: ארי כדנן אמר יי לא יפסוק לדוד גבר יתיב על כורסי מלכותא
18 דבית ישראל: ולכהניא ליואי לא יפסוק גבר מן קדמי מסיק עלון ומקריב קורבן
19 ועביד נכסת קודשין כל יומיא: והוה פתגם נבואה מן קדם יי עם ירמיה למימר:
20 כדנן אמר יי כמא דלית אפשר דיבטיל קימי דאקימית עם יממא ועם ליליא ובדיל
21 דלא למהוי יימם ולילי בעדנהון: אף קימי לא יבטיל דאקימית עם דוד עבדי
22 מלמהוי ליה בר מליך על כורסיה וית ליואי כהניא דמשמשין קדמי: כמא
דלית אפשר דיתמנון חילי שמיא ולא יתכיל חלא דימא כן אסגי ית זרעא דדוד
23 עבדי וית ליואי דמשמשין קדמי: והוה פתגם נבואה מן קדם יי עם ירמיה
למימר:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dñs : Adhuc audietur in loco iſto, de quo vos dicitis, Deſertus 10
eſt, abſq; homine, & jumento, in oppidis dom⁹ Juda,& in plateis Jeruſalem
vaſtis abſq; homine, & abſq; habitatore & abſq; pecore ; Vox gaudii 11
& vox lætitiæ, vox ſponſorum, & vox ſponſarum, vox dicentium, Confitemini
coram Dño exercituum ; quoniam bonus eſt Dñs, quia in æternum
benignitas ejus : & offerentium ſacrificium confeſſionis in domo ſanctuarii
Dñi. Quia reducam captivitatem terræ ſicut in principio, dicit Dñs.
Hæc dicit Dñs exercituum, Adhuc erunt in loco iſto qui deſert⁹ eſt abſque 12
homine & abſque jumento, & in omnib⁹ urbibus eorum, habitacula dom⁹
manſionis paſtorum, & caulæ ovium. In civitatibus montanis, & in civitatib⁹ 13
campeſtribus, & in civitatibus Auſtri, & in terra tribus Benjamin,
& in circuitibus Jeruſalem, & in civitatib⁹ domus Juda, adhuc diſcet populus
per manum Meſſiæ,dicit Dñs. Ecce dies venient,dicit Dñs, Et ſuſcitabo 14
verbum rectum quod locutus ſum ad domum Iſrael & ad domum Juda.
In diebus illis, & in tempore illo ſuſcitabo David Chriſtum juſtitiæ, & 15
faciet judicium verum & juſtitiam in terra. In diebus illis ſalvabuntur 16
viri domus Juda,et Jeruſalem habitabit confidenter. Et hoc eſt nomen quo
vocabunt eum, Fient nobis juſtitiæ à facie Dñi in medio ejus. Quia hæc 17
dicit Dñs, Non deficiet de David vir qui ſedeat ſuper thronum regni domus
Iſrael. Et de ſacerdotibus et Levitis non deerit vir à facie mea incendens 18
holocauſta, et offerens oblationem, et faciens victimam ſanctificatam
omnibus diebus. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi cum 19
Jeremia; dicens : Hæc dicit Dñs, Sicut non poteſt fieri irritum pactum meum 20
quod ſtatui cum die et cum nocte, ut non ſit dies et nox, tempore ſuo.
Sic et pactum meum non fiet irritum quod ſtatui cum David ſervo meo, 21
quo minus ſit ei filius regnans ſuper thronum ejus, et cum Levitis ſacerdotibus
qui miniſtrant coram me Sicut non poteſt numerari militia cœli, 22
nec menſurari arena maris ; ſic multiplicabo ſemen David ſervi mei, et
Levitas qui miniſtrant coram me. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie 23
Domini cum Jeremia ; dicens :

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܬܘܒ ܢܫܬܡܥ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܕܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܚܪܝܒ ܗܘ ܡܢ ܕܠܐ ܐܢܫܐ 10
ܘܡܢ ܕܠܐ ܒܥܝܪܐ. ܒܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܫܘܩܘܗ̈ܝ ܕܐܘܪܫܠܡ ܕܚܪܝܒܝܢ ܡܢ ܕܠܐ ܐܢܫܐ ܘܡܢ
ܕܠܐ ܕܝܬܒ ܘܡܢ ܕܠܐ ܒܥܝܪܐ * ܩܠܐ ܕܚܕܘܬܐ ܘܩܠܐ ܕܒܣܝܡܘܬܐ. ܩܠܐ ܕܚܬܢܐ ܘܩܠܐ ܕܟܠܬܐ. ܩܠܐ 11
ܕܐܡܪܝܢ. ܐܘܕܘ ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܕܛܒ ܗܘ ܡܪܝܐ ܘܡܪܚܡܢܐ ܗܘ. ܘܠܥܠܡ ܛܝܒܘܬܗ.
ܘܡܝܬܝܢ ܬܘܕܝܬܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܐܗܦܟ ܫܒܝܬܗ ܕܐܪܥܐ ܐܝܟ ܕܒܩܕܡܝܬܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܬܘܒ ܢܗܘܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܕܚܪܝܒ ܡܢ 12
ܐܢܫܐ ܘܡܢ ܒܥܝܪܐ ܘܒܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܘܗܝ. ܕܝܪܐ ܕܪܥܘܬܐ. ܘܡܪܒܥܐ ܕܥܢܐ. * ܒܩܘܪܝܐ 13
ܕܛܘܪܐ ܘܒܩܘܪܝܐ ܕܫܦܝܠܬܐ. ܘܒܩܘܪܝܐ ܕܬܝܡܢܐ. ܘܒܐܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ. ܘܒܚܕܪܝܗ̈ ܕܐܘܪܫܠܡ
ܘܒܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܬܘܒ ܢܥܒܪܢ ܥܢܐ ܥܠ ܐܝܕܝ ܡܢܝܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ 14
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܩܝܡ ܦܬܓܡܐ ܛܒܐ ܕܡܠܠܬ ܥܠ ܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܒܝܘܡܬܐ 15
ܗܢܘܢ ܘܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܐܨܡܚ ܠܕܘܝܕ ܨܡܚܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܢܡܠܟ ܒܡܠܟܘܬܐ ܘܢܣܬܟܠ.
ܘܢܥܒܕ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܐܪܥܐ. * ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܢܬܦܪܩ ܝܗܘܕܐ. ܘܐܘܪܫܠܡ ܬܥܡܪ 16
ܒܫܠܡܐ. ܘܗܢܘ ܫܡܗ ܕܢܩܪܘܢܗ ܡܪܝܐ ܙܕܝܩܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܢܬܚܣܪ ܠܕܘܝܕ 17
ܓܒܪܐ ܕܢܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܠܟܗܢܐ ܘܠܠܘܝܐ. ܠܐ ܢܬܚܣܪ ܓܒܪܐ ܡܢ ܩܕܡܝ 18
ܕܢܣܩ ܥܠܬܐ ܘܢܕܒܚ ܕܒܚܬܐ. ܘܢܣܝܡ ܒܣܡܐ. ܒܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ 19
ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢ ܡܫܟܚܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܡܒܛܠܘ ܬܫܡܫܬܝ 20
ܕܐܝܡܡܐ ܘܕܠܠܝܐ. ܕܠܐ ܢܗܘܐ ܐܝܡܡܐ ܘܠܠܝܐ ܒܙܒܢܗܘܢ. * ܐܦ ܩܝܡܝ ܢܒܛܠ 21
ܥܡ ܕܘܝܕ ܥܒܕܝ. ܕܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܒܪܐ ܕܢܡܠܟ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ. * ܘܥܡ ܟܗܢܐ 22
ܘܠܘܝܐ ܡܫܡܫܢܝ. ܐܝܟ ܕܠܐ ܡܬܡܢܐ ܚܝܠܐ ܕܫܡܝܐ: ܘܠܐ ܡܬܟܝܠ ܚܠܐ
ܕܝܡܐ. ܗܟܢܐ ܐܣܓܐ ܙܪܥܗ ܕܕܘܝܕ ܥܒܕܝ. ܘܠܠܘܝܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܠܝ. * ܘܗܘܐ 23
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܟܕ ܐܡܪ.

* Sic ait Dominus, Adhuc audietur in loco iſto 10
quem vaſtatum dicitis ob hominū jumentorúmque
penuriā, in civitatibus *ſcilicet* Judæ
& in plateis Jeroſolymorum, quæ deſolatæ
ſunt ob defectū hominum, ob defectum incolarum,
& ob defectum jumentorum; Vox exultationis 11
& vox lætitiæ, vox ſponſi & vox
ſponſæ, vox dicentiū, Gratias agite Dño potentiſſimo,
quia bonus eſt Dñs atque benign*,
& in perpetuum bonitas ejus: & afferentium
gratiarū actionem in ædem Dñi, nam reducturus
ſum captivos hujus terræ in priſtinum
ſtatum, ait Dñs potentiſſimus. Sic ait Dñs 12
potentiſſimus, Poſthac erunt in regione iſta
hominibus adeóque jumentis exhauſta, & in
omnibus oppidis ejus, caulæ, & paſtores, &
ovium cubilia: In oppidis quoque montanis, 13
in oppidis campeſtribus, in oppidis
Auſtralibus, & in terra Benjaminis, in adjacentibus
Jeroſolymæ locis, & in oppidis
Judæ, poſthac tranſibunt greges ſub manus
numerantis, ait Dñs. Ecce dies venturi ſunt, 14
ait Dñs, quibus eventu comprobabo ſermones
bonos quos locutus ſum de Judæis, dicit
Dñs. Diebus illis & tempore illo producam 15
Davidi fulgorem juſtitiæ, qui regnum moderabitur:
prudens erit, & exercebit judicium &
juſtitiā in terra. Diebus illis ſervabitur Juda, 16
& Jeruſalem habitabit ſecuré: & hoc eſt nomen
quo vocabunt eum, Dñs juſtitia noſtra.
Nam ſic ait Dominus, Non deficiet Davidi filius 17
inſidens ſolio Iſraelitarum: Et ſacerdotibus 18
atque Levitis non deerit vir à conſpectu
meo offerens holocauſtū, & faciens victimā,
adolénſque thura cunctis diebus. Factus eſt 19
etiam ſermo Domini ad Jeremiam, dicendo;
Sic ait Dñs, Si facere poteſtis ut ceſſent administrationes 20
meæ quibus diem noctémque
adminiſtro, ita ut non ſit dies neque nox tempore
ſuo; Etiam fœdus meum quod pollicitus 21
ſum Davidi ſervo meo, irritum fiet, ne ſit
ei filius regnans ſuper ſolium ipſius. Quod 22
autem ad ſacerdotes & Levitas miniſtros
meos, quemadmodum numerari nequit exercitus
cœlorum, nec menſurari arena maris;
ita multiplicabo ſemen Davidis ſervi mei,
& Levitarum miniſtrantium mihi. Rurſum 23
fuit ſermo Domini ad Jeremiam, dicendo;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ويرسلهم الي ملك يهوذا والي ملك مواب . والي ملك بني امون والي ملك صيدا . بايدي 3
رسلهم الاتيين للقايهم في ايروسليم . الي صدقيا ملك يهوذا * وتامرهم ان يقولوا لساداتهم . 4
هكذا قال الرب اله اسرايل . هكذا قولوا لساداتكم * اني انا صنعت الارض بقوتي 5
العظيمة وبذراعي الرفيعة . واعطيها لمن يسرف في عيني * دفعت كل الارض لبختنصر 6
ملك بابل ليتعبد له . ووحوش الحقل ليعمل له [* MS.Oxon. ويستعبد الشعوب هو وابنه . 7
وابن ابنه . الي الوقت الذي يجي عقاب ارضه ايضا . ويتعبد له شعوب كثيرة . وملوك
كثيرة] * والامة والمملكة الذين لا يضعون عنقهم تحت نير ملك بابل . بالسيف والجوع 8
اتعهدهم قال الرب . الي ان يفنوا في يده .

* Deinde mittas ea ad regem Judæ, ad regem 3
Moabi, ad regem filiorum Ammon,
& ad regem Sidonis, per nuntios venientes
in occurſum eorum Jeroſolymam apud
Sedeciam regem Judæ. Et his præcipias 4
ut dicant dominis ſuis, Sic dixit
Dominus Deus Iſraelis; Ita dicite dominis
veſtris, Ego quidem magnâ meâ potentiâ 5
& brachio meo excelſo terram condidi,
cámque do cuicunque præſtat in oculis
meis: Dedi totam terram Bochtonaſſari 6
regi Babelis ut ſerviret ei, & beſtias
agri ut pro ipſo operarentur. [MS.Ox.
Et gentes multas in ſervitutē rediget ipſe, 7
& filius ejus, & nepos ejus; donec adveniat
tempus quo animadvertam etiam
in terram ipſius: ſervient inquam, ei gentes
multæ, & multi reges.] Quare gens 8
aut regnum, quæ non ſubjecerint collum
ſuum jugo regis Babelis; gladio & fame
viſitabo illa, dixit Dominus, donec abſumantur
in manu ejus.

* الاصحاح الثاني والعشرون *

Textus vigeſimus ſecundus.

* وانتم لا تسمعوا من انبيايكم الكذبة . ولا من منجمينكم . ولا من الذين يحلمون 9
لكم . ولا من فالاتكم . ولا من سحرتكم الذين يقولون لا تعملوا لملك بابل * لان 10
هولاء يتنبون لكم بالكذب ليبعدوكم من ارضكم * والامة التي تدخل عنقها تحت نير 11
ملك بابل وتعمل له . ابقيها على ارضها . وتعمل له وتسكن فيها * ومع صدقيا ملك 12
يهوذا تكلمت بجميع هذه الاقوال قايلا . ادخلوا عنقكم واعملوا لملك بابل [MS.Ox.
وتعبدوا له ولشعبه * وعيشوا ولا تموتوا انت وشعبك بالحرب والجوع والموت الذي قال الرب في 13
كل الشعب لا يتعبد لملك بابل * واياكم ان تسمعوا قول انبيا الزور . الذين يقولون 14
لكم . لا تخضعوا لملك بابل .

* Vos itaque ne auſcultetis prophetis ve- 9
ſtris mendacibus, neque aſtrologis veſtris,
neque iis qui ſomniant vobis, neque divinationibus
veſtris, neque magis veſtris
qui dicunt, Ne operemini pro rege Babelis.
Nam iſti prophetant vobis mendacium, 10
ut procul amoveant vos à terra veſtra.
Gentem verò quæ collum ſuum 11
ſubdet jugo regis Babelis, eique operabitur;
relinquam in terra ſua, ut operetur
illi, & habitet in ea. Et cum Sedecia 12
rege Judæ habui cunctos hoſce ſermones,
dicens, Subdite collum veſtrum, & operamini
regi Babelis. [MS.Ox. Et ſervite 13
ei, & populo ejus. Ita vivite, &
non moriemini tu & populus tuus gladio,
fame & peſte, prout elocutus eſt Dominus
de omni populo qui non ſerviet regi Babyloniæ.
Vos autem ne auſcultetis ſermonibus 14
falſorum prophetarum qui alloquuntur
vos, dicendo, Nequaquam ſervietis
regi Babelis.

ירמיה : לד

quas familias Duas : dicendo,*ſunt locuti* iſte populus quid vidiſti Nónne

24 הלוא ראית מה־העם הזה דברו לאמר שתי המשפחות אשר

ultrà *exiſtendo ab parvipendent* meum populū & *eas reprobavit &* ,eis in Dominus elegerat

בחר יהוה בהם וימאסם ואת־עמי ינאצון מהיות עוד

die meum pactum non Si : Dominus dixit Sic .*eorum facies ad gentem*

25 גוי לפניהם: כה אמר יהוה אם־לא בריתי יומם

David &,Jahacob ſemen Etiam .poſui non terræ & ,cœlorum ſtatuta ; nocte &

26 ולילה חקות שמים וארץ לא שמתי: גם־זרע יעקוב ודוד

, Iſchac ,Abraham *ſemen in* dominantes ejꝰ ſemine de *capiendo à,reprobabo* mei ſervi

עבדי אמאס מקחת מזרעו משלים אל־זרע אברהם ישחק

.eorum miſerebor & ,eorum captivitatem reducam nam : Jahacob &

ויעקב כי־אשוב את־שבותם ורחמתים:

CAP. XXXIV. לד

rex Nebuchadneſar Et .Domino à Irmejahu ad fuit quod Verbum

1 הדבר אשר־היה אל־ירמיהו מאת יהוה ונבוכדנצר מלך־

,ejus manus poteſtatis terræ regna univerſique ,ejus *virtus* omnis & , Babel

בבל וכל־חילו וכל־ממלכות ארץ ממשלת ידו

: dicendo ,ejus urbes omnes *ſuper* & ,Jeruſalaim *ſuper bellantes* populi omnes &

וכל־העמים נלחמים על־ירושלם ועל־כל־עריה לאמר:

regem Sidchijahu ad *dices* & , Vade : Iſrael Deus Dominus dixit Sic

2 כה־אמר יהוה אלהי ישראל הלך ואמרת אל־צדקיהו מלך

civitatem *dans ego* Ecce : Dominus dixit Sic : eum ad *dices* & , Jehudah

יהודה ואמרת אליו כה אמר יהוה הנני נתן את־העיר

evades non tu Et .igni in eā ſuccendet & ,Babel regis manum in hanc

3 הזאת ביד מלך־בבל ושרפה באש: ואתה לא תמלט

: traderis ejus manum in & , comprehenderis comprehendendo ſed , ejus manu de

מידו כי תפש תתפש ובידו תנתן

,alloquetur tuum os ejus os & , videbunt Babel regis oculos tui oculi &

ועיניך את־עיני מלך־בבל תראינה ופיהו את־פיך ידבר

.Jehudah rex Sidchijahu Domini verbum audi Attamen .introibis Babel &

4 ובבל תבוא: אך שמע דבר־יהוה צדקיהו מלך יהודה

, morieris pace In .gladio in morieris Non , te ad Dominus dixit Sic

5 כה־אמר יהוה עליך לא תמות בחרב: בשלום תמות

, te ante fuerunt qui , priorum regum tuorum patrum *combuſtionibus in* &

ובמשרפות אבותיך המלכים הראשנים אשר־היו לפניך

,ſum locutus ego verbum quia ; te plangent Domine væ & , te comburent ſic

כן ישרפו־לך והוי אדון יספדו־לך כי־דבר אני־דברתי

Jehudah regem Sidchijahu ad propheta Irmejahu eſt locutus Et .Dominus dixit

6 נאם־יהוה: וידבר ירמיהו הנביא אל־צדקיהו מלך יהודה

ſuper pugnantes Babel regis *virtus* Et .Jeruſalaim in hæc verba univerſa

7 את כל־הדברים האלה בירושלם: וחיל מלך־בבל נלחמים על־

:Hazecah *ad* & ,Lachis *ad* ,*remanentes* Jehudah civitates omnes *ſuper* &,Jeruſalaim

ירושלם ועל כל־ערי יהודה הנותרות אל־לכיש ואל־עזקה

fuit quod Verbum .*munitionis* urbes Jehudah civitatibꝰ *in* remanſerant iſtæ nam

8 כי הנה נשארו בערי יהודה ערי מבצר: הדבר אשר־היה

omni cum fœdus Sidchijahu *regem excidiſſe poſt* , Domino à Irmejahu ad

אל־ירמיהו מאת יהוה אחרי כרת המלך צדקיהו ברית את־כל־

virum dimittendum Ad .libertatē *eis* prædicando ,Jeruſalaim in *qui* populo

9 העם אשר בירושלם לקרא להם דרור: לשלח איש את־

non *ad* : liberos , Hebræam & Hebræum , ſuam ancillam *virum* & ,ſuum ſervū

עבדו ואיש את־שפחתו העברי והעבריה חפשים לבלתי

univerſus &,principes omnes audierunt Et .*virum* ſuo fratre Jehudæo *in eis infaciendū*

10 עבד־בם ביהודי אחיהו איש: וישמעו כל־השרים וכל־

unumquemq; & ,ſuum ſervū *unumquemq; dimittendū ad*,pactum in venerant qui ,populus

העם אשר־באו בברית לשלח איש את־עבדו ואיש

.dimiſerūt & audierūt &:amplius eis *in ſerviendum* non *ad* ; liberos ,ſuam ancillam

את־שפחתו חפשים לבלתי עבד־בם עוד וישמעו וישלחו:

Verſio VULG. LAT.

24 Numquid non vidiſti quid populus hic locutꝰ ſit, dicens; Duæ cognationes, quas elegerat Dñs, abjectæ ſunt: & populū meum deſpexerunt, eò quòd non ſit ultrà gens coram eis? 25 Hæc dicit Dñs: Si pactū meum inter diem & noctē, & leges cœlo & terræ non poſui; 26 Equidē & ſemen Jacob & David ſervi mei projiciā, ut non aſſumā de ſemine ejus principes ſeminis Abraham, Iſaac, & Jacob: reducam enim converſionem eorum, & miſerebor eis.

CAP. XXXIV.

1 VErbum quod factū eſt ad Jeremiā à Dño, quando Nabuchodonoſor rex Babylonis, & omnis exercitus ejus, univerſáque regna terræ, quæ erāt ſub poteſtate manûs ejus, & omnes populi bellabant contra Jeruſalē, & contra omnes urbes ejus, dicens; 2 Hæc dicit Dñs Deus Iſrael; Vade, & loquere ad Sedeciam regē Juda: & dices ad eum; Hæc dicit Dñs; Ecce ego tradam civitatē hanc in manꝰ regis Babylonis, & ſuccendet eam igni. 3 Et tu non effugies de manu ejꝰ: ſed comprehenſione capieris, & in manu ejus tradêris: & oculi tui oculos regis Babylonis videbunt, & os ejꝰ cum ore tuo loquetur, & Babylonem introibis. 4 Attamen audi verbum Dñi, Sedecia rex Juda: Hæc dicit Dñs ad te; 5 Non morieris in gladio. Sed in pace morieris, & ſecundùm combuſtiones patrū tuorum regū priorum qui fuerunt ante te, ſic comburent te: et væ, dñe, plangent te: quia verbū ego locutus ſum, dicit Dñs. 6 Et locutꝰ eſt Jeremias propheta ad Sedeciam regē Juda univerſa verba hæc in Jeruſalē. 7 Et exercitus regis Babylonis pugnabat contra Jeruſalē, & contra omnes civitates Juda, quæ reliquæ erant, contra Lachis, & contra Azecha: hæ enim ſupererant de civitatibus Juda, urbes munitæ. 8 Verbum, quod factum eſt ad Jeremiam à Domino, poſtquàm percuſſit rex Sedecias fœdus cum omni populo in Jeruſalem, prædicans; 9 Ut dimitteret unuſquiſque ſervum ſuum, & unuſquiſque ancillā ſuā, Hebræum, & Hebræam, liberos: et nequaquam dominarentur eis, id eſt, in Judæo & fratre ſuo. 10 Audierunt ergò omnes principes & univerſus populus, qui inierant pactum ut dimitteret unuſquiſque ſervum ſuum, & unuſquiſque ancillam ſuam liberos, & ultrà non dominarentur eis: audierunt igitur, & dimiſerunt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

14 Ὅτι ἄδικα αὐτοὶ προφητεύουσιν ὑμῖν, 15 Ὅτι οὐκ ἀπέστειλα αὐτούς, φησὶ κύριος, καὶ προφητεύουσι (λ) τῷ ὀνόματί μου ἐπ' ἀδίκῳ, πρὸς τὸ (μ) ἀπολέσαι ὑμᾶς, καὶ ἀπολεῖσθε ὑμεῖς, καὶ οἱ προφῆται ὑμῶν, οἱ προφητεύοντες ὑμῖν ἐπ' ἀδίκῳ ψευδῆ. 16 Ὑμῖν, καὶ παντὶ τῷ λαῷ τούτῳ, καὶ τοῖς ἱερεῦσιν ἐλάλησα, λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος, Μὴ ἀκούετε τῶν λόγων τῶν προφητῶν, τῶν προφητευόντων ὑμῖν (ν), λεγόντων, Ἰδοὺ σκεύη οἴκου κυρίου (ξ) ἐπιστρέψει ἐκ Βαβυλῶνος· ὅτι ἄδικα αὐτοὶ προφητεύουσιν 17 18 ὑμῖν. Οὐκ ἀπέστειλα αὐτούς. (ο) Εἰ προφῆταί εἰσι, (π) καὶ εἰ ἔστι λόγος κυρίου ἐν αὐτοῖς, ἀπαντησάτωσάν μοι, 19 ὅτι οὕτως εἶπε κύριος. Καὶ τῶν ἐπιλοίπων σκευῶν, 20 Ὧν οὐκ ἔλαβε βασιλεὺς Βαβυλῶνος, ὅτε ἀπῴκισε τὸν Ἰεχονίαν 22 ἐξ Ἱερουσαλήμ, Εἰς Βαβυλῶνα εἰσελεύσεται, λέγει κύριος.

Quia iniqua ipſi prophetant vobis: Quia non miſi eos, ait Dominus: & prophetant nomine meo ſuper iniquo ad perdendos vos. Et peribitis vos, & prophetæ veſtri, qui prophetant vobis ſuper iniquo mendacia. (l) Vobis & omni populo huic, & ſacerdotibus loquutus ſum, dicens; Sic ait Dominus; Nolite audire verba prophetarum, qui prophetant vobis, dicentes, Ecce vaſa domûs Domini revertentur de (m) Babylone: quia iniqua ipſi prophetant vobis: (n) Non miſi eos. Si prophetæ ſunt, & ſi eſt verbum Domini in eis; occurrant (o) mihi: quia ſic dixit Dominus. Et reliqua vaſa, Quæ non accepit rex Babylonis, quando tranſtulit Jechoniam de Hieruſalem, In Babylonem intrabunt, dicit Dominus.

MS.A. (λ) ἐπὶ τῷ (μ) ἀπολέσαι (ν) ψευδῆ, καὶ λεγόντων, (ξ) ἐπιστρέφει (ο) Καὶ εἰ (π) καὶ ἔστιν

Cap. 28. Vulg. Lat.

ΚΕΦ. λέ.

1 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ τετάρτῳ ἔτει (α) Σεδεκία βασιλέως Ἰούδα (β) ἐν μηνὶ τῷ πέμπτῳ, εἶπέ μοι Ἀνανίας υἱὸς Ἀζὼρ ὁ ψευδοπροφήτης (γ) ἀπὸ Γαβαὼν ἐν οἴκῳ κυρίου, κατ' ὀφθαλμοὺς τῶν ἱερέων, καὶ παντὸς τοῦ λαοῦ, 2 λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος, Συνέτριψα τὸν ζυγὸν τοῦ βασιλέως Βαβυλῶνος. 3 Ἔτι (δ) δύο ἔτη ἡμερῶν, καὶ ἐγὼ ἀποστρέψω εἰς τὸν τόπον τοῦτον τὰ σκεύη οἴκου κυρίου, 4 Καὶ (ε) Ἰεχονίαν, καὶ τὴν ἀποικίαν Ἰούδα, ὅτι (ζ) συντρίψω τὸν ζυγὸν βασιλέως Βαβυλῶνος. 5 Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας πρὸς Ἀνανίαν κατ' ὀφθαλμοὺς παντὸς τοῦ λαοῦ καὶ κατ' ὀφθαλμοὺς τῶν ἱερέων τῶν ἑστηκότων ἐν οἴκῳ 6 κυρίου, Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας, Ἀληθῶς (η) οὕτω ποιήσαι κύριος, στῆσαι (θ) τὸν λόγον σου ὃν σὺ προφητεύεις, τοῦ ἐπιστρέψαι τὰ σκεύη οἴκου κυρίου καὶ πᾶσαν τὴν ἀποικίαν ἐκ Βαβυλῶνος εἰς τὸν τόπον τοῦτον.

CAP. XXXV.

ET (a) factū eſt in quarto anno Sedeciæ regis Juda in menſe quinto, dixit mihi Ananias filius Azor pſeudopropheta de Gabaon in domo Domini ante oculos ſacerdotum, & omnis populi, dicens; Sic dixit (b) Dominus; Contrivi jugum regis Babylonis. Adhuc duo anni dierum: & ego reddere faciam ad locum iſtum vaſa domûs Domini, Et Jechoniam, & tranſmigrationem Juda: quia conteram jugum regis Babylonis. Et dixit Hieremias ad Ananiam ante oculos omnis populi, & ante oculos ſacerdotum ſtantium in domo Domini. Et dixit Hieremias, Verè ſic faciat Dominus: ſtatuat verbum tuum, quod tu prophetas, ut revertantur vaſa domûs Domini, & omnis tranſmigratio de Babylone ad locum iſtum.

MS.A. (α) βασιλεύοντος Σεδεκίου βασιλέως (β) ἐν τῷ πέμπτῳ μηνί, (γ) ὁ ἀπὸ (δ) ἔτη δύο ἡμερῶν, ἐγὼ (ε) τὸν Ἰεχονίαν, (ζ) συνέτριψα (η) οὕτως (θ) κύριος τὰ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

24 הלא חזיתא מא עמא הדין ממללין למימר תרתין זרעיתא דאתרעי יי בהון ורחיקנון

25 וית עמי מרגזין מלמהוי עוד עם משמש קדמי כקבלהון: כדנן אמר יי כמא דלית

אפשר דיבטיל קימי דאקימית עם יממא ועם ליליא כן גזירת שמיא וארעא לא שויתינון

26 דיעדון: אף זרעא דיעקב ודוד עבדי לא ארחיק מלקרבא מבניהון עבדין שולטן על

זרעיה דאברהם יצחק ויעקב ארי אתיב ית גלותהון וארחם עליהון:

לד

1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה מן קדם יי ונבוכד נצר מלכא דבבל וכל משריתיה וכל

מלכות ארעא שולטן ידיה וכל עממיא מגיחין קרבא על ירושלם ועל כל קרויהא

2 למימר: כדנן אמר יי אלהא דישראל אזל ותימר לצדקיה מלך שבטא דבית יהודה

ותימר ליה כדנן אמר יי הא אנא מסר ית קרתא הדא ביד מלכא דבבל ויוקדנה בנורא:

3 ואת לא תשתזיב מן ידיה ארי אתאחדא תתאחד ובידיה תתמסר ועינך ית עיני מלכא

4 דבבל יחזין ופומיה עם פומך ימלל ולבבל תהובל: ברם קביל פתגמא דיי צדקיה מלך

5 שבטא דבית יהודה כדנן אמר יי עלך לא תתקטיל בחרבא: בשלמא תמות וביקידות

אבהתך מלכיא קדמאי דהוו קדמך כן יוקדון עלך וי על מלכא יספדון עלך ארי פתגמא

6 אנא מלילית אמר יי: ומלל ירמיה נביא עם צדקיה מלך שבטא דבית יהודה ית כל

7 פתגמיא האלין בירושלם: ומשרית מלכא דבבל מגיחין קרבא על ירושלם ועל כל

קרויא דבית יהודה דאשתארא על לכיש ועל עזקה ארי אנין אשתארא בקרויא דבית

8 יהודה קרוין כריכן: פתגם נבואה דהוה עם ירמיה מן קדם יי בתר דגזר מלכא צדקיה

9 קים עם כל עמא דבירושלם למקרי להון חירו: לשלחא גבר ית עבדיה וגבר ית

אמתיה בר ישראל ובת ישראל בני חורין בדיל דלא יפלחון בהון גבר באחוהי

10 יהודאה: ושמעו כל רברביא וכל עמא דעלו בקימא לשלחא גבר ית עבדיה וגבר ית

אמתיה בני חורין בדיל דלא יפלחון בהון עוד וקבילו ושלחו:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

24 Nónne vidiſti quid populꝰ hic loquitur; dicendo: Duæ cognationes quas elegit Dñs, & projecit eas; & populum meum irritare faciunt, quo minus ultrà ſit populꝰ miniſtrans coram me in conſpectu eorum. 25 Hæc dicit Dñs, Sicut non poteſt fieri ut aboleatur pactum meum quod ſtatui cum die & cum nocte; ſic ſtatuta cœli & terræ non poſui ut tranſeant. 26 Semen quoque Jacob & David ſervi mei non averſabor, quo minus applicem ex filiis eorum dominatores ſuper ſemen Abrahæ, & Iſaac, & Jacob: reducam enim captivitatem eorum, & miſerebor eorum.

CAP. XXXIV.

1 VErbum prophetiæ quod factum eſt ad Jeremiam à facie Dñi. Et Nabuchodonoſor rex Babylonis, & omnis exercitꝰ ejus, & omnia regna terræ dominationis manꝰ ejus, & omnes populi præliabantur adverſùm Jeruſalem, & adverſùm omnes urbes ejus; dicendo: 2 Hæc dicit Dñs Deus Iſrael, Vade & dic Sedechiæ regi tribꝰ domus Juda, & dices ei: Hæc dicit Dñs, Ecce ego tradam civitatem iſtā in manū regis Babylonis, & ſuccendet eam igni. 3 Et tu non liberaberis de manu ejus; quia comprehenſione capieris, & in manum ejus tradêris, & oculi tui oculos regis Babylonis videbunt, & os ejus cum ore tuo loquetur, & in Babylonem ducêris. 4 Veruntamen ſuſcipe verbum Dñi Sedechia rex tribus domꝰ Juda. Hæc dicit Dñs de te, 5 Non interficiêris gladio. Sed in pace moriêris, & ſecundùm combuſtionem patrum tuorum regum priorum qui fuerunt ante te, ſic exurent te: væ ſuper regem, plangent te, quia verbum hoc locutus ſum, dicit Dñs. 6 Et locutꝰ eſt Jeremias propheta cum Sedechia rege tribus domus Juda omnia verba hæc in Jeruſalem. 7 Et exercitus regis Babylonis pugnabant contra Jeruſalem, & contra omnes civitates domus Juda quæ remanſerant: contra Lachis & contra Azecha; hæ enim remanſerant de civitatibꝰ domus Juda, urbes munitæ. 8 Verbum prophetiæ quod factum eſt cum Jeremia à facie Dñi, poſtquam percuſſit rex Sedechias pactum cum omni populo qui erat in Jeruſalem, ut prædicarent eis libertatem. 9 Ut dimitteret quiſq; ſervum ſuum & quiſq; ancillam ſuam, filium Iſrael & filiam Iſrael, liberos: ut nullus in ſervitutem redigeret fratrem ſuum Judæum. 10 Et audierunt omnes principes, & omnis populus qui venerant in fœdus, ut dimitteret quiſque ſervum ſuum, & quiſq; ancillam ſuam liberos, ita ut non uteretur eis tanquam ſervis; & obedierunt, & dimiſerunt.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܠܐ ܚܙܝܬ ܐܝܟ ܡܕܡ ܕܐܡܪܝܢ ܥܡܐ: ܕܬܪܬܝܢ ܫܪ̈ܒܢ ܕܓܒܐ ܡܪܝܐ ܐܣܠܝ ܐܢܝܢ. ܘܠܥܡ
ܡܪ̈ܓܙܝܢ. ܕܠܐ ܢܗܘܐ ܥܡܐ ܩܕܡܝ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢ ܠܐ ܗܘܐ ܩܝܡܝ ܕܐܝܡܡܐ ܘܠܠ
ܘܢܡܘ̈ܣܐ ܕܫܡܝܐ ܘܕܐܪܥܐ ܣܡܬ. * ܐܦ ܙܪܥܗ ܕܝܥܩܘܒ ܘܕܕܘܝܕ ܥܒܕܝ ܐܣܠܐ. ܕܠܐ ܐܣ
ܙܪܥܗ ܫܠܝܛܢܐ. ܥܠ ܙܪܥܗ ܕܐܒܪܗܡ ܘܕܐܝܣܚܩ ܘܕܝܥܩܘܒ. ܟܕ ܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܗ
ܘܐܪܚܡ ܥܠܝܗܘܢ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܕ * ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܠܘܬ ܐܪ
ܡܢ ܡܪܝܐ. ܟܕ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ. ܘܟܠܗܝܢ ܡܠܟ̈ܘܬܐ ܕܐܪ
ܫܘܠܛܢ ܐܝܕܗ. ܘܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ. ܡܬܟܬܫܝܢ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܘܥܠ ܟܠܗܝܢ ܩܘܪ̈ܝ
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܙܠ ܘܐܡܪ ܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ .· ܗܟܢܐ ܐ
ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܗܕܐ ܡܕܝܢܬܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܘܩܕܝܗ ܒܢܘ
* ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܬܦܠܛ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ. ܐܠܐ ܡܬܬܚܕܘ ܬܬܬܚܕ. ܘܒܐܝܕܘܗܝ ܬܫܬܠܡ. ܘܥܝܢ
ܒܥܝܢ̈ܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܢܚܙܝܢ. ܘܦܘܡܟ ܥܡ ܦܘܡܗ ܢܡܠܠ. ܘܠܒܒܠ ܬܐܙܠ
* ܒܪܡ ܫܡܥ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠܝܟ. ܠܐ ܬܡ
ܒܚܪܒܐ. ܐܠܐ ܒܫܠܡܐ ܬܡܘܬ. * ܘܐܝܟ ܕܐܘܩܕܘ ܠܐܒܗ̈ܝܟ ܡܠܟ̈ܐ ܩܕܡܝ̈ܐ ܕܗܘܘ ܩܕܡ
ܗܟܢܐ ܢܘܩܕܘܢ ܠܟ. ܡܛܠ ܕܦܬܓܡܐ ܗܢܐ ܡܠܠܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܢܒ
ܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡ̈ܐ ܗܠܝܢ ܒܐܘܪܫܠܡ .· * ܘܚܝܠܐ ܕܡܠܟ
ܕܒܒܠ. ܡܬܟܬܫܝܢ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܘܥܠ ܟܠܗܝܢ ܩܘܪ̈ܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܐܫܬܚܪ. ܥܠ ܠܟ
ܘܥܠ ܥܙܩܐ. ܡܛܠ ܕܗܠܝܢ ܐܫܬܚܪ ܡܢ ܩܘܪ̈ܝܐ ܕܝܗܘܕܐ ܩܘܪ̈ܝܐ ܚܣܝܢ̈ܬܐ. * ܦܬܓܡܐ ܕܗ
ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ .· ܡܢ ܒܬܪ ܕܓܙܪ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ ܩܝܡܐ ܥܡ ܟܠ
ܥܡܐ ܕܒܐܘܪܫܠܡ. ܠܡܩܪܐ ܠܗܘܢ ܚܐܪܘܬܐ. * ܕܢܫܕܪ ܐܢܫ ܥܒܕܗ ܘܐܢܫ ܐܡܬܗ ܥܒ
ܥܒܪܝܐ ܘܥܒܪܝܬܐ ܒܢܝ ܚܐܪܐ. ܕܠܐ ܢܦܠܚܘܢ ܐܢܫ ܠܐܚܘܗܝ ܝܗܘܕܝܐ. * ܘܫܡܥܘ ܟܠܗܘ
ܪܘܪ̈ܒܢܐ. ܘܟܠܗ ܥܡܐ .· ܘܥܠܘ ܒܩܝܡܐ ܕܢܫܕܪܘܢ ܐܢܫ ܥܒܕܗ ܘܐܢܫ ܐܡܬܗ
ܒܢܝ ܚܐܪܐ .· ܕܠܐ ܢܦܠܚܘܢ ܒܗܘܢ ܬܘܒ.

An non percipis quid dicant populus iste, 24
quòd duas familias quas elegerat Dominus,
abominatur: & populum meum irritant, ne
sit populus coram me? Sic dicit Dominus, 25
Sin minùs fœdus meum diei & noctis, & le-
ges meas cœli ac terræ ego poſui; Ita ſemen 26
Jacobi & Davidis ſervi mei abominabor, ne
ſumam de ſemine ipſius principem ſuper do-
mum Abrahami, Iſahaci, & Jacobi; quum re-
duxero captivos eorũ, & miſert⁹ fuero ipſorũ.

CAP. XXXIV.

SErmo qui factus eſt ad Jeremiam à Domi- 1
no, dum Nebuchadnoſar rex Babelis cum to-
to exercitu ſuo, omnibúſque regnis terræ do-
minio ſuo ſubjectæ, necnon omnes gentes op-
pugnabant Jeroſolymam & omnes civitates
ejus. Sic ait Dominus Deus Iſraelis, Abi 2
dictum Sedeciæ regi Judæ; Sic dicit Domi-
nus, Ecce traditurus ſum hanc urbem in ma-
num regis Babyloniæ, ut eam igne comburat.
Et tu non effugies manus ejus, ſed proculdu- 3
biò capiêris, & in manus ejus tradêris; oculi
tui oculos regis Babyloniæ videbunt, & os
tuum cum ipſius ore loquetur; denique Ba-
bylonem ibis. Verùm audi ſermonem Domi- 4
ni Sedecia rex Judæ: Sic ait Dominus de te,
Non es moriturus gladio, ſed in pace mori-
turus: Et quemadmodum lamentati ſunt ma- 5
jores tuos reges priſtinos qui te præceſſerunt,
ſic te lamentabuntur; hunc enim ego ſermo-
nem locutus ſum, ait Dominus. Retulit ergò 6
Jeremia propheta Sedeciæ regi Judæ omnes
ſermones iſtos in Jeruſalem, Dum copiæ re- 7
gis Babyloniæ oppugnarent Jeroſolymam &
reliquas omnes civitates Judæ, *nempe* Lachis
& Azecam; nam iſtæ præ *cæteris* civitatibus
Judæ, reliquæ manebant civitates munitæ.
Sermo qui fuit ad Jeremiam à Domino, di- 8
cendo (poſtquam pepigiſſet rex Sedecia fœ-
dus cum toto populo qui erat Jeroſolymis de
promulganda ipſis libertate, Ut quiſque ſer- 9
vum ſuum & quiſque ancillam ſuam, Hebræ-
um Hebræámque liberos dimitteret, nemo
fratrem ſuum Judæum ſervitute premeret: Et 10
acquieſcentes omnes principes totúſque po-
pulus conſenſiſſent quiſque ſervum ſuum &
quiſque ancillam ſuam liberos dimittere, ut
ſibi non ſervirent ampliús.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

لأنّ هاولاء يتنبّون لكم بالظلم * لأني لم أرسلهم قال الربّ * ويتنبّون باسمي بالظل
ليحاربوكم ويهلكون انتم وانبياوكم الذين يتنبّون لكم بالظلم كذبا. ولكل هذا الشعب
* * وتكلّمت مع الكهنة قايلا. هكذا قال الربّ. لا تسمعوا اقوال الانبياء الكذبة الذين
يتنبّون لكم قايلين ها آنية بيت الربّ تعود من بابل. لأنّ هاولاء يتنبّون لكم ظلما
ارسلهم * وليس هم انبياء * وليست كلمة الربّ فيهم ليستقبلوك [MS Ox.* وان كانوا انبيا
وعندهم وحي الرب يطلبون الي الرب القوي ان لا تسكب المتاع الذي بقي في بيت الرب
وفي بيت ملك يهوذا وال اورشليم * وينطلق به الي بابل *] لأنّ هكذا قال الربّ [القوي
اله اسراييل في العمودين والبحر والانية وساير المتاع الذي بقي في هذه القرية. الذي ل
ياخذه بختنصر ملك بابل حيث سبي يوخانيا ملك يهوذا الي بابل. وجميع الاشراف يهوذا
واورشليم] * * * والاواني المتبقية التي لم ياخذها ملك بابل لما جلي يوخانيا من اورشليم
الي بابل تدخل يقول الربّ * الفصل الخامس والثلثون * * وكان في السنة الرابعة
لصدقيا ملك يهوذا في الشهر الخامس قال لي حنانيا بن عازور النبي الكذاب الذي من
عاباون في بيت الربّ تجاه الكهنة وكل الشعب قايلا * هكذا قال الربّ كسرت نير ملك بابل
* ايضا سنتين ايام انا أردّ الي هذا الموضع آنية بيت الربّ ويوخانيا وسبي يهوذا
أكسر نير ملك بابل [* MS Ox. قال ارميا لحننيا النبي الكذاب امام الكهنة وجميع
الشعب القيام في بيت الرب] فقال ارميا * بالحقيقة هكذا قال الرب يقيم الرب كلمتك التي
تنبيت بها * ليرد آنية بيت الرب وكل الجلوة من بابل الي هذا الموضع *

Iſti inquam, iniquè prophetant vobis:
Nam ego non miſi eos, dixit Dominus, 15
attamen falſum prophetant nomine meo,
ut expugnent vos, & pereatis cùm vos
tum prophetæ veſtri qui iniquè falſitatem
prophetant vobis & toti huic populo. 16
Allocutus ſum etiam ſacerdotes, dicens, 17
Sic dixit Dominus, Ne acquieſcatis dictis
prophetarum mendacium qui prophetant
vobis, dicentes; Ecce vaſa domûs Domi-
ni reditura ſunt ex Babele: nam iſti per-
versè prophetant vobis. Non miſi eos, 18
neque ſunt prophetæ, nec eſt verbum Do-
mini penes ipſos, ut audeant *opponere ſe*
tibi. [MS. Oxon. *Quòd ſi prophetæ ſunt,* 19
& revelatio Domini apud ipſos, poſtulent
à Domino potentiſſimo ut non incedant
vaſa quæ reliqua ſunt in domo Domini,
& in domo regis Judæ, & apud cives
Jeroſolymæ, ut non abeant inquam in Ba-
byloniam.] *Quoniam ſic dicit Dominus*[*po-*
tentiſſimus Deus Iſraelis, de columnis, de
mari, de inſtrumentis, cæteriſque vaſis quæ
reliqua ſunt in civitate hac, quæ non ac-
cepit Bochtonaſſar rex Babelis, quum ca-
ptivum abduxit Jochaniam regem Judæ
in Babyloniam, & omnes principes Judæ 20
& Jeruſalem,] *Etiam vaſa quæ non* 21
tulit rex Babelis quando deportavit Jo- 22
chaniam ex Jeruſalem, in Babelem intra-
bunt, ait Dominus.

CAP. XXXV.

P*Rætereà factum eſt anno quarto Sede-* 1
ciæ regis Judæ, menſe quinto, ut allo-
queretur me Hanania filius Azoris prophe-
ta mendax, qui erat de Gibaone, in domo
Domini, coram ſacerdotibus totóque po-
pulo, dicens; Sic dixit Dominus, Fregi 2
jugum regis Babelis. Duo adhuc dierum 3
anni reſtant, poſt quos ego reſtituam in
hunc locum vaſa domûs Domini, &
Jochaniam, Et captivitatem Judæ; 4
quia facturus ſum jugum regis Babelis.
[MS. Oxon. *Tum dixit Jeremia Hana-* 5
niæ pſeudoprophetæ coram ſacerdotibus,
& univerſo populo qui aſtabant in domo
Domini,] *dixit inquam Jeremia; Verè* 6
ſic ait Dominus? præſtet Dominus ver-
bum tuum quòd prophetâſti, ut reſtituat
vaſa domûs Domini totámque captivita-
tem, è Babele in hunc locum.

ירמיה : לד

& , servos reduxerunt & , *postea* sunt conversi Et
11 וַיָּשׁוּבוּ אַחֲרֵי־כֵן וַיָּשִׁבוּ אֶת־הָעֲבָדִים וְאֶת־
, servos in eos subjugaverunt & : liberos dimiserant quos , ancillas
הַשְּׁפָחוֹת אֲשֶׁר שִׁלְּחוּ חָפְשִׁים וַיִּכְבִּישׁוּם לַעֲבָדִים
Irmejahu ad DOMINI verbum fuit Et .ancillas in &
12 וְלִשְׁפָחוֹת׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ
Deus DOMINUS dixit Sic : dicendo , DOMINO à
13 מֵאֵת יְהוָה לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי
me educere die in , vestris patribus cum fœdus *excidi* Ego : Israel
יִשְׂרָאֵל אָנֹכִי כָּרַתִּי בְרִית אֶת־אֲבוֹתֵיכֶם בְּיוֹם הוֹצִאִי
fine A : dicendo , servorum domo de , Ægypti terra è eos
14 אוֹתָם מֵאֶרֶץ מִצְרַיִם מִבֵּית עֲבָדִים לֵאמֹר׃ מִקֵּץ
qui , Hebræum suum fratrem *vir* dimittetis annorum septem
שֶׁבַע שָׁנִים תְּשַׁלְּחוּ אִישׁ אֶת־אָחִיו הָעִבְרִי אֲשֶׁר־
liberum eum dimittes & , annis sex tibi serviet & ,tibi *venditur*
יִמָּכֵר לְךָ וַעֲבָדְךָ שֵׁשׁ שָׁנִים וְשִׁלַּחְתּוֹ חָפְשִׁי
inclinaverunt nec , *me ad* vestri patres audierunt non & : te *cum* à
מֵעִמָּךְ וְלֹא־שָׁמְעוּ אֲבוֹתֵיכֶם אֵלַי וְלֹא הִטּוּ
fecistis & , hodie vos estis conversi Et .suam aurem
15 אֶת־אָזְנָם׃ וַתָּשֻׁבוּ אַתֶּם הַיּוֹם וַתַּעֲשׂוּ אֶת־
: suo *socio* *vir* libertatem *prædicandum ad* , meis oculis in rectum
הַיָּשָׁר בְּעֵינַי לִקְרֹא דְרוֹר אִישׁ לְרֵעֵהוּ
est invocatum quam , domo in *meas facies ad* pactum *excidistis* &
וַתִּכְרְתוּ בְרִית לְפָנַי בַּבַּיִת אֲשֶׁר־נִקְרָא
, meum nomen *profanastis* & , estis reversi Et .*eam super* meum nomen
16 שְׁמִי עָלָיו׃ וַתָּשֻׁבוּ וַתְּחַלְּלוּ אֶת־שְׁמִי
, suam ancillam unusquisque & ,suum servum unusquisque reduxistis &
וַתָּשִׁבוּ אִישׁ אֶת־עַבְדּוֹ וְאִישׁ אֶת־שִׁפְחָתוֹ
eos subjugastis & : suam animam in liberos *vos* dimisistis quos
אֲשֶׁר־שִׁלַּחְתֶּם חָפְשִׁים לְנַפְשָׁם וַתִּכְבְּשׁוּ אֹתָם
Propterea .ancillas in & , servos in vobis *existendum ad*
17 לִהְיוֹת לָכֶם לַעֲבָדִים וְלִשְׁפָחוֹת׃ לָכֵן
, *me ad* *audivistis* non Vos : DOMINUS dixit sic
כֹּה־אָמַר יְהוָה אַתֶּם לֹא־שְׁמַעְתֶּם אֵלַי
unumquemque & , suo fratri *unumquemque* libertatem *prædicandum ad*
לִקְרֹא דְּרוֹר אִישׁ לְאָחִיו וְאִישׁ
, DOMINUS dixit ,libertatem vobis *prædicans* ego ecce : suo *socio*
לְרֵעֵהוּ הִנְנִי קֹרֵא לָכֶם דְּרוֹר נְאֻם־יְהוָה
vos dabo & : famem ad & , pestem ad , gladium ad
אֶל־הַחֶרֶב אֶל־הַדֶּבֶר וְאֶל־הָרָעָב וְנָתַתִּי אֶתְכֶם
viros dabo Et .terræ regnis cunctis commotionē in
18 לְזוֹעָה לְכֹל מַמְלְכוֹת הָאָרֶץ׃ וְנָתַתִּי אֶת־הָאֲנָשִׁים
fœderis verba statuerunt non qui ,meum pactum *transgredientes*
הָעֹבְרִים אֶת־בְּרִתִי אֲשֶׁר לֹא־הֵקִימוּ אֶת־דִּבְרֵי הַבְּרִית
, *duo* in conciderunt *quod* vitulum : *meas facies ad exciderunt* quod
אֲשֶׁר כָּרְתוּ לְפָנַי הָעֵגֶל אֲשֶׁר כָּרְתוּ לִשְׁנַיִם
principes & , Jehudah Principes .ejus *partes* inter transierunt &
19 וַיַּעַבְרוּ בֵּין בְּתָרָיו׃ שָׂרֵי יְהוּדָה וְשָׂרֵי
, terræ populum omnem & , sacerdotes & , eunuchos , Jerusalaim
יְרוּשָׁלַםִ הַסָּרִסִים וְהַכֹּהֲנִים וְכֹל עַם הָאָרֶץ
manum in eos dabo Et .vituli *partes* inter *transeuntes*
20 הָעֹבְרִים בֵּין בִּתְרֵי הָעֵגֶל׃ וְנָתַתִּי אוֹתָם בְּיַד
erit & : eorum animam quærentium manum in & ,eorum inimicorum
אֹיְבֵיהֶם וּבְיַד מְבַקְשֵׁי נַפְשָׁם וְהָיְתָה
.terræ *animali* & , cœlorum *volatili* escam in eorum morticinium
נִבְלָתָם לְמַאֲכָל לְעוֹף הַשָּׁמַיִם וּלְבֶהֱמַת הָאָרֶץ׃
manum in dabo ejus principes & , Jehudah regem Sidchijahu Et
21 וְאֶת־צִדְקִיָּהוּ מֶלֶךְ־יְהוּדָה וְאֶת־שָׂרָיו אֶתֵּן בְּיַד
manum in &: eorum animam quærentium manum in & ,eorum inimicorum
אֹיְבֵיהֶם וּבְיַד מְבַקְשֵׁי נַפְשָׁם וּבְיַד
.vobis *desuper ascendentium* ,Babel regis *virtutis*
חֵיל מֶלֶךְ בָּבֶל הָעֹלִים מֵעֲלֵיכֶם׃

Versio VULG. LAT.

11 Et conversi sunt deinceps: & retraxerunt servos & ancillas suas, quos dimiserant liberos, & subjugaverunt in famulos & famulas.
12 Et factum est verbum Domini ad Jeremiam à Domino, dicens;
13 Hæc dicit Dominus Deus Israel; Ego percussi fœdus cum patribus vestris, in die quâ eduxi eos de terra Ægypti, de domo servitutis, dicens;
14 Cùm completi fuerint septem anni, dimittat unusquisque fratrem suum Hebræum, qui venditus est ei, & serviet tibi sex annis: & dimittes eum à te liberum: & non audierunt patres vestri me, nec inclinaverunt aurem suam.
15 Et conversi estis vos hodiè, & fecistis quod rectum est in oculis meis, ut prædicaretis libertatem unusquisque ad amicum suum: & inistis pactum in conspectu meo, in domo, in qua invocatum est nomen meum super eam.
16 Et reversi estis, & commaculâstis nomen meum: & reduxistis unusquisque servum suum, & unusquisque ancillam suam, quos dimiseratis ut essent liberi & suæ potestatis: & subjugâstis eos ut sint vobis servi & ancillæ.
17 Propterea hæc dicit Dominus: Vos non audistis me, ut prædicaretis libertatem unusquisque fratri suo, & unusquisque amico suo: ecce ego prædico vobis libertatem, ait Dominus, ad gladium, ad pestem, & ad famem: & dabo vos in commotionem cunctis regnis terræ.
18 Et dabo viros, qui prævaricantur fœdus meum, & non observaverunt verba fœderis, quibus assensi sunt in conspectu meo, vitulum quem conciderunt in duas partes, & transierunt inter divisiones ejus:
19 Principes Juda & principes Jerusalem, eunuchi & sacerdotes, & omnis populus terræ, qui transierunt inter divisiones vituli:
20 Et dabo eos in manus inimicorum suorum, & in manus quærentium animam eorum: & erit morticinum eorum in escam volatilibus cœli, & bestiis terræ.
21 Et Sedeciam regem Juda, & principes ejus, dabo in manus inimicorum suorum, & in manus quærentium animas eorum, & in manus exercituum regis Babylonis, qui recesserunt à vobis.

Versio GRÆC. LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

7 Πλὴν ἀκούσατε τὸν λόγον κυρίου, ὃν ἐγὼ
λέγω εἰς τὰ ὦτα ὑμῶν καὶ εἰς τὰ ὦτα παντὸς
8 τοῦ λαοῦ. Οἱ προφῆται οἱ γεγονότες
πρότεροί μου καὶ πρότεροι ὑμῶν ἀπὸ τοῦ αἰῶνος,
καὶ ἐπροφήτευσαν ἐπὶ γῆς πολλῆς, καὶ
9 ἐπὶ βασιλείας μεγάλας εἰς πόλεμον. Ὁ
προφήτης ὁ προφητεύσας εἰς εἰρήνην, ἐλθόντος
τοῦ λόγου, γνώσονται τὸν προφήτην ὃν
10 ἀπέστειλεν αὐτοῖς κύριος ἐν πίστει. Καὶ ἔλαβεν
Ἀνανίας ἐν ὀφθαλμοῖς παντὸς τοῦ
λαοῦ τοὺς κλοιοὺς ἀπὸ τοῦ τραχήλου Ἱερεμίου, καὶ
11 συνέτριψεν αὐτούς. Καὶ εἶπεν Ἀνανίας κατ'
ὀφθαλμοὺς παντὸς τοῦ λαοῦ, λέγων, Οὕτως
εἶπε κύριος, Οὕτως συντρίψω τὸν ζυγὸν
βασιλέως Βαβυλῶνος ἀπὸ τραχήλων πάντων
12 τῶν ἐθνῶν. Καὶ ᾤχετο Ἱερεμίας εἰς τὴν
ὁδὸν αὐτοῦ. καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς
Ἱερεμίαν, μετὰ τὸ συντρίψαι Ἀνανίαν τοὺς
κλοιοὺς ἀπὸ τοῦ τραχήλου (ι) αὐτοῦ, λέγων,
13 Βάδιζε, καὶ εἰπὸν πρὸς Ἀνανίαν, λέγων,
Οὕτως εἶπε κύριος, Κλοιοὺς ξυλίνους συνέτριψας,
καὶ ποιήσω ἀντ' αὐτῶν κλοιοὺς σιδηροῦς.
14 Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, Ζυγὸν σιδηροῦν
ἔθηκα ἐπὶ τὸν τράχηλον πάντων τῶν
ἐθνῶν, ἐργάζεσθαι τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος.
15 Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας τῷ Ἀνανίᾳ, Οὐκ ἀπέσταλκέ
σε κύριος, (κ) καὶ πεποιθέναι ἐποίησας
16 τὸν λαὸν τοῦτον ἐπ' ἀδίκῳ. Διατοῦτο
οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐξαποστέλλω
σε ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς, τούτῳ τῷ ἐνιαυτῷ
17 ἀποθανῇ. Καὶ ἀπέθανεν ἐν τῷ (λ)
μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ.

Veruntamen audite verbum (c)
Domini, quod ego dico in auribus
vestris, & in auribus universi
populi. Prophetæ, qui fuerunt 8
priores me, & priores vobis à sæculo;
& prophetaverunt super
terram multam, & super regna
magna in (d) bellum. Propheta, 9
qui prophetavit in pacem, veniente
verbo, cognoscent prophetam,
quem misit eis Dominus in fide.
Et tulit Ananias in oculis universi 10
populi catenas de collo Hieremiæ,
& contrivit eas. Et dixit 11
Ananias ante oculos omnis populi,
dicens; Sic dixit Dominus;
Sic conteram jugum regis (e) Babylonis
de collis omnium gentium.
Et abiit Hieremias in viam 12
suam. Et factum est verbum Domini
ad Hieremiam, postquam
contrivit Ananias catenas de
collo ejus, dicens; Vade, & dic 13
ad Ananiam, dicens; Sic dixit
Dominus; Catenas ligneas contrivisti:
& faciam pro eis catenas
ferreas: Quia sic ait Dominus; 14
Jugum ferreum posui super
collum cunctarum gentium, ad operandum
regi (f) Babylonis.
Et dixit Hieremias Ananiæ, Non 15
misit te Dominus: & confidere
fecisti populum istum super iniquo.
Idcircò sic dixit Dominus, 16
Ecce ego emitto te à facie terræ:
hoc anno (g) morieris. Et mortuus 17
est in mense septimo.

MS.A. (ι) ἹΕΡΕΜΙΟΥ, ΛΕΓΩΝ, ΒΑΔΙΣΟΝ (κ) καὶ σὺ (λ) ἑβδόμῳ μηνί.

Cap. 29. ΚΕΦ. κθʹ. *CAP. XXXVI.*

1 Vulg. Lat. ΚΑὶ οὗτοι οἱ λόγοι τῆς βίβλου
οὓς ἀπέστειλεν Ἱερεμίας ἐξ Ἱερουσαλὴμ πρὸς
τοὺς πρεσβυτέρους τῆς ἀποικίας, καὶ πρὸς τοὺς
ἱερεῖς, καὶ πρὸς τοὺς ψευδοπροφήτας, ἐπιστολὴν
εἰς Βαβυλῶνα τῇ ἀποικίᾳ, καὶ πρὸς
2 (α) ἅπαντα τὸν λαόν, Ὕστερον ἐξελθόντος
Ἰεχονίου τοῦ βασιλέως, καὶ τῆς βασιλίσσης, καὶ
τῶν εὐνούχων, καὶ παντὸς ἐλευθέρου, καὶ δεσμώτου,
3 καὶ τεχνίτου ἐξ Ἱερουσαλήμ, Ἐν χειρὶ (β)
Ἐλεασὰν υἱοῦ Σαφὰν, καὶ Γαμαρίου υἱοῦ Χελκίου,
ὃν ἀπέστειλε Σεδεκίας βασιλεὺς Ἰούδα,
πρὸς βασιλέα Βαβυλῶνος εἰς Βαβυλῶνα
4 λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς
Ἰσραὴλ ἐπὶ τὴν ἀποικίαν ἣν (γ) ἀπῴκισα
5 ἀπὸ Ἱερουσαλήμ, Οἰκοδομήσατε (δ) οἴκους,
καὶ κατοικήσατε, καὶ φυτεύσατε παραδείσους,
6 καὶ (ε) φάγετε τοὺς καρποὺς αὐτῶν, Καὶ λάβετε
γυναῖκας, καὶ τεκνοποιήσατε υἱοὺς καὶ
θυγατέρας, καὶ λάβετε τοῖς υἱοῖς ὑμῶν
γυναῖκας, καὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν δότε ἀνδράσι,
καὶ πληθύνεσθε, καὶ μὴ σμικρυνθῆτε·

ET (a) hæc sunt verba libri, 1
quæ misit Hieremias de Hierusalem
ad seniores transmigrationis,
& ad sacerdotes, & ad
pseudoprophetas, ((b) epistolam
in Babylonem transmigrationi)
& ad omnem (c) populum;
Postquàm egressus est Jechonias 2
rex, & regina, & eunuchi, &
omnis liber, & vinctus, & artifex
de Hierusalem, In manu 3
Eleasan filii Saphan, et Gamariæ
filii Chelciæ; quem misit Sedecias
rex Juda ad regem Babylonis
in Babylonem, dicens;
Sic dixit Dominus Deus Israel 4
super transmigrationem, quam
transtuli de Hierusalem; Ædificate 5
domos, et habitate, et
plantate pomaria, et comedite
fructus eorum; Et accipite uxores, 6
et generate filios, et filias:
et accipite filiis vestris uxores:
et filias vestras date (d) viris:
et multiplicamini, et nolite minui:

MS.A. (α) πάντα (β) Ἐλεασὰρ (γ) ἀποίκησεν ἐξ Ἱερουσαλήμ, (δ) οἰκίας, (ε) φάγεσθαι τοὺς καρποὺς αὐτῶν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 ותבו בתר כן ואתיבו ית עבדין וית אמהתא דפטרו בני חורין וכבישונון לעבדין
12 ולאמהן : והוה פתגם נבואה מן קדם יי עם ירמיה מן קדם יי למימר : כדנן אמר
13 יי אלהא דישראל אנא גזרית קים עם אבהתכון ביומא דאפקית יתהון מארעא
14 דמצרים מבית עבדותא למימר : מסוף שבע שנין תשלחון גבר ית אחוהי בר ישראל
דיזדבן לך ויפלחנך שית שנין ותפטרניה בר חורין מעמך ולא קבילו אבהתכון
15 למימרי ולא ארכינו ית אודנהון : ותבתון אתון יומא דין ועבדתון ית דכשר קדמי
16 למקרי חירו גבר לחבריה וגזרתון קים קדמי בביתא דאתקרי שמי עלוהי : ותבתון
ואחלתון ית שמי ואתיבתון גבר ית עבדיה וגבר ית אמתיה די פטרתון בני חורין
17 לנפשתהון וכבשתון יתיה למהוי לכון לעבדין ולאמהן : בכן כדנן אמר יי אתון
לא קבלתון למימרי למקרי חירו גבר לאחוהי וגבר לחבריה הא אנא מכלי לכון
חירו אמר יי מן חרבא ומן מותא ומן כפנא ואתן יתכון לזיע לכל מלכות ארעא :
18 ואתן ית גבריא דעברו על קימי דלא קימו ית פתגמי קימא דגזרו קדמי עגלא
19 דפסקו לתרין ועברו בין פלגוהי : רברבי יהודה ורברבי ירושלם ורברביא
20 וכהניא וכל עמא דארעא דעברו בין פלגי עגלא : ואמסר יתהון ביד בעלי
דבביהון וביד דבען למקטלהון ותהי נבלתהון משגרא למיכל לעופא דשמיא
21 ולבעירא דארעא : וית צדקיה מלך שבטא דבית יהודה וית רברבוהי אמסר
ביד בעלי דבביהון וביד דבען למקטלהון וביד משריית מלכא דבבל דאסתלקא
מנכון :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et posteà conversi sunt, & reduxerunt servos & ancillas quos dimiserant 11
liberos, & subjugaverunt eos in servos & in ancillas. Et factum est 12
verbum prophetiæ à facie Domini, cum Jeremia *à conspectu Domini;*
dicendo: Hæc dicit Dominus Deus Israel: Ego pepigi pactum cum pa- 13
tribus vestris, in die qua eduxi eos de terra Ægypti de domo servitutis;
dicens: Post finem septem annorum dimittetis unusquisque fratrem suum 14
Israelitam, qui venditus fuerit tibi, & serviet tibi sex annis, & dimittes
eum liberum à te; & non obedierunt patres vestri verbo meo, nec inclinaverunt
aures suas. Et conversi estis vos hodiè, & fecistis quod rectum est 15
coram me ut prædicaretis libertatem quisque proximo suo, & inivistis pactum
in conspectu meo, in domo in qua invocatum est nomen meum. Et 16
aversi estis, & violâstis nomen meum, & reduxistis quisque servum suum,
& quisque ancillam suam, quos vos dimiseratis liberos animæ suæ; & subjugâstis
eos ut essent servi vobis & ancillæ. Propterea hæc dicit Domi- 17
nus: Vos non recepistis verbum meum, ut prædicaretis libertatem quisque
fratri suo & quisque proximo suo. Ecce ego clamo vobis libertatem, dicit
Dominus, ad gladium, ad pestem & famem, & dabo vos in commotionem
omnibus regnis terræ. Et dabo viros qui transgressi sunt pactum meum, 18
qui non confirmaverunt verba pacti mei, quod inierunt coram me, vitulum
quem conciderunt in duas partes, & transierunt inter divisiones ejus.
Principes Juda, & principes Jerusalem, & principes & sacerdotes, & 19
omnis populus terræ, qui transierunt inter divisiones vituli. Et tradam 20
eos in manum inimicorum suorum, et in manum quærentium occidere
eos, et erit eorum cadaver projectum in cibum avibus cœli, et bestiis terræ.
Sedechiam quoque regem *tribus* domus Juda, et principes ejus tra- 21
dam in manum inimicorum suorum, et in manum quærentium occidere
eos, et in manum exercitus regis Babylonis, qui discessit à vobis.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܚܪܪܘ ܐܢܘܢ. ܘܗܦܟܘ ܟܒܫܘ ܠܡܚܪܪܐ. ܘܥܒܕܘ ܐܢܘܢ ܥܒܕܐ
* ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ
ܐܢܐ ܩܝܡܬ ܩܝܡܐ ܥܡ ܐܒܗܝܟܘܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܐܦܩܬ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܡܢ
ܒܝܬ ܥܒܕܘܬܐ ܟܕ ܐܡܪܬ. * ܡܢ ܣܘܦ ܫܒܥ ܫܢܝܢ. ܫܒܩܘ ܐܢܫ ܠܐܚܘܗܝ ܥܒܪܝܐ
ܠܟ. ܘܢܦܠܚܟ ܫܬ ܫܢܝܢ. ܘܫܒܘܩܝܗܝ ܒܪ ܚܐܪܐ ܡܢ ܠܘܬܟ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܠܝ ܐܒܗܝܟܘܢ
ܘܠܐ ܨܠܝܘ ܐܕܢܗܘܢ ܠܘܬܝ. * ܘܗܦܟܬܘܢ ܐܢܬܘܢ ܝܘܡܢܐ. ܘܥܒܕܬܘܢ ܬܪܝܨܐ ܩܕܡ
ܥܝܢܝ. ܠܡܩܪܐ ܚܐܪܘܬܐ ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ. ܘܩܝܡܬܘܢ ܩܝܡܐ ܩܕܡܝ ܒܒܝܬܐ ܕܐܬܩܪܝ
ܫܡܝ ܥܠܘܗܝ. * ܘܗܦܟܬܘܢ ܘܛܢܦܬܘܢ ܫܡܝ. ܘܐܗܦܟܬܘܢ ܓܒܪ ܠܥܒܕܗ ܘ
ܐܢܬܬܐ ܠܐܡܬܗ. ܕܫܒܩܬܘܢ ܒܢܝ ܚܐܪܐ ܠܢܦܫܗܘܢ. ܘܟܒܫܬܘܢ ܐܢܘܢ ܕܢܗܘܘܢ ܠܟܘܢ
ܘܐܡܗܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢܬܘܢ ܠܐ ܫܡܥܬܘܢ
ܠܡܩܪܐ ܚܐܪܘܬܐ ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ. ܗܐ ܐܢܐ ܩܪܐ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܚܐܪܘܬܐ. ܠܚܪܒܐ ܘܠܟܦܢܐ
ܘܠܡܘܬܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܬܠܟܘܢ ܠܙܘܥܬܐ ܠܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘ
ܠܓܒܪܐ ܕܥܒܪܘ ܥܠ ܩܝܡܝ. ܕܠܐ ܐܩܝܡܘ ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܩܝܡܐ ܕܩܝܡܘ ܩܕܡܝ.
ܕܦܣܩܘ ܠܬܪܝܢ ܘܥܒܪܘ ܒܝܢ ܦܠܓܘܗܝ. * ܪܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ
ܘܡܗܝܡܢܐ ܘܟܗܢܐ ܘܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܕܥܒܪܘ ܒܝܢ ܦܠܓܘܗܝ ܕܥܓܠܐ
* ܘܐܫܠܡ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܝ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܒܐܝܕܝ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܢܗܘܝܢ
ܫܠܕܝܗܘܢ. ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܘܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ
ܕܝܗܘܕܐ ܘܠܪܘܪܒܢܘܗܝ. ܐܫܠܡ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܝ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܒܐܝܕܝ ܕܒܥܝܢ
ܢܦܫܗܘܢ. ܘܒܐܝܕܝ ܚܝܠܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܕܣܠܩܝܢ ܥܠܝܗܘܢ.

Cùm autem eos libertate donâſſent, iterum converſi ſervitute preſſiſſent manumiſſos, & ſervos effeciſſent) 11
Fuit inquam, ſermo Domini ad Jeremiam, dicendo; 12
Sic ait Dominus Deus Iſraelis, Ego pepigeram fœdus cum majoribus veſtris quo die eduxi eos è terra Ægypti, è domo ſervitutis, dicendo; 13
Poſt ſeptem annos dimittetis quiſque fratrem ſuum Hebræum qui ſe tibi vendiderit; ſerviet tibi ſex annos, tum liberum dimittes eum abs te: ſed non acquieverunt mihi majores veſtri, neque inclinaverunt ad me aurem ſuam. 14
Reverſi quidem vos hodie, feciſtis quod rectum eſt in oculis meis, promulgando libertatem quiſque ſocio ſuo: at *poſtquam* fœdus pepigiſtis coram me in æde ſuper quam invocatum eſt nomen meum. 15
Mutâſtis conſilium, & prophanâſtis nomen meum, repetentes quiſque ſervum ſuum & quiſque ancillam ſuam, quos ſibi ipſis liberos dimiſeratis, & ſubjugâſtis eos ut eſſent vobis ſervi & ancillæ. 16
Icc irco ſic ait Dominus Deus Iſraelis; *Quia* vos non obtemperâſtis mihi proclamando quiſque libertatem ſocio ſuo, ecce ego libertatem proclamo vobis ad gladium, famem, ac peſtem, dicit Dominus; & proponam vos in formidinem cunctis regnis terræ. 17
Et viros illos qui tranſgreſſi ſunt fœdus meum, qui non ſteterunt ſermonibus fœderis quod pepigerunt coram me; reddam *ut* vitulum illum quem duas in partes ſecuerunt, & tranſierunt inter diviſiones ejus: 18
Principes *ſcilicet* Judæ & Jeroſolymæ, eunuchos, ſacerdotes, & univerſum terræ populũ, qui tranſierunt inter dimidiatas illius vituli partes: 19
Tradámq; in manum hoſtium ipſorum, & in manum quærentium animam ipſorum; erúntque cadavera ipſorum cibo volucribus cœli & beſtiis terræ: 20
Et Sedeciam regem Judæ, ac principes ejus tradam in manum inimicorum eorum, & in manum quærentium animam eorum, in manum inquam, copiarum regis Babyloniæ, quæ aſcenſuræ ſunt contra ipſos. 21

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لكن اسمعوا قول الرب الذي انا اقوله في اذانكم وفي اذان كل الشعب * الانب
الذين كانوا قبلي وقبلكم منذ الدهر * وتنبوا على الارضين الكثير وعلى مملك
عظمات بالحرب * الذي يتنبا بالسلامة اذ ياتيه القول يعرفون النبي الذي ارسله الر
لهم بالايمان * واخذ حنانيا تجاه كل الشعب الاطواق من عنق ارميا وكسرهم * وقال حنا
تجاه كل الشعب قايلا * هكذا قال الرب * هكذا اكسر نير ملك بابل من جميع اعنا
الامم * وذهب ارميا في طريقه *

* وكان قول الرب الى ارميا من بعد ما كسر حنانيا الاطواق من عنقه قايلا *
* انطلق فقل لحنانيا قايلا * هكذا قال الرب * انت كسرت الاطواق الخشبية وانا اص
عوضهم اطواقا حديدية * لان هكذا قال الرب نيرا من حديد وضعت على عنا
الامم ليعملوا لملك بابل * وقال ارميا لحنانيا لم يرسلك الرب وانت جعلت هذا الشع
يتوكل على الظلم * لاجل هذا هكذا قال الرب ها انا ارسلك من وجه الارض وفي
السنة تموت * فمات في الشهر السابع *

Veruntamen audite ſermonem Domini quem ego dicturus ſum in auribus veſtris, & in auribus totius populi: 7
Tam Prophetæ qui me & vos jamdudum præceſſerunt, et prophetaverunt de terris multis & de regnis magnis bellum; 8
Quàm qui pacem prophetat: eveniente ſermone, cognoſcunt homines utrùm prophetam miſerit eis Dominus fidelem. 9
Tum arreptas Hanania coram toto populo numellas è collo Jeremiæ, fregit; 10
Et locutus eſt Hanania coram univerſo populo, dicens; Sic ait Dominus, Ita frangam jugum regis Babelis ex omnibus collis gentium: abiitque Jeremia in viam ſuam. 11

Fuit autem ſermo Domini ad Jeremiam poſtquam fregiſſet Hanania numellas è collo ipſius, dicentis; 12

Vade & alloquere Hananiam, dicens; Sic dixit Dominus, Tu fregiſti numellas ligneas; at ego faciam loco illarum numellas ferreas. 13
Nam ita dixit Dominus, jugum ferreum impoſui collo cunctarum gentium, ut operentur regi Babelis. 14
Dixit præterea Jeremia ad Hananiam; Non miſit te Dominus, tu tamen efficis ut populus iſte confidat iniquitati. 15
Hanc ob rem ſic dixit Dominus; Ecce ego emiſſurus ſum te è ſuperficie terræ, & hoc anno morieris. 16
Et mortuus eſt menſe ſeptimo. 17

* الفصل السادس والثلثون *

CAP. XXXVI.

* وهذه اقوال الكتاب الذين ارسلهم ارميا من ايروسليم الى مشايخ الجلوة والكهنة والانب
الكذبة * رسالة الى بابل في السبي والى كل الشعب المتاخر * حين خرج يوحانيا المل
والملكة * والخصيان وكل حر واسير وصانع من ايروسليم * بيد الياعازار بن صافان وغم
بن سلكيوا الذي ارسله صادقيا ملك يهودا الى ملك بابل قايلا * هكذا قال الر
اسراييل على السبي الذي سبيته من ايروسليم * ابنوا بيوتا واغرسوا بساتين و
ثمرها * واتخذوا نساء واعطوا بناتكم لرجال * اكثروا ولا تقلوا *

Cæterùm hi ſunt ſermones epiſtolæ, quas miſit Jeremia de Jeruſalem ad ſeniores captivitatis, ad ſacerdotes, & ad falſos prophetas: epiſtolæ ad Babelem in captivitate exiſtentem, & ad omnem populum qui ſuperfuit, 1
Quando Johania rex cum regina, eunuchis, omnibus ingenuis & mancipiis, atque opificibus, egreſſus eſt Jeroſolymis: 2
Miſſæ per Eliazirum filium Saphanis, & Gamarium filium Selechiæ, quem mittebat Sedecia rex Judæ ad regem Babelis, dicens; 3
Sic dixit Dominus Deus Iſraelis de captivis quos abduxi de Jeruſalem: 4
Extruite domos, hortos plantate, & fructus eorum comedite: 5
Uxores ducite, & filias veſtras locate maritis: creſcite, & ne minuamini: 6

, hanc civitatem ad eos reducam & ,Dominus dixit ,*præcipiens* ego Ecce
22 הִנְנִי מְצַוֶּה נְאֻם־יְהוָה וַהֲשִׁבֹתִים אֶל־הָעִיר הַזֹּאת
& : igni in eam incendent & ,eam capient & ,eam *super* præliabuntur &
וְנִלְחֲמוּ עָלֶיהָ וּלְכָדוּהָ וּשְׂרָפֻהָ בָאֵשׁ וְאֶת־
.*habitatore absque* solitudinem dabo Jehudah civitates
עָרֵי יְהוּדָה אֶתֵּן שְׁמָמָה מֵאֵין יֹשֵׁב׃

CAP. XXXV. לה

Jehojachim diebus in ,Domino *cum* à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הַדָּבָר אֲשֶׁר־הָיָה אֶל־יִרְמְיָהוּ מֵאֵת יְהוָה בִּימֵי יְהוֹיָקִים
,Rechabitarum domum ad Vade : dicendo ,Jehudah regis Josijahu filii
2 בֶּן־יֹאשִׁיָּהוּ מֶלֶךְ יְהוּדָה לֵאמֹר׃ הָלוֹךְ אֶל־בֵּית הָרֵכָבִים
; *cubiculorum* unum *ad* Domini domum eos introduces & , eos *alloqueris* &
וְדִבַּרְתָּ אוֹתָם וַהֲבִאוֹתָם בֵּית יְהוָה אֶל־אַחַת הַלְּשָׁכוֹת
Irmejahu filium Jaazanjah assumpsi Et .vinum eis propinabis &
3 וְהִשְׁקִיתָ אוֹתָם יָיִן׃ וָאֶקַּח אֶת־יַאֲזַנְיָה בֶן־יִרְמְיָהוּ
universam & ,ejus filios omnes & ,ejus fratres & ,Chabassinjah filii
בֶּן־חֲבַצִּנְיָה וְאֶת־אֶחָיו וְאֶת־כָּל־בָּנָיו וְאֵת כָּל־
cubiculum *ad* ,Domini domum eos introduxi Et .Rechabitarum domum
4 בֵּית הָרֵכָבִים׃ וָאָבִא אֹתָם בֵּית יְהוָה אֶל־לִשְׁכַּת
cubiculum apud quod ,Dei viri Igdaljahu filii Chanan filiorum
בְּנֵי חָנָן בֶּן־יִגְדַּלְיָהוּ אִישׁ הָאֱלֹהִים אֲשֶׁר־אֵצֶל לִשְׁכַּת
.liminis custodis Sallum filii Mahasejahu cubiculum supra quod ,principum
הַשָּׂרִים אֲשֶׁר מִמַּעַל לְלִשְׁכַּת מַעֲשֵׂיָהוּ בֶן־שַׁלֻּם שֹׁמֵר הַסַּף׃
:calices & ,vino plenos scyphos Rechabitarum domus *filiorum facies ad dedi* Et
5 וָאֶתֵּן לִפְנֵי בְּנֵי בֵית־הָרֵכָבִים גְּבִעִים מְלֵאִים יַיִן וְכֹסוֹת
quia : vinum bibemus Non : dixerunt Et .vinum Bibite : eos ad dixi &
6 וָאֹמַר אֲלֵיהֶם שְׁתוּ־יָיִן׃ וַיֹּאמְרוּ לֹא נִשְׁתֶּה־יָּיִן כִּי
bibetis Non : dicendo ,nobis *super* præcepit noster pater Rechab filius Jonadab
יוֹנָדָב בֶּן־רֵכָב אָבִינוּ צִוָּה עָלֵינוּ לֵאמֹר לֹא תִשְׁתּוּ־
,ædificabitis non domum Et .seculum in usque vestri filii & , vos vinum
7 יַיִן אַתֶּם וּבְנֵיכֶם עַד־עוֹלָם׃ וּבַיִת לֹא־תִבְנוּ
sed : vobis erit nec ,plantabitis non vineam & ,seretis non sementem &
וְזֶרַע לֹא־תִזְרָעוּ וְכֶרֶם לֹא־תִטָּעוּ וְלֹא יִהְיֶה לָכֶם כִּי
multis diebus vivatis ut ,vestris diebus cunctis habitabitis tabernaculis in
בָּאֳהָלִים תֵּשְׁבוּ כָּל־יְמֵיכֶם לְמַעַן תִּחְיוּ יָמִים רַבִּים
voce in audivimus Et .*ibi peregrinamini* vos qua ,*humi faciebus super*
8 עַל־פְּנֵי הָאֲדָמָה אֲשֶׁר אַתֶּם גָּרִים שָׁם׃ וַנִּשְׁמַע בְּקוֹל
non ad ,nobis præcepit quæ omnibus in nostri patris Rechab filii Jehonadab
יְהוֹנָדָב בֶּן־רֵכָב אָבִינוּ לְכֹל אֲשֶׁר צִוָּנוּ לְבִלְתִּי
,nostri filii , nostræ uxores , nos ,nostris diebus cunctis vinum *bibendum*
שְׁתוֹת־יַיִן כָּל־יָמֵינוּ אֲנַחְנוּ נָשֵׁינוּ בָּנֵינוּ
,ager & , vinea & : *nostræ sessioni* domos *ædificandum non ad Et* .nostræ filiæ &
9 וּבְנֹתֵינוּ׃ וּלְבִלְתִּי בְּנוֹת בָּתִּים לְשִׁבְתֵּנוּ וְכֶרֶם וְשָׂדֶה
,obedivimus & ; *tentoriis* in habitavimus *Et* .nobis fuit non sementis &
10 וָזֶרַע לֹא יִהְיֶה־לָּנוּ׃ וַנֵּשֶׁב בָּאֳהָלִים וַנִּשְׁמַע
fuit Et .noster pater Jonadab nobis præcepit quæ omnia juxta fecimus &
11 וַנַּעַשׂ כְּכֹל אֲשֶׁר־צִוָּנוּ יוֹנָדָב אָבִינוּ׃ וַיְהִי
,Venite : diximus & ,terram ad Babel rex Nebuchadresar *ascendendo in*
בַּעֲלוֹת נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל אֶל־הָאָרֶץ וַנֹּאמֶר בֹּאוּ
virtutis faciebus à & ,Chasdim *virtutis faciebus* à ,Jerusalaim ingrediamur &
וְנָבוֹא יְרוּשָׁלַםִ מִפְּנֵי חֵיל הַכַּשְׂדִּים וּמִפְּנֵי חֵיל
,Irmejahu ad Domini verbum fuit Et .Jerusalaim in mansimus & : Aram
12 אֲרָם וַנֵּשֶׁב בִּירוּשָׁלָםִ׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ
dices & ,Vade ; Israel Deus exercituum Dominus dixit Sic : dicendo
13 לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל הָלֹךְ וְאָמַרְתָּ
disciplinam recipietis Nonne : Jerusalaim habitatoribus & ,Jehudah *viro*
לְאִישׁ יְהוּדָה וּלְיוֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלָםִ הֲלוֹא תִקְחוּ מוּסָר
? Dominus dixit ,*mea verba ad audiendum ad*
לִשְׁמֹעַ אֶל־דְּבָרַי נְאֻם־יְהוָה׃

Versio VULG. LAT.

22 Ecce ego præcipio, dicit Dominus, & reducam eos in civitatem hanc, & præliabuntur adversùs eam, & capient eam, & incendent igni: & civitates Juda dabo in solitudinem, eò quòd non sit habitator.

CAP. XXXV.

1 VErbum, quod factum est ad
Jeremiam à Domino, in diebus
Joakim filii Josiæ regis Juda, di-
2 cens; Vade ad domum Recha-
bitarum: & loquere eis, & in-
troduces eos in domum Domi-
ni, in unam exedram thesauro-
rum, & dabis eis bibere vinum.
3 Et assumpsi Jezoniam filium Je-
remiæ filii Habsaniæ, & fratres
ejus, & omnes filios ejus, & uni-
versam domum Rechabitarum:
4 Et introduxi eos in domum Do-
mini ad gazophylacium filio-
rum Hanan, filii Jegedeliæ ho-
minis Dei, quod erat juxta ga-
zophylacium principum, super
thesaurum Maasiæ filii Sellum,
5 qui erat custos vestibuli. Et
posui coram filiis domûs Re-
chabitarum scyphos plenos vi-
no, & calices: & dixi ad eos;
6 Bibite vinum. Qui responde-
runt, Non bibemus vinum:
quia Jonadab filius Rechab, pa-
ter noster, præcepit nobis, di-
cens; Non bibetis vinum vos,
& filii vestri, usque in sempi-
7 ternum: Et domum non ædifi-
cabitis, & sementem non seretis,
& vineas non plantabitis, nec
habebitis: sed in tabernaculis
habitabitis cunctis diebus ve-
stris, ut vivatis diebus multis
super faciem terræ, in qua vos
8 peregrinamini. Obedivimus er-
gò voci Jonadab filii Rechab,
patris nostri, in omnibus quæ
præcepit nobis, ita ut non bi-
beremus vinum cunctis diebus
nostris nos, & mulieres nostræ,
9 filii, & filiæ nostræ: Et non ædificaremus domos ad habitandum: & vineam, & agrum, &
10 sementem non habuimus: Sed habitavimus in tabernaculis, & obedientes fuimus, juxta o-
11 mnia, quæ præcepit nobis Jonadab pater noster. Cùm autem ascendisset Nabuchodonosor
rex Babylonis ad terram nostram, diximus; Venite, & ingrediamur Jerusalem à facie exer-
12 citûs Chaldæorum, & à facie exercitûs Syriæ: & mansimus in Jerusalem. Et factum est
13 verbum Domini ad Jeremiam, dicens; Hæc dicit Dominus exercituum Deus Israel; Vade,
& dic viris Juda, & habitatoribus Jerusalem; Numquid non recipietis disciplinam ut obedi-
atis verbis meis, dicit Dominus?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

7 Καὶ ζητήσατε εἰς εἰρήνην τῆς γῆς,
εἰς ἣν ἀπῴκισα ὑμᾶς ἐκεῖ· καὶ
(ε) προσεύξεσθε περὶ αὐτῶν πρὸς κύ-
ριον, ὅτι ἐν (ζ) εἰρήνῃ αὐτῆς εἰ-
8 ρήνη ὑμῖν. Ὅτι οὕτως εἶπε κύρι-
ος, Μὴ ἀναπειθέτωσαν ὑμᾶς οἱ
ψευδοπροφῆται οἱ ἐν ὑμῖν, καὶ
μὴ ἀναπειθέτωσαν ὑμᾶς οἱ μάν-
τεις ὑμῶν, καὶ μὴ ἀκούετε εἰς τὰ
ἐνύπνια ὑμῶν, ἃ ὑμεῖς ἐνυπνιάζε-
9 σθε, Ὅτι ἄδικα αὐτοὶ προφητεύ-
ουσιν ὑμῖν ἐπὶ τῷ ὀνόματί μου,
10 καὶ οὐκ ἀπέστειλα αὐτούς. Ὅτι οὕ-
τως εἶπε κύριος, Ὅταν μέλλῃ
πληροῦσθαι Βαβυλῶνι ἑβδομήκοντα
ἔτη, ἐπισκέψομαι ὑμᾶς, καὶ ἐπι-
στήσω τοὺς λόγους μου ἐφ' ὑμᾶς,
(η) τοῦ ἀποστρέψαι τὸν λαὸν ὑμῶν
11 εἰς τὸν τόπον τοῦτον. Καὶ λογιοῦ-
μαι ἐφ' ὑμᾶς λογισμὸν εἰρήνης,
καὶ οὐ κακά, τοῦ δοῦναι ὑμῖν ταῦ-
12 τα. Καὶ προσεύξασθε πρὸς μέ,
13 καὶ εἰσακούσομαι ὑμῶν. Καὶ (ʹ) ἐκζη-
τήσατέ με, καὶ εὑρήσετέ με (θ)
ὅτι ζητήσετέ με ἐν ὅλῃ καρδίᾳ
14 ὑμῶν, Καὶ ἐπιφανοῦμαι ὑμῖν. Ὅτι
15 εἴπατε, Κατέστησεν ἡμῖν κύριος
(ι) προφήτας ἐν Βαβυλῶνι· Οὕτως
21 εἶπε κύριος ἐπὶ Ἀχαάβ, καὶ ἐπὶ
Σεδεκίαν, Ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι αὐ-
τοὺς εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυ-
λῶνος, καὶ (κ) πατάξει αὐτοὺς
κατ' ὀφθαλμοὺς ὑμῶν.

*Et quærite (e) pa-
cem terræ, ad quam
transmigrare vos feci
luc: & orate pro ea
ad Dominum: quia in
pace ejus pax vobis. Sic
enim dixit Dominus; Ne
seducant vos prophetæ,
qui in vobis, & non se-
ducant vos divini ve-
stri: & nolite audire ad
somnia vestra, quæ vos
somniatis: Quia iniquè
ipsi prophetant vobis in
nomine meo: & non mi-
si eos. Quia sic dixit
Dominus; Cùm cœperit
impleri Babyloni septua-
ginta anni, visitabo vos:
& suscitabo verba mea
super vos, ad reducen-
dum populum vestrum in
locum istum. Et cogita-
bo super vos cogitationem
pacis, & non mala, ad
dandum vobis hæc. Et
orate ad me; & exau-
diam vos: Et quærite
me; & invenietis me:
(f) quia quæretis me in
toto corde vestro; Et ap-
parebo vobis. Quia di-
xistis; Constituit nobis
Dominus prophetas in
(g) Babylone; Sic dixit
Dominus super Achab,
& super Sedeciam; Ec-
ce ego do eos in manus
regis Babylonis: & per-
cutiet eos ante oculos
vestros.*

MS.A. (ε) προσεύχεσθε (ζ) τῇ εἰρήνῃ αὐτῶν ἔσται ἡ εἰρήνη ὑμῶν. Οὕτως εἶπεν κύριος, Μὴ * ἀναπειθέτω (η) τοῦτον λαὸν ὑμῶν ἀποστρέψαι εἰς (ʹ) ἐκζητήσετέ (θ) ὅταν * ἐν ὅλῃ καρδίᾳ, Καὶ ἐπιφανοῦμαι (ι) προφήτην (κ) * πατάξεις

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 הָא אֲנָא מְפַקֵּיד אֲמַר יְיָ וַאֲתִיבִנּוּן עַל קַרְתָּא הָדָא וִיגִיחוּן קְרָבָא עֲלַהּ וְיִכְבְּשׁוּנַהּ וְיוֹקְדוּנַהּ
בְּנוּרָא וְיָת קִרְוַיָּא דְבֵית יְהוּדָה אֶתֵּין לְצָדוּ מִבְּלִי יָתֵיב׃

לה

1 פִּתְגָם נְבוּאָה דַהֲוָה עִם יִרְמְיָה מִן קֳדָם יְיָ בְּיוֹמֵי יְהוֹיָקִים בַּר יֹאשִׁיָּה מֶלֶךְ שִׁבְטָא
2 דְבֵית יְהוּדָה לְמֵימָר׃ אֵיזִיל לְוָת בְּנֵי בֵית רֵכָב וּתְמַלֵּל עִמְּהוֹן וְתַעֲלִנּוּן לְבֵית מַקְדְּשָׁא
3 דַיְיָ לַחֲדָא מִן לִשְׁכָּתָא וְתַשְׁקֵי יַתְהוֹן חַמְרָא׃ וּדְבָרִית יָת יַאֲזַנְיָה בַּר יִרְמְיָה בַּר חֲבַצִּנְיָה
4 וְיָת אֲחוּהִי וְיָת כָּל בְּנוֹהִי וְיָת כָּל בְּנֵי בֵית רֵכָב׃ וְאַעֵלִית יַתְהוֹן לְבֵית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ
לְלִשְׁכַּת בַּר חָנָן בַּר יִגְדַּלְיָה נְבִיָּא דַיְיָ דִּבְסְטַר לִשְׁכַּת רַבְרְבַיָּא דְּמֵעִיל לְלִשְׁכַּת מַעֲשֵׂיָה בַּר
5 שַׁלּוּם אֲמַרְכְּלָא׃ וִיהָבִית קֳדָם בְּנֵי בֵית רֵכָב כְּלִידִין מְלָן חַמְרָא וְכָסִין וַאֲמָרִית לְהוֹן
6 שְׁתוֹ חַמְרָא׃ וַאֲמַרוּ לָא נִשְׁתֵּי חַמְרָא אֲרֵי יוֹנָדָב בַּר רֵכָב אֲבוּנָא פַּקֵּיד עֲלָנָא לְמֵימַר
7 לָא תִשְׁתּוֹן חַמְרָא אַתּוּן וּבְנֵיכוֹן עַד עָלְמָא׃ וּבֵיתָא לָא תִבְנוּן וְזַרְעָא לָא תִזְרְעוּן
וְכַרְמָא לָא תִצְּבוּן וְלָא יְהֵי לְכוֹן אֲרֵי בְּמַשְׁכְּנִין תֵּיתְבוּן כָּל יוֹמֵיכוֹן בְּדִיל דְּתִתְקַיְּמוּן
8 יוֹמִין סַגִּיאִין עַל אַפֵּי אַרְעָא דְּאַתּוּן דַּיְרִין תַּמָּן׃ וְקַבֵּילְנָא לְמֵימַר יוֹנָדָב בַּר רֵכָב אֲבוּנָא
9 לְכֹל דְּפַקְּדָנָא בְּדִיל דְּלָא לְמִשְׁתֵּי חַמְרָא כָּל יוֹמָנָא אֲנַחְנָא נְשָׁנָא בְּנָנָא וּבְנָתָנָא׃ וּבְדִיל
10 דְּלָא לְמִבְנֵי בָתִּין לְמִתְּבְנָא וְכַרְמִין וַחֲקָלִין וְזַרְעִין לָא יְהֵי לָנָא׃ וִיתֵבְנָא בְּמַשְׁכְּנִין
11 וְקַבֵּילְנָא וַעֲבַדְנָא כְּכֹל דְּפַקְּדָנָא יוֹנָדָב אֲבוּנָא׃ וַהֲוָה כַּד סְלִיק נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל
עַל אַרְעָא וַאֲמַרְנָא אֱתוֹ וְנֵיעוֹל לִירוּשְׁלֵם מִן קֳדָם מַשְׁרְיַת כַּסְדָּאֵי וּמִן קֳדָם מַשְׁרְיַת
12 אֲרָם וִיתֵבְנָא בִּירוּשְׁלֵם׃ וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה לְמֵימַר׃ כִּדְנַן אֲמַר
13 יְיָ צְבָאוֹת אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל אֵיזִיל וְתֵימַר לֶאֱנָשׁ יְהוּדָה וּלְיָתְבֵי יְרוּשְׁלֵם הֲלָא תְקַבְּלוּן
אוּלְפַן לְקַבָּלָא לְפִתְגָמַי אֲמַר יְיָ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce ego præcipio, dicit Dñs, & reducam eos ad civitatem hanc; & præ- 22
liabuntur adversùs eam, & subjugabunt eam, & succendent eam igne; &
urbes domus Juda dabo in solitudinem absque habitatore.

CAP. XXXV.

VErbum prophetiæ quod factum est cum Jeremia à facie Dñi, in diebus 1
Joachim filii Josiæ regis tribus domus Juda; dicens: Vade ad filios domus 2
Rechab, & loquere cum eis, & introduces eos in domum sanctuarii Dñi,
ad unum de gazophylaciis & propinabis eis vinum. Et tuli Jaazaniam 3
filium Jeremiæ filii Abasaniæ & fratres ejus, & omnes filios ejus, & omnes
filios domus Rechab. Et introduxi eos in domum sanctuarii Dñi, in gazo- 4
phylacium *filii* Hanan, filii Jigdeliæ, prophetæ Dñi, quod est in latere ga-
zophylacii principum, quod est supra gazophylacium Maasiæ filii Sallum
præpositi. Et posui coram filiis domus Rechab scyphos plenos vino, & 5
calices: & dixi eis; Bibite vinum. Et dixerunt, Non bibemus vinum, 6
quia Jonadab filius Rechab pater noster præcepit nobis; dicendo: Ne bi-
batis vinum vos & filii vestri usque in æternum. Et domum non ædifi- 7
cabitis, & sementem non seretis; nec plantabitis vineam, nec erit vobis:
sed in tentoriis habitabitis omnibus diebus vestris; ut permaneatis diebus
multis super faciem terræ in qua vos habitatis. Et obedivimꝰ verbo Jo- 8
nadab filii Rechab patris nostri in omnibꝰ quæ præcepit nobis, ut non bi-
beremꝰ vinum omnibꝰ diebꝰ nostris, nos & uxores nostræ, filii nostri &
filiæ nostræ. Et ut non ædificaremꝰ domos ad habitandum, & vineas & 9
agros, & sementem non haberemꝰ. Et habitavimꝰ in tentoriis, & obe- 10
divimꝰ, & fecimꝰ juxta omnia quæ præcepit nobis Jonadab pater noster.
Et factum est cùm ascendit Nabuchodonosor rex Babylonis ad terram, 11
diximꝰ: Venite, & ingrediamur in Jerusalem à facie exercitꝰ Chaldæo-
rum, & à facie exercitꝰ Syriæ: & habitavimꝰ in Jerusalem. Et factum est 12
verbum prophetiæ à facie Domini cum Jeremia; dicendo: Hæc dicit 13
Dominus exercituum Deus Israel, Vade, & dices viris Juda, & habita-
toribus Jerusalem: Nonne *recipietis* disciplinam ut obediatis verbis meis,
dicit Dominus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܗܐ ܐܢܐ ܦܩܕ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܦܢܐ ܐܢܘܢ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܘܢܬܟܬܫܘܢ ܥܠ
ܘܢܟܒܫܘܢܗ ܘܢܘܩܕܘܢܗ ܒܢܘܪܐ. ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܐܬܠ ܠܚܘܪܒܐ ܡܢ ܕܠܐ

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܗ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܒܝܘܡܬܗܘܢ ܕܝܗܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠ
ܕܝܗܘܕܐ ܠܡܐܡܪ. * ܐܙܠ ܠܒܝܬܐ ܕܒܢܝ ܪܟܒ ܘܡܠܠ ܥܡܗܘܢ. ܘܐܥܠ ܐܢܘܢ ܠܒ
ܕܡܪܝܐ ܠܚܕ ܡܢ ܬܘܢܐ. ܘܐܫܩܐ ܐܢܘܢ ܚܡܪܐ. * ܘܕܒܪܬ ܠܝܙܢܝܐ ܒܪ ܐܪܡܝܐ ܒܪ ܚܒ
ܘܠܐܚܘܗܝ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܒܢܘܗܝ. ܘܠܟܠܗ ܒܝܬܐ ܕܪܟܒ. * ܘܐܥܠܬ ܐܢܘܢ ܠܒܝ
ܕܡܪܝܐ. ܠܬܘܢܐ ܕܒܢܝ ܚܢܢ ܒܪ ܓܕܠܝܐ ܢܒܝܐ ܕܐܠܗܐ. ܕܩܪܝܒ ܠܬܘܢܐ ܕܪ
ܕܠܥܠ ܡܢ ܬܘܢܗ ܕܡܥܣܝܐ ܒܪ ܫܠܘܡ ܢܛܪ ܬܪܥܐ. * ܘܣܡܬ ܩܕܡ ܒܢܝ
ܕܪܟܒ. ܟܐܣܐ ܕܡܠܝܢ ܚܡܪܐ ܘܟܣܐ. ܘܐܡܪܬ ܠܗܘܢ ܐܫܬܘ ܚܡܪܐ. * ܘܐܡܪܘ ܠܐ ܢܫ
ܚܡܪܐ. ܡܛܠ ܕܝܘܢܕܒ ܒܪ ܪܟܒ ܐܒܘܢ. ܦܩܕ ܘܐܡܪ ܠܢ. ܠܐ ܬܫܬܘܢ ܚܡܪܐ ܐܢܬ
ܘܒܢܝܟܘܢ. ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. * ܘܒܝܬܐ ܠܐ ܬܒܢܘܢ ܠܟܘܢ. ܘܙܪܥܐ ܠܐ ܬܙܪܥܘܢ. ܘܟܪܡ
ܠܐ ܬܢܨܒܘܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ. ܐܠܐ ܒܡܫܟܢܐ ܬܬܒܘܢ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܝܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܬܐܪܟܘܢ ܝܘܡ
ܬܘܬܒܐ. ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ ܕܐܢܬܘܢ ܥܡܪܝܢ ܒܗ. * ܘܫܡܥܢ ܠܩܠܗ ܕܝܘܢܕܒ ܒܪ ܪ
ܐܒܘܢ. ܒܟܠ ܡܕܡ ܕܦܩܕܢ. ܕܠܐ ܢܫܬܐ ܚܡܪܐ ܒܟܠܗܘܢ ܝܘܡܝܢ. ܠܐ ܚܢܢ ܘܠܐ ܢܫܝܢ ܘܠܐ ܒܢܝܢ
ܘܒܢܬܢ. * ܘܠܐ ܕܢܒܢܐ ܒܬܐ ܠܡܥܡܪܢ. ܘܟܪܡܐ ܘܚܩܠܐ ܘܙܪܥܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܢ. * ܘܝܬܒܢ
ܒܡܫܟܢܐ. ܘܫܡܥܢ ܘܥܒܕܢ ܐܝܟ ܟܠ ܡܕܡ ܕܦܩܕܢ ܝܘܢܕܒ ܐܒܘܢ. * ܘܟܕ ܣܠܩ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠ
ܕܒܒܠ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܐܡܪܢ ܕܢܥܘܠ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܡܢ ܩܕܡ ܚܝܠܐ ܕܟܠܕܝܐ ܘܡܢ ܩ
ܕܐܕܘܡ. ܘܝܬܒܢ ܒܐܘܪܫܠܡ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܡܐܡ
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܙܠ ܐܡܪ ܠܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܠܥܡܘܪ
ܕܐܘܪܫܠܡ. ܠܐ ܬܩܒܠܘܢ ܡܪܕܘܬܐ ܠܡܫܡܥ ܠܦܬܓܡܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* Ecce ego præcipiam, Dicit Dominus, & reducam eos ad hanc civitatem, & oppugnabunt eam, & capient eam, igneque ſuccendent: & civitates Judææ redigam in ſolitudinem præ incolarum defectu. 22

CAP. XXXV.

1 SErmo qui fuit ad Jeremiam à Dominô in diebus Jojacim filii Joſiæ regis Judæ, dicendo; 2 Vade ad familiam filiorum Rechebiami, alloquere eos, & introduc eos in ædem Dñi in unum cauponarũ, & præbe illis vinum bibendũ. 3 Igitur adduxi Jozaniam filiũ Amaniæ filii Hablaniæ, fratres ejus, filios ej⁹ omnes, totam denique familiam Rechebiami, 4 Et introduxi eos in ædem Dñi, in domum filiorũ Hananis filii Gedaliæ prophetæ Dei, cujus domus vicina erat principibus habitantibus ultra domum Maſiæ filii Sallumi cuſtodis liminis. 5 Cúmque propoſuiſſem filiis familiæ Rechebiami lagenas vino plenas, calicéſque; dixi eis, Bibite vinum. 6 Reſponderunt, Non bibimus vinum; quia Jonadab Rechabi filius pater noſter præcepit dixitque nobis, Ne bibitote vinum vos aut filii veſtri, in æternum: 7 Domos ne ædificate vobis, ſemen ne ſerite, vineas ne plantate, neque ſunto vobis, ſed in tentoriis habitate cunctis diebus, ut vivatis multis diebus ſuper faciem terræ in qua peregrini eſtis. 8 Quare nos integrè obtemperantes mandato Jonadabi filii Rechabi patris noſtri, quo mandavit nobis ne vinum biberem⁹ cunctis diebus noſtris, neque nos, neque uxores noſtræ, neque filii, neque filiæ noſtræ; 9 Et ne domos ædificaremus ad habitationem noſtrã; neque vineas, aut agros, aut ſementem poſſideremus: 10 Habitavimus in tentoriis, & obedivimus, atque perfecimus quicquid præcepit nobis Jonadab pater noſter. 11 Verùm cùm aſcendiſſet Nebuchadnoſar rex Babyloniæ contra terram iſtam, decrevimus ingredi Jeroſolymam metu exercitûs Chaldæorum & exercitûs Adumæorum & habitavimus in Jeruſalem. 12 Tunc fuit ſermo Domini ad Jeremiam prophetam, dicendo, 13 Sic ait Dominus exercituum Deus Iſraelis, Abi dictum viris Judæ & civibus Jeroſolymæ, An non recepturi *tandem* eſtis diſciplinam, ut pareatis ſermonibus meis, ait Dominus?

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* واطلبوا السلامة للارض التي سبيتكم اليها هناك . وصلوا من اجلهم الي الرب
وسلامتهم تكون السلامة لكم * لان هكذا قال الرب . لا تضلكم الانبياء الكذبة الذي
فيكم ولا تضلكم العرافون . ولا ترعدوا لاحلامكم التي انتم تحلمون بها * لان هو
يتنبوا ظلما باسمي ولم ارسلهم .

الاصحاح الثالث والعشرون .

* لان هكذا قال الرب . اذا ازمع ان تكمل ببابل سبعون سنة . اتعهدكم واقيم
لارد شعبي الي هذا الموضع * واوكد عليكم فكر السلامة . وليس شرورا لاعطيكم * وتصلو
الي واستجيب لكم * وتطلبوني بكل قلبكم واظهر لكم [MS.Ox. * وارد سبيكم واجمعكم
من جميع الشعوب من كل الارض التي فرقتكم فيها قال الرب . واردكم الي بلد الذي
سبيتكم منه] * لانكم قلتم . اقام لنا الرب انبياء في بابل [MS Ox. * لاجل ذلك هكذي
يقول الرب في الملك الجالس علي كرسي داود . وجميع الشعوب التي في هذه القرية اخوتكم
الذين لم يسبوا معكم في السبي * هكذي يقول الرب القوي انا مرسل عليهم الحر
والجوع والموت . واصيرهم مثل التين الردي الذي لا يوكل من رداته * واطردهم بالحر
والجوع والموت . واجعلهم فزعا في جميع ممالكات الارض وعجبا ولعنة وعارا وصفيرا في
جميع الشعوب التي افرقهم فيها * لانهم لم يسمعوا الاقوالي لاني ارسلت اليهم جميع عبيدي
الانبياء وتقدمت وارسلت فلم يقبلوا منهم قال الرب * وانتم فاسمعوا قول الرب ايها السبي
الذي قد سبي من اورشليم الي بابل] * هكذا قال الرب على اخاب وعلي صدقيا
وانا اسلمهم الي ايدي ملك بابل . ويصرعهم تجاه عيونكم .

7 * *Poſtulate pacem terræ ad quam vos egi captivos, & orate pro eis Dominum; quandoquidem per eorum pacem pax erit vobis.* 8 *Sic enim dixit Dominus, Ne ſeducant vos prophetæ mendaces qui ſunt inter vos, neque ſeducant vos* [illegible], *neque præſtetis fidem ſomniis veſtris quæ vos ſomniatis:* 9 *Quoniam iſti perverſè prophetant nomine meo, nec eos miſi.*

Textus vigeſimus tertius.

10 * *Nam ita dixit Dominus, quando futurum eſt ut abſolvantur in Babyle ſeptuaginta anni, viſitabo vos, & præſtabo ſermones meos, reducendo populum meum hunc in locum:* 11 *Et cogitabo de vobis cogitationem pacis, non autem mala vobis inferre.* 12 *Cumque oraveritis me, exaudiam vos;* 13 *Et quæſieritis me toto corde veſtro, apparebo vobis.* 14 [MS.Ox. *Et reducam captivos veſtros, & congregabo vos ex omnibus gentibus, et ex omnibus terris quò vos diſperſero dicit Dominus, & reducam vos ad locum unde vos captivos abegi.*] 15 *Quia dixiſtis, Suſcitavit nobis Dominus prophetas in Babyle.* [MS.Ox. 16 *Propterea ſic dicit Dominus de rege ſedente ſuper ſolium Davidis, & de toto populo qui reſidet in hac civitate, fratribus veſtris quos non abduxerunt captivos vobiſcum in deportatione;* 17 *Sic inquam ait Dominus potentiſſimus, Immiſſurus ſum ego ſuper hos gladium, famem, & peſtem, & dabo eos ſicut ficus malas, quæ non poſſunt comedi præ ſua malitia.* 18 *Et perſequar eos gladio, fame, ac peſte, & formidini exponam eos apud omnia regna terræ, ſtupori, & execrationi, & opprobrio, & ſibilo apud omnes gentes quò diſperſero eos;* 19 *Eo quod non auſcultaverint verbis meis, quum miſerim ad eos omnes ſervos meos prophetas anteveniendo & mittendo, at non acquieverunt eis, dicit Dominus.* 20 *Vos itaque audite verbum Domini, O omnes captivi qui deportati eſtis ex Jeruſalem Babylonem;*] 21 *Sic dixit Dominus de Achabo & de Sedecia, Ego quoque tradam eos in manus regis Babelis, qui percutiet eos coram oculis veſtris.*

ירמיה : לו

,suis filiis præcepit *quæ* ,Rechab filii Jehonadab *verba* est Firmatum
14 הוקם את דברי יהונדב בן־רכב אשר־צוה את־בניו
quia ; hanc diem ad usque biberunt non & , vinum *bibendum non ad*
לבלתי שתות־יין ולא שתו עד־היום הזה כי
,surgẽdo manè vos ad sum locut⁹ ego & : sui patris *præceptum audivere*
שמעו את מצות אביהם ואנכי דברתי אליכם השכם
omnes vos ad Misique *.me ad audistis* non &;loquendo &
ודבר ולא שמעתם אלי : ואשלח אליכם את־כל־ 15
Convertimini:*dicendũ ad*,mittẽdo &,surgẽdo manè prophetas meos servos
עבדי הנביאים השכם ושלח לאמר שבו־
ne & , vestra *studia* facite bona & , mala sua via à unusquisq; obsecro
נא איש מדרכו הרעה והיטיבו מעלליכם ואל־
in *habitate* & ,eis *serviendum ad* ,alienos Deos post ambuletis
תלכו אחרי אלהים אחרים לעבדם ושבו אל־
inclinastis non & : vestris patribus &,vobis dedi quam *humo*
האדמה אשר־נתתי לכם ולאבתיכם ולא הטיתם את־
Jehonadab filii firmaverunt Quia *.me ad audistis* nec ,vestram aurem
16 אזנכם ולא שמעתם אלי : כי הקימו בני יהונדב
iste populus &:eis præcepit quod ,sui patris præceptum Rechab filii
בן־רכב את מצות אביהם אשר צום והעם הזה
Deus exercituum Deus Dominus dixit sic Idcirco.*me ad audiverũt* non
17 לא שמעו אלי : לכן כה אמר יהוה אלהי צבאות אלהי
Jerusalaim habitatores omnes *ad* &,Jehudah *ad adducens* ego Ecce : Israel
ישראל הנני מביא אל־יהודה ואל כל־יושבי ירושלם
sum locutus eo pro , eis super sum locutus quod , malum omne
את כל־הרעה אשר דברתי עליהם יען דברתי
domui Et.responderũt non & ,illos vocavi & : audierunt non & ,eos ad
18 אליהם ולא שמעו ואקרא להם ולא ענו : ולבית
Deus exercituum Dominus dixit Sic : Irmejahu dixit Rechabitarum
הרכבים אמר ירמיהו כה־אמר יהוה צבאות אלהי
, vestri patris Jehonadab præcepto *super audivistis* quod eo Pro : Israel
ישראל יען אשר שמעתם על־מצות יהונדב אביכם
præcepit quæ omnia juxta fecistis &,ejus præcepta omnia custodivistis &
ותשמרו את־כל־מצותיו ותעשו ככל אשר־צוה
Non : Israel Deus exercituum Dominus dixit sic Propterea .vobis
19 אתכם : לכן כה אמר יהוה צבאות אלהי ישראל לא־
.diebus cunctis *meas facies ad* stãs,Rechab filio Jehonadab *ipsi* vir excidetur
יכרת איש ליונדב בן־רכב עמד לפני כל־הימים :

CAP. XXXVI. לו

, Jehudah regis Josijahu filii Jehojachim quarto anno in fuit Et
1 ויהי בשנה הרביעית ליהויקים בן־יאשיהו מלך יהודה
tibi Tolle : dicendo ,Domino à Irmejahu ad hoc verbum fuit
2 היה הדבר הזה אל ירמיהו מאת יהוה לאמר : קח־לך
quæ , verba omnia eo in *scribes* & , libri volumen
מגלת־ספר וכתבת אליה את כל־הדברים אשר־
,gentes omnes *super* & ,Jehudah *super* & , Israel *super* te ad sum locutus
דברתי אליך על־ישראל ועל־יהודה ועל־כל־הגוים
.hanc diem ad usque & , Josijahu diebus à ,te ad sum locutus die à
מיום דברתי אליך מימי יאשיהו ועד היום הזה :
ego quod malum omne Jehudah domus audiant fortè Si
3 אולי ישמעו בית יהודה את כל־הרעה אשר אנכי
, mala sua via à *vir* revertantur ut , eis facere *cogitans*
חשב לעשות להם למען ישובו איש מדרכו הרעה
Irmejahu vocavit Et .eorum peccato & ,eorũ iniquitati ero propitius &
4 וסלחתי לעונם ולחטאתם : ויקרא ירמיהו
Irmejahu ore ex Baruch scripsit & ; Nerijah filium Baruch
את־ברוך בן־נריה ויכתב ברוך מפי ירמיהו את
.libri volumine *super* eum ad est locutus quæ , Domini verba omnia
כל־דברי יהוה אשר־דבר אליו על־מגלת־ספר :

Versio VULG. LAT.

14 Prævaluerunt sermones Jonadab filii Rechab, quos præcepit filiis suis ut non biberent vinum : & non biberũt usque ad diem hanc, quia obedierunt præcepto patris sui : ego autem locutus sum ad vos, de manè consurgens & loquens, & non obedistis mihi.
15 Misique ad vos omnes servos meos prophetas, consurgens diluculò, mitténsq; & dicens; Convertimini unusquisque à via sua pessima, & bona facite studia vestra : & nolite sequi deos alienos , neque colatis eos : & habitabitis in terra, quam dedi vobis & patribus vestris : & non inclinâstis aurem vestram, neque
16 audistis me. Firmaverunt igitur filii Jonadab filii Rechab præceptum patris sui, quod præceperat eis : populus autem iste
17 non obedivit mihi. Idcircò hæc dicit Dominus exercituum, Deus Israel ; Ecce ego adducam super Juda & super omnes habitatores Jerusalem, universam afflictionẽ, quã locutus sum adversùm illos : eò quòd locutus sum ad illos, & non audierunt : vocavi illos, &
18 non responderunt mihi. Domui autem Rechabitarum dixit Jeremias ; Hæc dicit Dominus exercituum, Deus Israel ; Pro eo quòd obedîstis præcepto Jonadab patris vestri, & custodîstis omnia mandata ejus, & fecistis universa, quæ præcepit vobis :
19 Propterea hæc dicit Dominus exexcituum, Deus Israel ; Non deficiet vir de stirpe Jonadab filii Rechab, stans in conspectu meo cunctis diebus.

CAP. XXXVI.

1 ET factum est in anno quarto Joakim filii Josiæ regis Juda : factum est verbũ hoc ad Jeremiam
2 à Domino, dicens ; Tolle volumen libri, & scribes in eo omnia verba, quæ locutus sum tibi adversùm Israel & Judã, & adversùm omnes gentes ; à die qua locutus sum ad te, ex diebus Josiæ
3 usque ad diem hanc : Si fortè audiente domo Juda universa mala, quæ ego cogito facere eis, revertatur unusquisque à via sua pessima : & propitius ero iniquitati,
4 & peccato eorum. Vocavit ergo Jeremias Baruch filium Neriæ, & scripsit Baruch ex ore Jeremiæ, omnes sermones Domini quos locutus est ad eum, in volumine libri :

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Translatione LATINA.

22 Καὶ λήψονται (λ) ἀπ' αὐτῶν κατάραν ἐν πάσῃ τῇ ἀποικίᾳ Ἰούδα ἐν Βαβυλῶνι, λέγοντες, Ποιήσαι σε κύριος, ὡς Σεδεκίαν ἐποίησε, καὶ ὡς Ἀχιάβ, οὓς ἀπετηγάνισε
23 βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν πυρί, Δι' ἣν ἐποίησαν ἀνομίαν ἐν Ἰσραήλ, καὶ ἐμοιχῶντο τὰς γυναῖκας τῶν πολιτῶν αὐτῶν, καὶ λόγον ἐχρημάτισαν ἐν τῷ ὀνόματί μου, ὃν οὐ συνέταξα αὐτοῖς· (μ) καὶ ἐγὼ μάρτυς,
24 φησὶ κύριος. Καὶ πρὸς Σαμαίαν τὸν Αἰ-
25 λαμίτην ἐρεῖς, Οὐκ ἀπέστειλά σε τῷ ὀνόματί μου. καὶ πρὸς Σοφονίαν υἱὸν (ν) Μα-
26 ασαίου τὸν ἱερέα εἰπέ, Κύριος ἔδωκέ σε ἱερέα ἀντὶ Ἰωδαὲ τοῦ ἱερέως, γενέσθαι ἐπιστάτην ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου παντὶ ἀνθρώπῳ προφητεύοντι, καὶ παντὶ ἀνθρώπῳ μαινομένῳ, καὶ δώσεις αὐτὸν εἰς τὸ ἀπό-
27 κλεισμα, καὶ εἰς τὸν καταράκτην. Καὶ νῦν διατί συνελοιδορήσατε Ἱερεμίαν τὸν ἐξ Ἀναθὼθ, τὸν προφητεύσαντα ὑμῖν;
28 (ξ) Οὐ διατοῦτο ἀπέστειλε; ὅτι διὰ τοῦ μηνὸς τούτου ἀπέστειλε πρὸς ὑμᾶς εἰς Βαβυλῶνα, λέγων, Μακράν ἐστιν, οἰκοδομήσατε οἰκίας, καὶ κατοικήσατε, καὶ φυτεύσατε κήπους, καὶ φάγεσθε τὸν καρπὸν
29 αὐτῶν. Καὶ ἀνέγνω Σοφονίας τὸ βιβλίον
30 εἰς τὰ ὦτα Ἱερεμίου. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, λέγων,
31 Ἀπόστειλον πρὸς τὴν ἀποικίαν, λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος ἐπὶ Σαμαίαν τὸν Αἰλαμίτην, Ἐπειδὴ ἐπροφήτευσεν ὑμῖν Σαμαίας, (ο) καὶ ἐγὼ οὐκ ἀπέστειλα αὐτὸν, καὶ πεποιθέναι ἐποίησεν ὑμᾶς ἐπ' (π) ἀδίκοις,
32 Διατοῦτο οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπισκέψομαι ἐπὶ Σαμαίαν, καὶ ἐπὶ τὸ γένος αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔσαι αὐτῶν ἄνθρωπος ἐν μέσῳ ὑμῶν, τοῦ ἰδεῖν τὰ ἀγαθὰ, ἃ ἐγὼ ποιήσω ὑμῖν, οὐκ ὄψονται.

MS.A. (λ) ἐπ' (μ) κἀγὼ (ν) Μασαίου (ξ) Ὅτι διατοῦτο ἀπέστειλεν πρὸς ὑμᾶς (ο) κἀγὼ (π) ἀδίκῳ,

Et assument de eis maledictionem in
omni transmigratione Juda
in Babylone, dicentes, [illegible]
Dominus, sicut Sedeciam fecit,
& sicut Achiab : quos [illegible]
Babylonis in igne : P[illegible] 23
fecerunt iniquitatem [illegible]
rael, & mœchabantur uxores
[illegible] suorum, & verbum re-
sponderunt in nomine meo, quod
non præcepi eis : & ego te-
stis, ait Dominus. Et ad Same- 24
am Ælamitem dices ; Non [illegible] 25
[illegible] te nomine meo. Et ad Sopho-
niam filium Maasiæ sacerdotem
[illegible] dic ; Dominus dedit te [illegible] 26
cerdotem pro Jodae sacerdote,
ut esses præfectus in domo Domi-
ni omni homini prophetanti, &
omni homini insanienti, & dabis
eum in custodiam, & in [illegible]
taractam. Et nunc quare [illegible] 27
(n) contumelia affecistis Hiere-
miam, qui ex Anathoth, qui pro-
phetavit vobis? Non (o) [illegible] 28
hoc misit : quia per mensem
hunc misit ad (p) vos in Babylo-
nem, dicens ; Longe est : ædifica-
te domos, & habitate, & plan-
tate hortos, & comedite fru-
ctum eorum. Et legit Sophonias 29
librum in auribus Hieremiæ. Et 30
factum est verbum Domini ad
Hieremiam, dicens ; Mitte ad 31
transmigrationem, dicens ; Sic
dixit Dominus super Sameam
Ælamitem ; Quoniam prophe-
tavit vobis Sameas, & ego non
misi eum, & confidere vos fecit
super iniquis : Propter hoc sic 32
dixit Dominus ; Ecce ego visi-
tabo super Sameam, & super
genus ejus : & non erit de eis
homo in medio vestri, ad viden-
dum : bona, quæ ego faciam
vobis, (r) non videbunt.

Cap. 30.
1 Vulg.Lat.

ΚΕΦ. λζʹ.

1 Ο ΛΟΓΟΣ Ο (α) ΓΕΝΟΜΕΝΟΣ ΠΡΟΣ ΙΕΡΕΜΙΑΝ ΠΑΡΑ
2 ΚΥΡΙΟΥ, ΕΙΠΕΙΝ, Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, λέγων, Γράψον πάντας τοὺς λόγους, (β) οὓς ἐχρημάτισα πρὸς σὲ
3 ἐπὶ βιβλίου. Ὅτι ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, φησὶ κύριος, καὶ ἀποστρέψω τὴν ἀποικίαν λαοῦ μου Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα, εἶπε κύριος (γ), καὶ ἀποστρέψω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν, ἣν ἔδωκα τοῖς πατράσιν αὐτῶν, καὶ κυριεύσουσιν αὐτῆς.
4 ΚΑΙ ΟΥΤΟΙ ΟΙ ΛΟΓΟΙ ΟΥΣ ΕΛΑΛΗΣΕ ΚΥΡΙΟΣ ΕΠΙ ΙΣΡΑΗΛ
5 ΚΑΙ ΙΟΥΔΑ. Οὕτως εἶπε κύριος, Φωνὴν φόβου (δ) ἀκούσεσθε· φόβος, καὶ οὐκ ἔστιν εἰρήνη.

MS.A. (α) ΓΕΝΑΜΕΝΟΣ (β) οὓς ἐγὼ (γ) παντοκράτωρ, καὶ [illegible]κόσασθε·

CAP. XXXVII.

VERBUM quod factum est ad Hieremiam à Domino, dicens ; Sic dixit Dominus [illegible] Israel, dicens ; Scribe omnia [illegible] respondi ad te, [illegible] Quia ecce [illegible] dicit Dominus : & convertam transmigrationem populi mei Israel, & Juda, ait Dominus : & reducam eos in terram, quam dedi patribus eorum : & dominabuntur ejus. ET Hæc verba quæ locutus est Dominus super Israel, & Juda. Sic ait Dominus ; Vocem timoris audietis : timor, & non est pax.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 אתקימו פתגמי יונדב בר רכב דפקיד ית בנוהי בדיל דלא למשתי חמרא ולא אשתיאו
עד יומא הדין ארי קבילו ית תפקדתא דאבוהון ואנא שלחית לותכון ית כל עבדי נבייא
15 מקדים וממלל ולא קבלתון למימרי : ושלחית לותכון ית כל עבדי נבייא מקדים
ומשלח למימר תובו כען גבר מאורחיה בישתא ואתקינו עובדיכון ולא תהכון בתר
טעות עממיא למפלחהון ותיבו על ארעא דיהבית לכון ולאבהתכון ולא ארכנתון ית
16 אודנכון ולא קבלתון למימרי : ארי אקימו בני יונדב בר רכב ית תפקדתא דאבוהון
17 דפקדנון ועמא הדין לא קבילו למימרי : בכן כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל הא
אנא מיתי על אנש יהודה ועל כל יתבי ירושלם ית כל בישתא דגזרית עליהון חלף
18 דשלחית לותהון ית כל עבדי נבייא ולא קבילו ואתנביאו להון ולא תבו : ולבני בית
רכב אמר ירמיה כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל חלף דקבלתון לתפקידת יהונדב
19 אבוכון ונטרתון ית כל פקודוהי ועבדתון ככל דפקיד יתכון : בכן כדנן אמר יי צבאות
אלהא דישראל לא יפסיק גבר ליונדב בר רכב משמש קדמי כל יומיא :

לו

1 והוה בשתא רביעיתא ליהויקים בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה הוה פתגמא
2 הדין עם ירמיה מן קדם יי למימר : סב לך מגלת ספרא ותכתוב עלה ית כל פתגמיא
דמללית עמך על ישראל ועל יהודה ועל כל עממיא מיומא דמללית עמך מיומי
3 יאשיה ועד יומא הדין : מאים ישמעון דבית יהודה ית כל בישתא דאנא מחשיב למעבד
4 להון בדיל דיתובון גבר מאורחיה בישתא ואשבוק לחוביהון ולחטאיהון : וקרא
ירמיהו ית ברוך בר נריה וכתב ברוך מפומא דירמיה ית כל פתגמיא דיי דמליל עמיה
על מגלת ספרא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

14 Confirmata sunt verba Jonadab filii Rechab quæ præcepit filiis suis, ut non biberent vinum : & non biberunt usq; in diem hanc, quia obedierunt præcepto patris sui. Et ego misi ad vos omnes servos meos prophetas, manè consurgens & loquens, & non obedistis verbo meo.
15 Et misi ad vos omnes servos meos prophetas, manè consurgens & mittens; dicens : Convertimini nunc unusquisq; à via sua mala, & dirigite opera vestra ; & ne ambuletis post idola populorum ut serviatis eis : & habitate in terra quam dedi vobis & patribus vestris : & non inclinâstis aures vestras, nec obedistis verbo meo.
16 Firmaverunt enim filii Jonadab, filii Rechab, præceptum patris sui quod præceperat eis, & popul⁹ hic non obedierunt verbo meo.
17 Propterea hæc dicit Dominus exercituum Deus Israel : Ecce ego adducam super viros Juda, & super omnes habitatores Jerusalem omne malum quod decrevi adversùs illos, eo quòd misi ad eos omnes servos meos prophetas, & non obedierunt, & prophetarunt eis, & non sunt conversi.
18 Filiis autem dom⁹ Rechab dixit Jeremias : Hæc dicit Dñs exercituum Deus Israel, Pro eo quòd obedistis præcepto Jonadab patris vestri, & cu[illegible] omnia mandata ejus ; & fecistis juxta omnia quæ præcepit vobis.
19 Propterea hæc dicit Dñs exercituum De⁹ Israel, Non deficiet vir de Jonadab filio Rechab, ministrans coram me, cunctis diebus.

CAP. XXXVI.

1 ET factum est in anno quarto Joachim filii Josiæ regis trib⁹ dom⁹ Juda,
2 factum est verbum istud cum Jeremia à facie Dñi ; dicens : Tolle tibi volumen libri, & scribes in eo omnia verba quæ locut⁹ sum tecum super Israel & super Judam, & super omnem populum, à die qua locut⁹ sum tecum, à dieb⁹ Josiæ, & usque in diem hanc.
3 Fortè audient viri dom⁹ Juda omne malum quod ego cogito facere, & convertentur unusquisq; à via sua mala, & dimittam delicta & peccata eorum.
4 Et vocavit Jeremias Baruch filium Neriæ ; & scripsit Baruch ex ore Jeremiæ omnia verba Domini, quæ locutus est cum eo in volumine libri.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܡܘ ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܝܘܢܕܒ ܒܪ ܪܟܒ. ܕܦܩܕ ܠܒܢܘܗܝ ܕܠܐ ܢܫܬܘܢ ܚܡܪܐ. ܘܠܐ ܐܫܬ
ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܡܛܠ ܕܫܡܥܘ ܦܘܩܕܢܐ ܕܐܒܘܗܘܢ. ܘܐܢܐ ܡܠܠܬ ܥܡܟܘܢ. ܩܕܡܬ ܘܡ
ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ. * ܘܫܕܪܬ ܠܘܬܟܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܢܒܝܐ. ܩܕܡܬ ܘܫܕܪܬ ܘܐܡܪܬ. ܗ
ܓܒܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܬܩܢܘ ܥܒܕܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܬܐܙܠܘܢ ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ ܠܡܦܠ
ܐܢܘܢ ܘܬܬܒܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܟܘܢ ܘܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܐܪܟܢܬܘܢ ܐܕܢܟܘܢ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܘ
* ܗܐ ܐܩܝܡܘ ܒܢܝ ܝܘܢܕܒ ܒܪ ܪܟܒ. ܦܘܩܕܢܐ ܕܐܒܘܗܘܢ ܕܦܩܕ ܐܢܘܢ. ܘܥܡܐ ܗܢ
ܫܡܥܘܢܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠ ܝܗܘܕܐ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ
ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܐܡܪܬ ܥܠܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܠܠܬ ܥܡܗܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܘ. ܘܩܪܝܬ ܠܗܘ
ܥܢܘܢܝ. * ܘܠܒܝܬ ܪܟܒ ܐܡܪ ܐܪܡܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠ
ܕܐܝܣܪܝܠ: ܚܠܦ ܕܫܡܥܬܘܢ ܦܘܩܕܢܐ ܕܝܘܢܕܒ ܐܒܘܟܘܢ. ܘܢܛܪܬܘܢ ܟܠ
ܦܘܩܕܢܘܗܝ. ܘܥܒܕܬܘܢ ܟܠ ܡܕܡ ܕܦܩܕܟܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪ
ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܐ ܢܚܣܪ ܓܒܪܐ ܠܝܘܢܕܒ ܒܪ ܪܟܒ. ܕܩܐܡ ܩܕ
ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܗ *

* ܘܗܘܐ ܒܫܢܬܐ ܕܐܪܒܥ ܠܝܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܗ
ܠܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܣܒ ܠܟ ܡܓܠܬܐ ܕܟܬܒܐ. ܘܟܬ
ܒܗ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪܬ ܠܟ. ܥܠ ܐܝܣܪܝܠ ܘܥܠ ܝܗܘܕܐ ܘܥܠ ܟܠ
ܥܡܡܐ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܡܠܠܬ ܥܡܟ. ܡܢ ܝܘܡܬܗ ܕܝܘܫܝܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. *
ܢܫܡܥܘܢ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܡܬܚܫܒ ܐܢܐ ܠܡܥܒܕ ܠܗܘܢ. ܘܢܬܦܢ
ܓܒܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܫܒܘܩ ܠܥܘܠܗܘܢ ܘܠܚܛܗܝܗܘܢ. * ܘܩܪܐ ܐܪ
ܠܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ. ܘܟܬܒ ܒܪܘܟ ܡܢ ܦܘܡܗ ܕܐܪܡܝܐ. ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡ
ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪ ܥܡܗܘܢ. ܥܠ ܡܓܠܬܐ ܕܟܬܒܐ.

Inviolati fuerunt ſermones Jonadabi filii Re- 14
chabi, quo præcipiente filiis ſuis ne vinum
biberent, haud biberunt in hunc uſque diem,
quod obtemperaverint interdicto patris ſui:
ego autem dixi vobis atque prædixi, & non
paruiſtis: Miſi ad vos omnes ſervos meos 15
prophetas, præmaturè miſi, & dixi, Reverti-
mini quiſque à via ſua peſſima, & emendate
actiones veſtras, néve ſectemini deos alienos
ad colendũ eos, ut permaneatis in terra quam
dedi vobis & majoribus veſtris: vos tamen
nec aurem veſtrã inclinâſtis, nec audîſtis me.
Ecce præſtiterunt filii Jonadabi filii Rechabi 16
mandatum patris ſui quod præceperat eis;
populus autem iſte non obedierunt mihi:
Propterea adducturus ſum ſuper Judam & 17
ſuper omnes cives Jeroſolymæ totum illud
malum quod decrevi contra eos; quia mihi
ipſos colloquenti non auſcultârunt, & eos
vocanti non reſponderunt. Familiæ verò Re- 18
chebiami dixit Jeremia; Sic ait Dominus po-
tentiſſimus Deus Iſraelis, Eò quòd paruiſtis
mandato Jonadabi patris veſtri, & obſer-
vâſtis omnia præcepta ipſius, & executi eſtis
quicquid juſſit vobis: Propterea ſic ait Do- 19
minus potentiſſimus Deus Iſraelis, Non de-
ficiet vir Jonadabo filio Rechabi, qui ſtet co-
ram me cunctis diebus.

CAP. XXXVI.

FActum eſt præterea anno quarto Jòjacimi 1
filii Joſiæ regis Judæ, ut eſſet ſermo iſte ad
Jeremiam à Domino, hiſce verbis; Sume tibi 2
volumen libri, & ſcribe in eo omnes ſermo-
nes quos dixi tibi de Iſraele, de Juda, & de
cunctis gentibus ab ea die quâ te ſum allo-
cutus, à diebus Joſiæ ad præſentem uſque
diem: Si fortè audientes Judæi omne ma- 3
lum quod eis facere delibero, revertantur
quiſque à via ſua mala, & dimittam culpas &
ſcelera eorum. Quamobrem advocavit Jere- 4
mia Baruchum Neriæ filium, ſcripſitque Ba-
ruch dictante Jeremiâ omnes Domini ſermo-
nes quos ad utrumque locutus fuerat, in vo-
lumine libri.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويأخذون عليهم لعنات في جميع جلوة يهودا ببابل * قائلين يصنع بك الرب كما صن
بصدقيا * ومثل آسياب الذين سلقهم ملك بابل بالنار * لأجل الإثم الذي صنعو
ايروسليم * وفسقوا بنساء بلديهم * واظهروا قولا باسمي الذي انا لم امرهم به * وانا شا
قال الرب * * ولصفونيا بن صاماآو قال الرب * دفعتك كاهنا عوض ايوداا الكاهن لتكو
قيما في بيت الرب لكل انسان يتنبي ولكل انسان يجن * وتدفعه للرباط والسجن * والآن
تسمعون ارميا الذي من اناثوث الذي يتنبا لكم * أليس لأجل هذا ارسل اليكـ
بابل * قائلا طويل هو ابنوا بيوتا واسكنوا واغرسوا بساتين وكلوا ثمرهم * وقرأ صفونيا
في اذني ارميا * وكان قول الرب الي ارميا قائلا * ارسل الي الجلوة قائلا * هكذا قال الرب
صاماا الاهوازي * من اجل ان صاماآ تنبا لكم وانا لم ارسله * وصنع ظلما لتتوك
اندم عليه * لأجل هذا هكذا قال الرب * ها انا اطلع على صاماآ وعلى جنسه * ولا يكـ
له انسان في وسطكم ليري الخيرات التي انا اصنعها لكم * ولا يعاينوها *

* الفصل السابع والثلثون *

* القول الصاير الي ارميا من قبل الرب ليقول
* هكذا قال الرب اله اسرايل قائلا * اكتب جميع هذه الاقوال التي اظهرتها انا لك في
* لان ها ايام تاتي قال الرب * وارد جلوة شعبي اسرايل ويهودا قال الرب * واردهم الي ا
التي اعطيت اباهم * ويسودون على الارض *
* وهذه الاقوال التي تكلم الرب بها على اسرايل وعلى يهودا *
* هكذا قال الرب * اسمعوا صوت خوفه * خوف وليس تكون سلامه *

Et ab his deſument formam execratio- 22
num in tota captivitate Judæ in Babele,
dicentes; Faciat tibi Dominus quemad-
modum fecit Sedeciæ, & quemadmo-
dum Achabo, quos igne coxit rex Babe-
lis. Propter impietatem quam perpetrâ- 23
runt in Jeruſalem, mœchantes cum uxo-
ribus popularium ſuorum, & meo nomine
ſermonem promulgantes, quem non præ-
ceperam eis: & horum teſtis ego ſum,
ait Dominus. Ad Sophoniam autem 24
Samæi filium dixit Dominus; Poſui te 25
ſacerdotem loco Ajodai ſacerdotis, ut 26
eſſes præſes in domo Domini contra o-
mnem hominem prophetantem & omnem
hominem inſanientem, eúmque vinculis
& carceri traderes: Quare ergò con- 27
tumelia affeciſtis Jeremiam Anathothæum
qui prophetat vobis? An non hac de re 28
miſit ad vos in Babelem, dicens; Longa
eſt mora, ædificate domos, & inhabita-
te; ſerite hortos, & veſcimini fructibus
eorum. Libellum hunc legit Sophonias 29
audiente Jeremiâ. Deinde fuit ſermo 30
Domini ad Jeremiam, dicens; Mitte ad 31
captivitatem, dicens; Ita dixit Dominus
ad Samæam Elamitam, Quia Samæa pro-
phetavit vobis, cùm ego non miſerim eum,
& fabricavit iniquitatem cui vos fidere-
tis: Ideò ſic ait Dominus, Ecce ego in- 32
viſam Samæam & genus ejus, neque re-
manebit illi quiſquam in medio veſtrî, ad
fruendum bonis quæ ego facturus ſum vo-
bis, neque videndum illa.

CAP. XXXVII.

SErmo habitus cum Jeremia à 1
Domino, ut diceret;

Sic locutus eſt Dominus Deus Iſraelis, di- 2
cens; Scribe omnes hos ſermones quos in-
dicavi tibi, in libro: Quoniam ecce di- 3
es venturi ſunt, dixit Dominus, cùm re-
ducam captivitatem populi mei Iſraelis et
Judæ dixit Dominus; reducam inquam,
eos ad terram quam dedi patribus eorum,
& dominabuntur ſuper terram.

Atque hi ſunt ſermones quos locu- 4
tus eſt Dominus de Iſraele & de
Juda.

Ita dixit Dominus, Audite vocem ejus 5
horrendam. Terror, non autem pax erit.

יִרְמְיָה : לו

potero non ,clauſus Ego : dicendo ,Baruch Irmejahu præcepit Et
5 וַיְצַוֶּה יִרְמְיָהוּ אֶת־בָּרוּךְ לֵאמֹר אֲנִי עָצוּר לֹא אוּכַל
, volumine in leges & , tu intrabis Et .Domini domum ingredi
6 לָבוֹא בֵּית יְהוָה׃ וּבָאתָ אַתָּה וְקָרָאתָ בַמְּגִלָּה
populi auribus in Domini verba , meo ore ex ſcripſiſti quod
אֲשֶׁר־כָּתַבְתָּ מִפִּי אֶת־דִּבְרֵי יְהוָה בְּאָזְנֵי הָעָם
, Jehudah omnis auribus in etiam & : jejunii die in , Domini domo
בֵּית יְהוָה בְּיוֹם צוֹם וְגַם בְּאָזְנֵי כָל־יְהוּדָה
eorum deprecatio cadat forte Si .ea leges ſuis civitatibus de venientium
7 הַבָּאִים מֵעָרֵיהֶם תִּקְרָאֵם׃ אוּלַי תִּפֹּל תְּחִנָּתָם
magnus quia : mala ſua via à vir revertantur & ,Domini facies ad
לִפְנֵי יְהוָה וְיָשֻׁבוּ אִישׁ מִדַּרְכּוֹ הָרָעָה כִּי־גָדוֹל
.hunc populum ad Dominus eſt locutus quam , ira & niſus
הָאַף וְהַחֵמָה אֲשֶׁר־דִּבֶּר יְהוָה אֶל־הָעָם הַזֶּה׃
Irmejahu ei præcepit quæ omnia juxta Nerijah filius Baruch fecit Et
8 וַיַּעַשׂ בָּרוּךְ בֶּן־נֵרִיָּה כְּכֹל אֲשֶׁר־צִוָּהוּ יִרְמְיָהוּ
fuit Et .Domini domo Domini verba libro in legendo , propheta
9 הַנָּבִיא לִקְרֹא בַסֵּפֶר דִּבְרֵי יְהוָה בֵּית יְהוָה׃ וַיְהִי
Jehudah regis Joſijahu filii Jehojachim quinto anno in
בַשָּׁנָה הַחֲמִשִׁית לִיהוֹיָקִים בֶּן־יֹאשִׁיָּהוּ מֶלֶךְ־יְהוּדָה
populo omni Domini facies ad jejunium prædicaverunt nono menſe in
בַּחֹדֶשׁ הַתְּשִׁעִי קָרְאוּ צוֹם לִפְנֵי יְהוָה כָּל־הָעָם
Jehudah urbibus de venientibus populo univerſo & ,Jeruſalaim in
בִּירוּשָׁלִַם וְכָל־הָעָם הַבָּאִים מֵעָרֵי יְהוּדָה
Irmejahu verba libro in Baruch Legitque .Jeruſalaim in
10 בִּירוּשָׁלִָם׃ וַיִּקְרָא בָרוּךְ בַּסֵּפֶר אֶת־דִּבְרֵי יִרְמְיָהוּ
, ſcribæ Saphan filii Ghemarjahu cubiculo in , Domini domo
בֵּית יְהוָה בְּלִשְׁכַּת גְּמַרְיָהוּ בֶן־שָׁפָן הַסֹּפֵר
auribus in , novæ Domini domus portæ oſtii ſuperiori atrio in
בֶּחָצֵר הָעֶלְיוֹן פֶּתַח שַׁעַר בֵּית־יְהוָה הֶחָדָשׁ בְּאָזְנֵי
Saphan filii Ghemarjahu filius Michajahu audivit Et .populi omnis
11 כָּל־הָעָם׃ וַיִּשְׁמַע מִכָיְהוּ בֶן־גְּמַרְיָהוּ בֶּן־שָׁפָן
Deſcenditque .libro deſuper Domini verba omnia
12 אֶת־כָּל־דִּבְרֵי יְהוָה מֵעַל הַסֵּפֶר׃ וַיֵּרֶד
omnes ibi ecce & : ſcribæ cubiculum ſuper regis domum
בֵּית־הַמֶּלֶךְ עַל־לִשְׁכַּת הַסֹּפֵר וְהִנֵּה־שָׁם כָּל־
, Semahajahu filius Delajahu & ,ſcriba Eliſamah : ſedentes principes
הַשָּׂרִים יוֹשְׁבִים אֱלִישָׁמָע הַסֹּפֵר וּדְלָיָהוּ בֶן־שְׁמַעְיָהוּ
Sidchijahu & ,Saphan filius Ghemarjahu & ,Hachbor filius Elnathan &
וְאֶלְנָתָן בֶּן־עַכְבּוֹר וּגְמַרְיָהוּ בֶן־שָׁפָן וְצִדְקִיָּהוּ
Michajehu eis indicavit Et .principes univerſi &,Chananjahu filius
13 בֶן־חֲנַנְיָהוּ וְכָל־הַשָּׂרִים׃ וַיַּגֵּד לָהֶם מִכָיְהוּ
libro in Baruch legendo in , audivit quæ verba omnia
אֵת כָּל־הַדְּבָרִים אֲשֶׁר שָׁמֵעַ בִּקְרֹא בָרוּךְ בַּסֵּפֶר
, Baruch ad principes omnes miſerunt Et .populi auribus in
14 בְּאָזְנֵי הָעָם׃ וַיִּשְׁלְחוּ כָל־הַשָּׂרִים אֶל־בָּרוּךְ
: dicendum ad ,Chuſi filii Selemjahu filii Nethanjahu filium Jehudi
אֶת־יְהוּדִי בֶן־נְתַנְיָהוּ בֶּן־שֶׁלֶמְיָהוּ בֶן־כּוּשִׁי לֵאמֹר
illud ſume , populi auribus in eo in legiſti quo Volumen
הַמְּגִלָּה אֲשֶׁר קָרָאתָ בָּהּ בְּאָזְנֵי הָעָם קָחֶנָּה
volumen Nerijah filius Baruch tulit & : abi &,tua manu in
בְיָדְךָ וָלֵךְ וַיִּקַּח בָּרוּךְ בֶּן־נֵרִיָּהוּ אֶת־הַמְּגִלָּה
, nunc Sede : eum ad dixerunt Et .eos ad venit &,ſua manu in
15 בְּיָדוֹ וַיָּבֹא אֲלֵיהֶם׃ וַיֹּאמְרוּ אֵלָיו שֵׁב נָא
.eorum auribus in Baruch legit & : noſtris auribus in illud lege &
וּקְרָאֶנָּה בְּאָזְנֵינוּ וַיִּקְרָא בָרוּךְ בְּאָזְנֵיהֶם׃
ad vir expaverunt , verba omnia eos audire ſecundum fuit Et
16 וַיְהִי כְּשָׁמְעָם אֶת־כָּל־הַדְּבָרִים פָּחֲדוּ אִישׁ אֶל־
regi nuntiabimus Nuntiando : Baruch ad dixerunt & , ſuum ſocium
רֵעֵהוּ וַיֹּאמְרוּ אֶל־בָּרוּךְ הַגֵּיד נַגִּיד לַמֶּלֶךְ
.hæc verba omnia
אֵת כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה׃

Verſio VULG. LAT.

5 Et præcepit Jeremias Baruch, dicens; Ego clauſus ſum, nec valeo 6 ingredi domum Domini. Ingredere ergò tu, & lege de volumine, in quo ſcripſiſti ex ore meo, verba Domini, audiente populo in domo Domini, in die jejunii: inſuper & audiente univerſo Judâ, qui veniunt de civitatibus 7 ſuis, leges eis: Si fortè cadat oratio eorum in conſpectu Domini, & revertatur unuſquiſque à via ſua peſſima: quoniam magnus furor & indignatio eſt, quam locutus eſt Dominus ad- 8 verſùs populum hunc. Et fecit Baruch filius Neriæ, juxta omnia, quæ præceperat ei Jeremias propheta, legens ex volumine ſermones Domini in domo Domini. 9 Factum eſt autem in anno quinto Joakim filii Joſiæ regis Juda, in menſe nono: prædicaverunt jejunium in conſpectu Domini omni populo in Jeruſalem, & univerſæ multitudini, quæ confluxerat de civitatibus Juda in Jeruſa- 10 lem. Legítque Baruch ex volumine ſermones Jeremiæ in domo Domini, in gazophylacio Gamariæ filii Saphan ſcribæ, in veſtibulo ſuperiori, in introitu portæ novæ domûs Domini, audien- 11 te omni populo. Cúmque audiſſet Michæas filius Gamariæ filii Saphan omnes ſermones Do- 12 mini ex libro: Deſcendit in domum regis ad gazophylacium ſcribæ: & ecce ibi omnes principes ſedebant: Eliſama ſcriba, & Dalaias filius Semeiæ, & Elnathan filius Achobor, & Gamarias filius Saphan, & Sedecias filius Hananiæ, & univerſi prin- 13 cipes. Et nuntiavit eis Michæas omnia verba, quæ audivit legente Baruch ex volumine in au- 14 ribus populi. Miſerunt itaque omnes principes ad Baruch, Judi filium Nathaniæ filii Selemiæ, filii Chuſi, dicentes; Volumen, ex quo legiſti audiente populo, ſume in manu tua, & veni. Tulit ergò Baruch filius Neriæ volumen in manu ſua, & venit ad 15 eos. Et dixerunt ad eum; Sede, & lege hæc in auribus noſtris. Et legit Baruch in auribus eorum. 16 Igitur cùm audiſſent omnia verba, obſtupuerunt unuſquiſque ad proximum ſuum: & dixerunt ad Baruch; Nuntiare debemus regi omnes ſermones iſtos.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Ἐρωτήσατε, καὶ ἴδετε, εἰ ἔτεκεν ἄρσεν; καὶ περὶ φόβου, ἐν ᾧ καθέξουσιν ὀσφὺν καὶ σωτηρίαν; διότι ἑώρακα πάντα ἄνθρωπον, καὶ αἱ χεῖρες αὐτοῦ ἐπὶ τῆς ὀσφύος αὐτοῦ· ἐστράφησαν 7 πρόσωπα εἰς ἴκτερον. (δ) Ὅτι ἐγενήθη μεγάλη ἡ ἡμέρα ἐκείνη, καὶ οὐκ ἔστι τοιαύτη· καὶ χρόνος στενός ἐστι τῷ Ἰακώβ, καὶ ἀπὸ τούτου σωθήσεται. 8 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, εἶπε κύριος, Συντρίψω (ε) τὸν ζυγὸν ἀπὸ τοῦ τραχήλου αὐτῶν, καὶ τοὺς δεσμοὺς αὐτῶν διαῤῥήξω· καὶ οὐκ ἐργῶνται αὐτοὶ 9 ἔτι (ζ) ἀλλοτρίοις, Καὶ ἐργῶνται τῷ κυρίῳ θεῷ αὐτῶν· καὶ τὸν Δαυὶδ (η) βασιλέα αὐτῶν ἀναστήσω 12 αὐτοῖς. Οὕτως (θ) εἶπε κύριος, Ἀνέστησα (ι) σύντριμμα, ἀλγηρὰ ἡ 13 πληγή σου, Οὐκ ἔστι κρίνων κρίσιν σου, εἰς ἀλγηρὸν ἰατρεύθης, (κ) ὠφέ- 14 λεια σοι οὐκ ἔστι. Πάντες οἱ φίλοι σου ἐπελάθοντό σου, οὐ μὴ ἐπερωτήσωσιν· ὅτι πληγὴν ἐχθροῦ ἔπαισά σε, παιδείαν στερεάν· ἐπὶ πᾶσαν ἀδικίαν σου ἐπλήθυναν αἱ ἁμαρτίαι σου. 16 Διὰ τοῦτο πάντες οἱ ἔσθοντές σε βρωθήσονται, καὶ πάντες οἱ ἐχθροί σου 15 κρέας αὐτῶν πᾶν ἔδονται· Ἐπὶ πλῆθος (λ) ἀδικιῶν σου ἐπληθύνθησαν αἱ ἁμαρτίαι σου· ἐποίησαν ταῦ- 16 τά σοι· Καὶ ἔσονται οἱ διαφοροῦντές σε εἰς διαφόρημα, καὶ πάντας τοὺς (μ) προνομεύσαντάς σε δώσω εἰς προνομήν. 17 Ὅτι ἀνάξω τὸ (ν) ἴαμά σου, ἀπὸ πληγῆς ὀδυνηρᾶς ἰατρεύσω σε, φησὶ κύριος· ὅτι Ἐσπαρμένη ἐκλήθης, θήρευμα ὑμῶν ἐστιν, ὅτι ζητῶν οὐκ 18 ἔστιν αὐτήν. Οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστρέψω τὴν (ξ) ἀποικίαν Ἰακώβ, καὶ τὴν (ο) αἰχμαλωσίαν αὐτοῦ ἐλεήσω· καὶ οἰκοδομηθήσεται πόλις ἐπὶ (π) τὸ ὕψος αὐτῆς, καὶ ὁ λαὸς κατὰ τὸ κρίμα αὐτοῦ 19 καθεδεῖται. Καὶ ἐξελεύσονται ἀπ᾽ αὐτῶν ᾄδοντες, (ρ) φωνὴ παιζόντων· καὶ πλεονάσω αὐτούς, καὶ οὐ μὴ ἐλαττωθῶσι.

Interrogate, & videte, ſi generat maſculus? (a) & de timore, in quo detinebunt lumbum, & ſalutem? quia vidi omnem hominem, & manus ejus ſuper lumbum (b) ejus? Verſæ ſunt facies in auruginem; 7 (c) Quia facta eſt magna dies illa, & non eſt talis: & tempus anguſtum eſt Jacob: & ex iſto ſalvabitur. 8 In die illa, dixit Dominus, conteram jugum de collo eorum: & vincula eorum dirumpam: & non operabuntur ultrà alienis: 9 Et operabuntur Domino Deo ſuo. Et David regem eorum ſuſcitabo (d) eis: 12 Sic ait Dominus; (e) Suſcitavi contritionem: doloroſa eſt plaga tua: 13 Non eſt qui judicet judicium tuum: in dolore curata es: utilitas tibi non eſt. 14 Omnes amici tui obliti ſunt tui: non ſe interrogabunt: quia plaga inimici percuſſi te, diſciplinâ forti ſuper omnem iniquitatem tuam. Multiplicata ſunt peccata (g) tua. 16 Proptereà omnes qui comedunt te, devorabuntur: & omnes inimici tui (h) carnem ſuam omnem comedent. 15 (Propter multitudinem iniquitatum tuarum (i) multiplicata ſunt peccata tua: fecerunt hæc tibi:) 16 Et erunt, (k) qui vaſtant te, in vaſtationem: & omnes, qui diripuerunt te, dabo in direptionem: 17 Quia (l) obducam curationem tuam: à plaga doloroſa curabo te, ait Dominus: quia Diſperſa vocata es: (m) venatio veſtra eſt: quia non eſt qui quærat eam. 18 Sic dixit Dominus; Ecce ego reducam tranſmigrationem Jacob, & captivitati ejus miſerebor. Et ædificabitur civitas ſuper altitudinem ejus: & (n) populus juxta judicium ſuum ſedebit. 19 Et egredientur ab eis canentes, vox ludentium: et multiplicabo eos, et non minuentur.

MS.A. (δ) Ἐγενήθη, ὅτι μεγάλη (ε) ζυγὸν ἀπὸ τραχήλου (ζ) ἐν ἀλλοτρίοις, (η) τὸν βασιλέα (θ) λέγει (ι) σύντριμμά σοι, (κ) ὠφέλεια οὐκ ἔστιν σοι. (λ) ἀδικίας (μ) προνομεύοντές (ν) ἰμάτιον (ξ) αἰχμαλωσίαν (ο) ἀποικίαν (π) τεῖχος αὐτῆς, (ρ) καὶ φωνὴ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 ופקיד ירמיה ית ברוך למימר אנא כלי לית אנא יכיל למעל לבית מקדשא דיי׃
6 ותיתי את ותקרי במגלתא דכתבתא מפומי ית פתגמיא דיי קדם עמא בבית מקדשא דיי
7 ביומא דצומא ואף קדם כל בית יהודה דאתן מקרויהון תקרנון׃ מאים תתקבל
בעותהון קדם יי ויתובון גבר מאורחתיה בישתא ארי רב רוגזא וחמתא דגזר יי על
8 עמא הדין׃ ועבד ברוך בר נריה ככל די פקדיה ירמיה נביא למקרי בספרא פתגמא
9 דיי בית מקדשא דיי׃ והוה בשתא חמשתא ליהויקים בר יאשיה מלך שבטא דבית
יהודה בירחא תשיעאה גזרו צומא קדם יי כל עמא בירושלם וכל עמא דאתן
10 מקרויא דבית יהודה בירושלם׃ וקרא ברוך בספרא ית פתגמי ירמיה נביא בית
מקדשא דיי בלשכת גמריה בר שפן ספרא בדרתא עליתא במעלנא דתרע בית
11 מקדשא דיי מדנחאה קדם כל עמא׃ ושמע מיכיהו בר גמריה בר שפן ית כל
12 פתגמא דיי מעל ספרא׃ ונחת לבית מלכא ללשכת ספרא והא תמן כל רברביא
יתבין אלישמע ספרא ודליה בר שמעיה ואלנתן בר עכבור וגמריה בר שפן וצדקיה
13 בר חנניה וכל רברביא׃ וחוי להון מיכיהו ית כל פתגמיא דשמע כד קרא ברוך
14 בספרא קדם עמא׃ ושלחו כל רברביא לות ברוך ית יהודי בר נתניה בר שלמיה
בר כושי למימר מגלתא דקריתא בה קדם עמא סבהי בידך ואתא ונסיב ברוך בר נריה
15 ית מגלתא בידיה ואתא לותהון׃ ואמרו ליה תוב כען וקרהא קדמנא וקרא
16 ברוך קדמיהון׃ והוה כמשמעהון ית כל פתגמיא תוהו גבר בחבריה ואמרו לברוך
חואה נחוי למלכא ית כל פתגמיא האלין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

5 Et præcepit Jeremias Baruch; dicens: Ego clauſus ſum, & non poſſum ingredi in domum ſanctuarii Dñi. 6 Et venies tu, & leges in volumine, in quo ſcripſiſti ex ore meo, verba Dñi coram populo, in domo ſanctuarii Dñi, in die jejunii, & etiam coram omni domo Juda, qui veniunt de civitatibus ſuis, leges ea. 7 Fortè acceptabilis erit deprecatio eorum coram Dño, & convertentur unuſquiſque à via ſua mala: quoniam magnus eſt furor & indignatio quam decrevit Dñs adverſùs populum hunc. 8 Et fecit Baruch, filius Neriæ, juxta omnia quæ præcepit ei Jeremias propheta, ut legeret in libro verba Dñi, in domo ſanctuarii Dñi. 9 Et factum eſt in anno quinto Joachim filii Joſiæ regis tribus domus Juda, in menſe nono, decreverunt jejunium coram Dño omnis populus in Jeruſalem, & omnis populus qui venerat de urbibus domus Juda in Jeruſalem. 10 Et legit Baruch in libro omnia verba Jeremiæ *prophetæ*, in domo ſanctuarii Dñi, in gazophylacio Gamariæ filii Saphan ſcribæ, in atrio ſuperiori, in introitu portæ domus ſanctuarii Dñi orientalis, coram omni populo. 11 Et audivit Michæas filius Gamariæ filii Saphan omnia verba Dñi ex libro: 12 Et deſcendit in domum regis, in gazophylacium ſcribæ, & ecce ibi omnes principes ſedebant, Eliſama ſcriba, & Dalaias filius Semeiæ, & Elnathan filius Achbor, & Gamarias filius Saphan, & Sedechias filius Ananiæ, & univerſi principes. 13 Et annuntiavit eis Michæas omnia verba quæ audivit, quando legebat Baruch in libro coram populo. 14 Et miſerunt omnes principes ad Baruch Judi filium Nathaniæ, filii Selemiæ, filii Chuſi; dicendo: Volumen in quo legiſti coram populo, ſume in manu tua, & veni. Et tulit Baruch filius Neriæ volumen in manu ſua, & venit ad eos. 15 Et dixerunt ei, [illegible] & lege illud coram nobis: & legit Baruch coram eis. 16 Et factum eſt, cùm audiſſent omnia verba, obſtupuerunt unuſquiſque ad proximum ſuum: & dixerunt ad Baruch, Annuntiando annuntiabimus regi omnes ſermones iſtos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܦܩܕ ܐܪܡܝܐ ܠܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܐܢܐ ܟܠܐ ܐܢܐ. ܘܠܐ ܡܫܟܚ ܐܢܐ ܕܐܥܘܠ ܠܒ
ܕܡܪܝܐ. * ܥܘܠ ܐܢܬ ܘܩܪܝ ܒܟܬܒܐ ܕܟܬܒܬ ܡܢ ܦܘܡܝ. ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ
ܥܡܐ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܒܝܘܡܐ ܕܨܘܡܐ. ܘܐܦ ܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܐܬܝܢ
ܡܢ ܩܘܪܝܗܘܢ ܬܩܪܐ ܐܢܘܢ. * ܕܠܡܐ ܬܦܠ ܒܥܘܬܗܘܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܢܬܘܒܘܢ ܐܢܫ ܡܢ
ܒܝܫܬܐ. ܘܢܗܦܘܟ ܡܪܝܐ ܡܢܗܘܢ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܐܡܪ ܕܢܥܒܕ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܪܒܐ
ܘܚܡܬܐ ܕܡܠܠ ܡܪܝܐ ܥܠ ܥܡܐ ܗܢܐ. * ܘܥܒܕ ܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ ܟܠ ܕܦܩܕܗ ܐܪܡ
ܢܒܝܐ. ܠܡܩܪܐ ܒܟܬܒܐ ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ ܒܫ
ܚܡܫܝܬܐ ܕܝܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܒܝܪܚܐ ܬܫܝܥܝܐ. ܩܪܘ ܨ
ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܩܪܐ ܒܪܘܟ ܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܬܐ ܡܢ
ܠܐܘܪܫܠܡ. * ܘܩܪܐ ܒܪܘܟ ܣܦܪܐ. ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܒܒܝܬ
ܕܓܡܪܝܐ ܒܪ ܫܦܢ ܣܦܪܐ. ܒܕܪܬܐ ܥܠܝܬܐ. ܒܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ ܚܕܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕ
ܩܕܡ ܟܠܗ ܥܡܐ. * ܘܫܡܥ ܡܝܟܐ ܒܪ ܓܡܪܝܐ ܒܪ ܫܦܢ. ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܘܗܝ ܕ
ܡܢ ܟܬܒܐ. * ܘܢܚܬ ܠܒܝܬ ܡܠܟܐ ܠܡܫܪܝܬܗ ܕܣܦܪܐ. ܘܚܙܐ ܬܡܢ ܟܠܗܘܢ ܪ
ܝܬܒܝܢ. ܐܠܝܫܡܥ ܣܦܪܐ. ܘܕܠܝܐ ܒܪ ܫܡܥܝܐ. ܘܐܠܢܬܢ ܒܪ ܥܟܒܘܪ. ܘܓܡܪܝܐ ܒܪ
ܘܨܕܩܝܐ ܒܪ ܚܢܢܝܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ. * ܘܚܘܝ ܐܢܘܢ ܡܝܟܐ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܕ
ܟܕ ܩܪܐ ܒܪܘܟ ܣܦܪܐ ܒܐܕܢܝܗܘܢ ܕܥܡܐ. * ܘܫܕܪܘ ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܠܘܬ ܒܪܘܟ. ܠ
ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܒܪ ܫܠܡܝܐ ܒܪ ܟܘܫܝ. ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܡܓܠܬܐ ܕܩܪܝܬ ܒܗ ܩܕܡ ܥܡܐ.
ܒܐܝܕܟ. ܘܬܐ. ܘܢܣܒ ܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ. ܡܓܠܬܐ ܒܐܝܕܗ. ܘܐܬܐ ܠܘܬܗܘܢ. * ܘܐܡܪ
ܪܘܪܒܢܐ. ܬܒ. ܘܩܪܝܗ ܩܕܡܝܢ. ܘܩܪܐ ܒܪܘܟ ܩܕܡܝܗܘܢ. * ܘܟܕ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܐ
ܬܘܗ ܚܕ ܒܚܕ. ܘܐܡܪܘ ܠܒܪܘܟ. ܡܚܘܝܘ ܢܚܘܐ ܠܡܠܟܐ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ.

Tum præcepit Jeremia Barucho Neriæ filio, dixitque ad eum, ego detentus *carcere* non poſſum ingredi domum Domini: [5] Ingredere tu, & lege in volumine quos me dictante ſcripſiſti ſermones Domini, præſente populo, in domo Domini, die jejunii: atque etiam præſente toto populo Judæo qui venient è civitatibus ſuis, leges eos. [6] Si fortè admittantur preces eorum ante Dñm, & revertantur quiſque à via ſua peſſima, avertátque Dñs ab ipſis omnia mala quæ decrevit in ipſos: nam magna eſt ira & excandeſcentia quâ locutus eſt Dñs de populo iſto. [7] Et fecit Baruch Neriæ filius quicquid præceperat ipſi Jeremia propheta, legendo in eo libro ſermones Domini in domo Domini. [8] Accidit enim anno quinto Jojacimi filii Joſiæ regis Judæ, menſe nono, ut jejunium indicerent coram Domino totus populus qui erat Jeroſolymis, legerétq; Baruch præſente univerſo populo qui de civitatibus Judæ venerant Jeroſoymam; [9] Legeret inquam, Baruch ſcriba ſermones Domini quos locutus fuerat Jeremia, in domo Domini, in diverſoriis Gemariæ filii Saphanis ſcribæ in atrio ſuperiore, in veſtibulo portæ recentioris domûs Domini, præſente toto populo. [10] Cùm autem audîſſet Micha filius Gemariæ filii Saphanis omnes Domini ſermones, ex eo libro; [11] Deſcendit è domo regia in diverſoria ſcribæ: & cùm ibi vidiſſet omnes principes conſidentes, Eliſemaum ſcribam, Delaiam Semaiæ filium, Elathanem Abchoris filiũ, Gemariam filiũ Saphanis, Sedeciam filium Hananiæ, & omnes principes; [12] Et indicâſſet eis Micha omnes ſermones quos audierat, quum legeret Baruch ſcriba audiente univerſo populo: [13] Miſerunt omnes principes ad Baruchum, Jehudium filiũ Nethaniæ filii Selamiæ filii Chuſi, & dixerunt ad eum; Volumen illud in quo legiſti præſente populo tolle manu tuâ, & veni. Quare Baruch Neriæ filiꝰ, volumine manu ſuâ arrepto venit ad eos. [14] Tum dixerunt ad illum principes, Sede, & illud recita corã nobis: recitavítque illud Baruch corã ipſis. [15] Qui cùm audiviſſent ſermones illos, obſtupuerunt alter cum altero, & dixerunt Barucho, Indicabimus regi omnes ſermone iſtos. [16]

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* اسالوا وانظروا ايلد الذكر ومن اجل الخوف الذي به يمسكون الحقو والمعا
اجل اني رايت كل انسان ويداه على حقوه عادت الوجوه وصارت لليرقان * لان ذلك اليو
عظيم وليس يوجد مثله ويكون زمانا ضيقا ليعقوب ومن هنك يخلص * في ذلك اليوم
الرب * اكسر النير من وجههم واصرف رباطاتهم * ولن يعملوا هولاء للغرباء * لكن يعملو
للرب الاههم * واقيم لهم داود ملكهم [* MS. Ox. وانت لا خوف عليك يا يعقوب عبدي
يقول الرب * لا تنكسر يا اسراييل لاني تخلصك من ارض بعيدة * وانقذ نسلك من ار
سبيهم * ويسكن يعقوب مطمانا ويرقد ويستريح * ولا يكون له مودي * وانت لا خوف عليك
يعقوب عبدي يقول الرب * لاني معك * واني تخلصك يقول الرب واجرم الهلاك على جم
الشعوب التي فرقتك فيها * ولا اهلكك معهم * واودبك بالعدل * ولا اتركك] * هكذا ق
الرب * اقمت الكسر * ضربتك موجعة * وليس من يحكم حكمك * سقيت بالوجع ولم
تكون لك منفعة * جميع اصحابك نسيوك ولا يسالون * لان ضربة العدو ضربتك
للتاديب الشديد على كل ظلمك * كثرت خطاياك * على كثرة ظلمك كثرت
خطاياك صنعت لك هذه * لاجل هذا جميع الذين ياكلوها ياكلون * وجميع اعدا
ياكلون لحمهم * ويصير الذين ابعدوك للابعاد * وجميع الذين نهبوك ادفعهم للنه
* لاني ارفع شفاك من الضربة الوجيعة واشفيك قال الرب * لانك دعيت مبددة والصيد
موجودة لكم * لان ليس من يطلبها * هكذا قال الرب * ها انا ارد جلوة اسراييل وا
سبيه * ويبني مدينة على سورها * والشعب كالحكمة ياكل * ويخرج منهم مساكنون و
لاعبين * واكثرهم ولا ينقصون *

Percontamini & videte num pariat maſculus: attamen præ terrore qui erit in eo, tenebitis lumbum ac nates: nam vidi unumquemque manibus lumbo ſuo appoſitis, immutatos vultus atque in auriginem verſos. [6] *Dies enim ille magnus erit, nec invenietur ſimilis ei, eritque tempus calamitoſum Jacobo; ex his tamen ſervabitur.* [7] *Die illo, dixit Dominus, conteram jugum à facie eorum, & rumpam vincula eorum: & nullo modo operabuntur iſti alienis,* [8] *Sed operabuntur Domino Deo ſuo: & ſuſcitabo eis Davidem regem eorum.* [9] [MS. Oxon. *Tu ergò ne timeto ſerve mi Jacob dicit Dominus, neque conſternator O Iſrael: quoniam ego libero te è terra longinqua; et redimam ſemen tuum è terra captivitatis ſuæ; & habitabit Jacob ſecurus, & commorabitur, & quieſcet, nec quiſquam erit qui nocuerit ei.* [10] *Proinde tu ne timeto Jacob ſerve, mi dicit Dominus, quia tecum ego ſum, & ego liberaturus ſum te, dicit Dominus: exitio autem dare decrevi omnes gentes quò te diſperſero, veruntamen cum illis te minimè diſperdam, ſed caſtigaturus ſum te modicè, at non dimittam te.*] [11] *Sic dixit Dominus, Suſcitavi contritionem: plaga tua dolore plena eſt;* [12] *Nec eſt qui cauſam tuam tueatur: curata es in dolore, ſed nulla tibi fuit utilitas:* [13] *(Omnes amici tui obliti ſunt tui, nec interrogant de te) quia percuſſio inimici eſt plaga tua, ob duram animadverſionem in omne ſcelus tuum: plurima ſunt peccata tua:* [14] *Pro multitudine ſcelerum tuorum multiplicatæ eſt animadverſio, peccata tua hæc tibi fecerunt.* [15] *Idcircò omnes qui comederunt eam, devorabuntur, & omnes inimici tui comedent carnem ſuam: qui te procul expulerunt, erunt in expulſionem; & omnes qui te diripuerunt, dabo in direptionem.* [16] *Nam eliciam curationem tuam è plaga dolore plena, & curabo te, dixit Dominus; quia vocata es Diſperſa: & rete præſtò vobis eſt: quia non eſt qui requirat eam.* [17] *Sic ait Dominus, Ecce ego reducam transmigrationem Iſraelis, & miſerebor captivitatis ejus: & reædificabitur urbs ſuper murum ſuum, & populus juxta morem ſuum comedet:* [18] *Et egredientur ex eis canentes, & vox ludentium: & multiplicabo eos, & non minuentur:* [19]

ירמיה : לו

quomodo nobis nunc Nuntia : dicendo ,interrogaverunt Baruch Et
17 וְאֶת־בָּרוּךְ שָׁאֲלוּ לֵאמֹר הַגֶּד־נָא לָנוּ אֵיךְ
: Baruch eis dixit Et .ejus ore ex hæc verba omnia ſcripſiſti
18 כָּתַבְתָּ אֶת־כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה מִפִּיו׃ וַיֹּאמֶר לָהֶם בָּרוּךְ
ſuper ſcribens ego & , hæc verba omnia *me ad* legebat ſuo ore Ex
מִפִּיו יִקְרָא אֵלַי אֵת כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה וַאֲנִי כֹּתֵב עַל־
, tu te abſconde, Vade, Baruch ad principes dixerunt Et .atramēto *in* libro
19 הַסֵּפֶר בַּדְּיוֹ׃ וַיֹּאמְרוּ הַשָּׂרִים אֶל־בָּרוּךְ לֵךְ הִסָּתֵר אַתָּה
regem ad ſunt ingreſſi Et *.vos* ubi ſciat *non vir* & , Irmejahu &
20 וְיִרְמְיָהוּ וְאִישׁ אַל־יֵדַע אֵיפֹה אַתֶּם׃ וַיָּבֹאוּ אֶל־הַמֶּלֶךְ
.ſcribæ Eliſamah cubiculo in commendaverūt volumen & : atrium in
חָצֵרָה וְאֶת־הַמְּגִלָּה הִפְקְדוּ בְּלִשְׁכַּת אֱלִישָׁמָע הַסֹּפֵר
rex miſit Et .verba omnia regis aurib⁹ in nuntiaverūt Et
21 וַיַּגִּדוּ בְּאָזְנֵי הַמֶּלֶךְ אֵת כָּל־הַדְּבָרִים׃ וַיִּשְׁלַח הַמֶּלֶךְ
Eliſamah cubiculo de illud tulit & : volumen *capiendum ad* Jehudi
אֶת־יְהוּדִי לָקַחַת אֶת־הַמְּגִלָּה וַיִּקָּחֶהָ מִלִּשְׁכַּת אֱלִישָׁמָע
omnium auribus in & , regis auribus in Jehudi *illud* legit & ; ſcribæ
הַסֹּפֵר וַיִּקְרָאֶהָ יְהוּדִי בְּאָזְנֵי הַמֶּלֶךְ וּבְאָזְנֵי כָּל־
domo *ſedens* rex Et .regem *deſuper ſtantium* , principum
22 הַשָּׂרִים הָעֹמְדִים מֵעַל הַמֶּלֶךְ׃ וְהַמֶּלֶךְ יוֹשֵׁב בֵּית
fuit Et *.accenſus ejus facies ad rogus* & , nono menſe in , *hyemis*
23 הַחֹרֶף בַּחֹדֶשׁ הַתְּשִׁיעִי וְאֶת־הָאָח לְפָנָיו מְבֹעָרֶת׃ וַיְהִי
illud ſcidit ,quatuor & , pagellas tres Jehudi *legere ſecundum*
כִּקְרוֹא יְהוּדִי שָׁלֹשׁ דְּלָתוֹת וְאַרְבָּעָה יִקְרָעֶהָ
ad uſque , *rogo* in qui , ignem in *projicere* & , ſcribæ *ſcalpello in*
בְּתַעַר הַסֹּפֵר וְהַשְׁלֵךְ אֶל־הָאֵשׁ אֲשֶׁר אֶל־הָאָח עַד־
non Et *.rogum ſuper* qui ,ignem ſuper volumen omne *conſumi*
24 תֹּם כָּל־הַמְּגִלָּה עַל־הָאֵשׁ אֲשֶׁר עַל־הָאָח׃ וְלֹא
, ejus ſervi omnes & , rex , ſua veſtimenta ſciderunt nec , timuerunt
פָחֲדוּ וְלֹא קָרְעוּ אֶת־בִּגְדֵיהֶם הַמֶּלֶךְ וְכָל־עֲבָדָיו
, Elnathan etiam Et .iſta verba omnia *audientes*
25 הַשֹּׁמְעִים אֵת כָּל־הַדְּבָרִים הָאֵלֶּה׃ וְגַם אֶלְנָתָן
comburendum non ad , regem *apud interceſſerunt* Ghemarjahu & , Delajahu &
וּדְלָיָהוּ וּגְמַרְיָהוּ הִפְגִּעוּ בַמֶּלֶךְ לְבִלְתִּי שְׂרֹף
rex præcepit Et .eos *ad* audivit non & : volumen
26 אֶת־הַמְּגִלָּה וְלֹא שָׁמַע אֲלֵיהֶם׃ וַיְצַוֶּה הַמֶּלֶךְ
& , Hazriel filio Serajahu & , Melech filio Jerachmeel
אֶת־יְרַחְמְאֵל בֶּן־הַמֶּלֶךְ וְאֶת־שְׂרָיָהוּ בֶן־עַזְרִיאֵל וְאֶת־
& , ſcribam Baruch *capiendum ad* , Habdeel filio Selemjahu
שֶׁלֶמְיָהוּ בֶּן־עַבְדְּאֵל לָקַחַת אֶת־בָּרוּךְ הַסֹּפֵר וְאֵת
verbum fuit Et .Dominus eos abſcondit & : prophetam Irmejahu
27 יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא וַיַּסְתִּרֵם יְהוָה׃ וַיְהִי דְבַר־
,volumen *regem combuſſiſſe poſt* , Irmejahu ad Domini
יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ אַחֲרֵי שְׂרֹף הַמֶּלֶךְ אֶת־הַמְּגִלָּה
: dicendo Irmejahu ore ex Baruch ſcripſerat quæ verba &
וְאֶת־הַדְּבָרִים אֲשֶׁר כָּתַב בָּרוּךְ מִפִּי יִרְמְיָהוּ לֵאמֹר׃
omnia eo *ſuper* ſcribe & ,alterum volumen tibi tolle ,Revertere
28 שׁוּב קַח־לְךָ מְגִלָּה אַחֶרֶת וּכְתֹב עָלֶיהָ אֵת כָּל־
,priori volumine *ſuper* erant quæ , priora verba
הַדְּבָרִים הָרִאשֹׁנִים אֲשֶׁר הָיוּ עַל־הַמְּגִלָּה הָרִאשֹׁנָה
Jehojachim *ſuper* Et .Jehudah rex Jehojachim combuſſit quod
29 אֲשֶׁר שָׂרַף יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה׃ וְעַל־יְהוֹיָקִים
combuſſiſti Tu : Dominus dixit Sic : dices Jehudah regem
מֶלֶךְ־יְהוּדָה תֹּאמַר כֹּה אָמַר יְהוָה אַתָּה שָׂרַפְתָּ
: dicendo eo *ſuper* ſcripſiſti Quare : dicendo , iſtud volumen
אֶת־הַמְּגִלָּה הַזֹּאת לֵאמֹר מַדּוּעַ כָּתַבְתָּ עָלֶיהָ לֵאמֹר
, hanc terram *corrumpet* & , Babel rex veniet Veniendo
בֹּא־יָבוֹא מֶלֶךְ־בָּבֶל וְהִשְׁחִית אֶת־הָאָרֶץ הַזֹּאת
.animal & hominem ea ex faciet ceſſare &
וְהִשְׁבִּית מִמֶּנָּה אָדָם וּבְהֵמָה׃

Verſio VULG. LAT.

17 Et interrogaverunt eum, dicen-
tes ; Indica nobis quomodò ſcri-
pſiſti omnes ſermones iſtos ex ore
18 ejus. Dixit autem eis Baruch ;
Ex ore ſuo loquebatur quaſi le-
gens ad me omnes ſermones
iſtos : & ego ſcribebam in vo-
19 lumine atramento. Et dixerunt
principes ad Baruch ; Vade, &
abſcondere tu & Jeremias, & ne-
20 mo ſciat ubi ſitis. Et ingreſſi
ſunt ad regem in atrium : porrò
volumen commendaverunt in
gazophylacio Eliſamæ ſcribæ :
& nuntiaverunt audiente rege
21 omnes ſermones. Miſitque rex
Judi ut ſumeret volumen : qui
tollens illud de gazophylacio
Eliſamæ ſcribæ, legit audiente
rege, & univerſis principibus
22 qui ſtabant circa regem. Rex
autem ſedebat in domo hyemali
in menſe nono : & poſita erat
arula coram eo plena prunis.
23 Cúmque legiſſet Judi tres pagel-
las vel quatuor, ſcidit illud ſcal-
pello ſcribæ, & projecit in igné,
qui erat ſuper arulam, donec
conſumeretur omne volumen i-
24 gni, qui erat in arula. Et non
timuerunt, neque ſciderunt ve-
ſtimenta ſua, rex & omnes ſervi
ejus, qui audierunt univerſos
25 ſermones iſtos. Veruntamen El-
nathan, & Dalaias, & Gamarias,
contradixerunt regi ne combure-
ret librum : & non audivit eos.
26 Et præcepit rex Jeremiel filio
Amelech, & Saraiæ filio Ezriel,
& Selemiæ filio Abdeel, ut com-
prehenderent Baruch ſcribam, &
Jeremiam prophetam : abſcon-
27 dit autem eos Dominus. Et fa-
ctum eſt verbum Domini ad Je-
remiam prophetam, poſtquàm
combuſſerat rex volumen, &
ſermones quos ſcripſerat Baruch
28 ex ore Jeremiæ, dicens ; Rur-
ſùm tolle volumen aliud : &
ſcribe in eo omnes ſermones pri-
ores, qui erant in primo volumi-
ne, quod combuſſit Joakim rex
29 Juda. Et ad Joakim regem Ju-
da dices ; Hæc dicit Dominus ;
Tu combuſſiſti volumen illud,
dicens ; Quarè ſcripſiſti in eo
annuntians ; Feſtinus veniet rex
Babylonis, & vaſtabit terram
hanc, & ceſſare faciet ex illa ho-
minem, & jumentum ?

Verſio GRÆC. LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

20 Καὶ εἰσελεύσονται οἱ υἱοὶ (σ) αὐτῶν ὡς τὸ
πρότερον, καὶ τὰ μαρτύρια αὐτῶν (τ)
κατὰ πρόσωπόν μου ὀρθωθήσεται. καὶ ἐπισκέ-
21 ψομαι τοὺς θλίβοντας αὐτούς, Καὶ ἔσον-
ται ἰσχυρότεροι (υ) αὐτοῦ ἐπ᾽ αὐτούς, καὶ ὁ
ἄρχων αὐτοῦ ἐξ αὐτοῦ ἐξελεύσεται. καὶ συν-
άξω αὐτούς, καὶ ἀποστρέψουσι πρός με· ὅτι
τίς ἐστιν οὗτος ὃς ἔδωκε τὴν καρδίαν αὐτοῦ, (φ)
23 ἀποστρέψαι πρός με; φησὶ κύριος. Ὅτι
ὀργὴ κυρίου ἐξῆλθε θυμώδης, ἐξῆλθεν
24 ὀργὴ στρεφομένη, ἐπ᾽ ἀσεβεῖς ἥξει. Οὐ μὴ
ἀποστραφῇ ὀργὴ θυμοῦ κυρίου, ἕως (χ) ποι-
ήσει, καὶ ἕως καταστήσῃ ἐγχείρημα καρδίας
αὐτοῦ, ἐπ᾽ (ψ) ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν γνώ-
σεσθε αὐτά.

Et ingredientur filii eorum, ut
antea : & (o) teſtimonia eorum 20
ante faciem meam dirigentur.
Et viſitabo tribulantes eos. Et e- 21
runt fortiores (p) ejus ſuper eos :
& princeps ejus ex ipſo egredie-
tur. Et congregabo eos, & con-
vertentur ad me : quoniam quis
eſt iſte, qui dedit cor ſuum rever-
ti ad me? dicit Dominus. Quo- 23
niam ira Domini egreſſa eſt fu-
roris plena : egreſſa eſt ira vertens,
ſuper impios veniet. Non aver- 24
tetur ira furoris Domini ; donec
faciet, & donec conſtituet ince-
ptum cordis ſui. In noviſſimis
diebus cognoſcetis ea.

MS.A. (σ) αὐτοῦ (τ) ὡς τὸ ἀπ᾽ ἀρχῆς κατὰ (υ) αὐτῶν (φ) ἐπιστρέψαι (χ) ποιήσῃ, (ψ) ἐσχάτου

Cap. 31. Vulg. Lat.

ΚΕΦ. λη΄.

1 ΕΝ τῷ χρόνῳ ἐκείνῳ, εἶ-
πε κύριος, (α) ἔσομαι εἰς θεὸν τῷ γένει
Ἰσραήλ, (β) καὶ αὐτοὶ ἔσονταί μοι εἰς λα-
2 όν. Οὕτως εἶπε κύριος, Εὗρον θερμὸν
ἐν ἐρήμῳ μετὰ ὀλωλότων ἐν (γ) μαχαίρᾳ.
3 βαδίσατε, καὶ μὴ ὀλέσητε τὸν Ἰσραήλ, Κύριος
πόῤῥωθεν (δ) ὤφθη αὐτῷ. ἀγάπησιν (ε)
αἰώνιον ἠγάπησά σε· διὰ τοῦτο εἵλκυσά σε
4 εἰς οἰκτείρημα. (ϛ) Ὅτι οἰκοδομήσω σε,
καὶ οἰκοδομηθήσῃ παρθένος Ἰσραήλ· ἔτι
λήψῃ τύμπανόν σου, καὶ ἐξελεύσῃ μετὰ συνα-
5 γωγῆς παιζόντων. (ζ) Ὅτι ἐφυτεύσατε
ἀμπελῶνας ἐν ὄρεσι Σαμαρείας, (η) φυ-
6 τεύσατε καὶ αἰνέσατε, Ὅτι ἐστὶν ἡμέρα
κλήσεως ἀπολογουμένων ἐν ὄρεσιν Ἐ-
φραίμ, Ἀνάστητε, καὶ ἀνάβητε εἰς Σιὼν
7 (θ) πρὸς κύριον τὸν θεὸν ὑμῶν. Ὅτι οὕτως
εἶπε κύριος τῷ Ἰακώβ. Εὐφράνθητε. καὶ
χρεμετίσατε ἐπὶ (ι) κεφαλὴν ἐθνῶν· ἀκου-
στὰ ποιήσατε, καὶ αἰνέσατε· εἴπατε, Ἔσω-
σε κύριος τὸν λαὸν αὐτοῦ, τὸ κατάλοιπον
8 τοῦ Ἰσραήλ. Ἰδοὺ ἐγὼ ἄγω αὐτοὺς ἀπὸ Βοῤ-
ῥᾶ, καὶ συνάξω αὐτοὺς (¨) ἀπ᾽ ἐσχάτου τῆς γῆς
ἐν ἑορτῇ φασέκ· καὶ (ˣ) τεκνοποιήσῃ ὄχλον
9 πολύν, καὶ ἀποστρέψουσιν ὧδε. Ἐν κλαυθμῷ
ἐξῆλθον, καὶ ἐν παρακλήσει ἀνάξω αὐτούς,
αὐλίζων ἐπὶ (˙) διώρυγας ὑδάτων ἐν ὁδῷ
ὀρθῇ, καὶ οὐ μὴ πλανηθῶσιν ἐν αὐτῇ· ὅτι
ἐγενόμην τῷ Ἰσραὴλ εἰς πατέρα, καὶ Ἐ-
10 φραὶμ πρωτότοκός μου ἐστίν. Ἀκούσατε λό-
γους κυρίου ἔθνη, καὶ ἀναγγείλατε εἰς νή-
σους τὰς (κ) μακρόθεν· εἴπατε, Ὁ λικ-
μήσας τὸν Ἰσραὴλ (λ) καὶ συνάξει αὐτόν,
καὶ φυλάξει αὐτόν, ὡς ὁ βόσκων ποίμνι-
ον αὐτοῦ.

CAP. XXXVIII.

IN (a) tempore illo, dixit Do- 1
minus, ero in Deum generi Iſraël :
& ipſi erunt mihi in populum.
Sic dixit Dominus ; Inveni (b) 2
calidum in deſerto cum iis, qui
perierant gladio. Ite, & nolite
interficere Iſraël : Dominus de 3
longè (c) apparuit ei. Dilectione
perpetuâ dilexi te : ideò attraxi
te in miſeratione. (d) Quoniam 4
ædificabo te, & ædificaberis, vir-
go (e) Iſraël : adhuc aſſumes
tympanum tuum, & egredieris
cum ſynagoga ludentium. (f)
Quia plantaſtis vineas in mon- 5
tibus Samariæ ; plantate, & lau-
date : Quia eſt dies vocationis 6
reſpondentium in montibus E-
phraim ; Surgite, & aſcendite
in Sion ad Dominum Deum (g)
veſtrum. Quia ſic dixit Dominus 7
ad Jacob ; Lætamini, & hinnite
ſuper caput gentium : audita fa-
cite, et laudate : dicite ; Salva-
vit Dominus populum ſuum, re-
liquum Iſraël. Ecce ego adduco 8
eos ab Aquilone : et congregabo eos
ab extremo terræ in (h) ſolemni-
tate Phaſec. Et generabit filio-
rum turbam multam, et conver-
tentur huc. In ploratu exierunt, 9
et in conſolatione adducam eos,
divertere faciens ſuper foſſas a-
quarum in via recta : et non
errabunt in ea. Quoniam factus
ſum Iſraëli in patrem : et E-
phraim primogenitus meus eſt.
Audite verba Domini, gentes : et 10
annuntiate in inſulas longin-
quas : dicite ; Qui ventilavit
Iſraël, et congregavit eum, et cu-
ſtodiet eum, quaſi paſtor gregem
ſuum.

MS.A. (α) καὶ ἔσομαι (β) καὶ ἔσονταί (γ) μαχαίρῃ. (δ) ὠφθήσεται (ε) αἰωνίαν (ϛ) Ἔτι (ζ) Ἐπεφυτεύσατε (η) φύσαντες φυτεύσατε (θ) ἐν ὄρεσιν κυρίου θεοῦ ἡμῶν. (ι) κεφαλῆς (¨) ἐπ᾽ (ˣ) τεκνοποιήσῃ (˙) διορυγὰς (κ) μακράν· (λ) συνάξει

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 וְיַת בָּרוּךְ שְׁאִילוּ לְמֵימַר חַוִי כְעַן לָנָא אֵיכְדֵין כְּתַבְתָּא יַת כָּל פִּתְגָּמַיָּא הָאִלֵּין מִפּוּמֵיהּ׃
18 וַאֲמַר לְהוֹן בָּרוּךְ מִפּוּמֵיהּ קָרֵי לִי יַת כָּל פִּתְגָּמַיָּא הָאִלֵּין וַאֲנָא כָּתֵיב עַל סִפְרָא בִּדְיוּתָא׃
19 וַאֲמַרוּ רַבְרְבַיָּא לְבָרוּךְ אֵיזִיל אִטְּמַר אַתְּ וְיִרְמְיָה וֶאֱנָשׁ לָא יְדַע אֵיכָא אַתּוּן׃ 20 וַאֲתוֹ לְוָת
מַלְכָּא לְדַרְתָּא וְיַת מְגִלְּתָא פְּקִידוּ בְּלִשְׁכַּת אֱלִישָׁמָע סָפְרָא וְחַוִּיאוּ קֳדָם מַלְכָּא יַת כָּל
21 פִּתְגָּמַיָּא׃ וּשְׁלַח מַלְכָּא יַת יְהוּדִי לְמִסַּב יַת מְגִלְּתָא וּנְסַבַהּ מִלִּשְׁכַּת אֱלִישָׁמָע סָפְרָא
22 וּקְרָהָא יְהוּדִי קֳדָם מַלְכָּא וּקְדָם כָּל רַבְרְבַיָּא דְּקָיְמִין מֵעִלָּוֵי מַלְכָּא׃ וּמַלְכָּא יָתֵיב בֵּית
23 סִתְוָא בְּיַרְחָא תְּשִׁיעָאָה וְיַת נוּרָא קֳדָמוֹהִי מַדְלְקִין׃ וַהֲוָה כַּד קְרֵי יְהוּדִי תְּלָת פַּצִּין
וְאַרְבַּע בְּזַע בְּאִזְמֵל סָפְרָא וּרְמֵי לְנוּרָא דִּלְגוּמְרֵי עַד דִּשְׁלִימַת כָּל מְגִלְּתָא עַל נוּרָא
24 דְּעַל גּוּמְרֵי׃ וְלָא תְּוָהוּ וְלָא בְזַעוּ יַת לְבוּשֵׁיהוֹן מַלְכָּא וְכָל עַבְדּוֹהִי דִּשְׁמַעִין יַת כָּל
25 פִּתְגָּמַיָּא הָאִלֵּין׃ וְאַף אֶלְנָתָן וּדְלָיָה וּגְמַרְיָה בְּעוֹ מִן מַלְכָּא בְּדִיל דְּלָא לְאוֹקָדָא יַת
26 מְגִלְּתָא וְלָא קַבֵּיל מִנְּהוֹן׃ וּפַקֵּיד מַלְכָּא יַת יְרַחְמְאֵל בַּר מַלְכָּא וְיַת שְׂרָיָה בַּר עַזְרִיאֵל
וְיַת שֶׁלֶמְיָה בַּר עַבְדְּאֵל לְמִדְבַּר יַת בָּרוּךְ סָפְרָא וְיַת יִרְמְיָה נְבִיָּא וְאַגֵּין עֲלֵיהוֹן יְיָ׃
27 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יִרְמְיָה בָּתַר דְּאוֹקֵיד מַלְכָּא יַת מְגִלְּתָא וְיַת פִּתְגָּמַיָּא
28 דִּכְתַב בָּרוּךְ מִפּוּמָא דְּיִרְמְיָה לְמֵימַר׃ תּוּב סַב לָךְ מְגִלְּתָא אוּחְרִי וּכְתוֹב עֲלַהּ יַת
כָּל פִּתְגָּמַיָּא קַדְמָאֵי דַּהֲווֹ עַל מְגִלְּתָא קַדְמֵיתָא דְּאוֹקֵיד יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְּבֵית
29 יְהוּדָה׃ וְעַל יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ שִׁבְטָא דְּבֵית יְהוּדָה תֵּימַר כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אַתְּ אוֹקֵדְתָּא יַת
מְגִלְּתָא הָדָא לְמֵימַר מָא דֵין כְּתַבְתָּא עֲלַהּ לְמֵימַר מֵיתֵי יֵיתֵי מַלְכָּא דְּבָבֶל וִיחַבֵּל יַת
אַרְעָא הָדָא וִיבַטֵּל מִנַּהּ אֱנָשָׁא וּבְעִירָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et Baruch interrogaverunt ; dicentes : Indica nunc nobis, quomodo ſcri- 17
pſiſti omnes ſermones iſtos ex ore ejus? Et dixit eis Baruch, Ex ore ſuo le- 18
gebat mihi omnia verba hæc , & ego ſcribebam in volumine atramento.
Et dixerunt principes ad Baruch, Vade, abſcondere tu & Jeremias, & ne- 19
mo ſciat ubi ſitis. Et venerunt ad regem in atrium, & volumen commen- 20
daverunt in gazophylacio Eliſamæ ſcribæ, & nuntiaverunt coram rege
omnes ſermones. Miſitque rex Judi ut ſumeret volumen : & tulit illud de 21
gazophylacio Eliſamæ ſcribæ, & legit Judi coram rege, & coram omni-
bus principibus qui ſtabant circa regem. Et rex ſedebat in domo hyemali 22
in menſe nono, & ignis erat ſuccenſus coram eo. Factum eſt autem cum 23
legiſſet Judi tres paginas aut quatuor, ſcidit illud ſcalpello ſcribæ, & pro-
jecit in ignem ex carbonibus ; donec totum volumen ſuper ignem ex car-
bonibus abſumeretur. Et non obſtupuerunt nec ſciderunt veſtimenta ſua 24
rex & omnes ſervi ejus, qui audierunt omnes ſermones iſtos. Et etiam El- 25
nathan, & Dalaias & Gamarias rogaverunt regem ut non combureret vo-
lumen : & non acquievit eis. Et præcepit rex Hierameel filio regis, & Sa- 26
raiæ filio Azriel, & Selemiæ filio Abdeel ut caperent Baruch ſcribam, &
Jeremiam prophetam ; & protexit eos Dominus. Et factum eſt verbum 27
prophetiæ ad Jeremiam, poſtquam combuſſit rex volumen & ſermones
quos ſcripſerat Baruch ex ore Jeremiæ ; dicens : Rurſum tolle tibi volu- 28
men aliud, et ſcribe in eo omnes ſermones priores, qui erant in volumine
primo quod combuſſit Joachim rex tribus domus Juda. Et ad Joachim re- 29
gem tribus domus Juda dices : Hæc dicit Dominus, Tu combuſſiſti volu-
men iſtud , dicens : Quare ſcripſiſti in eo, dicens, Veniendo veniet rex
Babylonis, et diſperdet terram hanc, et diſperdet ex ea hominem et ju-
mentum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܒܪܘܟ ܫܐܠܘܗܝ ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܚܘܝܢ ܐܝܟܢܐ ܟܬܒܬ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܡܢ
ܦܘܡܗ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܒܪܘܟ. ܡܢ ܦܘܡܗ ܐܡܪ ܗܘܐ ܠܝ ܐܪܡܝܐ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ
ܗܠܝܢ. ܘܐܢܐ ܟܬܒ ܗܘܝܬ ܠܗܘܢ ܥܠ ܟܪܟܐ ܒܕܝܘܬܐ. * ܘܐܡܪܘ ܪܘܪܒܢܐ ܠܒܪܘܟ. ܙܠ ܐܬܛܫܐ
ܘܐܪܡܝܐ. ܘܐܢܫ ܠܐ ܢܕܥ ܐܝܟܐ ܐܝܬܝܟܘܢ. * ܘܥܠܘ ܠܘܬ ܡܠܟܐ ܠܕܪܬܐ. ܘܟܪܟܐ ܐܦܩܕܘ
ܒܬܘܢܐ ܕܐܠܝܫܡܥ ܣܦܪܐ. ܘܚܘܝܘ ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ. * ܘܫܕܪ
ܡܠܟܐ ܠܝܗܘܕܝ ܕܢܝܬܝܘܗܝ ܠܟܪܟܐ. ܘܢܣܒܗ ܡܢ ܬܘܢܐ ܕܐܠܝܫܡܥ ܣܦܪܐ. ܘܩܪܝܗ
ܝܗܘܕܝ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܘܩܕܡ ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܩܝܡܝܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. * ܘܡܠܟܐ ܝܬܒ
ܗܘܐ ܒܒܝܬ ܣܬܘܐ ܒܝܪܚܐ ܕܬܫܥܐ. ܘܢܘܪܐ ܣܝܡܐ ܗܘܬ ܩܕܡܘܗܝ. * ܘܟܕ ܩܪܐ ܝܗܘܕܝ
ܦܬܓܡ ܐܘ ܐܪܒܥ. ܓܙܪܗ ܒܣܟܝܢܐ ܕܣܦܪܐ. ܘܫܕܝܗ ܒܓܘ ܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ. ܥܕܡܐ ܕܣܦ ܟܠܗ ܟܪܟܐ
ܒܢܘܪܐ ܕܥܠ ܐܬܘܢܐ. * ܘܠܐ ܕܚܠܘ ܘܠܐ ܨܪܝܘ ܢܚܬܝܗܘܢ. ܡܠܟܐ ܘܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ
ܕܫܡܥܘ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ. * ܘܐܦ ܐܠܢܬܢ. ܘܓܡܪܝܐ ܘܕܠܝܐ. ܒܥܘ ܡܢ
ܡܠܟܐ ܕܠܐ ܢܘܩܕܝܘܗܝ ܠܟܪܟܐ ܒܢܘܪܐ. ܘܠܐ ܫܡܥ ܠܗܘܢ. * ܘܦܩܕ ܡܠܟܐ ܠܝܪܚܡܐܝܠ
ܒܪ ܡܠܟܐ. ܘܠܣܪܝܐ ܒܪ ܥܙܪܐܝܠ ܘܠܫܠܡܝܐ ܒܪ ܥܒܕܐܝܠ. ܠܡܐܚܕ ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ
ܘܠܒܪܘܟ ܣܦܪܐ. ܘܛܫܐ ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ
ܡܢ ܒܬܪ ܕܐܘܩܕ ܡܠܟܐ ܟܪܟܐ. ܘܦܬܓܡܐ ܕܟܬܒ ܒܪܘܟ ܡܢ ܦܘܡܗ
ܕܐܪܡܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܬܘܒ ܣܒ ܠܟ ܟܪܟܐ ܐܚܪܢܐ. ܘܟܬܘܒ ܒܗ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ
ܩܕܡܝܐ ܕܗܘܘ ܒܟܪܟܐ ܩܕܡܝܐ. ܕܐܘܩܕ ܝܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ
ܒܢܘܪܐ. * ܘܠܝܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܬܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢܬ ܐܘܩܕܬ
ܟܪܟܐ ܗܢܐ ܘܐܡܪܬ. ܡܛܠ ܡܢܐ ܟܬܒܬ ܒܗ. ܕܡܐܬܐ ܐܬܐ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ
ܘܡܚܪܒ ܠܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܘܡܘܒܕ ܡܢܗ ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ.

* Baruchum autem rogaverunt, & dixerunt 17
ei, Indica nobis quomodo ſcripſeris omnes
ſermones iſtos eo dictante. Quibus ait Ba- 18
ruch, Ore ſuo pronuntiabat mihi Jeremia
omnes ſermones iſtos, & ego atramento ſcri-
bebam in libro. Dixerunt principes Ba- 19
rucho, Vade; & abdere tu & Jeremia, &
nemo ſciat ubi ſitis. Tum venerunt ad re- 20
gem in atrium, depoſito volumine in di-
verſorio Eliſemai ſcribæ, & indicaverunt
regi omnes ſermones illos. Miſit ergò rex 21
Jehudium ut afferret volumen, qui arreptum
è diverſorio Eliſemai ſcribæ, legit illud Je-
hudius coram rege & coram cunctis princi-
pibus qui aſtabant regi. (Rex autem ſede- 22
bat in domo hyberna menſe nono, ignémque
ponebant ante ipſum) Cúmque legiſſet Je- 23
hudius tres aut quatuor periodos, laceravit
illud ſcalpro librario, & projecit in carbo-
nes ignis, ita ut totum volumen arderet igne
qui foco ſuperpoſitus erat. Nec interim 24
horruerunt, neque veſtimenta ſua ſciderunt
rex & omnes ſervi ejus, omnibus ejuſmodi
ſermonibus auditis. Quin etiam Eliathane, 25
& Gemaria, atque Delaia regem precanti-
bus, ne volumen illud igne combureret, non
acquievit eis: Imò præcepit rex Jerahmeeli 26
filio regis, & Seriæ filio Azrielis, & Sela-
miæ filio Abdielis, ut apprehenderent Jere-
miam prophetam & Baruchum ſcribam; ſed
abſcondit eos Dominus. Fuit autem ſermo 27
Domini ad Jeremiam prophetam, (poſtquam
exuſſiſſet rex volumen & ſermones quos ſcri-
pſerat Baruch dictante Jeremiâ) dicendo;
Iterum ſume tibi volumen alterum, & ſcribe 28
in eo omnes ſermones priores qui erant in
volumine quod Jojacim rex Judæ igne com-
buſſit. Ad Jojacim autem regem Judæ di- 29
ces, Sic ait Dominus, Tu volumen iſtud
exuſſiſti, & dixiſti, Quare ſcripſiſti in eo
venturum regem Babyloniæ, & terram iſtam
vaſtaturum, & aboliturum ab ea homines
ac jumenta?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولا يخرج بنوهم مثل الأول * وشهاداتهم لوجهي تستقيم * وأتعهد مخربيهم * ويصيرون أقوى
منهم عليهم * ورئيسه منه يخرج * وأجمعهم ولا يرجعون إلي * لأن من هو هذا الذي أعطى
قلبه إلي قال الرب [MS. Oxon. * ويصيرون لي شعبا وأنا أكون لهم الها] * لأن رجز الرب
خرج * مسخط خرج * رجز مرجع ملتف على المنافقين يأتي * لا يرتد رجز غضب الرب حتى
يفعل وحتى يقيم هوى قلبه في الأيام الآخرين تعرفوها *

* الفصل الثامن والثلثون *

* في ذلك الزمان قال الرب * أكون لجنس إسرائيل
إلها وهم يكونون لي شعبا *

* الإصحاح الرابع والعشرون *

* هكذا قال الرب * وجدت حارا في القفر * ضالين بسيف تذهبون * وليس هكذا * الرب
من بعيد يظهر له * أحببتك بحبة أبدية * لأجل هذا اجتذبتك للرأفة * لأني أبنيك
وتبنين يا عذري إسرائيل * تأخذي دفك أيضا وتخرجين مع جمع اللاعبين * لأني غرست
كروما في جبال سامرن * اغرسوا وسبحوا * لأنه يوم حكم المجاوبين في جبل أفرام * قوموا
واصعدوا إلى صهيون إلى الرب إلهنا * لأن هكذا قال الرب ليعقوب * افرحوا واصهلوا
على رأس الأمم * أسمعوا مسمعات وسبحوا * قولوا خلص الرب شعبه بقية إسرائيل
أنا أسوقهم من الجربياء * وأجمعهم من آخر الأرض في عيد الفصح * وأجعل البنين
كثيرا ويعودون إلى ههنا * ببكاء خرجوا وبتعزية سأجلبهم * أدبرهم على خلجان الماء
في أرض مستقيمة * فلا يضلون فيها * لأني صرت لإسرائيل أبا * وأفرام هو بكري * اسمعوا
أقوال الرب أيها الأمم * وأخبروا في الجزائر البعيدة * وقولوا الذي غربل إسرائيل يجمعه ويحفظه
مثل راعي قطيعه *

* *Et non egredientur filii eorum ut antea:* 20
et teſtimonia eorum ad conſpectum meum
dirigentur: & viſitabo affligentes eos, &
erunt fortiores eis contra ipſos: Et prin- 21
ceps ejus ex ipſo prodibit, & congregabo
eos. At tamen non convertentur ad me; nam
quis eſt ille qui dedidit mihi cor ſuum, di-
xit Dominus? [MS. Oxon. *Et illi erunt* 22
mihi populus, & ego ero illis Deus.] *Nam* 23
ira Domini prodivit, indignabunda pro-
divit, ira retorta convoluta ſuper impios
veniet. Non avertetur ira furoris Do- 24
mini, donec exequatur, & donec præſtet
voluntatem cordis ejus. Poſtremis diebus
hæc ſcietis.

CAP. XXXVIII.

IN illo tempore, ait Dominus, ero generi 1
Iſraelitico Deus, & ipſi erunt mihi popu-
lus.

Textus vigeſimus quartus.

* *Sic dixit Dominus, Inveni calidum in de-* 2
ſerto: errantes gladio peribetis? non ita.
Dominus à longè apparebit ei. Dilexi te 3
dilectione perpetuâ, ideò attraxi te ad cle-
mentiam. Nam ædificabo te, & ædifica- 4
beris O virgo Iſraelis: ſumes adhuc tym-
panum tuum, & prodibis cum turba lu-
dentium. Quia vineas plantavi in mon- 5
tibus Samariæ, plantate & canite: Quia 6
dies eſt judicii reſpondentium in monte
Aphraimi, ſurgite & aſcendite in Sionem
ad Dominum Deum noſtrum. Sic enim 7
dixit Dominus Jacobo; Lætamini, & hin-
nite ſuper capite gentium, res celebres fa-
cite, & laudate: dicite, Servavit Do-
minus populum ſuum, reliquias Iſrae-
lis. Et ego adducam eos ex Aquilone, 8
& colligam eos ab extremo terræ in feſto
Paſchatis: filios reddam turbam pluri-
mam, & revertentur huc. Cum fletu 9
exierunt, ſed cum conſolatione reducam
eos: regam eos ſuper canales aquarum
per terram planam, in qua non aberra-
bunt: factus enim ſum Iſraeli pater, &
Aphrem eſt primogenitus meus. Audite 10
ſermones Domini O gentes, & annuntia-
te in inſulis remotis: dicite, Qui cribra-
vit Iſraelem, colliget eum, & cuſtodiet
eum ut paſtor gregem ſuum.

ירמיה : לו

Non : Jehudah regem Jehoiachim super Dominus dixit sic Propterea
30 לָכֵן כֹּה־אָמַר יְהוָה עַל־יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ יְהוּדָה לֹא־
projectum erit ejus cadaver & :David solio super sedens ei erit
יִהְיֶה־לּוֹ יוֹשֵׁב עַל־כִּסֵּא דָוִד וְנִבְלָתוֹ תִּהְיֶה מֻשְׁלֶכֶת
,ej^o semen super & ,eo super visitabo Et .nocte in gelu ad & ,die in æstum ad
31 לַחֹרֶב בַּיּוֹם וְלַקֶּרַח בַּלָּיְלָה׃ וּפָקַדְתִּי עָלָיו וְעַל־זַרְעוֹ
super & ,eos super adducam & : eorum iniquitatem, ejus servos super &
וְעַל־עֲבָדָיו אֶת־עֲוֺנָם וְהֵבֵאתִי עֲלֵיהֶם וְעַל־
quod ,malum omne Jehudah virum ad & ,Jerusalaim habitatores
יֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלַםִ וְאֶל־אִישׁ יְהוּדָה אֵת כָּל־הָרָעָה אֲשֶׁר־
volumen tulit Irmejahu & .audierunt non & : eos ad sum locutus
32 דִּבַּרְתִּי אֲלֵיהֶם וְלֹא שָׁמֵעוּ׃ וְיִרְמְיָהוּ לָקַח מְגִלָּה
scripsit & ,scribam Nerijahu filium Baruch ad illud dedit & ,alterum
אַחֶרֶת וַיִּתְּנָהּ אֶל־בָּרוּךְ בֶּן־נֵרִיָּהוּ הַסֹּפֵר וַיִּכְתֹּב
combusserat quem ,libri verba omnia Irmeiahu ore ex eo super
עָלֶיהָ מִפִּי יִרְמְיָהוּ אֵת כָּל־דִּבְרֵי הַסֵּפֶר אֲשֶׁר שָׂרַף
verba ea super est additum adhuc & :igni in ,Jehudah rex Jehojachim
יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה בָּאֵשׁ וְעוֹד נוֹסַף עֲלֵיהֶם דְּבָרִים
sicut ea multa
רַבִּים כָּהֵמָּה׃

CAP. XXXVII. לז

,Jehoiachim filio Chonjahu pro Josijahu filius Sidchijahu rex regnavit Et
1 וַיִּמְלָךְ־מֶלֶךְ צִדְקִיָּהוּ בֶּן־יֹאשִׁיָּהוּ תַּחַת כָּנְיָהוּ בֶּן־יְהוֹיָקִים
non Et .Jehudah terra in Babel rex Nebuchadresar constituit rege quem
2 אֲשֶׁר הִמְלִיךְ נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל בְּאֶרֶץ יְהוּדָה׃ וְלֹא
quæ ,Domini verba ad ,terræ populus & ,ej^o servi & ,ipse obedivit
שָׁמַע הוּא וַעֲבָדָיו וְעַם הָאָרֶץ אֶל־דִּבְרֵי יְהוָה אֲשֶׁר
Sidchijahu rex misit Et .prophetæ Irmeiahu manu in est locut^o
3 דִּבֶּר בְּיַד יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא׃ וַיִּשְׁלַח הַמֶּלֶךְ צִדְקִיָּהוּ אֶת־
ad sacerdotē Mahasejah filium Sephanjahu & ,Selemiah filium Jehuchal
יְהוּכַל בֶּן־שֶׁלֶמְיָה וְאֶת־צְפַנְיָהוּ בֶן־מַעֲשֵׂיָה הַכֹּהֵן אֶל־
Dominum ad nobis pro quæso Ora : dicendum ad ,prophetam Irmejahu
יִרְמְיָהוּ הַנָּבִיא לֵאמֹר הִתְפַּלֶּל־נָא בַעֲדֵנוּ אֶל־יְהוָה
dederunt non & :populi medio in egrediens & ,venit Irmejahu Et .nostrū Deū
4 אֱלֹהֵינוּ׃ וְיִרְמְיָהוּ בָּא וְיֹצֵא בְּתוֹךְ הָעָם וְלֹא־נָתְנוּ
,Ægypto de est egressus Parhoh virtus Et .carceris domum eum
5 אֹתוֹ בֵּית הַכְּלִיא׃ וְחֵיל פַּרְעֹה יָצָא מִמִּצְרָיִם
,eorum auditum ,Jerusalaim super obsidentes ,Chasdim audierunt &
וַיִּשְׁמְעוּ הַכַּשְׂדִּים הַצָּרִים עַל־יְרוּשָׁלַםִ אֶת־שִׁמְעָם
Irmejahu ad Domini verbum fuit Et .Jerusalaim desuper ascenderunt &
6 וַיֵּעָלוּ מֵעַל יְרוּשָׁלָםִ׃ וַיְהִי דְּבַר־יְהוָה אֶל־יִרְמְיָהוּ
Sic ,Israel Deus Dominus dixit Sic : dicendo ,prophetam
7 הַנָּבִיא לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל כֹּה
:me quærendum ad ,me ad vos mittentem ,Jehudah regem ad dicetis
תֹאמְרוּ אֶל־מֶלֶךְ יְהוּדָה הַשֹּׁלֵחַ אֶתְכֶם אֵלַי לְדָרְשֵׁנִי
suam terram in est reversus auxilium in vobis exiens Parhoh virtus Ecce
הִנֵּה חֵיל פַּרְעֹה הַיֹּצֵא לָכֶם לְעֶזְרָה שָׁב לְאַרְצוֹ
;hanc civitatem super bellabunt & ,Chasdim redibunt Et .Ægyptum
8 מִצְרָיִם׃ וְשָׁבוּ הַכַּשְׂדִּים וְנִלְחֲמוּ עַל־הָעִיר הַזֹּאת
: Dominus dixit Sic .igni in eam succendent & ,eam capient &
9 וּלְכָדֻהָ וּשְׂרָפֻהָ בָאֵשׁ׃ כֹּה אָמַר יְהוָה
nobis desuper ibunt Eundo : dicendo ,vestras animas decipiatis Ne
אַל־תַּשִּׁאוּ נַפְשֹׁתֵיכֶם לֵאמֹר הָלֹךְ יֵלְכוּ מֵעָלֵינוּ
omnem percusseritis si Quia .ibunt non quia ,Chasdim
10 הַכַּשְׂדִּים כִּי־לֹא יֵלֵכוּ׃ כִּי אִם־הִכִּיתֶם כָּל־
viri eis in remaneant & ,vobiscum pugnantium ,Chasdim virtutem
חֵיל כַּשְׂדִּים הַנִּלְחָמִים אִתְּכֶם וְנִשְׁאֲרוּ־בָם אֲנָשִׁים
incendent & ,consurgent ,suo tentorio in unusquisque ,transfixi
מְדֻקָּרִים אִישׁ בְּאָהֳלוֹ יָקוּמוּ וְשָׂרְפוּ אֶת־
.igni in hanc civitatem
הָעִיר הַזֹּאת בָּאֵשׁ׃

Verſio VULG. LAT.

30 Propterea hæc dicit Dominus contra Joakim regem Juda; Non erit ex eo qui ſedeat ſuper ſolium David: & cadaver ejus projicietur ad æſtum per diem, & ad gelu per noctem. 31 Et viſitabo contra eum, & contra ſemen ejus, & contra ſervos ejus, iniquitates ſuas; & adducam ſuper eos, & ſuper habitatores Jeruſalem, & ſuper viros Juda, omne malum, quod locutus ſum ad eos, & non audierunt. 32 Jeremias autem tulit volumen aliud, & dedit illud Baruch filio Neriæ ſcribæ: qui ſcripſit in eo ex ore Jeremiæ omnes ſermones libri, quem combuſſerat Joakim rex Juda igni: & inſuper additi ſunt ſermones multo plures, quam antea fuerant.

CAP. XXXVII.

1 ET regnavit rex Sedecias filius Joſiæ pro Jechonia filio Joakim: quem conſtituit regem Nabuchodonoſor rex Babylonis in terra Juda. 2 Et non obedivit ipſe, & ſervi ejus, & populus terræ, verbis Domini, quæ locutus eſt in manu Jeremiæ prophetæ. 3 Et miſit rex Sedecias Juchal filium Selemiæ, & Sophoniam filium Maaſiæ ſacerdotem, ad Jeremiam prophetā, dicens, Ora pro nobis Dominum Deum noſtrum. 4 Jeremias autem libere ambulabat in medio populi: non enim miſerant eum in cuſtodiam carceris. Igitur exercitus Pharaonis egreſſus eſt de Ægypto: & audientes Chaldæi, qui obſidebant Jeruſalem, hujuſcemodi nuntium, 5 receſſerunt ab Jeruſalem. Et factum eſt verbum Domini ad Jeremiam prophetam, dicens; 6 Hæc dicit Dominus, Deus Iſrael; Sic dicetis regi Juda, qui miſit vos ad me interrogandum; Ecce exercitus Pharaonis, qui egreſſus eſt vobis in auxilium, revertetur in terram ſuam in Ægyptum. 7 Et redient Chaldæi, & bellabunt contra civitatem hanc: & capient eam, & ſuccendent eam igni. 8 Hæc dicit Dominus, Nolite decipere animas veſtras, dicentes; Euntes abibunt, & recedent à nobis Chaldæi; quia non abibunt. 9 Sed & ſi percuſſeritis omnem exercitum Chaldæorum, qui prœliantur adverſùm vos, & derelicti fuerint ex eis aliqui vulnerati: ſinguli de tentorio ſuo conſurgent, & incendent civitatem hanc igni.

Verſio GRÆC. LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

11 Ὅτι ἐλυτρώσατο κύριος τὸν Ἰακὼβ, ἐξείλατο αὐτὸν ἐκ χειρὸς στερεωτέρων αὐτοῦ. 12 Καὶ ἥξουσι, καὶ εὐφρανθήσονται ἐν τῷ ὄρει Σιὼν, καὶ ἥξουσιν ἐπ' ἀγαθὰ κυρίου, ἐπὶ γῆν σίτου καὶ οἴνου, καὶ καρπῶν, καὶ κτηνῶν, καὶ προβάτων· καὶ ἔσται ἡ ψυχὴ αὐτῶν ὥσπερ ξύλον (μ) ἔγκαρπον, καὶ οὐ πεινάσουσιν ἔτι. 13 Τότε χαρήσονται παρθένοι ἐν συναγωγῇ νεανίσκων, καὶ πρεσβῦται χαρήσονται, καὶ στρέψω τὸ πένθος αὐτῶν εἰς (ν) χαρμονὴν, καὶ ποιήσω αὐτοὺς εὐφραινομένους. 14 Μεγαλυνῶ καὶ μεθύσω τὴν ψυχὴν τῶν ἱερέων υἱῶν Λευὶ, καὶ ὁ λαός μου τῶν ἀγαθῶν μου ἐμπλησθήσεται· οὕτως εἶπε κύριος. 15 Φωνὴ (ξ) ἐν Ῥαμᾷ ἠκούσθη θρήνου, καὶ κλαυθμοῦ, καὶ ὀδυρμοῦ· Ῥαχὴλ (ο) ἀποκλαιομένη οὐκ ἤθελε παύσασθαι ἐπὶ τοῖς υἱοῖς αὐτῆς, ὅτι οὐκ εἰσίν. 16 Οὕτως εἶπε κύριος, Διαλειπέτω ἡ φωνή σου ἀπὸ κλαυθμοῦ, καὶ οἱ ὀφθαλμοί σου ἀπὸ (π) δακρύων σου, ὅτι ἔστι μισθὸς τοῖς σοῖς ἔργοις, καὶ ἐπιστρέψουσιν ἐκ γῆς ἐχθρῶν, 17 Μόνιμον τοῖς σοῖς τέκνοις. 18 Ἀκοὴν ἤκουσα Ἐφραὶμ ὀδυρομένου, Ἐπαίδευσάς με, καὶ ἐπαιδεύθην· ἐγὼ ὥσπερ μόσχος οὐκ ἐδιδάχθην. ἐπίστρεψόν με, καὶ ἐπιστρέψω, ὅτι σὺ κύριος ὁ θεός μου. 19 Ὅτι ὕστερον αἰχμαλωσίας μου μετενόησα, καὶ ὕστερον τοῦ γνῶναί με, ἐστέναξα ἐφ' ἡμέρας αἰσχύνης, καὶ ὑπέδειξά σοι, ὅτι ἔλαβον ὀνειδισμὸν ἐκ νεότητός μου. 20 Υἱὸς ἀγαπητὸς Ἐφραὶμ, ἐμοὶ παιδίον ἐντρυφῶν, ὅτι ἀνθ' ὧν οἱ λόγοι μου ἐν αὐτῷ, μνείᾳ μνησθήσομαι αὐτοῦ, διὰ τοῦτο ἔσπευσα ἐπ' αὐτῷ, ἐλεῶν ἐλεήσω αὐτὸν, φησὶ κύριος. 21 Στῆσον σεαυτὴν Σιὼν, ποίησον τιμωρίαν, δὸς καρδίαν σου εἰς τοὺς ὤμους (ρ) ὁδὸν ἣν ἐπορεύθης, (σ) ἀποστράφηθι παρθένος Ἰσραὴλ, ἀποστράφηθι εἰς τὰς πόλεις σου πενθοῦσα. 22 Ἕως πότε ἀποστρέψεις θυγάτηρ ἠτιμωμένη; ὅτι ἔκτισε κύριος σωτηρίαν εἰς καταφύτευσιν καινὴν, (τ) ἐν σωτηρίᾳ περιελεύσονται ἄνθρωποι. 23 (υ) Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, Ἔτι ἐροῦσι τὸν λόγον τοῦτον ἐν γῇ Ἰούδα, καὶ ἐν πόλεσιν αὐτοῦ, ὅταν ἀποστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν αὐτοῦ, Εὐλογημένος κύριος ἐπὶ δίκαιον ὄρος τὸ ἅγιον αὐτοῦ. 24 Καὶ (φ) ἐνοικοῦντες ἐν ταῖς πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἐν (χ) πάσῃ τῇ γῇ αὐτοῦ, ἅμα γεωργῷ, καὶ ἀρθήσεται ἐν ποιμνίῳ.

Redemit enim Dominus [illegible] *liberavit eum de manu* [illegible] *Et venient, & lætabuntur in monte Sion: &* [illegible] *ad bona Domini, ad terram* [illegible] *& vini, & frugum, & jumentorum, & ovium: & erit anima eorum, quasi lignum fructiferum: & non esurient ultra. Tunc gaudebunt virgines in ſynagoga juvenum, & ſenes gaudebunt: &* [illegible] *luctum eorum in gaudium (ν) & faciam eos lætantes. Magnificabo, &* [illegible] *ſacerdotum* [illegible] *& populus meus* [illegible] *replebitur: Sic dixit Dominus. Vox in Rhama audita eſt lamentationis, & ploratus, &* [illegible] *Rachel plorans* [illegible] *(o) conquieſcere* [illegible] *quia non ſunt. Sic dixit Dominus, Deficiat vox tua à* [illegible] *et oculi tui à* [illegible] *eſt merces* [illegible] *&* [illegible] *de terra inimicorum. (m) Stabile filiis tuis.* [illegible] *Ephraim lamentantem, Caſtigaſti me, & (n)* [illegible] *ego, tanquam vitulus, non didici. Converte me, & convertar, quia tu Dominus Deus meus. Quia poſt captivitatem meam* [illegible] *cognoſcere, ingemui* [illegible] *confuſionis, et* [illegible] *quoniam accepi* [illegible] *ab adoleſcentia mea. Filius dilectus Ephraim mihi, puer delicatus: quia ex* [illegible] *mea in eo; memoria* [illegible] *bor ejus: ideò* [illegible] *ſuper eo; miſerans miſerebor ejus, ait Dominus. Statue te* [illegible] *(q) Sion, fac pœnam, da cor tuum in humeros: viâ, in qua ambulâſti, revertere virgo Iſrael, revertere in civitates tuas lugens. Uſquequò (r) convertis* [illegible] *deſpecta? quoniam creavit Dominus* [illegible] *nova: in ſalute circuibunt homines: Quia ſic dixit Dominus: Adhuc dicent* [illegible] *in terra Juda, et in* [illegible] *quando reduxero captivitatem ejus; Benedictus Dominus* [illegible] *juſtum montem ſanctum* [illegible] *Et qui habitant in (t)* [illegible] *Juda, et in omni terra* [illegible] *ſimul cum agricola, et* [illegible]

MS.A. (μ) ἔγκαρπον, (ν) εὐφροσύνην, (ξ) ἐν τῇ ὑψηλῇ ἠκούσθη [illegible] ἀποκλαιομένης ἐπὶ τῶν υἱῶν αὐτῆς, καὶ οὐκ ἤθελεν παρακληθῆναι [illegible] εἰσίν. (π) δακρύων, ὅτι (ρ) σου ὁδὸν ἣν (σ) ἀποστράφητι παρθένος [illegible] Ἱερουσαλὴμ, ἀποστράφητι [illegible] (υ) Οὕτως εἶπε (φ) οἱ ἐνοικοῦντες [illegible] ἐν πόλεσιν (χ) * πάσαις ταῖς πόλεσιν αὐτοῦ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

30 בכן כדנן אמר יי על יהויקים מלך שבטא דבית יהודה לא יהי ליה יתיב על כורסי דוד
31 ונבלתיה תהי משנרא לשרבא בימָמא ולגלידא בליליא : ואסער עלוהי ועל בנוהי ועל
עבדוהי ית חוביהון ואיתי עליהון ועל יתבי ירושלם ועל אנש יהודה ית כל בישתא
32 דגזרית עליהון ולא קבילו : וירמיה נסיב מגלא אוחרי ויהבה לברוך בר נריה ספרא
וכתב עלה מפומא דירמיה ית כל פתגמי ספרא דאוקיד יהויקים מלך שבטא דבית
יהודה בנורא ועוד אתוספו עליהון פתגמין סגיאין כותהון :

לז

1 ומלך מלכא צדקיה בר יאשיה חלף כניה בר יהויקים דאמליך נבוכד נצר מלכא דבבל
2 בארעא דבית יהודה : ולא קביל הוא ועבדוהי ועמא דארעא לפתגמיא דיי דמליל ביד
3 ירמיהו נביא : ושלח מלכא צדקיהו ית יהוכל בר שלמיה וית צפניה בר מעשיה
4 כהנא לות ירמיה נביא למימר צלי כען עלנא קדם יי אלהנא : וירמיה עאיל ונפיק
5 בגו עמא ולא יהבו יתיה בבית אסירי : ומשרית פרעה נפקא ממצרים ושמעו כסדאי
6 דצירין על ירושלם ית שמעהון ואסתלקו מעל ירושלם : והוה פתגם נבואה מן קדם
7 יי עם ירמיה למימר : כדנן אמר יי אלהא דישראל כדין תימרון למלך שבטא דבית
יהודה דשלח יתכון לקדמי למתבע אולפן מן קדמי הא משרית פרעה דנפקא לכון
8 לסעיד תבא לארעהון למצרים : ויתובון כסדאי ויגיחון קרבא על קרתא הדא
9 ויכבשונה ויוקדונה בנורא : כדנן אמר יי לא תטעון נפשתכון למימר אסתלקא
10 יסתלקון מננא כסדאי ארי לא יסתלקון : ארי אם תקטלון כל משרית כסדאי דגיחין
קרבא עמכון וישתארון בהון גברין [illegible] יקומון ויוקדון ית קרתא
הדא בנורא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Propterea hæc dicit Dominus ad Joachim regem tribus domus Juda, Non erit ei ſedens ſuper ſolium David, & cadaver ejus erit projectum ad æſtum per diem, & ad gelu per noctem. Et viſitabo ſuper eum & ſuper filios ejus, & ſuper ſervos ejus peccata eorum; & adducam ſuper eos, & ſuper habitatores Jeruſalem, & ſuper viros Juda omne malum quod decrevi contra eos, & non obedierunt. Jeremias autem tulit volumen aliud, & dedit illud Baruch filio Neriæ ſcribæ: & ſcripſit in eo ex ore Jeremiæ omnes ſermones libri, quem combuſſit Joachim rex tribus domus Juda igni: & rurſum additi ſunt eis ſermones multi, eis ſimiles.

CAP. XXXVII.

ET regnavit rex Sedechias fili^ Joſiæ pro Jechonia filio Joachim, quem conſtituit regem Nabuchodonoſor rex Babylonis, in terra domus Juda. Et non obedivit ipſe & ſervi ejus, & populus terræ verbis Domini, quæ locutus eſt per manum Jeremiæ prophetæ. Et miſit rex Sedechias Juchal filium Selemiæ, & Sophoniam filium Maaſiæ ſacerdotem ad Jeremiam prophetam; dicens: Ora nunc pro nobis coram Domino Deo noſtro. Et Jeremias ingrediebatur & egrediebatur in medio populi, & non tradiderunt eum in domum vinctorum. Exercitus autem Pharaonis egreſſus eſt de Ægypto; & audierunt Chaldæi, qui obſidebant Jeruſalem [illegible] mam eorum, & receſſerunt ab Jeruſalem. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad Jeremiam, dicens: Hæc dicit Dominus Deus Iſrael, Sic dicetis regi tribus domus Juda, qui miſit vos coram me [illegible] tendum oraculum à facie mea. Ecce exercitus Pharaonis qui egreſſus [illegible] in auxilium veſtrum, reverſus eſt in terram ſuam, in Ægyptum. Et [illegible] tentur Chaldæi, & pugnabunt adverſus civitatem hanc, & [illegible] & ſuccendent eam igni. Hæc dicit Dominus, Ne decipiatis [illegible] ſtras, dicendo; [illegible] a nobis Chaldæi, quia non [illegible] dent. Nam ſi occideritis omnem exercitum Chaldæorum [illegible] adverſus vos, & remanſerint in eis viri vulnerati, ſinguli [illegible] lo ſuo conſurgent, & ſuccendent civitatem illam igni.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܝܗܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ
ܕܢܬܒ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ ܕܕܘܝܕ. ܘܫܠܕܗ ܢܗܘܐ ܫܕܐ ܒܫܘܒܐ ܕܐܝܡܡܐ. ܘܒܓܠܝܕܐ
ܕܠܠܝܐ. * ܘܐܦܩܘܕ ܥܠܘܗܝ ܘܥܠ ܙܪܥܗ ܘܥܠ ܥܒܕܘܗܝ ܚܛܗܝܗܘܢ. ܘܐܝܬܐ ܥܠܝܗܘܢ
ܘܥܠ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܘܥܠ ܐܢܫܐ ܕܝܗܘܕܐ ܀ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܐܡܪܬ
ܥܠܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥܘ ܠܩܠܝ. ܘܐܪܡܝܐ ܢܣܒ ܡܓܠܬܐ ܐܚܪܬܐ. ܘܝܗܒܗ ܠܒܪܘܟ
ܒܪ ܢܪܝܐ ܣܦܪܐ. ܘܟܬܒ ܒܗ ܡܢ ܦܘܡܗ ܕܐܪܡܝܐ. ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܐ. ܕܟܬܝܒܝܢ
ܗܘܘ ܒܟܬܒܐ. ܕܐܘܩܕ ܝܗܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܒܢܘܪܐ. ܘܥܘܕ. ܐܘܣܦ ܥܠܝܗܘܢ ܦܬܓܡܐ
ܕܣܓܝܐܝܢ ܐܟܘܬܗܘܢ. * ܦܘܠܓܐ ܟܙ *

* ܘܐܡܠܟ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ ܒܪ ܝܘܫܝܐ. ܚܠܦ ܝܘܟܢܝܐ ܒܪ ܝܗܘܝܩܝܡ ܀ ܕܐܡܠܟܗ ܢܒܘܟܕ
ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܘܠܐ ܫܡܥ ܗܘ ܘܥܒܕܘܗܝ ܘܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܠܦܬܓܡܘܗܝ
ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪ ܒܝܕ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. * ܘܫܕܪ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ ܠܝܘܟܠ ܒܪ ܫܠܡܝܐ. ܘܠܨܦܢܝܐ
ܒܪ ܡܥܣܝܐ ܟܗܢܐ ܀ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܡܐܡܪ. ܨܠܝ ܥܠܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. * ܘܐܪܡܝܐ
ܢܦܩ ܗܘܐ ܘܥܐܠ ܒܝܢܝ ܥܡܐ ܀ ܘܠܐ ܐܪܡܝܘܗܝ ܒܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. * ܘܚܝܠܗ ܕܦܪܥܘܢ ܢܦܩ
ܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܘܫܡܥܘ ܟܠܕܝܐ ܕܝܬܒܝܢ ܗܘܘ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܫܡܥܗܘܢ ܀ ܘܣܠܩܘ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ
* ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܐܡܪܘ ܠܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܫܕܪܟܘܢ ܠܘܬܝ ܠܡܫܐܠܢܝ. ܗܐ ܚܝܠܗ
ܕܦܪܥܘܢ ܕܢܦܩ ܠܥܘܕܪܢܟܘܢ ܀ ܗܦܟ ܠܐܪܥܗ ܠܡܨܪܝܢ. * ܘܢܗܦܟܘܢ ܟܠܕܝܐ
ܘܢܬܟܬܫܘܢ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܀ ܘܢܟܒܫܘܢܗ ܘܢܘܩܕܘܢܗ ܒܢܘܪܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܠܢܦܫܟܘܢ ܘܬܐܡܪܘܢ ܕܡܐܙܠ ܐܙܠܝܢ ܡܢܢ ܟܠܕܝܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܙܠܝܢ. * ܕܐܦܠܘ
ܠܚܝܠܗܘܢ ܟܠܗ ܕܟܠܕܝܐ ܕܡܬܟܬܫܝܢ ܥܡܟܘܢ ܀ ܘܢܫܬܚܪܘܢ ܡܢܗܘܢ ܓܒܪܐ
ܕܡܚܝܢ ܀ ܓܒܪ ܡܢ ܡܫܟܢܗ ܢܩܘܡܘܢ ܀ ܘܢܘܩܕܘܢ ܠܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܒܢܘܪܐ.

Propterea ſic ait Dominus de Jojacimo rege 30
Judæ, Non erit illi quiſquam ſedens ſuper ſo-
lium Davidis, & cadaver ejus erit expoſitum
æſtui diurno & gelu nocturno. Et viſitabo 31
cùm ipſius, tum ſeminis ac ſervorum ejus ini-
quitatem; & adducam ſuper eos, & ſuper
omnes habitatores Jeroſolymæ, ſuperque ho-
mines Judæ, totum illud malum quod in ipſos
decrevi; eò quod non auſcultárint voci meæ.
Itaque Jeremia ſumpſit volumen alterum; & 32
tradidit illud Barucho filio Neriæ ſcribæ, qui
ſcripſit in illo, dictante Jeremiá, omnes ſer-
mones qui ſcripti erant in eo libro quem Jo-
jacim rex Judæ igne combuſſerat: & inſuper
addidit eis complures ſimiles ſermones.

CAP. XXXVII.

DEinde regnavit rex Sedecia fili⁹ Joſiæ lo- 1
co Jochaniæ filii Jojacimi, quem regem con-
ſtituerat Nebuchadnoſar rex Babylonis in ter-
ra Judæ. Sed neque iſte, neque ſervi ej⁹, neque 2
terræ populus acquieverunt ſermonib⁹ Domi-
ni quos locut⁹ fuerat per Jeremiam prophe-
tam. Miſitque rex Sedecia Jubalem filium 3
Selamiæ, & Sephaniam filium Maaſiæ ſacer-
dotes, ad Jeremiam prophetam, ut dicerent,
Ora pro nobis Dominum Deum tuum. Jere- 4
mia verò egrediebatur & ingrediebatur in-
ter populum, nec tamen conjecerunt eum in
carcerem. Interim copiæ Pharaonis egreſſæ 5
ſunt ex Ægypto; quare Chaldæi qui Jeroſo-
lymam obſidebant, famam earum audientes,
abſceſſerunt ab Jeruſalem. Sed fuit ſermo 6
Domini ad Jeremiam prophetam, dicendo;
Sic ait Dominus Deus Iſraelis, Ita dicetis re- 7
gi Judæ qui vos ad me miſit ut conſuleretis
me; En exercitus Pharaonis qui egreſſus eſt
in auxilium veſtrum, revertetur in terram
Ægypti: Chaldæi autem redibunt, & expu- 8
gnatam hanc civitatem capient, igneque com-
burent. Sic ait Dominus, Ne putetis apud vos 9
& dicatis, Recedunt à nobis Chaldæi: non
enim recedunt. Quamvis enim trucidaretis
totum exercitum Chaldæorum qui vos op- 10
pugnant, & *nonniſi* homines inter eos vulne-
rati remanerent; quiſque ſuo ſurgerent è
tentorio, & hanc civitatem igne ſuccen-
derent.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* لان الرب نجا يعقوب * استخلصه من يد من هو اقوي منه * ويأتون ويفرحون في جبل
صهيون * ويوافون الي خير الرب * الي ارض القمح والخمر والثمرات والبهائم والكرا
ويصير نفسهم مثل العود الحسن الثمر * ولا يجوعون بعد * حينيذ تفرح العذاري في جمع
الشبان والشيوخ يفرحون * وارجع حزنهم الي فرحة * واجعلهم في سرور * اعظم واسكر نفس
الكهنة بني لاوي * وشعبي يمتلي من خيراتي * هكذا قال الرب * صوت سمع في الاكمه
صوت نوح وبكاء وعويل * راحيل باكية من اجل بنيها ولم ترد ان تتعزي * لانهم ليسو
موجودين * هكذا قال الرب * ليكف صوتك من البكاء وعيناك من الدموع * لان
الاجر في جميع الاعمال * ويعودون من ارض الاعداء * بنات مع بنيك * سامع سمعت
افرام النادب * ادبتني فتادبت * انا مثل عجل لم اتعلم ردني فارجع * لانك انت الرب
الهي * لاني اخر سبيي تبت * وتنهدت اخيرا لاعلم * منذ يوم الخزي واظهرت الذي
نلت تعييرا منذ صباي * افرام ابن حبيب ولد متنعم * لاني من اجل كلماتي فيه اذكر
ذكرا لاجل هذا اسرعت اليه * راحم سارحمه قال الرب * اقيمي ذاتك يا صهيون
اصنعي عقوبه * اعطي قلبك لجفاة الطريق التي ذهبت فيها * ارجعي يا عذرا اسرائيل
ارجعي الي مدنك حزينه * الي متي تتصرفين ايها الابنه المهانه * لان الرب خلق خلاص
لغرس جديد * الخلاص الذي به يسيرون البشر * هكذا قال الرب * يقولون هذا القول
ايضا في ارض يهوذا وفي مدنه اذا رددت سبيه * مبارك الرب على العادل جبله المقدس
* والسكان في مدن يهوذا وفي كل بلاده مع الفلاح ويحطون في القطيع *

Nam Dominus liberabit Jacobum, vin- 11
dicabit eum de manu ejus qui potentior eſt
ipſo: Et venientes exhilarabuntur in 12
monte Sionis, venientque ad bona Domini,
ad terram frumenti, vini, fructuum, ju-
mentorum, pecudumque feracem: & fiet
anima eorum tanquam lignum optimum
fructum producens, & non eſurient am-
plius. Tunc lætabuntur virgines cœtu 13
juvenum, & ſenes gaudebunt: vertam-
que triſtitiam eorum in gaudium, &
conſtituam eos in exultatione: Magni- 14
ficabo, & inebriabo animam ſacerdotum
filiorum Levi, & populus meus im-
plebitur bonis meis. Sic dixit Dominus, 15
Vox audita eſt in colle, vox lamenta-
tionis fletûs, ac gemitûs; Rachelis plo-
rantis propter filios, & admittere conſola-
tionem renuentis, eò quòd non exiſtant.
Ita dixit Dominus, Deſiſtat vox tua à 16
fletu, & oculi tui à lachrymis; quia
merces eſt in cunctis operibus, & re-
vertentur de terra inimicorum. Filiæ 17
cum filiis tuis. Audiens audivi A- 18
phremum lamentantem; Erudiviſti me,
& eruditus ſum, ego vitulo ſimilis, non
didici: reduc me, & revertar; quia tu es
Dominus Deus meus. Nam poſt captivitatē 19
meam pœnituit me, & ſuſpiravi de-
mum, ut diſcerem, inde à die eru-
beſcentiæ & indicavi tibi me adeptum
eſſe opprobrium inde à pueritia mea.
Aphrem filius eſt charus, natus delitio- 20
ſus; quandoquidem propter mea de ipſo
verba, memoriâ ipſum recolo: hac de
cauſa properavi ad ipſum, miſerans
miſerabor ipſius, ait Dominus. Erige 21
teipſam O Sion, fac pœnam, adhibe cor
tuum ad aſperitatem itineris per quod
iviſti. Revertere O virgo Iſraelis, re-
vertere ad urbes tuas mœrens. Quouſ- 22
que abibis O filia vilis? nam Dominus
creavit ſalutem plantario novello, ſa-
lutem in qua ambulabunt homines. Sic 23
dixit Dominus; Dicent adhuc ſermo-
nem iſtum in terra Judæ & in urbibus
ejus, cum reduxero captivitatem ejus;
Benedictus Dominus ſuper juſtum mon-
tem ſuum ſanctum, Et habitantes in 24
urbibus Judæ & in tota regione ipſius,
unà cum agricola; & expiatur in
grege.

ירמיה : לח

fascibus à , Jerusalaim *desuper* Chasdim *virtutem ascendendo in* fuit Et
11 והיה בהעלות חיל הכשדים מעל ירושלם מפני
terram *eundum ad* , Jerusalaim de Irmejahu est egressus Et .Pharoh *virtutis*
12 חיל פרעה: ויצא ירמיהו מירושלם ללכת ארץ
ipse fuit Et .populi medio in ,inde seipsum *lubrificandum ad* ,Binjamin
13 בנימן לחלק משם בתוך העם: ויהי הוא
filius , Irijah eius nomen & ,*præfecturarum dominus* ibi & ,Binjamin porta in
בשער בנימן ושם בעל פקדת ושמו יראייה בן
:dicendo ,prophetam Irmejahu apprehendit & :Chananjah filii Selemjah
שלמיה בן חנניה ויתפש את ירמיהו הנביא לאמר
ego non ,Falsum : Irmejahu Dixitque .*dilabens* tu Chasdim Ad
14 אל הכשדים אתה נפל: ויאמר ירמיהו שקר אינני
Irijah comprehendit *&* ,eum *ad* audivit non & : Chasdim *super dilabens*
נפל על הכשדים ולא שמע אליו ויתפש יראייה
super principes fuerunt irati Et .principes ad eum adduxit & ,Irmejahu *in*
15 בירמיהו ויבאהו אל השרים: ויקצפו השרים על
domum *in gaionis* domum eum *dederunt* & :eum fecerũt percutere & ,Irmejahu
ירמיהו והכו אתו ונתנו אותו בית האסור בית
Cùm .carceris domum *in* fecerunt ipsam nam , scribæ Jehonathan
16 יהונתן הספר כי אתו עשו לבית הכלא: כי
ibi mansit *&* , *hospitiola ad* & , laci domum *ad* Irmejahu esset ingressus
בא ירמיהו אל בית הבור ואל החניות וישב שם
,eum tulit & ,Sidchijahu rex misit Et .multis diebus Irmejahu
17 ירמיהו ימים רבים: וישלח המלך צדקיהו ויקחהו
verbum est Num :dixit & ,*absconditò in* sua domo in rex eũ interrogavit &
וישאלהו המלך בביתו בסתר ויאמר היש דבר
Babel regis manũ in : dixit Et .Est :Irmejahu dixit Et ? Domino *cum* à
מאת יהוה ויאמר ירמיהו יש ויאמר ביד מלך בבל
peccavi Quid : Sidchijahu regem ad Irmejahu dixit Et .traderis
18 תנתן: ויאמר ירמיהו אל המלך צדקיהו מה חטאתי
domum *ad* me *dedistis* quia ,huic populo & ,tuis servis & ,tibi
לך ולעבדיך ולעם הזה כי נתתם אותי אל בית
: dicendo ,vobis prophetabant qui ,vestri prophetæ ubi Et ?carceris
19 הכלא: ואיו נביאיכם אשר נבאו לכם לאמר
nunc Et ?hanc terram *super* & ,vos *super* Babel rex veniet Non
20 לא יבא מלך בבל עליכם ועל הארץ הזאת: ועתה
,*tuas facies* ad mea deprecatio obsecro Cadat : rex mi domine obsecro audi
שמע נא אדני המלך תפל נא תחנתי לפניך
ibi moriar *non &* ,scribæ Jonathan domum me facias redire ne &
ואל תשבני בית יהונתן הספר ולא אמות שם:
atrio in Irmejahu commendaverunt & ,Sidchijahu rex præcepit Et
21 ויצוה המלך צדקיהו ויפקדו את ירמיהו בחצר
adusque ,pistorum platea de *diem in* panis tortam ei *dare* & ,custodiæ
המטרה ונתן לו ככר לחם ליום מחוץ האפים עד
atrio in Irmejahu mansit & : civitate de *panem omnem consummare*
תם כל הלחם מן העיר וישב ירמיהו בחצר
.custodiæ
המטרה:

CAP. XXXVIII. לח

, Paschur filius Ghedaljahu & ,Matthan filius Sephatjah audivit Et
1 וישמע שפטיה בן מתן וגדליהו בן פשחור
verba ,Malchijah filius Paschur & ,Selemjahu filius Juchal &
ויוכל בן שלמיהו ופשחור בן מלכיה את הדברים
dixit Sic : dicendo ,populum omnem ad *loquens* Irmejahu quæ
2 אשר ירמיהו מדבר אל כל העם לאמר: כה אמר
, fame *in* , gladio *in* morietur , ista civitate in *Manens* : Dominus
יהוה הישב בעיר הזאת ימות בחרב ברעב
eius anima ei erit & ,vivet & , Chasdim ad *egrediens &* : peste *in* &
ובדבר והיצא אל הכשדים יחיה והיתה לו נפשו
.vivet & , spolium in
לשלל וחי:

Versio VULG. LAT.

10 Ergo cùm recessisset exercitus Chaldæorum ab Jerusalem pro- 11 pter exercitum Pharaonis, Egressus est Jeremias de Jerusalem ut iret in terram Benjamin, & divideret ibi possessionem in 12 conspectu civium. Cumque pervenisset ad portam Benjamin, erat ibi custos portæ per vices, nomine Jerias, filius Selemiæ filii Hananiæ, & apprehendit Jeremiam prophetam, dicens; Ad 13 Chaldæos profugis. Et respondit Jeremias; Falsum est, non fugio ad Chaldæos. Et non audivit eum: sed comprehendit Jerias Jeremiam, & adduxit eum 14 ad principes. Quam ob rem irati principes contra Jeremiam, cæsum eum miserunt in carcerem, qui erat in domo Jonathan scribæ: ipse enim præpositus 15 erat super carcerem. Itaque ingressus est Jeremias in domum laci & in ergastulum: & sedit 16 ibi Jeremias diebus multis. Mittens autem Sedecias rex tulit eum: & interrogavit eum in domo sua absconditè, & dixit; Putásne est sermo à Domino? Et dixit Jeremias, Est. Et ait, In manus regis Babylonis tra- 17 déris. Et dixit Jeremias ad regem Sedeciam; Quid peccavi tibi, & servis tuis, & populo tuo, quia misisti me in domum car- 18 ceris? Ubi sunt prophetæ vestri, qui prophetabant vobis, & dicebant, Non veniet rex Babylonis super vos, & super ter- 19 ram hanc? Nunc ergò audi, obsecro, domine mi rex; Valeat deprecatio mea in conspectu tuo: & ne me remittas in domum Jonathan scribæ, ne mo- 20 riar ibi. Præcepit ergò rex Sedecias ut traderetur Jeremias in vestibulo carceris, & daretur ei torta panis quotidiè, excepto pulmento, donec consumerentur omnes panes de civitate: & mansit Jeremias in vestibulo carceris.

CAP. XXXVIII.

1 Audivit autem Saphatias fil. Mathan, & Gedelias fil. Phassur, & Juchal fil. Selemiæ, & Phassur filius Melchiæ, sermones, quos Jeremias loquebatur ad 2 omnem populum, dicens; Hæc dicit Dominus; Quicunque manserit in civitate hac, morietur gladio, & fame, & peste: qui autem profugerit ad Chaldæos, vivet, & erit anima ejus sospes & vivens.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

25 Ὅτι ἐμέθυσα πᾶσαν ψυχὴν διψῶσαν, καὶ πᾶ- 26 σαν ψυχὴν πεινῶσαν ἐνέπλησα. Διατοῦτο ἐξηγέρθην, καὶ εἶδον, καὶ ὁ ὕπνος μου ἡδύς 27 μοι (†) ἐγενήθη. Διατοῦτο ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, φησὶ κύριος, καὶ σπερῶ τὸν Ἰσραὴλ καὶ τὸν Ἰούδαν, σπέρμα ἀνθρώπου καὶ σπέρμα 28 κτήνους. Καὶ ἔσται ὥσπερ ἐγρηγόρουν ἐπ' αὐτοὺς καθαιρεῖν καὶ κακοῦν, οὕτως γρηγορήσω ἐπ' αὐτοὺς τοῦ οἰκοδομεῖν καὶ καταφυτεύειν, φη- 29 σὶ κύριος. Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις οὐ μὴ εἴπωσιν, Οἱ πατέρες ἔφαγον ὄμφακα, καὶ 30 οἱ ὀδόντες τῶν τέκνων (ω) ἠμωδίασαν. Ἀλλ' ἢ ἕκαστος ἐν τῇ (α) ἑαυτοῦ ἁμαρτίᾳ ἀποθανεῖται, καὶ τοῦ φαγόντος τὸν ὄμφακα αἱμωδιά- 31 σουσιν οἱ ὀδόντες αὐτοῦ. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, (β) φησὶ κύριος, καὶ διαθήσομαι τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ καὶ τῷ οἴκῳ Ἰούδα διαθή- 32 κην καινήν, Οὐ κατὰ τὴν διαθήκην ἣν διεθέμην τοῖς πατράσιν αὐτῶν, ἐν ἡμέρᾳ ἐπιλαβομένου μου τῆς χειρὸς αὐτῶν, ἐξαγαγεῖν αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ὅτι αὐτοὶ οὐκ ἐνέμειναν ἐν τῇ διαθήκῃ μου, (γ) καὶ ἐγὼ ἠ- 33 μέλησα αὐτῶν, φησὶ κύριος. Ὅτι αὕτη ἡ (δ) διαθήκη μου, ἣν διαθήσομαι τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ, Μετὰ τὰς ἡμέρας ἐκείνας, φησὶ κύριος, διδοὺς (ε) δώσω νόμους μου εἰς τὴν διάνοιαν αὐτῶν, καὶ (ζ) ἐπὶ καρδίας αὐτῶν γράψω αὐτούς, καὶ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς θεόν, 34 καὶ αὐτοὶ ἔσονταί μοι εἰς λαόν. Καὶ οὐ μὴ διδάξωσιν ἕκαστος τὸν (η) πολίτην αὐτοῦ, καὶ ἕκαστος τὸν (θ) ἀδελφὸν αὐτοῦ, λέγων, Γνῶθι τὸν κύριον· ὅτι πάντες εἰδήσουσί με ἀπὸ μικροῦ (ι) αὐτῶν ἕως μεγάλου αὐτῶν, ὅτι ἵλεως ἔσομαι ταῖς ἀδικίαις αὐτῶν, καὶ τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν οὐ μὴ μνησθῶ ἔτι. 37 Ἐὰν ὑψωθῇ ὁ οὐρανὸς εἰς τὸ μετέωρον, φησὶ κύριος, καὶ ἐὰν ταπεινωθῇ τὸ ἔδαφος τῆς γῆς κάτω, καὶ ἐγὼ οὐκ ἀποδοκιμῶ τὸ γένος Ἰσραήλ, φησὶ κύριος, περὶ πάν- 35 των ὧν (κ) ἐποίησαν. Οὕτως εἶπε κύριος, ὁ δοὺς τὸν ἥλιον εἰς φῶς τῆς ἡμέρας, σελήνην καὶ (λ) ἀστέρας εἰς φῶς τῆς νυκτός, καὶ κραυγὴν (ʺ) ἐν θαλάσσῃ, καὶ ἐβόμβησε τὰ κύματα αὐτῆς, Κύριος παντοκράτωρ ὄνομα 36 αὐτῷ· Ἐὰν παύσωνται οἱ νόμοι οὗτοι ἀπὸ προσώπου μου, φησὶ κύριος, καὶ τὸ γένος Ἰσραὴλ (μ) παύσεται γενέσθαι ἔθνος κατὰ 38 πρόσωπόν μου πάσας τὰς (ν) ἡμέρας. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, φησὶ κύριος, καὶ (ʺ) οἰκοδομηθήσεται πόλις τῷ κυρίῳ ἀπὸ πύργου Ἀναμεήλ, ἕως (ξ) πύλης τῆς γωνίας· 39 Καὶ ἐξελεύσεται (ʺ) ἡ διαμέτρησις αὐτῆς ἀπέναντι αὐτῶν ἕως βουνῶν Γαρήβ, καὶ περικυκλωθήσεται (ʺ) κύκλῳ ἐξ ἐκλεκτῶν (ο) λίθων,

Quia inebriavi omnem animam sitientem: & omnem animam esurientem satiavi. 26 Ideo exsuscitatus sum, & vidi: & somnus meus jucundus mihi est. 27 Ideo ecce dies veniunt, ait Dominus, & seminabo Israel & Judam, semen hominis, & semen jumenti. 28 Et erit sicut vigilabam super eos ad destruendum & affligendum: sic vigilabo super eos ad ædificandum, & plantandum, ait Dominus. 29 In diebus illis non dicent; Patres comederunt uvam acerbam, & dentes filiorum obstupuerunt. 30 Sed unusquisque in peccato suo morietur: et comedentis uvam acerbam obstupescent dentes ejus. 31 Ecce dies venient, ait Dominus, & disponam domui Israel, et domui Juda, testamentum novũ. 32 Non juxta testamentum, quod disposui patribus eorum in die, cum apprehendi ego manum eorum ad educendum eos de terra Ægypti: quia ipsi non manserunt in testamento meo, et ego neglexi eos, ait Dominus. 33 Hoc enim est testamentum meum, quod disponam domui Israel post dies illos, ait Dominus: dans dabo leges meas in mentem eorum, et in corde eorum scribam eas: et ero eis in Deum, et ipsi erunt mihi in populum. 34 Et non docebunt unusquisque civem suum, et unusquisque fratrem suum, dicens; Nosce Dominum: quia omnes intelligent me à parvo eorum usque ad magnum eorum: quoniam propitius ero iniquitatibus eorum, et peccatorum eorum non recordabor amplius. 37 Si elevatum fuerit cœlum in sublime, ait Dominus, et si humiliatum fuerit pavimentum terræ deorsum, et (z) (u) non reprobabo genus Israel, dicit Dominus, pro omnibus quæ fecerunt. 35 Sic dixit Dominus: qui dat Solem in lumen diei, Lunam et stellas in lumen noctis, et clamorem in mari, et sonuerunt fluctus ejus: Dominus omnipotens nomen illi; 36 Si cessaverint leges hæ à facie mea, dicit Dominus; et genus Israel cessabit esse gens ante faciem meam cunctis diebus. 38 Ecce dies veniunt, dicit Dominus, et ædificabitur civitas Domino à turri Anameel usque ad portam anguli, 39 Et exibit (x) dimensio ejus contra (y) eos usque ad colles Gareb: et circundabitur in circuitu ex electis lapidibus:

MS. A. (†) ἐγένετο. (ω) ἐμωδίασαν. (α) ἁμαρτίᾳ αὐτοῦ (β) λέγει (γ) κἀγὼ ἠμέλησα (δ) διαθήκη, ἣν (ε) νόμους (ζ) ἐπιγράψω αὐτοὺς ἐπὶ τὰς καρδίας αὐτῶν, καὶ ὄψομαι αὐτούς, καὶ ἔσομαι (η) ἀδελφὸν (θ) πλησίον (ι) ἕως μεγάλου (κ) ἐποίησάν μοι. (λ) τὰ ἄστρα (ʺ) ἐν τῇ (μ) παύσονται (ν) ἡμέραις φησὶν κύριος. (ʺ) οἰκοδομηθήσεται (ξ) τῆς πύλης (ο) *κύκλῳ, Καὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 והוה כד אסתלקא משרית כסדאי מעל ירושלם מן קדם משרית פרעה: ונפק 12
ירמיה מירושלם למיזל לארע שבטא בנימן לפלגא אחסנתא דאית ליה תמן בגו עמא:
13 והוה הוא בתרע שבטא בנימן ותמן גברא ממנא ושמיה יראיה בר שלמיה בר
14 חנניה ואחד ית ירמיה נביא למימר לכסדאי את משתמע: ואמר ירמיה שקרא
את אמר לית אנא משתמע לכסדאי ולא קביל מניה ואחד יראיה בירמיה ואיתיה
15 לות רברביא: ורגיזו רברביא על ירמיה ואלקיאו יתיה ויהבו יתיה בית אסירי
16 בית יהונתן ספרא ארי יתיה עבדו לבית אסירי: ארי על ירמיה לבית אסירי ולגיו
17 מן חנותא ויתיב תמן ירמיה יומין סגיאין: ושלח מלכא צדקיה ודבריה ושאליה
מלכא בביתיה בסתרא ואמר האית פתגמא מן קדם יי ואמר ירמיה אית ואמר ביד
18 מלכא דבבל תתמסר: ואמר ירמיה למלכא צדקיה מה חבית לך ולעבדך ולעמא
19 הדין ארי יהבתון יתי לבית אסירי: ואן נביאיכון דשקרא דאתנביאו לכון למימר לא
20 ייתי מלכא דבבל עליכון ועל ארעא הדא: וכען שמע כען רבוני מלכא תתקבל
21 כען בעותי קדמך ולא תתיבנני לבית יהונתן ספרא ולא אמות תמן: ופקיד
מלכא צדקיה ופקידו ית ירמיה בדרת בית אסיריא ויהבין ליה פתא דלחמא
ליומא משוק נחתומיא עד דשלים כל לחמא מן קרתא ויתב ירמיה בדרת בית אסריא:

לח

1 ושמע שפטיה בר מתן וגדליה בר פשחור ויוכל בר שלמיה ופשחור בר מלכיה ית
2 פתגמיא דירמיה ממלל עם כל עמא למימר: כדנן אמר יי דיתיב בקרתא הדא יתקטיל
בחרבא בכפנא ובמותא ודיפוק וישתמע לכסדאי ויחי ותהי ליה נפשיה לשיבא ויתקיים:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

11 Et factum est cum recessisset exercitus Chaldæorum ab Jerusalem, propter exercitum Pharaonis. 12 Egressúsque est Jeremias de Jerusalem, ut iret in terram tribus Benjamin, ut divideret hæreditatem, quam habebat ibi in medio populi. 13 Cúmque esset ipse in porta tribus Benjamin, erat ibi vir constitutus, nomine Jerias, filius Selemiæ filii Ananiæ, & apprehendit Jeremiam prophetam; dicens: Tu Chaldæis tete vis dedere? 14 Et dixit Jeremias, Falsum tu dicis: non ego me dedo Chaldæis. Et non acquievit, & apprehendit Jerias Jeremiam, & adduxit eum ad principes. 15 Et irati sunt principes contra Jeremiam, & percusserunt eum, & conjecerunt eum in carcerem domus Jonathan scribæ; ipsam enim fecerant in carcerem. 16 Ingressus est enim Jeremias in domum carceris, & in medium tabernarum: & sedit ibi Jeremias diebus multis. 17 Et misit rex Sedechias, & tulit eum, & interrogavit eum rex in domo sua clam: & ait, Nunquid est verbum à facie Domini? & ait Jeremias, Est. Et ait: In manum regis Babylonis tradéris. 18 Et dixit Jeremias regi Sedechiæ, Quid peccavi tibi & servis tuis, & populo huic, ut poneretis me in domum carceris? 19 Et ubi sunt pseudoprophetæ vestri, qui prophetant vobis; dicentes, Non veniet rex Babylonis contra vos & contra terram istam? 20 Et nunc audi obsecro domine mi rex: acceptabilis sit obsecro deprecatio mea coram te, & ne reducas me in domum Jonathan scribæ, & non moriar ibi. 21 Et præcepit rex Sedechias, & commendaverunt Jeremiam in vestibulo domus carceris; & dabatur ei frustum panis quotidie de vico pistorum, donec consumeretur omnis panis de civitate. Et mansit Jeremias in vestibulo carceris.

CAP. XXXVIII.

1 Audivit autem Saphatias filius Mathan, & Gedelias filius Phasur, & Juchal filius Selemiæ, & Phasur filius Melchiæ, verba Jeremiæ loquentis cum omni populo; dicendo: 2 Hæc dicit Dñs, Qui manserit in urbe hac, occidetur gladio, & fame, & peste: qui autem egressus fuerit, & dediderit se Chaldæis, vivet; & erit [illegible] ejus in evasionem, & sustentabitur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܣܠܩ ܠܗ ܚܝܠܐ ܕܟܠܕܝܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܡܢ ܩܕܡ ܚܝܠܗ ܕܦܪܥܘܢ. * ܘܢܦܩ ܐܪܡܝܐ
ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܠܡܐܙܠ ܠܐܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ ܀ ܠܡܦܠܓܘ. ܬܡܢ ܡܢܬܐ ܥܡ ܥܡܐ. *
ܘܟܕ ܩܐܡ ܗܘܐ ܒܬܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ ܀ ܐܝܬ ܗܘܐ ܬܡܢ ܓܒܪܐ ܦܩܘܕܐ. ܘܫܡܗ ܢܪܝܐ ܒܪ ܫܠܡܝܐ
ܒܪ ܚܢܢܝܐ. ܘܐܚܕܗ ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܠܘܬ ܟܠܕܝܐ ܥܪܩ ܐܢܬ. * ܘܐܡܪ
ܐܪܡܝܐ ܡܫܩܪ ܐܢܬ. ܠܐ ܥܪܩ ܐܢܐ ܠܘܬ ܟܠܕܝܐ. ܘܠܐ ܫܡܥܗ. ܘܐܚܕܗ ܢܪܝܐ ܠܐܪܡܝܐ
ܘܐܝܬܝܗ ܠܘܬ ܪܘܪܒܢܐ. * ܘܪܓܙܘ ܪܘܪܒܢܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ. ܘܢܓܕܘܗܝ. ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܒܝܬ
ܐܣܝܪܐ ܒܒܝܬ ܝܘܢܬܢ ܣܦܪܐ. ܡܛܠ ܕܠܗ ܥܒܕܘ ܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. * ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܠܐܪܡܝܐ ܡܢ
ܟܘܬ ܓܘܒܐ ܠܓܘܒܐ. ܘܗܘܐ ܬܡܢ ܐܪܡܝܐ ܝܘܡܬܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܫܕܪ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ
ܘܐܦܩܗ. ܘܫܐܠܗ ܡܠܟܐ ܒܒܝܬܗ ܡܛܫܝܐܝܬ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܢܦܩ ܦܬܓܡܐ ܡܢ ܡܪܝܐ.
ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܢܦܩ. ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ ܐܝܢܐ ܢܦܩ. ܘܐܡܪ ܕܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ ܬܫܬܠܡ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ. ܡܢܐ ܚܛܝܬ ܠܟ ܘܠܥܒܕܝܟ
ܘܠܥܡܐ ܗܢܐ ܀ ܕܐܪܡܝܬܘܢܝ ܒܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. * ܘܐܝܟܐ ܐܢܘܢ ܢܒܝܝܟܘܢ ܕܡܬܢܒܝܢ ܗܘܘ
ܠܟܘܢ ܘܐܡܪܝܢ. ܕܠܐ ܐܬܐ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܠܝܟܘܢ ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܗܕܐ. * ܘܗܫܐ ܫܡܥܢܝ
ܡܪܝ ܡܠܟܐ. ܘܬܥܘܠ ܒܥܘܬܝ ܩܕܡܝܟ. ܘܠܐ ܬܗܦܟܢܝ ܠܒܝܬ ܝܘܢܬܢ ܣܦܪܐ. ܕܠܐ ܐܡܘܬ
ܬܡܢ. * ܘܦܩܕ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ ܀ ܘܫܒܩܘܗܝ ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. ܘܝܗܒܝܢ
ܗܘܘ ܠܗ ܓܪܝܨܬܐ ܕܠܚܡܐ ܟܠܝܘܡ ܡܢ ܫܘܩܐ ܕܢܚܬܘܡܐ. ܥܕܡܐ ܕܫܠܡ ܟܠܗ ܠܚܡܐ
ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܝܬܒ ܐܪܡܝܐ ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. * ܦܨܠܐ * ܟܫ *
* ܘܫܡܥ ܫܦܛܝܐ ܒܪ ܡܬܢ. ܘܓܕܠܝܐ ܒܪ ܦܫܚܘܪ. ܘܝܘܟܠ ܒܪ ܫܠܡܝܐ. ܘܦܫܚܘܪ ܒܪ ܡܠܟܝܐ
ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܟܠܗ ܥܡܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܢ ܕܢܬܒ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܢܡܘܬ
ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ. ܘܡܢ ܕܢܦܩ ܠܘܬ ܟܠܕܝܐ ܀ ܢܚܐ ܘܡܦܨܐ ܢܦܫܗ.

* Cùm itaque diſceſſiſſet exercitꝰ Chaldæorum 11
ex Jeruſalem metu exercitꝰ Pharaonis, Exivit 12
Jeremia de Jeruſalem ut abiret in terram
Benjaminis ad ſortem ibi cum populo dividendam : Cùmque ſtaret ad portam Benjaminis, 13
aderat illic præfectꝰ quidam cujus nomen
erat Neria filiꝰ Selamiæ filii Hananiæ. Is
apprehenſo Jeremiâ prophetâ dixit illi, Ad
Chaldæos tu fugis. Cui reſpondit Jeremia, 14
Mentiris, nequaquam fugio ad Chaldæos : at
non auſcultavit eum ; ſed Neria apprehenſum
Jeremiã adduxit ad principes. Tum principes 15
Jeremiæ ſuccenſentes flagellaverunt eum, & in
carcerem conjecerunt in domo Jonathanis
ſcribæ (hunc enim præfecerant carcere detentis) Et præcipitaverunt Jeremiam è feneſtra 16
foveæ in foveam, manſitque ibi Jeremia dies
multos. Tandem mittens rex Sedecia extraxit 17
eum, & interrogavit eum rex domi ſecretò,
& ait illi ; Prodiitne ſermo à Domino?
Reſpondit Jeremia, Prodiit. Ait rex, Cujuſmodi
prodiit ? Reſpondit, Te in manus regis
Babyloniæ tradendum. Subdiditque Jeremia 18
ad regem Sedeciam ; Quid peccavi tibi, aut
ſervis tuis, aut populo iſti, ut me in carcerem
truderetis ? Et ubi ſunt prophetæ veſtri qui 19
prophetabant vobis, ac dicebant haudquaquam
venturum regem Babyloniæ contra vos
& contra terram iſtam ? Jam audi me domine 20
mi rex, & admittatur apud te deprecatio
mea, néve me remittas in domum Jonathanis
ſcribæ, ne illic moriar. Quamobrem 21
præcepit rex Sedecia, dimiſeruntque Jeremiam
prophetam in atrium carceris, & dabant
ei placentam panis quotidie ex officina piſtoris,
donec conſumptus eſt totus panis ex
civitate : manſit ergò Jeremia in atrio carceris.

CAP. XXXVIII.

Audivit autem Sephatia filius Mathanis, 1
Gedalia filius Pheſhuris, Juchal filius Selamiæ,
& Pheſhur filius Melachiæ, ſermones
quos habuerat Jeremia ad univerſum populum ;
Sic ait Dominus, Quicunque manſerit in 2
hac civitate, peribit gladio, fame, aut peſte ;
quicunque verò exierit ad Chaldæos, vivet, &
liberabit animam ſuam.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لاني اسكرت كل ارض عطشانة · وملأت كل نفس جايعة * لاجل هذا قمت ونظرت
وصار لي نومي لذيذا * لاجل هذا ها ايام تاتي قال الرب · وازرع اسرايل ويهودا زرع
انسان وزرع بهيمة * ويكون كما سهرت عليهم لاهلكهم واكبهم · هكذا ساسهر عليهم
لابنيهم واغرسهم قال الرب * في تلك الايام لا يقولون · الاباء اكلوا الحصرم واسنان الاولاد
ضرست * لكن كل واحد بخطيته يموت · والذي ياكل الحصرم تضرس اسنانه *
ايام تاتي قال الرب · واضع لبيت اسرايل ولبيت يهودا عهدا جديدا * ليس كالعهد الذي
عهدته لاباءهم في يوم اخذت بيدهم لاخرجهم من ارض مصر · لانهم لم يثبتوا في
عهدي وانا تهاونت بهم قال الرب * لان هذا هو العهد الذي اعهد به لبيت اسرايل
من بعد تلك الايام قال الرب · اعطي نواميسي في قلبهم · واكتبها على ضمايرهم
واعاينهم · واصير لهم الها وهم يصيرون لي شعبا * ولا يعلمون كل واحد قريبه و
واحد اخاه قايلا اعرف الرب · لان جميعهم يعرفونني من صغيرهم الى كبيرهم · لاني
اصير راحما لظلاماتهم · ولست اذكر خطاياهم بعد * ان ارتفعت السماء ارتفاعا قال الرب
وان ذل تراب الارض اسفل · فانا لست ابعد جنس اسرايل قال الرب · من اجل جميع
صنعوه لي * هكذا قال الرب المعطي الشمس لنور النهار · والقمر والنجوم لضوء الليل
وصراخا في البحر · ورفع امواجه · الرب ضابط الكل اسمه * ان انكفت هذه النواميس
الرب · فجنس اسرايل ينكف ليكون امة لوجهي قال الرب * ها ايام تاتي قال الرب
فيبنون مدنا للرب · من برج انامييل الى باب الزاوية * وتخرج مساحتها قدامهم الى
غاريب · ويدار حولها من الحجارة المختارة ·

Quia inebriavi omnem terram ſitientem, 25
& implevi omnem animam eſurientem. Ad hoc exurrexi, & vidi, 26
factuſque eſt mihi ſomnus meus jucundus. Idcirco ecce dies venient, dixit 27
Dominus, quum ſeminabo Iſraelem & Judam ſemine humano & ſemine
jumenti : Et erit, quemadmodum 28
vigilavi ſuper eos ut deſtruerem &
dejicerem eos ; ita vigilabo ſuper eos ut
ædificem & plantem eos, ait Dominus.
Iis diebus nequaquam dictitabunt, Patres 29
comederunt omphacem, & dentes
filiorum obſtupeſcunt : Sed unuſquiſque 30
pro peccato ſuo morietur : & quicunq;
comederit omphacem, hujus dentes obſtupeſcent.
Ecce dies venient, dixit 31
Dominus, quum diſponam domui Iſraelis
& domui Judæ fœdus novum :
Non quale fuit illud fœdus quod inieram 32
cum majoribus eorum, die quo apprehendi
manum eorum ut educerem eos
è terra Ægypti : (nam quia non perſliterunt
in fœdere meo, ego viciſſim
neglexi eos, dixit Dominus) Sed hoc 33
eſt fœdus quod inea cum domo Iſraelis :
Poſt illos dies, dixit Dominus,
indam leges meas in cor eorum, & inſcribam
eas menti eorum : reſpiciam
eos, & ero illis Deus, ipſique fient
mihi populus. Et non docebunt unuſquiſque 34
proximum ſuum & unuſquiſque
fratrem ſuum, dicens ; Noſce Dominum :
omnes enim me cognoſcent à
minimo ad maximum : quoniam propitius
ero perverſitatibus eorum, & non
recordabor amplius peccata eorum.

Anteponit hunc Ver. 37 ut in LXX.

Etiamſi cœlum ſublime feretur, dixit 37
Dominus, & quatenus terræ pulvis ad
imum deprimetur, ego tamen haudquaquam
amovebo genus Iſraelis, ait Dominus,
pro omnibus quæ contra me perpetrârunt.
Ita dixit Dominus qui ſolem 35
dat in lumen diei, lunam ac ſtellas in lucem
noctis, ſonitum in mari, & extollit
fluctus ejus, cujus nomen eſt Dominus
omnitenens ; Si defecerint hæ leges, dixit 36
Dominus, genus Iſraelis deſinet eſſe populus
in conſpectu meo, dixit Dominus.
Ecce dies venient, dixit Dominus, quum 38
ædificabunt urbes Domino, à turri Anameelis
uſq; ad portam anguli : Et porrigetur 39
dimenſio earum coram ipſis uſque
ad colles Gareb, & undique cingentur
lapidibus electis :

ירמיה : לח

hæc civitas tradetur Tradendo :Dominus dixit Sic
3 כה אמר יהוה הנתן תנתן העיר הזאת
principes dixerunt Et .eam capiet & ,Babel regis *virtutis* manum in
4 ביד חיל מלך־בבל ולכדה׃ ויאמרו השרים
sic super nam ,iste vir *nunc* Moriatur :regem ad
אל־המלך יומת נא את־האיש הזה כי על־כן
residuorum ,belli virorum manus *debilitans* ipse
הוא מרפא את־ידי אנשי המלחמה הנשארים
eos ad loquendo ,populi universi manus & ,hac civitate in
בעיר הזאת ואת ידי כל־העם לדבר אליהם
quærens ipse non iste vir quia :hæc verba secundùm
כדברים האלה כי האיש הזה איננו דרש
rex dixit Et .malum *in quinimo* ,huic populo pacem *ad*
5 לשלום לעם הזה כי אם־לרעה׃ ויאמר המלך
poterit rex non quia :*vestra manu in ipse* Ecce :Sidchijahu
צדקיהו הנה־הוא בידכם כי־אין המלך יוכל
fecerunt projicere & ,Irmejahu tulerunt Et .*verbum vobiscum*
6 אתכם דבר׃ ויקחו את־ירמיהו וישלכו
atrio in qui ,Melech filii Malchijahu cisternam in eum
אתו אל־הבור מלכיהו בן־המלך אשר בחצר
cisterna in & :funibus *in* Irmejahu submiserunt & ,custodiæ
המטרה וישלחו את־ירמיהו בחבלים ובבור
.cœnum in Irmejahu est defixus & ,lutum *quinimo* ,aqua non
אין־מים כי אם־טיט ויטבע ירמיהו בטיט׃
domo in ipse &) eunuchus vir Æthiops Melech-Hebed audivit Et
7 וישמע עבד־מלך הכושי איש סריס והוא בבית
rex & :cisternam *ad* Irmejahu *dedissent* quod (regis
המלך כי־נתנו את־ירמיהו אל־הבור והמלך
domo de Melech-Hebed est egressus Et .Binjamin porta in *sedens*
8 יושב בשער בנימן׃ ויצא עבד־מלך מבית
,rex mi Domine :dicendo ,regem ad est locutus & ,regis
9 המלך וידבר אל־המלך לאמר׃ אדני המלך
Irmejahu in fecerunt quæ omnia isti viri malefecerunt
הרעו האנשים האלה את כל־אשר עשו לירמיהו
moritur & :cisternam in fecerunt projicere quem ,prophetam
הנביא את אשר־השליכו אל־הבור וימת
.civitate in ultrà panis non quia :*famis faciebus à se sub*
תחתיו מפני הרעב כי אין הלחם עוד בעיר׃
Tolle :dicendo ,Æthiopi Melech-Hebed rex præcepit Et
10 ויצוה המלך את עבד־מלך הכושי לאמר קח
Irmejahu *facies* ascendere & ,viros triginta hinc tua manu in
בידך מזה שלשים אנשים והעלית את־ירמיהו
-Hebed assumpsit Et .moriatur antequam ,cisterna de prophetam
11 הנביא מן־הבור בטרם ימות׃ ויקח עבד־
ad regis domum est ingressus & ,sua *manu in* viros Melech
מלך את־האנשים בידו ויבא בית־המלך אל־
vetera & tractionum vetera inde tulit & ,thesaurum sub
תחת האוצר ויקח משם בלוי הסחבות ובלוי
funibus in cisternam ad Irmejahu ad ea misit & ,*corruptionum*
מלחים וישלחם אל־ירמיהו אל־הבור בחבלים׃
nunc Pone :Irmejahu ad Æthiops Melech-Hebed dixit Et
12 ויאמר עבד־מלך הכושי אל־ירמיהו שים נא
tuarum manuum axillis sub *corruptionum & ,tractionum vetera*
בלואי הסחבות והמלחים תחת אצלות ידיך
Irmejahu extraxerunt Et .sic Irmejahu fecit & :funes desubter
13 מתחת לחבלים ויעש ירמיהו כן׃ וימשכו את־ירמיהו
Irmejahu mansit & :cisterna è eum fecerunt ascendere & ,funibus *in*
בחבלים ויעלו אתו מן־הבור וישב ירמיהו
.custodiæ atrio in
בחצר המטרה׃

Versio VULG. LAT.

3 Hæc dicit Dominus; Tradendo tradetur civitas hæc in manu exercitûs regis Babylonis, & capiet eam. 4 Et dixerunt principes regi; Rogamus ut occidatur homo iste: de industria enim dissolvit manus virorum bellantium, qui remanserunt in civitate hac, & manus universi populi, loquens ad eos juxta verba hæc: siquidem homo iste non quærit pacem populo huic, sed malum. 5 Et dixit rex Sedecias; Ecce ipse in manibus vestris est: nec enim fas est regem vobis quidquam negare. 6 Tulerunt ergo Jeremiam, & projecerunt eum in lacum Melchiæ filii Amelech, qui erat in vestibulo carceris: & submiserunt Jeremiam funibus in lacum, in quo non erat aqua, sed lutum: descendit itaque Jeremias in cœnum. 7 Audivit autem Abdemelech Æthiops vir eunuchus, qui erat in domo regis, quòd misissent Jeremiam in lacum: porrò rex sedebat in porta Benjamin. 8 Et egressus est Abdemelech de domo regis, & locutus est ad regem, dicens; 9 Domine mi rex, malè fecerunt viri isti omnia quæcunque perpetrârunt contra Jeremiam prophetam, mittentes eum in lacum ut moriatur ibi fame; non sunt enim panes ultra in civitate. 10 Præcepit itaque rex Abdemelech Æthiopi, dicens; Tolle tecum hinc triginta viros, & leva Jeremiam prophetam de lacu antequàm moriatur. 11 Assumptis ergo Abdemelech secum viris, ingressus est domum regis, quæ erat sub cellario: & tulit inde veteres pannos, & antiqua quæ computruerant, & submisit ea ad Jeremiam in lacum per funiculos. 12 Dixitque Abdemelech Æthiops ad Jeremiam; Pone veteres pannos, & hæc scissa & putrida, sub cubito manuum tuarum, & super funes: fecit ergò Jeremias sic. 13 Et extraxerunt Jeremiam funibus, & eduxerunt eum de lacu: mansit autem Jeremias in vestibulo carceris.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

40 Καὶ πάντες ἀσαρημὼθ ἕως (π) νάχαλ Κέδρων, ἕως γωνίας πύλης ἵππων ἀνατολῆς, ἁγίασμα τῷ κυρίῳ, ϗ οὐκέτι οὐ μὴ ἐκλίπῃ, ϗ οὐ μὴ καθαιρεθῇ ἕως τοῦ αἰῶνος.

Cap. 32. ΚΕΦ. λθ'.

1 Vulg. Lat. Ο λόγος ὁ (α) γενόμενος παρὰ κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν ἐν τῷ ἐνιαυτῷ (β) δεκάτῳ βασιλεῖ Σεδεκίᾳ, οὗτος ἐνιαυτὸς ὀκτωκαιδέκατος τῷ βασιλεῖ Ναβουχοδονόσορ (γ) βασιλεῖ Βαβυλῶνος. 2 Καὶ δύναμις βασιλέως Βαβυλῶνος ἐχαράκωσεν (δ) ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, ϗ Ἱερεμίας ἐφυλάττετο (ε) ἐν αὐλῇ τῆς φυλακῆς, ἥ ἐστιν ἐν οἴκῳ (ζ) βασιλέως, 3 Ἐν ᾗ κατέκλεισεν αὐτὸν ὁ βασιλεὺς Σεδεκίας, λέγων, Διατί σὺ προφητεύεις; λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ (η) ἐγὼ δίδωμι τὴν πόλιν ταύτην ἐν χερσὶ βασιλέως Βαβυλῶνος, ϗ λήψεται αὐτὴν, 4 Καὶ Σεδεκίας οὐ μὴ σωθῇ ἐκ χειρὸς (θ) τῶν Χαλδαίων, ὅτι παραδόσει (ι) παραδοθήσεται εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος, ϗ λαλήσει στόμα αὐτοῦ πρὸς στόμα αὐτοῦ, ϗ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ ὄψονται. 5 Καὶ εἰσελεύσεται (κ) Σεδεκίας εἰς Βαβυλῶνα, 6 ϗ ἐκεῖ καθιεῖται. ΚΑΙ' Ο ΛΟ'ΓΟΣ ΚΥΡΙ'ΟΥ 'ΕΓΕΝΗ'ΘΗ ΠΡΟ'Σ 'ΙΕΡΕΜΙ'ΑΝ, ΛΕ'ΓΩΝ, 7 Ἰδοὺ Ἀναμεὴλ υἱὸς Σαλὼμ ἀδελφοῦ πατρός σου ἔρχεται πρὸς σὲ, λέγων (λ), Κτῆσαι σεαυτῷ τὸν ἀγρόν μου τὸν ἐν Ἀναθὼθ, ὅτι σοὶ (μ) κρίσις παραλαβεῖν εἰς κτῆσιν. 8 Καὶ ἦλθε πρὸς μὲ Ἀναμεὴλ υἱὸς Σαλὼμ, ἀδελφοῦ πατρός μου, εἰς τὴν αὐλὴν τῆς φυλακῆς, ϗ εἶπε (ν), Κτῆσαι σεαυτῷ τὸν ἀγρόν μου τὸν ἐν γῇ Βενιαμὶν τὸν ἐν Ἀναθὼθ, ὅτι σοὶ κρίμα (ξ) κτήσασθαι αὐτὸν, ϗ σὺ πρεσβύτερος. ϗ 9 ἔγνων, ὅτι λόγος κυρίου ἐστὶ, Καὶ ἐκτησάμην τὸν ἀγρὸν Ἀναμεὴλ υἱοῦ ἀδελφοῦ πατρός μου, ϗ ἔστησα αὐτῷ ἑπτὰ σίκλους ϗ 10 δέκα ἀργυρίου, Καὶ ἔγραψα εἰς βιβλίον, ϗ (ο) ἐσφραγισάμην, ϗ διεμαρτυράμην μάρτυρας, ϗ ἔστησα τὸ ἀργύριον ἐν ζυγῷ. 11 Καὶ ἔλαβον τὸ βιβλίον τῆς κτήσεως τὸ ἐ- 12 σφραγισμένον (π), Καὶ ἔδωκα αὐτὸ τῷ Βαροὺχ υἱῷ Νηρίου (ρ) υἱῷ Μαασαίου, κατ' ὀφθαλμοὺς Ἀναμεὴλ υἱοῦ ἀδελφοῦ πατρός μου, ϗ κατ' ὀφθαλμοὺς τῶν (σ) ἀνδρῶν τῶν παρεστηκότων ϗ γραφόντων ἐν τῷ βιβλίῳ τῆς κτήσεως, ϗ κατ' ὀφθαλμοὺς τῶν Ἰουδαίων (τ) 13 τῶν ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς. Καὶ συνέταξα τῷ Βαροὺχ κατ' ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, λέγων, 14 Οὕτως εἶπε κύριος παντοκράτωρ, Λάβε τὸ βιβλίον τῆς κτήσεως τοῦτο, ϗ τὸ βιβλίον τὸ ἀνεγνωσμένον, ϗ θήσεις (υ) αὐτὸ εἰς ἀγγεῖον ὀστράκινον, ἵνα διαμείνῃ ἡμέρας 15 πλείους. Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, Ἔτι (φ) κτηθήσονται ἀγροὶ, ϗ οἰκίαι, ϗ ἀμπελῶνες 16 ἐν τῇ γῇ ταύτῃ. Καὶ (χ) προσευξάμην πρὸς κύριον μετὰ τὸ δοῦναί με τὸ βιβλίον τῆς κτήσεως πρὸς Βαροὺχ υἱὸν Νηρίου, λέγων,

(ζ) Et omnes Asaremoth usque ad (ω) ad Nahal Cedron, usque ad angulum portæ equorum Orientis: Sanctificatum Domino: & nequaquam ultrà deficiet, & non destruetur usque in seculum.

CAP. XXXIX.

VErbum, (a) quod factum est à Domino ad Hieremiam in 1 anno decimo regi Sedeciæ, hic est annus octavus decimus regi Nabuchodonosor, regi Babylonis: Et 2 virtus regis Babylonis vallum fecit super Hierusalem: & Hieremias custodiebatur in atrio carceris, qui est in domo regis: In quo clauserat eum rex Sede- 3 cias, dicens; Quare tu prophetas? dicens; Sic dixit Dominus; Ecce ego do civitatem istam in manibus regis Babylonis, & capiet eam. Et Sedecias non sal- 4 vabitur de manu Chaldæorum: quia traditione tradetur in manus regis Babylonis: & loquetur os ipsius ad os ejus; & oculi ejus oculos illius videbunt: Et ingredietur Sedecias in Babylonem, & ibi (b) dimittet se. ET VER- 6 BUM Domini factum est ad Hieremiam, dicens; Ecce Ana- 7 meel filius Salom fratris patris tui venit ad te, dicens; Posside tibi agrum meum, qui in Anathoth, quia tibi judicium est accipere in possessionem. Et venit 8 ad me Anameel filius Salom, fratris patris mei, in atrium carceris, & dixit; Posside tibi agrum meum, qui in terra Benjamin, qui in Anathoth: quia tibi (c) judicium est possidere eum, & tu es senior. Et cognovi, quia verbum Domini est: Et possedi agrum Anameel filii fratris patris mei, & appendi ei septem siclos & decem argenti: Et scripsi in libello, & sigillavi: 10 & contestatus sum testes: & appendi argentum in statera. Et sumpsi libellum possessionis 11 obsignatum, Et dedi illum Ba- 12 ruch filio Neriæ filio Maasiæ ante oculos Anameel filii fratris patris mei, & ante oculos virorum, qui adstiterant, & (d) scripserant in libello possessionis, & ante oculos Judæorum qui in atrio carceris: Et præcepi Ba- 13 ruch ante oculos eorum, dicens; Sic dixit Dominus omnipotens; 14 Sume librum possessionis istum, & librum, qui lectus est: & pones illum in vase testaceo; ut permaneat dies plures. Quia 15 sic dixit Dominus; Adhuc (e) possidebuntur agri, & domus, & vineæ in terra hac. Et oravi 16 ad Dominum, postquàm dedi librum possessionis ad Baruch filium Neriæ, dicens;

MS.A. Κεφ. λη'. (π) χειμάῤῥου Νάχαλ MS.A. Κεφ. λθ'. (α) ΓΕΝΑ'ΜΕΝΟΣ (β) ΤΩ͂ ΔΕΚΑ'ΤΩ ΤΩ͂ ΒΑΣΙΛΕΙ͂ ΣΕΔΕΚΙ'Α ΒΑΣΙΛΕΙ͂ 'ΙΟΥ'ΔΑ, ΟΥ̓͂ΤΟΣ Ο' 'ΕΝΙΑΥΤΟ'Σ (γ) ΒΑΒΥΛΩ͂ΝΟΣ· (δ) 'ΕΝ (ε) 'ΕΝ ΤΗ͂ (ζ) ΤΟΥ͂ (η) δίδωμι (θ) βασιλέως Χαλδαίων, (ι) παραδοθήσεται (κ) εἰς Βαβυλῶνα Σεδεκίας, ϗ ἐκεῖ ἀποθανεῖται. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς (λ) σε, (μ) κρίμα (ν) μοι, (ξ) παραλαβεῖν εἰς κτῆσιν, ϗ σὺ (ο) διεσφραγισάμην, (π) ϗ τὸ ἀνεγνωσμένον, Καὶ ἔδωκα (ρ) τοῦ Μαασαίου, (σ) ἑστηκότων ϗ (τ) πάντων τῶν καθημένων ἐν τῇ (υ) εἰς ἀγγεῖον (φ) κτηθήσονται (χ) προσηυξάμην

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 כדנן אמר יי אתמסרא תתמסר קרתא הדא ביד משרית מלכא דבבל ויכבשנה׃
4 ואמרו רברביא למלכא יתקטיל כען גברא הדין ארי על כן הוא מרשיל ית ידי
גברי עבדי קרבא דאשתארו בקרתא הדא וית ידי כל עמא למללא עמהון
כפתגמיא האלין ארי גברא הדין ליתוהי תבע לשלמא לעמא הדין אלהן לבישו׃
5 ואמר מלכא צדקיה הא הוא מסיר בידכון ארי לית מלכא יכיל לאתבא יתכון
6 פתגם׃ ודברו ית ירמיה ורמו יתיה לגובא דמלכיא בר מלכא דבדרת בית
אסיריא ושרביבו ית ירמיה באטוניא ובגובא לית מיא אלהן טינא וטבע ירמיה
7 בטינא׃ ושמע עבדא דמלכא צדקיה גבר רב והוא בבית מלכא ארי יהבו ית
8 ירמיה לגובא ומלכא יתיב בתרע שבטא בנימן׃ ונפק עבדא דמלכא מבית
9 מלכא ומליל עם מלכא למימר׃ רבוני מלכא אבאישו גבריא האלין ית כל
דעבדו לירמיה נביא ית דרמוהי לגובא כבר מית באתריה מן קדם כפנא ארי לית
10 לחמא עוד בקרתא׃ ופקיד מלכא ית עבדא דמלכא צדקיה למימר דבר עמך
11 מכא תלתין גברין ותסיק ית ירמיה נביא מן גובא עד לא ימות׃ ודבר עבדא
דמלכא ית גבריא עמיה ועל לבית מלכא לתחות אוצרא ונסיב מתמן בלאי
12 טפסן ובלאי שחקן ושרבבינון לות ירמיה לגובא באטוניא׃ ואמר עבדא
דמלכא צדקיה לירמיה שוי כען בלאי טפסן ושחקן תחות מדבקי ידך מלרע לאטוניא
13 ועבד ירמיה כן׃ ונגדו ית ירמיה באטוניא ואסיקו יתיה מן גובא ויתיב ירמיה
בדרת בית אסיריא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

3 Hæc dicit Dominus, Tradendo tradetur civitas hæc in manum exercitus regis Babylonis, & subjiciet eam. 4 Et dixerunt principes regi, Occidatur nunc vir iste, propterea quòd dissolvit manus bellatorum qui remanserunt in urbe hac, & manus totius populi, dum eos hujusmodi verbis alloquitur. Vir enim iste non quærit pacem populo huic, sed malum. 5 Et dixit rex Sedechias, Ecce ipse traditus est in manum vestram: non enim rex potest prohibere vobis verbum. 6 Et tulerunt Jeremiam, & projecerunt eum in lacum Melchiæ filii regis, qui erat in atrio domus carceris; & demiserunt Jeremiam funibus, & in lacu non erat aqua sed lutum; & demersus est Jeremias in luto. 7 Et audivit servus regis Sedechiæ vir magnus, & ipse [*erat*] in domo regis, quòd posuissent Jeremiam in lacu. Et rex sedebat in porta tribus Benjamin. 8 Et egressus est servus regis de domo regis, & locutus est cum rege; dicens: 9 Domine mi rex, malefecerunt viri isti in omnibus quæ fecerunt Jeremiæ prophetæ, quem conjecerunt in lacum: jam mortuus est in loco suo præ fame, neque enim est ultrà panis in civitate. 10 Et præcepit rex servo regis Sedechiæ, dicens: Tolle hinc tecum triginta viros, & subleva Jeremiam prophetam de lacu, antequam moriatur. 11 Et tulit servus regis viros secum: & ingressus est in domum regis, sub cellarium; & tulit indè frusta panni vetera scissa, & comminuta; & demisit ea ad Jeremiam in lacum funibus. 12 Et dixit servus regis Sedechiæ ad Jeremiam, Pone nunc vetera panni frusta scissa & trita, sub axillis manuum tuarum, & sub funibus. Et fecit Jeremias sic. 13 Et extraxerunt Jeremiam funibus, & subvexerunt eum de lacu. Et mansit Jeremias in atrio domus carceris.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܫܬܠܡܘ ܡܫܬܠܡܐ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܒܐܝ̈ܕܝ ܚܝܠܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܘܢܟܒܫܝܗ.
* ܘܐܡܪܘ ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܠܡܠܟܐ. ܢܬܩܛܠ ܓܒܪܐ ܗܢܐ. ܡܛܠ ܕܗܘܝܘ ܡܪܦܐ ܐܝ̈ܕܝܐ ܕܓ̈ܒܪܐ
ܩܪ̈ܒܢܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܐܝ̈ܕܝܐ ܕܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܡܪ ܥܡܗܘܢ ܦܬܓ̈ܡܐ ܐܝܟ ܗܠܝܢ.
ܡܛܠ ܕܓܒܪܐ ܗܢܐ. ܠܐ ܒܥܐ ܫܠܡܐ ܠܥܡܐ ܗܢܐ ܐܠܐ ܒܝܫܬܐ. * ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ
ܗܐ ܡܫܠܡ ܒܐܝ̈ܕܝܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܠܟܐ ܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܐܡܪ ܠܟܘܢ ܡܕܡ. * ܘܢܣܒܘܗܝ
ܠܐܪܡܝܐ. ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܒܓܘܒܐ ܕܡܠܟܝܐ ܒܪ ܡܠܟܐ. ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܣܝܪ̈ܐ. ܘܫܒܩܘ
ܠܐܪܡܝܐ ܒܚܒܠܐ ܠܓܘܒܐ. ܘܒܓܘܒܐ ܠܝܬ ܒܗ ܡܝ̈ܐ ܐܠܐ ܐܢ ܣܝܢܐ. ܘܛܒܥ ܐܪܡܝܐ ܒܣܝܢܐ.
* ܘܫܡܥ ܥܒܕܡܠܟ ܟܘܫܝܐ ܓܒܪܐ ܡܗܝܡܢܐ. ܘܗܘ ܒܒܝܬ ܡܠܟܐ ܗܘܐ. ܕܐܪܡܝܘ
ܠܐܪܡܝܐ ܒܓܘܒܐ. ܘܡܠܟܐ ܝܬܒ ܗܘܐ ܒܬܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ. * ܘܢܦܩ ܥܒܕܡܠܟ ܡܢ ܒܝܬ
ܡܠܟܐ. ܘܐܡܪ ܠܡܠܟܐ. * ܡܪܝ. ܒܝܫ ܥܒܕܘ ܓܒܪ̈ܐ ܗܠܝܢ. ܡܕܡ ܕܥܒܕܘ ܠܐܪܡܝܐ
ܢܒܝܐ. ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܒܓܘܒܐ. ܘܗܐ ܡܐܬ ܒܟܦܢܐ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܠܚܡܐ ܒܡܕܝܢܬܐ.
* ܘܦܩܕ ܡܠܟܐ ܠܥܒܕܡܠܟ ܟܘܫܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܕܒܪ ܥܡܟ ܡܢ ܗܪܟܐ ܬܠܬܝܢ ܓܒܪܝܢ
ܘܐܣܩܘܗܝ ܠܐܪܡܝܐ ܡܢ ܓܘܒܐ. ܥܕܠܐ ܢܡܘܬ. * ܘܕܒܪ ܥܒܕܡܠܟ ܓܒܪ̈ܐ ܥܡܗ
ܡܢ ܒܝܬ ܡܠܟܐ ܠܒܝܬܗ. ܘܥܠ ܠܒܝܬ ܓܙܐ ܕܬܚܝܬ ܒܝܬ ܡܠܟܐ. ܘܢܣܒ ܡܢ
ܬܡܢ ܡܐܢ̈ܐ ܕܡܫܘܝܢ ܘܡܐܢ̈ܐ ܒܠ̈ܝܐ. ܘܫܒܩ ܐܢܘܢ ܠܐܪܡܝܐ ܒܚܒܠܐ ܠܓܘܒܐ. * ܘܐܡܪ
ܥܒܕܡܠܟ ܟܘܫܝܐ ܠܐܪܡܝܐ. ܡܐܢ̈ܐ ܕܡܫܘܝܢ ܘܒܠ̈ܝܐ. ܣܝܡ ܬܚܝܬ ܐܨܝ̈ܠܬܟ
ܡܢ ܬܚܝܬ ܚܒܠܐ. ܘܥܒܕ ܐܪܡܝܐ ܗܟܢܐ. * ܘܢܓܕܘܗܝ ܠܐܪܡܝܐ ܒܚܒܠܐ. ܘܐܣܩܘܗܝ ܡܢ
ܓܘܒܐ. ܘܝܬܒ ܐܪܡܝܐ ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܣܝܪ̈ܐ.

3 Sic ait Dominus, Tradetur hæc civitas in manum exercitûs regis Babyloniæ, qui ſubjugabit illam. 4 Quare dixerunt principes ad regem; Interficiatur vir iſte, quoniam ipſe remiſſas reddit manus virorum belligerorum qui reſidui ſunt in hac civitate, & manus totius populi quibuſcum habet hujuſcemodi ſermones: nam vir iſte non optat fœlicitatem huic populo, ſed potiùs perniciem. 5 Quibus dixit rex Sedecia, En eſt manibus veſtris commiſſus, quandoquidem rex nihil vobis dicere poteſt. 6 Accipientes itaque Jeremiam conjecerunt eum in foveam Melachiæ filii regis, *quæ erat* in atrio carceris, & fune Jeremiam demiſerunt in foveam: in illa autem fovea non erant aquæ, ſed tantùm lutum: immerſuſque eſt Jeremia in lutum. 7 Sed cùm audiſſet Abdamelech Æthiops, vir eunuchus, qui erat in domo regis, conjectum fuiſſe Jeremiam in foveam (rex autem ſedebat in porta Benjaminis) 8 Egreſſus eſt Abdamelech è domo regia, dixitque regi; 9 Domine mi, Iniquè fecerunt homines iſti quod egerunt in Jeremiam prophetam: nam projecerunt eum in foveam, & ecce fame perit, quòd non ſit panis in civitate. 10 Præcepit ergò rex Abdamelecho Æthiopi, & dixit illi, Duc tecum iſtinc triginta viros, & vade, extrahe Jeremiam è fovea priuſquam moriatur. 11 Tum ductis ſecum Abdamelech viris illis de domo regia, ingreſſus eſt in ærariũ ꝙ erat ſub domo regia; & ſumptis inde pannis quibus terguntur *jumenta*, peniculamentis pannoſis, fune demiſit ea Jeremiæ in foveam; 12 Dixitque Abdamelech Æthiops ad Jeremiam, Peniculos terſorios & ſegmenta detrita pone ſub axillis tuis ſubter funem: fecitque ſic Jeremia. 13 Tum Jeremiam fune trahentes eduxerunt eum è fovea; manſitque Jeremia in atrio carceris.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وجميع اصاريموث الي الوادي . حقل الارزات الي الزاوية باب الخيل الشرقي قدسا للرب
ولا يفني بعد ولا يهدم الي الدهر .

40 *Tota Aſarimoth uſque ad vallem, ager cedrorum uſque ad angulum, porta equorum Orientalis, ſanctuarium erunt Domino, quod non deficiet ampliùs, nec deſtruetur in æternum.*

الفصل التاسع والثلثون .

الاصحاح الخامس والعشرون .

CAP. XXXIX.

Textus vigeſimus quintus.

* القول الصاير الي ارميا من قبل الرب * في السنة العاشرة للملك صدقيا . هذه السنة
الثامنة عشر للملك بختنصر * وجيش ملك بابل سيج في اورشليم . وارميا حفظ في دار
الحبس الذي هو في بيت الملك * الذي حبسه فيه صدقيا الملك قايلا .
لماذا انت تتنبا قايلا هكذا قال الرب . ها ادفع هذه المدينة في يد ملك بابل ويأخذها
* ولا يخلص صدقيا من يد الكلدانيين . لانه يدفع دفعا الي يدي ملك بابل
ويتكلم فمه لفمه . وعيناه لعينيه تنظران * ويدخل الي بابل وهناك يموت * وكان قول
الرب الي ارميا قايلا * ها انامايل بن شالوم اخي ابيك ياتي اليك قايلا . اقتن لك
حقلي الذي في اناثوث . لانك انت لك ان تاخذه حكما * واتي الي انامايل بن شالوم
اخي ابي الي دار الحبس وقال لي . اقتن حقلي الذي في ارض بنيامين فيه . فانت شيخ
* وعرفت ان هذا قول الرب . واقتنيت حقل انامايل بن اخي ابي . واقمت له سبع مثاقيل
ومايه من الفضة * وكتبت في كتاب وختمته . واشهدت شهودا . واقمت الفضة في ميزان
* واخذت كتاب القنية المختوم المقرو * ودفعته لباروخ بن نيريو بن ماسيا ولعيني انامايل ابن
اخي ابي ولعيني القيام والكاتبين في كتاب القنية . ولعيني اليهود الذين في دار الحبس
* وامرت باروخ لعينيهم قايلا * هكذا قال الرب ضابط الكل خذ كتاب القنية المقرو وضعه
في اناء خزفي كي يقيم اياما كثيرة * لان هكذا قال الرب يقتنون ايضا حقول وبيوت وكروم
في هذه الارض * وصليت الي الرب من بعد ما دفعت كتاب القنية لباروخ بن نيريو .

1 SErmo qui factus eſt ad Jeremiam à Domino, anno decimo regis Sedeciæ, (is eſt annus decimus octavus regis Bochtonaſſaris) 2 Quum exercitus regis Babelis obſideret Jeroſolymam, & Jeremia cuſtodiretur in atrio carceris qui erat in domo regis, 3 In quem conjecerat eum Sedecia rex, dicens;

Quare tu prophetas, dicens, Ita dixit Dominus; Ecce tradam hanc urbem in manum regis Babelis, & capiet eam? 4 *Nec evadet Sedecia è manu Chaldæorum, quia certiſſimè tradetur in manus regis Babelis, cumque coràm alloquetur, & ejus oculi hujus oculos videbunt?* 5 *Babelem ingredietur, ibique morietur?* 6 *Fuit ergò ſermo Domini ad Jeremiam, dicens,* 7 *Ecce Anameel filius Salomi fratris patris tui veniet ad te dicens, Acquire tibi ipſi agrum meum qui eſt in Anathoth; quandoquidem ad te jure ſpectat eum recipere.* 8 *Quare quum veniſſet ad me Anameel filius Salomi fratris patris mei in atrium carceris, & dixiſſet mihi, Acquire agrum meum qui eſt in terra Benjaminis, in poſſeſſionem, quippe qui ſenior es;* 9 *Et ſciebam hunc eſſe Domini ſermonem: acquiſivi agrum Anameelis filii fratris patris mei, & appendi illi centum ac ſeptem ſiclos argenti:* 10 *Scripſi in libello, & obſignavi eum, teſtes adhibui, & pecuniam appendi staterâ.* 11 *Inde ſumpſi libellum acquiſitionis obſignatum & prælectum.* 12 *Dedique eum Barucho filio Neriæ filii Maaſiæ, ſpectante Anameele filio fratris patris mei, & ſpectantibus iis qui aderant & ſcripſerant in libello acquiſitionis, ſpectantibus etiam Judæis qui erant in atrio carceris:* 13 *Et præcepi Barucho iis præſentibus, dicens;* 14 *Sic ait Dominus omnipotens, Accipe libellum acquiſitionis qui lectus eſt, eumque reponas in vaſe teſtaceo, ut permaneat pluribus diebus.* 15 *Sic enim dixit Dominus, Poſſidebuntur adhuc agri, domus, atque vineæ in hac terra.* 16 *Tum oravi Dominum [illegible] [illegible] libellum acquiſitionis Barucho filio Neriæ [illegible].*

ſe ad prophetam Irmeiahu tulit & ,Sidchijahu rex miſit Et
14 וישלח המלך צדקיהו ויקח את־ירמיהו הנביא אליו
ad rex dixit & : Domini domo in qui ,tertium introitum ad
אל־מבוא השלישי אשר בבית יהוה ויאמר המלך אל־
verbum me à celes ne ,verbum te ego *Interrogans* : Irmejahu
ירמיהו שאל אני אתך דבר אל־תכחד ממני דבר :
nónne ,tibi annuntiavero *Cùm* : Sidchijahu ad Irmejahu dixit Et
15 ויאמר ירמיהו אל־צדקיהו כי אגיד לך הלוא
,me ad *audies* non ,tibi conſuluero *cùm* Et ? me facies mori faciendo mori
המת תמיתני וכי איעצך לא תשמע אלי :
Vivens : dicendo ,*abſconditio in* Irmeiahu *ad* Sidchijahu rex juravit Et
16 וישבע המלך צדקיהו אל־ירמיהו בסתר לאמר חי־
,te occidero ſi ,hanc animam nobis fecit qui ,Dominus
יהוה את אשר עשה לנו את־הנפש הזאת אם־אמיתך
quærentes qui ,iſtorum virorum manu in te tradidero ſi &
ואם־אתנך ביד האנשים האלה אשר מבקשים את
dixit Sic : Sidchijahu ad Irmejahu dixit Et .tuam animam
17 נפשך : ויאמר ירמיהו אל־צדקיהו כה־אמר
exieris exeundo Si : Iſrael Deus exercituum Deus Dominus
יהוה אלהי צבאות אלהי ישראל אם־יצא תצא
non hæc civitas & ,tua anima vivet & ,Babel regis principes ad
אל־שרי מלך־בבל וחיתה נפשך והעיר הזאת לא
ad exieris non ſi Et .tua *domus* & ,tu vives & : igni in ſuccēdetur
18 תשרף באש וחיתה אתה וביתך : ואם לא־תצא אל־
,Chaſdim manum in hæc civitas tradetur & ,Babel regis principes
שרי מלך בבל ונתנה העיר הזאת ביד הכשדים
dixit Et .eorum manu de *evades* non tu & ; igni in eā ſuccendent &
19 ושרפוה באש ואתה לא־תמלט מידם : ויאמר
qui ,Jehudæos *verens* Ego : Irmeiahu ad Sidchijahu rex
המלך צדקיהו אל־ירמיהו אני דאג את־היהודים אשר
illudant & ,eorū manū in me dent fortè ne ; Chaſdim ad *ſunt delapſi*
נפלו אל־הכשדים פן־יתנו אתי בידם והתעללו
,Domini *vocem in* ,quæſo ,Audi .tradent Non : Irmejahu dixit Et *.me in*
20 בי : ויאמר ירמיהו לא יתנו שמע־נא בקול יהוה
ſi Et .tua anima vivet & ,tibi erit bene & ,te ad *loquens* ego qua
21 לאשר אני דבר אליך וייטב לך ותחי נפשך : ואם
.Dominus mihi oſtendit quod ,verbum hoc ,exire *tu* *renuens*
מאן אתה לצאת זה הדבר אשר הראני יהוה :
,Jehudah regis domo in remanſerunt quæ ,mulieres omnes ecce Et
22 והנה כל־הנשים אשר נשארו בבית מלך־יהודה
,te *Incitaverunt* : *dicentes* ipſæ & ; Babel regis principes ad *eductæ*
מוצאות אל־שרי מלך בבל והנה אמרות הסיתוך
,*tuum pes* cœno in ſunt *immerſi* ,tuæ pacis viri tibi prævaluerunt &
ויכלו לך אנשי שלמך הטבעו בבץ רגלך
tuos filios & ,tuas uxores omnes Et .retrorſum ſunt converſi
23 נסגו אחור : ואת־כל־נשיך ואת־בניך
ſed ,eorū manu de evades non tu & ,Chaſdim ad *educentes*
מוצאים אל־הכשדים ואתה לא־תמלט מידם כי
.igni *in cremabis* hanc civitatem & ,capieris Babel regis manu in
ביד מלך־בבל תתפש ואת־העיר הזאת תשרף באש :
,iſta verba *in* ſciat *non Vir* : Irmeiahu ad Sidchijahu dixit Et
24 ויאמר צדקיהו אל־ירמיהו איש אל־ידע בדברים האלה
,tecum ſum locutus quod ,principes audierint *cùm Et* .morieris non &
25 ולא תמות : וכי־ישמעו השרים כי־דברתי אתך
es locutus quid nobis nunc Indica ,*te ad* dixerint & ,te ad venerint &
ובאו אליך ואמרו אליך הגידה־נא לנו מה־דברת
quid & ,te interficiemus non & ,nobis à celes ne ,regem ad
אל־המלך אל־תכחד ממנו ולא נמיתך ומה
? rex te ad eſt locutus
דבר אליך המלך :

Verſio VULG. LAT.

14 Et miſit rex Sedecias, & tulit ad ſe Jeremiam prophetam ad oſtium tertium, quod erat in domo Domini: & dixit rex ad Jeremiam; Interrogo ego te ſermonem, ne abſcondas à me aliquid. 15 Dixit autem Jeremias ad Sedeciam; Si annuntiavero tibi, numquid non interficies me? & ſi conſilium dedero tibi, non me audies. 16 Juravit ergò rex Sedecias Jeremiæ clàm, dicens; Vivit Dominus, qui fecit nobis animam hanc, ſi occidero te, & ſi tradidero te in manus virorum iſtorum, qui quærunt animam tuam. 17 Et dixit Jeremias ad Sedeciam, Hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael, Si profectus exieris ad principes regis Babylonis, vivet anima tua, & civitas hæc non ſuccendetur igni: & ſalvus eris tu, & domus tua. 18 Si autem non exieris ad principes regis Babylonis, tradetur civitas hæc in manus Chaldæorum, & ſuccendent eam igni: & tu non effugies de manu eorum. 19 Et dixit rex Sedecias ad Jeremiam; Solicitus ſum propter Judæos, qui tranſfugerunt ad Chaldæos, ne fortè tradar in manus eorum, & illudant mihi. 20 Reſpondit autem Jeremias; Non te tradent: audi, quæſo, vocem Domini, quam ego loquor ad te, & benè tibi erit, & vivet anima tua. 21 Quòd ſi nolueris egredi: iſte eſt ſermo, quem oſtendit mihi Dominus; 22 Ecce omnes mulieres, quæ remanſerunt in domo regis Juda, educentur ad principes regis Babylonis: & ipſæ dicent; Seduxerunt te, & prævaluerunt adverſùm te viri pacifici tui, demerſerunt in cœno & in lubrico pedes tuos, & receſſerunt à te. 23 Et omnes uxores tuæ, & filii tui educentur ad Chaldæos: & non effugies manus eorum, ſed in manu regis Babylonis capieris: & civitatem hanc comburet igni. 24 Dixit ergò Sedecias ad Jeremiam, Nullus ſciat verba hæc, & non morieris. 25 Si autem audierint principes quia locutus ſum tecum, & venerint ad te, & dixerint tibi; Indica nobis quid locutus ſis cum rege, ne celes nos, & non te interficiemus: & quid locutus eſt tecum rex;

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Ὦ ὢν (ψ) κύριε, σὺ ἐποίησας τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν (ω) τῇ ἰσχύϊ σου τῇ μεγάλῃ, καὶ τῷ βραχίονί σου τῷ ὑψηλῷ καὶ τῷ μετεώρῳ, οὐ μὴ ἀποκρυβῇ ἀπὸ σοῦ οὐθέν, 18 Ποιῶν ἔλεος εἰς χιλιάδας, καὶ ἀποδιδοὺς ἁμαρτίας πατέρων εἰς κόλπους τέκνων αὐτῶν μετ' αὐτούς· ὁ θεὸς ὁ (α) μέγας, ὁ ἰσχυρός, 19 Κύριος μεγάλης βουλῆς, καὶ (β) δυνατὸς τοῖς ἔργοις, ὁ θεὸς ὁ μέγας ὁ παντοκράτωρ, καὶ μεγαλώνυμος κύριος· οἱ ὀφθαλμοί σου εἰς τὰς (γ) ὁδοὺς τῶν υἱῶν τῶν ἀνθρώπων, δοῦναι ἑκάστῳ κατὰ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ· 20 (δ) Ὃς ἐποίησας σημεῖα καὶ τέρατα ἐν γῇ Αἰγύπτῳ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, καὶ ἐν Ἰσραήλ, καὶ ἐν τοῖς γηγενέσι· καὶ ἐποίησας σεαυτῷ ὄνομα, ὡς (ε) ἡ ἡμέρα αὕτη, 21 Καὶ ἐξήγαγες τὸν λαόν σου Ἰσραὴλ ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἐν σημείοις (ϛ) καὶ ἐν τέρασιν, ἐν χειρὶ κραταιᾷ, καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ, καὶ ἐν ὁράμασι μεγάλοις, 22 Καὶ ἔδωκας αὐτοῖς τὴν γῆν ταύτην, ἣν ὤμοσας τοῖς πατράσιν αὐτῶν, γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι. 23 Καὶ εἰσήλθοσαν καὶ (ζ) ἔλαβον αὐτήν, καὶ οὐκ ἤκουσαν τῆς φωνῆς σου, καὶ ἐν τοῖς προστάγμασί σου οὐκ ἐπορεύθησαν· ἅπαντα ἃ ἐνετείλω αὐτοῖς οὐκ ἐποίησαν, καὶ ἐποίησας συμβῆναι αὐτοῖς (η) πάντα τὰ κακὰ ταῦτα. (θ) 24 Ἰδοὺ ὄχλος ἥκει εἰς τὴν (ι) πόλιν συλλαβεῖν αὐτήν, καὶ ἡ πόλις ἐδόθη εἰς χεῖρας Χαλδαίων τῶν πολεμούντων αὐτὴν ἀπὸ προσώπου μαχαίρας, καὶ τοῦ λιμοῦ. ὡς ἐλάλησας, 25 οὕτως ἐγένετο. Καὶ σὺ λέγεις πρὸς μέ, Κτῆσαι σεαυτῷ (κ) τὸν ἀγρὸν ἀργυρίου· καὶ (λ) ἔγραψα βιβλίον, καὶ ἐσφραγισάμην, καὶ ἐπεμαρτυράμην μάρτυρας, καὶ ἡ πόλις ἐδόθη εἰς χεῖρας Χαλδαίων. 26 Καὶ ἐγένετο 27 λόγος κυρίου πρὸς μέ, λέγων, Ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς πάσης σαρκός, μὴ ἀπ' ἐμοῦ κρυβήσεταί (μ) τι; 28 Διατοῦτο οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραήλ, Δοθεῖσα παραδοθήσεται ἡ πόλις αὕτη εἰς χεῖρας βασιλέως 29 Βαβυλῶνος, καὶ λήψεται αὐτήν, Καὶ ἥξουσιν οἱ Χαλδαῖοι πολεμοῦντες (ν) ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην, καὶ καύσουσι τὴν πόλιν ταύτην ἐν πυρί, καὶ (ξ) κατακαύσουσι τὰς οἰκίας ἐν αἷς (ο) ἐθυμιῶσαν ἐπὶ τῶν δωμάτων αὐτῶν τῇ Βάαλ, καὶ ἔσπενδον σπονδὰς θεοῖς 30 ἑτέροις, πρὸς τὸ παραπικρᾶναί με· Ὅτι ἦσαν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ καὶ οἱ υἱοὶ Ἰούδα μόνοι ποιοῦντες τὸ πονηρὸν (π) κατ' ὀφθαλμούς 31 μου ἐκ νεότητος αὐτῶν. Ὅτι ἐπὶ τὴν ὀργήν μου, καὶ ἐπὶ τὸν θυμόν μου ἦν ἡ πόλις αὕτη, ἀφ' ἧς ἡμέρας ᾠκοδόμησαν αὐτὴν καὶ ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, ἀπαλλάξαι (ρ) αὐτὴν ἀπὸ προσώπου μου,

O (ψ) Domine, Tu fecisti cœlum & terram [illegible] magna, & brachio tuo excelſo & ſublimi: non abſcondetur à te quicquam: Qui facis miſericordiam in millia & reddis peccata patrum in ſinus filiorum eorum poſt eos: Deus magnus, (α) Dominus magni conſilii, & potens operibus, Deus magnus omnipotens, & magni nominis Dominus: Oculi (γ) tui ad vias filiorum hominum, ut des unicuique juxta viam (δ) ejus: Qui feciſti ſigna & prodigia in terra Ægypti uſque in diem hanc, & in Iſrael, & in indigenis, & feciſti tibi nomen, ſicut dies hæc: Et eduxiſti populum tuum Iſrael de terra Ægypti in ſignis, & in prodigiis, in manu valida, & in brachio excelſo, & in viſionibus magnis: Et dediſti eis terram hanc, quam juraviſti patribus eorum, terram fluentem lac, & mel: Et intraverunt, & acceperunt eam: & non audierunt vocem tuam, & in præceptis tuis non ambulaverunt: omnia, quæ mandaveras eis, non fecerunt: & feciſti ut evenirent ſibi mala hæc. Ecce turba venit ad civitatem, ad capiendam eam: & urbs data eſt in manus Chaldæorum, qui oppugnant eam à facie gladii, & famis: ſicut loquutus es, ſic factum eſt. Et tu dicis ad me: Acquire tibi agrum argento: & ſcripſi librum, & ſignavi, & conteſtatus ſum teſtes: & urbs data eſt in manus Chaldæorū. Et factū eſt verbum Domini ad me, dicens, Ego Dominus Deus univerſæ carnis: nunquid à me abſcondetur quicquam? Propterea ſic dixit Dominus Deus Iſrael, Tradita tradetur civitas iſta in manus regis Babylonis, & capiet eam: Et venient Chaldæi oppugnantes ſuper civitatem iſtam, & ſuccendent urbem hanc igne, & comburent domos, in quibus adolebant ſuper tecta earum Baal, & libabant libamina diis alienis, ad exacerbandum me: Quia fuerunt filii Iſrael, & filii Juda (l) ſoli facientes malum ante oculos meos ab adoleſcentia (m) ſua: Quia ſuper iram meam, & ſuper furorem meum fuit civitas hæc, ex qua die ædificaverunt eam, & uſque ad diem hanc, ad amovendam eam à facie mea,

MS. A. (ψ) κύριε, κύριε, (ω) ἐν τῇ (α) μέγας καὶ ἰσχυρός, (β) ὁ δυνατὸς (γ) ὁδοὺς τῶν ἀνθρώπων, ἀποδοῦναι (δ) Ὅσα (ε) ἡ ἡμέρα (ϛ) καὶ τέρασιν, καὶ ἐν (ζ) ἐλάβοσαν (η) ἅπαντα (θ) Καὶ ἰδοὺ (ι) πόλιν ταύτην (κ) ἀγρὸν (λ) ἔγραψα εἰς (μ) ἔτι; (ν) ἐπὶ τὴν γῆν ταύτην, (ξ) καύσουσιν (ο) ἐθυμιῶσαν ἐν αὐταῖς ἔτι (π) ἐκ νεότητος αὐτῶν κατ' ὀφθαλμούς μου. Ὅτι (ρ) αὐτῆς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ושלח מלכא צדקיה ודבר ית ירמיה נביא לותיה למעלנא תליתאה די בבית
15 מקדשא דיי ואמר מלכא לירמיה שאל אנא יתך פתגמא לא תכסי מני פתגמא : ואמר
ירמיה לצדקיה ארי אחוי לך הלא מקטל תקטלנני וארי אמלכנך לא תקבל מני :
16 וקיים מלכא צדקיה לירמיה בסתרא למימר קים הוא יי ית דקים לנא ית נפשתא
17 האלין אם אקטלנך ואם אמסרנך ביד גבריא האלין דבען למקטלך : ואמר ירמיה
לצדקיה כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל אם מפק תפוק לות רברבי מלכא
18 דבבל ותתקיים נפשך וקרתא הדא לא תתוקד בנורא ותחי את ואנש ביתך : ואם
לא תפוק לות רברבי מלכא דבבל ותתמסר קרתא הדא בידא דכסדאי ויוקדונה
19 בנורא ואת לא תשתיזב מידיהון : ואמר מלכא צדקיה לירמיה אנא יציף מן יהודאי
20 דאשתמעו לכסדאי דלמא ימסרון יתי בידיהון ויתלעבון בי : ואמר ירמיה לא ימסרון
21 קביל כען למימרא דיי לדאנא ממליל עמך וייטב לך ותתקיים נפשך : ואם
22 לית את צבי למפק דין פתגמא דאחזיני יי : הא כל נשיא דאשתארא
בבית מלך שבטא דבית יהודה מתפקן לות רברבי מלכא דבבל ואנין אמרין
אטעיוך ויכילו לך אנש שלמך אשתקעא בבהתא רגלך אסתחרא לאחרא :
23 וית כל נשך וית בנך מתפקין לות כסדאי ואת לא תשתיזב מידהון ארי ביד מלכא
24 דבבל תתמסר וית קרתא הדא תתוקד בנורא : ואמר צדקיה לירמיה אנש
25 לא ידע בפתגמיא האלין ולא תמות : וארי ישמעון רברביא ארי מלילית עמך
וייתון לותך ויימרון לך חוי כען לנא מה מלילית עם מלכא לא תכסי מננא ולא נקטלנך
ומה מליל עמך מלכא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et miſit rex Sedechias, & tulit Jeremiam prophetam ad ſe, ad oſtium 14 tertium quod erat in domo ſanctuarii Domini. Dixitque rex ad Jeremiam, Interrogo ego te ſermonem: ne celes à me quicquam. Et dixit Jeremias 15 ad Sedechiam, Si annuntiavero tibi, nónne interficiendo interficies me? & ſi conſilium dedero tibi, non acquieſces mihi. Et juravit rex Sedechias, 16 dicens in occulto Jeremiæ, Vivus eſt Dominus qui ſuſtentat nobis animas iſtas, ſi occidero te, & ſi tradidero te in manus virorum iſtorum, qui quærunt occidere te. Et dixit Jeremias Sedechiæ: Hæc dicit Dominus exercituum 17 Deus Iſrael: Si egrediendo egreſſus fueris ad principes regis Babylonis, & ſuſtentabitur anima tua, & civitas hæc non comburetur igni; & vives tu, & viri domus tuæ. Si verò non exieris ad principes regis Babylonis, 18 tradetur civitas hæc in manum Chaldæorum, & ſuccendent eam igni, & tu non liberaberis de manibꝰ eorum. Et dixit rex Sedechias ad Jeremiam, 19 Anxiꝰ ſum propter Judæos qui ſe dediderunt Chaldæis, ne fortè tradant me in manꝰ eorum, & illudant mihi. Et dixit Jeremias, Non tradent: acquieſce 20 obſecro verbo Domini quod ego loquor tecum, ut benè ſit tibi, & ſuſtentetur anima tua. Quòd ſi renuis exire: hoc eſt verbum quod oſtendit mihi 21 Dominꝰ. Ecce omnes mulieres quæ remanſerunt in domo regis tribꝰ 22 domꝰ Juda, educentur ad principes regis Babylonis; & ipſæ dicent, Deceperunt te & prævaluerunt contra te viri pacifici tui: ſubmerſi ſunt in confuſione pedes tui: converſi ſunt retrorſum. Et omnes uxores tuæ & 23 filii tui educentur ad Chaldæos, & tu non evades è manibꝰ eorum, quia in manu regis Babylonis *traderis*, & civitas hæc comburetur igni. Et dixit 24 Sedechias ad Jeremiam, Nullus vir ſciat verba hæc, & non morieris. 25 Cùm autem audierint principes quia locutus ſum tecum, & venerint ad te, & dixerint tibi, Narra nunc nobis quid locutus ſis cum rege, ne celes à nobis & non interficiemus te, & quid locutus eſt tecum rex.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܫܕܪ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ. ܘܕܒܪܗ ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܘܬܗ. ܠܓܘ ܡܢ ܬܠܬܐ ܬܪܥܝܢ ܕܒ
ܕܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ ܠܐܪܡܝܐ. ܫܐܠܐ ܐܢܐ ܠܟ ܡܠܬܐ. ܠܐ ܬܛܫܐ ܡܢܝ ܡܠܬܐ. * ܘܐܡ
ܐܪܡܝܐ ܠܨܕܩܝܐ. ܐܢ ܡܚܘܐ ܐܢܐ ܠܟ ܗܘ. ܡܩܛܠ ܐܢܬ ܠܝ. ܘܐܢ ܡܡܠܟ ܐܢܐ ܠܟ ܠܐ ܫܡܥ ܐܢ
ܠܝ. * ܘܝܡܐ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ ܠܐܪܡܝܐ ܒܛܘܫܝܐ ܒܒܝܬܐ. ܘܐܡܪ. ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ ܕܥ
ܠܢ ܢܦܫܐ. ܕܠܐ ܐܩܛܠܟ. ܘܠܐ ܐܫܠܡܟ ܒܝܕ ܐܢܫܐ ܗܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܟ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡ
ܠܨܕܩܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢ ܡܦܩ ܬܦܘܩ ܠܘܬ ܪܘܪܒܢܐ ܕܡܠ
ܕܒܒܠ. ܬܚܐ ܐܢܬ ܢܦܫܟ. ܘܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܠܐ ܬܐܩܕ ܒܢܘܪܐ. ܘܬܚܐ ܐܢܬ ܘܒܝܬܟ. * ܘܐ
ܢܦܩ ܐܢܬ ܠܘܬ ܪܘܪܒܢܐ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܡܫܬܠܡܐ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܒܐܝܕܝ ܟܠܕ
ܘܢܘܩܕܘܢܗ ܒܢܘܪܐ. ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܬܦܠܛ ܡܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ ܠܐܪܡ
ܕܚܝܠ ܐܢܐ ܡܢ ܝܗܘܕܝܐ ܕܢܦܩܘ ܠܘܬ ܟܠܕܝܐ. ܕܠܡܐ ܢܫܠܡܘܢܢܝ ܒܐܝܕܝܗܘܢ ܘܢܒܙܚܘܢ ܒ
* ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ. ܠܐ ܡܫܠܡܝܢ ܠܟ. ܫܡܥ ܒܥܢ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪ ܐܢܐ ܠܟ. ܕܢܛܐܒ ܠ
ܘܬܚܐ ܢܦܫܟ. * ܘܐܢ ܠܐ ܨܒܐ ܐܢܬ ܠܡܦܩ. ܗܢܘ ܦܬܓܡܐ ܕܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ. * ܘܟܠ
ܢܫܐ ܕܐܫܬܚܪ: ܒܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܢܦܩܢ ܠܘܬ ܪܘܪܒܢܐ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒ
ܘܐܡܪܢ ܐܛܥܝܘܟ. ܘܐܙܟܝܘܟ ܐܢܫܐ ܕܫܐܠܝܢ ܗܘܘ ܒܫܠܡܟ. ܘܐܛܒܥܘ ܒܣ
ܪܓܠܝܟ: ܘܗܦܟܘ ܠܒܣܬܪܗܘܢ. * ܘܠܢܫܝܟ ܘܠܒܢܝܟ ܡܦܩܝܢ ܠܘܬ ܟܠܕ
ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܬܦܠܛ ܡܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. ܐܠܐ ܒܐܝܕܝܗ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܬܬܐܚܕ
ܘܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܬܐܩܕ ܒܢܘܪܐ. * ܘܐܡܪ ܨܕܩܝܐ ܠܐܪܡܝܐ. ܐܢܫ ܠܐ ܢܕܥ ܒܡܠܐ ܗܠ
ܕܠܐ ܬܡܘܬ. * ܘܐܢ ܢܫܡܥܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܡܠܠܬ ܥܡܟ: ܘܢܐܬܘܢ ܠܘܬܟ ܘܢܐܡ
ܠܟ: ܚܘܝܢ ܡܢܐ ܡܠܠܬ ܥܡ ܡܠܟܐ: ܘܡܢܐ ܐܡܪ ܠܟ ܡܠܟܐ: ܠܐ ܬܛ
ܡܢܢ ܕܠܐ ܢܩܛܠܟ.

14 * Deinde mittens rex Sedecia adduci juſſit ad ſe Jeremiam prophetam tres intra portas domûs Domini, dixítque rex ad Jeremiam, Verbum abs te peto, ne me celato verbum. 15 Dixit Jeremia Sedeciæ; Si indicavero tibi, ecce me morte afficies: ſique conſilium tibi dedero, non auſcultabis mihi. 16 Juravit autem rex Sedecia Jeremiæ clanculùm in domo, dixitque; Per Dominum vivum qui nobis indidit animam, nec te morte afficiam, neque te tradam in manum hominum iſtorum qui quærunt animam tuam. 17 Tunc dixit Jeremia Sedeciæ, Sic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis; Si prodieris ad principes regis Babyloniæ, vivam ſervabis animam tuam, & civitas iſta non comburetur igne; atque ita vives tu & familia tua. 18 Verùm ſi non prodieris ad principes regis Babyloniæ, tradetur civitas iſta in manuum Chaldæorum, & comburent eam igne, neque tu manus eorum effugies. 19 Dicente autem rege Sedeciâ Jeremiæ, Vereor Judæos, ne ſi prodiero ad Chaldæos, tradant me in manus eorum, & ludibrio me afficiant: 20 Reſpondit Jeremia, Non ſunt te tradituri: acquieſce quæſo, verbo Domini ꝙ tibi dico, ut bene ſit tibi, & vivat anima tua. 21 Quòd ſi prodire nolis, hic eſt ſermo quem ſignificavit mihi Dominus; 22 Omnes fœminæ quæ reliquæ manſerunt in domo regis Judæ, prodibunt ad principes regis Babyloniæ, dicentes; Seduxerunt atque vicerunt te homines qui tuam cupiebant fœlicitatē, demerſiſque in lutum pedibus tuis, ipſi ſe retraxerunt. 23 Omnes enim uxores tuas & filios tuos producent ad Chaldæos: tu non effugies manus eorum, ſed in manus regis Babyloniæ tradéris. & civitas hæc igne comburetur. 24 Tunc dixit Sedecia Jeremiæ, Nemo reſciat hæc verba, ne moriaris. 25 Sed cùm audierint principes me tecum ſermonem habuiſſe, venerintque ad te & dixerint tibi, Indica nobis quid locutus es apud regem, & quid dixit tibi rex: ne celato nos, ne te interficiamus:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ايها الرب الكاين . انت صنعت السما والارض بقوتك العظيمة وبذراعك الرفيعة العالية
لا يخفي عنك ولا شي * الصانع الرحمة الوف . والمعطي خطايا الاباء في احضان الابنا
بعدهم . الله العظيم القوي * رب الراي العظيم . والقوي في اعماله . الاله العظيم
الضابط الكل . والعظيم الاسم . يا رب عينك الي طرق البشر لتعطي كل واحد كطريقه
* كما صنعت ايات وجرايح في ارض مصر الي هذا اليوم في اسرايل وفي الارضيين . وصنعت
لذاتك اسما كما هذا اليوم * واخرجت شعبك اسرايل من ارض مصر بايات وجرايح ب
عزيز وذراع رفيعة ومراي عظيمة * واعطيتهم هذه الارض التي اعطيتها لابايهم . ار
تفيض لبنا وعسلا * ودخلوا واخذوها . ولم يسمعوا صوتك . ولم يسيروا في اوامرك . و
يصنعوا بكلما امرتهم . جعلت ان تصيبهم جميع هذه الشرور * ها جمع اتي الي المدينة
لياخذها . والمدينة دفعت الي ايدي الكلدانيين ليحاربوها من وجه السيف والجوع
كلما تكلمت هكذا صار * وانت تقول لي اقتن لذاتك حقل فضة . وكتبت
وختمته . واشهدت شهودا . والمدينة دفعت الي ايدي الكلدانيين * وكان قول الرب
قايلا * انا الرب الاله لا يخفي عني شي * لاجل هذا هكذا يقول الرب اله اسرايل
دفعت وتدفع اوروشليم الي ايدي ملك بابل وياخذها * ويوافي الكلدانيون يحاربون
هذه المدينة . ويحرقون هذه المدينة بالنار . ويحرقون المساكن التي فيها بخروا على اسطحتهم
للبعل . واراقوا القوارير للالهة الغريبة ليحزنوني * لان بني اسرايل كانوا وبني يهوذا وحدهم
يصنعون الشر لعيني منذ صباهم * لان على رجزي وعلى غضبي هذه المدينة منذ بني
منها والي هذا اليوم . لاقلعها من وجهي .

17 *O Domine qui es, tu cælum terramque feciſti potentiâ tuâ magnâ, & brachio tuo excelſo atque ſublimi, quem nulla unquam res latet:* 18 *Faciens miſericordiam in millia, & reddens peccata parentum in ſinus filiorum poſt ipſos, Deus maxime & fortiſſime,* 19 *Domine ſummi conſilii, potentiſſime in operibus tuis, Deus maxime, omnipotens, & ſummi nominis: O Domine, oculi tui vias hominum intuentur, ut reddas unicuique ſecundùm viam ſuam.* 20 *Quemadmodum feciſti ſigna & portenta in terra Ægypti ad hunc uſque diem in Iſraele & in terricolis, & comparâſti tibi nomen quale eſt hodiernâ die:* 21 *Eduxiſti populum tuum Iſraelem è terra Ægypti ſignis atque portentis, manu potenti, brachio excelſo, magniſque ſpectaculis:* 22 *Et dediſti eis hanc terram quam dederas majoribus eorum, terram lacte & melle exuberantem.* 23 *Sed quia ingreſſi & poſſidentes eam, non auſcultaverunt voci tuæ, nec ambulaverunt in præceptis tuis, neque fecerunt quicquid præcepiſti eis; ideo feciſti ut contingerent eis tanta hæc mala.* 24 *Ecce turba venit ad urbem ut capiat eam; & urbs tradita jam eſt in manus Chaldæorum, ut expugnent eam metu gladii & famis: quicquid locutus es, ita factum eſt:* 25 *Attamen tu mihi dicis, Acquire tibi agrum pecuniâ; adeoque ſcripſi libellum & obſignavi eum adhibitis teſtibus, quum urbs tradita ſit in manus Chaldæorum.* 26 *Fuit autem ſermo Domini ad me, dicens;* 27 *Ego ſum Dominus Deus, nulla me latet res.* 28 *Idcirco ſic dicit Dominus Deus Iſraelis; Tradita eſt, atque tradetur Jeruſalem in manus regis Babelis, & capiet eam:* 29 *Et venient Chaldæi, pugnabuntque in hac urbe, & urbem hanc igne comburent, & ſuccendent habitationes in quibus adoleverunt ſuper tecta ſua Baali, & lenticulas effuderunt diis alienis, ut me exaſperarent.* 30 *Quia filii Iſraelis & filii Judæ ſoli malum perpetrabant in oculis meis inde à pueritia ſua:* 31 *Quia iræ meæ & furori meo obnoxia fuit hæc urbs ab ea die quâ ædificavi illam ad hodiernum uſque diem, dubio procul immutabo eam à conſpectu meo;*

, regis facies ad meă deprecatione ego jaciens Cadere : eos ad dices Et
26 ואמרת אליהם מפיל־אני תחנתי לפני המלך
Veneruntque .ibi moriendum ad ,Jonathan domum me reducendum non ad
27 לבלתי השיבני בית יהונתן למות שם: ויבאו
nuntiavit & ,eum interrogaverunt & ,Irmejahu ad principes omnes
כל השרים אל־ירמיהו וישאלו אתו ויגד
tacuerunt & : rex præcepit quæ ,hæc verba omnia juxta eis
להם ככל־הדברים האלה אשר צוה המלך ויחרשו
atrio in Irmejahu mansit Et .verbum est auditum non quia , eo ab
28 ממנו כי לא־נשמע הדבר: וישב ירמיהו בחצר
ut est factum & : Jerusalaim est capta quo diem ad usque ,custodiæ
המטרה עד־יום אשר־נלכדה ירושלם והיה כאשר
.Jerusalaim caperetur
נלכדה ירושלם:

CAP. XXXIX. לט

, decimo mense in ,Jehudah regis Sidchijahu nono anno In
1 בשנה התשעית לצדקיהו מלך־יהודה בחדש העשרי
,Jerusalaim ad ejus virtus omnis & ,Babel rex Nebuchadresar venit
בא נבוכדראצר מלך־בבל וכל־חילו אל־ירושלם
mense in Sidchijahu anno undecimo In .eam super obsederunt &
2 ויצרו עליה: בעשתי עשרה שנה לצדקיהו בחדש
omnes sunt ingressi Et .civitas est scissa , mensis nona in , quarto
3 הרביעי בתשעה לחדש הבקעה העיר: ויבאו כל־
, Sareser-Nerghal , media porta in sederunt & ,Babel regis principes
שרי מלך־בבל וישבו בשער התוך נרגל שראצר
, Mag-Rab , Sareser-Nerghal , Saris-Rab , Sarsechim , Nebu-Samghar
סמגר־נבו שרסכים רב־סריס נרגל שראצר רב־מג
eos vidisset cùm fuit Et .Babel regis principes ,reliquum omne &
4 וכל־שארית שרי מלך־בבל: ויהי כאשר ראם
, fugerunt & ,belli viri omnes & ,Jehudah rex Sidchijahu
צדקיהו מלך־יהודה וכל אנשי המלחמה ויברחו
inter portam per ,regis horti via civitate de nocte sunt egressi &
ויצאו לילה מן־העיר דרך גן המלך בשער בין
exercitus sunt persecuti Et .deserti via est egressus & ,muros duos
5 החמתים ויצא דרך הערבה: וירדפו חיל־
campestribus in Sidchijahu comprehenderunt & , eos post Chasdim
כשדים אחריהם וישגו את־צדקיהו בערבות
Nebuchadnesar ad eum fecerunt ascendere & ,eum tulerunt & ,Jerecho
ירחו ויקחו אתו ויעלהו אל־נבוכדנאצר
eo cum est locutus & : Chamath terra in , Riblah in Babel regem
מלך־בבל רבלתה בארץ חמת וידבר אתו
Riblah in Sidchijahu filios Babel rex jugulavit Et .judicia
6 משפטים. וישחט מלך בבל את־בני צדקיהו ברבלה
.Babel rex jugulavit Jehudah heroas omnes & ,ejus oculis in
לעיניו ואת כל־חרי יהודה שחט מלך בבל:
, compedibus in eum vinxit & ; cæcavit Sidchijahu oculos Et
7 ואת־עיני צדקיהו עור ויאסרהו בנחשתים
populi domum & , regis Domumque .Babel in eum adducendum ad
8 לביא אתו בבלה: ואת־בית המלך ואת־בית העם
.diruerunt Jerusalaim muros & ; igni in Chasdim succenderunt
שרפו הכשדים באש ואת־חומת ירושלם נתצו:
qui dilabentes & ,civitate in remanentum populi residuum Et
9 ואת יתר העם הנשארים בעיר ואת־הנפלים אשר
Nebuzaradan transtulit ,residuorum ,populi residuum & ,eū super sunt dilapsi
נפלו עליו ואת יתר העם הנשארים הגלה נבוזראדן
eis non quibus , tenues plebe de Et .Babel laniorum magister
10 רב־טבחים בבל: ומן־העם הדלים אשר אין־להם
terra in laniorum magister Nebuzaradan fecit remanere , quicquam
מאומה השאיר נבוזראדן רב־טבחים בארץ
.illa die in agros & , vineas eis dedit & : Jehudah
יהודה ויתן להם כרמים ויגבים ביום ההוא:

Versio VULG. LAT.

26 Dices ad eos; Prostravi ego preces meas coram rege, ne me reduci juberet in domum Jonathan, & ibi morerer. 27 Venerunt ergo omnes principes ad Jeremiam, & interrogaverunt eum: & locutus est eis, juxta omnia verba quæ præceperat ei rex, & cessaverunt ab eo: nihil enim fuerat auditum. 28 Mansit vero Jeremias in vestibulo carceris usq; ad diem, quo capta est Jerusalem: & factum est ut caperetur Jerusalem.

CAP. XXXIX.

1 ANno nono Sedeciæ regis Juda, mense decimo, venit Nabuchodonosor rex Babylonis, & omnis exercitus ejus ad Jerusalem, & obsidebant eam. 2 Undecimo autem anno Sedeciæ, mense quarto, quinta mensis, aperta est civitas. 3 Et ingressi sunt omnes principes regis Babylonis, & sederunt in porta media: Neregel, Sereser, Semegarnabu, Sarsachim, Rabsares, Neregel, Sereser, Rebmag, & omnes reliqui principes regis Babylonis. 4 Cùmque vidisset eos Sedecias rex Juda, & omnes viri bellatores, fugerunt: & egressi sunt nocte de civitate per viam horti regis, & per portam, quæ erat inter duos muros, & egressi sunt ad viam deserti. 5 Persecutus est autem eos exercitus Chaldæorum: & comprehenderunt Sedeciam in campo solitudinis Jerichontinæ, & captum adduxerunt ad Nabuchodonosor regem Babylonis in Reblatha, quæ est in terra Emath: & locut⁹ est ad eum judicia. 6 Et occidit rex Babylonis filios Sedeciæ in Reblatha, in oculis ejus: & omnes nobiles Juda occidit rex Babylonis. 7 Oculos quoque Sedeciæ eruit: & vinxit eum compedibus ut duceretur 8 in Babylonem. Domum quoque regis, & domum vulgi succenderunt Chaldæi igni, & murum Jerusalē subverterunt. 9 Et reliquias populi, qui remanserant in civitate, & perfugas, qui transfugerant ad eum, & superfluos vulgi, qui remanserant, transtulit Nabuzardan magister militū in Babylonem. 10 Et de plebe pauperū, qui nihil penitùs habebant, dimisit Nabuzardan magister militum in terra Juda: et dedit eis vineas et cisternas in die illa.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

32 Διὰ πάσας τὰς πονηρίας (σ) τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα, ὧν ἐποίησαν (τ) πικρᾶναί με, αὐτοὶ καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν, καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν, καὶ οἱ ἱερεῖς αὐτῶν, καὶ οἱ προφῆται αὐτῶν, ἄνδρες Ἰούδα, καὶ οἱ κατοικοῦντες ἐν Ἱερουσαλήμ. 33 Καὶ ἀπέστρεψαν πρός με νῶτον, καὶ οὐ πρόσωπον· καὶ ἐδίδαξα αὐτοὺς ὄρθρου, καὶ οὐκ (υ) ἤκουσαν ἔτι λαβεῖν παιδείαν. 34 Καὶ ἔθηκαν τὰ μιάσματα αὐτῶν ἐν τῷ οἴκῳ, (φ) οὗ ἐπεκλήθη τὸ ὄνομά μου ἐπ' αὐτῷ, ἐν ἀκαθαρσίαις αὐτῶν. 35 Καὶ ᾠκοδόμησαν τοὺς (χ) βωμοὺς τῇ Βάαλ τοὺς ἐν φάραγγι υἱοῦ Ἐννὸμ, τοῦ ἀναφέρειν τοὺς υἱοὺς αὐτῶν καὶ τὰς θυγατέρας αὐτῶν τῷ Μολὸχ βασιλεῖ, ἃ οὐ συνέταξα αὐτοῖς, καὶ οὐκ ἀνέβη (ψ) ἐπὶ καρδίαν μου τοῦ ποιῆσαι τὸ βδέλυγμα τοῦτο, πρὸς τὸ ἐφαμαρτεῖν τὸν (ω) Ἰούδαν. 36 Καὶ νῦν οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ ἐπὶ τὴν πόλιν, ἣν σὺ λέγεις, Παραδοθήσεται εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος ἐν (α) μαχαίρᾳ, καὶ ἐν λιμῷ, καὶ ἐν ἀποστολῇ. 37 Ἰδοὺ ἐγὼ συνάγω αὐτοὺς ἐκ πάσης τῆς γῆς, οὗ διέσπειρα αὐτοὺς ἐκεῖ ἐν ὀργῇ μου, καὶ τῷ θυμῷ μου, (β) καὶ ἐν παροξυσμῷ μεγάλῳ· καὶ ἐπιστρέψω αὐτοὺς εἰς τὸν τόπον τοῦτον, καὶ (γ) καθιῶ αὐτοὺς πεποιθότας. 38 Καὶ ἔσονταί μοι εἰς λαὸν, καὶ ἐγὼ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς θεόν. 39 Καὶ δώσω αὐτοῖς ὁδὸν ἑτέραν καὶ καρδίαν ἑτέραν, φοβηθῆναί με πάσας τὰς ἡμέρας, καὶ εἰς ἀγαθὸν αὐτοῖς καὶ τοῖς τέκνοις αὐτῶν μετ' αὐτούς. 40 Καὶ διαθήσομαι αὐτοῖς διαθήκην ( ) αἰωνίαν, ἣν οὐ μὴ ἀποστρέψω ὄπισθεν αὐτῶν· καὶ τὸν φόβον μου δώσω εἰς τὴν καρδίαν αὐτῶν, πρὸς τὸ μὴ ἀποστῆναι αὐτοὺς ἀπ' ἐμοῦ. 41 Καὶ ἐπισκέψομαι τοῦ ἀγαθῶσαι αὐτοὺς, καὶ φυτεύσω αὐτοὺς ἐν τῇ γῇ ταύτῃ ἐν πίστει, καὶ ἐν πάσῃ (δ) καρδίᾳ μου, καὶ ἐν πάσῃ ψυχῇ. 42 Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, Καθὰ ἐπήγαγον ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον πάντα τὰ κακὰ τὰ μεγάλα ταῦτα, οὕτως ἐγὼ (ε) ἐπάξω ἐπ' αὐτοὺς πάντα τὰ ἀγαθὰ, ἃ ἐλάλησα ἐπ' αὐτούς. 43 Καὶ κτηθήσονται ἔτι ἀγροὶ ἐν τῇ γῇ, (ζ) ἣ σὺ λέγεις, Ἄβατός ἐστιν ἀπὸ ἀνθρώπων καὶ κτήνους, καὶ παρεδόθησαν εἰς χεῖρας Χαλδαίων. 44 Καὶ κτήσονται ἀγροὺς ἐν ἀργυρίῳ· καὶ γράψεις βιβλίον καὶ σφραγιῇ, καὶ διαμαρτύρῃ μάρτυρας ἐν γῇ Βενιαμὶν, καὶ (η) κύκλῳ τῆς Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐν πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἐν πόλεσιν τοῦ ὄρους, καὶ ἐν πόλεσι τῆς σεφηλὰ, καὶ ἐν πόλεσι τῆς ναγὲβ, ὅτι ἀποστρέψω τὰς ἀποικίας αὐτῶν.

32 Propter omnes nequitias filiorum Israel & Juda, quas fecerunt ad exacerbandum me, ipsi & reges eorum, & principes eorum, & sacerdotes eorum, & prophetæ eorum, viri Juda, & habitatores Hierusalem. 33 Et converterunt ad me dorsum, & non faciem. Et docui eos diluculo: & non audierunt (o) ultrà accipere disciplinam: 34 Et posuerunt inquinamenta sua in domo, in qua invocatum est nomen meum super ea, in immunditiis suis: 35 Et ædificaverunt aras Baal, quæ in valle filii Ennom, ad (p) offerendum filios suos, & filias suas (q) Moloch regi: quæ non præcepi eis, nec ascendit in cor meum ad faciendum abominationem istam, & ad faciendum peccare Judam. 36 Et nunc sic dixit Dominus Deus Israel super civitatem, quam tu dicis; Tradetur in manus regis Babylonis in gladio, & in fame, & (r) amissione. 37 Ecce ego congrego eos ex omni terra, quò dispersi eos illuc in ira mea, & furore meo, & in irritatione magna. Et convertam eos in locum istum, & sedere eos faciam confidentes: 38 Et erunt mihi in populum: & ego ero eis in Deum. 39 Et dabo eis viam aliam, & cor aliud, ut timeant me omnibus diebus, & in bonum ipsis, & filiis eorum post eos. 40 Et disponam eis testamentum æternum, quod non avertam à post eos; & timorem meum dabo in cor eorum, ut non recedant ipsi à me: 41 Et visitabo ad benefaciendum eis: & plantabo eos in terra ista, in fide, & in omni corde meo, & in omni anima. 42 Quia sic dixit Dominus, Sicut induxi super populum istum omnia mala magna hæc; sic ego inducam super eos omnia bona, quæ locutus sum super eos. 43 Et possidebuntur adhuc agri in terra, de qua tu dicis; Invia est ab hominibus, & à pecore, & traditi sunt in manibus Chaldæorum. 44 Et possidebuntur agri in argento. Et scribes librum, & obsignabis, et contestaberis testes in terra Beniamin, & in circuitu Hierusalem, & in civitatibus Juda, & in civitatibus montis, & in civitatibus ipsius (s) Sephela, & in civitatibus Nageb: quia convertam transmigrationes eorum.

MS. A. (σ) ὧν (τ) παραπικρᾶναί με, αὐτοὶ καὶ οἱ πατέρες αὐτῶν, καὶ οἱ (υ) ἠθέλησαν ἔτι (φ) ᾧ (χ) βωμοὺς αὐτῶν τῇ (ψ) ἐπὶ τὴν (ω) Ἰούδα. (α) μαχαίρῃ, (β) καὶ ἐν παροξυσμῷ (γ) κατοικιῶ ( ) αἰώνιον, (δ) καρδίᾳ, καὶ ἐν πάσῃ ψυχῇ μου. (ε) ἐπάγω (ζ) ἣν (η) κυκλόθεν Ἱερουσαλήμ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

26 ותימר להון בעו אנא בעי קדם מלכא בדיל דלא לאתבותי בית יהונתן לממת תמן:
27 ואתו כל רברביא לות ירמיה ושאילו יתיה וחוי להון ככל פתגמיא האלן דפקיד מלכא
28 ושתיקו מניה ארי לא אשתמע פתגמא: ויתיב ירמיה בדרת בית אסיריא עד יומא
דאתכבשת ירושלם והוה כד אתכבישת ירושלם:

לט

1 בשתא תשיעתא לצדקיה מלך שבטא דבית יהודה בירחא עשיראה אתא נבוכדנצר
2 מלכא דבבל וכל משריתיה לירושלם וצרו עלה: בחדא עשרי שנין לצדקיה בירחא
3 רביעאה בתשעה לירחא אתרעת קרתא: ואתו כל רברבי מלכא דבבל ויתיבו
בתרעא מציעתא נרגל שראצר סמגר נבו שר סכים רב סריס נרגל שראצר רב
4 מג וכל שאר רברבי מלכא דבבל: והוה כד חזנון צדקיה מלך שבטא דבית
יהודה וכל גברי עבדי קרבא וערקו ונפקו בליליא מן קרתא באורח גנתא דמלכא
5 בתרעא בין שוריא ונפק באורח מישרא: ורדפו משרית כסדאי בתריהון וארביקו
ית צדקיה במישרי ירחו ודברו יתיה ואסקוהי לות נבוכד נצר מלכא דבבל לרבלה
6 בארעא דחמת ומלל עמיה פתגמי דינין: ונכס מלכא דבבל ית בני צדקיה ברבלה
7 לעינוהי וית כל רברבי יהודה נכס מלכא דבבל: וית עיני צדקיה עור ואסריה
8 בשישלן דנחש לאובלא יתיה לבבל: וית בית מלכא וית בית עמא אוקידו
9 כסדאי בנורא וית שורי ירושלם תרעו: וית שאר עמא דאשתארו בקרתא וית
שמיטיא דאשתמעו עלוהי וית שאר עמא דאשתארו אגלי נבוזרדן רב קטוליא לבבל:
10 ומן עמא חשיכיא דלית להון מדעם אשאר נבוזרדן רב קטוליא בארעא דבית יהודה
ויהב להון למהוי מפלחין בחקלין ובכרמין ביומא ההוא:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

26 Dices illis, Deprecationem ego postulavi coram rege, ut non reduceret me in domum Jonathan, ut morerer ibi. 27 Et venerunt omnes principes ad Jeremiam, & interrogaverunt eum; & narravit eis juxta omnia verba hæc quæ præcepit rex; & dimiserunt eum: quia non fuerat auditum verbum. 28 Et habitavit Jeremias in atrio carceris, usque in diem quo capta est Jerusalem. Et factum est ut caperetur Jerusalem.

CAP. XXXIX.

1 ANno nono Sedechiæ regis tribus domus Juda, mense decimo, venit Nabuchodonosor rex Babylonis, & omnis exercitus ejus ad Jerusalem, & obsederunt eam. 2 Undecimo anno Sedechiæ, mense quarto, nono die mensis perrupta est civitas. 3 Et ingressi sunt omnes principes regis Babylonis, & sederunt in porta media; Neregal, Sareser, Samgar-nebu, Sar-sechim, Rab-saris, Neregal, Sareser, Rab-mag, & omnes reliqui principes regis Babylonis. 4 Et factum est cùm vidisset eos Sedechias rex tribus domus Juda, & omnes viri bellatores, fugerunt: & egressi sunt nocte de civitate per viam horti regis, per portam quæ erat inter muros, & egressus est per viam campestrem. 5 Et persecuti sunt exercitus Chaldæorum post eos, & comprehenderunt Sedechiam in campestribus Jericho: & tulerunt eum, & adduxerunt eum ad Nabuchodonosor regem Babylonis in Riblah, in terra Hamath; & locutus est cum eo verba judiciorum. 6 Et occidit rex Babylonis filios Sedechiæ in Riblah ante oculos ejus, & 7 omnes principes Juda occidit rex Babylonis. Et oculos Sedechiæ ex- 8 cæcavit & vinxit eum catenis æreis, ut duceret eum in Babylonem. Et domum regis & domum populi succenderunt Chaldæi igni, & muros 9 Jerusalem confregerunt. Et reliquias populi qui remanserant in civitate, & transfugas qui transfugerant ad eum, & reliquum populum qui remanserat, transtulit Nabuzardan princeps occidentium in Babylonem. 10 Et de pauperibus populi qui nihil habebant, dimisit Nabuzardan princeps occidentium in terra domus Juda, & dedit eis ut essent cultores in agris & vineis in die illa.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܡܒܥܐ ܒܥܝܬ ܡܢ ܡܠܟܐ܃ ܕܠܐ ܢܗܦܟܢܝ ܠܒܝܬ ܝܘܢܬܢ ܣܦܪܐ
ܕܐܡܘܬ ܬܡܢ. * ܘܐܬܘ ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܠܘܬ ܐܪܡܝܐ. ܘܫܐܠܘܗܝ. ܘܚܘܝ ܐܢܘܢ ܟܠܗܘܢ
ܡܠܐ ܕܦܩܕܗ ܡܠܟܐ. ܘܫܬܩܘ ܡܢܗ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܫܬܡܥܬ ܡܠܬܐ. * ܘܝܬܒ
ܐܪܡܝܐ ܒܕܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܐ ܕܐܬܟܒܫܬ ܐܘܪܫܠܡ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܛ *

* ܒܫܢܬܐ ܬܫܥܝܬܐ ܕܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ܆ ܒܝܪܚܐ ܕܥܣܝܪܝܐ
ܐܬܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܗܘ ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܚܕܘ ܠܗ
* ܘܒܫܢܬ ܚܕܥܣܪܐ ܕܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܒܝܪܚܐ ܚܡܝܫܝܐ ܒܬܫܥܐ ܒܗ ܒܝܪܚܐ. ܐܬܬܙܝܥܬ
ܡܕܝܢܬܐ. * ܘܐܬܘ ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܝܬܒܘ ܒܬܪܥܐ ܡܨܥܝܐ. ܢܪܓܠ ܫܪܐܨܪ
ܘܣܡܓܪ ܢܒܘ. ܘܣܪܣܟܝܡ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ. ܘܢܪܓܠ ܫܪܐܨܪ ܪܒ ܡܓܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܪܘܪ
ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܘܟܕ ܚܙܐ ܐܢܘܢ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ
ܥܪܩܘ. ܘܢܦܩܘ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܒܠܠܝܐ. ܒܐܘܪܚܐ ܕܓܢܬܐ ܕܡܠܟܐ. ܒܬܪܥܐ ܕܒܝܬ ܫܘܪܐ. ܘܢܦܩ
ܒܐܘܪܚܐ ܕܥܪܒܬܐ. * ܘܪܕܦܘ ܚܝܠܐ ܕܟܠܕܝܐ ܒܬܪܗܘܢ. ܘܐܕܪܟܘܗܝ ܠܨܕܩܝܐ ܒܥܪܒ
ܕܐܝܪܝܚܘ. ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ ܐܬܒܕܪ ܡܢܗ. ܘܐܚܕܘܗܝ ܘܐܣܩܘܗܝ ܠܘܬ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ܆ ܠܕܒܠܬ ܒܐܪܥܐ ܕܚܡܬ. * ܘܡܠܠ ܥܡܗ ܕܝܢܐ. ܘܢܟܣ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ
ܠܒܢܘܗܝ ܕܨܕܩܝܐ ܒܕܒܠܬ ܠܥܝܢܘܗܝ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܢܟܣ ܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ ܒܕܒܠܬ. * ܘܠܥܝܢܘܗܝ ܕܨܕܩܝܐ ܥܘܪ. ܘܐܣܪܗ ܒܫܫܠܬܐ. ܠܡܝܬܝܘܬܗ
ܠܒܒܠ. * ܘܠܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܘܒܬܐ ܕܥܡܐ. ܐܘܩܕܘ ܟܠܕܝܐ ܒܢܘܪܐ. ܘܫܘܪܐ ܕܐܘܪܫܠܡ
ܥܩܪܘ ܚܕܪܢܝܗ. * ܘܫܪܟܐ ܕܥܡܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܡܕܝܢܬܐ܆ ܘܥܢܝܐ ܕܢܦܠܘ ܠܘܬܗ: ܘܫܪܟܐ
ܕܥܡܐ ܕܐܫܬܚܪܘ. ܫܒܐ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܩܛܘܠܐ. ܘܐܘܒܠܝܢܘܢ ܠܒܒܠ. * ܘܡܢ ܡܣܟܢܐ
ܕܥܡܐ܆ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܡܕܡ. ܫܒܩ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܩܛܘܠܐ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܝܗܒ ܠܗ
ܟܪܡܐ ܘܦܠܚܢܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ.

* Dic eis, Enixè rogavi regem ne me remitte- 26
ret ad Jonathanem ſcribam, ne moriar ibi.
Venientibus ergò cunctis principibus ad Je- 27
remiam, & interrogantibus eum, indicavit il-
lis ea omnino verba quæ rex illi præceperat:
ſic abſtinuerunt ab eo, cùm res minimè reſci-
ta fuiſſet. Manſitque Jeremia in atrio carce- 28
ris uſque ad diem quo capta fuit Jeruſalem.

CAP. XXXIX.

ANno nono Sedeciæ regis Judæ, menſe 1
decimo, venit Nebuchadnoſar rex Babylo-
niæ unà cum omnibus copiis ſuis contra Jero-
ſolymam, & obſederunt eam. Anno verò 2
undecimo regis Sedeciæ, menſe quinto, nono
die ejuſdem menſis, perrupta eſt civitas: Et 3
venientes omnes principes regis Babyloniæ,
ſederunt in porta media; Nerghel-Seraſar,
& Samgadnebo, & Sarſechim princeps eunu-
chorum, & Nerghel-Seraſar-Rabmag, o-
mnéſque principes regis Babyloniæ. Quos 4
cùm vidiſſent Sedecia rex Judæ & omnes viri
bellatores, fugerunt; & noctu exeuntes è ci-
vitate per viam horti regii per portam quæ
eſt inter muros, egreſſi ſunt per viam campe-
ſtrem. Sed perſequentes eos copiæ Chal- 5
dæorum, aſſecutæ ſunt Sedeciam in campo
Jerichuntino; ubi toto ipſius exercitu ab eo
diſſipato, ceperunt eum, deduxerúntque ad
Nebuchadnoſarem regem Babyloniæ in
Deblatham in terram Hamathæ. Et initis 6
cum eo rationibus, jugulari juſſit rex Baby-
loniæ filios Sedeciæ in Deblatha, coram ipſo:
omnes etiam principes Judæ jugulari juſſit rex 7
Babylonis in Deblatha. Tum oculos Sede-
ciæ excæcari juſſit, & catenis vinciri, ut per-
duceretur Babylonem. Domum vero regi- 8
am, & domos populares igne combuſſerunt
Chaldæi, muróſque Jeruſalem per circuitum
everterunt. Denique reſiduum populi qui 9
reliqui erant in civitate, tam homines qui
aufugerant ad ipſum, quàm reliquum qui ſu-
pererat populum, captivos abduxit Nebu-
zardan princeps ſatellitum, & perduxit eos
Babylonem. Ex pauperrimis autem plebis 10
qui nihil habebant, reliquit Nebuzardan
princeps ſatellitum in terra Judæ, dedítque
eis vineas & arva in die illo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لاجل جميع شرور بني اسرائيل ويهودا · لما صنعوا ليمرمروني هم وملوكهم ورؤساؤهم وكهنتهم
وانبياؤهم · رجال يهودا وسكان اورشليم * ولّوا لي ظهورهم وليس وجههم * وعلمتهم باكرا فلم
يسمعوا ايضا لياخذوا ادبا * ووضعوا ادناسهم في البيت حيث دعي اسمي عليه بنجاساتهم * وبنوا
الهياكل للبعال الذين في وادي بن انوم ليصعدوا بنيهم وبناتهم لمولوخ · مما لم آمرهم
بها ولم تصعد على قلبي · ليصنعوا هذه الرذالة ليخطوا يهودا * والآن هكذا قال الرب اله اسرائيل
على المدينة التي انت تقول تدفع في ايدي ملك بابل بالسيف والجوع وبالوبا * ها
اجمعهم من كل الارض حيث فرقتهم هناك برجزي وبغضبي وبحرد عظيم · واردهم الى
الموضع · واجلسهم مطمئنين * ويكونون لي شعبا وانا اكون لهم الها * واجعلهم الى ار
اخرى ليخافوني جميع الايام · خيرا لهم ولابنائهم بعدهم * واعهد لهم عهدا ابديا لا ا
من خلفهم · واعطي خوفي في قلبهم لئلا يبعدوا مني * وافتقدهم لاصلحهم · واغرسهم
هذه الارض بالايمان وبكل القلب وبكل النفس ·

· الاصحاح السادس والعشرون ·

* لانه هكذا قال الرب · كما جلبت على هذا الشعب جميع هذه الشرور العظيمة · هكذا انا اجلب
عليهم الخيرات التي تكلمت بها عليهم * ويقتنى ايضا حقول في الارض التي انت تقول انها
غير مسلوكة من انسان وبهيمة · ويسلمون الى ايدي الكلدانيين * ويشترون حقولا بالفضة
ويكتب في سفر ويختم · ويشهد شهودا في ارض بنيامين وفي حول اورشليم · وفي مدن
وفي مدن جبل سافيلا وفي مدن ناجاب لاني ارد جلواتهم ·

* *Propter tot ſcelera filiorum Iſraelis &* 32
Judæ, quæ commiſerunt ut me exaſpe-
rarent, tam ipſi quàm reges eorum, prin-
cipes, ſacerdotes, ac Prophetæ eorum,
viri Judæ, & cives Jeruſalem, Verten- 33
tes mihi dorſa ſua, non autem faciem, Et
quidem docui eos diluculò, ſed non au-
dierunt ampliùs, ut acquirerent diſci li-
nam: Imò collocaverunt abominationes 34
ſuas in domo ſuper quam invocatum eſt
nomen meum, cum turpitudinibus ſuis:
Et ædificaverunt Baali templa quæ ſunt 35
in valle filii Ennom, ut offerrent filios
filiaſque ſuas Molocho, rem quam neque
præceperam eis, neque in mentem mihi
venerat; ut ſcilicet, tantam abominati-
onem committerent, quatenus ad peccatum
inducerent Judam. Nunc itaque ſic dixit 36
Dominus Deus Iſraelis de urbe quam tu
dicis tradendam in manus regis Babylonis,
gladio, fame, & emiſſione: En ego 37
colligam eos ex univerſa terra, quocun-
que diſperſi eos in ira & furore meo &
ſumma cum indignatione; & reducam
eos hunc in locum, & efficiam ut ſede-
ant ſecuri: Eruntque mihi populus, & 38
ego ero ipſis Deus: Ponam eos in alia ter- 39
ra, ut me timeant cunctis diebus, in bo-
num ſuum & filiorum ſuorum poſt ipſos:
Et inibo cum eis teſtamentum æternum 40
quod non abolebo poſt ipſos: & indam
timorem meum in cor eorum, ut non re-
cedant à me: Et viſitabo eos ut reparem 41
eos, & plantabo eos in hac terra fideliter,
& ex toto corde, totoque animo.

Textus vigeſimus ſextus.

* *Sic enim dixit Dominus; Quemadmo-* 42
dum induxi ſuper hunc populum omnia
hæc mala maxima, ita ego inducam ſuper
eos bona quæ locutus ſum de ipſis.
Adeóque poſſidebuntur adhuc agri in 43
terra quam tu dicis non eſſe terendam ab
homini aut jumento, ſed tradendos in ma-
nus Chaldæorum: Agros inquam pecuniâ 44
comparabunt: & ſcribes in libello, &
obſignabis, & teſtes adhibebis in terra
Benjaminis, & in adjacentibus Jeroſo-
lymæ locis, in urbibus Judæ, in urbibus
montis Sephilæ, & in urbibus Negebi: quia
reducturus ſum transmigrationes eorum.

ירמיה: מ

manum in ,Irmejahu ſuper Babel rex reſar-Nebuchad præceperat Et
11 ויצו נבוכדראצר מלך־בבל על־ירמיהו ביד
tuos oculos & ,illum Tolle : dicendo , laniorum magiſtri Nebuzaradan
12 נבוזראדן רב־טבחים לאמר׃ קחנו ועיניך
quod ſecundum ſed ,mali quicquam ei facias ne & ,illum ſuper pone
שים עליו ואל־תעש לו מאומה רע כי אם כאשר
Nebuzaradan Miſitque .eo cum facias ſic , te ad loquetur
13 ידבר אליך כן עשה עמו׃ וישלח נבוזראדן
, Sareſer Nerghal & , Saris-Rab Nebuzazban & ,laniorum magiſter
רב־טבחים ונבושזבן רב־סריס ונרגל שראצר
, miſerunt Et .Babel regis magiſtri omnes & ; Magh-Rab
14 רב־מג וכל רבי מלך־בבל׃ וישלחו
eum tradiderunt & , cuſtodiæ atrio de Irmejahu tulerunt &
ויקחו את־ירמיהו מחצר המטרה ויתנו אתו
ad eum *educendum ad* , Saphan filii Ahicham *filium* Guedaljahu *ad*
אל־גדליהו בן־אחיקם בן־שפן להוציאהו אל־
verbum fuerat Irmejahu ad Et .populi medio in *habitavit* & : domum
15 הבית וישב בתוך העם׃ ואל־ירמיהו היה דבר־
, Vade : dicendo , cuſtodiæ atrio in *clauſum ipſum exiſtendo in* ,Domini
16 יהוה בהיתו עצור בחצר המטרה לאמר׃ הלוך
Dominus dixit Sic : dicendo ,Æthiopem Melech Hebed ad *dices* &
ואמרת לעבד־מלך הכושי לאמר כה־אמר יהוה
civitatē *ad* mea verba *adducens* ego Ecce : Iſrael Deus exercituū
צבאות אלהי ישראל הנני מבי את־דברי אל־העיר
.illa die in *tuos facies ad* erunt & :bonum in non & ,malum in hanc
הזאת לרעה ולא לטובה והיו לפניך ביום ההוא׃
manum in tradêris non & ; Dominus dixit ,illa die in te liberabo Et
17 והצלתיך ביום־ההוא נאם־יהוה ולא תנתן ביד
eruendo Sed .*eorum faciebus à timens* tu quorum , virorum
18 האנשים אשר־אתה יגור מפניהם׃ כי מלט
,ſpolium in tua anima tibi erit & : cades non gladio *in* & , te eruam
אמלטך ובחרב לא תפל והיתה לך נפשך לשלל
.Dominus ait ,*me in* fidiſti quia
כי־בטחת בי נאם־יהוה׃

CAP. XL. מ

dimiſit poſtquam ,Domino *cum* à Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הדבר אשר־היה אל־ירמיהו מאת יהוה אחרי שלח
,eum *ipſo capiendo in* Ramah de laniorum magiſter Nebuzaradan eum
אתו נבוזראדן רב־טבחים מן־הרמה בקחתו אתו
tranſmigrationis omnis medio in , catenis in vinctus ipſe &
והוא־אסור באזקים בתוך כל־גלות
magiſter tulit Et .Babel in *tranſlatorum* , Jehudah & ,Jeruſalaim
2 ירושלם ויהודה המגלים בבלה׃ ויקח רב־
eſt locutus tuus Deus Dominus :eum ad dixit & ,Irmejahu laniorum
טבחים לירמיהו ויאמר אליו יהוה אלהיך דבר
Dominus fecit &,adduxit Et .iſtum locum *ad* hoc malum
3 את־הרעה הזאת אל־המקום הזה׃ ויבא ויעש יהוה
audiſtis non & ,Domino peccâſtis quia ; eſt locutus quemadmodum
כאשר דבר כי־חטאתם ליהוה ולא־שמעתם
te ſolvi ecce nunc Et .hoc verbum vobis *fuit* & , ejus *voce in*
4 בקולו והיה לכם דבר הזה׃ ועתה הנה פתחתיך
,tuis oculis in *bonum* Si .*tua manu ſuper* quæ , catenis à hodie
היום מן־האזקים אשר על־ידך אם־טוב בעיניך
: te ſuper meum oculum ponam & ,veni ,Babel mecum *veniendum ad*
לבוא אתי בבל בא ואשים את־עיני עליך
, vide : *ceſſa* , Babel mecum *veniendum ad* ,tuis oculis in *malum* ſi &
ואם־רע בעיניך לבוא־אתי בבל חדל ראה
,tuis oculis in *rectum ad &* *bonum* ad , *tuæ faciei ad* terra omnis
כל־הארץ לפניך אל־טוב ואל־הישר בעיניך
.vade , *illuc* *eundum ad*
ללכת שמה לך׃

Verſio VULG. LAT.

11 Præceperat autem Nabuchodonoſor rex Babylonis de Jeremia Nabuzardan magiſtro militum, 12 dicens; Tolle illum, & pone ſuper eum oculos tuos, nihilque ei mali facias : ſed, ut voluerit, ſic 13 facias ei. Miſit ergò Nabuzardan princeps militiæ,& Nabuſezban, & Rabſares, & Neregel, & Sereſer,& Rebmag,& omnes optimates regis Baylonis, 14 Miſerunt, & tulerunt Jeremiam de veſtibulo carceris, & tradiderunt eum Godoliæ filio Ahicam filii Saphan,ut intraret in domum, & 15 habitaret in populo. Ad Jeremiam autem factus fuerat ſermo Domini, cùm clauſus eſſet in 16 veſtibulo carceris, dicens; Vade,& dic Abdemelech Æthiopi, dicens; Hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael; Ecce egò inducam ſermones meos ſuper civitatem hanc in malum,& non in bonum : & erunt in con17ſpectu tuo in die illa. Et liberabo te in die illa, ait Dominus : & non tradêris in manus viro18rum, quos tu formidas : Sed eruens liberabo te,& gladio non cades : ſed erit tibi anima tua in ſalutem,quia in me habuiſti fiduciam, ait Dominus.

CAP. XL.

1 SErmo, qui factus eſt ad Jeremiam à Domino, poſtquàm dimiſſus eſt à Nabuzardan magiſtro militiæ de Rama, quando tulit eum vinctum catenis, in medio omnium, qui migrabant de Jeruſalem & Juda, & ducebantur 2 in Babylonem. Tollens ergò princeps militiæ Jeremiam,dixit ad eum; Dominus Deus tuus locutus eſt malum hoc ſuper locum 3 iſtum.Et adduxit:et fecit Dominus ſicut locutus eſt, quia peccaſtis Domino, & non audiſtis vocem ejus, & factus eſt vobis 4 ſermo hic. Nunc ergò ecce ſolvi te hodiè de catenis, quæ ſunt in manibus tuis : ſi placet tibi ut venias mecum in Babylonem, veni; & ponam oculos meos ſuper te : ſi autem diſplicet tibi venire mecum in Babylonem, reſide : ecce omnis terra in conſpectu tuo eſt: quod elegeris, & quò placuerit tibi ut vadas, illuc perge.

Verſ. GRÆ.LXX.Interp.

Cap. 33. ΚΕΦ. μ'.
Vulg. Lat. 1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου
πρὸς Ἱερεμίαν (α) δεύτερον, καὶ (β) αὐτὸς ἦν
ἔτι δεδεμένος ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς,
2 λέγων, Οὕτως εἶπε κύριος, ποιῶν γῆν, καὶ
πλάσσων αὐτὴν, τοῦ ἀνορθῶσαι αὐτὴν, Κύρι-
3 ος ὄνομα αὐτῷ· Κέκραξον πρὸς μὲ, καὶ ἀπο-
κριθήσομαί σοι, καὶ ἀπαγγελῶ σοι μεγάλα
4 καὶ ἰσχυρὰ, ἃ οὐκ ἔγνως αὐτά. Ὅτι οὕτως εἶπε
(γ) κύριος περὶ οἴκων τῆς πόλεως ταύτης,
καὶ περὶ (δ) οἴκων βασιλέως Ἰούδα τῶν (ε)
καθῃρημένων εἰς χάρακας καὶ προμαχῶνας,
5 Τοῦ μάχεσθαι πρὸς τοὺς Χαλδαίους, καὶ πληρῶ-
σαι αὐτὴν (ζ) τῶν νεκρῶν τῶν ἀνθρώπων, οὓς
(η) ἐπάταξα ἐν ὀργῇ μου, καὶ ἐν θυμῷ μου·
καὶ ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν μου ἀπ' αὐτῶν,
6 περὶ πασῶν τῶν πονηριῶν αὐτῶν. Ἰδοὺ ἐγὼ
(θ) ἀνάγω αὐτῇ συνούλωσιν καὶ ἴαμα, (ι) καὶ
φανερώσω αὐτοῖς, καὶ ἰατρεύσω αὐτὴν, καὶ ποι-
7 ήσω καὶ εἰρήνην καὶ πίστιν. Καὶ ἀποστρέψω τὴν
ἀποικίαν Ἰούδα, καὶ (κ) ἀποικίαν Ἰσραὴλ,
καὶ οἰκοδομήσω αὐτοὺς (λ) καθὼς καὶ τὸ πρό-
8 τερον. Καὶ καθαριῶ αὐτοὺς ἀπὸ πασῶν τῶν
ἀδικιῶν αὐτῶν, ὧν (μ) ἡμάρτοσάν μοι, καὶ οὐ
μὴ μνησθήσομαι ἁμαρτιῶν αὐτῶν ὧν ἥμαρ-
9 τόν (ν) μοι, καὶ ἀπέστησαν ἀπ' ἐμοῦ. Καὶ ἔσται
εἰς εὐφροσύνην καὶ (ξ) αἴνεσιν, καὶ εἰς μεγαλει-
ότητα παντὶ τῷ λαῷ τῆς γῆς, οἵτινες ἀκού-
σονται πάντα τὰ ἀγαθὰ ἃ ἐγὼ (ο) ποιήσω,
καὶ φοβηθήσονται καὶ πικρανθήσονται περὶ πάν-
των τῶν ἀγαθῶν, καὶ περὶ πάσης τῆς εἰρήνης
10 ἧς ἐγὼ (π) ποιήσω αὐτοῖς. Οὕτως εἶπε κύ-
ριος, Ἔτι ἀκουσθήσεται ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ,
ᾧ ὑμεῖς λέγετε, Ἔρημός ἐστιν ἀπὸ ἀνθρώ-
πων καὶ κτηνῶν, ἐν πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἔξω-
θεν Ἱερουσαλὴμ, ταῖς ἠρημωμέναις, (ρ)
11 παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἄνθρωπον καὶ κτήνη· Φωνὴ
εὐφροσύνης, καὶ φωνὴ (σ) χαρμοσύνης, φω-
νὴ νυμφίου, καὶ φωνὴ νύμφης, φωνὴ (τ) λε-
γόντων, Ἐξομολογεῖσθε κυρίῳ παντοκρά-
τορι, ὅτι χρηστὸς κύριος, ὅτι εἰς τὸν αἰῶνα τὸ
ἔλεος αὐτοῦ. καὶ εἰσοίσουσι (υ) δῶρα εἰς οἶκον
κυρίου, ὅτι (φ) ἀποστρέψω πᾶσαν τὴν ἀποικί-
αν τῆς γῆς ἐκείνης (χ) κατὰ τὸ πρότερον, εἶπε
12 κύριος. Οὕτως εἶπε κύριος τῶν δυνάμε-
ων, Ἔτι ἔσται (ψ) ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ τῷ ἐ-
ρήμῳ, παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἄνθρωπον καὶ (ω) κτῆ-
νος, ἐν πάσαις ταῖς πόλεσιν αὐτοῦ κατα-
λύματα ποιμένων κοιταζόντων (α) πρό-
13 βατα, Ἐν πόλεσι τῆς ὀρεινῆς, καὶ ἐν πόλεσι
τῆς (β) Σεφηλὰ, καὶ ἐν πόλεσι τῆς ναγὲβ,
καὶ ἐν γῇ Βενιαμὶν, καὶ ἐν ταῖς κύκλῳ Ἱε-
ρουσαλὴμ, καὶ ἐν πόλεσιν Ἰούδα, ἔτι παρ-
ελεύσεται πρόβατα ἐπὶ χεῖρα ἀριθμοῦντος,
εἶπε κύριος.

MS. A. (α) ἘΚ ΔΕΥΤΈΡΟΥ, (β) ΑΥ̓ΤΟ͂Σ ἜΤΙ ἮΝ (γ) κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ (δ) οἰκίας (ε) καθῃμένων (ζ) νεκρῶν (η) *ἐπάταξεν ὀργῇ, (θ) ἐπάγω ἐπ' αὐτοὺς συνούλωσιν (ι) καὶ ἰατρεύσω αὐτοὺς, καὶ *φανερῶ αὐτοῖς εἰσακούειν, καὶ ἰατρεύσω αὐτοὺς, καὶ ποιήσω αὐτοῖς εἰρήνην (κ) τὴν ἀποικίαν (λ) ὡς τὸ πρότερον. (μ) ἥμαρτόν (ν) μου, (ξ) εἰς αἴνεσιν, (ο) ποιῶ, καὶ φοβηθήσονται περὶ πάντων (π) ποιῶ (ρ) καὶ [illegible] (σ) χαρμονῆς, (τ) λέγοντος, (υ) δῶρα αἰνέσεως εἰς (φ) ἀποστρέψω τὴν ἀποικίαν πάσης τῆς γῆς (χ) καθὰ πρότερον, (ψ) ἐν τῷ τόπῳ τῷ ἠρημωμένῳ τούτῳ, παρὰ (ω) κτήνη, καὶ ἐν (α) προβάτων, (β) Ναγὲβ, καὶ ἐν γῇ

cum Tranſl. LAT.

CAP. XL

1 ET (a) factum eſt verbum Domini ad Hieremiam ſecundò (& ipſe erat adhuc ligatus in atrio carceris) dicens; Sic dixit 2 Dominus faciens terram, & formans eam, ad erigendam eam: Dominus nomen illi. 3 Clama ad me, & reſpondebo tibi: & annuntiabo tibi magna, & [illegible] quæ non noviſti ea. Quia [illegible] dixit 4 Dominus de domibus [illegible], & de domibus regis Juda, quæ deſtructæ ſunt in valla & [illegible] Ad pugnandum 5 adverſus Chaldæos, & implendum eam cadaveribus hominum, quos percuſſi in ira mea, & in furore meo: & averti faciem meam ab eis [illegible] malitiis eorum. Ecce ego adduco 6 ei cicatricem, & [illegible] & curabo eam, & faciam [illegible] pacem & fidem. Et [illegible] 7 [illegible] Juda, & tranſmigrationem Iſrael, & ædificabo eos [illegible] 8 [illegible] omnibus iniquitatibus [illegible] quibus peccaverunt mihi, & non recordabor peccatorum eorum, quibus peccaverunt mihi, & [illegible] 9 ceſſerunt à me. Et [illegible] lætitiam, & laudem, & in magnificentiam omni populo terræ, qui quidem audient omnia bona, quæ ego faciam: & timebunt, & [illegible] pro omnibus bonis, & pro omni pace, quam ego faciam eis. Sic dixit Dominus; 10 Adhuc audietur in loco iſto, quem vos dicitis, (Deſertus eſt ab hominibus, & jumentis in civitatibus Juda, & foris Hieruſalem, quæ [illegible] eo quod non ſit homo, & pecus,) 11 Vox lætitiæ & vox gaudii, [illegible] & vox [illegible] dicentium; Confitemini Domino omnipotenti, quoniam bonus eſt Dominus; quoniam [illegible] miſericordia ejus. Et inferent dona in domum Domini: quia reducam omnem tranſmigrationem [illegible] juxta id, quod antea, dixit Dominus. 12 Sic dixit Dominus [illegible] Adhuc erunt in [illegible] hoc deſerto, eò quod non ſit homo, & pecus, in omnibus civitatibus ejus habitacula paſtorum accubare facientium oves: 13 In civitatibus montanæ, & in civitatibus Sephela, & in [illegible] Nageb, & in terra Benjamin, & in iis quæ in circuitu Hieruſalem, & in civitatibus Judæ: Adhuc tranſibunt oves ad manum numerantis, ait (e) Dominus.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 ופקיד נבוכד נצר מלכא דבבל על ירמיה ביד נבוזר אדן רב קטוליא למימר׃ דברהי
12 ועינך שוי עלוהי ולא תעבד ליה מדעם ביש אלהן כמה דימלל עמך כן עביד עמיה׃
13 ושלח נבוזר אדן רב קטוליא ונבושזבן רב סריס ונרגל שראצר רב מג וכל שאר רברבי
14 מלכא דבבל׃ ושלחו ודברו ית ירמיהו מדרת בית אסיריא ויהבו יתיה לגדליה בר
15 אחיקם בר שפן לאפקותיה לביתא ויתיב בגו עמא׃ ועם ירמיה הוה פתגם נבואה מן
16 קדם יי כד הוה כלי בדרת בית אסיריא למימר׃ איזיל ותימר לעבדא דמלכא צדקיה
למימר כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל הא אנא מיתי ית פתגמי על קרתא הדא
17 לבישתא ולא לטבא ויהון קדמך ביומא ההוא׃ ואשזבנך ביומא ההוא אמר יי ולא
18 תתמסר ביד גבריא דאת דחיל מן קדמיהון׃ ארי שיזבא אשזבנך ובחרבא לא תתקטל
ותהי לך נפשך לשיזבא ארי אתרחצתא על מימרי אמר יי׃

מ

1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה מן קדם יי בתר דשלח יתיה נבוזר אדן רב קטוליא מן
רמתא כד דבר יתיה והוא אסיר בעוקיא בגו כל גלות ירושלם ויהודה דאתגליאו
2 לבבל׃ ודבר רב קטוליא לירמיה ואמר ליה יי אלהך גזר ית בישתא הדא על אתרא
3 הדין׃ ואיתי וקים יי כמא דמליל ארי חבתון קדם יי ולא קבלתון למימריה והוה לכון
4 פתגמא הדין׃ וכען הא שריתך יומא דין מן עוקיא די על ידך אם תקין בעינך למיתא
עמי לבבל אתא ואשוי ית עיני עלך ואם ביש בעינך למיתי עמי לבבל אתמנע חזי כל
ארעא קדמך לדתקין ולדכשר בעינך למיזל תמן איזיל׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et præcepit Nabuchodonoſor rex Babylonis de Jeremia per manum Nabu- 11
zardan principis occidentium; dicendo : Tolle illum, & oculos tuos pone 12
ſuper eum, neque feceris ei quicquam mali ; ſed ſicut locutus fuerit tecum,
ſic fac cum eo. Et miſit Nabuzardan princeps occidentium, & Nabuſaz- 13
ban, Rabſaris, & Neregel ,& Sareſer, Rabmag, & omnes reliqui principes regis Babylonis. Et miſerunt, & tulerunt Jeremiam de atrio domus vin- 14
ctorum , & tradiderunt eum Godoliæ filio Ahicam filii Saphan, ut educeret
eum in domum : & habitavit in medio populi. Et cum Jeremia factum eſt 15
verbum prophetiæ à facie Domini, cùm eſſet clauſus in atrio carceris, di-
cens : Vade & dic ſervo regis Sedechiæ, hoc modo : Hæc dicit Dominus 16
exercituum Deus Iſrael, Ecce ego inducam ſermones meos ſuper civitatem
hanc in malum, & non in bonum ; & erunt in conſpectu tuo in die illa. Et 17
liberabo te in die illa, dicit Dominus, & non tradêris in manum virorum
à quorum facie tu formidas. Quia liberando liberabo te, & gladio non oc- 18
cidêris : & erit tibi anima tua in ereptionem ; quia confiſus es in verbo
meo, dicit Dominus.

CAP. XL.

VErbum prophetiæ quod factum eſt cum Jeremia à facie Domini, poſt- 1
quam miſit eum Nabuzardan princeps occidentium de Ramatha,quando tu-
lit eum, cùm eſſet vinctus compedibus, in medio omnis tranſmigrationis Je-
ruſalem & Juda, qui in captivitatem abducebantur in Babylonem. Et tulit 2
princeps occidentium Jeremiam, & dixit ei : Dominus Deus tuus decrevit
malum hoc ſuper locum iſtum. Et adduxit & firmavit Dominus ſicut locu- 3
tus fuerat, quia peccaſtis coram Domino, & non obediſtis verbo ejus, & fa-
ctus eſt ideo vobis ſermo hic. Et nunc ecce ſolvi te hodie de catenis quæ in 4
manibus tuis erant : ſi rectum eſt in oculis tuis,ut venias mecum in Babylo-
nem, veni, & ponam oculos meos ſuper te. Et ſi diſplicet tibi venire me-
cum in Babylonem, deſine : vide, omnis terra coram te eſt : quocunque re-
ctum fuerit & placuerit in oculis tuis ut vadas, illuc vade.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܦܩܕ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܠ ܐܪܡܝܐ. ܠܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܢܚܬܘܡܐ. ܘܐܡܪ ܠ
* ܕܒܪܝܗܝ ܠܐܪܡܝܐ. ܘܥܝܢܝܟ ܢܗܘܝܢ ܥܠܘܗܝ. ܘܠܐ ܬܥܒܕ ܠܗ ܡܕܡ ܕܒܝܫ. ܘܟܠ ܡ
ܕܐܡܪ ܠܟ. ܥܒܕ ܠܗ. * ܘܫܕܪ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܢܚܬܘܡܐ. ܘܢܒܘܫܙܒܢ ܪܒ ܡܗܝܡܢ
ܘܢܪܓܠ ܫܪܐܨܪ ܪܒܡܓ. ܘܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܫܕܪܘ ܕܒܪܘܗܝ ܠܐܪܡ
ܡܢ ܕܪܬܐ ܕܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. ܘܐܫܠܡܘܗܝ ܠܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦܢ. ܠܡܦܩܘܬܗ
ܠܒܝܬܗ. ܘܝܬܒ ܒܓܘ ܥܡܐ. * ܘܥܠ ܐܪܡܝܐ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܟܕ ܗܘ ܟܠܝ
ܒܕܪܬܐ ܕܡܛܪܬܐ. * ܙܠ ܘܐܡܪ ܠܥܒܕܡܠܟ ܟܘܫܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܦܬܓܡܝ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ ܠܒܝܫܬܐ. ܘܠܐ ܠܛܒܬܐ. ܘܢܗܘܘܢ
ܩܕܡܝܟ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. * ܘܐܦܨܝܟ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܫܬܠܡ ܒܐܝ
ܕܓܒܪܐ ܕܐܢܬ ܕܚܠ ܡܢܗܘܢ. * ܘܐܦܨܝܟ ܘܒܚܪܒܐ ܠܐ ܬܦܠ. ܘܬܗܘܐ ܠܟ ܢܦܫܟ. ܥܠ ܕܐܬܬܟܠ
ܒܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܦܣܘܩܐ * ܩܡ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܡܢ ܒܬܪ ܕܫܪܝܗ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܢܚܬ
ܪܡܬܐ. ܟܕ ܕܒܪܗ ܟܕ ܐܣܝܪ ܒܫܫܠܬܐ. ܒܓܘ ܟܠܗ ܫܒܝܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܘܝܗܘ
ܕܐܫܬܒܝܘ ܠܒܒܠ. * ܘܕܒܪܗ ܪܒ ܢܚܬܘܡܐ ܠܐܪܡܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ ܡ
ܒܝܫܬܐ ܗܕܐ ܥܠ ܐܬܪܐ ܗܢܐ. * ܘܐܝܬܝ. ܘܥܒܕ ܡܪܝܐ ܐܝܟ ܕܐܡܪ. ܡܛܠ ܕܚܛܝܬܘܢ ܠܡ
ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ ܒܩܠܗ. ܗܘܐ ܠܟܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. * ܗܫܐ ܗܐ ܫܪܝܬܟ ܡܢ ܫܫܠ
ܫܫܠܬܐ ܕܒܐܝܕܝܟ. ܐܢ ܨܒܐ ܐܢܬ ܠܡܐܬܐ ܥܡܝ ܠܒܒܠ. ܬܐ. ܘܐܗܘܐ ܥܝܢܝ ܥܠܝܟ
ܠܐ ܨܒܐ ܐܢܬ ܠܡܐܬܐ ܥܡܝ ܠܒܒܠ. ܦܘܫ. ܗܐ ܟܠܗ ܐܪܥܐ ܩܕܡܝܟ. ܠܐܝܟܐ ܕ
ܕܫܦܝܪ ܒܥܝܢܝܟ ܠܡܐܙܠ. ܠܬܡܢ ܙܠ.

Commendaverat autem Nebuchadnoſar rex Babylonis Jeremiam Nebuzardani præfecto ſatellitum, & dixerat ei; 11 Accipe Jeremiam, & curam ejus gere, neque feceris ei quicquam mali; ſed quicquid tibi dixerit, fac illi. 12 Quapropter mittens Nebuzardan præfectus ſatellitum, & Nebuſciazban princeps eunuchorum, & Nerghel-Seraſar-Rabmag, omnéſque principes regis Babyloniæ, 13 Mittentes adduci juſſerunt Jeremiam ex atrio carceris, & commiſerunt eum Gedaliæ filio Ahicami filii Saphanis, ut remitteret eum in domum ſuam: ita manſit in medio populi. 14 Ad Jeremiam autem factus fuerat ſermo Domini dum detineretur in atrio cuſtodiæ, 15 Vade dictum Abdamelecho Æthiopi; Sic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, Ecce facturus ſum ut res eveniant contra civitatem iſtam in malum non in bonum; fientque te ſpectante in die illo. 16 Te autem eripiam illo die, ait Dominus, & non traderis in manum virorum quos pertimeſcis: 17 Eripiam te inquam, ut non occumbas gladio, ſed animam tuam ſerves; eò quòd ſis mihi confiſus, dicit Dominus. 18

CAP. XL.

Sermo qui factus eſt ad Jeremiam à Domino poſtquam dimiſit eum Nebuzardan princeps ſatellitum de Rama, quò vinctum catenis duxerat eum inter omnes captivos Jeroſolymorum & Judæ, qui deportati fuerant Babylonem. 1 Acceſſivit ergò princeps ſatellitum Jeremiam, & dixit illi; Dominus Deus tuus prædixerat malum hoc de loco iſto: 2 Et quidem adduxit, præſtitítque Dominus quemadmodum prædixerat. Quia peccâſtis in Dominum, & non auſcultâſtis voci ejus, evenit vobis res iſta. 3 Te verò en hodiè ſolvo catenis quæ ſunt in manibus tuis: ſi vis mecum venire Babylonem, veni, tuíque curam geram; ſin autem venire mecum Babylonem non vis, maneto: ecce tota terra coram te eſt, quocunque commodum & quocunque jucundum ire tibi viſum fuerit, eò vade. 4

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

٭ الفصل الاربعون ٭

* وصار قول الرب الي ارميا قايلا ثانية ٭ وهو اذا كان مربوطا في دار الحبس ٭
* هكذا قال الرب صانع الارض وجابلها ليقومها ٭ الرب اسمه * اصرخ الي فاجيبك ٭ واحدثك
عظيمات وقويات هذه التي لم تعرفها * لان هكذا قال الرب اله اسرايل من اجل بيوت هذه
المدينة ومن اجل بيوت ملوك يهودا الجلوس علي الحصن وعلي السراريف * ليتحاربوا مع
الكلدانيين ٭ فاملاوها من اموات البشر الذين ضربتهم برجزي وبغضبي ٭ واصرفت وجهي
عنهم من اجل جميع شرورهم * ها انا اصعد لها دواء وشفاء ٭ واظهر لهم واطبها واصنع لهم
السلامة والايمان * وارد جلوة يهودا وجلوة ايروشليم وابنيهم كالاول * واطهرهم من جميع
خطاياهم التي اخطاء بها الي ٭ ولا اذكر خطاياهم التي اخطاء بها الي وتباعدوا عني * وتصير
للسرور وللتسبحة وللعظمة لكل شعب الارض الذين يسمعون بجميع الخيرات التي انا اصنعها
ويخافون ويتمرمرون من اجل جميع الخيرات ومن اجل جميع السلامة التي انا اصنعها لهم
* هكذا قال الرب ٭ سيسمع ايضا في هذا الموضع الذي انتم تقولون هو خراب من الناس
والبهايم ٭ في مدن يهودا ومن خارج ايروشليم المخروبات ان لا يكون انسان وبهايم * صوت
سرور وصوت فرحة ٭ صوت عريس وصوت عروس ٭ صوت القايلين اعترفوا للرب الضابط الكل
لان الرب صالح وان الي الابد رحمته ٭ ويدخلون قرابين الي بيت الرب ٭ لاني اصرف جلوة بلاد
الارض كالاول قال رب القوات * هكذا قال الرب ٭ يكون ايضا في هذا الموضع القفر وفي جميع
مدنه ٭ منزلة للرعاة يربضون الخراف * في مدن الجبل ٭ وفي مدن سافيل ٭ وفي
ناجاب ٭ وفي ارض بنيامين ٭ وفي التي حول ايروشليم ٭ وفي مدن يهودا ايضا تات الخراف
بيدي العداد قال الرب ٭

CAP. XL.

Factus eſt etiam ſermo Domini ad Ieremiam ſecundò, dicens, (idque dum vinctus eſſet in atrio carceris.) 1

Sic dixit Dominus terræ factor & plaſmator, ut eam dirigeret, cujus nomen Dominus eſt: 2 *Clama ad me, & reſpondebo tibi, & nota faciam tibi magna & fortia quæ non noſti.* 3 *Nam ita dixit Dominus Deus Iſraelis de domibus hujus urbis, deque domibus regum Judæ propugnaculo & ſuggrundis inſidentium,* 4 *ut pugnent adverſùm Chaldæos; quas impleverunt mortuis hominibus quos in ira & furore meo percuſſi, à quibus faciem meam averti propter tot ſcelera eorum;* 5 *Ecce ego producam eis remedium & ſanitatem, & oſtendam ipſis, curabo eas, & faciam illis pacem & fidem:* 6 *Et reducam captivitatem Judæ & captivitatem Jeroſolymæ, & ædificabo eos ut primitùs:* 7 *Mundabo eos ab omnibus peccatis eorum, quibus peccaverunt in me: & non recordabor peccatorum eorum, quibus in me peccaverunt, & receſſerunt à me.* 8 *Eritque gaudio, laudi, & magnificentiæ omni terræ populo, qui audientes cuncta beneficia quæ ego ſum collaturus, timebunt & ægrè ferent, propter omnia bona & propter omnem pacem quam ego ſum eis præſtiturus.* 9 *Ita dixit Dominus, Audietur adhuc hoc in loco quem vos exhauſtum dicitis hominibus & jumentis (in urbibus videlicet Judæ, & exterioribus Jeroſolymæ locis ita dirutis ut nullus extet homo vel jumentum)* 10 *Vox exultationis & vox lætitiæ, vox ſponſi & vox ſponſæ, vox dicentium, Confitemini Domino omnipotenti, quia Dominus optimus eſt, & quia in æternū miſericordia ej⁹: inferentq; munera in domū Domini: ego enim reſtituam tranſmigrationem ejus terræ, ut ſit qualis erat antea, dixit Dominus virtutum.* 11 *Sic dixit Dominus, Erit adhuc hoc in loco deſerto, & in cunctis urbibus ejus, diverſorium paſtoribus abigentibus pecudes:* 12 *In urbibus montanis, & in urbibus Sephel, in urbibus Negeb, in terra Benjaminis, & ea quæ circumjacet Jeroſolymis, & in urbibus Judæ, venient adhuc pecudes ad manus recenſentis, dixit Dominus.* 13

ירמיה : מ

quem , Saphan filii Ahicham filium Ghedaljah ad ,revertere & ,*redibit non ipſe* adhuc Et
5 וְעוֹדֶנּוּ לֹא־יָשׁוּב וְשֻׁבָה אֶל־גְּדַלְיָה בֶּן־אֲחִיקָם בֶּן־שָׁפָן אֲשֶׁר
vel : populi medio in eo cum habita & , Jehudah civitatibus in Babel rex præpoſuit
הִפְקִיד מֶלֶךְ־בָּבֶל בְּעָרֵי יְהוּדָה וְשֵׁב אִתּוֹ בְּתוֹךְ הָעָם אוֹ
, *viaticum* laniorum magiſter ei dedit Et .vade ,*eundum ad* ,tuis oculis in *rectum* omnem ad
אֶל־כָּל־הַיָּשָׁר בְּעֵינֶיךָ לָלֶכֶת לֵךְ וַיִּתֶּן־לוֹ רַב־טַבָּחִים אֲרֻחָה
: Miſpah in Ahicham filium Ghedaljah ad Irmejahu venit Et .eum dimiſit & ,munus &
6 וּמַשְׂאֵת וַיְשַׁלְּחֵהוּ׃ וַיָּבֹא יִרְמְיָהוּ אֶל־גְּדַלְיָה בֶּן־אֲחִיקָם הַמִּצְפָּתָה
principes omnes audierunt Et .terra in *reſiduorum* populi medio in eo cum habitavit &
7 וַיֵּשֶׁב אִתּוֹ בְּתוֹךְ הָעָם הַנִּשְׁאָרִים בָּאָרֶץ׃ וַיִּשְׁמְעוּ כָּל־שָׂרֵי
Ghedaljahu Babel rex præfeciſſet quòd ,eorum viri & , *ipſi agro in* qui , *virtutum*
הַחֲיָלִים אֲשֶׁר בַּשָּׂדֶה הֵמָּה וְאַנְשֵׁיהֶם כִּי־הִפְקִיד מֶלֶךְ־בָּבֶל אֶת־גְּדַלְיָהוּ
tenuitate de & ,*pubem* &,mulieres & viros *eo cum* cõmendâſſet quodque ; *terra in* Achicham filiũ
בֶּן־אֲחִיקָם בָּאָרֶץ וְכִי הִפְקִיד אִתּוֹ אֲנָשִׁים וְנָשִׁים וָטָף וּמִדַּלַּת
; Miſpah in Ghedaljah ad venerunt Et .Babel in fuerant tranſlati non qui *iis de* ,terræ
8 הָאָרֶץ מֵאֲשֶׁר לֹא־הָגְלוּ בָּבֶלָה׃ וַיָּבֹאוּ אֶל־גְּדַלְיָה הַמִּצְפָּתָה
filius Serajah & ,Chareach filii Jonathan & , Jochanan & , Nethanjahu filius Iſmahel &
וְיִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָהוּ וְיוֹחָנָן וְיוֹנָתָן בְּנֵי־קָרֵחַ וּשְׂרָיָה בֶן־
, ipſi ; Mahachati filius Jezanjahu & , Nethophatites Hephai filii & , Tanchumeth
תַּנְחֻמֶת וּבְנֵי עוֹפַי הַנְּטֹפָתִי וִיזַנְיָהוּ בֶּן־הַמַּעֲכָתִי הֵמָּה
, Saphan filii Achicham filius Ghedaljahu eis juravit Et .eorum viri &
9 וְאַנְשֵׁיהֶם׃ וַיִּשָּׁבַע לָהֶם גְּדַלְיָהוּ בֶּן־אֲחִיקָם בֶּן־שָׁפָן
ſervite & , terra in habitate : Chaſdim *ſerviendo à* timeatis Ne : dicendo ,eorum viris &
וּלְאַנְשֵׁיהֶם לֵאמֹר אַל־תִּירְאוּ מֵעֲבוֹד הַכַּשְׂדִּים שְׁבוּ בָאָרֶץ וְעִבְדוּ
ſtandum ad ,Miſpah in *habitans ego* ecce ,ego Et .vobis erit bene & , Babel regi
10 אֶת־מֶלֶךְ בָּבֶל וְיִיטַב לָכֶם׃ וַאֲנִי הִנְנִי יֹשֵׁב בַּמִּצְפָּה לַעֲמֹד
,fructum *æſtivum* & ,vinum colligite vos & ; nos ad venient qui , Chaſdim *facies ad*
לִפְנֵי הַכַּשְׂדִּים אֲשֶׁר יָבֹאוּ אֵלֵינוּ וְאַתֶּם אִסְפוּ יַיִן וְקַיִץ
.apprehendiſtis quas , veſtris urbibus in manete & , veſtris vaſis in ponite & , oleum &
וְשֶׁמֶן וְשִׂמוּ בִּכְלֵיכֶם וּשְׁבוּ בְּעָרֵיכֶם אֲשֶׁר־תְּפַשְׂתֶּם׃
, Edom in & ,Hammon filios inter & , Moab in qui , Jehudæi omnes etiam Et
11 וְגַם כָּל־הַיְּהוּדִים אֲשֶׁר־בְּמוֹאָב וּבִבְנֵי־עַמּוֹן וּבֶאֱדוֹם
; Jehudah in reſiduum Babel rex dediſſet quòd audierunt , terris univerſis in qui &
וַאֲשֶׁר בְּכָל־הָאֲרָצוֹת שָׁמְעוּ כִּי־נָתַן מֶלֶךְ־בָּבֶל שְׁאֵרִית לִיהוּדָה
ſunt reverſi Et .Saphan filii Ahicam filium Ghedaljahu eos ſuper præpoſuiſſet quòd &
12 וְכִי הִפְקִיד עֲלֵיהֶם אֶת־גְּדַלְיָהוּ בֶּן־אֲחִיקָם בֶּן־שָׁפָן׃ וַיָּשֻׁבוּ
terram venerunt & ; *illuc* fuerant expulſi *quò* , locis univerſis de Jehudæi omnes
כָּל־הַיְּהוּדִים מִכָּל־הַמְּקֹמוֹת אֲשֶׁר נִדְּחוּ־שָׁם וַיָּבֹאוּ אֶרֶץ־
.valde *multum fructum æſtivum* &,vinum collegerunt & : Miſpah in Ghedaliahu ad Jehudah
יְהוּדָה אֶל־גְּדַלְיָהוּ הַמִּצְפָּתָה וַיַּאַסְפוּ יַיִן וָקַיִץ הַרְבֵּה מְאֹד׃
venerunt ; *agro in* qui , *virtutum* principes omnes & , Chareach filius Jochanan Et
13 וְיוֹחָנָן בֶּן־קָרֵחַ וְכָל־שָׂרֵי הַחֲיָלִים אֲשֶׁר בַּשָּׂדֶה בָּאוּ
, cognoſces cognoſcendo Nónne : eum ad dixerunt Et .Miſpah in Ghedaljahu ad
14 אֶל־גְּדַלְיָהוּ הַמִּצְפָּתָה׃ וַיֹּאמְרוּ אֵלָיו הֲיָדֹעַ תֵּדַע
, Nethanjah filium Iſmahel miſit ,Hammon filiorum rex Bahalis quòd
כִּי בַּעֲלִיס מֶלֶךְ בְּנֵי־עַמּוֹן שָׁלַח אֶת־יִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָה
.Ahicam filius Ghedaljahu eis credidit non Et ? anima te *percutiendum ad*
לְהַכֹּתְךָ נֶפֶשׁ וְלֹא־הֶאֱמִין לָהֶם גְּדַלְיָהוּ בֶּן־אֲחִיקָם׃
: dicendo , Miſpah in *abſcondito in* Ghedaljahu ad dixit Chareach filius Jochanan Et
15 וְיוֹחָנָן בֶּן־קָרֵחַ אָמַר אֶל־גְּדַלְיָהוּ בַסֵּתֶר בַּמִּצְפָּה לֵאמֹר
.ſciet *non vir* & , Nethanjah filium Iſmahel percutiam & , nunc Ibo
אֵלְכָה נָּא וְאַכֶּה אֶת־יִשְׁמָעֵאל בֶּן־נְתַנְיָה וְאִישׁ לֹא יֵדָע
peribit & , te ad congregati , *Jehudah omnis* diſpergentur & , anima te percutiet Quare
לָמָּה יַכֶּכָּה נֶּפֶשׁ וְנָפֹצוּ כָּל־יְהוּדָה הַנִּקְבָּצִים אֵלֶיךָ וְאָבְדָה
? Jehudah reſiduum
שְׁאֵרִית יְהוּדָה׃

Verſio VULG. LAT.

5 Et mecum noli venire : ſed habita
apud Godoliam filium Ahicam filii
Saphan, quem præpoſuit rex Babylonis
civitatibus Juda : habita
ergò cum eo in medio populi :
vel quocunque placuerit tibi ut
vadas, vade. Dedit quoque ei magiſter
militiæ cibaria, & munuſcula,
6 & dimiſit eum. Venit autem Jeremias
ad Godoliam filium Ahicam
in Maſphath : & habitavit cum eo
in medio populi, qui relictus fuerat
7 in terra. Cúmque audiſſent omnes
principes exercit⁹, qui diſperſi fuerant
per regiones, ipſi & ſocii
eorum, quòd præfeciſſet rex Babylonis
Godoliam filium Ahicam terræ,
& quòd commendâſſet ei viros,
& mulieres, & parvulos, & de pauperibus
terræ, qui non fuerant
8 tranſlati in Babylonem : Venerunt
ad Godoliam in Maſphath : &
Iſmahel fili⁹ Nathaniæ, & Johanan
& Jonathan filii Caree, & Sareas
fili⁹ Thanehumeth, & filii Ophi,
qui erant de Netophathi, & Jezonias
fili⁹ Maachathi, ipſi & viri eorum.
9 Et juravit eis Godolias fili⁹
Ahicam filii Saphan, & comitibus
eorum, dicens; Nolite timere
ſervire Chaldæis, habitate in terra,
& ſervite regi Babylonis, & benè
10 erit vobis. Ecce ego habito in
Maſphath, ut reſpondeam præcepto
Chaldæorum, qui mittuntur ad nos :
vos autem colligite vindemiam, &
meſſem, & oleum, & condite in
vaſis veſtris, & manete in urbib⁹
veſtris, quas tenetis. Sed & omnes
11 Judæi, qui erant in Moab, & in filiis
Ammon, & in Idumæa, & in univerſis
regionib⁹, audito quòd dediſſet
rex Babylonis reliquias in Judæa,
& quòd præpoſuiſſet ſuper eos Godoliam
filium Ahicam filii Saphan :
12 Reverſi ſunt, inquam, omnes Judæi
de univerſis locis, ad quæ profugerant,
et venerunt in terram Juda ad
Godoliam in Maſphath, & collegerunt
13 vinum, & meſſem multam nimis. Johanan autem filius Caree, & omnes
principes exercit⁹, qui diſperſi fuerant in regionib⁹, venerunt ad Godoliam in
14 Maſphath. Et dixerunt ei; Scito quòd Baalis rex filiorum Ammon miſit Iſmahel
filium Nathaniæ percutere animam tuam. Et non credidit eis Godolias fili⁹ Ahicam.
15 Johanan autem fili⁹ Caree dixit ad Godoliam ſeorſum in Maſphath, loquens;
Ibo, & percutiam Iſmahel filium Nathaniæ nullo ſciente, ne interficiat animam
tuam, & diſſipentur omnes Judæi, qui congregati ſunt ad te, & peribunt reliquiæ
Juda.

Verſ. GRÆC. LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. μα'.

Cap. 34.
Vulg.Lat.
1 Ὁ λόγος
ὁ (α) γινόμενος πρὸς
Ἰερεμίαν παρὰ κυρίου·
(καὶ Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς
Βαβυλῶνος, καὶ
πᾶν τὸ στρατόπεδον αὐτοῦ,
καὶ πᾶσα ἡ γῆ
ἀρχῆς αὐτοῦ ἐπολέμουν
ἐπὶ Ἰερουσαλὴμ, καὶ
ἐπὶ πάσας τὰς πόλεις
2 Ἰούδα·) λέγων, Οὕτως
εἶπε κύριος, Βάδισον
πρὸς Σεδεκίαν
βασιλέα Ἰούδα, καὶ ἐρεῖς
αὐτῷ, Οὕτως εἶπε
κύριος, Παραδόσει
παραδοθήσεται ἡ πόλις
αὕτη εἰς χεῖρας βασιλέως
Βαβυλῶνος, καὶ
συλλήψεται αὐτὴν, καὶ
καύσει αὐτὴν ἐν πυρὶ,
3 Καὶ σὺ οὐ μὴ σωθῇς
ἐκ χειρὸς (β) αὐτοῦ, καὶ
συλλήψει (γ) συλληφθήσῃ,
καὶ εἰς χεῖρας
αὐτοῦ δοθήσῃ, καὶ ὀφθαλμοί
σου τοὺς ὀφθαλμοὺς
αὐτοῦ ὄψονται,
(δ) καὶ εἰς Βαβυλῶνα εἰσελεύσῃ.

CAP. XLI.

1 VErbum, (a) quod
factum eſt ad Hieremiam
à Domino :
(Et Nabuchodonoſor
rex Babylonis, &
omnis exercitus ejus,
& (b) univerſa terra
principatûs ejus
bellabant ſuper Hieruſalem,
& ſuper
omnes civitates Juda
:) dicens ; Sic
dixit Dominus ; Vade
ad Sedeciam regem
Juda, & dices
ei ; Sic dixit 2
Dominus ; Traditione
tradetur civitas hæc
in manus regis Babylonis
: & capiet eam,
& incendet eam
in igne : Et tu 3
non ſalvaberis de manu
ejus, & comprehenſione
capieris, &
in manus ejus daberis
: & oculi tui oculos
ejus (c) videbunt
: & in Babylonem
ingredieris.

MS. A. (α) ΓΕΝΑ'ΜΕΝΟΣ (β) αὐτῶν, (γ) συλλημφθήσῃ, καὶ οἱ ὀφθαλμοί σου (δ) καὶ στόμα αὐτοῦ μετὰ τοῦ στόματός σου λαλήσει, καὶ εἰς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 ואם לית את צבי למתב ותוב לות גדליה בר אחיקם בר שפן דמני מלכא דבבל
בקרויא דבית יהודה ותב עמיה בגו עמא או לכל דכשר בעינך למיזל איזל ומניה ליה
6 רב קטוליא מתנן ונבזבן ושלחיה : ואתא ירמיה לות גדליה בר אחיקם למצפיא ויתב
7 עמיה בגו עמא דאשתארו בארעא : ושמעו כל רבני חילותא די בחקלא אנון וגבריהון
ארי מני מלכא דבבל ית גדליה בר אחיקם בארעא וארי מני עמיה גבריא ונשיא
8 וטפלא ומחשיכי עמא דארעא מדלא אתגליאו לבבל : ואתו לות גדליה למצפיא
וישמעאל בר נתניה ויוחנן ויונתן בר קרח ושריה בר תנחומת ובני עיפי דמנטופא
9 ויזניה בר מעכת אנון וגבריהון : וקים להון גדליה בר אחיקם בר שפן ולגבריהון למימר
10 לא תדחלון מלמפלח לכסדאי תבו בארעא ופלחו ית מלכא דבבל וייטב לכון : ואנא
הא אנא יתיב במצפיא למיקם קדם כסדאי דיתון עלנא ואתון כנושו חמרא ודבלתא
11 ומשחא ושוו במניכון ותבו בקרויכון דאחדתון : ואף כל יהודאי די במואב ובבני עמון
ובאדום ודי בכל מדינתא שמעו ארי שבק מלכא דבבל שארא לדבית יהודה וארי מני
12 עליהון ית גדליה בר אחיקם בר שפן : ותבו כל יהודאי מכל אתריא דאתבדרו לתמן
ואתו לארעא דבית יהודה לות גדליה למצפיא וכנשו חמרא ודבילתא סגי לחדא :
13 14 ויוחנן בר קרח וכל רבני חילותא די בחקלא אתו לות גדליהו למצפיא : ואמרו ליה
המדע תדע ארי בעלים מלכא דבני עמון שלח ית ישמעאל בר נתניה למקטלך נפש
15 ולא האמין להון גדליה בר אחיקם : ויוחנן בר קרח אמר לגדליה בסתרא במצפיא
למימר איזיל כען ואמחי ית ישמעאל בר נתניה ואנש לא ידע למה יקטלנך נפש
ויתבדרון כל דבית יהודה דאתכנישו לותך ויוביד שארא דבית יהודה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſi tu non vis *reverti*, revertere ad Godoliam filium Ahicam filii Saphan, 5
quem conſtituit rex Babylonis in urbibus domus Juda, & habita cum eo in
medio populi : aut ad quemcunque locum qui placuerit tibi ut pergas, perge.
Et dedit ei princeps occidentium munera & dona, & dimiſit eum. Et venit 6
Jeremias ad Godoliam filium Ahicam in Maſpha, & habitavit cum eo in
medio populi qui remanſit in terra. Et audierunt omnes principes exercitu- 7
um qui erant in agro, ipſi & viri eorum, quòd conſtituiſſet rex Babylonis
Godoliam filium Ahicam in terra; & quòd conſtituiſſet cum eo viros & mulieres,
& parvulos, & de pauperibus populi terræ, de his qui non fuerant
tranſlati in Babylonem. Et venerunt ad Godoliam in Maſpha. Et Iſmael filius 8
Nethaniæ, & Johanan, & Jonathan *filius* Careæ, & Saraias filius Thanhumeth,
& filii Ephai, qui erant de Netopha, & Jezanias filius Maachat, ipſi
& viri eorum. Et juravit eis Godolias filius Ahicam, filii Saphan, & viris 9
eorum; dicens : Ne timeatis ſervire Chaldæis : habitate in terra, & ſervite
regi Babylonis, & bene erit vobis. Ecce ego habito in Maſpha, ut ſtem coram 10
Chaldæis qui venient ad nos : vos autem colligite vinum, & caricas, &
oleum, & reponite in vaſis veſtris, & manete in urbibus veſtris, quas occupâſtis.
Et etiam omnes Judæi qui erant in Moab & in filiis Ammon, & in 11
Idumæa, & in univerſis regionibus, audierunt quòd dimiſiſſet rex Babylonis
reliquias domui Juda ; & quòd conſtituiſſet ſuper eos Godoliam filium
Ahicam filii Saphan. Et reverſi ſunt omnes Judæi de omnibus locis ad quæ 12
diſperſi fuerant, & venerunt in terram domus Juda ad Godoliam in Maſpha,
& collegerunt vinum & caricas in magna copia. Et Johanan filius Caree, & 13
omnes principes exercitus qui erant in agro, venerunt ad Godoliam in Maſpha. 14
Et dixerunt ei, Nónne planè ſcis quòd Baalis rex filiorum Ammon miſit
Iſmaelem filium Nathaniæ, ut occidat animam tuam ? Et non credidit eis
Godolias filius Ahicam. Johanan autem filius Caree locutus eſt ad Godoliam 15
in ſecreto, in Maſpha; dicendo : Vadam nunc et percutiam Iſmaelem filium
Nathaniæ, & nullus vir ſciet : quare interficiet animam tuam ? et diſpergentur
omnes viri domus Juda qui congregati ſunt ad te ? et peribunt reliquiæ
domus Juda ?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܠܗ. ܐܢ ܩܐܡ ܐܢܬ. ܬܒ ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦܢ ܕܐܫܠܛܗ ܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܬܒ ܥܡܗ ܒܓܘ ܥܡܐ. ܐܘ ܠܟܠ ܕܫܦܪ ܒܥܝܢܝܟ ܠܡܐܙܠ ܙܠ.
ܘܝܗܒ ܠܗ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܢܚܘܬܐ ܙܘܕܐ ܘܡܘܗܒܬܐ ܘܫܪܝܗ. * ܘܐܬܐ ܐܪܡܝܐ ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ
ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦܢ ܠܡܨܦܝܐ. ܘܝܬܒ ܥܡܗ ܒܓܘ ܥܡܐ ܕܐܫܬܚܪ ܒܐܪܥܐ. * ܘܫܡܥܘ
ܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܕܒܩܘܪܝܐ ܗܢܘܢ ܘܓܒܪܐ ܕܥܡܗܘܢ. ܕܐܫܠܛ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܓܕܠܝܐ
ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܥܠ ܐܪܥܐ: ܘܐܫܠܡ ܠܗ ܓܒܪܐ ܘܢܫܐ ܘܛܠܝܐ: ܘܡܢ ܡܣܟܢܐ ܕܐܪܥܐ ܐܝܠܝܢ
ܕܠܐ ܐܫܬܒܝܘ ܠܒܒܠ. * ܘܐܬܘ ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܠܡܨܦܝܐ. ܐܝܫܡܥܐܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ. ܘܝܘܚܢܢ
ܘܝܘܢܬܢ ܒܢܝ ܩܘܪܚ. ܘܣܪܝܐ ܒܪ ܬܢܚܘܡܬ. ܘܒܢܝ ܥܝܦܝ ܕܢܛܘܦܬ. ܘܝܙܢܝܐ ܒܪ ܡܥܟܬ
ܗܢܘܢ ܘܓܒܪܝܗܘܢ. * ܘܝܡܐ ܠܗܘܢ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦܢ ܘܠܓܒܪܐ ܕܥܡܗܘܢ
ܘܐܡܪ. ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܠܡܦܠܚ ܠܟܠܕܝܐ. ܬܒܘ ܒܐܪܥܐ. ܘܦܠܘܚܘ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ
ܘܢܛܐܒ ܠܟܘܢ. * ܘܐܢܐ ܗܐ ܝܬܒ ܐܢܐ ܒܡܨܦܝܐ. ܠܡܩܡ ܩܕܡ ܟܠܕܝܐ ܕܐܬܝܢ ܠܘܬܢ. ܘܐܢܬܘܢ
ܟܢܘܫܘ ܚܡܪܐ ܘܩܝܛܐ ܘܡܫܚܐ. ܘܐܪܡܘ ܒܡܐܢܝܟܘܢ. ܘܬܒܘ ܒܩܘܪܝܟܘܢ
ܕܐܚܕܬܘܢ. * ܘܐܦ ܟܠܗܘܢ ܝܗܘܕܝܐ ܕܐܝܬ ܒܐܕܘܡ ܘܒܡܘܐܒ: ܘܒܝܢܝ ܒܢܝ ܥܡܘܢ ܘܒܟܠ
ܐܬܪܐ. ܫܡܥܘ ܕܫܒܩ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܫܪܟܐ ܠܝܗܘܕܐ. ܘܐܫܠܛ ܥܠܝܗܘܢ ܠܓܕܠܝܐ
ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦܢ. * ܘܗܦܟܘ ܟܠܗܘܢ ܝܗܘܕܝܐ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܐܬܪܘܬܐ ܕܐܬܒܕܪܘ ܠܬܡܢ
ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܠܡܨܦܝܐ. ܘܟܢܫܘ ܚܡܪܐ ܘܩܝܛܐ ܣܓܝܐܐ ܛܒ.
* ܘܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܘܪܚ ܘܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܕܒܩܘܪܝܐ. ܐܬܘ ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܠܡܨܦܝܐ. ܘܐܡܪܘ
ܠܗ. * ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ. ܕܒܥܠܝܣ ܡܠܟܐ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ: ܫܕܪ ܠܐܝܫܡܥܐܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ
ܠܡܩܛܠܟ. ܘܠܐ ܗܝܡܢ ܐܢܘܢ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ. * ܘܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܘܪܚ ܐܡܪ ܠܓܕܠܝܐ
ܒܛܘܫܝܐ ܒܡܨܦܝܐ. ܐܙܠ ܐܩܛܠܝܘܗܝ ܠܐܝܫܡܥܐܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܘܐܢܫ ܠܐ ܢܕܥ. ܠܡܢܐ ܢܩܛܠܟ
ܘܢܬܒܕܪܘܢ ܟܠܗܘܢ ܝܗܘܕܝܐ ܕܟܢܝܫܝܢ ܠܘܬܟ. ܘܢܐܒܕ ܫܪܟܐ ܕܝܗܘܕܝܐ.

Dixit etiam ad eum, Si maneas, commorare 5
in medio populi apud Gedaliam filium Ahicami filii Saphanis, quē præfecit rex Babyloniæ civitatibus Judæ; vel certè quocunque abire tibi libuerit, abi: dedítque illi Nebuzardan princeps ſatellitum munera in viam,
& dimiſit eum. Venit ergò Jeremia ad Ge- 6
daliam filium Ahicami filii Sephanis in Maſphiam, & commoratus eſt apud illum in me-
dio populi qui reliquus erat in terra. Au- 7
dientes autem omnes copiarum duces qui erant in civitatibus, ipſi & viri qui cum eis erant, præfeciſſe regem Babylonis Gedaliam filium Ahicami illi regioni, eíque commiſiſſe viros, mulieres, ac pueros, & ex pauperibus
terræ qui non fuerant abducti Babylonem;
Venerunt ad Gedaliam in Maſphiam Iſmael 8
Nethaniæ filius, Johannes & Jonathan filii Corahi, Seria filius Tenahmathi filii Iphai Netophathitæ, & Jezania filius Maachatæ,
ipſi & viri ſui. His Gedalia filius Ahicami fi- 9
lii Saphanis, & viris qui cum eis erant, juravit, ac dixit; Ne timeatis ſervire Chaldæis: manete in hac terra, & ſervite regi Babylo-
niæ, ut benè cedat vobis. Ego enim ecce 10
manſurus ſum in Maſphia, ut reſiſtam Chaldæis qui contra nos venerint: vos autem colligite frumentum, vinum, oleum, & frugem æſtivam, reponite in vaſis veſtris, & manete
in civitatibus veſtris quas occupâſtis Omnes 11
etiã Judæi qui erant in Adum, in Moab, inter Ammonitas, & in cæteris regionibus, audientes quòd dimiſiſſet rex Babyloniæ reliquias Judæis, & præfeciſſet illis Gedaliam filium
Ahicami filii Saphanis; Reverſi ſunt omnes 12
Judæi iſti ex omnibus locis in quæ diſperſi fuerant, venerúntque in terram Judæ ad Ge-
daliam in Maſphiam: & collegerunt vini & 13
annonæ æſtivæ copiam ingentem. Johannes autem Corahi filius, & omnes copiarum duces qui erant in civitatibus, Gedaliam ad-
euntes in Maſphia dixerunt ei; An igno- 14
ras quòd Belaiſi rex Ammonitarum miſit Iſmaelem Nethaniæ filium ad interficiendum te? ſed non credidit eis Gedalia filius Ahica-
mi. Quin cùm Johannes Corahi filius clàm 15
dixiſſet Gedaliæ in Maſphia, Ibo, & Iſmaelem Nethaniæ filium occîdam, nemine ſciente; ne te interfecto diſſipentur omnes Judæi apud te congregati, pereántque reliquiæ Judæorum:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

Ox.MS.] *يستجيكم ايام يقول الرب واتم الاقوال الصالحة التي وعدت بها ال اسرايل وال يهود
يقول الرب *في تلك الايام وفي ذلك الزمان اضي لداود ضيا البر ويملك الملك *
ويعدل في الارض * ويعمل البر * في تلك الايام يخلص يهودا وتسكن اورسلي
مطمانة * وهذا اسمه الذي يسمونه الرب الخفيا * لانه هكذي يقول الرب انه لا يعد
داود ابنا يجلس على كرسي اسرايل * والكهنة واللاويون لا يعدمون رجلا يقوم امامي
يقرب الذبيحة وقربان ويبخر البخور كل ايام *ثم اوحي الرب الي ارميا وقال *هكذي يقول الرب
ان انتم قدرتم ان تبطلوا تدبير الليل والنهار الا يكونا في وقتهما *يبطل العهد الذي عاهدت
داود عبدي الا يكون له ابن يجلس على كرسيه *والكهنة واللاويون خدامي كما لا يحصي
السماء ولا يكال رمل البحر * كذلك اكثر ذرية داود عبدي ونسل اللاويين الذين يخدمون
* واوحي الرب الي ارميا وقال *ما تري ما يقول الشعب ان القبيلتين التين انتخب الرب رذلهما
ويسخطوني الشعبي ان لا يكون امامي الشعب *هكذي يقول الرب ان لم يثبت عهدي وسنني
الليل والنهار والحد الذي حددت السماء والارض لم يثبت *نسل يعقوب وداود عبدي ارذله
ولا اتخذ وليا من نسل داود على بيت ابرهيم واسحق ويعقوب * اذا رددت سبيهم ورحمتهم
• الفصل الحادي والاربعون • * القول الصاير الي ارميا من قبل الرب * وبختنصر ملك بابل
وكل معسكره وكل ارض رياسته للحرب على اورشليم وعلى مدن يهودا * قايلا •
* هكذا قال الرب * امض الي صدقيا ملك يهودا وقل له * هكذا قال الرب
تدفع هذه المدينة الي ايدي ملك بابل * ويقبض عليها ويحرقها بالنار * وانت
لا تخلص من يده * وبالقبض تقبض والي يديه تدفع * وعيناك تنظران عينيه * وتدخل الي بابل

[MS.Oxon. *Advenient vobis dies, dixit Dominus, quum complebo verba illa* 14
optima, quæ promiſi tum Iſraelitis tum Judæis, inquit Dominus. Diebus illis, 15
*& tempore illo accendam Davidi Lumen juſtitiæ: & regno dominabitur, & prudens erit, & æquitatem in terra admi-
niſtrabit, & juſtitiã exercebit. Dieb⁹ illis* 16
*ſervabitur Juda, et Hieruſalem habitabit ſecurè: & iſtud eſt nomen quo vocabunt
eum, Dominus abſconditus. Quoniam ſic* 17
*dicit Dominus, Davidi non deficiet filius
ſedens in ſolio Iſraelitarum. Etiam ſa-* 18
*cerdotibus, & Levitis non deerit vir qui ſtet in conſpectu meo offerens ſacrificia
et oblationes, et adolens thura cunctis die-* 19
*bus. Tum revelavit Dominus Jeremiæ di-
cendo, Sic ait Dominus, ſi irritam facere* 20
*poteſtis adminiſtrationem noctis & diei,
ita ut non ſint tempore ſuo;* Etiam *fœdus* 21
*meum quod pollicitus ſum Davidi ſervo meo irritum fiet, ne ſit illi filius ſedens ſu-
per ſolium ejus. Quod autem ad ſacerdo-* 22
*tes & Levitas miniſtros meos, quemadmodum numerari nequeunt ſtellæ cœli, nec menſurari arena maris; ita multiplicabo progeniem Davidis ſervi mei, et generatio-
nem Levitarum miniſtrantiũ mihi. Et re-* 23
velavit Dominus Jeremiæ dicendo; Annon 24
*animadvertis quid popul⁹ iſte loquuntur, quòd duas familias elegerat Domin⁹, jam abominatur ipſas: et quòd ita me irritârunt popul⁹ meus, ut non ſit ampliùs gens
corã me? Sic dicit Domin⁹, Si fœd⁹ meũ et* 25
*ſtatutũ meũ noctis et diei non eſt ſatis firmũ; et termin⁹ quem poſui cœlo terræq;, ſi
minimè ſtabilis; Etiã progeniem Jacobi et* 26
Davidis ſervi mei ſpernam, ne ſumã præfectũ de ſemine Davidis ſuper domũ Abrahami, Iſhaci, et Jacobi, quũ reduxero captivitatē eorũ, & miſertus fuero ipſorũ.

CAP. XLI.

Sermo factus ad Jeremiã à Domino (quũ 1
Bochtonaſſar rex Babelis, totuſq; exercitus ejus, & tota terra dominii ipſius oppugnaret Jeroſolymam & urbes Judæ) dicens;

Sic dixit Dominus, Adito Sedeciam re- 2
*gem Judæ, & dicas ei: Sic ait Dominus, Traditur hæc urbs in manus regis Babelis,
capiet eam, igneque ſuccendet. Tu quo-* 3
que non effugies manum ejus, ſed omninò capieris, & in manus ejus tradêris, oculi tui videbunt oculos ejus, & Babelem ingredieris.

:Chareach filium Jochanan ad Ahicam filius Ghedaljahu dixit Et
16 ויאמר גדליהו בן־אחיקם אל־יוחנן בן־קרח
ad loquens tu falſum nam :hoc verbum facias Ne
אל־תעש את־הדבר הזה כי־שקר אתה דבר אל־
.Iſmahel
ישמעאל׃

CAP. XLI. מא

filii Nethanjah filius Iſmahel venit ,ſeptimo menſe in fuit Et
1 ויהי בחדש השביעי בא ישמעאל בן־נתניה בן־
viri decem & ,regis *magnates &* ,*regni* ſemine de Eliſamah
אלישמע מזרע המלוכה ורבי המלך ועשרה אנשים
comederunt & :Miſpah in Ahicam filium Ghedaljahu ad ,eo cum
אתו אל־גדליהו בן־אחיקם המצפתה ויאכלו
filius Iſmahel ſurrexit Et .Miſpah in ſimul panem ibi
2 שם לחם יחדו במצפה׃ ויקם ישמעאל בן־
percuſſerunt & ,eo cum erant qui viri decem & ,Nethanjah
נתניה ועשרת האנשים אשר־היו אתו ויכו
interfecit & ,gladio *in* Saphan filii Ahicam filium Ghedaljahu
את־גדליהו בן־אחיקם בן־שפן בחרב וימת
, Jehudæos omnes Et .*terra in* Babel rex præfecerat quem ,eum
3 אתו אשר־הפקיד מלך־בבל בארץ׃ ואת כל־היהודים
Chaſdim & ,Miſpah in Ghedaljahu cum *eo cum* erant qui
אשר־היו אתו את־גדליהו במצפה ואת־הכשדים
.Iſmahel percuſſit *belli* viros ;ibi ſunt inventi qui
אשר נמצאו־שם את אנשי המלחמה הכה ישמעאל׃
(.noverat *non vir &*) ,Ghedaljahu *facere mori* ,ſecunda die in fuit Et
4 ויהי ביום השני להמית את־גדליהו ואיש לא ידע׃
,viri octoginta Someron de & ,Silo de ,Sechem de viri Veneruntq;
5 ויבאו אנשים משכם משלו ומשמרון שמנים איש
thus & ,*munus &* ;*inciſi* & ,veſtibus ſciſſi & , barbam raſi
מגלחי זקן וקרעי בגדים ומתגדדים ומנחה ולבונה
Iſmahel eſt egreſſus Et .Domini domum *adducendum ad* ,eorũ manu in
6 בידם להביא בית יהוה׃ ויצא ישמעאל
eundo vadens ,Miſpah de eorum occurſum in Nethanjah filius
בן־נתניה לקראתם מן־המצפה הלך הלך
ad Venite :eos ad dixit & ,eis *occurrere circa* fuit Et .flens &
ובכה ויהי כפגש אתם ויאמר אליהם באו אל־
medium ad *eos venire ſecundum* fuit Et .Ahicam filium Ghedaljahu
7 גדליהו בן־אחיקם׃ ויהי כבואם אל־תוך
medium ad Nethanjah filius Iſmahel eos jugulavit & ,civitatis
העיר וישחטם ישמעאל בן־נתניה אל־תוך
viri decem Et .eo cum qui viri & , ipſe ,ciſternæ
8 הבור הוא והאנשים אשר־אתו׃ ועשרה אנשים
quia ,nos occidas Ne :Iſmahel ad dixerunt & ,eos inter ſunt reperti
נמצאו־בם ויאמרו אל־ישמעאל אל־תמתנו כי־
,olei & ,ordeorum & ,frumentorum,agro in *abſconditi* theſauri nobis ſunt
יש־לנו מטמנים בשדה חטים ושערים ושמן
.eorum fratrum medio in eos interfecit non & ,ceſſavit & :mellis &
ודבש ויחדל ולא המיתם בתוך אחיהם׃
cadavera omnia Iſmahel *illuc* fecerat projicere *quò* ciſterna Et
9 והבור אשר השליך שם ישמעאל את כל־פגרי
fecit quam ipſa ,Ghedaljahu *manu in* percuſſit quos , virorum
האנשים אשר הכה ביד־גדליהו הוא אשר עשה
replevit ipſam ;Iſrael *regis* Bahaſa *faciebus à* Aſa rex
המלך אסא מפני בעשא מלך־ישראל אתו מלא
.occiſis Nethanjahu filius Iſmahel
ישמעאל בן־נתניהו חללים׃

Verſio VULG. LAT.

16 Et ait Godolias filius Ahicam ad Johanan filium Caree; Noli facere verbum hoc: falſum enim tu loqueris de Iſmahel.

CAP. XLI.

1 ET factum eſt in menſe ſeptimo, venit Iſmahel filius Nathaniæ, filii Eliſama de ſemine regali, & optimates regis, & decem viri cum eo, ad Godoliam filium Ahicam in Maſphath: & comederunt ibi panes ſimul in 2 Maſphath. Surrexit autem Iſmahel filius Nathaniæ, & decem viri qui cum eo erant, & percuſſerunt Godoliam filium Ahicam filii Saphan gladio, & interfecerunt eum, quem præfecerat 3 rex Babylonis terræ. Omnes quoque Judæos, qui erant cum Godolia in Maſphath, & Chaldæos, qui reperti ſunt ibi, & viros 4 bellatores percuſſit Iſmahel. Secundo autem die poſtquàm occiderat Godoliam, nullo adhuc 5 ſciente, Venerunt viri de Sichem, & de Silo, & de Samaria octoginta viri, raſi barbâ, & ſciſſis veſtib⁹, & ſqualentes: & munera & thus habebant in manu, ut offerrent in domo Domi- 6 ni. Egreſſus ergò Iſmahel filius Nathaniæ in occurſum eorum de Maſphath, incedens & plorans ibat: cùm autem occurriſſet eis, dixit ad eos; Venite ad 7 Godoliam filium Ahicam. Qui cùm veniſſent ad medium civitatis, interfecit eos Iſmahel filius Nathaniæ circa medium laci, ipſe, & viri qui erant cum eo. 8 Decem autem viri reperti ſunt inter eos, qui dixerunt ad Iſmahel; Noli occidere nos: quia habemus theſauros in agro, frumenti, & hordei, & olei, & mellis. Et ceſſavit, & non inter- 9 fecit eos cum fratribus ſuis. Lacus autem in quem projecerat Iſmahel omnia cadavera virorum, quos percuſſit propter Godoliam, ipſe eſt, quem fecit rex Aſa propter Baaſa regem Iſrael: ipſum replevit Iſmahel filius Nathaniæ occiſis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Ἀλλὰ ἄκουσον τὸν λόγον κυρίου, Σεδεκία βασιλεῦ Ἰούδα· Οὕτως λέγει κύριος, Ἐν εἰ- 5 ρήνῃ ἀποθανῇ· καὶ ὡς ἔκλαυσαν τοὺς πατέρας σου τοὺς βασιλεύσαντας πρότερόν σου, κλαύσονται καὶ σὲ, (ε) Οὐαὶ κύριε, καὶ ἕως ᾅδου (ζ) κόψονταί σε, ὅτι λόγον ἐγὼ ἐλάλη- 6 σα, εἶπε κύριος. Καὶ ἐλάλησεν Ἱερεμίας (η) πρὸς τὸν βασιλέα Σεδεκίαν πάντας τοὺς λό- 7 γους τούτους ἐν Ἱερουσαλήμ. Καὶ ἡ δύναμις βασιλέως Βαβυλῶνος ἐπολέμει ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ τὰς πόλεις Ἰούδα (θ), καὶ ἐπὶ Λαχὶς, καὶ ἐπὶ Ἀζηκὰ, ὅτι αὗται κατελεί- 8 φθησαν ἐν πόλεσιν Ἰούδα πόλεις ὀχυραί. Ὁ λόγος ὁ (ι) γενόμενος πρὸς Ἱερεμίαν παρὰ κυρίου, μετὰ τὸ συντελέσαι τὸν βασιλέα Σεδεκίαν διαθήκην πρὸς τὸν λαὸν (κ), τοῦ 9 καλέσαι ἄφεσιν, Τοῦ ἐξαποστεῖλαι ἕκαστον τὸν παῖδα αὐτοῦ, καὶ ἕκαστον τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, τὸν Ἑβραῖον καὶ τὴν Ἑβραίαν ἐλευθέρους, πρὸς τὸ μὴ δουλεύειν ἄνδρα ἐξ (λ) Ἰούδα. 10 Καὶ ἐπεστράφησαν πάντες οἱ μεγιστᾶνες, καὶ πᾶς ὁ λαὸς (μ) οἱ εἰσελθόντες ἐν τῇ διαθήκῃ, τοῦ ἀποστεῖλαι ἕκαστον τὸν παῖδα αὐτοῦ, 11 (ν) καὶ ἕκαστον τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, καὶ ἔωσαν 12 Αὐτοὺς εἰς παῖδας καὶ παιδίσκας. Καὶ (ξ) ἐγενήθη λόγος κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, λέ- 13 γων, Οὕτως εἶπε (ο) κύριος, Ἐγὼ διεθέμην διαθήκην πρὸς τοὺς πατέρας ὑμῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ, ᾗ ἐξειλάμην αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, 14 ἐξ οἴκου δουλείας, λέγων, Ὅταν πληρωθῇ ἓξ ἔτη, ἀποστελεῖς τὸν ἀδελφόν σου τὸν Ἑβραῖον ὃς πραθήσεταί σοι, καὶ ἐργᾶταί σοι ἓξ ἔτη, καὶ ἐξαποστελεῖς αὐτὸν ἐλεύθερον. καὶ οὐκ ἤκουσάν μου, καὶ οὐκ ἔκλιναν τὸ οὖς αὐτῶν. 15 Καὶ (π) ἐπέστρεψαν σήμερον ποιῆσαι τὸ εὐθὲς (ρ) πρὸ ὀφθαλμῶν μου, τοῦ καλέσαι ἄφεσιν (σ) ἕκαστον τοῦ πλησίον αὐτοῦ· καὶ συνετέλεσαν διαθήκην κατὰ πρόσωπόν μου, ἐν τῷ οἴκῳ, οὗ ἐπεκλήθη τὸ ὄνομά μου ἐπ' 16 αὐτῷ. Καὶ ἐπεστρέψατε, καὶ ἐβεβηλώσατε (τ) τὸ ὄνομά μου, τοῦ ἐπιστρέψαι ἕκαστον τὸν παῖδα αὐτοῦ, καὶ ἕκαστον τὴν παιδίσκην αὐτοῦ, οὓς ἐξαπεστείλατε ἐλευθέρους τῇ ψυχῇ αὐτῶν, τοῦ 17 εἶναι ὑμῖν εἰς παῖδας καὶ παιδίσκας. Διατοῦτο οὕτως εἶπε κύριος, Ὑμεῖς οὐκ ἠκούσατέ μου, (υ) τοῦ καλέσαι ἄφεσιν ἕκαστον πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ· ἰδοὺ ἐγὼ καλῶ ἄφεσιν ὑμῖν εἰς μάχαιραν, καὶ εἰς τὸν θάνατον, καὶ εἰς τὸν λιμὸν, καὶ δώσω ὑμᾶς εἰς διασπορὰν πάσαις 18 ταῖς βασιλείαις τῆς γῆς· Καὶ δώσω τοὺς ἄνδρας τοὺς παρεληλυθότας τὴν (φ) διαθήκην μου, τοὺς μὴ στήσαντας τὴν διαθήκην μου, ἣν ἐποίησαν κατὰ πρόσωπόν μου, τὸν μόσχον ὃν ἐποίησαν ἐργάζεσθαι αὐτῷ,

Sed audi verbum Domini, Sedecia rex Juda. Sic dicit Dominus, In (d) pace morieris: & sicut 4 5 (e) ploraverunt patres tuos, qui regnaverunt ante te, (f) plorabunt & te, Væ, domine, & uſque ad infernum plangent te: quia verbum ego locutus ſum, dixit Dominus. Et locutus eſt Hieremias ad regem Sedeciam omnia 6 verba hæc in Hieruſalem. Et 7 virtus regis Babylonis bellabat ſuper Hieruſalem, & ſuper civitates (g) Juda, & ſuper Lachis, & ſuper Azeca: quia hæ remanſerant in civitatibus Juda civitates munitæ. Verbum quod 8 factum eſt ad Hieremiam à Domino, poſtquàm rex Sedecias conſummavit teſtamentum erga (h) populum, vocando dimiſſionem. Ut dimitteret unuſquiſque 9 puerum ſuum, & unuſquiſque ancillam ſuam, Hebræum & Hebræam liberos; ut non ſerviret vir è Juda. Et (i) converſi ſunt 10 omnes magnates, & omnis populus, qui ingreſſi erant in teſtamentum, ut dimitteret unuſquiſque puerum ſuum, & unuſquiſque ancillam ſuam: (k) & dimiſerunt . . . . . . Eos in pueros, & ancil- 11 las. Et factum eſt verbum Do- 12 mini ad Hieremiam, dicens; Sic 13 dixit Dominus; Ego diſpoſui teſtamentum ad patres veſtros in die quâ erui eos de terra Ægypti, è domo ſervitutis, dicens; Cùm 14 impleti fuerint ſex anni, mittes fratrem tuum Hebræum, qui emptus erit tibi, & operabitur tibi ſex annos: & dimittes eum liberum. Et non audierunt me, & non inclinaverunt aurem ſuam. Et converſi ſunt hodiè ad faci- 15 endum rectum ante oculos meos, cùm vocaret unuſquiſque dimiſſionem proximi ſui: & conſummaverunt teſtamentum ante faciem meam in domo, in qua invocatum eſt nomen meum in ea. Et 16 reverſi eſtis, & polluiſtis nomen meum, cùm reduceret unuſquiſque puerum ſuum, & unuſquiſque ancillam ſuam, quos dimiſeratis liberos animæ ſuæ, ut ſint vobis in pueros, & ancillas. Propterea 17 ſic dixit Dominus; Vos non audîſtis me, ut vocaret dimiſſionem unuſquiſq; ad proximum ſuum. Ecce ego voco dimiſſionem vobis in gladium, & in mortem, & in famē: & dabo vos in diſperſionem omnibus regnis terræ: Et dabo viros, qui tranſgreſſi 18 ſunt teſtamentum meum, qui non ſtabilierunt teſtamentum meum, quod fecerant ad faciem meam, vitulum, (l) quem fecerant ad operandum ei,

MS. A. (ε) Ὦ κύριε, (ζ) κλαύσονταί σε, ὅτι λόγον ἐλάλησα, (η) πρὸς βασιλέα (θ) τὰς καταλελειμμένας, ἐπὶ Λαχεὶς, (ι) ΓΕΝΑ'ΜΕΝΟΣ (κ) ΤΟ'Ν 'ΕΝ 'ΙΕΡΟΥΣΑΛΗ'Μ, ΤΟ'Υ (λ) 'ΙΣΡΑΗ'Λ. (μ) Ο'Ι 'ΕΛΘΟ'ΝΤΕΣ Ε'ΙΣ ΤΗ'Ν ΔΙΑΘΗ'ΚΗΝ, (ν) * ΚΑ'Ι 'ΕΩ͂ΣΑΝ Α'ΥΤΟ'ΥΣ 'ΕΙΣ (ξ) ἐγένετο (ο) κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, ἀποστελεῖς (π) ἔστρεψαν (ρ) ἐν ὀφθαλμοῖς (σ) ἕκαστος τῷ πλησίον (τ) τὴν διαθήκην μου, (υ) καλέσαι * ἕκαστος ἄφεσιν πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, καὶ ἕκαστον πρὸς τὸν πλησίον (φ) διαθήκην μου, ἣν ἐποίησαν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 ואמר גדליה בר אחיקם ליוחנן בר קרח לא תעביד ית פתגמא הדין ארי שקרא את ממלל על ישמעאל׃

מא

1 והוה בירחא שביעאה אתא ישמעאל בר נתניה בר אלישמע מזרעא דמלכותא ורברבי מלכא ועסרא גברין עמיה לות גדליה בר אחיקם למצפיא ואכלו תמן לחמא כחדא במצפיא׃ 2 וקם ישמעאל בר נתניה ועסרא גברין דהוו עמיה ומחו ית גדליה בר אחיקם בר שפן בחרבא וקטל יתיה דמני מלכא דבבל בארעא׃ 3 וית כל יהודאי דהוו עמיה עם גדליה במצפיא וית כסדאי דאשתכחו תמן ית גברי עבדי קרבא קטל ישמעאל׃ 4 והוה ביומא תנינא למקטל ית גדליה ואנש לא ידע׃ 5 ואתו גבריא משכם ומשילו ומשמרון תמנן גברין כד מגלחין דקניהון ומבזעין לבושיהון ומתחסמין וקורבנא ולבונתא בידיהון לאיתאה לבית מקדשא דיי׃ 6 ונפק ישמעאל בר נתניה לקדמותהון מן מצפיא אזיל מיזל ובכי והוה כד ערע יתהון ואמר להון עולו לות גדליה בר אחיקם׃ 7 והוה כמעלהון לגו קרתא ונכיסנון ישמעאל בר נתניה לגו גובא הוא וגבריא די עמיה׃ 8 ועסרא גברין אשתכחו בהון ואמרו לישמעאל לא תקטלננא ארי אית לנא מטמורין בחקלא חטין וסערין ומשח ודבש ואתמנע ולא קטלנון בגו אחוהון׃ 9 וגובא די רמא תמן ישמעאל ית כל פגרי גבריא די קטל ביד גדליה הוא דעבד מלכא אסא כד צר עלוהי בעשא מלכא דישראל יתיה מלי ישמעאל בר נתניה קטילין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ait Godolias filius Ahicam ad Johanan filium Caree: Ne facias verbum 16 hoc, quia falſum tu loqueris de Iſmaele.

CAP. XLI.

ET factum eſt in menſe ſeptimo, venit Iſmael filius Nathaniæ filii Eliſa- 1 mæ, de ſemine regio, & principes regis, & decem viri cum eo, ad Godoliam filium Ahicam in Maſpha; & comederunt ibi panem ſimul in Maſpha. Et ſurrexit Iſmael filius Nathaniæ & decem viri qui erant cum eo, & percuſ- 2 ſerunt Godoliam filium Ahicam filii Saphan gladio, & *occidit* eum quem conſtituit rex Babylonis in terra. Et omnes Judæos qui erant cum ipſo Go- 3 dolia in Maſpha, & Chaldæos qui inventi ſunt ibi, viros bellatores occidit Iſmael. Et factum eſt in ſecundo die poſtquam occiſus fuerat Godolias, & 4 nullus vir ſciebat. Et venerunt viri de Sechem & de Silo, & de Samaria 5 octoginta viri, raſa barba, & ſciſſis veſtibus, & inciſa [*facie*;] eorumque in manibus erat oblatio & thus, ut adducerent in domum ſanctuarii Domini. Egreſſúſque eſt Iſmael filius Nathaniæ in occurſum eorum de Maſpha, am- 6 bulans & plorans. Et factum eſt cùm occurriſſet eis, dixit ad eos, Ingredimini ad Godoliam filium Ahicam. Et factum eſt cùm ingrederentur in me- 7 dium urbis, & occidit eos Iſmael filius Nathaniæ, circa medium laci, ipſe et viri qui erant cum eo. Et decem viri inventi ſunt in eis, qui dixerunt ad 8 Iſmaelem, Ne occidas nos, quia habemus theſauros in agro, triticum et hordeum, et oleum, et mel: et ceſſavit, et non interfecit eos in medio fratrum ſuorum. Ciſterna autem in quam projecit Iſmael omnia cadave- 9 ra virorum quos occidit propter Godoliam, ipſa eſt quam fecit rex Aſa, quando obſedit eum Baaſa rex Iſrael: ipſam implevit Iſmael filius Nathaniæ occiſis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܠܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܪܚ. ܠܐ ܬܥܒܕ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. ܡܛܠ
ܕܕܓܠܘܬܐ ܡܡܠܠܬ ܥܠ ܐܝܫܡܥܝܠ.

16 Reſpondit Gedalia Ahicami filius Johanni filio Corahi, Ne feceris hanc rem : nam mendacium loqueris de Iſmaele.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܐ *

* ܘܒܝܪܚܐ ܫܒܝܥܝܐ. ܐܬܐ ܐܝܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܒܪ ܐܝܫܡܥܝܠ ܡܢ ܙܪܥܐ ܕܡܠܟܘܬܐ
ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ ܕܡܠܟܐ. ܘܥܣܪܝܢ ܓܒܪܝܢ ܥܡܗ. ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܠܡܨܦܐ. ܘܐܟ
ܠܚܡܐ ܐܟܚܕܐ ܒܡܨܦܐ. * ܘܩܡ ܐܝܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܗܘ ܘܥܣܪܝܢ ܓܒܪܝܢ ܕܥܡܗ
ܥܡܗ. ܘܩܛܠܘܗܝ ܠܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦܢ ܒܚܪܒܐ. ܘܩܛܠܘܗܝ
ܕܐܫܠܛܗ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܘܠܟܠܗܘܢ ܝܗܘܕܝܐ ܕܐܝܬ ܗܘܘ ܥܡܗ
ܠܓܕܠܝܐ. ܒܡܨܦܐ. ܘܠܟܠܕܝܐ ܕܐܫܬܟܚܘ ܬܡܢ. ܘܠܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ. ܩܛܠ ܐܝܫ
ܘܐܢܫ ܠܐ ܝܕܥ. * ܘܒܝܘܡܐ ܕܬܪܝܢ ܡܢ ܕܩܛܠܗ ܠܓܕܠܝܐ. * ܐܬܘ ܓܒܪܐ ܡܢ ܫ
ܘܡܢ ܫܝܠܘ ܘܡܢ ܫܡܪܝܢ. ܬܡܢܝܢ ܓܒܪܝܢ. ܓܪܝܥܝ ܕܩܢܗܘܢ. ܘܡܨܪܝܢ ܡܐܢܝܗܘܢ
ܘܡܬܚܒܠܝܢ. ܘܩܘܪܒܢܐ ܘܒܣܡܐ ܒܐܝܕܝܗܘܢ. ܠܡܥܠܘ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܢܦ
ܐܝܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܠܐܘܪܥܗܘܢ ܡܢ ܡܨܦܐ ܡܗܠܟ ܘܒܟܐ. ܘܟܕ ܦܓܥ ܒ
ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܬܘ ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ. * ܘܟܕ ܥܠܘ ܠܡܨܥܬܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܢܟܣ ܐܢܘܢ ܐܝ
ܒܪ ܢܬܢܝܐ. ܘܐܪܡܝ ܐܢܘܢ ܒܓܘܒܐ. ܗܘ ܘܓܒܪܐ ܕܥܡܗ. * ܘܥܣܪܐ ܓܒܪܝܢ ܐܫ
ܒܗܘܢ. ܘܐܡܪܘ ܠܐܝܫܡܥܝܠ. ܠܐ ܬܩܛܠܢ. ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܠܢ ܣܝܡܬܐ ܒܚܩܠܐ ܚܛܐ ܘܣܥ
ܘܡܫܚܐ ܘܕܒܫܐ. ܘܫܒܩ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܩܛܠ ܐܢܘܢ ܥܡ ܐܚܝܗܘܢ. * ܘܓܘܒܐ ܕܐܪܡܝ
ܐܝܫܡܥܝܠ ܦܓܪܝܗܘܢ ܕܓܒܪܐ ܕܩܛܠ. ܥܡ ܓܕܠܝܐ. ܗܘܝܘ ܕܥܒܕ ܐܣܐ ܡ
ܝܗܘܕܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܒܥܫܐ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܠܗ ܠܓܘܒܐ ܗܘ. ܡܠܝܗܝ ܐܝܫܡܥܝܠ

CAP. XLI.

1 MEnſe ſeptimo veniens Iſmael filius Nethaniæ filii Iſmaelis de ſtirpe regia, optimatibus regis & viginti viris comitatus, ad Gedaliam Ahicami filium in Maſphiam ; panem comederunt ibi ſimul in Maſphia. 2 Deinde ſurgens Iſmael Nethaniæ filius unà cum illis viginti viris qui cum eo venerant, Gedaliam filium Ahicami filii Saphanis quem rex Babyloniæ præfecerat terræ Judæ, gladio percuſſerunt & occiderunt. 3 Omnes etiam Judæos qui cum Gedalia erant in Maſphia, & Chaldæos qui illic aderant, atque viros bellatores interfecit Iſmael, nemine audiente. 4 Alterâ vero die poſt cædem Gedaliæ, 5 Venerunt quidam è Sichim, è Silo, & è Samaria, octoginta *ſcilicet* viri, abraſis barbis diſciſſiſque veſtibus, atque perturbati, munus & incenſum manibus geſtantes ut inferrent in domum Domini. 6 His obviàm egreſſus eſt Iſmael Nethaniæ filius, de Maſphia, ambulans & procedens cum lachrymis : cúmque occurriſſet eis, ait illis, Venite ad Gedaliam filium Ahicami. 7 Sed cùm ingreſſi fuiſſent civitatem, jugulavit eos Iſmael Nethaniæ filius, projecitque in foveam, ipſe & viri qui erant cum ipſo. 8 Decem autem viri extiterunt inter illos, qui dixerunt Iſmaeli, Ne occîdas nos, quoniam habemus in agro acervos tritici & hordei, oleum, & mel : ita dimiſit illos, neque occîdit cum fratribus eorum. 9 Porrò fovea in quam Iſmael omnia virorum cadavera quos interfecerat, ponè Gedaliam projecit, illa eſt quam fecerat Aſa rex Judæ metu Baaſæ regis Iſraelis : illam eandem foveam implevit Iſmael interfectis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا اسمع قول الرب يا صداقيا الملك * هكذا قال الرب * تموت في السلامة * ولا تكس
اباءك الملكين من قبلك يبكون عليك * واسيداه * ويندبونك * لاني انا تكلمت ها
القول قال الرب * وتكلم ارميا مع الملك صداقيا بجميع هذه الاقوال في ايروسليم * وجيـ
ملك بابل يحارب علي ايروسليم وعلي مدن يهودا * وعلي لاشيش وعلي اريكا * لان هاتين بقيتا
مدن يهودا * مدينتان حصينتان *

4 *Itaque audi ſermonem Domini O Sedecia rex : Ita dixit Dominus, Morieris in pace ;* 5 *Et quemadmodum defleſti patres tuos qui regnaverunt ante te, deflebunt te dicentes, Heu domine, & lamentabuntur te : nam ego locutus ſum hunc ſermonem, ait Dominus.* 6 *Locutus eſt ergò Jeremia apud regem Sedeciam cunctos hoſce ſermones in Jeruſalem,* 7 *Dum exercitus regis Babelis bellaret contra Jeruſalem & contra urbes Judæ, contra Lachis, & contra Azecam ; nam hæ duæ reſtabant ex urbibus Judæ, urbes munitæ.*

* الاصحاح السابع والعشرون *

* القول الصاير علي ارميا من قبل الرب * من بعد ان اكمل صداقيا الملك عهدا مع الشعب
في ايروسليم ليدعوا غفرانا * ليسرح كل واحد عبده وكل واحد جاريته العبراني والعبرا
احرارا * ليلا يستعبدهم رجل من يهودا * * ورجع جميع العظماء وكل الشعب الذين
دخلوا في العهد ان يسرح كل واحد عبده وعبدته * وتركوهم عبيدا وعبيدات *
* وصار قول الرب الي ارميا قايلا *
* هكذا قال الرب * انا وضعت عهدا لاباءكم في اليوم الذي خلصتهم من ارض مصر من
العبودية قايلا * اذا كملت ست سنين تسرح اخاك العبراني الذي يباع لك ست سنين يتعبد
وتسرحه معتوقا * فلم يسمعوا لي ولا امالوا اذانهم * ورجعوا اليوم ليصنعوا غفرانا كل واحد بقريبه
واكملوا عهدا لوجهي في بيتي حيث دعي اسمي عليه * ورجعتم ودنستم عهدي ليرد
واحد عبده وكل واحد جاريته الذين سرحتموهم احرارا لقبايلهم * لكم عبيدا وعبيدات * لاجل
هذا هكذا قال الرب * انتم لم تسمعوا لي لتدعوا غفرانا كل واحد مع قريبه * ها انا ادعو لكم
غفرانا للسيف وللجوع وللموت * وادفعكم للنفي في جميع ممالك الارض * وادفع الرجال الذين
تجاوزوا عهدي الذي صنعوه لوجهي * العجل الذي صنعوه ليعمل له

Textus vigeſimus ſeptimus.

8 Sermo factꝰ ad Jeremiam à Domino, poſtquam tranſegiſſet Sedecia rex fœdꝰ cum populo in Jeruſalem de proclamanda indulgentia, 9 Ut quiſque ſervũ ſuum et quiſque ancillam ſuam Hebræum et Hebræam libertate donaret, ne quis ex Juda ſervos adhiberet eos : 10 Omnes tamen principes, 11 totuſq; populꝰ qui fœdꝰ ſubierant de manumittendo quiſque ſervum et ancillam ſuam, deſciverunt, et reliquerunt eos ſervos et ancillas.

12 *Factus eſt itaque ſermo Domini ad Jeremiam, dicens ; Sic ait Dominus,* 13 *Ego pactum præfixeram majoribus veſtris in die quâ eripui eos de terra Ægypti, de domo ſervitutis, dicens ;* 14 *Cùm exacti fuerint ſex anni, manumittes fratrem tuum Hebræum qui tibi venditus fuerit : ſex annos ſerviet tibi, tum liberum dimittes eum : at non auſcultârunt mihi, neque præbuerunt aures ſuas.* 15 *Et hodie converſi indulgentiam fecerant quiſq; erga proximum ſuum, & fœdus perfecerant coram facie mea, in æde mea ſuper quam invocatum eſt nomen meum :* 16 *Nihilominus deſciviſtis, & polluiſtis fœdus meum ; reducens quiſque ſervum ſuum & quiſque ancillam ſuam, quos liberos dimiſeratis ad tribus ſuas ; repetentes eos vobis in ſervos & ancillas.* 17 *Propterea ſic dixit Dominus, Vos non acquieviſtis mihi ut proclamaretis quiſque indulgentiam erga proximum ſuum ; en ego viciſſim proclamo vobis indulgentiam ad gladium, famem, & mortalitatem : & dabo vos in exilium in omnia regna terræ :* 18 *Tradamque viros illos qui tranſgreſſi ſunt fœdus meum quod pepigerant coram facie mea, vitulum quem fecerunt ut* [illegible]

ירמיה : מב

,Misfpah in qui ,populi refiduum omne Ifmahel duxit captivos Et
10 וישב ישמעאל את־כל שארית העם אשר במצפה
,Misfpah in *refiduos* ,populum omnem & ,regis filias
את־בנות המלך ואת־כל־העם הנשארים במצפה
Ghedaljahu laniorum magifter Nebuzaradan commendaverat quos
אשר הפקיד נבוזראדן רב־טבחים את־גדליהו
abiit &,Nethanjah filius Ifmahel eos duxit captivos & ;Ahicam filio
בן־אחיקם וישבם ישמעאל בן־נתניה וילך
filius Jochanan audivit Et .Hammon filios ad *tranfeundum ad*
11 לעבר אל־בני עמון : וישמע יוחנן בן־
malum omne ,eo cum qui ,*virtutum* principes omnes & ,Chareach
קרח וכל־שרי החילים אשר אתו את כל־הרעה
affumpferunt Et .Nethanjah filius Ifmahel fecerat quod
12 אשר עשה ישמעאל בן־נתניה : ויקחו את־
filio Ifmahel cum *pugnandum ad* abierunt & ,viros omnes
כל־האנשים וילכו להלחם עם־ישמעאל בן־
.Ghibhon in quæ ,multas aquas ad eum invenerunt & : Nethanjah
נתניה וימצאו אתו אל־מים רבים אשר בגבעון :
,Ifmahel cum qui ,*populum omnem videre fecundum* ,fuit Et
13 ויהי כראות כל־העם אשר את־ישמעאל את־
,eo cum qui ,*virtutum* principes univerfos &,Chareach filium Jochanan
יוחנן בן־קרח ואת כל־שרי החילים אשר אתו
duxerat captivum quem ,populus omnis fe verterunt Et .funt lætati &
14 וישמחו : ויסבו כל־העם אשר־שבה
filium Jochanan ad iverunt & ,funt reverfi & : Misfpah de Ifmahel
ישמעאל מן־המצפה וישבו וילכו אל־יוחנן בן־
viris octo cum evafit Nethanjah filius Ifmahel Et .Chareach
15 קרח : וישמעאל בן־נתניה נמלט בשמנה אנשים
Jochanan tulit Et .Hammon filios ad abiit & : Jochanan *faciebus* à
16 מפני יוחנן וילך אל־בני עמון : ויקח יוחנן
omne ,eo cum qui ,exercituum principes omnes & ,Chareach filius
בן־קרח וכל־שרי החילים אשר־אתו את כל־
Nethanjah filio Ifmahel ab reduxerat quem ,populi refiduum
שארית העם אשר השיב מאת ישמעאל בן־נתניה
,Ahicam filium Ghedaljah percuffit poftquam ,Misfpah de
מן־המצפה אחר הכה את־גדליה בן־אחיקם
quos ,eunuchos & ,*familiam* &,mulieres & ,*belli homines* viros
גברים אנשי המלחמה ונשים וטף וסרסים אשר
peregrinatione in habitaverunt &,abierunt Et .Ghibhon de reduxerat
17 השיב מגבעון : וילכו וישבו בגרות
Ægyptum *ingrediendum ad eundum ad*,lechem-Beth juxta quæ ,Chimham
כמוהם אשר־אצל בית־לחם ללכת לבוא מצרים :
percufferat quia : eorum *faciebus* à timuerunt nam : Chafdim *faciebus* A
18 מפני הכשדים כי יראו מפניהם כי־הכה
quem ,Ahicam filium Ghedaljahu Nethanjah filius Ifmahel
ישמעאל בן־נתניה את־גדליהו בן־אחיקם אשר־
.*terra in* Babel rex præpofuerat
הפקיד מלך־בבל בארץ :

C A P. XLII. מב

,Chareach filius Jochanan & ,exercituum principes omnes acceſſerunt Et
1 ויגשו כל־שרי החילים ויוחנן בן־קרח
.magnū ad uſque & parvo à populus omnis &,Hoſahaiah filius Jezanjah &
ויזניה בן־הושעיה וכל־העם מקטן ועד־גדול :
noſtra *deprecatio nunc* Cadat : prophetam Irmejahu ad dixerunt Et
2 ויאמרו אל־ירמיהו הנביא תפל־נא תחנתנו
tuum Deum DOMINUM ad nobis pro ora & ,*tuas facies ad*
לפניך והתפלל בעדנו אל־יהוה אלהיך
.*multo de parum* remanſimus quia : iſto reſiduo omni pro
בעד כל־השארית הזאת כי־נשארנו מעט מהרבה
.nos *videntes* tui oculi ſicut
כאשר עיניך ראות אתנו :

Verſio VULG. LAT.

10 Et captivas duxit Iſmahel omnes reliquias populi, qui erant in Maſphath; filias regis, & univerſum populum, qui remanſerat in Maſphath: quos commendaverat Nabuzardan princeps militiæ Godoliæ filio Ahicam. Et cepit eos Iſmahel fili⁹ Nathaniæ, & abiit ut tranſiret ad filios 11 Ammon. Audivit autem Johanan filius Caree, & omnes principes bellatorum, qui erant cum eo, omne malum, quod fecerat 12 Iſmahel filius Nathaniæ. Et aſſumptis univerſis viris, profecti ſunt ut bellarent adverſùm Iſmahel filium Nathaniæ, & invenerunt eum ad aquas multas, quæ 13 ſunt in Gabaon. Cumque vidiſſet omnis populus, qui erat cum Iſmahel, Johanan filium Caree, & univerſos principes bellatorum, qui erant cum eo, lætati 14 ſunt. Et reverſus eſt omnis populus, quem ceperat Iſmahel, in Maſphath: reverſúſque abiit ad 15 Johanan filium Caree. Iſmahel autem filius Nathaniæ fugit cum octo viris à facie Johanan, & ab-16 iit ad filios Ammon. Tulit ergò Johanan filius Caree, & omnes principes bellatorum, qui erant cum eo, univerſas reliquias vulgi, quas reduxerat ab Iſmahel filio Nathaniæ de Maſphath, poſtquàm percuſſit Godoliam filium Ahicam; fortes viros ad præliū, & mulieres, & pueros, & eunuchos, quos reduxerat de Gabaon.
17 Et abierunt, & ſederunt peregrinantes in Chamaam, quæ eſt juxta Bethlehem, ut pergerent, & 18 introirent Ægyptum A facie Chaldæorum: timebant enim eos, quia percuſſerat Iſmahel filius Nathaniæ Godoliam filium Ahicam, quem præpoſuerat rex Babylonis in terra Juda.

CAP. XLII.

1 Et acceſſerunt omnes principes bellatorum, & Johanan fili⁹ Caree, & Jezonias filius Oſaiæ, & reliquum vulgus à parvo uſ-2 que ad magnum: Dixerúntque ad Jeremiam prophetam; Cadat oratio noſtra in conſpectu tuo: & ora pro nobis ad Dominum Deum tuum, pro univerſis reliquiis iſtis: quia derelicti ſumus pauci de pluribus, ſicut oculi tui nos intuentur:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Τὸς ἄρχοντας Ἰέδα, ϗ τὸς δυνάςας, καὶ 20 τὸς ἱερεῖς, ϗ τ̃ λαὸν, καὶ δώσω αὐτὸς τοῖς ἐχθροῖς αὐτῶν, ϗ ἔςαι τὰ θνησιμαῖα αὐτῶν (χ) βρῶσις τοῖς πετεινοῖς τȣ̃ ὀρανȣ̃ ϗ τοῖς 21 θηρίοις τῆς γῆς. Καὶ τ̃ Σεδεκίαν βασιλέα ( ) τ̃ Ἰεδαίας, ϗ τὸς ἄρχοντας αὐτῶν δώσω εἰς χεῖρας ἐχθρῶν αὐτῶν, ϗ δύναμις βασιλέως Βαβυλῶνος (ψ) τοῖς ἀποτρέχουσιν ἀπ' 22 αὐτῶν. Ἰδὲ ἐγὼ συντάσσω, φησὶ κύριος, ϗ ἐπιςρέψω αὐτὸς εἰς τ̃ γῆν ταύτην, ϗ πολεμήσουσιν ἐπ' (ω) αὐτὴν, ϗ λήψονται αὐτὴν, ϗ κατακαύσουσι αὐτὴν ἐν πυρὶ, ϗ τὰς πόλεις Ἰέδα, (α) ϗ δώσω αὐτὰς ἐρήμοις ἀπὸ τ̃ κατοικȣ́ντων.

MS. A. (χ) Βρώματα ( ) Ἰέδα, (ψ) οἱ ἀποτρέχοντες ἀπ' αὐτῶν, [illegible] τὸς, (α) δώσω αὐτὰς εἰς ἄβατον ἀπὸ κατοικȣ́ντων.

Cap. 35. ΚΕΦ. μβ'.

1 Vulg. Lat. Ο ΛΟΓΟΣ Ὁ (α) ΓΕΝΟΜΕΝΟΣ ΠΡΟΣ ἹΕΡΕΜΙ'ΑΝ παρὰ κυρίȣ ἐν ἡμέραις Ἰωακεὶμ (β) βασιλέως Ἰέ-2 δα, λέγων, ( ) Βάδισον εἰς οἶκον Ἀρχαβεὶν, ϗ ἄξεις αὐτὸς εἰς οἶκον κυρίου, εἰς μίαν τ̃ 3 αὐλῶν, ϗ ποτιεῖς αὐτὸς οἶνον. Καὶ (γ) ἐξήγαγον τ̃ Ἰεχονίαν υἱὸν (δ) Ἱερεμὶν υἱȣ̃ Χαβασὶν, ϗ τὸς ἀδελφὸς αὐτȣ̃, ϗ τὸς υἱὸς αὐ-4 τȣ̃, ϗ πᾶσαν τ̃ οἰκίαν (ε) Ἀρχαβεὶν, Καὶ εἰσήγαγον αὐτὸς εἰς οἶκον κυρίου εἰς τὸ (ζ) παςοφόριον υἱῶν Ἰωνὰν, υἱȣ̃ Ἀναν͂ιου, υἱȣ̃ Γοδολίου ἀνθρώπου τ̃ θεȣ̃, ὅς ἐςιν ἐγγὺς (η) τȣ̃ οἴκου τῶν ἀρχόντων τῶν ἐπάνω τȣ̃ οἴκου (θ) Μαασαίου υἱȣ̃ Σελὼμ, τ̃ φυλάσσοντος 5 τ̃ αὐλήν. Καὶ (ι) ἔδωκα κατὰ πρόσωπον αὐτῶν κεράμιον οἴνου, ϗ ποτήρια, ϗ εἶπα, Πίετε 6 οἶνον. Καὶ (κ) εἶπον, Οὐ μὴ πίωμεν οἶνον, ὅτι Ἰωναδὰβ υἱὸς Ῥηχὰβ ὁ πατὴρ ἡμῶν ἐνετείλατο ἡμῖν, (λ) λέγων, Οὐ μὴ πίητε οἶ-7 νον ὑμεῖς ϗ οἱ υἱοὶ ὑμῶν, ἕως αἰῶνος, Καὶ οἰκίας ȣ̓ μὴ οἰκοδομήσητε, ϗ σπέρμα ȣ̓ μὴ σπείρητε, ϗ ἀμπελὼν ȣ̓κ ἔςαι ὑμῖν, ὅτι ἐν σκηναῖς (μ) οἰκήσετε πάσας τὰς ἡμέρας ( ) ὑμῶν, ὅπως ἂν (ν) ζήσητε ἡμέρας πολλὰς ἐπὶ τ̃ γῆς, ἐφ' ἧς διατρίβετε ὑμεῖς ἐπ' αὐτῆς.
8 Καὶ (ξ) ἠκȣ́σαμεν τ̃ φωνῆς Ἰωναδὰβ τȣ̃ πατρὸς ἡμῶν, πρὸς τὸ μὴ πιεῖν οἶνον πάσας τὰς (ο) ἡμέρας ἡμῶν, ἡμεῖς ϗ αἱ γυναῖκες ἡμῶν, ϗ οἱ υἱοὶ ἡμῶν, ϗ αἱ θυγατέρες ἡμῶν, 9 (π) Καὶ πρὸς τὸ μὴ οἰκοδομεῖν οἰκίας τȣ̃ κατοικεῖν ἐκεῖ, ϗ ἀμπελὼν, ϗ ἀγρὸς, ϗ σπέρ-10 μα ȣ̓κ ἐγένετο ἡμῖν. Καὶ (ρ) ᾠκήσαμεν ἐν σκηναῖς, ϗ ἠκȣ́σαμεν (σ), ϗ ἐποιήσαμεν κατὰ πάντα ἃ ἐνετείλατο ἡμῖν Ἰωναδὰβ ὁ πα-11 τὴρ ἡμῶν. Καὶ ἐγενήθη ὅτε ἀνέβη Ναβȣχοδονόσορ ἐπὶ τὴν γῆν, ϗ εἴπαμεν (τ) εἰσέλθετε, ϗ εἰσήλθομεν εἰς Ἱερουσαλὴμ, ἀπὸ προσώπου τ̃ (υ) δυνάμεως τ̃ Χαλδαίων, ϗ ἀπὸ προσώπου τ̃ δυνάμεως τ̃ Ἀσσυρίων, 12 ϗ ᾠκȣ̃μεν ἐκεῖ. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων,

MS. A. (α) ΓΕΝΑ'ΜΕΝΟΣ ΠΑΡΑ' ΚΥΡΙ'ΟΥ ΠΡΟΣ ἹΕΡΕΜΙ[illegible] (β) ΥἹΟ'Υ ἸΩΣΙ'ΟΥ, ΒΑΣΙΛΕ'ΩΣ ( ) Πορεύθητι εἰς οἶκον Ἀρχαβεὶν [illegible] κάλεσον αὐτὸς, ϗ εἰσάξεις (γ) ἤγαγον (δ) Ἱερεμίου (ε) Χαβασὶν, (ζ) παςοφόριον Ἀνανίου, υἱȣ̃ (η) οἴκȣ τῶν ἀρχόντων (θ) Μασαίου [illegible] (κ) εἶπαν, Οὐ πίομεν (λ) εἴπας, (μ) κατοικήσεται ( ) τ̃ ζωῆς ὑμῶν, [illegible] (ξ) εἰσηκȣ́σαμεν (ο) ἡμέρας τ̃ ζωῆς ἡμῶν, ϗ οἱ υἱοὶ ἡμῶν, (π) Πρὸς τὸ [illegible] (ρ) οἰκήσαμεν (σ) κατὰ πάντα ὅσα ἐνετείλατο (τ) Ἀναβάντες εἰσελευσόμεθα εἰς (υ) δυνάμεως τ̃ Ἀσσυρίων, ϗ οἰκήσομεν

Principes m Juda, & [illegible]
& ſacerdotes, & [illegible]
Et dabo eos [illegible]
& erunt morticina [illegible]
eſca volatilibus [illegible]
terræ. Et Sedeciam [illegible]
dææ, & principes [illegible]
manus inimicorum [illegible]
regis Babylonis [illegible]
ab eis. Ecce ego [illegible]
Dñs, & reducam [illegible]
hanc & bellabunt [illegible]
capient eam & [illegible]
igni, & civitates Juda [illegible]
dabo eas deſertas ab habitatione.

CAP. XLII.
VERBUM [illegible]
ad Hieremiam à [illegible]
diebus Joacim [illegible]
dicens, Vade [illegible]
Domini [illegible]
tabis eos [illegible]
am filium [illegible]
& fratres ejus [illegible]
omnem domum [illegible]
introduxi eos in domum Domini [illegible]
filiorum [illegible]
Dei, (ζ) qui eſt prope [illegible]
principum [illegible]
Maaſiæ filii Selum [illegible]
[illegible]
faciem eorum [illegible]
& pocula: & dixi [illegible]
Et dixerunt, Non [illegible]
quia Jonadab filius [illegible]
ter noſter mandavit [illegible]
Non bibetis vinum, [illegible]
veſtri, uſque in ſeculum: [illegible]
mos ne ædificetis, et ſemen [illegible]
minetis: & vinea [illegible]
quia in tabernaculis [illegible]
cunctis diebus [illegible]
[illegible]
quam incolatis [illegible]
audivimus [illegible]
noſtri [illegible]
diebus noſtris, nos, et uxores [illegible]
& filii noſtri, & filiæ [illegible]
non ad ædificandas domos [illegible]
tandum ibi: & vinea, & ager [illegible]
ſemen non fuit nobis: Et habitavimus in tabernaculis. Et [illegible]
vimus, & fecimus [illegible]
mnia, quæ mandavit [illegible]
dab pater noſter. [illegible]
quando aſcendit Nabuchodonoſor ſuper terram: & [illegible]
(c) ingredi: & [illegible]
Hieruſalem à facie [illegible]
dæorum, & à [illegible]
Syriorum: & [illegible]
factum [illegible]
me, dicens;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 ושבא ישמעאל ית כל שארא דעמא די במצפיא ית בנת מלכא וית כל עמא דאשתארו
במצפיא דמני נבוזר אדן רב קטוליא על גדליה בר אחיקם ושבנון ישמעאל בר נתניהו
11 ואזל למעבר לות בני עמון : ושמע יוחנן בר קרח וכל רבני חילותא די עמיה ית כל
12 בישתא דעבד ישמעאל בר נתניה : ודברו ית כל גבריא ואזלו לאגחא על ישמעאל בר
13 נתניה ואשכחו יתיה על בריכת מיין סגיאין די בגבעון : והוה כד חזא כל עמא דעם
14 ישמעאל ית יוחנן בר קרח וית כל רבני חילותא די עמיה וחדיאו : ואסתחרו כל עמא
15 דשבא ישמעאל מן מצפיא ותבו ואזלו לות יוחנן בר קרח : וישמעאל בר נתניה
16 אשתזב בתמניא גברין מן קדם יוחנן בר קרח ואזל לות בני עמון : ודבר יוחנן בר קרח
וכל רבני חילותא די עמיה ית כל שארא דעמא דאתיב מלות ישמעאל בר נתניה מן
מצפיא בתר די קטל ית גדליה בר אחיקם גברין גברי עבדי קרבא ונשיא וטפלא
17 ורברביא די אתיב מגבעון : ואזלו ויתיבו בגירות דיהב דוד לכמהם בר ברזלי
18 גלעדאה די בסטר בית לחם למיזל למעל למצרים : מן קדם כסדאי ארי דחילו מן
קדמיהון ארי קטל ישמעאל בר נתניה ית גדליה בר אחיקם דמני מלכא דבבל
בארעא :

מב
1 וקריבו כל רבני חילותא ויוחנן בר קרח ויזניה בר הושעיה וכל עמא מזעירא ועד רבא :
2 ואמרו לירמיה נביא תתקבל כען בעותנא קדמך וצלי עלנא קדם יי אלהך על כל שארא
הדין ארי אשתארנא זעיר מסגי כמא דעינך חזין יתנא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

10 Et captivavit Iſmael omnes reliquias populi, qui erat in Maſpha; filias regis, & omnem populum qui relictus fuerat in Maſpha, quos commendaverat Nabuzardan princeps occidentium Godoliæ filio Ahicam; & in captivitatem duxit eos Iſmael filius Nathaniæ. Et abiit ut tranſiret ad filios Am-11 mon. Et audivit Johanan filius Caree, et omnes principes exercitus qui erant 12 cum eo, omne malum quod fecerat Iſmael filius Nathaniæ. Et tulerunt omnes viros, & abierunt ut pugnarent contra Iſmaelem filium Nathaniæ, & invenerunt eum juxta piſcinam aquarum multarum quæ eſt in Gabaon. 13 Et factum eſt cùm vidiſſet omnis populus qui erat cum Iſmaele, Johanan filium Caree, & omnes principes exercituum, qui erant cum eo, lætatus 14 eſt. Et reverſus eſt omnis populus quem ceperat Iſmael de Maſpha: & re-15 verſi ſunt & perrexerunt ad Johanan filium Caree. Iſmael verò filius Na-thaniæ liberatus eſt cum octo viris à facie Johanan filii Caree, & abiit ad 16 filios Ammon. Et tulit Johanan filius Caree, & omnes principes exercitus, qui erant cum eo, univerſas reliquias populi, quas reduxerat ab Iſmael filio Nathaniæ de Maſpha, poſtquam occiderat Godoliam filium Ahicam, & viros fortes bellatores, & uxores, & parvulos, & principes quos reduxerat 17 de Gabaon. Et abierunt, & ſederunt in peregrinatione, quam dederat David Camaham filio Berſelai Galaaditæ, quæ eſt juxta Bethlehem, ut pergerent & proficiſcerentur in Ægyptum A facie Chaldæorum: timebant 18 enim à facie eorum, eo quod occiderat Iſmael filius Nathaniæ Godoliam filium Ahicam, quem conſtituerat rex Babylonis in terra.

C A P. XLII.

1 Et acceſſerunt omnes principes exercituum, & Johanan filius Caree, & Jezanias filius Oleæ, & omnis populus à minimo uſque ad maximum. Et dixerunt ad Jeremiam prophetam, Acceptabilis ſit nunc deprecatio noſtra coram te, & ora pro nobis coram Domino Deo tuo pro omnibus reliquiis iſtis; quia relicti ſumus pauci ex multis, ſicut oculi tui vident nos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܫܒܐ ܐܫܡܥܝܠ ܟܠܗ ܫܪܟܐ ܕܥܡܐ ܕܒܡܨܦܝܐ. ܕܐܫܠܡ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܐܣ
ܠܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ. ܘܫܒܐ ܐܢܘܢ ܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ. ܘܐܙܠ ܠܡܥܒܪ ܠܘܬ
ܥܡܘܢ. * ܘܫܡܥ ܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܘܪܚ ܘܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܕܥܡܗ: ܠܟܠܗ ܒܝܫܬܐ
ܕܥܒܕ ܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ. * ܘܕܒܪܘ ܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ. ܘܐܙܠܘ ܠܡܬܟܬܫܘ ܥܡ
ܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ. ܘܐܫܟܚܘܗܝ ܥܠ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܕܐܝܬ ܒܓܒܥܘܢ. * ܘܟܕ
ܚܙܐ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܥܡ ܐܫܡܥܝܠ ܠܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܘܪܚ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܕܥܡܗ
ܚܕܝܘ. * ܘܗܦܟܘ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܫܒܐ ܐܫܡܥܝܠ ܡܢ ܡܨܦܝܐ. ܘܐܬܘ ܠܘܬ ܝܘܚܢܢ
ܒܪ ܩܘܪܚ. * ܘܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܐܬܦܠܛ ܒܬܡܢܝܐ ܓܒܪܝܢ ܡܢ ܩܕܡ ܝܘܚܢܢ.
ܘܐܙܠ ܠܘܬ ܒܢܝ ܥܡܘܢ. * ܘܕܒܪ ܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܘܪܚ ܘܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܕܥܡܗ. ܠ
ܫܪܟܐ ܕܥܡܐ ܕܐܦܢܝ ܡܢ ܠܘܬ ܐܫܡܥܝܠ ܒܪ ܢܬܢܝܐ. ܡܢ ܡܨܦܝܐ. ܡܢ ܒܬܪ ܕܩܛܠ
ܐܫܡܥܝܠ ܠܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ. ܓܒܪܐ ܓܢܒܪܐ ܘܩܪܒܬܢܐ ܘܢܫܐ ܘܛܠܝܐ ܘܡܗܝܡܢܐ
ܕܐܦܢܝ ܡܢ ܓܒܥܘܢ. * ܘܐܙܠܘ ܘܝܬܒܘ ܒܩܘܪܝܐ ܕܒܡܗܡ ܕܠܘܬ ܒܝܬ ܠܚܡ
* ܠܡܐܙܠ ܠܡܥܠ ܠܡܨܪܝܢ. ܡܢ ܩܕܡ ܟܠܕܝܐ ܕܕܚܠܝܢ ܗܘܘ ܡܢܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܩܛܠ ܐܫܡܥܝܠ
ܒܪ ܢܬܢܝܐ ܠܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ. ܗܘ ܕܐܫܠܡܗ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܒ *

* ܘܩܪܒܘ ܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ: ܘܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܘܪܚ. ܘܝܙܢܝܐ ܒܪ ܗܘܫܥܝܐ
ܘܟܠܗ ܥܡܐ. ܡܢ ܙܥܘܪܐ ܘܥܕܡܐ ܠܪܒܐ. * ܘܐܡܪܘ ܠܐܪܡܝܐ. ܒܥܝܢ ܡܢ
ܟ ܨܠܝ ܥܠܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܡܛܠ ܕܐܫܬܚܪܢ ܩܠܝܠ ܡܢ ܣܓܝܐܐ. ܐܝܟ ܕ
ܚܙܝܢ ܠܢ.

Et captivum abduxit Iſmael totum reliquum populum qui erat in Maſphia, quos Nebuzardan præfectus ſatellitum commiſerat Gedaliæ filio Ahicami: captivos inquam, abduxit eos Iſmael Nethaniæ filius, & tranſmeavit ad Ammonitas. 10

Audiens autem Johannes Corahi filius, omnéſque duces exercitûs qui cum illo erant, totam illam prædam quam abduxerat Iſmael Nethaniæ filius; 11 Sumptis omnibus viris abiit oppugnatum Iſmaelem Nethaniæ filium, & offenderunt eum ad aquas multas quæ ſunt in Gebeone. 12 Quarè cùm vidiſſet totus ille populus qui erat cum Iſmaele, Johannem Corahi filium omnéſque duces exercitûs qui cum eo erant, lætati ſunt. 13 Sic reverſus totus ille popul⁹ quem abduxerat Iſmael de Maſphia, venerunt ad Johannem Corahi filium: 14 Iſmael verò Nethaniæ filius eripiens ſe cum octo hominibus à conſpectu Johannis, abiit ad Ammonitas. 15 Tum Johannes Corahi filius omnéſque duces exercitûs qui cum eo erant, totum reſiduum populum quem recuperaverat ab Iſmaele Nethaniæ filio, accipiens ex Maſphia, poſtquam interfeciſſet Iſmael Gedaliam Ahicami filium, accipiens inquam, viros bellatores, mulieres & pueros, atque eunuchos quos è Gebeone reduxerat; 16 Abierunt, & conſederunt in areis Bemham quæ ſunt ad latus Beth-lehem: 17 Ut irent, ſeſéque reciperent in Ægyptum, 18 metu Chaldæorum quos pertimeſcebant eò quòd peremiſſet Iſmael Nethaniæ fili⁹ Gedaliam illum Ahicami filium, quem rex Babylonis præfecerat terræ Judæ.

CAP. XLII.

DEinde accedentes omnes copiarum duces, & Johannes Corahi filius, & Jezania Hoſeæ filius, totúſque populus à juniore ad ſeniorem uſque; 1 Dixerunt Jeremiæ, Rogamus te, ora pro nobis Dominum Deum tuum; nam pauci remanſimus ex multis, quales oculi tui nos vident: 2

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* رؤساء يهودا والاقوياء والكهنة والشعب * واسلمهم لاعدايهم * ويصير جثثهم ماكلة لطير
السماء ولوحوش الارض * وصدقيا ملك يهودا ادفعه الي ايدي اعدايه وجيش ملك بابل
* للمسرعين منهم ها انا امرهم قال الرب * واردهم الي هذه الارض * ويحاربون عليها وياخذ
ويحرقونها بالنار ومدن يهودا * وادفعها للخراب من السكان *

* الفصل الثاني والاربعون *

* القول الصاير الي ارميا من قبل الرب * في ايام يوياقيم بن يوشيا ملك يهودا * قايلا
* اعمد الي بيت ارخابين وسوقهم الي بيت الرب الي واحد من الديار واسقهم خمرا * فامض
ياروبان بن يارامين بن حاصابين * واخوته وبنيه وكل بيت ارخابين * وادخلـ
الي بيت الرب الي عمارية بن يوناداب بن عودوليو رجل الله * الذي هو قريبا
الرؤساء الذي فوق بيت ماساو بن صالوم حافظ الدار * واعطيت لوجههم د
خمر وكووسا * وقلت اشربوا خمرا * فقالوا لا نشرب خمرا * لان يوانان بن كارب
اوصانا قايلا * لا تشربوا خمرا انتم وبنوكم الي الدهر * ولا تبنوا بيتا * ولا تزرعوا زر
ولا يكون لكم كرم * لانكم في الخيام تسكنون جميع ايام حياتكم * كي تعيشو
كثيرين على الارض التي انتم تسيرون عليها * فسمعنا صوت يوناداب ابينا الا نشر
جميع ايامنا * نحن ونساونا وابناونا وبناتنا * والا نبني بيوتا لنسكن * كرم وحقل وزرع
يكن لنا * وسكنا في الخيام وسمعنا كلما اوصانا به يوناداب ابونا * وصار لما صعد بختنصـ
هذه الارض * فقلنا نصعد ندخل الي اورشليم من وجه جيش الموصليين ونسكن
* وصار قول الرب الي قايلا *

Principes Judæ, potentes, ſacerdotes, & populum; 19 *Hos inquam, tradam hoſtibus ſuis, ſientque cadavera eorum eſca volucribus cœli & beſtiis terræ:* 20 *Et Sedeciam regem Juda tradam in manus inimicorum ejus & copiarum regis Babelis.* 21 *Velociſſimis inter eos en ego præcipiam, dixit Dominus, & reducam eos in terram iſtam; oppugnabunt eam, & capient eam, ignéque comburent cum urbibus Judæ: adeoque reddam illas civibus deſolatas.* 22

CAP. XLII.

SErmo factus ad Jeremiam à Domino in diebus Joacimi filii Joſiæ regis Judæ, dicens; 1

Adi familiam Archabini, cóſque ducas in domum Domini ad unum atriorum, & des eis bibendum vinum. 2 *Quare deduxi Jezonian filium Jeremin filii Chaſabin, & fratres ac filios ejus, totámque familiam Archabini;* 3 *Et introduxi eos in in domum Domini, in ædem filii Jonadabi fili Godoliæ viri Dei, qui vicinus erat domicilio principum quod erat ſupra domum Maaſiæ filii Salomi cuſtodis atrii:* 4 *Et poſitis ante ipſos lagenâ vini & calicibus, dixi; Bibite vinum.* 5 *Qui dixerunt; Nequaquam bibemus vinum, quia Joanan Carebæ filius pater noſter præcepit nobis, dicens; Ne bibatis vinum vos neque filii veſtri in æternum:* 6 *Ne extruatis domum, ſemen ne ſeratis, neque ſit vobis vinea: nam in tentoriis habitabitis cunctis diebus vitæ veſtræ, ut dies multos vivatis ſuper terram ſuper quam ambulatis.* 7 *Itaq; auſcultantes voci Jonadabi patris noſtri, ne vinum biberemus cunctis diebus noſtris, nos autem, uxores, aut filii filiæque noſtræ,* 8 *Et ne domos extrueremus ad habitandum; vineam, agrum, neque ſemen ullum poſſedimus,* 9 *Habitavimus in tentoriis, & auſcultavimus quæcunque præcepit nobis Jonadab pater noſter.* 10 *Contigit autem quum aſcendit Bochtonaſſar in terram iſtam, ut diceremus; Aſcendentes ingrediamur in Jeruſalem à facie exercitûs Aſſyriorum, & habitemus illic.* 11 *Tum factus eſt ad me ſermo Domini dicentis;* 12

ירמיה : מב

pergamus qua , viam tuus Deus Dominus nobis annuntiet Et
3 ויגד־לנו יהוה אלהיך את־הדרך אשר נלך־
Irmejahu eos ad dixit Et .faciamus quod verbum & ,ea in
4 בה ואת־הדבר אשר נעשה: ויאמר אליהם ירמיהו
vestrum Deum Dominum ad orans ego ecce , Audivi : propheta
הנביא שמעתי הנני מתפלל אל־יהוה אלהיכם
Dominus responderit quod verbum omne , erit & :vestra verba secundum
כדבריכם והיה כל־הדבר אשר־יענה יהוה
ipsi Et .verbum vobis à prohibebo non : vobis indicabo , vobis
5 אתכם אגיד לכם לא־אמנע מכם דבר: והמה
, veritatis testem in nobis in Dominus Sit : Irmejahu ad dixerunt
אמרו אל־ירמיהו יהי יהוה בנו לעד אמת
Dominus te miserit quo , verbum omne juxta nisi : fidelis &
ונאמן אם־לא ככל־הדבר אשר ישלחך יהוה
voce in , malum ſive , bonum Sive .faciamus ſic , nos ad tuus Deus
6 אלהיך אלינו כן נעשה: אם־טוב ואם־רע בקול
: audiemus , eum ad te mittentes nos quem , noſtri Dei Domini
יהוה אלהינו אשר אנו שלחים אתך אליו נשמע
.noſtri Dei Domini voce in audierimus cum ,nobis ſit bene ut
למען אשר ייטב־לנו כי נשמע בקול יהוה אלהינו:
.Irmejahu ad Domini verbum fuit & dierum decem fine à fuit Et
7 ויהי מקץ עשרת ימים ויהי דבר־יהוה אל־ירמיהו:
principes omnes ad & , Chareach filium Jochanan ad Vocavitque
8 ויקרא אל־יוחנן בן־קרח ואל כל־שרי
parvo à , populum univerſum ad & : eo cum qui exercituum
החילים אשר אתו ולכל־העם למקטן
Dominus dixit Sic : eos ad dixit Et .magnum ad uſque &
9 ועד־גדול: ויאמר אליהם כה־אמר יהוה
faciendum cadere ad , eum ad me miſiſtis quem , Iſrael Deus
אלהי ישראל אשר שלחתם אתי אליו להפיל
terra in manſeritis manendo Si .ejus facies ad veſtram deprecationem
10 תחנתכם לפניו: אם־שוב תשבו בארץ
non & , vos plantabo & : deſtruam non & ,vos ædificabo & , hac
הזאת ובניתי אתכם ולא אהרס ונטעתי אתכם ולא
.vobis feci quod malum ad me pœnitet quia : evellam
אתוש כי נחמתי אל־הרעה אשר עשיתי לכם:
:ejus faciebus à timentes vos cujus , Babel regis faciebus à timeatis Ne
11 אל־תיראו מפני מלך בבל אשר־אתם יראים מפניו
ſalvandum ad ego vobiſcum quia : Dominus dixit,eo ab timeatis ne
אל־תיראו ממנו נאם־יהוה כי־אתכם אני להושיע
,miſericordias vobis dabo Et .ejꝰ manu de vos liberandum ad & , vos
12 אתכם ולהציל אתכם מידו: ואתן לכם רחמים
.veſtram humum in vos faciet redire & : veſtri miſerebitur &
ורחם אתכם והשיב אתכם אל־אדמתכם:
audiendum non ad , hac terra in habitabimus Non , vos dicentes ſi Et
13 ואם־אמרים אתם לא נשב בארץ הזאת לבלתי שמע
terram ſed ,Nequaquam : Dicendo .veſtri Dei Domini voce in
14 בקול יהוה אלהיכם: לאמר לא כי ארץ
tubæ vocem & , bellum videbimus non qua ,ingrediemur Ægypti
מצרים נבוא אשר לא־נראה מלחמה וקול שופר
.habitabimus ibi & , eſuriemus non pane & ; audiemus non
לא נשמע וללחם לא־נרעב ושם נשב:
, Jehudah reſiduum Domini verbum audite idcirco nunc Et
15 ועתה לכן שמעו דבר־יהוה שארית יהודה
vos Si : Iſrael Deus exercituum Dominus dixit ſic
כה־אמר יהוה צבאות אלהי ישראל אם־אתם
, Ægyptum ingrediendum ad veſtras facies poſueritis ponendo
שום תשמון פניכם לבא מצרים
.ibi peregrinandum ad intraveritis &
ובאתם לגור שם:

Verſio VULG. LAT.

3 Et annuntiet nobis Dominꝰ Deꝰ
tuus viam, per quam pergamꝰ,
4 & verbum, quod faciamꝰ. Di-
xit autem ad eos Jeremias pro-
pheta; Audivi : ecce ego oro
ad Dominum Deum veſtrum ſe-
cundùm verba veſtra : omne
verbum, quodcunque reſpon-
derit mihi, indicabo vobis; nec
5 celabo vos quidquam. Et illi
dixerunt ad Jeremiam; Sit Do-
minus inter nos teſtis veritatis
& fidei, ſi non juxta omne ver-
bum, in quo miſerit te Dominꝰ
Deus tuus ad nos, ſic faciemꝰ.
6 Sive bonum eſt, ſive malum, voci
Domini Dei noſtri, ad quem
mittimꝰ te, obediemꝰ : ut benè
ſit nobis cùm audierimus vocem
7 Domini Dei noſtri. Cùm au-
tem completi eſſent decem dies,
factum eſt verbum Domini ad
8 Jeremiam. Vocavítque Joha-
nan filium Caree, & omnes
principes bellatorum, qui erant
cum eo, & univerſum popu-
lum à minimo uſque magnum.
9 Et dixit ad eos; Hæc dicit
Dominꝰ Deus Iſrael, ad quem
miſiſtis me, ut proſternerem
preces veſtras in conſpectu ejꝰ;
10 Si quieſcentes manſeritis in ter-
ra hac, ædificabo vos, & non
deſtruam, plantabo, & non evel-
lam : jam enim placatus ſum ſu-
11 per malo quod feci vobis. No-
lite timere à facie regis Baby-
lonis, quem vos pavidi formi-
datis : nolite metuere eum, di-
cit Dominus : quia vobiſcum
ſum ego, ut ſalvos vos faciam,
12 & eruam de manu ejꝰ. Et da-
bo vobis miſericordias, & mi-
ſerebor veſtri, & habitare vos
13 faciam in terra veſtra. Si autem
dixeritis vos; Non habitabimꝰ
in terra iſta, nec audiemus vo-
14 cem Domini Dei noſtri, Dicen-
tes; Nequaquam, ſed ad terram
Ægypti pergemus : ubi non vi-
debimus bellum, & clangorem
tubæ non audiemus, & famem
non ſuſtinebimus : & ibi habita-
15 bimus. Propter hoc nunc audite
verbum Domini, reliquiæ Juda :
Hæc dicit Dominus exercituum,
Deus Iſrael; Si poſueritis faci-
em veſtram ut ingrediamini
Ægyptum, & intraveritis ut ibi
habitetis :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

13 Οὕτως λέγει κύριος, Πορεύου, καὶ εἰπὸν ἀνθρώπῳ Ἰούδα, καὶ τοῖς κατοικοῦσιν (φ) Ἱερουσαλὴμ, Οὐ μὴ λάβητε παιδείαν (ˉ) τοῦ ἀκούειν τοὺς λόγους μου; 14 Ἔστησαν ῥῆμα υἱοὶ Ἰωναδὰβ υἱοῦ Ῥηχὰβ, ὃ ἐνετείλατο τοῖς τέκνοις αὐτοῦ πρὸς τὸ μὴ πιεῖν οἶνον, καὶ οὐκ (χ) ἐπίοσαν· καὶ ἐγὼ ἐλάλησα πρὸς ὑμᾶς (ψ) ὄρθρου, καὶ ἐλάλησα, καὶ οὐκ ἠκούσατε. 15 Καὶ ἀπέστειλα πρὸς ὑμᾶς τοὺς (ω) παῖδάς μου τοὺς προφήτας, λέγων, Ἀποστράφητε ἕκαστος ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, καὶ (α) βελτίω ποιήσατε (ˉ) τὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν, καὶ οὐ πορεύεσθε ὀπίσω θεῶν (β) ἑτέρων τοῦ δουλεύειν αὐτοῖς, καὶ οἰκήσετε ἐπὶ τῆς γῆς, ἧς ἔδωκα ὑμῖν, καὶ τοῖς πατράσιν ὑμῶν· καὶ οὐκ ἐκλίνατε τὰ ὦτα ὑμῶν, καὶ οὐκ (γ) εἰσηκούσατε. 16 Καὶ ἔστησαν υἱοὶ Ἰωναδὰβ υἱοῦ Ῥηχὰβ τὴν ἐντολὴν τοῦ πατρὸς αὐτῶν, ὁ δὲ (δ) λαὸς οὗτος οὐκ ἤκουσέ μου. 17 Διὰ τοῦτο οὕτως εἶπε (ε) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ φέρω ἐπὶ Ἰούδαν καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλὴμ πάντα τὰ κακὰ ἃ ἐλάλησα 18 ἐπ᾽ αὐτούς. Διὰ τοῦτο οὕτως εἶπε κύριος, Ἐπειδὴ ἤκουσαν υἱοὶ Ἰωναδὰβ υἱοῦ Ῥηχὰβ τὴν ἐντολὴν τοῦ πατρὸς αὐτῶν ποιεῖν (ζ) καθότι 19 ἐνετείλατο αὐτοῖς ὁ πατὴρ αὐτῶν, Οὐ μὴ ἐκλείπῃ ἀνὴρ τῶν υἱῶν Ἰωναδὰβ υἱοῦ Ῥηχὰβ παρεστηκὼς κατὰ πρόσωπόν μου πάσας τὰς ἡμέρας τῆς γῆς.

MS. A. (φ) ἐν Ἱερουσαλὴμ, (ˉ) ἀκούειν (χ) ἔπιον· κἀγὼ (ψ) ὀρθρίζων [illegible] εἰσηκούσατε. (ω) δούλους μου (α) βέλτιον (ˉ) ἐπιτηδεύματα (β) ἀλλοτρίων (γ) ἠκούσατε. (ˉ) οἱ υἱοὶ (δ) λαός μου οὐκ ἤκουσάν μου. (ε) κύριος, Ἐπειδὴ ἤκουσαν οἱ υἱοὶ (ζ) ὅσα

13 Sic dicit Dominus; Vade, & dic homini Juda, & habitantibus Hieruſalem; Non accipietis diſciplinam audiendo verba mea? 14 Firmaverunt verbum filii Jonadab filii Rechab, quod mandavit filiis ſuis, ut non biberent vinum, & non (χ) biberunt. Et ego locutus ſum ad vos diluculo, & locutus ſum, & non audiſtis. 15 Et miſi ad vos pueros meos prophetas, dicens, Avertimini unuſquiſque à via ſua peſſima: & meliora facite ſtudia veſtra, & non ambulabitis poſt deos alienos ſerviendo eis: & habitabitis ſuper terram, quam dedi vobis & patribus veſtris. Et non inclinaſtis aures veſtras, & non exaudiſtis. 16 Et ſteterunt filii Jonadab filii Rechab mandatum patris ſui, populus autem iſte non audivit me. 17 Idcirco ſic dixit Dominus, Ecce ego fero ſuper Judam, & ſuper habitantes Hieruſalem, omnia mala quæ locutus ſum ſuper eos. 18 Propterea ſic dixit Dominus, Quoniam audierunt filii Jonadab filii Rechab mandatum patris ſui facere, ſicut mandavit eis pater eorum: 19 Non deficiet vir filiorum Jonadab filii Rhechab [illegible] faciem meam cunctis diebus [illegible].

Cap. 36. Vulg. Lat.

ΚΕΦ. μγ΄.

1 (α) ΕΝ ΤΩ ἘΝΙΑΥΤΩ ΤΩ ΤΕΤΑΡΤΩ ΙΩΑΚΕΙΜ υἱοῦ (β) Ἰωσία βασιλέως Ἰούδα, ἐγενήθη λόγος κυρίου πρός με, λέγων, 2 Λάβε σεαυτῷ (γ) χαρτίον βιβλίου, καὶ γράψον ἐπ᾽ (δ) αὐτοῦ πάντας τοὺς λόγους, οὓς (ε) ἐλάλησα πρὸς σὲ ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ Ἰούδα, καὶ ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη, ἀφ᾽ ἧς ἡμέρας λαλήσαντός μου πρὸς σὲ, ἀφ᾽ ἡμερῶν Ἰωσία βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἕως τῆς ἡμέρας 3 ταύτης. Ἴσως (ζ) ἀκούσεται ὁ οἶκος Ἰούδα πάντα τὰ κακὰ (η) ἃ ἐγὼ λογίζομαι ποιῆσαι αὐτοῖς, ἵνα ἀποστρέψωσιν (θ) ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτῶν τῆς πονηρᾶς, καὶ ἵλεως ἔσομαι ταῖς ἀδικίαις 4 αὐτῶν, καὶ ταῖς ἁμαρτίαις αὐτῶν. Καὶ ἐκάλεσεν Ἱερεμίας τὸν Βαροὺχ υἱὸν Νηρίου· καὶ (ι) ἔγραψεν ἀπὸ στόματος Ἱερεμίου πάντας τοὺς λόγους κυρίου, οὓς (κ) ἐλάλησε πρὸς αὐτὸν, 5 εἰς χαρτίον βιβλίου. Καὶ ἐνετείλατο Ἱερεμίας τῷ Βαροὺχ, λέγων, Ἐγὼ φυλάσσομαι, (λ) οὐ μὴ δύνωμαι εἰσελθεῖν εἰς οἶκον 6 κυρίου· Καὶ ἀναγνώσῃ ἐν τῷ (μ) χαρτίῳ τούτῳ εἰς τὰ ὦτα τοῦ λαοῦ ἐν οἴκῳ κυρίου, ἐν ἡμέρᾳ νηστείας, καὶ ἐν ὠσὶ παντὸς (ν) Ἰούδα τῶν ἐρχομένων ἐκ πόλεων αὐτῶν, ἀναγνώσῃ αὐτοῖς.

MS. A. (α) ΚΑΙ ἘΝ (β) ἸΩΣΙΟΥ (γ) χάρτην (δ) αὐτῷ (ε) κεχρημάτισα πρὸς σὲ ἐπὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐπὶ Ἰούδα (ζ) ἀκούσονται οἶκος (η) ἃ ἐλάλησα ἐπ᾽ αὐτοὺς, ἵνα ἀποστρέψωσιν (θ) ἀπὸ ὁδοῦ αὐτῶν (ι) ἔγραψεν Βαροὺχ ἀπὸ (κ) ἐχρημάτισεν (λ) οὐ δύναμαι (μ) χάρτῃ (ν) [illegible]

CAP. XLIII.

1 IN (α) anno quarto Joachim filii Joſiæ regis Juda, factum eſt verbum Domini ad me dicens; 2 Sume tibi volumen libri, & ſcribe ſuper illud omnia verba, quæ locutus ſum ad te ſuper Hieruſalem, & ſuper Judam, & ſuper omnes gentes, ex qua die (β) loquente me ad te, à diebus Joſiæ regis Juda, & uſque ad diem hanc. 3 Forte audiet domus Juda omnia mala, quæ ego cogito facere eis: ut avertantur à via ſua peſſima: & propitius ero iniquitatibus eorum, & peccatis eorum. 4 Et vocavit Hieremias Baruch filium Neriæ: & ſcripſit ex ore Hieremiæ omnia verba Domini, quæ locutus eſt ad eum, in volumine libri. 5 Et mandavit Hieremias Baruch, dicens; Ego cuſtodior: non potero ingredi in domum Domini. 6 Et leges in volumine iſto, in auribus populi, in domo Domini in die jejunii; & in auribus omnis Juda, venientium de civitatibus ſuis, leges eis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 ויחוי לנא יי אלהך ית אורחא דנהך בה וית פתגמא דנעביד : ואמר להון ירמיה נביא
4 שמעית הא אנא מצלי קדם יי אלהכון כפתגמיכון ויהי כל פתגם דותיב יי יתכון אחוי
5 לכון לא אמנע מנכון פתגם : ואנון אמרו לירמיה יהי מימרא דיי בנא לסהיד קשוט
6 ומהימן אם לא ככל פתגמיא די שלחנך יי אלהך לותנא כן נעביד : אם טב ואם ביש
למימרא דיי אלהנא די אנחנא שלחין יתך לקדמוהי נקבל בדיל דייטב לנא ארי נקבל
7 למימרא דיי אלהנא : והוה מסוף עשרא יומין והוה פתגם נבואה מן קדם יי עם
8 ירמיה : וקרא ליוחנן בר קרח ולכל רבני חילותא דעמיה ולכל עמא למזעירא ועד
9 רבא : ואמר להון כדנן אמר יי אלהא דישראל דשלחתון יתי לקדמוהי למבעי
10 בעותכון קדמוהי : אם מתב תיתבון בארעא הדא ואבני יתכון ולא אפגר ואקים יתכון
11 ולא אטלטל ארי תבית מן בישתא דעבדית לכון : לא תדחלון מן קדם מלכא דבבל
די אתון דחלין מן קדמוהי לא תדחלון מניה אמר יי ארי בסעדכון מימרי למפרק
12 יתכון ולשזבא יתכון מן ידוהי : ואתן לכון רחמין וירחים עליכון ויתיב יתכון
13 לארעכון : ואם אמרין אתון לא נתיב בארעא הדא בדיל דלא לקבלא למימרא דיי
14 אלהכון : למימר לא אלהן לארעא דמצרים נעול דלא נחזי עבדי קרבא וקל שופרא
15 לא נשמע וללחמא לא נכפן ותמן נתיב : וכען בכן קבילו פתגמא דיי שארא דבית
יהודה כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל אם אתון שואה תשוון אפיכון למעל
למצרים ותעלון לאתותבא תמן :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et indicet nobis Dñs Deus tuus viam in qua ambulemus, & verbum quod
faciamus. Et dixit eis Jeremias propheta, Audivi : Ecce ego oro coram 4
Dño Deo veſtro juxta verba veſtra ; & erit, omne verbum quod reſpon-
derit Dñs vobis, annuntiabo vobis, & non prohibebo à vobis verbum.
Ipſi autem dixerunt ad Jeremiam, Sit Verbum Dñi nobis in teſtem verum 5
& fidelem, ſi non juxta omnia verba propter quæ miſerit te Dñs Deus tuus
ad nos, ſic faciemus : Sive bonum ſive malum : verbo Dñi Dei noſtri ad 6
quem mittimus nos te, obediemus, ut bene ſit nobis, cùm ſuſceperimus
ſermonem Dñi Dei noſtri. Et factum eſt poſt decem dies, & factum eſt 7
verbum prophetiæ à facie Dñi cum Jeremia. Et vocavit Johanan filium 8
Caree, & omnes principes exercitus qui erant cum eo, & omnem popu-
lum, a minimo uſque ad maximum. Et dixit eis, Hæc dicit Dñs Deus Iſ- 9
rael, ante cujus conſpectum miſiſtis me ut deprecarer deprecationem ve-
ſtram coram eo. Si habitando habitaveritis in terra iſta, ædificabo vos, 10
& non deſtruam ; & ſuſtentabo vos, & non faciam tranſmigrare, quia 11
converſus ſum à malo quod feci vobis. Ne timeatis à facie regis Babylo-
nis, à facie cujus vos timetis: ne timeatis ab eo, dicit Dñs; quia in adjuto-
rium veſtrum eſt Verbum meum, ut ſalvem vos, & liberem vos de manu
ejus. Et dabo vobis miſerationes : & miſerebitur veſtri, & reducet vos 12
in terram veſtram. Si autem vos dicitis, Non habitabimus in terra iſta 13
ut non obediatis verbo Dñi Dei veſtri : Dicentes : Nequaquam, ſed in 14
terram Ægypti ingrediemur, ubi non videbimus bellatores, & vocem tubæ
non audiemus, & famem panis non ſuſtinebimus, & ibi habitabimus : 15
Et nunc igitur ſuſcipite verbum Dñi reliquiæ domus Juda : hæc dicit
Dominus exercituum Deus Iſrael, Si vos ponendo poſueritis faciem
veſtram ut ingrediamini in Ægyptum, & ingreſſi fueritis ad habitan-
dum ibi :

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܢܚܘܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܐܘܪܚܐ ܕܢܐܙܠ ܒܗ̇. ܘܦܬܓܡܐ ܕܢܥܒܕ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܐܪ
ܢܒܝܐ ܫܡܥܬ. ܗܐ ܡܨܠܐ ܐܢܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ ܐܝܟ ܦܬܓܡܝܟܘܢ. ܘܟܠ ܦܬ
ܕܢܥܢܝܟܘܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ ܐܚܘܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܐܟܣܐ ܡܢܟܘܢ ܡܕܡ. * ܘܗܢܘܢ ܐܡ
ܠܐܪܡܝܐ. ܢܗܘܐ ܒܢ ܡܪܝܐ ܣܗܕܐ ܫܪܝܪܐ ܘܡܗܝܡܢܐ. ܐܠܐ ܐܝܟ ܦܬܓܡܐ ܕܢܫܕܪܟ
ܐܠܗܟ ܠܘܬܢ. ܗܟܢܐ ܢܥܒܕ. * ܐܢ ܛܒ ܘܐܢ ܒܝܫ. ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܕܡ
ܕܡܫܕܪܝܢܢ ܠܟ ܠܘܬܗ. ܘܢܛܐܒ ܠܢ ܟܕ ܢܫܡܥ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. * ܘܡܢ ܒܬܪ
ܥܣܪܐ ܝܘܡܝܢ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. * ܘܩܪܐ ܠܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܪܚ ܘܠܟܠܗ
ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܕܥܡܗ. ܘܠܟܠܗ ܥܡܐ ܡܢ ܙܥܘܪܐ ܘܥܕܡܐ ܠܩܫܝܫܐ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܕܫܕܪܬܘܢܝ ܠܘܬܗ ܠܡܪܡܝܘ ܒܥܘܬܟܘܢ
ܩܕܡܘܗܝ. * ܐܢ ܬܬܒܘܢ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܐܒܢܝܟܘܢ ܘܠܐ ܐܣܚܘܦܟܘܢ. ܘܐܢܨܒܟܘܢ
ܘܠܐ ܐܥܩܪܟܘܢ. ܘܬܘܐ ܠܝ ܡܢ ܒܝܫܬܐ ܕܝܗܒܬ ܠܟܘܢ. * ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܡܢ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ
ܕܐܢܬܘܢ ܕܚܠܝܢ ܡܢܗ. ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܡܢܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܥܡܟܘܢ ܐܢܐ ܐ
ܡܪܝܐ. ܠܡܦܪܩܟܘܢ ܘܠܡܦܨܝܘܬܟܘܢ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ. * ܘܐܬܠ ܠܟܘܢ ܪܚܡܐ
ܘܐܪܚܡ ܥܠܝܟܘܢ. ܘܐܘܬܒܟܘܢ ܒܐܪܥܟܘܢ. * ܘܐܢ ܐܡܪܝܬܘܢ ܠܐ ܢܬܒ ܚܢܢ ܒܐܪܥܐ ܗܕܐ. ܘ
ܕܠܐ ܬܫܡܥܘܢ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. * ܘܐܡܪܝܬܘܢ ܠܐ ܗܟܢܐ. ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܢܥܘܠ
ܢܚܙܐ ܩܪܒܐ. ܘܩܠ ܕܫܝܦܘܪܐ ܠܐ ܢܫܡܥ. ܘܠܟܦܢܐ ܠܐ ܢܟܦܢ. ܘܬܡܢ ܢܬܒ. * ܘܗܫܐ ܫܡ
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܫܪܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢ ܐܢ
ܬܣܝܡܘܢ ܐܦܝܟܘܢ ܠܡܥܠ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܬܐܙܠܘܢ ܠܡܥܡܪ ܬܡܢ.

* Ut oſtendat nobis Dominus Deus noſter viam qua nobis ambulandum eſt, & res quæ nobis agendæ. 4 Quibus dixit Jeremia propheta, Audio, ecce oratur⁹ ſum Dominum Deum veſtrum juxta ſermonem veſtrum: & quemcunque ſermonem reſponderit vobis Dominus Deus veſter, indicaturus vobis, nec ullum vos verbum celaturus. 5 Viciſſim illi dixerunt Jeremiæ, Sit adverſùm nos Domin⁹ teſtis verax & fidelis, niſi juxta ſermonem cum quo miſerit te Dominus Deus tuus ad nos, ita fecerimus. 6 Sive bonum ſive malum fuerit, voci Domini Dei noſtri ad quem *te* mittemus, obtemperabimus; nam benè ſuccedet nobis, cùm paruerimus voci Domini Dei noſtri. 7 Exactis itaque decem diebus, fuit ſermo Domini ad Jeremiam prophetam: 8 Unde convocatis Johanne Corahi filio, & cunctis copiarum ducibus qui erant cum illo, totóque populo à juniore ad ſeniorem uſque, dixit eis; 9 Sic ait Dominus Deus Iſraelis ad quem me miſiſtis ut proponerem ei petitionem veſtram. 10 Si manſeritis in terra iſta, ædificabo vos & non deſtruam, plantabo vos & non evellam, deſiſtámque à malo quod intuli vobis. 11 Ne formidetis regem Babyloniæ quem pertimeſcitis; ne formidetis eum, dicit Dominus; quia vobiſcum ſum, ait Dominus, ad ſalvandum & eripiendum vos è manibus ejus: 12 Miſericordiâ vobiſcum utar, & veſtri miſertus faciam ut habitetis in terra veſtra. 13 Verùm ſi dixeritis, Nequaquam manſuri ſumus in hac terra, quò minùs obtemperetis voci Domini Dei veſtri: 14 Et dixeritis, Non ita; terram Ægypti ingrediemur, ut non videamus bellum, tubæ ſonitum non audiamus, neque panis penuriâ laboremus; denique illic habitabimus: 15 Igitur audite ſermonem Domini. O reliquiæ Judæ. Sic ait Domiuus potentiſſimus Deus Iſraelis, Si vos facies veſtras verteritis ad recipiendum vos in Ægyptum, & ingreſſi fueritis ut ibi commoremini;

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* هكذا يقول الرب * امض وقل لرجل يهودا وللسكان في ايروسليم * اما تقبلون ادبا لتسمعو
اقوالي * اقام بنو يوناداب بن ريكاب الكلمة التي اوصى بها اولاده الا يشربوا خمرا فلم يشربو
وانا تكلمت معكم سحرا فلم تسمعوا * وارسلت اليكم عبيدي الانبياء قايلا * ارجعوا ك
واحد من طريقه الشرير * واصلحوا اعمالكم جيدا * ولا تسلكوا خلف الالهة الغريبة لتعبد
لها * وتسكنون على الارض التي اعطيتها لكم ولابايكم * ولا تميلوا اذانكم * فلم تسمعو
* واقام بنو يوناداب بن ريكاب وصية ابيهم * وشعبي لم يسمع لي * لاجل هذا هكذا
الرب * ها انا اجلب على يهودا وعلى السكان بايروسليم جميع الشرور التي تكلمت بها عليهم
* لاجل هذا هكذا قال الرب * من اجل ان بني يوناداب بن ريكاب سمعوا وصية ابيه
ليصنعوا كلما امرهم به ابوهم * لا يعدم رجل من بني يوناداب بن ريكاب يقوم
جميع ايام الارض *

Sic ait Dominus, Vade & dic viro Judæ & habitantibus in Jeruſalem, An non capietis diſciplinam ut audiatis ſermones meos? 3 14 *Præſtiterunt filii Jonadabi filii Rechabi verbum quod præcepit filiis ſuis ne vinum biberent, & non biberunt: Ego verò allocutus ſum vos diluculò, & non audiſtis:* 15 *Miſi ad vos ſervos meos prophetas, dicens; Retrahite vos quiſque à via ſua mala, bene inſtituite actiones veſtras, & ne ambuletis poſt deos alienos, ut adoretis eos; ſic habitabitis ſuper terram quam dedi vobis & majoribus veſtris: & ne abducatis aures veſtras; at non acquieviſtis.* 16 *Sanè præſtiterunt filii Jonadabi filii Rechabi monitum patris ſui; populus verò meus non obtemperavit mihi.* 17 *Icc irco ſic ait Dominus; Ecce ego inducam ſuper Judam & ſuper habitantes in Jeruſalem, cuncta mala quæ locutus ſum contra eos.* 18 *Quamobrem ſic dixit Dominus; Quia filii Jonadabi filii Rechabi obtemperârunt mandato patris ſui, perficientes quicquid præcepit eis pater ſuus; non deficiet vir de filiis Jonadabi filii Rechabi, qui ſtet coram facie mea cunctis terræ diebus.*

* الفصل الثالث والاربعون * الاصحاح الثامن والعشرون

CAP. XLIII.

Textus vigeſimus octavus.

* وفي السنة الرابعة ليواقيم بن يوشيا ملك يهودا * صار قول الرب الي قايلا *
* خذ لك قرطاس سفر * واكتب فيه جميع الاقوال التي اظهرتها لك على اسرايل و
يهودا وعلى جميع الامم * منذ يوم تكلمي معك من ايام يوشيا ملك يهودا الي هذا اليو
* لعلهم يسمعون بيت يهودا جميع الشرور التي تكلمت بها عليهم * كي يرجعوا
طريقهم الردية * واصير راحما لظلاماتهم وخطاياهم * ودعا ارميا باروخ بن نيريو وك
باروخ من فم ارميا جميع اقوال الرب التي اوحى بها اليه في قرطاس سفر * واوصى ارميا بار
قايلا * انا محفوظ ولا اقدر ان ادخل الي بيت الرب * فتقرا في هذا القرطاس لا
الشعب في بيت الرب في يوم الصيام * وفي اذان كل الشعب الاتيين من
مدنهم *

ANno præterea quarto Joacimi filii Joſiæ regis Judæ, fact⁹ eſt ad me ſermo Domini dicentis; 1

Sume tibi chartam libelli, & ſcribe in ea cunctos ſermones quos indicavi tibi de Jeruſalem, de Juda, & de omnibus populis, inde à die colloquii mei tecum a diebus Joſiæ regis Judæ, ad hodiernum uſque diem. 2 *Forſitan audient domus Judæ cuncta mala quæ locutus ſum contra eos; ut retrahant ſe à via ſua peſſima, fiamque propitius perverſitatibus & peccatis eorum.* 3 *Advocavit ergò Jeremia Baruchum Neriæ filium: cúmque ſcripſiſſet Baruch ex ore Jeremiæ cunctos Domini ſermones quos revelaverat ei, in charta libelli;* 4 *Præcepit Jeremia Barucho, dicens; Ego ſub cuſtodia ſum, nec poſſum ingredi domum Domini:* 5 *Legas igitur chartam iſtam audiente populo, in domo Domini, die jejunii: audiente quoque totâ turbâ venientium ex urbibus ſuis, legas:* 6

comprehendet ibi , eo ab timentes vos quo , gladius erit Et
16 והיתה החרב אשר אתם יראים ממנה שם תשיג
, ea ab verentes vos qua , fames & : Ægypti terra in vos
אתכם בארץ מצרים והרעב אשר אתם דאגים ממנו
erunt Et .moriemini ibi & , Ægypto vos post adhærebit ibi
17 שם ידבק אחריכם מצרים ושם תמתו: ויהיו
, Ægyptum intrandum ad ſuas facies poſuerunt qui , viri omnes
כל האנשים אשר שמו את פניהם לבוא מצרים
: peſte in & ,fame in , gladio in morientur , ibi peregrinandum ad
לגור שם ימותו בחרב ברעב ובדבר
ego quod , mali faciebus à ,evaſor & ,ſuperſtes eis erit non &
ולא יהיה להם שריד ופליט מפני הרעה אשר אני
Deus exercituum Dominus dixit ſic Nam .eos ſuper adducens
18 מביא עליהם: כי כה אמר יהוה צבאות אלהי
habitatores ſuper mea ira & ,meus naſus eſt effuſus Sicut : Iſrael
ישראל כאשר נתך אפי וחמתי על ישבי
: Ægyptum vos intrando in , vos ſuper mea ira effundetur ſic : Jeruſalaim
ירושלם כן תתך חמתי עליכם בבאכם מצרים
, maledictionem in & , ſtuporem in & , execrationem in eritis &
והייתם לאלה ולשמה ולקללה
.iſtum locum ultrà videbitis non & ; opprobrium in &
ולחרפה ולא תראו עוד את המקום הזה:
intretis Ne : Jehudah reſiduum vos ſuper Dominus eſt Locutus
19 דבר יהוה עליכם שארית יהודה אל תבאו
.hodie vos in ſum conteſtatus quod ſciatis ſciendo : Ægyptum
מצרים ידע תדעו כי העידתי בכם היום:
me miſiſtis vos nam ,veſtras animas in feciſtis errare Quia
20 כי התעתים בנפשותיכם כי אתם שלחתם אתי
Dominum ad nobis pro Ora : dicendo,veſtrum Deum Dominum ad
אל יהוה אלהיכם לאמר התפלל בעדנו אל יהוה
,noſter Deus Dominus dixerit quæ omnia juxta & , noſtrum Deum
אלהינו וככל אשר יאמר יהוה אלהינו
non & , hodie vobis annuntiavi Et .faciemus & ,nobis annuntia ſic
21 כן הגד לנו ועשינו: ואגד לכם היום ולא
me miſit quibus univerſis & ,veſtri Dei Domini voce in audiviſtis
שמעתם בקול יהוה אלהיכם ולכל אשר שלחני
peſte in & ,fame in gladio in quod , ſciatis ſciendo nunc Et .vos ad
22 אליכם: ועתה ידע תדעו כי בחרב ברעב ובדבר
.ibi peregrinandum ad intrare voluiſtis quem loco in ,moriemini
תמותו במקום אשר חפצתם לבוא לגור שם:

CAP. XLIII. מג

, populum omnem ad loqui Irmeiahu conſummare ſecundum fuit Et
1 ויהי ככלות ירמיהו לדבר אל כל העם את
eum miſerat quibus , eorum Dei DOMINI verba univerſa
כל דברי יהוה אלהיהם אשר שלחו
.iſta verba omnia , eos ad eorum Deus DOMINUS
יהוה אלהיהם אליהם את כל הדברים האלה:
, Chareach filius Jochanan & , Hoſahajah filius Hazariah dixit Et
2 ויאמר עזריה בן הושעיה ויוחנן בן קרח
Mendacium : Irmejahu ad dicentes , ſuperbi viri omnes &
וכל האנשים הזדים אמרים אל ירמיהו שקר
: dicendo , noſter Deus Dominus te miſit non , loquens tu
אתה מדבר לא שלחך יהוה אלהינו לאמר
Sed .ibi peregrinandum ad , Ægyptum ingrediamini Non
3 לא תבאו מצרים לגור שם: כי
dudum ad , nos adverſus te incitans Nerijah filius Baruch
ברוך בן נריה מסית אתך בנו למען תת
tranſportandum ad & , nos faciendum mori ad , Chaſdim manum in nos
אתנו ביד הכשדים להמית אתנו ולהגלות
.Babel nos
אתנו בבל:

Verſio VULG. LAT.

16 Gladius, quem vos formidatis, ibi comprehendet vos in terra Ægypti: & fames, pro qua eſtis ſoliciti, adhærebit vobis in Ægypto, & ibi moriemini. 17 Omnéſque viri, qui poſuerunt faciem ſuam ut ingrediantur Ægyptum, ut habitent ibi, morientur gladio, & fame, & peſte: null⁹ de eis remanebit, nec effugiet à facie mali, quod ego afferam 18 ſuper eos. Quia hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael; Sicut conflat⁹ eſt furor me⁹, & indignatio mea ſuper habitatores Jeruſalem: ſic conflabitur indignatio mea ſuper vos, cùm ingreſſi fueritis Ægyptum, & eritis in jusjurandum, & in ſtuporem, & in maledictum, & in opprobrium: & nequaquàm ultrà 19 videbitis locum iſtum. Verbum Domini ſuper vos, reliquiæ Juda; Nolite intrare Ægyptum: ſcientes ſcietis quia 20 obteſtatus ſum vos hodie, Quia decepiſtis animas veſtras: vos enim miſiſtis me ad Dominum Deum noſtrum, dicentes; Ora pro nobis ad Dominum Deum noſtrum, & juxta omnia quæcunque dixerit tibi Dominus Deus noſter, ſic annuntia nobis, & faciemus. 21 Et annuntiavi vobis hodiè, & non audiſtis vocem Domini Dei veſtri, ſuper univerſis pro qui- 22 bus miſit me ad vos. Nunc ergò ſcientes ſcietis, quia gladio, & fame, & peſte moriemini in loco, ad quem voluiſtis intrare ut habitaretis ibi.

CAP. XLIII.

1 FActum eſt autem, cùm compléſſet Jeremias loquens ad populum univerſos ſermones Domini Dei eorum, pro quibus miſerat eum Domin⁹ De⁹ eorum 2 ad illos, omnia verba hæc: Dixit Azarias fili⁹ Oſaiæ, & Johanan fili⁹ Caree, & omnes viri ſuperbi, dicentes ad Jeremiam; Mendacium tu loqueris: non miſit te Domin⁹ De⁹ noſter, dicens, Ne ingrediamini Ægyptum ut 3 habitetis illîc. Sed Baruch filius Neriæ incitat te adverſùm nos, ut tradat nos in manus Chaldæorum, ut interficiat nos, & traduci faciat in Babylonem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

7 Ἴσως πεσεῖται ἔλεος αὐτῶν κατὰ πρόσωπον κυρίου, καὶ ἀποστρέψουσιν (ͨ) ἐκ τῆς ὁδοῦ αὐτῶν τῆς πονηρᾶς, ὅτι μέγας ὁ (ξ) θυμὸς καὶ ἡ ὀργὴ κυρίου, ἣν ἐλάλησεν ἐπὶ τὸν λαὸν τοῦτον. 8 Καὶ ἐποίησε Βαροὺχ κατὰ πάντα ἃ ἐνετείλατο αὐτῷ Ἱερεμίας, τοῦ ἀναγνῶναι ἐν τῷ βιβλίῳ τοὺς λόγους κυρίου ἐν οἴκῳ κυρίου. 9 Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ ἔτει τῷ (ο) ὀγδόῳ τῷ βασιλεῖ Ἰωακεὶμ ἐν τῷ μηνὶ τῷ ἐνάτῳ, ἐξεκκλησίασαν νηστείαν κατὰ πρόσωπον κυρίου πᾶς ὁ λαὸς (π) ἐν Ἱερουσαλὴμ, 10 καὶ (ρ) οἶκος Ἰούδα. Καὶ ἀνέγνωσε Βαροὺχ ἐν τῷ βιβλίῳ (σ) τοὺς λόγους Ἱερεμίου ἐν οἴκῳ κυρίου, ἐν οἴκῳ Γαμαρίου υἱοῦ Σαφὰν τοῦ γραμματέως, ἐν τῇ αὐλῇ τῇ ἐπάνω ἐν (ͨ) προθύροις πύλης τοῦ οἴκου κυρίου τῆς καινῆς, (τ) καὶ ἐν ὠσὶ παντὸς τοῦ λαοῦ. 11 Καὶ ἤκουσε Μιχαίας υἱὸς Γαμαρίου υἱοῦ Σαφὰν (υ) ἅπαντας τοὺς λόγους κυρίου, ἐκ τοῦ βιβλίου, 12 Καὶ κατέβη εἰς (φ) οἰκίαν τοῦ βασιλέως, εἰς τὸν οἶκον τοῦ γραμματέως, καὶ ἰδοὺ ἐκεῖ πάντες οἱ ἄρχοντες ἐκάθηντο, Ἐλισαμὰ ὁ γραμματεὺς, καὶ Δαλαίας υἱὸς Σελεμίου, καὶ (χ) Ἰωνάθαν υἱὸς Ἀχχοβὼρ, καὶ Γαμαρίας υἱὸς Σαφὰν, καὶ Σεδεκίας υἱὸς Ἀνανίου, καὶ 13 πάντες οἱ ἄρχοντες. Καὶ ἀνήγγειλεν αὐτοῖς Μιχαίας πάντας τοὺς λόγους οὓς ἤκουσεν ἀναγινώσκοντος (ͨ) Βαροὺχ εἰς τὰ ὦτα 14 τοῦ λαοῦ, Καὶ ἀπέστειλαν πάντες οἱ ἄρχοντες πρὸς Βαροὺχ υἱὸν Νηρίου, τὸν (ψ) Ἰουδὶν υἱὸν Ναθανίου, υἱοῦ (ω) Σελεμίου, υἱοῦ Χουσὶ, λέγοντες, Τὸ (α) χαρτίον ἐν ᾧ σὺ ἀναγινώσκεις ἐν αὐτῷ ἐν ὠσὶ τοῦ λαοῦ, λαβὲ αὐτὸ εἰς τὴν χεῖρά σου, καὶ ἧκε. καὶ ἔλαβε Βαροὺχ (β) τὸ χαρτίον, καὶ κατέβη πρὸς 15 αὐτούς. Καὶ (γ) εἶπον αὐτῷ, Πάλιν ἀνάγνωθι εἰς τὰ ὦτα ἡμῶν. καὶ ἀνέγνω Βαροὺχ. 16 Καὶ ἐγενήθη ὡς ἤκουσαν πάντας τοὺς λόγους, συνεβουλεύσαντο ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, καὶ (δ) εἶπον, Ἀναγγέλλοντες ἀναγγείλωμεν τῷ βασιλεῖ (ͨ) ἅπαντας τοὺς 17 λόγους τούτους. Καὶ τὸν Βαροὺχ ἠρώτησαν, λέγοντες, (ε) Ποῦ ἔγραψας πάντας τοὺς 18 λόγους τούτους; Καὶ εἶπε Βαροὺχ, Ἀπὸ (ζ) στόματος αὐτοῦ ἀνήγγειλέ μοι Ἱερεμίας πάντας τοὺς λόγους τούτους. (η) καὶ ἔγραφον 19 ἐν βιβλίῳ. Καὶ (θ) εἶπον τῷ Βαροὺχ, Βάδισον, καὶ κατακρύβηθι σὺ καὶ Ἱερεμίας, ἄν- 20 θρωπος μὴ γνώτω ποῦ ὑμεῖς. Καὶ εἰσῆλθον πρὸς τὸν βασιλέα εἰς τὴν αὐλὴν, καὶ τὸ (ι) χαρτίον ἔδωκαν φυλάσσειν ἐν οἴκῳ Ἐλισαμά. καὶ ἀνήγγειλαν τῷ βασιλεῖ πάντας τοὺς λόγους τούτους.

7 Fortaſſe cadet miſe[illegible] rum ante faciem Domi[illegible], & a- vertent ſe à via ſua peſſima: quia magnus eſt furor, & ira Domini, quam loquutus eſt [illegible] populum iſtum. Et fecit Baruch ſecundum 8 omnia, quæ mandavit ei Hieremi- as, legendo in libro verba Domi- ni in domo Domini. Et factum 9 eſt in anno octavo [illegible] Joa- cim in menſe nono, concionati ſunt jejunium ad faciem Domini, omnis populus in Hieruſalem, & domus Juda. Et legit Baruch in 10 libro verba Hieremiæ in domo Domini, in domo Gamariæ [illegible] Saphan ſcribæ, in atrio ſupe- riore, in [illegible] Do- mini novæ, & in auribus [illegible] populi. Et audivit Michæas 11 filius Gamariæ filii Saphan omnia verba Domini ex libro. Et de- 12 ſcendit in domum regis, in domum ſcribæ: & ecce ibi omnes prin- cipes ſedebant, Eliſama [illegible], & Dalæas filius Selemiæ, & Jonathan filius Acchobor, & Gamarias filius Saphan: & Se- decias filius Ananiæ, & omnes principes. Et annuntiavit eis Mi- 13 chæas omnia verba quæ audie- rat legentem Baruch in auribus populi. Et miſerunt omnes prin- 14 cipes ad Baruch filium Neriæ, Judin filium Nathaniæ filii Se- lemiæ filii Chuſi, dicentes: Vo- lumen, in quo tu [illegible] in auribus populi, ſume illud in ma- nu tua, & veni. Et [illegible] Ba- ruch volumen, & deſcendit ad eos. Et dixerunt ei, Iterum 15 lege in auribus [illegible]. Et legit Baruch. Et factum eſt, ut au- 16 dierunt omnia verba, conſilia- verunt unuſquiſque ad proximum ſuum, & dixerunt: Annunti- antes annuntiemus regi omnia verba hæc. Et interrogaverunt 17 Baruch, dicentes; (ε) Ubi ſcri- pſiſti omnes ſermones iſtos? Et 18 dixit Baruch; Ex ore ſuo an- nuntiabat mihi Hieremias omnia verba hæc, & ſcribebam in li- bro. Et dixerunt ad Baruch: 19 Vade, & abſcondere tu & Hie- remias: homo non ſciat ubi vos. Et * ingreſſi ſunt ad re- 20 gem in atrium: & volumen de- derunt ad cuſtodiendum in domo Eliſama. Et annuntiaverunt re- gi omnia verba iſta.

MS. A. (ͨ) ἀπὸ (ξ) θυμὸς κυρίου, καὶ ἡ ὀργὴ, ἣν ἐλάλησεν κύριος ἐπὶ τὸν τόπον τοῦτον. (ο) πέμπτῳ Ἰωακεὶμ βασιλεῖ ἐν (π) εἰς (ρ) οἶκος (σ) λόγους (ͨ) προθύροις οἴκου (τ) εἰς τὰ ὦτα (υ) πάντας (φ) οἶκον (χ) Νάθαν υἱὸς Ἀχοβὼρ, (ͨ) τοῦ Βαροὺχ (ψ) Ἰουδεὶ (ω) Σαλαμίου (α) βιβλίον ἐν ᾧ ἀναγινώσκεις (β) υἱὸς Νηρίου τὸ χαρτίον ἐν χειρὶ αὐτοῦ, καὶ (γ) εἶπαν (δ) εἶπαν, Ἀναγγέλοντες ἀναγγέλωμεν (ͨ) πάντας (ε) Πόθεν (ζ) στόματος ἀνήγγειλεν (η) κἀγὼ (θ) εἶπαν οἱ ἄρχοντες πρὸς Βαροὺχ, Βάδισον καὶ κρύβηθι σὺ, καὶ Ἱερεμίας, καὶ ἄνθρωπος μὴ γνῶ (ι) βιβλίον

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 ותהי חרבא די אתון דחלין מנה תמן תדביק יתכון בארעא דמצרים וכפנא די אתון
17 צפין מנה תמן ידביק בתריכון למצרים ותמן תמותון: והוו כל גבריא דשויאו ית
אפיהון למעל למצרים לאתותבא תמן יתקטלון בחרבא בכפנא ובמותא ולא יהי להון
18 שאר ומשיזב מן קדם בישתא די אנא מיתי עליהון: ארי כדנן אמר יי צבאות אלהא
דישראל כמא דחל רוגזי וחימתי על יתבי ירושלם כן יחול רוגזי עליכון במעלכון
19 למצרים ותהון למומי ולצדו וללוטא ולחסודין ולא תחזון עוד ית אתרא הדין: גזירת
פתגמא דיי עליכון שארא דבית יהודה לא תעלון למצרים מידע תדעון ארי אסהידית
20 בכון יומא דין: ארי אטעיתון בנפשתיכון ארי אתון שלחתון יתי לקדם יי אלהכון
21 למימר צלי עלנא קדם יי אלהנא וככל דיימר יי אלהנא כן חוי לנא ונעביד: וחויתי
22 לכון יומא דין ולא קבלתון למימרא דיי אלהכון ולכל די שלחני לותכון: וכען מידע
תדעון ארי בחרבא בכפנא ובמותא תמותון באתרא דאתרעיתון למעל
לאתותבא תמן:

מג

1 והוה כד שיצי ירמיה למללא עם כל עמא ית כל פתגמיא דיי אלההון דשלחיה יי
2 אלההון לותהון ית כל פתגמיא האלין: ואמר עזריה בר הושעיה ויוחנן בר קרח וכל
3 גבריא רשיעיא אמרין לירמיה שקרא את מתנבי לא שלחך יי אלהנא למימר לא
תעלון למצרים לאתותבא תמן: ארי ברוך בר נריה מגרי יתך בנא בדיל למסר יתנא
בידא דכסדאי למקטל יתנא ולאגלאה יתנא לבבל:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et erit, gladius quem vos timetis, apprehendet vos ibi in terra Ægypti: & 16 fames pro qua ſolliciti eſtis, ibi conſequetur vos in Ægyptum, & ibi moriemini. Et omnes viri qui poſuerunt faciem ſuam ut ingrediantur in Ægy- 17 ptum ad habitandum ibi, occidentur gladio, & fame, & peſte: & nullus ex eis remanebit, nec liberabitur à facie mali quod ego adducam ſuper eos. Quia hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſrael: Sicut reſedit furor meus 18 & indignatio mea ſuper habitatores Jeruſalem; ſic reſidebit furor meus ſuper vos cùm ingreſſi fueritis in Ægyptum. Et eritis in jusjurandum, et in deſolationem, & in maledictionem, & in opprobria, & non videbitis ultra locum iſtum. Decrevit Verbum Domini ſuper vos reliquias domus Juda: Non in- 19 grediemini in Ægyptum: ſciendo enim ſcitote, quia conteſtatus ſum vobis 20 hodie. Quia decepiſtis animas veſtras: vos enim miſiſtis me ante conſpectum Domini Dei veſtri; dicentes: Ora pro nobis coram Domino Deo noſtro, & juxta omnia quæ dixerit Dominus Deus noſter, ſic annuntia nobis ut faciamus. Et annuntiavi vobis hodie, & non obediſtis verbo Domini Dei 21 veſtri, & omnibus pro quibus miſit me ad vos. Et nunc ſciendo ſcitote 22 quia gladio, & fame, & peſte moriemini in loco ad quem vultis intrare ad habitandum ibi.

CAP. XLIII.

ET factum eſt cùm impleſſet Jeremias loqui cum omni populo omnia verba Domini Dei ſui pro quibus miſerat eum Dominus Deus eorum ad ipſos, [ut loqueretur ad eos] omnia verba hæc. Et dixit Azarias filius Oſæ, & 2 Johanan filius Caree, & omnes viri impii; dicentes ad Jeremiam: Falſum tu prophetas nobis; non miſit te Dominus Deus noſter, ut diceres: Non in- 3 grediamini in Ægyptum ad habitandum ibi. Quia Baruch filius Neriæ incitat te adverſus nos, ut tradat nos in manus Chaldæorum ut occidant nos, & transferant nos in Babylonem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܗܝ ܚܪܒܐ ܕܕܚܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢܗ. ܬܡܢ ܬܕܪܟܟܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܟܦܢܐ ܕܕܚܠ
ܐܢܬܘܢ ܡܢܗ. ܬܡܢ ܢܪܕܦܟܘܢ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܬܡܢ ܬܡܘܬܘܢ. * ܘܢܗܘܘܢ ܟܠܗ
ܓܒܪܐ ܕܣܡܘ ܐܦܝܗܘܢ ܠܡܥܠ ܠܡܨܪܝܢ ܠܡܥܡܪ ܬܡܢ. ܢܡܘܬܘܢ ܒܚܪ
ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܫܪܢܐ ܘܦܠܝܛܐ. ܡܢ ܩܕܡ ܒܝܫܬܐ ܕܐܢܐ
ܐܝܬܐ ܥܠܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܝܟ ܕܐܬܐܫܕ
ܪܘܓܙܝ ܘܚܡܬܝ ܥܠ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܗܟܢܐ ܬܬܐܫܕ ܚܡܬܝ ܥܠܝܟܘܢ ܟ
ܕܥܠܬܘܢ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܬܗܘܘܢ ܠܡܘܡܬܐ ܘܠܬܕܡܘܪܬܐ ܘܠܠܘܛܬܐ ܘܠܚܣܕܐ. ܘܠܐ ܬܚ
ܬܘܒ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠܝܟܘܢ ܫܪܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܠܐ ܬܥܠܘܢ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܕ
ܕܐܣܗܕܬ ܒܟܘܢ ܝܘܡܢܐ. * ܕܐܛܥܝܬܘܢ ܢܦܫܟܘܢ. ܟܕ ܫܕܪܬܘܢ
ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܘܐܡܪܬܘܢ ܨܠܝ ܥܠܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܘܟܠܡܕܡ ܕܐܡܪ ܠܟ
ܐܠܗܢ. ܚܘܝܢ ܘܢܥܒܕ. * ܘܚܘܝܬܟܘܢ ܝܘܡܢܐ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ
ܐܠܗܟܘܢ. ܘܠܐ ܟܠ ܕܫܕܪܢܝ ܠܘܬܟܘܢ. ܠܐ ܥܒܕܬܘܢ. * ܗܫܐ ܕܝܢ. ܕܥ
ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ ܡܡܬܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܒܐܬܪܐ ܕܨܒܝܬܘܢ ܠܡܥܠ ܠܗ. ܠܡܥܡܪ ܬܡܢ.

16 Gladius ille quem pertimeſcitis, illic aſſequetur vos in terra Ægypti; & fames quam timetis, illuc perſequetur vos in Ægyptum uſque; ibique moriemini: 17 Fiétque ut omnes ii qui propoſuerint ingredi terram Ægypti ad commorandum illic, pereant gladio, fame, ac peſte; neque remaneat illis ſuperſtites qui evadat malum quod illaturus ſum eis. 18 Sic enim ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, Quemadmodum requievit ira & furor meus ſuper cives Jeroſolymorum, ita requieſcet furor meus ſuper vos ubi ingreſſi fueritis Ægyptum: & eritis in jusjurandum, ſtuporem, maledictionem, atque contumeliam: nec ampliùs videbitis locum iſtum, ait Dominus de vobis, O reliquiæ Judæ. 19 Ne ingrediamini Ægyptum: & ſcitote me conteſtari vos hodiè, 20 Quòd vos fallitis voſmetipſos: miſiſtis enim me ad Dominum Deum veſtrum, dicentes; Ora pro nobis Dominum Deum noſtrum; & quicquid tibi dixerit Dominus Deus noſter, indica nobis, & exequemur. 21 Indicavi autem vobis hodiè, & non obtemperatis voci Domini Dei veſtri, & eorum omnium pro quibus me miſit ad vos, nihil exequimini. 22 Quarè ſcitote vos gladio, fame, ac peſte morituros in ea loco quem ingredi vultis ad commorandum ibi.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܓ *

CAP. XLIII.

* ܘܟܕ ܫܠܡ ܐܪܡܝܐ ܠܡܡܠܠܘ ܠܟܠܗ ܥܡܐ: ܠܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ
ܕܫܕܪܗ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ ܠܘܬܗܘܢ: ܠܡܡܠܠܘ ܥܡܗܘܢ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ. * ܐܡ
ܝܙܢܝܐ ܒܪ ܗܘܫܥܝܐ ܘܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܘܪܚ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܥܘܠܐ ܐܡܪܘ ܠܐܪܡܝܐ. ܕܓܠ
ܐܡܪ ܐܢܬ. ܠܐ ܫܕܪܟ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܕܬܐܡܪ ܠܢ. ܕܠܐ ܬܥܠܘܢ ܠܡܨܪܝܢ ܠܡܥܡܪ ܬܡܢ. * ܐܠܐ
ܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ ܡܓܪܐ ܠܟ ܒܢ. ܕܢܫܠܡܢ ܒܐܝܕܝܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܕܢܩܛܠܘܢ
ܘܢܫܒܘܢ ܠܒܒܠ.

1 Cumque finem feciſſet Jeremia referendi toti populo cunctos ſermones Domini Dei ipſorum, (miſerat enim illum Dominus Deus eorum ad ipſos, ut referret ipſis ejuſmodi ſermones) 2 Dixit Jezania Hoſaiæ filius, & Johannes Corahi filius, omnéſque nefarii dixerunt Jeremiæ, Mendaciter loqueris; nequaquam miſit te Dominus Deus noſter ut diceres nobis, Ne ingrediamini Ægyptũ ad commorandum illic: 3 Nam Baruch Neriæ filius te concitat adversùm nos, ut tradat nos in manum Chaldæorum ad occidendum nos, & captivos ducendum in Babelem.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لعل تقع رحمتهم لوجه الرب ويرجعون من طريقهم الرديه * لان غضب الرب عظيم والرجز
الذي تكلم به الرب على هذا الموضع * وصنع باروخ كلما اوصاه به ارميا * ليقرا في السفر
اقوال الرب في بيت الرب * وصار في السنة الخامسة ليواقيم الملك في الشهر التاسع * جمعوا صيا
ليوم الرب كل الشعب في ايروسليم وبيت يهودا * وقري باروخ في السفر اقوال ارميا في بيت الرب
في بيت عاماريو بن صافان الكاتب * في الدار العليا في مداخل بيت الرب الحديث * في اذا
كل الشعب * وسمع ميخا بن عاماريو بن صافان جميع اقوال الرب من السفر * ونزل الى بيت
الملك الى بيت الكاتب * واذا هناك جميع الروساء جلوسا * اليصاما الكاتب * ودالايس بن
سالاميو * وناثان بن احوبور * وعاماريس بن صافان * وصداقيا بن حنانيا * وجميع الروسا
* فاخبر ميخا بجميع الاقوال التي سمعها من باروخ القاري في اذان الشعب * وارسل
جميع الروساء الى باروخ بن نيريو يوديث بن ناثانيو بن سالاميو بن خوسي قايلين
الكتاب الذي قرات فيه في اذان الشعب خذه في يدك وات * فاخذ باروخ بن نيريو
القرطاس في يده ونزل اليهم * فقالوا له اقراه ايضا في اذاننا * وقراه باروخ * وكان
لما سمعوا جميع الاقوال تشاوروا كل واحد مع قريبه وقالوا * نخبرن الملك
بجميع هذه الاقوال * وسالوا باروخ قايلين من اين كتبت جميع هذه الاقوال
* فقال باروخ * اخبرني ارميا من فمه بجميع هذه الاقوال * وانا كتبت في السفر *
الروساء لباروخ * امض واختف انت وارميا * ولا يعرف انسان اين انتم * ودخلوا
الملك الى الدار * ودفعوا الكتاب ليحفظوه في بيت اليصاماع * واخبروا الملك بجميع
هذه الاقوال *

7 *Fortaſſe continget eis miſericordia apud Dominum, & retrahent ſe à via ſua mala: nam ira Domini & furor quo locutus eſt Dominus contra locum iſtum, ingens eſt.* 8 *Fecitque Baruch quicquid mandavit ei Jeremia, legendo in eo libello ſermones Domini in domo Domini.* 9 *Cùm enim factum eſſet anno quinto Joacimi regis, menſe nono, ut indicerent jejunium diei Domini totus populus in Jeruſalem, & domus Judæ;* 10 *Legit Baruch in eo libello ſermones Jeremiæ in domo Domini, in domo Gamariæ filii Saphanis ſcribæ, in atrio ſuperiore, in veſtibulis domûs Domini recentioribus, audiente univerſo populo.* 11 *Audiens autem Micha filius Gamariæ filii Saphanis cunctos Domini ſermones ex eo libello recitatos,* 12 *Deſcendit in ædem Domini, ad domum ſcribæ; & ecce illic omnes principes conſidentes, Eliſama ſcriba, & Dalaas filius Selemiæ, Nathan filius Achoboris, Gamarias filius Saphanis, & Sedecia filius Hananiæ, omneſque principes:* 13 *Retulitque Micha cunctos ſermones quos audierat à Barucho recitante in auribus populi.* 14 *Tunc miſerunt omnes principes ad Baruchum filium Neriæ, Judin filium Nathaniæ, filii Salmiæ, filii Chuſi, dicentes; Libellum in quo legiſti audiente populo, tolle manu tuâ, & veni. Cúmque tuliſſet Baruch Neriæ filius chartam illam manu ſuâ, & deſcendiſſet ad eos,* 15 *Dixerunt ei, Lege iterum nobis audientibus: legitque Baruch.* 16 *Cùm autem audiſſent omnes ſermones illos, conſilium inierunt alter cum altero, deinde dixerunt; Omnino indicare* debemus *regi cunctos hoſce ſermones.* 17 *Tum Baruchum interrogaverunt, dicentes, Unde ſcripſiſti omnes hujuſmodi ſermones?* 18 *Reſpondit Baruch, Dictabat mihi Jeremia ore proprio cunctos hoſce ſermones, & ego ſcribebam in hoc libello.* 19 *Dixerunt principes ad Baruch, Age, abſcondere tu & Jeremia, nemóque ſciat ubi ſitis.* 20 *Deinde regem adeuntes in aulam, depoſito ad aſſervandum libello in domo Eliſamæ, indicaverunt ei omnes hos ſermones.*

, virtutum principes omnes & ,Chareach filius Jochanan audivit non Et
4 ולא־שמע יוחנן בן־קרח וכל־שרי החילים
.Jehudah terra in habitandum ad ,Domini voce in populus universus &
וכל־העם בקול יהוה לשבת בארץ יהודה:
,exercituum principes omnes & ,Chareach filius Jochanan tulit Et
5 ויקח יוחנן בן־קרח וכל־שרי החילים את
quo ,gentibus cunctis de fuerant reversi qui , Jehudah residuum omne
כל־שארית יהודה אשר־שבו מכל־הגוים אשר
. Viros .Jehudah terra in peregrinandum ad illuc fuerant expulsi
6 נדחו־שם לגור בארץ יהודה: את־הגברים
omnem & , regis filias & , pubem & , mulieres &
ואת־הנשים ואת־הטף ואת־בנות המלך ואת כל־
cum , laniorum magister Nebuzaradan dimiserat quam animam
הנפש אשר הניח נבוזראדן רב־טבחים את־
,propheta Irmejahu & , Saphan filio Achicham filio Ghedaljahu
גדליהו בן־אחיקם בן־שפן ואת ירמיהו הנביא
: Ægypti terram sunt ingressi Et .Nerijahu filio Baruch &
7 ואת־ברוך בן־נריהו: ויבאו ארץ מצרים
.Tachpanches ad usque venerunt & : Domini voce in audierunt non quia
כי לא שמעו בקול יהוה ויבאו עד־תחפנחס:
: dicendo , Tachpanches in Irmejahu ad Domini verbum fuit Et
8 ויהי דבר־יהוה אל־ירמיהו בתחפנחס לאמר:
,lateraria in intritio in eos abscondes & ,grandes lapides tua manu in Sume
9 קח בידך אבנים גדלות וטמנתם במלט במלבן
virorum oculis in , Tachpanches in , Parhoh domus ostio in quæ
אשר בפתח בית־פרעה בתחפנחס לעיני אנשים
exercituum Dominus dixit Sic : eos ad dices Et .Jehudæorum
10 יהודים: ואמרת אליהם כה־אמר יהוה צבאות
regem Nebuchadresar assumam & ,mittens ego Ecce : Israel Deus
אלהי ישראל הנני שלח ולקחתי את־נבוכדראצר מלך־
, istos lapides supra ej⁹ thronum ponam &,meum servum Babel
בבל עבדי ושמתי כסאו ממעל לאבנים האלה
.eos super suum elegans tentorium tendet & : abscondi quos
אשר טמנתי ונטה את־שפרורו עליהם:
: morte ad ,mortem ad quos : Ægypti terram percutiet & ,veniet Et
11 ובאה והכה את־ארץ מצרים אשר למות למות
.gladium ad ,gladium ad quos & : captivitatē ad ,captivitatē ad quos &
ואשר לשבי לשבי ואשר לחרב לחרב:
, eas comburet & ,Ægypti deorum domibus in ignem succendam Et
12 והצתי אש בבתי אלהי מצרים ושרפם
quemadmodum , Ægypti terram involvet & : eos captivos ducet &
ושבם ועטה את־ארץ מצרים כאשר־
.pace in inde egredietur & ,suo indumento pastor se involveret
יעטה הרעה את־בגדו ויצא משם בשלום:
& : Ægypti terra in quæ , Solis domus statuas conteret Et
13 ושבר את־מצבות בית שמש אשר בארץ מצרים ואת
.igni in comburet Ægypti deorum domos
בתי אלהי־מצרים ישרף באש:

CAP. XLIV. מד

habitantes , Jehudæos omnes erga Irmejahu ad fuit quod Verbum
1 הדבר אשר־היה אל־ירמיהו אל כל־היהודים הישבים
,Noph in &,Tachpanches in & ,Migdol in habitantes , Ægypti terra in
בארץ מצרים הישבים במגדל ובתחפנחס ובנף
Deus exercituum Dominus dixit Sic : dicendo , Pathros terra in &
2 ובארץ פתרוס לאמר: כה־אמר יהוה צבאות אלהי
super adduxi quod malum omne vidistis Vos : Israel
ישראל אתם ראיתם את כל־הרעה אשר הבאתי על
die desolatio ipsæ ecce & Jehudah urbes omnes super & ,Jerusalaim
ירושלם ועל כל־ערי יהודה והנם חרבה היום
.habitator eis in non & , hic
הזה ואין בהם יושב:

Versio VULG. LAT.

4 Et non audivit Johanan filius Caree, & omnes principes bellatorum, & univers⁹ popul⁹, vocem Domini, ut manerent in terra Juda. 5 Sed tollens Johanan filius Caree, & universi principes bellatorum, universos reliquiarum Juda, qui reversi fuerant de cunctis Gentib⁹, ad quas fuerant antè dispersi, ut habitarent 6 in terra Juda; Viros, & mulieres, & parvulos, & filias regis, & omnem animam, quam reliquerat Nabuzardan princeps militiæ cum Godolia filio Ahicam filii Saphan, & Jeremiam prophetam, & Baruch filium 7 Neriæ. Et ingressi sunt terram Ægypti, quia non obedierunt voci Domini: & venerunt us- 8 que ad Taphnis. Et factus est sermo Domini ad Jeremiam in 9 Taphnis, dicens; Sume lapides grandes in manu tua, & abscondes eos in crypta, quæ est sub muro latericio in porta domûs Pharaonis in Taphnis, cer- 10 nentib⁹ viris Judæis: Et dices ad eos; Hæc dicit Domin⁹ exercituum, De⁹ Israel; Ecce ego mittam, & assumam Nabuchodonosor regem Babylonis servum meum: & ponam thronum ej⁹ super lapides istos, quos abscondi, & statuet solium suum super 11 eos. Veniénsque percutiet terram Ægypti, quos in mortem, in mortem; & quos in captivitatem, in captivitatem: & quos 12 in gladium, in gladium. Et succendet ignem in delubris deorum Ægypti, & comburet ea, & captivos ducet illos: & amicietur terra Ægypti, sicut amicitur pastor pallio suo: & egre- 13 dietur indè in pace. Et conteret statuas dom⁹ Solis, quæ sunt in terra Ægypti: & delubra deorum Ægypti comburet igni.

CAP. XLIV.

1 Verbum, quod factum est per Jeremiam ad omnes Judæos, qui habitabant in terra Ægypti, habitantes in Magdalo, & in Taphnis, & in Memphis, & in terra 2 Phatures, dicens; Hæc dicit Dominus exercituum, De⁹ Israel; Vos vidistis omne malum istud, quod adduxi super Jerusalem, & super omnes urbes Juda: & ecce desertæ sunt hodie, & non est in eis habitator:

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

21 Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς τὸν Ἰουδὶν, λαβεῖν τὸ χαρτίον. καὶ ἔλαβεν αὐτὸ ἐξ οἴκου Ἐλισαμά· καὶ ἀνέγνω Ἰουδὶν εἰς τὰ ὦτα τοῦ βασιλέως, καὶ εἰς τὰ (κ) ὦτα πάντων τῶν ἀρχόντων, τῶν ἑστηκότων (λ) περὶ τὸν βασιλέα. 22 Καὶ ὁ βασιλεὺς ἐκάθητο ἐν οἴκῳ χειμερινῷ, καὶ ἐσχάρα πυρὸς κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ. 23 Καὶ ἐγενήθη ἀναγινώσκοντος Ἰουδὶν τρεῖς σελίδας καὶ τέσσαρας, ἀπέτεμεν (μ) αὐτὰς τῷ ξυρῷ τοῦ γραμματέως, καὶ (ν) ἔρριπτεν εἰς τὸ πῦρ τὸ ἐπὶ τῆς ἐσχάρας, (ξ) ἕως ἐξέλιπε πᾶς ὁ χάρτης εἰς τὸ πῦρ τὸ ἐπὶ τῆς ἐσχάρας. 24 Καὶ οὐκ (ο) ἐζήτησαν, καὶ οὐ διέρρηξαν τὰ ἱμάτια αὐτῶν ὁ βασιλεὺς καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ (˝) οἱ ἀκούοντες πάντας τοὺς λόγους τούτους. 25 Καὶ (π) Ἐλνάθαν καὶ Γοδολίας (ρ) ὑπέθεντο τῷ βασιλεῖ, πρὸς τὸ (σ) κατακαῦσαι τὸ 26 χαρτίον. Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς τῷ (τ) Ἱερεμεὴλ υἱῷ τοῦ βασιλέως, καὶ τῷ Σαραίᾳ υἱῷ (υ) Ἐσριὴλ, συλλαβεῖν τὸν Βαροὺχ, καὶ τὸν 27 Ἱερεμίαν, καὶ κατεκρύβησαν. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, μετὰ τὸ (φ) κατακαῦσαι τὸν βασιλέα τὸ χαρτίον, πάντας τοὺς λόγους, οὓς ἔγραψε Βαροὺχ ἀπὸ στόματος 28 Ἱερεμίου, λέγων, Πάλιν λάβε (χ) σὺ χαρτίον ἕτερον, καὶ γράψον (ψ) πάντας τοὺς λόγους, τοὺς ὄντας ἐπὶ τοῦ χαρτίου, οὓς κατ- 29 έκαυσεν ὁ βασιλεὺς Ἰωακείμ, Καὶ ἐρεῖς, Οὕτως εἶπε κύριος, Σὺ κατέκαυσας τὸ (˝) χαρτίον τοῦτο, λέγων, Διατί ἔγραψας ἐπ' αὐτῷ, λέγων, Εἰσπορευόμενος εἰσπορεύσεται (˙) βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ (ω) ἐξολοθρεύσει τὴν γῆν ταύτην, καὶ (α) ἐκλείψει ἐπ' αὐτῆς 30 ἄνθρωπος καὶ κτήνη; Διατοῦτο οὕτως εἶπε κύριος ἐπὶ Ἰωακεὶμ βασιλέα Ἰούδα, Οὐκ ἔσται αὐτῷ καθήμενος ἐπὶ (β) θρόνου Δαυὶδ, καὶ τὸ θνησιμαῖον αὐτοῦ ἔσται ἐρριμμένον ἐν τῷ καύματι τῆς ἡμέρας, καὶ ἐν τῷ 31 παγετῷ τῆς νυκτός· Καὶ ἐπισκέψομαι ἐπ' αὐτὸν, καὶ ἐπὶ τὸ γένος αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ, καὶ ἐπάξω ἐπ' (γ) αὐτὸν, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ γῆν Ἰούδα, πάντα τὰ κακὰ, ἃ ἐλάλησα (δ) 32 πρὸς αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἤκουσαν. Καὶ ἔλαβε Βαροὺχ χαρτίον ἕτερον, καὶ ἔγραψεν ἐπ' αὐτῷ ἀπὸ στόματος Ἱερεμίου ἅπαντας τοὺς λόγους τοῦ βιβλίου, οὓς κατέκαυσεν Ἰωακείμ· καὶ ἔτι προσετέθησαν αὐτῷ λόγοι πλείονες, ὡς οὗτοι.

Et misit rex Judin ad sumendum volumen. Et accepit illud e domo Elisama: & legit Judin in aures regis, & in aures omnium principum stantium circa regem. Et rex sedebat in domo (f) hyemali: & focus ad faciem ejus. Et factum est legente Judin tres pagellas & quatuor, abscindebat illas novacula scribæ, & jaciebat in ignem, qui super arulam, donec defecit totum volumen in igne, qui super arulam. Et (g) non quæsierunt, neque sciderunt vestimenta sua rex, & pueri ejus audientes omnia verba hæc. Et Elnathan, & Godolias suggesserunt regi, de comburendo volumine. Et mandavit rex Hieremeel filio regis, & Saraiæ filio Ezriel, ut comprehenderent Baruch, & Hieremiam: & occultati sunt. Et factum est verbum Domini ad Hieremiam, postquam rex combussit volumen, omnes sermones, quos scripserat Baruch ex ore Hieremiæ: dicens, Rursus sume tu volumen aliud, & scribe omnia verba, quæ erant super volumen, quæ combussit rex Joacim: Et dices; Sic dixit Dominus; Tu combussisti volumen istud, dicens; Quare scripsisti in eo, dicens; Ingrediens ingredietur rex Babylonis, & exterminabit terram istam, & (i) deficient ab ea homo, & jumenta? Propterea sic dixit Dominus super Joacim regem Juda, Non erit ei sedens super thronum David: & morticinum ejus erit projectum in æstu diei, & in gelu noctis: Et visitabo super eum, & super genus ejus, & super pueros (k) ejus: & inducam super eum, & super habitantes Hierusalem, & super terram Juda omnia mala, quæ loquutus sum ad eos, & non audierunt. Et sumpsit (l) Baruch volumen aliud, & scripsit in eo ex ore Hieremiæ omnes sermones libri, quos combusserat Joacim: & præterea additi sunt ei sermones plures, sicut isti.

MS. A. (κ) ὦτα τῶν ἀρχόντων, (λ) πρὸς (μ) αὐτὰ (ν) ἔρριπτεν (ξ) ἕως (ο) ἐξεζήτησαν, (˝) ἀκούσαντες (π) Νάθαν (ρ) καὶ Γαμαρίας (σ) μὴ κατακαῦσαι τὸ βιβλίον. (τ) Ἱερεμαὴλ (υ) * Ἐσριὴλ, (φ) ΚΑΥΣΑΙ (χ) ΣΕΑΥΤΩ ΧΑΡΤΙΟΝ (ψ) ΑΠΑΝΤΑΣ (˝) βιβλίον (˙) ὁ βασιλεὺς (ω) ἐξολεθρεύσει (α) ἐκτρίψει ἀπ' αὐτῆς ἄνθρωπον (β) θρόνον (γ) αὐτοὺς, (δ) ἐπ' αὐτοὺς,

Cap. 37. Vulg. Lat.

ΚΕΦ. μδ'.

1 Καὶ ἐβασίλευσε Σεδεκίας υἱὸς Ἰωσία ἀντὶ (α) Ἰωακεὶμ, ὃν ἐβασίλευσεν Ναβουχοδονόσορ (β) βασιλεύειν τοῦ Ἰούδα. 2 Καὶ οὐκ ἤκουσαν αὐτὸς καὶ οἱ παῖδες αὐτοῦ καὶ ὁ λαὸς τῆς γῆς τοὺς λόγους κυρίου, οὓς ἐλάλησεν ἐν χειρὶ Ἱερεμίου.

MS.A. (α) Ἰεχονίου, υἱοῦ Ἰωακείμ, (β) βασιλεὺς Βαβυλῶνος βασιλεύειν

CAP. XLIII.

Et regnavit Sedecias filius Josiæ (a) pro Joacim, quem constituit regem Nabuchodonosor, ut regnaret in Juda. Et non audierunt ipse, & pueri ejus, & populus terræ, verba Domini, quæ loquutus est in manu Hieremiæ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 ולא קביל יוחנן בר קרח וכל רבני חילותא וכל עמא למימרא דיי למתב בארעא דבית
5 יהודה: ודבר יוחנן בר קרח וכל רבני חילותא ית כל שארא דבית יהודה דתבו מכל
6 עממיא דאתבדרו לתמן לאתותבא בארעא דבית יהודה: ית גבריא וית נשיא וית
טפלא וית בנת מלכא וית כל נפשתא די שבק נבוזר אדן רב קטוליא על גדליה בר
7 אחיקם בר שפן וית ירמיה נביא וית ברוך בר נריה: ואתו לארעא דמצרים ארי לא
8 קבילו למימרא דיי ואתו עד תחפנחס: והוה פתגם נבואה מן קדם יי עם ירמיה
9 בתחפנחס למימר: סב עמך אבנין רברבן ותטמרנון בטפיל בנינא די בתרע בית פרעה
10 בתחפנחס לעיני גברין יהודאין: ותימר להון כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל הא
אנא שלח ואדבר ית נבוכדנצר מלכא דבבל עבדי ואשוי ית כורסוהי עיל מן אבניא
11 האלין דטמרית ויגוד ית אפדניה עליהון: וייתי ויקטיל ית ארעא דמצרים די למותא
12 למותא ודי לשביא לשביא ודי לחרבא לחרבא: ואדליק אשתא בבתי טעות מצראי
ויוקדנון וישבנון וירוקן ית ארעא דמצרים כמא דמתעטיף רעיא ית לבושיה ויפוק
13 מתמן בשלם: ויתבר ית קמת בית שמש די בארעא דמצרים וית בתי טעות מצרים
יוקיד בנורא:

מד

1 פתגם נבואה דהוה עם ירמיה על כל יהודאי דיתבין בארעא דמצרים דיתבין במגדל
ובתחפנחס ובמפס ובארע פתרוס למימר: כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל אתון
חזיתון ית כל בישתא דאיתיתי על ירושלם ועל כל קרויא דבית יהודה והא אנון חרבא
יומא דין ולית בהון יתיב:

PARAPH CHALD. Versio Latina.

Et non obedivit Johanan filius Caree, et omnes principes exercitus, et omnis populus verbo Domini, ut habitarent in terra domus Juda. Et tulit Johanan filius Caree, & omnes principes exercituum, omnes reliquias domus Juda, quæ reversæ fuerant de omnibus populis ad quos dispersi fuerant, ut habitarent in terra domus Juda. Viros & mulieres, & parvulos, & filias regis, & omnes animas quas dimisit Nabuzardan princeps occidentium cum Godolia filio Ahicam filii Saphan, & Jeremiam prophetam, & Baruch filium Neriæ. Et venerunt in terram Ægypti; quia non obedierunt verbo Domini, & venerunt usque ad Taphnes. Factum est autem verbum prophetiæ à facie Domini cum Jeremia in Taphnes; dicens: Tolle tecum lapides grandes, & abscondes eos in junctura ædificii, quæ est in porta domus Pharaonis in Taphnes, ante oculos virorum Judæorum. Et dices ad eos, Hæc dicit Dominus exercituum Deus Israel: Ecce ego mitto, & tollam Nabuchodonosor regem Babylonis servum meum, & ponā solium ejus super lapides istos quos abscondi, & extendet tentorium suum super eos. Et veniet & percutiet terram Ægypti; quos in mortem, in mortem, & quos in captivitatem, in captivitatem; & quos in gladium, in gladium. Et succendam ignem in domibus idolorum Ægyptiorum, & comburet eas, & in captivitatem ducet eos: & spoliabit terram Ægypti sicut amicitur pastor vestimento suo, & egredietur inde in pace. Et conteret statuas domus Solis quæ sunt in terra Ægypti, & domos idolorum Ægyptiorum succendet igni.

CAP. XLIV.

Verbum prophetiæ quod factum est ad Hieremiam de omnibus Judæis qui habitant in terra Ægypti, qui habitant in Magdalo, & in Taphnes, & in Memphis, et in terra Phatures, dicendo: Hæc dicit Dominus exercituum Deus Israel, Vos vidistis omne malum quod adduxi super Jerusalem et per omnes urbes domus Juda; et ipsæ sunt desertæ hodie, et non est in eis habitator;

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܐ ܫܡܥ ܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܘܪܚ ܘܟܠܗܘܢ ܪ̈ܒܝ ܚܝܠܐ. ܘܟܠܗ ܥܡܐ ܠܩܠܗ ܕܡ
ܐܠܗܗܘܢ. ܕܢܬܒܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܘܕܒܪ ܝܘܚܢܢ ܒܪ ܩܘܪܚ ܠܟܠܗܘܢ ܪ̈ܒܝ ܚܝܠܐ ܘܫܪ
ܘܠܟܠܗ ܫܪܟܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܡܢ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ: * ܠܓܒܪ̈ܐ ܘܠܢܫ̈ܐ ܘܠܛܠܝ̈ܐ ܘܠܒܢ̈ܬ
ܡܠܟܐ: ܘܟܠܗܘܢ ܢܦ̈ܫܬܐ ܕܫܒܩ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܢܚ̈ܘܬܐ: ܠܘܬ ܓܕܠܝܐ ܒܪ ܐܚܝܩܡ ܒܪ ܫܦ
ܣܦܪܐ. ܘܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܘܠܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ. * ܘܐܬܘ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥܘ ܠܩ
ܕܡܪܝܐ. ܘܐܬܘ ܠܡܕܝܢܬܐ ܬܚܦܢܚܣ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܒܬܚܦܢܚܣ ܟܕ ܐ
* ܣܒ ܒܐܝܕܝܟ ܟܐܦ̈ܐ ܪ̈ܘܪܒܬܐ. ܘܛܫܝ ܐܢܝܢ ܒܡܠܒܢܬܐ ܕܒܠܒ̈ܢܐ. ܒܬܪܥܐ ܕܒܝܬ ܦܪ
ܒܬܚܦܢܚܣ ܠܥܝܢܝ ܓ̈ܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܘܕܒܪ ܐܢܐ. ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܒܕܝ. ܘܐܣ
ܟܘܪܣܝܗ ܥܠ ܗܠܝܢ ܟܐܦ̈ܐ ܕܛܫܝܬ. ܘܢܦܪܘܣ ܡܐܢܘܗܝ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܢ
ܘܢܡܚܐ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܠܕܠܡܘܬܐ ܠܡܘܬܐ. ܘܠܕܠܫܒܝܐ ܠܫܒܝܐ. ܘܠܕܠܚܪܒܐ ܠܚ
* ܘܢܫܟܘܢ ܢܘܪܐ ܒܒ̈ܬܐ ܕܐܠܗ̈ܐ ܕܡܨܪ̈ܝܐ. ܘܢܘܩܕ ܐܢܘܢ. ܘܢܫܒܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܬܥܛ
ܐܪܥܐ. ܐܝܟ ܕܡܬܥܛܦ ܪܥܝܐ ܠܡܪܛܘܛܗ. ܘܢܦܘܩ ܡܢ ܬܡܢ ܒܫܠܡܐ. * ܘܢ
ܩܝܡܬܐ ܕܒܝܬ ܫܡܫ ܕܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܒ̈ܬܐ ܕܐܠܗ̈ܐ ܕܡܨܪ̈ܝܐ. ܢܘܩܕ ܒܢܘܪܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܕ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܕܢܬܢܒܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܝܗܘܕܝ̈ܐ ܕܝܬܒܝܢ
ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܕܝܬܒܝܢ ܒܡܓܕܘܠ ܘܒܬܚܦܢܚܣ. ܘܒܡܦܝܣ ܘܒܐܪ
ܕܦܬܪܘܣ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢܬܘܢ ܚܙܝܬܘܢ ܟ
ܒܝܫܬܐ ܕܐܝܬܝܬ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܥܠ ܟܠܗܝܢ ܩܘܪ̈ܝܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܗܐ ܚܪ̈ܒܢ ܝܘܡ
ܘܠܝܬ ܒܗܝܢ ܐܢܫ ܕܥܡܪ.

Itaque non obtemperavit Johannes Corahi 4
filius, & omnes copiarum duces, totúſque populus
voci Domini Dei ſui; ut manerent in
terra Judæ: Sed abduxit Johannes Corahi 5
filiꝰ omnes copiarum duces, & reliquos omnes
qui ſupererant ex familia Judæ, Tam 6
viros & mulieres, quàm pueros & ſtirpem
regiam; omnes *ſcilicet* animas quas reliquerat
Nebuzardan princeps ſatellitū apud Gedaliam
filium Ahicami filii Saphanis, Jeremiam
quoque prophetam, & Baruchum filiū
Neriæ; Abierúntque in terram Ægypti (non 7
enim obtemperárunt voci Domini) & pervenerunt
ad Tahphis uſque. Fuit autem ſermo 8
Domini ad Jeremiam in Tahphis, dicendo;
Accipe manu tuâ lapides magnos, & abde eos 9
ſub argilla in officina lateritia ad oſtium domûs
Pharaonis in Tahphis, *idque* ſpectantibꝰ
viris Judæ: Et dic eis, Sic ait Dominꝰ potentiſſimꝰ 10
Deus Iſraelis, Ecce ego mittens adducam
Nebuchadnoſarem regem Babyloniæ
ſervum meum, collocabítque ſolium ſuum ſuper
lapides iſtos quos abdidiſti, & portabit
arma ſua ſuper eos. Veniens autem percutiet 11
terram Ægypti, quoſdam ad mortē, quoſdam
ad captivitatem, alios ad gladium: Dimittétque 12
ignem in ædes deorum Ægyptiorum,
& illas comburet, hos autem captivos
abducet: amiciétque ſe terrâ *hac*, quemadmodum
amicit ſe paſtor endromide ſuâ, &
exibit inde cum pace: Confringétque ſtatuam 13
Beth-ſemeſi in terra Ægypti, & ædes
deorum Ægyptiorum igne comburet.

CAP. XLIV.

SErmo qui fuit ad Jeremiam à Domino, ut 1
prophetaret de omnibus Judæis commorantibus
in terra Ægypti, & commorantibus in
Migdol, in Tahphis, in Mephes, & in terra
Phathros. Ita dicit Dominus potentiſſimus 2
Deꝰ Iſraelis, Vos vidiſtis totum illud malum
quod adduxi ſuper Jeruſalem & ſuper omnes
civitates Judæ, eáſque eſſe hodie deſolatas,
& nullum extare in eis habitantem;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وارسل الملك يوذين لياخذ القرطاس فاخذه من بيت اليصاماع وقراه يوذين في اذان المل
وفي اذان الرؤساء القيام لدى الملك * والملك جالس في بيت شتوي وكانون نار لوجهه * و
اذ قرى يوذين ثلث قطع واربعة قطعها بموسى الكاتب وطرحها في النار التي على الكانون
ان فني كل القرطاس بالنار التي على الكانون * ولم يطلبوا ولا خرقوا ثيابهم الملك وعبيده جميع
الذين سمعوا هذه الاقوال * وناثان وعودولياس وعامارياس سالوا الملك ان لا يحرق السفر * ف
الملك يارامييل بن الملك وصارا بن اسرييل ان يقبضوا على باروخ وارميا * فاختفيا *
* وكان قول الرب الى ارميا من بعد ما احرق الملك القرطاس الذي فيه
جميع الاقوال التي كتبها باروخ من فم ارميا قايلا *
* خذ لك قرطاسا ايضا واكتب جميع الاقوال التي كانت في القرطاس التي احرقها يواقيم الملك
* وتقول هكذا قال الرب انت احرقت هذا السفر قايلا لماذا كتبت فيه قايلا داخلا يدخل
ملك بابل ويستاصل هذه الارض ويبيد منها الانسان والبهايم * لاجل هذا هكذا قال الرب ع
يواقيم ملك يهوذا لا يكون له جالس على كرسي داود وجسمه تكون مطروحة في حر النه
وفي صقيع الليل * واطلع عليه وعلى جنسه وعلى عبيده واجلب عليهم وعلى سكان اورشليم
وعلى ارض يهوذا جميع الشرور التي تكلمت بها عليهم ولم يسمعوا * واخذ باروخ قرطاسا ا
وكتب فيه من فم ارميا جميع اقوال السفر التي احرقها يواقيم وزيدت له ايضا اقو
كثيرة مثل هذه *

الفصل الرابع والاربعون *

* وملك صدقيا بن يوشيا عوض يخونيا بن يواقيم الذي ملكه نبوخذنصر ملك بابل ليملك
على يهوذا * ولم يسمعوا هو وعبيده وشعب الارض اقوال الرب التي تكلم بها بيد ارميا *

Tunc miſit rex Judin ut chartam illam 21
acciperet: accepitque eam de domo Eliſamæ,
legitque eam Judin audiente rege,
& audientibus principibus qui aderant
apud regem. Rex autem ſedebat in domo 22
hyemali, focuſque ignis erat ante ipſum.
Et factum eſt, cùm legiſſet Judin tres pagellas 23
vel quatuor, ut ſcinderet eas novaculâ
ſcriptoris, projiceretq; in ignem foco
impoſitū, donec conſumpta eſſet tota illa
charta igne qui foco ſuperpoſitus erat:
Potiùs quàm deprecarentur, & lacerarent 24
veſtimenta ſua rex & ſervi ejus, omnes
videlicet *qui audierant ejuſmodi ſermones.*
Porrò Nathan, Godolias, & Gamarias 25
rogaverant regem ne libellū illum
combureret. Sed rex imperavit Jeramieli 26
filio regis, & Saraæ filio Aſrielis, ut caperent
Baruchum & Jeremiam; verùm
abdiderant ſeſe.

Et fuit ſermo Domini ad Jeremiā, 27
poſtquā combuſſiſſet rex chartam
illam in qua erant omnes ſermones
quos ſcripſerat Baruch ex ore
Jeremiæ, dicens;

Sume tibi denuò chartam, & inſcribe 28
cunctos ſermones qui erant in charta
quam combuſſit Joacim rex: Et dices; 29
Ita dixit Dominus, Tu combuſſiſti libellum
iſtum, dicens; Quare ſcripſiſti in eo,
dicens, Certiſſimè ingredietur rex Babelis,
evertetque terram iſtam: & extinguentur
ex ea homines & jumenta? Icirco 30
ſic dixit Dominus de Joacimo rege
Judæ; Non erit ei qui ſedeat ſuper ſolio
Davidis, & cadaver ejus erit abjectum
ſub æſtu diei & gelu noctis: Et viſitabo 31
eum, & ſtirpem atque ſervos ipſius; &
inducam ſuper hos & ſuper habitatores
Jeruſalem, & ſuper terram Judæ, cuncta
mala quæ locutus ſum contra eos, nec audierunt.
Tulit ergò Baruch chartam aliam, 32
& ſcripſit in ea ex ore Jeremiæ
cunctos libelli ſermones quos combuſſerat
Joacim: & adjecti ſunt ei præterea multi
ſermones iis ſimiles.

CAP. XLIV.

POſtea regnavit Sedecia Joſiæ filius 1
pro Jechonia Joachimi filio, quem conſtituit
regem Buchtonaſſar rex Babelis, ut
regnaret ſuper Judam. Sed neque is, 2
neque ſervi ejus, neque terræ populus audierunt
ſermones Domini quos locutus
fuerat per Jeremiam.

ירמיה : מד

eundum ad , me irritandum ad fecerunt quam , eorum maliciæ faciebus A
3 מפני רעתם אשר עשו להכעסני ללכת
, ipſi eos ſciebant nec quos , alienis Diis ſerviendum ad ſuffitum
לקטר לעבד לאלהים אחרים אשר לא ידעום המה
,prophetas meos ſervos omnes vos ad miſi Et .veſtri patres & ,vos
4 אתם ואבתיכם: ואשלח אליכם את־כל־עבדי הנביאים
verbum faciatis quæſo Ne : dicendo ,mittendo & ,ſurgendo manè
השכים ושלח לאמר אל־נא תעשו את דבר־
inclinaverũt nec ,audierunt non Et .odi quam , hujus abominationis
5 התעבה־הזאת אשר שנאתי: ולא שמעו ולא־הטו
Diis ſuffiendum non ad ,ſua malitia à ſe avertendũ ad ſuã aurem
את־אזנם לשוב מרעתם לבלתי קטר לאלהים
civitatibus in eſt ſuccenſa & ,meus naſus & ,mea ira eſt effuſa Et .alienis
6 אחרים: ותתך חמתי ואפי ותבער בערי
vaſtitatem ,ſolitudinem in fuerunt & : Jeruſalaim plateis in & ,Jehudah
יהודה ובחצות ירושלם ותהיינה לחרבה לשממה
exercituum Deus Dominus dixit ſic nunc Et .hanc diem ſecundùm
7 כיום הזה: ועתה כה־אמר יהוה אלהי צבאות
ad grande malum facientes vos quid Ad : Iſrael Deus
אלהי ישראל למה אתם עשים רעה גדולה אל־
,parvulum,mulierem & virum vobis faciendum excidere ad ,veſtras animas
נפשתיכם להכרית לכם איש־ואשה עולל
.reſiduum vobis faciendũ remanere non ad ,Jehudah medio de ,ſugentem &
ויונק מתוך יהודה לבלתי הותיר לכם שארית:
Diis ſuffiendo ,veſtrarum manuum factis in me irritandum Ad
8 להכעסני במעשי ידיכם לקטר לאלהים
peregrinandum ad ingredientes vos quam , Ægypti terra in alienis
אחרים בארץ מצרים אשר־אתם באים לגור
,maledictionẽ in vos exiſtendos ad & , vos ſuccidendum ad ,ibi
שם למען הכרית לכם ולמען היותכם לקללה
eſtis obliti Nunquid .terræ gentibus cunctis in ,opprobrium in &
9 ולחרפה בכל גויי הארץ: השכחתם את־
& , Jehudah regum malorum & ,veſtrorum patrum malorum
רעות אבותיכם ואת־רעות מלכי יהודה ואת
malorum & , veſtrorum malorum & , ejus uxorum malorum
רעות נשיו ואת רעתיכם ואת רעת
plateis in & , Jehudah terra in fecerunt quæ ,veſtrarum uxorum
נשיכם אשר עשו בארץ יהודה ובחצות
non & , hanc diem ad uſque ſunt attriti Non ? Jeruſalaim
10 ירושלם: לא דכאו עד היום הזה ולא
quæ , meis ſtatutis in & ,mea lege in ambulârunt nec , timuerunt
יראו ולא־הלכו בתורתי ובחקתי אשר
dixit ſic Ideo .veſtrorum patrum facies ad & ,veſtras facies ad dedi
11 נתתי לפניכם ולפני אבותיכם: לכן כה־אמר
vos in meas facies ponens ego Ecce : Iſrael Deus exercituum Dominus
יהוה צבאות אלהי ישראל הנני שם פני בכם
tollam Et .Jehudah omnem ſuccidendum ad & ,malum in
12 לרעה ולהכרית את־כל־יהודה: ולקחתי את־
terram ingrediendum ad ſuas facies poſuerunt qui , Jehudah reſiduum
שארית יהודה אשר־שמו פניהם לבוא ארץ־
, Ægypti terra in omnes conſumentur & ,ibi peregrinandum ad , Ægypti
מצרים לגור שם ותמו כל בארץ מצרים
,magnum ad uſque & parvo à ,conſumentur fame in gladio in , cadent
יפלו בחרב ברעב יתמו מקטן ועד־גדול
,ſtuporem in ,execrationem in erunt & : morientur fame in & gladio in
בחרב וברעב ימתו והיו לאלה לשמה
habitantes ſuper viſitabo Et .opprobrium in & ,maledictionem in &
13 ולקללה ולחרפה: ופקדתי על היושבים
,gladio in ,Jeruſalaim ſuper viſitavi quemadmodum , Ægypti terra in
בארץ מצרים כאשר פקדתי על־ירושלם בחרב
.peſte in & , fame in
ברעב ובדבר:

Verſio VULG. LAT.

3 Propter malitiam,quam fecerunt
ut me ad iracundiam provoca-
rent, & irent ut ſacrificarent, &
colerent deos alienos, quos ne-
ſciebant & illi, & vos, & patres
4 veſtri. Et miſi ad vos omnes ſer-
vos meos prophetas, de nocte
conſurgens, mittéńſque & di-
cens; Nolite facere verbum abo-
minationis hujuſcemodi, quam
5 odivi. Et non audierunt, nec
inclinaverunt aurem ſuam, ut
converterentur à malis ſuis, &
6 non ſacrificarent diis alienis. Et
conflata eſt indignatio mea & fu-
ror meus, & ſuccenſa eſt in ci-
vitatib⁹ Juda,& in plateis Jeru-
ſalem : & verſæ ſunt in ſolitudi-
nem & vaſtitatem ſecundùm
7 diem hanc. Et nunc hæc dicit
Domin⁹ exercituum,Deus Iſrael;
Quarè vos facitis malum gran-
de hoc contra animas veſtras, ut
intereat ex vobis vir & mulier,
parvul⁹ & lactens de medio Ju-
dæ, nec relinquatur vobis quid-
8 quam reſiduum : Provocantes
me in operib⁹ manuum veſtra-
rum, ſacrificando diis alienis in
terra Ægypti, in quam ingreſſi
eſtis ut habitetis ibi : & diſper-
eatis, & ſitis in maledictionem,
& in opprobrium cunctis gen-
9 tib⁹ terræ ? Numquid obliti e-
ſtis mala patrum veſtrorum, &
mala regum Juda, & mala uxo-
rum ejus, & mala veſtra, & ma-
la uxorum veſtrarum, quæ fece-
runt in terra Juda, & in regio-
10 nibus Jeruſalem ? Non ſunt
mundati uſque ad diem hanc :
& non timuerunt, & non ambu-
laverunt in lege Domini, & in
præceptis meis, quæ dedi coram
vobis & coram patrib⁹ veſtris.
11 Ideò hæc dicit Domin⁹ exerci-
tuum,De⁹ Iſrael ; Ecce ego po-
nam faciem meam in vobis in
malum : & diſperdam omnem
12 Judam. Et aſſumam reliquias
Judæ, qui poſuerunt facies ſuas
ut ingrederentur terram Ægypti,
& habitarent ibi : & conſumen-
tur omnes in terra Ægypti : ca-
dent in gladio & in fame : &
conſumentur à minimo uſque ad
maximum, in gladio & in fame
morientur : & erunt in jusju-
randum, & in miraculum, & in
maledictionem, & in opprobri-
13 um. Et viſitabo ſuper habita-
tores terræ Ægypti, ſicut viſita-
vi ſuper Jeruſalem, in gladio, &
fame, & peſte.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς Σεδεκίας τὸν
(γ) Ἰωάχαλ υἱὸν Σελεμίου, καὶ τὸν Σοφονί-
αν υἱὸν (δ) Μαασαίου τὸν ἱερέα πρὸς Ἱερε-
μίαν, λέγων, Πρόσευξαι δὴ περὶ ἡμῶν πρὸς
4 κύριον. Καὶ Ἱερεμίας ἦλθε, καὶ διῆλθε (ε) διὰ
μέσου τῆς πόλεως, καὶ οὐκ ἔδωκαν αὐτὸν (ζ)
εἰς τὸν οἶκον τῆς φυλακῆς. Καὶ δύναμις Φα-
ραὼ ἐξῆλθεν ἐξ Αἰγύπτου, καὶ ἤκουσαν οἱ
Χαλδαῖοι τὴν ἀκοὴν αὐτῶν, καὶ ἀνέβησαν (η)
5 ἐπὶ Ἱερουσαλήμ. Καὶ ἐγένετο λόγος κυ-
6 ρίου πρὸς Ἱερεμίαν, λέγων, Οὕτως εἶπε
κύριος, Οὕτως ἐρεῖς πρὸς βασιλέα Ἰούδα
τὸν ἀποστείλαντα πρὸς σὲ, (*) τοῦ ἐκζητῆσαί
με, Ἰδοὺ δύναμις Φαραὼ ἡ ἐξελθοῦσα ὑ-
μῖν εἰς βοήθειαν, ἀποστρέψουσιν εἰς γῆν Αἰ-
7 γύπτου, Καὶ ἀναστρέψουσιν (θ) αὐτοὶ οἱ
Χαλδαῖοι, καὶ πολεμήσουσιν ἐπὶ τὴν πόλιν
ταύτην, καὶ συλλήψονται αὐτὴν, καὶ καύσουσιν
8 αὐτὴν ἐν πυρί. Ὅτι οὕτως εἶπε κύριος, Μὴ
ὑπολάβητε ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν, λέγοντες,
Ἀποτρέχοντες ἀπελεύσονται ἀφ' ἡμῶν οἱ
9 Χαλδαῖοι· ὅτι οὐ μὴ ἀπέλθωσι. Καὶ ἐὰν
πατάξητε πᾶσαν δύναμιν τῶν Χαλδαίων τοὺς
πολεμοῦντας ὑμᾶς, καὶ καταλειφθῶσί τινες
ἐκκεκεντημένοι, ἕκαστος (*) ἐν τῷ τόπῳ αὐτοῦ
(ι) οὗτοι ἀναστήσονται, καὶ καύσουσιν τὴν πόλιν
10 ταύτην ἐν πυρί. Καὶ ἐγένετο ὅτε ἀνέβη ἡ
δύναμις τῶν Χαλδαίων (κ) ἀπὸ Ἱερουσα-
λὴμ ἀπὸ προσώπου τῆς δυνάμεως Φαραὼ,
11 Ἐξῆλθεν (λ) Ἱερεμίας ἀπὸ Ἱερουσαλὴμ τοῦ
πορευθῆναι εἰς γῆν Βενιαμὶν, τοῦ ἀγοράσαι
12 ἐκεῖθεν ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ. Καὶ ἐγένετο αὐτὸς
ἐν πύλῃ Βενιαμὶν, καὶ ἐκεῖ ἄνθρωπος παρ' ᾧ
(μ) κατέλυε, Σαρουΐα υἱὸς Σελεμίου, υἱοῦ Ἀνα-
νίου, καὶ συνέλαβε τὸν Ἱερεμίαν, λέγων, Πρὸς
13 τοὺς Χαλδαίους σὺ φεύγεις. Καὶ εἶπε, Ψεῦ-
δος, (ν) οὐκ εἰς τοὺς Χαλδαίους ἐγὼ φεύγω.
καὶ οὐκ (ξ) εἰσήκουσεν αὐτοῦ· καὶ συνέλαβε (ο)
Σαρουΐα τὸν Ἱερεμίαν, καὶ εἰσήγαγεν αὐτὸν
14 πρὸς τοὺς ἄρχοντας. Καὶ ἐπικράνθησαν οἱ
ἄρχοντες ἐπὶ Ἱερεμίαν, καὶ ἐπάταξαν αὐ-
τὸν, καὶ ἀπέστειλαν αὐτὸν εἰς τὴν οἰκίαν Ἰω-
νάθαν τοῦ γραμματέως, ὅτι ταύτην ἐποίη-
15 σαν εἰς (ϛ) οἰκίαν φυλακῆς. Καὶ ἦλθεν Ἱερε-
μίας εἰς οἰκίαν τοῦ λάκκου, καὶ εἰς τὴν χερὲθ,
16 καὶ ἐκάθισεν ἐκεῖ ἡμέρας πολλάς. Καὶ ἀπ-
έστειλε Σεδεκίας, καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸν, καὶ (π)
ἠρώτα αὐτὸν ὁ βασιλεὺς κρυφαίως εἰπεῖν,
Εἰ ἔστιν ὁ λόγος παρὰ κυρίου; καὶ (ρ) εἶπεν, Ἔ-
στιν· εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος παρα-
17 δοθήσῃ. Καὶ εἶπεν (*) Ἱερεμίας τῷ βασιλεῖ,
Τί ἠδίκησά σε, καὶ τοὺς παῖδάς σου, καὶ τὸν
λαὸν τοῦτον, ὅτι σὺ δίδως με εἰς οἰκίαν
(σ) φυλακῆς;

Et miſit rex Sedecias Joachal 3
filium Selemiæ, & Sophoniam
filium Maaſiæ ſacerdotem, ad
Hieremiam, dicens; Ora nunc
pro nobis ad Dominum. Et Hie- 4
remias venit, & tranſiit per me-
dium civitatis: & non dede-
runt eum in domum carceris. Et
virtus Pharaonis exiit ex Æ-
gypto: & audierunt Chaldæi fa-
mam eorum: & aſcenderunt
(b) deſuper Hieruſalem. Et fa- 5
ctum eſt verbum Domini ad Hie-
remiam, dicens; Sic dixit Do- 6
minus; Sic dices ad regem Ju-
da, qui miſit ad te ad exquiren-
dum me; Ecce virtus Pharao-
nis, quæ egreſſa eſt vobis in au-
xilium, revertent in terram Æ-
gypti: Et revertent ipſi Chal- 7
dæi, & bellabunt ſuper civita-
tem hanc, & capient eam, &
ſuccendent eam in igne. Quo- 8
niam ſic dixit Dominus; Non
exiſtimetis animabus veſtris, di-
centes; Recurrentes abibunt à
nobis Chaldæi: quia non abi-
bunt. Et, ſi percuſſeritis omnem 9
virtutem Chaldæorum, eos, qui
oppugnant vos, & remanſerint
quidam transfixi, unuſquiſque
in loco ſuo, iſti conſurgent, &
incendent civitatem hanc in i-
gne. Et factum eſt, quando 10
aſcendit virtus Chaldæorum à
Hieruſalem à facie virtutis Pha-
raonis: Egreſſus eſt Hieremi- 11
as de Hieruſalem, ut iret in ter-
ram Benjamin, ut (c) emeret in-
dè in medio populi. Et fuit ipſe 12
in porta Benjamin: & ibi ho-
mo, apud quem divertebat, Sa-
ruia filius Selemiæ, filii Ananiæ:
& comprehendit Hieremiam, di-
cens; Ad Chaldæos tu fugis.
Et dixit, Mendacium: non ad 13
Chaldæos ego fugio. Et non ex-
audivit eum: & comprehendit
Saruia Hieremiam: & introdu-
xit eum ad principes. Et exa- 14
cerbati ſunt principes ſuper Hie-
remiam, & percuſſerunt eum: &
miſerunt eum in domũ Jonathan
ſcribæ: quia hanc fecerant in
domum carceris. Et venit He- 15
remias in domum laci, & in
(d) Chereth: & ſedit ibi die-
bus multis. Et miſit Sedecias, 16
& vocavit eum: & interroga-
bat eum rex abſconditè, dicen-
do, Si eſt verbum à Domino?
Et dixit, Eſt: in manus regis
Babylonis tradêris. Et dixit Hie- 17
remias regi; Quid læſi te, &
pueros tuos, & populum iſtum;
quia tu das me in domum carce-
ris?

MS.A. (γ) Ἰωάχαζ (δ) Μασαίου (ε) ἀναμέσον (ζ) εἰς οἶκον (η) ἀπὸ (*) ἐκζητῆσαί (θ) οἱ Χαλδαῖοι, οἱ πολεμοῦντες τὴν γῆν ταύτην, (*) ἐν τόπῳ (ι) ὅτι αὐτοὶ (κ) ἐπὶ (λ) Ἱηρεμίας (μ) κατέλυσεν, Σαρουΐας (ν) οὐχὶ πρὸς τοὺς (ξ) ἤκουσεν (ο) Σαρουΐας (ϛ) οἶκον (π) ἐπηρώτησεν αὐτὸν κρυφαίως, Εἰ ἔστιν λόγος κυρίου; (ρ) εἶπεν αὐτῷ, (*) Ἱηρεμίας (σ) τῆς φυλακῆς;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 מן קדם בישתהון דעבדו לארגזא קדמי למהך לאסקא בוסמין למפלח לטעות עממיא
4 דלא ידעונון אתון ואבהתכון : ושלחית לותכון ית כל עבדי נבייא מקדים ומשלח
5 למימר לא כען תעבדון ית עסק תועיבתא הדא דרחיקית : ולא קבילו ולא ארכינו
6 ית אודניהון למתב מבישתהון בדיל דלא לאסקא בוסמין לטעות עממיא : וחל רוגזי
וחמתי ודליק בקרויא דבית יהודה ובשוקי ירושלם והואה לחורבא לצדו כיומא הדין :
7 וכען כדנן אמר יי אלהי צבאות אלהא דישראל למה אתון גרמין בישתא רבתא על
נפשתכון לשיצאה לכון גבר ואתא ועלים ויניק מגו בית יהודה בדיל דלא למשבק לכון
8 שארא : לארגזא קדמי בעובדי ידכון לאסקא בוסמין לטעות עממיא בארעא דמצרים
דאתון אתן לאתותבא תמן בדיל לשיצאה לכון ובדיל למהויכון ללוטא ולחסודין
9 בכל עממי ארעא : האתנשיתון ית בישות אבהתכון וית בישות מלכיא דבית יהודה
וית בישות נשוהי וית בישתכון וית בישות נשיכון דעבדו בארעא דבית יהודה ובשוקי
10 ירושלם : לא פסקו עד יומא הדין ולא דחילו ולא הליכו באוריתי ובקימי דיהבית
11 קדמיכון וקדם אבהתכון : בכין כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל הא אנא משוי
12 אפי בכון לבישא ולשיצאה ית כל דבית יהודה : ואסב ית שארא דבית יהודה דשויאו
אפיהון למיעל לארעא דמצרים לאתותבא תמן ויסופון כולהון בארעא דמצרים
יתרמון בחרבא ובכפנא יסופון מזעירא ועד רבא בחרבא ובכפנא ימותון ויהון למומי
13 ולצדו וללוטא ולחסודין : ואסער על דיתבין בארעא דמצרים כמא דאסערית על
ירושלם בחרבא בכפנא ובמותא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Propter mala ſua quæ fecerunt ut irritarent me, & irent, & adolerent aro- 3
mata, & ſervirent idolis populorum, quæ neſcierunt ipſi, & vos & patres
veſtri. Et miſi ad vos omnes ſervos meos prophetas, manè conſurgens & 4
mittens; dicendo : Ne faciatis nunc rem abominationis hujus quam abjeci.
Et non obedierunt nec inclinaverunt aures ſuas ut converterentur à malitia 5
ſua, ut non adolerent aromata idolis populorum. Et manſit furor meus & 6
ira mea ; & ſuccenſa eſt in civitates domus Juda, & in vicos Jeruſalem : &
factæ ſunt in ſolitudinem, & in deſolationem, ſicut in die hac. Et nunc hæc 7
dicit Dominus Deus exercituum Deus Iſrael : Quare vos cauſa eſtis mali
grandis contra animas veſtras, ut conſumam ex vobis virum & mulierem,
adoleſcentem, & lactentem de medio domus Juda, ut non remaneant vobis
reliquiæ : Irritantes me operibus manuum veſtrarum, adolendo aromata 8
idolis populorum in terra Ægypti, quò vos veniſtis ad habitandum ibi, ut
conſumam vos, & ut ſitis in maledictionem, & opprobria omnibus populis
terræ ? Nunquid obliti eſtis malitiæ patrum veſtrorum, & malitiæ regum 9
domus Juda, & malitiæ uxorum eorum, & malitiæ veſtræ, & malitiæ
uxorum veſtrarum, quam fecerunt in terra domus Juda, & in vicis Je-
ruſalem ? Non ceſſaverunt uſque in diem hanc, nec timuerunt, nec i- 10
ambulaverunt in lege mea, & in pactis meis quæ poſui coram vobis &
patribus veſtris. Propterea hæc dicit Dominus exercituum Deus Iſra- 11
el : Ecce ego ponam faciem meam in vobis in malum, ut conſumam omnes
viros domus Juda. Et tollam reliquias populi domus Juda, quæ poſuerunt 12
facies ſuas ut ingrederentur in terram Ægypti ad habitandum ibi : & con-
ſumentur omnes in terra Ægypti, cadent in gladio, & fame conſumentur à
minimo uſque ad maximum in gladio, & fame morientur, & erunt in jus-
jurandum & vaſtitatem, & in maledictionem, & in opprobria. Et viſita- 13
bo ſuper eos qui habitant in terra Ægypti, ſicut viſitavi contra Jeruſalem
in gladio, & in fame, & in peſte.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܥܒܕܘ ܘܐܪܓܙܘܢܝ. ܘܐܙܠܘ ܘܣܡܘ ܒܣܡܐ ܠܐܠܗܐ ܐܚܪܢܐ
ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܐܢܘܢ ܗܢܘܢ ܘܐܒܗܝܗܘܢ. * ܘܫܕܪܬ ܠܘܬܗܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝ ܢܒܝ
ܡܩܕܡ ܘܫܕܪܬ ܘܐܡܪܬ. ܠܐ ܬܥܒܕܘܢ ܨܒܘܬܐ ܛܢܦܬܐ ܗܕܐ ܕܣܢܝܬ. * ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܘܠܐ ܪܟܢܘ ܐܕܢܗܘܢ
ܕܢܬܦܢܘܢ ܡܢ ܒܝܫܘܬܗܘܢ. ܕܠܐ ܢܣܡܘܢ ܒܣܡܐ ܠܐܠܗܐ ܐܚܪܢܐ. ܘܐܬܬܢܝܚ ܪܘ
ܘܚܡܬܝ. ܘܐܚܕܬ ܢܘܪܐ ܒܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܒܫܘܩܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܗܘܝ ܠܚܘܪܒܐ
ܘܠܬܡܗܐ. ܐܝܟ ܕܝܘܡܢܐ. * ܘܗܫܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝ
ܠܡܢܐ ܥܒܕܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܝܫܬܐ ܪܒܬܐ ܥܠ ܢܦܫܟܘܢ. ܕܬܘܒܕܘܢ ܡܢܟܘܢ ܓܒ
ܘܢܫܐ. ܥܠܝܡܐ ܘܝܠܘܕܐ ܡܢ ܓܘ ܝܗܘܕܐ. ܕܠܐ ܢܫܬܚܪ ܠܟܘܢ ܫܪܟܐ. * ܡܛܠ
ܕܐܪܓܙܬܘܢܝ ܒܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܟܘܢ. ܘܣܡܬܘܢ ܒܣܡܐ ܠܐܠܗܐ ܐܚܪܢܐ. ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ
ܕܥܠܬܘܢ ܠܡܥܡܪ ܬܡܢ. ܕܬܘܒܕܘܢ. ܘܬܗܘܘܢ ܠܠܘܛܬܐ ܘܠܚܣܕܐ. ܒܟܠܗܘܢ ܥܡ
ܕܐܪܥܐ. * ܛܥܝܬܘܢ ܠܗܘܢ ܒܝܫܬܐ ܕܐܒܗܝܟܘܢ. ܘܒܝܫܬܐ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗ
ܘܒܝܫܬܐ ܕܢܫܝܗܘܢ. ܕܥܒܕܘ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܒܫܘܩܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܘܠܐ ܐܬܕ
ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. ܘܠܐ ܕܚܠܘ ܘܠܐ ܦܠܚܘܢܝ ܘܠܐ ܗܠܟܘ ܒܢܡܘܣܝ ܘܒܩ
ܕܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐܒܗܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ ܐܠ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܣܐܡ ܐܢܐ ܐܦܝ ܒܟܘܢ. ܠܒܝܫܬܐ. ܘܠܡܘܒܕܘ ܠܟܠܗ
ܝܗܘܕܐ. * ܘܐܬܒܪ ܫܪܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܣܡܘ ܐܦܝܗܘܢ ܠܡܥܠ ܠܡܨܪܝܢ ܠܡܥܡܪ ܬܡ
ܘܢܦܠܘܢ ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܬܡܗܐ
ܘܠܠܘܛܬܐ. ܘܠܚܣܕܐ. * ܘܐܦܩܘܕ ܥܠ ܕܝܬܒܝܢ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܐܝܟ ܕܦܩܕܬ
ܐܘܪܫܠܡ. ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ.

Propter totum illud crimen quod commi- 3
ſerunt irritando me, & eundo thuráque ad-
hibendo diis alienis quos nec ipſi neque ma-
jores eorum cognoſcebant. Et *licèt* miſerim 4
ad eos omnes prophetas, præmiſerim atque
prædixerim, Ne perpetretis abominatio-
nem iſtam quam odi: Tamen non audierunt 5
neque aurem admoverunt, ut reverterentur
à ſceleribus ſuis, ne thura adhiberent diis
alienis. Idcirco deſæviente irâ & furore meo 6
exarſit ignis in civitatibus Judæ & in plateis
Jeroſolymæ, & redactæ ſunt in vaſtitatem &
ſtuporem, ut hodie *cernuntur*. Quapropter 7
ſic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis,
Quare tantum crimen perpetratis in volmet-
ipſos, ut extinguatis à vobis viros & fœmi-
nas, & adoleſcentes ac pueros ex Juda, adeo-
que nullum relinquatis vobis veſtigium? Me 8
enim irritatis facinore manuum veſtrarum,
& adoletis thura diis alienis in terra Ægypti
quam ingreſſi eſtis ad peregrinandum illic;
ut extinguam vos, & ſitis maledictioni &
opprobrio apud omnes terræ populos. Num 9
obliti eſtis ſceleris patrum veſtrorum, ſcele-
ris regum Judæ, & ſceleris uxorum eorum,
quod perpetraverunt in terra Judæ & in pla-
teis Jeroſolymæ: Necdum expiaverunt ſe ad 10
hunc uſque diem, neque timuerunt aut colue-
runt me, neque ambulaverunt in lege mea &
fœdere meo quod dedi eis & majoribus eo-
rum? Idcirco ſic ait Dominus potentiſſimus 11
Deus Iſraelis, Ecce vultu maligno vos re-
ſpiciam, ad extinguendum omnes Judæos:
Conterámque reliquias Judæ qui propoſue- 12
runt ingredi Ægyptum ad peregrinandum
illic: peribunt enim gladio, fame, & peſte;
& erunt execrationi, ſtupori, maledictioni,
atque opprobrio. Et animadvertam in eos 13
qui commorantur in terra Ægypti, quemad-
modum animadverti in Jeroſolymam, gladio,
fame, & peſte:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح التاسع والعشرون * *وارسل الملك صداقيا يواحال بن سالاميو وصفو
بن ماساو الكاهن الي ارميا قايلا. صل من اجلنا الي الرب * فدخل ارميا وجاز وسط المدي
ولم يدعوه الي بيت الحبس * وجيش فرعون خرج من مصر. وسمع الكلدانيون بسماع
وصعدوا عن ايروسليم * *وصار قول الرب الي ارميا قايلا *
* هكذا قال الرب. هكذا تقول لملك يهودا الذي ارسل اليك لتطلبني. ها جيش فر
الخارج لكم للمعونة يرجعون الي ارض مصر * ويعود الكلدانيون الذين يحاربون
الارض * ويأخذوها ويحرقوها بالنار * لان هكذا قال الرب * لا تضلون في نفوسكم قايل
ان الكلدانيين يسرعون وينصرفون عنكم * لانهم لم يذهبوا * وان ضربتم كل ج
الكلدانيين الذين يحاربونكم . ويبقي قوم مجروحون كل واحد في موضعه . ان ه
يقومون ويحرقون هذه المدينة بالنار * وكان لما صعد جيش الكلدانيين عن ايرو
من وجه جيش فرعون * خرج ارميا من ايروسليم ليذهب الي ارض بنيامين . ليبتاع
هناك في وسط شعبه * وصار هو في باب بنيامين . وكان هناك انسان نزل عنده وهو صا
بن سالاميو بن حنانيا . فقبض ارمياء قايلا . الي الكلدانيين انت تهرب * فقال ك
ليس الي الكلدانيين انا اهرب * فلم يسمع منه . واخذ صارييا ارميا وادخله
الروساء * فغضب الروساء علي ارميا وضربوه وارسلوه الي بيت يوناثان الكاتب . لانهم
هذا في بيت الحبس * واتي ارميا الي الجب والي شارات * وجلس اياما كثيرة
صداقيا وادعاه وسأله سرا . الموجود قول من الرب . فقال له موجود . في ايدي ملك
تدفع * وقال ارميا للملك . ماذا اخطيت بك وبعبيدك وبهذا الشعب لانك انت دفع
الي بيت الحبس .

Textus vigeſimus nonus.

Miſit autem rex Sedecia Joachalem Sele- 3
miæ filium, & Sephoniam filium Maaſiæ
ſacerdotem ad Jeremiam, dicens; Ora
pro nobis ad Dominum. Porrò ingredie- 4
batur Jeremia, tranſibátque per mediam
urbem, neque poſuerunt eum in domum
carceris. Interim exercitus Pharaonis 5
prodivit ex Ægypto: & cùm audiſſent
Chaldæi famam illorum, abſceſſerunt ab
Jeruſalem.

Tum factus eſt ſermo Domini 6
ad Jeremiam, dicens;

Sic ait Dominus, Ita dices regi Judæ 7
qui miſit ad te ut me requireres; En ex-
ercitus Pharaonis egreſſus in auxilium ve-
ſtrum, redibunt in terram Ægypti: Et 8
revertentur Chaldæi qui terram hanc op-
pugnant, & capient eam, ignéque combu-
rent. Nam ita dixit Dominus, Ne exi- 9
ſtimetis animis veſtris, dicentes; Chal-
dæos illicò diſceſſuros à vobis, nondum
enim abierunt: Et licèt percuſſeritis to- 10
tum exercitum Chaldæorum qui vos op-
pugnant; tamen remanebunt aliquot vul-
nerati quiſque in loco ſuo; & hi ſur-
gent, & hanc urbem igne comburent.
Factum eſt autem ut cùm diſceſſiſſet ex- 11
ercitus Chaldæorum ab Jeruſalem propter
exercitum Pharaonis, Egrederetur Je- 12
remia è Jeruſalem ut iret in terram Ben-
jaminis ad aliquid inde emendum in me-
dio populi ſui. Cúmque fuiſſet ipſe ad 13
portam Benjaminis, fuit ibi quidam apud
quem diverterat; (nempe Saruias filius
Selemiæ filii Hananiæ) qui comprehen-
dit Jeremiam, dicens; Ad Chaldæos tu
fugis. Reſpondit, Falſum eſt, nequa- 14
quam ad Chaldæos ego fugio. Verùm il-
le non acquievit; ſed captum Saruias
Jeremiam introduxit ad principes. Tunc 15
indignati principes contra Jeremiam, per-
cuſſerunt eum, & miſerunt in domum Jo-
nathanis ſcribæ: hanc enim poſuerant in
domo carceris. Venit ergò Jeremia ad 16
foveam & ad Seeth: cúmque manſiſſet
ibi dies multos, Mittens Sedecia advo- 17
cavit eum, & interrogavit eum ſecretò
num adeſſet ſermo à Domino: Cui dixit,
Adeſt: in manus regis Babelis tradendus
es. Præterea dixit Jeremia ad regem, 18
Qua in re læſi te, aut ſervos tuos, aut
populum iſtum, ut tu tradas me in do-
mum carceris?

ירמיה: מד

ingredientibus , Jehudah residuo superstes & evasor erit non Et
14 ולא יהיה פליט ושריד לשארית יהודה הבאים
, Jehudah terram revertendum ad &, Ægypti terra in ibi peregrinandũ ad
לגור־שם בארץ מצרים ולשוב ארץ יהודה
habitandum ad revertendum ad , suam animam elevantes ipsi quam
אשר־המה מנשאים את־נפשם לשוב לשבת
ipsi responderunt Et .evasores nisi revertentur non quia : ibi
שם כי לא־ישובו כי אם־פלטים: ויענו את־ 15
eorum uxores suffientes quod scientes , viri omnes Irmejahu
ירמיהו כל־האנשים הידעים כי־מקטרות נשיהם
, magno cœtu stantes mulieres universæ & , alienis Diis
לאלהים אחרים וכל־הנשים העמדות קהל גדול
: dicendo ,Pathros in Ægypti terra in habitantes populus omnis &
וכל־העם הישבים בארץ־מצרים בפתרוס לאמר:
audientes nos non ,Domini nomine in nos ad es locutus quod Verbo
16 הדבר אשר־דברת אלינו בשם יהוה איננו שמעים
est egressum quod , verbum omne faciemus faciendo Sed .te ad
17 אליך: כי עשה נעשה את־כל־הדבר אשר־יצא
, libamina ei libando & ,cœlorum reginæ suffiendo ,nostro ore de
מפינו לקטר למלכת השמים והסך־לה נסכים
nostri principes &,nostri reges ,nostri patres & , nos fecimus sicut
כאשר עשינו אנחנו ואבתינו מלכינו ושרינו
, pane sumus saturati & : Jerusalaim plateis in & , Jehudah urbibus in
בערי יהודה ובחצות ירושלם ונשבע־לחם
cessavimus tunc ex Et .vidimus non malum & , boni fuimus &
18 ונהיה טובים ורעה לא ראינו: ומן־אז חדלנו
:omnibus caruimus,libamina ei libare & , cœlorum reginæ suffire
לקטר למלכת השמים והסך־לה נסכים חסרנו כל
suffientes nos cum Et .sumus consumpti fame in & , gladio in &
19 ובחרב וברעב תמנו: וכי־אנחנו מקטרים
præter nunquid , libamina ei libando & , cœlorum opificio
למלכת השמים ולהסך לה נסכים המבלעדי
ei libandum & , eam effingendum ad , effigies ei fecimus nostros viros
אנשינו עשינו לה כונים להעצבה והסך לה
, viros super ,populum omnem ad Irmejahu dixit Et ? libamina
20 נסכים: ויאמר ירמיהו אל־כל־העם על־הגברים
, verbum ei respondentes , populum omnem super & , mulieres super &
ועל־הנשים ועל־כל־העם הענים אתו דבר
, Jehudah civitatibus in suffivistis quem suffitus Nonne : dicendo
21 לאמר: הלוא את־הקטר אשר קטרתם בערי יהודה
, vestri reges , vestri patres & , vos , Jerusalaim plateis in &
ובחצות ירושלם אתם ואבותיכם מלכיכם
, Dominus est recordatus ipsorum , terræ populus & ,vestri principes &
ושריכם ועם הארץ אתם זכר יהוה
ultrà Dominus poterat non Et ? ejus cor super ascendit &
22 ותעלה על־לבו: ולא־יוכל יהוה עוד
,abominationum faciebus à , vestrorum actorum malitiæ faciebus à ferre
לשאת מפני רע מעלליכם מפני התועבת
, stuporem in & ,desolationem in vestra terra fuit & : fecistis quas
אשר עשיתם ותהי ארצכם לחרבה ולשמה
Propterea .hanc diem secundùm habitatore absque , maledictionem in &
23 ולקללה מאין יושב כהיום הזה: מפני
non & , Domino peccaveritis quod & , suffiveritis quod
אשר קטרתם ואשר חטאתם ליהוה ולא
, ejus statutis in & , ejus lege in & , Domini voce in audieritis
שמעתם בקול יהוה ובתרתו ובחקתיו
vobis evenit idcirco : ambulaveritis non ejus testimoniis in &
ובעדותיו לא הלכתם על־כן קראת אתכם
.hanc diem secundùm hoc malum
הרעה הזאת כיום הזה:

Verſio VULG. LAT.

14 Et non erit qui effugiat, & ſit
reſiduus de reliquiis Judæorum,
qui vadunt ut peregrinentur in
terra Ægypti : & revertantur in
terram Juda, ad quam ipſi elevant
animas ſuas ut revertantur,
& habitent ibi : non revertentur
15 niſi qui fugerint. Reſponderunt
autem Jeremiæ omnes
viri, ſcientes quòd ſacrificarent
uxores eorum diis alienis, & universæ
mulieres, quarum ſtabat
multitudo grandis, & omnis popul⁹
habitantium in terra Ægypti
16 in Phatures, dicentes ; Sermonem,
quem locut⁹ es ad nos
in nomine Domini, non audiemus
17 ex te : Sed facientes faciemus
omne verbum quod egredietur
de ore noſtro, ut ſacrificem⁹
reginæ cœli, & libemus ei libamina,
ſicut fecim⁹ nos, & patres
noſtri, reges noſtri, & principes
noſtri, in urbib⁹ Juda, & in
plateis Jeruſalem : & ſaturati
ſumus panib⁹, & benè nobis erat,
18 malúmque non vidim⁹. Ex
eo autem tempore, quo ceſſavimus
ſacrificare reginæ cœli, &
libare ei libamina, indigem⁹ omnibus,
& gladio, & fame con-
19 ſumpti ſumus. Quòd ſi nos ſacrificam⁹
reginæ cœli, & libam⁹
ei libamina : numquid ſine viris
noſtris fecim⁹ ei placentas, ad
colendum eam, & libandum ei
20 libamina ? Et dixit Jeremias
ad omnem populum, adverſùm
viros, & adverſùm mulieres, &
adverſùm univerſam plebem,
qui reſponderant ei verbum, di-
21 cens ; Numquid non ſacrificium,
quod ſacrificâſtis in civitatibus
Juda, & in plateis Jeruſalem,
vos & patres veſtri, reges
veſtri, & principes veſtri, &
popul⁹ terræ, horum recordatus
eſt Dominus, & aſcendit ſuper
22 cor ejus ? Et non poterat Domin⁹
ultrà portare propter malitiam
ſtudiorum veſtrorum, &
propter abominationes quas feciſtis
: & facta eſt terra veſtra in
deſolationem, & in ſtuporem, &
in maledictum, eò quòd non ſit
23 habitator, ſicut eſt dies hæc. Propterea
quòd ſacrificaveritis idolis,
& peccaveritis Domino, &
non audieritis vocem Domini,
& in lege, & in præceptis, & in
teſtimoniis ejus non ambulaveritis
: idcircò evenerunt vobis
mala hæc, ſicut eſt dies hæc.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

18 Καὶ ποῦ εἰσιν οἱ προφῆται ὑμῶν οἱ (τ) προφητεύσαντες
ὑμῖν, λέγοντες, Ὅτι οὐ μὴ ἔλθῃ
βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐπὶ τὴν γῆν ταύτην;
19 Καὶ νῦν (υ) κύριε βασιλεῦ, πεσέτω τὸ
ἔλεός μου κατὰ πρόσωπόν σου· καὶ τί ἀποστρέφεις
με εἰς οἰκίαν Ἰωνάθαν τοῦ γραμματέως;
20 καὶ οὐ μὴ ἀποθάνω ἐκεῖ. Καὶ συνέταξεν
ὁ βασιλεὺς, καὶ ἐνεβάλοσαν αὐτὸν
εἰς οἰκίαν τῆς φυλακῆς, καὶ ἐδίδοσαν αὐτῷ
ἄρτον ἕνα τῆς ἡμέρας, ἔξωθεν οὗ πέσσουσιν,
ἕως ἐξέλιπον οἱ ἄρτοι ἐκ τῆς πόλεως.
καὶ ἐκάθισεν Ἰερεμίας ἐν τῇ αὐλῇ τῆς
φυλακῆς.

Et ubi ſunt prophetæ veſtri, qui prophetabant vobis, dicentes; Quia non veniet rex Babylonis ſuper terram hanc? Et (υ) nunc, domine rex, procidat miſericordia mea ad faciem tuam. Et quid redire me facis in domum Jonathan ſcribæ? & non moriar ibi. Et præcepit rex, & miſerunt eum in domum carceris: & dederunt ei panem unum die de foris, ubi panem faciebant; donec defecerunt panes de civitate. Et ſedit Hieremias in atrio carceris.

MS.A. (τ) προφητεύοντες (υ) κύριέ μου βασιλεῦ, πεσέτω δὴ τὸ

Cap. 38. Vulg.Lat. ΚΕΦ. με'.

1 ΚΑὶ ἤκουσε Σαφανίας υἱὸς
Νάθαν, καὶ Γοδολίας υἱὸς Πασχὼρ, καὶ Ἰωάχαλ
υἱὸς Σελεμίου, τοὺς λόγους οὓς (ʼ) Ἰερεμίας
2 ἐλάλει ἐπὶ τὸν λαὸν, λέγων, Οὕτως εἶπε
κύριος, Ὁ κατοικῶν ἐν τῇ πόλει
ταύτῃ, ἀποθανεῖται ἐν ῥομφαίᾳ, καὶ ἐν λιμῷ·
καὶ ὁ ἐκπορευόμενος πρὸς τοὺς Χαλδαίους,
ζήσεται, καὶ ἔσται ἡ ψυχὴ αὐτοῦ εἰς
3 (α) εὕρημα, καὶ ζήσεται. Ὅτι οὕτως εἶπε
κύριος, Παραδιδομένη παραδοθήσεται ἡ
πόλις αὕτη εἰς χεῖρας δυνάμεως βασιλέως
Βαβυλῶνος, καὶ (β) συλλήψεται
4 αὐτήν· Καὶ (γ) εἶπον τῷ βασιλεῖ, Ἀναιρεθήτω
(ʼʼ) δὴ ὁ ἄνθρωπος ἐκεῖνος, (δ)
ὅτι αὐτὸς ἐκλύει τὰς χεῖρας τῶν ἀνθρώπων
τῶν (ε) πολεμούντων τῶν καταλειπομένων
ἐν τῇ πόλει, καὶ τὰς χεῖρας παντὸς
τοῦ λαοῦ, λαλῶν πρὸς αὐτοὺς κατὰ τοὺς λόγους
τούτους· ὅτι ὁ ἄνθρωπος οὗτος οὐ χρησμολογεῖ
εἰρήνην τῷ (ζ) λαῷ τούτῳ,
5 ἀλλ' ἢ πονηρά. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς,
Ἰδοὺ αὐτὸς ἐν (η) χερσὶν ὑμῶν· ὅτι οὐκ
6 ἠδύνατο ὁ βασιλεὺς πρὸς αὐτούς. Καὶ
ἔρριψαν αὐτὸν εἰς (θ) λάκκον Μελχίου υἱοῦ
τοῦ βασιλέως, ὃς ἦν ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς,
καὶ ἐχάλασαν αὐτὸν εἰς τὸν λάκκον,
καὶ ἐν τῷ λάκκῳ οὐκ ἦν ὕδωρ, ἀλλ' ἢ βόρβορος,
7 καὶ ἦν ἐν τῷ βορβόρῳ. Καὶ ἤκουσεν
Ἀβδεμέλεχ ὁ Αἰθίοψ, καὶ αὐτὸς ἐν οἰκίᾳ
τοῦ βασιλέως, ὅτι ἔδωκαν Ἰερεμίαν
εἰς τὸν λάκκον· καὶ ὁ βασιλεὺς ἦν ἐν τῇ (ʼ) πύλῃ
8 Βενιαμὶν, Καὶ ἐξῆλθε πρὸς αὐτὸν, καὶ
ἐλάλησε πρὸς τὸν βασιλέα, καὶ εἶπεν,
9 Ἐπονηρεύσω, ἃ ἐποίησας τοῦ ἀποκτεῖναι
τὸν ἄνθρωπον τοῦτον, ἀπὸ προσώπου τοῦ λιμοῦ,
ὅτι οὐκ εἰσὶν ἔτι ἄρτοι ἐν τῇ πόλει.
10 Καὶ ἐνετείλατο ὁ βασιλεὺς τῷ Ἀβδεμέλεχ,
λέγων, Λάβε εἰς (ι) τὰς χεῖράς σου
ἐντεῦθεν τριάκοντα ἀνθρώπους, καὶ ἀνάγαγε
αὐτὸν ἐκ τοῦ λάκκου, ἵνα μὴ ἀποθάνῃ.

CAP. XLV.

ET audivit Saphanias filius Nathan, & Godolias filius Paſchor, & Joachal filius (a) Semeliæ, verba, quæ Hieremias loquebatur ad populum, dicens; Sic dixit Dominus. (b) Habitans in civitate iſta morietur in gladio, & in (c) fame: &, qui egreditur ad Chaldæos, vivet: & erit anima ejus in rem inventam, & vivet. Quoniam ſic dixit Dominus; Tradenda tradetur civitas hæc in manus virtutis regis Babylonis, & capiet eam. Et (d) dixerunt regi; Occidatur nunc homo iſte: quia ipſe diſſolvit manus hominum bellantium, qui remanſerunt in civitate, & manus univerſi populi, loquens ad eos juxta verba hæc. Homo enim iſte non (e) vaticinatur pacem populo huic, ſed mala. Et dixit rex, Ecce ipſe in manibus veſtris. Non enim poterat rex adverſùs eos. (f) Et projecerunt eum in lacum Melchiæ filii regis, qui erat in atrio carceris: & demiſerunt (g) eum in lacum: & in lacu non erat aqua, ſed lutum: & fuit in luto. Et audivit Abdemelech (h) Æthiops, & ipſe in domo regis, quia dederant Hieremiam in lacum: et rex erat in porta Benjamin: Et egreſſus eſt ad eum, et loquutus eſt ad regem, et dixit; (i) Malefeciſti, quæ feciſti, interficiendo hominē iſtum à facie famis: quoniã non ſunt amplius panes in civitate. Et mandavit rex Abdemelech, dicens; Tolle in manus tuas hinc triginta homines, et educ eum è lacu, ut non moriatur.

MS.A. (ʼ) ἐλάλησεν Ἰερεμίας ἐπὶ (α) εὕρημα. Ὅτι οὕτως (β) συλλήμψεται (γ) εἶπαν (ʼʼ) ὁ ἄνθρωπος (δ) ὅτι ἐκλύει (ε) πολεμιστῶν τῶν καταλειμμένων ἐπὶ τῷ (ζ) λαῷ, ἀλλ' ἢ (η) ταῖς χερσὶν (θ) τὸν λάκκον (ʼ) αὐλῇ (ι) τὴν χεῖρά σου ἀπ' ἐντεῦθεν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ולא יהי שאר ומשיזיב לשארא דבית יהודה דאתן לאותבא תמן בארעא דמצרים
ולמתב בארעא דבית יהודה דאנון מטען ית נפשהון למתב למתב תמן ארי לא יתובין
15 אלהין משיזבין: ואתיבו ית ירמיה כל גבריא דידעין ארי מסקן בוסמין נשיהון לטעות
עממיא וכל נשיא דקימן קהלא רבא וכל עמא דיתבין בארעא דמצרים בפתרוס
16 למימר: פתגמא דמללתא עמנא בשמא דיי לית אנחנא צבן לקבלא מנך: ארי מעבד
17 נעביד ית כל פתגמא דנפק מפומנא לאסקא בוסמין לכוכבת שמיא ולנסכא לה
נסכין כמא דעבדנא אנחנא ואבהתנא מלכנא ורברבנא בקרויא דבית יהודה ובשוקי
18 ירושלם והוינא סבעין לחמא והוינא שלן שליוא ובישתא לא חזינא: ומן עדן
דאתמנענא לאסקא בוסמין לכוכבת שמיא ולנסכא לה נסכין חסרנא כולא ובחרבא
19 ובכפנא ספנא: וארי אנחנא מסקן בוסמין לכוכבת שמיא ומנסכן לה נסכין הבר
20 מגברנא עבדנא לה כרדיטין לטעותא ומנסכן לה נסכין: ואמר ירמיה לכל עמא
21 לגבריא ולנשיא ועל כל עמא דמתיבין יתיה פתגמא למימר: הלא ית בוסמניא
דאסקתון בקרויא דבית יהודה ובשוקי ירושלם אתון ואבהתכון מלכיכון ורברביכון
22 ועמא דארעא יתהון דכר יי וגלי קדמוהי: ולא הות רעוא קדם יי עוד דלא למשבק מן
קדם בישות עובדיכון מן קדם תועבתא דעבדתון והות ארעכון לחורבא ולצדו וללוטא
23 מבלי יתיב כיומא הדין: מן קדם דאסקתון בוסמין ודחבתון קדם יי ולא קבלתון
למימרא דיי ובאוריתיה ובקימוהי ובסהדותיה לא הלכתון על כן ערעת יתכון בישתא
הדא כיומא הדין:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Nec erit reliquus nec ſuperſtes reliquiis domus Juda, quæ veniunt ad ha- 14
bitandum ibi in terra Ægypti :& ut revertantur in terram dom⁹ Juda, quò
ipſi decipiunt animas ſuas ut *revertantur* & habitent illic ; quia non re-
vertentur niſi qui liberati fuerint. Et reſponderunt Jeremiæ omnes viri 15
qui ſciebant quòd adolerent uxores ſuæ aromata idolis populorum, &
univerſæ mulieres quarum ſtabat multitudo magna, & omnis populus ha-
bitantium in terra Ægypti, in Phatures ; dicentes : Verbum quod locutus 16
es nobiſcum in nomine Dñi, nolum⁹ ſuſcipere à te. Sed faciendo faciemus 17
omne verbum quod egredietur de ore noſtro, ad adolendum aromata ſyderi
cœli, & ad libandum ei libamina, ſicut jam fecimus nos & patres noſtri,
& reges noſtri, & principes noſtri in urbibus domus Juda, & in vicis Je-
ruſalem, & ſaturati ſumus pane, & fuimus abundantes abundantia, & 18
malum non vidimus. Ex eo autem tempore quo ceſſavimus adolere aro-
mata ſyderi cœli, & libare ei libamina ; indiguimus omnibus ; & gladio, 19
& fame conſumpti ſumus. Quod ſi adolemus aromata ſyderi cœli, &
libamus ei libamina, nunquid ſine viris noſtris facimus ei placentas, idolo 20
[*inquam*,] & libam⁹ ei libamina ? Et dixit Jeremias omni populo, viris & 21
mulieribus, & omni populo qui reſponderat ei verbum ; dicendo : Nonne
aromatum quæ adoleviſtis in civitatibus domus Juda, & in vicis Jeruſa-
lem, vos & patres veſtri, & reges veſtri, & principes veſtri, & populus 22
terræ, eorum recordatus eſt Dñs, & nota ſunt coram eo ? Et non placuit
ultrà Dño, ut remitteret, propter malitiam operum veſtrorum, & propter
abominationes quas feciſtis. Et fuit terra veſtra in deſolationem et vaſti- 23
tatem, et in maledictionem abſque habitatore, ſicut in die hac. Propter
id quod adoléſtis aromata ; et quia peccâſtis coram Domino, et non
obedîſtis verbo Domini ; et in lege ejus et in pactis ejus, et in teſtimo-
niis ejus non ambulâſtis : propterea evenit vobis malum hoc, ſicut eſt
dies hæc.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܦܠܝܛܐ ܘܫܪܝܕܐ. ܠܫܪܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܥܐܠܝܢ ܠܡܥܡܪ: ܬܡܢ ܒܐܪ
ܕܡܨܪܝܢ ܘܠܡܗܦܟ ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܗܢܘܢ ܡܣܒܪܝܢ ܒܢܦܫܗܘܢ ܠܡܗܦܟ ܠܡܥܡ
ܠܐ ܢܗܦܟܘܢ܆ ܐܠܐ ܐܢ ܦܠܝܛܐ. * ܘܥܢܘ ܘܐܡܪܘ ܠܐܪܡܝܐ. ܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܕܝܕܥܝܢ ܗܘܘ ܕܡܣܩ
ܗܘܝ ܢܫܝܗܘܢ ܒܣܡܐ ܠܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܘܟܠܗܝܢ ܢܫܐ ܕܩܝܡܢ ܒܟܢܫܐ ܪܒܐ: ܘܟܠܗ ܥܡ
ܕܝܬܒܝܢ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܘܒܦܬܪܘܣ. * ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪܬ ܠܢ. ܒܫܡ
ܕܡܪܝܐ. ܠܐ ܫܡܥܝܢܢ ܠܟ. * ܐܠܐ ܡܥܒܕ ܥܒܕܝܢܢ ܟܠ ܦܬܓܡܐ ܕܢܦܩ ܡܢ ܦܘܡܢ. ܠܡܣܩ
ܒܣܡܐ ܠܚܝܠܗ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܡܢܣܟ ܠܗ ܢܣܟܐ. ܐܝܟ ܕܥܒܕܢ ܚܢܢ ܘܐܒܗܬ
ܘܡܠܟܝܢ ܘܪܘܪܒܢܝܢ. ܒܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܫܘܩܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܣܒܥܝܢ ܗܘܝܢ. ܠܚܡ
ܘܛܒ ܗܘܐ ܠܢ. ܘܒܝܫܬܐ ܠܐ ܚܙܝܢ. * ܘܗܐ ܡܢ ܕܫܠܝܢ ܡܢ ܕܠܡܣܩܘ ܒܣܡܐ ܠܚܝܠ
ܫܡܝܐ: ܘܠܡܢܣܟܘ ܠܗ ܢܣܟܐ: ܚܣܝܪܝܢ ܠܢ ܟܠܡܕܡ. ܘܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܫܠܡ
* ܘܟܠܗܝܢ ܢܫܐ. ܘܐܡܪܝ. ܟܕ ܚܢܢ ܡܣܩܢ ܗܘܝܢ ܒܣܡܐ ܠܡܠܟܬ
ܫܡܝܐ. ܘܡܢܣܟܢ ܗܘܝܢ ܠܗ ܢܣܟܐ. ܠܐ ܗܘܐ ܒܠܥܕ ܓܒܪܝܢ ܥܒܕܢ ܗܘܝܢ ܠܗ
ܠܗ ܓܪܝܨܐ ܘܢܣܟܝܢ ܠܗ ܢܣܟܐ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܟܠܗ ܥܡܐ ܠܓܒ
ܘܠܢܫܐ. ܘܠܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܡܪܘ ܠܗ ܗܠܝܢ ܡܠܐ. * ܗܘ ܒܣܡܐ ܕܣܡܬܘܢ ܒܡܕܝ
ܕܝܗܘܕܐ ܘܒܫܘܩܐ ܕܐܘܪܫܠܡ: ܐܢܬܘܢ ܘܐܒܗܝܟܘܢ ܘܡܠܟܝܟܘܢ ܘܪܘܪܒܢܝܟܘܢ
ܘܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܠܗܘܢ ܐܬܕܟܪ ܡܪܝܐ ܘܣܠܩ ܥܠ ܠܒܗ. * ܘܠܐ ܡܫܟܚ ܗܘܐ ܡܪܝܐ ܠܡܫܒܩ
ܠܟܘܢ. ܡܛܠ ܒܝܫܘܬܐ ܕܥܒܕܝܟܘܢ. ܘܡܛܠ ܛܢܦܘܬܐ ܕܥܒܕܬܘܢ. ܘܗܘܬ ܐܪܥܟܘܢ
ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܬܘܗܪܐ ܘܠܠܘܛܬܐ. ܡܢ ܕܠܐ ܥܡܘܪܐ ܐܝܟ ܝܘܡܢܐ. * ܡܛܠ ܕܣܡܬܘܢ
ܒܣܡܐ ܘܚܛܝܬܘܢ ܠܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܫܡܥܬܘܢ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܒܢܡܘܣܗ ܘܒܩܝܡܗ
ܘܒܣܗܕܘܬܗ ܠܐ ܗܠܟܬܘܢ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܪܥܬܟܘܢ ܒܝܫܬܐ ܗܕܐ ܐܝܟ ܝܘܡܢܐ.

Adeóque non erit qui evadat aut ſuperſit è 14
reliquiis Judæ ingredientibus ad commorandum
ibi in terra Ægypti: & in terram Judæ,
quò iſti ſibi perſuadent ſe rediturus, redeundo
nequaquam redibunt niſi pauci. Re- 15
ſpondentes autem dixerunt Jeremiæ omnes
viri qui ſciebant uxores ſuas adolere thura
diis alienis, & omnes mulieres quæ magno
cœtu aſtabant, totúſque populus qui degebant
in terra Ægypti & in Phathros; Dixe- 16
runt inquam, illi; Sermonem quem nobis retuliſti
nomine Domini, non recipiemus à te:
Sed faciemus omnem ſermonem qui egreſſus 17
eſt ex ore noſtro, adolendo thura exercitui
cœleſti, & libando ei libamina, quemadmodum
fecimus nos & majores noſtri, reges ac
principes noſtri in civitatibus Judæ & in
plateis Jeroſolymorum. Tum enim ſaturabamur
pane, fœlices eramus, nec ullum malum
experiebamur: Jam verò ex quo ceſſavimus 18
adolere exercitui cœleſti, eíque libare libamina;
omnium rerum facti ſumus indigi, &
gladio ac fame conſumpti. Reſponderunt 19
quoque mulieres omnes, ac dixerunt; Quando
nos thura adolebam⁹ reginæ cœli, & libabamus
ei libamina, non abſque maritis noſtris
fecimus ei lagana & libavimus ei libamina.
Dixit autem Jeremia toti populo viris atque 20
mulieribus, toti turbæ quæ talibus eum verbis
allocuta fuerat; Illius aromatũ ſuffitûs quem 21
adoleviſtis in civitatibus Judæ & plateis Jeroſolymorũ,
vos & majores veſtri, & reges ac
principes veſtri, terræque populus; illiuſmet
recordatus eſt Dñs, ejuſque animo ſubiit:
Cúmque non poſſet Dominus ampliùs condonare 22
vobis propter nequitiam facinorum
veſtrorum, & propter abominationem quam
feciſtis, fuit terra veſtra ſtupori, maledictioni,
atque vaſtitati, habitatoribus exhauſta, ut eſt
hodie. Eò quòd thus adoleviſtis, & peccaviſtis 23
in Dominum, non obtemperâſtis voci
Domini, & ſecundùm legem, fœdus, & teſtimonia
ejus non ambulâſtis, idcirco aſſecutum
eſt vos tale malum quale eſt hodiernum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* فاين هم انبياوكم الذين يتنبون لكم * قايلين ان ملك بابل لا ياتي على هذه الارض
* والان يا سيدي الملك لتسقط رحمتي لوجهك * ولا تردني الي بيت يوناثان الكاتب * ولا اموت
هناك * وامر الملك فالقوه في بيت الحبس * واعطوه خبز واحد كل يوم من الخارج * ولا
يخبزون * الي ان فني الخبز من المدينة * وجلس ارميا في دار الحبس *

* الفصل الخامس والاربعون *

* وسمع صافانياس بن ناثان * وعودلياس بن فسحور * ويواخال بن سالاميو الاقوال التي تكلم
بها ارميا على الشعب قايلا * هكذا قال الرب * الساكن في هذه المدينة يموت بالسيف
والجوع * والخارج الي الكلدانيين تعيش وتصير نفسه في الوجود * لان هكذا قال الرب
مدفوعة تدفع هذه المدينة الي ايدي جيش ملك بابل وياخذوها * فقالوا للملك ليقتل
ذلك الانسان * لانه يرخي ايدي الناس المحاربين المتبقين في المدينة وايدي جميع
الشعب * اذ يتكلم معهم بمثل هذه الاقوال * لان هذا الانسان لا يخبر بسلامة لهذا الشعب
لكن بشرور * فقال الملك ها هو في ايديكم * لان الملك لم يقدر لهم * فطرحوه في جب
ملشيو بن الملك الذي هو في دار الحبس * ودلوه الي الجب * ولم يكن في الجب ماء لكن
حماة * وكان في الحماة * فسمع ابداملاخ الحبشي وهو في بيت الملك * انهم دفعوا ارميا
الي الجب * وكان الملك في دار بنيامين * فخرج اليه وتكلم مع الملك وقال * اسات بالذي
صنعته لتقتل هذا الانسان من وجه الجوع * لان ليس خبز موجود في المدينة ايضا
* فامر الملك ابداملاخ قايلا * خذ بيدك من هاهنا ثلثين انسانا * واصعده من الجب
لكيلا يموت *

ubinam ſunt prophetæ veſtri qui prophetant 19
vobis, dicentes; Regem Babelis nequaquam
venturum contra terram iſtam?
Nunc itaque O domine mi rex, contingat 20
mihi miſericordia apud te, & ne me remittas
in domum Jonathanis ſcribæ, ne
moriar illic. Quare jubente rege con- 21
jecerunt eum in domum carceris, & dabant
ei panem unum ſingulis diebus ab
extra (non enim coquebant panem in carcere)
donec defeciſſet panis ab urbe: manſitque
Jeremia in atrio carceris.

CAP. XLV.

Cum autem audîſſent Sephanias filius 1
Nathanis, Godolias filius Phashoris,
& Joachal filius Selamiæ ſermones quos
locutus fuerat Jeremia contra populum,
dicens; Ita dixit Dominus, Qui man- 2
ſerit hac in urbe, gladio vel fame peribit:
qui autem exierit ad Chaldæos, hujus
anima vivet & ſuperſtes erit. Nam ita 3
dixit Dominus, Certiſſimè tradetur
hæc urbs in manus exercitûs regis Chaldæorum,
& capient eam: Dixerunt 4
ad regem, Occidatur hujuſmodi homo,
quia remittit manus hominum bellatorum
qui reliqui ſunt in urbe, & manus
totius populi, alloquendo eos hujuſcemodi
ſermonibus: quandoquidem
is homo nullam huic populo pacem,
ſed mala prædicit: Dixit rex; Ecce in 5
manibus veſtris eſt: rex enim non potuit
reſiſtere eis. Itaque conjecerunt eum in 6
lacum Melchiæ filii regis, qui eſt in atrio
carceris, demittentes eum in lacum: in
eo autem lacu non erat aqua, ſed lutum
fœtidum: erat igitur in luto fœtido. Au- 7
diens autem Abdemelech Æthiops (& is
erat in domo regia) conjectum fuiſſe Jeremiam
in lacum: dum eſſet rex in atrio
Benjaminis, Adivit eum; & re- 8
gem allocutus dixit; Delinquis in eo 9
quod agis, hominem iſtum fame enecando,
cùm non extet ampliùs panis in urbe.
Tunc præcepit rex Abdemelecho, dicens; 10
Ducito iſtinc manu tuâ triginta homines,
eúmque è lacu extrahito, ne moriatur.

ירמיה : מה

: mulieres universas ad & , populum omnem ad Irmejahu dixit Et
24 ויאמר ירמיהו אל־כל־העם ואל כל־הנשים
.Ægypti terra in qui , Jehudah omnis Domini verbum Audite
שמעו דבר־יהוה כל־יהודה אשר בארץ מצרים:
: dicendo , Israel Deus exercituum Dominus dixit Sic
25 כה־אמר יהוה־צבאות אלהי ישראל לאמר
vestris manibus *in* & , vestro ore *in* estis *locutæ &* , vestræ uxores & , Vos
אתם ונשיכם ותדברנה בפיכם ובידיכם
vovimus quæ , nostra vota faciemus Faciendo : dicendo , implestis
מלאתם לאמר עשה נעשה את־נדרינו אשר נדרנו
: libamina ei *Libandum ad* & , cœlorum *opificio suffiendum ad*
לקטר למלכת השמים ולהסך לה נסכים
fecistis faciendo & , vestra vota confirmastis confirmando
הקים תקימנה את־נדריכם ועשה תעשינה
Jehudah omnis Domini verbum audite Ideo .vestra vota
26 את־נדריכם: לכן שמעו דבר־יהוה כל־יהודה
, magno meo nomine in juravi ego Ecce : Ægypti terra in *habitatores*
הישבים בארץ מצרים הנני נשבעתי בשמי הגדול
omnis ore in vocatum meum nomen ultra erit si , Dominus dixit
אמר יהוה אם־יהיה עוד שמי נקרא בפי כל־
terra omni in DEUS Dominus *Vivens* : dicentis ,Iehudah viri
איש יהודה אמר חי־אדני יהוה בכל־ארץ
: bonum in non & , malum in eos super *vigilans* ego Ecce .Ægypti
27 מצרים: הנני שקד עליהם לרעה ולא לטובה
, gladio in Ægypti terra in qui , Jehudah *vir omnis* consumetur &
ותמו כל־איש יהודה אשר בארץ־מצרים בחרב
terra è revertentur gladii evasores Et.*eos consumendum ad usque* ,fame in &
28 וברעב עד־כלותם: ופליטי חרב ישבון מן־ארץ
residuum omne scient Et .*numeri viri* Jehudah terram Ægypti
מצרים ארץ יהודה מתי מספר וידעו כל־שארית
verbum , ibi peregrinandum ad, Ægypti terram in *ingredientes* ,Jehudah
יהודה הבאים לארץ־מצרים לגור שם דבר־
,Dominus ait , signum vobis hoc Et .*ipsis ab & me à* , *stabit* cujus
29 מי יקום ממני ומהם: וזאת־לכם האות נאם־יהוה
quia , sciatis ut : isto loco in vos *super ego visitans* quod
כי־פקד אני עליכם במקום הזה למען תדעו כי
Sic .malum in vos super mea verba confirmabuntur confirmando
30 קום יקומו דברי עליכם לרעה: כה
, Ægypti regem Chophrah Parhoh *dans* ego Ecce : Dominus dixit
אמר יהוה הנני נתן את־פרעה חפרע מלך־מצרים
sicut , ejus animam quærentium manum in &,ejus inimicorum manum in
ביד איביו וביד מבקשי נפשו כאשר
Nebuchadresar manum in Jehudah regem Sidchijahu tradidi
נתתי את־צדקיהו מלך־יהודה ביד נבוכדראצר
.ejus animam quærentis & ,sui inimici Babel regis
מלך־בבל איבו ומבקש נפשו:

CAP. XLV. מה

Baruch ad propheta Irmejahu est locutus quod Verbum
1 הדבר אשר דבר ירמיהו הנביא אל־ברוך
ore ex libro *super* hæc verba *ipso scribendo in*, Nerijah filium
בן־נריה בכתבו את־הדברים האלה על־ספר מפי
regis Josijahu filii Jehojachim quarto anno in Irmejahu
ירמיהו בשנה הרבעית ליהויקים בן־יאשיהו מלך
, Israel Deus Dominus dixit Sic : dicendo , Jehudah
2 יהודה לאמר: כה־אמר יהוה אלהי ישראל
addidit quoniam ,mihi nunc Væ : Dixisti .Baruch te Ad
3 עליך ברוך: אמרת אוי־נא לי כי־יסף
requiem & , meo gemitu in laboravi,meum dolorē super *mærorem* Domin⁹
יהוה יגון על־מכאבי יגעתי באנחתי ומנוחה
.inveni non
לא מצאתי:

Versio VULG. LAT.

24 Dixit autem Jeremias ad omnem populum, & ad universas mulieres; Audite verbum Domini omnis Juda, qui estis in terra Ægypti: 25 Hæc inquit Dominus exercituum, Deus Israel, dicens; Vos, & uxores vestræ, locuti estis ore vestro, & manibus vestris impléstis, dicentes; Faciamus vota nostra, quæ vovimus, ut sacrificemus reginæ cœli, & libemus ei libamina: impléstis vota vestra, & opere perpetrástis 26 ea. Ideò audite verbum Domini, omnis Juda, qui habitatis in terra Ægypti: Ecce ego juravi in nomine meo magno, ait Dominus; quia nequaquàm ultrà vocabitur nomen meum ex ore omnis viri Judæi, dicentis; Vivit Domin⁹ Deus in omni terra Æ-27 gypti. Ecce ego vigilabo super eos in malum, & non in bonum: & consumentur omnes viri Juda, qui sunt in terra Ægypti, gladio & fame, donec penitùs 28 consumantur. Et qui fugerint gladium, revertentur de terra Ægypti in terram Juda viri pauci: & scient omnes reliquiæ Juda ingredientium terram Ægypti, ut habitent ibi, cujus sermo compleatur, meus, an illo-29 rum. Et hoc vobis signum, ait Dominus, quòd visitem ego super vos in loco isto: ut sciatis quia verè complebuntur sermones mei contra vos in malum. 30 Hæc dixit Dominus; Ecce ego tradam Pharaonem Ephree regem Ægypti in manu inimicorum ejus, & in manu quærentium animam illius: sicut tradidi Sedeciam regem Juda in manu Nabuchodonosor regis Babylonis inimici sui, & quærentis animam ejus.

CAP. XLV.

1 Verbum, quod locutus est Jeremias propheta ad Baruch filium Neriæ, cùm scripsisset verba hæc in libro ex ore Jeremiæ, anno quarto Joakim filii Josiæ re-2 gis Juda, dicens; Hæc dicit Dominus Deus Israel ad te, Ba-3 ruch; Dixisti; Væ misero mihi, quoniam addidit Dominus dolorem dolori meo: laboravi in gemitu meo, & requiem non inveni.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 Καὶ ἔλαβεν Ἀβδεμέλεχ τοὺς ἀνθρώπους, καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν οἰκίαν τοῦ βασιλέως τὴν ὑπόγαιον, καὶ ἔλαβεν ἐκεῖθεν παλαιὰ ῥάκη καὶ παλαιὰ σχοινία, καὶ ἔρριψεν αὐτὰ πρὸς 12 (θ) Ἱερεμίαν εἰς τὸν λάκκον, Καὶ εἶπε, Ταῦτα θὲς ὑποκάτω τῶν σχοινίων. καὶ ἐποίησεν (ι) Ἱε-13 ρεμίας οὕτως. Καὶ εἵλκυσαν αὐτὸν (κ) τοῖς σχοινίοις, καὶ ἀνήγαγον αὐτὸν ἐκ τοῦ λάκκου. καὶ ἐκάθισεν (λ) Ἱερεμίας ἐν τῇ αὐλῇ 14 τῆς φυλακῆς. Καὶ ἀπέστειλεν ὁ βασιλεὺς, καὶ ἐκάλεσεν αὐτὸν πρὸς ἑαυτὸν εἰς οἰκίαν (μ) ἀσελεισὴλ, τὴν ἐν οἴκῳ κυρίου· καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, Ἐρωτήσω σε λόγον, καὶ (ν) μὴ δὴ κρύψῃς ἀπ' ἐμοῦ ῥῆ-15 μα. Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας τῷ βασιλεῖ, Ἐὰν ἀναγγείλω σοι, οὐχὶ (ξ) θανάτῳ με θανατώσεις; καὶ ἐὰν συμβουλεύσω σοι, 16 οὐ μὴ (ο) ἀκούσῃς μου; Καὶ ὤμοσεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, λέγων, Ζῇ κύριος, ὃς ἐποίησεν ἡμῖν τὴν ψυχὴν ταύτην, εἰ ἀποκτενῶ σε, καὶ εἰ (π) δώσω σε εἰς χεῖρας τῶν ἀν-17 θρώπων τούτων. Καὶ εἶπεν αὐτῷ Ἱερεμίας, Οὕτως εἶπε κύριος, Ἐὰν ἐξελθὼν ἐξέλθῃς πρὸς ἡγεμόνας βασιλέως Βαβυλῶνος, (ρ) ζήσεται ἡ ψυχή σου, καὶ ἡ πόλις αὕτη οὐ μὴ κατακαυθῇ ἐν πυρὶ, καὶ ζήσῃ 18 σὺ καὶ ἡ οἰκία σου. Καὶ ἐὰν μὴ ἐξέλθῃς, (σ) δοθήσεται ἡ πόλις αὕτη εἰς χεῖρας (τ) τῶν Χαλδαίων, καὶ καύσουσιν αὐτὴν ἐν 19 πυρὶ, καὶ σὺ οὐ μὴ σωθῇς. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ Ἱερεμίᾳ, Ἐγὼ λόγον ἔχω τῶν Ἰουδαίων τῶν πεφευγότων πρὸς τοὺς Χαλδαίους, μὴ δῶσιν με εἰς χεῖρας αὐτῶν, καὶ 20 καταμωκήσονταί μου. Καὶ εἶπεν Ἱερεμίας, Οὐ μὴ (υ) παραδῶσίν σε· ἄκουσον τὸν λόγον κυρίου, ὃν ἐγὼ λέγω πρὸς σὲ, καὶ βέλτιον ἔσται σοι, καὶ ζήσεται ἡ ψυχή σου. 21 Καὶ εἰ μὴ (φ) θέλῃς σὺ ἐξελθεῖν, οὗτος ὁ 22 λόγος ὃν ἔδειξέ μοι κύριος· Καὶ ἰδοὺ πᾶσαι αἱ γυναῖκες αἱ καταλειφθεῖσαι ἐν οἰκίᾳ βασιλέως Ἰούδα, ἐξήγοντο πρὸς ἄρχοντας βασιλέως Βαβυλῶνος· καὶ αὗται ἔλεγον, (χ) Ἠπάτησάν σε, καὶ δυνήσονταί σοι ἄνδρες εἰρηνικοί σου· καὶ καταλύσουσιν ἐν ὀλισθήμασι (ψ) πόδα σου, 23 ἀπέστρεψαν ἀπὸ σοῦ, Καὶ τὰς γυναῖκάς σου, καὶ τὰ τέκνα σου ἐξάξουσιν πρὸς τοὺς Χαλδαίους. καὶ σὺ οὐ μὴ σωθῇς, ὅτι (ω) ἐν χειρὶ βασιλέως Βαβυλῶνος (α) συλληφθήσῃ, καὶ ἡ πόλις αὕτη κατακαυθήσεται. 24 Καὶ εἶπεν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς, Ἄνθρωπος μὴ γνώτω ἐκ τῶν λόγων τούτων, καὶ σὺ οὐ 25 μὴ ἀποθάνῃς. Καὶ ἐὰν (β) οἱ ἄρχοντες ἀκούσωσιν, ὅτι ἐλάλησά σοι, καὶ ἔλθωσι πρὸς σὲ, καὶ εἴπωσίν σοι, Ἀνάγγειλον ἡμῖν, τί ἐλάλησέ σοι ὁ βασιλεὺς, (γ) μὴ κρύψῃς ἀφ' ἡμῶν, καὶ οὐ μὴ ἀνέλωμέν σε, καὶ τί ἐλάλησε πρὸς σὲ ὁ βασιλεύς;

Et assumpsit Abdemelech homines, & ingressus est in domum regis subterraneam, & sumpsit inde veteres pannos, & veteres funiculos, & projecit ea ad Hieremiam in lacum, 11 *Et dixit; Ista pone sub funiculis. Et fecit Hieremias ita.* 12 *Et traxerunt eum funiculis, & eduxerunt eum e lacu. Et sedit Hieremias in atrio carceris.* 13 *Et misit rex, & vocavit eum ad se in domum (k) Aselisel, quæ in domo Domini. Et dixit ei rex; Interrogabo te sermonem: & ne abscondas, quæso, à me verbum. Et dixit Hieremias regi;* 14 *Si annuntiavero tibi; nunquid morte me mortificabis? & si consilium dedero tibi; nunquid audies me?* 15 *Et juravit ei rex, dicens; Vivit Dominus, qui fecit nobis animam hanc: si interfecero te, & si dabo te in manus hominum istorum.* 16 *Et dixit ei Hieremias, Sic dixit Dominus; Si exiens exiveris ad Duces regis Babylonis; vivet anima tua, & civitas hec non comburetur in igni, et vives tu, et domus tua.* 17 *Quòd si non exieris: dabitur civitas hæc in man⁹ Chaldæorum, et incendent eam in igne, & tu non salvaberis.* 18 *Et dixit rex Hieremiæ; Ego rationem habeo Judæorum, qui fugerunt ad Chaldæos, ne daturi sint me in manus eorum: et illudent mihi.* 19 *Et dixit Hieremias, Non tradent te. Audi verbum Domini, quod ego dico ad te: et melius erit tibi, et vivet anima tua.* 20 *Quòd si nolueris tu exire; iste est sermo quē ostendit mihi Dominus.* 21 *Et ecce omnes mulieres, quæ remanserunt in domo regis Juda, educte sunt ad principes regis Babylonis: et hæ dicebant; Seduxerunt te, et (l) prævalebunt tibi viri pacifici tui. Et (m) deponent in lubricis pedem tuum; recesserunt à te:* 22 *Et uxores tuas, et filios tuos educent ad Chaldæos: et tu non salvaberis: quia in manu regis Babylonis capieris: et civitas hæc comburetur.* 23 *Et dixit ei rex, Homo non sciat de verbis his: et tu non morieris.* 24 *Quòd si principes audierint, quia loquutus sum tibi, et venerint ad te, et dixerint tibi, Annuntia nobis, quid loquutus est tibi rex, ne celes à nobis, et non interficiemus te; et quid loquutus est ad te rex;* 25

MS. A. (θ) τὸν Ἱερεμίαν (ι) Ἰηρεμίας (κ) ἐν τοῖς (λ) Ἰηρεμίας ἐν αὐλῇ (μ) Σεδαθιὴλ, (ν) μὴ κρύψῃς (ξ) θανατώσεις με; (ο) μου ἀκούσῃς; (π) παραδώσω (ρ) καὶ ζήσεται (σ) παραδοθήσεται (τ) βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ (υ) παραδώσουσίν σε· ἄκουσον λόγον (φ) βούλῃ (χ) * Ἠπάτησέν σε, (ψ) πόδας σου, καὶ ἀπέστρεψαν ἀπὸ σοῦ, Καὶ τὰ τέκνα σου, καὶ τὰς γυναῖκάς σου (ω) εἰς χεῖρας (α) παραδοθήσῃ, (β) ἀκούσωσιν οἱ ἄρχοντες, (γ) μὴ δὴ κρύψῃς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

24 ואמר ירמיה לכל עמא ולכל נשיא קבילו פתגמא דיי כל דבית יהודה די בארעא
25 דמצרים : כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל למימר אתון ונשיכון ונזרתון בפומכון
וברעותכון קימתון למימר מעבד נעביד ית נדרנא די נדרנא לאסקא בוסמין לכוכבית
שמיא ולנסכא ליה נסכין אקמא תקימון ית נדריכון ומעבד תעבדון ית נסכיכון :
26 בכן קבילו פתגמא דיי כל דבית יהודה דיתבין בארעא דמצרים הא אנא קימית בשמי
רבא אמר יי אם יהי עוד שמי מתקרי בפום כל אנש יהודה אמר קים הוא יי אלהים
27 בכל ארעא דמצרים : הא אנא מסער עליהון לבישא ולא לטבא ויסופון כל אנש
28 יהודה די בארעא דמצרים בחרבא ובכפנא עד דישתיצון : ומשיזבי חרבא יתובון מן
ארעא דמצרים לארעא דבית יהודה עם דמנין וידעון כל שארא דבית יהודה דאתן
29 לארעא דמצרים לאתותבא תמן פתגם דמן יתקים אם דילי ואם די להון : ודא לכון
אתא אמר יי ארי אנא מסער עליכון באתרא הדין בדיל דתדעון ארי אתקימא יתקימון
30 פתגמי עליכון לבישא : כדנן אמר יי הא אנא מסר ית פרעה חבירא מלכא דמצרים ביד
בעלי דבבוהי וביד דבען למקטליה כמא דמסרית ית צדקיהו מלכא דשבטא דבית
יהודה ביד נבוכד נצר מלכא דבבל בעיל דבביה ודבעא למקטליה :

מה

1 פתגם נבואה דאתנבי ירמיה נביא על ברוך בר נריה כד כתב ית פתגמיא האלין על
ספרא מפומא דירמיה בשתא רביעיתא ליהויקים בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה
2 למימר : כדנן אמר יי אלהא דישראל עלך ברוך : אמרת וי כען לי ארי אוסיף יי
3 דון על תברי לאיתי בתנחתי ונבואה לא אשכחית :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et dixit Jeremias omni populo, & omnibus mulieribus: Suscipite verbum 24 Dñi omnes viri domus Juda, qui estis in terra Ægypti. Hæc dicit Dñs 25 exercituum Deus Israel; dicendo: Vos & uxores vestræ decrevistis ore vestro, & voluntate vestra præstitistis; dicentes: Faciendo faciamus vota nostra quæ vovimus, ut adoleamus aromata syderi cœli, & libemus ei libamina: firmando firmatis vota vestra, & faciendo facitis *libamina* vestra. Propterea suscipite verbum Dñi omnes viri domus Juda, qui habita- 26 tis in terra Ægypti: Ecce ego juravi in nomine meo magno, dicit Dñs, Si fuerit ultrà nomen meum invocatum in ore omnis viri domus Juda, dicentis, Vivus est Dñs Deus, in universa terra Ægypti. Ecce ego visito su- 27 per eos in malum, & non in bonum; & consumentur omnes viri Juda, qui sunt in terra Ægypti, in gladio, & in fame; donec dispereant. Et qui 28 liberati fuerint à gladio, revertentur de terra Ægypti in terram domus Juda, populus numeri: & scient omnes reliquiæ domus Juda, quæ ingressæ sunt in terram Ægypti ut habitent ibi, cujus verbum firmabitur, meum an illorum. Et hoc erit vobis signum, dicit Dñs, quòd visitaturus 29 sim super vos in loco isto, ut sciatis, quia confirmatione confirmabuntur sermones mei contra vos in malum. Hæc dicit Dñs: Ecce ego tradam Pha- 30 raonem *fractum* regem Ægypti in manum inimicorum suorum, & in manum quærentium occidere eum, sicut tradidi Sedechiam regem tribus domus Juda in manum Nabuchodonosor regis Babylonis inimici sui, & quærentis occidere eum.

CAP. XLV.

Verbum prophetiæ quam prophetavit Jeremias propheta de Baruch 1 filio Neriæ; quando scripsit verba hæc in libro ex ore Jeremiæ, anno quarto Joachim filii Josiæ regis tribus domus Juda; dicendo: Hæc dicit Dñs 2 Deus Israel super te Baruch. Dixisti, Væ nunc mihi, quoniam addidit Dñs 3 dolorem super contritionem meam: laboravi in gemitu meo, & prophetiam non inveni.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܟܠܗ ܥܡܐ ܠܓܒܪܐ ܘܠܢܫܐ. ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܠܗ
ܝܗܘܕܐ ܕܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢܬܘܢ ܘܢܫܝܟ
ܐܡܪܬܘܢ ܒܦܘܡܟܘܢ ܘܒܐܝܕܝܟܘܢ ܫܡܠܝܬܘܢ. ܘܐܡܪܬܘܢ ܢܫܡ ܢܕܪܝܢ ܕܢܕܪܢ. ܠܡܣܡ
ܒܣܡܐ ܠܚܝܠܗ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܡܢܣܟܘ ܠܗ ܢܣܟܐ. ܐܩܝܡܬܘܢ ܡܘܡܬܟܘܢ. ܘ
ܢܕܪܝܟܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܟܠܗ ܝܗܘܕܐ ܕܝܬܒܝܢ ܒܐܪ
ܕܡܨܪܝܢ. ܗܐ ܐܢܐ ܝܡܐ ܒܫܡܝ ܪܒܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܠܐ ܢܗܘܐ ܬܘܒ ܫܡܝ ܡܬܩܪܐ ܒܦܘܡܗܘܢ ܕ
ܝܗܘܕܝܐ ܕܒܟܠܗ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܘܠܐ ܢܐܡܪܘܢ. ܚܝܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܐܢܐ ܓܝܪ
ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ ܒܝܫܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܢܣܘܦܘܢ ܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܕܝܗܘܕܐ ܕܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪ
ܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܓܡܪ ܐܢܘܢ. * ܘܦܠܝܛܝ ܚܪܒܐ ܢܗܦܟܘܢ
ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܙܥܘܪܐ ܒܡܢܝܢܐ. ܘܢܕܥܘܢ ܟܠܗ ܫܪܟܐ ܕܝܗܘܕܐ
ܠܡܥܡܪ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܦܬܓܡ ܡܢ ܢܩܘܡ. ܕܝܠܝ ܐܘ ܕܝܠܗܘܢ. * ܘܗܕܐ ܠܟܘܢ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܐܦܩܘܕ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܕܬܕܥܘܢ. ܕܩܘܡ ܡܠܝ ܥܠܝܟܘܢ. ܠܒܝܫ
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܗ ܠܦܪܥܘܢ ܚܓܝܪܐ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܒ
ܕܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܘܒܐܝܕܐ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗ. ܐܝܟ ܕܐܫܠܡܬ ܠܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘ
ܒܐܝܕܐ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܒܥܠܕܒܒܗ ܘܒܥܐ ܢܦܫܗ.

* Dixit præterea Jeremia toti illi populo, viris 24
atque mulieribus, Audite ſermonem Domini
omnes Judæi qui eſtis in terra Ægypti : Sic 25
ait Dñs potentiſſimus Deus Iſraelis, Vos &
uxores veſtræ ore veſtro dixiſtis, & manibus
veſtris perfeciſtis : Dixiſtis inquam, Præſtabimus vota noſtra quæ vovimus, adolendo
thura exercitui cœleſti, & libando ei libamina: præſtitiſtis juramenta veſtra, & vota veſtra perfeciſtis. Propterea audite ſermonem 26
Dñi ô univerſi Judæi qui commoramini in
terra Ægypti : Ecce ego juro per nomen meum maximum, ait Dñs, haud futurum ampliùs
nomen meum in ore Judæorũ qui ſunt in tota terra Ægypti, neque dicturos, Vivat Dominus Deus. Ego enim accelerabo ſuper eos 27
malum, ait Dominus, & peribunt omnes viri
Judæ qui ſunt in terra Ægypti, gladio, fame,
& peſte, donec abſumam eos : Et qui gladiũ 28
effugient, remeabunt è terra Ægypti in terram Judæ, pauci numero. Ita ſcient omnes
reliqui Judæi qui abierunt commoratum in
terra Ægypti, cujuſnam ſermo ſit verus, meus
an ipſorum. Hoc autem vobis eſto ſignum, 29
ait Dominus, me animadverſurum eſſe in vos
hoc in loco ; ut ſciatis vera fore verba mea
contra vos in malum : Sic ait Dominus, Ecce 30
ego traditurus ſum Pharaonem claudum regem Ægypti in manum inimicorum ejus, &
in manum quærentium animam ipſius; quemadmodum tradidi Sedeciam regem Judæ in
manum Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ
inimici ipſius & quærentis animam ipſius.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܗ *

CAP. XLV.

* ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܒܪܘܟ ܒܪ ܢܪܝܐ. ܟܕ ܟܬܒ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܒܟܬܒܐ ܡ
ܦܘܡܗ ܕܐܪܡܝܐ. ܒܫܢܬܐ ܕܐܪܒܥ ܠܝܘܝܩܝܡ ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܟܕ ܐ
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܥܠܝܟ ܒܪܘܟ. * ܐܡܪܬ ܘܝ ܠܝ ܕܐܘܣ
ܡܪܝܐ ܟܘܪܗܢܐ ܥܠ ܟܐܒܝ. ܠܐܝܬ ܒܬܢܚܬܝ ܘܢܝܚܐ ܠܐ ܐܫܟܚܬ.

* SErmo quem dixit Jeremia Barucho Neriæ 1
filio, cùm ſciberet ſermones iſtos in libro
dictante Jeremiâ, anno quarto Jojacimi filii
Joſiæ regis Juda, dicendo ; Sic ait Dominus 2
potentiſſimus Deus Iſraelis de te ô Baruch :
* Dixiſti, Me miſerum, quoniam adjecit Do- 3
minus afflictionem dolori meo : gemendo
feſſus ſum, nec ullam reperio quietem.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* فاحذ ابدامالاخ الناس ودخل الي بيت الملك السفلي واخذ من هناك خرقا بالية وحبا
بالية وطرحها الي ارميا في الجب * وقال ضع هذه تحت الحبال فصنع ارميا هكذا * وجذبو
بالحبال واصعدوه من الجب وجلس ارميا في دار الحبس * وارسل الملك فاستدعاه اليه
بيت صالاسيل الذي في بيت الرب وقال له الملك اسالك قولا فلا تخف عني كلمة * فقا
ارميا للملك ان اخبرتك اليس تقتلني وان اشرت عليك ليس تسمع مني * فحلف له المل
قايلا حي الرب الذي صنع هذه النفس لنا لا اقتلك ولا اسلمك الي ايدي هولا
الناس * فقال له ارميا هكذا قال الرب ان خرجت خارجا الي قواد ملك بابل فتحيي نفسك
ولا تحرق هذه المدينة بالنار وتعيش انت وبيتك * وان لم تخرج تسلم هذه المدينة
ايدي ملك بابل فيحرقوها بالنار وانت لا تخلص * فقال الملك لارميا انا عندي كلا
من اليهود الهاربين الي الكلدانيين ليلا يدفعوني الي ايديهم فيستهزون بي * فقال
يسلمونك اسمع قول الرب الذي انا اقوله لك ويكون لك الخير وتحيي نفسك * وان
ترد انت ان تخرج هذا القول الذي اظهر لي الرب * وها جميع النسوة المتبقيات في بيت
ملك يهودا يخرجن الي روساء ملك بابل وهن يقلن اضلك وتقوي عليك الرج
المسالمون لك ويحلون في الزلق رجليك ويرجعون عنك * واولادك ونساءك يخرجوهم
الكلدانيين وانت لا تخلص لانك الي ايدي ملك بابل تدفع وهذه المدينة تحر
* فقال له الملك انسان لا يعلم من هذه الاقوال بشي وانت فما تموت * وان سمع
الروساء انني تكلمت معك فياتون اليك ويقولون لك اخبرنا ما تكلم به الملك معك
تخف عنا فما نقتلك وماذا تكلم به الملك معك.

* *Quarè ductis Abdemelech hominibus il-* 11
lis, ingreſſus eſt domum regis infimam,
tulitque inde pannos detritos & funiculos putrefactos, projecitque eos ad
Jeremiam in lacum, Et ait ; Hæc po- 12
ne ſub funibus : quod cùm feciſſet Jeremia, Traxerunt eum funibus, & e- 13
duxerunt è lacu : manſitque Jeremia
in atrio carceris. Tum mittens rex ad- 14
vocavit eum ad ſe in domum Selaſelis,
quæ eſt in domo Domini, dixitque ad eum
rex ; Sermonem à te peto, nullum abſcondas à me verbum. Dixit Jeremia 15
ad regem ; Si indicavero tibi, annon occîdes me? & ſi conſilium tibi dedero,
non acquieſces mihi. Verùm juravit illi 16
rex, dicens ; Per Dominum vivum qui
animam iſtam fecit nobis, non occîdam te,
neque tradam in manus hominum iſtorum. Tunc ait illi Jeremia, Sic dixit 17
Dominus ; Si certò egrediaris ad duces
regis Babelis, vivam ſervabis animam
tuam, non combur̃etur igne hæc urbs, &
vives tu ac filii tui : Quòd ſi non e- 18
grediaris, tradetur hæc urbs in manus regis Babelis, ignéque ſuccendetur ; &
tu non eripieris. Dixit rex ad Jere- 19
miam ; Num habeo verbum à Judæis
qui fugerunt ad Chaldæos, quòd non ſint
me prodituri in manus eorum, & illudant mihi? Reſpondit, Nequaquam te 20
tradent : auſculta ſermoni Domini quem
tibi dico, & bene tibi cedet, ſervabiſque
animam tuam. Verùm ſi tu egredi 21
nolueris, hic eſt ſermo quem indicavit mihi Dominus : En etiam mulieres omnes
quæ remanent in domo regis Judæ, producentur ad principes regis Babelis, dicentes ; Seduxerunt te, & prævalebunt
tibi viri pacifici tui : ponent in lubricis
pedes tuos, & recedent à te : Et filii 23
tui & uxores tuæ producentur ad Chaldæos ; & tu nequaquam effugies, quia in
manus regis Babelis tradêris : denique urbs
iſta ſuccendetur. Dixit ad eum rex, 24
Nemo quicquam ſciat ex his ſermonibus ; ſic tu non morieris. Quòd ſi au- 25
dierint principes me locutum eſſe tecum,
venerintque ad te, & dixerint tibi ; Indica nobis quæ locutus eſt rex tecum ; &
ne celes nos, ne te occidamus : quid locutus eſt rex tecum?

; deſtruens ego ,ædificavi quos Ecce : Dominus dixit Sic : eum ad dices Sic
4 כה תאמר אליו כה אמר יהוה הנה אשר־בניתי אני הרס
quæres tu Et .ipſam terram univerſam & : evellens ego ,plantavi quos &
5 ואת אשר־נטעתי אני נתש ואת־כל־הארץ היא : ואתה תבקש־
,carnem omnem ſuper malum adducens ego ecce quia : quæras Ne ? grandia tibi
לך גדלות אל־תבקש כי הנני מביא רעה על־כל־בשר
quò locis omnibus ſuper ,ſpolium in tuam animam tibi dabo & ,Dominus ait
נאם־יהוה ונתתי לך את־נפשך לשלל על כל־המקמות אשר־
.illuc iveris
תלך שם :

CAP. XLVI. מו

Ægyptum Ad .gentes ſuper prophetam Irmejahu ad Domini verbum fuit Quod
1 2 אשר היה דבר־יהוה אל־ירמיהו הנביא על־הגוים : למצרים
Perath flumen ſuper erat qui ,Ægypti regis Necho Parhoh virtutem ſuper
על־חיל פרעה נכו מלך מצרים אשר־היה על־נהר־פרת
quarto anno in Babel rex Nebuchadreſar percuſſit quem : Carchemis in
בכרכמש אשר הכה נבוכדראצר מלך בבל בשנת הרביעית
accedite & ,peltam & ,ſcutum Ordinate .Jehudah regis Joſijahu filii Jehojachim
3 ליהויקים בן־יאשיהו מלך יהודה : ערכו מגן וצנה ונשו
: galeis in conſiſtite & ,equites aſcendite & ,equos Ligate .bellum ad
4 למלחמה : אסרו הסוסים ועלו הפרשים והתיצבו בכובעים
,conſternati ipſi vid Quare .loricas vos induite ,lanceas tergite
5 מרקו הרמחים לבשו הסרינת : מדוע ראיתי המה חתים
non & ,fugerunt fugam & ,ſunt contriti eorum fortes & ,retrorſum ſe convertentes
נסגים אחור וגבוריהם יכתו ומנוס נסו ולא
evadet non & ,levis fugiet Non .Dominus dixit ,undique ab terror : reſpexerunt
6 הפנו מגור מסביב נאם־יהוה : אל־ינוס הקל ואל־ימלט
iſte Quis .ceciderunt & ,impegerunt Perath fluminis manum ſuper aquilonem ad :fortis
7 הגבור צפונה על־יד נהר־פרת כשלו ונפלו : מי־זה
fluvius tanquā Ægyptus ?ejus aquæ commovebitur flumina veluti :aſcendet fluviꝰ tanquā
8 כיאר יעלה כנהרות יתגעשו מימיו : מצרים כיאור
,terram operiam ,Aſcendam ; dixit & : aquæ movebuntur flumina veluti & ,aſcendet
יעלה וכנהרות יתגעשו מים ויאמר אעלה אכסה־ארץ
,currus inſanite & ,equos Aſcendite .ea in habitantes & ,civitatem perdam
9 אבידה עיר וישבי בה : עלו הסוסים והתהללו הרכב
,apprehendentes Ludim & ,ſcutum apprehendentes Put & ,Chus : fortes egrediantur &
ויצאו הגבורים כוש ופוט תפשי מגן ולודים תפשי
ultionis dies ,exercituum *Domini* Domini ipſa dies Et .arcum tendentes
10 דרכי קשת : והיום ההוא לאדני יהוה צבאות יום נקמה
inebriabitur & ,ſaturabitur & ,gladius devorabit & ; ſuis hoſtibus de ſe *ulciſcendum ad*
להנקם מצריו ואכלה חרב ושבעה ורותה
flumen ad aquilonis terra in exercituū *Domini* Domini victima nam :eorū ſanguine *de*
מדמם כי זבח לאדני יהוה צבאות בארץ צפון אל־נהר־
multiplicaviſti *vanum in* : Ægypti filia virgo *reſinam* tolle &,Ghilhad Aſcende .Perath
11 פרת : עלי גלעד וקחי צרי בתולת בת־מצרים לשוא הרביתי
tuus clamor & ,tuā ignominiā gentes Audierunt .tibi non *curatio* ,medicamina
12 רפאות תעלה אין לך : שמעו גוים קלונך וצוחתך
Verbum .ipſi ambo ceciderūt pariter ,impegerunt fortem in fortis quia : terram replevit
13 מלאה הארץ כי־גבור בגבור כשלו יחדיו נפלו שניהם : הדבר
Babel *regem* Nebuchadreſar *veniendo* :prophetam Irmejahu ad Dominus eſt locutꝰ quod
אשר דבר יהוה אל ירמיהו הנביא לבוא נבוכדראצר מלך בבל
,Mighdol in facite auditū & ,Ægypto in Annuntiate .Ægypti terram percutiendū ad
14 להכות את־ארץ מצרים : הגידו במצרים והשמיעו במגדול
devorabit quia ,te præpara & ,Sta ;dicite :Tachpanches in &,Noph in facite auditū &
והשמיעו בנף ובתחפנחס אמרו התיצב והכן לך כי־אכלה
.eū impulit Dominꝰ quoniā,ſubſiſtit non ? *tui fortes eſt proſtratus* Quare .*tuos circuitum* gladius
15 חרב סביביך : מדוע נסחף אביריך לא עמד כי יהוה הדפו :

Verſio VULG. LAT.

4 Hæc dicit Dominus, Sic dices ad
eum; Ecce quos ædificavi, ego de-
ſtruo : & quos plantavi, ego e-
vello, & univerſam terram hanc.
5 Et tu quæris tibi grandia ? noli
quærere: quia ecce ego adducam
malum ſuper omnem carnem, ait
Dn̄s : & dabo tibi animam tuam
in ſalutem, in omnibus locis, ad
quæcunque perrexeris.

CAP. XLVI.

1 QUod factum eſt verbum Do-
mini ad Jeremiam prophetam
2 contra Gentes, Ad Ægyptum, ad-
verſùm exercitum Pharaonis Ne-
chao regis Ægypti, qui erat juxta
fluvium Euphraten in Charca-
mis, quem percuſſit Nabuchono-
ſor rex Babylonis, in quarto an-
no Joakim filii Joſiæ regis Juda.
3 Præparate ſcutum, & clypeum,
4 & procedite ad bellum. Jungite
equos, & aſcendite equites: ſtate
in galeis, polite lanceas, induite
5 vos loricis. Quid igitur ? vidi i-
pſos pavidos, & terga vertentes,
fortes eorum cæſos : fugerunt
conciti, nec reſpexerunt : terror
6 undique, ait Dominus. Non fu-
giat velox, nec ſalvari ſe putet
fortis : Ad Aquilonem juxta flu-
men Euphraten victi ſunt, & ru-
7 erunt. Quis eſt iſte, qui quaſi
flumen aſcendit : & veluti fluvi-
orum, intumeſcunt gurgites ejus?
8 Ægyptus fluminis inſtar aſcen-
dit, & velut flumina movebun-
tur fluctus ejus: & dicet ; Aſcen-
dens operiam terram: perdam ci-
9 vitatem, & habitatores ejus. A-
ſcendite equos, & exultate in cur-
ribus, & procedant fortes, Æthi-
opia & Libyes tenentes ſcutum,
& Lydii arripientes & jacientes
10 ſagittas. Dies autem ille Domi-
ni Dei exercituum, dies ultionis,
ut ſumat vindictam de inimicis
ſuis : devorabit gladius, & ſatu-
rabitur, & inebriabitur ſanguine eorum : victima enim Domini Dei exercituum in terra
11 Aquilonis juxta flumen Euphraten. Aſcende in Galaad, & tolle reſinam, virgo filia Ægy-
12 pti: fruſtrà multiplicas medicamina, ſanitas non erit tibi. Audierunt gentes ignominiam
tuam, & ululatꝰ tuus replevit terram: quia fortis impegit in fortem, & ambo pariter con-
13 ciderunt. Verbum quod locutus eſt Dominꝰ ad Jeremiam prophetam, ſuper eo quòd ven-
14 turus eſſet Nabuchodonoſor rex Babylonis & percuſſurus terram Ægypti. Annuntiate
Ægypto, & auditum facite in Magdalo, & reſonet in Memphis, & in Taphnis: dicite; Sta,
15 & præpara te: quia devorabit gladius ea, quæ per circuitum tuum ſunt. Quarè compu-
truit fortis tuus ? non ſtetit : quoniam Dominus ſubvertit eum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

26 Καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, Ῥίπτω ἐγὼ τὸ ἔλεός μου κατ' ὀφθαλμοὺς τοῦ βασιλέως, πρὸς τὸ μὴ (δ) ἀποστρέψαι με εἰς οἰκίαν Ἰωνάθαν, ἀποθανεῖν 27 με ἐκεῖ. Καὶ ἤλθοσαν πάντες οἱ ἄρχοντες πρὸς Ἱερεμίαν, καὶ ἠρώτησαν αὐτόν. καὶ ἀνήγγειλεν αὐτοῖς κατὰ πάντας τοὺς λόγους τούτους, οὓς ἐνετείλατο αὐτῷ ὁ βασιλεύς. καὶ (ε) ἀπεσιώπησαν, ὅτι οὐκ ἠκούσθη (ζ) ὁ 28 λόγος κυρίου. Καὶ ἐκάθισεν Ἱερεμίας ἐν τῇ αὐλῇ τῆς φυλακῆς, ἕως χρόνου, οὗ συνελήφθη Ἱερουσαλὴμ (η).

Et dices eis; Projicio ego miſericordiam meam ante oculos regis ad hoc, ut redire me non faciat in domum Jonathan, ad moriendum me ibi. Et venerunt omnes principes ad Hieremiam, & interrogaverunt eum. Et annuntiavit eis juxta omnia verba hæc, quæ præceperat ei rex. Et tacuerunt; quia non erat auditum verbum Domini. Et ſedit Hieremias in atrio carceris, uſque ad tempus quo capta eſt Hieruſalem. 26 27 28

MS.A. (δ) ἐπιστρέψαι εἰς οἰκίαν Ἰωνάθαν, ἀποθανεῖν ἐκεῖ. Καὶ ἦλθαν (ε) ἐσιώπησαν, (ζ) λόγος (η) Ἡ ΠΟΛΕΙΣ.

Cap. 39. Vulg. Lat. ΚΕΦ. μϛʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο (α) τῷ μηνὶ τῷ ἐνάτῳ τοῦ Σεδεκία βασιλέως Ἰούδα, (β) παρεγένετο Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, καὶ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτοῦ ἐπὶ Ἱερουσαλήμ, καὶ (γ) ἐπολιόρκουν αὐτήν. 2 Καὶ ἐν τῷ ἑνδεκάτῳ ἔτει τοῦ Σεδεκία, ἐν τῷ μηνὶ τῷ τετάρτῳ, ἐνάτῃ τοῦ μηνός, ἐρράγη ἡ πόλις, 3 Καὶ εἰσῆλθον πάντες οἱ (δ) ἡγούμενοι βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ ἐκάθισαν ἐν (*) πύλῃ τῇ μέσῃ (ε) Μαργανασάρ, καὶ Σαμαγώθ, καὶ Ναβουσάχαρ, καὶ Ναβουσαρείς, Ναγαργάς, Νασεῤῥαβαμάθ, καὶ οἱ κατάλοιποι ἡγεμόνες βασιλέως Βαβυλῶνος.

CAP. XLVI.

ET factum eſt (a) menſe nono Sedeciæ, regis Juda, advenit Nabuchodonoſor rex Babylonis, & omnis virtus ejus ſuper Hieruſalem: & obſidebant eam. Et in undecimo anno Sedeciæ, in menſe quarto, nonâ menſis, diffiſſa eſt civitas: Et ingreſſi ſunt omnes duces regis Babylonis: & ſederunt in porta media, Marganaſar, & Samagoth, & Nabuſachar, & Nabuſaris, Nagargas, Naſerrabamath, & reliqui duces regis (b) Babylonis. 1 2 3

MS.A. (α) ἐν τῷ ἔτει τῷ ἐνάτῳ (β) ἐν τῷ μηνὶ τῷ δεκάτῳ, παρεγένετο Ναβουχοδονόσορ * βασιλέως (γ) ἐπολιόρκει (δ) ἡγεμόνες (*) τῇ πύλῃ (ε) Νηεργλασασάρ, Εἰσαμαγάθ, καὶ Ναβουσάχαρ, καὶ Ναβουζαρείς, καὶ Ναγαργάς, Νασεῤῥαμαβάκ, καὶ οἱ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כרנן תימר ליה כדנן אמר יי הא די בניתי אנא אפגר וית די קימית אנא אטלטל 4
וית כל ארעא דישראל דילי היא : ואת בעי לך רברבן לא תבעי ארי הא אנא מיתי 5
בישתא על כל בסרא אמר יי ואתן לך ית נפשך לשיזבא על כל אתריא די תהך לתמן :

מו

דהוה פתגם נבואה מן קדם יי על ירמיה נביא על עממיא : למצרים על משרית פרעה 1 2
חגירא מלכא דמצרים דהוה על נהר פרת בכרכמיש דמחא נבוכד נצר מלכא דבבל
בשתא רביעיתא ליהויקים בר יאשיה מלך שבטא דבית יהודה : סדרו עגלין ותריסין 3
ואתקרבו לאגחא קרבא : טקיסו סוסותא ויסקון פרשיא ויתעתדון בקולסיא צחצחו 4
מורניתא לבשו סריניא : מא דין חזיתי אנון תבירין מסתחרין לאחורא וגבריהון 5
תבירין ומערק ערקין ולא מתפנן למקם מן קדם דקטלין בחרבא דמתכנשין עליהון
מסחור סחור אמר יי : לא יערק דקליל ולא ישתזיב דגבר בארעא צפונא על כיף נהרא 6
פרת אתקלו ונפלו : מן דין דסליק במשריתיה כעננא דסליק וחפי ית ארעא כמבוע 7
דמיין דמטרפין מוהי : מלכא דמצרים דסליק במשריתיה כעננא דסליק חפי ית ארעא 8
כמבוע דמיין דמטרפין מוהי ואמר אסק אחפי ארעא ומלאה אוביד קרויא ודיתבין בהון :
יסקון סוסותא וישתגשון רתיכיא ויפקון גבריא כושאי ופוטאי אחדי תרסין ולודאי דנגדין 9
ומחן בקשתא : ויומא ההוא קדם יי צבאות יום פורענותא לאתפרע מסנאי עמיה ותקטיל 10
חרבא ותסבע ותרוי מדמהון ארי קטלא קדם יי צבאות בארעא צפונא על נהר פרת : סקי 11
לגלעד וסבי שעיף מלכות כנשתא דמצרים לא להנאה אסגית סממנין אסו לא סלקת
ליך : שמעו עממיא קלניך וצוחתיך אתמליאת ארעא ארי גבר בגבר אתקלו כחדא 12
אתקטלו תרויהון : פתגם נבואה דמליל יי עם ירמיה נביא למיתי נבוכד נצר מלכא 13
דבבל למחי ית ארעא דמצרים : חוו במצרים ובסרו במגדול ובסרו במפים 14
ובתחפנחס אמרו אזדרזו ואתקן לך ארי קטילת חרבא סחרנך : מא דין אתברו גבריך 15
ולא יכילו למקם ארי יי תברנון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dices ei, Hæc dicit Dn̄s : Ecce ego quod ædificavi, ego deſtruam; & 4
quod ſtabilivi ego tranſferam, & omnem terram Iſrael quæ mea eſt. Et tu 5
quæris tibi grandia ? ne quæras : quia ecce ego adducam mala ſuper
omnem carnem, dicit Dominus : & dabo tibi animam tuam in ſalutem in
omnibus locis ad quæ ieris.

CAP. XLVI.

QUod factum eſt verbum prophetiæ à facie Dn̄i ad Jeremiam prophetam 1
contra gentes. Ad Ægyptum contra exercitum Pharaonis claudi regis 2
Ægypti, qui erat juxta fluvium Euphratem in Carchamis, quem percuſſit
Nabuchodonoſor rex Babylonis in anno quarto Joachim filii Joſiæ regis
tribus domꝰ Juda. Ordinate ſcuta & clypeos; accedite ad pugnandum. 3
Inſtruite equos, & aſcendant equites & ſtent cum galeis; polite lanceas, 4
induimini loricis. Quare vidi ipſos contritos & terga vertentes, & fortes 5
eorum confractos? & fugiendo fugiunt, & non reſpiciunt ad reſiſtendum
illis qui occidunt gladio, qui congregantur adverſum eos undiquaque,
dicit Dn̄s. Non fugiet velox, nec evadet fortis. In terra Aquilonis 6
juxta ripam fluminis Euphratis impegerunt, & ceciderunt. Quis eſt iſte 7
qui aſcendit cum exercitu ſuo ſicut nubes; & operit terram? & ſicut fons
aquarum cujus aquæ turbatæ ſunt? Rex Ægypti qui aſcendit cum exercitu, 8
quaſi nubes quæ *aſcendens* operit terram; & ſicut fons aquarum, cujus
aquæ commoventur : & dixit, Aſcendam, cooperiam terram & plenitudinem
ejus; perdam civitates, & illos qui habitant in eis. Aſcendant 9
equi & ſonent currus, & egrediantur fortes Æthiopes, & Libyi tenentes
clypeos, & Lydi extendentes & *ferientes arcu*. Dies enim ille coram Dn̄o 10
exercituum dies ultionis eſt, ut vindictam ſumat de inimicis populi ſui:
& occidet eos gladio, & ſatiabitur, & inebriabitur ſanguine eorum; quia
occiſio eſt coram Dn̄o exercituum in terra Aquilonis juxta flumen Euphratem.
Aſcende ad Galaad, & tolle reſinam regnum cœtus Ægypti, in nullam 11
enim utilitatem multiplicas medicamina: medicina non aſcendet tibi.
Audierunt populi ignominiam tuam, & clamore tuo repleta eſt terra, quia 12
fortis impegit in fortem, ſimul ambo interfecti ſunt. Verbum prophetiæ 13
ꝙ locutꝰ eſt Dn̄s cum Jeremia propheta de adventu Nabuchodonoſor regis
Babylonis, ad percutiendā terram Ægypti. Annuntiate in Ægypto, & nar- 14
rate in Magdalo, & annuntiate in Memphis, & in Taphnes dicite: Accingere
& præpara te, quia occidit gladiꝰ eos qui in circuitu tuo ſunt. Quare 15
contriti ſunt fortes tui, & non potuerunt conſiſtere? Quia Dn̄s contrivit eos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܗ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܗ. ܗܐ ܡܕܡ ܕܒܢܝܬ ܐܢܐ ܣܬܪ. ܘܡܕܡ ܕܢܨ
ܐܢܐ ܥܩܪ. ܘܠܟܠܗ ܐܪܥܐ ܡܚܪܒ ܐܢܐ. * ܘܐܢܬ ܕܒܥܐ ܐܢܬ ܠܟ ܪܘܪܒܬܐ. ܠܐ ܬܒܥ
ܕܝܬܝܪܢ ܡܢܟ. ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܟܠ ܒܣܪ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܬܠ ܠܟ
ܢܦܫܟ ܠܒܙܬܐ. ܒܟܠܗܘܢ ܐܬܪܘܬܐ ܕܐܙܠ ܠܬܡܢ. * ܫܠܡ * ܦܢ *

* ܡܫܩܠܐ ܕܡܨܪܝܢ * * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܕܢܬܢܒ
ܥܠ ܥܡܡܐ ܘܥܠ ܡܨܪܝܐ. * ܘܥܠ ܚܝܠܗ ܕܦܪܥܘܢ ܚܓܝܪܐ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܕܐܝܬܘܗܝ ܗܘܐ ܥܠ
ܢܗܪܐ ܦܪܬ ܒܟܪܟܡܝܫ. ܕܩܛܠ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܒܫܢܬܐ ܕܐܪܒܥ ܠܝܗܘܝ
ܒܪ ܝܘܫܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ
ܣܒܘ ܠܟܘܢ ܙܝܢܐ ܘܬܪܣܐ ܘܩܪܘܒܘ ܠܩܪܒܐ. * ܦܟܪܘ ܪܟܫܐ ܘܐܪܟܒܘ ܦܪܫܐ. ܣܝܡܘ ܣܢܘ
ܡܪܩܘ ܪܘܡܚܝܐ. ܠܒܫܘ ܫܪܝܢܐ. * ܡܛܠ ܕܚܙܝܬ ܕܗܢܘܢ ܡܬܚܒܪܝܢ ܘܗܦܟ
ܠܒܣܬܪܗܘܢ. ܘܓܢܒܪܝܗܘܢ ܐܬܚܒܠܘ ܘܥܪܩܘ ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܘ. ܡܛܠ ܕܡܚܕܪ ܗܘ
ܠܗܘܢ ܡܢ ܚܕܪܝܗܘܢ. * ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܐ ܢܥܪܘܩ ܩܠܝܠܐ ܘܠܐ ܢܬܦܨܐ ܓܢܒܪܐ ܕܒܓ
ܥܠ ܓܢܒ ܢܗܪܐ ܦܪܬ ܐܬܬܩܠܘ ܘܢܦܠܘ ܟܠܗܘܢ. * ܡܢܘ ܗܢܐ ܕܐܝܟ ܢܗܪܐ ܣܠ
ܘܐܝܟ ܢܗܪܘܬܐ ܡܬܕܠܚܝܢ ܡܝܘܗܝ. * ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ ܐܝܟ ܢܗܪܐ ܣܠܩ. ܘܐܝܟ ܢܗܪܘ
ܡܬܕܠܚܝܢ ܡܝܘܗܝ. ܘܐܡܪ ܐܣܩ ܘܐܟܣܐ ܠܐܪܥܐ. ܘܐܘܒܕ ܩܪܝܬܐ ܘܥܡܘܪܝܗ. * ܣܩܘ ܠܪܟ
ܘܐܫܬܒܗܪܘ ܒܡܪܟܒܬܐ. ܢܦܩܘܢ ܓܢܒܪܐ ܟܘܫܝܐ ܘܦܘܛܝܐ ܐܚܝܕܝ ܬܪܣܐ. ܘܠܘܕܝܐ ܐܚܝܕ
ܘܡܫܟܝ ܩܫܬܐ. * ܘܝܘܡܐ ܗܘ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܝܘܡܐ ܕܬܘܪܥܢܐ ܕܢܬܦܪܥ
ܡܢ ܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. ܘܬܐܟܘܠ ܚܪܒܐ ܘܬܣܒܥ ܘܬܪܘܐ ܡܢ ܕܡܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܢܟܣܬܐ ܠܡ
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ ܥܠ ܢܗܪܐ ܦܪܬ. * ܣܩܝ ܠܓܠܥܕ ܘܣܒܝ ܪܬܝܢܐ
ܒܬܘܠܬܐ ܒܪܬ ܡܨܪܝܢ. ܣܓܝܐܬ ܐܣܘܬܐ ܡܣܩܬܝ. ܘܐܘܪܟܐ ܠܐ ܗܘܐ ܠܟܝ. * ܫܡܥܘ
ܥܡܡܐ ܨܥܪܟܝ. ܘܡܢ ܝܠܠܬܟܝ ܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܓܢܒܪܐ ܒܓܢܒܪܐ ܐܬܬܩܠ ܘܬܪܘ
ܢܦܠܘ ܐܟܚܕܐ. * ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. ܕܢܐܬܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒ
ܘܢܚܪܒܝܗ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܚܘܘ ܒܡܨܪܝܢ ܘܐܫܡܥܘ ܒܡܓܕܘܠ. ܘܐܫܡܥܘ ܒܡܦܝܣ
ܘܒܬܚܦܢܚܣ ܐܡܪܘ. ܐܬܥܬܕܘ ܘܐܬܛܝܒܘ. ܡܛܠ ܕܐܟܠܬ ܚܪܒܐ ܚܕܪܝܟܘܢ. * ܡܛܠ
ܡܢܐ ܐܬܚܒܠܘ ܓܢܒܪܝܟܝ ܘܢܦܠܘ. ܘܠܐ ܩܡܘ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܣܚܦ ܐܢܘܢ.

Ita dic illi, Sic dicit illi Dñs, Ecce quod ædificaveram, deſtructurus ſum; & quod plantaveram, evulſurus; totámque terram vaſtaturus. 4
Tu igitur qui ad ardua aſpiras, ad ea quæ majora te ſunt, ne aſpires: quoniam ecce ego adducturus ſum malum ſuper univerſam carnē, ait Dñs: tibi verò concedā ut teipſum eripias in quibuſvis locis ad quæ perrexeris. 5

CAP. XLVI.

Onus Ægypti.

Fuit præterea ſermo Domini ad Jeremiam prophetam, ut vaticinaretur de gentibus, & de Ægyptiis, 1
Deque exercitu Pharaonis Claudi regis Ægypti, qui caſtra fixerat ſecus flumen Euphratem in Carcemus, quem interfecit Nebuchadnoſar rex Babylonis, anno quarto Jojacim filii Joſiæ regis Judæ, dicendo; 2
Sic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis; Sumite arma & clypeum, & accedite ad bellum: 3
Injicite fræna equis, equites conſcendere jubete: imponite galeas, extergite lanceas, induite loricas: 4
Quoniam video iſtos profligatos & terga vertentes, & robuſtiſſimos eorum vulneratos fugere neque reſpicere, eò quòd undiq; cingerent eos. 5
Dicit Domin⁹, Haudquaquam fugiet qui leviſſimus eſt, nec eripiet ſe qui robuſtorum eſt robuſtiſſim⁹: ſecus fluvium Euphratem impegerunt & corruerunt omnes. 6
Quis eſt iſte qui ceu flumen aſcendit, cujus undæ ceu fluminum obſtrepunt? 7
Rex Ægypti ceu flumē aſcendit, & ut fluminū obſtrepunt undæ illius, ac dicit, Aſcendam, operiámque terram, & urbem cum civibus ejus perdam: 8
Conſcendite equos, gloriamini in curribus: prodeant viri Æthiopes & Putæi clypeos tractantes, & Lydii jaculandi arcu periti. 9
Erit autem dies illa Domino potentiſſimo, dies retributionis, quam rependet hoſtibus ſuis, vorabitque gladius, & ſaturabitur atque inebriabitur ſanguine eorum: nam gladium excitabit Dominus potentiſſim⁹ in terra Aquilonari ſecus fluvium Euphratem. 10
Aſcende in Gelaad, & ſume tibi reſinam virgo filia Ægypti: fruſtrà multas adhibes medicinas, nec emolumentū percipis. 11
Audient gentes ignominiam tuam, & ululatu tuo implebitur terra, quoniam vir in virum irruet, ambóque gladio corruent. 12
Sermo quem dixit Dominus Jeremiæ prophetæ, venturum Nebuchadnoſarem regem Babylonis, & terram Ægypti vaſtaturum. 13
Indicate in Ægypto, & annuntiate in Migdol, promulgate in Mephes, & in Tahphis dicite; Prompti ſitis ac parati, quoniam voravit gladius adjacentia tibi loca. 14
Qua de cauſa deturbati ſunt heroes tui, & ceciderunt, neque ſurrexerunt? quia Dominus deturbavit eos. 15

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فتقول لهم * انا طرحت رحمتي لعيني الملك الا يردني الي بيت يوناثان لاموت هناك * وا
جميع الرؤساء الي ارميا وسالوه فاخبرهم بجميع هذه الاقوال التي اوصاه بها الملك فسكتوا
لان قول الرب لم يسمع * وجلس ارميا في دار الحبس الي الزمان الذي اخذت فيه ايروسليم
المدينة * * الفصل السادس والاربعون * * وكان في السنة التاسعة لصداقيا
ملك يهودا في الشهر العاشر حضر بختنصر ملك بابل وكل جيشه الي ايروسليم وحاصرها * وفي
السنة الحادية عشر لصداقيا في الشهر الرابع في التاسع من الشهر تشققت المدينة * ودخل
جميع قواد ملك بابل وجلسوا في الباب الاوسط نرجل صاصاصار وصاماغات وبابوصادار
وبابوراريس وباغرغاس * وناسار ورامابك * وبقية قواد ملك بابل [MS.Ox. * فلما راهم صادقيا
ملك يهودا * وجميع الرجال الابطال هربوا وخرجوا من القرية ليلا في طريق بستان الملك من
باب السور وخرجوا في طريق الصحراء * وركض خيل الكلدانيين خلفهم * فادركوا صادقيا في قاع
اريحا * وتفرقت اجناده كلها * واخذوه واتوا به الي بختنصر ملك بابل الي دبلت في ارض حماة
* وخاصمه هناك * وحاكمه * وذبح ملك بابل بني صادقيا بدبلت بين يديه * وذبح ملك بابل
جميع قواد ملك يهودا في دبلت * واعمي عيني صادقيا وشده بسلاسل الحديد * وانطلق
به الي بابل * فاما قصر الملك وبيوت الشعب فاحرقوه الكلدانيون بالنار وهدموا سور اورشليم بما يدو

Dices illis, Ego propoſui miſericordiam mei coram rege, ut non remitteret me in domum Jonathanis ad moriendum illic. 26
Cùm itaque veniſſent omnes principes ad Jeremiam, & interrogâſſent eum; retulit eis omnes hoſce ſermones quos præceperat ei rex: quapropter tacuerunt; quia ſermo Domini non fuit auditus. 27
Manſit autem Jeremia in atrio carceris uſque ad tempus quo capta fuit urbs Jeruſalem. 28

CAP. XLVI.

Deinde contigit anno nono Sedeciæ regis Judæ, menſe decimo, ut adveniens Bochtonaſſar rex Babelis cum toto exercitu ſuo in Jeruſalem, obſideret eam: 1
Et anno undecimo Sedeciæ, menſe quarto, nono menſis die, perrumperetur urbs. 2
Quarè ingreſſi omnes duces regis Babelis conſederunt in porta media, Nerghel-ſeſaſar, Samagath, Nabuſachar, Nabuzaris, Nagargas, Naſar, & Ramabac, cæterique duces regis Babelis: 3
[MS. Ox. Et cùm vidiſſet eos Sedecia Rex Judæ, omnes viri ſtrenui, fugientes egreſſi ſunt nocte de civitate viâ horti regis, per portam muri, & exierunt viâ campeſtrium. 4
Perſequentes autem eos equites Chaldæorum aſſecuti ſunt Sedeciam in campeſtribus Jericho, ubi toto ipſius exercitu ab eo diſſipato tulerunt eum, deduxeruntque ad Bochtonaſſar regem Babyloniæ Diblatham, in terram Hamathæ. 5
Ubi poſtquam cum eo altercatus eſſet, ſententiam in eum tulit: & jugulavit Rex Babyloniæ filios Sedeciæ Diblathæ coram ipſo: etiam omnes Regis Judæ duces jugulavit rex Babyloniæ in Diblatha. 6
Tum oculos Sedeciæ excæcavit, & vinxit eum catenis ferreis, ut deduceret eum in Babyloniam. 7
Regis autem palatium, & domos populi igne combuſſerant Chaldæi, muróſque Jeruſalem per circuitum demoliti ſunt. 8

ירמיה : מז

,Surge : dixerunt & ,ſuum ſocium ad vir cecidit etiam : ruentem Multiplicavit
16 הרבה כושל גם נפל איש אל רעהו ויאמרו קומה
facibus à noſtræ nativitatis terram ad & , noſtrum populum ad revertamur &
ונשבה אל עמנו ואל ארץ מולדתנו מפני
,tumultum , Ægypti regem Parhoh , ibi Vocaverunt .depopulatoris gladii
17 חרב היונה : קראו שם פרעה מלך מצרים שאון
exercituum Dominus rex inquit ,ego Vivens .ſtatutum tempus fecit tranſire
18 העביר המועד : חי אני נאם המלך יהוה צבאות
.veniet ,mari in Charmel ſicut & , montibus in Thabor ſicut quoniam:ejus nomen
שמו כי כתבור בהרים וככרמל בים יבוא :
ſolitudinem in Noph quia : Ægypti filia habitatrix ,tibi fac tranſmigrationis Vaſa
19 כלי גולה עשי לך יושבת בת מצרים כי נף לשמה
excidium : Ægyptus formoſa Vitula .habitatore abſque , deſolabitur & , erit
20 תהיה ונצתה מאין יושב : עגלה יפה פיה מצרים קרץ
, ſaginæ vituli veluti ejus interiori in ejus mercenarii Etiam .veniens,veniens aquilone ab
21 מצפון בא בא : גם שכריה בקרבה כעגלי מרבק
dies quia : ſubſtiterunt non ,ſimul fugerunt , ſe verterunt ipſi etiam quia
כי גם המה הפנו נסו יחדיו לא עמדו כי יום
ſerpentis quaſi ejus Vox .eorum viſitationis tempus , eos ſuper veniens eorum exitii
22 אידם בא עליהם עת פקדתם : קולה כנחש
cæſores tanquam ei venerunt ſecuribus in & , ibunt virtute in quoniam , ibit
ילך כי בחיל ילכו ובקרדמות באו לה כחטבי
nam : inveſtigabitur non quia , Dominus ait , ejus ſylvam Exſcindent .lignorum
23 עצים : כרתו יערה נאם יהוה כי לא יחקר כי
: Ægypti filia eſt affecta Pudore .numerus eis non & , locuſtâ præ ſunt multiplicati
24 רבו מארבה ואין להם מספר : הבישה בת מצרים
Deus exercituum Dominus Dixit .aquilonis populi manum in eſt tradita
25 נתנה ביד עם צפון : אמר יהוה צבאות אלהי
,Ægyptum ſuper & ,Parhoh ſuper & ,No de Amon ad viſitans ego Ecce : Iſrael
ישראל הנני פוקד אל אמון מנא ועל פרעה ועל מצרים
.eum in fidentes ſuper & , Parhoh ſuper & : ejus reges ſuper & , ejus deos ſuper &
ועל אלהיה ועל מלכיה ועל פרעה ועל הבטחים בו :
Nebuchadreſar manum in & , eorum animam quærentium manum in eos dabo Et
26 ונתתים ביד מבקשי נפשם וביד נבוכדראצר
dies ſecundùm habitabitur hæc poſt & : ejus ſervorum manum in & , Babel regis
מלך בבל וביד עבדיו ואחרי כן תשכן כימי
ne & , Jahacob mi ſerve timeas ne tu Et .Dominus dixit , quondam
27 קדם נאם יהוה : ואתה אל תירא עבדי יעקב ואל
tuum ſemen & , longinquo de te ſervans ego ecce quia , Iſrael conſterneris
תחת ישראל כי הנני מושעך מרחוק ואת זרעך
, erit pacatus & , requieſcet & , Jahacob revertetur & : eorum captivitatis terra de
מארץ שבים ושב יעקוב ושקט ושאנן
, Dominus ait , Jahacob mi ſerve timeas ne Tu .exterrens non &
28 ואין מחריד : אתה אל תירא עבדי יעקב נאם יהוה
quas , gentibus cunctis in conſummationem faciam nam : ego tecum quia
כי אתך אני כי אעשה כלה בכל הגוים אשר
te caſtigabo & , conſummationem faciam non te & , illuc te propuli
הדחתיך שמה ואתך לא אעשה כלה ויסרתיך
.te liberabo non liberando & , judicio in
למשפט ונקה לא אנקך :

CAP. XLVII. מז

, Peliſtim ad prophetam Irmejahu ad Domini verbum fuit Quod
1 אשר היה דבר יהוה אל ירמיהו הנביא אל פלשתים
.Hazzah Parhoh percuteret antequam
בטרם יכה פרעה את עזה :

Verſio VULG. LAT.

16 Multiplicavit ruentes , cecidítque vir ad proximum ſuum : & dicent ; Surge, & revertamur ad populum noſtrum, & ad terram nativitatis noſtræ, à facie gladii
17 columbæ. Vocate nomen Pharaonis regis Ægypti, Tumultum
18 adduxit tempus. Vivo ego (inquit rex, Domin⁹ exercituum nomen ejus,) quoniã ſicut Thabor in montib⁹, & ſicut Carmelus in
19 mari, veniet. Vaſa tranſmigrationis fac tibi,habitatrix filia Ægypti : quia Memphis in ſolitudinem erit, & deſeretur,& inha-
20 bitabilis erit. Vitula elegans atque formoſa Ægyptus : ſtimula-
21 tor ab Aquilone veniet ei. Mercenarii quoque ejus, qui verſabantur in medio ejus, quaſi vituli ſaginati verſi ſunt, & fugerunt ſimul, nec ſtare potuerunt : quia dies interfectionis eorum venit ſuper eos, tempus viſitationis eo-
22 rum. Vox ejus quaſi æris ſonabit : quoniam cum exercitu properabunt, & cum ſecuribus venient ei, quaſi cædentes ligna.
23 Succiderunt ſaltum ejus, ait Dominus, qui ſupputari non poteſt: multiplicati ſunt ſuper locuſtas,
24 & non eſt eis numerus. Confuſa eſt filia Ægypti, & tradita in
25 manus populi Aquilonis. Dixit Domin⁹ exercituum,Deus Iſrael ; Ecce ego viſitabo ſuper tumultũ Alexandriæ, & ſuper Pharaoné, & ſuper Ægyptum,& ſuper deos ejus, & ſuper reges ejus,& ſuper Pharaonem,& ſuper eos qui con-
26 fidunt in eo. Et dabo eos in manus quærentium animam eorum, & in manus Nabuchodonoſor regis Babylonis,& in manus ſervorum ejus : & poſt hæc habitabitur ſicut diebus priſtinis, ait
27 Domin⁹. Et tu ne timeas,ſerve meus Jacob, & ne paveas,Iſrael: quia ecce ego ſalvum te faciam de longinquo, & ſemen tuum de terra captivitatis tuæ : & revertetur Jacob,& requieſcet,& proſperabitur ; & non erit qui ex-
28 terreat eum. Et tu noli timere, ſerve meus Jacob, ait Dominus : quia tecum ego ſum, quia ego conſumam cunctas gentes, ad quas ejeci te : te verò non conſumã, ſed caſtigabo te in judicio, nec quaſi innocenti parcam tibi.

CAP. XLVII.

1 Quod factum eſt verbũ Domini ad Jeremiam prophetam contra Palæſthinos, antequàm percuteret Pharao Gazam :

Verſio GRÆC. LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

14 Καὶ ἀπέστειλαν, καὶ ἔλαβον τὸν Ἱερεμίαν ἐξ αὐλῆς τῆς φυλακῆς, καὶ ἔδωκαν αὐτὸν (ζ) πρὸς τὸν Γοδολίαν υἱὸν Ἀχικὰν, υἱοῦ Σαφὰν, καὶ ἐξήγαγον αὐτὸν, καὶ (η) ἐκάθισεν ἐν μέ-
15 σῳ τοῦ λαοῦ. Καὶ πρὸς Ἱερεμίαν ἐγένετο λόγος κυρίου ἐν τῇ αὐλῇ
16 τῆς φυλακῆς, λέγων, Πορεύου καὶ (θ) εἰπὲ πρὸς Ἀβδεμέλεχ τὸν Αἰθίοπα, Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ἰδοὺ ἐγὼ φέρω τοὺς λόγους μου (ι) ἐπὶ τὴν πόλιν ταύτην εἰς κακὰ
17 καὶ οὐκ εἰς ἀγαθά. Καὶ σώσω σε ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ οὐ μὴ (κ) δώσω σε εἰς χεῖρας (λ) τῶν ἀνθρώπων, ὧν
18 σὺ φοβῇ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, Ὅτι σώζων σώσω σε, καὶ ἐν ῥομφαίᾳ οὐ μὴ πέσῃς· καὶ ἔσται ἡ ψυχή σου εἰς (μ) εὕρημα, ὅτι ἐπεποίθεις ἐπ' ἐμοὶ, φησὶ κύριος.

14 Et miſerunt, & tulerunt Hieremiam de atrio carceris, & dederunt eum ad Godoliam filium Ahican filii Saphan : & eduxerunt eum : & ſedit in me-
15 dio populi. Et ad Hieremiam factum eſt verbum Domini in atrio carceris,
16 dicens ; Vade, & dic ad Abdemelech Æthiopem ; Sic dixit Dominus Deus Iſrael ; Ecce ego affero verba mea ſuper civitatem hanc in mala, & non in
17 bona : Et ſalvabo te in die illa : & non dabo te in manus hominum, quos tu
18 times à facie eorum. Salvans enim ſalvabo te : & in gladio non cades : & erit anima tua in rem inventam : quoniam fidiſti ſuper me, ait Dominus.

MS. A. (ζ) πρὸς Γοδολίαν υἱὸν Ἀχικὰμ, *υἱὸν (η) ἐκάθισαν (θ) εἰπὸν (ι) εἰς τὴν γῆν ταύτην (κ) παραδώσω (λ) ἀνθρώπων, (μ) εὕρεμα,

ΚΕΦ. μζ΄.

Cap. 40. Vulg.Lat.

1 Ο Λόγος ὁ (α) γενόμενος παρὰ κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν, (β μετὰ τὸ ἀποστεῖλαι αὐτὸν Ναβουζαρδὰν τὸν ἀρχιμάγειρον (γ) τὸν ἐκ Ῥαμὰ, ἐν τῷ λαβεῖν αὐτὸν ἐν χειροπέδαις, ἐν μέσῳ ἀποικίας Ἰούδα τῶν (δ) ἠγμένων εἰς Βαβυλῶνα.
2 Καὶ ἔλαβεν αὐτὸν ὁ ἀρχιμάγειρος, καὶ εἶπεν αὐτῷ, Κύριος ὁ (ε) θεός σου ἐλάλησε τὰ κακὰ ταῦτα ἐπὶ τὸν
3 τόπον τοῦτον· Καὶ ἐποίησε κύριος, ὅτι (ϛ) ἡμάρτετε αὐτῷ, καὶ οὐκ (ζ) ἠκούσατε
4 τῆς φωνῆς αὐτοῦ. Ἰδοὺ ἔλυσά σε ἀπὸ τῶν χειροπέδων τῶν (η) ἐπὶ τὰς χεῖράς σου. εἰ καλὸν ἐναντίον σου ἐλθεῖν μετ' ἐμοῦ εἰς Βαβυλῶνα, (θ) καὶ θήσω τοὺς ὀφθαλμούς μου ἐπὶ σέ·

CAP. XLVII.

1 Verbum, quod factum eſt à Domino ad Hieremiam, poſtquam dimiſit eum Nabuzardan princeps coquorum, ex Rama, quando tulit eum in manicis, in medio tranſmigrationis Juda, eorum, qui ducebantur in
2 Babylonem. Et tulit eum princeps coquorum, & dixit ei ; Dominus Deus tuus loquutus eſt mala hæc ſuper locum iſtum : Et fecit
3 (a) Dominus ; quia peccaſtis ei, & non audiſtis vocem (b) ejus. Ecce ſolvi te
4 à manicis, quæ ſuper manus tuas. Si bonum coram te venire mecum in (c) Babylonem, & ponam oculos meos ſuper te :

MS.A. (α) ΓΕΝΑΜΕΝΟΣ (β) ὝΣΤΕΡΟΝ ΜΕΤᾺ (γ) ἘΚ ῬΑΜᾺ (δ) ἈΠΑΓΟΜΈΝΩΝ (ε) θεὸς ἐλάλησεν (ϛ) ἡμάρτητε (ζ) εἰσηκούσατε (η) ὑπὸ (θ) ἧκε, θήσω

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 אסניאו מתקליהון אף אשתמעו גבר לחבריה ויימרון קומו ונתיב לעמנא ולארעא
17 ילדותנא מן קדם חרבא דסנאה דהיא כחמר מרויא : זמינו לתמן פרעה מלכא דמצרים
18 דסגיאין אתרגושתיה מעדי זמניא : קים אנא אמר מלכא יי צבאות שמיה ארי כמא
19 דיציב פתגמא דתבור בטוריא וככרמלא בימא כן ייתי תביריה : מני גלותא אתקני ליך
20 מלכות כנשתא דמצרים ארי מפיס לצדו תהי ותצדי מבלי יתיב : מלכות יאיא הות
21 מצרים עממין קטולין מצפונא ייתון עלה למבזה : אף רברבהא בגוה כעגלי רבקא ארי
אף אנון אתפניאו ערקו כחדא לא יכילו למקם ארי יום תברהון אתא עליהון עדן
22 סטורן בישתהון : קל נקוש זיניהון כחון זחלין ארי במשרין יהכון עליכון וכמא דעלין
23 בכשילין למקץ אעי חורשא : שיצו רברבהא אמר יי ארי לית להון סוף ארי סגיאין
24 מוחלא ולית להון מנין : בהיתת מלכות מצרים אתמסרת ביד עמא דאתא עלה
25 מצפונא : אמר יי צבאות אלהא דישראל הא אנא מסער על אתרגושת אלכסנדריא
ועל פרעה ועל מצרים ועל טעותהא ועל מלכהא ועל פרעה ועל דמתרחצין עלוהי :
26 ואמסרנון ביד דבען למקטלהון וביד נבוכד נצר מלכא דבבל וביד עבדוהי ובתר כן
27 תשרי כיומי קדם אמר יי : ואת לא תדחל עבדי יעקב ולא תתבר ישראל ארי הא אנא
פריק ליך מרחיק וית בנך מארע גלותהון ויתובון דבית יעקב וישקטון וישרון לרוחצן
28 ולית דמניד : את לא תדחל עבדי יעקב אמר יי ארי בסעדך מימרי ארי אעביד
גמירא בכל עממיא די אגליתך לתמן ועמך לא אעביד גמירא ואיתי עלך יסורין
לאלפותך ברם בדין חסוד ושיצאה לא אשיצנך :

מז

1 דהוה פתגם נבואה מן קדם יי עם ירמיה נביא על פלשתאי עד לא ייתי פרעה
וימחי ית יתבי עזה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Multiplicatæ ſunt ruinæ eorum : etiam obedient unuſquiſq; proximo ſuo, 16
& dicent : Surgite & revertamur ad populum noſtrum, & ad terram nativitatis noſtræ à facie gladii inimici, qui eſt ſicut vinum inebrians. Invi- 17
tarunt ibi : Pharao rex Ægypti cujus copioſus tumultus eſt, transfert tempora. Vivo ego ; dicit Rex, Dñs exercituum nomen ejus; quia ſicut ve- 18
rum eſt verbum hoc, quòd Thabor eſt in montib⁹, & ſicut Carmelus in
mari ; ſic veniet interit⁹ ejus. Vaſa tranſmigrationis præpara tibi regnum 19
cœt⁹ Ægypti, quia Memphis in deſolationem erit, & deſolabitur abſque
habitatore. Regnum ſpecioſum fuit Ægyptus. Populi interfectores ve- 20
nient ab Aquilone contra eam, ad eam diripiendam. Principes quoque 21
ejus in medio ejus quaſi vituli ſaginati, ipſi enim verſi ſunt & fugerunt
ſimul, & non potuerunt conſiſtere ; quia dies interit⁹ eorum venit ſuper
eos, temp⁹ viſitationis malitiæ eorum. Vox colliſionis armorum eorũ quaſi 22
ſerpentum reptantiũ,quoniam cum exercitu ibunt contra vos : & ſicut ii
qui ingrediuntur cum ſecurib⁹ ad ſuccidenda ligna ſaltus. Conſumpti ſunt 23
principes ej⁹, dicit Dñs : quia non habent finem, quia copioſiores ſunt
locuſtis, & non eſt eis numer⁹. Confuſum eſt regnum Ægypti ; traditum 24
eſt in manum populi qui venit contra illud ab Aquilone. Dicit Dñs exer- 25
cituum Deus Iſrael : Ecce ego viſito ſuper tumultum Alexandriæ, & ſuper Pharaonem, & ſuper Ægyptios, & ſuper idola eorum, et ſuper reges
eorum , et ſuper Pharaonem , et ſuper omnes qui confidunt in eo.
Et tradam eos in manum quærentium occidere eos,et in manum Nabucho- 26
donoſor regis Babylonis, et in manum ſervorum ej⁹. Et poſtea habitabi-
tur ſicut in dieb⁹ antiquis, dicit Dñs. Tu autem ne timeas ſerve mi Jacob, 27
et ne formides Iſrael : Quia ecce ego ſalvum te faciam à longè, et filios
tuos de terra captivitatis eorum. Et revertentur viri dom⁹ Jacob, et quieſcent, et habitabunt confidenter, et non erit qui exterreat. Tu autem ne 28
timeas ſerve mi Jacob,dicit Dñs:quia in adjutoriũ tuũ eſt Verbum meum :
faciam enim conſumptionem in omnib⁹ populis ad quos tranſtuli te : non
faciam in te conſumptioné, ſed adducam ſuper te correptiones ut doceam
te,veruntamen in judicio miſericordiæ;et conſumendo non conſumam te.

CAP. XLVII.

Quod factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini cum Jeremia pro- 1
pheta, contra Philiſthæos, antequam veniret Pharao, et percuteret habitatores Gazæ.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܣܓܝ ܗܘܘ ܕܐܬܬܩܠܘ. ܐܦ ܢܦܠܘ ܓܒܪܐ ܥܠ ܚܒܪܗ. ܘܐܡܪܘ. ܩܘܡܘ ܢܗܦܘܟ ܠܥܡܢ
ܘܠܐܪܥܐ ܕܐܝܠܕܘܬܢ ܡܢ ܩܕܡ ܚܪܒܐ ܕܡܪܘܕܐ. * ܘܩܪܘ ܬܡܢ ܫܡܗ ܕܦܪܥܘܢ ܚܓܝܪܐ
ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܕܠܘܚܝܐ ܘܡܥܒܪܢ ܙܒܢܐ. * ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܠܟܐ ܡܪܝܐ ܡܠܟܐ ܕܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ.
ܢܦܠ ܦܪܥܘܢ ܐܝܟ ܩܨܝܐ ܕܛܘܪܐ. ܘܐܝܟ ܟܪܡܠܐ ܒܓܘ ܝܡܐ. * ܡܐܢܐ ܕܫܒܝܬܐ ܥܒܕܝ ܠܟܝ
ܒܬܘܠܬܐ ܒܪܬ ܡܨܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܡܦܝܣ ܠܚܘܪܒܐ ܬܗܘܐ. ܘܬܬܚܪܒ ܡܢ ܠܐ ܥܡܘܪܐ. * ܥܓܠܬܐ
ܫܦܝܪܬܐ ܡܨܝܪܬܐ ܡܨܪܝܢ. ܚܝܠܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ ܐܬܐ ܠܗ. * ܐܓܝܪܝܗ ܕܒܓܘܗ
ܐܝܟ ܥܓܠܐ ܕܦܛܡܐ. ܘܐܦ ܗܢܘܢ ܐܗܦܟܘ. ܘܥܪܩܘ ܐܟܚܕܐ. ܘܠܐ ܩܡܘ. ܡܛܠ ܕܝܘܡܐ ܕܬܒܪܗܘܢ
ܐܬܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܙܒܢܐ ܕܣܘܥܪܢܗܘܢ. * ܩܠܗ ܕܚܝܠܐ ܐܝܟ ܚܘܝܐ ܕܪܚܫ. ܡܛܠ ܕܒܚܝܠ
ܢܐܙܠܘܢ. ܘܒܢܪܓܐ ܢܐܬܘܢ ܥܠܝܗ ܐܝܟ ܦܣܩܝ ܩܝܣܐ. * ܦܣܘܩܘ ܥܒܝܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܡܢܝܢܐ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܣܓܝܘ ܡܢ ܩܡܨܐ. ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ ܡܢܝܢܐ. * ܒܗܬܬ
ܒܪܬ ܡܨܪܝܢ. ܘܐܫܬܠܡܬ ܒܐܝܕܝ ܥܡܐ ܕܓܪܒܝܐ: * ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ
ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܗܐ ܐܢܐ ܦܩܕ ܐܢܐ ܥܠ ܐܡܘܢ ܕܡܝܐ. ܘܥܠ ܦܪܥܘܢ. ܘܥܠ ܡܨܪܝܢ. ܘܥܠ ܐܠܗܝܗ.
ܘܥܠ ܚܝܠܗ. ܘܥܠ ܡܠܟܘܗܝ. ܘܥܠ ܦܪܥܘܢ. ܘܥܠ ܟܠ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ. * ܘܐܫܠܡ ܐܢܘܢ
ܒܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܒܐܝܕܐ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܒܐܝܕܐ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ. ܘܒܐܝܕܐ ܕܥܒܕܘܗܝ. ܘܡܢ ܒܬܪܟܢ ܬܥܡܪ ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܡܢ ܩܕܝܡ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܢܬ
ܠܐ ܬܕܚܠ ܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܬܬܬܒܪ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܡܛܠ ܕܗܐ ܦܪܩ ܐܢܐ ܠܟ ܡܢ ܪܘܚܩܐ.
ܘܠܙܪܥܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܫܒܝܗܘܢ. ܘܢܬܒ ܝܥܩܘܒ ܘܢܫܠܐ. ܘܢܫܬܝܢ ܘܢܬܢܝܚ ܘܠܝܬ ܕܡܕܚܠ
ܠܗ. * ܘܐܢܬ ܠܐ ܬܕܚܠ ܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܥܡܟ ܐܢܐ. ܡܛܠ
ܕܐܥܒܕ ܓܡܝܪܘܬܐ ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܒܕܪܬܟ ܬܡܢ. ܒܟ ܠܐ ܐܥܒܕ. ܘܐܪܕܝܟ ܒܕܝܢܐ
ܘܡܙܟܝܘ ܠܐ ܐܙܟܝܟ.

* ܦܣܘܩܘ̈ܗܝ * ܡܟܚ *

* ܥܠ ܦܠܫܬ *

* ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ
ܢܒܝܐ. ܕܢܬܢܒܐ ܥܠ ܦܠܫܬܝܐ. ܥܕܠܐ ܢܡܚܐ ܦܪܥܘܢ ܠܥܙܐ.

Complures eorum dejecti ſunt, & ceciderunt 16
alter ſuper alterũ, ac dixerunt; Surgite, rever-
tamur ad gentẽ noſtrã & ſolum natale noſtrũ,
à conſpectu gladii cruciantis. Et vocaverunt 17
ibi nomen Pharaonis Claudi regis Ægypti,
Perturbatorem et conſumptorem temporum.
Vivo ego, dicit ille Dñs cujus nomen eſt rex 18
Sebaoth, quòd ruiturus eſt Pharaon ceu frag-
mentum montis, & ut Charmelus in medi-
um maris. Vaſa captivitatis fac tibi virgo filia 19
Ægypti: nam Mephes erit in vaſtitatẽ, & de-
ſolabitur ob defectum civium: Super Ægyptũ 20
vitulam ſpecioſam depictam, exercitus ab A-
quilone veniet: Mercenarii ejus, *qui ſunt* in 21
ea quaſi vituli ſaginati, etiam ipſi terga ver-
tentes fugient ſimul, neq; ſubſiſtent; quia dies
fractionis eorum ſuperveniet eis, tempus viſi-
tationis eorum. Tumultus exercitûs erit quaſi 22
coluber reptans: ſiquidẽ cum exercitu ibunt,
& cum ſecuribus venient adverſùs eam tan-
quam cæſores lignorum: (Succidite ſylvas 23
ejus, dicit Dñs) ſiquidem infiniti ſunt; ſiqui-
dem plures ſunt locuſtis, & nullus eſt eis nu-
merus. Erubeſcet filia Ægypti, & tradetur in 24
manum populi Aquilonaris, Ait Dñs poten- 25
tiſſimus Deus Iſraelis. Ecce ego animadver-
ſurus ſum in Amonem aquarum, & in Pha-
raonem, & in Ægyptũ & deos ejus, & in ex-
ercitum regẽſq; ipſius; deniq; in Pharaonem,
& in omnes qui freti ſunt illo: Et traditurus 26
eos in manũ hoſtiũ eorũ, & in manũ quæren-
tium animam ipſorum; in manũ *ſcilicet* Ne-
buchadnoſaris regis Babylonii, & in manum
ſervorum ejus: poſtmodum autem habitabit
ut priſtinis diebus, ait Dñs. Tu verò ne time- 27
to ſerve mi Jacob, dicit Dñs, neque conſterna-
tor ô Iſrael: nam ecce liberabo te de *regione*
longinqua, & ſemen tuum de terra captivita-
tis ſuæ: ſedebitque Jacob & ſilebit, tran-
quillus ac tutus erit nemine lædente. Tu in- 28
quam, ne timeto ſerve mi Jacob, dicit Dñs;
quoniam tecum ſum: nam penitùs conſum-
pturus ſum cunctas gentes inter quas te
diſperſi, te verò nequaquam conſumam:
caſtigabo tamen te cum modo, nec penitùs
impunem te dimittam.

CAP. XLVII.

Contra Paleſtinam

Fuit etiam ſermo Domini ad Jeremiam 1
prophetam, ut vaticinaretur de Paleſtinis,
antequam percuſſiſſet Pharaon Azam.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وساير الشعب الذي بقي في القرية * والقوم الذين استامنوا الي ملك بابل * ومن بقي من
الشعب سباهم نبوزردان صاحب الشرطة * وانطلق بهم الي بابل * فاما مساكين الشعب
الذين لم يكن عندهم شي فتركهم نبوزردان في ارض يهودا * فدفع اليهم الكروم والارضين
وامرهم ان يستعملوها * فاما ارميا فامن به ملك بابل * وقال لنبوزردان صاحب الشرطة * وقال
له * خذ اليك ارميا وتعاهده * ولا تدع احدا يقول له شي من السو وما قال من شي فافعله
* وارسل نبوزردان ونبوسزبن صاحب الخدم * ونرغل سار اصار * وربماغ الذي هو صاحب
المطبخ * وجميع قواد ملك بابل] * وارسلوا فاخذوا ارميا من دار الحبس ودفعوه لجودليا
بن اسيكام بن صافان * واخرجوه واجلسوه في وسط الشعب * وكان قول الرب الي ارميا في دار
الحبس قايلا * امض وقل لابدملاخ الحبشي * هكذا قال الرب اله اسرايل * ها انا اجلب اقوالي
الي هذه الارض للشرور ولا للخيرات * واخلصك في ذلك اليوم ولا اسلمك في ايدي الناس
الذين تخاف من اجلهم * لاني تخلص اخلصك * ولا تسقط بالسيف ويكون نفسك للوجود
لانك توكلت علي قال الرب *

* الفصل السابع والاربعون *

* القول الصاير من قبل الرب الي ارميا اخيرا * بعد ان سرحه نبوزردان رييس الطباخين
من الرامة * عندما اخذه بالكبول في يديه في وسط جلوة يهودا المساقين الي بابل
* واخذ رييس الطباخين وقال له * الرب الاله تكلم بهذه الشرور علي هذا الموضع * وصنع
الرب * لانكم اخطاتم اليه ولم تسمعوا صوته * ها حللتك من هذه الكبول التي في يديك
ان كان حسن امامك ان تاتي معي الي بابل ات * اضع عيني عليك *

Populum verò omnem qui remanſerat in 9
urbe, unà cum iis qui ad regem Babylo-
niæ ſe receperant, univerſum populi reſi-
duum captivos abduxit Nebuzardan
præfectus militiæ, deportavitque in Ba-
byloniam. De populo autem pauperri- 10
mos, quibus non erat quicquam, reliquit
Nebuzardan in terra Judæ; deditque eis
vineas & agros, et præcepit eis ut illa co-
lerent. Jeremiam autem ſecurum reddi- 11
dit rex Babyloniæ, & dixit Nebuzardan
præfecto militiæ, dixit inquam ei;
Tolle tibi Jeremiam, et curam illius ge- 12
re, neque patiaris quempiam ut dicat ad-
verſùs eum quicquam mali: ſed quicquid
tibi dixerit, illud facies. Miſit itaque 13
Nebuzardan, & Nebuſazban præfectus
ſervorum, & Nergal-ſharazar et Rabmag
qui præfectus coquorum fuit, omnéſque
duces regis Babyloniæ:] Deinde mittentes 14
tulerunt Jeremiam ex atrio carceris, &
tradiderunt eum Godoliæ filio Achicami
filii Saphanis; eductúmque habitare fe-
cerunt in medio populi. Fuerat autem 15
ſermo Domini ad Jeremiam in atrio car-
ceris, dicens; Abi dictum Abdemelecho 16
Æthiopi; Sic dixit Dominus Deus Iſrae-
lis: Ecce ego adducturus ſum ſermones
meos huic terræ in mala, non autem in
bona. Te verò ſalvabo in illo die, & 17
non tradam te in manus hominum quos ti-
mes: Omnino ſalvabo te, & non occumbes 18
gladio, ſed erit anima tua ſuperſtes; quia
mihi confiſus es, dixit Dominus.

CAP. XLVII.

Sermo qui factus eſt à Domino 1
ad Jeremiam poſtremò, poſtquã
dimiſiſſet eum Nebuzardan prin-
ceps coquorum, ex Rama; quandó
vinctas manicis manus abduxit e-
um inter captivos Judæ qui duce-
bantur in Babelem.

Cum ergò cepiſſet eum princeps coquorũ, 2
dixit illi; Dominus Deus locutus eſt hæc
mala contra locum iſtum, Et fecit Do- 3
minus; quia peccâſtis in eum, & non au-
ſcultâſtis voci ejus. Ecce ſolvo te his 4
manicis quæ ſunt in manibus tuis. Si rectum
tibi videtur venire mecum Babelem, veni;
tui curam agam:

ירמיה : מח

torrentem in erunt &,aquilone ab *ascendentes* aquæ Ecce : Dominus dixit Sic
2 כה אמר יהוה הנה־מים עלים מצפון והיו לנחל
: ea in habitantes &,urbem ; ejus plenitudinem & ,terram inundabunt &,*inundantem*
שוטף וישטפו ארץ ומלואה עיר וישבי בה
ungularum *calcis* *voce* A .terræ habitator omnis ululabit & ,*homo* clamabunt &
3 וזעקו האדם והילל כל יושב הארץ: מקול שעטת פרסות
ad patres reſpexerunt non:ejus rotarum *tumultu*,ejus *currus ſtrepitu* à ,ejus fortium
אביריו מרעש לרכבו המון גלגליו לא־הפנו אבות אל־
, Peliſtim omnes vaſtandum ad venientem diem *Super* .manuum *remiſſione à* filios
4 בנים מרפיון ידים: על־היום הבא לשדוד את־כל־פלשתים
vaſtans nam : auxiliatorem ſuperſtitem omnem Sidon & , Sor ſuccidendum ad
להכרית לצר ולצידון כל שריד עזר כי־שדד
ad calvitium Venit .Caphtor inſulæ reſiduum , Peliſtim Dominus
5 יהוה את־פלשתים שארית אי כפתור: באה קרחה אל־
? te incides quò uſque : earum vallis reſiduum Aſchelon eſt ſuccisa , Hazzah
עזה נדמתה אשקלון שארית עמקם עד־מתי תתגודדי:
;tuam vaginam *ad* te collige ? quieſces non quò uſque Domini *gladie Heu*
6 הוי חרב ליהוה עד־אנה לא תשקטי האספי אל־תערך
, Aſchelon ad : ei *præcepit* Dominus & , *quieſces* Quomodo .ſile & , quieſce
7 הרגעי ודמי: איך תשקטי ויהוה צוה־לה אל־אשקלון
.eum *conſtituit* ibi maris *portum* ad &
ואל־חוף הים שם יעדה:

CAP. XLVIII. מח

,Nebo *ad* Væ :Iſrael Deus exercituum Dominus dixit ſic Moab Ad
1 למואב כה־אמר יהוה צבאות אלהי ישראל הוי אל־נבו
eſt affecta pudore : Chiriathaim eſt capta ,eſt affecta pudore , eſt vaſtata quoniam
כי שדדה הבישה נלכדה קריתים הבישה
cogitaverunt , Cheſbon *in* ,Moab laus ultra Non .*eſt conſternata &* ,*Miſgab*
2 המשגב וחתה: אין עוד תהלת מואב בחשבון חשבו
,*ſilebis* Madmen etiam : gente de eam diſperdamus & ,venite , malum *eam ſuper*
עליה רעה לכו ונכריתנה מגוי גם־מדמן תדמי
contritio & ,vaſtitas : Choronaim de clamoris Vox .gladius ibit te poſt
3 אחריך תלך חרב: קול צעקה מחרונים שד ושבר
Quia .ejus parvulorum clamorem facite audire : Moab eſt Contrita .magna
4 5 גדול: נשברה מואב השמיעו זעקה צעיריה: כי
hoſtes Choronaim deſcenſu in quoniam : *fletus* aſcendet fletu in Luchith *aſcenſu*
מעלה הלחית בבכי יעלה־בכי כי במורד חורנים צרי
eritis & : veſtram animam eruite , Fugite .audierunt contritionis clamorem
6 צעקת־שבר שמעו: נסו מלטו נפשכם ותהיינה
,tuis theſauris *in* &,tuis operib⁹ in *tua fiducia* quod eo *Quia* .deſerto in *juniper⁹* veluti
7 כערוער במדבר: כי יען בטחך במעשיך ובאוצרותיך
,ejus ſacerdotes,tranſmigrationem in Chemos egredietur & : capieris tu etiam
גם־את תלכדי ויצא כמיש בגולה כהניו
; evadet non urbs &,urbem omnem ad vaſtator veniet Et .ſimul ejus principes &
8 ושריו יחד: ויבא שדד אל־כל־עיר ועיר לא תמלט
alam Date .Dominus dixit *quod* : planities *diſperdetur* & , vallis peribit &
9 ואבד העמק ונשמד המישר אשר אמר יהוה: תנו־ציץ
non à erunt deſolationem in ejus civitates & : volabit volando quia , Moab
למואב כי נצא תצא ועריה לשמה תהיינה מאין
prohibens execratus & : fraude Domini opus *faciens Execratus* .eis in *habitatore*
10 יושב בהן: ארור עשה מלאכת יהוה רמיה וארור מנע
in ipſe *quieſcens &* ,*ſuis pueritiis à* Moab *fuit Pacatus* .ſanguine à ſuum gladium
11 חרבו מדם: שאנן מואב מנעוריו ושקט הוא אל־
: ivit non tranſmigrationem in &,vas *ad* vaſe de fuit evacuat⁹ non &,ſuis *fecib⁹*
שמריו ולא־הורק מכלי אל־כלי ובגולה לא הלך
.eſt mutatus non ejus odor & ,eo in ejus guſtus *ſtetit* idcirco
על־כן עמד טעמו בו וריחו לא נמר:

Verſio VULG. LAT.

2 Hæc dicit Dominus ; Ecce aquæ aſcendunt ab Aquilone, & erunt quaſi torrens inundans, & operient terram & plenitudinem ejus, urbem & habitatores ejus : clamabunt homines, & ululabunt 3 omnes habitatores terræ, A ſtrepitu pompæ armorum, & bellatorum ejus, à commotione quadrigarum ejus, & multitudine rotarum illius. Non reſpexerunt patres filios manibus diſſolutis 4 Pro adventu diei, in quo vaſtabuntur omnes Philiſthiim, & diſſipabitur Tyrus, & Sidon cum omnib⁹ reliquis auxiliis ſuis : depopulat⁹ eſt enim Domin⁹ Palæſthinos, reliquias inſulæ Cappa- 5 dociæ. Venit calvitium ſuper Gazam : conticuit Aſcalon, & reliquiæ vallis earum : uſquequò con- 6 cideris? O mucro Domini uſquequò non quieſces ? Ingredere in vaginā tuam, refrigerare, & ſile. 7 Quomodò quieſcet, cùm Domin⁹ præceperit ei adverſùs Aſcalonē, & adverſùs maritimas ejus regiones, ibique condixerit illi ?

CAP. XLVIII.

1 AD Moab hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael; Væ ſuper Nabo, quoniam vaſtata eſt, & confuſa : capta eſt Cariathaim : confuſa eſt fortis, & tremuit. 2 Non eſt ultrà exultatio in Moab contra Heſebon : cogitaverunt malum. Venite, & diſperdamus eam de gente, ergò ſilens conticeſces, ſequetúrque te gladius. 3 Vox clamoris de Oronaim : va- 4 ſtitas, & contritio magna. Contrita eſt Moab : annuntiate cla- 5 morem parvulis ejus. Per aſcenſum enim Luith plorans aſcendet in fletu : quoniam in deſcenſu Oronaim hoſtes ululatum con- 6 tritionis audierunt : Fugite, ſalvate animas veſtras : & eritis 7 quaſi myricæ in deſerto. Pro eo enim quòd habuiſti fiduciam in munitionib⁹ tuis, & in theſauris tuis, tu quoque capieris : & ibit Chamos in tranſmigrationem, ſacerdotes ejus, & principes ejus 8 ſimul. Et veniet prædo ad omnem urbem, & urbs nulla ſalvabitur : & peribunt valles, & diſſipabuntur campeſtria : quo- 9 niam dixit Domin⁹ : Date flo- 10 rem Moab, quia florens egredietur : & civitates ejus deſertæ erunt, & inhabitabiles. Maledictus, qui facit opus Domini fraudulenter : & maledictus, qui prohibet gladium ſuum 11 à ſanguine. Fertilis fuit Moab ab adoleſcentia ſua, & requievit in fæcibus ſuis : nec transfuſus eſt de vaſe in vas, & in tranſmigrationem non abiit : idcircò permanſit guſtus ejus in eo, et odor ejus non eſt immutatus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Εἰ δὲ μὴ, (ι) ἀπότρεχε, ἀνάστρεψον πρὸς τὸν Γοδολίαν υἱὸν Ἀχικὰμ, (κ) υἱοῦ Σαφὰν, ὃν κατέστησε βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν γῇ Ἰούδα, καὶ οἴκησον μετ' αὐτοῦ ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ ἐν γῇ Ἰούδα, εἰς ἅπαντα τὰ ἀγαθὰ ἐν ὀφθαλμοῖς σου τοῦ (λ) πορευθῆναι ἐκεῖ, πορεύου. καὶ ἔδωκεν αὐτῷ ὁ ἀρχιμάγειρος δῶρα, καὶ ἀπέστειλεν αὐτόν. 6 Καὶ ἦλθε πρὸς Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰ, καὶ ἐκάθισεν ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ (μ) αὐτοῦ, τοῦ καταλειφθέντος ἐν τῇ γῇ. 7 Καὶ ἤκουσαν πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως τῆς ἐν ἀγρῷ, αὐτοὶ (ν) καὶ οἱ ἄνδρες αὐτῶν, ὅτι κατέστησε βασιλεὺς Βαβυλῶνος τὸν Γοδολίαν ἐν τῇ γῇ, καὶ (ʺ) παρακατέθεντο αὐτῷ ἄνδρας καὶ γυναῖκας αὐτῶν, οὓς οὐ κατῴκισεν 8 εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ ἦλθε πρὸς Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰ Ἰσμαὴλ υἱὸς Ναθανίου, καὶ (ξ) Ἰωάναν υἱὸς Κάρηε, καὶ Σαραίας υἱὸς Θαναεμὲθ, καὶ υἱοὶ (ο) Ἰωφὲ τοῦ Νετωφαθὶ, καὶ Ἐζονίας υἱὸς τοῦ Μωχαθὶ, αὐτοὶ, καὶ οἱ ἄνδρες αὐ- 9 τῶν. Καὶ ὤμοσεν αὐτοῖς Γοδολίας, καὶ τοῖς ἀνδράσιν αὐτῶν, λέγων, Μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ προσώπου τῶν παίδων τῶν Χαλδαίων, κατοικήσατε ἐν τῇ γῇ, καὶ (ʺ) ἐργάσασθε τῷ βασιλεῖ Βαβυλῶνος, 10 καὶ βέλτιον ἔσται ὑμῖν. Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ κάθημαι ἐναντίον ὑμῶν εἰς Μασσηφὰ, στῆναι κατὰ πρόσωπον τῶν Χαλδαίων, οἳ (π) ἂν ἔλθωσιν ἐφ' ὑμᾶς. καὶ ὑμεῖς (ρ) συνάγετε οἶνον καὶ ὀπώραν καὶ (σ) ἔλαιον, καὶ βάλετε εἰς τὰ ἀγγεῖα ὑμῶν, καὶ (·) οἰκήσατε ἐν ταῖς πόλεσιν αἷς 11 κατεκρατήσατε. Καὶ πάντες οἱ Ἰουδαῖοι οἱ (τ) ἐν Μωὰβ, καὶ ἐν υἱοῖς Ἀμμὼν, καὶ οἱ ἐν τῇ Ἰδουμαίᾳ, καὶ οἱ ἐν πάσῃ τῇ γῇ, ἤκουσαν ὅτι ἔδωκε βασιλεὺς Βαβυλῶνος (υ) κατάλειμμα τῷ Ἰούδα, καὶ ὅτι κατέστησεν ἐπ' αὐ- 12 τοὺς τὸν Γοδολίαν υἱὸν Ἀχικάμ. Καὶ ἦλθον πρὸς Γοδολίαν εἰς γῆν Ἰούδα εἰς Μασσηφὰ, καὶ συνήγαγον οἶνον καὶ ὀπώραν πολλὴν σφόδρα, καὶ ἔλαιον.

MS.A. (ι) ἀπόστρεψον καὶ ἀπότρεχε πρὸς Γοδολίαν (κ) * υἱὸν (λ) πορευθῆναι, καὶ πορεύου. (μ) τοῦ καταλειφθέντος (ν) καὶ ἡ δύναμις αὐτῶν, καὶ οἱ (ʺ) παρεκατέθεντο (ξ) Ἰωάννας (ο) Ὠφὲτ τοῦ Νετωφατεὶ, καὶ Ἰεζονίας υἱὸς τοῦ Μαχατεὶ, (ʺ) ἐργάζεσθε (π) ἐὰν (ρ) συναγάγετε (σ) συναγάγετε ἔλαιον, (·) οἰκήσατε (τ) ἐν γῇ Μωὰβ, καὶ οἱ ἐν (υ) τὰ καταλείμματα

Sin minus; recurre (i) ad Godoliam filium Achicam filii Saphan, quem conſtituit rex Babylonis in terra Juda : & habita cum eo in medio populi in terra Juda : ad omnia quæ bona in oculis tuis ad eundum ibi, evade. Et dedit ei magiſter coquorum dona, & dimiſit eum. Et venit ad Godoliam in Maſſepha : & ſedit in medio populi ſui : qui remanſit in terra. Et audierunt omnes duces virtutis, quæ in agro, ipſi, & viri eorum, quia conſtituit rex Babylonis Godoliam in terra, & (g) commendaverunt ei viros, & uxores (h) eorum, quos non tranſtulit in Babylonem. Et venerunt ad Godoliam in Maſſepha Iſmael filius Nathaniæ, & Joanam filius Caree, & Saræas filius Thanameth, & filii Jophe Netophatitæ, & Ezonias filius Mochathi, ipſi, & viri eorum. Et juravit eis Godolias, & viris eorum, dicens : Ne timeatis à facie puerorum Chaldæorum. Habitate in terra, & operamini regi Babylonis : & melius erit vobis. Et ecce ego ſedeo coram vobis in Maſſepha ad ſtandum ante faciem Chaldæorum, quicunque venerint ſuper vos. Et vos colligite vinum, & fructus, & oleum, & mittite in vaſa veſtra : & habitate in urbibus, quas tenuiſtis. Et omnes Judæi qui in Moab, & in filiis Ammon, & qui in Idumæa, & qui in omni terra, audierunt, quia dedit rex Babylonis reliquias Juda, & quia conſtituit ſuper eos Godoliam filium Achicam. (·) Et venerunt ad Godoliam in terram Juda in Maſſepha : & collegerunt vinum, & fructus multos valdè, & oleum.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 כדנן אמר יי הא עממיא אתן מצפונא ויהון כנחל מגבר ויבזון ארעא ומלאה קרויא
3 ודיתבין בהון ויצוחון בני אנשא וילילון כל יתבי ארעא: מקל מפסועית פרסת גברוהי
מזיע לרתיכוהי אתרגושת גלגלוהי לא מתפנן אבהן לרחמא על בנין מאתרשלות
4 ידין: על יומא דאתי למבזית כל ארעא פלשתאי לשצאה לצור ולצידון כל שאר סעיד
5 ארי אביז יי ית ארע פלשתאי שאר נגות קפוטקאי: מטת פורענותא ליתבי עזה
6 אתברו אשקלנאי שאר תוקפהון עד אימתי תתהממון: וי חרבא דשליחא מן קדם
7 יי עד אימתי לא תנוחין אתכנשי ללדניך לבית זמנא תנוחין: איכדין תנוחין ויי
פקיד עלה על אשקלון ועל ספר ימא לתמן מזמנה:

מח

1 למואב כדנן אמר יי צבאות אלהא דישראל וי על נבו ארי אתבזיזת בהיתת אתכבישת
2 קריתים בהיתו מבית רוחצנהון ואתברו: לית עוד תושבחא למואב בחשבון חשיבו
עלה בישא אתו ונשיצנה מלמהוי עמא אף מדמן תתברין בתרך יהכון קטולי חרבא:
3 4 קל צוחתא מחורונים בזא ותברא רבא: אתברת מלכות מואב בסרו צוחתא
5 שלטוניהון: ארי מסוקית לוחית כד בכן יסקון בכן ארי במחתית חורונים צוחת
6 תבירי קרב יבסרון: ערקו שיזבו נפשכון והוו כמגדל ערער דשרן בשכונין במדברא:
7 ארי חלף דאתרחיצת באוצרך ובבירת גנזך אף את תתאחדין ויפיק כמוש בגלותא
8 פלחוהי ורברבוהי כחדא: וייתון בוזזין על כל קרויהון וקרוא מנהון לא תשתיזב
9 וייבדון דיתבין בעומקא וישתיצון דשרן במישרא דאמר יי: אעדו כתרא מן מואב
10 ארי מגלא תגלי וקרוהא לצדו יהוין מבלי יתיב בהן: ליט די עביד עלה עובדא מן
11 קדם יי בנכלא וליט דמנע חרביה מקטול: שלן מואבאי מעוריהון ושקטין אנון על
נכסיהון ולא אתגליאו מאתר לאתר ובגלותא לא הליכו על כן אוריכו שליותא נכסיהון
כחמרא דנטיר על שמריה וריחיה לא פג:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dñs, Ecce populi venient ab Aquilone, & erunt quaſi torrens inundans, & diripient terram & plenitudinem ejus; urbes, & habitantes in eis. Et clamabunt filii hominum, & ululabunt omnes habitatores terræ. A voce greſſus ungularum fortium ejus, à commotione curruum ejus, tumultu rotarum ejus, non reſpiciunt patres ut miſereantur filiorum, propter remiſſionem manuum. Propter diem qui ventur⁹ eſt, in quo diripietur omnis terra Philiſtæorum, & diſperdentur Tyrus & Sidon, & omnes reliquiæ auxilii; quia diripuit Dñs terram Philiſtæorum, reliquias inſulæ *Cappadocum*. Pervenit vindicta habitatorib⁹ Gazæ : contriti ſunt Aſcalonitæ, & reliquiæ roboris eorum : quouſq; tandem vos ipſos incidetis? Væ mucro, qui miſſus es à facie Dñi, uſque quo non quieſces? Recipe te in vaginam tuam, in domo temporis quieſce. Quomodo quieſcet ? quia Dñs præcepit de eo contra Aſcalonem, & contra portum maris, ibique præparavit eum.

CAP. XLVIII.

AD Moab hæc dicit Dñs exercituum Deus Iſrael ; Væ ſuper Nebo, quoniam direpta eſt, & confuſa eſt : ſubjugata eſt Cariathaim : confuſi ſunt à domo fiduciæ ſuæ, & confracti ſunt. Non eſt ultrà laus Moab. In Heſbon cogitaverunt contra eam malum : Venite & conſumem⁹ eam, ne ſit populus. Etiam Madmen contererîs ; poſt te ibunt occiſores gladio. Vox clamoris de Horonaim, direptio & confractio magna. Contritum eſt regnum Moab ; annuntiarunt clamorem dominatores ejus. Quia aſcenſum Luith dum flent aſcendunt flentes : nam per deſcenſum Horonaim clamorem confractorum à prælio annuntiabunt. Fugite, liberate animas veſtras, & eſtote ſicut turris Aroer, & ſicut qui morantur in tentoriis in deſerto. Quia pro eo quòd confiſa es in theſauris tuis, & in domo opum tuarum, tu quoque capieris. Et egredietur Chamos in tranſmigrationem, cultores ejus, & principes ejus ſimul. Et venient direptores contra omnes urbes eorum, neque earum ulla liberabitur ; & peribunt qui habitant in valle, & diſperdentur qui habitant in campeſtribus, quia dixit Dominus. Auferte coronam à Moab ; quia tranſmigrando tranſmigrabit, & urbes ejus in deſolationem erunt, ita ut non ſit qui habitet in eis. Maledict⁹ qui facit in ea opus à facie Dñi in dolo : & maledict⁹ qui prohibet gladiū ſuum ab occiſione. Abundantes fuerant Moabitæ ab adoleſcentia ſua, & quieti in ſubſtantiis ſuis : nec fuerant tranſlati de loco in locū, nec in tranſmigratione abiverant : propterea prorogarunt proſperitatem facultates eorum ſicut vinum quod conſervatum eſt ſuper fæces ſuas, & odor ejus non eſt immutatus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܝܬܐ ܐ̱ܢܐ ܥܠܝܡܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܢܚܠܐ ܕ
ܘܢܣܚܦܘܢ ܐܪܥܐ. ܘܡܠܝܗ̇. ܩܪܝܬܐ ܘܥܡܘܪܝܗ̇. ܘܢܩܥܘܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ. ܘܢܝܠܠܘܢ ܟܠܗܘܢ
ܥܡܘܪ̈ܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܡܢ ܩܠ ܕܗܠܟܬܐ ܕܦܪ̈ܣܬܐ ܕܓܢ̈ܒܪܘܗܝ. ܘܡܢ ܙܘܥܐ ܕܡܪ̈ܟܒܬܗ
ܘܡܢ ܩܠ ܕܓܠ̈ܓܠܘܗܝ. ܠܐ ܐܬܦܢܝܘ ܐܒܗ̈ܐ ܠܘܬ ܒ̈ܢܝܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܪܦܝ ܐܝ̈ܕܝܗܘܢ. *
ܗܐ ܝܘܡܐ ܐܬܐ ܠܡܒܙܙ ܠܟܠܗܘܢ ܦܠܫܬܝ̈ܐ. ܘܠܡܚܪܒܘ ܨܘܪ ܘܨܝܕܢ. ܘܠܟܠ ܕܐܫܬܚ
ܠܡܒܕܪܘ. ܡܛܠ ܕܒܙܘܙ ܡܪܝܐ ܠܦܠܫܬܝ̈ܐ. ܠܫܪܟܐ ܕܓܙܪ̈ܬܐ ܕܩܦܘܕܩܝܐ. * ܬܐܬܐ
ܡܚܘܬܐ ܠܥܙܐ. ܬܬܬܒܪ ܐܫܩܠܘܢ. ܘܟܠ ܕܐܫܬܚܪ ܡܢ ܒ̈ܢܝ ܡܕܝܢ̈ܬܗܘܢ. * ܐܘ ܣܦܣܪܗ ܕܡܪܝܐ
ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܠܐ ܬܫܠܝܢ. ܘܠܐ ܬܬܢܝܚܝܢ ܡܢ ܩܛܠܐ. ܐܬܟܢܫܝ ܒܬܐܠܬܟܝ. ܐܬܟܢܫܝ
ܘܫܠܝ. * ܐܝܟܢܐ ܬܫܠܐ ܕܡܪܝܐ ܦܩܕܗ̇ ܠܐܫܩܠܘܢ. ܘܥܠ ܣܦܪ ܝܡܐ ܬܡܢ ܐܫܠܛܗ̇

* Sic ait Dominus, Ecce juvenes adducam ex Aquilone, erúntq; tanquam torrens rapidus, abripiéntque terrā & quicquid eſt in ea, urbem & cives ejus; ita ut exclament homines, & ejulent omnes habitatores terræ. Ob ſonitū inceſſûs ungularum *equorum* gigantum ejus, & ob commotionem curruū ejus, ſtrepitúmque rotarū ejus, non reſpicient patres ad filios; quia remittentur manus eorum. Ecce dies veniet quo diripientur omnes Paleſtini, excindetur Tyrus & Sidon, & quotquot reliqui manſerunt, diſpergentur: vaſtaturus eſt enim Dñs Paleſtinos, reliquas inſulas Cappadocum. Perveniet plaga ad Azam, conteretur Aſcalon, & quotquot ſupererint de civibus earum. O gladie Domini, quouſque tandem non quieſces neque deſiſtes à cæde? recipe te in vaginam tuam, recipe te, & quieſce. Quomodo quieſceret, quum Dominus præfecerit eum Aſcaloni, & ſuper litora maris ibi dederit ei poteſtatem? 2 3 4 5 6 7

* ܩܦܠܐܘ * ܡܚ * ܥܠ ܢܒܘ *

CAP. XLVIII.

Contra Nobu.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܝ ܠܢܒܘ ܕܐܬܒܙܙܬ. ܒܗܬܬ ܘܐܬܚ
ܩܘܪܝܬܝܡ. ܒܗܬܬ ܚܣܝܢܬܐ ܘܐܬܒܙܙ. * ܘܠܝܬ ܬܘܒ ܫܘܒܗܪܐ ܠܡܘܐܒ ܒܚܫܒܘܢ
ܐܬܚܫܒܘ ܥܠܝܗ̇ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܡܪܘ. ܬܘ ܢܘܒܕܝܘܗ̇ ܡܢ ܥܡܐ. ܐܦ ܡܫܬܩܘ ܬܫܬܩܝ
ܒܬܪܟܝ ܢܐܙܠ ܣܝܦܐ. * ܩܠ ܡܝܠܠܬܐ ܡܢ ܚܘܪܘܢܝܡ. * ܒܙܬܐ ܘܬܒܪܐ ܪܒܐ ܐܬܬܒܪܬ ܡܘܐܒ
ܐܫܡܥܘ ܝܠܠܬܐ ܡܣܟ̈ܢܝܗ̇. * ܡܣܩܢܐ ܕܠܘܚܝܬ. ܒܒܟܝܐ ܢܣܩܘܢ. ܘܡܚܕܪܐ
ܕܚܘܪܘܢܝܡ. ܐܘܠܨܢܐ ܘܩܥܬܐ ܕܬܒܪܐ ܢܫܡܥܘܢ. * ܫܡܥܘ ܥܪܘܩܘ. ܘܦܨܘ ܢܦܫܟܘܢ. ܘܗܘܘ
ܐܝܟ ܥܩܪܐ ܒܡܕܒܪܐ. * ܡܛܠ ܕܐܬܬܟܠܬܝ ܥܠ ܥܫܝܢܘܬܟܝ ܘܥܠ ܓܙ̈ܝܟܝ. ܐܦ ܐܢܬܝ
ܬܬܐܚܕܝܢ. ܘܢܦܘܩ ܟܡܘܫ ܒܫܒܝܬܐ. ܘܟܗܢ̈ܘܗܝ ܘܪ̈ܘܪܒܢܘܗܝ ܐܟܚܕܐ. * ܘܢܐܬܐ
ܒܙܘܙܐ. ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢ̈ܬܟܝ. ܘܠܐ ܢܬܦܠܛܘܢ. ܘܢܐܒܕ ܒܩܥܬܐ. ܘܢܚܪܒ ܡܝܫܪܐ. ܐܝܟ
ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܒܘ ܟܠܝܠܐ ܠܡܘܐܒ. ܡܛܠ ܕܡܗܦܟܘ ܬܬܗܦܟ. ܘܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢ̈ܬܗ̇ ܢܗܘܝܢ
ܠܚܘܪܒܐ ܡܢ ܕܠܐ ܕܝܪܐ. * ܠܝܛ ܗܘ ܡܢ ܕܥܒܕ ܥܒܕܗ ܕܡܪܝܐ ܒܢܟܠܐ. ܘܠܝܛ
ܡܢ ܕܟܠܐ ܣܝܦܗ ܡܢ ܕܡܐ. * ܫܠܝܢ ܡܘܐܒܝ̈ܐ ܡܢ ܛܠܝܘܬܗܘܢ. ܘܫܩܝܛܝܢ ܥܠ
ܠܩܛܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܫܬܦܝܘ ܡܢ ܡܐܢܐ ܠܡܐܢܐ. ܘܒܫܒܝܬܐ ܠܐ ܐܙܠܘ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܩܡ
ܛܥܡܗܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܪܝܚܗܘܢ ܠܐ ܫܢܐ.

Sic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, Væ Nobu, quoniam direpta eſt; rubore & ignominiâ ſuffuſa eſt Curiathim, erubuit & diſſipata eſt magnificentia ejus: Nec eſt quod glorietur ampliùs Moab de Hesbone, meditati ſunt malum adverſùs eam, & dixerunt, Agite, populū ejus extinguamus, etiamſi omnino reticeas, ſequetur te gladius. Vox ejulatûs è Hornim: Direptione & contritione magnâ contrita eſt Moab: ediderunt ejulatū pauperes ejus: Clivum Luhith flentes conſcendent, & in declivitate Hornim anguſtiam & clamorem profligationis edent. Auſcultate, fugite, & voſmetipſos eripite, & ſimiles eſtote ſtipiti in deſerto. Quia confiſa es in arcibus & theſauris tuis, tu quoque capieris; & Chamos in captivitatem abibit unà cum ſacerdotibus & principibus ejus: Veniétq; direptor contra cunctas civitates tuas, & non evadent; imò peribit convallis, & planities vaſtabitur, quemadmodum edixit Dominus. Date coronam Moabo, quia funditùs evertetur, & omnes civitates ejus ibunt in deſolationem ob defectum incolarum. Maledictus qui fecerit opus Domini cum fraude, & maledictus qui cohibuerit gladium ſuum à ſanguine. Tuti ſunt Moabitæ inde à pueritia ſua, & ſuper fæces ſuas tranquilli, neque exhauſerunt è vaſe in vas, & in captivitatem non abierunt: propterea durat in eis ſapor eorum, & odor eorum non eſt remiſſus. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وان كان لا فارجع وامض الي عودوليا ابن اسيكام ابن صافان الذي اقامه ملك بابل ع
ارض يهودا * واسكن معه في وسط الشعب في ارض يهودا لكل الخيرات التي في عينيك ا
عصي فامض ودفع له رييس الطباخين هدايا وسرحه * فاتي الي عودوليا الي مسيفا وجلس
في وسط الشعب المتبقي في الارض * وسمع جميع قواد الجيش الذي في الحقل هم وجيشه
ورجالهم ان ملك بابل اقام عودوليا في الارض فاعادوا له رجاله ونساه الذين لم يسبهم ا
بابل * واتي الي عودوليا الي مسيفا اسمعيل ابن ناثنيو ويونان ابن كاريا وصاراء ابن
وبنو يوفات الذين من ناطوفات ويارونياس بن موخاتي هم ورجالهم * وحلف لهم عودو
ولرجالهم قايلا لا تخافوا من وجه عبيد الكلدانيين * اسكنوا في الارض واعملوا لملك
بابل فيكون لكم الخير * وها انا اجلس امامكم في مسيفا لاقوم في وجه الكلدانيين الذين
عساهم ان ياتوا عليكم وانتم اجمعوا خمرا وفاكهة واجمعوا زيتا وضعوا في اوعيتكم
وتسكنون في المدن اللاتي مسكتموها *

الاصحاح الثلاثون *

* وجميع اليهود الذين في ارض مواب والذين في بني عمون والذين في ادوم والذين
كل الارض سمعوا ان ملك بابل دفع البقايا ليهودا وانه اقام عليهم عودوليا ابن اسيكا
* فاتوا الي عودوليا الي ارض يهودا في مسيفا وجمعوا خمرا وفاكهة كثيرة جدا وزيتا

* *Sin minùs, revertere, & confer te ad Godoliam filium Achicami filii Saphanis, quem rex Babelis præfecit terræ Judæ, & habita cum eo in medio populi in terra Judæ: ad omnia bona ad quæ eundum tibi videtur, abi: Cùmque dediſſet illi munera princeps coquorum, & dimiſiſſet eum; Venit ad Godoliam in Maſepham, & habitavitque in medio populi qui reliquus erat in terra. Audientes autem cuncti copiarum duces qui erant in agro, ipſi & exercitus ac viri eorum, quòd rex Babelis præfeciſſet Godoliam in ea terra; reſtituerunt ei viros ejus & mulieres ejus, qui non fuerant abducti Babelem. Et venerunt ad Godoliam in Maſepham Iſmael filius Nathaniæ, Jonan filius Careæ, Saraa filius Thanamath, & filii Jophath qui erant ex Netophath, & Jezonias filius Machathi, tam ipſi quàm viri ipſorum. His juravit Godolia & viris eorum, dicens; Ne timeatis ſervos Chaldæorum: habitate in terra & operamini regi Babelis, & proſperè ſuccedet vobis. En ego maneo apud vos in Maſepha, ut me opponam Chaldæis qui fortè venient contra vos: vos interim colligite vinum & fructus, & colligite oleum, & reponite in vaſis veſtris: ſic habitabitis in urbibus quas tenuiſtis.* 5 6 7 8 9 10

Textus trigeſimus.

* *Omnes quoque Judæi qui erant in terra Moab, qui erant inter filios Ammon, qui erant in Edom, qui denique erant in univerſa terra, audientes quòd rex Babelis reliquias dediſſet Judæ, & præfeciſſet eis Godoliam filium Achicami;* 11
* *Venerunt ad Godoliam in terram Judæ in Maſepham, & collegerunt vinum & fructus plurimos oleumque.* 12

ירמיה : מח

,transfnigratores ei mittam & , Dominus dixit ,*venientes* dies ecce Propterea
12 לכן הנה־ימים באים נאם־יהוה ושלחתי־לו צעים
.*conterent sparsim* eorum utres & , *exinanient* ejus vasa &:eum facient transfnigrare &
וצעהו וכליו יריקו ונבליהם ינפצו׃
Israel domus sunt affecti pudore sicut : Chemos à Moab afficietur pudore Et
13 ובש מואב מכמוש כאשר־בשו בית ישראל
virtutis viri & *: nos* Fortes , *dicetis* Quomodo .eorum fiducia el--Beth à
14 מבית אל מבטחם׃ איך תאמרו גבורים אנחנו ואנשי־חיל
ejus *juvenum electio &* , *conscendit ejus civitates* & ,Moab est Vastatus ? bellum ad
15 למלחמה׃ שדד מואב ועריה עלה ומבחר בחוריו
.ejus nomen exercituum Dominus , rex ait : jugulationem ad descenderunt
ירדו לטבח נאם־המלך יהוה צבאות שמו׃
.valde festinavit ejus malum & *: veniendum ad* Moab contritio Propinqua
16 קרוב איד־מואב לבוא ורעתו מהרה מאד׃
Quomodo ,dicite :ejus nomen *scientes* universi & ,ei° *circuitu* omnes ei *Commovemini*
17 נדו לו כל־סביביו וכל ידעי שמו אמרו איכה
sede & , gloria de Descende *? decoris* baculus , *fortitudinis* virga est confracta
18 נשבר מטה־עז מקל תפארה׃ רדי מכבוד ישבי
corrupit ; te *in* ascendit Moab vastator quoniam : Dibon filia habitatrix , siti in
בצמא ישבת בת־דיבון כי־שדד מואב עלה בך שחת
interroga : Haroher habitatrix prospice & , sta *viam Ad* .tuas munitiones
19 מבצריך׃ אל־דרך עמדי וצפי יושבת ערוער שאלי־
, Moab est affectus Pudore ? est factum quid , dic *: evasam* & fugientem
20 נס ונמלטה אמרי מה־נהיתה׃ הביש מואב
est vastatus quòd , Arnon in annuntiate:clamate & ,ululate ;est *confractum* quoniam
כי־חתה הלילי וזעקי הגידו בארנון כי שדד
, Jehasah *ad* & , Cholon *ad : planit.ei* terram *ad* venit judicium Et .Moab
21 מואב׃ ומשפט בא אל־ארץ המישר אל־חלון ואל־יהצה
.Diblathaim domum *super* & , Nebo *super* & , Dibon super Et .Mephahath *super* &
22 ועל־מופעת׃ ועל־דיבון ועל־נבו ועל־בית דבלתים׃
, Cherioth *super* Et .Mehon-Beth *super* & ghamul-Beth *super* & , Chiriathaim super Et
23 ועל קריתים ועל־בית גמול ועל־בית מעון׃ ועל־קריות
24 .propinquas & , longinquas , Moab terræ civitates omnes *super* & : Bosrah *super* &
ועל־בצרה ועל כל־ערי ארץ מואב הרחקות והקרבות׃
,eum Inebriate.Dominus dixit:est contritũ ej° brachiũ &,Moab cornu est Abscissum
25 נגדעה קרן מואב וזרעו נשברה נאם־יהוה׃ השכירהו
26 erit & , suo vomitu in Moab *se volutabit* & : magnificavit Dominum *super* quoniam
כי על־יהוה הגדיל וספק מואב בקיאו והיה
furibus in si ? Israel tibi fuit *derisui non si* Et .ipse etiam derisum in
27 לשחק גם הוא׃ ואם לוא השחק היה לך ישראל אם־בגנבים
,civitates Relinquite.*commovebis te eo in tuorum verborum sufficientia à* quia ? est inventus
28 נמצאה כי־מדי דבריך בו תתנודד׃ עזבו ערים
oris transit b° in nidificabit colũba veluti estote &:Moab habitatores,petra in habitate &
ושכנו בסלע ישבי מואב והיו כיונה תקנן בעברי פי־
,ejus superbiam &,ejus elationem:valde est superb°,Moab superbiã Audivim° .foveæ
29 פחת׃ שמענו גאון־מואב גאה מאד גבהו וגאונו
,ej° *iracundiã*,Dominus ait , novi Ego .ejus cordis exaltationẽ & ,ej° extollẽtiã &
30 וגאותו ורם לבו׃ אני ידעתי נאם־יהוה עברתו
, ejulabo Moab super Ideo .fecerunt sic non,ejus *nugæ:firmitudo* non &
31 ולא־כן בדיו לא־כן עשו׃ על־כן על־מואב איליל
fletu A *.gemet* Cheres--Chir viros *ad* : clamabo *ipsam* universam Moab *ad* &
32 ולמואב כלה אזעק אל־אנשי קיר־חרש יהגה׃ מבכי
mare ad usq; ,mare transierut tuæ propagines ,Sibmah vitis *tibi* flebo Jahazer
יעזר אבכה־לך הגפן שבמה נטישתיך עברו ים עד ים
.*cecidit vastans* tuam vindemam super & ,*tuam æstivam* super : pervenerunt Jahazer
יעזר נגעו על־קיצך ועל־בצירך שדד נפל׃

Versio VULG. LAT.

12 Propterea ecce dies veniunt, dicit Dominus; & mittam ei ordinatores, & stratores laguncularum, & sternent eum, & vasa ejus exhaurient, & lagunculas eorum collident.
13 Et confundetur Moab à Chamos; sicut confusa est domus Israel à Bethel, in qua habebat fiduciam.
14 Quomodò dicitis; Fortes sumus, & viri robusti ad præliandũ?
15 Vastata est Moab, & civitates illius succiderunt: & electi juvenes ejus descenderunt in occisionem: ait rex, Dominus exercituum nomen ejus.
16 Propè est interitus Moab ut veniat: & malum ejus velociter accurret nimis.
17 Consolamini eum omnes, qui estis in circuitu ejus; & universi, qui scitis nomen ejus, dicite; Quomodò confracta est virga fortis, baculus gloriosus?
18 Descende de gloria, & sede in siti, habitatio filiæ Dibon: quoniam vastator Moab ascendit ad te, dissipavit munitiones tuas.
19 In via sta, & prospice habitatio Aroër: interroga fugientem: & ei qui evasit, dic; Quid accidit?
20 Confusus est Moab, quoniam victus est: ululate, & clamate, annuntiate in Arnon, quoniã vastata est Moab.
21 Et judiciũ venit ad terram campestrem; super Helon, & super
22 Jasa, & super Mephaath, Et super Dibon, & super Nabo, & super
23 domum Deblathaim, Et super Cariathaim, & super Bethgamul, & super
24 Bethmaon, Et super Carioth, & super Bosra, & super omnes civitates terræ Moab, quæ longè, & quæ propè sunt.
25 Abscissum est cornu Moab, & brachium ejus contritum est, ait
26 Dominus. Inebriate eum, quoniam contra Dominum erectus est: & allidet manum Moab in vomitu suo, & erit in derisum etiam ipse.
27 Fuit enim in derisum tibi Israel, quasi inter fures reperisses eum: propter verba ergò tua quæ adversùm illum locutus es, captivus ducêris.
28 Relinquite civitates, & habitate in petra, habitatores Moab: et estote quasi columba nidificans in summo ore foraminis.
29 Audivimus superbiã Moab: superbus est valdè, sublimitatẽ ejus, & arrogan-
30 tiam, & superbiam, & altitudinem cordis ejus. Ego scio, ait Dominus, jactantiam ejus: &
31 quòd non sit juxta eam virtus ej°, nec juxta quod poterat conata sit facere. Ideò super Moab
32 ejulabo, & ad Moab universam clamabo, ad viros muri fictilis lamentantes. De planctu Jazer plorabo tibi, vinea Sabama: propagines tuæ transierunt mare, usque ad mare Jazer pervenerunt: super messem tuam, & vindemiam tuam, prædo irruit.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

13 Καὶ (ᵘ) Ἰωάναν υἱὸς Κάρηε, ϗ πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως, οἱ ἐν τοῖς ἀγροῖς, (φ) ἦλθον πρὸς τὸν Γοδολίαν εἰς 14 Μασσηφὰ, Καὶ εἶπον αὐτῷ, Εἰ γνώσει γινώσκεις, ὅτι (χ) Βελεισὰ βασιλεὺς υἱὸς Ἀμμὼν ἀπέστειλε πρὸς σὲ τὸν Ἰσμαὴλ πατάξαι σου ψυχήν; ϗ 15 οὐκ ἐπίστευσεν αὐτοῖς Γοδολίας. Καὶ (ψ) εἶπε Ἰωάναν τῷ Γοδολίᾳ κρυφαίως (ω) ἐν Μασσηφᾷ, Πορεύσομαι δὴ ϗ πατάξω τὸν Ἰσμαὴλ, ϗ μηδεὶς γνώτω, (α) μὴ πατάξῃ σου ψυχὴν, ϗ (β) διασπαρῇ πᾶς Ἰούδα οἱ συνηγμένοι πρὸς σὲ, ϗ ἀπολοῦνται οἱ κατάλοι-16 ποι Ἰούδα. Καὶ εἶπε Γοδολίας πρὸς (γ) Ἰωάναν, Μὴ ποιήσῃς τὸ πρᾶγμα (δ), ὅτι ψευδῆ σὺ λέγεις (ε) ὑπὲρ Ἰσμαήλ.

Et Joanan filius Caree, & omnes duces virtutis, qui in agris, venerunt ad Godoliam in Masspha. Et dixerunt ei; Si cognoscens cognoscis, quia (x) B[illegible] rex filius Ammon misit ad te Ismael ad percutiendam animam tuam? Et non credidit eis Godolias. Et dixit Joanan Godoliæ occultè in Masspha; Ibo nunc, & percutiam Ismael, & nemo sciat: ne percutiat animam tuam, & dispergatur omnis Juda, qui convenerunt ad te: & peribunt residui Juda. Et dixit Godolias ad Joanan; Ne facias ( ) rem: quia falsa tu dicis super Ismael. 13 14 15 16

MS.A. (ᵘ) Ἰωάνναν (φ) ἦλθαν πρὸς Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰ, Καὶ εἶπαν (χ) βασιλεὺς υἱῶν Ἀμμὼν Βεγισὰ (ψ) Ἰωάνναν εἶπεν (ω) εἰς (α) μήποτε (β) διασπαρήσονται πάντες οἱ Ἰουδαῖοι οἱ (γ) Ἰωάνναν (δ) τοῦτο, (ε) κατὰ τοῦ Ἰσμαήλ.

Cap. 41. Vulg.Lat. ΚΕΦ. μη'. *CAP. XLVIII.*

1 ΚΑὶ ἐγένετο τῷ μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ, ἦλθεν Ἰσμαὴλ υἱὸς Ναθανίου υἱοῦ (α) Ἐλεασὰ, ἀπὸ γένους τοῦ βασιλέως, ϗ δέκα ἄνδρες μετ' αὐτοῦ πρὸς Γοδολίαν εἰς Μασσηφὰ, ϗ ἔφα-2 γον ἐκεῖ ἄρτον ἅμα. Καὶ ἀνέστη Ἰσμαὴλ, ϗ οἱ δέκα ἄνδρες οἱ ἦσαν μετ' αὐτοῦ, ϗ ἐπάταξαν τὸν Γοδολίαν, ὃν κατέστησε (ᵘ) βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐπὶ 3 τῆς γῆς, Καὶ πάντας τοὺς Ἰουδαίους τοὺς ὄντας μετ' αὐτοῦ (β) ἐν Μασσηφὰ, ϗ πάντας τοὺς Χαλδαίους τοὺς εὑρεθέντας 4 ἐκεῖ. Καὶ ἐγένετο τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ πατάξαντος αὐτοῦ τὸν Γοδολίαν, 5 ϗ ἄνθρωπος οὐκ ἔγνω. Καὶ ἦλθοσαν ἄνδρες ἀπὸ Συχὲμ, ϗ ἀπὸ (γ) Σαλὴμ, ϗ ἀπὸ Σαμαρείας, ὀγδοήκοντα ἄνδρες, ἐξυρημένοι πώγωνας, ϗ (δ) διερρηγμένοι τὰ ἱμάτια, ϗ κοπτόμενοι, ϗ μάννα, ϗ λίβανος ἐν (ε) χερσὶν αὐτῶν, τοῦ εἰσενεγκεῖν εἰς οἶκον κυρίου. 6 Καὶ ἐξῆλθεν εἰς ἀπάντησιν αὐτοῖς Ἰσμαήλ· (ᵘ) αὐτοὶ ἐπορεύοντο, ϗ ἔκλαιον· ϗ εἶπεν αὐτοῖς, (ᵘ) Εἰσέλθετε πρὸς 7 Γοδολίαν. Καὶ ἐγένετο, εἰσελθόντων αὐτῶν εἰς τὸ μέσον τῆς πόλεως, ἔσφαξεν αὐτοὺς εἰς τὸ φρέαρ.

ET factum est, mense septimo venit Ismael filius Nathaniæ filii Elasa de genere (a) regis, & decem viri cum eo ad Godoliam in Masspha: & comederunt ibi panem simul. Et surrexit Ismael, & decem viri, qui erant cum eo, & percusserunt (b) Godoliam, quem constituerat rex Babylonis super terram, Et omnes Judæos qui erant cum eo in Masspha, & omnes Chaldæos qui reperti sunt (c) ibi. Et factum est die secunda, cum ipse percussisset Godoliam, & homo non cognovit. Et venerunt viri de Sychim, & de Salem, et de Samaria, octuaginta viri, rasi barbas, & scissis vestibus, & plangentes: & (d) manna, et thus in manibus eorum ad inferendum in domum Domini. Et egressus est in occursum illis Ismael: ipsi ibant, et flebant. Et dixit eis, Ingredimini ad Godoliam. Et factum est, ingressis illis in medium civitatis; (e) jugulavit eos in puteo. 2 3 4 5 6 7

MS.A. (α) Ἐλασὰ, (ᵘ) ὁ βασιλεὺς (β) εἰς (γ) Σηλώμ, (δ) διερρηχότες (ε) ταῖς χερσὶν αὐτῶν, τοῦ εἰσενέγκαι ( ) ϗ αὐτοὶ (ᵘ) Εἰσέλθατε

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 בכן הא יומיא אתן אמר יי ואשלח עליהון בזוזין ויבזונינון ונכסיהון ירוקנון וטוב
13 ארעהון יגמרון : ויבהתון מואבאי דפלחין לכמוש כמא דבהיתו בית ישראל מבית
14 אל רוחצנהון : איכדין תימרון גברין אנחנא וגברין דחילא למעבד קרבא : אתבזיזו
15 מואבאי וקרויהון חרובא ושפר עולמיהון יתמסרון לקטלא אמר מלכא יי צבאות
16 שמיה : קריב תברהון דמואבאי למיתי ובשתהון מוחיא לחדא : דוו עלוהי כל
17 סחרנוהי וכל ידעי שמיה אמרו איכדין אתבר מלך מבאיש שלטון מעיק : חותי
18 מיקרא ותובי בצחיא מלכות כנשתא דדיבון ארי בזוזין אתו על מואב סליקו עלך
19 חבילו כרכיך : על אורחא קומו וסכו דיתבין בערוער שאילו למערקיא ולמשיזביא
20 אמרו מה הוה על תברא דיכי : בהיתו מואבאי ארי אתברו אילילו וצוחו חוו
21 בארנון ארי אתבזיזו מואבאי : ועבדי פורענותא מטו לארע מישרא לחולון וליהץ
22 ועל מיפעת : ועל דיבון ועל נבו ועל בית דבלתים : ועל קריתים ועל בית גמול ועל
23 24 בית מעון : ועל קריות ועל בצרה ועל כל קרוי ארע מואב דרחיקין ודקריבין :
25 26 אתקטפת מלכות מואב ושלטוניהון אתברו אמר יי : איתא עליהון עקא ויהון
דמן לרויא ארי על עמא דיי אתרברבו וידרשון מואבאי באתריהון ויהון ללעיב
27 אף אנון : ועל דחדיתון על תבירה דישראל כדלא חטו לכון כאלו בגנבין
28 אשתכחו ועל דאסגיתון עליהון פתגמין בכן תטלטלון : שבקו קרויא ושרו בכיפא
29 יתבי מואב והוו כיונא דשבקא פום שובכה ונחתא ושריא בארעית גובא : שמענא
30 רברבי מואב דמתגאן לחדא רברבידון ומפנקיהון וגיותנותהון ורמות לבהון :
31 קדמי גלן אמר יי עובדי רברבניהון ולא תקנין יקיריהון לא כדכשר עבדו : על כן
32 על מואבאי מללין ועל מואבאי כולהון מציחין על אנש כרך תוקפהון דוון : בכן
כמא דאיתיתי משרין על יעזר כן איתי קטולין על שבמה מטלטלך גזו עברו ימא
עד ים יעזר מטו על חצדיך ועל קטפיך בזוזין נפלו :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Propterea, Ecce dies veniunt, dicit Dominus, & mittam in eos deprædatores, & deprædabuntur eos, & substantias eorum evacuabunt, & bona terræ eorum absument. 13 Et confundentur Moabitæ qui colebant Chamos: sicut confusa est domus Israel à Bethel fiducia sua. 14 Quomodo dicitis, Fortes sumus, & viri robusti ad præliandum? 15 Direpti sunt Moabitæ, & urbes eorum desolatæ; & pulchri juvenes eorum tradentur occisioni, dicit rex, Dominus exercituum nomen ejus. 16 Propinquus est interitus Moabitarum ut veniat, & malum eorum accelerat admodum. 17 Dolete super eo omnes qui in circuitu ejus estis: & universi qui scitis nomen ejus, dicite, Quomodo contractus est rex malignus, dominator tribulans? 18 Descende de gloria & sede in siti regnum cœtus Dibon; quia deprædatores venerunt contra Moab: ascenderunt contra te, vastarunt arces tuas. 19 Ad viam state, & contemplamini qui habitatis in Aroer; interrogate fugientes; & eis qui liberati sunt, dicite: Quænam confractio hæc fuit? 20 Confusi sunt Moabitæ, quia contriti sunt. Ululate & clamate, annuntiate in Arnon: quia direpti sunt Moabitæ. 21 Et facientes vindictam pervenerunt in terram campestrem, in Holon, & in Jahats, & super Mephaat. 22 Et super Dibon, & super Nebo, & super domum Deblathaim. 23 Et super Cariathaim, & super Bethgamul, & super Bethmaon. 24 Et super Kerioth, & super Bosrah, & super omnes urbes terræ Moab, quæ longè sunt, & quæ propè. 25 Succisum est regnum *Moab*, & dominatores eorum contriti sunt, dicit Dñs. 26 Adduc super eos angustiam, ut sint similes ebrio; quia contra populum Dñi magnificati sunt: & *quærent Moabitas in locis suis*, & erunt in derisum etiam ipsi. 27 Et quia lætati estis super interitum Israel, cùm non peccaverint in vos, quasi inventi essent inter latrones; & quia multa verba locuti estis contra eos: propterea transmigrabitis. 28 Relinquite civitates, & habitate in petra habitatores Moab; estote quasi columba quæ dimittit ostium columbaris sui, & descendit & moratur in pavimento laci. 29 Audivimus principes Moab qui superbi sunt valdè, & principes eorum, & delicatos eorum, & superbiam eorum, & altitudinem cordis eorum. 30 Coram me manifesta sunt, dicit Dñs, opera principum eorum: & non sunt recti nobiles eorum, nec fecerunt quod decebat. 31 Propterea super Moabitas ululabunt, & super Moabitas omnes clamabunt, super viros civitatis fortitudinis eorum dolebunt. 32 Idcirco sicut adduxi exercitum contra Jazer, sic adducam interfectores contra Sibma: migrantes ex te, transvadarunt, transierunt mare, usque ad mare Jazer pervenerunt: super messem tuam, et super vindemiam tuam direptores irruerunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܘܐܫܕܪ ܥܠܝܗܘܢ ܒܙܘܙܐ܂ ܘܢܒܙܘܢ
ܘܡܐܢܝܗܘܢ ܢܣܪܩܘܢ܂ ܘܙܩܝܗܘܢ ܢܬܒܪܘܢ܂ * ܘܢܒܗܬ ܡܘܐܒ ܡܢ ܟܡܘܫ
ܐܝܟ ܕܒܗܬܘ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܒܝܬ ܐܝܠ ܬܘܟܠܢܗܘܢ܂ * ܐܝܟܢܐ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܓ
ܚܢܢ܂ ܘܓܒܪܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܩܪܒܐ܂ * ܐܬܒܙܬ ܡܘܐܒ܂ ܘܩܘܪܝܗ ܣܠܩܝ ܫܒܝܐ܂ ܘܓܒܝܐ ܕܓ
ܢܚܬܘ ܠܩܛܠܐ܂ ܐܡܪ ܡܠܟܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ܂ * ܩܪܝܒ ܬܒܪܗ ܕܡܘܐܒ
ܠܡܐܬܐ܂ ܘܒܝܫܬܗ ܡܣܪܗܒܐ ܛܒ܂ * ܐܬܕܠܚܘ ܘܙܥܘ ܟܠ ܚܕܪܘܗܝ܂ ܘܟܠ ܝܕ
ܫܡܗ ܐܡܪܘ܂ ܐܝܟܢܐ ܐܬܬܒܪ ܚܘܛܪܐ ܥܫܝܢܐ܂ ܫܒܛܐ ܕܫܘܒܚܐ܂ * ܚܘܬܝ ܡܢ ܐ
ܘܬܒܝ ܒܨܗܝܐ܂ ܥܡܘܪܬܐ ܕܒܪܬ ܪܝܒܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܒܙܘܙܐ ܕܡܘܐܒ܂ ܣܠܩ ܥܠܝܟܝ܂ ܘ
ܘܚܪܒ ܩܘܪܝܟܝ܂ * ܥܠ ܐܘܪܚܐ ܩܘܡܝ ܘܕܘܩܝ ܥܡܘܪܬܐ ܕܥܪܘܥܝܪ܂ ܫܐܠܝ ܠܕܥܪܩ
ܘܠܕܡܫܬܘܙܒ ܐܡܪܝ܂ ܡܢܐ ܗܘܐ܂ * ܒܗܬܬ ܡܘܐܒ ܡܛܠ ܕܐܬܬܒܪܬ܂ ܐܝܠܠܘ ܘܙܥܩܘ
ܡܛܠ ܕܐܬܬܒܪܬ ܡܘܐܒ܂ * ܘܕܝܢܐ ܐܬܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܡܝܫܘܪ܂ ܘܥܠ ܚܠܘܢ܂ ܘܥܠ ܝ
ܘܥܠ ܡܦܥܬ܂ * ܘܥܠ ܪܝܒܘܢ܂ ܘܥܠ ܢܒܘ܂ ܘܥܠ ܒܝܬ ܕܒܠܬܝܡ܂ * ܘܥܠ ܩܪܝܬ
ܘܥܠ ܒܝܬ ܓܡܘܠ܂ ܘܥܠ ܒܝܬ ܡܥܘܢ܂ * ܘܥܠ ܩܪܝܘܬ܂ ܘܥܠ ܒܘܨܪ܂ ܘܥܠ ܟ
ܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܐ ܕܐܪܥܐ ܕܡܘܐܒ ܕܪܚܝܩܢ ܘܕܩܪܝܒܢ܂ * ܐܬܓܕܥ ܩܪܢ
ܕܡܘܐܒ܂ ܘܕܪܥܗ ܐܬܬܒܪ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܪܘܝܘܗܝ܂ ܡܛܠ ܕܥܠ ܡܪܝܐ ܐܬܪܘܪܒ
ܘܢܬܛܪܦ ܡܘܐܒ ܒܬܝܘܒܗ܂ ܘܢܗܘܐ ܠܓܘܚܟܐ ܐܦ ܗܘ܂ * ܘܐܢ ܠܐ ܗܘܐ ܠܓܘܚ
ܗܘܐ ܠܟܝ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܘܒܝܢܬ ܓܢܒܐ ܐܫܬܟܚ܂ ܟܕ ܗܘܝܬ ܩܪܒܐ ܥܒܕ ܥܡܗ
* ܫܒܘܩܘ ܩܘܪܝܐ܂ ܘܥܡܪܘ ܒܫܘܥܐ ܥܡܘܪܝ ܡܘܐܒ܂ ܘܗܘܘ ܐܝܟ ܝܘܢܐ ܕܩܢܝܐ
ܒܥܒܪܐ܂ * ܫܡܥܢ ܪܘܪܒܢܘܗܝ ܕܡܘܐܒ ܕܣܓܝ ܐܬܪܘܪܒ܂ ܪܘܪܒܘܬܗܘܢ ܘܫܘܒܗܪܗܘܢ ܘܪ
ܠܒܗܘܢ܂ ܐܢܐ ܝܕܥܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܥܒܕܝܗܘܢ ܕܠܐ ܗܘܘ ܬܪܝܨܝܢ܂ ܘܡܩܣܡܢܘܗܝ ܠܐ
ܗܟܢܐ ܐܡܪܘ ܥܠܘܗܝ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܥܠ ܡܘܐܒ ܐܝܠܠܘ܂ ܘܥܠ ܡܘܐܒ ܟܠܗ ܙ
ܟܠ ܐܬܪ ܩܥܘ܂ ܘܥܠ ܐܢܫܐ ܕܥܡܪܝܢ ܒܒܝܬܗ܂ ܒܝܫܬܐ ܢܬܚܫܒ ܥܠܝܗܘܢ܂ * ܡܢ ܒܟ
ܕܝܥܙܝܪ ܐܒܟܐ ܥܠܝܟܝ ܓܦܬܐ ܕܫܒܡܐ܂ ܫܒܫܒܝܟܝ ܥܒܪܘ ܝܡܐ܂ ܘܥܕܡܐ ܠܝܡܐ ܕܝ
ܡܛܘ܂ ܡܛܠ ܕܥܠ ܚܨܕܟܝ ܘܥܠ ܩܛܝܦܟܝ ܒܙܘܙܐ ܢܦܠ܂

Idcirco ecce dies venturi ſunt, ait Dominus, 12
quibus mittam in eos direptores, ut diripiant
eos, vaſa eorum evacuent, & lagenas
eorum comminuant. Et pudefiet Moab cauſâ 13
Chamoſi, quemadmodum pudefacti ſunt
Iſraelitæ cauſâ Bethelis fiduciæ ſuæ. Quonam 14
pacto dicitis, Gigantes ſumus & viri ad
bella ſtrenui? Direptus eſt Moab, civitates 15
ejus *captivæ* aſcenderunt, & ſelectiſſimi heroum
ejus traditi ſunt ad necem, dicit rex
ille Dominus, cujus nomen eſt Deus potentiſſimus:
Contritio Moabi brevi eſt ventura, 16
& malum ejus properat admodum. Conturbati 17
trepidaverunt omnes eum circunſtantes,
& quotquot nôrunt famam ejus, dixerunt,
Quomodo fractus eſt baculus fortiſſimus
& truncus glorioſiſſimus? Deſcende 18
de faſtu, & in ignominia ſede ô habitatrix
filiæ Ribonis, quoniam direptor Moabi aſcendit
contra te, & vaſtavit urbes tuas. Juxta 19
vias conſiſte & ſpeculare habitatrix Adoeris:
ſciſcitare fugientem, & evadenti dicito,
Quid accidit? Pudefactus eſt Moab, quia 20
confractus eſt: & ululaverunt atque exclamaverunt
in Arnona, quia contrit⁹ eſt Moab.
Venit enim judicium contra terram Maſor, 21
contra Halonem, contra Jahſum, & contra
Mephiath, Contra Ribonem, contra Nobum, 22
& contra Beth-deblathim, Contra Curjathim, 23
contra Beth-gamulum, & contra Bethmaonem,
Contra Cerioth, contra Boſarem, 24
& contra omnes civitates terræ Moabiticæ
longinquas & propinquas. Refectum eſt cornu 25
Moabi, & brachium ejus confractum,
dicit Dominus. Affligite eum, quia contra 26
Dominum ſuperbivit: exagitet ſeſe Moab
in vomitu ſuo, ſitque riſui etiam ipſe. Et an 27
non riſui tibi fuit ô Iſrael, & inter fures inventus
eſt, cùm bellum gereres in eum? Relinquite 28
civitates, & in petris habitate ô incolæ
Moabi, & eſtote ſimiles columbæ nidificanti
in prominenti. Audivimus principes 29
Moabi multùm inſoleſcere: inſolentiam &
arrogantiam eorum, & ſuperbiam cordis eorum
ego novi, dicit Dominus, *Et* opera illorum 30
non eſſe recta: licèt harioli ejus non
ita prædixerint de ipſo. Propterea contra 31
Moabum clamate, & adverſùs totũ Moabum
ex omni loco vociferate, & adverſùs homines
commorantes in domo ipſius, malum excogitetur.
Pluſquam fletu Jazeris defleo te 32
ô vitis Sebmæ: propagines tuæ tranſierunt
mare, & ad mare Jazeris uſque pervenerunt:
ſuper meſſem enim tuam & ſuper vindemiam
tuam irruet direptor:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويونان ابن كاريا وجميع الجيش الذي في الحقول اتوا الي عودوليا في مسيفا وقالوا
* أعرفت أعلمت ان ملك بني عمون بالبصا ارسل اليك اسمعيل ليضرب نفسك •
يصدقهم عودوليا * فقال يونان لعودوليا • انا امضي سرا الي مسيفا واضرب اسمعيل ولا يعلـ
واحد • لان لا يضرب نفسك فيتفرق جميع اليهود المجتمعين اليك وتهلك بقايا يهودا *
عودوليا ليونان • لا تصنع هذا الامر لانك انت تقول الكذب على اسمعيل *

* الفصل الثامن والاربعون *

* وكان في الشهر السابع جاء اسمعيل بن ناثونيوا بن الاصا من جنس الملك • ومعه عشر
رجال الذين كانوا معه * وضربوا عودوليا في مسيفا • واكلوا هناك خبزا معا • وقام اسمعيل
والعشر رجال الذين كانوا معه * وضربوا عودوليا الذي اقامه ملك بابل على الارض * وجميع
اليهود الذين معه في مسيفا • وجميع الكلدانيين الموجودين هناك * وكان في اليوم
حين ضرب عودوليا وانسان لم يعلم * واتوا رجال من شكيم ومن صالوم ومن سامر
ثمانون رجلا يحلقون اللحي • ويشقون الثياب ويقطعونها • ومن ولبان في ايديهم ليقد
الي بيت الرب * فخرج لاستقبالهم اسمعيل • وهاولاء مضوا وبكوا • فقال لهم ادخلوا
عودوليا * وكان اذ دخلوا الي وسط المدينة ذبحهم عند البير *

Deinde Jonan Careæ filius & totus exercitus 13
qui erat in agris, venerunt ad Godoliam
in Maſepham, & dixerunt ei;
Sciſne, noſtine quòd rex Ammonitarum 14
Beliſa miſerit ad te Iſmaelem ut percutiat
animam tuam? at non præbuit eis fidem
Godolia. Imò cùm dixiſſet Jonan ad 15
Godoliam, Ego clanculùm ibo in Maſepham,
& percutiam Iſmaelem nemine
ſciente; ne percutiat animam tuam, &
diſpergantur omnes Judæi apud te congregati,
pereántque reliquiæ Judæ. Reſpondit 16
Godolia Jonani, Ne facias hanc
rem, quia tu falſum dicis de Iſmaele.

CAP. XLVIII.

Deinde contigit menſe ſeptimo, ut 1
veniret Iſmael filius Nathaniæ filii
Elaſæ de ſtirpe regia ſtipatus decem
viris qui comitabantur eum; Percuterent 2
Godoliam in Maſpha. Cùm enim panem
ibi ſimul comediſſent, ſurrexerunt
Iſmael & decem illi viri qui cum eo erant,
& percuſſerunt Godoliam quem
rex Babelis præfecerat illi *terræ. Cunctóſque* 3
Judæos qui cum eo erant in Maſpha,
& omnes Chaldæos ibi exiſtentes.
Fuit autem die ſecundâ poſtquam percuſſus 4
fuiſſet Godolia nemine ſciente, ut 5
venirent quidam è Sechim, è Salom, &
è Samaria, nempe *octoginta viri raſis*
barbis, & diſciſſis laceriſque veſtibus,
manna & thus manibus portantes ad offerendum
illud domui Domini. Quibus 6
obviàm procedens Iſmael (hi autem flebant
ambulantes) dixit; Ingredimini ad
Godoliam. Et factum eſt cùm ingreſſi 7
fuiſſent in mediam urbem, ut jugularet eos
apud puteum.

ירמיה : מח

torcularib⁹ de vinū &:Moab terra de &,Carmel de exultatio &,lætitia contrahetur Et
33 ונאספה שמחה וגיל מכרמל ומארץ מואב ויין מיקבים
Chesbon clamore A .celeusma non celeusma,celeusmate calcabit Non.faciam cessare
34 השבתי לא ידרך הידד הידד לא הידד : מזעקת חשבון
Choronaim ad usque Sohar à,suam vocem dederunt Jahas ad usque Elhaleh ad usque
עד אלעלה עד יהץ נתנו קולם מצער עד חרנים
faciam cessare Et.erunt desolationes in Nimrim aquæ etiam quia : triennem vitulam
35 עגלת שלשיה כי גם מי נמרים למשמות יהיו : והשבתי
Propterea .ejus diis suffientem & ,excelso facientem ascendere,Dominus ait ,Moab ipsi
36 למואב נאם יהוה מעלה במה ומקטיר לאלהיו : על כן
, cheres--Chir viros ad meum cor & ,perstrepet tibiæ veluti Moab ad meum cor
לבי למואב כחללים יהמה ולבי אל אנשי קיר חרש
caput omne Quia .perierunt ,fecit augmentum idcirco : perstrepet tibiæ tanquam
37 כחלילים יהמה על כן יתרת עשה אבדו : כי כל ראש
lumbos super &,incisiones manus omnes super :diminuta barba omnis & ,calvitium
קרחה וכל זקן גרעה על כל ידים גדדת ועל מתנים
contrivi quoniā:planctus ipse omnis ej⁹ plateis in &,Moab tecta omnia Super .saccus
38 שק : על כל גגות מואב וברחבתיה כלה מספד כי שברתי
est contritum Quomodo .Dominus dixit ,eum voluntas non ,vas sicut Moab
39 את מואב ככלי אין חפץ בו נאם יהוה : איך חתה
Moab eritque ? est affectus pudore,Moab cervicem vertit quomodo : ululaverunt
הילילו איך הפנה ערף מואב בוש והיה מואב
Ecce : Dominus dixit sic Quia .ejus circuitibus omnib⁹ contritioni in &,derisum in
40 לשחק ולמחתה לכל סביביו : כי כה אמר יהוה הנה
, civitates est Capta .Moab ad suas alas extendet & :volabit aquila tanquam
41 כנשר ידאה ופרש כנפיו אל מואב : נלכדה הקריות
cor sicut ,illa die in Moab fortium cor erit & :est apprehensa munitiones &
והמצדות נתפשה והיה לב גבורי מואב ביום ההוא כלב
.magnificavit Dñm super quoniam:populo à Moab disperdetur Et .miseræ mulieris
42 אשה מצרה : ונשמד מואב מעם כי על יהוה הגדיל :
[illegible] Dominus dicit,Moab habitator te super laqueus &,fovea &,Pavor
43 פחד ופחת ופח עליך יושב מואב נאם יהוה : הניס מפני
44 adducā nam:laqueo in capietur ,fovea de ascendens & :foveam in cadet ,pavoris
הפחד יפל אל הפחת והעלה מן הפחת ילכד בפח כי אביא
Chesbon umbra In .Dominus ait ,eorum visitationis annum Moab ad eam ad
45 אליה אל מואב שנת פקדתם נאם יהוה : בצל חשבון
[illegible] ex flamma & , Chesbon de est egressus ignis quia : fugientes [illegible] steterunt
עמדו מכח נסים כי אש יצא מחשבון ולהבה מבין
, Moab tibi Væ .sonitum filiorum verticem & ,Moab angulum devoravit &,Sichon
46 סיחן ותאכל פאת מואב וקדקד בני שאון : אוי לך מואב
tuæ filiæ & ,captivitatem in tui filii sunt comprehensi quia : Chemos populus periit
אבד עם כמוש כי לקחו בניך בשבי ובנתיך
: Dñs ait , dierum novissimo in Moab captivitatem convertam Et.captivitate in
47 בשביה : ושבתי שבות מואב באחרית הימים נאם יהוה
.Moab judicium huc usque
עד הנה משפט מואב :

CAP. XLIX. מט

hæres an ? Israel non filii Nunquid : Dominus dixit Sic,Hammon filios Ad
1 לבני עמון כה אמר יהוה הבנים אין לישראל אם יורש
ejus urbibus in ejus populus &,Ghad eorum rex accepit hæreditate cur ? ei non
אין לו מדוע ירש מלכם את גד ועמו בעריו
Rabbath in faciam audire & ,Dominus dixit ,venientes dies ecce Ideo ? habitavit
2 ישב : לכן הנה ימים באים נאם יהוה והשמעתי אל רבת
ejus filiæ & ,desolationis tumulū in erit & , prælii clamorem Hammon filiorum
בני עמון תרועת מלחמה והיתה לתל שממה ובנתיה
.Dominus dixit , eos hæreditantes Israel accipiet hæreditate & :succēdētur igni in
באש תצתנה וירש ישראל את ירשיו אמר יהוה :

Versio VULG. LAT.

33 Ablata est lætitia & exultatio de Carmelo, & de terra Moab, & vinum de torcularibus sustuli : nequaquam calcator uvæ solitum
34 celeuma cantabit. De clamore Hesebon usque Eleale, & Jasa, dederunt vocem suam; à Segor usque ad Oronaim vitula consternante: aquæ quoque Nemrim pes-
35 simæ erunt. Et auferam de Moab, ait Dominus, offerentem in excelsis, & sacrificantem diis ejus.
36 Propterea cor meum ad Moab quasi tibiæ resonabit : & cor meum ad viros muri fictilis dabit sonitum tibiarum : quia plus fecit quàm potuit, idcircò perie-
37 runt. Omne enim caput calvitiū, & omnis barba rasa erit: in cunctis manibus colligatio, & super
38 omne dorsum cilicium. Super omnia tecta Moab, & in plateis ejus, omnis planctus: quoniā contrivi Moab sicut vas inutile, ait
39 Dominus. Quomodò victa est, & ululaverunt ? quomodò dejecit cervicem Moab, & confusus est? Eritque Moab in derisum, & in exemplum omnibus in circui-
40 tu suo. Hæc dicit Dominus; Ecce quasi aquila volabit, & extendet
41 alas suas ad Moab. Capta est Carioth, & munitiones comprehensæ sunt: & erit cor fortium Moab in die illa, sicut cor mulieris par-
42 turientis. Et cessabit Moab esse populus : quoniam contra Do-
43 minum gloriatus est. Pavor, & fovea, & laqueus super te, ô habitator Moab, dicit Dominus.
44 Qui fugerit à facie pavoris, cadet in foveam : & qui conscenderit de fovea, capietur laqueo : adducam enim super Moab annum visitationis eorum, ait Do-
45 minus. In umbra Hesebon steterunt de laqueo fugientes : quia ignis egressus est de Hesebon, & flamma de medio Seon, & devorabit partem Moab, & verti-
46 cem filiorum tumultûs. Væ tibi Moab, periisti popule Chamos : quia comprehensi sunt filii tui,
47 & filiæ tuæ in captivitatem. Et convertam captivitatem Moab in novissimis diebus, ait Dominus. Hucusque judicia Moab.

CAP. XLIX.

1 AD filios Ammon. Hæc dicit Dominus ; Numquid non filii sunt Israel ? aut hæres non est ei ? Cur igitur hæreditate pos-
2 sedit Melchom, Gad : & populus ejus in urbibus ejus habitavit ? Ideò ecce dies veniunt, dicit Dominus ; & auditum faciam super Rabbath filiorum Ammon fremitum prælii, & erit in tumulum dissipata, filiæque ejus igni succendentur, & possidebit Israel possessores suos, ait Dominus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

8 Καὶ δέκα ἄνδρες εὑρέθησαν ἐκεῖ, ϗ (ζ) εἶπον τῷ Ἰσμαὴλ, Μὴ ἀνέλῃς ἡμᾶς, ὅτι εἰσὶν ἡμῖν θησαυροὶ ἐν ἀγρῷ, πυροὶ ϗ κριθαὶ, μέλι ϗ ἔλαιον. ϗ παρῆλθε, ϗ οὐκ ἀνεῖλεν αὐ-
9 τοὺς ἐν μέσῳ τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν. Καὶ τὸ φρέαρ, εἰς ὃ ἔρριψεν ἐκεῖ Ἰσμαὴλ πάντας οὓς ἐπάταξε, φρέαρ μέγα τοῦτό ἐστιν, ὃ ἐποίησεν ὁ βασιλεὺς Ἀσὰ ἀπὸ προσώπου Βαασὰ βασιλέως Ἰσραὴλ, τοῦτο ἐνέπλησεν Ἰσμαὴλ τραυ-
10 ματιῶν. Καὶ ἀπέστρεψεν Ἰσμαὴλ πάντα τὸν λαὸν τὸν καταλειφθέντα εἰς Μασσηφὰ, ϗ τὰς θυγατέρας τοῦ βασιλέως, ἃς (*) παρακατέθετο ὁ ἀρχιμάγειρος τῷ Γοδολίᾳ υἱῷ Ἀχεικὰμ, ϗ ᾤχετο εἰς τὸ πέραν υἱῶν Ἀμμών.
11 Καὶ ἤκουσεν Ἰωάναν υἱὸς Κάρηε, ϗ πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως οἱ μετ' αὐτοῦ, πάντα τὰ κακὰ ἃ ἐποί-
12 ησεν Ἰσμαὴλ, Καὶ ἤγαγον ἅπαν τὸ στρατόπεδον αὐτῶν, καὶ ᾤχοντο πολεμεῖν αὐτὸν, ϗ εὗρον αὐτὸν ἐπὶ
13 ὕδατος πολλοῦ ἐν Γαβαών. Καὶ ἐγένετο, ὅτε (η) εἶδε πᾶς ὁ λαὸς ὁ μετὰ Ἰσμαὴλ τὸν (θ) Ἰωάναν ϗ τοὺς ἡγεμόνας τῆς δυνάμεως τῆς μετ' αὐτοῦ,
14 Καὶ ἀνέστρεψαν πρὸς (ι) Ἰωάναν.
15 Καὶ Ἰσμαὴλ ἐσώθη σὺν ὀκτὼ ἀνθρώποις, καὶ ᾤχετο πρὸς τοὺς υἱοὺς
16 Ἀμμών. Καὶ ἔλαβεν (κ) Ἰωάναν, καὶ πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως οἱ μετ' αὐτοῦ, πάντας τοὺς καταλοίπους τοῦ λαοῦ, οὓς (λ) ἀπέστρεψεν ἀπὸ Ἰσμαὴλ, δυνατοὺς ἄνδρας ἐν πολέμῳ, ϗ τὰς γυναῖκας, ϗ τὰ λοιπὰ, ϗ τοὺς εὐνούχους, οὓς ἀπέστρεψαν ἀπὸ
17 Γαβαών, Καὶ ᾤχοντο, ϗ ἐκάθισαν (μ) ἐν Γαβηρωθχαμαά, τῇ πρὸς Βηθλεὲμ, τοῦ πορευθῆναι (ν) εἰς Αἴγυπτον
18 Ἀπὸ προσώπου τῶν Χαλδαίων· ὅτι ἐφοβήθησαν ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, ὅτι ἐπάταξεν Ἰσμαὴλ τὸν Γοδολίαν, ὃν κατέστησεν (*) ὁ βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν τῇ γῇ.

Et decem viri reperti sunt ibi, & dixerunt ad Ismael, 8 Ne occidas nos, quia sunt nobis thesauri in agro, frumenta, & hordea, mel, & oleum. Et præteriit, & non interfecit eos in medio fratrum eorum. Et puteum, in 9 quem projecit ibi Ismael omnes quos percussit, (puteus magnus hic est,) quem fecit rex Asa à facie Baasa regis Israel, hunc implevit Ismael occisis. Et 10 adduxit Ismael omnem populum, qui remanserat in Massepha, & filias regis, quas commendaverat magister coquorum Godoliæ filio Achicam: & abiit, ut transiret ad filios Ammon. Et audivit Joanan 11 filius Caree, & omnes duces virtutis, qui cum eo, omnia mala quæ fecerat Ismael: Et adduxerunt omnem exercitum suum: & abierunt 12 impugnare eum: & invenerunt eum super aquam multam, in Gabaon. Et 13 factum est, quando vidit omnis populus, qui cum Ismael, Joanam, & duces virtutis, (*) quæ cum eo, Et redierunt ad Joanam. 14 Et Ismael evasit cum octo 15 hominibus, & abiit ad filios Ammon. Et tulit Jo- 16 anan, & omnes duces virtutis, qui cum eo, omnes residuos populi, quos reduxerat ab (*) Ismaele, potentes viros in bello, & mulieres, & reliqua, & eunuchos, quos reduxerant de Gabaon: Et abierunt, & se- 17 derunt in (*) Gaberoth-chamaa, quæ ad Bethleem, ut irent in Ægyptum A facie 18 Chaldæorum: quia timuerunt à facie eorum: quia percusserat Ismael Godoliam, quem constituerat rex Babylonis in terra.

MS.A. (ζ) εἶπαν (*) παρεκατέθετο (η) ἴδον αὐτὸν πᾶς ὁ λαὸς μετὰ (θ) Ἰωάνναν ϗ πάντας τοὺς (ι) Ἰωάνναν. (κ) Ἰωάνναν, (λ) ἀπέστρεψαν (μ) ἐν Γηβηρωθχαμάαμ, * τῆς πρὸς (ν) εἰσελθεῖν εἰς (*) βασιλεὺς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

33 ותתכניש ביע וחדוא מכרמלא ומארע מואב וחמר ממעצריא אבטלית לא יעצרון
34 עצורין ולא ירימון בקלהון : מצוחת חשבון עד אלעלה עד יהץ אשתמע קלהון מצער
35 עד חורונים עגלת תלתית רבתא ארי אף מי נמרים לצדו יהון : ואבטל מן מואב אמר
36 יי מקריב קורבן על במתא ומסיק בוסמין לטעותיה : על כן בלבהון מואבאי ככנורא
המן ולבהון על אנש כרך תוקפהון כזמר אבובין דוי על כן שאר נכסיהון דקנו יתבזזון :
37 38 ארי כל סער ריש נתר וכל דקן גלוח על כל סיען מתהממין ועל חרצין סק : על כל
אגריהון דמואבאי וברחוביהון כולהון עבדין מספדא ארי תברית ית מלכות מואב
39 כמנא דלית צרוך ביה אמר יי : איכדין אתברו אילילו איכדין אחזרו קדלהון מואבאי
40 בהיתו ויהון מואבאי לחוך ולתביר לכל סחרניהון : ארי כדנן אמר יי הא כנשרא
41 דמשתדי כן יסק מלך במשריתיה וישרי על מואב : ותתכביש כרכא ומצדתא יתאחדן
42 ויהי לב גבריהון דמואבאי ביומא ההוא כלב אתתא דעקא לה בחבלהא : וישתיצון
43 מואבאי מלמהוי עם ארי על עמיה דיי אתרברב : דחלא וכומצא ומצדא עלך יתיב
44 מואב אמר יי : דיערוק מן קדם דחלא יפול לגו כומצא ודיסק מגו כומצא אתאחד
45 בסרנתא ארי איתי עליהון על מואבאי שנת סעורן חוביהון אמר יי : על דאשתמעו
ליתבי חשבון גלו אתקצר חילהון ערקו ארי קדום תקיף כאשתא נפק מחשבון ועבדי
46 קרבא כשלהוביתא מבין סיחון וקטילו רברבי מואב ויקירי בני אתרגושא : ווי לכון
מואבאי אבדתון עמא דפלחין לכמוש ארי אדברו בנך בשביא ובנתך בגלותא :
47 ואתיב גלות מואב בסוף יומיא אמר יי עד הכא למעבד פירענות דין מן מואב :

מט

1 לבני עמון כדנן אמר יי הבנין לית לישראל אם ירית לית ליה מא דין אחסין מלכהון
2 ית ארע גד ועמיה בקרוהי יתיב : בכן הא יומיא אתן אמר יי ואשמע לרבת בני עמון
יבבית עבדי קרבא ותהי לתל צדו ויתבי כפרנהא בנורא יתוקדין ויחסנין בני ישראל
נכסי עממיא דהוו מחסנין להון אמר יי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et colligetur exultatio & gaudium de Carmelo, & de terra Moab; & vi- 33
num de torcularibus cessare faciam : non calcabunt calcantes, nec attollent
vocem suam. A clamore Esebon,usq; ad Eleale,usq; ad Jahats audita est vox 34
eorum ; à Segor usq; Horonaim, vitula triennis grandis : quia etiam aquæ
Nemrim in desolationem erunt. Et cessare faciam de Moab,dicit Dñs, of- 35
ferentem oblationem in excelsis, & adolentem aromata idolis suis. Propter- 36
eà in corde suo Moabitæ quasi cithara sonabunt, & cor eorum super viros
civitatis munitionis eorum quasi cantus organorum mœrebit : ideo reli-
quæ facultates eorum quas possederunt diripientur. Quia omnes capilli 37
capitis defluent, & omnis barba radetur : in cunctis turmis conturbatio,
& in lumbis cilicium. Super omnia tecta Moabitarum, & in plateis eorum 38
omnes faciunt planctum, quia contrivi regnum Moab, sicut vas inutile,
dicit Dñs. Quomodo contriti sunt & ululaverunt ? quomodo verterunt 39
terga sua Moabitæ ? confusi sunt, eruntq; Moabitæ in derisum, & in con-
fractionem omnibus qui in circuitu eorum sunt. Quia hæc dicit Dñs: 40
Ecce sicut aquila quæ volat, sic ascendet rex cum exercitu suo, & castrame-
tabitur super Moab. Subjicietúrque civitas, & munitiones capientur. Et 41
erit cor fortium Moabitarum illa die sicut cor mulieris, cui est tribulatio
in doloribus suis. Et consumentur Moabitæ ne sint populus ; quia contra 42
populum Dñi magnificati sunt Timor, & fovea, & rete contra te habitator 43
Moab, ait Dñs. Qui fugerit à facie timoris, cadet in medium foveæ : & qui 44
ascenderit à fovea, capietur in rete. Quia adducam super ipsos Moabitas
annum visitationis peccatorum suorum, dicit Dñs. Pro eo quòd obedierunt 45
habitatorib⁹ Hesbon : transmigraverunt, abbreviata est virt⁹ eorum, fuge-
runt : quia vent⁹ urens, fortis sicut ignis, egressus est de Hesbon, & bella-
tores sicut flamma de medio Sehon : & interfecerunt principes Moab, &
nobiliores filiorum turbæ. Væ vobis Moabitæ, periistis populi, qui servie- 46
batis Chamos ; quia abducti sunt filii tui in captivitatem, & filiæ tuæ in
transmigrationem. Et convertam transmigrationem Moab in fine dierum, 47
dicit Dñs. Hucusq; ad faciendum vindictam judicii de Moab.

CAP. XLIX.

AD filios Ammon hæc dicit Dñs : Num filios non habet Israel, aut hæ- 1
res non est ei ? Quare hæreditate possedit rex eorum terram Gad, & popu-
lus ejus in civitatibus ejus habitaverunt ? Propterea ecce dies veniunt, di- 2
cit Dñs, & audire faciam apud Rabbath filiorum Ammon [illegible]
torum prælium, & erit in acervum desolationis, & habitatores vicorum ejus
comburentur : & possidebunt filii Israel hæreditatem populorum qui possidebant eos, dicit Dñs.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܬܒܛܠ ܚܕܘܬܐ ܘܕܝܨܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܟܪܡܠ܆ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܘܐܒ. ܘܚܡܪܐ ܡܢ ܡܥܨܪܬܐ ܒܛܠ
ܘܠܐ ܢܕܪܟܘܢ ܕܪܘܟܐ. ܘܠܐ ܢܥܢܘܢ. ܘܠܐ ܢܐܡܪܘܢ. ܗܘܝ ܗܘܝ. * ܡܢ ܩܥܬܐ ܕܚܫܒ
ܘܥܕܡܐ ܠܐܠܥܠܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܝܗܨ ܝܗܒܘ ܩܠܗܘܢ. ܡܢ ܨܥܪ. ܘܥܕܡܐ ܠܚܘܪܘܢܝܡ. ܘܥܕ
ܥܕܡܐ ܠܐܠܝܫ ܥܓܠܬܐ ܬܠܝܬܝܬܐ. ܡܛܠ ܕܡܝܐ ܕܢܡܪܝܡ ܢܚܪܒܘܢ. * ܘܐܒܛܠ ܡ
ܡܘܐܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܡܩܪܒ ܕܒܚܐ ܘܡܣܩ ܒܣܡܐ ܠܐܠܗܘܗܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܠܒܝ ܥܠ
ܡܘܐܒ ܐܝܟ ܟܢܪܐ ܢܡܠܠ. ܡܛܠ ܕܒܝܫܬܐ ܥܒܕܘ. ܘܐܒܕܘ. * ܪܫܝܗܘܢ ܓܝܪ ܩܪܝܚ
ܘܕܩܢܝܗܘܢ ܓܙܝܙܢ. ܘܥܠ ܟܠܗܝܢ ܐܝܕܝܗܘܢ ܡܪܩܕܬܐ. ܘܥܠ ܚܨܐ ܣܩܐ. * ܘܥܠ ܟ
ܐܓܪܐ ܕܡܘܐܒ ܘܒܫܘܩܐ ܟܠܗܘܢ ܡܪܩܕܬܐ. ܡܛܠ ܕܬܒܪܬ ܠܡܘܐܒ. ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܠܝ
ܒܗ ܨܒܝܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܝܟܢܐ ܐܬܬܒܪ ܘܐܝܠܠܘ. ܐܝܟܢܐ ܐܗܦܟ ܩܕܠܗ ܡܘܐܒ ܘܒ
ܘܢܗܘܐ ܡܘܐܒ ܠܓܘܚܟܐ ܘܠܬܒܪܐ ܠܟܠܗܘܢ ܕܚܕܪܝܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܐ
ܢܫܪܐ ܢܣܩ ܘܢܦܪܚ. ܘܢܦܪܘܣ ܓܦܘܗܝ ܥܠ ܡܘܐܒ. * ܐܬܬܚܝܕܬ ܩܪܝܘܬ ܘܡܨ
ܐܬܟܒܫ. ܘܢܗܘܐ ܠܒܗܘܢ ܕܓܢܒܪܐ ܕܡܘܐܒ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܝܟ ܠܒܐ ܕܐܢܬܬܐ ܕܚ
ܒܡܚܠܐ. * ܘܬܐܒܕ ܡܘܐܒ ܡܢ ܥܡܐ. ܡܛܠ ܕܥܠ ܡܪܝܐ ܐܬܪܘܪܒ. * ܙܘܥܐ ܘܦ
ܘܦܚܐ. ܥܠܝܟܝ ܥܡܘܪܐ ܕܡܘܐܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܡܢ ܕܥܪܩ ܡܢ ܩܠܐ ܕܙܘܥܐ. ܢ
ܒܦܚܬܐ. ܘܡܢ ܕܣܠܩ ܡܢ ܓܘ ܦܚܬܐ. ܢܬܐܚܕ ܒܦܚܐ. ܡܛܠ ܕܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥ
ܥܠ ܡܘܐܒ. ܫܢܬܐ ܕܣܘܥܪܢܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܢܘܪܐ ܢܦܩܬ ܡܢ ܚ
ܘܫܠܗܒܝܬܐ ܡܢ ܩܪܝܬܐ ܕܣܝܚܘܢ. ܘܐܟܠܬ ܦܐܬܗ ܕܡܘܐܒ. ܘܩܪܩܦܬܐ ܕܒܢܝ ܫܐܘܢ. * ܘ
ܡܘܐܒ. ܐܒܕ ܥܡܐ ܕܟܡܘܫ. ܕܐܬܕܒܪܘ ܒܢܝܟܝ ܘܒܢܬܟܝ ܠܫܒܝܬܐ. * ܘܐܗܦܘܟ ܫ
ܕܡܘܐܒ ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܕܡܐ ܠܗܪܟܐ ܕܝܢܗ ܕܡܘܐܒ.

Et præteribit lætitia & exultatio de terra Charmeli, de terra Moabi: & vinũ è lacu ceſſabit, & non calcabunt calcantes, neque *mutuò ſibi* reſpondebunt, neq; dicent, Hem hem. 33
Ob clamorem Heſbonis ad Elealam uſque & ad Jahaſum uſque vocẽ ſuã extulerunt, à Soar ad Hornim uſque, & uſque ad urbẽ Eles vitulam trimã: quoniam aquæ Nemrim deficient. 34
Et abolebo à Moabo, dicit Dñs, offerentẽ victimã, & adolentẽ thura deo ipſius. 35
Propterea cor meum de Moabo tanquam lyra loquetur, quia malũ cõmiſerunt & perierunt. 36
Capita enim eorũ ſunt abraſa, & barbæ detonſæ, ſup omnes eorũ man⁹ lamentationes, & ſup dorſa ciliciũ: 37
Super omnia tecta Moabi & in plateis omnib⁹ luctus: fracturus enim ſum Moabum tanquã vas quod nullius eſt uſûs, ait Domin⁹: 38
(Quomodo fracti ſunt & ululaverunt? quomodo cervicẽ ſuã vertit Moab, & erubuit?) eritq; Moab riſui & contritioni apud omnes conterminos ſuos. 39
Sic ait Dñs, Ecce velut aquila aſcendet, & volabit, explicabitq; alas ſuas ſuper Moabum. 40
Capieris ô Cerioth, Meſroth ſubjugaberis: eritq; animus robuſtiſſimorum Moabi die illo, ſicut anim⁹ mulieris partûs dolores patientis: 41
Deniq; peribit Moab ex mortalibus, eò quòd contra Dñm ſuperbierit. 42
Pavor, & fovea, laqueúſque imminet tibi ô incola Moabi, Dicit Dominus: 43
Et qui ſtrepitum pavoris effugerit, cadet in foveam; & qui emerſerit è fovea, laqueo capietur: ſiquidem adducturus ſum iſta ſuper Moabum, annũ viſitationis eorum, ait Dominus. 44
Nam ignis egredietur de Heſbone, & flamma ex urbe Sihone, vorabítque myſtacem Moabi, & primates filiorum Seon. 45
Væ tibi Moab, periiſti popule Chamoſi: nam filii filiæque tuæ in captivatem diſpergentur. 46
Reducam autem captivos Moabi poſtremis temporibus, ait Dominus. Hactenus ſententia Moabi. 47

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܛ *

CAP. XLIX.

* ܥܠ ܒܢܝ ܥܡܘܢ *

Contra Ammonitas.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܒܢܝܐ ܠܝܬ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܐܘ ܝܪܬܐ ܠܝܬ ܠܗ. ܡܛܠ ܡܢ
ܡܠܟܘܡ ܠܓܕ. ܘܥܡܗ ܒܩܘܪܝܗ ܝܬܒ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐ
ܡܪܝܐ. ܘܐܫܡܥ ܥܠ ܪܒܬ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ ܩܠܐ ܕܩܪܒܐ. ܘܬܗܘܐ ܠܬܠܐ ܕܚ
ܘܡܕܝܢܬܗ ܒܢܘܪܐ ܬܐܩܕ. ܘܢܐܪܬ ܐܝܣܪܝܠ ܠܝܪܘܬܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

Sic ait Dominus, Num liberi deſunt Iſraeli? an hæredem non habet? cur Malchom Gadem poſſedit, & populus illius hujus civitates occupavit? 1
Propterea, ecce dies venturi ſunt, ait Dominus, quibus faciam ut audiatur contra Rabath Ammonitarum clamor bellicus, & redigatur in tumulũ ruderum, ejuſq; rura igne comburantur, fiátque Iſrael hæres hæredum ſuorum, Dicit Dominus. 2

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ووجد هناك عشرة رجال فقالوا لاسمعيل * لا تقتلنا ان لنا كنوز موجودة في الحقل حنط
وشعير عسل وزيت * فمضي ولم يقتلهم في وسط اخوتهم * والبير الذي طرح فيه هذا
اسمعيل جميع الذين ضربهم بير عظيم * هذا هو الذي صنعه الملك اسا من وجه با
ملك اسرايل * الذي ملاه اسمعيل جرحا * ورد اسمعيل جميع الشعب المتبقي في مسفا
وبنات الملك اللاتي اعادهن ريس الطباخين لعودوليا بن اسيكام وفر الي عبر بني امون
* وسمع يونان بن كاريا وجميع مقدمي الجيش الذين معه بجميع الشرور الذي صنع
اسمعيل * وجلبوا جميع معسكرهم * وجاوا ليحاربوه * فوجدوه علي ماء كبير في عاباون
* وكان لما راي كل الشعب الذي مع اسمعيل يونان وجميع قواد الجيش الذين معه
فرجعوا الي يونان * واسمعيل خلص مع ثمانية اناس وفر الي بني عمون * واخذ يونان
وجميع قواد الجيش الذين معه * جميع بقايا الشعب الذين رجعوا عن اسمعيل * رجالا اقو
في الحرب * والنساء والبقايا * والخصيان الذين رجعوا من عاباون * وهربوا وجلسوا في ارض
بيروث خامام التي عند بيت لحم * ليذهبوا ويدخلوا الي مصر من وجه الكلدانيين
لانهم خافوا من وجههم * لان اسمعيل ضرب عودوليا الذي اقامه ملك بابل في الارض

Sed extiterunt ibi decem viri qui dixerunt Iſmaeli; Ne occidas nos, quoniam habemus theſauros exiſtentes in agro, frumentum, hordeum, mel, & oleum: ſic abiit, nec interfecit eos unà cum fratribus eorum. 8
Puteus autem in quem projecit Iſmael eos omnes quos percuſſerat, puteus ingens eſt (ille nimirum quem fecerat rex Aſa propter Baaſam regem Iſraelis) hunc implevit Iſmael vulneratis. 9
Et abduxit Iſmael totum populum qui remanſerat in Maſepha, & filias regis quas remiſerat princeps coquorum ad Godoliam filium Achicami: deinde fugit ad alteram partem filiorum Ammon. 10
Audiens autem Jonan Careæ filius omnéſque duces exercitûs qui erant cum eo, cuncta mala quæ fecerat Iſmael; 11
Adduxerunt omnes copias ſuas, & venerunt ad oppugnandum eum, & invenerunt eum ſecus aquam copioſam in Gabaone. 12
Et factum eſt, cùm vidiſſet omnis ille populus qui erat cum Iſmaele, Jonanem & omnes duces exercitûs qui cum ipſo erant; redierunt ad Jonanem. 13 14
Iſmael autem evadens cum octo hominibus, fugit ad Ammonitas. 15
Jonan verò & omnes duces exercitûs qui erant cum ipſo, tulerunt omnes populi reliquias quæ regreſſæ fuerant ab Iſmaele, viros in bello robuſtos, & fœminas, reliquias, atque eunuchos quos è Gabaone reduxerant: 16
Et fugientes ſederunt in terra Biroth-chamam quæ eſt prope Beth-lehem; 17
ut irent, & ingrederentur Ægyptum à facie Chaldæorum: timebant enim illos, eò quòd Iſmael percuſſiſſet Godoliam quem præfecerat rex Babelis in terra. 18

, ſaccis vos accingite ; Rabbah *filiæ* clamate ; Hai eſt vaſtata quia ,Cheſbon Ulula
3 הילילי חשבון כי שדדה־עי צעקנה בנות רבה חגרנה שקים
,ej' ſacerdotes,abiit tráſmigratione in eorũ rex quia *:maceriis in oberrate* & , plangite
ספדנה והתשוטטנה בגדרות כי מלכם בגולה ילך כהניו
, *refractaria* filia tua vallis fluxit ?vallib' in *gloriaberis* Quid .ſimul ej' principes &
4 ושריו יחדיו: מה תתהללי בעמקים זב עמקך הבת השובבה
ait ,*pavorem* te ſuper *adducens* ego Ecce ? me ad veniet quis ,ſuis theſauris *in fidens*
5 הבטחה באצרתיה מי יבא אלי: הנני מביא עליך פחד נאם
,*ſuas facies ad vir* eritis expulſi & :tuis circuitib' omnib' ab exercituũ Dominus Domin'
אדני יהוה צבאות מכל סביביך ונדחתם איש לפניו
,Hammon ,filiorũ captivitatem faciã reverti hæc poſt Et .vagantem *congregans* non &
6 ואין מקבץ לנדד: ואחרי־כן אשיב את־שבות בני־עמון
?Teman in ſapientia ultrà Eſtne :exercituũ Dominus dixit ſic Edom Ad .Domin' dixit
7 נאם־יהוה: לאדום כה אמר יהוה צבאות האין עוד חכמה בתימן
profundaverunt ,ſunt verſi ,Fugite .eorũ ſapientia eſt corrupta , filiis à conſilium periit
8 אבדה עצה מבנים נסרחה חכמתם: נסו הפנו העמקו
.*cum viſitabo* tempus,eũ ſuper adduxi Heſau *exitiũ* quoniã :Dedan habitatores habitãdũ ad
לשבת ישבי דדן כי איד עשו הבאתי עליו עת פקדתיו:
, nocte in fures ſi :racemos relinquent non ,tibi venerint vindemiatores Si
9 אם־בצרים באו לך לא ישאירו עוללות אם־גנבים בלילה
,ejus abſcondita revelavi ,Heſau diſcooperui *ego* Quia .*ſuã ſufficientiam corrumpent*
10 השחיתו דים: כי־אני חשפתי את־עשו גליתי את־מסתריו
.*ipſe* non &,ejus vicini &,ejus fratres &,ejus ſemen eſt vaſtatũ :poterit non ſe *abſcondens* &
ונחבה לא יוכל שדד זרעו ואחיו ושכניו ואיננו:
dixit ſic Quia .ſperabunt me *ſuper* tuæ viduæ & :vivificabo ego,tuos pupillos Relinque
11 עזבה יתמיך אני אחיה ואלמנתיך עלי תבטחו: כי־כה אמר
12 tu & : bibent bibendo ,calicem *bibendum ad* ,*eorum* judicium non quorum Ecce :Dominus
יהוה הנה אשר־אין משפטם לשתות הכוס שתו ישתו ואתה
, juravi me *in* Quia .bibes bibendo ſed ,*liberaberis* non ?*liberaberis liberando ipſe*
13 הוא נקה תנקה לא תנקה כי שתה תשתה: כי בי נשבעתי
erit maledictionẽ in & ,deſertum in,opprobriũ in ,ſolitudinẽ in quòd ,Dominus dixit
נאם־יהוה כי־לשמה לחרפה לחרב ולקללה תהיה
à audivi Auditum .*ſeculi* deſolationes in erunt ejus civitates omnes & :Boſrah
14 בצרה וכל־עריה תהיינה לחרבות עולם: שמועה שמעתי מאת
.prælium in conſurgite &,eã *ſuper* venite &,vos Cõgregate:miſſus gentes in legat' & ,Dño
יהוה וציר בגוים שלוח התקבצו ובאו עליה וקומו למלחמה:
, te decepit *tuus Terror* .homines inter contemptũ :gentes inter te dabo *parvum* ecce Nam
15 16 כי־הנה קטן נתתיך בגוים בזוי באדם: תפלצתך השיא אתך
exaltaveris cùm:collis altitudinẽ *apprehẽdens* ,*rupis foraminib'* in *habitãs*,tui cordis ſuperbia
זדון לבך שכני בחגוי הסלע תפשי מרום גבעה כי־תגביה
Edom erit Et .Dominus dixit ,te faciã deſcendere inde ,tuũ nidum aquila veluti
17 כנשר קנך משם אורידך נאם־יהוה: והיתה אדום
.ejus plagas omnes ſuper ſibilabit & ,ſtupebit ,eam *ſuper tranſiens* omnis : ſolitudinẽ in
לשמה כל עבר עליה ישם וישרק על־כל־מכותה:
ibi habitabit non :Dominus ait ,ejus vicinas &,Hamorah &,Sedom ſubverſionẽ Secũdùm
18 כמהפכת סדם ועמרה ושכניה אמר יהוה לא־ישב שם
Jarden elevatione de aſcẽdet leo tanquã Ecce .hominis filius *ea in hoſpitabitur* non & , *vir*
19 איש ולא־יגור בה בן־אדם: הנה כאריה יעלה מגאון הירדן
,electus quiſquis & ,ea ab eũ faciã accurrere ,faciã quieſcere quia *: robuſti* habitaculũ ad
אל־נוה איתן כי־ארגיעה אריצנו מעליה ומי בחור
paſtor iſte quis & ?tempus mihi præſcribet quis & ;ego ſicut quis nam :præficiam *eam ad*
אליה אפקד כי מי כמוני ומי יעידני ומי־זה רעה
, Edom *ad conſultavit* quod ,Domini conſiliũ audite Propterea ?*meas facies ad* ſtet qui
20 אשר יעמד לפני: לכן שמעו עצת־יהוה אשר יעץ אל־אדום
parvuli eos traxerint non ſi : Teman habitatores *ad* cogitavit quas ej' cogitationes &
ומחשבותיו אשר חשב אל־ישבי תימן אם־לוא יסחבום צעירי
.eorũ *vox ej audita Suph* mari in clamor : terra eſt commota *eorum cadere* voce A .eorũ habitacula eis *ſuper* deſolaverit non ſi , *pecoris*
21 הצאן אם־לא־ישים עליהם נוהם: מקול נפלם רעשה הארץ צעקה בים־סוף נשמע קולה:

Verſio VULG. LAT.

3 Ulula Heſebon, quoniam vaſtata eſt Hai:clamate filiæ Rabbath,accingite vos ciliciis : plangite & circuite p ſepes : quoniam Melchom in tranſmigrationem ducetur, ſacerdotes ejus & principes 4 ejus ſimul. Quid gloriaris in vallib'?defluxit vallis tua, filia delicata, quæ confidebas in theſauris tuis, & dicebas ; Quis veniet ad 5 me? Ecce ego inducã ſup te terrorem,ait Dñs Deus exercituũ,ab omnib' qui ſunt in circuitu tuo : & diſpergemini ſinguli à conſpectu veſtro,nec erit qui congreget 6 fugientes. Et poſt hæc reverti faciam captivos filiorũ Ammon,ait 7 Dñs. Ad Idumæã.Hæc dicit Dñs exercituum ; Numquid non ultrà eſt ſapientia in Theman ? Periit conſilium à filiis,inutilis facta eſt 8 ſapientia eorum. Fugite & terga vertite:deſcendite in voraginem, habitatores Dedan : quoniã perditionẽ Eſau adduxi ſup eũ, tem- 9 pus viſitationis ejus.Si vindemiatores veniſſent ſuper te,non reliquiſſent racemũ:ſi fures in nocte, rapuiſſent quod ſufficeret ſibi. 10 Ego verò diſcooperui Eſau,revelavi abſcondita ej', & celari non poterit:vaſtatũ eſt ſemen ejus,& fratres ejus,& vicini ejus, & non 11 erit. Relinque pupillos tuos:ego faciã eos vivere:& viduæ tuæ in 12 me ſperabũt.Quia hæc dicit Dñs; Ecce quib' non erat judicium ut biberent calicẽ,bibentes bibent: & tu quaſi innocens relinquêris? non eris innocens,ſed bibens bi- 13 bes. Quia p memetipſũ juravi, dicit Dñs, quòd in ſolitudinẽ, & in opprobriũ,& in deſertũ,& in maledictionem erit Boſra : et omnes civitates ejus erunt in ſoli- 14 tudines ſempiternas. Auditũ audivi à Dño,& legatus ad Gentes miſſus eſt:Congregamini, & venite contra eam, & conſurgamus 15 in prælium: Ecce enim parvulũ dedi te in Gentib',contemptibi- 16 lem inter homines . Arrogantia tua decepit te,& ſuperbia cordis tui:qui habitas in cavernis petræ, & apprehendere niteris altitudinẽ collis:cùm exaltaveris quaſi aquila nidum tuum,indè de- 17 traham te, dicit Dñs.Et erit Idumæa deſerta:omnis qui tranſibit p eam,ſtupebit,& ſibilabit 18 ſup omnes plagas ejus. Sicut ſubverſa eſt Sodoma,& Gomorrha,& vicinæ ej',ait Dñs:non 19 habitabit ibi vir,& non incolet eam fili' hominis. Ecce quaſi leo aſcendet de ſuperbia Jordanis ad pulchritudinẽ robuſtã:quia ſubitò currere faciã eũ ad illã:et quis erit elect',quẽ præponã ei?quis enim ſimilis mei ? & quis ſuſtinebit me?& quis eſt iſte paſtor,qui reſiſtat vultui 20 meo? Propterea audite conſiliũ Dñi, ꝙ iniit de Edom;& cogitationes ej',quas cogitavit de habitatorib' Theman:Si non dejecerint eos parvuli gregis, niſi diſſipaverint cum eis habi- 21 taculũ eorum. A voce ruinæ eorum commota eſt terra : clamor in mari rubro audit' eſt vocis ej'.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

Cap. 42. Vulg. Lat. ΚΕΦ. μθʹ.

1 ΚΑὶ προσῆλθον πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως, καὶ (α) Ἰωάναν, καὶ Ἀζαρίας υἱὸς (β) Μαασαίου, καὶ πᾶς ὁ λαὸς ἀπὸ μικροῦ 2 (γ) καὶ ἕως μεγάλου, Πρὸς Ἱερεμίαν τὸν προφήτην, καὶ εἶπαν αὐτῷ, (ʹ) Πεσέτω δὴ τὸ ἔλεος ἡμῶν κατὰ πρόσωπόν σου, καὶ πρόσευξαι πρὸς κύριον τὸν θεόν σου περὶ τῶν καταλοίπων τούτων· ὅτι κατελείφθημεν ὀλίγοι ἀπὸ πολλῶν, καθὼς οἱ ὀφθαλμοί 3 σου βλέπουσι. Καὶ ἀναγγειλάτω ἡμῖν κύριος ὁ (δ) θεός σου τὴν ὁδὸν ἣν πορευσόμεθα ἐν αὐτῇ, καὶ λόγον ὃν 4 ποιήσομεν. Καὶ εἶπεν αὐτοῖς Ἱερεμίας, Ἤκουσα· ἰδοὺ ἐγὼ ( ) προσεύξομαι ὑπὲρ ὑμῶν πρὸς κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν, κατὰ τοὺς λόγους ὑμῶν· καὶ ἔσται, ὁ λόγος ὃν (ε) ἂν ἀποκριθήσεται κύριος ὁ θεὸς, ἀναγγελῶ ὑμῖν, 5 οὐ μὴ κρύψω ἀφ' ὑμῶν ῥῆμα. Καὶ αὐτοὶ εἶπαν τῷ Ἱερεμίᾳ, Ἔστω κύριος (ζ) ἐν ἡμῖν εἰς μάρτυρα δίκαιον καὶ πιστὸν, εἰ μὴ κατὰ πάντα τὸν λόγον, (η) ὃν ἐὰν ἀποστείλῃ κύριος πρὸς ἡμᾶς, (θ) οὕτως ποιήσωμεν. 6 Καὶ ἐὰν ἀγαθὸν καὶ ἐὰν κακὸν, τῆς φωνῆς κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν, οὗ ἡμεῖς ἀποστέλλομέν σε πρὸς αὐτὸν, ἀκουσόμεθα, ἵνα βέλτιον ἡμῖν γένηται, ὅτι ἀκουσόμεθα τῆς φωνῆς κυρίου τοῦ θεοῦ 7 ἡμῶν. Καὶ ἐγενήθη μεθ' ἡμέρας δέκα, ἐγενήθη λόγος κυρίου πρὸς Ἱερε- 8 μίαν. Καὶ ἐκάλεσε τὸν Ἰωάναν, καὶ ( ) τοὺς ἡγεμόνας τῆς δυνάμεως, καὶ πάντα τὸν λαὸν ἀπὸ μικροῦ (ι) καὶ ἕως 9 μεγάλου, Καὶ εἶπεν αὐτοῖς, Οὕτως 10 εἶπε κύριος, Ἐὰν καθίσαντες καθίσητε ἐν τῇ γῇ ταύτῃ, οἰκοδομήσω ὑμᾶς, καὶ οὐ μὴ καθελῶ, καὶ φυτεύσω ὑμᾶς, καὶ οὐ μὴ ἐκτίλω, ὅτι ἀναπέπαυμαι (κ) ἐπὶ τοῖς κακοῖς οἷς ἐποίησα ὑμῖν.

CAP. XLIX.

ET acceſſerunt omnes duces virtutis, & Joanan, & Azarias filius Maaſia, & omnis populus à parvo & uſque ad ma- 2 gnũ, Ad Hieremiam prophetam: & dixerunt ei, Cadat nunc miſericordia noſtra ante faciem tuam: & ora ad Dominum Deum tuum pro reſiduis his: quia relicti ſumus pauci è multis; ſicut oculi tui (a) vident. Et annunciet 3 nobis Dominus Deus tuus viam, quâ ibimus in ea, et verbum, quod faciemus. Et dixit eis Hiere- 4 mias, Audivi: Ecce ego orabo pro vobis ad Dominum Deum noſtrum ſecundùm verba veſtra: et erit, verbum quodcunque reſpondebit Dominus Deus, annunciabo vobis: non celabo à vobis verbum. Et ipſi dixerunt Hieremiæ, 5 Sit Dominus in nobis in teſtem juſtum, et fidelem, ſi non juxta omne verbum, quod miſerit Dominus ad nos, ſic fecerimus: Et ſive bonũ, et ſive ma- 6 lum ; vocem Domini Dei noſtri, ad quem nos mittimus te ad eum, audiemus: ut melius nobis fiat, quia audiemus vocem Domini Dei noſtri. Et fa- 7 ctum eſt poſt dies decem, factum eſt verbum Domini ad Hieremiam. Et 8 vocavit Joanan, et duces virtutis, et univerſum populum à parvo et uſque ad magnum : Et di- 9 xit eis, Sic dixit (b) Dominus ; Si ſedentes ſede- 10 ritis in terra hac, ædificabo vos, et non deſtruam : et plantabo vos, et non evellã: quia requievi ſuper malis, quæ feci vobis.

MS.A. (α) Ἰωάνναν, (β) Μασαίου, (γ) ἕως μεγάλου, ἐπὶ Ἱερεμίαν (ʹ) Πεσάτω (δ) θεὸς τὴν ὁδὸν ἐν ᾗ ( ) προσεύξομαι πρὸς (ε) ἀποκριθήσεται κύριος, ἀναγγελῶ (ζ) ἡμῖν (η) ὃν ἀπέστειλεν (θ) οὐ ποιήσομεν. ( ) πάντας τοὺς (ι) ἕως (κ) ἀπὸ τῶν κακῶν οἷς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 אילילו יתבי חשבון ארי אתבזיזת עי צוחו יתבי כפרני רבה אסרו סקין ספודו
4 ואתהממון בסיען ארי מלכהון בגלותא יהך פלחוהי ורברבוהי כחדא: מה את
משתבחי במישרך חרובו תוקפך מלכותא טפשתא דמתרחצא בבית גנזהא אמרא מן
5 יעול עלי: הא אנא מיתי עלך דחלא אמר יי אלהים צבאות מכל סחרנך ותתבדרון
6 גבר לקביל אפוהי ולית דמכניש למבדריא: ובתר כן אתיב ית גלות בני עמון אמר יי:
7 לאדום כדנן אמר יי צבאות הלית עוד חוכמא בדרומא פסק מלכא מבניא אתקלקלת
8 חוכמתהון: ערוקו גלו ארחיקו למתב יתבי דדן ארי תביר עשו איתיתי עלוהי עדן
9 סעורת חובוהי: אם חטופין כקטופין אתו עלך לא אשארו עוללן אם גנביא בליליא
10 חבילו מסתהון: ארי אנא איתיתי בלושין על עשו גליתי ית מטמרוהי דאם יבעי
11 לאטמרא לא יכול אתבזיזו בנוהי ואחוהי וקריבוהי וליתנון: אתון בית ישראל לא
12 תשתבקון יתמיכון אנא אקים וארמלתכון על מימרי יתרחצן: ארי כדנן אמר יי הא
דלא חזי להון למשתי כסא דלוטא משתא ישתון ואתון מדמן דמזכא תזכון לא תזכון
13 ארי משתא תשתון: ארי במימרי קימית אמר יי ארי לצדו לחסודין לחורב וללוטא
14 תהי בצרה וכל קרוהא יהוין לחורבא לעלם: בסורא שמעית מן קדם יי ואזגד
15 בעממיא שליח אתכנישו ואתו עלה וקומו לאגחא קרבא: ארי הא חלש יהבתך
16 בעממיא בסיר בבני אנשא: טפשותך אטעיאת יתך רשע לבך דאת דמי לנשרא דשרי
בשני כיפא מותביה בתקוף רומא ארי תרים כנשרא מדורך מתמן במימרי אחתנך
17 18 אמר יי: ותהי אדום לצדו כל דיעבר עלה יכלי ויניד על כל מחתהא: כהפכתא
19 דסדום ועמורה וקריבהא אמר יי לא יתיב תמן אנש ולא יתותב בה בר אנש: הא מלך
במשריתיה יסק עליהון כאריא דסליק מרום ירדנא והוי לדיר רען ארי בזמן איתנון
עלה ושלטונין אמני עלה ארי מן כותי ומן דיערענני ולית מלך דאית ליה תקוף קדמי:
20 בכן שמעו מלכא דיי דמלך על אדום ומחשבתיה דחשיב על יתבי ארעא דרומא אם
21 לא יגררון ויקטלון תקיפי עמא אם לא יצדון עליהון מדורהון: מקל מפלתהון זעת
ארעא צוחתא בימא דסוף אשתמע קלהון:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ululate habitatores Heſbon;quia direpta eſt Hai: clamate habitatores vil- 3
larum Rabbah, accingite ſaccos, plangite & lacerate vos in turbis; quia
rex eorũ in tranſmigrationem ibit,miniſtri ej',& principes ej' ſimul. Quid 4
tu gloriaris in valle tua?Deſolata eſt fortitudo tua,regnũ inſipiẽs,quod confidebat in domo theſaurorũ ſuorum, & dicebat : Quis ingredietur ad me?
Ecce ego inducam ſup te timorem, dicit Dñs Deus exercituum, ab omnib' 5
qui in circuitu tuo ſunt ; & diſpergemini unuſquiſq; contra faciem ſuam;
& non erit qui congreget diſperſos. Et poſt hæc reducam tranſmigrationẽ 6
filiorũ Ammon,dicit Dñs. Ad Idumæam. Hæc dicit Dñs exercituũ:An non 7
adhuc eſt ſapientia in Meridie?ceſſavit conſiliũ à filiis,corrupta eſt ſapientia eorũ. Fugite, migrate, longè recedite ut habitetis habitatores Dedan ; 8
quia interitũ Eſau induxi ſup eum, tempus viſitationis peccatorũ ejus. Si 9
deprædatores quaſi vindemiatores veniſſent ſup te, num reliquiſſent racemos?nónne latrones in nocte diripuiſſent quod ſibi ſuffeciſſet ? Quia ecce 10
ego adducam ſcrutatores contra Eſau , revelavi abſcondita ejus : quod ſi
quæſierit abſcondi,non poterit. Vaſtati ſunt filii ejus,& fratres ejus,& pro- 11
ximi ejus, & non erunt. Vos autẽ domus Iſrael, non relinquentur orphani
veſtri,ego enim ſuſtentabo eos; & viduæ veſtræ in verbo meo ſperabunt.
Quia hæc dicit Dñs : Ecce quorũ non erat bibere calicẽ maledictionis, bi- 12
bendo bibent : & vos putatis omnino eſſe innocentes?non eritis innocentes,quia bibendo bibetis. Quia in verbo meo juravi,dicit Dñs : quia in de- 13
ſolationẽ,& in opprobria, & in ſolitudinẽ, & in maledictionẽ erit Boſra,
& oẽs urbes ejus erunt in ſolitudinẽ in æternũ. Nunciũ audivi à facie Dñi, 14
& legatus in populis miſſus eſt : Congregamini, & venite contra eam, &
ſurgite ad præliandũ. Quia ecce infirmũ poſui te in populis;contemptibilẽ 15
in filiis hominũ. Inſipientia tua ſeduxit te,malitia cordis tui:tu enim ſimi- 16
lis es aquilæ,quæ habitat in ſcopulis petrarũ ,in fortitudine excelſa habitatio
ejus. Si exaltaveris quaſi aquila habitaculũ tuũ, inde verbo meo detraham
te,dicit Dñs. Et erit Idumæa in ſolitudinẽ : omnis qui tranſierit per eam 17
clamabit, & movebit caput ſuũ ob oẽs plagas ej'. Juxta ſubverſionẽ Sodo- 18
mæ & Gomorræ,& vicinorũ ejus,dicit Dñs:non ſedebit ibi homo,nec habitabit in ea filius hominis. Ecce rex cum exercitu ſuo aſcendet contra eos, 19
ſicut leo qui aſcendit ab altitudine Jordanis,& redigetur in caſam paſtorũ,
quia in momento adducam illos adverſùs eam, & dominatores conſtituam
ſup eam ; quia quis eſt ſicut ego?& quis occurret mihi?Et non eſt rex qui
habeat fortitudinẽ coram me. Propterea audite conſiliũ Dñi,quod conſul- 20
tavit contra Idumæam,& cogitationes ejus quas cogitavit contra habitatores terræ Auſtri, Si non detrahant, & occidant fortes populi, ſi non deſo-
labuntur ſuper eos habitacula eorum. A voce ruinæ eorum contremuit terra, clamor in mari carectoſo, audita eſt vox eorum. 21

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܝܠܠܝ ܚܫܒܘܢ܆ ܡܛܠ ܕܐܬܒܙܬ ܥܝ܂ ܥܝܛܘ ܩܘܪܝܗ ܕܪܒܬ܂ ܐܬܥܛܦܘ ܣܩܐ ܘܪ
ܘܐܬܟܬܫܘ ܚܕ ܥܡ ܚܕ܂ ܡܛܠ ܕܡܠܟܘܡ ܒܫܒܝܐ ܢܐܙܠ܂ ܥܡ ܟܘܡܪܘܗܝ ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ ܐܟܚ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܡܢܐ ܡܫܬܒܗܪܬܝ ܒܥܘܡܩܝܟܝ ܘܒܢܚܠܝܟܝ܂ ܘܡܬܬܟܠܐ ܐܢܬܝ ܒܪܬܐ
ܚܒܝܒܬܐ ܕܬܟܝܠܐ ܥܠ ܓܙܝܗ܂ ܘܐܡܪܐ ܡܢܘ ܢܐܬܐ ܥܠܝ܂ * ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ ܕܚܠܬ
ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܚܕܪܝܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܟܠ ܚܕ ܠܩܘܒܠܗ܂ ܘܠܝܬ ܕܡܟܢ
ܠܡܒܕܪܐ܂ * ܘܡܢ ܒܬܪܟܢ ܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܐ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂

* ܥܠ ܐܕܘܡ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܠܝܬ ܬܘܒ ܚܟܡܬܐ ܒܬܝܡܢ܂ ܐܒܕ ܡܠܟܐ ܡܢ ܣܘܟܠܬܢ
ܐܬܢܣܒܬ ܚܟܡܬܗܘܢ܂ * ܥܪܩܘ ܘܐܬܗܦܟܘ ܘܥܡܩܘ ܠܡܥܡܪ ܥܡܘܪܐ ܕܕܝܢ܂ ܡܛܠ ܕܬܒܪ
ܕܥܫܘ ܐܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܘܗܝ܂ ܒܙܒܢܐ ܕܣܥܪܬܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܐܢ ܩܛܘܦܐ ܐܬܘ ܥܠܝܟ
ܥܘܠܠܐ ܗܘܘ ܡܫܒܩܝܢ܂ ܘܐܢ ܓܢܒܐ ܒܠܠܝܐ ܡܚܒܠܝܢ ܐܝܟ ܣܦܩܘܬܗܘܢ܂ * ܐܢܐ ܓܝܪ ܒܨܝܬ ܠܥܫܘ܂ ܘܓܠ
ܡܛܫܝܬܗ ܡܛܫܝܬܗ܂ ܘܐܬܛܫܝ ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ܂ ܘܐܬܒܕܪ ܙܪܥܗ ܘܐܚܘܗܝ ܘܫܒܒܘܗܝ ܘܠܝܬܘܗܝ
ܫܒܘܩ ܝܬܡܝܟ܂ * ܐܢܐ ܐܚܐ ܐܢܘܢ܂ ܘܐܪܡܠܬܟ ܥܠܝ ܢܬܬܟܠܢ܂ * ܡܛܠ ܕܗܟ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܗܐ ܕܠܐ ܕܝܢ ܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܡܫܬܐ ܟܣܐ ܐܫܬܝܘ܂ ܘܐܢܬ ܡܙܕܟܐ ܬܙܕܟܐ܂ ܠܐ ܬܙ
ܠܐ ܐܦ ܐܢܬ ܬܙܕܟܐ ܬܫܬܐ܂ * ܡܛܠ ܕܒܝ ܝܡܝܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܕܠܬܗܪܐ ܘܠܚܘܪܒܐ
ܘܠܚܣܕܐ܂ ܘܠܠܘܛܬܐ ܬܗܘܐ ܒܨܪܐ܂ ܘܟܠܗܝܢ ܩܘܪܝܗ ܠܚܘܪܒܐ ܢܗܘܝܢ ܠܥܠܡ܂ * ܫܡܥܬ
ܫܡܥܬܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ܂ ܘܐܫܬܕܪ ܠܥܡܡܐ ܐܙܓܕܐ܂ ܩܘܡܘ ܢܩܘܡ ܥܠܝܗ ܠܩܪܒܐ
* ܡܛܠ ܕܗܐ ܙܥܘܪܐ ܝܗܒܬܟ ܒܥܡܡܐ܂ ܘܫܝܛܐ ܒܝܢܝ ܒܢܝܢܫܐ܂ * ܛܘܥܝܝܟ ܐܛܥܝ
ܘܡܘܪܡܘܬ ܠܒܟ܂ ܕܝܬܒ ܒܢܩܝܥܐ ܕܟܐܦܐ܂ ܘܐܚܝܕ ܪܘܡܐ ܕܪܡܬܐ܂ ܘܐܡܪ ܒܠܒܗ ܡܢ
ܢܚܬܢܝ ܠܐܪܥܐ܂ ܐܢ ܬܪܝܡ ܐܝܟ ܢܫܪܐ ܩܢܟ܂ ܐܘ ܠܒܝܬ ܟܘܟܒܐ ܬܣܝܡ ܩܢܟ܆ ܡܢ ܬܡܢ
ܐܚܬܟ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܘܬܗܘܐ ܐܕܘܡ ܠܚܘܪܒܐ܂ ܘܟܠ ܕܥܒܪ ܥܠܝܗ܆ ܢܬܕܡܪ ܘܢܫܪܘ
ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܡܚܘܬܗ܂ * ܘܬܬܗܦܟ ܐܝܟ ܕܐܬܗܦܟܬ ܣܕܘܡ ܘܥܡܘܪܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܠܐ ܢܬܒ ܬܡܢ ܐܢܫ܂ ܘܠܐ ܢܥܡܪ ܬܡܢ ܒܪܢܫܐ܂ * ܗܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܢܣܩ ܡܢ ܓܐܘܬܗ ܕܝܘܪܕ
ܠܥܡܪܐ ܕܐܝܬܢ܂ ܘܡܚܕܐ ܐܪܗܛ ܐܢܘܢ ܡܢܗ܂ ܘܥܠܝܡܐ ܐܦܩܘܕ ܥܠܝܗ܂ ܡܢܘ ܓܝܪ ܐܝܟܘ
ܐܘ ܡܢܘ ܢܥܗܕܢܝ܂ ܐܘ ܐܝܢܘ ܪܥܝܐ ܕܢܩܘܡ ܩܘܒܠܝ܂ * ܡܛܠܗܢܐ ܫܡܥܘ ܡܠܟܗ ܕܡܪ
ܕܡܪܝܐ ܕܐܬܪܥܝ ܥܠ ܐܕܘܡ܂ ܘܡܚܫܒܬܗ ܕܐܬܚܫܒ ܥܠ ܥܡܘܪܝ ܬܝܡܢ܂ ܕܢܬܓܪܪܘܢ ܐܢ
ܙܥܘܪܝ ܕܥܢܐ܂ ܘܢܚܪܒ ܥܠܝܗܘܢ ܥܘܡܪܗܘܢ܂ * ܡܢ ܩܠܐ ܕܡܦܘܠܬܗܘܢ ܐܙܝܥ ܐܪܥ
ܘܒܟܝܬܗܘܢ ܡܢ ܝܡܐ ܕܣܘܦ܀ ܐܫܬܡܥ ܩܠܗ܂

Ululet Heſbon, quia contrita eſt Ai : voci- 3
feramini rura Rabath, accingimini ciliciis,
plangite, & alter in alterum dimicate : quia
Malchom ibit in captivitatem unà cum ſacer-
dotibus & principibus ſuis, ait Dominus.
Quid gloriaris de vallibus tuis, & convalli- 4
bꝰ tuis confidis filia dilecta, quæ ſpem collo-
cas in theſauris tuis, ac dicis, Quis invaderet
me ? Ecce ego inductꝰ ſum ſuper te pavo- 5
rem undequaque, dicit Dominꝰ potentiſſimꝰ,
& diſpergam eos quemque ſeorſim, nec erit
qui diſperſos congreget. Sed poſtmodum re- 6
ducam captivos Ammonitarum, dicit Dñs.

Contra Edom.

Sic ait Dominꝰ potentiſſimꝰ, Nulla ſupereſt 7
ſapientia in Theman, periit conſilium à pru-
dentibꝰ, ablata eſt ſapientia eorum : Fuge- 8
runt, terga verterunt, & ima petierunt ut ha-
bitarent incolæ Daranis ; quia contritionem
Eſau inducam ſuper eum, quo tempore viſi-
tabo illum, dicit Dominꝰ. Si te vindemiato- 9
res invaderent, an non relinquerent racema-
tionem ? vel ſi fures noctu, num vaſtarent
prout vellent ? At ego ſcrutabor Eſau, & pu- 10
blica faciam abdita ipſiꝰ : abdet ſe, & non in-
venietur : diſpergetur ſemen ejꝰ, & fratres,
ac vicini ejꝰ, ita ut non extent. Deſine, pu- 11
pillos tuos ego ſervabo vivos, & viduæ tuæ
mihi confidant. Nam ſic dicit Dominꝰ, Ecce 12
ii quos æquum non erat calicem hunc bibe-
re, biberunt : tu autem impunem te fore cre-
deres? nequaquam eris impunis, ſed tu quoq;
calicem bibes. Nam per me juro, dicit Do- 13
minꝰ, ſtupori, vaſtitati, ignominiæ, & execra-
tioni fore Boſarem ; & omnes civitates ejꝰ
in perpetuam deſolationem redigendas. Ru- 14
morem audivi à Domino, & legatus ad gen-
tes miſſus eſt, *dicens* ; Surgite, invadamꝰ eam
prælio. Nam ecce parvum te redditurus ſum 15
inter gentes, & abjectum inter mortales. Ini- 16
quitas tua & arrogantia animi tui te fallit ô
qui habitas in rupe petræ, verticem tenes col-
lis, & apud temetipſũ dicis, Quis me in terrã
devolvat? Etiamſi inter ſidera collocares nidũ
tuum, & elevares ut aquila nidum tuum; inde
te devolverem, ait Dñs : Eritque Edom de- 17
ſolationi, & quicunque ſecus eam tranſierit,
obſtupeſcet, & ſibilabit propter tantas pla-
gas ejꝰ. Subvertetur enim quemadmodum 18
ſubvertit Deus Sodomam & Gomorram, ait
Dominus : Non habitabit ibi quiſquam, nec
quiſquam mortalium commorabitur illic.
Ecce ſicut leo aſcendet è robore Jordanis in 19
habitaculum Ethan, & brevi expellam eos ex
ipſa ; juvenibus enim poteſtatem dabo ſuper
ipſam. Nam quis mihi par eſt ? aut quis me
commonefaciat ? aut quis eſt paſtor qui mihi
reſiſtat ? Idcirco audite conſilium Domini 20
quod cepit contra Edom, & cogitationem
ejus quam cogitavit contra habitatores The-
man : Raptandos eos eſſe à viliſſimis inter
gregem, & ab his evertendam ſuper eos ha-
bitationem eorum : A fragore caſûs eorum 21
concutiendam terram, vocem ululatûs eorum
ex mari Suph audiendam.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل التاسع والاربعون * وتقدم جميع قواد الجيش ويونان وعزاريا بن
ماساو * وجميع الشعب من صغيرهم الى كبيرهم الي ارميا النبي * وقالوا له ليهبط رحم
لوجهك * فصلي الي الرب الهك من اجل هذه البقايا * لانا بقينا قليلون من كثيرين
كما تنظر عينك * فليخبر لنا الرب الاله الطريق التي نسير اليها والقول الذي نصنعه
* فقال لهم ارمياء * سمعت ها انا اصلي الي الرب الهنا ككلماتكم * ويكون القول
الذي يجاوبني به الرب به اخبركم ولا اخفي عنكم كلمة * وهم قالوا لارميا * ليكن
الرب لنا شاهدا عدلا امينا * كل القول الذي يرسله الرب الهنا الينا هكذا نصنع
* ان كان خيرا وان كان شرا صوت الرب الهنا الذي نحن نرسلك اليه نسمع منه
كي يكون لنا الخير ان سمعنا صوت الرب الهنا * وكان من بعد عشرة ايام صار قول
الرب الي ارميا * فدعا يونان وجميع قواد الجيش * وكل الشعب من صغيرهم الي كبيرهم
وقال لهم * هكذا قال الرب * ان جلستم جالسين في الارض ابنيكم ولا اهدمكم
واغرسكم ولا اقلعكم * لاني كففت من الشرور التي صنعتها بكم *

CAP. XLIX.

Deinde acceſſerunt omnes duces ex- 1
ercitûs, & Jonan, & Azaria filius
Maaſiæ, totuſque populus à minimo ad
maximum uſque, ad Jeremiam prophe-
tam ; Et dixerunt ei, Tangat te miſe- 2
ricordia noſtri, & ora Dominum Deum
tuum pro iſtis reliquiis, (nam pauci re-
manſimus ex multis, ut vident oculi
tui) ut indicet nobis Dominus Deus 3
viam per quam eamus, & rem quam
agere debemus. *Dixit illis Jeremia ;* 4
Audivi, ecce ego rogabo Dominum Deum
noſtrum ſecundùm verba veſtra ; &
oraculũ quod reſpondebit mihi Dominus,
idem vobis indicabo, nec ullum à vobis
verbum abſcondam. Tum ipſi dixerunt 5
Jeremiæ ; Sit nobis Dominus teſtis juſtus
ac fidelis, nos quemcunque ſermonem
miſerit ad nos Dominus Deus noſter,
prorſus facturos : Sive bonus fuerit, 6
ſive malus, voci Domini Dei noſtri ad
quem nos mittimus te, auſcultabimus ; ut
bene ſuccedat nobis cùm audierimus
vocem Domini Dei noſtri. Poſt decem 7
ergò dies cùm factus eſſet ſermo Do-
mini ad Jeremiam, Advocavit Jona- 8
nem, & omnes duces exercitûs, to-
tumque populum à minimo ad maxi-
mum, & ait illis ; Sic dixit Dominus ; 9
Si firmi permanſeritis in hac terra, 10
ædificabo vos & non deſtruam, plantabo
vos & non evellam, quia deſtiti à
malis quæ intuli vobis.

erit & : Boſrah ſuper ſuas alas expandet & :volabit &,aſcendet aquila tanquā Ecce
22 הנה כנשר יעלה וידאה ויפרש כנפיו על־בצרה והיה
: Dammeſec Ad *.miſeræ* mulieris cor ſicut illa die in Edom fortium cor
23 לב גבורי אדום ביום ההוא כלב אשה מצרה: לדמשק
:ſunt diſſoluti,audierūt malum auditū quoniā,Arphad & Chamath eſt affecta Pudore
בושה חמת וארפד כי־שמעה רעה שמעו נמגו
,fugiendū ad ſe vertit,Dammeſec eſt *Debilitata* .poterit non *quieſcere* ,*ſolicitudo* mari in
24 בים דאגה השקט לא יוכל: רפתה דמשק הפנתה לנוס
Quomodo .parturientis tanquā eam *tenuit* *funes* & anguſtia :apprehendit tremor &
25 ורטט החזיקה צרה וחבלים אחזתה כיולדה: איך
ejus juvenes cadent Ideo ? mei gaudii urbs , laudis civitas eſt derelicta non
26 לא־עזבה עיר תהלה קרית משושי: לכן יפלו בחוריה
Dominus ait ,illa die in *conticeſcent* *belli* viri omnes & ,ejus plateis in
ברחבתיה וכל־אנשי המלחמה ידמו ביום ההוא נאם יהוה
-Ben ædes conſumet & :Dammeſec muro in ignem faciā ſuccēdere Et .exercituū
27 צבאות: והצתי אש בחומת דמשק ואכלה ארמנות בן־
rex reſar-Nebuchad percuſſit quæ Chaſor regna ad & ,Chedar Ad .hadad
28 הדד: לקדר ולממלכות חצור אשר הכה נבוכדראצר מלך־
filios vaſtate & ,Chedar ad aſcendite ,Surgite :Dominus dixit ſic , Babel
בבל כה אמר יהוה קומו עלו אל־קדר ושדדו את־בני־
,eorū vaſa omnia & ,eorum cortinas ,capient eorū *pecus* & ,eorum *Tentoria* .Chedem
29 קדם: אהליהם וצאנם יקחו יריעותיהם וכל־כליהם
,Fugite undique formidinem eos ſuper vocabunt & : ſibi tollent eorū camelos &
30 וגמליהם ישאו להם וקראו עליהם מגור מסביב: נסו
:Dominus dixit ,Chaſor habitatores habitandū ad *profundārunt*,vehementer *evagamini*
נדו מאד העמיקו לשבת ישבי חצור נאם־יהוה
vos *ſuper* cogitavit & ,conſiliū Babel rex Nebuchadreſar vos *ſuper* conſultavit quia
כי־יעץ עליכם נבוכדראצר מלך־בבל עצה וחשב עליהם
: Dñs ait ,*fiducia in* habitantē pacificā gentem ad aſcendite,Surgite .cogitationē
31 מחשבה: קומו עלו אל־גוי שליו יושב לבטח נאם־יהוה
,direptionē in eorū cameli erunt Et .*habitabunt ſolum* ,ei vectis nec , *fores* non
32 לא־דלתים ולא־בריח לו בדד ישכנו: והיו גמליהם לבז
: *anguli extremificatos ventum omnem* in eos diſpergā & ; *ſpolium* in eorū pecudū *turba* &
והמון מקניהם לשלל וזרתים לכל־רוח קצוצי פאה
Chaſor erit Et .Dominus dixit ,eorū interitū adducam ej⁹ laterib⁹ omnib⁹ ex &
33 ומכל־עבריו אביא את־אידם נאם־יהוה: והיתה חצור
habitabitur nec , *vir* ibi manebit non :ſeculū in uſq; ſolitudo,draconū habitaculū *in*
למעון תנים שממה עד־עולם לא־ישב שם איש ולא־יגור
ad prophetam Irmejahu ad Domini verbum fuit Quod hominis filius *ea in*
34 בה בן־אדם: אשר היה דבר־יהוה אל־ירמיהו הנביא אל־
dixit Sic *: dicendum ad* Jehudah regis Sidchijah regni principio in : Helam
35 עילם בראשית מלכות צדקיה מלך־יהודה לאמר: כה אמר
principium : Helam arcum *confringens ego* Ecce : exercituum Dominus
יהוה צבאות הנני שבר את־קשת עילם ראשית
extremitatib⁹ quatuor à ventos quatuor Helam ad adducam Et .eorū fortitudinis
36 גבורתם: והבאתי אל־עילם ארבע רוחות מארבע קצות
non *quo* gens erit non & : iſtos ventos omnes in eos *ſpargam* & ,cœlorum
השמים וזרתים לכל הרחות האלה ולא־יהיה הגוי אשר לא־
,*ſuorū inimicorum facies ad* Helam *conſternabo* Et .Helam *expulſi illuc veniat*
37 יבוא שם נדחי עולם: והחתתי את־עילם לפני איביהם
,mei *naſi* iram ,malum eos ſuper adducam & ,eorū animā *quærentium facies ad* &
ולפני מבקשי נפשם והבאתי עליהם רעה את־חרון אפי
.eos *me conſumere ad uſque* gladium eos poſt mittam Et .Dominus dixit
נאם־יהוה ושלחתי אחריהם את־החרב עד כלותי אותם:
.Dominus dixit ,principes & ,regem inde perdam & :Helam in meū ſoliū ponam Et
38 ושמתי כסאי בעילם והאבדתי משם מלך ושרים נאם־יהוה:
.Dominus dixit ,Helam captivitatem faciam reverti ,dierum noviſſimo in erit Et
39 והיה באחרית הימים אשוב את־שבית עילם נאם־יהוה:

Verſio VULG. LAT.

22 Ecce quaſi aquila adſcendet, &
avolabit: & expandet alas ſuas
ſuper Boſran: & erit cor fortium
Idumææ in die illa, quaſi cor
23 mulieris parturientis. Ad Damaſcum:
Confuſa eſt Emath, &
Arphad: quia auditum peſſimum
audierunt, turbati ſunt in
mari: præ ſolicitudine quie-
24 ſcere non potuit. Diſſoluta eſt
Damaſcus, verſa eſt in fugam,
tremor apprehendit eam: angu-
ſtia & dolores tenuerunt eam
25 quaſi parturientem. Quomodò
dereliquerunt civitatem lauda-
26 bilem, urbem lætitiæ! Ideò cadent
juvenes ej⁹ in plateis ej⁹:
& omnes viri prælii conti-
ceſcent in die illa, ait Domin⁹
27 exercituum. Et ſuccendam ignē
in muro Damaſci, & devorabit
28 mœnia Benadad. Ad Cedar, &
ad regna Aſor, quæ percuſſit Nabuchodonoſor
rex Babylonis.
Hæc dicit Domin⁹; Surgite, &
adſcendite ad Cedar, & vaſtate
29 filios Orientis. Tabernacula eorum,
& greges eorum capient:
pelles eorum, & omnia vaſa eorum,
& camelos eorum tollent
ſibi: & vocabunt ſuper eos formidinem
30 in circuitu. Fugite,
abite vehementer, in voraginib⁹
ſedete, qui habitatis Aſor, ait
Domin⁹: iniit enim contra vos
Nabuchodonoſor rex Babylonis
conſilium, & cogitavit adverſùm
31 vos cogitationes. Conſurgite, &
aſcendite ad gentem quietam, &
habitantem confidenter, ait Dominus:
non oſtia, nec vectes eis:
32 ſoli habitant. Et erunt cameli
eorum in direptionē, & multitudo
jumentorum in prædam: &
diſpergam eos in omnem ventū,
qui ſunt attonſi in comam: & ex
omni confinio eorum adducam
33 interitū ſup eos, ait Domin⁹. Et
erit Aſor in habitaculū draconū,
deſerta uſq; in æternū: non ma-
34 nebit ibi vir, nec incolet eam fili⁹ hominis. Quod factum eſt verbum Dñi ad Jeremiam prophe-
35 tam adverſùs Ælam, in principio regni Sedeciæ regis Juda, dicens; Hæc dicit Domin⁹ exercituum;
36 Ecce ego confringam arcum Ælam, & ſummam fortitudinem eorum. Et inducam ſuper Ælam
quatuor ventos à quatuor plagis cœli: & ventilabo eos in omnes ventos iſtos: & non erit gens,
37 ad quam non perveniant profugi Ælam. Et pavere faciā Ælam corā inimicis ſuis, & in conſpectu
quærentium animam eorum: & adducam ſuper eos malum, iram furoris mei, dicit Dominus: &
38 mittam poſt eos gladium donec conſumam eos. Et ponam ſolium meum in Ælam, & perdam indè
39 reges & principes, ait Dominus. In noviſſimis autem diebus reverti faciam captivos Ælam, dicit Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

11 Μὴ φοβηθῆτε ἀπὸ προσώπου βασιλέως
Βαβυλῶνος, οὗ ὑμεῖς φοβεῖσθε·
ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ μὴ φοβηθῆτε, φησὶ
κύριος, ὅτι μεθ' ὑμῶν ἐγὼ (λ),
ἐξαιρεῖσθαι ὑμᾶς, καὶ σώζειν ὑμᾶς ἐκ
12 χειρὸς αὐτῶν. Καὶ δώσω ὑμῖν ἔλεος,
καὶ ἐλεήσω ὑμᾶς, καὶ ἐπιστρέψω ὑμᾶς
13 εἰς τὴν γῆν ὑμῶν. Καὶ εἰ λέγετε ὑμεῖς,
Οὐ μὴ καθίσωμεν ἐν τῇ γῇ ταύτῃ,
πρὸς τὸ μὴ ἀκοῦσαι φωνῆς κυρίου,
14 Ὅτι εἰς γῆν Αἰγύπτου εἰσελευσόμεθα,
καὶ οὐ μὴ ἴδωμεν πόλεμον, καὶ φωνὴν
σάλπιγγος οὐ μὴ (μ) ἀκούσωμεν, καὶ
ἐν ἄρτοις οὐ μὴ πεινάσωμεν, καὶ ἐκεῖ
15 οἰκήσομεν· Διατοῦτο ἀκούσατε λόγον
κυρίου· οὕτως εἶπε κύριος, Ἐὰν ὑμεῖς
δῶτε τὸ πρόσωπον ὑμῶν εἰς Αἴγυπτον,
καὶ εἰσέλθητε ἐκεῖ κατοικεῖν,
16 Καὶ ἔσται, ἡ ῥομφαία ἣν ὑμεῖς φοβεῖσθε
ἀπὸ προσώπου αὐτῆς, εὑρήσει ὑμᾶς
ἐν γῇ (ν) Αἰγύπτου, καὶ ὁ λιμὸς οὗ ὑμεῖς
λόγον ἔχετε ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ,
καταλήψεται ὑμᾶς ὀπίσω ὑμῶν
ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ ἐκεῖ ἀποθανεῖσθε.
17 Καὶ ἔσονται πάντες οἱ ἄνθρωποι, καὶ
πάντες οἱ ἀλλογενεῖς, οἱ θέντες τὸ
πρόσωπον αὐτῶν εἰς γῆν Αἰγύπτου
ἐνοικεῖν ἐκεῖ, ἐκλείψουσιν ἐν τῇ ῥομφαίᾳ,
καὶ ἐν τῷ λιμῷ, καὶ οὐκ ἔσται αὐτῶν
(ξ) οὐδεὶς σωζόμενος ἀπὸ τῶν κα-
18 κῶν, ὧν ἐγὼ ἐπάγω ἐπ' αὐτούς. Ὅτι
οὕτως εἶπε κύριος, (ο) Καθὼς ἔσταξεν
ὁ θυμός μου ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλὴμ,
οὕτως στάξει ὁ θυμός μου ἐφ'
ὑμᾶς, εἰσελθόντων ὑμῶν εἰς Αἴγυπτον·
καὶ ἔσεσθε εἰς ἄβατον, καὶ ὑποχείριοι,
καὶ εἰς ἀρὰν, (π) καὶ εἰς ὀνειδισμὸν, καὶ
οὐ μὴ ἴδητε οὐκέτι τὸν τόπον τοῦτον.

Nolite timere à facie regis 11
Babylonis, quem vos timetis: à facie ejus ne timeatis,
dicit Dominus: quia vobiscum ego, ut eruam vos, &
ſalvem vos de manu eorum.
Et dabo vobis miſericordiam, & miſerebor veſtri: 12
& reducam vos in terram
veſtram. Quòd ſi dicitis 13
vos; Non ſedebimus in terra
hac, ut non audiamus vocem (d) Domini, Quia in 14
terram Ægypti ingrediemur, & non videbimus
bellum, & vocem tubæ non
audiemus, & in panibus
non eſuriemus, & ibi habitabimus: Propter hoc audite verbum Domini: (e) 15
Sic dixit Dominus; Si vos
dederitis faciem veſtram in
Ægyptum, & intraveritis
illuc ad habitandum; Et 16
erit, gladius, quem vos timetis à facie ejus, inveniet
vos in terra Ægypti: &
fames, cujus vos rationem
habetis à facie ejus, comprehendet vos poſt vos in
Ægypto, & ibi moriemini.
Et erunt omnes homines, & 17
omnes alienigenæ, qui poſuerint faciem ſuam ad terram Ægypti ad inhabitandum ibi, deficient in gladio,
& in (f) fame: & non erit eorum quiſquam ſalvus
à malis, quæ ego induco ſuper eos. Quia ſic dixit Do- 18
minus; Sicut ſtillavit furor meus ſuper habitatores
Hieruſalem: ſic ſtillabit
furor meus ſuper vos, ingreſſis vobis in Ægyptum: &
eritis in invium, & ſubjecti, & in maledictionem,
& in opprobrium: et non videbitis ultrà locum iſtum

MS.A. (λ) εἰμὶ, τοῦ ἐξαιρεῖσθαι (μ) ἀκούσωμεν, (ν) Αἰγύπτῳ,
(ξ) οὐθεὶς (ο) Ὅτι καθὼς (π) καὶ ὀνειδισμὸν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 הא כנשרא דסליק ומשתדי כן יסק מלך במשריתיה וישרי על בצרה ויהי לב גבריהון
23 דאדומאי ביומא ההוא כלב אתתא דעקא לה בחבלהא : לדמשק בהיתו יתבי חמת
וארפד ארי בסורא בישא שמעו אתברו דחלא בימא וצפא אחדתנון הא כנחתי ימא
24 דשקטין ולא יכלין למנח : אתרשלו יתבי דמשק אתפניאו למערק ושפלותא אחדתנין
25 עקא וחבלין אחדונון הא כחבלין לילדתא : איכדין לא אשתביקת קרתא משבחתא
26 קריא חדוא : בכן יתרמון עולמהא ברחובהא וכל גברי עבדי קרבא יתברון בעדנא
27 28 ההיא אמר יי צבאות : ואדליק אשתא בשורי דמשק ותשיצי בירנית בר הדד : לקדר
ולממלכות חצור דמחא נבוכד רצר מלכא דבבל כדנן אמר יי קומו סקו על קדר ובזו
29 ית בני מדנחא : משכניהון וענהון ישבון יריעתהון וכל מניהון וגמליהון יסבון להון
30 ויתכנשון עליהון דקטלין בחרבא מסחור סחור : ערוקו גלו לחדא אעמיקו למיתב
יתבי חצור אמר יי ארי מלך עליכון נבוכד ראצר מלכא דבבל מלכא וחשיב עליכון
31 מחשבא : קומו סקו על עמא דיתבין שליוא שרן לרוחצן אמר יי לית להון דשין
32 ועברין בלחודיהון שרן : ויהון גמליהון לבזא והמון גיתיהון לעדי ואבדרנון לכל
33 רוח מקפי פתא ומכל עבריהון איתי תברהון אמר יי : ותהי חצור למדור ירודין
34 צדו עד עלמא לא יתיב תמן אנש ולא יתותיב בה בר אנש : דהוה פתגם נבואה מן
קדם יי עם ירמיה נביא על עילם בריש מלכות צדקיה מלך שבטא דבית יהודה
35 36 למימר : כדנן אמר יי צבאות הא אנא תבר ית תקוף עילם ריש גבורתהון : ואיתי
על עילם ארבע מלכון מארבע רוחי שמיא ואבדרנון לכל רוחתא האלין ולא יהי עם
37 דלא יהכון לתמן מטלטלי עילם : ואתבר ית עילם קדם בעלי דבביהון וקדם דבעין
למקטלהון ואיתי עליהון בישא ית תקוף רוגזי אמר יי ואגרי בתריהון קטלין
38 בחרבא עד דאשיצי יתהון : ואשוי כורסי מלכותי בעילם ואוביד מתמן מלכא ושלטון
39 אמר יי : ויהי בסוף יומיא אתיב ית גלות עילם אמר יי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ecce ſicut aquila quæ aſcendit & volat, ſic aſcendet rex cum exercitu ſuo, 22
& caſtrametabitur ſuper Boſrā. Et erit cor fortiū Idumæorum in die illa,
ſicut cor mulieris, cui eſt tribulatio in dolorib⁹ ſuis. Ad Damaſcum. Con- 23
fuſi ſunt habitatores Hemath & Arphad; quia nuntiū malum audierunt:
contriti ſunt; timor *in mari* & ſolicitudo apprehendit eos: ecce ſicut de-
ſcendentes in mare, qui non quieſcūt, nec poſſunt *requieſcere*. Diſſoluti ſunt 24
habitatores Damaſci: reſpexerunt ut fugerent, & ruina apprehendit eos;
tribulatio & dolores tenuerunt eos, ſicut dolores parturientis. Quomodo 25
non fuit derelicta civitas laudabilis, arx læta? Propterea projicientur ju- 26
venes ej⁹ in plateis ejus, & omnes *viri* bellatores conterentur in tempore
illo, dicit Dñs exercituū. Et ſuccendā ignem in muris Damaſci, & diſperdet 27
palatia filii Hadad. Ad Cedar, & ad regna Haſor, quæ percuſſit Nabucho- 28
donoſor rex Babylonis; Hæc dicit Dñs, Surgite & aſcendite ad Cedar, &
vaſtate filios Orientis. Tabernacula eorū, & oves eorum capient, cortinas 29
eorū, & omnia vaſa eorum, & camelos eorū tollent ſibi. Et congregabuntur
contra eos, qui occidunt gladio, per circuitū. Fugite & migrate vehemen- 30
ter: procul abite ad habitandum habitatores Haſor, dicit Dñs: Quia iniit
contra vos conſilium Nabuchodonoſor rex Babylonis, & cogitavit adver-
ſùs vos cogitationē. Surgite, aſcendite ad populū qui habitant tranquillè, 31
& morantur confidenter, dicit Dñs: quib⁹ non ſunt portæ & vectes, ſoli
enim habitant. Et erunt cameli eorū in direptionē, & multitudo pecorū eo- 32
rum in prædā: & diſpergā eos in omnē ventum circumeuntes angulum:
& ab omnib⁹ eorū laterib⁹ adducā interitum eorum, dicit Dñs. Et erit 33
Haſor in habitaculū draconum, deſerta uſque in æternum: non ſedebit ibi
homo, nec habitabit in ea fili⁹ hominis. Quod factum eſt verbum prophe- 34
tiæ à facie Dñi cum Jeremia propheta adverſùs Helam, in principio regni
Sedechiæ regis trib⁹ domus Juda, dicens: Hæc dicit Domin⁹ exercituum: 35
Ecce ego conterā fortitudinē Helā, caput roboris eorū. Et inducam ſuper 36
Helam quatuor regna à quatuor ventis cœli, & diſpergā eos in omnes ventos
iſtos, & non erit popul⁹ quò non abeant profugi Helam. Et conteram 37
Helā corā inimicis ſuis, & corā iis qui quærunt occidere eos, & inducā ſup
eos malū, irā furoris mei, dicit Dñs: & mittā poſt eos illos qui occidunt gla-
dio, donec conſumā eos. Et ponā thronū regni mei in Helā, et perdā inde 38
regem et dominatorem, dicit Dominus. Et erit in fine dierum convertam 39
captivitatem Helam, dicit Dominus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܐ ܐܝܟ ܢܫܪܐ ܢܣܩ ܘܢܦܪܚ. ܘܢܦܪܘܣ ܓܦܘܗܝ ܥܠ ܒܨܪܐ. ܘܢܗܘܐ ܠܒܗ
ܕܓܢܒܪ̈ܐ ܕܐܕܘܡ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܝܟ ܠܒܐ ܕܐܢܬܬܐ ܕܡܚܒܠܐ ܒܡܐܬܐ.

Ecce ſicut aquila aſcendet, ac volabit, expan- 22
detque alas ſuper Boſarem : fietque anim⁹
heroum Edom die illo, ſicut anim⁹ mulieris
partûs dolores patientis.

* ܥܠ ܕܪܡܣܘܩ *

Contra Damaſcum.

* ܒܗܬܬ ܚܡܬ ܘܐܪܦܕ. ܡܛܠ ܕܫܡܥܬܐ ܒܝܫܬܐ ܫܡܥܘ ܘܐܬܬܙܝܥܘ. ܒܝܡܐ ܐܝܬ
ܘܫܝܢܐ ܠܐ ܐܫܟܚܬ. * ܐܬܪܦܝܬ ܕܪܡܣܘܩ ܘܐܬܦܢܝܬ ܠܡܥܪܩ. ܘܪܬܝܬܐ ܐܚܕܬܗ
ܘܥܩܬܐ ܘܚܒܠܐ ܐܚܕܘܗ. ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ. * ܐܝܟܢܐ ܠܐ ܐܫܬܒܩܬ ܡܕܝܢܬܐ ܕܫܘܒܚܐ
ܩܪܝܬܐ ܕܚܕܘܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܦܠܘܢ ܥܠܝܡܝܗ̇ ܒܫܘܩܝܗ̇. ܘܟܠܗܘܢ ܓܒܪ̈ܐ
ܩܪܒܬܢܐ ܢܫܬܠܩܘܢ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܫܘܪܗ̇
ܕܕܪܡܣܘܩ. ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܘܗܝ ܕܒܪ ܗܕܕ.

Erubuit Hamath & Rephad, qui rumorem 23
infauſtum audientes conſternatæ ſunt : ex ma-
ri erit terror ipſius, & quietem non inveniet.
Animis cadet Damaſcus, tergáque vertet ad 24
fugiendum : tremore corripietur, & anxie-
tas atque dolores occupabunt eam ut partu-
rientem. Quomodo non pepercerunt urbi 25
ſplendoris, urbi delitiarum? Hac de cauſa 26
corruent juvenes ej⁹ in plateis ipſi⁹, & omnes
ipſi⁹ viri bellatores ſilentio involventur. In 27
illo die, ait Dn̄s potentiſſimus, ignem dimit-
tam in mœnia Damaſci, devorabitque palatia
filii Hadadis.

* ܥܠ ܩܕܪ ܘܥܠ ܡܠܟܘܬܐ ܕܚܨܘܪ ܕܡܚܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ *

Contra Cedar, & contra regna Haſoris quæ cæde vaſtavit Nebuchadnoſar rex.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܩܘܡܘ ܣܩܘ ܥܠ ܩܕܪ. ܘܒܘܙܘ ܠܒܢܝ̈ ܡܕܢܚܐ. * ܡܫܟܢܝܗܘܢ
ܘܥܢܗܘܢ ܢܣܒܘܢ. ܘܝܪܝܥܬܗܘܢ ܘܟܠܗܘܢ ܡܐܢܝܗܘܢ ܘܓܡܠܝܗܘܢ. ܢܕܒܪܘܢ ܠܗܘܢ
ܘܢܩܪܘܢ ܥܠܝܗܘܢ ܡܢ ܚܕܪܝܗܘܢ. * ܥܪܘܩܘ ܢܘܕܘ. ܘܥܡܩܘ ܠܡܬܒ ܝܬܒ̈ܝ ܚ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܡܠܟ ܥܠܝܟܘܢ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܐܬܚܫܒ ܥܠܝܗܘܢ
ܡܚܫܒܬܐ ܘܐܡܪ. * ܩܘܡܘ ܣܩܘ ܥܠ ܥܡܐ ܫܠܝܐ ܕܝܬܒ ܒܬܘܟܠܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܠܐ ܬܪ
ܘܠܐ ܡܘܟܠܐ ܐܝܬ ܠܗ. ܘܒܠܚܘܕܝܗܘܢ ܫܪܝܢ. * ܘܢܗܘܘܢ ܓܡܠܝܗܘܢ ܠܒܙܬܐ. ܘܣܘܓ
ܕܒܥܝܪܗܘܢ ܠܡܫܒܝܬܐ. ܘܐܕܪܐ ܐܢܘܢ ܠܟܠ ܪܘܚ ܠܡܚܨܕܝ ܦܐܬܐ. ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܥܒܪܝܗܘܢ
ܐܝܬܐ ܬܒܪܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܬܗܘܐ ܚܨܘܪ ܡܥܡܪܐ ܠܬܢܝܢܐ. ܘܚܘܪܒܐ ܥܕܡܐ ܠܥܠܡ.
ܢܬܒ ܬܡܢ ܒܪܢܫ.

Sic ait Dn̄s, Surgite, invadite Cedaré, & Ori- 28
entales diripite. Tentoria & pecudes eorum 29
auferent ; aulæa, totam ſupellectilem, & ca-
melos eorum abducent ſibi ; & adverſùs eos
ſeditioſi undique clamabunt. Fugerunt, mi- 30
grârunt, & profunda petierunt ad habitan-
dum incolæ Haſoris, ait Domin⁹ : quia con-
ſilium inivit adverſùs eos Nebuchadnoſar rex
Babelis, & cogitationé cogitavit adverſ⁹ eos,
ac dixit ; Surgite, aſcendite contra populum 31
opulentū ſecurè habitanté, ait Dn̄s, nec oſtia
nec ſeras habentem, ſed ſeorſim habitanté. Et 32
erunt cameli eorū in direptioné, et multitudo
pecorum eorum in prædā : & diſperdā eos in
omnem ventum, inter detonſos barbâ : & ex
omnib⁹ terminis eorum inferá contritioné eo-
rum, dicit Dn̄s. Deniq; fiet Haſor habitatio 33
canum ſylveſtrium, & in ſeculum uſque de-
ſerta ; nemo illic habitabit.

* ܥܠ ܥܝܠܡ *

Contra Ilamitas.

* ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܕܢܬܢܒܐ ܥܠ ܥܝܠܡ. ܒܪܫ ܡܠܟܘܬܗ
ܕܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܐ ܬܒܪ ܐܢܐ ܩܫܬܗ ܕܥܝܠܡ ܕ
ܕܓܢܒܪܘܬܗܘܢ. * ܘܐܝܬܐ ܥܠ ܥܝܠܡ ܐܪܒܥ ܪܘܚܐ. ܡܢ ܐܪܒܥ ܦܐܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܐܕܪ
ܒܟܠܗܘܢ ܪܘܚܐ ܗܠܝܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܥܡܐ ܕܠܐ ܢܗܘܘܢ ܬܡܢ ܡܒܕܪ̈ܐ ܕܥܝܠܡ. * ܘܐܬܒ
ܠܥܝܠܡ ܩܕܡ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܩܕܡ ܐܝܠܝܢ ܕܒܥܝܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܐܝܬܐ ܥܠܝܗܘܢ
ܒܝܫܬܐ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܫܕܪ ܒܬܪܗܘܢ ܚܪܒܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܫܠܡ ܐܢܘܢ. * ܘܐܣ
ܟܘܪܣܝ ܒܥܝܠܡ. ܘܐܘܒܕ ܡܢ ܬܡܢ ܡܠܟܐ ܘܫܠܝܛܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܒܐܚܪܝܬ
ܝܘܡܬܐ ܐܗܦܟ ܫܒܝܬܗ ܕܥܝܠܡ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

Sermo Domini qui fuit ad Jeremiam prophe- 34
tam, ut vaticinaretur contra Ilamum, initio
regni Sedeciæ regis Judæ. Sic ait Domin⁹ po- 35
tentiſſimus, Ecce fracturus ſum arcum Ilami-
tarum, quo illi præcipuè valent : Et adductu- 36
rus contra Ilamitas quatuor ventos è quatuor
angulis cœli, eoſque diſperſurus in omnes
ventos iſtos ; ita ut nulla ſit gens ubi non re-
periantur diſperſi Ilamitæ : Et frangam Ila- 37
mitas coram hoſtib⁹ eorum, & coram iis qui
quærunt animam eorum : adducam ſuper eos
malum, æſtum iræ meæ, dicit Domin⁹ : immit-
tam in eos gladium, donec abſumam illos :
Et collocabo ſolium meum in Ilamo, & 38
perdam illinc reges ac principes ait Domin⁹:
Deinde poſtremis dieb⁹ reducam captivos Ila- 39
mi, dicit Dominus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لا تخافوا من وجه ملك بابل الذي انتم تخافون من وجهه * لا تخافوا قال الرب • لاني
معكم انا انا لانقذكم واخلصكم من ايديهم * واعطي لكم رحمة وارحمكم واردكم
الي ارضكم * وان قلتم انتم لا نجلس في هذه الارض لنسمع صوت الرب * لانا ندخل
الي مصر • ولا نعاين حربا • ولا نسمع صوت بوق • ولا نجوع من الخبز وهناك نسكن

Ne metuatis regem Babelis quem vos 11
pertimeſcitis ; ne metuatis, inquit Do-
minus, quia ego vobiſcum ſum ut
eruam & liberem vos è manibus eo-
rum : Et impendam vobis miſericor- 12
diam, & miſerebor veſtri, reducamque
vos in terram veſtram. Quòd ſi vos 13
dixeritis, Non manebimus hac in terra
obtemperantes voci Domini : Imò in- 14
grediemur Ægyptum ut non videamus
bellum, nec audiamus ſonitum buccinæ,
neque panis famem patiamur ; ibique ha-
bitabimus :

• الاصحاح الحادي والثلاثون •

Textus trigeſimus primus.

* لاجل هذا اسمعوا قول الرب • هكذا قال الرب • ان انتم اعطيتم وجوهكم الي مصر
ودخلتم لتسكنوا هناك * ويكون السيف الذي انتم تخافون من وجهه يدرككم
في ارض مصر • والجوع الذي قلتم انتم تهربون من وجهه • ياخذكم ويعدوا خلفكم
في مصر • وهناك تموتون * ويكون جميع الناس وجميع الاجناس الغريبة الواضعين
وجوههم الي ارض مصر ليسكنوا هناك يفنون بالسيف وبالجوع • ولا يكون منهم ولا
واحد يخلص من الشرور التي انا اجلبها عليهم * لان هكذا قال الرب • انه كما قطر
غضبي علي سكان اورشليم • هكذا يقطر غضبي عليكم اذ تدخلون الي مصر
وتكونون للنقم وعلامات • وللعنة والتعيير • ولا ترون هذا الموضع ايضا •

Iccirco audite ſermonem Domini. Sic 15
dixit Dominus ; Si vos faciem veſtram
verteritis ad Ægyptum, & ingreſſi
fueritis ad habitandum ibi ; Gladius 16
ille quem vos timetis, inveniet vos in
terra Ægypti ; & fames quam vos
fugere dicitis, corripiet vos curretque
poſt vos in Ægyptum uſque ; ibique
moriemini. Denique continget ut omnes 17
homines & omnes alienigenæ faciem
ſuam vertentes ad terram Ægypti ut
habitent illic, gladio & fame conſu-
mantur ; nemoque ex eis effugiat mala
quæ ego adducam ſuper eos. Nam ita 18
dixit Dominus ; Quemadmodum ſtil-
lavit ira mea ſuper cives Jeruſalem,
ita ſtillabit ira mea ſuper vos ubi
Ægyptum ingrediemini : & eritis de-
ſolationi, & famuli, maledictioni, &
opprobrio : nec videbitis amplius locum
iſtum.

CAP. L. נ

Irmeiahu manu in : Chaſdim terram ad Babel ad Dominus eſt locutus quod Verbum
הדבר אשר דבר יהוה אל־בבל אל ארץ כשדים ביד ירמיהו 1
: celetis ne ,facite audire ;vexillum levate &,facite audire & gentibᵒ in Annūtiate prophetæ
הנביא: הגידו בגוים והשמיעו ושאו־נס השמיעו אל־תכחדו 2
,ejᵒ idola ſunt pudefacta,Merodach eſt fractᵒ,Bel eſt affectᵒ pudore,Babel eſt Capta : dicite
אמרו נלכדה בבל הביש בל חת מרדך הבישו עצביה
ejus terram ponet ipſa ,aquilone ab gens eā ſuper aſcēdit Quoniā .ejus idola ſunt fracta
חתו גלוליה: כי עלה עליה גוי מצפון הוא ישית את־ארצה 3
.abierunt ſunt moti animal ad uſq; & homine ab :ea in habitans erit non & ,ſolitudinē in
לשמה ולא־יהיה יושב בה מאדם ועד־בהמה נדו הלכו:
filii & , ipſi Iſrael filii venient ,Dominᵒ ait , illo tempore in & ,illis diebus In
בימים ההמה ובעת ההיא נאם־יהוה יבאו בני־ישראל המה ובני־ 4
Sijon .quærent ſuum Deum Dominum & ,ibunt flendo & Ambulando .ſimul Jehudah
יהודה יחדו הלוך ובכו ילכו ואת־יהוה אלהיהם יבקשו: ציון 5
, ſeculi fœdere Dominum ad vos copulate & ,venite :eorū facies huc viam interrogabūt
ישאלו דרך הנה פניהם באו ונלוו אל־יהוה ברית עולם
,eas fecerūt errare earū paſtores,meᵒ populᵒ fuerunt perditæ Oves.tradetur oblivioni non
לא תשכח: צאן אבדות היה עמי רעיהם התעום 6
Omnes .ſui accubitus ſunt oblitæ ,abierunt collem ad monte de :eas abegerunt montibᵒ
הרים שובבים מהר אל־גבעה הלכו שכחו רבצם: כל־ 7
peccaverūt quòd eo pro:deliquimᵒ Non:dixerūt earū hoſtes &,eas comederūt,eas invenientes
מצאיהם אכלום וצריהם אמרו לא נאשם תחת אשר חטאו
,Babel medio de Avolate .Domino eorū patrū expectationi &,juſtitiæ habitaculo Domino
ליהוה נוה־צדק ומקוה אבותיהם יהוה: נדו מתוך בבל 8
ego ecce Quoniā .pecoris facies ad hirci tanquā eſtote &:egredimini Chaſdim terra de &
ומארץ כשדים יצאו והיו כעתודים לפני־צאן: כי הנה אנכי 9
[illegible] &,aquilonis terra de magnarū gentiū cœtum Babel ſuper faciens aſcēdere &,ſuſcitans
מעיר ומעלה על־בבל קהל־גוים גדלים מארץ צפון וערכו
erit Et .vacue revertetur non,proſperantis fortis tanquā ejᵒ ſagittæ :capietur inde ;ei
לה משם תלכד חציו כגבור משכיל לא ישוב ריקם: והיתה 10
quoniā,fuiſtis læti Quoniā .Dñs dixit ,ſaturabūtur eā ſpoliantes omnes :ſpolium in Chaſdim
כשדים לשלל כל־שלליה ישבעו נאם־יהוה: כי תשמחי כי 11
,germinis vitula ſicut incrementum ſumpſiſtis quoniā : meā hæreditatē diripientes exultaſtis
תעלזי שסי נחלתי כי תפושי כעגלה דשה
ecce :veſtra genitrix erubuit ,valde veſtra mater eſt affecta Pudore.fortes ſicut exultâſtis &
ותצהלי כאברים: בושה אמכם מאד חפרה יולדתכם הנה 12
.habitabitur non Domini iram Propter .ſolitudo & ,vaſtitas,deſertum gentiū noviſſimum
אחרית גוים מדבר ציה וערבה: מקצף יהוה לא תשב 13
univerſis ſuper ſibilabit &,ſtupebit Babel ſuper tranſiens omnis :ipſa tota ſolitudo erit &
והיתה שממה כלה כל עבר על־בבל ישם וישרק על־כל־
ne ,eam ad jacite ,arcum tendentes omnes circuitu Babel ſuper aciem Struite .ejus plagis
מכותיה: ערכו על־בבל סביב כל־דרכי קשת ידו אליה אל־ 14
dedit ,undique eam ſuper Clamate .peccavit Dominū contra quia : ſagitta in parcatis
תחמלו אל־חץ כי ליהוה חטאה: הריעו עליה סביב נתנה 15
, ipſa Domini ultio quia :eius muri ſunt deſtructi,ejᵒ fundamenta ceciderunt,ſuā manū
ידה נפלו אשויתיה נהרסו חומותיה כי נקמת יהוה היא
falcē tenentē & ,Babel de ſatorē Succidite .ei facite , fecit ſicut :eā in ulciſcamini
הנקמו בה כאשר עשתה עשו־לה: כרתו זורע מבבל ותפש מגל 16
ſuā terrā ad vir & ,reſpicient ſuū populū ad vir depopulatoris gladii faciebᵒ à :meſſis tēpore in
בעת קציר מפני חרב היונה איש אל־עמו יפנו ואיש לארצו
, Aſſur rex eū devoravit Primus .expulerunt leones , Iſrael diſperſum Pecus .fugient
ינוסו: שה פזורה ישראל אריות הדיחו הראשון אכלו מלך אשור 17
Dominus dixit ſic Propterea .Babel rex Nebuchadreſar eum exoſſavit noviſſimus iſte &
וזה האחרון עצמו נבוכדראצר מלך בבל: לכן כה־אמר יהוה 18
.Aſſur regem ad viſitavi ſicut :ſuā terram ad & ,Babel regem ad viſitans ego Ecce : Iſrael Deus exercituum
צבאות אלהי ישראל הנני פקד אל־מלך בבל ואל־ארצו כאשר פקדתי אל־מלך אשור:

Verſio VUL. LAT.

CAP. L.

1 VErbū, quod locutus eſt Dñs de Babylone, & de terra Chaldæorum, in manu Jeremiæ prophetæ. 2 Annuntiate in Gentibᵒ, & auditum facite: levate ſignū, prædicate, & nolite celare : dicite; Capta eſt Babylon, confuſus eſt Bel, victus eſt Merodach, confuſa ſunt ſculptilia ejus, ſuperata ſunt idola eorū. 3 Quoniam aſcendit contra eam gens ab Aquilone, quæ ponet terrā ejus in ſolitudinem : & non erit qui habitet in ea ab homine uſque ad pecus: & moti ſunt, & abierunt. 4 In diebus illis, & in tempore illo, ait Dñs: venient filii Iſrael, ipſi & filii Juda ſimul: ambulantes & flentes properabunt, & Dñm Deū ſuum quærent. 5 In Sion interrogabunt viā, huc facies eorū. Venient, & apponentur ad Dñm fœdere ſempiterno, quod nullâ oblivione delebitur. 6 Grex perditᵒ factᵒ eſt populᵒ meᵒ : paſtores eorū ſeduxerunt eos, fecerúntq; vagari in montibus : de monte in collem tranſierunt, obliti ſunt cubilis ſui. 7 Omnes, qui invenerunt, comederunt eos : & hoſtes eorū dixerunt, Non peccavimᵒ : pro eo quòd peccaverunt Dño decori juſtitiæ, & expectationi patrum 8 eorū Dño. Recedite de medio Babylonis, & de terra Chaldæorum egredimini: & eſtote quaſi 9 hœdi ante gregem. Quoniā ecce ego ſuſcito, & adducā in Babylonem congregationem gentium magnarum de terra Aquilonis : & præparabuntur adverſus eam, & inde capietur: ſagitta ejᵒ, quaſi viri fortis interfectoris, non revertetur vacua. 10 Et erit Chaldæa in prædam : omnes vaſtantes eā 11 replebuntur, ait Dñs. Quoniam exultatis, & magna loquimini, diripientes hæreditatem meam : quoniam effuſi eſtis ſicut vituli 12 ſup herbā, & mugiſtis ſicut tauri. Confuſa eſt mater veſtra nimis, & adæquata pulveri, quæ 13 genuit vos: ecce noviſſima erit in Gentibᵒ, deſerta, invia, & arens. Ab ira Dñi non habitabitur, ſed redigetur tota in ſolitudinem : omnis, qui tranſibit per Babylonem ſtupebit, & 14 ſibilabit ſup univerſis plagis ejᵒ. Præparamini contra Babylonem per circuitum omnes qui 15 tenditis arcum; debellate eam, non parcatis jaculis: quia Dño peccavit. Clamate adverſᵒ eā, ubiq; dedit manū, ceciderunt fundamenta ejᵒ, deſtructi ſunt muri ejus, quoniam ultio Do-16 mini eſt : ultionem accipite de ea; ſicut fecit, facite ei. Diſperdite ſatorem de Babylone, & tenentem falcem in tempore meſſis : à facie gladii columbæ unuſquiſque ad po-17 pulum ſuum convertetur, & ſinguli ad terram ſuam fugient. Grex diſperſus Iſrael, leones ejecerunt eum : primus comēdit eum rex Aſſur: iſte noviſſimus exoſſavit eum, Nabuchodo-18 noſor rex Babylonis. Propterea hæc dicit Dominus exercituum, Deus Iſrael; Ecce ego viſitabo regem Babylonis, & terram ejus, ſicut viſitavi regem Aſſur.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Ἃ ἐλάλησε κύριος ἐφ' ὑμᾶς τοὺς καταλοίπους Ἰούδα· μὴ εἰσέλθητε εἰς Αἴγυπτον. ϗ νῦν γνόντες γνώσεσθε, 20 Ὅτι ἐπονηρεύσασθε ἐν (ρ) ψυχαῖς ὑμῶν, ἀποστείλαντές με, λέγοντες, Πρόσευξαι περὶ ἡμῶν πρὸς κύριον, ϗ κατὰ πάντα (σ) ἃ ἐὰν λαλήσει σοι 21 κύριος, ποιήσομεν· Καὶ οὐκ (τ) ἠκούσατε τῆς φωνῆς κυρίου, ἧς ἀπέστειλέ 22 με πρὸς ὑμᾶς. Καὶ νῦν ἐν ῥομφαίᾳ ϗ ἐν λιμῷ ἐκλείψετε ἐν τῷ τόπῳ, (υ) ᾧ ὑμεῖς βούλεσθε εἰσελθεῖν κατοικεῖν ἐκεῖ.

Quæ loquutus eſt Dominus ſuper vos reſiduos Judæ: nolite intrare in Ægyptum. Et nunc cognoſcentes cognoſcetis, 20 (g) Quia malignè egiſtis in animas veſtras, mittentes me, dicentes; Ora pro nobis ad Dominum, & juxta omnia, quæcunque loquetur tibi Dominus, (h) faciemus: 21 Et non audiſtis vocem Domini, quâ miſit me ad vos: 22 Et nunc in gladio, & in (i) fame deficietis in loco, quò vos vultis intrare ad habitandum ibi.

MS.A. (ρ) ταῖς ψυχαῖς (σ) ἃ ἂν λαλήσῃ (τ) εἰσηκούσατε (υ) οὗ ὑμεῖς βούλεσθε

Cap. 43. Vulg. Lat. ΚΕΦ. ν'.

1 ΚΑὶ ἐγενήθη, ὡς ἐπαύσατο Ἱερεμίας λέγων πρὸς τὸν λαὸν πάντας τοὺς λόγους κυρίου (α), οὓς ἀπέστειλεν αὐτὸν κύριος (β) πρὸς αὐτοὺς, πάντας τοὺς λόγους 2 τούτους, Καὶ εἶπεν Ἀζαρίας υἱὸς (γ) Μαασαίου, καὶ Ἰωάναν υἱὸς Κάρηε, ϗ πάντες οἱ ἄνδρες, οἱ εἰπόντες τῷ Ἱερεμίᾳ, λέγοντες, Ψεύδη, οὐκ ἀπέστειλέ σε κύριος πρὸς ἡμᾶς, (δ) λέγων, Μὴ εἰσέλθητε εἰς Αἴγυ-3 πτον (ʹ) οἰκεῖν ἐκεῖ, Ἀλλ' ἢ Βαροὺχ υἱὸς Νηρίου συμβάλλει σε πρὸς ἡμᾶς, ἵνα δῷς ἡμᾶς εἰς χεῖρας τῶν Χαλδαίων, τοῦ θανατῶσαι ἡμᾶς, (ε) ϗ ἀποικισθῆναι ἡμᾶς εἰς Βαβυλῶ-4 να. Καὶ οὐκ (ʹ) ἤκουσεν Ἰωάναν, ϗ πάντες (ζ) ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως, ϗ πᾶς ὁ λαὸς τῆς φωνῆς κυρίου, κατ-5 οικῆσαι ἐν γῇ Ἰούδα. Καὶ ἔλαβεν Ἰωάναν, ϗ πάντες οἱ ἡγεμόνες τῆς δυνάμεως (η) πάντας τοὺς καταλοίπους Ἰούδα, τοὺς ἀποστρέψαντας κατοικεῖν ἐν τῇ (θ) γῇ,

CAP. L.

1 ET factum eſt, ut ceſſavit Hieremias dicens ad populum omnes ſermones Domini, quibus miſerat eum Dominus ad eos, omnia verba hæc; 2 Et dixit Azarias filius Maaſiæ, et Joanan filius Caree, & omnes (a) viri: qui dixerant Hieremiæ, dicentes; Mendacia: non miſit te Dominus ad nos, dicens, Ne ingrediamini in Ægyptum ad habitandum illîc: 3 Sed Baruch filius Neriæ concitat te adverſus nos; ut des nos in manus Chaldæorum ad occidendum nos, et transferendum nos in Babylonem: 4 Et non audivit Joanan, & omnes duces virtutis, & omnis populus vocem Domini, ut habitarent in terra Juda. 5 Et aſſumpſit Joanan, & univerſi duces virtutis omnes reſiduos Juda, qui (b) reverterant habitare in terra,

MS.A. (α) θεοῦ αὐτῶν, οὓς (β) ὁ θεὸς αὐτῶν πρὸς (γ) Μασαίου, (δ) εἰπεῖν, Μὴ (ʹ) κατοικεῖν (ε) ϗ τοῦ (ʹ) ἤκουσε (ζ) οἱ ἡγεμόνες (η) ἅπαντας τοὺς λοιποὺς (θ) γῇ Ἰούδα, Τοὺς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

נ

1 פתגמא דמליל יי על בבל ועל ארע כסדאי ביד ירמיה נביא: 2 חוו בעממיא ובסרו וזקיפו
אתא בסרו לא תמנעון אמרו אתכבישת בבל בהיתו דפלחין לבל אתברו דפלחין
3 למרודך בהיתו צלמנהא אתברא טעותהא: ארי סליק עלה עם מארעא צפונא הוא
4 ישוי ית ארעה לצדו ולא יהי יתיב בה מאנשא ועד בעירא אטלטלו גלו: ביומיא
האנון ובעדנא ההיא אמר יי ויתחברון בני ישראל אנון ובני יהודה כחדא במגלהון
5 כד הוו בכן גלו ובמותביהון מארע גלותהון פולחנא דיי אלההון יתבעון: לציון
ישאלון למיזל אורחא מכבשא קדמיהון וייתון ויתוספון על עמיה דיי ויגזר להון קים
6 עלם דלא יפסוק: ען מבדרא הוו עמי מלכיא טלטלונון שלטוניא בזונון מטור לרמא
7 גלו אתנשיאו מבית רוחצנהון: כל דאשכחונון בזונון וסנאיהון אמרין לית עלנא
8 חובא חלף דחבו קדם יי אתרחקו ממדור קודשה וסבור אבהתהון יי: גלו מגו בבל
9 ומארע כסדאי פוקו והוו כרברבין בריש עמא: ארי הא אנא מיתי ומסיק על בבל
משרית עממין סגיאין מארעא צפונא ויסדרון עלה קרב מתמן תתאחד גרריהי כגבר
10 מתכיל לא תיבין ריקן: ותהי ארע כסדאי לבזא כל בזזהא יסבעון אמר יי: 11 ארי תחדון
12 וארי תבועון בזוי אחסנתי ארי תדוצון כעגלי רבקא ויתטולון כגבריא: בהיתת כנישתכון
13 לחדא אתברת מדינתכון הא סופהון דעממיא מדבר צדי וחרוב: על דארגזות בבל
14 קדם יי לא תתיתב ותהי לצדו כלה כל דיעבר על בבל יכלי ויניד על כל מחתהא: סדרו
על בבל סחור סחור כל מחתי קשתא שדו בה לא תחוסון על גיריא ארי קדם יי חבת:
15 יביבו עלה סחור סחור אתמסרת בידיהון נפלא אשיתהא אתפגרא שוריהא ארי
16 פורענות עמא דיי היא אתפרעו מנה כמא דעבדתא עבידו לה: שיצו מלכא מבבל
ואחידו חרבא בעדן קטול מן קדם חרב סנאה דהיא כחמר מרויא גבר לעמיה יתפנון
17 וגבר לארעיה יערקון: עם מבדרא ישראל מלכיא טלטלונון קדמאה שליט בהון מלכא
18 דאתור ודין בתראה אספנון נבוכדנצר מלכא דבבל: בכן כדנן אמר יי צבאות אלהא
דישראל הא אנא מסער על מלכא דבבל ועל ארעיה כמא דאסערית על מלכא דאתור:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. L.

1 VErbum quod locutᵒ eſt Dñs contra Babylonem, & contra terram Chaldæorum in manu Jeremiæ prophetæ. 2 Narrate in populis, & annuntiate & levate ſignum, anuntiate & nolite ceſſare : dicite, Capta eſt Babylon, confuſi ſunt qui colebant Bel, confracti qui colebant Merodach: confuſa ſunt ſimulachra ejᵒ, contrita ejᵒ idola. 3 Quia aſcendit contra eam populᵒ de terra Aquilonis; ipſe ponet terram ejᵒ in deſolationem, & non erit qui habitet in ea ; ab homine uſque ad pecᵒ, moti ſunt & migraverunt. 4 In diebus illis & in tempore illo, dicit Dñs, jungentur filii Iſrael, ipſi & filii Juda ſimul : cùm migrarent, flentes migrarunt ; at cùm revertentur de terra tranſmigrationis ſuæ, cultum Dñi Dei ſui quærent. 5 De Sion interrogabunt ut eant via trita ante ſe: ibunt, & addentur ad populum Dñi: & inibit cum eis pactum ſempiternum, quod nunquam ceſſabit. 6 Oves diſperſæ fuerunt populᵒ meᵒ ; reges abduxerunt eos, dominatores deprædati ſunt eos: de monte in collem migraverunt, obliti ſunt domᵒ confidentiæ ſuæ. 7 Omnes qui invenerunt eos, diripuerunt eos : & inimici eorum dicunt, Non reputabitur nobis peccatum : quia pro eo quòd peccaverunt coram Dño, longè receſſerunt ab habitaculo veritatis ejᵒ, & ab expectatione patrū ſuorū Dño. 8 Recedite de medio Babylonis, & de terra Chaldæorū egredimini : eſtote quaſi principes in capite populi. 9 Quia ecce ego adducā & aſcendere faciā contra Babyloné copias populorū multorū de terra Aquilonis, & ordinabunt contra eā præliū; inde capietur: ſagitta ejᵒ quaſi fortis orbans, non revertetur vacua. 10 Et erit terra Chaldæorū in direptioné ; omnes diripientes eā ſaturabuntur, dicit Dñs. 11 Quia gaudetis & lætamini diripientes hæreditaté meā, quia exultatis quaſi *vituli ſaginati*, & hinnitis quaſi fortes. 12 Confuſa eſt congregatio veſtra nimis, contrita eſt provincia veſtra: ecce finis populorū deſertū, deſolatio & ſolitudo. 13 Eò quod tu Babylon irritâſti Dñm, nō habitaberis, & eris in deſolationé univerſa. Omnis enim qui tranſierit per Babyloné, clamabit, & movebit caput ſuū ob univerſas plagas ejᵒ. 14 Ordinate contra Babyloné per circuitū omnes tendentes arcū, projicite in eā, & ne parcatis ſagittis; quia corā Dño peccavit. 15 Ululate ſup eā per circuitū, tradita eſt in manᵒ eorū, ceciderūt fundamenta ejᵒ, deſtructi ſunt muri ejᵒ; quoniā ultio populi Dñi eſt: ulciſcimini eā: ſicut fecit, facite ei. 16 Diſperdite regé de Babylone, & *tenete* gladiū in tempore occiſionis, à facie gladii inimici, qui eſt ſicut vinū inebrians: unuſquiſque ad populū ſuū convertetur, & unuſquiſque ad terrā ſuā fugiet. 17 Populᵒ diſperſus Iſrael. Reges tranſtulerūt eos: primᵒ dominatᵒ eſt eis rex Aſſur, & iſte noviſſimè conſumpſit eos 18 Nabuchodonoſor rex Babylonis. Propterea hæc dicit Dñs exercituū Deᵒ Iſrael: Ecce ego viſitabo ſup regē Babylonis, & ſuper terrā ejᵒ, ſicut viſitavi ſuper regem Aſſur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢ *   * ܥܠ ܒܒܠ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠ ܒܒܠ ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܒܐܝܕ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ. * ܚܘܘ
ܒܥܡܡܐ ܘܐܫܡܥܘ. ܘܐܩܝܡܘ ܐܬܐ. ܐܫܡܥܘ ܘܠܐ ܬܟܣܘܢ. ܐܡܪܘ ܕܐܬܬܚܕܬ ܒܒܠ
ܢܦܠ ܒܝܠ. ܘܒܗܬ ܡܪܘܕܟ. ܒܗܬܘ ܦܬܟܪܝܗ. ܘܐܬܬܒܪܘ ܓܠܝܦܝܗ. * ܡܛܠ ܕܣܠܩ
ܥܠܝܗ ܥܡܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܗܘ ܢܥܒܕ ܠܐܪܥܐ ܗܝ ܠܚܪܒܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܥܡܘܪܐ ܒܗ. ܡܢ
ܒܢܝܢܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܒܥܝܪܐ ܢܕܘ ܘܐܙܠܘ. * ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܘܒܙܒܢܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܢܐܬܘܢ ܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ ܗܢܘܢ ܘܒܢܝ̈ ܝܗܘܕܐ ܐܟܚܕܐ. ܡܗܠܟܝܢ ܘܒܟܝܢ. ܘܠܡܪܝܐ
ܐܠܗܗܘܢ ܒܥܝܢ. * ܥܠ ܐܘܪܚܬܗ ܕܨܗܝܘܢ ܢܫܐܠܘܢ. ܐܦܝܗܘܢ. ܬܘ ܢܬܢܩܦ ܠܡܪܝܐ
ܒܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ ܕܠܐ ܢܬܛܥܐ. * ܐܝܟ ܥܢܐ ܕܐܒܝܕܐ ܗܘܐ ܥܡܝ. ܪ̈ܥܘܬܗܘܢ ܐܛܥܝܘ ܐܢܘܢ. ܘܥܠ
ܛܘܪ̈ܐ ܪ̈ܡܐ ܐܙܠܘ. ܘܛܥܘ ܡܪ̈ܒܥܝܗܘܢ. * ܟܠ ܡܢ ܕܐܫܟܚ ܐܢܘܢ. ܐܟܠ ܐܢܘܢ.
ܘܒܥܠܕܒ̈ܒܝܗܘܢ ܐܡܪܝܢ. ܠܐ ܢܫܒܘܩ ܐܢܘܢ. ܥܠ ܕܚܛܘ ܠܡܪܝܐ ܘܠܡܥܡܪܗ ܕܩܘܕܫܐ
ܘܣܒܪܐ ܕܐܒܗ̈ܝܗܘܢ. ܡܪܝܐ ܗܘ. * ܥܪܘܩܘ ܡܢ ܓܘ ܒܒܠ. ܘܡܢ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ ܦܘܩܘ.
ܘܗܘܘ ܐܝܟ ܬܝ̈ܫܐ ܩܕܡ ܥܢܐ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܥܝܪ ܐܢܐ ܘܡܣܩ ܐܢܐ ܥܠ ܒܒܠ. ܟܢܫܐ
ܕܥܡܡܐ ܣܓܝ̈ܐܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܢܣܕܪܘܢ ܥܠܝܗ. ܘܡܢ ܬܡܢ ܬܬܐܚܕ. ܓܐܪ̈ܝܗܘܢ ܐܝܟ
ܓܒܪܐ ܕܡܬܟܫܪ ܘܠܐ ܗܦܟܝܢ ܣܪܝܩܐܝܬ. * ܘܬܗܘܐ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. ܠܒܙܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ
ܒܙܘܙܝܗ ܢܣܒܥܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܚܕܝܬܘܢ. ܘܡܛܠ ܕܐܬܒܣܡܬܘܢ. ܝܪܬܘܬܝ. ܫܘܪ
ܬܘܢ :: ܘܐܬܦܫܬܘܢ ܐܝܟ ܥܓ̈ܠܐ ܕܦܛܡܐ. ܘܐܬܪܦܣܬܘܢ ܐܝܟ ܕܟܪ̈ܐ ܕܥܢܐ. * ܒܗܬܬ ܐܡܟܘܢ
ܛܒ. ܘܐܬܚܦܝܬ ܝܠܕܬܟܘܢ. ܗܐ ܚܪܬܐ ܕܥܡܡܐ ܐܝܟ ܡܕܒܪܐ. ܚܪܒܐ. ܘܨܕܝܐ. * ܡܢ ܪܘܓܙܗ
ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܬܬܒ. ܘܬܗܘܐ ܚܪܒܐ ܟܠܗ. ܘܟܠ ܕܥܒܪ ܥܠ ܒܒܠ. ܢܬܕܡܪ ܘܢܫܪܘܩ
ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܡܚܘ̈ܬܗ. * ܐܣܬܕܪܘ ܥܠ ܒܒܠ. ܟܠܟܘܢ ܕܢܓܕܝܢ ܩܫܬܐ.
ܫܕܘ ܥܠܝܗ. ܠܐ ܬܚܘܣܘܢ ܥܠ ܓܐܪ̈ܐ. * ܝܒܒܘ ܥܠܝܗ ܡܢ ܚܕܪܝܗ. ܝܗܒܬ ܐܝܕܐ. ܢܦܠ
ܫܬܐܣܝܗ ܘܐܬܦܟܘ ܫܘܪ̈ܝܗ. ܡܛܠ ܕܬܘܪܥܢܘܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܬܦܪܥܘ ܡܢܗ. ܐܝܟ
ܕܥܒܕܬ ܥܒܕܘ ܠܗ. * ܘܐܘܒܕܘ ܙܪܘܥܐ ܡܢ ܒܒܠ. ܘܐܚܝܕ ܡܓܠܐ ܒܙܒܢܐ ܕܚܨܕܐ.
ܡܛܠ ܚܪܒܐ ܕܡܚܒܠܐ. ܐܢܫ ܠܥܡܗ ܢܗܦܘܟ. ܘܐܢܫ ܠܐܪܥܗ ܢܥܪܘܩ. * ܥܢܐ
ܛܥܝܐ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܪ̈ܝܘܬܐ ܐܛܥܝܘ ܐܢܘܢ. ܩܕܡܝܐ ܐܟܠܗ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܘܗܢܐ ܐܚܪܝܐ
ܓܪܡ ܓܪܡܘܗܝ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ
ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܐ ܦܩܕ ܐܢܐ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܘܥܠ ܐܪܥܗ. ܐܝܟ ܕܦܩܕܬ ܥܠ
ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ.

CAP. L.

Contra Babylonem.

1 SErmo quem prædixit Dominus de Babylone & de terra Chaldæorum, per Jeremiam prophetam. 2 Annuntiate inter gentes, prædicate, & attollite vexillum : prædicate, ne celetis : dicite, Capta eſt Babel, cecidit Bil, erubuit Merodach, pudefacta ſunt idola ejᵒ, & ſculptilia ejᵒ confracta. 3 Nam invaſit illam populᵒ ex Aquilone : is reddet terram illam deſolatam, adeo ut non remaneat in illa habitator : tam homines quàm jumenta migrabunt & abibunt. 4 Diebᵒ illis & tempore illo, ait Dominᵒ, advenient Iſraelitæ unà cum Judæis ambulantes, & flentes, & Dominum Deum ſuum quærentes. 5 De viis Sionis interrogabunt in facies ſuas *provoluti*, *dicentes*; Venite, ſequamur Dominum fœdere perpetuo nunquam oblivioni tradendo. 6 Similis gregi perdito fuit populus meᵒ, paſtores eorum ſeduxerunt eos, & ſuper montes ad excelſa migraverunt, & obliti ſunt caulæ ſuæ. 7 Quicunque invenit eos, devoravit illos : & hoſtes eorum dicunt, Non dimittemus eos, quia peccaverunt in Dominum & in habitaculum ejus ſanctum; quum ſpes patrum eorum fuerit Dominᵒ. 8 Fugite de medio Babylonis, et de terra Chaldæorum egredimini, et eſtote ut hirci ante gregem : 9 Quoniam ecce concitaturᵒ et educturus ſum contra Babylonem turmam populorum multorum è terra Aquilonari, qui *in aciem* diſponent ſeſe contra eam, et ſubinde capietur : quorum ſagittæ ſunt ut viri dexteri nec vacuè redeuntis. 10 Et erit terra Chaldæorum direptioni, et omnes direptores ejᵒ ſatiabuntur, ait Dominus. 11 Ut lætemini, et ut exultetis, O primitiæ hæreditatis meæ, ſubſiliatis ut vituli ſaginati, et ut arietes ovium ſaltetis; 12 Erubeſcet admodum mater veſtra, et pudefiet genitrix veſtra : ecce poſtrema *regio* populorum veluti deſertum vaſtabitur et deſolabitur. 13 Propter indignationem Domini non habitabitur, ſed erit tota deſolata : et quicunque tranſierit secᵒ Babylonem, ſtupebit et ſibilabit propter omnes plagas ejᵒ. 14 Inſtruite vos contra Babylonem : omnes qui arcu jaculari nôſtis, jaculamini adverſùs eam : ne parcatis ſagittis. 15 Vociferamini contra eam undequaque; manum dedit, corruerunt fundamenta ejᵒ, deſtructi ſunt muri ejᵒ : quandoquidem retributio Domini eſt, ultionem ſumite de ea : quemadmodũ fecit, facite illi; 16 Et extinguite ex Babylone ſatorem et tractantem falcem tempore meſſis : metu gladii infeſtantis, quilibet ad gentem ſuam revertatur, et quiſque ad terram ſuam fugiat. 17 Ovis errans eſt Iſrael, leones ſeduxerunt eos : prior devoravit eum rex Aſſyriæ, hic autem poſterior Nebuchadnoſar rex Babylonis, *crudelitate* ſuperavit illum. 18 Propterea ſic ait Dominus potentiſſimus Deus Iſraelis, Ecce animadverſurus ſum in regem Babylonis & in terram ejus, quemadmodum animadverti in regem Aſſyriæ :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*هذا ما تكلم به الرب عليكم يا بقايا يهوذا * لا تدخلوا الى مصر * والآن علماً
تعلمون انكم جنيتم في نفوسكم * وارسلتموني قايلين صلّ عنا للرب * بكل ما عسى
يتكلم الرب معك نصنع * ولم تسمعوا صوت الرب الذي ارسله بي لكم * والآن بالسيف
وبالجوع تموتون في الموضع الذي انتم تريدون ان تدخلوا لتسكنوا هناك *

19 *Hæc ſunt quæ locutus eſt Dominus de vobis, O reliquiæ Judæ : 20 Ne ingrediamini Ægyptum. Jam verò certiſſimè ſcitote vos in voſmetipſos peccare, ſi cùm miſeritis me, dicentes, Ora pro nobis Dominum : quicquid locutus fuerit tecum Dominus, exequemur : 21 Non auſcultetis voci Domini quam per me miſit ad vos : 22 Demum gladio & fame vos perituros in loco quem adire vultis ad habitandum ibi.*

الفصل الخمسون *

* وكان لما فرغ ارميا قايلا للشعب جميع اقوال الرب الههم * الذي ارسله الرب الههم
اليهم بجميع هذه الاقوال * فقال زخرياس بن ماساو ويونان بن كاريا * وجميع الرجال قالوا
لارميا قايلين * كذبا * لم يرسلك الرب الينا لتقول لا تدخلوا الى مصر لتسكنوا
هناك * لكن باروخ بن نيريوا يمالئك علينا كي تسلمنا الى ايدي الكلدانيين
ليقتلونا ويسبونا الى بابل * ولم يسمع يونان وجميع قواد الجيش وكل الشعب صوت الرب
ليقطنوا بارض يهوذا * واخذ يونان وجميع مقدمي الجيش * جميع بقايا يهوذا الراجعين
ليقطنوا بارض يهوذا *

CAP. L.

1 FActum eſt autem, cùm ceſſaſſet Jeremia dicere populo cunctos ſermones Domini Dei ipſorũ (quippe quem miſiſſet ad eos Dominus Deus eorum cum omnibus ejuſcemodi ſermonibus) 2 Dixit Zacharias filius Maaſiæ, & Jonan filius Careæ, omneſque viri locuti ſunt ad Jeremiam, dicentes; Falſum eſt, non miſit te Dominus ad nos ut diceres, Ne ingrediamini Ægyptum ut habitetis illic : 3 Sed Baruch Neriæ filius animat te contra nos, ad tradendum nos in manus Chaldæorum, ut morte nos afficiant, aut captivos abducant nos in Babelem. 4 Sic non auſcultaverunt Jonan, neque omnes duces exercitûs, neque totus ille populus, voci Domini, ut commorarentur in terra Judæ : 5 Sed Jonan & omnes duces exercitûs, deductis omnibus reliquiis Judæ redeuntibus ad habitandum in terra Judæ,

ירמיה : נ

:Basan & ,Charmel pascetur & ,suū habitaculū ad Israel reducam Et
19 וְשֹׁבַבְתִּי אֶת־יִשְׂרָאֵל אֶל־נָוֵהוּ וְרָעָה הַכַּרְמֶל וְהַבָּשָׁן
tempore in & ,illis diebus In .ei⁹ anima saturabiturGhilhad &,Ephraim monte in &
20 וּבְהַר אֶפְרַיִם וְהַגִּלְעָד תִּשְׂבַּע נַפְשׁוֹ׃ בַּיָּמִים הָהֵם וּבָעֵת
peccata & ipsa non & , Israel iniquitas quæretur ,Dominus ait ,illo
הַהִיא נְאֻם־יְהוָה יְבֻקַּשׁ אֶת־עֲוֹן יִשְׂרָאֵל וְאֵינֶנּוּ וְאֶת־חַטֹּאת
terram *Super .faciam reliquum quem* ei parcam quoniā *: invenientur* non & ,Jehudah
21 יְהוּדָה וְלֹא תִמָּצֶאינָה כִּי אֶסְלַח לַאֲשֶׁר אַשְׁאִיר׃ עַל־הָאָרֶץ
, eos post *anathematiza & ,desola : visita* habitatores *ad & ,eam super* ascende rebellantiū
מְרָתַיִם עֲלֵה עָלֶיהָ וְאֶל־יוֹשְׁבֵי פְּקוֹד חֲרֹב וְהַחֲרֵם אַחֲרֵיהֶם
: terra in belli *Vox* .tibi præcepi quæ omnia juxta fac & : Dominus dixit
22 נְאֻם־יְהוָה וַעֲשֵׂה כְּכֹל אֲשֶׁר צִוִּיתִיךָ׃ קוֹל מִלְחָמָה בָּאָרֶץ
? terræ universæ malleus est contritus & ,est abscissus Quomodo .magna contritio &
23 וְשֶׁבֶר גָּדוֹל׃ אֵיךְ נִגְדַּע וַיִּשָּׁבֵר פַּטִּישׁ כָּל־הָאָרֶץ
es capta etiam & , te Illaqueavi ? gentibus in Babel *desolationem* in fuit Quomodo
24 אֵיךְ הָיְתָה לְשַׁמָּה בָּבֶל בַּגּוֹיִם׃ יָקֹשְׁתִּי לָךְ וְגַם־נִלְכַּדְתְּ
Dominū *in* quoniā ,es comprehensa etiam & ,es inventa : novisti non tu & ,Babel
בָּבֶל וְאַתְּ לֹא יָדָעַתְּ נִמְצֵאת וְגַם־נִתְפַּשְׂתְּ כִּי בַיהוָה
:suæ *indignationis* vasa protulit & ,suū thesaurū Dominus Aperuit *.litem miscuisti*
25 הִתְגָּרִית׃ פָּתַח יְהוָה אֶת־אוֹצָרוֹ וַיּוֹצֵא אֶת־כְּלֵי זַעְמוֹ
Venite .Chasdim terra in exercituum *Domini* Domini hoc opus quoniā
26 כִּי־מְלָאכָה הִיא לַאדֹנָי יֱהוִה צְבָאוֹת בְּאֶרֶץ כַּשְׂדִּים׃ בֹּאוּ־
ne :eā *excidione delete & , acervos* sicut eā calcate ,ejus *horrea* aperite , *fine à* ei
לָהּ מִקֵּץ פִּתְחוּ מַאֲבֻסֶיהָ סָלּוּהָ כְמוֹ־עֲרֵמִים וְהַחֲרִימוּהָ אַל־
: occisionē ad descendent ,ejus vitulos universos Occidite .residuum ei sit
27 תְּהִי־לָהּ שְׁאֵרִית׃ חִרְבוּ כָּל־פָּרֶיהָ יֵרְדוּ לַטָּבַח
,fugientium Vox .eorū visitationis tempus ,eorū dies venit quia , eis *super* væ
28 הוֹי עֲלֵיהֶם כִּי־בָא יוֹמָם עֵת פְּקֻדָּתָם׃ קוֹל נָסִים
,nostri Dei Domini ultionem Sijon in *annuntiandū ad* : Babel terra de *evasorum &*
וּפְלֵטִים מֵאֶרֶץ בָּבֶל לְהַגִּיד בְּצִיּוֹן אֶת־נִקְמַת יְהוָה אֱלֹהֵינוּ
, arcum tendentes omnes *multos* Babel *ad facite Audire* .ejus templi ultionem
29 נִקְמַת הֵיכָלוֹ׃ הַשְׁמִיעוּ אֶל־בָּבֶל רַבִּים כָּל־דֹּרְכֵי קֶשֶׁת
,suū opus secdm ei reddite *: evasio* ei sit ne ,*undique eam super* castrametamini
חֲנוּ עָלֶיהָ סָבִיב אַל־יְהִי פְּלֵטָה שַׁלְּמוּ־לָהּ כְּפָעֳלָהּ
ad fecit temerè Dominum *ad* quia : illi facite , fecit quæ omnia juxta
כְּכֹל אֲשֶׁר עָשְׂתָה עֲשׂוּ־לָהּ כִּי אֶל־יְהוָה זָדָה אֶל־
viri omnes & : ejus plateis in ejus juvenes cadent Idcirco .Israel sanctum
30 קְדוֹשׁ יִשְׂרָאֵל׃ לָכֵן יִפְּלוּ בַחוּרֶיהָ בִּרְחֹבֹתֶיהָ וְכָל־אַנְשֵׁי
te ad ego Ecce .Dominus ait , illa die in succidentur ejus *belli*
31 מִלְחַמְתָּהּ יִדַּמּוּ בַּיּוֹם הַהוּא נְאֻם־יְהוָה׃ הִנְנִי אֵלֶיךָ
tempus ,tuus dies venit quia : exercituum *Dominus* Dominus dixit , *superbe*
זָדוֹן נְאֻם־אֲדֹנָי יֱהוִה צְבָאוֹת כִּי בָּא יוֹמְךָ עֵת
ignem succendam & *: suscitans* ei non & ,cadet & superbus impinget Et .te visitem
32 פְּקַדְתִּיךָ׃ וְכָשַׁל זָדוֹן וְנָפַל וְאֵין לוֹ מֵקִים וְהִצַּתִּי אֵשׁ
:exercituum Dominus dixit Sic .ejus *circuitus omnes* consumet &,ejus urbibus in
33 בְּעָרָיו וְאָכְלָה כָּל־סְבִיבֹתָיו׃ כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת
apprehenderūt eos captivantes omnes & :simul Jehudah filii & , Israel filii Oppressi
עֲשׁוּקִים בְּנֵי־יִשְׂרָאֵל וּבְנֵי־יְהוּדָה יַחְדָּו וְכָל־שֹׁבֵיהֶם הֶחֱזִיקוּ
exercituum Dominus fortis eorum Redemptor .eos dimittere renuerunt , eos *in*
34 בָם מֵאֲנוּ שַׁלְּחָם׃ גֹּאֲלָם ׀ חָזָק יְהוָה צְבָאוֹת
, terram faciat quiescere ut : eorum *litem litigabit lite* ,ejus nomen
שְׁמוֹ רִיב יָרִיב אֶת־רִיבָם לְמַעַן הִרְגִּיעַ אֶת־הָאָרֶץ
:Dominus dixit , Chasdim *super* Gladius .Babel habitatores faciat commovere &
35 וְהִרְגִּיז לְיֹשְׁבֵי בָבֶל׃ חֶרֶב עַל־כַּשְׂדִּים נְאֻם־יְהוָה
.ejus sapientes ad & ,ejus principes ad & , Babel habitatores ad &
וְאֶל־יֹשְׁבֵי בָבֶל וְאֶל־שָׂרֶיהָ וְאֶל־חֲכָמֶיהָ׃

Verſio VULG. LAT.

19 Et reducam Iſrael ad habitaculum ſuum: & paſcetur Carmelum & Baſan, & in monte Ephraim & 20 Galaad ſaturabitur anima ejus. In diebus illis, & in tempore illo, ait Dominus, quæretur iniquitas Iſrael, & non erit; & peccatum Juda, & non invenietur: quoniam propitius ero eis, quos reliquero. 21 Super terram dominantium aſcende, & ſuper habitatores ejus viſita, diſſipa, & interfice quæ poſt eos ſunt, ait Dominus: & fac juxta 22 omnia quæ præcepi tibi. Vox belli in terra, & contritio magna. 23 Quomodò confractus eſt, & contritus malleus univerſæ terræ? Quomodò verſa eſt in deſertum 24 Babylon in Gentib⁹? Illaqueavi te, & capta es, Babylon, & neſciebas: inventa es & apprehenſa: 25 quoniā Dn̄m provocâſti. Aperuit Domin⁹ theſaurum ſuū, & protulit vaſa iræ ſuæ: quoniam opus eſt Domino Deo exercituum in 26 terra Chaldæorum. Venite ad eam ab extremis finib⁹, aperite ut exeant qui conculcent eam: tollite de via lapides, & redigite in acervos, & interficite eam: 27 nec ſit quidquam reliquum. Diſſipate univerſos fortes ejus, deſcendant in occiſionem: væ eis, quia venit dies eorum, tempus 28 viſitationis eorum. Vox fugientium, & eorum qui evaſerunt de terra Babylonis, ut annuntient in Sion ultionem Domini Dei no- 29 ſtri, ultionem templi ej⁹. Annuntiate in Babylonem plurimis, omnib⁹ qui tendunt arcum: conſiſtite adverſùs eam per gyrum, & nullus evadat: reddite ei ſecundùm opus ſuum: juxta omnia quæ fecit, facite illi: quia contra Dominum erecta eſt, adverſùm 30 Sanctum Iſrael. Idcircò cadent juvenes ejus in plateis ejus: & omnes viri bellatores ejus conticeſcent in die illa, ait Dominus. 31 Ecce ego ad te ſuperbe, dicit Dominus Deus exercituum: quia venit dies tuus, tempus viſitatio- 32 nis tuæ. Et cadet ſuperb⁹, & corruet, & non erit qui ſuſcitet eum: & ſuccendam ignem in urbib⁹ ejus, & devorabit omnia 33 in circuitu ejus. Hæc dicit Dominus exercituum; Calumniam ſuſtinent filii Iſrael, & filii Juda ſimul: omnes, qui ceperunt eos, tenent, nolunt dimittere eos. 34 Redemptor eorum fortis, Dominus exercituū nomen ejus, judicio defendet cauſam eorū, ut exterreat 35 terram, & commoveat habitatores Babylonis. Gladius ad Chaldæos, ait Dominus, & ad habitatores Babylonis, & ad principes, & ad ſapientes ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Τοὺς δυνατοὺς ἄνδρας, καὶ τὰς γυναῖκας, καὶ τὰ νήπια (ι) τὰ λοιπὰ, καὶ τὰς θυγατέρας τοῦ βασιλέως, (κ) καὶ τὰς ψυχὰς ἃς κατέλιπε Ναβουζαρδὰν μετὰ Γοδολίου υἱοῦ Ἀχεικὰμ, καὶ Ἱερεμίαν τὸν 7 προφήτην, καὶ Βαροὺχ υἱὸν Νηρείου. Καὶ εἰσῆλθον εἰς Αἴγυπτον, ὅτι οὐκ ἤκουσαν τῆς φωνῆς κυρίου, καὶ εἰσῆλθον (λ) εἰς Τάφνας. 8 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν 9 ἐν Τάφνας, λέγων, Λάβε σεαυτῷ λίθους μεγάλους, καὶ κατάκρυψον αὐτοὺς ἐν προθύροις, ἐν πύλῃ τῆς οἰκίας (μ) Φαραὼ ἐν Τάφνας, κατ᾽ ὀφθαλμοὺς ἀνδρῶν Ἰού- 10 δα, Καὶ ἐρεῖς, Οὕτως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀποστέλλω, καὶ ἄξω Ναβουχοδονόσορ βασιλέα Βαβυλῶνος, καὶ θήσει αὐτοῦ τὸν θρόνον ἐπάνω τῶν λίθων τούτων ὧν κατέκρυψας, καὶ ἀρεῖ τὰ (ν) ὅπλα ἐπ᾽ αὐτούς, 11 Καὶ εἰσελεύσεται, καὶ πατάξει γῆν Αἰγύπτου, οὓς εἰς θάνατον εἰς θάνατον, καὶ οὓς εἰς ἀποικισμὸν εἰς ἀποικισμὸν, καὶ οὓς 12 εἰς ῥομφαίαν εἰς ῥομφαίαν. Καὶ καύσει πῦρ ἐν οἰκίαις (ξ) τῶν θεῶν αὐτῶν, καὶ ἐμπυριεῖ αὐτὰς, καὶ ἀποικιεῖ αὐτούς, καὶ (ο) φθειριεῖ γῆν Αἰγύπτου, ὥσπερ φθειρίζει ποιμὴν τὸ ἱμάτιον αὐτοῦ. καὶ ἐξε- 13 λεύσεται ἐν εἰρήνῃ, Καὶ συντρίψει τοὺς στύλους Ἡλιουπόλεως, τοὺς (π) ἐν Ὢν, καὶ τὰς οἰκίας αὐτῶν κατακαύσει ἐν πυρί.

Potentes viros, & mulieres, 6 & parvulos reliquos, & filias regis, & animas quas reliquerat Nabuzardan cum Godolia filio Achicam, & Hieremiam prophetam, & Baruch filium Neriæ: Et ingreſ- 7 ſi ſunt in Ægyptum, quia non audierunt vocem Domini, & intrârunt in Taphnas. Et fa- 8 ctum eſt verbum Domini ad Hieremiam in Taphnas, dicens; Sume tibi lapides gran- 9 des, & abſconde eos (c) in veſtibulis in porta domûs Pharaonis in Taphnas, ante oculos virorum Juda, Et dices; 10 Sic dixit Dominus; Ecce ego mitto, & adducam Nabuchodonoſor regem (d) Babylonis: & ponet ſuum thronum ſuper lapides iſtos, quos abſcondiſti: & elevabit arma ſuper eos: Et ingredietur, & 11 percutiet terram Ægypti, quos in mortem, in mortem, & quos in tranſmigrationem, in tranſmigrationem, & quos in gladium, in gladium. Et ſuc- 12 cendet ignem in domibus deorum eorum, & comburet eas, & transferet eos, & pediculis excutiet terram Ægypti, ſicut excutit paſtor veſtimentum ſuum. Et egredietur in pace: Et conteret titulos Helio- 13 polis, (e) qui in On: & domos (f) eorum comburet in igni.

MS. A. (ι) καὶ τὰ λοιπὰ, (κ) καὶ πάσας τὰς ψυχὰς (λ) ἐν (μ) ἐν Τάφνας, (ν) ὅπλα αὐτοῦ ἐπ᾽ (ξ) θεῶν αὐτῶν, καὶ ἐνπυριεῖ (ο) φθειριεῖ γῆν αὐτοῦ, ὥσπερ φθειρίζει ὁ ποιμὴν (π) ἐν Ἐνὼν,

Cap. 44.
1 Vulg. Lat.

ΚΕΦ. να΄.

Ο ΛΟΓΟΣ Ο (α) ΓΕΝΟΜΕΝΟΣ ΠΡΟΣ ΙΕΡΕΜΙΑΝ ἅπασι τοῖς Ἰουδαίοις τοῖς κατοικοῦσιν ἐν γῇ (β) Αἰγύπτου, καὶ τοῖς καθημένοις ἐν Μαγδώλῳ, καὶ ἐν Τάφνας, καὶ (γ) ἐν γῇ Παθούρης, λέγων, 2 Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ὑμεῖς ἑωράκατε πάντα τὰ κακὰ, ἃ ἐπήγαγον ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπὶ τὰς πόλεις Ἰούδα· καὶ ἰδού εἰσιν ἔρημοι ἀ- 3 πὸ (δ) ἐνοίκων Ἀπὸ προσώπου πονηρίας αὐτῶν, ἧς ἐποίησαν παραπικρᾶναι με, πορευθέντες θυμιᾷν θεοῖς ἑτέροις, οἷς οὐκ ἔγνωτε.

CAP. LI.

VERBUM, quod fa- 1 ctum eſt ad Hieremiam omnibus Judæis habitantibus in terra Ægypti, & ſedentibus in Magdolo, & in (a) Taphnas, & in terra Pathures: dicens; Sic dixit Dominus 2 Deus Iſrael; Vos vidiſtis omnia mala, quæ induxi ſuper Hieruſalem, & ſuper civitates Juda: & ecce ſunt (b) deſertæ ab habitatoribus A facie 3 malitiæ ipſorum, quam fecerunt ad exacerbandum me, euntes adolere diis aliis, quos (c) neſciebatis.

MS. A. (α) ΓΕΝΑΜΕΝΟΣ (β) Αἰγύπτῳ, (γ) ἐν Παθούρης, (δ) ἐνοικούντων

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 ואתיב ית ישראל לאתריהון ויתפרנסון בארעא כרמלא מתנן ובטור בית אפרים וגלעד
20 ומקדשא תסבע נפשהון : ביומיא האנון ובעדנא ההיא אמר יי יתבעון ית חובי ישראל
21 וליתנון וחטאי בית יהודה ולא ישתכחון ארי אשבוק לשארא דאשאר : על ארעא
דעמא סרבן סקו עלה ועל יתבי פקוד דקטלין בחרבא ייתון לגמרא שאריתהון אמר
22 23 יי ועביד ככל דפקדתך : קל קרבא בארעא ותברא רבא : איכדין אתקטיף ואתבר
24 מלכא דהוה מזיח לכל ארעא איכדין הות לצדו בבל בעממיא : אתצידת ליך ואף
אתאחדת בבל ואת לא ידעת אתבעיאו חובך אשתכחו ואף אתאחדת ארי בעמא דיי
25 אתגרית : גלא יי ית בית גנזיה ואפק ית מני כס דלוט קדמוהי ארי עבידא היא קדם יי
26 אלהים צבאות בארעא כסדאי : עולו לה מסטרא פתחו אבולהא גמירו נכסהא כמא
27 דמנפרין ית ערימת עבורא כן גמרוהא לא יהי לה שארא : שיציאו כל גברהא
28 יתמסרון לקטלא ווי עליהון ארי מטא יום תבירהון עדן סעורן בישתהון : קל
דערקין ומשתזבין מארעא דבבל לחואה בציון ית פורענותא דיי אלהנא פורענות
29 היכליה : בסרו על בבל סגיאין כל מתחי קשתא שרו עלה סחור סחור לא יהא לה
שיזבא שלימו לה כאגרה ככל דעבדת עבידו לה ארי על עמא דיי בסרת אמרת מלין
30 דלא כשרן קדם קדישא דישראל : בכן יתרמון עולימהא ברחובהא וכל אנשי
31 עבדי קרבא יתברון בעדנא ההיא אמר יי : הא אנא שלח רוגזי עלך מלכא רשיעא
32 אמר יי אלהים צבאות ארי מטא יום תבירך עדן סעורן בישתיך : ויתקל מלכא
33 רשיעא ויפול ולית ליה מקים ואדליק אשתא בקרוהי ותשיצי כל סחרניהון : כדנן
אמר יי צבאות אניסין בית ישראל ובית יהודה כחדא וכל שביהון אתקיפו בהון
34 מסרבין לשלחותהון : פריקהון תקיפא יי צבאות שמיה אתפרעא אתפרע ית עולבניהון
35 בדיל למתבר רשיעי ארעהון ולאיתאה זיעא לכל יתבי בבל : דקטלין בחרבא ייתון
על ארעא כסדאי אמר יי ועל יתבי בבל ועל רברבהא ועל חכימהא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et reducam Iſrael ad locum ſuum, & nutrientur in terra Charmel, Baſan, & 19
in monte dom⁹ Ephraim & Ghilgad, & ſanctuarii, ſaturabitur anima eo-
rum. In dieb⁹ illis, & in tempore illo, dicit Dn̄s: quærentur iniquitates 20
Iſrael; & non erunt: & peccata dom⁹ Juda, & non invenientur: quoniā par-
cā reliquiis quas reliquero. Sup terrā populi rebellis; aſcendite adverſus eā, 21
& adverſ⁹ habitatores Pecod: qui occidūt gladio, veniant ad conſumendas
reliquias eorū, dicit Dn̄s: & fac juxta omnia quæ præcepi tibi. Vox belli de 22
terra, & interit⁹ magn⁹. Quomodo ſucciſus eſt & contritus eſt rex qui com- 23
movebat univerſam terrā? quomodo facta eſt in deſertū Babylon in popu-
lis? Venat⁹ ſum te & etiā capta es Babylon, & tu neſciebas; quæſita ſunt 24
peccata tua, & inventa ſunt, et etiā capta es: quia contra populū Dn̄i irruiſti.
Revelavit Dn̄s domū theſauri ſui, & eduxit vaſa calicis maledictionis corā 25
eo, quia op⁹ eſt corā Dn̄o Deo exercituū in terra Chaldæorū. Ingredimini 26
ad eam à latere; aperite horrea ej⁹, abſumite facultates ej⁹: ſicut abſumunt
acervos tritici, ſic abſumite eam, non ſint ei reliquiæ. Diſperdite omnes for- 27
tes ej⁹, tradantur occiſioni. Væ eis, quia pervenit dies interit⁹ eorū, tempus
viſitationis malitiæ eorū. Vox fugientiū & eorum qui evadunt de terra Ba- 28
bylonis, ad annuntiandū in Sion vindictā Dn̄i Dei noſtri, ultionē templi
ej⁹. Annuntiate in Babylonē plurimi, omnes tendentes arcū, caſtrametamini 29
contra eā p circuitū, ne ſit ei liberatio: reddite ei juxta mercedem ej⁹; juxta
omnia quæ fecit facite ei; quia contra populū Dn̄i exprobravit, dicens verba
quæ non ſunt recta corā ſancto Iſraelis. Propterea projicientur juvenes 30
ej⁹ in plateis ej⁹, & omnes *viri* bellatores ejus conterentur in tempore illo,
dicit Dn̄s. Ecce ego mitto furorē meū contra te rex impie, dicit Dn̄s Deus 31
exercituū: Quia pervenit dies interitus tui, tempus viſitationis malitiæ
tuæ. Et impinget rex impius, & cadet, & non erit qui ſuſcitet eum: & ſuc- 32
cendam ignem in urbibus ejus, & conſumet omnia quæ in circuitu eis ſunt.
Hæc dicit Dn̄s exercituum: Vi oppreſſi ſunt domus Iſrael, & domus Juda 33
ſimul: & omnes qui captivaverunt eos tenent violenter eos, nolunt dimit-
tere eos. Redemptor eorum fortis eſt, Dominus exercituum nomen ejus. 34
Vindicans vindicabit injuriam eorum, ut conterat impios terræ eorum,
& ut adducat commotionem omnibus habitatoribus Babylonis. Occi- 35
ſores gladio venient contra terram Chaldæorum, dicit Dominus: &
contra habitatores Babylonis, & contra principes ejus, & contra ſapientes
ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܗܦܘܟ ܠܐܝܣܪܐܝܠ ܠܕܝܪܗܘܢ. ܘܢܪܥܘܢ ܒܟܪܡܠ. ܘܒܡܬܢܝܢ. ܘܒܛܘܪܐ ܕܐܦܪܝܡ
ܘܒܓܠܥܕ. ܘܬܣܒܥ ܢܦܫܗܘܢ. * ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܘܒܙܒܢܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ.
ܢܬܒܥܐ ܥܘܠܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܘܠܝܬܘܗܝ. ܘܚܛܗܝܗ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܠܐ ܢܫܬܟܚܘܢ. ܡܛܠ
ܕܐܫܒܘܩ ܠܫܪܟܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܡܢܗܘܢ. * ܣܩܘ ܠܐܪܥܐ ܡܡܪܡܪܢܝܬܐ. ܣܩܘ ܥܠܝܗ
ܘܥܠ ܥܡܘܪܝܗ. ܐܬܬܥܝܪ ܣܝܦܐ ܘܚܪܘܒ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܥܒܕ ܐܝܟ ܕܦܩܕܬܟ.
* ܩܠ ܩܪܒܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܬܒܪܐ ܪܒܐ. * ܐܝܟܢܐ ܐܬܬܒܪܬ ܘܐܬܦܫܦܫܬ ܐܪܙܦܬܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܐܝܟܢܐ
ܗܘܬ ܠܬܡܗܐ ܒܒܠ ܒܝܢܝ ܥܡܡܐ. * ܐܬܬܩܠܬ ܒܒܠ ܘܐܬܬܚܕܬ. ܘܠܐ ܝܕܥܬ. ܕܥܡ
ܡܪܝܐ ܩܡܬ. * ܦܬܚ ܡܪܝܐ ܐܘܨܪܗ. ܘܐܦܩ ܡܐܢܐ ܕܪܘܓܙܗ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܐ ܗܘ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܐ
ܚܝܠܬܢܐ ܒܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. * ܥܘܠܘ ܥܠܝܗ ܡܢ ܣܘܦܗ. ܦܬܚܘ ܐܘܨܪܝܗ. ܕܘܫܘܗ ܐܝܟ
ܟܕܝܣܐ. ܘܚܪܒܘܗ. ܘܠܐ ܢܫܬܒܩ ܠܗ ܫܪܟܐ. * ܚܪܘܒܘ ܟܠܗܘܢ ܬܘܪܘܗܝ. ܘܢܚܬܘܢ
ܠܢܟܣܬܐ. ܘܝ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܛܐ ܝܘܡܗܘܢ. ܙܒܢܐ ܕܦܘܩܕܢܗܘܢ. * ܩܠܐ ܕܥܪܘܩܝܢ
ܘܕܡܬܦܠܛܝܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܒܒܠ. ܠܡܚܘܝܘ ܒܨܗܝܘܢ. ܬܒܥܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ. ܘܬܒܥܬܐ
ܕܗܝܟܠܗ. * ܐܫܡܥܘ ܥܠ ܒܒܠ ܩܫܬܐ. ܟܠ ܕܢܓܕܝܢ ܒܩܫܬܐ. ܫܩܘܠܘ ܫܪܝܘ ܥܠܝܗ
ܡܢ ܣܘܦܗ. ܠܐ ܢܫܬܒܩ ܠܗ ܫܪܟܐ. ܦܪܘܥܘܗ ܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ. ܐܝܟ ܟܠ ܕܥܒܕܬ ܥܒܕܘ
ܠܗ. ܡܛܠ ܕܥܠ ܡܪܝܐ ܐܬܪܘܪܒܬ ܘܥܠ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܦܠܘܢ ܥܠܝܡܝܗ
ܒܫܘܩܝܗ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܒܪܝ ܩܪܒܗ ܢܫܬܬܩܘܢ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. * ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ
ܡܪܝܚܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܡܛܠ ܕܡܛܐ ܝܘܡܟ ܙܒܢܐ ܕܦܘܩܕܢܟ. * ܘܢܬܩܠ
ܡܪܝܚܐ ܘܢܦܠ. ܘܠܝܬ ܕܡܩܝܡ ܠܗ. ܘܐܫܪܐ ܢܘܪܐ ܒܩܘܪܝܗ. ܘܬܐܟܘܠ
ܟܠܗܘܢ ܚܕܪܘܗܝ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܕܥܠܝܩܝܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܐܝܠ ܘܒܢܝ ܝܗܘܕܐ
ܐܟܚܕܐ. ܘܟܠ ܕܫܒܘ ܐܢܘܢ. ܐܚܝܕܝܢ ܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܨܒܝܢ ܠܡܫܪܝܘ ܐܢܘܢ. * ܦܪܘܩܗܘܢ
ܥܫܝܢܐ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. ܕܝܢܐ ܢܕܘܢ ܕܝܢܗܘܢ. ܘܢܢܝܚ ܠܐܪܥܐ. ܘܢܪܓܙ ܥܠ
ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܣܝܦܐ ܥܠ ܟܠܕܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ
ܕܒܒܠ. ܘܥܠ ܪܘܪܒܢܝܗ ܘܥܠ ܚܟܝܡܝܗ.

Et reducam Iſraelitas in caulam ſuam, & pa- 19
ſcentur in Charmelo, & in Mathnin, in mon-
te Aphremi, & in Gelaad, & ſatiabitur ani-
ma eorum. Dieb⁹ illis & tempore illo, di- 20
cit Domin⁹ potentiſſim⁹, quæretur iniquitas
Iſraelis, & non extabit; & peccatum Judæ,
& non invenietur: quia parcam reliquis qui
remanſerint ex eis. Aggredimini terram ex- 21
aſperantem, aggredimini eam & habitatores
ejus: expergiſcere gladie, & perime eos, ait
Domin⁹, & fac ut præcepi tibi. Rumor bel- 22
li in terra, & conſternatio magna. Quo- 23
modo confracta et ablata eſt fortiſſima toti⁹
terræ? quomodo Babel ſtupori facta eſt inter
gentes? Impegit Babel, & capta eſt ſe in- 24
ſciâ; eò quòd Domino reſtiterit. Aperuit 25
Domin⁹ armamentarium ſuum, & protulit
vaſa iræ ſuæ. Quia res eſt Domino Deo po-
tentiſſimo contra terram Chaldæorum; In- 26
vadite eam undequaque, aperite portas ejus,
ſcrutamini eam ut nudam, deſtruite eam, &
ne relinquatis ei veſtigium: Vaſtate eam, 27
& omnes fœt⁹ ejus internecioni devoveantur.
Væ illis, quoniam inſtat dies eorum,
temp⁹ viſitationis eorum. Vox fugientium, 28
et evadentium de terra Babelis, ad indicandum
in Sione ultionem Domini Dei noſtri et
ultionem templi ejus. Convocate multos 29
contra Babelem: quicunque nôſtis arcu jaculari,
jaculamini in eam undequaque; ne
relinquatis ei veſtigium, rependite ei ſecundùm
mercedem ſuam, & quemadmodum
fecit, facite illi: quia contra Dominum inſolenter
egit, & contra Sanctum Iſraelis.
Propterea cadent juvenes ejus intra ipſam, 30
& omnes viri bellatores ejus ſilentio involventur
die illo. Ecce me adverſùm te O 31
inſolens, ait Domin⁹ Deus potentiſſim⁹; quia
advenit dies tuus, tempus viſitationis tuæ:
Et deſtruetur inſolens, cadétque, nec erit 32
qui erigat illum: & dimittam ignem in civitates
ejus, qui conſumet quicquid adjacet
illi. Sic ait Domin⁹ exercituum, Oppri- 33
muntur Iſraelitæ & Judæi pariter, et omnes
qui captivos fecerunt eos, detinent eos, nec
dimittere volunt. Vindex eorum fortiſſim⁹, 34
cujus nomen eſt Domin⁹ potentiſſim⁹ omnino
aget cauſam eorum, & pacatam reddet
terram, et indignabitur in omnes habitatores
orbis. Gladius in Chaldæos, ait Domin⁹, 35
& in omnes cives Babelis, & in principes atque
ſapientes ejus:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الرجال الاقوياء * والنساء والاطفال والمرضعين * وبنات الملك * وجميع النفوس التي
تركها نابوزردان مع غودوليا بن اشيكام * وارمياء النبي وباروخ بن نيريو * ودخلوا الي
مصر * لانهم لم يسمعوا صوت الرب * ودخلوا الي طفناس *

* وصار قول الرب الي ارميا في طفناس قايلا *

* خذ لك حجارة عظاما * واخفها قباله الابواب في باب البيت في طفناس لعيني رجال
يهودا * وتقول هكذا قال الرب * ها انا ارسل واسوق بختنصر ملك بابل * ويضع
كرسيه فوق هذه الحجارة التي اخفيتها * ويرفع اسلحته عليها * ويدخل ويضرب ارض
مصر * الذين للموت للموت * والذين للسبي للسبي * والذين للسيف للسيف * ويشعل النار
في بيوت الهتهم ويحرقها ويسبيهم ويفسد ارضهم كما يفسد الراعي ثوبه * ويخرج بسلام
* ويحطم عمد عين شمس الذين في اون * وبيوتهم يحرقها بالنار *

الفصل الحادي والخمسون *

* القول الصاير الى ارميا في جميع اليهود السكان بارض مصر والجلوس في مجدولون
طفناس وفي باثوريس قايلا *

* هكذا قال الرب اله اسرائيل * انتم رايتم جميع الشرور التي جلبتها على اورشليم وعلى
مدن يهودا * وها هي مقفرات من السكان * من وجه شرهم الذي صنعوه ليمرمروني
ذهبوا ليذبحوا لالهة اخر هذه التي لم تعرفوها *

Tam viris fortibus, quàm mulieribus, 6
pueris, atque lactentibus, & filiabus re-
gis, cunctiſque animabus quas reliquerat
Nabuzardan, unà cum Godolia Achi-
cami filio, necnon Jeremiâ prophetâ, &
Barucho Neriæ filio; Ingreſſi ſunt 7
Ægyptum (non enim auſcultârunt voci
Domini) ingreſſi ſunt inquam, in Taph-
nas.

Tum fuit ſermo Domini ad Jere- 8
am in Taphnas, dicens;

Sume tibi lapides magnos, & abſconde 9
illos è regione portarum in oſtio domûs in
Taphnas, ante oculos virorum Judæ:
Et dicas; Ita dixit Dominus. Ecce 10
ego mittam & adducam Bochtonaſſarem
regem Babelis, imponetque thronum ſuum
hiſce lapidibus quos abſcondi, attolletq;
arma ſua ſuper illos: Et ingredietur, 11
percutietque terram Ægypti, quos in mor-
tem ad mortem, quos in captivitatem ad
captivitatem, & quos in gladium ad gla-
dium: Et ignem accendet in ædibus deo- 12
rum eorum, & comburet eas; ipſos
autem captivos abducet, & terram
eorum vaſtabit, quemadmodum detergit
paſtor veſtem ſuam; tum egredietur in-
columis: Et confringet columnas Ain- 13
ſemes quæ ſunt in Enon, & domos eorum
igne ſuccendet.

CAP. LI.

SErmo factus ad Jeremiam de 1
omnibus Judæis habitantibus in
terra Ægypti, & commorantibus
in Magdolo, & in Taphnas, et in
Pathures, dicens;

Ita dixit Dominus Deus Iſraelis; Vos 2
vidiſtis omnia mala quæ intuli Jeru-
ſalymæ & urbibus Judæ; (ecce enim
ſunt habitatoribus exhauſtæ. Propter 3
ſcelus eorum quod perpetraverunt ad
exacerbandum me) attamen iviſtis ut ado-
leretis diis alienis, iis quos ignorabatis.

ירמיה : נא

conterentur & ,ejus fortes ad gladius : inſanient & ,nugatores ad Gladius
36 חרב אל־הבדים ונאלו חרב אל־גבוריה וחתו :
quod vulgus promiſcuum omne ad & ,ejus currum ad & ,ejus equos ad Gladius
37 חרב אל־סוסיו ואל־רכבו ואל־כל־הערב אשר
Siccitas .diripientur &,ejus theſauros ad gladius :mulieres in erunt &,ejꝰ medio in
38 בתוכה והיו לנשים חרב אל־אוצרתיה ובזזו : חרב
,inſanient Emim in & ,ipſa ſculptiliũ terra quia : areſcent & ,ejus aquas ad
אל־מימיה ויבשו כי ארץ פסלים היא ובאימים יתהללו :
non & ,ululæ filiæ ea in habitabunt & ,iim cum ziim habitabũt Propterea
39 לכן ישבו ציים את־איים וישבו בה בנות יענה ולא
.generatione & ,generatione ad uſque habitabitur nec ,æternum in ultrà habitabitur
תשב עוד לנצח ולא תשכון עד־דור ודור :
ait ,ejus vicinas & ,Hamorah & ,Sedom Dei ſubverſionẽ Juxta
40 כמהפכת אלהים את־סדם ואת־עמרה ואת־שכניה נאם־
populus Ecce .hominis filius ea in habitabit nec ,vir ibi habitabit non :Dominus
41 יהוה לא־ישב שם איש ולא־יגור בה בן־אדם : הנה עם
.terræ lateribus à ſuſcitabuntur multi reges & ,magna gens & :aquilone ab veniens
בא מצפון וגוי גדול ומלכים רבים יערו מירכתי־ארץ :
mare ſicut eorũ vox :miſerebũtur non & ,ipſi crudelis ,apprehẽdent haſtile & Arcum
42 קשת וכידן יחזיקו אכזרי המה ולא ירחמו קולם כים
filia te ſuper prælium ad vir tanquã ordinatus :equitabũt equos ſuper & ,tumultuabit
יהמה ועל־סוסים ירכבו ערוך כאיש למלחמה עליך בת־
anguſtia :ejus manus ſe debilitaverũt & ,eorũ famam Babel rex Audivit .Babel
43 בבל : שמע מלך־בבל את־שמעם ורפו ידיו צרה
elevatione de aſcendet leo tanquã Ecce .parturientis tanquã tormen ,eũ apprehendit
44 החזיקתהו חיל כיולדה : הנה כאריה יעלה מגאון
: ea deſuper eos faciã currere ,faciã quieſcere quia ,robuſtum habitaculũ ad Jarden
הירדן אל־נוה איתן כי־ארגיעה ארוצם מעליה
,mihi [illegible] conſtituet quis & ,ego ſicut quis nam : recenſebo eam ad electus qui &
ומי בחור אליה אפקד כי מי כמוני ומי יועדני
,Domini conſilium audite Propterea ? meas facies ad ſtet qui ,paſtor iſte quis &
45 ומי־זה רעה אשר יעמד לפני : לכן שמעו עצת־יהוה
: Chaſdim terram ad cogitavit quas ejus cogitationes & ,Babel ad conſuluit quod
אשר יעץ אל־בבל ומחשבותיו אשר חשב אל־ארץ כשדים
.tugurium eis ſuper fecerit deſolari niſi ,pecoris parvuli eos traxerint niſi
אם־לא יסחבום צעירי הצאן אם־לא ישים עליהם נוה :
.eſt auditus gentibus in clamor & : terra eſt commota ,Babel eſt capta voce A
46 מקול נתפשה בבל נרעשה הארץ וזעקה בגוים נשמע :

CAP. LI. נא

cor ,habitatores ad & ,Babel ſuper ſuſcitans ego Ecce : Dominus dixit Sic
1 כה אמר יהוה הנני מעיר על־בבל ואל־ישבי לב
,eã ventilabũt &,ventilatores Babel in mittam Et .corrumpentẽ ventũ ,mei inſurgentiũ
2 קמי רוח משחית : ושלחתי לבבל זרים וזרוה
Ad .mala die in undique ab eam ſuper erunt quoniã :ejus terram evacuabũt &
3 ויבקקו את־ארצה כי־היו עליה מסביב ביום רעה : אל־
ſuper paratis ne & :ſua lorica in ſe attollet ad & ,ſuũ arcũ tendentem tendet
ידרך ידרך הדרך קשתו ואל־יתעל בסרינו ואל־תחמלו אל־
:Chaſdim terra in interfecti cadent Et .ejꝰ exercitũ omnẽ excidione delete,ejꝰ juvenibꝰ
4 בחריה החרימו כל־צבאה : ונפלו חללים בארץ כשדים
,ſuo Deo à Jehudah & ,Iſrael viduus non Quoniã .ejus plateis in confoſſi &
5 ומדקרים בחוצותיה : כי לא־אלמן ישראל ויהודה מאלהיו
Fugite .Iſrael ſancto à delicto eſt repleta eorum terra quia :exercituũ Domino à
6 מיהוה צבאות כי ארצם מלאה אשם מקדוש ישראל : נסו
:ejꝰ iniquitatẽ propter diſperdamini ne ,ſuã animã vir eruite & ,Babel medio de
מתוך בבל ומלטו איש נפשו אל־תדמו בעונה
.ei reddens ipſe retributionem ; Domino illud ultionis tempus quoniam
כי עת נקמה היא ליהוה גמול הוא משלם לה :

Verſio VUL. LAT.

36 Gladius ad divinos ejus, qui ſtulti erunt: gladius ad fortes 37 illius, qui timebunt. Gladius ad equos ejus, & ad currꝰ ejus, & ad omne vulgus, quod eſt in medio ejus: & erunt quaſi mulieres: gladiꝰ ad theſauros ejꝰ, 38 qui diripientur. Siccitas ſuper aquas ejus erit, & areſcent: quia terra ſculptilium eſt, & in 39 portentis gloriantur. Propterea habitabunt dracones cum faunis ficariis: & habitabunt in ea ſtruthiones: & non inhabitabitur ultrà uſque in ſempiternum, nec extruetur uſq; ad gene- 40 rationem & generationẽ. Sicut ſubvertit Dñs Sodomam & Gomorrhã, et vicinas ejus, ait Dñs: non habitabit ibi vir, & non in- 41 colet eã filius hominis. Ecce populus venit ab Aquilone, & gens magna, & reges multi conſurgent 42 à finibus terræ. Arcũ & ſcutum apprehendent: crudeles ſunt & immiſericordes: vox eorũ quaſi mare ſonabit: & ſup equos aſcendent, ſicut vir paratus ad prœliũ 43 contra te, filia Babylon. Audivit rex Babylonis famam eorum, & diſſolutæ ſunt manꝰ ejꝰ: anguſtia apprehendit eũ, dolor quaſi par- 44 turientẽ. Ecce quaſi leo aſcendet de ſuperbia Jordanis ad pulchritudinẽ robuſtã: quia ſubitò currere faciã eũ ad illã: & quis erit electus, quẽ præponã ei? quis eſt enim ſimilis mei? & quis ſuſtinebit me? & quis eſt iſte paſtor, 45 qui reſiſtat vultui meo? Propterea audite cõſiliũ Dñi, quod mente concepit adverſũ Babylonẽ; & cogitationes ejus, quas cogitavit ſup terrã Chaldæorũ: Niſi detraxerint eos parvuli gregũ, niſi diſſipatũ fuerit cũ ipſis habitaculũ 46 eorũ. A voce captivitatis Babylonis commota eſt terra, & clamor inter Gentes auditus eſt.

CAP. LI.

1 HÆc dicit Dñs; Ecce ego ſuſcitabo ſuper Babylonẽ, & ſuper habitatores ejus, qui cor ſuũ levaverunt contra me, quaſi ventũ 2 peſtilentem. Et mittã in Babylonem ventilatores, & ventilabunt eam & demolientur terrã ejus: quoniã venerunt ſuper eã undiq; 3 in die afflictionis ejꝰ. Non tendat qui tendit arcũ ſuũ, & nõ aſcẽdat loricatꝰ, nolite parcere juvenibꝰ 4 ejꝰ, interficite omnẽ militiã ejus. Et cadent interfecti in terra Chaldæorũ, & vulnerati in regionibus ejus. 5 Quoniam non fuit viduatus Iſrael & Juda à Deo ſuo Dño exercituũ: terra autem eorũ 6 repleta eſt delicto à Sancto Iſrael. Fugite de medio Babylonis, & ſalvet unuſquiſq; animam ſuã: nolite tacere ſuper iniquitatẽ ejꝰ: quoniã tempꝰ ultionis eſt à Dño, viciſſitudinẽ ipſe retribuet ei.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ ἀπέστειλα πρὸς ὑμᾶς τοὺς (ε) παῖδάς μου τοὺς προφήτας ὄρθρου, ϗ ἀπέστειλα (ζ), λέγων, Μὴ ποιήσητε τὸ πρᾶγμα τῆς μολύνσεως ταύτης, ἧς ἐμίσησα. 5 Καὶ οὐκ ἤκουσάν μου, ϗ οὐκ ἔκλιναν τὸ οὖς αὐτῶν ἀποστρέψαι ἀπὸ τῶν κακῶν αὐτῶν, πρὸς τὸ μὴ θυμιᾶν θεοῖς ἑτέροις. 6 Καὶ ἔσταξεν (η) ἡ ὀργή μου ϗ ὁ θυμός μου, ϗ ἐξεκαύθη ἐν πύλαις Ἰούδα, ϗ ἔξωθεν Ἱερουσαλήμ· ϗ ἐγενήθησαν εἰς ἐρήμωσιν ϗ εἰς ἄβατον ὡς 7 ἡ ἡμέρα αὕτη. Καὶ νῦν οὕτως εἶπε Κύριος παντοκράτωρ, Ἱνατί ὑμεῖς ποιεῖτε κακὰ μεγάλα ἐπὶ ψυχαῖς ὑμῶν; (θ) ἐκκόψαι ὑμῶν ἄνθρωπον ϗ γυναῖκα, νήπιον ϗ θηλάζοντα ἐκ μέσου Ἰούδα, πρὸς τὸ μὴ καταλειφθῆναι ὑμῶν 8 μηδένα, Παραπικρᾶναί με ἐν τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν ὑμῶν, θυμιᾶν θεοῖς ἑτέροις ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, εἰς ἣν (ι) ἤλθετε κατοικεῖν ἐκεῖ, ἵνα (κ) κοπῆτε, ϗ ἵνα γένησθε εἰς κατάραν ϗ εἰς ὀνειδισμὸν (ϛ) ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσι τῆς γῆς. 9 Μὴ ἐπιλέλησθε ὑμεῖς τῶν (λ) κακῶν τῶν πατέρων ὑμῶν, ϗ τῶν κακῶν τῶν βασιλέων Ἰούδα, ϗ τῶν κακῶν τῶν ἀρχόντων ὑμῶν, ϗ τῶν κακῶν τῶν γυναικῶν ὑμῶν, ὧν ἐποίησαν ἐν (μ) γῇ Ἰ- 10 ούδα, ϗ ἔξωθεν Ἱερουσαλήμ; Καὶ οὐκ ἐπαύσαντο ἕως τῆς ἡμέρας ταύτης, ϗ οὐκ ἀντείχοντο τῶν προσταγμάτων μου, ὧν ἔδωκα κατὰ πρόσωπον τῶν πατέ- 11 ρων αὐτῶν. Διατοῦτο οὕτως εἶπε Κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ (ν) ἐφίστημι τὸ πρόσωπόν 12 μου τοῦ ἀπολέσαι Πάντας τοὺς καταλοίπους τοὺς ἐν Αἰγύπτῳ, ϗ πεσοῦνται ἐν ῥομφαίᾳ ϗ ἐν λιμῷ, (ξ) ϗ ἐκλείψουσιν ἀπὸ μικροῦ (ο) ἕως μεγάλου, ϗ ἔσονται εἰς ὀνειδισμόν, ϗ εἰς ἀπώλει- 13 αν, ϗ εἰς κατάραν. Καὶ ἐπισκέψομαι ἐπὶ τοὺς καθημένους (π) ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ὡς ἐπεσκεψάμην ἐπὶ Ἱερουσαλήμ, 14 ἐν ῥομφαίᾳ ϗ ἐν (ρ) λιμῷ. Καὶ οὐκ ἔσται σεσωσμένος οὐδεὶς τῶν ἐπιλοίπων Ἰούδα τῶν παροικούντων ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, τοῦ ἐπιστρέψαι εἰς γῆν Ἰούδα, ἐφ᾽ ἣν αὐτοὶ ἐλπίζουσι ταῖς ψυχαῖς αὐτῶν τοῦ ἐπιστρέψαι ἐκεῖ· οὐ μὴ (ϛ) ἐπιστρέψωσιν, ἀλλ᾽ ἢ οἱ ἀνασεσωσμένοι.

Et miſi ad vos pueros meos 4 *prophetas diluculò, & miſi dicens; Nolite facere rem contaminationis hujus, quã odi. Et non audierunt me,* 5 *& non inclinaverunt aurem ſuam, ut averterent ſe à malis ſuis, ad non adolendum diis alienis. Et ſtillavit* 6 *ira mea, & furor meus: & ſuccenſus eſt in portis Juda, & extra Hieruſalem. Et facti ſunt in deſolationem, & in invium, ſicut dies hæc. Et nunc ſic* 7 *dixit Dominus omnipotens, ut quid vos facitis mala magna in animas veſtras? ad ſuccidendum vobis hominem, & mulierem, parvulũ, & lactentẽ, de medio Juda, ut non relinquatur ex vobis ullus. Exacerbando me* 8 *in operibus manuum veſtrarũ, adolendo diis alienis in terra Ægypto, ad quam veniſtis habitare illic; ut excidamini, & ut ſiatis in maledictionem, & in opprobrium in omnibus gentibus terræ. Nunquid obliti eſtis vos* 9 *malorũ, patrũ veſtrorũ, & malorũ, regũ Juda; & malorũ, principũ veſtrorũ, & malorũ, mulierũ veſtrarũ, quæ fecerunt in terra Juda, & extra Hieruſalem? Et* 10 *non ceſſaverunt uſque ad diẽ (d) hanc, & non adhæſerunt præceptis meis, quæ dedi ante faciẽ (e) patrũ eorũ. Idcircò* 11 *ſic dixit (f) Dominus; Ecce ego ſtatuo faciem meã ad (g) diſperdendũ Omnes* 12 *reſiduos, qui in Ægypto: & cadent in gladio, & in fame: & deficient à parvo uſque ad magnũ: & erunt in opprobriũ, & in perditionẽ, & in maledictionẽ. Et vi-* 13 *ſitabo ſuper ſedentes in terra Ægypto, ſicut viſitavi ſuper Hieruſalem in gladio, et in (h) fame: Et non erit ſalvus* 14 *quiſquam de reſiduis Juda, qui incolunt in terra Ægypto, ad revertendũ in terrã Juda, ad quã ipſi ſperant animabus ſuis reverti illuc: non revertentur; niſi qui evaſerint.*

MS. A. (ε) δούλους (ζ) ἐγὼ πρὸς ὑμᾶς, λέγων, (η) ὁ θυμός μου, ϗ ἡ ὀργή μου, (θ) ϗ ἐκκόψαι ἀφ᾽ ὑμῶν (ι) εἰσήλθατε τοῦ ἐνοικεῖν (κ) ἐκκοπῆτε, (ϛ) πᾶσιν (λ) ἔργων, (μ) πόλεσιν (ν) ἐπίστημι (ξ) ἐκλείψουσιν (ο) ϗ ἕως (π) ἐν Αἰγύπτῳ, (ρ) λιμῷ ϗ ἐν θανάτῳ. Καὶ (ϛ) ἐπιστρέψωσιν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

36 דקטלין בחרבא ייתון על קסמהא וישתבשון דקטלין בחרבא ייתון על גברהא ויתברון :
37 דקטלין בחרבא ייתון על סוסותהון ועל רתיכהון ועל כל סומכותא די בגוה ויהון חלשין
38 כנשיא דקטלין בחרבא ייתון על בית גנזהא ויתבזזון : שרבא במוהא ויבשון ארי
39 ארעא צלמניא היא ובטעותא משתבחין : בכין יערען תמן בחתולין וישרון בה בנת
40 נעמין ולא תתב עוד לעלם ולא תשרי עד דר ודר : רחיק מימרי יתכון כמא דרחיק יי
41 ית סדום וית עמורה וקריבהא אמר יי לא יתב תמן אנש ולא יתותב בה בר אנש : הא
42 עמא אתא מצפונא ועממין רברבין ומלכין סגיאין ייתון בגלי מסיפי ארעא : קשתא
ותריסין אחידן אכזראין אנון ולית להון רחמין קלהון כימא באתרגושתיה ועל סוסותא
43 רכבין מסדרין אנון כגבר עביד קרבין עלך כנשתא דבבל : שמע מלכא דבבל ית
44 שמעהון ואתרשלא ידוהי עקא אחדתיה הא כחבלין לילדתא : הא מלך במשריתיה
יסק עליהון כאריא דסליק מרום ירדנא והוי לדיר רען ארי בזמן דאיתנון עלה
45 ושלטונין אמני עלה ארי מן כותי ומן דיערענני ולית מלך דאית ליה תקוף קדמי : בכן
שמעו מלכא דיי די מלך על בבל ומחשבתיה דחשיב על יתבי ארעא כסדאי אם לא
46 יגררון ויקטלון תקיפי עמא אם לא יצדון עליהון מדורהון : מקל דאתאחדת בבל
זעת ארעא וצוחתא בעממיא אשתמעת : נא
1 כדנן אמר יי הא אנא מיתי על בבל ועל יתבי ארעא כסדאי עממין קטולין דרם לבהון
2 ושפירין בקומה רוחהון מחבלא : ואשלח על בבל בזוזין ויבזונה ויריקנון ית ארעא
3 ארי הוו עלה מסחור סחור ביום ביש : לא ימתח דמתח קשתיה ולא יסק בסריניה
4 ולא תחוסון על עולמהא גמירו כל נכסהא : ויתרמון קטילין בארעא כסדאי ומטענין
5 בשוקהא : ארי לא שביקין בית ישראל ויהודה מאלההון מיי צבאות ארי ארעהון
6 אתמליאת חיבי קטול מימר קדישא דישראל : ערוקו מגו בבל ושיזבו גבר נפשיה לא
תלקון בחובה ארי עדן פורענותא היא קדם יי גמולא הוא משלם לה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Qui occidunt gladio, venient contra divinos ejꝰ, & inſanient: qui occidunt 36
gladio, venient contra fortes ejꝰ, & contercentur. Qui occidunt gladio, ve- 37
nient contra equos & contra currꝰ eorũ, & contra omnia auxilia quæ ſunt
in medio ejꝰ, & erunt infirmi ſicut mulieres: qui occidunt gladio, venient
contra domũ theſaurorũ ejꝰ, & diripientur. Siccitas ſuper aquas ejus, & 38
areſcent: quia terra ſimulachrorum eſt, & in idolis gloriantur. Propterea oc- 39
current cercopitheci felibꝰ, & habitabunt in ea filiæ ſtruthionũ: non habita-
bitur ultrà in æternũ, nec incoletur uſque in generationẽ & generationẽ.
Projiciet vos Verbũ meũ, ſicut projecit Dñs Sodomã & Gomorrã, & vici- 40
nas ejꝰ, ait Dñs: non habitabit ibi homo, nec erit incola in ea filiꝰ hominis.
Ecce populus venit de *Aquilone*, & populi magni & reges multi venient 41
publicè à finibꝰ terræ. Arcꝰ & ſcuta tenentes, crudeles ſunt, nec eſt eis miſe- 42
ricordia. Vox eorũ quaſi maris cùm tumultuatur: & ſuper equos vehuntur,
ordinati ſunt, quaſi vir bellator, contra te coetꝰ Babylonis. Audivit rex Ba- 43
bylonis famã eorũ, remiſſæ ſunt manꝰ ejꝰ, anguſtia apprehendit eum quaſi
dolores parturientis. Ecce rex cum exercitu ſuo aſcendet contra eos ſicut 44
leo, qui aſcendit de altitudine Jordanis: & eſt in habitaculũ paſtorũ. Quia
in tempore quo adducã ipſos in eã, dominatores conſtituã ſuper eam: quo-
niam quis eſt ſimilis mei? & quis eſt qui occurrat mihi? & non eſt rex qui
habeat fortitudinẽ corã me. Propterea audite conſiliũ Dñi quod conſulta- 45
vit ſup Babylonẽ, & cogitationẽ ejꝰ quã cogitavit ſuper habitatores terræ
Chaldæorũ: Niſi detraxerint eos, & occiderint fortes populi, niſi deſolave-
rint ſuper eos habitacula eorũ. A voce qua capta eſt Babylon, commota eſt 46
terra: & clamor in populis auditus eſt.

CAP. LI.

HÆc dicit Dñs: Ecce ego adducã ſuper Babylonẽ, & ſuper habitatores 1
terræ Chaldæorũ populos interfectores, quorũ cor elevatũ eſt, & ele-
gantes ſtatura, quorũ ſpiritꝰ diſſipat. Et mittam ſuper Babylonẽ direptores 2
qui diripiant eã, & exhauriant terrã ejꝰ; quoniã fuerunt ſuper eã per circu-
itũ in die mala. Non tendat qui tendit arcũ ſuũ, nec aſcendat in lorica ſuâ; 3
nec parcatis juvenibus ejus: conſumite omnẽ ſubſtantiã ejus. Et projicientur 4
interfecti in terra Chaldæorũ, & vulnerati in vicis ejus. Non enim ſunt de- 5
relictæ domus Iſrael & Juda, à Deo ſuo, à Dño exercituũ. Quia terra eorũ
impleta eſt peccatis homicidii à verbo ſancti Iſrael. Fugite de medio Ba- 6
bylonis, & liberate quiſque animã ſuã, ne condemnini in peccato ejus:
tempus vindictæ eſt coram Domino, retributionem ipſe reddet ei.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܚܪܒܐ ܥܠ ܩܨܘܡܘܗܝ ܘܢܬܕܠܚܘܢ. ܚܪܒܐ ܥܠ ܓܢܒܪܘܗܝ ܘܢܬܬܒܪܘܢ. * ܚܪܒܐ
ܥܠ ܪܟܫܗ ܘܥܠ ܡܪܟܒܬܗ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܒܓܘܗ. ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܢܫ̈ܐ.
ܚܪܒܐ ܥܠ ܓܙܘܗܝ ܘܢܬܒܙܘܢ. * ܚܪܒܐ ܥܠ ܡ̈ܝܘܗܝ ܘܢܝܒܫܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܪܥܐ ܕܦܣ̈ܠܐ
ܗܝ. ܘܒܦܬܟܪ̈ܐ ܡܫܬܒܗܪܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܥܡܪܘܢ ܒܗ ܣܝܪ̈ܢܘܣ. ܘܢܥܡܪܘܢ
ܒܗ ܒܢ̈ܬ ܝܥܢܐ. ܠܐ ܬܬܥܡܪ ܠܥܠܡ. ܘܠܐ ܬܬܝܬܒ ܠܕܪܕܪ̈ܝܢ. * ܘܬܗܘܐ ܐܝܟ ܗܦܟܬܐ
ܠܣܕܘܡ. ܕܗܦܟ ܐܢܝܢ ܐܠܗܐ ܘܠܡܥܡܪ̈ܢܝܗܝܢ. ܠܐ ܢܬܒ ܬܡܢ ܓܒܪ. ܘܠܐ ܢܥܡܪ ܒܗ ܒܪ
ܐܢܫ. * ܗܐ ܥܡܐ ܐܬܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܥܡܐ ܪܒܐ. ܘܡܠܟ̈ܐ ܣܓܝ̈ܐܐ ܢܬܬܥܝܪܘܢ ܡܢ ܣܘܦ̈ܝ
ܐܪܥܐ. * ܒܩܫܬܐ ܘܒܪ̈ܘܡܚܐ ܡܙܝܢܝܢ. ܒܝܫܝܢ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܡܪܚܡܝܢ. ܩܠܗܘܢ ܐܝܟ
ܝܡܐ ܕܡܬܬܙܝܥ. ܘܥܠ ܪ̈ܟܫܐ ܪܟܝܒܝܢ ܘܡܛܝܒܝܢ. ܐܝܟ ܓܢܒܪ̈ܐ. ܠܩܪܒܐ. ܥܠܝܟܝ ܒܪܬ
ܒܒܠ. * ܫܡܥ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܫܡܥܗܘܢ. ܘܐܬܪܦܝ ܐܝ̈ܕܘܗܝ. ܐܘܠܨܢܐ ܐܚܕܗ.
ܘܚܒܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ. * ܗܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܢܣܩ ܡܢ ܓܐܘܬܗ ܕܝܘܪܕܢܢ ܠܡܕܝܪܐ ܕܐܝܬܢ. ܡܛܠ
ܕܥܓܠ ܐܪܗܛ ܐܢܘܢ ܡܢܗ. ܘܠܥܠܝܡ̈ܝܗ ܐܫܠܛ ܒܗ. ܡܢܘ ܓܝܪ ܕܫܘܐ ܠܝ. ܐܘ ܡܢܘ
ܕܢܬܟܬܫ ܥܡܝ. ܐܘ ܡܢܘ ܪܥܝܐ ܕܢܩܘܡ ܠܘܩܒܠܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܡܥܘ ܬܪܥܝܬܗ
ܕܡܪܝܐ ܕܐܬܪܥܝ ܥܠ ܒܒܠ. ܘܡܚܫܒܬܗ ܕܐܬܚܫܒ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝ̈ܐ. ܕܢܣܚܒܘܢ ܐܢܘܢ ܙܥܘܪ̈ܝ
ܥܢܐ. ܘܢܚܪܒܘܢ ܥܠܝܗܘܢ ܕܝܪܬܗܘܢ. * ܡܢ ܩܠ ܐܬܐܚܕܬܗ ܕܒܒܠ. ܐܙܕܘܥܬ ܐܪܥܐ. ܘܩܠܗ
ܐܬܫܡܥ ܐܪܥܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܢܐ *

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܐ ܡܥܝܪ ܐܢܐ ܥܠ ܒܒܠ ܘܥܠ ܥܡܘܪ̈ܝܗ
ܠܒܐ ܩܫܝܐ. ܘܪܘܚܐ ܡܚܒܠܢܝܬܐ. * ܘܐܫܕܪ ܥܠ ܒܒܠ ܒܙ̈ܘܙܐ. ܘܢܒܙܘܢܗ̇ ܘܢܕܘܫܘܢ
ܐܪܥܗ. ܘܢܬܟܢܫܘܢ ܥܠܝܗ ܡܢ ܚܕܪ̈ܝܗ ܒܝܘܡܐ ܕܒܝܫܬܗ. * ܠܐ ܢܫܠܐ ܡܢ ܕܢܓܕ ܩܫܬܐ
ܘܠܐ ܢܫܪܐ ܫܪܝܢܗ ܡܩܪܒܢܐ. ܘܠܐ ܬܚܘܣܘܢ ܥܠ ܥܠܝܡ̈ܘܗܝ. ܚܪܘܒܘ ܟܠܗ ܚܝܠܗ
* ܘܢܦܠܘܢ ܩܛܝ̈ܠܐ ܒܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝ̈ܐ. ܘܕܩܝܪ̈ܐ ܒܫܘܩ̈ܝܗ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܬܐܪܡܠܘ ܝܫܪܝܠ
ܘܝܗܘܕܐ ܡܢ ܐܠܗܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܪܥܗܘܢ. ܐܬܡܠܝܬ ܥܘܠܐ ܩܕܡ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ
* ܥܪܘܩܘ ܡܢ ܓܘ ܒܒܠ. ܘܦܨܘ ܓܒܪ ܢܦܫܗ. ܠܐ ܬܬܕܥܟܘܢ ܒܚܛܝܬܗ. ܡܛܠ
ܕܙܒܢܐ ܗܘ ܕܦܘܪܥܢܗ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ ܗܘ ܦܪܥ ܠܗ.

* Gladius in hariolos ejus, & exagitabuntur: 36
gladius in heroes ejus, & confringentur:
Gladius in equos & currus ejus, & in omnes 37
advenas qui in ea ſunt, eruntque ſicut fœminæ:
gladius in theſauros ejus, & diripientur:
Gladius in aquas ejus, & areſient: quia ter- 38
ra eſt ſculpentium idola, & in ſimulacris gloriantur.
Propterea habitabunt in ea ſirenes, 39
& commorabuntur in ea filiæ ſtruthionum:
non habitabitur in æternum, neque incoletur
in generationem generationum: Sed erit
ſimilis Sodomæ & Gomorræ quas ſubvertit 40
Deus cum incolis earum: non habitabit ibi
quiſquam, neque commorabitur ibi ull⁹ mortalium,
Ecce populus veniet ex Aquilone, 41
popul⁹ ingens & reges multi excitabuntur
ab extremis terræ: Arcubus & lanceis ar- 42
mati, maligni ſunt & immites, vox eorum ut
mare agitatum; equis inſident, & parati ſunt
ut gigantes ad prælium contra te filia Babylonis.
Ut audivit rex Babelis famam eorum, 43
elanguerunt manus ejus, & triſtitiâ corrept⁹
eſt atque doloribus ut parturientis. Ecce 44
ſicut leo aſcendet è magnitudine Jordanis ad
habitaculum Ethan: quia citò expellam eos
ex ipſa, & juvenib⁹ poteſtatem dabo in ipſâ.
Quis enim mihi par eſt? aut quis confligat
mecum? aut quiſnam eſt paſtor qui mihi reſiſtat?
Iccircò audite conſilium Domini 45
quod cepit contra Babelem, & cogitationem
quam cogitavit contra terram Chaldæorum:
quòd raptabunt eos infimi inter gregem, &
vaſtabunt ſuper eos habitationem eorum.
Præ fragore captæ Babelis contremuit terra, 46
clamore ejus impletus eſt orbis.

CAP. LI.

* SIc ait Domin⁹ Deus potentiſſimus, Ecce 1
immiſſurus ſum in Babalem & in cives ejus,
cor durum & ſpiritum perniciosum: Et 2
mittam contra Babelem direptores qui diripient
eam, & conculcabunt terram ejus, &
congregabuntur adversùs eam circunquaque
in die calamitatis. Ne deſiſtat qui jaculatur 3
arcu, neque deponat loricam ſuam bellator:
ne parcatis juvenibus ejus, interficite totum
exercitum ejus, Cadántque confoſſi in ter- 4
ra Chaldæorum, & vulnerati in plateis ejus:
Quia non ſunt viduati Iſraelitæ & Judæi Deo 5
ſuo: quia terra illorum plena eſt iniquitate
coram ſancto Iſraelis. Fugite de medio Ba- 6
belis, & eripite quiſque ſeipſum, ne ſcelerſi
ejus pœnas luatis: tempus eſt enim retributionis
ejus à Domino, ſecundùm actiones ejus
ipſe rependet ei.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*وارسلت اليكم عبيدي الانبياء سحرا * وارسلت انا اليكم قايلا * لا تصنعوا امر هذا
الدنس الذي ابغضه * فلم يسمعوني ولا امالوا اذانهم ليرجعوا من شرورهم الا يبخروا لالهة
اخر * فقطر غضبي ورجزي واشتعل في مدن يهوذا ومن خارج ايروشليم * وصاروا للخراب
مثل هذا اليوم * والان هكذا قال الرب ضابط الكل * لماذا انتم تصنعون شرورا عظيمة
لنفوسكم * فاقطع منكم انسانا وامراة طفلا ومرضعا من وسط يهوذا * ليلا يبقي منكم ولا واحد
* لتمرمروني باعمال ايديكم وتبخروا لالهة اخر في ارض مصر التي دخلتم اليها لتسكنوا
هناك * لكي تقطعوا ولكي تكونوا للعنة وللتعيير في جميع امم الارض * لا تتناسوا
اعمال ايديكم * وشرور ملوك يهوذا * وشرور روسايكم * وشرور نسايكم * التي صنعوها في مدن
يهوذا ومن خارج ايروشليم * ولم ينكفوا الي هذا اليوم * ولم يتمسكوا باوامري التي اعطيتها
اباءهم * لاجل هذا هكذا قال الرب * ها انا اقف بوجهي لاهلاك جميع البقايا التي في مصر
* ويسقطون بالسيف وبالجوع يفنون من صغيرهم الي كبيرهم * ويكونون للتعيير
واللعنة * واطلع علي الجلوس في مصر كما تطلعت علي ايروشليم * بالسيف والجوع
وبالموت * ولا يكون من يخلص ولا واحد من بقايا يهوذا المقيمين بارض مصر
ليرجعوا الي ارض يهوذا التي هم يريدونها بنفوسهم ليرجعوا هناك * لا يرجعون
المتخلصون ثانية *

Et ad vos miſi ſervos meos prophetas diluculò; miſi inquã, ego ad vos, dicens, Ne 4
faciatis rem iſtã abominandam quã odi:
Attamen non audierunt me, nec aurem 5
ſuam inclinaverunt, ne retraherent ſe à
ſceleribus ſuis, ne adolerent diis alienis.
Ideoque ſtillavit ira mea & furor 6
meus, exarſitq; in urbes Judæ & in extrinſeca
Jeroſolymæ; ita ut redactæ ſint
in ruinam & ſolitudinem, quales ſunt hodierno die.
Nunc ergò ſic ait Dominus 7
omnipotens, Quare vos tanta mala committitis
in voſipſos, ut excindam è vobis
hominem & fœminam; puerum atq; lactentem
de medio Judæ; ut nemo veſtrum ſuperſit?
Ad exacerbandum me o- 8
peribus manuum veſtrarũ, & adolendum
diis alienis in terra Ægypti quam ingreſſi
eſtis ut habitaretis ibi: ut excindamini, et ut
ſitis maledictioni atque probro inter omnes
terræ gentes? Ne tradatis vos oblivioni 9
opera manuum veſtrarum, flagitia regum
Judæ, flagitia principum veſtrorum, &
flagitia uxorum veſtrarum, quæ commiſerunt
in urbibus Judæ & extra Jeruſalem,
Nunquam deſiſtentes ad hanc uſque 10
diem, neque tenentes præcepta mea quæ
propoſueram patribus eorum. Propterea 11
ſic ait Dominus; En ego ſiſtam faciem
meam, ut perdam cunctas reliquias
quæ ſunt in Ægypto; Occumbant gla- 12
dio, & fame pereant à minimo eorum
ad maximum uſque, ſintque probro, excidio,
& maledictioni. Et inviſam 13
degentes in Ægypto, quemadmodum inviſi
Jeroſolymam, gladio, fame, & peſte;
Nemoq; erit qui evadat, nec unus quidem, 14
ex reliquiis Judæ degentibus in terra
Ægypti, ut revertantur in terram Judæ,
ad quam ipſi redire ſe ſperant: haud revertentur
niſi qui ſecundò evaſerint.

ej⁹ vino de : terram omnem inebrians Domini manu in Babel auri Calix
כוס־זהב בבל ביד־יהוה משכרת כל־הארץ מיינה 7
, Babel cecidit Subitò .gentes inſanient ideo , gentes biberunt
שתו גוים על־כן יתהללו גוים: פתאם נפלה בבל 8
.ſanetur fortè ſi,ej⁹ dolorem ad *reſinam* tollite :eã ſuper ululate :eſt cõtrita &
ותשבר הילילו עליה קחו צרי למכאובה אולי תרפא:
ſuã terrã in *vir* eamus &,eã derelinquite:eſt curata non &,Babel Curavimus
רפאנו את־בבל ולא נרפתה עזבוה ונלך איש לארצו 9
.*æthera* ad uſque eſt elevatum & ,ejus judicium cœlos ad *pertigit* quoniã
כי־נגע אל־השמים משפטה ונשא עד־שחקים:
opus Sijon in narrem⁹ &,venite:noſtras juſtitias Dominus Eduxit
הוציא יהוה את־צדקתינו באו ונספרה בציון את־מעשה 10
ſuſcitavit : ſcuta congregate , ſagittas *Exacuite* .noſtri Dei Domini
יהוה אלהינו: הברו החצים מלאו השלטים העיר 11
,ejus cogitatio Babel *ſuper* quia , Madai regum ſpiritum Dominus
יהוה את־רוח מלכי מדי כי על־בבל מזמתו
muros *Ad* .ſui templi ultio , *ipſa* Domini ultio quoniã :eã *corrumpendũ ad*
להשחיתה כי־נקמת יהוה היא נקמת היכלו: אל־חומת 12
facite præparare ,cuſtodes ſtatuite ,cuſtodiam *roborate* ,*vexillum* levate Babel
בבל שאו־נס החזיקו המשמר הקימו שמרים הכינו
eſt locutus quæ fecit etiam,Dominus *eſt molitus* etiã quoniã : *inſidiatores*
הארבים כי גם־זמם יהוה גם־עשה את אשר־דבר
:theſaurorum *multa* ,multas aquas *ſuper tu Habitans* .Babel habitatores *ad*
אל־ישבי בבל: שכנתי על־מים רבים רבת אוצרת 13
:*ſua anima in* exercituũ Dominus Juravit .*tuæ appetentiæ cubitus*,tu⁹ finis venit
בא קצך אמת בצעך: נשבע יהוה צבאות בנפשו 14
Faciens .celeuſma te ſuper *concinent & ,brucho* velut,*homine* te replevero Niſi
כי אם־מלאתיך אדם כילק וענו עליך הידד: עשה 15
ſua prudentia in & : ſua ſapientia in orbem *firmans* ,ſua fortitudine in terram
ארץ בכחו מכין תבל בחכמתו ובתבונתו
faciet aſcẽdere & ,cœlis in aquarũ *tumultũ ipſum dare* vocẽ Ad .cœlos extendit
נטה שמים: לקול תתו המון מים בשמים ויעל 16
ventum eduxit & ,fecit pluviam in fulgura : terræ extremo ab *vapores*
נשאים מקצה־ארץ ברקים למטר עשה ויוצא רוח
eſt affectus pudore:ſcientia à homo omnis eſt effectus *Brutus* .ſuis theſauris de
מאצרתיו: נבער כל־אדם מדעת הביש 17
.eis in ſpiritus non & ,ej⁹ conflatio mendaciũ quia *:ſculptili* à aurifex omnis
כל־צורף מפסל כי־שקר נסכו ולא־רוח בם:
Non .peribunt eorũ viſitationis tempore in : errorum opus , *ipſi* Vanitas
הבל המה מעשה תעתעים בעת פקדתם יאבדו: לא־ 18 19
:ej⁹ hæreditatis ſceptrum & ,*ipſe* omniũ plaſmator quia,Jahacob pars hæc ſicut
כאלה חלק יעקוב כי־יוצר הכל הוא ושבט נחלתו
inſtrumenta ,mihi *tu* *ſpargens* Malleus .ej⁹ nomen exercituũ Dominus
יהוה צבאות שמו: מפץ־אתה לי כלי 20
.regna te *in corrumpam* &,gentes te *in* diſperſione conteram & : *belli*
מלחמה ונפצתי בך גוים והשחתי בך ממלכות:
,currum te *in* conteram & : ejus *equitantem* &,equum te *in contritum ſpargam* Et
ונפצתי בך סוס ורכבו ונפצתי בך רכב 21
conteram & ; mulierem & , virum te *in contritum ſpargam* Et .ej⁹ *equitantem* &
ורכבו: ונפצתי בך איש ואשה ונפצתי 22
conteram Et .virginem & ,juvenem te *in* conteram & : puerum & ſenem te *in*
בך זקן ונער ונפצתי בך בחור ובתולה: ונפצתי 23
:ej⁹ jugalẽ & agricolam te *in ſpargam contritum* & ,ej⁹ gregem & ,paſtorem te *in*
בך רעה ועדרו ונפצתי בך אכר וצמדו
cunctis & ,Babel *ipſi* reddam Et .*magiſtratus* & , duces te *in* conteram &
ונפצתי בך פחות וסגנים: ושלמתי לבבל ולכל 24
Sijon in fecerunt quod eorum malum omne Chaſdim habitatoribus
יושבי כשדים את כל־רעתם אשר־עשו בציון
.Dominus dixit ,veſtris oculis in
לעיניכם נאם יהוה:

Verſio VULG. LAT.

7 Calix aureus Babylon in manu
Domini, inebrians omnem ter-
ram : de vino ej⁹ biberunt Gen-
8 tes, & ideò commotæ ſunt. Su-
bitò cecidit Babylon, & contri-
ta eſt : ululate ſuper eam, tollite
reſinam ad dolorem ej⁹, ſi fortè
9 ſanetur. Curavim⁹ Babylonem,
& non eſt ſanata : derelinquam⁹
eam , & eamus unuſquiſque in
terram ſuam : quoniam perve-
nit uſque ad cœlos judicium
ejus , & elevatum eſt uſque ad
10 nubes. Protulit Domin⁹ juſtitias
noſtras : venite, & narremus in
Sion opus Domini Dei noſtri.
11 Acuite ſagittas, implete phare-
tras : ſuſcitavit Domin⁹ ſpiritũ
regum Medorum : & contra Ba-
bylonem mens ejus eſt ut perdat
eam, quoniã ultio Domini eſt, ul-
12 tio templi ſui Super muros Ba-
bylonis levate ſignũ, augete cu-
ſtodiã : levate cuſtodes, præpa-
rate inſidias : quia cogitavit Do-
min⁹, & fecit quæcunq; locutus
eſt contra habitatores Babylo-
13 nis. Quæ habitas ſuper aquas mul-
tas, locuples in theſauris, venit fi-
nis tu⁹ pedalis præciſionis tuæ.
14 Juravit Domin⁹ exercituum per
animam ſuã ; Quoniã replebo
te hominib⁹ quaſi brucho, & ſu-
15 per te celeuma cantabitur. Qui
fecit terrã in fortitudine ſua, præ-
paravit orbem in ſapientia ſua,
& prudentiâ ſuâ extendit cœlos.
16 Dante eo vocẽ, multiplicantur
aquæ in cœlo : qui levat nubes
ab extremo terræ, fulgura in plu-
viam fecit : & produxit ventũ de
17 theſauris ſuis. Stult⁹ factus eſt
omnis homo à ſcientia: cõfuſ⁹ eſt
omnis conflator in ſculptili: quia
mendax eſt conflatio eorũ , nec
18 eſt ſpirit⁹ in eis. Vana ſunt ope-
ra, & riſu digna, in tempore vi-
19 ſitationis ſuæ peribunt. Non ſi-
cut hæc, pars Jacob : quia qui fe-
cit omnia ipſe eſt, & Iſrael ſce-
ptrum hæreditatis ejus : Domin⁹
20 exercituum nomen ej⁹. Collidis
tu mihi vaſa belli, & ego collidã
in te Gentes, & diſperdã in te
21 regna: Et collidã in te equum &
equitem ej⁹ : & collidã in te cur-
22 rum & aſcenſorem ej⁹ : Et col-
lidam in te virum & mulierem :
& collidã in te ſenem et puerũ :
& collidam in te juvenem & vir-
23 ginem : Et collidam in te paſtorem & gregem ejus : & collidam in te agricolam & jugales ejus : &
24 collidam in te duces & magiſtratus. Et reddam Babyloni, & cunctis habitatoribus Chaldææ, omne
malum ſuum, quod fecerunt in Sion, in oculis veſtris, ait Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

15 Καὶ ἀπεκρίθησαν τῷ Ἱερεμίᾳ (σ) πάντες
οἱ ἄνδρες οἱ γνόντες, ὅτι θυμιῶσιν αἱ γυ-
ναῖκες (˜) αὐτῶν, καὶ πᾶσαι αἱ γυναῖκες,
συναγωγὴ μεγάλη, καὶ πᾶς ὁ λαὸς οἱ καθ-
ήμενοι (τ) ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, ἐν Παθουρῇ,
16 λέγοντες, Ὁ λόγος ὃν ἐλάλησας πρὸς
ἡμᾶς τῷ ὀνόματι κυρίου, οὐκ (υ) ἀκουσό-
17 μεθά σου, Ὅτι ποιοῦντες ποιήσομεν πάν-
τα τὸν λόγον, ὃς ἐξελεύσεται ἐκ τοῦ στό-
ματος ἡμῶν, θυμιᾶν τῇ βασιλίσσῃ τοῦ οὐ-
ρανοῦ, καὶ σπένδειν αὐτῇ σπονδάς, καθὰ ἐ-
ποιήσαμεν ἡμεῖς καὶ οἱ πατέρες ἡμῶν, καὶ
οἱ βασιλεῖς ἡμῶν, καὶ οἱ ἄρχοντες ἡμῶν,
ἐν πόλεσιν Ἰούδα καὶ ἔξωθεν Ἱερουσαλήμ·
καὶ ἐπλήσθημεν ἄρτων, καὶ (φ) ἐγενόμεθα
18 χρηστοί, καὶ κακὰ οὐκ εἴδομεν. Καὶ ὡς διε-
λίπομεν θυμιῶντες τῇ βασιλίσσῃ τοῦ οὐ-
ρανοῦ, (χ) ἠλαττώθημεν πάντες, καὶ ἐν ῥομ-
19 φαίᾳ καὶ ἐν λιμῷ ἐξελίπομεν. Καὶ ὅτι (ψ)
ἡμεῖς ἐθυμιῶμεν τῇ βασιλίσσῃ τοῦ οὐρανοῦ,
(ω) καὶ ἐσπείσαμεν αὐτῇ σπονδάς, μὴ ἄνευ
τῶν ἀνδρῶν ἡμῶν ἐποιήσαμεν αὐτῇ χαυ-
20 ῶνας, καὶ ἐσπείσαμεν αὐτῇ σπονδάς; Καὶ
εἶπεν Ἱερεμίας παντὶ τῷ λαῷ, τοῖς δυνα-
τοῖς καὶ ταῖς γυναιξὶ, καὶ παντὶ τῷ λαῷ τοῖς
21 ἀποκριθεῖσιν αὐτῷ λόγους, λέγων, Οὐχὶ
τοῦ θυμιάματος οὗ (α) ἐθυμιάσατε ἐν ταῖς
πόλεσιν Ἰούδα, καὶ ἔξωθεν Ἱερουσαλήμ,
ὑμεῖς καὶ οἱ πατέρες ὑμῶν, καὶ οἱ βασιλεῖς
ὑμῶν, καὶ οἱ ἄρχοντες ὑμῶν, καὶ ὁ λαὸς τῆς
γῆς, ἐμνήσθη κύριος; καὶ ἀνέβη ἐπὶ τὴν
22 καρδίαν αὐτοῦ; Καὶ οὐκ ἠδύνατο κύριος
ἔτι φέρειν ἀπὸ προσώπου πονηρίας πραγ-
μάτων (β) ὑμῶν, καὶ ἀπὸ τῶν (γ) βδελυγ-
μάτων ὑμῶν ὧν ἐποιήσατε. καὶ (δ) ἐγενήθη
ἡ γῆ ὑμῶν εἰς ἐρήμωσιν, καὶ εἰς ἄβα-
τον, καὶ εἰς ἀρὰν, ὡς ἐν τῇ ἡμέρᾳ ταύτῃ,
23 Ἀπὸ προσώπου ὧν ἐθυμιᾶτε, καὶ ὧν ἡ-
μάρτετε τῷ κυρίῳ. καὶ οὐκ ἠκούσατε τῆς
φωνῆς κυρίου, καὶ ἐν τοῖς προστάγμασιν
αὐτοῦ, καὶ ἐν τῷ (ε) νόμῳ, καὶ ἐν τοῖς μαρτυ-
ρίοις αὐτοῦ οὐκ ἐπορεύθητε, καὶ ἐπελάβε-
24 το ὑμῶν τὰ κακὰ ταῦτα. Καὶ εἶπεν Ἱε-
ρεμίας τῷ λαῷ, καὶ ταῖς γυναιξὶν, Ἀκούσατε
λόγον κυρίου·

Et reſponderunt Hieremiæ omnes viri, qui ſciebant quod adolent uxores ſuæ, & omnes mulieres, ſynagoga magna, & omnis populus ſedentes in terra Ægypto in Pathure, dicentes; Verbum, quod 16 *loquutus es ad nos nomine Domini, non audiemus te:* 17 *Quia (i) facientes faciemus omne verbum, quod egredietur ex ore noſtro, adolendo reginæ cœli, & libando ei libamina ſicut fecimus nos, & patres noſtri, & reges noſtri, & principes noſtri in civitatibus Juda, & (k) extra Hieruſalem: & impleti ſumus panibus, & fuimus jucundi, & mala non vidimus.* 18 *Et ut omiſimus adolentes reginæ cœli, imminuti ſumus omnes: & in gladio, & in fame defecimus.* 19 *Et quia nos adolebamus reginæ cœli, & libavimus ei libamina; nunquid ſine viris noſtris fecimus ei placentas, & libavimus ei libamina?* 20 *Et dixit Hieremias omni populo, potentibus, & mulieribus, & omni populo iis qui reſponderant ei verba, dicens;* 21 *Nonne incenſi, quod adolebatis in civitatibus Juda, & extra Hieruſalem, vos, & patres veſtri, & reges veſtri, & principes veſtri, & populus terræ, meminit Dominus? & aſcendit ſuper cor ejus?* 22 *Et non potuit Dominus ultra ferre à facie malitiæ rerum veſtrarum, & à veſtris abominationibus, quas feciſtis. Et facta eſt terra veſtra in deſolationem, & in invium, & in maledictum, ſicut dies hæc,* 23 *A facie eorum, quæ adolebatis, & quæ peccabatis Domino. Et non audiſtis vocem Domini: & in præceptis ejus, & in lege, & in teſtimoniis ejus non ambulaſtis: & apprehenderunt vos mala hæc.* 24 *Et dixit Hieremias populo, & mulieribus; Audite verbum (l) Domini:*

MS.A. (σ) ἅπαντες (˜) αὐτῶν θεοῖς ἑτέροις, καὶ (τ) ἐν Αἰγύπτῳ, (υ) ἀκουσόμεθα (φ) ἐγενάμεθα (χ) ἠλαττονώθημεν ἡμεῖς, καὶ εἰ (ψ) θυμιῶμεν ἡμεῖς (ω) καὶ εἰ ἐσπείσαμεν (α) ἐθυμιάσατο (β) ὑμῶν, ἀπὸ (γ) βδελυγμάτων ὧν (δ) ἐγένετο (ε) νόμῳ αὐτοῦ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

הא ככסא דדהבא דהוא רגיג מכל מניא כן עלי חובה דבבל בכן פורענות תקיפא 7
עתידא דייתי לה מן קדם יי עתידין דיתרוון מנה רוון כל מלכי עממיא ומכס פורענותא
ישתון עממיא על כן ישתגשון עממיא: בתכיף נפלת בבל ואתברת אלילו עלה סבו 8
שעיף לתבירה מאים תתסי: אסינא ית בבל ולא מתסיא שבקוהא וניזיל גבר לארעיה 9
ארי קריב לשמיא תבירה ומנטל עד שמי שמיא: גלא יי ית זכותנא איתו ונשתעי בציון 10
ית עובדא די עביד יי אלהנא: שנינו גרריא מלו שלטיא אעיר יי ית רוח מלכי מדי ארי 11
על בבל רעותיה לחבלותה ארי פורענותא דיי היא פורענות היכליה: על שורי בבל 12
זקופו אתא אתקיפו מטרתא אקימו נטריא אתקינו חכניא ארי אף חשיב יי אף עבד ית
דמלל על יתבי בבל: דשריא על מיין סגיאין סגיאין בית גנזהא מטא יום תבריך עדן 13
סעורת בישותיך: קים יי צבאות במימריה אלהן אמלניך משרית עממין סגיאין כזחלא 14
וירימון עלך קלהון: אמר אלין דעבד ארעא בחיליה שכליל תבל בחוכמתיה 15
ובסוכלתנותיה תלא שמיא: לקל מתניה רכפת דמין בשמיא ומסיק עננין מסיפי ארעא 16
ברקין לזמן מטרא עביד ומפיק רוחין מבית גנזוהי: אטפשו כל עממיא מלמדע 17
חוכמתא בהית כל קיני מלמעבד צלם ארי שקרא אתיכונון ולא רוחא בהון: למא 18
אנון עובד חולעבא בעדן דאסער עליהון חוביהון ייבדון: לא כאלין חולקיה דיעקב 19
ארי די ברא כולא הוא וישראל חולק שבטא דאחסנתיה יי צבאות שמיה: מבדר את 20
קדמי כרכא די ביה מני קרבא ואבדר בך עממין ואחביל בך מלכון: ואבדר בך סוסון 21
ורתיכיהון ואבדר בך רתיכין ורכביהון: ואבדר בך גבר ואתא ואבדר בך סב ויניק 22
ואבדר בך עולימין ובתולן: ואבדר בך רעיא ועדריה ואבדר בך אכר ופדניה ואבדר בך 23
שלטונין וטורנין: ואשלם לבבל ולכל יתבי ארעא כסדאי ית כל בישתהון דעבדו 24
בציון לעיניכון אמר יי:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ecce ſicut calix aure⁹ qui eſt deſiderabilis præ cunctis vaſis ; ſic ſupremum eſt peccatum Babylonis : ideò ultio gravis ventura eſt contra eam à facie Dñi. Futurum eſt ut inebrientur ex ea ebrii omnes reges populorum, & de calice ultionis bibent populi; propterea conturbabuntur populi. Subitò cecidit Babylon, & contrita eſt. Ululate ſup eam : tollite reſinam contritioni ej⁹, ſi fortè ſanabitur. Curavim⁹ Babylonem, & non eſt ſanata : relinquite eam, & eam⁹ unuſquiſque in terram ſuam : quoniam appropinquavit uſque ad cœlos confractio ej⁹, & ſublata eſt uſque ad cœlos cœlorum. Revelavit Domin⁹ juſtitiam noſtram, venite et annuntiem⁹ in Sion op⁹ quod fecit Dñs Deus noſter. Acuite ſagittas & implete pharetras. Suſcitavit Dñs ſpiritum regũ Medorũ, quia contra Babylonẽ eſt voluntas ej⁹ ut diſperdat eã quia ultio Dñi eſt, ultio templi ej⁹. Sup muros Babylonis levate ſignũ; roborate cuſtodiam; ſuſcitate cuſtodes; præparate inſidias :quia cogitavit Dñs, etiam fecit quod locut⁹ eſt ſup habitatores Babylonis. Quæ habitat ſup aquas multas, multi ſunt dom⁹ theſaurorum ej⁹: pervenit dies interit⁹ tui, temp⁹ viſitationis malitiæ tuæ. Juravit Domin⁹ exercituũ in verbo ſuo, Niſi implevero te exercitib⁹ populorũ multorũ quaſi reptiliũ, & tollent ſup te vocẽ ſuam. Dixit hæc, qui fecit terrã virtute ſua, fundavit orbẽ ſapientia ſua, & prudentia ſua appendit cœlos. Ad vocẽ ej⁹ qui dat tumultũ aquarũ in cœlis, & [illegible]hit nubes ab extremis terræ, fulgura in tempore pluviæ fecit, & adduxit ventos de domo theſaurorũ ſuorũ. Inſipientes facti ſunt omnes populi ut neſciant ſapientiã. Confuſus eſt omnis argentarius à faciendo ſimulacrum quia falſa ſunt quæ *conflaverunt*, nec eſt ſpirit⁹ in eis. Vana ſunt, opera illuſionis : in tempore quo viſitavero ſup eos peccata ipſorũ, peribunt. Non ſi ejuſmodi eſt pars Jacob: quia qui creavit omnia, ipſe eſt, & Iſrael eſt tribus hæreditatis ejus, Dominus exercituũ nomen ejus. Diſſipator tu es coram me, civitas in qua ſunt arma bellica, & diſpergã in te populos, & diſſipabo in te regna. Et diſpergam in te equos & currus *eorum*; & diſpergam in te *currus*, & *aſcenſores eorum*. Et diſpergã in te virum & mulierem : & diſpergam in te ſenem & infantem: & diſpergam in te juvenes & virgines. Et diſpergam in te paſtorem et gregem ejus ; & diſpergam in te agricolam et par boum ejus : et diſpergam in te dominatores et duces. Et reddam Babyloni et omnibus habitatoribus terræ Chaldæorum omne malum quod fecerunt in Sion, in oculis veſtris, dicit Dominus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܟܣܐ ܕܕܗܒܐ ܒܒܠ ܒܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܂ ܕܡܪܘܝܐ ܠܟܠܗ ܐܪܥܐ ܡܢ ܚܡܪܗ ܂ ܘܐܫܬ
ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܂ ܘܐܬܬܙܝܥܘ ܂ * ܡܢ ܫܠܝܐ ܢܦܠܬ ܒܒܠ ܘܐܬܬܒܪܬ ܂ ܐܝܠܠܘ ܥܠܝ
ܣܒܘ ܣܡܡܢܐ ܠܟܐܒܝܗ ܂ ܐܢ ܢܬܐܣܐ ܂ * ܐܣܝܢܗ ܠܒܒܠ ܂ ܘܠܐ ܐܬܐܣܝܬ
ܫܒܘܩܘܗ ܘܢܐܙܠ ܐܢܫ ܠܐܪܥܗ ܂ ܡܛܠ ܕܡܛܐ ܠܫܡܝܐ ܕܝܢܗ ܂ ܘܐܬܪܝ
ܥܕܡܐ ܠܥܢܢܐ ܂ * ܐܦܩ ܡܪܝܐ ܙܕܩܘܬܢ ܂ ܬܘ ܢܫܬܥܐ ܒܨܗܝܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܡܪܝ
ܐܠܗܢ ܂ * ܚܪܘܦܘ ܓܐܪܐ ܂ ܡܠܘ ܫܠܛܐ ܂ ܐܥܝܪ ܡܪܝܐ ܪܘܚܐ ܕܡܠܟܐ ܕܡܕܝ ܂ ܡܛܠ
ܕܥܠ ܒܒܠ ܬܪܥܝܬܗ ܠܡܚܒܠܘܬܗ ܂ ܡܛܠ ܕܦܘܪܥܢܗ ܗܘ ܕܡܪܝܐ ܂ ܘܬܒܥ
ܗܝܟܠܗ ܂ * ܥܠ ܫܘܪܝܗ ܕܒܒܠ ܐܩܝܡܘ ܐܬܐ ܂ ܐܫܪܘ ܢܛܘܪܐ ܘܛܒܥ
ܒܡܝܐ ܂ ܡܛܠ ܕܓܡܪ ܡܪܝܐ ܡܕܡ ܕܐܬܪܥܝ ܥܠ ܒܒܠ ܕܫܪܝܐ ܗܘܬ ܥܠ ܡܝܐ ܣܓܝ
* ܣܓܝܐܝܢ ܓܙܝܟܝ ܂ ܡܛܠ ܕܡܛܐ ܚܪܬܟܝ ܘܐܬܩܦܬ ܡܚܘܬܟܝ ܂ * ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠ
ܒܢܦܫܗ ܂ ܕܐܡܠܝܟܝ ܐܢܫܐ ܐܝܟ ܩܡܨܐ ܂ ܘܢܥܢܘܢ ܥܠܝܟܝ ܘܢܐܡܪܘܢ ܂ ܗܘ
ܗܘ ܂ * ܡܪܝܐ ܥܒܕ ܐܪܥܐ ܒܚܝܠܗ ܂ ܘܐܬܩܢ ܬܒܝܠ ܒܚܟܡܬܗ ܂ ܘܒܣܘܟܠ
ܡܬܚ ܫܡܝܐ ܂ * ܢܬܠ ܩܠܐ ܕܪܥܡܐ ܕܡܝܐ ܒܫܡܝܐ ܂ ܘܡܣܩ ܥܢܢܐ ܡܢ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪ
ܘܒܪܩܐ ܠܡܛܪܐ ܥܒܕ ܂ ܘܡܦܩ ܪܘܚܐ ܡܢ ܐܘܨܪܘܗܝ ܂ * ܐܣܬܟܠ ܟܠܒܪܢܫܐ ܡܢ ܝܕ
ܒܗܬܘ ܟܠ ܨܐܪܐ ܡܢ ܦܬܟܪܐ ܕܥܒܕܘ ܂ ܡܛܠ ܕܕܓܠܘܬܐ ܢܣܟܘ ܘܠܝܬ ܒܗ
ܪܘܚܐ ܂ * ܠܐ ܡܕܡ ܐܢܘܢ ܂ ܘܥܒܕܐ ܐܢܘܢ ܫܝܛܐ ܂ ܒܝܘܡܐ ܕܡܬܦܩܕܝܢ ܢܐܒܕܘܢ ܂ *
ܐܝܟ ܕܗܠܝܢ ܡܢܬܗ ܕܝܥܩܘܒ ܂ ܐܠܐ ܡܢ ܕܒܪܐ ܟܠ ܂ ܗܘܝܘ ܡܢܬܗܘܢ ܂ ܘܫܒ
ܝܪܬܘܬܗܘܢ ܂ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ ܂ * ܛܝܒܘ ܠܝ ܡܐܢܐ ܕܩܪܒܐ ܂ ܐܒܕ ܒܟ
ܥܡܡܐ ܂ ܘܐܚܒܠ ܒܟܝ ܡܠܟܘܬܐ ܂ * ܘܐܒܕ ܒܟܝ ܣܘܣܝܐ ܘܪܟܒܝܗܘܢ ܂ ܘܐܒܕ ܒܟ
ܡܪܟܒܬܐ ܘܪܟܒܝܗܘܢ ܂ * ܘܐܒܕ ܒܟܝ ܓܒܪܐ ܘܢܫܐ ܂ ܘܐܒܕ ܒܟܝ ܣܒܐ ܘܛܠ
ܥܠܝܡܐ ܘܒܬܘܠܬܐ ܂ * ܘܐܒܕ ܒܟܝ ܪܥܝܐ ܘܡܪܥܝܬܗ ܂ ܘܐܒܕ ܒܟܝ ܐܟܪܐ ܘܨܡ
ܘܐܒܕ ܒܟܝ ܦܚܘܬܐ ܘܫܠܝܛܢܐ ܂ * ܘܐܦܪܘܥ ܠܒܒܠ ܂ ܘܠܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܟ
ܕܟܠܕܝܐ ܂ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܥܒܕܘ ܒܨܗܝܘܢ ܂ ܠܥܝܢܝܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܂

7 Calix aureus eſt Babel in manu Domini, inebrians totam terram vino ſuo: biberunt omnes gentes, & turbatæ ſunt. 8 Repentè corruit Babel, & confracta eſt: ululate propter eam: capite medicamina doloribus ejus, ſi fortè ſanetur, 9 Curavimus Babelem, & non eſt ſanata: relinquamus eam, & abeamus quiſque in patriam ſuam: (nam pervenit ad cœlum uſque judicium ejus, & extulit ſe ad nubes uſque) 10 Proferet Dominus innocentiam noſtram. Venite, narremus in Sione facinora Domini Dei noſtri. 11 Cogite pharetras, implete ſagittis: excitavit Dominus ſpiritum regis Mediæ, quia Babelem deſtruere deſtinavit: nam retributio Domini eſt, & ultio templi ſui. 12 Super muros Babelis erigite vexillum, ſtatuite excubias, & eam aquis immergite: nam perfecit Dominus quod decreverat contra Babelem quæ ſita erat inter aquas multas. Multi ſunt theſauri tui, *ſed* appropinquavit finis tuus, & invaluit plaga tua. 14 Juravit Dominꝰ potentiſſimus ꝑ ſemetipſum, *dicens*; Implebo te hominibus ut locuſtis, qui de te concinent ac dicent; Hem, hem. 15 Dominus terram fecit potentiâ ſuâ, condidit orbem ſapientiâ ſuâ, & prudentiâ ſuâ cœlum extendit. 16 Qui edit ſonum fragoris aquarum in cœlo, elicit nubes è terræ finibus, fulgura in pluviam vertit, profert ventos ex horreis ſuis. 17 Stultus factus eſt omnis homo potiùs quàm ut cognitionem aſſequatur: pudefacti ſunt omnes fuſores propter ſculptilia quæ fecerunt, quia mendacia fuderunt quibus nullus ineſt ſpiritus. 18 Nihil ſunt, opificia ſunt ſtolida: quo die viſitabuntur, peribunt. 19 Non ut iſtorum *(opificum)* eſt portio Jacobi; ſed qui omnia creavit, is eſt eorum portio; & virga hæreditatis eorum, Dominus potentiſſimus vocatur. 20 Parate mihi vaſa bellica: diſperdam propter te gentes, & extinguam propter te regna: 21 Diſperdam propter te equos & iis inſidentes, & propter te diſperdã currꝰ & ſeſſores eorum: 22 Diſpergam propter te viros ac mulieres, & diſpergam propter te ſenes juveneſque, & propter te diſpergã adoleſcentes ac virgines: 23 Diſperdam pro te paſtorem & gregem ejus, diſperdã pro te aratorem & jugum boum ejus, & pro te diſperdam tyrannos ac principes: 24 Denique rependam Babeli & cunctis habitatoribus Chaldæis, totum malum quo Sionem affecerant, ſpectantibus vobis, ait Dominus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح الثاني والثلاثون *

* فاجاب ارميا جميع الرجال العارفين ان نساهم بخرن لالهة اخرى * وجميع النسوة جمع
عظيم * وكل الشعب الحلول بمصر في باثروس قايلين * القول الذي تكلمت
معنا به باسم الرب لم نسمعه منك * لاننا صانعين نصنع كل القول الذي يخرج من
فمنا لنبخر لملكة السماء ونريق لها قوارير * كما صنعنا نحن واباونا وملوك
ورؤساونا في مدن يهودا ومن خارج ايروشليم • وامتلانا خبزا وصرنا طيبين • ولم نعا
شرورا * ولما فرغنا نبخر لملكة السماء عوزنا نحن • وبالسيف والجوع فنينا * و
نحن نبخر لملكة السماء • وان كنا فرغنا لها قوارير * هل من دون رجالنا صنعنا
لها قرابين وافرغنا لها قوارير * فقال ارميا لكل الشعب • للاقوياء وللنساء ولكل
الشعب الذين جاوبوه بهذه الاقوال قايلا * اليس البخور الذي بخرتم به في مدن
يهودا ومن خارج ايروشليم انتم واباوكم وملوككم ورؤساوكم وشعب الارض
ذكره الرب وصعد على قلبه * ولم يستطيع الرب ان يحتمل ايضا من وجه شر اعمالكم
ومن الرذالات التي صنعتموها • وصارت ارضكم للخراب وللقفر وللعنة • كما في هذا اليوم
* من وجه ما بخرتم به وما اخطاتم به للرب • ولم تسمعوا صوت الرب • وفي اوامره وفي ناموسه
وفي شهاداته لم تسيروا • فادرككم هذه الشرور * وقال ارميا للشعب وللنسوة اسمعوا
قول الرب •

Textus trigeſimus ſecundus.

15 Reſponderunt autem Jeremiæ omnes viri qui ſciebant uxores ſuas adoleviſſe diis alienis, & omnes mulieres, turba magna, totuſque populus qui commorabantur in Ægypto in Bathroe, dicentes; 16 Sermonem quo nos allocutus es nomine Domini, non auſcultabimus à te: 17 Imò planè facturi ſumus omnem ſermonem qui egredietur ex ore noſtro, adolentes reginæ cœli, & fundentes ei alabaſtra, quemadmodum fecimus nos & majores noſtri, & reges ac principes noſtri in urbibus Judæ & extra Jeruſalem: nam pane abundabamus, proſperi eramus, nec ſentiebamus incommoda. 18 Poſtquam verò deſivimus adolere reginæ cœli, indigi facti ſumus, & gladio ac fame defecimus. 19 Quòd autem adoleamus reginæ cœli, eique fuderimus alabaſtra, num abſque maritis noſtris fecimus ei oblationes, & alabaſtra fudimus illi? 20 Dixit Jeremia toti populo, tam fortibus quàm fœminis totique turbæ quæ reſponderat ei hujuſcemodi ſermonibus, dicens; 21 An non thuris illius, quod in urbibus Judæ & extra Jeruſalem adoleviſtis vos ac patres veſtri, & reges ac principes veſtri, terræque populus; recordatus eſt Dominus, eique venit in memoriam? 22 Cùmque non poſſit ampliùs tolerare Dominus propter nequitiam operum veſtrorum, & propter abominationes quas egiſtis; facta eſt terra veſtra in vaſtitatem, ſolitudinem, & maledictionem, quemadmodum eſt hodierno die. 23 Eò quòd adoleviſtis & peccâſtis in Dominum, neque paruiſtis voci Domini, & in præceptis, lege, atque teſtimoniis ejus non ambulâſtis; proptereà evenerunt vobis hæc mala. 24 Dixit etiam Jeremia populo & mulieribus; Audite ſermonem Domini.

: terram omnem *corrumpens* Dominus dixit , *corruptor* mons te ad ego Ecce
25 הִנְנִי אֵלֶיךָ הַר הַמַּשְׁחִית נְאֻם־יְהוָה הַמַּשְׁחִית אֶת־כָּל־הָאָרֶץ
te *dabo* & , petris de te evolvam & , te super meam manum extendam &
וְנָטִיתִי אֶת־יָדִי עָלֶיךָ וְגִלְגַּלְתִּיךָ מִן־הַסְּלָעִים וּנְתַתִּיךָ
lapidem & , angulo lapidem te de tollent non Et .combustionis montem *in*
26 לְהַר שְׂרֵפָה׃ וְלֹא־יִקְחוּ מִמְּךָ אֶבֶן לְפִנָּה וְאֶבֶן
vexillum Levate .Dominus dixit , eris *seculi* desolationes sed : fundamentis
27 לְמוֹסָדוֹת כִּי־שִׁמְמוֹת עוֹלָם תִּהְיֶה נְאֻם־יְהוָה׃ שְׂאוּ־נֵס
illā *super promulgate* , gentes eam *super consecrate* :gentibus in buccina clangite,terra in
בָּאָרֶץ תִּקְעוּ שׁוֹפָר בַּגּוֹיִם קַדְּשׁוּ עָלֶיהָ גּוֹיִם הַשְׁמִיעוּ עָלֶיהָ
facite ascēdere,principem *ea super* præficite : Aschenaz & ,Minni , Ararat regna
מַמְלְכוֹת אֲרָרַט מִנִּי וְאַשְׁכְּנָז פִּקְדוּ עָלֶיהָ טִפְסָר הַעֲלוּ־
, Madai reges gentes eam *super Sanctificate* .*horripilantem bruchum sicut equum*
28 סוּס כְּיֶלֶק סָמָר׃ קַדְּשׁוּ עָלֶיהָ גוֹיִם אֶת־מַלְכֵי מָדַי
.ejus potestatis terram cunctámque ,ejus *magistratus* universos & ,ejus duces
אֶת־פַּחוֹתֶיהָ וְאֶת־כָּל־סְגָנֶיהָ וְאֵת כָּל־אֶרֶץ מֶמְשַׁלְתּוֹ׃
Domini *cogitationes* Babel *super* est firmata quia :dolebit & , terra contremiscet Et
29 וַתִּרְעַשׁ הָאָרֶץ וַתָּחֹל כִּי קָמָה עַל־בָּבֶל מַחְשְׁבוֹת יְהוָה
fortes Cessaverunt .*habitatore absque* ,solitudinem in Babel terram *ponendum ad*
30 לָשׂוּם אֶת־אֶרֶץ בָּבֶל לְשַׁמָּה מֵאֵין יוֹשֵׁב׃ חָדְלוּ גִבּוֹרֵי
fuerunt ,eorum fortitudo *defecit* , munitionibus in sederunt , pugnare Babel
בָבֶל לְהִלָּחֵם יָשְׁבוּ בַּמְּצָדוֹת נָשְׁתָה גְבוּרָתָם הָיוּ
occursum in Cursor .ejus vectes sunt contriti ,ejus habitacula incenderunt :mulieres *in*
31 לְנָשִׁים הִצִּיתוּ מִשְׁכְּנֹתֶיהָ נִשְׁבְּרוּ בְרִיחֶיהָ׃ רָץ לִקְרַאת־
quod , Babel regi nuntiandum ad :nuntii occursum in nuntius & ,curret cursoris
רָץ יָרוּץ וּמַגִּיד לִקְרַאת מַגִּיד לְהַגִּיד לְמֶלֶךְ בָּבֶל כִּי־
arundines & ,sunt comprehensa vada Et .*fine à* ejus civitas sit capta
32 נִלְכְּדָה עִירוֹ מִקָּצֶה׃ וְהַמַּעְבָּרוֹת נִתְפָּשׂוּ וְאֶת־הָאֲגַמִּים
dixit sic Quia .fuerunt territi *belli* viri & : igni *in* combusserunt
33 שָׂרְפוּ בָאֵשׁ וְאַנְשֵׁי הַמִּלְחָמָה נִבְהָלוּ׃ כִּי כֹה אָמַר
: eam *calcare* tempus ; area tanquam Babel filia , Israel Deus exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל בַּת־בָּבֶל כְּגֹרֶן עֵת הִדְרִיכָהּ
me *contrivit* , me Comedit .ei messis tempus veniet & , paululum adhuc
34 עוֹד מְעַט וּבָאָה עֵת־הַקָּצִיר לָהּ׃ אֲכָלַנוּ הֲמָמַנוּ
replevit,draco veluti me absorbuit ,inane vas me statuit,Babel rex Nebuchadresar
נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ בָּבֶל הִצִּיגַנוּ כְּלִי רִיק בְּלָעַנוּ כַּתַּנִּין מִלָּא
, Babel super ,*mea caro &* ,*mei Rapina* .me *expulit* : meis deliciis suum ventrem
35 כְרֵשׂוֹ מֵעֲדָנָי הֱדִיחָנוּ׃ חֲמָסִי וּשְׁאֵרִי עַל־בָּבֶל
.Jerusalaim dicat , Chasdim habitatores *ad* meus sanguis & :Sijon habitatrix dicat
תֹּאמַר יֹשֶׁבֶת צִיּוֹן וְדָמִי אֶל־יֹשְׁבֵי כַשְׂדִּים תֹּאמַר יְרוּשָׁלִָם׃
:tuam ultionem ulciscar &,tuā *litem litigans* ego Ecce:Dominus dixit sic Propterea
36 לָכֵן כֹּה אָמַר יְהוָה הִנְנִי־רָב אֶת־רִיבֵךְ וְנִקַּמְתִּי אֶת־נִקְמָתֵךְ
Babel erit Et .ejus venam faciam arescere & ,ejus mare faciam siccare &
37 וְהַחֲרַבְתִּי אֶת־יַמָּהּ וְהוֹבַשְׁתִּי אֶת־מְקוֹרָהּ׃ וְהָיְתָה בָבֶל
leones ut Simul .*habitatore absque* ,sibilus & ,stupor ,draconum habitatio,tumulos in
38 לְגַלִּים מְעוֹן־תַּנִּים שַׁמָּה וּשְׁרֵקָה מֵאֵין יוֹשֵׁב׃ יַחְדָּו כַּכְּפִרִים
,eorū convivia ponam eorum calore In .*leænarum* catuli ut *fremuere* : rugient
39 יִשְׁאָגוּ נָעֲרוּ כְּגוֹרֵי אֲרָיוֹת׃ בְּחֻמָּם אָשִׁית אֶת־מִשְׁתֵּיהֶם
,evigilent non & ,*seculi* somnum dormiant & ,exultent ut ,eos faciam inebriare &
וְהִשְׁכַּרְתִּים לְמַעַן יַעֲלֹזוּ וְיָשְׁנוּ שְׁנַת־עוֹלָם וְלֹא יָקִיצוּ
cum arietes tanquā,jugulandum ad agnos veluti eos faciā Descendere .Dominus dixit
40 נְאֻם יְהוָה׃ אוֹרִידֵם כְּכָרִים לִטְבוֹחַ כְּאֵילִים עִם־
quomodo ? terræ omnis laus est cōprehensa &,Sesach est capta Quomodo .hircis
41 עַתּוּדִים׃ אֵיךְ נִלְכְּדָה שֵׁשַׁךְ וַתִּתָּפֵשׂ תְּהִלַּת כָּל־הָאָרֶץ אֵיךְ
tempestate in : mare Babel super Ascendit ! *gentibus in* Babel stuporem in fuit
42 הָיְתָה לְשַׁמָּה בָּבֶל בַּגּוֹיִם׃ עָלָה עַל־בָּבֶל הַיָּם בַּהֲמוֹן
.est operta ejus fluctuum
גַּלָּיו נִכְסָתָה׃

Versio VULG. LAT.

25 Ecce ego ad te,mons pestifer, ait
Domin⁹, qui corrumpis univer-
sam terram : & extendam ma-
num meam super te, & evolvam
te de petris, & dabo te in mon-
26 tem combustionis, Et non tol-
lent de te lapidem in angulum,
& lapidem in fundamenta, sed
perdit⁹ in æternum eris, ait Do-
27 min⁹. Levate signum in terra :
clangite buccinâ in Gentib⁹,san-
ctificate super eam Gentes: an-
nuntiate contra illam regib⁹ A-
rarat, Menni, & Ascenez : nu-
merate contra eam Taphsar, ad-
ducite equum quasi bruchum a-
28 culeatum. Sanctificate contra eā
Gētes,reges Mediæ,duces ej⁹,&
universos magistratus ejus, cun-
ctámque terram potestatis ejus.
29 Et commovebitur terra, & con-
turbabitur : quia evigilabit con-
tra Babylonē cogitatio Domini,
ut ponat terram Babylonis deser-
30 tam & inhabitabilem. Cessave-
runt fortes Babylonis à prælio ;
habitaverunt in præsidiis : devo-
ratū est robur eorū, & facti sunt
quasi mulieres : incensa sunt ta-
bernacula ejus, contriti sunt ve-
31 ctes ejus. Currens obviā curren-
ti veniet: & nuntius obvi⁹ nun-
tianti: ut annuntiet regi Babylo-
nis, quia capta est civitas ejus à
32 summo usque ad summū: Et va-
da præoccupata sunt, & paludes
incensæ sunt igni · & viri bella-
33 tores conturbati sunt. Quia hæc
dicit Dominus exercituum,Deus
Israel;Filia Babylonis quasi area,
tempus trituræ ejus: adhuc mo-
dicum,& veniet tempus messio-
34 nis ejus. Comêdit me,devoravit
me Nabuchodonosor rex Baby-
lonis: reddidit me quasi vas ina-
ne,absorbuit me quasi draco, re-
plevit ventrem suum teneritudi-
35 ne meâ, & ejecit me. Iniquitas
adversùm me, & caro mea super
Babylonē,dicit habitatio Sion :
& sanguis meus super habitato-
res Chaldææ, dicit Jerusalem.
36 Propterea hæc dicit Dominus ; Ecce ego judicabo causam tuam, & ulciscar ultionem tuam,
37 & desertum faciam mare ejus, & siccabo venam ejus Et erit Babylon in tumulos,habitatio
38 draconum, stupor, & sibilus, eò quòd non sit habitator. Simul ut leones rugient, excutient
39 comas veluti catuli leonum. In calore eorum ponam potus eorum, & inebriabo eos, ut so-
40 piantur, & dormiant somnum sempiternum , & non consurgant, dicit Dominus. Dedu-
41 cam eos quasi agnos ad victimam, & quasi arietes cum hœdis. Quomodò capta est Se-
sach, & comprehensa est inclyta vniversæ terræ ? quomodò facta est in stuporem Babylon
42 inter Gentes. Ascendit super Babylonem mare,multitudine fluctuum ejus operta est.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

25 Οὕτως εἶπε κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ,
Ὑμεῖς γυναῖκες τῷ στόματι ὑμῶν ἐ-
λαλήσατε, καὶ ταῖς χερσὶν ὑμῶν ἐ-
πληρώσατε, λέγουσαι, Ποιοῦσαι (ζ) ποι-
ήσομεν τὰς ὁμολογίας ἡμῶν ἃς (η) ὡ-
μολογήκαμεν, θυμιᾶν τῇ βασιλίσσῃ
τοῦ οὐρανοῦ καὶ σπένδειν αὐτῇ σπονδάς·
ἐμμείνασαι ἐνεμείνατε ταῖς ὁμολογί-
26 αις ὑμῶν, καὶ ποιοῦσαι ἐποιήσατε. Διὰ
τοῦτο ἀκούσατε λόγον κυρίου, πᾶς Ἰ-
ούδα οἱ καθήμενοι ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, Ἰ-
δοὺ ὤμοσα τῷ ὀνόματί μου τῷ μεγά-
λῳ, (θ) εἶπε κύριος, ἐὰν γένηται
ἔτι ὄνομά μου ἐν τῷ στόματι παντὸς
Ἰούδα εἰπεῖν, (ι) Ζῇ κύριος, ἐπὶ πά-
27 σῃ γῇ Αἰγύπτῳ. Ὅτι (κ) ἐγὼ ἐγρήγο-
ρα ἐπ' αὐτοὺς, τοῦ κακῶσαι αὐτοὺς, καὶ
οὐκ (λ) ἀγαθῶσαι· καὶ ἐκλείψουσι πᾶς
Ἰούδα, οἱ κατοικοῦντες ἐν γῇ (μ) Αἰ-
γύπτῳ, ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν λιμῷ, ἕως
28 ἂν ἐκλείπωσιν. Καὶ οἱ σεσωσμένοι ἀ-
πὸ ῥομφαίας ἐπιστρέψουσιν εἰς γῆν Ἰ-
ούδα ὀλίγοι (ν) ἀριθμῷ, καὶ γνώσονται
οἱ κατάλοιποι Ἰούδα (ξ) οἱ καταστάν-
τες ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, κατοικῆσαι ἐκεῖ,
29 λόγος τίνος ἐμμενεῖ. Καὶ τοῦτο (ο)
τὸ σημεῖον ὑμῖν, ὅτι ἐπισκέψομαι ἐ-
30 γὼ ἐφ' ὑμᾶς εἰς πονηρά. Οὕτως εἶπε
κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι τὸν Οὐαφρῆ
βασιλέα Αἰγύπτου εἰς χεῖρας ἐχθροῦ
αὐτοῦ, καὶ εἰς χεῖρας (π) ζητοῦντος τὴν
ψυχὴν αὐτοῦ, καθὰ ἔδωκα τὸν Σεδε-
κίαν βασιλέα Ἰούδα εἰς χεῖρας Να-
βουχοδονόσορ βασιλέως Βαβυλῶνος
ἐχθροῦ αὐτοῦ, καὶ ζητοῦντος τὴν ψυχὴν
αὐτοῦ.

1 Cap. 45, Vulg. Lat. Ὁ ΛΟ-
ΓΟΣ ὋΝ ἘΛΆΛΗΣΕΝ Ἱ[illegible]ΡΕ-
ΜΙ΄ΑΣ ὁ προφήτης πρὸς Βαροὺχ υἱὸν
Νηρείου, ὅτε (ρ) ἔγραφε τοὺς λόγους τού-
τους ἐν τῷ βιβλίῳ ἀπὸ στόματος Ἰ-
ερεμίου, ἐν τῷ ἐνιαυτῷ τῷ τετάρτῳ
(σ) Ἰωακεὶμ υἱῷ Ἰωσία βασιλέως
Ἰούδα·

S c d x[illegible] Dominus Deus Is-
rael, Vos (m) mulieres [illegible]
[illegible] o loquutæ estis, & ma-
nibus vestris implêstis, di-
centes: Facientes faciemus
confessiones nostras, quas
confessæ sumus, adolendo
reginæ cæli, & [illegible]
libamina. P[illegible] [illegible]
[illegible] in confessione [illegible]
[illegible], & fecistis.
Ideò audi[illegible] [illegible]
Domini, om[illegible] [illegible],
qui sedetis in terra Æ[illegible]
[illegible] ; Ecce juravi [illegible]
meo magno, ait Dominus, si
erit ultrà nomen meum in
ore universi Juda [illegible]
dum, Vivit Do[illegible]
omni terra Ægypt[illegible]. Quia
ego vigilavi sup[illegible]
a[illegible]dum eos, & [illegible]
nefaciendum. Et [illegible]
omnis Judæ, h[illegible]
terra Ægypto, in gla[illegible]
in fame, donec deficie[illegible]. Et
qui evaserint à gladio, [illegible]
ventent [illegible]
pauci numero: & [illegible]
residui Juda, qu[illegible]
in terra Ægypto ad habitan-
dum ibi, ve[illegible]
permaneat. Et hoc signum
vobis, quia visita[illegible]
[illegible] vos in (o) mala[illegible] Sic
dixit Dominus, Ecce [illegible]
(p) Va[illegible] regem Æ[illegible]
in manus inimici [illegible] &
in manus quærentis [illegible]
mam ejus; sicut dedi Se-
deciam regem [illegible]
nus Nabuchodonosor regis
Babylonis inimici ejus, &
quærentis animam [illegible].
(q) VE[illegible] [illegible]
loquutus est H[illegible]
pheta ad Baruch, [illegible]
Neriæ, quando [illegible]
verba hæc in libro [illegible]
re Hieremiæ, in anno [illegible]
to Joacim filio Josiæ [illegible]
Juda :

MS. A. (ζ) ποιήσωμεν (η) ὡμωλογήσαμεν, (θ) λέγει κύριος, (ι) Ζῇ κύριος κύριος, (κ) ἰδοὺ ἐγὼ (λ) ἀγαθῦναι. (μ) Αἰγύπτῳ, (ν) ἀριθμοὶ, (ξ) καὶ οἱ καταβαίνοντες ἐν γῇ Αἰγύπτου, οἰκῆσαι ἐκεῖ, (ο) * ἡμῖν τὸ σημεῖον, (π) ζητούντων (ρ) ἜΓΡΑ-ΨΕΝ (σ) ΤΩ͂ ἸΩΑΚΕῚΜ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

25 הא אנא שלח רוגזי עלך כרכא מחבלא אמר יי דמחביל ית כל ארעא וארים ית מחת
26 גבורתי עלך ואגרנך מן תוקפא ואתננך לכרך יקידא ׃ ולא יסבון מנך מלך למלכו
27 ושלטון לשולטנו ארי צדות עלמין תהי אמר יי ׃ זקופו אתא בארעא תקעו שופרא
בעממיא זמינו עלה עממיא בסרו עלה מלכות ארעא דקרדו משרית חורמיני והדיב
28 זמינו עלה עבדי קרבא דיהון סלקין סוסותהון מפנכין הא כזחלא דמצלהב ׃ זמינו
29 עלה עממיא ית מלכי מדי ית שלטונהא וית כל טורנהא וית כל ארע שולטניה ׃ ותזוע
ארעא ותתמרע ארי קמא על בבל מחשבתא דיי לשואה ית ארעא דבבל לצדו מבלי
30 יתיב ׃ אתמניעו גברי בבל מלאגחא קרבא יתיבו במצדיא אתברת גבורתהון הוו
31 חלישין כנשיא אתדלקא בירניתהא אתברו עבריהא ׃ רהיט לקדמות רהיט ירהוט
32 ומחוי לקדמות מחוי לחואה למלכא דבבל ארי אתכבישת קרתיה מסופיה ׃ ומגיזתא
33 אתאחדא וית אגמיא אוקידו בנורא וגברי עבדי קרבא אתבהילו ׃ ארי כדנן אמר יי
צבאות אלהא דישראל כנשתא דבבל דמיא לאדרא דמטא עדן אדריכותיה עוד ציב
34 חד כזעיר וייתון בזוזין עלה ׃ אמרת ירושלם בז נכסי ושיצני נבוכדנצר מלכא דבבל
35 נפצני כמן ריקן בלעני כתנינא מלא בית גנזיה מטוב ארעי טלטלני ׃ חטופי ובזוזי על
בבל תימר כנשתא דציון וחובת דם זכי דאתשד בי על יתבי ארעא כסדאי תימר
36 ירושלם ׃ בכן כדנן אמר יי הא אנא דאין ית דיניך ומתפרע ית פורענותיך ואחריב ית
37 ימה ואוביש ית מבועהא ׃ ותהי בבל ליגרין מדור ירודין צדו ואשתממו מבלי יתיב ׃
38 כחדא כאריון ינהמון כבני אריון ירימון קלהון ׃ איתא עליהון עקא ויהון דמן לרויא
39
40 בדיל דלא יהון תקיפין וימותון מותא תנינא ולא יהון לעלמא דאתי אמר יי ׃ אמסרנון
41 כתורין לקטלא כדכרין עם גדין ׃ איכדין אתכבישת בבל ואתאחדת תושבחת כל
42 ארעא איכדין הות לצדו בבל בעממיא ׃ סליק על בבל מלך במשריתיה דסגי כמי ימא
באתרגושת גלוהי חפיא ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce ego mitto furorem meum contra te civitas dissipans. dicit Dñs : quæ 25
dissipas universam terram: & levabo plagam fortitudinis meæ contra te, &
consumam te à *fortitudine*, & dabo te in civitaté combustionis. Et non tol- 26
lent ex te regem in regnum, & principé in principatum: quia desolatio æter-
na eris, dicit Dñs. Levate signum in terra, clangite buccina in populis præ- 27
parate contra eam populos, annuntiate contra illam regnis terræ Cardu, ex-
ercitui Armeniæ & Hideb ; præparate contra eam bellatores, qui ascen-
dant equos suos hinnientes instar bruchi inflammati. Præparate contra 28
eam populos, reges Medorum, & dominatores eorum, & omnes duces eo-
rum, & omnem terram dominii eorum. Et commovebitur terra & infirma- 29
bitur, quoniam confirmatæ sunt contra Babylonem cogitationes Domini, ut
ponat terram Babylonis in desolationem absque habitatore. Cessaverunt 30
fortes Babylonis à prælio, habitaverunt in munitionibus: contritum est ro-
bur eorum, facti sunt infirmi sicut mulieres: succensa sunt palatia ejus, contri-
ti sunt vectes ejus. Currens obviā currenti curret, & nuntians obviā nuntian- 31
ti ad annuntiandū regi Babylonis ; quia capta est civitas ejus à summo ejus.
Et vada capta sunt, & stagna succensa sunt igni, & viri bellatores turbati 32
sunt. Quia hæc dicit Dñs exercituum Deus Israel: Cœtus Babylonis similis 33
est areæ cujus trituræ tempus pervenit. Ad paululū modicúmque, & venient
direptores ad eam. Dixit Jerusalem, Diripuit substantiam meam, & consum- 34
psit me Nabuchodonosor rex Babylonis, comminuit me quasi vas vacuum:
absorbuit me quasi draco : implevit domum thesauri sui bonis terræ meæ.
transmigrare me fecit. Depopulatio mea & deprædatio mea super Babylo- 35
nem, dicit cœtus Sion : & peccatum sanguinis innocentis qui effusus est in
me, sup habitatores terræ Chaldæorū, dicit Jerusalem. Propterea hæc dicit 36
Dñs: Ecce ego judico causā tuā, & ulciscar ultioné tuam, & arefaciā mare 37
ejus, & siccabo fontes ejus. Et erit Babylon in acervos, & habitaculū draco- 38
num, desertū & desolatio, absq; habitatore. Simul quasi leones rugient, & 39
quasi filii leonum attollent vocé suam. Adducā sup eos tribulationé, & erunt
similes ebriis, ut non sint fortes, sed moriantur morte secunda, & non vivant 40
in seculo futuro, dicit Dñs. Tradam eos quasi tauros occisioni, & quasi ari- 41
etes cum hircis. Quomodo subjugata est Babylon, & captū est decus univer- 42
sæ terræ ! quomodo facta est Babel in desolationem inter populos ! Ascen-
dit contra Babylonem rex cum copiis suis numerosis, quasi aquis maris, a
multu fluctuum ejus cooperta est.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܐ ܐܢܐ ܠܘܬܟܝ ܛܘܪܐ ܡܚܒܠܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܕܚܒܠܬ ܠܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܐܪܝܡ
ܐܝܕܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܦܟܝܟܝ ܡܢ ܟܐܦܐ. ܘܐܥܒܕܟܝ ܠܛܘܪܐ ܝܩܝܕܐ. * ܘܠܐ ܢܣܒܘܢ ܡܢ
ܟܐܦܐ ܠܩܪܢܬܐ. ܘܟܐܦܐ ܠܫܬܐܣܬܐ. ܐܠܐ ܠܚܘܪܒܐ ܠܥܠܡ ܬܗܘܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
* ܐܩܝܡܘ ܐܬܐ ܒܐܪܥܐ. ܩܪܘ ܒܫܝܦܘܪܐ ܒܥܡܡܐ. ܙܡܢܘ ܥܠܝܗ ܥܡܡܐ. ܐܫܡܥܘ
ܥܠܝܗ ܡܠܟܘܬܐ ܕܐܪܪܛ ܘܕܡܢܝ ܘܕܐܫܟܢܙ. ܦܩܘܕܘ ܥܠܝܗ ܐܦܣܪܐ. ܐܣܩܘ
ܪ̈ܟܫܐ ܐܝܟ ܐܣܩܠܐ. * ܙܡܢܘ ܥܠܝܗ ܥܡܡܐ. ܠܡܠܟܐ ܕܡܕܝ. ܘܡܫܒܚܘ
ܘܠܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܘܗܝ. * ܘܬܬܙܝܥ ܐܪܥܐ ܘܬܬܬܘܗ. ܡܛܠ ܕܩܡܬ ܥܠ ܒܒܠ
ܡܚܫܒܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܡܚܪܒܗ ܠܐܪܥܐ ܕܒܒܠ ܡܢ ܕܠܐ ܝܬܒ. * ܫܠܘ
ܓܢܒܪ̈ܐ ܕܒܒܠ ܠܡܬܟܬܫܘ ܥܡ ܥܡܘܪ̈ܐ ܕܡܫܪܘܬ. ܐܬܬܒܪܬ ܓܢܒܪܘܬܗܘܢ ܘܗܘܘ
ܐܝܟ ܢܫ̈ܐ. ܚܒܘܪܘ ܡܫܟܢܝܗ. ܬܒܪܘ ܬܪ̈ܥܝܗ. * ܪܗܛܐ ܠܘܬ ܪܗܛܐ ܢܪܗܛ. ܘܡ
ܘܡܒܣܪܐ ܠܘܬ ܡܒܣܪܐ. ܠܡܒܣܪܘ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܕܐܬܐܚܕܬ ܡܕܝܢܬܗ ܡܢ
ܣܘܦܝܗ. * ܘܡܥܒܪ̈ܢܝܗ ܐܬܐܚܕܘ. ܘܐܓܡ̈ܝܗ ܐܘܩܕܘ ܒܢܘܪܐ. ܘܓܒܪ̈ܝܗ ܥܒ̈ܕܝ ܩܪܒܐ
ܐܬܕܠܚܘ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܒ
ܒܒܠ ܐܝܟ ܐܕܪܐ ܕܡܛܐ ܙܒܢܐ ܕܕܝܫܗ. ܥܕ ܩܠܝܠ. ܘܡܛܐ ܩܛܦܗ. * ܐܟܠܬܢܝ
ܐܟܠܢܝ ܘܫܚܩܢܝ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܐܩܝܡܢܝ ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܣܪܝܩܐ. ܒܠܥ
ܐܝܟ ܬܢܝܢܐ. ܡܠܐ ܟܪܣܗ ܡܢ ܒܘܣܡܝ. ܘܐܘܒܕܢܝ. * ܒܙܬܝ ܘܒܥܝܪܝ ܠܒܒܠ ܐܫܬܒܝ
ܘܕܡܝ ܥܠ ܥܡܘܪ̈ܐ ܕܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝ̈ܐ ܬܐܡܪ ܐܘܪܫܠܡ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܗܐ ܐܢܐ ܕܐܢ ܕܝܢܟܝ. ܘܬܒܥ ܐܢܐ ܬܒܥܬܟܝ. ܘܡܚܪܒ ܐܢܐ ܝܡܐ ܕܒܒܠ
ܘܐܘܒܫ ܡܒܘܥܝܗ. * ܘܬܗܘܐ ܒܒܠ ܚܘܪܒܐ. ܡܥܡܪܐ ܕܬܢܝܢ̈ܐ
ܠܬܕܡܘܪܬܐ ܘܠܫܪܩܐ ܡܢ ܕܠܐ ܥܡܘܪܐ. * ܐܝܟ ܐܪ̈ܝܘܬܐ ܢܢܗܡܘܢ
ܘܢܥܙܩܘܢ ܐܝܟ ܓܘܪܝ ܐܪ̈ܝܘܬܐ. * ܒܚܡܬܐ ܐܣܝܡ ܡܫܬܝܗܘܢ. ܘܐܪܘܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܬܕܠܚܘܢ
ܘܢܕܡܟܘܢ ܫܢܬܐ ܕܥܠܡ. ܘܠܐ ܢܬܬܥܝܪܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܚܬܝܢܘܢ ܐܝܟ ܐܡܪ̈ܐ
ܠܢܟܣܬܐ. ܘܐܝܟ ܕܟܪ̈ܐ ܥܡ ܥܬܘܕ̈ܐ. * ܐܝܟܢܐ ܐܬܐܚܕܬ
ܫܘܒܗܪܗ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܐܝܟܢܐ ܗܘܬ ܠܬܕܡܘܪܬܐ ܒܒܠ ܒܥܡܡܐ. * ܣܠܩ
ܥܠ ܒܒܠ ܝܡܐ. ܘܒܣܘܓܐ ܕܓܠܠܘܗܝ ܐܬܟܣܝܬ.

Ecce me adverſùm te mons pernicioſe, dicit 25
Dominus, qui totam terram corrupiſti: attollam
contra te manum meam, exhauriam te
lapidibus, & redigam te in montem exuſtum;
Ut ſumi de te *nequeat* lapis ad angulum, aut 26
lapis ad fundamentum; ſed in ſolitudinem
eris perpetuam, ait Dominus. Attollite vexillum 27
in terra, clangite bucciná inter populos,
comparate contra eam gentes, promulgantes
convocate contra eam regna Aradat,
& Armeniæ, & Aſchenaz: præcipite contra
eam exitium, adducite equos ut bruchum:
Comparate contra eam gentes, regem Mediæ, 28
inclytos ejus, & omnes principes ejus:
Ita ut quatiatur terra & obſtupeſcat: quia 29
ſtabile manſit contra Babelem conſilium Domini
de terra Babelis deſtruenda, ut non ſit
habitabilis. Deſierunt viri Babelis certare 30
contra habitatores Meſroth, conſternata eſt
fortitudo eorum, & facti ſunt ſicut fœminæ.
Evertite habitationes ejus, confringite januas
ejus. Curſor certatim cum curſore currat, 31
& nuntius cum nuntio, ad indicandum
regi Babelis captam eſſe urbem ejus ex omni
parte: Aditus ejus occupatos, paludes igne 32
combuſtas, omnéſque viros ejus bellatores
attonitos. Nam ſic ait Dominus potentiſſimꝰ 33
Deꝰ Iſraelis, Filia Babelis ſimilis eſt areæ cujꝰ
triturandæ tempus imminet, ejúſque vindemia
jamjam inſtat. Dixit Jeruſalem, Devoravit 34
ac diripuit me Nebuchadnoſar rex
Babelis, reddidit me ſimilem vaſi vacuo, deglutivit
me tanquam draco, implevit abdomen
ſuum deliciis meis, perdidit me; Spolia 35
mea & armenta mea in Babelem deportata
ſunt: ſanguis meus in habitatores *terræ*
Chaldæorum *recidat*, inquit Jeruſalem. Propterea 36
ſic ait Dominus; Ecce cauſam tuam
patrocinabor, & ulciſcar ultionem tuam:
mare Babelis exhauriam, & exſiccabo fontes
ejus: Fiétque Babel deſolata, habitatio canum 37
ſylveſtrium, in ſtuporem ac ſibilum, habitatoribus
deſtituta. Ut leones rugient, & 38
vociferabuntur ut catuli leonum. Furore 39
componam potum eorum, inebriabo eos, &
conſternabuntur, dormient ſomno perpetuo,
nec evigilabunt, dicit Dominus: Tradam 40
eos ut ſaginatos, ad necem; & ut arietes hircóſque,
ad mactationem. Quomodò capta 41
eſt reginarum maxima, gloria totius terræ?
quomodò ſtupori facta eſt Babel apud gentes?
Babelem mare ſuperabit, & multitudine 42
fluctuum ejus obruetur.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا قال الرب اله اسرايل * انتم ايها النسوه بفيكم تكلمتم وبايديكم اكمل
قايلات * صانعات نصنع اعترافنا الذي اعترفنا به * لنبخر لملكة السما ونريق ل
قوارير * ثابتات ثبتم باعترافكم * وصانعات صنعتم * ولاجل هذا اسمعوا قول الرب يا ك
يهودا الجالسون في ارض مصر * ها حلفت باسمي العظيم يقول الرب * لن يصير بعد اسمي
في فم جميع يهودا ليقول حي الرب * في كل ارض مصر * لاني ها انا سهرت عليهم لاصيب
وليس لاصلحهم * ويفني كل يهودا القاطنون بارض مصر بالسيف والجوع الي ان يفنو
* والمتخلصون من السيف يرجعون الي ارض يهودا عدد قليلون * ويعلم بقايا يهودا والنازلون
بارض مصر ليسكنوا هناك * قول من يثبت * وهذه العلامة لكم اني انا اطلع
عليكم للسرور * هكذا قال الرب * ها انا ادفع اوافرع ملك مصر الي ايدي
عدوه والي ايدي طالبي نفسه * كما دفعت صداقيا ملك يهودا لايدي بختنصر ملك
بابل عدوه وطالب نفسه *

Sic dixit Dominus Deus Iſraelis; Vos 25
O mulieres, ore veſtro locutæ eſtis,
& manibus veſtris peregiſtis, dicentes;
Omnino perficiemus confeſſionem
noſtram quam confeſſæ ſumus, adoleturas
nos reginæ cœli, eique alabaſtra
fuſuras: firmæ perſeverâſtis in confeſſione
veſtra, & opere complêſtis.
Ideoque audite ſermonem Domini O 26
omnes Judæi degentes in terra Ægypti;
Ecce juro per nomen meum magnum,
dicit Dominus, haudquaquam
fore deinceps nomen meum in ore totius
Judæ, ut dicat, Vivat Dominus,
in tota terra Ægypti. Quoniam 27
ecce ego vigilavi ſuper eos ut percutiam
eos, non ut reſtaurem eos:
& omnes Judæi qui commorantur in
terra Ægypti, gladio & fame conſumentur
donec deficiant: Qui gladium 28
effugerint, ii revertentur in terram
Judæ, numero perpauci: & cognoſcent
reliquiæ Judæ, & degentes in
terra Ægypti ut illic habitent, cujuſnam
ſermo ſit ſtabilis. Atque hoc ſignum 29
vobis eſto, me viſitaturum vos
ad mala: Sic dixit Dominus, Ecce 30
ego tradam Evaphre regem Ægypti
in manus hoſtis ejus, & in manum
quærentium animam ipſius; quemadmodum
tradidi Sedeciam regem Judæ
in manus Bochtonaſſaris regis Babelis
hoſtis ejus & quærentis animam
ipſius.

* القول الذي تكلم به ارميا النبي لباروخ بن نيريو * لما كتب هذه الاقوال في سفر
من فم ارميا * في السنة الرابعة ليواقيم بن يوشيا ملك يهودا

SErmo quem locutus eſt Jeremia 1
propheta ad Baruchum Neriæ
filium; quando ſcripſit hoſce
ſermones in libello ex ore
Jeremiæ, anno quarto Joacimi
filii Joſiæ regis Judæ.

ירמיה : נא

eis in habitabit non terra deſolationis & ,ſiccitatis terra ,ſtuporē in ei° civitates Fuerunt
43 היו עריה לשמה ארץ ציה וערבה ארץ לא־ישב בהן
,Babel in Bel ſuper viſitabo Et .hominis filius ea in tranſibit nec ,vir omnis
44 כל־איש ולא־יעבר בהן בן־אדם : ופקדתי על־בל בבבל
murus etiam :gentes ultrà eum ad confluent non &,ej° ore de ejus deglutitionē educam &
והצאתי את־בלעו מפיו ולא־ינהרו אליו עוד גוים גם־חומת
,ſuam animam vir eruite & ,mi popule ej° medio de Egredimini .corruit Babel
45 בבל נפלה : צאו מתוכה עמי ומלטו איש את־נפשו
auditu in timeatis & ,veſtrum cor molleſcat fortè ne Et .Domini naſi ira ab
46 מחרון אף־יהוה : ופן־ירך לבבכם ותיראו בשמועה
,auditio anno in eum poſt & ,auditus anno in veniet Et .terra in audito
הנשמעת בארץ ובא בשנה השמועה ואחריו בשנה השמועה
,venientes dies ecce Propterea .dominatorem ſuper dominator ,terra in rapacitas &
47 וחמס בארץ משל על־משל : לכן הנה ימים באים
univerſi & : afficietur pudore ej° terra omnis & ,Babel ſculptilia ſuper viſitabo &
ופקדתי על־פסילי בבל וכל־ארצה תבוש וכל־
,terra & ,cœli Babel ſuper dicent præconia Et .ej° medio in cadent ej° interfecti
48 חלליה יפלו בתוכה : ורננו על־בבל שמים וארץ
.Dominus ait ,vaſtatores ei veniet aquilone ab quia : eis in quæ omnia &
וכל אשר בהם כי מצפון יבוא־לה השודדים נאם־יהוה :
.terræ univerſæ occiſi ceciderūt Babel ad etiā : Iſrael vulneratos cadendū ad Babel Etiam
49 גם־בבל לנפל חללי ישראל גם־לבבל נפלו חללי כל־הארץ :
Jeruſalaim &,Domini longè à recordamini : ſtetis ne ,venite gladio à Evaſores
50 פלטים מחרב הלכו אל־תעמדו זכרו מרחוק את־יהוה וירושלם
,opprobrium audivimus quoniam ,ſumus affecti Pudore .veſtrum cor ſuper aſcendat
51 תעלה על־לבבכם : בשנו כי־שמענו חרפה
.Domini domus ſanctuaria ſuper alieni venerūt quia :noſtras facies ignominia operuit
כסתה כלמה פנינו כי באו זרים על־מקדשי בית יהוה :
omni in &:ej° ſculptilia ſuper viſitabo &,Dominus dixit,venientes dies ecce Propterea
52 לכן הנה־ימים באים נאם־יהוה ופקדתי על־פסיליה ובכל־
excelſo munierit cùm & ,cœlos Babel aſcenderit Cùm ſaucium gemet ej° terra
53 ארצה יאנק חלל : כי־תעלה בבל השמים וכי תבצר מרום
: Babel de clamoris Vox .Dominus dixit ,ei prædatores venient me à :ſuū robur
54 עזה מאתי יבאו שדדים לה נאם־יהוה : קול זעקה מבבל
,Babel Dominus vaſtat Quoniam .Chaſdim terra de magna contritio &
55 ושבר גדול מארץ כשדים : כי־שדד יהוה את־בבל
: multæ aquæ tanquam eorū fluctus tumultuabunt & : magnam vocem ea ex perdidit &
ואבד ממנה קול גדול והמו גליהם כמים רבים
ſunt apprehenſi & ,vaſtator Babel ſuper eā ſuper venit Quia .eorum vocis ſonitus eſt datus
56 נתן שאון קולם : כי בא עליה על־בבל שודד ונלכדו
reddendo Dominus retributionū Deus quia : eorum arcus eſt confractus ,ejus fortes
גבוריה חתתה קשתותם כי אל גמלות יהוה שלם
,ej° magiſtratus &,ej° duces,ejus ſapientes &,ejus principes faciam inebriare Et .reddet
57 ישלם : והשכרתי שריה וחכמיה פחותיה וסגניה
Dominus rex ait ; expergiſcentur non & ,ſeculi ſomnum dormient &,ej° fortes &
וגבוריה וישנו שנת־עולם ולא יקיצו נאם־המלך יהוה
latus Babel Muri : exercituū Dominus dixit Sic .ejus nomen exercituum
58 צבאות שמו : כה־אמר יהוה צבאות חמות בבל הרחבה
populi laborabūt &:cōburētur igne in excelſæ ejus portæ &,confringetur cōfringendo
ערער תתערער ושעריה הגבהים באש יצתו ויגעו עמים
propheta Irmejahu præcepit quod Verbū.laſſabūtur &,igni in nationes & ,vanum in
59 בדי־ריק ולאמים בדי־אש ויעפו : הדבר אשר־צוה ירמיהו הנביא
rege Sidchijahu cum ipſum eundo in Machaſejah filio Nerijah filio Serajah
את־שריה בן־נריה בן־מחסיה בלכתו את־צדקיהו מלך־
.quietis princeps Serajah & ,ejus regnando in quarto anno in ,Babel Jehudah
יהודה בבל בשנת הרביעית למלכו ושריה שר־מנוחה :

Verſio VULG. LAT.

43 Factæ ſunt civitates ej° in ſtuporem, terra inhabitabilis & deſerta, terra in qua null° habitet,
nec tranſeat per eam filius hominis.
44 Et viſitabo ſuper Bel in Babylone, & ejiciam quod abſorbuerat de ore ejus, & non confluent ad eum ultrà Gentes, ſiquidem & mur° Babylonis corruet.
45 Egredimini de medio ejus, populus meus : ut ſalvet unuſquiſque animam ſuam ab ira furoris Do-
46 mini. Et ne fortè molleſcat cor veſtrum, & timeatis auditum, qui audietur in terra : & veniet in anno auditio, & poſt hunc annum auditio, & iniquitas in terra, & dominator ſuper domi-
47 natorem. Propterea ecce dies veniunt, & viſitabo ſuper ſculptilia Babylonis : & omnis terra ejus confundetur, & univerſi interfecti ejus cadent in medio
48 ejus. Et laudabunt ſuper Babylonem cœli & terra, & omnia quæ in eis ſunt : quia ab Aquilone venient ei prædones, ait Do-
49 min°. Et quomodò fecit Babylon ut caderent occiſi in Iſrael : ſic de Babylone cadent occiſi in
50 univerſa terra. Qui fugiſtis gladium, venite, nolite ſtare : recordamini procul Domini, & Jeruſalem aſcendat ſuper cor veſtrum.
51 Confuſi ſumus, quoniam audivimus opprobrium : operuit ignominia facies noſtras : quia venerunt alieni ſup ſanctificationem
52 domûs Domini. Propterea ecce dies veniunt, ait Dominus : & viſitabo ſuper ſculptilia ejus, & in omni terra ejus mugiet vulnera-
53 tus. Si aſcenderit Babylon in cœlum, et firmaverit in excelſo robur ſuum : à me venient vaſta-
54 tores ejus, ait Domin°. Vox clamoris de Babylone, et contritio magna de terra Chaldæorum :
55 Quoniam vaſtavit Dñs Babylonem, et perdidit ex ea vocem magnam, et ſonabunt fluctus
56 eorum quaſi aquæ multæ : dedit ſonitum vox eorum : Quia venit ſuper eam, id eſt, ſuper Babylonem, prædo, et apprehenſi ſunt fortes ejus, et emarcuit arcus eorum, quia fortis ultor
57 Domin° reddens retribuet. Et inebriabo principes ejus, & ſapientes ejus, & duces ejus & magiſtratus ejus, & fortes ejus : & dormient ſomnum ſempiternum, & non expergiſcentur,
58 ait rex, Dominus exercituum nomen ejus. Hæc dicit Dominus exercituum ; Murus Babylonis iſte latiſſimus ſuffoſſione ſuffodietur, & portæ ejus excelſæ igni comburentur, & labores po-
59 pulorum ad nihilum, & gentium in ignem erunt, & diſperibunt. Verbum, quod præcepit Jeremias propheta, Saraiæ filio Neriæ filii Maaſiæ, cùm pergeret cum Sedecia rege in Babylonem, in anno quarto regni ejus : Saraias autem erat princeps prophetiæ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Οὕτως εἶπε κύριος ἐπὶ σοὶ Βαροὺχ,
3 Ὅτι εἶπας, (τ) Οἴμοι οἴμοι, ὅτι (υ)
προσέθηκε κύριος κόπον ἐπὶ πόνον
μοι, ἐκοιμήθην ἐν στεναγμοῖς, ἀνά-
4 παυσιν οὐχ εὗρον. Εἰπὸν αὐτῷ, Οὕ-
τως εἶπε κύριος, Ἰδοὺ οὓς ἐγὼ ᾠκο-
δόμησα, ἐγὼ καθαιρῶ· καὶ (φ) οὓς ἐ-
5 γὼ ἐφύτευσα, ἐγὼ ἐκτίλλω. Καὶ σὺ
ζητήσεις σεαυτῷ (χ) μεγάλα; μὴ
ζητήσῃς, ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω κακὰ
ἐπὶ πᾶσαν σάρκα, λέγει κύριος· καὶ
δώσω τὴν ψυχήν σου εἰς (ψ) εὕρημα
ἐν παντὶ τόπῳ, οὗ ἐὰν βαδίσῃς ἐκεῖ.

MS. A. (τ) Ὤιμοι ὤιμοι, (υ) προσέθηκέν μοι κύριος
ἐφύτευσα, (χ) μεγάλα; *ὅτι ἰδοὺ (ψ) εὕρεμα

Cap. 52. Vulg.Lat. ΚΕΦ. νβ΄.

1 ΟΝΤΟΣ (α) εἰκοσοῦ καὶ
ἑνὸς ἔτους Σεδεκίου, ἐν τῷ βασιλεύειν
αὐτὸν, καὶ ἕνδεκα ἔτη ἐβασίλευσεν ἐν
Ἱερουσαλὴμ καὶ ὄνομα τῇ μητρὶ αὐ-
τοῦ Ἀμειτάαλ, θυγάτηρ Ἱερεμίου, ἐκ
Λοβενά. Καὶ ἐγένετο (β) τῷ ἔτει τῷ
ἐνάτῳ τῆς βασιλείας αὐτοῦ, (γ) ἐν μηνὶ
τῷ ἐνάτῳ, δεκάτῃ τοῦ μηνὸς, ἦλθε
Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶ-
νος, καὶ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτοῦ ἐπὶ
Ἱερουσαλὴμ, καὶ (δ) περιεχαράκωσαν
αὐτὴν, καὶ περιῳκοδόμησαν αὐτὴν τε-
5 τραπέδοις λίθοις κύκλῳ. Καὶ ἦλθεν
ἡ πόλις εἰς συνοχὴν, ἕως ἑνδεκάτου
6 ἔτους τῷ βασιλεῖ Σεδεκίᾳ, (ε) Ἐν τῇ
ἐνάτῃ τοῦ μηνὸς, καὶ ἐστερεώθη ὁ λι-
μὸς ἐν τῇ πόλει, καὶ οὐκ ἦσαν ἄρτοι τῷ
7 λαῷ τῆς γῆς. Καὶ διεκόπη ἡ πόλις,
καὶ πάντες οἱ ἄνδρες οἱ πολεμισταὶ
ἐξῆλθον νυκτὸς κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς
πύλης, ἀναμέσον (ζ) τοῦ τείχους, καὶ
τοῦ προτειχίσματος, ὃ ἦν κατὰ τὸν
κῆπον τοῦ βασιλέως, καὶ οἱ Χαλδαῖοι
ἐπὶ τῆς πόλεως (η) κύκλῳ, καὶ ἐπορεύθη-
σαν ὁδὸν τὴν εἰς ἄραβα.

MS. A. (α) δευτέρου καὶ εἰκοστοῦ ἔτους (β) ἐν τῷ (γ) ἐν τῷ
μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ, (δ) περιεχαράκωσεν αὐτὴν, καὶ περιῳκοδόμησεν
αὐτὴν τετραπόδοις κύκλῳ. (ε) Ἐνάτῃ τοῦ (ζ) τῆς πύλης,
(η) ἐκύκλωσαν, καὶ ᾤχοντο ὁδὸν

Sic ait Dominus [illegible]
Baruch, Quia [illegible]
mihi, heu mihi, quia [illegible]
addidit Dominus laborem [illegible]
per dolorem meum [illegible]
in gemitibus : [illegible]
non inveni : Dic [illegible]
dixit Dominus, Ecce [illegible]
ego ædificavi, ego d[illegible]
am : & quos ego plantavi,
ego (evelli) : [illegible]
quæ es tu grandia? [illegible]
quære [illegible] ecce ego [illegible]
co mala [illegible] omnem [illegible]
[illegible] ait Dominus : & [illegible]
animam [illegible]
in omni loco, quo [illegible]

CAP. LII.

Cum (vigeſimum [illegible]
[illegible] Sedecias [illegible]
[illegible] & [illegible]
[illegible]
[illegible] Amitaal, filia H[illegible]
[illegible] Lobena. E[illegible]
[illegible]
me [illegible] decima men-
ſis, [illegible] Nabuc[illegible]
rex Babylonis et omnis [illegible]
ejus ſuper Hieruſalem &
circumvallaverunt eam, &
circumædificaverunt eam,)
quadratis lapidibus [illegible]
cuitu. E[illegible]
obſidionem uſque ad [illegible]
decimum [illegible]
In nona m[illegible]
fames in civitate, &
erant [illegible] populo [illegible]
E[illegible]
omnes [illegible]
nocte per viam portæ
inter murum, & a[illegible]
rale, quod [illegible]
regis : (Et Chaldæi [illegible]
civitatem in circuitu) &
[illegible] viam quæ ad A-
raba.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

43 הואה קרוהא לצדו ארעא צדיא וחרבא ארעא לא יתיב בה כל אנש ולא יעבר בה בר
44 אנש : ואסער על דפלחין לבל בבבל ואבזיז ית נכסוהי מניה ולא ישתמעון ליה עוד
45 עממיא אף שורי בבל יתרמון : פוקו מגוה עמי ושיזיבו גבר ית נפשיה מתקוף רוגזא
46 דיי : ודלמא יזוע לבכון ותדחלון מן קדם בסורתא דתשתמע בארעא ותיתי בשתא
47 בסורתא ובתרוהי בשתא בסורתא ויסגון חטופין בארעא ויקום שלטון על שלטון : בכן
הא יומיא אתן ואסער על צלמי בבל וכל ארעה תחרוב וכל קטילהא יתרמון בגוה :
48 וישבחון על בבל שמיא וארעא וכל די בהון ארי מצפונא ייתון עלה בזוזין אמר יי : אף
49
50 בבבל אתרמיאו קטילי ישראל אף לבבל יתרמון קטילי כל ארעא : משיזביא מחרבא
51 גלו לא תתעכבון אדכרו מרחיק ית פלחנא דיי וירושלם תסק על לבכון : בהתנא ארי
שמענא חסודין חפת אתכנעותנא אפנא ארי עלו נוכראין וסאיבו ית בית מקדשא דיי :
52 בכן הא יומיא אתן אמר יי ואסער על צלמהא ובכל ארעה יתרמון קטיליא : ארי תבני
53 בבל בנינין דרמין עד צית שמיא וארי תכרוך כרכין תקיפין עד רומא מן קדמי ייתון
54 בזוזין עלה אמר יי : קל ציחתא מבבל ותברא רבא מארעא כסדאי : ארי אביז יי ית בבל
55 ואביד מנה משרין סגיאין ויתכנשון עליהון משרית עממין סגיאין וירימון באתרגושת
56 קלהון : ארי אתו עלה על בבל בזוזין ואתאחידו גברהא אתברא קשתתיהון ארי
57 אלהא מרי גמליא יי שלמא ישלם להון גמולהון : ואריוי רברבהא וחכימהא ושולטנהא
וטורנהא וגברהא וימותון מותא תנינא דלא ייחון לעלמא דאתי אמר מלכא יי צבאות
58 שמיה : כדנן אמר יי צבאות שורי בבל פתיא אתחתרא יתחמרון ותרעהא רמיא
59 בנורא יתוקדון ויהלון עממיא לריקנו ומלכותא תסוף אשתא וישתלהון : פתגמא די
פקיד ירמיה נביא ית שריה בר נריה בר מחסיה כד אזל בשליחות צדקיה מלך שבטא
דבית יהודה לבבל בשתא רביעתא למלכיה ושריה רב תוקרבתא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Factæ ſunt civitates ejus in deſolationem, terra deſolata, & deſerta, terra in 43
qua non habitabit omnis homo, nec tranſibit per eam filius hominis. Et vi- 44
ſitabo ſuper eos qui colunt Bel in Babylone, & diripere faciam ſubſtantiam
ejus ab ea, & non obedient ei ampliùs populi; muri quoque Babylonis corruent. Egredimini de medio ejus popule mi, & liberate unuſquiſq; animam 45
ſuam ab ira furoris Domini. Et forſitan commovebitur cor veſtrum, & ti- 46
mebitis à facie nuntii qui audietur in terra. Et veniet in anno nuntius, &
poſtea in anno ſequenti nuntius, & multiplicabuntur raptores in terra, &
ſurget dominator ſuper dominatorem. Propterea ecce dies veniunt, & viſi- 47
tabo ſuper ſimulachra Babylonis, & deſtruetur univerſa terra ejus; & omnes
occiſi ejus projicientur in medio ejus. Et laudabunt ſuper Babylonem cœli 48
& terra, & omnia quæ in eis ſunt; quia ab Aquilone venient contra eam direptores, dicit Dñs. Etiam in Babylone projecti ſunt occiſi Iſrael: in Baby- 49
lone quoque projicientur occiſi univerſæ terræ. Et qui liberati eſtis a gla- 50
dio, migrate, ne moremini; recordamini ex longinquo cultus Dñi; & Jeruſalem aſcendat ſuper cor veſtrum. Confuſi ſumus quia audivimus opprobrium, 51
operuit ignominia faciem noſtram; quia ingreſſi ſunt extranei, & polluerunt
domum ſanctuarii Dñi. Propterea ecce dies veniunt, dicit Dominus: & vi- 52
ſitabo ſuper ſimulachra ej°, & in univerſa terra ej° projicientur occiſi. Quia 53
ſi ædificaverit Babylon ædificia excelſa uſque ad cœlum, & munierit quoque
arces validas uſque in excelſum; à facie mea venient direptores contra eam,
dicit Dñs. Vox clamoris de Babylone, & contritio magna de terra Chaldæ- 54
orum. Quoniam vaſtavit Dominus Babylonem, & perdidit exercitus multos 55
ex ea; & congregabuntur ſuper eos exercitus populorum multorum, & tol-
lent in tumultu vocem ſuam. Quia venerunt ſuper ipſam Babylonem dire- 56
ptores, & capti ſunt fortes ejus, confracti ſunt arcus eorum : quia Deus Dominus retributionum eſt Dominus; reddendo reddet eis retributionem eo-
rum. Et inebriabo principes ejus, & ſapientes, & dominatores ejus, & du- 57
ces ejus, & fortes ej°; & morientur morte ſecunda, & non vivent in ſeculo
venturo; dicit rex, Domin° exercituum nomen ejus. Hæc dicit Domin° ex- 58
ercituum : Muri Babylonis lati ſuffoſſione ſuffodientur, & portæ ejus excelſæ
igni comburentur : & laborabunt populi in vanū, & regna conſumet ignis
& deficient. Verbum quod præcepit Jeremias propheta Saraiæ filio Neriæ, 59
filii Maaſiæ, quando pergebat in legatione Sedechiæ regis tribus domus Juda, in Babylonem, in anno quarto regni ejus. Saraias autem erat princeps munerum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܘܝ ܩܘܪܝܗ ܠܬܡܗܐ܆ ܐܝܟ ܐܪܥܐ ܚܪܒܬܐ ܘܨܕܝܬܐ. ܠܐ ܢܬܒ ܒܗܘܢ ܐܢܫ ܚܕ. ܘܠܐ ܢܥܒ
ܒܗܘܢ ܒܪܢܫܐ. * ܘܐܣܥܘܪ ܥܠ ܒܝܠ ܒܒܒܠ܆ ܘܐܦܩ ܒܠܥܬܗ ܡܢ ܦܘܡܗ
ܘܠܐ ܢܬܢܗܪܘܢ ܠܗ ܬܘܒ ܥܡܡܐ. ܐܦ ܫܘܪܗ ܕܒܒܠ܆ ܦܬܝܐ ܢܦܠ. * ܦܘܩ
ܡܢ ܓܘܗ ܥܡܝ: ܘܦܠܛܘ ܓܒܪ ܢܦܫܗ ܡܢ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. * ܕܠܡ
ܢܬܬܒܪ ܠܒܟܘܢ: ܘܬܕܚܠܘܢ ܡܢ ܫܡܥܐ ܕܡܫܬܡܥ ܒܐܪܥܐ. ܘܢܐܬܐ ܒܗ ܒܫܢܬܐ
ܫܡܥܐ. ܘܒܬܪܗ ܒܫܢܬܐ ܫܡܥܐ ܐܚܪܢܐ. ܘܢܗܘܐ ܚܛܘܦܝܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܢܩܘܡ ܫܠܝ
ܥܠ ܫܠܝܛ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܣܥܘܪ ܥܠ ܓܠܝܦ
ܕܒܒܠ. ܘܟܠܗ ܐܪܥܐ ܬܒܗܬ. ܘܟܠܗܘܢ ܩܛܝܠܝܗ ܢܦܠܘܢ ܒܓܘܗ. * ܢܫ
ܥܠ ܒܒܠ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. ܘܟܠ ܕܒܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܓܪܒܝܐ ܢܐܬܘܢ ܥܠ
ܒܙܘܙܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܦ ܒܒܒܠ ܢܦܠܘܢ ܩܛܝܠܐ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܐܝܠ
ܕܐܬܦܠܛܬܘܢ ܡܢ ܣܝܦܐ. ܙܠܘ ܘܠܐ ܬܩܘܡܘܢ. ܐܬܕܟܪܘ ܡܢ ܪܘܚܩܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܐܘܪܫ
ܬܣܩ ܥܠ ܠܒܟܘܢ. * ܘܢܐܡܪܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܒܗܬܢ ܛܒ. ܡܛܠ ܕܫܡܥ
ܚܣܕܐ. ܘܟܣܬ ܒܗܬܬܐ ܐܦܝܢ. ܡܛܠ ܕܥܠܘ ܢܘܟܪܝܐ ܠܡܩܕܫܗ ܕܡܪ
* ܡܛܠܗܢܐ ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܣܥܘܪ ܥܠ ܒܒܠ. ܘܥܠ ܓܠܝܦ
ܘܒܟܠܗ ܐܪܥܐ ܢܦܠܘܢ ܩܛܝܠܝܗ. * ܐܢ ܬܣܩ ܒܒܠ ܠܫܡܝܐ. ܘܐܢ ܬܥܫ
ܪܘܡܐ ܬܘܩܦܗ. ܡܢ ܠܘܬܝ ܢܐܬܘܢ ܒܙܘܙܐ ܥܠܝܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܩܠܐ ܕܝܠܠܬܐ
ܒܒܠ. ܘܬܒܪܐ ܪܒܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ. * ܡܛܠ ܕܒܙ ܡܪܝܐ ܠܒܒܠ. ܘܐܘ
ܡܢܗ ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. ܩܠܐ ܪܒܐ ܐܝܟ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܕܢܦܩ ܩܠܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐ
ܥܠ ܒܒܠ ܒܙܘܙܐ. ܘܐܬܬܚܕܘ ܓܢܒܪܝܗ. ܘܐܬܬܒܪܘ ܩܫܬܬܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܐܠ
ܦܘܪܥܢܐ ܡܪܝܐ. ܡܦܪܥ ܢܦܪܘܥ ܠܗܘܢ. * ܘܐܪܘܐ ܪܘܪܒܢܝܗ ܘܚܟܝܡܝܗ. ܘܚܐܪ
ܘܫܠܝܛܢܝܗ. ܘܓܢܒܪܝܗ. ܘܢܕܡܟܘܢ ܫܢܬܐ ܕܥܠܡ. ܘܠܐ ܢܬܬܥܝܪܘܢ. ܐܡ
ܡܠܟܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܫܘܪܗ ܕܒܒ
ܦܬܝܐ ܡܦܟܘ ܢܬܗܦܟܘܢ. ܘܬܪܥܝܗ ܪܡܐ ܒܢܘܪܐ ܢܐܩܕܘܢ. ܘܢܠܐܘܢ ܥܡ
ܣܪܝܩܐܝܬ. ܘܐܡܘܬܐ ܒܢܘܪܐ ܢܬܬܙܝܥܘܢ. * ܦܬܓܡܐ ܕܦܩܕ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܠܣ
ܒܪ ܢܪܝܐ ܒܪ ܡܚܣܝܐ. ܟܕ ܐܙܠ ܥܡ ܨܕܩܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ܠܒܒܠ. ܒܫܢܬ ܚܕܥܣ
ܕܡܠܟܘܬܗ. ܘܣܪܝܐ ܪܒ ܡܫܪܝܬܐ ܗܘܐ.

Erunt civitates ejus ſtupori, ſicut terra deſerta & ſolitaria : nemo inhabitabit eas, & nemo commorabitur in eis. 43
Viſitabo etiam Bil in Babele, & extraham lagana ejus ex ore ipſius, & non colent eum ampliùs gentes : quin & lata Babelis mœnia corruent. 44
Egredimini ex ea popule meus, & eripite quiſque ſeipſum ab æſtu furoris Domini; 45
Ne fortè conſternetur animus veſter, & paveatis ad rumorem qui audietur in terra : veniet enim eodem illo anno rumor, & poſt annum illum rumor alius, eritque violentia in terra, & ſurget princeps contra principem. 46
Propterea ecce dies venient, dicit Dominus, quibus animadvertam in ſculptilia Babelis, tota illa terra peribit, & omnes confoſſi ejus cadent in medio ipſius : 47
Gaudebunt de Babele cœli & terra, & quicquid in eis eſt ; quia ex Aquilone venient ſuper eam direptores, ait Dominus. 48
Atque etiam in Babele caſuri ſunt confoſſi in tota terra illa. 49
Qui gladium effugiſtis, abite, ne ſubſiſtatis : memores eſtote Domini de longinquo, & Jeruſalem vobis in mentem veniat. 50
Et dicent Iſraelitæ, Erubeſcimus vehementer, quoniam audivimus opprobrium ; & operuit ignominia vultus noſtros, quoniam intraverunt alienigenæ in ſanctuarium Domini. 51
Propterea ecce dies venient, ait Dominus, quibus animadvertam in Babelem & in ſculptilia ejus, & in tota terra cadent confoſſi ejus. 52
Etiamſi aſcenderet Babel in cœlum, & quanvis in ſublimi collocaret robur ſuum ; à me venirent adverſùs eam vaſtatores, ait Dominus. 53
Vox ululatûs è Babele, & confractio magna de terra Chaldæorum : 54
Quia vaſtavit Dominus Babelem, & perdidit ex ea homines & jumenta. Strepitus magnus ut aquarum multarum quarum ſonitus latè diffunditur : 55
Quia venerunt contra Babelem vaſtatores, capti ſunt heroes ejus, & arcus eorum confracti : nam Deus ultor Domin⁹ omnino rependet eis. 56
Et inebriabo magnates ejus, ſapientes, nobiles, principes, & potentes ejus, dormiéntque ſomno perpetuo, nec evigilabunt, ait rex cujus nomen eſt Dominus potentiſſim⁹. 57
Sic ait Domin⁹ potentiſſimus, Mœnia Babylonis latiſſima funditùs evertentur, & portæ ejus altiſſimæ igni ſuccendentur ; & fruſtrà fatigabuntur gentes, & nationes igne exagitabuntur. 58
Sermo quem præcepit Jeremia propheta Seriæ filio Neriæ filii Maaſiæ, quando cum Sedecia rege Judæ abiit Babylonem anno undecimo regni ejus : erat autem Seria princeps militiæ. 59

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا قال الرب عليك يا باروخ * لانك قلت الويل لي الويل لي ۔ لان الرب زادني تعبا
تعبي ۔ اضطجعت بتنهدات ولم اجد نياحا * قل له هكذا قال الرب ۔ ها الذين بنيتهم
انا اهدمهم ۔ والذين غرستهم انا اقلعهم * وانت تطلب لذاتك عظايم ۔ لاني ها انا اجلب
شرورا على كل ذي لحم يقول الرب ۔ واعطي نفسك للوجود في كل موضع حيث ما تسير هناك

* الفصل الثاني والخمسون *

* ولما كانت اثنان وعشرون سنة لصدقيا من مملكته ۔ وملك احدى عشر سنة في ايروشليم
واسم امه اميطال ابنة ارميا من لوبانا [Ox. MS. * وارتكب القبيح والسيئات امام الرب مثل
ما ارتكب يواقيم * من اجل هذه الامور غضب الرب ۔ ونزل غضبه باورشليم ويهودا حتى رمى بهم
وقذفهم من بين يديه ۔ وعصى صادقيا الملك ولم يخضع لبختنصر ملك بابل] * وكان في
السنة التاسعة من ملكه في الشهر السابع في العاشر من الشهر ۔ واتى بختنصر ملك بابل وكل
جيشه الى ايروشليم ۔ واحاط بها سياجا وبنى عليها كلاليب * واقبلت المدينة للضيق الى السنة
العاشرة للملك صدقيا * في الشهر الرابع في التاسع من الشهر ۔ واشتد الجوع في المدينة ولم
يك لشعب الارض خبز * وتشققت المدينة ۔ وجميع الرجال المحاربين خرجوا ليلا في طريق
الباب بين البابين والسور الذي كان عند بستان الملك ۔ والكلدانيون احاطوا بالمدينة ۔ وفروا في الطريق التي للاعراب

Ita dixit Dominus de te O Baruch. 2
Quia tu dixiſti; Væ mihi, væ mihi, quia Domin⁹ adjecit laborem ad laborem meũ, cũ ſuſpiriis cubo nec ullã invenio requiẽ: 3
Dic illi, Sic ait Dominus, Ecce eos quos ego ædificaveram, egomet demolior; & quos plantaverã, ego evello; 4
Et tu grandia tibi quæreres? Nam en ego mala ſum illaturus omni carne prædito, dicit Dominus : animam verò tuam dabo ſuperſtitem in omni loco ad quem perrexeris. 5

CAP. LII.

Cum autem haberet annos viginti duos Sedecia poſt regnum ſuum, & annos undecim regnâſſet in Jeruſalem; (nomen matris ejus erat Amitaal filia Jeremiæ de Lobena) 1
[MS.Ox. Iſte turpitudinem & ſcelera perpetravit cora Domino prout perpetraverat Joacim. 2
Ob haſce cauſas excanduit Dominus, et erupit furor ejus contra Jeruſalem, & contra Judam, donec projecerat eos, & expulerat à facie ſua. Rebellante enim rege Sedeciâ, & non obtemperante Bochtonaſſari regi Babelis,] 3
Factum eſt anno regni ipſi⁹ nono, menſe ſeptimo, decimâ menſis, ut veniens Bochtonaſſar rex Babelis cum toto exercitu ſuo in Jeruſalem, obſidione vallaret eam, & fabricaret adverſùs eam moles ad contorquenda ſaxa : 4
Procederétq; urbs in obſidione, uſq; ad annum decimum regis Sedeciæ. 5
Menſe quarto, nonâ menſis invaluit fames in urbe, ita ut nullus eſſet populo terræ panis : 6
Perrupta eſt urbs, & omnes viri bellatores exierunt noctu per viam portæ, inter portam & murum qui erat prope hortum regium (Chaldæis interim urbem obſidentibus) & fugerunt per viam quæ pergit ad Arabes. 7

ירמיה : נב

libro in Babel ad erat venturū quod malum omne Irmejahu scripsit Et
60 ויכתב ירמיהו את כל־הרעה אשר־תבוא אל־בבל אל־ספר
Irmejahu dixit Et .Babel ad scripta hæc verba omnia : uno
61 אחד את כל־הדברים האלה הכתבים אל־בבל׃ ויאמר ירמיהו
verba omnia leges & ,videbis & ,Babel te venire Secundum : Serajah ad
אל־שריה כבאך בבל וראית וקראת את כל־הדברים
,eū succidendū ad istum locum ad es locutus tu Domine ,dices Et .hæc
62 האלה׃ ואמרת יהוה אתה דברת אל־המקום הזה להכריתו
solitudines quia : animal ad usque & homine ab habitatorem eo in existendum non ad
לבלתי היות־בו יושב למאדם ועד־בהמה כי־שממות
ligabis : hunc librum legere te complere secundum ,erit Et .erit seculi
63 עולם תהיה׃ והיה ככלתך לקרא את־הספר הזה תקשר
infigetur Sic : dices Et .Perath medium in eum projicies &,lapidem eum super
64 עליו אבן והשלכתו אל־תוך פרת׃ ואמרת ככה תשקע
,eam super adducens ego quod ,mali faciebus à consurget non & , Babel
בבל ולא־תקום מפני הרעה אשר אנכי מביא עליה
.Irmejahu verba Hucusque .lassabuntur &
ויעפו עד־הנה דברי ירמיהו׃

CAP. LII. נב

annis decim--un & ,ipsum regnando in ,Sidchijahu anni unius & viginti Filius
1 בן־עשרים ואחת שנה צדקיהו במלכו ואחת עשרה שנה
.Libnah de Irmejahu filia Chamutal ejus matris nomen & : Jerusalaim in regnavit
מלך בירושלם ושם אמו חמיטל בת־ירמיהו מלבנה׃
super Quia .Jehojachim fecit quæ omnia juxta :Domini oculis in malum Fecitque
2 3 ויעש הרע בעיני יהוה ככל אשר־עשה יהויקים׃ כי על־
desuper ipsos eū projiciendū ad usque,Jehudah & ,Jerusalaim in fuit Domini furore
אף יהוה היתה בירושלם ויהודה עד־השליכו אותם מעל
nono anno in ,fuit Et .Babel regem in Sidchijahu rebellavitque :suis faciebus
4 פניו וימרד צדקיהו במלך בבל׃ ויהי בשנה התשעית
rex resar-Nebuchad venit mensis decima in decimo mense in ,ipsum regnando
למלכו בחדש העשירי בעשור לחדש בא נבוכדראצר מלך־
: eam super sunt castrametati & ,Jerusalaim super ejus virtus omnis & , ipse Babel
בבל הוא וכל־חילו על־ירושלם ויחנו עליה
ad usque,obsidione in civitas venit Et .undique ligneam turrim eā super ædificaverūt &
5 ויבנו עליה דיק סביב׃ ותבא העיר במצור עד
nona in quarto mense In .Sidchijahu regis annum undecimum
6 עשתי עשרה שנה למלך צדקיהו׃ בחדש הרביעי בתשעה
est dirupta Et .terræ populo panis erat non &,civitate in fames invaluit & mensis
7 לחדש ויחזק הרעב בעיר ולא־היה לחם לעם הארץ׃ ותבקע
portæ via nocte civitate de exieruntq; ,fugerunt belli viri omnes &,civitas
העיר וכל־אנשי המלחמה יברחו ויצאו מהעיר לילה דרך שער
undique civitatem super Chasdim & ,regis hortum super quæ ,muros duos inter
בין־החמתים אשר על־גן המלך וכשדים על־העיר סביב
, regem post Chasdim virtus sunt persecuti Et .solitudinis via abierunt &
8 וילכו דרך הערבה׃ וירדפו חיל־כשדים אחרי המלך
.eo desuper sunt dispersi ejus virtus omnis & : Jerecho desertis in Sidchijahu attigerūt &
וישגו את־צדקיהו בערבת ירחו וכל־חילו נפצו מעליו׃
Babel regem ad eum fecerunt ascendere & , regem comprehenderunt Et
9 ויתפשו את־המלך ויעלו אתו אל־מלך בבל
rex jugulavit Et .judicia eo cū est locutus & : Chamath terram in Riblah in
10 רבלתה בארץ חמת וידבר אתו משפטים׃ וישחט מלך־
Jehudah principes omnes etiam & : ejus oculis in Sidchijahu filios Babel
בבל את־בני צדקיהו לעיניו וגם את־כל־שרי יהודה
eum vinxit & , cæcavit Sidchijahu oculos Et .Riblah in jugulavit
11 שחט ברבלתה׃ ואת־עיני צדקיהו עור ויאסרהו
domo in eum dedit &,Babel in Babel rex eum fecit adducere & ,compedibus in
בנחשתים ויבאהו מלך־בבל בבלה ויתנהו בבית־
.eum mori diem ad usque præfecturarum
הפקדת עד־יום מותו׃

Versio VULG. LAT.

60 Et scripsit Jeremias omne malū, quod venturum erat super Babylonem, in libro uno: omnia verba hæc, quæ scripta sunt contra Babylonem. 61 Et dixit Jeremias ad Saraiam; Cùm veneris in Babylonē, & videris, & legeris omnia verba hæc, 62 Dices; Domine, tu locut' es contra locum istum ut disperderes eum: ne sit qui in eo habitet ab homine usque ad pecus, & ut sit perpetua solitudo. 63 Cúmque compleveris legere librum istum, ligabis ad eum lapidem, & projicies illum in mediū 64 Euphraten: Et dices; Sic submergetur Babylon, & non consurget à facie afflictionis, quam ego adduco super eam, & dissolvetur. Hucusque verba Jeremiæ.

CAP. LII.

1 Filius viginti & unius anni erat Sedecias cùm regnare cœpisset: & undecim annis regnavit in Jerusalem, & nomen matris ejus Amital, filia Jeremiæ de Lobna. 2 Et fecit malū in oculis Dñi, juxta 3 omnia quæ fecerat Joakim. Quoniam furor Domini erat in Jerusalem & in Juda, usquequò projiceret eos à facie sua: & recessit 4 Sedecias à rege Babylonis. Factū est autem in anno nono regni ejus, in mense decimo, decimâ mensis: Venit Nabuchodonosor rex Babylonis, ipse & omnis exercitus ejus, adversùs Jerusalem, & obsederunt eam, & ædificaverunt contra eam munitiones in 5 circuitu. Et fuit civitas obsessa usque ad undecimū annum regis 6 Sedeciæ. Mense autem quarto, nonâ mensis, obtinuit fames civitatem: & non erant alimenta po- 7 pulo terræ. Et dirupta est civitas, & omnes viri bellatores ejus fugerunt, exierúntque de civitate nocte, per viam portæ, quæ est inter duos muros, & ducit ad hortū regis, (Chaldæis obsidentib' urbem in gyro,) & abierunt per 8 viam, quæ ducit in eremum. Persecut' est autem Chaldæorum exercitus regem: et apprehenderunt Sedeciam in deserto, ꝙ est juxta Jericho: & omnis comitatus ejus 9 diffugit ab eo. Cúmque comprehendissent regē, adduxerunt eum ad regem Babylonis in Reblatha, quæ est in terra Emath: & locut' est ad eum judicia. 10 Et jugulavit rex Babylonis filios Sedeciæ in oculis ejus: sed & omnes principes Juda oc- 11 cidit in Reblatha. Et oculos Sedeciæ eruit, & vinxit eum compedibus, & adduxit eum rex Babylonis in Babylonem, & posuit eum in domo carceris usque ad diem mortis ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

8 Καὶ κατεδίωξεν ἡ δύναμις τῶν Χαλδαίων ὀπίσω τοῦ βασιλέως, ϗ (θ) κατέλαβον αὐτὸν ἐν τῷ πέραν Ἱεριχὼ, ϗ πάντες οἱ παῖδες αὐτοῦ διεσπάρησαν 9 ἀπ' αὐτοῦ. Καὶ συνέλαβον τὸν βασιλέα, ϗ ἤγαγον αὐτὸν πρὸς τὸν βασιλέα Βαβυλῶνος εἰς Δεβλαθὰ, ϗ ἐ- 10 λάλησεν αὐτῷ μετὰ κρίσεως, Καὶ ἔσφαξε βασιλεὺς Βαβυλῶνος τοὺς υἱοὺς Σεδεκίου κατ' ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, ϗ πάντας τοὺς ἄρχοντας Ἰούδα ἔσφαξεν ἐν 11 Δεβλαθά. Καὶ τοὺς ὀφθαλμοὺς Σεδεκίου ἐξετύφλωσε, ϗ ἔδησεν αὐτὸν ἐν πέδαις. ϗ ἤγαγεν αὐτὸν βασιλεὺς Βαβυλῶνος εἰς Βαβυλῶνα, ϗ ἔδωκεν αὐτὸν εἰς οἰκίαν (ι) μύλωνος, ἕως ἡ- 12 μέρας ἧς ἀπέθανε. Καὶ ἐν μηνὶ (κ) πέμπτῳ, δεκάτῃ τοῦ μηνὸς, ἦλθε Ναβουζαρδὰν ὁ ἀρχιμάγειρος (λ) ἑστηκὼς κατὰ πρόσωπον τοῦ βασιλέως Βαβυλῶ- 13 νος, εἰς Ἱερουσαλὴμ, Καὶ ἐνέπρησε τὸν οἶκον κυρίου, ϗ τὸν οἶκον τοῦ βασιλέως, ϗ πάσας τὰς οἰκίας τῆς πόλεως, ϗ πᾶσαν οἰκίαν μεγάλην ἐνέπρησεν ἐν 14 πυρί. Καὶ πᾶν τεῖχος (μ) Ἱερουσαλὴμ κύκλῳ καθεῖλεν ἡ δύναμις τῶν Χαλδαίων, ἡ μετὰ τοῦ ἀρχιμαγείρου. Καὶ 15 16 τοὺς καταλοίπους τοῦ λαοῦ κατέλιπεν ὁ ἀρχιμάγειρος εἰς ἀμπελουργοὺς ϗ εἰς 17 γεωργούς. Καὶ τοὺς στύλους τοὺς χαλκοῦς τοὺς ἐν (ν) οἴκῳ κυρίου, καὶ τὰς βάσεις, καὶ τὴν θάλασσαν τὴν χαλκῆν τὴν ἐν οἴκῳ κυρίου συνέτριψαν οἱ Χαλδαῖοι, ϗ ἔλαβον τὸν χαλκὸν αὐτῶν, 18 ϗ ἀπήνεγκαν εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ τὴν στεφάνην, ϗ τὰς φιάλας, ϗ τὰς κρεάγρας, ϗ πάντα τὰ σκεύη τὰ χαλκᾶ, ἐν 19 οἷς (ξ) ἐλειτούργουν ἐν αὐτοῖς, Καὶ τὰς (ο) ἀπφὼθ, ϗ τὰς μασμαρὼθ, καὶ τοὺς ὑποχυτῆρας, καὶ τὰς λυχνίας, καὶ τὰς θυΐσκας, καὶ τοὺς κυάθους, ἃ ἦν χρυσᾶ χρυσᾶ, καὶ ἃ ἦν ἀργυρᾶ ἀργυρᾶ, ἔλαβεν ὁ ἀρχιμάγειρος.

Et persequuta est virtus Chaldæorum post regem: & apprehenderunt eum trans Hiericho: & omnes pueri ejus dispersi sunt ab eo. Et ceperunt regem, & adduxerunt eum ad regem Babylonis in Deblatha: Et loquutus est ei cum judicio. Et jugulavit rex Babylonis filios Sedeciæ ante oculos ejus: & omnes principes Juda jugulavit in Deblatha. Et oculos Sedeciæ excæcavit, & ligavit eum in compedibus. Et duxit eum rex Babylonis in Babylonem, & dedit eum in domum pistrini usque in diem, qua mortuus est. Et in mense quinto, decimâ mensis, venit Nabuzardan princeps coquorum, qui stabat ante faciem regis Babylonis, in Hierusalem: Et incendit domum Domini, & domum regis, & omnes domos civitatis: & omnem domum magnam incendit in igne: Et omnem murum Hierusalem in circuitu destruxit virtus Chaldæorum, quæ cum principe coquorum. Et reliquos de populo reliquit princeps coquorum in vinitores & agricolas. Et columnas æreas, quæ in domo Domini, & bases, & mare æneum, quæ in domo Domini, contriverunt Chaldæi: & tulerunt æs eorum; & asportarunt in Babylonem: Et coronam, & phialas, & creagras, & omnia vasa ænea, in quibus ministrabant in eis, Et ipsas Aphphoth, & ipsas Masmaroth, & pelves, & candelabra, & mortariola, & cyathos, quæ erant aurea aurea, & quæ erant argentea argentea, tulit princeps coquorum.

MS. A. (θ) κατέλαβεν (ι) μύλωνος, ἕως ἀπέθανεν. (κ) τῷ πέμπτῳ, δεκάτῃ (λ) ὁ ἑστηκὼς κατὰ πρόσωπον βασιλέως (μ) ἐν Ἱερουσαλὴμ (ν) οἴκῳ κυρίου, * συνέτριψαν (ξ) ἐλειτούργουν (ο) ἀφφὼθ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

60 וכתב ירמיה ית כל בישתא דעתידא למיתי על בבל על ספרא חד ית כל פתגמיא
61 האלין דכתיבין על בבל׃ ואמר ירמיה לשריה כמיתך לבבל ותחזי ותקרי ית כל
62 פתגמיא האלין׃ ותימר יי את גזרתא על אתרא הדין לשציותיה בדיל דלא למהוי ביה
63 יתיב למאנשא ועד בעירא ארי צדות עלם תהי׃ ויהי כשציותך למקרי ית ספרא הדין
64 תקטר ביה אבנא ותרמיניה לגו פרת׃ ותימר כדין תשתקע בבל ולא תקום מן קדם
בישתא די אנא מיתי עלה וישתלהון עד הכא נבואת פתגמי ירמיה׃

נב

1 בר עסרין וחדא שנין צדקיה כד מלך וחדא עשרי שנין מלך בירושלם ושום אמיה
2 חמוטל בת ירמיה מלבנה׃ ועבד דביש קדם יי ככל די עבד יהויקים׃ ארי על דארגיזו
3 קדם יי הות בירושלם וביהודה עד דאגלי יתהון מארעא בית שכנתיה ומרד צדקיה
4 במלכא דבבל׃ והוה בשתא תשיעיתא למלכיה בירחא עשיראה בעסרא לירחא
אתא נבוכדרצר מלכא דבבל הוא וכל משריתיה על ירושלם ושרו עלה ובנו עלה
5 כרקום סחור סחור׃ ועלת קרתא בצירא עד חדא עסרי שנין למלכא צדקיה׃
6 בירחא רביעאה בתשעא לירחא ותקיף כפנא בקרתא ולא הות מיכל לעמא
7 דארעא׃ ואתרעת קרתא וכל גברי עבדי קרבא ערקו ונפקו מן קרתא בליליא באורח
תרע בין שוריא די על גנתא דמלכא וכסדאי שרן על קרתא סחור סחור ואזלו באורח
8 מישרא׃ ורדפו משרית כסדאי בתר מלכא ואדביקו ית צדקיה במישרי ירחו וכל
9 משריתיה אתבדרא מניה׃ ואחידו ית מלכא ואסיקו יתיה לות מלכא דבבל לרבלת
10 בארעא דחמת ומלל עמיה פתגמי דינין׃ ונכיס מלכא דבבל ית בני צדקיה ברבלתה
11 לעינוהי ואף ית כל רברבי יהודה נכס ברבלתה׃ וית עיני צדקיה עור ואסריה
בשלשלן דנחש ואובליה מלכא דבבל לבבל ויהביה בבית אסירי עד יום מותיה׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et scripsit Jeremias omne malum quod venturum erat super Babylonem in libro uno; omnia verba hæc quæ scripta sunt contra Babylonem. Et dixit Jeremias ad Saraiam, Cùm veneris in Babylonem, & videbis et leges omnia verba hæc. Et dices: Dñe tu decrevisti contra locum istum, ut disperderes eum, ne sit in eo habitator ab homine usque ad jumentum: ut perpetua sit vastitas. Et erit cùm consummaveris legere librum istum, ligabis in eo lapidem, & projicies eum in medium Euphratis. Et dices: Sic mergetur Babylon, & non consurget, propter malum quod ego adducam super eam, & deficient. Hucusque prophetia sermonum Jeremiæ.

CAP. LII.

Filius viginti & unius anni erat Sedechias quando regnavit, & undecim annis regnavit in Jerusalem: & nomen matris ejus Hamutal filia Jeremiæ de Lobna. Et fecit quod malum est coram Dño, juxta omnia quæ fecerat Jojachim. Quia pro eo quòd irritassent Dñm, fuit [*ira Domini*] in Jerusalem & Juda, donec transmigrare fecit eos de terra domus majestatis suæ. Et rebellavit Sedechias in regem Babylonis. Et factum est anno nono regni ejus, mense decimo, decima die mensis, venit Nabuchodonosor rex Babylonis, ipse & omnis exercitus ejus contra Jerusalem, & castrametati sunt contra eam, & ædificaverunt adversùs eam machinas per circuitum. Venitque civitas in obsidionem usque ad undecimum annum regis Sedechiæ. Mense quarto, nona die mensis, prævaluit fames in civitate, adeò ut non essent alimenta populo terræ. Et dirupta est civitas, & omnes viri bellatores fugerunt, & egressi sunt de civitate nocte per viam portæ inter muros qui erant juxta hortum Regis. (Chaldæi autem castrametati erant per circuitum civitatis:) & abierunt per viam campestrem. Et persecuti sunt exercitus Chaldæorum post regem, & apprehenderunt Sedechiam in campestribus Jericho: & omnis exercitus ejus dispersus est ab eo. Et comprehenderunt Regem, & adduxerunt eum ad regem Babylonis in Riblath in terram Hemath: & locutus est cum eo verba judiciorum. Et jugulavit rex Babylonis filios Sedechiæ in Riblah in oculis ejus, & etiam omnes principes Juda jugulavit in Riblah. Oculos autem Sedechiæ excæcavit; & vinxit eum catenis æreis, & duxit eum rex Babylonis in Babylonem, & posuit eum in domo vinctorum usque in diem mortis ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܟܬܒ ܐܪܡܝܐ ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ ܕܐܬܝܐ ܥܠ ܒܒܠ ܒܟܬܒܐ ܚܕ܆ ܟܠܗܘܢ ܡ̈ܠܐ ܗܠܝܢ
ܕܟܬܝܒܢ ܥܠ ܒܒܠ. * ܘܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܠܣܪܝܐ. ܡܐ ܕܥܠܬ ܠܘܬ ܒܒܠ܀ ܩܪܝ
ܘܚܙܝ ܟܠܗܘܢ ܦܬܓ̈ܡܐ ܗܠܝܢ. ܘܐܡܪ. * ܡܪܝܐ ܐܢܬ ܡܠܠܬ ܥܠ ܐܬܪܐ ܗܢܐ
ܠܡܘܒܕܘܬܗ܀ ܕܠܐ ܢܗܘܐ ܒܗ ܕܢܬܒ ܡܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܒܥܝܪܐ. ܡܛܠ
ܕܠܚܘܪܒܐ ܕܥܠܡ ܢܗܘܐ. * ܘܡܐ ܕܫܠܡܬ ܠܡܩܪܐ ܟܬܒܐ ܗܢܐ܀ ܐܣܘܪ ܒܗ
ܟܐܦܐ. ܘܫܕܝܗܝ ܒܦܪܬ. * ܘܐܡܪ܀ ܗܟܢܐ ܬܛܒܥ ܒܒܠ ܘܠܐ ܬܩܘܡ܀ ܡܢ ܩܕܡ
ܒܝܫܬܐ ܕܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܗܘܢ ܘܢܬܕܠܚܘܢ.

* ܥܕܡܐ ܠܗܪܟܐ ܦܬܓ̈ܡܘܗܝ ܕܐܪܡܝܐ *

* ܫܠܡܘ * ܢܒ *

* ܒܪ ܥܣܪܝܢ ܗܘܐ ܘܚܕܐ ܫܢܝܢ ܨܕܩܝܐ ܟܕ ܐܡܠܟ. ܘܚܕܥܣܪܐ ܫܢܝܢ ܐܡܠܟ ܒܐܘܪܫܠܡ܆
ܘܫܡܗ ܕܐܡܗ ܚܡܘܛܠ܀ ܒܪܬ ܐܪܡܝܐ ܡܢ ܠܒܢܐ. * ܘܥܒܕ ܕܒܝܫ ܩܕܡ ܡܪܝܐ
ܐܝܟ ܕܥܒܕ ܝܘܝܩܝܡ. * ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܗܘܐ ܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ܀ ܘܥܠ
ܝܗܘܕܐ܀ ܥܕܡܐ ܕܫܕܐ ܐܢܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܐܦܘܗܝ. ܘܡܪܕ ܨܕܩܝܐ ܥܠ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ.
* ܘܒܫܢܬܐ ܕܬܫܥ ܠܡܠܟܘܬܗ ܒܝܪܚܐ ܕܥܣܪܐ܀ ܒܥܣܪܐ ܒܗ ܒܝܪܚܐ ܗܘ܀ ܐܬܐ
ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܗܘ ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܫܪܘ ܥܠܝܗ̇
ܘܒܢܘ ܥܠܝܗ̇ ܩܠܩܘܡܐ ܡܢ ܚܕܪܐ. * ܘܗܘܬ ܡܕܝܢܬܐ ܒܡܨܘܪܐ. ܥܕܡܐ ܠܫܢܬ ܚܕܥܣܪ
ܠܡܠܟܐ ܨܕܩܝܐ. * ܘܒܝܪܚܐ ܕܚܡܫܐ ܒܬܫܥܐ ܒܗ ܒܝܪܚܐ܀ ܟܕ ܬܩܦ ܟܦܢܐ ܒܡܕܝܢܬܐ
ܘܠܝܬ ܗܘܐ ܠܚܡܐ ܠܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܬܬܪܥܬ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܒܪ̈ܐ ܩܪܒܬܢ̈ܐ
ܥܪܩܘ ܘܢܦܩܘ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܒܠܠܝܐ܀ ܒܐܘܪܚܐ ܕܬܪܥܐ ܕܒܝܬ ܫܘܪ̈ܐ ܕܠܘܬ ܓܢܬܐ
ܕܡܠܟܐ. ܘܟܠܕܝ̈ܐ ܚܕܝܪܝܢ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܐܙܠܘ ܒܐܘܪܚܐ ܕܥܪܒܬܐ. * ܘܪܕܦܘ ܚܝܠܐ
ܕܟܠܕܝ̈ܐ ܒܬܪ ܡܠܟܐ܀ ܘܐܕܪܟܘܗܝ ܠܨܕܩܝܐ ܒܡܫܪܐ ܕܐܝܪܝܚܘ. ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ ܐܬܒܕܪ
ܡܢܗ. * ܘܐܚܕܘܗܝ ܠܡܠܟܐ܀ ܘܐܣܩܘܗܝ ܠܘܬ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܕܒܠܬ ܒܐܪܥܐ
ܕܚܡܬ. ܘܡܠܠ ܥܡܗ ܕܝܢܐ. * ܘܢܟܣ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܒܢܘܗܝ ܕܨܕܩܝܐ ܠܥܝܢܘܗܝ. ܘܐܦ
ܟܠܗܘܢ ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܢܟܣ ܒܕܒܠܬ. * ܘܠܥܝܢܘܗܝ ܕܨܕܩܝܐ ܥܘܪ. ܘܐܣܪܗ
ܒܫܫܠܬܐ. ܘܐܝܬܝܗ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܒܒܠ. ܘܝܗܒܗ ܒܒܝܬ
ܐܣܝܪ̈ܐ. ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܐ ܕܡܝܬ.

* Nam poſtquam ſcripſiſſet Jeremia totum malum quod eventurum erat Babyloni, in libro uno, omnia verba iſta quæ ſcripta ſunt contra Babylonem; 60 Dixit Jeremia Seriæ, 61 Quum ingreſſus fueris Babylonem, lege & conſidera omnes ſermones iſtos, & dic; Domine, tu dixiſti te locum hunc perditurum, 62 ita ut non maneat in eo ullus habitator tam ex hominibus quàm jumentis, eò quòd futurus ſit deſolationi perpetuæ. Cúmque hujus libelli lectionem abſolveris, 63 alligato ei lapidem, & in Euphratem projicito, Ac dicito; Ita cadat Babylon, neque reſurgat 64 à malo quod inducturus ſum ſuper eos, ſed deturbentur.

Hactenus ſermones Jeremiæ.

CAP. LII.

Natus erat annos viginti unum Sedecia 1 quando regnavit, & annis undecim regnavit in Jeruſalem: nomen autem matris ejus erat Hamtol filia Armejæ de Lebna. Is malum 2 perpetravit coram Domino, quemadmodum fecerat Jojacimus. Horum cauſâ fuit ira Do- 3 mini contra Jeruſalem & contra Judam, adeò ut projiceret eos à facie ſua. Cùm enim rebellâſſet Sedecia contra Nebuchadnoſarem regem Babylonis; Anno nono regni ipſius, 4 menſe decimo, *die* decimâ hujus ejuſdem menſis, venit Nebuchadnoſar rex Babylonis unà cum omnibus copiis ſuis contra Jeruſalem, obſederunt eam, & aggeribus cinxerunt eam circunquaque; Fuitque civitas obſidione 5 detenta uſque ad annum undecimum regis Sedeciæ. Menſe autem quinto, nonâ die 6 ejuſdem menſis, cùm invaluiſſet fames in civitate, ita ut non eſſet panis populo terræ, Et perrupta eſſet civitas; omnes viri bellato- 7 res fugerunt, egreſsíque ſunt è civitate noctu per illam portæ viam inter muros ſitæ, quæ erat ſecus hortos regios, Chaldæis civitatem obſidentibus; & abierunt viâ campeſtri. Copiæ verò Chaldæorum, regem inſe- 8 cutæ, prehenderunt Sedeciam in campis Jericho, & totus exercitus ejus diſſipatus eſt ab eo. Captúmque regem deduxerunt ad re- 9 gem Babylonis Deblatham in terra Hamathæ; ubi initis cum eo rationibus, Jugula- 10 ri juſſit rex Babelis filios Sedeciæ ipſo ſpectante, omnéſque nobiles Judæ interfecit in Deblatha: Sedeciam verò oculis excæca- 11 tum vinxit catenis, perduxítque eum rex Babylonis in Babylonem, & tradidit carceri uſque ad diem quâ mortuus eſt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وطرد جيش الكلدانيين خلف الملك * وادركوه في عبر اريحا * وجميع عبيدك تفرقوا
عنه * فقبضوا الملك وساقوه الي ملك بابل الي دبلاثا * فتكلم معه بحكم * وذبح ملك
بابل بني صدقيا لعينيه * وذبح جميع رؤساء يهودا في دبلاثا * واعمي عيني صدقيا
وربطه بقيود وساقه ملك بابل الي بابل * واسلمه لبيت الرحي حتي مات * وفي الشهر الخامس
في العاشر من الشهر * اتي نابوزردان رييس الطباخين الواقف لوجه ملك بابل الي
ايروسليم * واحرق بيت الرب وبيت الملك وكل مساكن المدينة * وكل منزل كبير
احرقه بالنار * وهدم كل سور في ايروسليم من حولها جيش الكلدانيين الذي مع رييس
الطباخين * * وترك رييس الطباخين بقايا الشعب كرامين وفلاحين * وكسر الكلدانيون
العمد النحاس الذي في بيت الرب * واخذوا نحاسهم وحملوه الي بابل * و[illegible]
والهدابات والمصافي وكل الاواني النحاس الذين يخدمون بهم * والقصاع والقوارير * والمراجل
والمناير * والاحقاق والمناشل * التي كانت ذهبا ذهبا والتي كانت فضة فضة * اخذها
رييس الطباخين *

At exercitus Chaldæorum perſecutus 8 *regem, aſſecuti ſunt eum in altera parte Jericho: cúmque omnes ſervi ejus diſperſi eſſent ab eo, Ceperunt re-* 9 *gem, duxeruntque eum ad regem Babelis in Deblatham; qui allocutus eſt eum cum imperio. Deinde jugulavit rex* 10 *Babelis filios Sedeciæ ob oculos ejus, & jugulavit omnes principes Judæ in Deblatha: Sedeciæ oculos excæcavit,* 11 *& compedibus vinctum abduxit rex Babelis in Babelem, poſuitque in domo piſtrini quoad mortuus eſt. Menſe* 12 *quinto, decimâ menſis, Nabuzardan coquorum præfectus, qui ſtabat ante faciem regis Babelis, venit Jeroſolymam, Combuſſitque domum Domini, domum* 13 *regis, & omnes urbis habitationes, omnéque palatium magnum igne ſuccendit: Omnes quoque muros qui erant* 14 *in Jeruſalem circunquaque, deſtruxit exercitus Chaldæorum qui erat cum præfecto coquorum. Reliquias verò po-* 15 *puli reliquit præfectus coquorum in vi-* 16 *nitores & aratores. Et fregerunt Chal-* 17 *dæi columnas æneas quæ erant in domo Domini, acceperunt æs illarum, & aſportaverunt in Babelem. Item coro-* 18 *nam, aquaria, cola, cunctaque vaſa ænea quibus miniſtrabant, Diſcos,* 19 *alabaſtra, cacabos, candelabra, pixides, & fuſcinulas tam aureas quàm argenteas; tulit præfectus coquorum:*

regis annus decimus nonus annus ipſe ,menſis decima in quinto menſe in Et
12 ובחדש החמישי בעשור לחדש היא שנת תשע עשרה שנה למלך
facies ad ſtabat laniorum princeps Nebuzaradan venit , Babel regis Nebuchadreſar
נבוכדראצר מלך בבל בא נבוזראדן רב־טבחים עמד לפני
: regis domum & ,Domini domum incendit Et .Jeruſalaim in Babel regis
13 מלך בבל בירושלם : וישרף את־בית־יהוה ואת־בית המלך
Et .igni in combuſſit magnam domum omnem & ,Jeruſalaim domos omnes &
14 ואת כל־בתי ירושלם ואת־כל־בית הגדול שרף באש : ואת־
cum qui , Chaſdim virtus omnis deſtruxerunt : undique Jeruſalaim muros omnes
כל־חומת ירושלם סביב נתצו כל־חיל כשדים אשר את־
relictis populi reſiduo & , populi tenuitatibus de Et .laniorum magiſtro
15 רב־טבחים : ומדלות העם ואת־יתר העם הנשארים
: turbæ reſiduo & , Babel regem ad incubuerunt qui , incumbentibus & ,civitate in
בעיר ואת־הנפלים אשר נפלו אל־מלך בבל ואת יתר האמון
fecit remanere ,terræ tenuitatibus de Et .laniorum magiſter Nebuzaradan fecit tranſmigrare
16 הגלה נבוזראדן רב־טבחים : ומדלות הארץ השאיר
columnas Et .agricolas in & , vinitores in : laniorum magiſter Nebuzaradan
17 נבוזראדן רב־טבחים לכרמים וליגבים : ואת־עמודי
domo in quod , æreum mare & , baſes & ,Domini domo quæ , æris
הנחשת אשר לבית־יהוה ואת־המכנות ואת־ים הנחשת אשר בבית־
.Babel in eorum æs omne detulerunt & : Chaſdim confregerunt , DOMINI
יהוה שברו כשדים וישאו את־כל נחשתם בבלה :
,cochlearia & , pelves & , pſalteria & , ſcopas & , lebetes Et
18 ואת־הסרות ואת־היעים ואת־המזמרות ואת־המזרקת ואת־הכפות
, hydrias Et .tulerunt eis in miniſtrabant quibus , æris vaſa omnia &
19 ואת כל־כלי הנחשת אשר־ישרתו בהם לקחו : ואת־הספים
, cochlearia & , lucernas & , ollas & , pelves & , thuribula &
ואת־המחתות ואת־המזרקות ואת־הסירות ואת־המנרות ואת־הכפות
.laniorum magiſter tulit : argentum argentum quæ & ,aurum aurum quæ purificatoria &
ואת־המנקיות אשר זהב זהב ואשר־כסף כסף לקח רב טבחים :
ſub qui , æris decim---duo boves & ,unum mare ,duas Columnas
20 העמודים שנים הים האחד והבקר שנים־עשר נחשת אשר־תחת
pondus erat non , Domini domo in Selomoh rex fecerat quos , baſibus
המכנות אשר עשה המלך שלמה לבית יהוה לא־היה משקל
ſtatura cubitorū decem octo columnas Et .iſtorum vaſorum omnium æris
21 לנחשתם כל־הכלים האלה : והעמודים שמנה עשרה אמה קומה
digitorū quatuor ejus craſſitudo & : eā circuibat cubitorū decim-duo filum & ,unius columnæ
העמד האחד וחוט שתים־עשרה אמה יסבנו ועביו ארבע אצבעות
quinque unius coronamenti ſtatura & , æs ,eam ſuper coronamentum Et .concava
22 נבוב : וכתרת עליו נחשת וקומת הכתרת האחת חמש
hæc ſicut & : æs omne ,circum coronamentum ſuper malogranata & ,retiaculū & : cubitorū
אמות ושבכה ורמונים על־הכותרת סביב הכל נחשת וכאלה
ventum ad ,ſex & nonaginta malogranata fuerunt Et .malogranata & ,ſecunda columna in
23 לעמוד השני ורמונים : ויהיו הרמנים תשעים וששה רוחה
laniorum magiſter tulit Et .undique retiaculum ſuper centum malogranata omnia
24 כל־הרמנים מאה על־השבכה סביב : ויקח רב־טבחים את־
.liminis cuſtodes tres & : ſecundum ſacerdotē Sephanjah & , caput ſacerdotē Serajah
שריה כהן הראש ואת־צפניה כהן המשנה ואת־שלשת שמרי הסף :
, belli viros ſuper præpoſitus erat qui ,unum eunuchum tulit civitate de Et
25 ומן־העיר לקח סריס אחד אשר־היה פקיד על־אנשי המלחמה
principē ſcribam & ,civitate in ſunt invēti qui , regis facies videntib⁹ ex viros ſeptem &
ושבעה אנשים מראי פני־המלך אשר נמצאו בעיר ואת ספר שר
inventis , terræ populo de viros ſexaginta & : terræ populum exercentem , militiæ
הצבא המצבא את־עם הארץ וששים איש מעם הארץ הנמצאים
eos fecit ire & : laniorum magiſter Nebuzaradan eos tulit Et .civitatis medio in
26 בתוך העיר : ויקח אותם נבוזראדן רב־טבחים וילך אותם
.ſua humo deſuper Jehudah eſt tranſlatus & : Chamath terra in ,Riblah in eos interfecit & , Babel rex eos fecit percutere Et .Riblah in Babel regem ad
27 אל־מלך בבל רבלתה : ויכה אותם מלך בבל וימתם ברבלה בארץ חמת ויגל יהודה מעל אדמתו :

Verſio VULG. LAT.

12 In menſe autem quinto, decimâ menſis, ipſe eſt ann⁹ nonusdecim⁹ Nabuchodonoſor regis Babylonis : venit Nabuzardan princeps militiæ, qui ſtabat corā rege 13 Babylonis in Jeruſalem. Et incendit domum Domini, & domum regis, & omnes domos Jeruſalē, & omnē domum magnam 14 igni combuſſit. Et totum murum Jeruſalem p circuitum deſtruxit, cunct⁹ exercit⁹ Chaldæorum, qui 15 erat cum magiſtro militiæ. De pauperibus autē populi, & de reliquo vulgo, quod remanſerat in civitate, & de perfugis, qui tranſfugerant ad regē Babylonis, & cæteros de multitudine, tranſtulit Nabuzardan princeps mi- 16 litiæ. De pauperibus verò terræ reliquit Nabuzardan princeps militiæ vinitores, & agricolas, 17 Columnas quoque æreas, quæ erant in domo Domini, & baſes, & mare æneum, qđ erat in domo Domini, confregerunt Chaldæi, & tulerunt omne æs eorum in 18 Babylonem. Et lebetes, & creagras, & pſalteria, & phialas, & mortariola, & omnia vaſa ærea, quæ in miniſterio fuerant, tule- 19 runt: & Hydrias, & thymiamateria, & urceos, & pelves, & candelabra, & mortaria, & cyathos: quotquot aurea, aurea; & quotquot argentea, argentea, tulit ma- 20 giſter militiæ: Et columnas duas, & mare unum, & vitulos duodecim æreos, qui erant ſub baſibus, quas fecerat rex Salomon in domo Domini: nō erat pondus æris 21 omnium horum vaſorum. De columnis autē, decē & octo cubiti altitudinis erāt in columna una, & funiculus duodecim cubitorum circuibat eā: porrò groſſitudo ejus quatuor digitorum, & in- 22 trinſecùs cava erat. Et capitella ſuper utramq; ærea: altitudo capitelli uni⁹ quinque cubitorum: & retiacula, & malogranata ſup 23 coronā in circuitu, oīa ærea. Similiter columnæ ſecundæ, & malogranata. Et fuerūt malogranata nonagintaſex depēdentia: & oīa malogranata centū, retiaculis circumdabantur. 24 Et tulit magiſter militiæ Saraiā ſacerdotē primum, & Sophoniā ſacerdotem ſecundum, 25 & tres cuſtodes veſtibuli. Et de civitate tulit eunuchum unum, qui erat præpoſitus ſuper viros bellatores: & ſeptem viros de his, qui videbant faciem regis, qui inventi ſunt in civitate : & ſcribam principem militum, qui probabat tyrones: & ſexaginta viros 26 de populo terræ, qui inventi ſunt in medio civitatis. Tulit autem eos Nabuzardan ma- 27 giſter militiæ, & duxit eos ad regem Babylonis in Reblatha. Et percuſſit eos rex Babylonis, & interfecit eos in Reblatha in terra Emath: & tranſlatus eſt Juda de terra ſua.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

20 Καὶ οἱ στῦλοι δύο, καὶ ἡ θάλασσα μία, καὶ οἱ μόσχοι δώδεκα χαλκοῖ ὑποκάτω τῆς θαλάσσης, ἃ ἐποίησεν ὁ βασιλεὺς Σαλωμὼν εἰς οἶκον κυρίου, (π) οὐκ ἦν σταθμὸς τοῦ χαλκοῦ αὐτῶν. 21 Καὶ οἱ στῦλοι τριακονταπέντε (ς) πηχῶν ὕψος τοῦ στύλου τοῦ ἑνός, καὶ σπαρτίον δώδεκα πηχῶν (ρ) περιεκύκλου αὐτόν, καὶ τὸ πάχος αὐτοῦ (σ) δακτύλων τεσσάρων κύκλῳ. 22 Καὶ γεῖσος ἐπ' αὐτοῖς χαλκοῦν, καὶ πέντε πηχῶν τὸ μῆκος, ὑπεροχὴ τοῦ γείσους τοῦ ἑνός, καὶ δίκτυον καὶ ῥοαὶ (τ) ἐπὶ τοῦ γείσους κύκλῳ τὰ πάντα χαλκᾶ, καὶ κατὰ ταῦτα τῷ στύλῳ τῷ δευτέρῳ, ὀκτὼ ῥοαὶ τῷ πήχει τοῖς δώδεκα πήχεσι. 23 Καὶ ἦσαν αἱ ῥοαὶ ἐνενηκονταὲξ τὸ ἓν μέρος, καὶ ἦσαν αἱ πᾶσαι ῥοαὶ ἑκατὸν ἐπὶ τοῦ δικτύου κύκλῳ. 24 Καὶ ἔλαβεν ὁ ἀρχιμάγειρος τὸν ἱερέα τὸν πρῶτον, καὶ τὸν ἱερέα τὸν δευτερεύοντα, καὶ τοὺς τρεῖς τοὺς (υ) φυλάττοντας τὴν ὁδόν, 25 (φ) Καὶ εὐνοῦχον ἕνα ὃς ἦν ἐπιστάτης τῶν ἀνδρῶν τῶν πολεμιστῶν, καὶ ἑπτὰ ἄνδρας ὀνομαστούς, τοὺς ἐν προσώπῳ τοῦ βασιλέως, τοὺς εὑρεθέντας ἐν τῇ πόλει, καὶ τὸν γραμματέα τῶν δυνάμεων, τὸν γραμματεύοντα τῷ λαῷ τῆς γῆς, καὶ ἑξήκοντα ἀνθρώπους ἐκ τοῦ λαοῦ τῆς γῆς, τοὺς εὑρεθέντας ἐν μέσῳ τῆς 26 πόλεως. Καὶ ἔλαβεν αὐτοὺς Ναβουζαρδὰν ὁ (ψ) ἀρχιμάγειρος τοῦ βασιλέως, καὶ ἤγαγεν (χ) αὐτοὺς πρὸς βασιλέα Βαβυλῶνος εἰς Δεβλαθά.

Et columnæ duæ, & mare unum, & vituli duodecim ænei ſubtus mare, quæ fecerat rex Salomon in domo Domini, cujus non erat pondus æris eorum: 21 *Et columnæ (ς) triginta quinque cubitorum altitudo columnæ unius: et funiculus duodecim cubitorū circundabat eam: & craſſities ejus digitorum quatuor in circuitu:* 22 *Et epiſtylium ſuper eas æneum, & quinque cubitorum longitudo, exceſſus epiſtylii unius, & rete, & malogranata ſuper epiſtylium in circuitu, omnia ænea: & juxta hæc columnæ ſecundæ, octo malogranata cubito, duodecim cubitis.* 23 *Et erant malogranata nonaginta ſex latus unum: & erant omnia malogranata centum ſuper rete in circuitu.* 24 *Et tulit princeps coquorum (m) ſacerdotē primum, & ſacerdotē ſecundū, & tres illos, qui cuſtodiebant viā,* 25 *Et eunuchum unū, qui erat præfectus virorū bellatorum, & ſeptem viros nominatos, qui in facie regis, inventos in civitate, & ſcribam virtutū ſcribentē populo terræ, et ſexaginta homines de populo terræ, inventos in medio civitatis.* 26 *Et tulit eos Nabuzardan princeps coquorum regis: & duxit eos ad regē Babylonis in Deblatha.*

MS. A. (π) οὐκ ἦν (ς) πήχεων (ρ) περιεκύκλουν (σ) τεσσάρων δακτύλων (τ) ἐπὶ γείσους (υ) φυλάσσοντας (φ) Καὶ ἐκ τῆς πόλεως ἔλαβεν εὐνοῦχον (ψ) ἀρχιμάγειρος, καὶ (χ) * αὐτόν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 ובירחא חמישאה בעסרא לירחא היא שנת תשע עשרי שנין למלכא נבוכד ראצר
13 מלכא דבבל אתא נבוזר אדן רב קטוליא קם קדם מלכא דבבל בירושלם : ואוקיד ית
בית מקדשא דיי וית בית מלכא וית כל בתי ירושלם וית כל בתי רברביא אוקיד בנורא:
14 15 וית כל שורי ירושלם סחור סחור תרעו כל משרית כסדאי דעם רב קטוליא : ומחשיכי
עמא וית שאר דעמא דאשתארא בקרתא וית שמיעיא דאשתמעו על מלכא דבבל וית
16 שאר המונא אגלי נבוזר אדן רב קטוליא : ומחשיכי עמא דארעא אשאר נבוזר אדן רב
17 קטוליא למהוי מפלחין בחקלין ובכרמין : וית עמודי נחשא די בבית מקדשא דיי וית
בסיסיא וית ימא דנחשא די בבית מקדשא דיי תברו כסדאי ואובילו ית כל נחשהון
18 לבבל : וית דודיא וית מגרופיתא וית מזמריא וית מזרקיא וית בזיכיא וית כל מני נחשא
19 דהוו משמשין בהון נסיבו : וית קוליא וית מחתיתא וית מזרקיא וית דודיא וית
מנרתא וית בזיכיא וית מכילתא דדהבא דהבא ודי כספא כספא נסיב רב קטוליא :
20 עמודיא תרין ימא חד ותורי תרי עסר דנחשא דתחות בסיסיא דעבד מלכא שלמה
21 בבית מקדשא דיי לא הוה מתקל לנחשהון דכל מניא האלין : ועמודיא תמנא עסרי
אמין רומיה דעמודא חד וחוט משח תרתא עסרי אמין מקף לה סחור סחור וסומכיה
22 ארבע אצבעין חליל : וקרונתהון עלוהי דנחשא ורומא דקרונתהון חדא חמש אמין
וסרגתא ורמוניא על קרונתהון סחור סחור כולא נחשא וכאלן לעמודא תנינא
23 ורמוניא. והוו רמוניא תשעין ושתא בעברתא כל רמוניא מאה על סרגתא סחור סחור:
24 25 ודבר רב קטוליא ית שריה כהנא רבא וית צפניה סגן כהניא וית תלתא אמרכליא : ומן
קרתא דבר גזאה חד דהוה ממנא על גברי עבדי קרבא ושבעא גברין דחזן אפי מלכא
דאשתכחו בקרתא וית ספרא רב חילא דכניש ית עמא דארעא ושתין גברא מעמא
26 דארעא דאשתכחו בגו קרתא : ודבר יתהון נבוזר אדן רב קטוליא ואוביל יתהון לות
27 מלכא דבבל לרבלת : ומחא יתהון מלכא דבבל וקטלנון ברבלה בארעא דחמת
ואתגליאו דבית יהודה מעל ארעהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

12 Menſe autem quinto decima die menſis (ipſe eſt annus decimus nonus regis Nabuchodonozor regis Babylonis) venit Nabuzardan princeps occidentium, & ſtetit ante regem Babylonis in Jeruſalem. 13 Et ſuccendit domum ſanctuarii Dñi, & domum Regis, & omnes domos Jeruſalem, & cunctas domos principum ſuccendit igni: 14 Et omnes muros Jeruſalem per circuitum deſtruxit omnis exercitus Chaldæorum qui [*venerat*] cum principe occidentium. 15 Et de pauperib⁹ populi, & reliquum populum qui remanſerat in civitate, & profugos qui transfugerant ad regem Babylonis, & reliquam multitudinem tranſmigrare fecit Nabuzardan princeps occidentium. 16 Et de pauperib⁹ populi terræ reliquit Nabuzardan princeps occidentium, ut colerent agros & vineas. 17 Et columnas æreas quæ erant in domo ſanctuarii Domini, & baſes, & mare æreum qđ erat in domo ſanctuarii Domini, confregerunt Chaldæi, & detulerunt omne æs eorum in Babylonem: 18 Et lebetes, & ſcopas, & pſalteria, & phialas, & cochlearia, & omnia vaſa ærea quib⁹ miniſtrabant, tulerunt: 19 Et hydrias, & thuribula, & pelves, & ollas, & candelabra, & mortariola, & cyathos: quæ aurea, aurea; & quæ argentea, argentea, tulit princeps occidentium. 20 Columnas duas, mare unum, & duodecim boves æneos qui ſub baſibus erant, quæ fecerat rex Salomon in domo ſanctuarii Dñi: non erat pondus æris omnium vaſorum iſtorum. 21 Columnarum autem, decem & octo cubitorum erat altitudo columnæ uni⁹; & funicul⁹ menſuræ duodecim cubitorum ambiebat eam circumquaque, & groſſitudo ejus erat quatuor digitorum, & concava erat. 22 Et capitella erant ſup eam ærea, & altitudo capitelli uni⁹ quinque cubitorum erat: & retiaculum, & malogranata ſuper capitella in circuitu, omnia ærea : & ſimilia erant columnæ ſecundæ & malogranata. 23 Fuerunt autem malogranata nonaginta & ſex in latere uno: omnia malogranata centū ſuper retiaculum per circuitū. 24 Et tulit princeps occidentium Saraiam ſacerdotem magnum, & Sophoniam principem Sacerdotum ſecundum, & tres theſaurarios. 25 Et de civitate tulit eunuchum unum qui erat præpoſit⁹ viris bellatorib⁹, & ſeptem viros qui videbant faciem Regis, qui inventi ſunt in civitate, & ſcribam principem exercit⁹, qui congregabat populum terræ, & ſexaginta viros de populo terræ, qui inventi ſunt in medio civitatis. 26 Et tulit eos Nabuzardan princeps occidentium, & duxit eos ad regem Babylonis in Riblath. 27 Et percuſſit eos rex Babylonis, & occidit eos in Riblah in terra Hemath : & tranſlati ſunt viri domus Judæ de terra ſua.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܝܪܚܐ ܕܚܡܫܐ ܒܥܣܪܐ ܒܗ ܒܝܪܚܐ . ܗܝ ܗܘܬ ܫܢܬ ܬܫܥܣܪܐ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ . ܐܬܐ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܩܛܘܠܐ . ܘܩܡ ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܒܐܘܪܫܠܡ . * ܘܐܘܩܕ
ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܘܠܒܝܬܗ ܕܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ . ܘܠܟܠܗܘܢ ܒܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ . ܘܠܟܠܗܘܢ
ܒܬܐ ܕܪܘܪܒܢܐ . ܐܘܩܕ ܒܢܘܪܐ . * ܘܠܟܠܗܘܢ ܫܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ ܡܢ ܚܕܪ . ܣܚܦܘ
ܟܠܗ ܚܝܠܐ ܕܟܠܕܝܐ ܕܥܡ ܪܒ ܩܛܘܠܐ . * ܘܡܢ ܡܣܟܢܐ ܕܥܡܐ : ܘܫܪܟܐ ܕܥܡܐ
ܕܐܫܬܚܪ ܒܡܕܝܢܬܐ : ܘܗܢܘܢ ܕܢܦܩܘ ܠܘܬ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ . ܘܫܪܟܐ ܕܥܡܐ ܫܒܐ
ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܩܛܘܠܐ . * ܘܡܢ ܡܣܟܢܐ ܕܐܪܥܐ . ܫܒܩ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܩܛܘܠܐ
ܠܟܪܡܐ ܘܠܦܠܚܘܬܐ . * ܘܠܥܡܘܕܐ ܕܢܚܫܐ ܘܠܐܓܢܐ . ܘܠܝܡܐ ܕܢܚܫܐ ܕܒܒܝܬܗ
ܕܡܪܝܐ . ܬܒܪܘ ܟܠܕܝܐ . ܘܫܩܠܘ ܟܠܗ ܢܚܫܗܘܢ ܘܐܘܒܠܘܗܝ ܠܒܒܠ . * ܘܩܕܪܐ
ܘܦܣܐ ܘܡܙܪܩܐ . ܘܡܚܬܝܬܐ ܘܟܣܐ . ܘܟܠܗܘܢ ܡܐܢܐ ܕܢܚܫܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܒܗܘܢ
ܫܩܠܘ . * ܘܦܝܠܣܐ ܘܡܚܬܝܬܐ . ܘܡܙܪܩܐ ܘܩܕܪܐ . ܘܡܢܪܬܐ ܘܟܣܐ . ܘܡܢܩܝܬܐ
ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ . * ܘܫܩܠ ܪܒ ܩܛܘܠܐ . ܥܡܘܕܐ ܬܪܝܢ ܕܢܚܫܐ ܕܐܝܬ
ܗܘܘ ܒܣܛܪܘܗܝ ܕܝܡܐ . ܕܥܒܕ ܡܠܟܐ ܫܠܝܡܘܢ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ . ܘܠܐ ܗܘܐ ܡܬܩܠ
ܠܢܚܫܗܘܢ ܕܡܐܢܐ ܗܠܝܢ . * ܘܥܡܘܕܐ ܬܪܝܢ ܠܐܪܘܡ . ܬܡܢܥܣܪܐ ܐܡܝܢ ܪܘܡܗ
ܕܥܡܘܕܐ ܚܕ ܡܢܗܘܢ . ܘܚܘܛܐ ܕܬܪܬܥܣܪܐ ܐܡܝܢ . ܚܕܪ ܠܗ ܡܢ ܚܕܪ . ܘܥܒܝܘܬܗ
ܐܪܒܥ ܨܒܥܢ . ܘܚܠܝܠ ܠܓܘ . * ܘܐܓܢܐ ܕܠܥܠ ܡܢܗ ܕܢܚܫܐ . ܘܪܘܡܗ ܕܐܓܢܐ ܚܕ
ܚܡܫ ܐܡܝܢ . ܘܡܨܝܕܬܐ ܘܪܘܡܢܐ ܥܠ ܐܓܢܐ ܡܢ ܚܕܪ . ܘܟܠܗ ܕܢܚܫܐ . ܘܐܟܘܬܗ
ܠܥܡܘܕܐ ܐܚܪܢܐ . ܘܪܘܡܢܐ . * ܘܗܘܘ ܪܘܡܢܐ ܬܫܥܝܢ ܘܫܬܐ . ܘܟܠܗܘܢ ܪܘܡܢܐ
ܡܐܐ ܥܠ ܡܨܝܕܬܐ ܡܢ ܚܕܪ . * ܘܕܒܪ ܪܒ ܩܛܘܠܐ ܠܣܪܝܐ ܟܗܢܐ ܪܫܐ . ܘܠܨܦܢܝܐ
ܟܗܢܐ ܕܬܪܝܢ . ܘܠܬܠܬܐ ܢܛܘܪܝ ܐܣܦܐ . * ܘܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܒܪ ܡܗܝܡܢܐ ܚܕ
ܕܗܘܐ ܪܒ ܥܠ ܓܒܪܐ ܡܩܪܒܢܐ . ܘܫܒܥܐ ܓܒܪܝܢ ܡܝܩܪܐ ܕܚܙܝܢ ܗܘܘ
ܩܕܡ ܡܠܟܐ . ܕܐܫܬܟܚܘ ܒܡܕܝܢܬܐ . ܘܣܦܪܐ ܘܪܒ ܚܝܠܐ ܕܥܡܐ ܕܐܪܥܐ . ܘܫܬܝܢ
ܓܒܪܝܢ ܡܢ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ . ܕܐܫܬܟܚܘ ܒܓܘ ܡܕܝܢܬܐ . * ܘܕܒܪ ܐܢܘܢ ܢܒܘܙܪܕܢ
ܪܒ ܩܛܘܠܐ . ܘܐܘܒܠ ܐܢܘܢ ܠܘܬ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܠܕܒܠܬ ܒܐܪܥܐ ܕܚܡܬ . * ܘܩܛܠ
ܐܢܘܢ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ . ܘܩܛܠ ܐܢܘܢ ܒܕܒܠܬ ܒܐܪܥܐ ܕܚܡܬ . ܘܐܫܬܒܝ
ܝܗܘܕܐ ܡܢ ܐܪܥܗ .

Menſe quinto, decimâ ejuſdem menſis (is 12
erat annus decim⁹ nonus Nebuchadnoſaris
regis Babyloniæ) venit Nebuzardan princeps
ſatellitum, ſtetítque coram rege Babelis
in Jeruſalem: Deinde combuſſit domum Do- 13
mini, & domum regis Judæ; omnes etiam
domos Jeruſalem, hoc eſt, omnes magnatum
domos igne combuſſit: Et omnes muros 14
Jeruſalem per circuitum, deſtruxerunt omnes
Chaldæorum copiæ quæ erant cum principe
ſatellitum. Ex pauperrima verò plebe, & 15
tam reliquum populum qui remanſerat in civitate,
quàm illos qui profugerant ad regem
Babyloniæ, & reliquum vulg⁹, captivos abduxit
Nebuzardan princeps ſatellitum. Ex 16
pauperrima etiam terræ plebe reliquit Nebuzardan
princeps ſatellitum, in vinitores, &
pro agricultura. Præterea columnas æneas, 17
lagenas, & mare æneum quæ erant in domo
Domini, fregerunt Chaldæi, vexerúntque
totum æs eorum, & detulerunt Babylonem.
Ollas etiam, caldaria, cacabos, trullas, diſcos, 18
& omnia vaſa ænea quib⁹ miniſtrabant,
abſtulerunt: Item acerras, thuribula, extra- 19
ctoria, & ahena, lychnuchos, & candelabra,
lances, atque libatoria aurea & argentea.
Abſtulit etiam princeps ſatellitum columnas 20
duas æreas quæ erant ſub laterib⁹ maris, quas
fecerat Salomon rex pro domo Domini: non
erat autem pond⁹ æri vaſorum iſtorum. Ha- 21
rum enim duarum columnarum unaquæque
columna erat altitudinis decem & octo cubitorum,
& filum duodecim cubitorum cingebat
eam circunquaque: denſitas autem ejus
erat quatuor digitorum, & cava intrinſecùs:
Lagena erat ſuper ipſam ænea, & altitudo cu- 22
juſlibet lagenæ erat quinque cubitorum, &
rete atque malogranata ſuper lagenam undequaque,
totaque erat ænea: hæc eadem habebat
altera columna cum malogranatis. Por- 23
ro malogranata erant nonaginta ſex, omnia
autem malogranata centum erant ſuper rete
circunquaque. Abduxit quoque princeps 24
ſatellitum Seriam ſummum ſacerdotem, &
Sephaniam ſacerdotem ab eo ſecundum, ac
tres liminum cuſtodes. E civitate verò ab- 25
duxit eunuchum unum qui præerat viris bellatorib⁹;
ſeptem viros inſignes & apud regem
conſpicuos, qui reliqui erant in civitate;
ſcribam & ducem exercitûs populi terræ;
& ſexaginta viros de populo terræ, qui inventi
ſunt intra civitatem, Abduxit Nebu- 26
zardan princeps ſatellitum, perduxítque ad
regem Babylonis in Deblatham in terram Ha-
mathæ: Quos percutiens rex Babylonis in- 27
terfecit in Deblatha in terra Hamathæ: ita
captivus eſt abductus Juda de terra ſua.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والعمودان * والبحر الواحد * والاثنا عشر عجل النحاس الذين تحت البحر * الذين
صنعهم سليمن الملك في بيت الرب * لم يكن قيمة لنحاسهم * وثلاثون عمودا * ارتفاع
العمود الواحد خمسة اذرع * وخيط اثني عشر ذراعا يدور عليه * وثخنه اربعة
اصابع داير * وعليهم اجانة نحاس * وطول الاجانة الواحدة خمسة اذرع * وشبكة
ورمانين على الاجانة من حولها كلها نحاس * وهكذا للعمود الثاني ثمان رمانين
للذراع لاثني عشر ذراعا * وكانت الرمانين ستة وتسعين جزوا واحدا * وكانت
جميع الرمانين مائة على الشبكة من حولها * واخذ رييس الطباخين الكاهن
الاول والكاهن الثاني * وحفظة الطريق الثلاثة * واخذ من المدينة خصيا واحدا
الذي كان عظيم المحاربين * وسبعة رجال مسميين الذين في وجه الملك الموجودين
في المدينة * وكاتب الجيوش الذي يكتب لشعب الارض * وستين انسانا من شعب
الارض الموجودين في وسط المدينة * واخذهم نابوزردان رييس الطباخين * وساقهم الى
ملك بابل الى دبلاثا *

Item duas columnas, mare unum, duo- 20
decim vitulos æneos qui erant ſub
mari, quos poſuerat Salomon rex in
domo Domini, quorum æri non erat
pretium: Et columnas triginta, quarum 21
altitudo cujuſque erat quinque cubitorum;
& filum duodecim cubitorum
cujus denſitas erat quatuor digitorum,
ambiebat illam per circuitum. Super- 22
poſita his erat lagena ænea, & longitudo
lagenæ unius quinque cubitorum;
& reticulum atque malogranata lagenam
undique cingebant, tota ænea:
idemque erat columnæ alteri, octo
ſcilicet *malogranata in ſingulis cubitis,*
per duodecim cubitos. Erant autem ma- 23
logranata nonaginta ſex, pars una:
omnia verò malogranata centum erant
ſuper reticulum circunquaque. Item 24
cepit coquorum præfectus ſacerdotem
primarium, & ſacerdotem ſecunda-
num, treſque viæ cuſtodes. Cepit 25
etiam ex urbe eunuchum unum qui præ-
fectus erat militum, ſeptemque viros
inſignes qui aſſiſtebant regi, qui
inventi ſunt in urbe; & ſcribam exercituum,
qui ſcribebat populum terræ;
denique ſexaginta homines de
populo terræ, qui inventi ſunt intra
urbem. Hos cepit Nabuzardan præ- 26
fectus coquorum, abduxitque ad re-
gem Babelis in Deblatham:

septimo anno in :]Nebuchadresar fecit *migrare* quem ,populus Iste
28 זה העם אשר הגלה נבוכדראצר בשנת־שבע
anno In .tres & ,viginti & ,millia tria Jehudæos
29 יהודים שלשת אלפים ועשרים ושלשה׃ בשנת
animas Jerusalaim de ;Nebuchadresar decimo octavo
שמונה עשרה לנבוכדראצר מירושלם נפש
vigesimo & ,tertio anno In .duas & ,triginta ,octingentas
30 שמנה מאות שלשים ושנים׃ בשנת שלש ועשרים
Jehudæorum laniorū magister Nebuzaradan fecit *migrare* Nebuchadresar
לנבוכדראצר הגלה נבוזראדן רב־טבחים יהודים
quatuor animæ omnes : quinque & quadraginta ,septingentas animas
נפש שבע מאות ארבעים וחמשה כל־נפש ארבעת
anno septimo & trigesimo in fuit Et .sexcentæ & ,millia
31 אלפים ושש מאות׃ ויהי בשלשים ושבע שנה
,mense duodecimo in ,Jehudah regis Jehojachin transmigrationis
לגלות יהויכן מלך־יהודה בשנים עשר חדש
Babel rex Merodach Evil elevavit ;mensis quinta & vigesima in
בעשרים וחמשה לחדש נשא אויל מרדך מלך בבל
eum eduxit & ,Jehudah regis Jehojachin caput ,sui regni anno in
בשנת מלכתו את־ראש יהויכין מלך־יהודה ויצא אתו
ej° thronum *dedit* & : bona eo cum est locutus Et .carceris domo de
32 מבית הכליא׃ וידבר אתו טבות ויתן את־כסאו
vestimenta mutavit Et .Babel in secum qui regum thronum *desuper*
33 ממעל לכסא מלכים אשר אתו בבבל׃ ושנה את בגדי
.ej° *vitarum* diebus omnibus ,*suæ mortis* diem ad usque ,*suo die in* dieiverbum ,Babel rege *cum* à ei dabatur *juge* *viaticum* ejus *viaticum* Et .*suarū vitarū* diebus omnib° semper *ej° facies* ad panē comedit & :ej° carceris
34 כלאו ואכל לחם לפניו תמיד כל־ימי חיו׃ וארחתו ארחת תמיד נתנה־לו מאת מלך בבל דבר־יום ביומו עד־יום מותו כל ימי חיו׃

Versio VULG.LAT.

28 Iste est populus, quem transtulit Nabuchodonosor: In anno
septimo, Judæos tria millia &
29 viginti tres: In anno octavodecimo Nabuchodonosor, de Jerusalem animas octingentas trigin-
30 ta duas: In anno vigesimotertio Nabuchodonosor, transtulit Nabuzardā magister militiæ animas Judæorum septingentas quadraginta quinque: omnes ergò animæ, quatuor millia sexcentæ.
31 Et factum est in trigesimoseptimo anno transmigrationis Joachin regis Juda, duodecimo mense, vigesimaquintâ mensis, elevavit Evilmerodach rex Babylonis ipso anno regni sui, caput Joachin regis Juda, & edu-
32 xit eum de domo carceris. Et locutus est cum eo bona, & posuit thronū ej° sup thronos regū qui
33 erāt post se in Babylone. Et muta-
34 vit vestimenta carceris ej°, & comedebat panē corā eo semp cunctis dieb° vitæ suæ. Et cibaria ej°, cibaria perpetua dabantur ei à rege Babylonis, statuta p singulos dies, usq; ad diē mortis suæ, cunctis dieb° vitæ ej°.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

27 Καὶ ἐπάταξεν αὐτοὺς βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐν Δεβλαθὰ, ἐν γῇ (†) Αἱμάθ.
31 Καὶ ἐγένετο (*) ἐν τῷ τριακοστῷ καὶ ἑβδόμῳ ἔτει, ἀποικισθέντος τοῦ Ἰωακεὶμ βασιλέως Ἰούδα, ἐν τῷ δωδεκάτῳ μηνὶ, ἐν τῇ τετράδι καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς, ἔλαβεν (ω) Οὐλαιμαδάχαρ βασιλεὺς Βαβυλῶνος, ἐν τῷ ἐνιαυτῷ ᾧ ἐβασίλευσε, τὴν κεφαλὴν Ἰωακεὶμ βασιλέως Ἰούδα, (α) καὶ ἔκειρεν αὐτὸν, καὶ ἐξήγαγεν αὐτὸν ἐξ οἰκίας ἧς ἐφυλάσσετο,
32 Καὶ ἐλάλησεν αὐτῷ χρηστὰ, καὶ ἔδωκε τὸν θρόνον αὐτοῦ ἐπάνω τῶν (β) βασιλέων τῶν μετ' αὐτοῦ ἐν Βαβυλῶνι,
33 Καὶ ἤλλαξε τὴν στολὴν τῆς φυλακῆς αὐτοῦ, καὶ ἤσθιεν ἄρτον διαπαντὸς κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ πάσας τὰς ἡμέρας, ἃς
34 ἔζησε. Καὶ ἡ σύνταξις αὐτῷ ἐδίδοτο διαπαντὸς παρὰ τοῦ βασιλέως Βαβυλῶνος (γ) ἐξ ἡμέρας εἰς ἡμέραν, ἕως ἡμέρας ἧς ἀπέθανεν. (δ)

MS.A. (†) Ἱμαάθ. (*) ἐν τριακοστῷ (ω) Οὐλαιμβαδάχ (α) καὶ ἐξήγαγεν (β) θρόνων τῶν βασιλέων (γ) ἐξ ἡμερῶν εἰς ἡμέρας, (δ) Ἱερεμίας προφήτης ιδ'.

Et percussit eos rex Babylonis in Deblatha in terra (n) Æmath. 27
Et factum est in trigesimo & septimo anno transmigrationis Joacim regis Juda, in duodecimo mense, in vigesima quarta mensis, accepit Ulæmadachar rex Babylonis, in anno, quo regnum adiit, caput Joacim regis Judæ; (o) & totondit eum, & eduxit eum de domo, in qua custodiebatur: 31
Et loquutus est ei bona; 32 *& dedit thronum ejus super reges qui secum in Babylone:* 33 *Et mutavit stolam carceris ejus: & comedebat panem semper ante faciem ejus cunctis diebus, quibus vixit.* 34 *Et demensum ei dabatur perpetuò à rege Babylonis de die in diem, usque ad diem quā mortuus est.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

28 דין עמא דאגלי נבוכד נצר בשנת שבע יהודאי תלתא אלפין ועסרין ותלתא׃ בשנת
29 30 תמני עסרי לנבוכד נצר מירושלם נפשתא תמני מאה תלתין ותרתין׃ בשנת עסרין
ותלת לנבוכד נצר אגלי נבוזר אדן רב קטוליא יהודאי נפשתא שבע מאה ארבעין
31 וחמש כל נפשתא ארבעא אלפין ושית מאה׃ והוה בתלתין ושבע שנין לגלות
יהויכין מלך שבטא דבית יהודה בתרי עסר ירחין בעסרין וחמשא לירחא רבי אויל
מרודך מלכא דבבל בשנת מלכותיה ית ריש יהויכין מלך שבטא דבית יהודה ואפיק
32 יתיה מבית אסירי׃ ומליל עמיה פתגמין תקנין ויהב ית כורסיה מעיל לכורסי מלכיא
33 די עמיה בבבל׃ ושני ית לבושי אסוריה ואכל לחמא קדמוהי תדירא כל יומי חיוהי׃
34 ושריותיה שריות תדירא מתיהבין ליה מן קדם מלכא דבבל פתגם יום ביומיה עד יום מותיה כל יומי חיוהי׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Iste est populus quem transtulit Nabuchodonozor in anno septimo, Judæos 28
ter mille & viginti tres. Anno decimo octavo Nabuchodonozor, [*transtulit*] 29
de Jerusalem animas octingentas & triginta duas. Anno vigesimo tertio 30
Nabuchodonozor, transtulit Nabuzardan princeps occidentium Judæorum
animas septingentas quadraginta quinque. Omnes animæ, quater mille &
sexcentæ. Et factum est tricesimo & septimo anno transmigrationis Joachin 31
regis tribus domus Juda, duodecimo mense, vicesima quinta die mensis, magnificavit Evilmerodach rex Babylonis, in ipso anno regni sui, caput Joachin regis tribus domus Juda, & eduxit eum de domo carceris. Et locutus est 32
cum eo verba recta: & posuit thronū ej° sup thronos Regū qui erant cum eo
in Babylone. Et mutavit vestimenta carceris ejus, & comedebat panem co- 33
ram eo semper omnib° diebus vitæ suæ. Et cibaria ejus continua dabantur 34
ei à facie regis Babylonis statuta per singulos dies,
usq; ad diem mortis suæ, omnib° dieb° quib° vixit.

ספר קינות

CAPUT I. א

: vidua veluti est facta ,populo *multa* ,civitas *sola* *sedit* Quomodo
1 איכה ישבה בדד העיר רבתי עם היתה כאלמנה
Plorando .*tributum in* est facta provinciis in *princeps* ,gentibus in *multa*
2 רבתי בגוים שרתי במדינות היתה למס׃ בכו
consolator ei non : ej° maxillis *super* ej° lachrymæ &,nocte in plorabit
תבכה בלילה ודמעתה על לחיה אין־לה מנחם
fuerunt,eam *in sunt prævaricati* ejus *socii* omnes : ej° amatoribus omnib° ex
מכל־אהביה כל־רעיה בגדו בה היו
multitudine præ &,afflictione præ Jehudah Transmigravit .inimicos in ei
3 לה לאיבים׃ גלתה יהודה מעני ומרב
omnes : requiem invenit nec ,gentes inter habitavit ipsa :servitutis
עבדה היא ישבה בגוים לא מצאה מנוח כל־
.*angustias* inter eā apprehenderunt ejus persecutores
רדפיה השיגוה בין המצרים׃

Versio VULG.LAT.

THRENI, id est, LAMENTATIONES JEREMIÆ PROPHETÆ.

Et factū est, postquā in captivitatē redact° est Israel, & Jerusalem deserta est, sedit Jeremias propheta flens, & planxit lamentatione hac in Jerusalē, & amaro animo suspirans & ejulans dixit:

CAP. I.

1 *Aleph.* QUOMODO sedet sola civitas plena populo: facta est quasi vidua domina Gentium: princeps provinciarum facta est
2 sub tributo. *Beth.* Plorans ploravit in nocte, & lachrymæ ejus in maxillis ejus: non est qui consoletur eam ex omnibus charis ejus: omnes
3 amici ejus spreverunt eam, & facti sunt ei inimici. *Ghimel.* Migravit Judas propter afflictionem, & multitudinem servitutis: habitavit inter gentes, nec invenit requiem: omnes persecutores ejus apprehenderunt eam inter angustias.

Vers. GRÆ.LXX.Interp. cum Transl. LAT.

(*) ΘΡΗ͂ΝΟΙ ἹΕΡΕΜΙΟΥ.

ΚΕΦ. α'.

ΚΑὶ ἐγένετο μετὰ τὸ αἰχμαλωτισθῆναι τὸν
Ἰσραὴλ, καὶ Ἱερουσαλὴμ ἐρημωθῆναι, ἐ-
κάθισεν Ἱερεμίας κλαίων, καὶ ἐθρήνησε τὸν
θρῆνον τοῦτον ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ εἶπεν· Ἀ-
1 ΛΕΦ. Πῶς ἐκάθισε μόνη ἡ πόλις ἡ πε-
πληθυμμένη λαῶν; ἐγενήθη ὡς χήρα, πε-
πληθυμμένη ἐν ἔθνεσιν, ἄρχουσα ἐν χώραις
2 ἐγενήθη εἰς φόρον. ΒΗ'Θ. Κλαίουσα (α) ἔ-
κλαυσεν ἐν νυκτὶ, καὶ τὰ δάκρυα αὐτῆς ἐπὶ
τῶν σιαγόνων αὐτῆς, καὶ οὐχ ὑπάρχει ὁ παρα-
καλῶν αὐτὴν, ἀπὸ πάντων τῶν ἀγαπών-
των αὐτήν· πάντες οἱ φιλοῦντες αὐτὴν ἠ-
3 θέτησαν ἐν αὐτῇ, ἐγένοντο αὐτῇ εἰς ἐχθρούς.
ΓΙ'ΜΕΛ. Μετῳκίσθη (*) Ἰουδαία ἀπὸ ταπει-
νώσεως αὐτῆς, καὶ ἀπὸ πλήθους δουλείας αὐτῆς·
ἐκάθισεν ἐν ἔθνεσι, οὐχ εὗρεν ἀνάπαυσιν.
πάντες οἱ καταδιώκοντες αὐτὴν, κατέλαβον
αὐτὴν ἀναμέσον τῶν (β) θλιβόντων.

MS.A. (*) ΘΡΗ͂ΝΟΙ. (α) ἐδάκρυσεν (*) ἡ Ἰουδαία (β) θλιβόντων αὐτήν.

(a) LAMENTATIONES HIEREMIÆ.

CAP. I.

ET factum est, postquàm in captivitatem redactus est Israel, & Hierusalem deserta est, sedit Hieremias flens: & lamentatus est lamentationem hanc super Hierusalē, & dixit; ALEPH. Quo- 1
modò sedit sola civitas, quæ repleta fuit populis? facta est quasi vidua, plena in gentibus: princeps in provinciis facta est in tributum. 2
BETH. Plorans ploravit in nocte, & lachrymæ ej° in maxillis ej°: & non est qui consoletur eam, ex omnib° diligentib° eā: omnes amici ej° spreverunt eā; facti sunt in inimicos. 3 *GIMEL. Migravit Judæa propter humiliationem suam, & propter multitudinem servitutis suæ: sedit in gentibus: non invenit requiem: omnes persequutores ejus apprehenderunt eā in medio tribulantium.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 אמר ירמיהו נביא וכהנא רבא איכדין יתגזר על ירושלם ועל עמהא לאתדנא בתירוכין
ולמספד עליהון איכה היכמה דאתדנו אדם וחוה דאתרכו מגנתא דעדן ואספיד מרי
עלמא עליהון איכה ענת מדת דינא וכן אמרת על סגיאות חובאה אשתדור די בגוהא
ובנין כן תהי יתבה בלחודהא כגבר דמכתש סגירו על בסריה די בלחודיה יתיב
וקרתא הות מליא אוכלוסין ועממין סגיאין אתרוקנת מנהון והות דמיא לארמלא
ודי מתרברבא בעממיא ושליטיא באפרכיא והוו מסקין לה מסין הדרת למהוי מכיכא
2 ולמתן כרגא להון בתר דנא׃ כד שלח משה נביא אזגדין לאלאה ית ארעא ותבו
אזגדיא ואפיקו שום ביש על ארעא דישראל [והיא ליליא תשע יומין באב הוה] וכד
שמעו עמא בית ישראל ית בשורתא בישא הדא דאתבשרו על ארעא דישראל נטלו
עמא ית קלהון ובכו בליליא ההוא מן יד תקיף רוגזא דיי בהון וגזר למהוי בכן בליליא
הדא לדריהון על חורבן בית מוקדשא וכדו אתאמר בנבואה לירמיהו כהנא רבא
למהוי חריבא ירושלם על ידוי דנבוכדנצר רשיעא אין לא תיבין בתיובתא מן יד עאל
ואוכח ית עמא בית ישראל וסריבו לקבלא במימריה בכן על נבוכדנצר רשיעא וצדא
ית ירושלם ובית מקדשא אוקיד בנורא בתשע יומין בירחא דאב וביה בכיא כנשתא
דישראל בכותא ודמעהא זליג על ליסתהא ולית די ימלל תנחומין על לבהא מן כל
טעותא די רחמתא למיזל בתריהון ובנין כן כל חברהא ארשיעו בה אתהפיכו למהוי
3 לה לבעלי דבבין׃ אזלו בית יהודה בגלותא על דהוו מענין יתמין וארמלן ועל
סגיאות פולחנא דהוו מפלחין באחיהון בני ישראל דאזדבנו להון לא קרו חירותא
לעבדיהון ואמהתהון דהוו מזרעית ישראל ובנין כן אף אנון אתמסרו ביד עממיא
וכנשתא דבית יהודה יתבא בגו עממיא ולא אשכחת ניחא מפולחנא קשיא דשעבידו
יתה וכל דהוה רדיף יתה אדביקו יתה כד היא מתחבאה בין תחומיא ואעיקו לה׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAPUT I.

DIxit Jeremias Propheta & Sacerdos magnus: ALEPH. Quomodo 1
decretum est super Jerusalem & super populum ejus ut damnaretur exiliis,
& ut fieret planctus super eis, איכה .i. Quomodo? quemadmodum judicati sunt Adam & Eva qui ejecti sunt de paradiso voluptatis & lamentatus est dominator seculi super eis, איכה i. Quomodo? Respondit mensura judicii, & sic ait: Propter multitudinem peccatorum ejus, & conjurationem, quæ sunt in medio ejus, ideò habitabit sola, sicut vir in cujus carne est plaga lepræ qui solus habitat. Et civitas quæ erat plena turbis & populis multis, evacuata est ab eis, & facta est similis viduæ: & quæ erat magnifica inter populos, & dominabatur provinciis, qui reddebant ei tributa, reversa est ut sit depressa, détque eis tributum posthac. BETH. Quando misit 2
Moses Propheta nuntios ad explorandam terram, reversi sunt nuntii, & eduxerunt nomen pessimum de terra Israel, *atque ipsa nox erat nona dierum Ab:* & quando audierunt populus domus Israel nuntium hoc pessimum quod nuntiatum est eis de terra Israel, levavit populus vocem suam, & flevit in nocte illa. Illicò iratus est furor Domini in eos, & decrevit ut plangerent in nocte illa in generationibus suis propter devastationem domus sanctuarii: & quando dictum fuit in prophetia Jeremiæ Sacerdoti magno, quod destruenda esset Jerusalem per manum Nabuchodonosor impii, si non converterentur ad pœnitentiam; confestim perrexit & increpavit populum Israel, & noluerunt suscipere verbum ejus. Tunc venit Nabuchodonosor impius & destruxit Jerusalem, & domum sanctuarii succendit igne in nona die mensis Augusti: & in ipso [*tempore*] flebat cœtus Israel fletu, & lachrymæ ejus decurrebant per maxillas ejus: non erat qui loqueretur consolationes ad cor ejus ex omnib° idolis quæ amaverat sequi, et ideò omnes socii ej° impiè egerunt in eam, & conversi sunt ut essent ei inimici. GHIMEL. Abierunt 3
viri dom° Juda in transmigrationem, pro eo quod affligebant pupillos & viduas: & ob multitudinē servitutis ad quā adigebant fratres suos filios Israel qui venditi fuerant eis, & non prædicaverunt libertatē servis suis & ancillis suis qui erant de cognatione Israel: et ideò traditi sunt in manū populorū, & cœt° dom° Juda habitavit in medio populorū, et non invenit requiē propter servitutē durā cui subjecerunt eam: et omnes qui persequebantur eam apprehenderunt eam cùm se occultaret inter terminos, et ad angustiam adegerūt eā.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܗܢܘ ܥܡܐ ܕܫܒܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܒܫܢܬ ܫܒܥ ܠܡܠܟܘܬܗ . ܝܗܘܕܝܐ
ܐܠܦܝܢ ܘܥܣܪܝܢ ܘܬܠܬܐ. * ܘܒܫܢܬ ܬܡܢܥܣܪܐ ܠܡܠܟܘܬܗ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ
ܕܒܒܠ . ܫܒܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. ܢܦܫܬܐ ܬܡܢܡܐܐ ܘܬܠܬܝܢ ܘܬܪܬܝܢ. * ܘܒܫܢܬ
ܘܬܠܬ ܫܢܝܢ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ . ܫܒܐ ܢܒܘܙܪܕܢ ܪܒ ܕܒܚܐ . ܝܗܘܕܝܐ
ܫܒܥܡܐܐ ܘܐܪܒܥܝܢ ܘܚܡܫ. ܟܠܗܝܢ ܢܦܫܬܐ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ ܘܫܬܡܐܐ. *
ܬܠܬܝܢ ܘܫܒܥ ܠܫܒܝܗ ܕܝܗܘܝܟܝܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ . ܒܝܪܚܐ ܕܬܪܥܣܪ
ܘܚܡܫܐ ܒܗ ܒܝܪܚܐ . ܐܪܝܡ ܐܘܝܠ ܡܪܘܕܟ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܒܫܢܬܐ ܕܡܠܟܘܬܗ .
ܕܝܗܘܝܟܝܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܐܦܩܗ ܡܢ ܒܝܬ ܐܣܝܪܐ. ܘܡܠܠ ܥܡܗ ܛܒܬܐ. ܘܣܡ
ܟܘܪܣܝܗ ܠܥܠ ܡܢ ܟܘܪܣܘܬܐ ܕܡܠܟܐ ܕܐܝܬ ܗܘܘ ܥܡܗ ܒܒܒܠ. * ܘܫܚܠܦ
ܐܣܘܪܘܗܝ. ܘܐܟܠ ܠܚܡܐ ܩܕܡܘܗܝ ܟܠܗܘܢ ܝܘܡܬܐ ܕܚܝܘܗܝ. * ܘܡܫܘܚܬܗ
ܗܘܬ ܠܗ ܡܢ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܒܟܠܝܘܡ ܐܡܝܢܐܝܬ . ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܐ ܕܡܝܬ. ܟܠܗܘܢ
ܝܘܡܬܐ ܕܚܝܘܗܝ.

* Hic eſt populus quem captivum duxit Nebuchadnoſar rex Babylonis anno ſeptimo regni ſui, Judæorum tria millia viginti tres. 28
Anno decimo octavo regni Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ, captivas duxit è Jeruſalem animas octingentas triginta duas. 29
Anno demum vigeſimo tertio Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ, captivas duxit Nebuzardan princeps ſatellitum Judæorum animas ſeptingentas quadraginta quinque : omnium animarum *ſumma*, quater mille ſexcentæ. 30
Anno trigeſimo ſeptimo à captivitate Jojacini regis Judæ, menſe duodecimo, vigeſimâ quintâ ejuſdem menſis; exaltavit Ulmerodach rex Babylonis anno regni ſui *primo*, caput Jojacini regis Judæ. 31
Eductum enim è carcere humanis excepit verbis, & collocavit ſolium ejus ſupra ſolia regum qui ſecum erant in Babylone : 32
Et mutatis veſtibus vinculorum ejus, panem comedebat ſemper coram eo cunctis diebus vitæ ſuæ : 33
Et demenſum ejus egrediebatur à rege Babylonis ſingulis ſemper diebus, ad uſque diem obitûs ejus, cunctis diebus vitæ ipſius. 34

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*وضربهم ملك بابل في دبلاثا بارض حماة [MS. Ox. وهذا الشعب الذي سبي بختنصر ملك بابل
السنة السابعة من ملكه سبي من اليهود ثلثة الالف وثلثة عشرين *وفي سنة ثمان عشر من ملك
بختنصر ملك بابل *سبي من اوريشليم ثمان ماية واثنين وثلثين نفسا *وفي سنة ثلثة وعشرين من
ملك بختنصر ملك بابل سبي نبوزردان صاحب الشرطة سبع ماية وخمسة واربعين نفسا من
اليهود *جميع من سبي اربعة الف وستماية *وكان في السنة السابعة والثلثين اذ سبي يواقيم ملك
يهودا في الشهر الثاني عشر في الرابع والعشرين من الشهر * اخذ اوايل ماروداخ ملك بابل
السنة التي ملك فيها *براس يواقيم ملك يهودا *واخرجه من البيت الذي احتفظ فيه *
معه بالخير *واعطي كرسيه فوق كراسي الملوك الذين معه في بابل *وغير حلة حبسه
واكل خبزا كل حين لوجهه *جميع الايام التي عاشها *ورتب له قوت اعطي له كل حين
من عند ملك بابل من ايام الي ايام *الي اليوم الذي مات فيه *

Et percuſſit eos rex Babelis in Deblatha in terra Hamath. 27
[MS. Ox. Hic eſt populus quem deportavit Bochtonaſſar rex Babelis : anno ſeptimo regni ſui, Judæorum tria millia viginti tres captivos abduxit. 28
Anno decimo octavo regni Bochtonaſſaris regis Babelis captivas duxit è Jeruſalē animas octingentas triginta duas. 29
Anno viceſimo tertio regni Bochtonaſſaris regis Babelis captivas duxit Nebuzaradan dux militiæ Judæorum animas ſeptingentas quadraginta quinq; : Omnes animas quas deportavit quatuor mille ſexcentæ ſunt.] 30
Deinde factum eſt anno trigeſimo ſeptimo, poſtquam captivus abductus eſſet Joacim rex Judæ; menſe duodecimo, vigeſimâ quartâ menſis; ut efferret Evajelmerodach rex Babelis, eodem anno quo inauguratus eſt regno, caput Joacimi regis Judæ. 31
Educens enim illum è domo in qua aſſervabatur, allocutus eſt eum bona verba, poſuitque thronum ejus ſuper thronos regum qui ſecum erant in Babele : 32
Mutavit ſtolam carceris ejus, comedebatque ſemper panem coram ipſo, cunctis diebus quos vixit : 33
Et diſpoſitum fuit illi demenſum quod jugiter dabatur ei à rege Babelis de die in diem, uſque ad eum diem quo mortuus eſt. 34

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܐܘܠܝܬܗ ܕܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ *ܩܝܢܬܐ* *ܐ*

* * ܐ * ܐܝܟܢܐ ܝܬܒܐ ܒܠܚܘܕܝܗ ܡܕܝܢܬܐ ܣܓܝܐܬ ܥܡܡܐ. ܗܘܬ ܐܝܟ ܐܪܡܠܬܐ
ܣܓܝܐܬ ܒܥܡܡܐ. ܪܫܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܗܘܬ ܠܡܟܣܐ. * ܒ * ܒܟܐ ܒܟܬ ܒܠܠܝܐ. ܘܕܡܥܝܗ
ܥܠ ܦܟܝܗ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܡܒܝܐܢܐ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܗ. ܟܠܗܘܢ
ܒܗ ܒܗ. ܘܗܘܘ ܠܗ ܒܥܠܕܒܒܐ. * ܓ * ܓܠܬ ܝܗܘܕܐ ܡܢ ܫܥܒܕܐ
ܣܓܝܐܐ ܕܦܘܠܚܢܐ. ܗܝ ܝܬܒܐ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ ܠܗ ܢܝܚܐ.
ܪܕܘܦܝܗ ܐܕܪܟܘܗ ܒܝܬ ܐܘܠܨܢܐ.

LAMENTATIONES JEREMIÆ Prophetæ.

CAP. I.

* Quomodo ſedet ſolitaria civitas illa frequens populo? facta eſt ſimilis viduæ affluens populis? caput urbium facta eſt tributaria? 1
Plorat noctu, & lachrymæ ejus diffluunt ſuper genas ejus, nullo eam conſolante ex omnibus amatoribus ejus? omnes amici ejus fefellerunt eam, & verſi ſunt ei in hoſtes? 2
Migravit Judæa propter ſubjectionem, propter nimiam ſervitutem : ipſa inter gentes habitavit, nec invenit ſibi quietem? omnes perſecutores ejus apprehenderunt eam inter anguſtias? 3

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*بدو المراثي * الفصل الاول * الاصحاح الخامس والثلاثون * وكان من
بعد ان سبي اسرائيل وخربت اوريشليم *جلس ارمياء باكيا وناح هذا النوح على اوريشليم وقال
*كيف جلست المدينة وحدها المملوة الشعوب * صارت مثل ارملة المملوة بالامم *الرييسة
في الكور صارت للجزية *اذرفت الدموع باكية في الليل *دموعها على خديها *وليس لها
من يعزيها من جميع محبيها *جميع الذين يحبونها غدروا بها *وصاروا لها اعداء *جلت
اليهودية من ذلها من كثرة عبوديتها *جلست في الامم ولم تجد نياحا *جميع الذين
طردوها ادركوها وسط كربها *

INITIUM LAMENTATIONUM

CAPUT PRIMUM.

Textus trigeſimus quintus.

FActum eſt autem poſtquā captivus abductus eſſet Iſrael, et Jeruſalem deſtructa; ut ſederet Jeremia plorans, et Jeroſolymā hac lamentatione lamentaretur, ac diceret;

Quomodo manſit ſolitaria urbs illa populis affluens? facta eſt quaſi vidua quæ plena erat gentibus? præcipua inter provincias facta eſt ſub tributū? 1
Effundit lachrymas plorans in nocte, lachrymæ ej⁹ ſuper utramque genam ejus, nec eſt qui conſoletur eā ex tot amicis ejus : omnes qui amabant eam, deceperunt eam. & facti ſunt ei inimici? 2
Migravit Judæa propter depreſſionem ſuam ex nimia ſervitute ſua : ſedet inter gentes, nec invenit requiem : omnes qui perſequuntur eam, aſſecuti ſunt eam in medio affligentium eam. 3

ejus portæ omnes ,ſolemnitatem venientibus non à lugentes Sijon Viæ
דרכי ציון אבלות מבלי באי מועד כל־שעריה 4
ei amaritudo ipſi &,afflictæ ej⁹ virgines:ſuſpirantes ej⁹ ſacerdotes,deſolatæ
שוממין כהניה נאנחים בתולתיה נוגות והיא מר־לה׃
Dominus quia ,fuere ſecuri ejus inimici ,capite in ejus hoſtes Fuerunt
היו צריה לראש איביה שלו כי־יהוה 5
abierunt ejus parvuli : ejus prævaricationū multitudinē ſuper eā anxiavit
הוגה על־רב־פשעיה עולליה הלכו
:ej⁹ decor omnis Sijon filia à eſt egreſſus Et ,anguſtiatoris facies ad captivitatē
שבי לפני־צר׃ ויצא מן־בת־ציון כל־הדרה 6
abierunt & ,paſcuum invenerunt non cervi veluti ej⁹ principes fuerunt
היו שריה כאילים לא־מצאו מרעה וילכו
dierū Jeruſalaim eſt Recordata .perſecutorē ante fortitudine abſque
בלא־כח לפני רודף׃ זכרה ירושלם ימי 7
fuerunt quæ , ſuorū deſiderabiliū omniū ,ſuarū rebellionum & ,ſuæ afflictionis
עניה ומרודיה כל מחמדיה אשר היו
: ei auxiliator non &,hoſtis manu in ej⁹ populum cadendo in,quondam dieb⁹ à
מימי קדם בנפל עמה ביד־צר ואין עוזר לה
,Jeruſalaim peccavit Peccatum.ej⁹ ſabbatha ſuper riſerunt ,hoſtes eā viderūt
ראוה צרים שחקו על־משבתה׃ חטא חטאה ירושלם 8
viderūt quia,eā vilifecerunt eā glorificantes omnes :fuit commotionem in propterea
על־כן לנידה היתה כל־מכבדיה הזילוה כי־ראו
ej⁹ Immunditia .retrorſum eſt converſa &,ſuſpiravit ipſa etiam:ej⁹ nuditatē
ערותה גם־היא נאנחה ותשב אחור׃ טמאתה 9
non ,mirabilibus deſcendit & ,ſui noviſſimi eſt recordata non ,ej⁹ fimbriis in
בשוליה לא זכרה אחריתה ותרד פלאים אין
.inimicus magnificavit quoniā,meā afflictionē Domine vide : ei conſolator
מנחם לה ראה יהוה את־עניי כי הגדיל אויב׃
vidit quia ; ej⁹ deſiderabilia omnia ſuper oppreſſor extendit ſuā Manum
ידו פרש צר על כל־מחמדיה כי־ראתה 10
intrabunt non ,præcepiſti quo ,ejus ſanctuarium ſunt ingreſſæ , gentes
גוים באו מקדשה אשר צויתה לא־יבאו
: panem quærentes , ſuſpirantes ejus populus Omnis .tibi Eccleſiam in
בקהל לך׃ כל־עמה נאנחים מבקשים לחם 11
,Domine vide : animam reducendū ad , cibo in ſua deſiderabilia dederunt
נתנו מחמודיהם באכל להשיב נפש ראה יהוה
tranſeuntes omnes , vos ad Haud .vilis fui quia , aſpice &
והביטה כי הייתי זוללה׃ לוא אליכם כל־עברי 12
eſt factus qui ,me⁹ dolor ſicut dolor ſit an ,videte &,aſpicite ,viam
דרך הביטו וראו אם־יש מכאוב כמכאבי אשר עולל
excelſo De .ſui naſi iræ die in Dominus affecit mæſtitia quoniam :mihi
לי אשר הוגה יהוה ביום חרון אפו׃ ממרום 13
,meis pedibus rete expandit : ei eſt dominatus &,mea oſſa in ignem miſit
שלח־אש בעצמתי וירדנה פרש רשת לרגלי
.mœrentem die tota ,deſolatam me dedit : retrorſum me fecit redire
השיבני אחור נתנני שוממה כל־היום דוה׃
,ſunt perplexæ ejus manu in ,mearum prævaricationum jugum eſt Ligatum
נשקד על פשעי בידו ישתרגו 14
me dedit : meam vim fecit corruere ; meum collum ſuper aſcenderunt
עלו על־צוארי הכשיל כחי נתנני
.ſurgere potero non ,manus in Dominus
אדני בידי לא־אוכל קום׃

Verſio VULG.LAT.

4 *Daleth*. Viæ Sion lugent, eò quòd non ſint qui veniant ad ſolennitatem : omnes portæ ejus deſtructæ : ſacerdotes ej⁹ gementes : virgines ej⁹ ſqualidæ, & ipſa oppreſſa amaritudine. 5 *He*. Facti ſunt hoſtes ejus in capite, inimici ej⁹ locupletati ſunt : quia Domin⁹ locut⁹ eſt ſuper eam propter multitudinem iniquitatum ej⁹ : parvuli ej⁹ ducti ſunt in captivitatē 6 ante faciem tribulantis. *Vau*. Et egreſſ⁹ eſt à filia Sion omnis decor ejus : facti ſunt principes ej⁹ velut arietes non invenientes paſcua : & abierunt abſque fortitudine ante faciem ſubſequentis. 7 *Zain*. Recordata eſt Jeruſalem dierum afflictionis ſuæ, & prævaricationis omnium deſiderabilium ſuorum, quæ habuerat à diebus antiquis, cùm caderet populus ejus in manu hoſtili, & non eſſet auxiliator : viderunt eam hoſtes, & deriſerunt ſabbata ej⁹. 8 *Heth*. Peccatum peccavit Jeruſalem, propterea inſtabilis facta eſt : omnes, qui glorificabant eā, ſpreverunt illam, quia viderunt ignominiam ejus : ipſa autem gemens converſa eſt retrorſúm. 9 *Theth*. Sordes ejus in pedib⁹ ejus, nec recordata eſt finis ſui : depoſita eſt vehementer, non habens conſolatorem : vide, Domine, afflictionem meam, quoniam 10 erect⁹ eſt inimic⁹. *Jod*. Manum ſuam miſit hoſtis ad omnia deſiderabilia ejus : quia vidit Gentes ingreſſas Sanctuarium ſuum, de quib⁹ præceperas ne intrarent 11 in eccleſiam tuam. *Caph*. Omnis popul⁹ ejus gemens, & quærens panem : dederunt pretioſa quæque pro cibo ad refocillandā animam : vide, Domine, & conſidera, quoniam facta ſum 12 vilis. *Lamed*. O vos omnes, qui tranſitis per viam, attendite, & videte ſi eſt dolor ſicut dolor meus : quoniam vindemiavit me ut locut⁹ eſt Domin⁹ in die iræ 13 furoris ſui. *Mem*. De excelſo miſit ignem in oſſib⁹ meis, et erudivit me : expandit rete pedib⁹ meis, convertit me retrorſúm : poſuit me deſolatam, totâ die mœrore confectam. 14 *Nun*. Vigilavit jugum iniquitatum mearum : in manu ej⁹ convolutæ ſunt, et impoſitæ collo meo : infirmata eſt virt⁹ mea : dedit me Domin⁹ in manu, de qua non potero ſurgere.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 ΔΑ'ΛΕΘ. Ὁδοὶ Σιὼν πενθοῦσι παρὰ τὸ μὴ εἶναι ἐρχομένους ἐν ἑορτῇ· πᾶσαι αἱ πύλαι αὐτῆς ἠφανισμέναι, οἱ ἱερεῖς αὐτῆς ἀναστενάζουσιν, αἱ παρθένοι αὐτῆς ἀγόμεναι, καὶ αὐτὴ πικραινομένη ἐν (γ) ἑαυτῇ. Ἡ. 5 Ἐγένοντο οἱ θλίβοντες αὐτὴν εἰς κεφαλὴν, καὶ οἱ ἐχθροὶ αὐτῆς εὐθηνοῦσαν, ὅτι κύριος ἐταπείνωσεν αὐτὴν ἐπὶ τὸ πλῆθος τῶν ἀσεβειῶν αὐτῆς. τὰ νήπια αὐτῆς ἐπορεύθησαν ἐν αἰχμαλωσίᾳ κατὰ πρόσωπον θλίβοντος. 6 ΟΥΑΥ. Καὶ (δ) ἐξήρθη ἐκ θυγατρὸς Σιὼν πᾶσα ἡ εὐπρέπεια αὐτῆς. ἐγένοντο οἱ ἄρχοντες αὐτῆς ὡς κριοὶ (ε) οὐχ εὑρίσκοντες νομὴν, καὶ ἐπορεύοντο ἐν οὐκ ἰσχύϊ (ζ) κατὰ 7 πρόσωπον διώκοντος. ΖΑΙΝ. Ἐμνήσθη Ἱερουσαλὴμ ἡμερῶν ταπεινώσεως αὐτῆς, καὶ ἀπωσμῶν αὐτῆς· πάντα τὰ ἐπιθυμήματα αὐτῆς ὅσα ἦν ἐξ ἡμερῶν ἀρχαίων, ἐν τῷ πεσεῖν τὸν λαὸν αὐτῆς εἰς χεῖρας θλίβοντος, καὶ οὐκ ἦν ὁ βοηθῶν αὐτῇ. ἰδόντες οἱ ἐχθροὶ αὐτῆς, ἐγέλασαν ἐπὶ (η) κατοικεσίᾳ αὐτῆς. 8 ἩΘ. Ἁμαρτίαν ἥμαρτεν Ἱερουσαλὴμ, διὰ τοῦτο εἰς σάλον ἐγένετο. πάντες οἱ δοξάζοντες αὐτὴν, ἐταπείνωσαν αὐτήν· (θ) εἶδον γὰρ τὴν ἀσχημοσύνην αὐτῆς, καί γε αὐτὴ στενάζουσα 9 καὶ ἀπεστράφη (ι) ὀπίσω. ΤΗΘ. Ἀκαθαρσία αὐτῆς (κ) πρὸ ποδῶν αὐτῆς· οὐκ ἐμνήσθη (λ) ἔσχατα αὐτῆς, καὶ κατεβίβασεν ὑπέρογκα· οὐκ ἔστιν ὁ παρακαλῶν αὐτήν. ἴδε κύριε τὴν ταπείνωσίν μου, ὅτι ἐμεγαλύνθη ὁ 10 ἐχθρός. ἸΩΔ. Χεῖρα αὐτοῦ ἐξεπέτασεν θλίβων ἐπὶ πάντα τὰ ἐπιθυμήματα αὐτῆς· (μ) εἶδε γὰρ ἔθνη εἰσελθόντα εἰς τὸ ἁγίασμα αὐτῆς, ἃ ἐνετείλω μὴ (ʹ) εἰσελθεῖν αὐτὰ 11 εἰς ἐκκλησίαν σου. ΧΑΦ. Πᾶς ὁ λαὸς αὐτῆς καταστενάζοντες, ζητοῦντες ἄρτον· ἔδωκαν τὰ ἐπιθυμήματα αὐτῆς ἐν βρώσει, τοῦ ἐπιστρέψαι ψυχήν. (ϛ) ἴδε κύριε καὶ ἐπίβλεψον, 12 ὅτι (ν) ἐγενήθη ἠτιμωμένη. ΛΑΜΕΔ. Οἱ πρὸς ὑμᾶς, πάντες οἱ παραπορευόμενοι ὁδὸν, ἐπιστρέψατε καὶ ἴδετε εἰ ἔστιν ἄλγος (ξ) κατὰ τὸ ἄλγος μου, ὃ ἐγενήθη. φθεγξάμενος ἐν ἐμοὶ ἐταπείνωσέ με κύριος ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς θυ- 13 μοῦ αὐτοῦ. ΜΗΜ. Ἐξ ὕψους αὐτοῦ ἀπέστειλε πῦρ, ἐν τοῖς ὀστέοις μου κατήγαγεν αὐτό· διεπέτασε δίκτυον τοῖς ποσί μου, ἀπέστρεψέ με εἰς τὰ ὀπίσω· ἔδωκέ (ο) με ἠφανισμένην, ὅλην τὴν ἡμέραν (π) ὀδυνωμένην. ΝΟΥΝ. 14 Ἐγρηγορήθη ἐπὶ τὰ ἀσεβήματά μου, ἐν χερσί μου συνεπλάκησαν. ἀνέβησαν ἐπὶ τὸν τράχηλόν μου· ἠσθένησεν ἡ ἰσχύς μου· ὅτι ἔδωκε κύριος ἐν χερσί μου ὀδύνας, οὐ δυνήσομαι στῆναι.

DALETH. Viæ Sion lugent, eò quòd non ſint qui veniant ad ſolemnitatem : omnes portæ ejus deſtructæ : Sacerdotes ejus gemunt : virgines ej⁹ [illegible] & ipſa oppreſſa amaritudine in ſe. HE. 5 Facti ſunt tribulantes eam in caput, & inimici ejus locupletati ſunt, quia Domin⁹ humiliavit eā propter multitudinem impietatum ej⁹. Parvuli ej⁹ abierunt in captivitatem ante faciem tribulantis. VAU. Et (d) ablatus eſt à filia Sion omnis decor ejus. 6 Facti ſunt principes ej⁹ velut arietes non invenientes paſcuā : & abibant abſque fortitudine ante faciē perſequentis. ZAIN. Recordata eſt 7 Hieruſalem dierum humiliationis ſuæ, & rebellionum ſuarū, omniū deſiderabilium ſuorum quæ fuerunt à diebus antiquis, cùm caderet popul⁹ ejus in manus [illegible], non eſſet qui auxiliaretur ei. Videntes inimici ej⁹ riſerunt ſuper habitatione ej⁹. HETH. Peccatum 8 peccavit Hieruſalem : propterea in fluctuationem facta eſt. Omnes qui glorificabant eam, humiliaverunt illā. Viderunt enim ignominiā ej⁹ : atque ipſa gemens, & converſa eſt retrorſū. TETH. Im- 9 munditia ejus ante pedes ejus : nō eſt recordata noviſſimorū ſuorū, & fecit ſe deſcendere immenſe : non eſt qui conſoletur eam. Vide, Domine, humiliationē meā, quoniam magnificatus eſt inimicus. JOD. Manū ſuā extendit tribu- 10 lans ad omnia deſiderabilia ejus : vidit enim gentes ingreſſas in Sanctuariū ejus : quas præcepiſti non intrare eas in eccleſiam tuā. CHAPH. Omnis populus ej⁹ gementes, quærentes panem : dederunt deſiderabilia ejus in cibum ad revocandā animā. Vide, Domine, et cōſidera, quoniā facta eſt vilis. LAMED. Qui ad 12 vos, omnes qui tranſitis per viā, convertite vos, & videte, ſi eſt dolor (ξ) juxta dolorem meū, qui fact⁹ eſt. Loquut⁹ in me, humiliavit me Dñs in die iræ furoris ſui. MEM. De excelſo ſuo miſit ignē, 13 in oſſa mea deduxit eū : expandit rete pedib⁹ meis : convertit me retro ſū : dedit me deſolatam, totā die mœrore confectā. NUN. Vi- 14 gilavit ſuper impietates meas : (k) in manibus meis complicatæ ſunt : aſcenderunt ſuper collum meum. Infirmata eſt virtus mea : quia dedit Dominus in manibus meis dolores : non potero ſtare.

MS.A.(γ) αὐτῇ. (δ) ἐξῆλθεν (ε) μὴ εὑρίσκοντες (ζ) ἐνώπιον διώκοντος. (η) μετοικεσίας (θ) ἰδόντες (ι) εἰς τὰ ὀπίσω. (κ) πρὸς (λ) ἐσχάτων (μ) Ἴδον (ʹ) εἰσελθεῖν εἰς ἐκκλησίαν (ϛ) ἰδὲ καὶ (ν) ἐγενήθην (ξ)* καὶ τὸ (ο) με κύριος ἠφανισμένην, (π) ὀδυρωμένην.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כל זמן דהוה ירושלם מתבניא סריבו ישראל למסק לירושלם לאתחזאה קדם יי תלת 4
זמנין בשתא ועל חוביהון דישראל אצטדיאת ירושלם ואתעבידו שבילי ציון אבלין
מדלית עאל בה בזמן מועדיא כל תרעהא צדין וכהנהא אנחין על די בטילו קורבניא
בתולתהא ספדן על די פסקו למפק בחמשא עסר יומין באב וביומא דכפוריא די הוא
בעסרא יומין בתשרי לחנגא בחנגין אף איהי מריר לבא לחדא׃ הוו מעיקהא מתמנן 5
עלהא לרישין ובעלי דבבהא הוו יתבין בשלוה ארום יי תבר יתה על סגיאת מרודהא
רביהא אזלו בשביתא קדם מעיקהא׃ ונפק מן כנשתא דציון כל זיוהא הוו רברבנהא 6
מסתחרן על מיכלא היכמא דמסחרן איליא במדברא ולא אשכחו אתר כשר
למרעהון ואזלו בתשות כוחא ולא הוה להון חילא למערוק לאשתזבא קדם רדף׃
הות דכירא ירושלם יומין קדמאין די הות מדורה בכרכיא ובפציחין תקיפין ומרדה 7
ושלטה בכל עלמא וכל רגוגהא דהוו לה מן יומין קדמאין ועל חובא נפל עמה בידוי
דנבוכדנצר רשיעא ואעיק להון ולית דסיע לה חזוהא מעיקיא דאזלא בשביתא חיכו
על טובהא די פסק מבינהא׃ חובא רבא חבת ירושלם בגין כן בטלטול הות כל 8
עממיא דהוו מיקרין לה מלקדמין נהגו בה זילותא ארום חזו בדקהא ברם היא
מתאנחא ותיעת לאחורא׃ סואבות דם ריחוקהא בשפולהא לא אדכיאת מנה ולא 9
תהת על חובהא ולא דכירת מה דעתיד למיתי עלהא בסוף יומיא ונחתת ונפלת
והות פרישן ולית דמלל תנחומין לה חזי יי ותהי מסתכל ארום אתרברב עלי בעל
דבבא׃ ידיה אושיט נבוכדנצר רשיעא ושלף סיפא וקטע כל רגוגה אף כנשתא 10
דישראל שריאת ליללא ארום חזת עממין נוכראין עלו לבית מוקדשה די פקדת על
ידוי דמשה נביאה על עמון ומואב דלא ידכון למעל בקהלא דילך׃ כל עמהא 11
דירושלם אניחן מכפנא ותבעין לחמא למיכל יהבו רגוגיהון בסעיד לחמא לקימא נפש
חזי יי ותהי מסתכל ארום הויתי גרגרניתא׃ אשבעית לכון כל דעברין באורחא זורו 12
הכא אסתכלו וחזו אין איתי כיבא ככיבי דאסתקף לי דתבר יי יתי ביום תקוף רוגזיה׃
מן שמיא שלח אשתא בכרכי תקיפין וכבש יתהון פרש מצדתא לרגלי ארתיעני קדל 13
בעלי דבבי יהבני למהוי צדיא כל יומא מרחקא וחלישא׃ אתיקר ניר מרודי 14
בידיה אשתבשו כשבשין דגופנא סלקו על צורי אתקל חילי מסר יי יתי בידי מן דלית
יכיל אנא למקם׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

4 DALETH. Omni tempore quo erat Jeruſalem ædificata, noluerunt filii Iſrael aſcendere in Jeruſalem ut apparerent coram Dño trib⁹ vicib⁹ in anno & propter peccata Iſrael deſerta eſt Jeruſalem, & factæ ſunt viæ Sion lugentes, eò quòd non ſit qui veniat in eam tempore feſtivitatum : omnes portæ ej⁹ deſtructæ, & Sacerdotes ej⁹ gementes, pro eo quòd ceſſaverunt oblationes : virgines ej⁹ plangentes, eò quòd deſierunt egredi in quinta decima die menſis Auguſti, & in die propitiationis, quæ erat in decima die menſis Septembris ad ducendos choros : ipſa quoque eſt amara corde valdè. HE. Fuerunt 5 hoſtes ej⁹ conſtituti ſup eam in principes, & inimici ej⁹ habitaverūt in tranquillitate : quia Dñs confregit eam propter multitudinē tranſgreſſionū ej⁹ : parvuli ej⁹ iverunt in captivitatē corā tribulante. VAU. Et egreſſus eſt à 6 cœtu Sion omnis ſplendor ej⁹ : fuerunt principes ej⁹ diſcurrentes ad quærendum cibū, ſicut diſcurrunt cervi in deſerto, & non invenerunt locū aptū paſcuis ſuis : & abierunt in infirmitate fortitudinis, & non fuit eis virt⁹ ad fugiendū ut liberarentur à perſequente. ZAIN. Recordata eſt Jeruſalē dierum antiquorū cùm habitatio ej⁹ eſſet in arcib⁹ et in villis fortiſſimis et prævaricaretur et dominaretur in oñi ſeculo, & omniū deſiderabiliū ſuorū quæ fuerūt ei à dieb⁹ antiquis : & propter peccata ſua cecidit popul⁹ ej⁹ in manu Nabuchodonoſor impii, qui tribulavit eos ; & non fuit qui adjuvaret eā. Viderunt eam hoſtes cùm iret in captivitatē, & irriſerūt ſup bona ej⁹ quæ ceſſaverūt de medio ej⁹. CHETH. Peccatū grande peccavit Jeruſalē : propterea vaga facta eſt inter omnes populos ; qui glorificabant eam ab initio, uſi ſunt contemptu contra illā, quia viderunt ſciſſuras ejus : ipſa autē gemens & converſa eſt retrorſū. TETH. Immunditia ſanguinis menſtrui ejus in oris veſtimenti ejus : non eſt mundata ab ea, neq; obſtupuit propter peccata ſua, neque recordata eſt quod eventurū eſſet ſup ipſam in fine dierū. Et deſcendit, & cecidit mirabiliter ; & non eſt qui loquatur ei conſolationes. Vide Dñe & contemplare, quia prævaluit ſup me inimicus. JOD. Manū ſuā extendit Nabuchodonoſor impius, et evaginavit gladiū, et ſuccidit omnia deſiderabilia ejus : cœtus quoq ; Iſrael cœpit ululare, quia vidit populos extraneos ingredientes in domū ſanctuarii ipſius, de quibus præcepiſti p manus Moſis prophetæ ſup Ammon et Moab, quòd non eſſent digni ingredi in Eccleſiā tuam. CAPH. Omnis popul⁹ Jeruſalē gemunt propter famem, et quærunt panē ad comedendū : dederunt deſiderabilia ſua pro alimento panis ad ſuſtentandū animam. Vide Domine et conſidera quia facta ſum vorax. LAMED. Adjuro vos omnes tranſeuntes p viam, declinate huc, aſpicite et videte ſi eſt dolor ſicut dolor meus, quoniā occaſionē quæſivit contra me, ut confringeret me Dñs in die iræ furoris ſui. MEM. De cœlis miſit ignē in civitates meas, et ſubjugavit eas ; expandit rete pedib⁹ meis : vertere fecit me dorſum coram inimicis meis : poſuit me ut ſim deſolata tota die abjecta et infirma. NUN. Aggravatū eſt jugū prævaricationū mearū in manu ejus ; convolutæ ſunt quaſi propagines vitis : aſcenderunt ſuper collum meum : [illegible] virtus mea : tradidit me Dominus in manum de qua non potero ſurgere.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕ * ܐܘܪ̈ܚܬܗ ܕܨܗܝܘܢ ܐܒ̈ܝܠܢ ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܕܐܬܝܢ ܠܥܐܕܐ. ܟܠܗܘܢ ܬܪ̈ܥܝܗ ܚܪ̈ܝܒܝܢ. ܟܗ̈ܢܝܗ ܡܬܬܢܚܝܢ. ܒ̈ܬܘܠܬܗ ܡܬܕܒܪ̈ܢ. ܘܗܝ ܡܪܝܪܐ ܠܗ̇. * ܗ * ܗܘܘ ܡܥܝܩ̈ܢܝܗ ܠܪܫܐ. ܘܒܥܠܕܒ̈ܒܝܗ ܫܝܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܟܟܗ̇ ܥܠ ܣܘܓܐܐ ܕܥܘ̈ܠܝܗ. ܥܘ̈ܠܠܝܗ̇ ܐܙܠܘ ܒܫܒܝܐ ܩܕܡ ܡܥܝܩܢܐ. * ܘ * ܘܢܦܩ ܡܢ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ ܟܠܗ ܫܘܦܪܗ̇. ܗܘܘ ܪ̈ܘܪܒܢܝܗ̇ ܐܝܟ ܐܝ̈ܠܐ ܕܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܪܥܝܐ. ܘܐܙܠܘ ܕܠܐ ܚܝܠܐ ܩܕܡ ܪܕܘܦܐ. * ܙ * ܐܬܕܟܪܬ ܐܘܪܫܠܡ ܝܘܡ̈ܬܐ ܕܡܘܟܟܗ̇ ܘܕܡܪܕܘܬܗ̇. ܘܟܠܗܘܢ ܪ̈ܓܝܓܬܗ̇ ܕܗܘܘ ܡܢ ܝܘܡ̈ܬܐ ܩܕܡ̈ܝܐ. ܟܕ ܢܦܠ ܥܡܗ̇ ܒܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܥܕܪ ܠܗ̇. ܚܙܐܘܗ̇ ܡܥܝܩ̈ܢܝܗ̇. ܘܓܚܟܘ ܥܠ ܬܘܒܪܗ̇. * ܚ * ܚܛܗܐ ܚܛܬ ܐܘܪܫܠܡ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܠܙܘܥܐ ܗܘܬ. ܟܠܗܘܢ ܕܡܝܩܪܝܢ ܗܘܘ ܠܗ̇ ܫܛܘܗ̇. ܡܛܠ ܕܚܙܘ ܨܥܪܗ̇. ܐܦ ܗܝ ܐܬܬܢܚܬ ܘܗܦܟܬ ܠܒܣܬܪܗ̇. * ܛ * ܛܢܦܘܬܗ̇ ܒܫܦܘ̈ܠܝܗ̇. ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܬ ܚܪܬܗ̇. ܘܢܚܬܬ ܫܘܒܚܗ̇. ܘܠܝܬ ܠܗ̇ ܡܒܝܐܢܐ. ܚܙܝ ܡܪܝܐ ܡܘܟܟܝ. ܡܛܠ ܕܐܬܪܘܪܒ ܒܥܠܕܒܒܐ. * ܝ * ܐܝܕܗ ܦܫܛ ܡܥܝܩܢܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܪ̈ܓܝܓܬܗ̇. ܘܚܙܝܬ ܠܥܡ̈ܡܐ ܕܥܠܘ ܠܡܩܕܫܟ. ܐܝܠܝܢ ܕܦܩܕܬ ܕܠܐ ܢܥܠܘܢ ܠܟܢܘܫܬܟ. * ܝܐ * ܟܠܗ ܥܡܗ̇ ܡܬܬܢܚܝܢ ܘܒܥܝܢ ܠܚܡܐ. ܘܝܗܒܘ ܪ̈ܓܝܓܬܗܘܢ ܒܡܐܟܘܠܬܐ ܠܡܦܢܝܘ ܢܦܫܐ. ܚܙܝ ܡܪܝܐ ܘܐܣܬܟܠ ܕܗܘܝܬ ܫܝܛܬܐ. * ܝܒ * ܠܐ ܠܟܘܢ ܟܠܟܘܢ ܥܒ̈ܪܝ ܐܘܪܚܐ. ܐܣܬܟܠܘ ܘܚܙܘ ܐܢ ܐܝܬ ܟܐܒܐ ܐܝܟ ܟܐܒܝ ܕܗܘܐ ܠܝ. ܘܡܟܟܢܝ ܡܪܝܐ ܒܝܘܡܐ ܕܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. * ܝܓ * ܡܢ ܪܘܡܐ ܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܓܪ̈ܡܝ ܘܪܕܢܝ. ܦܪܣ ܡܨܝܕܬܐ ܠܪ̈ܓܠܝ. ܘܗܦܟܢܝ ܠܒܣܬܪܐ. ܝܗܒܢܝ ܠܚܪܒܐ. ܟܠܗ ܝܘܡܐ ܕܘܝܐ. * ܝܕ * ܐܬܬܥܝܪܘ ܥܠܝ ܚܛܗ̈ܝ. ܘܒܐܝ̈ܕܘܗܝ ܐܬܩܛܪܘ ܢܝܪ̈ܘܗܝ ܥܠ ܨܘܪܝ. ܘܐܬܡܚܠ ܚܝܠܝ. ܘܐܫܠܡܢܝ ܡܪܝܐ ܒܐܝܕܐ ܕܠܐ ܡܫܟܚ ܐܢܐ ܠܡܩܡ.

Viæ Sionis in luctu *verſantur* ob defectum venientium ad ſolennitatem? omnes portæ ejus ſunt deſolatæ, ſacerdotes ejus gementes, virgines ejus humiliatæ, & ipſa amaritudine confecta? 4

Oppreſſores ejus effecti ſunt ſuperiores, & inimici ejus tranquillè agunt? Quia Dominus depreſſit eam propter multitudinem peccatorum ejus, ideò nati ejus abierunt in captivitatem coram oppreſſore: 5

Et exceſſit è filia Sionis totus decor ejus: facti ſunt magnates ejus ſimiles cervis, & non invenientes paſcuum, abierunt languidi coram abigente. 6

Recordata eſt Jeruſalem dierum depreſſionis & punitionis ſuæ, & omnium delitiarum ſuarum quæ erant à priſcis diebus; ubi cecidit populus ejus manu hoſtili nemine auxiliante; viderunt eam oppreſſores ejus, & de ipſius contritione riſerunt. 7

Flagitium perpetravit Jeruſalem, ideò facta eſt horrori: omnes qui honorabant eam, vituperaverunt eam, quia viderunt turpitudinem ejus: etiam ipſa gemuit, & retroceſſit. 8

Sordes ejus in fimbriis ejus, ac non eſt recordata finis ſui: dejecta eſt gloria ejus, & non eſt illi conſolator. Vide Domine depreſſionẽ meam, quòd elatus ſit hoſtis. 9

Manus ſuas extendit oppreſſor ad optatiſſima quæq; ipſius: & vidi gentes ingreſſas in ſanctuariũ tuum, quas præceperas ne ingrederentur in congregationem tuam. 10

Totus populus anhelant, & panem quærunt, ederunt chariſſimam quamque rem pro cibo, ad recuperandam animam. Reſpice Domine & intuere, ut ſum fœdata. 11

Nihílne ad vos omnes viatores? animadvertite, & videte num ſit dolor ſimilis dolori meo quo me Dominus affecit, depreſsítque me Dominus in die æſtûs iræ ſuæ. 12

Ab alto miſit ignem in oſſa mea, dejecítque me: pandit rete pedibus meis, meque ſupinam evertit: tradidit me gladio, totâque die mœrore conficior. 13

Experrecta ſunt contra me peccata mea, & manibus ejus aptata ſunt juga ejus collo meo. & elanguit virtus mea, tradiditque me Dominus in manum ejus cujus viribus impar ſum. 14

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* طرقات صهيون تنوح من اجل انه لم يكن آتون في العيد * جميع ابوابها فني
كهنتها يتنهدون * عذاراها مسبيون * وهي ممرمرة في ذاتها * صاروا محزنوها راسا * واعدا
مخصبون * لان الرب اذلها لكثرة نفاقها * اطفالها ذهبوا في السبي لوجه المحزن * وخرج
الابنة صهيون كل حسن بهائها * صارت رؤساؤها مثل كباش لم تجد مرعى * وذهبوا بلا
قوة امام الطارد * ذكرت ايروسليم ايام مذلتها * وبعدت عنها جميع شهواتها التي كا
منذ الايام الاولى * عند ما سقط شعبها في ايدي المحزن ولم يكن لها معين * نظر
اعداؤها وضحكوا بسبتها * اخطات ايروسليم خطية * لاجل هذا صارت للزلل * جميع
ممجديها اذلوها * لانهم نظروا فضيحتها * وهي متنهدة ورجعت الى خلف * نجاستها من
قدميها * لم تذكر اواخرها * حطها النساخ وليس لها من يعزيها * انظر يا رب مذلتي لا
عدوي عظم * المحزن بسط يده على جميع شهواتها * لاني نظرت الامم الداخلة الى مقدسها
التي امرت ان لا يدخلوا الى كنيستك * كل شعبها يتنهدون يطلبون خبزا * دفعوا شهواته
في طعام لترد النفس * انظر واطلع لاني صرت مهانة * يا جميع ماري الطريق اليـ
ارجعوا وانظروا هل وجع هو مثل وجعي الذي صار لي * تكلم الرب في واذلني في يو
رجز غضبه * من علوه ارسل نارا * انزلها في عظامي * بسط شبكة لقدمي * وردني الى
خلف * اسلمني الرب هالكة * كل النهار باكية * سهر على فواحشي * كتفوني
يدي * صعدوا على عنقي * ضعفت قوتي * لان الرب اعطى في يدي اوجاعا لا
استطيع ان اقف *

Viæ Sionis lamentantur, quia nulli ſunt qui veniant in feſto: omnes portæ ejus conſumptæ ſunt, ſacerdotes ejus gemunt, virgines ejus abductæ; ipſa verò amaritudine oppreſſa in ſemetipſa. 4

Affligentes eam facti ſunt caput, & hoſtes ejus locupletes; quia Dominus depreſſit illam propter multitudinem impietatis ejus: pueruli ejus abierunt in captivitatem ante faciem affligentis. 5

Et abſceſſit à filia Sione tota venuſtas decoris ejus: facti ſunt principes ejus velut arietes non invenientes paſcua, & abierunt ſine viribus coram abigente. 6

Recordata eſt Jeruſalem dierũ depreſſionis ſuæ; & receſſerunt ab ea omnes voluptates ejus quæ erant à priſcis diebus, ubi cecidiſſet populus ejus in manus affligentis, nemine ei auxilium ferente: viderunt hoſtes ejus, & deriſerunt ſabbathum ejus. 7

Peccavit Jeruſalem peccatum, idcirco lapſationi expoſita eſt: omnes qui glorificabant eam, depriment eam, quia viderunt ignominiam ejus: ipſa quoque ſuſpirans verſa eſt ſupina. 8

Immunditia ejus ex pedibus ejus eſt, non eſt recordata poſtremorum ſuorum: dejecit eam arrogantia, & non habet qui conſoletur eam. Vide O Domine dejectionem meam, quoniam inimicus meus magnificatus eſt. 9

Affligens extendit manum ſuam ad optatiſſima quæque ipſius: quia vidi gentes ingredientes in ſanctuarium ejus, quas præceperas ne ingrederentur in Eccleſiam tuam. 10

Totus populus ejus ſuſpirantes quærunt panem, dederunt optatiſſima quæque ipſius pro cibo ad reſtituendum animam. Vide & aſpice quòd facta ſim vilis. 11

O quotquot viam tranſitis ad nos, convertimini & videte num dolor ullus ſit ſimilis dolori meo qui factus eſt mihi. Locutus eſt de me Dominus, & humiliavit me in die furoris iræ ſuæ. 12

Ab excelſo ſuo miſit ignem, immiſit eum in oſſa mea: tetendit rete pedibus meis, evertitque me ſupinam: dedit me Dominus perditam, totâ die lugentem. 13

Vigilavit ſuper turpitudines meas, revinxerunt manus meas, aſcenderunt ſuper collum meum, infirmatæ ſunt vires meæ; quia Dominus poſuit in manibus meis dolores, nequeo reſiſtere. 14

me ſuper vocavit ; meo interiori in Dominus meos validos omnes Proſtravit
15 סִלָּה כָל־אַבִּירַי אֲדֹנָי בְּקִרְבִּי קָרָא עָלַי
virgini Domin⁹ calcavit torcular:meos electos conterēdū ad,conventum
מוֹעֵד לִשְׁבֹּר בַּחוּרָי גַּת דָּרַךְ אֲדֹנָי לִבְתוּלַת
,aquas deſcendens me⁹ ocul⁹,me⁹ oculus ,flens ego hæc Super .Jehudah filiæ
16 בַּת־יְהוּדָה׃ עַל־אֵלֶּה אֲנִי בוֹכִיָּה עֵינִי עֵינִי יֹרְדָה מַּיִם
mei filii fuerunt:meā animā reducens conſolator me à eſt elongatus quia
כִּי־רָחַק מִמֶּנִּי מְנַחֵם מֵשִׁיב נַפְשִׁי הָיוּ בָנַי
,ſuas manibus in Sijon Expandit .inimicus prævaluit quia , deſolati
17 שׁוֹמֵמִים כִּי גָבַר אוֹיֵב׃ פֵּרְשָׂה צִיּוֹן בְּיָדֶיהָ
:ej⁹ hoſtes ej⁹ circuitus ,Jahacob Dominus præcepit ; ei conſolator non
אֵין מְנַחֵם לָהּ צִוָּה יְהוָה לְיַעֲקֹב סְבִיבָיו צָרָיו
ej⁹ ori quia,Domin⁹ ipſe Juſtus .eos inter elongationē in Jeruſalaim fuit
18 הָיְתָה יְרוּשָׁלַםִ לְנִדָּה בֵּינֵיהֶם׃ צַדִּיק הוּא יְהוָה כִּי פִיהוּ
,meæ virgines:meū dolorē videte & ,populi omnes nunc audite : rebellavi
מָרִיתִי שִׁמְעוּ־נָא כָל־עַמִּים וּרְאוּ מַכְאֹבִי בְּתוּלֹתַי
ipſi , meos amicos ad Clamavi .captivitatē in abierunt mei juvenes &
19 וּבַחוּרַי הָלְכוּ בַשֶּׁבִי׃ קָרָאתִי לַמְאַהֲבַי הֵמָּה
quæſierūt quoniā ;obierūt urbe in mei ſenes &,mei ſacerdotes,me deceperūt
רִמּוּנִי כֹּהֲנַי וּזְקֵנַי בָּעִיר גָּוָעוּ כִּי־בִקְשׁוּ
,mihi tribulatio quia Domine Vide .ſuā animam reducerent & ,ſibi cibum
20 אֹכֶל לָמוֹ וְיָשִׁיבוּ אֶת־נַפְשָׁם׃ רְאֵה יְהוָה כִּי־צַר־לִי
rebellando quia,meo interiori in meum cor ſe vertit :ſunt conſtipata mea viſcera
מֵעַי חֳמַרְמָרוּ נֶהְפַּךְ לִבִּי בְּקִרְבִּי כִּי מָרוֹ
quòd Audierunt .mors tanquā domo in,gladius orbavit foris : rebellavi
21 מָרִיתִי מִחוּץ שִׁכְּלָה־חֶרֶב בַּבַּיִת כַּמָּוֶת׃ שָׁמְעוּ כִּי
,meū malū audierūt mei inimici omnes;mihi cōſolator non , ego ſuſpirans
נֶאֱנָחָה אָנִי אֵין מְנַחֵם לִי כָּל־אֹיְבַי שָׁמְעוּ רָעָתִי
.ego ſicut erunt & ,vocâſti diem adduxiſti : feciſti tu quia,ſunt gaviſi
שָׂשׂוּ כִּי אַתָּה עָשִׂיתָ הֵבֵאתָ יוֹם־קָרָאתָ וְיִהְיוּ כָמוֹנִי׃
fuiſti cauſa quēadmodū eis cauſa ſis&,tuas facies ad eorū malū omne Ingrediatur
22 תָּבֹא כָל־רָעָתָם לְפָנֶיךָ וְעוֹלֵל לָמוֹ כַּאֲשֶׁר עוֹלַלְתָּ
.mœrēs meū cor &,mea ſuſpiria multa quia;meas prævaricationes oēs ſuper mihi
לִי עַל כָּל־פְּשָׁעָי כִּי־רַבּוֹת אַנְחֹתַי וְלִבִּי דַוָּי׃

CAP. II. ב

fecit projicere ,Sijon filiam Dominus ſuo naſo in obnubilavit Quomodo
1 אֵיכָה יָעִיב בְּאַפּוֹ אֲדֹנָי אֶת־בַּת־צִיּוֹן הִשְׁלִיךְ
ſuorū pedū ſcabelli eſt recordat⁹ nō & : Iſrael decorem terram cœlis de
מִשָּׁמַיִם אֶרֶץ תִּפְאֶרֶת יִשְׂרָאֵל וְלֹא־זָכַר הֲדֹם־רַגְלָיו
tabernacula omnia pepercit nō & ,Dominus Abſorbuit ? ſui naſi die in
2 בְּיוֹם אַפּוֹ׃ בִּלַּע אֲדֹנָי לֹא חָמַל אֵת כָּל־נְאוֹת
fecit pertingere,Jehudah filiæ munitiones ſuo furore in deſtruxit ,Jahacob
יַעֲקֹב הָרַס בְּעֶבְרָתוֹ מִבְצְרֵי בַת־יְהוּדָה הִגִּיעַ
omne naſi ira in Concidit .ej⁹ principes & , regnum polluit , terram
3 לָאָרֶץ חִלֵּל מַמְלָכָה וְשָׂרֶיהָ׃ גָּדַע בָּחֳרִי־אַף כֹּל
;inimici faciebus à ſuam dexteram retrorſum fecit redire , Iſrael cornu
קֶרֶן יִשְׂרָאֵל הֵשִׁיב אָחוֹר יְמִינוֹ מִפְּנֵי אוֹיֵב
.undique conſumpſit flamma,ignis veluti Jahacob in eſt accenſus &
וַיִּבְעַר בְּיַעֲקֹב כְּאֵשׁ לֶהָבָה אָכְלָה סָבִיב׃

Verſio VULG.LAT.

15 *Samech.* Abſtulit omnes magnificos meos Dñs de medio mei : vocavit adverſum me temp⁹, ut contereret electos meos, torcular calcavit Dominus virgini filiæ Juda. 16 *Ain.* Idcircò ego plorans, & oculus meus deducens aquas: quia longè factus eſt à me conſolator, convertens animā meā: facti ſunt filii mei pditi, quoniam invaluit 17 inimic⁹. *Phe.* Expandit Sion man⁹ ſuas, nō eſt qui cōſoletur eā: mandavit Dñs adverſum Jacob in circuitu ej⁹ hoſtes ej⁹: facta eſt Jeruſalē quaſi polluta menſtruis inter 18 eos. *Sade.* Juſt⁹ eſt Dñs, quia os ej⁹ ad iracundiam provocavi: audite, obſecro, univerſi populi, & videte dolorē meum: virgines meæ, & juvenes mei abierūt in captivita- 19 tem. *Coph.* Vocavi amicos meos, & ipſi deceperunt me: ſacerdotes mei, & ſenes mei in urbe conſumpti ſunt: quia quæſierūt cibū ſibi 20 ut refocillarēt animā ſuā. *Res.* Vide, Dñe, quoniā tribulor, conturbat⁹ eſt venter meus: ſubverſū eſt cor meū in memetipſa, quoniā amaritudine plena ſum : foris interficit gladi⁹, & domi mors ſimi- 21 lis eſt. *Sin.* Audierunt quia ingemiſco ego, & non eſt qui conſoletur me : omnes inimici mei audierūt malū meū, lætati ſunt, quoniam tu feciſti: adduxiſti diē conſolationis, & fient ſimiles mei. 22 *Thau.* Ingrediatur omne malum eorū corā te: & vindemia eos, ſicut vindemiâſti me propter omnes iniquitates meas : multi enim gemitus mei, & cor meum mœrens.

CAP. II.

1 *Aleph.* Quomodò obtexit caligine in furore ſuo Domin⁹ filiā Sion: projecit de cœlo in terram inclytā Iſrael, et non eſt recordat⁹ ſcabelli pedū ſuorū in die furoris 2 ſui. *Beth.* Præcipitavit Dñs, nec pepercit, omnia ſpecioſa Jacob : deſtruxit in furore ſuo munitiones virginis Juda, & dejecit in terrā: polluit regnū, & principes 3 ej⁹. *Ghimel.* Confregit in ira furoris ſui omne cornu Iſrael: avertit retrorſum dexterā ſuā à facie inimici: & ſuccendit in Jacob quaſi ignē flammæ devorantis in gyro.

Verſ. GRÆ.LXX.Interp. cum Tranſl. LAT.

15 ΣΑΜΕΧ. Ἐξῆρε πάντας τοὺς ἰσχυρούς μου ὁ κύριος ἐκ μέσου μου, ἐκάλεσεν ἐπ' ἐμὲ καιρὸν τοῦ συντρῖψαι ἐκλεκτούς μου· ληνὸν ἐπάτησε κύριος τῇ θυγατρὶ Ἰούδα. 16 Ἐπὶ τούτοις ἐγὼ κλαίω. ΑΙΝ. Ὁ ὀφθαλμός μου κατήγαγεν ὕδωρ, ὅτι ἐμακρύνθη ἀπ' ἐμοῦ ὁ παρακαλῶν με, ὁ ἐπιστρέφων ψυχήν μου· ἐγένοντο οἱ υἱοί μου ἠφανισμένοι, ὅτι ἐκραταιώθη ὁ ἐχθρός. 17 ΦΗ. Διεπέτασε Σιὼν (ρ) χεῖρα αὐτῆς, οὐκ ἔστιν ὁ παρακαλῶν αὐτήν. ἐνετείλατο κύριος τῷ Ἰακώβ, (σ) κύκλῳ αὐτοῦ οἱ θλίβοντες αὐτόν· ἐγενήθη Ἱερουσαλὴμ εἰς ἀποκαθημένην ἀναμέσον αὐτῶν. 18 ΤΣΑΔΗ. Δίκαιός ἐστι κύριος, ὅτι (τ) στόμα αὐτοῦ παρεπίκρανα. ἀκούσατε δὴ πάντες οἱ λαοί, καὶ ἴδετε τὸ ἄλγος μου. παρθένοι μου καὶ νεανίσκοι μου ἐπορεύθησαν ἐν αἰχμαλωσίᾳ. 19 ΚΩΦ. Ἐκάλεσα τοὺς ἐραστάς μου, αὐτοὶ δὲ παρελογίσαντό με. οἱ ἱερεῖς μου καὶ οἱ πρεσβύτεροί μου ἐν τῇ πόλει ἐξέλιπον, ὅτι ἐζήτησαν βρῶσιν αὐτοῖς ἵνα ἐπιστρέψωσι 20 ψυχὰς αὐτῶν, καὶ οὐχ εὗρον. ΡΗΧΣ. Ἴδε κύριε, ὅτι θλίβομαι, (υ) ἡ κοιλία μου ἐταράχθη, καὶ ἡ καρδία μου ἐστράφη ἐν ἐμοί, ὅτι παραπικραίνουσα παρεπίκρανα· ἔξωθεν ἠτέκνωσέ με μάχαιρα, ὥσπερ θάνατος ἐν 21 οἴκῳ. ΧΣΕΝ. Ἀκούσατε δή, ὅτι στενάζω ἐγώ, οὐκ ἔστιν ὁ παρακαλῶν με. πάντες οἱ ἐχθροί μου ἤκουσαν τὰ κακά μου, καὶ ἐχάρησαν, ὅτι σὺ ἐποίησας· ἐπήγαγες ἡμέραν, ἐκάλεσας καιρόν, (φ) ἐγένοντο ὅμοιοι ἐμοί. 22 ΘΑΥ. Εἰσέλθοι πᾶσα ἡ κακία αὐτῶν κατὰ πρόσωπόν σου, καὶ (χ) ἐπιφύλλισον αὐτοῖς, ὃν τρόπον ἐποίησαν ἐπιφυλλίδα περὶ πάντων τῶν ἁμαρτημάτων μου, ὅτι πολλοὶ οἱ στεναγμοί μου, καὶ ἡ καρδία μου λυπεῖται.

ΚΕΦ. β΄.

1 ΑΛΕΦ. Πῶς ἐγνόφωσεν ἐν ὀργῇ (α) αὐτοῦ κύριος τὴν θυγατέρα Σιών; κατέρριψεν ἐξ οὐρανοῦ εἰς γῆν δόξασμα Ἰσραήλ, καὶ οὐκ 2 ἐμνήσθη ὑποποδίου ποδῶν (β) αὐτοῦ. ΒΗΘ. Ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς αὐτοῦ κατεπόντισε κύριος, οὐ φεισάμενος πάντα τὰ ὡραῖα Ἰακὼβ καθεῖλεν ἐν θυμῷ αὐτοῦ, τὰ ὀχυρώματα τῆς θυγατρὸς Ἰούδα ἐκόλλησεν εἰς τὴν γῆν, ἐβεβήλωσεν (γ) βασιλέα αὐτῆς, καὶ ἄρ- 3 χοντας αὐτῆς. ΓΙΜΕΛ. Συνέκλασεν ἐν ὀργῇ θυμοῦ αὐτοῦ πᾶν κέρας Ἰσραήλ, ἀπέστρεψεν (δ) ὀπίσω δεξιὰν αὐτοῦ ἀπὸ προσώπου ἐχθροῦ, καὶ (ε) ἀνῆψεν ἐν Ἰακὼβ ὡς πῦρ φλόγα, καὶ κατέφαγε πάντα τὰ κύκλῳ.

SAMECH. Abſtulit omnes fortes meos Dominus de medio mei: vocavit ſuper me tempus conterendi electos meos. Torcular calcavit Dominus virgini filiæ Juda. (l) Super his ego ploro. AIN. Oculus meus deduxit aquam: quia longe factus eſt à me, qui conſoletur me, (m) qui reducat animam meam: facti ſunt filii mei (n) perditi: quoniam invaluit inimicus. PHE. Expandit Sion manum ſuam, non eſt, qui conſoletur eam. (o) Mandavit Dominus ipſi Jacob: in circuitu ejus tribulantes eum: facta eſt Jeruſalem in pollutam menſtruis inter eos. TSADE. Juſtus eſt Dominus, quia os ejus ad iracundiam provocavi. Audite, obſecro, univerſi populi, & videte dolorem meum. Virgines meæ, & juvenes mei abierunt in captivitatem. COPH. Vocavi amatores meos: ipſi autem deceperunt me. Sacerdotes mei, & ſeniores mei in urbe defecerunt: quia quæſierunt cibum ſibi, ut refocillarent animas ſuas, & (p) non invenerunt. RECHS. Vide, Domine, quoniam tribulor: conturbatus eſt venter meus: & cor meum ſubverſum eſt in meipſo, quoniam exacerbans exacerbavi: foris orbavit me gladius, ſicut mors in domo. CHSEN. Audite, obſecro, quia ingemiſco ego, non eſt, qui conſoletur me. Omnes inimici mei audierunt mala mea & lætati ſunt, quoniam tu feciſti: adduxiſti diem, vocaſti tempus: (q) facti ſunt ſimiles mihi. THAU. Ingrediatur omnis malitia eorum ante faciem tuam: & vindemia eos, ſicut (r) vindemiam fecerunt pro omnibus peccatis meis. Multi enim gemitus mei: & cor meum mœ[illegible]

CAP. II.

ALEPH. Quomodo obtexit caligine in ira ſua Dominus filiam Sion? projecit de cœlo in terram glorificationem Iſrael: & non eſt recordatus ſcabelli pedum ſuorum. BETH In die iræ ſuæ abſorbuit Dominus, non pepercit, omnia ſpecioſa Jacob deſtruxit in furore ſuo munitiones filiæ Juda; adhærere fecit ad terram: polluit (b) regem ejus, & principes ejus. GIMEL. Confregit in ira furoris ſui omne cornu Iſrael: avertit retrorſum dexteram ſuam à facie inimici: & accendit in Jacob quaſi ignem (c) flammam: & devoravit omnia quæ in gyro.

MS.A. (ρ) τὰς χεῖρας (σ) κύκλῳ οἱ (τ) τὸ στόμα (υ) καὶ ἡ κοιλία (φ) καὶ ἐγένετο οἴμμοι οἴμμοι. (χ) ἐπιφύλλισον
MS.A. Κεφ. β΄. (α) αὐτοῦ τὴν (β) αὐτοῦ ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς θυμοῦ αὐτοῦ. ΒΗΘ. Κατεπόντισεν (γ) εἰς τὴν γῆν βασιλέα αὐτῆς, καὶ ἄρχοντα (δ) εἰς τὰ ὀπίσω (ε) ἀνῆψεν Ἰακὼβ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 כנש כל תקיפי יי ביני ארעזמן עלי לתבירא חיל עולמי ועלו עממיא על גזירת מימרא
דיי וסאיבו בתולתא דבית יהודה די הוה דמהון דבתולתהון מתשד היך כחמר מן
16 מעצרתא בעדן דגבר מבעט ית ענבין חמר ענבוהי שרין : על טפליא דאתרטשו ועל
נשיא מעדיתא דאתבקעו כרסיהון אמרת כנשתא דישראל אנא בכיא ותרין עיני זלגין
דמעתא היך מבועא דמיא ארום אתרחק מני מנחם דמקים יתי וממלל תנחומין על נפשי
17 הוו בנוי צדין ארום אתגבר עליהון בעל דבבא : פרסת ציון ידהא מן עקתא היכמה
דמפרסא אתתא על מתברא פגינת וליתי דמלל תנחומין על לבה פקד יי לבית יעקב
פקודיא ואוריתא למנטר והנון עברו על גזירת מימריה בגין כן אסחרו חזור חזור
18 ליעקב מעיקוהי הות ירושלם דמיא לאתתא מרחקא ביניהון : אמר יי במימריה לעמא
בית ישראל דלא יעבר קטלין בחרבא בארעהון אזל יאשיהו מלכא שלף סיפא על
פרעה חגירא בבקעת מגדו מה דלא אתפקד ולא תבע אולפן מן קדם יי בגין כן רגמו
רגומיא גירין למלכא יאשיהו ומית תמן עד דלא נפקת נשמתיה הוה רחש בספותיה
וכן אמר זכי הוא יי ארום על מימריה עברית שמעו כען כל עמיא אספדא דאספד
ירמיהו על יאשיהו וחזו כיבי די ערעני בתר מותיה בתולתי ורביי אזלו בשביתא :
19 אמרת ירושלם כד אתמסרת בידוי דנבוכדנצר קריתי למרחמי ביני עממיא דקיימית
עמהון קים דיסיעוני ואנון חכימו מני אתהפכו לחבלא יתי הנון רומאי דעלו עם
טיטוס ואספסינוס ובנו כרכומין על ירושלם כהני וסבי בגו קרתא אתננידו ארום תבעו
20 סעיד לחמא להון למיכל ויקימון ית נפשיהון : חזי יי ארום אעיק לי בגין כן מעי אדגרו
אתהפך לבבי בגוי ארום מעבר עברית על גזירת מימרא דיי ומן בגלל הכי מן ברא
21 תכלי חרבא ומלגיו הרגת כפנא כמלאכא חבלא די ממני על מותא : שמעו אומיא
ארום מתאנחא אנא ולית דמנחם לי כל בעלי דבבי שמעו בישתא די מטת עלי בדחו
ארום את הוא יי דעבדת איתיתא עלי יום פורענותא ערעתא עלי מערע לצדיאותני
22 כדין תערע עלויהון ויהון צדיאן כותי : תעול ליום דינא רבא כל בישתהון די אבאישו
לי קדמך ותסתקף להון היכמה דאסתקפתא עלי על כל סגיאות מרודי ארום סגיאו
אנחתי ולבי חליש :

ב

1 איכדין יקוץ יי בתקוף רוגזיה ית כנשתא דציון טלק משמיא לארעא תושבחתא
דישראל ולא דכיר בית מוקדשא דהוה גלוגדקא דרגלוהי ולא חס עלוהי ביום תקוף
2 רוגזיה : שיצי יי לא חס ית כל עדית יעקב פגר ברוגזיה כרכי כנשתא דבית יהודה
3 אמטי לארעא אפיס מלכותהא ורברבנהא : קצץ בתקוף רגזית כל יקריה דישראל
אתיב לאחורא יד ימיניה ולא סיע לעמיה מן קדם בעיל דבבא ואדליק בבית יעקב
כאשתא דמשלהבא אכלת חזור חזור :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

SAMECH. Collegit omnes fortes meos Dñs in medio mei: vocavit adverſum me temp⁹ ut contereret fortitudinē juvenū meorū, & ingreſſi ſunt populi per decretum verbi Dñi, & polluerunt virgines dom⁹ Juda, donec ſanguis virginitatis earū effunderetur ſicut vinū de torculari, in tempore quo homo calcat uvas, & vinum de uvis defluit. AIN. Sup parvulos qui alliſi ſunt, & ſup mulieres prægnantes quarū venter ſciſſus eſt, dixit cœt⁹ Iſrael, ego ploro, & duo oculi mei defluunt lachrymis ſicut fons aquarum : quia longè fact⁹ eſt à me conſolator qui ſuſtentaret me, & loqueretur conſolationes animæ meæ: facti ſunt filii mei deſolati, quia prævaluit ſup eos inimicus. PE. Expandit Sion man⁹ ſuas præ anguſtia, ſicut expandit mulier quæ ſedet ad pariendū : clamavit, & non eſt qui loquatur conſolationes ad cor ej⁹: præcepit Dñs domui Jaacob præcepta & Legē ut cuſtodirent: ipſi autē tranſgreſſi ſunt decretū verbi ejus, ideò circuierunt domū Jaacob per circuitum inimici ejus : facta eſt Jeruſalē ſimilis mulieri menſtruatæ in medio eorum. SADE. Dixerat Dñs in verbo ſuo populo domus Iſrael, quòd non tranſirēt qui occidunt gladio, per terrā eorum: perrexit Joſias rex evaginato gladio contra Pharaonē claudum in campo Magedo, quod non præceptum fuerat ei, nec quæſiverat oraculū à facie Dñi : ideò miſerunt ſagittarii ſagittas in regē Joſiam, & mortuus eſt ibi: antequàm egrederetur anima ejus, muſſitabat labiis ſuis, & ſic dicebat : Juſtus eſt Dñs, quia tranſgreſſus ſum verbum ejus. Audite obſecro omnes populi hanc lamentationem qua lamentatus eſt Jeremias ſup Joſiam, & videte dolorē meum, qui accidit mihi poſt mortem ejus : virgines & pueri mei abierunt in captivitatē. COPH. Dixit Jeruſalē quando tradita eſt in manus Nabuchodonoſor: Vocavi amicos meos *inter populos* cum quibus inieram pactum ut adjuvarent me : illi autem doloſè egerunt contra me, & converſi ſunt ut nocerent mihi: illi Romani qui venerunt cum Tito & Veſpaſiano, & extruxerunt machinas contra Jeruſalē: & Sacerdotes mei & ſenes mei in medio civitatis expirarunt quia quæſierunt alimenta panis ſibi ut comederent & ſuſtentarent animas ſuas. RES. Vide Dñe quia anguſtia eſt mihi, ideò viſcera mea conturbata ſunt, ſubverſum eſt cor meū in medio mei: quia tranſgrediendo tranſgreſſa ſum decretum verbi Dñi: & propterea foris conſumit gladi⁹, & intus occidit fames, ſicut angel⁹ diſperdēs qui conſtitut⁹ eſt ſup mortē. SIN. Audierūt nationes quia gemebā ego, & non eſt qui cōſoletur me: omnes inimici mei audierūt malū ꝙ pervenit ad me: lætati ſunt quoniā tu Dñe feciſti: adduxiſti ſup me diē ultionis : cōvocâſti ſup me cōvocationē in deſolationē meā: ſic cōvocabis ſup eos, & erūt deſolati ſicut ego. THAU. Ingrediatur in die judicii magni omne malū eorū quo malignati ſunt mihi corā te, & quære occaſiones in eos, ſicut quæſiſti occaſiones cōtra me propter multitudinē prævaricationū mearū : quia multi ſunt gemit⁹ mei, & cor meum infirmum.

CAP. II. ALEPH.

Quomodo deteſtat⁹ eſt Dñs in ira furoris ſui cœtū Sion! projecit de cœlo in terrā pulchritudinē Iſrael, & non eſt recordat⁹ dom⁹ ſanctuarii, quæ erat ſcabellum pedum ejus; nec pepercit ei in die iræ furoris ſui. BETH. Conſumpſit Dñs, & non pepercit ; omne ornamentū domus Jacob : & deſtruxit in furore ſuo, arces cœt⁹ dom⁹ Juda pertingere fecit ad terrā: & prophanavit regnū ej⁹ & principes ejus. GIMEL. Succidit in furore iræ omnem gloriā Iſrael: convertit retrorſum manū dexterā ſuam, & non auxiliatus populo ſuo à facie inimici : & ſuccendit in domo Jaacob ſicut ignis flammæ, quæ conſumit per circuitum.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܣ * ܟܒܫ ܟܠܗܘܢ ܥܫܝܢܝ ܡܪܝܐ ܒܓܘܝ. ܩܪܐ ܥܠܝ ܟܢܘܫܬܐ ܠܡܘܒܕܘ ܥܠܝ̈ܡܝ
ܐܝܟ ܡܥܨܪܬܐ ܕܫ ܡܪܝܐ ܠܒܬܘܠܬܐ ܒܪܬ ܝܗܘܕܐ. * ܥ * ܥܠ ܗܠܝܢ ܒܟܝܐ ܐܢܐ. ܘܥܝܢ̈ܝ
ܡܪܕܝܢ ܡܝܐ. ܕܪܚܩ ܡܢܝ ܡܒܝܐܢܐ ܕܢܦܢܐ ܢܦܫܝ. ܗܘܘ ܒܢ̈ܝ ܫܡܝܡܝܢ. ܡܛܠ
ܕܥܫܢ ܒܥܠܕܒܒܐ. * ܦ * ܦܪܫܬ ܨܗܝܘܢ ܐܝ̈ܕܝܗ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܡܒܝܐܢܐ. ܦܩܕ
ܡܪܝܐ ܥܠ ܝܥܩܘܒ. ܘܚܕܪܘܗܝ ܥܠܘܒܘܗܝ. ܗܘܬ ܐܘܪܫܠܡ ܠܕܘܝܐ ܒܝܢܬܗܘܢ.
* ܨ * ܙܕܝܩܘ ܗܘ ܡܪܝܐ. ܕܠܗ ܡܪܡܪܬ. ܫܡܥܘ ܟܠܟܘܢ ܥܡ̈ܡܐ: ܘܚܙܘ ܟܐܒܝ. ܒܬܘ̈ܠܬܝ
ܘܥܠܝ̈ܡܝ. ܐܙܠܘ ܒܫܒܝܐ. * ܩ * ܩܪܝܬ ܠܪ̈ܚܡܝ. ܘܗܢܘܢ ܕܓܠܘ ܒܝ. ܟܗ̈ܢܝ ܘܩܫܝ̈ܫܝ
ܫܠܡܘ ܒܓܘܝ. ܕܒܥܘ ܠܗܘܢ ܡܐܟܘܠܬܐ ܕܢܦܢܘܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ. * ܪ * ܚܙܝ
ܡܪܝܐ: ܕܐܠܝܨ ܠܝ. ܘܡ̈ܥܝ ܐܬܕܠܚܘ. ܐܬܗܦܟ ܠܒܝ ܒܓܘܝ. ܡܛܠ ܕܡܪܡܪܘ
ܡܪܡܪܬ. ܡܢ ܠܒܪ ܐܘܚܕܬ ܚܪܒܐ. ܘܒܒܝܬܐ ܡܘܬܐ. * ܫ * ܫܡܥܘ ܕܡܬܬܢܚܐ ܐܢܐ.
ܘܠܝܬ ܠܝ ܡܒܝܐܢܐ. ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝ ܫܡܥܘ ܒܒܝܫܬܝ. ܘܚܕܝܘ ܕܐܢܬ ܥܒܕܬ ܠܝ.
ܐܝܬܝܬ ܝܘܡܐ ܕܩܪܝܬ. ܘܢܗܘܘܢ ܐܟܘܬܝ. * ܬ * ܬܥܘܠ ܟܠܗ ܒܝܫܘܬܗܘܢ ܩܕܡܝܟ. ܘܥܘܠ
ܒܗܘܢ. ܐܝܟܢܐ ܕܐܬܦܠܚܬ ܠܝ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝ. ܡܛܠ ܕܣܓܝܐܢ ܐܢܚ̈ܬܝ ܘܠܒܝ ܕܘܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

* ܐ * ܐܝܟܢܐ ܐܚܫܟ ܡܪܝܐ ܒܪܘܓܙܗ ܠܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܐܪܡܝ ܡܢ ܫܡܝܐ ܠܐܪܥܐ ܫܘܒܚܗ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܐܬܕܟܪ ܟܘܒܫܐ ܕܪ̈ܓܠܘܗܝ ܒܝܘܡܐ ܕܚܡܬ ܪܘܓܙܗ. * ܒ * ܒܠܥ
ܡܪܝܐ ܘܠܐ ܚܣ. ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝ ܝܥܩܘܒ. ܣܚܦ ܒܚܡܬܗ ܟܪ̈ܟܐ ܕܒܪܬ ܝܗܘܕܐ. ܐܪܡܝ
ܠܐܪܥܐ ܘܛܢܦ ܡܠܟܘܬܗ ܘܪܘܪ̈ܒܢܘܗܝ. * ܓ * ܓܕܥ ܒܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܟܠܗ
ܩܪܢܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܗܦܟ ܠܒܣܬܪܐ ܝܡܝܢܗ ܡܢ ܩܕܡ ܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܐܘܩܕ
ܒܝܥܩܘܒ. ܘܫܠܗܒܝܬܐ ܐܟܠܬ ܐܝ̈ܕܘܗܝ.

15 Subjugavit omnes robustos meos Dominus intra me, convocavit contra me conventum ad perdendum juvenes meos, *ut* torcular calcavit Dominus virginem filiam Judæ. 16 Horum causâ lugeo, & oculi mei profundunt aquas, quòd procul absit à me consolator qui animam mihi restituat: facti sunt filii mei fructus immaturi, quia prævaluit hostis. 17 Extendit Sion manus suas, nec adest ei consolator: præcepit Dominus contra Jacobum, & circundederunt eum oppressores ejus: facta est Jerusalem horrori inter eos. 18 Justus est Dominus; ipsum enim exasperavi. Audite omnes populi, & videte dolorem meum: virgines meæ & adolescentes mei abierunt in captivitatem. 19 Invocavi amicos meos, & ipsi fefellerunt me: sacerdotes mei, & seniores mei extincti sunt in medio mei: quæsierunt enim sibi cibum ut seipsos reficerent, & non invenerunt. 20 Aspice Domine afflictam me esse, & viscera mea conturbata, subversum intra me cor meum; quia graviter exasperavi: foris extinxit gladius, & eos qui domi erant, pestis. 21 Audi quomodo gemam, nec adsit mihi consolator: omnes inimici mei audito malo meo, gavisi sunt te *id* fecisse mihi, adduc diẽ quem promulgâsti, fiantque mihi similes. 22 Ingrediatur omnis eorũ malitia in conspectum tuum: exagita eos, quemadmodum exagitâsti me propter omnia peccata mea: multi enim sunt gemitus mei, & cor meum anxium.

CAP. II.

1 Quomodo obscuravit Dominus in ira sua filiam Sionis? de cœlo in terram dejecit gloriam Israelis? & non est recordatus scabelli pedum suorum in die æstûs iræ suæ? 2 Demersit Dominus citra indulgentiam universam habitationem Jacobi? destruxit in furore suo urbem filiæ Judæ? humi prostravit occisos ejus, reges ac principes ejus? 3 Amputavit in æstu iræ suæ totum cornu Israelis, reflexit dexteram ejus retrorsum ab inimico? ignem dimisit in Jacobum, & flamma devoravit manus ejus?

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الرب نزع جميع اقويائي من وسطي ۔ دعا علي زمانا ليكسر مختاري * داسني الرب
مثل معصرة ايها العذرى ابنة يهودا * على هذه انا ابكي ۔ عيني تهمل دموعا ۔ لانه
من يعزيني بعد عني ومن يرد نفسي ۔ صار بني هالكين لان العدو تقوى * بسطت
صهيون يديها ولم يكن من يعزيها ۔ امر الرب بيعقوب ۔ تحوط به كاربوه ۔ صارت
اورشليم حايضة وسطهم * عدل هو الرب لاني مررت فمه ۔ اسمعوا يا جميع الشعوب
وانظروا وجعي ۔ عذاراي وشباني مضوا في السبي * ادعوا اصدقاي فهم مكروا بي
كهنتي ومشايخي فنيوا في المدينة ۔ لانهم طلبوا لهم طعاما كي يرجعوا نفوسهم فلم
يجدوا * انظر يا رب لاني احزن ۔ وبطني اضطربت ۔ وقلبي انقلب في ۔ لاني مررت
مرمرت ۔ اثكلني السيف من خارج مثل موت في بيت * اسمعوا لاني انا متنهد وليس
من يعزيني ۔ جميع اعداي سمعوا بشروري وفرحوا لانك انت صنعت ۔ جلبت يوما دعوت
زمانا ۔ فصاروا وياه وا وياه علي * دخل كل شرهم لوجهك ۔ احصدهم كما حصدوني
عما عن جميع خطاياي ۔ لان تنهداتي كثيرة وقلبي يكتئب ۔

الفصل الثاني ۔ الثاني من المراثي ۔

* كيف ظلم بغضبه على ابنة صهيون ۔ طرح من السماء الى الارض شرف اسرائيل
ولم يذكر موطئ قدميه في يوم زجر غضبه * غرق الرب جميع بهاء يعقوب لا
يشفق ۔ هدم بغضبه حصون ابنة يهودا ۔ الصقها بالارض ۔ نجس بالارض ملكها ورؤساها
* كسر بزجر غضبه كل قرن اسرائيل ۔ رد يمينه الى خلف من وجه العدو ۔ واشعل في
يعقوب مثل نار اللهيب ۔ واكلت جميع ما حوله ۔

15 *Abstulit Dominus omnes robustos meos de medio mei: conduxit contra me tempus, ad conterendum electos meos: calcavit me Dominus ceu torcular, O virgo filia Judæ.* 16 *Ob hæc ego lugeo, oculus meus lachrymas fundit; quia procul abscessit à me qui consoletur me, & qui restituat animam meam: facti sunt filii mei perditi, quia inimicus invaluit.* 17 *Extendit Sion manus suas, nec fuit qui consolaretur eam: permissum dedit Dominus in Jacobum, circundederunt eum affligentes eum: facta est Jerusalem menstruum patiens inter eos.* 18 *Justus est Dominus, quoniam exasperavi os ejus. Audite O populi omnes, & considerate dolorem meum: virgines meæ & juvenes mei abierunt in captivitatem.* 19 *Invoco amicos meos, at ipsi deceperunt me: sacerdotes mei & seniores mei defecerunt in urbe; quia quæsierunt sibi cibum ad reparandas animas suas, & non invenerunt.* 20 *Vide O Domine quòd doleam, venter meus conturbatus sit, & cor meũ sese volutet intra me, quia atrociter exasperavi: orbavit me gladius foris, ceu pestis in domo.* 21 *Audite quòd ego suspirem, nec sit qui me consoletur: omnes inimici mei audientes mala mea lætati sunt, quia tu fecisti: adduxisti diem, condixisti tempus; & evenit, eheu eheu, super me.* 22 *Introduc omnia scelera eorum in conspectum tuum; dispelle eos, quemadmodum genuerunt mihi mœrorem pro cunctis peccatis meis: nam suspiria mea multa sunt, & cor meum mœrore conficitur.*

CAP. II.

Lamentatio secunda.

1 *Quomodo obtenebratus est in ira sua erga filiam Sionis? è cœlo in terram dejecit decus Israelis, neque recordatus est scabelli pedum suorum in die furoris iræ suæ?* 2 *Immersit Dominus totum nitorem Jacobi, neque pepercit? destruxit in ira sua arces filiæ Judæ? agglutinavit eam terræ? polluit in terra regem ac principem ejus?* 3 *Fregit in furore iræ suæ totum cornu Israelis? retraxit dexteram suam à facie inimici, & accendit in Jacobo quasi ignem flagrantem qui devoravit omnia undequaque?*

איכה : ב

,hoſtis tanquã ejus dextera ſtetit ; inimicus veluti ſuum arcum Tetendit
4 דרך קשתו כאויב נצב ימינו כצר
effudit , Sijon filiæ *tentorio* in ; oculi deſiderabilia omnia occidit &
ויהרג כל מחמדי־עין באהל בת־ציון שפך
abſorbuit ,inimicus veluti Dominus Fuit .ſuã *excandeſcentiam* ignem tanquã
5 כאש חמתו: היה אדני כאויב בלע
multiplicavit &;ej⁹ munitiones *corrupit* ,ej⁹ palatia omnia *abſorbuit* ,Iſrael
ישראל בלע כל־ארמנותיה שחת מבצריו וירב
,ſuum *tegmen hortum ut diſſipavit* Et .*quærelam & ,planctum* Jehudah filia in
6 בבת־יהודה תאניה ואניה: ויחמס כגן שכו
,ſolemnitatem Sijon in Dominus fecit oblivisci : *ſuum conventum corrupit*
שחת מעדו שכח יהוה בציון מועד
Elongavit .ſacerdotem & ,regem ſui furoris ira in ſprevit &,ſabbathum &
7 ושבת וינאץ בזעם־אפו מלך וכהן: זנח
fecit *claudi* ,ſuum ſanctuarium corde è projecit ,ſuum altare Dominus
אדני מזבחו נאר מקדשו הסגיר
,Domini domo in dederunt vocem :ejus palatiorũ muros inimici manu in
ביד־אויב חומת ארמנותיה קול נתנו בבית־יהוה
filiæ murum *corrumpere* Dominus Cogitavit .ſolemnitatis die ſicut
8 כיום מועד: חשב יהוה להשחית חומת בת־
: *abſorbendo ab* ſuam manum fecit redire non ,*lineam* extendit ;Sijon
ציון נטה קו לא־השיב ידו מבלע
ſunt Demerſæ .ſunt *infirmati* pariter *murus* & ,antemurale deſolavit &
9 ויאבל־חל וחומה יחדו אמללו: טבעו
,ejus regem : ejus vectes contrivit & ,perdidit ; ejus portæ terra in
בארץ שעריה אבד ושבר בריחיה מלכה
invenerit non ejus prophetæ etiam , lex non ,gentibus in ej⁹ principes &
ושריה בגוים אין תורה גם־נביאיה לא־מצאו
.Sijon filiæ ſenes conticuerunt ,terra in Sederunt .Domino à viſionem
10 חזון מיהוה: ישבו לארץ ידמו זקני בת־ציון
; ſaccis ſe accinxerunt ; ſuum caput ſuper pulverem fecerunt aſcendere
העלו עפר על־ראשם חגרו שקים
Defecerunt .Jeruſalaim filiæ ſuum caput terram in depoſuerunt
11 הורידו לארץ ראשן בתולת ירושלם: כלו
terra in eſt effuſum ;mea viſcera *ſunt conturbata* ;mei oculi *lachrymis in*
בדמעות עיני חמרמרו מעי נשפך לארץ
parvulum animo deficiendo in ,mei populi filiæ contritionem propter meũ jecur
כבדי על־שבר בת־עמי בעטף עולל
,triticum Ubi ,*dicent* ſuis Matribus .civitatis plateis in *ſugentem* &
12 ויונק ברחבות קריה: לאמתם יאמרו איה דגן
ſe effundendo in ,civitatis plateis in *ſauciũ tanquam eos deficiendo in* ,vinũ &
ויין בהתעטפם כחלל ברחבות עיר בהשתפך
,tibi faciam teſtificari Quid .ſuarum matrum ſinum in eorum animam
13 נפשם אל־חיק אמתם: מה־אעידך
te conſolabor & ,tibi æquabo quid ? Jeruſalem filia ô tibi adſimilabo quid
מה אדמה־לך הבת ירושלם מה אשוה־לך ואנחמך
medebitur quis ,tua contritio mare velut magna nam ? Sion filia virgo
בתולת בת־ציון כי־גדול כים שברך מי ירפא
non & ; inſulſum & ,*mendacium* tibi viderunt tui Prophetæ ? tibi
14 לך: נביאיך חזו לך שוא ותפל ולא
: tuam *captivitatem convertendum ad* ,tuam iniquitatem ſuper revelaverunt
גלו על־עונך להשיב שביתך
.*expulſiones* & , *mendacii* onera tibi viderunt &
ויחזו לך משאות שוא ומדוחים:

Verſio VUL. LAT.

4 *Daleth.* Tetendit arcũ ſuũ quaſi inimicus, firmavit dexteram ſuã quaſi hoſtis: & occidit omne ꝙ pulchrũ erat viſu in tabernaculo filiæ Sion, effudit quaſi ignẽ indignationẽ ſuã. 5 *He.* Fact⁹ eſt Dñs velut inimic⁹: præcipitavit Iſrael, præcipitavit omnia mœnia ejus: diſſipavit munitiones ej⁹, & replevit in filia Juda humiliatũ & humiliatã. 6 *Vau.* Et diſſipavit quaſi hortũ tentorium ſuũ, demolit⁹ eſt tabernaculum ſuum: oblivioni tradidit Dñs in Sion feſtivitatẽ, & ſabbatũ; & in opprobriũ, & in indignationẽ furoris ſui, regẽ, & ſacerdotem. 7 *Zain.* Repulit Dñs altare ſuum, maledixit ſanctificationi ſuæ: tradidit in manu inimici muros turrium ejus: vocẽ dederunt in domo Dñi, ſicut in die ſolenni. 8 *Heth.* Cogitavit Dñs diſſipare murũ filiæ Sion: tetendit funiculum ſuum, & non avertit manum ſuam à perditione: luxitque antemurale, & mur⁹ pariter diſſipatus eſt. 9 *Theth* Defixæ ſunt in terra portæ ejus: perdidit, & contrivit vectes ejus; regem ej⁹ & principes ej⁹ in Gentib⁹: non eſt lex, & prophetæ ej⁹ non invenerunt viſionem à Domino. 10 *Jod.* Sederunt in terra, conticuerunt ſenes filiæ Sion: conſperſerunt cinere capita ſua, accincti ſunt ciliciis, abjecerunt in terram capita ſua virgines Jeruſalem. 11 *Caph.* Defecerunt præ lachrymis oculi mei, conturbata ſunt viſcera mea: effuſum eſt in terra jecur meum ſuper contritione filiæ populi mei, cùm deficeret parvulus & lactens in plateis oppidi. 12 *Lamed.* Matrib⁹ ſuis dixerunt, Ubi eſt triticum & vinum? cùm deficerent quaſi vulnerati in plateis civitatis: cùm exhalarent animas ſuas in ſinu matrum ſuarum. 13 *Mem.* Cui comparabo te? vel cui aſſimilabo te, filia Jeruſalem? cui exæquabo te, & conſolabor te, virgo filia Sion? magna eſt enim velut mare contritio tua: quis medebitur tuî? 14 *Nun.* Prophetæ tui viderunt tibi falſa, & ſtulta, nec aperiebant iniquitatem tuam, ut te ad pœnitentiam provocarent: viderunt autem tibi aſſumptiones falſas, & ejectiones.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. cum Tranſ. LAT.

4 ΔΑ'ΛΕΘ. (ζ) Ἐνέτεινε τόξον αὐτοῦ ὡς ἐχθρὸς ὑπεναντίος, ἐστερέωσε δεξιὰν αὐτοῦ ὡς ὑπεναντίος, καὶ ἀπέκτεινε πάντα τὰ ἐπιθυμήματα τῶν ὀφθαλμῶν μου (η) ἐν σκηνῇ θυγατρὸς Σιὼν, ἐξέχεεν ὡς πῦρ τὸν θυμὸν αὐτοῦ. 5 Ἡ. Ἐγενήθη κύριος ὡς ἐχθρὸς, κατεπόντισεν Ἰσραὴλ, κατεπόντισε (θ) τὰς βάρεις αὐτῆς, διέφθειρε τὰ ὀχυρώματα (ι) αὐτοῦ, καὶ ἐπλήθυνε τῇ θυγατρὶ Ἰούδα (κ) ταπεινουμένην καὶ τεταπεινωμένην. 6 ΟΥ'ΑΥ. Καὶ διεπέτασεν ὡς ἄμπελον τὸ σκήνωμα αὐτοῦ, διέφθειρεν ἑορτὴν αὐτοῦ. ἐπελάθετο κύριος ([illegible]) ἃ ἐποίησεν ἐν Σιὼν ἑορτῆς καὶ σαββάτου, καὶ παρώξυνεν ἐμβριμήματι ὀργῆς αὐτοῦ βασιλέα καὶ ἱερέα καὶ ἄρχοντα. 7 ΖΑΙ'Ν. Ἀπώσατο (λ) κύριος θυσιαστήριον αὐτοῦ, ἀπετίναξεν ἁγίασμα αὐτοῦ, συνέτριψεν ἐν χειρὶ ἐχθροῦ τεῖχος βάρεων αὐτῆς. φωνὴν (μ) ἔδωκαν ἐν οἴκῳ κυρίου ὡς ἐν ἡμέρᾳ ἑορτῆς. 8 ἭΘ. Καὶ ἀπέστρεψε (ν) διαφθεῖραι τεῖχος θυγατρὸς Σιών· ἐξέτεινε μέτρον, οὐκ ἀπέστρεψε (ξ) χεῖρα αὐτοῦ ἀπὸ καταπατήματος, καὶ ἐπένθησε τὸ προτείχισμα, καὶ τεῖχος ὁμοθυμαδὸν (ο) ἠσθένησε. 9 ΤΗ'Θ. Ἐνεπάγησαν εἰς (π) γῆν πύλαι αὐτῆς, ἀπώλεσε καὶ συνέτριψε μοχλοὺς αὐτῆς, βασιλέα αὐτῆς καὶ ([illegible]) ἄρχοντα αὐτῆς ἐν τοῖς ἔθνεσιν. οὐκ ἔστι νόμος, καί γε προφῆται αὐτῆς οὐκ εἶδον ὅρασιν παρὰ κυρίου. 10 ΙΩ'Δ. Ἐκάθισαν εἰς τὴν γῆν, ἐσιώπησαν πρεσβύτεροι θυγατρὸς Σιὼν, ἀνεβίβασαν χοῦν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτῶν, περιεζώσαντο σάκκους, κατήγαγον εἰς (ρ) γῆν ἀρχηγοὺς παρθένους ἐν Ἱερουσαλήμ. ΧΑ'Φ. 11 Ἐξέλιπον ἐν δάκρυσιν οἱ ὀφθαλμοί μου, ἐταράχθη ἡ καρδία μου, ἐξεχύθη (σ) εἰς τὴν γῆν ἡ δόξα μου, ἐπὶ τὸ σύντριμμα τῆς θυγατρὸς (τ) λαοῦ μου, ἐν τῷ ἐκλείπειν νήπιον καὶ θηλάζοντα ἐν πλατείαις πόλεως. 12 ΛΑ'ΜΕΔ. Ταῖς μητράσιν αὐτῶν εἶπαν, Ποῦ σῖτος, καὶ οἶνος; ἐν τῷ ἐκλύεσθαι αὐτοὺς ὡς τραυματίας ἐν πλατείαις πόλεως, ἐν τῷ ἐκχεῖσθαι ψυχὰς αὐτῶν εἰς κόλπον μητέρων αὐτῶν. 13 ΜΗ'Μ. Τί μαρτυρήσω σοι, ἢ τί ὁμοιώσω σοι θύγατερ Ἱερουσαλήμ; τίς (υ) σώσει καὶ παρακαλέσει σε παρθένος θύγατερ Σιών; ὅτι ἐμεγαλύνθη ποτήριον συντριβῆς σου, τίς ἰάσεταί σε; 14 ΝΟΥ'Ν. Προφῆταί σου (φ) εἴδοσάν σοι μάταια καὶ ἀφροσύνην, καὶ οὐκ ἀπεκάλυψαν ἐπὶ τὴν ἀδικίαν σου, τοῦ ἐπιστρέψαι αἰχμαλωσίαν σου, καὶ εἴδοσάν σοι λήμματα μάταια καὶ ἐξώσματα.

MS. A. (ζ) Ἐνέτειλεν (η) σκηνῇ (θ) πάσας τὰς (ι) αὐτῆς, (κ) ταπεινουμένον ([illegible]) ὁ (λ) θυσιαστήριον αὐτοῦ κύριος, (μ) ἔδωκεν (ν) κύριος τοῦ διαφθεῖραι (ξ) κύριος χεῖρα (ο) ἠσθένησαν. (π) τὴν γῆν αἱ πύλαι ([illegible]) ἄρχοντας, (ρ) τὴν γῆν (σ) εἰς γῆν (τ) τοῦ λαοῦ (υ) σώσει σε, (φ) ἴδον μάταια

4 *DALETH. Tetendit arcum ſuum quaſi inimicus (d) adverſarius: firmavit dexteram ſuam quaſi adverſarius: & occidit omnia deſiderabilia oculorum meorum in tabernaculo filiæ Sion: effudit quaſi ignem indignationem ſuam.* 5 *HE. Factus eſt Dominus velut inimicus: abſorbuit Iſrael, [illegible] (e) palatia ejus: diſſipavit munitiones ejus: & multiplicavit in filia Juda (f) humiliatam, & humiliatam.* 6 *VAU. Et [illegible] quaſi vitem, tabernaculum ſuum: corrupit feſtivitatem ſuam. Oblitus eſt Dominus, quæ fecit in Sion, feſtivitatis, & ſabbati: & irritavit fremitu iræ ejus regem, & ſacerdotem, & (g) principem.* 7 *ZAIN. Repulit Dominus altare ſuum: excuſſit ſanctificationem ſuam: contrivit in manu inimici murum turrium ejus. (h) Vocem dederunt in domo Domini, ſicut in die feſtivitatis.* 8 *HETH. Et convertit ſe ad diſſipandum murum filiæ Sion, tetendit menſuram: non avertit manũ ſuã à conculcatione: luxitque antemurale & murus pariter infirmatus eſt.* 9 *TETH. Defixæ ſunt in terram portæ ejus: perdidit, et contrivit vectes ejus, regem ejus, & principem ejus in gentibus. Non eſt lex: & etiam prophetæ ejus non viderunt viſionem à Domino.* 10 *JOD. Sederunt in terra, conticuerunt ſenes filiæ Sion: impoſuerunt cinerẽ ſuper caput ſuũ: accincti ſunt ciliciis: deduxerunt in terrã principes virgines in Hieruſalem.* 11 *CHAPH. Defecerunt in lachrymis oculi mei: conturbatum eſt cor meum: effuſa eſt in terram gloria mea, ſuper contritionem filiæ populi mei, cum deficeret parvulus, & lactens in plateis civitatis.* 12 *LAMED. Matribus ſuis dixerunt, Ubi eſt triticum, & vinum? Cum diſſolverentur, quaſi vulnerati in plateis civitatis, cum effunderent animas ſuas in ſinum matrum ſuarum.* 13 *MEM. Quid teſtificabor tibi, aut quid aſſimilabo tibi, filia Hieruſalem? Quis ſalvabit & conſolabitur te, virgo filia Sion? quoniam magnificatum eſt poculum contritionis tuæ: quis medebitur tuî?* 14 *NUN. Prophetæ tui viderunt tibi vana, & ſtultitiã: & non revelarunt ſuper iniquitatem tuã, ad reducendam captivitatem tuam: & viderunt tibi aſſumptiones falſas, & ejectiones.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 מתח קשתיה ורגם עלי גירין כבעל דבבא אתעתד על יד ימינה דנבוכדנצר וסיעיה
כאלו הוה מעיק לעמיה ישראל וקטל כל עולים וכל דמרגגין לחזו עינא במשכן
5 כנשתא דציון שדא כבעור אשא רוגזיה: הוה יי דמי כבעל דבבא שיצי ישראל שיצי כל
ברניתהא חבל כל קרוי פציחהא ואסגי בכנשתא דבית יהודה אבליתא ואניניתא:
6 ושרש כנשתא בית מוקדשיה חבל אתר מזומן לכפרא על עמיה אנשי יי בציון חדוית
7 יומא טבא ושבתא ושנא בתקוף רוגזיה מלכא וכהנא רבא: אשלי יי מדבחיה בעט
מקדשיה מסר ביד בעל דבבא שורי בירניתא קלא יהבו בבית מוקדשא דיי כקל
8 עמא בית ישראל דמצלין בגויה ביומא דפסחא: חשב יי לחבלא שור כנשתא דציון
סט משקולתא ולא אתיב ידיה מלשיצאה ואבל מקפנא ושורא בהדא אתפגרו:
9 טמעו בארעא תרעהא על די נכסו חזירא ואובילו מן דמיה עלויהון: הוביד ותבר
מוותהא מלכהא ורברבנהא גלו ביני עממיא על דלא נטרו פתגמי אוריתא כאלו
לא קבלו יתה בטורא דסיני אף נביאהא אתמנע מנהון רוח נבואת קודשא ולא
10 אתאמר להון פתגם נבואתא מן קדם יי: יתבין על ארעא שתקין סבי כנשתא דציון
אסיקו עפר מקלה על רישיהון קמרו סקין על בסריהון אחיתו לעפרא דארעא
11 רישיהון בתולתא דירושלם: ספקו בדמען עיני אדגרו מעי יתשד לארעא כבדי
12 על תביר כנשתא דעמי כד רצחו עולמיא וינקיא בפתאות קרתא: לאמהון אמרין
רוביא דישראל אן עבור וחמר כד הוו צחין כקטל דחרבא מן צחותא בפתאית
13 קרתא כד יתשד נפשהון מן כפנא לגו עטיף אמהון: מה אסהיד בך מה אהי מדמיא
לך כנשתא דירושלם מה אחביר לך אהי מנחם ליך בתולתא דכנשתא דציון ארום
סגי תבריך כסגיאות תביר גללי ימא רבא בעדן נחשוליה ומן הוא אסיא דיסי יתיך
14 מן מרעיך: נביאי שקרא די בינך הנון אתנבאו ליך שקרא וליתי ממש לנבואתהון
ולא פרסימו ית פורענותא דעתיד למיתי עליך בגלל חוביך לאהדרותיך בתיובתא
אלהן נבאו ליך נבואת מגן ומלי טעותא:

PARAPH. CHALD. Verrſio Latina.

4 DALETH. Tetendit arcum ſuum, & projecit contra me ſagittas ſicut inimic⁹: ſtetit ad manum dexteram Nabuchodonozor, & auxiliatus eſt ei quando coarctabat populũ ſuũ domũ Iſrael: & occidit omnem juvenem & omnia deſiderabilia aſpectu oculi in tabernaculo cœt⁹ Sion: effudit quaſi 5 lampadem ignis furorẽ ſuum. HE. Fact⁹ eſt Dñs ſimilis inimico, conſumpſit Iſrael, conſumpſit omnia palatia ej⁹, diſſipavit omnes urbes & villas ej⁹: & multiplicavit in cœtu dom⁹ Juda lamentationẽ & luctum. 6 VAU. Et eradicavit quaſi hortum domum ſanctuarii ſui, diſſipavit locum præparatum ad propitiandũ pro populo ſuo: oblivisci fecit Dñs in Sion lætitiã diei feſti & Sabbathi, & projecit in furore iræ ſuæ Regẽ & Sacerdotẽ magnũ. 7 ZAIN. Repulit Dñs altare ſuum, conculcavit ſanctuariũ ſuum: tradidit in manu inimici muros turriũ ej⁹: vocem dederunt in domo ſanctuarii Dñi, quaſi vocem populi dom⁹ Iſrael quando precabantur in medio ejus in die Phaſe. 8 CHETH. Cogitavit Dñs diſperdere murũ cœt⁹ Sion: extendit perpendiculum: nec retraxit manũ ſuã ab excidio; & luxit antemurale & murus, ſimul ſuffoſſa ſunt. 9 TETH. Defixæ ſunt in terram portæ ejus, *eo quod [illegible] porco attulerunt de ſanguine ejus ad eas*: perdidit & contrivit poſtes ejus. Rex & principes ejus migraverunt inter populos, eo quod non cuſtodierunt verba Legis, quaſi non ſuſcepiſſent eam in monte Sinai: & etiam à Prophetis ejus prohibitus eſt ſpiritus prophetiæ ſanctæ, & non eſt 10 dictum eis verbum propheticum à facie Dñi. JOD. Sederunt in terra, & tacuerunt ſenes cœtus Sion; impoſuerunt cinerem ignominiæ ſuper capita ſua, accinxerunt ſe ſaccis ſuper carnem ſuam: demiſerunt in pulverem terræ capita ſua virgines Jeruſalẽ. 11 CAPH Conſumpti ſunt lachrymis oculi mei, conturbata ſunt viſcera mea: effuſum eſt in terram jecur meum propter contritionem cœtus populi mei, cùm ſiti deficerent juvenes & lactentes in plateis civitatis. 12 LAMED. Matribus ſuis dicebant juvenes Iſrael: Ubi eſt frumentum & vinum? quando deficiebant, quaſi occiſi gladio, præ ſiti in plateis civitatis, quando effundebatur anima eorum præ fame in medio ſinuum matrum ſuarum. 13 MEM. Quem conteſtabor tibi, & cui aſſimilabo te cœt⁹ Jeruſalem? cui exæquabo te, & conſolabor te virgo cœtus Sion? [illegible] magna eſt contritio tua ſicut multitudo confractionis fluctuum maris magni in tempore tempeſtatis ſuæ: & quis eſt medicus qui ſanet te ab infirmitate tua? 14 NUN. Pſeudoprophetæ qui fuẽt in te, ipſi prophetaverunt tibi falſa, & non eſt ſubſtantia prophetiæ eorũ: nec manifeſtaverunt tibi ultionẽ quæ ventura erat ſuper te propter peccata tua, ut converterent te ad pœnitentiam, ſed prophetaverunt tibi prophetiam vanam, & verba erroris.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕ * ܡܬܚ ܩܫܬܗ ܐܝܟ ܣܩܘܒܠܐ. ܐܩܝܡ ܝܡܝܢܗ ܐܝܟ ܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܩܛܠ ܟܠ ܪ̈ܓܝܓܬܐ
ܕܥܝ̈ܢܐ ܒܡܫܟܢܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܘܐܫܕ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܚܡܬܗ. * ܗ * ܗܘܐ ܡܪܝܐ ܐܝܟ
ܒܥܠܕܒܒܐ. ܘܛܒܥܗ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܘܛܒܥ ܟܠܗܘܢ ܦܠܛܪ̈ܘܗܝ. ܘܚܒܠ ܟܪ̈ܟܘܗܝ. ܘܐܣܓܝ
ܒܒܪܬ ܝܗܘܕܐ ܐܘܠܝܬܐ ܘܐܘܠܝܬܐ. * ܘ * ܘܥܩܪ ܐܝܟ ܓܢܬܐ ܡܛܠܬܗ. ܘܚܒܠ ܥܐܕ̈ܘܗܝ.
ܐܛܥܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܥܐܕܐ ܘܫܒܬܐ. ܘܒܣܪ ܒܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܡ̈ܠܟܐ ܘܟܗ̈ܢܐ.
* ܙ * ܛܥܐ ܡܪܝܐ ܡܕܒܚܗ. ܘܣܠܝ ܡܩܕܫܗ. ܘܐܫܠܡ ܒܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܐ ܫܘܪ̈ܐ ܕܦܠܛܪ̈ܘܗܝ.
ܩܠܐ ܝܗܒܘ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܕܒܝܘܡܐ ܕܥܐܕܐ. * ܚ * ܐܬܚܫܒ ܡܪܝܐ ܠܡܚܪܒܘ
ܫܘܪܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܐܪܡܝ ܚܒܠܐ. ܘܠܐ ܐܗܦܟ ܐܝܕܗ ܡܢ ܬܘܒܥܗ. ܘܐܒܠ ܚܝܠܗ.
ܘܫܘܪ̈ܘܗܝ ܐܟܚܕܐ ܚܪܒܘ. * ܛ * ܛܒܥܘ ܒܐܪܥܐ ܬܪ̈ܥܝܗ. ܘܐܘܒܕܘ ܘܬܒܪܘ ܡܘܟ̈ܠܝܗ. ܡܠ̈ܟܝܗ
ܘܫܠܝ̈ܛܢܝܗ ܒܥܡ̈ܡܐ. ܠܝܬ ܢܡܘܣܐ. ܐܦ ܢܒܝ̈ܝܗ ܠܐ ܐܫܟܚܘ ܚܙܘܐ ܡܢ ܡܪܝܐ.
* ܝ * ܝܬܒܘ ܒܐܪܥܐ ܘܫܬܩܘ ܩܫܝ̈ܫܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܐܣܩܘ ܥܦܪܐ ܥܠ ܪ̈ܝܫܝܗܘܢ.
ܘܐܣܪܘ ܣܩ̈ܐ. ܡܟܟܘ ܠܐܪܥܐ ܪ̈ܝܫܝܗܝܢ ܒܬܘ̈ܠܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. * ܝܐ * ܚܫܟܝ ܒܕܡ̈ܥܐ
ܥܝ̈ܢܝ. ܘܐܬܕܠܚܘ ܡܥ̈ܝ. ܘܐܫܬܦܟ ܠܐܪܥܐ ܐܝܩܪܝ. ܥܠ ܬܒܪܗ ܕܒܪܬ ܥܡܝ. ܟܕ ܐܬܬܦܝܘ
ܛܠܝ̈ܐ ܘܝܠܘ̈ܕܐ ܒܫܘ̈ܩܝܗ ܕܡܕܝܢܬܐ. * ܝܒ * ܠܐܡܗܬܗܘܢ ܐܡܪܝܢ. ܐܝܟܘ ܥܒܘܪܐ ܘܚܡܪܐ
ܘܡܫܚܐ. ܟܕ ܐܬܦܢܝܘ ܐܝܟ ܩܛܝ̈ܠܐ ܒܫܘ̈ܩܝܗ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܟܕ ܐܫܬܦܟܘ ܢܦ̈ܫܬܗܘܢ ܒܥܘܒܐ
ܕܐܡܗܬܗܘܢ. * ܝܓ * ܡܢܐ ܐܣܗܕܟܝ. ܘܡܢܐ ܐܕܡܐ ܠܟܝ ܒܪܬ ܐܘܪܫܠܡ. ܡܢ ܐܫܘܐ
ܠܟܝ ܘܐܒܝܐܟܝ. ܒܬܘܠܬܐ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܕܣܓܝ ܐܝܟ ܝܡܐ ܬܒܪܟܝ. ܡܢܘ ܢܣܟܪ.
* ܝܕ * ܢܒܝ̈ܝܟܝ ܚܙܘ ܠܟܝ ܕܓܠܘܬܐ ܘܡܛܥܝܢܘܬܐ. ܠܐ ܓܠܘ ܠܟܝ ܥܠ
ܣܟܠܘܬܟܝ ܕܬܬܘܒܝܢ. ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܟܝ. ܘܚܙܘ ܠܟܝ ܢܒܝܘܬܐ ܕܓܠܘܬܐ
ܘܡܛܥܝܢܘܬܐ.

Tetendit arcum ſuum velut infenſus, erexit 4
dexteram ſuam velut hoſtis, & occidit omnem
oculorum voluptatem in tabernaculo filiæ Sionis,
effuditque velut ignem iram ſuam?
Factus eſt Dominus ut inimicus, & immerſit 5
Iſraelem, demerſitque omnia palatia ejus, &
vaſtavit urbes ejus, & multiplicavit in filia
Judæ querelam & lamentationes? Et evulſit 6
ut hortum tugurium ejus, & abolevit ſolennitates
ejus? oblivione delevit Dominus è Sione
feſtum & ſabbathum, & aſpernatus eſt in
æſtu iræ ſuæ reges atque ſacerdotes? Oblitus 7
eſt Dominus altaris ſui, abominatus eſt ſanctuarium
ſuum, tradidit in manum hoſtis muros
palatiorum ejus, vocem ediderunt in domo
Domini, ut in die ſolennitatis? Conſtituit 8
Dominus vaſtare muros filiæ Sionis, jecit funiculum,
& non retraxit manum ſuam ab ea
demergenda: fecit ut in luctu ſederet exercitus
ejus, & muri ejus pariter deſolati ſunt?
Demerſerunt in terram portas ejus, perdiderunt 9
& contriverunt ſeras ejus? reges & principes
ejus ſunt inter gentes, non eſt lex, &
prophetæ ejus non inveniunt viſionem à Domino?
Sederunt humi & conticuerunt ſeniores 10
filiæ Sionis, pulverem jecerunt ſuper capita
ſua, ſeſeque ciliciis accinxerunt: reclinaverunt
humi capita ſua virgines Jeruſalem?
Caligaverunt lachrymis oculi mei, & conturbata 11
ſunt viſcera mea, everſus eſt in terram
honor meus propter contritionem filiæ populi
mei, dum languerent pueri & infantes in
plateis civitatis, Matribus ſuis dicentes, Ubi 12
eſt frumentum, vinum, & oleum? dum occiſorum
inſtar agitarent ſeſe in plateis civitatis:
dum effunderent ſeſe animæ eorum in ſinum
matrum ſuarum. Quibus *verbis* hortabor te, 13
aut cujus ſimilitudinem afferam tibi filia Jeruſalem?
cui te comparabo, ut conſoler te virgo
filia Sionis? ampliſſima enim eſt velut
mare labes tua; quis obſtruat? Prophetæ 14
tui viderunt tibi mendacium & ſeductionem,
non retexerunt tibi peccata tua, ut te pœniteret,
& averterem captivitatem tuam;
ſed viderunt tibi prophetias mendaces atque
fallaces.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* اوتر قوسه مثل عدو معاند * وشدد يمينه مثل معاند * اباد جميع شهوات عيني
افاض على مسكن ابنة صهيون مثل نار غضبه * صار الرب مثل عدو * غرق
ايروسليم * غرق كل قصورها * فسد حصونها * وكثر لابنة يهودا ذليلا وذليلة * وبسط
مثل كرم مسكنه * افسد عيده * نسي الرب ما صنع في صهيون عيدا وسبتا
وحرد بغضب سخطه على ملك وكاهن ورئيس * اقصى الرب مذبحه * نقض مقدسه
كسر بيد العدو سور قصورها * اعطى صوتا في بيت الرب مثل في يوم العيد
* ورجع الرب ليفسد سور ابنة صهيون * مد قياسا * ولم يصرف الرب يده عن دوسها
واحزنها مقاتلها * وسورها ضعفوا معا * انغمست الى الارض ابوابها * اهلك وسحق اكالها
ملكها ورئيسها في الامم ليس لهم ناموس * وانبياوهم لم يروا رويا من قبل الرب
* جلسوا على الارض * صمتت شيوخ ابنة صهيون * اصعدوا التراب على راسهم
منطقوا مسوحا * انزلوا الى الارض العذارى الرئيسات في ايروسليم * فنيتا عيناي
بالدموع * قلق قلبي * انسكب كبدي على الارض لانكسار ابنة شعبي * عند ما وني
طفل ورضيع في رحاب المدينة * قالوا لامهاتهم اين القمح والخمر * عند ما اكلوا مثل
الجرحا في شوارع المدينة * عند ما نزعت نفوسهم في حضن امهاتهم * ماذا اشهد لك
او ماذا اشبهك يا ابنة ايروسليم * من يخلصك ويعزيك ايها العذرى ابنة صهيون
لان كاس كسرك عظم فمن يشفيك * انبياوك راوا باطلا وجهلا * ولم يكشفوا
عن ظلمك ليرد سبيك * راوا لك مناظر كاذبة وهبيات *

Tetendit arcum ſuum ut hoſtis infenſus? 4
firmavit dexteram ſuam velut adverſarius?
extinxit omnes delicias oculorum
meorum? profudit ſuper habitationem
filiæ Sionis velut ignem iram
ſuam? Factus eſt Dominus ut inimicus, 5
demerſit Jeroſolymam, demerſit
omnia palatia ejus, vaſtavit arces ejus,
& multiplicavit filiæ Judæ abjectum
& abjectam? Et explanavit ſicut vineam 6
habitaculum ſuum, abolevit feſtum
ſuum, oblitus eſt Dominus quæ
fecerat in Sione, feſtum ac ſabbathum,
& ſuccenſuit in furore iræ ſuæ regi,
ſacerdoti, atque principi? Exterminavit 7
Dominus aram ſuam, deſtruxit ſanctuarium
ſuum, perrupit manu hoſtili murum
palatiorum ejus; vocem dedit in
domo Domini, ut in die feſto? Converſus 8
eſt iterum Dominus ad vaſtandum
murum filiæ Sionis, menſuram tetendit,
neque relaxit Dominus manum ſuam ab
ea conculcanda, afflixit eam impugnator
ipſius, & muri ejus ſimul infirmati
ſunt? Defixæ ſunt in terram portæ 9
ejus, perdidit, & contrivit vectes
ejus? rex & principes ejus inter gentes
nullam habent legem, & prophetæ
ejus non vident viſionem à Domino?
Sederunt humi, tacuerunt ſeniores filiæ 10
Sionis, impoſuerunt pulverem capiti ſuo,
accincti ſunt ciliciis; demiſerunt in terram
virgines præcipuas in Jeruſalem?
Conſumpti ſunt lachrymis oculi mei, perturbatum 11
eſt cor meum, effuſa eſt ſuper
terram gloria mea, propter conquaſſationem
filiæ populi mei, dum deficeret parvulus
ac lactens in plateis urbis. Matribus 12
ſuis dicebant, ubi eſt triticum &
vinum? quum diſſolverentur ſicut vulnerati
in vicis urbis, quum dilaniarentur
animæ eorum in ſinu matrum ſuarum.
Quânam te teſtimoniam afferam tibi, aut 13
cui comparabo te O filia Jeroſolymæ?
quis te liberet, & quis te conſoletur O
virgo filia Sionis? quandoquidem calix
contritionis tuæ magnus eſt, quis te curabit?
Prophetæ tui vanitatem & ſtultitiam 14
viderunt, & non retexerunt impietatem
tuam, ut amoveretur captivitas
tua: viderunt tibi viſiones falſas, &
[illegible].

איכה : ג

moverũt &,sibilaverunt ,viam transeuntes omnes volis te super Plauserũt

15 ספקו עליך כפים כל־עברי דרך שרקו ויניעו

absolutam dicebãt quam civitas hæc num : Jerusalaim filiam super suũ caput

ראשם על־בת ירושלם הזאת העיר שיאמרו כלילת

omnes suũ os te super Patefecerunt ? terræ universæ gaudium, pulchritudine

16 יפי משוש לכל־הארץ : פצו עליך פיהם כל־

equidem : Absorbuimus, dixerunt, dente frenduerunt &, sibilaverũt ; tui inimici

איביך שרקו ויחרקו־שן אמרו בלענו אך

Dominus Fecit .vidimus ,invenimus ;eam expectabamus quam dies hæc

17 זה היום שקוינהו מצאנו ראינו : עשה יהוה

diebus à præceperat quem ,suũ sermonẽ complevit ,est machinatus quæ

אשר זמם בצע אמרתו אשר צוה מימי־

,inimicum te super fecit lætificari & ;pepercit non & ,destruxit : quondam

קדם הרס ולא חמל וישמח עליך אויב

,Dominum ad eorum cor Clamavit .tuorum hostium cornu exaltavit

18 הרים קרן צריך : צעק לבם אל־אדני

,interdiu lachrymam torrentem veluti fac descendere Sijon filiæ Mure

חומת בת־ציון הורידי כנחל דמעה יומם

, Surge .tui oculi filia taceat non ,tibi sedationem des non : noctu &

19 ולילה אל־תתני פוגת לך אל־תדם בת־עינך : קומי

coram tuum cor aquam sicut effunde ; custodiarum capite in nocte in prædica

רני בליל לראש אשמרות שפכי כמים לבך נכח

tuorũ parvulorum anima super tuas volas eum ad leva : Domini faciebus

פני אדני שאי אליו כפיך על־נפש עולליך

,Domine Vide .platearum omniũ capite in fame in patientiũ animi deliquiũ

20 העטופים ברעב בראש כל־חוצות : ראה יהוה

,suum fructum mulieres comedent an : sic causasti quem ad aspice &

והביטה למי עוללת כה אם־תאכלנה נשים פרים

,sacerdos Domini sanctuario in occidetur an ? educationum parvulos

עללי טפחים אם־יהרג במקדש אדני כהן

,meæ virgines ; senex & , puer plateis ,terra in Jacuerunt ? propheta &

21 ונביא : שכבו לארץ חוצות נער וזקן בתולתי

,jugulâsti ;tui furoris die in interfecisti :gladio in ceciderũt mei juvenes&

ובחורי נפלו בחרב הרגת ביום אפך טבחת

,circuitu de meos timores solemnitatis diem tanquã Vocâsti .pepercisti non

22 לא חמלת : תקרא כיום מועד מגורי מסביב

,educavi palmis quos :superstes & ,evasor Domini nasi die in fuit non &

ולא היה ביום אף־יהוה פליט ושריד אשר־טפחתי

.eos consumpsit meus inimicus ; auxi &

ורביתי איבי כלם :

CAP. III. ג

,duxit Me .eius indignationis virga in afflictionem vidit vir Ego

1 אני הגבר ראה עני בשבט עברתו : אותי נהג

2 ,est conversus me in Profectò .lucem non & ,tenebrositatem fecit ire &

3 וילך חשך ולא־אור : אך בי ישב

,meam carnem reddidit Vetustam .die tota suam manum vertit

4 יהפך ידו כל־היום : בלה בשרי

.mea ossa confregit ,meam pellem &

ועורי שבר עצמותי :

Verſio VULG. LAT.

15 *Samech.* Plauſerunt ſuper te manibus omnes tranſeuntes per viã: ſibilaverunt, & moverunt caput ſuum ſuper filiã Jeruſalem; Hæccine eſt urbs, dicentes, perfecti decoris, gaudium univerſæ terræ? 16 *Phe.* Aperuerunt ſuper te os ſuum omnes inimici tui: ſibilaverunt, & fremuerunt dentibus, & dixerunt; Devorabimus: en iſta eſt dies, quam expectabamus: 17 invenimus, vidimus. *Ain.* Fecit Dominus quæ cogitavit, complevit ſermonem ſuum, quem præceperat à diebus antiquis: deſtruxit, & non pepercit, & lætificavit ſuper te inimicum, & exaltavit cornu hoſtium tuorum. 18 *Sade.* Clamavit cor eorum ad Dominum ſuper muros filiæ Sion; Deduc quaſi torrentem lachrymas, per diem & noctem: non des requiem tibi, neq; taceat pupilla oculi tui. 19 *Coph.* Conſurge, lauda in nocte, in principio vigiliarum: effunde ſicut aquã cor tuum ante conſpectum Domini: leva ad eum manus tuas pro anima parvulorum tuorum, qui defecerunt in fame in capite omnium compitorum. 20 *Res.* Vide, Domine, & conſidera quem vindemiaveris ita: ergóne comedent mulieres fructum ſuum, parvulos ad menſuram palmæ? ſi occiditur in Sanctuario Domini ſacerdos, & propheta? 21 *Sin.* Jacuerunt in terra foris puer, & ſenex: virgines meæ, & juvenes mei ceciderunt in gladio: interfeciſti in die furoris tui: percuſſiſti, nec miſertus es. 22 *Thau.* Vocâſti quaſi ad diem ſolennem, qui terrerent me de circuitu, & non fuit in die furoris Domini qui effugeret, & relinqueretur: quos educavi, & enutrivi, inimicus meus conſumpſit eos.

CAP. III.

1 *Aleph.* EGo vir videns paupertatem meam in virga indi-
2 gnationis ejus. *Aleph.* Me mi-
3 navit, & adduxit in tenebras, & non in lucem. *Aleph.* Tantùm in me vertit, & convertit manum
4 ſuam totâ die. *Beth.* Vetuſtam fecit pellem meam & carnem meam, contrivit oſſa mea.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 ΣΑ'ΜΕΧ. Ἐκρότησαν ἐπὶ σὲ χεῖρας πάντες οἱ παραπορευόμενοι ὁδὸν, ἐσύρισαν καὶ ἐκίνησαν τὴν κεφαλὴν αὐτῶν ἐπὶ τὴν θυγατέρα Ἱερουσαλήμ. (χ) Αὕτη ἡ πόλις, ἐροῦσι, στέφανος εὐφροσύνης πάσης τῆς γῆς; 16 ΑΙ'Ν. Διήνοιξαν ἐπὶ σὲ στόμα αὐτῶν πάντες οἱ ἐχθροί σου, ἐσύρισαν καὶ ἔβρυξαν ὀδόντας, καὶ εἶπαν, Καταπίομεν αὐτήν· πλὴν αὕτη ἡ ἡμέρα, ἣν προσεδοκῶμεν, εὕρομεν αὐτὴν, 17 εἴδομεν. ΦΗ῀. Ἐποίησε κύριος ἃ ἐνεθυμήθη, συνετέλεσε (ψ) ῥῆμα αὐτοῦ, ἃ ἐνετείλατο ἐξ ἡμερῶν ἀρχαίων· καθεῖλε, καὶ οὐκ ἐφείσατο, καὶ ηὔφρανεν ἐπὶ σὲ ἐχθρὸν, ὕ- 18 ψωσε (ω) κέρας θλίβοντός σε. ΤΣΑ'ΔΗ. Ἐβόησε καρδία αὐτῶν πρὸς κύριον, Τείχη Σιὼν (α) καταγάγετε ὡς χειμάῤῥους δάκρυα ἡμέρας καὶ νυκτός· μὴ δῷς ἔκνηψιν σεαυτῇ, μὴ σιωπήσαιτο (β) θυγάτηρ ὀφθαλ- 19 μῶν σου. ΚΩ'Φ. Ἀνάστα, ἀγαλλίασαι ἐν νυκτὶ εἰς ἀρχὰς φυλακῆς σου, ἔκχεον ὡς ὕδωρ καρδίαν σου ἀπέναντι προσώπου κυρίου, (γ) ἆρον πρὸς αὐτὸν χεῖράς σου περὶ ψυχῆς νηπίων σου, τῶν ἐκλυομένων λιμῷ ἐπ' 20 ἀρχῆς πασῶν ἐξόδων. ΡΗ'ΧΣ. Ἴδε κύριε καὶ ἐπίβλεψον τίνι (δ) ἐπεφύλλισας οὕτως. εἰ φάγονται γυναῖκες καρπὸν κοιλίας αὐτῶν; ἐπιφυλλίδα ἐποίησε μάγειρος, φονευθήσονται νήπια θηλάζοντα (ε) μαστούς; ἀποκτενεῖς ἐν ἁγιάσματι κυρίου ἱερέα καὶ προφή- 21 την; ΧΣΕ'Ν. Ἐκοιμήθησαν εἰς τὴν ἔξοδον παιδάριον καὶ πρεσβύτης· παρθένοι μου καὶ νεανίσκοι μου ἐπορεύθησαν ἐν αἰχμαλωσίᾳ, ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν λιμῷ ἀπέκτεινας, ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς σου ἐμαγείρευσας, οὐκ ἐφείσω. 22 ΘΑΥ῀. Ἐκάλεσεν ἡμέραν ἑορτῆς παροικίας μου κυκλόθεν, καὶ οὐκ (ζ) ἐγένοντο ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς κυρίου ἀνασωζόμενος καὶ καταλελειμμένος, ὡς ἐπεκράτησα, καὶ ἐπλήθυνα ἐχθρούς μου πάντας.

MS.A. (χ) Ἡ αὕτη ἡ πόλις ἣν ἐροῦσιν, στέφανος δόξης εὐφροσύνης (ψ) ῥήματα αὐτοῦ, ἃ ἐνεθυμήθη ἐξ (ω) κεφαλὰς (α) καταγαγέτωσαν (β) θυγάτερ ὁ ὀφθαλμός σου. (γ) ἆρον ἆρον (δ) ἐπεφαύλισας (ε) μαστούς; (ζ) ἐγένετο

ΚΕΦ. γ'.

1 ἈΛΕΦ. ΕΓὼ ἀνὴρ ὁ βλέπων πτωχείαν,
2 ἐν ῥάβδῳ θυμοῦ αὐτοῦ ἐπ' ἐμέ. Παρέλαβέ με καὶ ἀπήγαγέ με εἰς σκότος, καὶ οὐ φῶς.
3 Πλὴν ἐν ἐμοὶ ἐπέστρεψε χεῖρα αὐτοῦ ὅλην
4 τὴν ἡμέραν, Ἐπαλαίωσε (α) σάρκα μου καὶ δέρμα μου, (β) ὀστέα μου συνέτριψεν.

MS.A. (α) τὰς σάρκας (β) ὀστᾶ

SAMECH. Plauſerunt ſuper te manib⁹ omnes tranſeuntes per viam: ſibilaverunt, & moverũt caput ſuũ ſuper filiam Hieruſalem. Hæccine eſt urbs, dicentes, (i) corona (k) lætitiæ univerſæ terræ? 16 *AIN. Aperuerũt ſuper te os ſuũ omnes inimici tui: ſibilaverunt, et fremuerũt dentib⁹, et dixerũt, (l) Abſorbuim⁹ eam; profectò hæc eſt dies, quã expectabam⁹, invenim⁹ eã, vidim⁹. PHE. Fecit Dominus, quæ cogitavit: complevit ſermonem ſuũ, (m) quæ præceperat à dieb⁹ antiquis: deſtruxit, & non pepercit: et lætificavit ſuper te inimicum: exaltavit cornu tribulantis te. TSADE. Clamavit cor eorũ ad Dominũ; Muri Sion deducite quaſi torrentes, lachrymas per diẽ, et noctẽ: non des requiẽ tibi: non taceat (n) filia oculorũ tuorũ.* 19 *COPH. Surge, exulta in nocte in principiis cuſtodiæ tuæ: effunde ſicut aquã cor tuum ante faciem Domini: leva ad eum manus tuas pro anima parvulorum tuorum, qui deficiunt fame in principio omnium compitorum.* 20 *RECHS. Vide, Domine, & conſidera, quẽ vindemiâris ita. Si comedent mulieres fructum ventris ſui? vindemiam fecit coquus. occidentur parvuli ſugentes ubera? (o) Occides in Sanctuario Domini ſacerdotem, et prophetã?* 21 *CHSEN. Dormierunt (p) in via parvul⁹ & ſenex: virgines meæ, & juvenes mei abierunt in captivitatẽ, in gladio, & in fame occidiſti in die iræ tuæ, mactâſti, non peperciſti.* 22 *THAU. (q) Vocavit (r) diem ſolennitatis (ſ) parœcias meas de circuitu: & non fuerunt in die iræ Domini, qui effugeret ſalvus, & qui relinqueretur: (t) ſicut invaleſcere feci, & multiplicavi inimicos meos omnes.*

CAP. III.

1 *ALEPH.* E*Go vir videns paupertatem, in virga furoris ejus ſuper me.* 2 *Minavit me, et abduxit me in tenebras, & non lucem.* 3 *Tantùm in me convertit manum ſuam totâ die:* 4 *Vetuſtam fecit carnem meam, & pellem meam: oſſa mea contrivit.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 שפקו עליך ידיהון כל עברי אורחא שריקו בספותהון וטלטילו ברישיהון על כנשתא
דירושלם אמרו בפומהון הדא היא קרתא דהוו אמרין אבהתן דמלקדמין דהיא גמירת
16 נואי ושופרא חדוה לכל יתבי ארעא : פתחו עליך פומהון כל בעלי דבביך שרקו
בספותהון ועסיאו בשניהון ואמרו שיצינא ברם דין יומא דהוינא מתינן אשכחנא חזינא :
17 עבד יי מה דחשיב גמר מימר פומיה די פקיד למשה נביא מן יומין קדמאין דאי לא
נטרין בני ישראל ית פקודיא דיי עתיד לאתפרע מנהון פגר ולא חס ואחדי עליך בעיל
18 דבבא ארים יקר מעיקיך : צוח לבהון קדם יי דרחם עליהון שורא דיקרא דציון ולגי
כנחלא דמעין יומם ולילא לא תתנין תנחומין לצעריך לפינא צלותא די לך ולא תשתוק
19 עינך מלמדמע : קומי כנשתא דישראל שריא בגלותא עסוקי במשנה בליליא ארום
שכנתא דיי שריא לקבליך ובפתגמי אוריתא בשירוי שפרפרא שדואי היך מיא עקמומית
ליבך והדרי בתיובתא וצליאי בבית כנשתא כל קבל אפי יי טולי לותיה בצלו ידיך על
20 נפשת עולמיך דצחין בכפנא בריש כל מחוזין : חזי יי ותהי מסתכל מן שמיא למן
אסתקפתא כדנן אם חזי לבנתא דישראל למיכל פרי בטניהון עולמיא רגיגיא דהוו
מלפפין בסדינין דמילתא ענת מדת דינא וכן אמרת אם חזי למקטל בבית מוקדשא דיי
כהנא ונביא כמה דקטלתון ית זכריה בר עדו כהנא רבא ונביא מהימן בבית מוקדשא
21 דיי ביומא דכפוריא על דאוכח יתכון דלא תעבדון דביש קדם יי : דמכו על ארעא
במחוזין עולימיא וסביא דהוו רגילין למשכוב על ברין דמילת ועל ערסין דשן דפיל
22 בתולתי ורובי נפלו קטילין בחרבא קטלתא ביום רוגזך נכסתא ולא חסתא : תהי
קרי חירותא לעמך בית ישראל על יד משיחא היכמה דעבדת על יד משה ואהרן
ביומא דפסחא ויתכנשון עולמי חזור חזור מן כל אתר דאתבדרו תמן ביומא
תקוף רוגזך יי ולא הוה בהון שיזבא ושארא דלפפית בסדינין ורביתי בתפנוקי
מלכין בעלי דבבי שיציאונין :

ג

1 אנא נביא דחזא עני בחוטרא דרדי ברוגזיה : יתי דבר ואוביל חשוכא ולא לאנהרא :
2 3 ברם בי יתוב יגלגל עלי מחתיה כל יומא : עתק בסרי מבמחתין ומשכי מן
4 מחתא תבר גרמי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

15 SAMECH. Plauſerunt ſuper te manib⁹ ſuis omnes tranſeuntes viã, ſibilaverunt labiis ſuis, & moverunt capita ſua ſuper cœtũ Jeruſalẽ: dixerunt in ore ſuo, Hæccine eſt civitas de qua dicebant patres noſtri antiqui, ꝙ eſſet perfecti decoris & pulchritudo gaudii habitatorib⁹ terræ? 16 PE. Aperuerunt ſuper te os ſuũ omnes inimici tui, ſibilaverunt labiis ſuis, fremuerunt dentib⁹ ſuis: dixerunt, Conſumpſim⁹: veruntamen hic eſt dies quẽ expectavimus; invenim⁹, vidim⁹. 17 AIN. Fecit Dñs id quod cogitaverat, conſummavit verbum oris ſui, ꝙ præceperat Moſi prophetæ à dieb⁹ antiquis; quòd ſi non cuſtodirent filii Iſrael præcepta Dñi, ultionẽ ſumeret ex eis: deſtruxit & non pepercit, & lætificavit ſuper te inimicum, exaltavit gloriam tribulantiũ te. 18 SADICH. Clamavit cor eorũ corã Dño, qui miſeretur ipſorũ: Mure gloriæ Sion dimana inſtar torrentis lacrymas die ac nocte, ne des conſolationes tuis doloribus; ut ceſſes ab oratione tua, nec taceat oculus tuus à fletu. 19 COPH. Surge cœt⁹ Iſrael qui habitas in captivitate, & da operã lectioni in nocte, quoniã majeſtas Dñi habitat in conſpectu tuo, & verbis Legis in principio cuſtodiæ matutinæ: effunde ſicut aquã perverſitatẽ cordis tui, & convertere ad pœnitentiã, & ora in domo congregationis ante faciẽ Dñi: leva ad eũ in oratione man⁹ tuas propter animas juvenũ tuorũ qui deficiũt fame in capite omniũ vicorũ. 20 RES. Vide Dñe & contemplare de cœlis in quẽ occaſiones quæſiſti ita: nũ decens eſt ut comedant filiæ Iſrael fructum ventris ſui, parvulos deſiderabiles qui involvebantur ſindonib⁹ ſericeis? Reſpondit menſura judicii, & ſic ait: Nunquid decens eſt ut occidatur in domo ſanctuarii Dñi Sacerdos & *Propheta?* quemadmodũ interfeciſtis Zachariã filiũ Addo ſacerdotẽ magnũ & prophetã fidelẽ in domo ſanctuarii Dñi in die propitiationum, eò quod caſtigabat vos ne faceretis quod malũ eſt corã Dño? 21 SIN. Dormierunt humi in vicis juvenes, & ſenes qui aſſueti erant dormire in culcitris ſericeis, & in lectulis eburneis. Virgines meæ & juvenes mei ceciderunt interfecti gladio: occidiſti in die furoris tui, jugulaſti & non peperciſti. 22 THAU. Vocabis libertatẽ populo tuo domui Iſrael ꝑ manum Meſſiæ, ſicut feciſti per manũ Moſis & Aaron in die Phaſe, & congregabuntur juvenes mei per circuitum de omni loco ad quem diſperſi ſunt in die iræ furoris tui Dñe, & non fuit in eis qui liberaretur & relinqueretur: quos involvi ſindonibus, & nutrivi in deliciis regum, inimici mei conſumpſerunt eos.

CAP. III. ALEPH.

1 EGo ille vir qui vidi afflictionem in virga illius qui caſtigat in ira ſua. 2 Me duxit & adduxit ad tenebras, & non ad lucem. 3 Veruntamen in me convertit, & revolvit ſuper me plagam ſuam tota die. 4 BETH. Vetuſta facta eſt caro mea à plagis, & pellis mea à percuſſione, confregit oſſa mea.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܣ * ܨܦܩܘ ܥܠܝܟܝ ܐܝܕܝܗܘܢ ܟܠ ܥܒܪܝ ܐܘܪܚܐ. ܫܪܩܘ ܘܢܕܘ ܪܫܝܗܘܢ ܥܠ
ܒܪܬ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܡܪܘ. ܗܕܐ ܗܝ ܡܕܝܢܬܐ ܕܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܕܫܡܠܝܐ ܫܘܦܪܐ. ܘܚܕܘܬܐ ܕܟܠܗ
ܐܪܥܐ. * ܥ * ܥܒܕ ܡܪܝܐ ܡܕܡ ܕܐܬܚܫܒ. ܘܫܡܠܝ ܡܠܬܗ. ܐܝܟ ܕܦܩܕ ܡܢ ܝܘܡܬܐ
ܩܕܡܝܐ. ܣܚܦܗ ܘܠܐ ܚܤ. ܘܚܕܝ ܒܟܝ ܒܥܠܕܒܒܝܟܝ. ܘܐܪܝܡ ܩܪܢܐ ܕܐܠܘܨܝܟܝ.
* ܦ * ܦܬܚܘ ܥܠܝܟܝ ܦܘܡܗܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܟܝ. ܫܪܩܘ ܘܚܪܩܘ
ܫܢܝܗܘܢ. ܘܐܡܪܘ ܒܠܥܢܝܗ. ܒܪܡ ܗܢܘ ܝܘܡܐ ܕܣܟܝܢ ܗܘܝܢ. ܐܫܟܚܢ. ܘܚܙܝܢ. * ܨ *
ܨܘܚ ܠܒܗܘܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܫܘܪܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܐܚܬܝ ܐܝܟ ܢܚܠܐ ܕܡܥܐ ܒܐܝܡܡܐ ܘܒܠܠܝܐ.
ܠܐ ܬܬܠܝܢ ܠܟܝ ܦܘܝܓܐ. ܘܠܐ ܬܫܠܐ ܒܒܬ ܥܝܢܟܝ. * ܩ * ܩܘܡܝ ܫܒܚܝ ܒܠܠܝܐ
ܒܪܫ ܡܛܪܬܐ. ܘܐܫܘܕܝ ܐܝܟ ܡܝܐ ܠܒܟܝ. ܠܘܩܒܠ ܐܦܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܐܪܝܡܝ ܠܘܬܗ
ܐܝܕܝܟܝ ܥܠ ܢܦܫܐ ܕܥܘܠܠܝܟܝ. ܕܐܬܥܛܦܘ ܒܟܦܢܐ. ܒܪܝܫ ܟܠܗܘܢ ܫܘܩܐ: * ܪ *
ܚܙܝ ܡܪܝܐ ܘܚܘܪ. ܠܡܢ ܥܒܕܬ ܗܟܢܐ. ܐܢ ܢܐܟܠܢ ܢܫܐ ܦܐܪܝܗܝܢ. ܥܘܠܐ ܕܡܬܪܒܝܢ.
ܐܢ ܢܬܩܛܠ ܒܡܩܕܫܗ ܕܡܪܝܐ. ܟܗܢܐ ܘܢܒܝܐ. * ܫ * ܫܟܒܘ ܥܠ ܐܪܥܐ ܒܫܘܩܐ
ܛܠܝܐ ܘܣܒܐ. ܒܬܘܠܬܝ ܘܥܠܝܡܝ ܢܦܠܘ ܒܚܪܒܐ. ܩܛܠܬ ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܟ
ܢܟܣܬ. ܘܠܐ ܚܤܬ. * ܬ * ܩܪܝܬ ܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܥܐܕܐ ܠܒܥܠܕܒܒܝ. ܡܢ ܚܕܪܝ. ܘܠܐ ܗܘܐ
ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܦܠܝܛܐ ܘܫܪܝܕܐ. ܕܪܒܝܬ ܘܪܒܝܬ. ܒܥܠܕܒܒܝ ܓܡܪܘ ܐܢܘܢ.

* ܓ * [illegible] *

* ܐ * ܐܢܐ ܓܒܪܐ ܕܚܙܝܬ ܫܘܥܒܕܝ. ܒܫܒܛܐ ܕܪܘܓܙܗ. * ܒ * ܠܝ ܕܒܪ. ܘܗܠܟ
ܒܚܫܘܟܐ. ܘܠܐ ܒܢܘܗܪܐ. * ܓ * ܒܪܡ ܒܝ ܗܦܟ. ܘܐܥܛܦ ܐܝܕܗ. ܟܠܗ ܝܘܡܐ.
* ܕ * ܒܠܝ ܒܣܪܝ ܘܡܫܟܝ. ܘܬܒܪ ܓܪܡܝ.

15 * Plauſerunt ſuper te manus ſuas omnes viatores, ſibilârunt, capita ſua motaverunt ſuper filiam Jeruſalem, ac dixerunt; Hæccine eſt illa civitas quam perfectiſſimè pulchram, totiuſque terræ delitias eſſe prædicabant? 16 Fecit Dominus * quod conſtituerat, perfecitque verbum ſuum, quemadmodum præceperat à priſcis diebus; deſtruxit eam citra clementiam, exhilaravit de te inimicos, & extulit cornu oppreſſorum tuorum. 17 Aperuerunt contra * te os ſuum omnes inimici tui, ſibilaverunt, dentibuſque ſuis frenduerunt dicentes, Deglutivim⁹ eam: hic ſanè dies eſt quem expectabam⁹, *jam* invenimus, & vidimus: 18 Mugivit cor eorum contra Dominum murorum filiæ Sionis. Dimana ceu torrentem lachrymas diu noctuque, ne des tibi refrigerium, néve ceſſet pupilla oculi tui. 19 Surge, dic laudes noctu in principio vigiliæ, & effunde velut aquas cor tuum ante faciem Domini, attolle ad eum manus tuas pro anima natorum tuorum qui fame langueſcunt in compitis omnium platearum, *dicens*; 20 Reſpice Domine, & conſidera quibus talia feceris, itáne, comederent mulieres fœtus ſuos, infantes alliſos? itáne, occideretur in ſanctuario Domini ſacerdos & propheta? 21 Jacuerunt humi in plateis pueri & ſenes, virgines meæ & adoleſcentes mei gladio ceciderunt, trucidâſti in die furoris tui, mactâſti, & non pepercisti. 22 Convocâſti ut in die ſolennitatis inimicos meos circunquaque, nec remanſit in die furoris Domini profuga aut ſuperſtes: quos portaveram & educaveram, hos inimici mei conſumpſerunt.

CAP. III.

1 * DEus potentiſſime, intuere ſubjectionem meam. 2 Virgâ furoris ſui Me duxit, egitque in tenebras, non autem in lucem: 3 Imò contra me rediens, & reflectens manum ſuam totâ die; 4 Conſumpſit cutem carnemque meam, * & comminuit oſſa mea.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* صفقت عليك بايديها جميع مارّ الطريق * صفروا وحركوا راسهم على ابنة ايروسليم
ويقولون هذه المدينة التي كانت اكليل مجد وسرور لكل الارض * فتحوا عليك فاهم
جميع اعدائك * صفروا وسنّوا اسنانهم وقالوا * نبتلعها لان هذا اليوم الذي كـ
ننتظر وجدناه ورايناه * صنع الرب ما افكر فيه * انجز كلماته التي افكر فيـ
منذ الايام الاولى * هدم ولم يشفق * واشمت بك العدو * رفع روس محزنيك * صرخ قلبهم
الى الرب يا اسوار صهيون * فليذرفوا مثل الوادي دموعا نهارا وليلا * لا تعطي لذاتك راحة
لا تغفل ايتها الابنة عينك * قومي هللي في الليل في مبادي محارسك * اهرقي قلبك
مثل ماء قدام وجه الرب * ارفعي ارفعي اليه يديك من اجل نفس اطفالك الذين
انحلوا بالجوع على مبداء جميع مخارجك * انظر يا رب واطلع لماذا فضحتنا هكذا
اتاكل النساء ثمر بطونهن * حمل الطباخ بعان * يقتلون الاطفال والذين يرضعون
الثدي * تقتل في قدس الرب كاهنا ونبيا * رقد في المخرج صبي وشيخ * عذاري وشباني
مضوا في السبي بالسيف والجوع قتلتهم في يوم رجزك * طبختهم ولم تشفق * دعا يوم
عيد غريبي من حولي * ولم ينج في يوم رجز الرب متخلص ومتروك * كما مسكتهم
واكثرت جميع اعدائك *

25 * *Plauſerunt ſuper te manibus ſuis omnes tranſeuntes viam, ſibilaverunt & caput ſuum agitaverunt ſuper filiam Jeroſolymæ, dicentes, Hæc eſt urbs illa quæ erat corona gloriæ & lætitiæ toti terræ.*

Tranſponit hos duos Verſ. ut in Hebr. & LXX.

17 *Aperuerunt ſuper te os ſuum omnes inimici tui, ſibilaverunt & exacuerunt dentes ſuos, ac dixerunt: Deglutiamus eam, quia diem hunc quem expectabamus, invenimus ac vidimus.* 16 *Fecit Dominus quod cogitaverat, perfecit verba ſua quæ cogitaverat à priſtinis diebus: deſtruxit, neque pepercit, & lætificavit de te inimicum, extulit capita affligentium te.* 18 *Clamavit ad Dominum cor eorum O muri Sionis: profundant quaſi torrentem lachrymas die noctéque: ne des tibi requiem, ne dormiſcat O filia, oculus tuus.* 19 *Surge, jubila in nocte in principiis excubiarum tuarum, effunde cor tuum velut aquam ante faciem Domini: attolle, attolle ad eum manus tuas pro anima parvulorum tuorum qui ſunt fame diſſoluti in aditu omnium compitorum tuorum.* 20 *Aſpice Domine, & intuere cur nos ita contumelioſos reddideris: comedéntne mulieres fructum ventris ſui? faciet coquus racemationem? occidentur parvuli & qui ubera ſugunt? occîdes in ſanctuario Domini ſacerdotem & prophetam?* 21 *Jacuit in compito puer & ſenex, virgines meæ & juvenes mei abierunt in captivitatem, gladio & fame peremiſti eos in die furoris tui, coxiſti eos & non pepercisti.* 22 *Convocavit diem jejunii peregrinorum à me è circumjacentibus mihi regionibus, & non fuit in die furoris Domini, qui evaderet aut ſuperesſet; quantùm ſuſtinuiſti, & multiplicaſti omnes inimicos meos!*

الفصل الثالث

الاصحاح السادس والثلاثون

الثالث من المراثي

* انا رجل انظر المسكنة بعصي غضبه علي * اخذني وساقني الى الظلام وليس الى النور
* رد يده علي النهار كله * عتق لحمي وجلدي * كسر عظامي *

CAP. III.

Textus trigeſimus ſextus.

Lamentatio tertia.

1 ME virum qui paupertatem experior, 2 baculo furoris ſui mihi imminente, Duxit 3 & abegit ad tenebras, non autem ad lucem. Repetiit manū ſuā ſuper me totâ die.

Tranſpoſui peculiari ordine Verſiculi.

4 * *Vetuſtis reddidit carnes meas & pellem meam, & comminuit oſſa mea.*

איכה : ג

locis tenebrosis In .fatigatione & ,felle circundedit & ,me super Ædificavit
5 6 בנה עלי ויקף ראש ותלאה: במחשכים
non & ,me pro struxit Maceriam .seculi mortuos veluti me fecit manere
הושיבני כמתי עולם: גדר בעדי ולא 7
,vociferabar &,clamabõ quãdo Etiã .meũ compede fecit aggravari ;egrediar
8 אצא הכביד נחשתי: גם כי אזעק ואשוע
meas semitas :lapide exciso in meas vias Circũseplit .meã orationẽ obstruxit
9 שתם תפלתי: גדר דרכי בגזית נתיבתי
meas Vias .absconditis in leo ,mihi ipse insidians Ursus .pervertit
10 עוה: דב ארב הוא לי אריה במסתרים: דרכי
11 Tetendit .desolatam me posuit ,me minutim concidit & ,fecit divertere
12 סורר ויפשחני שמני שמם: דרך
fecit Ingredi .sagittam ad scopum tanquam me statuit & ,suum arcum
13 קשתו ויציבני כמטרא לחץ: הביא
eorũ canticũ,meo populo omni risus Fui .suæ pharetræ filios meos renes in
14 בכליותי בני אשפתו: הייתי שחק לכל־עמי נגינתם
me fecit inebriare ,amaritudinibus in me fecit Saturari .die tota
15 כל־היום: השביעני במרורים הרוני
.pulvere in me immersit,meos dẽtes lapillo in fecit cõtringere Et .absinthio
16 לענה: ויגרס בחצץ שני הכפישני באפר:
Periit ,dixi Et .boni sum oblitus ,mea anima pace à se elongavit Et
17 18 ותזנח משלום נפשי נשיתי טובה: ואמר אבד
,meæ rebellionis &,meæ afflictionis Recordare .Dño à mea spes &,mea duratio
19 נצחי ותוחלתי מיהוה: זכר־עניי ומרודי
me super incurvabitur & ,recordabitur Recordando .fellis & ,absinthii
20 לענה וראש: זכור תזכור ותשיח עלי
Misericordiæ .expectabo idcirco ,meũ cor ad faciã redire Hoc .mea anima
21 נפשי: זאת אשיב אל־לבי על־כן אוחיל: חסדי
22 .ejꝰ misericordiæ defecerunt non quia ,consumpti sumus non quòd,Domini
יהוה כי לא־תמנו כי לא־כלו רחמיו:
dixit ,Dominus mea Pars .tua fides multa ,matutinis Novæ
23 24 חדשים לבקרים רבה אמונתך: חלקי יהוה אמרה
,eũ expectantibus Dominus Bonus .eum expectabo propterea ,mea anima
25 נפשי על־כן אוחיל לו: טוב יהוה לקוו
.Domini salute in silens & ,expectet & Bonum .eum quæsierit animæ
26 לנפש תדרשנו: טוב ויחיל ודומם לתשועת יהוה:
,solitarius Manebit .suis pueritiis in jugum portaverit cùm ,viro Bonum
27 28 טוב לגבר כי־ישא על בנעוריו: ישב בדד
fortè si ,suum os pulvere in Dabit .se super portavit quia ,silebit &
29 וידם כי נטל עליו: יתן בעפר פיהו אולי
.probro in saturabitur ,maxillam se percutienti Dabit .præstolatio sit
30 יש תקוה: יתן למכהו לחי ישבע בחרפה:
,afficit mærore si Quia .Dominus seculum in elongabit non Quia
31 32 כי לא יזנח לעולם אדני: כי אם־הוגה
affixit non Nam .suarũ misericordiarũ multitudinẽ secũdm miserebitur &
33 ורחם כרב חסדיו: כי לא ענה
suis pedibus sub conterendum Ad .viri filios affecit mærore &,suo corde de
34 מלבו ויגה בני־איש: לדכא תחת רגליו
coram viri judicium faciendum declinare Ad .terræ vinctos omnes
35 כל אסירי ארץ: להטות משפט־גבר נגד
non Dominus ,sua rixa in hominem pervertendum Ad .altissimi faciebus
36 פני עליון: לעות אדם בריבו אדני לא
? præcepit non Dominus ,fuit Et ,dixit ille Quis .vidit
37 ראה: מי זה אמר ותהי אדני לא צוה:

Versio VUL. LAT.

5 *Beth.* Ædificavit in gyro meo, & circumdedit me felle, & labore. 6 *Beth.* In tenebrosis collocavit me, quasi mortuos sempiternos. 7 *Ghimel.* Circumædificavit adversùm me, ut non egrediar: aggravavit compedẽ meũ. 8 *Ghimel.* Sed & cùm clamavero, & rogavero, exclusit orationem meam. 9 *Ghimel.* Conclusit vias meas lapidibus quadris, semitas meas subvertit. 10 *Daleth.* Ursus insidians factus est mihi: leo in absconditis. 11 *Daleth.* Semitas meas subvertit, & confregit me: posuit 12 me desolatam. *Daleth.* Tetendit arcũ suũ, & posuit me quasi signũ 13 ad sagittam. *He.* Misit in renibꝰ 14 meis filias pharetræ suæ. *He.* Factus sum in derisũ omni populo meo, canticum eorum totâ die. 15 *He.* Replevit me amaritudinibꝰ, 16 inebriavit me absinthio. *Vau.* Et fregit ad numerũ dentes meos, 17 cibavit me cinere. *Vau.* Et repulsa est à pace anima mea, obli- 18 tus sum bonorũ. *Vau.* Et dixi; Periit finis meꝰ, & spes mea à 19 Dño. *Zain.* Recordare paupertatis, & transgressionis meæ, ab- 20 sinthii, & fellis. *Zain.* Memoriâ memor ero, & tabescet in me 21 anima mea. *Zain.* Hæc recolens in corde meo, ideò sperabo. 22 *Heth.* Misericordiæ Dñi quia non sumus consumpti: quia non defecerunt miserationes ejꝰ. 23 *Heth* Novi diluculò, multa est 24 fides tua. *Heth.* Pars mea Dñs, dixit anima mea: propterea ex- 25 pectabo eũ. *Theth.* Bonꝰ est Dñs sperantibꝰ in eũ, animæ quærenti 26 illũ. *Theth* Bonũ est præstolari cũ 27 silentio salutare Dei. *Theth.* Bonum est viro, cùm portaverit ju- 28 gũ cũ adolescentia sua. *Jod.* Sedebit solitariꝰ, & tacebit: quia le- 29 vavit sup se. *Jod.* Ponet in pulve- 30 re os suũ, si fortè sit spes. *Jod.* Dabit percutienti se maxillã, satura- 31 bitur opprobriis. *Caph.* Quia non repellet in sempiternũ Dñs. 32 *Caph.* Quia si abjecit, & miserebitur secũdũ multitudinẽ miseri- 33 cordiarũ suarũ. *Caph.* Non enim humiliavit ex corde suo, & abje- 34 cit filios hominũ, *Lamed.* Ut contereret sub pedibus suis omnes 35 vinctos terræ, *Lamed.* Ut declinaret judiciũ viri in cõspectu vultꝰ 36 Altissimi. *Lamed.* Ut perverteret hominẽ in judicio suo, Dñs igno- 37 ravit. *Mem.* Quis est iste, qui dixit ut fieret, Dño non jubente?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 ΒΗΘ. Ἀνῳκοδόμησε κατ' ἐμοῦ, καὶ ἐκύκλωσε κεφαλήν μου, καὶ ἐμόχθησεν. 6 Ἐν σκοτεινοῖς ἐκάθισέ με (γ) ὡς νεκροὺς αἰῶνος. 7 Ἀνῳκοδόμησε κατ' ἐμοῦ, καὶ οὐκ ἐξελεύσομαι, 8 ἐβάρυνε χαλκόν μου. ΓΙΜΕΛ. Καί γε κεκράξομαι (δ) καὶ βοήσω, ἀπέφραξε προσευχήν μου. 9 ΔΑΛΕΘ. Ἀνῳκοδόμησεν ὁδούς μου, ἐνέφραξε 10 τρίβους μου, ἐτάραξεν. Ἄρκος ἐνεδρεύουσα, 11 αὐτός μοι λέων ἐν κρυφαίοις, Κατεδίωξεν ἀφεστηκότα, καὶ (ε) κατέπαυσέ με, ἔθετό με 12 ἠφανισμένην. Η. Ἐνέτεινε τόξον αὐτοῦ, καὶ 13 ἐστήλωσέ με ὡς σκοπὸν εἰς βέλος. Εἰσήγαγεν (ζ) ἐν τοῖς νεφροῖς μου ἰοὺς φαρέτρας αὐ- 14 τοῦ. Ἐγενήθην γέλως παντὶ (η) λαῷ μου, ψαλμὸς αὐτῶν ὅλην τὴν ἡμέραν. ΟΥΑΥ. 15 Ἐχόρτασέ με πικρίας, ἐμέθυσέ με χολῆς, 16 (θ) Καὶ ἐξέβαλε ψήφῳ (ι) ὀδόντας μου, ἐψώ- 17 μισέ με σποδόν, Καὶ ἀπώσατο ἐξ εἰρήνης 18 ψυχήν μου· ἐπελαθόμην ἀγαθά. Καὶ ἀπώλετο νῖκός μου, καὶ ἡ ἐλπίς μου ἀπὸ κυρίου. 19 ΖΑΙΝ. Ἐμνήσθην ἀπὸ πτωχείας μου, καὶ ἐκ 20 διωγμοῦ (ι) πικρία καὶ χολή μου. Μνησθήσεται, 21 καὶ καταδολεσχήσει ἐπ' ἐμὲ ἡ ψυχή μου. Ταύτην τάξω εἰς τὴν καρδίαν μου, διὰ τοῦτο ὑπο- 22 μενῶ. ΗΘ. (κ) Τὰ ἐλέη κυρίου, ὅτι οὐκ ἐξέλιπέ με, ὅτι οὐ συνετελέσθησαν οἱ οἰκτιρμοὶ αὐτοῦ· μῆνας εἰς τὰς πρωΐας ἐλέησον κύριε, ὅτι οὐ συνετελέσθημεν, ὅτι οὐ συνετελέσθησαν 23 οἱ οἰκτιρμοὶ αὐτοῦ. Καινὰ εἰς τὰς πρωΐας, 24 πολλὴ ἡ πίστις σου. Μερίς μου κύριος, εἶπεν ἡ ψυχή μου· διὰ τοῦτο ὑπομενῶ αὐτῷ. ΤΗΘ. 25 Ἀγαθὸς κύριος τοῖς ὑπομένουσιν αὐτόν, 26 ψυχῇ ἣ ζητήσει αὐτόν, Ἀγαθὸν καὶ ὑπομενεῖ, καὶ ἡσυχάσει εἰς τὸ σωτήριον κυρίου. 27 ΤΗΘ. Ἀγαθὸν ἀνδρί, ὅταν ἄρῃ ζυγὸν ἐν 28 νεότητι αὐτοῦ, Καθήσεται κατὰ μόνας, καὶ σιωπήσεται, ὅτι ἦρεν ἐφ' ἑαυτῷ. 30 ΙΩΔ. Δώσει τῷ παίοντι αὐτὸν σιαγόνα, χορτασθήσεται ὀνειδισμῶν· 31 Ὅτι οὐκ εἰς τὸν αἰῶνα ἀπώσεται 32 κύριος. ΧΑΦ. Ὅτι ὁ ταπεινώσας (λ) οἰκτειρήσει, καὶ κατὰ τὸ πλῆθος τοῦ ἐλέους αὐτοῦ, 33 Οὐκ ἀπεκρίθη ἀπὸ καρδίας αὐτοῦ, καὶ ἐτα- 34 πείνωσεν υἱοὺς ἀνδρός. ΛΑΜΕΔ. Τοῦ ταπεινῶσαι ὑπὸ τοὺς πόδας αὐτοῦ πάντας δεσμίους γῆς, 35 Τοῦ ἐκκλῖναι κρίσιν ἀνδρὸς κατέναντι 36 προσώπου ὑψίστου, Καταδικάσαι ἄνθρωπον ἐν τῷ κρίνεσθαι αὐτόν, κύριος οὐκ εἶπε. 37 (μ) Τίς οὕτως εἶπε, καὶ ἐγενήθη; κύριος οὐκ ἐνετείλατο,

BETH. Ædificavit contra me, & circundedit caput meum, & laborare fecit: In tenebrosis collocavit me, quasi mortuos seculi. Ædificavit contra me, & non egrediar: aggravavit (a) æs meum. GIMEL. Etiam vociferabor, & clamabo: obstruxit orationem meam. DALETH. Circumædificavit vias meas, obstruxit semitas meas, conturbavit. Ursus insidians ipse mihi, leo in absconditis: Persecutus est recedentem, & cessare me fecit: posuit me desolatã. HE. Tetendit arcum suũ, & statuit me quasi signum ad sagittam: Immisit in renes meos (b) sagittas pharetræ suæ. Factus sum (c) risus omni populo meo, psalmus eorum totâ die. VAU. Saturavit me amaritudine, inebriavit me felle, Et ejecit (d) calculo dentes meos: cibavit me cinere: Et repulit à pace animã meã: oblitꝰ sum bonorũ: Et (e) periit victoria mea, & spes mea à Domino. ZAIN. Recordatus sum à paupertate mea: & de persecutione (f) amaritudo, & fel meum In memoria erit: & recolet super me anima mea. Hanc ponam in cor meum: propter hoc sustinebo. HETH. Misericordiæ Domini [quia (g) non fecit deficere me: quia non sunt consumptæ miserationes ejus, Menses in matutinis miserere, Domine,] quia (h) consumpti non sumus: quia non sunt consummatæ miserationes ejus. (i) Novæ in matutinis: multa est fides tua. Pars mea Dominus, dixit anima mea: propterea expectabo eum. TETH. Bonus est Dominus sustinentibus eum: animæ, quæ quæret illũ, (k) Bonũ: Et sustinebit, & silebit in salutare Domini. TETH. Bonum est viro, cùm portaverit jugum in juventute sua: Sedebit singulariter, & silebit, (l) quia tulit super se. JOD. Dabit percutienti se maxillam: saturabitur opprobriis: Quia non repellet in sempiternũ Dominus. CHAPH. Quoniam qui humiliavit, miserebitur et (m) secundùm multitudinem misericordiæ suæ. Non reprobavit ex corde suo, & humiliavit filios viri. LAMED. Ad humiliandum sub pedibꝰ ejꝰ omnes vinctos terræ: Ad declinare faciendũ judicium viri coram facie Altissimi: Ad condemnandũ hominem, cũ ipse judicatur: Dominus non dixit. Quis ita dixit; & factum est? Dominus non mandavit.

MS. A. (γ) ἐν σκοτεινοῖς αἰῶνος. (δ) καί γε (ε) κατέπαυσεν, ἔθετό (ζ) τοῖς νεφροῖς (η) τῷ λαῷ (θ) Ἐξέβαλεν (ι) τοὺς ὀδόντας (ι) μου πικρία γὰρ καὶ (κ) Desiderantur versus 22,23,24. usque ad Ἀγαθὸς κύριος (λ) οἰκτιρήσει κατὰ (μ) Κύριος οὕτως

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 6 בנה עלי כרכומין ואקף קרתא ועקר רישי עממיא ושלהי אנון: בבית יסורין דחשוכא
7 אותבני כמיתין דאזלין לעלמא אחרן: סגר בתרי בגין דלא אפוק מן טריקא יקר על
8 9 רגלי כבלין דנחשא: אף ארום אצוח ואצלי אסתתים בית צלותי: סגר אורחי
10 במרמירין פסילן שבילי סרך: דובא מכמן הוא לי אריא דמטמר בכבישא: אורחי סרך
11 12 ושסעני שויני צדו: מתח קשתיה ועתדני היך פלגיסא לגירא: אעל בכליתי גירי
13 14 תיקיה: הויתי חוכא לכל פריצי עמי ומזמרן עלי כל יומא: אשביעני מרירת חיון ארוני
15 16 גידא: ורצץ בפרידן שני כנע יתי בקטמא: וקצת מלמשאל שלם נפשי אנשיתי
17 18 טיבותא: ואמרית אובד תוקפי וטיבא דהויתי אוריך מן קדם יי: אדכר עניי נפשי ומה
19 דאמרירו בי סנאי ואשקיאו יתי גידין ורישי חיון: מדכר תדכר ותצלי עלי נפשי על
20 סגופא: דא נחמתא אתיב על לבי בגין כן אוריך: טיבותא דיי ארום לא פסקו ארום לא
21 22 אתמניעו רחמוהי: נסין חדתין מרחיש בצפריא סגיאה היא הימנותך: חולקי יי
23 24 אמרית נפשי על כן אוריך לה: טב יי לסוברין לפורקניה לנפשא דתבעא אלפניה
25 טב לאורכא ולמשתק עד דמטי פורקנא דיי: טב הוא לגברא ארום יאלף נפשיה
26 27 לסוברא ניר פקודיא בטליותיה: יתיב בלחודוהי וישתוק ויסבול יסורין דאתין
28 בגין יחודא דשמא דיי דמשתלחין לאתפרע מניה על חובא קלילא דחב בעלמא הדין
29 עד כד יחוס עלוהי ויטלנון מניה ויקבל אפי שלים לעלמא דאתי: יתן בעפרא פומיה
30 וישתטח קדם רבוניה מאים אית סבר: יושיט למחי ליה ליכתא בגין דחלתא דיי יסבע
31 32 קלנא: ארום לא ישלי יי לעבדוי לעלם לממסרנון בידא דסנאיהון: ארום אלהן
33 ברישא יתבר ובתר כן יתוב וירחם לצדיקיא כסגיאות טיבותיה: ארום מן בגלל דלא
עני גבר ית נפשיה ואעדי זחוחה מלביה בגין כן גרם לאסתקפא תבירא בבני אנשא:
34 35 למככא לכבשא תחות רגלוי כל אסירי ארעא: ולמצלי דין דגבר מסכן כל קביל
36 אפי עלאה: לסרכא אנש מסכן במצותיה אפשר דמן קדם יי לא יתגלי: מן הוא אנש אמר
37 והות בישתא מתעבדא בעלמא אלהן מן בגלל דעבדו מה דלא אתפקדו מן פומא דיי:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ædificavit super me machinas, & circundedit civitatẽ, evulsitque caput populorũ, & deficere fecit eos. In domo carceris tenebrosa collocavit me, sicut mortuos qui vadunt in aliud seculũ. GHIMEL. Clausit post me ut non egrediar de custodia: aggravavit super pedes meos compedes æreos. Etiã si clamavero & oravero, conclusa est domꝰ orationis meæ. Clausit vias meas lapidibꝰ marmoreis dolatis, *semitas meas pervertit.* DALETH. Ursus insidians factꝰ est mihi, leo se abscondens in semita. Vias meas subvertit, & succidit me, posuit me in desolationẽ. Tetendit arcũ suũ, & statuit me quasi scopũ ad sagittã. HE. Induxit in renes meos sagittas pharetræ suæ. Factꝰ sum in derisũ omnibꝰ dissipatoribus populi mei, & psallebant de me totâ die. Saturavit me felle serpentũ, inebriavit me absinthio. VAU. Et contrigit lapidibꝰ dentes meos, humiliavit me in cinere. Et detestata est ut quæreret pacem anima mea, oblitꝰ sum bonorũ. Et dixi: Periit fortitudo mea & bonũ quod expectabã à facie Dñi. ZAIN. Recordare afflictionis animæ meæ, & quòd ad amaritudinẽ duxit me inimicꝰ meꝰ; & potavit me absinthio & veneno serpentis. Recordans recordabitur, & curvabitur super me anima mea propter afflictionẽ. Hanc consolationẽ reducã ad cor meũ, propterea expectabo: CHETH. Benignitates Dñi quia nõ defecerunt, quia nõ cessarunt misericordiæ ejꝰ. Miracula nova depromit diluculò, multa est fides tua. Pars mea Dñs, *dixi*, anima mea, propterea expectabo eum. TETH. Bonꝰ est Dñs expectantibꝰ salutẽ ejꝰ, animæ quæ quæsivit doctrinã ejꝰ. Bonũ est expectare & silere donec perveniat salꝰ Dñi. Bonũ est viro si docuerit animã suã ut portet jugũ præceptorũ in adolescentia sua. JOD. Sedebit solꝰ & tacebit, & sustinebit castigationes quæ eveniunt, propter unitatẽ nominis Dñi, quæ quidẽ mittuntur ab eo, ut reddat ei pœnã propter peccatũ leve quod peccavit in hoc seculo: usquedũ parcat ei, & auferat eas [*pœnas*] & accipiat *personã perfecti* in seculo venturo. Dabit in pulverẽ os suũ, & prosternetur corã Dño suo; an fortè sit spes. Præbebit percutienti se maxillã, propter timorẽ Dñi saturabitur ignominia. CAPH. Quoniã non repellet Dñs servos suos in seculũ, ut tradat eos in manũ inimicorũ suorũ. Sed si in principio confregerit, & posteà conversꝰ miserebitur justorũ pro abundantia benignitatis suæ. Quoniã propterea quod non affligit vir animã suã & abstulit superbiã de corde suo, ideo hoc fecit ut devolveretur interitus [illegible] filios hominũ. LAMED. Ad humiliandũ & ad subjugandum sub pedibꝰ suis omnes vinctos terræ. Ad pervertendum judicium viri pauperis in conspectu vultus Altissimi: Ad pervertendum hominem pauperem in lite [illegible] Etiamne potest ut non reveletur in conspectu Dñi? MEM. Quis est ille vir qui dixit: Et fuit hoc malũ factũ in seculo, nõ pro eo quòd fecerunt quod nõ fuit præceptũ eis ab ore Dñi.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܢܐ ܥܠܝ. ܘܚܕܪܢܝ ܡܪܪܐ ܘܥܡܠܐ. * ܒܚܫܘܟܐ ܐܘܬܒܢܝ. ܐܝܟ ܡܝ̈ܬܐ ܕܥܠܡ.
* ܓ * ܣܓ ܥܠܝ ܕܠܐ ܐܦܘܩ. ܘܐܝܩܪ ܫܫܠܬܝ. * ܘܐܦ ܐܢ ܐܩܥܐ ܘܐܙܥܩ. ܠܐ ܫܡܥ
ܨܠܘܬܝ. * ܣܓ ܐܘܪܚܬܝ ܒܟܐܦܐ. ܘܫܒܝ̈ܠܝ ܥܩܡ. * ܕ * ܕܒܐ ܟܡܝܢܐ
ܗܘܐ ܠܝ. ܘܐܪܝܐ ܒܡܛܫܝܐ. * ܐܘܪܚܬܝ ܥܩܡ. ܦܫܚܢܝ ܘܫܘܝܢܝ ܚܪܒܐ.
* ܡܬܚ ܩܫܬܗ. ܘܐܩܝܡܢܝ ܐܝܟ ܢܝܫܐ ܠܓܐܪܐ. * ܗ * ܐܥܠ ܒܟܘܠܝ̈ܬܝ
ܓܐܪ̈ܘܗܝ. * ܗܘܝܬ ܓܘܚܟܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ. ܘܙܡܝܪܬܗܘܢ ܟܠܗ ܝܘܡܐ.
* ܐܣܒܥܢܝ ܡܪܪ̈ܐ. ܘܐܪܘܝܢܝ ܓܕܐ. * ܘ * ܘܩܨܨ ܒܟܐܦ̈ܐ ܫܢ̈ܝ. ܦܠܫܢܝ ܒܩܛܡܐ.
* ܘܐܬܪܚܩܬ ܡܢ ܫܠܡܐ ܢܦܫܝ. ܘܛܥܝܬ ܛܒܬܐ. * ܘܐܡܪܬ. ܐܒܕ ܢܨܚܢܝ ܘܣܒܪܝ ܡܢ
ܡܪܝܐ. * ܙ * ܐܬܕܟܪ ܫܘܥܒܕܝ ܘܡܪܕܘܬܝ ܡܪܪܐ ܘܓܕܐ. * ܐܬܕܟܪ ܘܐܦܢܝ ܢܦܫ
ܠܘܬܝ. * ܗܕܐ ܐܬܐܒ ܠܠܒܝ. ܡܛܠܗܢܐ ܐܣܒܪ ܠܗ. * ܚ * ܛܝܒܘܬܗ
ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܫܠܡܬ. ܘܠܐ ܫܠܡܘ ܪ̈ܚܡܘܗܝ. * ܚܕ̈ܬܐ ܠܨܦܪ̈ܐ. ܣܓܝܐܐ ܗܝܡܢܘܬܟ
ܡܪܝܐ. * ܐܡܪܐ ܢܦܫܝ. ܡܢܬܝ ܗܘ ܡܪܝܐ. ܡܛܠܗܢܐ ܐܣܒܪ ܠܗ. * ܛ * ܛܒ ܡܪܝܐ
ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܣܒܪܝܢ ܠܗ. ܘܠܢܦܫܐ ܕܒܥܝܐ ܠܗ. * ܛܒ ܠܡܢ ܕܡܣܒܪ ܒܦܘܪܩܢܗ
ܕܡܪܝܐ. * ܛܒ ܠܓܒܪܐ ܕܢܫܩܘܠ ܢܝܪܐ ܒܛܠܝܘܬܗ. * ܝ * ܢܬܒ
ܒܠܚܘܕܘܗܝ. ܘܢܫܬܘܩ. ܡܛܠ ܕܢܛܠ ܥܠܘܗܝ ܢܝܪܗ. * ܢܬܠ ܒܥܦܪܐ ܦܘܡܗ
ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܣܒܪܐ. * ܢܬܠ ܦܟܗ ܠܡܢ ܕܡܚܐ ܠܗ. ܘܢܣܒܥ ܚܣܕܐ. * ܟ * ܡܛܠ
ܕܠܐ ܫܒܩ ܡܪܝܐ ܠܥܠܡ. * ܐܠܐ ܡܡܟܟ ܘܡܪܚܡ. ܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܚܢܢܘܗܝ. * ܡܛܠ
ܕܠܐ ܡܢ ܠܒܗ. ܘܡܡܟܟ ܒܢ̈ܝ ܓܒܪܐ. * ܠ * ܠܡܕܟܕܟܘ ܬܚܝܬ ܪ̈ܓܠܘܗܝ
ܟܠܗܘܢ ܐܣܝܪ̈ܝ ܐܪܥܐ. * ܠܡܨܠܝܘ ܕܝܢܐ ܕܓܒܪܐ. ܩܕܡ ܐܦ̈ܘܗܝ ܕܥܠܝܐ. * ܠܡܚܝܒܘ
ܒܪܢܫܐ ܒܕܝܢܗ. ܡܪܝܐ ܠܐ ܚܙܐ. * ܡ * ܡܢܘ ܗܢܐ ܕܐܡܪ ܘܗܘܐ. ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܦܩܕ.

Extruxit contra me, & circunvallavit me fel- 5
le & labore. In tenebris collocavit me, ut 6
ſempiternè mortuum. Circunſepivit me ne 7
evaderem, & vincula mea roboravit. Et 8
quanvis rogem ac deprecer, non exaudit ſup-
plicationem meam. Sepſit vias meas ſpinis, 9
& ſemitas meas obliquavit. Urſus inſidians 10
factus eſt mihi, & leo in latibulo. Vias meas 11
obliquas reddidit, diſcerpſit me, & ad corru-
ptionem redegit. Tetendit arcum ſuum, ſta- 12
tuitque me ut ſcopum ſagittæ. Ecce immiſit 13
in renes meos ſagittas ſuas. Factus ſum riſus 14
apud omnes gentes, & cantiones earum totâ
die. Satiavit me felle, & inebriavit me ab- 15
ſynthio. Et comminuit lapidibus dentes 16
meos: conſperſit me cinere. Demum obli- 17
vione deleta eſt à pace anima mea, & oblitus
ſum proſperitatis: Et dixi, Periit ſplendor 18
meus & ſpes mea à Domino. Memento de- 19
jectionis & punitionis meæ felle & abſyn-
thio: Memento, & reſtitue mihi animam 20
meam. Hoc in mentem meam revocabo, 21
(propterea expectabo eum,) Quòd miſeri- 22
cordiæ Domini nullum habent finem, neque
deficiunt miſerationes ejus. Ad renovatio- 23
nem *cujuſlibet* matutini plurima eſt fides tua
Domine. Dixit anima mea, Portio mea eſt, 24
ideo expectabo eum. Bonus eſt Dominus 25
expectanti eum, & animæ quærenti ipſum.
Bene cedet verè ſperanti ſalutem Domini. 26
Benè cedet viro cùm tulerit jugum tuum à 27
pueritia ſua. Sedebit ſolitarius ac tacebit, 28
eò quòd ſuſceperit ſuper ſe jugum tuum. Ap- 29
ponet pulveri os ſuum, eò quòd ſuperſit
ſpes. Præbebit genam ſuam percutienti ſe, 30
& ſatiabitur opprobrio. Nam non oblivi- 31
ſcitur Dominus in perpetuum: Sed deprimit, 32
tum miſereſcit ſecundùm multitudinem cle-
mentiæ ſuæ. Quia *homo* non reſpondet ex 33
animo ſuo, ideo deprimit filios robuſtorum.
Terere ſub pedibus ſuis omnes terræ vinctos, 34
Pervertere jus alicujus coram facie Altiſſimi, 35
Condemnare aliquem in *juſta* ipſius cauſa; 36
nonne videret Dominus? Quis eſt qui *rem* 37
ullam proponat, eaque fiat, niſi Dominus
permittat?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بنى علي * وأحاط برأسي . وأتعبني في المظلمات * أجلسني في مظلمات الأبد * بنى علي
فلست أخرج * ثقل علي * مع ما أنني أصرخ * ومع ما أنني أهتف صرف صلاتي * بنى
وسد طريقي * الذئب أقلق سبلي مكمنا * والأسد طردني في الخفايا * إذا كنت
واقفا كف * ووضعني فانيا * أوتر قوسه * وأقامني هدفا مثل نصب للسهم * أدخل في
كليتي بني جعبته * صرت ضحكا لكل شعبي * ترميرهم النهار كله * أشبعني حنظلا . أسكرني
مرارا * أخرج أسناني بحكم * أطعمني رمادا * أقصى من السلامة نفسي * نسيت الخيرات
* وباد ظفري ورجائي من الرب * ذكرت من مسكنتي وطردي * لأن علقمي ومرارتي
* يذكران * فتذوب نفسي علي * هذه أرددها في قلبي * لأجل هذا أترجى
[* MS. Oxon. لأن نعم الرب . ورحمته . وأناته كثيرة لا تزول . إيمانك يا رب عظيم * ولكن
نرجوا أن تطلع علينا . كطلوع الفجر بغتة * وقالت نفسي . إن هذا هو سهمي
لذلك أرجوا ربي] * الرب صالح للذين يرجونه . للنفس التي تطلبه * ويرجوا الخير
ويطمئن بخلاص الرب * خير للرجل إذا حمل النير في شبابه * يجلس متوحدا ويسكت
لأنه حمله من ذاته [* MS. Oxon. ويجعل فاه في التراب . لأن رجاه قايم بيدك
* يعطي لضاربه خديه . يشبع تعييرات * لأن الرب لا يقصي إلى الأبد * لأن الذي
نزل بتذلل . يكثر رحمته * لم يجب من قلبه . وأذل بني الرجل * ليواضع تحت أقدامه
جميع أسرى الأرض * ليميل حكم الرجل أمام وجه العلي * ليدين الإنسان عند
محاكمته . ولم يقل . الرب * هكذا قال وصار . أليس الرب أمر *

Ædificavit contra me, vallavit caput 5
meum, & fatigavit me in tenebricoſis
locis. Collocavit me in tenebricoſis per- 4
petuis; Ædificavit contra me, & non 7
egredior: auxit pondus meum. Licèt 8
clamem & licèt vociferem, repellit ora-
tionem meam. Ædificavit & occluſit 9
viam meam. Urſus perturbavit ſemitas 10
meas, inſidians; & leo perſecutus eſt
me in abditis. Cùm conſiſterem, contra- 11
hebat ſeſe, at conſumptum reddidit me.
Tetendit arcum ſuum, ſtatuitque me 12
ſcopum, ut metam ſagittæ: Immiſit in 13
renes meos, filios pharetræ ſuæ. Factus 14
ſum riſus apud univerſum populum me-
um, modulatio eorum totâ die. Satiavit 15
me colocynthide, inebriavit me felle.
Evulſit dentes meos in juſtitia, cibavit 16
me cinere. Procul amovit à pace animam 17
meam, oblitus ſum bonorum: Periitque 18
victoria mea & ſpes mea à Domino.
Recordatus ſum propter paupertatem me- 19
am & perſecutionem meam; quoniam
abſynthium meum & fel meum In me- 20
moria ſunt: quieſcat apud me anima
mea. Hæc diſpono in corde meo, ideo 21
ſperabo. [MS. Oxon. Quoniam bonus eſt 22
Dominus, & miſericordia ejus & longa-
nimitas multa nequaquã deficit. Fides
tua Domine maxima; Ideo nos ex- 23
pectamus ut exoriatur illa ſuper nos,
ſicut exoritur aurora ſubitò. Dixit etiam 24
anima mea, quòd portio mea eſt, ideo ex-
pectabo Dominum meum.] Bonus eſt Do- 25
minus iis qui præſtolantur eum, animæ
quæ quærit illum, Et bonum ſperat, ac 26
certum eſt de ſalute Domini. Bonum eſt 27
viro cùm jugum portaverit ab adoleſcen-
tia ſua: Sedebit ſeorſim, & ſilebit quia 28
portavit illud ſponte ſuâ. [MS. Oxon. In- 29
dit etiam os ſuum pulveri, quoniam ſpes
ejus poſita eſt in manu tua.] Præbebit 30
percutienti ſe genas ſuas, ſaturabitur
contumeliis. Nam Dominus non repulſu- 31
rus in æternũ. Nam qui depreſſit, clementiâ 32
utetur: juxta multitudinem miſericordiæ
ſuæ, Non reſpondet ex animo ſuo: ſed de- 33
primit filios viri, ut humiliet ſub pedibus 34
ſuis omnes terræ vinctos: ut deflectat 35
judicium viri coram facie Altiſſimi: ut 36
hominem condemnet cum judicium cum
eo contendit. Attamen non dixit, Domi-
nus ita dixit, & factum eſt. Nonne 37
Dominus juſſit?

[illegible] Cur ? bonum & ,mala [illegible] non altiſſimi ore De

39 מפי עליון לא תצא הרעות והטוב : מה יתאונן אדם

,inquiramus & ,noſtras vias Scrutemur ? ſuo peccato ſuper vir ,vivens

40 חי גבר על־חטאו : נחפשה דרכינו ונחקרה

Deum ad volas ad noſtra corda Levemus .Dominum ad revertamur &

41 ונשובה עד־יהוה : נשא לבבנו אל־כפים אל־אל

.pepercisti non tu ,fuimus rebelles & ,ſumus prævaricati Nos .cœlis in

42 בשמים : נחנו פשענו ומרינו אתה לא סלחת :

Operuiſti .pepercisti non ,occidiſti ;nos es perſecutus & ,furore in Operuiſti

43 סכותה באף ותרדפנו הרגת לא חמלת : סכתה

44 nos poſuiſti abjectionē & ,Nauſeam .orationem tranſeundo à ,te nube in

45 בענן לך מעבור תפלה : סחי ומאוס תשימנו

.noſtri inimici omnes ſuum os nos ſuper Patefecerunt .populorum interiori in

46 בקרב העמים : פצו עלינו פיהם כל־איבינו :

deſcendit aquarū Rivis .contritio & ,vaſtatio ,nobis fuit fovea &,Formido

47 פחד ופחת היה לנו השאת והשבר : פלגי־מים תרד

48 non &,defluxit meus Oculus .mei populi filiæ contritionē ſuper .meus oculus

49 עיני על־שבר בת־עמי : עיני נגרה ולא

.cœlis de Dñs videret & ,aſpiceret Donec .intermiſſionibus non à ,tacuit

50 תדמה מאין הפגות : עד־ישקיף וירא יהוה משמים :

Venando .meæ urbis filiabus omnibus ab meæ animæ fuit cauſa meus Oculus

51 עיני עוללה לנפשי מכל בנות עירי : צוד

52 ,meas vitas lacu in Succiderunt .gratis mei inimici,avem veluti,me ſunt venati

53 צדוני כצפור איבי חנם : צמתו בבור חיי

, dixi :mei caput ſuper aquæ Supernatarunt .me in lapidē projecerūt &

54 וידו־אבן בי : צפו־מים על־ראשי אמרתי

meā Vocem .inferiorum lacu è Domine tuū nomen Invocavi .ſum exciſus

55 נגזרתי : קראתי שמך יהוה מבור תחתיות : קולי

56 .meū clamorem ad meā reſpirationē *ad* tuā aurem abſcondas ne ,audiſti

שמעת אל־תעלם אזנך לרוחתי לשועתי :

Domine *es Rixatus* .timeas Ne ,dixiſti :te invocavi die in Appropinquaſti

57 קרבת ביום אקראך אמרת אל־תירא : רבת אדני

58 ,meā perverſitatē Domine Vidiſti .meas vitas redemiſti ,meæ animæ rixas

59 ריבי נפשי גאלת חיי : ראיתה יהוה עותתי

eorū cogitationes omnes,eorū ultionē omnē Vidiſti .meū judiciū judica

60 שפטה משפטי : ראיתה כל־נקמתם כל־מחשבתם

.me *ſuper* eorū cogitationes omnes,Domine eorū opprobriū Audiſti .mihi

61 לי : שמעת חרפתם יהוה כל־מחשבתם עלי :

,eorū Seſſionē .die tota me *ſuper* eorū meditationē &,me in ſurgentiū Labia

62 שפתי קמי והגיונם עלי כל־היום : שבתם

63 retributionē eis Reddes .eorū *modulamen* ego ;aſpice eorū reſurrectionē &

64 וקימתם הביטה אני מנגינתם : תשיב להם גמול

tuā imprecationē,cordis tegumentū eis Dabis .eorū manuū opus ſecūdm Dñe

65 יהוה כמעשה ידיהם : תתן להם מגנת־לב תאלתך

.Domine ,cœlis ſub à eos *diſperdes* & ,furore in Perſequēris .eis

66 להם : תרדף באף ותשמידם מתחת שמי יהוה :

CAP. IV. ד

fuerit projecti ? bona auri *maſſa mutabitur* ,aurū *obducetur rubigine* Quomodo

1 איכה יועם זהב ישנא הכתם הטוב תשתפכנה

, pretioſi Sijon Filii .platearum omnium capite in ſanctitatis lapides

2 אבני־קדש בראש כל־חוצות : בני ציון היקרים

opus ,*teſtæ lagenas in* ſunt reputati quomodo :puro auro in *æquiparati*

המסלאים בפז איכה נחשבו לנבלי־חרש מעשה

?figuli manuum

ידי יוצר :

Verſio VUL. LAT.

38 *Mem.* Ex ore Altiſſimi non egredientur nec mala nec bona?
39 *Mem.* Quid murmuravit homo vivens, vir pro peccatis ſuis?
40 *Nun.* Scrutemur vias noſtras,& quæram⁹,& revertamur ad Dñm.
41 *Nun.* Levem⁹ corda noſtra cum manibus ad Dominū in cœlos.
42 *Nun.* Nos iniquè egim⁹, & ad iracundiā provocavim⁹: idcircò
43 tu inexorabilis es. *Samech.* Operuiſti in furore, & percuſſiſti nos: occidiſti, nec pepercisti.
44 *Samech.* Oppoſuiſti nubem tibi,
45 ne tranſeat oratio. *Samech.* Eradicationē, & abjectionē poſuiſti
46 me in medio populorū. *Phe.* Aperuerunt ſup nos os ſuū omnes
47 inimici. *Phe.* Formido & laqueus facta eſt nobis vaticinatio, &
48 contritio. *Phe.* Diviſiones aquarum deduxit ocul⁹ me⁹, in con-
49 tritione filiæ populi mei. *Ain.* Oculus meus afflictus eſt, nec tacuit, eò quòd non eſſet requies,
50 *Ain.* Donec reſpiceret & videret
51 Dñs de cœlis. *Ain.* Ocul⁹ meus deprædat⁹ eſt animā meā in cun-
52 ctis filiab⁹ urbis meæ. *Sade.* Venatione ceperunt me quaſi avem
53 inimici mei gratis. *Sade.* Lapſa eſt in lacū vita mea,& poſuerunt
54 lapidem ſup me. *Sade.* Inundaverunt aquæ ſup caput meum:
55 dixi, Perii. *Coph.* Invocavi nomen tuū Dñe, de lacu noviſſimo.
56 *Coph.* Vocē meā audiſti: ne avertas aurem tuā à ſingultu meo, &
57 clamorib⁹. *Coph.* Appropinquâſti in die, quādo invocavi te: dixiſti,
58 Ne timeas. *Res.* Judicâſti, Dñe, cauſā animæ meæ, redemptor vi-
59 tæ meæ. *Res.* Vidiſti, Dñe, iniquitatē illorū adverſū me: judica ju-
60 diciū meū. *Res.* Vidiſti omnē furorem, univerſas cogitationes e-
61 orū adverſū me. *Sin.* Audiſti opprobriū eorū, Dñe, omnes cogi-
62 tationes eorū adverſū me: *Sin.* Labia inſurgentiū mihi, & meditationes eorū adverſū me totâ die.
63 *Sin.* Seſſionē eorū, & reſurrectionē eorū vide, ego ſū pſalm⁹ eo-
64 rum. *Thau.* Reddes eis vicē, Dñe, juxta opera manuum ſuarum.
65 *Thau.* Dabis eis ſcutū cordis la-
66 borē tuū. *Thau.* Perſequêris in furore, & conteres eos ſub cœlis, Domine.

CAP. IV.

1 *Aleph.* Quomodò obſcuratum eſt aurū, mutat⁹ eſt color optim⁹,
2 diſperſi ſunt lapides Sanctuarii in capite omnium plateaurū? *Beth.* Filii Sion inclyti, & amicti auro primo: quomodò reputati ſunt in vaſa teſtea, opus manuum figuli?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

38 Ἐκ ςόματος Ὑψίςου οὐκ ἐξελεύσεται τὰ κα-
39 κὰ καὶ τὸ ἀγαθόν. ΜΗΜ. Τί γογγύσει ἄνθρωπος ζῶν, ἀνὴρ περὶ τῆς ἁμαρτίας αὐτοῦ;
40 ΝΟΥΝ. Ἐξηρευνήθη ἡ ὁδὸς ἡμῶν καὶ ἠτάσθη, καὶ (μ) ἐπιςρέψωμεν ἕως κυρίου. Ἀναλά-
41 βωμεν καρδίας ἡμῶν ἐπὶ χειρῶν πρὸς ὑψηλὸν ἐν οὐρανῷ. Ἡμαρτήσαμεν, ἠσεβήσαμεν,
42 καὶ (ν) οὐχ ἱλάσθης. ΣΑΜΕΧ. Ἐπεσκέπασας
43 ἐν θυμῷ, καὶ ἀπεδίωξας ἡμᾶς, ἀπέκτεινας,
44 (ξ) οὐκ ἐφείσω. Ἐπεσκέπασας νεφέλην σεαυ-
45 τῷ (ο) εἵνεκεν προσευχῆς, καμμύσαι με Καὶ (π) ἀπωσθῆναι. ΑΙΝ. Ἔθηκας ἡμᾶς ἐν μέ-
46 σῳ τῶν λαῶν. Διήνοιξαν ἐφ᾽ ἡμᾶς (ρ) τὸ ςό-
47 μα αὐτῶν πάντες οἱ ἐχθροὶ ἡμῶν. ΦΗ. Φόβος καὶ θυμὸς ἐγενήθη ἡμῖν, ἔπαρσις καὶ συντρι-
48 βή. Ἀφέσεις ὑδάτων κατάξει ὁ ὀφθαλμός μου ἐπὶ τὸ σύντριμμα τῆς θυγατρὸς τοῦ λαοῦ
49 μου. ΦΗ. Ὁ ὀφθαλμός μου κατεπόθη, καὶ οὐ
50 (σ) σιγήσομαι τοῦ μὴ εἶναι ἔκνηψιν, Ἕως οὗ δια-
51 κύψῃ καὶ ἴδῃ κύριος ἐξ οὐρανοῦ. Ὁ ὀφθαλμός μου ἐπιφυλλιεῖ ἐπὶ τὴν ψυχήν μου παρὰ
52 πάσας θυγατέρας πόλεως. ΤΣΑΔΗ. Θηρεύοντες ἐθήρευσάν με ὡς ςρουθίον (τ) πάν-
53 τες οἱ ἐχθροί μου δωρεάν. Ἐθανάτωσαν ἐν λάκκῳ ζωήν μου, καὶ ἐπέθηκαν λίθον ἐπ᾽ ἐ-
54 μοί. (υ) Ὑπερεχύθη ὕδωρ ἐπὶ τὴν κεφαλήν
55 μου· εἶπα, Ἀπῶσμαι. ΚΩΦ. (ͅ) Ἐπεκαλεσάμην τὸ ὄνομά σου κύριε ἐκ λάκκου κατωτάτου·
56 Φωνήν μου ἤκουσας· μὴ κρύψῃς τὰ ὦτά σου εἰς
57 τὴν δέησίν μου· Εἰς τὴν βοήθειάν μου ἤγγισας ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἐπεκαλεσάμην σε· εἶπάς μοι, Μὴ
58 φοβοῦ. ΡΗΧΣ. Ἐδίκασας κύριε τὰς (φ) δίκας τῆς ψυχῆς μου, ἐλυτρώσω τὴν ζωήν μου.
59 Ἴδες κύριε τὰς ταραχάς μου, ἔκρινας τὴν κρί-
60 σιν μου. Εἶδες πᾶσαν τὴν ἐκδίκησιν αὐτῶν, εἰς πάντας διαλογισμοὺς αὐτῶν ἐν ἐμοί. ΧΣΕΝ.
61 Ἤκουσας τὸν ὀνειδισμὸν αὐτῶν, πάντας τοὺς δια-
62 λογισμοὺς αὐτῶν κατ᾽ ἐμοῦ, Χείλη (χ) ἐπανιςαμένων μοι, καὶ μελέτας αὐτῶν κατ᾽ ἐμοῦ ὅλην
63 τὴν ἡμέραν, Καθέδραν αὐτῶν, καὶ ἀνάςασιν αὐτῶν ἐπίβλεψον ἐπὶ (ψ) ὀφθαλμοὺς αὐτῶν.
64 Ἀποδώσεις αὐτοῖς ἀνταπόδομα κύριε κατὰ
65 τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτῶν. ΘΑΥ. Ἀποδώσεις αὐτοῖς ὑπερασπισμὸν, καρδίας (ω) μου μόχθον.
66 Σὺ αὐτοὺς καταδιώξεις ἐν ὀργῇ, καὶ ἐξαναλώσεις αὐτοὺς (α) ὑποκάτωθεν τοῦ οὐρανοῦ κύριε.

ΚΕΦ. δ'.

1 ΑΛΕΦ. Πῶς ἀμαυρωθήσεται (α) χρυσίον, ἀλλοιωθήσεται τὸ ἀργύριον τὸ ἀγαθόν; ἐξεχύθησαν λίθοι ἅγιοι ἐπ᾽ ἀρχῆς πασῶν
2 ἐξόδων. ΒΗΘ. (β) Οἱ υἱοὶ Σιὼν οἱ τίμιοι, οἱ ἐπηρμένοι ἐν χρυσίῳ, πῶς ἐλογίσθησαν εἰς ἀγγεῖα ὀςράκινα, ἔργα χειρῶν κεραμέως;

Ex ore Altiſſimi non [illegible] *mala & bonum.* MEM. [illegible] *murmurabit homo* [illegible] *peccato ſuo?* NUN. [illegible] *& examinata,* [illegible] *Levemus corda noſtra ſuper manus ad Excelſum* [illegible] *Peccavimus, impiè egimus, & non es placatus.* SAMECH. *Operuiſti* [illegible] *occidiſti, non pepercisti. Operuiſti autem nubem tibi* [illegible] *claudendum me & repellendum.* AIN *Poſuiſti nos in medio populorum: Aperuerunt ſuper nos os ſuum omnes inimici noſtri.* (ρ) *Timor,* [illegible] *eſt nobis, tumor, & contritio.* [illegible] *miſſiones aquarū deducet oculus meus ſuper contritionē filiæ populi mei.* PHE. (σ) *Oculus meus abſorptus eſt, & non tacebo eò quod non ſit requies. Donec reſpiciat & videat Dominus de cœlo.* (τ) *Oculus meus vindemiabit ſuper animā meam præ cunctis filiabus urbis.* TSADE *Venantes venati ſunt me, quaſi avem, omnes inimici mei gratis. Occiderunt in lacu vitā meā & impoſuerunt lapidē ſuper me.* [illegible] *perfuſa eſt aqua ſuper caput meum: dixi, Repulſus ſum.* COPH. *Invocavi nomen tuū, Domine, de lacu infimo: Vocem meā audiſti. Nè abſcondas aures tuas ad deprecationē meā: In auxiliū meū appropinquaſti; in die, quâ invocavi te dixiſti mihi Ne timeas.* RESCH. *Judicaſti, Domine,* [illegible] *animæ meæ: redemiſti vitā meā: Vidiſti, Domine, turbationes meas: judicaſti judicium meum. Vidiſti omnem ultionem eorum* (φ) *in omnes cogitationes eorū in me.* CHSEN. *Audiſti opprobriū eorum, omnes cogitationes eorum adverſum me, Labia inſurgentium mihi, & meditationes eorum adverſum me totâ die, Seſſionē eorū, & reſurrectionē eorū* (ψ) *reſpice in oculos eorū. Retribues eis retributionē, Domine, juxta opera manuū ſuarū.* THAU *Reddes eis tegumentū, cordis mei laborē. Tu perſequêris eos in ira, & abſumes eos de ſub cœlo, Domine.*

CAP. IV.

ALEPH. *Quomodò obſcurabitur aurū, mutabitur argentum bonū? Effuſi ſunt lapides* [illegible] *in principio omniū viarū.* BETH. *Filii Sion inclyti elevati in auro, quomodò reputati ſunt in vaſa teſtea, opera manuū figuli?*

MS. A. (μ) ἐπιςρέψωμεν ἕως * τ. Ἀναλάβωμεν καρδίας ἡμῶν πεσίν-λὸν ἐπὶ χειρῶν ἐν οὐρανῷ. (ν) οὐκ (ξ) καὶ οὐκ (ο) εἵνεκεν (π) ἀπεωσθῆναι. (ρ) ςόμα (σ) σιωπήσωμαι (τ) οἱ ἐχθροί μου (υ) Ἐπερχύθη (ͅ) Deſiderantur verſus 56,57. uſq; ad Ἐδίκασας (φ) ἀδικίας (χ) ἐπανιςανομένων (ψ) τοὺ ὀφθαλμοὺς (ω) μόχθον. Σὺ αὐτοὺς καλάξεις (ω) ὑποκάτω ΚΕΦ'. δ'. MS. A. (α) τὸ χρυσίον, (β) Υἱοὶ Σιὼν τίμιοι, ἐπηρμένοι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

38 מפי אלהא לא תפוק בישתא אלהן על ברת קלא רמיזא בנין חטופין דאתמליאת ארעא
39 ובעדן דבעי למגזר טבא בעלמא מן פום קודשא נפקא : מה ממון ישבח אנש דיחוב
40 על יומי חיוהי גברא רשיעא על חובוהי : נבלוש אורחנא ונבקר ונתוב בתיובתא קדם
41 יי : נטול לבבנא בריר ונרמי חטוף וגזילן מן ידנא ונתוב קדם יי אלהנא שכנתיה בשמי
42 מרומא : נחנא מרדנא סרבנא ומן בגלל דלא הדרנא לותך אנת לא שבקת : טללתא
43 עלנא ברגז ורדפתנא בגלותא קטלתא ולא חסתא : טללתא שמיא בענני יקרא דילך
44 מן בגלל דלא תעבר לותך צלותנא : טלטולין ורטושין שויתא יתנא בגו עממיא :
45 פתחו עלנא פומהון כל בעלי דבבנא למגזר עלנא גזירין בישין : ואימתא וזיעא הוה
46 לנא מנהון רתיתא ותבירא : היך יבלין דמיא זלגת עיני דמען על תבירא דכנישת עמי :
47 עיני זלגת דמען ולא תשתוק מלמבכי מדלית פאג עקתי וממלל תנחומין לי : עד כדו
48 דיסתכי ויחזי עולבני יי מן שמיא : בכותא דעיני אסתקפת למרע נפשי על חורבן פלכי
49 דעמי ונוול בנתא דירושלם קרתי : כמנא כמנו לי היך כצפרא בעלי דבבי על מגן :
50 עברו בגובא חיי ורגמו אבנא בי : שטו מיא על רישי אמרית במימרי אתגזרית מן עלמא :
51 צליתי לשמך יי מן גוב ארעיתא : צלותי קבלתא בזמנא ההיא וכען לא תכסי אדנך
52 מלקבלא צלותי לארוחותני בגין בעותי : קרבתא מלאכא לשיזבותי ביום דצליתי לך
53 אמרת במימרך לא תדחל : נציתא יי לעבדין מצותא לנפשי פרקתא מן ידיהון חיי :
54 חזיתא יי סרוך דסריבו לי דון דיני : גלי קדמך כל נקמתהון כל מזמתהון עלי : שמיע
55 קדמך כסופהון יי כל מזמתהון עלי : ספות קמין עלי והגיונהון עלי כל יומא : מיתבהון
56 וקימתהון אסתכל אנא זמרהון : תתיב להון גמולא בישא יי כעובדי ידיהון : תתן
57 להון תבירות לבא ושלהובית שלהי להון : תרדפינון ברוגזא ותשיצינון מתחות
58 שמי מרומא דיי :

ד

1 היכדין עמא דהב בית מקדשא אשתני זיו פלטין ברת משחין מרגלאין קדישין
2 ברש כל מחוזין : בני ציון יקירין דמתילין איקונהון לדהב טב היכדין הוו עממין
מסאבין מחתין יתהון מקבל ערסיהון ומסתכלין בהון בגין דילדן נשיהון בנין שפיריא
כשפרהון ואתחשבו לגבין דחסף עובדי ידי פחרא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ex ore Dei non egredietur malū, niſi per filiā vocis manifeſtatā ob rapinas quib⁹ impleta eſt terra: & in tempore quo quærit decernere bonū in ſeculo, ex ore ſanctiſſimi egreditur. Quā utilitatē inveniet homo qui peccaverit *in dies* vitæ ſuæ, vir impius ſuper peccato ſuo? NUN. Scrutemur vias noſtras & inveſtigemus, et revertamur in pœnitentiā corā Dño. Levem⁹ corda noſtra munda, & projiciam⁹ rapinā & deprædationē de manib⁹ noſtris: & revertamur corā Dño Deo noſtro, cuj⁹ majeſtas habitat in cœlis excelſis. Nos prævaricati ſum⁹ & rebelles fuim⁹; & propterea quòd non ſum⁹ converſi ad te, non dimiſiſti [*peccata noſtra.*] SAMECH. Obūbrâſti nos in ira, & perſecut⁹ es nos in captivitate, occidiſti & non pepercisti. Operuiſti cœlos nubib⁹ gloriæ tuæ, ut nō tranſiret ad te oratio noſtra. Tranſmigrantes & derelictos poſuiſti nos inter populos. PE Aperuerunt ſup nos os ſuū omnes inimici noſtri, ut decernerent contra nos decreta mala. Timor & commotio fuit nobis ab eis, tremor & contritio. Sicut rivi aquarū, defluunt oculi mei lachrymis propter excidiū cœt⁹ populi mei. AIN. Ocul⁹ me⁹ defluxit lachrymis, et nō quieſcit à fletu, eò quòd nō ſit qui remiſſā faciat tribulationē meā; & loquatur conſolationes mihi. Donec aſpiciat & videat injuriā meā Dñs de cœlis. Flet⁹ oculorū meorū fuit occaſio ut malè haberet anima mea propter deſtructionē provinciæ populi mei, & deturpationē filiarū Jeruſalē civitatis meæ. SADE. Inſidias ſtruxerūt mihi, ſicut paſſeri, inimici mei fruſtra. Tranſiit in lacū vita mea: & projecerunt lapidē in me. Inundaverunt aquæ ſup caput meū: dixi in verbo meo, Succiſ⁹ ſū à ſeculo. COPH. Oravi in nomine tuo Dñe de lacu inferiori. Orationē meā ſuſcepiſti in tempore illo: et nunc ne obtures aurē tuā ad ſuſcipiendā orationē meā, ut in ſpatiū deducas me propter deprecationē meā. Applicaſti angelū ut liberaret me in die quâ oravi te: dixiſti in verbo tuo, Ne timeas. RES. Contendiſti Dñe cū agentibus litē in animā meā: redemiſti de manib⁹ eorū vitā meā. Vidiſti Dñe exactionē quā uſi ſunt contra me: judica judiciū meū. Manifeſta eſt corā te omnis vindicta eorū, omnis cogitatio eorū contra me. SIN Auditū eſt corā te opprobriū eorū, Dñe: omnis cogitatio eorū contra me. Labia inſurgentiū contra me & meditationes eorū contra me tota die. Seſſionē eorū et reſurrectionē eorū reſpice: ego ſum pſalm⁹ eorū. THAU Reddes eis retributionē malā Dñe juxta opera manuū ſuarū. Dabis eis contritionē cordis, & deſat [illegible] tua [illegible] illos. Perſequeris eos in furore, & conſumes eos de ſub [illegible] Domine.

CAP. IV. ALEPH.

Quomodò obſcuratū eſt aurū [illegible] mutatus eſt ſplendor [illegible] BETH. [illegible] optimo, quomodò [illegible] populi [illegible] aſpicientes eos ut pa[illegible] uxores eorum filios pulchros juxta pulchritudinem eorum [illegible] opera manuum figuli

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܢ ܦܘܡܗ ܕܡܪܝܡܐ. ܠܐ ܢܦܩܢ ܒܝܫܬܐ ܘܛܒܬܐ. * ܡܢܐ ܡܬܪܥܡ ܒܪܢܫܐ ܚܝܐ
ܘܓܒܪܐ. ܥܠ ܚܛܗܘܗܝ. * * ܢ * ܢܒܨܐ ܐܘܪܚܬܢ. ܘܢܒܩܝܗܝܢ. ܘܢܬܦܢܐ ܠܘܬ ܡܪܝܐ
* ܢܫܩܘܠ ܠܒܢ ܥܠ ܐܝܕܝܢ. ܠܘܬ ܐܠܗܐ ܕܒܫܡܝܐ. * ܚܢܢ ܐܣܟܠܢ ܘܡܪܡܪܢ. ܘܐܢܬ ܠܐ
ܚܣܬ. * * ܣ * ܛܠܠܬ ܒܪܘܓܙܟ ܘܪܕܦܬܢ. ܘܩܛܠܬܢ ܘܠܐ ܚܣܬ. * ܛܠܠܬ ܒܥܢܢ
ܘܐܥܒܪܬ ܨܠܘܬܢ. * ܣܚܘܦܐ ܘܡܣܠܝܐ ܫܘܝܬܢ. ܒܝܬ ܥܡܡܐ. * * ܥ * ܥܝܢܝ ܕܡܥܬ
ܘܠܐ ܫܠܝܐ. ܡܢ ܕܠܝܬ ܢܝܚܐ. * ܥܕܡܐ ܕܢܚܘܪ ܘܢܚܙܐ ܡܪܝܐ ܡܢ ܫܡܝܐ. * ܥܝܢܝ ܥܠܬ
ܥܠ ܢܦܫܝ. ܡܢ ܕܟܠܗܝܢ ܒܢܬ ܡܕܝܢܬܝ. * * ܦ * ܦܬܚܘ ܥܠܝܢ ܦܘܡܗܘܢ
ܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܢ. * ܕܚܠܬܐ ܘܪܬܝܬܐ ܗܘܬ ܠܢ. ܦܚܬܐ ܘܬܒܪܐ. * ܦܠܓܐ ܕܡܝܐ ܐܪܕܝ
ܥܝܢܝ ܥܠ ܬܒܪܐ ܕܒܪܬ ܥܡܝ. * * ܨ * ܨܝܕܐ ܨܕܘܢܝ ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܒܥܠܕܒܒܝ ܡܓܢ
* ܨܡܬܘ ܒܓܘܒܐ ܚܝܝ. ܘܫܕܘ ܒܝ ܟܐܦܐ. * ܨܦܘ ܡܝܐ ܥܠ ܪܫܝ. ܐܡܪܬ ܐܬܓܙܪܬ
* * ܩ * ܩܪܝܬ ܫܡܟ ܡܪܝܐ ܡܢ ܓܘܒܐ ܬܚܬܝܐ. * ܩܠܝ ܫܡܥܬ. ܠܐ ܬܟܣܐ ܐܕܢܟ
ܐܠܐ ܐܪܘܚ ܠܝ ܘܦܨܝܢܝ. * ܩܪܒܬ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܝܬܟ. ܘܐܡܪܬ ܠܝ ܠܐ ܬܕܚܠ. * * ܪ * ܪܒܝܬ
ܡܪܝܐ ܕܝܢܐ ܕܢܦܫܝ ܘܦܪܩܬ ܚܝܝ. * ܚܙܝܬ ܡܪܝܐ ܫܘܥܒܕܝ ܘܕܢܬ ܕܝܢܝ. * ܚܙܝܬ ܟܠܗ
ܢܩܡܬܗܘܢ. ܘܟܠܗܝܢ ܡܚܫܒܬܗܘܢ ܥܠܝ. * * ܫ * ܫܡܥܬ ܚܣܕܗܘܢ ܡܪܝܐ. ܘܟܠܗܝܢ ܡܚܫܒ
ܥܠܝ. * ܣܦܘܬܐ ܕܩܝܡܝܢ ܘܪܢܝܗܘܢ ܥܠܝ. ܟܠܗ ܝܘܡܐ. * ܡܘܬܒܗܘܢ ܘܡܩܝܡܗܘܢ
ܚܙܝܬ ܐܢܐ ܡܢ ܪܢܝܗܘܢ. * * ܬ * ܬܦܪܘܥ ܠܗܘܢ ܦܘܪܥܢܐ. ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܥܒܕ
ܐܝܕܝܗܘܢ. * ܬܬܠ ܠܗܘܢ ܬܘܪܐ ܕܠܒܐ. ܘܡܚܘܬܟ ܬܪܕܦ ܐܢܘܢ. * ܘܬܘܒܕ ܒܪܘܓܙܟ
ܐܢܘܢ. ܡܢ ܬܚܝܬ ܫܡܝܟ ܡܪܝܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *
* * ܐ * ܐܝܟܢܐ ܐܬܒܣܝ ܕܗܒܐ ܛܒܐ. ܫܢܐ ܨܒܬܐ ܫܦܝܪܐ. ܘܐܫܬܕܝܘ ܟܐܦܐ ܕܩܘܕܫܐ
ܒܪܝܫ ܟܠܗܘܢ ܫܘܩܐ. * * ܒ * ܒܢܝ ܨܗܝܘܢ ܕܝܩܝܪܝܢ ܗܘܘ ܡܢ ܟܐܦܐ ܛܒܬܐ
ܐܝܟܢܐ ܐܬܚܫܒܘ ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܚܨܦܐ. ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝ ܦܚܪܐ.

Ex ore Altiſſimi nonne prodierũt mala & bona? 38
Quid ſentit homo vivens & vir de peccatis 39
ſuis? Scrutemur ac publicemus vias noſtras, 40
& revertamur ad Dñm. Portem⁹ corda noſtra 41
ſuper manus noſtras ad Deum in cœlum. Nos 42
iniquè egimus, & exaſperavimus te; & tu non
pepercisti. Irâ tuâ obruiſti & perſecut⁹ es nos, 43
peremiſti, nec uſus es clementiâ. Obtexiſti 44
nube tuâ, & rejeciſti orationẽ noſtrã. Everſos 45
& execrabiles reddidiſti nos inter gentes. Oculus 46
meus inceſſanter lachrymatur, quia nullum
eſt refrigeriũ, Donec aſpiciat & intueatur 47
Dñs de cœlo. Oculus meus exagitatus eſt ſup 48
animã meã, propter omnes filias civitatũ mearũ.
Aperuerunt contra nos os ſuum omnes 49
inimici noſtri. Timor & tremor evenit nobis, 50
fovea & contritio. Rivos aquarum effuderunt 51
oculi mei propter contritionem filiæ populi
mei. Venando venati ſunt me, ſicut aviculã, 52
inimici mei immeritò: Silentio involverunt 53
in fovea vitã meã, jaculati ſunt in me lapides.
Exundaverunt aquæ ſuper caput meũ: dixi, 54
Procul amotus ſum. Invocavi nomẽ tuũ Dñe, 55
è fovea infima. Vocem meã audîſti: ne decli- 56
nes aurẽ tuam, ſed refocilla me, & libera me.
Appropinquâſti quo die invocavi te, et dixiſti 57
mihi, Ne timeto. Defendiſti Dñe cauſam animæ 58
meæ, & ſervâſti vitam meam. Vidiſti Dñe 59
depreſſionem meam, & egiſti cauſam meam.
Vidiſti omnem vindictam eorum, & omnia 60
quæ machinati ſunt contra me. Audiſti probrum 61
eorum Dñe, & omnia quæ cogitaverunt
contra me, Labia inſurgentia & meditantia 62
adverſùm me totâ die. Seſſionem & 63
ſurrectionem eorum deprehendi ego ex eorum
meditatione. Reddes illis retributionem 64
eorum Dñe: ſecundùm opus manuũ ipſorum,
Dabis eis triſtitiã cordis: & plaga tua Perſequatur 65
eos, & in ira tua perdes eos de ſub 66
cœlis tuis Domine.

CAP. IV.

Quomodo contemnitur aurum optimum, 1
mutatur color pulcherrimus, & disjiciuntur
lapides ſanctuarii per compita omnium platearum?
Filii Sionis qui pretioſiores erant 2
lapidibus optimis, quomodo reputantur pro
vaſis fictilibus, opere manuum figuli?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* أليس من فم العلي تخرج السرور والخير * لماذا يتذمر الانسان الحي والرجل من اجل
خطيته * فتش طريقنا واستفحصت * نرجع * حتي ناخذ قلوبنا الي العلو مع ايدينا و
السماء * اخطانا نافقنا ولم تغفر * ظللت علينا بالغضب وطردتنا * قتلتنا ولم تشفق * ستر
ذاتك بسحابة من اجل صلاتي لتغمض عيني فانصرف * وضعتنا في وسط الشعوب * فتح
علينا فمها جميع اعدائنا * خوف وغضب صار لنا * وسايح وانكسار وفيض المياه * عيني
تنكسر على انكسار ابنة شعبي * عيني ابتلعت * ولست اسكت * من ان لا يكون له
نقطة * الي ان يطلع الرب وينظر من السماء * عيني على الغمة * لا على نفسي * على جميع
بنات المدينة * الصيادون اصطادوني مثل عصفور * اعداي مجانا * اماتوا حياتي في جب
وضعوا على حجرا * انهرق الماء على راسي * قلت اقصيت MS.Oxon. * [دعوت باسمك يا رب
وسمعت صوتي من اسفل الجب * لا تبعد سماعك عني * ولكن فرج وخلصني * دنوت يو
دعوتك * وقلت لي لا تخف] * دنت يا رب ظلامات نفسي * انقذت حياتي * نظرت يا رب اضطرابي
حكمت حكمي * نظرت كل انتقامهم * وجميع فكرهم في * سمعت تعييرهم * جميع افكارهم
على * شفاه القائمين على * وتلاوتهم على النهار كله * جلسهم وقومهم * انظر على عينيهم
* واعطهم مكافاة يا رب كاعمال ايديهم * اجرهم تعب القلب ملازما * انت تطاردهم بالغضب
وتبيدهم من تحت السماء يا رب * الفصل الرابع * الرابع من المراثي *
* كيف يسود الذهب * ويتبدل الفضة الخالصة * تتبدد الحجارة المقدسة على رو
جميع المخارج * بنو صهيون الكرام المرتفعون بالذهب * كيف حسبوا اوعية خزفية عمل
يدي القرموصي *

Nónne ex ore Altiſſimi prodeunt mala & 38
bonum? Cur murmurat homo vivens & 39
vir, propter peccatum ſuum? Pervestigata 40
eſt via noſtra, & examinata. Convertamur,
ut feramus corda noſtra in 41
altum, unà cum manibus noſtris in cœlum.
Peccavimus, impiè geſſimus; & non parceres? 42
Obruiſti nos in ira, & perſecutus 43
es nos, occidiſti nos; & non parceres?
Velâſti teipſum nube, propter orationem 44
meam; ut clauderes oculos meos & perirem.
Poſuiſti nos in medio gentium. 45

Præponit literam Phe Literæ Ain, ut in Hebr. & Græco.

Aperuerunt contra nos os ſuum omnes 49
inimici noſtri. Timor & ira evenit nobis: 50
arrogantia, & contritio, & eluvies aquarum.
Oculus meus frangitur, propter fra- 51
ctionem filiæ populi mei. Oculus meus ab- 46
ſorptus eſt, & non tacebo, eò quòd nullum
ſit ei intervallum: Donec aſpiciat Domi- 47
nus, & videat de cœlo. Oculus meus in 48
triſtitia verſatur, *non propter meipſum,*
ſed propter omnes filias urbis. Venatores 52
venati ſunt me tanquam aviculam. Inimici
mei gratis Morte affecerunt vitam meam 53
in fovea, poſuerunt ſuper me lapidem.
Effuſa eſt aqua ſuper caput meum: dixi, 54
Exterminatus ſum. [MS. Ox. *Invocavi* 55
nomen tuum Domine, & exaudîſti vocem
meam de fovea infima. Ne amoveas au- 56
rem tuã à me, ſed refocilla & libera me.
Appropinquâſti quo die invocavi te, & 57
dixiſti mihi; Ne timeto.] *Judicâſti O Do-* 58
mine oppreſſiones animæ meæ, ſervâſti vi-
tam meam. Vidiſti O Domine perturbatio- 59
nes meas, egiſti cauſam meam. Vidiſti to- 60
tam ultionem eorum, & omnes cogitatio-
nes eorum de me. Audîſti opprobrium 61
eorum, omnes cogitationes eorum adver-
ſùm me, Labia inſurgentium contra me, 62
& meditationẽ eorum contra me totâ die,
Seſſionem eorum, & reſurrectionem eorũ. 63
Inſpice ſuper oculos eorum, Et redde illis 64
retributionem O Domine, ſecundùm opera
manuum ſuarum. Repende illis laborem 65
cordis inſeparabilẽ. Tu terrebis eos in ira, 66
& perdes eos de ſub cœlo O Domine.

CAP. IV.

Lamentatio quarta.

Quomodo nigreſcit aurum, & immutatur 1
argentũ purum, diſperſi ſunt lapides
ſancti ad initium omnium compitorum?
Filii Sionis honorandi, auro eminen- 2
tes, quomodo reputati ſunt vaſa teſtacea,
opus manuum figuli?

mei populi filia .suos catulos lactaverunt, mammam *solverunt* *draco* Etiam
3 גם־תנין חלצו שד הניקו גוריהן בת־עמי
ejus *palatum ad* lactentis lingua Adhæsit .deserto in *ululæ* veluti *crudelis in*
4 לאכזר כי ענים במדבר: דבק לשון יונק אל־חכו
Vescentes .eis non *frangens* ,panem petierunt parvuli *: siti in*
5 בצמא עוללים שאלו לחם פרש אין להם: האכלים
sunt amplexati, coccinũ super *nutriti* : plateis in *sunt desolati* , *delicias ad*
למעדנים נשמו בחוצות האמנים עלי תולע חבקו
, Sedom *peccato præ* , mei populi filiæ *iniquitas* fuit *ingens* Et .stercora
6 אשפתות: ויגדל עון בת־עמי מחטאת סדם
fuerunt *Mundi* .*manus ea in resederunt* non & , repentè *quasi* *subversæ*
7 ההפוכה כמו־רגע ולא־חלו בה ידים: זכו
Sapphir, margaritis præ corpore rubuere: lacte *præ canduerunt*, nive *præ* ej⁹ Nazaræi
נזיריה משלג צחו מחלב אדמו עצם מפנינים ספיר
sunt agniti non ,eorum forma nigredine præ est Obscurata .eorum excisio
8 גזרתם: חשך משחור תארם לא נכרו
fuit , aruit ; eorum *ossi* *super* eorum pellis *se agglutinavit* : plateis in
בחוצות צפד עורם על־עצמם יבש היה
isti quia ;fame interfectis *præ* gladio interfecti fuerũt *Felices* .lignũ tanquã
9 כעץ: טובים היו חללי־חרב מחללי רעב שהם
misericordium mulierum Man⁹ .agrorum *frugibus à* perfossi fluxerunt
10 יזבו מדקרים מתנובת שדי: ידי נשים רחמניות
.mei populi filiæ cõtritione in eis comedendũ ad fuerũt: suos natos coxerũt
בשלו ילדיהן היו לברות למו בשבר בת־עמי:
ignẽ succendit &; sui furoris iram effudit, suam iram Dominus Complevit
11 כלה יהוה את־חמתו שפך חרון אפו ויצת־אש
universi &, terræ reges crediderunt Non .ejus fundamenta *exedit* &, Sijon in
12 בציון ותאכל יסודתיה: לא האמינו מלכי־ארץ וכל
.Jerusalaim portas per inimic⁹ & ,hostis ingrederetur ꝙ ,orbis habitatores
ישבי תבל כי יבא צר ואויב בשערי ירושלם:
effundentium ; ej⁹ sacerdotũ iniquitates, ej⁹ prophetarum peccata Propter
13 מחטאת נביאיה עונות כהניה השפכים
se polluerũt, plateis in cæci se Moverunt .justorum sanguinẽ ej⁹ *interiori* in
14 בקרבה דם צדיקים: נעו עורים בחוצות נגאלו
,*immunde* Recedite .eorum vestimenta *in tangent poterunt non in* , sanguine in
15 בדם בלא יוכלו יגעו בלבשיהם: סורו טמא
etiam, *avolarunt* quippe: tangatis ne ,recedite ,recedite : eos ad clamaverũt
קראו למו סורו סורו אל־תגעו כי נצו גם־
Domini *Facies* .*hospitari* addent Non, gentibus in dixerunt: sunt commoti
16 נעו אמרו בגוים לא יוספו לגור: פני יהוה
senum, *susceperunt* non sacerdotum *facies*; eos *aspicere* addet non, eos divisit
חלקם לא יוסיף להביטם פני כהנים לא נשאו זקנים
nostrũ auxilium ad nostri oculi defecerunt nobis *Adhuc*. sunt miserti non
17 לא חננו: עודינה תכלינה עינינו אל־עזרתנו
sunt Venati .*salvabit* non gentẽ *ad speculati sum⁹* nostra *speculatione* in : *vanitatem*
18 הבל בצפיתנו צפינו אל־גוי לא יושע: צדו
, noster finis appropinquavit : nostras plateas per *eundo ab* ,nostros gressus
צעדינו מלכת ברחבתינו קרב קצנו
fuerunt *Leves* .noster finis venit quia , nostri dies sunt completi
19 מלאו ימינו כי־בא קצנו: קלים היו
,nos sunt persecuti montes super ; cœlorum aquilis *præ* nostri persecutores
רדפינו מנשרי שמים על־ההרים דלקנו
.nobis sunt insidiati deserto in
במדבר ארבו לנו:

Versio VULG. LAT.

3 *Ghimel.* Sed & lamiæ nudaverũt
mammã, lactaverũt catulos suos:
filia populi mei crudelis, quasi
4 struthio in deserto. *Daleth.* Adhæsit
lingua lactentis ad palatum
ej⁹ in siti: parvuli petierunt panẽ,
& non erat qui frangeret eis.
5 *He.* Qui vescebantur voluptuosè,
interierunt in viis: qui nutriebantur
in croceis, amplexati sunt
6 stercora. *Vau.* Et major effecta est
iniquitas filiæ populi mei peccato
Sodomorum, quæ subversa est in
momento, & non ceperunt in ea
7 man⁹. *Zain.* Candidiores Nazaræi
ejus nive, nitidiores lacte, rubicundiores
ebore antiquo, sapphiro
8 pulchriores. *Heth.* Denigrata
est sup carbones facies eorum,
& non sunt cogniti in plateis:
adhæsit cutis eorum ossib⁹:
aruit, & facta est quasi lignum.
9 *Theth.* Melius fuit occisis gladio,
quàm interfectis fame: quoniam
isti extabuerũt consumpti à sterilitate
10 terræ. *Jod.* Man⁹ mulierum
misericordiũ coxerũt filios suos:
facti sunt cib⁹ earum, in contritione
11 filiæ populi mei. *Caph.* Complevit
Dñs furorem suum, effudit
iram indignationis suæ: & succendit
ignẽ in Sion, & devoravit
12 fundamenta ejus. *Lamed.* Non
crediderunt reges terræ, & universi
habitatores orbis, quoniam
ingrederetur hostis & inimic⁹ p
13 portas Jerusalẽ: *Mem.* Propter
peccata prophetarũ ejus, & iniquitates
sacerdotũ ejus, qui effuderunt
in medio ejus sanguinem
14 justorũ. *Nun.* Erraverunt cæci in
plateis, polluti sunt in sanguine:
cùmque non possent, tenuerunt
15 lacinias suas. *Samech.* Recedite
polluti, clamaverunt eis: recedite,
abite, nolite tangere: jurgati
quippe sunt, & commoti dixerũt
inter Gentes; Non addet ultrà ut
16 habitet in eis. *Phe.* Facies Dñi divisit
eos, non addet ut respiciat
eos: facies sacerdotũ non erubuerunt,
neque senum miserti sunt.
17 *Ain.* Cùm adhuc subsisteremus,
defecerunt oculi nostri ad auxilium
nostrũ vanũ, cùm respiceremus
attenti ad gentẽ, quæ salvare
18 non poterat. *Sade.* Lubricaverũt
vestigia nostra in itinere platearũ
nostrarum, appropinquavit finis
noster: completi sunt dies nostri,
19 quia venit finis noster. *Coph.* Velociores fuerunt persecutores nostri aquilis cœli: super montes persecuti sunt nos, in deserto insidiati sunt nobis.

Vers. GRÆ LXX. Interp. cum Transl. LAT.

3 ΓΙΜΕΛ. Καί γε δράκοντες ἐξέδυσαν μαστοὺς,
ἐθήλασαν σκύμνοι αὐτῶν· θυγατέρες λαοῦ
μου εἰς ἀνίατον, ὡς στρουθίον ἐν ἐρήμῳ.
4 ΔΑ'ΛΕΘ. Ἐκολλήθη ἡ γλῶσσα θηλάζοντος
πρὸς τὸν φάρυγγα αὐτοῦ ἐν δίψει, νήπια
ᾔτησαν ἄρτον, (γ) ὁ διακλῶν οὐκ ἔστιν αὐτοῖς.
5 Η. Οἱ (δ) ἔσθοντες τὰς τρυφὰς, ἠφανίσθησαν
ἐν ταῖς ἐξόδοις, οἱ τιθηνούμενοι ἐπὶ (ε) κόκκων,
6 περιεβάλλοντο κοπρίας. ΟΥΑΥ. Καὶ ἐμεγαλύνθη
(ϛ) ἀνομία θυγατρὸς λαοῦ μου ὑπὲρ
ἀνομίας Σοδόμων τῆς κατεστραμμένης ὥσπερ
σπουδῇ, καὶ οὐκ ἐπόνεσαν ἐν αὐτῇ χεῖρας.
7 ΖΑΙ'Ν. Ἐκαθαριώθησαν Ναζιραῖοι αὐτῆς
ὑπὲρ χιόνα, ἔλαμψαν ὑπὲρ (ζ) γάλα, ἐπυρρώθησαν,
ὑπὲρ λίθου σαπφείρου τὸ ἀπόσπασμα
8 αὐτῶν. ΗΘ. Ἐσκότασεν ὑπὲρ ἀσβόλην
τὸ εἶδος αὐτῶν, οὐκ ἐπεγνώσθησαν ἐν
ταῖς ἐξόδοις· ἐπάγη δέρμα αὐτῶν ἐπὶ τὰ (η)
ὀστέα αὐτῶν, ἐξηράνθησαν, ἐγενήθησαν
9 ὥσπερ ξύλον. ΤΗ'Θ. Καλοὶ ἦσαν οἱ τραυματίαι
ῥομφαίας, ἢ οἱ τραυματίαι λιμοῦ· ἐπορεύθησαν
ἐκκεκεντημένοι ἀπὸ (ϛ) γεννημάτων
10 ἀγρῶν. ΙΩΔ. Χεῖρες γυναικῶν οἰκτιρμόνων
ἥψησαν τὰ παιδία αὐτῶν, ἐγενήθησαν
εἰς βρῶσιν αὐταῖς, ἐν τῷ συντρίμματι
11 τῆς θυγατρὸς τοῦ λαοῦ μου. ΧΑ'Φ.
Συνετέλεσε κύριος θυμὸν αὐτοῦ, ἐξέχεε
(θ) θυμὸν ὀργῆς αὐτοῦ, καὶ ἀνῆψε πῦρ ἐν
Σιὼν, καὶ κατέφαγε τὰ θεμέλια αὐτῆς.
12 ΛΑ'ΜΕΔ. Οὐκ ἐπίστευσαν βασιλεῖς γῆς,
πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν οἰκουμένην, ὅτι
εἰσελεύσεται ἐχθρὸς καὶ ἐκθλίβων διὰ τῶν πυλῶν
13 Ἰερουσαλήμ. ΜΗΜ. Ἐξ ἁμαρτιῶν
προφητῶν (ι) αὐτῆς, ἀδικιῶν ἱερέων αὐτῆς,
τῶν ἐκχεόντων αἷμα δίκαιον ἐν μέσῳ αὐτῆς.
14 ΝΟΥΝ. Ἐσαλεύθησαν ἐγρήγοροι αὐτῆς
(κ) ἐν ταῖς ἐξόδοις, ἐμολύνθησαν ἐν αἵματι,
ἐν τῷ μὴ δύνασθαι αὐτοὺς, (λ) ἥψαντο
15 ἐνδυμάτων αὐτῶν. ΣΑ'ΜΕΧ. Ἀπόστητε
(μ) ἀκαθάρτων, καλέσατε αὐτοὺς, ἀπόστητε,
ἀπόστητε, μὴ ἅπτεσθε, ὅτι ἀνήφθησαν, καί
γε ἐσαλεύθησαν· εἴπατε ἐν τοῖς ἔθνεσιν, Οὐ
16 μὴ προσθῶσι τοῦ παροικεῖν. ΑΙ'Ν. Πρόσωπον
κυρίου μερὶς αὐτῶν, οὐ προσθήσει ἐπιβλέψαι
αὐτοῖς. πρόσωπον ἱερέων οὐκ ἔλαβον,
(ν) προφήτας οὐκ ἠλέησαν.
17 ΦΗ. Ἔτι ὄντων ἡμῶν ἐξέλιπον οἱ ὀφθαλμοὶ
ἡμῶν, εἰς τὴν βοήθειαν ἡμῶν μάταια
ἀποσκοπευόντων ἡμῶν. ΤΣΑΔΗ'.
Ἀπεσκοπεύσαμεν εἰς ἔθνος οὐ σῶζον, ἐθηρεύσαμεν
μικροὺς ἡμῶν, τοῦ μὴ (ξ) πορεύ-
18 εσθαι ἐν ταῖς πλατείαις ἡμῶν. ΚΩ'Φ. Ἤγγικεν
ὁ καιρὸς ἡμῶν, ἐπληρώθησαν αἱ ἡμέραι ἡ-
19 μῶν, πάρεστιν ὁ καιρὸς ἡμῶν. Κοῦφοι ἐγένοντο
οἱ διώκοντες ἡμᾶς ὑπὲρ ἀετοὺς οὐρανοῦ,
ἐπὶ τῶν ὀρέων (ο) ἐξέπτησαν, ἐν ἐρήμῳ
ἐνήδρευσαν ἡμᾶς.

GIMEL. Et quidem dracones nudaverunt mammas, lactaverunt catulos suos: filiæ populi mei in insanabile, sicut passer in deserto. DALETH. Adhæsit lingua lactentis ad palatum ejus in siti, parvuli petierunt panem, (c) qui frangat, non est eis. HE. Qui vescebantur deliciis, perierunt in exitibus: qui nutriebantur super coccinea, amplexati sunt stercora. VAU. Et magnificata est iniquitas filiæ populi mei super iniquitate Sodomorum, quæ subversa est quasi (d) repente: & non laboraverunt in ea (e) manibus. ZAIN. Mundati sunt Nazaræi ejus (f) super nivem, splenduerunt super lac, (g) rubuerunt, super lapidem Sapphiri excisio eorum. HETH. Obtenebrata est super fuliginem species eorum: non sunt cogniti in plateis: adhæsit pellis eorum super ossa eorum: aruerunt, facti sunt quasi lignum. TETH. Boni fuerunt occisi gladio, quàm occisi per famem: abierunt perfossi à frugibus agrorum. JOD. Manus mulierum misericordium (h) coxerunt filios suos: facti sunt in escam illis, in contritione filiæ populi mei. CAPH. Complevit Dominus furorem suum: effudit indignationem iræ suæ: & succendit ignem in Sion, & devoravit fundamenta ejus. LAMED. Non crediderunt reges terræ, universi habitatores orbis, quoniam ingredietur inimicus, et tribulans per portas Hierusalem. MEM. Propter peccata prophetarũ ej⁹, iniquitates sacerdotum ejus, effundentium sanguinem justum in medio ejus. NUN. (i) Commoti sunt vigiles ejus in plateis: polluti sunt in sanguine: cum ipsi non possent, (k) tetigerunt vestimenta eorum. SAMECH. Recedite ab immundis, vocate eos, recedite, recedite, nolite tangere: quia succensi sunt, & etiam commoti sunt: dicite in gentib⁹, Non addent habitare. AIN. Facies Domini pars eorũ, non addet respicere eos. Facies sacerdotũ non acceperunt, (l) prophetarũ miserti non sunt. PHE. Cum adhuc subsisteremus, defecerunt oculi nostri ad auxiliũ nostrũ vana speculantibus nobis. TSADE. Respexim⁹ in gentem non salvantem: (m) venati sum⁹ parvulos nostros, ne irent in plateis nostris. COPH. Appropinquavit tempus nostrum: completi sunt dies nostri: adest (n) temp⁹ nostrum: Leves facti sunt persequutores nostri super aquilas cœli: super montes (o) evolaverunt: in deserto insidiati sunt nobis.

MS.A. (γ) καὶ ὁ κλῶν (δ) ἐσθίοντες τὰς τροφὰς, (ε) κόλπων, περιέλαβον (ϛ) ἡ ἀνομία (ζ) γάλα ἐπυρώθησαν, ὑπὲρ λίθους (η) ὀστᾶ (ϛ) γεννημάτων (θ) ὀργὴν θυμοῦ αὐτοῦ, (ι) αὐτῶν, (κ) ἐπὶ τὰς (λ) ἥψατο (μ) ἀπὸ ἀκαθάρτων, (ν) πρεσβύτας (ξ) παραπορεύεσθαι (ο) ἐξήφθησαν, ἐπὶ τῶν ὀρέων ἐνήδρευσαν ἡμᾶς.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 אף בנתא דישראל מפנקתא לבני עממיא דדמין לחורמנא טלען תדיהן ורבי כנשתא
4 דעמי מסירין לאכזראין ואמהון ספדן עליהון כנעמיא במדברא: ארביק לשן עולמא
5 למוריניה בצהותא טליא תבעו לחמא מושיט לית להון: דהוו אכלין תפנוקין אשתממו
6 במחוזין דאתרביאו על צבע זהרי נפיפו קקלתן: וסגית חובת כנשתא דעמי מן חובת
סדום דאתהפכת כשעתא ולא שריאו בה נביאיא לאתנבאה לאהדרותה בתיובתא:
7 הוו ברירן נזירהא יתיר מתלגא שעעו יתיר מן חלבא סמיקו חיזו יתיר מן יוהרין
8 וכשבזיזא פרצופיהון: חשך מן אוכמתא דגלותא רויהון לא אשתמודעו במחוזין
9 אדק משכהון על גרמהון פריך הוה כקיסא: מעלי הוו קטילי סיפא יתיר מן קטילי
כפן דקטילי סיפא דיבין כד אנון מבזעין בכריסיהון מן מה דאכלו מעלל חקלא
10 ונפיחי כפנא פריק כריסהון מן מיכלא: ידי נשיא דהון מרחמן על מסכנין בשילו
11 עולמיהן הוו למסעד להון ביום תבר די אתברת כנשתא דעמי: ספ יי ית חמתיה
12 שרא על ירושלם ית תקוף רוגזיה ואסיק באור אשתא בציון ואכלת אשותהא: לא הוו
מהימנין מלכות ארעא וכל דיירי תבל ארום יעול נבוכדנצר רשיעא ונבוזראדן בעיל
13 דבבא לנכסא עמא בית ישראל בתרעיא דירושלם: ענת מדת הדין וכן אמרת לא
הות כל דא אלהן מחובת נביאהא דמנבן לה נביאות שקרא ומעוית כהנהא דאסיקו
14 קטורת בוסמין לטעותא ואנון גרמו לאתאשד בגוה דם זכאין: אתטלטלו עורין
במחוזין אטנפו בדם קטולין בחרבא ועל דלא הוו יכלין למחמי קריבו בלבושיהון:
15 זורו מסאבא קרו עממיא זורו זורו לא תקרבון בהון ארום אתקוטטו אף אתטלטלו
16 אמרו במהויהון בשלותהון דביני עממיא לא יוסיפון למדר: מן קדם אפי יי אתפלינו
לא יוסיף לאסתכלא בהון בנין כן אומיא רשיעיא אפי כהניא לא סברו ועלוי סביא לא
17 חסו: עוד ספן עיננא לאסתכלא לסיענא דהוינא מתינן לרומאי ואתהפך לנא להבלו
18 בסכותנא דאסתכינא לרומאי דאנון עמא דלא יפרוק: הגנן צדין שבילנא מלמהך
19 לרוחצן בפלטיתנא אמרנא קרב סופנא אתמליאו יומנא ארום מטא סופנא: קלילין
הוו רדפנא יתיר מנשרי שמיא על טוריא ארדליקו יתנא במדברא כמנו לנא:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

GHIMEL. Filiæ quoque Israel deliciosæ filiis populorum, qui similes sunt 3 draconib⁹, nudabant mammillas suas, & pueri cœt⁹ populi mei traditi sunt crudelibus, & matres eorum lamentantur super eis sicut lamiæ in deserto. DALETH. Adhæsit lingua juvenis palato suo in siti: pueri petierunt panẽ, 4 & non est qui porrigat eis. HE. Qui assueti erant comedere in deliciis vastati 5 sunt in vicis: qui nutriebãtur in croceis, amplexati sunt stercora. VAU. 6 Et maj⁹ factũ est peccatũ cœt⁹ populi mei peccato Sodomæ, quæ subversa est in momẽto: & non mãserũt in ea Prophetæ, ut prophetarẽt & cõverterẽt eã ad pœnitentiã. ZAIN. Fuerunt candidiores Nazaræi ej⁹ nive, leniores 7 lacte, rubicundiores sunt aspectu quàm pyropi, & sicut sapphir⁹ vult⁹ eorũ. CHETH. Obscurat⁹ est magis quàm nigredo captivitatis aspect⁹ eorũ: non 8 sunt agniti in vicis, contracta est pellis super ossa eorũ, aruit & facta est sicut lignũ. TETH. Feliciores fuerunt occisi gladio mortuis fame: quia occisi 9 gladiis defluebãt cùm rumperentur ventres eorũ ab eo quod comederant de fructu agri: & qui inflati erãt fame, scissus est venter eorum propter [*defectum*] cibi. JOD. Man⁹ mulierũ quæ erãt misericordes sup pauperes, 10 coxerunt parvulos suos: facti sunt eis in alimentũ in die excidii quo attrit⁹ est cœt⁹ populi mei. CAPH. Consummavit Dñs furorẽ suũ, & fudit super 11 Jerusalẽ irã indignationis suæ, & succendit lampadẽ ignis in Sion, & consumpsit fundamẽta ej⁹. LAMED. Non credebãt regna terræ, nec omnes habitatores 12 orbis, ꝙ ingrederetur Nabuchodonosor impius & Nabuzardan inimicus ad jugulandũ populũ dom⁹ Israel in portis Jerusalẽ. MEM. Respondit 13 mensura judicii, & sic ait: Non fuerunt omnia hæc nisi propter peccata Prophetarũ ej⁹, qui prophetabãt ei prophetiã falsam, & propter delicta Sacerdotũ qui adolebant incensum aromatũ idolis; ipsi enim fuerunt causa ut effunderetur in medio ej⁹ sanguis innocentũ. NUN. Vacillabant 14 cæci in plateis, inquinati sunt sanguine occisorum gladio; & eo quòd non poterãt videre, adhæserunt vestib⁹ suis. SAMECH. Recedite à pollutis, clamaverunt 15 eis populi, recedite recedite, ne accedatis ad eos: quia abominabiles, & vagi sunt: dixerunt cùm esset in abundantia sua, quòd non addent ut remorari inter populos. PE. A facie vult⁹ Dñi divisi sunt: non adjiciet ut respiciat eos: propterea gentes impiæ non acceptaverunt faciẽ Sacerdotũ, & super senes non sunt miserti. AIN. Adhuc deficiunt oculi nostri respiciendo ad adjutoriũ nostrum ꝙ sperabam⁹ in *Romanis*, & cõversum est nobis in nihilum cùm e specula nostra cõtẽplaremur *Romanos*, qui sunt popul⁹ qui non salvat. SADIC. Ipsi impediverũt semitas nostras, ne ambularem⁹ confidenter in plateis nostris. Diximus, Appropinquavit finis noster, impleti sunt dies nostri, quia pervenit finis noster. COPH. Leviores fuerunt persecutores nostri aquilis cœli: super montes persecuti sunt nos, in deserto insidiati sunt nobis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

[illegible]

* Nudaverunt ut canes ſylveſtres ubera ſua, & 3
lac præbuerunt catulis ſuis : expoſita eſt filia
populi mei plagæ cui non eſt medela, & quaſi
ſtruthio in deſerto. Adhæſit lingua infantis 4
palato ipſius præ ſiti : pueri petierunt panem,
nec fuit qui frangeret & daret eis. Ii qui com- 5
edebant delitias, ecce cubant in ſterquiliniis.
Et ſuperavit iniquitas filiæ populi mei pec- 6
catũ Sodomæ, quæ ſubitò ſubverſa fuit ſine
labore manuum. Puriores erant Nazaræi ejus 7
nive, & candidiores lacte in paſcuis ſuis, ru-
bicundiora oſſa eorũ ſardio, & ſapphiro cor-
pus eorum. *Jam verò* obſcurior facta eſt car- 8
bonibus ſpecies eorum, nec agnoſcuntur in
plateis : rugata eſt pellis eorum ſuper oſſibus
eorum, aruit, & ligno ſimilis evaſit. Meliùs 9
habuerunt confoſſi gladio, quàm enecati fa-
me, quòd hi liquefacti ſint velut ii qui ſaucii
jacent in agro. Manus mulierum benignarum 10
coxerunt natos earum, facti ſunt eis alimento
in contritione filiæ populi mei. Explevit Do- 11
minus furorẽ ſuum, & effudit æſtum iræ ſuæ :
dimiſit ignẽ in Sionem, & flamma devoravit
fundamenta ejus. Nunquam crediđiſſent re- 12
ges terræ & omnes habitatores orbis, ventu-
rum atq; ingreſſurum oppreſſorẽ & inimicũ
per portas Jeruſalem. Propter peccata pro- 13
phetarum ejus, & crimen ſacerdotum ejus,
qui effuderunt in ea ſanguinem innocentium;
Vacillârunt magnates ejus in plateis ipſius, 14
fuerúntque ſanguine conſperſi, nec potuerunt
tangere veſtes eorum. Recedite ab eis, & im- 15
mundos vocate eos : tranſite, tranſite, & ne at-
tingatis eos : quoniã irritantes cruciati etiam
fuerunt, dixerunt inter gentes ſe non futuros
ampliùs incolas. Dum adhuc ſubſiſterem⁹, ca- 16
ligaverunt oculi noſtri præ *expectatione* auxi-
lii noſtri : fruſtrà ſpeculati ſunt ſpeculatores
noſtri verſùs populum minimè liberaturum.
Vultus Domini diviſit illos, nec eſt ampliùs 17
intuiturus eos ; *quia* vultus ſacerdotum non
ſunt reveriti, neque ſenum miſerti. Venati 18
ſunt minutiſſimos quoſque, eos qui ambula-
bant in plateis, *dicentes*, Appropinquavit
terminus noſter, impleti ſunt dies noſtri,
quòd jam advenit tempus noſtrum. Veloci- 19
ores erant perſecutores noſtri aquilis cœli,
ſuper montes perſecuti ſunt nos, & in de-
ſerto inſidiati ſunt nobis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* والتنانين خلعوا ثديهم * اشبالهم رضعوا * بنات شعبي لغير شفا * مثل عصفور في الفلاة

* لصق لسان المرضع بحنجرته بالعطش * الاطفال طلبوا خبزا ولم يكن لهم من يكسر

* الذين ياكلون الاطعمة فنيوا في الخارج * المربيون احتضنوا من المزابل في احضانهم * وعظم

اثم ابنة شعبي * اكثر من اثم سدوم المخسوفة بسرعة * ولم تتعب الايادي فيها * نقيت اطهارها

اكثر من الثلج * اشرقوا اكثر من اللبن جمدوا * اكثر من حجارة الفيروزج جزهم * اظلم

منظرهم اكثر من الفحم * لم يعرفوا في الخارج * لصق جلدهم بعظامهم * يبسوا وصاروا

مثل الخشبة * صار جرحا السيف احسن من جرحا الجوع * ذهبوا مطعونين من غلات

الحقول * ايدي النسوة المترافات طبخن اولادهن * صاروا طعاما لهن في انكسار ابنة

شعبي * اكمل الرب غضبه * افاض رجز غضبه * واشعل نارا في صهيون * فاكلت اساساتها

* لم تصدق ملوك الارض * جميع سكان المسكونة * ان العدو يدخل والمحزن من ابواب

ايروسليم * من خطايا انبيائهم * وظلامات كهنتها * الذين اهرقوا دما زكيا في وسطها

* اضطرب ساهروها في الخارج * تدنسوا بالدم * اذ لا يستطيعون ان يلمسوا ثيابهم * ابعدوا

من الانجاس * ادعوهم * ابعدوا ابعدوا لا تلمسوهم * لانهم اشعلوا وتزعزعوا قولوا في الامم لا

يعودون ان يسكنوا * وجه الرب نصيبهم * لا يعود ان ينظرهم * لم ياخذوا بوجه الكهنة

ولم يرحموا المشايخ * حين كنا فنيت اعيننا الي معونتنا * باطل الذين يرقبوننا * رمقنا امة

لا تخلص * اصطدنا صغارنا * ان لا يمروا في شوارعنا * اقترب زماننا * كملت ايامنا * حضر وقتنا

* صار طاردونا خفافا اكثر من نسور السماء * على الجبال * كمنوا على الجبال واختلسونا.

* *Vel dracones ipſi nudant mammas ſuas,* 3
catuli eorum lac ſugunt : filiæ populi mei
ſunt incurabiles, ut avis in aëre. Adhæ- 4
ſit lingua lactentis faucibus ejus in ſiti :
parvuli petierunt panem, nec fuit eis qui
frangeret. Qui cibos comedebant, defece- 5
runt in foris : qui nutriebant ſeſe, amplexati
ſunt è ſterquiliniis in finibus ſuis. Et ma- 6
jus extitit flagitiũ filiæ populi mei, quàm
flagitia Sodomæ quæ ſubitò abſorpta fuit,
non laborantibus in ea manibus. Puriores 7
erant ſancti ejus nive, fulgebant, pluſ-
quam lac coagulati erant, præſtantior erat
quàm lapidum ſapphiri inciſio eorum. Ob- 8
ſcurior nunc *eſt aſpectus eorum carboni-*
bus, non agnoſcuntur in foris, adhæſit cu-
tis eorum oſſibus eorum, exaruerunt, & li-
gno ſimiles facti ſunt. Vulnerati gladio 9
pulchriores ſunt vulneratis fame, inter-
ierunt confoſſi propter defectum *frugum*
agrorum. Manus mulierum clementium 10
coxerunt filios ſuos, facti ſunt illis cibus
in contritione filiæ populi mei. Complevit 11
Dominus iram ſuam, profudit furorem iræ
ſuæ, & accendit ignem in Sione, qui fun-
damenta ejus conſumpſit. Non crediđiſ- 12
ſent reges terræ, & omnes orbis incolæ, in-
greſſurum hoſtem & affligentem in portas
Jeroſolymorum. Propter peccata prophe- 13
tarum ejus, & perverſitates ſacerdotum
ejus, qui effuderunt ſanguinem innoxium
in medio ipſius ; Exagitati ſunt vigiles e- 14
jus in foris, contaminati ſunt ſanguine, ita
ut non poſſent tangere veſtes eorum. Re- 15
cedite ab immundis ; proclamate eis, Re-
cedite, recedite, ne tangatis eos. Quia ſuc-
ceſſi & concuſſi ſunt, dicite inter gentes ;
Non habitabunt ampliùs ;

Tranſponit Literas Phe & Ain, ut
in Hebr. & Græco.

Facies Domini quæ eſt *pars eorum, non* 17
videbit eos ampliùs : non enim *venerati*
ſunt vultum ſacerdotum, neque miſerti
ſunt ſenum. Dum adhuc ſubſiſteremus, 16
defecerunt oculi noſtri ad auxilium no-
ſtrum reſpicientes *: fallaces fuerunt qui*
ſpeculati ſunt nobis : reſpeximus gentem
minimè ſalvaturam. Venati ſumus par- 18
vulos noſtros, ut non tranſirent per vicos
noſtros. Appropinquavit tempus noſtrum,
finiti ſunt dies noſtri, adeſt momentum no-
ſtrum : Facti ſunt perſecutores noſtri ve- 19
lociores aquilis cœli [illegible]
[illegible]

cujus : eorum foveis in eſt captus Domini *unctus* noſtrarū nariū Spiritus
20 רוּחַ אַפֵּינוּ מְשִׁיחַ יְהוָה נִלְכַּד בִּשְׁחִיתוֹתָם אֲשֶׁר
, Edom filia lætare &, Gaude .gentes inter vivemus *ejus* umbra *in* dixim⁹
21 אָמַרְנוּ בְּצִלּוֹ נִחְיֶה בַגּוֹיִם : שִׂישִׂי וְשִׂמְחִי בַּת־אֱדוֹם
, inebriaberis , calix tranſibit te ſuper etiam ; Hus terra in *habitans*
יוֹשַׁבְתִּי בְּאֶרֶץ עוּץ גַּם־עָלַיִךְ תַּעֲבָר־כּוֹס תִּשְׁכְּרִי
:te *depoſt induā ad* addet non, Sijon filia *tua iniquit. is eſt Cōſumpta. te denudabis* &
22 וְתִתְעָרִי : תַּם־עֲוֹנֵךְ בַּת־צִיּוֹן לֹא יוֹסִיף לְהַגְלוֹתֵךְ
.tua peccata *ſuper* diſcooperuit, Edom filia tuam iniquitatem viſitavit
פָּקַד עֲוֹנֵךְ בַּת־אֱדוֹם גִּלָּה עַל־חַטֹּאתָיִךְ :

CAP. V. ה

.noſtrum opprobriū vide & , aſpice ;nobis fuerit quid Domine Recordare
1 זְכֹר יְהוָה מֶה־הָיָה לָנוּ הַבִּיטָ וּרְאֵה אֶת־חֶרְפָּתֵנוּ :
.alienigenas ad noſtræ domus , extraneos ad eſt verſa noſtra Hæreditas
2 נַחֲלָתֵנוּ נֶהֶפְכָה לְזָרִים בָּתֵּינוּ לְנָכְרִים :
noſtras Aquas .viduæ veluti noſtræ matres, patre abſque fuimus Pupilli
3 יְתוֹמִים הָיִינוּ אֵין אָב אִמֹּתֵינוּ כְּאַלְמָנוֹת : מֵימֵינוּ 4
noſtra colla Super .venerunt pretio in noſtra ligna ,bibimus *argento in*
5 בְּכֶסֶף שָׁתִינוּ עֵצֵינוּ בִּמְחִיר יָבֹאוּ : עַל צַוָּארֵנוּ
Ægypto .nobis dabatur requies non, laboravim⁹ ;ſum⁹ paſſi perſecutionē
6 נִרְדָּפְנוּ יָגַעְנוּ לֹא הוּנַח־לָנוּ : מִצְרַיִם
;*ipſi* non, peccaverūt noſtri Patres .pane *ſaturari ad* Aſſyrio, manum dedimus
7 נָתַנּוּ יָד אַשּׁוּר לִשְׂבֹּעַ לָחֶם : אֲבֹתֵינוּ חָטְאוּ אֵינָם
Liberans: nos in ſunt dominati Servi .portavimus eorum *iniquitates* nos &
8 אֲנַחְנוּ עֲוֹנֹתֵיהֶם סָבָלְנוּ : עֲבָדִים מָשְׁלוּ בָנוּ פֹּרֵק
faciebus à noſtrum panem afferebamus *noſtra anima In* .eorum manu è *non*
9 אֵין מִיָּדָם : בְּנַפְשֵׁנוּ נָבִיא לַחְמֵנוּ מִפְּנֵי
horrorum faciebus à incaluerunt cliban⁹ tanquā *noſtra Pellis* .deſerti *gladii*
10 חֶרֶב הַמִּדְבָּר : עוֹרֵנוּ כְּתַנּוּר נִכְמָרוּ מִפְּנֵי זַלְעֲפוֹת
Principes. Jehudah civitatib⁹ in virgines, *cōpreſſerūt* Sijō in Mulieres .famis
11 12 רָעָב : נָשִׁים בְּצִיּוֹן עִנּוּ בְּתֻלֹת בְּעָרֵי יְהוּדָה : שָׂרִים
Juvenes .*ſunt honoratæ* non ſenum facies, fuerunt ſuſpenſi eorum manu *in*
13 בְּיָדָם נִתְלוּ פְּנֵי זְקֵנִים לֹא נֶהְדָּרוּ : בַּחוּרִים
;ceſſaverūt porta de Senes .impegerunt lignum in pueri &, tulerunt *molā*
14 טְחוֹן נָשָׂאוּ וּנְעָרִים בָּעֵץ כָּשָׁלוּ : זְקֵנִים מִשַּׁעַר שָׁבָתוּ
luctū in eſt verſus, noſtri cordis gaudiū Ceſſavit .*ſua modulatione à* juvenes
15 בַּחוּרִים מִנְּגִינָתָם : שָׁבַת מְשׂוֹשׂ לִבֵּנוּ נֶהְפַּךְ לְאֵבֶל
.peccavim⁹ quia, nobis nunc væ :noſtri capitis corona Cecidit. noſter chor⁹
16 מְחֹלֵנוּ : נָפְלָה עֲטֶרֶת רֹאשֵׁנוּ אוֹי־נָא לָנוּ כִּי חָטָאנוּ :
.noſtri oculi ſūt obtenebrati iſta Propter, noſtrū cor mœſtū fuit hoc Propter
17 עַל־זֶה הָיָה דָוֶה לִבֵּנוּ עַל־אֵלֶּה חָשְׁכוּ עֵינֵינוּ :
Tu .eo in ambulaverunt vulpes, eſt deſolat⁹ quia, Sijon montē Propter
18 19 עַל הַר־צִיּוֹן שֶׁשָּׁמֵם שׁוּעָלִים הִלְּכוּ־בוֹ : אַתָּה
quid Ut. generationē & generationē in tuū ſoliū, permanebis ſeculū in Dñe
20 יְהוָה לְעוֹלָם תֵּשֵׁב כִּסְאֲךָ לְדֹר וָדוֹר : לָמָּה
?dierum longitudinem in nos derelinques, noſtri obliviſceris perpetuū in
לָנֶצַח תִּשְׁכָּחֵנוּ תַּעַזְבֵנוּ לְאֹרֶךְ יָמִים :
.*quondā* ſicut noſtros dies innova :cōvertemur &, te ad Domine nos Cōverte
21 הֲשִׁיבֵנוּ יְהוָה אֵלֶיךָ וְנָשׁוּבָ חַדֵּשׁ יָמֵינוּ כְּקֶדֶם :
.*valde uſque* nos contra es iratus , nos reprobaſti reprobando *Quamvis*
22 כִּי אִם־מָאֹס מְאַסְתָּנוּ קָצַפְתָּ עָלֵינוּ עַד־מְאֹד :
22 ſicut à principio. Sed projiciens repuliſti nos, iratus es contra nos vehementer.

Verſio VULG. LAT.

20 *Res.* Spirit⁹ oris noſtri Chriſtus Dñs capt⁹ eſt in peccatis noſtris : cui dixim⁹ ; In umbra tua vivem⁹
21 in Gentib⁹. *Sin.* Gaude, & lætare filia Edom, quæ habitas in terra Hus: ad te quoq; perveniet calix, inebriaberis, atque nudaberis.
22 *Thau.* Completa eſt iniquitas tua filia Sion, non addet ultrà ut tranſmigret te : viſitavit iniquitatem tuam filia Edom, diſcooperuit peccata tua.

Oratio *Jeremiæ* Prophetæ.

CAP. V.

1 RECordare, Domine, quid acciderit nobis : intuere, & reſpice
2 opprobriū noſtrum. Hæreditas noſtra verſa eſt ad alienos, dom⁹
3 noſtræ ad extraneos. Pupilli facti ſumus abſque patre, matres no-
4 ſtræ quaſi viduæ. Aquam noſtrā pecuniâ bibim⁹ : ligna noſtra pre-
5 tio comparavimus. Cervicib⁹ noſtris minabamur, laſſis non daba-
6 tur requies. Ægypto dedim⁹ manum, & Aſſyriis ut ſaturaremur
7 pane. Patres noſtri peccaverunt, & non ſunt : & nos iniquitates
8 eorū portavimus. Servi dominati ſunt noſtrî : non fuit qui redime-
9 ret de manu eorum. In animabus noſtris afferebamus panē nobis, à
10 facie gladii in deſerto. Pellis noſtra, quaſi clibanus exuſta eſt à fa-
11 cie tempeſtatū famis. Mulieres in Sion humiliaverunt, & virgines
12 in civitatib⁹ Juda. Principes manu ſuſpenſi ſunt : facies ſenū non
13 erubuerunt. Adoleſcentibus impudicè abuſi ſunt : & pueri in li-
14 gno corruerunt. Senes defecerunt de portis, juvenes de choro pſal-
15 lentium. Defecit gaudiū cordis noſtri : verſus eſt in luctum chor⁹
16 noſter. Cecidit corona capitis noſtri : væ nobis, quia peccavim⁹.
17 Propterea mœſtum factū eſt cor noſtrum, ideò contenebrati ſunt
18 oculi noſtri. Propter montē Sion quia diſperiit, vulpes ambulave-
19 rūt in eo. Tu autē, Dñe, in æternū pmanebis, ſoliū tuum in genera-
20 tionē & generationē. Quarè in ppetuū obliviſcéris noſtri ? derelinques nos in longitudine dierū?
21 Converte nos, Dñe, ad te, & convertemur : innova dies noſtros, ſicut à principio. Sed projiciens repuliſti nos, iratus es contra nos vehementer.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp

10 ΡΗ'ΧΣ. Πνεῦμα προσώπου ἡμῶν χριςὸς κύριος συνελήφθη ἐν ταῖς διαφθοραῖς αὐτῶν, (π) οὗ εἴπαμεν, Ἐν τῇ σκιᾷ αὐτοῦ ζησόμεθα
21 ἐν τοῖς ἔθνεσι. ΧΣΕ'Ν. Χαῖρε καὶ εὐφραίνου θύγατερ Ἰδουμαίας ἡ κατοικοῦσα (ᶜ) ἐπὶ γῆς, καί γε ἐπὶ σὲ διελεύσεται (ρ) τὸ ποτήριον κυ-
22 ρίου, (σ) μεθυσθήσῃ καὶ ἀποχεεῖς. ΘΑΥ'. Ἐξέλιπεν ἡ ἀνομία σου θύγατερ Σιών, οὐ προσθήσει (τ) τοῦ ἀποικίσαι σε. ἐπεσκέψατο (υ) ἀνομίας σου θύγατερ Ἐδώμ, ἀπεκάλυψεν ἐπὶ τὰ ἀσεβήματά σου. MS.A. (π) οἱ (ᶜ) ἐπὶ τῆς γῆς, (ρ) ποτήριον (σ) καὶ μεθυσθήσῃ (τ) ἔτι ἀποικίσαι (υ) ἀδικίας

ΚΕΦ. ε'.

1 ΜΝήσθητι κύριε, ὅ, τι ἐγενήθη ἡμῖν· ἐπί-
2 βλεψον, καὶ ἴδε τὸν ὀνειδισμὸν ἡμῶν. Κληρονομία ἡμῶν μετεςράφη ἀλλοτρίοις, οἱ οἶ-
3 κοι ἡμῶν ξένοις. Ὀρφανοὶ ἐγενήθημεν, οὐχ ὑπάρχει πατήρ, μητέρες ἡμῶν (α) ὡς αἱ χῆ-
4 ραι. Ὕδωρ ἡμῶν ἐν ἀργυρίῳ ἐπίομεν, ξύλα
5 ἡμῶν ἐν ἀλλάγματι (β) ἦλθεν. Ἐπὶ τὸν τράχηλον ἡμῶν ἐδιώχθημεν, ἐκοπάσαμεν, οὐκ
6 ἀνεπαύθημεν. Αἴγυπτος ἔδωκε χεῖρα, Ἀσ-
7 σοὺρ εἰς πλησμονὴν αὐτῶν. Οἱ πατέρες ἡμῶν ἥμαρτον, οὐχ ὑπάρχουσιν, ἡμεῖς τὰ
8 ἀνομήματα αὐτῶν ὑπέσχομεν. Δοῦλοι ἐκυρίευσαν ἡμῶν, λυτρούμενος οὐκ ἔςιν ἐκ τῆς χει-
9 ρὸς αὐτῶν. Ἐν ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν εἰσοίσομεν ἄρτον ἡμῶν, ἀπὸ προσώπου ῥομφαίας τῆς ἐ-
10 ρήμου. Τὸ δέρμα ἡμῶν ὡς κλίβανος ἐπελιώθη, συνεσπάσθησαν ἀπὸ προσώπου καταιγί-
11 δων λιμοῦ. Γυναῖκας ἐν Σιὼν ἐταπείνωσαν,
12 παρθένους ἐν πόλεσιν Ἰούδα. Ἄρχοντες ἐν χερσὶν αὐτῶν ἐκρεμάσθησαν, πρεσβύτεροι οὐκ
13 ἐδοξάσθησαν. Ἐκλεκτοὶ κλαυθμὸν ἀνέλαβον,
14 καὶ νεανίσκοι ἐν ξύλῳ ἠσθένησαν. Καὶ πρεσβῦται ἀπὸ πύλης κατέπαυσαν, ἐκλεκτοὶ ἐκ
15 ψαλμῶν αὐτῶν κατέπαυσαν. Κατέλυσε χαρὰ καρδίας ἡμῶν, ἐςράφη εἰς πένθος ὁ
16 χορὸς ἡμῶν· Ἔπεσεν ὁ ςέφανος (γ) ἡμῶν
17 τῆς κεφαλῆς· οὐαὶ δὲ ἡμῖν, ὅτι ἡμάρτομεν. Περὶ τούτου ἐγενήθη (δ) ὀδύνη, ὀδυνηρὰ ἡ καρδία ἡμῶν, περὶ τούτου ἐσκότασαν οἱ ὀφθαλμοὶ ἡ-
18 μῶν. Ἐπ' ὄρος Σιών, ὅτι ἠφανίσθη, ἀλώ-
19 πεκες διῆλθον ἐν αὐτῇ. Σὺ δὲ κύριε εἰς τὸν αἰῶνα κατοικήσεις, ὁ θρόνος σου εἰς γενεὰν
20 καὶ γενεάν. Ἵνα τί εἰς νῖκος ἐπιλήσῃ ἡμῶν, καταλείψεις ἡμᾶς εἰς μακρότητα ἡμερῶν ;
21 Ἐπίςρεψον ἡμᾶς κύριε πρὸς σέ, καὶ ἐπιςραφησόμεθα· καὶ ἀνακαίνισον ἡμέρας ἡμῶν
22 καθὼς ἔμπροσθεν. Ὅτι ἀπωθούμενος ἀπώσω ἡμᾶς, ὠργίσθης ἐφ' ἡμᾶς ἕως σφόδρα. (†)

MS.A. (α) ὡς χῆραι ἐξ ἡμερῶν ἡμῶν, ξύλα (β) ἦλθον, (γ) τῆς κεφαλῆς ἡμῶν· (δ) ὀδυνηρὰ

cum Tranſl. LAT.

RECHS. Spiritus faciei [illegible] *Chriſtus Dominus captus eſt* [illegible] *corruptionibus* [illegible] *dicebamus, In umbra ejus vivemus* [illegible] *gentibus. CHSEN. Gaude, & lætare, filia Idumææ, quæ habitas* [illegible] *ſuper* [illegible] *te tranſibit* [illegible] *calix Domini* [illegible] *& effunderis. THAU.* [illegible] *iniquitas tua, filia Sion, non* [illegible] *(τ) tranſmigrare te* [illegible] *iniquitates tuas, filia Edom,* [illegible] *ſuper impietates tuas.*

CAP. V.

RECordare, Domine, quod factum eſt nobis: Reſpice, & vide opprobrium noſtrum. Hæreditas noſtra verſa eſt ad alienos, domus noſtræ ad extraneos. Pupilli facti ſumus, non eſt pater: matres noſtræ quaſi viduæ. Aquā noſtram argento bibimus: ligna noſtra in commutatione (a) venerunt. Super collum noſtrum: paſſi ſumus perſecutionem, laboravimus, non habuimus requiem. (b) Ægyptus dedit manum: Aſſur ad ſaturitatem ipſorum. Patres noſtri peccaverunt, non ſunt: nos iniquitates eorum portavimus. Servi dominati ſunt noſtrî: qui redimat non eſt de manu eorum. In animabus noſtris afferemus panē noſtrum, à facie gladii deſerti. Pellis noſtra quaſi clibanus (d) exuſta eſt: [illegible] *vulſæ ſunt à facie tempeſtatum famis. Mulieres in Sion humiliaverunt, virgines in civitatibus Juda. Principes in manibus* [illegible] *ſuſpenſi fuerunt; ſenes non ſunt glorificati. Electi ploratum aſſumpſerunt, et adoleſcentes in ligno infirmati ſunt. Et ſenes à porta ceſſaverunt: electi à pſalmis* [illegible] *ceſſaverunt. Defecit gaudium cordis noſtri: verſus eſt in luctum chorus noſter: Cecidit corona capitis noſtri. Væ autē nobis, quia peccavimus. Propterea factum eſt* [illegible] *mœſtum cor noſtrum: ideò contenebrati ſunt oculi noſtri. Super montē Sion, quia diſperiit,* [illegible] *ambulaverunt in ea. Tu autē, Domine, in æternū habitabis:* [illegible] *tuū in generationē, et generationem. Quare in finē oblivisceris noſtri? derelinques nos in longitudinē dierū? Cōverte nos, Domine, ad te, et convertemur: et innova dies noſtros ſicut à principio.* [illegible] *pellens enim repuliſti nos: iratus es* [illegible]

(†) Θρῆνοι Ἱερεμίου

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 מַלְכָּא יֹאשִׁיָּהוּ דַּהֲוָה חֲבִיב לָנָא כְּנִשְׁמַת רוּחַ חַיִּין דִּבְאַפָּנָא וַהֲוָה מִתְרַבֵּי בִּמְשַׁח רְבוּתָא
דַּיְיָ אִתְּחַד בְּמְצַד חַבּוּלֵיהוֹן דְּמִצְרָאֵי דַּהֲוֵינָא אָמְרִין עֲלוֹהִי בִּטְלַל זְכוּתֵיהּ נֵחֵי בֵּינֵי
21 עַמְמַיָּא : חֲדַיאִי וּבְדַיחִי בְּרַתָּא דֶּאֱדוֹם דְּמִתְבַּנְיָא בְּאַרְעָא דְעוּץ בְּסַגִּיאִין אוּכְלוּסִין אַף
עֲלַיִךְ עֲתִיד לְמֵיתֵי פּוּרְעָנוּתָא וְיִצְדוּן יָתִיךְ פַּרְכְוָאֵי וְתִעְבַּר עֲלַיִךְ כַּס דְּלוּט תִּרְוֵי וְתִתְרוֹקְנִי :
22 וּבָתַר כֵּן יִשְׁלַם עֲוָיָתִיךְ כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן וְתִתְפַּרְקִין עַל יְדוֹי דִמְשִׁיחָא וְאֵלִיָּהוּ כַהֲנָא רַבָּא וְלָא
יוֹסִיף יְיָ תּוּב לְאַגְלוּתִךְ וּבְהַהִיא זִמְנָא אַסְעַר עֲוָיָתִיךְ בְּרַתָּא דֶאֱדוֹם וְיֵיתוּן פַּרְסָאֵי וִיעִיקוּן
לִךְ וְיִצְדוּן יָתִךְ אֲרוּם אִתְפַּרְסַם קֳדָם יְיָ עַל חוֹבָתִיךְ :

ה

1 הֲוֵי דְכִיר יְיָ מָה דְאִתְגְּזַר לְמֶהֱוֵי לָנָא אִסְתַּכַּל מִן שְׁמַיָּא וַחֲזֵי יָת כְּסוּפָנָא : אַחְסַנְתָּנָא
2 אִתְהַפְּכַת לְחִלּוֹנָאֵי בָּיְתָנָא לְעַמִּין נוּכְרָאִין : הֲוֵינָא מְתִילִין לְיַתְמִין דְּלֵית לְהוֹן אַבָּא
3 אִמְּהָתָנָא כְּאַרְמְלָן דְּאָזְלוּ גֻבְרֵיהוֹן בְּקִרְוֵי יַמָּא וּמְסַפְּקָא לְהוֹן אִם אִנּוּן קַיָּמִין : מֵימָנָא
4 בְּכַסְפָּא שְׁתֵינָא קַסְנָא בְּדָמִין יֵיתוּן : עַל פְּרַקַת צַוְרָנָא אִטְעַנְנָא כַּד הֲוֵינָא אָזְלִין בְּשִׁבְיָתָא
5 חֲמָא נְבוּכַדְנֶצַּר רַשִׁיעָא סַרְכַיָּא דִבְנֵי יִשְׂרָאֵל דְּאָזְלִין רֵיקָנִין פַּקֵּד לְחַיָּטָא סִפְרֵי אוֹרָיְתָא
וּלְמֶעְבַּד מִנְּהוֹן גּוּאלְקִין וּמְלִיאוּ יָתְהוֹן מִן פְּרִידְיָא דִּי עַל סְפַר פְּרָת וְטַעֲנוּ יָתְהוֹן עַל
6 צַוְרֵיהוֹן בְּהַהִיא זִמְנָא לְעֵינָא לָא הֲוָת נְיָחָא לָנָא : מִצְרַיִם יְהַבְנָא סְטַר לְאִתְפַּרְנָסָא תַּמָּן
7 וְלַאֲתוּר לְמִסְבַּע לַחְמָא : אֲבָהָתָנָא חָבוּ וְלֵיתְהוֹן בְּעָלְמָא וַנְחְנָא בָּתְרֵיהוֹן עֲוָיָתְהוֹן
8 סוֹבַרְנָא : בְּנוֹי דְחָם דְּאִתְיְהִיבוּ עַבְדִין לִבְנוֹי דְשֵׁם אִנּוּן שְׁלִיטוּ בָנָא פָּרִיק לֵית מִידֵיהוֹן :
9 10 בְּנַפְשָׁנָא נֵיתֵי לְחֵם פַּרְנָסוּתָנָא מִן קֳדָם קְטוֹל דְּחַרְבָּא דְּאָתֵי מִן סְטַר מַדְבְּרָא : מַשְׁכָּנָא
11 הֵיךְ תַּנּוּרָא אִתְקַדְרוּ מִן קֳדָם מַפַּח כַּפְנָא : נְשַׁיָּא דַּהֲווֹ נְסִיבָן לִגְבַר בְּצִיּוֹן אִתְעַנִּיאוּ מִן
12 נוּכְרָאֵי וּבְתוּלָתָא בְּקִרְוֵי יְהוּדָה מִן כַּשְׂדָּאֵי : רַבְרְבָנִין בִּידֵיהוֹן אִצְטְלִיבוּ אַפֵּי סָבַיָּא לָא
13 סְבַרוּ : רוּבִין רֵיחְיָא נְטַלוּ וְטַלְיָא בִּצְלִיבַת קֵיסָא תְקַלוּ : סָבַיָּא מִתְּרַע סַנְהֶדְרִין אִתְבַּטִּילוּ
14 15 וְרוּבִין מִן בֵּית זְמָרֵיהוֹן : בְּטֵילַת חֶדְוַת לִבָּנָא אִתְהֲפִיךְ לְאֶבְלָא חִנּוּגָנָא : נְפַלַת כְּלִילָא
16 17 דְרֵישָׁנָא וַי לָנָא אֲרוּם חַבְנָא : עַל דֵּין בֵּית מוּקְדְּשָׁא דְּאִצְטְדֵי הֲוָה חֲלִישׁ לִבָּנָא וְעַל
18 אִלֵּין עַמָּא בֵית יִשְׂרָאֵל דְּאָזְלוּ בְּגָלוּתָא מִתַּמָּן הֲווֹ חֲשִׁיכָן עֵינָנָא : עַל טוּרָא דְצִיּוֹן דְּהוּא
19 צָדֵי תַּעֲלִין הֲלִיכוּ בֵיהּ : אַתְּ הוּא יְיָ לְעָלַם בֵּית מוֹתְבָךְ בִּשְׁמֵי מְרוֹמָא כּוּרְסֵי יְקָרָךְ לְדָרֵי
20 21 דָרַיָּא : לְמָה לְעָלְמִין תְּשַׁלִּינָנָא תִּשְׁבְּקִנָּנָא לְאוֹרִיכוּת יוֹמִין : אֲתִיב יְיָ יָתָנָא לְוָתָךְ וְנִתִּיב
22 בִּתְיוּבְתָּא שְׁלֵמְתָּא תְּחַדֵּת יוֹמָנָא לְטָב כִּזְמַן יוֹמַיָּא טָבַיָּא דַּהֲווֹ מִלְּקַדְמִין : אֲרוּם אִלְהֵן
מִקְצַף תִּקְצוֹף בָּנָא רְגוּתָא עֲלָנָא עַד לַחֲדָא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

RES. Rex *Joſias* qui erat dilect⁹ nobis ſicut ſpiraculū ſpirit⁹ vitæ [illegible] in narib⁹ noſtris, & erat unct⁹ oleo unctionis Dñi, capt⁹ eſt in rete [illegible] nis *Ægyptiorum* : de quo dicebam⁹, In umbra juſtitiæ ejus vivemus inter populos. SIN. Gaude, & lætare *filia* Idumeæ, quæ ædificata es in terra [illegible] inter multas turmas : ſup te quoq; futurū eſt ut veniat ultio : & deſolabunt te Parchevæi, & tranſibit ſup te calix maledictionis : inebriaberis & evacuaberis. THAU. Et poſteà complebitur iniquitas tua cœt⁹ Sion, & liberaberis per manū Meſſiæ & Eliæ ſacerdotis magni : & non addet ultra Dñs ut tranſmigrare faciat te : & in illo tempore viſitabo iniquitatē tuam [illegible] Edom : & venient Perſæ, & anguſtiabunt te, & deſolabunt te ; quia manifeſta ſunt coram Dño peccata tua.

CAP. V.

RECordare Dñe quid decretū ſit ut eveniret nobis : contemplare de cœlis, & vide opprobriū noſtrū. Hæreditas noſtra verſa eſt prophanis, domus noſtræ populis extraneis. Similes facti ſum⁹ pupillis, qui non habent patrem : matres noſtræ quaſi viduæ, quarū mariti perrexerunt ad civitates maris, & dubitatur de eis utrùm vivant. Aquam noſtram argento bibim⁹, & ligna noſtra pecuniis adducebantur. Super juncturā cervicis noſtræ onerati [illegible] quando pergebam⁹ in captivitatē, vidit Nabuchodonoſor impi⁹ præfectos filiorū Iſrael, qui ibant vacui ; & præcepit ut conſuerent libros Legis, & [illegible] facerent ex eis manticas : & impleverunt eas lapillis qui erant in ripa Euphratis, & oneraverunt eos ſup colla eorū : & in illo tempore laborabam⁹ non erat nobis requies. Ægypto dedim⁹ lat⁹ ut nutriremur illic, & Aſſyriis ut ſaturaremur pane. Patres noſtri peccaverunt, & non ſunt in [illegible] & nos poſt eos iniquitates eorū portavim⁹. Filii Cham qui traditi ſunt [illegible] vi filiis Sem, dominati ſunt in nos, nec eſt qui redimat de manib⁹ eorū. [illegible] animab⁹ noſtris adducebam⁹ panē alimenti noſtri, propter occidentes gladio qui veniebāt de latere deſerti. Pelles noſtræ ſicut furnus denigratæ [illegible] propter inflationem famis. Mulieres quæ erant nuptæ viro in Sion, [illegible] ctæ ſunt *ab alienigenis*, & virgines in civitatib⁹ Juda à Chaldæis. Principes [illegible] manib⁹ eorū ſuſpenſi ſunt ; faciē ſenū non ſunt reveriti. Juvenes molas [illegible] lerunt, & pueri in patibulo ligneo corruerunt. Senes à porta judicii [illegible] nariorū ceſſaverunt, & juvenes à domo cantici ſui. Ceſſavit lætitia cordis noſtri, verſus eſt in luctum chor⁹ noſter. Cecidit corona capitis noſtri [illegible] nobis quia peccavim⁹. Propter domū ſanctuarii quæ deſerta eſt [illegible] eſt cor noſtrū : & propter iſtum populum domus Iſrael, qui abiit [illegible] tranſmigrationē, obſcurati ſunt oculi noſtri. Propter montē Sion [illegible] latus eſt ; vulpes ambulaverūt in eo. Tu ipſe Dñe in æternū es : domus [illegible] tionis tuæ in cœlis excelſis, ſoliū gloriæ tuæ in generationes [illegible] Quare in æternū repellis nos ? relinquis nos in longitudinem dierum [illegible] verte nos Dñe ad te, & convertemur ad pœnitentiam perfectam [illegible] dies noſtros in bonū, juxta tempus dierum bonorum qui fuerunt [illegible] Quamvis deteſtatione deteſtatus ſis nos, iratus es contra nos iam [illegible]

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܪ * ܪܘܚܐ ܕܐܦܝܢ ܡܫܝܚܗ ܕܡܪܝܐ ܐܬܬܨܝܕ ܒܚܒܠܝܗܘܢ. ܗܘ ܕܐܡܪܢ. ܕܒܛܠܠܗ
ܢܚܐ ܒܥܡܡܐ. * ܫ * ܚܕܝ ܘܪܘܙܝ ܒܪܬ ܐܕܘܡ.. ܕܥܡܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܥܘܨ. ܐܦ ܥܠܝܟܝ
ܬܥܒܪ ܟܣܐ. ܘܬܪܘܝܢ ܘܬܬܦܪܥܝܢ. * ܬ * ܫܠܡܘ ܚܛܗܝܟܝ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܘܠܐ
ܢܘܣܦ ܠܡܫܒܝܟܝ. ܐܬܦܩܕ ܥܘܠܝܟܝ ܒܪܬ ܐܕܘܡ.. ܐܬܓܠܝ ܚܛܗܝܟܝ.

* ܨܠܘܬܗ ܕܐܪܡܝܐ * * ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *

* ܐܬܕܟܪ ܡܪܝܐ.: ܡܢܐ ܗܘܐ ܠܢ. ܚܘܪ ܘܚܙܝ ܨܥܪܢ. * ܝܪܬܘܬܢ ܐܬܗܦܟܬ ܠܢܘܟܪܝܐ
ܘܒܬܝܢ ܠܚܠܘܦܝܐ. * ܝܬܡܐ ܗܘܝܢ ܕܠܐ ܐܒܐ. ܘܐܡܗܬܢ ܐܝܟ ܐܪܡܠܬܐ. * ܡܝܢ ܒܟܣܦܢ
ܐܫܬܝܢ. ܘܩܝܣܝܢ ܒܕܡܝܐ. * ܥܠ ܨܘܪܢ ܐܬܪܕܦܢ: ܠܐܝܢ ܘܠܐ ܐܬܬܢܝܚܢ. * ܡܨܪܝܐ
ܝܗܒܘ ܐܝܕܐ. ܘܐܬܘܪܝܐ ܠܡܣܒܥܘܬܢ ܠܚܡܐ. * ܐܒܗܝܢ ܚܛܘ. ܘܠܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܚܢܢ
ܚܛܗܝܗܘܢ ܩܒܠܢ. * ܥܒܕܐ ܐܫܬܠܛܘ ܒܢ. ܘܠܝܬ ܕܦܪܩ ܠܢ ܡܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. * ܒܢܦܫܢ
ܢܦܩܝܢ ܠܚܡܢ ܡܢ ܩܕܡ ܚܪܒܐ ܕܡܕܒܪܐ. * ܡܫܟܢ ܐܝܟ ܬܢܘܪܐ ܐܬܟܡܪܘ. ܘܐܬܚܫܟܘ
ܡܢ ܩܕܡ ܥܠܥܠܐ ܕܟܦܢܐ. * ܢܫܐ ܒܨܗܝܘܢ ܫܥܒܕܘ. ܘܒܬܘܠܬܐ ܒܩܘܪܝܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܪܘܪܒܢܐ
ܒܐܝܕܝܗܘܢ ܐܬܬܠܝܘ. ܘܐܦܝ ܣܒܐ ܠܐ ܢܟܦܘ. * ܓܒܪܐ ܛܚܢܐ ܛܥܢܘ. ܘܛܠܝܐ ܒܩܝܣܐ
ܐܬܬܩܠܘ. * ܣܒܐ ܡܢ ܬܪܥܐ ܒܛܠܘ. ܘܥܠܝܡܐ ܡܢ ܙܡܪܗܘܢ. * ܒܛܠܬ ܚܕܘܬܐ ܕܠܒܢ.
ܐܬܗܦܟܬ ܠܐܒܠܐ ܚܕܘܬܢ. * ܢܦܠܬ ܟܠܝܠܐ ܕܪܝܫܢ. ܘܝ ܠܢ ܕܚܛܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܘܐ
ܟܐܒ ܠܒܢ. ܘܡܛܠ ܗܢܐ ܗܘܐ ܚܫܟܝ ܥܝܢܝܢ. * ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܕܚܪܒ ܘܬܥܠܐ ܗܠܟܘ ܒܗ.
* ܘܐܢܬ ܡܪܝܐ ܠܥܠܡ ܝܬܒܬ. ܘܟܘܪܣܝܟ ܠܕܪ ܕܪܝܢ. * ܠܐ ܠܥܠܡ ܬܛܥܝܢ ܘܬܫܒܩܢ
ܠܐܘܪܟ ܝܘܡܬܐ. * ܐܦܢܝܢ ܡܪܝܐ ܠܘܬܟ. ܘܢܬܦܢܐ. ܚܕܬ ܝܘܡܬܢ. ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ
* ܡܛܠ ܕܡܣܠܐ ܐܣܠܝܬܢ. ܘܪܓܙܬ ܥܠܝܢ ܛܒ.

* ܫܠܡ ܡܠܬܐ ܕܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ *

* Spiritus facierum noſtrarum unctus Domini, captꝰ eſt in fovea eorum, ille ſub cujus umbra dicebamus nos victuros inter gentes. 20 Gaude & lætare filia Adum, quæ habitas in terra Us: 21 etiam ad te perveniet calix, & inebriaberis, & cordolium patieris. Conſumpta ſunt peccata tua filia Sionis, 22 non abducet te ultrà in captivitatem: viſitabuntur ſcelera tua filia Adum, retegentur peccata tua.

CAP. V.

Oratio Jeremiæ.

* RECordare Domine quid acciderit nobis, 1 intuere & conſidera opprobrium noſtrum. Hæreditas noſtra devoluta eſt ad extraneos, 2 & domꝰ noſtræ ad alienigenas. Pupilli facti 3 ſumus abſq; patre, & matres noſtræ ſicut viduæ. Aquã noſtrã pecuniã bibimus, & ligna 4 noſtra pretio. Impetunt cervices noſtras, ja- 5 ctamur, fatigamur, & non quieſcimꝰ. Ægyptii 6 præbent manũ & Aſſyrii, ut *nos* pane ſaturent. Patres noſtri peccaverunt, & non ſunt; nos 7 verò peccata eorum ſuſtinemus. Servi domi- 8 nantur in nos, nec eſt qui nos eripiat è manibus eorũ. Vitæ noſtræ periculo afferimus pa- 9 nem noſtrũ, propter gladiũ qui eſt in deſerto. Cutes noſtræ ut à conſpectu fornacis corruga- 10 tæ ſunt, & ob cruciatũ famis, atratæ. Mulieres 11 in Sione ſtupratæ ſunt, & virgines in civitatibus Judæ. Magnates manibꝰ eorũ ſuſpenſi fu- 12 erunt, & vultus ſenum non ſunt reveriti. Ad- 13 oleſcentes agitant molas, & juvenes ad ligna impingunt. Senes è porta ceſſaverunt, & ju- 14 venes à lætitia ſua. Deſiit hilaritas cordis 15 noſtri, verſum eſt in luctũ gaudium noſtrum. Cecidit corona capitis noſtri; væ nobis, quia 16 peccavimus. Iccirco en mœret cor noſtrum, 17 & ob id ecce tenebreſcunt oculi noſtri: Pro- 18 pter montẽ Sionis, quòd ſit deſolatus, & vulpes ambulent in eo. Tu verò Dñe, in æternũ 19 es & ſolium tuũ in generationem generationum. Ne in perpetuum derelinquas nos, & 20 oblivifcaris noſtrî diuturnis temporibꝰ. Converte nos Dñe ad te, & convertemur; reſtaura 21 dies noſtros ut olim. Jam enim ſatis diu abo- 22 minatus es nos, et in nos admodũ indignatus.

Libri Jeremiæ Prophetæ finis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* روح وجهنا مسيح الرب اخذ بمفاسدهم . الذي قالوا انا نعيش في ظله في الامم * افرحي
وسري يا ابنة الادومية الساكنة على الارض . فان عليك يجوز كاس الرب . فتسكرين
وتعطين * انقطع اثمك يا ابنة صهيون . لا يعود ايضا ان يسبيك . تعهد ظلمك يا ابنة
ادوم . هتك فواحشك * الفصل الخامس * صلاة ارمياء *
* اذكر يا رب ما صار لنا . اطلع وانظر تعييرنا * ميراثنا انتقل للغرباء . بيوتنا للغرباء
* صرنا ايتاما . ليس اب . امهاتنا مثل ارامل منذ ايامنا * اخشابنا بالثمن ادوا على عنقنا
* طردنا . تعبنا ولم نسترح * مصر دفعتنا ليد الموصل لشبعهم * اباونا اخطاوا فلم يوجدوا
ولكن ابتلينا باثامهم * العبيد احتوطونا . وليس منقذ من يدهم * في نفوسنا ندخل خبزنا
من وجه سيف البرية * جلودنا شيطت مثل تنور . تسحجوا من وجه عواصف الجوع * اذلوا
النساء في صهيون . العذاري في مدن يهودا * علقت الروساء بايديهم . المشايخ لم يستحيوا
* المختارون اخذوا بكاء . والشبان ضعفت بالخشبة * والاشياخ فرغوا من الباب . المختارون
كفوا من مزاميرهم * انحل فرح قلبنا . انقلب مزهرنا الى حزن * سقط اكليل راسنا . فالويل
لنا لانا اخطانا * من اجل هذا صار قلبنا موجعا . من اجل هذا اظلمت عيوننا * على جبل
صهيون . لانه فني . جازت الثعالب فيها * وانت يا رب تسكن الى الابد . كرسيك الى جيل
وجيل * لماذا تنسانا بالظفر . تتركنا الى طول الايام * ردنا يا رب فنرجع اليك . وجدد ايامنا
كما تقدم * لانك مقصي اقصيتنا . غضبت علينا الى الغاية .

* *Spiritus facierum noſtrarum chriſtus Domini, captus eſt dolis eorum, in cujus umbra dicebant nos victuros inter gentes.* 20 *Lætare & exulta O filia Idumææ quæ ſuper terram habitas: nam ſuper te tranſibit calix Domini, & inebriaberis, potúmque dabis.* 21 *Amputata eſt iniquitas tua O filia Sionis, non addet ultrà captivam te ducere, viſitabit perverſitatem tuam O filia Edom, deducet velum turpitudinum tuarum.* 22

CAP. V.

Oratio Jeremiæ.

RECordare O Domine quid factum ſit nobis, vide, & conſidera opprobrium noſtrum. 1 *Hæreditas noſtra tranſlata eſt ad alienos, domus noſtræ ad extraneos.* 2 *Facti ſumus pupilli, non eſt pater, matres noſtræ tanquam viduæ, inde à diebus noſtris.* 3 *Ligna noſtra pretio venerunt ſuper collum noſtrum.* 4 *Perſecutionem paſſi ſumus, laboravimus, & non quievimus.* 5 *Ægyptus tradidit nos in manũ Aſſyriæ, propter ſatietatem ſuam.* 6 *Patres noſtri peccaverunt, & non exiſtunt: nos verò pœnam luimus iniquitatum eorum.* 7 *Servi cuſtodiunt nos, & non eſt qui eripiat è manu eorum.* 8 *Animarum noſtrarum periculo advehimus panem noſtrum, à facie gladii deſerti.* 9 *Pelles noſtræ uſtulatæ ſunt ut clibanus, corrugatæ ſunt à facie procellarum famis.* 10 *Humiliaverunt mulieres in Sione, virgines in urbibus Judæ.* 11 *Suſpenſi ſunt principes e manibus ſuis, ſenes haud honorantur.* 12 *Electi luctum aſſumpſerunt, juvenes infirmati ſunt in ligno,* 13 *Et ſenes defecerunt à porta, electi deſtiterunt à cantibus ſuis.* 14 *Evanuit gaudium cordis noſtri, verſa eſt tibia noſtra in mœrorem.* 15 *Corruit corona capitis noſtri. Væ nobis, quia peccavimus.* 16 *Ob hoc factum eſt cor noſtrũ dolens, ob hoc obtenebrati ſunt oculi noſtri;* 17 *Propter montem Sionis, quòd ille perierit, vulpes per hanc tranſierunt.* 18 *Tu verò O Domine, manes in æternum, ſolium tuum in generationem & generationem.* 19 *Cur obliviſceris ſalutem noſtram, derelinquis nos in longitudinem dierum?* 20 *Reduc nos O Domine, ut redeamus ad te: & renova dies noſtros, ut antea.* 21 *Nam omninò repuliſti nos, iratus nobis es præter modum.* 22

EZECHIEL.

ספר יחזקאל : א

CAP. I. א

medio in *ego* & ; mensis quinta *in* , quarto *in* ,anno trigesimo *in* fuit Et
1 וַיְהִי בִּשְׁלֹשִׁים שָׁנָה בָּרְבִיעִי בַּחֲמִשָּׁה לַחֹדֶשׁ וַאֲנִי בְתוֹךְ־
vidi & , cœli sunt aperti : Chebar fluvium *super* transmigrationis
הַגּוֹלָה עַל־נְהַר כְּבָר נִפְתְּחוּ הַשָּׁמַיִם וָאֶרְאֶה
quintus annus ipse) , mensis quinta *In* .Dei visiones
2 מַרְאוֹת אֱלֹהִים׃ בַּחֲמִשָּׁה לַחֹדֶשׁ הִיא הַשָּׁנָה הַחֲמִישִׁית
ad Domini verbum fuit Essendo (.Jojachin regis transmigrationis
3 לְגָלוּת הַמֶּלֶךְ יוֹיָכִין׃ הָיֹה הָיָה דְבַר־יְהוָה אֶל־
:Chebar flumen *super* ,Chasdim terra in sacerdotem ,Buzi filium, Jechezchel
יְחֶזְקֵאל בֶּן־בּוּזִי הַכֹּהֵן בְּאֶרֶץ כַּשְׂדִּים עַל־נְהַר כְּבָר
turbinis ventus ecce & ,vidi Et .Domini *manus* ibi eum super fuit &
4 וַתְּהִי עָלָיו שָׁם יַד־יְהוָה׃ וָאֵרֶא וְהִנֵּה רוּחַ סְעָרָה
ei splendor & ,*sese reciprocans* ignis & ,magna nubes , Aquilone ab *veniens*
בָּאָה מִן־הַצָּפוֹן עָנָן גָּדוֹל וְאֵשׁ מִתְלַקַּחַת וְנֹגַהּ לוֹ
.ignis medio de *flammæ crepitantis oculus* veluti ejus medio de & : *undique*
סָבִיב וּמִתּוֹכָהּ כְּעֵין הַחַשְׁמַל מִתּוֹךְ הָאֵשׁ׃
,eorum aspectus hic & : animalium quatuor similitudo ejus medio de Et
5 וּמִתּוֹכָהּ דְּמוּת אַרְבַּע חַיּוֹת וְזֶה מַרְאֵיהֶן
quatuor & : uni facies quatuor Et .eis hominis similitudo
6 דְּמוּת אָדָם לָהֵנָּה׃ וְאַרְבָּעָה פָנִים לְאֶחָת וְאַרְבַּע
planta & : *rectus* *pes* eorum pedes Et .*eis* unicuique alæ
7 כְּנָפַיִם לְאַחַת לָהֶם׃ וְרַגְלֵיהֶם רֶגֶל יְשָׁרָה וְכַף
æris *oculus* tanquam scintillantes &,vituli pedis planta veluti eorum *pedum*
רַגְלֵיהֶם כְּכַף רֶגֶל עֵגֶל וְנֹצְצִים כְּעֵין נְחֹשֶׁת
:*eorũ quadrilateris* quatuor *super* eorum alis *desubter* hominis manᵒ Et .politi
8 קָלָל׃ וִידֵו אָדָם מִתַּחַת כַּנְפֵיהֶם עַל אַרְבַּעַת רִבְעֵיהֶם
ad *femina* Junctæ .ipsis quatuor in eorum alæ & , eorum facies &
9 וּפְנֵיהֶם וְכַנְפֵיהֶם לְאַרְבַּעְתָּם׃ חֹבְרֹת אִשָּׁה אֶל־
latus ad *vir* , *ipsa eundo in* revertebantur non :eorum alæ *suam sororem*
אֲחוֹתָהּ כַּנְפֵיהֶם לֹא־יִסַּבּוּ בְלֶכְתָּן אִישׁ אֶל־עֵבֶר
facies &,hominis facies eorum facierum similitudo Et .*ibant suarum facierum*
10 פָּנָיו יֵלֵכוּ׃ וּדְמוּת פְּנֵיהֶם פְּנֵי אָדָם וּפְנֵי
sinistra à bovis facies & ; ipsorum quatuor dexteram ad , leonis
אַרְיֵה אֶל־הַיָּמִין לְאַרְבַּעְתָּם וּפְנֵי־שׁוֹר מֵהַשְּׂמֹאול
eorum alæ & ,eorum facies Et .ipsis quatuor aquilæ facies & :ipsis quatuor
11 לְאַרְבַּעְתָּן וּפְנֵי־נֶשֶׁר לְאַרְבַּעְתָּן׃ וּפְנֵיהֶם וְכַנְפֵיהֶם
duæ & ,uniuscujusque junctæ duæ : unicuique , desuper *disjunctæ*
פְּרֻדוֹת מִלְמָעְלָה לְאִישׁ שְׁתַּיִם חֹבְרוֹת אִישׁ וּשְׁתַּיִם
:*ibãt suarũ facierum latus* *ad* unumquodque Et.eorum corpora *tegentes*
12 מְכַסּוֹת אֵת גְּוִיֹתֵיהֶנָה׃ וְאִישׁ אֶל־עֵבֶר פָּנָיו יֵלֵכוּ
revertebãtur non:ambulabãt,ambulandi *animus* *illuc* erat quo
אֶל אֲשֶׁר יִהְיֶה־שָּׁמָּה הָרוּחַ לָלֶכֶת יֵלֵכוּ לֹא יִסַּבּוּ
prunarum veluti eorum aspectus animalium similitudo Et.*illa ambulando in*
13 בְּלֶכְתָּן׃ וּדְמוּת הַחַיּוֹת מַרְאֵיהֶם כְּגַחֲלֵי־
inter *perambulans* ipsa , lampadarum aspectus tanquam,ardentium ignis
אֵשׁ בֹּעֲרוֹת כְּמַרְאֵה הַלַּפִּדִים הִיא מִתְהַלֶּכֶת בֵּין
.fulgur *egrediens* igne de & , igni splendor & : animalia
הַחַיּוֹת וְנֹגַהּ לָאֵשׁ וּמִן־הָאֵשׁ יוֹצֵא בָרָק׃

Versio VULG. LAT.

PROPHETIA EZECHIELIS.

CAP. I.

1 ET factum est in trigesimo anno,
in quarto, in quinta mensis,
cùm essem in medio captivorum
juxta fluvium Chobar, aperti
sunt cœli, & vidi visiones Dei.
2 In quinta mensis, ipse est annus
quintus transmigrationis regis
3 Joachin, Factum est verbũ Domini
ad Ezechielem filium Buzi
sacerdotem in terra Chaldæorũ,
secus flumen Chobar: & facta est
4 super eum ibi manus Domini. Et
vidi, & ecce ventus turbinis veniebat
ab Aquilone, & nubes
magna, & ignis involvens, &
splendor in circuitu ejus : & de
medio ejus quasi species electri,
5 id est, de medio ignis : Et in medio
ejus similitudo quatuor animalium
: & hic aspectus eorum,
6 similitudo hominis in eis. Quatuor
facies uni, & quatuor pen-
7 næ uni. Pedes eorum pedes recti,
& planta pedis eorum quasi
planta pedis vituli, & scintillæ
8 quasi aspectus æris candentis. Et
manus hominis sub pennis eorũ
in quatuor partibus : & facies &
pennas per quatuor partes habe-
9 bant. Junctæque erant pennæ eorum
alterius ad alterum: non revertebantur
cùm incederent: sed
unumquodq; ante faciẽ suã gra-
10 diebatur. Similitudo autem vultûs
eorũ: facies hominis, et facies
leonis à dextris ipsorũ quatuor;
facies autem bovis, à sinistris ipsorum
quatuor; & facies aquilæ
11 desupèr ipsorum quatuor. Facies
eorum, & pennæ eorum extentæ
desupér : duæ pennæ singulorum
jungebantur, & duæ tegebant
12 corpora eorum : Et unumquodque
eorum coram facie sua ambulabat
: ubi erat impetus spiritûs,
illuc gradiebantur, nec revertebantur
cùm ambularent,
13 Et similitudo animalium, aspectᵒ
eorum quasi carbonum ignis ardentium,
& quasi aspectus lampadarum.
Hæc erat visio discurrens
in medio animaliũ, splendor ignis,
& de igne fulgur egrediens.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

(†) ἸΕΖΕΚΙΗ΄Λ.

ΚΕΦ. α΄.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ τριακοστῷ ἔτει ἐν τῷ τετάρτῳ μηνὶ πέμπτῃ τοῦ μηνὸς, ϗ ἐγὼ ἤμην ἐν μέσῳ τῆς αἰχμαλωσίας ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Χοβάρ· ϗ ἠνοίχθησαν οἱ οὐρανοὶ, ϗ ἴδον ὁράσεις θεοῦ. 2 Πέμπτῃ τοῦ μηνός· τοῦτο τὸ ἔτος (α) τὸ πέμπτον τῆς αἰχμαλωσίας τοῦ βασιλέως Ἰωακείμ· 3 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἰεζεκιὴλ υἱὸν Βουζεὶ, τὸν ἱερέα, ἐν γῇ Χαλδαίων, ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Χοβάρ· ϗ ἐγένετο 4 (β) ἐπ᾽ ἐμὲ χεὶρ κυρίου. Καὶ ἴδον, ϗ ἰδοὺ πνεῦμα ἐξαῖρον ἤρχετο ἀπὸ Βοῤῥᾶ, ϗ νεφέλη μεγάλη ἐν αὐτῷ, ϗ φέγγος κύκλῳ αὐτοῦ ϗ πῦρ ἐξαστράπτον. ϗ ἐν τῷ μέσῳ αὐτοῦ ὡς (γ) ὅρασις ἠλέκτρου ἐν μέσῳ τοῦ πυρὸς, ϗ φέγγος ἐν αὐτῷ. 5 Καὶ ἐν τῷ μέσῳ ὡς ὁμοίωμα τεσσάρων ζώων· ϗ αὕτη ἡ ὅρασις αὐτῶν· ὁμοίωμα ἀνθρώπου ἐπ᾽ αὐτοῖς. 6 Καὶ τέσσαρα πρόσωπα τῷ ἑνὶ, καὶ 7 τέσσαρες πτέρυγες τῷ ἑνί. Καὶ τὰ σκέλη αὐτῶν ὀρθὰ, ϗ πτερωτοὶ οἱ πόδες αὐτῶν, ϗ σπινθῆρες, ὡς ἐξαστράπτων χαλκός· ϗ ἐλαφραὶ αἱ πτέρυγες αὐτῶν. 8 Καὶ χεὶρ ἀνθρώπου ὑποκάτωθεν τῶν πτερύγων αὐτῶν ἐπὶ τὰ τέσσαρα μέρη αὐτῶν. 9 Καὶ τὰ πρόσωπα αὐτῶν (δ) τῶν τεσσάρων οὐκ ἐπεστρέφοντο ἐν τῷ βαδίζειν αὐτά· ἕκαστον (ε) ἀπέναντι τοῦ προσώπου αὐτῶν ἐπορεύοντο. 10 Καὶ (ζ) ὁμοίωσις τῶν προσώπων αὐτῶν, πρόσωπον ἀνθρώπου (η), ϗ πρόσωπον τοῦ λέοντος ἐκ δεξιῶν τοῖς τέσσαρσι, ϗ πρόσωπον μόσχου ἐξ ἀριστερῶν τοῖς τέσσαρσι, ϗ πρόσωπον ἀετοῦ τοῖς τέσσαρσι. 11 Καὶ αἱ πτέρυγες αὐτῶν ἐκτεταμέναι ἄνωθεν τοῖς τέσσαρσιν, ἑκατέρῳ δύο συνεζευγμέναι πρὸς ἀλλήλας, ϗ δύο ἐπεκάλυπτον ἐπάνω τοῦ σώματος αὐτῶν. 12 Καὶ ἑκάτερον κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ ἐπορεύετο· οὗ ἂν (θ) ἦν τὸ πνεῦμα πορευόμενον (ι) ἐπορεύοντο, ϗ οὐκ ἐπέστρεφον. 13 Καὶ ἐν μέσῳ τῶν ζώων ὅρασις (κ) ὡς ἀνθράκων πυρὸς καιομένων, ὡς ὄψις λαμπάδων συστρεφομένων ἀναμέσον τῶν ζώων, ϗ φέγγος τοῦ πυρὸς, ϗ ἐκ τοῦ πυρὸς ἐξεπορεύετο (λ) ἀστραπή.

MS.A. (†) ..ζεκιὴλ προφήτης ιϛ΄.

MS. A. (α) πέμπτον (β) ἐκεῖ ἐπ᾽ (γ) ὁμοίωμα (δ) ϗ αἱ πτέρυγες αὐτῶν τῶν τεσσάρων ἐχόμεναι ἑτέρα τῆς ἑτέρας, ϗ τὰ πρόσωπα αὐτῶν οὐκ ἐπεστρέφοντο (ε) κατέναντι (ζ) ἡ ὁμοίωσις (η) αὐτοῖς, ϗ πρόσωπον λέοντος ἐκ δεξιῶν τοῖς τεσσάροις, (θ ἦ (ι) ἐπορεύετο, ϗ οὐκ ἐπέστρεφεν. (κ) ἀνθράκων (λ) ὡς ἀστραπή· ϗ τὰ ζῶα ἔτρεχον, ϗ ἀνέκαμπτον ὡς εἶδος τοῦ Βεζέκ. Καὶ ἴδον

IEZECIEL.

CAP. I.

ET factum est in tricesimo anno, in quarto mense, quintâ mensis; & ego eram in medio captivitatis super fluviũ Chobar: et aperti sunt cœli: & vidi visiones Dei: Quintâ mensis: (hic est annus quintus captivitatis regis Joacim:) Et factum est verbum Domini ad Iezeciel filium Buzi sacerdotem, in terra Chaldæorum, super fluvium Chobar. Et facta est super me manus Domini. Et vidi: Et ecce spiritus (a) auferens veniebat ab Aquilone: & nubes magna in eo: (b) & splendor in circuitu ejus, & ignis fulgurans: Et in (c) medio ejus quasi visio electri in medio ignis, & (d) splendor in eo. Et in medio quasi similitudo quatuor animalium: et hæc visio eorũ. Similitudo hominis in eis: Et quatuor facies uni, & quatuor alæ uni: Et crura eorum recta; & pedes eorum pennati, et scintillæ, quasi (e) fulgurans æs: Et leves pennæ eorum: Et manus hominis sub pennis eorum in quatuor partibus ipsorum: Et (f) facies eorum quatuor, non revertebantur, cùm incederent ipsa: unumquodque ante faciem suam gradiebantur. Et similitudo faciei eorum, facies hominis, & facies leonis à dextris, ipsis quatuor: & facies vituli à sinistris, ipsis quatuor, & facies aquilæ ipsis quatuor. (g) Et alæ eorum extentæ desuper ipsis quatuor: unicuique duæ, conjunctæ ad se invicèm, et duæ cooperiebant desuper corpᵒ ipsorũ; Et unumquodque coram facie sua ambulabat: quocumque ambulabat spiritus, ibant, & non revertebantur. Et in medio animalium visio quasi carbonum ignis ardentium, quasi visio lampadarum discurrentium inter medium animalium: & splendor ignis: & de igne egrediebatur (h) fulgur.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 וַהֲוָה בִּתְלָתִין שְׁנִין לִזְמַן דְּאַשְׁכַּח חִלְקִיָּה כָּהֲנָא רַבָּא סִפְרָא דְאוֹרַיְתָא בְּבֵית מַקְדְּשָׁא
בַּעֲזָרְתָּא תְּחוֹת אוּלְמָא בְּפַלְגוּת לֵילְיָא בָּתַר מַעֲלָנֵי סִיהֲרָא בְּיוֹמֵי יֹאשִׁיָּה בַּר אָמוֹן מֶלֶךְ
שִׁבְטָא דְבֵית יְהוּדָה בְּתַמּוּז בַּחֲמְשָׁא לְיַרְחָא אֲמַר נְבִיָּא וַאֲנָא בְּגוֹ בְּנֵי גָלוּתָא עַל נְהַר
2 כְּבָר אִתְפְּתַחוּ שְׁמַיָּא וַחֲזֵית בְּחֵזוּ נְבוּאָה דִשְׁרָת עֲלַי חֵיזוּ יְקַר שְׁכִנְתָּא דַיְיָ׃ בַּחֲמְשָׁא
3 לְיַרְחָא הִיא שַׁתָּא חֲמִשֵׁתָא לְגָלוּת מַלְכָּא יוֹיָכִין׃ מֶהֱוֵי הֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם
יְחֶזְקֵאל בַּר בּוּזִי כָּהֲנָא בְּאַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל תָּב תִּנְיָנוּת וְאִתְמַלַּל עִמֵּיהּ בִּמְדִינַת אֲרַע
4 כַּסְדָּאֵי עַל נְהַר כְּבָר וּשְׁרַת עֲלוֹהִי תַּמָּן רוּחַ נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ׃ וַחֲזֵית וְהָא רוּחַ עַלְעוֹלָא
אָתֵי מִן צִפּוּנָא עֲנָן רַב וְאֶשָּׁתָא מִשְׁתַּלְהֲבָא וְזִיהוֹרָא לֵיהּ סְחוֹר סְחוֹר וּמִגּוֹ עֲנָנָא וּמִגּוֹ
5 עַלְעוֹלָא כְּעֵין חַשְׁמְלָא מִגּוֹ אֶשָּׁתָא׃ וּמִגַּוַהּ דְּמוּת אַרְבַּע בִּרְיָן וְדֵין חֶזְוֵיהוֹן דְּמוּת אֱנָשָׁא
6 לְהֵין׃ וְאַרְבְּעָא אַפִּין לַחֲדָא וְאַרְבַּע אַפִּין לְכָל חַד וְחַד שִׁתַּת עֲסַר אַפִּין לְבִרְיְתָא חֲדָא
מִנְיַן אַפַּיָּא דְאַרְבַּע בִּרְיָן שִׁתִּין וְאַרְבְּעָה אַפִּין וְאַרְבְּעָא גַּפִּין לַחֲדָא וְאַרְבְּעָא גַּפִּין לְכָל
חַד וְחַד שִׁתַּת עֲסַר גַּפִּין לְכָל אַפָּא וְאַפָּא שִׁתִּין וְאַרְבְּעָא גַּפִּין לְבִרְיְתָא חֲדָא וַהֲווֹ מִנְיַן
7 גַּפַּיָּא דְאַרְבַּע בִּרְיָן מָאתָן וְחַמְשִׁין וְשִׁתָּא גַּפִּין׃ וְרַגְלֵיהוֹן רַגְלִין כֵּיוָנָן וּפַרְסַת רַגְלֵיהוֹן
8 כְּפַרְסַת רַגְלִין סַגְלְגָלָן וּמְזִיעָן עָלְמָא בְּמַהְכֵהֶן וּמְנַצְנְצָן כְּעֵין נְחָשׁ מְצַלְהַב׃ וִידִין כִּידֵי
אֱנָשָׁא עֲבִיד לְהוֹן מִתְּחוֹת גַּפֵּיהוֹן עַל אַרְבַּע סִטְרֵיהוֹן לְמֵיתֵי בְהֵן גּוּמְרִין דְּאֶשָּׁא
מִבֵּינֵי כְרוּבַיָּא מִתְּחוֹת רְקִיעָא דְעַל רֵישֵׁיהוֹן לְמִתַּן עַל חוּפְנֵי סְרָפַיָּא לְמִזְרַק עַל
אֲתַר רַשִׁיעַיָּא לְאַבָּדָא חַיָּבַיָּא עָבְרֵי מֵימְרֵיהּ וְאַפֵּיהוֹן וְגַפֵּיהוֹן שָׁוֵי לְאַרְבַּעְתְּהֵין׃
9 מְכַוְּנָן חֲדָא לָקֳבֵיל חֲדָא גַּפֵּיהוֹן לָא מִתְחַזְרִין בְּמֵיזַלְהֶן בִּרְיָא לָקֳבֵיל אַפַּהָא אָזְלָן׃
10 וּדְמוּת אַפֵּיהוֹן אַפֵּי אֱנָשָׁא וְאַפֵּי אַרְיָא עֲבִיד מִיַּמִּינָא לְאַרְבַּעְתְּהֶן וְאַפֵּי תוֹרָא עֲבִיד
11 מִסְּמָלָא לְאַרְבַּעְתְּהֶן וְאַפֵּי נִשְׁרָא לְאַרְבַּעְתְּהֶן׃ וְאַפֵּיהֶן וְגַפֵּיהֶן פְּרִישָׁן מִלְּעֵלָּא לַחֲדָא
12 תַּרְתֵּין מְכַוְּנָן חֲדָא וְתַרְתֵּין מְכַסְּיָן יַת גְּוִיָּתְהֵין׃ וּבִרְיָא לָקֳבֵל אַפַּהָא אָזְלָא לַאֲתַר
13 דִּתְהֵוֵי תַמָּן רַעֲוָא לְמֵיזַל אָזְלָן לָא מִתְחַזְרָן בְּמֵיזַלְהֶן׃ וּדְמוּת בִּרְיָתָא חֶזְוֵיהֶן כְּגוּמְרִין
דְּאֶשָּׁא בָּעֲרָן כְּחֵזוּ בְעוּרַיָּא אֶשָּׁתָא מִשְׁתַּלְהֲבָא בֵּין בִּרְיָתָא וְזִיהוֹרַיָּא לְאֶשָּׁתָא וּמִן
אֶשָּׁתָא נְפֵיק בַּרְקָא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAPUT. I.

ET factum est triginta *annis* postquàm invenisset Helchias sacerdos
magnus librum Legis in domo sanctuarii in atrio sub porticu, media nocte
post occasum Lunæ, in diebᵒ Josiæ filii Amon regis tribᵒ domᵒ Juda, in mense
Thammuz, quinta die mensis, dixit Propheta: cũ essẽ in medio transmigrationis
juxta fluviũ Chobar, aperti sunt cœli, & vidi in visione prophetiæ
quæ resedit sup me, visionẽ gloriæ majestatis Dñi : Quinta die mensis, 2
ipse est annᵒ quintᵒ transmigrationis regis Joachin : Factũ est verbũ pro- 3
phetiæ à facie Dñi ad Ezechielem filiũ Buzi sacerdotẽ in terra Israel. Iterũ
secundò locutᵒ est cum eo in provincia terræ Chaldæorũ juxta fluviũ Chobar,
& resedit sup eum ibi spiritus prophetiæ à facie Dñi. Et vidi & ecce 4
ventᵒ turbinis veniebat ab Aquilone, & nubes magna & ignis inflammatᵒ,
& splendor ei undiquaque , & de medio nubis & turbinis quasi species
electri ex medio ignis. Ex medio verò ejᵒ similitudo quatuor creaturarum, 5
quarũ hic erat aspectus, ut similitudo hominis esset eis. Et quatuor facies 6
uni, & quatuor *vultus* unicuique: sedecim facies unicuiq; creaturæ: numerᵒ
vultuũ quatuor creaturarũ, sexaginta & quatuor facies erant. *Et quatuor
alæ uni, & quatuor pennæ unicuiq; : sedecim pennæ singulis faciebus, sexaginta
& quatuor pennæ creaturæ uni: numerᵒ pennarũ quatuor creaturarum,
ducentæ & quinquaginta & sex pennæ erant.* Et pedes earũ pedes 7
recti, & planta pedis earũ quasi planta pedũ rotundorũ: & movebãt orbẽ
cùm incederent, & splendebant in morẽ æris candentis. Et manᵒ quasi ma- 8
nᵒ hominis factæ erãt eis sub pennis earũ ad quatuor latera earũ, ut haurirẽt
in eis prunas ignis de medio Cherubim sub firmamento quod erat sup
capita earũ; ad dandũ sup pugillos Seraphim, ut dispergerent eas sup locũ
impiorũ, ad dispergendos sceleratos qui transgrediuntur verbũ ejᵒ: & facies
earũ & pennæ earum æquales erãt ipsis quatuor. Directæ erãt pennæ ea- 9
rum una ex adverso alterius: non reflectebantur cùm ambularent creaturæ,
sed ante faciem suam gradiebantur. Et similitudo vultus earum, facies ho- 10
minis, & facies leonis factæ erant à dextera illis quatuor, facies autem bovis
facta erat à sinistra illis quatuor, & facies aquilæ illis quatuor. Et facies 11
earum & pennæ earum extensæ desuper : duæ pennæ uniuscujusque directæ
erant è regione alterius, & duæ tegebant corpora earum. Creaturæ 12
autem ante faciem suam ambulabant, ad locum, quò volebant ire, ibant :
non convertebantur cùm ambularent. Et similitudo creaturarum & 13
aspectus earum quasi carbonum ignis ardentium, quasi aspectus lampadum
: ignis inflammatus [*erat*] inter creaturas, & splendor [*erat*] igni,
& de igne egrediebatur fulgur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܟܬܒܐ ܕܢܒܝܘܬܗ ܕܚܙܩܝܐܝܠ ܢܒܝܐ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܘܗܘܐ ܒܫܢܬ ܬܠܬܝܢ ܒܚܡܫܐ ܒܝܪܚܐ ܪܒܝܥܝܐ. ܘܐܢܐ ܒܝܬ ܫܒܝܐ ܗܘܝܬ. ܥܠ ܢ
ܟܒܪ. ܘܐܬܦܬܚܘ ܫܡܝܐ. ܘܚܙܝܬ ܚܙܘܐ ܕܐܠܗܐ. * ܒܚܡܫܐ ܒܝܪܚܐ. ܫܢܬܐ ܚܡ
ܠܫܒܝܬܗ ܕܝܘܝܟܝܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܚܙܩܝܐܝܠ ܒܪ ܒ
ܟܗܢܐ: ܒܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ ܥܠ ܢܗܪ ܟܒܪ. ܘܗܘܬ ܥܠܝ ܬܡܢ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܚܙܝܬ
ܘܗܐ ܪܘܚܐ ܕܥܠܥܠܐ ܐܬܝܐ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܥܢܢܐ ܪܒܐ. ܘܢܘܪܐ ܡܬܚܒܠܐ ܘܡܙܠܓܐ ܗܘܬ ܚܕܪܝܗ. ܘ
ܘܡܢ ܓܘܗ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܡܢ ܓܘ ܢܘܪܐ. * ܘܡܢ ܓܘܗ ܕܡܘܬܐ ܕܐܪܒܥ ܚܝܘܢ. ܘܗܢܘ ܚܙܘܗܝܢ. ܕ
ܕܡܘܬܐ ܕܒܪܢܫܐ ܐܝܬ ܠܗܝܢ. * ܘܐܪܒܥܐ ܐܦܝܢ ܠܚܕܐ. ܘܐܪܒܥܐ ܓܦܝܢ ܠܚܕܐ. * ܘܪܓܠܝܗܝܢ ܦܫ
ܘܦܪܣܬܐ ܕܪܓܠܝܗܝܢ ܐܝܟ ܦܪܣܬܐ ܕܥܓܠܐ. ܘܡܨܠܚܢ ܐܝܟ ܢܚܫܐ ܕܡܨܪܦ. * ܘ
ܕܒܪܢܫܐ ܠܬܚܬ ܓܦܝܗܝܢ ܡܢ ܐܪܒܥܐ ܣܛܪܝܗܝܢ. ܘܐܦܝܗܝܢ ܘܓܦܝܗܝܢ ܒܣܛܪ
* ܘܓܦܝܗܝܢ ܢܩܝܦܢ ܗܘܝ ܚܕܐ ܠܚܕܐ. ܘܟܠ ܕܐܙܠܝܢ ܗܘܝ. ܠܩܘܒܠܗܝܢ ܐܙܠܝܢ ܗܘ
ܡܬܗܦܟܢ ܗܘܝ. * ܘܕܡܘܬܐ ܕܐܦܝܗܝܢ. ܐܦܐ ܕܒܪܢܫܐ ܘܐܦܐ ܕܐܪܝܐ. ܒܝܡܝܢܗܝܢ ܕܐܪܒ
ܘܐܦܐ ܕܬܘܪܐ ܘܐܦܐ ܕܢܫܪܐ. ܒܣܡܠܗܝܢ ܕܐܪܒܥܬܝܗܝܢ. * ܘܐܦܝܗܝܢ ܘܓܦܝܗܝܢ. ܦܪܝܣܢ ܗܘ
ܡܢ ܠܥܠ. ܬܪܬܝܢ ܢܩܝܦܢ ܚܕ ܠܚܕ. ܘܬܪܬܝܢ ܡܟܣܝܢ ܦܓܪܝܗܝܢ. * ܘܡܗܠܟܢ
ܐܝܟ ܗܘܝ ܠܟܠ ܐܬܪ ܕܐܙܠܐ ܗܘܬ ܪܘܚܐ. ܘܠܐ ܡܬܗܦܟܢ ܗܘܝ. * ܘܕܡܘܬܐ ܕܚܝܘܬܐ. ܐ
ܚܙܘܐ ܕܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ ܕܝܩܕܐ. ܘܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܠܡܦܐܕܐ ܡܗܠܟܐ ܗܘܬ ܒܝܬ ܚܝܘܬܐ. ܘܢܘܗ
ܗܘܬ ܢܘܪܐ. ܘܡܢܗ ܢܦܩ ܗܘܐ ܒܪܩܐ.

LIBER PROPHETIÆ
HEZECIELIS
PROPHETÆ.

CAPUT I.

VErtente anno trigeſimo, quintâ *die* menſis quarti, dum ego inter captivos eſſem ad fluvium Chebar; aperti ſunt cœli, & vidi viſionem Dei. 1 Quintâ *inquam* menſis, anno quinto à captivitate Jojacimi regis Judæ, 2 Fuit ſermo Dñi ad Hezecielem filium Buzi ſacerdotem, in terra Chaldæorum ſecus fluvium Chebar. 3 Fuit itaque ſuper me ibi manus Domini; Et cùm aſpexiſſem, ecce ventus turbineus veniebat ab Aquilone, & nubes magna: circa hanc ignis ardebat fulgebâtque; in medio autem ipſius erat quaſi viſio, intra ignem. 4 In medio enim ipſius erat ſimilitudo quatuor animalium, quorum hæc erat ſpecies: Speciem referebant humanam: 5 Quaterni vultus erant unicuique, & quaternæ alæ: 6 Pedes eorum porrecti, & ungulæ pedum ſimiles ungulis vitulinis, ſcintillantes ut æs rutilans: 7 Manus humana ſub alis eorum è quaternis eorum lateribus, et vultus alæque eorum erant in lateribus eorum: 8 Alæ eorum conjunctæ erant altera cum altera; & quoquoverſùm inceſſiſſent, ante ſe incedebant, nec vertendum ſibi erat. 9 Figura verò vultuũ eorum *hæc erat*, vultus hominis & vultus leonis in lateribus eorum dexteris, & vultus bovis vultúſque aquilæ in lateribus eorum ſiniſtris. 10 Facies eorum & alæ eorum porrectæ erant ſurſum, duæ erant invicèm conjunctæ, duæ verò tegebant corpora eorum: 11 Et ante ſe incedebant quocunque ibat ille ventus, nec vertebant ſeſe. 12 Similitudo autem horum animalium erat velut aſpectus carbonum ignis ardentium: & quaſi quædam ſpecies lampadis diſcurrebat inter animalia: porrò ignis ſcintillabat, & fulgur ex eo prodibat. 13

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الرحمن الرحيم * نبتدي بعونه الله جل جلاله بكتاب حزقيـ
النبي بن بوزي * بركاته تكون معنا الي الابد امين *
* الفصل الاول * * الاصحاح الاول *

* وكان في السنة الثلاثين في الشهر الرابع * في الخامس من الشهر * وانا كنت في وسط السبي
علي نهر خوبار * فانفتحت السموات ورايت رويا الله * في الخامس من الشهر * هذه السـ
الخامسة من سبي يواقيم الملك * وكان قول الرب الي حزقيال بن بوزي الكاهن في ار
الكلدانيين على نهر خوبار * وكانت هناك علي يد الرب * ونظرت واذا ريح مرتفعة اقبلت
من الجربياء * وفيها سحابة عظيمة * ونور حولها * ونار تبرق وفي وسطها مثل منظر الكهر
في وسط النار * ونور فيها * وفي الوسط مثل شبه اربعة حيوانات * وهذا منظرها * شبه
انسان فيها * واربعة وجوه للواحد * واربعة اجنحة للواحد * وسيقانها مستقيمة * وارجل
طاير * وشرار مثل نحاس يبرق * واجنحتها خفيفة * ويد انسان من تحت اجنحتها
جوانبها الاربعة * ووجوهها واجنحتها الاربعة متصلة الاخر بالاخر * ووجوهها لا ترج
عند ما تسير * كل واحد قدام وجهه يسير * واشباه وجوهها * وجه انسان لها * ووج
اسد عن اليمين للاربعة * ووجه عجل عن اليسار للاربعة * ووجه نسر للاربعة * ووجوهها
واجنحتها منبسطة من فوق للاربعة * لكل واحد اثنان مزدوجان الي بعضها بعض
واثنان مستوران فوق جسدها * وكل واحد لوجهه يسير * حيث ان تكون الريح سائر
يسيرون ولا يرجعون * وفي وسط الحيوانات منظر مثل جمر نار متوقد * مثل منظر مصا
سابح بين الحيوانات * ونور نار ومن النار يخرج مثل برق *

IN NOMINE DEI
Miſericordis, Clementiſſimi.

Aggredimur *freti* auxilio Dei ſummè glorioſi librum Hezecielis Prophetæ filii Buzi, cujus benedictiones ſint ſuper nos in perpetuum. Amen.

CAP. I.
Textus primus.

ET fuit anno trigeſimo, menſe quarto, quintâ menſis, dum ego eſſem in medio captivitatis ad fluvium Chobar, ut aperirentur cœli, & viderem viſionem Dei: 1 *Quintâ menſis (hic erat annus quintus à captivitate Joacimi regis)* 2 *Fuit ſermo Domini ad Hezecielem filium Buzi ſacerdotem, in terra Chaldæorum, ſecus fluvium Chobar: & fuit ibi ſuper me manus Domini,* 3 *Vidique, & ecce ventus excitatus advenit ex Aquilone, & in illo nubes ingens circa quam lux erat & ignis fulgurans, & in hujus meditullio quaſi quidam aſpectus ſuccini in medio ignis, & lux in eo.* 4 *Et in meditullio veluti ſpecies quatuor animalium quorum hujuſmodi erat aſpectus: Forma humana inerat eis;* 5 *Et quatuor facies unicuique, & quatuor alæ unicuique:* 6 *Crura eorum recta, & pedes volantes: & ſcintillæ æris inſtar fulgurantes: alæque eorum leviſſimæ:* 7 *Manus hominis ſub alis eorum ad quaterna ipſorum latera:* 8 *Facies eorum & alæ ipſorum quaternæ cohærebant altera cum altera: & facies eorum non vertebantur cum ambularent; unumquodque ante faciem ſuam gradiebatur.* 9 *Formæ autem facierum eorum* tales erant: *Faciem hominis, faciémque leonis habebant ipſa quatuor à dextera; faciem autem vituli habebant ipſa quatuor à ſiniſtra, faciémque aquilæ eadem quatuor:* 10 *Et tam facies quàm alæ ipſorum quatuor porrectæ erant ſupernè. Unumquodque duas alas habebat ſimul conjunctas, duas verò ſuper corpus ſuum expanſas:* 11 *Et unumquodque ante faciem ſuam gradiebatur: quocunque ventus ille pergebat, ibant, nec vertebant ſeſe.* 12 *In medio autem animalium erat aſpectus quaſi carbonum ignis accenſorum, quaſi lampadarum diſcurrentium inter animalia; & ſplendor ignis; & ex igne procedebant quaſi fulgura.* 13

יחזקאל : א

. vidi Et .corruscationis aspectum secundùm ; redire & ,currere animalia Et
14 והחיות רצוא ושוב כמראה הבזק : וארא 15
quatuor ad animalia juxta terra in una rota ecce & ;animalia
החיות והנה אופן אחד בארץ אצל החיות לארבעת
, Tarsis oculus tanquam earum opus & , rotarum Aspectus .ejus facies
16 פניו : מראה האופנים ומעשיהם כעין תרשיש
si ac earum opus &,earum aspectus &:ipsis quatuor una similitudo &
ודמות אחד לארבעתן ומראיהם ומעשיהם כאשר
, sua quadrilatera quatuor Ad .rotæ medio in rota esset
17 יהיה האופן בתוך האופן : על ארבעת רבעיהן
altitudo &,eorum canthi Et .ipsa eundo in revertebantur non :ibant ,ipsa eundo in
18 בלכתם ילכו לא יסבו בלכתן : וגביהן וגבה
undique oculis plena eorum dorsa &:eas propter pavor & ,eis
להם ויראה להם וגבתם מלאת עינים סביב
: ea juxta rotæ ambulabant ,animalia eundo in Et .ipsis quatuor
19 לארבעתן : ובלכת החיות ילכו האופנים אצלם
Ad .rotæ se elevabant ,terram desuper animalia se extollendo in &
20 ובהנשא החיות מעל הארץ ינשאו האופנים : על
: eundum ad animus illuc , ibant , eundum ad animus illuc erat quod
אשר יהיה שם הרוח ללכת ילכו שמה הרוח ללכת
.rotis in animalis spiritus nam , ea contra se elevabant rotæ &
והאופנים ינשאו לעמתם כי רוח החיה באופנים :
desuper se elevando in & : stabant , ipsa stando in & ,ibant ,ipsa ambulando In
21 בלכתם ילכו ובעמדם יעמדו ובהנשאם מעל
.rotis in animalis spiritus quia,ea contra rotæ se elevabant , terra
הארץ ינשאו האופנים לעמתם כי רוח החיה באופנים :
,terribilis gelu oculus ut , expansio animalis capita super similitudo Et
22 ודמות על ראשי החיה רקיע כעין הקרח הנורא
eorum alæ expansione sub Et .desuper eorum capita super extenta
23 נטוי על ראשיהם מלמעלה : ותחת הרקיע כנפיהם
, se tegentes duæ unicuique : suam sororem ad unaquæque rectæ
ישרות אשה אל אחותה לאיש שתים מכסות להנה
audivi Et .sua corpora sibi tegentes duæ unicuique &
24 ולאיש שתים מכסות להנה את גויתיהם : ואשמע
vocem tanquam multarum aquarum vocem tanquā,eorum alarum vocem
את קול כנפיהם כקול מים רבים כקול
,ipsa stando in : turmæ vocem tanquam loquelæ vocem ,ipsa eundo in ,Saddai
שדי בלכתם קול המלה כקול מחנה בעמדם
super quod firmamento desuper vox erat Et .suas alas dimittebant
25 תרפינה כנפיהן : ויהי קול מעל לרקיע אשר על
firmamentum desuper Et .suas alas dimittebant ipsi stando in : eorū caput
26 ראשם בעמדם תרפינה כנפיהן : וממעל לרקיע
similitudo ,Sapphiri lapidis aspectus tanquam eorum caput super quod
אשר על ראשם כמראה אבן ספיר דמות
hominis aspectus tanquā similitudo throni similitudinem super & : throni
כסא ועל דמות הכסא דמות כמראה אדם
aspectū tanquā ,flammæ crepitantis oculum ut vidi Et .desuper eum super
27 עליו מלמעלה : וארא כעין חשמל כמראה
aspectu ab & : supra &,ejus lumborū aspectu ab circum ipsi domus ignis
אש בית לה סביב ממראה מתניו ולמעלה וממראה
splendorem & ignis aspectum tanquam vidi , infra & , ejus lumborum
מתניו ולמטה ראיתי כמראה אש ונגה
die in , nube in fuerit cùm arcus aspectum Velut .circum ei
28 לו סביב : כמראה הקשת אשר יהיה בענן ביום
.circum splendoris aspectus sic , pluviæ
הגשם כן מראה הנגה סביב

Versio VULG. LAT.

14 Et animalia ibant & revertebantur, in similitudinem fulguris co-
15 ruscantis. Cúmque aspicerem
animalia, apparuit rota una super
terram juxta animalia, habens
16 quatuor facies. Et aspectus rotarum, & opus earum, quasi visio
maris: & una similitudo ipsarū
quatuor: & aspectus earum &
opera, quasi sit rota in medio ro-
17 tæ. Per quatuor partes earū euntes ibant, & non revertebantur
18 cùm ambularent. Statura quoq;
erat rotis, & altitudo, & horribilis aspectus: & totum corpus o-
culis plenum in circuitu ipsarum
19 quatuor. Cúmque ambularent
animalia, ambulabant pariter &
rotæ juxta ea: & cùm elevarentur animalia de terra, elevaban-
20 tur simul & rotæ. Quocunque
ibat spiritus, illuc eunte spiritu,
& rotæ pariter elevabantur, sequentes eum. Spiritus enim vitæ
21 erat in rotis. Cum euntib⁹ ibant,
& cum stantibus stabant: & cum
elevatis à terra, pariter elevabantur & rotæ, sequentes ea:
quia spiritus vitæ erat in rotis.
22 Et similitudo super capita animalium firmamenti, quasi aspectus crystalli horribilis, & extenti super capita eorum desupér.
23 Sub firmamento autem pennæ
eorum rectæ alterius ad alterum:
unumquodque duabus alis velabat corpus suum, & alterum simi-
24 liter velabatur. Et audiebant sonum alarum, quasi sonum aquarum multarum, quasi sonum sublimis Dei: cùm ambularent quasi
sonus erat multitudinis, ut sonus
castrorum: cúmque starent, de-
25 mittebantur pennæ eorum. Nam
cùm fieret vox super firmamentum, quod erat super caput eorum, stabant, & submittebant
26 alas suas. Et super firmamentum,
quod erat imminens capiti eorū,
quasi aspectus lapidis sapphiri similitudo throni: & super similitudinem throni, similitudo quasi
27 aspectus hominis desupér. Et
vidi quasi speciem electri, velut
aspectum ignis, intrinsecus ejus
per circuitū: à lumbis ejus & desupèr, & à lumbis ejus usque deorsum, vidi quasi speciem ignis
28 splendentis in circuitu. Velut
aspectum arcûs cùm fuerit in
nube in die pluviæ: hic erat aspectus spendoris per gyrum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

15 Καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ τροχὸς εἷς ἐπὶ τῆς γῆς ἐχόμενος
16 τῶν ζώων τοῖς τέσσαρσι. Καὶ τὸ
εἶδος τῶν τροχῶν ὡς εἶδος θαρσείς. καὶ
ὁμοίωμα ἓν τοῖς τέσσαρσι· καὶ τὸ ἔργον
αὐτῶν ἦν καθὼς ἂν εἴη τροχὸς (λ) ἐν τρο-
17 χῷ. Ἐπὶ τὰ (μ) τέσσαρα μέρη αὐτῶν ἐπορεύοντο. οὐκ ἐπέστρεφον ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐ-
18 τά, Οὐδ᾽ οἱ νῶτοι αὐτῶν. καὶ ὕψος ἦν
αὐτοῖς. καὶ ἴδον αὐτά, καὶ οἱ νῶτοι αὐτῶν
πλήρεις ὀφθαλμῶν κυκλόθεν τοῖς τέσσαρ-
19 σιν. Καὶ ἐν τῷ πορεύεσθαι τὰ ζῶα, ἐπορεύοντο οἱ τροχοὶ ἐχόμενοι αὐτῶν· καὶ ἐν τῷ
ἐξαίρειν τὰ ζῶα ἀπὸ τῆς γῆς, ἐξήρειντο
20 οἱ τροχοί. Οὗ ἂν ἦν ἡ νεφέλη, ἐκεῖ τὸ
πνεῦμα τοῦ πορεύεσθαι, ἐπορεύοντο (μ) οἱ
τροχοὶ καὶ ἐξήρειντο σὺν αὐτοῖς, διότι
21 πνεῦμα ζωῆς (ν) ἐν τοῖς τροχοῖς. Ἐν τῷ
πορεύεσθαι αὐτὰ ἐπορεύοντο, καὶ ἐν τῷ ἑστάναι αὐτὰ εἱστήκεισαν, καὶ ἐν τῷ ἐξαίρειν αὐ-
τὰ ἀπὸ τῆς γῆς, ἐξήρειντο σὺν αὐτοῖς,
ὅτι πνεῦμα ζωῆς (ξ) ἦν ἐν τοῖς τροχοῖς.
22 Καὶ ὁμοίωμα ὑπὲρ κεφαλῆς (ο) αὐτῶν τῶν
ζώων ὡσεὶ στερέωμα, ὡς ὅρασις κρυστάλλου,
ἐκτεταμένον ἐπὶ τῶν πτερύγων αὐτῶν ἐπ-
23 άνωθεν. Καὶ (π) ὑποκάτωθεν τοῦ στερεώματος αἱ πτέρυγες αὐτῶν ἐκτεταμέναι,
πτερυσσόμεναι ἑτέρα τῇ ἑτέρᾳ, ἑκάστῳ
δύο (ρ) ἐπικαλύπτουσαι τὰ σώματα αὐτῶν.
24 Καὶ ἤκουον τὴν φωνὴν τῶν πτερύγων αὐτῶν
ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτά, ὡς φωνὴν ὕδατος (σ) πολλοῦ· καὶ ἐν τῷ ἑστάναι αὐτά,
25 κατέπαυον αἱ πτέρυγες αὐτῶν. Καὶ ἰδοὺ
26 φωνὴ (τ) ὑπεράνωθεν τοῦ στερεώματος τοῦ
ὄντος ὑπὲρ κεφαλῆς αὐτῶν, (υ) ὡς ὅρασις λίθου σαπφείρου, ὁμοίωμα θρόνου (φ)
ἐπ᾽ αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τοῦ ὁμοιώματος τοῦ θρόνου
27 ὁμοίωμα ὡς εἶδος ἀνθρώπου ἄνωθεν. Καὶ
ἴδον ὡς ὄψιν ἠλέκτρου (χ) ἀπὸ ὁράσεως
ὀσφύος καὶ ἐπάνω, καὶ ἀπὸ ὁράσεως
ὀσφύος καὶ ἕως κάτω ἴδον (ψ) ὅρασιν
28 πυρός, καὶ τὸ φέγγος αὐτοῦ κύκλῳ. Ὡς
ὅρασις τόξου ὅταν ᾖ ἐν τῇ νεφέλῃ ἐν
ἡμέραις ὑετοῦ, οὕτως ἡ στάσις τοῦ φέγγους
κυκλόθεν.

Et vidi, & ecce rota una super
terram juxta animalia,
quatuor: Et species rotarum
quasi species (k) Tharsis. Et simi-
tudo (l) una ipsis quatuor: Et
opus earum erat, quasi
rota in rota. In quatuor partes
earum ambulabant, non reverte-
bantur, cùm ambularent, (m)
Neque dorsa earum. Et altitudo
erat (n) eis. Et vidi ea: &
dorsa earum plena oculis in cir-
cuitu ipsis quatuor. Et cùm am-
bularent animalia, ambulabant
rotæ juxta ea. Et cùm eleva-
rentur animalia de terra; eleva-
bantur rotæ. Ubicunq; erat nubes
illic (o) & spiritus ad eundum;
ibant rotæ, & elevabantur cum
eis: Spiritus enim vitæ erat in
rotis: Cùm illa irent, ibant; &
cùm illa starent, stabant; & cùm
illa elevarentur à terra, elevaban-
tur cū eis: quia spiritus vitæ erat
in rotis. Et similitudo super capita
ipsorum animalium quasi firma-
mentum, quasi aspectus (p) cry-
stalli, extentum super alas eo-
rum desuper: Et sub firmamen-
to alæ eorum extentæ, volantes
altera alteri: unicuique duæ (q)
tegentes corpora ipsorum. Et au-
divi vocem alarum ipsorum, (r)
dum ipsa irent, quasi vocem (s)
aquæ multæ: cùmque ipsa sta-
rent, cessabant alæ eorum. Et
ecce vox desuper firmamento,
Quod erat super (t) caput eorum,
quasi aspectus lapidis sapphiri,
similitudo throni super illud: &
super similitudinem throni simi-
litudo quasi species hominis de-
super. Et vidi quasi aspectum
(u) electri à visione lumbi, &
supra: & à visione lumbi, &
usque deorsum vidi visionem
ignis: & splendor ejus in cir-
cuitu, Velut visio arcûs, cùm
fuerit in nube in diebus
(x) Sic statio splendoris per
gyrum.

MS.A. (λ) ἐπὶ (μ) τέσσαρα (μ) τὰ ζῶα, καὶ οἱ τροχοὶ ἐξήρειντο (ν) ἦν ἐν τοῖς (ξ) ἐν τοῖς τροχοῖς ἦν. (ο) αὐτοῖς (π) ὑποκάτω (ρ) συνεζευγμέναι ἐπικαλύπτουσαι τῷ σώματι τὰ πρόσωπα αὐτῶν. (σ) πολλοῦ, ὡς φωνὴν ἱκανοῦ, ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτά, φωνὴ τοῦ λόγου ὡς φωνὴ παρεμβολῆς· καὶ ἐν τῷ ἑστάναι (τ) ὑπεράνω (υ) ἐν τῷ ἑστάναι αὐτά, ἀνίεντο αἱ πτέρυγες αὐτῶν. Καὶ ὑπεράνω τοῦ στερεώματος τοῦ ὑπὲρ κεφαλῆς αὐτῶν, ὡς ὅρασις (φ) ἐπ᾽ αὐτῷ, (χ) ὡς ὅρασις πυρὸς ἔσωθεν αὐτοῦ κύκλῳ ἀπὸ ὁράσεως (ψ) ὡς ὥρασιν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ובריתא באשתלחותהין למעבד רעות רבונהן דאשרי שכנתיה במרומא עלא מנהן
באנפא עינא למחזי חזרן ומקפן ומכסן ית עלמא ותיבן בריתא כחדא וקלילן כחיזו
15 ברקא : וחזית בריתא והא גלגל חד משתוי כמלרע לרום שמיא בסטר בריתא לארבע
16 אפוהי : חיזו גלגליא ועובדיהון כעין אבן טבא ודמות חד לארבעתהן וחזויהן ועובדיהן
17 כמא דהוי גלגל בגו גלגל : על ארבעא סטריהן במיזלהן אזלין לא מתחזרין במיזלהן :
18 וגביהן שוין לקבלא רקיעא ורומא להן ודחילין אנון וגביהן מלן עינין סחור סחור
19 לארבעתהן : ובמיזל בריתא אזלין גלגליא לקבליהן ובאתרממא בריתא כמלרע לרום
20 שמיא מתרמין גלגליא : על אתר דהוי תמן רעוא למיזל אזלין לתמן רעוא למיזל
21 וגלגליא מתרמין לקבלהן ארי כרוח בריתא בגלגליא : במיזלהון אזלין ובמקמהון
קימין ובאתרמהון כמלרע לרום שמיא מתרמין גלגליא לקבלהון ארי כרוח בריתא
22 בגלגליא : ודמות על רישי בריתא רקיעא כעין גליד חסין מרכן על רישיהון מלעלא :
23 ותחות רקיעא גפיהון מכונן חדא לקביל חדא לחדא תרתין מכסין להן ולחדא תרתין
24 מכסין להן ית גויתהן : ושמעית ית קל גפיהן כקל מיין סגיאין כקלא מן קדם שדי
במהכהן קל מלוליהן כד מודן ומברכין ית רבונהון קימא מלך עלמיא כקל משרית
25 מלאכי מרומא במקמהן משתקן גפיהן מן קדם דבורא : ובזמן דהוי רעוא קדמוהי
לאשמעא דבורא לעבדוהי נביי ישראל הוי קלא ומשתמע מעלוי רקיעא מבין
26 כרוביא מתחות רקיעא די על רישיהון במקמהן משתקן גפיהן מן קדם דבורא : ומעלוי
רקיעא די על רישיהון כחיזו אבן טבא דמות כורסיא ועל דמות כורסיא דמות כחיזו
27 אנשא עלוהי מלעלא : וחזית כעין חשמלא כחיזו אשתא מגיו לה סחור סחור חיזו יקר
דלא יכילא עינא למחזי ולא אפשר לאסתכלא ביה ולעלא חזו יקר דלא יכילא עינא
למחזי ולא אפשר לאסתכלא ביה ולרע חזיתי כחיזו אשתא וזיהורא ליה סחור סחור :
28 כחיזו קשתא דהוי בעננא ביומא דמטרא כן חיזו זיהורא סחור סחור

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et creaturæ, cùm mitterentur ad exequendū voluntatem Dñi sui, qui collo- 14
cavit majestatem suā in excelso supra ipsas; in ictu oculi convertebantur,
& circuibant, & operiebant orbem: revertebanturq; simul creaturæ, & ve- 15
loces erant quasi aspect⁹ fulguris. Et vidi creaturas, & ecce rota una posita
erat quasi sub altitudine cœli, in latere creaturarū ad quatuor facies ejus. 16
Aspect⁹ rotarū & op⁹ earū quasi species lapidis pretiosi: & similitudo una
erat ipsis quatuor: & visio earū & op⁹ earū quasi esset rota in medio rotæ. 17
Super quatuor latera earū euntes ibāt, non convertebātur cum ambularent. 18
Et dorsa earū æqualia erāt versus firmamentū: & altitudo eis erat, & ter-
ribilia erāt; & dorsa earū plena erant oculis per circuitū ipsarū quatuor. 19
Et cùm ambularēt creaturæ, ibant rotæ è regione earū; & cùm elevarētur 20
creaturæ quasi sub altitudine cœli, elevabātur rotæ. In quemcunq; locū ire
vellent ibāt, illuc ire volentes, & rotæ elevabātur è regione earū: quia quasi 21
spirit⁹ creaturarū erat in rotis. Cùm ambularent ambulabāt, & cùm starent
stabāt, & cùm elevarētur quasi sub altitudine cœli, elevabātur rotæ è regi-
one earū: quia *quasi* spirit⁹ creaturarū erat in rotis. Et similitudo sup capita 22
creaturarū firmamēti quasi aspect⁹ gelu fortissimi, inclinati sup capita earū
supernè. Sub firmamento verò alæ earū directæ erāt una e regione alteri⁹: 23
uni duæ tegebāt eas, & uni duæ tegebant eas, nempe earū corpora. Et au- 24
divi vocem alarū earū tanquam vocem aquarū multarū, velut vocē à facie
omnipotentis, cùm graderentur: & vox sermonū earū cùm confiterentur
& benedicerent Dñm suum viventem regem *seculorū*, quasi vox erat copi-
arū angelorum supernorū: cùm starent, quiescebant alæ earū à facie sermo-
nis. Et in tempore quo erat voluntas corā eo ut audire faceret verbum 25
servis suis prophetis Israel, audiebatur vox desuper firmamentū inter Che-
rubim sub firmamento quod erat super capita earum: cùm starent, qui- 26
escebant pennæ earum à facie sermonis. Et desuper firmamentum quod
erat supra capita earum, quasi aspect⁹ lapidis pretiosi, similitudo throni,
& super similitudinē throni similitudo tanquam aspect⁹ hominis super 27
desuper. Et vidi quasi speciem electri quasi aspectū ignis in medio
circuitū, aspectū gloriæ quam non possit ocul⁹ videre, neq; contempl
eā; & supernè aspectū gloriæ quam ocul⁹ non possit videre, aut conte 28
& inferiùs vidi quasi visionē ignis, & splendor ei in circuitu. Velut
arcus qui est in nube in die pluviæ, sic erat aspectus splendoris

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܚܝܘܬܐ ܪܗܛܢ ܗܘܝ܂ ܘܠܐ ܡܬܗܦܟܢ ܗܘܝ܂ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܙܝܩܐ܂ * ܘܚܙܝܬ ܚܝܘܬܐ܂
ܓܝܓܠܐ ܒܐܪܥܐ ܠܘܬ ܐܪܒܥܬܝܗܘܢ ܚܝܘܬܐ܂ * ܘܚܙܘܐ ܕܓܝܓܠܐ ܘܥܒܕܝܗܘܢ܂ ܐܝܟ
ܕܬܪܫܝܫ܂ ܘܕܡܘܬܐ ܚܕܐ ܠܐܪܒܥܬܝܗܘܢ܂ ܘܚܙܘܗܘܢ ܘܥܒܕܝܗܘܢ܂ ܐܝܟ ܕܓܝܓܠܐ ܒܓܘ ܓܝܓܠܐ
* ܥܠ ܐܪܒܥܬ ܣܛܪܝܗܘܢ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ܂ ܘܠܐ ܡܬܗܦܟܝܢ ܗܘܘ܂ ܘܠܐܬܪ ܕܪܫܢܝܬܐ ܗܘܬ
ܠܡܐܙܠ܂ ܒܬܪܗ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ܂ ܘܠܐ ܡܬܗܦܟܝܢ ܗܘܘ܂ * ܘܪܘܡܐ ܐܝܬ ܠܚܘܝܕܝܗܘܢ܂ ܘܚ
ܗܘܘ܂ ܘܚܙܝܢ ܗܘܘ܂ ܡܠܐ ܥܝܢܐ ܗܘܐ ܕܐܪܒܥܬܝܗܘܢ ܡܢ ܚܕܪܝܗܘܢ܂ * ܘܟܕ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ ܚܝܘ
ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ ܓܝܓܠܐ ܥܡܗܘܢ܂ ܘܟܕ ܡܫܬܩܠܝܢ ܗܘܘ ܚܝܘܬܐ ܡܢ ܐܪܥܐ܂ ܡܫܬܩܠܝܢ ܗܘܘ
ܥܡܗܘܢ܂ * ܘܠܐܬܪ ܕܐܙܠܐ ܗܘܬ ܪܘܚܐ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ܂ ܘܓܝܓܠܐ ܡܫܬܩܠܝܢ ܗܘܘ ܥܡܗܘܢ܂ ܡܛܠ
ܪܘܚܐ ܚܝܬܐ ܐܝܬ ܗܘܬ ܒܓܝܓܠܐ܂ * ܘܟܕ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ܂ ܘܟܕ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ
ܗܘܘ܂ ܘܟܕ ܡܫܬܩܠܝܢ ܗܘܘ ܡܢ ܐܪܥܐ܂ ܡܫܬܩܠܝܢ ܗܘܘ ܓܝܓܠܐ ܥܡܗܘܢ܂ ܡܛܠ
ܪܘܚܐ ܚܝܬܐ ܐܝܬ ܗܘܬ ܒܓܝܓܠܐ܂ * ܘܕܡܘܬܐ ܕܪܩܝܥܐ ܥܠ ܪܫܐ ܕܚܝܘܬܐ܂ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܓܠܝܕܐ ܕܚܝܠܐ܂ ܦܪܝܣ ܥܠ ܪܫܝܗܘܢ ܡܢ ܠܥܠ܂ * ܘܬܚܝܬ ܪܩܝܥܐ ܓܦܝܗܘܢ ܬܪܝܨܢ܂ ܚܕܐ ܠܘܩܒܠ ܚܕܐ܂ ܡܢ ܠܥܠ ܘܡܢ ܠܬܚܬ܂ ܬܪܬܝܢ ܡܟܣܝܢ ܐܦܝܗܘܢ܂ ܘܬܪܬܝܢ ܡܟܣܝܢ ܦܓܪܝܗܘܢ܂ * ܘܫܡܥܬ ܩܠܐ ܕܓܦܝܗܘܢ ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܡܝܐ ܣܓܝܐܐ܂ ܘܐܝܟ ܩܠܐ ܕܐܠܗܐ ܟܕ ܡܗܠܟܝܢ ܗܘܘ܂ ܐܘ ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܡܡܠܠܐ ܕܡܫܪܝܬܐ܂ ܘܟܕ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܐܚܝܕܝܢ ܗܘܘ ܓܦܝܗܘܢ܂ * ܘܩܠܐ ܗܘܐ ܡܢ ܠܥܠ ܡܢ ܪܩܝܥܐ ܕܥܠ ܪܫܝܗܘܢ܂ * ܘܡܢ ܠܥܠ ܡܢ ܪܩܝܥܐ ܕܥܠ ܪܫܝܗܘܢ܂ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܟܐܦܐ ܕܣܦܝܠܐ܂ ܘܐܝܟ ܕܡܘܬܐ ܕܟܘܪܣܝܐ܂ ܘܥܠ ܕܡܘܬܐ ܕܟܘܪܣܝܐ ܐܝܟ ܕܡܘܬܐ ܘܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܒܪܢܫܐ ܝܬܒ ܡܢ ܠܥܠ܂ * ܘܚܙܝܬ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܐܠܗܐ܂ ܘܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܢܘܪܐ ܡܢ ܠܓܘ ܚܕܪܗ܂ ܡܢ ܚܙܘܐ ܕܚܨܘܗܝ ܘܠܥܠ܂ ܘܡܢ ܚܨܘܗܝ ܘܠܬܚܬ ܚܙܝܬ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܢܘܪܐ܂ ܘܙܠܝܩܐ ܚܕܪܗ܂ * ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܩܫܬܐ ܕܗܘܝܐ ܒܥܢܢܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܛܪܐ܂ ܗܟܢܐ ܗܘܐ ܚܙܘܐ ܕܙܗܪܐ ܕܚܕܪܘܗܝ܂

14 * Animalia verò currebant abſq; eo quòd verterent ſeſe, tanquam aſpectus ſtellæ volantis. 15 Poſtquam vidiſſem animalia, ecce rotas in terra ſecus quatuor illa animalia. 16 Aſpectus rotarũ & factura earũ, ſimilis erat aſpectui chryſolithi: eadémque ſpecies erat iis quatuor: & aſpectus atque factura earum, ac ſi eſſet rota rotæ interſerta. 17 Super quaterna ſua latera ibant, & non reflectebantur: quocunque flectebat præcipua earum ad progrediendum, *reliquæ* ſequebantur eam, neque reflectebantur. 18 Altitudinem habebant abſides earum, & videbant; abſis enim earum quatuor plena erat oculis circunquaque. 19 Cùm irent animalia, ibant rotæ; cùm attollerent ſe animalia de terra, attollebant ſe rotæ cum eis. 20 Quocunq; ibat ventus, ibant illa, & rotæ proficiſcebantur cum eis, quia ſpiritus vitalis erat in rotis. 21 Quoties ibant illa, ibant iſtæ; quoties conſiſtebant illa, conſiſtebant iſtæ; & quoties illa ſe attollebant à terra, attollebant ſe rotæ cum eis; quia ſpiritus vitalis erat in rotis. 22 Expanſa autem erat ſuper caput animalium *quædam* quaſi ſpecies aſpectûs cryſtalli formidabilis: 23 Et ſub hac, alæ earum rectæ erant una ex adverſo alterius, tam supernè quàm infernè: binæ tegentes *vultum* eorum, binæ verò tegentes corpus eorum. 24 Et audivi ſonitum alarum eorum ut ſonitum aquarũ multarũ, & ut vocem Domini, quum illa incederent; vel ut murmur loquelæ in caſtris: quum autem conſiſterent, retinebant alas ſuas; 25 Sed ſonus edebatur ſuper umbraculum quod imminebat capitib⁹ eorum. 26 Super umbraculum autem quod imminebat capitibus eorum, erat quaſi aſpectus lapidis ſapphiri, & quaſi figura throni: & ſuper throni figuram, quaſi ſpecies & quaſi aſpectus hominis inſidebat supernè. 27 Et vidi quaſi aſpectum Dei, & quaſi aſpectum ignis intrinſecus circundantis eum à ſpecie lumborum ejus ſurſum verſus: à lumbis autem ejus deorſum verſùs, vidi tanquam aſpectum ignis: & fulgor cingebat eum. 28 Qualis eſt aſpectus arcûs illius qui fit in nubibus die pluvio, talis erat aſpectus fulgoris qui cingebat eum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والحيوانات تركض ولا ترجع ، مثل منظر البرق * ونظرت واذا بكرة واحدة على الار
بجانب الحيوانات للاربعة * ومنظر البكرات وصنعها مثل منظر المسع ، وشبه واحد
الاربعة ، ومنظرها وعملها كان كما تكون بكرة في بكرة * على جوانبها الاربعة تسير ولا تلتـ
عند ما تسير * وحيث ظهورها فكان ارتفاعها ، ونظرتها وظهورها مملوة اعينا من حو
للاربعة * وعند ما تسير الحيوانات ، تسير البكرات بجانبها ، وعند ما ترتفع الحيوانات من
الارض ، ترتفع البكرات * وحيث تكون السحابة ، هناك تكون ، وعند ما تسير الريح
تسير الحيوانات ، والبكرات ترتفع معها ، من اجل انه كانت حياة في البكرات * عند ما تسير
تسير البكرات ، وعند ما تقف تقف ، وعند ما ترتفع من الارض ترتفع معها البكرات ،
كان في البكرات روح حياة * وشبه فوق راس الحيوانات مثل الجلد ، مثل منظر جليد كر
منبسط على اجنحتها من فوق * ومن تحت الجلد اجنحتها منبسطة ، طايرات احد للاخر
واحد اثنان مزدوجان يغطيان اجسادها * وسمعت صوت اجنحتها مثل صوت ماء كثير
مثل صوت الله شداي الكافي ، عند ما تسير ، بصوت كلام مثل صوت المعسكر ، وعند
تقف تسكن اجنحتها * واذا صوت من فوق الجلد الكاين فوق راسها * ومن فوق الجلد
الذي فوق راسها ، مثل منظر حجر الفيروزج ، وشبه عرش فوقه ، وعلى شبه العرش شبه مثل
منظر انسان من فوق * ونظرت مثل منظر المها ، ومثل منظر نار من داخله حوله من منـ
حقوه والى فوق ، ومن منظر حقوه والى اسفل نظرت منظر نار ونور حولها * مثل منظر القو
اذا كان في السحاب في يوم المطر ، هكذا منظر النور من حوله ،

14 * *Porro animalia currebant, nec vertebant ſeſe tanquam aſpectus fulguris.* 15 *Præterea aſpexi, & ecce rotæ ſingulæ ſuper terram ad latus quatuor illorum animalium.* 16 *Aſpectus autem rotarum & artificium earum erat velut aſpectus jaſpidis, eadémque ipſis quatuor figura: & aſpectus atque opificium earum erat, ac ſi eſſet rota in rota.* 17 *Super quatuor latera ſua incedebant, neque reflectebantur cùm incederent:* 18 *Et ubi erant dorſa earum, erat etiam altitudo earum. Vidi quoque ipſas & dorſa ipſarum quatuor, oculis plena circunquaque:* 19 *Quoties ibant animalia, ibant rotæ ad latus illorum: et quoties attollebant ſe animalia de terra, attollebant ſe rotæ:* 20 *ubicunque erat ibi nubes, illic erant: et quoties abibat ventus, ibant animalia, et rotæ attollebant ſe cum eis, quoniam vita inerat rotis.* 21 *Quoties diſcedebant, diſcedebant rotæ; et quoties conſiſtebant, conſiſtebant; & quoties attollebant ſe à terra, attollebant ſe rotæ cum eis, quoniam inerat rotis ſpiritus vitæ.* 22 *Præterea ſpecies quædam erat ſuper caput animalium ſimilis firmamento, ſimilis aſpectui glaciei formidabilis, expanſa ſuper alas eorum ſupernè;* 23 *Et ſub firmamento alæ eorum erant expanſæ, volantes altera ad alteram: unicuique duæ conjunctæ tegentes corpora ipſorum.* 24 *Et audivi ſtrepitum alarum ipſorum tanquam ſtrepitum aquæ multæ, quaſi vocem Dei potentiſſimi ſufficientiſſimi (quum incedebant) cum voce locutionis ſimili fremitui caſtrorum: quum autem conſiſtebant, ſilebant alæ ipſorum.* 25 *Et ecce vox è ſuprema firmamenti parte, quod erat ſuper capita eorum.* 26 *Nam ſuper firmamentum quod imminebat capiti eorum, erat quædam velut aſpectus lapidis ſapphiri, & ſuper hanc forma quædam ſolii, & ſuper ſolii formam tanquam ſpecies hominis, deſuper.* 27 *Et vidi quandam veluti ſpeciem cryſtalli, & veluti ſpeciem ignis ab interiore illius parte circa ipſum, ab aſpectu lumbi ejus ſurſum verſus: ab aſpectu verò lumbi ejus deorſum verſus vidi ſpeciem ignis quem lux circundabat.* 28 *Qualis eſt ſpecies arcûs cùm eſt in nubibus die pluvio, talis erat conditio ſplendoris circa ipſum.*

ſuper cecidi & , vidi & : Domini gloriæ ſimilitudinis viſio Hæc
הוא מראה דמות כבוד־יהוה ואראה ואפל על־
.loquentis vocem audivi & ,*meam facies*
פני ואשמע קול מדבר׃

CAP. II. ב

.tecum loquar & ,tuos pedes ſuper ſta ,hominis Fili ,me ad dixit Et
1 ויאמר אלי בן־אדם עמד על־רגליך ואדבר אתך׃
ſuper me ſtatuit & ,me ad eſt locut⁹ quando,ſpirit⁹ me in eſt ingreſſus Et
2 ותבא בי רוח כאשר דבר אלי ותעמדני על־
,hominis Fili,me ad dixit Et .me ad dictum audivi & ; meos pedes
3 רגלי ואשמע את מדבר אלי׃ ויאמר אלי בן־אדם
quæ ,rebelles gentes ad , Iſrael filios ad te *ego Mittens*
שולח אני אותך אל־בני ישראל אל־גוים המורדים אשר
ad uſque me in ſunt prævaricati eorũ patres & ipſi: me contra rebellaverũt
מרדו־בי המה ואבותם פשעו בי עד־
mittens ego ,corde duri & ,*faciebus* duri filii Et .*iſtius diei corpus*
4 עצם היום הזה׃ והבנים קשי פנים וחזקי־לב אני שולח
.Deus Dominus dixit Sic , eos ad dices & : *illos ad* te
אותך אליהם ואמרת אליהם כה אמר אדני יהוה׃
, *ipſi rebellionis* domus quia .ceſſaverint ſi & , audierint ſi ipſi Et
5 והמה אם־ישמעו ואם־יחדלו כי בית מרי המה
, hominis fili tu Et .eorum medio in fuit propheta quòd ſcient &
6 וידעו כי נביא היה בתוכם׃ ואתה בן־אדם
,*retractantes* quoniam,metuas ne eorum verbis à & , eis ab timeas ne
אל־תירא מהם ומדבריהם אל־תירא כי סרבים
eorum verbis A : *habitans tu ſcorpionibus* cum & ,tecum ſpinæ &
וסלונים אותך ואל־עקרבים אתה יושב מדבריהם
rebellionis domus quia ,*conſterneris* ne eorum *faciebus* à & ,timeas ne
אל־תירא ומפניהם אל־תחת כי בית מרי
ſi & , audiant ſi : eos ad mea verba Loquerisque .*ipſi*
7 המה׃ ודברת את־דברי אליהם אם־ישמעו ואם־
quæ audi hominis fili tu Et .*ipſi rebellio* quoniã :ceſſent
8 יחדלו כי מרי המה׃ ואתה בן־אדם שמע את אשר־
Aperi .*rebellionis* domus ſicut,rebellis ſis Ne : te ad *dicens ego*
אני מדבר אליך אל־תהי־מרי כבית המרי פצה
ecce & , vidi Et .*te ad dans ego* quæ comede & ,tuum os
9 פיך ואכל את אשר־אני נתן אליך׃ ואראה והנה־
expandit Et .libri volumen ea in ecce & : me ad miſſa manus
10 יד שלוחה אלי והנה־בו מגלת־ספר׃ ויפרש
eo in *ſcriptum* & : retro & ,antè ſcriptum *ipſum* & ,*meas facies ad* illud
אותה לפני והיא כתובה פנים ואחור וכתוב אליה
.væ &,gemitus & ,lamentationes
קינים והגה והי׃

CAP. III. ג

comede : comede ,inveneris quod , hominis Fili:me ad dixit Et
1 ויאמר אלי בן־אדם את אשר־תמצא אכול אכול
aperui Et .Iſrael *domum* ad loquere,vade &,iſtud volumen
2 את־המגלה הזאת ולך דבר אל־בית ישראל׃ ואפתח
: me ad dixit Et .illud volumen me fecit comedere & : meum os
3 את־פי ויאכלני את המגלה הזאת׃ ויאמר אלי
volumine *replebis* tua viſcera & ,*cibabis* tuum ventrem,hominis Fili
בן־אדם בטנך תאכל ומעיך תמלא את המגלה
mel ſicut meo ore in fuit & ,comedi Et .*te ad dans* ego quod , iſto
הזאת אשר אני נתן אליך ואכלה ותהי בפי כדבש
domum ad ingredere ,vade ,hominis Fili :me ad dixit Et .dulcedine *in*
4 למתוק׃ ויאמר אלי בן־אדם לך־בא אל־בית
populum ad non Nam : eos ad *meis verbis in loquêris* & , Iſrael
5 ישראל ודברת בדברי אליהם׃ כי לא אל־עם
.Iſrael domum ad : *miſſus tu lingua graves* & , *labio profundos*
עמקי שפה וכבדי לשון אתה שלוח אל־בית ישראל׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. II.

1 HÆc viſio ſimilitudinis gloriæ
Dñi: & vidi, & cecidi in faciem
meam, & audivi vocẽ loquentis.
Et dixit ad me; Fili hominis, ſta
ſuper pedes tuos, & loquar te-
2 cum. Et ingreſſus eſt in me ſpi-
ritus poſtquàm locutus eſt mihi,
& ſtatuit me ſupra pedes meos:
3 & audivi loquentem ad me, Et
dicentem; Fili hominis, mitto
ego te ad filios Iſrael, ad gentes
apoſtatrices, quæ receſſerunt à
me: ipſi & patres eorũ prævari-
cati ſunt pactum meum uſque ad
4 diem hanc. Et filii durâ facie, &
indomabili corde ſunt, ad quos
ego mitto te: & dices ad eos;
5 Hæc dicit Dominus Deus; Si
fortè vel ipſi audiant, & ſi
fortè quieſcant, quoniam domus
exaſperans eſt: & ſcient quia
propheta fuerit in medio eorum.
6 Tu ergò, fili hominis, ne timeas
eos, neque ſermones eorum me-
tuas: quoniam increduli & ſub-
verſores ſunt tecum, & cum ſcor-
pionibus habitas: verba eorum
ne timeas, & vultus eorum ne
formides, quia domus exaſperans
7 eſt. Loquêris ergò verba mea
ad eos, ſi fortè audiant, & quie-
ſcant: quoniam irritatores ſunt.
8 Tu autem, fili hominis, audi quæ-
cunque loquor ad te: & noli eſſe
exaſperans, ſicut domus exaſpe-
ratrix eſt: aperi os tuum & com-
9 ede quæcunque ego do tibi. Et
vidi, & ecce manus miſſa ad me,
in qua erat involutus liber: &
expandit illum coram me, qui
erat ſcriptus intùs & foris: &
ſcriptæ erant in eo lamentatio-
nes, & carmen, & væ.

CAP. III.

1 ET dixit ad me; Fili hominis,
quodcunque inveneris comede:
comede volumen iſtud, & vadens
2 loquere ad filios Iſrael. Et a-
perui os meum, & cibavit me
3 volumine illo: Et dixit ad me;
Fili hominis, venter tuus come-
det, & viſcera tua complebun-
tur volumine iſto, quod ego do
tibi. Et comêdi illud: & factum
eſt in ore meo ſicut mel dulce.
4 Et dixit ad me; Fili hominis,
vade ad domum Iſrael, & loquê-
5 ris verba mea ad eos. Non e-
nim ad populum profundi ſer-
monis & ignotæ linguæ tu mit-
teris, ad domum Iſrael:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. β΄.

1 ΑΥΤΗ ἡ ὅρασις (α) ὁμοιώματος δό-
ξης κυρίου. καὶ ἴδον, καὶ πίπτω ἐπὶ
πρόσωπόν μου, καὶ ἤκουσα φωνὴν λαλοῦντος.
Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώπου, στῆθι ἐπὶ
2 τοὺς πόδας σου, καὶ λαλήσω πρὸς σέ. Καὶ
ἦλθεν ἐπ' ἐμὲ πνεῦμα, καὶ ἀνέλαβέ με,
καὶ (β) ἐξῆρέ με, καὶ ἔστησέ με ἐπὶ τοὺς πόδας
μου, καὶ ἤκουον αὐτοῦ λαλοῦντος πρὸς
3 μέ. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώπου, (γ)
ἐξαποστέλλω ἐγώ σε πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσ-
ραὴλ, τοὺς παραπικραίνοντάς με, οἵτινες
παρεπίκρανάν με, αὐτοὶ καὶ οἱ πατέρες
4 αὐτῶν (δ) ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας. (ε) Καὶ
ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει (ζ) κύριος,
5 Ἐὰν ἄρα ἀκούσωσιν ἢ πτοηθῶσι. διότι οἶ-
κος παραπικραίνων ἐστὶ, καὶ γνώσονται ὅτι
6 προφήτης εἶ σὺ ἐν μέσῳ αὐτῶν. Καὶ
σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, μὴ φοβηθῇς αὐτοὺς,
μηδὲ ἐκστῇς ἀπὸ προσώπου αὐτῶν· διότι
παροιστρήσουσι, καὶ ἐπισυστήσονται ἐπὶ σὲ κύ-
κλῳ, καὶ ἐν μέσῳ σκορπίων σὺ κατοι-
κεῖς. τοὺς λόγους αὐτῶν μὴ φοβηθῇς,
καὶ ἀπὸ προσώπου αὐτῶν μὴ ἐκστῇς, διό-
7 τι οἶκος παραπικραίνων ἐστί. Καὶ λαλή-
σεις τοὺς λόγους μου πρὸς αὐτοὺς, ἐὰν ἄρα
ἀκούσωσιν ἢ πτοηθῶσιν, (η) ὅτι οἶκος
8 παραπικραίνων ἐστί. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου,
ἄκουε τοῦ λαλοῦντος πρὸς σὲ, μὴ γίνου
παραπικραίνων (θ), καθὼς ὁ οἶκος ὁ
παραπικραίνων. χάνε τὸ στόμα σου, καὶ
9 φάγε (ι) ὃ ἐγὼ δίδωμί σοι. Καὶ ἴδον,
καὶ ἰδοὺ χεὶρ ἐκτεταμένη πρὸς μὲ, καὶ ἐν
αὐτῇ κεφαλὶς βιβλίου. Καὶ ἀνείλησεν αὐ-
τὴν ἐνώπιόν (κ) μου, καὶ ἦν ἐν αὐτῇ γε-
γραμμένα τὰ ἔμπροσθεν καὶ τὰ ὀπίσω· καὶ
ἐγέγραπτο (λ) θρῆνος καὶ μέλος καὶ
1 οὐαί. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώπου,
κατάφαγε τὴν κεφαλίδα ταύτην, καὶ
πορεύθητι καὶ λάλησον τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ.
2 Καὶ διήνοιξε τὸ στόμα μου, καὶ ἐψώμισέ
με τὴν κεφαλίδα.

MS.A. (α) ὁμοίωμα τῆς δόξης (β) ἐξήγειρέν (γ) ἐξαποστέλλω (δ) ἠθέτησαν ἐν ἐμοὶ ἕως (ε) Καὶ υἱοὶ σκληροπρόσωποι καὶ στερεοκάρδιοι ἐγὼ ἀποστέλλω σε πρὸς αὐτούς· καὶ ἐρεῖς (ζ) κύριος κύριος. (η) διότι (θ) καὶ σὺ, καθὼς (ι) ἃ (κ) ἐμοῦ, καὶ ἐν αὐτῇ γεγραμμένα ἦν τὰ ὄπισθεν καὶ τὰ ἔμπροσθεν· καὶ (λ) εἰς αὐτὴν θρῆνος

ΚΕΦ. γ΄.

3 ΚΑὶ εἶπε πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώπου,
τὸ στόμα σου φάγεται, καὶ ἡ κοιλία σου
πλησθήσεται τῆς κεφαλίδος ταύτης τῆς
δεδομένης εἰς σέ. καὶ ἔφαγον αὐτὴν,
καὶ ἐγένετο ἐν τῷ στόματί μου, ὡς μέλι
4 γλυκάζον. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Υἱὲ
ἀνθρώπου, (α) βάδιζε καὶ εἴσελθε πρὸς τὸν
οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ λάλησον τοὺς λόγους
5 μου πρὸς αὐτούς. Διότι οὐ πρὸς λαὸν (β)
βαθύγλωσσον σὺ ἐξαποστέλλῃ πρὸς τὸν
οἶκον τοῦ Ἰσραήλ·

MS.A. (α) βάδιζε, εἴσελθε (β) βαθύχειλον καὶ βαρύγλωσσον σὺ

CAP. II.

HÆc viſio ſimilitudinis gloriæ Domini. Et vidi, & cado in faciem meam. Et audivi vocem loquentis, & dixit ad me; Fili hominis, ſta ſupra pedes tuos: & loquar ad te. Et venit ad me ſpiritus, & aſſumpſit me, & elevavit me, & ſtatuit me ſuper pedes meos, & audiebam eum loquentem ad me. Et dixit ad me; Fili hominis, mitto ego te ad domum Iſrael, exacerbantes me, qui quidem exacerbaverunt me, ipſi & patres (a) eorum uſque ad hodiernam (b) diem. Et dices ad eos; Hæc dicit (c) Dominus: Si forte audiant, aut paveant: quia domus exacerbans eſt: & ſcient, quia propheta es tu in medio eorum. Et tu, fili hominis, non timeas eos, nec formides à facie eorum: quoniam inſanient, & congregabuntur contra te in circuitu: & in medio ſcorpionum tu habitas. Verba eorum ne timeas; & à facie eorum ne formides: quia domus exaſperans eſt. Et loquêris verba mea ad eos: ſi forte audiant, aut timeant: quia domus exacerbans eſt. Et tu, fili hominis, audi loquentem ad te: noli eſſe exaſperans, ſicut domus exaſperatrix eſt. Aperi os tuum, & comede quod ego do tibi. Et vidi, & ecce manus extenta ad me: & in ea (d) capitulum libri: & expandit illud coram me: & erant in eo ſcripta anteriora, & poſteriora: & inſcripta erat (e) lamentatio, & carmen, & væ. Et dixit ad me; Fili hominis, comede capitulum iſtud: & vade, & loquere filiis Iſrael. Et aperuit os meum, & cibavit me capitulo.

CAP. III.

ET dixit ad me; Fili hominis, os tuum comedet, & venter tuus implebitur capitulo iſto dato. Et comêdi illud: & factum eſt in ore meo, ſicut mel, dulceſcens. Et dixit ad me; Fili hominis, vade, & ingredere ad domum Iſrael, & loquere verba mea ad eos. Non enim ad populum (a) profundæ [illegible] mitteris ad domum Iſrael,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

הוא חזו דמות יקרא דיי וחזית ואשתטחית על אפי ושמעית קל דמתמליל׃

ב

1 ואמר לי בר אדם קום על רגלך ואמלל עמך׃ ועלת בי רוחא כד מלל עמי ואקמתני
2 על רגלי ושמעית ית דמתמלל עמי׃ ואמר לי בר אדם שלח אנא יתך לות בני ישראל
3 לות עממיא סרבניא דסריבו על מימרי אנון ואבהתהון מרדו במימרי עד כרן יומא
4 הדין׃ ומתקרן בניא אנון חציפי אפיא ותקיפי לבא אנא שלח יתך לותהון ותימר להון
5 כדנן אמר יי אלהים׃ ואנון אם יקבלון אולפן ואם יתמנעון מלמחטי ארי עם סרבן
6 אנון וידעון די נביא הוה ביניהון׃ ואת בר אדם לא תדחל מנהון ומפתגמיהון לא
תדחל ארי מסרבין ומקשן לקבלך ובנו עמא דעובדיהון דמן לעקרבין את יתיב
7 ומפתגמיהון לא תדחל ומן קדמיהון לא תתבר ארי עם סרבן אנון׃ ותתנבי ית
פתגמי נבואתי להון אם יקבלון אולפן ואם יתמנעון מלמחטי ארי עם סרבן אנון׃
8 ואת בר אדם קבל ית די אנא ממלל עמך לא תהי סרבן כעמא סרבנא ארכין נפשך
9 וקביל ית די אנא יהב לך׃ וחזית והא דמות יד מתושטא לצד לותי והא ביה מגלת
10 ספרא׃ ופרס יתה קדמי והא כתיבא מאפהא ומאחורהא מה דהוה מן שרויא
ומה דעתיד למהוי בסופא וכתיב בה דאם יעברון בית ישראל על אוריתא ישלטון
בהון עממיא ואם יעבדון ית אוריתא יסוף מנהון אליא ודונא יתנחתא׃

ג

1 ואמר לי בר אדם ית דמתיהיב לך קבל קביל מא דכתיב במגלתא הדא ואזיל ואתנבי
2 על בית ישראל׃ וארכינית ית נפשי ואחכימני מה דכתיב במגלתא הדא׃ ואמר לי
3 בר אדם נפשך תסבע ומעך תמלי אם תקבל מה דכתיב במגלתא הדא די אנא יהיב לך
4 וקבלתהא והוו פתגמהא בפומי כדבש חלי׃ ואמר לי בר אדם אתא איזל לות בני
5 ישראל ותתנבי בפתגמי נבואתי להון׃ ארי לא לות עם עמקי ממלל ויקירי לישן את
שליח לאתנבאה אלהן לות בית ישראל׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc eſt viſio ſimilitudinis gloriæ Domini: & vidi, & cecidi pronus in faciem meam, & audivi vocem loquentis.

CAP. II.

ET dixit ad me: Fili hominis, ſta ſuper pedes tuos, & loquar tecum. Et ingreſſus eſt in me ſpiritus cùm loqueretur mecum, & ſtatuit me ſuper pedes meos, & audivi loquentem mecum. Et dixit ad me: Fili hominis, ego mitto te ad filios Iſrael, ad populos rebelles qui refractarii ſunt verbo meo: ipſi & patres eorum tranſgreſſi ſunt verbũ meum uſq; ad hujuſce diei articulum. Filii autem vocati ſunt impudentes facie & duri corde ad quos ego mitto te: & dices ad eos, Hæc dicit Dñs Deus. Si fortè ipſi ſuſcipiant diſciplinam, & deſinant peccare; quia popul⁹ rebellis eſt: & ſciant quia propheta fuerit in medio eorum. Tu autem fili hominis ne timeas eos, neque ſermones eorum metuas, quia rebelles ſunt & duri contra te: & in medio populi, cujus opera ſimilia ſunt ſcorpionibus, tu habitas: & à verbis eorum ne timeas, neq; formides à facie eorum, quoniam popul⁹ contumax eſt. Et prophetabis verba prophetiæ meæ eis, ſi fortè ſuſcipiant diſciplinam, & ſi quieſcant peccare, quia populus contumax eſt. Tu autem fili hominis audi quod loquor tecum; ne ſis contumax ſicut populus rebellis: inclina animam tuam & ſuſcipe quod ego do tibi. Et vidi, & ecce ſimilitudo manus extenſa eſt ad latus ad me: & ecce in ea erat volumen libri. Et expandit illud coram me, & erat ſcriptum in fronte ſua & poſteriori ſuo, id quod fuit ab initio, & quod futurum eſt in fine: & ſcriptum erat in eo, Quod ſi tranſgreſſi fuerint domus Iſrael Legem, dominarentur eis populi: & ſi facerent Legem, deficeret ab eis lamentatio, & gemitus & mœror.

CAP. III.

ET dixit ad me: Fili hominis, quod datur tibi ſuſcipe; ſuſcipe quod ſcriptum eſt in volumine iſto: & vade & vaticinare ſuper domum Iſrael. Et inclinavi animam meam & docuit me quod ſcriptum erat in volumine iſto. Et dixit ad me: Fili hominis, animam tuam ſatiabis & ventrem tuum replebis, ſi ſuſceperis quod ſcriptum eſt in volumine iſto quod do tibi. Et ſuſcepi illud, & fuerunt verba ejus in ore meo quaſi mel dulce. Et dixit mihi: Fili hominis veni, & vade ad filios Iſrael, & prophetabis verba prophetiæ meæ illis. Quia non ad populum profundæ linguæ & gravis eloquii tu mitteris ad prophetandum, ſed ad domum Iſrael.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ * ܘܗܟܢܐ ܗܘܐ ܚܙܘܐ ܕܕܡܘܬܐ ܕܐܝܩܪܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܚܙܝܬܗ
ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ. ܘܫܡܥܬ ܩܠܐ ܕܡܡܠܠ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܩܘܡ ܥܠ ܪܓܠܝܟ ܘܐܡܠܠ
ܥܡܟ. * ܘܥܠܬ ܒܝ ܪܘܚܐ ܟܕ ܡܡܠܠ ܥܡܝ. ܘܐܩܝܡܬܢܝ ܥܠ ܪܓܠܝ. ܘܫܡܥܬܗ
ܕܡܡܠܠ ܥܡܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܠܟ. ܠܘܬ ܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܘܬ ܥܡܐ
ܡܪܘܕܐ ܕܡܪܕܘ ܒܝ ܗܢܘܢ ܘܐܒܗܝ̈ܗܘܢ. ܘܐܥܘܠܘ ܒܝ ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. * ܘܠܘܬ ܒܢܝ̈ܐ
ܕܩܫܝܢ ܐܦܝ̈ܗܘܢ ܘܩܫܝܢ ܠܒܘܬܗܘܢ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܠܟ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘ
* ܟܒܪ ܢܫܡܥܘܢ. ܘܢܙܘܥܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܐܢܘܢ ܡܡܪܡܪܢܐ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܢܒܝܐ ܐܝܬ
ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢܗܘܢ. ܘܡܢ ܡܠܝ̈ܗܘܢ ܠܐ ܬܙܘܥ. ܕܡܪܚܝܢ
ܘܡܫܛܝܢ ܒܟ. ܡܛܠ ܕܥܡ ܥܩܪ̈ܒܐ ܥܡܪ ܐܢܬ. ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢ ܡܠܝ̈ܗܘܢ. ܘܡܢ ܐܦܝ̈ܗܘܢ
ܠܐ ܬܙܘܥ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܐܢܘܢ ܡܡܪܡܪܢܐ. * ܐܠܐ ܐܡܪ ܠܗܘܢ ܦܬܓܡܝ. ܟܒܪ ܢܫܡܥܘܢ
ܘܢܙܘܥܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܐܢܘܢ ܡܡܪܡܪܢܐ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܫܡܥ ܡܕܡ ܕܐܡܪ ܐܢܐ ܠܟ
ܠܐ ܬܗܘܐ ܡܡܪܡܪܢ ܐܝܟ ܒܝܬܐ ܡܡܪܡܪܢܐ. ܐܠܐ ܦܬܚ ܦܘܡܟ. ܘܐܟܘܠ ܡܕܡ ܕܝܗܒ ܐܢܐ
ܠܟ. * ܘܚܙܝܬ. ܘܗܐ ܐܝܕܐ ܐܬܦܫܛܬ ܠܘܬܝ. ܘܐܚܝܕܐ ܒܗ ܟܪܟܐ ܕܟܬܒܐ. * ܘܦܫܛܗ ܩܕܡܝ
ܘܟܬܝܒ ܗܘܐ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܡܢ ܒܣܬܪܗ. ܘܟܬܝܒܢ ܒܗ ܩܝܢܬܐ ܘܗܓܝܐ ܘܐܘܠܝܬܐ.
* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܡܕܡ ܕܡܫܟܚ ܐܢܬ ܐܟܘܠ.
ܐܟܘܠܝܗܝ ܠܟܪܟܐ ܗܢܐ. ܘܙܠ ܡܠܠ ܥܡ ܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܦܬܚܬ ܦܘܡܝ
ܘܐܘܟܠܢܝ ܟܪܟܐ ܗܘ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܡܠܝ ܟܪܣܟ ܘܡܥܝ̈ܟ ܡܢ ܟܪܟܐ ܗܢܐ ܕܝܗܒ
ܐܢܐ ܠܟ. ܘܐܟܠܬܗ. ܘܗܘܐ ܒܦܘܡܝ ܐܝܟ ܕܒܫܐ ܚܠܝܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܙܠ
ܥܘܠ ܠܫܒܝܬܐ ܠܘܬ ܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܦܬܓܡܝ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܠ
ܠܥܡܐ ܥܡܝܩ ܡܡܠܠܐ ܘܝܩܝܪ ܠܫܢܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܠܟ. ܐܠܐ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ.

CAP. II.

ITaque hujuſmodi erat aſpectus gloriæ Dñi, 1
quem cùm vidiſſem, procidi in faciem meam,
Deinde audivi vocem loquentem ac dicentem
mihi; Fili hominis, conſiſte in pedes tuos, &
alloquar te. Tunc ingreſſus eſt in me ſpirit⁹, 2
alloqueretur me, erexitq; me in pedes meos:
& audivi eum alloquentem me, & dicentem
mihi; Fili hominis, Miſſurus te ſum ad filios 3
Iſraelis & ad populum rebellem, qui contra
me rebellârunt, tam ipſi quàm majores eorũ,
& iniquè mecũ egerunt ad hunc uſque diem.
Ad filios inquam obſtinati vultûs & præduri 4
cordis ſum te miſſurus. Dic eis, Sic ait Dñs
dominorum. Fortè audient, ac trepidabunt 5
(familia ſunt enim exaſperans) & ſcient te
prophetam eſſe inter eos. Tu ergò fili homi- 6
nis, ne timeas eos, & verba eorũ ne formides:
inſoleſcent enim & aſpernabuntur te, quia
inter ſcorpiones habitas. Ne timeas eorũ verba,
& facies eorum ne formides; quia familia
ſunt exaſperans: Sed dic eis ſermones meos: 7
forſitan audient ac trepidabunt: quoniam familia
ſunt exaſperans. Tu vero fili hominis, 8
auſculta quod ſum tibi dicturus; Ne ſis contumax
ut familia iſta exaſperans, ſed aperi os
tuum, & comede quod ſum tibi daturus. Et 9
cùm aſpexiſſem, ecce manus ad me extendit
ſeſe, tenens volumen libri: Et explicavit illud 10
coram me (ſcriptum autem erat à fronte &
à tergo, ſcriptique erant in eo concentus, carmina
lugubria, & lamentationes.)

CAP. III.

DIxitque mihi; Fili hominis, quod reperis, 1
comede: comede volumen iſtud, & vade, alloquere
filios Iſraelis. Cùm itaque aperuiſ- 2
ſem os meum, cibavit me volumine illo, Et 3
dixit mihi; Fili hominis, imple ventrem tuum
& viſcera tua volumine iſto quod tibi do:
quod ubi comedi, factum eſt in ore meo ſicut
mel dulce. Deinde dixit mihi; Fili hominis, 4
Vade, ingredere ad captivos, apud filios Iſraelis,
& refer illis ſermones meos. Quia ne- 5
quaquam ad populum profundæ loquelæ, aut
linguâ balbutientem te mitto; *ſed* ad domum
Iſraelis:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* الفصل الثاني * * هذه رويا مثل مجد الرب. فنظرت وسقطت على وجهي
فسمعت صوت متكلم وقال لي. يا ابن الانسان قف على قدميك فاتكلم معك * فاتت علي
روح واخذتني واقامتني على قدمي. وسمعته يتكلم معي وقال لي * يا ابن الانسان
انا ارسلك لبيت اسرايل الذين مرمروني. القوم الذين مرمروني * هم واباوهم شكوا في الى
نهار اليوم * فبنون وجوههم صفيقة وقلوبهم قاسية. انا ارسلك اليهم فتقول لهم * هكذا
يقول الرب الرب * ان لعلهم يسمعون ويخافون. من اجل انهم بيت ممرمر هو ويعلمون انك
انت نبي في وسطهم * وانت يا ابن الانسان لا تخفهم. ولا تفرق من وجههم. من اجل ان
سيقاومونك ويقومون عليك من حولك. وفي وسط عقارب انت تسكن. فلا تخش كلامهم من
وجههم لا تفزع. من اجل انهم بيت ممرمر هو * وانت يا ابن الانسان تكلم باقوالي معهم ان
لعلهم يسمعون فيفزعون. من اجل انهم بيت ممرمر هو * وانت يا ابن الانسان اسمع المتكلم
معك. ولا تكن انت ممرمرا كما هم بيت ممرمر. افتح فمك وكل ما انا اعطيك اياه * فنظرت
واذا يد ممدودة نحوي وفيها طي سفر * فنشرها امامي. والمكتوبات فيها كانت من قدام
ومن خلف. وكتب فيها نوح وحزن وويل * * الفصل الثالث.
* وقال لي يا ابن الانسان كل هذا الطي. وامض فتكلم مع بني اسرايل * وفتح فمي
واطعمني هذا الطي * وقال لي. يا ابن الانسان فمك ياكل وبطنك يمتلي من هذا الطي
المعطاة لك. فاكلتها وصارت في فمي مثل عسل حلو * وقال لي يا ابن الانسان امض
ادخل الى بيت اسرايل. وتكلم باقوالي معهم * من اجل اني لست الى شعب عميق اللسان
وثقيل اللسان ارسلك. بل الى بيت اسرايل.

CAP. II.

HUjuſmodi erat viſio ſimilitudinis glo- 1
*riæ Domini, quâ viſâ procubui in faciem
meam. Tum audivi vocem loquentis
qui dixit mihi: O fili hominis, ſta pedibus
tuis, ut colloquar tecum. Tunc advenit* 2
*ſuper me ſpiritus, qui me apprehenſum elevavit,
ſtatuitque ſuper pedes meos: & audivi
eum colloquentem mecum, & dicentem
mihi; O fili hominis, ego te mitto* 3
*ad domum Iſraelis qui exacerbaverunt
me; gentem qui exacerbaverunt me, tam
ipſi quàm patres eorum, in me dubitantes
ad hodiernum uſque diem: Filios quorum* 4
*facies impudentes & corda proterva. Ad
hos te mitto ut dicas eis, Sic dicit Dominus
Deus. Nam fortaſſis audient & ex-* 5
*paveſcent (domus enim refractaria ſunt
iſti) cognoſcéntque te prophetam eſſe in
medio ſui. Tu itaque O fili hominis, ne* 6
*formides eos, neque pertimeſcas vultum
eorum; licèt adverſaturi ſint tibi, & inſurrecturi
contra te undequaque. In medio
ſcorpionum tu habitas, at ne timeas verba
eorum, et ab eorum vultu ne terrearis: nam
domus refractaria ſunt iſti. Tu ergò O* 7
*fili hominis, refer ſermones meos ipſis:
fortaſſis enim audient, & paveſcent: nam
domus refractaria iſti ſunt. Et tu O* 8
*fili hominis, audi colloquentem tecum, et
ne ſis tu refractarius, quemadmodum iſti
ſunt domus refractaria: aperi os tuum, et
comede quod ego ſum tibi daturus. Cùmque* 9
*vidiſſem, ecce manum ad me porrectam,
tenentem libri pagellam: Explica-* 10
*vitque eam ob oculos meos: ſcripturæ autem
in ea, erant à fronte & à tergo; ſcriptúmque
erat in ea lamentatio, carmen,
& væ.*

CAP. III.

TUm dixit mihi, O fili hominis, come- 1
*de pagellam iſtam, & abi locutum cum
filiis Iſraelis. Et aperuit os meum, de-* 2
*ditque mihi comedendum pagellam iſtam,
Et dixit mihi; O fili hominis, os tuum* 3
*comedet, & venter tuus implebitur hac
pagellâ tibi porrectâ: quam cùm comediſſem,
& facta eſſet in ore meo velut
mel dulce; Rurſus dixit mihi, O fili* 4
*hominis, vade ingredere ad domum Iſraelis,
& loquere cum eis ſermones meos.
Neque verò ad populum profundi labii &* 5
*gravis linguæ te mitto: ſed ad domum
Iſraelis.*

יְחֶזְקֵאל : ג

non quorum ,linguæ gravis & ,labio profundi multos populos ad Non
6 לֹא אֶל־עַמִּים רַבִּים עִמְקֵי שָׂפָה וְכִבְדֵי לָשׁוֹן אֲשֶׁר לֹא־
audient ipsi , te misero eos ad non si : eorum verba audies
תִשְׁמַע דִּבְרֵיהֶם אִם־לֹא אֲלֵיהֶם שְׁלַחְתִּיךָ הֵמָּה יִשְׁמְעוּ
ipsi non quia , te ad audire cupient non Israel domus Et .te ad
7 אֵלֶיךָ׃ וּבֵית יִשְׂרָאֵל לֹא יֹאבוּ לִשְׁמֹעַ אֵלֶיךָ כִּי־אֵינָם
duri & ,fronte rigidi Israel domus omnis nam :me ad audire cupientes
אֹבִים לִשְׁמֹעַ אֵלָי כִּי כָּל־בֵּית יִשְׂרָאֵל חִזְקֵי־מֵצַח וּקְשֵׁי־
; eorum facies contra fortes tuas facies dedi Ecce .ipsi corde
8 לֵב הֵמָּה׃ הִנֵּה נָתַתִּי אֶת־פָּנֶיךָ חֲזָקִים לְעֻמַּת פְּנֵיהֶם
petra præ fortem adamantē Ut .eorū frontem contra fortem tuā frontē &
9 וְאֶת־מִצְחֲךָ חָזָק לְעֻמַּת מִצְחָם׃ כְּשָׁמִיר חָזָק מִצֹּר
,eorū faciebus à consterneris neque , eos timeas ne : tuā frontem dedi
נָתַתִּי מִצְחֶךָ לֹא־תִירָא אוֹתָם וְלֹא־תֵחַת מִפְּנֵיהֶם
omnia ,hominis Fili : me ad dixit Et .ipsi rebellionis domus quia
10 כִּי בֵּית־מְרִי הֵמָּה׃ וַיֹּאמֶר אֵלָי בֶּן־אָדָם אֶת־כָּל־
tuis auribus in & ,tuo corde in assume , te ad loquar quæ mea verba
דְּבָרַי אֲשֶׁר אֲדַבֵּר אֵלֶיךָ קַח בִּלְבָבְךָ וּבְאָזְנֶיךָ
,tui populi filios ad ,transmigrationem ad ingredere ,vade Et .audi
11 שְׁמָע׃ וְלֵךְ בֹּא אֶל־הַגּוֹלָה אֶל־בְּנֵי עַמֶּךָ
: Deus Dominus dixit Sic : eos ad dices & , eos ad loquêris &
וְדִבַּרְתָּ אֲלֵיהֶם וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה
audivi & ,spiritus me assumpsit Et .cessaverint si & ,audierint Si
12 אִם־יִשְׁמְעוּ וְאִם־יֶחְדָּלוּ׃ וַתִּשָּׂאֵנִי רוּחַ וָאֶשְׁמַע
.suo loco de Domini gloria Benedicta : magni fragoris vocem me post
אַחֲרַי קוֹל רַעַשׁ גָּדוֹל בָּרוּךְ כְּבוֹד־יְהוָה מִמְּקוֹמוֹ׃
,suam sororem ad unaquæque contingentium ,animalium alarum vocem Et
13 וְקוֹל כַּנְפֵי הַחַיּוֹת מַשִּׁיקוֹת אִשָּׁה אֶל־אֲחוֹתָהּ
spiritus Et .magni fragoris vocem & , ea contra rotarum vocem &
14 וְקוֹל הָאוֹפַנִּים לְעֻמָּתָם וְקוֹל רַעַשׁ גָּדוֹל׃ וְרוּחַ
manus & ,mei spiritus ira in amarus abii & :me assumpsit & ,me elevavit
נְשָׂאַתְנִי וַתִּקָּחֵנִי וָאֵלֵךְ מַר בַּחֲמַת רוּחִי וְיַד־
Abib-Tel transmigrationē ad veni Et .fortis me super Domini
15 יְהוָה עָלַי חָזָקָה׃ וָאָבוֹא אֶל־הַגּוֹלָה תֵּל אָבִיב
sedi & : ibi sedentibus ipsis sedi & ,Chebar flumen ad habitantium
הַיֹּשְׁבִים אֶל־נְהַר־כְּבָר וָאֵשֵׁר הֵמָּה יוֹשְׁבִים שָׁם וָאֵשֵׁב
septem fine à fuit Et .eorū medio in stupefactus diebus septem ibi
16 שָׁם שִׁבְעַת יָמִים מַשְׁמִים בְּתוֹכָם׃ וַיְהִי מִקְצֵה שִׁבְעַת
,hominis Fili : dicendo me ad Domini verbum fuit Et .dierum
17 יָמִים ○ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם
admonebis &,verbū meo ore de audies & :Israel domui te dedi speculatorē
צֹפֶה נְתַתִּיךָ לְבֵית יִשְׂרָאֵל וְשָׁמַעְתָּ מִפִּי דָּבָר וְהִזְהַרְתָּ
,eū admonueris non &,morieris moriēdo,impio me dicendo In .me à eos
18 אוֹתָם מִמֶּנִּי׃ בְּאָמְרִי לָרָשָׁע מוֹת תָּמוּת וְלֹא הִזְהַרְתּוֹ
,eū vivificandū ad impia sua via à impium monendum ad,fueris locutus nec
וְלֹא דִבַּרְתָּ לְהַזְהִיר רָשָׁע מִדַּרְכּוֹ הָרְשָׁעָה לְחַיֹּתוֹ
tua manu de ejus sanguinem & ,morietur sua iniquitate in impius ipse
הוּא רָשָׁע בַּעֲוֺנוֹ יָמוּת וְדָמוֹ מִיָּדְךָ
conversus fuerit non & ,impium admonueris cùm tu Et .requiram
19 אֲבַקֵּשׁ׃ וְאַתָּה כִּי־הִזְהַרְתָּ רָשָׁע וְלֹא־שָׁב
,morietur sua iniquitate in ipse : impia sua via à & ,sua impietate ab
מֵרִשְׁעוֹ וּמִדַּרְכּוֹ הָרְשָׁעָה הוּא בַּעֲוֺנוֹ יָמוּת
,sua justitia à justum se avertendo in Et .liberâsti tuam animam tu sed
20 וְאַתָּה אֶת־נַפְשְׁךָ הִצַּלְתָּ׃ וּבְשׁוּב צַדִּיק מִצִּדְקוֹ
: morietur ipse ; ejus facies ad offendiculū dabo & ,iniquitatē fecerit &
וְעָשָׂה עָוֶל וְנָתַתִּי מִכְשׁוֹל לְפָנָיו הוּא יָמוּת
memorabuntur non & ,morietur suo peccato in ,eum admonuisti non quia
כִּי לֹא הִזְהַרְתּוֹ בְּחַטָּאתוֹ יָמוּת וְלֹא תִזָּכַרְןָ
.requiram tua manu de ejus sanguinē & : fecit quas ejus justitiæ
צִדְקֹתָו אֲשֶׁר עָשָׂה וְדָמוֹ מִיָּדְךָ אֲבַקֵּשׁ׃

Versio VULG. LAT.

6 Neque ad populos multos profundi sermonis, & ignotæ linguæ, quorum non possis audire sermones: & si ad illos mittereris, ipsi 7 audirent te. Domus autem Israel nolunt audire te: quia nolunt audire me: omnis quippe domus Israel attrita fronte est, & duro 8 corde. Ecce dedi faciem tuam valentiorem faciebus eorum, & frontem tuam duriorem frontib⁹ 9 eorum. Ut adamantem, & ut silicem dedi faciem tuam: ne timeas eos, neque metuas à facie eorum: quia domus exasperans 10 est. Et dixit ad me; Fili hominis, omnes sermones meos, quos ego loquor ad te, assume in corde tuo, 11 & auribus tuis audi: Et vade, ingredere ad transmigrationem, ad filios populi tui, & loquéris ad eos, & dices eis; Hæc dicit Dominus Deus: si forte audiant, 12 & quiescant. Et assumpsit me spiritus, & audivi post me vocem commotionis magnæ; Benedicta gloria Domini de loco suo: 13 Et vocem alarum animalium percutientium alteram ad alteram, & vocem rotarum sequentium animalia, & vocem commotio- 14 nis magnæ. Spiritus quoque levavit me, & assumpsit me: & abii amarus in indignatione spiritûs mei: manus enim Domini 15 erat mecum, confortans me. Et veni ad transmigrationem, ad acervum novarum frugum, ad eos qui habitabāt juxta flumen Chobar, & sedi ubi illi sedebant: & mansi ibi septem diebus mœrens 16 in medio eorum. Cùm autem pertransissent septem dies, factum est verbum Domini ad me, di- 17 cens; Fili hominis, speculatorem dedi te domui Israel: & audies de ore meo verbum, & annun- 18 tiabis eis ex me. Si dicente me ad impium; Morte morieris: non annuntiaveris ei, neque locutus fueris ut avertatur à via sua impia, & vivat: ipse impius in iniquitate sua morietur, sanguinem autem ejus de manu tua requirā. 19 Si autem tu annuntiaveris impio, & ille non fuerit convers⁹ ab impietate sua, et à via sua impia: ipse quidem in iniquitate sua morietur, tu autem animam tuam libe- 20 râsti. Sed & si conversus justus à justitia sua fuerit, & fecerit iniquitatem: ponam offendiculum coram eo, ipse morietur, quia non annuntiasti ei: in peccato suo morietur, & non erunt in memoria justitiæ ejus, quas fecit: sanguinē verò ejus de manu tua requiram.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

6 Οὐδὲ πρὸς λαοὺς πολλοὺς ἀλλοφώνους ἢ ἀλλογλώσσους, οὐδὲ στιβαροὺς τῇ γλώσσῃ ὄντας, ὧν οὐκ ἀκούσῃ τοὺς λόγους (γ)· καὶ εἰ πρὸς τοιούτους ἐξαπέστειλά σε, οὗτοι ἂν εἰσήκουσάν 7 σου. Ὁ δὲ οἶκος τοῦ (·) Ἰσραὴλ οὐ μὴ θελήσωσιν εἰσακοῦσαί σου, διότι οὐ βούλονται εἰσακούειν μου, ὅτι πᾶς ὁ οἶκος Ἰσραὴλ φιλόνεικοί 8 εἰσι καὶ σκληροκάρδιοι. Καὶ ἰδοὺ δέδωκα τὸ πρόσωπόν σου δυνατὸν κατέναντι τῶν προσώπων αὐτῶν, καὶ τὸ νεῖκός σου κατι- 9 σχύσω κατέναντι τοῦ νείκους αὐτῶν. Καὶ ἔσται διαπαντὸς κραταιότερον πέτρας (δ). μὴ φοβηθῇς ἀπ' αὐτῶν, μηδὲ πτοηθῇς ἀπὸ προσώπου αὐτῶν, διότι οἶκος παραπικραί- 10 νων ἐστί. Καὶ εἶπε πρὸς μέ, Υἱὲ ἀνθρώπου, πάντας τοὺς λόγους οὓς λελάληκα μετὰ σοῦ, λάβε εἰς τὴν καρδίαν σου, καὶ τοῖς ὠσί σου 11 ἄκουε. Καὶ βάδιζε, εἴσελθε εἰς τὴν αἰχμαλωσίαν πρὸς τοὺς υἱοὺς τοῦ λαοῦ σου, καὶ λαλήσεις πρὸς αὐτοὺς, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει (ε) κύριος, ἐὰν ἄρα ἀκούσω- 12 σιν, ἐὰν ἄρα ἐνδῶσι. Καὶ ἀνέλαβέ με πνεῦμα, καὶ ἤκουσα κατόπισθέν μου φωνὴν σεισμοῦ μεγάλου, (ζ) Εὐλογημένη ἡ δόξα 13 κυρίου ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ. Καὶ ἴδον φωνὴν (·) τῶν πτερύγων τῶν ζώων πτερυσσομένων ἑτέρα πρὸς τὴν ἑτέραν, καὶ φωνὴ τῶν τροχῶν ἐχομένη 14 αὐτῶν, καὶ φωνὴ τοῦ σεισμοῦ. Καὶ τὸ πνεῦμα (η) ἐξῆρέ με, καὶ ἀνέλαβέ με, καὶ ἐπορεύθην (θ) ἐν ὁρμῇ τοῦ πνεύματός μου, καὶ χεὶρ 15 κυρίου ἐγένετο ἐπ' ἐμὲ κραταιά. Καὶ εἰσῆλθον εἰς τὴν αἰχμαλωσίαν μετέωρος, καὶ περιῆλθον τοὺς κατοικοῦντας ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Χοβὰρ τοὺς ὄντας ἐκεῖ· καὶ ἐκάθισα ἐκεῖ ἑπτὰ ἡμέρας, ἀναστρεφόμενος ἐν μέσῳ αὐ- 16 τῶν. Καὶ ἐγένετο μετὰ τὰς ἑπτὰ ἡμέρας λό- 17 γος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, σκοπὸν δέδωκά σε τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ, καὶ ἀκούσῃ ἐκ στόματός μου λόγον, 18 καὶ διαπειλήσῃ αὐτοῖς παρ' ἐμοῦ. Ἐν τῷ λέγειν με τῷ ἀνόμῳ, Θανάτῳ θανατωθήσῃ· καὶ οὐ διεστείλω αὐτῷ (ι) τοῦ διαστείλασθαι τῷ ἀνόμῳ, ἀποστρέψαι ἀπὸ τῶν ὁδῶν αὐτοῦ, τοῦ (κ) ζῆσαι αὐτόν· ὁ ἄνομος ἐκεῖνος τῇ ἀδικίᾳ αὐτοῦ ἀποθανεῖται, καὶ τὸ αἷμα αὐτοῦ (λ) ἐκ τῆς χειρός σου ἐκζητήσω. 19 Καὶ σὺ ἐὰν διαστείλῃ τῷ ἀνόμῳ, καὶ μὴ ἀποστρέψῃ ἀπὸ τῆς ἀνομίας αὐτοῦ, καὶ (μ) ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ, ὁ ἄνομος ἐκεῖνος ἐν τῇ ἀδικίᾳ αὐτοῦ ἀποθανεῖται, καὶ σὺ τὴν ψυχήν σου 20 (ν) ῥύσῃ. Καὶ ἐν τῷ ἀποστρέφειν δίκαιον ἀπὸ (ξ) τῶν δικαιοσυνῶν αὐτοῦ, καὶ (·) ποιήσει παράπτωμα, καὶ δώσω τὴν βάσανον εἰς πρόσωπον αὐτοῦ, αὐτὸς ἀποθανεῖται, ὅτι οὐ διεστείλω αὐτῷ· καὶ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις αὐτοῦ ἀποθανεῖται, διότι οὐ μὴ μνησθῶσιν αἱ δικαιοσύναι αὐτοῦ (ο), καὶ τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐκ τῆς χειρός σου ἐκζητήσω.

MS.A. (γ) αὐτῶν (·) τοῦ Ἰσραὴλ (δ) δέδωκα τὸ νεῖκός σου, (ε) κύριος κύριος, (ζ) λεγόντων, (·) πτερύγων (η) κυρίου (θ) μετέωρος (ι) οὐδὲ ἐλάλησας τοῦ (κ) ζητῆσαι (λ) ἐκ χειρὸς (μ) τῆς ὁδοῦ (ν) ἐρύσω. (ξ) τῆς δικαιοσύνης (·) ποιήσῃ (ο) ἃς ἐποίησεν, καὶ

Neque ad populos multos alienæ vocis, aut alterius linguæ, neque, qui graves sunt lingua, quorum non audias sermones. Et si ad tales misissem te, hi utique exaudissent te. Domus autem Israel nolent exaudire te: quia nolunt exaudire me. Omnis quippe domus Israel contentiosi, & duri corde. Et ecce dedi faciem tuam potentem contra facies eorum: & pervicaciam tuam confortabo contra pervicaciam eorum: Et erit semper fortior petra. Ne timeas ab eis, neque metuas à facie eorum: quia domus exasperans est. Et dixit ad me; Fili hominis, omnes sermones, quos loquutus sum tecum, assume in cor tuum: & auribus tuis audi. Et vade, ingredere in captivitatem, ad filios populi tui, & loquêris ad eos, & dices ad eos; Hæc dicit Dominus, si forte audiant, si forte cessent. Et assumpsit me spiritus: & audivi post me vocem commotionis magnæ; Benedicta gloria Domini de loco suo. Et (e) vidi vocem alarum animalium plaudentium altera ad alteram: & vox rotarum juxta ea, & vox commotionis. Et spiritus elevavit me, & suscepit me, & abii in impetu spiritus mei. Et manus Domini facta est super me fortis, Et intravi ad captivitatem (e) sublimis, & circumivi habitantes super flumen Chobar, qui erant ibi. Et sedi ibi septem diebus (f) conversans in medio eorum. Et factum est post septem dies verbum Domini ad me, dicens; Fili hominis, speculatorem dedi te domui Israel: & audies de ore meo verbum, & comminaberis eis ex me: In dicendo me iniquo; Morte morieris: & non distinxisti (g) ei ad distinguendum iniquo, ut avertatur à viis suis, ut vivat; iniquus ille in sua iniquitate morietur: & sanguinem ejus de manu tua requiram. Et tu, si distinxeris iniquo, & non se averterit ab iniquitate sua, & a via sua; iniquus ille in sua iniquitate morietur: & tu animam tuam liberabis. Et in avertendo se justum à justitiis suis, & faciet delictum, & dabo (h) tormentum ante faciem ejus; ipse morietur, quia non distinxisti ei: & in peccatis suis morietur, quia non erit memoria justitiæ ejus: & sanguinem ejus de manu tua requiram.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 לאלות עממיא סגיאין תקיפי ממלל ויקירי לישן דלא תשמע פתגמיהון אלו לותהון
7 שלחתך אנון יקבלון מנך׃ ובית ישראל לא ייבון לקבלא מנך ארי לית אנון צבן
8 לקבלא למימרי ארי כל בית ישראל חציפי אפין ותקיפי לבא אנון׃ הא יהבית ית אפך
9 תקיף כקביל בית אפיהון וית בית עינך חסין כקביל בית עיניהון׃ כמא דשמירא תקיף
מטנרא כן יהבית ית בית עינך חסין כקביל בית אפיהון לא תדחל מנהון ולא תתבר
10 מן קדמיהון ארי עם סרבן אנון׃ ואמר לי בר אדם ית כל פתגמי דאמלל עמך קביל
11 בלבך ובאודנך שמע׃ ואתא איזיל לות בני גלותא לות בני עמך ותתנבי להון ותימר
12 להון כדנן אמר יי אלהים אם יקבלון אולפן ואם יתמנעון מלמחטי׃ ונטלתני רוחא
13 ושמעית בתרי קל זיע סגיא דמשבחין ואמרין בריך יקרא דיי מאתר בית שכנתיה׃ וקל
14 גפי בריתא נקשן חדא לחדא וקל גלגליא לקבליהון וקל זיע סגי׃ ורוחא נטלתני ונסבתני
15 ואזלית במריר בתקוף רוחי ונבואה מן קדם יי עלי תקיפת׃ ואתית לות בני גלותא לתל
אביב דיתבין על נהר כבר ונחית ביניהון ואנון יתבין תמן ויתיבית תמן שבעא יומין
16 שתיק ביניהון׃ והוה מסוף שבעא יומין והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃
17 בר אדם מליף מניתך לבית ישראל ותקביל ממימרי פתגם ותזהיר יתהון מלמחטי
18 קדמי׃ כד אמרית לרשיעא ממת תמות ולא אזהרתיה ולא מללתא לאזהרא רשיעא
19 מארחיה דרשעא לקימותיה הוא רשיעא בחוביה ימות ודמיה מן ידך אתבע׃ ואת
ארי אזהרתא רשיעא ולא תב מחוביה ומארחיה דרשעא הוא בחוביה ימות ואת ית
20 נפשך שיזבתא׃ וכד יתוב זכאה מזכותיה ויעביד שקרא ואתן תקלא קדמוהי הוא
ימות ארי לא אזהרתיה בחוביה ימות ולא ידכרן זכותיה דעבד ודמיה מן ידך אתבע׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Non ad populos multos duri sermonis & gravis linguæ, cujus verba non possis audire: si enim ad eos misissem te, ipsi obedirent tibi. Domus autem Israel nolunt obedire tibi, quia nolunt obedire verbo meo: quia omnes Israelitæ impudentes facie, & duro corde sunt. Ecce dedi faciem tuam duram contra facies eorum, & frontem tuam robustam contra frontem eorum. Ut adamantem fortiorem petra, sic dedi frontem tuam fortiorem contra *facies* eorum: ne timeas eos, nec formides à facie eorum, quia populus contumax est. Et dixit ad me: Fili hominis, omnia verba mea quæ loquar tecum, suscipe in corde tuo, & aurib⁹ tuis audi. Et veni, vade ad filios transmigrationis ad filios populi tui, & prophetabis eis, & dices ad eos: Hæc dicit Dñs Deus, Si fortè susceperint disciplinam, & desinant peccare. Et sustulit me spiritus, & audivi post me vocem commotionis magnæ laudantium & dicentium: Benedicta gloria Dñi de loco majestatis suæ. Et vocem alarum creaturarum sese invicem *complodentiū*, & vocem rotarum contra eas, & vocem commotionis magnæ. Et spirit⁹ levavit me, & assumpsit me, & abii in amaritudine in indignatione spirit⁹ mei, & prophetia à facie Dñi super me confortata est. Et veni ad filios transmigrationis ad acervum novarum frugum, qui habitant juxta fluvium Chobar: & quievi inter eos, & ipsi sedebant ibi: & sedi ibi septem dieb⁹ tacens inter eos. Et factum est in fine septem dierum, & factum est verbum prophetiæ à facie Dñi, dicendo: Fili hominis, doctorem constitui te domui Israel, & suscipies à verbo meo sermonem, & exhortaberis eos ne peccent coram me. Quando dixero impio, Morte morieris, & non monueris eum, nec locut⁹ fueris ad exhortandum impium à via sua mala ut vivat: ipse impi⁹ in peccato suo morietur, & sanguinem ej⁹ de manu tua requiram. Si autem exhortat⁹ fueris impium, & non fuerit aversus à peccato suo & à via sua impia, ipse in peccato suo morietur: & tu animā tuam liberâsti. Et quando aversus fuerit just⁹ à justitia sua, & fecerit iniquitatē, ponam offendiculū peccatorum coram eo, ipse morietur, quia non exhortat⁹ es eū: in peccato suo morietur, & non erūt in memoria justitiæ ej⁹ quas fecit, & sanguinē ej⁹ de manu tua requiram.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܦ ܠܐ ܠܘܬ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܕܠܐ ܫܡܥ ܐܢܬ ܡܡܠܠܗܘܢ. ܘܐܠܘ ܠܘܬܗܘܢ ܫܕܪܬܟ
ܫܡܥܝܢ ܗܘܘ ܠܟ. * ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܕܝܢ ܠܐ ܫܡܥܝܢ ܠܟ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܨܒܝܢ ܠܡܫܡܥܢܝ.
ܕܟܠܗ ܓܝܪ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܩܫܝܢ ܒܝܬ ܒܥܝܢܝܗܘܢ. ܘܩܫܐ ܠܒܗܘܢ. * ܗܐ ܝܗܒܬ
ܐܦܝܟ ܠܘܩܒܠ ܐܦܝܗܘܢ. ܘܦܬܟ ܐܥܫܢܬ ܠܘܩܒܠ ܦܬܝܗܘܢ. * ܐܝܟ
ܫܡܝܪܐ ܕܩܫܐ ܡܢ ܛܪܢܐ ܝܗܒܬ ܦܬܟ. ܠܐ ܬܕܚܠ ܡܢܗܘܢ. ܘܠܐ ܬܬܒܪ ܡܢ ܦܪܨܘܦܝܗܘܢ.
ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܡܡܪܡܪܢܐ ܐܢܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܟܠܗܘܢ ܡܠܝ ܕܐܡܪ ܐܢܐ ܠܟ
ܩܒܠ ܒܠܒܟ. ܘܫܡܥ ܒܐܕܢܝܟ. * ܘܙܠ ܥܘܠ ܠܘܬ ܫܒܝܬܐ ܠܘܬ ܒܢܝ ܥܡܟ. ܘܡܠܠ
ܥܡܗܘܢ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܕܠܡܐ ܢܫܡܥܘܢ. ܘܢܕܚܠܘܢ. * ܘܫܩܠܬܢܝ
ܪܘܚܐ. ܘܫܡܥܬ ܡܢ ܒܣܬܪܝ ܩܠܐ ܕܙܘܥܐ ܪܒܐ ܕܐܡܪ. ܒܪܝܟ ܐܝܩܪܗ ܕܡܪܝܐ ܡܢ ܐܬܪܗ. * ܘܩܠܐ
ܕܓܦܐ ܕܚܝܘܬܐ ܕܢܩܫܢ ܚܕܐ ܒܚܕܐ. ܘܩܠܐ ܕܓܝܓܠܐ ܥܡܗܘܢ. ܘܩܠܐ ܕܙܘܥܐ ܪܒܐ. * ܘܪܘܚܐ
ܫܩܠܬܢܝ ܘܕܒܪܬܢܝ. ܘܐܙܠܬ ܒܚܡܬܐ ܕܪܘܚܝ. ܘܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠܝ ܚܝܠܬ. * ܘܐܬܝܬ
ܠܘܬ ܫܒܝܬܐ ܠܬܠܐ ܕܟܐܒܐ. ܕܝܬܒܝܢ ܥܠ ܢܗܪܐ ܟܒܪ. ܘܝܬܒܬ ܬܡܢ ܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ ܟܕ ܡܬܡܗ
ܐܢܐ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܥܠܝ ܘܐܡܪ. ܒܪ ܐܢܫܐ ܕܘܩܐ
ܝܗܒܬܟ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܬܫܡܥ ܡܠܬܐ ܡܢ ܦܘܡܝ. ܘܬܙܗܪ ܐܢܘܢ
ܒܫܡܝ. * ܡܐ ܕܐܡܪܬ ܠܚܛܝܐ. ܡܡܬ ܬܡܘܬ. ܘܐܢܬ ܠܐ ܐܙܗܪܬܗ. ܘܠܐ ܡܠܠܬ ܥܡ ܚܛܝܐ ܗܘ
ܕܢܙܕܗܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܕܢܚܐ. ܚܛܝܐ ܗܘ ܒܥܘܠܗ ܢܡܘܬ. ܘܕܡܗ ܡܢ ܐܝܕܝܟ ܐܬܒܥ.
* ܘܐܢ ܐܢܬ ܐܙܗܪܬܗ ܠܚܛܝܐ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܝ ܡܢ ܚܛܝܬܗ ܘܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܗܘ ܒܚܛܗܘܗܝ
ܢܡܘܬ. ܘܐܢܬ ܢܦܫܟ ܦܨܝܬ. * ܘܟܕ ܢܗܦܘܟ ܙܕܝܩܐ ܡܢ ܙܕܝܩܘܬܗ. ܘܢܥܒܕ ܥܘܠܐ.
ܘܐܬܠ ܬܘܩܠܬܐ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܢܡܘܬ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܙܗܪܬܗ. ܒܚܛܗܘܗܝ
ܢܡܘܬ. ܘܠܐ ܬܬܕܟܪ ܠܗ ܙܕܝܩܘܬܗ ܕܥܒܕ. ܘܕܡܗ ܡܢ ܐܝܕܝܟ ܐܬܒܥ.

Neque ad populos multos quorum tu loque- 6
lam minimè intelligas: (& quidem ſi ad hos
mitterem te, auſcultarent tibi: At Iſraelitæ 7
non auſcultabunt tibi quia nolunt auſcultare
mihi: omnium enim Iſraelitarũ dura frons eſt
& cor obſtinatum.) Ecce durã reddo faciem 8
tuam contra faciem eorum, & frontem tuam
firmã reddo contra frontes eorum: Ut ada- 9
mantem ſilice duriorem reddo frontẽ tuam:
ne formides eos, néve terrearis ab eis, quia fa-
milia ſunt contumax. Præterea dixit mihi; 10
Fili hominis, cunctos ſermones meos quos ti-
bi dico, corde percipe, & auribus auſculta: Et 11
abiens ingredere ad captivos, apud populares
tuos, alloquere eos, & dic eis; Sic ait Dominus
dominorum: fortaſſis audient, & trepida-
bunt. Tum ſuſtulit me ſpirit⁹, & audivi à ter- 12
go meo vocẽ cõmotionis magnæ dicentẽ, Be-
nedicta ſit gloria Dñi de loco ſuo: Strepitum 13
alarum animaliũ illorũ alterius in alterã alli-
dentium, & cum eis ſtrepitũ rotarũ, & vocẽ
commotionis magnæ. Cúmque ſuſtuliſſet me 14
ſpirit⁹ & perduxiſſet me, abii impetu ſpiritûs
mei: & manu Dñi ſuper me invaleſcente, In- 15
greſſus ſum ad captivos in collẽ Chib (*i. dolo-
ris*) ſitũ juxta fluviũ Cebar, ibiq; ſedi ſeptem
diebus attonitus inter eos. Poſt ſeptem verò 16
dies fuit ad me ſermo Dñi, dicendo, Fili homi- 17
nis, ſpeculatorẽ dedi te Iſraelitis, ut ſis audi-
ens ex ore meo ſermones, & moneas eos no-
mine meo. Quum dixero peccatori, Certiſ- 18
ſimè morieris; tu autem non monueris eum,
neque dixeris peccatori illi ut ſibi caveat à
via ſua, ut vivat: peccator ille in ſua *quidem*
iniquitate morietur, at ſanguinem ejus è ma-
nib⁹ tuis exigam. Verùm ſi monueris pecca- 19
torẽ, & non extrahat ſe à peccato ſuo, & à via
ſua peſſima: iſte *quidem* in peccatis ſuis mo-
rietur, & tu animam tuam liberaveris. Item 20
quum juſtus *aliquis* averterit ſe à juſtitia ſua,
& iniquitatem commiſerit; offendiculum po-
nam ante ipſum, & moriatur: eò quòd mini-
mè monueris eum, in peccatis *quidem* ſuis
morietur, & juſtitiæ quam fecerat, non erit
illi recordatio, at ſanguinem ejus è manibus
tuis repoſcam.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولا الي شعوب كثيرة غريبة الاصوات ولا غريبة الالسنة. وليست ذي لسان ثقيل الذين لم
تسمع كلامهم. ولو ارسلتك الي هولاء لسمعوا منك * واما بيت اسرايل فلا يريدون ان يسمعوا
منك. من اجل انهم لا يشاون ان يسمعوا مني. لان كل بيت اسرايل مشاجرون. وقلوبهم قاسية.
* وها اعطيت لوجهك امكانا قدام وجوههم. واقوي طرفك قدام طرفهم * وتكون كل حين
اشد من الصخر. اذ اعطيتك طرفا لا تخف منهم ولا تفزع من وجوههم. من اجل انهم بيتا
ممرمر هو * وقال لي. يا ابن الانسان جميع الاقوال التي تكلمت بها معك. خذها في قلبك
واسمعها باذنيك * وامض ادخل الي السبي الي بني شعبك. وتكلم معهم وتقول لهم. هكذا
يقول الرب الرب. ان لعلهم يسمعون. ان لعلهم يفزعون * واخذني الروح. وسمعت من خلفي
صوت زلزلة عظيمة. يقولون. مبارك مجد الرب من موضعه * ونظرت صوت اجنحة الحيوانات
طايرات اخر الي اخر. وصوت البكرات بجانبها. وصوت الزلزلة * وروح الرب رفعني واخذني.
فمضيت مرتفعا بوثبة روحي. ويد الرب العزيز صارت علي * فدخلت الي السبي مرتفعا.
وعبرت بالساكنين علي نهر خوبار الكاينين هناك. وجلست هناك سبعة ايام مترددا في وسطهم.

* الاصحاح الثاني *

* وكان من بعد سبعة ايام قول الرب الي قايلا.
* يا ابن الانسان اعطيتك رقيبة لبيت اسرايل. فتسمع القول من فمي وتحذرهم عني * عند
ما اقول للاثيم. بالموت تموت ولم تنذره ولم تتكلم معه. ليتعظ الاثيم ويرجع من طرقه ليحيي.
ذلك الاثيم بظلمه يموت. ودمه اطلبه من يدك * وان انت انذرت الاثيم. ولم يرجع عن
اثمه وطريقه. فذلك الاثيم يموت بظلمه. وانت تنجي نفسك * وعند ما يرجع الصديق
من عدله. ويصنع زلة. فاعطي عثرة لوجهه. وهو يموت لانك لم تنذره. ويموت بخطاياه
من اجل ان معدلاته التي صنعها لا تذكر ودمه اطلبه من يدك.

Neque ad populos multos peregrinæ vo- 6
cis, aut exterarum linguarum: neque ad
habentes gravem linguam, quorum loque-
lam non audias. Vel ſi ad tales mitterem
te, ſanè te audirent: Verùm domus Iſ- 7
raelis nolunt audire te, quia nolunt audi-
re me: tota enim domus Iſraelis conten-
tioſi ſunt, & corda eorum prædura. Et 8
ecce do faciei tuæ firmitatem contra fa-
cies eorum, & firmam reddo confiden-
tiam tuam contra confidentiam eorum;
Eriſque ſemper ſaxo durior: quandoqui- 9
dem do tibi confidentiam, ne timeas eos,
neque formides vultum eorum; quoniam
domus refractaria ſunt iſti. Et dixit 10
mihi; O fili hominis, Omnes ſermones
quos tecum habui, corde tuo percipe, &
auribus tuis audi: Tum vade, ingrede- 11
re ad captivos, ad populares tuos, quos
alloquêris, & dices eis; Sic ait Dominus
Deus: fortaſſis enim audient, fortaſſis
verebuntur. Deinde aſſumpſit me ſpi- 12
ritus, & audivi à tergo meo vocem con-
cuſſionis magnæ, dicentium; Benedicta
gloria Domini de loco ſuo. Et vidi vo- 13
cem alarum animalium, volantium alte-
rius in alterum, & vocem rotarum juxta
illa, vocémque concuſſionis. Deinde ſpi- 14
ritus Domini ſuſtulit accepitque me, abi-
ique elevatus eruptione ſpiritûs mei: &
manus Domini robuſta facta eſt ſuper me,
Ingreſſúſque ſum ad captivos elevatus, 15
tranſivi per habitantes juxta flumen Cho-
bar ibi exiſtentes, ibique ſedi ſeptem die-
bus verſans in medio eorum.

Textus ſecundus.

Poſt ſeptem autem dies fuit ſermo Domi- 16
ni ad me, dicens; O fili hominis, con-
ſtituo te ſpeculam domui Iſraelis, ut cùm 17
audieris ſermonem ex ore meo, alloquaris
eos vice mei. Quum dixero iniquo Mor- 18
te morieris; & tu non monueris eum, nec
allocutus eum fueris, quatenus monitum
ſuſcipiens iniquus ille revertatur à viis
ſuis, ut vivat: iniquus ille in ſcelere ſuo
morietur, ſed ſanguinem ejus requiram
de manu tua. Quòd ſi tu monueris ini- 19
quum, neque revertatur ab iniquitate ſua
& viâ ſuâ: is iniquus morietur in ſce-
lere ſuo, at tu quidem liberaveris animam
tuam. Similiter quum receſſerit juſtus 20
ab æquitate ſua, culpámque commiſerit;
ſupplicium ponam ante faciem ejus, &
ipſe morietur eò quòd non monueris eum:
(& verò morietur in peccatis ſuis, quo-
niam juſtitiarum ipſius quas fecerat, non
erit memoria:) at ſanguinem ejus requi-
ram de manu tua.

, *juſtum peccandum non ad* , juſtum *eum* admonueris *cum* tu Et

21 וְאַתָּה כִּי הִזְהַרְתּוֹ צַדִּיק לְבִלְתִּי חֲטֹא צַדִּיק

tu & , eſt admonitus quia , vivet vivendo : peccaverit non ipſe &

וְהוּא לֹא־חָטָא חָיוֹ יִחְיֶה כִּי נִזְהָר וְאַתָּה

:me ad dixit &:Domini *manus* ibi me ſup fuit Et .liberâſti tuam animam

22 אֶת־נַפְשְׁךָ הִצַּלְתָּ׃ וַתְּהִי עָלַי שָׁם יַד־יְהוָה וַיֹּאמֶר אֵלַי

, ſurrexi Et .tecum loquar ibi & , campum in egredere , Surge

23 קוּם צֵא אֶל־הַבִּקְעָה וְשָׁם אֲדַבֵּר אוֹתָךְ׃ וָאָקוּם

ſtans , Domini gloria ibi ecce & : campum in ſum egreſſus &

וָאֵצֵא אֶל־הַבִּקְעָה וְהִנֵּה־שָׁם כְּבוֹד־יְהוָה עֹמֵד

.meas facies in cecidi Et .Chebar fluvium juxta vidi quam ,gloria ſicut

כַּכָּבוֹד אֲשֶׁר רָאִיתִי עַל־נְהַר־כְּבָר וָאֶפֹּל עַל־פָּנָי׃

eſt allocutus & :meos pedes ſup me ſtatuit & ,ſpiritus me in eſt ingreſſ⁹ &

24 וַתָּבֹא־בִי רוּחַ וַתַּעֲמִדֵנִי עַל־רַגְלָי וַיְדַבֵּר

tu & .tuæ domus medio in te include ,Ingredere :me ad dixit & , me

25 אֹתִי וַיֹּאמֶר אֵלַי בֹּא הִסָּגֵר בְּתוֹךְ בֵּיתֶךָ׃ וְאַתָּה

non & : eis in te ligabunt & , funes te ſuper *dabunt* ecce , hominis fili

בֶן־אָדָם הִנֵּה נָתְנוּ עָלֶיךָ עֲבוֹתִים וַאֲסָרוּךָ בָּהֶם וְלֹא

ad faciam adhærere tuam linguam Et .eorum medium in egredieris

26 תֵצֵא בְּתוֹכָם׃ וּלְשׁוֹנְךָ אַדְבִּיק אֶל־

: arguentem virum in eis eris non & ,mutus eris & , *tuum palatum*

חִכֶּךָ וְנֶאֱלַמְתָּ וְלֹא־תִהְיֶה לָהֶם לְאִישׁ מוֹכִיחַ

aperiam , tibi *me loquendo in* Et *.ipſi rebellionis* domus quia

27 כִּי בֵּית מְרִי הֵמָּה׃ וּבְדַבְּרִי אוֹתְךָ אֶפְתַּח אֶת־

Audiens : Deus Dominus dixit Sic : eos ad dices & , tuum os

פִּיךָ וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הַשֹּׁמֵעַ ׀

.ipſi rebellionis domus quia , ceſſet *ceſſans* & , audiat

יִשְׁמָע וְהֶחָדֵל ׀ יֶחְדָּל כִּי בֵּית מְרִי הֵמָּה׃

CAP. IV. ד

: tuas facies ad eum *dabis* & , laterem tibi ſume,hominis fili tu Et

1 וְאַתָּה בֶן־אָדָם קַח־לְךָ לְבֵנָה וְנָתַתָּה אוֹתָהּ לְפָנֶיךָ

eam adverſum *dabis* Et .Jeruſalaim civitatem eum ſuper *exarabis* &

2 וְחַקּוֹתָ עָלֶיהָ עִיר אֶת־יְרוּשָׁלִָם׃ וְנָתַתָּה עָלֶיהָ

eam contra *fundes* & ,*ligneam turrim* eam contra *ædificabis* & , obſidionem

מָצוֹר וּבָנִיתָ עָלֶיהָ דָּיֵק וְשָׁפַכְתָּ עָלֶיהָ

arietes eam adverſus pone & , caſtra eam *ſuper* *dabis* & : aggerem

סֹלְלָה וְנָתַתָּה עָלֶיהָ מַחֲנוֹת וְשִׂים־עָלֶיהָ כָּרִים

eam *dabis* & , *ferri* ſartaginem tibi ſume tu Et .undique

3 סָבִיב׃ וְאַתָּה קַח־לְךָ מַחֲבַת בַּרְזֶל וְנָתַתָּה אוֹתָהּ

tuas facies *obfirmabis* & : civitatem inter &,te inter ferreum parietem

קִיר בַּרְזֶל בֵּינְךָ וּבֵין הָעִיר וַהֲכִינֹתָה אֶת־פָּנֶיךָ

ipſum ſignum ,eam *contra* *coarctabis* & , obſidionem in erit & , eam *ad*

אֵלֶיהָ וְהָיְתָה בַמָּצוֹר וְצַרְתָּ עָלֶיהָ אוֹת הִיא

pones & , ſiniſtrum tuum latus ſuper *jace* tu Et .Iſrael domui

4 לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃ וְאַתָּה שְׁכַב עַל־צִדְּךָ הַשְּׂמָאלִי וְשַׂמְתָּ

quibus , dierum numerum ,illud ſuper Iſrael domus iniquitatem

אֶת־עֲוֺן בֵּית־יִשְׂרָאֵל עָלָיו מִסְפַּר הַיָּמִים אֲשֶׁר

tibi dedi ego Et .eorum iniquitatem portabis , illud ſuper *jacueris*

5 תִּשְׁכַּב עָלָיו תִּשָּׂא אֶת־עֲוֺנָם׃ וַאֲנִי נָתַתִּי לְךָ

trecentos , dierum numerum *ad* eorum iniquitatis annos

אֶת־שְׁנֵי עֲוֺנָם לְמִסְפַּר יָמִים שְׁלֹשׁ־מֵאוֹת

conſummabis Et .Iſrael dom⁹ iniquitatẽ portabis &:dies nonaginta &

6 וְתִשְׁעִים יוֹם וְנָשָׂאתָ עֲוֺן בֵּית־יִשְׂרָאֵל׃ וְכִלִּיתָ

portabis & ,ſecundò dexterum tuum latus ſuper *jacebis &* , *hæc*

אֶת־אֵלֶּה וְשָׁכַבְתָּ עַל־צִדְּךָ הַיְמָנִי שֵׁנִית וְנָשָׂאתָ

diem , *annum in Diem* .diebus quadraginta ,Jehudah domus iniquitatem

אֶת־עֲוֺן בֵּית־יְהוּדָה אַרְבָּעִים יוֹם יוֹם לַשָּׁנָה יוֹם

.tibi *illud* dedi *annum in*

לַשָּׁנָה נְתַתִּיו לָךְ׃

Verſio VULG. LAT.

21 Si autem tu annuntiaveris juſto
ut non peccet juſtus, & ille non
peccaverit: vivens vivet, quia
annuntiâſti ei, & tu animam tuã
22 liberâſti. Et facta eſt ſuper me
manus Domini, & dixit ad me;
Surgens egredere in campum,
23 & ibi loquar tecum. Et ſurgens
egreſſus ſum in campum: & ecce
ibi gloria Domini ſtabat quaſi
gloria, quam vidi juxta fluvium
Chobar: & cecidi in faciem meã.
24 Et ingreſſus eſt in me ſpiritus, &
ſtatuit me ſuper pedes meos: &
locutus eſt mihi, & dixit ad me;
Ingredere, & includere in
25 medio domûs tuæ. Et tu, fili hominis,
ecce data ſunt ſuper te vincula,
& ligabunt te in eis: &
non egredieris de medio eorum.
26 Et linguam tuam adhærere faciam
palato tuo, & eris mutus,
nec quaſi vir objurgans: quia domus
27 exaſperans eſt. Cùm autem
locutus fuero tibi, aperiam os
tuum, & dices ad eos; Hæc dicit
Dominus Deus; Qui audit, audiat:
& qui quieſcit, quieſcat:
quia domus exaſperans eſt.

CAP. IV.

1 ET tu, fili hominis, ſume tibi
laterem, & pones eum coram te,
& deſcribes in eo civitatem
2 Jeruſalem. Et ordinabis adverſùs
eam obſidionem. & ædificabis
munitiones, & comportabis aggerem,
& dabis contra eam caſtra,
& pones arietes in gyro.
3 Et tu ſume tibi ſartaginem ferream,
& pones eam in murum
ferreum inter te, & inter civitatem:
& obfirmabis faciem tuam
ad eam, & erit in obſidionem,
& circumdabis eam: ſignum eſt
4 domui Iſrael. Et tu dormies ſuper
latus tuum ſiniſtrum, & pones
iniquitates domûs Iſrael ſuper
eo, numero dierum quibus
dormies ſuper illud, & aſſumes
5 inquitatem eorum. Ego autem
dedi tibi annos iniquitatis
eorum, numero dierum trecentos
& nonaginta dies: & portabis
iniquitatem domûs Iſrael.
6 Et cùm compleveris hæc, dormies
ſuper latus tuum dexterum ſecundò:
& aſſumes iniquitatem
domûs Juda quadraginta diebus:
diem pro anno, diem, inquam,
pro anno dedi tibi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

21 Σὺ δὲ ἐὰν διαστείλῃ τῷ δικαίῳ τοῦ μὴ (π)
ἁμαρτεῖν, καὶ αὐτὸς μὴ ἁμάρτῃ, ὁ δίκαιος
ζωῇ ζήσεται, ὅτι διεστείλω αὐτῷ, καὶ σὺ (ρ)
22 τὴν σεαυτοῦ ψυχὴν ῥύσῃ. Καὶ ἐγένετο ἐπ᾽
ἐμὲ χεὶρ κυρίου· καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Ἀνάστηθι,
καὶ ἔξελθε εἰς τὸ πεδίον, καὶ ἐκεῖ
23 λαληθήσεται πρὸς σέ. Καὶ ἀνέστην καὶ ἐξῆλθον
πρὸς τὸ πεδίον· καὶ ἰδοὺ ἐκεῖ δόξα κυρίου
εἱστήκει, καθὼς ἡ ὅρασις, καὶ καθὼς ἡ (σ) δόξα
κυρίου, ἣν ἴδον ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ
24 Χοβάρ· καὶ πίπτω ἐπὶ πρόσωπόν μου. Καὶ ἦλθεν
ἐπ᾽ ἐμὲ πνεῦμα, καὶ ἔστησέ με (τ) ἐπὶ
τοὺς πόδας μου, καὶ ἐλάλησε πρὸς μὲ, καὶ
εἶπέ μοι, Εἴσελθε, καὶ ἐγκλείσθητι ἐν μέσῳ
25 τοῦ οἴκου σου. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, ἰδοὺ
δέδονται ἐπὶ σὲ δεσμοὶ, καὶ δήσουσί σε ἐν
αὐτοῖς, καὶ (υ) οὐ μὴ ἐξέλθῃς (φ) ἐκ μέσου
26 αὐτῶν. Καὶ τὴν γλῶσσάν σου συνδήσω, καὶ
ἀποκωφωθήσῃ, καὶ οὐκ ἔσῃ αὐτοῖς εἰς ἄνδρα
ἐλέγχοντα, διότι οἶκος παραπικραίνων
27 ἐστί. Καὶ ἐν τῷ λαλεῖν με πρὸς σὲ, ἀνοίξω
τὸ στόμα σου, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε
λέγει (χ) κύριος, Ὁ ἀκούων ἀκουέτω, καὶ ὁ
ἀπειθῶν (ψ) ἀπειθείτω, διότι οἶκος
παραπικραίνων ἐστί.

Tu autem ſi diſtinxeris juſto, ut 21
non peccet, & ipſe non peccaverit,
juſt⁹ vitâ vivet, quia diſtinxiſti
ei: & tu animam tuam
liberabis. Et facta eſt ſuper me 22
manus Domini, & dixit ad
me; Surge, & egredere in
campum: et ibi alloquutio fiet
ad te. Et ſurrexi, et egreſſus 23
ſum ad campum. Et ecce ibi
gloria Domini ſtabat, (i) ſicut
aſpectus, et ſicut gloria Domini,
quam vidi, ſuper fluvium Chobar.
Et cado in faciem meam:
Et venit in me ſpiritus: et ſtatuit 24
me ſuper pedes meos: et
loquutus eſt ad me, et dixit
mihi; Ingredere, et includere in
medio domûs tuæ. Et tu, fili 25
hominis, ecce data ſunt ſuper te
vincula: et ligabunt te in eis:
et non egredieris de medio eorum:
Et linguam tuam (k) 26
colligabo, et eris mutus; et non
eris eis in virum objurgantem:
quia domus exaſperans eſt. Et 27
in loquendo me ad te, aperiam
os tuum, et dices ad eos, Hæc dicit
Dominus; Qui audit, audiat:
et qui eſt inobediens, non obediat:
quia domus exaſperans eſt.

MS.A. (π) ἁμαρτάνειν, (ρ) τὴν ψυχήν σου (σ) δόξα, ἣν ἴδον (τ) ἐπὶ πόδας (υ) σὺ οὐ μὴ (φ) ἐξ αὐτῶν. Καὶ τὴν (χ) κύριος κύριος, (ψ) ἀπειθείτω,

ΚΕΦ. δ΄.

1 ΚΑὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, λάβε σεαυτῷ
πλίνθον, καὶ θήσεις αὐτὴν πρὸ προσώπου
σου, καὶ διαγράψεις ἐπ᾽ αὐτὴν πόλιν τὴν
2 Ἱερουσαλήμ. Καὶ δώσεις ἐπ᾽ αὐτὴν περιοχὴν,
καὶ οἰκοδομήσεις ἐπ᾽ αὐτὴν προμαχῶνας,
καὶ περιβαλεῖς ἐπ᾽ αὐτὴν χάρακα,
καὶ δώσεις ἐπ᾽ αὐτὴν παρεμβολὰς, καὶ
3 τάξεις τὰς βελοστάσεις κύκλῳ. Καὶ σὺ
λάβε σεαυτῷ τήγανον σιδηροῦν, καὶ
θήσεις αὐτὸ τοῖχον σιδηροῦν ἀναμέσον
σου καὶ ἀναμέσον τῆς πόλεως, καὶ ἑτοιμάσεις
τὸ πρόσωπόν σου ἐπ᾽ αὐτὴν, καὶ ἔσται ἐν
συγκλεισμῷ, καὶ συγκλείσεις αὐτήν. σημεῖόν
4 ἐστι τοῦτο τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ. Καὶ σὺ
κοιμηθήσῃ ἐπὶ τὸ πλευρόν σου τὸ ἀριστερὸν,
καὶ θήσεις τὰς ἀδικίας τοῦ οἴκου Ἰσραὴλ
ἐπ᾽ αὐτοῦ, κατὰ ἀριθμὸν τῶν ἡμερῶν
πεντήκοντα καὶ ἑκατὸν (α) ἃς κοιμηθήσῃ
ἐπ᾽ αὐτοῦ, καὶ λήψῃ τὰς ἀδικίας αὐτῶν.
5 Καὶ ἐγὼ δέδωκά σοι τὰς (β) ἀδικίας αὐτῶν
εἰς ἀριθμὸν ἡμερῶν, ἐνενήκοντα καὶ
ἑκατὸν ἡμέρας, καὶ λήψῃ τὰς ἀδικίας τοῦ
6 οἴκου Ἰσραήλ. Καὶ συντελέσεις (γ) ταῦτα,
καὶ κοιμηθήσῃ ἐπὶ τὸ πλευρόν σου τὸ
δεξιὸν, καὶ λήψῃ τὰς ἀδικίας τοῦ οἴκου
Ἰούδα (δ) τεσσαράκοντα ἡμέρας· ἡμέραν εἰς
ἐνιαυτὸν τέθεικά σοι.

CAP. IV.

ET tu, fili hominis, ſume tibi 1
(a) laterem: et pones eum ante
faciem tuam: et deſcribes in eo
civitatem Hieruſalem: Et dabis 2
ſuper eam obſidionem: et ædificabis
ſuper eam propugnacula,
et circumjacies ſuper eam vallum,
et dabis ſuper eam caſtra,
et ordinabis machinas miſſilium
in gyro. Et tu ſume tibi ſartaginem 3
ferream: et pones eam
murum ferreum inter te et civitatem:
et parabis faciem tuam
ſuper eam: et erit in concluſione,
et concludes eam. Signum eſt
hoc filiis Iſrael. Et tu dormies 4
ſuper latus tuum ſiniſtrum: et
pones iniquitates domûs Iſrael
ſuper eo, juxta numerum dierum
(b) quinquaginta et centum, quos dormies ſuper illud:
et aſſumes iniquitates eorum. Et 5
ego dedi tibi (c) iniquitates eorum
in numero dierum (d) nonaginta,
et centum dies; et ſumes
iniquitates domûs Iſrael.
Et conſummabis hæc, et dormies 6
ſuper latus tuum dextrum: et
aſſumes iniquitates domûs Juda
quadraginta diebus. Diem in
annum poſui tibi.

MS.A. (α) ἡμέρας ἃς (β) δύο ἀδικίας (γ) αὐτὰ πάντα, (δ) τεσσεράκοντα

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

21 ואת ארי אזהרת לצדיקא בדיל דלא למחטי צדיקא והוא לא חטי מחי יחי ארי
21 אזדהר ואת ית נפשך שזבתא : ושרת עלי תמן רוח נבואה מן קדם יי ואמר לי קום
23 פוק לבקעתא ותמן אמלל עמך : וקמית ונפקית לבקעתא והא תמן יקרא דיי שריא
24 כיקרא דחזיתי על נהר כבר ואשתטחית על אפי : ועלת בי רוחא ואקימתני על רגלי
25 ומלל עמי ואמר עול אטמר בגו ביתך : ואת בר אדם הא נזרית פתגמי פומי עלך כאסור
26 גדילן דאסרין בהן ולא תפוק ביניהון : ולישנך אדביק לחכך ותשתוק ולא תהי
27 להון לגבר מוכח ארי עם סרבן אנון : ובמללותי עמך ארכין ית נפשך ותימר להון
כדנן אמר יי אלהים דמקבל יקבל אולפן ודי יתמנע יתמנע מלמחטי ארי עם
סרבן אנון :

ד

1 ואת בר אדם סב לך אבנא ותתן יתה קדמך ותצור עלה קרתא ית ירושלם :
2 ותתן עלה ציר ותבני עלה כרקום ותצבור עלה מליתא ותשרי עלה משרין
3 ומני עלה אפרורין סחור סחור : ואת סב לך מסרית ברזל ותתן יתה כותל
ברזל בינך ובין קרתא ותתקין ית אפך לה ותהי בצירא ותצור עלה את היא
4 לבית ישראל : ואת שכוב על סטרך דסמלא ותשוי ית חובי בית ישראל עלוהי
5 מנין יומיא דתשכוב עלוהי תקבל ית חוביהון : ואנא יהבית לך על חד תרין
6 כחוביהון למנין יומיא תלת מאה ותשעין יומין ותקבל חובי בית ישראל : ותשלים
ית אלין ותשכוב על סטרך דימינא תנינות ותקביל ית חובי בית יהודה ארבעין
יומין יומא לשתא יומא לשתא יהבתנין לך :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Tu autem ſi exhortatus fueris juſtum ut non peccet juſtus, & ipſe non peccaverit; 21
vivens vivet, quia monitus eſt; tu autem animam tuam liberaſti.
Et manſit ſuper me ibi ſpirit⁹ prophetiæ à facie Dñi, & dixit ad me: Surge 22
& egredere in campum, & ibi loquar tecum. Et ſurrexi & egreſſus ſum 23
in campum, & ecce ibi gloria Dñi reſidebat, quaſi gloria quam vidi juxta
fluvium Chobar: & pronus cecidi ſuper faciem meam. Et ingreſſus eſt 24
in me ſpiritus, & ſtatuit me ſuper pedes meos, & locutus eſt mecum, &
dixit: Ingredere & abſconde te in medio domus tuæ. Tu autem fili hominis, 25
ecce ſtatui *verba oris mei* ſuper te, ſicut vinculum funiculorum quibus
ligant: & non egredieris in medium eorum. Et linguam tuam adhærere 26
faciam palato tuo, & tacebis, & non eris eis vir increpans: quia populus
contumax eſt. Et cùm locutus fuero tecum, inclinabo animam tuam, 27
& dices eis: Hæc dicit Dominus Deus: Qui ſuſcipit, ſuſcipiat diſciplinam;
& qui ceſſat, ceſſet peccare; quia populus contumax eſt.

CAP. IV.

ET tu fili hominis ſume tibi lapidem, & pones coram te, & figurabis ſuper 1
eum civitatem Jeruſalem: Et pones ſuper eam obſidionem, & ædificabis 2
ſuper eam machinam, & comportabis adverſùs eam aggerem: &
collocabis contra eam caſtra, & conſtitues contra eam duces per circuitum.
Et tu tolle tibi ſartaginem ferream, & pones eam murum ferreum; 3
inter te & civitatem: & diriges faciem tuam ad eam, & erit in obſidione,
& obſidebis eam: ſignum eſt domui Iſrael. Et tu cuba ſuper latus tuum 4
ſiniſtrum, & pones peccata domus Iſrael ſuper illud: numero dierum quibus
cubaveris ſuper illud, ſuſcipies peccata eorum. Et ego dedi tibi pro 5
uno duo *pro* peccatis eorum juxta numerum dierum trecentorum & nonaginta
dierum: & ſuſcipies iniquitates domus Iſrael. Ubi enim hæc abſolveris, 6
cubabis ſuper latus tuum dextrum ſecundò, & ſuſcipies iniquitates
domus Juda quadraginta dieb⁹, diem pro anno, diem pro anno dedi eos

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܢ ܕܝܢ ܐܢܬ ܡܙܗܪ ܠܙܕܝܩܐ ܕܠܐ ܢܚܛܐ ܘܠܐ ܚܛܐ܆ ܙܕܝܩܐ ܚܝܐ ܢܚܐ ܡܛܠ ܕܐܙܕܗܪ܆ ܘܐܢܬ ܢܦܫܟ ܦܨܝܬ܂
* ܘܗܘܬ ܥܠܝ ܬܡܢ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܘܐܡܪ ܠܝ ܩܘܡ ܦܘܩ ܠܦܩܥܬܐ܂ ܘܬܡܢ ܐܡܠܠ ܥܡܟ܂
* ܘܩܡܬ ܢܦܩܬ ܠܦܩܥܬܐ܂ ܘܬܡܢ ܩܐܡ ܗܘܐ ܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ܂ ܐܝܟ ܫܘܒܚܐ
ܕܚܙܝܬ ܥܠ ܢܗܪܐ ܟܒܪ܂ ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ܂ * ܘܥܠܬ ܒܝ ܪܘܚܐ܂ ܘܐܩܝܡܬܢܝ ܥܠ ܪܓܠ
ܪܓܠܝ܂ ܘܡܠܠ ܥܡܝ܂ ܘܐܡܪ ܠܝ ܥܘܠ ܐܬܚܒܫ ܒܓܘ ܒܝܬܟ܂ * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܗܐ ܝܗܒܝܢ ܥܠܝܟ
ܫܫܠܬܐ܂ ܘܐܣܪܝܢ ܠܟ ܒܗܝܢ܂ ܕܠܐ ܬܦܘܩ ܒܝܢܬܗܘܢ܂ * ܘܠܫܢܟ ܐܕܒܩ ܒܚܟܟ
ܘܬܫܬܘܩ ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܓܒܪܐ ܡܟܣܢܐ܂ ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܐܢܘܢ ܡܡܪܡܪܢܐ܂ * ܘܟ
ܕܡܡܠܠ ܐܢܐ ܥܡܟ܆ ܐܦܬܚ ܦܘܡܟ ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ܂ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܡܢ
ܕܫܡܥ ܢܫܡܥ܂ ܘܕܙܐܥ ܢܙܘܥ܂ ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܐܢܘܢ ܡܡܪܡܪܢܐ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܣܒ ܠܟ ܠܒܢܬܐ܂ ܘܣܝܡܝܗ ܩܕܡܝܟ܂ ܘܨܘܪ ܥܠܝܗ ܡܕܝܢܬܐ
ܐܘܪܫܠܡ܂ * ܘܣܝܡ ܥܠܝܗ ܨܪܐ܂ ܘܒܢܝ ܥܠܝܗ ܚܠܩܘܡܐ܂ ܘܐܫܕ ܥܠܝܗ ܥܪܡܬܐ܂
ܘܣܝܡ ܥܠܝܗ ܡܫܪܝܬܐ܂ ܘܥܒܕ ܠܗ ܟܘܝܢ ܐܠܟܣܢ ܚܕܪܝܗ܂ * ܘܐܢܬ ܣܒ ܠܟ ܛܓܢܐ
ܕܦܪܙܠܐ܂ ܘܥܒܕܝܗܝ ܫܘܪܐ ܕܦܪܙܠܐ ܒܝܢܝ ܠܒܝܬ ܡܕܝܢܬܐ܂ ܘܬܩܝܢ ܐܦܝܟ ܥܠܝܗ܂ ܘܬܗܘܐ
ܒܣܓܪܐ܂ ܘܬܟܪܘܗ܂ ܐܬܐ ܗܝ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ܂ * ܘܐܢܬ ܕܡܘܟ ܥܠ ܓܒܟ
ܕܣܡܠܐ܂ ܘܣܝܡ ܥܠܘܗܝ ܥܘܠܗ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ ܠܡܢܝܢ ܝܘܡܬܐ ܕܕܡܟ ܐܢܬ ܥܠܘܗܝ
ܬܩܒܠ ܥܘܠܗܘܢ܂ * ܘܐܢܐ ܝܗܒܬ ܠܟ ܬܪܬܝܢ ܥܘܠܐ ܠܡܢܝܢ ܝܘܡܬܐ܂ ܬܠܬܡܐܐ
ܘܬܫܥܝܢ ܝܘܡܝܢ܂ ܘܬܩܒܠ ܥܘܠܗ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ܂ * ܘܬܫܠܡ ܐܢܘܢ܂ ܘܬܕܡܟ ܬܘܒ
ܥܠ ܓܒܟ ܕܝܡܝܢܐ܂ ܘܬܩܒܠ ܥܘܠܗ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܐܪܒܥܝܢ ܝܘܡܝܢ܂ ܝܘܡܐ ܠܫܢܬܐ
ܝܗܒܬ ܠܟ܂

Verùm ſi monueris juſtum ne peccet, & non peccaverit: juſtus ille vivet quòd monitus fuerit, & tu animam tuam liberaveris. 21

Deinde fuit ibi ſuper me manus Domini, dixitque mihi; Surge egredere in campum, & ibi te alloquar. 22

Quarè ſurgens egreſſus ſum in campum, ibíque ſtabat gloria Dei Iſraelis, ſimilis gloriæ quam videram juxta fluvium Cebar: unde procidi in faciem meam. 23

Sed ingreſſus in me ſpiritus erexit me in pedes meos: tum allocutus eſt me *Dominus*, dixitque mihi; Ingredere, include te intra domum tuam. 24

Tibi autem fili hominis, ecce injecturi ſunt tibi vincula, iiſque te ligaturi, ut non egrediaris inter eos. 25

Quapropter linguam tuam adhæreſcere faciam cœlo palati tui, ut obmuteſcas, & non ſis eis vir objurgator; quia familia ſunt contumax. 26

Sed quum alloquar te, aperiam os tuum ut dicas eis; Sic ait Dominus dominorum, *Si* quis audiat, audiat; & *ſi* quis trepidet trepidet: nam domus ſunt contumax. 27

CAP. IV.

CÆterùm tu fili hominis, accipe tibi laterem, pone ante te, & incide in eum urbem Jeroſolymam: 1

Deinde obſidionem pone contra illam, extrue contra eam aggeres, inſidias tende contra eam, caſtra fige contra eam, & fac illi obliquas per circuitum feneſtellas. 2

Tu deinde ſume tibi ſartaginem ferream, eamque compone in murum ferreum inter te & urbem, faciem tuam compara adverſùs eam, ſit intra ſeptum, & obſide eam. Hoc ſignum eſto Iſraelitis. 3

Tu autem incumbe lateri tuo ſiniſtro, imponens ei iniquitatem Iſraelitarum: numero dierum quibus incumbes ei, feres iniquitatem illorum. 4

Ego enim do tibi duas iniquitates ad numerum dierum, *nempe* trecentorum nonaginta dierum, quibus feres iniquitatem Iſraelitarum. 5

Cùm hos abſolveris, incumbes iterum lateri tuo dextero, feréſque iniquitatem domûs Judæ quadraginta diebus: diem pro anno do tibi. 6

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وان انت انذرت الصديق ان لا يخطي * وهو فلا يخطي * فالصديق يحيي حياة لانك
انذرته * وانت تنجي نفسك * وصارت علي يد الرب وقال لي * قم واخرج الي الصحراء * وهناك
يتكلم معك * فقمت وخرجت الي الصحراء * واذا هناك مجد الرب قايم * كمثل المنظر وكمثل
المجد الذي رايته علي نهر خوبار * فسقطت علي وجهي * واتي علي روح * واقامني علي قدمي
وتكلم معي وقال لي * ادخل واحتبس في وسط بيتك * وانت يا ابن الانسان ها اعطيت
عليك رباطات فيربطونك بها * وانت فلا تخرج منها * واشكل لسانك فتخرس * ولا تكن
لهم رجلا موبخا * من اجل انهم بيت ممرمر هو * وعندما اتكلم معك افتح فمك * فتقول
لهم * هكذا يقول الرب الرب * السامع ليسمع * والعاصي ليعصي * من اجل انهم
بيت ممرمر هو *

الفصل الرابع *

* وانت يا ابن الانسان خذ لك لبنة * وضعها قدام وجهك * وخطط عليها مدينة اورشليم
* وضع عليها زماما * وتبني عليها مجانيق * وتحيط عليها سياجا * وتعطي عليها معسكرا
وترتب من حولها مرامي * وانت خذ لنفسك طاجنا من حديد * وتضع له حايطا من حديد
بينك وبين المدينة * تستعد بوجهك عليها * وتصير في حبس وتحبسها * هذه هي علامة لبني
اسرايل * وانت ترقد علي جنبك الايسر * وتضع مظالم بيت اسرايل عليه * كعدد الايام
مايه وخمسين يوما التي تضطجع فيها عليه * وتاخذ ظلاماتهم * وانا اعطيتك ظلاماتهم
بعدد الايام مايه وتسعين يوما * وتاخذ ظلامات بيت اسرايل * وتكملها جميعا * وتضطجع
علي جنبك الايمن * وتاخذ مظالم بيت يهوذا اربعين يوما * اليوم بسنة وضعت لك *

Quòd ſi tu juſtum illum monueris ne peccet, & ipſe non peccaverit; is quidem juſtus omnino vivet eò quòd monueris eum, & tu liberaveris animam tuam. 21

Præterea facta eſt ſuper me manus Domini, qui dixit mihi; Surge, egredere in deſertum, ibique ſermo tecum habebitur. 22

Quapropter ſurgens egreſſus ſum in deſertum, & ecce ibi gloriam Domini ſtantem, juxta viſionem & juxta gloriam illam quam videram ſuper flumen Chobar: tum procidi in faciem meam. 23

Venit autem ſuper me ſpiritus, & erexit me ſuper pedes meos, allocutus eſt me, & dixit mihi; Ingredere, teque include in medio domûs tuæ. 24

Tu verò O fili hominis, ecce injecta ſunt tibi vincula quibus te ligabunt, è quibus tu non evades: 25

En innodabo linguam tuam, & obmuteſces, ut non ſis eis vir objurgator; quia domus refractaria iſti ſunt. 26

Cum autem colloquar tecum, aperiam os tuum, & dices eis; Sic ait Dominus Deus; Qui audit, audiat; & qui rebellis eſt, rebellet: nam domus refractaria ſunt iſti. 27

CAP. IV.

ET tu O fili hominis, accipe tibi laterem, ponito eum ante faciem tuam, & delineato ſuper eum urbem Jeroſolymam: 1

Obſidionem pones adverſùs eam, ædificabis adverſùs eam machinas ad jaculanda ſaxa, cinges eam ſepto, pones adverſus eam caſtra, & diſpones circa eam aggeres ad jaculanda tela. 2

Tu præterea ſume tibi ſartaginem ferream, & pones eam murum ferreum inter te & inter urbem: parabis faciem tuam adverſùs eam, ut ſit in obſidione & obſideas eam. Hoc eſt ſignum filiis Iſraelis. 3

Et tu jacebis ſuper latus tuum lævum, eiq; impones ſcelera domûs Iſraelis, juxta numerum dierum, centum ſcilicet quinquaginta dierum, quibus jacebis ſuper illud, fereſq; ſcelera eorum. 4

Ego enim dedi tibi ſcelera eorum juxta numerum dierum, centum ſcilicet nonaginta dierum, fereſque ſcelera domûs Iſraelis. 5

His integrè abſolutis, jacebis ſuper latus tuum dexterum, fereſque ſcelera domûs Judæ quadraginta diebus: diem pro anno poſui tibi. 6

יחזקאל: ד

tuum brachium & , tuas facies obfirmabis Jeruſalaim obſidionē ad Et
ואל־מצור ירושלם תכין פניך וזרעך 7
te ſuper dedi ecce Et .eā adverſus prophetabis & : diſcoopertum
חשופה ונבאת עליה: והנה נתתי עליך 8
te conſummandum ad,tuum latus ad tuo latere à te vertes non & : funes
עבותים ולא־תהפך מצדך אל־צדך עד־כלותך
, fabam & , hordea & , frumenta tibi cape tu Et .tuæ obſidionis dies
ימי מצורך: ואתה קח־לך חטין ושערים ופול 9
facies &,uno vaſe in ea dabis & : ſpeltas &,milium &,lentes &
ועדשים ודחן וכסמים ונתתה אותם בכלי אחד ועשית
ſuper dormiens tu quibus dierum numerum panem in tibi eis
אותם לך ללחם מספר הימים אשר־אתה שוכב על־
.illum comedes diebus nonaginta & centis---tre , tuum latus
צדך שלש־מאות ותשעים יום תאכלנו:
.die in ſicli viginti pondere in ,eo veſceris quo tuus cibus Et
ומאכלך אשר תאכלנו במשקול עשרים שקל ליום 10
menſura in aquam Et .illum comedes tempus ad uſque tempore A
מעת עד־עת תאכלנו: ומים במשורה 11
libum Et .bibes tempus ad uſque tempore A .hin ſextum bibes
תשתה ששית ההין מעת עד־עת תשתה: ועגת 12
hominis egeſtionis ſtercoribus in ipſum & : illum comedes hordeaceorum
שערים תאכלנה והיא בגללי צאת האדם
filii comedent Sic : Dominus dixit Et .eorum oculis in illum coques
תעגנה לעיניהם: ויאמר יהוה ככה יאכלו בני־ 13
.illuc eos propellam quò gentes inter ,pollutum ſuū panem Iſrael
ישראל את־לחמם טמא בגוים אשר אדיחם שם:
: polluta non mea anima Ecce ; Deus Domine Ahah : dixi Et
ואמר אהה אדני יהוה הנה נפשי לא מטמאה 14
: nunc ad uſque & meis pueritiis ab comedi non raptum &,morticinium &
ונבלה וטרפה לא־אכלתי מנעורי ועד־עתה
: me ad dixit Et .putridæ rei caro meum os in eſt ingreſſa non &
ולא־בא בפי בשר פגול: ויאמר אלי 15
: hominis ſtercoribus pro bovis ſtercora tibi dedi , Vide
ראה נתתי לך את־צפועי הבקר תחת גללי האדם
,hominis Fili : me ad dixit Et .eis ſuper tuū panem facies &
ועשית את־לחמך עליהם: ויאמר אלי בן־אדם 16
panem comedent & , Jeruſalaim in panis baculum frangens ego Ecce
הנני שבר מטה־לחם בירושלם ואכלו־לחם
.bibent ſtupore in & menſura in aquam & ;ſolicitudine & ,pondere in
במשקל ובדאגה ומים במשורה ובשממון ישתו:
,ej⁹ frater & unuſquiſque obſtupeſcent Et .aqua & ,pane careant Ut
למען יחסרו לחם ומים ונשמו איש ואחיו 17
.ſua iniquitate in liqueſcent &
ונמקו בעונם:

CAP. V. ה

eā capies tonſorum novaculā,acutū gladiū tibi tolle hominis fili tu Et
ואתה בן־אדם קח־לך חרב חדה תער הגלבים תקחנה 1
tibi capies & : tuā barbam ſuper &,tuū caput ſuper facies tranſire & ,tibi
לך והעברת על־ראשך ועל־זקנך ולקחת לך
medio in incendes igni in partē Tertiā .eos divides & ,ponderis bilances
מאזני משקל וחלקתם: שלשית באור תבעיר בתוך 2
percuties,partē tertiā capies Et .obſidionis dies coplere ſecundū,civitatis
העיר כמלאת ימי המצור ולקחת את־השלשית תכה
evacuabo gladiū &,ventū in diſperges partē tertiā &,ej⁹ circuitibus gladio in
בחרב סביבותיה והשלשית תזרה לרוח וחרב אריק
.tuis alis in eos ſtringe &numero in parum inde capies Et .eos poſt
אחריהם: ולקחת משם מעט במספר וצרת אותם בכנפיך: 3
combures & ,ignis medium in eos projicies & , capies rurſus eis ex Et
ומהם עוד תקח והשלכת אותם אל־תוך האש ושרפת 4
.Iſrael domum omnem in ignis egredietur eo ex : igni in eos
אתם באש ממנו תצא־אש אל־כל־בית ישראל:

Verſio VULG. LAT.

7 Et ad obſidionem Jeruſalem con-
vertes faciem tuam, & brachium
tuum erit extentum : & prophe-
8 tabis adverſùs eam. Ecce circum-
dedi te vinculis : & non te con-
vertes à latere tuo in lat⁹ aliud,
donec compleas dies obſidionis
9 tuæ. Et tu ſume tibi frumentum,
& hordeum, & fabam, & lentē,
& miliū, & viciā : & mittes ea
in vas unum, & facies tibi panes
numero dierū quib⁹ dormies ſu-
per lat⁹ tuū : trecentis & nona-
10 ginta dieb⁹ comedes illud. Cibus
autem tu⁹ quo veſcêris, erit in
pondere viginti ſtateres in die :
à tempore uſque ad temp⁹ come-
11 des illud. Et aquam in menſura
bibes, ſextā partem hin : à tem-
pore uſque ad temp⁹ bibes illud.
12 Et quaſi ſubcinericium hordea-
ceum comedes illud: & ſtercore,
quod egreditur de homine, ope-
13 ries illud in oculis eorū. Et dixit
Dñs ; Sic comedent filii Iſrael
panem ſuum pollutū inter Gen-
14 tes, ad quas ejiciam eos. Et
dixi, A,a,a, Domine Deus, ecce
anima mea non eſt polluta : &
morticînum, & laceratum à be-
ſtiis non comêdi ab infantia mea
uſque nunc, & non eſt ingreſſa in
os meum omnis caro immunda.
15 Et dixit ad me ; Ecce dedi tibi
fimum boum pro ſtercoribus hu-
manis : & facies panem tuum in
16 eo. Et dixit ad me; Fili hominis:
Ecce ego conteram baculū panis
in Jeruſalem : & comedent panē
in pondere, & in ſolicitudine :
& aquam in menſura , & in an-
17 guſtia bibent : Ut deficientibus
pane & aquâ, corruat unuſquiſ-
que ad fratrem ſuum : & conta-
beſcant in iniquitatibus ſuis.

CAP. V.

1 ET tu, fili hominis, ſume tibi
gladium acutum, radentem pi-
los : & aſſumes eū, & duces per
caput tuum, & per barbam tuā:
& aſſumes tibi ſtateram ponde-
2 ris, & divides eos. Tertiam par-
tem igni combures in medio ci-
vitatis, juxta completionem di-
erum obſidionis : & aſſumes ter-
tiam partem, & concides gladio
in circuitu ej⁹: tertiam verò ali-
am diſperges in ventum, & gla-
3 dium nudabo poſt eos. Et ſumes
indè parvum numerum : et liga-
bis eos in ſummitate pallii tui.
4 Et ex eis rurſum tolles, et proji-
cies eos in medio ignis, et com-
bures eos igni: & ex eo egredie-
tur ignis in omnem domū Iſrael,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

7 Καὶ (ζ) εἰς τὸν συγκλεισμὸν Ἱερουσαλὴμ ἑ-
τοιμάσεις τὸ πρόσωπόν σου, καὶ τὸν βραχίο-
νά σου στερεώσεις, καὶ προφητεύσεις ἐπ' αὐ-
8 τήν. Καὶ (η) ἐγὼ ἰδοὺ δέδωκα ἐπὶ σὲ δε-
σμοὺς, καὶ (θ) μὴ στραφῇς ἀπὸ τοῦ πλευροῦ σου
ἐπὶ τὸ πλευρόν σου, ἕως οὗ συντελεσθῶσιν (ι)
9 ἡμέραι τοῦ συγκλεισμοῦ σου. Καὶ σὺ λάβε
σεαυτῷ πυροὺς, καὶ κριθὰς, καὶ κύαμον, καὶ φα-
κὸν, καὶ κέγχρον, καὶ ὀλύραν, καὶ ἐμβαλεῖς
αὐτὰ εἰς ἄγγος ἓν ὀστράκινον, καὶ ποιήσεις
αὐτὰ σεαυτῷ εἰς ἄρτους· καὶ κατὰ ἀριθμὸν
τῶν ἡμερῶν, ἃς σὺ καθεύδεις ἐπὶ τοῦ πλευ-
ροῦ σου, ἐνενήκοντα καὶ ἑκατὸν ἡμέρας φάγε-
10 σαι αὐτά. Καὶ τὸ βρῶμά σου (κ) φάγεσαι
ἐν σταθμῷ, εἴκοσι σίκλους τὴν ἡμέραν (λ), ἀπὸ
11 καιροῦ ἕως καιροῦ φάγεσαι αὐτά. Καὶ ὕδωρ ἐν
μέτρῳ πίεσαι, (μ) καὶ τὸ ἕκτον τοῦ εἶν ἀπὸ
12 καιροῦ ἕως καιροῦ πίεσαι. Καὶ ἐγκρυφίαν
κρίθινον φάγεσαι αὐτά, ἐν βολβίτοις κόπρου
ἀνθρωπίνης (ν) ἐγκρύψεις αὐτὰ κατ' ὀ-
13 φθαλμοὺς αὐτῶν. Καὶ ἐρεῖς, Τάδε λέγει κύ-
ριος ὁ θεὸς τοῦ Ἰσραὴλ, Οὕτως φάγονται οἱ
υἱοὶ (˘) τοῦ Ἰσραὴλ ἀκάθαρτα ἐν τοῖς ἔθνεσιν.
14 Καὶ εἶπα, Μηδαμῶς (ξ) κύριε θεὲ Ἰσραήλ·
εἰ ἡ ψυχή μου οὐ μεμίανται ἐν ἀκαθαρσίᾳ, καὶ
θνησιμαῖον καὶ θηριάλωτον οὐ βέβρωκα ἀπὸ
(ο) γενέσεώς μου ἕως τοῦ νῦν, οὐδὲ εἰσελήλυθεν
15 εἰς τὸ στόμα μου πᾶν κρέας (π) ἕωλον. Καὶ
εἶπε (ρ) πρὸς μὲ, Ἰδοὺ δέδωκά σοι βόλ-
βιτα βοῶν ἀντὶ τῶν βολβίτων τῶν ἀνθρω-
πίνων, καὶ ποιήσεις τοὺς ἄρτους σου ἐπ' αὐ-
16 τῶν. Καὶ εἶπε (σ) πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώ-
που, ἰδοὺ ἐγὼ συντρίβω στήριγμα ἄρτου ἐν
Ἱερουσαλὴμ, καὶ φάγονται ἄρτον ἐν σταθμῷ καὶ
ἐν ἐνδείᾳ, καὶ ὕδωρ ἐν μέτρῳ, καὶ ἐν ἀφανι-
17 σμῷ πίονται. Ὅπως ἐνδεεῖς γένωνται ἄρτου
καὶ ὕδατος· καὶ ἀφανισθήσεται ἄνθρωπος καὶ
ἀδελφὸς αὐτοῦ, καὶ (τ) ἐντακήσονται ἐν ταῖς
ἀδικίαις αὐτῶν.

MS. A. (ζ) εἰς συνκλεισμὸν (η) ἰδοὺ ἐγὼ (θ) οὐ μὴ (ι) αἱ ἡμέραι (κ) φάγεσαι ἐν σταθμίῳ, (λ) φάγεσαι, ἀπὸ καιροῦ καὶ ἕως (μ) τὸ ἕκτιν (ν) κατακρύψεις (˘) Ἰσραὴλ (ξ) κύριε κύριε, θεὲ τοῦ Ἰσραήλ· (ο) τῆς γενέσεώς (π) βέβηλον. (ρ) κύριος πρὸς (σ) κύριος πρὸς (τ) τακήσονται

ΚΕΦ. ε'.

1 ΚΑὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, λάβε σεαυτῷ ῥομ-
φαίαν ὀξεῖαν ὑπὲρ ξυρὸν κουρέως, (α) κτή-
σῃ αὐτὴν σεαυτῷ, καὶ ἐπάξεις αὐτὴν ἐπὶ τὴν
κεφαλήν σου, καὶ ἐπὶ τὸν πώγωνά σου· καὶ λή-
ψῃ ζυγὸν σταθμίων, καὶ διαστήσεις αὐτούς.
2 Τὸ τέταρτον (β) ἐν πυρὶ ἀνακαύσεις ἐν μέ-
σῃ τῇ πόλει κατὰ τὴν πλήρωσιν τῶν ἡμερῶν
τοῦ συγκλεισμοῦ· καὶ λήψῃ τὸ τέταρτον, καὶ
κατακαύσεις αὐτὸ ἐν μέσῳ αὐτῆς· καὶ τὸ τέ-
ταρτον κατακόψεις ἐν ῥομφαίᾳ κύκλῳ αὐ-
τῆς· καὶ τὸ τέταρτον διασκορπιεῖς τῷ πνεύ-
ματι. καὶ μάχαιραν ἐκκενώσω ὀπίσω αὐτῶν.
3 Καὶ λήψῃ ἐκεῖθεν ὀλίγους ἐν ἀριθμῷ, καὶ
4 συμπεριλήψῃ αὐτοὺς τῇ ἀναβολῇ σου. Καὶ
ἐκ τούτων λήψῃ ἔτι, καὶ ῥίψεις αὐτοὺς εἰς
μέσον τοῦ πυρὸς, καὶ κατακαύσεις αὐτοὺς ἐν
πυρί· ἐξ αὐτῆς ἐξελεύσεται πῦρ. καὶ ἐρεῖς παντὶ οἴκῳ Ἰσραήλ,

MS. A. (α) κτῆσαι (β) τὸ ἐν

Et ad concluſionem Hieruſalem parabis faciem tuam, & brachium tuum obfirmabis, & prophetabis ſuper eam. Et ego ecce dedi ſuper te vincula : & non convertaris de latere tuo in latus tuum, donec completi fuerint dies concluſionis tuæ. Et tu ſume tibi triticum, & hordeum, & fabam, & lentem, & milium, & [illegible] & mittes ea in vas unum teſtaceum, & facies ea tibi in panes : & juxta numerum dierum quibus tu dormis ſuper latus tuum, nonaginta & centum diebus comedes ea. Et cibum tuum comedes in pondere, viginti (f) ſiclos die : à tempore uſque ad tempus comedes ea. Et aquam in menſura bibes, & ſextam partem (g) hin à tempore uſque ad tempus bibes. (h) Et ſubcinericium hordeaceum, comedes ea : in fimo ſtercoris humani abſcondes ea ante oculos eorum. Et dices; Hæc dicit Dominus Deus Iſrael, Sic comedent filii Iſrael immunda in ( ) gentibus. Et dixi; Nequaquam Domine Deus Iſrael : ſi anima mea non eſt polluta in immunditia, & morticinum, & à beſtiis laceratum non comêdi à nativitate mea uſque nunc, & non eſt ingreſſa in os meum omnis caro (k) [illegible]. Et dixit ad me; Ecce dedi tibi fimos boum pro ſtercoribus humanis, & facies panes tuos ſuper eis. Et dixit ad me; Fili hominis, ecce ego contero (l) fulcimentum panis in Hieruſalem, & comedent panem in pondere, & in penuria : & aquam in menſura, & in interitu bibent; Ut egentes fiant panis (c) & aquæ : & delebitur homo, & frater ejus, & contabeſcent in iniquitatibus ſuis.

CAP. V.

ET tu, fili hominis, ſume tibi gladium acutum ſuper novaculam tonſoris : poſſidebis eam tibi : & duces eam ſuper caput tuum, & ſuper barbam tuam. Et aſſumes ſtateram ponderis, & divides eos : (a) Quartam partem in igni combures in medio civitatis juxta completionem dierum concluſionis : & aſſumes quartam, & combures eam in medio ejus : & quartam concîdes in gladio in circuitu ejus : & quartam diſperges vento : Et gladium nudabo poſt eos. Et aſſumes inde paucos numero, & [illegible] eos [illegible] amictu tuo. Et ex his ſumes adhuc, & projicies eos in medium ignis, & combures eos in igni : Ex ea egredietur ignis. (b) Et dices omni domui Iſrael ;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 ולציר ירושלם תתקן אפך ודרעך תתקיף ותתנבי עלה: והא גזרית פתגמי עלך כאסור
8 גדילן ולא תתהפיך מסטרך לסטרך עד אשלמותך יומי צירך: ואת סב לך חטין 9
וסעורין ופולא וטלופחין ודוחן וכונתין ותתן יתהון במנא חד ותעביד יתהון לך למיכל
מנין יומיא דאת שכיב על סטרך תלת מאה ותשעין יומין תכלניה: ומיכלך דתכלניה 10
במתקל עסרין פילס ליום מעדן עד עדן תיכלניה: ומיא במכילא תשתי חד מן שתא 11
בהינא מעדן עד עדן תשתי: וחררא דלחים שעורין תיכלנה והיא על גלי מפקת אנשא 12
תחררנה לעיניהון: ואמר יי כדין ייכלון בני ישראל ית מיכלהון מסאב בין עממיא 13
דאגלנון לתמן: ואמרית קבל בעותי יי אלהים הא נפשי לא מסאבא ונבילא ותבירא 14
לא אכלית מזעורי ועד כען ולא אכלית בסר מרחק: ואמר לי חזי דיהבית לך ית גלי 15
תוריא חלף גלי אנשא ותעביד ית מיכלך עליהון: ואמר לי בר אדם הא אנא תבר 16
סעיד מיכלא בירושלם ויכלון לחמא במתקל וביצפא ומיא בצדו ובאשתממו ישתון:
בדיל דיחסר להון מיכל ומשתי ויצדון גבר ואחוהי ויתמסון בחוביהון: 17

ה

ואת בר אדם סב לך חרבא חריפא מספר גלביא תסב לך ותעבר על רישך ועל דקנך 1
ותסב לך מוזנין דמתקל ותפלגנון: תלתא בנורא תדליק בגו קרתא כמשלם יומי צירא 2
ותסב ית תלתא תקטל בחרבא סחרנהא ותלתא תבדר לכל רוח דכן יתבדרון
ודקטלין בחרבא אגרי בתריהון: ותסב מתמן זעיר במנין ותצור יתהון בכנפך: ומנהון 3 4
עוד תסב ותרמי יתהון לגו נורא ותוקיד יתהון בנורא בכן תפוק אשתא על כל
בית ישראל:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ad obſidionem Jeruſalem diriges faciem tuam, & brachium tuum roborabis: & prophetabis adverſùs eam. Et ecce decretum Verbi mei erit ſuper te quaſi vinculum funiculorum; & non te convertes de latere tuo in latus tuum, donec compleveris dies tuæ obſidionis. Et tu ſume tibi triticum, & hordeum, & fabam, & lentes, & milium, & ſpeltam, & mittes ea in vaſe uno, & facies ea tibi in cibum numero dierum quibus cubaveris ſuper latus tuum; trecentis & nonaginta diebus comedes illum. Cibus autem tuus quo veſcêris, erit in pondere viginti ſtateres in diem, à tempore uſque ad tempus comedes illum. Et aquam in menſura bibes, ſextam partem hin : à tempore uſque ad tempus bibes illam. Et ſubcinericium panem hordeaceum comedes illum : ſuper excrementum ſtercoris humani ſubiges illum in oculis eorum. Et dixit Dominus : Sic comedent filii Iſrael cibum pollutum ſuum inter populos ad quos tranſmigrare eos feci. Et dixi : Suſcipe deprecationem meam Domine Deus : ecce anima mea non eſt polluta, & morticinium & contractum à beſtia non comedi ab infantia mea uſque nunc : & non comedi carnem abominabilem. Et dixit mihi : Vide ut dederim tibi ſtercus boum pro ſtercore hominis, & facies cibum tuum ſuper illud. Et dixit ad me : Fili hominis, ecce ego conteram ſuſtentaculum cibi in Jeruſalem, & comedent cibum ſuum in pondere & in ſolicitudine ; & aquam in deſolatione & ſtupore bibent. Ut deficiat eis cibus & potus : & vaſtabuntur vir et frater ejus, et tabeſcent in iniquitatibus ſuis.

CAP. V.

ET tu fili hominis tolle tibi gladium acutum, novaculam tonſorum tolles tibi; et traduces ſuper caput tuum et ſuper barbam tuam, et aſſumes tibi lances ponderis et divides eos. Tertiam partem igne combures in medio civitatis, cùm completi fuerint dies obſidionis: et tolles tertiam partem, et occides gladio quæ in circuitu ejus ſunt ; et tertiam partem diſperges omni vento ; ſic enim diſpergentur : et occidentes gladio immittam poſt eos. Et tolles indè paucos numero, et ligabis eos in extremitate pallii tui. Et ex eis rurſus tolles et projicies illos in medium ignis, et combures eos igni : tunc egredietur ignis in omnem domum Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܘܬ ܡܟܪܝܢܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ ܬܛܝܒ ܐܦܝܟ. ܘܕܪܥܟ ܬܥܫܢ. ܘܬܬܢܒܐ ܥܠܝܗ̇. * ܗܐ ܝܗܒܬ
ܥܠܝܟ ܫܫܠܬܐ. ܘܠܐ ܬܬܗܦܟ ܡܢ ܓܒܐ ܠܓܒܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܫܠܡܘܢ ܝܘܡܬܐ ܕܐܣܝܪܘܬܟ.
* ܘܣܒ ܠܟ ܚܛܐ. ܘܣܥܪܐ. ܘܦܘܠܐ. ܘܛܠܘܦܚܐ. ܘܕܘܚܢܐ ܘܟܘܢܬܐ. ܘܪܡܐ ܐܢܘܢ
ܒܡܐܢܐ ܚܕ. ܘܥܒܕ ܐܢܘܢ ܠܟ ܠܚܡܐ. ܠܡܢܝܢܐ ܕܝܘܡܬܐ ܕܕܡܟ ܐܢܬ ܥܠ ܓܒܟ. ܬܠܬܡܐܐ
ܘܬܫܥܝܢ ܝܘܡܝܢ ܬܐܟܠܝܘܗܝ. * ܘܡܐܟܘܠܬܟ ܕܬܐܟܘܠ ܬܗܘܐ ܒܡܬܩܠܐ ܥܣܪܝܢ ܡܬܩܠܝܢ ܒ
ܝܘܡܐ. ܡܢ ܥܕܢܐ ܠܥܕܢܐ ܬܐܟܠܝܗ̇. * ܘܡܝܐ ܒܡܫܘܚܬܐ ܬܫܬܐ. ܚܕ ܡܢ ܫܬܐ ܒܗܝܢܐ ܡܢ ܥܕܢܐ
ܠܥܕܢܐ. * ܘܓܪܝܨܬܐ ܕܣܥܪܐ ܬܐܟܘܠ. ܘܒܓܠܠܐ ܕܒܪܢܫܐ ܬܐܦܝܗ̇ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܗܟܢܐ ܢܐܟܠܘܢ ܒܢܝ ܝܣܪܐܝܠ ܠܚܡܗܘܢ ܒܛܡܐܘܬܐ. ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܕܐܒܕܪ ܐܢܘܢ
ܬܡܢ. * ܘܐܡܪܬ. ܐܠܗܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܢܦܫܝ ܠܐ ܗܘܬ ܡܬܛܡܝܐ. ܘܢܒܝܠܬܐ ܘܬܒܝܪ
ܚܝܘܬܐ. ܠܐ ܐܟܠܬ ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ ܘܥܕܡܐ ܠܗܫܐ. ܘܠܐ ܥܠ ܒܦܘܡܝ ܒܣܪܐ ܛܡܐܐ
* ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܐ ܝܗܒܬ ܠܟ ܪܥܝܐ ܕܬܘܪܐ ܚܠܦ ܪܥܝܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܘܬܥܒܕ ܠܚܡܟ
ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܬܒܪ ܐܢܐ ܣܡܟܐ ܕܠܚܡܐ ܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܢܐܟܠܘܢ
ܠܚܡܐ ܒܡܬܩܠܐ. ܘܡܝܐ ܒܡܫܘܚܬܐ. ܒܫܘܠܡܐ ܢܫܬܘܢ. * ܘܢܚܣܪܘܢ ܠܚܡܐ
ܘܡܝܐ. ܘܢܬܩܒܠܘܢ ܐܢܫ ܥܡ ܐܚܘܗܝ. ܘܢܬܡܣܘܢ ܒܥܘܠܗܘܢ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܗ
* ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܣܒ ܠܟ ܣܦܣܪܐ ܚܪܝܦܐ ܐܝܟ ܡܣܦܪܐ ܕܓܪܥܐ. ܘܐܥܒܪܝܗ̇ ܥܠ ܪܫܟ
ܘܥܠ ܕܩܢܟ. ܘܣܒ ܠܟ ܡܣܐܬܐ ܕܡܬܩܠܐ. ܘܦܠܓ ܐܢܘܢ ܠܬܠܬ ܡܢܘܢ. * ܘܚܕܐ
ܡܢ ܬܠܬ ܡܢܘܢ. ܐܘܩܕ ܒܢܘܪܐ ܒܓܘ ܡܕܝܢܬܐ. ܡܐ ܕܡܫܬܠܡܝܢ ܝܘܡܬܐ ܕܐܣܝܪܘܬܟ.
ܘܣܒ ܡܢܬܐ ܐܚܪܬܐ. ܘܦܣܘܩ ܒܣܝܦܐ ܚܕܪܝܗ̇ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܘܡܢܬܐ ܬܠܝܬܝܬܐ
ܕܪܝ ܠܪܘܚܐ. ܘܣܝܦܐ ܢܪܕܘܦ ܒܬܪܗܘܢ. * ܘܣܒ ܡܢ ܬܡܢ ܩܠܝܠ ܒܡܢܝܢܐ
ܘܨܪ ܒܟܢܦܟ. * ܘܡܢܗܘܢ ܬܘܒ ܣܒ. ܘܐܪܡܐ ܐܢܘܢ ܒܓܘ ܢܘܪܐ. ܘܐܘܩܕ ܐܢܘܢ
ܒܢܘܪܐ. ܘܡܢܗܘܢ ܬܦܘܩ ܢܘܪܐ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܝܣܪܐܝܠ.

7 Ad obſidionem verò Jeroſolymæ comparabis faciem tuam, & brachium tuum confirmabis, & prophetabis contra illam. 8 Ecce catenas injiciam tibi, ne te vertas ab uno latere in alterum, donec abſolvantur dies ergaſtuli tui. 9 Sume tibi frumentum, & hordeum, fabas, lentes, milium, atque zeam, eaque in vas unum inde, & ex iis confice tibi panem pro numero dierum quibus incubiturus es lateri tuo: trecentis ac nonaginta diebus comedes illum. 10 Cibus autem tuus ſit viginti ſiclorum indies, de tempore in tempus: 11 Aquam etiam cum menſura bibas; unam è ſex partibus heminæ de tempore in tempus bibes. 12 Placentam hordei comedes aſſatam ſuper ſtercus humanum in præſentia eorum. 13 Dicit Dominus, Ita comedent Iſraelitæ panem ſuum in immunditia, inter gentes quo diſpellam eos. 14 Dicenti verò mihi, Deus dominorum Domine, anima mea non fuit unquam polluta, morbidum aut à bellua diſcerptum nunquam comedi à pueritia mea ad hodiernum uſque diem, neque ingreſſa eſt in os meum caro immunda: 15 Reſpondit, Ecce do tibi ſtercora bovina pro ſtercoribus humanis, ut conficias ſuper iis panem tuum. 16 Tum dixit mihi; Fili hominis, ecce fracturus ſum culmum frumenti in Jeruſalem, ita ut panem in pondere comedant, & aquam tempore ſitis in menſura bibant: 17 Patientur enim penuriam panis & aquæ, vir cum fratre ſuo deficient, & in iniquitate ſua tabeſcent.

CAP. V.

1 Tu autem fili hominis, accipe tibi gladiolum acutum ut novaculam tonſoriam, eumque traduc ſuper caput tuum & ſuper barbam tuam: deinde cape tibi trutinam libræ, eóſque *pilos* divide tres in partes. 2 Unam è tribus illis partibus igni combure intra urbem, cùm exacti fuerint dies ergaſtuli tui: alteram partem capiens, gladio concîdes circum urbem: tertiam denique partem diſperges in ventum: nam gladius nece perſequetur eos. 3 Inde tamen excipies paucos numero, quos in fimbria tua colligabis: 4 Et ex his rurſum capies *aliquot*, eóſque in ignem projicies, ignéque combures: atque ex his prodibit ignis contra omnes Iſraelitas.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*وتحبس ايروسليم تهيي وجهك * وتشدد ساعدك * وتتنبي عليها * وها انا اعطيت عليك رباطات
فلا تنقلب من جنبك الي جنبك * الي ان تكمل ايام حبسك * وانت خذ لنفسك قمحا وشعيرا
وفولا وعدسا ودخنا وسوفين * وتضعها في اناء واحد خزفي * وتضعها لذاتك قوتا كعدد الايام
التي انت تنامها علي جنبك * مايه وتسعين يوما تأكلها * وطعامك الذي تأكله بالميزان
عشرين مثقالا تأكله في اليوم * من وقت الي وقت تأكلها * والماء بالكيل تشربه * سدس
من وقت الي وقت تشربه * ورغيفا مليلا من شعير تأكله * تخبز برجيع زبل الناس لعيونهم
وتقول * هكذا يقول الرب اله اسرايل * هكذا تأكل بنو اسرايل النجاسات في الامم * فقلت
لي يا رب يا اله اسرايل * ان نفسي لم تتنجس بنجاسة ورمة * وفريسة الوحش لم آكلها منذ
نشاتي والي الان * ولم يدخل في فمي لحم نجس بالكلية * فقال لي الرب * ها اعطيتك رجيع البقر
عوضا من رجيع الناس * فتصنع خبزك عليه * وقال لي الرب * يا ابن الانسان ها انا اكسر
الخبز في ايروسليم * وياكلون الخبز بالوزن وبالقحط * ويشربون الماء بالكيل وبالفناء
* كيف يصيروا مقلين من الخبز والماء * ويهلك الانسان واخوه * ويذوبون بظلاماتهم

* الفصل الخامس *

* وانت يا ابن الانسان خذ لذاتك سيفا
حدا اكثر من موسي الحلاق * اقتنه لذاتك * وعبر به علي راسك ولحيتك * وتاخذ ميزان
الصنجات وتعيرهم * الربع تحرقه بالنار في وسط المدينة لكمال ايام حبسك * وتاخذ الربع
وتحرقه في وسطها * والربع تقطعه بالسيف حولها * والربع تذريه للريح * فاني اقرع سيفا خلفهم
* وتاخذ من هناك قليلا بالعدد * وتلفه في كساءك * وتاخذ ايضا منه وتطرحه في
النار وتحرقه بالنار * لان منها تخرج النار * وتقول لكل بيت اسرايل *

7 *Et ad obſidionem Jeroſolymæ parabis faciem tuam, brachium tuum confirmabis, et prophetabis adverſùs eam.* 8 *Ecce autem ego injiciam tibi vincula, ne te vertas ab* uno *latere ad* aliud *latus, quoad abſolvantur dies carceris tui.* 9 *Quapropter tu accipe tibi frumentum, hordeum, fabas, lentes, milium atque viciam; eaque repones in vaſe uno teſtaceo, ſervabiſq; tibi in alimentum juxta numerum dierum quibus cubaturus es ſuper latus tuum, centum nonaginta diebus comedes ea.* 10 *Cibum autem tuum quem comedes, ſtaterâ* ponderabis; *viginti ſiclorũ* pondere *comedes eum ſingulis diebus: de tempore in tempus comedes illa.* 11 *Aquã etiam menſurâ bibes, ſextam partem hin, quam à tempore ad tempus bibes.* 12 *Panem ſubcinericium hordeaceum comedes eum, in excremento ſtercoris humani coques illum ante oculos eorum, & dices;* 13 *Sic ait Dominus Deus Iſraelis; Ita comeſturi ſunt filii Iſraelis immunditias inter gentes.* 14 *Et dixi, Abſit à me O Domine, O Deus Iſraelis: nam anima mea nunquam contaminata eſt immunditie aut cadavere, & prædam feræ nunquam comedi ab adoleſcentia mea huc uſque, neque ingreſſa eſt in os meum caro immunda, omnino.* 15 *Dixit autem mihi Dominus, Ecce do tibi excrementa bovina pro excrementis humanis, ut ponas panem tuum ſuper ea.* 16 *Dixit quoque mihi Dominus; O fili hominis, ecce ego fracturus ſum ſubſidium panis in Jeruſalem; comedentque panem in pondere & penuriâ, bibentque aquam in menſura & interitu.* 17 *Quomodo fient egentes panis & aquæ, & peribit homo cum fratre ſuo, & colliqueſcent propter ſcelera ſua?*

C A P. V.

1 *Et tu O fili hominis, ſume tibi gladium acutiorem novaculâ tonſoris, poſſide eum tibi, & traduc eum ſuper caput tuum & barbam tuam: deinde ſumes bilances, & ponderabis eos* (pilos) 2 *Quartam partem igne combures in medio urbis poſt finem dierum carceris tui: & quartam partem capies, combureſque eam in medio ipſius: quartam partem gladio concîdes circa ipſam: & quartam partem diſperges in ventum: nam gladium nudaturus ſum poſt eos.* 3 *Et accipies inde paucos numero, quos involves in veſte tua.* 4 *Et ex his accipies adhuc, projicieſq; in medium ignis, igneq; combures: nã ex his egredietur ignis. Et dices toti domui Iſraelis,*

יחזקאל : ה

gentium medio in ,Jerusalaim Ista :Deus Dominus dixit Sic
5 כה אמר אדני יהוה זאת ירושלם בתוך הגוים
impietatē in mea judicia mutavit Et .terras ejº *circuitibus* & :eam posui
6 שמתיה וסביבותיה ארצות: ותמר את משפטי לרשעה
quia :ejº *circuitibus* quæ terris præ mea statuta & ,gentibus præ
מן הגוים ואת חקותי מן הארצות אשר סביבותיה כי
.*eis in* ambulaverunt non meis *statutis* & ,*reprobaverunt* mea judicia *in*
במשפטי מאסו וחקותי לא הלכו בהם:
quæ ,gentibus de *vos multiplicare Propter*:Deus Dominus dixit sic Idcirco
7 לכן כה אמר אדני יהוה יען המנכם מן הגוים אשר
non mea judicia & ,ambulâstis non meis *statutis in* ,*vestris circuitibus*
סביבותיכם בחקותי לא הלכתם ואת משפטי לא
.fecistis non *vestris circuitibus* quæ ,gentium judicia juxta & ;fecistis
עשיתם וכמשפטי הגוים אשר סביבותיכם לא עשיתם:
faciam & :ego etiam ,te ad ego Ecce :Deus Dominus dixit sic Ideo
8 לכן כה אמר אדני יהוה הנני עליך גם אני ועשיתי
quod te in faciam Et .gentium oculis in judicia tui medio in
9 בתוכך משפטים לעיני הגוים: ועשיתי בך את אשר
omnes propter,ultrà *illud sicut* sum facturus non quòd & ,feci non
לא עשיתי ואת אשר לא אעשה כמוהו עוד יען כל
filii & ,tui medio in filios comedent patres Ideo .tuas abominationes
10 תועבתיך: לכן אבות יאכלו בנים בתוכך ובנים
omne ventilabo & ,judicia te in faciam Et .suos patres comedent
יאכלו אבותם ועשיתי בך שפטים וזריתי את כל
,Deus Dominus dixit ,ego *vivens* Idcirco .*ventum omnem* in tuū residuū
11 שאריתך לכל רוח: לכן חי אני נאם אדני יהוה
,tuis cōtaminationibº omnibº *in polluisti* meū sanctuariū quòd eo pro nisi
אם לא יען את מקדשי טמאת בכל שקוציך
parcet non &,diminuam ego etiam &:tuis abominationibº cunctis *in* &
ובכל תועבתיך וגם אני אגרע ולא תחוס
peste in tui tertia Pars .miserebor non ego etiam & ,meus oculus
12 עיני וגם אני לא אחמול: שלשתיך בדבר
gladio in tertia pars & ,tui medio in *consummabuntur* fame in & ,*morientur*
ימותו וברעב יכלו בתוכך והשלשית בחרב
gladiū &,dispergam ventum omnē in partē tertiam & :*tuis circuitibus cadent*
יפלו סביבותיך והשלשית לכל רוח אזרה וחרב
faciā requiescere & ,meus furor *consummabitur* Et .eos post *evacuabo*
13 אריק אחריהם: וכלה אפי והנחתי
Dominus ego quòd scient & :ero consolatus & ,eis in meā *excandescentiam*
חמתי בם והנחמתי וידעו כי אני יהוה
.eis in meam indignationem *me consummando in* ,meo zelo in sum locutus
דברתי בקנאתי בכלותי חמתי בם:
:*tuis circuitibus* quæ ,gentibus in opprobrium in & ,desertum in te dabo Et
14 ואתנך לחרבה ולחרפה בגוים אשר סביבותיך
,*castigatio*,*convitium* & ,opprobrium erit Et .transeuntis omnis oculis in
15 לעיני כל עובר: והיתה חרפה וגדופה מוסר
judicia te in *me faciendo in* ,*tuis circuitibus* quæ ,gentibus stupor &
ומשמה לגוים אשר סביבותיך בעשותי בך שפטים
.sum locutus Dominus Ego .iræ increpationibº in & ,ira in &,furore in
באף ובחמה ובתכחות חמה אני יהוה דברתי:
,*corruptionē* in erunt quæ ,eis in malas famis sagittas *me mittendo* In
16 בשלחי את חצי הרעב הרעים בהם אשר היו למשחית
,vos super *colligam* famem & :vos *corrumpendum ad* ,*eas* mittam quas
אשר אשלח אותם לשחתכם ורעב אסף עליכם
,famem vos super mittam Et .panis baculum vobis conteram &
17 ושברתי לכם מטה לחם: ושלחתי עליכם רעב
:te per transibit sanguis &,pestilentia & ;te orbabunt & ,*malam feram* &
וחיה רעה ושכלך ודבר ודם יעבר בך
.sum locutus Dominus Ego .te super inducam gladium &
וחרב אביא עליך אני יהוה דברתי:

Versio VULG. LAT.

5 Hæc dicit Dominus Deus; Ista est Ierusalem, in medio Gentium posui eam, & in circuitu ejus 6 terras. Et cōtempsit judicia mea, ut plus esset impia quàm Gentes; & præcepta mea, ultrà quàm terræ quæ in circuitu ejus sunt: judicia enim mea projecerunt, & in præceptis meis non ambulaverunt. 7 Idcircò hæc dicit Dñs Deus; Quia superâstis Gentes, quæ in circuitu vestro sunt, & in præceptis meis non ambulâstis, & judicia mea non fecistis, & juxta judicia Gentiū, quæ in circuitu vestro sunt, non estis operati: 8 Ideò hæc dicit Dñs Deus; Ecce ego ad te, & ipse ego faciā in medio tuî judicia in oculis 9 Gentium. Et faciam in te quod non feci, & quibus similia ultrà non faciam, propter omnes abo10minationes tuas. Ideò patres comedent filios in medio tuî, & filii comedent patres suos, & faciam in te judicia, & ventilabo universas reliquias tuas in omnē 11 ventum. Idcircò, Vivo ego, dicit Dñs Deº: Nisi pro eo quòd Sanctum meum violâsti in omnibus offensionibº tuis, & in cunctis abominationibº tuis: ego quoq; confringam, & non parcet oculº 12 meus, & non miserebor: Tertia pars tuî peste morietur, & fame consumetur in medio tuî: & tertia pars tuî in gladio cadet in circuitu tuo: tertiam verò partem tuam in omnem ventum dispergam, & gladium evaginabo 13 post eos. Et complebo furorem meum, & requiescere faciam indignationem meam in eis, & consolabor: & scient quia ego Dominus locutus sum in zelo meo, cùm implevero indignatio14nem meam in eis. Et dabo te in desertū & in opprobrium Gentibus, quæ in circuitu tuo sunt, in conspectu omnis prætereuntis. 15 Et eris opprobrium, & blasphemia, exemplum & stupor in Gentibus quæ in circuitu tuo sunt, cùm fecero in te judicia in furore, & in indignatione, & 16 in increpationibus iræ. Ego Dominus locutus sum: Quando misero sagittas famis pessimas in eos; quæ erunt mortiferæ, & quas mittam ut disperdam vos: & famem congregabo super vos, & conteram in vobis baculum pa17nis. Et immittam in vos famem, & bestias pessimas usque ad internecionem: & pestilentia, & sanguis transibunt per te, & gladium inducam super te. Ego Dominus locutus sum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 Τάδε λέγει (γ) κύριος, Αὕτη ἡ Ἱερουσαλὴμ, ἐν μέσῳ τῶν ἐθνῶν τέθεικα αὐτὴν, 6 ϗ τὰς κύκλῳ αὐτῆς χώρας. Καὶ ἐρεῖς τὰ δικαιώματά μου τῇ ἀνόμῳ ἐκ τῶν ἐθνῶν, καὶ τὰ νόμιμά μου (˜) τῶν χωρῶν τῶν κύκλῳ αὐτῆς· διότι τὰ δικαιώματά μου ἀπώσαντο, ϗ ἐν τοῖς νομίμοις μου οὐκ ἐπορεύθησαν ἐν αὐτοῖς. 7 Διατοῦτο τάδε λέγει (δ) κύριος, Ἀνθ᾽ ὧν ἡ ἀφορμὴ ὑμῶν ἐκ τῶν ἐθνῶν τῶν κύκλῳ ὑμῶν, ϗ ἐν τοῖς νομίμοις μου οὐκ ἐπορεύθητε, καὶ τὰ δικαιώματά μου οὐκ ἐποιήσατε, ἀλλ᾽ οὐδὲ κατὰ τὰ δικαιώματα τῶν ἐθνῶν τῶν κύκλῳ ὑμῶν (ε) οὐ πεποιήκατε, 8 Διατοῦτο τάδε λέγει (ζ) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ, καὶ ποιήσω ἐν μέσῳ σου κρίμα ἐνώπιον τῶν 9 ἐθνῶν. Καὶ ποιήσω ἐν σοὶ ἃ (η) οὐ πεποίηκα, ϗ (θ) ἃ οὐ ποιήσω ὅμοια αὐτοῖς, ἔτι 10 κατὰ πάντα τὰ βδελύγματά σου. Διατοῦτο πατέρες φάγονται τέκνα ἐν μέσῳ σου, καὶ τέκνα φάγονται πατέρας· καὶ ποιήσω ἐν σοὶ κρίματα, ϗ διασκορπιῶ πάντας τοὺς καταλοίπους σου εἰς πάντα ἄνεμον. 11 Διατοῦτο, Ζῶ ἐγὼ, λέγει (ι) κύριος, ἦ μὴν ἀνθ᾽ ὧν τὰ ἅγιά μου ἐμίανας ἐν πᾶσι τοῖς (κ) βδελύγμασί σου, κἀγὼ ἀπώσομαί σε, (λ) οὐ φείσεταί μου ὁ ὀφθαλμὸς, 12 (μ) κἀγὼ οὐκ ἐλεήσω. Τὸ τέταρτόν σου ἐν θανάτῳ ἀναλωθήσεται, καὶ τὸ τέταρτόν σου ἐν λιμῷ συντελεσθήσεται ἐν μέσῳ σου, ϗ τὸ τέταρτόν σου εἰς πάντα ἄνεμον (ν) σκορπιῶ αὐτοὺς, ϗ τὸ τέταρτόν σου ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται κύκλῳ σου, ϗ 13 μάχαιραν ἐκκενώσω ὀπίσω αὐτῶν. Καὶ συντελεσθήσεται ὁ θυμός μου, ϗ ἡ ὀργή μου ἐπ᾽ αὐτοὺς, καὶ ἐπιγνώσῃ, διότι ἐγὼ κύριος λελάληκα ἐν (ξ) ζήλῳ μου, ἐν τῷ συν14τελέσαι με τὴν ὀργήν μου ἐπ᾽ αὐτούς. Καὶ θήσομαί σε εἰς ἔρημον, καὶ τὰς θυγατέρας σου κύκλῳ σου ἐνώπιον παντὸς διο15δεύοντος. Καὶ ἔσῃ στενακτὴ ϗ (ο) δηλαϊστὴ ἐν τοῖς ἔθνεσι τοῖς κύκλῳ σου, ἐν τῷ ποιῆσαί με ἐν σοὶ κρίματα (π) ἐν ἐκδι16κήσει θυμοῦ μου· Ἐγὼ κύριος λελάληκα. (ρ) καὶ ἐν τῷ ἀποστεῖλαί με βολίδας τοῦ λιμοῦ ἐπ᾽ αὐτοὺς, καὶ ἔσονται εἰς ἔκλειψιν, 17 ϗ συντρίψω στήριγμα ἄρτου σου. Καὶ ἐξαποστελῶ ἐπὶ σὲ λιμὸν καὶ θηρία πονηρὰ, ϗ τιμωρήσομαί σε, καὶ θάνατος ϗ αἷμα διελεύσονται ἐπὶ σὲ, καὶ ῥομφαίαν ἐπάξω ἐπὶ σὲ κυκλόθεν· ἐγὼ κύριος λελάληκα.

5 Hæc dicit Dominus; Ista est Hierusalem: in medio gentium posui eam, & quæ sunt in circuitu ejus, terras. 6 Et dices (c) justificationes meas ipsi iniquæ ex gentibus, & legitima mea de regionibus quæ sunt in circuitu ejus. Justificationes enim meas projecerunt, & in legitimis meis non ambulaverunt in eis. 7 Ideo hæc dicit Dominus; (d) Quia occasio vestra de gentibus, quæ in circuitu vestro sunt, & in legitimis meis non ambulastis, & justificationes meas non fecistis, (e) neque juxta justificationes gentium, quæ in circuitu vestro sunt, fecistis: 8 Ideo hæc dicit Dominus, Ecce ego super te, & faciam in medio tui judicium coram gentibus: 9 Et faciam in te, quæ non feci, & quæ non faciam similia eis ultrà secundum omnes abominationes tuas. 10 Idcircò patres comedent filios in medio tuî: & filii comedent patres. Et faciam in te judicia: & dispergam omnes residuos tuos in omnem ventum. 11 Idcircò, Vivo ego, dicit Dominus, profectò pro eo quod Sancta mea (f) polluisti in omnibus abominationibus tuis, & ego abjiciam te: non parcet oculus meus: & ego non miserebor. 12 Quarta pars tui in morte consumetur: & (g) quarta tui pars in fame consumetur in medio tui: & quartam tuî partem in omnem ventum dispergam eos: & (h) quarta pars tuî in gladio cadent in circuitu tuo: & gladium evacuabo post eos. 13 Et complebitur furor meus, & ira mea super (i) eos: & scies, quia ego Dominus loquutus sum in zelo meo, in consummando me iram meam super eos. 14 Et ponam te in (k) desertum, & filias tuas in circuitu tuo in conspectu omnis prætereuntis. 15 Et eris gemibilis, (l) & miserabilis in gentibus, quæ in circuitu tuo, in faciendo me judicia in te (m) in ultione furoris mei. Ego Dominus loquutus sum. 16 Et in emittendo me sagittas famis super eos, & erunt in (n) defectionem, & conteram firmamentum panis tui: 17 Et emittam super te famem, & bestias pessimas: & ulciscar te, & mors & sanguis transibunt super te: & gladium inducam super te in circuitu. Ego Dominus loquutus sum.

MS. A. (γ) ἀδωναὶ κύριος τῇ Ἱερουσαλὴμ, Ἐμμέσῳ (˜) ἐκ τῶν (δ) ἀδωναὶ κύριος, (ε) οὐκ ἐποιήσατε, (ζ) ἀδωναὶ κύριος, (η) οὐκ ἐποίησα, (θ) οὐ μὴ ποιήσω (ι) ἀδωναὶ κύριος, εἰ μὴ ἀνθ᾽ ὧν (κ) προσοχθίσμασί σου, ϗ ἐν πᾶσιν τοῖς βδελύγμασίν σου, ϗ ἐγὼ (λ) ϗ οὐ (μ) ϗ ἐγὼ οὐκ ἐλεήσω σε. (ν) διασπερῶ (ξ) τῷ ζήλῳ (ο) δηλαία (π) ἐν ὀργῇ ϗ ἐν ἐκδι ϗ ἐν (ρ) ἐν τῷ ἐξαποστεῖλαί με τὰς βολίδας μου τοῦ θυμοῦ ἐπ᾽

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 כדנן אמר יי אלהים דא ירושלם בגו עממיא שויתהא וסחור סחור לה מדינתא:
6 ואשניאת ית דיני למחבביהון מן עממיא וית קימי מן מדינתא די בסחרנהא ארי בדיני
7 קצו וקימי לא הליכו בהון: בכן כדנן אמר יי אלהים חלף דחבתון מן עממיא די
בסחרניכון בקימי לא הלכתון וית דיני לא עבדתון וכנימוסי עממיא די בסחרניכון
8 לא עבדתון: בכן כדנן אמר יי אלהים הא אנא שלח רוגזי עלך אף אנא ואעביד בגויך
9 פורענות דינין לעיני עממיא: ואעביד ביך ית דלא עבדית וית דלא אעביד דכותיה עוד
10 חלף כל תועבתיך: בכן אבהן יכלון בסר בניהון בגויך ובניא יכלון בסר אבהתהון
11 ואעביד ביך פורענות דינין ואבדר ית כל שאר עמיך לכל רוח: בכן קים אנא אמר יי
אלהים אם לא חלף דמקדשי סאברת בכל שקוציך ובכל תועבתיך ואף אנא אקטוף
12 תקוף דרעיך ולא יחוס מימרי ואף אנא לא ארחם: תלתיך במותא ימותון ובכפנא
ישתיצון בגויך ותלתא בחרבא יתקטלון סחרניך ותלתא לכל רוח אבדר ודקטלין
13 בחרבא אגרי בתריהון: ויחיל רוגזי ואניח חימתי בהון ואסיף וידעון ארי אנא יי גזרית
14 במימרי ואקים כד יחול רוגזי בהון: ואתננך לחרבא ולחסודין בין עממיא די בסחרנך
15 לעיני כל דעדי: ותהין לחסודין ולאתרברבא עלך צדו ואשתממו לעממיא דבסחרנך
16 כד אעביד ביך פורענות דינין ברגז ובחמה ובתקוף רגז אנא יי גזרית במימרי: בגריותי
ית מחת כפנא מכתשין בישין דמתקנין לחבלא דאשלח יתהון לחבלותכון וכפנא
17 אוסיף עליכון ואתבר לכון סעד מיכלא: ואשלח עליכון כפנא וחיתא בישתא
ויתכלונך ומותא וקטלא יעדון ביך ודקטלין בחרבא איתי עלך אנא יי גזרית במימרי:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Hæc dicit Dñs Deº: Ista est Hierusalē: in medio populorū posui eā, & in circuitu *ejus provincias*. Et mutavit judicia mea, ut peccaret in eis magis quàm populi, & pacta mea magis quàm provinciæ quæ in circuitu ejus sunt, quia judicia mea detestati sunt, & in pactis meis non ambulaverūt. Propterea hæc dicit Dñs Deº: Pro eo quòd peccastis magis quàm populi qui in circuitu vestro sunt, & in pactis meis non ambulastis, & judicia mea non fecistis, & juxta leges populorū qui sunt in circuitu vestro, non fecistis; Ideò hæc dicit Dñs Deus: Ecce ego immitto furorē meū contra te etiam ego, & faciā in medio tui ultionem judiciorum in oculis populorum. Et faciam in te id quod non feci, & cui simile non faciam ultra pro omnibus abominationibº tuis. Ideò patres comedent carnes filiorum suorum in medio tui, & filii comedent carnem patrum suorum: & faciā in te ultionē judiciorum, & dispergā omnes reliquias populi tui in omnem ventum. Propterea vivo ego, dicit Dñs Deus, nisi pro eo quòd sanctuarium meum polluisti in omnibus immunditiis tuis, & in omnibº abominationibº tuis, ego quoq; conteram ro*bur brachii tui*, & non parcet Verbum meum, & ego quoq; non miserebor. Tertia pars tui peste morietur, & fame consumetur in medio tui: & tertia pars tui gladio occidetur in circuitu tuo, & tertiā partem in omnem ventum dispergā, & occidentes gladio immittā post eos. Et manebit furor meus, & requiescere faciā indignationem meā in eis, & finiā: & scient quia ego Dñs decrevi in verbo meo, & exequar cùm resederit ira mea in eis. Et dabo te in solitudinem & in opprobria inter populos qui in circuitu tuo sunt in oculis omnis transeuntis. Et eris in opprobria & ut magnificentur super te, & in desolationem et stuporem populis qui in circuitu tuo sunt, cùm fecero in te ultionem judiciorum in furore et indignatione, et in ira furoris: ego Dñs decrevi in verbo meo. Cum misero percussionem famis, et plagas malas quæ parata sunt ad disperdendum, quas mittam ut disperdam vos: et famem adjiciam super vos, et conteram vobis sustentaculum panis. Et mittam in vos famem, et bestias pessimas, et absque liberis te facient: pestilentia et *cædes* transibunt per te: et occidentes gladio inducam super te. Ego Dominus decrevi in verbo meo.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܕܐ ܐܘܪܫܠܡ ܒܝܢܬ ܥܡܡܐ ܣܡܬܗ̇. ܘܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢܬܐ
ܣܚܪܢ ܠܗ̇. * ܘܫܚܠܦܬ ܕܝܢܝ ܒܚܛܝܬܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܘܦܘܩܕܢܝ. ܝܬܝܪ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܣܚܪܢ
ܠܗ̇. ܡܛܠ ܕܕܝܢܝ ܐܣܠܝܘ. ܘܒܦܘܩܕܢܝ ܠܐ ܗܠܟܘ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܚܠܦ ܕܐܣܬܟܠܬܘܢ ܡܢ ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܟܘܢ: ܘܒܦܘܩܕܢܝ ܠܐ ܗܠܟܬܘܢ:
ܘܕܝܢܝ ܠܐ ܥܒܕܬܘܢ: ܘܥܒܕܬܘܢ ܕܝܢܐ ܕܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܟܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܠܩܘܒܠܟܝ. ܘܐܥܒܕ ܒܓܘܟܝ ܕܝܢܐ. ܩܕܡ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ
* ܘܐܥܒܕ ܒܟܝ ܡܕܡ ܕܠܐ ܥܒܕܬ. ܘܡܕܡ ܕܠܐ ܐܥܒܕ ܬܘܒ ܐܟܘܬܗ. ܡܛܠ ܟܠܗܝܢ
ܛܢܦܘܬܟܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܒܗܐ ܢܐܟܠܘܢ ܒܢܝܗܘܢ ܒܓܘܟܝ. ܘܒܢܝܐ ܢܐܟܠܘܢ
ܠܐܒܗܝܗܘܢ. ܘܐܥܒܕ ܒܟܝ ܕܝܢܐ. ܘܐܒܕܪ ܠܫܪܟܢܐ ܕܐܫܬܚܪܘ ܒܓܘܟܝ. ܠܟܠ ܪܘܚ
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܚܠܦ ܕܛܢܦܬܝ ܡܩܕܫܝ. ܒܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܟܝ
ܘܒܟܠܗܝܢ ܫܝܩܘܨܝܟܝ. ܐܦ ܐܢܐ ܐܣܠܝܟܝ. ܘܠܐ ܬܚܘܣ ܥܝܢܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܠܐ ܐܪܚܡ. * ܬܠ
ܬܘܠܬܟܝ. ܒܡܘܬܐ ܢܡܘܬܘܢ. ܘܒܟܦܢܐ ܢܫܠܡܘܢ ܒܓܘܟܝ. ܘܬܘܠܬܐ. ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ
ܚܕܪܝܟܝ. ܘܬܘܠܬܐ. ܠܟܠ ܪܘܚ ܐܒܕܪ. ܘܚܪܒܐ ܐܫܠܘܦ ܒܬܪܗܘܢ. * ܘܐܫܠܡ ܪܘܓܙܝ
ܘܐܢܝܚ ܚܡܬܝ ܒܗܘܢ. ܘܐܬܒܝܐ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܡܠܠܬ ܒܛܢܢܝ. ܡܐ
ܕܫܡܠܝܬ ܒܗܘܢ ܚܡܬܝ. * ܘܐܬܠܟܝ ܠܚܪܒܐ ܘܠܚܣܕܐ ܒܥܡܡܐ. ܕܚܕܪܝܟܝ ܠܥ
ܡܢ ܟܠ ܕܥܒܪ. * ܘܬܗܘܝܢ ܠܚܣܕܐ ܘܠܓܘܕܦܐ. ܘܠܡܪܕܘܬܐ ܘܠܬܡܗܐ. ܠܥܡܡܐ
ܕܚܕܪܝܟܝ. ܡܐ ܕܥܒܕܬ ܒܟܝ ܕܝܢܐ. ܒܪܘܓܙܐ ܘܒܚܡܬܐ ܘܒܡܟܣܢܘܬܐ ܕܪܘܓܙܝ. ܐܢܐ
ܡܪܝܐ ܡܠܠܬ. * ܡܐ ܕܫܕܪܬ ܒܟܘܢ ܓܐܪܐ ܒܝܫܐ ܕܟܦܢܐ. ܕܗܘܘ ܠܚܒܠܐ. ܕܐܫܕܪ ܐܢܘܢ
ܠܡܚܒܠܘܬܟܘܢ. ܘܟܦܢܐ ܐܘܣܦ ܥܠܝܟܘܢ. ܘܐܬܒܪ ܣܡܟܐ ܕܠܚܡܟܘܢ. * ܘܐܫܕܪ ܥܠܝܟܘܢ
ܟܦܢܐ ܘܚܝܘܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܚܒܠܟܘܢ. ܘܡܘܬܢܐ ܘܕܡܐ ܢܥܒܪ ܒܟܘܢ. ܘܚܪܒܐ ܐܝܬܐ
ܥܠܝܟܘܢ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܠܠܬ.

Sic ait Dominus dominorum, Hanc Jeroſolymam inter gentes poſui, & omnes urbes circunjacent ei; 5 Sed judicia mea commutavit in peccatum pluſquam gentes, & præcepta mea pluſquam urbes ſibi circunjacentes: nam judicia mea ſpreverunt, & in præceptis meis non ambulaverunt. 6 Propterea ſic ait Dominus dominorum, Quandoquidem voſmetipſos cenſuiſtis de *numero* gentium quæ circa vos ſunt, in præceptis meis non ambulâſtis, & judicia mea non perfeciſtis, ſed perfeciſtis judicia gentium quæ vos circunſtant: 7 Ideò ſic ait Dominus dominorum; Ecce me contra te, & faciam intra te judicia coram cunctis gentibus: 8 Faciámque in te quod nondum feci, & cujuſmodi non ſum facturus inpoſterùm, propter omnem ſpurcitiam tuam. 9 Ideò patres comedent filios ſuos in te, & filii comedent patres ſuos: exercebo in te judicia, & eos qui reſidui ſunt in te, in omnem ventum diſpergam. 10 Ideò *ut* vivo, dicit Dominus dominorum; Quia polluiſti ſanctuarium meum tot ſpurcitiis tuis tantâque fœditate tuâ, ego viciſſim rejiciam te, neque clementiâ movebitur oculus meus erga te, neque miſerebor. 11 Una tui pars peſte morientur, & fame conficientur intra te: altera gladio occumbent circa te: tertiam verò in omnem ventum diſpergam: & gladius clade perſequetur eos. 12 Ita conſummabo iracundiam meam, & placabo furorem meum in iſtis, atque conſolabor: & experientur me eſſe Dominum qui locutus ſum in zelo meo, quum conſummavero in eis iracundiam meam, 13 Et expoſuero te gladio & opprobrio inter gentes quæ circa te ſunt, ob oculos omnis tranſeuntis: 14 Fueríſque contumeliæ atque blaſphemiæ, eruditioni atque ſtupori gentibus quæ te circunſtant: quum exercuero in te judicia in ira atque furore, et correptione excandeſcentiæ meæ: ego Dominus dixi) 15 Quum in vos immiſero ſagittas meas famis peſſimas quæ ſunt ad perniciem, quas mittam ad extinguendum vos: famem auxero ſuper vos, & fregero culmum frumenti veſtri: 16 Immiſero inquam, in vos famē beſtiáſq; peſſimas, & conſumpſero vos: peſtiſque & cædes pervaſerit vos, & gladium adduxero ſuper vos: ego Dominus dixi. 17

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يقول ادوناي الرب * لايروسليم في وسط الامم وضعها * وحولها بلادا * ويقول حقو
للاثمة من الامم * وشرايعي من البلدان التي حولها * من اجل انهم اقصوا حقوقي * ولم
يسيروا بنواميسي فيهم * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * من اجل ان علتك
من الامم الذين حولكم * وبنواميسي لم تسيروا * وحقوقي لم تصنعوا * لكن ولا
كحقوق الامم الذين حولكم لم تصنعوا * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * ها انا
عليك * واصنع في وسطك حكما امام الامم * واصنع فيك ما لم اصنعه * ولا اصنع شبهه ايضا
كجميع رذالاتك * لاجل هذا الاباء ياكلون الاولاد في وسطك * والاولاد ياكلون الاباء
واصنع فيك قضايا * وافرق جميع بقاياك لكل ريح * لاجل هذا حي انا يقول ادوناي
الرب * من اجل انك نجست اقداسي بجميع نجاساتك وبجميع رذالاتك * وانا اقصيك ولا
تشفق عيني * وانا فلا ارحمك * ربعك بالموت يهلك * وربعك بالجوع يفنى في وسطك
وربعك لكل ريح ابدده * وربعك بالسيف يسقط حولك * وافرغ سيفا خلفهم * ويستكمل
رجزي وغضبي عليهم * وتعلمين اني انا الرب تكلمت بغيرتي * عند ما اكمل رجزي عليهم
* واصيرك للقفر وبناتك حولك امام كل عابر * وتصيري متنهدة وشقية في الامم الذين حولك
عند ما اصنع فيك الاحكام برجز وبغضب وبانتقام غضبي * انا الرب تكلمت بهذا * عند
ما ارسل نصال غضبي عليهم * ويصيرون للفناء * واسحق رفد خبزك * وارسل عليك جوع
ووحوشا خبيثة * واعاقبك * والموت والدم يجوزان عليك * واجلب عليك سيفا من حولك
انا الرب تكلمت *

Sic ait Adonai Dominus, Jeroſolymam in medio gentium collocavi, & circa eam regiones. 5 *Et dices decreta mea iſti iniquæ pluſquam gentes, & leges meas ſceleratæ pluſquam regiones quæ circunſtant eam: quandoquidem repulerunt decreta mea, & non ambulaverunt in legibus meis.* 6 *Iccirco ſic ait Adonai Dominus; Quoniam occaſio veſtra à gentibus eſt quæ circa vos ſunt, & in legibus meis non ambulâſtis, & decreta mea minimè feciſtis, imò ne decreta quidem gentium quæ circa vos ſunt, feciſtis.* 7 *Propterea ſic ait Adonai Dominus, Ecce me contra te, ponamque in medio tui judicium coram gentibus:* 8 *Et faciam in te quod nondum feci, & cui ſimile non ſum poſthac facturus, juxta omnes abominationes tuas.* 9 *Propterea patres comedent filios in medio tui, & filii comedent patres: faciamque in te judicia, & diſpergam cunctas reliquias tuas in omnem ventum.* 10 *Idcirco, Ut vivus ego ſum, ait Adonai Dominus, Quia contamináſti ſancta mea cunctis impuritatibus tuis, cunctiſque abominationibus tuis; ego etiam repellam te, neque parcet oculus meus, & ego non miſerebor tui.* 11 *Quarta pars tui morte peribit: quarta pars tui fame conſumetur in medio tui: quartam tui partem in omnem ventum diſpergam: quarta denique tui pars gladio circum te occumbet: & gladium diſtringam poſt eos:* 12 *Et explebitur ira & excandeſcentia mea contra ipſos: & ſcies me Dominum locutum eſſe in zelo meo, quum explevero excandeſcentiam meam contra ipſos.* 13 *Et redigam te in deſertum, filiaſque tuas circa te, corā omni pertranſeunte:* 14 *Eriſque ſuſpirabunda & miſera inter gentes quæ circa te ſunt, quum fecero in te judicia in ira & excandeſcentiâ & ultione furoris mei: (Ego Dominus locutus ſum hæc)* 15 *Quum immiſero cuſpides furoris mei in ipſos, redacti fuerint in excidium, contrivero ſubſidium panis tui,* 16 *Miſero contra te famem & belluas pernicioſas, teque punivero, mors & ſanguis tranſierint ſuper te, & adduxero contra te gladium ex adjacentibus tibi locis. Ego Dominus locutus ſum.* 17

יחזקאל : ו

CAP. VI. ו

,hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר׃ בן־אדם
.eos ad propheta & ,Israel montes ad *tuas facies* pone
שים פניך אל־הרי ישראל והנבא אליהם׃
dixit Sic .Dei Domini verbum audite ,Israel Montes *: dices* Et
3 ואמרת הרי ישראל שמעו דבר־אדני יהוה כה־אמר
: vallibus & , torrentibus ,collibus & montibus Deus Dominus
אדני יהוה להרים ולגבעות לאפיקים ולגאיות
.vestra excelsa perdam & ,gladium vos super *adducens* ego ego Ecce
הנני אני מביא עליכם חרב ואבדתי במותיכם׃
: *vestra aprica* confringentur & , vestræ aræ desolabuntur Et
4 ונשמו מזבחותיכם ונשברו חמניכם
dabo Et .*vestrorum idolorum facies ad* vestros *vulneratos* faciam cadere &
והפלתי חלליכם לפני גלוליכם׃ 5 ונתתי
dispergam & : eorum *idolorum facies ad* Israel filiorum cadavera
את־פגרי בני ישראל לפני גלוליהם וזריתי
omnibus In .*vestrorum altarium circuitibus* vestra ossa
6 את־עצמותיכם סביבות מזבחותיכם׃ בכל
:*devastabuntur* excelsa & ,erunt desertæ civitates vestris habitationibus
מושבותיכם הערים תחרבנה והבמות תישמנה
cessabunt & ,cōfringētur & : vestræ aræ *devastentur* &,desolentur ut
למען יחרבו ויאשמו מזבחותיכם ונשברו ונשבתו
.vestra opera delebuntur & ,*vestra aprica* succidentur & ,vestra idola
גלוליכם ונגדעו חמניכם ונמחו מעשיכם׃
.Dominus *ego* quod scietis & : vestri medio in *saucius* cadet Et
7 ונפל חלל בתוככם וידעתם כי־אני יהוה׃
; gentibus in *gladii* evasores vobis *existendo in* , faciam remanere Et
8 והותרתי בהיות לכם פליטי חרב בגוים
mei vestri evasores recordabuntur Et .terras in vos *dispergi in*
9 בהזרותיכם בארצות׃ וזכרו פליטיכם אותי
eorū *corde cum* fuerim fractus quia , *ibi* erunt captivi *cum* gentes inter
בגוים אשר נשבו־שם אשר נשברתי את־לבם
fornicantibus eorum *oculis cum* & ,me *desuper* declinavit quod *fornicante*
הזונה אשר־סר מעלי ואת עיניהם הזנות
quæ mala *ad suis faciebus in ingemiscent* Et .sua idola post
אחרי גלוליהם ונקטו בפניהם אל־הרעות אשר
.Dominus *ego* quòd scient Et .suis abominationib⁹ omnib⁹ in fecerunt
10 עשו לכל תועבתיהם׃ וידעו כי־אני יהוה
.hoc malum eis *faciendum ad* ,sum locutus *gratis ad* Non
לא אל־חנם דברתי לעשות להם הרעה הזאת׃
,tuo pede in extende &,tua *vola in* Percute : Deus Dominus dixit Sic
11 כה־אמר אדני יהוה הכה בכפך ורקע ברגלך
quia : Israel domus malorum abominationes omnes *ad* Heu dic &
ואמר־אח אל כל־תועבות רעות בית ישראל אשר
;morietur peste *in* ,*Longinquus* .sunt ruituri peste in & fame in ,gladio in
12 בחרב ברעב ובדבר יפלו׃ הרחוק בדבר ימות
:morietur fame in .*servatus* & ,relictus & ; corruet gladio in ,*propinquus* &
והקרוב בחרב יפול והנשאר והנצור ברעב ימות
ego quòd scietis Et .eis in meam indignationem complebo &
13 וכליתי חמתי בם׃ וידעתם כי־אני
circuitibus ,eorum idolorum medio in *eorum vulneratos existendo in*,Dominus
יהוה בהיות חלליהם בתוך גלוליהם סביבות
capitibus cunctis in , excelso colle omni in ,eorum ararum
מזבחותיהם אל כל־גבעה רמה בכל ראשי
quercum omnem subtus & , viride lignum omne subtus & ,montium
ההרים ותחת כל־עץ רענן ותחת כל־אלה
universis *quietis* odorem *ibi* dederunt quo locum , *implicatam*
עבתה מקום אשר נתנו־שם ריח ניחח לכל
.suis idolis
גלוליהם׃

Versio VULG. LAT.

CAP. VI.

1 ET factus est sermo Domini,
2 ad me, dicens; Fili hominis, pone faciem tuam ad montes Israel,
3 & prophetabis ad eos, Et dices; Montes Israel, audite verbum Domini Dei: Hæc dicit Dominus Deus montibus, & collibus, rupibus, & vallibus; Ecce ego inducam super vos gladium, & dis-
4 perdam excelsa vestra. Et demoliar aras vestras, et confringentur simulacra vestra: & dejiciam interfectos vestros ante idola ve-
5 stra. Et dabo cadavera filiorum Israel ante faciem simulacrorū vestrorum: & dispergam ossa
6 vestra circum aras vestras, In omnibus habitationib⁹ vestris. Urbes desertæ erunt, & excelsa demolientur, & dissipabuntur: & interibunt aræ vestræ, & confringentur: & cessabunt idola vestra, & conterentur delubra vestra, & delebuntur opera ve-
7 stra. Et cadet interfectus in medio vestrî: & scietis quia ego
8 sum Dominus. Et relinquam in vobis eos, qui fugerint gladium in Gentibus, cùm dispersero vos
9 in terris. Et recordabuntur meî liberati vestri in Gentibus, ad quas captivi ducti sunt: quia contrivi cor eorum fornicans, & recedens à me: & oculos eorum fornicantes post idola sua: & displicebunt sibimet super malis quæ fecerunt in universis abomi-
10 nationibus suis. Et scient, quia ego Dominus non frustrà locutus sum, ut facerem eis malum hoc.
11 Hæc dicit Dominus Deus; Percute manum tuam, & allide pedem tuum, & dic; Heu, ad omnes abominationes malorum domûs Israel: quia gladio, fame, & peste
12 ruituri sunt. Qui longè est, peste morietur: qui autem propè, gladio corruet: & qui relictus fuerit, & obsessus, fame morietur: et complebo indignationem meā
13 in eis. Et scietis quia ego Dominus, cùm fuerint interfecti vestri in medio idolorum vestrorū, in circuitu ararum vestrarum, in omni colle excelso, & in cunctis summitatibus montium, & subtus omne lignum nemorosum, & subtus universam quercum frondosam, locum ubi accenderunt thura redolentia universis idolis suis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-
2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ τὰ ὄρη Ἰσραὴλ, ϗ προφήτευσον
3 ἐπ' αὐτὰ, Καὶ ἐρεῖς, Τὰ ὄρη Ἰσραὴλ ἀκούσατε (α) λόγον κυρίου· τάδε λέγει (β) κύριος τοῖς ὄρεσι ϗ τοῖς βουνοῖς (γ) ϗ ταῖς φάραγξι ϗ ταῖς νάπαις, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐφ' ὑμᾶς ῥομφαίαν, ϗ (δ) ἐξολοθρευθήσε-
4 ται τὰ ὑψηλὰ ὑμῶν. Καὶ συντριβήσονται τὰ θυσιαστήρια ὑμῶν, ϗ τὰ τεμένη ὑμῶν, ϗ καταβαλῶ τραυματίας ὑμῶν ἐνώπιον
5 τῶν εἰδώλων ὑμῶν, (ε) Καὶ διασκορπιῶ τὰ ὀστᾶ ὑμῶν κύκλῳ τῶν θυσιαστηρίων ὑμῶν, (ζ)
6 Καὶ ἐν πάσῃ τῇ κατοικίᾳ ὑμῶν. αἱ πόλεις ἐξερημωθήσονται, ϗ τὰ ὑψηλὰ ἀφανισθήσεται, ὅπως ἐξολοθρευθῇ τὰ θυσιαστήρια ὑμῶν, ϗ συντριβήσονται τὰ εἴδωλα ὑμῶν, ϗ (η) ἐξαρθῇ τὰ τεμένη (θ) ὑμῶν·
7 Καὶ πεσοῦνται τραυματίαι ἐν μέσῳ ὑμῶν,
8 ϗ ἐπιγνώσεσθε, ὅτι ἐγὼ κύριος. (ι) Ἐν τῷ γενέσθαι ἐξ ὑμῶν ἀνασῳζομένους ἐκ ῥομφαίας ἐν τοῖς ἔθνεσι, ϗ ἐν τῷ διασκορπι-
9 σμῷ ὑμῶν ἐν ταῖς χώραις, Καὶ μνησθήσονταί μου οἱ ἀνασῳζόμενοι ἐξ ὑμῶν ἐν τοῖς ἔθνεσιν, οὗ ᾐχμαλωτεύθησαν ἐκεῖ· ὀμώμοκα τῇ καρδίᾳ αὐτῶν τῇ ἐκπορνευούσῃ (κ) ἀπ' ἐμοῦ, ϗ τοῖς ὀφθαλμοῖς αὐτῶν τοῖς ἐκπορνεύουσιν ὀπίσω τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν· ϗ κόψονται (λ) πρόσωπα αὐτῶν ἐν πᾶσι τοῖς
10 βδελύγμασιν αὐτῶν (μ). Καὶ ἐπιγνώσον-
11 ται (ν) διότι ἐγὼ κύριος λελάληκα. Τάδε λέγει κύριος, Κρότησον τῇ χειρὶ καὶ ψόφησον τῷ ποδὶ, ϗ εἰπὸν, Εὖγε εὖγε ἐπὶ πᾶσι τοῖς βδελύγμασι οἴκου Ἰσραήλ· ἐν ῥομφαίᾳ καὶ ἐν θανάτῳ καὶ ἐν λι-
12 μῷ πεσοῦνται. Ὁ ἐγγὺς ἐν ῥομφαίᾳ (ξ) πεσεῖται, ὁ δὲ μακρὰν ἐν θανάτῳ τελευτήσει· (ο) καὶ ὁ περιεχόμενος ἐν λιμῷ συντελεσθήσεται· καὶ συντελέσω τὴν ὀργήν μου
13 ἐπ' αὐτούς. Καὶ γνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος, ἐν τῷ εἶναι τοὺς τραυματίας ὑμῶν ἐν μέσῳ τῶν εἰδώλων ὑμῶν κύκλῳ τῶν θυσιαστηρίων ὑμῶν, ἐπὶ πάντα βουνὸν ὑψηλὸν, (π) καὶ ὑποκάτω δένδρου συσκίου, (ρ) οὗ ἔδωκαν ἐκεῖ ὀσμὴν εὐωδίας πᾶσι τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν.

CAP. VI.

ET factus est sermo Domini ad me, dicens; Fili hominis, firma faciem tuam ad montes Israel, & propheta ad eos, Et dices; Montes Israel, audite verbum Dñi: Hæc dicit Dominus montibus, & collibus, & vallibus, & rupibus; Ecce ego induco super vos gladium: & disperdentur excelsa vestra, Et conterentur altaria vestra, & (a) delubra vestra: & dejiciam interfectos vestros ante idola (b) vestra. Et dispergam ossa vestra in circuitu altarium vestrorum, Et in omni habitatione vestra. Urbes desertæ erunt, & excelsa delebuntur ut exterminentur altaria vestra, & (c) conterentur idola vestra, & auferentur delubra (d) vestra: Et cadent interfecti in medio vestrî: & scietis, quia ego Dominus. (e) Dum fuerint ex vobis evadentes à gladio in gentibus, & in dispersione vestra in regionibus; Et recordabuntur mei, qui evaserint ex vobis in gentibus, quò captivi ducti fuerint illuc. Juravi cordi eorum fornicanti à me, & oculis eorum fornicantibus post adinventiones suas. (f) Et percutient faces suas in omnibus abominationibus suis: Et scient, (g) quia ego Dominus loquutus sum. Hæc dicit Dominus; Plaude manu, & obstrepe pede. (h) Et dic; Euge, Euge, super omnibus abominationibus domûs Israel. In gladio, & in morte, & in fame cadent: Qui propè, in gladio cadet: qui verò longè, in morte peribit: (i) & qui circundatus fuerit, in fame consumetur: & implebo iram meam super eos. Et scietis, quia ego Dominus; cùm fuerint interfecti vestri in medio idolorum vestrorum in circuitu altarium vestrorum super omnem collem (k) excelsum, & (l) subter arborem umbrosam; ubi dederunt illic odorem suavitatis universis idolis suis.

MS. A. (α) λόγον ἀδωναὶ κυρίου· (β) ἀδωναὶ κύριος (γ) καὶ ταῖς νάπαις καὶ ταῖς φάραγξι, (δ) ἐξολεθρευθήσεται (ε) καὶ δώσω τὰ πτώματα τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ κατὰ πρόσωπον τῶν εἰδώλων αὐτῶν· καὶ διασκορπιῶ (ζ) Ἐν πάσῃ ( ) ἐξολεθρευθῇ (η) ἐξαρθῶσι (θ) ὑμῶν, ϗ ἐξαλειφθῶσιν τὰ ἔργα ὑμῶν, Καὶ πεσοῦνται (ι) Καὶ ὑπολείψομαι ἐν τῷ (κ) ἀπ' ἐμοῦ, τῇ ἀποστάσῃ ἀπ' ἐμοῦ, καὶ τοῖς (λ) τὰ πρόσωπα αὐτῶν περὶ τῶν κακιῶν ὧν ἐποίησαν ἐν πᾶσιν (μ) καὶ ἐν πᾶσιν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν. Καὶ ἐπιγνώσονται (ν) ὅτι ἐγὼ κύριος οὐκ εἰς δωρεὰν λελάληκα τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς ἅπαντα τὰ κακὰ ταῦτα. Τάδε λέγει ἀδωναὶ κύριος, Κρότησον (ξ) τελευτήσει, (ο) καὶ ὁ ὑπολειφθεὶς, ϗ ὁ (π) ϗ ἐν πάσαις κορυφαῖς τῶν ὀρέων, ϗ ὑποκάτω (ρ) ϗ ὑποκάτω πάσης δρυὸς δασείας, οὗ ἔδωκαν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ו

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ בר אדם קבל נבואה על טורי ישראל
3 ואתנבי עליהון׃ ותימר טורי ישראל קבילו פתגמא דיי אלהים כדנן אמר יי אלהים
לטוריא ולרמתא ולפצידיא ולחיליא הא אנא מיתי עליכון דקטלין בחרבא ואוביד
4 במתיכון׃ ויצדון אגוריכון ויתברון חניסנסיכון וארמי קטיליכון קדם פגור טעותכון׃
5 ואתן ית פגרי בני ישראל קדם פגור טעותהון ואבדר ית גרמיכון סחרנות אגוריכון׃
6 בכל מותבניכון קרויא יחרבן ובמתא יצדין בדיל דיחרבון ויצדון אגוריכון ויתברן
7 ויבטלן טעותכון ויתקטפון חנסנסיכון ויתמחון עובדיכון׃ ויתרמון קטילין ביניכון
8 ותדעון ארי אנא יי׃ ואשאר במהוי לכון משזבי חרבא ביני עממיא באתבדרותיכון
9 במדינתא׃ וידכרון משיזביכון דחלתי ביני עממיא דאשתביאו לתמן דתברית ית
לבהון טפשא דסטא מבתר פולחני וית חיזו עיניהון דטעא בתר טעותהון וידנקון
10 ויהון חזן על בישתא דעבדו לכל תועבתהון׃ וידעון ארי אנא יי לא למגן גזרית
11 במימרי למעבד להון בישתא הדא׃ כדנן אמר יי אלהים טפח בידך ורפוס ברגלך
ואמר וי על כל תועבתא בישתא בית ישראל די בחרבא בכפנא ובמותא יתרמון׃
12 דרחיק במותא ימות ודקריב בחרבא יתקטיל ודישתאר ודיעול לכרכי צירא בכפנא
13 ימות ויחול רוגזי בהון׃ ותדעון ארי אנא יי במהוי קטיליהון בגו פגור טעותהון
סחרנות אגוריהון על כל רמא מנטלא בכל רישי טוריא תחות כל אילן עבוף ותחות
כל בוטמא מעפיא אתר דיהבו תמן קורבנין לפולחן לכל טעותהון׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. VI.

ET factum est verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: Fili hominis suscipe prophetiam in montes Israel, & vaticinare in eos. Et dices: Montes Israel suscipite verbum Dñi Dei: Hæc dicit Dñs Deus montibus & collibus, rivis & vallibus: Ecce ego inducam super vos occidentes gladio, & disperdam excelsa vestra: Et desolabuntur aræ vestræ, & conterentur delubra vestra, & projiciam interfectos vestros ante cadavera idolorum vestrorum. Et dabo cadavera filiorum Israel ante cadavera idolorum suorum: & dispergam ossa vestra in circuitu ararum vestrarum. In omnibus habitationibus vestris civitates desertæ erunt: & excelsa desolabuntur, ut destruantur & vastentur aræ vestræ, & conterantur & cessent idola vestra, & succidantur delubra vestra, & deleantur opera vestra. Et projicientur interfecti inter vos: & scietis quia ego Dñs. Et reliquum faciam ut vobis sint superstites à gladio inter populos, cùm dispersi fueritis in provinciis. Et recordabuntur, qui superstites fuerint in vobis, timoris mei inter populos ad quos captivi ducti sunt: quia confregi cor eorum insipiens, quod declinavit à cultu meo, & aspectum oculorum suorum qui erraverunt post idola eorum, & gement ipsi spectantes ob mala quæ fecerunt in omnibus abominationibus suis. Et scient quia ego Dominus non frustrà decrevi in verbo meo, ut facerem eis malum hoc. Hæc dicit Dominus Deus: Complode manu tua, & allide pede tuo: & dic Væ super omnes abominationes malas domus Israel; quia in gladio, in fame, & peste ruent. Qui longè fuerit, peste morietur; & qui propè fuerit, gladio occidetur: & qui relictus fuerit & ingressus fuerit arces obsidionis, fame morietur: & manebit furor meus in eis. Et scietis quia ego Dominus, cùm fuerint interfecti eorum in medio *cadaverum* idolorum eorum, in circuitu ararum eorum super omnem collem excelsum, & in cunctis summitatibus montium, & sub omni arbore virente, & sub universa quercu ramosa, loco ubi posuerunt oblationes cultui omnium idolorum suorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܠܘܬ ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ
ܘܐܬܢܒܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܐܡܪ. * ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܠܛܘܪܐ ܘܠܪܡܬܐ ܘܠܢܚܠܐ ܘܠܡܥܝܢܐ. ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ
ܚܪܒܐ. ܘܐܘܒܕ ܦܬܟܪܝܟܘܢ. * ܘܢܚܪܒܘܢ ܡܕܒܚܝܟܘܢ. ܘܢܬܬܒܪܘܢ ܦܬܟܪܝܟܘܢ. ܘܐܪܡܐ
ܩܛܝܠܝܟܘܢ ܩܕܡ ܕܚܠܬܟܘܢ. * ܘܐܬܠ ܫܠܕܐ ܕܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܩܕܡ ܦܬܟܪܝܗܘܢ. ܘܐܕܪܐ
ܓܪܡܝܟܘܢ ܚܕܪ ܡܕܒܚܝܟܘܢ. * ܘܡܕܝܢܬܐ ܕܟܠܗ ܡܘܬܒܟܘܢ ܢܚܪܒܢ. ܘܦܬܟܪܐ ܢܨܕܘܢ
ܡܛܠ ܕܢܚܪܒܘܢ ܘܢܨܕܘܢ ܡܕܒܚܝܟܘܢ. ܘܢܬܬܒܪܘܢ ܘܢܬܒܛܠܘܢ ܦܬܟܪܝܟܘܢ. ܘܢܬܦܣܩܘܢ
ܨܠܡܝܟܘܢ. ܘܢܬܥܛܘܢ ܥܒܕܝܟܘܢ. * ܘܢܦܠܘܢ ܩܛܝܠܐ ܒܝܢܬܟܘܢ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐ
ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܘܐܘܬܪ ܡܢܟܘܢ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܐܦܠܛܘ ܡܢܟܘܢ. ܡܢ ܚܪܒܐ ܘܐܬܒܕܪܘ
ܒܡܕܝܢܬܐ. * ܘܢܬܕܟܪܘܢܢܝ ܐܝܠܝܢ ܕܐܦܠܛܘ ܡܢܟܘܢ. ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܕܐܫܬܒܝܘ
ܠܬܡܢ. ܟܕ ܐܬܒܪ ܠܠܒܗܘܢ ܙܢܝܐ ܕܣܛܐ ܡܢܝ. ܘܠܥܝܢܝܗܘܢ ܕܛܥܝ ܒܬܪ ܦܬܟܪܝܗܘܢ
ܘܢܬܟܡܪܘܢ ܐܦܝܗܘܢ ܒܒܝܫܬܐ ܕܥܒܕܘ. ܘܒܟܠܗ ܛܢܦܘܬܗܘܢ. * ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ
ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܗܘܝܬ ܣܪܝܩܐܝܬ ܐܡܪܬ ܕܐܥܒܕ ܠܗܘܢ ܒܝܫܬܐ ܗܕܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘ
ܡܚܝ ܒܟܦܟ. ܘܪܦܘܣ ܒܪܓܠܟ. ܘܐܡܪ. ܐܘܚ ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܐ ܘܒܝܫܬܐ ܕܒܝܬ
ܐܝܣܪܝܠ. ܕܒܚܪܒܐ ܘܒܟܦܢܐ ܘܒܡܘܬܢܐ ܢܦܠܘܢ. * ܘܕܩܪܝܒ ܒܚܪܒܐ ܢܦܠ
ܘܕܡܫܬܚܪ ܘܕܡܫܬܒܩ ܒܟܦܢܐ ܢܡܘܬ. ܘܐܫܡܠܐ ܚܡܬܝ ܒܗܘܢ. * ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ
ܡܪܝܐ. ܡܐ ܕܗܘܘ ܩܛܝܠܝܗܘܢ ܒܝܬ ܦܬܟܪܝܗܘܢ ܚܕܪ ܡܕܒܚܝܗܘܢ. ܥܠ ܟܠ ܪܡܐ
ܪܡܬܐ. ܘܬܚܝܬ ܟܠ ܪܝܫ ܛܘܪܐ. ܘܬܚܝܬ ܟܠ ܐܝܠܢ ܕܡܛܠܠ. ܘܬܚܝܬ ܟܠ ܒܛܡܐ
ܥܒܝܬܐ. ܐܬܪܐ ܕܣܡܘ ܬܡܢ ܒܣܡܐ ܠܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪܝܗܘܢ.

CAP. VI.

Rurſum fuit ad me ſermo Domini, dicen- 1
do; Fili hominis, porrige faciem tuam ver- 2
ſùs montes Iſraelis, & propheta de eis, ac di-
cito; Montes Iſraelis, audite ſermonem 3
Domini dominorum. Ita dicit Dominus do-
minorum ad montes & colles, torrentes fon-
téſque: Ecce adducturus ſum contra vos gla-
dium, & fana veſtra perditurus: Altaria 4
veſtra deſolabuntur, & idola veſtra confrin-
gentur: proſternam confoſſos veſtros coram
numinibus veſtris, Et projiciam cadavera 5
Iſraelitarum ante idola ſua, & diſpergam oſſa
veſtra circum altaria veſtra: Urbes totius 6
ſedis veſtræ deſtruentur, & fana deſolabun-
tur. Nam deſtruentur & vaſtabuntur altaria
veſtra, confringentur & abolebuntur ſimula-
cra veſtra, ſuccidentur ſculptilia veſtra, &
opera veſtra delebuntur: Et confoſſi inter 7
vos cadent, & experiemini me eſſe Domi-
num. Sed reliquos faciam ex vobis inter 8
gentes, eos qui è vobis gladium evaſerint, &
in urbes diſperſi fuerint. Et qui ex vobis eva- 9
ſerint, recordabuntur mei inter gentes quò
captivi ſunt abducti; quum fregero meretriciũ
cor eorum qui deflexerunt à me, & oculos
qui aberrârunt poſt idola ipſorum; & cor-
rugati fuerint vultus eorum ſcelere quod per-
petrârunt, omníque ſpurcitiâ ſuâ. Et expe- 10
rientur me eſſe Dominum, nec fruſtrà dixiſſe;
me affecturum eos hujuſmodi calamitate. Sic 11
ait Dominus dominorum, Volâ tuâ plaude,
& pede tuo *tellurem* quate, & dic; Serva
nos, *(i. euge)* ob tantam turpitudinem &
flagitium Iſraelitarum; quia gladio, fame, &
peſte caſuri ſunt. Qui prope adeſt, gladio 12
corruet; & qui ſuperſtes fuerit & evaſerit,
fame peribit: denique conſummabo irã meã
in eis. Et experientur me eſſe Dominũ, quum 13
fuerint confoſſi eorum inter idola ipſorũ cir-
cum altaria ipſorum, ſuper omnem collem ſu-
blimem, ſubter omnia montiũ cacumina, ſub-
ter omnem arborem umbriferam, & ſubter o-
mnem terebinthum denſam, ubicunque thura
adoleverunt omnibus idolis ſuis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح الثالث * * الفصل السادس *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان ثبت وجهك علي جبال اسرائيل * وتنبا عليها وقول
* يا جبال اسرائيل اسمعوا قول ادوناي الرب * هكذا يقول ادوناي الرب للجبال والاكام والتلال
والاودية * ها انا اجلب عليكم سيفا * فتستاصل عواليكم * وتتكسر مذابحكم وهياكلكم
والقي جرحاكم امام اوثانكم * واعطي جثث بني اسرائيل لوجه اصنامهم * وافرق عظامكم
حول مذابحكم في كل مساكنكم * المدن تخربون * والعوالي يفقدون * كي تستاصل مذابحكم
في كل مسكنكم * وتتكسر اصنامكم * وتنزع هياكلكم * وتمتحي اعمالكم * وتسقط الجرحى
في وسطكم * وتعلمون اني انا الرب * وابقي بقية * عند ما يصير منكم المخلصون من السيف
في الامم * وبتفريقكم في الكور * ويذكروني المخلصون منكم في الامم حيث سبيوا هناك
المحاربون بقلبهم الفاسق المتباعد عني * وبعيونهم الفاسقة خلف اعمالهم * ويقطعون وجوههم
من اجل قبائحهم التي صنعوها بجميع رذالاتهم وبجميع اعمالهم * ويعلمون اني انا الرب
اتكلم مجانا * لاصنع بهم هذه الشرور كلها * هكذا يقول ادوناي الرب * صفق باليد
واخفق بالرجل * وقل نعما نعما علي جميع رذالات بيت اسرائيل * بالسيف والموت والجوع يسقطون
* القريب بالسيف يقضي اجله * والبعيد بالموت يقضي اجله * والمتبقي والقريب بالجوع
يستكمل حياته * واكمل رجزي عليهم * وتعلمون اني انا الرب عند ما تكون جرحاكم
في وسط اوثانكم حول مذابحكم * وعلي كل اكمة عالية * وفي جميع رؤوس الجبال
وتحت كل شجرة ظليلة * وتحت كل بلوطة حسنة * حيث اعطوا هناك رائحة طيبة
لجميع اصنامهم *

CAP. VI.

Textus tertius.

Fuit etiam ſermo Domini ad me, di- 1
cens; O fili hominis, confirma faciem tuam 2
contra montes Iſraelis, vaticinare contra
eos, & dicas; O montes Iſraelis, audite 3
ſermonem Adonai Domini. Sic dicit Ado-
nai Dominus montibus, collibus, clivis, &
vallibus; Ecce ego inducam ſuper vos
gladium, & evellentur excelſa veſtra.
Confringentur altaria templáque veſtra, 4
dejiciã vulneratos veſtros ante ſimulacra
veſtra, Exponã cadavera filiorũ Iſraelis 5
ante faciem idolorũ ſuorũ, diſpergã oſſa
veſtra circa aras veſtras in omnibus ha-
bitationibus veſtris, urbes deſtruentur, et 6
excelſa peribũt: ut extirpentur altaria ve-
ſtra in cunctis habitationibus veſtris, fran-
gantur idola veſtra, tollantur templa ve-
ſtra, deleantur facinora veſtra, Corruant 7
vulnerati in medio veſtrî, & ſciatis me
eſſe Dominum. Reſervabo tamen reliquias, 8
quum fuerint ex vobis qui gladium eva-
ſerint, inter gentes; quumq; diſperſi fue-
ritis in regiones. Et qui evaſerint ex vobis, 9
recordabuntur mei inter gentes ibi quò
captivi ducti fuerint: qui repugnant cor-
de ſuo fornicario à me remoto, oculiſq;
ſuis fornicantibus poſt opera ipſorum: &
incident facies ſuas ob turpitudines ſuas 10
quas fecerunt in omnibus abominati-
onibus ſuis, cunctiſq; facinoribus ſuis: Et
agnoſcent me Dominum haudquaquam
gratìs dixiſſe me affecturum eos tot hiſce
malis. Sic ait Adonai Dominus; Plaude 11
manu, & tunde ſolum *pede, & dic;*
Euge, euge propter omnes abominationes
domûs Iſraelis. Gladio, peſte, & fame
cadent: Propinqui finis gladio termi- 12
nabitur, & remoti finis peſte conclu-
detur, & ſuperſtes atque propinquus
fame finiet vitam ſuam: ita explebo
excandeſcentiam meam contra ipſos.
Et ſcietis me eſſe Dominum, quum 13
fuerint vulnerati veſtri in medio ido-
lorum veſtrorum circa aras veſtras,
& ſuper omnem collem ſublimem, &
in cunctis montium verticibus, ſub omni
arbore umbrifera, & ſub omni quercu
pulchra, ubi obtulerunt odorem aroma-
ticum omnibus idolis ſuis.

יחזקאל : ו

,desolatam terram dabo & ,eos super meā manum extendam Et
14 ונטיתי את־ידי עליהם ונתתי את־הארץ שממה
sciēt & :eorū habitationibus cunctis in ,Diblathah deserto à desertam &
ומשמה ממדבר דבלתה בכל מושבותיהם וידעו
.Dominus *ego* quòd
כי־אני יהוה:

CAP. VII. ז

Sic :hominus fili tu Et :dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר: ואתה בן־אדם כה־
super finis venit :finis Israel *Humo* ,Deus Dominus dixit
אמר אדני יהוה לאדמת ישראל קץ בא הקץ על־
meū *nasum* mittam & ,te super finis Nunc .terræ *alas* quatuor
3 ארבעת כנפות הארץ: עתה הקץ עליך ושלחתי אפי
omnes te super *dabo* & :tuas vias juxta te judicabo & ,te in
בך ושפטתיך כדרכיך ונתתי עליך את כל־
:*indulgebo* nec ,*te super* meus oculus parcet non Et .tuas abominationes
4 תועבתיך: ולא־תחוס עיני עליך ולא אחמול
;erunt tui medio in tuæ abominationes & ,*dabo* te super tuas vias *nam*
כי דרכיך עליך אתן ותועבותיך בתוכך תהיין
Malum :Deus Dominus dixit Sic .Dominus *ego* quòd scietis &
5 וידעתם כי־אני יהוה: כה אמר אדני יהוה רעה
evigilavit :finis venit ,venit Finis .venit ecce malum ,unum
6 אחת רעה הנה באה: קץ בא בא הקץ הקיץ
:terræ habitator *te ad matutina cidaris* Venit .venit ecce ,te adversum
7 אליך הנה באה: באה הצפירה אליך יושב הארץ
.montium *repercussio* non & ,*tumultus* dies *propinqua* ,tempus venit
בא העת קרוב היום מהומה ולא־הד הרים:
complebo & ,te super meam iram effundam propinquo de Nunc
8 עתה מקרוב אשפוך חמתי עליך וכליתי
te super *dabo* & :tuas vias secundùm te judicabo & ,te in meū *nasum*
אפי בך ושפטתיך כדרכיך ונתתי עליך את
:*indulgebo* nec ,meus oculus parcet non Et .tuas abominationes omnes
9 כל־תועבותיך: ולא־תחוס עיני ולא אחמול
:erunt tui medio in tuæ abominationes & ,dabo te super tuas vias juxta
כדרכיך עליך אתן ותועבתיך בתוכך תהיין
:venit ecce ,dies Ecce .*percutiens* Dominus *ego* quòd scietis &
10 וידעתם כי אני יהוה מכה: הנה היום הנה באה
Violentia .superbia *gemmuit* ,virga floruit ,*matutina cidaris* est egressa
11 יצאה הצפרה צץ המטה פרח הזדון: החמס
,eorum *multitudine à* neque ,eis ex non :impietatis virgam in surrexit
קם למטה־רשע לא־מהם ולא מהמונם
,tempus Venit .eis in lamentum non & ,eorum *tumultu è* neque
12 ולא מהמהם ולא־נה בהם: בא העת
quia :lugeat ne ,*vendens* & ;lætetur ne ,*Emens* .dies *attigit*
הגיע היום הקונה אל־ישמח והמוכר אל־יתאבל כי
venditionem ad vendens Quoniam .ejus *turbam* omnem *ad* ira
13 חרון אל־כל־המונה: כי המוכר אל־הממכר
ad visio Quia .eorum *vita viventibus* in etiam Et .revertetur non
לא ישוב ועוד בחיים חיתם כי־חזון אל־
non suæ vitæ sua iniquitate in unusquisque & ,revertetur non ejus *turbam* omnē
כל־המונה לא ישוב ואיש בעונו חיתו לא־
vadens non & ,omnia *præparare* & ,tuba in *Clanxerunt* .*confortabunt se*
14 יתחזקו: תקעו בתקוע והכין הכל ואין הלך
,foris Gladius .ejus *turbam universam ad* mea ira nam :prælium ad
15 למלחמה כי חרוני אל־כל־המונה: החרב בחוץ
qui & ;morietur gladio in ,agro in Qui .*domo à* fames & pestis &
והדבר והרעב מבית אשר בשדה בחרב ימות ואשר
eum perdet pestis & ,fames ,civitate in
בעיר רעב ודבר יאכלנו:

Versio VULG. LAT.

14 Et extendam manum meam super eos: & faciam terram desolatam & destitutam, à deserto Deblatha, in omnibus habitationibus eorum: & scient quia ego Dominus.

CAP. VII.

1 ET factus est sermo Domini ad 2 me, dicens; Et tu, fili hominis, hæc dicit Dominus Deus terræ Israel; Finis venit, venit finis super quatuor plagas terræ. 3 Nunc finis super te, & immittam furorem meum in te: & judicabo te juxta vias tuas: & ponam contra te omnes abominationes tuas. 4 Et non parcet oculus meus super te, & non miserebor: sed vias tuas ponam super te, & abominationes tuæ in medio tuî erunt: & scietis quia 5 ego Dominus. Hæc dicit Dominus Deus; Afflictio una, 6 afflictio ecce venit. Finis venit, venit finis, evigilavit adversùm te: 7 ecce venit. Venit contritio super te, qui habitas in terra: venit tempus, propè est dies occisionis, & non gloriæ montium. 8 Nunc de propinquo effundam iram meam super te, & complebo furorem meum in te: & judicabo te juxta vias tuas, & imponam tibi omnia scelera tua: 9 Et non parcet oculus meus, nec miserebor: sed vias tuas imponam tibi, & abominationes tuæ in medio tuî erunt: & scietis quia ego sum Dominus percuti- 10 ens. Ecce dies, ecce venit: egressa est contritio, floruit virga, 11 germinavit superbia: Iniquitas surrexit in virga impietatis; non ex eis, & non ex populo, neque ex sonitu eorum: & non 12 erit requies in eis. Venit tempus, appropinquavit dies: qui emit, non lætetur: & qui vendit, non lugeat: quia ira super 13 omnem populum ejus. Quia qui vendit, ad id quod vendidit, non revertetur, & adhuc in viventibus vita eorum: visio enim ad omnem multitudinem ejus non regredietur: & vir in iniquitate vitæ suæ non confortabitur. 14 Canite tubâ, præparentur omnes, & non est qui vadat ad prælium: ira enim mea super 15 universum populum ejus. Gladius foris; & pestis & fames intrinsecus: qui in agro est, gladio morietur: & qui in civitate, pestilentia & fame devorabuntur.

Vers. GRÆ. LXX. Interp.

14 Καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπ᾽ αὐτοὺς, καὶ θήσομαι τὴν γῆν εἰς ἀφανισμὸν καὶ εἰς ὄλεθρον ἀπὸ τῆς ἐρήμου Δεβλαθὰ ἐκ πάσης τῆς (σ) κατοικεσίας αὐτῶν. ἐπιγνώσεσθε ὅτι ἐγὼ κύριος.

MS. A. (σ) κατοικίας. καὶ ἐπιγνώσεσθε

ΚΕΦ. ζ΄.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ- 2 γων, Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου εἰπὸν, Τάδε (α) λέγει κύριος, Τῇ γῇ τοῦ Ἰσραὴλ πέρας ἥκει, τὸ πέρας ἥκει ἐπὶ τὰς τέσσαρας πτέρυ- 3 γας τῆς γῆς. (β) Ἥκει τὸ πέρας ἐπὶ σὲ 7 τὸν κατοικοῦντα τὴν γῆν· ἥκει ὁ καιρὸς, ἤγγικεν ἡ ἡμέρα, οὐ μετὰ θορύβων, οὐδὲ μετὰ ὠ- 8 δίνων. Νῦν ἐγγύθεν ἐκχεῶ τὴν ὀργήν μου ἐπὶ σὲ καὶ συντελέσω τὸν θυμόν μου ἐν σοὶ, καὶ κρινῶ σε ἐν ταῖς ὁδοῖς σου, καὶ δώσω ἐπὶ σὲ 9 πάντα τὰ βδελύγματά σου. Οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός (˜) μου, οὐδὲ μὴ ἐλεήσω· διότι (˜) τὰς ὁδούς σου ἐπὶ σὲ δώσω, καὶ τὰ βδελύγματά σου ἐν μέσῳ σου γ ἔσονται, καὶ ἐπιγνώσῃ, διότι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ τύπτων. Νῦν τὸ πέρας πρὸς σὲ, καὶ ἀποστελῶ ἐγὼ ἐπὶ σὲ, καὶ ἐκδικήσω ἐν ταῖς ὁδοῖς σου, καὶ δώσω ἐπὶ σὲ πάν- 4 τα τὰ βδελύγματά σου, Οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός μου, οὐδὲ μὴ ἐλεήσω· διότι τὴν ὁδόν σου ἐπὶ σὲ δώσω, καὶ τὰ βδελύγματά σου ἐν μέσῳ σου ἔσται, καὶ ἐπιγνώσῃ διότι ἐγὼ 5 κύριος. Διότι τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ τὸ 10 πέρας ἥκει. Ἰδοὺ ἡ ἡμέρα κυρίου· εἰ καὶ ἡ 11 ῥάβδος ἤνθηκεν, ἡ ὕβρις ἐξανέστηκεν, Καὶ συντρίψει στήριγμα ἀνόμου, καὶ οὐ μετὰ (δ) 12 θορύβου, οὐδὲ μετὰ (ε) σπουδῆς. Ἥκει ὁ καιρὸς, ἰδοὺ ἡ ἡμέρα. ὁ κτώμενος μὴ χαι- 13 ρέτω, καὶ ὁ πωλῶν μὴ (ζ) θρηνείτω· Διότι ὁ κτώμενος πρὸς τὸν πωλοῦντα οὐκέτι (η) μὴ ἐπιστρέψει, καὶ ἄνθρωπος ἐν ὀφθαλ- 14 μῷ ζωῆς αὐτοῦ οὐ κρατήσει. Σαλπίσατε ἐν σάλπιγγι, (θ) καὶ κρίνατε τὰ (ι) σύμπαν- 15 τα. Ὁ πόλεμος ἐν ῥομφαίᾳ ἔξωθεν, καὶ ὁ λιμὸς καὶ ὁ θάνατος ἔσωθεν· (κ) ὁ ἐν τῷ πεδίῳ ἐν ῥομφαίᾳ (λ) τελευτήσει, τοὺς δ᾽ ἐν τῇ πόλει λιμὸς καὶ θάνατος συντελέσει.

3 MS. A. (α) λέγει ἀδωναῒ κύριος, (β) Ἥκει τὸ πέρας, νῦν τὸ πέρας πρὸς σὲ, καὶ ἀποστελῶ ἐγὼ ἐπὶ σὲ, καὶ ἐκδικήσω σε ἐν ταῖς ὁδοῖς σου, καὶ δώσω ἐπὶ σὲ πάντα (˜) μου ἐπὶ σὲ, οὐδὲ (˜) τὴν ὁδόν γ[illegible] 5 7 σαι, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγὼ κύριος. Διότι τάδε λέγει κύριος ἐπὶ σὲ, ** τὸν κατοικοῦντα τὴν γῆν, ἥκει ὁ καιρὸς, ἤγγικεν ἡ ἡμέρα οὐ μετὰ θορύβων, 8 οὐδὲ μετ᾽ ὠδίνων. Νῦν ἐγγύθεν ἐκχεῶ τὴν ὀργήν μου ἐπὶ σὲ, καὶ συντελέσω τὸν θυμόν μου ἐν σοὶ, καὶ κρινῶ σε ἐν ταῖς ὁδοῖς σου, καὶ δώσω 9 ἐπὶ σὲ πάντα τὰ βδελύγματά σου· Οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός μου, οὐδὲ ἐλεήσω. διότι τὰς ὁδούς σου ἐπὶ σὲ δώσω, καὶ τὰ βδελύγματά σου ἐν 10 μέσῳ σου ἔσονται· καὶ ἐπιγνώσῃ διότι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ τύπτων. Ἰδοὺ ἡ ἡμέρα κυρίου, ἰδοὺ τὸ πέρας ἥκει, ἐξῆλθεν ἡ πλοκὴ, καὶ ἡ ῥάβδος ἤνθηκεν, ἐξανέστηκεν ἡ ὕβρις, Καὶ συντρίψει [illegible] θορύβων, (ε) σπουδῆς. καὶ οὐκ ἐξ αὐτῶν εἰσιν, οὐδὲ ὡραϊσμὸς ἐν αὐτοῖς. Ἥκει (ζ) θρηνείτω· ὅτι ὀργὴ εἰς πᾶν τὸ 13 πλῆθος αὐτῆς· Διότι (η) οὐ μὴ ἐπιστρέψῃ, καὶ ἔτι ἐν ζωῇ τὸ ζῆν αὐτῶν, ὅτι ὅρασις εἰς πᾶν τὸ πλῆθος αὐτῆς οὐκ ἀνακάμψει, καὶ ἄνθρωπος 14 κρίνατε (ι) σύμπαντα, καὶ οὐκ ἔστιν πορευόμενος εἰς τὸν πόλεμον, ὅτι ὀργή μου εἰς πᾶν τὸ πλῆθος αὐτῆς. Ὁ πόλεμος (κ) οἱ ἐν (λ) πεδιάσιν

cum Transl. LAT.

14 Et extendam manum meam super eos: & ponam terram in desolationem, & in [illegible], à deserto Deblatha ex omni habitatione eorum. Scietis quia ego Dominus.

CAP. VII.

1 ET factum est verbum Domini ad me, dicens: Et tu fili hominis, (a) dic, Hæc dicit Dominus terræ Israel; Finis venit, venit finis super quatuor alas terræ: (b) Venit finis (c) super te, Qui habitas terram: venit tempus, appropinquavit dies, non cum perturbationibus, neque cum doloribus. 8 Nunc de propinquo effundam iram meam super te: & complebo furorem meum in te: & judicabo te in viis tuis: & dabo super te omnes abominationes tuas. 9 Non parcet oculus meus, neque miserebor: quia vias tuas super te dabo: & abominationes tuæ in medio tui erunt: & scies quia ego Dominus, qui percutio. 3 Nunc finis ad te: & mittam (d) ego super te, & ulciscar in vias tuas, & dabo super te omnes abominationes tuas. 4 Non parcet oculus meus, neque miserebor: quia viam tuam super te dabo, & abominationes tuæ in medio tuî erunt: & scies quia ego Dñs. 5 Hæc enim dicit (e) Dominus, Ecce finis (f) venit, ecce (g) dies Domini: & virga floruit, contumelia surrexit. 11 Et conteret firmamentum iniqui, & non cum perturbatione, neque cum festina[illegible]. 12 Venit tempus, ecce dies. Qui emit, non lætetur: & qui vendit, non (h) lugeat: 13 Quia emens ad vendentem non ultrà (i) revertetur: & homo in oculo vitæ suæ non obtinebit. 14 Clangite in tuba, & judicate (k) omnia. 15 (l) Bellum in gladio foris, & fames & mors intrinsecus. Qui in campo est, in gladio morietur: [illegible] fames, & mors consumet.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ואריים ית מחת גבורתי עליהון ואתן ית ארעא לצדו ואשתממו ממדבר דבלת בכל
מותבניהון וידעון ארי אנא יי:

ז

1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר: ואת בר אדם כדנן אמר יי אלהים לארעא
2 דישראל קצא מטא מטת פורענית קצא למיתי על ארבע רוחי ארעא: כען מטת
3 פורענית קצא למיתי עלך ואשלח רוגזי ביך ואתפרע מניך כאורחתיך ואתן עלך ית כל
4 תועבתיך: ולא יחוס מימרי עלך ולא ארחם ארי חוב ארחתיך עלך אתן ופורענות
5 תועבתיך בגויך יהוין ותדעין ארי אנא יי: כדנן אמר יי אלהים בישתא בתר בישתא
6 7 הא אתיא: קצא מטא מטת פורענות קצא למיתי עלך הא אתיא: אתגליאת מלכותא
עלך יתיב ארעא מטא עדן תבירת קריב יום אתרגושא ולית לאשתיזבא במצדי טוריא:
8 כען מקריב אשפוך חימתי עלך ויחול רוגזי ביך ואתפרע מניך כארחתיך ואתן עלך ית
9 כל תועבתיך: ולא תחוס מימרי ולא ארחים בחובי ארחתיך עלך אתן ופורענות
10 תועבתיך בגויך יהוין ותדעין ארי אנא יי איתיתי עליכון מחא: הא יום פורענותא מטא
11 הא אתיא אתגליאת מלכותא צמח שולטנא הופע רשיעא: חטופין קמו למסער רשיעין
12 לא מנהון ולא מאתרגישתהון ולא מבניהון ולא מבני בניהון: מטא עדן תושלמת
חובין קריב יום פורענית חטאין זבנא לא יחדי ומזבננא לא ידוי ארי רגז מן קדמי על
13 כל אתרגישתהון: ארי מזבננא לזבינא לא יתוב ועד דאנון חיין ירדנון בגויתהון ארי
נביא מתנבן על כל אתרגושתהון למתב בתיובתא ולא תיבין גבר בחובי נפשיה
14 מתרען ועד דאנון קימין בתיובתא לא מתקפין: נפקין באצוחת קרנא ומתקנין במני
15 זינא ולית דאזיל לקרבא ארי רגז מן קדמי על כל אתרגישתהון: חרבא מלברא ומותא
וכפנא מלגיו דבחקלא בחרבא יתקטיל ודי בקרתא כפנא ומותא ישיצניה:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et levabo plagam potentiæ meæ super eos, & dabo terram in desolationem et stuporem à deserto Deblata in cunctis habitationibus suis: & scient quia ego Dominus.

CAP. VII.

ET factum est verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: Et tu fili hominis, hæc dicit Dñs Deus terræ Israel: Finis pervenit, pervenit ultio finis ut veniat sup quatuor ventos terræ. Nunc pervenit ultio definita ut veniat contra te, & mittam furoré meum in te, & ultioné sumam à te juxta vias tuas, & dabo super te omnes abominationes tuas. Et non parcet Verbum meum tibi, nec miserebor. Quia peccatum viæ tuæ sup te dabo, & abominationum tuarum ultio in medio tui erit: & *scies* quia ego Dñs. Hæc dicit Dñs Deus: Malū post malum ecce venit. Pervenit finis, pervenit ultio definita ut veniat sup te, ecce venit. Revelatum est regnum sup te qui habitas in terra: pervenit tempus interitus, propè est dies tumultus, nec licet evadere in vertices montium. Nunc de propinquo effundam furorem meum sup te, & crescet ira mea in te, & ultionem sumam ex te juxta vias tuas, & dabo super te omnes abominationes tuas. Non parcet Verbum meum, nec miserebor: juxta peccata viarum tuarum dabo super te; & ultio abominationum tuarum in medio tui erit: & scietis quia ego Dñs adduxi sup vos percussionem. Ecce dies ultionis appetiit, ecce venit, revelatum est regnum, germinavit dominator, apparuit impius. Direptores surrexerunt ad visitandum impios: non ex eis, neque ex sonitu eorum, neque ex filiis eorum, neque ex filiis filiorum eorum. Pervenit tempus retributionis delictorum, propè est dies ultionis peccatorum: qui emit non lætetur, & qui vendit non lugeat, quia ira à facie *mea* super omnem tumultum eorum. Quia qui vendit, ad id quod vendidit non revertetur: & dum ipsi vivunt, dominabitur eis in corporibus eorum: qui cùm prophetæ prophetarent ad omnem multitudinem eorum ut pœnitentia redirent, non redierunt: quisque in sceleribus animæ suæ [illegible]cet, & interea dum ipsi permanent, non apprehendunt pœnitentiam. [illegible]duntur in clangore cornu & accincti sunt armis bellicis, & non est qui vadat ad prælium, quia ira à facie mea super omnem tumultum [illegible]. Gladius foris, & pestis & fames intus: qui in agro est, gladio occidetur: qui in civitate, fames & pestis eum perdent.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ ܥܠܝܗܘܢ .. ܘܐܥܒܕܝܗ ܠܐܪܥܐ ܗܕܐ ܚܪܒܬܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܕܒܠ
ܘܒܟܠܗ ܒܝܬ ܡܥܡܪܗܘܢ ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *
* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ .. ܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܡܪܘܬܐ. ܡܛܐ ܩܨܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܘܡܛܐ ܚܘܒܠܐ ܥܠ ܐܪܒܥ ܦܢܝܬܗ ܕܐܪܥܐ.* ܗܫܐ
ܩܨܐ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܫܕ ܥܠܝܟܝ ܪܘܓܙܝ. ܘܐܕܘܢܟܝ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܟܝ. ܘܐܝܬܐ ܥܠܝܟܝ ܟܠ
ܛܢܦܘܬܟܝ. * ܘܠܐ ܬܚܘܣ ܥܝܢܝ ܥܠܝܟܝ ܘܠܐ ܐܪܚܡ. ܡܛܠ ܕܐܘܪܚܬܟܝ ܥܠܝܟܝ ܐܬܠ
ܘܛܢܦܘܬܟܝ ܒܓܘܟܝ ܬܗܘܐ. ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܒܝ
ܒܝܫܬܐ ܚܠܦ ܒܝܫܬܐ. * ܕܬܐܬܐ ܓܝܪ ܩܨܐ ܘܐܥܩܟܝ. *ܘܬܐܬܐ ܨܦܪܐ ܥܡܘܪܐ ܕܐܪܥܐ ܥܠܝ
ܡܛܐ ܙܒܢܐ. ܘܩܪܒ ܝܘܡܐ ܕܫܘܓܫܐ.* ܗܫܐ ܡܢ ܩܪܝܒ ܐܫܕ ܚܡܬܝ ܥܠܝܟܝ ܘܐ
ܘܐܫܡܠܐ ܪܘܓܙܝ ܒܟܝ. ܘܐܕܘܢܟܝ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܟܝ. ܘܐܝܬܐ ܥܠܝܟܝ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܟܝ. *ܘܠܐ ܬܚܘܣ
ܥܝܢܝ ܥܠܝܟܝ ܘܠܐ ܐܪܚܡ. ܐܠܐ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܟܝ ܐܦܪܥܟܝ. ܘܛܢܦܘܬܟܝ ܒܓܘܟܝ ܬܗܘܐ
ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܡܚܝܬܟܝ. * ܗܐ ܝܘܡܐ ܐܬܐ. ܢܦܩ ܨܦܪܐ. ܘܦܪܚ ܚܘܛܪܐ. ܦܪ
ܨܥܪܐ. * ܘܥܘܠܐ ܩܡ ܥܠ ܫܒܛܐ ܕܥܘܠܐ. ܠܐ ܡܢܗܘܢ. ܘܠܐ ܡܢ ܗܡܝܢܗܘܢ. ܘܠܐ ܡܢ
ܡܥܒܕܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܬܬܢܝܚ ܒܗܘܢ. * ܡܛܐ ܙܒܢܐ. ܩܪܒ ܝܘܡܐ. ܕܙܒܢ ܠܐ ܢܚܕܐ
ܘܕܡܙܒܢ ܠܐ ܢܬܟܪܐ ܠܗ. ܡܛܠ ܕܪܘܓܙܐ ܥܠ ܟܠܗ ܩܢܝܢܗܘܢ. * ܘܙܒܘܢܐ ܠܐ ܢܗܦܘܟ
ܠܡܙܒܢܢܐ. ܘܬܘܒ ܚܝܐ ܒܚܝܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܚܙܘܐ ܠܐ ܢܬܗܦܟ ܥܠ ܟܠܗ ܩܢܝܢܗܘܢ
ܘܓܒܪܐ ܒܥܘܠܗ ܠܐ ܢܚܠܡ ܚܝܘܗܝ. * ܩܪܘ ܒܩܪܢܐ. ܘܐܬܛܝܒܘ ܟܠ. ܘܠܝܬ ܕܐܙܠ
ܠܩܪܒܐ. ܡܛܠ ܕܪܘܓܙܝ ܥܠ ܟܠܗ ܩܢܝܢܗܘܢ. * ܚܪܒܐ ܒܫܘܩܐ. ܘܟܦܢܐ ܘܡܘܬܢܐ
ܒܒܬܐ. ܐܝܢܐ ܕܒܚܩܠܐ ܢܗܘܐ ܒܚܪܒܐ ܢܡܘܬ. ܘܐܝܢܐ ܕܒܡܕܝܢܬܐ .. ܟܦܢܐ ܘܡܘܬܢܐ
ܢܐܟܠܘܢܗ.

Levabo enim manum meam super eos, & red- 14
dam terram istam magis desolatã quàm terrã
Deblathæ; ac omnem locum habitationis eo-
rum: & experientur me esse Dominum.

CAP. VII.

Fuit etiam ad me sermo Domini, dicendo; 1
Tu vero fili hominis, dicito; Sic ait Dominus 2
dominorum; Advenit finis super terram Is-
raelis, & advenit exitium super quatuor ter-
ræ oras. Nunc finis super te, & effundam 3
super te iram meam, judicabo te secundùm
vias tuas, & adducam super te omnem tur-
pitudinem tuam. Non parcet oculus meus 4
tibi, neque misericordia commovebor; quia
vias tuas super te reponam, & turpitudo tua
in medio tui erit: & experieris me esse Do-
minum. Sic ait Dominus dominorum, Ecce 5
malum pro malo venturum est. Adveniet 6
enim finis, & affligam te: Veniétque hir- 7
cus incola terræ super te. Advénit tempus, &
propinquus est dies vexationis. Jamjam co- 8
minùs effundam furorem meum super te, ef-
fundam super te iracundiam meam, judicabo
te secundùm vias tuas, & reponam super te
totam abominationem tuam. Non parcet tibi 9
oculus meus, nec utar clementiâ; sed juxta vias
tuas rependam tibi, & abominatio tua in me-
dio tui erit: & experieris me Dominum esse
qui te percussi. Ecce dies advénit, prodiit 10
hircus, germinavit fustis, ramos emisit contu-
melia, Et iniquitas stetit super virgam iniqui- 11
non ab eis, neque à tumultu eorum, neque ab
operatione eorum: & non placabitur illis.
Advênit tempus, accessit dies: qui comparat, 12
ne lætetur; & qui vendit, ne molestè ferat:
nam ira impendet omnibus possessionib' eo-
rum. Emptor non redibit ad venditorem, 13
& ampliùs non erit vita in vita eorum: quo-
niam inspectio non repetetur super ullam
possessionem eorum, neque vir per iniquita-
tem suam conservabit vitam suam. Clan- 14
gent buccinâ, & parabunt omnia, nec erit
qui ad prælium eat; quoniam ira mea impen-
det omnibus possessionibus eorum. Gladius 15
erit in plateis, & pestis ac fames in domibus:
qui fuerit in deserto, gladio peribit; qui autem
in urbe, fame ac peste consumetur.

Versio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وامدد يدي عليهم * واصنع الارض للفناء وللهلاك * من برية دبلاثا * من كل مسكن
ويعلمون اني انا الرب * الفصل السابع *
* وكان قول الرب الي قايلا * وانت يا ابن الانسان قل - هكذا يقول ادوناي الرب لارض اسراييل
الانتهاء اي على اربعة اجنحة الارض * اي الانتهاء * الان الانتهاء اي على اربعة اجنحة الارض
اي الانتهاء * الان الانتهاء اليك * وارسل انا عليك وانتقم منك بطرقك * واعطي عليك
جميع رذالاتك * ولا تشفق عيني عليك ولا ارحمك * من اجل ان طريقك ادفعها عليك
ورذالاتك في وسطك تصير * وتعلمين اني انا الرب * من اجل انه هكذا يقول الرب * عليك
ايها الساكن الارض اي الزمان * اقترب اليوم * لا بقلق ولا بطلقات * لان من قريب اسكب
رجزي عليك * واكمل غضبي فيك * واديك بطرقك * وادفع عليك جميع رذالاتك *
تشفق عيني ولا ارحم * من اجل ان طرقك ادفعها عليك * ورذالاتك في وسطك تصير * وتعل
اني انا الرب الضارب * ها يوم الرب * ها الانتهاء اي خرجت الضفيرة * وازهرت العصا * ظهر
العظمة * فتنكسر رفد الاثم * ولا بقلق ولا بحرص * وليس هم منهم * ولا المباهي فيهم
* اي الزمان * ها اليوم * المقتني لا يفرح * والبايع لا ينح * لان الرجز على كل كثرتها
* من اجل ان المقتني لا يرجع على البايع ايضا * ولا معاش لحياتهم ايضا * لان الرؤ
على كل كثرتها * ولا ترجع * والانسان في عين حياته لا يقبض * بوقوا بالبوق * دبر
الجميع * فليس من يخرج للحرب * لان رجزي على كل كثرتها * الحرب بالسيف من
خارج * والجوع والموت من داخل * الذين في البقعة بالسيف يموتون * والذين في المدينة
الجوع والموت يفنيهم *

Et extendens manum meam super ipsos, 14
terram omnem habitatam redigam in ex-
cidium & exterminium, inde à deserto
Deblathæ: & scietis me esse Dominum.

CAP. VII.

Rursus fuit sermo Domini ad me, di- 1
cens; Et tu O fili hominis, dicito; Sic 2
ait Adonai Dominus ad terram Israelis;
Finis venit super quatuor alas terræ,
venit finis: instat jam finis super quatuor
alas terræ, venit finis. Jam finis ad te 3
pervenit: missurus enim ego sum adver-
sum te, & vindictam à te sumpturus
propter vias tuas, & reflexurus in te
cunctas abominationes tuas. Non parcet 4
oculus meus tibi, neque miserebor tui;
quia viam tuam in te retundam, & abo-
minationes tuæ in medio tui erunt: scies-
que me esse Dominum. Nam sic dicit 5
Dominus; Super te O incola terræ, ad- 6
venit tempus, appropinquavit dies:
Non prævio quidem fastidio, neque dolo- 7
ribus partus: Quia cominus effundam 8
iram meam in te, & perficiam in te fu-
rorem meum; judicabo te secundùm
vias tuas, & retundam in te cunctas
abominationes tuas. Nequaquam parcet 9
oculus meus, neque miserebor, quoniam
vias tuas in te retundam, & abomina-
tiones tuæ in medio tui erunt: & agno-
sces me esse Dominum percutientem. Ecce 10
dies Domini, ecce finis adest: prodiit
germen, floruit virga, excrevit magni-
tudo; Contereturque subsidium iniqui, 11
atque id sine tumultu, & sine solici-
tudine: & non existent ex eis, neque
fastus erit in ipsis. Advenit tempus, ecce 12
diem: qui possidet, ne gaudeat; & qui
vendit, ne gemat; quoniam ira immi-
net omni earum rerum multitudini:
Quoniam possessor non revertetur am- 13
pliùs ad venditorem, nec erit amplius
vita vitæ ipsorum: quia visio erit super
totam harum rerum multitudinem, &
non revertentur, neque homo pro oculo
vitæ suæ quicquam obtinebit. Clangite 14
buccinâ, judicate omnes, quia nemo est
qui prodeat ad bellum: nam iracundia
mea imminet omni earum rerum copiæ.
Gladius bellum erit extrinsecus, & fa- 15
mes ac pestis intrinsecus: qui fuerint in
campo, gladio morientur; qui autem in
urbe, fames ac pestis consumet.

יחזקאל : ח

vallium columbæ veluti montes ſuper erunt & ,eorũ evaſores evadent Et
16 וּפָלְטוּ פְּלִיטֵיהֶם וְהָיוּ אֶל־הֶהָרִים כְּיוֹנֵי הַגֵּאָיוֹת
Omnes *ſua iniquitate in* unuſquiſque , gementes *ipſi* univerſi
17 כֻּלָּם הֹמוֹת אִישׁ בַּעֲוֺנוֹ׃ כָּל־
.aquæ ibunt genua omnia & : debilitabuntur manus
הַיָּדַיִם תִּרְפֶּינָה וְכָל־בִּרְכַּיִם תֵּלַכְנָה מָּיִם׃
facies omnes ad & :formido eos operiet & , ſaccis ſe accingent Et
18 וְחָגְרוּ שַׂקִּים וְכִסְּתָה אוֹתָם פַּלָּצוּת וְאֶל כָּל־פָּנִים
ſuũ Argentum .calvitium eorum capitibus omnibus in & , pudor
19 בּוּשָׁה וּבְכָל־רָאשֵׁיהֶם קָרְחָה׃ כַּסְפָּם
,eorum Argentum .*erit elongationem in* eorum aurum &,projicient plateas in
בַּחוּצוֹת יַשְׁלִיכוּ וּזְהָבָם לְנִדָּה יִהְיֶה כַּסְפָּם
; Domini *indignationis* die in eos liberare valebit non eorum aurum &
וּזְהָבָם לֹא־יוּכַל לְהַצִּילָם בְּיוֹם עֶבְרַת יְהוָה
offendiculum quia : implebunt non *ſua viſcera* & ,ſaturabunt non ſuã animam
נַפְשָׁם לֹא יְשַׂבֵּעוּ וּמֵעֵיהֶם לֹא יְמַלֵּאוּ כִּי־מִכְשׁוֹל
,*eum poſuit excellentiam in ejus ornamenti decor* Et .fuit eorum *iniquitatis*
20 עֲוֺנָם הָיָה׃ וּצְבִי עֶדְיוֹ לְגָאוֹן שָׂמָהוּ
: eo in fecerunt *ſuarum ſpurcitiarum* , ſuarum abominationum imagines &
וְצַלְמֵי תוֹעֲבֹתָם שִׁקּוּצֵיהֶם עָשׂוּ בוֹ
manum in illud dabo Et .elongatione in ipſis *illud* dedi hoc propter
21 עַל־כֵּן נְתַתִּיו לָהֶם לְנִדָּה׃ וּנְתַתִּיו בְּיַד־
.illud cõtaminabunt & :*ſpolium* in terræ impiis &,diripiendũ ad alienorũ
הַזָּרִים לָבַז וּלְרִשְׁעֵי הָאָרֶץ לְשָׁלָל וְחִלְּלוּהָ׃
introibunt & :meũ *abditum* violabũt & , eis ab meas facies avertam Et
22 וַהֲסִבּוֹתִי פָנַי מֵהֶם וְחִלְּלוּ אֶת־צְפוּנִי וּבָאוּ־
quoniam : catenam Fac .illud polluent & , *effractores* illud in
23 בָהּ פָּרִיצִים וְחִלְּלוּהָ׃ עֲשֵׂה הָרַתּוֹק כִּי
.*extorſione* eſt plena civitas & , ſanguinum judicio eſt plena terra
הָאָרֶץ מָלְאָה מִשְׁפַּט דָּמִים וְהָעִיר מָלְאָה חָמָס׃
: eorum domos poſſidebunt & , gentium peſſimos adducam Et
24 וְהֵבֵאתִי רָעֵי גוֹיִם וְיָרְשׁוּ אֶת־בָּתֵּיהֶם
.eorum ſanctuaria polluentur & , fortium ſuperbiam faciam ceſſare &
וְהִשְׁבַּתִּי גְּאוֹן עַזִּים וְנִחֲלוּ מְקַדְשֵׁיהֶם׃
ſuper Contritio .non & , pacem quærent & : venit Præciſio
25 26 קְפָדָה בָא וּבִקְשׁוּ שָׁלוֹם וָאָיִן׃ הֹוָה עַל־
viſionẽ quærent & : erit auditum *ad* auditus & ,veniet contritionẽ
הֹוָה תָּבוֹא וּשְׁמֻעָה אֶל־שְׁמוּעָה תִּהְיֶה וּבִקְשׁוּ חָזוֹן
.ſenioribus à conſilium & ,ſacerdote à peribit lex & , propheta à
מִנָּבִיא וְתוֹרָה תֹּאבַד מִכֹּהֵן וְעֵצָה מִזְּקֵנִים׃
terræ populi manus &,deſolatione induetur princeps & ,lugebit Rex
27 הַמֶּלֶךְ יִתְאַבָּל וְנָשִׂיא יִלְבַּשׁ שְׁמָמָה וִידֵי עַם־הָאָרֶץ
.eos judicabo eorũ judiciis in & , eis faciam eorum *via à* : terrebuntur
תִּבָּהַלְנָה מִדַּרְכָּם אֶעֱשֶׂה אֹתָם וּבְמִשְׁפְּטֵיהֶם אֶשְׁפְּטֵם
.Dominus *ego* quòd ſcient &
וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃

CAP. VIII. ח

ego , menſis quinta *in* , ſexto in , ſexto anno in fuit Et
1 וַיְהִי בַּשָּׁנָה הַשִּׁשִּׁית בַּשִּׁשִּׁי בַּחֲמִשָּׁה לַחֹדֶשׁ אֲנִי
cecidit & :*meas facies ad ſedentes* Jehudah ſeniores &,mea domo in *ſedens*
יוֹשֵׁב בְּבֵיתִי וְזִקְנֵי יְהוּדָה יוֹשְׁבִים לְפָנָי וַתִּפֹּל־
ſimilitudo ecce & , vidi Et .Dei Domini *manus ibi* me ſuper
2 עָלַי שָׁם יַד אֲדֹנָי יֱהוִה׃ וָאֶרְאֶה וְהִנֵּה דְמוּת
: ignis infrà & , ejus lumborum aſpectu ab , ignis aſpectus tanquam
כְּמַרְאֵה־אֵשׁ מִמַּרְאֵה מָתְנָיו וּלְמַטָּה אֵשׁ
oculus tanquam , ſplendoris aſpectus tanquam , ſuprà & ,ejꝰ lumbis à &
וּמִמָּתְנָיו וּלְמַעְלָה כְּמַרְאֵה־זֹהַר כְּעֵין
.*flammæ crepitantis*
הַחַשְׁמַלָה׃

Verſio VULG. LAT.

16 Et ſalvabuntur qui fugerint ex eis : & erunt in montibꝰ quaſi columbæ convallium omnes trepidi, unuſquiſque in iniquitate 17 ſua. Omnes manꝰ diſſolventur, & 18 omnia genua fluent aquis. Et accingent ſe ciliciis, & operiet eos formido, & in omni facie confuſio, & in univerſis capitibꝰ eo- 19 rum calvitiũ. Argentum eorũ foràs projicietur, & aurũ eorũ in ſterquiliniũ erit : Argentum eorũ, & aurũ eorũ non valebit liberare eos in die furoris Dñi. Animam ſuam non ſaturabunt, & ventres eorũ non implebuntur : quia ſcandalũ iniquitatis 20 eorũ factũ eſt. Et ornamentum monilium ſuorum in ſuperbiam poſuerunt, & imagines abominationũ ſuarũ & ſimulacrorum fecerunt ex eo: propter hoc dedi 21 eis illud in immunditiam : Et dabo illud in manꝰ alienorum ad diripiendũ, & impiis terræ in prædam, & contaminabunt il- 22 lud. Et avertam faciẽ meã ab eis, & violabunt arcanum meũ: & introibunt in illud emiſſarii, 23 & contaminabunt illud. Fac concluſionem : quoniam terra plena eſt judicio ſanguinũ, & ci- 24 vitas plena iniquitate. Et adducã peſſimos de Gentibus, & poſſidebunt domos eorum : & quieſcere faciam ſuperbiam potentium, & poſſidebunt Sanctuaria 25 eorũ. Anguſtiâ ſuperveniente, requirent pacem, & non erit. 26 Conturbatio ſuper conturbationem veniet, & auditus ſuper auditũ : & quærent viſionem de propheta, & lex peribit à ſacer- 27 dote, & conſiliũ à ſeniorib⁹. Rex lugebit, & princeps induetur mœrore, & manꝰ populi terræ conturbabuntur. Secundùm viã eorũ faciã eis, & ſecundùm judicia eorum judicabo eos : & ſcient quia ego Dominus.

CAP. VIII.

1 ET factum eſt in anno ſexto, in ſexto menſe, in quinta menſis : ego ſedebam in domo mea, & ſenes Juda ſedebant coram me, & cecidit ibi ſuper me ma- 2 nus Domini Dei. Et vidi, & ecce ſimilitudo quaſi aſpectus ignis : ab aſpectu lumborum ejus, & deorſum, ignis : et à lumbis ejus, et ſurſum, quaſi aſpectus ſplendoris, ut viſio electri.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Καὶ ἀνασωθήσονται οἱ ἀνασῳζόμενοι ἐξ αὐτῶν, ϗ ἔσονται ἐπὶ τῶν (μ) ὀρέων. ϗ πάντας ἀποκτενῶ, ἕκαστον ἐν ταῖς ἀδικίαις 17 αὐτοῦ. Πᾶσαι χεῖρες ἐκλυθήσονται, ϗ πάν- 18 τες μηροὶ μολυνθήσονται ὑγρασίᾳ. Καὶ περιζώσονται σάκκους, ϗ καλύψει αὐτοὺς θάμβος· ϗ ἐπὶ πᾶν πρόσωπον αἰσχύνη ἐπ᾽ αὐτοὺς, ϗ ἐπὶ πᾶσαν κεφαλὴν φαλά- 19 κρωμα. Τὸ ἀργύριον αὐτῶν ῥιφήσεται ἐν ταῖς πλατείαις, ϗ τὸ χρυσίον αὐτῶν (ν) ὑπεροφθήσεται. αἱ ψυχαὶ αὐτῶν οὐ μὴ ἐμπλησθῶσι, ϗ αἱ κοιλίαι αὐτῶν οὐ μὴ πληρωθῶσι, διότι βάσανος τῶν ἀδικιῶν αὐτῶν ἐ- 20 γένετο. Ἐκλεκτὰ κόσμου εἰς ὑπερηφανίαν ἔθεντο αὐτὰ, ϗ εἰκόνας τῶν βδελυγμάτων αὐτῶν ἐποίησαν ἐξ αὐτῶν· ἕνεκεν τούτου δέδωκα αὐτὰ αὐτοῖς εἰς ἀκαθαρσίαν. 21 Καὶ παραδώσω αὐτὰ εἰς χεῖρας ἀλλοτρίων, τοῦ (ξ) διαρπάσαι αὐτὰ, ϗ τοῖς λοιμοῖς τῆς γῆς εἰς σκῦλα, ϗ βεβηλώσουσιν αὐ- 22 τά. Καὶ ἀποστρέψω τὸ πρόσωπόν μου ἀπ᾽ αὐτῶν, ϗ μιανοῦσι τὴν ἐπισκοπήν μου, καὶ εἰσελεύσονται εἰς αὐτὰ ἀφυλάκτως, ϗ βε- 23 βηλώσουσιν αὐτά· Καὶ ποιήσουσι φυρμόν· διότι ἡ γῆ πλήρης λαῶν, ϗ ἡ πόλις 24 πλήρης (ο) ἀνομίας. Καὶ ἀποστρέψω τὸ φρύαγμα τῆς ἰσχύος αὐτῶν, ϗ μιανθήσε- 25 ται τὰ ἅγια (π) αὐτῶν. Καὶ ἐξιλασμὸς ἥ- 26 ξει, ϗ ζητήσει (ρ) εἰρήνην, ϗ οὐκ ἔσται. Οὐαὶ ἐπὶ οὐαὶ ἔσται· ϗ ἀγγελία ἐπὶ ἀγγελίαν ἔσται. ϗ ζητηθήσεται ὅρασις ἐκ προφήτου, ϗ νόμος ἀπολεῖται ἐξ ἱερέως, ϗ βου- 27 λὴ ἐκ πρεσβυτέρων. (σ) Ἄρχων ἐνδύσεται ἀφανισμὸν, ϗ αἱ χεῖρες τοῦ λαοῦ τῆς γῆς παραλυθήσονται. κατὰ τὰς ὁδοὺς αὐτῶν ποιήσω αὐτοῖς, (τ) καὶ ἐν τοῖς κρίμασιν αὐτῶν ἐκδικήσω αὐτοὺς, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγὼ κύριος.

MS.A. (μ) ὀρέων, ὡς περιστεραὶ μελετητικαί. πάντας (ν) ὑπεροφθήσεται· τὸ ἀργύριον αὐτῶν ϗ τὸ χρυσίον αὐτῶν οὐ δυνήσεται ἐξελέσθαι αὐτοὺς ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς κυρίου. αἱ ψυχαὶ (ξ) διαφθεῖραι (ο) ἀνομίας. Καὶ ἄξω πονηροὺς ἐθνῶν, ϗ κληρονομήσουσιν τοὺς οἴκους αὐτῶν, καὶ ἀποστρέψω (π) αὐτῶν. Ἐξιλασμὸς (ρ) εἰς εἰρήνην, (σ) Ὁ βασιλεὺς πενθήσει, ϗ ὁ ἄρχων (τ) καὶ τοῖς

ΚΕΦ. η΄.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἕκτῳ ἔτει ἐν τῷ πέμπτῳ μηνὶ, πέμπτῃ τοῦ (α) μηνὸς, ἐγὼ ἐκαθήμην ἐν τῷ οἴκῳ, ϗ οἱ πρεσβύτεροι Ἰούδα ἐκάθηντο (β) ἐνώπιόν μου· καὶ ἐ- 2 γένετο ἐπ᾽ ἐμὲ (γ) χεὶρ κυρίου. Καὶ ἴδον, ϗ ἰδοὺ ὁμοίωμα ἀνδρὸς, ἀπὸ τῆς ὀσφύος αὐτοῦ ϗ ἕως κάτω πῦρ, καὶ ἀπὸ τῆς ὀσφύος αὐτοῦ (δ) ὑπεράνω αὐτοῦ ὡς (ε) ὅρασις ἠλέκτρου.

MS.A. (α) μηνὸς, ἐκαθήμην (β) ἐνώπιον ἐμοῦ· (γ) χεὶρ ἀδωναῒ κυρίου. (δ) τὰ ὑπεράνω (ε) ὅρασις αὔρας, ὡς εἶδος ἠλέκτρου.

16 *Et ſalvi evadent, qui evadunt ex eis, & erunt ſuper (m) montes. Et omnes occidam, unumquemque in iniquitatibus ſuis.* 17 *Omnes manus diſſolventur, & omnia femora pollu[illegible] humore:* 18 *Et accingent ſe ciliciis, & operiet eos formido, & ſuper omnem faciem confuſio ſuper eos, & ſuper omne caput calvitium.* 19 *Argentum eorum in plateis projicietur: & aurum eorum erit (o) contemptui: Animæ eorum non ſaturabuntur, & ventres eorum non implebuntur: quia cruciatus iniquitatum eorum fuit.* 20 *Electa (p) mundi in ſuperbiam poſuerunt ea: & imagines abominationum (q) ſuarum fecerunt ex eis. Propterea dedi ea illis in immunditiam:* 21 *Et tradam ea in manus alienorum, ut diripiant ea, & peſtilentibus terræ in ſpolia: & polluent ea.* 22 *Et avertam faciem meam ab eis, & violabunt [illegible] meam: & ingredientur in ea ( ) temerè, & contaminabunt ea,* 23 *Et (t) facient permixtionem: quia terra plena (u) populorum, & civitas plena (x) iniquitatis.* 24 *Et avertam fremitum fortitudinis eorum: & polluentur Sancta eorum.* 25 *Et (y) propitiatio veniet: & quærent pacem, & non erit.* 26 *Væ ſuper væ erit: & nuntius ſuper nuntium erit: & quæretur viſio de propheta: & lex peribit à ſacerdote, & conſilium à ſenioribus.* 27 *(z) Princeps induetur interitu: & manus populi terræ diſſolventur. Secundum vias eorum faciam eis, & in judiciis eorum ulciſcar eos. Et ſcient, quia ego Dominus.*

CAP. VIII.

1 *ET factum eſt in ſexto anno, in (a) quinto menſe, quinta menſis; ego ſedebam in domo: & ſeniores Juda ſedebant coram me. Et facta eſt ſuper me manus (b) Domini:* 2 *Et vidi, & ecce ſimilitudo [illegible] à lumbis ejus, & uſque deorſum ignis: & à lumbis ejus ſupra eum, (d) quaſi ſpecies [illegible]*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 ומשיזביא ישתזבון מנהון ויהון על טוריא כיוני חיליא כולהון מנהמין גבר בחובי
17 18 נפשיה : כל ידיא יתרשלן וכל רכוביא יתאשדן מיא : ויסרון סקין ותחפי יתהון
19 אתכנעותא ועל כל אפיהון בהתא ובכל רישיהון מרט : כספהון בשוקין ירמון
ודהבהון לבוסרן יהי כספהון ודהבהון לא יכול לשיזבותהון ביום רוגזא דיי נפשהון
20 לא יסבעון ומעיהון לא ימלון ארי לתקלת חובין יהי : וחדות תקוניה ליקר יהבתיה
21 ואנון צלמי תועבתהון שקוצהון עבדו ביה על כן יהבתיה להון לבוסרן : ואמסרניה
22 ביד רשיעין למבז ולחיבי ארעא לעדי ויחלוניה : ואסליק שכנתי מנהון על דאחילו
23 ית ארעא בית שכנתי ויעלון בה רשיעין ויחלונה : עביד שלשלן ארי ארעא
24 אתמליאת חיבי קטול וקרתא אתמליאת חטופין : ואיתי מבאשי עממיא ויחסנון ית
25 בתיהון ואבטל רבות רשיעין ויתחלון מקדשיהון : אתקפדת מטת ויבעון שלמא
26 ולית : תבר על תבר ייתי ובסורתא על בסורתא תהא ויבעון אולפן מספר ואוראה
27 תפסוק מכהן ומלך מחכים : מלכא יתאבל ורבא ילבש צדו וידי עמא דארעא יתבהלן
מארחהון אעביד עמהון ובנימוסיהון אתפרע מנהון וידעון ארי אנא יי :

ח

1 והוה בשתא שתיתי בשתיתאה בחמשא לירחא אמר נביא אנא יתיב בביתי וסבי
2 בית יהודה יתבין קדמי ושרת עלי תמן רוח נבואה מן קדם יי אלהים : וחזית והא
דמות כחזו אשתא חיזו יקר דלא יכלא עינא למחזי ולית אפשר לאסתכלא ביה ולרע
חזו אשתא וחזו יקר דלא יכלא עינא למחזי ולא אפשר לאסתכלא ביה ולעלא כחיזו
זהרא כעין חשמל :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſuperſtites qui ſalvi fuerint ex eis, erunt ſuper montes quaſi columbæ convallium, omnes gementes, unuſquiſque in peccatis animæ ſuæ. Omnes manus diſſolventur, & omna genua defluent aquis. Et accingentur ſaccis, & operiet eos opprobrium, & ſuper omnem faciem eorum confuſio, & in omnibus capitibus eorum depilatio. Argentum ſuum in viis projicient, & aurum eorum erit in contemptum. Argentum eorum & aurum eorum non valebit liberare eos in die furoris Domini : animas ſuas non ſatiabunt, & viſcera ſua non implebunt, quia in ſcandalum peccatorum erit : Et gaudium ornamenti ejus quod in honorem poſuit : at ipſi in eo ſimulachra abominationum ſuarum & deteſtationum ſuarum fecerunt : propterea dedi illud eis in contemptum. Et tradam illud in manum impiorum ad diripiendum, & impiis terræ in prædam, & prophanabunt illud. Et auferam majeſtatem meam ab eis, pro eo quòd violaverunt terram domus majeſtatis meæ : & ingredientur in eam impii, & prophanabunt illam. Fac catenas, quia terra impleta eſt peccatis homicidii, & civitas plena eſt rapinis. Et adducam malignos populorum, & poſſidebunt domos eorum : & ceſſare faciam ſuperbiam impiorum, & prophanabuntur ſanctuaria eorum. Succiſio pervenit; & quærent pacem, & non erit. Interitus ſuper interitum veniet, & nuntium ſuper nuntium erit : & quærent à ſcriba diſciplinam, & doctrina ceſſabit à ſacerdote, & conſilium à ſapiente. Rex lugebit, & princeps induetur deſolatione : & manus populi terræ turbabuntur : ſecundùm viam eorum faciam cum eis, & in judiciis eorum ultionem ſumam ab eis : & ſcient quia ego Dominus.

CAP. VIII.

ET factum eſt anno ſexto, ſexto [*menſe,*] quinta die menſis, [illegible] ego ſedebam in domo mea, & ſenes Juda ſedebant coram me : & [illegible] ſuper me ibi ſpiritus prophetiæ à facie Domini Dei. Et vidi, & ecce ſimilitudo quaſi aſpectus ignis, aſpectus gloriæ quam oculus non poſſit videre, nec contemplari in illam : & infrà aſpectus ignis & aſpectus gloriæ quam non poſſit intueri oculus, & quam contemplari ſit impoſſibile : & ſuperius aſpectus ſplendoris quaſi ſpecies electri.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܘܢܦܠܛܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܡܫܬܘܙܒܝܢ ܡܢܗܘܢ ܠܛܘܪ̈ܐ. ܐܝܟ ܝܘܢ̈ܐ ܕܒܢܩ̈ܝܥܐ. ܟܠܗܘܢ ܢܡܘܬܘܢ
ܐܢܫ ܒܚܛܗ̈ܘܗܝ. * ܟܠܗܝܢ ܐܝ̈ܕܝܐ ܢܬܪ̈ܫܠܢ : ܘܟܠܗܝܢ ܒܘܪ̈ܟܐ. ܢܪ̈ܕܝܢ ܡܝ
* ܘܢܚܓܪܘܢ ܣܩ̈ܐ. ܘܢܟܣܘܢ ܐܢܘܢ ܙܘܥ̈ܐ. ܒܗܬܬܐ. ܒܟܠ ܐ̈ܦܝܗܘܢ. ܘܩܪܝܚܘܬܐ ܒܟܠ
ܪ̈ܫܝܗܘܢ. * ܣܐܡܗܘܢ ܒܫܘ̈ܩܐ ܢܫܕܘܢ. ܘܕܗܒܗܘܢ ܠܡܣܠܝܘ ܢܗܘܐ. ܘܣܐܡܗܘܢ
ܘܕܗܒܗܘܢ. ܠܐ ܢܫܟܚܘܢ ܠܡܦܨܝܘ ܐܢܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܢܦܫܗܘܢ
ܢܣܒܥܘܢ. ܘܟܪ̈ܣܬܗܘܢ ܠܐ ܢܡܠܘܢ. * ܗܢܐ ܬܫܢܝܩܐ ܦܘܪܥܢܐ ܕܥܘܠܗܘܢ. ܘܫܘܒ
ܝܩܪܗܘܢ ܕܥܒܕܘ ܒܫܘܒܗܪܐ. ܨܠܡ̈ܐ ܕܛܢ̈ܦܘܬܗܘܢ ܘܕܕܚ̈ܠܬܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗ
ܠܡܣܠܝܐ. ܘܐܬܠܝܘܗܝ ܒܐܝܕܐ ܕܢܘܟܪ̈ܝܐ. ܠܒܙܬܐ. ܘܠܪ̈ܫܝܥܐ ܕܐܪܥܐ
ܠܕܒܪܬܐ. ܘܢܛܢܦܘܢܝܗܝ. * ܘܐܦܢܐ ܐܦ̈ܝ ܡܢܗܘܢ. ܘܢܛܘܫܘܢ ܕܘܟܬܝ. ܘܢܥܠܘܢ ܒܗ
ܒܪ̈ܝܙܐ ܘܢܛܢܦܘܢܝܗ. ܘܢܥܒܪܘܢ ܒܗ ܒܬܘܠ̈ܐ. * ܡܛܠ ܕܐܪܥܐ ܐܬܡܠܝܬ ܕܝܢܐ ܕܕܡ̈ܐ. ܘܡܕܝܢ
ܐܬܡܠܝܬ ܥܘܠܐ. * ܘܐܝܬܐ ܪ̈ܥܘܬܐ ܕܥܡ̈ܡܐ ܘܢܐܪܬܘܢ ܒ̈ܬܝܗܘܢ. ܘܐܒܛܠ ܫܘܒܗܪܐ ܕܥܫܝ̈ܢܐ
ܘܢܐܪܬܘܢ ܡܩܕ̈ܫܝܗܘܢ. * ܪܘܓܙܐ ܐܬܐ. ܘܢܒܥܘܢ ܫܠܡܐ ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢ. * ܬܒܪܐ ܥܠ ܬܒ
ܘܫܡܘܥܬܐ ܥܠ ܫܡܘܥܬܐ ܬܗܘܐ. ܘܢܒܥܘܢ ܚܙܘܐ ܡܢ ܢܒܝܐ. ܘܢܡܘܣܐ ܢܐܒܕ ܡܢ ܟܗ
ܘܡܠܟܐ ܡܢ ܣܒ̈ܐ. * ܡܠܟܐ ܢܬܒ ܒܐܒܠܐ. ܘܪܒܐ ܢܠܒܫ ܚܒܠܐ. ܘܐܝ̈ܕܝܗܘܢ ܕܥܡܐ ܕܐܪ
ܢܬܪ̈ܫܠܢ. ܐܝܟ ܐܘܪ̈ܚܬܗܘܢ ܐܥܒܕ ܠܗܘܢ. ܘܒܕܝܢ̈ܝܗܘܢ ܐܕܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡ

* ܩܦܠܐܘܢ * ܚ *

* ܘܗܘܐ ܒܫܢܬܐ ܫܬܝܬܝܬܐ. ܒܚܡܫܐ ܒܝܪܚܐ ܫܬܝܬܝܐ. ܐܢܐ ܝܬܒ ܗܘܝܬ ܒܒܝܬ
ܘܣܒ̈ܐ ܕܝܗܘܕܐ ܝܬܒܝܢ ܗܘܘ ܩܕܡܝ. ܘܢܦܠܬ ܥܠܝ ܬܡܢ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܘܚܙ
ܘܗܐ ܕܡܘܬܐ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܢܘܪܐ. ܡܢ ܚܙܘܐ ܕܚܨܘܗܝ ܘܠܬܚܬ ܢܘܪܐ. ܘܡܢ ܚܨܘܗܝ ܘܠܥ
ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܙܗܪܐ. ܘܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܐܠܗܐ.

Qui ex eis evadent, eripient ſeſe in montes, 16
ceu columbæ in prominentes *rupes* : omnes
morientur, quiſque propter peccata ſua.
Omnes manus torpeſcent, & omnia genua 17
aquis manabunt. Saccis accingentur, & 18
vertigines obruent eos : pudor erit in omnibus
faciebus eorum, & avulſio pilorum in omnibus
capitibus eorum. Argentum ſuum 19
per plateas abjicient, & aurum eorum contemptibile
erit : argentum & aurum eorum
non poterit ſervare illos in die furoris Domini
: ſeipſos non ſaturabunt, & ventres
ſuos non explebunt. Hoc ſupplicium erit 20
compenſatio pro ſcelere ipſorum, & gloria
ornatûs eorum, quem cum faſtu fecerunt idolis
abominationum & numinum ſuorum :
Ideò contemptibile reddam *aurum* illud, tra- 21
damque in manum alienorum in direptionem,
& peccatoribus terræ in prædam ; &
polluent illud. Avertam faciem meam ab 22
eis, & prophanabunt ſpeculas meas, & ingredientur
urbem ipſam effractores, & contaminabunt
eam, & lateres *ipſos* permeabunt :
Quia terra impleta eſt judicio ſanguinis, & 23
urbs impleta eſt iniquitate. Et adducam pa- 24
ſtores gentium, & poſſidebunt domos eorum :
auferam faſtum potentium, & poſſidebunt
ſanctuarium eorum. Adveniente irâ pacem 25
quærent, & non reperietur. Ærumna ſuper- 26
veniet ærumnæ, & rumor *infauſtus* poſt rumorem
audietur : peténtque viſionem à prophetis,
& lex deficiet à ſacerdotibus, & conſilium
à ſenibus : Rex ſedebit in luctu, & 27
princeps induet corruptionem, & manus populi
terræ torpeſcent : ſecundùm vias eorum
faciam eis, & judiciis eorum judicabo illos :
& experientur me eſſe Dominum.

CAP. VIII.

PRæterea contigit anno ſexto, quintâ men- 1
ſis ſexti, ut ſedente me domi meæ, & ſenioribus
Judæ coram me ſedentibus ; caderet ibi
ſuper me manus Domini dominorum. Nam 2
aſpiciente me, ecce imago ſimilis ſpeciei ignis
: ab aſpectu lumborum ejus deorſum
verſùs, ignis erat ; à lumbis autem ejus ſurſum
verſùs, vidi quaſi aſpectum fulgoris, &
quaſi aſpectum Dei.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويخلص المتخلصون منهم * ويصيرون على الجبال مثل الحمام تهدر * واقتل الجميع كل
واحد بظلاماته * جميع الأيدي تنحل * وجميع الأفخاذ تتدنس بالرطوبة * ويمنطقو
مسوحا * ويغشاهم الجزع * والخزي على كل وجه عليهم وعلى كل رأس قرع * فضتهم
تطرح في الشوارع * وذهبهم ينشهر * فضتهم وذهبهم لا يقدران أن يخلصاهم في يوم رج
الرب * نفوسهم لا تشبع * وبطونهم لا تمتلي * من أجل أن عقاب مظالمهم صار
مختاري العالم وصنعوهم للكبرياء * وصور رذائلهم صنعوها منهم * من أجل هذ
أسلمها للنجاسة * وسأدفعها لأيدي الغرباء ليفسدوها * ولمفسدي الأرض للنهـ
وينجسوها * وأرد وجهي عنهم * وينجسون تعهدي * ويدخلون إليها بغير كث
وينجسوها * ويصنعون امتزاجا * من أجل أن الأرض مملوءة شعبا * والمدينة مملوءة إثـ
* وأجلب أشرار الأمم فيرثون بيوتهم * وأصرف ارتجاج قوتهم * ويتدنس مقادسهم * العفو
يأتي * ويطلب سلامة فلا تكون * الويل على الويل يكون * خبر على خبر يكون * ويطلب
الرؤيا من نبي * والناموس يبيد من الكاهن * والمشور من الشيوخ * الرئيس يلبس الهلا
وأيدي شعب الأرض تسترخي * كطرقهم أصنع لهم * وبأحكامهم أنتقم منهم * ويعلمو
أني أنا الرب *

* الفصل الثامن *

* وكان في السنة السادسة * في الشهر الخامس * في الخامس من الشهر * جلست في البيت وشيـ
يهوذا جلسوا أمامي * فكانت علي يد أدوناي الرب * فنظرت وإذا شبه رجل من حقوه إلى
أسفل نار * ومن حقوه وإلى فوق مثل رؤيا الجو * مثل منظر البها -

Evadent autem qui ſe ex eis eripient, 16
eruntque ſuper montes ceu columbæ gementes : omnes interficiam, quemque pro-
prias ob culpas. Omnes manus remitten- 17
tur, omniaque femora polluentur humore : Accingent ſe ciliciis, & operiet 18
eos pavor : pudor erit ſuper omnem faciem ſuper eos, & ſuper omne caput
calvitium. Argentum eorum projicietur 19
in plateas, & aurum eorum publicabitur ;
argentum & aurum eorum non poterunt
ſalvare eos in die furoris Domini : animæ eorum non ſaturabuntur, & ventres
eorum non explebuntur : Quia ſuppli- 20
cium perverſitatum eorum factum eſt.
Electos orbis poſuerunt ad ſuperbiam, &
imagines abominationem ſuarum fecerunt ex eis. Propterea immunditiæ tra- 21
dam illa, daboque illa in manum exterorum ut corrumpant illa, & cor-
ruptoribus terræ in prædam ut polluant
illa. Et avertam faciem meam ab eis, 22
& violabunt viſitationem meam, &
ingredientur in eam ſine ulla moderatione, & polluent eam, facientque
commiſtionem : Quoniam terra plena 23
eſt populo, & urbs plena ſcelere : Et 24
adducam nequiſſimos terræ, & poſſidebunt domos eorum : abolebo turbulen-
tiam roboris eorum, & prophanabuntur
ſanctuaria eorum. Indulgentia veniet, 25
pacemque quæret, ſed non erit. Væ ſuper 26
væ erit, nuntium ſuper nuntium erit ;
& poſtulabitur viſio ab aliquo propheta,
ſed lex peribit à ſacerdote, & conſilium à ſenibus : Princeps induetur exi- 27
tio, & manus populi terræ remittentur.
Secundùm vias eorum faciam eis, &
in judiciis eorum vindictam ſumam ab
eis : & agnoſcent me eſſe Dominum.

CAP. VIII.

Fuit etiam anno ſexto, menſe quinto, 1
quintâ die ejus menſis, ut me domi ſedente, & ſenioribus Judæ coram me
ſedentibus ; eſſet ſuper me manus Adonai Domini. Tum vidi, & ecce formam 2
viri qui à lumbo ſuo deorſum verſùs
ignis erat, à lumbo verò ſurſum verſus
ſimilis erat aſpectui aëris, ſimilis aſpectui chryſtalli.

יחזקאל : ח

me elevavit & :mei capitis cincinno in me tulit &,manus *inſtar* miſit Et
3 וַיִּשְׁלַח תַּבְנִית יָד וַיִּקָּחֵנִי בְּצִיצִת רֹאשִׁי וַתִּשָּׂא אֹתִי
,Jeruſalaim in me adduxit & , cœlos inter & terram inter ſpiritus
רוּחַ בֵּין־הָאָרֶץ וּבֵין הַשָּׁמַיִם וַתָּבֵא אֹתִי יְרוּשָׁלְַמָה
reſpicientis , interioris portæ oſtium ad , Dei viſionibus in
בְּמַרְאוֹת אֱלֹהִים אֶל־פֶּתַח שַׁעַר הַפְּנִימִית הַפּוֹנֶה
.facientis zelare zeli *imaginis* habitatio *ibi quo* , aquilonem ad
צָפוֹנָה אֲשֶׁר־שָׁם מוֹשַׁב סֵמֶל הַקִּנְאָה הַמַּקְנֶה׃
vidi quam viſionem ſecundùm : Iſrael Dei gloria ibi ecce Et
4 וְהִנֵּה־שָׁם כְּבוֹד אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל כַּמַּרְאֶה אֲשֶׁר רָאִיתִי
,tuos oculos nunc leva ,hominis Fili : me ad dixit Et .campo in
5 בַּבִּקְעָה׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־אָדָם שָׂא־נָא עֵינֶיךָ
ecce & ,aquilonẽ ad viam meos oculos levavi & : aquilonem ad viam
דֶּרֶךְ צָפוֹנָה וָאֶשָּׂא עֵינַי דֶּרֶךְ צָפוֹנָה וְהִנֵּה
.introitu in *hæc* zeli *ſimilitudo* ,altaris portam ad ,aquilone ab
מִצָּפוֹן לְשַׁעַר הַמִּזְבֵּחַ סֵמֶל הַקִּנְאָה הַזֶּה בַּבִּאָה׃
: *facientes* iſti quid tu *videns* nonne ,hominis Fili : me ad dixit Et
6 וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־אָדָם הֲרֹאֶה אַתָּה מָהֵם עֹשִׂים
fieri longè ad , hic *facientes* Iſrael domus quas , magnas abominationes
תּוֹעֵבוֹת גְּדֹלוֹת אֲשֶׁר בֵּית־יִשְׂרָאֵל עֹשִׂים פֹּה לְרָחֳקָה
abominationes videbis *converteris* adhuc & ? meo ſanctuario *deſuper*
מֵעַל מִקְדָּשִׁי וְעוֹד תָּשׁוּב תִּרְאֶה תּוֹעֵבוֹת
ecce & , vidi & : atrii oſtium ad me adduxit Et .magnas
7 גְּדֹלוֹת׃ וַיָּבֵא אֹתִי אֶל־פֶּתַח הֶחָצֵר וָאֶרְאֶה וְהִנֵּה
hominis Fili , me ad dixit Et .pariete in unum foramen
8 חֹר־אֶחָד בַּקִּיר׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־אָדָם
.unum oſtium ecce & ,parietem *in* fodi & : parietem *in* nunc fode
חֲתָר־נָא בַקִּיר וָאֶחְתֹּר בַּקִּיר וְהִנֵּה פֶּתַח אֶחָד׃
quas , malas abominationes vide & ,Ingredere :me ad dixit Et
9 וַיֹּאמֶר אֵלָי בֹּא וּרְאֵה אֶת־הַתּוֹעֵבוֹת הָרָעוֹת אֲשֶׁר
omnis ecce & , vidi & , ſum ingreſſus Et .hic *facientes* iſti
10 הֵם עֹשִׂים פֹּה׃ וָאָבוֹא וָאֶרְאֶה וְהִנֵּה כָל־
domus idola univerſa & ,abominatio ,animalis & ,reptilis ſimilitudo
תַּבְנִית רֶמֶשׂ וּבְהֵמָה שֶׁקֶץ וְכָל־גִּלּוּלֵי בֵּית
ſeptuaginta Et .*circum circum* pariete *ſuper exaratum* : Iſrael
11 יִשְׂרָאֵל מְחֻקֶּה עַל־הַקִּיר סָבִיב סָבִיב׃ וְשִׁבְעִים
ſtans , Saphan filius Jazanjahu & , Iſrael domus ſenioribus de viri
אִישׁ מִזִּקְנֵי בֵית־יִשְׂרָאֵל וְיַאֲזַנְיָהוּ בֶן־שָׁפָן עֹמֵד
:ſua manu in *ſuum* thuribulũ *vir &* ,*eorũ facies ad* ,ſtantium *eorũ* medio in
בְּתוֹכָם עֹמְדִים לִפְנֵיהֶם וְאִישׁ מִקְטַרְתּוֹ בְּיָדוֹ
vidiſti Nonne : me ad dixit Et .*aſcendens* ſuffimenti nebulæ vapor &
12 וַעֲתַר עֲנַן־הַקְּטֹרֶת עֹלֶה׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי הֲרָאִיתָ
,*obſcuritate in facientes* , Iſrael domus ſeniores quæ , hominis fili
בֶן־אָדָם אֲשֶׁר זִקְנֵי בֵית־יִשְׂרָאֵל עֹשִׂים בַּחֹשֶׁךְ
videns Dominus Non *: dicentes* quia ? ſuæ *proſpecturæ conclavibus in vir*
אִישׁ בְּחַדְרֵי מַשְׂכִּיתוֹ כִּי אֹמְרִים אֵין יְהוָה רֹאֶה
Adhuc : me ad dixit Et .terram Dominus dereliquit , nos
13 אֹתָנוּ עָזַב יְהוָה אֶת־הָאָרֶץ׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי עוֹד
.*facientes* iſti quas magnas abominationes videbis , *converteris*
תָּשׁוּב תִּרְאֶה תּוֹעֵבוֹת גְּדֹלוֹת אֲשֶׁר־הֵמָּה עֹשִׂים׃
ad quod , Domini domus portæ oſtium ad me adduxit Et
14 וַיָּבֵא אֹתִי אֶל־פֶּתַח שַׁעַר בֵּית־יְהוָה אֲשֶׁר אֶל־
.Tammuz *flentes ſedentes* mulieres ibi ecce & : aquilonem
הַצָּפוֹנָה וְהִנֵּה־שָׁם הַנָּשִׁים יֹשְׁבוֹת מְבַכּוֹת אֶת־הַתַּמּוּז׃
videbis *converteris* Adhuc ?hominis fili vidiſti Nonne : me ad dixit Et
15 וַיֹּאמֶר אֵלַי הֲרָאִיתָ בֶן־אָדָם עוֹד תָּשׁוּב תִּרְאֶה
.his *præ magnas* abominationes
תּוֹעֵבוֹת גְּדֹלוֹת מֵאֵלֶּה׃

Verſio VULG. LAT.

3 Et emiſſa ſimilitudo man⁹ apprehendit me in cincinno capitis mei : & elevavit me ſpiritus inter terram & cœlum : & adduxit me in Jeruſalem in viſione Dei, juxta oſtium interius, quod reſpiciebat ad Aquilonem, ubi erat ſtatutum idolum zeli ad provocandam 4 æmulationem. Et ecce ibi gloria Dei Iſrael, ſecundùm viſionem quam videram in campo. 5 Et dixit ad me ; Fili hominis, leva oculos tuos ad viam Aquilonis. Et levavi oculos meos ad viam Aquilonis : & ecce ab Aquilone portæ altaris, idolum 6 zeli in ipſo introitu. Et dixit ad me ; Fili hominis, putáſne, vides tu quid iſti faciunt, abominationes magnas, quas domus Iſrael facit hic, ut procul recedam à Sanctuario meo ? & adhuc converſus videbis abo-7 minationes majores. Et introduxit me ad oſtium atrii : & vidi, & ecce foramen unum in 8 pariete. Et dixit ad me ; Fili hominis, fode parietem. Et cùm fodiſſem parietem, apparuit 9 oſtium unum. Et dixit ad me ; Ingredere, & vide abominationes peſſimas, quas iſti faciunt 10 hìc. Et ingreſſus vidi, & ecce omnis ſimilitudo reptilium & animalium, abominatio, & univerſa idola domûs Iſrael depicta erant in pariete in cir-11 cuitu per totum. Et ſeptuaginta viri de ſenioribus domûs Iſrael, & Jezonias filius Saphan ſtabat in medio eorum, ſtantium ante picturas : & unuſquiſque habebat thuribulum in manu ſua : & vapor nebulæ de 12 thure conſurgebat. Et dixit ad me; Certè vides, fili hominis, quæ ſeniores domûs Iſrael faciunt in tenebris, unuſquiſque in abſcondito cubiculi ſui : dicunt enim ; Non videt Dominus nos, 13 dereliquit Dominus terram. Et dixit ad me, Adhuc converſus videbis abominationes majores, 14 quas iſti faciunt. Et introduxit me per oſtium portæ domûs Domini, quod reſpiciebat ad Aquilonem : & ecce ibi mulieres ſedebant plangentes Adoni-15 dem. Et dixit ad me ; Certè vidiſti, fili hominis : adhuc converſus videbis abominationes majores his.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καὶ ἐξέτεινεν ὁμοίωμα χειρὸς, ϗ ἀνέλαβέ με τῆς κορυφῆς μου, ϗ ἀνέλαβέ με πνεῦμα ἀναμέσον τῆς γῆς ϗ ἀναμέσον τοῦ οὐρανοῦ, ϗ ἤγαγέ με εἰς Ἱερουσαλὴμ ἐν ὁράσει Θεοῦ ἐπὶ τὰ πρόθυρα τῆς πύλης (ζ) τῆς βλεπούσης εἰς Βοῤῥᾶν, οὗ ἦν ἡ στήλη τοῦ κτωμένου. 4 Καὶ (η) ἰδοὺ ἦν ἐκεῖ δόξα κυρίου Θεοῦ Ἰσραὴλ κατὰ τὴν ὅρασιν ἣν ἴδον ἐν τῷ πεδίῳ. 5 Καὶ εἶπε πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου, ἀνάβλεψον τοῖς ὀφθαλμοῖς σου πρὸς Βοῤῥᾶν. ϗ ἀνέβλεψα τοῖς ὀφθαλμοῖς μου πρὸς Βοῤῥᾶν, ϗ ἰδοὺ ἀπὸ Βοῤῥᾶ ἐπὶ τὴν 6 (θ) πύλην τὴν πρὸς ἀνατολάς. Καὶ εἶπε πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου, (ι) ἑώρακας τί οὗτοι ποιοῦσιν ; ἀνομίας (κ) μεγάλας ποιοῦσιν ὧδε τοῦ ἀπέχεσθαι ἀπὸ τῶν ἁγίων μου. ϗ ἔτι (˜) ὄψει ἀνομίας μείζονας. 7 Καὶ εἰσήγαγέ με ἐπὶ τὰ πρόθυρα τῆς (λ) αὐλῆς. 8 Καὶ εἶπε πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου, ὄρυ-9 ξον (μ). ϗ ὤρυξα, ϗ ἰδοὺ θύρα. Καὶ εἶπε πρός με, Εἴσελθε, ϗ ἴδε τὰς (ν) ἀνομίας, 10 ἃς οὗτοι ποιοῦσιν (ξ) ὧδε. Καὶ εἰσῆλθον, ϗ ἴδον, ϗ (ο) ἰδοὺ μάταια, βδελύγματα, καὶ (π) πάντα τὰ εἴδωλα οἴκου Ἰσραὴλ διαγεγραμμένα ἐπ᾽ (ρ) αὐτοῦ κύκλῳ. 11 Καὶ ἑβδομήκοντα ἄνδρες ἐκ τῶν πρεσβυτέρων οἴκου Ἰσραὴλ, ϗ (σ) Ἰεχονίας ὁ τοῦ Σαφὰν ἐν μέσῳ αὐτῶν εἱστήκει πρὸ προσώπου αὐτῶν, ϗ ἕκαστος θυμιατήριον αὐτοῦ εἶχεν (τ) ἐν τῇ χειρὶ, ϗ ἡ ἀτμὶς τοῦ θυμιάματος ἀνέβαινε. 12 Καὶ εἶπε πρός με, (υ) Ἑώρακας υἱὲ ἀνθρώπου, ἃ οἱ πρεσβύτεροι οἴκου Ἰσραὴλ (φ) ποιοῦσιν, ἕκαστος αὐτῶν ἐν τῷ κοιτῶνι τῷ κρυπτῷ αὐτῶν, διότι (χ) εἶπαν, Οὐχ ὁρᾷ ὁ κύριος, ἐγκαταλέλοιπε 13 κύριος τὴν γῆν. Καὶ εἶπε πρός με, Ἔτι (˜) ὄψει ἀνομίας μείζονας ἃς οὗτοι ποιοῦσι. 14 Καὶ εἰσήγαγέ με ἐπὶ τὰ πρόθυρα τῆς πύλης οἴκου κυρίου τῆς βλεπούσης πρὸς Βοῤῥᾶν· ϗ ἰδοὺ ἐκεῖ γυναῖκες καθ-15 ήμεναι θρηνοῦσαι τὸν Θαμμοὺζ. Καὶ εἶπε πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου (ψ) ἑώρακας, ϗ ἔτι ὄψει ἐπιτηδεύματα μείζονα τούτων.

Et extendit ſimilitudinem manûs, & aſſumpſit me ( ) verticis mei: & aſſumpſit me ſpiritus inter terram, & cœlum. Et adduxit me in Hieruſalem in viſione Dei ad veſtibula (f) portæ, quæ reſpicit ad Aquilonem, ubi erat ſtatua (g) Poſſidentis. Et ecce erat ibi gloria Domini Dei Iſrael ſecundùm viſionem, quam vidi in campo. Et dixit ad me; Fili hominis, reſpice oculis tuis ad Aquilonem: Et reſpexi oculis meis ad Aquilonẽ: & ecce ab Aquilone (h) ad portã Orientalẽ. Et dixit ad me; Fili hominis, (i) vidiſti quid hi faciunt? (k) iniquitates magnas (l) faciunt hic, ut abſtineant à Sanctis meis & adhuc videbis iniquitates majores. Et introduxit me ad veſtibula atrii. Et dixit ad me; Fili hominis, (k) fode. Et fodi, & ecce oſtium. Et dixit ad me; Ingredere, & vide (l) iniquitates, quas iſti faciunt hic. Et ingreſſus ſum, & vidi. Et ecce (m) vana, abominationes, & univerſa idola domûs Iſrael deſcripta ſuper eos in circuitu. Et ſeptuaginta viri de ſenioribus domûs Iſrael: & Jechonias filius Saphan in medio eorum ſtabat ante faciem eorum: & unuſquiſque thuribulum ſuum habebat in manu: & vapor incenſi aſcendebat. Et dixit ad me; Vidiſti, fili hominis, quæ ſeniores domûs Iſrael faciunt, unuſquiſque ipſorum in cubiculo abſcondito ſuo: quia dixerunt; Non videt Dominus, dereliquit Dominus terram. Et dixit ad me; Adhuc videbis iniquitates majores, quas iſti faciunt. Et introduxit me in veſtibula portæ domûs Domini, quæ reſpicit ad Aquilonem. Et ecce ibi mulieres ſedentes plangentes (o) Thammuz. Et dixit ad me; Fili hominis, vidiſti: & adhuc videbis adinventiones majores his.

MS. A. (ζ) τῆς ἐσωτέρας τῆς βλεπούσης πρὸς Βοῤῥᾶν, (η) ἰδοὺ ἐκεῖ ἦν δόξα (θ) πύλην τοῦ θυσιαστηρίου, ἡ εἰκὼν τοῦ ζήλους τύπου ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι αὐτὴν τὴν βλέπουσαν πρὸς ἀνατολάς. (ι) ἑόρακας (κ) μεγάλας ἃς ὁ οἶκος Ἰσραὴλ ποιοῦσιν (˜) ὄψῃ ἁμαρτίας (λ) αὐλῆς. καὶ ἴδον, ϗ ἰδοὺ ὀπὴ μία ἐν τῷ τοίχῳ. Καὶ εἶπε (μ) δὴ ἐν τῷ τοίχῳ. ϗ ὤρυξα, ϗ ἰδοὺ θύρα μία. Καὶ εἶπε (ν) ἀνομίας τὰς πονηρὰς, ἃς (ξ) ὧδε σήμερον. Καὶ (ο) ἰδοὺ πᾶσα ὁμοίωσις ἑρπετοῦ καὶ κτήνους, μάταια, (π) εἶδον πάντα (ρ) αὐτοῦ (σ) Ἰεζονίας (τ) ἐν χειρὶ αὐτοῦ. ϗ (υ) υἱὲ ἀνθρώπου, ἑώρακας (φ) ποιοῦσιν ὧδε, ἕκαστος (χ) εἶπαν, Ἐγκαταλέλοιπεν κύριος, οὐκ ἐφορᾷ ὁ κύριος τὴν γῆν. (˜) ὄψῃ (ψ) ἑώρακας, εἰ μικρὰ τῷ οἴκῳ Ἰούδα τοῦ ποιεῖν τὰς ἀνομίας, ἃς πεποιήκασιν αὐτοῦ ὧδε, καὶ ἔτι ὄψῃ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 ואושיט דמות יד ואחדני בסער רישי ונטלת יתי רוחא בין ארעא ובין שמיא ואעלת יתי
לירושלם בחיזו נבואה דשרת עלי מן קדם יי במעלנא דתרעא גואה דפתיח לצפונא
4 דתמן מותב צלם קנאתא דמרגזין׃ והא תמן יקר אלהא דישראל כחזוא דחזיתי
5 בבקעתא׃ ואמר לי בר אדם זקוף כען עינך לאורח צפונא וזקפית עיני לאורח צפונא
6 והא מצפונא לתרע מדבחא צלם קנאתא הדין במעלנא׃ ואמר לי בר אדם חזי את מה
דאנון עבדין תועיבן רברבן דבית ישראל עבדין כא לאתרחקא מעל מקדשי ועוד
7 תתיב תחזי תועיבן רברבן׃ ואעל יתי לתרע דרתא וחזית והא חורא חד בכותלא׃
8 9 ואמר לי בר אדם חתור כען בכותלא וחתרית בכותלא והא תרעא חד׃ ואמר לי עול
10 וחזי ית תועבתא בישתא דאנון עבדין כא׃ ועלית וחזית והא כל דמות רחיש ובעירא
11 שקוצין וכל טעותא דפלחין להן בית ישראל מצירין על כתלא סחור סחור׃ ושבעין
גברא מסבי בית ישראל ויאזניה בר שפן קאם ביניהון קימין קדמיהון וגבר מחתיתיה
12 דקטרתא בידיה ויטור ענן קטרתא סליק׃ ואמר לי החזיתא בר אדם דסבי בית ישראל
עבדין בקבלא גבר באדרון בית משכביה ארי אמרין לא גלן עובדנא קדם יי רחיק יי
13 14 ית ארעא׃ ואמר לי עוד תתוב תחזי תועיבן רברבן דאנון עבדין׃ ואעיל יתי
במעלנא דתרע בית מקדשא דיי דפתיח לצפונא והא תמן נשיא יתבן מבכן ית תמוזא׃
15 ואמר לי החזיתא בר אדם עוד תתוב תחזי תועבן רברבן מאלין׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et extendit ſimilitudinem manus, & apprehendit me capillis capitis mei, & ſuſtulit me ſpiritus inter cœlum & terram; & introduxit me in Jeruſalem in viſione prophetiæ, quæ reſidebat ſuper me à facie Domini, in introitum portæ interioris quæ aperta erat ad Aquilonem, ubi erat ſedes idoli Zeli quo provocabant. Et ecce ibi erat gloria Dei Iſrael, ſicut viſio quam vidi in campo. Et dixit mihi : Fili hominis, tolle nunc oculos tuos ad viam Aquilonis : & ſuſtuli oculos meos ad viam Aquilonis : & ecce ab Aquilone in porta altaris idolum Zeli in ipſo introitu. Et dixit ad me: Fili hominis, vide tu quid iſti faciunt ; abominationes magnas, quas domus Iſrael faciunt hìc, ut procul recedam à ſanctuario meo : & adhuc redi, & videbis abominationes majores. Et introduxit me ad oſtium atrii, & vidi, et ecce foramen unum in pariete. Et dixit mihi: Fili hominis, age fode in pariete : & fodi in pariete, & ecce oſtium unum. Et dixit ad me : Ingredere & vide abominationem peſſimam quam ipſi faciunt hic. Et ingreſſus ſum & vidi, & ecce omnis ſimilitudo reptilis & beſtiæ : abominationes, & omnia idola quibus ſerviebant domus Iſrael, depicta erant in pariete per circuitum. Et ſeptuaginta viri de ſenioribus domus Iſrael & Jezonia filio Saphan ſtante inter eos, ſtabant ante ea, & unuſquiſque habebat thuribulum incenſi in manu ſua, & columna nubis incenſi aſcendebat. Et dixit ad me : Nunquid vidiſti fili hominis quod ſenes domus Iſrael faciunt in tenebris quiſque in cubiculo domus lectuli ſui ? quia dicunt, Non ſunt revelata coram Domino opera noſtra ; projecit Dominus *terram*. Et dixit ad me : Adhuc converſus videbis abominationes majores quas ipſi faciunt. Et introduxit me per oſtium portæ domus ſanctuarii, quæ aperta erat ad Aquilonem, et ecce ibi mulieres ſedebant plangentes Thammuz. Et dixit ad me : Nunquid vidiſti fili hominis ? adhuc converſus videbis abominationes majores

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܦܫܛ ܕܡܘܬܐ ܕܐܝܕܐ܂ ܘܐܚܕܢܝ ܒܨܘܨܝܬܐ ܕܪܝܫܝ܂ ܘܫܩܠܬܢܝ ܪܘܚܐ ܒܝܢ ܐܪܥ
ܠܫܡܝܐ܂ ܘܐܝܬܝܬܢܝ ܠܐܘܪܫܠܡ ܒܚܙܘܐ ܕܐܠܗܐ܂ ܠܬܪܥܐ ܕܬܪܥܐ ܓܘܝܐ ܕܚܐܪ
ܠܓܪܒܝܐ܂ ܘܬܡܢ ܩܐܡ ܩܐܡ ܨܠܡܐ ܕܛܢܢܐ܂ * ܘܗܐ ܬܡܢ ܗܘܐ ܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ
ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܚܙܝܬ ܒܦܩܥܬܐ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܐܪܝܡ ܥܝܢܝܟ ܠܐܘܪܚܐ ܕܓܪܒܝܐ܂
ܘܗܐ ܡܢ ܓܪܒܝܗ ܕܬܪܥܐ ܡܕܢܚܝܐ܂ ܨܠܡܐ ܕܛܢܢܐ ܒܡܥܠܢܗ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ
ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܚܙܝܬ܂ ܡܢܐ ܥܒܕܝܢ܂ ܛܘܥܝܬܐ ܪܘܪܒܬܐ ܕܥܒܕܝܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܕܐܬܪܚܩ
ܡܢ ܡܩܕܫܝ܂ ܬܘܒ ܬܚܙܐ ܛܘܥܝܬܐ ܪܘܪܒܬܐ ܕܥܒܕܝܢ܂ * ܘܐܥܠܢܝ ܠܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ
ܘܚܙܝܬ ܢܩܒܐ ܚܕ ܒܫܘܪܐ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܚܦܘܪ ܒܫܘܪܐ܂ ܘܚܦܪܬ ܒܫܘܪܐ
ܘܐܫܟܚܬ ܬܪܥܐ ܚܕ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܥܘܠ܂ ܘܚܙܝ ܛܘܥܝܬܐ ܘܣܢܝܬܐ ܕܥܒܕܝܢ ܗܪܟܐ
* ܘܥܠܬ ܘܚܙܝܬ ܟܠ ܕܡܘܬܐ ܕܪܚܫܐ ܘܕܚܝܘܬܐ ܘܛܘܥܝܬܐ܂ ܘܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪܐ ܕܒܝܬ
ܐܝܣܪܝܠ܂ ܕܨܝܪܝܢ ܥܠ ܫܘܪܐ ܚܕܪ ܚܕܪ܂ * ܘܫܒܥܝܢ ܓܒܪܝܢ ܡܢ ܣܒܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ
ܘܝܙܢܝܐ ܒܪ ܫܦܢ܂ ܩܐܡ ܗܘܐ ܒܡܨܥܬܗܘܢ܂ ܘܗܢܘܢ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܩܕܡܘܗܝ܂ ܘܐܢܫ
ܦܝܪܡܗ ܒܐܝܕܗ܂ ܘܥܛܪܐ ܕܐܢܢܐ ܕܒܣܡܐ ܣܠܩ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܚܙܝܬ ܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܡܢ
ܕܥܒܕܝܢ ܣܒܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܒܚܫܘܟܐ܂ ܐܢܫ ܒܬܘܢܗ ܟܣܝܐ܂ ܘܐܡܪܝܢ܂ ܠܐ ܚܙ
ܠܢ ܡܪܝܐ܂ ܡܛܠ ܕܫܒܩܗ ܡܪܝܐ ܠܐܪܥܐ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܬܘܒ ܬܚܙܐ ܛܘܥܝܬܐ
ܪܘܪܒܬܐ ܕܥܒܕܝܢ܂ * ܘܐܥܠܢܝ ܠܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܕܠܓܪܒܝܐ܂ ܘܚܙ
ܬܡܢ ܢܫܐ ܝܬܒܢ܂ ܘܡܒܟܝܢ ܠܬܡܘܙܐ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܚܙܝܬ ܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܬܘ
ܬܚܙܐ ܛܘܥܝܬܐ ܪܘܪܒܬܐ ܡܢ ܗܠܝܢ܂

Is extendens formam manûs, apprehendit me 3
cincinnis capitis mei : & ſuſtollens me ventus terram inter ac cœlum, perduxit me Jeroſolymam in viſione Dei ad veſtibulum oſtii anguli, quod reſpicit Aquilonem, ubi erecta erat ſtatua zelotypiæ. Et ecce ibi gloriam 4
Dei Iſraelis, ſimilem ſpeciei quam videram in planitie : Dixitque mihi, Fili hominis, 5
attolle oculos tuos Aquilonem verſûs : ecce autẽ ab Aquilonari plaga oſtii Orientalis ſtatuam zelotypiæ in ejus veſtibulo erectam.
Tum dixit mihi ; Fili hominis, vidéſne quid 6
agant ? abominationes maximas quas faciunt Iſraelitæ? quòd receſſerint à ſanctuario meo ? Sed iterum converſus videbis abominationes majores quas faciunt. Cùm igitur introdu- 7
xiſſet me per oſtium atrii, vidi foramen quoddam in pariete : Dixítque mihi ; Fili homi- 8
nis, fode in pariete : cúmque fodiſſem in pariete, inveni portam quandam. Tum dixit 9
mihi ; Ingredere, & vide abominationes & flagitia quæ iſtic perpetrant. Ingreſſus vidi 10
omnigenas reptilium, ferarum, atque abominationum ſpecies, omniáque numina Iſraelis depicta ſuper parietem circunquaque,
Et ſeptuaginta viros de ſenioribus Iſraelita- 11
rum (Jazania fili' Saphanis ſtabat inter ipſos, ipſi verò ſtabant ante illum) quemque thuribulum ſuum manu tenentem, & fumum ſuffitûs aromatici aſcendentem. Tunc dixit 12
mihi ; Vidéſne fili hominis, quid faciant ſeniores Iſraelitarum in tenebris, quiſque in conclavi ſuo occulto? & dicunt ; Nequaquam videt nos Dominus, quia dereliquit Dominus terram. Rurſùm dixit mihi ; Adhuc videbis 13
abominationes majores quas faciunt : Et 14
cùm adduxiſſet me ad veſtibulum oſtii domûs Domini, quod eſt ad Aquilonem ; vidi ibi mulieres ſedentes, & Thamuzum (*Adonidem*) plangentes. Poſteà dixit mihi ; 15
Vidéſne fili hominis ? adhuc videbis abominationes hiſce majores.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فامدّ شبه يد * واخذني من هامتي واحملني روح وسط الارض ووسط السماء * وادخلني
الى ايروشليم بمنظر الله * الى مداخل الباب الداخل الناظر الى الجربياء * حيث كان
نصبه المقتني * واذا هناك كان مجد الرب اله اسرائيل * كالرويا التي نظرتها في
البقعة * وقال لي * يا ابن الانسان * انظر بعينيك الى الجربياء * فنظرت بعيني الى
الجربياء * واذا من الجربياء الى باب المذبح صورة هذه الغيرة عند ما تدخل * ناظر
نحو الشرق * وقال لي * يا ابن الانسان * ارايت ما هولاء يصنعون * هذه الآثام
العظيمة التي يصنعها بيت اسرائيل هاهنا ليبتعدوا من اقداسي * وستعاين ايضا
خطايا اعظم *

Deinde extendens ſe figura quædam ma- 3
nûs, prehendit me vertice meo : & aſſumens me ſpiritus inter terram & inter cœlum, perduxit me Jeroſolymam in viſione Dei, ad veſtibulum januæ intimæ reſpicientis Aquilonem, ubi erat ſtatua Poſſidentis. Et ecce ibi aderat glo- 4
ria Domini Dei Iſraelis, juxta viſionem quam videram in planitie. Qui 5
dixit mihi ; O fili hominis, reſpice oculis tuis Aquilonem verſùs : cúmque reſpexiſſem oculis meis Aquilonem verſùs, ecce ab Aquilone, ad januam altaris, imaginem illius zelotypiæ ſtatim ad ingreſſum tuum, reſpicientem Orientem verſùs. Dixitque mihi ; O fili 6
hominis, vidéſne quid iſti faciant ? has iniquitates maximas quas perpetrat domus Iſraelis iſtic, ut recedant à ſacris meis ? At videbis adhuc peccata majora.

* الاصحاح الرابع *

Textus quartus.

* وادخلني الى مدخل الدار ونظرت * واذا نقب واحد في الحايط * وقال لي * يا ابن الانسان
انقب في الحايط * فنقبت واذا باب واحد * وقال لي * ادخل وانظر الآثام الشريرة التي
يصنعونها هاهنا اليوم * فدخلت ونظرت * واذا كل شبه هامة وبهيمة * والرذالات الباطلة
ونظرت كل اوثان بيت اسرائيل مصور عليه من حوله * وسبعون رجلا من اشياخ بيت اسرائيل
ويازونياس بن صافان في وسطهم قايم قدام وجههم * وكل واحد معه مجمر في يده * ودخان
البخور صعد * وقال لي * يا ابن الانسان رايت ما تصنعه اشياخ بيت اسرائيل هاهنا * كل واحد
منهم في مرقد المخفي * من اجل انهم قالوا * الرب ترك * وليس ينظر الرب الارض * وقال
لي * سوف تعاين آثاما اعظم التي هم يصنعونها * وادخلني الى مداخل باب بيت الرب
الناظر الى الجربياء * واذا هناك نسوة جالسات يندبن تموز * وقال لي * يا ابن الانسان رايت
ليس صغير لبيت يهوذا ان يصنعوا الآثام التي صنعوها هم ههنا * وسوف تعاين اع
اعظم من هذه *

Itaque introduxit me ad veſtibulum 7
atrii ; vidique, & ecce foramen quoddam in pariete. Tum dixit mihi ; O fili 8
hominis, fode in pariete : cúmque fodiſſem, ecce januam quandam. Rurſus 9
dixit mihi ; Ingredere, & vide iniquitates peſſimas quas iſti committunt hîc hodiè. Quare ingreſſus vidi omnigenas 10
ſpecies inſectorum & jumentorum, atque abominationum vanarum ; & vidi omnia ſimulacra domûs Iſraelis depicta ſuper eum circumquaque : Et ſeptua- 11
ginta viros de ſenioribus domûs Iſraelis, & Jezoniam filium Saphanis inter eos ſtantem ante faciem ipſorum, & unumquenque thuribulum manu ſuâ tenentem, fumumque thuris aſcendentem. Dixitque mihi ; O fili hominis, vidéſne 12
quid iſtic faciant ſeniores domûs Iſraelis, quiſque in cubili ſuo ſecreto ? dicunt enim, Dereliquit Dominus, neq; videt Dominus terram. Præterea dixit 13
mihi ; Adhuc viſurus es majores iniquitates quas iſti committunt : Tum in- 14
troduxit me in veſtibulum januæ domûs Domini, ſpectantis Aquilonem verſùs ; & ecce ibi mulieres ſedentes lamentabantur Tamuzum. Tum dixit mihi ; 15
O fili hominis, vidiſtine ? Haud parvum crimen eſt domui Judæ perpetrare iniquitates quas hi iſtic perpetrant : at adhuc viſurus es facinora iſtis atrociora.

ostio ecce & ,interius Domini domus atrium ad me adduxit Et
16 ויבא אתי אל־חצר בית־יהוה הפנימית והנה פתח
quinque & viginti circiter altare inter &,vestibulũ inter Domini templi
היכל יהוה בין האולם ובין המזבח כעשרים וחמשה
,orientẽ ad eorũ facies &,Domini templum ad *eorum* posteriora : viri
איש אחריהם אל־היכל יהוה ופניהם קדמה
vidisti Nonne :me ad dixit Et .solis ortum ad se *incurvantes* ipsi &
17 והמה משתחויתם קדמה לשמש: ויאמר אלי הראית
abominationes *faciendo à* Jehudah domui est leve Nunquid?hominis fili
בן־אדם הנקל לבית יהודה מעשות את־התועבות
sunt cõversi &,iniquitate terram repleverunt quia : hîc fecerunt quas
אשר עשו־פה כי־מלאו את־הארץ חמס וישבו
etiã Et *? suũ nasum ad ramum mittentes* ipsi ecce &,me irritandũ ad
18 להכעיסני והנם שלחים את־הזמורה אל־אפם : וגם־
:miserebor nec ,meus oculus parcet non : *excandescentia* in faciam ego
אני אעשה בחמה לא־תחוס עיני ולא אחמול
.eos exaudiam non & ,magna voce meis auribus in clamabunt &
וקראו באזני קול גדול ולא אשמע אותם :

CAP. IX. ט

Appropinquaverunt:dicendo ,magna voce meis auribus in clamavit Et
1 ויקרא באזני קול גדול לאמר קרבו
ecce Et .sua manu in *suæ perditionis* instrumentũ *vir* & :civitatis *visitationes*
2 פקדות העיר ואיש כלי משחתו בידו : והנה
respiciens quæ ,superioris portæ via de *venientes* viri sex
ששה אנשים באים מדרך שער העליון אשר מפנה
eorũ medio in unus vir &,*sua manu in suæ dissipationis vas vir* &,aquilonẽ ad
צפונה ואיש כלי מפצו בידו ואיש־אחד בתוכם
juxta steterũt &,sunt ingressi&:ej° *renib° in* scribæ *tabella* &,lineis vestitus
לבוש בדים וקסת הספר במתניו ויבאו ויעמדו אצל
desuper elevata est Israel Dei gloria Et .æreum altare
3 מזבח הנחשת: וכבוד אלהי ישראל נעלה מעל
virum *ad* vocavit & : domus limen ad,*eum super* erat quem , Cherub
הכרוב אשר היה עליו אל מפתן הבית ויקרא אל־האיש
Dominus dixit Et.suis lumbis in scribæ *tabella* qui , lineis *indutum*
4 הלבש הבדים אשר קסת הספר במתניו : ויאמר יהוה
Tau *signabis* & , Jerusalaim mediũ per,civitatis medium per Transi :eũ ad
אלו עבר בתוך העיר בתוך ירושלם והתוית תו
cunctis super *vociferantium* & , *suspirantium* virorum frontes super
על־מצחות האנשים הנאנחים והנאנקים על כל־
:meis aurib° in dixit illis Et .ej° medio in *factis* abominationib°
5 התועבות הנעשות בתוכה : ולאלה אמר באזני
,vester oculus parcat non : percutite & ,eum post civitatem per Transite
עברו בעיר אחריו והכו על־תחוס עיניכם
,mulieres & ,*parvulum & ,virginem & ,electum* ,*Senem* .misereamini nec
6 ואל תחמלו : זקן בחור ובתולה וטף ונשים
,Tau *cum super* quem ,virum omnem ad sed : perditionem ad *occidetis*
תהרגו למשחית ועל־כל־איש אשר־עליו התו
viris *in* inceperunt Et .incipietis meo sanctuario à & , accedatis ne
אל־תגשו וממקדשי תחלו ויחלו באנשים
Contaminate : eos ad dixit Et .*domus facies ad* qui , senioribus
7 הזקנים אשר לפני הבית : ויאמר אליהם טמאו
,sunt egressi Et.Egredimini.*vulneratis* atria implete & ,domum
את־הבית ומלאו את החצרות חללים צאו ויצאו
remansi & ,eos *percutere juxta* ,fuit Et .civitatem *per* percusserunt &
8 והכו בעיר : ויהי כהכותם ונאשאר
.Deus Domine Ahah :dixique,clamavi &,*meas facies* super rui & , ego
אני ואפלה על־פני ואזעק ואמר אהה אדני יהוה
te effundendo in ,Israel residuum omne *tu corrumpens* Nunquid
המשחית אתה את כל שארית ישראל בשפכך את
? Jerusalaim super tuum furorem
חמתך על־ירושלם :

Versio VULG. LAT.

16 Et introduxit me in atrium dom° Domini interius: & ecce in ostio templi Domini inter vestibulum & altare, quasi vigintiquinque viri, dorsa habentes contra templum Domini, & facies ad Orientem : & adorabant ad ortum
17 Solis, Et dixit ad me; Certè vidisti, fili hominis : numquid leve est hoc domui Juda, ut facerent abominationes istas, quas fecerunt hîc : quia replentes terram iniquitate conversi sunt ad irritandum me ? & ecce applicant
18 ramum ad nares suas. Ergò & ego faciam in furore : non parcet ocul° meus, nec miserebor: & cùm clamaverint ad aures meas voce magnâ, non exaudiam eos.

CAP. IX.

1 ET clamavit in auribus meis voce magnâ, dicens; Appropinquaverunt visitationes urbis, & unusquisque vas interfectionis
2 habet in manu sua. Et ecce sex viri veniebant de via portæ superioris, quæ respicit ad Aquilonem : & uniuscujusque vas interitûs in manu ejus : vir quoque unus in medio eorum vestitus erat lineis, & atramentarium scriptoris ad renes ejus : & ingressi sunt, & steterunt juxta al-
3 tare æreum : Et gloria Domini Israel assumpta est de Cherub, quæ erat super eum ad limen domûs : & vocavit virum, qui indutus erat lineis, & atramentarium scriptoris habebat in lum-
4 bis suis. Et dixit Dominus ad eum; Transi per mediam civitatem in medio Jerusalem : & signa Thau super frontes virorũ gementium, & dolentium super cunctis abominationibus, quæ
5 fiunt in medio ej°. Et illis dixit, audiente me ; Transite per civitatem sequentes eum, & percutite : non parcat oculus vester,
6 neque misereamini. Senem, adolescentulum, & virginem, parvulum, & mulieres, interficite usque ad internecionem: omnem autẽ, super quem videritis Thau, ne occidatis, et à Sanctuario meo incipite. Cœperunt ergò à viris senioribus, qui erant ante faciem
7 domûs. Et dixit ad eos; Contaminate domum, & implete atria interfectis : egredimini. Et egressi sunt, & percutiebant eos
8 qui erant in civitate. Et cæde completâ, remansi ego : ruique super faciem meam, & clamans aio ; Heu, heu, heu, Domine Deus : ergóne disperdes omnes reliquias Israel, effundens furorem tuum super Jerusalem ?

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

16 Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν αὐλὴν οἴκου κυρίου τὴν ἐσωτέραν, καὶ (ω) ἐπὶ τῶν προθύρων (˜) τοῦ ναοῦ κυρίου ἀναμέσον τῶν αἰλὰμ, καὶ ἀναμέσον τοῦ θυσιαστηρίου, ὡς (α) εἴκοσι ἄνδρες τὰ ὀπίσθια αὐτῶν (β) πρὸς τὸν ναὸν τοῦ κυρίου, καὶ τὰ πρόσωπα αὐτῶν ἀπέναντι,
17 καὶ οὗτοι (γ) προσκυνοῦσι τῷ ἡλίῳ. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Ἑώρακας υἱὲ ἀνθρώπου. μὴ μικρὰ τῷ οἴκῳ (δ) Ἰούδα τοῦ ποιεῖν τὰς ἀνομίας ἃς πεποιήκασιν ὧδε; διότι ἔπλησαν τὴν γῆν ἀνομίας· (ε) καὶ ἰδοὺ αὐτοὶ ὡς
18 μυκτηρίζοντες. Καὶ ἐγὼ ποιήσω αὐτοῖς μετὰ θυμοῦ· οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός μου, οὐδὲ μὴ (ζ) ἐλεήσω.

MS. A. (ω) ἰδοὺ ἐπὶ (˜) ναοῦ (α) εἴκοσι καὶ πέντε ἄνδρες (β) δεδωκότες πρὸς (γ) προσεκύνουν κατ᾽ ἀνατολὰς τῷ ἡλίῳ. (δ) Ἰσραὴλ (ε) καὶ ἐπέστρεψαν παροργίσαι με, καὶ ἰδοὺ αὐτοὶ ἐκτείνουσιν τὸ κλῆμα ὡς (ζ) ἐλεήσω. καὶ καλέσουσιν ἐν τοῖς ὠσίν μου, καὶ οὐ μὴ εἰσακούσω αὐτῶν.

Et introduxit me in atrium domûs Domini interius : & super vestibula templi Domini (β) inter Ælam, & altare, quasi (γ) viginti viri: posteriora sua ad templum Domini, & facies suas (γ) contrà : & hi adorant Solem. 16
Et dixit ad me; Vidisti fili hominis. Nunquid parva domui Juda, ut facerent iniquitates, quas fecerunt hîc? quia effecerunt terram iniquitate? (ζ) Et ecce ipsi quasi subsannantes. Et ego faciam eis cum furore. Non parcet oculus meus, nec (η) miserebor. 17 18

ΚΕΦ. Θ'.

ΚΑὶ ἀνέκραξε εἰς τὰ ὦτά μου φωνῇ μεγάλῃ, λέγων, Ἤγγικεν ἡ ἐκδίκησις τῆς πόλεως. καὶ (α) ἕκαστος εἶχε τὰ σκεύη τῆς (β)
2 ἐξολοθρεύσεως ἐν χειρὶ αὐτοῦ. Καὶ ἰδοὺ ἓξ ἄνδρες ἤρχοντο ἀπὸ τῆς ὁδοῦ τῆς πύλης τῆς ὑψηλῆς τῆς βλεπούσης πρὸς Βορρᾶν, καὶ ἑκάστου πέλυξ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ. καὶ εἷς ἀνὴρ ἐν μέσῳ αὐτῶν ἐνδεδυκὼς ποδήρη, καὶ (γ) ζώνη σαπφείρου ἐπὶ τῆς ὀσφύος αὐτοῦ, καὶ εἰσήλθοσαν καὶ ἔστησαν (δ) ἐχόμενοι τοῦ θυσιαστηρίου
3 τοῦ χαλκοῦ. Καὶ δόξα (ε) θεοῦ τοῦ Ἰσραὴλ ἀνέβη ἀπὸ τῶν χερουβὶμ, ἣ οὖσα ἐπ᾽ αὐτῶν, εἰς τὸ αἴθριον τοῦ οἴκου. καὶ ἐκάλεσε τὸν ἄνδρα τὸν ἐνδεδυκότα τὸν ποδήρη, ὃς εἶχεν ἐπὶ
4 τῆς ὀσφύος αὐτοῦ τὴν ζώνην, Καὶ (ζ) εἶπε πρὸς αὐτὸν, Δίελθε μέσην (η) Ἱερουσαλὴμ, καὶ δὸς σημεῖον ἐπὶ τὰ μέτωπα τῶν ἀνδρῶν τῶν καταστεναζόντων καὶ τῶν κατοδυνωμένων ἐπὶ πάσαις ταῖς ἀνομίαις ταῖς
5 γινομέναις ἐν μέσῳ (θ) αὐτῶν. Καὶ τούτοις εἶπεν ἀκούοντός μου, Πορεύεσθε ὀπίσω αὐτοῦ εἰς τὴν πόλιν, καὶ κόπτετε, καὶ μὴ (ι) φείδεσθε τοῖς ὀφθαλμοῖς ὑμῶν, καὶ μὴ ἐλεήση-
6 τε. Πρεσβύτερον καὶ νεανίσκον καὶ παρθένον καὶ νήπια καὶ γυναῖκας ἀποκτείνατε εἰς ἐξάλειψιν· ἐπὶ δὲ πάντας ἐφ᾽ οὓς ἐστι τὸ σημεῖον, μὴ ἐγγίσητε· (κ) ἀπὸ τῶν ἁγίων μου ἄρξασθε. καὶ ἤρξαντο (λ) ἀπὸ τῶν ἀνδρῶν τῶν πρεσβυτέρων οἳ ἦσαν ἔσω ἐν τῷ οἴκῳ.
7 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, Μιάνατε τὸν οἶκον, καὶ (μ) πλήσατε τὰς ὁδοὺς νεκρῶν ἐκ-
8 πορευόμενοι, καὶ κόπτετε. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ κόπτειν αὐτοὺς, καὶ πίπτω ἐπὶ πρόσωπόν μου, καὶ ἀνεβόησα, καὶ εἶπα, (ν) Οἴμοι κύριε, ἐξαλείφεις σὺ τοὺς καταλοίπους τοῦ Ἰσραὴλ, ἐν τῷ (ξ) ἐκχέαι σε τὸν θυμόν σου ἐπὶ Ἱερουσαλήμ;

MS. A. (α) αὐτὸς (β) ἐξολεθρεύσεως (γ) ζώνην (δ) ἐχόμενοι τοῦ (ε) θεοῦ Ἰσραὴλ ἀνέβη ἐπὶ τῶν χερουβεὶν, (ζ) εἶπεν κύριος πρὸς αὐτὸν τὴν Ἱρουσαλὴμ, καὶ δὸς τὸ σημεῖον (θ) αὐτῆς. (ι) φείσησθε (κ) καὶ ἀπὸ (λ) ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων (μ) πληρώσατε (ν) Οἴμμοι ἀδωναι κύριε (ξ) ἐκχέαι τὸν

CAP. IX.

ET clamavit in aures meas voce magnâ, dicens; Appropinquavit ultio urbis. Et unusquisque habebat vasa exterminationis in manu sua. Et ecce sex viri veniebant de via portæ excelsæ, quæ respicit ad Aquilonem : & unusquisque (a) securis in manu ejus. Et unus vir in medio eorum indutus (b) podere : & (c) zona sapphiri super lumbum ejus : & ingressi sunt, & steterunt juxta altare æneum. Et gloria Dei Israel ascendit de (d) Cherubim, quæ erat super ipsa, in (e) sub dio domûs. Et vocavit virum indutum podere, qui habebat super lumbum suum zonam. Et dixit ad eum; Transi (f) mediam Hierusalem : & da (g) signum super frontes virorum gementium, & dolentium super cunctis iniquitatibus, quæ fiunt in medio ipsorum. Et illis dixit audiente me; Ite post eum in civitatem, & percutite : & non parcite oculis vestris, & non misereamini : Senem, & adolescentem, & virginem, & parvulos, & mulieres interficite ad internecionem : Super omnes autem, super quos est signum, ne appropinquetis. A (h) sanctis meis incipite. Et cœperunt à viris senioribus, qui erant intus in domo. Et dixit ad eos; Contaminate domum : & implete (i) vias interfectis exeuntes, & percutite. Et factum est, dum percuterent; & cado in faciem meam; & exclamavi, & dixi: Heu mihi, Domine, deles tu residuos Israel, in effundendo te furorem tuum super Hierusalem?

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 ואעיל יתי לדרת בית מקדשא דיי גויתא והא תרע היכלא דיי בין אולמא ובין מדבחא
כעשרין וחמשא גברא אחוריהון להיכלא דיי ואפיהון למדנחא והא אנון מתחבלין
17 סגדין למדנחא לשמשא : ואמר לי הא חזיתא בר אדם הזעיר לבית יהודה מלמעבד
ית תועבתא דעבדו כא ארי מלו ית ארעא חטופין ותבו לארגזא קדמי והא אנון מיתן
18 בהתא לאפיהון : ואף אנא אעביד ברגז לא יחוס מימרי ולא ארחם ויצלון קדמי בקל
רב ולא אקבל צלותהון :

ט

1 ואכלי ואנא שמע קל רב למימר אתקרבו דממנן על קרתא וגבר מן חבולי בידיה :
2 והא שתא גברין אתן מאורח תרעא עלאה דפתיח לצפונא וגבר מן בדוריה בידיה
וגברא חד ביניהון לביש לבושין ופנקס ספרא בחרציה ועלו וקמו בסטר מדבחא
3 דנחשא : ויקר אלהא דישראל אסתלק בכרובא דהוה שרי עלוהי בית קדש קודשיא
ושרא מעל לקבל סקופת ביתא וקרא לגברא דלביש לבושיא דפנקס ספרא בחרציה :
4 ואמר יי לידה עבר בגו קרתא בגו ירושלם ותרשום תוא על בית עיני גבריא דמתאנחין
5 ודמאנקין על כל תועבתא דאתעבידא בגוה : ולאלין אמר ואנא שמע עברו בקרתא
6 בתרוהי וקטולו לא תחוס עיניכון ולא תרחמון : סב עולם ובתולה וטפלא ונשיא
תקטלון לחבלא ועל כל גברא דעלוהי רושם תוא לא תקרבון ומבית מקדשי תשרון
7 ושריאו בגבריא סביא דקדם ביתא : ואמר להון סאיבו ית ביתא ומלו ית דרתא קטילין
8 פוקו ונפקו וקטלו בקרתא : והוה כקטליהון ואשתארית אנא ואשתטחית על אפי
וצוחית ואמרית קבל בעותי יי אלהים המחבל את ית כל שארא דישראל במשפכך ית
חימתך על ירושלם :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et introduxit me in atrium domus sanctuarii Dñi interius : & ecce in ostio templi Domini inter vestibulum & altare quasi viginti & quinque viri, quorum posteriora erant ad templum Domini, & facies eorum ad Orientem, & ecce ipsi corrumpebant se adorantes ad Ortum Solis. Et dixit ad me: Nonne vides fili hominis ? nunquid parum est domui Juda facere abominationes quas fecerunt hîc? quia impleverunt terram rapinis, & reversi sunt ut irritarent me, & ecce ipsi adducunt confusionem ad faciem suam. Ego quoque faciam in furore, & non parcet Verbum meum, nec miserebor: & orabunt coram me voce magna, & non suscipiam orationem eorum.

CAP. IX.

ET clamavit, audiente me, voce magna dicens: Appropinquaverunt qui constituti sunt super civitatem, & unusquisque vas dissipationis habebat in manu sua. Et ecce sex viri veniebant de via portæ superioris quæ patet ad Aquilonem, & unusquisque vas dispersionis in manu sua: & vir unus erat inter eos indutus vestimentis, & atramentarium scriptoris erat in lumbis ejus: & ingressi sunt, & steterunt in latere altaris ærei. Et gloria Dei Israel recedebat in Cherub super quo residebat in domo sancti sanctorum : & residebat superiùs contra limen domus: & vocavit virum qui indutus erat vestibus, in cujus lumbis erat atramentarium scribæ. Et dixit Dominus ad eum: Transi per medium civitatis per medium Jerusalem, & signa *signum* super frontes virorum gementium, & dolentium, super omnes abominationes quæ factæ sunt in medio ejus. Illis autem dixit audiente me; Transite per civitatem post eum, & occidite : non parcat oculus vester, nec misereamini. Senem : adolescentem, & virginem, & parvulos, & mulieres ad internecionem occidite : & ad omnem virum, super quem fuerit impressio *signi*, ne accedatis, & de domo sanctuarii mei incipite. Et cœperunt à viris senioribus qui erant ante domum. Et dixit eis : Contaminate domum, & implete atria occisis : egredimini : & egressi sunt & occiderunt in civitate. Et factum est cùm occidissent eos, & relictus sum ego, & cecidi pronus super faciem meam, & clamavi & dixi : Suscipe deprecationem meam Domine Deus : nunquid disperdes tu oẽs reliquias Israel cùm effuderis furorem tuum sup. Jerusalem?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܥܠܢܝ ܠܕܪܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܓܘܝܬܐ. ܘܚܙܝܬ ܒܬܪܥܗ ܕܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ ܒܝܬ
ܕܪܓܐ ܠܡܕܒܚܐ. ܐܝܟ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܓܒܪܝܢ ܩܝܡܝܢ. ܘܚܨܝܗܘܢ ܠܘܩܒܠ ܗܝܟܠܐ
ܕܡܪܝܐ. ܘܐܦܝܗܘܢ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܡܩܕܡܝܢ ܘܣܓܕܝܢ ܠܫܡܫܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܚܙܝܬ
ܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܕܩܠܝܠܐ ܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܠܡܥܒܕ ܛܢܦܘܬܐ ܗܕܐ ܕܥܒܕܝܢ ܗܪܟܐ.
ܕܡܠܘܗ ܠܐܪܥܐ ܥܘܠܐ. ܘܗܦܟܘ ܠܡܪܓܙܘܬܝ. * ܘܗܢܘܢ ܡܫܩܠܝܢ ܚܘܡܬܐ ܒܢܚܝܪܝܗܘܢ. ܐܦ
ܐܢܐ ܐܥܒܕ ܒܚܡܬܐ. ܘܠܐ ܬܚܘܣ ܥܝܢܝ ܘܠܐ ܐܪܚܡ. ܘܢܩܥܘܢ ܒܐܕܢܝ ܒܩܠܐ ܪܒܐ. ܘܠܐ ܐܫܡܥ
ܐܢܘܢ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܛ * * ܘܩܪܐ ܒܐܕܢܝ ܒܩܠܐ ܪܒܐ ܘܐܡܪ
ܩܪܒܘ ܦܘܪܥܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܘܐܢܫ ܡܐܢܐ ܕܦܘܪܥܢܗ ܒܐܝܕܗ. * ܘܚܙܝܬ
ܫܬܐ ܓܒܪܝܢ ܕܐܬܝܢ ܡܢ ܐܘܪܚܐ ܕܬܪܥܐ ܥܠܝܐ ܕܚܙܐ ܠܓܪܒܝܐ. ܘܐܢܫ ܡܐܢܐ ܕܦܘܪܥܢܗ ܒܐܝܕܗ.
ܘܓܒܪܐ ܚܕ ܒܡܨܥܬܗܘܢ ܠܒܝܫ ܒܘܨܐ. ܘܐܣܝܪ ܒܣܦܝܠܐ ܚܨܘܗܝ. ܘܐܬܘ ܘܩܡܘ ܠ
ܓܢܒ ܡܕܒܚܐ ܕܢܚܫܐ. * ܘܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܣܠܩ ܡܢ ܟܪܘܒܐ ܕܗܘܐ ܥܠܘܗܝ ܥܠ
ܙܘܝܬܐ ܕܒܝܬܐ. ܘܩܪܐ ܠܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ ܒܘܨܐ. ܘܐܣܝܪ ܒܣܦܝܠܐ ܚܨܘܗܝ.
* ܘܐܡܪ ܠܗ ܡܪܝܐ. ܥܒܪ ܒܓܘ ܡܕܝܢܬܐ ܒܓܘ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܪܫܘܡ ܪܘܫܡܐ ܥܠ
ܒܝܬ ܥܝܢܝܗܘܢ ܕܓܒܪܐ ܕܡܬܬܢܚܝܢ ܘܡܬܟܪܝܢ ܥܠ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܐ ܘܥܘܠܐ
ܕܡܬܥܒܕܝܢ ܒܓܘܗ. * ܘܠܗܠܝܢ ܕܥܡܗ ܐܢܘܢ. ܐܡܪ ܠܗܘܢ ܒܫܡܥܝ. ܥܒܪܘ ܒܓܘ
ܡܕܝܢܬܐ ܒܬܪܝ. ܘܩܛܘܠܘ. ܘܠܐ ܬܚܘܣ ܥܝܢܝܟܘܢ ܘܠܐ ܬܪܚܡܘܢ. * ܘܠܣܒܐ ܘܠܥܠܝܡܐ
ܘܠܒܬܘܠܬܐ ܘܠܛܠܝܐ ܘܠܢܫܐ ܩܛܘܠܘ ܠܚܒܠܐ. ܘܠܟܠ ܕܐܝܬ ܥܠܘܗܝ ܪܘܫܡܐ
ܠܐ ܬܬܩܪܒܘܢ. ܘܡܢ ܡܩܕܫܝ ܫܪܘ. ܘܫܪܝܘ ܡܢ ܓܒܪܐ ܩܫܝܫܐ ܕܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܩܕܡ ܒܝܬܐ.
* ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܛܡܐܘܗܝ ܠܒܝܬܐ. ܘܡܠܘ ܕܪܬܐ ܩܛܝܠܐ. ܦܘܩܘ ܩܛܘܠܘ ܒܡܕܝܢܬܐ.
* ܘܟܕ ܩܛܠܘ ܐܢܘܢ. ܐܫܬܚܪܬ ܐܢܐ. ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ. ܘܩܥܝܬ ܒܩܠܐ ܪܒܐ ܘܐܡܪܬ. ܐܘܗ
ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܡܚܒܠ ܐܢܬ ܠܫܪܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܟܕ ܐܫܕ ܐܢܬ ܚܡܬܟ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ.

Et cùm introduxiſſet me in atrium domûs 16
Domini interius, vidi in oſtio templi Domini
inter gradus & altare, circiter viginti quinque
viros ſtantes ; qui dorſis contra templum
Domini, faciebus autem ad Orientem *verſis*,
ſummo manè ſolem adorabant. Et dixit 17
mihi ; Vidéſne fili hominis ? num levis eſt
apud Judæos abominatio iſta quam hîc perpetrant
? impleverunt enim terram ſcelere,
ſeſéque converterunt ad irritandum me.
Ipſi quidem naribus anhelant, ego quoque 18
iracundè agam, & non parcet oculus meus,
neque miſerebor ; clamabunt in auribus meis
elatâ voce, & non exaudiam eos.

CAP. IX.

Deinde clamavit audiente me altâ voce, 1
dixitque ; Adeſte ultores urbis, quiſque inſtrumenta
ultionis ſuæ manu *tenens*. Tum 2
vidi ſex viros venientes de via portæ ſuperioris
quæ ſpectat Aquilonem, quemque inſtrumenta
ultionis ſuæ manu *portantem* ; inter
quos vir unus erat indutus byſſo, zonâ ſapphirinâ
lumbos præcinctus : hi venientes ſteterunt
ad latus altaris ænei. Gloria autem 3
Dei Iſraelis aſcendens è Cherubino qui ſtabat
ſuper angulo domûs, vocavit illum virum
qui byſſo indutus erat, & zonâ ſapphirinâ
lumbos præcinctus : Et dixit ad eum Do- 4
minus ; Tranſi per urbem, per Jeroſolymam,
& imprime notam ſuper frontes virorum qui
ſuſpirant & excruciantur ob tot abominationes
& flagitia quæ perpetrantur in ea. Illis 5
ergò qui ſecum erant, dixit me præſente ;
Tranſite per urbem poſt me, & interficite : ne
clementiâ moveantur oculi veſtri, neque miſereamini:
Senes & juvenes, ac virgines, pue- 6
ros fœmináſque ad internecionem trucidate:
at ullum qui notam ſuper ſe habuerit, ne tangitote:
à ſanctuario meo incipite. Cùm itaque
cœpiſſet à viris illis ſeniorib⁹ qui ſtabant ante
domū, Dixit ad eos, Prophanate domum, & 7
atria confoſſis implete : egredimini, trucidate
in urbe. Et cùm trucidaſſent illos, & ſuperſtes 8
ego manſiſſē : procidi in faciē meam, & elatâ
voce exclamans, dixi ; Ah dominorū Dn̄e, an
extincturus es omnes qui reliqui manſerunt ex
Iſraele, & effuſurus furorē tuū ſuper Jeruſalē?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وادخلني الي دار بيت الرب الداخلة * واذا على مداخل هيكل الرب * بين الهيكل وبين
المذبح * نحو من خمسة وعشرين رجلا * اعطوا ظهورهم لهيكل الرب ووجوههم قبالته * وهم
يسجدون نحو المشارق للشمس * وقال لي * رايت يا ابن الناس * ليس صغير لبيت اسرائيل ان
يصنعوا الاثام التي صنعوها هاهنا * من اجل انهم ملوا الارض اثما * ورجعوا ليغضبوني * وها هم
يمدون الغصن مثل مستهزيين * وانا ساصنع لهم بغضبي * ولا تشفق عيني ولا ارحم * ويدعون
في اذني ولا استجيب لهم * * الفصل التاسع *
* وصرخ في اذني بصوت عظيم قايلا * اقترب انتقام المدينة * وهو كان بيده اواني الاستيصال
* واذا ستة رجال اقبلوا من طريق الباب المرتفع الناظر الي الجربيا * وقدوم كل واحد بيده
ورجل واحد في وسطهم لابس مدرعة * ومنطقة من فيروزج على حقوه * ودخلوا ووقفوا في
جانب المذبح النحاس * ومجد اله اسرائيل صعد على الشاروبيم الذي كان عليها في عتبة
الباب * ودعا الرجل اللابس المدرعة * الذي كان على حقوه المنطقة * وقال له الرب * جز في
وسط ايروسليم * واعط علامة على جباه الرجال الذين يتنهدون ويتوجعون على جميع الاثام
الصانعين في وسطها * وقال لهاولاء اذ انا اسمع * اذهبوا خلفي الي المدينة * واقطعوا ولا تشفق
عيونكم * ولا ترحموا شيخا ولا شابا ولا عذري * والاطفال والنسوان اقتلوهم للهلاك * انظروا
جميع الذين عليهم هذه السمة لا تقربوهم * وابتدوا من اقداسي * فابتدوا من المشايخ
الذين كانوا داخلا في البيت * وقال لهم * نجسوا البيت * واملاوا الطريق امواتا * واخرجوا
واقطعوا * وكان فيما هم يقطعون * سقطت على وجهي وصرخت وقلت الويل لي يا ادوناي
الرب * مهلك انت بقايا اسرائيل عند ما تفيض غضبك على ايروسليم *

Introduxitque me in atrium domûs Domini intimum, & ecce ſuper veſtibulum 16
templi Domini inter templum & altare,
quaſi vigintiquinque viri terga dederant
templo Domini, & faciebus contra illud
verſis *ſolem adorabant verſus Orientem.*
Et dixit mihi ; Vidiſtine fili hominum ? 17
nequaquam leve flagitium *eſt domui Iſraelis*
perpetrare iniquitates quas hîc
perpetrant : nam repleverunt terram iniquitate,
& averſi ſunt ut me ad iram
provocarent. Et ecce ipſi ramum exten- 18
dunt ut irriſores. At ego agam cum eis in
furore meo, & non parcet oculus meus,
neque miſerebor : clamabunt in auribus
meis, & non exaudiam eos.

CAP. IX.

Et clamavit in auribus meis voce magnâ, 1
dicens ; Appropinquavit ultio urbis:
is autem habebat manu ſuâ inſtrumenta
excidii. Et ecce ſex viri venerunt de via 2
portæ ſupremæ ſpectantis Aquilonem, aſciam
quiſque manu ſuâ tenens : & his inter
vir unus erat indutus tunicâ laneâ, &
balteo ſapphirino præcinctus lumbū : hi ingredientes,
ſteterunt ad latus altaris ænei.
Et gloria Dei Iſraelis aſcendit ſuper Che- 3
rubinos ſuper quos erat in limine portæ ;
vocatoque viro illo tunicâ laneâ induto,
qui lumbum præcinctus erat balteo,
Dixit ei Dominus ; Tranſi per mediam 4
Jeroſolymam, ſignumque ponito ſuper
frontes virorum illorum qui ſuſpirant &
dolent propter omnes iniquitates quæ fiunt
in medio ipſius. Deinde dixit illis, me 5
audiente ; Ite poſt me in urbem, & excindite ;
ne parcatis in oculis veſtris,
Neque miſereamini ſenis, aut juvenis, aut 6
virginis : parvulos & mulieres occidite ad
internecionem : (Cavete omnes quibus ineſt
hæc nota, ne tangatis eos) incipite autem
à mihi ſacris : Cœperunt ergò ab iis
ſenioribus qui intus erant in domo. Et 7
dixit eis, Polluite domum, & implete
viam mortuis : exite, & excindite. Dum 8
ii excinderent, procidi in faciem meam, &
exclamavi, ac dixi ; Heu mihi O Adonai
Domine, deleres tu reſiduos Iſraelis
effundendo furorem tuum ſuper Jeruſalem?

יחזקאל: י

vehementer in magna Jehudah & Israel domus Iniquitas :me ad dixit Et
9 ויאמר אלי עון בית־ישראל ויהודה גדול במאד
Nam .perverso est plena civitas & ,sanguinibus terra est repleta & ,valde
מאד ותמלא הארץ דמים והעיר מלאה מטה כי
.videns Dominus non & ,terram Dominus Dereliquit : dixerunt
אמרו עזב יהוה את־הארץ ואין יהוה ראה:
eorū Viam .miserebor neque ,meus oculus parcet Non .ego etiam Et
10 וגם אני לא־תחוס עיני ולא אחמל דרכם
tabellam qui ,lineis indutus vir ecce Et .dedi eorū caput in
11 בראשם נתתי: והנה האיש לבש הבדים אשר הקסת
.mihi præcepisti quæ juxta Feci : dicendo verbum reddens ,suis lumbis in
במתניו משיב דבר לאמר עשיתי כאשר צויתני:

CAP. X. י

Cherubim caput super quæ ,expansionem ad ecce & ,vidi Et
1 ואראה והנה אל־הרקיע אשר על־ראש הכרבים
.eos super apparuit ,solii similitudinis aspect⁹ veluti sapphiri lapis tāquā
כאבן ספיר כמראה דמות כסא נראה עליהם:
inter ad Ingredere :dixit & ,lineis indutum virum ad dixit Et
2 ויאמר אל־האיש לבש הבדים ויאמר בא אל־בינות
inter de ignis prunis tuas volas imple & ,Cherub subter ad rotam
לגלגל אל־תחת לכרוב ומלא חפניך גחלי־אש מבינות
.meos oculos ad est ingressus & : civitatem super sparge & ,Cherubim
לכרבים וזרק על־העיר ויבא לעיני:
nubes & ,virum illum intrando in,domus dextera à stantes Cherubim Et
3 והכרבים עמדים מימין לבית בבאו האיש והענן
desuper Domini gloria se extulit Et .interius atrium implevit
4 מלא את־החצר הפנימית: וירם כבוד־יהוה מעל
atrium & ,nube domus est repleta &;domus limen ad Cherub
הכרוב על מפתן הבית וימלא הבית את־הענן והחצר
Cherubim alarum vox Et .Domini gloriæ splendore est repletum
5 מלאה את־נגה כבוד יהוה: וקול כנפי הכרבים
.ipso loquendo in Sadai Dei vox tanquā ,exterius atrium ad usque est audita
נשמע עד־החצר החיצנה כקול אל־שדי בדברו:
ignem Tolle : dicendo ,lineis induto viro ipso præcipiendo in ,fuit Et
6 ויהי בצותו את־האיש לבש־הבדים לאמר קח אש
juxta stetit &,est ingressus & : Cherubim inter de rotam inter de
מבינות לגלגל מבינות לכרבים ויבא ויעמד אצל
ignem ad ,Cherubim inter de suā manum Cherub misit Et .rotam
7 האופן: וישלח הכרוב את־ידו מבינות לכרבים אל־האש
; lineis induti volis in dedit & ,tulit & ,Cherubim inter qui
אשר בינות הכרבים וישא ויתן אל־חפני לבש הבדים
hominis manus exemplar Cherubim in apparuit Et .est egressus &,accepit &
8 ויקח ויצא: וירא לכרובים תבנית יד־אדם
juxta rotæ quatuor ecce & ,vidi Et .eorum alas subtus
9 תחת כנפיהם: ואראה והנה ארבעה אופנים אצל
juxta una rota & ,unum Cherub juxta una Rota .Cherubim
הכרבים אופן אחד אצל הכרוב אחד ואופן אחד אצל
.Tarsis lapidis color tanquam rotarum aspectus & : unum Cherub
הכרוב אחד ומראה האופנים כעין אבן תרשיש:
rota fuisset si ac ; ipsis quatuor una similitudo earū aspectus Et
10 ומראיהם דמות אחד לארבעתם כאשר יהיה האופן
,ambulabāt suis quatuor in eis eundo In .rotæ medio in
11 בתוך האופן: בלכתם אל־ארבעת רבעיהם ילכו
caput se vertebat quem locum sed ,ipsis eundo in circuibant non
לא יסבו בלכתם כי המקום אשר־יפנה הראש
.eis eundo in ,circuibant nec ,ibant illud post
אחריו ילכו לא יסבו בלכתם:

Versio VULG. LAT.

9 Et dixit ad me ; Iniquitas domûs Israel & Juda, magna est nimis valdè, & repleta est terra sanguinibus, & civitas repleta est aversione : dixerunt enim; Dereliquit Dominus terram, & Dominus
10 non videt. Igitur & meus non parcet oculus, neque miserebor: viam eorum super caput eorum
11 reddam. Et ecce vir, qui erat indutus lineis, qui habebat atramentarium in dorso suo, respondit verbum, dicens; Feci sicut præcepisti mihi.

CAP. X.

1 ET vidi, et ecce in firmamento, quod erat super caput Cherubim, quasi lapis sapphirus, quasi species similitudinis solii, apparuit
2 super ea. Et dixit ad virum, qui indutus erat lineis, & ait ; Ingredere in medio rotarum, quæ sunt subt⁹ Cherubim, & imple manum tuam prunis ignis, quæ sunt inter Cherubim, & effunde super civitatem : Ingressúsque est in con-
3 spectu meo : Cherubim autem stabant à dextris domûs cùm ingrederetur vir, & nubes imple-
4 vit atrium interius. Et elevata est gloria Domini desup Cherub ad limen domûs : & repleta est domus nube, & atrium repletum
5 est splendore gloriæ Domini. Et sonitus alarum Cherubim audiebatur usque ad atrium exterius, quasi vox Dei omnipotentis lo-
6 quentis. Cúmque præcepisset viro, qui indutus erat lineis, dicens ; Sume ignem de medio rotarum, quæ sunt inter Cherubim: ingressus ille stetit juxta rotam.
7 Et extendit Cherub manum de medio Cherubim, ad ignem, qui erat inter Cherubim: & sumpsit, & dedit in manus ejus, qui indutus erat lineis : qui accipiens e-
8 gressus est. Et apparuit in Cherubim similitudo manûs hominis
9 subtus pennas eorum. Et vidi, & ecce quatuor rotæ juxta Cherubim: rota una juxta Cherub unum, & rota alia juxta Cherub unum: species autem rotarum erat
10 quasi visio lapidis chrysolithi. Et aspectus earum similitudo una quatuor : quasi sit rota in medio
11 rotæ. Cúmque ambularent, in quatuor partes gradiebantur : & non revertebantur ambulantes ; sed ad locum, ad quem ire declinabat quæ prima erat, sequebantur & cæteræ, nec convertebantur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

9 Καὶ εἶπε πρός με, Ἀδικία τοῦ οἴκου Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα μεμεγάλυνται σφόδρα σφόδρα, ὅτι ἐπλήσθη ἡ γῆ λαῶν πολλῶν, καὶ ἡ πόλις ἐπλήσθη ἀδικίας καὶ ἀκαθαρσίας, ὅτι εἴπαν, (ο) Ἐγκατέλιπε κύριος τὴν (π)
10 γῆν, οὐκ ἐφορᾷ ὁ κύριος. Καὶ οὐ φείσεταί μου ὁ ὀφθαλμὸς, οὐδὲ μὴ ἐλεήσω, τὰς ὁδοὺς
11 αὐτῶν εἰς κεφαλὰς αὐτῶν δέδωκα. Καὶ ἰδοὺ ὁ ἀνὴρ ὁ ἐνδεδυκὼς τὸν ποδήρη, καὶ (ρ) ἐζωσμένος τῇ ζώνῃ τὴν ὀσφὺν αὐτοῦ, καὶ ἀπεκρίνατο (σ) λέγων, Πεποίηκα καθὼς ἐνετείλω μοι.

MS. A. (ο) Ἐγκαταλέλοιπεν ὁ κύριος (π) γῆν. καὶ ἐγὼ εἶπα, Ἐγώ εἰμι, Οὐ φείσεται ὁ ὀφθαλμός μου, οὐδὲ μὴ (ρ) περιεζωσμένος (σ) λόγον, λέγων, Πεποίηκα καθὰ

Et dixit ad me, Iniquitas domus Israel & Juda magnificata est valde valde: quia repleta est terra (l) populis multis: & civitas repleta est iniquitate, & immunditia: quia dixerunt; Dereliquit Dominus terram: non inspicit Dominus. Et non parcet oculus meus, neque miserebor: vias eorum super capita eorum dedi. Et ecce vir, qui indutus erat podere, & accinctus zona lumbum suum: & respondit, dicens; Feci, sicut mandasti mihi. 9 10 11

ΚΕΦ. ι'.

1 ΚΑὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ ἐπάνω τοῦ στερεώματος τοῦ ὑπὲρ κεφαλῆς τῶν χερουβὶμ, ὡς λίθος σαπφείρου ὁμοίωμα θρόνου ἐπ' (α) αὐτῶν.
2 Καὶ εἶπε πρὸς τὸν ἄνδρα τὸν ἐνδεδυκότα τὴν στολὴν, Εἴσελθε εἰς τὸ μέσον τῶν τροχῶν, τῶν ὑποκάτω τῶν χερουβὶμ, καὶ πλῆσον τὰς (β) δράκας σου ἀνθράκων πυρὸς ἐκ μέσου τῶν (˝) χερουβὶμ, καὶ διασκόρπισον ἐπὶ τὴν
3 πόλιν. καὶ εἰσῆλθεν ἐνώπιον ἐμοῦ. Καὶ τὰ (˝) χερουβὶμ εἱστήκει ἐκ δεξιῶν τοῦ οἴκου ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι τὸν ἄνδρα, καὶ ἡ νεφέλη ἔ-
4 πλησε τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν. Καὶ ἀπῆρεν ἡ δόξα κυρίου ἀπὸ τῶν χερουβὶμ εἰς τὸ αἴθριον τοῦ οἴκου, καὶ ἔπλησε τὸν οἶκον ἡ νεφέλη· καὶ ἡ αὐλὴ ἐπλήσθη τοῦ φέγγους
5 τῆς δόξης κυρίου. Καὶ φωνὴ τῶν πτερύγων τῶν (˝) χερουβὶμ ἠκούετο ἕως τῆς αὐλῆς τῆς ἐξωτέρας, ὡς φωνὴ θεοῦ Σαδδαὶ λαλοῦν-
6 τος. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἐντέλλεσθαι αὐτὸν τῷ ἀνδρὶ τῷ ἐνδεδυκότι τὴν στολὴν τὴν ἁγίαν, λέγων, Λάβε πῦρ ἐκ μέσου τῶν τροχῶν ἐκ μέσου (γ) τῶν χερουβὶμ, καὶ εἰσ-
7 ῆλθε καὶ ἔστη ἐχόμενος τῶν τροχῶν. Καὶ (δ) ἐξέτεινεν τὴν χεῖρα αὐτοῦ εἰς μέσον τοῦ πυρὸς τοῦ ὄντος (ε) εἰς μέσον τῶν χερουβὶμ, καὶ ἔλαβε, καὶ ἔδωκεν εἰς τὰς χεῖρας τοῦ ἐνδεδυκότος τὴν στολὴν τὴν ἁγίαν, καὶ ἔ-
8 λαβε καὶ ἐξῆλθε. Καὶ (ζ) ἴδον τὰ χερουβὶμ ὁμοίωμα χειρῶν ἀνθρώπων ὑποκά-
9 τωθεν τῶν πτερύγων αὐτῶν. Καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ τροχοὶ τέσσαρες εἱστήκεισαν ἐχόμενοι τῶν (˝) χερουβὶμ· τροχὸς εἷς ἐχόμενος (η) χερουβ ἑνός. καὶ ἡ ὄψις τῶν τροχῶν, ὡς ὄψις
10 λίθου ἄνθρακος. Καὶ (θ) ὄψις αὐτῶν ὁμοίωμα ἓν τοῖς τέσσαρσιν, ὃν τρόπον ὅ-
11 ταν ᾖ τροχὸς ἐν μέσῳ τροχοῦ. Ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτὰ, εἰς τὰ (˝) τέσσαρα μέρη αὐτῶν ἐπορεύοντο, οὐκ ἐπέστρεφον ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτά· ὅτι εἰς ὃν ἂν τόπον ἐπέβλεψεν ἡ ἀρχὴ ἡ μία, ἐπορεύοντο, καὶ οὐκ ἐπέστρεφον ἐν τῷ πορεύεσθαι αὐτά·

MS. A. (α) αὐτῷ. (β) χεῖράς σου (˝) χερουβεὶν, (˝) χερουβεὶν (˝) χερουβεὶν (γ) τροχῶν τῶν χερουβεὶμ, (δ) ἐξέτεινεν ὁ χερουβ τὴν (ε) ἐκ μέσου τῶν χερουβεὶν, (ζ) ἰδοὺ τὰ χερουβεὶν (˝) χερουβεὶν (η) τοῦ χερουβ τοῦ ἑνὸς, καὶ τροχ ἐχόμενος τοῦ χερουβ. ἡ ὄψις (θ) ἡ ὄψις (˝) τέσσαρα

CAP. X.

ET vidi: & ecce super firmamentum, quod supra caput ipsorum Cherubim, quasi lapis sapphiri similitudo throni super ea. Et dixit ad virum indutum stola; Ingredere in medio rotarum, quæ sunt subtus Cherubim: & imple pugnos tuos carbonibus ignis de medio Cherubim, & disperge super civitatem. Ingressusque est in conspectu meo: Et Cherubim stabant à dextris domus, cùm ingrederetur vir. Et nubes implevit atrium interius. Et elevata est gloria Domini ab ipsis Cherubim in subdio domus. Et implevit domum nubes: & atrium repletum est splendore gloriæ Domini. Et vox alarum Cherubim audiebatur usque ad atrium exterius, quasi (a) vox Dei Saddai loquentis. Et factū est in mandando ipsū viro induto stolâ sanctâ, dicens: Sume ignem de medio rotarum, de medio Cherubim; & intravit, & stetit juxta rotas. Et (b) extendit manum suam in medio ignis, qui erat inter Cherubim: & sumpsit, & dedit in manus ejus qui indutus erat stolâ sanctâ. Et accepit, & egressus est. Et vidi ipsa Cherubim similitudinem manûs hominum subtus alas eorum. Et vidi: & ecce rotæ quatuor stabant juxta Cherubim: rota una juxta Cherub (c) unum. Et aspectus rotarum, quasi aspectus lapidis carbunculi: Et aspectus earum, similitudo una ipsis quatuor quemadmodum cùm fuerit rota in medio rotæ. In eundo ipsa in quatuor suas partes ibant: non revertebantur in eundo ipsa: quoniam in quemcunque locum respiciebat principium unum: (d) ibant, & non revertebantur in eundo ipsa. 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

9 ואמר לי חובי בית ישראל ויהודה תקיפו בה לחדא ואתמליאת ארעא חיבי קטול
וקרתא אתמליאת אסטיות דין ארי אמרו רחיק יי ית יתבי ארעא ולית דאגליא קדם
10 יי: ואף אנא לא אחוס מימרי ולא ארחים פורענות אורחתהון ברישיהון יהבית:
11 והא גברא דלביש לבושא דפנקסא בחרציה מתיב פתגמא למימר עבדית כמא
דפקדתני:

י

1 וחזית והא ברקיעא די על ריש כרוביא כאבן טבא כחיזו דמות כורסיא אתחזי
2 עליהון: ואמר לגברא דלביש לבושיא ואמר עול לביני גלגליא לתחות כרובא
3 ומלי חופנך גומרין דאשא מביני כרוביא וזרוק על קרתא ועל ואנא חזי: וכרוביא
4 קימין מדרום לביתא במעל גברא וענן אמטתא אתמליאת ית דרתא גויתא: ואסתלק
יקרא דיי בכרובא דהוה שרי עלוהי ושרא מעיל לקביל סקופת ביתא ואתמליאת
5 ביתא ית ענן אמטתא ודרתא אתמליאת ית זהור יקרא דיי: וקל כנפי כרוביא אשתמע
6 עד דרתא בריתא כקלא מן קדם שדי במלולא: והוה בפקדותיה ית גברא דלביש
לבושיא למימר סב אשתא מביני גלגליא מביני כרוביא ועל וקם בסטר גלגלא:
7 8 ואושיט כרובא ית ידיה מביני כרוביא לאשתא די ביני כרוביא ונסיב ויהב לחפני
9 דלביש לבושיא ונסיב ונפק: ואתחזי לכרוביא דמות יד אנשא תחות גדפיהון: וחזית
והא ארבעא גלגליא בסטר כרוביא גלגל חד בסטר כרובא חד וגלגל חד בסטר
10 כרובא חד וחיזו גלגליא כעין אבן טבא: וחזויהון דמות חד לארבעתהון כמא דהוי
11 גלגל בגו גלגל: במיזלהון על ארבעת סטריהון אזלין לא מתחזרין במיזלהון ארי
לאתרא דמתפני קדמאה בתרוהי אזלין ולא מתחזרין במיזלהון:

PARAPH CHALD. Versio Latina.

Et dixit ad me: Peccata domus Israel & Juda prævaluerunt in ea valde, impleta est terra homicidiis, & civitas plena est perversione judicii. Quia dixerunt, Projecit Dominus habitatores terræ, & non est hoc revelatum coram Domino. Et ego quoque non miserebor, nec parcet Verbum meum: ultionem viarum suarum in caput eorum dabo. Et ecce vir qui indutus erat vestimentis, in cujus lumbis erat atramentarium, respondit verbum dicens : Feci sicut præcepisti mihi.

CAP. X.

ET vidi et ecce in firmamento quod erat super caput Cherubim, velut lapis pretiosus, & quasi species similitudinis throni apparuit super illa. Et dixit viro qui indutus erat vestimentis, & ait: Ingredere inter rotas quæ sunt subtus Cherub, & volas tuas imple carbonibus ignis ex medio Cherubim, & sparge super civitatem : & ingressus est vidente me. Et Cherubim stabant ad Australem partem domus cùm ingrederetur vir , & nubes caliginosa implevit atrium interius. Et elevata est gloria Domini in Cherub super quo residebat, & resedit desuper ex adverso liminis domus, & impleta est domus nube caliginosa, & atriū impletum est splendore gloriæ Domini. Et vox alarum Cherubim audita est usque ad atrium exterius, sicut vox à facie omnipotentis cùm loquitur. Et factum est cùm præcepisset viro qui indutus erat vestimentis, dicens: Tolle ignem de medio rotarum & de medio Cherubim : & ingressus est & stetit juxta rotam. Et extendit Cherub manum suam de medio Cherubim ad ignem qui erat inter Cherubim, & tulit & dedit in pugillos ejus qui indutus erat vestimentis : qui cùm accepisset egressus est. Et apparuit in Cherubim similitudo manus hominis subtus pennas eorum. Et vidi, & ecce quatuor rotæ juxta Cherubim: rota una erat in latere Cherub unius, & rota altera erat in latere Cherub alterius, & aspectus rotarum quasi species lapidis pretiosi. Et aspectus earum similitudo una ipsis quatuor sicut est rota in medio rotæ. Cùm ambularent, in quatuor latera sua gradiebantur, non revertebantur cùm ambularent, quoniam ad locum ad quem declinabat primus, post eum ibant, & non revertebantur cùm ambularent,

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܠܝ. ܥܘܠܗ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܘܕܝܗܘܕܐ ܣܓܝ ܛܒ. ܘܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܐ ܕܡܐ. ܘܡܕܝܢܬܐ
ܐܬܡܠܝܬ ܢܟܠܐ. ܘܐܡܪܘ: ܫܒܩܗ ܡܪܝܐ ܠܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܚܙܐ ܠܢ ܡܪܝܐ. * ܘܐܦ ܐܢܐ ܠܐ ܐܚܘܣ
ܥܠܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܪܚܡ. ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܒܪܝܫܗܘܢ ܐܦܪܘܥ. * ܘܗܐ ܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ ܒܘܨܐ
ܦܢܝ ܦܬܓܡܐ ܘܐܡܪ. ܥܒܕܬ ܐܝܟ ܕܦܩܕܬܢܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *

* ܘܚܙܝܬ ܛܠܠܐ ܕܥܠܐ ܡܢ ܪܝܫ ܟܪܘܒܐ. ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܟܐܦܐ ܕܫܦܝܠܐ. ܘܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܕܡܘܬ
ܕܟܘܪܣܝܐ ܥܠܝܐ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܩܪܐ ܠܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ ܒܘܨܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܥܘܠ ܠܒܝܢ
ܓܝܓܠܐ ܠܬܚܬܝܗ ܟܪܘܒܐ. ܘܡܠܝ ܚܘܦܢܝܟ ܓܘܡܪܐ ܕܢܘܪܐ ܡܢ ܒܝܢܝ ܟܪܘܒܐ. ܘܙܪܘܩ ܥܠ
ܡܕܝܢܬܐ. ܘܥܠ ܠܥܝܢܝ. * ܘܟܪܘܒܐ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܡܢ ܝܡܝܢܗ ܕܒܝܬܐ. ܟܕ ܥܐܠ ܓܒ
ܗܘ. ܘܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܐܬܡܠܝܬ ܗܘܬ ܥܢܢܐ. * ܘܐܬܬܪܝܡ ܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܡܢ ܟܪܘ
ܕܥܠ ܡܢ ܙܘܝܬܐ ܕܒܝܬܐ. ܘܐܬܡܠܝ ܒܝܬܐ ܥܢܢܐ. ܘܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܐܬܡܠܝܬ ܗܘܬ
ܒܨܡܚܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܩܠܐ ܕܓܦܝܗܘܢ ܕܟܪܘܒܐ ܡܫܬܡܥ ܗܘܐ. ܥܕܡܐ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܐܝܟ
ܩܠܗ ܕܐܠܗܐ ܟܕ ܡܡܠܠ. * ܘܟܕ ܦܩܕ ܠܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ ܒܘܨܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܣܒ ܢܘܪܐ
ܡܢ ܒܝܬ ܓܝܓܠܐ ܡܢ ܒܝܢܝ ܟܪܘܒܐ. ܘܐܬܐ ܘܩܡ ܠܘܬ ܓܝܒ ܓܝܓܠܐ. * ܘܐܘܫܛ ܟܪܘ
ܐܝܕܗ ܡܢ ܒܝܢܝ ܟܪܘܒܐ ܠܢܘܪܐ ܕܒܝܢܝ ܟܪܘܒܐ. ܘܫܩܠ ܐܪܡܝ ܒܚܘܦܢܘܗܝ ܕܓܒ
ܕܠܒܝܫ ܒܘܨܐ. ܘܢܣܒ ܘܢܦܩ. * ܘܚܙܝܬ ܠܟܪܘܒܐ. ܕܡܘܬܐ ܕܐܝܕܐ ܕܒܪܢܫܐ ܠܬܚܝ
ܓܦܝܗܘܢ. * ܘܚܙܝܬ ܐܪܒܥ ܓܝܓܠܝܢ ܠܘܬ ܓܢܒ ܟܪܘܒܐ. ܚܕ ܚܕ ܓܝܓܠ ܠܘ
ܓܢܒ ܟܪܘܒܐ ܚܕ. ܘܚܙܘܗܘܢ ܕܓܝܓܠܐ. ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܟܐܦܐ ܕܒܪܘܠܐ. * ܘܚܙܘܗ
ܘܕܡܘܬܗܘܢ ܚܕܐ ܠܐܪܒܥܬܗܘܢ. ܐܝܟ ܓܝܓܠܐ ܒܓܘ ܓܝܓܠܐ. * ܘܟܕ ܐܙܠܝܢ
ܗܘܘ. ܥܠ ܐܪܒܥܐ ܓܒܝܗܘܢ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ. ܘܠܐ ܡܬܦܢܝܢ ܗܘܘ. ܐܠܐ ܠܐܬܪܐ ܕܐܙܠ ܗܘܐ ܪܫܐ
ܒܬܪܗ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ. ܘܠܐ ܡܬܦܢܝܢ ܗܘܘ.

Et dixit mihi; Iniquitas domûs Iſraelis & Judæ ſupra modum multa eſt, impleta eſt terra ſanguine, urbs impleta eſt dolo, & dixerunt Dereliquit Dñs terram neque videt nos Dñs. 9
Ideo ego non parcam eis, nec utar clementiâ: vias eorum in caput eorum retundam. 10
Tum vidi virum illum byſſo veſtitum reſpondiſſe ac dixiſſe, Feci quemadmodum præceperas mihi. 11

CAP. X.

Deinde vidi umbraculum quod imminebat capiti Cherubinorum, ſimile colori lapidis ſapphirini: & quaſi aſpectum formæ ſolii ſuper ipſos: 1 Vocavitque virum illum indutum byſſo, & dixit illi; Ingredere inter rotas ſubter Cherubinos, imple volas tuas carbonibus ignitis de medio Cherubinorum, & ſparge ſuper urbem: qui ingreſſus eſt me ſpectante. Porrò Cherubini ſtabant à dextera domûs, cùm ingrederetur vir ille: & atrium interius impletum fuerat nube. Tum extulit ſe 4 gloria Dei à Cherubino qui erat ſuper angulo domûs, & impleta eſt domus nube, atrium verò interius impletum eſt ſplendore gloriæ Domini. Et ſonus alarum Cherubinorum 5 audiebatur uſque ad atrium exterius, quaſi vox Dei quum loquitur. Cùm itaque præcepiſſet 6 illi viro qui byſſo veſtit' erat, dixit illi; Accipe ignem de medio rotarum intra Cherubinos. Quare veniente illo, ſeſeque ad latus rotarum ſiſtente, Extendit manum ſuam Cherubinus è 7 Cherubinis illis, ad ignem qui erat intra Cherubinos, deſumpſit, poſuitque in volas illius viri byſſo induti: qui accipiens exivit. Tum 8 vidi Cherubinis formam manûs humanæ ſub alis eorum. Præterea vidi quatuor rotas ad 9 latus Cherubinorum, ſingulas rotas ad latus cujuſque Cherubini: color autem rotarum ſimilis erat colori lapidis adamantini: Idemq; 10 erat color & forma earum quatuor, ac ſi eſſet rota in medio rotæ: Et cùm ibant, ſuper 11 quaterna latera ſua ibant, nec retrocedebant; ſed quocunque ibat præcipua illarum, *reliquæ* ſequebantur eam, nec retrocedebant.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فقال لي مظالم بيت اسرايل ويهودا عظمت جدا جدا ۔ لان الارض امتلات شعوبا كثير
والمدينة امتلات ظلما ونجاسة ۔ لانهم قالوا ۔ الرب اهمل الارض * وانا قلت ۔ انا انا لا
تشفق عيني ولا ارحم ۔ طرقاتهم اعطيها على رووسهم * واذا الرجل اللابس المدرعة
الممنطق بالمنطقة على حقوه ۔ فاجاب بكلمة قايلا ۔ صنعت كما امرتني ۔

* الفصل العاشر *

* ونظرت واذا فوق الجلد الذي على راس الساروبيم مثل
حجر الفيروزج ۔ شبه عرش عليه * وقال للرجل اللابس الحلة ۔ ادخل الي وسط البكرات
التي فوق الساروبيم واملا كفيك جمر نار من بين الساروبيم وبدده على المدينة
ودخل قدامي * والساروبيم قايمة عن يمين البيت ۔ وعند ما دخل الرجل ۔ والسحابة ملات
الدار الداخلة * وارتفع مجد الرب من الساروبيم الي معتبة البيت ۔ والسحابة ملات البيت
والدار امتلات من مجد الرب * وصوت اجنحة الساروبيم سمع حتي الدار الخارجة ۔ مثل
صوت الله الكافي متكلما * وكان عند ما اكمل الرجل اللابس الحلة المقدسة قايلا
خذ نارا من وسط البكرات من وسط الساروبيم ۔ فدخل ووقف الي جانب البكرات * ومد
الساروب يده الي وسط النار الكاينة في وسط الساروبيم ۔ فاخذ واعطي في يدي اللابس
الحلة المقدسة فاخذ وخرج * واذا للساروبيم شبه ايدي البشر من تحت اجنحتها * ونظرت
واذا بكرات اربعة وقفن الي جانب الساروبيم ۔ بكرة واحدة الي جانب الساروب الواحد
وبكرة واحدة الي جانب الساروب الاخر ۔ ومنظر البكرات مثل منظر حجر البهرمان * ومنظرهن
شبه واحد للاربعة ۔ كما اذا كانت بكرة في وسط بكرة * عند ما تسير ۔ باربعة جوانبها
تسير * ولا ترجع عند ما تسير ۔ لانها الي اي موضع نظرته الواحدة الاولي تسير ۔
ترجع عند ما تسير ۔

Dixit mihi; Flagitia domûs Iſraelis & Judæ gravia facta ſunt præter modum: quia terra multis populis impleta eſt, urbs etiam repleta eſt impietate & impuritate: dixerunt enim, Dominus terram neglexit. 9
Quapropter ego dixi; Mei, mei inquam oculi non parcent, neque miſerebor: vias eorum reflectam in capita ipſorum. 10
Tum ecce vir ille laneâ tunicâ veſtitus, lumbum balteo præcinctus, verbo reſpondit dicens; Feci prout mandaveras mihi. 11

CAP. X.

Et vidi, & ecce ſuper firmamentum illud quod erat ſuper caput Cherubinorum, ſimilitudo lapidis ſapphirini in ſolii modum elaborati, eidem firmamento impoſiti. 1 *Et dixit viro illi ſtolâ induto; Ingredere in medium rotarum quæ ſunt ſuper Cherubinos, imple volas tuas carbonibus ignis qui extat inter Cherubinos, & diſperge ſuper urbem: ingreſſuſque eſt me præſente.* 2 *(Stabant autem Cherubini à dextera domûs.) Et cùm ingreſſus eſſet vir ille, nubes implevit atrium intimum:* 3 *Et ſublata eſt gloria Domini à Cherubinis ad limen domûs; & nubes implevit domum, & atrium impletum eſt gloriâ Domini.* 4 *Et ſtrepitus alarum Cherubinorum auditus eſt uſque ad atrium extimũ, quaſi vox Dei ſufficientiſſimi loquentis.* 5 *Itaque perfecturus vir ille ſtolâ ſanctâ veſtitus mandatum dicentis, Cape ignem de medio rotarum, de medio Cherubinorum; ingreſſus eſt ſtetitque ad latus rotarum.* 6 *Tum extendens Cherub manum ſuam in medium ignem exiſtentem in medio Cherubinorum, cepit, deditque in manus induti ſtolâ ſanctâ: qui accipiens egreſſus eſt.* 7 *Et ecce Cherubinis erat ſpecies manuum humanarum ſub alis eorum.* 8 *Et vidi, & ecce rotæ quatuor ſtabant ad latus Cherubinorum, rota una ad latus Cherubini unius, & rota una ad latus Cherubini alterius: aſpectus autem rotarum ſimilis erat aſpectus lapidis carbunculi;* 9 *Et aſpectus earum eadem figura ipſis quatuor, ac ſi eſſet rota in medio rotæ.* 10 *Cùm ibant, in quaterna ſua latera ibant; neque revertebantur cùm irent, quia quemcunque in locum reſpiciebat una prior, cæteræ pergebant, & non revertebantur cùm pergerent.* 11

יחזקאל : יא

,earum alæ & ,earum manus & ,earum dorsa & , earum caro omnis Et
12 וְכָל־בְּשָׂרָם וְגַבֵּהֶם וִידֵיהֶם וְכַנְפֵיהֶם
.rotarum ipsarum quatuor *circum* oculis plenæ rotæ &
וְהָאוֹפַנִּים מְלֵאִים עֵינַיִם סָבִיב לְאַרְבַּעְתָּם אוֹפַנֵּיהֶם׃
quatuor Et .meis auribus in , rota ô , est clamatum ipsis Rotis
13 לָאוֹפַנִּים לָהֶם קוֹרָא הַגַּלְגַּל בְּאָזְנָי׃ וְאַרְבָּעָה 14
secundæ facies & , Cherub facies unius facies : unicuique facies
פָנִים לְאֶחָד פְּנֵי הָאֶחָד פְּנֵי הַכְּרוּב וּפְנֵי הַשֵּׁנִי
.aquilæ facies quartæ & , leonis facies tertiæ & ,hominis facies
פְּנֵי אָדָם וְהַשְּׁלִישִׁי פְּנֵי אַרְיֵה וְהָרְבִיעִי פְּנֵי־נָשֶׁר׃
flumine in vidi quod animal ipsum : Cherubim se exaltaverũt Et
15 וַיֵּרֹמּוּ הַכְּרוּבִים הִיא הַחַיָּה אֲשֶׁר רָאִיתִי בִּנְהַר־
: eos juxta rotæ ambulabant , Cherubim *eundo in* Et .Chebar
16 כְּבָר׃ וּבְלֶכֶת הַכְּרוּבִים יֵלְכוּ הָאוֹפַנִּים אֶצְלָם
non ,terram *desuper se elevandũ ad* ,suas alas Cherubim *elevando in* &
וּבִשְׂאֵת הַכְּרוּבִים אֶת־כַּנְפֵיהֶם לָרוּם מֵעַל הָאָרֶץ לֹא־
,*ipsos stando In* .eos apud ipsæ etiam , rotæ revertebantur
17 יִסַּבּוּ הָאוֹפַנִּים גַּם־הֵם מֵאֶצְלָם׃ בְּעָמְדָם
animalis spiritus nam : eis cum se elevabant *se elevando in* & : stabant
יַעֲמֹדוּ וּבְרוֹמָם יֵרוֹמּוּ אוֹתָם כִּי רוּחַ הַחַיָּה
stetit & : domus limine *desuper* Domini gloria est egressa Et .eis in
18 בָּהֶם׃ וַיֵּצֵא כְּבוֹד יְהוָה מֵעַל מִפְתַּן הַבָּיִת וַיַּעֲמֹד
, suas alas Cherubim elevaverunt Et .Cherubim super
19 עַל־הַכְּרוּבִים׃ וַיִּשְׂאוּ הַכְּרוּבִים אֶת־כַּנְפֵיהֶם
rotæ & ,*ipsos egrediendo in* : meis oculis in terra à sunt elevati &
וַיֵּרוֹמּוּ מִן־הָאָרֶץ לְעֵינַי בְּצֵאתָם וְהָאוֹפַנִּים
gloria & ,orientalis Domini domus portæ *ostio* stetit & : eos juxta
לְעֻמָּתָם וַיַּעֲמֹד פֶּתַח שַׁעַר בֵּית־יְהוָה הַקַּדְמוֹנִי וּכְבוֹד
quod animal Hoc .desuper eos super Israel Dei
20 אֱלֹהֵי־יִשְׂרָאֵל עֲלֵיהֶם מִלְמָעְלָה׃ הִיא הַחַיָּה אֲשֶׁר
quod cognovi & : Chebar flumine in Israel Deum subter vidi
רָאִיתִי תַּחַת אֱלֹהֵי־יִשְׂרָאֵל בִּנְהַר כְּבָר וָאֵדַע כִּי
quatuor & , *uni* facies *quatuor* Quatuor .*ipsi* Cherubim
21 כְרוּבִים הֵמָּה׃ אַרְבָּעָה אַרְבָּעָה פָנִים לְאֶחָד וְאַרְבַּע
.eorum alis sub hominis *manuum* similitudo Et .*uni* alæ
כְּנָפַיִם לְאֶחָד וּדְמוּת יְדֵי אָדָם תַּחַת כַּנְפֵיהֶם׃
juxta vidi quas facierum *earundem* eorum facierum similitudo Et
22 וּדְמוּת פְּנֵיהֶם הֵמָּה הַפָּנִים אֲשֶׁר רָאִיתִי עַל־
transitum ad unusquisque ,ipsæmet & earum aspectus ,Chebar fluvium
נְהַר כְּבָר מַרְאֵיהֶם וְאוֹתָם אִישׁ אֶל־עֵבֶר
.*ibant ipsius facierum*
פָּנָיו יֵלֵכוּ׃

CAP. XI. יא

Domini domus portam ad me introduxit & ,spiritus me elevavit Et
1 וַתִּשָּׂא אֹתִי רוּחַ וַתָּבֵא אֹתִי אֶל־שַׁעַר בֵּית־יְהוָה
viginti portæ ostio in ecce Et .orientem ad *respicientem* ,orientalem
הַקַּדְמוֹנִי הַפּוֹנֶה קָדִימָה וְהִנֵּה בְּפֶתַח הַשַּׁעַר עֶשְׂרִים
,Hazur filium Jaazanjah eorum medio in vidi & , viri quinque &
וַחֲמִשָּׁה אִישׁ וָאֶרְאֶה בְתוֹכָם אֶת־יַאֲזַנְיָה בֶן־עַזֻּר
: me ad Dixitque .populi principes ,Benajahu filium Pelathjahu &
2 וְאֶת־פְּלַטְיָהוּ בֶן־בְּנָיָהוּ שָׂרֵי הָעָם׃ וַיֹּאמֶר אֵלָי
consulentes & ,iniquitatem *cogitantes* viri isti ,hominis Fili
בֶּן־אָדָם אֵלֶּה הָאֲנָשִׁים הַחֹשְׁבִים אָוֶן וְהַיֹּעֲצִים
ædificare propinquo in Non : *Dicentes* .ista urbe in malum consilium
3 עֲצַת־רָע בָּעִיר הַזֹּאת׃ הָאֹמְרִים לֹא בְקָרוֹב בְּנוֹת
,eos super vaticinare Idcirco .caro nos & , lebes hæc : domos
4 בָּתִּים הִיא הַסִּיר וַאֲנַחְנוּ הַבָּשָׂר׃ לָכֵן הִנָּבֵא עֲלֵיהֶם
.hominis fili vaticinare
הִנָּבֵא בֶּן־אָדָם׃

Versio VULG. LAT.

12 Et omne corpus earum, & colla, & man⁹, & pennæ, & circuli, plena erant oculis, in circuitu 13 quatuor rotarum. Et rotas istas vocavit Volubiles, audiente me. 14 Quatuor autem facies habebat unum: facies una, facies Cherub: & facies secunda, facies hominis: & in tertio facies leonis: 15 & in quarto facies aquilæ. Et elevata sunt Cherubim: ipsum est animal, quod videram juxta 16 fluvium Chobar. Cúmque ambularent Cherubim, ibant pariter & rotæ juxta ea: & cùm elevarent Cherubim alas suas ut exaltarentur de terra, non residebant rotæ, sed & ipsæ juxtà 17 erant. Stantib⁹ illis, stabant: & cum elevatis elevabantur: spirit⁹ 18 enim vitæ erat in eis. Et egressa est gloria Domini à limine templi: & stetit super Cherubim. 19 Et elevantia Cherubim alas suas, exaltata sunt à terra coram me: & illis egredientib⁹, rotæ quoq; subsecutæ sunt: & stetit in introitu portæ dom⁹ Dñi Orientalis: & gloria Dei Israel erat super 20 ea. Ipsum est animal, quod vidi subter Deum Israel juxta fluvium Chobar: & intellexi quia 21 Cherubim essent. Quatuor vultus uni, & quatuor alæ uni: & similitudo manûs hominis sub 22 alis eorum. Et similitudo vultuum eorum, ipsi vult⁹ quos videram juxta fluvium Chobar, & intuitus eorum, & impetus singulorum ante faciem suam ingredi.

CAP. XI.

1 ET elevavit me spiritus, & introduxit me ad portam domûs Domini Orientalem, quæ respicit ad Solis ortum: & ecce in introitu portæ vigintiquinque viri: & vidi in medio eorum Iezoniam filium Azur, & Pheltiam filium Banaiæ, principes popu-2 li. Dixítque ad me; Fili hominis, hi sunt viri, qui cogitant iniquitatem, & tractant consilium 3 pessimum in urbe ista, Dicentes; Nónne dudum ædificatæ sunt domus? hæc est lebes, nos au-4 tem carnes. Idcirco vaticinare de eis; vaticinare, fili hominis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

12 Καὶ οἱ νῶτοι αὐτῶν, καὶ αἱ χεῖρες αὐτῶν, καὶ αἱ πτέρυγες αὐτῶν, καὶ οἱ τροχοὶ πλήρεις (ι) ὀφθαλμῶν κυκλόθεν τοῖς τέσσαρσι (κ) τρο-13 χοῖς. Τοῖς δὲ τροχοῖς (λ) τούτοις ἐπεκλήθη 15 Γελγὲλ ἀκούοντός μου. Καὶ τὰ χερουβὶμ ἦσαν τοῦτο τὸ ζῶον ὃ ἴδον ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ 16 Χοβάρ. Καὶ ἐν τῷ πορεύεσθαι τὰ (μ) χερουβὶμ, ἐπορεύοντο οἱ τροχοί, καὶ οὗτοι ἐχόμενοι αὐτῶν· καὶ ἐν τῷ ἐξαίρειν τὰ (ν) χερουβὶμ τὰς πτέρυγας αὐτῶν τοῦ μετεωρίζεσθαι ἀπὸ τῆς 17 γῆς, οὐκ ἐπέστρεφον οἱ τροχοὶ (ξ) αὐτῶν. Ἐν τῷ ἑστάναι αὐτὰ, εἱστήκεισαν· καὶ ἐν τῷ μετεωρίζεσθαι αὐτὰ (ο) μετεωρίζοντο μετ᾽ αὐτῶν· 18 διότι πνεῦμα ζωῆς ἐν αὐτοῖς ἦν. Καὶ ἐξῆλθε δόξα κυρίου ἀπὸ (π) τοῦ οἴκου, καὶ ἐπέβη 19 ἐπὶ τὰ (ρ) χερουβίμ. Καὶ ἀνέλαβον τὰ (σ) χερουβὶμ τὰς πτέρυγας αὐτῶν, καὶ ἐμετεωρίσθησαν ἀπὸ τῆς γῆς ἐνώπιον ἐμοῦ· ἐν τῷ (τ) ἐξιέναι αὐτὰ, καὶ οἱ τροχοὶ ἐχόμενοι αὐτῶν. καὶ ἔστησαν ἐπὶ τὰ πρόθυρα τῆς πύλης οἴκου κυρίου τῆς ἀπέναντι, καὶ δόξα (υ) θεοῦ 20 Ἰσραὴλ ἦν ἐπ᾽ αὐτῶν ὑπεράνω. Τοῦτο τὸ ζῶόν ἐστιν ὃ ἴδον ὑποκάτω θεοῦ Ἰσραὴλ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Χοβάρ, καὶ ἔγνων ὅτι χε-21 ρουβίμ ἐστι. (φ) Τέσσαρα πρόσωπα τῷ ἑνὶ, καὶ ὀκτὼ πτέρυγες τῷ ἑνὶ, καὶ ὁμοίωμα χειρῶν (χ) ἀνθρώπων ὑποκάτωθεν τῶν πτερύ-22 γων αὐτῶν. Καὶ (ψ) ὁμοίωσις τῶν προσώπων αὐτῶν, ταῦτα τὰ πρόσωπά ἐστιν ἃ ἴδον ὑποκάτω τῆς δόξης (ω) τοῦ θεοῦ Ἰσραὴλ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Χοβάρ. (α) καὶ αὐτὰ ἕκαστον κατὰ πρόσωπον αὐτῶν ἐπορεύοντο.

MS. A. (ι) ὀφθαλμῶν τοῖς (κ) τροχοῖς αὐτῶν. (λ) τούτοις ἐπεκλήθη Γελ-14 γέλ. Καὶ τέσσαρα πρόσωπα τῷ ἑνί· τὸ πρόσωπον τοῦ ἑνὸς πρόσωπον χεροὺβ, καὶ τὸ πρόσωπον τοῦ δευτέρου πρόσωπον ἀνθρώπου, καὶ τὸ πρό-15 σωπον τοῦ τρίτου πρόσωπον λέοντος, καὶ τὸ τέταρτον πρόσωπον ἀετοῦ. Καὶ ἐπῆραν τὰ χερουβεὶν· τοῦτο τὸ ζῶον (μ) χερουβεὶν, ἐπορεύοντο καὶ οἱ τροχοί, (ν) χερουβεὶν (ξ) αὐτῶν, καί γε αὐτοὶ ἀπὸ τῶν ἐχόμενα αὐτῶν. Ἐν τῷ (ο) ἐμετεωρίζοντο (π) τοῦ αἰθρίου τοῦ οἴκου, (ρ) χερουβεὶν. (σ) χερουβεὶν (τ) ἐξαίρειν (υ) κυρίου θεοῦ (φ) Τέσσαρα (χ) ἀνθρώπου (ψ) ὁμοίωμα (ω) θεοῦ (α) τὴν ὅρασιν αὐτῶν, καὶ

(c) Et dorsa eorum, & manus eorum, & alæ eorum, & rotæ plenæ erant oculis in circuitu quatuor rotis. 13 Rotis autem illis acclamatum est (f) Gelgel, audiente (g) me. Et ipsa Cherubim erant, 15 idipsum animal, quod videram super fluvium Chobar. Cùmque 16 ambularent Cherubim, ibant rotæ, & hæ juxta ea. Et, cùm elevarent Cherubim alas suas, ut exaltarentur de terra, non revertebantur rotæ (h) eorum. Stantibus 17 illis, stabant; & cùm illa elevarentur; elevabantur cum eis. Spiritus enim vitæ erat in eis. Et egressa est gloria Domini (i) 18 de domo: & conscendit super Cherubim. Et assumpserunt Che-19 rubim alas suas, & elevati sunt de terra coram me. Illis egredientibus, etiam rotæ juxta illa. Et steterunt super vestibula portæ domûs Domini, quæ è (k) regione: et gloria Dei Israel erat super ea desuper. Ipsum est animal, 20 quod vidi subter Deum Israel super fluvium Chobar: & intellexi, quia Cherubim essent. Qua-21 tuor facies uni, & (l) octo alæ unicuique similitudo manuum hominum sub alis eorum. Et similitu-22 do facierum eorum, ipsi vultus erant, quos videram subtus gloriam Dei Israel super fluvium (m) Chobar. Et hæc, unumquodque ante faciem suam ibant.

ΚΕΦ. ια΄.

1 ΚΑὶ ἀνέλαβέ με πνεῦμα, καὶ ἤγαγέ με ἐπὶ τὴν πύλην τοῦ οἴκου κυρίου τὴν κατέναντι, τὴν βλέπουσαν κατὰ ἀνατολάς. καὶ ἰδοὺ ἐπὶ τῶν προθύρων τῆς πύλης ὡς εἴκοσι καὶ πέντε ἄνδρες· καὶ ἴδον ἐν μέσῳ αὐτῶν τὸν Ἰεχονίαν τὸν τοῦ (α) Ἔζερ, καὶ Φαλτίαν τὸν τοῦ Βαναίου, 2 τοὺς ἀφηγουμένους τοῦ λαοῦ. Καὶ εἶπε κύριος πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου, οὗτοι οἱ ἄνδρες οἱ λογιζόμενοι μάταια καὶ βουλευόμενοι βου-3 λὴν πονηρὰν ἐν τῇ πόλει ταύτῃ· Οἱ λέγοντες, Οὐχὶ προσφάτως ᾠκοδόμηνται αἱ οἰκίαι; αὕτη ἐστὶν ὁ λέβης, ἡμεῖς δὲ τὰ 4 κρέα. Διὰ τοῦτο προφήτευσον ἐπ᾽ αὐτοὺς, προφήτευσον υἱὲ ἀνθρώπου.

MS. A. (α) Ἰαζερ

CAP. XI.

1 ET assumpsit me spiritus, & induxit me ad portam domûs Domini, quæ è regione, quæ respicit ad Orientem. Et ecce super vestibula portæ quasi viginti & quinque viri: & vidi in medio eorum Jechoniam filiũ Ezer, & Phaltiã filiũ Banææ, principes populi. Et dixit Dñs ad me; Fili hominis, Hi viri, qui cogitant vana, 2 et tractant consilium pessimum in urbe ista, Dicentes; Nonne re-3 center ædificatæ sunt domus? Hæc est lebes, nos autem carnes. Idcircò prophetа super eos, pro-4 pheta, fili hominis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 וְכָל בִּסְרֵיהוֹן וְגַבֵּיהוֹן וְאִשְׁדְּתְהוֹן וְכַנְפֵיהוֹן וְגַלְגַּלַיָּא מְלַן עֵינִין סְחוֹר סְחוֹר
13 14 לְאַרְבַּעְתְּהוֹן דִּגְלְגַלַיָּא׃ לְאוֹפַנַּיָּא לְהוֹן אִתְקְרֵי גַלְגְּלָא וַאֲנָא שְׁמַע׃ וְאַרְבְּעָא אַפִּין
לְחַד אַפֵּי חַד אַפֵּי כְרוּבָא וְאַפֵּי תִנְיָנָא אַפֵּי אֱנָשָׁא וּתְלִיתָאָה אַפֵּי אַרְיָא וּרְבִיעָאָה אַפֵּי
15 16 נִשְׁרָא׃ וְאִתְרְמוּ כְּרוּבַיָּא אִנּוּן בְּרִיָּתָא דִּי חֲזֵיתִי בִּנְהַר כְּבָר׃ וּבְמֵיזַל כְּרוּבַיָּא אָזְלִין
גַּלְגַּלַּיָּא לִקְבְלֵיהוֹן וּבְמִטַּל כְּרוּבַיָּא יָת גַּדְפֵּיהוֹן לְאִתְרְמָא כְּמִלְרַע לְרוּם שְׁמַיָּא
17 לָא מִתַּחַזְרִין גַּלְגַּלַּיָּא אַף אִנּוּן מִקַּבְלֵיהוֹן׃ בְּמִקָּמְהוֹן קָיְמִין וּבְאִתְרְמוּתְהוֹן
18 מִתְרַמְיָן עִמְּהוֹן אֲרֵי כְּרוּחַ בְּרִיָּתָא בְּהוֹן׃ וְאִסְתַּלַּק יְקָרָא דַּיְיָ דַּהֲוָה שְׁרֵי עֲלוֹהִי מֵעִיל־
19 לָקֳבֵיל סְקוֹפַת בֵּיתָא וּשְׁרָא עַל כְּרוּבַיָּא׃ וּנְטַלוּ כְּרוּבַיָּא יָת גַּדְפֵּיהוֹן וְאִתְרְמוּ כְּמִלְרַע
לְרוּם שְׁמַיָּא וַאֲנָא חָזֵי בְּמִפַּקְהוֹן וְגַלְגַּלַּיָּא לִקְבְלֵיהוֹן וְקָם בְּמַעֲלָנָא דִּתְרַע בֵּית מַקְדְּשָׁא
20 דַּיְיָ מַדִּנְחָאָה וִיקָר אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל עֲלֵיהוֹן מִלְעֵלָּא׃ אִנּוּן בְּרִיָּתָא דַּחֲזֵיתִי תְּחוֹת יְקָר
21 אֱלָהָא דְיִשְׂרָאֵל בִּנְהַר כְּבָר וִידַעִית אֲרֵי כְרוּבַיָּא אִנּוּן׃ אַרְבַּע אַרְבַּע אַפִּין לְחַד וְאַרְבַּע
22 גַּדְפִּין לְחַד וּדְמוּת יַד אֱנָשָׁא תְּחוֹת גַּדְפֵּיהוֹן׃ וּדְמוּת אַפֵּיהוֹן אִנּוּן אַפַּיָּא דִּי חֲזֵיתִי עַל נְהַר
כְּבָר חֶזְוֵיהוֹן וְאִנּוּן בְּרִיָּא לָקֳבֵל אַפֵּהָא אָזְלָא׃

יא

1 וּנְטַלַתְנִי רוּחָא וְאָעֵלַת יָתִי לִתְרַע בֵּית מַקְדְּשָׁא דַּיְיָ מַדִּנְחָאָה דִּפְתִיחַ לְמַדִּנְחָא וְהָא
בְּמַעֲלָנָא דִּתְרַע עַסְרִין וְחַמְשָׁא גֻּבְרִין וַחֲזֵית בֵּינֵיהוֹן יָת יַאֲזַנְיָה בַּר עַזּוּר וְיָת פְּלַטְיָה בַּר
2 בְּנָיָה רַבְרְבֵי עַמָּא׃ וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם אִלֵּין גֻּבְרַיָּא דִּמְחַשְּׁבִין לְמִינַס וּדְמַלְּכִין מְלַךְ בִּישׁ
3 בְּקַרְתָּא הָדָא׃ דְּאָמְרִין לָא בְּקָרִיב לְמִבְנֵי בָתִּין הִיא חֲשִׁיבָא לָנָא כְּדוּדָא וַאֲנַחְנָא חֲשִׁיבִין
4 בְּגַוַּהּ כְּבִסְרָא דִּבְשִׁיל בְּגוֹ דוּדָא׃ בְּכֵן אִתְנַבֵּי עֲלֵיהוֹן אִתְנַבֵּי בַּר אָדָם׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et omnis caro eorum, & dorsum eorum, & expansio & pennæ eorum, 12 & rotæ plenæ erant oculis per circuitum in quatuor eorum rotis. Rotæ 13 sunt appellatæ Volubiles, audiente me. Et erant cuique facies quaternæ: 14 facies uni⁹, facies Cherub; & facies secundi, facies hominis; & tertii, facies leonis; & quarti, facies aquilæ. Et sublati sunt Cherubim: ipsæ sunt 15 creaturæ quas videram in fluvio Chobar. Et cùm ambularent Cherubim, 16 ambulabant rotæ è regione eorum; & cùm elevarent Cherubim alas suas, ut sese elevarent quasi sub altitudine cœli, ipsæ quoque rotæ non revertebantur à conspectu eorum. Cùm starent, stabant; & cùm elevarentur, 17 elevabantur cum eis; quia *quasi* spirit⁹ creaturarum erat in eis. Et elevata 18 est gloria Dñi quæ residebat super illud desuper contra limen dom⁹, & resedit super Cherubim. Et sustulerunt Cherubim alas suas, & elevati 19 sunt quasi sub altitudine cœli; & ego vidi, cùm egrederentur, & rotæ è regione eorum. Et stetit in introitu portæ dom⁹ sanctuarii Domini Orientalis, & gloria Dei Israel erat eis desuper. Ipsæ erant creaturæ quas vidi 20 sub gloria Dei Israel juxta fluvium Chobar, & cognovi quòd Cherubim essent. Quatuor quatuor vultus uni, & quatuor alæ uni; & similitudo 21 manus hominis sub alis eorum. Et similitudo vultuum eorum, ipsi 22 sunt vultus quos videram juxta fluvium Chobar, aspectus earum & ipsæ, quæque creatura ante faciem suam gradiebatur.

CAP. XI.

ET sustulit me spiritus, & introduxit me ad portam Orientalem domus 1 sanctuarii Domini quæ aperta erat ad Orientem, & ecce in introitu portæ erant viginti et quinque viri: et vidi inter eos Jezoniam filium Azur, et Phaltiam filium Banaiæ, principes populi. Et dixit ad me: Fili hominis, 2 isti sunt viri qui cogitant vim facere, et qui consulunt consilium malum in civitate hac. Qui dicunt, Non propè est ut ædificentur domus: ipsa 3 est reputata nobis quasi lebes, et nos reputati sumus in medio ejus sicut caro quæ coquitur in medio lebetis. Propterea vaticinare super eos, vati- 4 cinare fili hominis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܟܠܗ ܒܣܪܗܘܢ܇ ܘܚܨܝܗܘܢ ܘܐܝܕܝܗܘܢ܇ ܘܓܦܝܗܘܢ ܕܓܝܓܠܐ ܀ ܡܠܝܢ ܥܝܢܐ ܚܕ
ܚܕܪ ܗܘܝ. ܠܐܪܒܥܬܗܝܢ. * ܘܠܓܝܓܠܐ ܩܪܐ ܐܢܝܢ ܓܝܓܠܐ ܩܕܡܝ. * ܘܐܪܒܥܐ ܐܦܝܢ ܠܚ
ܚܕ ܡܢܗܘܢ. ܚܕܐ ܐܦܐ ܕܟܪܘܒܐ. ܘܐܚܪܬܐ ܐܦܐ ܕܒܪܢܫܐ. ܘܐܚܪܬܐ ܐܦܐ ܕܐܪܝܐ. ܘܐܚܪܬܐ ܐ
ܕܢܫܪܐ. * ܘܐܬܬܪܝܡܘ ܟܪܘܒܐ. ܗܝ ܚܝܘܬܐ ܕܚܙܝܬ ܥܠ ܢܗܪܐ ܕܟܒܪ. * ܘܟܕ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ ܟܪܘ
ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ ܓܝܓܠܐ ܥܡܗܘܢ. ܘܟܕ ܡܪܝܡܝܢ ܗܘܘ ܟܪܘܒܐ ܓܦܝܗܘܢ܇ ܠܡܬܬܪܝܡܘ ܡܢ
ܐܪܥܐ. ܠܐ ܗܦܟܝܢ ܗܘܘ ܓܝܓܠܐ ܡܢܗܘܢ. * ܘܟܕ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ܇ ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ. ܘܟܕ
ܡܬܬܪܝܡܝܢ ܗܘܘ܇ ܡܬܬܪܝܡܝܢ ܗܘܘ. ܘܟܕ ܡܪܝܡܝܢ ܗܘܘ ܟܪܘܒܐ ܓܦܝܗܘܢ. ܐܙܠܝܢ
ܓܝܓܠܐ ܥܡܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܕܚܝܐ ܐܝܬ ܗܘܬ ܒܗܘܢ. * ܘܢܦܩ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪ
ܙܘܝܬܗ ܕܒܝܬܐ. ܘܩܡ ܥܠ ܟܪܘܒܐ. * ܘܫܩܠܘ ܟܪܘܒܐ ܓܦܝܗܘܢ. ܘܐܬܬܪܝܡܘ ܡܢ ܐ
ܠܥܝܢܝ. ܘܟܕ ܢܦܩܘ ܓܝܓܠܐ ܥܡܗܘܢ ܗܘܘ. ܘܩܡܘ ܒܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ ܡܕܢܚ
ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܥܠܝܗܘܢ. * ܗܕܐ ܗܝ ܚܝܘܬܐ ܕ
ܚܙܝܬ ܬܚܝܬ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܥܠ ܢܗܪܐ ܕܟܒܪ. ܘܝܕܥܬ ܕܟܪܘܒܐ ܐܢܘܢ. * ܐܪܒܥܐ ܐܦ
ܠܚܕ ܚܕ ܡܢܗܘܢ. ܘܐܪܒܥܐ ܓܦܐ ܠܚܕ ܡܢܗܘܢ. ܘܕܡܘܬܐ ܕܐܝܕܝܐ ܕܒܪܢܫܐ ܬܚܝ
ܓܦܝܗܘܢ. * ܘܕܡܘܬܐ ܕܐܦܝܗܘܢ. ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܐܦܐ ܕܚܙܝܬ ܥܠ ܢܗܪܐ ܕܟܒܪ. ܘܚܙܘ
ܝܗܘܢ. ܘܚܕ ܚܕ ܠܘܩܒܠ ܐܦܘܗܝ ܐܙܠܝܢ ܗܘܘ. *ܩܦܠܐܘܢ * ܝܐ *
* ܘܫܩܠܬܢܝ ܪܘܚܐ. ܘܐܝܬܝܬܢܝ ܠܬܪܥܐ ܡܕܢܚܝܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܕܚܐܪ ܠܡܕܢ
ܘܚܙܝܬ ܒܡܥܠܢܗ ܕܬܪܥܐ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܓܒܪܝܢ. ܘܚܙܝܬ ܒܝܢܬܗܘܢ ܠܝܙܢ
ܒܪ ܥܙܘܪ. ܘܠܦܠܛܝܐ ܒܪ ܒܢܝܐ ܪܫܢܐ ܕܥܡܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܒܪܢܫܐ. ܗܠܝܢ ܐܢ
ܓܒܪܐ ܕܡܬܚܫܒܝܢ ܢܟܠܐ. ܘܡܡܠܟܝܢ ܡܠܟܐ ܒܝܫܐ ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܐܡܪܝܢ. * ܠܐ ܗܘ
ܒܗ ܒܢܝܢ ܒܬܐ܇ ܗܝ ܩܕܪܐ. ܘܚܢܢ ܒܣܪܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܢܒܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܐܬܢܒܐ ܒܪ

Tota verò caro, dorſa, manus, & alæ rota- 12
rum, plena erant oculis per circuitum, in ab-
ſidibus earum: Cochleas autem ipſas, voca- 13
vit Rotas, me præſente. Quaternas verò fa- 14
cies habebat unuſquiſque illorum *Cherubino-
rum*; una erat facies Cherubini, altera facies
hominis, alia facies leonis, alia demum faci-
es aquilæ. Ita extulerunt ſe Cherubini, *hoc eſt*, 15
illud animal quod videram ad fluvium Ce-
bar. Euntibus Cherubinis, ibant rotæ cum 16
eis: & attollentibus Cherubinis alas ſuas ad
efferendum ſe de terra, non recedebant ab eis
rotæ: Conſiſtentibus illis, conſiſtebant iſtæ: 17
efferentibus ſe illis, efferebant ſe iſtæ: & at-
tollentibus Cherubinis alas ſuas, proficiſce-
bantur rotæ cum eis; quoniam ſpiritus vita-
lis inerat eis. Egreſſâ itaque gloriâ Domini 18
ex angulo domûs, ſtetit ſupra Cherubinos:
Et Cherubini ſublatis alis ſuis extulerunt ſe 19
de terra, me ſpectante, (& cùm exirent, rotæ
cum eis erant,) ſteteruntque ad veſtibulum
portæ Orientalis dom⁹ Domini, & gloria Dei
Iſraelis erat ſuper eos. Hoc eſt illud animal 20
quod videram ſub Deo Iſraelis ad fluvium Ce-
bar, & cognovi Cherubinos eos eſſe. Qua- 21
ternas facies habebat unuſquiſque eorum, &
quaternas alas unuſquiſque eorum, et formam
man⁹ humanæ ſub alis ſuis. Forma verò fa- 22
cierum eorum, ſimilis erat faciebus illis quas
videram juxta fluvium Cebar; eodemque mo-
do aſpect⁹ eorum: & unuſquiſque ibat in la-
tere ſuo *quod occupabat*.

CAP. XI.

Tum attollens me ſpirit⁹, adduxit me ad por- 1
tam Orientalem dom⁹ Domini, quæ ſpectat
Orientem: & vidi in veſtibulo portæ viginti-
quinque viros; inter quos vidi Jazaniam fili-
um Azuris, & Pelatiam filium Benaiæ, primo-
res populi. Dixitque mihi Domin⁹, Fili ho- 2
minis, hi ſunt viri qui dolum architectantur,
& dant conſilia prava in hac urbe, ac dicunt
Nonne in ipſa domos ædificavim⁹? ipſa erit 3
olla, nos verò caro. Itaque vaticinare contra 4
iſtos, vaticinare fili hominis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وظهورها وايديها واجنحتها والبكرات مملوة اعينا لاربعة بكراتها * وللبكرات دعى هذا
سريعة سريعة * واربعة وجوه للواحد • وجه الواحد وجه ساروب • ووجه الثاني وجه انسان
ووجه الثالث وجه اسد • والرابع وجه نسر * وارتفعت الساروبيم • وهذا الحيوان الذي رايته
على نهر خوبار * وعند ما تسير الساروبيم تسير البكرات • وهي بجانبها • وعند ما ترفع
الساروبيم اجنحتها لتتعالى من الارض • لا ترجع بكراتها • مع ما انها من جوانبها * عند
تقف يقفون • وعند ما تتعالى يتعالون معها • من اجل ان روح حياة كانت فيها * وخرج
مجد الرب من معتمة البيت • وركب على الساروبيم * واخذت الساروبيم اجنحتها • وتعا
من الارض امامي • عند ما ارتفعت البكرات الى جانبها ووقفت على مداخل باب بيت الرب
الذي مقابلي • ومجد الرب اله اسرائيل كان عليها من فوق * هذا الحيوان هو الذي
رايته تحت اله اسرائيل على نهر خوبار • وعلمت ان الساروبيم هو * اربعة وجوه للواحد • وستة
اجنحة للواحد • وشبه ايدي انسان من تحت اجنحتها * وشبه وجوهها • هذه الوجوه
هي التي رايتها تحت مجد اله اسرائيل على نهر خوبار ومنظرها • وكان كل واحد يسير لوجهه

الفصل الحادي عشر • الاصحاح الخامس

* وحملتني ريح واتت بي الى باب بيت الرب الذي مقابلي • الناظر نحو المشرق • واذا
مداخل الباب نحو من خمسة وعشرين رجلا • ونظرت في وسطهم ياحوبيان بن ازار وفلطيا
بن باناو مقدمي الشعب * وقال لي الرب • يا ابن الانسان • هولاء الرجال الذين يفكرون
الافك • ويرون رايا شريرا في هذه المدينة • ويقولون * اليس تبنى البيوت جديدا
هي المرجل ونحن اللحم * لاجل هذا تنبا عليهم • تنبا يا ابن الانسان

Et tam illorum dorſa, manus, & alæ 12
illorum, quàm rotæ plenæ erant oculis per
quaternas abſides ſuas. Rotæ verò ſic 13
appellatæ fuerunt, Veloces, velociſſimæ.
Quatuor autem facies habebat unum- 14
quodque: facies una, facies Cherubini:
facies ſecunda, facies hominis: facies
tertia, facies leonis: quarta verò, facies
aquilæ. Et elevati ſunt Cherubim, (atque 15
hoc eſt illud animal quod videram ſecus
flumen Chobar:) Quoties ibant Cherubi- 16
ni, ibant rotæ ad latus eorum exiſtentes:
& cùm elevarent Cherubini alas ſuas ut
efferrent ſe ab humo, non recedebant
rotæ eorum, quippe quæ eſſent ad latera
eorum. Cum iſtæ conſiſterent, conſiſte- 17
bant illa: cumque elevarent ſe iſtæ,
elevabant ſe illa cum iſtis; quoniam
ſpiritus vitalis inerat iſtis. Et egreſſâ 18
gloriâ Domini è limine domûs, conſcen-
dit Cherubinos: Et ſublatis Cherubini 19
alis ſuis, elevaverunt ſe ab humo coram
me (elevantibus ſe rotis ad ipſorum la-
tera) ſteteruntque ſupra veſtibulum
januæ domûs Domini, quæ erat ex ad-
verſo mihi; & gloria Domini Dei Iſ-
raelis erat ſuper eos deſuper. Hoc ani- 20
mal eſt illud quod videram ſub Deo
Iſraelis juxta flumen Chobar, & agnovi
Cherubinos illud eſſe. Quatuor erant 21
facies cuilibet, & ſex alæ cuilibet, &
figura manuum humanarum ſub alis eo-
rum. Quod autem ad formam facierum 22
eorum, eadem erant facies quas videram
ſubter gloriam Dei Iſraelis juxta flumen
Chobar, & idem aſpectus eorum: atque
horum unumquodque ante faciem ſuam
procedebat.

CAP. XI.

Textus quintus.

Deinde tulit me ventus quidam, per- 1
duxitque me ad januam domûs Domini,
quæ erat ex adverſo mihi, quæ ſpectabat
Orientem verſus: & ecce ad veſtibulum
januæ erant viginti quinque viros: &
vidi in medio eorum Jechoniam filiũ Azze-
ri, & Pheltiam filiũ Banai, anteſigna-
nos populi. Tum dixit ad me Dominus; 2
O fili hominis, hi ſunt viri qui fraudem
cogitant, & probant conſilium ma-
lum in hac urbe, & dicunt; Nonne 3
recens ædificatæ ſunt hæ domus? iſtæ
erunt cacabus, nos autem caro. Prophe- 4
ta prophetato de iſtis, prophetato O fili
hominis.

יחזקאל : יא

dixit Sic : Dic : me ad dixit &,Domini ſpiritus me ſuper cecidit Et
5 ותפל עלי רוח יהוה ויאמר אלי אמר כה־אמר
ego *veſtri ſpiritum aſcenſiones* & : Iſrael domus *dixiſtis* ſic ,Dominus
יהוה כן אמרתם בית ישראל ומעלות רוחכם אני
: hac urbe in veſtros interfectos feciſtis Multiplicare .*illud* novi
6 ידעתיה : הרביתם חלליכם בעיר הזאת
Dominus dixit ſic Propterea .*occiſo* ejus plateas impleſtis &
7 ומלאתם חוצתיה חלל : לכן כה־אמר אדני
, caro ipſi ,ejus medio in *poſuiſtis* quos veſtri Interfecti : Deus
יהוה חלליכם אשר שמתם בתוכה המה הבשר
; metuiſtis Gladium .ejus medio de *eduxit* vos Et .lebes ipſa &
8 והיא הסיר ואתכם הוציא מתוכה : חרב יראתם
educam Et .Deus Dominus dixit ,vos ſuper inducam gladium &
9 וחרב אביא עליכם נאם אדני יהוה : והוצאתי
faciam & ,alienorum manu in vos daboque ,ejus medio de vos
אתכם מתוכה ונתתי אתכם ביד־זרים ועשיתי
judicabo Iſrael termino in ; cadetis gladio In .judicia vobis in
10 בכם שפטים : בחרב תפלו על־גבול ישראל אשפוט
vobis erit non Hæc .Dominus *ego* quòd ſcietis & : vos
11 אתכם וידעתם כי־אני יהוה : היא לא־תהיה לכם
Iſrael termino in : *carnem in* ejus medio in eritis vos & ,*lebetem in*
לסיר ואתם תהיו בתוכה לבשר אל־גבול ישראל
meis ſtatutis in quia : Dominus *ego* quòd ſcietis Et .vos judicabo
12 אשפט אתכם : וידעתם כי־אני יהוה אשר בחקי
,gentium judicia juxta ſed : feciſtis non mea judicia & ,ambulâſtis non
לא־הלכתם ומשפטי לא עשיתם וכמשפטי הגוים
Pelatjahu & ,*me prophetare juxta* ,fuit Et .feciſtis ,*veſtris circuitibus* quæ
13 אשר סביבותיכם עשיתם : ויהי כהנבאי ופלטיהו
clamavi & ,*meas facies* ſuper cecidi & : eſt mortuus ,Benajah filius
בן־בניה מת ואפל על־פני ואזעק
tu conſummationem ,Deus Domine Ahah : dixi & ,magna voce
קול־גדול ואמר אהה אדני יהוה כלה אתה
,me ad Domini verbum fuit Et .Iſrael reſidui *faciens*
14 עשה את שארית ישראל : ויהי דבר־יהוה אלי
,*tuæ redemptionis* viri tui fratres ,tui fratres ,hominis Fili : dicendo
15 לאמר : בן־אדם אחיך אחיך אנשי גאלתך
habitatores *eis* dixerunt quibus ,ipſa tota Iſrael domus omnis &
וכל־בית ישראל כלה אשר אמרו להם ישבי
terra eſt data ipſa nobis ,Domino *deſuper* vos Elongate : Jeruſalaim
ירושלם רחקו מעל יהוה לנו היא נתנה הארץ
Quia : Deus Dominus dixit ſic : dic Propterea .poſſeſſionem in
16 למורשה : לכן אמר כה אמר אדני יהוה כי
fui & ,*terras* in eos diſpergere feci *quia* & ,gentes in eos elongare feci
הרחקתים בגוים וכי הפיצותים בארצות ואהי
.*illuc* venerunt *quò* terris in ,parvum ſanctuarium in eis
להם למקדש מעט בארצות אשר־באו שם :
vos congregabo Et : Deus Dominus dixit Sic : dic Propterea
17 לכן אמר כה־אמר אדני יהוה וקבצתי אתכם
eſtis diſperſi quibus ,terris de vos *colligam* & ,populis de
מן־העמים ואספתי אתכם מן־הארצות אשר נפצותם
, illuc ingredientur Et .Iſrael humum vobis dabo & : *eis in*
18 בהם ונתתי לכם את־אדמת ישראל : ובאו שמה
ejus abominationes cunctáſque ,ejus *contaminationes omnes* removebūt &
והסירו את־כל־שקוציה ואת־כל־תועבתיה
dabo novum ſpiritum & ,unum cor eis dabo Et .illa de
19 ממנה : ונתתי להם לב אחד ורוח חדשה אתן
dabo & ,eorum carne de *lapidis* cor removebo & : eorum *interiori* in
בקרבכם והסרתי לב האבן מבשרם ונתתי
.*carnis* cor eis
להם לב בשר :

Verſio VULG. LAT.

5 Et irruit in me ſpiritus Domini,
& dixit ad me; Loquere; Hæc
dicit Dominus; Sic locuti eſtis,
domus Iſrael, & cogitationes
6 cordis veſtri ego novi. Plurimos
occidiſtis in urbe hac, et impléſtis
7 vias ejus interfectis. Propterea
hæc dicit Dominus Deus; Interfecti
veſtri, quos poſuiſtis in
medio ejus, hi ſunt carnes, &
hæc eſt lebes: & educam vos
8 de medio ejus. Gladium metuiſtis,
& gladium inducam ſuper
9 vos, ait Dominus Deus. Et ejiciam
vos de medio ejus, dabóque
vos in manu hoſtium, & faciam
10 in vobis judicia. Gladio cadetis:
in finibus Iſrael judicabo vos,
& ſcietis quia ego Dominus.
11 Hæc non erit vobis in lebetem,
& vos non eritis in medio ejꝰ
in carnes: in finibꝰ Iſrael judicabo
12 vos. Et ſcietis quia ego
Dominus: quia in præceptis
meis non ambulâſtis, & judicia
mea non feciſtis, ſed juxta judicia
Gentium, quæ in circuitu
13 veſtro ſunt, eſtis operati. Et factum
eſt, cùm prophetarem,
Pheltias filiꝰ Banaiæ mortuus eſt:
& cecidi in faciem meam clamans
voce magnâ, & dixi, Heu,
heu, heu, Dñe Deus: conſummationem
tu facis reliquiarum Iſrael?
14 Et factum eſt verbum Dñi
15 ad me, dicens; Fili hominis, fratres
tui, fratres tui, viri propinqui
tui, & omnis domus Iſrael, univerſi,
quibꝰ dixerunt habitatores
Jeruſalem; Longè recedite
à Domino, nobis data eſt terra
16 in poſſeſſionem. Propterea hæc
dicit Dominus Deus, Quia longè
feci eos in Gentibus, & quia
diſperſi eos in terris: ero eis in
ſanctificationē modicam in terris,
17 ad quas venerunt. Propterea
loquere; Hæc dicit Dominus
Deus; Congregabo vos de populis,
& adunabo de terris, in
quibus diſperſi eſtis, dabóque
18 vobis humum Iſrael. Et ingredientur
illuc, & auferent omnes
offenſiones, cunctáſque abominationes
19 ejus de illa. Et dabo
eis cor unum, & ſpiritum novum
tribuam in viſceribus eorum:
& auferam cor lapideum de
carne eorum, & dabo eis cor
carneum:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Καὶ ἔπεσεν ἐπ' ἐμὲ πνεῦμα κυρίου, καὶ εἶπε
πρὸς μὲ, Λέγε, Τάδε λέγει κύριος, Οὕτως
εἴπατε (β) οἶκος Ἰσραὴλ, καὶ τὰ διαβούλια
τοῦ πνεύματος ὑμῶν ἐγὼ ἐπίσταμαι.
6 Ἐπληθύνατε νεκροὺς ὑμῶν ἐν τῇ πόλει
ταύτῃ, καὶ ἐνεπλήσατε τὰς ὁδοὺς (γ)
7 αὐτῶν τραυματιῶν. Διατοῦτο τάδε λέγει
(δ) κύριος, Τοὺς νεκροὺς ὑμῶν οὓς
(ε) ἐπατάξατε ἐν μέσῳ αὐτῆς, οὗτοί
εἰσι τὰ κρέα, αὐτὴ δὲ ὁ λέβης ἐστὶ, καὶ
8 ὑμᾶς ἐξάξω ἐκ μέσου αὐτῆς. Ῥομφαίαν
φοβεῖσθε, καὶ ῥομφαίαν ἐπάξω ἐφ'
9 ὑμᾶς, λέγει (ζ) κύριος. Καὶ ἐξάξω
ὑμᾶς ἐκ μέσου αὐτῆς, καὶ παραδώσω
ὑμᾶς εἰς χεῖρας ἀλλοτρίων, καὶ ποιήσω
10 ἐν ὑμῖν κρίματα. Ἐν ῥομφαίᾳ πεσεῖσθε,
(η) ἐπὶ τῶν ὀρέων τοῦ Ἰσραὴλ κρινῶ ὑμᾶς,
καὶ ἐπιγνώσεσθε ὅτι ἐγὼ κύριος. (θ)
13 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ προφητεύειν με, καὶ
Φαλτίας ὁ τοῦ Βαναίου ἀπέθανε· καὶ πίπτω
ἐπὶ πρόσωπόν μου, καὶ ἀνεβόησα φωνῇ
μεγάλῃ, καὶ εἶπα, (ι) Οἴμοι οἴμοι κύριε,
εἰς συντέλειαν ποιεῖς σὺ τοὺς καταλοίπους
14 τοῦ Ἰσραήλ; Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου
15 πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου,
οἱ ἀδελφοί σου καὶ οἱ ἄνδρες τῆς αἰχμαλωσίας
σου καὶ πᾶς ὁ οἶκος τοῦ Ἰσραὴλ
συντετέλεσται, οἷς εἶπαν αὐτοῖς οἱ κατοικοῦντες
Ἱερουσαλὴμ, Μακρὰν ἀπέχετε
ἀπὸ τοῦ κυρίου, ἡμῖν δέδοται ἡ γῆ εἰς κληρονομίαν.
16 Διατοῦτο εἰπὸν, Τάδε λέγει
(κ) κύριος, Ὅτι ἀπώσομαι αὐτοὺς εἰς τὰ
ἔθνη, καὶ διασκορπιῶ αὐτοὺς εἰς πᾶσαν
(λ) γῆν, καὶ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς ἁγίασμα
μικρὸν ἐν ταῖς χώραις οὗ ἐὰν εἰσέλθωσιν
17 ἐκεῖ. Διατοῦτο (μ) εἰπὸν, Τάδε λέγει
κύριος, Καὶ εἰσδέξομαι αὐτοὺς ἐκ τῶν
ἐθνῶν, καὶ συνάξω αὐτοὺς ἐκ τῶν χωρῶν
οὗ διέσπειρα αὐτοὺς ἐν αὐταῖς· καὶ δώσω
18 αὐτοῖς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ εἰσελεύσονται
ἐκεῖ, καὶ ἐξαροῦσι πάντα τὰ βδελύγματα
αὐτῆς, καὶ πάσας τὰς ἀνομίας
19 αὐτῆς ἐξ αὐτῆς. Καὶ δώσω αὐτοῖς
καρδίαν ἑτέραν, καὶ πνεῦμα καινὸν δώσω
ἐν αὐτοῖς, καὶ ἐκσπάσω τὴν καρδίαν (ν)
τὴν λιθίνην ἐκ τῆς σαρκὸς αὐτῶν, καὶ δώσω
αὐτοῖς καρδίαν σαρκίνην·

Et irruit in me ſpiritus Domini: & dixit ad me; Dic: Hæc dicit Dominus; Sic dixiſtis domus Iſrael: & cogitationes ſpiritus veſtri ego novi: Multiplicaſtis mortuos veſtros in urbe hac, & impleſtis vias earum interfectis. Propterea hæc dicit Dominus; Mortuos veſtros, quos percuſſiſtis in medio ejus, hi ſunt carnes, hæc autem lebes eſt. Et vos educam de medio ejus. Gladium timetis: & gladium inducam ſuper vos, ait Dominus. Et educam vos de medio ejus: & tradam vos in manus alienorum: & faciam in vobis judicia: In gladio cadetis: in (b) montibus Iſrael judicabo vos: & ſcietis, quia ego (c) Dominus. Et factum eſt, cum prophetarem; & Phaltias filius Banææ mortuus eſt: & cado in faciem meam: & exclamavi voce magnâ, & dixi; Heu, heu, Domine, in conſummationem tu facis reſiduos Iſrael? Et factus eſt ſermo Domini ad me, dicens; Fili hominis, fratres tui, & viri captivitatis tuæ, & omnis domus Iſrael conſummata eſt: quibus dixerunt eis habitatores Hieruſalem; Longe abeſtis à Domino: nobis data eſt terra in hæreditatem. Propterea dic, Hæc dicit Dominus; Quia repellam eos in gentes, et diſpergam eos in omnem terram: et ero eis in ſanctificationem parvulam in regionibus, quocunq; ingreſſi fuerint illuc. Propterea dic, Hæc dicit Dominus; Et ſuſcipiam eos de gentibus, & congregabo eos de regionibus, quò diſſeminavi eos in illas: et dabo eis terram Iſrael. Et ingredientur illuc: et auferent omnes abominationes ejus, cunctaſque iniquitates ejus de illa. Et dabo eis cor alterum, et ſpiritum novum dabo in eis: et extraham cor lapideum de carne eorum: et dabo eis cor carneum:

MS. A. (β) ὁ οἶκος (γ) αὐτῆς (δ) ἀδωναὶ κύριος, (ε) ἐφονεύσατε
11 (ζ) ἀδωναὶ κύριος. (η) καὶ ἐπὶ (θ) Αὕτη ὑμῖν οὐκ ἔσται εἰς λέβητα, καὶ ὑμεῖς
οὐ μὴ γένησθε ἐμ μέσῳ αὐτῆς εἰς κρέα· ἐπὶ τῶν ὀρέων τοῦ
12 Ἰσραὴλ κρινῶ ὑμᾶς. Καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος. Καὶ ἐγένετο
(ι) Οἴμμοι, οἴμμοι, ἀδωναὶ κύριε, εἰς συντέλειαν σὺ ποιεῖς (κ)
ἀδωναὶ κύριος, (λ) τὴν γῆν, (μ) τάδε λέγει ἀδωναὶ κύριος, (ν)
αὐτῶν τὴν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 ושרת עלי רוח נבואה מן קדם יי ואמר לי אמר כדנן אמר יי כן אמרתון בית ישראל
6 ודי אתון מהרהרין ודסליקת על לבכון קדמי גלן : אסגיתון קטיליכון בקרתא
7 הדא ומליתון שוקהא קטילין : בכן כדנן אמר יי אלהים קטילכון דשויתון בגוה
8 אנון כבסרא והיא כדודא ויתכון אגלי מגוה : מן קדם דקטלין בחרבא דחלתון
9 ודקטלין בחרבא איתי עליכון אמר יי אלהים : ואגלי יתכון מגוה ואמסר יתכון
10 ביד נוכראין ואעבד בכון פורענות דינין : בחרבא תתקטלון על תחום ארעא
11 דישראל אתפרע מנכון ותדעון ארי אנא יי : היא לא תהי לכון כדודא ברם אתון
תהון בגוה כבסרא דבשיל בגו דודא על תחום ארעא דישראל אתפרע מנכון :
12 ותדעון ארי אנא יי די בקימי לא הלכתון ודיני לא עבדתון ובנימוסי עממיא די
13 בסחרניכון עבדתון : והוה באתנבאותי ופלטיה בר בניה מית ואשתטחית על אפי
וצוחית בקל רב ואמרית קביל בעותי יי אלהים גמירא את עביד עם שארא דישראל :
14 15 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם אחך אחך אנש קריבך וכל בית
ישראל כולהון דאמרין להון יתבי ירושלם אתרחקו מדחלתא דיי דילנא היא
16 אתיהיבת ארעא למירתה : בכן כדנן אמר יי אלהים ארי ארחקתנון לביני עממיא וארי
בדרתנון במדינתא ויהבית להון בתי כנשתא תנין לבית מקדשי ואנון כזעיר במדינתא
17 דאתגליאו לתמן : בכן אמר כדנן אמר יי אלהים ואקריב יתכון מן ביני עממיא ואכניש
18 יתכון מן מדינתא דאתבדרתון בהון ואתן לכון ית ארעא דישראל : ויעלון לתמן ויעדון
19 ית כל שקוצהא וית כל תועבתהא מנה : ואתן להון לבא דחיל ורוח דחלא אתן במעיהון
ואתבר לבא דרשיעא דהוא תקיף כאבנא מבסרהון ואתן להון לב דחיל קדמי
למעבד רעותי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et reſedit ſuper me ſpiritus prophetiæ à facie Domini, & dixit ad me: Dic, Hæc dicit Dominus; ſic dixiſtis domus Iſrael, & quod vos cogitatis, & quod aſcendit in cor veſtrum, revelatum eſt coram me. Multiplicaſtis interfectos veſtros in civitate iſta, & impleſtis vicos ejus interfectis. Propterea hæc dicit Dominꝰ Deus: Interfecti veſtri quos poſuiſtis in medio ejus, ipſi ſunt ſicut caro, & ipſa eſt quaſi lebes, & vos tranſmigrare faciam de medio ejus. A facie eorum qui occidunt gladio timuiſtis, & occidentes gladio adducam ſuper vos, dicit Dominꝰ Deus. Et tranſmigrare faciam vos de medio ejus, & tradam vos in manum alienorum, & faciam in vobis ultionem judiciorum. Gladio occidemini; in termino terræ Iſrael vindictam ſumam ex vobis, & ſcietis quia ego Dominus. Ipſa non erit vobis tanquam lebes, ſed vos intra eam eritis velut caro quæ in lebete coquitur: in limite terræ Iſrael vos ulciſcar. Scietiſque, quia ego Dominus, qui in pactis meis non ambulâſtis, & judicia mea non feciſtis, ſed ſecundùm mores populorum qui in circuitu veſtro ſunt, feciſtis. Et factum eſt cùm prophetarem, Phaltias filiꝰ Banaiæ mortuus eſt: & corrui pronus in faciem meam, & clamavi voce magna, & dixi: Suſcipe deprecationem meam Domine Deus, conſummationem tu facis cum reliquiis Iſrael. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me dicens: Fili hominis, fratres tui, fratres tui, viri propinqui tui & omnis domus Iſrael univerſi de quibꝰ dicunt habitatores Jeruſalem; Longe facti ſunt à timore Domini: nobis data eſt terra in poſſeſſionem. Propterea hæc dicit Dominus Deus, quia elongavi eos inter populos, & quia diſperſi eos per provincias, dedi eis domos congregationis ſecundæ domui ſanctuarii mei & ipſi ſunt quaſi pauci in provinciis ad quas tranſmigraverūt. Propterea dic, Hæc dicit Dominꝰ Deus, & applicabo vos de medio populorum, & congregabo vos de provinciis ad quas diſperſi eſtis, & dabo vobis terram Iſrael. Et ingredientur illuc & auferent omnia inquinamenta & abominationes ejus ab ea. Et dabo eis cor timens, & ſpiritum timoris dabo in viſceribus eorum, & conteram cor impietatis, quod erat durum ſicut lapis, de carne eorum, & dabo eis cor timens coram me, ut faciant voluntatem meam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܦܠܬ ܥܠܝ ܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܘܐܡܪ ܠܝ. ܐܡܪ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܟܢܐ ܐܚܒܬܘܢ
ܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܡܚܫܒܬܐ ܕܪܘܚܟܘܢ ܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܠܗܝܢ. * ܐܣܓܝܬܘܢ ܩܛܝ̈ܠܝܟܘܢ
ܒܡܕܝܢܬܐ ܗܕܐ. ܘܡܠܝܬܘܢ ܫܘܩܝ̈ܗ ܩܛܝ̈ܠܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.
ܩܛܝ̈ܠܝܟܘܢ ܕܐܪܡܝܬܘܢ ܒܓܘܗ. ܗܢܘܢ ܐܢܘܢ ܒܣܪܐ. ܗܝ ܕܝܢ ܩܕܪܐ. ܘܠܟܘܢ ܐܦܩ
ܐܢܐ ܡܢ ܓܘܗ. * ܡܢ ܚܪܒܐ ܕܚܠܬܘܢ. ܘܚܪܒܐ ܐܝܬܐ ܥܠܝܟܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.
* ܘܐܦܩܟܘܢ ܡܢ ܓܘܗ. ܘܐܫܠܡܟܘܢ ܒܐܝܕܝ̈ ܢܘܟܪ̈ܝܐ. ܘܐܥܒܕ ܒܟܘܢ ܕܝܢܐ. * ܒܚܪܒܐ
ܬܦܠܘܢ. ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܕܘܢܟܘܢ. * ܗܝ ܠܐ ܬܗܘܐ ܠܟܘܢ ܩܕܪܐ. ܘܐܢܬܘܢ
ܠܐ ܬܗܘܘܢ ܒܓܘܗ ܒܣܪܐ. ܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܕܘܢܟܘܢ. * ܘܬܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.
ܕܒܦܘܩܕܢܝ̈ ܠܐ ܗܠܟܬܘܢ. ܘܕܝܢܝ̈ ܠܐ ܥܒܕܬܘܢ. * ܘܟܕ ܐܬܢܒܝܬ. ܡܝܬ ܦܠܛܝܐ ܒܪ
ܒܢܝܐ. ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ. ܘܩܥܝܬ ܒܩܠܐ ܪܡܐ. ܘܐܡܪܬ. ܐܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܫܘܠܡܐ
ܥܒܕ ܐܢܬ ܠܫܪܟܢܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܥܠܝ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ.
ܐܚܝ̈ܟ ܐܚܝ̈ܟ ܐܢܫܐ ܕܫܒܝܬܟ: ܘܟܠܗܘܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܢܫܬܘܦܘܢ. ܕܐܡܪܘ ܠܗܘܢ
ܥܡܘܪ̈ܘܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܐܬܪܚܩܘ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܠܢ ܗܝ ܝܗܝܒܐ ܐܪܥܐ ܠܝܪܬܘܬܐ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܕܐܪܚܩ ܐܢܘܢ ܒܥܡܡܐ. ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܒܐܪ̈ܥܬܐ.
ܘܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܡܩܕܫܐ ܙܥܘܪܐ ܒܐܪ̈ܥܬܐ ܕܐܙܠܘ ܠܗܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܐܠܗܐ. ܐܟܢܫܟܘܢ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܘܐܩܪܒܟܘܢ ܡܢ ܐܪ̈ܥܬܐ ܕܐܬܒܕܪܬܘܢ ܒܗܝܢ. ܘܐܬܠ
ܠܟܘܢ ܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܢܥܠܘܢ ܠܬܡܢ. ܘܢܥܒܪܘܢ ܡܢܗ ܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪ̈ܘܗܝ. ܘܟܠܗܝܢ
ܛܢܦܘܬܗ ܡܢܗ. * ܘܐܬܠ ܠܗܘܢ ܠܒܐ ܚܕܬܐ. ܘܪܘܚܐ ܚܕܬܐ ܐܬܠ ܒܗܘܢ. ܘܐܥܒܪ ܠܒܐ
ܕܟܐܦܐ ܡܢ ܒܣܪܗܘܢ. ܘܐܬܠ ܠܗܘܢ ܠܒܐ ܕܒܣܪܐ.

Tum cecidit ſuper me ſpiritus Domini, dixítque 5
mihi; Dic, Sic ait Dominus dominorum;
Hoccine modo dilexiſtis filios Iſraelis?
nam cogitationes animi veſtri ego novi.
Multiplicâſtis occiſos veſtros hac in urbe, 6
& confoſſis implevistis plateas ejus. Iccircò 7
ſic ait Dominus dominorum; Confoſſi veſtri
quos in ea proſtraviſtis, ipſi caro ſunt,
iſta verò *urbs* eſt olla: vos autem ex ipſa educam.
Gladium timuiſtis, & gladium adducam 8
ſuper vos, ait Dominus dominorum:
Nam vos educam ex ipſa, tradámque vos in 9
manum alienorum, & exercebo contra vos
judicia. Gladio cadetis, & ad limites Iſraelis 10
judicabo vos. Hæc non erit vobis olla, 11
neque vos eritis in ea caro: ad limites Iſraelis
judicabo vos: Ita experiemini me eſſe 12
Dominum, quicunque in præceptis meis non
ambulâſtis, & judicia mea non feciſtis. Cùm 13
autem prophetâſſem, mortuus eſt Pelatia filius
Benaiæ: quapropter in faciem meam procidens,
altâque voce exclamans, dixi; Ah
Domine dominorum, num conſummationem
faceres reliquiis Iſraelis? Tum fuit ad me 14
ſermo Domini, dicendo; Fili hominis, fratres 15
tui, fratres *inquam* tui, homines concaptivi
tui, & omnes Iſraelitæ delebuntur;
quia dixerunt eis, O habitatores Jeruſalem,
recedite à Domino; nobis enim data eſt *hæc*
terra in hæreditatem. Iccirco ſic ait Dominus 16
dominorum; Expellam eos inter gentes,
& diſperdam eos per terras, eroque
illis ſanctuarium exiguum in terris ad quas
abierint. Iccirco ſit ait Dominus dominorum; 17
Colligam vos è gentibus, & admovebo
vos de terris in quas diſperſi eſtis, dabóque
vobis terram Iſraelis: Quam cùm
ingreſſi fuerint, amovebunt ab ea cuncta 18
ipſius numina cunctaſque abominationes
ejus. Nam dabo illis cor novum, & ſpiritum 19
novum indam ipſis: amovebo cor
lapideum à carne eorum, daboque ipſis cor
carneum:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ونزلت علي روح الرب • وقال لي • قل • هذا ما يقوله الرب • هكذا قولوا يا بيت اسراييل
انا اعلم مواضع روحكم * كثرتم امواتكم في هذه المدينة • وملاتم طرقاتها من الجر
* لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب • امواتكم الذين قتلتموهم في وسطها هولا
هم اللحم • وهذه هي المرجل • واخرجكم من وسطها * اتخافون السيف • فاجلب عليك
سيفا يقول ادوناي الرب * واخرجكم من وسطها • واسلمكم الي ايدي الغربا • واصنع
فيكم احكاما * وتسقطون بالسيف • وعلي جبال اسراييل ادينكم • وتعلمون اني انا الرب
* وهذه ليست لكم مرجلا • وانتم لا تكونون في وسطها لحما • علي جبال اسراييل ادينك
* وتعلمون اني انا الرب [MS. Oxon. لانكم لم تسلكوا في وصاياي واحكامي ل
تعملوا • وكمثل احكام الشعوب التي حولكم فعلتم] * وكان لما تنبيت مات فلطيا
بن باناو • فسقطت علي وجهي • وصرخت بصوت عظيم وقلت • الويل لي الويل لي
ادوناي الرب • للانقضاء انت تصنع ببقايا اسراييل * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن
الانسان • اخوتك ورجال سبيك • وكل بيت اسراييل انقضي • الذين قالوا لهم سكا
اورشليم • ابعدوا بعيدا من الرب • الارض اعطيت لكم ميراثا * لاجل هذا قل
هكذا يقول ادوناي الرب • اني اقصيهم في الامم • وافرقهم في كل الارض • واصير له
مقدسا صغيرا في البلاد حيث يدخلون هناك * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب
واقبلهم من الامم واجمعهم من البلدان حيث بددتهم فيها • واعطيهم ارض اسراييل
* ويدخلون هناك • وينزعون جميع رذالاتها وجميع اثامها منها * واعطيهم قلبا اخر
وروحا جديدا اعطي فيهم • وانزع قلبهم الحجري من لحمهم • واعطيهم قلبا لحميا

Tum deſcendit ſuper me ſpiritus Domini, 5
dixitque mihi; Dic, Hoc eſt quod dicit
Dominus: Ita dicite O domus Iſraelis;
ego novi conſilium animi veſtri. Multiplicâſtis 6
mortuos veſtros hac in urbe, &
impleviſtis vias ejus vulneratis. Ideo ſic 7
dicit Adonai Dominus; Mortui veſtri
quos occidiſtis in medio ejus, hi ſunt
caro, & iſta eſt cacabus. At vos educam
de medio ejus: (Gladium pertimeſcitis? 8
at adducam ſuper vos gladium,
dicit Adonai Dominus.) Et cùm 9
eduxero vos de medio ejus, tradam
vos in manus exterorum, & agam vobiſcum
judicia, Et occumbetis gladio: & 10
ſuper montes Iſraelis judicabo vos: &
ſcietis me eſſe Dominum. Hæc nequaquam 11
erit vobis cacabus, neque vos
eritis caro in medio ejus: ſuper montes
Iſraelis judicabo vos, Et ſcietis me 12
eſſe Dominũ. [MS. Oxon. *Vos enim in præceptis*
meis non ambulâſtis, & judicia
mea minimè obſervâſtis, ſed juxta judicia
populorũ, qui in circuitu veſtro ſunt,
feciſtis.] *Contigit autem cùm prophetâſſem,* 13
ut moreretur Phaltias Banai filius:
quare procidens in faciem meam,
exclamavi voce magnâ, & dixi; Heu
me miſerum, heu me miſerum Adonai
Domine: num excidio tu traditurus es
reſiduos Iſraelis? Tum fuit ad me ſermo 14
Domini, dicens; O fili hominis, fratres 15
tui, & concaptivi tui, totáque domus
Iſraelis excindentur, quibus dixerunt
cives Jeruſalem, Recedite procul à
Domino, terra data vobis eſt in hæreditatem.
Propterea dic, Sic ait Adonai 16
Dominus; Equidem exterminabo eos
inter gentes, & diſpergam illos in univerſam
terram, eroque ipſis ſanctuarium
exiguũ in regionibus quas ingreſſuri ſunt.
Propterea ſic dicit Adonai Dominus; 17
Et recipiam eos de gentibus, & congregabo
eos de regionibus in quas diſperſero
eos, daboque eis terram Iſraelis.
Et cùm ingreſſi fuerint illuc, auferent 18
omnes abominationes ejus omneſque iniquitates
ejus ex ipſa. Et dabo eis cor 19
aliud, & ſpiritum novum indam eis:
auferam cor eorum lapideum ex eorum
carne, daboque eis cor carneum;

יחזקאל : יב

faciant & ,custodiant mea judicia & ,ambulent meis statutis in Ut

20 לְמַעַן בְּחֻקֹּתַי יֵלֵכוּ וְאֶת־מִשְׁפָּטַי יִשְׁמְרוּ וְעָשׂוּ

ad Et Deum in eis sim ego & ,populum in mihi sint & : ea

21 אֹתָם וְהָיוּ־לִי לְעָם וַאֲנִי אֶהְיֶה לָהֶם לֵאלֹהִים׃ וְאֶל־

eorum cor suarum abominationum & ,suarum contaminationum cor

לֵב שִׁקּוּצֵיהֶם וְתוֹעֲבוֹתֵיהֶם לִבָּם

.Deus Dominus dixit ,dabo eorum caput in eorum viam ambulans

הֹלֵךְ דַּרְכָּם בְּרֹאשָׁם נָתַתִּי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃

: eos contra rotæ & ,suas alas Cherubim elevaverunt Et

22 וַיִּשְׂאוּ הַכְּרוּבִים אֶת־כַּנְפֵיהֶם וְהָאוֹפַנִּים לְעֻמָּתָם

gloria ascendit Et .desuper eos super Israel Dei gloria &

23 וּכְבוֹד אֱלֹהֵי־יִשְׂרָאֵל עֲלֵיהֶם מִלְמָעְלָה׃ וַיַּעַל כְּבוֹד

oriente ab qui ,montem super stetitque ,civitatis medio desuper Domini

יְהוָה מֵעַל תּוֹךְ הָעִיר וַיַּעֲמֹד עַל־הָהָר אֲשֶׁר מִקֶּדֶם

ad Chasdim in me adduxitque ,me elevavit spiritus Et .urbis

24 לָעִיר׃ וְרוּחַ נְשָׂאַתְנִי וַתְּבִיאֵנִי כַשְׂדִּימָה אֶל־

visio me desuper ascendit & : Dei spiritu in visione in transmigratione

הַגּוֹלָה בַּמַּרְאֶה בְּרוּחַ אֱלֹהִים וַיַּעַל מֵעָלַי הַמַּרְאֶה

verba omnia transmigrationem ad sum locutus Et .vidi quam

25 אֲשֶׁר רָאִיתִי׃ וָאֲדַבֵּר אֶל־הַגּוֹלָה אֵת כָּל־דִּבְרֵי

.mihi ostenderat quæ ,Domini

יְהוָה אֲשֶׁר הֶרְאָנִי׃

CAP. XII. יב

medio in hominis Fili : dicendo me ad Domini verbum fuit Et

1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ 2 בֶּן־אָדָם בְּתוֹךְ

non & ,videndum ad eis oculi quibus : sedens tu rebellionis domus

בֵּית־הַמֶּרִי אַתָּה יֹשֵׁב אֲשֶׁר עֵינַיִם לָהֶם לִרְאוֹת וְלֹא

domus quia ,audierunt non & ,audiendum ad eis aures : viderunt

רָאוּ אָזְנַיִם לָהֶם לִשְׁמֹעַ וְלֹא שָׁמֵעוּ כִּי בֵּית

,transmigrationis vasa tibi fac hominis fili tu Et .ipsi rebellionis

3 מְרִי הֵם׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם עֲשֵׂה לְךָ כְּלֵי גוֹלָה

ad tuo loco de transmigrabis Et .eorum oculis in interdiu transmigra &

וּגְלֵה יוֹמָם לְעֵינֵיהֶם וְגָלִיתָ מִמְּקוֹמְךָ אֶל־

rebellionis domus quia ,aspiciant forte si ,eorum oculis in alterum locum

מָקוֹם אַחֵר לְעֵינֵיהֶם אוּלַי יִרְאוּ כִּי בֵּית מְרִי

interdiu transmigrationis vasa tanquam tua vasa educes Et .ipsi

4 הֵמָּה׃ וְהוֹצֵאתָ כֵלֶיךָ כִּכְלֵי גוֹלָה יוֹמָם

exitus secundum eorum oculis in vespera in egredieris tu Et .eorum oculis in

לְעֵינֵיהֶם וְאַתָּה תֵּצֵא בָעֶרֶב לְעֵינֵיהֶם כְּמוֹצָאֵי

extra facies & ,parietem in tibi perfode eorum oculis In .transmigrationis

5 גוֹלָה׃ לְעֵינֵיהֶם חֲתָר־לְךָ בַקִּיר וְהוֹצֵאתָ

: efferes caligine in ,portabis humerum super eorum oculis In .eum per

6 בּוֹ׃ לְעֵינֵיהֶם עַל־כָּתֵף תִּשָּׂא בָּעֲלָטָה תוֹצִיא

te dedi portentum quia : terram videbis non & ,velabis tuas facies

פָּנֶיךָ תְכַסֶּה וְלֹא תִרְאֶה אֶת־הָאָרֶץ כִּי־מוֹפֵת נְתַתִּיךָ

protuli mea Vasa .sum jussus quemadmodum ,sic feci Et .Israel domui

7 לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃ וָאַעַשׂ כֵּן כַּאֲשֶׁר צֻוֵּיתִי כֵּלַי הוֹצֵאתִי

parietem in mihi perfodi vespera in & ,interdiu transmigrationis vasa tanquam

כִּכְלֵי גוֹלָה יוֹמָם וּבָעֶרֶב חָתַרְתִּי־לִי בַקִּיר

.eorum oculis in portavi humerum super ,protuli caligine In .manu in

בְּיָד בָּעֲלָטָה הוֹצֵאתִי עַל־כָּתֵף נָשָׂאתִי לְעֵינֵיהֶם׃

nonne ,hominis Fili : dicendo ,mane in me ad Domini verbum fuit Et

8 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי בַּבֹּקֶר לֵאמֹר׃ 9 בֶּן־אָדָם הֲלֹא

? faciens tu quid ,rebellionis domus ,Israel domus te ad dixerant

אָמְרוּ אֵלֶיךָ בֵּית יִשְׂרָאֵל בֵּית הַמֶּרִי מָה אַתָּה עֹשֶׂה׃

hoc onus Prælato : Deus Dominus dixit Sic : eos ad Dic

10 אֱמֹר אֲלֵיהֶם כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הַנָּשִׂיא הַמַּשָּׂא הַזֶּה

.eorum medio in ipsi quæ ,Israel domui omni & ,Jerusalaim in

בִּירוּשָׁלַ͏ִם וְכָל־בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר־הֵמָּה בְתוֹכָם׃

Versio VULG. LAT.

20 Ut in præceptis meis ambulent, & judicia mea custodiant, faciántque ea: & sint mihi in populum, & ego sim eis in Deum. 21 Quorum cor post offendicula & abominationes suas ambulat, horum viam in capite suo ponam, 22 dicit Dominus Deus. Et elevaverũt Cherubim alas suas, & rotæ cum eis: & gloria Dei Israel 23 erat super ea. Et ascendit gloria Domini de medio civitatis, stetitque super montem, qui est ad 24 Orientem urbis. Et spiritus levavit me, adduxítque in Chaldæam ad transmigrationem, in visione, in spiritu Dei: & sublata est à me visio, quam vide- 25 ram. Et locutus sum ad transmigrationem omnia verba Domini, quæ ostenderat mihi.

CAP. XII.

1 ET factus est sermo Domini ad 2 me, dicens; Fili hominis, in medio domûs exasperantis tu habitas: qui oculos habẽt ad videndum, & non vident: & aures ad audiendum, & non audiunt: quia 3 domus exasperans est. Tu ergo, fili hominis, fac tibi vasa transmigrationis, & transmigrabis per diem coram eis: transmigrabis autem de loco tuo ad locum alterum, in conspectu eorũ, si forte aspiciant: quia domus 4 exasperans est. Et efferes foràs vasa tua quasi vasa transmigrantis per diem in conspectu eorũ: tu autem egredieris vespere coram eis, sicut egreditur migrans. 5 Ante oculos eorum perfode tibi parietem: & egredieris per eum. 6 In conspectu eorum in humeris portaberis, in caligine efferéris: faciem tuam velabis, & non videbis terram: quia portentum 7 dedi te domui Israel. Feci ergò sicut præceperat mihi Dominus: vasa mea protuli quasi vasa transmigrantis per diem: & vespere perfodi mihi parietem manu: & in caligine egressus sum, in humeris portatus in conspectu 8 eorum. Et factus est sermo Do-9 mini mane ad me, dicens; Fili hominis, numquid non dixerunt ad te domus Israel, domus ex-10 asperans; Quid tu facis? Dic ad eos; Hæc dicit Dominus Deus; Super ducem onus istud, qui est in Jerusalem, & super omnem domum Israel, quæ est in medio eorum.

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Translatione LATINA.

20 Ὅπως ἐν τοῖς προστάγμασί μου πορεύωνται, καὶ τὰ δικαιώματά μου φυλάσσωνται, καὶ (ξ) ποιῶσιν αὐτὰ, καὶ ἔσονταί μοι εἰς λαὸν, καὶ ἐγὼ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς (ο) Θεόν. 21 Καὶ εἰς τὴν καρδίαν τῶν βδελυγμάτων αὐτῶν, καὶ τῶν ἀνομιῶν (π) αὐτῶν, ὡς ἡ καρδία αὐτῶν ἐπορεύετο, τὰς ὁδοὺς αὐτῶν (ρ) εἰς τὰς κεφαλὰς αὐτῶν δέδωκα, (σ) λέγει κύριος. 22 Καὶ ἐξῆραν τὰ χερουβὶμ τὰς πτέρυγας αὐτῶν, καὶ οἱ τροχοὶ ἐχόμενοι αὐτῶν, καὶ ἡ δόξα Θεοῦ (τ) Ἰσραὴλ ἐπ᾽ αὐτὰ ὑπεράνω αὐτῶν. 23 Καὶ (υ) ἀνέβη ἡ δόξα κυρίου ἐκ μέσης τῆς πόλεως, καὶ ἔστη ἐπὶ τοῦ ὄρους ὃ ἦν ἀπέναντι τῆς πόλεως. 24 Καὶ ἀνέλαβέ με πνεῦμα, καὶ ἤγαγέ με εἰς γῆν Χαλδαίων εἰς τὴν αἰχμαλωσίαν ἐν ὁράσει ἐν πνεύματι Θεοῦ. καὶ ἀνέβην 25 ἀπὸ τῆς ὁράσεως ἧς ἴδον. Καὶ ἐλάλησα πρὸς τὴν αἰχμαλωσίαν πάντας τοὺς (φ) λόγους τοῦ κυρίου οὓς ἔδειξέ μοι.

MS. A. (ξ) ποιήσωσιν (ο) Θεὸν, λέγει κύριος. Καὶ κατὰ τὰς καρδίας τῶν (π) αὐτῶν, καὶ τῶν πονηρῶν ὧν ἐποίησαν, ὡς ἡ (ρ) εἰς κεφαλὰς (σ) λέγει ἀδωναὶ κύριος. (τ) Ἰσραὴλ ἦν ἐπ᾽ αὐτοῖς (υ) ἀνέβη δόξα κυρίου ἐκ μέσου τῆς πόλεως, (φ) λόγους κυρίου, οὓς ἔδειξέν μοι κύριος.

Ut in præceptis meis ambulent, & justificationes meas custodiant, & faciant ea: & erunt mihi in populum, & ego ero eis in Deum. Et in cor abominationum suarum, & in iniquitatum suarum, quemadmodum cor eorum ambulabat, vias eorum in capita eorum dedi, dicit Dominus. Et elevaverunt Cherubim alas suas & rotæ [illegible] eis: & gloria Dei Israel super ea desuper eis. Et ascendit gloria Domini de medio civitatis, & stetit super montem, qui erat è regione civitatis. Et assumpsit me spiritus, & duxit me in terram Chaldæorum in captivitatem in visione in spiritu Dei. Et ascendi à visione, quam vidi, & locutus sum ad captivitatem omnia verba Domini, quæ ostendit mihi.

ΚΕΦ. ιβ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, ἐν μέσῳ τῶν ἀδικιῶν αὐτῶν σὺ κατοικεῖς, οἳ ἔχουσιν ὀφθαλμοὺς τοῦ (α) βλέπειν, καὶ οὐ βλέπουσι, καὶ ὦτα ἔχουσι τοῦ ἀκούειν, καὶ οὐκ ἀκούουσι, διότι οἶ-3 κος παραπικραίνων ἐστί. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου ποίησον σεαυτῷ σκεύη (β) αἰχμαλωσίας ἡμέρας ἐνώπιον αὐτῶν, καὶ αἰχμαλωτευθήσῃ ἐκ τοῦ (γ) τόπου σου εἰς ἕτερον τόπον ἐνώπιον αὐτῶν, ὅπως ἴδωσι, δι-4 ότι οἶκος παραπικραίνων ἐστί. Καὶ ἐξοίσεις τὰ σκεύη σου σκεύη αἰχμαλωσίας ἡμέρας κατ᾽ ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, καὶ (δ) σὺ ἐξελεύσῃ ἑσπέρας, ὡς ἐκπορεύεται αἰχμάλω-5 τος Ἐνώπιον αὐτῶν. διόρυξον σεαυτῷ 6 εἰς τὸν τοῖχον, καὶ διεξελεύσῃ δι᾽ αὐτοῦ Ἐνώπιον αὐτῶν. ἐπ᾽ ὤμων ἀναληφθήσῃ, καὶ κεκρυμμένος ἐξελεύσῃ, τὸ πρόσωπόν σου συγκαλύψεις, καὶ οὐ μὴ ἴδῃς τὴν 7 γῆν, διότι τέρας δέδωκά σε τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ. Καὶ ἐποίησα οὕτως κατὰ πάντα ὅσα ἐνετείλατό μοι· (ε) καὶ σκεύη ἐξήνεγκα αἰχμαλωσίας ἡμέρας, καὶ ἑσπέρας (ζ) διώρυξα ἐμαυτῷ τὸν (η) τοῖχον, καὶ κε-8 κρυμμένος ἐξῆλθον, ἐπ᾽ ὤμων ἀνελήφθην 9 ἐνώπιον αὐτῶν. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου (θ) τοπρωῒ πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, οὐκ εἶπαν πρὸς σὲ ὁ οἶκος (ι) τοῦ Ἰσραὴλ, οἶκος ὁ παραπικραίνων, Τί σὺ 10 ποιεῖς; Εἰπὸν πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει κύριος κύριος, (κ) Ὁ ἄρχων καὶ ὁ ἀφηγούμενος ἐν Ἰερουσαλὴμ, καὶ παντὶ οἴκῳ Ἰσραὴλ, οἵ εἰσιν ἐν μέσῳ αὐτῶν.

MS. A. (α) ὁρᾶν, (β) αἰχμαλωσίας, καὶ αἰχμαλωτισθήσῃ ἡμέρας (γ) οἴκου σου (δ) ἐξελεύσῃ σὺ ἑσπέρας ἐνώπιον αὐτῶν, ὡς ἐκπορεύεται (ε) ἐξήνεγκα ὡς σκεύη αἰχμαλωσίας (ζ) ὤρυξα (η) τοῖχον τῇ χειρί, καὶ (θ) πρὸς μὲ τοπρωῒ, (ι) Ἰσραὴλ ὁ παραπικραίνων, (κ) Εἰπὸν τῷ ἄρχοντι καὶ τῷ ἀφηγουμένῳ Ἰερουσαλὴμ, καὶ

CAP. XII.

ET factus est sermo Domini ad me, dicens; Fili hominis, in medio iniquitatum eorum tu habitas: qui oculos habent ad videndum, & non vident, & aures habent ad audiendum, & non audiunt; quia domus exasperans est. Et tu fili hominis fac tibi vasa captivitatis per diem coram eis: & captivaberis de loco tuo in locum alterum in conspectu eorum; ut videant, quia domus exasperans est. Et proferes vasa tua, vasa captivitatis, per diem in oculis eorum: & tu egredieris vespere, sicut egreditur captivus. In conspectu eorum. Perfode tibi parietem, & transibis per eum, In conspectu eorum. Super humeros assumeris, & absconditus egredieris: faciem tuam cooperies, & non videbis terram: quia portentum dedi te domui Israel. Et feci sic juxta omnia, quæ mandavit mihi: & vasa protuli captivitatis per diem, & ad vesperam perfodi mihi parietem: & absconditus egressus sum: Super humeros assumptus sum in conspectu eorum. Et factus est sermo Domini mane ad me, dicens: Fili hominis, non dixerunt ad te domus Israel, domus exasperans, Quid tu facis? Dic ad eos; Hæc dicit Dominus Dominus; (κ) Princeps, & dux in Hierusalem, & omni domui Israel, qui sunt in medio eorum.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 בדיל דבקימי יהכון וית דיני יטרון ויעבדון יתהון ויהון קדמי לעם ואנא אהוי להון
21 לאלהא׃ בתר פולחן שקוציהון ותועבתהון לבהון טעי פורענות ארחתהון ברישיהון
22 יהבית אמר יי אלהים׃ ונטלו כרוביא ית גדפיהון וגלגליא לקבליהון ויקר אלהא
23 דישראל עליהון מלעילא׃ ואסתלק יקרא דיי מן גו קרתא ושרא על טור
24 זיתא דממדנח לקרתא׃ ורוח נטלתני ואיתיתני למדינת ארעא כסדאי לות בני
גלותא בחזוא ברוח נבואה דשרת עלי מן קדם יי ואסתלק מני חזוא דחזיתי׃
25 ואתנביתי לבני גלותא ית כל פתגמיא דיי דאחזיני׃

יב

1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ 2 בר אדם בגו עמא סרבנא את יתיב די עינין
להון למחזי ולא חזן ואודנין להון למשמע ולא שמעין ארי עם סרבן אנון׃ 3 ואת בר
אדם אתקין לך מני גלותא וגלי בימם לעיניהון ותגלי מאתרך לאתר אוחרן לעיניהון
מאם ידחלון ארי עם סרבן אנון׃ 4 ותפיק מנך כמני גלותא בימם לעיניהון ואת
תפוק ברמשא לעיניהון כמפקני גלותא׃ 5 לעיניהון חתר לך בכותלא ותפיק ביה׃
6 לעיניהון על כתפא תטול בקבלא תפוק אפך תכסי ולא תחזי ית ארעא ארי את יהבתך
לבית ישראל׃ 7 ועבדית כן כמא דאתפקדית מני אפקית כמני גלותא בימם
וברמשא אתחתרית לי בכותלא ביד בקבלא נפקית על כתפא נטלית לעיניהון׃
8 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי בצפרא למימר׃ 9 בר אדם הלא אמרו לך
בית ישראל עמא סרבנא מא את עביד׃ 10 אמר להון [illegible]
[illegible] נבואתא הדא בירושלם וכל בית ישראל [illegible]

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ut ambulent in pactis meis, & judicia mea servent & faciant ea: & erunt coram me in populum, & ego ero eis in Deum. Et post cultum idolorum suorum & abominationum suarum cor eorum errat: ultionem viarum suarum in caput eorum dabo, dicit Dominus Deus. Et levaverunt Cherubim alas suas & rotæ è regione eorum; & gloria Dei Israel super eis desuper. Et elevata est gloria Domini de medio civitatis, & resedit super montem Oliveti qui est ad Orientem civitatis. Et spiritus sustulit me, & adduxit me in provinciam terræ Chaldæorum ad filios transmigrationis in visione spiritus prophetiæ qui resedit super me à facie Domini: & recessit à me visio quam vidi. Et prophetavi filiis transmigrationis omnia verba Domini quæ ostenderat mihi.

CAP. XII.

ET factum est verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: Fili hominis, in medio populi contumacis tu habitas, qui oculos habent ad videndum, & non vident: & aures ad audiendum, & non audiunt: quia populus contumax est. Tu autem fili hominis præpara tibi vasa transmigrationis, & transmigra in die ante oculos eorum, & transmigrabis de loco tuo ad locum alterum in oculis eorum: forte timebunt, quia populus contumax est. Et efferes vasa tua sicut vasa transmigrationis per diem in oculis eorum, & tu egredieris vespere in oculis eorum sicut egredientes transmigrantes. Ante oculos eorum perfode tibi in pariete, & egredieris per eum. Ante oculos eorum in humero tolles, in tenebris egredieris, faciem tuam operies, & non videbis terram, quia signum dedi te domui Israel. Et feci sicut [illegible], vasa mea eduxi sicut vasa transmigrationis [illegible] perfodi mihi in pariete manu, in tenebris exivi, [illegible] ante oculos eorum. Et factum est verbum prophetiæ [illegible] Fili hominis, [illegible] Quid tu facis? Dic [illegible] prophetiæ hujus [illegible]

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܘܢܗܠܟܘܢ ܒܦܘܩܕܢܝ. ܘܕܝܢܝ ܢܛܪܘܢ. ܘܢܥܒܕܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐ
ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. *ܘܕܒܬܪ ܪܥܝܢܐ ܓܝܪ ܕܦܬܟܪܝܗܘܢ ܘܕܛܢܦܘܬܗܘܢ ܐܙܠ ܗܘܐ ܠܒܗܘܢ.
ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܐܦܪܘܥ ܒܪܫܝܗܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. *ܘܐܪܝܡܘ ܟܪܘܒܐ ܟܢܦܝܗܘܢ. ܘܓܝ
ܥܡܗܘܢ. ܘܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܥܠ ܡܢܗܘܢ. *ܘܐܣܬܠܩ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪ
ܡܢ ܓܘ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܩܡ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܠܡܕܢܚܗ ܕܡܕܝܢܬܐ. *ܘܪܘܚܐ ܫܩܠܬܢ
ܘܐܝܬܝܬܢܝ ܠܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ ܠܫܒܝܬܐ. ܒܚܙܘܐ ܘܒܪܘܚܐ ܕܐܠܗܐ. ܘܥܒܪ ܠܗ ܡܢ
ܚܙܘܐ ܕܚܙܝܬ. *ܘܡܠܠܬ ܥܡ ܫܒܝܬܐ. ܟܠܗܘܢ ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܕܚܘܝܢܝ.

*ܩܦܠܐܘܢ *ܝܒ*

*ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܒܓܘ ܒܝܬܐ ܡܡܪܡܪܢܐ ܝܬܒ ܐܢ
ܕܥܝܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܚܙܝܢ. ܘܐܕܢܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܝܢ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܐܢܘ
ܡܡܪܡܪܢܐ. *ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܥܒܕ ܠܟ ܡܐܢܐ ܕܓܠܘܬܐ. ܘܐܫܬܢܐ ܒܐܝܡܡ
ܠܥܝܢܝܗܘܢ: ܘܫܢܝ ܡܢ ܐܬܪܟ ܠܐܬܪܐ ܐܚܪܢܐ ܕܢܚܙܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܝܬܐ ܐܢܘܢ ܡܡܪܡܪܢܐ. *ܘܐܦܩ
ܡܐܢܝܟ ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܓܠܘܬܐ ܒܐܝܡܡܐ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. ܘܐܢܬ ܦܘܩ ܒܪܡܫܐ ܐܝܟ ܕܓܠܐ
*ܘܚܪܘܒ ܫܘܪܐ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. ܘܦܘܩ ܒܗ. *ܘܫܩܘܠ ܫܩܘܠܬܐ ܥܠ ܟܬܦܟ. ܘܦܘ
ܒܚܫܘܟܐ. ܘܦܪܨܘܦܟ ܟܣܝ ܘܠܐ ܬܚܙܐ ܠܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܝܗܒܬܟ ܠܒܝܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ
*ܘܥܒܕܬ ܗܟܢܐ ܐܝܟ ܕܦܩܕܢܝ. ܡܐܢܝ ܐܦܩܬ ܒܐܝܡܡܐ. ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܓܠܘܬܐ. ܘܫܘܪ
ܟܪܒܬ ܒܪܡܫܐ. ܘܒܚܫܘܟܐ ܢܦܩܬ. ܘܥܠ ܟܬܦܝ ܫܩܠܬ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. *ܘܗܘܐ ܥܠ
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܒܨܦܪܐ ܟܕ ܐܡܪ. *ܒܪ ܐܢܫܐ. ܠܐ ܐܡܪܝܢ ܠܟ ܒܝܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ
ܒܝܬܐ ܡܡܪܡܪܢܐ. ܡܢܐ ܥܒܕ ܐܢܬ. *ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܪ
ܢܫܩܘܠ ܫܩܘܠܬܐ ܗܕܐ ܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܟܠܗܘܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܥܡܗ.

Et ambulabunt in præceptis meis, judicia 20
mea obſervabunt ac perficient, eruntque mihi
populus, & ego ero illis Deus. Quorum e- 21
nim cor ſtudio idolorum & ſpurcitiarum ſua-
rum ferebatur, horum viam rependam in ca-
put ipſorum, ait dominorum Dominus. De- 22
inde cùm extuliſſent Cherubini alas ſuas, &
rotæ cum eis eſſent, & gloria Dei Iſraelis eſ-
ſet ſuper eos; Extulit ſe gloria Domini de 23
medio urbis, ſubſtititque ſuper montem qui
eſt ad plagam urbis Orientalem. Me autem 24
ſuſtulit ſpiritus, perduxitque in terram Chal-
dæorum ad captivos, in viſione & ſpiritu
Dei: ſic receſſit à me viſio quam videbam:
Et retuli captivis cunctos Domini ſermones 25
quos indicaverat mihi.

CAP. XII.

ET fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 1
Fili hominis, in medio domûs contumacis tu 2
ſedes, qui oculos habent, nec vident; aures
habent, nec audiunt, quia domus ſunt contu-
max. Tu ergò fili hominis, para tibi vaſa 3
migrationis, & migra interdiu, ſpectanti-
bus ipſis de loco tuo in alium locum, ut vi-
deant; nam domus ſunt rebellis. Vaſa tua, 4
ut vaſa migrationis educito, *idque* interdiu,
ſpectantibus ipſis; tu deinde egreditor ſub
veſperam, ut migraturus. Effringe parietem 5
cernentibus ipſis, perque ipſum egredere.
Sarcinam bajulato ſuper humerum tuum, & 6
tenebroſâ *nocte* egreditor; faciem tuam te-
gito, ne terram aſpicias: nam typum propo-
no te Iſraelitis. Sic itaque feci, quemadmo- 7
dum præcepit mihi: vaſa mea interdiu eduxi
ut vaſa migrationis: parietem ſub veſperam
perrupi, & obſcurâ *nocte* egreſſus ſum, ſuper
humerum meum *ſarcinam* bajulans, cernenti-
bus ipſis. Deinde fuit ad me ſermo Domini 8
matutino tempore, dicendo; Fili hominis, 9
Si tibi dixerint Iſraelitæ, domus iſta re-
bellis, Quid agis? Dic illis; Sic ait Do- 10
minus dominorum, Maximus *inter vos* baju-
labit hujuſcemodi ſarcinam in Jeruſalem, &
omnes Iſraelitæ cum ipſo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*لكي يسيروا في اوامري * ويحفظوا حقوقي ويصنعوها * ويكونوا لي شعبا * وانا اكون
لهم الها يقول الرب * وكقلوب رذائلهم وآثامهم والشرور التي صنعوها * كما سار قلبهم
اعطيت طرقهم على روسهم يقول ادوناي الرب * ورفعت الشاروبيم اجنحتها * والبكرات الى
جانبها * ومجد اله اسرايل كان عليها من فوقها * وصعد مجد الرب من وسط المدينة
ووقف على الجبل الذي كان مقابل المدينة * واخذني روح واتت بي الى ار
الكلدانيين الى السبي * بوحي بروح الله * واستيقظت من الرويا التي رايتها * وكلمت
السبي بجميع اقوال الرب التي اظهرها الي الرب *

* الفصل الثاني عشر *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * في وس
ظلاماتهم انت تسكن * هولاء الذين لهم اعين لينظروا فلا ينظرون * ولهم آذان
ليسمعوا فلا يسمعون * من اجل انهم بيت ممرمر هو * وانت يا ابن الانسان * اصنع لذاتك
آلات السبي * وانسبي نهارا امامهم * فتنسبي من بيتك الى موضع آخر امامهم كي
ينظروا * من اجل انهم بيت ممرمر هو * وتخرج آلاتك آلة السبي نهارا لعيونهم * وتخرج
انت مساء قدامهم * كما يخرج المسبي قدامهم * وانقب لذاتك في الحايط وتخرج منه قدامهم
* وتصعد على الاكتاف * وتخرج تخفيا * اذ تغطي وجهك ولا تنظر الارض * من اجل اني
اعطيتك آية لبيت اسرايل * وصنعت هكذا بجميع ما امرني واخرجت آلتي نها
مثل آلة السبي * ونقبت الحايط بيدي مساء لذاتي * وخرجت تخفيا * وصعدت ع
الاكتاف قدامهم * وكان قول الرب الي بالغداة قايلا * يا بن الانسان * اليس قالوا لك
بيت اسرايل الممرمر * ماذا تصنع انت * قل لهم * هكذا يقول الرب الرب * قل للرييس
ولمقدم اوروشليم * ولكل بيت اسرايل الذين هم في وسطها *

ut ambulent in præceptis meis, cuſtodiant 20
legitima mea, & perficiant ea, ſintque
mihi populus, & ego ſim ipſis Deus, ait
Dominus. Sed ſecundùm corda eorum 21
abominanda & iniqua, & ſcelera quæ
commiſerunt, prout ambulavit cor eorum;
reflexi vias eorum in capita ipſorum,
dicit Adonai Dominus. Deinde extu- 22
lerunt Cherubini alas ſuas, rotis ad
ipſorum latera, & gloriâ Dei Iſraelis
ſuper ipſos deſupèr exiſtentibus. Aſcen- 23
ditque gloria Domini è medio urbis, &
conſtitit ſuper montem qui erat ex ad-
verſo urbis. Tum aſſumpſit me ſpiri- 24
tus, perduxitque me in terram Chaldæ-
orum ad captivos, in revelatione in
ſpiritu Dei: & cùm evigilâſſem ex
viſione quam videram; Locutus ſum 25
inter captivos omnes Domini ſermones
quos indicaverat mihi Dominus.

C A P. XII.

PRæterea fuit ſermo Domini ad me, 1
dicens; O fili hominis, in medio impie- 2
tatum iſtorum tu habitas: iſtorum
inquam, qui oculos habent ad videndum,
nec vident; aures habent ad audiendum,
nec audiunt; eò quòd domus refracta-
ria ſunt iſti. Quarè tu O fili ho- 3
minis, fac tibi inſtrumenta migrationi
accommoda, & migra interdiu coram eis:
migrabis autem è domo tua in alium lo-
cum coram ipſis ita ut videant: quan-
doquidem domus refractaria hi ſunt.
Inſtrumenta tua, nempè inſtrumenta mi- 4
grationis educes interdiu ob oculos eo-
rum: tum egrederis tu veſpere coram
eis, quemadmodum egredi ſolet captivus,
idque coram ipſis. Foramen aperi tibi 5
in pariete, & egreditor inde coram eis.
Conſcendes humeros, & egredieris clan- 6
culùm obvelatâ facie ita ut non videas
terram: nam dedi te ſignum domui
Iſraelis. Feci ergò ſic, omnino prout 7
præceperat mihi: nam eduxi inſtrumen-
ta mea interdiu velut inſtrumenta capti-
vitatis, parietem meâ manu veſpere mihi
effodi, clanculùm egreſſus ſum, hume-
roſque conſcendi coram eis. Ruſus 8
fuit ſermo Domini ad me in matutino,
dicens; O fili hominis, annon dicturi 9
tibi ſunt refractaria domus Iſraelis,
Quid agis tu? Dic eis; Ita dicit Do- 10
minus Deus: dic inquam principi, &
præpoſito Ieroſolymæ, totique domui
Iſraelis qui ſunt in medio ejus:

יחזקאל : יב

.eis fiet ſic ,feci Sicut .veſtrum portentum Ego ,Dic
11 אמר אני מופתכם כאשר עשיתי כן יעשה להם
,eorũ medio in qui prælatus Et .ibunt captivitatẽ in ,tranſmigrationẽ In
12 בגולה בשבי ילכו : והנשיא אשר־בתוכם
,perfodient ,parietem per egredietur & ,caligine in portabit humerũ ad
אל־כתף ישא בעלטה ויצא בקיר יחתרו
oculo in videat non quod propter ,operiet ſuas facies :ipſum per educendũ ad
להוציא בו פניו יכסה יען אשר לא־יראה לעין
prehendetur & ,eum ſuper meum rete extendam Et .terram ipſe
13 הוא את־הארץ : ופרשתי את־רשתי עליו ונתפש
ipſam & ,Chaſdim terram ,Babel in eum adducam & : mea ſagena in
במצודתי והבאתי אתו בבלה ארץ כשדים ואותה
ejus circuitibus qui omnes Et .morietur ibi & ,videbit non
14 לא־יראה ושם ימות : וכל אשר סביבתיו
: ventum omnem in diſpergam ejus militum alas omnes & ,ejus auxilium
עזרה וכל־אגפיו אזרה לכל־רוח
me ſpargendo in ,Dominus ego quòd ſcient Et .eos poſt evacuabo gladium &
15 וחרב אריק אחריהם : וידעו כי־אני יהוה בהפיצי
relinquam Et .terras in eos ventilavero & ,gentes in eos
16 אותם בגוים וזריתי אותם בארצות : והותרתי
narrent ut ;peſte à & ,fame à ,gladio à ,numeri viros eis ex
מהם אנשי מספר מחרב מרעב ומדבר למען יספרו
,illuc ingredientur quò ,gentibus in ſuas abominationes omnes
את־כל־תועבותיהם בגוים אשר־באו שם
me ad Domini verbum fuit Et .Dominus ego quòd ſcient &
17 וידעו כי־אני יהוה : ויהי דבר־יהוה אלי
tuas aquas & ,comedes tremore in tuum panem ,hominis Fili : dicendo
18 לאמר : בן־אדם לחמך ברעש תאכל ומימיך
: terræ populum ad dices Et .bibes ſolicitudine & commotione in
19 ברגזה ובדאגה תשתה : ואמרת אל־עם הארץ
humum ad ,Jeruſalaim habitatoribus Deus Dominus dixit Sic
כה־אמר אדני יהוה ליושבי ירושלם אל־אדמת
deſolatione in ſuas aquas & ,comedent ſolicitudine in ſui Panem : Iſrael
ישראל לחמם בדאגה יאכלו ומימיהם בשממון
iniquitatẽ propter ,ſua plenitudine à ejus terra deſoletur ut : bibent
ישתו למען תשם ארצה מםלאה מחמס
,deſolabuntur habitatæ civitates Et .ea in habitantium omnium
20 כל־הישבים בה : והערים הנושבות תחרבנה
fuit Et .Dominus ego quòd ſcietis & : erit deſerta terra &
21 והארץ שממה תהיה וידעתם כי־אני יהוה : ויהי
proverbium quod ,hominis Fili : dicendo me ad Domini verbum
22 דבר־יהוה אלי לאמר : בן־אדם מה־המשל
,dies Prolongabũtur : dicendo ,Iſrael humo ſuper vobis iſtud
הזה לכם על־אדמת ישראל לאמר יארכו הימים
Dominus dixit Sic : eos ad dic Ideo ? viſio omnis peribit &
23 ואבד כל־חזון : לכן אמר אליהם כה־אמר אדני
illud proverbiũ dicent non & ,iſtud proverbium feci Ceſſare : Deus
יהוה השבתי את־המשל הזה ולא־ימשלו אתו
,dies Appropinquaverũt : eos ad loquere quinimo : Iſrael in ultrà
עוד בישראל כי אם־דבר אליהם קרבו הימים
,fruſtra viſio omnis ultrà erit non Quia .viſionis omnis verbum &
24 ודבר כל־חזון : כי לא יהיה עוד כל־חזון שוא
Dominus ego Quia .Iſrael domus medio in : lenientis divinatio &
25 ומקסם חלק בתוך בית ישראל : כי אני יהוה
: amplius protrahetur nec ,fiet & ,verbum loquar quod ,loquar
אדבר את אשר אדבר דבר ויעשה לא תמשך עוד
,illud faciam & ,verbum loquar ,rebellionis domus ,veſtris diebus in ſed
כי בימיכם בית המרי אדבר דבר ועשיתיו
.Deus Dominus dixit
נאם אדני יהוה :

Verſio VULG. LAT.

11 Dic; Ego portentum veſtrum: quomodò feci, ſic fiet illis: in tranſmigrationem, & in captivitatem ibunt. 12 Et dux, qui eſt in medio eorum, in humeris portabitur, in caligine egredietur: parietem perfodient ut educant eum: facies ejus operietur 13 ut non videat oculo terram. Et extendam rete meum ſuper eum, et capietur in ſagena mea: & adducam eum in Babylonem in terram Chaldæorum: & ipſam non videbit, ibíque morietur. 14 Et omnes qui circa eum ſunt, præſidium ejus, & agmina ejus, diſpergam in omnem ventum: & gladium evaginabo poſt eos. 15 Et ſcient quia ego Dominus, quando diſperſero illos in Gentibus, & diſſeminavero eos in 16 terris. Et relinquam ex eis viros paucos, à gladio, et fame, & peſtilentia: ut enarrent omnia ſcelera eorum in Gentibus, ad quas ingredientur: & ſcient quia 17 ego Dominus. Et factus eſt ſer- 18 mo Domini ad me, dicens; Fili hominis, panem tuum in conturbatione comede: ſed & aquam tuam in feſtinatione & mœrore 19 bibe. Et dices ad populum terræ; Hæc dicit Dominus Deus ad eos, qui habitant in Jeruſalem in terra Iſrael; Panem ſuum in ſolicitudine comedent, & aquam ſuam in deſolatione bibent; ut deſoletur terra à multitudine ſua, propter iniquitatem 20 omnium qui habitant in ea. Et civitates, quæ nunc habitantur, deſolatæ erunt, terráque deſerta: & ſcietis quia ego Dñs. 21 Et factus eſt ſermo Dñi ad me, 22 dicens, Fili hominis, quod eſt proverbium iſtud vobis in terra Iſrael, dicentium; In longum differentur dies, et peribit omnis 23 viſio? Ideò dic ad eos; Hæc dicit Dominus Deus; Quieſcere faciam proverbium iſtud, neque vulgò dicetur ultrà in Iſrael: & loquere ad eos quòd appropinquaverint dies, & ſermo omnis 24 viſionis. Non enim erit ultrà omnis viſio caſſa, neq; divinatio ambigua in medio filiorũ Iſrael. 25 Quia ego Dñs loquar: & quodcunque locutus fuero verbum, fiet, et non prolongabitur amplùs: ſed in diebus veſtris, domus exaſperans, loquar verbum, et faciam illud, dicit Dominus Deus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

11 Εἰπὸν, Ὅτι ἐγὼ τέρατα (λ) ποιῶ, ὃν τρόπον πεποίηκα, οὕτως ἔσται (μ) αὐτῷ. ἐν μετοικεσίᾳ καὶ ἐν αἰχμαλωσίᾳ πορεύσονται. 12 Καὶ ὁ (ν) ἄρχων ἐν μέσῳ αὐτῶν ἐπ᾽ ὤμων ἀρθήσεται, καὶ κεκρυμμένος ἐξελεύσεται διὰ τοῦ τοίχου, καὶ (ξ) διορύξει τοῦ ἐξελθεῖν αὐτὸν δι᾽ αὐτοῦ, τὸ πρόσωπον αὐτοῦ συγκαλύψει, ὅπως μὴ ὁραθῇ ὀφθαλμῷ, καὶ αὐτὸς τὴν γῆν οὐκ ὄψεται. 13 Καὶ ἐκπετάσω τὸ δίκτυόν μου ἐπ᾽ αὐτὸν, καὶ συλληφθήσεται ἐν τῇ περιοχῇ μου, καὶ ἄξω αὐτὸν εἰς Βαβυλῶνα εἰς γῆν Χαλδαίων, καὶ αὐτὴν οὐκ ὄψεται, καὶ ἐκεῖ τελευτήσει. 14 Καὶ πάντας τοὺς κύκλῳ αὐτοῦ τοὺς βοηθοὺς αὐτοῦ, καὶ πάντας τοὺς ἀντιλαμβανομένους αὐτοῦ διασπερῶ εἰς πάντα ἄνεμον, καὶ ῥομφαίαν (ο) ἐκκενώσω ὀπίσω αὐτῶν. 15 Καὶ γνώσονται διότι ἐγὼ κύριος, ἐν τῷ διασκορπίσαι με αὐτοὺς ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ διασπερῶ αὐτοὺς ἐν ταῖς χώραις. 16 Καὶ ὑπολείψομαι ἐξ αὐτῶν ἄνδρας ἀριθμῷ ἐκ ῥομφαίας, καὶ ἐκ λιμοῦ, καὶ ἐκ θανάτου, ὅπως (π) ἐκδιηγῶνται πάσας τὰς ἀνομίας αὐτῶν ἐν τοῖς ἔθνεσιν οὗ εἰσήλθοσαν ἐκεῖ, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγὼ κύριος. 17 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου 18 πρός με, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, τὸν ἄρτον σου μετὰ ὀδύνης φάγεσαι, καὶ τὸ (ρ) ὕδωρ μετὰ βασάνου καὶ θλίψεως πίεσαι. 19 Καὶ ἐρεῖς πρὸς τὸν λαὸν τῆς γῆς, Τάδε (σ) λέγει κύριος τοῖς κατοικοῦσιν Ἱερουσαλὴμ ἐπὶ τῆς γῆς τοῦ Ἰσραὴλ, Τοὺς ἄρτους αὐτῶν (˘) μετ᾽ ἐνδείας φάγονται, καὶ τὸ ὕδωρ αὐτῶν μετ᾽ ἀφανισμοῦ πίονται, ὅπως ἀφανισθῇ ἡ γῆ σὺν (τ) πληρώματι αὐτῆς· ἐν ἀσεβείᾳ γὰρ 20 πάντες οἱ κατοικοῦντες ἐν αὐτῇ. Καὶ αἱ πόλεις αὐτῶν αἱ κατοικούμεναι ἐξερημωθήσονται, καὶ ἡ (υ) γῆ εἰς ἀφανισμὸν ἔσται, 21 καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέγων, 22 Υἱὲ ἀνθρώπου, (φ) τίς ἡ παραβολὴ ὑμῖν ἐπὶ τῆς γῆς τοῦ Ἰσραὴλ, λέγοντες, (χ) Μακραὶ αἱ 23 ἡμέραι, ἀπόλωλεν ὅρασις; Διατοῦτο εἰπὸν πρὸς αὐτοὺς, Τάδε (ψ) λέγει κύριος, Καὶ ἀποστρέψω τὴν παραβολὴν ταύτην, καὶ οὐκέτι μὴ εἴπωσι τὴν παραβολὴν ταύτην οἶκος τοῦ Ἰσραὴλ, ὅτι λαλήσεις πρὸς αὐτοὺς, Ἠγγίκασιν αἱ ἡμέραι, καὶ λόγος πάσης ὁράσεως. 24 (ω) Ὅτι οὐκ ἔσται ἔτι πᾶσα ὅρασις ψευδὴς, καὶ μαντευόμενος τὰ πρὸς χάριν 25 ἐν μέσῳ τῶν υἱῶν Ἰσραήλ. Διότι ἐγὼ κύριος λαλήσω τοὺς λόγους μου, λαλήσω καὶ ποιήσω, καὶ οὐ μὴ μηκύνω (α) ἔτι· ὅτι ἐν ταῖς ἡμέραις ὑμῶν (β) οἶκος ὁ παραπικραίνων, λαλήσω λόγον καὶ ποιήσω, (γ) λέγει κύριος.

MS. A. (λ) ποιῶ ἐμμέσῳ αὐτ. ὃν (μ) αὐτοῖς. (ν) ἄρχων αὐτ. ἐμμέσῳ αὐτ. ἐπ᾽ ὤμων (ξ) ὀρύξει (ο) ἐκχεῶ (π) ἐκδιηγήσωνται τὰς ἀνομίας (ρ) ὕδωρ σου μετ᾽ βασάνου καὶ ἐκθλίψεως πίεσαι. (σ) λέγει ἀδωναῒ κύριος (˘) μετ᾽ ἐνδείας (τ) τῷ πληρώματι (υ) γῆ αὐτῆς εἰς (φ) τίς ὑμῖν ἡ παραβολὴ αὕτη ἐπὶ (χ) Μακρὰν (ψ) λέγει ἀδωναῒ κύριος, Ἀποστρέψω τὴν (ω) Καὶ οὐκ ἔτι ἔσται πᾶσα (α) ἔτι· ἐν τῷ (β) οἶκος παραπικραίνων, (γ) λέγει ἀδωναῒ κύριος.

11 Dic, Quia ego portenta facio: quomodò feci, ſic erit ei. In tranſmigrationem, & in captivitatem ibunt: 12 Et princeps in medio eorum in humeris portabitur, & abſconditus egredietur per parietem, & perfodiet, ut exeat ipſe per eum: faciem ſuam cooperiet, ut non aſpiciatur oculo: & ipſe terram non videbit. 13 Et expandam rete meum ſuper eum, & capietur in ſepto meo: & ducam eum in Babylonem, in terram Chaldæorum: & ipſam non videbit: & ibi morietur. 14 Et omnes, qui circa eum ſunt, auxiliatores ejus, & omnes ſuſcipientes eum diſſeminabo in omnem ventum: & gladium effundam poſt eos: 15 Et ſcient, quia ego Dominus, in diſpergendo me eos in gentibus. Et diſſeminabo eos in regionibus: 16 Et relinquã ex eis viros numero à gladio, & à fame, et à morte: ut narrent omnes iniquitates ſuas in gentibus, quò ingreſſi fuerint illuc: & ſcient, quia ego Dominus. 17 Et factus eſt ſermo Domini ad me, dicens; 18 Fili hominis, panem tuum cum dolore comedes: & aquam cum tormento & tribulatione bibes. 19 Et dices ad populum terræ; Hæc dicit Dominus habitatoribus Hieruſalem ſuper terram Iſrael; Panes ſuos cum egeſtate comedent: & aquam ſuam cum diſſipatione bibent: ut diſſipetur terra cum plenitudine ejus. In impietate enim omnes, qui habitant in ea: 20 Et civitates eorum, quæ habitantur, in deſolationem erunt: & terra in diſſipationem erit: & cognoſcetis, quia ego Dominus. 21 Et factus eſt ſermo Domini ad me, dicens; 22 Fili hominis, quæ eſt (f) parabola vobis ſuper terram Iſrael, dicentes; Longi dies, (g) periit viſio? 23 Ideò dic ad eos; Hæc dicit Dominus; Et avertam parabolam iſtam: & non dicent ultrà parabolam iſtam domus Iſrael. Quia loqueris ad eos; Appropinquaverunt dies, & verbum omnis viſionis. 24 Non enim erit ultrà omnis viſio falſa, & divinans, (h) quæ ad gratiam, in medio filiorum Iſrael. 25 Quia ego Dominus loquar verba mea, loquar & faciam, & non prolongabo ampliùs: quia in diebus veſtris, domus exaſperans, loquar verbum, & faciam, dicit Dominus.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 אמר אנא אתכון כמא דעבדית כן יתעביד להון בגלותא בשביא יהכון : 12 ורבא
דביניהון על כתפא יטול בקבלא יפוק בכותלא יחתרון לאפקותיה ביה אפוהי יכסי
13 חלף דחב הוא ולא יחזי ית ארעא : ואפריס ית מצדתי עלוהי ויתאחד בסריגתי
14 ואגלי יתיה לבבל למדינת ארעא כסדאי ויתה לא יחזי ותמן ימות : וכל די
בסחרנוהי סעדוהי וכל משריתיה אבדר לכל רוחא ודקטלין בחרבא אגרי בתריהון :
15 וידעון ארי אנא יי כד אגלי יתהון לביני עממיא ואבדר יתהון במדינתא : 16 ואשאר
מנהון גברין דמנין מחרבא מכפנא וממותא בדיל דישתעון ית כל תועבתהון
17 בעממיא דאתגליאו לתמן וידעון ארי אנא יי : והוה פתגם נבואה מן קדם יי
18 עמי למימר : בר אדם מיכלך בזיע תיכול ומשתך בצדו ובאשתממו תשתי : 19 ותימר
לעמא דארעא כדנן אמר יי אלהים ליתבי ירושלם על ארעא דישראל מיכלהון
בזיע ייכלון ומשתהון באשתממו ישתון בדיל דתצדי ארעא ממלואה מחטוף
20 כל דיתבין בה : וקרויא דהואה יתבן יחרבן וארעא לצדו תהי ותדעון ארי
21 אנא יי : 22 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם מא מתלא
23 הדין לכון על ארעא דישראל למימר יורכון יומיא ותבטיל כל נבואה : בכן
אמר להון כדנן אמר יי אלהים אבטיל ית מתלא הדין ולא ימתלון יתיה עוד
24 בישראל אלהן אתנבי להון אתקרבו יומיא ופתגם כל נבואה : ארי לא תהי עוד
25 כל נבואה שקר וקסם כדבין בגו בני ישראל : ארי אנא יי אמליל ית דאמליל
פתגמא ויתקיים ולא יתמשך עוד ארי ביומיכון עמא מרודא אמליל פתגמא
ואקימניה אמר יי אלהים :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

11 Dic, Ego ſignum veſtrum: ſicut feci ſic fiet eis; in tranſmigrationem & in captivitatem ibunt. 12 Et princeps qui eſt inter eos in humero portabit, in tenebris egredietur, in pariete fodient ut educant illum per eum: faciem ſuam operiet, pro eo quòd peccavit ipſe, & non videbit terram. 13 Et extendam rete meum ſuper eum, & capietur in ſagena mea; & transferam eum in Babylonem in provinciam terræ Chaldæorũ, & ipſam non videbit, & ibi morietur. 14 Et omnes qui in circuitu ejus ſunt, & adjutores ejus, & omnem exercitum ejus diſpergam in omnem ventum: & eos qui occidunt gladio immittam poſt eos. 15 Et ſcient quia ego Dominus, cùm tranſmigrare fecero eos inter populos, & diſperſero eos per provincias. 16 Et relinquam ex eis viros numeri pauci à gladio, & à fame, & à peſte, ut narrent omnes abominationes ſuas in populis ad quos tranſmigraverunt, & ſcient quia ego Dominus. 17 Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: 18 Fili hominis, cibum tuum in tremore comedes, & potum tuum in deſolatione & ſtupore bibes. 19 Et dices populo terræ: Hæc dicit Dominus Deus habitatoribus Jeruſalem ſuper terram Iſrael, Cibum ſuum in tremore comedent, & potum ſuum in ſtupore bibent, ut deſoletur terra à plenitudine ejus propter rapinam omnium habitantium in ea. 20 Et civitates quæ habitatæ fuerunt, deſertæ erunt, & terra in deſolationem erit: & ſcietis quia ego Dominus. 21 Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi mecum, dicens: 22 Fili hominis, quod eſt proverbium iſtud vobis in terra Iſrael dicendo: In longum differentur dies, & ceſſabit omnis prophetia? 23 Propterea dic eis: Hæc dicit Dñs Deus: Ceſſare faciam proverbium iſtud, neque erit in proverbium ultrà in Iſrael: ſed vaticinare eis; Appropinquaverũt dies, & ſermo omnis prophetiæ. 24 Non enim erit ultrà omnis prophetia falſa, & divinatio mendacii in medio filiorum Iſrael. 25 Quia ego Dominus loquar, & verbum quod ego locutus fuero, firmabitur, & non irritum fiet ampliùs, quia in diebus veſtris popule contumax, loquar verbum & confirmabo illud, dicit Dominus Deus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ܂ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܐܬܟܘܢ܂ ܐܝܟ ܕܥܒܕܬ ܗܟܢܐ ܢܬܥܒܕ ܠܗܘܢ܂ ܘܒܫܒܝܬܐ ܬܐܙܠ
* ܘܪܒܐ ܕܒܟܘܢ܂ ܥܠ ܟܬܦܗ ܢܫܩܘܠ܂ ܘܒܥܡܛܢܐ ܢܦܘܩ܂ ܘܢܚܘܪ ܫܘܪܐ ܘܢܦܘܩ
ܒܗ܂ ܘܢܟܣܐ ܐܦܘܗܝ܂ ܕܠܐ ܢܚܙܝܗ ܠܐܪܥܐ܂ * ܘܐܦܪܘܣ ܡܨܝܕܬܝ ܥܠܘܗܝ܂ ܘܢܬܐܚܕ
ܘܐܝܬܝܘܗܝ ܠܒܒܠ ܠܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ܂ ܘܠܐ ܢܚܙܝܗ ܠܐܪܥܐ܂ ܘܐܦ ܬܡܢ ܢܡܘܬ܂ * ܘܟܠܗܘܢ
ܕܚܕܪܝܢ ܠܗ܂ ܘܡܥܕܪܝܢ ܠܗ܂ ܘܡܬܟܫܦܝܢ ܠܗ܂ ܐܙܪܐ ܠܟܠ ܪܘܚ܂ ܘܣܝܦܐ ܐܫܠܘܦ ܒܬܪܗܘܢ
* ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ ܕܒܕܪܬ ܐܢܘܢ ܒܥܡܡܐ܂ ܘܙܪܝܬ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܬܐ܂ * ܘܐܫ
ܡܢܗܘܢ ܓܒܪܐ ܕܡܢܝܢܐ܂ ܡܢ ܚܪܒܐ ܘܡܢ ܟܦܢܐ ܘܡܢ ܡܘܬܢܐ܂ ܕܢܫܬܥܘܢ ܟܠܗ
ܛܢܦܘܬܗܘܢ ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܕܐܙܠܘ ܠܘܬܗܘܢ܂ ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ * ܘܗܘܐ ܥܠ
ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ܂ * ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܠܚܡܟ ܒܙܘܥܐ ܐܟܘܠ܂ ܘܡܝܐ ܒܙܘ
ܘܒܫܓܘܫܝܐ ܐܫܬܝ܂ * ܘܐܡܪ ܠܥܡܐ ܕܐܪܥܐ܂ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܠܥܡܘܪ
ܐܘܪܫܠܡ ܘܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܠܚܡܗܘܢ ܒܙܘܥܐ ܢܐܟܠܘܢ܂ ܘܡܝܗܘܢ ܒܬܡܗܐ
ܢܫܬܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܬܚܪܒ ܐܪܥܐ ܒܡܠܝܘܬܗ܂ ܡܢ ܚܛܗܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ܂ * ܘܩܘܪܝܐ
ܕܝܬܝܒܢ ܢܚܪܒܢ܂ ܘܐܪܥܐ ܠܫܘܠܡܐ ܬܗܘܐ܂ ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ * ܘܗܘܐ ܥܠ
ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ܂ * ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܡܢܘ ܡܬܠܐ ܗܢܐ ܕܡܬܠܝܢ ܠܟܘܢ ܒܐܪ
ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܘܐܡܪܝܢ ܕܢܓܪܘܢ ܝܘܡܬܐ܂ ܘܬܐܒܕ ܟܠܗ ܚܙܘܐ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܠܗܘ
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂ ܡܒܛܠ ܐܢܐ ܠܗ ܠܡܬܠܐ ܗܢܐ܂ ܘܠܐ ܢܡܬܠܘܢܗ ܬܘ
ܒܐܝܣܪܝܠ܂ ܐܠܐ ܐܡܪ ܠܗܘܢ܂ ܕܩܪܒܘ ܝܘܡܬܐ܂ ܘܡܠܬܐ ܕܟܠܗ ܚܙܘܐ܂ * ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܬܘܒ
ܟܠ ܚܙܘܐ ܕܓܠܐ܂ ܘܩܘܣܡܐ ܕܦܠܓܘܬܐ ܒܝܢܬ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ܂ * ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܐ
ܡܪܝܐ ܐܡܠܠ܂ ܘܐܡܪ ܐܢܐ ܡܠܬܐ܂ ܘܐܥܒܕ ܐܢܐ ܠܗ܂ ܘܠܐ ܡܬܘܚܪ ܐܢܐ܂ ܘܒܝܘܡܬܟܘܢ
ܒܝܬܐ ܡܡܪܡܪܢܐ܂ ܐܡܪ ܐܢܐ ܡܠܬܐ ܘܐܥܒܕܝܗ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ܂

Dic etiam illis, Ego ſum typus veſter: quemadmodum feci, ſic fiet vobis. In captivitatem abibitis. 11
Et qui maximus eſt inter vos, ſuper humerum ſuum bajulabit, & obſcurâ *nocte* egredietur: parietem perrumpet, & per ipſum egredietur: faciem ſuam operiet, ne terram videat. 12
At expandam rete meum ſuper ipſum, eóque capietur: & deducam ipſum in Babylonem terram Chaldæorum, nec terram videbit, quin etiam ibi morietur. 13
Et omnes ipſi circunjacentes, quique ſubſidio & munimini ſunt ipſi, diſpergam in omnem ventum, gladiúmque mittam poſt eos: 14
Et experientur me eſſe Dominum qui diſſipavi eos inter gentes, perque terras diſperſi. 15
Reliquos tamen faciam ex eis viros aliquot à gladio fame & peſte; ut enarrent omnes abominationes ſuas inter gentes ad quas petrexerint, & cognoſcant me eſſe Dominum. 16
Rurſus fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 17
Fili hominis, panem tuum cum tremore comedito, & aquam tuam tremens ac pavidus bibito: 18
Tum dicito populo *hujus* terræ; Sic dicit dominorum Dominus habitatoribus Jeruſalem & terræ Iſraeliticæ; Panem ſuum pavidi comedent, & aquam ſuam attoniti bibent. Nam vaſtanda eſt univerſa terra propter ſcelus omnium incolarum ejus: 19
Urbes habitatæ vaſtabuntur, & terra in conſumptionem erit: ſcietiſque me eſſe Dominum. 20
Iterum fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 21
Fili hominis, quid ſibi vult proverbium iſtud quod de vobis vertunt in terra Iſraelis, dicentes; Protrahentur dies, & peribit omnis viſio? 22
Propterea dic eis, Sic ait Dominus dominorum, Efficiam ut ceſſet hujuſmodi proverbium, nec ampliùs vertant illud in Iſraele: quin potiùs dic eis, Imminent dies, & eventu comprobabitur omnis viſio, 23
Nec erit ampliùs ulla viſio falſa, aut prædictio dubia inter filios Iſraelis. 24
Nam ego Dominus dixi, & dico verbum quod facturus ſum, nec diu moraturus, ſed in diebus veſtris ô domus contumax, verbum dicam & exequar, ait Dominus dominorum. 25

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* قل إني أنا أصنع في وسطها آيات * كما صنعت هكذا يكون لهم * في الجلوة والسبي
يمضون * ورئيسهم في وسطها يحمل على الأكتاف * ويخرج مختفيا من الحائط * وينقب ليخرج
منه * ويغطي وجهه كي لا ينظر بعين * وهو لا يعاين الأرض * وأطرح شبكتي عليه
ويؤخذ بزمامي * وأسوقه إلى بابل إلى أرض الكلدانيين * ولا يعاينها * ويموت هناك * وجميع
معينيه الذين حوله * وجميع الذين يساعدونه * أبددهم لكل ريح * وأسكب خلفهم سي
* ويعلمون أني أنا الرب * عند ما أفرقهم في الأمم * وأبددهم في البلدان * وأترك منهم رجا
من السيف بعدد * ومن الجوع والموت * كي يخبروا بآثامهم بالأمم حيث يدخلون هنا
ويعلمون أني أنا الرب * وكان قول الرب إلي قائلا * يا ابن الإنسان * تأكل خبزك بوجع
وتشرب ماءك بعذاب وضيقة * وتقول لشعب الأرض * هكذا يقول أدوناي الرب لسكان
أيروشليم على سكان إسرائيل * يأكلون خبزهم بالقلة * ويشربون ماءهم بفناء * كي تفنى
الأرض بكمالها * لأن جميع السكان فيها بالنفاق * ومدنهم العامرة تخرب * وأرضهم تصير
للفناء * ويعلمون أني أنا الرب * وكان قول الله إلي قائلا * يا ابن الإنسان * ما هذا المثل
الذي لكم على أرض إسرائيل * قائلين * طالت الأيام * وانقطعت الرؤيا * لأجل هذا قل لهم
هكذا يقول أدوناي الرب * أصرف هذا المثل * ولا يقولون هذا المثل أيضا بيت إسرائيل
لأنك تتكلم معهم * اقتربت الأيام وقول كل رؤيا * ولا تكون أيضا رؤيا كاذبة * ولا من يتكهن
نجيما في وسط بني إسرائيل * من أجل أني أنا الرب أتكلم بأقوالي أتكلم وأصنع * ولا يبطئ
أيضا في أيامكم أيها البيت المرمر أتكلم بقول وأصنع * يقول أدوناي الرب *

Dic, Ego facio in medio ejus ſigna, quemadmodum feci, ita continget eis. In captivitatem & migrationem abibunt: 11
Et princeps eorum in medio ipſius geſtabitur ſuper humeros, egredietur clanculùm per parietem, perfodiétque ut per eum egrediatur: velabit faciem ſuam ne pateat ulli oculo, & ipſe terram non aſpiciet. 12
Verùm jaciam rete meum ſuper illum, & capiſtro meo capietur, abigámque illum in Babelem ad terram Chaldæorum, quam non videbit; ibique morietur. 13
Omnes auxiliares ejus qui circa eum ſunt, & omnes qui opem ferunt ei, diſpergam in omnem ventum, & effundam poſt eos gladium: 14
Et ſentient me eſſe Dominum, quum eos diſperſero inter gentes, & per regiones diſſipavero. 15
Attamen reſervabo ex eis exigui *numeri viros à gladio, fame, & peſte; ut narrent iniquitates ſuas inter gentes quò ſunt ingreſſuri: ita ſentient me eſſe Dominum.* 16
Fuit etiam ſermo Domini ad me, dicens; 17
O fili hominis, panem tuum cum dolore comedes, & aquam tuam cum tormento & afflictione bibes: 18
Deinde dices populo terræ, Sic dicit Adonai Dominus ad cives Jeruſalem de habitatoribus Iſraelis; Panem ſuum cum penuria comedent, & aquam ſuam cum exitio bibent, ita ut pereat univerſa terra: quoniam habitantes in ea omnes, in impietate verſantur. 19
Urbes eorum habitatæ deſtruentur, et terra eorum erit in excidium: & ſentient me eſſe Dominum. 20
Præterea fuit ſermo Dei ad me, dicens; 21
O fili hominis, Quodnam eſt proverbium iſtud quod habetis ſuper terram Iſraelis, dicentes; Protracti ſunt dies, & ceſſavit viſio? 22
Propterea dic eis, Sic ait Adonai Dominus; Amovebo hujuſmodi proverbium domûs Iſraelis. Alloquêris enim eos, dicéſque; *Dies, & ſermo quicunque viſionis appropinquaverunt:* 23
Nec erit ampliùs viſio mendax, neque qui ex aſtris futura prædicat in medio filiorum Iſraelis. 24
Nam ego Dominus loquar ſermones meos, loquar & faciam, nec ampliùs tardabunt: In diebus veſtris O domus refractaria, loquar ſermonem et faciam, dicit Adonai Dominus. 25

E

יחזקאל : יג

ecce ,hominis Fili : dicendo me ad Domini verbum fuit Et
26 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר: בן־אדם הנה
27 ,multos dies ad *videns* hic quam Visio *: dicentes* Israel domus
בית־ישראל אמרים החזון אשר־הוא חזה לימים רבים
Sic : eos ad dic Propterea *.prophetans* ipse longa tempora in &
28 ולעתים רחוקות הוא נבא: לכן אמר אליהם כה
Quod *.mea verba omnia* ultrà protrahetur Non : Deus Dominus dixit
אמר אדני יהוה לא־תמשך עוד כל־דברי אשר
.Deus Dominus dixit , fiet & ,verbum loquar
אדבר דבר ויעשה נאם אדני יהוה:

CAP. XIII. יג

vaticinare hominis Fili : dicendo , me ad Domini verbum fuit Et
1 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר: בן־אדם הנבא
2 : suo corde de prophetantibus *dices* & , *vaticinantes* , Israel prophetas ad
אל נביאי ישראל הנבאים ואמרת לנביאי מלבם
super Væ : Deus Dominus dixit Sic : Domini verbum Audite
3 שמעו דבר־יהוה: כה אמר אדני יהוה הוי על־
nihil & ,suum spiritum post *ambulantes* qui *,caducis* prophetis
הנביאים הנבלים אשר הלכים אחר רוחם ולבלתי
.fuerunt Israel tui prophetæ ,desertis in vulpes Tanquam .viderunt
4 ראו: כשעלים בחרבות נביאיך ישראל היו:
, Israel domum super sepem sepivistis & ,fracturas in ascendistis Non
5 לא עליתם בפרצות ותגדרו גדר על־בית ישראל
, vanum Viderunt .Domini die in prælio in *standum ad*
6 לעמד במלחמה ביום יהוה: חזו שוא
Dominus Et .Dominus Dixit : dicentes , *mendacii* divinationem &
וקסם כזב האמרים נאם־יהוה ויהוה
visionem Nónne .verbum *firmandum ad* sperare fecerunt & :eos misit non
7 לא שלחם ויחלו לקים דבר: הלוא מחזה־
, *dicentes* & : dixistis *mendacii* divinationem & , vidistis *vanitatis*
שוא חזיתם ומקסם כזב אמרתם ואמרים
dixit sic Propterea ? sum locutus non ego & , Dominus Dixit
8 נאם־יהוה ואני לא דברתי: לכן כה אמר
ideo , mendacium vidistis & , vanum *vos loqui Propter* : Deus Dominus
אדני יהוה יען דברכם שוא וחזיתם כזב לכן
ad mea *manus* erit Et .Deus Dominus dixit , vos ad ego ecce
9 הנני אליכם נאם אדני יהוה: והיתה ידי אל־
mei populi *secreto* In :mendacium *divinantes* & ,vanum *videntes* prophetas
הנביאים החזים שוא והקסמים כזב בסוד עמי
ad & , scribentur non Israel domus scriptura in & ,erunt non
לא־יהיו ובכתב בית־ישראל לא יכתבו ואל־
.Deus Dominus *ego* quod scietis & :ingredientur non Israel *humum*
אדמת ישראל לא יבאו וידעתם כי אני אדני יהוה:
, pax , dicendo meum populum fecerunt errare quòd eo pro & ,eo Pro
10 יען וביען הטעו את־עמי לאמר שלום
.insulso eum *oblinentes* ipsi ecce &,parietem *ædificans* ipse & ; pax non &
ואין שלום והוא בנה חיץ והנם טחים אתו תפל:
: inundans imber fuit , est casurus Et *:insulso* complanantes ad Dic
11 אמר אל־טחי תפל ויפל היה גשם שוטף
.scindet turbinum ventus & , *cadetis* *Elgabis* *lapidibus* *vos* &
ואתנה אבני אלגביש תפלנה ורוח סערות תבקע:
quam , *litura* Ubi , *vos ad* dicetur nonne : paries cecidit ecce Et
12 והנה נפל הקיר הלוא יאמר אליכם איה הטיח אשר
faciam scindere Et : Deus Dominus dixit sic Propterea *? linistis*
13 טחתם: לכן כה אמר אדני יהוה ובקעתי
, erit meo *naso* in inundans imber & , mea ira in turbinum spiritum
רוח־סערות בחמתי וגשם שטף באפי יהיה
.consumptionem ad ira in *Elgabis* lapides &
ואבני אלגביש בחמה לכלה:

Versio VULG. LAT.

26 Et fact⁹ est sermo Domini ad me, 27 dicens; Fili hominis, ecce domus Israel dicentiũ; Visio, quam hic videt, in dies multos: & in tempora longa iste prophetat. 28 Propterea dic ad eos; Hæc dicit Dominus Deus; Non prolongabitur ultrà omnis sermo meus: verbũ, quod locutus fuero, complebitur, dicit Dominus Deus.

CAP. XIII.

1 ET factus est sermo Domini ad 2 me, dicens; Fili hominis, vaticinare ad prophetas Israel, qui prophetant: & dices prophetantibus de corde suo; Audite ver3bum Domini: Hæc dicit Dominus Deus; Væ prophetis insipientibus, qui sequuntur spiritum 4 suum, & nihil vident. Quasi vulpes in desertis, prophetæ tui, 5 Israel, erant. Non ascendistis ex adverso, neque opposuistis murum pro domo Israel, ut staretis 6 in prælio in die Domini. Vident vana, & divinant mendacium, dicentes; Ait Dominus: cùm Dominus non miserit eos: & perseveraverunt confirmare ser7monem. Numquid non visionem cassam vidistis, & divinationem mendacem locuti estis: & dicitis; Ait Dominus, cùm ego 8 non sim locutus? Propterea hæc dicit Dominus Deus; Quia locuti estis vana, & vidistis mendacium: ideò ecce ego ad vos, di9cit Dominus Deus: Et erit manus mea super prophetas, qui vident vana, & divinant mendacium: in consilio populi mei non erunt, & in scriptura domûs Israel non scribentur, nec in terram Israel ingredientur: & sci10etis quia ego Dominus Deus. Eò quòd deceperint populũ meum, dicentes; Pax, & non est pax: & ipse ædificabat parietem, illi autem liniebant eum luto absque 11 paleis. Dic ad eos, qui liniunt absque temperatura, quòd casurus sit: erit enim imber inundans, & dabo lapides prægrandes desupè irruentes, & ventum 12 procellæ dissipantem. Siquidem ecce cecidit paries: numquid non dicetur vobis; Ubi est litu13ra, quam linîstis? Propterea hæc dicit Dominus Deus; Et erumpere faciam spiritum tempestatum in indignatione mea, & imber inundans in furore meo erit: & lapides grandes in ira in consumptionem.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

26 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, 27 Υἱὲ ἀνθρώπου, ἰδοὺ ὁ οἶκος Ἰσραὴλ ὁ παραπικραίνων, λέγοντες λέγουσιν, Ἡ ὅρασις ἣν οὗτος ὁρᾷ, εἰς ἡμέρας πολλὰς, καὶ εἰς καιροὺς μακροὺς οὗτος προφητεύει. 28 Διατοῦτο εἰπὸν πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει (δ) κύριος, Οὐ μὴ μηκύνωσιν οὐκέτι πάντες οἱ λόγοι μου, οὓς ἂν λαλήσω· (ε) λαλήσω καὶ ποιήσω, λέγει (ζ) κύριος.

Et factus est sermo Domini ad me, dicens; Fili hominis, ecce domus Israel exasperans, dicentes; Visio, quam hic videt, in dies multos, et in tempora longa iste prophetat. Propterea dic ad eos, Hæc dicit Dominus; Non prolongabuntur ultra omnia verba mea, quæcunque loquutus fuero: loquar, & faciam, dicit Dominus.

MS.A. (δ) ἀδωναῒ κύριος, (ε) ὅτι λαλήσω λόγον (ζ) ἀδωναῒ κύριος.

ΚΕΦ. ιγʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ2γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, προφήτευσον ἐπὶ τοὺς προφήτας τοῦ Ἰσραὴλ (α), καὶ προφητεύσεις, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Ἀκούσατε λόγον κυ3ρίου· Τάδε λέγει (β) κύριος, Οὐαὶ τοῖς προφητεύουσιν ἀπὸ καρδίας αὐτῶν, καὶ τὸ 4 καθόλου μὴ βλέπουσιν. (γ) Ὡς ἀλώπεκες ἐν ταῖς ἐρήμοις οἱ προφῆταί σου Ἰσραήλ· 5 Οὐκ ἔστησαν ἐν στερεώματι· καὶ συνήγαγον ποίμνια (δ) ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραήλ. οὐκ ἀνέ6στησαν οἱ λέγοντες, Ἐν ἡμέρᾳ κυρίου, Βλέποντες ψευδῆ, μαντευόμενοι μάταια, οἱ λέγοντες, (ε) Λέγει κύριος, καὶ κύριος οὐκ ἀπέσταλκεν αὐτοὺς, καὶ ἤρξαντο τοῦ ἀναστῆσαι 7 λόγον. Οὐχὶ ὅρασιν ψευδῆ ἑωράκατε; καὶ 8 μαντείας ματαίας εἰρήκατε; Καὶ (ζ) διατοῦτο εἰπὸν, Τάδε λέγει (η) κύριος, Ἀνθ' ὧν οἱ λόγοι ὑμῶν ψευδεῖς, καὶ αἱ μαντεῖαι ὑμῶν μάταιαι, διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ ἐφ' ὑμᾶς, 9 λέγει (θ) κύριος. Καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ τοὺς προφήτας τοὺς ὁρῶντας ψευδῆ, καὶ τοὺς ἀποφθεγγομένους μάταια· ἐν παιδείᾳ τοῦ λαοῦ μου οὐκ ἔσονται, οὐδὲ ἐν γραφῇ οἴκου Ἰσραὴλ οὐ γραφήσονται, καὶ εἰς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ οὐκ εἰσελεύσονται, καὶ γνώσονται (ι) διότι 10 ἐγὼ κύριος. Ἀνθ' ὧν ἐπλάνησαν τὸν λαόν μου, λέγοντες, (κ) Εἰρήνη, καὶ οὐκ ἔστιν εἰρήνη· καὶ οὗτος οἰκοδομεῖ (λ) τοῖχον, καὶ (μ) αὐτοὶ ἀ11λείφουσιν (ν) αὐτὸν, πεσεῖται. Εἰπὸν πρὸς τοὺς ἀλείφοντας, Πεσεῖται, καὶ ἔσται ὑετὸς κατακλύζων, καὶ δώσω λίθους πετροβόλους εἰς τοὺς ἐνδέσμους αὐτῶν, καὶ πεσοῦνται, καὶ πνεῦ12μα ἐξαῖρον, καὶ ῥαγήσεται. Καὶ ἰδοὺ πέπτωκεν ὁ τοῖχος, (ξ) καὶ οὐκ ἐροῦσι πρὸς ὑμᾶς, 13 Ποῦ ἐστὶν ἡ ἀλοιφὴ ὑμῶν ἣν ἠλείψατε; Διατοῦτο τάδε λέγει (ο) κύριος, Καὶ ῥήξω πνοὴν ἐξαίρουσαν μετὰ θυμοῦ, καὶ ὑετὸς κατακλύζων ἐν ὀργῇ μου ἔσται· καὶ τοὺς λίθους τοὺς πετροβόλους (π) ἐν θυμῷ ἐπάξω εἰς συντέλειαν.

CAP. XIII.

ET factus est sermo Domini ad me, dicens, Fili hominis, vaticinare super prophetas Israel: & prophetabis, & dices ad eos; Audite verbum Domini. Hæc dicit Dominus; Væ his qui prophetant de corde suo, & omnino non vident. (a) Sicut vulpes in desertis prophetæ tui, Israel: Non steterunt in firmamento: & (b) congregaverunt greges super domum Israel. Non (c) resurrexerunt qui dicunt, In die Domini, Videntes mendacia, divinantes vana, qui dicunt: Dicit Dominus: & Dominus non misit eos: & cœperunt suscitare sermonem. Nonne visionem falsam vidistis, & divinationes vanas loquuti (d) estis? Et ideò dic, Hæc dicit Dominus: Quoniam verba vestra mendacia, & divinationes vestræ vanæ; idcircò ecce ego super vos, dicit Dominus: Et extendam manum meam super prophetas, qui vident mendacia, & qui loquuntur vana: In (e) disciplina populi mei non erunt, nec in scriptura domus Israel scribentur: & in terram Israel non intrabunt: & scient quia ego Dominus. Quoniam deceperunt populum meum, dicentes; Pax, & non est pax. Et ipse ædificat (f) parietem: & ipsi liniunt eum, (g) cadet. Dic ad eos qui liniunt, Cadet: & erit pluvia inundans: & dabo lapides magnos in juncturas eorum, & cadent: & ventum auferentem, & dirumpetur. Et ecce cecidit paries; & non dicent ad vos, Ubi est litura vestra, quam linistis? Propterea hæc dicit Dominus; Et dirumpam spiritum auferentem in furore, et pluvia inundans in ira mea erit: et lapides magnos in furore inducam in consummationem:

MS.A. (α) τοὺς προφητεύοντας, καὶ ἐρεῖς τοῖς προφήταις τοῖς προφητεύουσιν ἀπὸ καρδίας αὐτῶν, καὶ προφητεύσεις, (β) ἀδωναῒ κύριος, (γ) Οἱ προφῆταί σου Ἰσραὴλ ὅσει ἀλώπεκες ἐν ταῖς ἐρήμοις· Οὐκ (δ) καὶ ἐπὶ (ε) Τάδε λέγει κύριος, καὶ ὁ κύριος (ζ) λέγεται, φησὶν κύριος, καὶ ἐγὼ οὐκ ἐλάλησα. Διατοῦτο (η) ἀδωναῒ κύριος, (θ) ἀδωναῒ κύριος. (ι) ὅτι ἐγώ εἰμι ἀδωναῒ κύριος. (κ) Εἰρήνη εἰρήνη, (λ) τὸν τοῖχον, (μ) ἄλλοι (ν) αὐτόν. Εἰπὸν πρὸς τοὺς ἀλείφοντας αὐτὸν, (ξ) καὶ ἐροῦσιν (ο) ἀδωναῒ κύριος, (π) ἐπάξω ἐν θυμῷ εἰς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

26 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר: בר אדם הא בית ישראל אמרין אולפן דהוא
27 מליף ליומין סגיאין ולעדן רחיק הוא מתנבי: בכן אמר להון כדנן אמר יי אלהים
28 לא יבטיל עוד כל פתגמי דאמלל פתגמא ויתקים אמר יי אלהים:

יג

1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר: בר אדם אתנבי על נביי שקרא דמתנבן
2 ותימר לדמתנבן ברעות לבהון קבילו פתגמא דיי: כדנן אמר יי אלהים וי על נביי
3 שקרא דמשתטן דאזלין בתר הרהור לבהון ומדעם לא חזן: כתעלין בחרבתא נביי
4 שקרך ישראל הוו: לא קמתון בתרעתא ולא עבדתון לכון עובדין טבין למבעי על בית
5 ישראל למקם למבעי עליהון רחמין בעדן דאתו עליהון עבדי קרבא ביום רוגזא דיי:
6 מתנבן שקר ומלפין כדבין אמרין אמר יי ויי לא שלחנון ומחצפין דתתקים מלתהון:
7 הלא נבואן דשקר אתנביתון וקסם כדבין אמרתון ואמרין אמר יי ומן קדם יי לא
8 אתמלל: בכן כדנן אמר יי אלהים חלף דאתנביתון שקר ואלפתון כדבין בכן הא אנא
9 שלח רוגזי עליכון אמר יי אלהים: ותהי מחת גבורתי על נביי שקרא דמתנבן שקר
ומלפין כדיבין ברז טב דגניז לעמי לא יהון ובכתב חיי עלמא דכתיב לצדיקי בית
10 ישראל לא יתכתבון ולארעא דישראל לא יעלון ותדעון ארי אנא יי אלהים: חלף
דאתנביאו שקר וחלף דאטעיאו ית עמי למימר שלמא ולית שלם ואנון דמן לדבני
11 מחיצא ושעע ליה טין פטיר דלא תבן: אמר לדבני מחיצא ושיעי ליה טין פטיר דלא
12 תבן נפיל הוא כען יהי מטר מגבר וית אבני אלגביש יחתן ורוח עלעולין תבוע: והא
13 נפל כתלא הלא יתאמר לכון אן שיעא דשעתון: בכן כדנן אמר יי אלהים ואיתי מלך
דתקיף ברוח עלעולין בחמתי ועממין קטולין כמטר מגבר ברוגזי ייתון ומלכין דחסינין
כאבני אלגביש ברגז לשצאה:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et factum est verbum prophetiæ à facie Dñi mecum dicens: Fili hominis, ecce domus Israel dicunt, Doctrinam quam ipse docet, in dies multos & in tempus longum ipse prophetat. Propterea dic ad eos: Hæc dicit Dñs Deus, non cessabunt ultrà omnia verba mea: verbum enim quod locutus fuero, confirmabitur, dicit Dñs Deus.

CAP. XIII.

ET factum est verbũ prophetiæ à facie Dñi mecũ dicens: Fili hominis, vaticinare ad pseudoprophetas qui prophetant: & dices prophetantibus juxta voluntatem cordis sui, Suscipite verbum Dñi. Hæc dicit Dñs Deus, Væ pseudoprophetis qui stulti sunt, qui ambulant post cogitationes cordis sui, & nihil vident. Sicut vulpes in solitudine pseudoprophetæ tui Israel fuerunt. Non stetistis in ruptura muri, nec fecistis vobis opera bona ad deprecandum pro domo Israel, ut staretis ad exorandam misericordiam pro eis, quando venerunt contra eos bellatores in die furoris Dñi. Prophetant falsa & docent mendacia, dicentes, Dicit Dñs, & Dñs non misit eos, & impudenter afferunt suum sermonem confirmandum. Nonne prophetias falsas prophetâstis, & divinationem mendacii dixistis? dicentes, Dicit Dñs, cum à facie *Domini* null⁹ sermo sit fact⁹. Propterea hæc dicit Dñs Deus: Pro eo quòd prophetâstis falsa & docuistis mendacia, ideo ecce ego mitto iram meam in vos, dicit Dñs Deus. Et erit plaga potentiæ meæ super pseudoprophetas qui prophetant falsa, & docent mendacia. In secreto bono quod absconditum est populo meo non erunt; & in scriptura vitæ æternæ quæ scripta est justis domus Israel non scribentur; & in terram Israel non ingredientur: & scietis quia ego Dñs Deus. Pro eo quòd prophetaverunt falsa, & pro eo quòd seduxerunt populum meum, dicentes, Pax, cùm non sit pax. Et ipsi similes sunt ædificanti parietem, qui linit eum luto simplici absq; paleis. Dic ædificanti parietẽ, & linienti eum luto simplici absq; paleis, cadet ipse [*paries*,] nunc erit pluvia inundans, & lapides grandes descendent, & ventus tempestatum dirumpet. Et ecce cecidit paries: nonne dicetur vobis, Ubi est litura quam linistis? Idcircò hæc dicit Dñs Deus, Et adducam regem fortem *cum spiritu* tempestatũ in indignatione mea: & populi occidẽtes quasi pluvia inũdans in furore meo venient, & reges qui robusti sunt sicut lapides grãdes in furore ad consum

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܗܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪܝܢ
ܚܙܘܐ ܗܢܐ. ܠܝܘܡܬܐ ܗܘ ܣܓܝܐܐ ܘܠܙܒܢܐ ܪܚܝܩܐ ܡܬܢܒܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܠܗܘܢ
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܠܘܬ ܠܐ ܢܗܘܐ ܦܘܫܐ ܠܡܠܝ. ܡܠܬܐ ܕܐܡܪ ܐܢܐ. ܥܒܕ
ܐܢܐ ܠܗ̇ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܦܣܩܐ * ܝܒ *

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܢܒܝܐ ܕܐܝܣܪܝܠ
ܕܡܬܢܒܝܢ ܠܗܘܢ. ܘܐܡܪ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܬܢܒܝܢ ܡܢ ܠܒܗܘܢ. ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ
ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܝ ܠܣܟܠܐ ܢܒܝܐ. ܕܐܙܠܝܢ ܒܬܪ ܪܢܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܚܙܘ ܚܙܘܐ. * ܐܝܟ
ܒܚܘܪܒܐ ܗܘܘ ܢܒܝܝܟ ܐܝܣܪܝܠ. * ܠܐ ܣܠܩܬܘܢ ܠܬܘܪܥܬܐ. ܘܐܦܠܐ ܚܕܪܬܘܢ ܚܕ
ܥܠ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܠܡܩܡ ܒܩܪܒܐ ܒܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܕܐܡܪܝܢ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪ
ܘܡܪܝܐ ܠܐ ܫܕܪ ܐܢܘܢ. ܘܫܪܝܘ ܠܡܩܝܡܘ ܡܠܬܐ ܕܕܓܠܘܬܐ. * ܚܙܘܐ ܣܪܝܩܐ ܚܙܝܬܘܢ. ܘܩܘ
ܕܓܠܐ ܐܡܪܬܘܢ. ܘܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܕܡܪܝܐ ܐܡܪ. ܘܐܢܐ ܠܐ ܐܡܪܬ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡ
ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܥܠ ܕܚܙܝܬܘܢ ܣܪܝܩܘܬܐ ܘܡܠܠܬܘܢ ܕܓܠܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܠܘܬܟܘܢ ܐܡܪ
ܡܪܘܬܐ. * ܘܬܗܘܐ ܐܝܕܝ ܥܠ ܢܒܝܐ ܕܚܙܝܢ ܣܪܝܩܘܬܐ ܘܡܬܢܒܝܢ ܕܓܠܘܬܐ. ܒܓܘ ܥܡܝ
ܠܐ ܢܗܘܘܢ. ܘܒܟܬܒܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܠܐ ܢܬܟܬܒܘܢ. ܘܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܠܐ ܢܥܠܘܢ. ܘܬܕ
ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܥܠ ܕܐܛܥܝܘ ܠܥܡܝ. ܘܐܡܪܘ ܫܠܡܐ. ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ. ܘܗܘ
ܒܢܐ ܗܘܐ ܐܣܝܐ. ܘܗܢܘܢ ܫܝܥܝܢ ܗܘܘ ܠܗ ܕܢܦܠ. * ܐܡܪ ܠܫܝܥܘܗܝ ܕܢܦܠ
ܗܐ ܐܢܐ ܝܗܒ ܐܢܐ ܡܛܪܐ ܕܓܪܦ. ܘܟܐܦܐ ܕܬܪܙܐ ܢܦܠܢ. ܘܪܘܚܐ ܕܥܠܥܠܐ. * ܘܢܦ
ܘܢܦܠ ܫܘܪܐ. ܘܢܐܡܪ ܠܟܘܢ. ܐܝܟܐ ܗܝ ܫܘܥܝܬܐ ܕܫܥܝܬܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܐܫܒ ܪܘܚܐ ܕܥܠܥܠܐ ܒܚܡܬܝ. ܘܡܛܪܐ ܕܓܪܦ ܢܗܘܐ ܒܪܘܓܙܝ.
ܘܟܐܦܐ ܕܬܪܙܐ ܒܚܡܬܝ ܢܚܒܠܢ.

* Fuit etiam ad me ſermo Domini, dicendo; 26 Fili hominis, en Iſraelitæ dicunt; Viſionem 27 quam iſte videt, ad multos dies & longinqua tempora prophetat. Iccirco dic eis; Sic ait 28 Dominus dominorum; non erit ampliùs mora verbis meis: verbum quod dico, facturus ſum, ait Dominus dominorum.

CAP. XIII.

* DEinde fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 1 Fili hominis, vaticinare contra prophetas 2 Iſraelitarum qui prophetant eis; & dic iis qui ſuopte ex animo prophetant; Audite ſermonem Dñi, Domini *inquam* dominorũ. Væ ſtolidis prophetis qui ſuam ſequuntur 3 phantaſiam, qui viſionem non viderunt. Similes 4 vulpibus in deſerto facti ſunt prophetæ tui, ô Iſrael. Non aſcendiſtis ad rupturam, 5 neque ſepe circundediſtis Iſraelitas, ut in prælio ſtarent in die Domini. Qui dicunt, Sic ait 6 Dñs, quum Dominus non miſerit eos, & cœperunt aſſeverare verbum falſum. Viſionem 7 vanam vidiſtis, & vaticinium falſum prædixiſtis: attamen dicitis, Dominus dixit, quum ego non dixerim. Propterea ſic ait Dominus 8 dominorũ; Quia vidiſtis, & falſum locuti eſtis, ecce me contra vos, dicit Dominus dominorum: Eritque man⁹ mea ſuper prophe- 9 tas qui vident vanitatem, & vaticinantur falſitatem: in medio populi mei non erunt, in libro Iſraelitarum non ſcribentur, & in terram Iſraelis non ingredientur, & ſcietis me eſſe Dominum dominorum. Quia ſeduxerunt 10 populũ meum, & dixerunt, Pax, quum nulla eſſet pax, ille parietem extruebat iſti verò liniebant eum ut corrueret: Dic linientibus 11 eum ut corruat, Ecce ego dabo imbrem abripientem, & lapides ſilicis cum vento procelloſo cadent: Sic rumpetur corruétque paries, 12 dicetúrque vobis, Ubi eſt litura quam liniviſtis? Iccirco ſic ait Dominus domino- 13 rum, Excitabo ventum procelloſum in ira mea, & imber abripiens erit in furore meo, lapidéſque ſilicei in excandeſcentia mea diſperdent:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * ها بيت اسرايل الممرمر قايلون يقولون الر
التي راها هذا الي ايام كثيرة والي ازمنة بعيدة هذا يتنبي * لاجل هذا قل لهم * هكذا
يقول ادوناي الرب * لا تبطي ايضا جميع اقوالي التي اتكلم بها * لاني اتكلم بقول واصنعه
يقول ادوناي الرب * الفصل الثالث عشر * الاصحاح السادس *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان تنبا علي انبياء اسرايل الذين يتنبون وتقول
للانبياء الذين يتنبون من قلبهم وتتنبا وتقول لهم * اسمعوا قول الرب * هكذا يقول ادو
الرب * الويل للذين يتنبون من قلبهم * وانبياوك يا اسرايل لم ينظروا شيا البتة * مثل الثعا
في البراري * [MS.Ox. كانوا انبياك يا اسرايل *] * لم يقفوا في جلد * وجمعوا القطعان علي بيت
اسرايل * لم يقوموا القايلون في يوم الرب * ننظر الكذب ننجم الاباطيل * القايلون هكذا يقو
الرب * والرب لم يرسلهم * وابتدوا ان يقيموا قولا * اليس رويا كذب رايتم * وتعريفات باطلة قلتم
ويقولون قال الرب * ولم اتكلم * لاجل هذا قل * هكذا يقول ادوناي الرب * من اجل
كلماتكم كاذبة وتعريفاتكم باطلة لاجل هذا ها انا عليكم يقول ادوناي الرب * وامد
يدي علي الانبياء الذين يرون الكذب وينطقون بالباطل في بقعة شعبي * ولا يكونون
يكتبون في كتاب بيت اسرايل * والي ارض اسرايل لا يدخلون ويعلمون اني انا انا ادوناي
* من اجل انهم اضلوا شعبي قايلين * سلامة سلامة وليس هي سلامة * وهذا يبني الجدار وذاك
يلبسونه * قل للذين يلبسونه يسقط * ويكون مطر مغرقا * واعطي حجارة ذي صخور
رباطاتهم ويسقطون وريحا مزعجة فينشق * واذا سقط الحايط فيقولون لكم * اين هو التلبيس
الذي لبستموه * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * واشق ريحا مزعجة بغضب
المغرق يكون في غضبي الحجارة ذي الصخور المبيتة اجلبها بغضب للابادة

* *Deinde fuit ſermo Domini ad me, dicens;* 26 *O fili hominis, ecce domus Iſraelis refractaria* 27 *dicentes dicunt; Viſio quam vidit iſte, ad plurimos dies eſt, et ad longinqua tempora iſte prophetat. Propterea dic eis,* 28 *Ita dicit Adonai Dominus; Nequaquam tardabunt ampliùs cuncti ſermones mei quos loquor: nam ſermonem dico, & faciam illum, ait Adonai Dominus.*

CAP. XIII.

Textus ſextus.

* *ET fuit ſermo Domini ad me, dicens;* 1 *O fili hominis, vaticinare de prophetis* 2 *Iſraelis, qui vaticinantur: & dices prophetis qui ſuopte ex corde vaticinantur: prophetabis inquam, & dices eis;* 3 *Audite ſermonem Domini: ſic ait Adonai Dominus, Væ iis qui ſuopte ingenio pro-* 3 *phetant. Et quidem prophetæ tui O Iſrael, nihil penitùs viderunt. Sicut vulpes* 4 *in deſertis* [MS. Ox. *facti ſunt prophetæ tui, O Iſrael.*] *Non ſteterunt in firma-* 5 *mento, & congregaverunt greges contra domum Iſraelis. Non reſurgent qui dicunt in die Domini, Videamus falſum, vana præſagiamus: Qui dicunt, Sic dicit Do-* 6 *minus, quum Dominus nequaquam miſerit eos: & cœperunt ſuſcitare ſermonem. Nónne viſionem falſam vidiſtis, & divi-* 7 *nationes vanas prædixiſtis? tamen dicitis, Ait Dominus, quum ego non ſim locutus. Propterea dic, Sic ait Adonai Do-* 8 *minus; Quia verba veſtra falſa ſunt, et divinationes veſtræ vanæ; ideò ecce me contra vos, dicit Adonai Dominus: Et* 9 *extendam manum meam ſuper prophetas qui falſum vident & loquuntur vanitatem in regione populi mei: hi non erunt, neque ſcribentur in libro domûs Iſraelis, & in terram Iſraelis non ingredientur: & ſcient quòd ego ſim Adonai Dominus. Quoniam iſti ſeduxerunt populum me-* 10 *um, dicentes; Pax, pax, quum nulla eſſet pax: is parietem ædificat, alii verò liniunt eum: Dic eis qui liniunt eum; Ca-* 11 *det: erit enim pluvia inundans, dabóque lapides ſaxeos diſperſos in nexus eorum, & cadent; ventúmque concitatum, & diſrumpetur. Et cùm ceciderit paries,* 12 *dicent vobis, ubi nam eſt litura veſtra quâ liniviſtis eum? Propterea ſic dicit Ado-* 13 *nai Dominus; Et diſrumpam ventum in iracundia, & pluvia ſubmergens erit in furore meo; lapides ſaxeos diſperſos inferam in iracundia, ad exitium:*

יחזקאל : יד

eum faciam pertingere & ,*insulso linistis* quem parietem diruam Et
14 והרסתי את־הקיר אשר־טחתם תפל והגעתיהו
consumemini & ,cadet & : ejus fundamentum discooperietur &, terram ad
אל־הארץ ונגלה יסדו ונפלה וכליתם
complebo Et .Dominus *ego* quod scietis & , ejus medio in
15 בתוכה וידעתם כי־אני יהוה׃ וכליתי את־
: vobis Dicamque .*insulso cum linentibus* in & , pariete in meum furorem
חמתי בקיר ובטחים אתו תפל ואמר לכם
vaticinantes Israel Prophetæ .eum complanantes non & ,paries Non
16 אין הקיר ואין הטחים אתו׃ נביאי ישראל הנבאים
dixit , pax non & , pacis visionem ei *videntes* & , Jerusalaim ad
אל־ירושלם והחזים לה חזון שלם ואין שלם נאם
filias ad *tuas facies* pone , hominis fili tu Et .Deus Dominus
17 אדני יהוה׃ ואתה בן־אדם שים פניך אל־בנות
: *dices* Et .eas super vaticinare &,suo corde de *vaticinantes* , tui populi
18 עמך המתנבאות מלבהן והנבא עליהן׃ ואמרת
omnibus *super* pulvinaria *consuentibus* Væ : Deus Dominus dixit Sic
כה־אמר אדני יהוה הוי למתפרות כסתות על כל־
omnis caput super velamina *facientibus* & ,*mearum* manuum axillis
אצילי ידי ועשות המספחות על־ראש כל־
, mei populi venabimini animas Nunquid .animas venandum ad staturæ
קומה לצודד נפשות הנפשות תצודדנה לעמי
meo populo in me prophanastis Et ? vivificabitis vobis animas &
19 ונפשות לכנה תחיינה׃ ותחללנה אתי אל־עמי
interficiendum ad , panis *buccellis in* & , hordei pugillos propter
בשעלי שעורים ובפתותי לחם להמית
non quæ , animas *vivificandum ad* & ,*morientur* non quæ animas
נפשות אשר לא־תמותנה ולחיות נפשות אשר לא־
Propterea .mendacium *audientibus* meo populo *vos mentiendo in* ,*vivent*
20 תחיינה בכזבכם לעמי שמעי כזב׃ לכן
quibus vestra cervicalia ad ego Ecce : Deus Dominus dixit sic
כה־אמר אדני יהוה הנני אל־כסתותיכנה אשר
dirumpam Et .*evolandum ad* animas ibi *venantes* vos
אתנה מצדדות שם את־הנפשות לפרחות וקרעתי
vos quas animas dimittam & ,vestris brachiis *desuper* ea
אתם מעל זרועתיכם ושלחתי את־הנפשות אשר אתם
, vestra velamina dirumpam Et .*avolantes in* animas *venantes*
21 מצדדות את־נפשים לפרחת׃ וקרעתי את־מספחתיכם
vestra manu in ultrà erunt non &,vestra manu de mei populi liberabo &
והצלתי את־עמי מידכן ולא־יהיו עוד בידכן
conterere Pro .Dominus *ego* quod scietis & : venationem in
22 למצודה וידעתן כי־אני יהוה׃ יען הכאות
manus *confortando* & :illud affeci dolore non ego &,mendaciter justi cor
לב־צדיק שקר ואני לא הכאבתיו ולחזק ידי
Propterea .eum vivificando , mala sua via à *redeundum* non *ad* , impii
23 רשע לבלתי־שוב מדרכו הרע להחיתו׃ לכן
: amplius divinabitis non divinationem & ,videbitis non vanum
שוא לא תחזינה וקסם לא־תקסמנה עוד
.Dominus *ego* quod scietis & : vestra manu de meum populum eruam &
והצלתי את־עמי מידכן וידעתן כי־אני יהוה׃

CAP. XIV. יד

.*meas facies ad* sederunt & , Israel senioribus de viri me ad *venit* Et
1 ויבוא אלי אנשים מזקני ישראל וישבו לפני׃
viri , hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר׃ בן־אדם האנשים
3 offendiculum & ,suum cor super sua idola fecerunt ascendere isti
האלה העלו גלוליהם על־לבם ומכשול
? eis *requirar requirendo* nunquid .*suas facies* contra *dederunt* suæ iniquitatis
עונם נתנו נכח פניהם האדרש אדרש להם׃

Versio VULG. LAT.

14 Et destruam parietem, quem linistis absque temperamento : & adæquabo eum terræ, & revelabitur fundamentum ejus : & cadet, & consumetur in medio ejus : & scietis quia ego sum Dominus. 15 Et complebo indignationē meā in pariete, & in his qui liniunt eum absque temperamento, dicamque vobis ; Non est paries, & non sunt qui liniunt eum. 16 Prophetæ Israel, qui prophetant ad Jerusalem, & vident ei visionem pacis : & non est pax, ait 17 Dominus Deus. Et tu, fili hominis, pone faciem tuam contra filias populi tui, quæ prophetant de corde suo : & vaticinare super 18 eas, Et dic ; Hæc dicit Dominus Deus ; Væ quæ consuunt pulvillos sub omni cubito manûs : & faciunt cervicalia sub capite universæ ætatis ad capiendas animas : & cùm caperent animas populi mei, vivificabant animas eo- 19 rum. Et violabant me ad populum meum, propter pugillum hordei, & fragmen panis, ut interficerent animas, quæ non moriuntur, & vivificarent animas, quæ non vivunt, mentientes populo meo credenti mendaciis. 20 Propter hoc hæc dicit Dominus Deus ; Ecce ego ad pulvillos vestros, quibus vos capitis animas volantes : & dirumpā eos de brachiis vestris : & dimittam animas, quas vos capitis, animas ad 21 volandum. Et dirumpam cervicalia vestra, & liberabo populum meum de manu vestra, neque erunt ultrà in manibus vestris ad prædandum : & scietis quia ego 22 Dominus. Pro eo quòd mœrere fecistis cor justi mendaciter, quem ego non contristavi : & confortastis manus impii, ut non reverteretur à via sua mala, & 23 viveret : Propterea vana non videbitis, & divinationes non divinabitis amplius, & eruam populum meum de manu vestra : & scietis quia ego Dominus.

CAP. XIV.

1 ET venerūt ad me viri seniorum Israel, & sederunt coram 2 me. Et factus est sermo Domini 3 ad me, dicens; Fili hominis, viri isti posuerunt immunditias suas in cordibus suis, & scandalum iniquitatis suæ statuerunt contra faciem suam : numquid interrogatus respondebo eis?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

14 Καὶ κατασκάψω τὸ τεῖχον ὃ ἠλείψατε, ϗ πεσεῖται. ϗ θήσω αὐτὸν ἐπὶ τὴν γῆν, ϗ ἀποκαλυφθήσεται τὰ θεμέλια αὐτοῦ, ϗ πεσεῖται, ϗ (ʹ) συντελεσθήσεσθε μετ᾽ ἐλέγχων, ϗ 15 ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος. Καὶ συντελέσω τὸν θυμόν μου ἐπὶ τὸ τεῖχον, ϗ ἐπὶ τοὺς ἀλείφοντας αὐτὸν, (ρ) πεσεῖται· ϗ εἶπα πρὸς ὑμᾶς, Οὐκ ἔστιν ὁ τοῖχος, οὐδὲ 16 οἱ ἀλείφοντες αὐτὸν, Προφῆται τοῦ Ἰσραὴλ, οἱ προφητεύοντες ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, ϗ (σ) οἱ ὁρῶντες αὐτῇ εἰρήνην, ϗ οὐκ ἔστιν εἰρή- 17 νη, λέγει (τ) κύριος. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ τὰς θυγατέρας τοῦ λαοῦ σου, τὰς προφητευούσας ἀπὸ καρδίας 18 αὐτῶν, ϗ προφήτευσον ἐπ᾽ αὐτὰς, Καὶ ἐρεῖς (υ), Τάδε λέγει κύριος, Οὐαὶ ταῖς συρραπτούσαις προσκεφάλαια (φ) ὑπὸ πάντα ἀγκῶνα χειρὸς, ϗ ποιούσαις ἐπιβόλαια ἐπὶ πᾶσαν κεφαλὴν πάσης ἡλικίας, τοῦ διαστρέφειν ψυχάς. (χ) αἱ ψυχαὶ διεστράφησαν τοῦ λαοῦ μου· 19 ϗ ψυχὰς περιεποιοῦντο. Καὶ ἐβεβήλουν με πρὸς τὸν λαόν μου, ἕνεκεν δρακὸς κριθῶν, (ψ) ϗ ἕνεκεν κλασμάτων ἄρτων, τοῦ ἀποκτεῖναι ψυχὰς ἃς οὐκ ἔδει ἀποθανεῖν, ϗ (ω) τοῦ περιποιήσασθαι ψυχὰς ἃς οὐκ ἔδει (α) ζῆσαι, ἐν τῷ ἀποφθέγγεσθαι ὑμᾶς λαῷ εἰσ- 20 ακούοντι μάταια ἀποφθέγματα. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ τὰ προσκεφάλαια ὑμῶν, ἐφ᾽ ἃ ὑμεῖς (β) ἐκεῖ συστρέφετε ψυχάς· ϗ διαρρήξω αὐτὰ ἀπὸ τῶν βραχιόνων ὑμῶν, ϗ ἐξαποστελῶ τὰς ψυχὰς ἃς ὑμεῖς ἐκστρέφετε τὰς 21 ψυχὰς αὐτῶν εἰς διασκορπισμόν. Καὶ διαρρήξω τὰ (γ) ἐπιβόλαια ὑμῶν, ϗ ῥύσομαι τὸν λαόν μου ἐκ χειρὸς ὑμῶν, ϗ οὐκέτι ἔσονται ἐν χερσὶν ὑμῶν εἰς συστροφήν· ϗ 22 ἐπιγνώσεσθε (ʹ) διότι ἐγὼ κύριος. Ἀνθ᾽ ὧν (ʹ) διεστρέφετε καρδίαν δικαίου (δ), ϗ ἐγὼ οὐ διέστρεφον αὐτὴν, ϗ τοῦ κατισχῦσαι χεῖρας ἀνόμου τὸ καθόλου μὴ ἀποστρέψαι (ε) ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ τῆς πονηρᾶς, (ζ) ϗ ζῆσαι αὐτόν· 23 Διατοῦτο ψευδῆ οὐ μὴ ἴδητε, ϗ (η) μαντείας οὐ μὴ (θ) μαντεύσησθε ἔτι· ϗ ῥύσομαι τὸν λαόν μου ἐκ χειρὸς ὑμῶν, ϗ (ι) γνώσεσθε ὅτι ἐγὼ κύριος.

MS.A. (ʹ) συντελεσθήσεται (ρ) ϗ πεσεῖται. (σ) ὁρῶντες (τ) ἀδωναὶ κύριος. (υ) πρὸς αὐτὰς, Τάδε λέγει ἀδωναὶ κύριος, (φ) ἐπὶ (χ) ϗ αἱ (ψ) ϗ κλάσματος ἄρτου, ἀποκτεῖναι (ω) περιεποιοῦντο (α) ζῆν, (β) συστρέφετε ἐκεῖ (γ) περιβόλαια (ʹ) ὅτι (ʹ) διαστρέφετε (δ) ἀδίκως, ϗ (ε) * τοῦ ἀπὸ (ζ) ἀποστρέψαι ϗ * ζητῆσαι αὐτόν· (η) μαντείαν (θ) μαντεύσησθε, ὅτι ῥύσομαι (ι) ἐπιγνώσεσθε.

ΚΕΦ. ιδʹ.

1 ΚΑὶ ἦλθον πρὸς μὲ (α) ἐκ τῶν πρεσβυτέρων ἄνδρες τοῦ λαοῦ Ἰσραὴλ, ϗ ἐκάθισαν πρὸ προσώπου μου. 2 Καὶ ἐγένετο (β) 3 πρὸς μὲ λόγος κυρίου, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, οἱ ἄνδρες οὗτοι ἔθεντο τὰ διανοήματα αὐτῶν ἐπὶ τὰς καρδίας αὐτῶν, ϗ τὴν κόλασιν τῶν ἀδικιῶν αὐτῶν ἔθηκαν πρὸ προσώπου αὐτῶν· εἰ ἀποκρινόμενος ἀποκριθῶ αὐτοῖς;

MS.A. (α) ἄνδρες ἀπὸ τῶν πρεσβυτέρων Ἰσραὴλ, (β) λόγος κυρίου πρὸς μὲ,

Et suffodiam parietem, quem linistis: & cadet. Et ponam eum super terram, & [illegible] fundamenta ejus; & cadet: & consumemini cum increpatione: & cognoscetis, quia ego Dominus. Et complebo furorem meum super parietem: et [illegible] cadet. Dixi [illegible] Non est paries, [illegible] eum, Prophetæ Israel, qui prophetant super Hierusalem, & [illegible] illi pacem, & [illegible] dicit Dominus. Et tu, fili hominis, obfirma faciem tuam [illegible] populi tui, quæ prophetant [illegible] corde suo: & propheta super eas, Et dices; Hæc dicit Dominus: (b) Væ his, quæ consuunt [cervi]calia sub omni cubito manus [illegible] quæ faciunt velamina [illegible] omne caput universæ ætatis [illegible] pervertant animas. Animæ [per]versæ sunt populi mei. Et animas salvabant, Et contaminabant me ad populum meum propter pugillum hordei, & propter fragmenta panum, ut occiderent animas quas non oportuit mori, [illegible] animas, quas non [illegible] dum loquimini vos populo [audi]enti vanos sermones. [illegible] hæc dicit Dominus Dñs; Ecce [ego] super cervicalia vestra, in quæ vos illic colligitis animas [illegible] [dir]rumpam ea de brachiis [illegible] emittam animas quas vos pervertitis animas eorum, in [dispersio]nem: Et disrumpam [illegible] vestra: & liberabo populum meum de manu vestra: & non [illegible] ultra in manibus [illegible] gregationem: & cognoscetis quia ego Dominus. Pro eo quod [per]vertebatis cor (k) justi, & ego non pervertebam eum, & confortabatis manus iniqui, ut penitus non converteretur à via sua pessima, & viveret ipse; Propterea mendacia non videbitis, & divinationes nequaquam divinabitis amplius: & liberabo populum meum de manu vestra: & [illegible] tis, quia ego Dominus.

CAP. XIV.

ET venerunt ad me de senioribus (a) viri populi Israel, & [se]derunt ante faciem meam. E[t fa]ctus est ad me sermo Dom[ini di]cens, Fili hominis, [illegible] cogitationes [illegible] [illegible]: & tormentum [illegible] tum suarum posuerunt ante [fa]ciem suam: si respondens re- spondebo eis?

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ואפגר ית קרתא דאתנביתון בה נבואן דשקר וארמנה לארעא ויתגלון אושהא ותפל
15 ותשתיצון בגוה ותדעון ארי אנא יי׃ ויחול רוגזי בקרתא ובנביי שקרא דאתנביאו
16 בה נבואן דשקר ויתאמר לכון לית קרתא ולית נביי שקרא׃ נביי שקרא דישראל
17 דמתנבן על ירושלם ומטעין לה באולפן שלם ולית שלם אמר יי אלהים׃ ואת בר אדם
18 קביל נבואה על בנת עמך דמתנבן כרעות לבהן ואתנבי עליהן׃ ותימר כדנן אמר
יי אלהים וי עליהן על דמחטטן רקיעי חשוך על כל מרפקי ידין ועבדן פתכומרין על
ריש כל קומה לאבדא נפשן הנפשת עמי אתן יכלן לאבדא ולקימא הלא נפשתכן
19 דילכן הלא יכלתן לקימא׃ ואחלתן רעותי בעמי בשעלי סערין ובמנוסין דלחים
לאמתא נפשן דלא חזי להן דימותון לא אתן ממיתן ולקימא נפשן דלא חזי להן לקימא
20 דתתקימן לא אתן מקימן בכדבותכן לעמי שמעי כדבין׃ בכן כדנן אמר יי אלהים הא
אנא שלח רוגזי על רקיעי חשיכין דאתן מטעין למימר בהון אנחנא מחרשן ית נפשן
לאבדא ואפסיק יתהן מעל דרעיכון ואשזיב ית נפשתא דאתון מחרשן ית נפשיהון
21 לאבדותהא׃ ואפסיק ית פתכומריכון ואשזיב ית עמי מידכון ולא יתמסרון עוד בידכון
22 לאשתיצאה ותדעון ארי אנא יי׃ חלף דאכאיתון לב זכי למהוי שקר ומן קדם מימרי
23 לא אתכהי ולתקפא ידי רשיעא בדיל דלא למתב מאורחיה בישתא לקימותיה׃ בכן
שקר לא תתנבאון ואולפן לא תילפון עוד ואשזיב ית עמי מידכון ותדעון ארי אנא יי׃

יד

1 אמר נביא אתו לותי גוברין מסבי ישראל ויתיבו קדמי [illegible]
2 3 עמי למימר׃ בר אדם גבריא האלין אסיקו פיהון [illegible]
יהבו לקביל אפיהון [illegible]

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et destruam civitatem in qua vos prophetastis prophetias falsas, & commovere faciam eam in terram, & revelabuntur fundamenta ejus; & cadet : & consummabimini in medio ejus, & scietis quia ego Dñs. Et residebit indignatio mea in civitate & pseudoprophetis qui prophetarunt in ea prophetias falsas, & dicetur vobis : Non est civitas nec pseudoprophetæ. Prophetæ falsi Israel qui prophetant ad Jerusalem, & decipiunt eam oraculo pacis, cùm non sit pax, dicit Dominus Deus. Et tu fili hominis accipe prophetiam super filias populi tui, quæ prophetant juxta voluntatem cordis sui, & vaticinare super eas. Et dices : Hæc dicit Dominus Deus : Væ iis quæ consuunt pulvillos inopis super omnes *axillas* manuum & faciunt cervicalia ad caput universæ staturæ ad perdendas animas. Nunquid animas populi mei vos potestis perdere aut vivificare? nunquid animas vestras quæ ad vos spectant, vos potestis vivificare? Et violastis voluntatem meam in populo meo pugillis hordei & fragmentis panis, ad occidendas animas eas quas non decebat mori, *non* vos occiditis; & ad vivificandas animas quas *omninò* non decebat vivere, *non* vos vivificatis; cùm mentimini populo meo qui audit mendacia. Propterea hæc dicit Dominus Deus : Ecce ego mitto furorem meum ad pulvillos inopum, quos decipitis, dicentes: In his nos incantamus animas ut pereant : & dirumpam eos ex brachiis vestris, & liberabo animas, quas animas ut perdatis, veneficiis utimini. Et dirumpam cervicalia vestra, & liberabo populum meum de manu vestra, & non tradentur ultra in manû vestram ut perdantur; & scietis quia ego Dñs. Pro eo quòd dolore affecistis cor justi, ut sit falsum, & à facie Verbi mei non est per[illegible] sum, & ad confortandas manus impii, ut non converteretur à via sua mala, ut viveret. Propterea falsa non prophetabitis & doctrinam non docebitis amplius : & eruam populum meum de manu vestra, & scietis quia ego [illegible]

CAP. XIV.

DIxit propheta: Venerunt ad me viri de senioribus Israel, & [illegible] coram me. Et factum est verbum prophetiæ à facie Domini [illegible] Fili hominis, viri isti ascendere fecerunt cultum idolorum [illegible] [illegible] scelerum suorum posuerunt contra faciem suam [illegible] interrogatus respondebo eis?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܣܚܘܦ ܠܫܘܪܐ ܕܛܫܬܘܢ. ܘܢܦܠ. ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܠܐܪܥܐ. ܘܢܬܓܠܘܢ ܫܬܐܣܘܗܝ
ܘܬܦܠܘܢ. ܘܬܣܬܚܦܘܢ ܒܓܘܗ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܘܐܫܡܠܐ ܚܡܬܝ ܒܫܘܪܐ.
ܘܒܐܝܠܝܢ ܕܛܫܝܢ ܗܘܘ ܠܗ ܟܕ ܢܦܠ. * ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܟܘܢ. ܐܝܟܘ ܫܘܪܐ. ܘܐܝܟܐ ܐܢܘܢ
ܢܒܝܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܕܡܬܢܒܝܢ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܚܙܝܢ ܠܗ ܚܙܘܐ ܕܫܠܡܐ. ܘܠܝܬ ܫܠܡܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܘܬܐ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܥܠ ܒܢܬ ܥܡܟ ܕܡܬܢܒܝܢ ܡܢ
ܠܒܗܝܢ. ܘܐܬܢܒܐ ܥܠܝܗܝܢ. ܘܐܡܪ ܠܗܝܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܘܬܐ. ܘܝ ܠܕܡܚܝܛܢ
ܟܪܝܟܬܐ ܥܠ ܐܩܦܝ ܐܝܕܝܐ. ܘܥܒܕܢ ܥܡܛܦܬܐ ܥܠ ܟܠ ܪܝܫ ܘܥܠ ܟܠ ܩܘܡܐ. ܠܡܨܕ ܢܦܫܬܐ.
ܢܦܫܬܗ ܕܥܡܝ ܨܕܝܢ ܐܢܬܝܢ. ܘܢܦܫܬܟܝܢ ܡܚܝܢ ܐܢܬܝܢ. * ܘܛܢܦܬܝܢ ܠܝ
ܠܥܡܝ ܒܡܠܘܐ ܕܣܥܪܐ. ܘܒܦܪܘܣܐ ܕܠܚܡܐ. ܠܡܩܛܠ ܢܦܫܬܐ ܕܠܐ ܚܝܒܢ ܗܘܝ
ܠܡܡܬ. ܘܠܡܚܝܘ ܢܦܫܬܐ ܕܠܐ ܚܝܒܢ ܗܘܝ ܠܡܚܐ. ܘܡܕܓܠܢ ܠܥܡܐ ܕܫܡܥ
ܕܓܠܘܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠ ܟܪܝܟܬܟܝܢ ܕܨܝܕܢ
ܒܗܘܢ ܢܦܫܬܐ. ܘܐܨܪܘܐ ܐܢܘܢ ܡܢ ܕܪܥܝܟܝܢ. ܘܐܫܪܐ ܢܦܫܬܐ ܐܝܠܝܢ ܕܨܕܝܢ ܐܢܬܝܢ. ܘܐܦܪܚ
ܐܢܝܢ. * ܘܐܨܪܐ ܡܥܛܦܬܟܝܢ. ܘܐܦܨܐ ܠܥܡܝ ܡܢ ܐܝܕܝܟܝܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܬܘܒ ܨܝܕܐ
ܒܐܝܕܝܟܝܢ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܚܠܦ ܕܐܟܐܒܬܘܢ ܠܒܗ ܕܙܕܝܩܐ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܘܐܢܐ
ܠܐ ܐܟܐܒܬܗ. ܘܐܚܣܢܬܘܢ ܐܝܕܝܗ ܕܪܫܝܥܐ. ܕܠܐ ܢܬܦܢܐ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ ܘܢܚܐ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܕܓܠܘܬܐ ܠܐ ܬܚܙܝܢ. ܘܩܣܡܐ ܠܐ ܬܩܣܡܢ ܬܘܒ. ܘܐܦܨܐ ܠܥܡܝ ܡܢ ܐܝܕܝܟܝܢ.
ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܓ *
* ܘܐܬܘ ܠܘܬܝ ܐܢܫܝܢ ܡܢ ܩܫܝܫܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܠܡܫܐܠ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܝܬܒܘ ܩܕܡܝ.
* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܘܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܓܒܪܐ ܗܠܝܢ ܐܣܩܘ ܕܚܠܬܗܘܢ ܥܠ
ܠܒܗܘܢ. ܘܬܘܩܠܬܐ ܕܥܘܠܗܘܢ ܣܡܘ ܠܘܩܒܠ ܐܦܝܗܘܢ. ܘܐܬܦܪܥ ܡܢܗܘܢ.

14 Et deſtruam parietē quem linivistis, ruétque: humi proſternam eum, & retegentur fundamenta ipſius: cadetis & deſtruemini in medio ejus, & ſcietis me eſſe Dñm. 15 Ita complebo iram meam in parietem & in illos qui liniebant eum, quum ceciderit. 16 Et dicetur vobis, Ubi eſt paries, & ubi ſunt prophetæ Iſraelis, qui prophetabant de Jeruſalem, & videbant ei viſiones pacis, quum nulla pax eſſet, ait Dñs dominorū? 17 Jam verò, fili hominis, vultū tuum adjice ad filias populi tui, quæ ex animo ſuo prophetant. Propheta contra eas, & dic illis; 18 Sic ait Dñs dominorū; Væ illis quæ conſuunt pulvillos pro cubitis brachiorum, & operimenta conficiunt pro quolibet capite, & quâcunq; ſtaturâ, ad venandas animas: animas populi mei venamini, animas autem veſtras vivas ſervatis. 19 Contaminatis populū meū pro pugillis hordei & fruſtulis panis, ad perimendas animas quæ mori non debebant: & vivas ſervandas animas quæ vivere non debebant: & mentitæ eſtis apud populum qui auſcultat mendacio. 20 Propterea ſic ait Dñs dominorum; Ecce me contra pulvillos veſtros quibus animas venamini, & lacerabo eos à brachiis veſtris, dimittámq; animas quas venamini, & avolare faciam illas: 21 Et lacerabo inſtrumenta veſtra, populúmq; meum de manibus veſtris liberabo, ne reti ſe committant ampliùs inter manus veſtras: & experiamini me eſſe Dñm. 22 Quia cor juſti mendacio transverberáſtis, quem ego dolore non affeceram; & manus iniquorum confirmáſtis, ne reverterentur à viis ſuis pravis ac viverent: 23 Deinceps vanitatem non videbitis, & divinationē non divinabitis ampliùs: ita populum meum eripiam è manibus veſtris, & agnoſcetis me eſſe Dominum.

CAP. XIV.

1 DEinde venientes ad me quidam è ſenioribus Iſraelitarum ad conſulendum Dominum, ſederunt coram me. 2 Factúſq; eſt ad me ſermo Domini, dicendo; 3 Fili hominis, viri iſti deos ſuos induxerunt in animum ſuum, & offendiculum iniquitatis ſuæ ob oculos ſibi propoſuerunt: ideo ultionem ſumam ab eis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* واهدم الحايط الذي لبستموه فيسقط * واضعه على الارض * فتنكشف اساساته ويسقط
ويفنى بتبكيتات * وتعلمون اني انا الرب * واكمل غضبي على الحايط وعلى الذين
لبسوه فيسقط * وقلت لكم اليس هذا الحايط * واليس الذين لبسوه انبياء اسرايل الذين
يتنبون على ايروسليم * ويرون لها السلامة وليس يكون سلامة * يقول ادوناي الرب * وانت يا
ابن الانسان * سدد وجهك على بنات شعبك المتنبيات من قلبهم وتنبا عليهم وقل * هكذا
يقول ادوناي الرب * الويل للاتي يخيطن وسايد لكل مرفق يد * ويصنعن عمايم لكل راس كل
قامة * ليصطدن الانفس * وانفس شعبي صيدت * واقتنوا نفوسا * ونجسوني لشعبي من اجل
حفنة شعير ومن اجل كسر خبز ليقتلوا النفوس التي لا يجب لها ان تموت * واقتنوا النفوس
التي لا ينبغي لها ان تعيش * عندما تنطقون للشعب المصغي للنغمات الباطلة * لاجل
هذا هكذا يقول الرب الرب * ها انا على وسايدكم التي بها انتن تصطدن هناك النفوس
فامزقها من اذرعتكم * وارسل النفوس التي انتم تقوتون نفوسها للتفريق * وامزق اريديتكم
وانجي شعبي من يدكم * ولا يكونون في ايديكم ايضا للشرك * وتعلمون اني انا الرب * من
اجل انكم اصطدتم قلب الصديق بالظلم * وانا لم اصطده * وقويتم ايدي الاثيم ان
يرجع بالكلية من طريقه الشرير ليرجع ويحيى * لاجل هذا لا تنظرن الكذب * ولا تكهنّ
تكهنا * لاني انجي شعبي من يدكم * وتعلمون اني انا الرب *

الفصل الرابع عشر

* واتى الي رجال من مشايخ اسرايل * وجلسوا قدام وجهي * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن
الانسان * هاولاء الرجال وضعوا ضمايرهم على قلوبهم * وعثرة ظلمهم جعلوها قبالة
وجوههم * اجاوب اجاوبهم *

14 *Evertámque parietem quem linivistis, & cadet; & æquabo illum solo, & retegentur fundamenta ipſius, cadetque; & abſumetur increpationibus: & ſentietis me eſſe Dominum.* 15 *Et explebo iram meam ſuper parietem, & ſuper eos qui liniverunt eum, cadétque.* 16 *Tum dicam vobis; Annon hic eſt paries ille? & nonne qui liniverunt eum, prophetæ Iſraelis? qui prophetant de Jeruſalem, & vident ei pacem, cùm non ſit pax, dicit Adonai Dominus.* 17 *Tu itaque O fili hominis, obſirma faciem tuam contra filias populi tui ſuopte ingenio prophetantes; & propheta contra eas, ac dicas;* 18 *Ita dicit Adonai Dominus; Væ iis quæ conſuunt cervicalia cuivis cubito manûs, & conficiunt vittas cuivis capiti cujuſcunque ſtaturæ, ad captandas animas. Animæ quidem populi mei captæ ſunt, animas autem quaſdam acquiſiverunt:* 19 *Et contaminaverunt me apud populum meum pro pugillo hordei, & pro fragmento panis, ut occiderent animas quas mori non decebat, & acquirerent animas quas vivere non decebat; dum alloquimini populum ad muſas vanas intentum.* 20 *Propterea ſic ait Dominus Deus; Ecce me contra cervicalia veſtra quibus vos captatis illic animas, & lacerabo ea de brachiis veſtris, dimittámque animas quarum vos nutritis animas, ut diſperſim eant:* 21 *Et lacerabo vela veſtra, eripiámque populum meum de manu veſtra, ne ſint ampliùs inter manus veſtras ad laqueos: & ſentietis me eſſe Dominum.* 22 *Quia cor juſti iniquitate venati eſtis, quod ego minimè venatus fueram; & confortáſtis manus iniqui, ne reverteretur omnino à via ſua mala, ut converſus viveret:* 23 *Ideò nec falſum videbitis, neque divinationes prædicetis: quia populum meum eripiam è manu veſtra, & ſcietis me eſſe Dominum.*

CAP. XIV.

1 *VEnerunt autem ad me viri quidam è ſenioribus Iſraelis, & ſederunt coram facie mea.* 2 *Tum fuit ſermo Domini ad me, dicens;* 3 *O fili hominis, viri iſti poſuerunt conſilia ſua in cordibus ſuis, & petram impietatum ſuarum poſuerunt ante facies ſuas: nunquid reſpondebo eis?*

: Deus Dominus dixit Sic : eos ad dices & , eos alloquere Propterea
4 לכן דבר־אותם ואמרת אליהם כה אמר אדני יהוה
in sua idola fecerit ascendere *qui* Israel domo de *vir* *Vir*
איש איש מבית ישראל אשר יעלה את־גלוליו אל־
venerit &, *suas facies* contra posuerit suæ iniquitatis offendiculū & , suū cor
לבו ומכשול עונו ישים נכח פניו ובא
multitudine in venienti ipsi respondebo Dominus Ego : Prophetam ad
אל־הנביא אני יהוה נעניתי לו בה ברב
quod, suo corde in Israel domum *capiendum Ad* .suorum idolorum
5 גלוליו: למען תפש את־בית־ישראל בלבם אשר
ad dic Propterea .ipsi universi suis idolis in me *desuper* se *alienaverunt*
6 נזרו מעלי בגלוליהם כלם: לכן אמר ׀ אל־
cōverti facite &, Convertimini : Deus Domin⁹ dixit Sic : Israel domum
בית ישראל כה אמר אדני יהוה שובו והשיבו
facite cōverti, vestris abominationib⁹ universis *desuper* &, vestris idolis *desuper*
מעל גלוליכם ומעל כל־תועבתיכם השיבו
qui , *peregrino* de & , Israel domo de *vir* *vir* *Cùm* .vestras facies
7 פניכם: כי איש איש מבית ישראל ומהגר אשר־
fecerit ascendere & , me post à se separaverit & , Israel in *peregrinabitur*
יגור בישראל וינזר מאחרי ויעל
contra posuerit suæ iniquitatis offendiculum & , suum cor in sua idola
גלוליו אל־לבו ומכשול עונו ישים נכח
Domin⁹ Ego: me pro eum *inquirendum ad*, prophetam ad venerit &, *suas facies*
פניו ובא אל־הנביא לדרש־לו בי אני יהוה
eum *vastabo* & , ipsum virum *in meas facies* dabo Et .me *in* ei *respondebitur*
8 נענה־לו בי: ונתתי פני באיש ההוא והשמתיהו
:mei populi medio è eum faciam succidere & , proverbia in & , signum in
לאות ולמשלים והכרתיו מתוך עמי
fuerit locut⁹ &, fuerit seduct⁹ cùm propheta Et. Domin⁹ *ego* quod scietis &
9 וידעתם כי־אני יהוה: והנביא כי־יפתה ודבר
extendam & :illum prophetam seduxi Dominus ego , verbum
דבר אני יהוה פתיתי את הנביא ההוא ונטיתי את־
.Israel mei populi medio è eum faciam delere &, eum super meam manū
ידי עליו והשמדתיו מתוך עמי ישראל:
.erit prophetæ *iniquitas* sic, quærentis *iniquitas* Sicut .*suā iniquitatē ferent* Et
10 ונשאו עונם כעון הדרש כעון הנביא יהיה:
ultrà polluātur non &, me post à , Israel domus ultrà errent non Ut
11 למען לא־יתעו עוד בית־ישראל מאחרי ולא־יטמאו עוד
ero ego &, populū in mihi erunt Et .suis prævaricationib⁹ universis in
בכל־פשעיהם והיו־לי לעם ואני אהיה
,me ad Domini verbum fuit Et .Deus Dominus dixit , Deum in eis
12 להם לאלהים נאם אדני יהוה: ויהי דבר־יהוה אלי
prævaricando , mihi peccaverit cum terra , hominis Fili : dicendo
13 לאמר: בן־אדם ארץ כי תחטא־לי למעל־
virgam ei conteram &, eam super meā manū extendā & , prævaricationē
מעל ונטיתי ידי עליה ושברתי לה מטה־
, *hominem* ea ex succidere faciam &, famem eam in mittam & : panis
לחם והשלחתי־בה רעב והכרתי ממנה אדם
, Noach, ejus medio in isti viri tres fuerint Et .*jumentum* &
14 ובהמה: והיו שלשת האנשים האלה בתוכה נח
dixit , suā animam liberabunt sua justitia in ipsi ; Ijob & , Daniel
דנאל ואיוב המה בצדקתם ינצלו נפשם נאם
, terram in fecero transire malam bestiam Si .Deus Dominus
15 אדני יהוה: לו־חיה רעה אעביר בארץ
.*bestiæ faciebus* à transeunte absque desolata fuerit &, eam orbaverit &
ושכלתה והיתה שממה מבלי עובר מפני החיה:
Dominus dixit , ego *vivens*, ejus medio in isti viri Tres
16 שלשת האנשים האלה בתוכה חי־אני נאם אדני
, liberabuntur ipsi soli ipsi : liberabunt filias *si &* , filios si , Deus
יהוה אם־בנים ואם־בנות יצילו המה לבדם ינצלו
.desolata erit terra &
והארץ תהיה שממה:

Versio VULG. LAT.

4 Propter hoc loquere eis, & dices ad eos: Hæc dicit Dominus Deus; Homo homo de domo Israel, qui posuerit immunditias suas in corde suo, & scandalum iniquitatis suæ statuerit contra faciem suam, & venerit ad prophetam interrogans per eum me: ego Dominus respondebo ei in multitudine 5 immunditiarum suarum: Ut capiatur domus Israel in corde suo, quo recesserunt à me in cun-6 ctis idolis suis. Propterea dic ad domum Israel; Hæc dicit Dominus Deus; Convertimini, & recedite ab idolis vestris, & ab universis contaminationibus vestris 7 avertite facies vestras. Quia homo homo de domo Israel, & de proselytis quicunque advena fuerit in Israel, si alienatus fuerit à me, & posuerit idola sua in corde suo, & scandalum iniquitatis suæ statuerit contra faciem suam, & venerit ad prophetam ut interroget per eum me: ego Domi-8 nus respondebo ei per me. Et ponam faciem meam super hominē illum, & faciam eum in exemplū, & in proverbium, & disperdam eum de medio populi mei: & 9 scietis quia ego Domin⁹. Et propheta cùm erraverit, & locutus fuerit verbum: ego Dominus decepi prophetam illum: & extendam manum meam super illum: & delebo eum de medio populi 10 mei Israel. Et portabunt iniquitatem suam: juxta iniquitatem interrogantis, sic iniquitas 11 prophetæ erit: Ut non erret ultrà domus Israel à me, neque polluatur in universis prævaricationibus suis: sed sint mihi in populum, & ego sim eis in Deum, ait 12 Dominus exercituum. Et factus est sermo Domini ad me, dicens; 13 Fili hominis, terra cùm peccaverit mihi, ut prævaricetur prævaricans, extendam manum meam super eam, & conteram virgam panis ejus: & immittam in eam famem, & interficiam de ea ho-14 minem, & jumentum. Et si fuerint tres viri isti in medio ejus, Noe, Daniel, & Job: ipsi justitiâ suâ liberabunt animas suas, ait 15 Dominus exercituum. Quòd si & bestias pessimas induxero super terram ut vastem eam: et fuerit invia, eò quòd non sit pertrans-16 iens propter bestias: Tres viri isti si fuerint in ea, Vivo ego, dicit Dominus Deus; quia nec filios, nec filias liberabunt: sed ipsi soli liberabuntur, terra autem desolabitur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

4 Διὰ τοῦτο λάλησον αὐτοῖς, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτούς, Τάδε λέγει (γ) κύριος, Ἄνθρωπος ἄνθρωπος ἐκ τοῦ οἴκου Ἰσραήλ, ὃς ἂν θῇ τὰ διανοήματα αὐτοῦ ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτοῦ, καὶ τὴν κόλασιν τῆς ἀδικίας αὐτοῦ τάξῃ πρὸ προσώπου αὐτοῦ, καὶ ἔλθῃ πρὸς τὸν προφήτην, ἐγὼ κύριος ἀποκριθήσομαι αὐτῷ ἐν οἷς ἐνέχεται ἡ διάνοια αὐτοῦ, 5 Ὅπως (δ) πλαγιάσῃ τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ κατὰ τὰς καρδίας αὐτῶν τὰς ἀπηλλοτριωμένας ἀπ' ἐμοῦ ἐν τοῖς ἐνθυμήμασιν αὐτῶν. 6 Διὰ τοῦτο εἰπὸν (ε) εἰς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραήλ, Τάδε λέγει κύριος κύριος (ζ), Ἐπιστράφητε καὶ ἀποστρέψατε ἀπὸ τῶν ἐπιτηδευμάτων ὑμῶν, καὶ ἀπὸ πασῶν τῶν ἀσεβειῶν ὑμῶν, καὶ (η) ἐπι-7 στρέψατε τὰ πρόσωπα ὑμῶν. Διότι ἄνθρωπος ἄνθρωπος ἐκ τοῦ οἴκου Ἰσραήλ, (θ) καὶ ἐκ τῶν προσηλύτων τῶν (ι) προσηλυτευόντων ἐν τῷ Ἰσραήλ, ὃς ἂν ἀπαλλοτριωθῇ ἀπ' ἐμοῦ, καὶ θῆται (κ) τὰ ἐνθυμήματα αὐτοῦ ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτοῦ, καὶ τὴν κόλασιν τῆς ἀδικίας αὐτοῦ τάξῃ πρὸ προσώπου αὐτοῦ, καὶ ἔλθῃ πρὸς τὸν προφήτην τοῦ ἐπερωτῆσαι αὐτὸν ἐν ἐμοί, ἐγὼ κύριος ἀποκριθήσομαι αὐτῷ, 8 ἐν ᾧ ἐνέχεται ἐν αὐτῷ. Καὶ στηριῶ τὸ πρόσωπόν μου ἐπὶ τὸν ἄνθρωπον ἐκεῖνον, καὶ (λ) θήσομαι αὐτὸν εἰς ἔρημον καὶ εἰς ἀφανισμόν, καὶ ἐξαρῶ αὐτὸν ἐκ μέσου τοῦ λαοῦ μου, 9 καὶ ἐπιγνώσεσθε ὅτι ἐγὼ κύριος. Καὶ ὁ προφήτης ἐὰν πλανήσῃ καὶ λαλήσῃ, ἐγὼ κύριος (μ) πεπλάνηκα τὸν προφήτην ἐκεῖνον, καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπ' αὐτόν, καὶ ἀφανιῶ 10 αὐτὸν ἐκ μέσου τοῦ λαοῦ μου Ἰσραήλ. Καὶ (ν) λήψονται τὴν ἀδικίαν αὐτῶν, κατὰ τὸ ἀδίκημα τοῦ ἐπερωτῶντος, καὶ κατὰ τὸ ἀδίκημα ὁμοίως τῷ 11 προφήτῃ ἔσται· Ὅπως μὴ πλανᾶται ἔτι ὁ οἶκος (ξ) τοῦ Ἰσραὴλ ἀπ' ἐμοῦ, καὶ ἵνα μὴ μιαίνωνται ἔτι ἐν πᾶσι τοῖς παραπτώμασιν αὐτῶν· καὶ ἔσονταί μοι εἰς λαόν, καὶ ἐγὼ ἔσο-12 μαι αὐτοῖς εἰς θεόν, λέγει (ο) κύριος. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέγων, 13 Υἱὲ ἀνθρώπου, (π) γῆ ἣ ἐὰν ἁμάρτῃ μοι τοῦ παραπεσεῖν (ρ) παράπτωμα, καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπ' αὐτήν, καὶ συντρίψω (σ) αὐτῆς στήριγμα ἄρτου, καὶ ἐξαποστελῶ ἐπ' αὐτὴν λιμόν, καὶ ἐξαρῶ (τ) ἐξ αὐτῆς ἄνθρω-14 πον καὶ κτήνη. Καὶ ἐὰν ὦσιν οἱ τρεῖς ἄνδρες οὗτοι ἐν μέσῳ αὐτῆς, Νῶε καὶ Δανιὴλ καὶ Ἰώβ, (υ) αὐτοὶ ἐν τῇ δικαιοσύνῃ αὐτῶν σω-15 θήσονται, λέγει (φ) κύριος. Ἐὰν καὶ θηρία πονηρὰ (χ) ἐπάγω ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ τιμωρήσομαι αὐτήν, καὶ ἔσται εἰς ἀφανισμόν, (ψ) οὐκ ἔσται ὁ διοδεύων ἀπὸ προσώπου τῶν θηρίων, 16 Καὶ οἱ τρεῖς ἄνδρες οὗτοι ἐν μέσῳ αὐτῆς ὦσι, Ζῶ ἐγώ, λέγει κύριος, εἰ υἱοὶ (ω) ἢ θυγατέρες σωθήσονται, ἀλλ' ἢ αὐτοὶ μόνοι σωθήσονται, ἡ δὲ γῆ ἔσται εἰς ὄλεθρον.

MS. A. (γ) ἀδωναῒ κύριος, (δ) μὴ διαστρέψωσιν τὸν (ε) πρὸς τὸν (ζ) ὁ θεός, (η) ἐπιστράφητε πρός με. Διότι (θ) καὶ τῶν (ι) προσκειμένων ἐν Ἰσραήλ, ὃς ἐὰν ἀπηλλοτριώθη (κ) ἐνθυμήματα (λ) θήσω (μ) ἐπλάνησα (ν) λήμψομαι τὴν ἀδικίαν αὐτοῦ, (ξ) Ἰσραὴλ (ο) ἀδωναῒ κύριος. (π) γῆ ἐὰν (ρ) παραπτώματι, (σ) ἀπ' αὐτῆς (τ) ἀπ' αὐτῆς (υ) οὗτοι (φ) ἀδωναῒ κύριος. Ἐὰν δὲ καὶ (χ) ἐπαγάγω (ψ) καὶ οὐκ (ω) καὶ θυγατέρες αὐτῶν σωθήσονται,

Propterea loquere eis, & dices ad eos: Hæc dicit Dominus: Homo, homo de domo Israel, qui posuerit cogitationes suas in corde suo, et tormentum iniquitatis suæ posuerit ante faciem suam, et venerit ad (b) prophetam: ego Dominus respondebo ei in eis, quibus tenetur mens ejus: ut [illegible] vertet domum Israel secundum corda eorū, quæ abalienata sunt à me in cogitationibus ipsorum. 6 Propterea dic ad domum Israel, Hæc dicit Dominus Dominus; Convertimini, & recedite ab adinventionibus vestris, & ab omnibus impietatibus vestris: & convertite facies (d) vestras. Quia 7 homo, homo de domo Israel, et de advenis, qui peregrinantur in Israel, qui abalienatus fuerit à me, & posuerit cogitationes suas in corde suo, et tormentū iniquitatis suæ posuerit ante faciem suam, et venerit ad prophetam, ut interroget eum in me: ego Dñs respondebo ei in eo, quo tenetur in ipso: Et obfirmabo faciem meam super 8 hominē illū: & ponā eum in (e) desertum, & in exterminium, auferam eū de medio populi mei: et cognoscetis, quia ego Dominus. Et propheta, si (f) errare fecerit, 9 & loquutus (g) fuerit, ego Dominus errare feci prophetam illū. Et extendā manū meam super eum; & exterminabo illum de medio populi mei Israel. Et accipient 10 iniquitatem suam: secundū iniquitatē interrogantis: (h) et juxta iniquitatem similiter prophetæ erit: Ut nequaquā erret ultrà do- 11 mus Israel à me, & ut non polluantur adhuc in cunctis delictis suis. Et erunt mihi in populū: & ego ero eis in Deum, dicit Dominus. Et factus est sermo Domini 12 ad me, dicens; Fili hominis, terra, 13 quæcunq; peccaverit mihi, delinquendo delictū, et extendā manū meam super eam: & conterā fulcimentū panis ejus: & immittā in eam famē, et auferā de ea hominem, & jumenta. Et si fuerint 14 tres viri isti in medio ejus, Noe, & Daniel, et Job; ipsi in sua justitia salvabuntur, ait Dominus. Quòd si bestias pessimas inducā 15 super terram, & puniam eam, & erit in dissipationem, non erit pertransiens à facie bestiarū, Et tres 16 viri isti in medio ej⁹ fuerint: Vivo ego, dicit Dominus; si filii, aut filiæ salvabuntur: sed ipsi soli salvabuntur: terra autem erit in exterminium.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 בכן אתנבי להון ותימר להון כדנן אמר יי אלהים גבר גבר מבית ישראל דיסיק פולחן
טעותיה על לביה ותקלת חוביה ישוי לקביל אפוהי וייתי לות נביא אנא יי משתאל
ליה במימרי דאתי למתבע אולפן מן קדמי אף על גב דמתערב בסני פולחן טעותיה:
5 בדיל לקרבא ית בית ישראל למתן תיובתא בלבהון דסטו מבתר פולחני ואסתאבו
6 בפולחן טעותהון כולהון: בכן אמר לבית ישראל כדנן אמר יי אלהים תובו לפולחני
ואעדו מנכון פולחן טעותכון וית כל חובי פולחן טעות תועבתכון ארחיקו מקביל
7 אפיכון: ארי גבר גבר מבית ישראל ומן גיוריא דיתגיירון בישראל ויסטי מבתר פולחני
ויסק פולחן טעותיה על ליביה ותקלת חובוהי ישוי לקביל אפוהי וייתי לות נביא
8 למשאל ליה במימרי אנא יי משתאל ליה במימרי: ואתן רגזי בגברא ההוא ואשוניה
9 לאת ולמתלין ואשצניה מגו עמי ותדעון ארי אנא יי: ונביא ארי יטעי וימלל פתגמא
אנא יי אטעיתי ית נביא ההוא וארים ית מחת גבורתי עלוהי ואשצניה מגו עמי ישראל:
10 ויקבלון חוביהון כחוב דאתי למילף ולא אליף כחוב נביי שקרא יהי: 11 בדיל דלא יטעון
עוד בית ישראל מבתר פולחני ולא יסתאבון עוד בכל מרדיהון ויהון קדמי לעם ואנא
12 אהוי להון לאלהא אמר יי אלהים: והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר: 13 בר אדם
ארעא ארי תחוב קדמי לשקרא שקר וארים מחת גבורתי עלה ואתבר בה סעיד מיכלא
14 ואשלח בה כפנא ואשיצי מנה אנשא ובעירא: ויהון תלתא גבריא האלין בגוה נח
15 דניאל ואיוב אנון בזכותהון ישיזבון נפשהון אמר יי אלהים: אלו חיתא בישתא אעבר
16 בארעא ותתכלנה ותהי לצדו מבלי עדי מן קדם חיתא: תלתא גבריא האלין בגוה
קים אנא אמר יי אלהים אם בנין ואם בנן ישיזבון אנון בלחודיהון ישתזבון וארעא
תהי לצדו:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

4 Propterea vaticinare eis, & dices ad eos: Hæc dicit Dñs Deus, Vir vir de domo Israel, qui ascendere fecerit cultum idolorum suorum in cor suum, & scandalum iniquitatis suæ posuerit contra faciem suam, & venerit ad prophetam; ego Dñs respondebo ei in verbo meo, qui venerit ad quærendum oraculum à facie mea, quamvis implicit⁹ sit in multitudine cultus idolorum suorum. 5 Ut applicem domum Israel; ut ponat pœnitentiam in corde suo, quia declinaverunt à cultu meo, & polluti sunt omnes cultu idolorum suorum. 6 Propterea dic domui Israel: Hæc dicit Dñs Deus, Convertimini ad cultum meum, & auferte à vobis cultum idolorum vestrorum, & omnes iniquitates cult⁹ idolorum abominationum vestrarū projicite à facie vestra. 7 Quia vir vir de domo Israel, & de peregrinis qui peregrinantur in Israel, qui declinaverit à cultu meo, & ascendere fecerit cultū idolorū suorum in cor suū, & scandalū iniquitatis suæ posuerit ante faciem suam, & venerit ad prophetam ut interroget eum in verbo meo: ego Dñs respondebo ei in verbo meo. 8 Et dabo furorem meum in hominem illum, & ponam illum in signum & in proverbium; & disperdam eum de medio populi mei: & scietis quia ego Dñs. 9 Et propheta cùm erraverit & locut⁹ fuerit verbum, ego Dñs errare prophetam illum feci: & levabo plagam potentiæ meæ super eum, & disperdā eū de medio populi mei Israel. 10 Et suscipient iniquitatem suā: juxta iniquitatē venientis ad discendum, & non discit; juxta iniquitatē pseudoprophetæ erit: 11 Ut non decipiantur ampliùs dom⁹ Israel à cultu meo, nec polluantur ultrà in omnibus prævaricationib⁹ suis: sed sint coram me in populum, & ego sim eis in Deum, dicit Dñs Deus. 12 Et factū est verbū prophetiæ à facie Dñi mecum dicens: 13 Fili hominis, terra cum peccaverit coram me ut prævaricetur prævaricationē, & levabo plagā potentiæ meæ sup eam, & conterā in ea sustentaculū cibi, & mittā in eam famē, & disperdam ex ea hominem & jumentū. 14 Et si fuerint tres viri isti in medio ej⁹, Noe, Daniel, & Job: ipsi in justitia sua liberabūt animas suas, dicit Dñs Deus. 15 Si bestias pessimas adduxero in terrā, ut absq; liberis faciant [*habitatores*] ej⁹, & sit in desolationem, eò quod non sit pertransiens propter bestias: 16 Et tres viri isti fuerint in medio ejus: vivo ego, dicit Dñs Deus, si liberabunt filios aut filias: sed ipsi soli liberabuntur, & terra erit in desolationem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܗܢܐ ܡܠܠ ܥܡܗܘܢ ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܓܒܪ ܓܒܪ ܡܢ ܒܝܬ
ܐܝܣܪܝܠ. ܕܢܣܩ ܛܥܘܬܗ ܥܠ ܠܒܗ. ܘܬܘܩܠܬܐ ܕܥܘܠܗ ܢܣܝܡ ܠܘܩܒܠ ܐܦܘܗܝ.
ܘܢܐܬܐ ܠܘܬ ܢܒܝܐ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܗܘܐ ܠܗ ܣܗܕܐ ܒܗ. ܒܣܘܓܐܐ ܕܛܥܘܬܗ. * ܡܛܠ
ܕܢܬܦܪܫܘܢ ܒܠܒܗܘܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢܝ ܒܟܠܗܘܢ ܛܥܘܬܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ
ܐܡܪ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܬܘܒܘ ܘܐܬܦܢܘ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܛܥܘܬܟܘܢ.
ܘܡܢ ܟܠܗ ܛܢܦܘܬܟܘܢ ܐܗܦܟܘ ܐܦܝܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܓܒܪܐ ܡܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܡܢ ܬܘܬܒܐ
ܕܡܬܬܘܬܒܝܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܕܢܬܦܪܫ ܡܢܝ. ܘܢܣܩ ܛܥܘܬܗ ܥܠ ܠܒܗ.
ܘܬܘܩܠܬܐ ܕܥܘܠܗ ܢܣܝܡ ܠܘܩܒܠ ܐܦܘܗܝ: ܘܢܐܬܐ ܠܘܬ ܢܒܝܐ ܠܡܫܐܠܘܬܗ. ܐܢܐ
ܡܪܝܐ ܐܗܘܐ ܠܗ ܣܗܕܐ. * ܘܐܬܠ ܪܘܓܙܝ ܥܠ ܓܒܪܐ ܗܘ. ܘܐܣܝܡܝܘܗܝ ܠܐܬܐ ܘܠܡܬܠܐ
ܘܐܘܒܕܝܘܗܝ ܡܢ ܓܘ ܥܡܝ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܘܢܒܝܐ ܟܕ ܢܛܥܐ. ܘܢܡܠܠ
ܡܠܬܐ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܛܥܝܬܗ ܠܢܒܝܐ ܗܘ. ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܐܘܒܕܝܘܗܝ. ܡܢ
ܓܘ ܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܢܩܒܠܘܢ ܚܘܒܝܗܘܢ. ܚܘܒܗ ܕܗܘ ܕܡܫܐܠ. ܐܝܟ ܚܘܒܗ ܕܢܒܝܐ
ܢܗܘܐ. * ܘܠܐ ܬܘܒ ܢܛܥܘܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢܝ. ܘܠܐ ܬܘܒ ܢܬܛܢܦܘܢ ܒܟܠܗܘܢ ܚܘܒܝܗܘܢ.
ܐܠܐ ܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܘܗܘܐ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠܝ
ܟܕ ܐܡܪ ܠܝ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܪܥܐ ܐܢ ܬܚܛܐ ܠܝ ܘܬܥܘܠ ܥܘܠܐ ܩܕܡܝ. ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ
ܥܠܝܗ. ܘܐܬܒܪ ܒܗ ܩܢܝܐ ܕܥܒܘܪܐ. ܘܐܫܕܪ ܒܗ ܟܦܢܐ. ܘܐܘܒܕ ܡܢܗ. ܐܢܫܐ
ܘܒܥܝܪܐ. * ܘܐܢ ܢܗܘܘܢ ܒܗ ܬܠܬܐ ܓܒܪܐ ܗܠܝܢ: ܢܘܚ ܘܕܢܝܐܝܠ ܘܐܝܘܒ. ܗܢܘܢ
ܒܙܕܝܩܘܬܗܘܢ ܢܦܨܘܢ ܢܦܫܗܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܘܐܢ ܚܝܘܬܐ ܒܝܫܬܐ ܐܝܬܐ ܥܠ
ܐܪܥܐ ܘܬܚܒܠܝܗ. ܘܬܗܘܐ ܠܚܘܒܠܐ ܕܠܐ ܢܗܘܐ ܥܒܘܪܐ ܒܗ ܡܢ ܩܕܡ ܚܝܘܬܐ. * ܘܬܠܬܐ ܓܒܪܐ
ܗܠܝܢ ܢܗܘܘܢ ܒܗ. ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܕܠܐ ܢܦܨܘܢ ܠܐ ܒܢܝܐ ܘܠܐ ܒܢܬܐ.
ܐܠܐ ܗܢܘܢ ܒܠܚܘܕܝܗܘܢ ܢܦܨܘܢ. ܘܐܪܥܐ ܬܗܘܐ ܠܚܘܒܠܐ.

* Quapropter alloquere eos, & dic eis; Sic ait Dominus dominorum; Quotieſcunque aliquis ex Iſraelitis deum ſuum induxerit in animum ſuum, & offendiculum iniquitatis ſuæ ſibi ipſe propoſuerit, tum ad prophetam acceſſerit; ego Dominus teſtis ero adverſùs eum de multitudine deorum ipſius: 4
Ut Iſraelitas in corde ipſorũ deprehendam, eos à me receſſiſſe per tot deos ſuos. 5
Quare dic Iſraelitis, Sic ait Dominus dominorum; pœniteat vos, & retrahite vos ab omnibus diis veſtris, & ab omni ſpurcitia veſtra reflectite facies veſtras. 6
Nam ſi quis ex Iſraelitis, aut ex his qui ad me converſi degunt inter Iſraelitas, avertatur à me, & deum ſuum inducens in animum ſuum, ſuæque iniquitatis offendiculum proponens ante faciem ſuam, venerit ad conſulendum prophetam; ego Dominus teſtis ero adverſùs iſtum, 7
Dabóque iram meam ſuper hujuſcemodi hominem, & exponam eum in ſignum atque proverbium, denique perdam eum de medio populi mei; & experiemini me eſſe Dominum. 8
Item cùm quis propheta erraverit, & locutus fuerit verbum, ego Dominus faciam ut aberret ille propheta, exertâque manu meâ ſuper eum, perdam eum de medio populi mei Iſraelis. 9
Ita portabunt iniquitatẽ ſuam (iniquitas conſulentis par erit iniquitati prophetæ) 10
Nec aberrabunt ampliùs tot ſceleribus ſuis; ſed erunt mihi populus, & ego ero ipſis Deus, ait Dominus dominorum. 11
Fuit etiam ad me ſermo Domini dicendo; 12
Fili hominis, Siqua terra peccaverit in me, & ſcelus coram me perpetraverit; attollam manum meam ſuper illam, frangam in ea culmum frumenti, famem immittam in eam, & perdam ex ea tam homines quàm jumenta: 13
Et licèt fuerint in ea tres iſti viri, Nohe, Daniel, & Job, iſti per juſtitiam ſuam eripient ſeipſos, ait Dominus dominorum. 14
Si beſtias malas ſuper terram adduxero, eámque vaſtaverint adeò ut abeat in excidiũ, nemóque *per illam* tranſeat propter beſtias, 15
Et tres iſti viri fuerint in ea: Ut vivo, dicit Dominus dominorũ, neque filios neque filias eriperent, ſed ipſi ſe ſolos eriperent, terra autem eſſet in excidium. 16

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لاجل هذا كلمهم وقول لهم * هكذا يقول ادوناي الرب * انسان فانسان من بيت اسرايل
الذي يضع ضغاينه على قلبه * وعقوبة ظلاماته يرتب قدام وجهه * وياتي الى النبي * انا
الرب اجاوبه بهذه التي احتوي عليها قلبه * لكيلا يضل بيت اسرايل كعقولهم المتغربه
مني بفكراتهم * لاجل هذا قل لبيت اسرايل * هكذا يقول الرب الرب الاله * ارجعوا
وانصرفوا من اعمالكم ومن جميع نفاقكم * وارجعوا بوجوهكم الي * من اجل ان انسانا
فانسانا من بيت اسرايل * ومن الدخلاء المدخولين في بيت اسرايل * الذي يتغرب مني
ويضع فكراته على قلبه * وعقوبة ظلاماته يرتبها قدام وجهه * وياتي الى النبي ليساله بي * انا
الرب اجاوبه بما حواه في ذاته * واشدد وجهي على ذلك الانسان * واضعه للخراب والفناء وانزعه
من وسط شعبي * وتعلمون اني انا الرب * والنبي اذ اضل وتكلم * انا الرب اضللت ذلك
النبي * وامدد يدي عليه * وابيده من وسط شعبي اسرايل * واخذ ظلاماته كظلم السايل
وكظلمه هكذا يكون للنبي * كيلا يضل بيت اسرايل عني * ولكيلا يتدنسون ايضا
بجميع زلاتهم * ويكونون لي شعبا * وانا اكون لهم الها * يقول ادوناي الرب * وكان قول الرب
الي قايلا * يا ابن الانسان * الارض اذا اخطات لي تسقط بزلتها * وامدد يدي عليها واكسر
منها رزق الخبز * وارسل عليها جوعا * وانزع منها الانسان والبهيمة * واذا كانت هاولاء الثلاثة
الرجال في وسطها * نوح ودانيال وايوب * هاولاء بعدلهم يخلصون * يقول ادوناي الرب * واذا
جلبت وحوشا خبيثة على الارض * فاعدمها ويكون للفناء * ولا يكون مارا من الوحوش
* وهاولاء الثلاثة الرجال في وسطها * حي انا يقول ادوناي الرب * لا البنون ولا البنات
يخلصون * الا هاولاء وحدهم يخلصون * والارض تكون للهلاك *

* *Iccircò alloquere eos, & dicas eis; Ita dicit Adonai Dominus; Quicunque de domo Iſraelis poſuerit conſilia ſua in corde ſuo, pœnámque impietatum ſuarum diſpoſuerit ante faciem ſuam, & venerit ad prophetam; ego Dominus reſpondebo illi ſecundùm ea quæ continet mens ejus:* 4
Ut non aberret domus Iſraelis ſecundùm corda ipſorum à me abalienata, in cogitationibus ſuis. 5
Proptereà dic domui Iſraelis; Ita dicit Dominus, Dominus inquam Deus; Convertimini, & recedite ab actionibus veſtris & ab omnibus impietatibus veſtris, & convertite facies veſtras ad me. 6
Nam homo quicunque de domo Iſraelis, aut ex advenis admiſſis in domum Iſraelis, qui ſe abalienaverit à me, poſuerit conſilia ſua in corde ſuo, & pœnam impietatis ſuæ diſpoſuerit ante faciem ſuam, veneritque ad prophetam ut eum de me interroget; huic ego reſpondebo ſecundùm ea quæ continet in ſemetipſo: 7
Et obfirmabo faciem meam adverſùs hominem illum, exponam eum ruinæ & exitio; auferámque de medio populi mei: & ſcietis me eſſe Dominum. 8
Propheta verò cùm ſeduxerit & locutus fuerit, ego Dominus faciam ut erret hujuſmodi propheta, & extendam manum meam ſuper eum, perdámque eum de medio populi mei Iſraelis: 9
Ferétque iniquitates ſuas ut iniquitatem interrogantis: & ſecundùm iniquitatem iſtius, ita fiet prophetæ: 10
Ut non aberret domus Iſraelis à me, & ut non polluant ſeſe poſthac omnibus culpis ſuis; ſed ſint mihi populus, & ego ſim illis Deus, ait Adonai Dominus. 11
Deinde fuit ſermo Domini ad me, dicens; 12
O fili hominis, terra cùm peccaverit in me, cadet culpâ ſuâ: & ego, manu meâ ſuper ipſam extenſâ, frangam ex ea ſubſidium panis, mittam in eam famem, & extinguam ex ea hominem atque jumentum: 13
Et quamvis fuerint tres iſti viri in medio ejus, Nohe, Daniel, & Job; iſti per juſtitiam ſuam ſalvarentur, dicit Adonai Dominus. 14
Item cùm feras pernicioſas adduxero ſuper terram, eámque puniverò, ita ut abeat in excidium, neque ſuperſit ullus viator cauſâ ferarum; 15
Et iſti tres viri fuerint in medio ejus: Per vitam meam, dicit Adonai Dominus, neque filii neque filiæ ſalvarentur, ſed hi ſoli ſalvarentur, reliqua verò terra abiret in excidium. 16

יחזקאל : טו

transfeas ,gladio dixero & ,ipsam terram super induxero gladium Vel
17 אוֹ חֶרֶב אָבִיא עַל־הָאָרֶץ הַהִיא וְאָמַרְתִּי חֶרֶב תַּעֲבֹר
tres Et .jumentum & ,hominem ea ex fecero succidere & ,terram per
18 בָּאָרֶץ וְהִכְרַתִּי מִמֶּנָּה אָדָם וּבְהֵמָה׃ וּשְׁלֹשֶׁת
, Deus Dominus dixit : ego vivens ,ejus medio in isti viri
הָאֲנָשִׁים הָאֵלֶּה בְּתוֹכָהּ חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה
Vel .liberabuntur ipsi soli ipsi quia ,filias & , filios liberabunt non
19 לֹא יַצִּילוּ בָּנִים וּבָנוֹת כִּי הֵם לְבַדָּם יִנָּצֵלוּ׃ אוֹ
eam super meā iram effudero & ,istam terram ad immisero pestilentiā
דֶּבֶר אֲשַׁלַּח אֶל־הָאָרֶץ הַהִיא וְשָׁפַכְתִּי חֲמָתִי עָלֶיהָ
,Daniel,Noach Et .jumentum & ,hominem ea ex succidendum ad,sanguine in
20 בְּדָם לְהַכְרִית מִמֶּנָּה אָדָם וּבְהֵמָה׃ וְנֹחַ דָּנִאֵל
si ,filium si , Deus Dominus dixit ,ego vivens :ejus medio in Ijob &
וְאִיּוֹב בְּתוֹכָהּ חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה אִם־בֵּן אִם־
sic Nam .suā animam liberabunt sua justitia in ipsi : liberabūt filiam
21 בַּת יַצִּילוּ הֵמָּה בְצִדְקָתָם יַצִּילוּ נַפְשָׁם׃ כִּי כֹה
,gladium , mala mea judicia quatuor quòd etiam : Deus Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה אַף כִּי־אַרְבַּעַת שְׁפָטַי הָרָעִים חֶרֶב
, Jerusalaim ad misi pestilentiam & ,malam bestiam & ,famem &
וְרָעָב וְחַיָּה רָעָה וָדֶבֶר שִׁלַּחְתִּי אֶל־יְרוּשָׁלִָם
ea in remanebit ecce Et .jumentum & ,hominem ea ex succidendum ad
22 לְהַכְרִית מִמֶּנָּה אָדָם וּבְהֵמָה׃ וְהִנֵּה נוֹתְרָה־בָּהּ
, vos ad egredientes ipsi ecce : filiæ & filii eductorum evasio
פְּלֵטָה הַמּוּצָאִים בָּנִים וּבָנוֹת הִנָּם יוֹצְאִים אֲלֵיכֶם
malo super consolabimini & :eorū actiones & ,eorū viam videbitis &
וּרְאִיתֶם אֶת־דַּרְכָּם וְאֶת־עֲלִילוֹתָם וְנִחַמְתֶּם עַל־הָרָעָה
.eam super induxi quæ omnibus cum ,Jerusalaim super induxi quod
אֲשֶׁר הֵבֵאתִי עַל־יְרוּשָׁלִַם אֵת כָּל־אֲשֶׁר הֵבֵאתִי עָלֶיהָ׃
:eorum conatus & ,eorū viam videritis cùm ,vos consolabūtur Et
23 וְנִחֲמוּ אֶתְכֶם כִּי־תִרְאוּ אֶת־דַּרְכָּם וְאֶת־עֲלִילוֹתָם
dixit ,ea in feci quæ omnia feci gratis non quod ,scietis &
וִידַעְתֶּם כִּי לֹא חִנָּם עָשִׂיתִי אֵת כָּל־אֲשֶׁר־עָשִׂיתִי בָהּ נְאֻם
.Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה׃

CAP. XV. טו

lignum erit quid ,hominis Fili : dicendo,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם מַה־יִּהְיֶה עֵץ־
? sylvæ ligna inter fuit qui palmite ? ligno omni præ vitis
הַגֶּפֶן מִכָּל־עֵץ הַזְּמוֹרָה אֲשֶׁר הָיָה בַּעֲצֵי הַיָּעַר׃
eo ex tollent Si ? opus faciendū ad lignū eo ex tolletur Nunquid
3 הֲיֻקַּח מִמֶּנּוּ עֵץ לַעֲשׂוֹת לִמְלָאכָה אִם־יִקְחוּ מִמֶּנּוּ
est datum igni Ecce ? vas omne illo in dependendum ad ,paxillum
4 יָתֵד לִתְלוֹת עָלָיו כָּל־כֶּלִי׃ הִנֵּה לָאֵשׁ נִתַּן
: est exustū ej° mediū & ,ignis comedit ej° extremitates Duas .consumendū ad
לְאָכְלָה אֵת שְׁנֵי קְצוֹתָיו אָכְלָה הָאֵשׁ וְתוֹכוֹ נָחָר
non ,integrum ipsum essendo in Ecce ? opus ad prosperabitur nunquid
הֲיִצְלַח לִמְלָאכָה׃ הִנֵּה בִּהְיוֹתוֹ תָמִים לֹא
fiet & sit combustū &,illud comederit ignis quia etiam , operi fiebat
יֵעָשֶׂה לִמְלָאכָה אַף כִּי־אֵשׁ אֲכָלַתְהוּ וַיֵּחָר וְנַעֲשָׂה
Quemadmodū : Deus Dominus dixit sic Propterea ? operi adhuc
עוֹד לִמְלָאכָה׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה כַּאֲשֶׁר
consumendum ad igni illud dedi quod sylvæ ligno in vitis lignum
עֵץ־הַגֶּפֶן בְּעֵץ הַיַּעַר אֲשֶׁר־נְתַתִּיו לָאֵשׁ לְאָכְלָה
.eos in meas facies dabo Et .Jerusalaim habitatores tradidi sic
7 כֵּן נָתַתִּי אֶת־יֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלִָם׃ וְנָתַתִּי אֶת־פָּנַי בָּהֶם
,Dominus ego quod scietis Et .eos comedet ignis & ,sunt egressi igne De
מֵהָאֵשׁ יָצָאוּ וְהָאֵשׁ תֹּאכְלֵם וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה
,desolatam terram dabo Et .eos contra meas facies me ponendo in
8 בְּשׂוּמִי אֶת־פָּנַי בָּהֶם׃ וְנָתַתִּי אֶת־הָאָרֶץ שְׁמָמָה
.Deus Dominus dixit ,prævaricationem sunt prævaricati quod eò
יַעַן מָעֲלוּ מַעַל נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה׃

Verſio VULG. LAT.

17 Vel ſi gladium induxero ſuper terram illam, & dixero gladio; Tranſi per terram: & interfecero de ea hominem, & jumentum: 18 Et tres viri iſti fuerint in medio ejus: Vivo ego, dicit Dominus De°, non liberabunt filios, neque filias: ſed ipſi ſoli liberabuntur. 19 Si autem & peſtilentiam immiſero ſuper terram illam, & effudero indignationem meam ſuper eam in ſanguine, ut auferam ex 20 ea hominem, & jumentum: Et Noe, & Daniel, & Job fuerint in medio ejus: Vivo ego, dicit Dominus Deus, quia filium & filiam non liberabunt: ſed ipſi juſtitiâ 21 ſuâ liberabūt animas ſuas. Quoniam hæc dicit Dominus Deus; Quòd & ſi quatuor judicia mea peſſima, gladium, & famem, ac beſtias malas, & peſtilentiam, immiſero in Jeruſalem, ut interficiam de ea hominem, & pecus: 22 Tamen relinquetur in ea ſalvatio educentium filios, & filias: ecce ipſi ingredientur ad vos, & videbitis viam eorum, & adinventiones eorum, & conſolabimini ſuper malo, quod induxi in Jeruſalem, in omnibus quæ importavi 23 ſuper eam. Et conſolabuntur vos, cùm videritis viam eorum, & adinventiones eorum: & cognoſcetis quòd non fruſtrà fecerim omnia, quæ feci in ea, ait Dominus Deus.

CAP. XV.

1 ET factus eſt ſermo Domini ad 2 me, dicens; Fili hominis, quid fiet de ligno vitis, ex omnibus lignis nemorum, quæ ſunt inter li-3 gna ſylvarum? Numquid tolletur de ea lignum, ut fiat opus, aut fabricabitur de ea paxillus, ut dependeat in eo quodcunque vas? 4 Ecce igni datum eſt in eſcam: utramque partem ejus conſumpſit ignis, & medietas ejus redacta eſt in favillam: numquid utile 5 erit ad opus? Etiam cùm eſſet integrū, non erat aptum ad opus: quantò magis cùm illud ignis devoraverit, & combuſſerit, nihil 6 ex eo fiet operis? Propterea hæc dicit Dominus Deus; Quomodò lignum vitis inter ligna ſylvarum, quod dedi igni ad devorandum, ſic tradam habitato-7 res Jeruſalem. Et ponam faciem meam in eos: de igne egredientur, & ignis conſumet eos: & ſcietis quia ego Dominus, cùm 8 poſuero faciem meam in eos, Et dedero terram inviam, & deſolatam: eò quòd prævaricatores extiterint, dicit Dominus Deus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Ἢ ϗ (α) ῥομφαίαν ἐὰν ἐπάγω ἐπὶ τὴν γῆν ἐκείνην, ϗ εἴπω, Ῥομφαία διελθάτω διὰ τῆς γῆς, ϗ ἐξαρῶ ἐξ (β) αὐτῆς ἄνθρωπον 18 ϗ (γ) κτῆνος, Καὶ οἱ τρεῖς ἄνδρες οὗτοι ἐν μέσῳ αὐτῆς (δ), Ζῶ ἐγὼ, λέγει κύριος, οὐ μὴ (ε) ῥύσονται υἱοὺς οὐδὲ θυγατέρας, ἀλλ' 19 ἢ αὐτοὶ μόνοι σωθήσονται. Ἢ ϗ θάνατον (ζ) ἐπαποστείλω ἐπὶ τὴν γῆν ἐκείνην, ϗ ἐκχεῶ τὸν θυμόν μου ἐπ' αὐτὴν ἐν αἵματι τοῦ (η) ἐξολοθρεῦσαι ἐξ αὐτῆς ἄνθρωπον ϗ κτῆνος, 20 Καὶ Νῶε ϗ Δανιὴλ ϗ Ἰὼβ ἐν μέσῳ αὐτῆς (θ), Ζῶ ἐγὼ, λέγει κύριος, ἐὰν υἱοὶ ἢ θυγατέρες ὑπολειφθῶσιν (ι), αὐτοὶ ἐν τῇ δικαιοσύνῃ αὐτῶν ῥύσονται τὰς ψυχὰς αὐ-21 τῶν. Τάδε λέγει (κ) κύριος, Ἐὰν δὲ ϗ τὰς τέσσαρας ἐκδικήσεις μου τὰς πονηρὰς, ῥομφαίαν, ϗ λιμὸν, ϗ θηρία πονηρὰ, ϗ θάνατον (λ) ἐξαποστείλω ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, τοῦ (μ) ἐξολοθρεῦσαι ἐξ αὐτῆς ἄνθρωπον ϗ κτῆνος, 22 Καὶ ἰδοὺ ὑπολελειμμένοι ἐν αὐτῇ οἱ ἀνασεσωσμένοι (ν) αὐτῆς, οἳ ἐξάγουσιν ἐξ αὐτῆς υἱοὺς ϗ θυγατέρας, ἰδοὺ (ξ) ἐκπορεύονται πρὸς ὑμᾶς, ϗ ὄψεσθε τὰς ὁδοὺς αὐτῶν ϗ τὰ ἐνθυμήματα αὐτῶν, ϗ μεταμεληθήσεσθε ἐπὶ τὰ κακὰ ἃ ἐπήγαγον ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, πάν-23 τα τὰ κακὰ ἃ ἐπήγαγον ἐπ' αὐτήν. Καὶ παρακαλέσουσιν ὑμᾶς, διότι ὄψεσθε τὰς ὁδοὺς αὐτῶν ϗ τὰ ἐνθυμήματα αὐτῶν, ϗ ἐπιγνώσεσθε διότι οὐ μάτην πεποίηκα πάντα ὅσα ἐποίησα ἐν αὐτῇ, λέγει κύριος.

MS.A. (α) ἐὰν ῥομφαίαν ἐπαγάγω (β) αὐτῆς (γ) κτήνη, (δ) ὦσιν, (ε) ῥύσωνται υἱοὺς ἢ θυγατέρας, (ζ) ἐπάγω (η) ἐξολεθρεῦσαι (θ) ὦσιν, (ι) αὐτοῖς, αὐτοὶ (κ) ἀδωναῒ κύριος, (λ) ἐπαποστελῶ (μ) ἐξολεθρεῦσαι (ν) ἐξ αὐτῆς, οὗτοι ἐξάξουσιν υἱοὺς (ξ) αὐτοὶ ἐκπορεύονται

Vel etiam gladium ſi inducā ſuper terram illam, & dicam: Gladius tranſeat per terram, & auferam ex eis hominem, & jumentum, 18 Et tres viri iſti in medio ejus; Vivo ego, dicit Dominus, non liberabunt filios, neque filias: ſed ipſi ſoli ſalvabuntur. 19 Vel etiam mortem immittam ſuper terram illam, & effundam furorē meum ſuper eam in ſanguine ad exterminandum ex ea hominem, & jumentum, 20 Et Noe, & Daniel, & Job in medio ejus; Vivo ego, dicit (ι) Dominus, ſi filii, aut filiæ relinquentur: ipſi in ſua juſtitia liberabunt animas ſuas. 21 Hæc dicit Dominus; Quòd ſi & quatuor ultiones meas peſſimas, gladium, & famem, & beſtias peſſimas, & mortem emiſero ſuper Hieruſalē, ad exterminandum ex ea hominem, & jumentum; 22 Et ecce reſidui in ea ſalvati ejus, qui educunt ex ea filios, & filias. Ecce egrediuntur ad vos: & videbitis vias eorum, & cogitationes eorum: et pœnitebit vos ſuper malis, quæ induxi ſuper Hieruſalem omnib° malis quæ induxi ſuper illā. 23 Et conſolabuntur vos: quia videbitis vias eorum, & cogitationes eorum: et cognoſcetis, quòd non fruſtrà feci omnia, quæ feci in ea, ait Dominus.

ΚΕΦ. ιε'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, 2 λέγων, (α) Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, τί ἂν γένοιτο τὸ ξύλον τῆς ἀμπέλου ἐκ πάντων τῶν ξύλων τῶν κλημάτων τῶν ὄντων ἐν τοῖς ξύ-3 λοις τοῦ δρυμοῦ; Εἰ λήψονται ἐξ αὐτῆς ξύλον τοῦ ποιῆσαι εἰς ἐργασίαν; εἰ λήψονται ἐξ αὐτῆς πάσσαλον τοῦ κρεμάσαι ἐπ' (β) αὐ-4 τὸν πᾶν σκεῦος; Πάρεξ ὁ πυρὶ δέδοται εἰς ἀνάλωσιν, τὴν κατ' ἐνιαυτὸν κάθαρσιν (γ) ἀπ' αὐτῆς ἀναλίσκει τὸ πῦρ, ϗ ἐκλείπει εἰς τέλος· μὴ χρήσιμον ἔσται εἰς ἐργασίαν; 5 Οὐδὲ ἔτι αὐτοῦ ὄντος ὁλοκλήρου οὐκ ἔσται εἰς ἐργασίαν· (δ) μὴ ὅτι ἐὰν ϗ πῦρ αὐτὸ ἀναλώσῃ εἰς τέλος, (ε) εἰ ἔτι ἔσται εἰς ἐργασίαν; 6 Διὰ τοῦτο εἰπὸν, Τάδε λέγει (ζ) κύριος, Ὃν τρόπον τὸ ξύλον τῆς ἀμπέλου ἐν τοῖς ξύλοις τοῦ δρυμοῦ ὃ δέδωκα αὐτὸ (η) πυρὶ εἰς ἀνάλωσιν, οὕτως δέδωκα τοὺς κατοικοῦντας 7 (θ) Ἱερουσαλήμ. Καὶ δώσω τὸ πρόσωπόν μου ἐπ' αὐτούς. ἐκ τοῦ πυρὸς ἐξελεύσονται, ϗ πῦρ αὐτοὺς καταφάγεται, ϗ ἐπιγνώσονται ὅτι ἐγὼ κύριος ἐν τῷ στηρίσαι με τὸ πρόσω-8 πόν μου ἐπ' αὐτούς. Καὶ δώσω τὴν γῆν εἰς ἀφανισμὸν ἀνθ' ὧν παρέπεσον παραπτώματι, λέγει κύριος.

MS.A. (α) Υἱὲ ἀνθρώπου, (β) αὐτοῦ (γ) αὐτῆς (δ) διότι ἐὰν ϗ μὴ πῦρ (ε) μὴ ἔσται ἔτι εἰς (ζ) ἀδωναῒ κύριος, (η) τῷ πυρὶ (θ) ἐν Ἱερουσαλήμ. Καὶ στηριῶ τὸ

CAP. XV.

ET factº eſt ſermo Domini ad 1 me, dicens; Et tu, fili hominis, quid 2 fiet lignū vitis ex omnibus ligna ſarmentorum, quæ ſunt inter ligna ſylvæ? Si tollent de illa lignum ad faciendum in opus? ſi tollent de ea paxillum ad ſuſpendendum ſuper eum omne vas? (a) Tantùm data eſt igni in conſumptionē; (b) annuā purgationē ex ea conſumit ignis, et (c) dimittit in finem. Nunquid utile erit ad op°? Neq; etiā dū adhuc eſt integrū, erit ad op°? Nunquid quandocunque etiam ignis illud conſumpſerit in finē, ſi erit adhuc ad opus? Propterea dic; Hæc dicit Dominus, Quomodò lignum vitis inter ligna ſylvæ, quod dedi illud igni in conſumptionem; ſic dabo habitatores Hieruſalem. Et dabo faciem meam ſuper eos. De igne egredientur; & ignis devorabit eos. Et ſcient, quia ego Dominus, cùm obfirmavero faciem meam in eos. Et dabo terram in deſo- 8 lationem; eò quòd deliquerunt delicto, dicit Dominus.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 או דקטלין בחרבא איתי על ארעא ההיא ואימר דקטלין בחרבא יעדון בארעא ואשצי
18 מנה אנשא ובעירא : ותלתא גבריא האלין בגוה קים אנא אמר יי אלהים לא ישיזבון
19 בנין ובנן אלהן אנון בלחודיהון ישתיזבון : או מותא אשלח על ארעא ההיא ואשפוך
20 חמתי עלה בקטול לשיצאה מנה אנשא ובעירא : ונח דניאל ואיוב בגוה קים אנא אמר
21 יי אלהים אם בר אם ברתא ישיזבון אנון בזכותהון ישיזבון נפשהון : ארי כדנן אמר יי
אלהים אף ארי ארבע פורענין בישן חרבא וכפנא וחיתא בישתא ומותא שלחית על
22 ירושלם לשיצאה מנה אנשא ובעירא : והא אשתארת בה שובתא דמתפקין בנין ובנן
אנון נפקין לותכון ותחזון ית אורחיהון וית עובדיהון ותתנחמון על בישתא דאיתיתי
23 על ירושלם ית כל דאיתיתי עלה : וינחמון יתכון ארי תחזון ית אורחיהון וית עובדיהון
ותדעון ארי לא למגן עבדית ית כל דעבדית בה אמר יי אלהים :

טו

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם מה שנא אילן גופנא מכל אילניא
3 שבשתא דהות באעי חורשא : היסבון מניה אעא למעבד עבידא אם יסבון מניה
4 סכתא למתלי בה כל מן : הא לאשתא אתמסר לאשתיצאה ית תרין סטרוהי אכלא
5 אשתא וגויה חר היכשר לעבידא : הא כד הוה שלים לא כשר לעבידא אף אלהן
6 דאשתא אכלתיה וחר היכשר עוד לעבידא : בכן כדנן אמר יי אלהים כמא דאילן
7 גופנא באעי חורשא דמסרתיה לאשתא לאשתיצאה כן מסרית ית יתבי ירושלם : ואתן
ית פורענותי בהון על פתגמי אוריתא דיהיבין מגו אשתא עברו ועממיא דתקיפין
8 כאשתא ישיצנון ותידעון ארי אנא יי כד יחול רוגזי בהון : ואתן ית ארעא לצדו חלף
דשקרו שקר אמר יי אלהים :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina

Aut ſi eos qui occidunt gladio, adduxero ſuper terram illam, & dixero ut 17 qui occidunt gladio tranſeant per terram, & diſperdam ex ea hominem & jumentum: Et tres viri iſti fuerint in medio ejus: vivo ego, dicit Dñs Deus, 18 quia non liberabunt filios nec filias; ſed ipſi ſoli liberabuntur. Vel peſtem 19 ſi miſero in terram illam, & effudero ſuper eam indignationem meam in occiſione, ut conſumam ex ea hominem & jumentum. Et Noe, & Daniel & 20 Job fuerint in medio ejus, vivo ego, dicit Dñs Deus, ſi filium aut filiam liberabunt, ſed ipſi in juſtitia ſua liberabunt animas ſuas. Quia hæc dicit 21 Dñs Deus: Si quatuor ultiones peſſimas, gladium & famem, & beſtias peſſimas, & peſtem miſero contra Jeruſalem, ad diſperdendum ex ea hominem & jumentum. Et ecce relinquentur in ea reliquiæ; qui educentur 22 filii & filiæ, ipſi egredientur ad vos, & videbitis vias eorum & opera eorum, & conſolabimini ſuper omne malum quod adduxi ſuper Jeruſalem, quodcunque adduxi ſuper eam. Et conſolabuntur vos cùm videritis 23 vias eorum & opera eorum; & ſcietis quòd non fruſtrà fecerim omnia quæ feci in ea, dicit Dñs Deus.

CAP. XV.

ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi mecum dicens: Fili homi- 1 2 nis, in quo differt arbor vitis ab omnibus arboribus, palmite, qui eſt in li- 3 gnis ſylvæ? Nunquid tollent ex ea lignum ad faciendum opus, aut aſſu- 4 ment ex ea paxillum, ut pendeat in eo quodcunq; vas? Ecce igni traditum eſt ut abſumatur, & duas ſummitates ejus conſumpſit ignis, & medium ejus 5 aruit: nunquid aptum erit ampliùs operi? Ecce cùm eſſet integrum, non erat aptum operi, quanto minus cùm illud ignis conſumpſerit, & aruerit: 6 nunquid aptum erit ampliùs operi? Idcirco hæc dicit Dñs Deus: Sicut 7 arbor vitis in lignis ſylvæ, quam tradidi igni ut abſumatur, ſic tradidi habitatores Jeruſalem. Et dabo ultionem meam in eos, eò quòd transgreſſi ſunt verba Legis meæ quæ data ſunt ex medio ignis; & populi fortes ſicut ignis conſument eos: & ſcietis quia ego Dñs, cùm quieverit furor 8 meus in eis. Et dabo terram in deſolationem, eò quòd prævaricati ſunt prævaricationem, dicit Dominus Deus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܘ ܐܢ ܚܪܒܐ ܐܝܬܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܗܝ . ܘܐܡܪ ܠܚܪܒܐ ܬܥܒܪ ܒܐܪܥܐ ܗܝ : ܘܐܘܒܕ ܡܢܗ ܒܢܝ
ܘܒܥܝܪܐ : * ܘܬܠܬܐ ܓܒܪܐ ܗܠܝܢ ܐܢ ܗܘܘ ܒܗ . ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ .. ܕܠܐ ܢܦܨ
ܒܢܝܐ ܘܠܐ ܒܢܬܐ . ܐܠܐ ܗܢܘܢ ܒܠܚܘܕܝܗܘܢ ܢܦܨܘܢ . * ܐܘ ܐܢ ܡܘܬܐ ܐܫܕܪ ܥܠ
ܗܝ : ܘܐܫܘܕ ܚܡܬܝ ܥܠܝܗ ܒܩܛܠܐ : ܘܐܘܒܕ ܡܢܗ ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ : * ܘܢܘܚ ܘܕܢ
ܘܐܝܘܒ ܐܢ ܗܘܘ ܒܓܘܗ . ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ .. ܕܠܐ ܒܪܐ ܘܠܐ ܒܪܬܐ ܢܦܨܘܢ . ܐܠܐ ܗ
ܒܙܕܝܩܘܬܗܘܢ ܢܦܨܘܢ ܢܦܫܗܘܢ . * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ . ܐܪܒܥܐ ܕܝܢܝܢ ܒܝ
ܐܫܕܪ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ . ܚܪܒܐ ܘܟܦܢܐ . ܘܚܝܘܬܐ ܒܝܫܬܐ ܘܡܘܬܢܐ . ܘܐܘܒܕ ܡܢܗ ܒܢܝ
ܘܒܥܝܪܐ . * ܘܢܫܬܚܪܘܢ ܒܗ ܐܝܠܝܢ ܕܢܦܩܘܢ .. ܘܡܦܩܝܢ ܒܢܝܐ ܘܒܢܬܐ . ܘܗܐ ܗܢܘܢ ܢ
ܠܘܬܟܘܢ . ܘܬܚܙܘܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܘܥܒܕܝܗܘܢ .. ܘܬܬܒܝܐܘܢ ܥܠ ܒܝܫܬܐ ܕܐܝܬܝ
ܐܘܪܫܠܡ .. ܘܥܠ ܟܠܡܕܡ ܕܐܝܬܝܬ ܥܠܝܗ . * ܘܢܒܝܐܘܢܟܘܢ ܟܕ ܬܚܙܘܢ ܐܘܪܚ
ܘܥܒܕܝܗܘܢ ܘܬܕܥܘܢ . ܕܠܐ ܗܘܐ ܡܓܢ ܥܒܕܬ ܟܠ ܕܥܒܕܬ ܒܗ . ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ .

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܗ *

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ . * ܒܪ ܐܢܫܐ .
ܡܢܐ ܢܗܘܐ ܩܝܣܐ ܕܓܦܬܐ ܡܢ ܟܠ ܩܝܣܐ . ܫܒܫܬܐ ܕܗܘܬ ܒܩܝܣܐ ܕܥܒܐ . * ܕܢܣܒܘܢ ܡܢܗ
ܩܝܣܐ ܠܡܥܒܕ ܥܒܕܐ . ܐܘ ܢܣܒܘܢ ܡܢܗ ܣܟܬܐ ܠܡܬܠܐ ܒܗ ܡܐܢ
ܐܠܐ ܠܡܐܟܘܠܬܐ ܠܢܘܪܐ . ܘܐܬܝܗܒ ܫܒܫܘܗܝ ܐܟܠܬ ܢܘܪܐ . ܘܡܘܚܗ ܚܪܒ . ܕܠܡ
ܠܥܒܕܐ .. * ܘܟܕ ܕܠܐ ܡܘܡ ܗܘܐ ܠܐ ܐܬܚܫܚ ܗܘܐ ܠܥܒܕܐ : ܗܫܐ ܕܐܟܠܬܗ ܢܘܪܐ ܘܐܬܚܪܒ .. ܐ
ܐܠܐ ܠܥܒܕܐ . * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ . ܐܝܟ ܕܝܗܒܬ ܩܝܣܐ ܕܓܦܬܐ ܒ
ܩܝܣܐ ܕܥܒܐ ܠܡܐܟܘܠܬܐ ܠܢܘܪܐ .. ܗܟܢܐ ܐܫܠܡ ܠܥܡܘܪܝܗ ܕܐܘܪܫܠܡ . * ܘ
ܐܬܠ ܒܗܘܢ . ܡܢ ܢܘܪܐ ܢܦܩܘ . ܘܢܘܪܐ ܐܚܪܬܐ ܬܐܟܘܠ ܐܢܘܢ . ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܟܕ ܐܣ
ܐܬܠ ܒܗܘܢ . * ܘܐܬܠ ܐܪܥܐ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܫܘܡܡܐ . ܡܛܠ ܕܐܥܘܠܘ ܥܘܠܐ . ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐ

Si gladium adduxero ſuper eandẽ terrã, & juſ- 17
ſero ut gladius terrã illam pervadat, adeóque 18
perdam ex ea homines atq; jumenta: Etiamſi
tres iſti viri eſſent in ea; *Ut* vivo, ait Dñs do-
minorũ, neq; filios, neq; filias eriperent; ſed
ipſi ſe ſolos eriperent. Si peſtem immiſero ſu- 19
per terrã illã, & effundens iram meã ſuper il-
lam ad cædem; perdidero ex ea homines & ju-
menta: Licèt Nohe, Daniel, & Job eſſent in ea; 20
Ut vivo, ait Dñs dominorũ, neque filiũ neque
filiã eriperent, ſed ipſi ſe ſolos per juſtitiam
ſuam eriperent. Nam ita dicit Dñs dominorũ, 21
Quatuor judicia mala immiſſurus ſum in Jeru-
ſalem, gladiũ, famem, beſtias malas, & peſtem,
& extinguam ex ea homines atque jumenta:
Sed reſidui manebunt in ea qui ſeſe eripue- 22
rint, qui filios filiáſque producent: hi ad vos
egredientur, vias atque ſtudia corũ videbitis,
& conſolationem percipietis ex malo quod
ſuper Jeruſalem adduxero, & ex omni re quam
adduxero ſuper eam. Conſolabuntur inquam 23
vos, quum vias & ſtudia eorum conſidera-
veritis: & cognoſcetis me non immeritò fe-
ciſſe quicquid feci contra ipſam, ait Dominus
dominorum.

CAP. XV.

ET fuit ad me ſermo Domini, dicendo, Fili 1 2
hominis, quid fiet de ligno vitis præ omnibus
lignis, palmite qui eſt inter ligna ſylvæ? Num 3
aſſumitur ex eo lignum ad fabrefaciendum ul-
lum opus, aut capiunt ex eo paxillum ad ap-
pendendum ei vas ullum? Imò in eſcam tra- 4
ditur igni. Cùm ergò utrumque ramuſculum
ejus voraverit ignis, & medulla ejus vaſtata
fuerit, num prodeſt ad ullum opus? Dum ad- 5
huc ſine vitio eſſet, non proderat ad opus, jam
quum voraverit eum ignis & vaſtatus ſit, quo-
modo prodeſſet ad opus? Iccirco ſic ait Dñs 6
dominorum, Quemadmodum dedi lignũ vi-
tis præ omnibus lignis ſylvæ, in eſcam igni,
ſic tradidi habitatores Jeruſalem, Et iram meã 7
collocabo in eis. Ex igne emerſerunt, & ignis
alius devorabit eos: & ſcietis me eſſe Dñm,
quum eis impoſuero iram meam, Et expoſue- 8
ro terram *iſtam* vaſtitati & ſtupori: eò quòd
ſcelleratè ſe geſſerint, ait Domin⁹ dominorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وإن أنا جلبت على تلك الأرض سيفا * فأقول للسيف ليعبر في الأرض، وأنزع منها الإنس
والبهيمة * وهاؤلاء الثلاثة الرجال في وسطها، حي أنا يقول أدوناي الرب * لا يخلصون بنين
بنات، إلا وحدهم يخلصون * وإذ أنا جلبت على تلك الأرض موتا فأفيض غضبي عليها بالد
لأستأصل منها الإنسان والبهيمة * ونوح ودانيال وأيوب يكونون في وسطها، حي أنا يـ
أدوناي الرب لم يبق منهم بنون ولا بنات، هاؤلاء بعدلهم ينجون نفوسهم، الإصحاح الساب
* هكذا يقول أدوناي الرب، أربعة نقمات شرين، سيفا وجوعا، ووحوشا خبيثة وموتا، أرسلها
أيروسليم، لأستأصل منها الإنسان والبهيمة * وأما المبقون فيها المتخلصون منها، هم يخرج
بنين وبنات، ها هاؤلاء يخرجون إليكم، وتعاينون طرقهم وفكرهم، وتندمون على الشرور ا
جلبتها على أيروسليم، وجميع الشرور التي جلبتها عليها * ويعزونكم، من أجل أنكم تعاين
طرقهم وفكراتهم، وتعلمون أني لم أصنع باطلا كلما صنعت فيها، يقول أدوناي الرب

* الفصل الخامس عشر * * وكان قول الرب إلي قائلا * وأنت يا ابن الإنسان،
يكون عود الكرم، من جميع عيدان الأغصان الكائنة في أشجار الغاب * أيأخذون منها
ليصنعوه للعمل، أو يأخذون منها وتدا، ليعلقوا عليه كل إناء * غير أنها تعطى للهلا
نفيتها في كل سنة تحرقها النار، وتفنى إلى الغاية، ولا يكون منها شي نافعا للعمل *
إذ هي كائنة صحيحة لا تكون للعمل، من أجل أنها وإن لم تبدها النار إلى الغاية
تكون أيضا للعمل * لأجل هذا قل، هكذا يقول أدوناي الرب، كما عود الكرم
عيدان الغاب الذي دفعته للهلاك بالنار، هكذا دفعت سكان أيروسليم * وسأعط
وجهي عليهم، من النار يخرجون والنار تأكلهم، وتعلمون أني أنا الرب عند ما أسلط وج
عليهم * وأدفع الأرض للفناء، من أجل أنهم سقطوا بزللهم، يقول أدوناي الرب،

Item ſi ego adduxero gladium ſuper ejuſ- 17
modi terram, & gladio dixero ut perva-
dat terram illam, & extinxero ex ea ho-
minem atque jumentum: Et hi tres viri 18
fuerint in medio ejus: Per vitam meam,
dicit Adonai Dominus, non ſervarent fi-
lios neque filias; ſed ipſi ſoli ſe ſerva-
rent. Denique cùm adduxero ſuper terram 19
illam, peſtem; & effudero furorem meum
ſuper illam in ſanguine, ut extirpem ex ea
hominem atque jumentum; Et Nohe, Da- 20
niel, ac Job fuerint in medio ejus: Per vitã
meam, dicit Adonai Dominus, non rema-
nerent ex eis ſuperſtites filii neque filiæ;
ſed hi juſtitiâ ſuâ ſeipſos ſervarent.

Textus ſeptimus.

Sic ait Adonai Dominus; Quatuor ultio- 21
num atrocium genera, *gladium, & fa-*
mem, feras pernicioſas, & peſtem immiſ-
ſurus ſum contra Jeruſalem; ut extirpem
ex ea hominem & jumentum. Verùm 22
qui reſidui fuerint in ea, qui ſe eripuerint
ex ea; ipſi educent filios & filias: ecce iſti
ad vos egredientur, videbitis vias & co-
gitationes eorum, & pœnitebit vos malo-
rum quæ adduxero contra Jeruſalem, o-
mniumque calamitatum quas adduxero
ſuper eam: Et conſolabuntur vos, quia 23
videntes vias & cogitationes eorum, ſcie-
tis me haud gratis feciſſe quicquid feci in
ea, dicit Adonai Dominus.

CAP. XV.

F*uit etiam ſermo Domini ad me, di-* 1
cens; Et tu O fili hominis, quid eſt li- 2
gnum vineæ ex omnibus lignis ramorum
exiſtentium in arboribus ſylvarum? Num 3
accipiunt ex eo lignum ad concinnandum
in ullum *opus? an verò capiunt ex eo*
paxillum, ut appendant ei vas ullum?
Imo potiùs conſumptioni traditur, ejus 4
ſarmenta ſingulis annis comburit ignis,
penitúſque conſumitur, neque fit ex eo
quicquam uſui accommodum. Ne dum 5
quidem integrum eſt, prodeſt ad opus;
quia licèt ignis haud penitùs conſum-
pſerit illud, non tamen accommodum eſt
ulli *operi. Propterea dic, Sic ait Ado-* 6
nai Dominus; Ut lignum vitis inter ligna
ſylvæ, quod igni conſumendum tradidi;
ita tradidi cives Jeruſalem. Diſponam 7
faciem meam adverſùs eos: ex igne egre-
dientur, & ignis devorabit eos: & ſen-
tient me eſſe Dominum, cùm obduravero
faciem meam adverſus eos, Et tradide- 8
ro terram in excidium, eò quòd culpæ
ſuæ ceciderint, ait Adonai Dominus.

CAP. XVI. יו

Jeruſalaim fac notas, hominis Fili : dicendo, me ad Domini verbum fuit Et
1 2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר: בן אדם הודע את־ירושלם
: Jeruſalaim Deus Dominus dixit Sic dices Et .ſuas abominationes
3 את־תועבתיה: ואמרת כה־אמר אדני יהוה לירושלם
tua mater &,Emoræus tu⁹ pater:Chenahanæa terra de tui natales &,tuæ Manſiones
מכרתיך ומלדתיך מארץ הכנעני אביך האמרי ואמך
fuiſſet præciſus non ,te naſci die in tuæ nativitates Et .Chittæa
4 חתית: ומולדותיך ביום הולדת אתך לא־כרת
,fuiſſes ſalita non ſaliendo & :lenimen ad fuiſſes lota non aquis in &,tu⁹ umbilic⁹
שרך ובמים לא־רחצת למשעי והמלח לא המלחת
tibi faciendum ad ,oculus te ſuper pepercit Non .fores faſciata non involvendo &
5 והחתל לא חתלת: לא־חסה עליך עין לעשות לך
abjectione in,agri facies ad es projecta & :te ſuper indulgendū ad ,his ex unum
אחת מאלה לחמלה עליך ותשלכי אל־פני השדה בגעל
conculcatam te vidi &,te juxta tranſivi Et .te naſci die in,tuæ animæ
6 נפשך ביום הלדת אתך: ואעבר עליך ואראך מתבוססת
tuis ſanguinib⁹ In:tibi dixi &,vive tuis ſanguinibus In,tibi dixi &:tuis ſanguinibus in
בדמיך ואמר לך בדמיך חיי ואמר לך בדמיך
, es multiplicata & , te dedi agri germen veluti millia Decem .vive
7 חיי: רבבה כצמח השדה נתתיך ותרבי
,ſunt facta firma ubera:ornamentorū ornamento in es ingreſſa &,es magnificata &
ותגדלי ותבואי בעדי עדיים שדים נכנו
, te juxta tranſivi Et .diſcooperta & ,nuda tu & , germinavit tuus pilus &
8 ושערך צמח ואת ערם ועריה: ואעבר עליך
, te ſuper meam alam expandi & ,amorum tempus tuū tempus ecce &,te vidi &
ואראך והנה עתך עת דדים ואפרש כנפי עליך
ait ,tecum pactum in ſum ingreſſus & ,tibi juravi &:tuam nuditatem operui &
ואכסה ערותך ואשבע לך ואבוא בברית אתך נאם
tuos ſanguines inundavi & , aquis in te lavi Et .mihi fuiſti & ,Deus Dominus
9 אדני יהוה ותהיי־לי: וארחצך במים ואשטף דמיך
: taxo te calceavi & , acupictio te veſtivi Et .oleo in te unxi & :te deſuper
10 מעליך ואסכך בשמן: ואלבישך רקמה ואנעלך תחש
armillas dedi &:ornamēto te ornavi Et.ſerico te operui &,byſſo in te ſtravi &
11 ואחבשך בשש ואכסך משי: ואעדך עדי ואתנה צמידים
,tua nare ſuper inaurem dedi Et .tuo gutture ſuper torquem & ,tuis manibus ſuper
12 על־ידיך ורביד על־גרונך: ואתן נזם על־אפך
auro es ornata Et .tuo capite in gloriæ coronam &:tuis aurib⁹ ſuper circulos &
13 ועגילים על־אזניך ועטרת תפארת בראשך: ותעדי זהב
oleū & ,mel &,ſimilam;polymitum &,ſericum &,byſſus tua veſtis & ,argento &
וכסף ומלבושך שש ומשי ורקמה סלת ודבש ושמן
.regnum in es proſperata & ,valde vehementia in es facta decora & : comediſti
אכלתי ותיפי במאד מאד ותצלחי למלוכה:
ipſa perfecta quia:tuam ſpeciem propter gentes in nomen tibi eſt egreſſum Et
14 ויצא לך שם בגוים ביפיך כי כליל הוא
fidiſti Et .Deus Dominus dixit ,te ſuper poſueram quem,meo decore in
15 בהדרי אשר־שמתי עליך נאם אדני יהוה: ותבטחי
tuas fornicationes effudiſti &:tuū nomē ꝓpter es fornicata &,tua pulchritudine in
ביפיך ותזני על־שמך ותשפכי את־תזנותיך
feciſti &,tuis veſtimētis de ſumpſiſti Et.erat eū erga :tranſeuntem omnem ſup
15 על־כל־עובר לו־יהי: ותקחי מבגדיך ותעשי
.erit non & ,ventura non : eis ſuper es fornicata & ,maculoſa excelſa tibi
לך במות טלאות ותזני עליהם לא באות ולא יהיה:

Verſio VULG. LAT.

CAP. XVI.

1 ET factus eſt ſermo Dñi ad me,
2 dicens; Fili hominis,notas fac Je-
3 ruſalem abominationes ſuas: Et
dices; Hæc dicit Dñs Deus Jeru-
ſalē; Radix tua, & generatio tua
de terra Chanaan:pater tuus A-
morrhæus, & mater tua Cethæa.
4 Et quando nata es,in die ort⁹ tui,
non eſt præciſ⁹ umbilic⁹ tuus, &
aquâ non es lota in ſalutem, nec
ſale ſalita, nec involuta pannis.
5 Non pepercit ſup te oculus ut fa-
ceret tibi unū de his,miſert⁹ tuî :
ſed projecta es ſup faciē terræ in
abjectione animæ tuæ, in die quâ
6 nata es. Tranſiens autē ꝑ te,vidi
te conculcari in ſanguine tuo: &
dixi tibi cùm eſſes in ſanguine
tuo;Vive:dixi, inquā,tibi;In ſan-
7 guine tuo vive.Multiplicatā quaſi
germen agri dedi te:& multipli-
cata es, & grandis effecta, & in-
greſſa es, & ꝑveniſti ad mundum
muliebrē:ubera tua intumuerūt,
& pilus tuus germinavit:& eras
8 nuda, & confuſione plena. Et
tranſivi per te, & vidi te:& ecce
temp⁹ tuū, temp⁹ amantiū:& ex-
pandi amictū meū ſup te,& ope-
rui ignominiā tuā.Et juravi tibi,
& ingreſſ⁹ ſum pactū tecum,(ait
9 Dñs De⁹:)& facta es mihi. Et lavi
te aquâ,& emundavi ſanguinem
10 tuum ex te:& unxi te oleo. Et ve-
ſtivi te diſcolorib⁹,& calceavi te
ianthino:& cinxi te byſſo, & in-
11 dui te ſubtilib⁹. Et ornavi te or-
namento,& dedi armillas in ma-
nibus tuis,& torquē circa collum
12 tuū.Et dedi inaurē ſup os tuū,&
circulos aurib⁹ tuis,& coronā de-
13 coris in capite tuo. Et ornata es
auro,& argento,& veſtita es byſ-
ſo,& polymito,et multicolorib⁹:
ſimilā, & mel, & oleū comediſti,
et decora facta es vehementer ni-
14 mis:& ꝓfeciſti in regnū. Et e-
greſſū eſt nomē tuū in Gētes pro-
pter ſpeciē tuā : quia pfecta eras
in decore meo, quē poſuerā ſup
15 te, dicit Dñs De⁹. Et habēs fidu-
ciā in pulchritudine tua,fornica-
ta es in nomine tuo:& expoſuiſti
fornicationē tuā omni tranſeun-
16 ti,ut ej⁹ fieres.Et ſumens de veſti-
mētis tuis,feciſti tibi excelſa hinc
indè conſuta: & fornicata es ſup
eis,ſicut nō eſt factū,neq; futurū eſt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ιϛ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-
2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, διαμάρτυραι τῇ Ἱερου-
3 σαλὴμ τὰς ἀνομίας αὐτῆς, Καὶ ἐρεῖς, Τάδε
λέγει κύριος τῇ Ἱερουσαλὴμ, Ἡ ῥίζα σου καὶ
ἡ γένεσίς σου ἐκ γῆς Χαναάν· ὁ πατήρ σου
4 Ἀμορραῖος, καὶ ἡ μήτηρ σου Χετταία. Καὶ ἡ
γένεσίς σου ἐν ᾗ ἡμέρᾳ ἐτέχθης, οὐκ (α) ἔ-
δησας τοὺς μαστούς σου, καὶ ἐν ὕδατι οὐκ ἐλού-
σθης (β), οὐδὲ ἁλὶ ἡλίσθης, (γ) καὶ ἐν σπαρ-
5 γάνοις οὐκ ἐσπαργανώθης, (δ) Οὐδὲ ἐφείσα-
το ὁ ὀφθαλμός μου ἐπὶ σοὶ, τοῦ ποιῆσαί σοι ἓν
ἐκ πάντων τούτων, τοῦ παθεῖν τι ἐπὶ σοί. καὶ
ἀπερρίφης ἐπὶ πρόσωπον τοῦ πεδίου τῇ σκο-
λιότητι τῆς ψυχῆς σου ἐν (ε) ἡμέρᾳ ᾗ ἐτέχθης.
6 Καὶ διῆλθον ἐπὶ σὲ, καὶ ἴδον σε πεφυρμένην
ἐν τῷ αἵματί σου· καὶ εἶπά σοι, Ἐκ τοῦ αἵμα-
7 τός σου (ζ) ζωή· Πληθύνου, καθὼς ἡ ἀνατολὴ
τοῦ ἀγροῦ δέδωκά σε. καὶ ἐπληθύνθης καὶ ἐμε-
γαλύνθης, καὶ εἰσῆλθες εἰς πόλεις πόλεων. οἱ
μαστοί σου ἀνωρθώθησαν, καὶ ἡ θρίξ σου ἀνέτει-
8 λε· (η) σὺ δὲ ἦσθα γυμνὴ καὶ ἀσχημονοῦσα. Καὶ
διῆλθον διὰ σοῦ, καὶ ἴδον σε· καὶ ἰδοὺ καιρός
σου, (θ) καὶ καιρὸς καταλυόντων. καὶ διεπέ-
τασα τὰς πτέρυγάς μου ἐπὶ σὲ, καὶ ἐκάλυψα
τὴν ἀσχημοσύνην σου, καὶ ὤμοσά σοι· καὶ εἰσῆλ-
θον ἐν διαθήκῃ μετὰ σοῦ, λέγει (ι) κύριος. καὶ
9 ἐγένου μοι, Καὶ ἔλουσά σε ἐν ὕδατι, καὶ ἀπέ-
πλυνα τὸ αἷμά σου ἀπὸ σοῦ, καὶ ἔχρισά σε ἐν
10 ἐλαίῳ. Καὶ ἐνέδυσά σε ποικίλα, καὶ (κ) ὑπέ-
δυσά σε ὑάκινθον· καὶ ἔζωσά σε βύσσῳ, καὶ
11 περιέβαλόν σε τριχάπτῳ. Καὶ ἐκόσμησά σε
κόσμῳ, καὶ περιέθηκα ψέλια περὶ τὰς χεῖ-
12 ράς σου, καὶ κάθεμα περὶ τὸν τράχηλόν σου· Καὶ
ἔδωκα ἐνώτιον (λ) περὶ τὸν μυκτῆρά σου, καὶ
τροχίσκους ἐπὶ τὰ ὦτά σου, καὶ στέφανον καυ-
13 χήσεως ἐπὶ τὴν κεφαλήν σου. Καὶ ἐκοσμήθης
(μ) χρυσίῳ καὶ (ν) ἀργυρίῳ, καὶ τὰ περιβόλαιά
σου βύσσινα, καὶ τριχαπτὰ, καὶ ποικίλα. σεμίδα-
λιν καὶ ἔλαιον καὶ μέλι ἔφαγες, καὶ ἐγένου καλὴ
14 (ξ) σφόδρα. Καὶ ἐξῆλθέ σου ὄνομα ἐν τοῖς
ἔθνεσιν (ο) ἐν τῷ κάλλει σου, διότι συντετε-
λεσμένον ἦν ἐν εὐπρεπείᾳ ἐν τῇ ὡραιότη-
15 τι ἣ ἔταξα ἐπὶ σέ, λέγει (π) κύριος. Καὶ
ἐπεποίθεις ἐν τῷ κάλλει σου, καὶ ἐπόρνευσας
ἐπὶ τῷ ὀνόματί σου, καὶ ἐξέχεας τὴν πορνείαν
16 σου ἐπὶ πάντα πάροδον (ρ)· Καὶ ἔλαβες ἐκ
τῶν ἱματίων σου, καὶ ἐποίησας σεαυτῇ εἴδωλα
ῥαπτὰ, καὶ ἐξεπόρνευσας ἐπ' αὐτὰ, καὶ οὐ μὴ
εἰσέλθῃς (σ) οὐδὲ μὴ γένηται.

CAP. XVI.

1 ET factus eſt ſer[illegible]
ad me, dicens, F[illegible]
ficare Hieruſalem (a) [illegible]
ſuas, Et dices, Hæc dicit [illegible] 3
ad Hieruſalem; Radix [illegible]
ratio tua de terra Chana[illegible]
tuus Amorrhæus, & mat[illegible]
Chettæa. Et generatio [illegible] 4
quâ nata es, (b) non [illegible]
millas tuas, et in aqua non [illegible]
lota, nec ſale ſalita, nec [illegible]
faſciata: Non pepercit [illegible] 5
culus (d) meus, ut faceret [illegible]
omnib⁹ iſtis, ad patiendū [illegible]
ſuper te. Et projecta es [illegible]
ciē campi pravitate animæ [illegible]
in die quâ nata es. Et tranſivi [illegible] 6
per te, & vidi te mixtam [illegible]
ſanguine tuo: et dixi tibi, De [illegible]
guine tuo vita: Multiplica[illegible] 7
ortus agri, dedi te. Et mu[illegible]
cata es, & magnifica[illegible]
greſſa es in civitates c[illegible]
Ubera tua erecta ſunt & [illegible]
ortus eſt. Tu autem eras [illegible] 8
plena ignominiæ. Et [illegible]
te, et vidi te: & ecce tem[illegible]
& (f) tempus divertentium [illegible]
pandi alas meas ſuper te [illegible]
ignominiam tuā. Et juravi [illegible]
ingreſſus ſum in teſtamentū [illegible]
dicit Dominus. Et facta es m[illegible]
Et lavi te in aqua, & [illegible] 9
guinē tuū à te et unxi te in [illegible]
Et indui te variis: & ca[illegible] 10
(g) hyacintho: & cinxi te [illegible]
circundedi te (h) trichapto. E[illegible] 11
navi te ornamento: et cir[illegible]
armillas man⁹ tuas, et [illegible]
ca collum tuum: Et dedi [illegible] 12
circa nares tuas, & [illegible]
aures tuas, et coronā gloriæ [illegible]
ſuper caput tuū. Et ornata [illegible] 13
o, & argento: & amictum [illegible]
ſin, & tricha[illegible]
ſimilā, & oleum, & mel come-
diſti. et facta es [illegible]
Et exiit nomē tuū in gen[illegible] 14
ſpecie tua: quia compl[illegible]
(i) decore, in pulchritudine [illegible]
poſui ſuper te, dicit Domi[illegible]
Confidiſti in pulchritudine [illegible] 15
& fornicata es in nomine [illegible]
et effudiſti fornicationē [illegible]
omnem (k) tranſeuntem. Et [illegible] 16
de veſtibus tuis: et feciſti [illegible]
idola conſuta: et fornicata [illegible]
ſuper eis: et non ingredieris, ne-
que fiet.

MS.A (α) ἔδησας (β) τοῦ ΧΡΙΣΤΟΥ μου, οὐδὲ (γ) καὶ σπαργάνοις (δ) Οὐ
φείσεται (ε) ἡ ἡμέρα ἐτέχθης. (ζ) ἡ ζωή σου Καὶ πληθύνου, (η) καὶ ἦσθα [illegible]
καιρὸς (ι) ἀδωναὶ κύριος. (κ) ὑπέδησα (λ) ἐπὶ τὸν (μ) κόσμῳ χρυσῷ (ν) ἀργυρῷ, (ξ) σφόδρα σφόδρα. (ο) ἐπὶ τῷ (π) ἀδωναὶ κύριος. Καὶ κατεπεποίθεις ἐπὶ τῷ (ρ) ὃ οὐκ ἔσται Καὶ (σ) οὐδ' οὐ μὴ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

יו

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר: בר אדם הוכח ית יתבי ירושלם וחוי להון
3 ית תועבתהון: ותימר כדנן אמר יי אלהים ליתבי ירושלם תותבתכון וילדותכון מארעא
כנענאי תמן אתגליתי על אברהם אבוכון בין בתריא ואודעתיה דאתון נחתין למצרים
בדרע מרומם אנא פריק יתכון ובזכות אבהתכון אנא מתריך מן קדמיכון ית אמוראי
4 ומשיצי ית חתאי: ואף כד נחתו אבהתכון למצרים תותבין בארעא דלא דילהון
משעבדין ומענן להון הות כנשתא דישראל דמיא לולדא די רטיש על אפי ברא דלא
אתפסק שורירה ובמיא לא אשתטיף לאתנקאה ובמלח לא אתמלח ובאסורין לא
5 אתאסר: לא חסת עליכון עינא דפרעה למעבד לכון טבא חדא לאנחא לכון משעבודכון
לרחמא עליכון וגזר עליכון גזירת גמירא למרמי דכוריכון בנהרא לאבדא יתכון בעדן
6 דהויתון במצרים: ועל דכרן קים אבהתכון קדמי אתגליתי למפרקכון ארי גלי קדמי ארי
אתון מענן בשעבודכון ואמרית לכון בדמא דמהולתא אחוס עליכון ואמרית לכון בדם
7 פסחא אפרוק יתכון: רבבת כצמחי חקלא יהבתיכון וסגיתון ותקפתון והויתון לזרעין
ולשבטין ובעובדי אבהתכון תקניא עדן פורקן כנישתכון מטא ארי אתון משעבדין
8 ומענן: ואתגליתי על משה באסנא ארי גלי קדמי ארי מטא זמן פורקניכון ואגנית
במימרי עליכון ואעדתי חוביכון וקימית במימרי למפרק יתכון כמא דקימית לאבהתכון
9 אמר יי אלהים למהויכון עם משמש קדמי: ופריקית יתכון משעבוד מצראי ואעדיתי
10 תקוף מרותא מנכון ודברית יתכון בחרותא: ואלבישית יתכון לבושי ציורין מחמדת
סנאיכון ויהבית מסן דיקר ברגליכון וקדשית מנכון כהניא למהוי משמשין קדמי
11 במצנפן דבוץ וית כהנא רבא בלבושי צבעונין: ותקנית יתכון תקון פתגמי אוריתא
כתיבין על תרין לוחי אבניא ויהיבין על ידי משה ובקדושת שמי רבא קדישית יתכון:
12 ויהבית ארון קימי ביניכון וענן יקרי מטל עלויכון ומלאך שליח מן קדמי מדבר
13 ברישכון: ויהבית משכני ביניכון מתקן בדהב וכסף ויריעת בוץ וצבעונין וציורין ומנא
דטב כסילתא וכדבש וכמשח אוכלית יתכון ועתרתון ותקפתון לחדא ואצלחתון
14 ושלטתון בכל מלכותא: ונפק לך שום כנשתא דישראל בני עממיא בשופריך ארי גמיר
15 הוא יקרי דשויתי עליך אמר יי אלהים: ואתרחצת בשופריך וטעית על שמיך ואתחברת
16 ליך למפלח לטעותא עם כל דעדי ולא כשר ליך למעבד כן: ונסיבת מלבושיך ועבידת
ליך במן מחפין פתכומרין וטעית עליהון לא כדכשר ולא כדחזי:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XVI.

ET factū eſt verbū prophetiæ à facie Dñi mecū dicens: Fili hominis, corripe habitatores Jeruſalē, & annuntiabis eis abominationes ſuas. Et dices: Hæc dicit Dñs De⁹ habitatorib⁹ Jeruſalē: Habitatio veſtra & generatio veſtra de terra *Canaanæorū* ubi revelat⁹ fui Abrahæ patri veſtro inter diviſiones, & indicavi ei quod vos deſcenſuri eſſetis in Ægyptū, & in brachio excelſo ego redēptur⁹ eſſem vos, & in juſtitia patrū veſtrorū ego ejicerē à facie veſtra Amorræos, & conſumerē Ethæos. Et etiā quando deſcenderūt patres veſtri in Ægyptū, incolæ terræ non ſuæ ſervitute preſſi & afflicti, ſimilis erat cœtus Iſrael puero qui project⁹ eſt ſup faciē agri, cuj⁹ umbilic⁹ non eſt præciſ⁹, & in aquis non eſt lot⁹ ut emūdaretur, & ſale non eſt cōdit⁹, neq; eſt alligat⁹ faſciis. Non pepercit vobis ocul⁹ Pharaonis ut aliquod bonū faceret vobis, & ut requiē daret vobis à ſervitute veſtra ut miſereretur veſtri: & decrevit contra vos decretū definitū ut projiceret maſculos veſtros in flumē, & ut perderet vos in tempore quo eratis in Ægypto. Et ſubiit memoria fœderis patrū veſtrorū corā me, & revelat⁹ ſum ut redimerē vos, quia manifeſtū erat corā me ꝙ vos eſſetis afflicti in ſervitute veſtra: & dixi vobis; In ſanguine circumciſionis miſerebor veſtri, & dixi vobis: In ſanguine Phaſe redimā vos. Myriades velut germina agri dedi vos & multiplicati eſtis & corroborati eſtis, & fuiſtis in cognationes & in trib⁹, & propter opera recta patrū veſtrorū advenit temp⁹ redemptionis cœt⁹ veſtri, quia eratis ſervitute preſſi & afflicti. Et revelat⁹ ſum Moyſi in rubo, quia manifeſtū fuit corā me ꝙ perveniſſet temp⁹ redemptionis veſtræ, & protexi vos verbo meo, et abſtuli iniquitates veſtras, et juravi ꝑ verbū meū ut redimerem vos, ſicut juraverā patrib⁹ veſtris, dicit Dñs De⁹, ut eſſetis popul⁹ miniſtris corā me. Et redemi vos de ſervitute Ægyptiorū, et abſtuli duritiē dominii à vobis, et duxi vos in libertatē. Et indui vos variis veſtib⁹ et deſiderabilib⁹ inimicorū veſtrorū, et poſui calciamēta pretioſa in pedib⁹ veſtris, et ſanctificavi ex vobis Sacerdotes, ut miniſtrarēt corā me in tiaris byſſinis, et Sacerdotē magnū in veſtimētis diverſorū colorum. Et ornavi vos ornamento verborū Legis quæ ſcripta ſunt ſuper duas tabulas lapideas, et data ſunt per manus Moyſi, et in ſanctitate nominis mei maximi ſanctificavi vos. Et dedi arcam fœderis mei inter vos, & nubes gloriæ meæ obumbrabat vos, & angel⁹ miſſus à facie mea ducebat in capite veſtro. Et dedi tabernaculū meū in medio veſtri ornatū auro, argento, & cortinis byſſinis, & tincturis variiſq; colorib⁹: & manna, ꝙ erat bonum inſtar ſimilæ, & mellis, & olei, cibavi vos: & divites facti eſtis et corroborati eſtis valdè, & profeciſtis & dominati eſtis omnib⁹ regnis. Exiit tibi, cœtus Iſrael, nomen inter populos ob pulchritudinem tuam, quia perfecta erat gloria mea quam poſueram ſuper te, dicit Dominus Deus. Et fiſa in pulchritudine tua, fornicata es ob nomen tuum, atque adjunxiſti te ut coleres idola cum omni tranſeunte, quod non decebat te ita facere. Et tuliſti de veſtimentis tuis, & feciſti tibi excelſa cooperta polymitis, et fornicata es ſuper ea præter fas et decorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܘ *

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ܂ * ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܐܘܕܥܝܗ ܠܐܘܪܫܠܡ ܛܢܦܘܬܗ
ܘܐܡܪ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܠܐܘܪܫܠܡ܂ ܥܩܪܟܝ ܘܡܘܠܕܟܝ܂ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܟܢܥܢ
ܐܒܘܟܝ ܐܡܘܪܝܐ܂ ܘܐܡܟܝ ܚܬܝܬܐ܂ * ܘܡܘܠܕܝܟܝ ܒܝܘܡܐ ܕܐܬܝܠܕܬܝ܂
ܦܣܩܘ ܫܪܟܝ܂ ܘܒܡܝܐ ܠܐ ܐܣܚܘܟܝ܂ ܘܒܡܠܚܐ ܠܐ ܡܠܚܘܟܝ܂ ܘܒܥܙܪܘܪܐ ܠܐ ܥܙܪܘܟܝ
* ܘܠܐ ܚܣܬ ܥܠܝܟܝ ܥܝܢܗ܂ ܠܡܥܒܕ ܠܟܝ ܚܕܐ ܡܢ ܗܠܝܢ܂ ܘܠܡܪܚܡ ܥܠܝܟܝ܂
ܐܫܬܕܝܬܝ ܥܠ ܐܦܝ ܚܩܠܐ ܒܫܘܥܒܕܐ ܕܢܦܫܟܝ܂ ܒܝܘܡܐ ܕܐܬܝܠܕܬܝ܂ * ܘܥܒܪܬ ܥܠܝܟܝ
ܘܚܙܝܬܟܝ܂ ܕܡܬܦܠܦܠܐ ܒܕܡܟܝ܂ ܘܐܡܪܬ ܠܟܝ ܒܕܡܟܝ ܚܝܝ܂ * ܣܓܝ ܐܝܟ
ܨܡܚܐ ܕܚܩܠܐ܂ ܘܣܓܝܬܝ܂ ܘܪܒܝܬܝ܂ ܘܥܠܬܝ ܠܡܕܝܢܬܐ܂ ܬܕܝܟܝ܂ ܩܡܘ܂ ܘܣܥܪܟܝ
ܐܦܪܥ܂ ܘܗܘܝܬܝ܂ ܥܪܛܠܝܐ ܘܡܬܒܙܚܐ܂ * ܘܥܒܪܬ ܥܠܝܟܝ ܘܚܙܝܬܟܝ܂ ܘܗܐ ܙܒܢܟܝ
ܙܒܢܐ ܕܪܚܡܐ܂ ܘܦܪܣܬ܂ ܟܢܦܝ ܥܠܝܟܝ܂ ܘܟܣܝܬ ܥܪܛܠܝܘܬܟܝ܂ ܘܝܡܝܬ ܠܟܝ܂ ܘܥܠܬ
ܥܡܟܝ ܒܩܝܡܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ܂ ܘܗܘܝܬܝ ܠܝ܂ * ܘܐܣܚܬܟܝ ܒܡܝܐ܂ ܘܫܝܓܬ
ܕܡܟܝ ܡܢܟܝ܂ ܘܡܫܚܬܟܝ ܒܡܫܚܐ܂ * ܘܐܠܒܫܬܟܝ ܨܒܥܐ܂ ܘܐܣܐܢܬܟܝ ܣܘܣܢܐ܂ ܘܐܣܪܬ
ܚܨܝܟܝ ܒܘܨܐ܂ ܘܟܣܝܬܟܝ ܫܝܪܐ܂ * ܘܨܒܬܟܝ ܨܒܬܐ܂ ܘܝܗܒܬ ܫܐܪܐ ܒܐܝܕܝܟܝ܂ ܘܗܡܢܝܟܐ
ܒܨܘܪܟܝ܂ * ܘܩܕܫܐ ܕܕܗܒܐ ܒܐܕܢܝܟܝ܂ ܘܒܪܘܠܐ ܥܠ ܒܝܬ ܥܝܢܝܟܝ܂ ܘܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ
* ܘܐܨܛܒܬܝ ܒܕܗܒܐ ܘܒܡܪܓܢܝܬܐ܂ ܘܐܠܒܫܬܝ ܒܘܨܐ܂ ܘܫܝܪܐ ܘܨܒܥܐ܂ ܘܣܡܝܕܐ
ܘܕܒܫܐ܂ ܘܡܫܚܐ ܐܟܠܬܝ܂ ܘܫܦܪܬܝ ܛܒ ܛܒ܂ ܘܐܬܟܫܪܬܝ ܠܡܠܟܘܬܐ܂ * ܘܢܦܩ ܫܡܟܝ
ܒܥܡܡܐ ܡܛܠ ܫܘܦܪܟܝ܂ ܡܛܠ ܕܫܡܠܝ ܒܫܘܒܚܐ ܕܝܗܒܬ ܥܠܝܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ
* ܘܐܬܬܟܠܬܝ ܥܠ ܫܘܦܪܟܝ܂ ܘܙܢܝܬܝ ܥܠ ܫܡܟܝ܂ ܘܐܫܕܬܝ ܙܢܝܘܬܟܝ ܥܠ ܟܠ
ܕܥܒܪ܂ * ܘܢܣܒܬܝ ܡܢ ܢܚܬܝܟܝ܂ ܘܥܒܕܬܝ ܠܟܝ ܒܢܬܐ܂ ܘܙܢܝܬܝ ܒܗܝܢ܂
ܐܝܟܢܐ ܕܠܐ ܢܗܘܘܢ ܕܝܠܟܝ܂

CAP. XVI.

ITerum fuit ad me ſermo Domini, dicen- 1
do; Fili hominis, Notam fac Jeroſolymæ 2
abominationem ejus, & dic; Sic dicit Do- 3
minus dominorum ad Jeruſalem; Origo tua
& natalia tua ſunt ex terra Chanaan: pater
tuus Amoræus eſt, & mater tua Hethæa.
Genitrix tua, quo die te peperit, non ampu- 4
tavit umbilicum tuum, aquâ non lavit te,
ſale non ſalivit, neq; faſciis involvit: Neque 5
miſericordiâ motus eſt erga te oculus ipſius,
ut quicquã ex his tibi præſtaret, tui miſerta:
ſed projecta fuiſti in deſertum in oppreſſione
animæ tuæ, quo die te peperit. Cùmque 6
prope te tranſiiſſem, téque vidiſſem ſanguine
tuo conſperſam; dixi tibi *dum eſſes* in ſanguine tuo, Vive & multiplicare ſicut germen 7
agri: & multiplicata es, atque creviſti, & ingreſſa es in urbes; ubera tua erexerant ſeſe,
& pilus tuus germinarat, & eras nuda & trigens. Cùmque prope te tranſiens vidiſſem te, 8
& deprehendiſſem ætatem tuam ætatem eſſe
nubilem; manu meâ ſuper te protenſâ operui
turpitudinem tuam, juravi tibi, & inivi tecum fœdus, ait Dominus dominorum, & facta
es mea. Lavi te aquâ, ablui ſanguinem tuum 9
à te, & unxi te unguento: Indui te verſico- 10
loribus, calceavi te calceis, accinxi lumbos
tuos byſſo, operuíque te ſtolâ: Decoravi te 11
ornatu, poſuique armillas in manibus tuis,
torquem collo tuo, Inaures aureas auribus 12
tuis, beryllos in fronte tua, & coronam glorioſiſſimam in capite tuo: Auro & globulis 13
ornata fuiſti, byſſo, ſerico, & verſicoloribus
induta: ſimilam, mel, & oleum comediſti:
pulchra ſupra modum evaſiſti, & fœlix prædicata fuiſti inter regna: Exiit fama pulchri- 14
tudinis tuæ inter gentes, propter coronam
gloriæ meæ quam impoſueram capiti tuo,
ait Dominus dominorum. Tum confiſa pul- 15
chritudini tuæ, ſcortata es ob *hanc* famam
tuam, et profudiſti ſcortationem tuam cuicunque prætereunti. Et ſumpſiſti de veſtibus 16
meis, et feciſti tibi pupas, inque iis fornicata
es, non progredieris, neque tuæ erunt.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل السادس عشر *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان. اشهد لايروسليم باثامها ويقول * هكذا
يقول ادوناي الرب لايروسليم. اصلك ومولدك من ارض كنعان. ابوك اموري وا
حيثانية * ومولدك في اليوم الذي ولدت فيه. لم يربطوا ثدييك. والماء لم تغسلي
من دمك. ولم تملحي. ولم تقمطي باقماط * لا تشفق عيني عليك. لاصنع بك واحدا
من جميع هولاء لاتالم عليك. وطرحت علي وجه الصحراء. باعوجاج نفسك. في اليوم
الذي ولدت فيه * وجازوا عليك ونظروك مخضبة بدمك. وقلت لك. بدمك حياتك
* فاكثري كطلوع الحقل. اعطيتك وكثرت وعظمت. ودخلت الي مدن المدن ثد
نهدت وشعرك نبت. وانت صرت عريانة ومفتضحة * وجازوا بك ونظروك. واذا ز
كزمان الذين يحلون. وبسطت اجنحتي عليك. وغطيت فضيحتك. وحلفت لك ود
في العهد معك. يقول ادوناي الرب وصرت لي * وحميتك بالماء. وغسلت دمك عنك
ومسحتك بالزيت * والبستك منوعات. وحذيتك بالياقوت. ومنطقتك بالارجوان. ورديتك
بالوشي * وزينتك بزينة. ووضعت اسورة في يديك. وقلادة علي عنقك. وردده في انف
* واقرطة في اذنيك. واكليل فخر علي راسك * وزينت بزينة فضة وذهب. وارديتك ارجو
وموشاه ومنوعة. واكلت سميذا وعسلا وزيتا. وصرت حسنة جدا جدا * وخرج اسمك في
بحسنك من اجل انه كان مكملا بالبهاء الذي وضعته عليك يقول ادوناي الرب * فوثقت
بحسنك. وزنيت باسمك. وافضت زناك علي كل مار في الطريق * واخذت من ثيابك وصن
لذاتك اوثانا مخيطة. وزنيت بها. لم تدخلي. ولا تصير.

CAP. XVI.

ET fuit ſermo Domini ad me, dicens; 1
O fili hominis, conſtare fac Jeroſolymæ 2
iniquitates ejus, ac dicas; Sic dicit 3
Adonai Dominus ad Jeruſalem; Origo
tua & natalia tua ſunt ex terra Chanaan: pater tuus Amoræus eſt, & mater
tua Hethæa. Et in nativitate tua, die 4
quo nata es, non alligaverunt ubera tua,
aquâ non fuiſti lota de ſanguine tuo, non
fuiſti ſalita, neque faſciis obligata: Non 5
pepercit oculus meus tibi, ut facerem tibi
unum ex his omnibus, ut compaterer tibi:
ſed projecta fuiſti ſuper faciem deſerti
propter obliquitatem animæ tuæ, die quo
nata es: Et prope te tranſierunt, teque 6
viderunt ſanguine tuo oblitam. Et dixi tibi, In ſanguine tuo vita tua: Ideò creſce 7
velut germen agri. Conceſſi tibi; & multa ac magna evaſiſti, & ingreſſa es urbes
urbium: at ubi ubera tua prominuerunt,
& pilus tuus ortus eſt, tu facta es nuda
& ignominioſa. Prope te tranſierunt, te- 8
que viderunt; & ecce tempus tuum quaſi
tempus eorum qui commorantur. Tum extendens alas meas ſuper te, operui ignominiam tuam, juravi tibi, & fœdus inivi
tecum, dicit Adonai Dominus, & facta
es mea. Lavi te aqua, ablui à te ſan- 9
guinem tuum, & unxi te oleo: Indui te 10
verſicoloribus, calceavi te hyacintho, cinxi
te byſſo, & acupictis amicivi: Ornavi 11
te ornamento, poſui armillas in manibus
tuis, torquem in collo tuo, & annulum in
naſo tuo, Inaures in auribus tuis, & 12
diadema pretioſiſſimum ſuper caput tuum:
Demum ornata fuiſti ornamentis argen- 13
teis & aureis: et amicivi te byſſo, acupictis, et verſicoloribus; et comediſti ſimilam, mel, atque oleum, factáque es admodum pulchra: Et exivit nomen tu- 14
um inter gentes propter pulchritudinem
tuam, eò quòd perfecta eſſet ſplendore
quem ſuper te poſueram, dicit Adonai
Dominus. Tu verò freta pulchritudine 15
tuâ, ſcortata es propter tantum *nomen*
tuum, et effudiſti ſcortationem tuam ad
omnem viatorem. Præterea ſumens de 16
veſtibus tuis, compoſuiſti tibi idola conſuta, atque fornicata es cum iis: non ingreſſa es, neque fiet.

dedi quæ ,meo argento de & ;meo auro de tuæ gloriæ vaſa tuliſti Et
17 וַתִּקְחִי כְּלֵי תִפְאַרְתֵּךְ מִזְּהָבִי וּמִכַּסְפִּי אֲשֶׁר נָתַתִּי
ſumpſiſti Et .eis *in* es fornicata & :*maſculi* imagines tibi feciſti & ,tibi
לָךְ וַתַּעֲשִׂי־לָךְ צַלְמֵי זָכָר וַתִּזְנִי־בָם׃ וַתִּקְחִי אֶת־ 18
meum ſuffimentũ & ,meũ oleũ & :eas operuiſti &,*tuæ recamationis* veſtimẽta
בִּגְדֵי רִקְמָתֵךְ וַתְּכַסִּים וְשַׁמְנִי וּקְטָרְתִּי
,oleum & ,ſimilam ,tibi dedi quem meum panẽ Et .*earum facies ad* dediſti
19 נָתַתִּי לִפְנֵיהֶם׃ וְלַחְמִי אֲשֶׁר־נָתַתִּי לָךְ סֹלֶת וָשֶׁמֶן
, quietis odorem in,*earum facies ad* illud dediſti & , te comedere feci , mel &
וּדְבַשׁ הֶאֱכַלְתִּיךְ וּנְתַתִּיהוּ לִפְנֵיהֶם לְרֵיחַ נִיחֹחַ
tuas filias & , tuos filios tuliſti Et .Deus Dominus ait , fuit &
20 וַיֶּהִי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ וַתִּקְחִי אֶת־בָּנַיִךְ וְאֶת־בְּנוֹתַיִךְ
parum Nunquid:*comedendum* ad eis eos immolâſti & ,mihi generâſti quos
אֲשֶׁר יָלַדְתְּ לִי וַתִּזְבָּחִים לָהֶם לֶאֱכוֹל הַמְעַט
, eos dediſti & : meos filios immolâſti Et ? tuis fornicationibus de
21 מִתַּזְנוּתֵךְ׃ וַתִּשְׁחֲטִי אֶת־בָּנַי וַתִּתְּנִים
tuis abominationibus omnibus cum Et .illis eos *faciendo tranſire in*
22 בְּהַעֲבִיר אוֹתָם לָהֶם׃ וְאֵת כָּל־תּוֹעֲבֹתַיִךְ
te exiſtendo in:tuarũ pueritiarũ dierum es recordata non tuis fornicationib⁹ &
וְתַזְנֻתַיִךְ לֹא זָכַרְתִּי אֶת־יְמֵי נְעוּרָיִךְ בִּהְיוֹתֵךְ
poſt fuit Et .fuiſti tuo ſanguine in *conculcatam* ,*diſcoopertam &* ,nudam
23 עֵירֹם וְעֶרְיָה מִתְבּוֹסֶסֶת בְּדָמֵךְ הָיִית׃ וַיְהִי אַחֲרֵי
tibi ædificâſti Et .Deus Dominus dixit,tibi væ væ :tuam malitiã omnem
24 כָּל־רָעָתֵךְ אוֹי אוֹי לָךְ נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ וַתִּבְנִי־לָךְ
viæ caput omne Ad .platea omni in excelſum tibi feciſti & :*fornicem*
25 גָּב וַתַּעֲשִׂי־לָךְ רָמָה בְּכָל־רְחוֹב׃ אֶל־כָּל־רֹאשׁ דֶּרֶךְ
divaricâſti & ,tuum decorem es abominata &,tuũ excelſum ædificâſti
בָּנִית רָמָתֵךְ וַתְּתַעֲבִי אֶת־יָפְיֵךְ וַתְּפַשְּׂקִי אֶת־
.tuas fornicationes multiplicâſti & : tranſeunti omni tuos pedes
רַגְלַיִךְ לְכָל־עוֹבֵר וַתַּרְבִּי אֶת־תַּזְנוּתָךְ׃
multiplicâſti & : *carne magnos tuos vicinos* Ægypti *filios ad* es fornicata Et
26 וַתִּזְנִי אֶל־בְּנֵי־מִצְרַיִם שְׁכֵנַיִךְ גִּדְלֵי בָשָׂר וַתַּרְבִּי
,te ſuper meã manũ extendi ecce Et .me irritandum ad tuam fornicationẽ
27 אֶת־תַּזְנֻתֵךְ לְהַכְעִיסֵנִי׃ וְהִנֵּה נָטִיתִי יָדִי עָלַיִךְ
filiarum te habentium odio *animam in* te dedi & :*tuum* ſtatutum diminui &
וָאֶגְרַע חֻקֵּךְ וָאֶתְּנֵךְ בְּנֶפֶשׁ שֹׂנְאוֹתַיִךְ בְּנוֹת
filios ad es fornicata Et .*ſceleris* tua via de *confuſarum* , Peliſtim
28 פְּלִשְׁתִּים הַנִּכְלָמוֹת מִדַּרְכֵּךְ זִמָּה׃ וַתִּזְנִי אֶל־בְּנֵי
.ſaturata eras non *etiã &* ,eis es fornicata & : *tua ſaturitate abſque* ,Aſſur
אַשּׁוּר מִבִּלְתִּי שָׂבְעָתֵךְ וַתִּזְנִים וְגַם לֹא שָׂבָעַתְּ׃
: Chaſdim *in* , Chenahan *terra* in tuam fornicationem multiplicâſti Et
29 וַתַּרְבִּי אֶת־תַּזְנוּתֵךְ אֶל־אֶרֶץ כְּנַעַן כַּשְׂדִּימָה
dixit , tuum cor eſt infirmatum Quàm .es ſatiata non hoc in etiam &
30 וְגַם־בְּזֹאת לֹא שָׂבָעַתְּ׃ מָה אֲמֻלָה לִבָּתֵךְ נְאֻם
meretricis mulieris opus , iſta omnia *te faciendo in*:Deus Domin⁹
אֲדֹנָי יְהוִה בַּעֲשׂוֹתֵךְ אֶת־כָּל־אֵלֶּה מַעֲשֵׂה אִשָּׁה־זוֹנָה
, viæ omnis capite in tuum excelſum *te ædificando In* .*imperioſæ*
31 שַׁלָּטֶת׃ בִּבְנוֹתַיִךְ גַּבֵּךְ בְּרֹאשׁ כָּל־דֶּרֶךְ
meretrix tanquam fuiſti non &:platea omni in feciſti tuum excelſum &
וְרָמָתֵךְ עָשִׂיתִי בְּכָל־רְחוֹב וְלֹא־הָיִיתִי כַּזּוֹנָה
ſuſcipiet ſuo viro pro adultera Mulier .mercedem ſpernendo
32 לְקַלֵּס אֶתְנָן׃ הָאִשָּׁה הַמְּנָאָפֶת תַּחַת אִישָׁהּ תִּקַּח
dediſti tu & : *donum* dabunt meretricibus Omnibus .alienos
33 אֶת־זָרִים׃ לְכָל־זֹנוֹת יִתְּנוּ־נֵדֶה וְאַתְּ נָתַתְּ
intranaum ad , illos remunerabas &,tuis amatoribus cunctis tua *præmia*
אֶת־נְדָנַיִךְ לְכָל־מְאַהֲבַיִךְ וַתִּשְׁחָדִי אוֹתָם לָבוֹא
.tuis fornicationibus in undique te ad
אֵלַיִךְ מִסָּבִיב בְּתַזְנוּתָיִךְ׃

Verſio VULG. LAT.

17 Et tuliſti vaſa decoris tui de auro meo, atque argento meo, quæ dedi tibi: & feciſti tibi imagines maſculinas, & fornicata es in eis. 18 Et ſumpſiſti veſtimenta tua multicoloria, & operuiſti illas: & oleum meum, & thymiama meum 19 poſuiſti coram eis. Et panem meum, quem dedi tibi, ſimilam, & oleum, & mel, quibus enutrivi te, poſuiſti in conſpectu eorum in odorem ſuavitatis, & factum 20 eſt, ait Dominus Deus. Et tuliſti filios tuos, & filias tuas, quas generâſti mihi: & immolâſti eis ad devorandum. Numquid parva eſt 21 fornicatio tua? Immolâſti filios meos, & dediſti, illos conſecrans, 22 eis. Et poſt omnes abominationes tuas, & fornicationes, non es recordata dierum adoleſcentiæ tuæ, quando eras nuda, & confuſione plena, conculcata in ſangui- 23 ne tuo. Et accidit poſt omnem malitiam tuam, (væ, væ tibi, ait 24 Dominus Deus,) Et ædificâſti tibi lupanar, & feciſti tibi proſti- 25 bulum in cunctis plateis. Ad omne caput viæ ædificâſti ſignum proſtitutionis tuæ: & abominabilem feciſti decorem tuum: & diviſiſti pedes tuos omni tranſeunti, & multiplicâſti fornicatio- 26 nes tuas. Et fornicata es cum filiis Ægypti vicinis tuis magnarũ carnium: & multiplicâſti fornicationem tuam ad irritandum me. 27 Ecce ego extendam manum meã ſuper te, & auferam juſtificationem tuam: & dabo te in animas odientium te, filiarum Palæſtinarum, quæ erubeſcũt in via tua ſce- 28 lerata. Et fornicata es in filiis Aſſyriorum, eò quòd necdum fueris expleta: et poſtquàm fornicata es, 29 nec ſic es ſatiata. Et multiplicâſti fornicationẽ tuam in terra Chanaan cum Chaldæis: & nec ſic ſa- 30 tiata es. In quo mundabo cor tuum, ait Dominus Deus; cùm facias omnia hæc opera mulieris 31 meretricis, & procacis? Quia fabricâſti lupanar tuum in capite omnis viæ, & excelſum tuum feciſti in omni platea: nec facta es quaſi meretrix faſtidio augens 32 pretium, Sed quaſi mulier adultera, quæ ſuper virum ſuum in- 33 ducit alienos. Omnibus meretricibus dantur mercedes: tu autem dediſti mercedes cunctis amatoribus tuis, & dona donabas eis, ut intrarent ad te undique ad fornicandum tecum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Καὶ ἔλαβες τὰ σκεύη τῆς καυχήσεώς σου (τ) ἐκ τοῦ χρυσίου μου καὶ ἐκ τοῦ ἀργυρίου μου, ἐξ ὧν ἔδωκά σοι, καὶ ἐποίησας σεαυτῇ εἰκόνας ἀρσενικὰς, καὶ ἐξεπόρνευσας ἐν αὐταῖς. 18 Καὶ ἔλαβες τὸν ἱματισμὸν τὸν ποικίλον σου, καὶ περιέβαλες (υ) αὐτὰς, καὶ τὸ ἔλαιόν μου καὶ τὸ θυμίαμά μου ἔθηκας πρὸ προσώπου αὐτῶν. 19 Καὶ τοὺς ἄρτους μου οὓς ἔδωκά σοι, σεμίδαλιν καὶ ἔλαιον καὶ μέλι ἐψώμισά σε, καὶ ἔθηκας αὐτὰ πρὸ προσώπου αὐτῶν εἰς ὀσμὴν εὐωδίας. καὶ 20 ἐγένετο (φ), λέγει κύριος, Καὶ ἔλαβες τοὺς υἱούς σου καὶ τὰς θυγατέρας (χ) σου ἃς ἐγέννησας, καὶ ἔθυσας αὐτοῖς εἰς ἀνάλωσιν. ὡς μι- 21 κρὰ ἐξεπόρνευσας, Καὶ ἔσφαξας τὰ τέκνα σου, καὶ ἔδωκας αὐτὰ ἐν τῷ ἀποτροπιάζεσθαί 22 σε (ψ) αὐτὰ αὐτοῖς. Τοῦτο παρὰ πᾶσαν τὴν πορνείαν σου, (ω) καὶ οὐκ ἐμνήσθης (α) τὴν νηπιότητός σου, ὅτε ἦσθα γυμνὴ καὶ ἀσχημονοῦσα, (β) πεφυρμένη ἐν τῷ αἵματί σου ἔζησας. 23 Καὶ ἐγένετο μετὰ πάσας τὰς κακίας σου, (γ) 24 λέγει κύριος, Καὶ ᾠκοδόμησας σεαυτῇ οἴκημα πορνικὸν, καὶ ἐποίησας σεαυτῇ ἔκθε- 25 μα ἐν πάσῃ πλατείᾳ, Καὶ ἐπ' (δ) ἀρχῆς πάσης ὁδοῦ ᾠκοδόμησας τὰ πορνεῖά σου, καὶ ἐλυμήνω τὸ κάλλος σου, καὶ (ε) διήγαγες τὰ σκέλη σου παντὶ παρόδῳ, καὶ ἐπλήθυνας τὴν 26 πορνείαν σου, Καὶ ἐξεπόρνευσας ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Αἰγύπτου τοὺς (ζ) ὁμοροῦντάς σοι τοὺς μεγαλοσάρκους, καὶ πολλαχῶς ἐξεπόρνευσας τοῦ 27 παροργίσαι με. Ἐὰν δὲ ἐκτείνω τὴν χεῖρά μου ἐπὶ σὲ, (η) καὶ ἐξαρῶ τὰ νόμιμά σου, καὶ παραδώσω (θ) εἰς ψυχὰς μισούντων σε, θυγατέρας ἀλλοφύλων τὰς ἐκκλινούσας σε 28 ἐκ τῆς ὁδοῦ (ι) σου ἧς ἠσέβησας. Καὶ ἐξεπόρνευσας ἐπὶ τὰς θυγατέρας Ἀσσοὺρ, καὶ οὐδ' οὕτως ἐνεπλήσθης, (κ) καὶ ἐξεπόρνευσας καὶ 29 οὐκ ἐνεπίπλω. Καὶ ἐπλήθυνας (λ) τὰς διαθήκας σου πρὸς γῆν Χαλδαίων, καὶ οὐδὲ ἐν τού- 30 τοις ἐνεπλήσθης. Τί διαθῶ τὴν θυγατέρα σου, λέγει κύριος, ἐν τῷ ποιῆσαί σε (μ) πάντα ταῦτα ἔργα γυναικὸς πόρνης; καὶ ἐξεπόρνευσας τρισσῶς ἐν ταῖς θυγατράσι σου· 31 Τὸ πορνεῖον ᾠκοδόμησας ἐν πάσῃ ἀρχῇ ὁδοῦ, καὶ τὴν βάσιν σου ἐποίησας ἐν πάσῃ πλατείᾳ· καὶ ἐγένου ὡς πόρνη συνάγουσα 32 μισθώματα. (ν) Ἡ γυνὴ ἡ μοιχωμένη ὁμοία σοι, παρὰ τοῦ ἀνδρὸς αὐτῆς λαμβά- 33 νουσα μισθώματα, Πᾶσι τοῖς (ξ) ἐκπορνεύσασιν αὐτὴν προσεδίδου μισθώματα· (ο) καὶ σὺ δέδωκας μισθώματα πᾶσι τοῖς ἐρασταῖς σου, καὶ ἐφόρτιζες αὐτοὺς τοῦ ἔρχεσθαι πρὸς σὲ κυκλόθεν ἐν τῇ πορνείᾳ σου.

MS.A. (τ) καὶ ἐκ τοῦ (υ) αὐτὰ, (φ) μετὰ ταῦτα, λέγει κύριος, Ἔλαβες (χ) σου, καὶ ἔθυσας αὐτὰ αὐτοῖς (ψ) ἐν αὐτοῖς. (ω) καὶ τὰ βδελύγματά σου, καὶ οὐκ (α) τὰς ἡμέρας τῆς (β) καὶ πεφυρμένη (γ) οὐαὶ οὐαί σοι, λέγει (δ) ἀρχὴν πασῶν ἐξόδων (ε) ἤγαγες (ζ) *ὁμοροῦντάς (η) ἐξαρῶ (θ) σε εἰς (ι) σου. Ἐξεπόρνευσας καὶ ἠσέβησας ἐπὶ (κ) ἐξεπόρνευσας καὶ οὐκ ἐνεμπίπλω. (λ) τὴν διαθήκην σου πρὸς γῆν Χαναναίων καὶ Χαλδαίων, καὶ οὐδ' ἐν (μ) ἔργα γυναικὸς πόρνης; ἐξεπόρνευσας τρισσῶς ἐπὶ ταῖς θυγατράσι σου, καὶ τὸ πορνεῖον ᾠκοδόμησας ἐπὶ πάσης ἀρχῆς ὁδοῦ· τὴν βάσιν (ν) Ὡς γυνὴ μοιχωμένη (ξ) ἐκπορνεύουσιν (ο) πᾶσι τοῖς

Et tuliſti vaſa glorationis tuæ de auro meo, & de argento meo, de iis quæ dederam tibi: & feciſti tibi imagines maſculinas: & fornicata es in eis. 18 *Et ſumpſiſti veſtimentum variũ tuũ, et operuiſti illas: Et oleũ meum, & thymiama meum poſuiſti ante faciem eorum:* 19 *Et panes meos, quos dedi tibi, ſimilã, & oleum, et mel, in cibavi te: et poſuiſti ea ante faciẽ eorũ in odorem ſuavitatis. Et factum (n) eſt, dicit Dominus,* 20 *Et tuliſti filios tuos, et filias tuas, quas genuiſti, et immolâſti eis in conſumptionẽ. Quaſi parum fornicata ſis;* 21 *Et interfeciſti filios tuos, et dediſti eos in (o) expiando te ipſos eis.* 22 *Hoc eſt ſuper omnem fornicationẽ (p) tuam: et non es recordata (q) infantiæ tuæ: quando eras nuda, et ignominioſa: mixta in ſanguine tuo vixiſti.* 23 *Et factum eſt poſt omnes malitias (r) tuas, ait Domin⁹;* 24 *Et ædificâſti tibi (ſ) habitaculum fornicationis: et feciſti tibi (t) proſtitutionem in omni platea.* 25 *Et in principio omnis viæ ædificâſti (u) lupanaria tua: et corrupiſti decorem tuum: et divaricâſti crura tua omni tranſeunti: et multiplicâſti fornicationẽ tuam:* 26 *Et fornicata es (x) cum filiis Ægypti vicinis tuis, qui ſunt magnarum carniũ: et multipliciter fornicata es, ut me ad iracundiam provocares.* 27 *(y) Si autem extendero manum meã ſuper te: et auferam legitima tua, et tradam in animas odientiũ te, filias alienigenarum, (z) declinantes te de via tua, quâ impiè egiſti.* 28 *Et fornicata es (ω) ſuper filias Aſſur: et nec ſic ſatiata es: et fornicata es, et non es repleta.* 29 *Et multiplicâſti (a a) teſtamenta tua ad terram (b) Chaldæorũ: et neque in iſtis expleta es.* 30 *(c) Quomodò diſponam filiam tuã, dicit Domin⁹, cùm facias tu omnia hæc opera mulieris (d) fornicariæ? Et fornicata es tripliciter in filiabus tuis:* 31 *Lupanar ædificâſti in omni principio viæ, et (e) baſim tuam feciſti in omni platea. Et (f) facta es quaſi meretrix congregans mercedes:* 32 *Mulier adultera (g) ſimilis tui, à viro ſuo accipiens mercedes,* 33 *Omnibus qui fornicabuntur cũ ea, dabat mercedes: et tu dediſti mercedes cunctis amatoribus tuis, et onerabas illos, ut venirent ad te per circuitum in fornicatione tua.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 ונסיבת מני תושבחתיך מדהבי ומכספי די יהבית ליך ועבדת ליך צלמי דכורא וטעית
18 בהון : ונסבת ית לבושי ציוריך וכסיתנון ומשחי וקטורת בוסמי שוית קדמיהון : וטובי 19
דיהבית ליך סולתא ומשח ודבש אוכלתיך ויהבתנון קדמיהון קורבנין לפולחן הלא
20 הואה כל אלין אמר יי אלהים : איכא אסגית לארגזא קדמי כנשתא דישראל די דברת
ית בנך וית בנתך דעתידין למפק מנהון תולדת קודשא קדמי ונכסתנון להן קורבנין
21 לפולחן הזעירא הות בעינך טעותיך : ונכסת ית בניא ויהבתנין באעבראיתהון להן :
22 וית כל חובי תועבתיך וטעותיך לא אדכרת ית יומין דמלקדמין כד הוית מטלטלא
23 ושביקא מתעניא בשעבודיך הוית : מה יהי בסופיך על כל בישתיך נביא אמר לה
24 וי ליך על דחבת וי ליך על דלא תבת אמר יי אלהים : ובנית ליך אגורין ועבדת ליך
25 רמן בכל רחוב : בריש כל פרשות אורח בנית רמתיך ואחלת ית קדושתיך ואתחברת
26 ליך למפלח לטעותא ואסגית ית טעותיך עם כל דעדי ואסגית ית טעותיך : וטעית בתר
27 בני מצרים קריביך מטרבלי בסר ואסגית ית טעותיך לארגזא קדמי : והא ארימית ית
מחת גבורתי עלך ומנעית טוביך ואמסרניך ביד בעלי דבביך כפרני פלשתאי דאלו
28 שלחית לותהון נביי אתכנעו ואת לא תבת מאורחיך דעיצת חטאין : וטעית בתר בני
29 אתור מדלא ידעת אוריתא וטעית בהון ואף לא ידעת תיובתא : ואסגית ית טעותיך
30 לאתחברא לעמא דכנען למהך בנימוסי כסדאי ואף בדא לא ידעת אוריתא : מה תקיף
הוה רשע לבך אמר יי אלהים במעבדיך ית כל אלין כעובדי אתתא נפקת ברא דשליט
31 לה בנפשה : במבנך אגוריך בריש כל פרשות אורח ורמתך עבדת בכל רחוב ולא
32 הוית כנפקת ברא דמתהניא באגרא : כנשתא דישראל דמיא לאתתא דרחימא
33 על בעלה ומזניא עלוהי שבקת ית בעלה וטעית בתר נוכראין : לכל נפקת ברא
יהבין אגר ואת אהנית ית אגריך לכל רחימך ושחדת יתהון למיתי עלך מסחור
סחור בטעותיך :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et tuliſti vaſa tua laudabilia ex auro meo & argento meo ꝙ dederam tibi, 17 & feciſti tibi imagines maſculas, & fornicata es in eis. Et tuliſti veſtimen- 18 ta tua varii coloris, & operuiſti ea; & oleum meum & incenſum aromatis mei poſuiſti coram eis: Et bona mea quæ dedi tibi, ſimilam, & oleum & 19 mel, quibus cibavi te, poſuiſti coram eis in oblationes & in cultum. Nonne facta ſunt omnia hæc? dicit Dñs Deus. Quomodo multiplicâſti irritare me 20 cœtus Iſrael? qui tuliſti filios tuos & filias tuas, ex quibus futurum erat ut egrederetur generatio ſancta coram me, & immolâſti eos illis in oblationem & cultum: Nunquid parum eſt in oculis tuis fornicatio tua? Et immolâſti 21 filios, & tradidiſti eos ut traducerentur illis. Non es recordata omnium pec- 22 catorum abominationum tuarum & idolorum tuorum, nec dierum antiquorum cùm eſſes tranſmigrans & derelicta, & afflicta in ſervitute tua eſſes. Quid erit in fine tuo ob omnia mala tua? Propheta dic ei: Væ tibi quia 23 peccâſti, væ tibi quia non es converſa, dicit Dñs Deus. Et ædificâſti tibi 24 aras, & feciſti tibi excelſa in omni platea. In capite omnis diviſionis iti- 25 neris conſtruxiſti excelſum tuum, & prophanâſti ſanctitatem tuam, & tete conjunxiſti ut coleres idola. Et multiplicâſti omnia idola tua cum omni tranſeunte, & multiplicâſti idola tua. Et fornicata es poſt filios Ægypti pro- 26 pinquos tuos opertos carne; & multiplicâſti idola tua ut irritares me. Et ecce levavi plagam potentiæ meæ ſuper te, & prohibui bonum tuum, 27 & tradam te in manum inimicorum tuorum villarum Philiſtinorum; ad quos ſi miſiſſem prophetas meos, erubeſcerent: tu autem non es converſa à via tua ſcelerata. Et fornicata es poſt filios Aſſur, eò quòd non ſci- 28 ebas Legem; & fornicata es cum eis, & etiam ignorâſti pœnitentiam. Et 29 multiplicâſti idola tua ut conjungereris cum populo Chanaan, & ut ambulares in legibus Chaldæorum: & etiam in hoc non cognoviſtis Legem. Quàm fortis fuit malitia cordis tui, dicit Dñs Deus: cùm faceres omnia 30 hæc ſicut opera mulieris meretricis quæ poteſtatem habet ſuiipſius. Et 31 cùm ædificares aras tuas in capite omnis bivii itineris, & excelſa tua faceres in omni platea. Nec fuiſti ſicut meretrix quæ utilitatem percipit ex mercede. Cœtus Iſrael ſimilis eſt mulieri quæ dilecta eſt marito, quæ fornicata 32 eſt ſuper eum, & reliquit virum ſuum, & mœchatur cum alienis. Omnibus 33 meretricibus dant mercedem, tu autem mercedem tuam contuliſti omnibus amatoribus tuis, & muneribus conduxiſti eos ut venirent ad te per circuitum, propter fornicationes tuas.

Verſio S Y R I A C A cum Interpretatione L A T I N A.

* ܘܢܣܒܬܝ ܡܐܢܐ ܕܫܘܒܚܟܝ. ܡܢ ܕܗܒܐ ܘܡܢ ܣܐܡܐ ܕܝܗܒܬ ܠܟܝ. ܘܥܒ
ܠܟܝ ܨܠܡܐ ܕܕܟܪܐ. ܘܙܢܝܬܝ ܒܗܘܢ. * ܘܢܣܒܬܝ ܡܐܢܐ ܕܨܒܘܬܟܝ. ܘܟܣܝܬܝ ܐ
ܘܡܫܚܝ ܘܒܣܡܝ. ܣܡܬܝ ܩܕܡܝܗܘܢ. * ܘܠܚܡܐ ܕܝܗܒܬ ܠܟܝ. ܣܡܝܕܐ ܘ
ܘܡܫܚܐ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. ܣܡܬܝܗܘܢ ܩܕܡܝܗܘܢ ܠܪܝܚܐ ܕܒܣܡܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪ
* ܘܢܣܒܬܝ ܒܢܝܟܝ ܘܒܢܬܟܝ ܕܝܠܕܬܝ ܠܝ. ܘܕܒܚܬܝ ܠܗܘܢ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. ܣ
ܡܢ ܙܢܝܘܬܟܝ. * ܘܢܟܣܬܝ ܒܢܝ ܘܝܗܒܬܝ ܠܗܘܢ. ܡܢ ܕܐܬܛܢܦܬܝ ܒܗܘܢ. * ܘܒ
ܛܢܦܘܬܟܝ ܘܙܢܝܘܬܟܝ. ܠܐ ܐܬܕܟܪܬܝ ܝܘܡܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟܝ. ܟܕ ܥܪܛܠܝܐ ܗܘܝܬܝ
ܘܡܬܦܠܦܠܐ ܒܕܡܐ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܟܝ. ܘܝ ܠܟܝ ܘܝ ܠܟܝ ܐ
ܡܪܘܬܐ. * ܒܢܝܬܝ ܠܟܝ ܒܝܬܐ ܪܒܐ. ܘܥܒܕܬܝ ܠܟܝ ܒܟܠܗܝܢ ܫܘܩܐ. * ܘ
ܟܠ ܐܘܪܚܐ ܒܢܝܬܝ ܦܪܟܝܟܝ. ܘܛܢܦܬܝ ܫܘܦܪܟܝ. ܘܦܫܛܬܝ ܪܓܠܝܟܝ. ܠܟ
ܥܒܪ. ܘܐܣܓܝܬܝ ܙܢܝܘܬܟܝ. * ܘܙܢܝܬܝ ܥܡ ܒܢܝ ܡܨܪܝܢ ܫܒܒܝܟܝ ܪܘܪܒܝ ܒ
ܘܐܣܓܝܬܝ ܙܢܝܘܬܟܝ. ܠܐܪܓܙܘܬܝ. * ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܘܒܕ ܦܘܩܕܢܝ
ܘܐܫܠܡܟܝ ܒܝܕ ܣܢܐܝܟܝ ܒܢܬܐ ܕܦܠܣܛܝܢܝ. ܕܡܗܦܟܢ ܗܘܝ ܠܟܝ ܡܢ ܐܘܪܚܬܟܝ ܙ
* ܘܙܢܝܬܝ ܥܡ ܒܢܝ ܐܬܘܪ. ܘܠܐ ܣܒܥܬܝ. * ܘܐܣܓܝܬܝ ܙܢܝܘܬܟܝ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܟ
ܘܕܟܠܕܝܐ. ܘܐܦ ܒܗܠܝܢ ܠܐ ܣܒܥܬܝ. * ܡܢܐ ܐܕܘܢ ܠܒܪܬܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪ
ܕܥܒܕܬܝ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܥܒܕܐ ܕܐܢܬܬܐ ܙܢܝܬܐ ܘܡܡܪܚܬܐ. * ܟܕ ܒܢܝܬܝ ܦ
ܒܟܠ ܪܝܫ ܐܘܪܚܐ. ܘܥܠܘܬܟܝ ܒܟܠ ܫܘܩ. * ܘܠܐ ܗܘܝܬܝ ܐܝܟ ܐܢܬܬܐ ܙ
ܕܡܟܢܫܐ ܐܓܪܐ. ܐܦܠܐ ܐܝܟ ܐܢܬܬܐ ܓܝܪܬܐ ܕܢܣܒܐ ܡܢ ܢܘܟܪܝܐ. * ܠܟܠܗܘܢ ܙ
ܝܗܒܝܢ ܐܓܪܐ. ܘܐܢܬܝ ܝܗܒܬܝ ܐܓܪܐ ܠܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܟܝ. ܘܫܘܚܕܝܢ ܝܗܒܬܝ ܠܗܘܢ ܒܙܢܝܘ
ܕܢܐܬܘܢ ܠܘܬܟܝ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܚܕܪܝܟܝ.

* Sumpſiſti quoque vaſa decôris tui, ex auro 17
nimirum & argento quod dederam tibi; &
faciens tibi ſimulacra maſculina, ſcortata es
cum eis. Sumpſiſti veſtes ornatûs tui, & ope- 18
ruiſti ea: unguentum meum & aromata mea
poſuiſti coram eis: Cibum quem dederam 19
tibi, ſimilam, mel, & oleum) in eſcam, po-
ſuiſti coram eis in odorem ſuffitûs, ait Do-
minus dominorum. Sumpſiſti filios filiáſque 20
tuas, quos mihi genueras, & ſacrificâſti eis in
cibum; præter ſcortationem tuam: Et jugu- 21
lâſti filios meos, & obtuliſti eis poſtquam la-
ſciviſſes cum eis. Inter tot abominationes & 22
ſcortationes tuas non es recordata dierum
adoleſcentiæ tuæ, quum nuda eſſes, algens,
& ſanguine conſperſa. Ad hæc omnia flagi- 23
tia tua (væ tibi, væ tibi, ait Dominus do-
minorum) Extruxiſti tibi ædem ampliſſi- 24
mam, & altaria feciſti tibi in omni platea:
In omnibus compitis ædificâſti fana tua, & 25
contaminâſti pulchritudiné tuam, extendens
crura tua cuicunque prætereunti: multipli-
câſti ſcortationes tuas, Et ſcortata es cum 26
Ægyptiis vicinis tuis ingenti carne præditis.
Cúmq; multiplicibus ſcortationibus tuis *adeò*
me provocâſſes ad iram, Ut attollerem ſuper 27
te manũ meum, imperia tua perderem, téque
traderem in manum hoſtium tuorum filiarum
Paleſtinorum, quæ te avocabant à viis tuis
meretriciis; Iterum fornicata es cum filiis 28
Aſſur, & non es ſatiata: Multiplicâſti forni- 29
cationem tuam ſuper terram Chanaan &
Chaldæorum, & ne his quidem contenta fu-
iſti. Quorſum judicarem filiam tuam, ait Do- 30
minus dominorum, quum feceris has omnes
actiones mulieris fornicariæ & impudentis?
Quum ædificaveris templa tua in omnibus 31
compitis, & altaria tua in cunctis plateis?
Nedum mulieri fornicariæ ſimilis es, quòd 32
hæc mercedem congreget; neque adulteræ
uxori *alicujus* viri, quòd *hæc* ab extraneis
accipiat. Omnibus ſcortis dant *alii* merce- 33
dem; tu verò mercedem ſolvis omnibus ama-
toribus tuis; & munerata es eis ſcortationes
tuas, ut ad te confluerent undequaque.

Verſio A R A B I C A cum Interpretatione L A T I N A.

* واخذت اواني فخرك * ومن ذهبي ومن فضتي الذين اعطيتك اياهم * وصنعت لك صـ
ذكورية وزنيت بهن * واخذت ثيابك الملونة ورديتيهما * وزيتي وبخوري وضعتيهما امام وجوهم
* وخبزي الذي اعطيته لك * سميذا وزيتا وعسلا اطعمتك * وضعتيهم امام وجوههما لر
طيب * وكان بعد هذا يقول ادوناي الرب * فاخذت بنيك وبناتك الذين ولدتيهم
وذبحتيهم لها للهلاك * هل زنيت قليلا * وذبحت اولادك واسلمتيهم عند ما زنيت بهـ
* هذا اعظم من كل زناك ورذالاتك * ولم تذكري ايام شبيبتك * لما كنت عر
ومفضوحة * تخضبه بدمك عشت * وكان بعد جميع شرورك * يقول ادوناي الر
* وبنيت لذاتك بيتا للزنا * وصنعت لذاتك مذبحا في كل شارع * وعلي راس كل طر
بنيت مواخيرك * وافسدت حسنك * واخرجت ساقيك لكل مار الطريق * واكثرت ز
* وزنيت ببني مصر جيرانك العظيمي الاجسام * وبضروب كثيرة زنيت لتغضبيني * و
امدد يدي عليك * وانزع شرايعك * واسلمك الي نفوس مبغضيك بنات الغربا
القبايل التي امالتك عن طريقك التي نافقت فيها * وزنيت مع بنات اسور * والـ
هكذا امتليت * وزنيت ولم تشبعي * واكثرت عهودك الي ارض الكلدانيين * و
هل شبعت * بماذا اصنع عهودك يقول ادوناي الرب * عند ما صنعت جميع هذا اعـ
امراة زانية * زنيت مثلثا مع بناتك * وبنيت ماخورك علي كل راس طريق * وصنعت ا
في كل شارع * ولم تكوني كزانية تجمع الاجر * المراة الزانية شبيهة بك * من رجلها تا
الاجر * وكجميع الذين زنوا بها تدفع اجرها * وانت اعطيت الاجر لجميع الذين يرضو
بك * وارغبتيهم ليادوا اليك من حولك في زناك *

* *Sumpſiſti quoque ſupellectilem tuam pre-* 17
tioſiſſimam, & ex auro argentóve meo
quæ tibi dederam; confectiſque tibi ima-
ginibus maſculeis, iis fornicata es: Ad 18
hæc ſumpſiſti veſtes tuas verſicolores, &
operuiſti eas: & oleum meum, thuſque
meum poſuiſti ante facies earum: Panem 19
meum quem dederam tibi, ſimilam, oleũ,
& mel, quibus te cibaveram, poſuiſti an-
te facies earum in odorem ſuavcolentem.
Fuit etiam poſthæc, dicit Adonai Domi- 20
nus, ut accipiens filios tuos & filias tuas,
quos genueras, jugulaveris eos ipſis in in-
teritum, num parum fornicata es? Ju- 21
gulâſti filios tuos, & tradidiſti eos poſt-
quam fornicata eſſes in ipſis. Hæc eſt ma-
xima omnium ſcortationum & abomina-
tionum tuarum. Et non es recordata die- 22
rum adoleſcentiæ tuæ, quum eſſes nuda
& turpis, tuoque ſanguine conſperſa vi-
veres. Fuit etiam poſt omnia ſcelera tua, 23
dicit Adonai Dominus, Ut extrueres tibi 24
domum pro fornicatione, facereſque tibi
aram in omni platea: Ad initium cujuſ- 25
cunque viæ ædificâſti cauponas tuas, &
corrupiſti pulchritudinem tuam: produxiſti
crura tua omnibus viam tranſeuntibus, &
multiplicâſti fornicationem tuam: For- 26
nicata es cum filiis Ægypti vicinis tuis
qui magnis ſunt corporibus; denique modis
permultis fornicata es, ut me ad iracundiã
provocares. Quapropter en extendam ſu- 27
per te manum meam, auferam leges tuas,
tradámque te animabus odientium te, filia-
rum Alienorum, nationũ quæ te averterunt
à via tua in qua impiè te gerebas. For- 28
nicata quoque es cum filiabus Aſſur, & ne
ita quidem explevisti libidinem tuam?
fornicata es, & nondum ſatiata? Multi- 29
plicâſti fœdera tua cum terra Chaldæorũ,
& nihilominus haud ſaturata es. In qua- 30
nam æſtimatione ponam fœdera tua, dicit
Adonai Dominus, quandoquidem feciſti o-
mnes hujuſmodi actiones mulieris fornica-
riæ? Fornicata es tripliciter cum filiabus 31
tuis: & ædificâſti cauponam tuam ad o-
mne viæ initium, & feciſti fundamentum
ejus in omni platea. Non fuiſti ſicut for- 32
nicaria mercedem congregans: mulier for-
nicaria tibi ſimilis eſt: à marito ſuo acci-
pit mercedem, Et omnibus cum ea for- 33
nicantibus dat mercedem ſuam. Sic tu de-
diſti mercedem omnibus iis qui te dilige-
bant, & fornicatione tuâ concitâſti libi-
dinem eorum, ut venirent ad te è circuitu
tuo.

יחזקאל : יו

non te post & ,tuis fornicationibus in *mulieribus à* oppositum te in fuit Et
34 וַיְהִי־בָךְ הֵפֶךְ מִן־הַנָּשִׁים בְּתַזְנוּתַיִךְ וְאַחֲרַיִךְ לֹא
fuisti & ,tibi data sit non merces & ,mercedem *te dando in* & :fuit fornicatũ
זוּנָּה וּבְתִתֵּךְ אֶתְנָן וְאֶתְנַן לֹא נִתַּן־לָךְ וַתְּהִי
dixit Sic .Domini verbum audi meretrix Propterea .*oppositum in*
35 36 לְהֶפֶךְ : לָכֵן זוֹנָה שִׁמְעִי דְּבַר־יְהוָה : כֹּה־אָמַר
tua *nuditas* est revelata & , *tuum æs effundi* Pro : Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה יַעַן הִשָּׁפֵךְ נְחֻשְׁתֵּךְ וַתִּגָּלֶה עֶרְוָתֵךְ
idola omnia super & : tuos amatores super tuis fornicationibus in
בְּתַזְנוּתַיִךְ עַל־מְאַהֲבָיִךְ וְעַל כָּל־גִּלּוּלֵי
.eis dedisti quos tuorũ filiorũ *sanguines* juxta &,tuarũ abominationũ
תוֹעֲבוֹתַיִךְ וְכִדְמֵי בָנַיִךְ אֲשֶׁר נָתַתְּ לָהֶם :
, *eis super dulcuisti quibus* tuos amatores omnes *congregans* ego ecce Ideò
37 לָכֵן הִנְנִי מְקַבֵּץ אֶת־כָּל־מְאַהֲבַיִךְ אֲשֶׁר עָרַבְתְּ עֲלֵיהֶם
: habebas odio quos universis *super* dilexisti quos omnes &
וְאֵת כָּל־אֲשֶׁר אָהַבְתְּ עַל כָּל־אֲשֶׁר שָׂנֵאת
, *eos ad* tuã *nuditatem* revelabo & ,undique te adversus eos congregabo &
וְקִבַּצְתִּי אֹתָם עָלַיִךְ מִסָּבִיב וְגִלֵּיתִי עֶרְוָתֵךְ אֲלֵהֶם
,adulterarum judiciis te judicabo Et .tuam *nuditatẽ* omnem videbunt &
38 וְרָאוּ אֶת־כָּל־עֶרְוָתֵךְ : וּשְׁפַטְתִּיךְ מִשְׁפְּטֵי נֹאֲפוֹת
dabo Et .zeli & iræ sanguinem te dabo & :sanguinem effundentium &
39 וְשֹׁפְכוֹת דָּם וּנְתַתִּיךְ דַּם חֵמָה וְקִנְאָה : וְנָתַתִּי
,tua excelsa *demolientur* &,tuũ excelsum destruent &,eorum manum in te
אוֹתָךְ בְּיָדָם וְהָרְסוּ גַבֵּךְ וְנִתְּצוּ רָמֹתַיִךְ
te dimittent & .tuæ gloriæ vasa *capient* &,tuis vestimentis te *exspoliabunt* &
וְהִפְשִׁיטוּ אוֹתָךְ בְּגָדַיִךְ וְלָקְחוּ כְּלֵי תִפְאַרְתֵּךְ וְהִנִּיחוּךְ
obruent & ,concionem te super facient ascendere Et .discoopertam & ,nudam
40 עֵירֹם וְעֶרְיָה : וְהֶעֱלוּ עָלַיִךְ קָהָל וְרָגְמוּ
tuas domos comburent Et .suis gladiis in te perfodient &:lapide in te
41 אוֹתָךְ בָּאָבֶן וּבִתְּקוּךְ בְּחַרְבוֹתָם : וְשָׂרְפוּ בָתַּיִךְ
: plurimarum mulierum oculis in judicia te in facient & , igni in
בָּאֵשׁ וְעָשׂוּ־בָךְ שְׁפָטִים לְעֵינֵי נָשִׁים רַבּוֹת
.ultra dabis non mercedem etiam & , *meretrice à* te faciam cessare &
וְהִשְׁבַּתִּיךְ מִזּוֹנָה וְגַם־אֶתְנַן לֹא תִתְּנִי־עוֹד :
: te à meus zelus recedet & , te in meam iram faciam requiescere Et
42 וַהֲנִחֹתִי חֲמָתִי בָּךְ וְסָרָה קִנְאָתִי מִמֵּךְ
fueris recordata non quòd eo Pro .amplius irascar non & , quiescam &
43 וְשָׁקַטְתִּי וְלֹא אֶכְעַס עוֹד : יַעַן אֲשֶׁר לֹא־זָכַרְתְּי
etiam & : his omnibus in me provocaveris &,*tuarum pueritiarum* dierum
אֶת־יְמֵי נְעוּרַיִךְ וַתִּרְגְּזִי־לִי בְּכָל־אֵלֶּה וְגַם־
non Et .Deus Dominus dixit , dedi caput in tuam viam ecce ego
אֲנִי הֵא דַּרְכֵּךְ בְּרֹאשׁ נָתַתִּי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה וְלֹא
Ecce .tuis abominationibus omnibus super cogitationem fecisti
44 עָשִׂיתִי אֶת־הַזִּמָּה עַל כָּל־תּוֹעֲבֹתָיִךְ : הִנֵּה
.ejus filia ,mater Sicut : dicendo ,*parabolizabit* ,te super *parabolizans* .omnis
כָּל־הַמֹּשֵׁל עָלַיִךְ יִמְשֹׁל לֵאמֹר כְּאִמָּה בִּתָּהּ :
soror & : suos filios & ,suum virum *fastidiens* , tu tuæ matris Filia
45 בַּת־אִמֵּךְ אַתְּ גֹּעֶלֶת אִישָׁהּ וּבָנֶיהָ וַאֲחוֹת
vestra Mater.suos filios &,suos viros sunt abominatæ quæ ,tu tuæ sororis
אֲחוֹתֵךְ אַתְּ אֲשֶׁר גָּעֲלוּ אַנְשֵׁיהֶן וּבְנֵיהֶן אִמְּכֶן
Someron *magna* tua soror Et .Emoreus vester pater & , Chittæa
46 חִתִּית וַאֲבִיכֶן אֱמֹרִי : וַאֲחוֹתֵךְ הַגְּדוֹלָה שֹׁמְרוֹן
parva tua soror Et .tuam sinistram *super habitans* , ejus *filiæ &* ,ipsa
הִיא וּבְנוֹתֶיהָ הַיּוֹשֶׁבֶת עַל־שְׂמֹאולֵךְ וַאֲחוֹתֵךְ הַקְּטַנָּה
earum viis in non Et .ejus *filiæ* & ,Sedom ,tuis dexteris à *habitans* ,te *præ*
47 מִמֵּךְ הַיּוֹשֶׁבֶת מִימִינֵךְ סְדֹם וּבְנוֹתֶיהָ : וְלֹא בְדַרְכֵיהֶן
paululum velut : fecisti earum abominationes secundùm *&* , ambulasti
הָלַכְתְּ וּבְתוֹעֲבוֹתֵיהֶן עָשִׂיתִי כִּמְעַט
.tuis viis omnibus in illis præ es corrupta *&* , *pauxillum*
קָט וַתַּשְׁחִתִי מֵהֵן בְּכָל־דְּרָכָיִךְ :

Versio VULG. LAT.

34 Factúmque est in te contra consuetudinem mulierum in fornicationibus tuis, & post te non erit fornicatio: in eo enim quòd dedisti mercedes, & mercedes non accepisti, factum est in te contrarium. 35 Propterea, meretrix, audi 36 verbum Domini: Hæc dicit Dominus Deus; Quia effusum est æs tuum, & revelata est ignominia tua in fornicationibus tuis super amatores tuos, & super idola abominationũ tuarum in sanguine filiorum tuorum, quos dedisti eis: 37 Ecce ego congregabo omnes amatores tuos, quibus commista es; & omnes quos dilexisti, cum universis quos oderas: & congregabo eos super te undique, & nudabo ignominiã tuam coram eis, & videbunt omnem turpitudinẽ 38 tuã. Et judicabo te judiciis adulterarum, & effundentium sanguinem: & dabo te in sanguinem fu- 39 roris & zeli. Et dabo te in manꝰ eorum, & destruent lupanar tuũ: & demolientur prostibulũ tuum: & denudabunt te vestimentis tuis, & auferent vasa decoris tui: & derelinquent te nudam, ple- 40 námque ignominiâ: Et adducent super te multitudinem, & lapidabunt te lapidibus, & truci- 41 dabunt te gladiis suis. Et comburent domos tuas igni, & facient in te judicia in oculis mulierum plurimarum: & desines fornicari, & mercedes ultrà non da- 42 bis. Et requiescet indignatio mea in te: & auferetur zelus meus à te, et quiescã, nec irascar amplius. 43 Eò quòd non fueris recordata dierum adolescentiæ tuæ, & provocâsti me in omnibus his: quapropter & ego vias tuas in capite tuo dedi, ait Dominus Deus, et non feci juxta scelera tua in omnibus abominationibus tuis. 44 Ecce omnis, qui dicit vulgò proverbium, in te assumet illud, dicens; Sicut mater, ita & filia e- 45 jus. Filia matris tuæ es tu, quæ projecit virũ suum, & filios suos: & soror sororum tuarum es tu, quæ projecerunt viros suos, & filios suos: mater vestra Cethæa, 46 & pater vester Amorrhæus. Et soror tua major, Samaria, ipsa et filiæ ejus, quæ habitant ad sinistram tuam: soror autem tua minor te, quæ habitat à dextris tuis, 47 Sodoma, & filiæ ejus. Sed nec in viis earũ ambulâsti, neque secundùm scelera earũ fecisti pauxillũ minùs: penè sceleratiora fecisti illis in omnibus viis tuis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

34 Καὶ (π) ἐγένετο ἐν σοὶ διεστραμμένον παρὰ τὰς γυναῖκας ἐν τῇ πορνείᾳ σου, καὶ μετὰ σοῦ πεπορνεύκασιν, ἐν τῷ (ρ) προσδιδόναι σε μισθώματα, καὶ σοὶ μισθώματα οὐκ ἐδόθη, καὶ 35 ἐγένετο ἐν σοὶ (σ) διεστραμμένα. Διατοῦτο 36 πόρνη ἄκουε λόγον κυρίου. Τάδε λέγει (τ) κύριος, Ἀνθ' ὧν ἐξέχεας τὸν χαλκόν σου, καὶ ἀποκαλυφθήσεται ἡ αἰσχύνη σου ἐν τῇ πορνείᾳ σου πρὸς τοὺς ἐραστάς σου, καὶ (υ) εἰς πάντα τὰ ἐνθυμήματα τῶν ἀνομιῶν σου, καὶ ἐν τοῖς αἵμασι τῶν τέκνων σου ὧν ἔδωκας 37 αὐτοῖς· Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ (φ) ἐπισυνάγω πάντας τοὺς ἐραστάς σου ἐν οἷς ἐπεμίγης ἐν αὐτοῖς, καὶ πάντας οὓς ἠγάπησας, σὺν πᾶσιν οἷς ἐμίσεις, καὶ συνάξω αὐτοὺς ἐπὶ σὲ κυκλόθεν, καὶ ἀποκαλύψω τὰς κακίας σου πρὸς αὐτοὺς, καὶ ὄψονται πᾶσαν τὴν αἰσχύνην σου, 38 Καὶ ἐκδικήσω σε ἐκδικήσει μοιχαλίδος, (χ) καὶ θήσω σε ἐν αἵματι θυμοῦ καὶ ζήλου. 39 Καὶ παραδώσω σε εἰς χεῖρας αὐτῶν, καὶ (ψ) κατασκάψουσι τὸ πορνεῖόν σου, καὶ καθελοῦσι τὴν βάσιν σου, καὶ ἐκδύσουσί σε (ω) τὰ ἱμάτιά σου, καὶ λήψονται τὰ σκεύη τῆς καυχήσεώς σου· καὶ ἀφήσουσί σε γυμνὴν, καὶ 40 ἀσχημονοῦσαν. Καὶ ἄξουσιν ἐπὶ σὲ ὄχλους, καὶ λιθοβολήσουσί σε ἐν λίθοις, καὶ κατασφάξουσί σε ἐν τοῖς ξίφεσιν αὐτῶν. 41 Καὶ ἐμπρήσουσι τοὺς οἴκους σου (ʼ) πυρὶ, καὶ ποιήσουσιν ἐν σοὶ ἐκδικήσεις ἐνώπιον γυναικῶν πολλῶν· καὶ ἀποστρέψω σε (α) ἐκ πορνείας, καὶ 42 μισθώματα οὐ μὴ (β) δῷς οὐκέτι. Καὶ ἐπαφήσω τὸν θυμόν μου ἐπὶ σὲ, καὶ ἐξαρθήσεται ὁ ζῆλός μου ἐκ σοῦ· καὶ ἀναπαύσομαι, καὶ οὐ μὴ 43 μεριμνήσω οὐκέτι. Ἀνθ' ὧν οὐκ ἐμνήσθης (γ) τῆς νηπιότητός σου, καὶ ἐλύπεις με ἐν πᾶσι τούτοις· καὶ (δ) ἰδοὺ ἐγὼ τὰς ὁδούς σου εἰς κεφαλήν σου δέδωκα, λέγει κύριος. καὶ οὕτως ἐποίησας τὴν (ε) ἀσέβειαν ἐπὶ πάσαις ταῖς ἀνομίαις 44 σου. Ταῦτά ἐστι πάντα ὅσα εἶπαν κατὰ σοῦ ἐν παραβολῇ, λέγοντες, Καθὼς ἡ (ζ) μήτηρ 45 θυγάτηρ· Καὶ ἡ θυγάτηρ τῆς μητρός σου σὺ εἶ, ἡ ἀπωσαμένη τὸν ἄνδρα αὐτῆς καὶ τὰ τέκνα αὐτῆς, καὶ (η) ἀδελφαὶ τῶν ἀδελφῶν σου αἱ ἀπωσάμεναι τοὺς ἄνδρας αὐτῶν καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν. ἡ μήτηρ ὑμῶν Χετταία, καὶ ὁ 46 πατὴρ (θ) Ἀμορραῖος. Ἡ ἀδελφὴ ὑμῶν ἡ πρεσβυτέρα Σαμάρεια, αὐτὴ καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς, ἡ κατοικοῦσα ἐξ εὐωνύμων σου· καὶ ἡ ἀδελφή σου ἡ νεωτέρα σου, ἡ κατοικοῦσα ἐκ δεξιῶν σου, Σόδομα καὶ αἱ θυγατέρες 47 αὐτῆς. Καὶ οὐδ' ὡς ἐν ταῖς ὁδοῖς αὐτῶν ἐπορεύθης, οὐδὲ κατὰ τὰς ἀνομίας αὐτῶν ἐποίησας παρὰ μικρὸν, καὶ ὑπέρκεισαι αὐτὰς (ι) ἐν πάσαις ταῖς ὁδοῖς σου.

Et factũ est in te perversum præter mulieres in fornicatione tua: et (b) tecum sunt fornicatæ, in eo quòd dares mercedes, & mercedes non sunt datæ tibi: & facta sunt in te perversa. Proptereà 35 *meretrix, audi verbum Domini:* 36 *Hæc dicit Dominus; Quia effudisti æs tuũ, et revelabitur ignominia tua in fornicatione tua ad amatores tuos, & in omnes cogitationes iniquitatum tuarũ, et in sanguinibus filiorum tuorũ quos dedisti eis. Ideò ecce ego (c) supercongrego omnes amatores* 37 *tuos, in quibus commista es in eis, & omnes, quos dilexisti, cum universis, quos oderas. Et congregabo eos super te per circuitũ: et revelabo malitias tuas ad eos: & videbunt cunctam ignominiam tuã: Et ulciscar te ultione (k)* 38 *adulteræ: & ponã te in sanguine furoris, & zeli. Et tradam te* 39 *in manus eorum: & suffodient lupanar tuum, & destruent basim tuam, & nudabunt te vestimentis tuis, & tollent vasa gloriationis tuæ: & dimittent te nudam, & plenam ignominiæ. Et adducent* 40 *super te turbas & lapidabunt te in lapidibus: & jugulabunt te in gladiis suis: Et succendent domos* 41 *tuas igni: & facient in te ultiones coram mulieribus plurimis. Et avertam te à fornicatione, & mercedes ultrà (l) non dabis: Et* 42 *immittam furorem meum super te: & auferetur zelus meus à te: & requiescam, & non ero ultrà sollicitus: Quia non es recordata in-* 43 *fantiæ tuæ, & contristabas me in his omnibus. Et ecce ego vias tuas in caput tuũ dedi, dicit Dominus: et (m) sic fecisti impietatem super cunctis iniquitatibus tuis. Hæc* 44 *sunt omnia, quæ dixerunt contra te in parabola dicentes; Sicut mater, et filia: Et (n) filia matris tuæ* 45 *es tu, quæ repulit virum suum, et filios suos: et (o) sorores sororum tuarũ, quæ repulerunt viros suos, et filios suos. Mater (p) vestra Chettæa, et pater Amorrhæus. So-* 46 *ror vestra senior Samaria, hæc, et filiæ ejus, quæ habitat à sinistris tuis: et soror tua junior te, quæ habitat à dextris tuis, Sodoma, et filiæ ejus. Sed nec sic qui-* 47 *dem in viis earũ ambulâsti, neque secundùm iniquitates illarũ egisti: paulominùs et supergressa es eas in omnibus viis tuis.*

MS. A. (π) ἐγένετό σοι ἐξεστραμμένον (ρ) προδιδόναι (σ) ἐξεστραμμένα. (τ) ἀδωναὶ κύριος, (υ) ὅτι (φ) ἐπὶ σὲ συνάγω (χ) καὶ * ἐκχεούσης αἷμα, καὶ θήσομαί σε ἐν τῷ αἵματί σου, καὶ δώσω σε εἰς αἷμα θυμοῦ καὶ * ζήλους. (ψ) * κατασκάψουσιν (ω) τὸν ἱματισμόν (ʼ) ἐν πυρὶ, (α) ἀπὸ τῆς πορνείας σου, (β) δῷς (γ) τὰς ἡμέρας τῆς (δ) ἐγὼ ἰδοὺ (ε) ἀσέβειάν σου ὅτι (ζ) μήτηρ καὶ ἡ θυγάτηρ τῆς μητρὸς σὺ εἶ, (η) αἱ ἀδελφαί σου τῶν ἀδελφῶν αἱ (θ) ὑμῶν (ι) * παρὰ μικρὸν ἐν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

34 וַהֲוָה בִיךְ שְׁנוּ כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל מִן מְדִינָתָא בְּטָעֲוָתִיךְ וּבָתְרִיךְ לָא הֲוָת דְטָעֲיַת כְּוָתִיךְ
35 וּבְמִתְּנִיךְ אַגַּר וְאַגַּר לָא אִתְיְהַב לִיךְ וַהֲוֵית לִשְׁנוּ : בְּכֵן דְעוּבָדְהָא כְּנַפְּקַת בְּרָא כְּנִשְׁתָּא
36 דְיִשְׂרָאֵל קַבִּילִי פִּתְגָמָא דַיְיָ : כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים חֲלַף דְאִגְלִיאַת בַּהֲתָתִיךְ וְאִתְחֲזִיאַת
קְלָנִיךְ בְּטָעֲוָתִיךְ בָּתַר רַחֲמַיִךְ וְיַת כָּל חוֹבֵי פּוּלְחָן טָעֲוַת תּוֹעֲבָתִיךְ וּבְחוֹבַת דַם בְּנַיִךְ
37 דְנַכְסַת לְהוֹן : בְּכֵן הָא אֲנָא מְכַנֵּישׁ יַת כָּל רַחֲמַיִךְ דְאִתְרְעִית לְמִטְעֵי בָתְרֵיהוֹן וְיַת כָּל
דִרְחִימַת עִם כָּל דִשְׂנֵית וְאַכְנֵישׁ יָתְהוֹן עֲלַיִךְ מִסְחוֹר סְחוֹר וַאֲגַלֵּי בַּהֲתָתִיךְ לְהוֹן וְיֶחֱזוֹן יַת
38 כָּל קְלָנִיךְ : וְאֶתְפְּרַע מִנִּיךְ פּוּרְעָנוּת גַיְפָן וְאָשְׁדַת דַם וְאֶמְסְרִנִּיךְ לִקְטוֹל בִּרְגַז וּבְחֵימָה :
39 וְאֶמְסַר יָתִיךְ בִּידֵיהוֹן וִיפַגְּרוּן שׁוּרִיךְ וִיתָרְעוּן רָמָתִיךְ וְיַשְׁלְחוּן יָתִיךְ לְבוּשֵׁי יְקָרִיךְ וְיִסְּבוּן
40 מָנֵי תוּשְׁבַּחְתִּיךְ וְיִשְׁבְּקוּנִיךְ מְטַלְטְלָא וּשְׁבִיקָא : וְיַסְקוּן עֲלַיִךְ מַשְׁרְיָן וְיִרְגְּמוּן יָתִיךְ בְּאַבְנֵי
41 קֶלַע וִיבַזְעוּנִיךְ בְּסַיְפֵיהוֹן : וְיוֹקְדוּן בָּתַּיִךְ בְּנוּרָא וְיַעַבְדוּן בִּיךְ פּוּרְעָנוּת דִינִין לְעֵינֵי מְדִינָן
42 סַגִּיאָן וְאֶבַטְּלִנִּיךְ מִלְּמֶהֱוֵי כְּנַפְּקַת בָּרָא וְאַף אַגַּר לָא תִתְּנִין עוֹד : וַאֲנִיחַ חֵימְתִי בִּיךְ וְתִעְדֵּי
43 קִנְאָתִי מִנִּיךְ וְאֶסּוֹף וְלָא יְהֵי רוּגְזִי עוֹד : חֲלַף דְלָא אִדְכַּרְתְּ יַת יוֹמִין דְמִלְּקַדְמִין וַהֲוֵית
מַרְגְּזָא קֳדָמַי בְּכָל אִלֵּין וְאַף אֲנָא פּוּרְעָנוּת אוֹרְחָתִיךְ בְּרֵישׁ יְהָבִית אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לָא
44 עֲבַדְתְּ לִיךְ עֵיצָה לִמְתַב מִן כָּל תּוֹעֲבָתִיךְ : הָא כָּל דִמְתֵיל עֲלַךְ יִמְתּוֹל לְמֵימַר כְּעוּבָדֵי
45 אִמָּא כֵּן בְּרַתָּא : לְמָא הֲוֵית בְּרַתָּא לְאַרְעָא דִכְנַעַן לְמֶעְבַּד כְּעוּבָדֵי עַמָּא דְאִתְרַבּוּ אֲבָהָן עִם
בְּנִין וְאַחְתָא לִסְדוֹם וַעֲמוֹרָה דְאִשְׁתֵּיצִי עִמְּהוֹן אֲבָהָן עִם בְּנִין הֲלָא אִמְּכוֹן שָׂרָה בֵּינֵי
חִתָּאֵי הֲוָת וְלָא עֲבַדַת כְּעוּבָדֵיהוֹן וַאֲבוּכוֹן אַבְרָהָם בֵּינֵי אֱמוֹרָאֵי וְלָא הֲלִיךְ בְּעֵיצַתְהוֹן :
46 וְאַחְתִּיךְ רַבְּתָא שֹׁמְרוֹן הִיא וְכַפְרָנָהָא דְיָתְבָא עַל סְמָאלִיךְ וְאַחְתִּיךְ דִזְעֵירָא מִנִּיךְ דְיָתְבָא
47 מִימִינִיךְ סְדוֹם וְכַפְרָנָהָא : וְאִלּוּ בְּאוֹרְחָתְהוֹן הֲלַכְתְּ וּכְתוֹעֲבָתְהוֹן עֲבַדְתְּ חֲסִיד הֲוָה
חוֹבִיךְ אֱלָהֵן דְאַסְגֵּית לְחַבָּלָא מִנְּהוֹן בְּכָל אוֹרְחָתִיךְ :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et fuit in te diversum, cœtꝰ Israel, ab aliis provinciis in fornicationibꝰ tuis, 34 & post te non fuit quæ fornicata fuerit sicut tu, in eo quòd dedisti mercedem, & merces non est data tibi, & facta es in contrarium. Propterea tu 35 cujꝰ opera sunt sicut meretricis, ô cœtus Israel, suscipe verbum Dñi. Hæc 36 dicit Dñs Deus: Pro eo quòd revelata est confusio tua, & apparuit ignominia tua, cùm fornicata fueris post amatores tuos, & in omnibꝰ peccatis cultus idolorũ & abominationum tuarũ, & in peccato sanguinis filiorum tuorũ quos immolâsti eis. Proptereà ecce ego congrego oẽs amatores tuos 37 quos dilexisti ut errares post eos, & oẽs quos dilexisti, cùm omnibꝰ quos odisti, & congregabo eos sup te per circuitũ, & revelabo confusionem tuã eis, & videbũt oẽm ignominiã tuã. Et ultionẽ sumam ex te, ultionẽ adul- 38 terantiũ & effundentiũ sanguinẽ; & tradã te in occisionẽ in ira & in furore. Et tradã te in manꝰ eorũ, & destruẽt muros tuos, & demolientur ex- 39 celsa tua, & expoliabũt te vestibꝰ tuis pretiosis, et tollẽt vasa laudabilia tua, & relinquent te transmigrantẽ & derelictã. Et ascendẽt contra te exercitꝰ, 40 & lapidabũt te lapidibꝰ fundæ, & præscindẽt te gladiis suis. Et comburẽt 41 domos tuas igne; & facient in te ultionẽ judiciorũ in oculis provinciarũ multarũ. & faciã ut desinas esse velut meretrix, & etiam mercedẽ non dabis ampliꝰ. Et requiescere faciã indignationẽ meã in te, & auferetur zelꝰ meꝰ 42 à te: & colligã furorẽ meũ, & non erit ampliꝰ. Pro eo quòd non es recor- 43 data dierũ priscorũ, & irritâsti me omnibꝰ his: ego quoq; ultionẽ viæ tuæ in caput dedi, dicit Dñs Deꝰ, & non inisti tibi consiliũ ut converteris ab omnibꝰ abominationibꝰ tuis. Ecce omnis qui proverbiũ sumit, sup te assu- 44 met illud, dicens: Qualia opera matris, talia filiæ. Quare facta es filia terræ 45 Chanaan, ut faceres juxta opera populi ubi *educati* sunt patres cum filiis, & sorores Sodomæ & Gomorræ, quæ consumptæ sũt cum eis, & patres cum filiis? Nonne mater vestra Sara erat inter Hitthæos, & non fecit juxta opera eorũ? Et pater vester Abraham fuit inter Amorræos, & non ambulavit in consiliis eorũ; Et soror tua major Samaria ipsa, & villæ ejꝰ, quæ habitabat 46 ad sinistram tuam, & soror tua minor te, quæ habitabat ad dexteram tuam, Sodoma, & villæ ejus. Si enim in viis earũ ambulasses, & juxta abominati- 47 ones earum fecisses, tolerabile esset peccatum tuum: sed longè corruptior fuisti quàm illæ in omnibus viis tuis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܬܦܪܫܬܝ ܡܢ ܢܫܐ ܒܙܢܝܘܬܟܝ. ܟܕ ܐܢܬܝ ܝܗܒܐ ܗܘܝܬܝ ܐܓܪܐ. ܘܐܓܪܐ ܠܐ ܝܗܒܝܢ ܗܘܘ ܠܟܝ
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܙܢܝܬܐ. ܫܡܥܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܫܕܬܝ
ܢܚܫܟܝ: ܘܓܠܝܬܝ ܦܘܪܫܝܟܝ ܒܙܢܝܘܬܟܝ ܠܪܚܡܝܟܝ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪܝ
ܛܢܦܘܬܟܝ: ܘܕܡܐ ܕܒܢܝܟܝ ܕܝܗܒܬܝ ܠܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܡܟܢܫ ܐܢܐ
ܠܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܟܝ ܕܐܬܒܣܡܬܝ ܒܗܘܢ. ܘܠܟܠ ܕܪܚܡܬܝ. ܥܡ ܕܣܢܝܬܝ. ܘܐܟܢܫ ܐܢܘܢ
ܥܠܝܟܝ ܡܢ ܚܕܪܝܟܝ. ܘܐܓܠܐ ܛܢܦܘܬܟܝ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܘܢܚܙܘܢ ܟܠܗ ܛܢܦܘܬܟܝ
* ܘܐܕܘܢܟܝ ܕܝܢܐ ܕܓܝܪܬܐ. ܘܕܝܢܐ ܕܐܫܕܝ ܕܡܐ. ܘܐܬܠܟܝ ܠܩܛܠܐ: ܘܠܚܡܬܐ
ܘܠܛܢܢܐ. * ܘܐܫܠܡܟܝ ܒܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܢܣܚܦܘܢ ܒܝܬ ܟܘܡܪܝܟܝ. ܘܢܥܩܪܘܢ
ܘܢܫܠܚܘܢܟܝ ܠܒܘܫܝܟܝ. ܘܢܣܒܘܢ ܡܐܢܐ ܕܫܘܒܚܟܝ. ܘܢܫܒܩܘܢܟܝ ܥܪܛܠܝܬܐ. * ܘܢܣܩܘܢ
ܥܠܝܟܝ ܟܢܫܐ. ܘܢܪܓܡܘܢܟܝ ܒܟܐܦܐ. ܘܢܨܠܘܢܟܝ ܒܣܝܦܝܗܘܢ. * ܘܢܘܩܕܘܢ
ܒܗ ܢܘܪܐ. ܘܢܥܒܕܘܢ ܒܟܝ ܕܝܢܐ ܠܥܝܢܝ ܢܫܐ ܣܓܝܐܬܐ. ܘܐܒܛܠܟܝ ܡܢ ܙܢܝܘܬܐ. ܘܐܦ
ܠܐ ܬܬܠܝܢ ܐܓܪܐ. * ܘܐܢܝܚ ܚܡܬܝ ܒܟܝ. ܘܬܥܒܪ ܛܢܢܝ. ܘܐܫܬܠܐ. ܘܠܐ ܐܪܓܙ
ܬܘܒ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܐܬܕܟܪܬܝ ܝܘܡܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟܝ. ܘܐܪܓܙܬܝܢܝ ܒܟܠܗܝܢ ܗܠܝܢ. ܘܐܦ ܐܢܐ
ܗܐ ܦܪܥܬ ܐܘܪܚܟܝ ܒܪܝܫܟܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܬܝ ܛܢܦܘܬܐ ܘܙܢܝܘܬܐ. * ܘܟܠ
ܕܡܡܬܠ ܡܬܠܐ ܥܠܝܟܝ ܢܡܬܠ. ܘܢܐܡܪ. ܐܝܟ ܐܡܐ ܐܝܟ ܒܪܬܐ. * ܒܪܬ ܐܡܟܝ ܐܢܬܝ
ܕܫܒܩܬ ܒܥܠܗ ܘܒܢܝܗ. ܘܚܬܐ ܐܢܬܝ ܕܚܬܘܬܟܝ ܕܫܒܩܝ ܠܒܥܠܝܗܝܢ ܘܠܒܢܝܗܝܢ. ܐܡܟܝܢ
ܚܬܝܬܐ. ܘܐܒܘܟܝܢ ܐܡܘܪܝܐ. * ܘܚܬܟܝ ܩܫܝܫܬܐ ܫܡܪܝܢ. ܗܝ ܘܒܢܬܗ. ܕܝܬܒܐ
ܡܢ ܣܡܠܟܝ. ܘܚܬܟܝ ܙܥܘܪܬܐ ܕܝܬܒܐ ܡܢ ܝܡܝܢܟܝ. ܣܕܘܡ. ܘܒܢܬܗ. * ܘܠܐ ܗܘܐ
ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܗܝܢ ܗܠܟܬܝ. ܘܠܐ ܗܘܐ ܐܝܟ ܛܢܦܘܬܗܝܢ ܥܒܕܬܝ. ܐܠܐ ܩܠܝܠ ܡܚܒܠ
ܝܬܝܪ ܡܢܗܝܢ ܚܒܠܬܝ. ܒܟܠܗܝܢ ܐܘܪܚܬܟܝ.

Differs, à *cæteris* mulieribus in ſcortatione 34
tua: nam tu mercedem dabas, non autem mercedem tibi dabant. Iccirco ô ſcortum, audi 35
ſermonem Domini. Sic ait Dominus domi- 36
norum; Quia æs tuum dediſti, turpitudinem
tuam in ſcortatione tua retexiſti amatoribus
tuis, & omnibus idolis abominationem tuam,
& ſanguinem filiorum tuorum his obtuliſti.
Propterea ecce congregabo omnes amatores 37
tuos quibus oblectata es, & quoſcunque amaviſti, cum iis quos odio proſecuta es: congregabo inquam, eos contra te ex omnibus adjacentibus tibi *locis*, retegam turpitudinem tuā
coram ipſis, & videbunt totam turpitudinem
tuam: Et judicabo te judicio adulterarum, & 38
judicio earum quæ ſanguinem effundunt: &
exponam te cædi, furori, & zelotypiæ. Tra- 39
dámq; te in manus illorum, ut deſtruant loca
templorū tuorum, funditùs evertant fana tua,
detrahant veſtes tuas, rapiant inſtrumenta
ornatûs tui, & nudam te relinquant. Deinde 40
aſcendent contra te turmæ, obruent te lapidib⁹, & gladiis ſuis confodient te; Igne te com- 41
burent, & exercebunt contra te judicia præſentibus fœminis multis: & faciam ut ceſſes
à ſcortatione, neque des ampliùs mercedem:
Ita ſedabo iram meā contra te, recedet à te 42
zelotypia mea, mitigabor, & non indignabor
ampliùs. Eò quòd non memineris dierum 43
adoleſcentiæ tuæ, & omnibus hujuſmodi reb⁹
irritaveris me; etiam ego ecce rependam vias
tuas in caput tuum, ait Dñs dominorum, eò
quòd abominationem & ſcortationem commiſeris. Et quicunq; proverbio uſus fuerit, de 44
te utetur, ac dicet; Filia matri ſuæ ſimilis eſt.
Filia es matris tuæ deſerentis maritū ſuum & 45
filios ſuos: & ſoror ſororū quæ maritos filióſque ſuos deſeruerunt: mater veſtra Hethæa
eſt, & pater veſter Amoræus. Soror tua natu 46
major eſt Samaria cum filiabus ſuis, quæ ſedet
ad lævam tuam: ſoror verò tua minor, quæ
ſedet ad dexteram tuam, Sodoma cum filiabus
ſuis. Neque verò ſecundùm vias earum am- 47
bulâſti, neque ſecundùm abominationes earū
feciſti, ſed fermè plures quàm illæ perpetrâſti
corruptiones in omnibus viis tuis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وصار فيك الاعوجاج اكثر من النساء في زناك وبعدك لا يزنون عندك ما تعطي الاجر
ولك الاجر فلا يعطى * وصار فيك الاعوجاج * لاجل هذا ايتها الزانية اسمعي قول الرب * هكذا
يقول ادوناي الرب * من اجل انك سكبت نحاسك وظهر فضيحتك بزناك لاخلائك وبكل
فكرات اثامك وبدماء اولادك الذين اعطيتهم لها * لاجل هذا ها انا اجمع عليك جميع
اصحابك الذين اختلطت فيهم وجميع الذين احببتهم * مع جميع الذين ابغضتهم
واجمعهم عليك من حولك واكشف مناحسك لهم ويعاينون كل فضيحتك * وانتقم منك
انتقام زانية ومهرقة دم * واذبحك بدم غضب وغيرة * واسلمك الى ايديهم ويهدمون ماخورك
ويهدمون اساسك ويخلعون عنك ثوبك وياخذون اواني فخرك ويتركونك عريانة ومفضوحة
* الاصحاح الثامن * * ويجعلون عليك جموعا ويرجمونك بالحجارة ويذبحونك
بسيوفهم * ويحرقون بيوتك بالنار ويصنعون فيك النقمات امام نسوة كثيرات واصرفك من
زناك ولا تعطين الاجر ايضا * واترك غضبي عليك ويبرح غيرتك منك واكف ولا اهتم
بك ايضا * من اجل انك لم تذكري يوم صبائك واحزنتيني بجميع هذا وها انا
اعطيت طرقك على راسك * يقول ادوناي الرب وهكذا صنعت النفاق في جميع اثامك
* هذه هي كلها التي قالوها عليك مثل * قائلين كمثل الام والابنة * ابنة امك انت
التي اقصت رجلها واولادها * واخوات اخواتك اقصوا رجالهن واولادهن * امكم حثانية
وابوكم اموري * اختكم الكبيرة سامرة هي وبناتها الساكنة عن يسارك * واختك
الصغيرة الساكنة عن يمينك سادوم وبناتها * اليس هكذا في طرقاتهم سرت * ولا
مثل اثامهم صنعت * عن قليل تفوقتهن في كل طرقاتك *

* *Itaque fuit in te perverſitas major quàm* 34
cæterarum mulierum, in fornicatione tua,
ut præterquam tecum non fornicarentur:
quandoquidem dabas eis mercedem, tibi
verò merces non dabatur. Fuit inquam, in
te perverſitas. Propterea O ſcortum, audi 35
ſermonem Domini. Sic dicit Adonai Do- 36
minus; Quia æs tuū prodegiſti, patet ignominia tua in ſcortatione tua amatoribus
tuis, & in omnibus cogitationibus iniquitatum tuarum, & in ſanguinibus filiorum
tuorum quos obtuliſti eis: Propterea ecce 37
ego congregabo adverſùm te omnes amaſios tuos quibuſcum te miſcuiſti, & omnes
eos quos dilexiſti, cum iis omnibus quos odiſti: congregabo inquam eos adverſùm
te ex circunjacentibus tibi locis, *detegámque eis malignitates tuas, & videbunt omnem ignominiam tuam:* *Et exigam à* 38
te pœnas fornicatricæ, et effundentis ſanguinem, & jugulabo te cæde furoris & zelotypiæ: Tradámque te in manus eorum, & 39
demolientur cauponā tuam, deſtruent fundamentum tuum, detrahent à te veſtem
tuam, auferent vaſa gloriationis tuæ, &
relinquent te nudam & ignominioſam.

Textus octavus.

Tum collocabunt adverſùm te turbas, quæ 40
te lapidibus obruent, gladiis ſuis jugulabūt
te, Domos tuas igne comburent, exigéntque à te pœnas coram multis mulieribus: 41
atque ita avocabo te à fornicatione tua,
nec dabis ampliùs mercedem. Denique di- 42
mittam furorem meum contra te, & ceſſabit à te zelotypia tua: me retraham, nec tui
curâ tangar ampliùs. Quandoquidem tu 43
non es recordata dici adoleſcentiæ tuæ,
neque mœrore affeciſti in his omnibus: en
ego viciſſim rependi vias tuas in caput
tuum, dicit Adonai Domin⁹, atque ita impietatē commiſiſti in omnibus flagitiis tuis.
Hæc ſunt omnia illa quæ proverbio de te 44
tulerunt, dicentes; Qualis eſt mater, talis
filia. Filia tu es matris tuæ, quæ repulit 45
maritum ſuum & liberos ſuos: ſorores etiam ſororum tuarum repulerunt maritos
ac liberos ſuos. Mater veſtra Hethæa, &
pater veſter Amoræus eſt. Soror veſtra 46
natu major, Samaria eſt & filiæ ipſius, quæ
habitat à ſiniſtra tua: ſoror autem tua natu
minor, quæ habitat à dextera tua, Sodoma
eſt & filiæ ipſius. An non hoc pacto in 47
viis earum ambulâſti? & nonne juxta ſcelera earum feciſti? parum abeſt quin ſuperaveris eas in omnibus viis tuis.

יחזקאל : יו

tua ſoror Sedom fecit Si : Deus Dominus dixit , ego Vivens
48 חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה אִם־עָשְׂתָה סְדֹם אֲחוֹתֵךְ
fuit iſta Ecce .tuæ *filiæ* & , tu feciſti ſicut , ejus *filiæ* & ,ipſa
49 הִיא וּבְנוֹתֶיהָ כַּאֲשֶׁר עָשִׂית אַתְּ וּבְנוֹתָיִךְ׃ הִנֵּה־זֶה הָיָה
abundantia & ,panis ſaturitas ,ſuperbia : tuæ ſororis Sedom iniquitas
עֲוֺן סְדֹם אֲחוֹתֵךְ גָּאוֹן שִׂבְעַת־לֶחֶם וְשַׁלְוַת
non *mendici* & , egeni manum & ejus *filiabus* & , ei fuit : otii
הַשְׁקֵט הָיָה לָהּ וְלִבְנוֹתֶיהָ וְיַד־עָנִי וְאֶבְיוֹן לֹא
: *meas facies ad* abominationem fecerunt & , ſunt elevatæ Et .*firmavit*
50 הֶחֱזִיקָה׃ וַתִּגְבְּהֶינָה וַתַּעֲשֶׂינָה תוֹעֵבָה לְפָנָי
dimidiũ ſecundùm Someron Et .vidi ſicut eas feci removere &
51 וָאָסִיר אֶתְהֶן כַּאֲשֶׁר רָאִיתִי׃ וְשֹׁמְרוֹן כַּחֲצִי
tuas abominationes multiplicâſti & : peccavit non tuorum peccatorum
חַטֹּאתַיִךְ לֹא חָטָאָה וַתַּרְבִּי אֶת־תּוֹעֲבוֹתַיִךְ
tuis abominationibus omnibus in tuas ſorores juſtificâſti & ; illis præ
מֵהֵנָּה וַתְּצַדְּקִי אֶת־אֲחוֹתַיִךְ בְּכָל־תּוֹעֲבוֹתַיִךְ
judiciũ pronuntiâſti quæ tuum pudorem porta tu Etiam .feciſti quas
52 אֲשֶׁר עָשִׂיתִי׃ גַּם־אַתְּ שְׂאִי כְלִמָּתֵךְ אֲשֶׁר פִּלַּלְתְּ
, eis præ feciſti abominationes quibus , tuis peccatis in *tuæ ſorori*
לַאֲחוֹתֵךְ בְּחַטֹּאתַיִךְ אֲשֶׁר־הִתְעַבְתְּ מֵהֵן
,tuam ignominiam porta &,erubeſce tu etiam Et .te præ *erunt* juſtificatæ
תִּצְדַּקְנָה מִמֵּךְ וְגַם־אַתְּ בּוֹשִׁי וּשְׂאִי כְלִמָּתֵךְ
captivitatem ,earum captivitatem convertã Et .tuas ſorores *te juſtificãdo in*
53 בְּצַדֶּקְתֵּךְ אַחְיוֹתֵךְ׃ וְשַׁבְתִּי אֶת־שְׁבוּתְהֶן אֶת־שְׁבִית
: ejus *filiarum* & , Someron captivitatem & , ejus *filiarum* & , Sedom
סְדֹם וּבְנוֹתֶיהָ וְאֵת שְׁבִית שֹׁמְרוֹן וּבְנוֹתֶיהָ
portes Ut .earum medio in tuarum captivitatum captivitatem &
54 וּשְׁבִית שְׁבִיתַיִךְ בְּתוֹכָהְנָה׃ לְמַעַן תִּשְׂאִי
te conſolando in :feciſti quæ omnibus de erubeſcas & , tuam ignominiam
כְּלִמָּתֵךְ וְנִכְלַמְתְּ מִכֹּל אֲשֶׁר עָשִׂית בְּנַחֲמֵךְ
.ſuam antiquitatẽ ad revertentur ejus *filiæ* & ,Sedom ,tuæ ſorores Et .eas
55 אֹתָן׃ וַאֲחוֹתַיִךְ סְדֹם וּבְנוֹתֶיהָ תָּשֹׁבְןָ לְקַדְמָתָן
tuæ *filiæ* & tu &:ſuam antiquitatẽ ad revertentur ejus *filiæ* &,Someron Et
וְשֹׁמְרוֹן וּבְנוֹתֶיהָ תָּשֹׁבְןָ לְקַדְמָתָן וְאַתְּ וּבְנוֹתַיִךְ
tua ſoror Sedom fuit non Et.veſtram antiquitatem ad revertimini
56 תְּשֻׁבֶינָה לְקַדְמַתְכֶן׃ וְלוֹא הָיְתָה סְדֹם אֲחוֹתֵךְ
revelaretur Antequam.tuarum ſuperbiarum die in tuo ore in auditu in
57 לִשְׁמוּעָה בְּפִיךְ בְּיוֹם גְּאוֹנָיִךְ׃ בְּטֶרֶם תִּגָּלֶה
ejus circuituum omnium & ,Aram *filiarum* opprobrii tempore ſicut,tua malitia
רָעָתֵךְ כְּמוֹ עֵת חֶרְפַּת בְּנוֹת־אֲרָם וְכָל־סְבִיבוֹתֶיהָ
& , *tuum Scelus* .undique te *ſpernentium* , Peliſtim *filiarum*
58 בְּנוֹת פְּלִשְׁתִּים הַשָּׁאטוֹת אוֹתָךְ מִסָּבִיב׃ אֶת־זִמָּתֵךְ וְאֶת־
dixit ſic Quia .Dominus dixit , *ea* portâſti tu tuas abominationes
59 תּוֹעֲבוֹתַיִךְ אַתְּ נְשָׂאתִים נְאֻם יְהוָה׃ כִּי כֹה אָמַר
contempſiſti quæ ;feciſti ſicut tecum faciam Et : Deus Dominus
אֲדֹנָי יְהוִה וְעָשִׂית אוֹתָךְ כַּאֲשֶׁר עָשִׂית אֲשֶׁר־בָּזִית
mei pacti ego recordabor Et .pactum *infringendum ad*,juramentum
60 אָלָה לְהָפֵר בְּרִית׃ וְזָכַרְתִּי אֲנִי אֶת־בְּרִיתִי
.*ſeculi* pactum tibi confirmabo & : *tuarum pueritiarum* diebus in tecum
אוֹתָךְ בִּימֵי נְעוּרָיִךְ וַהֲקִמוֹתִי לָךְ בְּרִית עוֹלָם׃
tuas ſorores *te capiendo in* ,erubeſces & ,tuarum viarum recordaberis Et
61 וְזָכַרְתְּ אֶת־דְּרָכַיִךְ וְנִכְלַמְתְּ בְּקַחְתֵּךְ אֶת־אֲחוֹתַיִךְ
,filias in tibi eas dabo Et .te *præ parvas ad* , te *præ magnas*
הַגְּדֹלוֹת מִמֵּךְ אֶל־הַקְּטַנּוֹת מִמֵּךְ וְנָתַתִּי אֶתְהֶן לָךְ לְבָנוֹת
ſcies & : tecum meum pactum ego confirmabo Et .tuo pacto ex non &
62 וְלֹא מִבְּרִיתֵךְ׃ וַהֲקִימוֹתִי אֲנִי אֶת־בְּרִיתִי אִתָּךְ וְיָדַעַתְּ
non & , afficiaris pudore & , recorderis Ut .Dominus *ego* quòd
63 כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ לְמַעַן תִּזְכְּרִי וָבֹשְׁתְּ וְלֹא
tibi *me propitiando in,tui pudoris faciebus à* ,oris *apertio* ultrà tibi ſit
יִהְיֶה־לָּךְ עוֹד פִּתְחוֹן פֶּה מִפְּנֵי כְּלִמָּתֵךְ בְּכַפְּרִי־לָךְ
.Deus Dominus dixit , feciſti quæ omnibus in
לְכָל־אֲשֶׁר עָשִׂית נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃

Verſio VULG. LAT.

48 Vivo ego, dicit Dominus Deus, quia non fecit Sodoma ſoror tua ipſa, & filiæ ejus, ſicut feciſti tu, & filiæ tuæ. 49 Ecce hæc fuit iniquitas Sodomæ ſororis tuæ, ſuperbia, ſaturitas panis & abundantia, & otium ipſius, & filiarum ejus : & manum egeno & pauperi non porrigebant. 50 Et elevatæ ſunt, & fecerunt abominationes coram me : & abſtuli eas ſicut vidiſti. 51 Et Samaria dimidium peccatorum tuorum non peccavit : ſed viciſti eas ſceleribus tuis, & juſtificâſti ſorores tuas in omnibus abominationibus tuis, quas operata es. 52 Ergò & tu porta confuſionem tuam, quæ viciſti ſorores tuas peccatis tuis, ſceleratiùs agens ab eis: juſtificatæ ſunt enim à te : ergò & tu confundere, & porta ignominiam tuam, quæ juſtificâſti ſorores tuas. 53 Et convertam reſtituens eas converſione Sodomorum cum filiabus ſuis, & converſione Samariæ, & filiarum ejus : & convertam reverſionem tuam in medio earum, 54 Ut portes ignominiam tuam, & confundaris in omnibus, quæ feciſti conſolans eas. 55 Et ſoror tua Sodoma, & filiæ ejus revertentur ad antiquitatem ſuam : & Samaria, & filiæ ejus revertentur ad antiquitatem ſuam : & tu, & filiæ tuæ, revertemini ad antiquitatem veſtram. 56 Non fuit autem Sodoma ſoror tua audita in ore tuo, in die ſuperbiæ tuæ, 57 Antequàm revelaretur malitia tua : ſicut hoc tempore in opprobrium filiarum Syriæ, & cunctarum in circuitu tuo filiarum Palæſtinarum, quæ ambiunt te per gyrum. 58 Scelus tuum, & ignominiam tuam tu portâſti, ait Dominus Deus. 59 Quia hæc dicit Dominus Deus ; Et faciam tibi, ſicut deſpexiſti juramentum, ut irritum faceres pactum : 60 Et recordabor ego pacti mei tecum in diebus adoleſcentiæ tuæ : & ſuſcitabo tibi pactum ſempiternum. 61 Et recordaberis viarum tuarum, & confundêris : cùm receperis ſorores tuas te majores cum minoribus tuis : & dabo eas tibi in filias, ſed non 62 ex pacto tuo. Et ſuſcitabo ego pactum meum tecum : & ſcies 63 quia ego Dominus, Ut recorderis, & confundaris, & non ſit tibi ultrà aperire os præ confuſione tua, cùm placatus tibi fuero in omnibus quæ feciſti, ait Dominus Deus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

48 Ζῶ ἐγώ, λέγει κύριος, εἰ πεποίηκε Σόδομα (κ) αὕτη καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς, ὃν τρόπον (λ) ἐποίησας σὺ καὶ αἱ θυγατέρες σου. 49 Πλὴν τοῦτο τὸ ἀνόμημα Σοδόμων τῆς ἀδελφῆς σου, ὑπερηφανία, ἐν πλησμονῇ ἄρτων καὶ ἐν εὐθηνίᾳ (μ) ἐσπατάλων αὕτη καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς· τοῦτο ὑπῆρχεν αὐτῇ καὶ ταῖς θυγατράσιν αὐτῆς, καὶ χεῖρα πτωχοῦ καὶ πένητος οὐκ (ʹ) ἀντελαμβάνοντο. 50 Καὶ ἐμεγαλαύχουν, καὶ ἐποίησαν (ν) ἀνομήματα ἐνώπιον ἐμοῦ· καὶ ἐξῆρα (ξ) αὐτὰς καθὼς ἴδον. 51 Καὶ Σαμάρεια κατὰ τὰς ἡμίσεις τῶν ἁμαρτιῶν σου οὐχ ἥμαρτε· καὶ ἐπλήθυνας τὰς (ʺ) ἀνομίας σου ὑπὲρ αὐτάς, καὶ ἐδικαίωσας τὰς ἀδελφάς σου ἐν πάσαις ταῖς ἀνομίαις σου αἷς ἐποίησας. 52 Καὶ σὺ κόμισαι βάσανόν σου, ἐν ᾗ (ο) ἔφθειρας τὰς ἀδελφάς σου ἐν ταῖς ἁμαρτίαις σου αἷς ἠνόμησας ὑπὲρ αὐτάς, καὶ ἐδικαίωσας αὐτὰς ὑπὲρ σεαυτήν· καὶ σὺ αἰσχύνθητι, καὶ λάβε τὴν ἀτιμίαν σου ἐν τῷ δικαιῶσαί σε τὰς ἀδελφάς σου. 53 Καὶ ἀποστρέψω τὰς ἀποστροφὰς αὐτῶν, τὴν ἀποστροφὴν Σοδόμων καὶ τῶν θυγατέρων αὐτῆς· καὶ ἀποστρέψω τὴν ἀποστροφὴν Σαμαρείας καὶ τῶν θυγατέρων αὐτῆς· καὶ ἀποστρέψω τὴν ἀποστροφήν σου ἐν μέσῳ αὐτῶν· 54 Ὅπως κομίσῃ τὴν βάσανόν σου, καὶ ἀτιμωθήσῃ ἐκ πάντων ὧν ἐποίησας ἐν τῷ (π) παροργίσαι με. 55 Καὶ ἡ ἀδελφή σου Σόδομα καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς ἀποκατασταθήσονται καθὼς ἦσαν ἀπ' ἀρχῆς· (ρ) καὶ σὺ καὶ αἱ θυγατέρες σου ἀποκατασταθήσεσθε καθὼς ἀπ' ἀρχῆς ἦτε. 56 Καὶ εἰ μὴ ἦν Σόδομα ἡ ἀδελφή σου εἰς ἀκοὴν ἐν τῷ στόματί σου ἐν ταῖς ἡμέραις 57 ὑπερηφανίας σου, Πρὸ τοῦ ἀποκαλυφθῆναι τὰς κακίας σου, ὃν τρόπον νῦν ὄνειδος εἶ θυγατέρων Συρίας, καὶ πάντων τῶν κύκλῳ αὐτῆς θυγατέρων ἀλλοφύλων τῶν 58 περιεχουσῶν σε κύκλῳ. (σ) Τὰς ἀσεβείας σου καὶ τὰς ἀνομίας σου σὺ κεκόμισαι αὐτάς, λέγει κύριος. 59 Τάδε λέγει (τ) κύριος, Καὶ ποιήσω ἐν σοὶ καθὼς ἐποίησας, ὡς (·) ἠτίμωσας ταῦτα τοῦ παραβῆναι 60 τὴν διαθήκην μου. Καὶ μνησθήσομαι ἐγὼ τῆς διαθήκης μου τῆς μετὰ σοῦ ἐν ἡμέραις νηπιότητός σου, καὶ ἀναστήσω σοι διαθήκην αἰώνιον. 61 Καὶ μνησθήσῃ τὴν ὁδόν σου, καὶ (υ) ἐξατιμωθήσῃ ἐν τῷ ἀναλαβεῖν σε τὰς ἀδελφάς σου τὰς πρεσβυτέρας σου σὺν ταῖς νεωτέραις σου, καὶ δώσω αὐτάς σοι εἰς οἰκοδομήν, καὶ οὐκ ἐκ 62 διαθήκης (φ) σου. Καὶ ἀναστήσω ἐγὼ τὴν διαθήκην μου μετὰ σοῦ, καὶ ἐπιγνώσῃ ὅτι ἐ- 63 γὼ κύριος· Ὅπως μνησθῇς καὶ αἰσχυνθῇς, καὶ μὴ ᾖ σοι ἔτι ἀνοῖξαι τὸ στόμα (χ) σου ἀπὸ προσώπου τῆς ἀτιμίας σου, (ψ) ἐν τῷ ἐξιλάσκεσθαί με σοὶ κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησας, λέγει κύριος.

MS.A. (κ) ἡ ἀδελφή σου, αὐτὴ (λ) πεποίηκας (μ) οἴνου ἐσπατάλων (ʹ) ἀντελάβοντο. (ν) ἄνομα (ξ) αὐτάς .Καθὼς καὶ Σαμάρεια (ʺ) ἁμαρτίας (ο) διέφθειρας (π) σε παροργίσαι με. (ρ) καὶ Σαμάρεια καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς ἀποκατασταθήσονται καθὼς ἦσαν ἀπ' ἀρχῆς· καὶ σὺ (σ) Ἐν ταῖς ἀσεβείαις σου καὶ ταῖς ἀνομίαις σου σὺ κεκόσμησαι αὐτάς, (τ) ἀδωναῒ κύριος, Καὶ ποιήσω σοι (·) ἠτίμασας (υ) ἀτιμασθήσῃ (φ) μου. Καὶ ἀναστήσω τὴν (χ) ἀπὸ προσώπου ἀτιμίας (ψ) καὶ ἐν τῷ

48 *Vivo ego, dicit Dominus, Si fecit (q) Sodoma, hæc, & filiæ ejus; ſicut feciſti tu, et filiæ tuæ.* 49 *Veruntamen hæc fuit iniquitas Sodomæ ſororis tuæ, ſuperbia in ſaturitate panũ, & in abundantia. Deliciis diffluebant ipſa, & filiæ ejus: hæc habebat ipſa, & filiæ ejus: & manũ pauperis & egeni non aſſumebant,* 50 *Et gloriabantur magnificè, & fecerunt iniquitates in conſpectu meo. Et abſtuli eas, ſicut (r) vidi.* 51 *Et Samaria ſecundũ dimidia peccatorũ tuorũ non peccavit: et multiplicâſti iniquitates tuas ſuper eas: & juſtificâſti ſorores tuas in omnibᵒ iniquitatibus tuis, quas operata es.* 52 *Et tu ſuſtine tormentũ tuũ in eo, quòd corruperis ſorores tuas in peccatis tuis, quibus iniquè egiſti ſuper eas, & juſtificâſti illas ſuper te. Et tu confundere, & ſuſcipe ignominiã tuã, eò quòd juſtificaveris ſorores tuas.* 53 *Et (ſ) convertam converſiones earũ, converſionẽ Sodomæ, & filiarum ejus. Et convertam converſionem Samariæ, & filiarum ejus: & convertam converſionẽ tuam in medio earum:* 54 *Ut portes tormentum tuũ, & habeas ignominiã ex omnibᵒ quæ feciſti, ut me ad iracundiam provocares.* 55 *Et ſoror tua Sodoma, & filiæ ejus reſtituentur, ſicut fuerunt à (t) principio. Et tu, & filiæ tuæ reſtituemini, ſicut fuiſtis à principio.* 56 *Et (u) niſi fuiſſet Sodoma ſoror tua in auditum in ore tuo, in diebus ſuperbiæ tuæ,* 57 *Antequàm revelarentur malitiæ tuæ; ſicut nunc opprobrium es filiarum Syriæ, & omnium quæ in circuitu ejus, filiarum alienigenarum, quæ circundant te per gyrum.* 58 *Impietates tuas, et iniquitates tuas tu (x) portâſti eas, dicit Dominus.* 59 *Hæc dicit Dominus; Et faciam in te, ſicut feciſti, ſicut deſpexiſti hæc, ut præterires teſtamentum meum.* 60 *Et recordabor ego teſtamenti mei, quod feci tecum in diebus adoleſcentiæ tuæ: & ſuſcitabo tibi teſtamentum ſempiternum.* 61 *Et recordaberis viæ tuæ, & deſpicieris, cum (y) receperis ſorores tuas te majores cum junioribus tuis: & dabo eas tibi in ædificationem, et non ex teſtamento tuo.* 62 *Et ſuſcitabo ego teſtamentum meum tecum: & cognoſces, quia ego Dominus:* 63 *Ut recorderis, & confundaris, et non ſit tibi ultrà aperire os tuum à facie ignominiæ tuæ; cùm propitius fuero tibi juxta omnia quæ feciſti, dicit Dominus.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

48 קים אנא אמר יי אלהים אם עבדת סדום אחתיך היא וכפרנהא כמא דעבדת את
49 וכפרניך׃ הא דין הוה חוב סדום אחתיך גאותנין סבעין לחמא ושליוא ושדוכיא הוה
50 לה ולכפרנהא ויד מסכן וחשוך לא אתקיפת׃ ואתרברבא ועבדא תועיבא קדמי
51 ואגליתי יתהן כמא דגלי קדמי׃ ושמרון כפלגות חוביך לא חבת ואסגית ית תועבתיך
52 מנהן וזכית ית אחתיך בכל תועבתיך דעבדת׃ אף את קבילי אתכנעותיך די בעית
לאחתיך בחוביך דאתעבת מנהן וזכין מניך ואף את בהתי וקבלי אתכנעותיך בדזכית
53 אחותיך׃ ואתיב ית עמהן להן ית עמא דסדום וכפרנהא וית עמא דשמרון וכפרנהא
54 ואתיב גלות עמיך ביניהון׃ בדיל דתקבלין אתכנעותיך ותתכנעין מכל דעבדת
55 בנחמותיך יתהן׃ ואחתיך סדום וכפרנהא יתובן לאולהן ושמרון וכפרנהא יתובון
56 לאולהן ואת וכפרנך תתובון לאולכן׃ ולא הות סדום אחתיך לאולפן בפומיך ביום
57 אתרברבותיך׃ עד לא תתגלי בישתיך כעדן דחסידו כפרני ארם וכל סחרנהא כפרני
58 פלשתאי דבזו יתיך מסחור סחור׃ ית חובי עיצת חטאך וית פולחן תועבתיך את
59 קבלתנון אמר יי׃ ארי כדנן אמר יי אלהים ואתפרע מניך כמא דעבדת דבסרת על מומי
60 61 לאשנאה קים׃ ודכירנא אנא ית קימי דעמך ביומי קדם ואקים לך קים עלם׃ ותדכרין
ית ארחתיך ותתכנעין בקרבותיך ית מדינן דרברבן מניך עם דזעירן מניך ומסרית
62 יתהון ליך לאשתמעא ולא את לא עבדת ית אוריתא׃ ואקים אנא ית קימי עמך ותדעין
63 ארי אנא יי׃ בדיל דתדכרין ותבהתין ולא יהי ליך עוד לאתרברבא במלי פומיך מן קדם
אתכנעותיך כד אשבוק ליך לכל דעבדת אמר יי אלהים׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

48 Vivo ego, dicit Dñs; ſi fecit Sodoma ſoror tua ipſa & villæ ejᵒ, ſicut feciſti tu & villæ tuæ. 49 Ecce hoc fuit peccatũ Sodomæ ſororis tuæ, ſuperbi & ſaturi pane, & abundantia & quies fuit ei & villis ejus, & manũ pauperis & inopis non confortavit. 50 Et ſeſe extulit, & fecit abominationes coram me. Et tranſmigrare feci eos ſicut manifeſtũ eſt corã me. 51 Et Samaria juxta dimidiũ peccatorũ tuorũ non peccavit, & multiplicâſti abominationes tuas magis quàm illæ, & juſtificâſti ſorores tuas in omnibᵒ abominationibᵒ tuis quas feciſti. 52 Tu quoq; ſuſcipe confuſionẽ tuã quæ deprecata es ſorores tuas, in peccatis tuis, quibᵒ te abominabiliorẽ illis præbuiſti; & juſtiores te ſunt. Tu quoq; confundere, & ſuſcipe ignominiã tuã cùm juſtificaveris ſorores tuas. 53 Et convertam populũ earũ ad illas, populũ Sodomæ & villarũ ejus, populũ Samariæ & villarũ ejᵒ, & reducam captivitatẽ populi tui in medio earũ. 54 Ut ſuſcipias ignominiã tuã & erubeſcas ab omnibᵒ [*abominationibᵒ*] quas feciſti, cùm conſolaberis eas. 55 Et ſoror tua Sodoma & villæ ejᵒ revertentur ad principiũ ſuũ, & Samaria ac villæ ejᵒ revertentur ad principium ſuũ, & tu & villæ tuæ revertemini ad principiũ veſtrũ. 56 Et non fuit Sodoma ſoror tua in doctrinã in ore tuo in die ſuperbiæ tuæ. 57 Antequam revelaretur malũ tuũ, *ſicut* tẽpore quo exprobaverũt villæ Syriæ & cunctæ quæ in circuitu ejᵒ ſunt, villæ Philiſtinorũ qui diripuerunt te undiquaq;. 58 Scelera conſilii peccatorũ tuorum & cultũ abominationum tuarũ tu ſuſcipies ea, dicit Dñs. 59 Hæc enim dicit Dñs Deᵒ : Vindictã ſumã ex te ſicut feciſti; nam ſpreviſti juramentũ ut mutares pactũ. 60 Et recordabor ego fœderis mei tecum in diebᵒ antiquis, & ſtatuam tibi pactũ ſempiternũ. 61 Et recordaberis viarũ tuarũ, & erubeſces cùm contuleris provincias majores te cum minoribᵒ te. Et tradidi eas tibi in obſequiũ, cùm tamẽ tu non feceris legẽ. 62 Et ſuſcitabo ego pactũ meũ tecum, & ſcies quia ego Dñs. 63 Ut recorderis & confundaris, & non ſit tibi amplius quod tete efferas in verbis oris tui propter ignominiã tuam, cùm dimiſero tibi omnia quæ feciſti, ait Dñs Deus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܚܝ ܐܢܐ . ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ . ܕܠܐ ܥܒܕܬ ܣܕܘܡ ܚܬܟܝ ܗܝ ܘܒܢܬܗ . ܐܝܟ ܕܥܒܕ
ܐܢܬܝ ܘܒܢܬܟܝ . * ܗܢܐ ܥܘܠܐ ܕܣܕܘܡ ܚܬܟܝ ܕܫܘܒܗܪܐ . ܕܣܒܥܐ ܗܘܬ ܠܚܡܐ ܘܫܠ
ܗܘܬ ܫܠܝܐ ܗܝ ܘܒܢܬܗ . ܘܐܝܕܐ ܕܡܣܟܢܐ ܘܕܒܝܫܐ ܠܐ ܐܚܕܝ . * ܐܠܐ ܐܬܪܘܪܒܝ ܘܥܒ
ܒܝܫܬܐ ܩܕܡܝ . ܘܟܕ ܚܙܝܬ ܒܗܝܢ ܗܦܟܬ ܐܢܝܢ . * ܘܫܡܪܝܢ ܐܝܟ ܦܠ
ܕܚܛܗܝܟܝ ܠܐ ܚܛܬ . ܐܣܓܝܬܝ ܕܝܢ ܛܘܥܝܬܟܝ ܡܢܗܝܢ . ܘܙܟܝܬܝ ܠܚܬܘܬ
ܒܚܛܗܝܟܝ . ܐܬܛܢܦܬܝ ܝܬܝܪ ܡܢܗܝܢ . ܘܗܝܢ ܐܙܕܕܩ ܝܬܝܪ ܡܢܟܝ . * ܐܦ
ܐܢܬܝ ܒܗܬܝ ܘܩܒܠܝ ܚܣܕܟܝ . ܕܐܙܕܕܩ ܚܬܘܬܟܝ ܝܬܝܪ ܡܢܟܝ . * ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܗ
ܫܒܝܬܐ ܕܣܕܘܡ ܘܕܒܢܬܗ . ܘܫܒܝܬܐ ܕܫܡܪܝܢ ܘܕܒܢܬܗ . ܘܐܫܒܐ ܫܒܝܬ
ܒܝܢܬܗܝܢ . * ܕܬܩܒܠܝܢ ܚܣܕܟܝ . ܘܬܒܗܬܝܢ ܡܢ ܟܠܡܕܡ ܕܥܒܕܬܝ ܕܬܪܓ
* ܘܚܬܟܝ ܣܕܘܡ ܘܒܢܬܗ ܢܬܦܢܝܢ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ . ܘܫܡܪܝܢ ܘܒܢܬܗ ܢܬܦ
ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ . ܘܐܢܬܝ ܘܒܢܬܟܝ ܬܗܘܝܢ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ . * ܘܠܐ ܗܘܬ ܚܬܟܝ ܣܕ
ܠܫܘܥܝܐ ܒܦܘܡܟܝ ܒܝܘܡܐ ܕܫܘܒܗܪܟܝ : * ܩܕܡ ܡܢ ܕܬܬܓܠܐ ܒܝܫܘܬܟܝ . ܐܝܟ ܚ
ܕܒܢܬܐ ܕܐܕܘܡ . ܘܕܟܠܗܝܢ ܒܢܬܐ ܦܠܫܬܝܐ ܕܚܕܪܢ ܗܘܝ ܠܗ . * ܘܚܛܗܝܟܝ ܘܛܢܦ
ܐܢܬܝ ܩܒܠܝܢ ܐܢܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ . * ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ . ܥܒܕ ܐ
ܠܟܝ ܐܝܟ ܕܥܒܕܬܝ . ܕܒܣܝܬܝ ܡܘܡܬܝ ܘܫܢܝܬܝ ܩܝܡܝ . * ܐܢܐ ܕܝܢ ܐܬܕܟܪ ܩܝ
ܕܥܡܟܝ ܒܝܘܡܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟܝ . ܘܐܩܝܡ ܠܟܝ ܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ . * ܘܬܬܕܟܪܝܢ ܐܘܪܚ
ܘܬܬܟܠܡܝܢ . ܕܢܣܒܬ ܠܚܬܘܬܟܝ ܠܪܒܬܐ ܘܠܙܥܘܪܬܐ . ܘܝܗܒܬ ܐܢܝܢ ܠܟܝ ܠܒܢ
ܠܐ ܡܢ ܩܝܡܟܝ . * ܘܐܩܝܡ ܐܢܐ ܩܝܡܝ ܥܡܟܝ . ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ . * ܕܬܬܕܟܪܝ
ܘܬܬܟܠܡܝܢ . ܘܠܐ ܬܦܬܚܝܢ ܦܘܡܟܝ ܡܢ ܟܘܠܡܟܝ . ܡܐ ܕܫܒܩܬ ܠܟܝ ܟܠܡ
ܕܥܒܕܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ .

Per vitam meam, dicit Dominus dominorum, 48
nequaquam fecit Sodoma ſoror tua cum filiabus ſuis, quemadmodum feciſti tu cum filiabus tuis. Hoc erat crimen Sodomæ ſororis 49
tuæ arrogantis : ſaturabatur pane, & otiosè deſidebat ipſa & filiæ ejus : manum egenorum & pauperum non tenuerunt; Sed ſu- 50
perbientes deſignaverunt malum coram me : quæ cùm vidiſſem in eis, ſubverti eas. Sama- 51
ria ad dimidium peccatorũ tuorum non peccavit: plures quàm ipſæ abominationes commiſiſti, & ſuperâſti ſorores tuas peccatis tuis: pluſquam ipſæ tu te contaminâſti, adeoque ipſæ juſtiores te ſunt. Tu ſaltem erubeſce, & 52
fer ignominiam tuam, quòd ſorores tuæ juſtiores te fuerint. Et ego reducam captivita- 53
tem earum, *nempe* captivitatem Sodomæ & filiarum ejus, & captivitatem Samariæ atque filiarum ejus, & captivitatem tuam abducam inter eas : Ut feras ignominiam, & erubeſcas 54
pro rebus omnibus quas feciſti ut me ad iracundiam provocares. Soror tua Sodoma & 55
filiæ ejus reſtaurabuntur ut olim, & Samaria atque filiæ ejus reſtaurabuntur ut antea ; tu verò ac filiæ tuæ eris ut antea. Neque enim 56
fuit ſoror tua Sodoma famoſa in ore tuo die arrogantiæ tuæ, Antequam detegeretur ma- 57
lum tuum, qualis erat infamia filiarum Edom, & omnium filiarum Paleſtinorum, quæ circunſtabant illam : Ideò peccata tua & abo- 58
minationes tuas tu reportabis, dicit Dominus dominorum. Propterea, ſic ait Dominus do- 59
minorum, Facturus ſum tibi prout feciſti ; eò quòd ſpreveris juramentum meum, & violaveris fœdus meum. Ego tamen recordabor 60
fœderis mei tecum *initi* diebus adoleſcentiæ tuæ, & præſtabo tibi fœdus perpetuum : Ut 61
recordata viarum tuarum, pudefias quòd acceperim ſorores tuas tam *natu* majorẽ quàm minorem, dederímque eas tibi filias, non ex 62
fœdere tuo. Et confirmabo ego fœdus meum tecum, & agnoſces me eſſe Dominum : Ut 63
recorderis & erubeſcas, nec aperias ampliùs os tuum præ pudore tuo ; quum dimiſero tibi quicquid feciſti, ait Dominus dominorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* حي انا يقول ادوناي الرب * ان كانت هذه اختك سدوم صنعت وبناتها * كما صنعتِ انتِ
وبناتك * لكن هذا اثم سدوم اختك الكبرياء * بشبع الخبز وخصب الخمر لهت هي وبناتها
هذا كان لها ولبناتها * ولم يعضدن يد فقير ومسكين * وتعظمن وصنعن اثاما امامي * ونزعتهن
كما رايت * وسامرة لم تخطِ بنصف خطاياك * واكثرت اثامك اكثر منها * وبررت اخواتك
بجميع اثامك التي صنعتها * وانتِ تحملين عقابك التي به افسدت اخواتك بخطاياك * التي
اعتبت بها اكثر منهن * وبررتيهن اكثر منك * وانت افتضحي وخذي هوانك عند ما
بررت اخواتك * واصرف انصرافهن كانصراف سدوم وبناتها * واصرف انصراف سامرة وبناتها
واصرف انصرافك في وسطهن * لكي تاخذي عقابك * وتهانين من جميع ما صنعتِه
لتغضيبي * واختك سدوم وبناتها يعودون كما كانوا منذ البدء * وسامرة وبناتها يعودون كما
كانوا منذ البدء * وانت وبناتك تعدن كما بداءتكن * وكما كانت اختك سدوم للسماع بفمك في
ايام عظمتك * قبل ان تنكشف قبائحك * وكما انك الان عار لبنات سورية وجميع من حولها
من البنات الغرباء القبائل * الذين استحوذوا عليك من حولك * نفاقك واثامك انت تحملي
يقول الرب * هكذا يقول ادوناي الرب * واصنع بك كما صنعت * كما زريت بهن لتجاوزي
عهدي * واذكر انا عهدي الذي معك في ايام طفوليتك * واقيم لك عهدا ابديا
* وتذكرين طريقك وتهانين * عند ما تاخذين اخواتك العجائز مع شاباتك * واعطيهن لك
للامتحان * وليس من عهدك * واقيم انا عهدي معك * وتعلمين اني انا الرب * كي تذكري
وتفتضحي * ولا تقدري ان تفتحي فاك من وجه اهانتك * عند ما تستعطفيني لك على كل
ما صنعتيه * يقول ادوناي الرب *

Ut vivo ego, dicit Adonai Dominus, hæc 48
ſoror tua Sodoma & filiæ ipſius, non fecerunt quemadmodum feciſti tu & filiæ tuæ. Enimverò hæc erat iniquitas Sodo- 49
mæ ſororis tuæ ; ſuperbia : in abundantia panis & affluentia vini, delitiis indulgebat ipſa & filiæ ejus: hoc vitium habebat ipſa & filiæ ejus : præterea non ſuffulſerunt manũ inopis ac pauperis: Ergò ſuper- 50
bientes fecerunt varias iniquitates coram me : proinde avulſi eas, ut vidiſti. Sama- 51
ria verò ne dimidiam quidem partem peccatorum tuorum perpetravit; ſed multiplicâſti iniquitates tuas plusquam ipſa : adeoque juſtificâſti ſorores tuas per tot crimina quæ commiſiſti. Ideo pœnas lues, 52
eò quòd ſorores tuas corruperis flagitiis tuis, quibus eas (cùm plura quàm ipſæ perpetraveris) juſtiores te reddidiſti. Tu itaque erubeſce, & fer ignominiam tuam, quandoquidem juſtificâſti ſorores tuas. Et 53
amovebo averſionem earum, ut averſionẽ Sodomæ & filiarum ejus : & amovebo averſionem Samariæ & filiarum ejus: & amovebo averſionem tuam in medio earũ: Ut pœnam tuam luas, & deprimaris pro 54
omnibus quæ feciſti ad irritandum me. Soror tua Sodoma & filiæ ejus redibunt 55
ut erant à principio : & Samaria ac filiæ ejus redibunt ut erant ab initio: & tu filiæq; tuæ redibitis uti cœperatis: Et quem- 56
admodum erat ſoror tua Sodoma in malam famam in ore tuo, in diebus ſuperbiæ tuæ, Priuſquã detegerentur turpitudines 57
tuæ : & quemadmodum tu jam es vituperium apud filias Syriæ, & omnes circumjacentes et filias nationum exterarum quæ te undiq; circundant. Impietatem tu- 58
am & iniquitates tuas tu portabis, ait Dominus. Sic ait Adonai Dominus ; Faci- 59
ámq; tibi quemadmodum feciſti, quemadmodum ſpreviſti illas, ut præterires fœdus meum. Verùm ego recordatus fœderis mei 60
quod tecum inieram diebus pueritiæ tuæ, ſtatuam tibi fœdus perpetuum : Et recor- 61
daberis viæ tuæ, atque humiliaberis, cùm receperis ſorores tuas anus cum puellis tuis: & dabo eas tibi ad experimentum, non autem ex fœdere tuo. Ego inquam, ſtatuam 62
fœdus meum tecum, & ſcies me eſſe Dominum : ut recordata rubore ſuffundaris, 63
nec poſſis aperire os tuum præ ignominia tua ; quum indulgentiam meam imploraveris tibi pro rebus omnibus quas feciſti, dicit Adonai Dominus.

יחזקאל׃ יז

CAP. XVII. יז

1 , hominis Fili : dicendo , me ad Domini verbum fuit Et
2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר׃ בן־אדם
ad parabolam loquere parabolicè & , ænigma loquere Ænigmaticè
חוד חידה ומשל משל אל־
Aquila : Deus Dominus dixit Sic : *dices* Et . Iſrael domum
3 בית ישראל׃ ואמרת כה־אמר אדני יהוה הנשר
ei quibus , *pluma* plena , *penna longa* , *alis magna* , grandis
הגדול גדול הכנפים ארך האבר מלא הנוצה אשר־לו
.cedri ſummitatem tulit & , Lebanon ad venit ; *variegatio*
הרקמה בא אל־הלבנון ויקח את־צמרת הארז׃
terram ad *illud* adduxit & : avulſit ejus *ramorum tenerorum Caput*
4 את ראש יניקותיו קטף ויביאהו אל־ארץ
,terræ ſemine de tulit Et .*illud* poſuit negotiatorum urbe in.Chenahan
5 כנען בעיר רכלים שמו׃ ויקח מזרע הארץ
ſalicem ,multas aquas juxta Tulit .ſeminis agro in illud *dedit* &
ויתנהו בשדה־זרע קח על־מים רבים צפצפה
, ſtatura *humilem ,luxuriantem vitem in fuit* &,germinavit Et .illud poſuit
6 שמו׃ ויצמח ויהי לגפן סרחת שפלת קומה
fuit Et .ſint ea ſub ejus radices & ,eam ad ejus *ramos reſpiciendum ad*
לפנות דליותיו אליו ושרשיו תחתיו יהיו ותהי
una aquila fuit Et .*ornamenta* emiſit & , palmites fecit & , *vitem in*
7 לגפן ותעש בדים ותשלח פארת׃ ויהי נשר־אחד
inflectebat hæc vitis ecce Et .*pluma multa* & , *alis magna* ,grandis
גדול גדל כנפים ורב נוצה והנה הגפן הזאת כפנה
eam *irrigandum ad* ,eam ad *emittebat* ſuos ramos & , eam ad ſuas radices
שרשיה עליו ודליותיו שלחה־לו להשקות אותה
ipſa multas aquas *ad* bono agro In .ſuæ plantationis lineis de
8 מערגות מטעה׃ אל־שדה טוב אל־מים רבים היא
.*magnificā vitem in exiſtendū ad*,fructū *ferendū ad &,frondem faciendū ad*,plantata
שתולה לעשות ענף ולשאת פרי להיות לגפן אדרת׃
ejus radices Nonne ? proſperabitur : Deus Dominus dixit Sic : Dic
9 אמר כה אמר אדני יהוה תצלח הלוא את־שרשיה
frondes omnes , *areſcet* & , excidet ejus fructum & , evellet
ינתק ואת־פריה יקוסס ויבש כל־טרפי
,multo populo *in* &,grandi brachio *in* non & , *areſcet* ejus germinis
צמחה תיבש ולא בזרוע גדולה ובעם רב
?proſperabitur nūquid plantata ecce Et?ſuis radicibꝰ à eam *tollendum ad*
10 למשאות אותה משרשיה׃ והנה שתולה התצלח
? ſiccando ſiccabitur , orientalis ventus eam *in tangere juxta* Nonne
הלא כגעת בה רוח הקדים תיבש יבש
,me ad Domini verbum fuit Et .areſcet ſui germinis lineis In
11 על־ערגת צמחה תיבש׃ ויהי דבר־יהוה אלי
cognoviſtis Nonne : *rebellionis* domum ad nunc Dic : dicendo
12 לאמר׃ אמר־נא לבית המרי הלא ידעתם
cepit & , Jeruſalaim Babel rex venit Ecce : Dic ? hæc quid
מה־אלה אמר הנה־בא מלך־בבל ירושלם ויקח את־
.Babel in ſe ad eos adduxit & ;ejus principes & , ejꝰ regem
מלכה ואת־שריה ויבא אותם אליו בבלה׃
induxit & : fœdus eo cum *excidit* & , regni ſemine de tulit Et
13 ויקח מזרע המלוכה ויכרת אתו ברית ויבא
exiſtendum Ad .*cepit* terræ *arietes* & , jusjurandum in eum
14 אתו באלה ואת־אילי הארץ לקח׃ להיות
,ejus pactum *cuſtodiendum ad* ,*ſe elevare non pro* ,humile regnum
ממלכה שפלה לבלתי התנשא לשמר את־בריתו
,Ægyptum ſuos nuntios mittendo ,eū contra rebellavit Et .*ei aſtandum ad*
15 לעמדה׃ וימרד־בו לשלח מלאכיו מצרים
? proſperabitur nunquid : multum populum & , equos ſibi *dandum ad*
לתת־לו סוסים ועם־רב היצלח
? effugiet & ,pactum irritavit & ? hæc *faciens* evadet nunquid
הימלט העשה אלה והפר ברית ונמלט׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. XVII.

1 ET factum eſt verbum Domini
2 ad me, dicens; Fili hominis, pro-
pone ænigma, & narra parabo-
3 lam ad domum Iſrael, Et dices;
Hæc dicit Dn̄s Deus; Aquila
grandis magnarum alarū, longo
membrorū ductu, plena plumis,
& varietate, venit ad Libanum,
4 & tulit medullam cedri. Summi-
tatem frondium ejus avulſit: &
tranſportavit eam in terram
Chanaan, in urbe negotiatorum
5 poſuit illam. Et tulit de ſemine
terræ, & poſuit illud in terra
pro ſemine, ut firmaret radicem
ſuper aquas multas: in ſuperficie
6 poſuit illud. Cúmque germinâſ-
ſet, crevit in vineam latiorem
humili ſtaturâ, reſpicientibus
ramis ejus ad eam: & radices
ejus ſub illa erant, facta eſt ergò
vinea, & fructificavit in palmi-
7 tes, & emiſit propagines. Et
facta eſt aquila altera grandis,
magnis alis, multíſque plumis:
& ecce vinea iſta quaſi mittens
radices ſuas ad eam, palmites
ſuos extendit ad illam, ut irriga-
ret eam de areolis germinis ſui.
8 In terra bona ſup aquas multas
plantata eſt: ut faciat frondes,
& portet fructum, ut ſit in vi-
9 neam grandem. Dic; Hæc dicit
Dn̄s Deus; Ergóne proſpera-
bitur? nónne radices ejus e-
vellet, & fructus ejus diſtringet,
et ſiccabit omnes palmites ger-
minis ejus, & areſcet: & non in
brachio grandi, neque in populo
multo, ut evelleret eam radici-
10 tús? Ecce plantata eſt: ergóne
proſperabitur? nónne cùm te-
tigerit eam ventus urens ſiccabi-
tur, & in areis germinis ſui are-
11 ſcet? Et factum eſt verbum Do-
12 mini ad me, dicens; Dic ad
domum exaſperantem; Neſcitis
quid iſta ſignificent? Dic; Ecce
venit rex Babylonis in Jeruſa-
lem: & aſſumet regem, & prin-
cipes ejus, & adducet eos ad
13 ſemetipſum in Babylonem. Et
tollet de ſemine regni, feriétque
cum eo fœdus: & ab eo acci-
piet jusjurandum: ſed & fortes
14 terræ tollet, Ut ſit regnum hu-
mile, & non elevetur, ſed cuſto-
diat pactum ejus, & ſervet illud.
15 Qui recedens ab eo miſit nun-
tios ad Ægyptum, ad daret ſibi
equos, & populū multū. Num-
quid proſperabitur, vel conſe-
quetur ſalutem qui fecit hæc?
& qui diſſolvit pactum, num-
quid effugiet?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ιζ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-
2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, διήγησαι διήγημα,
καὶ εἰπὸν παραβολὴν πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσ-
3 ραὴλ, Καὶ ἐρεῖς, Τάδε λέγει κύριος, (α)
Ἀετὸς ὁ μέγας ὁ μεγαλοπτέρυγος, ὁ μα-
κρὸς τῇ (*) ἐκτάσει, πλήρης ὀνύχων, ὃς ἔχει
τὸ ἥγημα εἰσελθεῖν εἰς τὸν Λίβανον, καὶ ἔ-
4 λαβε τὰ (β) ἐπίλεκτα τῆς κέδρου, Τὰ
ἄκρα τῆς ἁπαλότητος ἀπέκνισε, καὶ ἤνεγ-
κεν αὐτὰ εἰς γῆν (γ) Χαναὰν, εἰς πόλιν
5 τετειχισμένην ἔθετο αὐτά. Καὶ ἔλαβεν
ἀπὸ τοῦ σπέρματος τῆς γῆς, καὶ ἔδωκεν
αὐτὸ εἰς τὸ πεδίον φυτὸν ἐφ᾽ ὕδατι πολ-
6 λῷ, ἐπιβλεπόμενον ἔταξεν αὐτό. Καὶ ἀν-
έτειλε, καὶ ἐγένετο εἰς ἄμπελον (δ) ἀσθενοῦ-
σαν καὶ (ε) μικρὰν, τοῦ ἐπιφαίνεσθαι αὐτὴν
τὰ κλήματα αὐτοῖς ἐπ᾽ αὐτό· καὶ ῥίζαι
αὐτῆς ὑποκάτω αὐτῆς ἦσαν· καὶ ἐγένετο εἰς
(ζ) ἄμπελον, καὶ ἐποίησεν ἀπώρυγας, καὶ
7 ἐξέτεινε τὰς ἀναδενδράδας αὐτῆς. Καὶ ἐγέ-
νετο ἀετὸς ἕτερος μέγας, μεγαλοπτέρυ-
γος, πολὺς ὄνυξι· καὶ ἰδοὺ ἡ ἄμπελος αὕτη
περιπεπλεγμένη πρὸς αὐτὸν, καὶ (η) ῥίζαι
αὐτῆς πρὸς αὐτὸν, καὶ τὰ κλήματα αὐτῆς
(θ) ἐξαπέστειλεν αὐτῷ, τοῦ ποτίσαι αὐτὴν
8 σὺν τῷ (*) βώλῳ τῆς φυτείας αὐτῆς. Εἰς πεδίον
καλὸν ἐφ᾽ ὕδατι πολλῷ αὕτη πιαίνεται, τοῦ (ι)
ποιεῖν βλαστοὺς, καὶ φέρειν καρπὸν, τοῦ εἶναι
9 εἰς ἄμπελον μεγάλην. Διὰ τοῦτο εἰπὸν, Τάδε
λέγει κύριος, Εἰ (κ) κατευθυνεῖ; οὐχὶ
αἱ ῥίζαι τῆς ἁπαλότητος αὐτῆς καὶ ὁ καρ-
πὸς σαπήσεται; καὶ ξηρανθήσεται πάντα
τὰ προανατέλλοντα αὐτῆς, καὶ οὐκ ἐν βρα-
χίονι μεγάλῳ, οὐδὲ ἐν λαῷ πολλῷ, τοῦ ἐκ-
10 σπάσαι αὐτὴν ἐκ ῥιζῶν αὐτῆς. Καὶ ἰδοὺ
πιαίνεται. μὴ κατευθυνεῖ; οὐχὶ ἅμα τῷ
(*) ἅψασθαι αὐτῆς ἄνεμον τὸν καύσωνα
(λ) ξηρανθήσεται; σὺν τῷ (*) βώλῳ ἀνατολῆς
11 (μ) αὐτῆς ξηρανθήσεται. Καὶ ἐγένετο λόγος
12 κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου,
εἰπὸν δὴ πρὸς τὸν (ν) οἶκον τὸν παραπικραίνον-
τα, Οὐκ ἐπίστασθε τί (ξ) ἦν ταῦτα; εἰ-
πὸν, Ὅταν ἔλθῃ βασιλεὺς Βαβυλῶνος
(ο) ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, καὶ λήψεται τὸν βασιλέα
αὐτῆς, καὶ τοὺς ἄρχοντας αὐτῆς, καὶ ἄξει αὐ-
13 τοὺς πρὸς ἑαυτὸν εἰς Βαβυλῶνα. Καὶ λή-
ψεται ἐκ τοῦ σπέρματος τῆς βασιλείας, καὶ
διαθήσεται πρὸς αὐτὸν διαθήκην, καὶ εἰσ-
άξει αὐτὸν ἐν ἀρᾷ, καὶ τοὺς (π) ἡγεμόνας τῆς
14 γῆς λήψεται, Τοῦ γενέσθαι εἰς βασιλείαν ἀσθε-
νῆ, τὸ καθόλου μὴ ἐπαίρεσθαι, τοῦ φυλάσσειν
15 τὴν διαθήκην αὐτοῦ, (ρ) καὶ ἱστάνειν αὐτήν. Καὶ
ἀποστήσεται ἀπ᾽ αὐτοῦ, τοῦ ἐξαποστέλλειν ἀγγέ-
λους ἑαυτοῦ εἰς Αἴγυπτον, τοῦ δοῦναι αὐτῷ ἵπ-
πους καὶ λαὸν πολύν. εἰ κατευθυνεῖ, εἰ δια-
σωθήσεται ὁ ποιῶν ἐναντία; καὶ παραβαίνων διαθήκην εἰ (σ) διασωθήσεται;

CAP. XVII.

ET factus eſt ſermo Domini ad 1
me, dicens, Fili hominis, narra 2
narrationem, & dic parabolam ad
domum Iſrael, Et dices; Hæc di- 3
cit Dominus; Aquila magna ma-
gnarum alarum, longa extenſio-
ne, plena unguium, quæ habet du-
ctum intrandi in Libanum; &
tulit electa cedri: Summitates 4
teneritudinis avellit: & attulit
eas in terram Chanaan: in civita-
te murata poſuit illas. Et tulit 5
de ſemine terræ: & dedit illud
in campo (a) plantationem ſuper
aquam multam: (b) ut conſpicere-
tur, poſuit illud: Ortúmque eſt, 6
& factum in vitem infimam &
parvulam: ut (c) ipſa extare fa-
ceret ramos ſuos ſuper illum: &
radices illius ſubter illam erant.
Et facta eſt in vitē, & fecit pro-
pagines, & extendit ramos ſuos.
Et facta eſt aquila altera gran- 7
dis, magnarum alarum, multa un-
guium: & ecce vitis hæc impli-
cata erat ad eam: & radices ejus
ad illam: & ramos ſuos extendit
ad illam, ut irrigaretur ab illa
cum gleba plantationis ſuæ. In 8
campo bono ſuper aquam multam
ipſa impinguatur, ut faciat ger-
mina: & afferat fructum, ut ſit in
vitem grandem. Propterea dic, 9
Hæc dicit Dominus; Si dirige-
tur? Nónne radices teneritudi-
nis ejus, & fructus putreſcent, &
areſcent omnia, quæ ex ea proger-
minant, & non in brachio ma-
gno, neque in populo multo, ut
evellat eam à radicibus ſuis? Et 10
ecce impinguatur. Nunquid di-
rigetur? Nónne ſtatim ut teti-
gerit eam ventus urens; areſcet?
cū gleba germinis ſui areſcet. Et 11
factum eſt verbū Domini ad me,
dicens; Fili hominis, dic nunc ad 12
domum exaſperantem: Neſcitis
quid ſint iſta? (d) Dic; Cum
venerit rex Babylonis ſuper Hie-
ruſalem: & capiet regem ejus,
& principes ejus: & ducet eos
ad (e) ſe in Babylonem. Et tollet 13
de ſemine regni, & diſponet ad
eum teſtamentum, & introducet
eum in maledictione: & prin-
cipes terræ tollet, ut ſit in re- 14
gnum infirmum, omninoque non
elevetur cuſtodiendo teſtamentū
ipſius, & ſtatuat illud. Et rece- 15
det ab eo, mittendo nuntios ſu-
os in Ægyptum, ut ſibi daret
equos, & populum multum. Si
dirigetur, ſi ſalvabitur, qui
facit contraria? Et, qui tranſ-
greditur teſtamentum, ſi ſalva-
bitur?

MS. A. (α) Ὁ ἀετὸς (*) * ἐκστάσει, (β) ἐκλεκτὰ (γ) Χαλδαίων, (δ) ἀσθενοῦσαν (ε) μικρὰν τῷ μεγέθει, τῷ ἐπιφαίνεσθαι αὐτῇ τὰ κλήματα αὐτῆς ἐπ᾽ αὐτήν· καὶ αἱ ῥίζαι (ζ) ἄμπελον μεγάλην, καὶ (η) αἱ ῥίζαι (θ) καὶ ἐξαπέστειλεν αὐτὴν τοῦ ποτίσαι (*) βώλῳ (ι) ποιῆσαι καρπὸν, καὶ ἐνέγκαι βλαστὸν, τοῦ εἶναι (κ) κατευθυνθήσεται; (*) ἅψασθαι (λ) ξηρανθήσεται ξηρασίᾳ σὺν (*) βώλῳ (μ) αὐτῆς. Καὶ ἐγένετο (ν) οἶκον Ἰσραὴλ τὸν (ξ) ἐστι ταῦτα; εἶπον, ὅταν (ο) εἰς Ἱερουσαλὴμ, λήμψεται τὸν βασιλέα αὐτῆς, * καὶ ἄξει αὐτοὺς πρὸς αὐτὸν εἰς Βαβυλῶνα. (π) ἡγουμένοις (ρ) τοῦ ἰσχύειν (σ) σωθήσεται; Διὰ τοῦτο, Ζῶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

יז

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ בר אדם חוד חידתא ומתל מתלא על בית
3 ישראל׃ ותימר כדנן אמר יי אלהים נשרא רבא רב גפין אריך אברין חפי כנפין דיליה
4 ציורין אתא ללבנן ונסיב ית עוברתא דארזא רמא׃ ית ריש שבשתיה נסיב ואובליה
לארעא דבטלא מפולחנא בארעא דכנען ועד לא יעלון לה בית ישראל בקרית תגרין
5 שויה׃ ונסיב מזרעא דארעא ויהביה בחקל טב למזרע נצביה על מיין סגיאין גפן
6 נצבא שויה׃ וצמח והוה לגפן תקיף מכיך בקומא לכפפא עוברתיה ליה ושרשוהי
7 תחותוהי יהון והוה לגפן ועבד שבקין ושלח עוברן׃ והוה נשרא חד רבא רב גפין
וחפי כנפין והא גופנא הדא כפת שרשוהי עלוהי ועוברתיה שלחת ליה לאשקאה
8 יתה מעונית נצבתה׃ בחקל טב עלי מיין סגיאין היא שתילה למעבד ענף ולמטען
9 פרין למהוי לגפן תקיף׃ אמר כדנן אמר יי אלהים התצלח הלא ית שורשהא יפסיק
וית אבה יקטיף ויבשון כל טרפי צמחה יתרון ולא במשרין סגיאין ובעם סגי ייתון
10 למעקר יתה משורשהא׃ והא שתילא התצלח הלא כמקרב בה רוח קדומא תיבש
11 12 מיבש על עונית נצבתה תיבש׃ והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ אמר כען
לעמא סרבנא הלא ידעתון מה אלין אמר הא אתא מלכא דבבל לירושלם ודבר ית
13 מלכה וית רברבהא ואוביל יתהון לותיה לבבל׃ ודבר מזרעא דמלכותא וגזר עמיה
14 קים ואעיל יתיה במומי וית רברבי ארעא דבר׃ למהוי מלכו חלשא בדיל דלא
15 לאתרברבא למטר ית קימיה למפלחיה׃ ומרד ביה לשלחא אזגדוהי למצרים למתן
ליה סוסין ועם סגי היצלח הישתיזב דעביד אלין ומשני קים הישתיזב׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XVII.

ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: Fili ho- 1 2
minis propone ænigma & narra parabolam ſuper domum Iſrael. Et dices: 3
Hæc dicit Dominus Deus; Aquila grandis, magna pennis, longa membris,
operta plumis figuratis, venit ad Libanum, & tulit propaginem cedri excel-
ſæ. Summitatem ramorum ejus tulit, & tranſportavit eam in terram incul- 4
tam in terram Chanaan; & antequam ingrederetur in eam domus Iſrael, in
civitate negotiatorum poſuit illam. Et tulit de ſemine terræ, & poſuit illud 5
in agro apto ſementi: ſeminavit illud ad aquas multas, vitem plantatam po-
ſuit illud. Et germinavit, & fuit in vitem fortem, humilem ſtatura, ut incur- 6
varent ſeſe propagines ei, & radices ejus ſub ea eſſent: factáque eſt in vi-
tem, & fecit propagines, & emiſit palmites. Et fuit aquila altera ma- 7
gna, magna pennis & cooperta alis; & ecce vitis iſta incurvavit ſuper eam ra-
dices ſuas, & propagines ſuas miſit ad eam, ut irrigaret eam de areolis planta-
tionis ſuæ. In agro bono ſuper aquas multas eſt tranſplantata, ut faceret ra- 8
mos & portaret fructum, ut eſſet in vitem fortem. Dic: Hæc dicit Dominus 9
Deus; Proſperabitur? an non radices ejus ſuccidet, & fructum ejus decerpet,
& areſcent? omnes frondes germinis ejus defluent: & non cum exercitu
multo neque cum populo grandi venient, ut evellant eam à radicibus ſuis. Et 10
ecce plantata num proſperabitur? nonne cùm tetigerit eam ventus urens, are-
ſcendo areſcet? ſuper areis plantationis ſuæ areſcet. Et factum eſt verbum 11
prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: Dic nunc populo contumaci: Non- 12
ne ſcitis quæ ſunt hæc? Dic: Ecce venit rex Babylonis ad Jeruſalem, & aſ-
ſumpſit regem & principes ejus, & traduxit eos ad ſe in Babylonem. Et tulit 13
de ſemine regio, & pepigit cum eo pactum, & introduxit eum in juramen-
tum, & principes terræ tulit. Ut eſſet regnum infirmum, & non magnificare- 14
tur; ut cuſtodiret pactum ejus, & ſerviret ei. Et rebellavit in eum, ut mitte- 15
ret legatos ſuos in Ægyptum, ut daret ſibi equos & populum multum; nun-
quid proſperabitur aut liberabitur qui fecit hæc? & qui mutavit pactum, nun-
quid liberabitur?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܩܦܠܐܘܢ * ܝܙ *

* ܘܗܘܐ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠܝ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܐܡܬܠ
ܐܘܚܕܬܐ. ܘܐܡܬܠ ܡܬܠܐ ܥܠ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܢܫܪܐ ܪ
ܕܪܘܪܒܝܢ ܓܦܘܗܝ. ܘܐܪܝܟܝܢ ܐܒܪܘܗܝ. ܘܫܠܡܝܢ ܛܦܪܘܗܝ. ܘܡܥܒܝܢ ܢܨܘܗܝ. ܐܬܐ
ܠܠܒܢܢ ܘܢܣܒ ܡܢ ܓܒܝܐ ܕܒܪܘܬܐ. * ܘܦܣܩ ܪܝܫ ܡܪܒܝܬܗ. ܘܐܘܒܠܗ ܠܐܪܥܐ ܕܟܢܥܢ
ܘܣܡܗ ܒܡܕܝܢܬܐ ܕܬܓܪܐ. * ܘܢܣܒ ܡܢ ܙܪܥܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܐܪܡܝܗ ܒܡܕܒܪܐ. ܒܢܨܒܬܐ ܥܠ
ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܣܡܗ ܒܕܘܩܐ. * ܘܢܒܥ ܘܗܘܐ ܠܓܦܬܐ ܪܟܝܟܬܐ ܘܡܟܝܟܬ ܩܘܡܬܐ.
ܕܢܬܚܙܘܢ ܫܒܘܫܝܗ ܠܘܬܗ. ܘܥܩܪܝܗ ܬܚܘܬܘܗܝ ܢܗܘܘܢ. ܘܗܘܬ ܓܦܬܐ. ܘܐܘܥܕܬ ܫܒܘܫܐ
ܘܦܫܛܬ ܥܩܪܝܗ. * ܘܗܐ ܢܫܪܐ ܐܚܪܢܐ ܪܒܐ ܕܪܘܪܒܝܢ ܓܦܘܗܝ ܘܣܓܝܐܝܢ ܛܦܪܘܗܝ. ܘܗܐ
ܓܦܬܐ ܗܕܐ ܟܪܟܬ ܥܩܪܝܗ ܥܠܘܗܝ. ܘܫܒܘܫܝܗ ܫܕܪܬ ܠܘܬܗ. ܕܢܫܩܝܗ ܡܢ
ܕܒܪܘܟܗ. * ܒܚܩܠܐ ܫܦܝܪܐ ܘܥܠ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܢܨܝܒܐ. ܕܬܥܒܕ ܛܪܦܐ ܘܬܥܒܕ ܦܐܪܐ. ܘܬܗܘܐ
ܠܓܦܬܐ ܡܫܒܚܬܐ. * ܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܠܐ ܬܨܠܚ. ܐܠܐ ܥܩܪܝܗ ܢܬܦܣܩܘܢ
ܘܦܐܪܝܗ ܢܬܡܣܘܢ ܘܢܝܒܫܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܛܪܦܐ ܕܡܪܒܝܬܗ ܢܝܒܫܘܢ. ܘܠܐ ܒܕܪܥܐ ܪܡܐ
ܘܠܐ ܒܥܡܐ ܣܓܝܐܐ ܢܥܩܪܘܢܗ ܡܢ ܥܩܪܝܗ. * ܗܐ ܢܨܝܒܐ ܐܠܐ ܠܐ ܬܨܠܚ. ܘܡܐ ܕܢܩܪܒ ܒܗ
ܪܘܚܐ ܕܫܘܦܢܐ. ܬܝܒܫ ܒܟܪܒܐ ܕܢܨܒܬܗ. * ܘܗܘܐ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠܝ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ.
ܐܡܪ ܠܒܝܬܐ ܡܪܡܪܢܐ. ܠܐ ܝܕܥܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢܐ ܐܢܝܢ ܗܠܝܢ. ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܐ ܐܬܐ ܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܘܢܕܒܪ ܠܡܠܟܗ ܘܠܪܘܪܒܢܝܗ. ܘܢܝܬܐ ܐܢܘܢ ܠܒܒܠ. * ܘܢܣܒ
ܡܢ ܙܪܥܐ ܕܡܠܟܘܬܐ. ܘܢܩܝܡ ܥܡܗ ܩܝܡܐ. ܘܢܥܠܝܘܗܝ ܥܡܗ ܒܡܘܡܬܐ. * ܘܢ
ܠܥܫܝܢܐ ܕܐܪܥܐ ܕܠܐ ܢܬܪܘܪܒܘܢ. ܐܠܐ ܬܗܘܐ ܡܠܟܘܬܗܘܢ ܡܟܝܟܐ. ܘܢܛܪܘܢ ܩܝܡܗ
ܘܢܩܝܡܘܢܝܗܝ ܥܡܗ. * ܘܡܪܕ ܒܗ. ܘܫܕܪ ܐܝܙܓܕܘܗܝ ܠܡܨܪܝܢ. ܕܢܬܠܘܢ ܠܗ
ܪܟܫܐ ܘܥܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܠܐ ܬܨܠܚ ܘܠܐ ܢܬܦܨܐ ܡܢ ܕܥܒܕ ܗܠܝܢ.

CAP. XVII.

ET factus eſt ad me ſermo Domini, dicendo; 1
Fili hominis, compone ænigma, & effinge proverbium de domo Iſraelis, ac dicito; 2
Sic ait Dominus dominorum; Aquila quædam maxima ingentibus alis, longis pennis, integris unguib⁹, denſiſq; plumulis inſtructa, venit ad Libanum, ſumpſitque ex electiſſimis abietibus: 3
Truncavit faſtigium germinis ejus, aſportavit illud in terram Chanaan, collocavit in urbe mercatorum. 4
Et accipiens de ſemine terræ, jecit illud in deſertum, in plantarium ſecus aquas multas, poſuitque illud in ſpeculam. 5
Germinavit hoc, factúmque eſt vitis tenella & humilis ſtatura, ita ut conſpicerentur ſurculi ejus ſuper illam *aquilam*, & radices ejus ſubter illam: & cùm facta eſſet vitis, emiſit ſurculos, porrexítque radices ſuas. 6
Rurſus ecce aquilam aliam ingentem magnis alis & multis unguibus inſtructã, quam vitis illa circunvolvit radicib⁹ ſuis, palmitéſque ſuos jecit ſup eam, ut irrigaret eam de gleba plantarii ſui. 7
In agro pulcherrimo, & ſecus aquas multas plantata fuit, ut frondeſceret & fructus ferret, eſſétque vitis egregia. 8
Dic, Sic ait Dominus dominorum; Non proſperabitur, ſed radices ejus ſuccidentur, fruct⁹ ejus marceſcent & areſient, omniáque folia germinis ejus exſiccabuntur; & brachio haud ſublimi, populíſque haud multis evellet eam ab radicib⁹. 9
Ecce plantata quidem eſt, at non proſperabitur; imò ſtatim atque flaverit in eã ventus uredinis, areſcet in gleba ſua natali. 10
Deinde fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 11
Fili hominis, dic domui *iſti* rebelli; Neſcitis quid iſta ſibi velint? Dic eis, Ecce venturus eſt rex Babylonis in Jeruſalẽ, & regẽ, ac principes ejus abducturus, & Babylonem perducturus. 12
Et accipiens de ſtirpe regia, inibit cum illa fœdus, & intrabit cum illa in jusjurandum; 13
Abducet autem potentiores terræ, ne ſe *denuò* extollant, ſed humile maneat regnũ ipſorum, ac *proinde* ſervent præſtẽntque fœdus *initum* cum ipſo. 14
Rebellabit autem illa contra hunc, mittétque legatos ſuos in Ægyptum ut ſuppeditet ſibi equos populúmque copioſũ: *at* non proſperabitur nec eripiet ſe qui talia fecerit. 15

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل السابع عشر *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان اخبر اخبارا * وقل مثلا لبيت اسرايل * ويقول * هكذا
يقول ادوناي الرب * النسر العظيم الجناحين * الطويل بعدهما * المملو مخالب * الذي له الظن
ليدخل الي لبنان ودخل * قال واخذ خيار الارز * ومن البسطة قطعها * وجا بها الي كنعان
مدينة مسورة وضعها * واخذ من زرع الارض * واعطاه لبقعة غرسا على ماء كثير * رتبه منظورا
* فطلع وصار كرمة صغيرة * وضعيف في قدرها * ليظهر هناك اغصانها عليها * وكانت اصولها
تحتها * وصارت كرمة عظيمة * وصنعت هدبها * ومدت اغصانها * وكان النسر العظيم * العظ
الجناحين * الكثير المخالب * واذا هناك الكرمة ضمت عليه * واصولها عليه * وارسلت اغصانها
له * ليسقيها مع طينة غرسها * في البقعة الحسنة على الماء الكثير هناك تدسمت * لتصنع فروع
وتحمل ثمرا * لتكون كرمة عظيمة * لاجل هذا قل * هكذا يقول ادوناي الرب * لا تستقيم
كلا * اصول بساطتها وثمرها تيبس * ويجف نباتها * وليس بذراع عظيمة * ولا بشعب كثير
ليجردوها من اصولها * واذا تدسمت ولا تستقيم * اليس اذا يلمسها ريح سموم تجف جفافا مع
طينة نباتها تجف * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * قل لبيت اسرايل المتمرد * ليس
تعلمون ما هي هناك التي قلتها * اذا جاء ملك بابل الي ايروشليم * وياخذ روساها * وياتي
معه الي بابل * وياخذ من زرع المملكة * ويعهدون معه عهدا * ويدخله في اللعنة * وياخذ
مقدمي الارض * ويصيروا مملكة ضعيفة بالكلية * ان لعلهم يرتفعوا * ليحفظوا عهده ويقدموه
* ويتبعد منه ليرسل رسلا الي مصر * ليعطوه خيلا وشعبا كثيرا * لا يستقيم ولا يخلص
الذي يصنع بالخلاف * ويخالف العهد لا يخلص *

CAP. XVII.

DEinde fuit ſermo Domini ad me dicens. 1
O fili hominis, narra narrationem, & dic proverbiũ domui Iſraelis; inquã dicas, 2
Sic ait Adonai Dominus: Aquila illa maximarum alarum, longiſſimæ extenſionis, plena unguibus, cujus mens eſt ingrediendi Libanum (& quidem ingreſſa eſt) dixit; Equidem accipiam optimas cedrorum. 3
Ab expanſione ramorum *ſuccîdit eas, aſportavitque in Chanaan, in urbe murata collocavit eas.* 4
Accepit etiam de ſemine terræ, poſuitque illud in planitie quadam in plantarium ſecus aquam copioſam, ſpectabile diſpoſuit illud: 5
Cúmque exortum fuiſſet, factum eſt vitis infima & exiguæ molis, ut hæc produceret ramos ſuos ſuper illam; radices autem ejus eſſent ſub illa. Deinde facta eſt vitis magna, protulitque pampinos, & extendit ramos ſuos. 6
Et fuit ut aquilæ illi magnæ, ſummarum alarum, et multarum unguium, vitis hæc ſtatim ſe radiceſque ſuas agglutinaret, mitteretque ramos ſuos ad eam; ut irrigaret ſe cum gleba plantarii ſui. 7
In pulcherrima planitie, ſecus aquam copioſam hæc impinguata eſt, ut proferret pampinos, ferretque fructum; ut fieret vitis magna. 8
Propterea dic, Ita dicit Adonai Dominus; Nequaquam dirigetur, minimè gentium: radices expanſionis ramorum *ejus & fructus ejus areſcent, & marceſcet germen ejus, neq; magnum brachium, neque multum populum* adhibebunt *ut evellant eam ab radicibus.* 9
Cùm impinguata ſit, nec tamen redintegrata; annon ubi tetigerit eam ventus calidus, areſcet? cum gleba ſui germinis areſcet. 10
Tum fuit ſermo Domini ad me, dicens; 11
O fili hominis, dic domui Iſraelis refractariæ; Neſcitis quæ ſint iſta quæ dixi? Cùm venerit rex Babelis in Jeruſalem, capiet principes ejus, abducetque eos ſecum in Babelem: 12
Et accipiet de ſemine regni, pangentque cum eo fœdus, & introducet illud in maledictionem: Accipiet etiam primores terræ, 13
ut fiat regnum omnino debile, ne fortè elevent ſeſe, ſed ut ſervent fœdus ejus, et præſtent illud. 14
Recedet autem ab illo, mittendo legatos in Ægyptum, ut copiam ſibi faciant equorum & populi multi. Non dirigetur, neque ſalvabitur qui perfidè agit, & qui fœdus violat, non eripiet ſeſe. 15

, regis loco in nisi , Deus Dominus dixit , ego *Vivens*
16 חי־אני נאם אדני יהוה אם־לא במקום המלך
irritavit cujus & , *ejus* juramentum sprevit cujus eũ *facientis* regnare
המליך אתו אשר בזה את־אלתו ואשר הפר את־
exercitu in non Et .morietur Babel medio in eo cum , *ejus* pactum
17 בריתו אתו בתוך־בבל ימות : ולא בחיל
effundendo in , prælio in Parhoh eo cum faciet multo cœtu *in* & , grandi
גדול ובקהל רב יעשה אותו פרעה במלחמה בשפך
.multas animas *succidendum ad : ligneam turrim ædificando in* & , aggerem
סללה ובבנות דיק להכרית נפשות רבות :
, suã manũ dedit ecce & : pactum *irritandum ad* , juramentum sprevit Et
18 ובזה אלה להפר ברית והנה נתן ידו
Dominus dixit sic Propterea ? evadet non , fecit hæc omnia &
19 וכל־אלה עשה לא ימלט : לכן כה־אמר אדני
meũ fœdus & , sprevit quod meũ juramentũ nisi , ego *Vivens* : Deus
יהוה חי־אני אם־לא אלתי אשר בזה ובריתי
eum super expandam Et .ejus caput in *illud* dedero & :irritavit quod
20 אשר הפיר ונתתיו בראשו : ופרשתי עליו
eum faciam adducere & : mea sagena in comprehendetur & , meum rete
רשתי ונתפש במצודתי והביאותיהו
est prævaricatus qua , *ejꝰ prævaricatione* , ibi eo cum judicabor &, Babel in
בבלה ונשפטתי אתו שם מעלו אשר מעל־
gladio in suis *alis* omnibus cum , ejus profugi omnes Et .me contra
21 בי : ואת כל־מברחו בכל־אגפיו בחרב
ego quod scietis & : *expandentur* ventũ omnẽ in residui & , cadent
יפלו והנשארים לכל־רוח יפרשו וידעתם כי אני
sumam Et : Deus Dominus dixit Sic .sum locutus Dominus
22 יהוה דברתי : כה אמר אדני יהוה ולקחתי
, ejꝰ *tenerorum ramorum capite de dabo* & , sublimis cedri summitate de ego
אני מצמרת הארז הרמה ונתתי מראש ינקותיו
.elevatũ & , excelsum montem super ego plantabo & , excindam tenerum
רך אקטף ושתלתי אני על הר־גבה ותלול :
faciet & , ramum elevabit & , illud plantabo Israel sublimi monte In
23 בהר מרום ישראל אשתלנו ונשא ענף ועשה
, *avis omnis* ea sub habitabunt Et *.illustrem cedrum in erit* & , fructum
פרי והיה לארז אדיר ושכנו תחתיו כל צפור
omnia scient Et *.habitabunt* ejꝰ ramorum umbra in *ala omnis*
24 כל־כנף בצל דליותיו תשכנה : וידעו כל־
, sublime lignum feci humiliare Dominus ego quòd , agri ligna
עצי השדה כי אני יהוה השפלתי עץ גבה
feci florere & , viride lignum feci siccare : humile lignum feci sublimare
הגבהתי עץ שפל הובשתי עץ לח והפרחתי
.feci & , sum locutus Dominus Ego .aridum lignum
עץ יבש אני יהוה דברתי ועשיתי :

CAP. XVIII. יח

vos vobis Quid *: dicendum ad* , me ad Domini verbum fuit Et
1 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר : מה־לכם אתם
2 Patres : dicendo , Israel *humo* super istam parabolam *parabolizantes*
משלים את־המשל הזה על־אדמת ישראל לאמר אבות
, ego *Vivens* ? obstupescent filiorum dentes & , acerbam uvam comedent
3 יאכלו בסר ושני הבנים תקהינה : חי־אני
parabolam *parabolizare* ultrà vobis erit si : Deus Dominus dixit
נאם אדני יהוה אם־יהיה לכם עוד משל המשל
, patris anima Sicut *.ipsæ mihi* animæ omnes *En* .Israel in istam
4 הזה בישראל : הן כל־הנפשות לי הנה כנפש האב
.morietur ipsa , *peccans* anima *: ipsæ mihi* filii anima sic &
וכנפש הבן לי־הנה הנפש החטאת היא תמות :
.justitiam & , judicium fecerit & , justus fuerit *cum* vir Et
5 ואיש כי־יהיה צדיק ועשה משפט וצדקה :

Versio VULG. LAT.

16 Vivo ego, dicit Dominus Deus: quoniam in loco regis, qui constituit eum regem, cujus fecit irritum juramentum, & solvit pactum, quod habebat cum eo, in medio Babylonis morietur. 17 Et non in exercitu grandi, neque in populo multo faciet contra eum Pharao prælium : in jactu aggeris, & in extructione vallorum, ut interficiat animas multas. 18 Spreverat enim juramentũ ut solveret fœdꝰ, & ecce dedit manum suam : & cùm omnia 19 hæc fecerit, non effugiet. Propterea hæc dicit Dominus Deus; Vivo ego, quoniam juramentum quod sprevit, & fœdus quod prævaricatus est, ponam in caput ejus. 20 Et expandam super eum rete meum, & comprehendetur in sagena mea : & adducam eum in Babylonem, & judicabo eum ibi, in prævarica- 21 tione quâ despexit me. Et omnes profugi ejꝰ, cũ universo agmine suo, gladio cadent: residui autem in omnem ventum dispergentur: & scietis quia ego Dominus lo- 22 cutus sum. Hæc dicit Dominus Deus; Et sumam ego de medulla cedri sublimis, & ponam: de vertice ramorum ejus tenerũ distringam, & plantabo super montem excelsum & eminen- 23 tem. In monte sublimi Israel plantabo illud, & erumpet in germen, & faciet fructum, & erit in cedrum magnam : & habitabunt sub ea omnes volucres, & universum volatile sub umbra 24 frondium ejus nidificabit. Et scient omnia ligna regionis, quia ego Dominus humiliavi lignum sublime, & exaltavi lignum humile : & siccavi lignum viride, & frondere feci lignum aridum. Ego Dominus locutus sum, & feci.

CAP. XVIII.

1 ET factus est sermo Domini ad 2 me, dicens; Quid est quòd inter vos parabolam vertitis in proverbium istud in terra Israel, dicentes; Patres comederunt uvam acerbam, & dentes filio- 3 rum obstupescunt? Vivo ego, dicit Dominus Deus, si erit ultrà vobis parabola hæc in pro- 4 verbium in Israel. Ecce omnes animæ, meæ sunt : ut anima patris, ita & anima filii mea est: anima, quæ peccaverit, ipsa mo- 5 rietur. Et vir si fuerit justus, & fecerit judicium & justitiam,

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

16 Ζῶ ἐγὼ, λέγει κύριος, ἐὰν μὴ (τ) ἐν τόπῳ ὁ βασιλεὺς ὁ βασιλεύσας αὐτὸν, ὃς ἠτίμωσε τὴν ἀρὰν μου, ϗ ὃς παρέβη τὴν διαθήκην μου, μετʼ αὐτοῦ ἐν μέσῳ Βαβυλῶνος τελευτήσει. 17 Καὶ οὐκ ἐν δυνάμει μεγάλῃ οὐδὲ ἐν ὄχλῳ πολλῷ ποιήσει πρὸς αὐτὸν Φαραὼ πόλεμον, ἐν χαρακοβολίᾳ ϗ ἐν οἰκοδομῇ (υ) βελοστάσεων, τοῦ ἐξᾶραι 18 ψυχάς. (φ) Καὶ ἠτίμωσεν ὁρκωμοσίαν τοῦ παραβῆναι διαθήκην. ϗ ἰδοὺ (χ) δέδωκε τὴν χεῖρα αὐτοῦ, ϗ πάντα ταῦτα ἐποίησεν 19 αὐτῷ, μὴ σωθήσεται. Διὰ τοῦτο εἰπὸν, Τάδε λέγει κύριος, Ζῶ ἐγὼ, ἐὰν μὴ (ψ) τὴν ὁρκωμοσίαν μου ἣν ἠτίμωσε, ϗ τὴν διαθήκην μου ἣν παρέβη, ϗ δώσω αὐτὴν 20 εἰς κεφαλὴν αὐτοῦ. Καὶ ἐκπετάσω ἐπʼ αὐτὸν τὸ (ω) δίκτυον, ϗ ἁλώσεται ἐν τῇ 21 περιοχῇ (α) αὐτοῦ. Ἐν πάσῃ παρατάξει αὐτοῦ ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται· ϗ τοὺς καταλοίπους εἰς πάντα ἄνεμον διασπερῶ, ϗ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος λελάληκα. (β) 22 Διότι τάδε λέγει κύριος, Καὶ λήψομαι ἐγὼ ἐκ τῶν (γ) ἐκλεκτῶν τῆς κέδρου ἐκ κορυφῆς, καρδίας (δ) αὐτῶν ἀποκνιῶ, καὶ καταφυτεύσω ἐγὼ ἐπʼ ὄρος ὑψηλὸν, καὶ 23 κρεμάσω αὐτὸν Ἐν ὄρει μετεώρῳ (ε) Ἰσραήλ· ϗ καταφυτεύσω, ϗ ἐξοίσει βλαστὸν, ϗ ποιήσει καρπὸν, ϗ ἔσται εἰς κέδρον μεγάλην· ϗ ἀναπαύσεται ὑποκάτω αὐτοῦ πᾶν (ζ) ὄρνεον, ϗ πᾶν πετεινὸν ὑπὸ τὴν σκιὰν αὐτοῦ ἀναπαύσεται· (η) τὰ κλήματα 24 αὐτοῦ ἀποκατασταθήσεται. Καὶ γνώσονται πάντα τὰ ξύλα τοῦ (θ) πεδίου, διότι ἐγὼ κύριος ὁ ταπεινῶν ξύλον ὑψηλὸν, ϗ (ι) ὑψῶν ξύλον ταπεινὸν, ϗ ξηραίνων ξύλον χλωρὸν, ϗ ἀναθάλλων ξύλον ξηρόν. ἐγὼ κύριος λελάληκα, ϗ ποιήσω.

Vivo ego, dicit Dominus, nisi in 16 loco, (f) ubi rex, qui regnare fecit eum, qui sprevit maledictionem meam, & qui transgressus est testamentum meum cum eo, in medio Babylonis morietur. Et 17 non in virtute magna, neque in turba multa faciet adversus eum Pharao prælium, in jactu aggeris, & in ædificatione vallorum, ut auferat animas. Et [illegible] 18 pendit juramentum transgrediendo testamentum. Et ecce (g) dedit manum ejus: & hæc omnia fecit ei: non salvabitur. Proptereà dic, Hæc dicit Dominus; Vivo ego, nisi juramen- 19 tum meum, quod sprevit, & testamentum meum, quod transgressus est, & dabo illud in caput ejus. Et extendam super 20 eum (h) rete: & capietur in (i) circumstrictione ejus. In omni 21 acie ejus in gladio cadent: & residuos in omnem ventum disseminabo: & scietis, quia ego Dominus loquutus sum. Quia 22 hæc dicit Dominus; Et sumam ego de electis (k) cedri vertice: (l) de corde eorum avellam, & plantabo ego in montem excelsum, & suspendam illud In monte sublimi Israel: Et 23 plantabo, & proferet germen, & faciet fructum, & erit in cedrum magnam. Et requiescet subtus omnis avis: & omne volatile sub umbra ejus requiescet. (m) Rami ejus restituentur: Et sci- 24 ent omnia ligna campi, quia ego Dominus: qui humilio lignum excelsum, & exalto lignum humile: & arefacio lignum viride, & germinare facio lignum aridum. Ego Dominus loquutus sum, & faciam.

MS. A. (τ) ἐν τῷ τόπῳ ᾧ ὁ βασιλεὺς (υ) βελοστάσεως, (φ) Ὅτι ἠτίμασεν (χ) δέδωκεν (ψ) διαθήκην μου ἣν παρέβη, ϗ τὴν ὁρκωμοσίαν μου ἣν ἠτίμωσεν, ϗ δώσω αὐτὰ εἰς κεφαλὴν (ω) δίκτυόν μου, (α) αὐτοῦ. ϗ ἄξω αὐτὸν εἰς Βαβυλῶνα, καὶ διακριθήσομαι μετʼ αὐτοῦ ἐκεῖ τὴν ἀδικίαν αὐτοῦ ἣν ἠδίκησεν ἐν ἐμοί. Καὶ πάσας φυγαδείας αὐτοῦ ἐν πάσῃ τῇ παρατάξει αὐτοῦ (β) Διὰ τοῦτο εἰπὸν, Τάδε (γ) ἐπιλεκτῶν τῆς κέδρου κορυφῆς, (δ) αὐτῶν, ϗ δώσω ἀπὸ κεφαλῆς παραφυάδων αὐτῆς, καρδίας αὐτῶν ἀποκνιῶ, ϗ (ε) τοῦ Ἰσραήλ· (ζ) θηρίον, ϗ τὰ πετεινὰ (η) ϗ τὰ κλήματα (θ) ἀγροῦ, (ι) ὁ ὑψῶν

ΚΕΦ. ιη΄.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, 2 λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, τί ὑμῖν ἡ παραβολὴ (α) αὕτη ἐν τοῖς υἱοῖς Ἰσραήλ, λέγοντες, Οἱ πατέρες ἔφαγον ὄμφακα, ϗ οἱ 3 ὀδόντες τῶν τέκνων ἐγομφίασαν; Ζῶ ἐγὼ, (β) λέγει κύριος, ἐὰν γένηται ἔτι λεγομέ- 4 νη ἡ παραβολὴ αὕτη ἐν τῷ Ἰσραήλ· Ὅτι πᾶσαι αἱ ψυχαὶ ἐμαί εἰσιν, ὃν τρόπον ἡ ψυχὴ τοῦ πατρὸς, οὕτως ϗ ἡ ψυχὴ τοῦ υἱοῦ, ἐμαί εἰσιν. ἡ ψυχὴ ἡ (γ) ἁμαρτάνουσα, 5 αὕτη ἀποθανεῖται. Ὁ δὲ ἄνθρωπος ὃς ἔσται δίκαιος, ὁ ποιῶν κρίμα ϗ δικαιοσύνην,

CAP. XVIII.

ET factus est sermo Domini ad 1 me, dicens; Fili hominis, quid vo- 2 bis parabola hæc inter filios Israel, dicentes; Patres comederunt uvã acerbã, & dentes filiorũ (a) obstupuerunt? Vivo ego, dicit 3 Dominus; si fuerit ultrà, ut dicatur parabola hæc in Israel: Quia omnes animæ meæ sunt: 4 quomodò anima patris; ita & anima filii, meæ sunt. Anima quæ peccaverit, ipsa morietur. Homo 5 autem qui fuerit justus, qui facit judicium, & justitiam,

MS. A. (α) αὕτη ἐπὶ τῆς γῆς ἐν τοῖς (β) λέγει ἀδωναΐ κύριος, (γ) ἁμαρτάνουσα, ἀποθανεῖται. ϗ ὁ φαγὼν τὸν ὄμφακα, αἱμωδιάσουσιν οἱ ὀδόντες αὐτοῦ. Ὁ δὲ ἄνθρωπος ἔσται δίκαιος,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 קים אנא אמר יי אלהים אם לא באתרא דמלכא דאמליך יתיה דבסר על מומתיה
17 ודאשני ית קימיה עמיה בגו בבל ימות : ולא במשרין סגיאן ובעם סגי יעביד עמיה
18 פרעה קרבא במצבר מליתא ובמבני כרקום לשיצאה מדינן סגיאן : ובסר על מומי
19 לאשנאה קים והא אמטי ידיה לפרעה וכל אלין עבד לא ישתיזיב : בכן כדנן אמר יי
אלהים קים אנא אם לא מומתי דבסר וקימי דשני ואתן פורענות אורחיה ברישיה :
20 ואפרוס עלוהי מצדתי ויתאחד בסריגתי ואגלניה לבבל ואתפרע מניה תמן שקריה
21 דשקר קדמי : וית כל גברוהי בכל משריתיה בחרבא יתקטלון ודישתארון לכל רוח
22 יתבדרון ותדעון ארי אנא יי גזרית במימרי : כדנן אמר יי אלהים ואקרב אנא
ממלכותא דבית דוד דמתיל כארזא רמה ואקימניה מבני בנוהי יניק וארבי ואקימניה
23 במימרי בטור רם ומנטל : בטור קודשא דישראל אקימניה ויכניש משרין ויעביד
סומכון ויהי למלך תקיף ויסתמכון עלוהי כל צדיקיא וכל ענותניא בטלל מלכותיה
24 ישרון : וידעון כל מלכי עממיא ארי אנא יי אמאיכית מלכות דהות תקיפא ותקיפית
מלכות דהות חלשא אמאיכית מלכות עממיא דהות תקיפא כאעא רטיב ותקיפית
מלכות בית ישראל דהות חלשא כאעא יביש אנא יי גזרית במימרי ואקים :

יח

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : מא לכון דאתון מתלין ית מתלא הדין
3 על ארעא דישראל למימר אבהתא חטן ובניא לקן : קים אנא אמר יי אלהים אם יהי
4 לכון עוד מתל מתלא הדין בישראל : הא כל נפשתא דילי אנון כנפש אבא וכנפש
5 ברא קדמי אנון אנש דיחטי הוא ימות : וגבר ארי יהי זכי ויעביד דין דקשוט וזכו :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Vivo ego, dicit Dominus Deus, si non in loco in quo constituit eum regem, 16 cujus juramentum sprevit, & violavit pactum, cum eo in medio Babylonis morietur. Et non in exercitu grandi & in populo multo faciet contra eum 17 Pharao prælium, cùm comportaverit aggerem & ædificaverit machinam ad disperdendas provincias multas. Sprevit enim juramentum ut mutaret pa- 18 ctum : & ecce extendit manum suam ad Pharaonem. Et quia omnia hæc fecit, non liberabitur. Propterea hæc dicit Dominus Deus : Vivo ego, si non 19 [*ob*] juramentum meum quod sprevit, & pactum meum quod mutavit, dabo ultionem viæ ejus in caput ejus. Et extendam super eum rete meum, & com- 20 prehendetur in sagena mea : & migrare faciam eum in Babylonem, & sumam vindictam ex eo ibi [*ob*] prævaricationem ejus, qua prævaricatus est coram me. Et omnes fortes ejus cùm omni exercitu ejus gladio occidentur, & 21 qui remanserint, in omnem ventum dispergentur : & scietis quia ego Dominus decrevi in verbo meo. Hæc dicit Dominus Deus : Et applicabo ego 22 [*quempiam*] de regno domus David ꝙ comparatur cedro excelsæ, & fulcitabo eum : de filiis filiorum ejus infantem magnificabo; & statuam eum verbo meo in monte excelso & elevato. In monte sancto Israel statuam eum, & 23 congregabit exercitum, & faciet auxilia, & erit in regem fortem, & innitentur super eum omnes justi, & omnes mansueti in umbra regni ejus habitabunt. Et scient omnes reges populorum, quia ego Dominus humiliavi regnum 24 quod erat forte, & roboravi regnum quod erat infirmum; humiliavi regnum populorum quod erat forte sicut lignum viride; & roboravi regnum *domus* Israel quod erat infirmum sicut lignum aridum. Ego Dominus decrevi in verbo meo, & confirmabo illud.

CAP. XVIII.

ET factum est verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens : Quid vo- 1 2 bis est quòd vos parabolam istam assumitis de terra Israel, dicentes : Patres peccaverunt, & filii percussi sunt. Vivo ego, dicit Dominus, si fuerit vobis 3 ultrà assumens proverbium istud in Israel. Ecce omnes animæ meæ sunt : tam 4 anima patris quàm anima filii coram me sunt : homo qui peccaverit, ipse mo- 5 rietur. Vir autem qui fuerit justus & fecerit judicium verum & justitiam,

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܕܒܐܬܪܐ ܕܐܡܠܟܘܗܝ ܡܠܟܐ. ܗܘ ܕܫܛ ܡܘܡܬܗ ܘܒܛܠ
ܩܝܡܗ. ܒܓܘ ܒܒܠ ܢܡܘܬ. * ܘܠܐ ܒܚܝܠܐ ܪܒܐ. ܘܠܐ ܒܟܢܫܐ ܣܓܝܐܐ. ܢܥܒܕ ܥܡܗ
ܦܪܥܘܢ ܩܪܒܐ. ܐܠܐ ܒܡܣܬܪܢܐ ܘܒܟܘܡܪܐ. ܢܘܒܕ ܢܦܫܬܐ ܣܓܝܐܬܐ. * ܡܛܠ ܕܫܛ ܡܘܡܬܐ
ܘܒܛܠ ܩܝܡܐ. ܢܬܠ ܐܝܕܗ. ܘܠܐ ܢܬܦܨܐ. ܡܛܠ ܕܥܒܕ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܚܝ ܐܢܐ ܡܛܠ ܕܫܛ ܡܘܡܬܝ. ܘܒܛܠ ܩܝܡܝ. ܐܦܢܝܘܗܝ ܒܪܫܗ.
* ܘܐܦܪܘܣ ܡܨܝܕܬܝ ܥܠܘܗܝ. ܘܢܬܐܚܕ ܒܗ. ܘܐܝܬܝܘܗܝ ܠܒܒܠ ܠܐܪܥܐ ܕܟܠܕܝܐ.
ܘܐܬܕܝܢ ܥܡܗ ܬܡܢ ܥܠ ܥܘܠܐ ܕܥܒܕ ܒܝ. * ܘܟܠܗܘܢ ܓܢܒܪܘܗܝ ܘܟܠܗܘܢ ܩܪܝܒܘܗܝ
ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܕܡܫܬܚܪܝܢ ܢܬܒܕܪܘܢ ܠܟܠ ܪܘܚ. ܘܬܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ
ܡܠܠܬ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܐܣܒ ܐܢܐ ܡܢ ܓܒܝܐ ܕܐܪܙܐ ܪܡܐ. ܘܡܢ ܪܫܗ ܐܦܣܘܩ
ܫܒܛܐ. ܘܐܢܨܒ ܥܠ ܛܘܪܐ ܪܡܐ ܘܡܥܠܝܐ. * ܒܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܢܨܒܝܘܗܝ. ܘܢܬܠ
ܛܪܦܐ. ܘܢܥܒܕ ܦܐܪܐ. ܘܢܗܘܐ ܐܪܙܐ ܡܫܒܚܐ. ܘܢܫܪܘܢ ܒܗ ܟܠܗܘܢ ܦܪܚܬܐ ܕܓܦܐ.
ܘܒܛܠܠܐ ܕܣܘܟܘܗܝ ܢܫܪܘܢ. * ܘܢܕܥܘܢ ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܕܒܪܐ. ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܡܟܟ
ܩܝܣܐ ܪܡܐ. ܘܐܪܝܡ ܩܝܣܐ ܡܡܟܟܐ. ܘܐܘܒܫ ܩܝܣܐ ܪܛܝܒܐ. ܘܐܦܪܥ ܩܝܣܐ
ܝܒܝܫܐ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܠܠܬ ܘܥܒܕܬ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܚ *

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܠܡܢܐ ܡܬܡܬܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܬܠ
ܗܢܐ ܒܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܐܒܗܬܐ ܐܟܠܘ ܒܘܣܪܐ. ܘܫܢܝܐ ܕܒܢܝܐ ܩܗܝ. * ܚܝ
ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܕܠܐ ܢܗܘܐ ܬܘܒ ܕܢܡܬܠ ܡܬܠܐ ܗܢܐ ܒܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠ
ܕܕܝܠܝ ܐܢܝܢ ܢܦܫܬܐ. ܐܝܟ ܢܦܫܐ ܕܐܒܐ. ܘܢܦܫܐ ܕܒܪܐ. ܕܝܠܝ ܐܢܝܢ. ܢܦܫܐ ܕܚܛܝܐ
ܗܝ ܬܡܘܬ. * ܘܓܒܪܐ ܐܢ ܢܗܘܐ ܙܕܝܩ: ܘܢܥܒܕ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ:

15 Per vitam meam, dicit Dominus dominorum, Loco conſervandi eum regem (quum juramentum meum ſpreverit, & violaverit fœdus meum) in Babylone morietur. 17 Neque copiis ingentibus aut equis permultis bellum geret cum eo Pharaon; ſed inſidiis & ſpeculis (*aggeribus*) perdet animas multas. 18 Quia ſprevit juramentum, & fœdus irritum fecit, dabit manus, & non evadet; quòd hæc omnia fecerit. 19 His de rebus, ſic ait Dominus dominorum; Per vitam meam, quia ſprevit juramentum meum, & irritum fecit fœdus meum; reflectam id in caput ejus. 20 Expandam enim ſuper eum rete meum, eoque capietur: perducam illum in Babylonem terram Chaldæorum, ibíque judicabo eum de ſcelere quod contra me commiſit: 21 Et omnes nobiles ejus, omnéſque propinqui ejus gladio corruent: & qui ſuperſtites fuerint, diſpandentur in omnem ventum: & experiemini me Dominum locutum eſſe. 22 Sic ait Dominus dominorum; Accipiam è ſelectiſſimis abietibus altiſſimam, & ex hujus faſtigio excerpam meditullium ejus, & plantabo ſuper montes excelſos atque ſublimes: 23 In montibus Iſraelis plantabo illud, ferétque frondes, & producet fructus; fiétque cedrus glorioſiſſima, et habitabunt in ea omnes volucres alatæ, & ſub umbra ramorum ejus habitabunt. 24 Et agnoſcent omnes arbores deſerti, me Dominum humiliare arborem elatam, & exaltare arborem humilem; arefacere arborem virentem, & facere ut germinet arbor ſicca. Ego Dominus locutus ſum, & faciam.

CAP XVIII.

1 Fuit etiam ad me ſermo Domini, dicendo; 2 Fili hominis, qua de cauſa vertitis hoc proverbium in terra Iſraelis, & dicitis; Patres comederunt uvas agreſtes, & dentes filiorum obſtupeſcunt? 3 Per vitam meam inquit Dominus dominorum, non erit ampliùs qui vertat hujuſmodi proverbium in Iſrael. 4 Nam omnes animæ, meæ ſunt: tam anima patris quàm anima filii, meæ ſunt: anima quæ peccaverit, ipſamet morietur. 5 Cùm quis fuerit juſtus, feceritque judicium & juſtitiam:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* حي انا يقول ادوناي الرب * الا في الموضع الذي فيه ملكه الملك * الذي اهان لعني
والذي تجاوز عهدي معه * في وسط بابل يموت * وليس بقوة عظيمة * ولا بجمع كبير يصنع
معه فرعون حربا * برمي مجانيق ولا ببني مرامي ليستاصل النفوس * واهان بالحلف ليتجاوز
العهد واذا اعطي يده * وكل هذه صنعها له * لا يخلص * لاجل هذا قل * هكذا يقول ادوناي
الرب * حي انا * من اجل عهدي الذي تجاوز * وحلفي الذي اهانه * فساعطيهما على راسه *
* واطرح عليه شبكتي * ويهلك بزمانه * في كل قتاله بالسيف يسقطون * والمتبقين ابددهم
مع كل ريح * وتعلمون اني انا الرب تكلمت *

الاصحاح التاسع *

* من اجل انه هكذا يقول ادوناي الرب * وانا اخذ من خيار الارز * من راس قلبهم اقطع
واغرس انا على جبل عال * واعلقه في جبل شاهق لاسرايل * واغرسه فيخرج فرعا * ويصنع
ثمرا * ويصير ارزا عظيمة * ويستريح تحته كل وحش * وكل طاير تحت ظله يستريح * واغصانه
تستقيم * ويعلم جميع اشجار الغاب اني انا الرب الذي يواضع شجرا مرتفعة * ويرفع شجرة
متضعة * ويجفف شجرا خضراء * ويخصب الشجرة اليابسة * انا الرب تكلمت واصنع *

* الفصل الثامن عشر *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * لماذا لكم هذا المثل في بني اسرايل قايلين
الاباء اكلوا الحصرم * واسنان الاولاد ضرست * حي انا يقول ادوناي الرب * ان يكون هذا
المثل ايضا مقولا في اسرايل * لان جميع النفوس هم لي * كما نفس الاب هكذا ونفس
الابن هم لي * النفس التي تخطي هي التي تموت * والانسان الذي يكون صديقا * الذي
يصنع حكما وعدلا *

16 *Vivo ego, dicit Adonai Dominus, niſi eodem in loco in quo rex ille conſtituit hunc regem; iſte qui ſprevit maledictionem meam, quique fœdus meum prætergreſſus eſt erga illum; in medio Babelis morietur.* 17 *Neque verò magnâ vi, neq; turbâ multâ bellum geret contra eũ Pharaon, jaciendo aggeres, neque moles fabricando ad extirpandas animas.* 18 *Quippe qui ſpreverit juramentũ tranſgrediendo fœdus, etiamſi manum ſuam dederit, & hæc omnia egerit cum illo, nequaquam ſalvabitur.* 19 *Propterea dic; Sic ait Adonai Dominus, Vivo ego propter fœdus meum quod tranſgreſſus eſt, & juramentum meum quod ſprevit; retundam hæc in caput ejus.* 20 *Jaciam ſuper eum rete meum, ſuoque tempore peribit.* 21 *In omnibus prœliis ſuis gladio cadent: & reſiduos diſſeminabo in omnem ventum: & agnoſcetis quòd ego Dominus locutus ſim.*

Textus Nonus.

22 *Nam ita dicit Adonai Dominus; Equidem accipiam ex optimus cedrus, è vertice cordis earum abſcindam, & plantabo ego ſuper montem excelſum, appendamque illud in monte ſublimi Iſraelis:* 23 *Et cum plantavero illud, proferet germen, facietque fructum, et fiet illud cedrus maxima, adeoque requieſcent ſub eo omnes beſtiæ, & omnes volucres ſub ejus umbra requieſcent: Rami ejus dirigentur;* 24 *& ſcient omnes arbores ſylvæ me eſſe Dominũ qui humilio arborem elatam, & elevo arborem humilem, arefacio arborem viridem, & fertilem reddo arborem ſiccam. Ego Dominus locutus ſum, & faciam.*

CAP. XVIII.

1 *Deinde fuit ſermo Domini ad me, dicens;* 2 *O fili hominis, cur habetis hoc proverbium inter filios Iſraelis, dicentes; Patres manducaverunt omphacem, & dentes filiorum obſtupuerunt?* 3 *Ut vivo, ait Adonai Dominus, haudquaquam dictitabitur ampliùs proverbium iſtud in Iſraele.* 4 *Omnes enim animæ meæ ſunt: ut anima patris, ita etiam anima filii, meæ ſunt: anima quæ peccabit, ipſamet erit quæ morietur.* 5 *Et homo qui fuerit juſtus, qui fecerit judicium & juſtitiam,*

יחזקאל : יח

domus idola ad levaverit non suos oculos &,comederit non montes *Ad*
6 אל־ההרים לא אכל ועיניו לא נשא אל־גלולי בית
non *elongatā* mulierē ad &,violaverit non sui *focii* uxorem & : Israel
ישראל ואת־אשת רעהו לא טמא ואל־אשה נדה לא
rapium,reddiderit debitori suū pignus,*depopularit* non quempiā Et.accesserit
7 יקרב : ואיש לא יונה חבלתו חוב ישיב גזלה
.vestimento operuit nudum &,dederit esurienti suū panem : rapuerit non
לא יגזל לחמו לרעב יתן ועירם יכסה־בגד :
averterit iniquitate ab : acceperit non amplius &,dederit non usura Cum
8 בנשך לא־יתן ותרבית לא יקח מעול ישיב
meis *statutis* In .virum *ad* virum inter fecerit *veritatis* judicium :suā manū
9 ידו משפט אמת יעשה בין איש לאיש : בחקותי
,*ipse* justus :veritatē *faciendum ad*,custodierit mea judicia &,ambulaverit
יהלך ומשפטי שמר לעשות אמת צדיק הוא
,*effractorem* filium genuerit Et .Deus Dominus dixit ,vivet vivendo
10 חיה יחיה נאם אדני יהוה : והוליד בן־פריץ
omnia ipse Et .istis ex *uno ab fratrem* fecerit & :sanguinē effundentē
11 שפך דם ועשה אח מאחד מאלה : והוא את־כל
uxorem & ,comederit montes *ad* etiam sed : fecerit non hæc
אלה לא עשה כי גם אל־ההרים אכל ואת־אשת
pignus ,rapuerit *rapinas* ,oppresserit pauperē & ,Egenū .*profanaverit sui focii*
12 רעהו טמא : עני ואביון הונה גזלות גזל חבל
.fecerit abominationē,suos oculos levaverit idola ad & :reddiderit non
לא ישיב ואל־הגלולים נשא עיניו תועבה עשה :
Omnes .vivet Non ? vivet &,acceperit *augmentū* &,dederit usura Cum
13 בנשך נתן ותרבית לקח וחי לא יחיה את־כל־
.erit ipso in ej° *Sanguines* .morietur moriendo ,fecit istas abominationes
התועבות האלה עשה מות יומת דמיו בו יהיה :
,fecit quæ sui patris peccata omnia viderit &,filium genuerit *ecce* Et
14 והנה הוליד בן וירא את־כל־חטאת אביו אשר עשה
,comederit non montes Super *.illa sicut* fecerit non &,timuerit &
15 ויראה ולא יעשה כהן : על־ההרים לא אכל
sui *focii* uxorem ;Israel domus idola ad levaverit nō suos oculos&
ועיניו לא נשא אל־גלולי בית ישראל את־אשת רעהו
,*pignori* acceperit non pignus ,oppresserit non quenquā Et .*profanaverit* non
16 לא טמא : ואיש לא הונה חבל לא חבל
operuerit nudum &,dederit esurienti suum panem ;rapuerit non *raptum* &
וגזלה לא גזל לחמו לרעב נתן ועירם כסה־
non *augmentum* & ,usuram ; suam manum *converterit afflicto Ab* .vestimento
17 בגד : מעני השיב ידו נשך ותרבית לא
non ipse : ambulaverit meis *statutis* in ,fecerit mea judicia ,acceperit
לקח משפטי עשה בחקותי הלך הוא לא
oppressit quia ,ejus Pater .vivet vivendo ,sui patris *iniquitate in* morietur
18 ימות בעון אביו חיה יחיה : אביו כי־עשק
medio in fecit bonum non quod & ,*fratris* rapinam rapuit ,oppressionē
עשק גזל גזל אח ואשר לא־טוב עשה בתוך
non Cur : dixistis Et .*sua iniquitate in* est mortuus ecce & :sui populi
19 עמיו והנה־מת בעונו : ואמרתם מדע לא־
.fecit justitiam & judicium filius Et ? patris *iniquitate in* filius portabit
נשא הבן בעון האב והבן משפט וצדקה עשה
.vivet vivendo : ea fecit & ,custodivit mea *statuta* Omnia
את כל־חקותי שמר ויעשה אתם חיה יחיה :
,patris *iniquitate in* portabit non Filius .morietur ipsa *peccans* Anima
20 הנפש החטאת היא תמות בן לא־ישא בעון האב
, erit eum super justi Justitia .filii *iniquitate in* portabit non pater &
ואב לא ישא בעון הבן צדקת הצדיק עליו תהיה
fuerit aversus *cùm* impius At .erit eum super impii impietas &
21 ורשעת רשע עליו תהיה : והרשע כי ישוב
,mea *statuta* omnia custodierit & , fecit quæ suis peccatis omnibus ab
מכל־חטאתו אשר עשה ושמר את־כל־חקותי
.morietur non , vivet vivendo ; justitiam & ,judicium fecerit &
ועשה משפט וצדקה חיה יחיה לא ימות :

Versio VULG. LAT.

6 In montibus non comederit, & oculos suos non levaverit ad idola domûs Israel : & uxorem proximi sui non violaverit, & ad mulierem menstruatam non accesserit : 7 Et hominē non contristaverit : pignus debitori reddiderit, per vim nihil rapuerit : panem suum esurienti dederit, & nudum operuerit vestimento : 8 Ad usuram non commodaverit, & amplius non acceperit : ab iniquitate averterit manum suam, & judicium verum fecerit inter virum & virum : 9 In præceptis meis ambulaverit, & judicia mea custodierit ut faciat veritatē : hic justus est, vitâ vivet, ait Domin° 10 Deus. Quòd si genuerit filium latronem effundentem sanguinē, 11 & fecerit unum de istis : Et hæc quidem omnia non facientē, sed in montibus comedentem, & uxorem proximi sui polluentem : 12 Egenum & pauperem contristantem, rapientem rapinas, pignus non reddentem, & ad idola levantem oculos suos, abominati- 13 onem facientē: Ad usuram dantem, & ampliùs accipientē: numquid vivet? non vivet : cùm universa hæc detestanda fecerit, morte morietur, sanguis ejus in 14 ipso erit. Quòd si genuerit filiū, qui videns omnia peccata patris sui quæ fecit, timuerit, & non fe- 15 cerit simile eis : Super montes non comederit, & oculos suos non levaverit ad idola domûs Israel, & uxorem proximi sui non 16 violaverit : Et virum non contristaverit, pignus non retinuerit, & rapinam non rapuerit, panem suum esurienti dederit, & 17 nudum operuerit vestimento: A pauperis injuria averterit manū suam, usuram & superabundantiam non acceperit, judicia mea fecerit, in præceptis meis ambulaverit : hic non morietur in iniquitate patris sui, sed vitâ vivet. 18 Pater ejus quia calumniatus est, et vim fecit fratri, & malum operatus est in medio populi sui, ecce 19 mortuus est in iniquitate sua. Et dicitis ; Quarè non portavit fili° iniquitatē patris? Videlicèt, quia filius judicium & justitiam operatus est, omnia præcepta mea custodivit, & fecit illa, vivet vitâ. 20 Anima, quæ peccaverit, ipsa morietur: filius non portabit iniquitatem patris, & pater non portabit iniquitatem filii : justitia justi super eum erit, & impietas impii 21 erit super eum. Si autem impius egerit pœnitentiam ab omnibus peccatis suis, quæ operatus est, & custodierit omnia præcepta mea, & fecerit judicium, & justitiam : vitâ vivet, & non morietur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

6 Ἐπὶ τῶν ὀρέων οὐ φάγεται, ϗ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ οὐ μὴ ἐπάρῃ (δ) πρὸς τὰ ἐνθυμήματα οἴκου Ἰσραὴλ, ϗ τὴν γυναῖκα τοῦ πλησίον αὐτοῦ οὐ μὴ μιάνῃ, ϗ πρὸς γυναῖκα ἐν ἀφέδρῳ οὖσαν οὐ προσεγγιεῖ, 7 Καὶ ἄνθρωπον οὐ μὴ καταδυναστεύσῃ, ἐνεχυρασμὸν ὀφείλοντος ἀποδώσει, ϗ ἅρπαγμα οὐχ ἁρπᾶται, τὸν ἄρτον αὐτοῦ τῷ πεινῶντι δώσει, καὶ γυμνὸν 8 (ε) περιβαλεῖ, Καὶ τὸ ἀργύριον αὐτοῦ ἐπὶ τόκῳ οὐ δώσει, ϗ πλεονασμὸν οὐ λήψεται, ϗ ἐξ ἀδικίας ἀποστρέψει τὴν χεῖρα αὐτοῦ, κρίμα δίκαιον ποιήσει ἀναμέσον ἀνδρὸς ϗ ἀνα- 9 μέσον τοῦ πλησίον αὐτοῦ, Καὶ τοῖς προστάγμασί μου πεπόρευται, ϗ τὰ δικαιώματά μου πεφύλακται, τοῦ ποιῆσαι αὐτά· (ζ) δίκαιος 10 οὗτός ἐστι, ζωῇ ζήσεται, (η) λέγει κύριος. Καὶ ἐὰν γεννήσῃ υἱὸν λοιμὸν, ἐκχέοντα αἷμα ϗ 11 ποιοῦντα ἁμαρτήματα, Ἐν τῇ ὁδῷ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ τοῦ δικαίου οὐκ ἐπορεύθη, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῶν ὀρέων ἔφαγε, ϗ τὴν γυναῖκα τοῦ πλησί- 12 ον αὐτοῦ ἐμίανε, Καὶ πτωχὸν ϗ πένητα κατεδυνάστευσε, ϗ ἅρπαγμα ἥρπασε, ϗ ἐνεχυρασμὸν οὐκ ἀπέδωκε, ϗ εἰς τὰ εἴδωλα ἔθετο τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ, ἀνομίαν πεποίηκε, 13 Μετὰ τόκου ἔδωκε, ϗ πλεονασμὸν ἔλαβεν· οὗτος ζωῇ οὐ ζήσεται, πάσας τὰς ἀνομίας ταύτας ἐποίησε, θανάτῳ (θ) θανατωθήσεται· 14 τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐπ' αὐτὸν ἔσται. Ἐὰν δὲ (ι) γεννήσῃ υἱὸν, ϗ ἴδῃ πάσας τὰς ἁμαρτίας τοῦ πατρὸς αὐτοῦ ἃς ἐποίησε, ϗ φοβηθῇ, ϗ μὴ ποι- 15 ήσῃ κατ' αὐτὰς, Ἐπὶ τῶν ὀρέων (κ) οὐ βέβρωκε, ϗ τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτοῦ οὐκ ἔθετο εἰς τὰ ἐνθυμήματα οἴκου Ἰσραὴλ, ϗ τὴν γυ- 16 ναῖκα τοῦ πλησίον αὐτοῦ οὐκ ἐμίανε, Καὶ ἄνθρωπον οὐ κατεδυνάστευσε, ϗ ἐνεχυρασμὸν οὐκ ἐνεχύρασε, ϗ ἅρπαγμα οὐχ ἥρπασε, τὸν ἄρτον αὐτοῦ τῷ πεινῶντι ἔδωκε, καὶ γυμνὸν 17 περιέβαλεν, Καὶ ἀπὸ ἀδικίας ἀπέστρεψε τὴν χεῖρα αὐτοῦ, τόκον οὐδὲ πλεονασμὸν οὐκ ἔλαβε, δικαιοσύνην ἐποίησε, ϗ ἐν τοῖς προστάγμασί μου ἐπορεύθη· οὐ (λ) τελευτήσει ἐν ἀδι- 18 κίαις πατρὸς αὐτοῦ, ζωῇ ζήσεται. Ὁ δὲ πατὴρ αὐτοῦ (μ) ἐὰν θλίψει θλίψῃ ϗ ἁρπάσῃ ἅρπαγμα, ἐναντία ἐποίησεν ἐν μέσῳ τοῦ λαοῦ 19 μου, ϗ ἀποθανεῖται ἐν τῇ ἀδικίᾳ αὐτοῦ. Καὶ ἐρεῖτε, (ν) Τί ὅτι οὐκ ἔλαβεν τὴν ἀδικίαν ὁ υἱὸς τοῦ πατρός; ὅτι ὁ υἱὸς δικαιοσύνην ϗ ἔλεος (ξ) πεποίηκε, πάντα τὰ νόμιμά μου συνετήρησε, ϗ ἐποίησεν αὐτὰ, ζωῇ ζήσεται. 20 Ἡ δὲ ψυχὴ ἡ ἁμαρτάνουσα, (ο) ἀποθανεῖται. ὁ δὲ υἱὸς οὐ λήψεται τὴν ἀδικίαν τοῦ (π) πατρὸς, οὐδὲ ὁ πατὴρ λήψεται τὴν ἀδικίαν τοῦ (ρ) υἱοῦ· δικαιοσύνη δικαίῳ ἐπ' αὐτὸν ἔσται, ϗ ἀνο- 21 μία (σ) ἀνόμῳ ἐπ' αὐτὸν ἔσται. (τ) Καὶ ὁ ἄνομος ἐὰν ἀποστρέψῃ ἐκ πασῶν τῶν ἀνομιῶν αὐτοῦ ὧν ἐποίησε, ϗ (υ) φυλάξηται πάσας τὰς ἐντολάς μου, ϗ ποιήσῃ (φ) δικαιοσύνην ϗ ἔλεος, ζωῇ ζήσεται, ϗ οὐ μὴ ἀποθάνῃ.

MS. A. (δ) ἐπὶ τὰ (ε) περιβαλεῖ ἱμάτιον, Καὶ (ζ) δίκαιός ἐστι, (η) λέγει ἀδωναΐ κύριος. Ἐὰν δὲ γεννήσῃς υἱὸν (θ) ἀποθανεῖται· (ι) γεννήσει (κ) οὐκ ἔφαγεν, ϗ τοὺς (λ) τελευτήσει (μ) ἐν θλίψει θλίψῃ ϗ ἁρπάσῃ (ν) Ὅτι οὐκ ἔλαβεν ἀδικίαν υἱὸς πατρὸς αὐτοῦ; ὅτι ὁ υἱὸς (ξ) ἐποίησεν, (ο) αὕτη ἀποθανεῖται. υἱὸς οὐ (π) πατρὸς αὐτοῦ, (ρ) υἱοῦ αὐτοῦ· δικαιοσύνη δικαίου ἐπ' (σ) ἀνόμου (τ) Ἐὰν δὲ ἀποστραφῇ ἄνομος ἀπὸ πασῶν τῶν (υ) φυλάξῃ (φ) τὰ δικαιώματά μου, ζωῇ ζήσεται,

Super montes non comedit, & oculos suos non levavit ad cogitationes domûs Israel, & uxorē proximi sui non contaminavit, & ad mulierem fluentē sanguine non accessit, 6 *Et hominē per potentiā non oppressit, pignus debitori reddidit, & rapinā non rapuit, panē suū esurienti dedit, et nudū (b) operuit, Et pecuniā suā ad usuram non dedit,* 7 *& amplius non accepit, & ab iniquitate avertit manum suā, justū judiciū fecit inter virū, & inter proximū ej°, Et præceptis meis ambulavit, & justificationes meas custodivit, ut faciat ea; hic justus est: vitâ vivet, dicit Dominus. Quòd si genuerit* 8 9 *filiū pestilentē, effundentem sanguine, & facientem peccata, (In via patris sui justi non ambulavit, sed & super montes comedit, & uxorē proximi sui polluit, Et egenū & pauperē oppressit per potentiam, & rapinam rapuit, & pignus non reddidit, & ad idola posuit oculos suos, iniquitatē fecit, Cū usura dedit, & amplius accepit;) hic vitâ nō vivet: omnes has iniquitates fecit: morte mortificabitur; sanguis ej° super ipsū erit. Si autē genuerit filiū, & viderit omnia peccata patris sui, quæ fecit, & timuerit, & non fecerit secundū ea, (Super montes non manducavit, & oculos suos non posuit ad cogitationes dom° Israel, & uxorē proximi sui non violavit. Et hominē nō oppressit, & pignus non retinuit, & rapinā nō rapuit, panē suū esurienti dedit, & nudū operuit. Et ab injustitia avertit manū suā, usuram, & superabundantiā non accepit, justitiā fecit, & in præceptis meis ambulavit:) non morietur in iniquitatibus patris sui: vitâ vivet. Pater autē ej°, si tribulatione tribulaverit, & rapuerit rapinam; contraria fecit in medio populi mei; & morietur in sua iniquitate. Et dicetis; Quid quòd non accepit iniquitatem filius (c) patris? Quoniam filius justitiā & misericordiā fecit, omnia legitima mea conservavit, & fecit ea: vitâ vivet. Anima autē peccans morietur: Fili° autē nō accipiet iniquitatē patris: neq; pater accipiet iniquitatē filii. Justitia (d) justi super ipsū erit: & iniquitas iniqui super ipsū erit. Et iniq° si averterit se ab omnibus iniquitatib° suis, quas fecit, & custodierit omnia præcepta mea, & fecerit justitiam, & misericordiam: vitâ vivet, & non morietur.* 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 בטוריא לא פלח לטעותא ועינוהי לא זקף לפולחן טעות בית ישראל וית אתת
7 חבריה לא סאיב ולות אתא מסאבא לא על : ואנש לא אוני משכון דחובתא אתיב
8 גזלא לא גזל מלחמיה לכפנא יהב וערטלאה כסי מכסותיה : בחבוליא לא יהב
9 ורביתא לא נסיב משקרא אתיב ידיה דין דקשוט עביד בין גבר לגבר : בקימי הליך
10 ודיני נטר למעבד קשוט צדיקא הוא מחא יחי אמר יי אלהים : ואוליד בר רשיעא
11 אשיד דם ויעביד לאחוהי מחדא מאלין : והוא ית כל אלין לא עבד אלהן בטוריא
12 פלח לטעותא וית אתת חבריה סאב : מסכן וחשיך אוני גזלא גזל משכונא לא אתיב
13 ולפולחן טעותא זקף עינוהי תועבא עבד : בחבוליא יהב ורביתא נסיב האתקים לא
14 יתקים ית כל תועבתא האלין עבד ממת ימות חובת קטוליה ביה תהי : והא אוליד
15 בר וחזא ית כל חובי אבוהי דעבד וחזא ולא עבד כותהון : על טוריא לא פלח
16 לטעותא ועינוהי לא זקף לפולחן טעות בית ישראל וית אתת חבריה לא סאב : ואנש
לא אוני משכונא לא נסיב וגזלא לא גזל מלחמיה לכפנא יהב וערטלאה כסי
17 מכסותיה : ממסכנא לא אתיב ידיה חבוליא ורביתא לא נסיב דיני עביד בקימי הליך
18 הוא לא ימות בחובי אבוהי מחא יחי : אבוהי ארי עשק עשקא גזל גזלא לחד מאחוהי
19 ודלא תקין עבד בגו עמיה והא מית בחוביה : ותימרון מא דין לא לקי ברא בחובי
20 אבא וברא דין וקשוט וזכו עבד ית כל קימי נטר ועבד יתהון מחא יחי : אנש דיחוב
הוא ימות ברא לא לקי בחובי אבא ואבא לא לקי בחובי ברא זכות זכאה ביה יתקים
21 וחובת חיבא עלוהי תהי : ורשיעא ארי יתוב מכל חובוהי דעבד ויטר ית כל קימי
ויעביד דין דקשוט וזכו מחא יחי לא ימות :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

In montibus non servierit idolis, & oculos suos non sustulerit ad cultum ido- 6
lorum domus Israel, & uxorem proximi sui non polluerit, & ad mulierem im-
mundam non fuerit ingressus. Et hominē non oppresserit, pignus debiti reddi- 7
derit, rapinam non rapuerit, de pane suo esurienti dederit, & nudum coope-
ruit vestimento suo. Fœnori non dederit, & usuram non acceperit; à falsita- 8
te averterit manum suam, judicium verum fecerit inter virum & virum. Et in 9
pactis meis ambulaverit, & judicia mea servaverit ut faceret veritatem; justus
est, vita vivet, dicit Dominus Deus. Et si genuerit filium impium effunden- 10
tem sanguinem, & fecerit fratri suo unum ex his. Et ipse omnia hæc non fece- 11
rit, sed in montibus servierit idolis & uxorem proximi sui polluerit. Ege- 12
num & pauperem oppresserit, rapinam rapuerit, pignus non reddiderit, & ad
cultum idolorum levarit oculos suos, abominationem fecerit. Fœnori dede- 13
rit, & usuram acceperit, num vivet? non vivet: universas has abominationes
fecit, morte morietur, reatus mortis ejus in ipso erit. Et si genuerit filium, & 14
viderit omnia peccata patris sui quæ fecit, & videns non fecerit similia. In 15
montibus non servierit idolis, & oculos suos non sustulerit ad cultum idolo-
rum *domus* Israel, & uxorem proximi sui non polluerit. Et hominem non op- 16
presserit, pignus non *acceperit*, & rapinam non rapuerit; de pane suo esuri-
enti dederit, et nudum operuerit vestimento suo. A paupere averterit manum 17
suam, fœnus & usuram non acceperit, judicia mea fecerit, in pactis meis am-
bulaverit : ipse non morietur in peccatis patris sui, sed vivens vivet. Pater 18
ejus quia calumniam exercuit, & rapinam rapuit ab uno de fratribus suis, &
quod non est rectum in medio populi sui fecit, & ecce mortuus est in pecca-
to suo. Et dicetis : Quare non punitur filius in peccatis patris ? filius enim 19
judicium *& veritatem* & justitiam fecit, omnia pacta mea servavit & fecit
ea : vivens vivet. Homo qui peccaverit, ipse morietur. Filius non punietur 20
in peccatis patris, nec pater punietur in peccatis filii. Justitia justi in ipso
permanebit, & peccatum impii super eum erit. Impius autem cùm conver- 21
sus fuerit ab omnibus peccatis suis quæ fecit, & custodierit omnia pacta mea,
& fecerit judicium verum & justitiam; vivens vivet, non morietur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܥܠ ܛܘܪܐ ܠܐ ܐܟܠ : ܘܠܐ ܐܪܝܡ ܥܝܢܘܗܝ ܠܦܬܟܪܐ ܘܕܚܠܬܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ
ܘܠܐܢܬܬܐ ܕܚܒܪܗ ܠܐ ܛܢܦ : ܘܠܐܢܬܬܐ ܕܒܕܘܬܗ ܠܐ ܐܬܩܪܒ : * ܘܠܐܢܫ ܠܐ ܛܠܡ : ܘܠܐܢܫ ܠܐ
ܠܗ : ܘܦܢܐ ܡܫܟܢܐ ܕܢܣܒ : ܘܝܗܒ ܠܚܡܗ ܠܟܦܢܐ : ܘܠܥܪܛܠܝܐ ܟܣܝ ܒܠܒܘܫܐ
* ܘܒܪܒܝܬܐ ܠܐ ܐܘܙܦ : ܘܡܪܒܝܬܐ ܠܐ ܢܣܒ : ܘܡܢ ܥܘܠܐ ܐܗܦܟ ܐܝܕܗ : ܘܕܝܢܐ ܕܩܘܫܬܐ ܥܒܕ
ܒܝܢ ܓܒܪܐ ܠܚܒܪܗ : * ܘܒܦܘܩܕܢܝ ܗܠܟ : ܘܕܝܢܝ ܢܛܪ : ܘܥܒܕ ܩܘܫܬܐ . ܡܢ ܕܥܒܕ ܗܟܢ
ܙܕܝܩ ܗܘ . ܘܡܚܐ ܢܚܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ . * ܘܐܢ ܢܘܠܕ ܒܪܐ ܥܘܠܐ ܐܫܕ ܕܡܐ . ܘܥܒܕ ܚ
ܡܢ ܗܠܝܢ . * ܘܐܟܠ ܥܠ ܛܘܪܐ : ܘܛܢܦ ܐܢܬܬܐ ܕܚܒܪܗ : * ܘܡܣܟܢܐ ܘܒܨܝܪܐ
ܛܠܡ . ܘܐܢܣ ܠܚܒܪܗ : ܘܠܐ ܦܢܐ ܡܫܟܢܐ ܠܡܪܘܗܝ . ܘܠܦܬܟܪܐ ܐܪܝܡ
ܥܝܢܘܗܝ . ܘܥܒܕ ܛܢܦܘܬܐ : * ܘܒܪܒܝܬܐ ܐܘܙܦ : ܘܡܪܒܝܬܐ ܢܣܒ . ܘܚܝܐ ܢܚܐ . ܠܐ ܢܚܐ
ܡܛܠ ܕܥܒܕ ܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܐ ܗܠܝܢ . ܡܡܬ ܢܡܘܬ . ܘܕܡܗ ܒܪܫܗ ܢܗܘܐ . * ܘܐ
ܢܘܠܕ ܒܪܐ : ܘܢܚܙܐ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܐ ܕܥܒܕ ܐܒܘܗܝ : ܘܠܐ ܢܥܒܕ ܐܟܘܬܗܘܢ : * ܘܥܠ ܛܘܪܐ
ܠܐ ܢܐܟܘܠ : ܘܠܐ ܢܪܝܡ ܥܝܢܘܗܝ ܠܦܬܟܪܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ : ܘܠܐܢܬܬܐ ܕܚܒܪܗ ܠܐ ܢܛܢܦ
* ܘܠܐܢܫ ܠܐ ܢܛܠܘܡ : ܘܡܫܟܢܐ ܠܐܢܫ ܠܐ ܢܫܩܘܠ . ܘܐܢܘܣܐ ܠܐ ܢܐܢܘܣ : ܘܠܚܡܗ ܢܬܠ
ܠܟܦܢܐ . ܘܠܥܪܛܠܝܐ ܢܟܣܐ : * ܘܡܢ ܡܣܟܢܐ ܠܐ ܢܗܦܘܟ ܐܝܕܗ : ܘܪܒܝܬܐ ܠܐ ܢܣܒ
ܘܕܝܢܝ ܢܥܒܕ : ܘܒܦܘܩܕܢܝ ܢܗܠܟ . ܠܐ ܢܡܘܬ ܒܚܘܒܝܗ ܕܐܒܘܗܝ . ܐܠܐ ܡܚܐ ܢܚܐ
* ܐܒܘܗܝ ܕܝܢ ܟܠ ܕܛܠܡ ܛܠܘܡܝܐ : ܘܐܢܣ ܐܢܘܣܐ ܠܐܚܘܗܝ . ܘܡܕܡ ܕܫܦܝܪ ܠܐ ܥܒܕ
ܒܓܘ ܥܡܗ . ܡܐܬ ܒܚܛܗܘܗܝ . * ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ . ܐܝܟܢܐ ܠܐ ܡܬܦܪܥ ܒܪܐ ܚܛܗܐ ܕܐܒܘܗܝ
ܐܡܪ ܠܗܘܢ . ܡܛܠ ܕܥܒܕ ܒܪܐ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ . ܘܢܛܪ ܟܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܝ . ܡܚܐ
ܢܚܐ . * ܢܦܫܐ ܕܚܛܝܐ . ܗܝ ܬܡܘܬ . ܠܐ ܢܬܦܪܥ ܒܪܐ ܚܛܗܐ ܕܐܒܘܗܝ . ܘܠܐ ܐܒܐ ܢܬܦ
ܚܛܗܐ ܕܒܪܗ . ܙܕܝܩܘܬܗ ܕܙܕܝܩܐ ܥܠܘܗܝ ܬܗܘܐ . ܘܚܛܝܬܗ ܕܚܛܝܐ ܥܠܘܗܝ ܬܗܘܐ
* ܘܥܘܠܐ ܕܝܢ ܐܢ ܢܬܦܢܐ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܘܗܝ ܕܥܒܕ : ܘܢܛܪ ܦܘܩܕܢܝ . ܘܢܥܒ
ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ . ܡܚܐ ܢܚܐ . ܘܠܐ ܢܡܘܬ .

Super montes non comederit, neque ſuſtulerit 6
oculos ſuos ad ſimulacra & deos Iſraelitarum:
uxorem ſocii ſui non polluerit, & ad mulierem
in ſuis menſtruis *exiſtentem* non acceſſerit:
Neminem oppreſſerit, nemini damnum 7
intulerit, reſtituerit pignus quod accepit, dederit
panem ſuum eſurienti, & nudum veſte
operuerit: Ad uſuram nihil mutuò dederit, 8
& ex conventione nihil commodaverit, ſed
ab iniquitate retraxerit manum ſuam, & judicium
verum exercuerit inter virum & ſocium
ejus: In præceptis meis ambulaverit, judicia 9
mea cuſtodierit, & veritatem fecerit: quiſquis
ita fecerit, juſtus eſt, et omninò vivet, dicit Dominus
dominorum. Quòd ſi is filium genuerit 10
ſceleratum, effuſorem ſanguinis, qui unum
aliquod ex his commiſerit: Super montes 11
comederit, polluerit uxorem ſocii ſui, Pauperem 12
& egenum oppreſſerit, ſocium ſuum
fraudaverit, pign⁹ dominis ſuis minimè reſtituerit,
ad idola ſuſtulerit oculos ſuos, & fecerit
abominationem, Cum uſura mutuum dederit, 13
& ex conventione acceperit; nunquid
viveret? nequaquam vivet, quum hæc omnia
mala fecerit, ſed omnino morietur, & ſanguis
ejus in ipſum recidet. Quòd ſi filiū genuerit, 14
qui *licèt* videat omnia peccata quæ facit pater
ſuus, tamen non faciat ſicut illa: Super 15
montes non comedat, nec attollat oculos ſuos
ad idola Iſraelitarū, uxorem ſocii ſui non polluat:
Neminē opprimat, pignus à nemine tollat, 16
fraudē non committat, panē ſuum det eſurienti,
& nudū veſtiat: A paupere manū ſuam 17
non retrahat, uſurā non accipiat, judicia mea
faciat, & in præceptis meis ambulet, is nequaquam
morietur propter iniquitatē patris ſui,
ſed omninò vivet: Pater verò ipſius, qui oppreſſione 18
oppreſſit, fraudem commiſit in fratrem
ſuum, & quod honeſtum erat non fecit
inter populum ſuum; morietur propter peccata
ſua. Quòd ſi dicant; Quonam pacto non 19
rependerentur filio peccata patris ejus? Dic
illis, Quia fecit filius judicium & juſtitiam, &
ſervavit omnia præcepta mea, omninò vivet.
Anima quæ peccaverit, ipſamet morietur: non 20
rependentur filio peccata patris ſui, neque
patri rependentur peccata filii ſui: juſtitia juſti
in ipſum recidet, & ſcelus peccatoris in
ipſum recidet. Improbus autem ſi convertatur 21
ab omnibus peccatis ſuis quæ fecit, cuſtodiat
mandata mea, & faciat judicium atque
juſtitiam; omninò vivet, & non morietur:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لا ياكل على الجبال * ولا يرفع عينيه الى فكرات بيت اسرايل * ولا ينجس امراة قريبه * ولا
يقرب من امراة طامث * ولا يقوي على الانسان * ويرد الرهن لصاحبه * ويكسوا العريان
ثوبا * ولا يعطي فضته بالربا * ولا ياخذ تضعيفا * ويرد يده عن الظلم * ويصنع حكما عدلا
بين الرجل وبين قريبه * ويسير باوامري * ويحفظ حقوقي ليصنعها * هذا هو الصديق * يحيي
حياة يقول ادوناي الرب * وان اولد ابنا مفسدا مهرق دم * ويصنع الخطايا * ولم يسلك
طريق ابيه الصديق * لكن اكل على الجبال * ونجس امراة قريبه * ويقوي على الفق
والمسكين * واختطف اختطافا * ولم يرد الرهن * ووضع عينيه الى الاصنام * وصنع الاثم * واعطى
بالربا * واخذ التضعيف * هذا يحيي حياة بجميع هذه الاثام التي صنعها * فبالموت يموت * ودمه عليه
* وان اولد ابنا * وراى جميع خطاياه التي صنعها * فخاف ولم يصنع كمثلها * ولم ياكل على
الجبال * ولا وضع عينيه لفكرات بيت اسرايل * ولا نجس امراة قريبه * ولا تقوى على انسان * و
ارتهن رهنا * ولا اختطف اختطافا * واعطى خبزه للجايع * وكسى العريان ثوبا * ورد يده عن
الظلم * ولا ياخذ ربا ولا تضعيفا * وصنع العدل * وسلك في اوامري * لا يموت بمظالم ابيه * بل يحيي
حياة * واما ابوه ان ضيق ضيقة * واختطف اختطافا * وصنع العناد في وسط شعبي * فيموت بخطيته
* ويقولون * لماذا ان الابن لم ياخذ ظلم الاب * لان الابن صنع العدل والرحمة * وحفظ جميع سنني
وصنعها * يحيي حياة * والنفس التي تخطي هي التي تموت * والابن لا ياخذ ظلم ابيه * ولا الاب
ياخذ ظلم ابنه * عدل الصديق عليه يكون * واثم الاثيم عليه يكون * والاثيم اذا هو رجع من
جميع اثامه التي صنعها * وحفظ جميع وصاياي * وصنع العدل والرحمة * يحيي حياة * ولا يموت

Non comederit ſuper montes, non extulerit 6
oculos ſuos ad commenta domûs Iſraelis,
non polluerit uxorem proximi ſui, neque
acceſſerit ad mulierem immundam. Nemini 7
vim intulerit, pignus domino ſuo reddiderit,
nudum veſte induerit, Non dederit 8
pecuniam ſuam ad uſuram, neque duplum
exegerit, manum ſuam ab oppreſſione repreſſerit,
judicium æquum inter virum &
proximum ejus decreverit; Denique in 9
mandatis meis ambulaverit, et ſtatuta mea
cuſtodierit exercendo illa: is juſtus eſt, vitam
vivet, dicit Adonai Dominus. Quòd 10
ſi filium genuerit corruptorem, effuſorem
ſanguinis, qui faciat peccata, et non ambulet
in viis patris ſui juſti; Sed comedat ſuper 11
montes, & polluat uxorem proximi
ſui; Vim inferat egeno & pauperi, rapinam 12
rapiat, non reddat pignus, oculoſque
ſuos ad idola ponat, & iniquitatem committat,
Fœnori det, & duplum exigat: 13
iſténe vitam vivet poſt tot iniquitates
quas commiſit? imò verò morte morietur,
& ſanguis ejus ſuper ipſum erit. Rurſum 14
ſi filium genuerit, & is videns omnia peccata
illius quæ perpetrârit, tamen timeat,
neq; faciat ut illa, Nō comedat ſuper montes, 15
non advertat oculos ſuos ad commenta
domûs Iſraelis, non polluat uxorem proximi
ſui, Nemini vim inferat, pignus non accipiat, 16
non rapiat rapinā, panem ſuum det
eſurienti, & nudum induat veſte, Manū 17
ſuam ab oppreſſione retrahat, neque uſurā
neq; duplum repetat, juſtitiam faciat, &
in mandatis meis ambulet: is nequaquam
morietur ob impietates patris ſui, ſed vitā
vivet. At verò pater iſtius, ſi quempiam 18
tribulatione vexaverit, rapinam rapuerit,
repugnantiam fecerit in medio populi mei;
ſanè morietur pro peccato ſuo. Dicetis autem, 19
Qua de re filius non ferret impietatem
patris? Quia filius æquitatem & miſericordiam
exercuit, cuſtodivit omnes
leges meas, & perfecit illas; vitam vivet:
Anima autem quæ peccaverit, ipſa eſt quæ 20
morietur: & filius non feret impietatē patris
ſui, neque pater feret impietatem filii
ſui: æquitas juſti ſuper ipſum erit, & iniquitas
iniqui ſuper ipſum erit. Imò cùm 21
iniquus ipſe converterit ſe ab omnibus iniquitatibus
ſuis quas commiſit, & cuſtodierit
omnia mandata mea, & æquitatem
atque miſericordiam exercuerit: vitam
vivet, & non morietur.

quam *sua justitia in* :ei memorabitur non ,fecit quas ej⁹ prævaricationes Omnes
22 כָּל־פְּשָׁעָיו אֲשֶׁר עָשָׂה לֹא יִזָּכְרוּ לוֹ בְּצִדְקָתוֹ אֲשֶׁר־
? Deus Dominus dixit , *impii mortem volam* volendo Nunquid .vivet ,fecit
23 עָשָׂה יִחְיֶה׃ הֶחָפֹץ אֶחְפֹּץ מוֹת רָשָׁע נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה
,sua justitia à *justum se avertendo in* Et ? vivet &,suis viis à *se avertendo in* Nonne
24 הֲלֹא בְּשׁוּבוֹ מִדְּרָכָיו וְחָיָה׃ וּבְשׁוּב צַדִּיק מִצִּדְקָתוֹ
,fecerit &,impius fecit quas abominationes oēs secundū,iniquitatē fecerit &
וְעָשָׂה עָוֶל כְּכֹל הַתּוֹעֵבוֹת אֲשֶׁר־עָשָׂה הָרָשָׁע יַעֲשֶׂה
sua prævaricatione in:memorabūtur non ,fecit quas ej⁹ justitiæ Omnes ?vivet &
וָחָי כָּל־צִדְקָתוֹ אֲשֶׁר־עָשָׂה לֹא תִזָּכַרְנָה בְּמַעֲלוֹ
.morietur *eis in* ,peccavit quod suū peccatū propter & ,est prævaricatus quam
אֲשֶׁר־מָעַל וּבְחַטָּאתוֹ אֲשֶׁר־חָטָא בָּם יָמוּת׃
.Israel domus nunc Audite .Domini via *dirigetur* non , dixistis Et
25 וַאֲמַרְתֶּם לֹא יִתָּכֵן דֶּרֶךְ אֲדֹנָי שִׁמְעוּ־נָא בֵּית יִשְׂרָאֵל
se avertendo In ?firmabuntur non vestræ viæ Nónne *?dirigetur* non mea via Nunquid
26 הֲדַרְכִּי לֹא יִתָּכֵן הֲלֹא דַרְכֵיכֶם לֹא יִתָּכֵנוּ׃ בְּשׁוּב־
sua iniquitate in : ea super morietur & ,iniquitatē fecerit & ,sua justitia à *justum*
צַדִּיק מִצִּדְקָתוֹ וְעָשָׂה עָוֶל וּמֵת עֲלֵיהֶם בְּעַוְלוֹ
quam sua impietate ab *impium se avertendo in* Et .morietur , fecit quam
27 אֲשֶׁר־עָשָׂה יָמוּת׃ וּבְשׁוּב רָשָׁע מֵרִשְׁעָתוֹ אֲשֶׁר
,vidit Et .vivificabit suā animam ipse ; justitiam &,judicium fecerit & , fecit
28 עָשָׂה וַיַּעַשׂ מִשְׁפָּט וּצְדָקָה הוּא אֶת־נַפְשׁוֹ יְחַיֶּה׃ וַיִּרְאֶה
non ,vivet vivendo : fecit quas suis prævaricationib⁹ omnib⁹ ab est aversus &
וַיָּשׁוּב מִכָּל־פְּשָׁעָיו אֲשֶׁר עָשָׂה חָיוֹ יִחְיֶה לֹא
.Domini via *dirigetur* Non : Israel domus dixerunt Et .morietur
29 יָמוּת׃ וְאָמְרוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל לֹא יִתָּכֵן דֶּרֶךְ אֲדֹנָי
?dirigetur non vestræ viæ Nónne ? Israel domus *dirigentur* non meæ viæ Nunquid
הַדְּרָכַי לֹא יִתָּכְנוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל הֲלֹא דַרְכֵיכֶם לֹא יִתָּכֵן׃
dixit ,Israel domus vos judicabo suas vias juxta unumquēque Idcirco
30 לָכֵן אִישׁ כִּדְרָכָיו אֶשְׁפֹּט אֶתְכֶם בֵּית יִשְׂרָאֵל נְאֻם
,vestris *prævaricationib⁹* omnib⁹ ab facite converti &,Cōvertimini.Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה שׁוּבוּ וְהָשִׁיבוּ מִכָּל־פִּשְׁעֵיכֶם
vobis *desuper* Projicite .iniquitas offendiculū in vobis erit non &
31 וְלֹא־יִהְיֶה לָכֶם לְמִכְשׁוֹל עָוֺן׃ הַשְׁלִיכוּ מֵעֲלֵיכֶם אֶת־
cor vobis facite & ,*eis in* estis prævaricati quibus vestras *prævaricationes* omnes
כָּל־פִּשְׁעֵיכֶם אֲשֶׁר פְּשַׁעְתֶּם בָּם וַעֲשׂוּ לָכֶם לֵב
Quia ? Israel domus moriemini quid ut & : novum spiritum & ,novum
32 חָדָשׁ וְרוּחַ חֲדָשָׁה וְלָמָּה תָמֻתוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ כִּי
.vivetis &,facite reverti & : Deus Dominus dixit ,mortui *morte in volam non*
לֹא אֶחְפֹּץ בְּמוֹת הַמֵּת נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה וְהָשִׁיבוּ וִחְיוּ׃

CAP. XIX. יט

tua mater *Quid* : dices Et .Israel *prælatos* super planctum *tolle* tu Et
1 וְאַתָּה שָׂא קִינָה אֶל־נְשִׂיאֵי יִשְׂרָאֵל׃ וְאָמַרְתָּ מָה אִמְּךָ
2 .suos catulos multiplicavit leunculorū medio In ? cubavit leones inter leæna
לְבִיָּא בֵּין אֲרָיוֹת רָבָצָה בְּתוֹךְ כְּפִרִים רִבְּתָה גוּרֶיהָ׃
rapere didicit & : fuit leunculus ,suis catulis de unum fecit ascendere Et
3 וַתַּעַל אֶחָד מִגֻּרֶיהָ כְּפִיר הָיָה וַיִּלְמַד לִטְרֹף־
:est captus eorū *scrobe in* ,gentes eum *ad* audierunt Et .*comedit hominem ,prædam*
4 טֶרֶף אָדָם אָכָל׃ וַיִּשְׁמְעוּ אֵלָיו גּוֹיִם בְּשַׁחְתָּם נִתְפָּשׂ
,*expectata quia vidit* Et .Ægypti terram ad *Hamis* in eū adduxerunt &
5 וַיְבִאֻהוּ בַחַחִים אֶל־אֶרֶץ מִצְרָיִם׃ וַתֵּרֶא כִּי נוֹחֲלָה
.eum posuit leunculum,suis catulis de unum tulit & : sua expectatio perierit
אָבְדָה תִּקְוָתָהּ וַתִּקַּח אֶחָד מִגֻּרֶיהָ כְּפִיר שָׂמָתְהוּ׃
,rapinam rapere didicit & : fuit leunculus ,leonum medio in *ambulabat* Et
6 וַיִּתְהַלֵּךְ בְּתוֹךְ־אֲרָיוֹת כְּפִיר הָיָה וַיִּלְמַד לִטְרֹף־טֶרֶף
:fecit desolare eorū civitates & ,ejus viduas cognovit Et .*comedit hominem*
7 אָדָם אָכָל׃ וַיֵּדַע אַלְמְנוֹתָיו וְעָרֵיהֶם הֶחֱרִיב
.ejus rugitus voce à ej⁹ plenitudo & ,terra est desolata &
וַתַּשֵּׁם אֶרֶץ וּמְלֹאָהּ מִקּוֹל שַׁאֲגָתוֹ׃

Versio VULG. LAT.

22 Omniū iniquitatū ej⁹, quas operat⁹ est, nō recordabor: in justitia 23 sua, quā operat⁹ est, vivet. Numquid voluntatis meæ est mors impii, dicit Dn̄s De⁹, & non ut con- 24 vertatur à viis suis, et vivat? Si autē averterit se just⁹ à justitia sua, & fecerit iniquitatē secundùm omnes abominationes, quas operari solet impi⁹, numquid vivet? omnes justitiæ ej⁹, quas fecerat, nō recordabūtur: in prævaricatione, quâ prævaricat⁹ est, & in peccato suo, ꝙ peccavit, in ipsis morietur. 25 Et dixistis; Non est æqua via Dn̄i. Audite ergò, domus Israel: Numquid via mea non est æqua, & nō 26 magis viæ vestræ pravæ sūt? Cùm enim averterit se justus à justitia sua, et fecerit iniquitatē, morietur in eis: in injustitia, quā operat⁹ est, 27 morietur. Et cùm averterit se impi⁹ ab impietate sua, quā operat⁹ est, & fecerit judiciū, & justitiā: 28 ipse animā suā vivificabit. Considerans enim, & avertens se ab omnib⁹ iniquitatib⁹ suis, quas operat⁹ est, vitâ vivet, & non morie- 29 tur. Et dicunt filii Israel; Non est æqua via Dn̄i. Numquid viæ meæ non sunt æquæ, dom⁹ Israel, et nō 30 magis viæ vestræ pravæ? Idcircò unumquemque juxta vias suas judicabo, domus Israel, ait Dn̄s De⁹. Convertimini, & agite pœnitentiā ab omnib⁹ iniquitatib⁹ vestris: & nō erit vobis in ruinā iniqui- 31 tas. Projicite à vobis omnes prævaricationes vestras, in quib⁹ prævaricati estis, & facite vobis cor novū, & spiritū novum: & quarè 32 moriemini, domus Israel? Quia nolo mortē morientis, dicit Dn̄s Deus: revertimini, & vivite.

CAP. XIX.

1 ET tu assume planctū sup prin- 2 cipes Israel, Et dices; Quarè mater tua leæna inter leones cubavit, in medio leunculorū enutrivit catu- 3 los suos? Et eduxit unū de leunculis suis, & leo fact⁹ est: & didicit capere prædam, hominémque 4 comedere. Et audierūt de eo Gentes, & non absq; vulnerib⁹ suis ceperunt eū: & adduxerūt eū in ca- 5 tenis in terrā Ægypti. Quæ cùm vidisset quoniā infirmata est, & periit expectatio ej⁹: tulit unū de leunculis suis, leonē constituit eū. 6 Qui incedebat inter leones, et fact⁹ est leo: & didicit prædā cape- 7 re, & homines devorare: Didicit viduas facere, et civitates eorū in desertū adducere: & desolata est terra, & plenitudo ejus, à voce rugitûs illius.

Vers. GRÆ. LXX. Interp.

22 (χ) Πάντα τὰ παραπτώματα αὐτοῦ ὅσα ἐποίησεν, οὐ μνησθήσονται· (ψ) ἐν τῇ δικαιοσύνῃ αὐτοῦ ᾗ (ω) ἐποίησε, ζήσεται. 23 Μὴ θελήσει θελήσω τὸν θάνατον τοῦ ἀνόμου, λέγει (α) κύριος, ὡς τὸ ἀποστρέψαι αὐτὸν ἐκ τῆς (β) ὁδοῦ τῆς πονηρᾶς, καὶ ζῆν αὐτόν; 24 Ἐν δὲ τῷ ἀποστρέψαι δίκαιον (ˇ) ἐκ τῆς δικαιοσύνης αὐτοῦ, καὶ (γ) ποιῆσαι ἀδικίαν κατὰ πάσας τὰς ἀνομίας ἃς ἐποίησεν ὁ ἄνομος, πᾶσαι αἱ δικαιοσύναι αὐτοῦ ἃς ἐποίησεν, οὐ μὴ μνησθῶσιν· ἐν τῷ παραπτώματι αὐτοῦ ᾧ παρέπεσε, καὶ ἐν ταῖς ἁμαρτίαις αὐτοῦ αἷς ἥμαρτεν, ἐν αὐταῖς ἀποθανεῖται. 25 Καὶ εἴπατε, Οὐ (δ) κατευθύνει ἡ ὁδὸς κυρίου. ἀκούσατε δὴ (ε) πᾶς ὁ οἶκος Ἰσραήλ· μὴ ἡ ὁδός μου οὐ κατευθύνει; οὐχὶ ἡ ὁδὸς ὑμῶν (ˢ) κατευθύνει; 26 Ἐν τῷ (ζ) ἀποστρέψαι τὸν δίκαιον ἐκ τῆς δικαιοσύνης αὐτοῦ, καὶ (¨) ποιήσει παράπτωμα, καὶ ἀποθάνῃ ἐν τῷ παραπτώματι ᾧ ἐποίησεν, ἐν αὐτῷ ἀποθανεῖται. 27 Καὶ ἐν τῷ ἀποστρέψαι ἄνομον ἀπὸ τῆς ἀνομίας αὐτοῦ ἧς ἐποίησε, καὶ (˙) ποιήσει κρίμα καὶ δικαιοσύνην, οὗτος τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐφύλαξε, 28 (η) Καὶ ἀπέστρεψεν ἐκ πασῶν ἀσεβειῶν αὐτοῦ ὧν ἐποίησε, ζωῇ ζήσεται, οὐ μὴ ἀποθάνῃ. 29 Καὶ λέγουσιν ὁ (θ) οἶκος τοῦ Ἰσραήλ, Οὐ κατορθοῖ ἡ ὁδὸς κυρίου. μὴ ἡ ὁδός μου οὐ κατορθοῖ οἶκος Ἰσραήλ; οὐχὶ ἡ ὁδὸς ὑμῶν οὐ κατορθοῖ; 30 (ι) Ἕκαστον κατὰ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ κρινῶ (κ) ὑμᾶς οἶκος Ἰσραήλ, (λ) λέγει κύριος. ἐπιστράφητε καὶ ἀποστρέψατε ἐκ πασῶν τῶν ἀσεβειῶν ὑμῶν, καὶ οὐκ 31 ἔσονται ὑμῖν εἰς κόλασιν ἀδικίας. Ἀπορρίψατε (μ) ἀφ' ἑαυτῶν πάσας τὰς ἀσεβείας ὑμῶν (ν) ἃς ἠσεβήσατε εἰς ἐμέ, καὶ ποιήσατε ἑαυτοῖς καρδίαν καινὴν καὶ πνεῦμα (ξ) καινόν. καὶ ἵνα τί ἀποθνήσκετε οἶκος 32 (ο) Ἰσραήλ; Διότι οὐ θέλω τὸν θάνατον τοῦ ἀποθνήσκοντος, λέγει (π) κύριος.

ΚΕΦ. ιθ'.

1 ΚΑὶ σὺ (α) λάβε θρῆνον ἐπὶ τοὺς ἄρχον- 2 τας τοῦ Ἰσραήλ, Καὶ ἐρεῖς, Τί ἡ μήτηρ σου σκύμνος ἐν μέσῳ λεόντων ἐγενήθη; (β) ἐν μέσῳ λεόντων ἐπλήθυνε σκύμνους αὐ- 3 τῆς. Καὶ (γ) ἀπεπήδησεν εἷς τῶν σκύμνων αὐτῆς, λέων ἐγένετο, καὶ ἔμαθεν τοῦ ἁρπάζειν 4 ἁρπάγματα, ἀνθρώπους ἔφαγε. Καὶ ἤκουσαν κατ' αὐτοῦ ἔθνη, ἐν τῇ διαφθορᾷ αὐτῶν συνελήφθη, καὶ ἤγαγον αὐτὸν ἐν κημῷ εἰς 5 γῆν Αἰγύπτου. Καὶ εἶδεν ὅτι (δ) ἀπῶσται ἀπ' αὐτῆς, ἀπώλετο ἡ ὑπόστασις αὐτῆς· καὶ ἔλαβεν ἄλλον ἐκ τῶν σκύμνων αὐτῆς, λέοντα 6 ἔταξεν αὐτόν. Καὶ ἀνεστρέφετο ἐν μέσῳ λεόντων, λέων ἐγένετο, καὶ ἔμαθεν ἁρπά- 7 ζειν ἁρπάγματα. ἀνθρώπους ἔφαγε, Καὶ ἐνέμετο (ε) τῷ θράσει αὐτοῦ, καὶ τὰς πόλεις αὐτῶν (ζ) ἐξηρήμωσε, καὶ ἠφάνισε γῆν, καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς ἀπὸ φωνῆς (η) ὠρύματος αὐτοῦ.

cum Transl. LAT.

22 Omnia delicta ejus, quæcunq; fecit, (e) non memorabuntur: in sua justitia, quam fecit, vivet. 23 Nunquid voluntate volā mortē iniqui, dicit Dominus, sicut averti ipsū à via sua pessima, & ipsū vivere? 24 Cū autē avertere se just⁹ à justitia sua, et fecerit injustitiā secundū omnes iniquitates, quas fecit iniquus; omnes justitiæ ejus, quas fecit, nō erunt in memoria: in delicto suo, quo deliquit, & in peccatis suis, quæ peccavit, in ipsis morietur. 25 Et dixistis; Non rectè pergit via Domini. Audite nūc omnis domus Israel, Nunquid via mea nō rectè pergit? Nunquid via vestra rectè pergit? 26 In avertendo se justum à justitia sua, & faciet delictū, & morietur in delicto, quod fecit; in ipso morietur. 27 Et in avertendo se iniquū ab iniquitate sua, quā fecit, & faciet judiciū, et justitiā, hic animā suā custodivit, 28 Et avertit se ab omnib⁹ impietatibus suis, quas fecerat; vitâ vivet, non morietur. 29 Et dicunt dom⁹ Israel, Non recta est via Domini. Nunquid via mea nō recta est, dom⁹ Israel? nōnne via vestra nō recta est? 30 Unumquemq; secundū viā suā, judicabo vos, dom⁹ Israel, ait Domin⁹. Convertimini, & avertite vos ab omnib⁹ impietatib⁹ vestris: & non erunt vobis in suppliciū iniquitatis. 31 Projicite à vobis omnes impietates vestras, in quib⁹ impie egistis in me, & facite vobis cor novū, & spiritū novum. Et ut quid morimini, domus Israel? 32 (f) Quia nolo mortem morientis, ait Dominus.

CAP. XIX.

1 ET tu accipe lamentum super principē Israel, 2 Et dices; Quid mater tua (a) catul⁹ in medio leonum (b) facta est? In medio leonū multiplicavit catulos suos. 3 Et exilivit un⁹ de catulis ej⁹: leo fact⁹ est, & didicit rapere rapinas: homines comēdit. 4 Et audierunt (c) contra eum gentes: in corruptione earū capt⁹ est: & adduxerunt eū in camo in terrā Ægypti. 5 Et vidit, quoniā ablat⁹ esset ab ea, periisset substantia ejus: & tulit aliū de catulis suis: leonē constituit eū. 6 Et conversabatur in medio leonū: leo factus est, & didicit rapere rapinas. 7 Homines comēdit, Et pascebatur in audacia sua, & civitates eorum desolavit, & vastavit terram, & plenitudinem ejus, à voce rugitûs sui.

MS. A. (χ) Πᾶσαι αἱ ἀδικίαι ἃς ἐποίησεν οὐ μὴ μνησθῶσι. (ψ) ἀλλ' ἐν τῇ (ω) ἐποίησεν, ἐν αὐτῇ ζήσεται. Ὅτι οὐ βούλομαι τοῦ (α) κύριος κύριος, (β) ὁδοῦ αὐτοῦ τ(ˇ) ἀπὸ (γ) ποιήσῃ (δ) κατορθοῖ ἡ (ε) πᾶς οἶκος (ˢ) οὐ κατευθύνει (ζ) ἀποστρέψαι δίκαιον (¨) ποιήσῃ (˙) ποιήσῃ (η) Καὶ ἴδεν καὶ ἀπέστρεψεν ἐκ πασῶν τῶν ἀσεβειῶν (θ) οἶκος Ἰσραήλ, (ι) Διατοῦτο ἕκαστον (κ) ὑμεῖς (λ) λέγει ἀδωναῒ κύριος. (μ) ἀπὸ ἑαυτῶν (ν) ἃς ἐποιήσατε, καὶ (ξ) καινόν, καὶ ποιήσατε πάσας τὰς ἐντολάς μου. καὶ (ο) Ἰσραήλ; λέγει κύριος. (π) ἀδωναῒ κύριος, καὶ ἐπιστρέψατε καὶ ζήσατε. Κεφ. ιθ'. MS. A. (α) υἱὲ ἀνθρώπου λάβε, (β) καὶ ἐν (γ) * ἀπεδήμησεν (δ) ἀπώσατο ἀπ' αὐτῆς, καὶ ἀπώλετο ἡ (ε) ἐν τῷ θράσει (ζ) ἐξερήμωσεν (η) ὠρύματος

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 כָּל חוֹבוֹהִי דַעֲבַד לָא יִדְּכְּרוּן לֵיהּ בְּזָכוּתֵיהּ דַעֲבַד יִתְקַיָּם׃ הֲמִרְעָא רָעֵינָא בְּמוֹתֵיהּ
23 דְּרַשִׁיעָא אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הֲלָא כַּד יְתוּב מֵאוֹרְחֵיהּ וְיִתְקַיָּם׃ וְכַד יְתוּב זַכָּאָה מִזָּכוּתֵיהּ
24 וְיַעְבֵּיד שְׁקַר כְּכֹל תּוֹעֵבָתְ דִּי עֲבַד רַשִׁיעַ יַעְבֵּיד דְּאִתְקַיָּם כָּל זָכְוָתֵיהּ דַעֲבַד לָא יִדְּכְּרוּן
25 בְּשִׁקְרֵיהּ דְּשַׁקַּר וּבְחוֹבוֹהִי דִּיחַב בְּהוֹן יְמוּת׃ וַאֲמַרְתּוּן לָא מְפָרְשָׁן לָנָא אוֹרְחָת טוּבָא
דַּייָ שְׁמַעוּ כְעַן בֵּית יִשְׂרָאֵל הַאוֹרְחָת טוּבִי לָא מְפָרְשָׁן לְכוֹן הֲלָא אוֹרְחָתְכוֹן דִּילְכוֹן לָא
26 תַּקְנָן׃ וְכַד יְתוּב זַכָּאָה מִזָּכוּתֵיהּ וְיַעְבֵּיד שְׁקַר וִימוּת עֲלֵיהוֹן בְּשִׁקְרֵיהּ דִּי עֲבַד יְמוּת׃
27 וְכַד יְתוּב רַשִׁיעָא מֵחוֹבוֹהִי דִּי עֲבַד וְיַעְבֵּיד דִּין דִּקְשׁוֹט וּזְכוּ הוּא יָת נַפְשֵׁיהּ יְקַיֵּם׃ וַחֲזָא
28 וְתָב מִכָּל חוֹבוֹהִי דִּי עֲבַד מֵחְיָא יֵחֵי לָא יְמוּת׃ וַאֲמָרוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל לָא מְפָרְשָׁן לָנָא
29 אוֹרְחָת טוּבָא דַּייָ הַאוֹרְחָת טוּבִי לָא מְפָרְשָׁן לְכוֹן בֵּית יִשְׂרָאֵל הֲלָא אוֹרְחָתְכוֹן דִּילְכוֹן
30 לָא תַקְנָן׃ בְּכֵן אֱנָשׁ כְּאוֹרְחָתֵיהּ אִתְפְּרַע מִנְּכוֹן בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים תּוּבוּ
31 לְפוּלְחָנִי וְאַעְדוֹ מִנְּכוֹן פּוּלְחַן טַעֲוָתָא וְלָא יְהֵי לְכוֹן לְתַקְלַת חוֹבִין׃ אַרְחִיקוּ מִנְּכוֹן יָת
כָּל חוֹבֵיכוֹן דְּחַבְתּוּן בְּהוֹן וְעִבִידוּ לְכוֹן לֵב דָּחִיל וְרוּחַ דַּחֲלָא וּלְמָה תְּמוּתוּן בֵּית
32 יִשְׂרָאֵל׃ אֲרֵי לָא רָעֵינָא בְּמוֹתָא דְּחַיָּיב לִמְמָת אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים תּוּבוּ לְפוּלְחָנִי
וְאִתְקַיָּמוּ׃

יט

1 וְאַתְּ טוּל אִלְיָא עַל רַבְרְבֵי יִשְׂרָאֵל׃ וְתֵימַר מָה כְנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל דַּהֲוָת דָּמְיָא לְלֵיתָא
2 בֵּינֵי מַלְכַיָּא רְבָא בֵּינֵי שִׁלְטוֹנַיָּא רַבִּיאַת בְּנָהָא׃ וְרַבִּיאַת חַד מִבְּנָהָא מַלְכָּא הֲוָה
3 וְאַלִּיף לְמִקְטַל קְטוֹל אֱנָשָׁא קְטַל׃ וּשְׁמַעוּ עֲלוֹהִי עַמְמַיָּא בִּסְרִיגַתְהוֹן אִתְאַחַד
4 וְאַיְתִיאוּהִי בְּשַׁלְשְׁלָן לְאַרְעָא דְּמִצְרָיִם׃ וַחֲזָת אֲרֵי פְסַק אֲבַד סְבִירַהּ וְרַבִּיאַת חַד
5 מִבְּנָהָא מַלְכָּא שַׁוִּיתֵיהּ׃ וַהֲלִיךְ בְּנוֹ מַלְכַיָּא מַלְכָּא הֲוָה וְאַלִּיף לְמִקְטַל קְטוֹל אֱנָשָׁא
6 קְטַל׃ וְאַצְדִּי בִּירָנְיָתֵיהּ וְקִרְוֵיהוֹן אַחְרִיב וְצַדִּיאַת אַרְעָא וּמְלוֹאָהּ מִקָּל אִתְרַגְּשׁוּתֵיהּ׃
7

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

22 Omnes iniquitates ejus quas fecit non erunt in memoria ei: in justitia sua quam fecit permanebit. 23 Nunquid volens volo mortem impii, dicit Dominus Deus? nónne cùm conversus fuerit à via sua, vivet? 24 Et cùm aversus fuerit justus à justitia sua & fecerit iniquitatem, juxta omnes abominationes quas fecit impius, fecerit ipse, nunquid vivet? Omnes justitiæ ej⁹ quas fecit, non erunt in memoria: in prævaricatione qua prævaricat⁹ est, & in peccatis quib⁹ peccavit, in ipsis morietur. 25 Et dixistis: Non sunt expositæ nobis viæ bonitatis Domini. Audite nunc dom⁹ Israel: An viæ bonitatis meæ non declaratæ sunt vobis? nónne viæ vestræ non sunt rectæ? 26 Cùm avers⁹ fuerit just⁹ à justitia sua & fecerit iniquitatem & mortu⁹ fuerit ob ea, in iniquitate sua quam fecit morietur. 27 Et cùm avers⁹ fuerit impi⁹ ab *iniquitatibus suis quas* fecit, et fecerit judiciū verū & justitiā, ipse animā suā vivificabit. 28 Vidit enim & convers⁹ est ab omnib⁹ iniquitatib⁹ suis quas fecit: vivens vivet & non morietur. 29 Et dixerunt dom⁹ Israel: Non declaratæ sunt nobis viæ bonitatis Domini. An viæ bonitatis meæ non sunt declaratæ vobis dom⁹ Israel? utique viæ vestræ non sunt rectæ. 30 Propterea juxta vias uniuscujusque vindictam sumam ex vobis domus Israel, dicit Domin⁹ De⁹. Convertimini ad cultum meum, & auferte ex vobis cultum idolorum, & non sit vobis in offendiculum peccatorum. 31 Projicite à vobis omnia peccata vestra quæ commisistis, & facite vobis cor timens & spiritum timoris: & quare moriemini dom⁹ Israel? 32 Quia nolo mortem peccatoris, qui re⁹ est mortis, dicit Dn̄s Deus. Convertimini ad cultum meum, & vivite.

CAP. XIX.

1 ET tu assume lamentationem super principes Israel, 2 Et dices: Quid cœtus Israel, quæ similis *erat* leænæ, inter reges crevit, & inter principes nutrivit filios suos. 3 Et evexit unum de filiis suis, rex fuit, & didicit occidere occisionem, hominem occidit. 4 Et audierunt de eo populi, in reti eorum captus est, & adduxerunt eum in catenis in terram Ægypti. 5 Et vidit quia cessavit & periit expectatio ejus, & nutrivit unum de filiis suis, regem constituit eum. 6 Et ambulavit inter reges, rex fuit, & didicit occidere occisionem, hominem interfecit. 7 Et desolavit palatia ejus, & civitates eorum destruxit, & desolata est terra & plenitudo ejus à voce tumultus ejus.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܟܠܗܘܢ ܚܛܗܘܗܝ ܕܥܒܕ. ܠܐ ܢܬܕܟܪܢ ܠܗ. ܐܠܐ ܒܙܕܝܩܘܬܐ ܕܥܒܕ. ܢܚܐ. * ܠܐ
ܐܢܐ ܒܡܘܬܗ ܕܚܛܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܐܠܐ ܕܢܬܦܢܐ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ ܘܢܚܐ. * ܘܐ
ܢܬܦܢܐ ܙܕܝܩܐ ܡܢ ܙܕܝܩܘܬܗ : ܘܢܥܒܕ ܥܘܠܐ ܘܛܢܦܘܬܐ ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܕܥܒܕ ܚܛܝܐ.
ܟܠܗ ܙܕܝܩܘܬܗ ܕܥܒܕ. ܠܐ ܬܬܕܟܪ ܠܗ. ܐܠܐ ܒܥܘܠܐ ܕܥܒܕ. ܘܒܚܛܗܐ ܕܚܛܐ ܒܗܘܢ ܢܡܘܬ.
* ܘܐܡܪܬܘܢ. ܠܐ ܬܪܝܨܐ ܐܘܪܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܫܡܥܘ ܗܫܐ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܘܪܚܬܝ
ܬܪܝܨܢ ܐܢܝܢ. ܐܠܐ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܗܝ ܕܠܐ ܬܪܝܨܢ. * ܟܕ ܢܬܦܢܐ ܙܕܝܩܐ ܡܢ ܙܕܝܩܘܬܗ
ܘܢܥܒܕ ܥܘܠܐ. ܒܗ ܒܥܘܠܐ ܕܥܒܕ. ܢܡܘܬ. * ܟܕ ܢܬܦܢܐ ܥܘܠܐ ܡܢ ܥܘܠܘܬܗ. ܘܢܥܒ
ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ. ܢܦܫܗ ܢܚܐ. * ܟܕ ܢܚܙܐ ܘܢܬܦܢܐ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܘܗܝ ܕܥܒܕ
ܡܚܝܐ ܢܚܐ. ܘܠܐ ܢܡܘܬ. * ܘܐܡܪܝܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܠܐ ܬܪܝܨܢ ܐܘܪܚܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܘܪܚ
ܬܝ ܬܪܝܨܢ ܐܢܝܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ: ܐܠܐ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܗܝ ܕܠܐ ܬܪܝܨܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ
ܐܢܫ ܐܝܟ ܐܘܪܚܗ ܐܕܘܢܟܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ: ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܬܘܒܘ ܘܐܬܦܢܘ ܡܢ ܟܠ
ܥܘܠܟܘܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܠܬܘܩܠܬܐ ܠܚܛܗܝܟܘܢ. * ܫܕܘ ܡܢܟܘܢ ܟܠܗ ܥ
ܕܥܒܕܬܘܢ. ܘܥܒܕܘ ܠܟܘܢ ܠܒܐ ܚܕܬܐ. ܘܪܘܚܐ ܚܕܬܐ. ܘܠܐ ܬܡܘܬܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ.
* ܡܛܠ ܕܠܐ ܨܒܐ ܐܢܐ ܒܡܘܬܗ ܕܡܝܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܐܠܐ ܬܘܒܘ ܘܚܝܘ. * ܩܦܠܐܘܢ *
* ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ ܫܩܘܠ ܐܘܠܝܬܐ ܥܠ ܪܫܢܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪ. * ܡܢܐ ܗܝ ܐܡ
ܟ ܓܘܪܝܬܐ ܕܐܪܝܐ. ܕܒܝܢܝ ܐܪܝܘܬܐ ܪܒܥܬ. ܘܒܝܢܝ ܐܪܝܘܬܐ ܪܒܝܬ ܓܘܪܝܗ. * ܘܪܒ
ܚܕ ܡܢ ܓܘܪܝܗ. ܘܗܘܐ ܐܪܝܐ. ܘܝܠܦ ܠܡܚܛܦ ܚܛܘܦܝܐ. ܘܐܟܠ ܒܪܢܫܐ. * ܘܫܡܥܘ ܥܠ
ܥܡܡܐ. ܘܒܡܨܝܕܬܗܘܢ ܐܬܬܨܝܕ. ܘܐܝܬܝܘܗܝ ܒܙܡܐ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܟܕ
ܚܙܬ ܐܡܗ ܕܐܬܡܚܠ. ܘܐܒܕ ܣܒܪܗ. ܢܣܒܬ ܚܕ ܡܢ ܓܘܪܝܗ. ܘܥܒܕܬܗ ܐܪܝܐ.
* ܘܗܘܐ ܡܗܠܟ ܒܝܢܝ ܐܪܝܘܬܐ. ܘܗܘܐ ܐܪܝܐ. ܘܝܠܦ ܠܡܚܛܦ ܚܛܘܦܝܐ. ܘܐܟܠ ܒܪܢܫܐ. * ܘܒ
ܚܝܠܗ ܚܪܒ ܟܪܟܝܗܘܢ. ܘܐܚܪܒ ܐܪܥܐ. ܘܡܠܝܗ ܡܢ ܩܠܐ ܕܙܘܥܬܗ.

Et omnia peccata quæ fecit, non commemorabuntur ei; ſed per juſtitiam quam fecerit, vivet. 22
Haudquaquam oblector morte peccatoris, ait Domin⁹ dominorum, ſed ut retrahat ſe à via ſua prava, & vivat. 23
Quòd ſi avertat ſe juſtus à juſtitia ſua, & iniquitatem atque abominationem committat quales commiſit peccator; tota juſtitia quam fecerat, non commemorabitur ei; ſed propter iniquitatem quam commiſit, & peccata quæ perpetravit, propter eadem morietur. 24
Quòd autẽ dicitis, Non ſunt rectæ viæ Domini; audite jam Iſraelitæ: Viæ quidem meæ rectæ ſunt, at viæ veſtræ non ſunt rectæ. 25
Cùm avertit ſe juſtus à juſtitia ſua, & iniquitatem committit; propter ipſam iniquitatem quam commiſit, morietur. 26
Cùm autem converterit ſe improb⁹ ab improbitate ſua, & fecerit judicium atque juſtitiam; animã ſuam vivam conſervabit. 27
Cúmque conſideraverit, & retraxerit ſe ab omnibus peccatis ſuis quæ fecit; omnino vivet, & non morietur. 28
Attamen dicunt Iſraelitæ, Non ſunt æquæ viæ Domini. Viæ meæ æquæ ſunt O Iſraelitæ, ſed viæ veſtræ non ſunt æquæ. 29
Propterea quemq; ſecundùm vias ſuas judicabo vos Iſraelitæ, dicit Domin⁹ dominorum. Pœnitentiam agite, & revertimini ab omni iniquitate veſtra, & ne ſit vobis offendiculũ ad peccata veſtra. 30
Abjicite à vobis omnem iniquitatem quam commiſiſtis, & facite vobis cor novũ & ſpiritum novũ, & ne moriamini O Iſraelitæ. 31
Non enim delector morte mortui, ait Dominus dominorum: ſed pœniteat vos, & vivite. 32

CAP. XIX.

Tu autem fili hominis, ſume lamentationẽ de principibus Iſraelis, & dic; 1
Quid eſt mater tua catule leonis, quòd inter leones cubat, & inter leones educavit catulos ſuos? 2
Cúmque creviſſet unus è catulis ejus, & leo factus eſſet, didicit prædam diripere, hominémque devoravit: 3
Et audientes famam ejus populi, reti ſuo captum perduxerunt cum paſtomide in terram Ægypti. 4
Cùm autem vidiſſet mater ejus infirmam ſe redditam, & periiſſe expectationem ſuam; accepit unum è catulis ſuis, fecítque leonem: 5
Iſque inter leones ambulans, & leo factus, didicit prædam diripere, hominémque devoravit. 6
Cumque fortitudine proficiens, urbes vaſtâſſet, totámque terram voce rugitûs ſui deſtruxiſſet; 7

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وجميع زلاته التي صنعها لا تذكر له * بعدله الذي صنعه يحيى * لاني لا اشاء موت الاثيم
يقول الرب * مثل ان يرجع من طريقه السوء ويحيا * واذا رجع الصديق عن عدله * وصنع
ظلما كجميع الاثام التي صنعها الاثيم * كل معدلاته التي صنعها لا تذكر له * بزلته سقط
وبخطاياه التي اخطا بها يموت * ويقولون ليس تستقيم طريق الرب * اسمعوا يا كل بيت اسرائيل
هل طرقي لا تستقيم * كلا طرقكم لا تستقيم * اذا رجع الصديق من عدله وصنع زلة ومات
بزلته التي صنعها فيها يموت * واذا رجع الاثيم عن اثمه الذي صنعه * وصنع حكما وعدلا فهذا
حفظ نفسه * ورجع من جميع نفاقه الذي صنعه * يحيا حياة ولا يموت * ويقولون بيت اسرائيل
لا تقوم طريق الرب * هل طريقي لا تقوم يا بيت اسرائيل * كلا طريقكم لا تقوم * اديلكم
كل واحد كطريقه يا بيت اسرائيل يقول ادوناي الرب * ارجعوا وانصرفوا من جميع نفاقكم
ولا تصيرون اثمة للعقوبة * اطرحوا الظلم عنكم * وجميع نفاقكم الذي نافقتم به على
واصنعوا لكم قلبا جديدا وروحا جديدا * ولماذا تموتون يا بيت اسرائيل * من اجل اني لا
اريد موت المايت يقول ادوناي الرب *

* الفصل التاسع عشر *

* وانت يا ابن الانسان خذ نوحا على رييس اسرائيل وتقول * ما بال امك صارت شبلا في وسط
الاسود * اكثرت اشبالها * فشب واحد من اشبالها وصار اسدا * وتعلم ان يخطف اختطافا
واكل الناس * وسمعت عنه الامم * فقبض بفساده وساقوه بحكمة الي ارض مصر * ونظرت انه
ابعد عنها * وهلك قوامها * فاخذت اخر من اشبالها * ربيته اسدا * ويردد في وسط الاسود
وصار اسدا * وتعلم ان يخطف اختطافا * واكل الناس * وامتلي بجرايته * واخرب بلادهم
واهلك الارض بكمالها من صوت زئيره *

Omnia delicta quæ cõmiſerit, non cõmemorabuntur ei: per æquitatem ſuã quam fecerit, vivet. 22
Non enim volo mortem iniqui, dicit Dominus, ut volo ipſum converti à via ſua prava, & vivere. 23
Econtrà, cum retraxerit ſe juſtus ab æquitate ſua, et impiè ſe geſſerit ſecundùm omnes iniquitates quas cõmittit iniquus; equitates ej⁹ omnes quas fecerat, non cõmemorabuntur ei: culpâ ſuâ cecidit, ideo pro peccatis ſuis quæ cõmiſit, pro iiſdem morietur. 24
Dicetis autem, Non eſt recta via Domini. Audite O tota domus Iſraelis. Num viæ meæ non eſſent rectæ? imò verò viæ veſtræ non ſunt rectæ. 25
Cùm retraxerit ſe juſtus ab æquitate ſua, culpã cõmiſerit, & mortuus fuerit in culpa quã cõmiſit; propter eandem morietur. 26
Similiter, cùm retraxerit ſe iniquus ab iniquitate ſua quã fecit, & exercuerit judicium & æquitatem; is animã ſuã ſervabit: 27
Retrahens enim ſe ab omnibus impietatibus quas cõmiſit, vitam vivet, & non morietur. 28
Dicerent jam domus Iſraelis haud rectam eſſe viã Domini? An via mea non eſt recta O domus Iſraelis? imò verò veſtra non eſt recta. 29
Judicabo vos, quemq; ſecundùm viã ſuã O dom⁹ Iſraelis, inquit Adonai Domin⁹. Convertimini, et recedite ab omnibus impietatibus veſtris; ut ne ſupplicio addicamini. 30
Abjicite à vobis iniquitatem & omnes impietates quas in me perpetrâſtis, & facite vobis cor novum & ſpiritum novum. Quorſum enim moreremini O domus Iſraelis, 31
Quandoquidem ego nolo mortem moribundi? inquit Adonai Dominus. 32

CAP. XIX.

Et tu O fili hominis, adhibe lamentum ſuper principem Iſraelis, ac dicas; 1
Quid rei eſt quòd mater tua facta eſt leunculus in medio leonum? multiplicavit leunculos ſuos; 2
Et cùm adoleviſſet unus è leunculis ejus, factuſq; eſſet leo, didicit prædam rapere, & devorabat homines. 3
Audierunt autem de eo gentes, & propter perniciem ejus ceperunt eum, eumque deduxerunt ad terram Ægypti. 4
Quapropter videns illa hunc à ſe amotum, & periiſſe ſubſiſtentiam ſuam; alium accepit è leunculis ſuis, & in leonem inſtruxit: 5
Qui cum leonibus conſueſcens, & leo factus; didicit prædam capere, homineſque devorabat, 6
Audaciâ ſuâ ſe ſaturabat, & regiones eorum vaſtabat, totamque terram voce rugitûs ſui perdebat. 7

יחזקאל : כ

eũ ſuper expanderunt & :provinciis de *circum* gentes eum *ſuper dederunt* Et
8 ויתנו עליו גוים סביב ממדינות ויפרשו עליו
, *hamis* in *clauſtrum* in eum *dederunt* Et .eſt captus earũ *ſcrobe in*, ſuũ rete
9 רשתם בשחתם נתפש : ויתנהו בסוגר בחחים
ut ,munitiones *in* eũ adduxerunt : Babel regem ad eũ adduxerunt &
ויבאהו אל־מלך בבל יבאהו במצדות למען
vitis tanquã tua Mater .Iſrael montes *ad* ultrà ejꝰ vox audiretur non
10 לא־ישמע קולו עוד אל־הרי ישראל : אמך כגפן
fuit *frondeſcens* & ,fructificans : plantata aquas juxta *tuo ſanguine in*
בדמך על־מים שתולה פריה וענפה היתה
ſceptra ad fortitudinis virgæ ei fuerunt Et .multas aquas propter
11 ממים רבים : ויהיו־לה מטות עז אל־שבטי
eſt cõſpecta & :*perplexitates* inter *ſupra* ejꝰ ſtatura eſt exaltata Et .dominantiũ
משלים ותגבה קומתו על־בין עבתים וירא
eſt evulſa Et .ſuorum ramorum multitudine in ,ſua altitudine in
12 בגבהו ברב דליתיו : ותתש
:ejꝰ fructũ fecit ſiccare orientalis ventus &,eſt projecta terram in ,ira in
בחמה לארץ השלכה ורוח הקדים הוביש פריה
.*eam* conſumpſit ignis ejus roboris virgam ,aruerunt & , ſunt confracti
התפרקו ויבשו מטה עזה אש אכלתהו :
ignis eſt egreſſus Et .*ſitis &* ,*ariditatis* terra in ;deſerto in plantata nunc Et
13 ועתה שתולה במדבר בארץ ציה וצמא : ותצא אש
14 virga *ea in fuit non &* ,*comedit* ejus fructum ,ejus *membrorum* virga de
ממטה בדיה פריה אכלה ולא־היה בה מטה
.planctum in erit & , *ipſa* planctus : dominandum ad ſceptrum ,*roboris*
עז שבט למשול קינה היא ותהי לקינה :

CAP. XX.

venerunt ,menſis decima in , quinto in , ſeptimo anno in fuit Et
1 ויהי בשנה השביעית בחמשי בעשור לחדש באו
.*meas facies ad* ſederũt &:Dominum inquirẽdũ ad,Iſrael ſenioribꝰ de viri
אנשים מזקני ישראל לדרש את־יהוה וישבו לפני :
alloquere,hominis Fili : *dicendum ad*,me ad Domini verbum fuit Et
2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר : בן־אדם דבר את־
3 : Deus Dominus dixit Sic : eos ad *dices* & ,Iſrael ſeniores
זקני ישראל ואמרת אלהם כה אמר אדני יהוה
, vobis *requirar* ſi ego *vivens ?venientes* vos me inquirendũ ad Nũquid
הלדרש אתי אתם באים חי־אני אם־אדרש לכם
?hominis fili judicabis nũquid?eos judicabis Nũquid .Deus Dominꝰ dixit
4 נאם אדני יהוה : התשפט אתם התשפוט בן־אדם
dixit Sic : eos ad *dices* Et .eos ſcire fac eorũ patrũ Abominationes
5 את־תועבת אבותם הודיעם : ואמרת אליהם כה־אמר
ſemine pro meã manũ levavi & ,Iſrael in *me eligendi* die In : Deus Dominꝰ
אדני יהוה ביום בחרי בישראל ואשא ידי לזרע
meã manũ levavi & : Ægypti terra in eis ſum cognitꝰ & ,Jahacob domꝰ
בית יעקב ואודע להם בארץ מצרים ואשא ידי
meã manũ levavi illa die In .veſter Deus Dominus Ego :dicendo ,eis
6 להם לאמר אני יהוה אלהיכם : ביום ההוא נשאתי ידי
exploravi quam terram ad , Ægypti terra de eos *educendum ad* , eis
להם להוציאם מארץ מצרים אל־ארץ אשר־תרתי
.terris omnibus in *ipſa ornamentum* ; melle & lacte fluentem , eis
להם זבת חלב ודבש צבי היא לכל־הארצות :
,projicite *ſuorum* oculorũ abominationes Unuſquiſque : eos ad dixi Et
7 ואמר אלהם איש שקוצי עיניו השליכו
.veſter Deus Dominus Ego .vos polluatis ne Ægypti idolis in &
ובגלולי מצרים אל־תטמאו אני יהוה אלהיכם :

Verſio VULG. LAT.

8 Et convenerunt adverſùs eum
Gentes undique de provinciis, &
expanderunt ſuper eum rete ſuũ,
9 in vulneribus earũ captus eſt. Et
miſerunt eũ in caveam, in catenis
adduxerunt eum ad regem
Babylonis : miſerúntque eum in
carcerem, ne audiretur vox ejus
10 ultrà ſuper montes Iſrael. Mater
tua quaſi vinea in ſanguine tuo
ſuper aquam plantata eſt : fructus
ejus, & frondes ejus creverunt
11 ex aquis multis. Et factæ
ſunt ei virgæ ſolidæ in ſceptra
dominantiũ, & exaltata eſt ſtatura
ejus inter frondes : & vidit
altitudinem ſuam in multitudine
12 palmitũ ſuorũ. Et evulſa eſt in
ira, in terrámque projecta, &
ventꝰ urens ſiccavit fructum ejꝰ:
marcuerunt, & areſactæ ſunt virgæ
roboris ejus : ignis comêdit
13 eam. Et nunc tranſplantata eſt in
deſertum, in terra invia & ſitienti.
14 Et egreſſus eſt ignis de virga
ramorũ ejꝰ, qui fructum ejus
comêdit : & non fuit in ea virga
fortis, ſceptrum dominantiũ.
Planctꝰ eſt, & erit in planctum.

CAP. XX.

1 ET factum eſt in anno ſeptimo,
in quinto, in decima menſis :
venerunt viri de ſenioribus
Iſrael, ut interrogarent Dominũ,
2 & ſederunt corã me. Et factus
eſt ſermo Dñi ad me, dicens;
3 Fili hominis, loquere ſenioribus
Iſrael, & dices ad eos; Hæc dicit
Dñs Deꝰ; Numquid ad interrogandum
me vos veniſtis?
Vivo ego quia non reſpondebo
4 vobis, ait Dñs Deꝰ. Si judicas
eos, ſi judicas, fili hominis, abominationes
patrũ eorũ oſtende
5 eis. Et dices ad eos; Hæc dicit
Dñs Deꝰ; In die, quâ elegi Iſrael,
& levavi manũ meã pro ſtirpe
domꝰ Jacob, et apparui eis in terra
Ægypti, & levavi manũ meã
pro eis, dicens, Ego Dñs Deꝰ veſter:
6 In die illa levavi manũ meã
pro eis, ut educerem eos de terra
Ægypti in terram, quam provideram
eis, fluentem lacte &
melle : quæ eſt egregia inter
7 omnes terras. Et dixi ad eos;
Unuſquiſque offenſiones oculorum
ſuorum abjiciat, & in idolis
Ægypti nolite pollui : ego
Dominus Deus veſter.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Καὶ ἔδωκαν ἐπ᾽ αὐτὸν ἔθνη (θ) ἐκ χωρῶν
κυκλόθεν, καὶ ἐξεπέτασαν ἐπ᾽ αὐτὸν (ι) δίκτυα
αὐτῶν, ἐν διαφθορᾷ αὐτῶν (κ) συνελήφθη.
9 Καὶ ἔθεντο αὐτὸν ἐν κημῷ (λ) καὶ ἐν γαλεάγρᾳ,
ἦλθε πρὸς βασιλέα Βαβυλῶνος, καὶ (μ)
εἰσήγαγον αὐτὸν εἰς φυλακὴν, ὅπως μὴ ἀκουσθῇ
10 ἡ φωνὴ αὐτοῦ ἐπὶ τὰ ὄρη τοῦ Ἰσραήλ. Ἡ
μήτηρ σου ὡς (¨) ἄμπελος καὶ ὡς ἄνθος ἐν ῥοᾷ,
ἐν ὕδατι πεφυτευμένη, ὁ καρπὸς αὐτῆς καὶ ὁ
βλαστὸς αὐτῆς ἐγένετο ἐξ ὕδατος πολλοῦ.
11 Καὶ (ν) ἐγένετο αὐτῇ ῥάβδος ἐπὶ φυλὴν ἡγουμένων,
καὶ ὑψώθη (ξ) τῷ μεγέθει αὐτῆς ἐν
μέσῳ (ο) στελεχῶν· καὶ εἶδε τὸ μέγεθος αὐτῆς
12 ἐν πλήθει κλημάτων αὐτῆς. Καὶ κατεκλάσθη
ἐν θυμῷ, ἐπὶ γῆν (π) ἐῤῥίφη, καὶ ἄνεμος
(ρ) ὁ καύσων ἐξήρανε τὰ ἐκλεκτὰ αὐτῆς (σ)
ἐξεδικήθησαν, καὶ ἐξηράνθη ἡ ῥάβδος ἰσχύος
13 αὐτῆς· πῦρ ἀνήλωσεν αὐτήν. Καὶ νῦν (τ)
πεφύτευκαν αὐτὴν ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἐν γῇ ἀνύδρῳ.
14 Καὶ ἐξῆλθε πῦρ ἐκ ῥάβδου ἐκλεκτῶν
αὐτῆς, καὶ κατέφαγεν αὐτὴν, καὶ οὐκ ἦν ἐν
αὐτῇ ῥάβδος (υ) ἰσχύος. φυλὴ εἰς παραβολὴν
θρήνου ἐστὶ, καὶ ἔσται εἰς θρῆνον.

MS. A. (θ) ἀπὸ (ι) τὰ δίκτυα (κ) καὶ συνελήμφθη, (λ) καὶ ἤνεγκαν αὐτὸν ἐν γαλεάγρᾳ πρὸς (μ) εἰσήγαγον (¨) ἄμπελος, ὡς (ν) * ἐγένοντο αὐτῇ ῥάβδος ἰσχύος ἐπὶ (ξ) ἐν τῷ (ο) στελεχέων· (π) ἐρίφη (ρ) καύσων (σ) ἐξεδικήθη (τ) ἐφύτευσαν (υ) ἰσχύος αὐτῆς.

ΚΕΦ. κ΄.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἔτει τῷ ἑβδόμῳ (α)
τῇ πεντεκαιδεκάτῃ τοῦ μηνὸς, ἦλθον ἄνδρες
ἐκ τῶν πρεσβυτέρων (β) οἴκου Ἰσραὴλ, ἐπερωτῆσαι
τὸν κύριον, καὶ ἐκάθισαν πρὸ προσώπου
2 μου. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων,
3 Υἱὲ ἀνθρώπου, λάλησον πρὸς τοὺς
πρεσβυτέρους τοῦ οἴκου Ἰσραὴλ, καὶ ἐρεῖς πρὸς
αὐτοὺς, Τάδε λέγει κύριος, (γ) Εἰ ἐπερωτῆσαί
με ὑμεῖς ἔρχεσθε; Ζῶ ἐγὼ, εἰ ἀποκριθήσομαι
4 ὑμῖν, (δ) λέγει κύριος. Εἰ ἐκδικήσω
αὐτοὺς ἐκδικήσει, υἱὲ ἀνθρώπου; τὰς ἀνομίας τῶν
5 πατέρων αὐτῶν διαμάρτυραι αὐτοῖς, Καὶ ἐρεῖς
πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει (ε) κύριος, Ἀφ᾽ ἧς
ἡμέρας ἡρέτισα τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, καὶ ἐγνώσθην
τῷ σπέρματι (ζ) οἴκου Ἰακὼβ, καὶ ἐγνώσθην
αὐτοῖς ἐν γῇ (η) Αἰγύπτου, καὶ ἀντελαβόμην
τῇ χειρί μου αὐτῶν, λέγων, Ἐγὼ κύριος
6 ὁ θεὸς ὑμῶν· Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ἀντελαβόμην
τῇ χειρί μου αὐτῶν, τοῦ ἐξαγαγεῖν αὐτοὺς
(θ) ἐκ γῆς Αἰγύπτου εἰς τὴν γῆν ἣν (ι) ἡτοίμασα
αὐτοῖς, γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι,
7 κηρίον ἐστὶ παρὰ πᾶσαν τὴν γῆν. Καὶ εἶπα πρὸς
αὐτοὺς, Ἕκαστος (κ) βδελύγματα τῶν ὀφθαλμῶν
αὐτοῦ (λ) ἀποῤῥιψάτω, καὶ ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν
Αἰγύπτου μὴ μιαίνεσθε· ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς ὑμῶν.

MS. A. (α) ἐν τῷ πέμπτῳ μηνὶ, δεκάτῃ τοῦ (β) τοῦ οἴκου (γ) Ἐπερωτῆσαι (δ) λέγει ἀδωναῒ κύριος. (ε) κύριος ὁ θεὸς, Ἀφ᾽ (ζ) τοῦ οἴκου (η) Αἰγύπτου, (θ) * εἰς γῆν (ι) ὤμοσα (κ) τὰ βδελύγματα (λ) ἀποῤῥιψάτω,

Et dederunt ſuper eum gentes de 8
regionibus per circuitũ, & expanderunt
ſuper eũ retia ſua. In corruptione
earum captus eſt: Et po- 9
ſuerunt eum in camo, & in cavea:
venit ad regem Babylonis: &
(d) introduxit eũ in carcerem, ut
non audiretur vox (e) ejus ſuper
montes Iſrael. Mater tua, quaſi 10
vitis, & ſicut flos in (f) malogranato,
in aqua plantata: fructꝰ ejꝰ,
& germen illius factũ eſt ex aqua
multa. Et facta eſt hæc vir- 11
ga ſuper tribum ducum: & exaltata
eſt magnitudine ſua in
medio propaginum. Et vidit magnitudinem
ſuã in multitudine
palmitũ ſuorũ: Et confracta eſt 12
in furore: in terram projecta eſt:
& ventus urens areſecit electa ejus.
(g) Vindicati ſunt, & areſacta
eſt virga fortitudinis ejus.
Ignis conſumpſit eam: Et nunc 13
plantaverunt eã in deſerto in terra
(h) ſine aqua. Et exivit ignis de 14
virga electorũ ejus, & comedit
eam: & non erat in ea virga (i)
fortitudinis. Tribꝰ in parabolã lamentationis
eſt: et erit in planctũ.

CAP. XX.

ET factũ eſt in anno ſeptimo, 1
(a) quintâ decimâ menſis, venerunt
viri de ſenioribꝰ domꝰ Iſrael,
ad interrogandũ Dominũ, &
ſederunt ante faciẽ meã. Et factꝰ 2
eſt ſermo Domini ad me, dicens;
Fili hominis, loquere ad ſeniores 3
domꝰ Iſrael, & dices ad eos, Hæc
dicit Dominꝰ; Si ad interrogandũ
me vos venitis? Vivo ego, (b) ſi 4
reſpondero vobis, ait Dominus: Si
ultus fuero eos ultione, fili hominis?
Iniquitates patrũ eorũ conteſtare
eis: Et dices ad eos; Hæc 5
dicit Dominus; Ex qua die elegi
domũ Iſrael, & notꝰ factus ſum
ſemini domꝰ Jacob, & cognitꝰ eis
in terra Ægypti, & ſuſcepi manu
meâ eos, dicens, Ego Dominꝰ Deꝰ
veſter; In die illa apprehendi eos 6
manu meâ, ut educerẽ eos de terra
Ægypti, in terrã quam paravi
eis, terrã fluentẽ lacte, & melle,
(c) favꝰ eſt ultra omnẽ terram. Et 7
dixi ad eos; Unuſquiſque (d) abominationes
oculorũ ſuorũ projiciat,
& in (e) adinventionibus
Ægypti non polluamini. Ego Dominus
Deus veſter.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 ואתכנישו עלוהי עממיא סחור סחור ממדינתא ופרסו עלוהי מצדתהון בסריגתהון
9 אתאחד : ויהבוהי בקולרין בשלשלן ואיתיאוהי לות מלכא דבבל איתיאוהי במצדיא
10 בדיל דלא ישתמע קליה עוד על טורי ישראל : כנשתא דישראל במעבדה אוריתא
דמיא כגופן דשתילא על מבוע דמיין דנופה שפיר וסוכה מטלן היא שתילה על מיין
11 סגיאין : והוו בה שלטונין תקיפין מלכין דגברין לשעבדא מלכו וראם בתוקפיה על
12 מלכותיה ואתנצח בסומכותיה בסגי גברוהי : ואתעקרת בתקוף מארעא בית
שכנתא לארעא אוחרי אתגליאת ומלך דתקיף כרוח קדומא קטיל עמה אטלטלו
13 וגלו שלטוני תוקפה ועממיא דתקיפין כאשתא שציאונון : וכען דמיא לגופן דשתילא
14 במדברא בארעא צדיא וחרבא : ואתו עממיא דתקיפין כאשתא מחובי זדונה עמה
קטילו ולא הוו בה שלטונין תקיפין מלכין דגברין לשעבדא מלכו אמר נביא אליא
היא נבואתא ותהי לאליא :

כ

1 והוה בשתא שביעתא בחמשא בעסרא לירחא אמר נביא אתו גברין מסבי ישראל
2 למתבע אולפן מן קדם יי ויתיבו קדמי : והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר :
3 בר אדם אתנבי לסבי ישראל ותימר להון כדנן אמר יי אלהים הלמתבע אולפן מן
4 קדמי אתון אתן קים אנא אם אשתאיל לכון במימרי אמר יי אלהים : התוכח יתהון
5 התוכח בר אדם ית תועבת אבהתהון הודענון : ותימר להון כדנן אמר יי אלהים
ביומא דאתרעיתי בישראל וקימית להון במימרי לזרעא דבית יעקב ואתגליתי
6 למפרקהון בארעא דמצרים וקימית במימרי להון למימר אנא יי אלהכון : ביומא
ההוא קימית להון במימרי לאפקותהון מארעא דמצרים לארעא דיהבית להון עבדא
7 חלב ודבש תושבחא היא לכל מדינתא : ואמרית להון גבר ית שקוצוהי ארחיקו
מקביל עינוהי ופולחן טעות מצראי לא תסתאבון אנא יי אלהכון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et congregati ſunt contra eum populi per circuitum de provinciis, & expan- 8
derunt ſuper eum rete ſuum, & in ſagena eorum captus eſt. Et poſuerunt eum 9
in collare, & in catenas, & adduxerunt eum ad regem Babylonis: adduxerunt
enim eum in caveam ut non audiretur vox ejus ultrà ſuper montes Iſra-
el. Cœtus Iſrael cùm faceret legem, ſimilis erat viti quæ plantata eſt juxta 10
fontes aquarum, cujꝰ fructꝰ erat pulcher, & rami ejꝰ obumbrantes: & ipſa
plantata erat juxta aquas multas. Et fuerunt ea in dominatores fortes, re- 11
ges, qui potentes ſunt ad ſubjicienda regna: & elevatꝰ eſt robore ſuo ſuper
regnum ſuum, & ſuperavit cum adjutoribus ſuis in multitudine fortium ſu-
orum. Et evulſa eſt in vehementia de terra domus majeſtatis, & in terram 12
alteram tranſlata eſt. Et rex fortis quaſi ventꝰ urens occidit populum ejus:
migraverunt, & tranſlati ſunt dominatores fortitudinis ejꝰ, & populi qui fu-
erunt fortes ſicut ignis conſumpſerunt eos. Et nunc ſimilis eſt viti quæ planta- 13
ta eſt in deſerto in terra deſolata & deſerta. Et venerunt populi qui fortes fuerunt 14
ſicut ignis, & propter peccata ſuperbiæ ejꝰ occiderunt populum ejꝰ, & non
fuerunt in ea dominatores fortes nec reges potentes ad ſubjicienda regna.
Dicit propheta, lamentatio eſt prophetia, & erit in lamentationem.

CAP. XX.

ET factum eſt anno ſeptimo, quinto [*menſe*,] decima die menſis, dixit pro- 1
pheta, venerunt viri de ſenioribꝰ Iſrael, ut quærerent doctrinam à facie Do-
mini: & ſederunt coram me. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domi- 2
ni ad me, dicens: Fili hominis, vaticinare ſenioribꝰ Iſrael, & dices eis: Hæc 3
dicit Dominꝰ Deꝰ, Nunquid ad interrogandam doctrinam à facie mea vos ve-
niſtis? vivo ego, dicit Dominꝰ, ſi interrogatꝰ in verbo meo reſpondero vo- 4
bis, dicit Dominꝰ Deꝰ. An argues eos, an argues fili hominis? Abominati-
ones patrum ſuorum oſtende eis. Et dices ad eos: Hæc dicit Dñs Deus, In die, 5
qua elegi Iſrael, & juravi ipſis in verbo meo, ſemini domus Jacob, & revela-
tus ſum illis ut redimerem eos de terra Ægypti, & juravi eis in verbo meo, di-
cens: Ego Dominus Deus veſter. In die illa juravi illis in verbo meo, ut 6
educerem eos de terra Ægypti in terram quam dedi eis, fluentem lacte &
melle: quæ laudabilis eſt omnibꝰ provinciis. Et dixi eis: Quiſque abomina- 7
tiones ſuas projiciat à conſpectu oculorum ſuorum, & in cultu idolorum Ægy-
ptiorum ne polluamini. Ego Dominus Deus veſter.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܬܟܢܫܘ ܥܠܘܗܝ ܥܡܡܐ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܚܕܪܘܗܝ. ܘܦܪܣܘ ܥܠܘܗܝ ܡܨܝܕܬܗܘ
ܘܒܗ ܐܬܬܨܝܕ. *ܘܢܚܒܫܘܢܝܗܝ ܒܩܠܘܒܐ. ܘܐܘܒܠܘܗܝ ܠܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܐܥܠܗ ܠܒܝ
ܐܣܝܪܐ. ܕܠܐ ܢܫܬܡܥ ܬܘܒ ܩܠܗ ܒܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܐܡܟ ܐܝܟ ܓܦܬܐ ܕܒܕܡ
ܥܠ ܡܝܐ ܢܨܝܒܐ. ܦܐܪܝܗ ܘܛܪܦܝܗ ܗܘܘ. ܒܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܗܘܘ ܠܗ ܫܒ
ܫܒܛܐ ܥܫܝܢܐ ܥܠ ܫܒܛܐ ܕܫܠܝܛܢܐ. ܘܐܬܬܪܝܡܬ ܒܩܘܡܬܗ ܡܢ ܒܝܬ ܣܘܟܝܗ. ܘܐܬܚܙܝ
ܒܪܘܡܗܘܢ. ܘܒܣܘܓܐܐ ܕܫܒܒܝܗܘܢ. * ܘܐܬܥܩܪܬ ܒܚܡܬܐ. ܘܐܬܪܡܝܬ ܠܐܪܥܐ. ܘܪܘܚܐ
ܚܡܝܡܬܐ ܐܘܒܫܬ ܦܐܪܝܗ. ܘܐܬܦܪܫܘ ܘܝܒܫܘ ܫܒܛܐ ܕܥܫܝܢܘܬܗ. ܘܢܘܪܐ ܐܟܠܬ
* ܘܗܫܐ ܐܬܢܨܒܬ ܒܡܕܒܪܐ. ܒܐܪܥܐ ܨܗܝܐ ܘܨܕܝܬܐ. * ܘܢܦܩܬ ܢܘܪܐ ܡܢ ܫܒܛ
ܓܒܝܐ. ܘܐܟܠܬ ܦܐܪܝܗ. ܘܠܐ ܐܫܬܟܚ ܒܗ ܬܘܒ ܫܒܛܐ ܥܫܝܢܐ. ܐܘ ܫܒܛܐ ܕܢܗܘ
ܫܠܝܛܐ. ܐܘܠܝܬܐ ܗܝ ܘܬܗܘܐ ܠܐܘܠܝܬܐ. *ܫܠܡ* ܟ *

* ܘܗܘܐ ܒܫܢܬܐ ܫܒܝܥܝܬܐ ܒܚܡܫܐ ܒܥܣܪܐ ܒܝܪܚܐ. ܐܬܘ ܓܒܪܐ ܡܢ ܩܫܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ
ܠܡܫܐܠܘ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܝܬܒܘ ܩܕܡܝ. *ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬܝ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫ
ܡܠܠ ܥܡ ܣܒܐ ܕܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܠܡܫܐܠܘ
ܐܬܝܬܘܢ. ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܕܠܐ ܐܬܠ ܠܟܘܢ ܦܬܓܡܐ. * ܕܘܢ ܐܢܘ
ܐܢܘܢ ܒܪܢܫܐ. ܘܚܘܐ ܐܢܘܢ ܛܢܦܘܬܐ ܕܐܒܗܝܗܘܢ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗ
ܒܝܘܡܐ ܕܓܒܝܬ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܥܠ ܙܪܥܐ ܕܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܐܬܓܠܝܬ ܠ
ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ. ܘܐܡܪܬ ܠܗܘܢ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. * ܒܝܘܡܐ ܗܘ
ܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܕܐܦܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܗܘܢ. ܕܡܪܕܝܐ ܚܠ
ܘܕܒܫܐ. ܫܘܒܗܪܗ ܕܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢܬܐ. * ܘܐܡܪܬ ܠܗܘܢ. ܐܢܫ ܐܢܫ ܦܬܟܪܘ
ܡܢ ܥܝܢܘܗܝ. ܘܒܦܬܟܪܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܠܐ ܬܬܛܢܦܘܢ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ.

Congregatæ ſunt contra eum gentes ex urbibus 8
circunjacentibus, & expanderunt ſuper
illum rete ſuum, quo & captus fuit: Tum 9
includentes eum in caveam beſtiarū, deduxerunt
ad regem Babylonis; qui immiſit eum in
carcerem, ut non audiretur ampliùs vox ejus
in montibus Iſraelis. Mater tua erat ſicut 10
vitis in ſanguine tuo ſecus aquas plantata:
fructus & frondes ejus erant in aquis multis:
Erántque ei ſcipiones validi ſup virgas principum, 11
extulerátque ſe ſtatura eorum de medio
ſurculorum ejus, & conſpicui erant altitudine
ſuâ & multitudine palmitum ſuorum.
Sed avulſi ſunt in excandeſcentia, & in terram 12
dejecti: ventus calidus arefecit fructus ejus,
ſejuncti ſunt & aruerunt ſcipiones roboris
ejus, & ignis conſumpſit eam. Nunc plantata 13
eſt in deſerto, in terra ſiticuloſa & inculta:
Et egreſſus ignis è ſcipione ipſius electo, 14
conſumpſit fructus ejus, nec inventus eſt
ampliùs in ea ſcipio robuſtus, aut virga quæ
poſſit eſſe dominus. Lamentatio (*i. lamentabilis*)
eſt, & in lamentationem erit.

CAP. XX.

DEinde contigit anno ſeptimo, decimâ 1
menſis quinti, ut venientibus quibuſdam è ſenioribus
Iſraelis ad conſulendum Dominum,
& coram me ſedentibus; Fieret ad me ſermo 2
Domini, dicendo; Fili hominis, alloquere 3
ſeniores Iſraelitarum, & dic eis; Sic ait Dominus
dominorum, Ad conſulendum me venitis?
Per vitam meam, inquit Dominus dominorum,
nequaquam dabo vobis reſponſū.
Judica iſtos, judica iſtos fili hominis, indica 4
eis abominationem majorum ipſorum, & dic
illis; Sic ait Dominus dominorum; Quo die 5
elegi Iſraelem, levavi manum meam (*i. juravi*)
ſemini Jacobi, quum apparuiſſem ei in
terra Ægypti: levavi inquam, manum meam,
& dixi eis; Ego ſum Dominus Deus veſter.
Eo inquam, die levavi manum meam *jurans* 6
me educturum eos è terra Ægypti in terram
quam dederam eis, lacte & melle manantem,
quæ decus eſt omnium urbium: Et dixi eis, 7
Amovete quiſque idolum ſuum ab oculis ſuis,
& diis Ægypti ne contaminetis vos, ego ſum
Dominus Deus veſter.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وأعطوا عليه الأمم من البلدان من حوله * وبسطوا عليه شباكهم * فمسك بصيدهم
* ووضعوه بحكمة * وساقوه في قفص إلي ملك بابل * وأدخلوه إلي الحبس * كيلا يسمع أيضا صو
علي جبال إسرائيل * أمك مثل كرمة * ومثل زهر في رمانة معروسة في ماء كثير * فرعها
وثمرها صاروا من الماء الكثير * وصارت لها عصا قوة علي قبيلة المقدمين * وارتفعت بعظمها
في وسط الأغصان * ونظروا عظمها بكثرة أغصانها * وكسرت بغضب * وطرحت علي الأرض * وريح
السموم جفف خيارها * وانتقم منها * ويبست وجفت عصا قوتها * وأبادتها النار * والآن غرسها في
البرية في أرض لا ماء فيها * وخرجت نار من عصا خيارها وأكلتها * ولم يكن فيها عصا
قوة للقبيلة * هي مثل نوح * وتصير للنوح *

* الفصل العشرون *

* الاصحاح العاشر *

* وكان في السنة السابعة * في الشهر الخامس * في العاشر من الشهر * أتوا رجال من أشياخ إسرائيل
ليسألوا الرب * وجلسوا أمام وجهي * وكان قول الرب إلي قائلا * يا ابن الإنسان * تكلم مع أشياخ
إسرائيل * وتقول لهم * هكذا يقول أدوناي الرب * هل أتيتم لتسألوني * حي أنا لا أجاوبكم يقول
أدوناي الرب * إني أنتقم منهم انتقاما * يا ابن الإنسان * أشهد لهم بآثام آبائهم وتقول لهم
* هكذا يقول أدوناي الرب * منذ يوم ارتضيت بيت إسرائيل * وعرفت لزرع بيت يعقوب * وعرف
لهم في أرض مصر * وعضدتهم بيدي قائلا * أنا الرب إلهكم * في ذلك اليوم عضدتهم بيدي
لأخرجهم من أرض مصر إلي الأرض التي هيأتها لهم * أرضا تفيض لبنا وعسلا * هي شهد
أكثر من كل الأرض * وقلت لهم ليطرح كل واحد رذالات عينيه * وفي أعمال مصر لا
تهتموا * أنا الرب إلهكم *

Quare irruerunt in eum gentes è regionibus 8
circunjacentibus, & expanderunt ſuper
eum retia ſua, captuſque fuit plagis
earum: Deinde poſuerunt eum in camo, 9
& deduxerunt eum in cavea ad regem
Babelis; ubi detruſerunt eum in carcerem,
ne audiretur ampliùs vox ejus ſuper
montes Iſraelis. Mater tua ſimilis erat 10
viti, & ſimilis flori malogranati plantati
ſecus aquam copioſam: rami ejus & fructus
ejus facti ſunt ob aquam copioſam:
Factaq; eſt ei virga roboris ſuper familiā 11
primorum, & extulit ſeſe magnitudine
ſuâ in medio ramorum, ita ut viderent
magnitudinem ejus inter pluralitatem ramorum
ejus. Verùm confracta eſt in ira, 12
& in terram projecta; & ventus calidus
arefecit ſelectiſſima quæq; ipſius: ſumpta
eſt ab ea vindicta, & exiccata atque
arefacta eſt virga roboris ejus, demum
conſumpſit eam ignis. Et nunc plantaverunt 13
eam in deſerto, in terra in qua nullæ
ſunt aquæ: Et egreſſus ignis è virga ſelectiſſimorum 14
ejus, devoravit eam, & non
remanſit in ea virga roboris illi familiæ.
Ipſa eſt exemplar lamentationis, & erit in
lamentationem.

CAP. XX.

Textus decimus.

FUit autem anno ſeptimo, menſe quinto, 1
decimâ menſis, ut venientes viri
quidam è ſenioribus Iſraelis ad interrogandum
Dominum, ſederent ante faciem
meam. Fieretque ſermo Domini ad me, 2
dicens; O fili hominis, alloquere ſeniores 3
Iſraelis, & dicas eis; Ita dicit Adonai
Dominus; Num veniſtis interrogatum
me? Ut vivens ſum, non reſpondebo vobis,
ait Adonai Dominus: Imò vindictam 4
ſumam ab iſtis. O fili hominis, conteſtare
eis iniquitates patrum ſuorum, & dicas
eis; Ita dicit Adonai Dominus; Ab 5
ea die quâ obſecundavi domui Iſraelis, &
innotui ſemini domûs Jacobi, & notus
factus ſum eis in terra Ægypti, opemque
tuli eis manu meâ, dicens; Ego ſum Dominus
Deus veſter: Eâdem die, cùm opem 6
tuliſſem eis manu meâ ut educerem eos è
terra Ægypti ad terram quam præparaveram
eis, terram lacte & melle affluentem,
quæque favus eſt præter univerſam
terram: Dixi quoque eis, Abjiciat quiſque 7
abominationes oculorum ſuorum, &
in operibus Ægypti ne perſiſtatis: ego
ſum Dominus Deus veſter:

יחזקאל׃ כ

unusquisque : me ad audire cupierunt non &,me contra rebellaverunt Et
8 וימרו־בי ולא אבו לשמע אלי איש את־
non Ægypti idola &,projecerunt non suorū oculorū abominationes
שקוצי עיניהם לא השליכו ואת־גלולי מצרים לא
meū nasum implendū ad,eos super meā irā effundendū ad dixi Et .reliquerunt
עזבו ואמר לשפך חמתי עליהם לכלות אפי
non pro ,meū nomen propter feci Et .Ægypti terræ medio in eis in
9 בהם בתוך ארץ מצרים׃ ואעש למען שמי לבלתי
innotui quorum : earum medio in ipsæ quæ ,gentium oculis in pollui
החל לעיני הגוים אשר־המה בתוכם אשר נודעתי
eos eduxi Et .Ægypti terra à eos educendū ad ,eorū oculis in eos ad
10 אליהם לעיניהם להוציאם מארץ מצרים׃ ואוציאם
eis dedi Et .desertum in eos adduxi & : Ægypti terra è
11 מארץ מצרים ואבאם אל־המדבר׃ ואתן להם את־
ea faciet qui : eos feci scire mea judicia &,mea statuta
חקותי ואת־משפטי הודעתי אותם אשר יעשה אותם
,eis dedi mea sabbatha insuper Et .eis in vivet & ,homo
12 האדם וחי בהם׃ וגם את־שבתותי נתתי להם
Dominus ego quòd sciendum ad : eos inter &,me inter signū in existendum ad
להיות לאות ביני וביניהם לדעת כי אני יהוה
;deserto in Israel domus me contra rebellaverunt Et .eos sanctificans
13 מקדשם׃ וימרו־בי בית־ישראל במדבר
faciet qui :reprobaverūt mea judicia &,ambulaverunt non meis statutis in
בחקותי לא־הלכו ואת־משפטי מאסו אשר יעשה
:vehemēter violaverūt mea sabbatha & : eis in vivet & , homo ea
אתם האדם וחי בהם ואת־שבתתי חללו מאד
.eos consumendum ad ,deserto in eos super meā iram effundendum ad dixi Et
ואמר לשפך חמתי עליהם במדבר לכלותם׃
quarum,gentium oculis in pollui non pro ,meū nomen propter feci Et
14 ואעשה למען שמי לבלתי החל לעיני הגוים אשר
,deserto in eis meā manū levavi ego etiā Et .earū oculis in eos eduxi
15 הוצאתים לעיניהם׃ וגם־אני נשאתי ידי להם במדבר
lacte fluentem , dedi quam terram in eos inducendum non ad
לבלתי הביא אותם אל־הארץ אשר־נתתי זבת חלב
mea judicia in ꝙ eo Pro .terris omnibꝰ in ipsa ornamentum ;melle &
16 ודבש צבי היא לכל־הארצות׃ יען במשפטי
mea sabbatha & ,eis in ambulaverunt non meis statutis & ,abjecerunt
מאסו ואת־חקותי לא־הלכו בהם ואת־שבתותי
meus oculus pepercit Et .vadens eorū cor sua idola post quia :polluerunt
17 חללו כי אחרי גלוליהם לבם הלך׃ ותחס עיני
.deserto in cōsummationē eis cum feci non &:eos corrumpendo à,eis super
עליהם משחתם ולא־עשיתי אותם כלה במדבר׃
,incedatis ne vestrorū patrū statutis In,deserto in eorū filios ad dixi Et
18 ואמר אל־בניהם במדבר בחוקי אבותיכם אל־תלכו
.vos polluatis ne eorum idolis in & : custodiatis ne eorum judicia &
ואת־משפטיהם אל־תשמרו ובגלוליהם אל־תטמאו׃
,custodite mea judicia &,ambulate meis statutis In.vester Deus Dominꝰ Ego
19 אני יהוה אלהיכם בחקותי לכו ואת־משפטי שמרו
,me inter signum in erunt &,sanctificate mea sabbatha Et .ea facite &
20 ועשו אותם׃ ואת־שבתותי קדשו והיו לאות ביני
rebellaverunt Et .vester Deus Dominus ego quòd sciendum ad,vos inter &
21 וביניכם לדעת כי אני יהוה אלהיכם׃ וימרו־
non mea judicia & ,ambulaverunt non meis statutis In .filii me cōtra
בי הבנים בחקותי לא־הלכו ואת־משפטי לא־
vivet & ,homo ea faciet quòd : ea faciendum ad ,custodierunt
שמרו לעשות אותם אשר יעשה אותם האדם וחי
meā iram effundendum ad dixi & : polluerunt mea Sabbatha .eis in
בהם את־שבתותי חללו ואמר לשפך חמתי
.deserto in eis in meum nasum complendum ad ,eos super
עליהם לכלות אפי בם במדבר׃

Versio VULG. LAT.

8 Et irritaverunt me, noluerúntq; me audire : unusquisque abominationes oculorum suorum non projecit, nec idola Ægypti reliquerunt : & dixi ut effunderem indignationem meam super eos, & implerem iram meam in eis,
9 in medio terræ Ægypti. Et feci propter nomen meum, ut non violaretur coram Gentibus, in quarum medio erant, & inter quas apparui eis ut educerem
10 eos de terra Ægypti. Ejeci ergò eos de terra Ægypti, & eduxi
11 eos in desertum. Et dedi eis præcepta mea, & judicia mea ostendi eis, quæ faciens homo,
12 vivet in eis. Insupèr & sabbata mea dedi eis, ut essent signum inter me & eos : & scirent quia ego Dominus sanctificans eos.
13 Et irritaverunt me domus Israel in deserto, in præceptis meis non ambulaverunt, & judicia mea projecerunt, quæ faciens homo vivet in eis: & sabbata mea violaverunt vehementer : dixi ergò ut effunderem furorem meum super eos in deserto, & con-
14 sumerem eos. Et feci propter nomen meum, ne violaretur coram Gentibus, de quibus ejeci
15 eos in conspectu earum. Ego igitur levavi manum meam super eos in deserto, ne inducerē eos in terram, quam dedi eis, fluentem lacte & melle, præci-
16 cipuam terrarum omnium. Quia judicia mea projecerunt, & in præceptis meis non ambulaverunt, & sabbata mea violaverunt : post idola enim cor eorū
17 gradiebatur. Et pepercit oculus meus super eos, ut non interficerem eos : nec consumpsi eos
18 in deserto. Dixi autem ad filios eorum in solitudine; In præceptis patrum vestrorum nolite incedere, nec judicia eorum custodiatis, nec in idolis eorum
19 polluamini. Ego Dominus Deꝰ vester : in præceptis meis ambulate, judicia mea custodite, &
20 facite ea : Et sabbata mea sanctificate, ut sint signum inter me & vos, & sciatis quia ego sum
21 Dominus Deus vester. Et exacerbaverunt me filii : in præceptis meis non ambulaverunt, & judicia mea non custodierunt ut facerent ea : quæ cùm fecerit homo, vivet in eis : & sabbata mea violaverunt : & comminatus sum ut effunderem furorem meum super eos, & implerem iram meam in eis in deserto.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

8 Καὶ ἀπέστησαν ἀπ' ἐμοῦ, καὶ οὐκ ἠθέλησαν εἰσακοῦσαί μου, τὰ βδελύγματα τῶν ὀφθαλμῶν αὐτῶν οὐκ ἀπέῤῥιψαν, καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα Αἰγύπτου οὐκ ἐγκατέλιπον. καὶ (λ) εἶπα τοῦ ἐκχέαι τὸν θυμόν μου ἐπ' αὐτοὺς, τοῦ συντελέσαι (μ) ὀργήν μου ἐν αὐτοῖς (ν) ἐν μέσῳ τῆς Αἰγύπτου.
9 Καὶ ἐποίησα ὅπως τὸ ὄνομά μου τὸ παράπαν μὴ βεβηλωθῇ ἐνώπιον τῶν ἐθνῶν, ὧν αὐτοί εἰσιν ἐν μέσῳ αὐτῶν, ἐν οἷς ἐγνώσθην πρὸς αὐτοὺς ἐνώπιον αὐτῶν, τοῦ ἐξαγαγεῖν αὐ-
10 τοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου. Καὶ (ξ) ἤγαγον αὐτοὺς
11 εἰς τὴν ἔρημον, Καὶ ἔδωκα αὐτοῖς τὰ προστάγματά μου, καὶ τὰ δικαιώματά μου ἐγνώρισα αὐτοῖς, ὅσα ποιήσει αὐτὰ ἄνθρωπος, καὶ ζήσε-
12 ται ἐν αὐτοῖς. Καὶ τὰ σάββατά μου ἔδωκα αὐτοῖς, τοῦ εἶναι εἰς σημεῖον ἀναμέσον ἐμοῦ καὶ ἀναμέσον αὐτῶν, τοῦ γνῶναι αὐτοὺς, διότι ἐγὼ
13 κύριος ὁ ἁγιάζων αὐτούς. Καὶ εἶπα πρὸς τὸν οἶκον (˝) Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἐρήμῳ, Ἐν τοῖς προστάγμασί μου (ο) πορεύεσθε. καὶ οὐκ ἐπορεύθησαν· καὶ τὰ δικαιώματά μου ἀπώσαντο, ἃ ποιήσει αὐτὰ ἄνθρωπος καὶ ζήσεται ἐν αὐτοῖς· καὶ τὰ σάββατά μου ἐβεβήλωσαν σφόδρα. καὶ εἶπα τοῦ ἐκχέαι τὸν θυμόν μου ἐπ' αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ,
14 τοῦ ἐξαναλῶσαι αὐτούς. Καὶ (π) ἐποίησα ὅπως τὸ ὄνομά μου τὸ παράπαν μὴ βεβηλωθῇ ἐνώπιον τῶν ἐθνῶν, ὧν ἐξήγαγον αὐτοὺς (ρ) κατ'
15 ὀφθαλμοὺς αὐτῶν. Καὶ ἐγὼ ἐξῆρα τὴν χεῖρά μου ἐπ' αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ τὸ παράπαν, τοῦ μὴ εἰσαγαγεῖν αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν ἣν ἔδωκα αὐτοῖς, γῆν ῥέουσαν γάλα καὶ μέλι, κηρίον ἐστὶ παρὰ
16 πᾶσαν τὴν γῆν· Ἀνθ' ὧν τὰ δικαιώματά μου ἀπώσαντο, καὶ ἐν τοῖς προστάγμασί μου οὐκ ἐπορεύθησαν ἐν αὐτοῖς, καὶ τὰ σάββατά μου ἐβεβήλουν, καὶ ὀπίσω τῶν ἐνθυμημάτων (σ) καρ-
17 δίας αὐτῶν ἐπορεύοντο. Καὶ ἐφείσατο ὁ ὀφθαλμός μου ἐπ' αὐτοὺς, τοῦ ἐξαλεῖψαι αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἐποίησα αὐτοὺς εἰς συντέλειαν ἐν τῇ ἐρή-
18 μῳ. Καὶ εἶπα πρὸς τὰ τέκνα αὐτῶν ἐν τῇ ἐρήμῳ, Ἐν τοῖς νομίμοις τῶν πατέρων ὑμῶν μὴ πορεύεσθε, καὶ τὰ δικαιώματα αὐτῶν μὴ φυλάσσεσθε, καὶ ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν μὴ
19 (τ) συναναμίσγεσθε, καὶ μὴ μιαίνεσθε. Ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς ὑμῶν. ἐν τοῖς προστάγμασί μου πορεύεσθε, καὶ τὰ δικαιώματά μου φυλάσσε-
20 σθε, καὶ ποιεῖτε αὐτά. Καὶ τὰ σάββατά μου ἁγιάζετε, καὶ ἔστω εἰς σημεῖον ἀναμέσον ἐμοῦ (υ) καὶ ὑμῶν, τοῦ γινώσκειν διότι ἐγὼ κύριος ὁ
21 θεὸς ὑμῶν. Καὶ παρεπίκρανάν με, καὶ τὰ τέκνα (φ) αὐτῶν ἐν τοῖς προστάγμασί μου οὐκ ἐπορεύθησαν, καὶ τὰ δικαιώματά μου οὐκ ἐφυλάξαντο τοῦ ποιεῖν αὐτὰ, ἃ ποιήσει (χ) ἄνθρωπος καὶ ζήσεται ἐν αὐτοῖς, καὶ τὰ σάββατά μου ἐβεβήλουν. καὶ εἶπα τοῦ ἐκχέαι τὸν θυμόν μου (ψ) ἐπ' αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ, τοῦ συντελέσαι τὴν ὀργήν μου ἐπ' αὐτούς.

MS. A. (λ) εἶπον (μ) τὴν ὀργήν (ν) ἐν μέσῳ γῆς Αἰγύπτου. (ξ) ἐξήγαγον αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ ἤγαγον (˝) τοῦ Ἰσραὴλ (ο) πορεύεσθε, καὶ τὰ δικαιώματά μου φυλάσσετε τοῦ ποιεῖν αὐτὰ, ἃ ποιήσει αὐτὰ ἄνθρωπος καὶ ζήσεται ἐν αὐτοῖς. καὶ παρεπίκρανάν με ὁ οἶκος Ἰσραὴλ ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἐν τοῖς προστάγμασίν μου οὐκ ἐπορεύθησαν· καὶ τὰ (π) οὐκ ἐποίησα, (ρ) κατὰ (σ) τῶν καρδιῶν αὐτῶν (τ) συναναμίγνυσθαι, (υ) καὶ ἀναμέσον ὑμῶν, τοῦ γινώσκειν ὑμᾶς ὅτι (φ) αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς (χ) αὐτὰ ἄνθρωπος (ψ) ἐπ' αὐτούς. Καὶ οὐκ ἐποίησα,

Et recesserunt à me, & noluerūt 8
exaudire me: abominationes oculorū suorum non projecerunt, & adinventiones Ægypti non reliquerunt. Et dixi effundere indignationem meā super eos, implere irā meā in eis in medio Ægypti.
Et feci, ut nomen meū omninò nō 9
violaretur corā gentibus, quarū ipsi sunt in medio earū, in quibus cognitꝰ erā ad eos corā illis, ut educerē eos de terra Ægypti. (f) Et 10
adduxi eos in desertum, Et dedi 11
eis præcepta mea, & justificationes meas notas feci eis quæ faciet ea homo, & vivet in illis. Et sabbata 12
mea dedi eis, ut essēt in signū inter me, & eos, ut scirent ipsi, quia ego Dominꝰ sanctificans eos.
(g) Et dixi ad domum Israel in 13
deserto; In præceptis meis ambulate. (h) Et non ambulaverunt, & justificationes meas repulerunt, quas faciet eas homo, & vivet in eis: & sabbata mea violaverūt vehementer. Et dixi, ut effunderē furorē meū super eos in deserto, ut consumerem eos. Et feci ut nomen meū omninò non violaretur 14
corā gentibꝰ, de quibus eduxi eos ante oculos earum. Et ego levavi 15
manum meā super eos in deserto omninò, ut non introducerem eos in terram, quam dedi eis, terram fluentem lacte, & melle: favus est ultrà omnem terrā: Eò quòd ju- 16
stificationes meas repulerunt, & in præceptis meis non ambulaverunt in eis, & sabbata mea violaverunt, & post cogitationes cordis sui ambulaverunt. Et pepercit 17
oculus meus super eos, (i) delere eos, & non feci eos in consumptionem in deserto. Et dixi ad fi- 18
lios eorum in deserto; In legitimis patrum vestrorum nolite incedere, & justificationes eorum non custodiatis, & in adinventionibus eorum ne (k) commisceamini, & ne polluamini: Ego Dominus 19
Deus vester. In præceptis meis ambulate, & justificationes meas custodite, & facite eas: Et sabba- 20
ta mea sanctificate: et sint in signū inter me & vos, ad sciendum, quia ego Dominus Deus vester. Et 21
(l) exacerbaverunt me, & filii eorum in præceptis meis non ambulârunt, & justificationes meas non custodierunt ad faciendum eas, quas faciet homo, & vivet in eis: & sabbata mea violaverunt. Et dixi effundere furorem meum super eos in deserto: complere iram meam super eos.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 וסריבו על מימרי ולא אבו לקבלא לנביי גבר ית שקוצי עיניהון לא ארחיקו וית
פולחן טעות מצראי לא שבקו ואמרית למשפך חמתי עליהון דיחול רוגזי בהון בגו
9 ארעא דמצרים׃ ועבדית בדיל שמי בדיל דלא יתחל לעיני עממיא די אנון ביניהון
10 דאתגליתי למפרקהון לעיניהון לאפקותהון מארעא דמצרים׃ ואפקתנון מארעא
11 דמצרים ואעלתנון למדברא׃ ויהבית להון ית קימי וית דיני הודעית יתהון דאם
12 יעביד יתהון אנשא ויחי בהון בחיי עלמא׃ ואף ית יומי שביא דילי יהבית להון למהוי
13 לאת בין מימרי וביניהון למידע ארי אנא יי מקדשהון׃ וסריבו על מימרי בית ישראל
במדברא בקימי לא הליכו וית דיני קצו דאם יעביד יתהון אנשא וייחי בהון חיי עלמא
וית יומי שביא דילי אחילו לחדא ואמרית למשפך חימתי עליהון במדברא
14 לשציותהון׃ ועבדית בדיל שמי בדיל דלא יתחל לעיני עממיא דאפקתנון לעיניהון׃
15 ואף אנא קימית במימרי להון במדברא בדיל דלא לאעלא יתהון לארעא די יהבית
16 עבדא חלב ודבש תושבחא היא לכל מדינתא׃ חלף די בדיני קצו וית קימי לא הליכו
17 בהון וית יומי שביא דילי אחילו ארי בתר פולחן טעותהון לבהון טעי׃ וחס מימרי
18 עליהון מלחבלותהון ולא עבדית עמהון גמירא במדברא׃ ואמרית לבניהון במדברא
בנזירת אבהתכון לא תהכון וית נימוסיהון לא תטרון ובפולחן טעותהון לא
19 תסתאבון׃ אנא יי אלהכון בקימי הליכו וית דיני טרו ועבידו יתהון׃ וית יומי שביא
20 דילי קדישו ויהון לאת בין מימרי וביניכון למידע ארי אנא יי אלהכון׃ וסריבו על
21 מימרי בניא בקימי לא הליכו וית דיני לא נטרו למעבד יתהון דאם יעביד יתהון
אנשא ויחי בהון בחיי עלמא וית יומי שביא דילי אחילו ואמרית למשפך חימתי
עליהון דיחול רוגזי בהון במדברא׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

At refractarii fuerunt verbo meo, & noluerunt obedire prophetis meis; quis- 8
que non projecerunt abominationes oculorum suorum, neque reliquerunt
cultum idolorum Ægyptiorum. Et dixi quod effunderem indignationem me-
am super eos, & quod quiesceret ira mea in eis in medio terræ Ægypti. Et 9
feci propter nomen meum ut non violaretur ante oculos populorum, inter
quos erant, in quorum conspectu innotueram ut redimerem eos, ut educerem
eos ex terra Ægypti. Et eduxi eos de terra Ægypti, atque in desertum adduxi 10
eos. Et dedi eis pacta mea, & judicia mea ostendi eis; quæ si fecerint homi- 11
nes, vivent in eis vita æterna. Et etiam dies sabbatorum meorum dedi eis, 12
ut essent eis in signum inter Verbum meum & inter eos, ut cognoscerent quia
ego Dominus qui sanctifico eos. Et rebellaverunt contra verbum meum do- 13
mus Israel in deserto; in pactis meis non ambulaverunt, & judicia mea dete-
stati sunt : quæ si fecerit homo, vivet in eis vita æterna. Et dies sabbatorum
meorum violaverunt vehementer : & dixi quòd effunderem indignationem
meam in deserto super eos, ut consumerem eos. Et feci propter nomen me- 14
um ut non violaretur ante oculos populorum ante quorum oculos eduxi eos.
Ego quoque juravi eis in deserto in verbo meo, ut non introducerem eos in 15
terram quam dedi lacte & melle manantem, quæ laudabilis est omnibus pro-
vinciis. Pro eo quòd judicia mea detestati sunt, & in pactis meis non ambu- 16
laverunt, & dies sabbatorum meorum violaverunt; quia post cultum ido-
lorum suorum cor eorum errabat. Et pepercit Verbum meum illis, ut non 17
disperderem eos, & non feci consumptionem cum eis in deserto. Et dixi filiis 18
eorum in deserto : In decretis patrum vestrorum ne ambuletis, & leges eo-
rum ne observetis, & in cultu idolorum eorum ne polluamini. Ego Dominus 19
Deus vester : in pactis meis ambulate, & judicia mea servate, & facite ea.
Et dies sabbatorum meorum sanctificate, ut sint in signum inter Verbum me- 20
um & inter vos, ut sciatis quia ego Dominus Deus vester. Et prævaricati 21
sunt in verbum meum filii; in pactis meis non ambulaverunt, & judicia mea
non servaverunt ut facerent ea : quæ si fecerit homo, vivet in eis vita æter-
na : & dies sabbatorum meorum violaverunt, & dixi me effusurum in eos in-
dignationem meam, ut resideret ira mea in eis in deserto.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܡܪܡܪܘܢܝ ܘܠܐ ܨܒܘ ܠܡܫܡܥܢܝ. ܘܠܐ ܐܥܒܪܘ ܦܬܟܪܐ ܡܢ ܥܝܢܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܫܒܩܘ ܕܚܠܬܐ
ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܡܪܬ ܕܐܫܘܕ ܚܡܬܝ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܐܫܡܠܐ ܪܘܓܙܝ ܒܗܘܢ. ܒܓܘ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ.
* ܘܚܣܬ ܡܛܠ ܫܡܝ ܕܠܐ ܢܬܛܘܫ ܩܕܡ ܥܡܡܐ. ܕܐܬܚܙܝܬ ܠܗܘܢ ܒܝܢܬܗܘܢ.
ܕܐܦܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܐܦܩܬ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܝܬܝܬ ܐܢܘܢ ܠܡܕܒܪܐ.
* ܘܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܝ. ܘܕܝܢܝ ܐܘܕܥܬ ܐܢܘܢ. ܕܐܢ ܢܥܒܕ ܐܢܘܢ ܒܪܢܫܐ ܢܚܐ ܒܗܘܢ.
* ܘܐܦ ܫܒܬܝ ܝܗܒܬ ܠܗܘܢ. ܕܢܗܘܝܢ ܐܬܐ ܒܝܢܝ ܠܒܝܢܬܗܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ
ܕܡܩܕܫ ܠܗܘܢ. * ܘܡܪܡܪܘܢܝ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܒܦܘܩܕܢܝ ܠܐ ܗܠܟܘ. ܘܕܝܢܝ
ܐܣܠܝܘ. ܕܐܢ ܢܥܒܕ ܐܢܘܢ ܒܪܢܫܐ ܢܚܐ ܒܗܘܢ. ܘܫܒܬܝ ܛܢܦܘ. ܘܐܡܪܬ ܕܐܫܘܕ ܚܡܬܝ
ܥܠܝܗܘܢ ܒܡܕܒܪܐ. ܘܐܘܒܕ ܐܢܘܢ. * ܘܚܣܬ ܡܛܠ ܫܡܝ. ܕܠܐ ܢܬܛܘܫ ܩܕܡ ܥܡܡܐ
ܕܐܦܩܬ ܐܢܘܢ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. * ܘܐܦ ܐܢܐ ܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܥܠܝܗܘܢ ܒܡܕܒܪܐ. ܕܠܐ ܐܥܠ ܐܢܘܢ
ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܗܘܢ. ܕܪܕܝܐ ܚܠܒܐ ܘܕܒܫܐ. ܫܘܒܚܗܝܢ ܕܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢܬܐ. *
ܕܕܝܢܝ ܐܣܠܝܘ. ܘܫܒܬܝ ܛܒ ܛܢܦܘ. ܘܒܬܪ ܦܬܟܪܝܗܘܢ ܐܙܠ ܠܒܗܘܢ. * ܘܚܣܬ
ܥܝܢܝ ܥܠܝܗܘܢ. ܕܠܐ ܐܫܟܠܝܘܗܝ. ܘܠܐ ܐܫܝܨ ܐܢܘܢ ܒܡܕܒܪܐ. * ܘܐܡܪܬ ܠܒܢܝܗܘܢ
ܒܡܕܒܪܐ. ܒܦܘܩܕܢܐ ܕܐܒܗܝܟܘܢ ܠܐ ܬܗܠܟܘܢ. ܘܕܝܢܝܗܘܢ ܠܐ ܬܛܪܘܢ. ܘܒܦܬܟܪܝܗܘܢ
ܠܐ ܬܬܛܘܫܘܢ. * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܒܦܘܩܕܢܝ ܗܠܟܘ. ܘܕܝܢܝ ܛܪܘ. ܘܥܒܕܘ
ܐܢܘܢ. * ܘܫܒܬܝ ܩܕܫܘ. ܘܢܗܘܘܢ ܐܬܐ ܒܝܢܝ ܠܒܝܢܝܟܘܢ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ.
* ܘܡܪܡܪܘܢܝ ܒܢܝܐ. ܘܒܦܘܩܕܢܝ ܠܐ ܗܠܟܘ. ܘܕܝܢܝ ܠܐ ܢܛܪܘ. ܘܠܐ ܥܒܕܘ ܐܢܘܢ. ܕܐܢ ܢܥ
ܐܢܘܢ ܒܪܢܫܐ ܢܚܐ ܒܗܘܢ. ܘܫܒܬܝ ܛܢܦܘ. ܘܐܡܪܬ ܕܐܫܘܕ ܚܡܬܝ. ܘܐܫܡܠܐ
ܥܠܝܗܘܢ. ܪܘܓܙܝ ܒܡܕܒܪܐ.

Ipſi verò me irritaverunt, & noluerunt ob- 8
temperare, non amoverunt idola ab oculis
ſuis, neque dereliquerunt deos Ægypti. Quarè
decreveram effundere ſuper eos iracundiam
meam, & conſummare in eis furorem meum
intra terram Ægypti : Sed peperci propter 9
nomen meum, ne prophanaretur inter gentes
illas coram quibus apparueram éis ut edu-
cerem eos è terra Ægypti. Poſtquam edu- 10
xiſſem eos de terra Ægypti, & perduxiſſẽ eos
ad deſertum; Dedi illis præcepta mea, & nota 11
feci eis judicia mea per quæ homo vivit ſi fa-
ciat ea : Ac etiam ſabbatha mea dedi ipſis, 12
ut eſſent ſigno inter me & ipſos, & ſcirent me
eſſe Dominum ſanctificantem eos. Sed cùm 13
exaſperâſſent me Iſraelitæ in deſerto, in præ-
ceptis meis non ambulâſſent, judicia mea per
quæ homo viveret ſi faceret ea, ſprevinſſent, &
ſabbatha mea prophanâſſent ; decreveram ef-
fundere ſuper eos iracundiam meam in deſer-
to, & perdere eos : Sed peperci propter no- 14
men meum, ne pollueretur coram gentibus il-
lis in quarum conſpectu eduxeram eos. Ego 15
viciſſim levatâ in deſerto manu meâ *juravi*
eis, me non introducturũ eos in terram quam
dederam eis lacte & melle manantem, decus
omnium urbium : Eò quòd ſpreviſſent judi- 16
cia mea, ſabbatha mea valdè prophanâſſent,
& idola ſua ſecutum eſſet cor eorum. Atta- 17
men pepercit eis oculus meus ne extinguerem
eos & conſumerem eos in deſerto. Item filiis 18
eorum dixeram in deſerto, Juxta mandata pa-
trum veſtrorum ne ambuletis, judicia eorum
ne obſervetis, & in idolis eorum ne contami-
nemini : Ego ſum Dominus Deus veſter, in 19
mandatis meis ambulate, judicia mea ſervate
ac facite, Et ſabbatha mea ſanctificate, ſint- 20
que ſigno inter me & vos: & experiemini me
eſſe Dominum Deum veſtrum. At exacerba- 21
verunt me filii, in præceptis meis non ambu-
laverunt, judicia mea neque ſervaverunt neq;
fecerunt, p quæ homo vivit ſi faciat ea, & ſab-
batha mea prophanaverunt : Quapropter ſta-
tueram effundere iram meam, & conſummare
ſuper eos furorem meum in deſerto :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وتباعدوا عني * ولم يشاوا ان يسمعوا مني * ولم يطرحوا رذالات اعينهم * ولم يتركوا اعمال مصر
فقلت لافيض غضبي عليهم * لاكمل رجزي فيهم في وسط ارض مصر * وصنعت كيلا ينجس
اسمي امام الشعوب الذي هم في وسطهم * الذين فيهم عرفت لهم امامهم * لاخرجهم من ارض
مصر * واخرجتهم من ارض مصر * واتيت بهم الى البرية * ودفعت لهم اوامري * وعرفتهم حقوقي
التي يصنعها الانسان ويحيا بها * واعطيتهم سبوتي لتكون علامة بيني وبينهم * ليعرفوا
اني انا الرب الذي يقدسهم * وقلت لبيت اسرائيل في البرية * سيروا في اوامري * واحفظوا
حقوقي لتصنعوها * التي يصنعها انسان فيحيا بها * فمرمروني بيت اسرائيل في البرية * ولم يسيروا
في اوامري * واقصوا حقوقي التي يصنعها انسان فيحيا بها * ونجسوا سبوتي جدا * وقلت
لافيض غضبي عليهم في البرية لابيدهم * وما صنعت * كيلا ينجس اسمي الذي هو افضل
من كل شي * امام الامم الذين اخرجتهم لعيونهم * وانا رفعت يدي عليهم في البرية * الا
ادخلهم الى الارض التي اعطيتها لهم * ارضا تفيض لبنا وعسلا * شهدة هي اكثر من كل
الارض * من اجل انهم اقصوا حقوقي * وفي اوامري لم يسلكوا * ونجسوا سبوتي * وخلف
فكرات قلوبهم ذهبوا * وشفقت عيني عليهم لاحيهم * ولم اجعلهم في البرية الى النهاية *
* وقلت لاولادهم في البرية * بسنن ابائكم لا تسيرن * ولا تحفظوا حقوقهم * ولا تختلطوا
باعمالهم * ولا تتنجسوا * انا الرب الهكم * سيروا في اوامري * واحفظوا حقوقي واصنعوها
* وقدسوا سبوتي * ولتكن علامة بيني وبينكم * لتعرفوا اني انا الرب الهكم * فمرمروني
واولادهم * ولم يسيروا في اوامري * ولن يحفظوا حقوقي ليصنعوها * التي يصنعها
الانسان فيحيا بها * ونجسوا سبوتي * فقلت ان اهرق غضبي عليهم في البرية * لاكمل
رجزي عليهم *

Ipſi tamen receſſerunt à me, & renuerunt 8
audire me, non abjecerunt abominationes
oculorum ſuorum, neq; dereliquerunt ope-
ra Ægypti. Quapropter dixeram effuſu-
rum me ſuper eos iram meam, expleturum
in eis furorem meum in medio terræ Æ-
gypti. Sed præſtiti, ut non pollueretur no- 9
men meum coram gentibus quarum in me-
dio ipſi erant, inter quas & coram quibus
notum factum fuerat eis, ut educerem eos
è terra Ægypti. Et eduxi eos è terra 10
Ægypti, & adduxi eos ad deſertum: De- 11
dique eis mandata mea, & nota feci eis
ſtatuta mea, quæ faciens homo, per ea vi-
vit : Dediq; eis ſabbatha mea, ut eſſent 12
ſignum inter me & inter ipſos, ut ſcirent
me eſſe Dominum qui ſanctificat eos : Et 13
dixi domui Iſraelis in deſerto; Ambulate
in mandatis meis, & mea ſtatuta ſervate
ut faciatis ea, quæ quis faciens, vivit per
ipſa: tamen exaſperaverunt me domus Iſ-
raelis in deſerto, & non ambulaverunt in
mandatis meis; ſed rejecerunt ſtatuta mea,
quæ quis faciens, per ea vivit, & ſabba-
tha mea nimiùm prophanaverunt : ideoq;
dixeram effuſurum me ſuper eos iram
meam in deſerto, ut perderem eos. Verùm 14
non feci, ne pollueretur nomen meum quod
eſt præſtantiſſimum rerum omnium, coram
gentibus quibus cernentibus eduxeram
illos. Ego etiam levavi manum meam ſu- 15
per eos in deſerto, quòd non introduce-
rem eos in terram quam dederam eis, ter-
ram lacte & melle affluentem, quæ fa-
vus eſt pluſquam univerſa terra : Eò 16
quòd ſtatuta mea repudiâſſent, in manda-
tis meis non ambulâſſent, ſabbatha mea
violâſſent, & poſt cogitationes cordium
ſuorum abiiſſent. At pepercit eis oculus 17
meus delere eos, & non redegi eos in de-
ſerto ad exitium. Dixi quoque filiis eo- 18
rum in deſerto; In legibus patrum ve-
ſtrorum nullatenus incedatis, ſtatuta
eorum ne ſervetis, operibus eorum ne vos
immiſceatis, néve polluamini. Ego ſum 19
Dominus Deus veſter, ambulate in præ-
ceptis meis, ſervate ſtatuta mea, eaque
perficite : Sanctificate ſabbatha mea, 20
ſintque ſignum inter me & inter vos, ut
ſciatis me eſſe Dominum Deum veſtrum.
Sed & filii eorum exaſperaverunt me, 21
& non ambulaverunt in præceptis me-
is, neque ſervaverunt ſtatuta mea per-
ficiendo illa, quæ quis perficiendo, per
ipſa vivit ; & polluerunt ſabbatha
mea. Quare dixi me effuſurum ſuper eos
iram meam in deſerto, ut explerem in eis
furorem meum.

polluendum non ad : meũ nomen propter feci & ,meã manum averti Et
22 וַהֲשִׁבֹתִי אֶת־יָדִי וָאַעַשׂ לְמַעַן שְׁמִי לְבִלְתִּי הֵחֵל
ego Etiam .earum oculis eos eduxi quarum ,gentium oculis in
23 לְעֵינֵי הַגּוֹיִם אֲשֶׁר־הוֹצֵאתִי אוֹתָם לְעֵינֵיהֶם׃ גַּם־אֲנִי
, gentes in eos diſpergendum ad : deſerto in eis meã manum levavi
נָשָׂאתִי אֶת־יָדִי לָהֶם בַּמִּדְבָּר לְהָפִיץ אֹתָם בַּגּוֹיִם
,fecerunt non mea judicia quòd Eo .terras in eos ventilandum ad &
24 וּלְזָרוֹת אוֹתָם בָּאֲרָצוֹת׃ יַעַן מִשְׁפָּטַי לֹא־עָשׂוּ
idola poſt & :violaverunt mea ſabbatha & ,abjecerunt mea ſtatuta &
וְחֻקּוֹתַי מָאָסוּ וְאֶת־שַׁבְּתוֹתַי חִלֵּלוּ וְאַחֲרֵי גִּלּוּלֵי
ſtatuta eis dedi ego etiam Et .eorũ oculi fuerunt ſuorũ patrum
25 אֲבוֹתָם הָיוּ עֵינֵיהֶם׃ וְגַם־אֲנִי נָתַתִּי לָהֶם חֻקִּים
eos pollui Et .eis in vivent non judicia & ,bona non
26 לֹא טוֹבִים וּמִשְׁפָּטִים לֹא יִחְיוּ בָּהֶם׃ וָאֲטַמֵּא אוֹתָם
ut : vulvæ apertionem omnem faciendo tranſire in ,ſuis muneribus in
בְּמַתְּנוֹתָם בְּהַעֲבִיר כָּל־פֶּטֶר רָחַם לְמַעַן
Quamobrẽ .Dominus ego quòd ſcirent quod propter,eos facerẽ deſolare
27 אֲשִׁמֵּם לְמַעַן אֲשֶׁר יֵדְעוּ אֲשֶׁר אֲנִי יְהוָה׃ לָכֵן
dixit Sic : eos ad dices & ,hominis fili ,Iſrael domum ad loquere
דַּבֵּר אֶל־בֵּית יִשְׂרָאֵל בֶּן־אָדָם וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה אָמַר
, veſtri patres me affecerunt probris hoc Adhuc : Deus Dominus
אֲדֹנָי יְהוִה עוֹד זֹאת גִּדְּפוּ אוֹתִי אֲבוֹתֵיכֶם
quam terram in eos induxi Et.prævaricationẽ me in *ipſos prævaricando in*
28 בְּמַעֲלָם בִּי מָעַל׃ וָאֲבִיאֵם אֶל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר
collem omnẽ viderunt & : illis eam *dandum ad* ,meã manum levavi
נָשָׂאתִי אֶת־יָדִי לָתֵת אוֹתָהּ לָהֶם וַיִּרְאוּ כָל־גִּבְעָה
,ſua ſacrificia ibi ſacrificabant & ,*perplexum* lignum omne &,excelſum
רָמָה וְכָל־עֵץ עָבֹת וַיִּזְבְּחוּ־שָׁם אֶת־זִבְחֵיהֶם
odorem ibi poſuerunt & .ſuæ *appropinquationis* iram ibi dederunt &
וַיִּתְּנוּ־שָׁם כַּעַס קָרְבָּנָם וַיָּשִׂימוּ שָׁם רֵיחַ
Quid : eos ad dixi Et .ſua libamina ibi libaverunt & ,*ſuarũ quietum*
29 נִיחוֹחֵיהֶם וַיַּסִּיכוּ שָׁם אֶת־נִסְכֵּיהֶם׃ וָאֹמַר אֲלֵהֶם מָה
Bamah ejꝰ nomen eſt vocatum Et ? *illuc ingredientes* vos quod ,excelſum
הַבָּמָה אֲשֶׁר־אַתֶּם הַבָּאִים שָׁם וַיִּקָּרֵא שְׁמָהּ בָּמָה
dixit Sic : Iſrael domũ ad dic Propterea .hanc diem ad uſque
30 עַד הַיּוֹם הַזֶּה׃ לָכֵן אֱמֹר אֶל־בֵּית יִשְׂרָאֵל כֹּה אָמַר
poſt & : *polluti* vos veſtrorũ patrum *via in* Nũquid : Deus Dominꝰ
אֲדֹנָי יְהוִה הַבְדֶרֶךְ אֲבוֹתֵיכֶם אַתֶּם נִטְמְאִים וְאַחֲרֵי
faciendo tranſire in , *veſtra dona elevando* in Et ?*fornicantes vos* eorũ *ſpurcitias*
31 שִׁקּוּצֵיהֶם אַתֶּם זֹנִים׃ וּבִשְׂאֵת מַתְּנֹתֵיכֶם בְּהַעֲבִיר
,hodie uſque veſtris idolis omnibꝰ in *polluti vos* ignẽ per veſtros filios
בְּנֵיכֶם בָּאֵשׁ אַתֶּם נִטְמְאִים לְכָל־גִּלּוּלֵיכֶם עַד־הַיּוֹם
,Deus Dominus dixit ,ego *Vivens* ? Iſrael domus vobis *requirar* ego &
וַאֲנִי אִדָּרֵשׁ לָכֶם בֵּית יִשְׂרָאֵל חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה
: erit non *eſſendo* veſtrũ ſpiritũ ſuper *aſcendens* Et .vobis *requirar* ſi
32 אִם־אִדָּרֵשׁ לָכֶם׃ וְהָעֹלָה עַל־רוּחֲכֶם הָיוֹ לֹא תִהְיֶה
, terrarum cognationes ſicut ,gentes ſicut Erimus , *dicentes* vos quia
אֲשֶׁר אַתֶּם אֹמְרִים נִהְיֶה כַגּוֹיִם כְּמִשְׁפְּחוֹת הָאֲרָצוֹת
non ſi : Deus Dominus dixit ,ego *Vivens* .lapidi & ligno *miniſtrandũ ad*
33 לְשָׁרֵת עֵץ וָאָבֶן׃ חַי־אָנִי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה אִם־לֹא
regnavero ,effuſo furore in & , extento brachio in & , forti manu in
בְּיָד חֲזָקָה וּבִזְרוֹעַ נְטוּיָה וּבְחֵמָה שְׁפוּכָה אֶמְלוֹךְ
de vos congregabo & , populis de vos educam Et .vos ſuper
34 עֲלֵיכֶם׃ וְהוֹצֵאתִי אֶתְכֶם מִן־הָעַמִּים וְקִבַּצְתִּי אֶתְכֶם מִן־
,extento brachio in &,valida manu in,*eas in* eſtis diſperſi quas , terris
הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר נְפוֹצֹתֶם בָּם בְּיָד חֲזָקָה וּבִזְרוֹעַ נְטוּיָה
:populorum deſertum ad vos adducam Et .effuſo furore in &
35 וּבְחֵמָה שְׁפוּכָה׃ וְהֵבֵאתִי אֶתְכֶם אֶל־מִדְבַּר הָעַמִּים
.*facies ad faciebus* ibi vobiſcum me judicabo &
וְנִשְׁפַּטְתִּי אִתְּכֶם שָׁם פָּנִים אֶל־פָּנִים׃

Verſio VULG. LAT.

22 Averti autem manum meam, & feci propter nomen meum, ut non violaretur coram Gentibus, de quibus ejeci eos in oculis earum. 23 Iterùm levavi manũ meam in eos in ſolitudine, ut diſpergerem illos in nationes, & ventilarem in terras: 24 Eò quòd judicia mea non feciſſent, & præcepta mea reprobâſſent, & ſabbata mea violâſſent, & poſt idola patrum ſuorum fuiſſent oculi eorum. 25 Ergò & ego dedi eis præcepta non bona, & judicia in quibus non vivent. 26 Et pollui eos in muneribus ſuis, cùm offerrent omne quod aperit vulvã, propter delicta ſua, & ſcient quia ego Dominus. 27 Quamobrèm loquere ad domum Iſrael, fili hominis: & dices ad eos; Hæc dicit Dominus Deus; Adhuc & in hoc blaſphemaverunt me patres veſtri, cùm ſpreviſſent me contemnentes: 28 Et induxiſſem eos in terrã, ſuper quam levavi manum meam ut darem eis: viderunt omnem collem excelſum, & omne lignum nemoroſum, & immolaverunt ibi victimas ſuas: & dederunt ibi irritationem oblationis ſuæ, & poſuerunt ibi odorem ſuavitatis ſuæ, & libaverunt libationes ſuas. 29 Et dixi ad eos; Quid eſt excelſum, ad quod vos ingredimini? & vocatum eſt nomen ejus, Excelſũ, uſque ad hanc diem. 30 Propterea dic ad domum Iſrael; Hæc dicit Dominus Deus; Certè in via patrum veſtrorum vos polluimini, & poſt offendicula eorum vos fornicamini: 31 Et in oblatione donorum veſtrorũ, cùm traducitis filios veſtros per ignem, vos polluimini in omnibus idolis veſtris uſque hodié: & ego reſpondebo vobis, domus Iſrael? Vivo ego, dicit Dominus Deus, quia non reſpondebo vobis. 32 Neque cogitatio mentis veſtræ fiet, dicentium; Erimus ſicut Gentes, & ſicut cognationes terræ, ut colamus ligna & lapides. 33 Vivo ego, dicit Dominus Deus, quoniam in manu forti, et in brachio extento, & in furore effuſo regnabo ſuper vos. 34 Et educam vos de populis: & congregabo vos de terris, in quibus diſperſi eſtis, in manu valida, & in brachio extento, & in furore effuſo regnabo ſuper vos. 35 Et adducam vos in deſertum populorum, & judicabor vobiſcum ibi facie ad faciem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

22 Καὶ ἐποίησα ὅπως τὸ ὄνομά μου τὸ παράπαν μὴ βεβηλωθῇ ἐνώπιον τῶν ἐθνῶν, (ω) καὶ ἐξήγαγον αὐτοὺς κατ' ὀφθαλμοὺς αὐτῶν. (α) 23 Ἐξῆρα τὴν χεῖρά μου ἐπ' αὐτοὺς ἐν τῇ ἐρήμῳ, τοῦ διασκορπίσαι αὐτοὺς ἐν τοῖς ἔθνεσι, (β) διασπεῖραι αὐτοὺς ἐν ταῖς χώραις, 24 Ἀνθ' ὧν τὰ δικαιώματά μου οὐκ ἐποίησαν, καὶ τὰ προστάγματά μου ἀπώσαντο, καὶ τὰ σάββατά μου ἐβεβήλουν, καὶ ὀπίσω τῶν ἐνθυμημάτων τῶν πατέρων αὐτῶν ἦσαν οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν. 25 Καὶ ἐγὼ ἔδωκα αὐτοῖς προστάγματα οὐ καλὰ, καὶ δικαιώματα ἐν οἷς οὐ ζήσονται ἐν αὐτοῖς. 26 Καὶ μιανῶ αὐτοὺς ἐν τοῖς (γ) δόγμασιν αὐτῶν, ἐν τῷ διαπορεύεσθαί με πᾶν διανοῖγον μήτραν, ὅπως ἀφανίσω (δ) αὐτούς. 27 Διατοῦτο λάλησον πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ υἱὲ ἀνθρώπου, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε (ε) λέγει κύριος, Ἕως τούτου παρώργισάν με οἱ πατέρες ὑμῶν ἐν τοῖς παραπτώμασιν αὐτῶν ἐν οἷς (ζ) παρέπεσον εἰς ἐμέ. 28 Καὶ εἰσήγαγον αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν (η) ἣν ἦρα τὴν χεῖρά μου (θ) δοῦναι αὐτὴν αὐτοῖς· καὶ ἴδον πάντα βουνὸν ὑψηλὸν, καὶ πᾶν ξύλον κατάσκιον, καὶ ἔθυσαν ἐκεῖ τοῖς θεοῖς αὐτῶν, καὶ ἔταξαν ἐκεῖ ὀσμὴν (ι) εὐωδίας, καὶ ἔσπεισαν ἐκεῖ τὰς σπονδὰς αὐτῶν. 29 Καὶ (κ) εἶπον πρὸς αὐτοὺς, Τί ἐστιν (λ) Ἀβαμὰ, ὅτι ὑμεῖς εἰσπορεύεσθε ἐκεῖ; καὶ ἐπεκάλεσαν τὸ ὄνομα αὐτοῦ (') Ἀβαμὰ, ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας. 30 Διατοῦτο εἰπὸν πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ, Τάδε λέγει (μ) κύριος, Εἰ ἐν ταῖς ἀνομίαις τῶν πατέρων ὑμῶν ὑμεῖς μιαίνεσθε, καὶ ὀπίσω τῶν βδελυγμάτων αὐτῶν ὑμεῖς ἐκπορνεύετε, 31 Καὶ ἐν ταῖς ἀπαρχαῖς τῶν δομάτων ὑμῶν, (ν) ἐν τοῖς ἀφορισμοῖς οἷς ὑμεῖς μιαίνεσθε ἐν πᾶσι τοῖς ἐνθυμήμασιν ὑμῶν ἕως τῆς σήμερον ἡμέρας, καὶ ἐγὼ ἀποκριθῶ ὑμῖν, οἶκος τοῦ Ἰσραήλ; Ζῶ ἐγὼ, λέγει κύριος, εἰ ἀποκριθήσομαι ὑμῖν, καὶ εἰ ἀναβήσεται ἐπὶ τὸ πνεῦμα ὑμῶν τοῦτο. 32 Καὶ οὐκ ἔσται ὃν τρόπον ὑμεῖς λέγετε, Ἐσόμεθα ὡς τὰ ἔθνη, καὶ ὡς αἱ φυλαὶ τῆς γῆς, τοῦ λατρεύειν ξύλοις καὶ λίθοις. 33 Διατοῦτο, Ζῶ ἐγὼ, λέγει (ξ) κύριος, ἐν χειρὶ κραταιᾷ καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ καὶ ἐν θυμῷ κεχυμένῳ βασιλεύσω ἐφ' ὑμᾶς, 34 Καὶ ἐξάξω ὑμᾶς ἐκ τῶν λαῶν, καὶ εἰσδέξομαι ὑμᾶς ἐκ τῶν χωρῶν οὗ διεσκορπίσθητε ἐν αὐταῖς, ἐν χειρὶ κραταιᾷ καὶ ἐν βραχίονι ὑψηλῷ καὶ ἐν θυμῷ κεχυμένῳ. 35 Καὶ ἄξω ὑμᾶς εἰς τὴν ἔρημον τῶν λαῶν, καὶ διακριθήσομαι πρὸς ὑμᾶς ἐκεῖ πρόσωπον κατὰ πρόσωπον.

(m) Et feci, ut nomen meũ omninò non violaretur coram gentibus; (n) & eduxi eos ante oculos earum. 23 Levavi manum meam ſuper eos in deſerto, ut diſpergerem illos in nationibus diſſeminarem eos in regionibus, 24 Eo quod juſtificationes meas non fecerant, & præcepta mea repulerant, & ſabbata mea violaverant, & poſt cogitationes patrum ſuorum fuerant oculi ipſorum. 25 Et ego dedi eis præcepta non bona, & juſtificationes, in quibus non vivent in eis. 26 Et polluam eos in (o) dogmatibus eorũ, in (p) tranſducendo me omne adaperiens vulvam, ut delerem eos. 27 Idcircò loquere ad domum Iſrael, fili hominis, & dices ad eos; Hæc dicit Dominus; uſque ad hoc ad iracundiam provocaverunt me patres veſtri in delictis ſuis, in quibus corruerunt in me: 28 Et introduxi eos in terram, ſuper quã levavi manum meam, ut darem eam illis. Videruntque omnem collem excelſum, & omne lignum nemoroſum, & immolaverunt ibi diis (q) ſuis, & poſuerunt ibi odorem fragrantiæ, & libaverunt ibi libamina ſua. 29 Et dixi ad eos; Quid eſt (r) Abama; quia vos intratis illuc? Et vocaverunt nomen ejus, Abama, uſque in hodiernum diem. 30 Propterea dic ad domum Iſrael; Hæc dicit Dominus; Si in iniquitatibus patrum veſtrorum vos polluimini, & poſt abominationes eorum vos fornicamini, 31 Et in primitiis donorum veſtrorum, in ſegregationibus, (ſ) quibus vos polluimini in omnibus cogitationibus veſtris uſque in hodiernum diem: & ego reſpondebo vobis, domus Iſrael? Vivo ego, dicit Dominus, ſi reſpondebo vobis; & ſi aſcendet in ſpiritum veſtrum hoc: 32 Et non erit, quomodò vos dicitis, Erimus ſicut gentes, & ſicut tribus terræ, colendo ligna, & lapides. 33 Propterea, Vivo ego, dicit Dominus, in manu valida, & in brachio excelſo, & in furore effuſo regnabo ſuper vos. 34 Et educam vos de populis, & recipiam vos de regionibus, ubi diſperſi eſtis in eis, in manu valida, & in brachio excelſo, & in furore effuſo. 35 Et adducam vos in deſertum populorum, & judicabor vobiſcum ibi facie ad faciem.

MS. A. (ω) ὧν ἐξήγαγον (α) Καὶ ἐξῆρα (β) καὶ τοῦ διασκορπίσαι αὐτοὺς (γ) δόμασιν (δ) αὐτοὺς, εἶνα γνῶσιν ὅτι ἐγὼ κύριος. Διατοῦτο (ε) λέγει ἀδωναῒ κύριος, (ζ) παρέπεσαν (η) εἰς ἣν (θ) τοῦ δοῦναι αὐτοῖς· καὶ εἶδαν πάντα βουνὸν (ι) εὐωδίας αὐτῶν, (κ) εἶπα (λ) ἡ Ἀββανὰ, (') Ἀββανά, (μ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (ν) καὶ ἐν τοῖς ἀφορισμοῖς ὑμῶν ὑμῶν ἐν οἷς ὑμεῖς μιαίνεσθε (ξ) ἀδωναῒ κύριος, ἐὰν μὴ ἐν χειρὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

21 ואתיב ית מחת גבורתי ועבדית בדיל שמי בדיל דלא יתחל לעיני עממיא דאפקית
23 יתהון לעיניהון : אף אנא קימית במימרי להון במדברא לאגלאה יתהון לביני
24 עממיא ולבדרא יתהון במדינתא : חלף דדיני לא עבדו ובקימי קצו וית יומי שביא
25 דילי אחילו ובתר טעות אבהתהון הואה עיניהון : ואף אנא מדמרדו במימרי ולא
אבו לקבלא לנביאי ארחקתנון ומסרתנון ביד שנאיהון ובתר יצריהון טפשא אזלו
26 ועבדו גזירן דלא תקנן ונימוסין דלא אתקימתון בהון : וסאיבית יתהון במתנתהון
27 באעברא כל פתח ולדא בדיל דאצדנון בדיל דידעון די אנא יי : בכן אתנבי לבית
ישראל בר אדם ותימר להון כדנן אמר יי אלהים עוד דא ארגיזו קדמי אבהתכון
28 בדשקרו במימרי שקר : ואעלתנון לארעא דקימית במימרי למתן יתה להון וחזו כל
רמא מנטלא וכל אילן עבוף ונכיסו תמן ית נכסיהון ויהבו תמן ארגזא קורבניהון
29 ושויאו תמן פולחן דבחיהון ונסיכו תמן ית נסכיהון : ואמרית להון מא במתא דאתון
30 אתן לאשתטאה תמן ואתקרי שמה במתא עד יומא הדין : בכן אמר לבית ישראל
כדנן אמר יי אלהים הבאורח אבהתכון אתון מסתאבין ובתר שקוציהון אתון טען :
31 ובמטל מתנתכון באעברא בניכון בנורא אתון מסתאבין לכל פולחן טעותכון עד
יומא דין ואנא אשתאל לכון במימרי בית ישראל קים אנא אמר יי אלהים אם
32 אשתאל לכון במימרי : ודאתון מהרהרין ודסליקת על לבכון קדמי גלין דאתון
33 אמרין נהי כעממיא כזרעית מדינתא לשמשא אעא ואבנא : קים אנא אמר יי אלהים
34 אם לא ביד תקיפא ובדרעא מרומם וברגז שפיך אמלוך עליכון : ואפיק יתכון מביני
עממיא ואכניש יתכון מן מדינתא דאתבדרתון בהון ביד תקיפא ובדרעא מרומם
35 וברגז שפיך : ואעיל יתכון למדבר עממיא ואתפרע מנכון תמן אפין באפין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

21 Et averti plagam potentiæ meæ; & feci propter nomen meum ut non violaretur ante oculos populorum ante quorum oculos eduxi eos. 23 Ego quoque juravi in verbo meo eis in deſerto, me abducturum eos inter populos, & diſperſurum eos per provincias. 24 Pro eo quòd judicia mea non fecerunt, & pacta mea deteſtati ſunt, & dies ſabbatorum meorum violaverunt, & poſt idola patrum ſuorum fuerunt oculi eorum. 25 Ego quoque quia prævaricati ſunt in verbum meum, & noluerunt obedire prophetis meis, projeci eos, & tradidi eos in manum *inimicorum ſuorum; & poſt concupiſcentiã ſuam inſipientẽ* abierunt, & fecerunt decreta non recta, & leges in quibus non *vivetis*. 26 Et pollui eos in muneribus ſuis, cùm transferrent omne quod aperit vulvam, ut deſolarem eos, ut ſcirent quia ego Dominus. 27 Propterea vaticinare ad domum Iſrael, fili hominis, & dices ad eos: Hæc dicit Dominus Deus: Adhuc in hoc irritaverunt me patres veſtri, quod prævaricati ſunt in verbum meum prævaricationem. 28 Et introduxi eos in terram quam juraveram verbo meo me daturum illis, & viderunt omnem collem elevatum, & omnem arborem viridem; & immolaverunt ibi victimas ſuas, dederunt ibi irritationem oblationum ſuarum, & poſuerunt ibi cultum ſacrificiorum ſuorum, & libaverunt ibi libationes ſuas. 29 Et dixi eis: Quod eſt excelſum ad quod vos venitis ut ſtultè agatis ibi? & vocatum eſt nomen ejus Excelſum uſque in diem hanc. 30 Propterea dic domui Iſrael: Hæc dicit Dominus Deus; Nunquid in via patrum veſtrorum vos polluimini, & poſt abominationes eorum vos erratis? 31 Et in oblatione donorum veſtrorum, transferendo filios veſtros per ignem, vos polluimini; & in omni cultu idolorum veſtrorum uſque in diem hanc? Et ego interrogatus verbo meo reſpondebo vobis domus Iſrael? Vivo ego, dicit Dominus Deus, ſi interrogatus reſpondero vobis verbo meo. 32 Et quod vos cogitatis, & quod aſcendit in cor veſtrum, manifeſtum eſt coram me: quia vos dicitis: Erimus ſicut populi, ſicut cognationes provinciarum, ut colamus lignum & lapidem. 33 Vivo ego, dicit Dominus Deus, ſi non in manu forti & in brachio excelſo, & in furore effuſo regnabo ſuper vos. 34 Et educam vos de medio populorũ, & congregabo vos de provinciis ad quas diſperſi eſtis, in manu forti, & in brachio excelſo, & in furore effuſo. 35 Et introducam vos in deſertum populorum, & vindictam ſumam ex vobis ibi facie ad faciem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܚܣܬ ܡܛܠ ܫܡܝ. ܕܠܐ ܢܬܛܢܦ ܩܕܡ ܥܡܡܐ ܕܐܦܩܬ ܐܢܘܢ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. *
ܐܪܝܡܬ ܠܗܘܢ ܐܝܕܝ ܒܡܕܒܪܐ. ܕܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܒܥܡܡܐ. ܘܐܙܪܐ ܐܢܘܢ ܒܐܬܪܘܬܐ. * ܠܐ
ܥܒܕܘ ܕܝܢܝ. ܘܦܘܩܕܢܝ ܫܛܘ. ܘܫܒܬܝ ܛܢܦܘ. ܘܒܬܪ ܦܬܟܪܐ ܕܐܒܗܝܗܘܢ ܐܙ
ܥܝܢܝܗܘܢ. * ܘܐܦ ܐܢܐ ܝܗܒܬ ܠܗܘܢ ܦܘܩܕܢܐ ܕܠܐ ܫܦܝܪܝܢ. ܘܕܝܢܐ ܕܠܐ ܢܚܘܢ ܒܗܘܢ
* ܘܛܢܦܬ ܐܢܘܢ ܒܡܘܗܒܬܗܘܢ. ܟܕ ܡܥܒܪܝܢ ܒܘܟܪܐ. ܘܐܘܒܕ ܐܢܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ
ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܡܠܠ ܥܡ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐ
ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܬܘܒ ܒܗܕܐ ܓܕܦܘ ܥܠܝ ܐܒܗܝܟܘܢ. ܒܡܥܠܗܘܢ ܕܐܥܠܘ ܒܝ
* ܘܐܥܠܬ ܐܢܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܠܡܬܠܗ ܠܗܘܢ. ܘܚܙܘ ܟܠ ܪܡܬܐ ܪܡܬܐ
ܘܟܠ ܐܝܠܢ ܕܡܛܠܠ. ܘܕܒܚܘ ܬܡܢ ܕܒܚܝܗܘܢ. ܘܩܪܒܘ ܬܡܢ ܩܘܪܒܢܝܗܘܢ. ܘܣܡܘ ܬܡ
ܪܝܚܐ ܕܒܣܡܝܗܘܢ. ܘܢܣܟܘ ܬܡܢ ܢܣܟܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪܬ ܠܗܘܢ. ܡܢܘ ܗܘ ܦܪܟܐ ܕܐܢܬܘܢ
ܠܗܠܟܝܢ. ܘܐܬܩܪܝ ܫܡܗ ܦܪܟܐ. ܥܕܡܐ ܠܝܘܡܢܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܡ
ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܐܢ ܒܐܘܪܚܐ ܕܐܒܗܝܟܘܢ ܡܬܛܢܦܝܢ
ܐܢܬܘܢ. ܘܒܬܪ ܦܬܟܪܝܗܘܢ ܛܥܝܢ ܐܢܬܘܢ. * ܘܡܩܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܘܗܒܬܟܘܢ.
ܘܡܥܒܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܢܝܟܘܢ ܒܢܘܪܐ. ܘܡܬܛܢܦܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܦܬܟܪܝܟܘܢ ܥܕܡ
ܠܝܘܡܢܐ. ܘܫܐܠܝܢ ܠܝ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܐ
ܐܬܠ ܠܟܘܢ ܦܬܓܡܐ. * ܘܗܝ ܕܣܠܩܐ ܥܠ ܪܥܝܢܟܘܢ. ܠܐ ܬܗܘܐ. ܕܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܢܗܘܐ ܐܝܟ ܥܡܡܐ
ܘܐܝܟ ܫܪܒܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܦܠܘܚ ܠܩܝܣܐ ܘܠܟܐܦܐ. * ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܕܒܐ
ܐܝܕܐ ܥܫܝܢܬܐ ܘܒܕܪܥܐ ܪܡܐ: ܘܒܪܘܓܙܐ ܐܫܝܕܐ ܐܡܠܟ ܥܠܝܟܘܢ. * ܘܐܦܩܟܘܢ ܡܢ ܥܡܡ
ܘܐܟܢܫܟܘܢ ܡܢ ܐܬܪܘܬܐ ܕܐܬܒܕܪܬܘܢ ܒܗܝܢ. ܒܐܝܕܐ ܥܫܝܢܬܐ ܘܒܕܪܥܐ ܪܡܐ: ܘܒܪܘ
ܓܙܐ ܐܫܝܕܐ. * ܘܐܝܬܝܟܘܢ ܠܡܕܒܪܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܐܬܕܝܢ ܥܡܟܘܢ ܬܡܢ ܐܦܐ ܠܘܩܒܠ ܐܦܐ.

Sed peperci propter nomen meum, ne pollueretur 12
inter gentes coram quibus eduxeram
eos. Attamen ſublatâ manu meâ *juraveram* 23
eis in deſerto, me diſperſurum eos inter gentes,
& ſparſurum eos in regiones; Eò quòd 24
non feciſſent judicia mea, ſpreviſſent mandata
mea, prophanâſſent ſabbatha mea, & idola
patrum ſuorum ſecuti eſſent oculi eorum.
Et ego dedi eis præcepta minimè bona, & 25
judicia per quæ non vivant: Et pollui eos 26
in muneribus eorum, quum offerrent primogenitos:
perdam autem eos, & ſcient me eſſe
Dominum. Iccircò fili hominis, alloquere 27
Iſraelitas, & dic eis; Sic ait Dominus dominorum;
Etiam in hoc blaſphemaverunt corã
me patres veſtri, per ſcelus quod in me perpetraverunt.
Nam cùm perduxiſſem eos ad 28
terram quam ſublatâ manu *juraveram* me daturum
eis, videntes omnem collem excelſum,
& quamlibet arborem umbriferam; ſacrificaverunt
ibi victimas ſuas, ibi obtulerunt munera
ſua, ibi poſuerunt odorem ſuffitûs ſui,
ibíque libaverunt libamina ſua. Et dixi eis; 29
Quid eſt fanum quò convenitis; hinc vocatum
eſt nomen ejus Fanum, ad hunc uſque
diem. Iccircò fili hominis, dic Iſraelitis; Sic 30
ait Dominus dominorum; Quandoquidem in
via patrum veſtrorum vos polluitis, poſt idola
ipſorum aberrantes, Et offerentes munera 31
veſtra, traducentes filios veſtros per ignẽ,
& polluentes vos in idolis veſtris ad hunc
uſque diem; attamen vultis me conſulere O
Iſraelitæ? Per vitam meam, inquit Dominus
dominorum, non dabo vobis reſponſum:
Et id quod in animo habetis, non fiet. Dicitis 32
enim, Erimᵘ ut *reliquæ* gentes, & ut nationes
terræ; & miniſtrabimus lignis atque lapidibus.
Per vitam meam, dicit Dominᵘ dominorum, 33
manu validâ, brachio excelſo, &
iracundiâ effuſâ regnabo ſuper vos; Extrahámque 34
vos è gentibus, & colligam vos è regionibus
in quas diſperſi fueritis; & manu
robuſtâ, brachio ſublimi, atque irâ profuſâ,
Adducam vos in deſertum populorum, ibíque 35
diſceptabo vobiſcum facie coram facie.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فلم اصنع * كيلا يتنجس اسمي الذي هو افضل من كل شي * قدام الامم الذين
اخرجتهم لعيونهم * ورفعت يدي عليهم في البرية * لافرقهم في الامم * وابددهم في الكور * من
اجل انهم لم يصنعوا حقوقي * وافصوا اوامري * ونجسوا سبوتي * وخلف فكرات اباءهم كانت
اعينهم * وانا اعطيتهم اوامر ليست حسنة * وحقوقا التي بها لا يعيشون * فانجسهم بعطاياهم
فنجسوها باراءهم * حين عبوري بكل فاتح رحم * كي ابيدهم * ليعلموا اني انا الرب * لاجل
هذا تكلم مع بيت اسرايل يا ابن الانسان * وتقول لهم * هكذا يقول ادوناي الرب * هلم جدا
اغضبني اباوكم بزلاتهم التي سقطوا بها الي * وادخلتهم الي الارض التي رفعت يدي عليها
لاعطيها لهم * وراوا كل تل عال وكل شجر ظليلة * وذبحوا هناك لالهتهم * وربوا هناك
رايحة بخورهم * وافاضوا هناك قواريرهم * وقلت لهم * ما هي ابانا * لانكم انتم تدخلون اليها
الي ثم * ودعوا اسمه ابانا الي نهار هذا اليوم * لاجل هذا قل لبيت اسرايل * هكذا يقول الرب
الرب الاله * ان كنتم انتم باثام ابايكم تدنستم * وخلف رذالاتهم انتم زنيتم * وباوايل
عطاياكم * وبتعبير بنيكم بالنار * انتم تتدنسون بجميع فكراتكم الي نهار هذا اليوم * فانا
اجاوبكم يا بيت اسرايل * حي انا يقول الرب لا اجاوبكم * ولا يصعد الي روحكم هذا
ولا يكون كما انتم تقولون * نصير مثل الامم * ومثل قبايل الارض * لنخدم الاخشاب والحجارة
* لاجل هذا حي انا يقول ادوناي الرب * انني بيد عزيزة * وبذراع رفيعة * وبغضب فايض
املك عليكم * واخرجكم من الشعوب * واقبلكم من البلدان حيث تفرقتم فيها * بيد
عزيزة * وبذراع رفيعة * وبغضب فايض * واسوقكم الي برية الشعوب * واحاكمكم معكم
هناك وجها لوجه *

Verùm non feci, ut non pollueretur nomen 22
meum quod præſtantiſſimum eſt omnium
rerum, coram gentibus ante quarum
oculos eduxeram illos. Rurſum levavi 23
manum meam ſuper illos in deſerto, ut
diſperderem eos inter gentes, & diſſiparem
eos in regiones; Eò quòd non perfeciſſent 24
ſtatuta mea, ſed repuliſſent mandata
mea, violâſſent ſabbatha mea, &
poſt cogitationes patrum ſuorum fuiſſent
oculi eorum. Et ego dedi eis mandata 25
non bona, & ſtatuta per quæ non viverent.
Et polluam eos in muneribus ſuis 26
(polluerunt enim ea dogmatibus ſuis)
quum traduxero omne aperiens vulvam,
ut perdam eos; quatenus agnoſcant me
eſſe Dominum. Propterea alloquere domum 27
Iſraelis O fili hominis, & dicas
eis; Ita dicit Adonai Dominus; Agedum
graviſſimè irritârunt me patres veſtri
culpis ſuis in quas contra me lapſi
ſunt. Cùm enim introduxiſſem eos in terram, 28
pro qua levaveram manum meam
me daturum eis; videntes omnem collem
ſublimem & omnem arborem umbriferam,
ſacrificaverunt ibi diis ſuis, diſpoſuerunt
ibi ſui thuris odorem, & effuderunt
ibi alabaſtra ſua. Et dixi eis, 29
Quid eſt Abbana, quòd vos illuc ingredimini?
tamen vocaverunt nomen ejus
Abbana, uſque in hodiernum diem.
Propterea dic domui Iſraelis; Ita dicit 30
Dominus, Dominus Deus; Quandoquidem
vos iniquitatibus patrum veſtrorum
contaminâſtis vos, & poſt abominationes
eorum fornicati eſtis, Necnon in 31
primitiis donorum veſtrorum, & ſegregatione
filiorum veſtrorum in igne, vos
polluimini in cunctis cogitationibus veſtris
ad hodiernum uſque diem; egóne
reſponderem vobis O domus Iſraelis?
Vivo ego, dicit Dominus, haudquaquam
reſpondebo vobis. Et ne veniat hoc vobis 32
in mentem; non enim erit quemadmodum
dicitis, Fiemus ut gentes & ut
nationes terræ, ſervientes lignis atque
lapidibus. Propterea vivo ego, inquit 33
Adonai Dominus, manu potenti, brachio
elato, & irâ inundante regnabo ſuper vos;
Et educam vos è gentibus, et recipiam 34
vos è regionibus in quas diſperſi eſtis, manu
validâ, brachio elato, et irâ inundante:
Abigamque vos in deſertum gentium, 35
et litem inſtituam ibi vobiſcum facie
ad faciem.

יחזקאל : כ

ſic : Ægypti terræ deſerto in veſtris patribus cum me judicavi Sicut
36 כַּאֲשֶׁר נִשְׁפַּטְתִּי אֶת־אֲבוֹתֵיכֶם בְּמִדְבַּר אֶרֶץ מִצְרַיִם כֵּן
vos faciam tranſire Et .Deus Dominus dixit ,vobiſcum me judicabo
37 אִשָּׁפֵט אִתְּכֶם נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה׃ וְהַעֲבַרְתִּי אֶתְכֶם
refugibo Et .fœderis vinculo in vos adducam & : virga ſub
38 תַּחַת הַשָּׁבֶט וְהֵבֵאתִי אֶתְכֶם בְּמָסֹרֶת הַבְּרִית׃ וּבָרוֹתִי
ſuarum peregrinationum terra è ,me in prævaricantes & ,rebelles vobis ex
מִכֶּם הַמֹּרְדִים וְהַפּוֹשְׁעִים בִּי מֵאֶרֶץ מְגוּרֵיהֶם
quòd ſcietis & *: veniet* non Iſrael *humum* ad & ,eos educam
אוֹצִיא אוֹתָם וְאֶל־אַדְמַת יִשְׂרָאֵל לֹא יָבוֹא וִידַעְתֶּם כִּי־
: Deus Dominus dixit ſic ,Iſrael domus vos Et .Dominus *ego*
39 אֲנִי יְהוָה׃ וְאַתֶּם בֵּית־יִשְׂרָאֵל כֹּה־אָמַר ׀ אֲדֹנָי יֱהוִה
: me ad audientes vos non ſi poſt & ,ſervite ,ambulate ſua idola *Vir*
אִישׁ גִּלּוּלָיו לְכוּ עֲבֹדוּ וְאַחַר אִם־אֵינְכֶם שֹׁמְעִים אֵלָי
,veſtris *donis* in adhuc polluetis non *meæ ſanctitatis* nomen &
וְאֶת־שֵׁם קָדְשִׁי לֹא תְחַלְּלוּ־עוֹד בְּמַתְּנוֹתֵיכֶם
altitudinis monte in ,*meæ ſanctitatis* monte in Quia .veſtris idolis in &
40 וּבְגִלּוּלֵיכֶם׃ כִּי בְהַר־קָדְשִׁי בְּהַר ׀ מְרוֹם
,Iſrael domus omnis ,mihi ſervient ibi ,Deus Dominus dixit ,Iſrael
יִשְׂרָאֵל נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה שָׁם יַעַבְדֻנִי כָּל־בֵּית יִשְׂרָאֵל
,veſtras oblationes quæram ibi & ,eos volam ibi :terra in ipſa tota
כֻּלֹּה בָּאָרֶץ שָׁם אֶרְצֵם וְשָׁם אֶדְרוֹשׁ אֶת־תְּרוּמֹתֵיכֶם
.veſtris ſanctificationibus omnibus in *veſtrarum elevationum initium* &
וְאֶת־רֵאשִׁית מַשְׂאוֹתֵיכֶם בְּכָל־קָדְשֵׁיכֶם׃
,populis de vos *me educendo in* ,vos volam quietis odorem In
41 בְּרֵיחַ נִיחֹחַ אֶרְצֶה אֶתְכֶם בְּהוֹצִיאִי אֶתְכֶם מִן־הָעַמִּים
: eas in eſtis diſperſi quas ,terris de vos congregavero &
וְקִבַּצְתִּי אֶתְכֶם מִן־הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר נְפֹצֹתֶם בָּם
,Dominus *ego* quòd ſcietis Et .gentiũ oculis in vobis in me ſanctificabo &
42 וְנִקְדַּשְׁתִּי בָכֶם לְעֵינֵי הַגּוֹיִם׃ וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה
qua terram in ,Iſrael humum in vos *me inducendo in*
בַּהֲבִיאִי אֶתְכֶם אֶל־אַדְמַת יִשְׂרָאֵל אֶל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר
recordabimini Et .veſtris patribus eam *dandum ad* ,meã manũ levavi
43 נָשָׂאתִי אֶת־יָדִי לָתֵת אוֹתָהּ לַאֲבוֹתֵיכֶם׃ וּזְכַרְתֶּם־
vos polluiſtis quibus veſtrorũ operum omnium & ,veſtrarũ viarum ibi
שָׁם אֶת־דַּרְכֵיכֶם וְאֵת כָּל־עֲלִילוֹתֵיכֶם אֲשֶׁר נִטְמֵאתֶם
.feciſtis quæ veſtra mala omnia ob ,*veſtris faciebꝰ in vos faſtidietis & : eis in*
בָּם וּנְקֹטֹתֶם בִּפְנֵיכֶם בְּכָל־רָעוֹתֵיכֶם אֲשֶׁר עֲשִׂיתֶם׃
propter vobiſcum *me faciendo in* ,Dominus *ego* quòd ſcietis Et
44 וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה בַּעֲשׂוֹתִי אִתְּכֶם לְמַעַן
veſtra *ſtudia* ſecundùm & ,malas veſtras vias ſecundùm non ,meum nomen
שְׁמִי לֹא כְדַרְכֵיכֶם הָרָעִים וְכַעֲלִילוֹתֵיכֶם
verbum fuit Et .Deus Dominus dixit ,Iſrael domus corrupta
45 הַנִּשְׁחָתוֹת בֵּית יִשְׂרָאֵל נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה׃ וַיְהִי דְבַר־
,auſtrum ad viam *tuas facies* pone ,hominis Fili : dicendo me ad Domini
46 יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם שִׂים פָּנֶיךָ דֶּרֶךְ תֵּימָנָה
dices Et *.meridiei* agri ſylvam ad propheta & ,*auſtrum* ad ſtilla &
47 וְהַטֵּף אֶל־דָּרוֹם וְהִנָּבֵא אֶל־יַעַר הַשָּׂדֶה נֶגֶב׃ וְאָמַרְתָּ
: Deus Dominus dixit Sic : Domini verbum Audi ,*meridiei* ſylvæ
לְיַעַר הַנֶּגֶב שְׁמַע דְּבַר־יְהוָה כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה
,viride lignum omne te in *comedet* & ,ignem te in *ſuccendens* ego Ecce
הִנְנִי מַצִּית־בְּךָ ׀ אֵשׁ וְאָכְלָה בְךָ כָל־עֵץ־לַח
comburentur & ,*flammæ* flamma extinguetur non aridũ lignum omne &
וְכָל־עֵץ יָבֵשׁ לֹא־תִכְבֶּה לַהֶבֶת שַׁלְהֶבֶת וְנִצְרְבוּ־
quòd ,caro omnis *videbunt* Et .aquilonem ad *meridie à* facies omnes ea in
48 בָהּ כָּל־פָּנִים מִנֶּגֶב צָפוֹנָה׃ וְרָאוּ כָּל־בָּשָׂר כִּי
Domine Ahah : dixi Et .extinguetur nec ; eam ſuccendi Dominus ego
49 אֲנִי יְהוָה בִּעַרְתִּיהָ לֹא תִּכְבֶּה׃ וָאֹמַר אֲהָהּ אֲדֹנָי
? iſte parabolas *parabolizans* Nonne : mihi *dicentes* Ipſi : Deus
יֱהוִה הֵמָּה אֹמְרִים לִי הֲלֹא מְמַשֵּׁל מְשָׁלִים הוּא׃

Verſio VULG. LAT.

36 Sicut judicio contendi adverſùm patres veſtros in deſerto terræ Ægypti, ſic judicabo vos, dicit 37 Dominꝰ Deus. Et ſubjiciam vos ſceptro meo, & inducam vos in 38 vinculis fœderis. Et eligam de vobis tranſgreſſores, & impios, & de terra incolatꝰ eorum educam eos, & in terram Iſrael non ingredientur : & ſcietis quia 39 ego Dominꝰ. Et vos, domus Iſrael, Hæc dicit Dominꝰ Deus, Singuli poſt idola veſtra ambulate, et ſervite eis. Quòd ſi & in hoc non audieritis me, & nomen meum ſanctum pollueritis ultrà in muneribꝰ veſtris & in idolis veſtris: 40 In monte ſancto meo, in monte excelſo Iſrael, ait Dominꝰ Deus, ibi ſerviet mihi omnis domus Iſrael; omnes, inquam, in terra, in qua placebunt mihi, & ibi quæram primitias veſtras, & initium decimarum veſtrarum in omnibꝰ 41 ſanctificationibꝰ veſtris. In odorem ſuavitatis ſuſcipiam vos, cùm eduxero vos de populis, & congregavero vos de terris in quas diſperſi eſtis, & ſanctificabor in vobis in oculis nationum. 42 Et ſcietis quia ego Dominꝰ, cùm induxero vos ad terram Iſrael, in terram, pro qua levavi manum meam, ut darem eam patribꝰ ve- 43 ſtris. Et recordabimini ibi viarum veſtrarum, & omnium ſcelerum veſtrorum, quibꝰ polluti eſtis in eis : & diſplicebitis vobis in conſpectu veſtro in omnibꝰ 44 malitiis veſtris, quas feciſtis. Et ſcietis quia ego Dominꝰ, cùm benefecero vobis propter nomen meum, & non ſecundùm vias veſtras malas, neque ſecundùm ſcelera veſtra peſſima, domus Iſrael, 45 ait Dominꝰ Deus. Et factꝰ eſt ſermo Domini ad me, dicens ; 46 Fili hominis, pone faciem tuam contra viam Auſtri, & ſtilla ad Africum, & propheta ad ſaltum 47 agri Meridiani. Et dices ſaltui Meridiano ; Audi verbum Domini : hæc dicit Dominꝰ Deus ; Ecce ego ſuccendam in te ignem, & comburam in te omne lignum viride, & omne lignum aridum: non extinguetur flamma ſuccenſionis : & comburetur in ea omnis facies ab Auſtro uſque ad 48 Aquilonem. Et videbit univerſa caro, quia ego Dominꝰ ſuc- 49 cendi eam, nec extinguetur. Et dixi ; A, a, a, Domine Deus : ipſi dicunt de me ; Numquid non per parabolas loquitur iſte ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

36 Ὃν τρόπον διεκρίθην πρὸς τοὺς πατέρας ὑμῶν ἐν τῇ (ο) ἐρήμῳ γῆς Αἰγύπτου, οὕτως 37 κρινῶ ὑμᾶς, λέγει κύριος. Καὶ διάξω ὑμᾶς ὑπὸ τὴν ῥάβδον μου, καὶ εἰσάξω ὑμᾶς ἐν ἀριθ- 38 μῷ, Καὶ ἐκλέξω ἐξ ὑμῶν τοὺς ἀσεβεῖς καὶ τοὺς ἀφεστηκότας, διότι ἐκ τῆς παροικεσίας αὐτῶν (π) ἐξάξω αὐτοὺς, καὶ εἰς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ οὐκ εἰσελεύσονται· καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ 39 (ρ) κύριος κύριος. Καὶ ὑμεῖς οἶκος Ἰσραὴλ, τάδε λέγει κύριος κύριος, Ἕκαστος τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτοῦ ἐξάρατε, καὶ μετὰ ταῦτα (σ) εἰ ὑμεῖς εἰσακούετέ μου, καὶ τὸ ὄνομά μου τὸ ἅγιον οὐ βεβηλώσετε οὐκέτι ἐν τοῖς δώροις ὑμῶν καὶ ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν ὑμῶν· 40 Διότι ἐπὶ τοῦ ὄρους τοῦ ἁγίου μου, ἐπ᾽ ὄρους (τ) ὑψηλοῦ, λέγει κύριος κύριος, ἐκεῖ δουλεύσουσί μοι πᾶς οἶκος (υ) Ἰσραὴλ εἰς τέλος· καὶ ἐκεῖ προσδέξομαι, καὶ ἐκεῖ ἐπισκέψομαι τὰς ἀπαρχὰς ὑμῶν, καὶ τὰς ἀπαρχὰς τῶν ἀφορισμῶν ὑμῶν, ἐν πᾶσι τοῖς ἁγιάσμασιν ὑμῶν. 41 Ἐν ὀσμῇ εὐωδίας προσδέξομαι ὑμᾶς, ἐν τῷ (φ) ἐξαγαγεῖν με ὑμᾶς ἐκ τῶν λαῶν, καὶ (χ) εἰσδέχεσθαι ὑμᾶς ἐκ τῶν χωρῶν (ψ) ἐν αἷς διεσκορπίσθητε ἐν αὐταῖς, καὶ ἁγιασθήσομαι 42 ἐν ὑμῖν κατ᾽ ὀφθαλμοὺς τῶν λαῶν. Καὶ ἐπιγνώσεσθε (ω) διότι ἐγὼ κύριος, ἐν τῷ εἰσαγαγεῖν με ὑμᾶς εἰς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ, εἰς τὴν γῆν εἰς ἣν ἦρα τὴν χεῖρά μου τοῦ δοῦναι (α) 43 αὐτὴν τοῖς πατράσιν ὑμῶν. Καὶ μνησθήσεσθε ἐκεῖ τὰς ὁδοὺς ὑμῶν, καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν ἐν οἷς ἐμιαίνεσθε ἐν αὐτοῖς, καὶ κόψεσθε τὰ πρόσωπα ὑμῶν ἐν πάσαις ταῖς κακίαις 44 ὑμῶν. Καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος, ἐν τῷ ποιῆσαί με οὕτως ὑμῖν, ὅπως τὸ ὄνομά μου μὴ βεβηλωθῇ κατὰ τὰς ὁδοὺς ὑμῶν τὰς κακὰς, καὶ κατὰ τὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν 45 τὰ διεφθαρμένα, (β) λέγει κύριος. Καὶ 46 ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ Θαιμὰν, καὶ ἐπίβλεψον ἐπὶ (γ) Δαρὼμ, καὶ προφή- 47 τευσον ἐπὶ δρυμὸν ἡγούμενον Ναγὲβ, Καὶ ἐρεῖς τῷ δρυμῷ Ναγὲβ, Ἄκουε λόγον κυρίου· τάδε λέγει (δ) κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀνάπτω ἐν σοὶ πῦρ, καὶ καταφάγεται ἐν σοὶ πᾶν ξύλον χλωρὸν καὶ πᾶν ξύλον ξηρὸν, οὐ σβεσθήσεται ἡ φλὸξ ἡ ἐξαφθεῖσα, καὶ κατακαυθήσεται ἐν αὐτῇ πᾶν πρόσωπον ἀπὸ ἀπηλιώτου ἕως 48 Βορρᾶ. Καὶ ἐπιγνώσεται πᾶσα σὰρξ, ὅτι ἐγὼ 49 κύριος ἐξέκαυσα αὐτὸ, (ε) οὐ σβεσθήσεται. Καὶ εἶπα, Μηδαμῶς κύριε κύριε· αὐτοὶ λέγουσι πρὸς μὲ, Οὐχὶ παραβολή ἐστι λεγομένη αὕτη ;

Sicut judicio contendi adverſùs patres veſtros in deſerto terræ Ægypti: ſic judicabo vos, dicit Dominus. 36 *Et tranſire faciam vos ſub virga mea, & introducam vos in (t) numero: Et eligam e vobis impios, & rebelles: quoniam de terra incolatus eorum educam eos: & in terram Iſrael non ingredientur. Et ſcietis quia ego Dominus Dominus.* 37 *Et vos domus Iſrael, hæc dicit Dominus Dominus; Unuſquiſque adinventiones ſuas auferte; & poſt hæc, ſi vos exaudieritis me, & nomen ſanctum meum non polluetis ultrà in muneribꝰ veſtris, & in ſtudiis veſtris.* 38 *Quia ſuper montem ſanctum meum, ſuper montem excelſum, ait Dominus Dominus, ibi ſervient mihi omnis domus Iſrael in finem. Et ibi ſuſcipiam, & ibi requirã primitias veſtras, et primitias ſegregationũ veſtrarum in omnibꝰ ſanctificationibꝰ veſtris.* 39 40 *In odore ſuavitatis ſuſcipiam vos; cũ eduxero ego vos de populis, & ſuſcepero vos de regionibus, in quas diſperſi eſtis in eas: & ſanctificabor in vobis ante oculos populorum.* 41 *Et ſcietis, quia ego Dominus, in introducendo me vos in terram Iſrael, in terram, in quam levavi manum meam ad dandum eam patribus veſtris.* 42 *Et recordabimini ibi viarum veſtrarum, & adinventionum veſtrarum, in quibus polluti eſtis in iis: & (u) excutietis facies veſtras in omnibus malitiis veſtris.* 43 *Et ſcietis, quia ego Dominus, in faciendo me vobis ſic; ut nomen meum non polluatur ſecundùm vias veſtras malas & ſecundùm adinventiones veſtras corruptas, ait Dominus.* 44 *Et factus eſt ſermo Domini ad me, dicens; Fili hominis, confirma faciem tuã ſuper Theman, & reſpice ſuper Darom, & vaticinare ſuper ſaltum ducem (x) Nageb, Et dices ſaltui Nageb, Audi ſermonem Domini: Hæc dicit Dominus; Ecce ego ſuccendo in te ignẽ, & devorabit in te omne lignum viride, & omne lignum aridũ. Non extinguetur flamma ſuccenſa: & ardebit in ea omnis facies à Subſolano uſque ad Aquilonem.* 45 46 47 *Et cognoſcet omnis caro, quia ego Dominus ſuccendi illum: non extinguetur.* 48 *Et dixi; Nequaquàm, Domine Domine: ipſi dicunt ad me; Nonne parabola eſt, quæ dicitur hæc?* 49

MS.A. (ο) ἐρήμῳ, ὅτε ἐξήγαγον αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, κἀγὼ κρινῶ ὑμᾶς, λέγει κύριος ὁ θεός. Καὶ (π) ἐξαρῶ (ρ) κύριος ὁ θεός. Καὶ ὑμεῖς (σ) εἰ μὴ ὑμεῖς εἰσακούεται, καὶ τὸ (τ) ὑψηλοῦ, ἐκεῖ δουλεύσουσίν (υ) Ἰσραὴλ, λέγει κύριος κύριος, εἰς τέλος· (φ) ἐξάγειν (χ) εἰσδέξομαι (ψ) οὗ διεσκορπίσθητε (ω) ὅτι (α) αὐτὴν αὐτοῖς. Καὶ (β) λέγει ἀδωναῒ κύριος. (γ) δαρὼν, (δ) κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀνάπτω πῦρ, καὶ (ε) καὶ οὐ σβεσθήσεται ἔτι.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

36 כמא דאתפרעית מן אבהתכון במדברא ארעא דמצרים כן אתפרע מנכון אמר יי
37 אלהים : ואניח עליכון גזירת דיני ואעיל יתכון במסורת קימא : ואפריש מנכון די 38
מרדו ודי שקרו במימרי מארעא תותבותהון אפיק יתהון ולארעא דישראל לא יעלון
39 ותידעון ארי אנא יי : ואתון בית ישראל כדנן אמר יי אלהים גבר פולחן טעותיה
אזילו פלחו ובתר דתבתון ליתיכון צבן לקבלא למימרי וית שמא דקודשי לא תחלון
40 עוד במתנתכון ובטעותכון : ארי בטור קודשי בטור קודשא דישראל אמר יי אלהים
תמן יפלחון קדמי כל בית ישראל כולהון בארעא חייא תמן יתקבל קורבניהון
41 בפריע ותמן אתבעי ית אפרשותכון וית ריש אצותכון בכל קודשיכון : קורבן לרעוא
יתקבל קורבנכון בפריע כד אפיק יתכון מביני עממיא ואכניש יתכון מן מדינתא
42 דאתבדרתון בהן ואתקדש בכון לעיני עממיא : ותדעון ארי אנא יי כד אעיל יתכון
43 לארעא דישראל לארעא די קימית במימרי למתן יתה לאבהתכון : ותדכרון תמן
ית אורחתכון וית כל עובדיכון דאסתאבתון בהון ותדנקון ותהון חזן בכל בישתכון
44 דעבדתון : ותידעון ארי אנא יי כד אעביד עמכון בדיל שמי לא כאורחתכון בישתא
45 וכעובדיכון מחבליא בית ישראל אמר יי אלהים : והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי
46 למימר : בר אדם קבל נבואה לאורח דרומא ואליף על דרומא ואתנבי על
47 חורשא דחקל דרומא : ותימר לחורשא דדרומא קביל פתגמא דיי כדנן אמר יי
אלהים הא אנא מדליק בך אשתא ותקטיל בך כל אילן רטיב וכל אילן יביש לא
48 תטפי לשלהוביתא דמשיציא ויתרשמון בה כל אפיא מדרום לצפונא : ויחזון כל בני
49 בסרא ארי אנא יי אדלקתה לא תטפי : ואמרית קביל בעותי יי אלהים הא אנון אמרין
לי הלא ממתיל מתלין הוא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sicut vindictam ſumpſi de patribus veſtris in deſerto terræ Ægypti, ſic vindictam ſumã ex vobis, dicit Dominus Deus. 36 Et ponam in vobis decretum judiciorum meorum, et inducã vos in vinculo fœderis. 37 Et ſeparabo ex vobis eos qui prævaricati ſunt, & tranſgreſſi ſunt verbum meum; 38 de terra habitationis eorum educam eos, & in terram Iſrael non ingredientur: & ſcietis quia ego Dominꝰ. Et vos domꝰ Iſrael, hæc dicit Dominꝰ Deꝰ : Quiſque cultum idolorum ſuorum ite colite : et poſtquam converſi eſtis, non vultis obedire verbo meo. 39 Et nomen ſanctum meum ne violetis ampliùs in muneribꝰ veſtris, & in idolis veſtris. Quia in monte ſancto meo, in monte ſancto Iſrael, dicit Dominꝰ Deꝰ, ibi ſerviet coram me omnis domꝰ Iſrael univerſa in terra vivorum; ibi ſuſcipietur oblatio eorum citò. 40 Et ibi quæram primitias veſtras & initium ciborum veſtrorum, in omnibꝰ ſanctificationibꝰ veſtris. *Oblatio* voluntariè ſuſcipietur oblatio veſtra citò, cùm eduxero vos de medio populorum, & congregavero vos de provinciis in quibꝰ diſperſi eſtis; & ſanctificabor in vobis in oculis populorum. 41 Et ſcietis quia ego Dominꝰ: cùm introduxero vos in terram Iſrael, in terram quam juravi in verbo meo me daturum patribꝰ veſtris. 42 Et recordabimini ibi viarum veſtrarum & omnium operum veſtrorum in quibꝰ polluti eſtis, & gemetis : idque ſpectantes omnia mala quæ feciſtis. 43 Et ſcietis quia ego Dominus, cùm fecero vobiſcum propter nomen meum, non ſecundùm vias veſtras malas, nec ſecundùm opera veſtra corrupta domꝰ Iſrael, dicit Dominꝰ Deꝰ. 44 Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me dicens : 45 Fili hominis, ſuſcipe prophetiam ad viam Auſtri, & doce ad Auſtrum, & vaticinare ſuper ſylvam agri meridiani. 46 Et dices ſaltui meridiano : ſuſcipe verbum Domini; Hæc dicit Dominꝰ Deꝰ : Ecce ego ſuccendam in te ignem, & comburet in te omnem arborem viridem & omnem arborem aridam ; neque extinguetur flamma conſumens, & ſigna combuſtionis erunt in ea omni faciei ab Auſtro uſque ad Aquilonem. 47 Et videbunt univerſi filii carnis quia ego Dominus ſuccendi eam, non extinguetur. 48 Et dixi : Suſcipe deprecationem meam Domine Deus. Ecce ipſi dicunt mihi: Nonne aſſumens parabolam iſte eſt ? 49

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܝܟ ܕܕܢܬ ܥܡ ܐܒܗܝܟܘܢ ܒܡܕܒܪܐ ܕܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܗܟܢܐ ܐܕܘܢ ܥܡܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܘܐܥܒܪܟܘܢ ܬܚܝܬ ܫܒܛܐ. ܘܐܥܠܟܘܢ ܒܡܪܕܘܬܐ ܕܕܝܬܩܐ. * ܘܐܓܒܐ ܡܢܟܘܢ
ܐܢܫܝܢ ܕܡܪܕܝܢ ܘܡܥܘܠܝܢ ܒܝ. ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܬܘܬܒܘܬܗܘܢ ܐܦܩ ܐܢܘܢ. ܘܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܠܐ
ܢܥܠܘܢ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܐܢܬܘܢ ܕܝܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.
ܐܢ ܠܐ ܫܡܥܝܬܘܢ ܠܝ. ܙܠܘ ܦܠܘܚܘ ܐܢܫ ܠܦܬܟܪܘܗܝ. ܘܬܘܒ ܠܐ ܬܛܢܦܘܢ ܫܡܐ
ܕܩܘܕܫܝ. ܒܩܘܪܒܢܝܟܘܢ ܘܒܦܬܟܪܝܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܒܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ ܒܛܘܪܐ ܪܡܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܬܡܢ ܢܦܠܚܘܢܢܝ ܟܠܗܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܒܫܠܡܘܬܐ.
ܬܡܢ ܐܬܪܥܐ ܒܗܘܢ. ܘܬܡܢ ܐܣܥܘܪ ܪܝܫܝܬܗܘܢ. ܘܪܝܫ ܥܠܠܬܗܘܢ. ܘܪܝܫ ܩܘܪܒܢܝܗܘܢ
ܒܟܠܗܘܢ ܩܘܕܫܝܗܘܢ. * ܒܪܝܚܐ ܒܣܝܡܐ ܐܩܒܠܟܘܢ. ܡܐ ܕܐܦܩܬܟܘܢ ܡܢ ܥܡ̈ܡܐ.
ܘܟܢܫܬܟܘܢ ܡܢ ܡܕܝܢ̈ܬܐ ܕܐܬܒܕܪܬܘܢ ܒܗܝܢ. ܘܐܬܩܕܫ ܒܟܘܢ ܠܥܝܢܝ ܥܡ̈ܡܐ. * ܘܬܕܥܘܢ
ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܡܐ ܕܐܥܠܬܟܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܐܪܥܐ ܕܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܠܡܬܠܗ ܠܐܒܗܝܟܘܢ.
* ܘܬܬܕܟܪܘܢ ܬܡܢ ܐܘܪ̈ܚܬܟܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܨܒܝܢܝܟܘܢ ܕܐܬܛܢܦܬܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܬܬܟܡܪܘܢ
ܐܦܝܟܘܢ ܒܟܠܗܘܢ ܒܝܫܬܐ ܕܥܒܕܬܘܢ. * ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܕܚܣܬ ܥܠܝܟܘܢ ܡܛܠ
ܫܡܝ. ܘܠܐ ܐܝܟ ܐܘܪ̈ܚܬܟܘܢ ܒܝ̈ܫܬܐ. ܘܠܐ ܐܝܟ ܨܒܝܢܝܟܘܢ ܣܟܠܐ ܥܒܕܬ ܥܡܟܘܢ ܒܝܬ
ܐܝܣܪܝܠ: ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܘܗܘܐ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠܝ ܘܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܣܝܡ
ܐܦܝܟ ܠܐܘܪܚ ܬܝܡܢܐ. ܘܚܘܪ ܒܬܝܡܢܐ. ܘܐܬܢܒܐ ܥܠ ܥܒܐ ܕܒܬܝܡܢܐ. * ܘܐܡܪ ܠܥܒܐ
ܕܒܬܝܡܢܐ. ܫܡܥܝ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܒܟܝ ܢܘܪܐ.
ܘܬܐܟܘܠ ܟܠܗܘܢ ܩܝܣܝܟܝ ܪܛܝܒܐ ܘܝܒܝܫܐ. ܘܠܐ ܬܕܥܟ ܫܠܗܒܝܬܐ ܕܡܬܝܩܕܐ. ܘܢܐܩܕܘܢ
ܒܗ ܟܠܗܘܢ ܐܦܝܢ. ܡܢ ܬܝܡܢܐ ܘܥܕܡܐ ܠܓܪܒܝܐ. * ܘܢܚܙܘܢ ܟܠܗ ܒܣܪ. ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ
ܐܘܩܕܬܗ. ܘܠܐ ܕܥܟܬ. * ܘܐܡܪܬ. ܐܘ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܢܘܢ ܐܡܪܝܢ ܠܝ. ܗܐ ܡܡܬܠ ܡܬܠܐ ܐܢܬ.

Quemadmodum diſceptavi cum patribus ve- 36
ſtris in deſerto terræ Ægypti, ita diſceptabo
vobiſcum, ait Dñs dominorum : Et tranſire 37
faciam vos ſub virgam, inducamque vos ſub
diſciplinam fœderis : Et ſeligens è vobis eos 38
qui rebellant & perverſè agunt in me, è terra
incolatûs eorum educam eos, & in terram Iſ-
raelis non ingredientur : & experiemini me
eſſe Dñm. Vos autem Iſraelitæ (ſic ait Dñs 39
dominorum) niſi acquieſcatis mihi, ite, colite
quiſque idola ſua, & ne polluatis ampliùs nomen
ſanctitatis meæ muneribus veſtris et idolis
veſtris. Nam in monte ſanctitatis meæ, in 40
montibus excelſis Iſraelis, ait Dominus
dominorum, illic omnes Iſraelitæ perfectè
me colent, ibi delectabor eis, & ibi viſitabo
primitias eorum, & primas fruges,
primaſque oblationes eorum in omnibus ſacris
eorum. Odore ſuavi accipiam vos, quum 41
vos eduxero è gentibus, & collegero ex urbibus
in quas diſperſi fueritis, & ſanctificatus
fuero in vobis corã gentibus. Et experiemini 42
me eſſe Dñm, quum introduxero vos in terram
Iſraelis, in terrã quam ſublatã manu meã
juraveram me daturum patribus veſtris. Ibique 43
recordabimini viarũ veſtrarum & omniũ
ſtudiorum veſtrorum quibus vos ipſos polluiſtis,
& rugabuntur facies veſtræ propter tot
ſcelera quæ perpetrâſtis. Et cognoſcetis me 44
eſſe Dominum qui peperci vobis propter nomen
meum, & non ſecundùm vias veſtras pravas,
neque ſecundùm ſtudia veſtra ſtulta egi
vobiſcum Iſraelitæ, ait Dominus dominorum.
Et fuit ad me ſermo Domini, dicendo; Fili 45 46
hominis, verte faciem tuam verſùs Auſtrum,
reſpice ad Auſtrum, & prophetato de ſylva
quæ eſt in Auſtro, Et dic ad ſylvam quæ eſt in 47
Auſtro; Audi ſermonem Domini : Sic ait Dominus
dominorum; Ecce ego dimiſſurus ſum
in te ignem, & abſumet omnia ligna tua tam
virentia quàm ſicca : non extinguetur flamma
quæ accendetur, ſed eâ comburentur omnes
facies ab Auſtro ad Aquilonem uſque : Et 48
videbunt omnes carnei, me Dominum accendiſſe
illam, ideoque non extingui. Me autem 49
dicente, O Domine dominorum, ecce iſti dicunt
mihi, Parabolarum effector es tu.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* كما تحاكمت مع ابائكم في البرية * لما اخرجتهم من ارض مصر * هكذا اُدينكم يقول
الرب الرب الاله * واجوز بكم تحت عصاي * وادخلكم في العدد * واختار منكم المنافقين
والمتباعدين من اجل اني من جلوتهم اروعهم * والى ارض اسرايل لا يدخلون * وتعلمون
اني انا الرب الاله * وانتم يا بيت اسرايل * هكذا يقول الرب الرب * كل واحد ليبدع اعماله
وبعد هذا حقا انتم تسمعون لي * ولا تدنسون اسمي المقدس منذ الان بهداياكم وباعمالكم
* من اجل ان على جبلي المقدس * على جبل اسرايل المرتفع * يقول الرب الرب * هناك
يتعبد لي كل بيت اسرايل الى الانقضاء * وهناك اقبلهم * وهناك اتعهد اوايلكم واوايل
تعزيركم * في جميع اقداسكم * بعرف طيب اقبلكم * عند ما اخرجكم من الشعوب
واقبلكم من البلدان التي تفرقتم فيها * واتقدس بكم لعيون الشعوب * وتعلمون اني
انا الرب * عند ما ادخلكم الى ارض اسرايل * الى الارض التي رفعت يدي عليها لاعطيها
لابائكم * وتذكرون هناك طرقكم واعمالكم التي تدنستم بها * وتسخطون وجوهكم لجميع
قبائحكم * وتعلمون اني انا الرب * عند ما اصنع هكذا بكم * كيلا يتدنس اسمي
بطرقكم الردية وباعمالكم الفاسدة * يقول ادوناي الرب * الاصحاح الحادي عشر *
* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * ثبت وجهك الى تيمان * وانظر على داغون
وتنبأ على الغاب مقدم ناجاب * وقل لغاب ناجاب * اسمع قول الرب * هكذا يقول الرب الرب
اله اسرايل * ها انا اشعل فيك نارا * فتأكل فيك كل عود اخضر وكل عود يابس * لا
يطفي اللهيب المشتعل * ويحترق فيها كل وجه من المشرق الى الجربياء * ويعلم كل جسد
اني انا الرب احرقته * ولا يطفي ايضا * فقلت حاش يا رب يا رب * هاولاء يقولون لي
ليس هذا المثل هو المقول *

Quemadmodum litem inſtitui cum patri- 36
bus veſtris quando eduxi eos è terra
Ægypti; ita judicabo vos, ait Dominus,
Dominus Deus : Et tranſire faciam vos 37
ſub virgam meam, & introducam vos in
ſupputationem : Et ſeligam è vobis impios 38
& recedentes à me : nam è tranſmigratione
eorum extraham eos, & in terram
Iſraelis non ingredientur : & ſcietis me
eſſe Dominum Deum. Et vos O domus 39
Iſraelis, ita dicit Dominus Dominus,
unuſquiſque abdicet opera ſua, & poſt
hæc verè vos audietis me, & non polluetis
deinceps nomen meum ſacroſanctum
muneribus veſtris & operibus veſtris.
Nam ſuper montem ſanctum meum, ſuper 40
montem Iſraelis altum, dicit Dominus
Dominus, ibi ſerviet mihi tota domus
Iſraelis in finem uſque, ibi ſuſcipiam eos,
ibique viſitabo primitias veſtras & primitias
ſegregationum veſtrarum in quibuſcunque
ſacris veſtris. Odore ſuavi 41
ſuſcipiam vos, quum eduxero vos è gentibus,
& recepero vos è regionibus in
quas diſperſi fueritis : & ſanctificabor in
vobis ob oculos gentium : Et ſcietis me 42
eſſe Dominum, quum introduxero vos
in terram Iſraelis, terram illam pro qua
levavi manum meam, daturum me eam
patribus veſtris. Ibique recordabimini 43
viarum veſtrarum & facinorum veſtrorum
quibus contaminâſtis vos, & dilaniabitis
facies veſtras propter omnes turpitudines
veſtras. Et experiemini me 44
eſſe Dominum, quum ſic fecero vobis; ut
non polluatur nomen meum viis veſtris
pravis, & operibus veſtris corruptis, ait
Adonai Dominus.

Textus undecimus.

Deinde fuit ſermo Domini ad me, dicens; 45
O fili hominis, obfirma faciem tuam ad- 46
verſùs Themanem, reſpice contra Dagonem,
& prophetato de ſaltu præcipuo
Negebis; Et dicas ad ſaltum Nagebis; 47
Audi ſermonem Domini : Sic ait Dominus,
Dominus Deus Iſraelis; En accendam
in te ignem, devorabitque in te
omne lignum viride & omne lignum
aridum; & non extinguetur flamma
accenſa, ſed ipſo igne comburetur omnis
facies, ab Oriente ad Aquilonem : Et 48
cognoſcet omne corpus, quòd ego Dominus
combuſſi eam : & non extinguetur
ampliùs. Et dixi; Abſit O Domine O 49
Domine : iſti dicerent mihi, Hæc parabola
non eſt id quod dictum eſt.

1

יחזקאל : כא

CAP. XXI. כא

tuas facies pone hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et 1
וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם שִׂים פָּנֶיךָ 2
humum ad propheta & : sanctuaria *ad* stilla & ,Jerusalaim ad
אֶל־יְרוּשָׁלַם וְהַטֵּף אֶל־מִקְדָּשִׁים וְהִנָּבֵא אֶל־אַדְמַת
ego Ecce :Dominꝰ dixit Sic : Israel *humo* *dices* Et .Israel
יִשְׂרָאֵל׃ וְאָמַרְתָּ לְאַדְמַת יִשְׂרָאֵל כֹּה אָמַר יְהוָה הִנְנִי 3
te ex faciam succidere & : sua vagina de meũ gladiũ educam & ,te ad
אֵלַיִךְ וְהוֹצֵאתִי חַרְבִּי מִתַּעְרָהּ וְהִכְרַתִּי מִמֵּךְ
: impiũ & ,justum te ex feci succidere quòd eo Pro .impium & ,justum
צַדִּיק וְרָשָׁע׃ יַעַן אֲשֶׁר־הִכְרַתִּי מִמֵּךְ צַדִּיק וְרָשָׁע 4
meridie à carnem omnem ad sua vagina de meus gladius egredietur idcirco
לָכֵן תֵּצֵא חַרְבִּי מִתַּעְרָהּ אֶל־כָּל־בָּשָׂר מִנֶּגֶב
eduxi Dominus ego quòd ,caro omnis *scient* Et .aquilonem ad
צָפוֹן׃ וְיָדְעוּ כָּל־בָּשָׂר כִּי אֲנִי יְהוָה הוֹצֵאתִי 5
,hominis fili tu Et .ultrà revertetur non :sua vagina de meum gladium
חַרְבִּי מִתַּעְרָהּ לֹא תָשׁוּב עוֹד׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם 6
.corũ oculis in *ingemisces* amaritudine in &,lumborũ contritione in *suspira*
הֵאָנַח בְּשִׁבְרוֹן מָתְנַיִם וּבִמְרִירוּת תֵּאָנַח לְעֵינֵיהֶם׃
ad ,dices & ? *suspirans* tu quid propter ,te ad dixerint cùm erit Et
וְהָיָה כִּי־יֹאמְרוּ אֵלֶיךָ עַל־מָה אַתָּה נֶאֱנָח וְאָמַרְתָּ אֶל־ 7
,manus universæ *remittentur* & ,cor omne liquefiet & ,venit quia : auditum
שְׁמוּעָה כִי־בָאָה וְנָמֵס כָּל־לֵב וְרָפוּ כָל־יָדַיִם
Ecce .aquæ ibunt genua omnia & ,spiritus omnis *rugabitur* &
וְכִהֲתָה כָל־רוּחַ וְכָל־בִּרְכַּיִם תֵּלַכְנָה מַיִם הִנֵּה
Domini verbum fuit Et .Deus Dominus dixit ,fiet & ,venit
בָאָה וְנִהְיָתָה נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה 8
: Dominus dixit Sic *: dices* & ,propheta hominis Fili : dicendo,me ad
אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם הִנָּבֵא וְאָמַרְתָּ כֹּה אָמַר יְהוָה 9
jugulandum Ad .extersus etiam & ,est exacutus gladius ,Gladius , Dic
אֱמֹר חֶרֶב חֶרֶב הוּחַדָּה וְגַם־מְרוּטָה׃ לְמַעַן טְבֹחַ 10
Vel .est *tersus* ,*fulgor* ei sit ut ,est exacutus jugulationem
טֶבַח הוּחַדָּה לְמַעַן הֱיֵה־לָהּ בָּרָק מֹרָטָּה אוֹ
eum dedit Et ? lignum omne *spernente mei filii virga* gaudebimus
נָשִׂישׂ שֵׁבֶט בְּנִי מֹאֶסֶת כָּל־עֵץ׃ וַיִּתֵּן אֹתָהּ 11
hic & ,gladius est exacutus hic *: vola* in tenendum ad ,*tergendum* ad
לְמָרְטָה לִתְפֹּשׂ בַּכָּף הִיא־הוּחַדָּה חֶרֶב וְהִיא
fili ulula & ,Clama .interficientis manu in eum dandum ad ,est *tersus*
מֹרָטָּה לָתֵת אוֹתָהּ בְּיַד־הוֹרֵג׃ זְעַק וְהֵילֵל בֶּן־ 12
prælatis cunctis in iste ,meo populo in fuit iste quia ,hominis
אָדָם כִּי־הִיא הָיְתָה בְעַמִּי הִיא בְּכָל־נְשִׂיאֵי
percute idcirco ,meo populo fuerunt *gladium ob* Timores : Israel
יִשְׂרָאֵל מְגוּרֵי אֶל־חֶרֶב הָיוּ אֶת־עַמִּי לָכֵן סְפֹק
spernens tribum etiam si ,quid Et *probatio* Quia .femur *ad*
אֶל־יָרֵךְ׃ כִּי בֹחַן וּמָה אִם־גַּם־שֵׁבֶט מֹאֶסֶת 13
,propheta hominis fili tu Et .Deus Dominus dixit *: fuerit non*
לֹא יִהְיֶה נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ וְאַתָּה בֶן־אָדָם הִנָּבֵא 14
gladius , tertiò gladius duplicetur & *: volam ad volam* percute &
וְהַךְ כַּף אֶל־כָּף וְתִכָּפֵל חֶרֶב שְׁלִישִׁתָה חֶרֶב
.eos ad cubiculis in *penetrans magni occisi* gladius Hic .interfectorũ
חֲלָלִים הִיא חֶרֶב חָלָל הַגָּדוֹל הַחֹדֶרֶת לָהֶם׃
eorum portis omnibus in , offendicula *multiplicare* & ,cor *liquifieri Propter*
לְמַעַן לָמוּג לֵב וְהַרְבֵּה הַמִּכְשֹׁלִים עַל כָּל־שַׁעֲרֵיהֶם 15
.jugulationẽ ad *involutus* ,fulgorẽ ad factus heu : gladii terrorem dedi
נָתַתִּי אִבְחַת־חָרֶב אָח עֲשׂוּיָה לְבָרָק מְעֻטָּה לְטָבַח׃
.paratæ tuæ facies quò *: te sinistra ,pone ,te dextera te Uni*
הִתְאַחֲדִי הֵימִינִי הָשִׂימִי הַשְׂמִילִי אָנָה פָּנַיִךְ מֻעָדוֹת׃ 16

Versio VULG. LAT.

CAP. XXI.

1 ET factus est sermo Domini
2 ad me,dicens; Fili hominis,pone
faciem tuam ad Jerusalem,& stil-
la ad Sanctuaria , & propheta
3 contra humum Israel : Et dices
terræ Israel; Hæc dicit Dñs Deꝰ;
Ecce ego ad te,& ejiciã gladium
meum de vagina sua,& occîdam
4 in te justum & impiũ. Pro eo
auté quòd occîdi in te justum
& impium , idcircò egredietur
gladius meus de vagina sua ad
omnem carnẽ ab Austro usque
5 ad Aquilonem : Ut sciat omnis
caro, quia ego Dñs eduxi gladiũ
meũ de vagina sua irrevocabi-
6 lem. Et tu,fili hominis, inge-
misce in contritione lumborũ,&
in amaritudinibꝰ ingemisce corã
7 eis.Cúmq; dixerint ad te; Qua-
re tu gemis ? dices; Pro auditu :
quia venit,& tabescet omne cor,
et dissolventur universæ manꝰ,&
infirmabitur omnis spiritus, &
per cuncta genua fluent aquæ :
ecce venit, & fiet , ait Dñs Deꝰ.
8 Et factus est sermo Dñi ad me,
9 dicens; Fili hominis,propheta,
& dices; Hæc dicit Dñs Deus;
Loquere ; Gladiꝰ, gladiꝰ exacutꝰ
10 est, & limatus. Ut cædat victi-
mas, exacutus est : ut splendeat,
limatus est : qui moves sceptrum
filii mei, succidisti omne lignum.
11 Et dedi eum ad lævigandũ,ut te-
neatur manu : iste exacutus est
gladius, & iste limatus est, ut sit
12 in manu interficientis. Clama,&
ulula,fili hominis,quia hic factus
est in populo meo,hic in cunctis
ducibus Israel qui fugerant: gla-
dio traditi sunt cũ populo meo,
13 idcircò plaude super femur,Quia
probatus est : & hoc cùm sce-
ptrum subverterit, & non erit,
14 dicit Dñs Deus.Tu ergò, fili ho-
minis,propheta,& percute manu
ad manum, & duplicetur gladi-
us, ac triplicetur gladius inter-
fectorum : hic est gladius occi-
sionis magnæ, qui obstupescere
15 eos facit, Et corde tabescere, &
multiplicat ruinas. In omnibus
portis eorum dedi conturbatio-
nem gladii acuti, & limati ad
fulgendum , amicti ad cædem.
16 Exacuere, vade ad dexteram,sive
ad sinistram , quocunque faciei
tuæ est appetitus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. κα´.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-
2 γων, (α) Διὰ τοῦτο προφήτευσον υἱὲ ἀνθρώ-
που, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ Ἰερουσα-
λὴμ, καὶ ἐπίβλεψον ἐπὶ τὰ ἅγια αὐτῶν, καὶ
3 προφητεύσεις ἐπὶ τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ, Καὶ
ἐρεῖς πρὸς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ, Τάδε λέγει
κύριος (β), Ἰδοὺ ἐγὼ πρὸς σὲ, καὶ ἐκσπά-
σω τὸ ἐγχειρίδιόν μου ἐκ τοῦ κολεοῦ αὐτοῦ, καὶ
(γ) ἐξολοθρεύσω ἐκ σοῦ ἄνομον καὶ ἄδικον·
4 Ἀνθ᾽ ὧν ἐξολοθρεύσω ἐκ σοῦ ἄδικον καὶ ἄ-
νομον, οὕτως ἐξελεύσεται τὸ ἐγχειρίδιόν μου
ἐκ τοῦ κολεοῦ αὐτοῦ ἐπὶ πᾶσαν σάρκα ἀπὸ
5 ἀπηλιώτου ἕως Βοῤῥᾶ, Καὶ ἐπιγνώσεται πᾶσα
σὰρξ, (δ) διότι ἐγὼ κύριος ἐξέσπασα τὸ
ἐγχειρίδιόν μου ἐκ τοῦ κολεοῦ αὐτοῦ, (ε) οὐκ ἀ-
6 ποστρέψει οὐκέτι. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου κατα-
στέναξον ἐν συντριβῇ ὀσφύος σου, καὶ ἐν ὀδύ-
7 ναις στενάξεις κατ᾽ ὀφθαλμοὺς αὐτῶν. Καὶ ἔ-
σται ἐὰν εἴπωσι πρὸς σὲ, Ἕνεκα τίνος σὺ
στενάζεις; καὶ ἐρεῖς, Ἐπὶ τῇ ἀγγελίᾳ, (ζ) διό-
τι ἔρχεται, καὶ θραυσθήσεται πᾶσα καρδία, καὶ
πᾶσαι χεῖρες παραλυθήσονται, καὶ ἐκψύξει
πᾶσα σὰρξ καὶ πᾶν πνεῦμα, καὶ πάντες μη-
ροὶ μολυνθήσονται ὑγρασίᾳ· ἰδοὺ ἔρχεται, (η)
8 λέγει κύριος. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου
9 πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου προφήτευ-
σον, καὶ ἐρεῖς, Τάδε λέγει (θ) κύριος, Εἰ-
πὸν, Ῥομφαία, ῥομφαία ὀξύνου καὶ θυμώθη-
10 τι, Ὅπως σφάξῃς σφάγια, ὀξύνου ὅπως
γένῃ εἰς στίλβωσιν, ἑτοίμη εἰς παράλυσιν·
σφάζε, ἐξουδένει, (ι) ἀπόθου πᾶν ξύλον.
11 Καὶ ἔδωκεν αὐτὴν ἑτοίμην τοῦ κρατεῖν
χεῖρα αὐτοῦ. (ʺ) ἐξηκονήθη ἡ ῥομφαία, ἔστιν
ἑτοίμη, τοῦ (κ) δοῦναι αὐτὴν εἰς χεῖρα ἀπο-
12 κεντοῦντος. Ἀνάκραγε, καὶ ὀλόλυξον υἱὲ ἀν-
θρώπου, ὅτι αὕτη ἐγένετο ἐν τῷ λαῷ μου,
αὕτη ἐν πᾶσι τοῖς ἀφηγουμένοις τοῦ Ἰσρα-
ὴλ· παροικήσουσιν, ἐπὶ ῥομφαίᾳ ἐγένετο ἐν
τῷ λαῷ μου. διὰ τοῦτο κρότησον ἐπὶ τὴν χεῖ-
13 ρά σου, Ὅτι δεδικαίωται. καὶ (λ) τί εἰ καὶ φυ-
λὴ ἀπωσθῇ; οὐκ ἔσται, λέγει κύριος κύριος.
14 Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου προφήτευσον, καὶ κρότη-
σον (μ) χεῖρα ἐπὶ χεῖρα, καὶ διπλασίασον
ῥομφαίαν· ἡ τρίτη ῥομφαία τραυματιῶν ἐστι,
ῥομφαία τραυματιῶν ἡ μεγάλη. καὶ (ν) ἐκστήσει
15 αὐτοὺς, (ξ) Ὅπως μὴ θραυσθῇ ἡ καρδία,
καὶ πληθυνθῶσιν οἱ ἀσθενοῦντες ἐπὶ πᾶσαν πύ-
λην (ο), παραδέδονται εἰς σφάγια ῥομφαί-
ας· εὖ γέγονεν εἰς σφαγὴν, εὖ γέγονεν εἰς
16 στίλβωσιν. (π) Καὶ διαπορεύου, ὀξύνου ἐκ
δεξιῶν καὶ ἐξ εὐωνύμων, οὗ ἂν τὸ πρόσωπόν σου ἐξεγείρηται.

MS.A. (α) Υἱὲ ἀνθρώπου, διὰ τοῦτο προφήτευσον, καὶ στήρισον (β) ὁ θεὸς, (γ) ἐξολεθρεύσω ἐκ σοῦ ἄδικον καὶ ἄνομον, οὕτως (δ) ὅτι (ε) καὶ οὐκ (ζ) ὅτι (η) καὶ ἔσται, λέγει κύριος ὁ θεός. (θ) ἀδωναὶ κύριος, (ι) ἀπώθου (ʺ) ἐξηκονήθη ῥομφαία, (κ) δοθῆναι αὐτὴν εἰς χεῖρας (λ) ἔτι εἰ καὶ φυλὴ ἀπωσθῇ; (μ) τῇ χειρὶ ἐπὶ (ν) ἐκστήσει (ξ) Ὅπως θραυσθήσεται πᾶσα καρδία, (ο) αὐτῶν, καὶ παραδοθήσονται (π) Διαπορεύου,

CAP. XXI.

ET factꝰ est sermo Domini ad
me, dicens; Idcircò vaticinare, 2
fili hominis, obfirma faciem tuam
super Hierusalem, & aspice ad
Sancta eorum: et prophetabis su-
per terram Israel, Et dices ad 3
terram Israel; Hæc dicit Domi-
nus; Ecce ego ad te: & educam
gladium meum de vagina sua, &
interficiam ex te iniquum et inju-
stum, Eò quòd exterminabo ex te 4
injustum, & iniquum: sic egredie-
tur gladius meus de vagina sua
super omnem carnẽ à Subsolano
usq; ad Aquilonẽ: Et cognoscet 5
omnis caro; quia ego Dominus e-
duxi gladiũ meũ de vagina sua:
non revertetur ultrà. Et tu, fili ho- 6
minis, ingemisce in contritione
lumborũ tuorũ: & in doloribus
gemes ante oculos eorũ. Et q; si 7
dixerint ad te, Quarè tu gemis?
& dices, Propter nuntium: quia
venit, & quassabitur omne cor, &
universæ manus dissolventur, &
examinabitur omnis caro, &
omnis spiritus: & omnia femora
polluentur humore. Ecce venit,
(a) ait Dominus. Et factus est ser- 8
mo Domini ad me, dicens; Fili 9
hominis, propheta, & dices; Hæc
dicit Dominꝰ, Dic, Gladiꝰ, gladius
acuere, & irascere, ut jugules ju- 10
gulationes: acuere, ut sis in fulgo-
rẽ, paratꝰ ad dissolutionẽ: interfi-
ce, cõtemne, repelle omne lignũ. Et 11
dedit eum paratum, (b) ut teneat
manus ipsiꝰ. Exacutꝰ est gladius,
est paratꝰ, ut detur ipse in manũ
interficientis. Clama, et ulula, fili 12
hominis: quia hic factꝰ est in popu-
lo meo hic in cunctis ducibꝰ Isra-
el: (c) inhabitabũt, propter gladiũ
fuit in populo meo. Idcircò plaude
super manũ tuam: Quia (d) ju- 13
stificatus est. Et quid, si etiam tri-
bus repulsa fuerit? Non erit, dicit
Dominus Dominus. Et tu, fili ho- 14
minis, propheta, & plaude manu
ad manum, & duplica gladium:
tertius gladius interfectorũ est,
gladius interfectorum magnus.
Et obstupescere facies eos, ut (e) 15
non quassetur cor, & multipli-
centur infirmi super omnem por-
tam: traditi sunt in jugulatio-
ones gladii: (f) benè factus est ad
jugulationem, benè factus est ad 16
fulgorem. (g) Et transi, exacuere
à dextris, & à sinistris, quocun-
que facies tua exurrexerit.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כא

והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם קבל נבואה על ירושלם ואלף על 1 2
מקדשין ואתנבי על ארעא דישראל : ותימר לארעא דישראל כדנן אמר יי הא אנא 3
שלח רוגזי עלך ואפיק חרבי מלדנה ואגלי מניך זכאך בדיל לשיצאה חיבך : חלף דאגלי 4
מניך זכאך בדיל לשיצאה חיבך בכן תפוק חרבי מלדנה על כל בסרא מדרום לצפונא :
וידעון כל בני בסרא ארי אנא יי אפקית חרבי מלדנה לא תתוב עוד : ואת בר אדם 5 6
אתאנח בזיע חרצין ובמרר תתאנח לעיניהון : ויהי ארי יימרון לך על מה את מתאנח 7
ותימר על בסורתא ארי אתיא ויתמסי כל לב ויתרשלן כל ידין ותעמי כל רוח וכל
רכובין יתאשדן מיא הא אתיא ותתקים אמר יי אלהים : והוה פתגם נבואה מן קדם 8
יי עמי למימר : בר אדם אתנבי ותימר כדנן אמר יי אלהים אמר חרבא דמלכא 9
דבבל תקטול וחרבא דבני עמון תתני ותשיצי : בדיל למקטל קטול אשתליפת בדיל 10
למעבד פורענות אשתנינת על דחדיאו שבטא דבית יהודה ובנימן לשבטי ישראל כד
גלו על דפלחו לטעותא ותבו אנון למטעי בתר צלמי אעיא : ויהב פורענותהון 11
לאתמסרא ביד מלכא דבבל היא מחת חרבא תהי פורענותהון לממסר יתהון ביד
קטולין : צוח ואיליל בר אדם ארי היא הות בעמי היא וכל רברבי ישראל קטולי חרבא 12
אתכנשו ואתו על עמי מסחור סחור בכן טפח על ירכא : ארי אתנביאו עליהון נביא 13
ולא תבו ומה יהי בסופיהון אמר ואף שבטא דבית יהודה ובנימן מגלא יגלון
ובעובדיהון בישיא לא יתקימון אמר יי אלהים : ואת בר אדם אתנבי וטפח יד על 14
יד ותתכפיל חרבא תליתא חרב קטולין היא חרב פורענות קטולא רבא דמזיעא להון :
בדיל למתבר לבהון ולאסגאה מתקלהון על כל קרויהון מניתי קטלי חרבא 15
וי חרבא אשתליפת למקטל אשתנינת לשיצאה : אשתליפי וקטולי מדרומא 16
ושיצי מן צפונא לאן אפך מזמנין :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. XXI.

ET factum est verbũ prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: Fili hominis 1 2
suscipe propheitã in Jerusalẽ, & doce ad sanctuaria, & vaticinare contra
terrã Israel. Et dices terræ Israel: Hæc dicit Dñs: Ecce ego mitto furorem 3
meũ contra te, & educam gladiũ meũ de vagina sua, & migrare faciã ex te
justos tuos ut consumam peccatores tuos. Pro eo q̃ migrare faciã ex te ju- 4
stos tuos ut consumã peccatores tuos; ideò egredietur gladiꝰ meꝰ de vagina
sua contra omnem carnẽ ab Austro usque ad Aquilonẽ. Et scient omnes fi- 5
lii carnis, quia ego Dñs eduxi gladiũ meũ de vagina sua, non revertetur ul-
trà. Et tu fili hominis ingemisce in commotione lumborũ, & in amaritudine 6
ingemisce ante oculos eorum. Et erit, si dixerint tibi : Quare tu gemis ? & 7
dices: Propter nuntiũ quod venit, & dissolvetur omne cor, & remissæ erunt
universæ manꝰ, & obscurabitur omnis spiritꝰ, & omnia genua defluent sicut
aquæ. Ecce venit & firmabitur dicit Dñs Deꝰ. Et factũ est verbũ prophe- 8
tiæ à facie Dñi ad me dicens: Fili hominis, vaticinare, & dices: Hæc dicit 9
Dñs Deꝰ : Dic ; Gladiꝰ regis Babylonis occidet, & gladiꝰ filiorũ Ammon
exacuetur, & consumet. Ut occidat occisionẽ, evaginatꝰ est; ut faciat ultio- 10
nem, exacutꝰ est, pro eo quòd lætatæ sunt tribꝰ domꝰ Juda & Benjamin ob
tribꝰ Israel, quando migraverunt, eò quòd servissent idolis: & conversæ sunt 11
ipsæ ut errarent post simulachra lignea. Dedítque ultionẽ eorũ ut traderen-
tur in manum regis Babylonis : ipsa est percussio gladii, erit ultio eorum,
ut tradantur in manũ interficientiũ. Clama & ulula fili hominis, quia ista 12
fuit in populo meo ; ista *& universi principes* Israel : occidentes gladio
congregati sunt, & venerunt contra populum meũ per circuitum : idcirco
plaudes super femur. Quia prophetaverunt ad eos prophetæ, & non sunt 13
conversi: & quid futurũ sit in fine eorũ, dic. Etiam tribꝰ domꝰ Juda & Ben-
jamin migrando migrabunt, & propter opera sua mala non permanebunt,
dicit Dñs Deꝰ. Et tu fili hominis vaticinare, & percute manũ ad manum, 14
& duplicetur gladus tertiò, gladius interfectorum : ipse est gladius ultio-
nis & interfectionis magnæ qui contremiscere facit eos. Ut conteratur cor 15
eorum, & multiplicentur offendicula eorum, in omnibus civitatibus eorum
constitui occidentes gladio. Væ gladio, evaginatus est ad occidendum, exa- 16
cutus est ad excidendum. Evaginare & occide ab Austro, & consume ab
Aquilone, quocunque facies tua est parata.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܩܦܠܐܘܢ * ܟܐ *

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܘܚܘ
ܒܡܩܕܫܝܗܘܢ. ܘܐܬܢܒܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܐܡܪ ܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪ
ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܦܩ ܣܝܦܝ ܡܢ ܬܟܝܠܗ. ܘܐܘܒܕ ܡܢܟܝ ܙܕܝܩܐ ܘܚܛܝܐ.
* ܘܥܠ ܕܐܘܒܕܬ ܡܢܟܝ ܙܕܝܩܐ ܘܚܛܝܐ. ܡܛܠܗܢܐ ܢܦܘܩ ܣܝܦܝ ܡܢ ܬܟܝܠܗ ܥܠ
ܟܠ ܒܣܪ ܡܢ ܬܝܡܢܐ ܘܥܕܡܐ ܠܓܪܒܝܐ. * ܘܢܕܥܘܢ ܟܠ ܒܣܪ. ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܦܩܬ ܣܝܦܝ
ܡܢ ܬܟܝܠܗ. ܘܠܐ ܬܗܦܘܟ ܬܘܒ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܬܬܢܚ ܒܬܒܪܐ ܕܚܨܐ. ܘܒܡܪܝܪܘ
ܐܬܬܢܚ ܩܕܡܝܗܘܢ. * ܘܐܢ ܢܐܡܪܘܢ ܠܟ. ܥܠ ܡܢܐ ܡܬܬܢܚ ܐܢܬ. ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܥܠ ܫ
ܕܐܬܐ. ܘܢܬܡܣܐ ܟܠܗܘܢ ܠܒܘܬܐ. ܘܢܫܬܪܝܢ ܟܠܗܝܢ ܐܝܕܝܐ. ܘܢܬܡܟܟܢ ܟܠܗܝܢ
ܪܘܚܐ. ܘܟܠܗܝܢ ܒܘܪܟܐ ܢܪܕܢ ܡܝܐ ܗܐ ܐܬܬ ܘܗܘܝܐ: ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܗܘܐ ܥܠ
ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܬܢܒܐ ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܣܝܦܐ ܣܝܦܐ
ܐܬܚܪܕ * ܘܐܬܛܝܒ ܠܡܩܛܠ ܩܛܠܐ. ܘܠܡܒܪܩܘ. ܘܐܬܛܝܒ ܠܡܬܪܥ ܫܪܒܬܗ ܕܒܪ
ܘܐܣܠܝ ܟܠ ܩܝܣ. * ܘܝܗܒܗ ܠܛܘܝܒܐ. ܘܠܡܐܚܕ ܐܝܕܐ ܕܣܝܦܐ ܡܨܩܠܐ ܘܡܛܝܒܐ.
ܕܢܫܬܠܡܘܢ ܒܐܝܕܐ ܕܩܛܘܠܐ. * ܩܥܐ ܘܐܝܠܠ ܒܪ ܐܢܫܐ: ܡܛܠ ܕܗܘ ܗܘܐ ܥܠ ܥܡ
ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܛܪܘܦ ܒܟܦܐ. ܡܛܠ ܕܐܫܬܪܪ ܗܢܐ. ܘܐܢ ܫܪܒܬ
ܐܫܬܠܝܬ. ܠܐ ܬܗܘܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܬܢܒܐ. ܘܛܪܘܦ ܟܦܐ
ܥܠ ܟܦܐ. ܘܢܬܟܦܠ ܣܝܦܐ. ܘܣܝܦܐ ܕܬܠܬܐ ܕܩܛܝܠܐ. ܘܣܝܦܐ ܕܩܛܝܠ
ܪܒܐ ܗܘ ܕܡܬܡܗ ܠܗܘܢ. * ܕܢܬܒܪ ܠܒܗܘܢ. ܘܢܣܓܘܢ ܟܪܝܗܐ ܒܟܠܗܘܢ ܬܪܥܝܗܘܢ.
ܐܫܠܡܬ ܐܢܘܢ ܠܣܝܦܐ ܕܡܨܩܠ. ܘܡܒܪܩ. ܘܡܛܝܒ ܠܩܛܠܐ. * ܐܬܚܝܠ
ܒܝܡܝܢܝ ܘܐܬܚܝܠ ܒܣܡܠܝ. ܠܐܝܟܐ ܕܡܛܝܒ ܐܦܝ.

CAP. XXI.

Fuit ad me ſermo Dñi, dicendo; Fili hominis, 1
verte faciem tuam ad Jeruſalem, & intuere 2
ſanctuarium eorum: Vaticinare de terra
Iſraelis, Et dic ad terram Iſraelis; Sic ait 3
Dñs dominorum; Ecce me adverſùm te, exeramque
gladium meum è vagina ſua, & perdam
ex te juſtum ac peccatorem. Et quia perdidero 4
ex te juſtum et peccatorem, ideo prodibit
gladius meus è vagina ſua contra omnẽ
carnem, ab Auſtro ad Aquilonem uſque: Et 5
experientur omnis caro, me Dñm exeruiſſe
gladium meum è vagina ſua, nec ampliùs *in*
eam reverſurum. Tu verò fili hominis, ſuſpira 6
cum fractione (i. *contortione*) lumborum,
& *quidem* amarè ſuſpira coram eis. Quòd ſi 7
dicant tibi, Quare ſuſpiras? Dic eis, Propter
rumorem qui advenit, quo contabeſcent omnia
corda, manus omnes torpeſcent, omnes
ſpiritus dolore conficientur, omniaque genua
manabunt aquis: ecce advenit, ac fiet, ait Dñs
dominorum. Deinde fuit ad me ſermo Dñi, 8
dicendo; Fili hominis, vaticinare, & dic; Sic 9
ait Dñs dominorum, Gladie, gladie, acue te,
Teque compara ad cædem faciendam & coruſcandum: 10
compara te ad exagitandam ſtirpem
filii mei, & ſperne omne lignum. Et dedit 11
præparationẽ illam, (i. *paratum illum enſem*)
& capulũ manubrii enſis expoliti atq; parati
ad tradendum in manum occiſoris. Clama & 12
ejula fili hominis, quoniam ipſe eſt contra populum
meum, & contra omnes magnates Iſraelis.
Plaude volâ, quoniam hoc jam verificatum 13
eſt: quandoquidem enim ſtirps iſta ſpreta
eſt, an non fieret id, ait Dñs dominorum?
Tu itaque fili hominis, vaticinare & complode 14
volâ, manu ſuper manu: nam duplicabitur
gladius, & gladius tertius erit confoſſorum;
& gladius hic confoſſorum erit maximus qui
adeo terrebit eos, Ut frangatur cor eorum, et 15
multiplicentur ægroti in omnibus januis eorum.
Tradidi eos gladio expolito, coruſcanti, 16
et ad cædem parato. Strenuè agas dextera
mea, ſtrenuè etiam *ibi* agas ſiniſtra mea,
quò diſpoſita eſt facies (i. *ira*) mea.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الحادي والعشرون *   * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان
لاجل هذا تنبا وثبت وجهك على اورشليم . وانظر على مقادسهم وتنبا على ارض اسرايل
* وقول لارض اسرايل . هكذا يقول الرب . ها انا اليك . واخرج سيفي من غلافه
واستاصل منك الظالم والاثيم * لاجل اني استاصل منك الظالم والاثيم * هكذا يخر
سيفي من غلافه على كل جسد من المشرق الي الجربياء * ويعلم كل جسد اني انا الر
انتضيت سيفي من غمده . ولا يرجع ايضا * وانت يا ابن الانسان تنهد بانكسار حقويك
وبالاوجاع تنهد لعيونهم * ويكون اذ يقولون لك . من اجل ماذا تتنهد . فتقول . بالخب
لانه ياتي وينكسر كل قلب . وكل الايدي تنحل . ويموت كل جسد وكل روح . وكل الافخا
تتدنس بالرطوبة . اذ ياتي ويكون . يقول الرب الاله * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن
الانسان تنبا وقول . هكذا يقول ادوناي الرب . قل للسيف . ايها السيف احتد واغضب
* لكي تذبح ذبحا احتد لكي تصير للصقال . استعد للاستيصال . اذبح . ارذل واطرح كل
خشبة * واعطاه مستعدا ليمسك بيده . السيف هو مستعد مصقول ليدفع الي يد القاتل
* اصرخ وولول يا ابن الانسان . لان هذا صار في شعبي . هذا في كل مقدمي اسرايل السكان
على السيف . صار في شعبي * لاجل هذا صفق بيدك . لانه تبرر ايضا . ان كانت قبيلة
اقصيت . لا يكون . يقول الرب الرب * وانت يا ابن الانسان تنبا . وصفق بيدك على يد
وضاعف السيف . السيف الثالث هو للجرحا . سيف الجرحا عظيم وكبيرهم * كي يستاصل
كل قلب ويكثر الضعفاء على كل ابوابهم . ويسلمون لذبح السيف . صار حسنا للذبح
صار حسنا للصقال * امض احتد عن اليمين . وعن اليسار . حيث يقوم وجهك .

CAP. XXI.

Fuit autem ſermo Domini ad me, dicens; 1
O fili hominis, ideirco vaticinare, 2
& obfirma faciem tuam contra Jeruſalem
reſpice verſus ſanctuaria eorum, &
vaticineris contra terram Iſraelis, Dicaſque 3
terræ Iſraelis; Ita dicit Dominus;
Ecce me adverſum te, & exeram
verutum meum è vagina ſua, & extirpabo
ex te ſceleratum & iniquum.
Quoniam exterminabo ex te ſceleratum 4
& iniquum, pari ratione egredietur
verutum meum è vagina ſua contra
omne corpus, ab Oriente ad Aquilonem
uſque: Et cognoſcet omne corpus quòd 5
ego Dominus exerui verutum meum è
vagina ſua, nec avertetur ampliùs.
Quare tu O fili hominis, geme cum 6
fractione lumbi tui, & cum doloribus
gemas cernentibus ipſis. Eritque cùm 7
dixerint tibi; Quam ob cauſam gemis?
ut dicas, Propter nuntium, quo
veniente frangetur omnis animus, manus
omnes diſſolventur, morietur omne
corpus omniſque ſpiritus, & coxæ omnes
humore ſordeſcent, cum venerit ac fuerit,
dicit Dominus Deus. Rurſus fuit 8
ſermo Domini ad me, dicens; O fili hominis,
prophetato ac dicito; Sic ait 9
Adonai Dominus; Dic gladio, O gladie
acuere & iraſcere, Ad jugulandum 10
jugulationem: acuere ut ſis ad
expoliendum, para te ad extirpandum,
jugula, contemne, & abjice omne lignum.
Reddiditque eum paratum ad 11
manu tenendum. Gladius eſt paratus expolitus
ad tradendum in manum interfectoris.
Clama & ulula O fili hominis, 12
quòd hæc evenerint populo meo, hæc
omnibus præcipuis Iſraelis habitantibus
ſuper gladium, hæc inquam evenerint
populo meo. Hac de re plaude 13
manu tua, quoniam hæc adhuc juſtificata
ſunt. Quandoquidem familia repulſa
eſt, annon fierent hæc, dicit Dominus
Dominus? Et tu O fili hominis 14
vaticinare, & manum ad manum complode,
& duplica gladiũ: gladius tertius
erit vulneratoriũ, gladꝰ vulneratoriũ maximus
erit: & eos ita reddet attonitos,
Ut extirpentur corda quæq;, & multiplicentur 15
infirmi ad oſtia quæq; ipſorũ: deniq;
tradentur jugulatione gladii: factꝰ eſt
optimꝰ ad jugulandũ. factꝰ eſt optimꝰ ad
fulgendũ. Vade, exacuere à dextra et à 16
ſiniſtra, ubicunque ſteterit facies tua.

faciā requiescere & ,meā manū ad meam volam percutiam ego etiam Et
17 וגם־אני אכה כפי אל־כפי והנחתי
,me ad Domini verbum fuit Et .sum locutus Dominus ego :meā iram
18 חמתי אני יהוה דברתי : ויהי דבר־יהוה אלי
veniendum ad ,vias duas tibi pone ,hominis fili tu Et :dicendo
19 לאמר : ואתה בן־אדם שים־לך שנים דרכים לבוא
,elige manū & :ipsæ ambæ egrediantur una terra E :Babel regis gladium
חרב מלך־בבל מארץ אחד יצאו שניהם ויד ברא
,gladium veniendum ad ,pones Viam .elige civitatis viæ capite in
20 בראש דרך־עיר ברא : דרך תשים לבוא חרב את
.munita Jerusalaim in Jehudah & :Hammon filiorum Rabbath
רבת בני־עמון ואת־יהודה בירושלם בצורה :
, viarum duarum capite in ,viæ matrem ad Babel rex stetit Nam
21 כי־עמד מלך־בבל אל־אם הדרך בראש שני הדרכים
respexit ,Teraphim in petiit ,sagittis in tersit :divinatione divinandū ad
לקסם־קסם קלקל בחצים שאל בתרפים ראה
, arietes ponendum ad ,Jerusalaim divinatio fuit ejus dextera In .jecore in
22 בכבד : בימינו היה הקסם ירושלם לשום כרים
ponendū ad :vociferatione in vocem elevandū ad ,cædem ad os aperiendū ad
לפתח פה ברצח להרים קול בתרועה לשום
.ligneam turrim ædificandum ad ,aggerem fundendum ad , portas super arietes
כרים על־שערים לשפך סללה לבנות דיק :
juramenta jurantes ,eorum oculis in mendacium divinare secundum eis erit Et
23 והיה להם כקסום־שוא בעיניהם שבעי שבעות
Dominus dixit sic Idcirco .prehendi ad,iniquitatē commemorans hoc & :eis
24 להם והוא־מזכיר עון להתפש : לכן כה־אמר אדני
,vestras prævaricationes detegi in ,vestræ iniquitatis vos recordari Pro :Deus
יהוה יען הזכרכם עונכם בהגלות פשעיכם
, vos recordari pro :vestris studiis omnibus in vestra peccata videri ad
להראות חטאותיכם בכל עלילותיכם יען הזכרכם
venit cujus :Israel dux ,impie prophane tu Et .capiemini vola in
25 בכף תתפשו : ואתה חלל רשע נשיא ישראל אשר־בא
:Deus Dominus dixit Sic .finis iniquitatis tempore in ,ejus dies
26 יומו בעת עון קץ : כה אמר אדני יהוה
humilem :hæc non hæc :diadema leva & ,cidarim Remove
הסיר המצנפת והרים העטרה זאת לא־זאת השפלה
.eam ponam perversam ,perversam ,Perversam .humiliando altum &,sublevādo
27 הגבה והגבה השפיל : עוה עוה עוה אשימנה
.eam tradam & ,judicium ei cui venire usque fuit non hoc Etiam
גם־זאת לא היה עד־בא אשר־לו המשפט ונתתיו :
Deus Dominus dixit Sic :dices & ,propheta hominis fili tu Et
28 ואתה בן־אדם הנבא ואמרת כה אמר אדני יהוה
mucro ,Mucro :dices & ,eorũ opprobrium ad & ,Hammon filios ad
אל־בני עמון ואל־חרפתם ואמרת חרב חרב
vincendo In .fulgur propter ,sustinendum ad tersus ,jugulationē ad solutus
29 פתוחה לטבח מרוטה להכיל למען ברק : בחזות
colla ad te dandum ad ,mendacium tibi divinando in ,vanum tibi
לך שוא בקסם־לך כזב לתת אותך אל־צוארי
iniquitatis tempore in eorum dies venit quorum ,impiorum vulneratorum
חללי רשעים אשר־בא יומם בעת עון
,es creatus quo loco In ?suam vaginam ad Reducendum .finis
30 קץ : השב אל־תערה במקום אשר־נבראת
te super effundam Et .te judicabo tuarum mansionum terra in
31 בארץ מכרותיך אשפט אתך : ושפכתי עליך
te dabo Et .te super faciam sufflare mei furoris ignem Per .meā indignationē
זעמי באש עברתי אפיח עליך ונתתיך
corruptionis artificum insipientium virorum manum in
ביד אנשים בערים חרשי משחית :

Versio VULG. LAT.

17 Quin & ego plaudam manu ad manũ, & implebo indignationẽ meã, ego Dñs locut⁹ sum. 18 Et factus est sermo Dñi ad me, dicens; 19 Et tu, fili hominis, pone tibi duas vias, ut veniat gladi⁹ regis Babylonis: de terra una egredientur ambæ: & manu capiet conjecturã, in capite viæ civitatis 20 conjiciet. Viam pones ut veniat gladi⁹ ad Rabbath filiorũ Ammon, & ad Judã in Jerusalẽ mu21nitissimã. Stetit enim rex Babylonis in bivio, in capite duarum viarũ, divinationẽ quærens, commiscens sagittas: interrogavit 22 idola, exta consuluit. Ad dexterã ej⁹ facta est divinatio super Jerusalem, ut ponat arietes, ut aperiat os in cæde, ut elevet vocẽ in ululatu, ut ponat arietes contra portas, ut cõportet aggerẽ, ut ædi23ficet munitiones. Eritque quasi consulens frustrà oraculũ in oculis eorũ, & sabbatorũ otiũ imitans: ipse autẽ recordabitur ini24quitatis ad capiendũ. Idcircò hæc dicit Dñs De⁹; Pro eo ꝙ recordati estis iniquitatis vestræ, & revelâstis prævaricationes vestras, & apparuerunt peccata vestra in omnib⁹ cogitationibus vestris: pro eo, inquã, ꝙ recordati estis, 25 manu capiemini. Tu autem profane, impie dux Israel, cuj⁹ venit dies in tempore iniquitatis præ26finita: Hæc dicit Dñs De⁹; Aufer cidarim, tolle coronã: nónne hæc est, quæ humilẽ sublevavit, 27 & sublimem humiliavit? Iniquitatem, iniquitatem, iniquitatem ponam eam: & hoc non factum est, donec veniret cujus est ju28dicium, & tradam ei. Et tu, fili hominis, propheta, & dic; Hæc dicit Dominus Deus ad filios Ammon, & ad opprobrium eorum, & dices; Mucro, mucro, evagina te ad occidendum, lima 29 te ut interficias, & fulgeas, Cùm tibi viderentur vana, & divinarentur mendacia: ut dareris super colla vulneratorum impiorum, quorum venit dies in tem30pore iniquitatis præfinita. Revertere ad vaginam tuam, in loco in quo creatus es, in terra 31 nativitatis tuæ judicabo te, Et effundam super te indignationem meam: in igne furoris mei sufflabo in te, daboque te in manus hominum insipientium, & fabricantium interitum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

17 Καὶ ἐγὼ δὲ κροτήσω χεῖρά μου πρὸς χεῖρά μου, καὶ ἐναφήσω (ρ) θυμόν μου, ἐγὼ κύριος 18 λελάληκα. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς 19 με, λέγων, Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, διάταξον σεαυτῷ δύο ὁδοὺς, τοῦ εἰσελθεῖν ῥομφαίαν βασιλέως Βαβυλῶνος, ἐκ χώρας μιᾶς ἐξελεύσονται (σ) αἱ δύο, καὶ χεὶρ ἐν ἀρχῇ ὁδοῦ 20 πόλεως, ἐπ' ἀρχῆς ὁδοῦ διατάξεις, Τοῦ εἰσελθεῖν ῥομφαίαν ἐπὶ Ῥαββὰθ (τ) υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ ἐπὶ τὴν Ἰουδαίαν, καὶ ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ 21 ἐν μέσῳ αὐτῆς. Διότι στήσεται βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐπὶ τὴν ἀρχαίαν ὁδὸν, ἐπ' ἀρχῆς τῶν δύο ὁδῶν, τοῦ μαντεύσασθαι μαντείαν, τοῦ ἀναβράσαι (υ) ῥάβδον, καὶ ἐπερωτῆσαι ἐν 22 τοῖς γλυπτοῖς, καὶ ἡπατοσκοπήσασθαι. Ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ ἐγένετο τὸ μαντεῖον ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, τοῦ βαλεῖν χάρακα, τοῦ διανοῖξαι στόμα ἐν βοῇ, ὑψῶσαι φωνὴν μετὰ κραυγῆς, τοῦ βαλεῖν χάρακα ἐπὶ τὰς πύλας αὐτῆς, καὶ βαλεῖν χῶμα, καὶ οἰκοδομῆσαι βελοστάσεις. 23 Καὶ αὐτὸς αὐτοῖς ὡς μαντευόμενος μαντείαν ἐνώπιον αὐτοῦ, καὶ αὐτὸς ἀναμιμνήσκων 24 ἀδικίας (φ) αὐτοῦ μνησθῆναι. Διατοῦτο τάδε λέγει (χ) κύριος, Ἀνθ' ὧν ἀνεμνήσατε τὰς ἀδικίας ὑμῶν, ἐν τῷ ἀποκαλυφθῆναι τὰς ἀσεβείας ὑμῶν, τοῦ ὁραθῆναι ἁμαρτίας ὑμῶν, ἐν πάσαις ταῖς ἀσεβείαις ὑμῶν καὶ ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν ὑμῶν, ἀνθ' ὧν ἀνεμνή25σατε, ἐν τούτοις (ψ) ἁλώσεσθε. Καὶ σὺ βέβηλε, ἄνομε, ἀφηγούμενε τοῦ Ἰσραὴλ, οὗ ἥ26κει ἡ ἡμέρα ἐν καιρῷ ἀδικίας, πέρας, Τάδε λέγει (ω) κύριος, Ἀφείλου τὴν κίδαριν, καὶ ἐπέθου (α) τὸν στέφανον, αὕτη οὐ τοιαύτη ἔσται· ἐταπείνωσας τὸ ὑψηλὸν, καὶ (β) ὕψωσας τὸ 27 ταπεινόν. Ἀδικίαν, ἀδικίαν, ἀδικίαν θήσομαι αὐτὴν, (γ) καὶ αὐτὴ, τοιαύτη ἔσται ἕως οὗ ἔλθῃ ᾧ καθήκει, καὶ παραδώσω (δ) 28 αὐτῷ. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου προφήτευσον, καὶ ἐρεῖς, Τάδε λέγει (ε) κύριος πρὸς τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν καὶ πρὸς τὸν ὀνειδισμὸν αὐτῶν· καὶ ἐρεῖς, Ῥομφαία, ῥομφαία (ζ) ἐσπασμένη εἰς σφάγια, καὶ ἐσπασμένη εἰς συντέλειαν, 29 ἐγείρου ὅπως στίλβῃς, Ἐν τῇ ὁράσει σου τῇ ματαίᾳ, καὶ ἐν τῷ μαντεύεσθαί σε ψευδῆ, τοῦ παραδοῦναί σε ἐπὶ τραχήλους τραυματιῶν ἀνόμων, (η) ἥκει ἡ ἡμέρα ἐν καιρῷ ἀδικίας, 30 πέρας. Ἀπόστρεφε, μὴ καταλύσῃς ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ ᾧ γεγέννησαι, ἐν τῇ γῇ τῇ ἰ31δίᾳ σου κρινῶ σε. Καὶ ἐκχεῶ ἐπὶ (θ) σὲ ὀργήν μου, ἐν πυρὶ ὀργῆς μου ἐμφυσήσω ἐπὶ σὲ, καὶ παραδώσω σε εἰς χεῖρας ἀνδρῶν βαρβάρων τεκταινόντων (ι) διαφθοράν.

Et ego autem plaudam manu meâ 17 ad manum meam, & immittam furorem meum: ego Dominus loquutus sum. Et factus est sermo 18 Domini ad me dicens: Et tu, fili 19 hominis, statue tibi duas vias, ut ingrediatur gladius regis Babylonis. De regione una egredientur (h) ambæ: & (i) manus in principio viæ civitatis: super principium viæ constitues, ut ingrediatur 20 gladius super Rabbath filiorum Ammon, & super Judæa, & super Hierusalem in medio ejus. Stabit 21 enim rex Babylonis super antiquam viam, in principio duarum viarum ad divinandum divinationem, ad (l) faciendum ebullire virgam, et interrogandum in sculptilibus, (m) & jecur speculandum. A dexteris ejus 22 facta est divinatio super Hierusalem, ad faciendum vallum, ad aperiendum os in clamore, ad exaltandum vocem cum (n) vociferatione, ad faciendum vallum super portas ejus, & faciendum aggerem, & ædificandas machinas jaculatorias. Et ipse ipsis, quasi divinans 23 divinationem (o) coram eis: et ipse rememorans (p) iniquitatum ejus ad recordandum. Idcircò hæc dicit 24 Dominus; Pro eo quòd in memoriam revocastis iniquitates vestras, cũ revelarentur impietates vestræ, ut viderentur peccata vestra, in (q) omnib⁹ impietatib⁹ vestris, et in adinventionib⁹ vestris, pro eo, quòd in memoriam revocastis; in istis capiemini. Et tu profane, inique, dux Israel, cujus 25 venit dies, in tempore iniquitatis, finis: Hæc dicit Dñs, (r) Aufer 26 cidarim, et impone coronam: (s) et non erit talis. Humiliâsti excelsum; et sublevâsti humile. Iniqui27tatē, iniquitatē, (t) iniquitatē ponā eã. (u) Væ ei, talis erit, donec veniat, cui debetur, & tradam ei. Et tu, fili hominis, propheta, et di28ces; Hæc dicit Dominus ad filios Ammon, et ad opprobrium eorum: et dices, Gladius gladius eductus ad jugulationes, & eductus ad consummationẽ, exurge, ut splendeas, In visione tua vana, et in di29vinando te falsa, ut dareris super colla vulneratorũ iniquorũ: venit dies in tempore iniquitatis, finis. (x) Revertere, ne maneas in 30 loco in quo genitus es, in terra propria tua judicabo te: Et 31 effundã super te iram meam: in igne iræ meæ sufflabo in te: & tradã te in manus virorũ barbarorum fabricantium corruptionem.

MS.A. (ρ) τὸν θυμόν μου ἐν σοί, ἐγὼ κύριος ἐλάλησα. (σ) ἀρχαὶ δύο, καὶ χεῖρα ἑτοιμάσουσιν ἐπ' ἀρχῆς ὁδοῦ (τ) καὶ ἐπὶ υἱῶν (υ) ῥαβδία, [illegible] (φ) αὐτῶν (χ) κύριος κύριος, ὁ θεός, (ψ) ἁλωθήσεσθαι. (ω) κύριος κύριος ὁ θεός, (α) αὐτὴ τὸν στέφανον, (β) τὸ ταπεινὸν ὕψωσας. Ἀδικίαν ἀδικίαν θήσομαι (γ) οὐ τοιαύτη ἔσται ἕως (δ) αὐτήν. (ε) κύριος ὁ θεός, (ζ) ἑτοιμάζου ἐσπασμένη σφάγια, (η) ὧν ἥκει (θ) σοί. (ι) διαφθοράν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 ואף אנא איתי פורענות על פורענות ואניח חמתי אנא יי גזרית במימרי : 18 והוה פתגם
19 נבואה מן קדם יי עמי למימר : ואת בר אדם אתקין לך תרתין אורחן דייתון בהון קטולי
חרבא דמלכא דבבל מדינתא חדא יפקון תרויהון ואתרא אתקין בריש פרשות
20 אורח קרתא אתרא אתקין : אורחא אתקין דייתון בה קטולי חרבא מרבת בני עמון ועל
21 דבית יהודה די נפקו מירושלם למיתב בקרוין כריכן : ארי קם מלכא דבבל על אם
פרשות אורח בריש תרתין אורחן למקסם קסם קשת בגרריא שאל בצלמניא חזא
22 בכבדא : בימיניה הוה קסמא נפיל למהך לירושלם למנאה אפרורין לפתחא תרעין
דיעלון בהון קטולין לארמא קל באציחת קרנא למנאה אפרורין על תרעין למצבר
23 מליתא ולמבני כרקומין : והוה להון קסמיהון כדיבין בעיניהון נחשין דהוה מנחש
להון ואנון לא ידעין דארבעין ותשע זמנין הוה כמן ומתחב על פתגמא עד דאתיתי ליה
24 שעתא דיתמסרון בידיה : בכן כדנן אמר יי אלהים חלף דאדכרתון חוביכון באתגלאה
מרדיכון דאתחזאה חטאיכון בכל עובדיכון חלף דאדכרתון ביד מלכא דבבל
25 תתמסרון : ואת חייב קטלא רשיעא רבא דישראל דמטא יום תבריה עדן תושלמת
26 חובוהי : כדנן אמר יי אלהים אעדי מצנפתא משריה כהנא רבא ואבטל כתרא
מצדקיה מלכא אמר דין ודין באתריה לא יתקים מגלא יגלון גדליה בר אחיקם דלא
27 הות דיליה יסבנה צדקיה דדיליה היא תעדי מניה : חוביהון דחבו כחוביהון אתפרע
מנהון אף דין לא יתקים ליה עד דאיתי עלוהי פורענות ישמעאל בר נתניה ואמסריניה
28 בידיה : ואת בר אדם אתנבי ותימר כדנן אמר יי אלהים על בני עמון ועל חסודיהון
ותימר חרבא חרבא אשתלפת למקטל אשתננת לשיצאה בדיל למהוי לה צחצוחין :
29 באתנבאה לך שקר באלפא לך כדבין למסר ית צורך כצורי קטולי רשיעיא דמטא
30 יום תבירהון עדן סעירת בישתהון : אתיב חרבא לתיקה באתרא דאתבריתון בארע
31 דיתבותכון אתפרע מנכון : ואשפוך עלך רגזי באשתא דרוגזי אתקיף עלך
ואמסרנך ביד גברין רשיעין דאומנין לחבלא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ego quoque adducã ultionẽ super ultionẽ, & requiescere faciã indignati17onem meã. Ego Dñs decrevi in verbo meo. Et factũ est verbũ prophetiæ a 18 facie Dñi ad me, dicens: Et tu fili hominis para tibi duas vias per quas veni19ant occidentes gladio regis Babylonis. Et de provincia una egredientur ambæ, & locũ constitue, in capite bivii itineris civitatis locũ constitue. Viam 20 constitue, ꝑ quã veniant occidentes gladio de Rabbath filiorũ Ammon & sup eos qui sunt de domo Juda, qui egressi sunt de Jerusalem ut habitarent in civitatib⁹ munitis. Quoniã stetit rex Babylonis in bivio itineris in capite 21 duarũ viarũ, ad divinandũ divinationẽ: arcu ejaculat⁹ est sagittas, & consuluit simulachra, inspexit jecur. In dexterã ej⁹ divinatio cecidit, ut iret in 22 Jerusalẽ ad constituendũ duces, ad aperiendũ portas ut ingrederentur per eas occisores, & elevarent vocẽ in clangore tubæ, ad constituendos duces sup portas, ad comportandũ aggerẽ & ad exstruendã machinã. Et factæ sunt 23 eis divinationes eorũ mendacia in oculis eorum, & auguria quib⁹ augurabatur eis, & ipsi nesciebant quòd quadraginta & novẽ vicib⁹ observasset & responsũ sibi esset super verbũ, donec venisset ei temp⁹ quo traderentur in manũ ej⁹. Propterea hæc dicit Dñs De⁹: Pro eo quod recordati estis pec24catorũ vestrorũ cùm revelata sunt scelera vestra, ut appareant peccata vestra in omnib⁹ operib⁹ vestris pro eo quod recordati estis, in manũ regis Babylonis trademini. Et tu reus mortis impie princeps Israel, cuj⁹ interit⁹ 25 dies pervenit, temp⁹ retributionis peccatorũ suorũ. Hæc dicit Dñs De⁹: 26 Aufer cidarim à Saraia sacerdote magno, & tollã coronã a Sedechia rege. Dixit: Iste & iste non permanebunt in loco suo, sed migrando migrabunt: Godolias fili⁹ Ahicã cuj⁹ non erat [corona,] tollet eam; & auferetur a Sedechia cuj⁹ erat [corona.] Propter peccata sua quib⁹ peccaverunt, ultionẽ su27mã ex eis. Etiã hunc non permanebit [corona] donec adduxero sup eum ultionẽ Ismaelis filii Nathaniæ, & tradidero eum in manũ ej⁹. Et tu fili ho28minis vaticinare, & dic: Hæc dicit Dñs De⁹ de filiis Ammon, & de opprobriis eorum: [illegible] Gladi⁹ gladius evaginat⁹ est ad occidendũ, exacut⁹ est ad consumendũ ut splendorẽ habeat. Cum prophetarent tibi falsa, cùm do29cerent te mendacia, ut traderent cervicem tuam, sicut cervices occisorum impiorum, quorum dies interitus pervenit, tempus visitationis malorum suorum. Reduc ad vaginam gladium: in loco in quo creati estis, in terra 30 habitationis vestræ ultionem sumam ex vobis. [illegible] super te indi31gnationem meam, in igne ultionis meæ [illegible] contra te: [illegible] manus virorum [illegible] qui artifices sunt ad [illegible]

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܦ ܐܢܐ ܐܩܫ ܟܦܐ ܥܠ ܟܦܐ. ܘܐܢܝܚ ܚܡܬܝ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܡܪܬ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܥܒܕ ܠܟ ܬܪܬܝܢ ܐܘܪܚܢ. ܕܬܐܬܐ ܣܝܦܗ
ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܡܢ ܐܪܥܐ ܚܕܐ ܢܦܩܘܢ ܬܪܝܗܘܢ. ܘܐܝܕܐ ܓܒܝܬܐ. ܒܪܫ ܐܘܪܚܐ
ܕܡܕܝܢܬܐ ܓܒܝܬܐ. * ܘܥܒܕ ܐܘܪܚܐ ܕܬܐܬܐ ܣܝܦܐ ܥܠ ܪܒܬ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܘܥܠ ܝܗܘܕܐ
ܘܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܟܪܝܟܬܐ. * ܡܛܠ ܕܩܡ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܒܪܫ ܐܘܪܚܐ ܕܦܪܫܐ
ܐܘܪܚܬܐ. ܠܡܩܣܡ ܩܣܡܐ. ܫܕܐ ܓܐܪܐ. ܘܫܐܠ ܒܨܠܡܗ. ܚܙܐ ܒܫܘܒܚܗ. * ܘܒܝܡܝܢܗ
ܗܘܐ ܩܘܣܡܐ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܕܢܣܝܡ ܟܡܝܢܐ. ܘܢܦܬܚ ܦܘܡܗ ܒܚܝܠܗ. ܘܢܪܝܡ ܩܠܗ ܒܩܥܬܐ. ܘܢܪܡܐ
ܟܠܗ ܡܣܩܬܐ ܘܢܩܝܡ ܠܘܩܒܠ ܬܪܥܝܗ. ܘܢܣܝܡ ܟܡܝܢܐ ܘܢܒܢܐ ܕܝܩܐ. * ܘܢܗܘܐ
ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܩܘܣܡܐ ܣܪܝܩܐ ܩܕܡ ܥܝܢܝܗܘܢ. ܘܗܘ ܡܥܗܕ ܥܘܠܐ ܘܢܬܐܚܕ. * ܡܛܠܗܢܐ
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܚܠܦ ܕܐܬܕܟܪܬܘܢ ܥܘܠܟܘܢ ܒܫܒܝܬܐ ܕܚܛܗܝܟܘܢ. ܘܥܘܠܝܟܘܢ
ܘܟܠܗܘܢ ܨܒܝܢܝܟܘܢ ܚܙܝܬܘܢ. ܒܐܝܕܐ ܬܬܐܚܕܘܢ. * ܘܐܢܬ
ܛܢܦܐ ܚܛܝܐ ܪܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܕܐܬܐ ܝܘܡܗ. ܘܥܕܢܐ ܕܥܘܠܟ ܘܚܪܬܟ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܡܪܝܐ. ܐܥܒܪ ܡܢܟ ܟܘܒܥܐ. ܘܐܪܝܡ ܡܢܟ ܟܠܝܠܐ. ܡܟܝܟܐ ܐܪܝܡ. ܘܪܡܐ ܐܡܟ. * ܐܦ ܗܕܐ ܠܥܘܠܐ ܘܠܢܟܠܐ
ܐܣܝܡܝܗ. ܥܕܡܐ ܕܢܐܬܐ ܗܘ ܕܕܝܠܗ ܕܝܢܐ. ܘܐܫܠܡܝܘܗܝ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ ܐܬܢܒܐ ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܒܢܝ ܥܡܘܢ ܘܥܠ ܚܣܕܗܘܢ. ܘܐܡܪ. ܣܝܦܐ ܣܝܦܐ ܕܡܛܝܒ ܠܩܛܠܐ
ܘܡܫܝܥ ܘܡܒܪܩ. * ܥܠ ܚܙܘܢܟܘܢ ܣܪܝܩܐ. ܘܥܠ ܩܘܣܡܟܘܢ ܕܓܠܐ. ܕܐܩܪܒܟ ܥܠ ܨܘܪܝܗܘܢ
ܕܚܛܝܐ ܥܘܠܐ. ܕܐܬܐ ܝܘܡܗܘܢ. ܘܥܕܢܐ ܕܥܘܠܗܘܢ ܘܚܪܬܗܘܢ. * ܐܬܦܢܝ ܠܬܠܝܬܟ ܒܕܘܟܬܐ
ܕܐܬܝܠܕܬ ܒܗ. ܘܬܡܢ ܐܕܘܢܟ. * ܘܐܫܘܕ ܥܠܝܟ ܪܘܓܙܝ. ܘܒܢܘܪܐ ܕܚܡܬܝ ܐܦܘܚ ܒܟ
ܘܐܫܠܡܟ. ܒܐܝܕܝ ܓܒܪܐ ܚܠܝܨܐ ܕܝܕܥܝܢ ܚܒܠܐ.

Ego quoque plaudam volâ, manu ſuper ma- 17
num, & ſedabo iram meam: ego Dominus
dixi. Et fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 18
Tu autem fili hominis, fac tibi duas vias, ut 19
veniat gladius regis Babylonis: ex eadem ter-
ra egredientur ambo, & manus electa ad ini-
tium viæ urbis electæ. Fac etiam viam, ut ve- 20
niat gladius ſuper Rabath filiorum Ammon,
& ſuper Judam, ſupérque Jeruſalem muni-
tam. Nam ſtetit rex Babylonis in principio 21
viæ in compito viarum, ad divinandum divi-
nationem, jecit ſagittam, conſuluit idolum ſuũ,
inſpexit gloriam ſuam: Et ad dexteram ipſius 22
fuit divinatio contra Jeruſalem, ut contra eam
tenderet inſidias, aperiret os ſuum potentiâ
ſuâ, vocem attolleret cum clamore, aggeres
erigeret contra portas ejus, poneret inſidias,
& ſpeculas ædificaret. Erit quidem apud iſtos 23
quaſi vana quædam divinatio ante oculos eo-
rum; & is recordatus iniquitatis, capietur.
Idcirco ſic ait Dominus dominorum; Quia 24
recordati eſtis iniquitatis veſtræ in captivitate
peccatorum veſtrorum, & ſcelera veſtra &
cuncta ſtudia veſtra vidiſtis; manu capiemini.
Tu autem prophane, peccator, princeps Iſra- 25
elis, cujus advenit dies, & tempus iniquitatis
tuæ, & finis tuus; (Sic ait Dominus domi- 26
norum) tolle à te cidarim, & depone à te co-
ronam, humilem exalta, & altum humilia.
Etiam hoc ſceleri et fraudi aſcribam, donec 27
veniat is ad quem pertinet judicium, ac tum
tradam eum. Tu verò fili hominis, vaticina- 28
re et dic, Sic ait Dominus dominorum de filiis
Ammon deque opprobrio eorum: Dic in-
quam, Gladie, gladie qui ad cædem paratus
eras, expolitus, atque coruſcans, (Propter 29
viſionem veſtram vanam, et propter divinati-
onem veſtram falſam) ut applicarem te cer-
vicibus peccatorum ſceleratorum, quorum
advenit dies, tempus iniquitatis eorum, et fi-
nis eorum; Recipe te in vaginam tuam, *nem-* 30
pe locum in quo natus es, ibique judicabo te:
Effundam ſuper te iracundiã meã, et in igne 31
furoris mei inſufflabo in te, tradãq; te in ma-
num virorum ferocium, artificum vaſtationis:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وانا اصفق بيدي على يدي * واشعل غضبي فيك * انا الرب تكلمت * وكان قول
الرب الي قايلا * وانت يا ابن الانسان * رتب لذاتك طريقين ليدخل فيهما سيف ملك بابل
من بلدة واحدة تخرج الرياستان * وهييان على مبدا طريق المدينة يدا * ورتب على
مبداء الطريق * ليدخل السيف على رباث * وعلى بني عمون * وعلى اليهودية * وعلى ايروسليم
في وسطها * من اجل ان ملك بابل يقف على الطريق الاولى * على مبداء الطريقين ليكهن
تكهنا * ليرمي سهما * ويسال بالمنحوتات * ويبدع ليرمق عن يمينه * صار التكهين على
ايروسليم * ليضع عليها سياجا * وليفتح فمه بصراخ * ليرفع صوتا بعياط * ليضع سياجا
على ابوابها * ويلقي ترابا * ويبني مرامي * وهو لهم مثل من يتكهن تكهنا امامهم * وهو
يتذكر ظلاماتهم ليتذكرها * لاجل هذا يقول الرب الرب الاله * من اجل انكم تذكرتم
ظلاماتكم عند ما ينكشف نفاقكم لترى خطاياكم في جميع نفاقكم وفي اعمالكم
من اجل انكم تذكروها فيها تهلكون * وانت ايها النجس الاثيم مقدم اسرايل * الذي
اتى يومه ونهايته في وقت ظلمه * هكذا يقول الرب الرب الاله * انزع الطيلسان * وضع
عنه الاكليل الذي له * هذا يكون الى ان ياتي الاتي وادفعه * اذللت المرتفع * ورفعت
المتواضع * ظلما ظلما اصنعه * الذي له هذا يكون الى ان ياتي الاتي * وادفعه له * وانت
يا ابن الانسان تنبا وقل * هكذا يقول الرب الاله لبني عمون ولتعييرهم * وقل * السيف
السيف استعد منتضيا للذبح * وتجردا للهلاك * قم لكي تبرق * برويتك الباطلة * وتكهنك
باطلا كاذبا * لاسلمك على رقاب الجرحى الاثمة الذين اتى يومهم وعاقبتهم في وقت ظلمهم
* ارجع لا تحل في هذا الموضع الذي فيه صرت * في ارضك الخاصة ادينك * واريق
عليك غضبي * بنار رجزي انفخ عليك * واسلمك الى ايدي رجال عاجم قتلة *

Et ego manum ad manum complodam, & accendam iram meam in te. Ego Dominus 17
locutus ſum. Deinde fuit ſermo Domini 18
ad me, dicens; Et tu O fili hominis, 19
diſpone tibi duas vias, per quas ingredi-
atur gladius regis Babelis: ex eadem
regione egredientur ambo principatus, &
ad initium viæ urbis manum parabunt.
Diſpones etiam ſuper initium viæ, ut 20
ingrediatur gladius contra Rabbath, &
contra filios Ammon, contra Judæam, &
contra Jeruſalem in medium ejus. Sta- 21
bit enim rex Babelis ſuper viam primam,
ſuper initium utriuſque viæ divinando
inquiet, jaculando ſagittam, & conſu-
lendo ſculptilia, & inſiſtendo intueri ad
dexteram ſuam. Facta eſt divinatio 22
contra Jeruſalem, ut applicaret ei vallũ,
ut aperiret os ſuum cum clamore, ut vo-
cem attolleret cum vociferatione, ut val-
lum applicaret portis ejus, terram aggera-
ret, & machinas jaculatrices ædifica-
ret. Sed eſt apud iſtos ut is qui divi- 23
nat coram eis: ipſe verò recordabitur
iniquitatum eorum, ut mentionem earum
faciat. Idcirco dicit Dominus, Dominus 24
Deus; Quandoquidem recordati eſtis
iniquitatum veſtrarum, quum detegere-
tur impietas veſtra, ut apparerent pec-
cata veſtra in cunctis impietatibus
veſtris & operibus veſtris; quando-
quidem inquam recordati eſtis illarum,
in iiſdem peribitis. Et tu O impure, ſce- 25
lerate, princeps Iſraelis, cujus advenit dies
ac finis in tempore iniquitatis ſuæ;
(Ita dicit Dominus, Dominus Deus) 26
exue cidarim, & depone ab ea coronam
quam habet. Hoc erit quoad veniat
qui venturus eſt, tum tradam eum.
Elatum depreſſiſti, & humilem exal-
taſti. Iniquitatem iniquitatem id ponam. 27
Is cujus hæc ſunt, erit quoad veniat qui
venturus eſt, ac tum huic tradam eum.
Tu autem O fili hominis, propheta, & 28
dicas; Sic dicit Dominus Deus filiis
Ammon & conviciis eorum: Dicas,
inquam; Gladie gladie paratus eſto,
evaginatus ad jugulandum, & diſtrictus
ad excidium; ſurge ut ſplendeas In 29
viſione tua vana, & vanum ac falſum
divines; ut tradam te ſuper colla vul-
neratorum iniquorum, quorum dies &
finis advenit in tempore impietatis ſuæ.
Revertere, ne maneas in iſto loco in quo 30
factus es: in terra tua propria judicabo
te, Et effundam ſuper te furorem meum: 31
in igne excandeſcentiæ meæ ſufflabo ad-
verſum te: tradamque te in manus vi-
rorum barbarorum homicidarum,

יחזקאל : כב

non : terræ medio in erit tuus ſanguis ,devorandum ad eris Igni

לאש תהיה לאכלה דמך יהיה בתוך הארץ לא 32

.ſum locutus Dominus ego quia ,memoraberis

תזכרי כי אני יהוה דברתי :

CAP. XXII. כב

,hominis fili tu Et : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et

ויהי דבר־יהוה אלי לאמר : ואתה בן־אדם 1

2 eã facies ſcire & : ſanguinum civitatem judicabis nónne,judicabis nónne

התשפט התשפט את־עיר הדמים והודעתה

: Deus Dominus dixit Sic : dices Et ? ejus abominationes omnes

את כל־תועבותיה : ואמרת כה אמר אדני יהוה 3

: ejus tempus *veniendum ad* ,ſui medio in ſanguinem effundens Civitas

עיר שפכת דם בתוכה לבוא עתה

tuo ſanguine In .ſe polluendum ad ſeipſam contra idola fecit &

ועשתה גלולים עליה לטמאה : בדמך 4

,te polluiſti , feciſti quæ tuis idolis in & : deliquiſti ,effudiſti quem

אשר־שפכת אשמת ובגלוליך אשר־עשית טמאת

propterea :tuos annos ad uſq; veniſti &,tuos dies feciſti appropinquare &

ותקריבי ימיך ותבוא עד־שנותיך על־כן

, *Propinque* .terris omnibus irriſionẽ & ,gentib⁹ in opprobriũ te dedi

נתתיך חרפה לגוים וקלסה לכל־הארצות : הקרבות 5

multæ , nomine *polluta* : *te in ſubſannabunt* , te à *longinque &*

והרחקות ממך יתקלסו־בך טמאת השם רבת

ſuũ brachiũ ſecundũ unuſquiſq; , Iſrael *prelati* Ecce .contritionis

המהומה : הנה נשיאי ישראל איש לזרעו 6

,te in ſpreverunt matrem & Patrem .ſanguinẽ *effundendum ad* :te in fuerunt

היו בך למען שפך־דם : אב ואם הקלו בך 7

oppreſſerũt viduam & pupillũ :tui medio in oppreſſione *in* fecerũt *peregrino*

לגר עשו בעשק בתוכך יתום ואלמנה הונו

Viri .polluiſti mea ſabbatha & ,ſpreviſti mea Sanctuaria .te in

בך : קדשי בזית ואת־שבתתי חללת : אנשי 8 9

comederunt montes *ad* & :ſanguinẽ *effundendum ad* ,te in fuerunt *delatores*

רכיל היו בך למען שפך־דם ואל־ההרים אכלו

: te in *revelavit* patris *Nuditatem* .tui medio in fecerunt *ſcelus* : te in

בך זמה עשו בתוכך : ערות־אב גלה־בך 10

uxore cum unuſquiſq; Et .te in *compreſſerunt elongationis* immundam

טמאת הנדה ענו־בך : ואיש את־אשת 11

.*ſcelere in* polluit ſuã nurum unuſquiſq; & ,abominationẽ fecit ſui *ſocii*

רעהו עשה תועבה ואיש את־כלתו טמא בזמה

Munus .te in *compreſſit* ſui patris filiam ſuam ſororem unuſquiſque &

ואיש את־אחתו בת־אביו ענה־בך : שחד 12

ſuperabundantiã & Uſuram .ſanguinẽ *effundendum ad* , te in acceperunt

לקחו־בך למען שפך־דם נשך ותרבית

dixit ,es oblita mei & : oppreſſione *in* tuos *ſocios appetebas* & ,accepiſti

לקחת ותבצעי רעיך בעשק ואתי שכחת נאם

quam tuã avaritiam *ad* meam *volam* percuſſi ecce Et .Deus Dominus

אדני יהוה : והנה הכיתי כפי אל־בצעך אשר 13

ſtabit Nũquid .tui medio in *fuerunt* qui ,tuũ ſanguinẽ ſuper & : feciſti

עשית ועל־דמך אשר היו בתוכך : העמד 14

faciens ego quos diebus in tuæ manus prævalebunt Num ? tuum cor

לבך אם־תחזקנה ידיך לימים אשר אני עשה

faciam diſpergere Et .faciam & ,ſum locutus Dominus Ego ? tecum

אותך אני יהוה דברתי ועשיתי : והפיצותי 15

tuã immunditiã faciã deficere & ; terras in te ventilabo & ,gentes in te

אותך בגוים וזריתיך בארצות והתמתי טמאתך

.Dominus *ego* quòd ſcies & :gentium oculis in te in *hæreditabis* Et .te à

ממך : ונחלת בך לעיני גוים וידעת כי־אני יהוה : 16

: dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et

17 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר :

Verſio VULG. LAT.

32 Igni eris cibus, ſanguis tuus erit in medio terræ, oblivioni traderis: quia ego Dominus locutus ſum.

CAP. XXII.

1 ET factum eſt verbum Domini 2 ad me dicens; Et tu, fili hominis, nónne judicas, nónne judicas 3 civitatem ſanguinũ? Et oſtendes ei omnes abominationes ſuas, & dices; Hæc dicit Dñs Deus; Civitas effundens ſanguinem in medio ſui, ut veniat tempus ej⁹: & quæ fecit idola contra ſemet- 4 ipſam, ut pollueretur. In ſanguine tuo, qui à te effuſus eſt, deliquiſti: & in idolis tuis, quæ feciſti, polluta es: & appropinquare feciſti dies tuos, & adduxiſti tempus annorũ tuorũ: propterea dedi te opprobriũ Gentib⁹, & irriſionẽ univerſis terris. 5 Quæ juxta ſunt, & quæ procul à te, triumphabunt de te: ſordida, nobilis, grandis interitu. 6 Ecce principes Iſrael ſinguli in brachio ſuo fuerunt in te, ad 7 effundendum ſanguinem. Patrẽ & matrem contumeliis affecerunt in te, advenam calumniati ſunt in medio tuî, pupillum & viduam contriſtaverunt apud te: 8 Sanctuaria mea ſpreviſti, & ſab- 9 bata mea polluiſti. Viri detractores fuerunt in te ad effundendum ſanguinẽ, & ſuper montes comederunt in te, ſcelus operati 10 ſunt in medio tuî. Verecundiora patris diſcooperuerunt in te, immunditiam menſtruatæ humilia- 11 verunt in te: Et unuſquiſque in uxorem proximi ſui operat⁹ eſt abominationẽ, & ſocer nurũ ſuã polluit nefariè, frater ſororem ſuã filiã patris ſui oppreſſit in te. 12 Munera acceperunt apud te ad effundendũ ſanguinem: uſuram & ſuperabundantiam accepiſti, & avarè proximos tuos calumniabaris: meique oblita es, ait 13 Dñs Deus. Ecce comploſi man⁹ meas ſup avaritiam tuam, quam feciſti; & ſuper ſanguinem, qui 14 effuſus eſt in medio tuî. Numquid ſuſtinebit cor tuum, aut prævalebunt manus tuæ, in diebus quos ego faciam tibi? ego 15 Dñs locutus ſum, & faciam. Et diſpergam te in nationes, & ventilabo te in terras, & deficere faciam immunditiam tuam à te. 16 Et poſſidebo te in conſpectu Gentium: & ſcies quia ego Do- 17 minus. Et factum eſt verbum Domini ad me, dicens;

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

32 Ἐν πυρὶ ἔσῃ κατάβρωμα, τὸ αἷμά σου ἔσται ἐν μέσῳ τῆς γῆς σου. οὐ μὴ γένηταί σου μνεία, διότι ἐγὼ κύριος λελάληκα.

ΚΕΦ. κβ΄.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ- 2 γων, Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, (α) εἰ κρινεῖς τὴν 3 πόλιν τῶν αἱμάτων; Καὶ παράδειξον αὐτῇ πάσας τὰς ἀνομίας αὐτῆς. καὶ ἐρεῖς, Τάδε λέγει (β) κύριος κύριος, Ὦ πόλις ἐκχέουσα αἵματα ἐν μέσῳ αὐτῆς, τοῦ ἐλθεῖν καιρὸν αὐτῆς, καὶ (γ) ποιοῦσα ἐνθυμήματα (δ) 4 καθ' ἑαυτῆς, τοῦ μιαίνειν αὐτήν, Ἐν τοῖς αἵμασιν αὐτῆς οἷς ἐξέχεας, παραπέπτωκας, καὶ ἐν τοῖς ἐνθυμήμασί σου οἷς ἐποίεις, ἐμιαίνου· καὶ ἤγγισας τὰς ἡμέρας σου, καὶ ἤγαγες καιρὸν ἐτῶν σου. διὰ τοῦτο δέδωκά σε εἰς (ε) ὀνειδισμὸν τοῖς ἔθνεσι, καὶ εἰς ἐμπαιγμὸν 5 πάσαις ταῖς χώραις, Ταῖς ἐγγιζούσαις πρὸς σὲ, καὶ ταῖς μακρὰν ἀπεχούσαις ἀπὸ σοῦ, καὶ ἐμπαίξονται ἐν σοί, ἀκάθαρτος ἡ ὀνομαστὴ, καὶ 6 πολλὴ ἐν ταῖς ἀνομίαις. Ἰδοὺ οἱ ἀφηγούμενοι οἴκου Ἰσραήλ, ἕκαστος πρὸς τοὺς συγγενεῖς αὐτοῦ (ζ) συνεφύροντο ἐν σοί, ὅπως ἐκχέω- 7 σιν αἷμα. Πατέρα καὶ μητέρα ἐκακολόγουν ἐν σοί, καὶ πρὸς τὸν προσήλυτον ἀνεστρέφοντο ἐν ἀδικίαις ἐν σοί, ὀρφανὸν καὶ χήραν (η) 8 κατεδυνάστευον, Καὶ τὰ ἅγιά μου ἐξουδένουν, καὶ τὰ σάββατά μου ἐβεβήλουν ἐν σοί. 9 Ἄνδρες (θ) λῃσταὶ ἐν σοί, ὅπως ἐκχέωσιν ἐν σοὶ αἷμα, καὶ ἐπὶ τῶν ὀρέων ἤσθιον (ι) ἐπὶ 10 σοί, ἀνόσια ἐποίουν ἐν μέσῳ σου. Αἰσχύνην πατρὸς ἀπεκάλυψαν ἐν σοί, καὶ ἐν ἀκαθαρσί- 11 αις (κ) ἀποκαθημένην ἐταπείνουν ἐν σοί. Ἕκαστος τὴν γυναῖκα τοῦ πλησίον αὐτοῦ ἠνομοῦσαν, καὶ ἕκαστος τὴν (λ) νύμφην αὐτοῦ ἐμίαινεν ἐν ἀσεβείᾳ, καὶ ἕκαστος τὴν ἀδελφὴν αὐτοῦ θυγατέρα τοῦ πατρὸς αὐτοῦ ἐταπείνουν ἐν 12 σοί. Δῶρα (μ) ἐλαμβάνοσαν ἐν σοί, ὅπως ἐκχέωσιν αἷμα, τόκον καὶ πλεονασμὸν ἐλαμβάνοσαν ἐν σοί, καὶ συνετελέσω συντέλειαν κακίας σου τὴν ἐν (ν) καταδυναστείᾳ, ἐμοῦ δὲ 13 ἐπελάθου, λέγει (ξ) κύριος. Ἐὰν δὲ (ο) πατάξω χεῖρά μου ἐφ' οἷς συντετέλεσαι οἷς ἐποίησας, καὶ ἐπὶ τοῖς αἵμασί σου τοῖς (˜) γεγενημένοις 14 ἐν μέσῳ σου, Εἰ ὑποστήσεται ἡ καρδία σου; εἰ κρατήσουσιν αἱ χεῖρές σου ἐν ταῖς ἡμέραις αἷς ἐγὼ ποιῶ ἐν σοί; ἐγὼ κύριος λελάληκα, 15 καὶ ποιήσω. Καὶ διασκορπιῶ σε ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ διασπερῶ σε ἐν ταῖς χώραις, καὶ ἐκ- 16 λείψει ἡ ἀκαθαρσία σου ἐκ σοῦ. Καὶ κατακληρονομήσω (π) ἐν σοὶ κατ' ὀφθαλμοὺς τῶν 17 ἐθνῶν, καὶ γνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων,

32 In igne eris cibus: ſanguis tuus erit in medio terræ tuæ. Non erit tui memoria: quia ego Dominus loquutus ſum.

CAP. XXII.

1 ET factum eſt verbum Domini ad me, dicens; 2 Et tu, fili hominis, ſi judicas civitatem ſanguinum? 3 Et oſtende ei omnes iniquitates ſuas, & dices; Hæc dicit Dominus Dominus; O civitas effundens ſanguinem in medio ſuî, ut veniat tempus ejus, & faciens cogitationes contra ſemetipſam, ut pollueret ipſa. 4 In ſanguinibus eorum, quos effudiſti, deliquiſti: et in cogitationib⁹ tuis, quas faciebas, polluta es: & appropinquare feciſti dies tuos, & adduxiſti temp⁹ annorũ tuorũ. Propterea dedi te in opprobriũ gentibus, & in irriſionem omnibus regionibus, 5 Quæ ſunt juxta te, & quæ procul abſunt à te: & (a) illudent in te, immunda, nominata, & multa in iniquitatibus. 6 Ecce duces domus Iſrael, unuſquiſque ad cognatos ſuos, miſcebantur in te, ut effunderent ſanguinem. 7 Patrem & matrem maledicebant in te, et adverſus advenam converſabantur in iniquitatibus in te: pupillum, & viduam opprimebant: 8 Et Sancta mea ſpernebant, & ſabbata mea polluebant in te. 9 Viri (b) latrones in te, ut effunderent in te ſanguinem: & ſuper montes comedebant in te: ſcelerata faciebant in medio tuî. 10 Verecundiam patris diſcooperuerunt in te, & in immunditiis menſtruis reſidentem humiliabant in te: 11 unuſquiſque in uxorem proximi ſui iniquè agebant; & unuſquiſque nurum ſuam polluebat in impietate: & unuſquiſque ſororem ſuam filiam patris ſui humiliabant in te. 12 Munera accipiebant in te, ut effunderent ſanguinem: uſuram, & ſuperabundantiam accipiebant in te: & (c) conſummaſti conſummationem malitiæ tuæ, (d) quæ in oppreſſione: mei autem oblita es, ait Dominus. 13 Si autem percuſſero manum meam ſuper iis quæ conſummaſti, quæ feciſti, & ſuper ſanguinibus tuis, qui facti ſunt in medio tuî; 14 Si ſuſtinebit cor tuum? ſi prævalebunt manus tuæ in diebus, quos ego facio in te? Ego Dominus loquutus ſum, & faciam. 15 Et diſpergam te in gentibus, & diſſeminabo te in regionibus: & deficiet immunditia tua ex te: 16 Et ſ hæreditabo in te ante oculos gentium: & ſcietis, quia ego Dominus. 17 Et factum eſt verbum Domini ad me, dicens;

MS. A. (α) οὐ κρινεῖς (β) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (γ) ποιοῦσα (δ) κατ' αὐτῆς, (ε) ὄνειδος (ζ) συνανεφύροντο (η) κατεδυνάστευον ἐν σοί, (θ) λῃσταὶ ἦσαν (ι) ἐν σοί, (κ) ἀποκαθημένης (λ) ἀδελφὴν αὐτοῦ ἐμίαινεν (μ) ἐλάμβανον (ν) καταδυναστείᾳ σου, ὅτι ἐμοῦ ἐπελάθου, (ξ) κύριος, κύριος. (ο) πατάξω χεῖρά μου πρὸς χεῖρά μου ἐφ' (˜) γεγενημένοις, (π) ἐνώπιον τῶν ἐθνῶν, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγὼ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

לעממיא דתקיפין כאשתא תתמסרון לאשתיצאה חובת קטולך תהי בגו ארעא לא 32
יעול דכרניך ארי אנא יי גזרית במימרי : כב
והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : ואת בר אדם התוכח התוכח ית קרתא 1 2
דאשדי דם זכי בגוה ותחוי לה ית כל תועבתהא : ותימר כדנן אמר יי אלהים קרתא 3
דאשדי דם זכי בגוה מטא עדן תברה ו פלחין לטעותא בגוה בדיל לסאבותה : 4
בחובת דם זכי דאשדת חבת ובפולחן טעותיך דפלחת אסתאבת וקריב יום תבריך
ומטא עדן בישתיך על כן יהבתיך חסודין לעממיא ולעיב לכל מדינתא : דקריבין 5
ודרחיקין מניך יתלעבון ביך סואבת שמא דסגיאין אתרגושתהא : הא רברבי ישראל 6
גבר לתוקפיה הוו ביך בדיל למשפך דם זכי : אבא ואמא אקילו בך לגיורא אניסו 7
אנסא בגויך יתמין וארמלן אוניאו ביך : על קודשי בסרת וית יומי שביא דילי אחלת : 8
גברין אכלי קרצא הוו ביך בדיל למשפך דם זכי ובטוריא פלחו ביך לטעותא ארי עצת 9
חטאין עבדו בגויך : ערית אבא גליאו ביך אתתא טומאה עניאו ביך : וגבר ית אתת 10 11
חבריה עבד תועיבא וגבר ית כלתיה סאב בעצת חטאין וגבר ית אחתיה בת אבוהי עני
ביך : שוחדא קבילו ביך בדיל למשפך דם זכי חבוליא ורביתא נסבת ואהנית רחימך 12
באינסא ופולחני שבקת אמר יי אלהים : והא איתיתי פורענותי עלך בחובי ממון 13
אונסיך דאנסת ועל דם זכי דאשתפיך בגויך : היתקיף לבך אם יתקפן ידיך ליומיא 14
דאנא עתיד למעבד עמך אנא יי גזרית במימרי ואקיים : ואגלי יתיך ביני עממיא 15
ואבדרנך במדינתא ואסיף סואבתיך מניך : ואתקדש ביך לעיני עממיא ותדעין ארי 16
אנא יי : והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : 17

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Popnlis qui fortes ſunt ſicut ignis, trademini ad conſumendũ. Peccatũ in- 32
terficientiũ te erit in medio terræ : non ſubibit memoria tui; quia ego Do-
minus decrevi in verbo meo. CAP. XXII.
ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: Et tu fili ho- 2
minis nónne argues, nónne reprehendes civitatem in cuj⁹ medio effun-
ditur ſanguis innocens? & annuntiabis ei omnes abominationes ſuas. Et 3
dices: Hæc dicit Dñs De⁹: Civitas effundens ſanguinẽ innocentẽ in medio
ſui, ut perveniat temp⁹ interit⁹ ej⁹, & colentium idola in medio ej⁹, ut pol-
luant eam. In peccato ſanguinis innocentis quem effudiſti peccâſti, & cul- 4
tu idolorum tuorũ quæ coluiſti polluta es: & appropinquavit dies interit⁹
tui, & pervenit temp⁹ mali tui. Propterea dedi te in opprobria populis, &
in irriſionẽ omnib⁹ provinciis. Qui propè ſunt & qui longè ſunt, irridebunt 5
te pollutã nomine, cuj⁹ tumult⁹ ſunt multi. Ecce principes Iſrael ſinguli in 6
fortitudine ſua fuerunt in te ad effundendum ſanguinẽ innocentem. Patrẽ 7
& matrẽ inhonoraverunt in te, advenam violenter oppreſſerunt in medio
tui; pupillos & viduas contriſtaverunt in te. Sanctuaria mea ſpreviſti, et dies 8
ſabbatorũ meorũ violâſti. Viri calumniatores fuerunt in te ad effundendũ 9
ſanguinẽ innocentẽ, et in montib⁹ ſervierunt in te idolis: quia conſiliũ pec-
catorũ fecerunt in medio tui. Verenda patris diſcooperuerunt in te, mul- 10
ierẽ immundã humiliaverunt in te. Et unuſquiſque cum uxore proximi ſui 11
fecit abominationẽ, & unuſquiſque nurũ ſuã polluit ſcelerate, & unuſquiſque
ſororẽ ſuã filiã patris ſui humiliavit in te. Munera ſuſceperũt in te ad effun- 12
dendũ ſanguinẽ innocentẽ: fœn⁹ & uſurã accepiſti, & profuiſti amicis tuis
in rapina & cultũ meũ dereliquiſti, dicit Dñs De⁹. Et ecce induxi ultionem 13
meã ſuper te propter peccata pecuniarũ violentiæ tuæ, quas violenter ab-
ſtuliſti, & propter ſanguinẽ innocentẽ qui effuſus eſt in medio tui. Nunquid 14
confortabitur cor tuũ aut roborabuntur man⁹ tuæ in diebus quos ego faciã
tecũ? Ego Dñs decrevi in verbo meo, & firmabo. Et migrare te faciã inter 15
populos: & diſpergam te per provincias, & conſummabo immunditiã tuã à
te. Et ſanctificabor in te in oculis populorũ; & ſcies quia ego Dominus. 16
Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: 17

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܬܗܘܐ ܡܐܟܘܠܬܐ ܠܢܘܪܐ. ܘܕܡܟܝ ܢܗܘܐ ܒܓܘ ܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܬܬܕܟܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ
ܡܠܠܬ. * ܫܠܡ * ܟܐ *
* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪܢܫܐ. ܕܘܢ ܠܡܕܝܢܬܐ ܕܕܡܐ.
ܘܐܘܕܥܝܗ ܟܠܗ ܛܢܦܘܬܗ. ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܕܝܢܬܐ ܕܐܬܐܫܕ ܕܡܐ
ܒܓܘܗ. ܡܛܝ ܙܒܢܗ. ܘܥܒܕܬ ܦܬܟܪܐ ܒܓܘܗ. ܘܐܬܛܢܦܬ. * ܒܕܡܐ ܕܐܫܕܬܝ
ܐܬܚܝܒܬܝ. ܘܒܦܬܟܪܐ ܕܥܒܕܬܝ. ܐܬܛܡܐܬܝ. ܩܪܒܘ ܝܘܡܝܟܝ. ܘܡܛܝ ܙܒܢܐ ܕܫܢܝܟܝ.
ܡܛܠ ܗܢܐ ܝܗܒܬܟܝ ܠܚܣܕܐ ܠܥܡܡܐ. ܘܠܓܘܚܟܐ ܠܟܠܗܝܢ ܡܕܝܢܬܐ. * ܐܝܠܝܢ
ܕܩܪܝܒܢ ܠܟܝ. ܘܐܝܠܝܢ ܕܪܚܝܩܢ ܡܢܟܝ. ܢܓܚܟܢ ܒܟܝ. ܘܢܐܡܪܢ. ܛܢܦܬ ܫܡܐ. ܘܣܓܝܐܬ
ܒܫܘܓܢܝܗ. * ܗܐ ܪܘܪܒܢܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܢܫ ܠܒܝܬ ܐܒܘܗܝ ܗܘܘ ܒܟܝ. ܕܢܐܫܕܘܢ
ܕܡܐ. * ܠܐܒܐ ܘܠܐܡܐ ܨܥܪܘ ܒܟܝ. ܘܠܬܝܒܐ ܥܠܒܘ ܒܓܘܟܝ. ܘܠܝܬܡܐ
ܘܠܐܪܡܠܬܐ ܥܠܒܘ ܒܟܝ. * ܘܩܘܕܫܝ ܐܫܛܬܝ. ܘܫܒܬܝ ܛܡܐܬܝ. * ܓܒܪܐ ܬܓܪܐ
ܗܘܘ ܒܟܝ. ܕܢܐܫܕܘܢ ܕܡܐ. ܘܥܠ ܛܘܪܐ ܐܟܠܘ ܒܟܝ. ܘܥܘܠܐ ܥܒܕܘ ܒܓܘܟܝ.
* ܥܪܛܝܘܬܐ ܕܐܒܐ ܓܠܘ ܒܟܝ. ܘܛܢܦܘܬܐ ܕܕܫܘܢܝܬܐ ܥܒܕܘ ܒܓܘܟܝ. * ܘܓܒܪ
ܠܐܢܬܬ ܚܒܪܗ ܛܢܦܘ. ܘܓܒܪ ܠܟܠܬܗ ܛܢܦ ܒܙܢܝܘܬܐ. ܘܓܒܪ ܠܚܬܗ ܒܪܬ ܐܒܘܗܝ
ܫܚܩ ܒܟܝ. * ܡܘܗܒܬܐ ܢܣܒܘ ܒܟܝ ܕܢܐܫܕܘܢ ܕܡܐ. ܘܪܒܝܬܐ ܢܣܒܘ ܒܟܝ. ܘܝܬܝܪܐ ܢܣܒܘ
ܒܟܝ. ܘܢܟܠܘ ܠܚܒܪܝܗܘܢ ܒܢܟܠܐ. ܘܠܝ ܛܥܝܬܝ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. * ܐܦ ܐܢܐ
ܐܛܪܦ ܐܝܕܝ ܥܠ ܐܝܕܝ. ܥܠ ܚܛܗܐ ܕܥܒܕܬܝ. ܘܥܠ ܕܡܐ ܕܐܬܐܫܕ ܒܓܘܟܝ. * ܐܢ ܩܐܡ ܠܒܟܝ.
ܐܘ ܡܣܬܝܒܪܢ ܐܝܕܝܟܝ ܒܝܘܡܬܐ ܕܥܒܕ ܐܢܐ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܠܠܬ ܘܥܒܕܬ. * ܘܐܒܕܪܟܝ
ܒܥܡܡܐ. ܘܐܙܪܘܟܝ ܒܡܕܝܢܬܐ. * ܘܐܪܕܦܟܝ ܒܝܢܝ ܥܡܡܐ. ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.
* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ.

Eris eſca igni, & ſanguis tuus erit intra terram, 32
nec erit memoria tui: nam ego Dominus
locutus ſum.

CAP. XXII.

Fuit etiam ad me ſermo Domini, dicendo; 1
Tu autem fili hominis, judica urbem ſanguinariam, 2
& notas fac illi cunctas abominationes
ejus, & dic; Sic ait Dominus dominorum; 3
Urbs in qua ſanguis effuſus eſt, advenit
tempus tuum; quæ fabricavit idola intra ſe,
ſeſeque polluit; Sanguine quem fudiſti, rea 4
facta es; & idolis quæ fabricâſti, polluta es.
Acceſſerunt dies tui, & advenit tempus annorum
tuorum: ideo exponam te probro apud
gentes, & deriſui apud omnes urbes. Tam 5
illæ quæ ſunt à te remotæ, quàm quæ tibi proximæ
ſunt, deridebunt te, ac dicent; O infamis
nomine, & immodica in flagitiis tuis:
Ecce principes Iſraelis, quiſque in familiam 6
ſuam, ſunt in te ad effundendum ſanguinem:
Patrem matremque contumeliis affecerunt in 7
te: & eum qui ad me convertitur, oppreſſerunt
in medio tui: pupillis ac viduis vim intulerũt
in te. Sancta mea ſpreviſti, et ſabbatha mea 8
prophanâſti. Homines mercatores ſunt in te, 9
ut effundant ſanguinem: ſuper montes comederunt
in te, & facinus perpetraverunt in medio
tui. Pudenda patris retexerunt in te, & 10
ſtuprũ menſtrua patientis commiſerũt in medio
tui. Quiſque uxorem ſocii ſui polluerunt, 11
quiſque nurum ſuam fornicatione contaminaverunt,
& quiſque ſororem ſuam filiam patris
ſui ſtupraverunt in te. Munus acceperunt in 12
te ut effunderent ſanguinem, uſuram acceperunt
in te, plus æquo acceperunt in te, perfidè
fraudaverunt amicos ſuos, denique oblita
es mei, dicit Dominus dominorum. Etiam 13
ego manu ſuper manum complodam propter
ſcelus quod commiſiſti, & propter ſanguinem
qui effuſus eſt in te. An reſiſtet cor tuum? an 14
ſuſtinebunt manꝰ tuæ in diebus quibus agam?
ego Dominus locutus ſum, & faciam. Diſperdam 15
te inter gentes, et diſpergam te in
urbes, Et exterrebo te inter populos: ſciéſque 16
me eſſe Dominum. Et fuit ad me ſermo 17
Domini, dicendo;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ليفسدوك بالنار وتصير طعاما * دمك يصير في وسط ارضك * ولا يكون لك ذكر
من اجل اني انا الرب تكلمت * الفصل الثاني والعشرون *
* وكان قول الرب الي قايلا * وانت يا ابن الانسان * اليس تحاكم مدينة الدماء * فاسمع
لها اثامها وتقول * هكذا يقول الرب الرب الاله * ايتها المدينة المهرقة الدماء في وسطها
لياتي زمانها * وتصنع الفكرات عليها * لتتنجسي بدمايهم التي اهرقتيهم * سقطت
وبفكراتك التي صنعتيهم تنجست * قربت ايامك * واتيت بزمان سنيك * لاجل هذا دفعتك
عارا للامم * ولعبا في كل الكور * القريبة اليك * والبعيدات بعيدا منك * ويلعبون بك ايتها
النجسة المسماة والكثيرة الاثام * ها مقدموا بيت اسرايل * كل واحد مع قريبه اجتمعوا فيك
لكي يسفكوا دما * وتكلموا بالسوء في الاب والام فيك * ومع الدخيل ترددوا بالمظالم فيك
وعقوا على اليتيم والارملة فيك * وامتهنوا اقداسي * ونجسوا سبوتي فيك * الرجال اللصوص
صاروا فيك لكي يسفكوا فيك دما * واكلوا على الجبال فيك * صنعوا الخطية في وسطك
* كشفوا فضيحة الاب فيك * وبنجاسات الطامث اذلوا فيك * كل واحد زني بامراة
صاحبه * وكل واحد نجس احنته بالنفاق * وكل واحد اذل اخته ابنة ابيه فيك * اخذوا
الرشا فيك لكي يسفكوا دما * الربا والتضعيف اخذوهما فيك * وساكمل كمال قبيحك
الذي بكل قوتك * لانهم نسوني يقول الرب الرب * وانا اضرب بيدي على يدي
لافنيك بما صنعتيه وبدمايك الصايرة في وسطك * هل يبقى قلبك * او تمسك يداك
في الايام التي اصنع فيها بك * انا الرب تكلمت وساصنع * وافرقك في الامم * وابددك في
البلدان * وتفنى نجاستك منك * وارثك امام الامم * وتعلمين اني انا الرب *
* الاصحاح الثاني عشر * * وكان قول الرب الي قايلا *

Ut igne te conſumant, fiaſque cibus: ſanguis tuus erit in medio terræ tuæ, neque 32
remanebit tui memoria; quia ego Dominus locutus ſum.

CAP. XXII.

Et fuit ſermo Domini ad me dicens; 1
Et tu O fili hominis, annon judicium 2
inires cum urbe ſanguinum? imò retege
illi iniquitates ejus, ac dicas; Ita dicit 3
Dominus, Dominus Deus; O urbs quæ
ſanguinem fundis in medio tui, ut veniat
tempus tuum; & commenta fabricas
adverſùm te, ut contamineris eorum 4
ſanguinibus quos fudiſti: lapſa es, &
& commentis quæ fabricâſti, contaminata
es: acceleraſti dies tuos, & tempus
annorum tuorum adduxiſti. Propterea
tradidi te opprobrium gentibus, & luſum
in omnibus regionibus. Tibi vicinis, & 5
procul à te diſſitis, illudentque tibi O
impudica, famoſa, & ſceleribus abundans.
Ecce præcipui domûs Iſraelis, 6
quiſque cum proximo ſuo intra te convenerunt
ad effundendum ſanguinem:
Obloquuti ſunt contra patrem & ma- 7
trem in te: cùm advena tyrannicè ſe geſſerunt
in te: & pupillum ac viduam in
te oppreſſerunt: Sancta mea ſpreverunt, 8
& ſabbatha mea violaverunt in te. Viri 9
latrones ſe receperunt in te, ut effunderent
in te ſanguinem: comederunt ſuper
montes in te: commiſerunt ſcelus in medio
tui: Detexerunt verecundiam patris 10
in te, & cum impudicitiis menſtruatam
humiliaverunt in te. Unuſquiſque ſtu- 11
pravit uxorem ſocii ſui: unuſquiſque
ſororem ſuam impiè fœdavit, & unuſquiſque
ſororem ſuam filiam patris ſui in
te depreſſit. Acceperunt munus in te, ut 12
ſanguinem effunderent: uſuram & duplum
acceperunt in te: ideo finem ponam
ſummo turpitudinis tuæ cui totis
viribus tuis indulges: eò quòd mei obliti
ſint, ait Dominus, Dominus. Et ego 13
percutiam manum meam ad manum
meam, ut conſumam te ob ea quæ feciſti,
& ob cædes tuas quæ factæ ſunt in
medio tui. Num ſubſiſtet cor tuum? an 14
ſuſtinebunt manus tuæ in diebus quibus
hæc facturus ſum tibi? Ego Dominus
locutus ſum, & præſtabo: Nam 15
diſperdam te inter gentes, & diſpergam
te per regiones: cùmque turpitudo tua à
te deſierit, Tum hereditate poſſidebo te 16
coram gentibus: & agnoſces me eſſe Dominum.

Textus duodecimus.

Fuit etiam ſermo Domini ad me, dicens; 17

יחזקאל : כב

, æs isti Omnes .scoriam in Israel domus mihi fuerunt ,hominis Fili
18 בֶּן־אָדָם הָיוּ־לִי בֵית־יִשְׂרָאֵל לְסִיג כֻּלָּם נְחֹשֶׁת
argenti scoriæ , fornacis medio in plumbum & , ferrum & ,stannum &
וּבְדִיל וּבַרְזֶל וְעוֹפֶרֶת בְּתוֹךְ כּוּר סִגִים כֶּסֶף
vos omnes fuisse Pro : Deus Dominus dixit sic Propterea .fuerunt
19 הָיוּ׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה יַעַן הֱיוֹת כֻּלְּכֶם
.Jerusalaim medium in vos congregans ego ecce propterea : scorias in
לְסִגִים לָכֵן הִנְנִי קֹבֵץ אֶתְכֶם אֶל־תּוֹךְ יְרוּשָׁלִָם׃
medium ad stanni & ,plumbi & , ferri & , æris & ,argenti Cõgregatione
20 קְבֻצַת כֶּסֶף וּנְחֹשֶׁת וּבַרְזֶל וְעוֹפֶרֶת וּבְדִיל אֶל־תּוֹךְ
congregabo sic : fundendum ad ,ignem ea super sufflandum ad ,fornacis
כּוּר לָפַחַת־עָלָיו אֵשׁ לְהַנְתִּיךְ כֵּן אֶקְבֹּץ
.vos fundere faciã & ,faciam requiescere & ,mea ira in & ,meo naso in
בְּאַפִּי וּבַחֲמָתִי וְהִנַּחְתִּי וְהִתַּכְתִּי אֶתְכֶם׃
: mei furoris igne in , vobis super sufflabo & , vos congregabo Et
21 וְכִנַּסְתִּי אֶתְכֶם וְנָפַחְתִּי עֲלֵיכֶם בְּאֵשׁ עֶבְרָתִי
,fornacis medio in argentum fundi Secundum .ejus medio in eritis fusi &
22 וְנִתַּכְתֶּם בְּתוֹכָהּ׃ כְּהִתּוּךְ כֶּסֶף בְּתוֹךְ כּוּר
effudi Dominus ego quòd scietis & : ejus medio in eritis fusi sic
כֵּן תֻּתְּכוּ בְּתוֹכָהּ וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה שָׁפַכְתִּי
Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .vos super meã iram
23
24 חֲמָתִי עֲלֵיכֶם׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־
ejus pluvia nec : ipsa mundata non terra Tu : ei dic hominis
אָדָם אֱמָר־לָהּ אַתְּ אֶרֶץ לֹא מְטֹהָרָה הִיא לֹא גֻשְׁמָהּ
leo sicut :ejus medio in ejus prophetarum Conjuratio .indignationis die in
25 בְּיוֹם זָעַם׃ קֶשֶׁר נְבִיאֶיהָ בְּתוֹכָהּ כַּאֲרִי
ceperunt gloriam & robur ,comederũt animam :rapinam rapiens ,rugiens
שׁוֹאֵג טֹרֵף טָרֶף נֶפֶשׁ אָכָלוּ חֹסֶן וִיקָר יִקָּחוּ
violaverunt ejus Sacerdotes .ejus medio in multiplicaverunt ejus viduas
26 אַלְמְנוֹתֶיהָ הִרְבּוּ בְתוֹכָהּ׃ כֹּהֲנֶיהָ חָמְסוּ
prophanum ad sanctum inter ;mea sanctuaria polluerunt & ,meam legem
תוֹרָתִי וַיְחַלְּלוּ קָדָשַׁי בֵּין־קֹדֶשׁ לְחֹל
:scire fecerunt non mundum ad immundum inter & ; discreverunt non
לֹא הִבְדִּילוּ וּבֵין־הַטָּמֵא לְטָהוֹר לֹא הוֹדִיעוּ
coinquinabar & , suos oculos occultaverunt meis sabbathis à &
וּמִשַּׁבְּתוֹתַי הֶעְלִימוּ עֵינֵיהֶם וָאֵחַל
,rapinam rapientes lupi tanquã,ejꝰ interiori in ejꝰ Principes .corũ medio in
27 בְּתוֹכָם׃ שָׂרֶיהָ בְקִרְבָּהּ כִּזְאֵבִים טֹרְפֵי טָרֶף
.concupiscentiã appetendum ad ,animas perdendũ ad,sanguinẽ effundendũ ad
לִשְׁפָּךְ־דָּם לְאַבֵּד נְפָשׁוֹת לְמַעַן בְּצֹעַ בָּצַע׃
divinantes & ,vanum videntes , insulso eos linebant ejus prophetæ Et
28 וּנְבִיאֶיהָ טָחוּ לָהֶם תָּפֵל חֹזִים שָׁוְא וְקֹסְמִים
Dominus & , Deus Dominus dixit Sic : dicentes : mendaciũ eis
לָהֶם כָּזָב אֹמְרִים כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה וַיהוָה
rapiebant & ,oppressione opprimebant terræ Populum .est locutus non
29 לֹא דִבֵּר׃ עַם הָאָרֶץ עָשְׁקוּ עֹשֶׁק וְגָזְלוּ
opprimebant advenam & ,populabantur egenum & afflictum & [illegible]
גָּזֵל וְעָנִי וְאֶבְיוֹן הוֹנוּ וְאֶת־הַגֵּר עָשְׁקוּ
stantem & ,sepem sepientem virum eis ex quæsivi Et [illegible] absque
30 בְּלֹא מִשְׁפָּט׃ וָאֲבַקֵּשׁ מֵהֶם אִישׁ גֹּדֵר־גָּדֵר וְעֹמֵד
non & : eam corrumpendum non ad terra pro mea facies ad fractura in
בַּפֶּרֶץ לְפָנַי בְּעַד הָאָרֶץ לְבִלְתִּי שַׁחֲתָהּ וְלֹא
meæ iræ igne in ,meam indignationem eos super effudi Et .inveni
31 מָצָאתִי׃ וָאֶשְׁפֹּךְ עֲלֵיהֶם זַעְמִי בְּאֵשׁ עֶבְרָתִי
.Deus Dominus dixit , dedi eorũ caput in eorum viam :eos consumpsi
כִּלִּיתִים דַּרְכָּם בְּרֹאשָׁם נָתַתִּי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃

CAP. XXIII. כג

Duæ :hominis Fili :dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1
2 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם שְׁתַּיִם
.fuerunt unius matris filiæ mulieres
נָשִׁים בְּנוֹת אֵם־אַחַת הָיוּ׃

Versio VULG. LAT.

18 Fili hominis, versa est mihi domus Israel in scoriam: omnes isti æs, & stannum, & ferrum, & plumbum in medio fornacis: 19 scoria argenti facti sunt. Propterea hæc dicit Dominus Deꝰ; Eò quòd versi estis omnes in scoriam, propterea ecce ego congregabo vos in medio Jerusalem, 20 Congregatione argenti, & æris, & stanni, & ferri, & plumbi in medio fornacis: ut succendã in ea ignem ad conflandũ: sic congregabo in furore meo, & in ira mea, & requiescam: & conflabo 21 vos. Et congregabo vos, & succendã vos in igne furoris mei, & conflabimini in medio ejus. 22 Ut conflatur argentum in medio fornacis, sic eritis in medio ejꝰ: & scietis quia ego Dñs, cùm effuderim indignationẽ meã super 23 vos. Et factũ est verbũ Dñi ad 24 me, dicens; Fili hominis, dic ei; Tu es terra immunda, & non 25 compluta in die furoris. Conjuratio prophetarũ in medio ejꝰ, sicut leo rugiens, rapiénsque prædam, animas devoraverunt, opes & pretiũ acceperunt, viduas ejꝰ multiplicaverunt in medio illiꝰ. 26 Sacerdotes ejꝰ contempserunt legem meã, & polluerunt Sanctuaria mea: inter sanctũ & profanũ non habuerunt distantiã: & inter pollutum & mundum non intellexerunt: & à sabbatis meis averterunt oculos suos, & coin- 27 quinabar in medio eorum. Principes ejus in medio illiꝰ, quasi lupi rapientes prædam ad effundendũ sanguinẽ, & ad perdendas animas, & avarè ad sectanda lu- 28 cra. Prophetæ autẽ ejus liniebant eos absque temperamento, videntes vana, & divinantes eis mendacium, dicentes; Hæc dicit Dñs Deus, cùm Dñs non sit lo- 29 cutus. Populi terræ calumniabantur calumniam, & rapiebant violenter: egenum & pauperem affligebant, & advenã opprimebant calumniâ absque judicio. 30 Et quæsivi de eis virũ, qui interponeret sepem, & staret oppositus contra me pro terra, ne dis- 31 siparem eam: & non inveni. Et effudi super eos indignationem meam, in igne iræ meæ consumpsi eos: viam eorum in caput eorum reddidi, ait Dñs Deus.

CAP. XXIII.

1 ET factus est sermo Domini ad 2 me, dicens; Fili hominis, duæ mulieres filiæ matris unius fuerunt,

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

18 Υἱὲ ἀνθρώπου, ἰδοὺ (ρ) γεγόνασί μοι ὁ οἶκος Ἰσραὴλ ἀναμεμιγμένοι πάντες χαλκῷ, καὶ σιδήρῳ, καὶ κασσιτέρῳ, καὶ (σ) μολίβῳ, ἐν μέσῳ ἀργυρίου ἀναμεμιγμένος ἐστί. 19 Διὰ τοῦτο εἰπόν, Τάδε λέγει (τ) κύριος κύριος, Ἀνθ᾽ ὧν (υ) ἐγένεσθε εἰς σύγκρασιν μίαν, διὰ τοῦτο (φ) ἐγὼ εἰσδέχομαι ὑμᾶς εἰς μέσον Ἱερουσαλήμ. 20 Καθὼς εἰσδέχεται ἄργυρος, καὶ χαλκὸς, καὶ σίδηρος, καὶ κασσίτερος, καὶ (χ) μόλιβος εἰς μέσον καμίνου (ψ), τοῦ ἐκφυσῆσαι εἰς αὐτὸ πῦρ τοῦ χωνευθῆναι, οὕτως εἰσδέξομαι (ω) ἐν ὀργῇ μου, καὶ συνάξω καὶ χωνεύσω ὑμᾶς, 21 Καὶ ἐκφυσήσω (α) ἐφ᾽ ὑμᾶς ἐν πυρὶ ὀργῆς μου, καὶ χωνευθήσεσθε ἐν μέσῳ αὐτῆς. 22 Ὃν τρόπον χωνεύεται ἀργύριον ἐν μέσῳ καμίνου, οὕτως χωνευθήσεσθε ἐν μέσῳ αὐτῆς, καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος ἐξέχεα 23 τὸν θυμόν μου ἐφ᾽ ὑμᾶς. Καὶ ἐγένετο λόγος 24 κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, εἰπὸν αὐτῇ, Σὺ εἶ (β) γῆ ἡ οὐ βρεχομένη, οὐδὲ ὑε- 25 τὸς (γ) ἐγένετο ἐπὶ σὲ ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς. Ἧς οἱ ἀφηγούμενοι ἐν μέσῳ αὐτῆς ὡς λέοντες (δ) ὠρυόμενοι ἁρπάζοντες ἁρπάγματα, ψυχὰς κατεσθίοντες (ε) ἐν δυναστείᾳ, καὶ τιμὰς λαμβάνοντες. καὶ χῆραί σου ἐπληθύνθησαν ἐν μέ- 26 σῳ σου. Καὶ οἱ ἱερεῖς αὐτῆς ἠθέτησαν (ζ) νόμον μου, καὶ ἐβεβήλουν τὰ ἅγιά μου· ἀναμέσον ἁγίου καὶ βεβήλου οὐ διέστελλον, καὶ ἀναμέσον ἀκαθάρτου καὶ τοῦ καθαροῦ οὐ διέστελλον, καὶ ἀπὸ τῶν σαββάτων μου παρεκάλυπτον τοὺς ὀφθαλμοὺς αὐτῶν, (η) καὶ ἐβεβηλούμην ἐν μέσῳ 27 αὐτῶν. Οἱ ἄρχοντες αὐτῆς ἐν μέσῳ αὐτῆς ὡς λύκοι ἁρπάζοντες ἁρπάγματα, τοῦ ἐκχέ- 28 αι αἷμα, ὅπως πλεονεξίᾳ πλεονεκτῶσι. Καὶ οἱ προφῆται αὐτῆς (θ) ἀλείφοντες αὐτοὺς πεσοῦνται, (ι) ὁρῶντες μάταια, μαντευόμενοι ψευδῆ, λέγοντες, Τάδε λέγει κύριος· καὶ κύ- 29 ριος οὐκ ἐλάλησε. (κ) Λαὸν τῆς γῆς ἐκπιεζοῦντες (λ) ἀδικίᾳ, καὶ διαρπάζοντες ἁρπάγματα, πτωχὸν καὶ πένητα καταδυναστεύοντες, καὶ πρὸς τὸν προσήλυτον οὐκ ἀναστρεφόμενοι μετὰ 30 κρίματος. Καὶ ἐζήτουν ἐξ αὐτῶν ἄνδρα ἀναστρεφόμενον ὀρθῶς, καὶ ἑστῶτα πρὸ προσώπου μου (μ) ὁλοσχερῶς ἐν τῷ καιρῷ τῆς ὀργῆς, τοῦ μὴ εἰς τέλος ἐξαλεῖψαι αὐτὴν, καὶ οὐχ εὗρον. 31 Καὶ ἐξέχεα ἐπ᾽ αὐτὴν (ν) θυμόν μου ἐν πυρὶ ὀργῆς μου τοῦ συντελέσαι (ξ)· τὰς ὁδοὺς αὐτῶν εἰς κεφαλὰς αὐτῶν δέδωκα, λέγει κύριος κύριος.

MS. A. (ρ) γέγονεν ὁ οἶκος Ἰσραὴλ ἀναμεμιγμένος χαλκῷ, (σ) μολίβδῳ, (τ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (υ) ἐγένεσθε πάντες εἰς (φ) ἰδοὺ ἐγὼ (χ) μόλιβδος (ψ) πυρὸς, τοῦ ἐμφυσῆσαι εἰς αὐτὰ πῦρ τοῦ χωνεῦσαι, (ω) ὑμᾶς ἐν ὀργῇ μου, ἐν τῷ θυμῷ μου, καὶ (α) εἰς ὑμᾶς ἐκφύσημα ἐν πυρὶ (β) γῆ οὐ (γ) καταβήσεταί σοι. Οἱ ἀφηγούμενοι αὐτῆς ἐμμέσῳ (δ) ἐρευγόμενοι (ε) ἐδυνάστευον ἐν δυναστείᾳ, δῶρα ἐλάμβανον ἐν ἀδικίᾳ. καὶ χῆραί (ζ) τὸν νόμον (η) καὶ τὰ σάββατά μου ἐβεβήλουν (θ) οἱ ἀλείφοντες (ι) οἱ ὁρῶντες (κ) Τὸν λαὸν (λ) ἐν ἀδικίᾳ, (μ) τὸ ὁλοσχερὲς ἐν καιρῷ τῆς ὀργῆς μου, τοῦ (ν) τὸν θυμόν (ξ) αὐτοῦ.

Fili hominis, ecce facti sunt mihi domus Israel, admisti omnes æ[re], & ferro, & stanno, & plumbo: in medio argenti (g) admista est. 19 Propterea dic, Hæc dicit Dominus Dominus; Eo quod facti estis in (h) commistionem unam; Idcircò ego recipiam vos in medio Hierusalem; 20 Sicut recipitur argentum, & æs, & ferrum, & stannum, & plumbum in medium fornacis ad sufflandum ignem in (i) illud, ut conflетur: Sic recipiam in ira mea, & congregabo, & conflabo vos: 21 Et sufflabo in vos in igne iræ meæ: & conflabimini in medio ejus. 22 Sicut conflatur argentum in medio fornacis, sic conflabimini in medio ejus: & scietis, quia ego Dominus effudi indignationem meam super vos. 23 Et factum est verbum Domini ad me, dicens; 24 Fili hominis, dic ei; Tu es terra non irrigata, neque pluvia facta est super te in die iræ. 25 Cujus duces in medio ejus, sicut leones rugientes, rapinas rapientes, devorantes animas in potentia, & pretia accipientes. (k) Et viduæ tuæ multiplicatæ sunt in medio tui. 26 Et sacerdotes ejus contempserunt legem meam, & polluerunt Sancta mea. Inter sanctum & prophanum non distinguebant, & inter immundum & mundum non distinguebant, & à sabbatis meis cooperiebant oculos suos: & coinquinabar in medio eorum. 27 Principes ejus in medio illius, quasi lupi rapientes rapinas, ad effundendum (l) sanguinem, ut per avaritiã plus acquirant. 28 Et prophetæ ejus (m) ungentes eos, cadent, videntes vana, divinantes mendacia, dicentes; Hæc dicit Dominus, & Dominus non est loquutus: 29 Populum terræ vexantes injustitiã, & diripientes rapinas, egenũ & pauperem per potentiã opprimentes, & erga advenam non conversantes cũ judicio. 30 Et quærebã de eis virũ, qui conversaretur rectè, & (n) staret ante faciẽ meã integrè in tempore (o) iræ, ut non in finẽ delerẽ eã: & non inveni. 31 Et effudi super eã furorem meũ in igne iræ meæ ad consummandum. Vias eorũ in capita eorũ dedi, dicit Dominus Dominus.

ΚΕΦ. κγ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ- 2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, δύο γυναῖκες ἦσαν θυγατέρες μητρὸς μιᾶς,

CAP. XXIII.

1 ET factus est sermo Domini ad me, dicens; 2 Fili hominis, duæ mulieres fuerunt filiæ matris unius:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 בר אדם הוו קדמי בית ישראל לפסולא כולהון כמא דמערב נחש ובעיץ וברזל ואבר
19 בגו כורא לפסולת כספא הוו׃ בכן כדנן אמר יי אלהים חלף דהויתון כולכון לפסולא
20 בכן הא אנא כניש יתכון לגו ירושלם׃ כמכנש כסף ונחש וברזלא ואבר ובעיץ לגו
כורא לאתקפא עלוהי נורא לאמסיותיה כן אכניש ברוגזי ובחמתי ואסיף ואשיצי
21 22 יתכון׃ ואכניש יתכון ואתקיף עליכון באשתא פורענותי ותתמסון בגוה׃ כאתמסאה
23 כסף בגו כורא כן תתמסון בגוה ותידעון ארי אנא יי שפיכית חמתי עליכון׃ והוה
24 פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ בר אדם אמר לה את ארעא דישראל ארעא
25 לא מדכיא היא ולא אתעבידו בה עובדין טבין דיגנון עלה ביום לוט׃ סיעת ספרהא
בגוה כאריון נהמין למקטל קטול אנשא קטלו עותר ויקר נסיבו ארמלתהא אסגיאו
26 בגוה׃ כהנהא חטפין אוריתי ומפסין קדשי בין קודשא לחולא לא אפרישו ובין
מסאבא לדכיא לא הודיעו ומיומי שביא דילי כבשו עיניהון וחלת רעותי ביניהון׃
27 רברבהא בגוה כדיבין חטפי חטוף למשפך דם זכי לאבדא נפשן בדיל לקבלא ממון
28 דשקר׃ ונביי שקרא די בגוה דמן לדבני מחיצא ושעו ליה טין פטיר דלא תבן מתנבן
29 שקר ומלפין להון כדבין אמרין כדנן אמר יי אלהים ומן קדם יי לא אתמלל׃ עמא
דארעא עשקי עושקא ונזלו גזלה ומסכן וחשיך אוניאו ולגיורא אנסו בלא כדחזי׃
30 ואתבע מנהון קדמי גבר דליה עובדין טבין דיקום בתרעתא קדמי ויבעי רחמין על
31 עמא דארעא בדיל דלא לחבלותה ולא אשכחית׃ ושפיכית עליהון חמתי באשת
פורענותי שיציתנון פורענות אורחהון ברישיהון יהבית אמר יי אלהים׃

כג

והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ בר אדם אתנבי על תרתין מדינן דא
כתרתין נשין די בנת אמא חדא הואה׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Fili hominis, facti sunt coram me domꝰ Israel in scoriam universi, sicut com- 18 miscetur æs & stannum & ferrum & plumbum in medio fornacis, in scoriam argenti fuerunt. Propterea hæc dicit Dñs Deꝰ: Pro eo quòd facti estis 19 universi in scoriam, ideo ecce ego congregabo vos in medio Jerusalem. Sicut congregatur argentum & æs & ferrum & plumbum & stannum in 20 medio fornacis, ut prævaleat contra ea ignis, & liquefaciat ea; sic congregabo vos in furore meo, & in indignatione mea, & consumam & dispergam vos. Et congregabo vos, & prævalebo contra vos igne ultionis 21 meæ, & liquefietis in medio ejꝰ. Sicut liquefit argentum in medio fornacis, 22 sic colliquescetis in medio ejꝰ; & scietis quòd ego Dñs effuderim in vos meam indignationem. Et factum est verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, 23 dicens: Fili hominis, dic ei: Tu terra Israel terra immunda es, in qua non 24 sunt facta opera bona, ut protegant eam in die maledictionis. Turba scri- 25 barum ejꝰ in medio ejꝰ quasi leones rugientes ad occidendum occisionem; homines occidunt, divitias & gloriam accipiunt; viduas ejꝰ multiplicant in medio ejꝰ. Sacerdotes ejꝰ rapiunt legem meam, & violant sacra mea, in- 26 ter sanctum & prophanum non separant, & inter pollutum & mundum non dignoscunt, & à diebꝰ sabbatorum meorum comprimunt oculos suos, & prophanatur voluntas mea in medio eorum. Principes ejꝰ in medio illiꝰ, 27 quasi lupi rapientes rapinam ad effundendum sanguinem innocentem & ad perdendas animas, ut suscipiãt mammona iniquitatis. Et pseudopropheæ, 28 qui sunt in medio ejꝰ, similes sunt ei qui ædificat parietem, & oblinit luto simplici absque paleis; prophetant falsitatem & docent eos mendacia: dicunt, Hæc dicit Dñs Deꝰ: & à facie Dñi non dicitur eis. Populꝰ terræ ca- 29 lumniatur calumniã, et diripiunt direptionẽ, et egenũ et pauperem opprimunt, et advenæ vim inferunt, non sicut decet. Et quæsivi mihi ex eis virum 30 cujꝰ opera essent bona, et qui staret in ruptura muri coram me, et quæreret misericordiã pro populo terræ, ut non disperderẽ eam; et non inveni. Et ef- 31 fudi sup eos indignationẽ meã: in igne ultionis meæ consumpsi eos: ultionem viæ suæ in caput eorum dedi, ait Dñs Deus.

CAP. XXIII.

ET factũ est verbũ prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: Fili hominis va- 1 ticinare super duas provincias, quæ sunt sicut duæ mulieres quæ fuerunt filiæ matris unius.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܪܢܫܐ. ܗܘܘ ܠܝ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܡܣܠܝܐ ܟܠܗܘܢ. ܐܝܟ ܢܚܫܐ ܘܐܝܟ ܐܢܟܐ. ܘܐܝܟ ܦܪ
ܘܐܝܟ ܐܒܪܐ ܒܓܘ ܟܘܪܐ ܕܡܚܠܛܝܢ ܒܣܐܡܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܡ
ܕܐܬܚܠܛܬܘܢ ܟܠܟܘܢ. ܗܐ ܡܟܢܫ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܠܓܘ ܐܘܪܫܠܡ. * ܐܝܟ ܕܡܬܟܢܫ ܣܐܡ
ܘܢܚܫܐ ܘܦܪܙܠܐ ܘܐܢܟܐ ܘܐܒܪܐ ܠܓܘ ܟܘܪܐ: ܘܢܦܚܝܢ ܒܗܘܢ ܢܘܪܐ ܕܢܬܦܫܪܘܢ. ܗܟ
ܐܟܢܫܟܘܢ ܒܪܘܓܙܝ ܘܒܚܡܬܝ ܘܐܦܫܪܟܘܢ. * ܘܐܦܘܚ ܒܟܘܢ ܢܘܪܐ ܕܪܘܓܙܝ ܘܐܦܫ
ܒܓܘܗ. * ܐܝܟ ܕܡܬܦܫܪ ܣܐܡܐ ܒܓܘ ܟܘܪܐ. ܗܟܢܐ ܬܬܦܫܪܘܢ ܒܓܘܗ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐ
ܡܪܝܐ ܐܫܕܬ ܚܡܬܝ ܥܠܝܟܘܢ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܐ
ܠܗ. ܐܢܬܝ ܐܪܥܐ. ܠܐ ܗܘܝܬܝ ܕܟܝܐ. ܘܠܐ ܐܬܨܒܥܬܝ ܘܠܐ ܢܚܬ ܥܠܝܟܝ ܡܛܪܐ. * ܡ
ܕܢܒܝܘܗ̈ ܒܓܘܗ. ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܕܢܗܡ ܘܚܛܦ ܚܛܘܦܐ. ܐܟܠܘ ܢܦܫܬܐ ܒܥܘܫܢܗܘܢ. ܘܐܝ
ܕܗܝܟܠܝܗܘܢ ܢܣܒܘ. * ܟܗܢܝܗ̈ ܐܥܘܠܘ ܒܢܡܘܣܝ. ܘܛܘܫܘ ܡܩܕܫܝ. ܘܒܝܢ ܩܘܕ
ܠܚܘܠܐ ܠܐ ܦܪܫܘ. ܘܒܝܢ ܛܡܐܐ ܠܕܟܝܐ ܠܐ ܝܕܥܘ. ܘܡܢ ܫܒܬܝ ܐܥܡܝܘ ܥܝܢܝܗܘ
ܘܐܬܛܘܫܬ ܒܝܢܬܗܘܢ. * ܪܘܪܒܢܝܗ̈ ܒܓܘܗ. ܐܝܟ ܕܐܒܐ ܕܚܛܦܝܢ ܠܡܐܫܕ ܕܡܐ. ܘܠܡܘ
ܢܦܫܬܐ. ܕܢܩܢܘܢ ܩܢܝܢܐ. * ܘܢܒܝܘܗ̈ ܛܫܘ ܠܗ ܒܛܝܢܐ ܕܢܦܠ. ܚܙܘ ܠܗܘܢ ܕܓܠ
ܘܐܡܪܝܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܡܪܝܐ ܠܐ ܐܡܪ. * ܠܥܡܐ ܕܐܪܥܐ ܛܠܡܘ. ܘܢܟܠܘ. ܘܠܡ
ܘܠܒܨܝܪܐ ܘܠܚܫܝܟܐ. ܘܠܡܬܬܘܒܢܐ ܠܘܬܝ ܛܠܡܘ ܕܠܐ ܒܕܝܢܐ. * ܘܒܥܝܬ ܡܢܗܘܢ ܓ
ܕܢܓܕܪ ܣܝܓܐ. ܘܢܩܘܡ ܒܬܘܪܥܬܐ ܩܕܡܝ ܚܠܦ ܐܪܥܐ ܕܠܐ ܐܚܒܠܝܗ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܬ.
* ܘܐܫܕܬ ܥܠܝܗܘܢ ܪܘܓܙܝ. ܘܒܢܘܪܐ ܕܚܡܬܝ ܫܝܨܝܬ ܐܢܘܢ. ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܦܪܥ
ܒܪܫܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.

Fili hominis, facti ſunt apud me Iſraelitæ 18
omnes abominandi velut æs, velut ſtannum,
velut ferrum, & velut plumbum in catino cum
argento commixta. Iccircò ait Dñs domino- 19
rum; Quia commixti eſtis omnes, ecce con-
gregabo vos intra Jeruſalem. Quemadmodum 20
congeritur argentum, æs, ferrum, ſtannum, atq;
plumbum intra catinum, & ſufflant in ea ignē
ut liqueſiant; ita congregabo vos in ira mea,
& in furore meo liquabo vos: Sufflabo enim 21
in vos ignem furoris mei, & liquefaciam vos
intra ipſam *urbem*. Quemadmodum liqueſcit 22
argentum intra catinum, ita liqueſcetis intra
ipſam: & experiemini, me Dñm effudiſſe fu-
rorē meū ſuper vos. Fuit etiam ad me ſermo 23
Dñi, dicendo; Fili hominis, dic iſti; Tu terra, 24
non es munda, intincta nondum fuiſti, neque
decidit ſuper te pluvia. Rebellaverunt pro- 25
phetæ ejus in ipſa, tanquam leo rugiens & præ-
dam diripiens: comederunt animas fortitudi-
ne ſuâ, & gloriam palatiorum eorum occupa-
verunt. Sacerdotes ejus impiè egerunt contra 26
legē meam, & polluerunt ſanctuarium meum:
inter ſanctū & prophanum non diſcreverunt,
& impurum à puro non dignoſcunt: à ſab-
bathis meis demiſerunt oculos ſuos, denique
prophanatus ſum inter illos. Principes ejus 27
intra ipſam ut lupi rapiunt, ad effundendum
ſanguinem & perdendas animas, ut poſſeſſio-
nem acquirant. Prophetæ ejus obducunt eam 28
tectorio ut corruat: viderunt eis mendacium,
dicentes, Sic dicit Dñs, quum Dominus non
dixerit. Populum terræ tyrannicè & doloſè 29
tractârunt, pauperibus & egenis vim intule-
runt, & eum qui ad me convertitur, iniquè
oppreſſerunt. Denique virum inter eos quæ- 30
ſivi, qui ſepem obduceret, & conſiſteret in
ruptura coram me pro terra ne vaſtarem eam;
& non inveni. Quapropter effudi ſuper eos 31
iracundiam meam, & igne furoris mei con-
ſumpſi eos: vias eorum rependi in capita
ipſorum, ait Dominus dominorum.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܓ *

* ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܬܪܬܝܢ ܢܫܝܢ ܐܝܬ ܗܘܝ ܒܢܬ ܐ

CAP. XXIII.

ITem fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 1
Fili hominis, duæ erant fœminæ filiæ ejuſ- 2
dem matris.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* يا ابن الانسان ها قد صار بيت اسرايل مختلطا بنحاس وحديد * وقصدير ورصاص في
وسط فضة مختلط هو * لاجل هذا قل هكذا يقول الرب الرب الاله من اجل انكم صرتم جميع
امتزاجا واحدا لاجل هذا ها انا اقبلكم في وسط ايروسليم * كما تقبل الفضة والنحاس والحديد
والقصدير والرصاص في وسط قمين النار لينفخ عليها النار لتسبكها هكذا اقبلكم برجزي
وغضبي واجمعكم واسبككم * وانفخ عليكم نفخة بنار رجزي وتسبكون في وسطه *
تسبك الفضة في وسط الاتون هكذا تسبكون في وسطه وتعلمون اني انا الرب اهرقت غضبي
عليكم * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان قل لها * انت الارض الغير ممطورة
ينزل عليك مطر * الذي مقدموها في وسطها مثل اسد زاير يختطفون اختطافا * ياكلون
النفوس بقوة * ياخذون الرشا في الظلم واراملك كثرن في وسطك * وكهنتها خالفوا ناموسي
ونجسوا اقداسي * ولم يفرقوا بين الطاهر والنجس * ولم يفرقوا بين الغير نقي والنقي * وغطوا
عيونهم عن سبوتي * وتنجست في وسطهم * رؤساوها في وسطها مثل ذياب تخطف اختطافا
ليسفكوا دما لكي يستكثروا استكثارا * وانبياوها الذين دهنوهم يسقطون * ينظرون
الاباطيل ويتكهنون الكذب قايلين هكذا يقول ادوناي الرب والرب لم يتكلم * شعب
الارض يرتصد الظلم ويختطفون اختطافا يتعدون على الفقير والمسكين ومع الدخيل لا
يتصرفون بحكم * وطلبت منهم رجلا متصرفا باستقامة وقايما بالانصاف امام وجهي في
زمن الغضب من اجل الارض الا اهلكها الى الغاية فلم اجد * واهرقت عليها غضبي بنار
رجزي لافنيها واعطيت طرقهم على رووسهم يقول الرب الرب

O fili hominis, ecce jam facta eſt domus 13
Iſraelis mixta ære & ferro, ſtanno &
plumbo; in medio argenti permixta eſt.
Propereà dic, Ita dicit Dominus, Domi- 19
nus Deus; Quia vos facti eſtis omnes
mixturâ eâdem, ideò ecce ego recipiam
vos in medio Jeruſalem, Quemadmo- 20
dum recipitur argentum, æs, ferrum, ſtan-
num, & plumbum in medio camini ignis;
ut inſufflato in hæc igne, liqueſcant. Ita
recipiam vos in ira & furore meo, conge-
ram vos, & liquabo vos: Et flatum in 21
vos efflabo in igne furoris mei, & liqua-
bimini in medio ejus. Quemadmodum 22
liquatur argentum in medio fornacis, ita
liquefietis in medio ejus; & ſcietis me
Dominum effudiſſe ſuper vos furorem
meum. Rurſum fuit ſermo Domini ad 23
me, dicens; O fili hominis, dic ei; Tu 24
es terra ſine pluvia, ſuper quam nullus
decidit imber: Cujus principes in medio 25
tui, ſimiles leonibus rugientibus rapiunt
rapinam, animas violenter comedunt, mu-
nus iniquè accipiunt: unde viduæ tuæ
multiplicatæ ſunt in medio tui. Sacer- 26
dotes ejus adverſati ſunt legi meæ, pol-
luerunt ſancta mea, non habuerunt diſcri-
men inter mundum & immundum, neque
diſtinxerunt impurum à puro; imò ope-
ruerunt oculos ſuos à ſabbathis meis, &
contaminatus ſum in medio eorum. Prin- 27
cipes ejus in medio ipſius, tanquam lupi
rapinam rapiunt, ut effundant ſanguinem
quatenus multum acquirant. Et prophe- 28
tæ ejus, qui ungebant eos, cadent: vident
vanitates, & divinant mendacium, di-
centes; Ita dicit Adonai Dominus, quum
Dominus non ſit locutus. Populus terræ 29
ſtudet iniquitati; nam rapinam rapiunt,
pauperem & egenum opprimunt, & cum
advena non converſantur cum judicio.
Et quæſivi ex eis virum rectè conver- 30
ſantem, qui per integritatem ſtaret co-
ram facie mea tempore furoris pro ter-
ra, ne funditus delerem eam; & non
inveni. Igitur effudi ſuper eam furo- 31
rem meum in igne excandeſcentiæ meæ,
ut exciderem eam: & refudi vias eo-
rum in capita ipſorum, ait Dominus, Do-
minus.

الفصل الثالث والعشرون

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان كان امراتان ابنتان لام واحدة

CAP. XXIII.

Fuit etiam ſermo Domini ad me, di- 1
cens; O fili hominis, fuerunt duæ mulie- 2
res filiæ matris unius.

יחזקאל : כג

ibi : sunt fornicatæ *suis pueritiis* in , Ægypto in sunt fornicatæ Et
3 ותזנינה במצרים בנעוריהן זנו שמה
.earum virginitatis mammas *compresserunt* ibi &,earum ubera sunt compressa
מעכו שדיהן ושם עשו דדי בתוליהן :
fuerunt & ,ejus soror Aholibah & , major Aholah earum nomina Et
4 ושמותן אהלה הגדולה ואהליבה אחותה ותהיין
, Aholah Someron earum nomina & : filias & ,filios pepererunt & , *mihi*
לי ותלדנה בנים ובנות ושמותן שמרון אהלה
adamavit & : me sub Aholah est fornicata Et .Aholibah Jerusalaim &
5 וירושלם אהליבה : ותזן אהלה תחתי ותעגב
,duces ,hyacintho Indutos .propinquos Assur *ad* , suos amatores *super*
6 על־מאהביה אל־אשור קרובים : לבשי תכלת פחות
.equos equitantes equites ,ipsos universos *desiderii electos* , *magistratus* &
וסגנים בחורי חמד כלם פרשים רכבי סוסים :
.*ipsorum omnium* Assur *filiorum electione* ,eis *super* suas fornicationes dedit Et
7 ותתן תזנותיה עליהם מבחר בני־אשור כלם
Et .se polluit eorum idolis cunctis in ,adamavit quos *omnibus in* Et
8 ובכל אשר־עגבה בכל־גלוליהם נטמאה : ואת
concubuerunt ei quia : dereliquit non , Ægypto ab suas fornicationes
תזנותיה ממצרים לא עזבה כי אותה שכבו
effuderunt & : ejus *virginitatum* ubera compresserunt ipsi & ,*suis pueritiis in*
בנעוריה והמה עשו דדי בתוליה וישפכו
manum in eam tradidi Propterea .eam super suam fornicationem
9 תזנותם עליה : לכן נתתיה ביד־
.*ipsos super* adamavit quos Assur filiorum manum in ,suorum amatorum
מאהביה ביד בני אשור אשר עגבה עליהם :
,tulerunt ejus filias & , ejus filios ,ejus *nuditatem* discooperuerunt Ipsi
10 המה גלו ערותה בניה ובנותיה לקחו
judicia & , mulieribus nomen fuit & :occiderunt gladio in ipsam &
ואותה בחרב הרגו ותהי־שם לנשים ושפוטים
suum amorem corrupit & , Aholibah ejus soror vidit Et .ea in fecerunt
11 עשו בה : ותרא אחותה אהליבה ותשחת עגבתה
Ad .suæ sororis fornicationibus præ suas prævaricationes & : illa præ
12 ממנה ואת תזנותיה מזנוני אחותה : אל־
indutos , propinquos ,*magistratus* & , duces , adamavit Assur filios
בני אשור עגבה פחות וסגנים קרבים לבשי
.ipsos universos *desiderii electos* : equos equitantes equites ,*vestitu absoluto*
מכלול פרשים רכבי סוסים בחורי חמד כלם :
ad addidit Et .*ipsis ambabus una via esse polluta* quòd vidi Et
13 14 וארא כי נטמאה דרך אחד לשתיהן : ותוסף אל־
imagines , pariete in *depictum* viros vidit & : suas fornicationes
תזנותיה ותרא אנשי מחקה על־הקיר צלמי
, *suis lumbis in cingulo* Accinctos .*minio in descriptos* Chasdim
15 כשדיים חקקים בששר : חגורי אזור במתניהם
; ipsi universi *triariorum aspectu* , eorum capitibus in tinctas tiaras
סרוחי טבולים בראשיהם מראה שלישים כלם
.eorum nativitatis terræ Chasdim , Babel filiorum similitudinem
דמות בני־בבל כשדים ארץ מולדתם :
nuntios misit & :suorum oculorum aspectum ad eos *super* adamavit Et
16 ותעגב עליהם למראה עיניה ותשלח מלאכים
cubile ad Babel filii eam ad venerunt Et .Chasdim in eos ad
17 אליהם כשדימה : ויבאו אליה בני־בבל למשכב
,eis cum se polluit & : sua fornicatione in eam polluerunt & , amorum
דדים ויטמאו אותה בתזנותם ותטמא־בם
detexit & ,suas fornicationes *detexit* Et .eis ab ejus anima *est emota* &
18 ותקע נפשה מהם : ותגל תזנותיה ותגל
quemadmodum , ea *desuper* mea anima *est remota* & : suam *nuditatem*
את־ערותה ותקע נפשי מעליה כאשר
.ejus sorore *desuper* mea anima *se dimoverat*
נקעה נפשי מעל אחותה :

Versio VULG. LAT.

3 Et fornicatæ sunt in Ægypto, in adolescentia sua fornicatæ sunt: ibi subacta sunt ubera earum, & fractæ sunt mammæ pubertatis 4 earum. Nomina autem earum, Oolla major, & Ooliba soror ejus minor: & habui eas, & pepererunt filios & filias. Porrò earum nomina, Samaria Oolla, 5 & Jerusalem Ooliba. Fornicata est igitur super me Oolla, & insanivit in amatores suos, in 6 Assyrios propinquantes, Vestitos hyacintho, principes, & magistratus, juvenes cupidinis, universos equites, ascensores equo- 7 rum. Et dedit fornicationes suas super eos electos, filios Assyriorum universos: & in omnibus in quos insanivit, in immun- 8 ditiis eorum polluta est. Insuper & fornicationes suas, quas habuerat in Ægypto, non reliquit: nam & illi dormierunt cum ea in adolescentia ejus, & illi confregerunt ubera pubertatis ejus, & effuderunt fornicationem suam 9 super eam. Propterea tradidi eam in manus amatorum suorum, in manus filiorum Assur, super 10 quorum insanivit libidine. Ipsi discooperuerunt ignominiam ejus, filios & filias ejus tulerunt, & ipsam occiderunt gladio: & factæ sunt famosæ mulieres, & judicia perpetraverunt in ea. 11 Quod cùm vidisset soror ej⁹ Ooliba, plusquàm illa insanivit libidine: & fornicationem suam super fornicationem sororis suæ 12 Ad filios Assyriorum præbuit impudenter, ducibus & magistratibus ad se venientib⁹ indutis veste variâ, equitibus qui vectabantur equis, & adolescentibus formâ 13 cunctis egregiâ. Et vidi quòd polluta esset via una ambarum. 14 Et auxit fornicationes suas: cúmque vidisset viros depictos in pariete, imagines Chaldæorum ex- 15 pressas coloribus, Et accinctos balteis renes, & tiaras tinctas in capitibus eorũ, formam ducum omnium, similitudinem filiorum Babylonis, terræque Chaldæo- 16 rum, in qua orti sunt, Insanivit super eos concupiscentiâ oculorum suorum, & misit nuntios ad 17 eos in Chaldæam. Cúmq; venisset ad eã filii Babylonis ad cubile mammarũ, polluerunt eam stupris suis, & polluta est ab eis, & saturata est anima ejus ab illis. 18 Denudavit quoque fornicationes suas, & discooperuit ignominiam suam: & recessit anima mea ab ea, sicut recesserat anima mea à sorore ejus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

3 Καὶ ἐξεπόρνευσαν ἐν Αἰγύπτῳ ἐν τῇ νεότητι αὐτῶν, (α) ἐκεῖ ἔπεσον οἱ μαστοὶ αὐτῶν, (β) 4 ἐκεῖ διεπαρθενεύθησαν. Καὶ τὰ ὀνόματα αὐτῶν ἦν (γ) Ὀολὰ ἡ πρεσβυτέρα, καὶ (δ) Ὀολιβὰ ἡ ἀδελφὴ αὐτῆς· καὶ ἐγένοντό μοι, καὶ ἔτεκον υἱοὺς καὶ θυγατέρας, καὶ τὰ ὀνόματα αὐτῶν, Σαμάρεια (ε) ἦν Ὀολά, καὶ Ἱερουσα- 5 λὴμ (ζ) ἦν Ὀολιβά. Καὶ ἐξεπόρνευσεν ἡ (η) Ὀολὰ ἀπ' ἐμοῦ, καὶ ἐπέθετο ἐπὶ τοὺς ἐραστὰς αὐτῆς, ἐπὶ τοὺς Ἀσσυρίους τοὺς ἐγγί- 6 ζοντας αὐτῇ, (θ) Ἐνδεδυκότας ὑακίνθινα, ἡγουμένους καὶ στρατηγούς· (ι) νεανίσκοι καὶ ἐπίλεκτοι, πάντες ἱππεῖς ἱππαζόμενοι ἐφ' 7 ἵππων. Καὶ ἔδωκε τὴν πορνείαν (κ) αὐτῆς ἐπ' αὐτούς· ἐπίλεκτοι υἱοὶ Ἀσσυρίων πάντες· καὶ ἐπὶ πάντας οὓς ἐπέθετο, ἐν πᾶσι τοῖς ἐνθυ- 8 μήμασιν (λ), αὐτοῖς ἐμιαίνετο. Καὶ τὴν πορνείαν αὐτῆς ἐξ Αἰγύπτου οὐκ ἐγκατέλιπεν, ὅτι μετ' αὐτῆς ἐκοιμῶντο ἐν (μ) νεότητι αὐτῆς, καὶ αὐτοὶ διεπαρθένευσαν αὐτήν, καὶ ἐξέ- 9 χεαν τὴν πορνείαν αὐτῶν ἐπ' αὐτήν. Διατοῦτο παρέδωκα αὐτὴν εἰς χεῖρας τῶν ἐραστῶν αὐτῆς, εἰς χεῖρας υἱῶν Ἀσσυρίων, ἐφ' οὓς ἐπε- 10 τίθετο. Αὐτοὶ ἀπεκάλυψαν τὴν (ν) αἰσχύνην αὐτῆς, υἱοὺς καὶ θυγατέρας αὐτῆς ἔλαβον, καὶ αὐτὴν ἐν ῥομφαίᾳ ἀπέκτειναν. καὶ ἐγένετο λάλημα εἰς (ξ) γυναῖκας, καὶ ἐποίησαν ἐκδική- 11 σεις ἐν αὐτῇ εἰς τὰς θυγατέρας (ο). Καὶ εἶδεν ἡ ἀδελφὴ αὐτῆς (π) Ὀολιβά, καὶ διέφθειρε τὴν ἐπίθεσιν αὐτῆς ὑπὲρ (') αὐτήν, καὶ τὴν πορνείαν αὐτῆς ὑπὲρ τὴν πορνείαν τῆς ἀδελφῆς 12 αὐτῆς. Ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τῶν Ἀσσυρίων ἐπέθετο, ἡγουμένους καὶ στρατηγούς, τοὺς ἐγγὺς αὐτῆς, (ρ) ἐνδεδυκότας εὐπάρυφα, ἱππεῖς (σ) ἱππαζομένους ἐφ' ἵππων· νεανίσκοι ἐ- 13 πίλεκτοι πάντες. Καὶ ἴδον ὅτι μεμίανται (') ὁ- 14 δὸς μία τῶν δύο. Καὶ προσέθετο πρὸς τὴν πορνείαν αὐτῆς, καὶ εἶδεν ἄνδρας ἐζωγραφημένους ἐπὶ τοῦ τοίχου, εἰκόνας Χαλδαίων (τ) 15 ἐζωγραφημένους ἐν γραφίδι, (υ) Ἐζωσμένους ποικίλματα ἐπὶ τὰς ὀσφύας αὐτῶν, (φ) παραβαπτὰ καὶ ἐπὶ τῶν κεφαλῶν αὐτῶν, ὄψις τρισσὴ πάντων, ὁμοίωμα υἱῶν Χαλδαίων, 16 γῆς πατρίδος (χ) αὐτῶν· Καὶ ἐπέθετο ἐπ' αὐτοὺς (") τῇ ὁράσει ὀφθαλμῶν αὐτῆς· καὶ ἐξαπέστειλεν ἀγγέλους πρὸς αὐτοὺς εἰς γῆν Χαλ- 17 δαίων. Καὶ (ψ) ἤλθοσαν πρὸς αὐτὴν υἱοὶ Βαβυλῶνος, εἰς κοίτην καταλυόντων, καὶ ἐμίαινον αὐτὴν ἐν τῇ πορνείᾳ αὐτῆς, καὶ ἐμιάνθη ἐν αὐτοῖς, καὶ ἀπέστη ἡ ψυχὴ αὐ- 18 τῆς ἀπ' αὐτῶν. Καὶ ἀπεκάλυψε τὴν πορνείαν αὐτῆς, καὶ ἀπεκάλυψεν (ω) αἰσχύνην αὐτῆς. καὶ ἀπέστη ἡ ψυχή μου ἀπ' αὐτῆς, ὃν τρόπον ἀπέστη ἡ ψυχή μου ἀπὸ τῆς ἀδελφῆς αὐτῆς.

MS.A. (α) ἐξεπόρνευσαν, ἐκεῖ (β) καὶ ἐκεῖ (γ) Ὀλλὰ (δ) Ὀλιβὰ (ε) ἡ Ὀλλά, (ζ) ἡ Ὀλιβά. (η) Ὀλλὰ ἀπ' ἐμοῦ, καὶ προσέθετο (θ) Ἐνδεδυμένους (ι) νεανίσκους ἐπιλέκτους, πάντες ἱππεῖς (κ) αὐτῆς (λ) αὐτῆς ἐμιαίνετο. (μ) τῇ νεότητι (ν) ἀσχημοσύνην (ξ) τὰς γυναῖκας, (ο) αὐτῆς. (π) ἡ Ὀλιβά, (') αὐτή, (ρ) ἐνδεδυμένους εὐπόρφυρα, (σ) ἱππαζόμενοι (τ) ἐζωγραφημένας, (υ) διεζωσμένους (φ) καὶ παραβαπταὶ ἐπὶ (χ) αὐτῶν· (") ἐν ὁράσει (ψ) ἦλθον (ω) τὴν ἀσχημοσύνην

Et fornicatæ sunt in Ægypto in adolescentia sua: ibi ceciderunt ubera earum: & ibi devirginatæ sunt. Et nomina earum fuerunt, 4 *Oola senior, & (a) Ooliba soror ejus. Et factæ sunt mihi, & pepererunt filios, et filias. Et nomina earum, Samaria fuit Oola, & Hierusalem fuit Ooliba. Et fornicata* 5 *est Oola à me, & adhæsit super amatores suos, super Assyrios, qui appropinquabant ei, Indutos hyacinthinis,* 6 *principes, & duces: (b) juvenes, et electi, omnes equites equitantes super equos. Et dedit* 7 *fornicationẽ suam super eos: (c) (electi filii Assyriorũ omnes:) et super omnes, ad quos adhæsit, in omnib⁹ adinventionib⁹ (d) ipsis polluebatur. Et fornicationem suam* 8 *ex Ægypto non reliquit: quia cum ipsa dormiebant in adolescentia ejus, & ipsi devirginaverant eam, & effuderant fornicationem suam super eam. Propterea* 9 *tradidi eam in manus amatorum ejus, in manus filiorum Assyriorũ, ad quos adhæsit. Ipsi discooperuerunt* 10 *ignominiam ejus: filios & filias illius tulerunt, et ipsam in gladio occiderunt. Et facta est sermo apud mulieres: & fecerunt ultiones in ea in filias. Et vidit* 11 *soror ejus Ooliba, & corrupit (e) applicationẽ suã super eã, et fornicationem suam super fornicationem sororis suæ: Super filios* 12 *Assyriorum adhæsit, principes, & duces, qui propè eam, indutos (f) pretiosis, equites equitantes super equos: (g) adolescentes electi omnes. Et vidi, quia polluta est* 13 *via una ambarum: Et adjecit ad fornicationem* 14 *suam: & vidit viros depictos in pariete, imagines Chaldæorũ, (h) depictos in stylo, Accinctos variegatis super lumbos* 15 *suos, (i) tincta & super capita eorum, aspectus (k) triplex omnium, similitudo filiorum Chaldæorum, terræ patriæ (l) ejus. Et adhæsit super eos aspectu* 16 *oculorum suorum: & misit nuntios ad eos in terram Chaldæorum. Et venerunt ad eam filii Babylonis* 17 *ad cubile diversantium: & polluerunt eam in fornicatione (m) ejus: & polluta est in eis: & recessit anima ejus ab illis. Et revelavit fornicationem suam,* 18 *& revelavit ignominiam suam. Et recessit anima mea ab ea; sicut recessit anima mea à sorore ejus.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 וטעאה במצרים בתר פלחן טעותהון טעאה תמן פלחא לטעותא ותמן קלקלא
4 עובדיהן : ושמהתהן אהלה רבתא ואהליבה אחתה והואה משמשן קדמי ואצלחא
5 בבנין ובנן ושמהתהן שמרון אהלה וירושלם אהליבה : וטעת אהלה מבתר
6 פולחני ואתרעיאת למטעי בתר רחימהא בתר בני אתור קריבהא : לבישי גמיר
7 שלטונין וטורנין עולמי חמדתא כולהון פרשין רכבי סוסון : ואתרעיאת למטעי
בתריהון עולמי בני אתור כולהון ובכל דאתרעיאת בכל פולחן טעותהון אסתאבת :
8 וית פלחן טעותא דהוה עמה ממצרים לא שבקת ארי יתה אפלחו לטעותהון ואנון
9 אלפוהא עובדין בישין ושפכו טעותהון עלה : בכן מסרתהא ביד רחימהא ביד בני
10 אתור דאתרעיאת למטעי בתריהון : אנון גליאו קלנה בנהא ובנתהא שבו ועמה
11 בחרבא קטילו והות שום למדינתא ופורענות דינין עבדו בנה : וחזת אחתה
12 אהליבה וחבילת רחמתא מנה וית טעותהא מטעות אחתה : בתר בני אתור
אתרעיאת למטעי שלטונין וטורנין קריבין לבושי גמר ופרשין רכבי סוסון עולמי
13 14 חמדתא כולהון : וגלי קדמי ארי אסתאבת אורחא חדא שוי לתרתהן : ואוסיפת על
15 טעותה וחזת גברין מצירין על כתלא צלמי כסדאי מצירין בסממניא : אסירין זרזין
בחרציהון מחתין קולסין ברישהון חזו גברין כולהון דמות בני בבל מדינת כסדאי
16 ארע ילדותהון : ואתרעיאת למטעי בתריהון בתר חזו עינהא ושלחת אזגדין לותהון
17 למדינת ארע כסדאי : ואתו לותה בני בבל למעבד רחמו וסאיבו יתה בטעותהון
18 ואסתאבת בהון עד דקצת נפשה בהון : ואתגליאת בהתתה ואתחזי קלנה ורחיק
מימרי יתה כמא דרחיק מימרי ית אחתה :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et erraverunt in Ægypto, post cultum idolorum suorum erraverunt, ibi servierunt idolis, & ibi corruperunt opera sua. 3 Et nomina earum Oola major, 4 & Ooliba soror ejus, & ministrabant coram me, & proficiebant in filiis & filiabus: & nomina earum, Samaria Oola, & Jerusalem Ooliba. Et erravit 5 Oola à cultu meo, & elegit errare post amatores suos, post filios Assur sibi vicinos; Vestitos hyacintho, principes & tyrannos, juvenes elegantissimos, 6 universos equites, ascensores equorum. Et elegit errare post eos juvenes filios 7 Assyriorum universos, & apud omnes quos elegit, omni cultu idolorum polluta est. Et cultum idolorum quem habebat ex Ægypto, non reliquit: quia 8 eam servire fecerunt idolis *suis*, & docuerunt eam opera mala: & effuderunt idola sua super illam. Propterea tradidi eam in manũ amatorum suorũ, 9 in manũ filiorũ Assur, quos elegit ut erraret post eos. Ipsi revelaverunt ignominiam ejus: 10 filios ejus & filias ejus in captivitatem duxerunt, & populum ejus gladio occiderunt; & factum est nomen provinciis, & ultionem judiciorum fecerunt in ea. Et vidit soror ejus Ooliba, & corrupit *amorem præ* 11 illa, & fornicationes suas præ fornicationibus sororis suæ. Post filios Assur 12 elegit errare, post principes, & tyrannos propinquos, indutos perfectè equites ascensores equorum, juvenes specie insignes universos. Et revelatum fuit 13 coram me quòd polluta esset via una *pariter* ambarum. Et addidit super errores suos, 14 & vidit viros depictos in pariete, imagines Chaldæorum, depictos coloribus: Et accinctos balteis in lumbis suis, positis galeis in capitibus suis: 15 aspectus fortium omnium, similitudinem filiorum Babylonis, provinciæ Chaldæorũ terræ nativitatis eorũ. Et elegit errare post eos post visionem oculorũ suorũ, & misit nuntios ad eos in provinciam terræ Chaldæorũ. 16 Et venerunt ad eam filii Babylonis ut facerent amori, [illegible] eis, donec detestata est eos anima ejus. 17 Et revelata est confusio ejus, & apparuit ignominia ejus, & projecit eam Verbum meum, sicut projecit Verbum meum sororem ejus. 18

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܙܢܝ̈ ܒܡܨܪܝܢ ܒܛܠܝܘܬܗܝܢ. ܬܡܢ ܡܫܘ ܬܕ̈ܝܗܝܢ ܘܬܡܢ ܐܬܛܠܡ̈ܝ. * ܫܡܗ
ܕܩܫܝܫܬܐ ܐܗܘܠܐ. ܘܫܡܗ̇ ܕܙܥܘܪܬܐ ܐܗܘܠܝܒܐ. ܘܗܘܝ̈ ܠܝ. ܘܝܠܕ̈ ܒܢܝ̈ܐ ܘܒܢ̈ܬܐ. ܫܡܗ
ܕܫܡܪܝܢ ܐܗܘܠܐ. ܘܕܐܘܪܫܠܡ ܐܗܘܠܝܒܐ. * ܘܙܢܬ ܐܗܘܠܐ ܡܢܝ. ܘܪܚܡܬ ܠܪ̈ܚܡܝܗ̇ ܠܐܬܘܪ̈ܝܐ
ܕܩܪܝܒܝܢ ܠܗ̇. * ܕܠܒܝܫܝܢ ܬܟܠܬܐ ܗܘ̈ܦܪܟܐ ܘܫܠܝܛ̈ܢܐ. ܥܠܝܡ̈ܐ ܪ̈ܓܝܓܐ. ܟܠܗܘܢ ܦܪ̈ܫܐ
ܪܟܒܝ ܪ̈ܟܫܐ. * ܘܝܗܒܬ ܙܢܝܘܬܗ̇ ܠܟܠܗܘܢ. ܠܓܒܝ̈ܐ ܕܒܢ̈ܝ ܐܬܘܪ. ܘܠܟܠ ܗ̇ܠ
ܕܪܚܡܬ ܒܦܬܟܪ̈ܝܗܘܢ. ܘܐܬܛܡܝܬ. * ܘܙܢܝܘܬܗ̇ ܕܡܨܪܝܢ ܠܐ ܫܒܩܬ. ܡܛܠ ܕܗ̇ܢ
ܕܒܪܘ ܒܛܠܝܘܬܗ̇. ܘܗܢܘܢ ܚܒܠܘܗ̇. ܘܐܫܕܘ ܥܠܝܗ̇ ܙܢܝܘܬܗܘܢ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗ
ܫܠܡܬܗ̇ ܒܐܝܕܐ ܕܪ̈ܚܡܝܗ̇. ܒܐܝܕܝܐ ܕܒܢ̈ܝ ܐܬܘܪ ܕܪܚܡܬ ܠܗܘܢ. * ܘܗܢܘܢ ܓܠܘ
ܥܘܪܛܠܝܘܬܗ̇. ܘܕܒܪܘ ܒܢܝ̈ܗ̇ ܘܒܢ̈ܬܗ̇. ܘܠܗ̇ ܩܛܠܘ ܒܣܝܦܐ. ܘܗܘܬ ܠܗܘܢ ܡܬܠܐ ܠܢܫ̈ܐ
ܘܕܝܢܐ ܥܒܕܘ ܒܗ̇. * ܘܚܙܬ ܚܬܗ̇ ܐܗܘܠܝܒܐ. ܘܐܚܒܠܬ ܪܚܡܬܗ̇ ܝܬܝܪ ܡܢܗ̇. ܘܙܢܝܘܬܗ̇
ܝܬܝܪ ܡܢ ܙܢܝܘܬܐ ܕܚܬܗ̇. * ܠܒܢ̈ܝ ܐܬܘܪ ܪܚܡܬ. ܠܗܘ̈ܦܪܟܐ ܘܫܠܝܛ̈ܢܐ ܕܩܪܝܒܝܢ ܠܗ̇
ܦܪ̈ܫܐ ܪܟܒܝ ܪ̈ܟܫܐ. ܘܥܠܝܡ̈ܐ ܪ̈ܓܝܓܐ. ܟܠܗܘܢ ܥܠܝܡ̈ܐ ܕܗܘ ܪ̈ܓܝܓܐ. * ܘܚܙܝܬ
ܕܐܬܛܡܝܬ ܐܘܪܚܐ ܕܬܪ̈ܬܝܗܝܢ. * ܘܐܘܣܦܬ ܥܠ ܙܢܝܘܬܗ̇. ܘܚܙܬ ܓܒܪ̈ܐ ܕܨܝܪܝܢ ܒܫܘܪܐ.
ܨܠܡ̈ܐ ܕܟܠܕܝ̈ܐ ܕܨܝܪܝܢ ܒܣܩܘܠܬܐ. * ܘܚܙܝܩܝܢ ܚܨܝ̈ܗܘܢ ܒܚܙܩ̈ܐ. ܘܥܨܒ̈ܬܐ ܥܠ
ܪ̈ܫܝܗܘܢ. ܚܙܘܐ ܕܓܒܪ̈ܐ ܟܠܗܘܢ. ܕܡܘܬܐ ܕܒܢ̈ܝ ܒܒܠ. ܘܟܠܕܝ̈ܐ. ܐܪܥܐ
ܕܐܬܝܠܕܘ ܒܗ̇. * ܘܪܚܡܬ ܠܗܘܢ. ܒܚܙܘܐ ܕܥܝ̈ܢܝܗ̇. ܘܫܕܪܬ ܠܗܘܢ ܐܝܙܓܕ̈ܐ. ܠܐܪܥܐ
ܕܟܠܕܝ̈ܐ. * ܘܐܬܘ ܠܘܬܗ̇ ܒܢ̈ܝ ܒܒܠ ܠܡܫܟܒ ܥܡܗ̇. ܘܛܢܦܘܗ̇ ܒܙܢܝܘܬܗܘܢ.
ܘܐܬܛܢܦܬ ܒܗܘܢ. ܘܡܐܣܬ ܢܦܫܗ̇ ܡܢܗܘܢ. * ܘܓܠܬ ܙܢܝܘܬܗ̇. ܘܓܠܬ ܥܘܪܛܠܝܘܬܗ̇.
ܘܡܐܣܬ ܢܦܫܝ ܡܢܗ̇. ܐܝܟ ܕܡܐܣܬ ܢܦܫܝ ܡܢ ܚܬܗ̇.

Hæ in Ægypto fornicatæ ſunt in pueritia ſua, 3
ibi attrectaverunt ubera earum, ibique ſtupratæ
fuerunt. Nomen majoris Ahola, nomen 4
verò poſterioris Aholiba. Meæ fuerunt, & pepererunt
mihi filios ac filias. Nomen Samariæ
Ahola, Jeroſolymæ Aholiba. Scortata eſt autem 5
cum aliis præter me, adhæſitque amatoribus
ſuis, *nempe* Aſſyriis ſibi vicinis, Indutis 6
hyacintho, dominis, & proceribus, juvenibus
jucundiſſimis, qui equites erant omnes,
equis inſidentes: Iſtis proſtituit ſcortationem 7
ſuam, delectiſſimis Aſſyriorum, atque iis
omnibus, quorum idolis adhæſit, ſeſéque contaminavit.
Scortationem autem ſuam, cui in
Ægypto *indulſerat*, minimè dereliquit; quòd 8
hi ſtupraſſent eam in pueritia ejus, & hi defloraſſent
eam, & jeciſſent ſuper eam ſcortationem
ſuam. Propterea ecce tradidi eam in 9
manum amatorũ ejus, in manum Aſſyriorum
quibus adhæſit. Et iſti pudenda ejus retexerunt, 10
filios & filias ejus abduxerunt, ipſámq;
gladio peremerunt: & facta eſt ibi fabula
mulierum, & judicia exercuerunt in eam. Videns 11
autem ſoror ejus Aholiba, magis depravavit
familiaritatẽ ſuam quàm illa, & ſcortationem
ſuam pluſquam ſcortationem ſororis
ſuæ. Aſſyriis adhæſit, dominis, ac potentibus 12
ſibi vicinis, equitib' hyacintho indutis & inſidentibus
equis, qui omnes juvenes erant jucundiſſimi.
Denique vidi pollutam fuiſſe viam 13
utriuſque. Acceſſit præterea ad ſcortationem 14
earum, quòd videntes viros in pariete
depictos, figuras Chaldæorũ minio pictorum,
Cingulis accinctorũ lumbos ſuos, & vittis capita 15
redimitorũ, qui omnes formã habebant
virilem, ſimilitudinẽ filiorũ Babylonis (ſive
Chaldæorũ) terræ in qua orti fuerant: Adhæſit 16
hæc illis ut aſpexit eos oculis ſuis, miſitq;
ad eos legatos in terrã Chaldæorũ. Quare venerunt 17
ad eam Babylonii ad concumbendum
cum ipſa, & polluerunt eam ſcortatione ſuâ:
& poſtquam impurata eſt cum ipſis, abominata
eſt eos anima ipſius. Cùm itaq; retexerit 18
ſcortationem ſuam, & retexerit pudenda ſua;
abominata eſt eam anima mea, quemadmodum
abominata eſt anima mea ſororẽ ipſius.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فزنتا بمصر في صبيتهما · هناك سقطت ثدييهما · هناك فسدت عذرتهما * واسماهما واولا
الكبيرة · واوليبا اختها وصارتا لي · وولدتا بنين وبنات · واسماهما واولا سامرين · واوليبا
ايروسليم * وزنت واولا عني · ومالت الى مستاقيها · الى الموصليين القريبين لها * اللابسين
ياقوتيا · مقدمين · امراء · كلهم شبان مختارون · فرسان يركبون على الخيل * واعطت
زناها اليهم · بنو الموصليين مختارون كلهم · وجميع الذين مالت اليهم · بجميع
اعمالها تنجست * ولم تترك زناها من مصر · لانهم ناموا معها في صبيتها · وهم افسدوا
عذرتها · واهرقوا زناهم عليها * لاجل هذا اسلمتها الى ايدي مستاقيها · الى ايدي
الموصليين الذين مالت اليهم * وهم كشفوا عورتها · اخذوا بنيها وبناتها · وقتلوها
بالسيف · وصارت حديثا للنساء · وصنعوا الانتقام فيها لبناتها * ونظرت اختها اوليبا
وافسدت وضعها اكثر منها · وزناها اكثر من زنى اختها * الى بني الموصليين مالت
المقدمين والامراء القريبين منها · اللابسين البرفير الحسن · الراكبون على الخيل · جميعهم
شبان مختارون * ورايت ان طريقا واحدا تنجست من الاثنين * وعادت الى زناها ونظرت
رجالا مصورين على الحايط · صور كلدانيين مصورات بنقش * ممنطقات باصناف
حقاهم · وعصايب مصبوغات على روسهم · منظر ملك لجميعهن · شبه بني الكلدانيين
ارض بلادهن * ومالت اليهن بنظر عينيها · وارسلت رسلا اليهم الى ارض الكلدانيين
* فاتوا اليها بنو بابل الى مضجع المستريحين · ونجسوها بزناها · وتنجست بهم · وبعدت
نفسها منهم * وكشفت زناها · وكشفت فضيحتها · وبعدت نفسي منها · كما بعدت
نفسي من اختها ·

Scortatæ ſunt ambæ in Ægypto in adoleſcentia ſua: ibi ceciderunt ubera earum, 3
ibi violata fuit virginitas earum. Nomina 4
earum erant, Vaola major, & Avaoliba ſororis ejus. Erant ambæ meæ, genuerántque filios & filias. Nomina autem
earum, Vaola Samaria, Avaoliba verò
Jeruſalem. Scortata eſt igitur Vaola 5
abs me, declinavítque ad amaſios ſuos,
ad Aſſyrios ſibi vicinos, Indutos hya- 6
cinthinis, principes ducéſque, omnes juvenes delectos, equites qui vehebantur
equis. His proſtituit ſcortationem ſuam, 7
(filii Aſſyriorum delecti ſunt univerſi) &
cum omnibus ad quos declinavit, in cunctis actionibus ſuis ſeſe polluit. Neque 8
tamen ſcortari deſtitit cum Ægyptiis,
quoniam iſti concubuerant cum ea in adoleſcentia ipſius, iſti violaverant virginitatem ejus, & effuderant ſcortationem ſuam
ſuper eam. Hac de re tradidi eam in 9
manus amaſiorum ejus, in manus Aſſyriorum ad quos declinavit: Atque hi de- 10
texerunt pudenda ejus, abſtulerunt filios
& filias ejus, & ipſam gladio trucidârunt: factáque eſt fabella apud mulieres: & ultionem fecerunt in ea in filias
ejus. Videns autem hæc Avaoliba ſoror 11
ejus, corrupit conditionem ſuam pluſquam
illa, & ſcortationem ſuam pluſquam ſcortationem ſororis ſuæ. Ad Aſſyrios de- 12
clinavit, principes ac ſatrapas, ſibi vicinos, indutos purpurâ pulcherrimâ, qui
equis vehuntur, omnes juvenes delectiſſimos. Denique vidi quòd eâdem viâ pol- 13
luta fuiſſet ab utriſque. Rediit quo- 14
que ad ſcortationem ſuam: videns enim viros in pariete depictos, imagines Chaldæorum ſculpturâ expreſſas,
Variè cinctas ſuper lumbos ſuos, tinctáſ- 15
que vittas ſuper capita ſua (quibus omnibus triplex erat aſpectus, ſimilitudo
filiorum Chaldæorum terræ patriæ ſuæ)
Declinavit ad eas aſpectu oculorum ſuo- 16
rum, miſitque eis nuntios in terram Chaldæorum. Et venientes ad eam filii Ba- 17
belis in cubile quieſcentium, polluerunt
eam in ſcortatione ipſius, & polluta eſt
cum eis: deinde averſus eſt animus ejus
ab ipſis, Et proſtituit ſcortationem ſuam, 18
detexitque pudenda ſua: ideò averſus eſt
ab ea animus meus, quemadmodum averſus fuerat animus meus à ſorore ipſius.

יחזקאל : כג

,ſuarum pueritiarum dies commemorandum ad:ſuas fornicationes multiplicavit Et
19 וַתַּרְבֶּה אֶת־תַּזְנוּתֶיהָ לִזְכֹּר אֶת־יְמֵי נְעוּרֶיהָ
ſuper adamavit Et .Ægypti terra in eſt fornicata quibus
20 אֲשֶׁר זָנְתָה בְּאֶרֶץ מִצְרָיִם : וַתַּעְגְּבָה עַל
,equorum fluxus & ; eorum caro aſinorum caro quorum , eorum pellices
פִּלַגְשֵׁיהֶם אֲשֶׁר בְּשַׂר חֲמוֹרִים בְּשָׂרָם וְזִרְמַת סוּסִים
comprimendo in : tuarum pueritiarum ſcelus viſitâſti Et .eorum fluxus
21 זִרְמָתָם : וַתִּפְקְדִי אֵת זִמַּת נְעוּרָיִךְ בַּעְשׂוֹת
Propterea .tuarum pueritiarum ubera propter tua ubera Ægypto ab
22 מִמִּצְרַיִם דַּדַּיִךְ לְמַעַן שְׁדֵי נְעוּרָיִךְ : לָכֵן
tuos amatores ſuſcitans ego Ecce:Deus Dominus dixit ſic ,Aholibah
אָהֳלִיבָה כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה הִנְנִי מֵעִיר אֶת־מְאַהֲבַיִךְ
eos faciam venire & : eis ab tua anima eſt emota quibus , te ſuper
עָלַיִךְ אֵת אֲשֶׁר־נָקְעָה נַפְשֵׁךְ מֵהֶם וַהֲבֵאתִים
,Schoah &,Pecbod ,Chaſdim omnes & ,Babel Filios .undique te adverſum
23 עָלַיִךְ מִסָּבִיב : בְּנֵי בָבֶל וְכָל־כַּשְׂדִּים פְּקוֹד וְשׁוֹעַ
,magiſtratus &,duces ,deſiderii electos , eos Aſſur filios omnes,Coah &
וְקוֹעַ כָּל־בְּנֵי אַשּׁוּר אוֹתָם בַּחוּרֵי חֶמֶד פַּחוֹת וּסְגָנִים
.ipſos omnes equorum aſcenſores ,invitatos & triarios , ipſos univerſos
כֻּלָּם שָׁלִשִׁים וּקְרוּאִים רֹכְבֵי סוּסִים כֻּלָּם :
, ſcutum populorum cœtu in & , rota & ,currus ,rheda te ſuper venient Et
24 וּבָאוּ עָלַיִךְ הֹצֶן רֶכֶב וְגַלְגַּל וּבִקְהַל עַמִּים צִנָּה
eorum facies ad dabo & : undique te contra ponent galeam &,clypeum &
וּמָגֵן וְקוֹבַע יָשִׂימוּ עָלַיִךְ סָבִיב וְנָתַתִּי לִפְנֵיהֶם
,te in meum zelum dabo Et .ſuis judiciis in te judicabunt &,judicium
25 מִשְׁפָּט וּשְׁפָטוּךְ בְּמִשְׁפְּטֵיהֶם : וְנָתַתִּי קִנְאָתִי בָּךְ
, removebunt tuas aures & ,tuum naſum : furore in tecum facient &
וְעָשׂוּ אוֹתָךְ בְּחֵמָה אַפֵּךְ וְאָזְנַיִךְ יָסִירוּ
,capient tuas filias & ,tuos filios Ipſi .cadet gladio in tuũ noviſſimum &
וְאַחֲרִיתֵךְ בַּחֶרֶב תִּפּוֹל הֵמָּה בָּנַיִךְ וּבְנוֹתַיִךְ יִקָּחוּ
:tuis veſtimẽtis te faciẽt exuere Et .igni in devorabitur tuũ noviſſimum &
26 וְאַחֲרִיתֵךְ תֵּאָכֵל בָּאֵשׁ : וְהִפְשִׁיטוּךְ אֶת־בְּגָדָיִךְ
, te à tuam fœditatem faciam ceſſare Et .tuæ gloriæ vaſa tollent &
27 וְלָקְחוּ כְּלֵי תִפְאַרְתֵּךְ : וְהִשְׁבַּתִּי זִמָּתֵךְ מִמֵּךְ
tuos oculos levabis non & : Ægypti terra de tuam fornicationem &
וְאֶת־זְנוּתֵךְ מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם וְלֹא־תִשְׂאִי עֵינַיִךְ
dixit ſic Quia .amplius recordaberis non Ægypti & , eos ad
28 אֲלֵיהֶם וּמִצְרַיִם לֹא תִזְכְּרִי־עוֹד : כִּי כֹה אָמַר
, manum in : odiſti quos manum in te dans ego Ecce : Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה הִנְנִי נֹתְנָךְ בְּיַד אֲשֶׁר שָׂנֵאת בְּיַד
tollent & , odio in tecum agent Et .eis ab tua anima eſt remota quibus
29 אֲשֶׁר־נָקְעָה נַפְשֵׁךְ מֵהֶם : וְעָשׂוּ אוֹתָךְ בְּשִׂנְאָה וְלָקְחוּ
nuditas revelabitur &:nudam &,nudam te dimittent &,tuũ laborem omnem
כָּל־יְגִיעֵךְ וַעֲזָבוּךְ עֵירֹם וְעֶרְיָה וְנִגְלָה עֶרְוַת
iſta Faciendo .tuæ fornicationes &,tua fœditas & ,tuarũ fornicationũ
30 זְנוּנַיִךְ וְזִמָּתֵךְ וְתַזְנוּתָיִךְ : עָשֹׂה אֵלֶּה
.earum idolis in te polluiſti quibus ſuper ,gentes poſt te fornicando in : tibi
לָךְ בִּזְנוֹתֵךְ אַחֲרֵי גוֹיִם עַל אֲשֶׁר־נִטְמֵאת בְּגִלּוּלֵיהֶם :
Sic .tua manu in ejus calicem dabo & : ambulaſti tuæ ſororis via In
31 32 בְּדֶרֶךְ אֲחוֹתֵךְ הָלָכְתְּ וְנָתַתִּי כוֹסָהּ בְּיָדֵךְ : כֹּה
: latum & ,profundum bibes tuæ ſororis Calicem :Deus Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה כּוֹס אֲחוֹתֵךְ תִּשְׁתִּי הָעֲמֻקָּה וְהָרְחָבָה
, Ebrietate .continendum ad magnum ,ſubſannandum ad & ,ridendum ad eris
33 תִּהְיֶה לִצְחֹק וּלְלַעַג מִרְבָּה לְהָכִיל : שִׁכָּרוֹן
tuæ ſororis calice ,deſolationis & ,ſtuporis calice : repleberis dolore &
וְיָגוֹן תִּמָּלֵאִי כּוֹס שַׁמָּה וּשְׁמָמָה כּוֹס אֲחוֹתֵךְ
, confringes ejus teſtas & , exprimes & , illum bibes Et .Someron
34 שֹׁמְרוֹן : וְשָׁתִית אוֹתָהּ וּמָצִית וְאֶת־חֲרָשֶׂיהָ תְּגָרֵמִי
.Deus Dominus dixit ,ſum locutus ego quia : evelles tua ubera &
וְשָׁדַיִךְ תְּנַתֵּקִי כִּי אֲנִי דִבַּרְתִּי נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה :

Verſio VULG. LAT.

19 Multiplicavit enim fornicationes
ſuas, recordans dies adoleſcentiæ
ſuæ, quibus fornicata eſt in terra
20 Ægypti. Et inſanivit libidine
ſuper concubitum eorum, quorũ
carnes ſunt ut carnes aſinorum :
& ſicut fluxus equorum, fluxus
21 eorum. Et viſitâſti ſcelus adoleſcentiæ
tuæ, quando ſubacta ſunt
in Ægypto ubera tua, & confractæ
ſunt mammæ pubertatis tuæ.
22 Proptereà Ooliba, hæc dicit Dominus
Deus ; Ecce ego ſuſcitabo
omnes amatores tuos contra te,
de quibus ſatiata eſt anima tua :
& congregabo eos adverſùm te
23 in circuitu ; Filios Babylonis,&
univerſos Chaldæos, nobiles, tyrannóſque
& principes, omnes
filios Aſſyriorum, juvenes formâ
egregiâ,duces & magiſtratus univerſos,
principes principum, &
nominatos aſcenſores equorum :
24 Et venient ſuper te inſtructi curru
& rotâ, multitudo populorum
: loricâ, & clypeo, & galeâ
armabuntur contra te undique :
& dabo coram eis judicium, &
25 judicabunt te judiciis ſuis. Et
ponam zelum meum in te, quem
exercent tecum in furore: naſum
tuum, & aures tuas præcident :
& quæ remanſerint, gladio concident
: ipſi filios tuos, & filias
tuas capient;& noviſſimum tuum
26 devorabitur igni. Et denudabunt
te veſtimentis tuis, & tol-
27 lent vaſa gloriæ tuæ. Et requieſcere
faciam ſcelus tuum de te,et
fornicationem tuam de terra Ægypti
: nec levabis oculos tuos
ad eos, & Ægypti non recordaberis
28 amplius. Quia hæc dicit
Dominus Deus;Ecce ego tradam
te in manus eorum, quos odiſti :
in manus, de quibus ſatiata eſt
29 anima tua. Et agent tecum in
odio, & tollent omnes labores
tuos, & dimittent te nudam, &
ignominiâ plenam, & revelabitur
ignominia fornicationum
tuarum, ſcelus tuum, & fornica-
30 tiones tuæ Fecerunt hæc tibi,
quia fornicata es poſt Gentes,
inter quas polluta es in idolis
31 eorum. In via ſororis tuæ ambulaſti
: & dabo calicem ejus in
32 manu tua. Hæc dicit Dominus
Deus ; Calicem ſororis tuæ bibes
profundum & latum : eris in deriſum,&
in ſubſannationem,quæ
33 eſt capaciſſima. Ebrietate, &
dolore repleberis : calice mœroris,
& triſtitiæ, calice ſororis
34 tuæ Samariæ. Et bibes illum, &
epotabis uſque ad fæces, & fragmenta
ejus devorabis, & ubera
tua lacerabis : quia ego locutus
ſum, ait Dominus Deus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Καὶ ἐπλήθυνας τὴν πορνείαν σου, τοῦ ἀναμνῆσαι
(α) ἡμέραν νεότητός σου, ἐν αἷς ἐπόρνευ-
20 σας ἐν Αἰγύπτῳ, Καὶ ἐπέθου ἐπὶ τοὺς Χαλδαίους,
ὧν (β) ὡς ὄνων αἱ σάρκες αὐτῶν,
21 καὶ αἰδοῖα ἵππων τὰ αἰδοῖα αὐτῶν. Καὶ
ἐπεσκέψω τὴν ἀνομίαν νεότητός σου, ἃ ἐποίεις
ἐν Αἰγύπτῳ ἐν τῷ καταλύματί σου, οὗ
22 οἱ μαστοὶ (γ) νεότητός σου. Διατοῦτο (δ)
Ὀολιβὰ, τάδε λέγει (ε) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ
ἐξεγείρω τοὺς ἐραστάς σου ἐπὶ σὲ, ἀφ' ὧν
ἀπέστη ἡ ψυχή σου ἀπ' αὐτῶν, καὶ ἐπάξω
23 αὐτοὺς ἐπὶ σὲ κυκλόθεν, Υἱοὺς Βαβυλῶνος,
καὶ πάντας τοὺς Χαλδαίους, (ζ) Φακοὺκ,
καὶ Σουὲ, καὶ Ὑχουὲ, καὶ πάντας υἱοὺς Ἀσσυρίων
μετ' αὐτῶν, νεανίσκους ἐπιλέκτους, ἡγεμόνας
καὶ στρατηγοὺς, πάντας τριστάτας καὶ ὀνομαστοὺς,
24 ἱππεύοντας ἐφ' ἵππων. (η) Καὶ πάντες
ἥξουσιν ἐπὶ σὲ ἀπὸ Βοῤῥᾶ, ἅρματα καὶ τροχοὶ
(θ) μετ' ὄχλου λαῶν, θυρεοὶ καὶ πέλται,
(ι) καὶ βαλεῖ φυλακὴν ἐπὶ σὲ κύκλῳ. καὶ δώσω
πρὸ προσώπου αὐτῶν κρίμα, καὶ ἐκδικήσουσί
25 σε ἐν τοῖς κρίμασιν αὐτῶν. Καὶ δώσω τὸν
ζῆλόν μου ἐν σοὶ, καὶ ποιήσουσι μετὰ σοῦ ἐν
ὀργῇ θυμοῦ (κ). μυκτῆρά σου καὶ ὦτά σου
ἀφελοῦσι, καὶ τοὺς καταλοίπους σου ἐν ῥομφαίᾳ
καταβαλοῦσι. αὐτοὶ (λ) υἱούς σου καὶ θυγατέρας
σου λήψονται, καὶ τοὺς καταλοίπους σου (μ)
26 πῦρ καταφάγεται. Καὶ ἐκδύσουσί σε τὸν ἱματισμόν
σου, καὶ λήψονται τὰ σκεύη τῆς καυχήσεώς
27 σου. Καὶ ἀποστρέψω τὰς ἀσεβείας σου
ἐκ σοῦ, καὶ τὴν πορνείαν σου ἐκ γῆς Αἰγύπτου·
καὶ οὐ μὴ ἄρῃς τοὺς ὀφθαλμούς σου ἐπ' αὐτοὺς,
28 καὶ Αἰγύπτου οὐ μὴ μνησθῇς οὐκέτι. Διότι τάδε
λέγει κύριος κύριος (ν), Ἰδοὺ ἐγὼ
παραδίδωμί σε εἰς χεῖρας ὧν μισεῖς, ἀφ'
29 ὧν ἀπέστη ἡ ψυχή σου ἀπ' αὐτῶν. Καὶ ποιήσουσιν
ἐν σοὶ ἐν μίσει, καὶ λήψονται πάντας
τοὺς πόνους σου καὶ τοὺς μόχθους σου, καὶ
ἔσῃ γυμνὴ καὶ (ξ) αἰσχύνουσα, καὶ ἀποκαλυφθήσεται
(ο) αἰσχύνη πορνείας σου, καὶ ἀσέβειά
30 σου. καὶ ἡ πορνεία σου Ἐποίησε ταῦτά σοι,
ἐν τῷ ἐκπορνεῦσαί σε ὀπίσω ἐθνῶν, καὶ ἐμιαίνου
ἐν τοῖς (π) ἐνθυμήμασιν αὐτῶν.
31 Ἐν τῇ ὁδῷ τῆς ἀδελφῆς σου ἐπορεύθης· καὶ
δώσω τὸ ποτήριον αὐτῆς εἰς (ʺ) χεῖράς σου.
32 Τάδε λέγει (ρ) κύριος, Τὸ ποτήριον τῆς ἀδελφῆς
σου πίεσαι, τὸ βαθὺ καὶ τὸ πλατὺ,
(σ) καὶ τὸ πλεονάζον τοῦ συντελέσαι μέθην.
33 (τ) Καὶ ἐκλύσεως πλησθήσῃ, καὶ τὸ ποτήριον
ἀφανισμοῦ, ποτήριον ἀδελφῆς σου
34 Σαμαρείας, Πίεσαι αὐτό· καὶ τὰς ἑορτὰς
καὶ τὰς νουμηνίας αὐτῆς ἀποστρέψω· διότι
ἐγὼ (υ) λελάληκα, λέγει κύριος.

Et multiplicâſti fornicationem 19
tuam, recordando (n) dierum adoleſcentiæ ſuæ, in quibus fornicata
es in Ægypto: Et adhæſiſti ſuper 20
Chaldæos, quorum, velut aſinorũ,
carnes eorum, & (o) verenda equorũ, verenda eorum: Et (p) viſitâſti iniquitatem adoleſcentiæ 21
tuæ, quæ faciebas in Ægypto in
diverſorio tuo, ubi mammæ (q)
adoleſcentiæ tuæ. Proptereà Ooliba, hæc dicit Dominus; Ecce ego 22
ſuſcito amatores tuos ſuper te, à
quibus receſſit anima tua ab eis:
& adducam eos ſuper te per circuitũ, Filios Babylonis, et omnes 23
Chaldæos, (r) Phacuc, & Sue, &
Hychue, & omnes filios Aſſyriorũ
cum eis, juvenes electos, duces, et
magiſtratus, omnes (ſ) triſtatas,
et nominatos, equitantes in equis.
Et cuncti venient ſuper te ab Aquilone, 24
currus, et rotæ cum multitudine populorũ, clypei, & peltæ: & (t) mittet cuſtodiã ſuper te
in circuitu. Et dabo ante faciem
eorum judicium: & judicabunt
te in judiciis ſuis. Et dabo zelũ 25
meũ in te: & facient tecum in ira
furoris. Naſum tuũ, et aures tuas
auferent: et reliquos tuos in gladio dejicient. Ipſi filios tuos, et
filias tuas tollent: et reſiduos tuos
devorabit ignis: Et denudabunt 26
te veſtimento tuo, et tollent vaſa
glorificationis tuæ. Et avertã impietates 27
tuas à te, et fornicationem
tuam de terra Ægypti: et non elevabis oculos tuos ad eos: et Ægypti non recordaberis amplius.
Quia hæc dicit Dominus Dominus; 28
Ecce ego trado te in manus
eorum, quos odio habes, à quibus
receſſit anima tua ab eis. Et facient 29
in te in odio: et tollent omnes labores tuos, et (u) ærumnas
tuas: et eris nuda, et ignominiæ
plena: et revelabitur ignominia
fornicationis tuæ. Et impietas tua,
et fornicatio tua Fecerunt hæc 30
tibi, in fornicando te poſt gentes:
et polluta es in cogitationibus earum. In via ſororis tuæ ambulâſti: 31
et dabo calicem ejus in manus tuas. Hæc dicit Dominus; 32
Calicem ſororis tuæ bibes, profundum, et (x) latũ, et abundantẽ ad
complendam ebrietatẽ: Et diſſolutione 33
repleberis: et calice perditionis, calicem ſororis tuæ Samariæ Bibes (y) illum: et feſtivitates, 34
et neomenias ejus auferam:
quia ego loquutus ſum, ait Dominus.

MS.A. (α) ἡμέρας
(β) ἧς ὡς (γ) ἔπις νεότητός (δ) Ὀλιβὰ, (ε) κύριος κύριος ὁ θεὸς
ἐπὶ σὲ Ὀλιβὰ, Ἰδοὺ (ζ) καὶ Φοὺδ, καὶ Σοὺδ, καὶ Λοὺδ, καὶ πάντας τοὺς υἱοὺς (η) Πάντες
(θ) ἵπποι μετὰ (ι) καὶ περικεφαλαίαι, καὶ βαλεῖ ἐπὶ σὲ περιφυλακὴν κύκλῳ,
(κ) μου. (λ) τοὺς υἱούς σου καὶ τὰς θυγατέρας (μ) ἐμπρήσουσιν ἐν πυρί.
Καὶ (ν) ὁ θεός. (ξ) ἀσχημονοῦσα, (ο) ἡ αἰσχύνη σου, πορνεία σου, (π) ἐπιθυμήμασιν
(ʺ) τὰς χεῖράς (ρ) ἀδωναῒ κύριος, κύριος ὁ θεὸς, (σ) ἔσται
εἰς γέλωτα, καὶ εἰς μυκτηρισμὸν τὸ πλεονάζον (τ) Καὶ ἐκχεῶ ὅπως πλησθήσῃ,
καὶ τὸ ποτήριον τῆς ἀδελφῆς σου Σαμαρείας, ποτήριον ἀφανισμοῦ Πίεσαι
αὐτὸ, καὶ ἐκσραγγιεῖς καὶ τὰς ἑορτὰς (υ) ἐλάλησα, λέγει κύριος κύριος ὁ θεός.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 וְאַסְגִיאַת יַת טַעֲוָתַהּ לְאַדְכָּרָא יַת יוֹמִין דְמִלְקַדְמִין דִטְעַת בְּהוֹן כַּד הֲוַת בְּאַרְעָא
20 דְמִצְרָיִם : וְאִתְרְעִיאַת לְמֶהֱוֵי שְׁמוּטָה לְהוֹן דִבְסַר חֲמָרִין בִּסְרֵיהוֹן וְצַחֲנַת סוּסָוָן
21 צַחֲנַתְהוֹן : וְאַדְכַּרְתְּ יַת חוֹבֵי עֲצַת חֶטְאַךְ דְמִלְקַדְמִין בְּמֶעְבְּדִיךְ מִמִּצְרַיִם רַחְמוּ בְדִיל
22 חֶטְאֵי עוּלֵימַיִךְ : בְּכֵן אָהֳלִיבָה כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא מֵיתֵי בִגְלֵי יַת רְחִימַךְ עֲלָךְ
23 יַת דְקָצַת נַפְשִׁיךְ בְּהוֹן וְאַיְתֵינוּן עֲלָךְ מִסְחוֹר סְחוֹר : בְּנֵי בָבֶל וְכָל כַּסְדָאֵי פְקוֹדָאֵי וְשׁוֹעָאֵי
וְקוֹעָאֵי כָּל בְּנֵי אַתּוּר עִמְּהוֹן עוּלֵמֵי חֶמְדְתָא שִׁלְטוֹנִין וְטוּרְנִין כּוּלְהוֹן גִבָּרִין מְזַמְנִין
24 רָכְבֵי סוּסָוָן כּוּלְהוֹן : וְיֵיתוּן עֲלָךְ בְּמָאנֵי זֵינָא בִּרְתִיכִין וְגַלְגְלִין וּמַשְׁרְיַת עַמְמִין דִמְזַיְנִין
בְּעִגִילִין וְקוּלְסִין יִמְגְנִין עֲלָךְ סְחוֹר סְחוֹר וְאֶתֵּן קֳדָמֵיהוֹן פּוּרְעֲנוּת דִינִין וְיִתְפָּרְעוּן מִנִּיךְ
25 בְּנִימוֹסֵיהוֹן : וְאֶתֵּן פּוּרְעֲנוּתִי בִּיךְ וְיִתְפָּרְעוּן מִנִּיךְ בִּרְגַז רַבְרְבַיִךְ וִיקִירַיִךְ יִגְלוּן וְעַמִּיךְ
26 בְּחַרְבָּא יִתְקַטְלוּן אִנוּן בְּנַיִךְ וּבְנָתַיִךְ יִשְׁבּוּן וּשְׁפַר אַרְעִיךְ יִתּוֹקַד בְּנוּרָא : וְיַשְׁלְחוּנִיךְ
27 לְבוּשֵׁי יְקָרִיךְ וְיִסְבוּן מָאנֵי תוּשְׁבַּחְתִּיךְ : וַאֲבַטֵל חוֹבֵי עֲצַת חֶטְאַךְ מִנִּיךְ וְיַת פּוּלְחַן
טַעֲוָתִיךְ דַהֲוֵית עָבְדָא כַּד הֲוֵית בְּאַרְעָא דְמִצְרַיִם וְלָא תִזְקְפִין עֵינַךְ לְהוֹן וְטַעֲוַת
28 מִצְרָאֵי לָא תִדְכְּרִין עוֹד : אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא מְסַר לִיךְ בְּיַד דִסְנֵית
29 בְּיַד דְקָצַת נַפְשִׁיךְ בְּהוֹן : וְיִתְפָּרְעוּן מִנִּיךְ בִּדְבָבוּ וְיִשְׁבּוֹן יַת כָּל לֵיאוּתִיךְ וְיִשְׁבְּקוּנִיךְ
30 מְטַלְטְלָא וּשְׁבִיקָא וְתִתְגְלֵי בַהֲתַת טַעֲוָתִיךְ וְחוֹבֵי עֲצַת חֶטְאַךְ וְזָדוֹנִיךְ : חוֹבַיִךְ
31 גְרַמוּ אִלֵין לִיךְ בְּדִטְעֵית בָּתַר עַמְמַיָא וְאִסְתָּאֲבַת בְּפוּלְחַן טַעֲוָתְהוֹן : בְּאוֹרַח
32 אֲחָתִיךְ הֲלִיכַת וְאֶתֵּן כַּס פּוּרְעֲנוּתַהּ בִּידִיךְ : כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים כַּס פּוּרְעֲנוּת
אֲחָתִיךְ תִּשְׁתִּין תַּקִּיפָא וַחֲסִינְתָּא תְּהֵין לְחוּךְ וּלְלִעִיב מִסְנֵי עָקָא דְתֵיתֵי עֲלָךְ :
33 34 הָא כְרָוְיָא וְדָוָן תִּתְמַלְיָן כַּס צְדוּ וְאִשְׁתְּמָמוּ כַּס פּוּרְעֲנוּת אֲחָתִיךְ שֹׁמְרוֹן : וְתִשְׁתִּין
יָתַהּ וְתִגְמְרִין וְיַת פּוּרְעֲנוּתַהָא תְּקַבְּלִין וּבִסְרִיךְ תְּתַלְשִׁין אֲרֵי אֲנָא גְזָרִית בְּמֵימְרִי
אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et multiplicavit idola ſua ut recordaretur dierum antiquorum, in quibus 19
errabat quando erat in terra Ægypti. Et elegit ut eſſet miniſtrans eis, 20
quorum carnes ſunt ſicut carnes aſinorum, & ſicut fluxus equorum eſt fluxus
eorum. Et recordata es delictorum nefandi conſilii tui, quæ ab initio, 21
quando faciebas ex Ægypto *amorem* propter peccata adoleſcentiæ tuæ.
Proptereà Ooliba hæc dicit Dñs Deus : Ecce ego inducam publicè ama- 22
tores tuos contra te, quos deteſtata fuerat anima tua : & adducam eos
contra te undequaque. Filios Babylonis, & omnes Chaldæos, Pecodaitas 23
& Soaitas, & Coaitas, omnes filios Aſſur cum eis, juvenes eximios,
principes & tyrannos, univerſos fortes & præparatos, aſcenſores equorum
univerſos. Et venient contra te cum armis bellicis, cum curribus & 24
rotis ; & copias populorum qui armati ſunt ſcutis & galeis, conſtituent
ſuper te in circuitu, & dabo coram eis ultionem judiciorum, & ultionem
ſument ex te pro legibus ſuis. Et dabo ultionem meam in te, & ultionem 25
ſument ex te in furore. Principes tui & nobiles tui tranſmigrabunt, &
populus tuus gladio occidetur : ipſi filios tuos & filias tuas in captivitatem
ducent, & pulchritudo terræ tuæ ſuccendetur igni. Et expoliabunt te 26
veſtimentis gloriæ tuæ, & tollent vaſa laudis tuæ. Et ceſſare faciam delicta 27
flagitiorum tuorum à te, & cultum idolorum tuorum quem habebas quando
eras in terra Ægypti, & non levabis ad ea oculos tuos, & idolorum
Ægyptiorum non recordaberis amplius. Quia hæc dicit Dñs Deus : Ecce 28
ego tradam te in manum eorum quos odiſti, & in manum eorum quos deteſtata
eſt anima tua. Et ultionem ſument ex te in odio, & capient omnes 29
labores tuos, & derelinquent te tranſmigrantem & derelictam, & revelabitur
confuſio ſcortationũ tuarũ, & delicta tuorum nefandorum conſiliorũ,
& ſuperbia tua. Et peccata tua conciliârunt tibi hæc, eò quòd erraſti ſe- 30
quens populos, & polluta es cultu idolorũ eorum. In via ſororis tuæ am- 31
bulâſti : & dabo calicem ultionis ejus in manu tua. Hæc dicit Dñs Deus : 32
Calicem ultionis ſororis tuæ bibes grandẽ & fortẽ, & eris in deriſum & in
ſubſannationẽ præ multitudine tribulationis quæ veniet ſuper te. Ecce ſicut 33
ebrius, & mœrens impleberis calice deſolationis & ſtuporis, calice ultionis
ſororis tuæ Samariæ. Et bibes illũ, & conſummabis, & ultionẽ recipies, 34
& carnes tuas lacerabis ; quia ego decrevi in verbo meo, dicit Dñs Deus.

Verſio S Y R I A C A cum Interpretatione L A T I N A.

* ܘܐܣܓܝܬ ܙܢܝܘܬܗ. ܘܐܬܕܟܪܬ ܝܘܡܬܐ ܕܛܠܝܘܬܗ. ܕܙܢܝܬ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܐܬܢܩܦܬ
ܠܥܒܕܝܗܘܢ. ܕܒܣܪܗܘܢ ܐܝܟ ܒܣܪܐ ܕܚܡܪܐ ܗܘ. ܘܙܪܥܗܘܢ ܐܝܟ ܙܪܥܐ ܕܪܟܫܐ. * ܘܦܩܕܬ
ܠܟܝ ܥܘܠܐ ܕܛܠܝܘܬܟܝ. ܟܕ ܐܬܛܢܦܬܝ ܒܡܨܪܝܢ. ܘܐܬܡܥܟܘ ܬܕܝ ܛܠܝܘܬܟܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ
ܐܗܘܠܝܒܐ.. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܡܥܝܪ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ ܠܟܠܗܘܢ ܪܚܡܝܟܝ. ܕܣܠܝܬ
ܢܦܫܟܝ ܡܢܗܘܢ. ܘܐܝܬܐ ܐܢܘܢ ܥܠܝܟܝ. * ܘܢܚܕܪܘܢܟܝ ܒܢܝ ܒܒܠ. ܘܟܠܗܘܢ ܟܠܕܝܐ.
ܦܘܛ ܘܠܘܕ ܘܩܘܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܒܢܝ ܐܬܘܪ ܥܡܗܘܢ. ܥܠܝܡܐ ܪܓܝܓܐ. ܡܪܘܬܐ ܘܫܠܝܛܢܐ.
ܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܕܩܕܪ ܪܟܒܝ ܪܟܫܐ. * ܘܢܐܬܘܢ ܥܠܝܟܝ ܟܕ ܡܙܝܢܝܢ. ܒܡܪܟܒܬܐ
ܘܒܓܝܓܠܐ. ܘܒܟܢܫܐ ܕܥܡܡܐ. ܒܪܘܡܚܐ ܘܒܬܪܣܐ ܘܒܣܢܘܪܝܬܐ ܢܚܕܪܘܢܟܝ. ܘܐܬܠ
ܩܕܡܝܗܘܢ ܕܝܢܐ. ܘܢܕܘܢܘܢܟܝ ܒܕܝܢܝܗܘܢ. * ܘܐܬܠ ܛܢܢܝ ܒܟܝ. ܘܢܦܣܩܘܢ ܢܚܝܪܟܝ
ܒܚܡܬܐ. ܘܐܕܢܝܟܝ ܢܦܣܩܘܢ. ܘܚܪܬܟܝ ܒܚܪܒܐ ܬܦܠ. ܗܢܘܢ ܢܕܒܪܘܢ ܒܢܝܟܝ ܘܒܢܬܟܝ.
ܘܐܢܬܝ ܒܢܘܪܐ ܬܬܐܟܠܝܢ. * ܘܢܫܩܠܘܢ ܡܐܢܐ ܕܫܘܒܚܟܝ. ܘܢܫܠܚܘܢܟܝ ܠܒܘܫܝܟܝ.
* ܘܐܒܛܠ ܬܪܥܝܬܟܝ ܡܢܟܝ. ܘܙܢܝܘܬܟܝ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܠܐ ܬܪܝܡܝܢ ܥܝܢܝܟܝ
ܠܘܬܗܘܢ. ܘܡܨܪܝܢ ܬܘܒ ܠܐ ܬܬܕܟܪܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ
ܐܢܐ ܠܟܝ ܒܐܝܕܝ ܐܬܘܪܝܐ ܕܣܠܝܬ ܢܦܫܟܝ ܡܢܗܘܢ. * ܘܢܥܒܕܘܢ ܒܣܢܐܬܗܘܢ. ܘܢܣܒܘܢ
ܟܠܗ ܠܐܘܬܟܝ. ܘܢܫܒܩܘܢܟܝ ܥܪܛܠܝܐ ܘܩܪܝܪܬܐ. ܘܬܬܓܠܐ ܨܥܪܐ ܕܙܢܝܘܬܟܝ ܘܕܥܘܠܟܝ.
* ܘܡܛܠ ܙܢܝܘܬܟܝ ܐܬܥܒܕܘ ܗܠܝܢ ܠܟܝ. ܕܙܢܝܬܝ ܒܬܪ ܥܡܡܐ. ܘܐܬܛܢܦܬܝ
ܒܦܬܟܪܝܗܘܢ. * ܘܡܛܠ ܕܗܠܟܬܝ ܒܐܘܪܚܬܗ ܕܚܬܟܝ. ܐܬܠ ܟܣܗ ܒܐܝܕܝܟܝ. * ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܟܣܐ ܕܚܬܟܝ ܬܫܬܝܢ. ܥܡܝܩܐ ܘܪܘܝܚܐ. ܘܬܗܘܝܢ ܠܓܘܚܟܐ
ܘܠܡܡܝܩܢܘܬܐ ܪܒܐ ܘܡܫܡܠܝܐ. * ܪܘܝܘܬܐ ܘܫܘܚܩܐ ܬܬܡܠܝܢ. ܟܣܐ ܕܬܡܗܐ ܘܕܚܪܒܐ. ܟܣܐ
ܕܚܬܟܝ ܫܡܪܝܢ. ܬܫܬܝܢ ܘܬܡܨܝܢ. * ܘܣܥܪܟܝ ܬܓܙܝܢ. ܘܬܕܝܟܝ ܬܦܣܩܝܢ.
ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܠܠܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.

* Multiplicavit enim ſcortationem ſuam, in 19
memoriam revocans dies adoleſcentiæ ſuæ,
quibus fornicata fuerat in terra Ægypti, Et 20
adhæſerat facinoribus eorum quorum caro
velut aſinorum caro eſt, & ſexus velut ſexus
equorum. Et quidem viſitaveram tibi ſcelus 21
adoleſcentiæ tuæ, quando ſtuprata fuiſti in
Ægypto, & compreſſa fuerint ubera pueritiæ
tuæ. Iccirco ô Aholiba, ſic ait Dominus do- 22
minorum; Ecce concitaturus ſum adverſùm
te omnes amatores tuos, à quibus abhorrue-
rat anima tua, eóſque adducturus contra te:
Téque vallabunt Babylonii & omnes Chal- 23
dæi, Put, Lydia, & Coa, & omnes Aſſyrii
cum eis, juvenes deſideratiſſimi, domini, ac
potentes, omnes viri Cedar equis vecti. Hi 24
te invadentes armati, cum aurigis & rotis, &
turmis populorum, lanceis, ſcutis, galeíſque
circundabunt te: & proponam eis judicia, &
judicabunt te judiciis ſuis. Ponámque con- 25
tra te zelum meum, & confringent nares tuas
in furore, & aures tuas avellent, & ad extre-
mum gladio occumbes. Iidem filios filiáſque
tuas abducent, & tu tandè igne conſuméris:
Capient vaſa tua glorioſiſſima, & nudabunt 26
te veſtibus tuis. Sic ceſſare faciam cogita- 27
tionem tuam à te, & ſcortationem tuam de
terra Ægypti; adeò ut nec attollas oculos tu-
os ad eos, nec Ægypti poſt hac recorderis.
Idcirco, ſic ait Dominus dominorum; Ecce 28
tradam te in manum Aſſyriorum à quibus
abhorruit anima tua: Qui te odio ſuo per- 29
cutiant, totum laborem tuum rapiant, &
nudam gelidámque relinquant; atque ita re-
tegatur ignominia ſcortationis tuæ & flagitii
tui. Propter ſcortationem tuam hæc tibi fi- 30
ent, eò quòd ſcortata ſis poſt gentes, & ido-
lis earum contaminata. Et eò quòd ambula- 31
veris in viis ſororis tuæ, dabo tibi calicem
ejus in manus tuas. Sic ait Dominus domi- 32
norum, Calicem ſororis tuæ bibes, profun-
dum ac latum, eríſque deriſui et ludibrio
maximo et integro. Ebrietate et miſeriâ re- 33
pleberis: calicem ſtuporis et excidii, calicem
ſororis tuæ Samariæ bibes et exſuges: Crines 34
tuos tondebis, et ubera tua reſecabis: nam
ego locutus ſum, ait Dominus dominorum.

Verſio A R A B I C A cum Interpretatione L A T I N A.

* وأكثرت زناك لتذكري أيام شبيبتك التي فيها زنيت في مصر * وملت الى الكلدانيين
الذين كانت أجسادهم مثل الحمير ومذاكر الخيل مذاكرهم * وتعهدت اثم شبيبتك
* لأجل هذا يا اوليبا هكذا يقول الرب الرب . ها انا أثير عشاقك عليك . التي بعدت
نفسك منهم . وأجلبهم اليك من حولك * بني بابل . وجميع الكلدانيين * فاقود وسوع
ولود . وجميع بني الموصليين معهم * الشبان المختارين * القواد والامراء . جميع المثلثين
والمسميين * الفرسان على الخيل * جميعهم ياتون اليك من الجربياء . مركبات وفرسان مع
جميع الشعوب . اترسة وتبال . ويلقون عليك حرسا من حولك . وأعطي امام وجوههم حكما
وينتقمون منك باحكامهم * وادفع غيرتي فيك . ويصنعون معك بزجر غضبي . ويجدعون
انفك واذانك . ويقتلون بقاياك بالسيف . هم ياخذون بنيك وبناتك . ويبيدون بقاياك بالنار
* ويخلعون عنك ثوبك . وياخذون اواني افتخارك * واصرف عنك نفاقك . وزناك من
مصر . ولا ترفعين عينيك اليهم . ولا تذكرين مصر ايضا * لأجل هذا هكذا يقول
الرب الرب . ها انا ادفعك الى ايدي مبغضيك الذين بعدت نفسك منهم * ويصنعون
فيك بالبغضة . وياخذون جميع اتعابك وكدك . ويصيري عريانة ومفضوحة . وينكشف
فضيحة زناك ونفاقك * فزناك صنع بك هذا . عند ما زنيت خلف الامم . وتنجست
بفكرهم * وانطلقت في طريق اختك . وادفع كاسها في يديك * هكذا يقول الرب
الرب . كاس اختك تشربي العميق الواسع المفزع * لتكملي سكرا وتملي انحلالا . كاس
الابادة . وكاس اختك سامرة تشربيه وتمصمصين * واصرف اعيادها وروس شهورها من
اجل اني انا تكلمت يقول ادوناي الرب .

* *Multiplicâſti ſcortationem tuam, recor-* 19
dando te dierum adoleſcentiæ tuæ, qui-
bus fornicata fueras in Ægypto. Et 20
declinâſti ad Chaldæos quorum corpora
erant ut aſinorum, & virilia equorum
virilia ipſorum: Et reviſiſti iniquita- 21
tem adoleſcentiæ tuæ. Propterea O Ao- 22
liba, ſic ait Dominus Dominus; Ecce ego
concitabo amaſios tuos contra te, à qui-
bus averſus eſt animus tuus, & adducam
eos ad te de circuitu tuo; Filios Babelis, 23
omnéſque Chaldæos, Phacuth, Suth, &
Lud, omnéſque filios Aſſyriorum cum eis,
juvenes delectos, duces & imperatores,
omnes triarios, atque celebres, equites ſu-
per equos. Hi omnes ad te venient ab 24
Aquilone, currus, & equites, cum uni-
verſis populis, clypeis, & ſagittis: &
collocabunt adverſùm te cuſtodes circun-
quaque: ponámque a te faciem eorum
judicium, & ultionem à te repetent in ju-
diciis ſuis. Ponam in te zelum meum, 25
agéntque tecum in ira furoris mei, aufe-
rent naſum tuum & aures tuas, & reli-
quias tuas gladio trucidabunt. Hi tollent
filios filiáſque tuas, & reliquias tuas
igne conſument; Detrahent à te veſtem 26
tuam, rapiéntque vaſa gloriationis tuæ.
Et avertam à te impietatem tuam, & 27
ſcortationem tuam ab Ægypto: & non
attolles oculos tuos ad eos, neque recor-
daberis amplius Ægypti. Propterea 28
ſic dicit Dominus Dominus; En ego tra-
diturus ſum te in manus oſorum tuorum,
à quibus averſus eſt animus tuus: Qui 29
cum odio tecum agent, capiéntque omnes
labores tuos & operam tuam: eríſque nu-
da, & verecunda: & retegetur verecun-
dia ſcortationis tuæ & impietatis tuæ.
Scortatio quidem tua hæc tibi fecit, quan- 30
doquidem ſcortata es poſt gentes, téque
polluiſti cogitationibus earum, Et ab- 31
iiſti in via ſororis tuæ: dabóque cali-
cem ejus in manus tuas. Ita dicit Do- 32
minus Dominus; Calicem ſororis tuæ bi-
bes, profundum, latum, horrendum. ut 33
perfectè inebrieris, & implearis torpo-
re; calicem perditionis, calicem ſororis
tuæ Samariæ bibes & exuges: Au- 34
feámque feſtivitates ejus & principia
menſium ejus: quoniam ego locutus ſum,
dicit Adonai Dominus.

projecisti & ,mei es oblita quod eo Pro :Deus Domin⁹ dixit sic Propterea
35 לכן כה אמר אדני יהוה יען שכחת אותי ותשליכי
,tuas fornicationes & ,*tuum scelus* porta tu etiā & :tuū corp⁹ post me
אותי אחרי גוך וגם את שאי זמתך ואת־תזנותיך :
& ,Aholah judicabis nónne,hominis Fili :me ad Dominus dixit Et
36 ויאמר יהוה אלי בן־אדם התשפוט את־אהלה ואת־
,sunt adulteratæ Quia .earū abominationes eis nuntia Et ? Aholibah
37 אהליבה והגד להן את תועבותיהן : כי נאפו
etiam & :sunt fornicatæ suis idolis cum &,earū manibus in sanguis &
ודם בידיהן ואת־גלוליהן נאפו וגם את־
Amplius .*comedendū* ad eis fecerūt transire,mihi genuerūt quos ,suos filios
38 בניהן אשר ילדו־לי העבירו להן לאכלה : עוד
& ,illa die in meū sanctuariū polluerunt :mihi fecerunt hoc
זאת עשו לי טמאו את־מקדשי ביום ההוא ואת־
, suis idolis suos filios *eos immolando in* Et .prophanârunt mea sabbatha
39 שבתותי חללו : ובשחטם את־בניהם לגלוליהם
ecce & :illud *polluendū ad* ,illa die in meū sanctuariū ad ingrediebātur &
ויבאו אל־מקדשי ביום ההוא לחללו והנה־
venientes viros ad miserunt *quia etiā* Et.meæ dom⁹ medio in fecerūt sic
40 כה עשו בתוך ביתי : ואף כי תשלחנה לאנשים באים
quos *ad* ,venerunt ecce & ,*eos ad* missus nuntius quos ,longè à
ממרחק אשר מלאך שלוח אליהם והנה־באו לאשר
super sedisti Et .ornamento te ornâsti & ,tuos oculos *colorâsti* ,te lavisti
41 רחצת כחלת עיניך ועדית עדי : וישבת על־
,meā thymiama & *: ejus facies ad disposita* mensa & ,honorabilem lectum
מטה כבודה ושלחן ערוך לפניה וקטרתי
ad & .ea in pacificæ multitudinis vox Et .eā super posuisti,meū unguentū&
42 ושמני שמת עליה : וקול המון שלו בה ואל־
dederunt Et .deserto è ,Sabei adducti ,*hominem multiplicando à* ,viros
אנשים מרב אדם מובאים סובאים ממדבר ויתנו
dixi Et .earū capita super gloriæ coronam & ,earū manus *ad* armillas
43 צמידים אל־ידיהן ועטרת תפארת על־ראשיהן : ואמר
venit Et *ipsa &* ejus fornicationes *exibunt* nunc : adulteriis inveteratæ
44 לבלה נאופים עת יזנה תזנותיה והיא : ויבוא
,Aholah ad sunt ingressi sic ,meretricē mulierē ad *ingredi se ūdūm* :eam ad
אליה כבוא אל־אשה זונה כן באו אל־אהלה
judicabūt ipsi justi viri Et *sceleris* mulieres Aholibah ad &
45 ואל־אהליבה אשת הזמה : ואנשים צדיקם המה ישפטו
quia sanguinē effundentium judicio &,adulterarum judicio eas
אותהם משפט נאפות ומשפט שפכות דם כי
: Deus Dominus dixit sic Quia .earū manib⁹ in sanguis & ,*ipsæ* adulteræ
46 נאפת הנה ודם בידיהן : כי כה אמר אדני יהוה
.rapinam in &,commotionē in eas *dare* & ,cœtum eas *super facere* Ascendere
העלה עליהם קהל ונתן אתהן לזעוה ולבז :
: suis gladiis in eas succident & ,*cœtus* lapide eas *super obruent* Et
47 ורגמו עליהן אבן קהל וברא אותהן בחרבותם
.comburent igni in earū domos & ,interficient earum filias & ,earum filios
בניהם ובנותיהם יהרגו ובתיהן באש ישרפו :
,mulieres omnes erudientur & : terra è fœditatem faciam cessare Et
48 והשבתי זמה מן־הארץ ונוסרו כל־הנשים
,vos super *vestrum scelus dabunt* Et *vestrā* fœditatē secūdum facient non &
49 ולא תעשינה כזמתכנה : ונתנו זמתכנה עליכן
.Deus Dominus *ego quod* scietis & *: portabitis vestrorum idolorum peccata* &
וחטאי גלוליכן תשאינה וידעתם כי אני אדני יהוה :

CAP. XXIV. כד

,decimo mense in ,nono anno in me ad Domini verbum fuit Et
1 ויהי דבר־יהוה אלי בשנה התשיעית בחדש העשירי
: dicendo ,mensis decima in
בעשור לחדש לאמר :

Versio VULG. LAT.

35 Propterea hæc dicit Dominus Deus; Quia oblita es mei, & projecisti me post corpus tuum, tu quoque porta scelus tuum, & fornicationes tuas. 36 Et ait Dominus ad me, dicens; Fili hominis, numquid judicas Oollam, & Oolibā, & annuntias eis scelera earum? 37 Quia adulteratæ sunt, & sanguis in manibus earū, & cum idolis suis fornicatæ sunt: insuper & filios suos, quos genuerunt mihi, obtulerunt eis ad devorandum. 38 Sed & hoc fecerunt mihi: Polluerunt Sanctuarium meum in die illa, & sabbata mea profanaverunt. 39 Cúmque immolarent filios suos idolis suis, & ingrederentur Sanctuarium meum in die illa ut pollurent illud: etiam hæc fecerunt in medio domûs meæ. 40 Miserunt ad viros venientes de longè, ad quos nuntium miserant: itaque ecce venerunt: quibus te lavisti, & circumlinisti stibio oculos tuos, & ornata es mundo muliebri. 41 Sedisti in lecto pulcherrimo, & mensa ornata est ante te: thymiama meum, & unguentum meum posuisti super eam. 42 Et vox multitudinis exultantis erat in ea: & in viris, qui de multitudine hominum adducebantur, & veniebant de deserto, posuerunt armillas in manibus eorum, & coronas speciosas in capitib⁹ eorum. 43 Et dixi ei, quæ attrita est in adulteriis; Nunc fornicabitur in fornicatione sua etiam hæc. 44 Et ingressi sunt ad eam quasi ad mulierem meretricem: sic ingrediebantur ad Oollam & Oolibam, mulieres nefarias. 45 Viri ergò justi sunt: hi judicabunt eas judicio adulterarum, & judicio effundentium sanguinem: quia adulteræ sunt, & sanguis in manibus earum. 46 Hæc enim dicit Domin⁹ Deus; Adduc ad eas multitudinem, & trade eas in tumultum, & in rapinam: 47 Et lapidentur lapidib⁹ populorum, & confodiantur gladiis eorum: filios & filias earū interficient, & domos earū igne succendent. 48 Et auferam scelus de terra, & discent omnes mulieres ne faciant secundùm scel⁹ earum. 49 Et dabunt scelus vestrū super vos, & peccata idolorum vestrorum portabitis: & scietis quia ego Domin⁹ Deus.

CAP. XXIV.

1 ET factum est verbum Domini ad me, in anno nono, in mense decimo, decimâ die mensis, dicens;

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

35 Διατοῦτο τάδε λέγει (φ) κύριος, Ἀνθ' ὧν ἐπελάθου μου, ϗ ἀπέῤῥιψάς με ὀπίσω τοῦ σώματός σου, ϗ σὺ λάβε τὴν ἀσέβειάν σου ϗ τὴν πορνείαν σου. 36 Καὶ εἶπε κύριος πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώπου, οὐ κρινεῖς τὴν (χ) Ὀολὰν ϗ τὴν (ψ) Ὀολιβὰν, ϗ ἀναγγελεῖς αὐταῖς τὰς ἀνομίας αὐτῶν; 37 Ὅτι ἐμοιχῶντο, ϗ αἷμα ἐν χερσὶν αὐτῶν, (ω) τὰ ἐνθυμήματα αὐτῶν ἐμοιχῶντο, ϗ τὰ τέκνα αὐτῶν ἃ ἐγέννησάν μοι, (α) 38 διήγαγον αὐτοῖς δι' ἐμπύρων. Ἕως ϗ ταῦτα ἐποίησάν μοι, (β) τὰ ἅγιά μου ἐμίαινον, 39 ϗ τὰ σάββατά μου ἐβεβήλουν. Καὶ ἐν τῷ σφάζειν αὐτοὺς τὰ τέκνα αὐτῶν τοῖς εἰδώλοις αὐτῶν, ϗ εἰσεπορεύοντο εἰς τὰ ἅγιά μου (ς), τοῦ βεβηλοῦν αὐτά· ϗ ὅτι οὕτως ἐποίουν 40 ἐν μέσῳ τοῦ οἴκου μου. (δ) Καὶ ὅτι τοῖς ἀνδράσι τοῖς ἐρχομένοις μακρόθεν, οἷς ἀγγέλους (ε) ἐξαπέστελλον πρὸς αὐτοὺς, ϗ ἅμα τῷ ἔρχεσθαι αὐτοὺς, εὐθὺς ἐλούου, ϗ ἐστιβίζου τοὺς ὀφθαλμούς σου, ϗ ἐκόσμου κόσμῳ, 41 Καὶ ἐκάθου ἐπὶ κλίνης ἐστρωμένης, ϗ τράπεζα κεκοσμημένη πρὸ προσώπου αὐτῆς, ϗ τὸ (ζ) θυμίαμα, ϗ τὸ ἔλαιόν μου (η) εὐφραίνοντο 42 ἐν αὐτοῖς. Καὶ φωνὴν ἁρμονίας ἀνεκρούοντο, ϗ πρὸς ἄνδρας ἐκ πλήθους ἀνθρώπων ἥκοντας (θ) ἐκ τῆς ἐρήμου· ϗ ἐδίδοσαν (ι) ψέλλια ἐπὶ τὰς (κ) χεῖρας αὐτῶν, ϗ στέφανον καυχήσεως ἐπὶ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν. 43 Καὶ (λ) εἶπα, Οὐκ ἐν τούτοις (μ) μοιχεύουσι; ϗ ἔργα πόρνης ϗ αὐτὴ ἐξεπόρνευσε; 44 Καὶ εἰσεπορεύοντο πρὸς αὐτὴν, ὃν τρόπον εἰσπορεύονται πρὸς γυναῖκα πόρνην, οὕτως εἰσεπορεύοντο πρὸς (ν) Ὀολὰν, ϗ πρὸς Ὀολιβὰν, τοῦ ποιῆσαι ἀνομίαν. 45 Καὶ ἄνδρες δίκαιοι αὐτοὶ ϗ ἐκδικήσουσιν αὐτὰς ἐκδικήσει μοιχαλίδος, ϗ ἐκδικήσει αἵματος, ὅτι μοιχαλίδες εἰσὶ, ϗ (ξ) αἷμα ἐν χερσὶν αὐτῶν. 46 Τάδε λέγει (ο) κύριος κύριος, Ἀνάγαγε ἐπ' αὐτὰς ὄχλον, ϗ δὸς (π) ἐν αὐταῖς ταραχὴν ϗ διαρπαγὴν, 47 Καὶ λιθοβόλησον (ρ) ἐπ' αὐτὰς λίθοις ὄχλων, ϗ (σ) κατακέντει αὐτὰς ἐν τοῖς ξίφεσιν αὐτῶν· υἱοὺς αὐτῶν ϗ θυγατέρας αὐτῶν ἀποκτενοῦσιν, καὶ τοὺς οἴκους αὐτῶν (τ) ἐμπρήσουσιν. 48 Καὶ ἀποστρέψω ἀσέβειαν (υ) ἐκ τῆς γῆς, ϗ παιδευθήσονται πᾶσαι αἱ γυναῖκες, ϗ οὐ μὴ ποιήσουσι κατὰ τὰς ἀσεβείας αὐτῶν. 49 Καὶ δοθήσεται ἡ ἀσέβεια ὑμῶν ἐφ' ὑμᾶς, ϗ τὰς ἁμαρτίας τῶν ἐνθυμημάτων ὑμῶν λήψεσθε, ϗ γνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος.

MS.A. (φ) ἀδωναὶ κύριος, (χ) Ὀλλὰν (ψ) Ὀλιβὰν, (ω) ϗ τὰ (α) διῆγον αὐτὰ δι' (β) ϗ ἃ ἐμίαινον ἐποίησε, τὰ (ς) ἀφυλάκτως ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, τοῦ (δ) Καὶ τοῖς (ε) ἐξαπεστέλλοσαν (ζ) θυμίαμά μου, (η) ἐξηυφραίνοντο (θ) οἰνωμένους ἐκ (ι) ψέλλια (κ) χεῖράς σου, σὺ δὲ στέφανον (λ) εἶπας, (μ) μοιχῶνται; ἔργα γυναικὸς πόρνης ἐποίησε, Καὶ εἰσεπορεύοντο πρὸς αὐτ, ὃν τρόπον εἰσπορεύονται (ν) Ὀλλὰν, ϗ πρὸς Ὀλιβὰν, (ξ) αἵματα (ο) ἀδωναὶ κύριος, (π) ἐπ' αὐτὰς (ρ) αὐτὰς (σ) κατακέντησον (τ) ἐνπυρίσουσιν. (υ) ἀπὸ

ΚΕΦ. κδ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, ἐν τῷ ἔτει τῷ (α) ἐννάτῳ, ἐν τῷ μηνὶ τῷ δεκάτῳ, δεκάτῃ τοῦ μηνὸς, λέγων,

Propterea hæc dicit Dominus: 35 Quia oblita es mei, & projecisti me post corpus tuum, & tu accipe impietatem tuam, & fornicationē tuā. 36 Et dixit Dominus ad me; Fili hominis, (z) nonne judicabis Oolā, et Oolbā, et annūtiabis eis iniquitates earum; 37 Quia mœchabātur, et sanguis in manibus ipsarum? Secundū adinventiones suas mœchabantur, & filios suos quos genuerūt mihi, traduxerunt (ω) eis per ignita: 38 Donec et ista fecerūt mihi: Sancta mea polluerūt, & sabbata mea prophanaverunt: 39 Et in jugulando ipsos filios suos idolis suis, & ingrediebantur in Sācta mea ad prophanandū illa: & (aa) quia sic faciebant in medio domūs meæ: 40 Et (bb) quia viris venientibus de longè, quibus nuntios miserant ad eos; et simul ac venissent, statim lavabaris, & stibio liniebas oculos tuos, & ornabaris ornatu: 41 Et sedebas super lectum stratum: & mensa ornata ante faciem ipsius. Et thymiama, et oleū (cc) meum, lætabantur in eis: 42 Et vocem harmoniæ personabant, (dd) & ad viros ex multitudine hominū (ee) venientes de deserto. Et dederunt armillas super manus eorū, & coronā gloriationis super capita eorū. 43 Et dixi: Nonne in his mœchantur? et opera fornicariæ etiā ipsa fornicata est? 44 Et ingrediebantur ad eam: quemadmodum ingrediuntur ad mulierē meretricē, ita ingrediebantur ad Oolam, et ad Oolibam, ut facerent iniquitatē. 45 Et viri justi hi: et ulciscentur eas ultione adulteræ, et ultione (ff) sanguinis: quia adulteræ sunt, & sanguis in manibus earū. 46 Hæc dicit Dominus Dominus; Adduc super eas multitudine: & da in eis tumultū, & rapinā: 47 (gg) Et lapida super eas lapides turbarum: et confodito eas in gladiis earū. Filios earū & filias earū interficient: et domos earum incendent. 48 Et avertā impietatē de terra: et discent omnes mulieres, & non facient secundū impietates earum. 49 Et dabitur impietas vestra super vos: & peccata cogitationum vestrarum accipietis: & scietis, quia ego Dominus.

CAP. XXIV.

1 E factus est sermo Domini ad me in anno nono, in mense decimo, decimâ mensis, dicens;

MS.A. (α) ἐνάτῳ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

35 בכן כדנן אמר יי אלהים חלף דשבקת פולחני וארחקת דחלתי מקבל עינך ואף את
36 קבילי חובי עצת חטאיך וטעותיך : ואמר יי לי בר אדם התוכח ית אהלה וית אהליבה
37 וחוי להן ית תועבתהן : ארי נאין בהן ודם זכי אשדו בידיהן ובתר פולחן טעותהן
טעו ואף ית בניהן דעתידין למפק מנהן תולדת קודשא קדמי אעבירו להן לפולחן :
38 עוד ארגזו קדמי סאיבו ית בית מקדשי ביומא ההוא וית יומי שביא דילי אחילו :
39 ובמכסותהון ית בניהון לפולחן טעותהון ועלו לבית מקדשי ביומא ההוא לאחלותיה
40 והא כדין עבדו בגו בית מקדשי : ואף ארי שלחת לגבריא דאתן מרחיק דאזגד
41 שליח לותהון והא אתו לאתר דזמינת אתקנת שוקין ומנית פלטורין : ורמית דרגשין
מכבין דיקר ופתורין מלן כל טוב סדרת קדמיהון וקטורת בוסמי ומשחי שוית
42 עליהון : וקל אתרגושתהון די שלן שליוא בהון ולתקוף גברין מסני אנשא אתן
מסחור סחור ממדברא ויהבו שירין על ידיהון וכתר דתושבחא על רישיהון :
43 ואמרית לכנשתא דישראל דבליאת עמה בחובין כען תשבוק מטעותה ותתיב
44 לפולחני ולא תבת : ועלו לותה כמא דעלין לות אתתא פונדקיתא כן עלו לאהלה
45 ולאהליבה מוניתא דעיצתהון חטאין : וגברין זכאין בקבליהון יתפרעון מנהן
46 פורענות ניפין ופורענות אשדת דם ארי נאין בהן ודם זכי אשדו בידיהון : ארי כדנן
47 אמר יי אלהים אתנבי דיסקון עליהון משרין ואמסר יתהון לתביר ולבזא : ויירגמון
יתהן באבני קלע משרין ויבזעון יתהן בסיפיהון בניהון ובנתהון יקטלון ובתיהון
48 יוקדון בנורא : ואבטיל חובי עצת חטאין מן ארעא ויתרדון כל מדינתא ולא יעבדן
49 בעצת חטאיכון : ויתיהבון חובי עצת חטאיכון עליכון וחטאי פולחן טעותכון תקבלון
ותדעון ארי אנא יי אלהים :

כד

1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי בשתא תשיעתא בירחא עשיראה בעסרא לירחא
למימר :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Propterea hæc dicit Dñs De⁹: Pro eo quòd reliquisti cultum meum, & projecisti timorem mei à conspectu oculorū tuorū, tu quoq; suscipe delicta nefandorū consiliorū tuorū & idolorū tuorū. 36 Et dixit Dñs ad me: Fili hominis, nónne argues Oollam & Oolibam, & annuntiabis eis abominationes suas? 37 Quia scortatores sunt apud illas, & sanguinē innocētiū effuderūt manib⁹ suis; & post cultū idolorū suorū erraverunt: quin etiā filios suos, de quib⁹ futurū erat ut egrederetur generatio sancta corā me, transtulerunt eis ad cultum. 38 Adhuc irritaverunt me, polluerūt domū sanctuarii mei in die illa, & dies sabbato ū meorū violaverunt. 39 Et cùm immolarent filios suos in cultū idolorū suorū, ingressi sunt eadem die in domū sanctuarii mei, ut prophanarent eā, & ecce rem hujusmodi intra domū sanctuarii mei designârunt. 40 Et insuper cùm misisti ad viros venientes de longè, nuntio ad eos misso, & ecce venerunt ad locū quem statuisti: præparâsti vicos, & constituisti plateas. 41 Instravisti lectulos stragulis pretiosis, & mensas plenas omni bono ordinâsti corā eis, & incensum aromatū meorū & oleū meū posuisti sup eas. 42 Et vox tumult⁹ eorum qui summa fruebantur prosperitate, [*fuit*] in *eis*, & in fortitudine potentiū præ multitudine hominū venientiū undiquaq; à deserto, & posuerunt armillas in manib⁹ eorū, & coronā laudis in capitib⁹ eorū. 43 Et dixi de cœtu Israel, cuj⁹ popul⁹ inveterat⁹ est in peccatis: Nunc dimittet idola sua, & convertetur ad cultū meū: & non est conversa. 44 Et ingressi sunt ad eā sicut qui ingrediuntur ad mulierē hospitatricē, sic ingressi sunt ad Oolam & Oolibam fornicatrices sceleratissimorū consiliorū. 45 Et viri justi in conspectu earū ipsi sumēnt ultionē ex eis, ultionē adulterantiū & ultionē effundentiū sanguinem: quia apud eas sunt qui fornicentur, & sanguinē innocentē effuderunt manib⁹ suis. 46 Quia hæc dicit Dñs De⁹: Vaticinare ut ascendat contra eas exercit⁹, & tradam eas in interitū & in direptionē. 47 Et lapidabunt exercit⁹ eas lapidibus fundæ; & præscindent eas gladiis suis; filios earū & filias earum occident, & domos earum succendent igne. 48 Et cessare faciam scelera nefarii consilii de terra, & corripientur omnes provinciæ, & non facient juxta scelera vestra. 49 Et dabuntur peccata scelerati vestri consilii super vos, & peccata cultus idolorum vestrorum suscipietis: & scietis quia ego Dñs Deus.

CAP XXIV.

1 ET factum est verbum prophetiæ à facie Domini ad me anno nono, mense decimo, decima die mensis, dicens:

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܛܥܝܬܝܢܝ ܘܫܕܝܬܝܢܝ ܒܬܪ ܦܬܟܪܝܟܝ. ܘܐܦ ܐܢܬܝ ܩܒܠܝ ܥܘܠܟܝ
ܘܙܢܝܘܬܟܝ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܒܪ ܐܢܫܐ. ܕܘܢ ܠܐܗܘܠܐ ܘܠܐܗܘܠܝܒܐ. ܘܚܘܐ ܐܢܝܢ ܛܢܦܘܬܗܝܢ
* ܕܓܡܪܝ ܘܕܡܐ ܐܝܬ ܒܐܝܕܝܗܝܢ. ܘܥܡ ܦܬܟܪܝܗܝܢ ܓܡܪܝ. ܘܒܢܝܗܝܢ ܕܝܠܕܝ ܠܝ. ܐܘܩܕܝ
ܠܗܘܢ ܒܢܘܪܐ. * ܘܗܕܐ ܬܘܒ ܥܒܕܝ ܠܝ. ܛܡܐܝ ܡܩܕܫܝ ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܘܫܒ
ܐܚܠܝ. * ܘܟܕ ܢܟܣܝ ܗܘܝ ܒܢܝܗܝܢ ܠܦܬܟܪܝܗܝܢ. ܥܠܝ ܠܡܩܕܫܝ ܒܗ ܒܝܘܡ
ܗܘ ܘܛܡܐܘܗܝ. ܘܗܟܢܐ ܥܒܕܝ ܒܓܘ ܒܝܬܝ. * ܘܐܦ ܫܕܪܝ ܠܘܬ ܓܒܪܐ ܕܐܬܝܢ ܡܢ ܪܘ
ܠܘܬ ܗܢܘܢ. ܗܢܘܢ ܕܫܕܪܝ ܠܗܘܢ ܐܝܙܓܕܐ. ܘܟܕ ܐܬܘ. ܐܣܚܝ ܘܟܚܠܝ ܥܝܢܝܗܝܢ. ܘܨܒ
ܨܒܬܗܝܢ. ܘܐܬܨܒܬ ܨܒܬܗܝܢ. * ܘܝܬܒܝܢ ܥܠ ܥܪܣܬܐ ܕܡܫܘܝܢ. ܘܦܬܘܪܐ ܡܣܕܪܐ
ܩܕܡܝܗܝܢ. ܘܡܫܚܝ ܘܒܣܡܝ ܛܥܢܝܢ ܥܠܝܗܝܢ. * ܘܩܠܐ ܕܚܕܘܬܗܝܢ ܢܦܩ ܗܘܐ. ܘܐܦ
ܕܓܒܪܐ ܕܐܬܝܢ ܡܢ ܫܒܐ. ܘܡܢ ܡܕܒܪܐ. ܘܝܗܒܝܢ ܫܒܝܪܐ ܒܐܝܕܝܗܝܢ. ܘܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ
ܒܪܫܝܗܝܢ. * ܘܐܡܪܬ ܥܠܝܗܝܢ ܓܡܪܝ. ܘܐܝܟ ܥܒܕܐ ܕܙܢܝܬܐ ܙܢܝ. * ܘܥܐܠܝܢ ܗܘܘ ܠܘܬܗܝܢ
ܐܝܟ ܕܥܐܠܝܢ ܠܘܬ ܐܢܬܬܐ ܙܢܝܬܐ. ܗܟܢܐ ܥܐܠܝܢ ܗܘܘ ܠܘܬ ܐܗܘܠܐ ܘܠܘܬ ܐܗܘܠܝܒܐ. ܢܫ
ܙܢܝܬܐ. * ܘܓܒܪܐ ܙܕܝܩܐ ܢܕܘܢܘܢ ܐܢܝܢ ܕܝܢܐ ܕܓܡܪܝܬܐ. ܘܕܝܢܐ ܕܐܫܕܝ ܕܡܐ. ܡܛܠ
ܕܓܡܪܝ ܐܢܝܢ. ܘܕܡܐ ܐܝܬ ܒܐܝܕܝܗܝܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܐܣܩ ܥܠܝܗܝ
ܟܢܘܫܬܐ. ܘܗܒ ܐܢܝܢ ܠܙܘܥܬܐ ܘܠܒܙܬܐ. * ܘܢܪܓܡܘܢ ܐܢܝܢ ܟܢܘܫܬܐ ܒܟܐܦܐ. ܘܢܦܣܩ
ܐܢܝܢ ܒܣܝܦܝܗܘܢ. ܘܒܢܝܗܝܢ ܘܒܢܬܗܝܢ ܢܩܛܠܘܢ. ܘܒܬܝܗܝܢ ܢܘܩܕܘܢ ܒܢܘܪ
* ܘܐܒܛܠ ܥܘܠܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܢܬܪܕܝܢ ܟܠܗܝܢ ܢܫܐ. ܘܠܐ ܢܥܒܕܢ ܐܝܟ ܙܢܝܘܬܟܝܢ
* ܘܐܗܦܘܟ ܙܢܝܘܬܟܝܢ ܥܠܝܟܝܢ. ܘܚܛܗܐ ܕܦܬܟܪܝܟܝܢ ܬܩܒܠܢ. ܘܬܕܥܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪ

* ܫܠܡ * ܟܓ *

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܒܫܢܬܐ ܬܫܝܥܝܬܐ. ܒܝܪܚܐ ܥܣܝܪܝܐ ܒܥܣܪܐ ܒܗ

* Quandoquidem oblita es mei, teque præcipitâſti poſt deos tuos; tu quoque reporta ſcelus tuũ & ſcortationẽ tuã. 35

Deinde dixit mihi Dñs; Fili hominis, judica Aholam & Aholibam, & oſtende eis abominationẽ ipſarũ: 36

Quòd adulteratæ ſint, & ſanguis ſit in manib⁹ earũ, cum idolis adulteratæ ſint, & filios ſuos quos mihi pepererant, igne combuſſerint illis: 37

Hoc aliud præterea mihi fecerint, polluerint ſanctuarium meũ eodẽ die, & ſabbatha mea prophanârint: 38

(Nam poſtquam jugulâſſent filios ſuos idolis ſuis, ingreſſæ ſunt ſanctuariũ meũ eodẽ die, & prophanaverunt illud: talia fecerunt in medio dom⁹ meæ:) 39

Præterea miſerint ad viros ut ad ſe venirent è longinquo, eos *nimirùm* ad quos mittebant legatos: quib⁹ venientib⁹, ſtatim lavabant ſe, collyrio illinebant oculos ſuos, & ornabant ſe ornatu ſuo: 40

Inſidebant lectis ſtragulatis, & menſæ proponebantur eis: unguentum meũ & ſuaves odores meos ſuper ſe geſtabant: 41

Et vox lætitiæ earũ procedebat, itidémq; virorũ illorũ qui veniebant è Saba & è deſerto, imponebántque armillas manib⁹ earũ, & coronas glorioſiſſimas capitib⁹ earum. 42

Et dixi de iſtis; Adulteratæ ſunt, & ſecundùm actiones meretricũ fornicatæ ſunt: 43

Nam congrediebantur cum eis: ut congredi mos eſt cum muliere fornicaria, ita congrediebantur cum Ahola & cum Aholiba fœminis fornicariis. 44

Jam viri juſti judicent eas judicio adulterarũ et judicio effundentiũ ſanguinem; quandoquidem adulteræ ſunt, et ſanguis eſt in manibus earum. 45

Nam ſic ait Dominus dominorum, Adduc contra iſtas cœtum, et trade eas commotioni et direptioni: 46

Et obruat eas cœtus lapidibus, percutiant eas gladiis ſuis, filios et filias earum trucîdent, et domos earum igne comburant. 47

Ita ceſſare faciam ſcelus à terra, et erudientur omnes fœminæ, ne facient ſecundùm ſcortationem veſtram: 48

Reflectam ſcortationem veſtram in vos, et peccata idolorũ veſtrorum reportabitis; et experiemini me eſſe Dominum. 49

CAP. XXIV.

Fuit etiam ad me ſermo Domini anno nono, decimâ menſis decimi, dicendo; 1

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * من اجل انك نسيتيني * وطرحتيني وراء جسدك
وانت خذي ضعفك وزناك *   * الاصحاح الثالث عشر *
* وقال الرب لي * يا ابن الانسان * انت تحاكم اواولا واواوليبا * وتخبرهما باثامهما * لانه
فسقتا * والدم في ايديهما مثل افكارهما فسقت * واولادهما الذين ولدتاهم لي احرقتاهم بالنا
نهارا * وهذا صنعتا لي * نجستا اقداسي * ودنستا سبوتي * وعند ما ذبحتا اولادهما لاصنامهما
فدخلتا الي اقداسي لتنجساها * ولانهما هكذا صنعتا في وسط بيتي * ولانهما للرجال الاتيين
من بعيد الذين اليهم ارسلتا رسلا * فلما اتوهما معا * للوقت استحمتا * واكتحلتا اعينهما
وزينتا بزينة * وجلستا علي سرير مفروش * ومايدة مزينة امام وجههما * وبخوري وطيبي قر
بهما * واسمعتا صوت موصولهما للرجال من كثرة الناس الاتيين من البرية * فدفعوا لهما
اسورة علي ايديهما * واكليل فخر علي راسيهما * وقلت اليس هاولاء فسقتا * واعمال زانية زنتا
* فدخلوا اليهما * كما دخلوا الي امراة زانية * هكذا دخلوا الي اواولا والي اواوليبا ليصنعوا اث
* ورجال صديقون هم * ويدينون منهما بانتقام فاسقات وانتقام دم * لانهما فاسقتان * والدم في
ايديهما * لانه هكذا يقول الرب الرب * اصعد عليهما جمعا * واعط فيهما اضطرابا وخط
* وارجمهما بحجارة جموع * فيطعنونهما بسيوفهم * ويقتلون بنيهن وبناتهن * ويحرقون
بيوتهن * واصرف النفاق من الارض * ويتادبن جميع النسوة ولا يصنعن كنفاقهن * ويرد
نفاقكما عليكما * وتاخذان خطايا فكرانكما * وتعلمان اني انا الرب الرب *

* الفصل الرابع والعشرون *

* وكان قول الرب الي في السنة التاسعة * في الشهر العاشر في العاشر من الشهر * قايلا *

Propterea ſic dicit Adonai Dominus; Quia tu oblita es mei, & abjeciſti me à tergo corporis tui; tu etiam reporta infirmitatem tuam & ſcortationem tuam. 35

Textus decimuſtertius.

Tum dixit Dominus ad me; O fili hominis, tu judicium inſtitues cum Avaola & Avaoliba, & indicabis eis iniquitates earum. 36

Mœchatæ ſunt enim, & ſanguis hæret *manibus earum: juxta cogitationes ſuas mœchatæ ſunt, & filios ſuos quos mihi genuerant, igne combuſſerunt interdiu.* 37

Hæc etiam fecerunt mihi: ſancta mea polluerunt, ſabbatha mea violârunt; 38

Et ſtatim atque mactâſſent filios ſuos idolis ſuis, ingreſſæ ſunt in ſancta mea, ut polluerent ea: tum quòd talia fecerint in medio domûs meæ: 39

Tum quòd venientibus è longinquo viris ad quos nuntios mittebant, ſimul inquam venientibus ad eas, illicò ſe lavarent, ſtibio linirent oculos ſuos, ornamentis ſe decorarent; 40

Strato inſiderent lecto, & menſa ornata eſſet ante conſpectum earum: thure meo & unguento meo fruerentur: 41

Et audire facerent vocem harmoniæ ſuæ viris ex hominum multitudine venientibus è deſerto: qui dabant eis armillas ſuper manus earum, & coronam faſtûs ſuper capita earum, 42

Et dixi; Nonne cum iſtis mœchatæ ſunt, & more fornicariæ fornicatæ ſunt? 43

Nam ingreſſi ſunt ad eas, quemadmodum ingredi ſolent ad mulierem fornicariã, ita ingreſſi ſunt ad Avaolam & ad Avaolibam, ut ſcelus perpetrarent: 44

Et viri juſti ſunt, & exigent ab utraque pœnas mœchorum & pœnas cædis, cùm ſint adulteræ, & ſanguis in manibus earum. 45

Sic enim dicit Dominus Dominus; Aſcendere fac adversùs iſtas turbam, & da in eis perturbationem & direptionem. 46

Et obrue eas lapidibus turba eorum: confodiant eas gladiis ſuis, occîdant filios & filias earum, & domos earum comburant. 47

Sic auferam impietatem à terra, & erudientur omnes mulieres, ne faciant ſecundùm impietatem iſtarum: 48

Et refundetur impietas veſtra in vos, & reportabitis peccata cogitationum veſtrarum: ſcietiſque me eſſe Dominum Dominum. 49

CAP. XXIV.

Deinde fuit ſermo Domini ad me anno nono, menſe decimo, decimâ menſis, dicens; 1

sistum dici corpus , dici nomen tibi scribe ,hominis Fili
2 בן־אדם כתוב־לך את־שם היום את־עצם היום הזה
.istius diei corpore in , Jerusalaim ad Babel rex *se adjunxit*
סמך מלך־בבל אל־ירושלם בעצם היום הזה׃
: eos ad *dices* & ,parabolam rebellionis domum ad loquere parabolicè Et
3 ומשל אל־בית־המרי משל ואמרת אליהם
.aquas eā in funde etiā & ,*instrue* ollam *instrue* : Deus Dominus dixit Sic
כה אמר אדני יהוה שפת הסיר שפת וגם־יצק בו מים׃
electione:humerum & femur,bonū frustū omne ,eam in ejus frusta Congere
4 אסף נתחיה אליה כל־נתח טוב ירך וכתף מבחר
oſſa incende etiam & ,*aſſume pecoris Electionem* .imple *oſſium*
5 עצמים מלא׃ מבחר הצאן לקוח וגם דור העצמים
.ejus medio in ejus oſſa *coquantur* etiam,ejꝰ bullitiones ebullire fac:ea ſub
רתחיה רתח רתחיה גם־בשלו עצמיה בתוכה׃
cujus ollæ ſanguinum civitati Væ : Deus Dominus dixit ſic Propterea
6 לכן כה־אמר אדני יהוה אוי עיר הדמים סיר אשר
ejus fruſta in ejus fruſta in : ea ex exivit non ejꝰ ſpuma &,ea in *ejus* ſpuma
חלאתה בה וחלאתה לא יצאה ממנה לנתחיה לנתחיה
,fuit ejus medio in ejꝰ ſanguis Quia .ſors illam ſuper cadat non,eam educ
7 הוציאה לא־נפל עליה גורל׃ כי דמה בתוכה היה
operiendū ad terram ſup illum effudit non:eā poſuit *petræ læve faſtigiū* ſup
על־צחיח סלע שמתהו לא שפכתהו על־הארץ לכסות
dedi;ultionē ulciſcendū ad irā *faciendū aſcendere Ad*.pulvere illū *ſuper*
8 עליו עפר׃ להעלות חמה לנקם נקם נתתי את־
dixit ſic Propterea .*operiri non ad:petræ læve faſtigium* ſup ejꝰ ſanguinē
9 דמה על־צחיח סלע לבלתי הכסות׃ לכן כה אמר
.pyram grandem faciam ego etiam :ſanguinū civitati Væ,Deus Dominꝰ
אדני יהוה אוי עיר הדמים גם־אני אגדיל המדורה׃
condi & : carnem conſume , ignem ſuccende , ligna Multiplica
10 הרבה העצים הדלק האש התם הבשר והרקח
ejus prunas ſup eam ſtatue Et.comburātur oſſa & ,aromatibus condimentū
11 והמרקחה והעצמות יחרו׃ והעמידה על־גחליה
ejus medio in fundetur & ,ejus *æs* comburatur & ,incaleſcat ut : vacuam
רקה למען תחם וחרה נחשתה ונתכה בתוכה
non & ,*ſe afflictavit Injuriis* .ejus ſpuma conſumetur,ejus inquinamentum
12 טמאתה תתם חלאתה׃ תאנים הלאת ולא־
tua immunditia In .ejus ſpuma igni in ,ejus ſpuma multa ea de exivit
13 תצא ממנה רבת חלאתה באש חלאתה׃ בטמאתך
non tua immunditia ab;te mundâſti non & ,te *mundavi* ꝙ eo pro : fœditas
זמה יען טהרתיך ולא טהרת מטמאתך לא
Ego .te in meam iram *me faciendum quieſcere ad uſque* ,amplius te mundabis
14 תטהרי־עוד עד־הניחי את־חמתי בך׃ אני
non &,parcam non &,*retractabo* non : feci & Venit ,ſum locutus Dominꝰ
יהוה דברתי באה ועשיתי לא־אפרע ולא־אחוס ולא
Dñs dixit,te judicabunt tua *ſtudia juxta* &,tuas vias juxta:*ducar pœnitentia*
אנחם כדרכיך וכעלילותיך שפטוך נאם אדני
ego ecce hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .Deus
15 יהוה׃ ויהי דבר־יהוה אלי לאמר׃ בן־אדם הנני
, plangas nec : percuſſione *in*,tuorū oculorū deſiderium te à *capiens*
16 לקח ממך את־מחמד עיניך במגפה ולא תספד
mortuorum ,tace Clamando .tua lachryma veniat neque , plores nec
17 ולא תבכה ולוא תבוא דמעתך׃ האנק דם מתים
pones tua calceamenta &,te ſuper liga tuam tiaram , facias ne luctum
אבל לא־תעשה פארך חבוש עליך ונעליך תשים
ne hominum panem & , *myſtacem ſuper involvas* ne &:tuis pedibus in
ברגליך ולא תעטה על־שפם ולחם אנשים לא
mea uxor eſt mortua &,mane in populum ad ſum locutus Et .comedas
18 תאכל׃ ואדבר אל־העם בבקר ותמת אשתי
.*ſum juſſus* ſicut mane in fecique : *veſpera in*
בערב ואעש בבקר כאשר צויתי׃

Verſio VULG. LAT.

2 Fili hominis, ſcribe tibi nomen diei hujus, in qua confirmatus eſt rex Babylonis adverſùm Jeruſalem hodiè. 3 Et dices per proverbium ad domum irritatricem parabolam, & loquéris ad eos; Hæc dicit Dominus Deus; Pone ollam: pone, inquam, & mitte 4 in eam aquam: Congere fruſta ejus in eam, omnem partem bonam, femur & armum, electa & 5 oſſibus plena. Pinguiſſimum pecus aſſume, compone quoque ſtrues oſſium ſub ea: efferbuit coctio ejus, & diſcocta ſunt oſſa 6 illius in medio ejus. Propterea hæc dicit Dominꝰ Deus; Væ civitati ſanguinum, ollæ, cujus rubigo in ea eſt, & rubigo ejus non exivit de ea: per partes & per partes ſuas ejice eam, non cecidit 7 ſuper eam ſors. Sanguis enim ejus in medio ejus eſt, ſuper limpidiſſimam petram effudit illum: non effudit illum ſuper terram ut 8 poſſit operiri pulvere. Ut ſuperinducerem indignationē meam, & vindictā ulciſcerer: dedi ſanguinem ejus ſuper petram limpi9diſſimam ne operiretur. Propterea hæc dicit Dominus Deus; Væ civitati ſanguinum, cujus ego 10 grandem faciam pyram. Congere oſſa, quæ igne ſuccendam: conſumentur carnes, & coquetur univerſa compoſitio, & oſſa ta11beſcent. Pone quoque eam ſup prunas vacuam, ut incaleſcat, & liqueſiat æs ejus: & conflctur in medio ejus inquinamentum ejus, 12 & conſumatur rubigo ejus: Multo labore ſudatum eſt, & non exivit de ea nimia rubigo ejꝰ, neque 13 per ignem. Immunditia tua execrabilis: quia mundare te volui, & non es mundata à ſordibus tuis: ſed nec mundaberis priùs, donec quieſcere faciam indigna14tionem meam in te. Ego Dñs locutus ſum: Veniet, & faciam: non tranſeam, nec parcam, nec placabor: juxta vias tuas, & juxta adinventiones tuas judicabo te, dicit 15 Dominus. Et factum eſt verbum 16 Dñi ad me, dicens; Fili hominis, ecce ego tollo à te deſiderabile oculorū tuorum in plaga: & non planges, neq; plorabis, neque flu17ent lachrymæ tuæ. Ingemiſce tacens, mortuorū luctum no facies: corona tua circumligata ſit tibi, & calceamenta tua erunt in pedibus tuis, nec amictu ora velabis, 18 nec cibos lugentiū comedes. Locutꝰ ſum ergò ad populū manè, et mortua eſt uxor mea veſperé: feciq; manè ſicut præceperat mihi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Υἱὲ ἀνθρώπου, γράψον σεαυτῷ εἰς ἡμέραν ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύτης, ἀφ' ἧς ἀπηρείσατο βασιλεὺς Βαβυλῶνος ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, ἀπὸ 3 τῆς ἡμέρας τῆς σήμερον. Καὶ εἰπὸν ἐπὶ τὸν οἶκον τὸν παραπικραίνοντα παραβολὴν, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει (β) κύριος, Ἐπίστησον τὸν λέβητα, καὶ ἔγχεον εἰς αὐτὸν ὕ4δωρ, Καὶ ἔμβαλε εἰς αὐτὸν τὰ διχοτομήματα, πᾶν διχοτόμημα καλὸν, (γ) σκέλος καὶ ὦμον ἐκσεσαρκισμένα (δ) ἀπὸ τῶν 5 ὀστῶν, Ἐξ ἐπιλέκτων κτηνῶν (ε) εἰλημμένων· καὶ ὑπόκαιε τὰ ὀστᾶ ὑποκάτω αὐτῶν. (ζ) ἔζεσε καὶ ἥψηται τὰ ὀστᾶ αὐτῆς ἐν μέσῳ 6 αὐτῆς. Διατοῦτο τάδε λέγει (η) κύριος, Ὦ πόλις αἱμάτων, λέβης, ἐν ᾧ ἐστιν ἰὸς ἐν αὐτῷ, καὶ ὁ ἰὸς (θ) οὐκ ἐξῆλθεν ἐξ αὐτῆς, κατὰ μέλος αὐτῆς ἐξήνεγκεν, οὐκ ἔπεσεν ἐπ' 7 αὐτὴν κλῆρος. Ὅτι αἷμα αὐτῆς ἐν μέσῳ αὐτῆς ἐστιν, ἐπὶ (¨) λεωπετρίαν τέταχα αὐτό· οὐκ ἐκκέχυκα αὐτὸ ἐπὶ τὴν γῆν, τοῦ καλύ8ψαι (ι) ἐπ' αὐτὸ γῆν, Τοῦ ἀναβῆναι θυμὸν εἰς ἐκδίκησιν ἐκδικηθῆναι· δέδωκα τὸ αἷμα αὐτῆς ἐπὶ λεωπετρίαν, τοῦ μὴ καλύ9ψαι αὐτό. Διατοῦτο τάδε λέγει (κ) κύριος, 10 Κἀγὼ μεγαλυνῶ τὸν δαλόν· Καὶ πληθυνῶ τὰ ξύλα, καὶ (λ) ἀνακαύσω τὸ πῦρ, ὅπως (μ) τακῇ τὰ κρέα, καὶ ἐλαττωθῇ ὁ ζωμὸς, 11 Καὶ στῇ ἐπὶ τοὺς ἄνθρακας (ν), ὅπως προσκαυθῇ καὶ θερμανθῇ ὁ χαλκὸς αὐτῆς, καὶ τακῇ ἐν μέσῳ (ξ) ἀκαθαρσίας αὐτῆς, καὶ 12 ἐκλίπῃ ὁ (¨) ἰὸς αὐτῆς, Καὶ οὐ μὴ ἐξέλθῃ ἐξ 13 αὐτῆς πολὺς ὁ ἰὸς αὐτῆς. (ο) Καταισχυνθήσεται ὁ ἰὸς αὐτῆς, (π) ἀνθ' ὧν ἐμιαίνου σύ. καὶ τί ἐὰν μὴ καθαρισθῇς ἔτι ἕως οὗ ἐμπλήσω 14 τὸν θυμόν μου (ρ); Ἐγὼ κύριος λελάληκα, καὶ ἥξει, καὶ ποιήσω, οὐ διαστελῶ, οὐδὲ μὴ ἐλεήσω· κατὰ τὰς ὁδούς σου, καὶ κατὰ τὰ ἐνθυμήματά σου κρινῶ σε, λέγει (σ) κύριος. διατοῦτο ἐγὼ κρινῶ σε κατὰ τὰ αἵματά σου, καὶ κατὰ τὰ ἐνθυμήματά σου κρινῶ σε, ἡ ἀκάθαρτος, ἡ ὀνομαστὴ, καὶ πολλὴ τοῦ παραπικραί15νειν. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, 16 λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, ἰδοὺ ἐγὼ λαμβάνω ἐκ σοῦ τὰ ἐπιθυμήματα (·) τῶν ὀφθαλμῶν σου ἐν παρατάξει, οὐ μὴ κοπῇς, οὐδ' οὐ μὴ κλαυ17θῇς, Στεναγμὸς αἵματος, ὀσφύος (τ) πένθος ἐστί. οὐκ ἔσται τὸ τρίχωμά σου συμπεπλεγμένον ἐπὶ σὲ, καὶ τὰ ὑποδήματά σου ἐν τοῖς ποσί σου· οὐ μὴ παρακληθῇς ἐν χείλεσιν αὐτῶν, καὶ ἄρτον ἀνδρῶν οὐ μὴ 18 φάγῃς. Καὶ ἐλάλησα πρὸς τὸν λαὸν τοπρωῒ, ὃν τρόπον ἐνετείλατό (υ) μοι ἑσπέρας, καὶ ἐποίησα τοπρωῒ, (φ) ὃν τρόπον ἐπετάγη μοι.

Fili hominis, ſcribe tibi (a) in diem ab hac die, qua obfirmatus eſt rex Babylonis ſuper Hieruſalem ab hodierna die: Et dic ad domum 3 *exaſperantem, parabolam, & dices ad eos; Hæc dicit Dominus; Pone lebetem, et infunde ſuper eum aquam: Et mitte in eum di*4*viſiones, omnem inciſuram bonam, crus, & humerum, carnibus ſeparata ab oſſibus, De electu pecoribus aſſumpta: & incende oſſa ſub* 5 *eis. Ferbuit, & ſunt cocta oſſa ejus in medio illius. Propterea hæc* 6 *dicit Dominus; O civitas ſanguinum, lebes, in quo eſt ærugo in eo, & rubigo non eſt egreſſa ex eo: per partes ſuas protulit, non cecidit ſuper eam ſors: Quia ſan*7*guis ejus in medio illius eſt. Super leviſſimam petram poſui illum: non effudi illum ſuper terram ad operiendum ſuper ipſum terram: ut* 8 *aſcenderet furor ad ulciſcendam ultionē: dedi ſanguinē ejus ſuper leviſſimam petram, ut non operiretur ipſe. Propterea hæc dicit* 9 *Dominus; Et (b) ego magnificabo (c) torrem, & multiplicabo ligna, et ſuccendam ignem, ut li*10*queſcant carnes, & imminuatur (d) jus, Et ſtet ſuper (e) carbones,* 11 *ut exuratur, et concaleſcat æs ejus, et tabeſcat in medio immunditiæ ſuæ, & deficiat rubigo ejus. Et non exiet de ea multa ru*12*bigo illius: Confundetur rubigo e*13*jus, pro (f) eo, quod contaminata es tu. Et quid erit, ſi non fueris emundata ultra, donec impleam furorē meū? Ego Dominꝰ loqu*14*tus ſum, & veniet, & faciam, non differam, (g) nec miſerebor. Secundum vias tuas, & ſecundum (h) cogitationes tuas judicabo te, dicit Dominꝰ. Propterea ego judicabo te juxta ſanguines tuos: Et juxta cogitationes tuas judicabo te, immunda, famoſa, & multa ad irritandū. Et factꝰ eſt ſermo Do*15*mini ad me, dicens: Fili hominis,* 16 *ecce ego aufero à te (i) deſiderabilia oculorum tuorum in (k) acie, non planges, nec (l) flebis: Gemitus ſanguinis, renū luctus* 17 *(m) eris. (n) Non erunt crines tui colligati ſuper te, & calceamenta tua in pedibus tuis: non conſolaberis in labiis eorum: & panem hominū non comedes. Et loquutꝰ* 18 *ſum ad populum mane, ſicut præceperat mihi, (o) veſpere: & feci mane, ſicut præceptum eſt mihi.*

MS.A (β) ἀδωναῒ κύριος, (γ) καὶ σκέλος (δ) ἐκ τῶν ὀστέων αὐτῆς, (ε) εἰλημμένα (ζ) ἔζεσεν καὶ ἐξέζεσεν καὶ ἥψηθη τὰ (η) ἀδωναῒ κύριος, (θ) ἐν αὐτῇ καὶ (¨) λεοπετρίαν (ι) αὐτὸ γῆν, (κ) ἀδωναῒ κύριος, Οὐαὶ πόλεις τῶν αἱμάτων, Κἀγὼ (λ) ἐκκαύσω (μ) ἐλαττωθῇ ὁ ζωμὸς, καὶ ἐκτακῇ τὰ κρέα, καὶ τὰ ὀστᾶ συνεσυγήσονται, Καὶ στῆ (ν) αὐτῆς, ἐξήφθη ὅπως ἐκκαυθῇ, ὅπως συρρυῇ ὁ χαλκὸς (ξ) αὐτῆς ἡ ἀκαθαρσία αὐτῆς, καὶ (¨) ἰὸς, Καὶ (ο) Καὶ καταισχυνθήσεται (π) ἐν τῇ ἀκαθαρσίᾳ σου ζέσμα, ἀνθ' ὧν ἐμιάνθης σὺ, καὶ οὐκ ἐκαθαρίσθης ἀπὸ ἀκαθαρσίας σου, καὶ ἔτι ἔσται ἐὰν μὴ καθαρισθῇς ἕως οὗ (ρ) ἐν σοί; (σ) ἀδωναῒ κύριος. (·) ὀφθαλμῶν (τ) πένθος ἔσται αὐτῇ. (υ) μοι, καὶ ἀπέθανεν ἡ γυνή μου ἑσπέρας, καὶ (φ) καθὼς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 בר אדם כתב לך ית שום יומא ית כרן יומא הדין סמך מלכא דבבל על ירושלם בכרן
3 יומא הדין׃ ואתנבי לעמא סרבנא נבואה ותימר להון כדנן אמר יי אלהים אתנבי
4 דיסקין משרין על קרתא הדא ואף יתיהיב לה ארכא לקבלא מצירא׃ כנוש רברבהא
5 לגוה כל גבר גבר אימתן וגבר עביד קרב משרית עממין מלי יתהא׃ מלכי עממין
6 קריב ואף טקיס סומכותהא עמהון אבע ומנה אף יתרמון קטילהא בגוהא׃ בכן כדנן
אמר יי אלהים וי על קרתא דאשדי דם זכי בגוה דהיא כדודא דזיהומתיה בידה
7 וזיהומתיה לא נפקת מניה גלו על גלו אתפק עמה מדלא יתעביד בה תיובא׃ ארי
דם זכי דאתאשד בגוה בזידו ובדרע מרומם שפכתיה לא שפכתיה בשלו למעבד
8 עלוהי תיובא׃ למעבד פורענות לאתפרעא בתקוף גליתי חוביהון על דאשידו דם
9 זכי בגלי בדיל דלא לאשתבקא׃ בכן כדנן אמר יי אלהים וי על קרתא דאשדי דם
10 זכי בגוה אף אנא אסגי תבירהא׃ אסגי מלכיא כנש משריתא טקס סומכותא וזמן
11 עלה עבדי קרבא וגברהא ישתבשון׃ ואשאר ארעא צדיא בדיל דיצדון ויסופון תרעי
12 קרוהא ויתמסון בגוה עבדי סאובתה ויסופון חובהא׃ תסקופין אתמליאת ולא
13 יפקון מנה עבדי בישתא בנורא תתוקד מסגיות חובהא׃ בדאסתאבת בעצת חטאין
14 חלף דדכיתיך ולא דכית מסואבתיך לא תדכין עוד עד דאניח חמתי ביך׃ אנא יי
גזרית במימרי אתיא ותתקים לא אמנע ולא אחוס ולא ארחם כאורחתיך בישתא
15 וכעובדיך מקלקליא אתפרע מניך אמר יי אלהים׃ והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי
16 למימר׃ בר אדם הא אנא נסיב מנך ית רגנא דעינך במותא לא תספוד ולא תבכי
17 ולא תשגר דמעין׃ אדנק שתוק על מיתך אבלא לא תעביד טוטפתך יהון עלך ומסנך
18 תשוי ברגלך ולא תתעטיף על שפם ולחם אבלין לא תיכול׃ ואמליתי לעמא
בצפרא ומיתת אתתי ברמשא ועבדית בצפרא כמא דאתפקדית׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Fili hominis ſcribe tibi nomen diei hujus, ipſummet diem quo confirmatus 2 eſt rex Babylonis adverſùs Jeruſalem, in ipſo diei articulo. Et propheta pro3phetiam populo contumaci, & dices ad eos: Hæc dicit Dñs Deus; Vaticinare ut aſcendant exercitus contra civitatem, & etiam dabitur ei terminus ut ſuſcipiat obſidionem. Congrega principes ejꝰ in medio ejus, unumquemque 4 virum terribilem & bellatorem; exercitu populorum imple eam. Reges po5pulorum applica, & etiam junge cum eis auxilia, accelera tempꝰ ejus, etiam projicientur interfecti ejꝰ in medio ejus. Propterea hæc dicit Dñs Deus: Væ 6 civitati quæ effundit ſanguinem innocentem in medio ſui, quæ eſt quaſi olla cujus rubigo in ea eſt, & rubigo ejus non exivit ab ea; tranſmigratio ſuper tranſmigrationem exivit cum ea, eò quòd non agatur in ea pœnitentia. Quia 7 ſanguis innocens qui effuſus eſt in medio ejus, in ſuperbia & in brachio excelſo effudit illum, non effudit illum per ignorantiam ut ageret ſuper eum pœnitentiam. Ad faciendam vindictam ut ulciſcerer in furore, revelavi 8 peccata eorum, pro eo quòd effuderunt ſanguinem innocentem manifeſtè, ut non dimitteretur peccatum. Propterea hæc dicit Dñs Deus: Væ civitati quæ 9 effundit ſanguinem innocentem in medio ſui, ego quoque multiplicabo interitum ejus. Multiplica reges, congrega exercitum, junge auxilia, & præpara 10 contra eam bellatores, & fortes ejus inſaniant. Et relinquam terram deſola11tam, eò ut deſolentur & conſumantur portæ civitatis ejus, & tabeſcant in medio ejꝰ operantes immunditiam ejus, & conſumantur peccata ejus. Occaſio12nibꝰ plena eſt, & non egredientur ex ea operantes malum; igni ſuccendetur præ multitudine peccatorū ejus. In eo quòd polluta es ſcelaribꝰ: pro eo quòd 13 mundavi te & non es mundata ab immunditia tua; non mundaberis ampliꝰ, donec requieſcere fecero indignationē meam in te. Ego Dñs decrevi in verbo 14 meo; venit & firmabitur; non prohibebo, nec parcam, nec miſerebor. Juxta vias tuas peſſimas & juxta opera tua corrupta ultionem *ſumam* ex te, dicit Dñs Deus. Et factum eſt verbū prophetiæ à facie Dñi mecum, dicens: Fili 15 16 hominis, ecce ego tollo à te deſiderabile oculorū tuorū in peſte: non planges, nec plorabis, neq; emittes lachrymas. Diſpliceat tibi, tace ſup mortuū tuum, 17 luctū ne facias: frontalia tua ſint ſup te, & calciaméta tua pone in pedibꝰ tuis, neq; amiciaris ſup labia tua, & pané lugentiū ne comedas. Et prophetavi ad 18 populū mane, & mortua eſt uxor mea veſpere: & feci manè ſicut juſſus fueram.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܪܢܫܐ܂ ܟܬܘܒ ܠܟ ܫܡܗ ܕܝܘܡܐ ܗܢܐ܂ ܕܣܡܟ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܒܗ ܒܝܘܡ
ܗܢܐ܂ * ܘܐܡܬܠ ܡܬܠܐ ܠܒܝܬܐ ܡܡܪܡܪܢܐ܂ ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ܂ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ
ܠܗܒ ܩܕܪܐ܂ ܘܫܕܝ ܒܗ ܡܝܐ܂ * ܘܐܪܡܐ ܒܗ ܢܬܚܐ ܛܒܐ ܘܫܡܝܢܐ܂ ܟܬܦܐ ܕܓܒܝܐ
ܓܪܡܗ ܡܢ ܓܒܝܐ ܕܥܢܐ܂ * ܘܐܦ ܓܪܡܐ ܐܚܡܐ ܬܚܘܬ ܩܕܪܐ܂ ܘܐܘܩܕ ܐܢܘܢ ܬܚܘܬܗ
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ܂ ܘܝ ܠܡܕܝܢܬܐ ܕܕܡܐ܂ ܕܩܕܪܐ ܣܝܡܐ ܒܗ܂ ܘܥܘܠܗ ܠܐ ܢܦܩ
ܡܢܗ܂ ܗܕܡ ܗܕܡ ܦܣܘܩܘܗ܂ ܘܦܣܐ ܠܐ ܢܦܠ ܥܠܘܗܝ܂ * ܡܛܠ ܕܕܡܗ ܒܓܘܗ ܗܘ܂
ܘܥܠ ܟܐܦܐ ܫܕܝܗ܂ ܘܠܐ ܐܫܕܗ ܒܐܪܥܐ ܕܠܐ ܢܬܟܣܐ ܒܥܦܪܐ܂ * ܕܬܣܩ ܚܡܬܐ
ܠܡܬܦܪܥܢܘ܂ ܢܬܠ ܕܡܗ ܥܠ ܟܐܦܐ ܫܥܝܥܬܐ ܕܠܐ ܢܬܟܣܐ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ܂ ܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ܂ ܘܝ ܠܡܕܝܢܬܐ ܕܕܡܐ܂ ܐܢܐ ܐܘܣܦ ܡܕܘܪܐ܂ ܘܐܣܓܐ ܩܝܣܐ܂ * ܘܐܘܩܕ ܢܘܪܐ
ܘܢܬܒܫܠ ܒܣܪܐ܂ ܘܢܪܬܚ ܪܬܚܐ܂ ܘܢܬܘܩܕܘܢ ܓܪܡܐ܂ * ܘܐܣܝܡܝܘܗܝ ܪܬܚܐ ܥܠ
ܓܘܡܪܐ܂ ܕܢܫܚܢ ܘܢܬܦܫܪ ܢܚܫܗ܂ ܘܢܬܡܣܐ ܒܓܘܗ ܥܘܠܗ܂ ܘܢܫܠܡ ܦܘܪܥܢܗ
ܦܘܪܥܢܗ܂] * ܐܝܟ ܬܐܢܐ ܕܡܫܚܢܐ܂ ܘܠܐ ܢܦܘܩ ܡܢܗ ܣܘܓܐ ܕܥܘܠܗ܂ ܐܠܐ ܒܢܘܪܐ ܢܗܘܐ [MS. Armach.
ܦܘܪܥܢܗ܂] * ܡܛܠ ܕܒܙܢܝܘܬܐ ܐܬܛܢܦܬܝ܂ ܘܡܛܠ ܕܕܟܝܬܟܝ ܘܠܐ ܐܬܕܟܝܬܝ ܡܢ ܛܢܦܘܬܟܝ܂
ܬܘܒ ܠܐ ܬܬܕܟܝܢ ܥܕܡܐ ܕܐܢܝܚ ܚܡܬܝ ܒܟܝ܂ * ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܠܠܬ܂ ܘܐܬܝܐ ܘܐܥܒܕ ܐܢܐ
ܘܠܐ ܐܚܘܣ܂ ܘܠܐ ܐܪܚܡ܂ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܟܝ ܘܐܝܟ ܥܒܕܝܟܝ ܐܕܘܢܟܝ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܡܪܝܐ܂ * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ܂ * ܒܪܢܫܐ܂ ܗܐ ܢܣܒ ܐܢܐ ܡܢܟ ܪܓܬܐ
ܕܥܝܢܝܟ ܒܡܚܘܬܐ ܕܡܢ ܫܠܝ܂ ܘܠܐ ܬܪܩܘܕ ܘܠܐ ܬܒܟܐ܂ ܘܠܐ ܬܐܬܐ ܕܡܥܬܟ܂ * ܐܠܐ ܐܬܥܩ ܥܠ
ܕܡܝܬܐ܂ ܘܐܒܠܐ ܠܐ ܬܥܒܕ܂ ܘܡܐܢܝܟ ܐܣܘܪ ܥܠܝܟ܂ ܘܡܣܢܝܟ ܣܝܡ ܒܪܓܠܝܟ܂
ܠܐ ܬܥܛܦ ܥܠ ܣܦܘܬܟ܂ ܘܠܚܡܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܠܐ ܬܐܟܘܠ܂ * ܘܐܡܪܬ ܠܥܡܐ ܒܨܦܪܐ܂ ܘܡܝܬܬ
ܐܢܬܬܝ ܒܪܡܫܐ܂ ܘܥܒܕܬ ܒܨܦܪܐ ܐܝܟ ܕܐܬܦܩܕܬ܂

Fili hominis, ſcribe tibi nomen hujus diei, quoniam innitebatur rex Babylonis in Jeroſolymam hoc ipſo die. 3 Et aſtrue parabolam contra domum rebellē, & dic eis; Sic ait Dñs dominorum. Foco imponito cacabū, aquam in eum infundito, 4 Et injicito in eum victimas optimas & pingues, armū cujus os avulſum ſit, è ſelectiſſimis ovibus: 5 Oſſa verò ſub cacabo accende, eaque ſub ipſo combure. 6 Sic enim ait Dñs dominorū; Væ urbi ſanguinariæ in qua cacabus foco eſt aptatus, & iniquitas ſua non egreditur ex ea: membratim concidite eam, & ſors non cadat ſuper eam. 7 Quia ſanguis ejus in medio ipſius eſt, & ſupra petram poſuit eum, nec in terrâ effudit eum, ne impoſito pulvere operiretur; 8 Quatenus aſcenderet ira ad ultionem ſumendam: ponam ſanguinem ejus ſupra petram limpidam, ut non operiatur. 9 Iccirco ſic ait Dñs dominorum; Heu urbs ſanguinaria, ego domicilium amplifiabo, & multiplicabo ligna; 10 Ignemq; ſupponam, & coquetur caro: effervebit fervor, & comburentur oſſa: 11 Ponam fervorem ſuper prunas, ut incaleſcat & diſſolvatur æs ejus, computreſcat in medio ejus iniquitas ipſius, & conſummetur punitio ipſius. [*MS. Arm.* 12 Inſtar morbidarum ficuum; neq; exibit ab ea multitudo iniquitatis: ſed erit in igne compenſatio ejus.] 13 Quia ſcortatione te impuraſti, & quia mundavi te, tu autem non te mundâſti ab impuritate tua; nequaquam mundaberis ampliùs, donec ſedavero in te excandeſcentiā meam. 14 Ego Dñs dixi, adducam, & faciam: non utar clementiâ, non parcam, neque miſerebor, ſed ſecundùm vias tuas, & ſecundùm facinora tua judicabo te, ait Dñs dominorū. 15 Et fuit ad me ſermo Dñi, dicendo, 16 Fili hominis, ecce ſublaturus ſum à te plagâ repentinâ deſiderium oculorum tuorum: verùm ne lamenteris, neque fleas, neque ſtillet lachryma tua: 17 Sed crucia te ob ſanguinem mortuorū, luctum autem ne facito, veſtes tuas ſuper te præcingito, calceos tuos pedibus tuis apponito, ne te amicito ſuper labia tua, & panem hominum ne comedito. 18 Quæ cùm manè dixiſſem populo, mortua eſt uxor mea veſperè: manè autem alterius diei, feci quemadmodum juſſus fueram.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* يا ابن الانسان · اكتب لذاتك يوما · منذ هذا اليوم الذي فيه يصل ملك بابل الي
ايروسليم من نهار هذا اليوم * وقل علي البيت المومر مثلا ويقول لهم هكذا يقول ادوناي
الرب · انصب المرجل · وصب فيه ماء * وضع فيه بضعا · كل بضعة جيدة · ساق وكتف
كردات من العظام من البهايم الحيات المسمنات * وقد العظام تحتهم · حميت حميت واحرق
العظام تحتها * لاجل هذا هكذا يقول الرب الرب · يا مدينة الدماء · المرجل الذي فيه
[MS. Oxon. المنصوب فيها المرجل · وانها لم يخرج منها · وصلا وصلا قطعوها والقرعة
لم تصيبها * لان دمها فيها كاين · وعلي حجر وضعته · ولم يجعله في الارض ليلا يغطيه التراب
* ليصعد السخط للجازاة · صببت دمها علي حجر املس لكيلا يتغطي * من اجل ذلك هكذا
يقول رب الارباب · ايتها مدينة الدم انا اعظم الموضع واكثر الحطب * واسرج النار ويتم
اللحم · ويغلي غليانا · والعظام يحرقوا * ثبت الغليان علي الجمر · ويتماسا دنسها · وتذوب
نجاستها داخلها · ويتم جزاها * كمثل التين الطليل · ولا يخرج منها كثرة اثمها لكن بالنار
يكون جزاها * علي نجاستها بالزني · ولانك تنظفت ولم تستنقين من دنسك · وايضا لا
تتزكين الي ان يهدي فيك غضبي * انا الرب قلت واتي بذلك وافعله ولا اتروف و
اشفق ولا ارحم وحسب طريقك وفعلك احاكمك يقول رب الارباب * وكان علي قول الرب ا
يقول * يا ابن الانسان هذا انا اخذ منك شهوة عينيك بضربة بغتة ولا تنوح ولا تبكي و
تفيض دمعتك * لكنك تتعذب بدم الموتي · ومناحة ولا تصنع وثيابك شد عليك
واجعل في رجليك خفيك ولا تلتثم علي شفتيك وخبز الانسان لا تاكل * وقلت بكرة للشعب
وماتت امراتي عشية · والغد في اليوم الاخر فعلت كما امرت ·

O fili hominis, ſcribe tibi diem ab hac die 2 quâ perventurus eſt rex Babelis in Jeruſalem, ab hodierna die: 3 Et dic de domo iſta irritatrice proverbium. Dices autem ad eos, Ita dicit Adonai Dominus; Appone lebetem, & infunde in eum aquam: 4 Pone in eum fruſta, omne fruſtum optimum cruris & humeri exſeſſatorum, ex lectiſſimis & pinguiſſimis animantibus, 5 & oſſa ſub iis ambureto. Inflammata, inflammata & exuſta ſunt ſub iis oſſa. 6 Proptereà ſic dicit Dominus Dominus; O urbs ſanguinum, lebes in quo [MS. Oxon. *In qua lebes eſt collatus: & iniquitas ejus non egreditur ex ea: articulatim concidite eam: & ſors non accidat in eam. 7 Quoniam ſanguis ejus in ea manet, & ſupra petram poſuit eum, & non in terram effudit eum, ut illum pulvere non tegeret. 8 Aſcendit ira in retributionem: effudi ſanguinem ejus ſuper levem petram ut non tegatur. 9 Proptereà ſic dicit Dominus Dominorum, O Civitas ſanguinaria ego locum amplifiabo, et multiplicabo ligna. 10 Et ſubjiciam ignem, & coquetur caro, efferuebit etiam fervefactio, & comburentur oſſa. 11 Statui fervefactionem ſuper prunas, & liquefiet pollutio ejus, et diſſolvetur immunditia ejus intra eam, & retributio ejus conſummetur. 12 Eſt inſtar umbroſæ fici: neque egredietur ex ipſa abundantia iniquitatis ſuæ: atqui in igne erit portio ejus. 13 Eò quòd fornicatione contaminata, etiam mundata fuiſti, teipſam autem à ſpurcitie tua noluiſti expurgare, ideò ampliùs haudquaquam emundaberis, donec furor meus in te reſtinguatur. 14 Ego Dominus dixi, & adducam iſtud, & faciam; & non propitiabor, neque miſerebor: ſed juxta vias tuas, & opera tua judicabo te, dicit Dominus dominorum. 15 Et fuit verbum Domini ad me, dicendo; 16 O fili hominis, ecce ego plagâ ſubitaneâ tollo à te deſiderium oculorum tuorum: attamen ne plangas, nec defleas, neque exundet lachryma tua. 17 Sed excrucia te ob ſanguinem mortuorum; planctum autem ne facias, ſed veſtimenta tua alliga ſuper te, & calceos tuos apponito pedibus tuis, neque obvelato ſuper labia tua & panem hominum ne comedito. 18 Quæ cùm manè alloquutus eſſem populum, mortua eſt uxor mea veſperè: manè autem ſequentis diei, feci prout juſſus fueram.*

quia ?nobis ista quid nobis indicabis Nonne: populus me ad dixerunt Et
19 וַיֹּאמְרוּ אֵלַי הָעָם הֲלֹא־תַגִּיד לָנוּ מָה־אֵלֶּה לָּנוּ כִּי
: dicendo ,me ad fuit Domini Verbum : eos ad dixi Et faciens tu
20 אַתָּה עֹשֶׂה : וָאֹמַר אֲלֵיהֶם דְּבַר־יְהוָה הָיָה אֵלַי לֵאמֹר :
polluens ego Ecce ,Deus Dominus dixit Sic : Israel domui Dic
21 אֱמֹר לְבֵית יִשְׂרָאֵל כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הִנְנִי מְחַלֵּל
,vestrorũ oculorũ desiderium, vestræ fortitudinis superbiam ,meũ sanctuariũ
אֶת־מִקְדָּשִׁי גְּאוֹן עֻזְּכֶם מַחְמַד עֵינֵיכֶם
,reliquistis quas vestræ filiæ &,vestri filii &: vestræ animæ indulgentiam &
וּמַחְמַל נַפְשְׁכֶם וּבְנֵיכֶם וּבְנוֹתֵיכֶם אֲשֶׁר עֲזַבְתֶּם
non mystacem super : feci quemadmodum facietis Et .cadent gladio in
22 בַּחֶרֶב יִפֹּלוּ : וַעֲשִׂיתֶם כַּאֲשֶׁר עָשִׂיתִי עַל־שָׂפָם לֹא
super vestrum ornamentũ Et .comedetis non hominum panem & ,obvelvetis
23 תַעְטוּ וְלֶחֶם אֲנָשִׁים לֹא תֹאכֵלוּ : וּפְאֵרְכֶם עַל־
neque,plangetis non;vestris pedibus in vestra calceamenta &,vestra capita
רָאשֵׁיכֶם וְנַעֲלֵיכֶם בְּרַגְלֵיכֶם לֹא תִסְפְּדוּ וְלֹא
ad vir gemetis & , vestras iniquitates propter tabescetis & : flebetis
תִבְכּוּ וּנְמַקֹּתֶם בַּעֲוֺנֹתֵיכֶם וּנְהַמְתֶּם אִישׁ אֶל־
fecit quæ omnia iuxta:portentũ in vobis Jechezchel Eritque .suũ fratrẽ
24 אָחִיו : וְהָיָה יְחֶזְקֵאל לָכֶם לְמוֹפֵת כְּכֹל אֲשֶׁר־עָשָׂה
tu Et .Deus Dominus ego quòd scietis & , istud veniendo in : facietis
25 תַּעֲשׂוּ בְּבֹאָהּ וִידַעְתֶּם כִּי אֲנִי אֲדֹנָי יְהוִה : וְאַתָּה
gaudium,eorum fortitudinẽ eis ab me capere die in nonne ,hominis fili
בֶן־אָדָם הֲלוֹא בְּיוֹם קַחְתִּי מֵהֶם אֶת־מָעֻזָּם מְשׂוֹשׂ
eorum animæ elevationem &,eorum oculorum desiderium : eorum gloriæ
תִּפְאַרְתָּם אֶת־מַחְמַד עֵינֵיהֶם וְאֶת־מַשָּׂא נַפְשָׁם
, te ad evasor veniet ipsa die In ? eorum filias &,eorum filios
26 בְּנֵיהֶם וּבְנוֹתֵיהֶם : בַּיּוֹם הַהוּא יָבוֹא הַפָּלִיט אֵלֶיךָ
, evasore cum tuum os aperietur illa die In .aurium auditum ad
27 לְהַשְׁמָעוּת אָזְנָיִם : בַּיּוֹם הַהוּא יִפָּתַח פִּיךָ אֶת־הַפָּלִיט
scient &,portentum in eis eris & : ultra eris mutus non & ,loqueris &
וּתְדַבֵּר וְלֹא תֵאָלֵם עוֹד וְהָיִיתָ לָהֶם לְמוֹפֵת וְיָדְעוּ
.Dominus ego quod
כִּי־אֲנִי יְהוָה :

CAP. XXV. כה

ad tuas facies pone hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר : בֶּן־אָדָם שִׂים פָּנֶיךָ אֶל־
Audite :Hammon filiis dices Et .eos super propheta &:Hammon filios
3 בְּנֵי עַמּוֹן וְהִנָּבֵא עֲלֵיהֶם : וְאָמַרְתָּ לִבְנֵי עַמּוֹן שִׁמְעוּ
euge , te dicere Pro : Deus Dominus dixit Sic : Dei Domini verbum
דְּבַר־אֲדֹנָי יְהוִה כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה יַעַן אָמְרֵךְ הֶאָח
quia , Israel humum ad &,est pollutum quia , meum sanctuarium ad
אֶל־מִקְדָּשִׁי כִּי־נִחָל וְאֶל־אַדְמַת יִשְׂרָאֵל כִּי
.captivitatem in abierunt quoniam ,Jehudah domum ad & , est desolata
נָשַׁמָּה וְאֶל־בֵּית יְהוּדָה כִּי הָלְכוּ בַּגּוֹלָה :
facient inhabitare &,hæreditatem in orientis filiis te dans ego ecce Idcirco
4 לָכֵן הִנְנִי נֹתְנָךְ לִבְנֵי־קֶדֶם לְמוֹרָשָׁה וְיִשְּׁבוּ
,tuũ fructũ comedent ipsi : sua habitacula te in dabunt &,te in suas ædes
טִירוֹתֵיהֶם בָּךְ וְנָתְנוּ בָךְ מִשְׁכְּנֵיהֶם הֵמָּה יֹאכְלוּ פִרְיֵךְ
,camelorum habitaculum in Rabbah dabo Et .tuum lac bibent ipsi &
5 וְהֵמָּה יִשְׁתּוּ חֲלָבֵךְ : וְנָתַתִּי אֶת־רַבָּה לִנְוֵה גְמַלִּים
.Dominus ego quòd scietis & : pecoris cubile in Hammon filios &
וְאֶת־בְּנֵי עַמּוֹן לְמִרְבַּץ־צֹאן וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה :
te dilatare & , manu te plaudere Pro : Deus Dominus dixit sic Quia
6 כִּי כֹה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה יַעַן מַחְאֲךָ יָד וְרַקַּעֲךָ
humum ad animo in tuo contemptu omni in es gavisa & : pede in
בְּרָגֶל וַתִּשְׂמַח בְּכָל־שָׁאטְךָ בְּנֶפֶשׁ אֶל־אַדְמַת
te dabo & , te super meam manum extendi ego ecce Idcirco .Israel
7 יִשְׂרָאֵל : לָכֵן הִנְנִי נָטִיתִי אֶת־יָדִי עָלֶיךָ וּנְתַתִּיךָ
te faciam perdere & ,populis è te faciam succidere & ,gentibus cibum in
לְבַג לַגּוֹיִם וְהִכְרַתִּיךָ מִן־הָעַמִּים וְהַאֲבַדְתִּיךָ
.Dominus ego quod scies & , te faciam delere : terris de
מִן־הָאֲרָצוֹת אַשְׁמִידְךָ וְיָדַעְתָּ כִּי־אֲנִי יְהוָה :

Verſio VULG. LAT.

19 Et dixit ad me popul⁹, Quarè non indicas nobis, quid iſta ſignificent, quæ tu facis? 20 Et dixi ad eos; Sermo Domini factus eſt ad me, 21 dicens; Loquere domui Iſrael; Hæc dicit Dñs Deus; Ecce ego polluam Sanctuarium meum, ſuperbiam imperii veſtri, & deſiderabile oculorum veſtrorum, & ſuper quo pavet anima veſtra: filii veſtri & filiæ veſtræ, quas reliquiſtis, gladio cadent. 22 Et facietis ſicut feci: Ora amictu non velabitis, & cibos lugentium non 23 comedetis. Coronas habebitis in capitib⁹ veſtris, & calceamenta in pedibus: non plangetis neque flebitis, ſed tabeſcetis in iniquitatibus veſtris, & unuſquiſque 24 gemet ad fratrem ſuum. Eritque Ezechiel vobis in portentum: juxta omnia, quæ fecit, facietis cùm venerit iſtud: & ſcietis quia 25 ego Dominus Deus. Et tu, fili hominis, ecce in die, quâ tollam ab eis fortitudinem eorum, & gaudium dignitatis, & deſiderium oculorum eorum, ſuper quo requieſcunt animæ eorum, filios & fi- 26 lias eorum: In die illa cùm venerit fugiens ad te, ut annunciet 27 tibi: In die, inquam, illa aperietur os tuum cum eo qui fugit: & loquêris, & non ſilebis ultrà: eriſque eis in portentum, & ſcietis quia ego Dominus.

CAP. XXV.

1 ET factus eſt ſermo Domini ad 2 me, dicens; Fili hominis, pone faciem tuã contra filios Ammon, et 3 prophetabis de eis. Et dices filiis Ammon; Audite verbum Domini Dei: Hæc dicit Dñs Deus; Pro eo quòd dixiſti, Euge, euge ſup Sanctuariũ meum, quia pollutum eſt: & ſuper terram Iſrael, quoniam deſolata eſt: & ſuper domũ Juda, quoniam ducti ſunt in captivita- 4 tem: Idcircò ego tradam te filiis Orientalibus in hæreditatem, & collocabunt caulas ſuas in te, & ponent in te tentoria ſua: ipſi comedent fruges tuas: & ipſi bi- 5 bent lac tuũ. Dabóque Rabbath in habitaculum camelorum, & filios Ammon in cubile pecorum: 6 & ſcietis quia ego Dñs. Quia hæc dicit Dñs De⁹; Pro eo quòd plauſiſti manu, & percuſſiſti pede, & gaviſa es ex toto affectu ſup ter- 7 ram Iſrael: Idcircò ecce ego extendam manum meam ſuper te, & tradam te in direptionẽ Gentium, & interficiam te de populis, & perdam de terris, & conteram: & ſcies quia ego Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ ὁ λαὸς, (χ) Οὐκ ἀναγγέλλῃς ἡμῖν τί ἐστι ταῦτα ἃ σὺ ποιεῖς; 20 Καὶ εἶπα πρὸς αὐτοὺς, (ψ) Λόγος κυρίου ἐγένετο πρὸς μὲ, λέγων, 21 Εἰπὸν πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ, Τάδε λέγει (ω) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ βεβηλῶ τὰ ἅγιά μου, φρύαγμα ἰσχύος ὑμῶν, ἐπιθυμήματα ὀφθαλμῶν ὑμῶν, καὶ ὑπὲρ ὧν φείδονται αἱ ψυχαὶ ὑμῶν· καὶ οἱ υἱοὶ ὑμῶν καὶ αἱ θυγατέρες ὑμῶν, οὓς ἐγκαταλελοίπατε, ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται. 22 Καὶ (α) ποιήσετε ὃν τρόπον πεποίηκα· ἀπὸ στόματος αὐτῶν (β) οὐ παρακληθήσεσθε, καὶ ἄρτον ἀνδρῶν (γ) 23 οὐ φάγεσθε, Καὶ αἱ κόμαι ὑμῶν ἐπὶ τῆς κεφαλῆς ὑμῶν, καὶ τὰ ὑποδήματα ὑμῶν ἐν τοῖς ποσὶν ὑμῶν· (δ) οὔτε μὴ κόψησθε, οὔτε μὴ (ε) κλαύσητε, καὶ ἐντακήσεσθε ἐν ταῖς ἀδικίαις ὑμῶν, καὶ παρακαλέσετε ἕκαστος τὸν ἀ- 24 δελφὸν αὐτοῦ. Καὶ ἔσται Ἰεζεκιὴλ ὑμῖν εἰς τέρας. κατὰ πάντα ὅσα ἐποίησα, ποιήσετε, ὅταν ἔλθῃ ταῦτα, καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ 25 κύριος. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, οὐκ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ὅταν λαμβάνω τὴν ἰσχὺν (ζ) παρ' αὐτῶν, τὴν ἔπαρσιν τῆς καυχήσεως αὐτῶν, τὰ ἐπιθυμήματα ὀφθαλμῶν αὐτῶν, καὶ τὴν ἔπαρσιν ( ) ψυχῆς 26 αὐτῶν, υἱοὺς αὐτῶν καὶ θυγατέρας αὐτῶν, Ἐν (η) τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἥξει ὁ ἀνασωζόμενος πρὸς 27 σὲ, τοῦ ἀναγγεῖλαί σοι εἰς τὰ ( ) ὦτα; Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ διανοιχθήσεται τὸ στόμα σου πρὸς τὸν ἀνασωζόμενον· (θ) λαλήσεις, καὶ οὐ μὴ ἀποκωφωθῇς ἔτι, καὶ ἔσῃ αὐτοῖς εἰς τέρας, καὶ ἐπιγνώσονται διότι ἐγὼ κύριος.

ΚΕΦ. κε'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ- 2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν, καὶ προφήτευσον ἐπ' 3 αὐτοὺς, Καὶ ἐρεῖς τοῖς υἱοῖς Ἀμμὼν, Ἀκούσατε λόγον κυρίου· τάδε λέγει (α) κύριος, Ἀνθ' ὧν ἐπεχάρητε ἐπὶ τὰ ἅγιά μου, ὅτι (β) ἐβεβηλώθη, καὶ ἐπὶ τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ, ὅτι ἠφανίσθη, καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον τοῦ Ἰούδα, ὅτι ἐπο- 4 ρεύθησαν ἐν αἰχμαλωσίᾳ, Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ παραδίδωμι ὑμᾶς τοῖς υἱοῖς κεδὲμ εἰς κληρονομίαν, καὶ κατασκηνώσουσιν (γ) ἐν τῇ ἀπαρτίᾳ αὐτῶν ἐν σοὶ, καὶ δώσουσιν ἐν σοὶ τὰ σκηνώματα αὐτῶν· αὐτοὶ φάγονται τοὺς καρπούς σου, καὶ αὐτοὶ πίονται τὴν πιότητά σου. 5 Καὶ δώσω τὴν πόλιν τοῦ Ἀμμὼν εἰς νομὰς καμήλων, καὶ τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν εἰς (δ) νομὴν προβάτων, καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύ- 6 ριος. Διότι τάδε λέγει (ε) κύριος, Ἀνθ' ὧν ἐκρότησας (ζ) τὴν χεῖρά σου, καὶ (η) ἐψόφησας τῷ ποδί σου, καὶ ἐπέχαρας ἐκ ψυχῆς σου 7 ἐπὶ τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ, Διατοῦτο (θ) ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ σὲ, καὶ δώσω σε εἰς διαρπαγὴν ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ (ι) ἐξολοθρεύσω σε ἐκ τῶν λαῶν, καὶ ἀπολῶ σε ἐκ τῶν χωρῶν ἀπωλείᾳ, καὶ ἐπιγνώσῃ διότι ἐγὼ κύριος.

Et dixit ad me populus: Nonne annunciabis nobis quid sint hæc, quæ tu facis? Et dixi ad eos; Sermo Domini factus est ad me, dicens: Dic ad domum Israel; Hæc dicit Dominus; Ecce ego contamino Sancta mea, superbiam fortitudinis vestræ, desideria oculorum vestrorum, et super quibus parcunt animæ vestræ. Et filii vestri & filiæ vestræ, quos dereliquistis, in gladio cadent: Et facietis, sicut feci: ab ore eorũ non consolabimini, & panem virorũ non comedetis. Et comæ vestræ super capita vestra, et calceamenta vestra in pedibus vestris. Non plangetis, neque plorabitis, et contabescetis in iniquitatibus vestris, & consolabimini unusquisque fratrẽ suum. Et erit Iezechiel vobis in portentum. Secundũ omnia quæ (…) feci, facietis, cum venerint hæc: & cognoscetis, quoniam ego Dominus. Et tu, fili hominis, nonne in die quando abstulero ab eis fortitudinem, elationem gloriationis eorum, desideria oculorum eorum, & elationem animæ eorum, filios eorum, et filias eorum: In die illa veniet, qui salvus factus fuerit, ad te, ut annunciet tibi in auribus? In die illa aperietur os tuum ad eum qui evaserit: et loqueris, & nequaquam obmutesces: & eris eis in portentum, & cognoscent quoniam ego Dominus.

CAP. XXV.

ET factus est sermo Domini ad me, dicens; Fili hominis, obfirma faciem tuã super filios Ammon, & prophetabis super eos. Et dices filiis Ammon; Audite verbum Domini: Hæc dicit Dominus; Pro eo quòd gavisi estis super Sancta mea, quia polluta sunt, & super terram Israel, quia deleta est: & super domũ Juda quia abierunt in captivitatem: Idcirco ecce ego 4 trado vos (α) filiis Cedem in hæreditatem: & habitabunt in impedimentis suis in te & dabunt in te tentoria sua: ipsi comedent fructus tuos: et ipsi bibent ubertatem tuam: Daboque civitatem Am- 5 mon in pascua camelorũ et filios Ammon in (δ) pascuam ovium: & scietis, quia ego Dominus. Quia 6 hæc dicit Dominus; Pro eo quòd plausisti manu tua, & insultasti pede tuo, & (…) gavisa es ex anima tua super terra Israel: Idcir- 7 cò extendam manum meam super te: & dabo te in direptionem in gentibus, & exterminabo te de populis: & perdam te de terris perditione: & scies, quia ego Dominus.

MS.A. Κεφ. κδ'. (χ) Οὐ μὴ ἀπαγγείλῃς (ψ) Τάδε λέγει ἀδωναὶ κύριος, Εἰπὸν (ω) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (α) ποιήσω ὃν τρόπον ἐποίησα (β) οὐ μὴ (γ) οὐ μὴ (δ) οὐ μὴ (ε) κλαυθῆτε (ζ) αὐτῶν παρ' αὐτῶν, ( ) τῆς ψυχῆς (η) ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ( ) ὦτά σου; (θ) καὶ ἐρεῖς, οὐ μὴ

MS.A. Κεφ. κε'. (α) ἀδωναὶ κύριος, (β) ἐβεβηλώθησαν, (γ) σὺν τῇ (δ) προνομὴν (ε) κύριος ὁ θεὸς, Ἀνθ' ὧν (ζ) τὰς χεῖράς (η) ἐπεψόφησας (θ) ἰδοὺ ἐγὼ ἐκτενῶ (ι) ἐξολεθρεύσω

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 20 וְאָמְרוּ לִי עַמָּא הֲלָא תְחַוֵּי לָנָא מָא אִלֵּין לָנָא אֲרֵי אַתְּ עָבֵיד : וַאֲמָרִית לְהוֹן פִּתְגָם
21 נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ הֲוָה עִמִּי לְמֵימַר : אֱמַר לְבֵית יִשְׂרָאֵל כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא
מְפִיס יָת בֵּית מַקְדְּשִׁי יְקַר תּוּקְפְּכוֹן רִגְנָא דְעֵינֵיכוֹן וַחֲבִיב נַפְשְׁכוֹן וּבְנֵיכוֹן וּבְנָתֵיכוֹן
22 דִּשְׁבַקְתּוּן בְּחַרְבָּא יִתְקַטְלוּן : וְתַעְבְּדוּן כְּמָא דַעֲבָדִית עַל שְׂפָם לָא תִתְעַטְּפוּן וּלְחֵם
23 אַבְלִין לָא תֵיכְלוּן : וְטוֹטְפָתְכוֹן בְּרֵישֵׁיכוֹן וּמְסָנֵיכוֹן בְּרַגְלֵיכוֹן לָא תִסְפְּדוּן וְלָא תִבְכּוּן
24 וְתִתְמַסּוּן בְּחוֹבֵיכוֹן וְתִתְנַהֲמוּן גְּבַר לַאֲחוּהִי : וִיהֵי יְחֶזְקֵאל לְכוֹן לְאָת כְּכֹל דִּי עֲבַד
25 תַּעְבְּדוּן בְּמֵיתֵיהּ וְתִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ אֱלֹהִים : וְאַתְּ בַּר אָדָם הֲלָא בְּיוֹמָא דְאַעְדֵּי מִנְּהוֹן
יָת בֵּית מַקְדְּשֵׁיהוֹן יְקַר תּוּקְפְּהוֹן חֶדְוַת תּוּשְׁבַּחְתְּהוֹן יִתְנְסֵיב מִנְּהוֹן רִגְנָא דְעֵינֵיהוֹן
26 וַחֲבִיב נַפְשְׁהוֹן דְּטָב לְהוֹן מִבְּנֵיהוֹן וּמִבְּנָתְהוֹן : בְּיוֹמָא הַהוּא יֵיתֵי מְשֵׁיזְבָא לְוָתָךְ
27 לְאַשְׁמָעוּתָךְ בְּסוֹרָא : בְּיוֹמָא הַהוּא יִתְפְּתַח פּוּמָךְ בְּמֵיתֵי מְשֵׁיזְבָא וְתִתְנַבֵּי וְלָא תִשְׁתּוֹק
עוֹד וּתְהֵי לְהוֹן לְאָת וְתִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ :

כה

1 2 וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי לְמֵימַר : בַּר אָדָם קַבֵּל נְבוּאָה עַל בְּנֵי עַמּוֹן וְתִתְנַבֵּי
3 עֲלֵיהוֹן : וְתֵימַר לִבְנֵי עַמּוֹן קַבִּילוּ פִּתְגָמָא דַיְיָ אֱלֹהִים כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים חֲלַף דַּאֲמַרְתְּ הָא
חֶדְוָא עַל מַקְדְּשִׁי אֲרֵי אִתְּחַל וְעַל אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל אֲרֵי צְדִיאַת וְעַל דְּבֵית יְהוּדָה אֲרֵי
4 הֲלִיכוּ בְּגָלוּתָא : בְּכֵן הָא אֲנָא מְסַר לִיךְ לִבְנֵי מַדִּינְחָא לִירוּתָא וְיִתְּבוּן בִּירָנְתְּהוֹן בִּיךְ
5 וְיִגְרוּן בִּיךְ מַשְׁכְּנֵיהוֹן אִנּוּן יֵיכְלוּן טוּב אַרְעִיךְ וְאִנּוּן יִבְזוּן נִכְסִיךְ : וְאֶתֵּן יָת רַבָּה לִמְדוֹר
6 גַּמְלִין וְיָת בְּנֵי עַמּוֹן לְבֵית מִשְׁרֵי עֶדְרִין דְּעָן וְתִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ : אֲרֵי כִּדְנַן אֲמַר יְיָ
אֱלֹהִים חֲלַף דִּטְפַחְתָּא בִידָךְ וּרְפַסְתָּא בְּרַגְלָךְ וַחֲדִיתָא בְּכָל צְפִית נְפַשׁ עַל אַרְעָא
7 דְיִשְׂרָאֵל : בְּכֵן הָא אֲנָא מְרִים יָת מְחַת גְּבוּרְתִּי עֲלָךְ [illegible] לְעַמְמַיָּא וְאֵשֵׁיצִינָךְ
מִבֵּינֵי עַמְמַיָּא וְאוֹבְדִנָּךְ מִן מְדִינָתָא [illegible]

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixit ad me popul⁹: Nónne annuntiabis nobis, quid iſta ſignificent, quæ tu 19
facis? Et dixi ad eos: Verbum prophetiæ à facie Dñi factum eſt mecum, di- 20
cens: Dic domui Iſrael: Hæc dicit Dñs Deus: Ecce ego violabo domum 21
ſanctuarii mei, gloriam fortitudinis veſtræ, & deſiderabile oculorum veſtrorũ,
& quod dilectiſſimum eſt animo veſtro: filii veſtri & filiæ veſtræ quos reli-
quiſtis, gladio occidentur. Et facietis ſicut feci; ſuper labia non amiciemini, 22
& panem lugentiũ non comedetis. Et frontalia veſtra erunt in capite veſtro, 23
& calciamenta veſtra in pedib⁹ veſtris. Non plangetis nec plorabitis, & ta-
beſcetis in peccatis veſtris, & gemetis quiſq; ſuper fratrem ſuũ. Et erit Eze- 24
chiel vobis in ſignum: juxta omnia quæ fecit, facietis: cùm venerit ſcietis
quia ego Dñs Deus. Et tu fili hominis, ecce in die qua auferam ab eis domum 25
ſanctuarii eorum, gloriam fortitudinis eorum, lætitiam laudis eorum, tollentur
ab eis deliciæ oculorum eorum, & quod dilectiſſimum eſt eorum animo, quod
illis melius eſt quàm filii & filiæ eorum. In die illa veniet ad te qui evaſerit, 26
ut annuntiet tibi nuntium. In die illa aperietur os tuum cùm venerit qui eva- 27
ſerit: & prophetabis & non tacebis ampliùs, & eris eis in ſignum, & ſci-
ent quia ego Dominus.

CAP. XXV.

ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: Fili hominis, 1 2
ſuſcipe prophetiam ſuper filios Ammon, & vaticinare eis. Et dices filiis Am- 3
mon: Suſcipite verbum Dñi Dei; hæc dicit Dñs Deus: Pro eo quòd dixiſti
Euge ſuper ſanctuarium meum, quia prophanatum eſt; & ſuper terram Iſrael
quia deſerta eſt; & ſuper domum Juda, quia abierunt in tranſmigrationem.
Ideò ecce ego tradam te filiis Orientalibus in poſſeſſionem, & collocabunt 4
palatia ſua in te, & ponent in te habitacula ſua; ipſi comedent bona terræ tuæ,
& ipſi diripient ſubſtantiã tuam. Et dabo Rabba in habitaculũ camelorum, & 5
filios Ammon in domum manſionis gregum ovium: & ſcietis quia ego Dñs.
Quia hæc dicit Dñs Deus: Pro eo quòd plauſiſti manu tua, & calcaſti pede 6
tuo, & gaviſa es toto affectu animi ſup terrã Iſrael. Ideò ecce ego levo plagã 7
potentiæ meæ ſup te, & dabo te in direptionẽ populis, & diſperdã te de medio
populorũ: & perdã te de provinciis, deſertã faciã te, & ſcies quia ego Dñs.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܠܝ ܥܡܐ. ܠܐ ܡܚܘܐ ܐܢܬ ܠܢ܆ ܡܢܘ ܗܘܐ ܕܥܒܕ ܐܢܬ܀ * ܘܐܡܪܬ ܠܗܘܢ
ܕܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܗܘܐ ܥܠܝ ܠܡܐܡܪ. * ܐܡܪ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ܀ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܡܛܢܦ ܐܢܐ ܡܩܕܫܝ ܬܘܩܦܐ ܕܫܘܒܗܪܟܘܢ܀ ܘܪܓܬܐ ܕܥܝܢܝܟܘܢ܀ ܘܚܘܣ
ܕܢܦܫܟܘܢ. ܘܒܢܝܟܘܢ ܘܒܢܬܟܘܢ ܕܫܒܩܬܘܢ ܐܢܘܢ. ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ܀ * ܘܬܥܒܕܘܢ
ܐܝܟ ܕܥܒܕܬ. ܘܠܐ ܣܦܘܬܟܘܢ ܠܐ ܬܟܣܘܢ. ܘܠܚܡܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܠܐ ܬܐܟܠܘܢ
* ܘܣܥܪܟܘܢ ܠܐ ܢܬܓܠܚ. ܘܡܣܐܢܝܟܘܢ ܢܗܘܘܢ ܒܪܓܠܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܬܒܟܘܢ ܘܠܐ ܬܪ
ܘܬܬܡܣܘܢ ܒܚܛܗܝܟܘܢ. ܘܬܬܒܝܐܘܢ ܐܢܫ ܥܠ ܐܚܘܗܝ. [MS. Ar.* ܘܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܚܙܩܝܐܝܠ ܠܐ
ܘܐܝܟ ܕܥܒܕ ܗܘ ܗܟܢܐ ܬܥܒܕܘܢ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ.* ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ ܒܝܘܡܐ ܕܐܣܒ
ܐܢܐ ܡܢܗܘܢ ܥܘܫܢܐ ܕܫܘܒܗܪܗܘܢ ܕܚܕܘܬܗܘܢ. ܘܪܓܬܐ ܕܥܝܢܝܗܘܢ. ܘܚܘܣܝܐ ܕܢܦܫܬܗܘܢ
ܘܒܢܝܗܘܢ ܘܒܢܬܗܘܢ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܢܐܬܐ ܠܘܬܟ ܡܦܠܛܐ. ܘܢܫܡܥܟ ܒܐܕܢ
* ܘܢܦܬܚ ܦܘܡܟ ܡܦܠܛܐ ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܘܬܬܡܠܠ ܘܠܐ ܬܫܬܐܩ ܥܘܕ. ܘܬܗܘܐ ܠܗܘܢ
ܠܐܬܐ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.]

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܗ * ܥܠ ܒܢܝ ܥܡܘܢ.*

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܥܠ ܒܢܝ ܥܡܘܢ
ܘܐܬܢܒܐ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܟܢ
ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܚܠܦ ܕܐܡܪܬܘܢ ܐܘܚ ܥܠ ܡܩܕܫܝ ܕܐܬܛܢܦ. ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ
ܕܚܪܒܬ: ܘܥܠ ܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܕܐܙܠܘ ܒܫܒܝܬܐ.* ܡܛܠܗܢܐ ܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܟ
ܠܒܢܝ ܡܕܢܚܐ ܠܝܪܬܘܬܐ. ܘܢܬܒܘܢ ܒܟܝ ܚܝܠܘܬܗܘܢ. ܘܢܩܒܥܘܢ ܒܟܝ ܡܫܟܢܝܗܘܢ
ܢܐܟܠܘܢ ܦܐܪܝܟܝ. ܘܗܢܘܢ ܢܫܬܘܢ ܚܠܒܟܝ. * ܘܐܬܠܝܗ ܠܪܒܬ ܠܡܪܒܥܐ ܕܓܡܠ
ܘܠܒܢܝ ܥܡܘܢ ܠܡܪܒܥܐ ܕܥܢܐ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ
ܚܠܦ ܕܢܩܫܬܘܢ ܒܐܝܕܝܟܘܢ. ܘܪܦܣܬܘܢ ܒܪܓܠܝܟܘܢ: ܘܚܕܝܬܘܢ ܒܢܦܫܟܘܢ. ܠܐ ܐܪܥ
ܕܐܝܣܪܝܠ.* ܡܛܠܗܢܐ ܗܐ ܐܪܝܡ ܐܢܐ ܐܝܕܝ ܥܠܝܟܝ ܘܐܫܠܡܟܝ ܠܒܙܬܐ ܠܥܡܡܐ
ܘܐܘܒܕܟܝ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܘܐܚܪܒܟܝ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܐܚܪܒܟܝ. ܘܬܕܥܝܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.

Dicente verò mihi populo, Annon indicaturus es nobis quid hoc ſit quod agis? 19 Reſpondi eis, 20 Sermo quidem Domini fuit ad me, dicendo; Dic Iſraelitis, 21 Sic ait Dominus dominorum, Ecce prophanabo ſanctuariũ meum, gloriam roboris veſtri, deſiderium oculorum veſtrorum, & expiationem animarum veſtrarum; & filii filiæque veſtræ quas relinquetis, gladio concident. Et facietis quemadmodum 22 feci: labia veſtra non amicietis, panem hominum non comedetis, Pilus veſter minimè 23 radetur, calcei veſtri erunt ad pedes veſtros, non flebitis, neque lamentabimini; ſed in ſcelere veſtro tabeſcetis, & conſolationem capietis quiſque de fratre ſuo. [*MS. Armach* Eritque vobis Ezekiel in oſtentum: prout ille 24 fecit, ita facietis: tunc ſcietis quòd ego ſum Dñs dominorũ. Tu autem fili hominis, quâ die 25 tollã ab eis robur gaudii gloriæ eorũ, & deſiderũ oculorũ ipſorũ, et expiationẽ animarũ eorum, filios ipſorum & filias ipſorũ. Eo ipſo 26 die veniet qui evaſerit ad te, & audire te faciet in aurib⁹ tuis: Eo ipſo die aperiet os tuũ 27 evaſor ille, ut eloquaris, nec obmuteſcas amplius: Sic eris illis oſtento, ut cognoſcant me eſſe Dominum.]

CAP. XXV.

Contra Ammonitas.

Iterum fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 1 Fili hominis, 2 diſpone faciem tuam contra Ammonitas, vaticinare contra eos, Et dic 3 Ammonitis; Audite ſermonem Domini dominorum. Sic ait Dominus dominorum; Quia dixiſtis, Vivifica nos (i. *euge*) de ſanctuario meo quòd prophanatum ſit, & de terra Iſraelis quòd deſtructa ſit, déque domo Judæ quòd in captivitatem abierint: Idcirco ecce 4 traditurus ſum te Orientalibus in hæreditatem; & habitabit in te exercitus eorum, & figent in te tabernacula ſua: ipſi comedent fructus tuos, iidémque bibent lac tuum. Redigámque 5 Rabath in cubile camelorum & filios Ammon in caulam ovium: & ſcietis me eſſe Dominum. Sic ait Dominus dominorum; 6 Quia comploſiſti manibus tuis, & pedibus tuis ſaltâſti, & lætata es in temetipſa de terra Iſraelis, Propterea ſic ait Dominus domino- 7 rum, Ecce levabo manum meam ſuper te, tradam te in prædam gentibus, excindam ex populis, perdam ex urbibus, & deſtruam, ut experiaris me eſſe Dominum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وقال لي الشعب. الا تخبرنا ما هذا الذي صنعت * قلت كلام الرب كان علي * اذ يقول قول لبني
اسراييل. هكذا يقول رب الارباب. هوذا ادنس مقدسي مجد عزكم * وشهوة اعينكم. وكفارة
انفسكم * وبنيكم وبناتكم مخلفتكم بالحرب يتوقعون * وتصنعون كما صنعت وعلي شفاهكم
لا تلتثمون وخبز الانسان لا تاكلوا * ولا تقصوا شعوركم وخفافكم تكون في ارجلكم و
تبكون. ولا تنوحون. وتعففوا من اثمكم. ويتعزا الانسان علي اخيه * ويكون حزقيال لكم
علامة. وكالذي فعل. هكذا افعلوا. وتعلمون اني انا الرب * انت ايها الانسان في اليوم
الذي انتزع منهم مجد فرحهم. وشهوة اعينهم ومغفرة انفسهم. وبنيهم. وبناتهم * في ذلك
اليوم ياتيك المنقلب ويسمعك في مسامعك * ويفتح فاك المنقلب في ذلك اليوم وتتكلم
وايضا لا تخرس. وتكون لهم اية. وتعلمون اني انا الرب] الفصل الخامس والعشرون. النبوة في عمون
* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان. ثبت وجهك علي بني عمون. وتنبا عليهم
* وقول لبني عمون. اسمعوا قول ادوناي الرب. هكذا يقول ادوناي الرب. من اجل انك
شمت باقداسي لانها تدنست. وبارض اسرايل لانها فنيت. وببيت يهوذا لانه مضي في السبي
* لاجل هذا ها انا اسلمكم لبني كادم ميراثا. ويسكنون بكمالهم فيك. ويعملون
مساكنهم. هاولاء ياكلون ثمراتك. وهاولاء يشربون دسمك * وادفع مدينة عمون لمراعي
الابل. وبني عمون لمراعي الخراف. وتعلمون اني انا الرب * من اجل انه هكذا يقول الر
الرب. من اجل انك صفقت بيدك وخفقت برجلك وشمت من نفسك بارض اسرايل * لاجل
هذا ها انا امدد يدي عليك. وادفعك للخطف في الامم. واستاصلك من الشعوب
واهلكك بالهلاك. وتعلمين اني انا الرب.

Tum dixit mihi populus, Annon indicabis nobis, quidnam iſtud ſit quod tu facis? 19 *Dixi, Verbum Domini fuit ad me,* 20 *Cùm dicturus fuit ſermonem domui Iſrael:* 21 *Sic dicit Dominus dominorum; Ecce polluo ſanctuarium meum, gloriam roboris veſtri, deſiderium oculorum veſtrorum, & expiationem animarum veſtrarum: & filii veſtri filiæque veſtræ vobis relictæ, gladio concident. Tum facietis quemadmodum* 22 *feci: & labia veſtra non obvelabitis, nec panem hominum comedetis. Capillos ve-* 23 *ſtros non reſecabitis, calcei veſtri erunt ad pedes veſtros, non flebitis, neque plangetis; ſed propter ſcelera veſtra vagabimini, & ſolatio afficiemini unuſquiſque de fratre ſuo: Sic erit Hezeciel vobis* 24 *oſtento, et quemadmodum fecit, ſic facietis, & agnoſcetis me eſſe Dominum. Tu* 25 *autem O homo, quâ die tollam ab eis gloriam gaudii ipſorum, et deſiderium oculorum ipſorum, & propitiationem animarum ipſorũ, et filios ipſorum, et filias ipſorum; Eâ ipſâ die veniet qui reverſus fu-* 26 *erit ad te, et narrabit tibi in auribus tuis: Et eodem ipſo die aperiet os tuum redux* 27 *ille, ut eloquaris, nec obmuteſcas amplius: ſic eris illis oſtento, & cognoſcetis me eſſe Dominum.]*

CAP. XXV.

Prophetia contra Ammonitas.

Præterea fuit ſermo Domini ad me, 1 *dicens; O fili hominis, confirma faciem* 2 *tuam contra filios Ammon, & vaticinare de ipſis, Dicáſque filiis Ammon; Au-* 3 *dite ſermonem Adonai Domini. Sic dicit Adonai Dominus; Eò quòd inſultaveris ſanctis meis quòd profanata ſint, & terræ Iſraelis quòd perierit, & domui Judæ quòd in captivitatem abierit: Pro-* 4 *pterea ecce ego tradam vos filiis Kedem in hæreditatem, ut omnes omninò habitent in te, collocéntque domicilia ſua: iſti comedent fructus tuos, & iſti bibent ſuavitatem tuam. Et redigam urbem Ammon in* 5 *paſcua camelorum, & filios Ammon in paſcua agnorum: & experiemini me eſſe Dominum. Nam ita dicit Dominus Do-* 6 *minus; Quia manu tuâ plauſiſti, & pulſâſti pede tuo, & inſultáſti ex animo tuo terræ Iſraelis; Iccircò en ego ex-* 7 *tendam manum meam ſuper te, tradámque te direptioni in gentes, evellam e ex populis, téque planè perdam: et experieris me eſſe Dominum.*

יְחֶזְקֵאל : כה

Ecce , Sehir & , Moab dicere Pro : Deus Dominus dixit Sic
8 כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה יַעַן אֱמֹר מוֹאָב וְשֵׂעִיר הִנֵּה
aperiens ego ecce Idcircò .Jehudah domus gentes omnes ſicut
9 כְּכָל־הַגּוֹיִם בֵּית יְהוּדָה׃ לָכֵן הִנְנִי פֹתֵחַ אֶת־
terræ decorem ,ejus extremo ab ejus urbibus ab urbibus ab ,Moab humerum
כֶּתֶף מוֹאָב מֵהֶעָרִים מֵעָרָיו מִקָּצֵהוּ צְבִי אֶרֶץ
filios Ad .Chiriathaimah & ,mehon---Bahal ,hajeſimoth---Beth
10 בֵּית הַיְשִׁימוֹת בַּעַל מְעוֹן וְקִרְיָתָמָה׃ לִבְנֵי־
ut :hæreditatem in eam dabo & , Hammon filios contra orientis
קֶדֶם עַל־בְּנֵי עַמּוֹן וּנְתַתִּיהָ לְמוֹרָשָׁה לְמַעַן
faciam Moab in Et .gentes inter Hammon filiorum memoria ſit non
11 לֹא־תִזָּכֵר בְּנֵי־עַמּוֹן בַּגּוֹיִם׃ וּבְמוֹאָב אֶעֱשֶׂה
Dominus dixit Sic .Dominus ego quòd ſcient & : judicia
12 שְׁפָטִים וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי
domum contra ultionem ulciſcendo in , Edom facere Pro : Deus
יֱהֹוִה יַעַן עֲשׂוֹת אֱדוֹם בִּנְקֹם נָקָם לְבֵית
ſic Idcircò .eis in ſunt ulti & ,delinquendo deliquerunt &:Jehudah
13 יְהוּדָה וַיֶּאְשְׁמוּ אָשׁוֹם וְנִקְּמוּ בָהֶם׃ לָכֵן כֹּה
, Edom ſuper meam manum extendam Et : Deus Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה וְנָטִתִי יָדִי עַל־אֱדוֹם
,deſolationem eam dabo & : animal & hominem ea ex ſuccidam &
וְהִכְרַתִּי מִמֶּנָּה אָדָם וּבְהֵמָה וּנְתַתִּיהָ חָרְבָּה
meam ultionem dabo Et .cadent gladio in Dedan & Teman à
14 מִתֵּימָן וּדְדָנֶה בַּחֶרֶב יִפֹּלוּ׃ וְנָתַתִּי אֶת־נִקְמָתִי
Edom in facient & , Iſrael mei populi manum per Edom in
בֶּאֱדוֹם בְּיַד עַמִּי יִשְׂרָאֵל וְעָשׂוּ בֶאֱדוֹם
dixit ,meam vindictam ſcient & : meam iram juxta &,meũ naſum juxta
כְּאַפִּי וְכַחֲמָתִי וְיָדְעוּ אֶת־נִקְמָתִי נְאֻם
Peliſtim facere Pro : Deus Dominus dixit Sic .Deus Dominus
15 אֲדֹנָי יֱהֹוִה׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה יַעַן עֲשׂוֹת פְּלִשְׁתִּים
corruptionem ad animo in contemptu cum ultionem ſunt ulti & , ultione in
בִּנְקָמָה וַיִּנָּקְמוּ נָקָם בִּשְׁאָט בְּנֶפֶשׁ לְמַשְׁחִית
ego Ecce : Deus Dominus dixit ſic Propterea ſeculi inimicitiis
16 אֵיבַת עוֹלָם׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה הִנְנִי
, Cherethæos faciam ſuccidere & ,Peliſtim ſuper meam manum extendens
נוֹטֶה יָדִי עַל־פְּלִשְׁתִּים וְהִכְרַתִּי אֶת־כְּרֵתִים
eis in Faciamque .maris portus reſiduum faciam diſperdere &
17 וְהַאֲבַדְתִּי אֶת־שְׁאֵרִית חוֹף הַיָּם׃ וְעָשִׂיתִי בָם
ego quòd ſcient Et .iræ increpationibus in magnas ultiones
נְקָמוֹת גְּדֹלוֹת בְּתוֹכְחוֹת חֵמָה וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי
.eis in meam vindictam me dando in ,Dominus
יְהוָה בְּתִתִּי אֶת־נִקְמָתִי בָּם׃

CAP. XXVI. כו

verbum fuit ,menſis una in , anno undecimo in fuit Et
1 וַיְהִי בְּעַשְׁתֵּי־עֶשְׂרֵה שָׁנָה בְּאֶחָד לַחֹדֶשׁ הָיָה דְבַר־
dixit quòd eo Pro : hominis Fili : dicendo , me ad Domini
2 יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם יַעַן אֲשֶׁר־אָמְרָה
, populorum fores eſt confracta , euge , Jeruſalaim ſuper Sor
צֹּר עַל־יְרוּשָׁלִַם הֶאָח נִשְׁבְּרָה דַּלְתוֹת הָעַמִּים
Dominus dixit ſic Propterea .eſt deſerta ,me replebo,me ad ſe convertit
3 נָסַבָּה אֵלָי אִמָּלְאָה הָחֳרָבָה׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי
gentes te contra faciam aſcendere & : Sor te ſuper ego Ecce : Deus
יֱהֹוִה הִנְנִי עָלַיִךְ צֹר וְהַעֲלֵיתִי עָלַיִךְ גּוֹיִם
,Sor muros diſſipabunt Et .ſuis fluctibus mare aſcendere juxta , multas
4 רַבִּים כְּהַעֲלוֹת הַיָּם לְגַלָּיו׃ וְשִׁחֲתוּ חֹמוֹת צֹר
eam dabo & : ea ex ejus pulverem detraham & ,ejus turres deſtruẽt &
וְהָרְסוּ מִגְדָּלֶיהָ וְסִחֵיתִי עֲפָרָהּ מִמֶּנָּה וְנָתַתִּי אוֹתָהּ
.petræ læve cacumen in
לִצְחִיחַ סָלַע׃

Verſio VULG. LAT.

8 Hæc dicit Dominus Deus; Pro eo quòd dixerunt Moab & Seir; Ecce ſicut omnes Gentes, domus 9 Juda: Idcircò ecce ego aperiam humerum Moab de civitatib⁹, de civitatibus, inquam, ejus, & de finibus ejus, inclytas terræ Bethjeſimoth & Beelmeon & Caria-10 thaim, Filiis Orientis cum filiis Ammon, & dabo eam in hæreditatem: ut non ſit ultrà mẽmoria filiorum Ammon in Genti-11 bus. Et in Moab faciam judicia: & ſcient quia ego Domi-12 nus. Hæc dicit Dominus Deus; Pro eo quòd fecit Idumæa ultionem ut ſe vindicaret de filiis Juda, peccavítque delinquens, & 13 vindictam expetivit de eis, Idcircò hæc dicit Dominus Deus; Extendam manum meam ſuper Idumæam, & auferam de ea hominem & jumentum, & faciam eam deſertam ab Auſtro: & qui ſunt in Dedan, gladio cadent. 14 Et dabo ultionem meam ſuper Idumæam per manũ populi mei Iſrael: & facient in Edom juxta iram meam, & furorem meum: & ſcient vindictam meam, dicit 15 Dominus Deus. Hæc dicit Dominus Deus; Pro eo quòd fecerunt Palæſtini vindictam, & ulti ſe ſunt toto animo, interficientes, & implentes inimicitias ve-16 teres: Propterea hæc dicit Dominus Deus; Ecce ego extendam manum meam ſuper Palæſtinos, & interficiam interfectores, & perdam reliquias maritimæ re-17 gionis: Faciámque in eis ultiones magnas arguens in furore: & ſcient quia ego Dominus cùm dedero vindictam meam ſuper eos.

CAP. XXVI.

1 ET factum eſt in undecimo anno, primâ menſis, factus eſt ſer-2 mo Domini ad me, dicens; Fili hominis, pro eo quòd dixit Tyrus de Jeruſalem; Euge, confractæ ſunt portæ populorum, converſa eſt ad me: implebor, de-3 ſerta eſt. Propterea hæc dicit Dominus Deus; Ecce ego ſuper te, Tyre, & aſcendere faciam ad te gentes multas, ſicut aſcendit 4 mare fluctuans. Et diſſipabunt muros Tyri, & deſtruent turres ejus: & radam pulverem ejus de ea, & dabo eam in limpidiſſimam petram.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Τάδε λέγει (λ) κύριος, Ἀνθ᾽ ὧν εἶπε Μωὰβ, (μ) Ἰδοὺ, ὃν τρόπον πάντα τὰ 9 ἔθνη, (ν) οἶκος Ἰσραὴλ καὶ Ἰούδα; Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ παραλύω τὸν ὦμον Μωὰβ ἀπὸ (ξ) πόλεων ἀκρωτηρίων αὐτοῦ, ἐκλεκτὴν γῆν, οἶκον Βεθασιμοὺθ ἐπάνω πηγῆς πό-10 λεως παραθαλασσίας, Τοὺς υἱοὺς Κεδὲμ ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Ἀμμὼν δέδωκα αὐτῷ εἰς κληρονομίαν, ὅπως μὴ (ο) μνεία γένηται τῶν υἱῶν (π) 11 Ἀμμών. Καὶ εἰς Μωὰβ ποιήσω ἐκδίκη-12 σιν, καὶ ἐπιγνώσονται διότι ἐγὼ κύριος. Τάδε λέγει (ρ) κύριος, Ἀνθ᾽ ὧν ἐποίησεν ἡ Ἰδουμαία (σ) ἐν τῷ ἐκδικῆσαι αὐτοὺς ἐκδίκησιν εἰς τὸν οἶκον Ἰούδα, καὶ ἐμνησικάκη-13 σαν, καὶ ἐξεδίκησαν δίκην, Διατοῦτο τάδε λέγει (τ) κύριος, Καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν, καὶ (υ) ἐξολοθρεύσω ἐξ αὐτῆς ἄνθρωπον καὶ κτῆνος, καὶ θήσομαι αὐτὴν ἔρημον· καὶ ἐκ Θαιμὰν διωκόμενοι ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται. 14 Καὶ δώσω (φ) ἐκδίκησίν μου ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν ἐν χειρὶ λαοῦ μου Ἰσραὴλ, καὶ ποιήσουσιν ἐν τῇ Ἰδουμαίᾳ κατὰ τὴν ὀργήν (χ) μου καὶ κατὰ τὸν θυμόν μου, καὶ ἐπιγνώσονται τὴν 15 ἐκδίκησίν μου, λέγει κύριος. Διατοῦτο τάδε λέγει (ψ) κύριος, Ἀνθ᾽ ὧν ἐποίησαν οἱ ἀλλόφυλοι ἐν ἐκδικήσει, καὶ ἐξανέστησαν ἐκδίκησιν ἐπιχαίροντες ἐκ ψυχῆς, τοῦ 16 ἐξαλεῖψαι ἕως (ω) ἑνὸς, Διατοῦτο τάδε λέγει (α) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐκτείνω τὴν χεῖρά μου ἐπὶ τοὺς ἀλλοφύλους, καὶ (β) ἐξολοθρεύσω Κρῆτας, καὶ ἀπολῶ τοὺς καταλοίπους 17 τοὺς κατοικοῦντας τὴν (γ) παραλίαν. Καὶ ποιήσω ἐν αὐτοῖς ἐκδικήσεις μεγάλας, καὶ ἐπιγνώσονται διότι ἐγὼ κύριος, ἐν τῷ δοῦναι (δ) τὴν ἐκδίκησίν μου ἐπ᾽ αὐτούς.

MS.A. (λ) ἀδωναῒ κύριος, (μ) καὶ Σηεὶρ, Ἰδοὺ ὃν τρόπον (ν) ὁ οἶκος (ξ) τῶν πόλεων, ἀπὸ πόλεων (ο) γένηται μνεία (π) Ἀμμὼν ἐν τοῖς ἔθνεσιν. Καὶ ἐν Μωὰβ (ρ) ἀδωναῒ κύριος, (σ) τοῦ ἐκδικῆσαι (τ) ἀδωναῒ κύριος, (υ) ἐξολεθρεύσω (φ) τὴν ἐκδίκησίν (χ) τοῦ θυμοῦ μου, καὶ ἐπιγνώσονται (ψ) ἀδωναῒ κύριος, (ω) αἰῶνος, (α) ἀδωναῒ κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐκτενῶ (β) ἐξολεθρεύσω κρῆτας Σιδῶνος, καὶ (γ) παραθαλασσίαν. (δ) μετὰ τὴν

Hæc dicit Dominus; Pro eo quòd dixit (f) Moab; Ecce, (g) quomodo ſicut omnes gentes, dom⁹ Iſrael et Juda? Idcircò ecce ego diſſolvo humerum Moab de civitatibus promontoriorum ejus, electam terram, (h) domum Bethjeſimoth ſuper fontem urbis maritimæ: Filios Cedem ſuper filios Ammon dedi (i) ei in hæreditatem, ut non ſit memoria filiorum (k) Ammon. Et in Moab faciam ultionem: & cognoſcent, quoniam ego Dominus. Hæc dicit Dominus: Pro eo, quòd fecit Idumæa, in ulciſcendo ipſos (l) ultionem de domo Juda, & memoriam retinuerunt mali, et ulti ſunt ultione: Propterea hæc dicit Dominus: Et extendam manum meam ſuper Idumæam: & interficiam de ea hominem, et pecus: & ponam eam deſertum: & de Theman (m) fugientes in gladio cadent. Et dabo ultionem meam ſuper Idumæam in manu populi mei Iſrael: & facient in Idumæa juxta iram meã, & juxta furorem meum: & cognoſcent ultionem meam, dicit Dominus. Propterea hæc dicit Dominus; Pro eo, quòd fecerunt alienigenæ (n) in ultione, & ſuſcitaverunt vindictam inſultantes ex animo, ut delerent uſque (o) ad unum: Propterea hæc dicit Dominus; Ecce ego extendo manum meam ſuper alienigenas: & diſperdam (p) Creteuſes, & perdam reliquos habitantes maritimam. Et faciam in eis ultiones magnas: et cognoſcent, quia ego Dominus, cùm dedero ultionem meam ſuper eos.

ΚΕΦ. κϛʹ.

1 (α) ΚΑὶ ἐγενήθη ἐν τῷ ἑνδεκάτῳ ἔτει, μιᾷ τοῦ μηνὸς (β), ἐγένετο λόγος κυρίου 2 πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, (γ) ἀνθ᾽ ὧν εἶπε Σὸρ ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, Εὖγε συνετρίβη, ἀπόλωλε τὰ ἔθνη, ἐπεστράφη πρὸς μὲ, ἡ 3 πλήρης ἠρήμωται· Διατοῦτο τάδε λέγει (δ) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ Σὸρ, καὶ ἀνάξω ἐπὶ σὲ ἔθνη πολλὰ, ὡς ἀναβαίνει ἡ θάλασσα (ε) τοῖς κύμασιν αὐτῆς. 4 Καὶ καταβαλοῦσι τὰ τείχη Σὸρ, καὶ (ζ) καταβαλοῦσι τοὺς πύργους σου, καὶ (η) λικμήσω τὸν χοῦν αὐτῆς ἀπ᾽ αὐτῆς, καὶ δώσω (θ) αὐτὴν εἰς λεωπετρίαν.

MS.A. (α) Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ δωδεκάτῳ (β) τοῦ πρώτου, (γ) ἀνθ᾽ ὧν (δ) ἀδωναῒ κύριος, (ε) ἐν τοῖς (ζ) καθελοῦσιν (η) λικμήσουσιν (θ) σὲ εἰς

CAP. XXVI.

ET factum eſt in undecimo anno, unâ menſis, factus eſt ſermo Domini ad me, dicens; Fili hominis, pro eo quòd dixit Sor ſuper Hieruſalem; Euge, confracta eſt, periit, gentes converſæ ſunt ad me; quæ fuit plena, deſerta eſt: Propterea hæc dicit Dominus; Ecce ego ſuper te, Sor: & aſcendere faciam ſuper te gentes multas, ſicut aſcendit mare fluctibus ſuis. Et deficient muros Sor, & deſtruent turres tuas: & ventilabo pulverem ejus de ea: et dabo eam in (a) nitidiſſimam petram:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 כדנן אמר יי אלהים חלף דאמרו מואבאי ושעיר מה שנו מכל עממיא דבית יהודה :
9 בכן הא אנא תבר ית תקוף מואב מקרויהון מכרכיהון עד פציחיהון חדוות ארעהון
10 בית ישימות בעל מעון וקריתים : לבני קדם על בני עמון ואמסרנה לירותא בדיל
11 דלא יהי דכרן בני עמון בעממיא : ובמואב אעביד פורענות דינין וידעון ארי אנא יי :
12 כדנן אמר יי אלהים חלף דעבדו אדומאי בתקוף פורענות לבית יהודה וחבו חובא
13 ואתפרעו מנהון : בכן כדנן אמר יי אלהים וארים מחת גבורתי על אדום ואשיצי
14 מנה אנשא ובעירא ואתננה חורבא מדרומא ויתבי דדן בחרבא יתקטלון : ואתן ית
פורענותי באדום ביד עמי ישראל ויתמסרון ויתפרעון מן אדום כרוגזי וכחמתי וידעון
15 ית פורענותי אמר יי אלהים : כדנן אמר יי אלהים חלף דעבדו פלשתאי בדבבו
16 ויתפרעון פורענות בצפות נפש בדיל לחבלא דבבות עלם : בכן כדנן אמר יי אלהים
הא אנא מרים ית מחת גבורתי על פלשתאי ואשיצי ית עמא דחיבין לאשתיצאה
17 ואוביד ית שאר ספר ימא : ואעביד בהון פורענין רברבן בתקוף רגז וידעון ארי אנא
יי בדאתן ית פורענותי בהון :

כו

1 והוה בחדא עסרי שנין בחד לירחא הוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר 2
אדם חלף דאמרת צור על ירושלם חדוא אתברת דהוה מספקא סחורא לכל עממיא
3 אסתחרת למיתי לותי דהות מליא חריבת : בכן כדנן אמר יי אלהים הא אנא שלח
רוגזי עלך צור ואסק עלך משירית עממין סניאין כמסק ימא באתרגושת גלוהי :
4 ויחבלון שורי צור ויפגרון מגדלהא ואעקר עפרה מנה ואתן יתה לשעיעות כיף גלי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dñs Deus: Pro eo quòd dixerunt Moabitæ & Seir; In quo diffe-8 runt viri dom⁹ Juda ab omnib⁹ populis? Propterea ecce ego conteram for-9 titudinem *Moab* ex civitatibus eorum, ex arcibus eorum, uſque ad villas ipſorum, gaudium terræ eorum, Beth jeſimoth, Beelmeon & Cariathaim. Filiis Orientalib⁹ contra filios Ammon; & tradam eam in hæreditatem, ut 10 non ſit memoria filiorum Ammon in populis. Et in *Moab* faciam ultionem 11 judiciorum, & ſcient quia ego Dñs. Hæc dicit Dñs Deus: Pro eo quòd fe-12 cerunt Idumæi in furore ultionem contra domum Juda, & peccaverunt peccatum, & vindictam ſumpſerunt ex eis: Ideò hæc dicit Dñs Deus: Et leva-13 bo plagam fortitudinis meæ ſuper Idumæam, & diſperdam ex ea hominem & jumentum; & dabo eam deſertam ab Auſtro, & habitatores Dedan gladio occidentur. Et dabo ultionem meam in Idumæam per manum populi mei 14 Iſrael, *tradentúrque*: & ſument ultionem ab *Idumæa* pro furore meo, & ira mea; & ſcient ultionem meam, dicit Dñs Deus. Hæc dicit Dñs Deus: 15 Pro eo quòd fecerunt Philiſtæi hoſtiliter, & ulti ſunt ſeſe cum inſultatione animi ad diſperdendum propter inimicitiam antiquam. Propterea hæc dicit 16 Dñs Deus: Ecce ego levo plagam potentiæ meæ ſuper Philiſthæos, & diſperdam populum, qui rei ſunt, ut diſpereant; & perdam reliquias portus maris. Et faciam in eis ultiones magnas in ira furoris: & ſcient quia ego Dominus, 17 cùm dedero ultionem meam in eis.

CAP. XXVI.

ET factum eſt undecimo anno, prima [*die*] menſis, factum eſt verbum pro-1 phetiæ a facie Dñi ad me, dicens: Fili hominis, pro eo quòd dixit Tyrus 2 ſuper Jeruſalem: Euge confracta eſt quæ præbebat mercimonia omnibus populis, converſa eſt ut veniat ad me; quæ erat plena, deſerta eſt. Propterea 3 hæc dicit Dominus Deus: Ecce ego mitto furorem meum ſuper te Tyre, & aſcendere faciam contra te exercitus populorum multorum, ſicut aſcendit mare in fremitu fluctuum ſuorum. Et diſſipabunt muros Tyri, & deſtruent 4 turres ej⁹, & evellã pulverem ej⁹ ab ea: & dabo eam in politiẽ petræ apertæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܥܠ ܡܘܐܒ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܥܠ ܕܐܡܪ ܡܘܐܒ ܘܣܥܝܪ. ܗܐ ܐܝܟ ܟܠܗܘܢ
ܥܡܡܐ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܐܢܐ ܫܪܐ ܐܢܐ ܟܬܦܗ ܕܡܘܐܒ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܡܢ
ܡܕܝܢܬܗ. ܘܡܢ ܣܘܦܘܗܝ. ܫܘܒܚܐ ܕܐܪܥܐ ܕܒܝܬ ܝܫܝܡܘܬ. ܘܕܒܥܠܡܥܘܢ. ܘܕܩܪܝܬܝܡ.
* ܕܒܢܝ ܡܕܢܚܐ. ܘܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܐܬܠܝܘܗܝ ܠܝܪܬܘܬܐ. ܕܠܐ ܬܬܕܟܪ ܪܒܬ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ ܒܥܡܡܐ.
* ܘܒܡܘܐܒ ܐܥܒܕ ܕܝܢܐ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܥܠ ܐܕܘܡ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܥܠ ܕܥܒܕ ܐܕܘܡ ܦܘܪܥܢܐ ܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ: ܘܐܛܪ ܐܛܪܐ ܘܚܡ ܒܗܘܢ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܡܪܝܡ ܐܢܐ ܐܝܕܝ ܥܠ ܐܕܘܡ. ܘܡܘܒܕ ܐܢܐ
ܡܢܗ. ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. ܘܐܥܒܕܝܗ ܚܘܪܒܐ ܡܢ ܬܝܡܢ. ܘܕܕܢ. ܘܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ.
* ܘܐܥܒܕ ܦܘܪܥܢܝ ܒܐܕܘܡ. ܒܝܕ ܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܬܦܪܥܘܢ ܡܢ ܐܕܘܡ ܐܝܟ ܪܘܓܙܝ
ܘܐܝܟ ܚܡܬܝ. ܘܢܕܥܘܢ ܦܘܪܥܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܥܠ ܦܠܣܛܝܢ *
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܥܠ ܕܥܒܕܘ ܦܠܣܛܝܐ ܦܘܪܥܢܐ: ܘܐܬܦܪܥܘ ܦܘܪܥܢܐ ܒܪܓܬ
ܢܦܫܗܘܢ. ܕܢܚܒܠܘܢ ܪܚܡܘܬܐ ܕܥܠܡ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ
ܡܪܝܡ ܐܢܐ ܐܝܕܝ ܥܠ ܦܠܣܛܝܐ. ܘܡܘܒܕ ܐܢܐ ܠܟܪܬܝܐ. ܘܡܘܒܕ ܐܢܐ ܫܪܟܐ ܕܣܦܪ ܝܡܐ.
* ܘܐܥܒܕ ܒܗܘܢ ܦܘܪܥܢܐ ܪܘܪܒܐ ܒܡܟܣܢܘܬܐ ܘܒܚܡܬܐ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܡܐ
ܕܐܬܠ ܒܗܘܢ ܦܘܪܥܢܝ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܘ * ܥܠ ܨܘܪ *
* ܒܫܢܬ ܚܕܥܣܪܐ ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ. ܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܥܠ
ܕܐܡܪܬ ܨܘܪ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܐܚܐ. ܐܬܬܒܪܘ ܬܪܥܐ ܕܥܡܡܐ ܘܐܬܦܢܝܘ ܠܘܬܝ: ܘܚܪܒܬ ܘܨܕܝܬ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ. ܘܐܣܩ ܥܠܝܟܝ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ.
ܐܝܟ ܕܡܣܩ ܝܡܐ ܠܓܠܠܘܗܝ. * ܘܢܚܒܠܘܢ ܫܘܪܝܗ ܕܨܘܪ ܘܢܣܚܦܘܢ ܡܓܕܠܝܗ.
ܘܢܓܪܦܘܢ ܥܦܪܗ ܡܢܗ. ܘܐܥܒܕܝܗ ܐܝܟ ܟܐܦܐ ܫܥܝܥܬܐ.

Contra Moab. Sic ait Dominus do- 8
minorum; Quia dixit Moab & Sir, Ecce inter
omnes gentes ſunt Judæi; Iccirco ecce luxabo 9
humerum Moabi ab urbibus, ab urbibus ejus
& confinibus ejus: decus terræ Beth-aſimonis,
Belmonis, & Curiathim, Orientalium, atque 10
Ammonitarum, dabo in hæreditatem, ut nulla
maneat memoria Rabathæ Ammonitarum in- 11
ter gentes. Etiam in Moabitis exercebo judi-
cium, & experiemini me eſſe Dominum.

Contra Edom. Sic ait Dominus do- 12
minorum; Eo quod ultionem fecerit Edom
contra Judæos, odium inteſtinum conceperit,
& zelaverit in eos; Iccirco ſic ait Dominus 13
dominorum, Ecce ego ſublatâ manu meâ con-
tra Edom, perditurus ſum ex ea tam homines
quàm jumenta, eámq; redacturus in ſolitudi-
nem à Themane & Darane; & gladio concid-
det. Et exercebo ultionem meam in Edom, per 14
populum meum Iſraelem, & ultionem ſument
ab Edom ſecundùm iram meam & ſecundùm
excandeſcentiam meam, & experientur ulti-
cem meam, ait Dominus dominorum.

Contra Palæſtinam. Sic ait Dominus 15
dominorum; Quia vindictam exercuerunt Pa-
leſtini, & ſumpſerunt ultionem juxta cupidi-
tatem animi ſui, ut violarent amicitiam per-
petuam, Iccirco ſic ait Dominus dominorum, 16
Ecce levabo manum meam ſuper Paleſtinos,
& perdam Ceretæos, perdámq; reliquas oras
maritimas. Et exercebo in eos ultiones meas 17
magnas in increpatione & excandeſcentia, et
experientur me eſſe Dominum, cùm exegero
ab eis pœnas meas.

CAP. XXVI.

Contra Tyrum.

ANno undecimo, primâ *die* menſis, fuit ad 1
me ſermo Domini, dicendo, Fili hominis, 2
quia dixit Tyrus de Jeruſalem, Vivifica nos,
fractæ ſunt portæ populorum, et converſi ſunt
ad me, vaſtata et deſolata eſt: Iccirco ſic ait 3
Dominus dominorum, Ecce me contra te, et
aſcendere faciam contra te gentes multas,
quemadmodum aſcendit mare cum fluctibus
ſuis: Et vaſtabunt muros Tyri, deſtruent 4
turres ejus, et effodient ex ea pulveres ejus, et
reddam eam ut lapidem expolitum:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح الرابع عشر * النبوة في مواب * هكذا يقول ادوناي الرب
من اجل ان مواب قالت ها كمثل جميع الامم كذلك بيت اسرايل ويهودا * من اجل هذا ها
انا اخلع كتف مواب من مدن اطراف مصاريته كالارض المختان بيت باسموت * وفي ينبوع
المدينة التي علي ساحل البحر * بني كادم علي بني عمون اعطيته ميراثا * كيلا يكون ذكر
بني عمون * وفي مواب ساصنع انتقاما * ويعلمون اني انا الرب * النبوة في ادوم *
* هكذا يقول الرب ادوناي * من اجل ان ادوم صنعت عند انتقامهم انتقاما ببيت يهودا
وحقدوا وانتقموا انتقاما * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب * فامدد يدي علي ادوم
واستاصل منها الانسان والبهيمة واجعلها خرابا * والمطرودين من تامان يسقطون بالسيف * واعطي
انتقامي علي ادوم بيدي شعب اسرايل * ويصنعون كرجزي وكغضبي * ويعلمون انتقامي
يقول ادوناي الرب * النبوة في فلسطين * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب
من اجل ان الغرباء القبايل صنعت بالانتقام * واقامت انتقاما * فرحين بالنفس ليفسدوا الي
الابد * لاجل هذا هكذا يقول ادوناي الرب ها انا امدد يدي علي القبايل الغريبة
واستاصل القصاة * واهلك البقايا السكان عند ساحل البحر * واصنع فيهم انتقاما عظيما
ويعلمون اني ادوناي الرب عندما اعطي انتقامي عليهم * الفصل السادس والعشرون
* النبوة في صور * وصار في السنة الحادية عشر في اول يوم من الشهر * كان
قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * من اجل ان صور قالت علي اوروشليم نعما * كسرت
هلكت * الامم رجعت الي * المملوة اقفرت * لاجل هذا يقول ادوناي الرب ها انا عليك يا
صور * واصعد عليك امما كثيرة كما يصعد البحر بامواجه * ويخربون حيطان صور ويهدمون
بروجك * واذري ترابها عليها * واصيرها صخرة ملسا

Textus decimusquartus

Prophetia contra Moab.

Sic dicit Adonai Dominus; Quia Moab 8
dixit, Ecce quales ſunt omnes gentes,
talis domus Iſraelis & Judæ: Pro- 9
pterea en ego luxabo humerum Moabi ex
urbibus extremorum viſcerum ejus: ut
terram delectam, domum Beth aſimuth
ſitam ſuper fontem urbis quæ eſt ſecus
oras maritimas; Filiis Kedem ſuper 10
filios Ammon dedi in hæreditatem, ut
nulla ſuperſit memoria filiorum Ammon.
Etiam contra Moab exercebo vindictam, 11
& ſcietis me eſſe Dominum.

Prophetia contra Edom.

Ita dicit Dominus Adonai; Quoniam 12
Edomæi, cum ulciſcerentur, ultionem
ſumpſerunt à domo Judæ, & odium
ſervantes vindictam exegerunt: Ideò 13
ſic dicit Adonai Dominus; Extendam ma-
num meam ſuper Edom, extirpabo ex ea
hominem & jumentum, redigámque eam
in ruinam, & expulſi è Themane, gladio
concident. Et vindictam ſumam ab E- 14
dom per manus populi Iſraelitici, ut fa-
ciant ſecundùm iram meam & ſecundùm
excandeſcentiam meam: atque ita experi-
entur vindictam meam, dicit Adonai Do-
minus.

Prophetia contra Paleſtinam.

Iccircò ſic dicit Adonai Dominus; quo- 15
niam exteræ nationes ad ultionem fece-
runt, & ſuſcitaverunt ultionem, animo in-
ſultantes ut extinguerent in perpetuum;
Proptereà ſic dicit Adonai Dominus; Ecce 16
ego extendam manum meam ſuper natio-
nes exteras, extirpabo racemationem, &
perdam reliquias habitantes ad oras mari-
timas; Et exercebo in eos ultionem ma- 17
gnam: ſciéntque me eſſe Adonai Domi-
num, cùm dedero ultionem meam ſuper
ipſos.

CAP. XXVI.

Prophetia contra Sur.

F*Actum eſt autem anno undecimo, pri-* 1
mâ die menſis, ut eſſet ſermo Domini ad
me, dicens; O fili hominis, Quia Sur 2
dixit de Jeruſalem; Euge, confracta eſt,
periit, gentes converſæ ſunt ad me, quæ
plena erat incolis, deſerta eſt: Propter- 3
eà dicit Adonai Dominus; Ecce me con-
tra te O Sur, & faciam ut aſcendant
contra te gentes multæ, quemadmodum
aſcendit mare cum procellis ſuis: Et 4
deſtruent muros Sur, & demolientur tur-
res ejus: & ſpargam pulverem ejus ſuper
eam, & reddam eam ut petram læviſ-
ſimam;

יחזקאל׃ כו

ego quia ; maris medio in erit ſagenarum Extenſio
5 מִשְׁטַח חֲרָמִים תִּהְיֶה בְּתוֹךְ הַיָּם כִּי אֲנִי
direptionem in erit & : Deus Dominus dixit , ſum locutus
דִבַּרְתִּי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה וְהָיְתָה לְבַז
: occidentur gladio *in* , agro in quæ ejus *filiæ* Et .gentibus
6 לַגּוֹיִם׃ וּבְנוֹתֶיהָ אֲשֶׁר בַּשָּׂדֶה בַּחֶרֶב תֵּהָרַגְנָה
: Deus Dominus dixit ſic Quia .Dominus *ego* quòd ſcient &
7 וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי יְהוָה׃ כִּי כֹה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה
Babel regem Nebuchadreſar Sor adverſum *adducens* ego Ecce
הִנְנִי מֵבִיא אֶל־צֹר נְבוּכַדְרֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל
, equitibus in & , *curru in* & , *equo in* ,regum regem ,aquilone ab
מִצָּפוֹן מֶלֶךְ מְלָכִים בְּסוּס וּבְרֶכֶב וּבְפָרָשִׁים
: interficiet gladio in , agro in *tuas Filias* .multo populóque , cœtu &
8 וְקָהָל וְעַם־רָב׃ בְּנוֹתַיִךְ בַּשָּׂדֶה בַּחֶרֶב יַהֲרֹג
, aggerem te contra effundet & : ligneam *turrim* te contra *dabit* &
וְנָתַן עָלַיִךְ דָּיֵק וְשָׁפַךְ עָלַיִךְ סֹלְלָה
dabit ſuæ catapultæ ictum Et .ſcutum te contra faciet conſurgere &
9 וְהֵקִים עָלַיִךְ צִנָּה׃ וּמְחִי קָבָלּוֹ יִתֵּן
copia Præ .ſuis *gladiis in* deſtruet tuas turres & ; tuos muros contra
10 בְּחֹמוֹתָיִךְ וּמִגְדְּלֹתַיִךְ יִתֹּץ בְּחַרְבוֹתָיו׃ מִשִּׁפְעַת
currus & , *rotæ &* , *equitis voce* A .eorum pulvis te operiet ejus equorum
סוּסָיו יְכַסֵּךְ אֲבָקָם מִקּוֹל פָּרַשׁ וְגַלְגַּל וָרֶכֶב
introitus tanquam,tuas portas in *illo ingrediendo in* ,tui muri movebuntur
תִּרְעַשְׁנָה חוֹמוֹתַיִךְ בְּבֹאוֹ בִּשְׁעָרַיִךְ כִּמְבוֹאֵי
conculcabit ſuorum equorum ungulis In *.diruptæ* civitatis
11 עִיר מְבֻקָּעָה׃ בְּפַרְסוֹת סוּסָיו יִרְמֹס אֶת־
ſtatuæ & , occidet gladio in tuum populum : tuas plateas omnes
כָּל־חוּצוֹתָיִךְ עַמֵּךְ בַּחֶרֶב יַהֲרֹג וּמַצְּבוֹת
, *tuam facultatem* prædabuntur Et *.deſcendet* terram in tuæ fortitudinis
12 עֻזֵּךְ לָאָרֶץ תֵּרֵד׃ וְשָׁלְלוּ חֵילֵךְ
domos & , tuos muros deſtruent & ,tuam negotiationem diripient &
וּבָזְזוּ רְכֻלָּתֵךְ וְהָרְסוּ חוֹמוֹתַיִךְ וּבָתֵּי
tuum pulverem & , tua ligna & ,tuos lapides & ; *demolientur tui deſiderii*
חֶמְדָּתֵךְ יִתֹּצוּ וַאֲבָנַיִךְ וְעֵצַיִךְ וַעֲפָרֵךְ
:tuorum canticorum *turbam* faciam ceſſare Et .ponent aquarum medio in
13 בְּתוֹךְ מַיִם יָשִׂימוּ׃ וְהִשְׁבַּתִּי הֲמוֹן שִׁירָיִךְ
te *dabo* Et .amplius audietur non tuarum citharum *vox* &
14 וְקוֹל כִּנּוֹרַיִךְ לֹא יִשָּׁמַע עוֹד׃ וּנְתַתִּיךְ
:ultrà ædificaberis nec , eris ſagenarum expanſio , petræ *læve cacumen in*
לִצְחִיחַ סֶלַע מִשְׁטַח חֲרָמִים תִּהְיֶה לֹא תִבָּנֶה עוֹד
Sic .Deus Dominus dixit , ſum locutus Dominus ego quia
15 כִּי אֲנִי יְהוָה דִּבַּרְתִּי נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ כֹּה
clamando in ,tuæ ruinæ *voce* à Nónne : Sor ipſi Deus Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה לְצוֹר הֲלֹא מִקּוֹל מַפַּלְתֵּךְ בֶּאֱנֹק
? inſulæ commovebuntur ,tui medio in occiſione *occidi in* , *occiſum*
חָלָל בֵּהָרֵג הֶרֶג בְּתוֹכֵךְ יִרְעֲשׁוּ הָאִיִּים׃
removebunt & ,maris *prælati* omnes ſuis ſoliis *deſuper* deſcendent Et
16 וְיָרְדוּ מֵעַל כִּסְאוֹתָם כֹּל נְשִׂיאֵי הַיָּם וְהֵסִירוּ
tremoribus : exuent *ſuæ recamaturæ* veſtimenta & , ſua pallia
אֶת־מְעִילֵיהֶם וְאֶת־בִּגְדֵי רִקְמָתָם יִפְשֹׁטוּ חֲרָדוֹת
admirabuntur &,momenta ad *trement* & ,ſedebunt terram ſuper ,induentur
יִלְבָּשׁוּ עַל־הָאָרֶץ יֵשֵׁבוּ וְחָרְדוּ לִרְגָעִים וְשָׁמְמוּ
periſti Quomodo *:tibi* dicent & ,lamentum te ſuper aſſument Et .te ſuper
17 עָלָיִךְ׃ וְנָשְׂאוּ עָלַיִךְ קִינָה וְאָמְרוּ לָךְ אֵיךְ אָבַדְתְּ
,mari in fortis *fuit* Quæ *? laudata* urbs , maribus à habitata
נוֹשֶׁבֶת מִיַּמִּים הָעִיר הַהֻלָּלָה אֲשֶׁר הָיְתָה חֲזָקָה בַיָּם
.ej⁹ habitatorib⁹ omnib⁹ ſuũ terrorē dabant qui ,ej⁹ habitatores & ipſa
הִיא וְיֹשְׁבֶיהָ אֲשֶׁר־נָתְנוּ חִתִּיתָם לְכָל־יוֹשְׁבֶיהָ׃
quæ inſulæ terrebuntur & :tuæ ruinæ die *inſulæ* pavebunt Nunc
18 עַתָּה יֶחֶרְדוּ הָאִיִּן יוֹם מַפַּלְתֵּךְ וְנִבְהֲלוּ הָאִיִּים אֲשֶׁר־
.te *egrediendo ab* mari in
בַּיָּם מִצֵּאתֵךְ׃

Verſio VULG. LAT.

5 Siccatio ſagenarum erit in medio maris, quia ego locutus ſum, ait Dominus Deus ; & erit in di- 6 reptionem Gentibus. Filiæ quoque ejus,quæ ſunt in agro,gladio interficientur : & ſcient quia ego 7 Dominus. Quia hæc dicit Dominus Deus ; Ecce ego adducam ad Tyrum Nabuchodonoſor regem Babylonis ab Aquilone, regem regum, cum equis, & curribus, & equitibus, & cœtu, po- 8 pulóque magno. Filias tuas,quæ ſunt in agro, gladio interficiet : & circumdabit te munitionibus, & comportabit aggerem in gyro : & elevabit contra te clype- 9 um. Et vineas, & arietes temperabit in muros tuos, & turres 10 tuas deſtruet in armatura ſua. Inundatione equorum ejus operiet te pulvis eorum : à ſonitu equitum, & rotarum, & curruum, movebuntur muri tui, cùm ingreſſus fuerit portas tuas quaſi per introitum urbis diſſipatæ. 11 Ungulis equorum ſuorum conculcabit omnes plateas tuas, populum tuum gladio cædet,& ſtatuæ tuæ nobiles in terram corruent. 12 Vaſtabunt opes tuas, diripient negotiationes tuas : & deſtruent muros tuos, & domos tuas præclaras ſubvertent : & lapides tuos, & ligna tua, & pulverem tuum in medio aquarum ponent. 13 Et quieſcere faciam multitudinẽ canticorum tuorum, & ſonitus cithararum tuarum non audietur 14 ampliùs. Et dabo te in limpidiſſimam petram, ſiccatio ſagenarum eris, nec ædificaberis ultrá : quia ego locutus ſum, ait 15 Dominus Deus. Hæc dicit Dominus Deus Tyro,Numquid non à ſonitu ruinæ tuæ, & gemitu interfectorum tuorum, cùm occiſi fuerint in medio tuî, commove- 16 buntur inſulæ ? Et deſcendent de ſedibus ſuis omnes principes maris : & auferent exuvias ſuas, & veſtimenta ſua varia abjicient, & induentur ſtupore : in terra ſedebunt, & attoniti ſuper repentino caſu tuo admirabuntur. 17 Et aſſumentes ſuper te lamentum, dicent tibi;Quomodò periſti, quæ habitas in mari, urbs inclyta, quæ fuiſti fortis in mari cum habitatoribus tuis,quos for- 18 midabant univerſi ? Nunc ſtupebunt naves in die pavoris tui: & turbabuntur inſulæ in mari,eò quòd nullus egrediatur ex te.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Ψυγμὸς σαγηνῶν ἔσται ἐν μέσῳ (ι) θαλάσσης, ὅτι ἐγὼ λελάληκα, λέγει κύριος· 6 καὶ ἔσται εἰς προνομὴν (κ) τοῖς ἔθνεσιν. Καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς (λ) ἐν πεδίῳ μαχαίρᾳ ἀναιρεθήσονται, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγὼ κύριος. 7 (μ) Ὅτι τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ σὲ Σὸρ τὸν Ναβουχοδονόσορ (ν) βασιλέα Βαβυλῶνος ἀπὸ τοῦ Βορρᾶ, βασιλεὺς βασιλέων ἐστὶ, (ξ) μεθ' ἵππων καὶ ἁρμάτων καὶ (ο) ἱππέων καὶ συναγωγῆς ἐθνῶν πολ- 8 λῶν σφόδρα. Οὗτος τὰς θυγατέρας σου τὰς ἐν τῷ πεδίῳ μαχαίρᾳ ἀνελεῖ, καὶ δώσει ἐπὶ σὲ προφυλακὴν, καὶ περιοικοδομήσει, καὶ (π) ποιήσει ἐπὶ σὲ κύκλῳ (ρ) χάρακα, καὶ περίστασιν ὅπλων, καὶ τὰς λόγχας αὐτοῦ (σ) 9 ἀπέναντί σου δώσει. Τὰ τείχη σου, καὶ τοὺς πύργους σου καταβαλεῖ ἐν ταῖς μαχαίραις αὐ- 10 τοῦ. Ἀπὸ τοῦ πλήθους τῶν ἵππων αὐτοῦ (τ) κατακαλύψει σε ὁ κονιορτὸς αὐτῶν· (υ) καὶ ἀπὸ τῆς φωνῆς τῶν ἱππέων αὐτοῦ καὶ τῶν τροχῶν τῶν ἁρμάτων αὐτοῦ σεισθήσονται τὰ τείχη σου, εἰσπορευομένου αὐτοῦ τὰς πύλας σου, ὡς (φ) 11 εἰσπορευόμενος εἰς πόλιν ἐκ πεδίου. Ἐν ταῖς ὁπλαῖς τῶν ἵππων αὐτοῦ (χ) καταπατήσουσί σου πάσας τὰς πλατείας· τὸν λαόν σου μαχαίρᾳ ἀνελεῖ, καὶ τὴν ὑπόστασιν τῆς ἰσχύος 12 σου ἐπὶ τὴν γῆν κατάξει. Καὶ προνομεύσει τὴν δύναμίν σου, καὶ σκυλεύσει (ψ) τὰ ὑπάρχοντά σου, καὶ καταβαλεῖ τὰ τείχη σου, καὶ (ω) τοὺς οἴκους σου τοὺς ἐπιθυμητοὺς καθελεῖ· καὶ τοὺς λίθους σου, καὶ τὰ ξύλα σου, καὶ τὸν χοῦν σου εἰς μέσον τῆς θαλάσσης (α) σου ἐμβαλεῖ. 13 Καὶ καταλύσει τὸ πλῆθος τῶν μουσικῶν σου, καὶ ἡ φωνὴ τῶν ψαλτηρίων σου οὐ μὴ ἀκουσθῇ 14 (β) ἔτι. Καὶ δώσω σε (γ) λεωπετρίαν, ψυγμὸς σαγηνῶν ἔσῃ, οὐ μὴ οἰκοδομηθῇς ἔτι, ὅτι (*) ἐγὼ κύριος ἐλάλησα, λέγει κύ- 15 ριος. Διότι τάδε λέγει (δ) κύριος κύριος (ε) τῇ Σὸρ, Οὐκ ἀπὸ φωνῆς τῆς πτώσεώς σου, ἐν τῷ στενάξαι τραυματίας (ζ), ἐν τῷ σπάσαι μάχαιραν ἐν μέσῳ σου, σεισθήσονται αἱ 16 νῆσοι; Καὶ καταβήσονται ἀπὸ τῶν θρόνων αὐτῶν πάντες οἱ ἄρχοντες ἐκ τῶν ἐθνῶν τῆς θαλάσσης, καὶ (η) ἀφελοῦνται τὰς μίτρας ἀπὸ τῶν κεφαλῶν αὐτῶν, καὶ τὸν ἱματισμὸν τὸν ποικίλον αὐτῶν ἐκδύσονται· (θ) ἐκστάσει ἐκστήσονται, ἐπὶ (ι) γῆν καθεδοῦνται, καὶ φοβηθήσονται τὴν ἀπώλειαν αὐτῶν, καὶ στενάξουσιν 17 ἐπὶ σέ, Καὶ λήψονται ἐπὶ σὲ θρῆνον, καὶ ἐροῦσί σοι, Πῶς (κ) κατελύθης ἐκ θαλάσσης ἡ πόλις ἡ ἐπαινετή, (λ) ἡ δοῦσα τὸν φόβον αὐτῆς πᾶσι τοῖς κατοικοῦσιν αὐτήν; 18 Καὶ (μ) φοβηθήσονται αἱ νῆσοι ἀπὸ ἡμέρας πτώσεώς (ν) σου·

MS. A. (ι) τῆς θαλάσσης, ὅτι ἐγὼ ἐλάλησα, λέγει κύριος, κύριος· (κ) ἔθνεσιν. (λ) αἱ ἐν τῷ πεδίῳ μαχαίρᾳ πεσοῦνται, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. (μ) Διὰ τοῦτο τάδε λέγει ἀδωναῒ κύριος, (ν) * βασιλέα βασιλέα (ξ) μετὰ (ο) συναγωγῆς πολλῶν ἐθνῶν σφόδρα. (π) περιποιήσει (ρ) σου χάρακα καὶ βελοστάσεις ὅπλων, (σ) ἐπὶ σὲ δώσει. (τ) καλύψει (υ) ἀπὸ φωνῆς (φ) ὁ εἰσπορευόμενος (χ) καταπατήσουσιν πάσας τὰς πλατείας σου· (ψ) τὸν πλοῦτόν σου, καὶ (ω) καθελεῖ τοὺς οἴκους σου τοὺς ἐπιθυμητούς· καὶ (α) ἐμβαλεῖ. (β) ἐν σοὶ οὐκέτι. (γ) εἰς λεωπετρίαν, καὶ ψυγμὸς (*) ἐγὼ ἐλάλησα, (δ) ἀδωναῒ κύριος κύριος (ε) ἐπὶ σὲ Σὸρ, Οὐχὶ (ζ) σου, (η) καθελοῦσιν (θ) καὶ ἐκστάσει (ι) τὴν γῆν (κ) ἀπώλου καὶ κατελύθης (λ) ἥτις ἐγενήθη ἰσχυρὰ ἐν θαλάσσῃ, αὐτὴ καὶ οἱ κατοικοῦντες αὐτήν, ἡ δοῦσα (μ) νῦν φοβηθήσονται (ν) σου, καὶ ταραχθήσονται νῆσοι ἐν τῇ θαλάσσῃ ἀπὸ τῆς ἐξοδίας σου· Ὅτι

5 Siccatio ſagenarum erit in medio maris: quia ego loquutus ſum, ait Dominus. Et erit in direptionem gentibus: 6 Et filiæ ejus in campo gladio interficientur: & ſcient, quia ego Dominus. 7 Quia hæc dicit Dominus; Ecce ego adduco ad te, Sor, Nabuchodonoſor regem Babylonis ab Aquilone (rex regum eſt) cum equis, & curribus, & equitibus, & cœtu gentium multarũ valdè. 8 Hic filias tuas, quæ in campo, gladio interficiet: & dabit ſuper te propugnaculũ, & circùm ædificabit, & faciet ſuper te in circuitu vallũ, & circunſtantiam armorum: & lanceas ſuas contra te dabit: 9 Muros tuos, & turres tuas dejiciet in (b) gladiis ſuis: 10 A multitudine equorũ ejus, operiet te pulvis eorum: & à voce equitum ejus, et rotarũ curruum ejus commovebuntur muri tui; ingrediente eo portas tuas, quaſi ingrediens urbem de campo. 11 In ungulis equorũ ſuorũ conculcabunt omnes plateas tuas; populum tuum gladio interficiet: & ſubſtantiã fortitudinis tuæ in terram deducet: 12 Et deprædabitur potentiam tuam, & ſpoliabit ſubſtantiam tuam, et deſtruet muros tuos: & domos tuas deſiderabiles ſubvertet: et lapides tuos, et ligna tua, & pulverem tuum in mediũ maris (c) tui injiciet. 13 Et (d) ceſſare faciet multitudinem muſicorum tuorum: & vox pſalteriorum tuorum non audietur ampliús. 14 Et dabo te nitidiſſimam petrã: ſiccatio ſagenarum eris: non ædificaberis ultrá: quia ego Dominus loquutus ſum, ait Dominus. 15 Quia hæc dicit Dominus Dominus Sor; Nónne à voce ruinæ tuæ, cùm ingemuerint vulnerati, cùm evaginatus fuerit gladius in medio tuî, commovebuntur inſulæ, 16 Et deſcendent de ſedibus ſuis omnes principes (e) ex gentibus maris, & auferent mitras de capitibus ſuis, & veſtimento ſuo vario nudabuntur? Stupore ſtupebunt, in terra ſedebunt, et formidabunt perditionem ſuam: et gement ſuper te: 17 Et aſſument ſuper te lamentum, et dicent tibi; Quomodò (f) diſſipata es è mari urbs (g) laudata, quæ dedit timorem ſuum omnibus habitatoribus ſuis? 18 Et formidabunt inſulæ à die ruinæ (h) tuæ:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 מַשְׁטַח צַיָּדִין תְּהֵי בְּגוֹ יַמָּא אֲרֵי אֲנָא גְזָרִית בְּמֵימְרִי אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים וּתְהֵי לְבִזָּא לְעַמְמַיָּא׃
6 וְיָתְבֵי כַּפְרָנַהָא דִּי בְּחַקְלָא בְּחַרְבָּא יִתְקַטְלוּן וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ
7 אֱלֹהִים הָא אֲנָא מַיְתֵי עַל צוֹר נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא דְבָבֶל מִצִּפּוּנָא מֶלֶךְ מַלְכַיָּא בְּסוּסָוָן
8 וּבִרְתִיכִין וּבְפָרָשִׁין וּמַשְׁרְיָן וְעַם סַגִּי׃ יָתְבֵי כַּפְרָנַיִךְ דִּי בְּחַקְלָא בְּחַרְבָּא יִקְטֹל וְיִבְנֵי עֲלַיִךְ
9 כַּרְקוֹם וְיִצְבּוֹר עֲלַיִךְ מְלִיתָא וִיקִים עֲלַיִךְ דִּי מְזַיְּנִין בִּתְרֵסִין׃ וּמְחַת פַּגְוָזוֹהִי יְהֵב בְּשׁוּרַיִךְ
10 וּמִגְדְּלַיִךְ יְתָרַע בְּאַבְנֵי בַרְזְלֵיהּ׃ מֵרִפְסַת סוּסְוָתֵיהּ יְחַפִּנַּךְ אַבְקְהוֹן מִקָּל פָּרָשִׁין
וְגַלְגְּלִין וּרְתִיכִין יְזוּעוּן שׁוּרַיִךְ בְּמֵיעֲלוֹהִי בְּתַרְעַיִךְ כְּמָא דְעָלִין בְּקַרְתָּא דְמִתְרְעָא מִשּׁוּר׃
11 בְּפַרְסַת סוּסְוָתֵיהּ יְדוּשׁ יָת כָּל שׁוּקַיִךְ עַמִּיךְ בְּחַרְבָּא יִקְטֹל וְקָמַת תּוּקְפִּיךְ לְאַרְעָא יְמַגַּר׃
12 וְיִבְזוּן נִכְסַיִךְ וְיִשְׁבּוּן סְחוֹרְתִיךְ וִיפַגְּרוּן שׁוּרַיִךְ וּבָתֵּי חֶמְדְּתִיךְ יְתָרְעוּן וְאַבְנַיִךְ וְאָעַיִךְ וְעַפְרִיךְ
13 בְּגוֹ יַמָּא יְשַׁוּוּן׃ וְאַבַטֵּל אִתְרְגוּשַׁת זְמָרַיִךְ וְקָל נִגּוּן כִּנָּרַיִךְ לָא יִשְׁתְּמַע עוֹד׃
14 וְאֶתְּנִנַּךְ לִשְׁעִיעוּת כֵּיף גְּלֵי מַשְׁטַח צַיָּדִין תְּהֵי לָא תִתְבְּנֵי עוֹד אֲרֵי אֲנָא יְיָ גְזָרִית בְּמֵימְרִי
15 אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לְצוֹר הֲלָא מִקָּל מַפֶּלֶת קְטִילַיִךְ בְּנִיהוּם
16 מְטַעֲנֵי חֶרֶב כַּד יִתְרְמוֹן קְטִילִין בְּגַוִּיךְ יְזוּעוּן פְּרוּרַיָּא׃ וְיֵחֲתוּן מֵעַל כּוּרְסְוָתְהוֹן כָּל
רַבְרְבֵי יַמָּא וְיַעְדוּן יָת מְעִילֵיהוֹן וְיָת לְבוּשֵׁי צִיּוּרֵיהוֹן יִשְׁלְחוּן זִיעַ יִלְבְּשׁוּן עַל אַרְעָא
17 יִתְּבוּן וִיזוּעוּן מִן קֳדָם תְּבִירֵיהוֹן וְיִצְדּוּן עֲלַךְ׃ וִיטְּלוּן עֲלַךְ אִלְיָא וְיֵימְרוּן לִיךְ אֵיכְדֵין
אֲבַדְתְּ דַּהֲוֵית יָתְבָא בְּגוֹ יַמַּיָּא קַרְתָּא מְשַׁבַּחְתָּא דַּהֲוֵית יָתְבָא בִּתְקוֹף יַמָּא הִיא וְיָתְבָהָא
18 אֵיכְדֵין אִתְמְסַרוּ לְתַבָּר כָּל יָתְבָהָא׃ כְּעַן יְזוּעוּן פְּרוּרַיָּא בְּיוֹם מַפֶּלֶת קְטִילַיִךְ וְיִתְבַּהֲלוּן
נְגַוָתָא דִּי בְיַמָּא בְּמַפַּק גָּלוּתִיךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

5 Expanſio piſcatorum erit in medio maris, quia ego decrevi in verbo meo, dicit Dñs Deus, & erit in direptionem populis. 6 Et habitatores villarum ejus quæ ſunt in agro, gladio occidentur, & ſcient quia ego Dñs. 7 Sic enim dicit Dñs Deus : Ecce ego adducam ad Tyrum Nabuchodonoſor regem Babylonis ab Aquilone, regem regum cum equis & currib⁹ & equitib⁹ & exercitu & populo grandi. 8 Habitatores villarum tuarum quæ ſunt in agro, gladio occidet, & ædificabit contra te machinam, & comportabit contra te aggerem, & ſtatuet contra te armatos clypeis. 9 Et percuſſionem tormentorum ſuorum dabit in muros tuos, & turres tuas deſtruet lapidib⁹ ſuis ferreis. 10 Præ conculcatione equorum ej⁹ operiet te pulvis eorum ; præ voce equitum & rotarum & curruũ commovebuntur muri tui, cùm ingreſſus fuerit per portas tuas ſicut qui ingrediuntur civitatem cuj⁹ diſſipat⁹ eſt mur⁹. 11 Unguibus equorum ſuorum conculcabit omnes vicos tuos, populum tuum gladio occidet, & ſtatuas fortitudinis tuæ in terram collidet. 12 Et diripient ſubſtantiam tuam, & capient negotiationes tuas, & diſſipabunt muros tuos, & domos deſiderabiles tuas demolientur: & lapides tuos,& ligna tua & pulverem tuum in medio maris ponent. 13 Et ceſſare faciam ſonitum canticorum tuorum : & vox concent⁹ cithararũ tuarum non audietur ultrà. 14 Et dabo te in politiem petræ apertæ: expanſio piſcatorum eris ; non ædificaberis ultrà ; quia ego Dñs decrevi in verbo meo, dicit Dñs Deus. 15 Hæc dicit Dñs Deus Tyro : Nónne à voce ruinæ occiſorum tuorum, in gemitu vulneratorum gladio, quando projicientur occiſi in medio tui, commovebuntur ſuburbia ? 16 Deſcendent de ſoliis ſuis omnes principes maris, & auferent pallium ſuum, & veſtimenta ſua varii coloris ſpoliabunt ; tremore induentur, ſuper terram ſedebunt, & contremiſcent propter interitum ſuum, & deſolabuntur ſuper te. 17 Et tollent ſuper te lamentum, & dicent tibi : Quomodo periiſti, quæ habitabas in medio maris ; civitas laudabilis, quæ habitabat in fortitudine maris, ipſa & habitatores ejus ? quomodo traditi ſunt in excidium omnes habitatores ejus? 18 Nunc commovebuntur ſuburbia in die ruinæ occiſorum tuorum, & turbabuntur inſulæ quæ ſunt in mari, cùm egreſſa fuerit tranſmigratio tua.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

ܘܢܗܘܐ ܡܫܛܚܐ ܕܡܨܝܕܬܐ ܒܓܘ ܝܡܐ: ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܠܠܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܘܬܗܘܐ ܠܒܙܬܐ ܠܥܡܡܐ. * ܘܒܢܬܗ ܕܒܚܩܠܐ ܒܚܪܒܐ ܢܬܩܛܠܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠ ܨܘܪ: ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܡܠܟ ܡܠܟܐ. ܒܣܘܣܘܬܐ. ܘܒܡܪܟܒܬܐ. ܘܒܦܪܫܐ. ܘܒܟܢܫܐ ܘܒܥܡܐ ܣܓܝܐܐ. * ܒܢܬܟܝ ܕܒܚܩܠܐ. ܒܚܪܒܐ ܢܩܛܘܠ. ܘܢܩܝܡ ܥܠܝܟܝ ܕܘܩܐ. ܘܢܥܒܕ ܥܠܝܟܝ ܟܡܝܢܐ. ܘܢܩܝܡ ܥܠܝܟܝ ܣܟܪܐ. * ܘܡܚܘܬܐ ܕܪܘܡܚܘܗܝ ܢܬܠ ܒܫܘܪܝܟܝ. ܘܡܓܕܠܝܟܝ ܢܣܚܦ ܒܣܦܣܝܪܘܗܝ. * ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܪܟܫܗ ܢܟܣܝܟܝ ܥܦܪܐ. ܘܡܢ ܩܠܐ ܕܦܪܫܘܗܝ ܘܕܓܠܓܠܐ ܕܡܪܟܒܬܗ. ܢܙܘܥܘܢ ܫܘܪܝܟܝ. ܡܐ ܕܥܐܠ ܠܬܪܥܝܟܝ. ܐܝܟ ܗܘ ܕܥܐܠ ܠܡܕܝܢܬܐ ܡܬܒܙܬܐ. * ܘܒܦܪܣܬܐ ܕܪܟܫܗ ܢܕܘܫ ܟܠܗܘܢ ܫܘܩܝܟܝ. ܘܠܥܡܟܝ ܒܚܪܒܐ ܢܩܛܘܠ. ܘܩܘܡܬܐ ܕܥܘܫܢܟܝ ܠܐܪܥܐ ܬܚܘܬ. * ܘܢܒܙܘܢ ܚܝܠܟܝ. ܘܢܒܙܘܢ ܩܢܝܢܟܝ. ܘܢܣܬܘܪ ܫܘܪܝܟܝ. ܘܒܬܝܟܝ ܕܪܓܝܓܬܐ. ܘܟܐܦܝܟܝ ܘܩܝܣܝܟܝ ܘܥܦܪܟܝ ܢܪܡܘܢ ܒܓܘ ܝܡܐ. * ܘܐܒܛܠ ܣܘܓܐܐ ܕܙܡܪܝܟܝ. ܘܩܠܐ ܕܟܢܪܝܟܝ ܠܐ ܢܫܬܡܥ ܬܘܒ. * ܘܐܥܒܕܟܝ ܟܐܦܐ ܫܥܝܥܬܐ. ܘܡܫܛܚܐ ܕܡܨܝܕܬܐ. ܘܠܐ ܬܬܒܢܝܢ ܬܘܒ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܠܠܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܠܨܘܪ. ܡܢ ܩܠܐ ܕܡܦܘܠܬܟܝ ܘܡܢ ܚܫܐ ܕܩܛܝܠܝܟܝ. ܘܡܢ ܩܛܠܐ ܕܡܬܩܛܠܝܢ ܒܓܘܟܝ. ܢܙܘܥܘܢ ܓܙܪܬܐ. * ܘܢܚܬܘܢ ܡܢ ܟܘܪܣܘܬܗܘܢ ܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܐ ܕܝܡܐ. ܘܢܥܒܪܘܢ ܡܢܗܘܢ ܐܣܛܠܝܬܗܘܢ. ܘܢܫܠܚܘܢ ܡܐܢܐ ܕܫܘܒܚܗܘܢ. ܘܢܠܒܫܘܢ ܪܘܬܬܐ. ܘܢܬܒܘܢ ܥܠ ܐܪܥܐ ܘܢܬܕܡܪܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܢܝܚܘܢ * ܘܢܬܕܡܪܘܢ ܥܠܝܟܝ. ܘܢܐܠܝܢ ܥܠܝܟܝ ܐܠܝܬܐ ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܟܝ. ܐܝܟܢܐ ܐܬܚܪܒܬܝ ܥܡܘܪܬܐ ܕܝܡܡܐ. ܡܕܝܢܬܐ ܚܣܝܢܬܐ ܕܚܣܝܢܐ ܗܘܬ ܒܝܡܐ ܗܝ ܘܥܡܘܪܝܗ. ܕܝܗܒܘ ܕܚܠܬܗܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܡܟܝܠ ܢܙܘܥܘܢ ܓܙܪܬܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܦܘܠܬܟܝ. ܘܢܬܕܠܚܘܢ ܓܙܪܬܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܦܘܠܬܟܝ.

* Fiétque locus ad expandenda retia in medio 5
mari: quoniam ego locutus ſum, ait Dominus dominorum: erítque direptioni gentibus, Et filiæ ejus quæ ſunt in campo, gladio 6
trucidabuntur: & experientur me eſſe Dominum. Nam ſic ait Dominus dominorum; 7
Ecce ego aductúrus ſum contra Tyrum, Nebuchadnoſarem regem Babylonis ex Aquilone, regem regum; cum equis, curribus, &
equitibus, cúmque turba & populo copioſiſſimo. Filias tuas quæ in agro ſunt, gladio tru- 8
cidabit, eriget contra te ſpeculas, ponet adversùm te inſidias, & clypeum adversùm te
ſtatuet: Cuſpides lancearum ſuarum indet 9
muris tuis, & turres evellent gladiis ſuis. Ex 10
inceſſu equorum ejus obruet te pulvis, & præ
ſtrepitu equitum & rotarũ curruum ejus concutientur mœnia tua. Cùm ingredietur in
portas tuas, perinde erit ac ſi ingrederetur in
urbem diruptam, Et ungulis equorum ſuo- 11
rum calcabit omnes vicos tuos, populum tuum gladio trucidabit, & excelſa roboris tui
ſolo æquabit: Diripient armenta tua, & de- 12
prædabuntur poſſeſſiones tuas; muros tuos demolientur, & deſtruent domos tuas expetibiles; lapides & ligna tua, opéſque tuas in mare
projicient. Ita faciam ut ceſſet multitudo mu- 13
ſicæ tuæ, nec audiatur inpoſterum vox citharæ
tuæ: Denique redigam te in lapidem expoli- 14
tum, & locum expandendis ſagenis, & non
ædificaberis ampliùs; nam ego locutus ſum,
ait Dominus dominorum. Sic ait Dominus 15
dominorum ad Tyrum; Præ fragore ruinæ
tuæ, cruciatu confoſſorum tuorum, & cædibus
eorum qui interficientur in te, contremiſcent
inſulæ: Et deſcendentes è ſoliis ſuis omnes 16
principes maritimi, tollent à ſe ſtolas ſuas,
depoſitíſque veſtibus ornatûs ſui, induentur
tremore, humi ſedebunt, erunt attoniti, & non
requieſcent. De te ſtupebunt, & lamentati- 17
ones de te proferent, ac dicent tibi, Quomodo periiſti habitatrix marium, urbs munita
quæ fortis eras in mari cum habitatoribus tuis qui terrorem ſuum incuſſerant omnibus habitatoribus terræ! Nunc contremiſcent in- 18
ſulæ in die ruinæ tuæ, & conturbabuntur inſulæ in die caſûs tui.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

✱ ويصير مصطح شباك في وسط البحر لاني انا تكلمت ✱ يقول الرب الرب ✱ ويصير نهبا للامم
✱ وبناتها في الصحراء يقتلون ✱ ويعلمون اني انا الرب ✱ لانه هكذا يقول ادوناي الرب.
ها انا اجلب عليك يا صور بختنصر ملك بابل من الجربياء ✱ ملك الملوك هو بخيل
ومركبات وفرسان ✱ وجمع وشعوب كثير جدا ✱ هذا يقتل بناتك الذين في الصحراء
بالسيف ✱ ويعطي عليك مرقبا ✱ ويبني عليك ✱ ويضع عليك من حولك سياجا ومرامي
السلاح ✱ ويدفع حرابه عليك ✱ ويهدم اسوارك وبروجك بسيوفه ✱ ومن كثير خيوله يغشاك
غبارهم ✱ ومن صوت فرسانه وبكرات مراكبه تتزلزل اسوارك ✱ حين يدخل ابوابك كما
يدخل الى المدينة من الصحراء ✱ بحوافر خيله يدوسون جميع شوارعك ✱ ويقتل شعبك
بالسيف ✱ وينزل قوام قوتك على الارض ✱ وينهب جيشك ✱ ويغنم غناك ✱ ويهدم اسوارك
وبيوتك المشتهاة ✱ وحجارتك وخشبك ✱ ويضع ترابك في وسط البحر ✱ ويحل كثير ملاهيك
وصوت عيدانك لا يسمع فيك ايضا ✱ واصيرك صخرة ملساء ✱ تكونين مسطحا للشباك
ولا تبنين بعد ✱ لاني انا تكلمت يقول ادوناي الرب ✱ من اجل انه هكذا يقول الرب
الرب لصور اليس من صوت زلتك ✱ عند ما تنهد جرحاك ✱ عند ما يتجرد السيف في
وسطك ✱ تتزلزل الجزاير ✱ وينزل عن كراسيها جميع الرؤساء من امم البحر ✱ ويدعون
التاجات عن روسهم ✱ ويخلعون ثوبهم المنوع ✱ ويذهلون ذهلا ✱ ويقعدون على الارض ويخشون
هلاكهم ✱ ويتنهدون عليك ✱ وياخذون عليك نوحا ويقولون ✱ كيف اهلكت من البحر
ايتها المدينة الممدوحة ✱ المعظمة خوفا لكل سكانها ✱ والان تخاف الجزاير من يوم زلتك
وتضطرب الجزاير في البحر من سياقك ✱

✱ Fiétque locus pandendis retibus in medio 5
mari: quoniam ego locutus ſum, dicit Dominus Dominus; Et fiet in direptio-
✱ nem gentibus: Et filias ejus in deſerto 6
trucidabunt: ſciéntque me eſſe Dominum.
Sic enim dicit Adonai Dominus; Ecce ego 7
adducam contra te O Sur, Bochtonaſſarem regem Babilis ex Aquilone (rex regum eſt) cum equis, curribus, & equitibus, turmis,
populiſque perquam multis. Hic filias 8
tuas quæ ſunt in campo, gladio trucidabit: ponet adversùm te propugnaculum, extruet adversùm te faciétque contra te circunquaque vallum & machinas ad arma
jaculanda: Tela ſua contra te vibrabit, 9
et muros turréſque tuas gladiis ſuis evertet. Præ multitudine equorum ejus ope- 10
riet te pulvis eorum; & præ ſtrepitu equitum ejus & rotarum curruum ejus contremiſcent muri tui; quum per tuas portas intrabit acſi quis intraret in urbem è deſerto. Ungulis equorum ſuorum conculcabit 11
omnes vicos tuos, interficiet populum tuum gladio, & ſubſiſtentiam fortitudinis tuæ
in terram dejicet: Deprædabitur turmas 12
tuas, diripiet divitias tuas, evertet muros tuos & domos tuas deſiderabiles, lapides ac ligna tua, ponétque pulverem tuum in
medio mari: Summovebit multitudinem 13
inſtrumentorum muſicorum tuorum, et vox fidium tuarũ non audietur in te ampliús:
Demum reddam te petram nitidiſſimam, 14
eris locus pandendis retibus, & non ædificaberis rurſùs: quoniam ego locutus
ſum, dicit Adonai Dominus. Nam ita 15
dicit Dominus Dominus ad Sur; Nonne à ſono lapſûs tui, cùm gemuerint vulnerati tui, cùm evaginatus fuerit gladius
in medio tui; concutientur inſulæ, Et 16
deſcendent è thronis ſuis omnes principes gentium maritimarum, deponent diademata de capitibus ſuis, exuent ſe veſte ſua verſicolore, ſtupore percellentur, humi cubabunt, & exitium ſuum pertime-
ſcent? Propter te ſuſpirabunt, & la- 17
mentum de te component, ac dicent; Quomodo deſtructa es è mari O urbs celeberrima, quæ timorem incutiebas omni-
bus habitatoribus tuis: Jam verò ter- 18
rentur inſulæ à die lapſûs tui, & inſulæ in mari commoventur ob agoniam tuam!

יחזקאל : כו

,deſolatam urbem te me ponendo In : Deus Dominus dixit ſic Quia
19 כי כה אמר אדני יהוה בתתי אתך עיר נחרבת 19
te ſuper faciendo aſcendere in : habitantur non quæ civitates ſicut
כערים אשר לא־נושבו בהעלות עליך את־
cum te fecero deſcendere Et .multæ aquæ te operuerint & ,voraginem
20 תהום וכסוך המים הרבים׃ והורדתיך את־ 20
terra in te fecero collocare & , ſeculi populum ad ,lacum deſcendentibus
יורדי בור אל־עם עולם והושבתיך בארץ
non ut ,lacum deſcendentibus cum ſeculo à ſolitudinibus in ,inferorum
תחתיות בחרבות מעולם את־יורדי בור למען לא
:tu non & ,te dabo Terrores .viventiũ terra in decorem dedero & :habiteris
21 תשבי ונתתי צבי בארץ חיים׃ בלהות אתנך ואינך 21
.Deus Dominus dixit ,ſeculum in ultrà invenieris non & ,requireris &
ותבקשי ולא־תמצאי עוד לעולם נאם אדני יהוה׃

CAP. XXVII. כז

1 tolle hominis fili tu Et : dicendo me ad Domini verbum fuit Et
2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר׃ ואתה בן־אדם שא
ingreſſibus ſuper habitanti ,Sor ipſi dices Et .lamentum Sor ſuper
3 על־צר קינה׃ ואמרת לצור הישבתי על־מבואת
Dominus dixit Sic .multas inſulas ad populorum negotiatrici ,maris
ים רכלת העמים אל־איים רבים כה אמר אדני
marium corde In .pulchritudine abſoluta Ego : dixiſti tu ,Sor : Deus
4 יהוה צור את אמרת אני כלילת יפי׃ בלב ימים
Abietibus .tuum decorem perfecerunt tui Ædificatores .tui termini
5 גבוליך בניך כללו יפיך׃ ברושים
Lebanon de cedrum : tabulis omnibus cum tibi ædificaverunt Senir de
משניר בנו לך את כל־לחתים ארז מלבנון
fecerunt Baſan de Alnis .te ſuper malum faciendum ad ,tulerunt
6 לקחו לעשות תרן עליך׃ אלונים מבשן עשו
.Chitthim inſulis de ,Aſſurim filia ,dente fecerunt tuũ aſſerem :tuos remos
משוטיך קרשך עשו־שן בת־אשרים מאיי כתיים׃
tibi exiſtendum ad ,tuum velum fuit Ægypto de recamatione in Byſſo
7 שש ברקמה ממצרים היה מפרשך להיות לך
.tuũ operimentũ fuit Eliſah inſulis de purpura &,hyacintho :vexillum in
לנס תכלת וארגמן מאיי אלישה היה מכסך׃
,Sor tui Sapientes .tibi remiges fuerunt Arvad & ,Sidon Habitatores
8 ישבי צידון וארוד היו שטים לך חכמיך צור
fuerunt ejus ſapientes & ,Ghebal Senes .tui gubernatores ipſi te in fuerunt
9 היו בך המה חבליך׃ זקני גבל וחכמיה היו
fuerunt earum nautæ & ,maris naves Omnes .tuam fiſſuram roborantes te in
בך מחזיקי בדקך כל־אניות הים ומלחיהם היו
fuerunt ,Put & ,Lud & ,Paras .tuam fidejuſſionem fidejubendum ad te in
10 בך לערב מערבך׃ פרס ולוד ופוט היו
Ipſi .te in ſuſpenderũt galeam &,Scutum .tui belli viri tuo exercitu in
בחילך אנשי מלחמתך מגן וכובע תלו־בך המה
,undique tuos muros ſuper tua virtus & Arvad Filii .tuũ decorem dederunt
11 נתנו הדרך׃ בני ארוד וחילך על־חומותיך סביב
ſuper ſuſpenderunt ſua Scuta .fuerunt tuis turribus in Pygmæi &
וגמדים במגדלותיך היו שלטיהם תלו על־
Tarſis .tuam pulchritudinem perfecerunt ipſi : undique tuos muros
12 חומותיך סביב המה כללו יפיך׃ תרשיש
, ſtanno , ferro , argento in ,affluentiæ omnis multitudine à ,tuus negotiator
סחרתך מרב כל־הון בכסף ברזל בדיל
ipſi ,Meſech & , Tubal , Javan .tuis ſubſidiis dederunt plumbo &
13 ועופרת נתנו עזבוניך׃ יון תבל ומשך המה
.tuo mercatu dederunt æris vaſa & ,hominis anima in ,tui inſtitores
רכליך בנפש אדם וכלי נחשת נתנו מערבך׃

Verſio VULG. LAT.

19 Quia hæc dicit Dominus Deus; Cùm dedero te urbem deſolatã, ſicut civitates quæ non habitantur: & adduxero ſuper te abyſſum, & operuerint te aquæ multæ: 20 Et detraxero te cum his qui deſcendunt in lacum ad populum ſempiternum, & collocavero te in terra noviſſima ſicut ſolitudines veteres, cum his qui deducuntur in lacum, ut non habiteris: porrò cùm dedero gloriam in terra viventium, 21 In nihilum redigam te, & non eris, & requiſita non invenieris ultrà in ſempiternum, dicit Dominus Deus.

CAP. XXVII.

1 ET factum eſt verbum Domini 2 ad me, dicens; Tu ergò, fili hominis, aſſume ſuper Tyrum lamentũ: 3 Et dices Tyro, quæ habitat in introitu maris, negotiationi populorum ad inſulas multas: Hæc dicit Dominus Deus, O Tyre, tu dixiſti; Perfecti decoris ego 4 ſum, Et in corde maris ſita. Finitimi tui, qui te ædificaverunt, 5 impleverunt decorẽ tuum: Abietibus de Sanir extruxerunt te cum omnibus tabulatis maris: cedrum de Libano tulerunt ut facerent 6 tibi malũ. Quercus de Baſan dolaverunt in remos tuos: & tranſtra tua fecerunt tibi ex ebore Indico, & prætoriola de inſulis Ita- 7 liæ. Byſſus varia de Ægypto texta eſt tibi in velum ut poneretur in malo: hyacinthus & purpura de inſulis Eliſa facta ſunt operi- 8 mentũ tuum. Habitatores Sidonis & Aradii fuerũt remiges tui: ſapientes tui, Tyre, facti ſunt gu- 9 bernatores tui. Senes Giblii, & prudentes ejus, habuerunt nautas ad miniſterium variæ ſupellectilis tuæ: omnes naves maris, & nautæ earum, fuerunt in populo 10 negotiationis tuæ. Perſæ, & Lydii, & Libyes erant in exercitu tuo viri bellatores tui: clypeum, & galeam ſuſpenderunt in te pro 11 ornatu tuo. Filii Aradii cum exercitu tuo erant ſup muros tuos in circuitu: ſed & Pigmæi, qui erant in turribus tuis, pharetras ſuas ſuſpenderunt in muris tuis p gyrũ: ipſi compleverunt pulchri- 12 tudinem tuam. Carthaginenſes negotiatores tui, à multitudine cunctarum divitiarum, argento, ferro, ſtanno, plumbóque, reple- 13 verunt nundinas tuas. Græcia, Thubal, & Moſoch, ipſi inſtitores tui: mancipia, & vaſa ærea advexerunt populo tuo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

19 Ὅτι τάδε λέγει κύριος κύριος, Ὅταν δῶ (ξ) πόλιν ἠρημωμένην ὡς τὰς πόλεις τὰς μὴ (ο) κατοικισθησομένας, ἐν τῷ ἀναγαγεῖν με ἐπὶ σὲ τὴν ἄβυσσον, καὶ κατακαλύψῃ σε ὕδωρ πολύ, 20 Καὶ (π) καταβιβάσω σε πρὸς τοὺς καταβαίνοντας εἰς βόθρον πρὸς λαὸν αἰῶνος, καὶ κατοικιῶ σε εἰς (ρ) βάθη τῆς γῆς ὡς ἔρημον αἰώνιον μετὰ καταβαινόντων εἰς βόθρον, ὅπως μὴ κατοικηθῇς, μηδὲ (σ) 21 ἀναστῇς ἐπὶ γῆς ζωῆς, Ἀπώλειάν σε δώσω, καὶ οὐχ ὑπάρξεις ἔτι (τ) εἰς τὸν αἰῶνα, λέγει κύριος κύριος (υ).

MS.A. (ξ) σε πόλιν (ο) κατοικηθησομένας, (π) καταβιβῶ (ρ) τὰ βάθη (σ) ἀνασταθῇς (τ) καὶ ζητηθῇσῃ εἰς (υ) ὁ θεός.

ΚΕΦ. κζ΄.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μέ, λέ- 2 γων, Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου λάβε (α) ἐπὶ 3 Σὸρ θρῆνον, Καὶ ἐρεῖς τῇ Σὸρ τῇ κατοικούσῃ ἐπὶ τῆς (β) εἰσόδου τῆς θαλάσσης, τῷ ἐμπορίῳ τῶν λαῶν, ἀπὸ νήσων πολλῶν, Τάδε λέγει (γ) κύριος τῇ Σόρ, Σὺ εἶπας, Ἐ- 4 γὼ περιέθηκα ἐμαυτῇ κάλλος μου, Ἐν καρδίᾳ θαλάσσης τοῖς Βεελείμ, (δ) υἱοί σου περι- 5 έθηκάν σοι κάλλος. Κέδρος ἐκ (ε) Σενεὶρ ᾠκοδομήθη σοι, ταινίαι σανίδων (ε) κυπαρίσσων ἐκ τοῦ Λιβάνου ἐλήφθησαν, τοῦ ποιῆσαί 6 σοι ἱστοὺς ἐλατίνους, Ἐκ τῆς Βασανίτιδος ἐποίησαν τὰς κώπας σου, τὰ ἱερά σου ἐποίησαν ἐξ ἐλέφαντος, οἴκους ἀλσώδεις ἀπὸ νή- 7 σων τῶν (ζ) Χεττιείμ. Βύσσος μετὰ ποικιλίας ἐξ Αἰγύπτου ἐγένετό σοι στρωμνή, τοῦ περιθεῖναί σοι δόξαν, καὶ περιβαλεῖν σε ὑάκινθον καὶ πορφύραν ἐκ τῶν νήσων Ἐλισαί, καὶ 8 (η) ἐγένετο περιβόλαιά σου. Καὶ οἱ ἄρχοντές σου οἱ κατοικοῦντες (θ) Σιδῶνα, καὶ Ἀράδιοι ἐγένοντο κωπηλάται σου· οἱ σοφοί σου Σὸρ οἳ ἦσαν ἐν σοί, οὗτοι κυβερνῆταί σου. 9 Οἱ πρεσβύτεροι Βιβλίων, καὶ οἱ σοφοὶ αὐτῶν, (ι) οἳ ἦσαν ἐν σοί, οὗτοι ἐνίσχυον τὴν βουλήν σου· καὶ πάντα τὰ πλοῖα τῆς θαλάσσης καὶ οἱ κωπηλάται (κ) αὐτῶν ἐγένοντό σοι ἐπὶ 10 δυσμὰς δυσμῶν. Πέρσαι, καὶ Λυδοί, καὶ Λίβυες ἦσαν ἐν τῇ δυνάμει σου, ἄνδρες πολεμισταί σου πέλτας καὶ περικεφαλαίας ἐκρέμασαν ἐν σοί, οὗτοι ἔδωκαν τὴν δόξαν σου. 11 Υἱοὶ Ἀραδίων καὶ ἡ δύναμίς σου ἐπὶ τῶν τειχέων σου (λ)· φύλακες ἐν τοῖς πύργοις σου ἦσαν, τὰς φαρέτρας αὐτῶν ἐκρέμασαν ἐπὶ τῶν ὅρμων σου κύκλῳ, οὗτοι ἐτελείωσάν σου τὸ 12 κάλλος. Καρχηδόνιοι ἔμποροί σου ἀπὸ πλήθους πάσης ἰσχύος σου, ἀργύριον καὶ χρυσίον (μ) καὶ σίδηρον καὶ κασσίτερον καὶ (ν) 13 μόλιβον ἔδωκαν τὴν ἀγοράν σου. Ἡ Ἑλλάς, καὶ (ξ) ἡ σύμπασα, καὶ τὰ παρατείνοντα, (ο) οὗτοι ἐνεπορεύοντό σοι ἐν ψυχαῖς ἀνθρώπων, καὶ σκεύη χαλκᾶ ἔδωκαν τὴν ἐμπορίαν σου.

MS.A. (α) θρῆνον ἐπὶ Σόρ, (β) ὁδοῦ (γ) ἀδωναῒ κύριος κύριος ἐπὶ Σόρ, (δ) καὶ υἱοί (ε) Σανεὶρ (ε) κυπαρισσίων (ζ) Χεττιείμ. (η) περιβόλαια ἐγένετό σοι. (θ) Σιδόνα (ι) ἦσαν (κ) αὐτῆς (λ) κύκλῳ· φύλακες (μ) καὶ χαλκὸν καὶ (ν) μόλιβδον, (ξ) τὰ σύμπαντα, (ο) αὐτοὶ ἐνεπορεύονταί σοι

19 Quia hæc dicit Dominus Dominus; Cùm dedero te urbem deſolatam, ſicut civitates, quæ non habitabuntur, cùm adduxero ſuper te abyſſum, et operiet te aqua multa, 20 Et deſcendere faciam te ad eos qui deſcendunt in foveam, ad populum ſempiternum, et collocavero te in profundis terræ ſicut ſolitudinem ſempiternam cum his qui deſcendunt in foveam, ut non habiteris, neque erigaris ſuper terram vitæ, 21 In diſſipationem dabo te, et non eris (t) ultrà in ſempiternum, dicit Dominus Dominus.

CAP. XXVII.

1 ET factum eſt verbum Domini ad me, dicens; 2 Et tu, fili hominis, aſſume ſuper Sor lamentum, 3 Et dices Sor habitanti ſuper introitum maris, emporio populorum ab inſulis multis; Hæc dicit Dominus ad Sor; Tu dixiſti; Ego circumdedi mihi decorem meum, 4 In corde maris (a) ipſi Beelim: filii tui circumdederunt tibi decorem: 5 Cedrus de Senir ædificata eſt tibi: tæniæ tabularũ cypreſſi de Libano ſumptæ ſunt, ad faciendum tibi malos abiegnos: 6 De Baſanitide fecerunt remos tuos, (b) templa tua fecerunt ex ebore, domos (c) ſylveſtres de inſulis Chettiim. 7 Byſſus cum varietate de Ægypto facta eſt tibi (d) ſtratũ, ut circumdaret tibi gloriam, & operiret te hyacintho, & purpura, de inſulis Eliſæ, (e) & facta ſunt opertoria tua. 8 Et (f) principes tui, qui habitabant in Sidone, et Aradii fuerũt remiges tui. Sapientes tui, Sor qui erant in te, iſti gubernatores tui. 9 Seniores Bibliorum, & ſapientes eorum, qui erant in te, iſti confortabant conſilium tuum. Et omnes naves maris, & remiges (g) eorum facti ſunt tibi in Occidentem Occidentis. 10 Perſæ, & Lydi & Lybes erant in virtute tua, viri bellatores tui: peltas & galeas ſuſpenderunt in te: ipſi dederunt gloriam tuam. 11 Filii Aradiorum, & virtus tua ſuper muros (h) tuos: cuſtodes in turribus tuis erant: pharetras ſuas ſuſpenderunt ſuper (i) propugnacula tua per gyrum: ipſi perfecerunt decorem tuum. 12 Carthaginenſes negotiatores tui à multitudine univerſæ fortitudinis tuæ, argentũ, et aurum, et ferrũ, & ſtannum, et plumbũ dederunt forum tuum. 13 Græcia, & univerſa, & adjacentia, ipſi negotiabantur tibi in animabus hominum: et vaſa ænea dederunt mercatum tuum.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 ארי כדנן אמר יי אלהים כד אתן יתיך קריה חרבא כקרוין דלא אתותבא באסקותי
20 עלך משרית עממין דסגיאין כמי תהומא ויחפונך עממין סגיאין׃ ואחתניך עם נחתי
גוב בית אבדנא לות עמא דמעלמא ואצדנך בארעא ארעיתא בחרבתא דמעלמא עם
21 נחתי גוב בית אבדנא בדיל דלא תתיתבין ואתן חדוא בארעא דישראל׃ כדלא הוית
אתננך וכן תהי ותתבעין ולא תשכחין עוד לעלם אמר יי אלהים׃

כז

1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ ואת בר אדם טול על צור אליא׃ ותימר 2
3 לצור דיתבא על מגרש מחוזי ימא מספקא סחורא לעממיא לנגון סגיאין כדנן אמר
4 יי אלהים צור את אמרת אנא משכללא בשופרי׃ בגו ימיא תחומיך ארדכליך
5 שכלילו בנינך׃ בירון משניר בנו ליך ית כל גשרך ארזין מלבנן נסיבו למעבד
6 תורנין עלך׃ בלוטין ממתנן עבדו משוטי ספינך תרומי תרעך דפין דאשכרועין
7 מכבשין בשן דפיל בית חופאה לאתיטרון ממדינת אפוליא׃ בוץ וציורין ממצרים
8 הוה פרסיך למהוי ליך לאת תכלא וארגונא ממדינת איטליא הות כסותיך׃ יתבי
9 צידון וארוד הוו שיטין ומיתן סחורא לגויך חכימיך צור הוו ביך אנון פרנסך׃ סבי
גבל וחכימהא הוו ביך מתקפי צורכך כל נחתי ימא וספניהון הוו שיטין ומיתן סחורא
10 לגויך׃ פרסאי ולודאי ופוטאי הוו במשריתך גברי עבדי קרביך עגילין וקולסין
11 תלו ביך אנון אסגיאו זיוך׃ בני ארוד וכל משריתיך על שורך סחור סחור ואף
קפוטקאי במגדליך הוו שלטיהון תלו על שורך סחור סחור אנון שכלילו
12 שופריך׃ מן ימא מיתן סחורה לגויך מסגי כל עותר בכסף ברזל עבץ ואבר
13 יהבו בבית גנזיך׃ יון תובל ומשך אנון הגריך בנפשא דאנשא ומני נחשא מיתן
סחורה לגויך׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

19 Quia hæc dicit Dñs Deus: Cùm dedero te civitatem deſertã ſicut civitates inhabitabiles, cùm aſcendere fecero contra te exercitus populorũ multorũ, ſicut aquas abyſſi, & operient te populi multi. 20 Et deſcendere faciam te cum deſcendentibus in lacum domus perditionis ad populum qui à ſeculo eſt; & vaſtabo te in terra inferiori ſicut deſerta quæ à ſeculo ſunt, cum deſcẽdentibus in lacũ domus perditionis, ut non habiteris; & dabo gaudiũ in terra Iſrael. 21 Quaſi non fueris dabo te, & ſic eris; & quæreris, & non invenieris ultrà in æternum, dicit Dominus Deus.

CAP. XXVII.

1 ET factum eſt prophetia à facie Dñi mecum, dicens: 2 Et tu fili hominis, aſſume ſuper Tyrum lamentationem. 3 Et dices Tyro, quæ ſita eſt in vicinia portuum maris, quæ ſuppeditat negotiationem populis & inſulis multis: Hæc dicit Dñs Deus: Tyre tu dixiſti: Ego ſum perfecta in decore meo. 4 In medio marium eſt terminus tuus; architecti tui fundaverunt ædificia tua. 5 Abietibus de Sanir conſtruxerunt tibi omnes pontes tuos, cedros de Libano tulerunt ut facerent tibi malos navium. 6 Quercubus de Baſſan fecerunt remos navium tuarum, ſuperliminaria portarum tuarum ex tabulis buxinis cælatis ebore, coopertoria in theatri morem de provincia Apuliæ. 7 Byſſus & varia tinctura de Ægypto fuit tibi velum, ut eſſet tibi in ſignum. Hyacinthus & purpura de provincia Italiæ fuit operimentum tuum. 8 Habitatores Sidon & Aradii fuerunt remiges & portantes mercimonia in medium tui. Sapientes tui Tyre fuerunt in te, & ipſi fuerunt gubernatores tui. 9 Senes Gebal & ſapientes ejus fuerunt in te, providentes neceſſaria, omnes deſcendentes in mare, & nautæ eorum fuerunt remiges & portantes mercimonia in medium tui. 10 Perſæ & Lydii & Libyes erant in exercitu tuo viri bellatores tui, ſcuta & galeas ſuſpenderunt in te; ipſi multiplicaverunt ſplendorem tuum. 11 Filii Aradii & omnis exercitus tuus ſuper muros tuos in exercitu tuo, & Cappadoces in turribus tuis fuerunt; clypeos ſuos ſuſpenderunt in muris tuis per gyrum; ipſi compleverunt pulchritudinem tuam. 12 De mari adducebant mercimonia in medium tui, præ multitudine omnium divitiarum in argento, ferro, ſtanno & plumbo, quæ poſuerunt in domo theſaurorum tuorum. 13 Græcia & Tubal & Moſoch ipſi negotiatores tui in animabus hominum, & vaſa ærea adducebant in mercimonia in medium tui.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܠܨܘܪ. ܡܐ ܕܐܬܠܟܝ ܡܕܝܢܬܐ ܚܪܒܬܐ ܐܝܟ ܡܕܝܢܬܐ
ܕܠܐ ܡܬܥܡܪܢ.. ܡܣܩ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ ܬܗܘܡܐ.. ܘܢܟܣܘܢܟܝ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܐܚܬܟܝ ܥܡ
ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. ܠܘܬ ܥܡܐ ܕܥܠܡ. ܘܐܘܬܒܟܝ ܒܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ.. ܒܚܘܪܒܐ ܕܡܢ ܥܠܡ
ܥܡ ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. ܘܠܐ ܬܬܝܬܒܝܢ. ܘܠܐ ܐܬܠܟܝ ܡܩܘܡܘܬܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. * ܠܐܒܕܢܐ ܐܬܠܟܝ
ܘܬܬܒܥܝܢ.. ܘܠܐ ܬܫܬܟܚܝܢ ܬܘܒ ܠܥܠܡ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܟܙ *

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ.. ܫܩܘܠ ܐܘܠܝܬܐ ܥܠ
* ܘܐܡܪ ܠܨܘܪ ܕܝܬܒܐ ܒܡܥܠܢܐ ܕܝܡܐ. ܬܐܓܘܪܬܐ ܕܥܡܡܐ ܘܕܓܙܪܬܐ ܣܓܝܐܬܐ.. ܗܟܢܐ ܐ
ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܨܘܪ.. ܐܢܬܝ ܐܡܪܬܝ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ. * ܬܚܘܡܝܟܝ. ܒܠܒܐ ܕܝܡܡܐ
ܘܒܢܝܟܝ. ܫܟܠܠܘ ܫܘܦܪܟܝ. * ܩܝܣܐ ܘܕܦܐ ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܡܢ ܣܢܝܪ. ܘܐܪܙܐ ܡܢ ܠܒ
ܢܢ ܢܣܒܘ. ܕܢܥܒܕܘܢ ܠܟܝ ܩܠܥܐ. * ܡܢ ܒܠܘܛܐ ܕܡܬܢܢ. ܥܒܕܘ ܡܩܕܝܟܝ. ܘܦܬܘܪܝܟܝ ܥܒ
ܕܘ ܕܫܢܐ. ܕܡܝܬܝܢ ܠܟܝ ܡܢ ܟܬܝܐ. * ܘܡܢ ܡܨܪܝܢ ܕܒܘܨܐ. ܒܨܒܘܬܐ ܠܒܘܫܝܟܝ. ܘܦܪܣܘ ܠܟ
ܕܢܗܘܐ ܠܟܝ ܠܐܬܐ. ܬܟܠܬܐ ܘܐܪܓܘܢܐ. ܐܝܬܝܘ ܠܟܝ ܡܢ ܓܙܪܬܐ ܕܐܠܝܫܐ. ܠܟܣܝܟܝ. * ܝܬܒ
ܝܬܒܐ ܕܨܝܕܢ ܘܕܐܪܘܕ ܗܘܘ ܡܕܒܪܢܐ ܕܡܫܘܛܝܟܝ. ܚܟܝܡܝܟܝ. * ܣܒܐ
ܕܓܒܠ ܘܚܟܝܡܝܗ. ܗܘܘ ܕܒܟܝ ܡܚܙܩܝܢ ܒܕܩܝܟܝ. ܟܠܗܝܢ ܐܠܦܐ ܕܝܡܐ. ܘܡܠܚܝܗܝܢ. * ܦܪܣܝܐ
ܘܡܢ ܚܠܛܝܢ. ܗܘܘ ܦܪܣܝܐ ܘܠܘܕܝܐ ܘܦܘܛܝܐ. ܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ. ܗܘܘ
ܒܚܝܠܟܝ. * ܬܪܣܐ ܘܟܘܒܥܐ ܬܠܘ ܒܟܝ. ܘܗܘܘ ܫܘܒܚܟܝ. * ܒܢܝ ܐܪܘܕ ܘܚܝܠܟܝ
ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܥܠ ܫܘܪܝܟܝ. ܘܢܛܪܝܢ ܗܘܘ ܡܓܕܠܝܟܝ. ܫܠܚܝܗܘܢ ܬܠܘ ܗܘܘ ܥܠ
ܫܘܪܝܟܝ. ܘܡܫܡܠܝܢ ܫܘܦܪܟܝ. * ܬܪܫܝܫ ܐܬܪ ܬܐܓܘܪܬܟܝ. ܘܣܘܓܐܐ ܕܥܘܬܪܟܝ. ܣܐܡܐ ܘܦܪܙܠܐ. ܘܐܒܪܐ ܘܐܢܟܐ
ܥܒܕܘ ܠܟܝ ܒܙܒܢܝܟܝ. * ܝܘܢ ܘܬܘܒܠ ܘܡܘܫܟ ܬܓܪܝܟܝ. ܒܢܦܫܬܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܘܡܐܢܐ ܕܢܚܫܐ

* Sic ait Domin⁹ dominorum ad Tyrum; Cùm reddidero te urbem deſertam, ſimilem urbibus quæ non habitantur, aſcendere fecero ſuper te abyſſum, & obruerint te aquæ multæ; 19

Dejecero te cum deſcendentibus in foveam, ad populum ſempiternũ, & collocavero te in infima terra, in deſertis æternis cum deſcendentibus in foveã, fueris inhabitabilis, neque fecero tibi ſubſiſtentiam in terra viventium: 20

Excidio te tradam, requireris, nec unquam ampliùs invenieris, ait Dominus dominorum. 21

CAP. XXVII.

Deinde fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 1 Tu autem fili hominis profer lamentationem de Tyro, 2 Et dic Tyro ad maris aditum habitanti, emporio populorum & inſularum multarum: Sic ait Dominus dominorum; Tyre, tu dixiſti; Ego ſum corona gloriæ: 3 Termini tui ſunt in corde marium, & ædificatores tui perfecerunt pulchritudiné tuam: 4 Abietes & aſſeres attulére tibi de Sonir, & cedros è Libano deſumpſerunt, ut malos *navales* tibi pararent: 5 E quercubus Baiſanis parârunt remos tuos, & tranſtra tua fecerunt ex ebore de Cethæorum inſulis *advecto.* 6 Stragula byſſina ornatûs tui attulerunt ex Ægypto, ut eſſent tibi in vexillum: hyacinthum & purpuram attulêre tibi ex inſulis Eles, in operimentum tuum. 7 Habitatores Sidonis et Arud erant ductores remorum tuorum; ſapientes tui Tyre, erant naucleri tui. 8 Senes Gebelis, & periti ejus inſtaurabant *quæ* in te inſtauranda *erant*: naves omnes maris, & nautæ earum, erant de miſcellaneis *turbis* tuis. 9 Perſæ, Lydii, & Putæi viri bellatores, erant in copiis tuis: clypeos & galeas appendebant in te, erántque tibi gloriæ. 10 Arudæi & copiæ tuæ ſtabant ſuper mœnia tua, et cuſtodiebant turres tuas: pharetras ſuas ſuſpendebant ſuper muros tuos circunquaque, et pulchritudinem tuam perficiebant. 11 Tharſis locus negotiationis tuæ et multitudinis divitiarum tuarum, argentum, ferrum, ſtannum, atque plumbum advehebant tibi emendum. 12 Javan, Thubel, et Moſoch mercatores tui, pro animabus humanis et vaſis æneis, 13

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لانه هكذا يقول الرب الرب * واجعلك مدينة خربة مثل المدن الغير مسكونة * عندما اصعد
عليك العمق ويغمرك الماء الكثير * وانزلك عند النازلين في الجب * عند شعب الدهر واسكنك
في اعماق الارض مثل القفر الابدي مع النازلين في الجب * لكي لا تسكني * ولا تقومي في
ارض الحيوة * واسلمك الي الهلاك * ولا تكوني ايضا * يقول الرب الرب *

* الفصل السابع والعشرون *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * خذ في
صور نوحا * وقول لصور الساكنة على مدخل البحر * لمتجر الشعوب من جزاير كثيرة * هكذا
يقول الرب لصور * انت قلت انا وضعت على حسني * لا اجور في قلب البحر * بنوك وضعوا لك حسنا
* ارزة من سانير بنيت لك * تاجات من الواح السربين اخذت لك من لبنان * ليصنعوا لك عمدا
* من ارض بيسان صنعوا مقاديفك * صنعوا هياكلك من العاج * والبيوت الصنمية من جزاير
الهند * ارجوان مع مشوعات من مصر صار لك فرشا * ليوضع لك شرفا * سربلك الياقوت وبرفير
من جزاير اليسا صار ارديتك * ورؤساوك الساكنون صيدا والاراديون صاروا قذافيك * حكماوك
يا صور الذين كانوا فيك * هاولاء مدبروك * مشايخ الكتب وحكماوهم الذين كانوا فيك * هاولاء
قووا ارايك * وكل سفن البحر وقذافوهن * كانوا لك على مغارب المغارب * الفرس واللوديون
والليبيون كانوا في جيشك رجال محاربون * علقوا فيك نبالا وخوذا * هاولاء دفعوا شرفك * بنو
الاراديين وجيشك على اسوارك من حولك * كانوا حفظة في ابراجك * علقوا جعابهم على متاريسك
من حولك * هاولاء كملوا حسنك * الخركيذونيون تجارك من كثرة كل قوتك فضة وذهبا
ونحاسا وحديدا * واسربا ورصاصا * دفعوه في سوقك * هلس وكل حولها وما امتد اليها * هاولاء
ادوا لك بنفوس البشر * واواني نحاس دفعوا لتجارتك *

Nam ita dicit Dominus Dominus; Faciamque te urbem deſertam velut urbes haud habitatas, quum aſcendere fecero ſuper te abyſſum, & obruerint te aquæ multæ; 19 *Deduxero te apud deſcendentes in foveam, apud populum ſempiternũ, & collocavero te in profundis terræ veluti deſertum æternum cum deſcendentibus in foveam, ut non habiteris, neq; ſubſiſtas in terra vitæ;* 20 *Teque tradidero excidio, neq; fueris ampliùs, dicit Dominus Dominus.* 21

CAP. XXVII.

Rurſus fuit ſermo Domini ad me, dicens; 1 *O fili hominis, compone de Sur lamentum,* 2 *Dicaſq; ad Sur habitantem ſecus oſtium maris, emporium populorum ab inſulis multis* accedentium; 3 *Ita dicit Dominus ad Sur; Tu dixiſti, Ego impoſui mihi pulchritudinem meam: Non deſinam* fixa *in corde maris.* 4 *Filii tui comparârunt tibi decorem:* 5 *Cedrus de Sanir fabricata eſt tibi: coronæ ex aſſeribus pineis deſumptæ ſunt tibi è Libano, ut fabricarent tibi columnas:* 6 *De terra Baiſan fecerunt remos tuos, fecerunt templa tua ex ebore, & fana idolorum ab inſulis Indiæ:* 7 *Byſſus cum verſicoloribus ex Ægypto* allatis *facti ſunt tibi lecti: ut apponeretur tibi decor, induerunt te hyacintho, & purpurâ ex inſulis Eliſæ* advectâ; *facta ſunt veſtimenta tua.* 8 *Principes tui habitantes in Saida, Aradæi erant remiges tui: ſapientes tui O Sur, qui erant in te, ipſi erant gubernatores tu:* 9 *Seniores librorũ* periti, *et ſapientes eorũ qui erant in te, ii cõfirmabant cõſilia tua: & omnes naves maris, earumque remiges, erant tibi ad Occidentalẽ plagã Occidentis.* 10 *Perſæ, Lydii, & Libes erant in exercitu tuo viri belligerantes: appendebant in te ſagittas & galeas: iſti gloriam tuam* tibi *tribuerunt.* 11 *Filii Aradæorum & copiæ tuæ ſuper muros tuos circunquaq; erant excubiæ in turribus tuis: ſuſpendebant pharetras ſuas ad propugnacula tua circunquaque: iſti perficiebant pulchritudinem tuam.* 12 *Charcidonienſes mercatores tui ob multitudinem roboris tui, argentum & aurum, æs atq; ferrum, ſtannum plumbumque ſuppeditabant in foro tuo.* 13 *Hellas, omniſque circuitus ejus, & quæ ad eam ſeſe protendunt regiones, iſtæ afferebant tibi animas hominum; & vaſa ænea exponebant mercatui tuo.*

יחזקאל : כז

.tuis subsidiis dederūt mulos & , equites & , equos Togharmah domo De
14 מבית תוגרמה סוסים ופרשים ופרדים נתנו עזבוניך׃
: tuæ manus negotiatio multæ insulæ , tui negotiatores Dedan Filii
15 בני דדן רכליך איים רבים סחרת ידך
Aram .tuum honorarium reddiderunt hebena & , dentis Cornua
16 קרנות שן והובנים השיבו אשכרך׃ ארם
,purpura,carbunculo cū ,tuorū operū multitudinē propter tua negotiatrix
סחרתך מרב מעשיך בנפך ארגמן
.tuis nundinis in dederunt rubinum & ,coralliis & ,bysso & ,acupictura &
ורקמה ובוץ וראמת וכדכד נתנו בעזבוניך׃
,Minnith frumentis cum : tui institores ipsi , Israel terra & ,Jehudah
17 יהודה וארץ ישראל המה רכליך בחטי מנית
Dammesec .tuo mercatu dederunt resinam & ,oleum & ,mel & ,Pannag &
18 ופנג ודבש ושמן וצרי נתנו מערבך׃ דמשק
multitudinem propter ,tuorū operū multitudine in tua negotiatrix
סחרתך ברב מעשיך מרב
Meuzal ,Javan & ,Dan Et .alba lana & ,Chelbon vino in ,quæstus omnis
19 כל־הון ביין חלבון וצמר צחר׃ ודן ויון מאוזל
.fuit tuo foro in calamus &,Casia :nitidum ferrum dederūt tuis nundinis in
בעזבוניך נתנו ברזל עשות קדה וקנה במערבך היה׃
,Harab .currum ad ingenuitatis vestimentis in tua negotiatrix Dedan
20 21 דדן רכלתך בבגדי־חפש לרכבה׃ ערב
,agnis cum tuæ manus negotiatores ipsi ,Chedar principes universi &
וכל־נשיאי קדר המה סחרי ידך בכרים
Negotiatores .tui negotiatores eis in hircis & , arietibus &
22 ואילים ועתודים בם סחריך׃ רכלי
,aromatis omnis capite In .tui negotiatores ipsi , Rahamah & ,Seba
שבא ורעמה המה רכליך בראש כל־בשם
,Charan .tuis subsidiis dederunt auro & , pretioso lapide omni in &
23 ובכל־אבן יקרה וזהב נתנו עזבוניך׃ חרן
.tua negotiatrix Chilmad ,Assur ,Sceba negotiatores,Heden &,Channeh &
וכנה ועדן רכלי שבא אשור כלמד רכלתך׃
,recamationis & ,hyacinthi involucris in ,universitatib⁹ in tui negotiatores Ipsi
24 המה רכליך במכללים בגלומי תכלת ורקמה
.tua mercatura in cedri & ,ligatarum funibus in ;pretiosarū vestiū capsis in &
ובגנזי ברמים בחבלים חבשים וארזים במרכלתך׃
, es repleta & : tua negotiatione tuæ principes Tarsis Naves
25 אניות תרשיש שרותיך מערבך ותמלאי
te adduxerunt multas aquas In .marium corde in valde es glorificata &
26 ותכבדי מאד בלב ימים׃ במים רבים הביאוך
.marium corde in te contrivit orientalis Ventus .te agentes remis
השטים אתך רוח הקדים שברך בלב ימים׃
,tui gubernatores & ,tui nautici ,tua fidejussio ,tua subsidia & ,tuus Quæstus
27 הונך ועזבוניך מערבך מלחיך וחבליך
, tui belli viri omnes &,tuæ fidejussionis fidejussores&,tuæ rupturæ fortificatores
מחזיקי בדקך וערבי מערבך וכל־אנשי מלחמתך
,mariū corde in cadent,tui medio in qui ,tuo cœtu omni in &,te in qui
אשר־בך ובכל־קהלך אשר בתוכך יפלו בלב ימים
contremiscent tuorū rectorum clamoris sonitum Ad .tuæ ruinæ die in
28 ביום מפלתך׃ לקול זעקת חבליך ירעשו
, nautici , remum tenētes omnes suis navibus de descēdent Et .suburbana
29 מגרשות׃ וירדו מאניותיהם כל תפשי משוט מלחים
te super facient audire Et .stabunt terram ad maris gubernatores omnes
30 כל חבלי הים אל־הארץ יעמדו׃ והשמיעו עליך
, sua capita super pulverē faciēt ascēdere & :amarè clamabūt & ,sua voce in
בקולם ויזעקו מרה ויעלו עפר על־ראשיהם
se accingent & ,calvitium te ad decalvabunt Et .se conspergent cinere in
31 באפר יתפלשו׃ והקריחו אליך קרחה וחגרו
.amaro planctu ,animæ amaritudine in , te in flebunt & : saccis
שקים ובכו אליך במר־נפש מספד מר׃

Versio VULG. LAT.

14 De domo Thogorma, equos, &
equites,& mulos adduxerunt ad
15 forum tuū. Filii Dedan negotiatores
tui:insulæ multæ, negotiatio
man⁹ tuæ : dentes eburneos
& hebeninos commutaverunt in
16 pretio tuo. Syrus negotiator tu⁹
propter multitudinē operū tuorum,
gemmā,& purpurā, & scutulata,
& byssum, & sericum,&
chodchod proposuerunt in mercatu
17 tuo. Juda & terra Israel ipsi
institores tui in frumento primo,
balsamū, & mel,& oleū, & resinā
proposuerūt in nundinis tuis.
18 Damascenus negotiator tuus in
multitudine operum tuorum, in
multitudine diversarū opum, in
vino pingui , in lanis coloris optimi.
19 Dan,& Græcia,& Mosel,
in nundinis tuis proposuerunt
ferrū fabrefactū : stacte & calamus
20 in negotiatione tua. Dedan
institores tui in tapetib⁹ ad sedendū.
21 Arabia,& universi principes
Cedar, ipsi negotiatores
manûs tuæ : cum agnis, & arietibus,
& hœdis venerunt ad te
22 negotiatores tui. Venditores Saba,
& Reema, ipsi negotiatores
tui : cum universis primis aromatibus
, & lapide pretioso, &
auro, ꝙ proposuerunt in mercatu
23 tuo. Haran,& Chene,et Eden,
negotiatores tui : Saba,Assur,&
24 Chelmad, venditores tui. Ipsi
negotiatores tui multifariàm involucris
hyacinthi, & polymitorum,
gazarúmq; pretiosarū, quæ
obvolutæ et astrictæ erāt funib⁹:
cedros quoq; habebant in negotiationibus
25 tuis. Naves maris,
principes tui in negotiatione
tua : & repleta es, & glorificata
26 nimis in corde maris. In aquis
multis adduxerūt te remiges tui:
vent⁹ Auster contrivit te in corde
27 maris. Divitiæ tuæ, & thesauri
tui, et multiplex instrumentum
tuum, nautæ tui et gubernatores
tui,qui tenebant supellectilē tuā,
et populo tuo præerāt:viri quoq;
bellatores tui, qui erant in te, cū
universa multitudine tua,quæ est
in medio tuî:cadent in corde maris
28 in die ruinæ tuæ. A sonitu clamoris
gubernatorū tuorū cōturbabuntur
29 classes: Et descendent
de navib⁹ suis omnes qui tenebāt
remū: nautæ et universi gubernatores
maris in terra stabunt:
30 Et ejulabunt sup te voce magnâ,
et clamabunt amarè: et superjacient
pulverē capitib⁹ suis,et cinere
31 conspergentur. Et radent
sup te calvitiū,et accingentur ciliciis:
et plorabunt te in amaritudine
animæ ploratu amarissimo.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

14 Ἐξ οἴκου (π) Θοργαμὰ ἵπποι καὶ ἱππεῖς ἔδωκαν
15 τὴν ἀγοράν σου. Υἱοὶ (ρ) Ῥοδίων ἔμποροί
σου, ἀπὸ νήσων ἐπλήθυναν τὴν ἐμπορίαν
σου ὀδόντας ἐλεφαντίνους, καὶ τοῖς εἰσαγομένοις
16 ἀντεδίδους τοὺς μισθούς σου, Ἀνθρώπους
ἐμπορίαν σου ἀπὸ πλήθους τοῦ συμμίκτου σου,
στακτὴν καὶ ποικίλματα ἐκ Θαρσὶς, καὶ (σ) Ῥαμὸθ,
καὶ Χορχὸρ ἔδωκαν τὴν ἀγοράν σου. (τ)
17 Ἰούδας καὶ οἱ υἱοὶ τοῦ Ἰσραὴλ, οὗτοι ἔμποροί
σου, ἐν (υ) πράσει σίτου καὶ μύρων καὶ κασίας,
καὶ πρῶτον μέλι καὶ ἔλαιον καὶ ῥητίνην ἔδωκαν
18 εἰς τὸν σύμμικτόν σου. Δαμασκὸς ἔμπορός σου,
ἐκ πλήθους πάσης δυνάμεώς σου· (φ) οἶνος
ἐκ Χελβὼν, καὶ ἔρια ἐκ Μιλήτου, καὶ οἶνον εἰς
19 τὴν ἀγοράν σου ἔδωκαν. Ἐξ (χ) Ἀσὴλ σίδηρος
εἰργασμένος, καὶ τροχιὰς ἐν τῷ συμμίκτῳ
20 σου ἐστί. Δαιδὰν ἔμποροί σου, μετὰ κτηνῶν
21 ἐκλεκτῶν εἰς ἅρματα. Ἡ Ἀραβία καὶ
πάντες οἱ ἄρχοντες Κηδὰρ, οὗτοι ἔμποροί σου
διὰ χειρός σου, καμήλους (ψ) καὶ ἀμνοὺς καὶ κριοὺς
22 ἐν οἷς ἐμπορεύονταί σε. Ἔμποροι (ω)
Σαββὰ, καὶ Ῥαμμὰ, οὗτοι ἔμποροί σου, μετὰ
πρώτων ἡδυσμάτων, καὶ λίθων (α) χρηστῶν,
καὶ χρυσὸν ἔδωκαν τὴν ἀγοράν σου. (β)
23 Χαῤῥὰ, καὶ Χαναὰ, οὗτοι ἔμποροί σου· Ἀσσοὺρ
24 καὶ Χαρμὰν ἔμποροί σου, Φέροντες ἐμπορίαν
ὑάκινθον, (γ) καὶ θησαυροὺς ἐκλεκτοὺς
δεδεμένους σχοινίοις, (δ) καὶ κυπαρίσσινα.
25 Πλοῖα ἔμποροί σου, ἐν τῷ πλήθει, ἐν τῷ
συμμίκτῳ σου· καὶ ἐνεπλήσθης καὶ ἐβαρύνθης
26 σφόδρα ἐν καρδίᾳ θαλάσσης. Ἐν ὕδατι
πολλῷ ἦγόν σε οἱ κωπηλάται σου, τὸ πνεῦμα τοῦ
Νότου συνέτριψέ σε (ε) ἐν καρδίᾳ θαλάσσης.
27 Ἦσαν δυνάμεις σου, καὶ ὁ μισθός σου (ζ), καὶ τῶν
συμμίκτων σου, καὶ οἱ κωπηλάται σου, καὶ οἱ κυβερνῆταί
σου, καὶ οἱ σύμβουλοί σου, καὶ οἱ σύμμικτοί
σου ἐκ τῶν συμμίκτων σου, καὶ πάντες οἱ
ἄνδρες οἱ πολεμισταί (η) σου οἱ ἐν σοί· καὶ πᾶσα
συναγωγή σου ἐν μέσῳ σου πεσοῦνται ἐν καρδίᾳ
θαλάσσης, ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς πτώσεώς σου.
28 Πρὸς (θ) τὴν κραυγὴν τῆς φωνῆς σου οἱ κυβερνῆται
29 σου φόβῳ φοβηθήσονται. (ι) Καὶ καταβήσονται
ἀπὸ τῶν (κ) πλοίων πάντες οἱ (λ) κωπηλάται
καὶ οἱ ἐπιβάται, καὶ οἱ πρωρεῖς τῆς θαλάσσης
30 ἐπὶ (μ) τὴν γῆν στήσονται, Καὶ (ν) ἀλαλάξουσιν
ἐπὶ σὲ τῇ φωνῇ αὐτῶν, καὶ κεκράξονται (ξ) πικρὸν,
καὶ ἐπιθήσουσι (ο) γῆν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν
αὐτῶν, καὶ σποδὸν (π) στρώσονται.

14 De domo Thogarma (l) equi, & equites dederunt forū tuum. 15 Filii Rhodiorum negotiatores tui ex insulis multiplicaverunt negotiationē tuā (m) dētes elephantinos: et his, qui introducebantur, reddebas mercedes tuas. 16 (n) Homines, negotiationē tuā à multitudine commisti tui: (o) stacten, & (p) varietates ex Tharsis, et (q) Rhamoth, & Chorchor, dederunt forum tuū. 17 Judas, & filii Israel, isti negotiatores tui in venditione frumenti, & unguentorū, & casiæ: (r) & primū mel, & oleum, & resinā dederunt in commistū tuū. 18 Damasc⁹ negotiatores (s) tui ex multitudine omnis fortitudinis tuæ: vinū ex (t) Chelbon, et (u) lanas de Mileto: & (x) vinū in forū tuū dederunt. 19 Ex Asel ferrū factum opere, & rota in commisto tuo est. 20 Dedan negotiatores tui cū jumentis electis ad currus. 21 Arabia, & universi principes Cedar, ipsi negotiatores tui per manum tuā, camelos, & agnos, et arietes, in quibus negotiantur tui. 22 Negotiatores Sabba, & Ramma, ipsi negotiatores tui cum primis suavitatibus, & lapidibus (y) optimis, & aurum dederunt forum tuum. 23 Charra, & (z) Chanaa, isti negotiatores tui. (&) Assur, & Charmā negotiatores tui: 24 Ferentes negotiationē, (aa) hyacinthum, & thesauros electos funibus colligatos, & cypressina: 25 Naves, negotiatores tui in multitudine in commisto tuo. Et repleta es, & aggravata es nimis in corde maris: 26 In aqua multa adduxerunt te remiges tui: spiritus Austri contrivit te in corde maris. 27 (bb) Fuerunt virtutes tuæ, & merces tua, & commistorum tuorum, & remiges tui, & gubernatores tui, & consiliarii tui, & (cc) commisti tui ex commistis tuis, & omnes viri bellatores tui, qui in te, & omnis cœtus tuus in medio tuî cadent in corde maris, in die ruinæ tuæ. 28 Ad clamorem vocis tuæ gubernatores tui timore timebunt: 29 Et descendent de navibus omnes remiges, & epibatæ: & proretæ maris in terra stabunt, 30 Et vociferabuntur super te voce suâ, & clamabunt amare, & imponent terram super caput suū, & cinerē (dd) sternent sub.

MS. A. (π) Θοργαμὰ ἵπποις καὶ ἱππεῖς καὶ ἡμιόνους ἔδωκαν ἀγορὰν (ρ) Ἀραδίων (σ) Ῥαμμὼθ, καὶ Κορχορὺς (τ) Ἰούδα καὶ οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, (υ) σίτου πράσει (φ) οἶνον ἐκ Χεβρὼν, (χ) Ἀσαὴλ σίδηρον εἰργασμένον, καὶ τροχιὰς ἔδωκαν ἐν (ψ) καὶ κριοὺς, καὶ μόσχους ἐν οἷς ἐνεπορεύοντό σοι. (ω) Σαβὰ, καὶ Ῥαγμὰ, (α) ἐκλεκτῶν, καὶ χρυσίον (β) Χαῤῥὰν, καὶ Χαναὰν, καὶ Δαιδὰν, αὐτοὶ (γ) καὶ πορφύραν, καὶ (δ) ἐν κυπαρισσίνοις πλοίοις ἐν αὐτοῖς. Καρχηδόνιοι ἔμποροί σοι, Θαρσὸς ἔμποροί σου, ἐν τῷ πλήθει (ε) ἐμμέσῳ θαλάσσης· (ζ) ἐν τῷ συμμίκτῳ σου, οἱ (η) σου· καὶ πᾶσα ἡ (θ) τῆς φωνῆς τῆς κραυγῆς σου (ι) Καταβήσονται (κ) πλοίων αὐτῶν πάντες (λ) κωπηλάται σου (μ) τῆς γῆς (ν) ἀλαλάξονται ἐπὶ σὲ τὴν κραυγὴν αὐτῶν, (ξ) πικρῶς. (ο) ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτῶν γῆν, (π) ὑποστρώσονται.

31 Καὶ φαλακρώσουσιν ἐπὶ σὲ φαλάκρωμα, καὶ περιζώσονται σάκκον,
καὶ κλαύσονται περὶ σοῦ ἐν πικρασμῷ ψυχῆς, καὶ κοπετὸν πικρὸν ἐκκόσονται.
Καὶ λήμψονται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ממדינת גרממיא סוסון ופרשין וכודנון מיתן סחורא לגויך׃ בני דדן תגרך יתבי נגון
15 16 סגיאן מיתן סחורה לגויך בקרנין דיעלין ושן דפיל וטוסין אתיבו קורבניך׃ מן ארם
מיתן סחורא לגויך מסגי עתריך בתכריכין דארגון ורקם ובוץ ציורין ואבנין טבין
17 ומרגלין יהבו בבית גנזך׃ יהודה וארעא דישראל אנון תגרך בחטי ריחוש וקוליא
18 ודבש ומשח ושעיף יהבו בחנותיך׃ מן דמשק מיתן סחורא לגויך בסגי עתריך מסגי
19 כל עותר בחמר חילת מבשל ועמר מילת כבינא׃ ודן ויון בשירין סחורתיך מיתן
20 בערקין דברזל קדה וקנה בשם בחנותיך יהבו׃ מן דדן מיתן סחורא לגויך בלבוש
21 דיקר לרתיכין׃ ערב וכל רברבי נבט אנון תגרך בתורין ודכרין וגדין בהון הות
22 סחורתיך׃ תגרי שבא ורעמה אנון תגריך בריש כל בוסמין ובכל אבנין טבן ודהבא
23 24 יהבו בבית גנזיך׃ חרן ונציבין והדיב תגרי שבא מדינן אתור ומדי אנון תגרך׃ אנון
תגרך בגמר מני כל תושבחתא בגוזין דתכלא וכושפין דארזא באמלין די זהוריתא
דמחתין בקומטרין חפן גלדין מאסרין באטונין די בוצא חתימין בעזקת גלף עבידת
25 ימא מחתין במגדלי אעי הדסין בהון הות סחורתיך׃ בספיני ימא הוו שיטין ומיתן
26 סחורה לגויך ועתרת ותקפת לחדא בגו ימיא׃ כמיין סגיאן עלו עלך ובזו יתיך מלך
27 דתקיף כרוח קדומא תבריך בגו ימיא׃ עותריך ונכסיך סחורתיך ספניך ופרנסיך מתקפי
צורכיך ומיתן סחורת חנותיך וכל גברי עבדי קרביך די ביך וכל משריתיך די בגויך
28 29 יתרמון בגו ימיא ביום מפלת קטיליך׃ לקל צוחת פרנסיך יזועון פרוריא׃ ויחתון
30 מספיניהון כל אחדי משוט ספנין כל פרנסי ימא על ארעא יקומון׃ וישמעון עלך
31 בקלהון ויצוחון במרר ויסקון עפרא על רישיהון בקטמא יהון חפיפין׃ וימרטון עלך
מרט ויסרון סקין ויבכון עלך במריר נפש ויעבדון מספד מריר׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

De provincia Germaniæ equos & equites & mulos adducebant merces in me- 14
dium tui. Filii Dedan negotiatores tui & habitatores insularum multarum 15
adducebant merces in medium tui, in cornibus caprearum & dentibus elephantinis;
& pavones adduxerunt in munus tibi. De Syria adducebant mer- 16
cimonia in medium tui,præ multitudine divitiarum tuarum; chlamydes purpureas
& acupictas & ex bysso varii coloris, & lapides pretiosos & margaritas
posuerunt in domo thesaurorum tuorum. Juda etiam & terra Israel, ipsi 17
institores tui in tritico optimo & balsamo ; mel, oleum & resinam posuerunt
in officinis tuis. De Damasco adducebant negotiationem in medium tui, in 18
multitudine divitiarum tuarum præ multitudine omnium divitiarum in vino
dulci condito, & lana sericea subtili. Et Dan & Græcia turmatim mercimonia 19
adducebant; laminas ferreas, stacten & calamum aromaticum posuerunt
in nundinis tuis. A Dedan afferebant negotiationes in medium tui, in vestibus 20
pretiosis ad equitaturam. Arabia, & omnes principes Nebat, ipsi fuerunt 21
negotiatores tui in bob⁹ & arietib⁹ & hœdis,in quib⁹ fuit negotiatio tua. Institores 22
Saba & Raama, ipsi negotiatores tui in primariis omnium aromatū,&
in omnib⁹ lapidib⁹ pretiosis; aurum quoque posuerunt in domo thesauri tui.
Charræi,Cannæi, & Hadibæi, negotiatores Saba, provinciæ Assyria & Me- 23
dia,ipsi fuerunt negotiatores tui. Et ipsi institores tui in absolutissimis omnis 24
generis rebus eximiis, palliis hyacinthinis, & scriniolis cedrinis,chlamydibus
coccineis, quæ repositæ sunt in capsellis coopertis pellibus & ligatis funibus
byssinis & signatis annulo sculptorio, opere marino, positis in turribus myrtinis
, in quibus fuit negotiatio tua. Navibus maris fuerunt remiges addu- 25
centes negotiationem in mediū tui; & dives & potens evasisti nimis in medio
mariū. *Ut aquæ multæ* venerunt contra te *ac* diripuerunt te:rex qui fortis est 26
sicut vent⁹ orientalis contrivit te in medio mariū. Divitiæ tuæ & substantia 27
tua,& negotiatio tua, nautæ tui, & gubernatores tui providentes necessaria
tua, & inferentes negotiationes in tabernas tuas, & omnes viri bellatores tui
qui apud te sunt,& omnes exercitus tui qui sunt in medio tui,projicientur in
mediū maris in die ruinæ occisorū tuorū. Ad vocē clamoris gubernatorū tu- 28
orum commovebuntur suburbia. Et descendent de navib⁹ suis omnes tenen- 29
tes remum ; nautæ & omnes gubernatores maris sup terram stabunt. Et au- 30
dire facient sup te vocem suam, & clamabunt amarè & imponent pulverem
sup capita sua, & cinere operientur. Et radent sup te calvitium, & accingentur saccis, & plorabunt super te in amaritudine animæ, & agent super te planctū amarum. 31

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܢ ܒܝܬ ܬܘܓܪܡܐ. ܘܪܟܫܐ ܘܦܪܫܐ ܘܟܘܕܢܝܐ ܝܗܒܘ ܠܟܝ ܒܙܒܢܐ. * ܒܢܝ ܕܪܢ
ܬܓܪܝܟܝ. ܘܓܙܪܬܐ ܣܓܝܐܬܐ ܐܬܪܐ ܕܬܐܓܘܪܬܐ ܕܐܝܕܝܟܝ. ܩܪܢܬܐ ܕܡܫܚܐ. ܘܠܒܘܢܬܐ
ܝܗܒܘ ܠܟܝ ܡܘܗܒܬܐ. * ܐܕܘܡ ܐܬܪܐ ܕܬܐܓܘܪܬܟܝ ܘܣܘܓܐܐ ܕܥܒܕܝܟܝ. ܐܪܓܘܢܐ ܘܒܘܨܐ
ܘܨܒܥܐ ܘܬܟܠܬܐ. ܘܫܐܪܝܐ ܘܦܘܠܡܛܐ ܝܗܒܘ ܠܟܝ ܒܙܒܢܐ. * ܝܗܘܕܐ ܘܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ.
ܗܢܘܢ ܐܢܘܢ ܬܓܪܝܟܝ. ܚܛܐ ܘܪܙܐ ܘܕܘܚܢܐ ܘܕܒܫܐ ܘܡܫܚܐ ܘܩܛܘܦܐ. ܝܗܒܘ ܠܟܝ
ܒܙܒܢܐ. * ܕܪܡܣܘܩ ܐܬܪܐ ܕܬܐܓܘܪܬܟܝ ܘܣܘܓܐܐ ܕܥܒܕܝܟܝ. ܘܣܘܓܐ
ܕܥܘܬܪܐ. ܚܡܪܐ ܕܚܠܒܘܢ. ܘܥܡܪܐ ܚܘܪܐ. * ܕܢ ܘܝܘܢ. ܡܢ ܐܘܙܠ ܝܗܒܘ ܠܟܝ ܒܙܒܢܐ. ܦܪܙܠܐ ܕܢܥܒܕܘܢ
ܩܣܝܐ ܘܩܢܝܐ. ܝܗܒܘ ܠܟܝ ܒܙܒܢܐ. * * ܕܪܢ ܐܬܪܐ ܕܬܐܓܘܪܬܟܝ. ܝܗܒܘ ܠܟܝ ܣܘܓܐܐ
ܕܒܥܝܪܐ ܓܡܝܪܐ. ܘܕܟܪܐ ܘܐܡܪܐ ܘܓܕܝܐ ܝܗܒܘ ܠܟܝ. * ܬܓܪܐ ܕܫܒܐ ܘܕܪܥܡܐ. ܒܣܡܐ
ܓܒܝܐ ܘܟܐܦܐ ܝܩܝܪܬܐ. ܘܕܗܒܐ ܝܗܒܘ ܠܟܝ ܒܙܒܢܐ. * ܚܪܢ ܘܟܢܐ ܘܥܕܢ ܬܓܪܝ ܫܒܐ.
ܘܐܬܘܪ ܐܬܪܐ ܕܬܐܓܘܪܬܟܝ. * ܗܠܝܢ ܐܢܘܢ ܬܓܪܝܟܝ. ܕܡܝܬܝܢ ܠܟܝ ܡܐܢܐ ܕܬܟܠܬܐ
ܘܕܨܒܥܐ. ܘܣܝܡܬܐ ܓܒܝܬܐ ܐܣܝܪܢ ܒܚܒܠܐ ܘܒܐܠܦܐ ܕܟܘܪܐ. * ܒܢܝ ܬܪܫܝܫ
ܕܥܡܪܝܢ ܒܡܥܪܒܟܝ. ܝܗܒܘ ܠܟܝ ܛܥܘܢܐ. ܘܐܬܡܠܝܬܝ ܘܐܬܥܫܢܬܝ ܛܒ ܛܒ. * ܘܒܠܒܐ
ܕܝܡܡܐ ܘܒܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܐܥܠܘܟܝ ܕܐܚܝܕܝܢ ܡܫܘܛܐ. ܪܘܚܐ ܕܩܕܘܡܐ ܬܒܪܬܟܝ ܒܠܒܐ ܕܝܡܡܐ.
* ܘܥܘܬܪܟܝ ܘܬܐܓܘܪܬܟܝ ܕܡܢ ܡܥܪܒܟܝ. ܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܡܩܒܠܢܝܟܝ ܘܡܠܚܝܟܝ ܘܡܚܝܕܝ
ܒܕܩܝܟܝ ܕܡܢ ܡܥܪܒܟܝ. ܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܡܩܒܠܢܝܟܝ. ܘܟܠܗ ܟܢܫܟܝ ܕܒܓܘܟܝ
ܢܦܠܘܢ ܒܠܒܐ ܕܝܡܡܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܦܘܠܬܟܝ. * ܠܩܠܐ ܕܩܥܬܐ ܕܡܠܚܝܟܝ ܢܙܘܥܘܢ
ܚܕܪܝܟܝ. * ܘܢܚܬܘܢ ܡܢ ܐܠܦܝܗܘܢ ܟܠܗܘܢ ܕܐܚܝܕܝܢ ܡܫܘܛܐ. ܘܡܠܚܐ ܘܟܠܗܘܢ
ܡܠܚܝ ܝܡܐ. ܥܠ ܐܪܥܐ ܢܩܘܡܘܢ. * ܘܢܝܠܠܘܢ ܥܠܝܟܝ ܒܩܠܐ ܪܒܐ ܘܡܪܝܪܐ. ܘܢܪܡܘܢ
ܥܦܪܐ ܥܠ ܪܫܝܗܘܢ. ܘܢܬܦܠܦܠܘܢ ܒܩܛܡܐ. * ܘܢܓܪܘܢ ܥܠܝܟܝ ܪܫܝܗܘܢ
ܘܢܐܣܪܘܢ ܣܩܐ. ܘܢܒܟܘܢ ܥܠܝܟܝ ܒܡܪܝܪܘܬ ܡܪܩܕܐ.

* E regione Togormæ equos, equitéſque, ac 14
mulos afferebant ad te emendos. Filii Daranis 15
mercatores tui, & inſulæ multæ, locus negotiationis
manuum tuarum; cornua olei, &
incenſum afferebant tibi munus. Edom loc⁹ 16
negotiationis tuæ & multitudinis operũ tuorum,
purpuram, byſſum, *pannum* verſicolorẽ,
hyacinthinum, ſericum, & acupictum advehebant
tibi emendum. Judæa & terra Iſraelitica, 17
ipſi ſunt mercatores tui: frumentum, oryzam,
milium, mel, oleum, & reſinam afferebant
tibi ad nundinas. Damaſcus erat emporium 18
tuum, multitudo negotiorum tuorum, &
copia diviciarum tuarum; quoad vinum, adipem,
& lanam candidam. Dan & Javan ex 19
Uzel advehebant tibi nundinatum ferrum, ut
fabrefaceres: & caſias calamóſque afferebant 20
tibi ad nundinas: Daran emporium tuum 21
aſportabant ad te multitudinem jumentorum
integerrimorum: & arietes, agnos, hœdóſque
aſportabant ad te. Mercatores Sabæ & Raamæ, 22
aromata egregia, lapides optimos, & aurum
afferebant tibi nundinatum. Haran, 23
Channe, & Aden, mercatores Sabæ, & Aſſur
locus negotiationis tuæ; Hi erant mercatores 24
tui, qui advehebant ad te veſtes hyacinthinas
& verſicolores, & theſauros optimos
funib⁹ alligatos, & navibus abiegnis *incluſos*.
Filii Tharſis qui *jacent* ad plagã tuã Occidentalẽ, 25
afferebant ad te ſarcinas, & perquã plena
ac potens evaſiſti maximé. In cor marium & 26
aquas multas induxerũt te qui regebãt remos
tuos: vent⁹ calid⁹ confregit te in corde mariũ:
Opes tuæ & merces tua, quæ ex plaga tua Oc- 27
cidentali *afferebãtur*, oẽs lectiſſimi bellatores
tui, nautæ tui, inſtauratores eorũ quæ in te inſtauranda
erãt, qui *jacent* ab Occidentali plaga
tua; omnes viri tui belligeri, totúſque cœt⁹ qui
eſt in te, cadent in cor mariũ die caſûs tui. Ad 28
vocẽ clamoris nautarũ tuorũ contremiſcent
quæ circa te ſunt: Deſcendent de navib⁹ ſuis 29
omnes remiges; & naucleri omnéſque nautæ
maris in terra conſiſtent: Et ululabunt ſup te 30
clamore ingenti & acerbo, imponent pulverem
capitibus ſuis, & volutabunt ſe in cinere:
Tondebunt ſuper te capita ſua, accingent ſe 31
ciliciis, acerbè te deflebunt cum planctibus:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* من بيت ترغاما خيلا وفرسانا وبغالا دفعوا لسوقك * بنو الروديين تجارك من الجزاير
اكثروا تجارتك * الانياب العاج والابنوس يساوون * عوضت للمساقين اجرك * اناسا * تجارتك
من كثرة خلطك * ميعه ومرقومات من ترشيش ورموث وخرخور * دفعوا لسوقك *

* الاصحاح الخامس عشر *

* يهودا وبنو اسرائيل * هولاء تجارك ببيع الحنطة * اطيابا وسليخة * واوايل العسل * والزيت
والعلكوبيه * دفعوا لخلطك * دمشق تجارك من كثرة جيشك * خمرا من سلبون وصوفا من
ميليطس * وخمرا اعطوه لسوقك من ازيل * حديد معمول * وبكن هي في خلطك * ددان
تجارك ببهايم مختارة للمركبات * ارابيا وجميع روساء قيدار هولاء تجار بيدك * دخلوا فيك
بجمال وكباش وحملان * تجار سابا ورعما * هولاء تجارك باوايل الاطياب والاحجار الطيبة * واعطوا
ذهبا لسوقك * حران وحنا * هولاء تجارك * الموصل وحرمان تجارك * يحملون تجارة * ياتوا بحلل
نحاسن * محرومة بحبال في سفن سربينيه * الخركيدونيون تجارك بيسار تجارك في خلطك
وامتليت وثقلت جدا في قلب البحر * في ماء كثير ساقوا قذافوك * ريح الجنوب
كسرتك في قلب البحر * كانت جيوشك واجرتك * ومن خلطتك قذافوك
ومدبروك * واصحاب اساراتك * وخلطوك * من خلطتك * وجميع رجالك محاربوك فيك
وكل جمعك في وسطك يسقطون في قلب البحر في يوم سقطتك * بصرخة صوتك مدبروك
يخافوا خوفا * وينحدرون عن سفنهم * وجميع قذافيك * وركابك ورؤساء البحر * يقفون على
الارض * ويبدلون صوتهم عليك * ويتصارخون بمرارة * ويضعون التراب على روسهم
ويفترشون الرماد *

De domo Thorgama equos, equiteſque, & 14
mulos ſuppeditabant nundinis tuis. Filii 15
Rhodiorum negotiatores tui, ex inſulis
multiplicaverunt merces tuas: dentes
eburnei & opificia advehebantur: reddidiſti
iis qui adducebantur, mercedem tuam,
Homines, negotiationem tuam ex mul- 16
titudine commixti tui: ſtacten & veſtes
virgatas è Tharſis, & Ramoth, & Chorchor,
afferebant ad nundinas tuas.

Textus decimus quintus.

Juda & filii Iſraelis, hi erant mercatores 17
tui in vendendo frumento: odores, & caſiam,
præſtantiſſima mellis, oleum, atque
reſinam ſuppeditabant commixto tuo.
Damaſcus mercatores tui, propter multitu- 18
dinem exercitûs tui, vinum de Scelbon, &
lanam de Mileto, & vinum afferebant ad
nundinas tuas ex Aiil: Ferrum fabre- 19
factum & rota eſt in commixto tuo. De- 20
dan mercatores tui accedebant *cum jumentis*
delectiſſimis ad currus. Arabia & 21
omnes principes Cedar, iſti negotiatores
ad manum tuam inferebant in te camelos,
arietes, & agnos. Mercatores Sabæ et 22
Ragmæ, hi erant negotiatores tui pro odoribus
& lapidibus optimis, & aurum
ſuppeditabant foro tuo. Harran & Han- 23
na, iſti erant negotiatores tui. Mauſel
& Charman negotiatores tui, Adve- 24
hentes merces, hyacinthum theſaureſque
delectos funibus alligatos, navibus cypreſſinis.
Charcidonii mercatores tui cum 25
opulentia, mercatores tui in commiſto tuo:
Denique plena ſumméque gravis facta es
in corde maris. In aquam multam de- 26
duxerunt te remiges tui: ventus Auſtralis
confregit te in corde maris. Fuerunt 27
exercitus tui, & merces tua, et ex commiſtis
tuis; remiges tui, et gubernatores tui,
et conſiliarii tui, et commiſti tui ex commiſtis
tuis, omneſque viri tui bellatores
tui in te, et omnis cœtus tuus in medio
tui cadent in cor maris, die caſûs tui. Ad 28
clamorem vocis tuæ gubernatores tui
formidine perculſi, Deſcendent è navibus 29
ſuis: et omnes remiges tui, et conſcenſores
tui, ac principes maris in terra conſiſtent,
Et mutantes vocem ſuam cauſâ tui, 30
exclamabunt amarè, imponent pulverem
capitibus ſuis, ſternent cinerem:

Quæ:te ſuper *lamentabuntur* &,lamentum,*ſuis querimoniis in* te ad *tollent* Et
32 וְנָשְׂאוּ אֵלַיִךְ בְּנִיהֶם קִינָה וְקוֹנְנוּ עָלַיִךְ מִי
,maribus de *tua ſubſidia egrediendo In* ? maris medio in ſuccisa ſic,Sor ſicut
33 כְצוֹר כְּדֻמָה בְּתוֹךְ הַיָּם׃ בְּצֵאת עִזְבוֹנַיִךְ מִיַּמִּים
lucri emporiorum &,tui lucri multitudine *in* : multos populos ſaturabas
הִשְׂבַּעַתְּ עַמִּים רַבִּים בְּרֹב הוֹנַיִךְ וּמַעֲרָבַיִךְ
,aquarũ profundis in,maribus à contrita Tempore .terræ reges ditâſti
34 הֶעֱשַׁרְתְּ מַלְכֵי־אָרֶץ׃ עֵת נִשְׁבֶּרֶת מִיַּמִּים בְּמַעֲמַקֵּי־מָיִם
habitatores Univerſi .cadent tui medio in tu° cœtus omnis &,*tuũ emporiũ*
35 מַעֲרָבֵךְ וְכָל־קְהָלֵךְ בְּתוֹכֵךְ נָפָלוּ׃ כֹּל יֹשְׁבֵי
, *crine horripilaverunt* earum reges & ,te ſuper obſtupuerunt ,inſularum
הָאִיִּים שָׁמְמוּ עָלַיִךְ וּמַלְכֵיהֶם שָׂעֲרוּ שַׂעַר
.te ſuper ſibilaverunt populis in Negotiatores *.faciebus ſunt turbati*
36 רָעֲמוּ פָּנִים׃ סֹחֲרִים בָּעַמִּים שָׁרְקוּ עָלָיִךְ
.ſeculum in uſque *tu* non &,fuiſti *Terrores*
בַּלָּהוֹת הָיִית וְאֵינֵךְ עַד־עוֹלָם׃

CAP. XXVIII. כח

duci Dic ,hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם אֱמֹר לִנְגִיד
,dixiſti &,tuum cor eſt elevatũ ꝑ eo Pro : Deus Dominus dixit Sic : Sor
צֹר כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה יַעַן גָּבַהּ לִבְּךָ וַתֹּאמֶר
,homo tu & : marium medio in , ſedi Dei cathedra ,ego Deus
אֵל אָנִי מוֹשַׁב אֱלֹהִים יָשַׁבְתִּי בְּלֵב יַמִּים וְאַתָּה אָדָם
ſapiens Ecce .Dei cor tanquam tuum cor *dediſti* & , Deus non &
3 וְלֹא־אֵל וַתִּתֵּן לִבְּךָ כְּלֵב אֱלֹהִים׃ הִנֵּה חָכָם
,tua ſapientia In .te *latuerunt* non abſconditum Omne ? Daniele *præ* tu
4 אַתָּה מִדָּנִאֵל כָּל־סָתוּם לֹא עֲמָמוּךָ׃ בְּחָכְמָתְךָ
argentum & aurum *feciſti & :facultatem* tibi *feciſti* tua intelligentia in &
וּבִתְבוּנָתְךָ עָשִׂיתָ לְּךָ חָיִל וַתַּעַשׂ זָהָב וָכֶסֶף
tua negotiatione in ,tuæ ſapientiæ multitudine *In* .tuis theſauris in
5 בְּאוֹצְרוֹתֶיךָ׃ בְּרֹב חָכְמָתְךָ בִּרְכֻלָּתְךָ
Propterea .*tua facultate in* tuũ cor eſt elevatum & *:tuã facultatẽ* multiplicâſti
6 הִרְבִּיתָ חֵילֶךָ וַיִּגְבַּהּ לְבָבְךָ בְּחֵילֶךָ׃ לָכֵן
.Dei cor ſicut tuum cor *te dare* Pro : Deus Dominus dixit ſic
כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה יַעַן תִּתְּךָ אֶת־לְבָבְךָ כְּלֵב אֱלֹהִים׃
evaginabunt & :gentiũ robuſtos,alienos te ſuper *adducens* ego ecce Idcirco
7 לָכֵן הִנְנִי מֵבִיא עָלֶיךָ זָרִים עָרִיצֵי גּוֹיִם וְהֵרִיקוּ
.tuũ ſplendorẽ polluent & ,tuæ ſapientiæ pulchritudinẽ ſuper ſuos gladios
חַרְבוֹתָם עַל־יְפִי חָכְמָתֶךָ וְחִלְּלוּ יִפְעָתֶךָ׃
corde in *occiſi* mortibus morieris & ,te facient deſcendere foveam Ad
8 לַשַּׁחַת יוֹרִדוּךָ וָמַתָּה מְמוֹתֵי חָלָל בְּלֵב
?te *occidentis facies ad* ,ego Deus , dices dicendo Nunquid .marium
9 יַמִּים׃ הֶאָמֹר תֹּאמַר אֱלֹהִים אָנִי לִפְנֵי הֹרְגֶךָ
Mortibus .te *ſauciantis* manu in , Deus non & , homo tu Et
10 וְאַתָּה אָדָם וְלֹא־אֵל בְּיַד מְחַלְלֶיךָ׃ מוֹתֵי
,ſum locutus ego Quia .alienorum manu in morieris incircunciſorum
עֲרֵלִים תָּמוּת בְּיַד זָרִים כִּי אֲנִי דִבַּרְתִּי
Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .Deus Dominus ait
11 12 נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־
dixit Sic : ei *dices* & : Sor regem ſuper lamentum *Tolle* : hominis
אָדָם שָׂא קִינָה עַל־מֶלֶךְ צוֹר וְאָמַרְתָּ לּוֹ כֹּה אָמַר
perfectus &,ſapientia plenus *diſpoſitionem ſigillans* Tu : Deus Dominus
אֲדֹנָי יְהוִה אַתָּה חוֹתֵם תָּכְנִית מָלֵא חָכְמָה וּכְלִיל
pretioſus lapis omnis ,fuiſti Dei horti Heden In .decore
13 יֹפִי׃ בְּעֵדֶן גַּן־אֱלֹהִים הָיִיתָ כָּל־אֶבֶן יְקָרָה
,*jaſpis* & , onyx ,*hyacinthus* ,*adamas* & ,*ſmaragdus* ,*rubinus* ,tuũ operimentũ
מְסֻכָתֶךָ אֹדֶם פִּטְדָה וְיָהֲלֹם תַּרְשִׁישׁ שֹׁהַם וְיָשְׁפֵה
,tuorũ tympanorũ opus : aurum & ,ſmaragdus &,carbuncul°,ſapphirus
סַפִּיר נֹפֶךְ וּבָרְקַת וְזָהָב מְלֶאכֶת תֻּפֶּיךָ
.fuerunt præparata *te creari* die in te in *tuorum foraminum* &
וּנְקָבֶיךָ בָּךְ בְּיוֹם הִבָּרַאֲךָ כּוֹנָנוּ׃

Verſio VULG. LAT.

32 Et aſſument ſuper te carmen lugubre, & plangent te : Quæ eſt ut Tyrus, quæ obmutuit in me-33 dio maris ? Quæ in exitu negotiationum tuarum de mari implêſti populos multos : in multitudine divitiarum tuarũ, & populorum tuorum, ditâſti reges 34 terræ. Nunc contrita es à mari, in profundis aquarũ opes tuæ, & omnis multitudo tua, quæ erat 35 in medio tui, ceciderunt. Univerſi habitatores inſularum obſtupuerunt ſuper te : & reges earũ omnes tempeſtate perculſi 36 mutaverunt vultus. Negotiatores populorũ ſibilaverunt ſuper te : ad nihilum deducta es, & non eris uſque in perpetuum.

CAP. XXVIII.

1 Et fact° eſt ſermo Dñi ad me, 2 dicens; Fili hominis, dic principi Tyri ; Hæc dicit Dñs Deus ; Eò quòd elevatũ eſt cor tuum, & dixiſti ; Deus ego ſum, & in cathedra Dei ſedi in corde maris : cùm ſis homo, & non De°, & dediſti cor tuũ quaſi cor Dei. 3 Ecce ſapientior es tu Daniele : omne ſecretum non eſt abſcon-4 ditum à te. In ſapientia & prudentia tua feciſti tibi fortitudinem : & acquiſiſti aurum & ar-5 gentum in theſauris tuis. In multitudine ſapientiæ tuæ, & in negotiatione tua multiplicâſti tibi fortitudinẽ : & elevatũ eſt cor tuũ 6 in robore tuo. Propterea hæc dicit Dñs De°; Eò ꝙ elevatũ eſt cor 7 tuũ quaſi cor Dei , Idcircò ecce ego adducã ſup te alienos, robuſtiſſimos Gentiũ : & nudabunt gladios ſuos ſuper pulchritudinẽ ſapientiæ tuæ, & polluent deco-8 rem tuum. Interficient, & detrahent te : & morieris in interitu 9 occiſorum in corde maris. Numquid dicens loquêris ; Deus ego ſum, corã interficientibus te : cùm ſis homo, & non Deus, in manu 10 occidentiũ te ? Morte incircumciſorũ morieris in manu alienorum : quia ego locut° ſum, ait Dñs 11 De°. Et factus eſt ſermo Dñi ad me, dicens ; Fili hominis, leva 12 planctũ ſup regẽ Tyri : Et dices ei; Hæc dicit Dñs De°; Tu ſignaculũ ſimilitudinis, plen° ſapien-13 tiâ, & perfect° decore, In deliciis paradiſi Dei fuiſti : omnis lapis pretioſus operimentũ tuũ : ſardius, topazius, & jaſpis, chryſolithus, & onyx, & beryllus, ſapphirus, & carbunculus, & ſmaragdus : aurũ opus decoris tui : & foramina tua in die, quâ conditus es, præparata ſunt.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp.

32 Καὶ λήψονται οἱ υἱοὶ αὐτῶν ἐπὶ σὲ θρῆνον, (ρ) 33 θρήνημα Σόρ· Πόσον τινὰ εὗρες μισθὸν ἀπὸ τῆς θαλάσσης; (σ) Ἐνέπλησας ἔθνη ἀπὸ τοῦ πλήθους σου, καὶ ἀπὸ τοῦ συμμίκτου σου (τ) ἐπλού-34 τησας πάντας βασιλεῖς τῆς γῆς. Νῦν συνετρίβης ἐν θαλάσσῃ, ἐν βάθει ὕδατος ὁ σύμμικτός σου, καὶ πᾶσα ἡ συναγωγή σου ἐν μέσῳ 35 σου ἔπεσον πάντες οἱ (υ) κωπηλάται σου. Πάντες οἱ κατοικοῦντες τὰς νήσους ἐστύγνασαν ἐπὶ σέ, καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν ἐκστάσει ἐξέστησαν, καὶ 36 (φ) ἐδάκρυσε τὸ πρόσωπον αὐτῶν. Ἔμποροι ἀπὸ ἐθνῶν ἐσύρισάν σε, ἀπώλεια ἐγένου, καὶ οὐκέτι ἔσῃ εἰς τὸν (χ) αἰῶνα.

MS. A. (ρ) καὶ θρήνημά σοι· Τίς ὥσπερ Τύρος κατασιγηθεῖσα ἐν μέσῳ θαλάσσης; πόσον καὶ τίνα (σ)* Ἐνέπλησας ἔθνη (τ) ἐπλούτισας (υ) κατοικοῦντες τὰς νήσους, καὶ οἱ κωπηλάται σου ἐστύγνασαν (φ) ἐδάκρυσαν τῷ προσώπῳ αὐτῶν. Ἐπὶ σοὶ ἔμποροι (χ) αἰῶνα, λέγει κύριος ὁ θεός.

ΚΕΦ. κη΄.

1 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέ-2 γων, (α) Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου εἰπὸν τῷ ἄρχοντι Τύρου, Τάδε λέγει (β) κύριος, Ἀνθ᾽ ὧν ὑψώθη σου ἡ καρδία, καὶ εἶπας, Θεός εἰμι ἐγώ, κατοικίαν θεοῦ κατῴκηκα ἐν καρδίᾳ θαλάσσης, σὺ δὲ εἶ ἄνθρωπος καὶ οὐ θεός, καὶ ἔ-3 δωκας τὴν καρδίαν σου ὡς καρδίαν θεοῦ· Μὴ σοφώτερος εἶ σὺ τοῦ Δανιήλ; (*) σοφοὶ οὐκ ἐ-4 παίδευσάν σε (γ) τῇ ἐπιστήμῃ αὐτῶν. Μὴ ἐν τῇ ἐπιστήμῃ σου ἢ (δ) τῇ φρονήσει σου ἐποίησας σεαυτῷ δύναμιν, καὶ (ε) χρυσίον καὶ ἀργύριον 5 ἐν τοῖς θησαυροῖς σου; (ζ) Ἐν τῇ πολλῇ ἐπιστήμῃ σου καὶ ἐμπορίᾳ σου ἐπλήθυνας (η) δύναμίν σου, ὑψώθη ἡ καρδία σου ἐν τῇ δυνά-6 μει σου. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει (θ) κύριος, Ἐπειδὴ δέδωκας τὴν καρδίαν σου ὡς καρδίαν 7 θεοῦ, Ἀντὶ τούτου ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ σὲ ἀλλοτρίους λοιμοὺς ἀπὸ ἐθνῶν, καὶ ἐκκενώσουσι τὰς μαχαίρας αὐτῶν ἐπὶ σέ, καὶ ἐπὶ τὸ κάλλος τῆς ἐπιστήμης σου, καὶ στρώσουσι τὸ κάλλος σου εἰς 8 ἀπώλειαν, Καὶ καταβιβάσουσί σε, καὶ ἀποθανῇ θανάτῳ τραυματιῶν ἐν καρδίᾳ θαλάσ-9 σης. Μὴ λέγων ἐρεῖς, Θεός εἰμι ἐγώ, ἐνώπιον τῶν ἀναιρούντων σε; σὺ δὲ εἶ ἄνθρωπος, καὶ 10 οὐ θεός. Ἐν πλήθει (ι) ἀπεριτμήτων ἀπολῇ ἐν χερσὶν ἀλλοτρίων, ὅτι ἐγὼ ἐλάλησα, λέγει 11 κύριος. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, λάβε θρῆνον ἐπὶ τὸν 12 ἄρχοντα Τύρου, Καὶ εἰπὸν αὐτῷ, Τάδε (κ) λέγει κύριος κύριος, Σὺ ἀποσφράγισμα ὁμοιώ-13 σεως, καὶ στέφανος κάλλους Ἐν τῇ τρυφῇ τοῦ παραδείσου τοῦ θεοῦ ἐγεννήθης. πάντα λίθον χρηστὸν ἐνδέδεσαι, σάρδιον (λ) καὶ τοπάζιον, καὶ σμάραγδον καὶ (μ) ἄνθρακα, καὶ σάπφειρον καὶ ἴασπιν, καὶ ἀργύριον καὶ χρυσίον, καὶ λιγύριον καὶ ἀχάτην, καὶ ἀμέθυστον καὶ χρυσόλιθον, καὶ βηρύλλιον, καὶ ὀνύχιον, καὶ χρυσίου ἐνέπλησας τοὺς θησαυρούς σου καὶ τὰς ἀποθήκας σου ἐν σοί. ἀφ᾽ ἧς ἡμέρας ἐκτίσθης,

MS. A. (α) Υἱὲ ἀνθρώπου (β) κύριος ὁ θεός, Ἀνθ᾽ ὧν (*) ἡ [illegible] (γ) ἐν τῇ (δ) ἐν τῇ (ε) ἐποίησας χρυσίον (ζ) Ἢ ἐν τῇ (η) δυνάμει (θ) κύριος κύριος ὁ θεός, Ἀνθ᾽ ὧν ἔδωκας (ι) τραυματιζόντων σε θανάτοις ἀπεριτμήτοις ἀπολῇ (κ) λέγει κύριος, Σὺ εἶ ἀποσφράγισμα (λ) τοπάζιον, (μ) ἄνθρακα,

cum Tranſl. LAT.

Et aſſumẽt filii eorũ ſuper ſe lamentum, lamentationem Sor: (ee) Quantã inveniſti mercedem de 32 mari? Implêſti gentes de multitudine tua, & à commiſto tuo di-33 tâſti omnes reges terræ. Nunc contrita es in mari: in profundo aquæ 34 commiſtus tu°, & omnis cœt° tuus in medio tui ceciderunt : omnes remiges tui, Univerſi habitatores 35 inſularũ contriſtati ſunt ſuper te: & reges eorũ (ff) ſtupore ſtupuerunt, & flevit facies eorũ. Negotiatores de gentibus ſibilaverunt 36 te: perditio facta es : & non eris ultra in ſeculum.

CAP XXVIII.

Et fact° eſt ſermo Domini ad 1 me, dicens; Et tu, fili hominis, dic 2 principi Tyri; Hæc dicit Domin°, Pro eo quòd exaltatũ eſt cor tuum, & dixiſti, De° ego ſũ, habitatione Dei habitavi in corde maris, (tu autẽ es homo, & nõ Deus,) & dediſti cor tuũ quaſi cor Dei : Nunquid ſapientior es tu 3 Daniele? (a) Sapientes nõ erudierũt te diſciplinâ ſuâ. Nunquid in 4 eruditione tua aut prudentia tua feciſti tibi fortitudinẽ, (b) & aurũ, & argentũ in theſauris tuis? In multa eruditione tua, & nego-5 tiatione tua multiplicâſti fortitudinẽ tuã : elatũ eſt cor tuũ in fortitudine tua. Propterea hæc dicit 6 Dñs; Quia dediſti cor tuũ quaſi cor Dei, Pro hoc ecce ego adducã 7 ſuper te alienos peſtilẽtes de gentib° : & evaginabunt gladios ſuos ſuper te, & ſuper pulchritudinẽ doctrinæ tuæ : & ſternent pulchritudinẽ tuã in perditionem : (c) Et 8 deſcendere facient te : & morieris morte vulneratorũ in corde maris. Nunquid loquens dices, Deus ego 9 ſum, in conſpectu interficientium te? Tu autẽ es homo, & nõ De° : In (d) multitudine incircumciſorũ 10 morieris in manib° alienorũ : quia ego loquut° ſũ, dicit Domin°. Et 11 fact° eſt ſermo Domini ad me, dicens ; Fili hominis, ſume planctũ ſuper principẽ Tyri, Et dic ei; Hæc 12 dicit Domin° Domin° ; Tu ſignaculũ (e) ſimilitudinis, & corona decoris In deliciis paradiſi Dei fu-13 iſti. Omni lapide bono circundat° es : ſardio, & topazio, & (f) ſmaragdo, & carbunculo, & ſapphiro, & iaſpide, & argento, & auro, et ligurio, & achate, & amethyſto, & chryſolitho, & beryllo, & onychino : & auro replẽſti theſauros tuos, & horrea tua in te. A die quâ (g) conditus es,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

32 ויטלון עלך בעיניהון אליא ויילילון עלך מן כצור לית דדמי לה בגו ימיא : במפק
33 סחרתיך מביני עממיא שבעת עממין סגיאין בסגי עתריך ונכסיך אעתרת מלכי
34 ארעא : כען אתברת דהות מספקא סחורה לעממיא בעומקי ימא סחרתיך וכל
35 משריתיך בגויך נפלו : כל יתבי נגותא צדיאו עלך ומלכהון זעו זיע אתרשימו אפיהון :
36 תגרין בעממיא צדיאו עליך כדלא הוית אתננך וכן תהוין עד עלמא :

כח

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם אמר למלכא דצור כדנן אמר יי
אלהים חלף דרם לבך ואמרת דחלא אנא מותב תקיפין יתיבית בגו ימיא ואת
3 אנשא ולית בך צרוך וחשבתא בלבך דאת דחלא : הא חכים את מדניאל וכל רזא
4 יתכסא מנך : בחוכמתך ובסוכלתנותך קניתא לך נכסין וכנשתא דהבא וכספא
5 6 באוצרך : בסגי חוכמתך ובסחרתך סגיאה משריתך וראם לבך במשריתך : בכן כדנן
7 אמר יי אלהים חלף דחשבתא בלבך דאת דחלא : בכן הא אנא מיתי עלך נוכראין
8 תקיפי עממיא וישלפון סיפיהון על תקון חוכמתך ויחבלון זיו אימתך : לחבלא
9 יחתונך ותמות ממת מטעני חרבא בגו ימיא : המימר תימר דחלא אנא קדם דקטלך
10 ואת אנשא ולית בך צרוך ביד מחבלך : ממת רשיעין תמות ביד נוכראין ארי אנא
11 12 גזרית במימרי אמר יי אלהים : והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם
טול אליא על מלכא דצור ותימר ליה כדנן אמר יי אלהים את דמי למנא דצורתא די
13 מתקן בחוכמא ומשכלל בשופריה : בסגי טבון ותפנוקין את מתפנק כאלו בעדן
גנתא דיי את שרי כל עתרא גיותא ויקרא מתיהב לך כל אבנין טבין מסדרן על
לבושך סמקן ירקן וסבהלום כרום ימא ובורלא ופנתירין שבזיו אזמרגדין וברקן
משקען בדהב כל אלין עבידת תקונך בכן ראם לבך ברם לא אסתכלת בפגרך
דאתעביד חללין ונקבין דאנון צורכך דלא אפשר לך דתתקים בלא בהון מיומא
דאתבריתא עמך מתקנין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et aſſument ſup te lamentationem in *oculis eorum*, & ululabunt ſup te: Quis 32 eſt ſicut Tyrus ? non eſt ſimilis ei in medio maris. Cùm exirent mercimonia 33 tua ex nationibus, ſatiâſti populos multos, multitudine divitiarum tuarum & ſubſtantiæ tuæ ditâſti reges terræ. Nunc contrita *eſt* quæ *ſuppeditabat* ne-34 *gotiationem populis*, in profundis maris negotiatio tua, & omnes exercitus tui in medio tui ceciderunt. Univerſi habitatores inſularum obſtupuerunt ſuper 35 te, & reges earum contremuerunt tremore, maculatæque ſunt facies eorum. Negotiatores in populis obſtupuerunt ſuper te : quaſi non fuiſſes dabo te ; & 36 ſic eris uſque in æternum.

CAP. XXVIII.

Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens : Fili ho-1 minis, dic regi Tyri : Hæc dicit Dominus Deus : Pro eo quòd elevatum eſt 2 cor tuum, & dixiſti : Terribilis ego ſum, in ſede fortium ſedi in medio marium ; & tu es homo inutilis, & cogitâſti in corde tuo quòd ſis terribilis. Ecce ſapientior es tu Daniele : & omne ſecretum non eſt occultatum à te. 3 In ſapientia tua & in prudentia tua poſſediſti tibi divitias, & congregâſti 4 aurum & argentum in theſauris tuis. In multitudine ſapientiæ tuæ & in ne-5 gotiatione tua multiplicati ſunt exercitus tui, & elevatum eſt cor tuum ob copias tuas. Propterea hæc dicit Dominus Deus : Pro eo quòd cogi-6 tâſti in corde tuo quòd tu ſis terribilis. Ideò ecce ego adducam ſuper 7 te extraneos robuſtiſſimos populorum, & evaginabunt gladios ſuos in ornamentum ſapientiæ tuæ, & diſſipabunt ſplendorem terroris tui. In diſſi-8 pationem detrahent te, & morieris in morte vulneratorum gladio in medio marium. Nunquid dicendo dices : Terribilis ego ſum coram interficientibus 9 te ? cùm tu homo ſis inutilis, in manu diſſipantium te. Morte impiorum mo-10 rieris in manu alienorum, quia ego decrevi in verbo meo, dicit Dominus De-11 us. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens : Fili ho-12 minis, tolle lamentum ſuper regem Tyri, & dices illi : Hæc dicit Dñs Deus : Tu ſimilis es vaſi figurato quod ſcitè compoſitum eſt & abſolutum in pulchritudine ſua. Copia bonorum & deliciarum tu diffluis, acſi in volupta-13 te paradiſi Domini habitares. Omnes divitiæ & altitudo & gloria data ſunt tibi : omnes lapides pretioſi & digeſti in veſtimentis tuis : Sardius, topazius & adamas, chryſolithus, beryllus & jaſpis, ſapphirus, ſmaragdus & carbunculus, incluſi auro, omnes iſti opus ornamenti tui ; ideò elevatum eſt cor tuum. Verùm non conſiderâſti cadaver tuum, quòd *factum ſit* concavitatibus & foraminibus quæ ſunt tibi neceſſaria, ſine quibus impoſſibile eſt ut vivas : à die quo conditus es, tecum compoſita ſunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܐܠܘܢ ܥܠܝܟܝ ܒܢܝܗܘܢ ܐܠܝܬܐ ܘܢܐܡܪܘܢ. ܡܢ ܗܘ ܐܝܟ ܨܘܪ ܕܗܘܬ ܐܝܟ ܨܘܪ ܕܫܪܝܐ ܗܘܬ 32
ܒܓܘ ܝܡܐ. * ܟܕ ܢܦܩܝܢ ܩܢܝܢܝܟܝ ܡܢ ܝܡܐ. ܐܣܒܥܬܝ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܡܢ ܣܘܓܐܐ 33
ܕܥܘܬܪܟܝ ܘܕܬܐܓܘܪܬܟܝ. ܐܥܬܪܬܝ ܡܠܟܐ ܕܐܪܥܐ. * ܒܙܒܢܐ ܕܐܬܬܒܪܬܝ ܘܢܦܠܬܝ 34
ܒܥܘܡܩܝܗܘܢ ܕܝܡܐ. ܬܐܓܘܪܬܟܝ ܘܟܠܗ ܟܢܫܟܝ ܒܓܘܟܝ ܢܦܠܘ. * ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝ 35
ܓܙܪܬܐ ܬܘܗܘ ܥܠܝܟܝ. ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܐܬܕܡܪܘ ܘܙܥܦܘ ܐܦܝܗܘܢ. * ܬܓܪܐ ܕܥܡܡܐ ܫܪܩܘ 36
ܥܠܝܟܝ. ܠܚܘܪܒܐ ܗܘܝܬܝ ܘܠܐ ܬܗܘܝܢ ܠܥܠܡ. * ܫܠܡܬ ܦܢܝܬܐ ܩܕܡܝܬܐ ܕܥܠ ܨܘܪ
ܨܘܪ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܟܚ * ܬܘܒ ܥܠ ܡܠܟܐ * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ 1
ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܡܪ ܠܪܫܐ ܕܨܘܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܚܠܦ ܕܐܬܪܝܡ ܠܒܟ 2
ܘܐܡܪܬ ܐܠܗܐ ܐܢܐ. ܘܡܘܬܒܐ ܕܐܠܗܐ ܝܬܒܬ ܒܠܒܐ ܕܝܡܡܐ. ܘܐܢܬ ܐܢܫܐ ܐܢܬ ܘܠܐ ܗܘܝܬ ܐܠܗܐ.
ܘܝܗܒܬ ܠܒܟ ܐܝܟ ܠܒܐ ܕܐܠܗܐ. * ܕܠܡܐ ܚܟܝܡ ܐܢܬ ܡܢ ܕܢܝܐܝܠ. ܐܘ ܟܣܝܬܐ ܚܙܝܬ 3
ܒܚܟܡܬܟ. * ܘܒܣܘܟܠܟܘܢܘܬܟ ܩܢܝܬ ܠܟ ܚܝܠܐ. ܘܟܢܫܬ ܕܗܒܐ ܘܣܐܡܐ ܒܓܙܟ. 4
* ܒܣܘܓܐܐ ܕܚܟܡܬܟ ܘܕܬܐܓܘܪܬܟ. ܐܣܓܝܬ ܥܘܬܪܟ ܕܢܬܪܝܡ ܠܒܟ ܒܥܘܬܪܟ. * ܡܛܠ ܗܢܐ 5
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܚܠܦ ܕܝܗܒܬ ܠܒܟ ܐܝܟ ܠܒܐ ܕܐܠܗܐ. * ܗܐ ܐܢܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ 6 7
ܢܘܟܪܝܐ. ܥܫܝܢܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܢܫܡܛܘܢ ܣܝܦܝܗܘܢ ܥܠ ܫܘܦܪܐ ܕܚܟܡܬܟ. ܘܢܛܢܦܘܢ
ܫܘܒܚܟ. * ܘܢܚܬܘܢܟ ܠܚܒܠܐ. ܘܬܡܘܬ ܡܘܬܐ ܕܩܛܝܠܐ ܒܠܒܐ ܕܝܡܡܐ. * ܕܠܡܐ ܐܡܪ 8 9
ܡܐܡܪ ܐܢܬ ܩܕܡ ܩܛܘܠܝܟ. ܕܐܠܗܐ ܐܢܐ. ܘܐܢܬ ܐܢܫܐ ܐܢܬ ܒܐܝܕܐ ܕܩܛܘܠܝܟ. ܘܠܐ ܗܘܝܬ ܐܠܗܐ.
* ܒܐܝܕܐ ܕܥܪܠܐ ܢܘܟܪܝܐ ܬܡܘܬ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܠܠܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ 10 11
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܝܬܐ ܐܠܝܬܐ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܨܘܪ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ 12
ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܐܢܬ ܗܘ ܚܬܡܐ ܕܕܡܘܬܐ. ܘܡܠܐ ܚܟܡܬܐ. ܘܟܠܝܠܐ ܕܫܘܒܚܐ. * ܒܥܕܝܢ ܦܪܕܝܣܗ ܕܐܠܗܐ 13
ܗܘܝܬ. ܘܒܟܠ ܟܐܦܐ ܛܒܬܐ ܡܬܥܛܦ ܗܘܝܬ. ܣܪܕܘܢ. ܘܡܪܓܢܝܬܐ. ܘܙܡܪܓܕܐ. ܘܒܪܘܠܐ. ܘܣܦܝܠܐ. ܘܝܫܦܗ
ܘܩܪܘܣܛܠܘܣ. ܘܡܪܓܢܝܬܐ ܘܕܗܒܐ ܡܠܝܬ ܓܙܝܟ. ܘܡܢ ܟܐܦܐ ܛܒܬܐ ܒܝܬ ܓܙܝܟ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܐܬܒܪܝܬ.

Et proferent de te filii eorum lamentationes, ac dicent; Quænâ par erat Tyro quæ habitabat in mari? 32 Quando procedebant opes tuæ è mari, ſatiabas gentes multas, & ex abundantia divitiarũ tuarũ & merciũ tuarũ ditabas reges terræ. 33 Quo tempore confracta es, & cecidiſti in profunda maris; merces tuæ totúſque cœtus tuus intra te ceciderunt: 34 Omnes habitatores inſularum obſtupuerunt de te, reges eorũ attoniti fuerũt, & lachrymatæ ſunt facies eorũ: 35 Mercatores populorũ ſibilaverunt de te: in excidiũ fuiſti, neque exiſtes in æternum. 36

Abſoluta eſt ſectio prima contra Tyrum.

CAP. XXVIII.

Sequitur contra regem.

ET fuit ad me ſermo Dñi, dicendo; 1 Fili hominis, dic principi Tyri; Sic ait Dñs dominorũ; Quia elatũ eſt cor tuum, & dixiſti, Deus ſum, & ſedẽ Dei occupo in corde mariũ: quũ homo ſis, non autem Deus, tamen exiſtimâſti cor tuum par cordi Dei: 2 Num ſapientior es Daniele, aut occulta vidiſti ſapientiâ tuâ, 3 Et prudentiâ tuâ comparâſti tibi robur, & congeſſiſti argentũ & aurum in æraria tua? 4 Multitudine ſapientiæ & commercii tui multiplicâſti divitias tuas, ut ſuperbiat cor tuũ propter divitias tuas? 5 Iccircò ſic ait Dñs dominorum; 6 Quoniam cenſuiſti cor tuum par cordi Dei, Ecce adducturus ſum contra te extraneos fortiſſimos gentiũ, qui exertis gladiis ſuis contra pulchritudinem ſapientiæ tuæ, contaminabunt gloriã tuam, 7 Demittent te in corruptionẽ, & morieris morte occiſorũ in corde mariũ. 8 Num dictus es corã interfectoribus tuis, Deus ſum? 9 Quia homo eris in manu interfectorũ tuorũ, non autẽ Deus; Per manum incircuncïſorũ extraneorum morieris; nam ego locutus ſum, ait Dñs dominorũ. 10 Et fuit ad me ſermo Dñi, dicendo; 11 Fili hominis, profer lamentationẽ de rege Tyri, & dic illi, Sic ait Dñs dominorum; 12 Tu ſigillũ es exemplaris, plenus ſapientiâ; & corona gloriæ In Eden paradiſo Dei eras; 13 omnibus lapillis optimis te præcingebas; ſardio, amethyſto, ſmaragdo, beryllo, ſapphiro, jaſpide, chryſtallo, unionibus, & auro impleveras theſauros tuos, & lapillis optimis conditoria tua, ab eo die quo creatus es:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وياخذ بنوهم عليك نوحا * اذ سقط عليك العويل [MS.Ox. ويقولون من كان مثل صور الكاينة في داخل البحر] * ماذا
وجدت اجرا من البحر * اوعبت الامم من يسارك * ومن مخالطك اغنيت جميع ملوك الارض * والان انكسرت في البحر وفي
عمق الماء مخالطك * وكل مجمعك في وسطك سقط * جميع قذافيك وجميع سكان الجزاير تعرسوا
عليك * وملوكهم حاروا حين * ويبكي وجوههم * التجار من الامم صفروا عليك * وصرت هلاكا * ولست
تصيري بعد الى الابد * * الفصل الثامن والعشرون * النبوة في ملك صور *
* وكان قول الرب الي قايلا * وانت يا ابن الانسان قل لرييس صور * هكذا يقول الرب الرب * من
اجل ان قلبك ارتفع * وقلت انا اله * انا في بيت الله سكنت في قلب البحر * وانت انسان انت
ولست الها * واعطيت قلبك كقلب اله * هل انت احكم من دانيال * او لم يوديك حكمة
حكماؤهم * هل بفطنتك وبفهمك صنعت لذاتك جيشا وصنعت ذهبا وفضة في كنوزك * بفطنتك
الكثير وبتجارتك صنعت قوتك * ارتفع قلبك بقوتك * لاجل هذا هكذا يقول الرب الرب
الاله * من اجل انك اعطيت قلبك كقلب اله * عوض هذا ها انا اجلب عليك الغرباء
المفسدين من الامم * ويسلون سيوفهم عليك وعلى حسن فطنتك * ويدلون حسنك للهلاك
* ويحطونك وتموت موت الجرحا في قلب البحر * هل تقول قايلا * انا اله انا * امام قاتليك
فانت انسان ولست اله * في كثرة الغلف تموت * في يدي الغرباء * لاني انا تكلمت يقول
ادوناي الرب * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان انح نوحا على رييس صور وقل له
هكذا يقول الرب الرب * انت طابع الشبه * واكليل حسن المجد * في نعيم فردوس الله كنت
لبست كل حجر صالح * لازوردا وزبرجدا * وزمردا وكهرمانا * وفيروزجا ويشبا * وفضة وذهبا
وجزعا وبجادي * والحجر الذهبي * والبلور * وسبجا * ومن الذهب ملات كنوزك واهراييك بك

Et component filii eorum de te lamentum, cùm ceciderit ſuper te gemitus. [MS. Ox. *Et dicent, Quænam erat par Tyro quæ habitat in medio mari.*] 32 *Quid comparâſti mercedis à mari? implêſti gentes opibus tuis, & è commiſto tuo ditâſti omnes reges terræ:* 33 *Jã verò confracta es in mari, & in profundo aquarum jacet commiſtum tuum, totuſque cœtus tuus in medio tui cecidit:* 34 *Omnes remiges tui, omneſque habitatores inſularum humiliati ſunt propter te: reges eorũ attoniti ſtupuerunt, & lachrymata eſt facies eorum:* 35 *Negotiatores gentium ſibilârunt te, & abiiſti in interitum, nec eris ampliùs in æternum.* 36

CAP. XXVIII.

Prophetia contra regem Sur.

F*uit etiam ſermo Domini ad me, dicens;* 1 *Et tu O fili hominis, dic principi Sur; Ita dicit Dominus Dominus; Quia exaltatum eſt cor tuum, & dixiſti, Ego ſum Deus, ego in domo Dei habitavi in corde maris (quum tu homo ſis, & non Deus) & æquâſti cor tuum cordi Dei:* 2 *Num ſapientior es Daniele, an verò non erudierunt te ſapientes prudentiâ ſuâ?* 3 *Num prudentiâ & intellectu tuo comparâſti tibi exercitum, & aurum argentumque condidiſti in theſauris tuis?* 4 *Prudentiâ tuâ multâ, & negotiatione tuâ comparâſti potentiam tuam, exaltatum eſt cor tuum propter potentiam tuam?* 5 *Propterea ſic ait Dominus, Dominus Deus; Quia tu æquâſti cor tuũ cordi Dei,* 6 *Hanc ob rẽ ecce ego adducam contra te extraneos vaſtatores de gentibus, qui evaginabunt gladios ſuos in te & in præſtantiã prudentiæ tuæ, & deducent pulchritudinem tuã ad interitum;* 7 *Deturbabunt te, & morieris morte vulneratorũ in corde maris.* 8 *Num loquens dices, Ego Deus ſum, corã interficientibus te, quũ tu homo ſis, & non Deus?* 9 *Inter multitudinem incircunciſorum morieris, in manibus exterorum: quoniam ego locutus ſum, dicit Adonai Dominus.* 10 *Tum fuit ſermo Domini ad me, dicens;* 11 *O fili hominis, compone lamentum de principe Sur, & dic ei; Sic ait Dominus Dominus; Tu ſignaculum ſimilitudinis & corona pulchritudinis gloriæ,* 12 *In delitiis paradiſi Dei eras, induebas te omnigenis lapillis optimis, cyano,* 13
topazio, ſmaragdo, ſardonyche, amethyſto, jaſpide, argento, & auro, ligno granis verſicoloribus, chryſolitho, cryſtallo, & achate; et auro implevisti theſauros tuos et horrea tua in te.

יחזקאל : כט

ſanctitatis monte In .te dedi & : protegens unctus Cherub Tu
14 את־כרוב ממשח הסוכך ונתתיך בהר קדש
tu Perfectus .ambulâſti ignis lapidum medio in , fuiſti Dei
15 אלהים היית בתוך אבני־אש התהלכת ׃ תמים אתה
.te in iniquitas eſt inventa donec : te creari die à , tuis viis in
בדרכיך מיום הבראך עד־נמצא עולתה בך ׃
,iniquitate tui medium repleverunt tuæ negotiationis multitudine In
16 ברב רכלתך מלו תוכך חמס
Cherub te perdam & , Dei monte de te prophanabo & : peccâſti &
ותחטא ואחללך מהר אלהים ואבדך כרוב
: tua pulchritudine in tuũ cor eſt Elevatum .ignis lapidum medio de,protector
17 הסוכך מתוך אבני־אש ׃ גבה לבך ביפיך
terram ſuper : tuum ſplendorem ſuper tuam ſapientiam perdidiſti
שחת חכמתך על־יפעתך על־ארץ
.te in aſpiciendum ad te dabo regum facies ad te projiciam
השלכתיך לפני מלכים נתתיך לראוה בך ׃
polluiſti tuæ negotiationis iniquitate in ,tuarũ iniquitatum multitudine Præ
18 מרב עוניך בעול רכלתך חללת
te dabo & ; te comedet ipſe ,tui medio de ignem producam &:tua ſanctuaria
מקדשיך ואוצא־אש מתוכך היא אכלתך ואתנך
te ſcientes Omnes .te videntium omnium oculis in terram ſuper cinerem in
19 לאפר על־הארץ לעיני כל־ראיך ׃ כל־יודעיך
.ſeculum in uſque tu non & ,fuiſti terrores :te ſuper obſtupeſcēt populis in
בעמים שממו עליך בלהות היית ואינך עד־עולם ׃
pone hominis Fili : dicendo me ad Domini verbum fuit Et
20 21 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר ׃ בן־אדם שים
dixit Sic , dices Et .eam ſuper propheta & : Sidon ad tuas facies
22 פניך אל־צידון והנבא עליה ׃ ואמרת כה אמר
:tui medio in me glorificabo & ,Sidon te ſuper ego Ecce :Deus Dominus
אדני יהוה הנני עליך צידון ונכבדתי בתוכך
, judicia ea in me faciendo in Dominus ego quòd ſcient &
וידעו כי־אני יהוה בעשותי בה שפטים
ſanguinem &,peſtilentiã eam in mittam Et .ea in me ſanctificavero &
23 ונקדשתי בה ׃ ושלחתי־בה דבר ודם
eam ſuper gladio in ejᵒ medio in vulneratus cadet & , ejᵒ plateis in
בחוצותיה ונפלל חלל בתוכה בחרב עליה
ultrà erit non Et .Dominus ego quòd ſcient & : undique
24 מסבב וידעו כי־אני יהוה ׃ ולא־יהיה עוד
omnibus ex inferens dolorẽ ſpina & , pungens ſpina Iſrael domui
לבית ישראל סלון ממאיר וקוץ מכאב מכל
.Deus Dominᵒ ego quòd ſcient & : eos ſpernentium eorũ circuitibus
סביבתם השאטים אותם וידעו כי אני אדני יהוה ׃
,populis de Iſrael domũ me cõgregando In : Deus Dominus dixit Sic
25 כה־אמר אדני יהוה בקבצי את־בית ישראל מן־העמים
: gentium oculis in eis in me ſanctificabo & , eos in ſunt diſperſi quos
אשר נפצו בם ונקדשתי בם לעיני הגוים
.Jahacob meo ſervo dedi quam ,ſuã terram ſuper habitabunt &
וישבו על־אדמתם אשר נתתי לעבדי ליעקב ׃
, vineas plantabunt &,domos ædificabũt &,fiducia in eã ſuper habitabũt Et
26 וישבו עליה לבטח ובנו בתים ונטעו כרמים
eos ſpernentibus omnibᵒ in judicia me faciendo in ,fiducia in habitabũt &
וישבו לבטח בעשותי שפטים בכל השאטים אתם
.eorum Deus Dominus ego quòd ſcient & : eorum circuitibus à
מסביבתם וידעו כי אני יהוה אלהיהם ׃

CAP. XXIX. כט

verbum fuit : menſis duodecimo in , decimo in , decimo anno In
1 בשנה העשרית בעשרי בשנים עשר לחדש היה דבר־
: dicendo ,me ad Domini
יהוה אלי לאמר ׃

Verſio VULG. LAT.

14 Tu Cherub extentus, & protegens, & poſui te in monte ſancto Dei, in medio lapidum ignitorum ambulâſti. 15 Perfectus in viis tuis à die conditionis tuæ, donec inventa eſt iniquitas in te. 16 In multitudine negotiationis tuæ repleta ſunt interiora tua iniquitate, & peccâſti: & ejeci te de monte Dei, & perdidi te, O Cherub protegens, de medio lapidum ignitorum. 17 Et elevatum eſt cor tuum in decore tuo: perdidiſti ſapientiam tuam in decore tuo, in terram projeci te: ante faciem regum dedi te ut cernerent te. 18 In multitudine iniquitatum tuarum, & iniquitate negotiationis tuæ, polluiſti ſanctificationem tuam: producam ergò ignem de medio tui, qui comedat te, & dabo te in cinerem ſuper terram in conſpectu omnium videntium te. 19 Omnes, qui viderint te in Gentibus, obſtupeſcent ſuper te: nihil factus es, & non eris in perpetuum. 20 Et factus eſt ſermo Domini ad me, dicens; 21 Fili hominis, pone faciem tuam contra Sidonem: & prophetabis de ea. 22 Et dices; Hæc dicit Dominus Deus; Ecce ego ad te, Sidon, & glorificabor in medio tuî: & ſcient quia ego Dominus, cùm fecero in ea judicia, & ſanctificatus fuero in ea. 23 Et immittam ei peſtilentiam, & ſanguinem in plateis ejus: & corruent interfecti in medio ejus gladio per circuitum: & ſcient quia ego Dominus. 24 Et non erit ultrà domui Iſrael offendiculum amaritudinis, & ſpina dolorem inferens undique per circuitum eorũ, qui adverſantur eis: & ſcient quia ego Dominus Deus. 25 Hæc dicit Dominus Deus; Quando congregavero domũ Iſrael de populis, in quibus diſperſi ſunt, ſanctificabor in eis coram Gentibus: & habitabunt in terra ſua, quam dedi ſervo meo Jacob. 26 Et habitabunt in ea ſecuri: & ædificabunt domos, & plantabunt vineas, & habitabunt confidenter, cùm fecero judicia in omnibus qui adverſantur eis per circuitum: & ſcient quia ego Dominus Deus eorum.

CAP. XXIX.

1 IN anno decimo, decimo menſe, undecimâ die menſis, factum eſt verbum Domini ad me, dicens;

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

14 Σὺ μετὰ τοῦ χερουβ, ἔθηκά σε ἐν ὄρει ἁγίῳ θεοῦ, (ν)ἐγενήθης ἐν μέσῳ λίθων πυρίνων. 15 Ἐγενήθης σὺ ἄμωμος ἐν ταῖς ἡμέραις σου, ἀφ' ἧς ἡμέρας σὺ ἐκτίσθης ἕως (ξ) εὑρέθη τὰ ἀδικήματα ἐν σοί. 16 Ἀπὸ πλήθους τῆς ἐμπορείας σου (ο)ἔπλησας τὰ ταμεῖά σου ἀνομίας, καὶ ἥμαρτες, καὶ ἐτραυματίσθης ἀπὸ ὄρους τοῦ θεοῦ· καὶ ἤγαγέ σε τὸ χερουβ (π) ἐκ μέσου λίθων πυρίνων. 17 Ὑψώθη ἡ καρδία σου ἐπὶ τῷ κάλλει σου, διεφθάρη ἡ ἐπιστήμη σου μετὰ τοῦ κάλλους σου. διὰ (ρ) πλῆθος ἁμαρτιῶν σου ἐπὶ τὴν γῆν (σ) ἔρριψά σε, ἐναντίον βασιλέων ἔδωκά σε παραδειγματισθῆναι. 18 Διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἁμαρτιῶν σου (τ) καὶ τῶν ἀδικιῶν τῆς ἐμπορείας σου, (˚)ἐβεβήλωσα τὰ ἱερά σου, καὶ ἐξάξω πῦρ (υ) ἐκ μέσου σου, τοῦτο καταφάγεταί σε· καὶ δώσω σε (φ) σποδὸν ἐπὶ τῆς γῆς σου ἐναντίον πάντων τῶν ὁρώντων σε. 19 Καὶ πάντες οἱ ἐπιστάμενοί σε ἐν τοῖς ἔθνεσι (χ) στενάξουσιν ἐπὶ σέ. ἀπώλεια ἐγένου, καὶ οὐχ ὑπάρξεις ἔτι εἰς τὸν αἰῶνα. 20 (˚)Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, 21 Υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ Σιδῶνα, καὶ προφήτευσον ἐπ' αὐτήν, 22 Καὶ εἰπὸν, Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ Σιδὼν, καὶ ἐνδοξασθήσομαι ἐν σοὶ, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, ἐν τῷ ποιῆσαί με ἐν σοὶ κρίματα, καὶ 23 ἁγιασθήσομαι ἐν (ψ)σοί. Αἷμα καὶ θάνατος ἐν ταῖς πλατείαις (ω)σου, καὶ πεσοῦνται τετραυματισμένοι (α)μαχαίραις ἐν σοὶ περικύκλῳ σου, καὶ (β) γνώσονται διότι ἐγώ εἰμι κύριος. 24 Καὶ οὐκ (γ)ἔσονται οὐκέτι ἐν τῷ οἴκῳ τοῦ Ἰσραὴλ σκόλοψ πικρίας καὶ ἄκανθα ὀδύνης ἀπὸ τῶν (δ) περικύκλῳ αὐτῶν, τῶν ἀτιμασάντων αὐτοὺς, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι (ε) κύριος. 25 Τάδε λέγει (ζ) κύριος κύριος, Καὶ συνάξω τὸν Ἰσραὴλ ἐκ τῶν (η)ἐθνῶν οὗ διεσκορπίσθησαν ἐκεῖ, καὶ ἁγιασθήσομαι ἐν αὐτοῖς (θ), καὶ ἐνώπιον τῶν (ι) λαῶν καὶ τῶν ἐθνῶν· καὶ κατοικήσουσιν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν, (κ) ἣν δέδωκα τῷ δούλῳ μου Ἰακὼβ, 26 Καὶ κατοικήσουσιν ἐπ' αὐτῆς ἐν ἐλπίδι, καὶ οἰκοδομήσουσιν οἰκίας, καὶ (λ)φυτεύσουσιν ἀμπελῶνας, καὶ κατοικήσουσιν ἐν ἐλπίδι, ὅταν ποιήσω κρίμα ἐν πᾶσι τοῖς ἀτιμάσασιν αὐτοὺς ἐν τοῖς κύκλῳ αὐτῶν· καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν καὶ ὁ θεὸς τῶν πατέρων αὐτῶν.

MS. A. (ν) ἐμμέσῳ λίθων πυρίνων. ἐγενήθης ἄμωμος σὺ ἐν ταῖς (ξ) ἡμέραις εὑρέθη τὰ ἀδικήματά σου ἐν σοί. (ο) ἐπλήθυνας τὰ ταμιεῖά (π) ἐμμέσῳ (ρ) τὸ πλῆθος τῶν (σ) ἔριψά (τ) καὶ ἀδικιῶν (˚) ἐβεβήλωσας (υ) ἐκ μέσου (φ) εἰς σποδὸν (χ) συγνάσουσιν (˚) ΕΠΙ ΣΙΔΩΝΑ. Καὶ (ψ) σοί. Καὶ ἐξαποστελῶ ἐπὶ σεαυτὴν θάνατον, καὶ αἷμα καὶ θάνατος (ω) σου ἔσται, (α) ἐν μαχαίραις (β) γνώσῃ ὅτι (γ) ἔτι ἔσονται τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ σκόλοψ (δ) κύκλῳ (ε) κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν. (ζ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (η) χωρῶν (θ) ἐνώπιον (ι) λαῶν τῶν (κ) ἧς ἔδωκα (λ) φυτεύσωσιν

14 Tu (h) cum Cherub, poſui te in monte ſancto Dei; factus es in medio lapidũ ignitorũ. 15 Fuiſti tu (i) immaculatus in diebus tuis à die, quâ creatus es, donec inventæ ſunt iniquitates in te. 16 A multitudine negotiationis tuæ repleſti cellaria tua iniquitate, & peccâſti, & vulneratus es à monte Dei; & adduxit te (k) Cherub de medio lapidum ignitorũ. 17 Elatum eſt cor tuum in decore tuo: corrupta eſt diſciplina tua cũ decore tuo. Propter multitudinem peccatorũ tuorum in terrã projeci te: in conſpectu regum dedi te ut (l) dehoneſtareris. 18 Propter multitudinẽ peccatorum tuorum, & iniquitatum negotiationis tuæ (m) contaminavi Sancta tua. Et educã ignẽ de medio tuî: hic devorabit te. Et dabo te (n) cinerem ſuper terram tuam in conſpectu omnium videntium te. 19 Et omnes qui noverunt te in gentibus, (o) gement ſuper te. Perditio facta es: & non eris ultrà in ſeculũ. 20 Et factus eſt ſermo Domini ad me, dicens, 21 Fili hominis, obfirma faciẽ tuã ſuper Sidonẽ, & propheta ſuper eã, 22 Et dic, Hæc dicit Dñs; Ecce ego ad te, Sidon, & glorificabor in te: & ſcies, quia ego ſum Dominus, cũ fecero in te judicia, & ſanctificabor in te. 23 (p) Sanguis & mors in plateis tuis: & cadent vulnerati gladiis in te per circuitũ tuũ: et ſcient, quia ego ſum Dominus. 24 Et non erunt ultrà in domo Iſrael offendiculum amaritudinis, et ſpina doloris, ab iis qui in circuitu eorum, qui contumeliã fecerint eis: & ſcient quia ego ſum Dominus. 25 Hæc dicit Dominus Dominᵒ; Et congregabo Iſrael de gentibus ubi diſperſi ſunt illic: & ſanctificabor in iis, (q) & corã populis, & gentibus. & habitabunt in terra ſua, quã dedi ſervo meo Jacob: 26 Et habitabunt in ea in ſpe: & ædificabunt domos, & plantabunt vineas. Et habitabunt in ſpe, cùm fecero judicium in omnibus, qui fecerint eis contumeliam, qui in circuitu eorum. Et ſcient, quia ego ſum Dominus Deus eorum, & Deus patrum eorum.

ΚΕΦ. κθʹ.

1 ἘΝ τῷ ἔτει τῷ (α) δωδεκάτῳ, ἐν τῷ (˚) δεκάτῳ μηνὶ, μιᾷ τοῦ μηνὸς, ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων,

MS. A. (α) δεκάτῳ (˚) ἐνδεκάτῳ

CAP. XXIX.

1 IN anno (a) duodecimo, in decimo menſe, unâ menſis, factũ eſt verbum Domini ad me, dicens;

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 את מלך מרבא למלכו ויהבית לך רבותא ואת על טור קודשא דיי בסרתא ובעמא
15 קדישא סברתא למשלט ׃ שלים את בארחך מיומא דאתבריתא עד דאשתכח שקר
16 ביך ׃ בסגיאות סחורתך אתמליאו אוצרך חטוף וחבתא ואפסנך על דבסרתא על טור
17 קודשא דיי ואבדנך מלכא דרבתנא על די סברתא למשלט בעמא קדישא ׃ ראם
לבך בתוקפך אתחבלת בחוכמתך על זיו אימתך על ארעא רטשתך אזהרא למלכיא
18 יהבתך לאסתכלא בך ׃ מסגי חובך בשקר סחורתך אפסתא מקדשך ואיתי עממיא
דתקיפין כאשתא מחובי זדונך אנון ישיצונך ואתננך כקטם על ארעא לעיני כל חזך ׃
19 20 כל דידעך בעממי צדיאו עלך כדלא הוית אתננך וכן תהי עד עלמ׳ ׃ והוה פתגם נבואה
21 מן קדם יי עמי למימר ׃ בר אדם קביל נבואה על צידון ואתנבי עלה ׃ ותימר כדנן
22 אמר יי אלהים הא אנא שלח רוגזי עלך צידון ואתיקר בגויך וידעון ארי אנא יי כד
23 אעביד ביך פורענות דינין ואתקדש בה ׃ ואשלח בה מותא וקטלא בשוקהא כד
יתרמון קטילין בגוה באיתיותי עלה דקטלין בחרבא מסחור סחור וידעון ארי אנא יי ׃
24 ולא יהי עוד לבית ישראל מלך מבאיש ושלטון מעיק מכל סחרניהון דבזין יתהון
25 וידעון ארי אנא יי אלהים ׃ כדנן אמר יי אלהים כד אכניש ית בית ישראל מבני
עממיא דאתבדרו לתמן ואתקדש בהון לעיני עממיא ויתיבון על ארעהון דיהבית
26 לעבדי ליעקב ׃ ויתיבון עלה לרוחצן ויבנון בתין ויצבון כרמין ויתבון לרוחצן כד
אעביד פורענות דינין מכל דבזין יתהון מסחרניהון וידעון ארי אנא יי אלההון ׃

כט

1 בשתא עשיריתא בעשיראה בתרי עסר לירחא הוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי
למימר ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

14 Tu es rex unctus in regnum, & dedi tibi magnitudinem. Et tu montem ſanctum Domini ſpreviſti, & in populum ſanctum cogitâſti dominari. 15 Perfectus eras in via tua à die quo creatus es, donec inventa eſt iniquitas in te. 16 Ob multitudinem negotiationis tuæ impleti ſunt theſauri tui rapina: hinc deliquiſti; et violabo te, pro eo quòd ſpreviſti montẽ ſanctum Domini, & perdam te rex qui unctus es; pro eo quòd putâſti dominari in populum ſanctum. 17 Elevatum eſt cor tuum in fortitudine tua, & corruptᵒ es in ſapientia tua, ob ſplendorem terroris tui: in terram projeci te, admonitionem regibus dedi te, ut conſiderent te. 18 Propter multitudinem peccatorum tuorum, ob perfidiam negotiationis tuæ profanâſti ſanctuarium tuum; & adducam populos qui fortes ſunt ſicut ignis, propter peccata ſuperbiæ tuæ ipſi conſument te. Et dabo te ſicut cinerem ſuper terram in conſpectu omnium videntium te. 19 Omnes qui noverunt te in populis obſtupuerunt ſuper te: quaſi non fueris dabo te, & ſic eris uſque in æternum. 20 Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: 21 Fili hominis, ſuſcipe prophetiam ſuper Sidon, & prophetabis in eam. 22 Et dices: Hæc dicit Dominus Deus: Ecce ego mitto furorem meum ſuper te Sidon, & glorificabor in medio tui. & ſcient quia ego Dominus, cùm fecero in te ultionem judiciorum, & ſanctificatus fuero in ea. 23 Et mittam in eam peſtem & occiſionem in vicos ejus, cùm projicientur interfecti in medio ejus, cùm induxero ſuper eam occidentes gladio per circuitum, & ſcient quia ego Dominus. 24 Et non erit ultrà domui Iſrael rex malefaciens, & princeps tribulans per omnem circuitum eorum, qui diripiebant eos: & ſcient quia ego Dominus Deus. 25 Hæc dicit Dominus Deus: Quando congregavero domũ Iſrael de medio populorũ per quos diſperſi ſunt, ſanctificabor in eis in oculis populorum, & habitabunt in terra ſua quam dedi ſervo meo Jacob. 26 Et habitabunt in ea confidenter, & ædificabunt domos & plantabunt vineas, & habitabunt ſecurè, cùm fecero ultionem judiciorum de omnibus qui deprædantur eos per circuitum: & ſcient quia ego Dominus Deus eorum.

CAP. XXIX.

1 ANno decimo, menſe decimo, duodecima die menſis, factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens:

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܗܘܝܬ ܥܡ ܟܪܘܒܐ ܕܡܫܝܚ ܘܡܛܠܠ. ܘܣܡܬܟ ܒܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܗ ܕܐܠܗܐ. ܘܗܘܝܬ
ܒܝܢܝ ܟܐܦܐ ܕܢܘܪܐ. * ܘܗܠܟܬ ܕܠܐ ܡܘܡ ܒܐܘܪܚܬܟ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܐܬܒܪܝܬ ܥܕܡܐ ܕܐܫܬܟܚ
ܒܟ ܥܘܠܐ. * ܡܛܠ ܣܘܓܐܐ ܕܬܐܓܘܪܬܟ ܡܠܝܬ ܓܘܝܟ ܥܘܠܐ. ܘܚܛܝܬ. ܘܐܘܒܕܟ ܡܢ ܛܘܪܗ
ܕܐܠܗܐ. ܘܐܘܒܕܟ ܟܪܘܒܐ ܕܡܛܠܠ ܡܢ ܓܘ ܟܐܦܐ ܕܢܘܪܐ. * ܐܬܪܝܡ ܠܒܟ ܒܫܘܦܪܟ.
ܐܬܚܒܠܬ ܚܟܡܬܟ ܥܡ ܫܘܦܪܟ. ܘܥܠ ܐܪܥܐ ܫܕܝܬܟ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܘܝܗܒܬܟ ܠܗܘܢ
ܚܙܘܐ. * ܡܛܠ ܣܘܓܐܐ ܕܚܛܗܝܟ ܘܥܘܠܐ ܕܬܐܓܘܪܬܟ. ܛܘܫܬ ܡܩܕܫܟ. ܘܐܦܩ ܢܘܪܐ ܡܢ ܓܘܟ.
ܗܝ ܬܐܟܠܟ. ܘܐܬܠܟ ܩܛܡܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܠܥܝܢ ܟܠ ܕܚܙܝܢ ܠܟ. * ܘܟܠ ܕܝܕܥܝܢ ܠܟ ܒ
ܥܡܡܐ ܢܬܕܡܪܘܢ ܥܠܝܟ. ܠܚܒܠܐ ܗܘܝܬ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܬܘܒ ܠܥܠܡ. * ܥܠ ܨܝܕܢ *
* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܥܠ ܨܝܕܢ. ܘܐܬܢܒܐ
ܥܠܝܗ. ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ ܨܝܕܢ. ܘܐܫܬܒܚ ܒܟܝ
ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܡܐ ܕܥܒܕܬ ܒܗ ܕܝܢܐ ܘܐܬܩܕܫܬ ܒܗ. * ܘܐܫܕܪ ܒܗ ܡܘܬܢܐ
ܘܕܡܐ ܒܫܘܩܝܗ. ܘܢܦܠܘܢ ܩܛܝܠܐ ܒܓܘܗ ܒܚܪܒܐ ܕܡܚܕܪܐ ܠܗ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.
* ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܬܘܒ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܓܕܐ ܡܪܝܪܐ ܘܟܐܒܐ ܕܡܥܩܐ. ܡܢ ܟܠܗܘܢ
ܕܚܕܪܝܢ ܠܗܘܢ ܘܡܨܥܪܝܢ ܠܗܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܡܐ ܕܟܢܫܬ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܡܢ ܥܡܡܐ ܕܐܬܒܕܪܘ ܒܝܢܬܗܘܢ.
ܘܐܬܩܕܫ ܒܗܘܢ ܩܕܡ ܥܡܡܐ: ܘܢܬܒܘܢ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܥܒܕܝ ܠܝܥܩܘܒ.
* ܘܢܬܒܘܢ ܒܗ ܠܬܘܟܠܢ. ܘܢܒܢܘܢ ܒܬܐ. ܘܢܨܒܘܢ ܟܪܡܐ. ܘܢܬܒܘܢ ܠܬܘܟܠܢ. ܡܐ ܕܥܒܕܬ
ܕܝܢܐ ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܗܘܢ. ܕܡܨܥܪܝܢ ܠܗܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ
ܐܠܗܗܘܢ.

* ܫܠܡ * ܟܚ *

* ܥܠ ܡܨܪܝܢ *

* ܒܫܢܬܐ ܥܣܪܝܬܐ. ܒܝܪܚܐ ܕܥܣܪܐ. ܒܬܪܥܣܪ. ܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ.

Et eras cum Cherubino uncto & obumbrante, & poſueram te in monte ſanctitatis Dei, & eras inter lapides ignitos: 14
Et ambulaveras ſine labe in viis tuis ab eo die quo creatus fuiſti, donec inventa eſt in te iniquitas. 15
Propter abundantiam negotiationis tuæ impleviſti præcordia tua iniquitate, & peccâſti: ideò perimam te de monte Dei, & perdam te O Cherubine obumbrans, de medio lapidū ignitorum. 16
Quia ſuperbivit cor tuum propter pulchritudinem tuam, corrupta eſt ſapientia tua cum pulchritudine tua, & in terram dejeci te coram regibus, & expoſui te illis ſpectaculum. 17
Multitudine fraudis tuæ, & iniquitate mercaturæ tuæ prophanâſti ſanctuarium tuum: eliciam ignem è medio tui, qui te devorabit; & redigam te in cinerem in terra coram omnibus ſpectantibus te. 18
Quicunque te noverant inter populos, ſtupebunt de te: abibis in interitum, & nunquam futurus es. 19

Contra Sidonem.

Deinde fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 20
Fili hominis, verte oculos tuos ad Sidonem, & prophetato contra eam, 21
ac dicito; Sic ait Dominus dominorum; Ecce me contra te Sidon, ut per te glorificer, & cognoſcant me eſſe Dominum, quum exercuero in eam judicia mea, & ſanctificatus fuero per eam; 22
Immiſero in eam peſtem, & ſanguinem in vicos ejus, & confoſſi ejus in medio ipſius corruerint gladio qui obſidebit eam: tum cognoſcent me eſſe Dominum. 23
Ita non erit ampliùs Iſraelitis abſinthium amarum & dolor excrucians, ab omnibus iis qui circunſtant eos & convitiantur eis: & experientur me eſſe Dominum dominorū. 24
Sic ait Dominus dominorum; Quum collegero Iſraelitas è populis inter quos diperſi ſunt, & ſanctificat⁹ fuero per eos inter gentes; tunc habitabunt in terra quã dedi ſervo meo Jacobo. 25
Securè habitabunt in ea, domos ædificabunt, plantabunt vineas, & ſedebunt in tuto, quum exercuero judicia in omnes gentes circunjacentes eis, ipſis infenſas: & ſcient me eſſe Dominū Deum ipſorum. 26

CAP. XXIX.

Contra Ægyptum.

ANno decimo, menſe decimo, duodecimo *die*, fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 1

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* منذ يوم خلقت مع الشاروب دفعتك في جبل القدوس * صرت في وسط حجارة نارية * وصرت
غير معاب انت في ايامك منذ يوم خلقت انت حتي وجدت المظالم فيك * من كثرة تجارتك
ملات مخادعك اثما واخطات * وخرجت من جبل الله * واتي بك الشاروب من وسط الحجارة
النارية * وارتفع قلبك بحسنك وفسدت فطنتك مع حسنك * لاجل كثرة خطاياك طرحتك
على الارض * اسلمتك لتشهر امام الملوك * لاجل كثرة خطاياك وظلامات تجارتك * ودنست
اقداسك * واخرج نارا من وسطك هي تاكلك * وادفعك رمادا على ارضك * امام جميع الذين
ينظرون اليك * وجميع العارفين بك في الامم يعبسون عليك * اذ قد صرت هلكة * ولا تكون
بعد الي الابد * النبوة في صيدا * وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان ثبت
وجهك على صيدا وتنبا عليها وقل * هكذا يقول الرب ها انا عليك يا صيدا * واتمجد بك
ويعلمون اني انا الرب * عند ما اصنع فيك احكاما * واتقدس بك * يصير الدم في شوارعك
ويسقطون مجرحين بالسيوف فيك الذين من حولك * ويعلمون اني انا الرب * ولا يكون ايضا
لبيت اسرايل نخسة مرار * ولا شوكة وجع * من جميع الذين يحيطون بهم ويهينونهم * ويعلمون
اني انا ادوناي الرب * هكذا يقول ادوناي الرب الاله * واجمع اسرايل من الامم حيث تفرقوا
هناك * واتقدس فيهم امام الشعوب والامم * ويسكنون في ارضهم التي اعطيت لعبدي يعقوب
* ويسكنون عليها في طمانينة * ويبنون بيوتا * ويغرسون كروما * ويسكنون في طمانينة * اذ اصنع
حكما في جميع الذين اهانوهم * وفي الذين حولهم * ويعلمون اني انا الرب الههم واله ابايهم

* الفصل التاسع والعشرون * الاصحاح السادس عشر * النبوة في فرعون ملك مصر

* في الشهر الثاني عشر * في الثاني عشر من الشهر * كان قول الرب الي قايلا *

Ab ea die quâ creatus es, cum Cherubino poſui te in monte Sanctiſſimi, & fuiſti in medio lapidū ignitorū: 14
Eraſq; tu minimè vitioſus in diebus tuis, ab ea die quâ tu creat⁹ fuiſti, quoadusq; inventæ ſunt in te impietates. 15
Ob multitudinē negotiationis tuæ impleviſti cellaria tua iniquitate, peccâſti, & egreſſus es è monte Dei: adduxitque te Cherub è medio lapidū ignitorū: 16
Et exaltatū eſt cor tuū propter pulchritudinē tuā, & corrupta eſt prudentia tua cum pulchritudine tua. Propter multitudinē peccatorū tuorum in terrā projeci te, tradidi te ut ſis infamis apud reges. 17
Propter multitudinē peccatorū tuorum & iniquitatum negotiationis tuæ: Et contaminavi Sancta tua: educamq; ignem de medio tui: hic te devorabit. Daboq; te cinerē ſuper terrā tuam corā omnibus iis qui te aſpicient: 18
Et omnes cognoſcentes te inter gentes, mœrebunt de te, quum jam abieris in excidium, neq; ſis ampliùs futurus in æternum. 19

Prophetia contra Saidam.

Rurſus fuit ſermo Domini ad me, dicens; 20
O fili hominis, obfirma faciē tuā contra Saidā, vaticinare de ea, & dic; 21
Ita dicit Domin⁹, Ecce me adverſùm te O Saida, et glorificabor in te, ſcieſq; me eſſe Dominū, quū exercuero in te judicia, & ſanctificatus fuero in te. 22
Erit ſanguis in plateis tuis, & cadent vulnerati gladiis in te, qui circa te ſunt; ſcientq; me eſſe Dominū. 23
Et nō erit amplius domui Iſraelis ſtimulus amaritudinis, neq; ſpina doloris ab omnibus iis qui circunſtant eos & deprimunt eos: tum ſcient me eſſe Adonai Dominum. 24
Ita dicit Adonai Dominus Deus; Equidem colligam Iſraelem è gentibus, quocunque diſperſi ſunt, & ſanctificabor in eis corā populis & gentibus: & habitabunt in terra ſua, quam dedi ſervo meo Jacobo: 25
Habitabunt autem in ea ſecurè; & domos extruent, plantabunt vineas, & habitabunt ſecurè, quū fecero judiciū in omnes eos qui depreſſerunt illos, & in eos qui circunſtant ipſos: ſcientque me eſſe Dominum Deum eorum, & Deum patrum eorum. 26

CAP. XXIX.

Textus decimus ſextus.

Prophetia contra Pharaonem regem Ægypti.

M*Enſe duodecimo, duodecimâ die menſis, fuit ſermo Domini ad me, dicens;* 1

יחזקאל : כט

propheta & : Ægypti regem Parhoh ſuper tuas facies pone ,hominis Fili
2 בֶּן־אָדָם שִׂים פָּנֶיךָ עַל־פַּרְעֹה מֶלֶךְ מִצְרָיִם וְהִנָּבֵא
dixit Sic dices & ,Loquere .totam Ægyptum ſuper & ,eum ſuper
3 עָלָיו וְעַל־מִצְרַיִם כֻּלָּהּ׃ דַּבֵּר וְאָמַרְתָּ כֹּה־אָמַר
draco ,Ægypti rex Parhoh te ſuper ego Ecce :Deus Dominus
אֲדֹנָי יֱהוִה הִנְנִי עָלֶיךָ פַּרְעֹה מֶלֶךְ־מִצְרַיִם הַתַּנִּים
,me⁹ fluvi⁹ Mihi ,dixit qui : ſuorũ fluminũ medio in cubans ,magnus
הַגָּדוֹל הָרֹבֵץ בְּתוֹךְ יְאֹרָיו אֲשֶׁר אָמַר לִי יְאֹרִי
piſcem faciã adhærere &,tuis maxillis in hamos dabo Et .me feci ego &
4 וַאֲנִי עֲשִׂיתִנִי׃ וְנָתַתִּי חַחִיִּים בִּלְחָיֶיךָ וְהִדְבַּקְתִּי דְגַת־
medio de te faciam aſcendere & : tuis ſquamis in tuorum fluminum
יְאֹרֶיךָ בְּקַשְׂקְשֹׂתֶיךָ וְהַעֲלִיתִיךָ מִתּוֹךְ
.adhærebit tuis ſquamis in tuorũ fluminum piſcis omnis & ,tuorũ fluminũ
יְאֹרֶיךָ וְאֵת כָּל־דְּגַת יְאֹרֶיךָ בְּקַשְׂקְשֹׂתֶיךָ תִּדְבָּק׃
ſuper,tuorũ fluminũ piſcem omnem & te ,deſerto in te derelinquã Et
5 וּנְטַשְׁתִּיךָ הַמִּדְבָּרָה אוֹתְךָ וְאֵת כָּל־דְּגַת יְאֹרֶיךָ עַל־
feræ : congregaberis nec ,colligêris non ,cades agri faciebus
פְּנֵי הַשָּׂדֶה תִּפּוֹל לֹא תֵאָסֵף וְלֹא תִקָּבֵץ לְחַיַּת
omnes ſcient Et .cibum in te dedi cœlorum volatili & ,terræ
6 הָאָרֶץ וּלְעוֹף הַשָּׁמַיִם נְתַתִּיךָ לְאָכְלָה׃ וְיָדְעוּ כָּל־
cannæ fulcrum eos fuiſſe pro :Dominus ego quòd ,Ægypti habitatores
יֹשְׁבֵי מִצְרַיִם כִּי אֲנִי יְהוָה יַעַן הֱיוֹתָם מִשְׁעֶנֶת קָנֶה
findes & ,confringêris vola in te in eos prehendendo In .Iſrael domui
7 לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃ בְּתָפְשָׂם בְּךָ בַכַּף תֵּרוֹץ וּבָקַעְתָּ
facies ſtare & ,conterêris ,te ſuper eos innitendo in & : humerũ omnẽ eis
לָהֶם כָּל־כָּתֵף וּבְהִשָּׁעֲנָם עָלֶיךָ תִּשָּׁבֵר וְהַעֲמַדְתָּ
ego Ecce : Deus Dominus dixit ſic Propterea .lumbos omnes eis
8 לָהֶם כָּל־מָתְנָיִם׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה הִנְנִי
.animal & ,hominem te de faciam ſuccidere & : gladium te ſuper adducens
מֵבִיא עָלַיִךְ חָרֶב וְהִכְרַתִּי מִמֵּךְ אָדָם וּבְהֵמָה׃
ego quòd ſcient &,ſolitudinem & deſertum in Ægypti terra erit Et
9 וְהָיְתָה אֶרֶץ־מִצְרַיִם לִשְׁמָמָה וְחָרְבָּה וְיָדְעוּ כִּי־אֲנִי
Idcirco .feci ego & ,mihi fluvius ,dixit quòd eo pro :Dominus
10 יְהוָה יַעַן אָמַר יְאֹר לִי וַאֲנִי עָשִׂיתִי׃ לָכֵן
ſolitudines in Ægypti terram daboque :tuũ fluvium ad & ,te ad ego ecce
הִנְנִי אֵלֶיךָ וְאֶל־יְאֹרֶיךָ וְנָתַתִּי אֶת־אֶרֶץ מִצְרַיִם לְחָרְבוֹת
.Chus terminum ad uſque & Seveneh turre à deſolationis ſolitudinis
חֹרֶב שְׁמָמָה מִמִּגְדֹּל סְוֵנֵה וְעַד־גְּבוּל כּוּשׁ׃
:eã per tranſibit non animalis pes & ,hominis pes eam per tranſibit Non
11 לֹא תַעֲבָר־בָּהּ רֶגֶל אָדָם וְרֶגֶל בְּהֵמָה לֹא תַעֲבָר־בָּהּ
Ægypti terram Daboque .annis quadraginta habitabitur neque
12 וְלֹא תֵשֵׁב אַרְבָּעִים שָׁנָה׃ וְנָתַתִּי אֶת־אֶרֶץ מִצְרַיִם
medio in ejus civitates & ,deſolatarum terrarum medio in deſolationem
שְׁמָמָה בְּתוֹךְ אֲרָצוֹת נְשַׁמּוֹת וְעָרֶיהָ בְּתוֹךְ
: annis quadraginta deſolationem erunt deſtructarum civitatum
עָרִים מָחֳרָבוֹת תִּהְיֶיןָ שְׁמָמָה אַרְבָּעִים שָׁנָה
.terras in eos ventilabo & ,gentes in Ægyptios faciã diſpergere &
וַהֲפִצֹתִי אֶת־מִצְרַיִם בַּגּוֹיִם וְזֵרִיתִים בָּאֲרָצוֹת׃
congregabo annorũ quadraginta fine A : Deus Dominus dixit ſic Quia
13 כִּי כֹה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה מִקֵּץ אַרְבָּעִים שָׁנָה אֲקַבֵּץ
reducam Et .illuc fuerunt diſperſi quò populis de Ægyptios
14 אֶת־מִצְרַיִם מִן־הָעַמִּים אֲשֶׁר־נָפֹצוּ שָׁמָּה׃ וְשַׁבְתִּי
,Pathros terram eos faciam reducere & ,Ægyptiorum captivitatẽ
אֶת־שְׁבוּת מִצְרַיִם וַהֲשִׁבֹתִי אֹתָם אֶרֶץ פַּתְרוֹס
.humile regnum ibi erunt & : eorum reſidentiæ terram ſuper
עַל־אֶרֶץ מְכוּרָתָם וְהָיוּ שָׁם מַמְלָכָה שְׁפָלָה׃
:gentes ſuper ultrà elevabitur non &,humile erit regnis Præ
15 מִן־הַמַּמְלָכוֹת תִּהְיֶה שְׁפָלָה וְלֹא־תִתְנַשֵּׂא עוֹד עַל־הַגּוֹיִם
.gentibus in dominandum non ad ,eos faciam imminuere &
וְהִמְעַטְתִּים לְבִלְתִּי רְדוֹת בַּגּוֹיִם׃

Verſio VULG. LAT.

2 Fili hominis, pone faciem tuam contra Pharaonem regem Ægypti, & prophetabis de eo, & de 3 Ægypto univerſa: Loquere, & dices; Hæc dicit Dominus Deus; Ecce ego ad te, Pharao rex Ægypti, draco magne, qui cubas in medio fluminũ tuorum, & dicis; Meus eſt fluvius: & ego feci me-4 metipſum. Et ponam frænum in maxillis tuis: & agglutinabo piſces fluminum tuorum ſquamis tuis: & extraham te de medio fluminum tuorum, & univerſi piſces tui ſquamis tuis adhærebunt. 5 Et projiciam te in deſertum, & omnes piſces fluminis tui: ſuper faciem terræ cades, non colligêris, neque congregaberis: beſtiis terræ, & volatilibus cœli, 6 dedi te ad devorandum: Et ſcient omnes habitatores Ægypti quia ego Dominus: pro eo quòd fuiſti baculus arundineus domui 7 Iſrael. Quando apprehenderunt te manu, & confractus es, & laceraſti omnem humerum eorum: & innitentib⁹ eis ſuper te, comminutus es, & diſſolviſti omnes 8 renes eorum. Propterea hæc dicit Domin⁹ Deus; Ecce ego adducam ſuper te gladium: & interficiam de te hominem, & ju-9 mentum. Et erit terra Ægypti in deſertum, & in ſolitudinem: & ſcient quia ego Domin⁹: pro eo quòd dixeris; Fluvius meus eſt, 10 & ego feci eum. Idcircò ecce ego ad te, & ad flumina tua: daboque terram Ægypti in ſolitudines, gladio diſſipatam, à turre Syenes, uſque ad terminos Æthi-11 opiæ. Non pertranſibit eam pes hominis, neque pes jumenti gradietur in ea: & non habitabitur 12 quadraginta annis. Daboque terram Ægypti deſertam in medio terrarum deſertarum, & civitates ejus in medio urbium ſubverſarum, & erunt deſolatæ quadraginta annis: & diſpergam Ægyptios in nationes, & ventilabo 13 eos in terras. Quia hæc dicit Dominus Deus; Poſt finem quadraginta annorum congregabo Ægyptum de populis, in quib⁹ di-14 ſperſi fuerant. Et reducam captivitatem Ægypti, & collocabo eos in terra Phathures, in terra nativitatis ſuæ: & erunt ibi in 15 regnum humile: Inter cætera regna erit humillima, & non elevabitur ultrà ſuper nationes, & imminuam eos ne imperent Gentibus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

2 Υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ προφήτευσον ἐπ' αὐτὸν καὶ ἐπ' Αἴγυπτον (ϛ)ὅλην, 3 Καὶ εἰπόν, Τάδε λέγει (γ)κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ (δ) ἐπὶ Φαραώ, τὸν δράκοντα τὸν μέγαν τὸν ἐγκαθήμενον ἐν μέσῳ ποταμῶν αὐτοῦ, τὸν λέγοντα, Ἐμοί εἰσιν οἱ ποταμοί, καὶ ἐγὼ ἐποίησα αὐτούς. 4 (ε)Καὶ ἐγὼ δώσω παγίδας εἰς τὰς σιαγόνας σου, καὶ προσκολλήσω τοὺς ἰχθύας τοῦ ποταμοῦ σου πρὸς τὰς πτέρυγάς σου, καὶ ἀνάξω σε ἐκ μέσου τοῦ (ζ) ποταμοῦ σου, 5 Καὶ καταβαλῶ σε ἐν τάχει καὶ πάντας τοὺς ἰχθύας τοῦ ποταμοῦ σου. ἐπὶ πρόσωπον τοῦ πεδίου πεσῇ, καὶ οὐ μὴ συναχθῇς, (η) καὶ οὐ μὴ περισταλῇς, τοῖς θηρίοις (θ) τῆς γῆς καὶ τοῖς πετεινοῖς 6 τοῦ οὐρανοῦ δέδωκά σε εἰς (ι) κατάβρωμα. Καὶ γνώσονται πάντες οἱ κατοικοῦντες Αἴγυπτον, ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. ἀνθ' ὧν ἐγενήθης ῥά-7 βδος καλαμίνη τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ, Ὅτε (κ) ἐπελάβετό σου τῇ χειρὶ αὐτῶν, ἐθλάσθης· καὶ ὅτε (λ) ἐπεκρότησεν ἐπ' αὐτοὺς πᾶσα χείρ, καὶ ὅτε ἐπανεπαύσαντο ἐπὶ σέ, συνετρίβης, 8 καὶ συνέκλασας αὐτῶν πᾶσαν ὀσφύν. Διατοῦτο τάδε λέγει (μ) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπάγω ἐπὶ σὲ ῥομφαίαν, καὶ ἀπολῶ ἀπὸ σοῦ (ν) ἀνθρώπους 9 καὶ κτήνη. Καὶ (ξ) ἔσται ἡ γῆ Αἰγύπτου ἀπώλεια καὶ ἔρημος· καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. ἀντὶ τοῦ λέγειν σε, (ο) Οἱ ποταμοὶ ἐμοί εἰ-10 σι, καὶ ἐγὼ ἐποίησα αὐτούς, Διατοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς ποταμούς σου, καὶ δώσω (π) γῆν Αἰγύπτου εἰς (ρ) ἔρημον καὶ ῥομφαίαν καὶ ἀπώλειαν ἀπὸ Μαγδώλου καὶ 11 (σ) Συήνης καὶ ἕως ὁρίων (τ) Αἰθιόπων. Οὐ μὴ διέλθῃ ἐν αὐτῇ (υ) ποὺς ἀνθρώπου, καὶ ποὺς κτήνους οὐ μὴ διέλθῃ αὐτήν, καὶ οὐ κατοικηθή-12 σεται τεσσαράκοντα ἔτη. Καὶ δώσω τὴν γῆν αὐτῆς (φ) ἀπώλειαν ἐν μέσῳ γῆς ἠρημωμένης, καὶ αἱ πόλεις αὐτῆς ἐν μέσῳ πόλεων ἠρημωμένων (χ) ἔσονται τεσσαράκοντα ἔτη· καὶ διασπερῶ Αἴγυπτον ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ λικμή-13 σω αὐτοὺς εἰς τὰς χώρας. (ψ) Τάδε λέγει κύριος, Μετὰ τεσσαράκοντα ἔτη συνάξω (ω) Αἰγυπτίους ἀπὸ τῶν ἐθνῶν οὗ διεσκορπί-14 σθησαν ἐκεῖ, Καὶ ἀποστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν (α) τῶν Αἰγυπτίων, καὶ κατοικίσω αὐτοὺς ἐν γῇ Φαθωρῆς, ἐν τῇ γῇ ὅθεν ἐλήφθησαν, καὶ ἔσται 15 ἀρχὴ ταπεινή Παρὰ πάσας τὰς ἀρχάς· οὐ μὴ ὑψωθῇ ἔτι ἐπὶ τὰ ἔθνη· καὶ ὀλιγοστοὺς αὐτοὺς ποιήσω, τοῦ μὴ εἶναι αὐτοὺς πλείονας ἐν τοῖς ἔθνεσι.

MS. A. (ϛ) ὅλην, Καὶ λάλησον, καὶ εἰπὸν (γ) κύριος ὁ θεός, (δ) ἐπὶ σὲ Φαραώ, βασιλεῦ Αἰγύπτου, τὸν (ε) Καὶ δώσω τὰς παγίδας (ζ) ποταμοῦ, καὶ πάντας τοὺς ἰχθύας τοῦ ποταμοῦ σου, Καὶ (η) οὐδ' οὐ μὴ (θ) τοῦ ἀγροῦ καὶ (ι) βρῶσιν, (κ) ἐπελάβοντό (λ) ἐπεκράτησεν (μ) κύριος ὁ θεός, (ν) ἄνθρωπον καὶ κτῆνος. (ξ) ἔσται πᾶσα ἡ (ο) Ὅτι οἱ (π) τὴν γῆν (ρ) ἔρημον καὶ ἀπώλειαν ἀπὸ (σ) Σοήνης (τ) Αἰθιοπίας. (υ) ἄνθρωπος, καὶ κτῆνος, οὐδὲ κατοικηθήσεται τεσσεράκοντα (φ) εἰς ἀπώλειαν ἐμ μέσῳ τῆς ἐρήμου, καὶ αἱ πόλεις αὐτῶν (χ) ἔσονται, ἀφανισμὸς ἔσται· καὶ διασπερῶ (ψ) Ὅτι τάδε λέγει κύριος κύριος, Μετὰ τεσσεράκοντα (ω) τοὺς Αἰγυπτίους (α) Αἰγύπτου, καὶ κατοικιῶ αὐτοὺς ἐν γῇ Παθουρῆς,

Fili hominis, obfirma faciem tuam ſuper Pharaonem regem Ægypti, & propheta ſuper eum, & ſuper Ægyptum univerſam, 2 *Et dic; Hæc dicit Dominus; Ecce ego ſuper Pharaonem (b) draconem magnum ſedentem in medio (c) fluminum ſuorũ, dicentem; Mihi ſunt flumina: & ego feci illa.* 3 *Et ego dabo (d) laqueos in maxillas tuas: & agglutinabo piſces fluminis tui ad pennas tuas: & educam te de medio fluminis (e) tui:* 4 *Et deponam te velociter & omnes piſces fluminis tui. Super faciem campi cades: neque congregaberis, neque colligêris: beſtiis terræ, & volatilibus cœli dedi te in devorationem.* 5 *Et ſcient omnes habitatores Ægypti, quia ego ſum Dominus. Pro eo, quòd factus es virga arundinea domui Iſrael: Quando apprehendit te manu ſuâ, confractus es: & quando plauſit ſuper eos omnis manus, & quando requieverunt ſuper te, contritus es, & confregiſti omnes renes eorum. Propterea hæc dicit Dominus; Ecce ego induco ſuper te gladium, & perdam de te homines, & jumenta: Et erit terra Ægypti perditio, & ſolitudo: & ſcient quia ego ſum Dominus. Eò quòd dicis tu; Flumina mea ſunt, & ego feci illa; Idcircò ecce ego ſuper te, & ſuper omnia flumina tua: & dabo terram Ægypti in (f) ſolitudinem, & gladium, & perditionem à (g) Magdolo, & Syene, & uſq; ad terminos Æthiopũ. Non tranſibit in ea pes hominis: & pes jumenti non pertranſibit eã: & non habitabitur quadraginta annis. Et dabo terram ejus perditionem in medio terræ deſertæ: & civitates ejus in medio civitatũ deſertarum erunt quadraginta annis. Et diſſeminabo Ægyptum in gentibus, & ventilabo eos in terras. Hæc dicit Dominus; Poſt quadraginta annos congregabo Ægyptios de gentibus, in quibus diſperſi erant illuc: Et reducam captivitatem Ægyptiorum, & collocabo eos in terra Phathores, in terra, de qua aſſumpti ſunt. Et erit principatus humilis Inter omnes principatus. Non elevabitur ultrà ſuper nationes: & pauciſſimos eos faciam; ne plures ſint ipſi inter gentes.*

2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 בַּר אָדָם קַבֵּיל נְבוּאָה עַל פַּרְעֹה מַלְכָּא דְמִצְרַיִם וְאִתְנַבֵּי עֲלוֹהִי וְעַל מִצְרָאֵי כּוּלְּהוֹן׃
3 אִתְנַבֵּי וְתֵימַר כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים הָא אֲנָא שָׁלַח רוּגְזִי עֲלָךְ פַּרְעֹה מַלְכָּא דְמִצְרַיִם
דְּאַתְּ דָּמֵי לְתַנִּינָא רַבָּא דִּי שָׁרֵי בְּגוֹ נַהֲרוֹתֵיהּ דִּי אֲמַר דִּילִי מַלְכוּתָא וַאֲנָא כְבֵישִׁית׃
4 וְאֶתֵּן שִׁירִין בְּלִיסָתָךְ וְאֶקְטוֹל שִׁלְטוֹנֵי תוּקְפָּךְ עִם גִּבָּרָךְ וַאֲבַטְּלִנָּךְ מִמַּלְכוּתָךְ וְיָת כָּל
5 שִׁלְטוֹנֵי תוּקְפָּךְ עִם גִּבָּרָךְ יִתְקַטְלוּן׃ וַאֲרַטְשִׁנָּךְ לְמַדְבְּרָא יָתָךְ וְיָת כָּל שִׁלְטוֹנֵי תוּקְפָּךְ
עַל אַפֵּי חַקְלָא תִתְרְמֵי נְבֵלְתָךְ לָא תִתְכְּנֵישׁ וְלָא תִתְקְבַר לְחַיַּת אַרְעָא וּלְעוֹפָא דִשְׁמַיָּא
6 מְסַרְתָּךְ לְאִשְׁתֵּיצָאָה׃ וְיִדְעוּן כָּל יָתְבֵי מִצְרַיִם אֲרֵי אֲנָא יְיָ חֲלַף דַּהֲווֹ סְמָךְ קַנְיָא רְעִיעָא
7 לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃ בְּאִתְכְּנִיוּתְהוֹן בָּךְ בְּיַד מֶלֶךְ תַּקִּיף תִּתְמְסַר וְיֵיבַד בֵּית רוּחְצָנֵיהוֹן
8 וּבְאִסְתְּמָכוּתְהוֹן עֲלָךְ תִּתְּבַר וְלָא תְהֵי לְהוֹן לְבֵית סוּמְכָן׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים
9 הָא אֲנָא מַיְתֵי עֲלָךְ דְּקָטְלִין בְּחַרְבָּא וְאֵשֵׁיצֵי מִנָּךְ אֱנָשָׁא וּבְעִירָא׃ וּתְהֵי אַרְעָא
דְמִצְרַיִם לְאִשְׁתְּמָמוּ וְחוּרְבָּא וְיִדְעוּן אֲרֵי אֲנָא יְיָ חֲלַף דַּאֲמַר מַלְכוּתָא דִילִי וַאֲנָא
10 כְּבֵשִׁית׃ בְּכֵן הָא אֲנָא שָׁלַח רוּגְזִי עֲלָךְ וְעַל מַלְכוּתָךְ וְאֶתֵּן יָת אַרְעָא דְמִצְרַיִם לְחוֹרָב
11 צָדוּ וְשִׁמָּמוּ מִמִּגְדֹּל סְוֵנֵה וְעַד תְּחוּם כּוּשׁ׃ לָא תֶעְבַּר בַּהּ רִגְלָא אֱנָשָׁא וְרִגְלָא דִי
12 בְעִירָא לָא תֶעְבַּר בַּהּ וְלָא תִתְיְתֵב אַרְבְּעִין שְׁנִין׃ וְאֶתֵּן יָת אַרְעָא דְמִצְרַיִם לְצָדוּ בְּגוֹ
מְדִינָן צַדְיָן וְקִרְוָהָא בְּגוֹ קִרְוִין דַּהֲוָאָה חָרְבָן יְהוֹיָן לְצָדוּ אַרְבְּעִין שְׁנִין וְאַגְלֵי יָת מִצְרָאֵי
13 לְבֵינֵי עַמְמַיָּא וַאֲבַדַּרְנוּן בִּמְדִינָתָא׃ אֲרֵי כִדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים מִסּוֹף אַרְבְּעִין שְׁנִין
14 אֲכַנֵּישׁ יָת מִצְרָאֵי מִבֵּינֵי עַמְמַיָּא דְּאִתְבַּדַּרוּ לְתַמָּן׃ וְאָתֵיב יָת גָּלוּת מִצְרַיִם וְאוֹתֵיב
15 יָתְהוֹן לְאַרְעָא פַּתְרוֹס עַל אַרְעָא תּוֹתָבוּתְהוֹן וִיהוֹן תַּמָּן מַלְכוּ חַלָּשָׁא׃ מִן מַלְכְּוָתָא
תְּהֵי חַלָּשָׁא וְלָא תִתְרַבְרַב עוֹד עַל עַמְמַיָּא וַאֲזְעֵירִנּוּן בְּדִיל דְּלָא יִפְלְחוּן בְּעַמְמַיָּא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Fili hominis, ſuſcipe prophetiam ſuper Pharaonem regem Ægypti, & vaticinare ſuper eum & ſup univerſos Ægyptios. 3 Vaticinare, & dices: Hæc dicit Dominus Deus: Ecce ego mitto furorem meum ſup te Pharao rex Ægypti, qui ſimilis es draconi magno qui cubat in medio fluminum ſuorum; qui dicis: Meum eſt regnum, & ego ſubjugavi illud. 4 Et dabo hamos in maxillas tuas, & interficiam principes fortitudinis tuæ cum potentibus tuis. Et ceſſare faciam regnum à te, & omnes principes fortitudinis tuæ cum potentibus tuis occi-dentur. 5 Et projiciam te in deſertum, te & omnes principes fortitudinis tuæ: ſuper faciem agri projicietur cadaver tuum, non colligetur nec ſepelietur. Beſtiis terræ & volucribus cœli tradidi te in exitium. 6 Et ſcient omnes habitatores Ægypti quia ego Dominus, pro eo quòd fuerunt ſuſtentaculum arundineum conquaſſatum domui Iſrael. 7 Cùm *nomen dederint* in te, in manum regis robuſti tradêris, & peribit domus confidentiæ eorum: & cùm innitentur ſuper te, confringêris, & non eris eis in domum præſidii. 8 Propterea hæc dicit Dñs Deus: Ecce ego adducam ſuper te occidentes gladio, & conſumam ex te hominem & jumentum. 9 Et erit terra Ægypti in ſolitudinem & deſertum; & ſcient quia ego Dominus. Pro eo quòd dixit: Meum eſt regnum, & ego ſubjugavi illud. 10 Propterea ecce ego mitto furorem meum ſuper te & ſuper regnum tuum, & dabo terram Ægypti in deſertum ſolitudinis & deſolationis, à turri Syenes & uſque ad terminum Æthiopiæ. 11 Non tranſibit per eam pes hominis, neque pes jumenti tranſibit per eam, & non habitabitur quadraginta annis. 12 Et dabo terram Ægypti in vaſtitatem in medio provinciarum deſolatarum, & civitates ejus in medio civitatum quæ fuerunt deſertæ, erunt in deſolationem quadraginta annis. Et tranſmigrare faciam Ægyptios inter populos, & diſpergam eos per provincias. 13 Quia hæc dicit Dominus Deus: In fine quadraginta annorum congregabo Ægyptios de medio populorum quò diſperſi fuerunt. 14 Et revocabo captivitatem Ægyptiorum, & reducam eos in terram Phatures, in terram habitationis ſuæ: & erunt ibi in regnum infirmum. 15 Aliis regnis erit infirmius, & non magnificabitur ultrà ſuper populos, & imminuam eos ne ſervire faciant ſibi populos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܪ ܐܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܥܠ ܦܪܥܘܢ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܬܢܒܐ ܥܠܘܗܝ. ܘܥܠ ܟܠܗ
ܡܨܪܝܢ ܡܠܠ ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ ܦܪܥܘܢ. ܡܠܟܐ
ܕܡܨܪܝܢ. ܬܢܝܢܐ ܪܒܐ ܕܪܒܝܥ ܒܝܢܬ ܢܗܪܘܬܐ. ܘܐܡܪ: ܕܕܝܠܝ ܢܗܪܐ. ܘܐܢܐ ܥܒܕܬܗ.
* ܐܢܐ ܐܪܡܐ ܠܡܘܡܐ ܒܠܘܥܝܟ. ܘܐܕܒܩ ܒܓܦܝܟ ܢܘܢܐ ܕܢܗܪܟ. ܘܐܣܩܝܟ ܡܢ ܓܘ ܢܗܪܟ.
ܘܠܟܠܗܘܢ ܢܘܢܐ ܕܢܗܪܟ ܒܓܦܝܟ ܢܕܒܩܘܢ. * ܘܐܪܡܝܟ ܒܡܕܒܪܐ ܠܟ. ܘܠܟܠܗܘܢ ܢܘܢܐ
ܕܢܗܪܟ. ܘܥܠ ܐܦܝ ܚܩܠܐ ܬܦܠ. ܘܠܐ ܬܬܟܢܫ ܘܠܐ ܬܬܩܒܪ. ܠܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܘܠܦܪܚܬܐ
ܕܫܡܝܐ. ܝܗܒܬܟ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. * ܘܢܕܥܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܘܗܝ ܕܡܨܪܝܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.
ܚܠܦ ܕܗܘܝܬ ܐܝܟ ܫܒܛܐ ܕܩܢܝܐ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܟܕ ܐܚܕܘܟ ܒܐܝܕܝܗܘܢ. ܦܚܕܬ
ܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܟܕ ܐܣܬܡܟܘ ܥܠܝܟ ܐܬܬܒܪܬ. ܘܐܪܥܠܬ ܚܨܝܗܘܢ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ ܚܪܒܐ. ܘܐܘܒܕ ܡܢܟ ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. * ܘܬܗܘܐ ܐܪܥܐ
ܕܡܨܪܝܢ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܫܘܡܡܐ. ܘܢܕܥܘܢ. ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܚܠܦ ܕܐܡܪܬ ܕܕܝܠܝ ܢܗܪܐ. ܘܐܢܐ
ܥܒܕܬܗ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ. ܘܥܠ ܢܗܪܟ. ܘܐܬܠܝܗ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܠܚܘܪܒܐ
ܘܠܫܘܡܡܐ. ܡܢ ܡܓܕܠܐ ܕܣܘܢܐ ܘܥܕܡܐ ܠܬܚܘܡܐ ܕܟܘܫ. * ܠܐ ܬܥܒܪ ܒܗ ܪܓܠܐ ܕܒܪܢܫܐ.
ܐܦܠܐ ܦܪܣܬܐ ܕܒܥܝܪܐ. ܘܠܐ ܬܬܒ ܐܪܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. * ܘܐܬܠܝܗ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܠܚܘܪܒܐ ܒܝܢܬ
ܡܕܝܢܬܐ ܕܚܪܒܢ. ܘܐܒܕܪܝܘܗܝ ܠܡܨܪܝܐ ܒܥܡܡܐ. ܘܐܙܪܐ ܐܢܘܢ ܒܡܕܝܢܬܐ: * ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܒܬܪ ܐܪܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. ܐܟܢܫ ܐܢܘܢ ܠܡܨܪܝܐ ܡܢ ܥܡܡܐ ܕܐܬܒܕܪܘ
ܠܗܘܢ. * ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܘܬܒ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܦܬܪܘܣ ܒܐܪܥܐ
ܕܐܙܕܒܢܘ ܡܢܗ. ܘܢܗܘܘܢ ܬܡܢ ܡܠܟܘܬܐ ܡܟܝܟܬܐ. * ܘܬܗܘܐ ܡܟܝܟܐ
ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ. ܘܬܘܒ ܠܐ ܬܬܪܝܡ ܥܠ ܥܡܡܐ. ܘܐܙܥܪ ܐܢܘܢ ܕܠܐ
ܢܫܬܥܒܕܘܢ ܒܥܡܡܐ.

Fili hominis,pone faciem tuam verſùs Phara- 2
onem regem Ægypti,& vaticinare contra eũ;
& contra totam Ægyptum loquere, & dic ;
Sic ait Dominus dominorum;Ecce me contra 3
te Pharaon rex Ægypti, draco maxime cu-
bans inter amnes,& dicens ; Meus eſt fluvius,
& ego feci eum. Ego paſtomidem indam 4
maxillis tuis, agglutinabo alis tuis piſces flu-
vii tui, & extraham te è fluvio tuo ; & cun-
ctis fluvii tui piſcib⁹ alis tuis inhærentibus.
Projiciam te in deſertum, te *inquam*,omneſ- 5
que piſces fluvii tui:ſuper faciem agri cades,
& non recipieris, neque colligéris ; *ſed* be-
ſtiis terræ & volucrib⁹ cœli exponam te in
cibum : Ut experiantur omnes habitatores 6
Ægypti me eſſe Dominum. Eò quòd fueris ut
ſcipio arundineus Iſraelitis, *Qui* cùm te ma- 7
nibus ſuis tenuiſſent, perfodiſti man⁹ eorum ;
cúmque tibi innixi fuiſſent, confract⁹ es, &
lumbos eorum concuſſiſti : Iccircò ſic ait 8
Dominus dominorum ; Ecce adducam ſuper
te gladium, perdámque ex te homines & ju-
menta : Eritque terra Ægypti in excidium 9
& vaſtitatem, & experientur me eſſe Domi-
num. Eo quòd dixeris, Meus eſt fluvius, &
ego feci eum, Idcircò ecce me contra te 10
& contra fluvium tuum, tradámque terram
Ægypti excidio & vaſtitati. A turri Suna
uſque ad limites Cus, Non tranſibit per 11
eam pes hominis, neque ungula jumenti ;
neque habitabitur quadraginta annis. Tra- 12
dam enim terram Ægypti excidio inter ur-
bes dirutas, diſſipabo Ægyptios inter gentes,
& diſpergam eos per urbes. Sic ait Domi- 13
nus dominorum ; Poſt annos quadraginta
colligam Ægyptios è gentib⁹ inter quas di-
ſperſi fuerint, Et reducam captivitatem Æ- 14
gypti, & collocabo eos in terra Pathros, in
terra ex qua empti fuerant, & erunt ibi re-
gnum humile. Erit inquam , regnorum o- 15
mnium humillimum, ut non efferat ſe am-
pliùs ſuper gentes : & imminuam eos, ne
ſubjiciant gentes :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* يا ابن الانسان * ثبت وجهك على فرعون ملك مصر وتنبأ عليه وعلى مصر كلها
تكلم وقل * هكذا يقول الرب الرب * ها انا عليك يا فرعون التنين العظيم الرابض
في وسط انهارك * القايل * لي هي الانهار وانا صنعتها * اعطي فخاخا في حنكيك * والصق
سمك نهرك * والقيك بسرعة * وجميع حيتان نهرك * على وجه صحرايك تسقط * ولا تجمع
ولا تستتر * فاني دفعتك لوحوش الحقل وطيور السماء طعاما * ويعلمون جميع سكان
مصر اني انا الرب * من اجل انك صرت عصا قصبية لبيت اسرايل * لما اخذوك بيدهم
تكسرت * ولما قبضت عليهم كل يد * ولما استراحوا عليك تهشمت * وكسرت
كل حقوهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب الرب * ها انا اجلب عليك سيفا * وابيد
منك الانسان والبهيمة * وتصير كل ارض مصر هلاكا وخرابا * ويعلمون اني انا
الرب * عوض انك تقول ان الانهار لي هم وانا صنعتهم * لاجل هذا ها انا اجلب
عليك وعلى انهارك * وادفع ارض مصر للخراب والسيف والهلاك * من مجدول واسوان
والى حدود الحبشة * لا يجوز فيها انسان ولا بهيمة * ولا تسكن اربعين سنة
* وادفع ارضها للهلاك في وسط ارض البرية * ومدنها في وسط مدن الخراب تصير
اربعين سنة * وابدد مصر في الامم * واذريهم في الكور * لان هكذا يقول الرب
الرب * بعد اربعين سنة اجمع المصريين من الامم حيث تفرقوا هناك * وارد سبي
مصر * واسكنهم في ارض فاتوريس في الارض من حيث اخذوا * وتصير رياستهم
ذليلة * اكثر من جميع الرياسات * ولا ترتفع على الامم ايضا * واجعلهم قليلين * ولا
يكونوا كثيرين في الامم :

O fili hominis, obfirma faciem tuam 2
contra Pharaonem regem Ægypti, vati-
cinare de ipſo & de tota Ægypto, lo-
quere, & dic ; Sic ait Dominus Domi- 3
nus ; Ecce me adverſùm te O Pharaon
draco magne, qui cubas in medio flumi-
num tuorum, qui dicis, Mea ſunt flu-
mina, & ego feci ea. Imponam laqueos 4
genis tuis, & faciam ut hæreant piſces
fluminis tui ; projiciam te citò, omneſque
piſces fluminis tui. Super faciem ſolitu- 5
dinis tuæ cades, & non recipies nec ab-
des te ; quia beſtiis agri & volucribus
cœli dedi te cibum : Et ſcient omnes 6
habitatores Ægypti me eſſe Dominum.
Quia fuiſti baculus arundineus domui
Iſraelis : Cùm te manu ſuâ cepiſſent, 7
confractus es : cúmque tenuiſſet eos omnis
manus, & cùm in te ſpem collocâſſent,
contritus es, & fregiſti omnes lumbos
eorum : Propterea ſic dicit Dominus 8
Dominus ; Ecce ego adducam ſuper te
gladium, perdamque ex te hominem &
jumentum : Et abibit tota terra Ægypti 9
in perditionem & ruinam, ſcientque
me eſſe Dominum. Eò quòd dicas, Flu-
mina mea ſunt, & ego feci ea ; Propter- 10
ea ecce ego adducam ſuper te & ſuper
flumina tua, tradamque terram Ægypti
vaſtitati, gladio, & excidio. A Mag-
dol & Aſuan uſque ad limites Æ-
thiopiæ, Non tranſibit per eam homo ne- 11
que jumentum ; nec habitabitur annis
quadraginta : Tradamque terram ejus 12
perditioni in medio terræ deſerti, & ur-
bes ejus inter urbes dirutas erunt annis
quadraginta : & diſpergam Ægyptios
inter gentes, & diſpellam eos per cli-
mata. Nam ita dicit Dominus Dominus ; 13
Poſt annos quadraginta colligam Æ-
gyptios è gentibus quoquoverſum diſper-
ſi fuerint. Et reſtituam captivitatem 14
Ægyptiorum, & habitare faciam eos
in terra Phathores, in terra è qua
capti ſunt : Eritque principatus eorum 15
humillimus omnium principatuum, nec
attollet ſe ampliùs ſuper gentes : &
faciam ut pauci ſint, & non ſint multi
inter gentes :

יחזקאל׃ ל

commonefactor confidentiam in Israel domui ultrà erit non Et
16 ולא יהיה־עוד לבית ישראל למבטח מזכיר
.Deus Dominus ego quod scient & : eos post *eos respiciendo in* ,iniquitatis
עון בפנותם אחריהם וידעו כי אני אדני יהוה׃
: mensis *una* in ,primo in ,anno septimo & vigesimo in ,fuit Et
17 ויהי בעשרים ושבע שנה בראשון באחד לחדש
,hominis Fili : dicendo ,me ad DOMINI verbum fuit
18 היה דבר־יהוה אלי לאמר׃ בן־אדם
magna servitute *suam virtutem* fecit servire Babel rex Nebuchadresar
נבוכדראצר מלך־בבל העביד את־חילו עבדה גדלה
,depilatus humerus omnis & ,decalvatum caput Omne : Sor adversus
אל־צר כל־ראש מקרח וכל־כתף מרוטה
quam servitutem *super* Sor de ejus *virtuti* & ,ei fuit non merces &
ושכר לא־היה לו ולחילו מצר על־העבדה אשר־
dans ego Ecce : Deus Dominus dixit sic Propterea .eā adversus servivit
19 עבד עליה׃ לכן כה אמר אדני יהוה הנני נתן
tollet & : Ægypti terram Babel regi Nebuchadresar
לנבוכדראצר מלך־בבל את־ארץ מצרים ונשא
erit & ,ejꝰ prædam prædabitur & ejꝰ *spolium* spoliabit & ,ejꝰ multitudinē
המנה ושלל שללה ובזז בזה והיתה
terram ei dedi ,*eo in* servivit quo ejus Opus .ejꝰ *virtuti* merces
20 שכר לחילו׃ פעלתו אשר־עבד בה נתתי לו את־ארץ
die In .Deus Dominus dicit ,*mihi* fecerunt quod ,Ægypti
21 מצרים אשר עשו לי נאם אדני יהוה׃ ביום
apertionem dabo tibi & ,Israel domus cornu faciam germinare illa
ההוא אצמיח קרן לבית ישראל ולך אתן פתחון־
.Dominus *ego* quod scient & : eorum medio in oris
פה בתוכם וידעו כי־אני יהוה׃

CAP. XXX. ל

,propheta ,hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר׃ בן־אדם הנבא
2 Quia .diei væ ,Ululate : Deus Dominus dixit Sic : *dices* &
3 ואמרת כה אמר אדני יהוה הילילו הה ליום׃ כי־
.erit gentium tempus ,nubis dies :Domini dies *propinqua* & ,dies *propinqua*
קרוב יום וקרוב יום ליהוה יום ענן עת גוים יהיה׃
cadendo in Chus in *vacillatio* erit & ,Ægyptum in gladius veniet Et
4 ובאה חרב במצרים והיתה חלחלה בכוש בנפל
.ejꝰ fundamenta destruentur & ,ejꝰ *turbam* tollent & : Ægypto in *occisum*
חלל במצרים ולקחו המונה ונהרסו יסודתיה׃
eis cum :fœderis terræ filii & ,Chub & ,vulgus omne & ,Lud & ,Put & ,Chus
5 כוש ופוט ולוד וכל־הערב וכוב ובני ארץ הברית אתם
,Ægyptum fulcientes cadent Et ,Dominus dixit Sic .cadent gladio *in*
6 בחרב יפלו׃ כה אמר יהוה ונפלו סמכי מצרים
cadent gladio in Seveneh turre à : ejꝰ fortitudinis superbia descendet &
וירד גאון עזה ממגדל סונה בחרב יפלו־
:desolatarū terrarū medio in desolabuntur Et .Deus Dominus dixit,ea in
7 בה נאם אדני יהוה׃ ונשמו בתוך ארצות נשמות
quod scient Et .erunt desertarum urbium medio in ejus urbes &
8 ועריו בתוך ערים נחרבות תהיינה׃ וידעו כי־
omnes attriti fuerint & ,Ægypto in ignem *me dando in* ,Dominus *ego*
אני יהוה בתתי־אש במצרים ונשברו כל־
navibꝰ in *meis faciebꝰ* à nuntii egredientur illa die In .ejꝰ auxiliatores
9 עזריה׃ ביום ההוא יצאו מלאכים מלפני בצים
die secundū eis in *vacillatio* erit & : confidenter Chus terrendum ad
להחריד את־כוש בטח והיתה חלחלה בהם כיום
faciā cessare Et : Deus Dominus dixit Sic .venit ecce quia ,Ægypti
10 מצרים כי הנה באה׃ כה אמר אדני יהוה והשבתי
.Babel regis Nebuchadresar manum per Ægypti *turbam*
את־המון מצרים ביד נבוכדראצר מלך־בבל׃

Versio VULG. LAT.

16 Neque erunt ultrà domui Israel in confidentia, docentes iniquitatē, ut fugiant, & sequantur eos: 17 & scient quia ego Dñs Deꝰ. Et factū est in vigesimo & septimo anno, in primo, in una mensis: factū est verbū Dñi ad me, di- 18 cens; Fili hominis, Nabuchodonosor rex Babylonis servire fecit exercitū suū servitute magnā adversꝰ Tyrū: omne caput decalvatū, & omnis humerꝰ depilatꝰ est; & merces non est reddita ei, neq; exercitui ejꝰ, de Tyro, pro servitute quā servivit mihi ad- 19 versꝰ eam. Propterea hæc dicit Dñs Deꝰ; Ecce ego dabo Nabuchodonosor regem Babylonis in terra Ægypti: & accipiet multitudinē ejꝰ, & deprædabitur manubias ejꝰ, & diripiet spolia ejꝰ: 20 & erit merces exercitui illiꝰ, Et operi, quo servivit adversꝰ eam: dedi ei terrā Ægypti, pro eo ꝙ 21 laboraverit mihi, ait Dñs Deꝰ. In die illo pullulabit cornu domui Israel, & tibi dabo apertū os in medio eorum: & scient quia ego Dominus.

CAP. XXX.

1 ET factū est verbū Dñi ad me, 2 dicens; Fili hominis, propheta, & dic; Hæc dicit Dñs Deus; 3 Ululate, væ, væ diei: Quia juxtà est dies, & appropinquat dies Dñi: dies nubis, tempus Gentiū erit. 4 Et veniet gladius in Ægyptum: & erit pavor in Æthiopia, cùm ceciderint vulnerati in Ægypto, & ablata fuerit multitudo illius, 5 & destructa fundamenta ejus. Æthiopia, & Libya, & Lydi, & omne reliquū vulgus, & Chub, et filii terræ fœderis, cū eis gladio 6 cadent. Hæc dicit Dñs Deus; Et corruent fulcientes Ægyptū, & destructur superbia imperii ejus: à turre Syenes gladio cadent in 7 ea, ait Dñs Deus exercituū. Et dissipabuntur in medio terrarū desolatarū, & urbes ejus in me- 8 dio civitatū desertarū erunt. Et scient quia ego Dñs: cùm dedero ignē in Ægypto, & attriti fue- 9 rint omnes auxiliatores ejus. In die illa egredientur nuntii à facie mea in trieribus, ad conterendā Æthiopiæ confidentiā, & erit pavor in eis in die Ægypti, 10 quia absque dubio veniet. Hæc dicit Dominus Deus; Cessare faciam multitudinem Ægypti in manu Nabuchodonosor regis Babylonis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

16 Καὶ οὐκέτι ἔσονται τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ εἰς ἐλπίδα (β) ἀναμιμνήσκουσαν ἀνομίαν, ἐν τῷ ἀκολουθῆσαι αὐτοὺς ὀπίσω αὐτῶν, καὶ γνώσονται 17 ὅτι ἐγώ εἰμι (γ) κύριος. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἑβδόμῳ καὶ εἰκοστῷ ἔτει, μιᾷ τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου, ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέ- 18 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, Ναβουχοδονόσορ βασιλεὺς Βαβυλῶνος κατεδουλώσατο τὴν δύναμιν αὐτοῦ δουλείᾳ μεγάλῃ ἐπὶ (δ) Τύρου, πᾶσα κεφαλὴ (ε) φαλακρὰ, καὶ πᾶς ὦμος μαδῶν· καὶ μισθὸς οὐκ ἐγενήθη αὐτῷ καὶ τῇ δυνάμει αὐτοῦ ἐπὶ Τύρον, καὶ τῆς δουλείας ἧς (ζ) ἐδούλευσαν 19 ἐπ' αὐτήν. Τάδε λέγει κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ δίδωμι τῷ Ναβουχοδονόσορ βασιλεῖ Βαβυλῶνος γῆν Αἰγύπτου, (η) καὶ προνομεύσει τὴν προνομὴν αὐτῆς, καὶ σκυλεύσει τὰ σκῦλα αὐτῆς· καὶ ἔσται μισθὸς τῇ δυνάμει αὐτοῦ, 20 Ἀντὶ τῆς (θ) λειτουργείας αὐτοῦ ἧς ἐδούλευσεν ἐπὶ Τύρον, δέδωκα αὐτῷ γῆν (ι) Αἰγύπτου. 21 τάδε λέγει κύριος κύριος. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀνατελεῖ κέρας παντὶ τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ, καὶ (κ) σοὶ δώσω στόμα ἀνεῳγμένον ἐν μέσῳ αὐτῶν, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος.

Et non erunt ultrà domui Israel 16 in spem reducentem in memoriam iniquitatis, ut sequantur ipsi post illos: & scient, quia ego sum Dominus. Et factum est in septi- 17 mo & vigesimo anno, una mensis primi, factum est verbum Domini ad me, dicens; Fili hominis, Na- 18 buchodonosor rex Babylonis servire fecit exercitum suum servitute magnâ super Tyrum. Omne caput decalvatum, & omnis humerus depilatus: & merces non fuit ei, & exercitui ejus super Tyrum, (h) & servitutis, quâ servierunt adversum eam. (i) Hæc 19 dicit Dominus Dominus; Ecce ego do Nabuchodonosor regi Babylonis terram Ægypti: (k) & deprædabitur deprædationem ejus, & spoliabit spolia ejus. Et erit merces virtuti ejus: Pro 20 ministerio ejus, quo servivit adversus Tyrum, dedi ei terram Ægypti. Hæc dicit Dominus Dominus. In die illa exorietur cornu 21 omni domui Israel: & tibi dabo os apertum in medio eorum: & scient, quia ego sum Dominus.

MS. A. (β) ἀναμιμνήσκουσαν ἁμαρτίαν, ἐν τῷ αὐτοὺς ἀκολουθῆσαι ὀπίσω τῶν καρδιῶν αὐτῶν, (γ) κύριος ὁ θεός. (δ) Τύρον, (ε) φαλάκρωμα, (ζ) ἐδούλωσεν αὐτήν. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει ἀδωναὶ κύριος, Ἰδοὺ δίδωμι (η) καὶ λήμψεται τὸ πλῆθος αὐτῆς, καὶ προνομεύσει (θ) δουλείας ἧς (ι) Αἰγύπτου, ὅσα ἐποίησάν μοι. τάδε λέγει ἀδωναὶ κύριος. (κ) δώσω σοι

ΚΕΦ. λ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέ- 2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, προφήτευσον, καὶ εἰπὸν, 3 Τάδε λέγει κύριος, Ὢ ὢ (α) ἡμέρα, Ὅτι ἐγγὺς ἡμέρα τοῦ κυρίου, ἡμέρα νεφέλης, (β) 4 πέρας ἐθνῶν ἔσται· Καὶ ἥξει (˜) μάχαιρα ἐπ' (γ) Αἰγυπτίους, καὶ ἔσται ταραχὴ ἐν (δ) γῇ Αἰθιοπίᾳ, καὶ (ε) συμπεσοῦνται τετραυματισμένοι ἐν Αἰγύπτῳ, (ζ) καὶ συμπεσεῖται τὰ 5 θεμέλια αὐτῆς. Πέρσαι, καὶ Κρῆτες, καὶ Λυδοὶ, καὶ Λίβυες, καὶ πάντες οἱ ἐπίμικτοι (η), καὶ τῶν υἱῶν τῆς διαθήκης μου, (θ) μαχαίρᾳ πεσοῦνται 6 ἐν αὐτῇ. Καὶ πεσοῦνται τὰ ἀντιστηρίγματα Αἰγύπτου, καὶ καταβήσεται ἡ ὕβρις τῆς ἰσχύος αὐτῆς ἀπὸ Μαγδωλοῦ ἕως (ι) Συήνης, μαχαίρᾳ πε- 7 σοῦνται ἐν αὐτῇ, λέγει κύριος. Καὶ ἐρημωθήσονται ἐν μέσῳ χωρῶν (κ) ἠρημωμένων, καὶ αἱ πόλεις αὐτῶν ἐν μέσῳ πόλεων ἠρημωμένων 8 ἔσονται. Καὶ γνώσονται (λ) ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, ὅταν δῶ πῦρ ἐπ' Αἴγυπτον, καὶ (μ) συντριβῶ- 9 σι πάντες οἱ βοηθοῦντες αὐτῇ. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐξελεύσονται ἄγγελοι σπεύδοντες ἀφανίσαι τὴν Αἰθιοπίαν, καὶ ἔσται ταραχὴ ἐν (ν) αὐτοῖς ἐν τῇ ἡμέρᾳ Αἰγύπτου, ὅτι ἰδοὺ ἥκει. 10 Τάδε λέγει (ξ) κύριος κύριος, Καὶ ἀπολῶ πλῆθος Αἰγυπτίων διὰ χειρὸς Ναβουχοδονόσορ βασιλέως Βαβυλῶνος,

CAP. XXX.

ET factus est sermo Domini 1 ad me, dicens; Fili hominis, va- 2 ticinare, & dic; Hæc dicit Do- 3 minus; (a) O, ô dies: Quoniam juxtà est dies Domini, (b) dies nubis: (c) finis gentium erit. Et ve- 4 niet gladius super Ægyptios: & erit conturbatio in terra Æthiopia: & cadent vulnerati in (d) Ægypto, & concident fundamenta ejus: Persæ, & Cretenses, & 5 Lydi, & (e) Libyes, & omnes commisti, & de filiis testamenti mei gladio cadent in (f) ea. Et 6 cadent sustentacula Ægypti: & descendet contumelia fortitudinis ejus à Magdolo usq; ad Syenem: gladio cadent in ea, dicit Dominus: Et desolabitur in medio 7 regionum desolatarum: & civitates (g) eorum in medio urbium desertarum erunt: Et sci- 8 ent, quoniam ego sum Dominus: quando dedero ignem super Ægyptum, & contriti fuerint omnes qui auxiliantur ei. In die illa e- 9 gredientur (h) nuntii festinantes disperdere (i) Æthiopiam: & erit conturbatio in eis in die Ægypti: quia ecce venit. Hæc dicit Do- 10 minꝰ Dominus; Et disperdā multitudine Ægyptiorum per manū Nabuchodonosor regis Babylonis,

MS. A. (α) ἡ ἡμέρα, Ὅτι ἐγγὺς ἡ ἡμέρα (β) καιρὸς πέρας (˜) ἡ μάχαιρα (γ) Αἴγυπτον, (δ) τῇ Αἰθιοπίᾳ, (ε) πεσοῦνται (ζ) καὶ λήμψονται τὸ πλῆθος αὐτῆς, καὶ (η) ἐπ' αὐτὴν, καὶ ἀπὸ τῶν υἱῶν (θ) ἐν αὐτῇ μαχαίρᾳ πεσοῦνται. (ι) Σουήνης, (κ) ἠφανισμένων, (λ) πάντες ὅτι (μ) συντριβήσονται (ν) Αἰγύπτῳ ἐν τῇ (ξ) ἀδωναὶ κύριος, Καὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 ולא יהון עוד לבית ישראל לאתרחצא עליהון לאדכרא חובין באפניותהון בתריהון
17 וידעון ארי אנא יי אלהים׃ והוה בעסרין ושבע שנין בקדמאה בחד לירחא הוה פתגם
18 נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ בר אדם נבוכדראצר מלכא דבבל אפלח ית
משריתיה פולחן רב על צור כל ריש נתר וכל כתף אתמרט ואגר לא הוה ליה
19 ולמשריתיה מצור על פולחנא דאפלח עלה׃ בכן כדנן אמר יי אלהים הא אנא יהיב
לנבוכדראצר מלכא דבבל ית ארעא דמצרים וישבי אתרגושתה ויבוז ביזה ויעדי
20 עדאה ותהי אגר למשריתיה׃ אגריה דאפלח ביה יהבית ליה ית ארעא דמצרים
21 דחבו קדמי לאתפרע מנהון אמר יי אלהים׃ ביומא ההוא איתי פורקן לבית ישראל
ולך אתן מפתח פומא בנבואה ביניהון וידעון ארי אנא יי׃

ל

1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ בר אדם אתנבי ותימר כדנן אמר יי
2 אלהים אילילו ואמרו ווי מן קדם יומא׃ ארי קריב יומא וקריב יומא דעתיד למיתי
3 מן קדם יי יום ענן זיע עדן תבר עממיא יהי׃ ותחול חרבא במצרים ויהי זיע בכוש כד
4 יתרמון קטילין במצרים וישבון אתרגושתה ויתפגרון אושהא׃ כושאי ופוטאי ולודאי
5 וכל סומכותא וכוב ובני ארעא קימא עמהון בחרבא יתקטלון׃ כדנן אמר יי
6 ויתקטלון סעדי מצרים ויבטיל יקר תוקפה ממגדול סונה בחרבא יתקטלון בה אמר
7 8 יי אלהים׃ ויצדון בגו מדינן דצדין וקרוהי בגו קרוין דהואה חרבן יהוין׃ וידעון
9 ארי אנא יי כד אתן עממיא דתקיפין כאשתא על מצרים ויתברון כל סעדהא׃ בעדנא
ההיא יפקון אזגדין מן קדמי בלגיונין לאועא ית כוש דשריא לרוחצן ויהי זיע בהון
10 כיום מצרים ארי הא אתיא׃ כדנן אמר יי אלהים ואבטל ית אתרגושת מצרים ביד
נבוכדנאצר מלכא דבבל׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et non erunt ultrà domui Israel ut confidant in eis in recordationem pecca- 16 torum, cùm declinaverint post eos, & scient quia ego Dominus Deus. Et fa- 17 ctum est vicesimo & septimo anno, primo [*mense,*] prima die mensis, factum est verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: Fili hominis, Nabu- 18 chodonosor rex Babylonis servire fecit exercitum suum servitute multa adversus Tyrum. Omnes capilli capitis defluebant, & omnis humerus depilatus est; & merces non fuit ei & exercitui ejus de Tyro, pro servitute qua usus erat adversus eam. Propterea hæc dicit Dominus Deus: Ecce ego dabo Na- 19 buchodonosor regi Babylonis terram Ægypti, & in captivitatem ducet multitudinem ejus, & deprædabitur prædam ejus, & auferet spolia, & erit merces exercitui ejus. Mercedem dedi ei terram Ægypti, pro eo quòd servivit 20 in ea, eò quòd peccaverunt coram me, ut ultionem sumam ab eis, ait Dominus Deus. In die illa *afferam* redemptionem domui Israel, & tibi dabo 21 apertionem oris in prophetiam inter eos; & scient quia ego Dominus.

CAP. XXX.

ET factum est verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: Fili ho- 1 minis vaticinare & dices: Hæc dicit Dominus Deus: Ululate & dicite: Væ 2 ob diem. Quia propè est dies, & juxta est dies qui venturus est à facie Domi- 3 ni, dies nubilus tremoris, tempus interitus populorum erit. Et residebit gla- 4 dius in Ægypto, & erit tremor in Æthiopia, cùm prosternentur interfecti in Ægypto, & capietur multitudo ejus, & destruentur fundamenta ejus. Æthio- 5 pes & Lydi & Libyes & omnes qui conjuncti sunt eis, & Cub, & filii fœderis, cum eis gladio occident. Hæc dicit Dominus: Et occident 6 sustentantes Ægyptū, & abolebitur decus roboris ejus, à turre Svenes gladio occidentur in ea, dicit Dominus Deus. Et desolabuntur in medio provinci- 7 arum quæ sunt desolatæ, & urbes ejus erunt in medio civitatum earum quæ desertæ sunt. Et scient quia ego Dominus, cùm dedero populos qui fortes 8 sunt sicut ignis super Ægyptum, & contriti fuerint omnes auxiliatores ejus. In tempore illo egredientur nuntii à facie mea cum legionibus ad terrendum 9 Æthiopiam quæ habitat confidenter, & erit tremor in eis sicut in die Ægypti, quia ecce venit. Hæc dicit Dominus Deus: & cessare faciam tumultum Ægy- 10 pti in manu Nabuchodonosor regis Babylonis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܬܘܒ ܠܐ ܢܗܘܘܢ ܠܬܘܟܠܢܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܠܡܥܗܕܢܘܬܐ ܕܥܘܠܐ. ܟܕ ܐܙܠܘ ܒܬܪܗܘܢ.
ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܒܫܢܬ ܥܣܪܝܢ ܘܫܒܥ. ܒܝܪܚܐ ܩܕܡܝܐ. ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ.
ܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܫܥܒܕ
ܠܚܝܠܗ ܫܥܒܘܕܐ ܪܒܐ ܥܠ ܨܘܪ. ܟܠ ܪܝܫ ܩܪܝܚ. ܘܟܠ ܟܬܦ ܡܪܝܛܐ. ܘܐܓܪܐ
ܠܐ ܐܬܝܗܒ ܠܗ ܘܠܚܝܠܗ ܡܢ ܨܘܪ. ܥܠ ܫܥܒܘܕܐ ܕܫܥܒܕܗ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܐܠܗܐ. ܗܐ ܝܗܒ ܐܢܐ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܢܫܩܘܠ ܩܢܝܢܗ
ܘܢܒܘܙ ܒܙܬܗ. ܘܢܒܘܙ ܒܙܬܗ. ܘܬܗܘܐ ܐܓܪܐ ܠܚܝܠܗ. * ܘܚܠܦ ܦܘܠܚܢܐ ܕܠܐܝ
ܒܨܘܪ. ܝܗܒܬ ܠܗ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܕܢܚ ܩܪܢܐ ܠܒܝܬ
ܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܦܬܚ ܦܘܡܟ ܒܝܢܬܗܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠ * * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ.
ܐܬܢܒܐ ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܐܝܠܠܘ ܘܐܡܪܘ. ܘܝ ܠܗ ܠܝܘܡܐ ܕܩܪܝܒ ܗܘ ܝܘܡܐ.
* ܩܪܝܒ ܗܘ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܝܘܡܐ ܕܥܢܢܐ. ܘܙܒܢܐ ܕܥܡܡܐ. * ܘܬܐܬܐ ܚܪܒܐ ܥܠ ܡܨܪܝܢ.
ܘܬܗܘܐ ܬܗܪܐ ܒܟܘܫ. ܟܕ ܢܦܠܘܢ ܩܛܝܠܐ ܒܡܨܪܝܢ. ܘܢܣܒܘܢ ܥܘܬܪܗ. ܘܢܥܩܪܘܢ
ܫܬܐܤܘܗܝ. * ܘܟܘܫܝܐ ܘܦܘܛܝܐ ܘܠܘܒܝܐ. ܘܟܠܗ ܥܪܒ ܘܟܘܒ. ܘܒܢܝ ܐܪܥܐ ܕܩܝܡܐ
ܥܡܗܘܢ. ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܢܦܠܘܢ ܣܡܟܘܗܝ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܢܬܬܒܪ
ܫܒܚܐ ܕܥܘܫܢܗ. ܡܢ ܡܓܕܠ ܕܣܘܢܐ. ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ ܒܗ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. * ܘܢܚܪܒܘܢ
ܒܝܢܬ ܐܪܥܬܐ ܕܚܪܒܢ. ܘܩܘܪܝܗܝܢ ܒܝܢܬ ܩܘܪܝܐ ܚܪܝܒܬܐ ܢܗܘܝܢ. * ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ
ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܫܕܪܬ ܢܘܪܐ ܒܡܨܪܝܢ. ܘܢܬܬܒܪܘܢ ܟܠܗܘܢ ܡܥܕܪܢܝܗ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ
ܢܦܩܘܢ ܐܝܙܓܕܐ ܡܢ ܩܕܡܝ ܒܣܘܪܗܒܐ. ܠܡܚܪܒܘ ܠܟܘܫ ܕܝܬܒܐ ܠܬܘܟܠܢ. ܘܬܗܘܐ
ܒܗܘܢ ܬܗܪܐ ܒܝܘܡܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܗܐ ܐܬܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܘܐܒܛܠ ܐܢܐ
ܠܥܘܬܪܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܒܐܝܕ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ.

16 Et non erunt ampliùs Iſraelitis in confidentiam & memoriam iniquitatis, nam hi ſequebantur illos: & experientur me eſſe Dominū dominorum. 17 Anno vigeſimo ſeptimo, menſe primo, primâ menſis, fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 18 Fili hominis, Nebuchadnoſar rex Babylonis fatigavit omnes copias ſuas magna ſervitute contra Tyrum, *adeo ut* in omni capite *facta ſint* calvitia, & omnis humerus exhauſtus: nulla tamen merces data fuit ipſi neque copiis ej⁹ à Tyro, pro ſervitute quâ fatigavit eas. 19 Iccircò ſic ait Dominus dominorum; Ecce do Nebuchadnoſari regi Babylonis terram Ægypti, ut tollat poſſeſſionem ejus, diripiat ſpolium ej⁹, & deprædetur prædam ej⁹, cedátque in mercedem copiis ipſius. 20 Itaque pro opera cui deſudavit in Tyro, do illi terram Ægypti, ait Dominus dominorum. 21 Eodem illo die oriri faciam cornu Iſraelitis, & aperiam os tuum inter eos; & ſcient me eſſe Dominum dominorum.

CAP. XXX.

1 RUrſus fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 2 Fili hominis, vaticinare, & dic, Sic ait Dominus dominorum; Ejulate, & dicite; Ah de die illa, nam proxima eſt illa dies: 3 Proxima eſt dies Domini, dies nubila, & tempus gentium: 4 Quum invadet gladius Ægyptum, erítque ſtupor in Æthiopia; quum corruent occiſi in Ægypto, & diripient divitias ejus, & evellent fundamenta ejus: 5 Æthiopes, Putæi, & Lybii, tota Arabia, & Cubæi, atque terrigenæ, cum quibus fœdere *conjuncti ſunt*, gladio corruent. 6 Sic ait Dominus dominorum; Corruēt ſuſtentacula Ægypti, & confringetur fortitudo roboris ejus; inde à turri Suna gladio corruent in ea, dicit Domin⁹ dominorum. 7 Et deſolabuntur inter regiones deſolatas, & urbes earum inter urbes deſolatas erunt: 8 Et cognoſcent me eſſe Dominum qui ignem dimiſi per Ægyptum, ut attererentur omnes auxiliarii ejus. 9 Eodem illo die prodibunt nuntii à conſpectu meo velociter, ad vaſtandam Æthiopiam quæ ſecura deſidet: erítque inter illos tumultus in die Ægypti; & ecce advênit. 10 Sic ait Dominus dominorum; Tradam divitias Ægypti in manum Nebuchadnoſaris regis Babyloniæ,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولا يصيرون ايضا لبيت اسرائيل رجاء مذكرا للخطية * عند ما يلحقون خلفهم * ويعلمون اني
انا ادوناي الرب * وكان في السنة السابعة والعشرين * في اول يوم من الشهر الاول * كان قول الرب
الي قايلا * يا ابن الانسان * ان بختنصر ملك بابل استعبد جيشه عبودية عظيمة على صور * كل
راس للسلخ * وكل كتف للجراحات * ولم تكن له اجرة ولا لجيشه على صور من العبودية التي
استعبدوها عليها * لاجل هذا هكذا يقول الرب الرب * ها اعطي لبختنصر ملك بابل ارض مصر
وياخذ كثرها * وينهب نهبها * ويغنم غنايمها * وتصير اجرة لجيشه * عوض جيشه الذي
استعبد على صور * اعطي له ارض مصر * هكذا يقول الرب الرب * في ذلك اليوم يشرق قرن
لبيت كل آل اسرائيل * واعطي لك فما مفتوحا في وسطهم * ويعلمون اني انا الرب *

* الفصل الثلثون *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان تنبا وقل * هكذا يقول ادوناي الرب * اف اف اليوم
* لان يوم الرب قريب * يوم سحابة يكون انتهاء الامم * ويكون السيف على المصريين * ويكون
القلق في الحبشة * ويسقطون مجروحين في مصر * وياخذ يسارها الفرس * والاقريطسيون * واللوديون
واهل النوبة * وجميع المختلطين * ومن بني عهدي فيها يسقطون بالسيف * ويسقط دعائم
مصر * وينحط كبرياء قوتها * من مجدول الى اسوان يسقطون فيها بالسيف يقول ادوناي الرب
* ويخرب في وسط البلدان * ويصير مدنها في وسط مدن الخراب * ويعلمون اني انا الرب اذ اعطي
نارا على مصر * وينكسر جميع معينيها * في ذلك اليوم يخرج مخبرون مسرعين ليهلكوا الحبشة
ويكون القلق فيها في يوم مصر * لانه ها هو اتي * هكذا يقول الرب الرب * اهلك كثرة
المصريين بيد بختنصر ملك بابل

16 *Ita non erunt ampliùs Iſraelis ſpes mentionem faciens iniquitatis, ſectando illos: & ſcient me eſſe Adonai Dominum.* 17 *Præterea contigit anno vigeſimo ſeptimo, primâ die menſis primi, ut eſſet ſermo Domini ad me, dicens;* 18 *O fili hominis, Bochtonaſſar rex Babelis depreſſit exercitum ſuum ſervitute magnâ propter Sur: omne caput vulneri, & omnis humerus plagis* expoſitus eſt; *nullam tamen habuit ipſe mercedem neque exercitus ejus propter Sur, pro ſervitute cui ſe ſubjecerunt propter eam.* 19 *Propterea ſic dicit Dominus Dominus; Ecce ego do Bochtonaſſari regi Babelis terram Ægypti; capiétque multitudinem ejus, prædabitur prædam ejus, & diripiet ſpolia ipſius; ut ſit mercedi exercitui ejus.* 20 *Pro ſervitute quâ preſſit exercitum ſuum propter Sur, do illi terram Ægypti. Sic ait Dominus Dominus;* *In illa die exorietur cornu domui totius familiæ Iſraelis, daboque tibi os apertum in medio eorum, & ſcient me eſſe Dominum.*

CAP. XXX.

1 *FUit etiam ſermo Domini ad me, dicens;* 2 *O fili hominis, propheta & dic; Ita dicit Adonai Dominus; Heu, heu dies:* 3 *Nam dies Domini proximus eſt, dies nubis erit finis gentium:* 4 *Eritque gladius ſuper Ægyptios, & erit perturbatio in Æthiopia, cadentq; vulnerati in Ægypto:* 5 *Tollent divitias ejus Perſæ, & Cretenſes, Lydii, & Nubienſes, omneſque commixti: atque de filiis fœderis mei, in ipſa gladio cadent:* 6 *Cadent etiam fulcra Ægypti, & deprimetur ſuperbia potentiæ ipſius: à Magdol ad Aſuan cadent in ea gladio, dicit Adonai Dominus.* 7 *Et vaſtabitur inter regiones, eruntque urbes ejus inter urbes dirutas:* 8 *Scientque me eſſe Dominum, quum ignem dedero ſuper Ægyptum, & confracti fuerint omnes adjutores ejus.* 9 *In illa die exibunt nuntii feſtini ad perdendam Æthiopiam: & erit in ea perturbatio in die Ægypti, quoniam en ipſa inſtat.* 10 *Ita dicit Dominus Dominus, Perdam multitudinem Ægyptiorum per manum Bochtonaſſaris regis Babelis;*

יחזקאל : ל

disperdendū ad adducti gentium fortes eo cum ej⁹ populus & ,Ipse
11 הוא ועמו אתו עריצי גוים מובאים לשחת
implebunt & ,Ægyptum super suos gladios evaginabunt & : terram
הארץ והריקו חרבותם על־מצרים ומלאו את־
terram vendam & ,siccitatem flumina dabo Et .*occiso* terram
12 הארץ חלל : ונתתי יארים חרבה ומכרתי את־הארץ
.alienorū manu in ej⁹ plenitudinē &,terram *desolabo* & : malorū manu in
ביד־רעים והשמתי ארץ ומלאה ביד־זרים
faciā perdere Et : Deus Dominus dixit Sic .sum locutus Dominus Ego
13 אני יהוה דברתי : כה־אמר אדני יהוה והאבדתי
Ægypti terra de *prælatus* &,Noph de idola faciā cessare &,simulachra
גלולים והשבתי אלילים מנף ונשיא מארץ־מצרים
faciā desolare Et .Ægypti terra in timorem dabo &;ultrà erit non
14 לא יהיה־עוד ונתתי יראה בארץ מצרים : והשמתי את־
effundam Et .No in judicia faciam & : Sohan in ignem dabo &,Pathros
15 פתרס ונתתי אש בצען ועשיתי שפטים בנא : ושפכתי
.No *turbam* succidam & : Ægypti robur Sin super meam iram
חמתי על־סין מעוז מצרים והכרתי את־המון נא :
: *scindi ad* erit No &,Sin dolebit dolendo,Ægypto in ignem dabo Et
16 ונתתי אש במצרים חול תחיל סין ונא תהיה להבקע
:cadent gladio in beseth-Pi &,Aven Juvenes .*interdiu tormina* Noph ipsi &
17 ונף צרי יומם : בחורי און ופי־בסת בחרב יפלו
prohibuit Techaphnehes in Et .ibunt captivitatem in *ipsæ* &
18 והנה בשבי תלכנה : ובתחפנחס חשך
superbia ea in cessabit & ,Ægypti vectes ibi *me frangendo in* ,dies
היום בשברי־שם את־מטות מצרים ונשבת־בה גאון
captivitatem in ejus *filiæ* & ,*eam* operiet nubes ipsam :ejus fortitudinis
עזה היא ענן יכסנה ובנותיה בשבי
.Dominus *ego* quòd scient & : Ægypto in judicia faciam Et .ibunt
19 תלכנה : ועשיתי שפטים במצרים וידעו כי־אני יהוה :
fuit : mensis septima in ,primo in ,anno undecimo in fuit Et
20 ויהי באחת עשרה שנה בראשון בשבעה לחדש היה
Parhoh brachium ,hominis Fili : dicendo,me ad Domini verbum
21 דבר־יהוה אלי לאמר : בן־אדם את־זרוע פרעה
,medicamina ponēdū ad,alligatū est non ecce &,confregi Ægypti regis
מלך־מצרים שברתי והנה לא־חבשה לתת רפאות
.gladiū *in* tenēdū ad,illud roborādū ad,illud alligādū ad ,fasciā ponēdū ad
לשום חתול לחבשה לחזקה לתפש בחרב :
, Ægypti regem Parhoh ad *ego* Ecce : Deus Dominus dixit sic Propterea
22 לכן כה־אמר אדני יהוה הנני אל־פרעה מלך־מצרים
faciā cadere & : confractū & ,fortitudinē ej⁹ brachia conteram &
ושברתי את־זרעתיו את־החזקה ואת־הנשברת והפלתי
:gentes in Ægyptios faciā dispergere Et .ejus manu de gladium
23 את־החרב מידו : והפיצותי את־מצרים בגוים
,Babel regis brachia confortabo Et .terras in eos ventilabo &
24 וזריתם בארצות : וחזקתי את־זרעות מלך בבל
, Parhoh brachia cōfringam & :ejus manu in meū gladium daboque
ונתתי את־חרבי בידו ושברתי את־זרעות פרעה
brachia confortabo Et .*ejus facies ad* interfectus clamorib⁹ clamabit &
25 ונאק נאקות חלל לפניו : והחזקתי את־זרעות
,Dominus *ego* quòd scient Et .concident Parhoh brachia & ,Babel regis
מלך בבל וזרעות פרעה תפלנה וידעו כי־אני יהוה
eum extenderit & , Babel regis manu in meum gladium *me dando in*
בתתי חרבי ביד מלך־בבל ונטה אותה
, gentes in Ægyptios faciam dispergere Et .Ægypti terram *ad*
26 אל־ארץ מצרים : והפיצותי את־מצרים בגוים
.Dominus *ego* quòd scient & : terras in eos ventilabo &
וזריתי אותם בארצות וידעו כי־אני יהוה :

Versio VULG. LAT.

11 Ipse & popul⁹ ej⁹ cū eo, fortissimi
Gentium, adducentur ad disper-
dendā terram : & evaginabunt
gladios suos super Ægyptum : &
12 implebunt terrā interfectis. Et
faciam alveos fluminū aridos, &
tradā terrā in man⁹ pessimorum :
& dissipabo terrā & plenitudi-
nem ej⁹ manu alienorū, ego Dñs
13 locut⁹ sum. Hæc dicit Dñs De⁹;
Et disperdā simulachra, & cessare
faciam idola de Memphis : & dux
de terra Ægypti non erit am-
plius : & dabo terrorem in terra
14 Ægypti. Et disperdam terrā Pha-
thures, & dabo ignē in Taphnis,
& faciam judicia in Alexandria.
15 Et effundam indignationē meam
super Pelusiū robur Ægypti, &
interficiam multitudinē Alexan-
16 driæ, Et dabo ignē in Ægy-
pto : quasi parturiens dolebit Pe-
lusiū, & Alexandria erit dissipa-
ta, & in Memphis angustiæ quo-
17 tidianæ. Juvenes Heliopoleos &
Bubasti gladio cadent, & ipsæ
18 captivæ ducentur. Et in Taphnis
nigrescet dies, cùm contrivero
ibi sceptra Ægypti, & defecerit
in ea superbia potentiæ ej⁹ : ipsā
nubes operiet, filiæ autē ej⁹ in ca-
19 ptivitatem ducentur. Et judicia
faciā in Ægypto : & scient quia
20 ego Dñs. Et factū est in undeci-
mo anno, in primo mense, in se-
ptima mensis, factū est verbū Dñi
21 ad me, dicens; Fili hominis, bra-
chiū Pharaonis regis Ægypti cō-
fregi : & ecce non est obvolutū
ut restitueretur ei sanitas, ut li-
garetur pannis, & fasciaretur
linteolis, ut recepto robore pos-
22 set tenere gladiū. Propterea hæc
dicit Dñs De⁹; Ecce ego ad Pha-
raonem regē Ægypti, & commi-
nuam brachiū ej⁹ forte, sed con-
fractū : & dejiciā gladiū de ma-
23 nu ej⁹ : Et dispergam Ægyptum
in Gentib⁹, & ventilabo eos in
24 terris. Et confortabo brachia
regis Babylonis, daboq; gladium
meū in manu ej⁹ : et confringam
brachia Pharaonis, et gement ge-
mitib⁹ interfecti coram facie ej⁹.
25 Et confortabo brachia regis Ba-
bylonis, et brachia Pharaonis
concident : et scient quia ego
Dñs, cùm dedero gladiū meū in
manu regis Babylonis, et exten-
derit eum super terram Ægypti.
26 Et dispergam Ægyptum in nati-
ones, et ventilabo eos in terras,
et scient quia ego Dominus.

Vers. GRÆ. LXX. Interp.

11 Αὐτοῦ καὶ τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, λοιμοὶ ἀπὸ ἐθνῶν
ἀπεσταλμένοι (ο) ἀπολέσαι γῆν· καὶ ἐκκενώ-
σουσι πάντες τὰς μαχαίρας αὐτῶν ἐπ' Αἴ-
γυπτον, καὶ πλησθήσεται (π) ἡ γῆ τραυματιῶν.
12 Καὶ δώσω τοὺς ποταμοὺς αὐτῆς ἐρήμους, καὶ (ρ)
ἀπολῶ τὴν γῆν, καὶ τὸ πλήρωμα αὐτῆς ἐν χερ-
σὶν ἀλλοτρίων, ἐγὼ κύριος (σ) λελάληκα.
13 Ὅτι τάδε (τ) λέγει κύριος κύριος, Καὶ ἀπο-
λῶ μεγιστᾶνας ἀπὸ Μέμφεως, καὶ ἄρχοντας
(υ) Μέμφεως ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ οὐκ ἔσονται
14 (φ) ἔτι. Καὶ ἀπολῶ γῆν Φαθωρῆς, καὶ δώσω
πῦρ ἐπὶ Τάνιν, καὶ ποιήσω ἐκδίκησιν ἐν Δι-
15 οσπόλει. Καὶ ἐκχεῶ τὸν θυμόν μου ἐπὶ (χ) Σαῒν
τὴν ἰσχὺν Αἰγύπτου, καὶ ἀπολῶ (ψ) τὸ πλῆθος
16 Μέμφεως. Καὶ δώσω πῦρ ἐπ' Αἴγυπτον, καὶ
(ω) ταραχῇ ταραχθήσεται ἡ Συήνη, καὶ ἐν
Διοσπόλει ἔσται ἔκρηγμα, καὶ διαχυθήσεται ὕ-
17 δατα. Νεανίσκοι Ἡλιουπόλεως καὶ Βουβάστου
(α) ἐν μαχαίρᾳ πεσοῦνται, καὶ (β) αἱ γυναῖκες
18 ἐν αἰχμαλωσίᾳ πορεύσονται. Καὶ ἐν Τάφναις
συσκοτάσει ἡ ἡμέρα, ἐν τῷ συντρίψαι με
ἐκεῖ τὰ σκῆπτρα Αἰγύπτου· καὶ ἀπολεῖται ἐκεῖ ἡ
ὕβρις (*) ἰσχύος αὐτῆς, καὶ (γ) ταύτην νεφέλη
καλύψει, καὶ αἱ θυγατέρες αὐτῆς αἰχμάλωτοι
19 (δ) ἀρθήσονται. Καὶ ποιήσω κρίμα ἐν Αἰγύ-
20 πτῳ, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. Καὶ
ἐγένετο ἐν τῷ ἑνδεκάτῳ ἔτει, ἐν τῷ πρώ-
τῳ μηνὶ, ἑβδόμῃ τοῦ μηνὸς, ἐγένετο λόγος
21 κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, τοὺς
βραχίονας Φαραὼ βασιλέως Αἰγύπτου συν-
έτριψα, καὶ ἰδοὺ οὐ κατεδέθη (ε) τοῦ δοθῆναι
ἴασιν (ζ), τοῦ δοθῆναι ἐπ' αὐτὸν μάλαγμα, τοῦ
22 δοθῆναι ἰσχὺν ἐπιλαβέσθαι μαχαίρας. Δια-
τοῦτο τάδε λέγει κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ
ἐπὶ Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ συντρίψω
τοὺς βραχίονας αὐτοῦ τοὺς ἰσχυροὺς, καὶ τοὺς τε-
ταμένους, (η) καὶ καταβαλῶ τὴν μάχαιραν αὐτοῦ
23 ἐκ τῆς χειρὸς αὐτοῦ, Καὶ διασπερῶ Αἴγυπτον εἰς
τὰ ἔθνη, καὶ λικμήσω αὐτοὺς εἰς τὰς χώρας.
24 (θ) Καὶ κατισχύσω τοὺς βραχίονας βασιλέ-
ως Βαβυλῶνος, καὶ (ι) δώσω τὴν ῥομφαίαν μου
εἰς (κ) τὴν χεῖρα αὐτοῦ, καὶ ἐπάξει αὐτὴν ἐπ' Αἴ-
γυπτον, καὶ προνομεύσει τὴν προνομὴν αὐτῆς, καὶ
25 σκυλεύσει τὰ σκῦλα αὐτῆς. Καὶ ἐνισχύσω τοὺς
βραχίονας βασιλέως Βαβυλῶνος, οἱ δὲ βρα-
χίονες Φαραὼ πεσοῦνται. καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ
εἰμι κύριος, ἐν τῷ δοῦναι τὴν ῥομφαίαν μου
εἰς χεῖρας βασιλέως Βαβυλῶνος, καὶ ἐκτε-
26 νεῖ αὐτὴν ἐπὶ γῆν Αἰγύπτου. Καὶ διασπερῶ Αἴ-
γυπτον εἰς τὰ ἔθνη, καὶ λικμήσω αὐτοὺς εἰς
τὰς χώρας, καὶ (λ) γνώσονται πάντες ὅτι ἐγώ
εἰμι κύριος.

MS. A. (ο) ἀφανίσαι αὐτήν· (π) τραυματιῶν ἡ γῆ. (ρ) ἀποδώσομαι τὴν
γῆν ἐν χειρὶ πονηρῶν, καὶ ἀπολῶ τὴν γῆν αὐτῆς σὺν τῷ πληρώματι αὐτῆς (σ) ἐλά-
λησα. (τ) λέγει ἀδωναῒ κύριος, Καὶ ἀπολῶ βδελύγματα, καὶ καταπαύσω με-
γιστᾶνας (υ) Τάνεως (φ) οὐκέτι. Καὶ δώσω φόβον ἐν γῇ Αἰγύπτῳ, καὶ ἀφανιῶ
γῆν Παθουρῆς, καὶ (χ) Τάνιν, (ψ) πλῆθος (ω) ἀπολεῖται Συήνη, (α) μαχαίρᾳ
(β) αἱ πόλεις αἰχμαλωτισθήσονται. Καὶ ἐν (*) τῇ ἰσχύος (γ) αὐτῆς (δ) ἀχθήσονται.
(ε) μου τοῦ (ζ) ἐπ' αὐτῷ, τοῦ δοθῆναι μάλαγμα, (η) καὶ τοὺς συντριβομένους, καὶ
(θ) Κατισχύσω (ι) θήσω (κ) τὰς χεῖρας αὐτοῦ, (λ) ἐπιγνώσονται πάντες οἱ Αἰ-
γύπτιοι ὅτι

cum Transl. LAT.

Ipsius, & populi ejus : pestilentes, 11
qui de gentibus missi sunt ad per-
dendam terram. Et evaginabunt
omnes gladios suos super Ægy-
ptum : & replebitur terra vulne-
ratorum. Et dabo fluvios eorum 12
(k) desertos : & disperdam terrā
& plenitudinem ejus, in manibus
alienorum. Ego Dominus loquut⁹
sum. Quia hæc dicit Dominus 13
Dominus; Et (l) perdam optimates
de Memphis, & principes (m)
Memphеos de terra Ægypti : &
non erunt ultra. Et (n) disperdam 14
terrā Phathores, & dabo ignem
super Tanin : & faciā ultionē in
(o) Diospoli : Et effundā furorem 15
meū super Sain robur Ægypti : &
disperdā multitudinē Memphe-
os. Et dabo ignem super Ægyptū : 16
& conturbatione conturbabitur
Syene : & in Diospoli erit scissura,
et diffundentur (p) aquæ. Juvenes 17
Heliopoleos & Bubasti in gladio
cadent : & mulieres in captivita-
tem abibunt : Et in Taphnis tene- 18
brescet dies ; quando contrivero
ibi sceptra Ægypti : & peribit ibi
contumelia fortitudinis ejus : &
ipsā nubes operiet ; & filiæ ejus
captivæ (q) auferentur. Et faciam 19
** judiciū in Ægypto : & scient,*
quoniā ego sum Domin⁹. Et factū 20
est in undecimo anno, in primo
mense, septimâ mensis, factū est
verbū Domini ad me, dicens; Fili 21
hominis, brachia Pharaonis re-
gis Ægypti contrivi : neq; ecce
(r) deprecatus est, ut daretur
medela, ut daretur super eum
malagma, (s) ut daretur robur ad
tenendū gladium. Propterea hæc 22
dicit Domin⁹ Domin⁹ ; Ecce ego
super Pharaonē regē Ægypti : &
conterā brachia ej⁹ fortia, & (t)
extenta : & dejiciā gladiū ej⁹ de
manu ejus : Et disseminabo Ægy- 23
ptū in gentes, & ventilabo eos in
terras. Et confortabo brachia 24
regis Babylonis : & dabo gladium
meū in manu ejus : & inducet
eum super Ægyptū ; & populabi-
tur prædā ejus, & spoliabit spolia
illi⁹. Et confortabo brachia regis 25
Babylonis : brachia autē Phara-
nis cadent. Et scient, quia ego sū
Domin⁹ ; cùm dedero gladiū me-
um in manus regis Babylonis. Et
(u) extendet eum super terram
Ægypti : Et disseminabo Ægy- 26
ptum in gentes, & ventilabo eos
in terras. Et scient omnes, quia
ego sum Dominus.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 הוא ועמיה עמיה תקיפי עממיא אתן לחבלא ארעא וישלפון סיפיהון על מצרים
12 וימלון ית ארעא קטילין : ואתן נהריהון יבשתא ואמסר ית ארעא ביד מבאשין
13 ואצדי ארעא ומלאה ביד רשיעין אנא יי גזרית במימרי : כדנן אמר יי אלהים ואביד
דפלחין לטעותא ואשיצי דפלחין לצלמניא ממפס ומלכא מארעא דמצרים לא יהי
14 עוד ואתן דחלא במצרים : ואצדי ית פתרוס ואיתי עמא דתקיפין כאשתא על טאנים
15 ואעביד פורענות דינין באלכסנדריא : ואשפוך חימתי על סין תקוף מצרים ואשיצי
16 ית אתרגושת אלכסנדריא : ואיתי עממיא דתקיפין כאשתא במצרים מזע תזוע
17 סין ואלכסנדריא תהי מתרעא משור ומפיס בעלי דבבו יקפונה יום יום : עולימי און
18 ופי בסת בחרבא יתקטלון ופלחיהון בשביא יהכון : ועל תחפנחס איתי חשוך
ביממא כד אתבר תמן ית תקוף מצרים ויבטל בה יקר תוקפה מלך במשריתיה
19 יחפנה כעננא דסליק וחפי ית ארעא ויתבי כפרנהא בשביא יהכון : ואעביד
20 פורענות דינין במצרים וידעון ארי אנא יי : והוה בחדא עשרי שנין בקדמאה
21 בשבעא לירחא הוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם ית תקוף פרעה
מלכא דמצרים תברית והא לא מתקפא לאתסאה למתן עיצה למחכם לאתקפא
22 למיחד מלכו : בכן כדנן אמר יי אלהים הא אנא שלח רוגזי על פרעה מלכא דמצרים
ואתבר ית סעדוהי וית שלטונוהי תקיפיא דבהון הוא תבר ית מלכותא וארמי ית
23 24 תוקפא מניה : ואגלי ית מצראי בני עממיא ואבדרנון במדינתא : ואתקיף ית מלכות
מלכא דבבל ואתן ית תוקפי בידיה ואתבר ית תקוף פרעה ויניהם נהום מטעני חרב
25 קדמוהי : ואתקיף ית מלכות מלכא דבבל ומלכות פרעה תבטיל וידעון ארי אנא יי
26 כד אתן תוקפי ביד מלכא דבבל ויתפרע פורענות מן ארעא דמצרים : ואגלי ית
מצראי לביני עממיא ואבדר יתהון במדינתא וידעון ארי אנא יי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ipsum & *populum* ejus cum eo, fortes populorum *dabo* ad disperdendam ter- 11
ram, & evaginabunt gladios suos super Ægyptum, & implebunt terram inter-
fectis. Et dabo flumina eorum in siccum, & tradam terram in manum mali- 12
gnantium, & destruam terram & plenitudinem ejus in manu impiorum : ego
Dominus decrevi in verbo meo. Hæc dicit Dominus Deus : Et perdam colen- 13
tes idola, & consumā colentes simulachra de Memphis, & rex ex terra Ægypti
non erit amplius : & dabo timorem in *Ægypto*. Et desolabo Phatures, & ad- 14
ducam populos qui fortes sunt sicut ignis, super Tanes, & faciam ultionem
judiciorum in Alexandriam. Et effundam indignationem meam super Pelu- 15
sium robur Ægypti, & disperdam multitudinem Alexandriæ. Et *adducam* 16
populos qui fortes sunt sicut ignis, sup Ægyptū; contremiscens contremiscet
Pelusium, & Alexandria muris subruetur, & Memphim circundabunt inimici
quotidie. Juvenes Heliopoleos & Bubasti gladio occidentur, & servientes 17
eis in captivitatem ibunt. Et in Taphnim tenebras adducam interdiu, cùm 18
contrivero ibi fortitudinem Ægyptiorum, & cessaverit in ea gloria fortitudi-
nis ejus. Rex cum exercitu suo operiet eam sicut nubes quæ ascendit & ope-
rit terrā ; & habitatores villarum ejus in captivitatem ibunt. Et faciam ulti- 19
onem judiciorum in Ægypto, & scient quia ego Dominus. Et factum est an- 20
no undecimo, primo mense, septima mensis, factus est sermo prophetiæ à facie
Domini mecum, dicens : Fili hominis, fortitudinem Pharaonis regis Ægypti, 21
confregi, & ecce non confirmabitur ut sanetur, ut det consilium quò sapien-
ter agat, ut roboretur ad regnum tenendum. Propterea hæc dicit Dominus 22
Deus : Ecce ego mitto furorem meum super Pharaonem regem Ægypti et
conteram auxiliatores ejus, et principes ejus fortissimos quibus ille regna con-
fregit ; et projiciam fortitudinem ab eo. Et transmigrare faciam Ægyptios 23
inter populos, et dispergam eos per provincias. Et roborabo regnum regis 24
Babylonis, et dabo fortitudinem meam in manum ejus, et conteram fortitudi-
nem Pharaonis. Et gemet gemitu eorum qui confossi sunt gladio coram eo.
Et roborabo regnum regis Babylonis, et regnum Pharaonis cessabit ; et scient 25
quia ego Dominus, cùm dedero fortitudinem meam in manum regis Babylo-
nis, et ultus fuerit ultionem de terra Ægypti. Ac demigrare faciam Ægyptios 26
inter populos, et dispergam eos per provincias, et scient quia ego Dominus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܘ ܘܥܫܝܢܐ ܕܥܡܗ. ܕܐܬܝܢ ܠܡܚܒܠܘܬܗ ܠܐܪܥܐ. ܘܢܫܡܛܘܢ ܣܝܦܝܗܘܢ ܥܠ ܡܨܪܝܢ.
ܘܢܡܠܘܢܗ ܠܐܪܥܐ ܩܛܝܠܐ. * ܘܐܥܒܕ ܢܗܪܘܬܐ ܠܚܒܠܐ. ܘܐܫܠܡܝܗ ܠܐܪܥܐ ܒܐܝܕܝ
ܕܢܘܟܪܝܐ. ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܡܠܠܬ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܘܐܘܒܕ ܐܢܐ ܦܬܟܪ̈ܐ. ܘܐܒܛܠ
ܐܠܗ̈ܐ ܕܢܟ̈ܠܐ ܡܢ ܡܦܣ. ܘܬܘܒ ܠܐ ܢܗܘܐ ܪܫܐ ܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܐܚܪܒܝܗ ܠܐܪܥܐ
ܕܦܬܪܘܣ. ܘܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܨܘܥܢ. ܘܐܥܒܕ ܕܝܢܐ ܒܢܘ. * ܘܐܫܘܕ ܪܘܓܙܝ ܥܠ ܣܝܢ
ܚܝܠܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܘܒܕ ܥܘܬܪܗ ܕܢܘ. * ܘܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܡܨܪܝܢ. ܘܢܬܕܠܚ ܣܝܢ
ܘܢܘ ܬܬܒܙܥ. ܘܡܦܣ ܬܗܘܐ ܠܡܦܘܠܬܐ. * ܘܐܝܟ ܡܝܐ ܢܗܘܘܢ ܥܠܝܡܐ ܕܡܦܝܒܣܬ.
ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܒܫܒܝܐ ܢܐܙܠܘܢ. * ܘܒܬܚܦܢܚܣ ܢܚܫܟ ܝܘܡܐ. ܟܕ ܐܬܒܪ ܬܡܢ
ܫܒܛܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܢܒܛܠ ܡܢܗ ܫܘܒܗܪܐ ܕܥܫܝܢܘܬܗ. ܘܥܢܢܐ ܬܚܦܝܗ. ܘܒܢܬܗ
ܒܫܒܝܐ ܢܐܙܠܢ. * ܘܐܥܒܕ ܕܝܢܐ ܒܡܨܪܝܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܒܫܢܬ ܚܕܥܣܪܐ.
ܒܫܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܩܕܡܝܐ. ܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܕܪܥܗ
ܕܦܪܥܘܢ. ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܬܒܪܬ. ܘܠܐ ܐܬܚܒܫ ܕܢܗܘܐ ܠܗ ܐܣܝܘܬܐ. ܘܠܐ ܢܬܬܣܝܡ
ܠܗ ܡܠܓܡܐ. ܘܠܐ ܢܬܚܒܫ ܘܠܐ ܢܬܐܣܐ. ܕܢܐܚܘܕ ܣܝܦܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠ ܦܪܥܘܢ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܬܒܪ ܕܪ̈ܥܘܗܝ ܥܫܝܢܬܐ. ܘܐܪܡܐ
ܣܝܦܐ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ. * ܘܐܒܕܪܝܘܗܝ ܠܡܨܪܝܢ ܒܥܡܡ̈ܐ. ܘܐܕܪܐ ܐܢܘܢ ܒܡܕܝܢ̈ܬܐ. * ܘܐܚܝܠ
ܕܪ̈ܥܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܐܬܠ ܣܝܦܝ ܒܐܝܕܘܗܝ. ܘܢܦܣܘܩ ܕܪ̈ܥܘܗܝ ܕܦܪܥܘܢ.
ܘܢܬܬܢܚ ܬܢܚܬܐ ܕܩܛ̈ܝܠܐ ܩܕܡܘܗܝ. * ܘܐܚܝܠ ܕܪ̈ܥܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܘܕܪ̈ܥܘܗܝ
ܕܦܪܥܘܢ ܢܦܠܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܟܕ ܝܗܒܬ ܣܝܦܝ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܡܠܟܐ
ܕܒܒܠ. ܘܢܡܬܚܝܘܗܝ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܐܒܕܪܝܘܗܝ ܠܡܨܪܝܢ ܒܥܡܡ̈ܐ. ܘܐܕܪܐ ܐܢܘܢ
ܒܡܕܝܢ̈ܬܐ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.

* Ipſius & robuſtorum qui cum ipſo erunt, qui 11
venturi ſunt ad vaſtandam terram, & exerentes
gladios ſuos contra Ægyptum, repleturi
ſunt terram confoſſis. Fluvios redigam ad 12
corruptionem, tradámque terram univerſam
in manum exterorum : ego Dominus locutus
ſum. Sic ait Dominus dominorum ; Perdam 13
idola, & abolebo deos è Mephes; & non manebit
ampliùs princeps in terra Ægypti : Delebo 14
terram Pathros, dimittã ignem in Soanem,
& exercebo judicium in No : Effundam 15
iram meam ſuper Sin robur Ægypti, &
perdam opulentiam No : Dimittam ignem 16
in Ægyptum, conturbabitur Sin, No diſrumpetur,
& Mephes abibit in ruinam. Aquæ 17
ſimiles erunt juvenes Mephibeſeth, gladio cadent,
& in captivitatẽ abibunt. In Tahphis 18
obtenebreſcet dies, quum ibi fregero ſcipionem
Ægypti, & deſierit ex ea faſtus roboris
ejus, texerit illam nubes, & filiæ ejus abierint
in captivitatem. Denique exercebo judicium 19
in Ægyptum, & experientur me eſſe
Dominum. Anno undecimo, ſeptimâ menſis 20
primi, fuit ad me ſermo Domini, dicendo;
Fili hominis, brachium Pharaonis regis Ægypti 21
contregi, & non alligabitur ut ſit ei curatio,
non apponetur illi malagma, non obligabitur,
neque ſanabitur ut gladium tenere *poſſit.*
Idcircò ſic ait Dominus dominorum ; 22
Ecce me contra Pharaonem regem Ægypti, et
frangam brachia ejus robuſta, dejiciámque
gladium è manibus ejus : Diſſipabo Ægyptios 23
inter gentes, & diſpergã eos per urbes.
Confirmabo autem brachia regis Babyloniæ, 24
dabóque gladium meum in manus ejus, ut
præcîdat brachia Pharaonis, & gemat coram
eo gemitibus occiſorum. Confirmabo inquam, 25
brachia regis Babyloniæ, brachia verò
Pharaonis concident : & cognoſcent me eſſe
Dominum, quum dedero gladium meum in
manꝰ regis Babyloniæ, & ſtrinxerit eum contra
terram Ægypti : Et diſſipabo Ægyptios 26
inter gentes, & diſperdam eos per urbes; &
experientur me eſſe Dominum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وشعبه مفسدون من الامم * مرسلون ليبيدوها * ويسلون جميعهم سيوفهم على مصر *
ويملي الارض من الجرحا * واجعل انهارهم مقفرات * واهلك الارض وكمالها بيد الغرباء انا
الرب تكلمت * لان هكذا يقول الرب الرب * واهلك العظماء من منف * والروساء من ارض
مصر * ولا يكونون بعد * وابيد ارض فاتوريس * واعطي نارا على صان * واصنع انتقاما
في مدينة المشتري * واسكب غضبي على صان قوة مصر * واهلك كثرة منف * واعطي
نارا على مصر * وتهلك صان * وتصير الثلمة في مدينة المشتري * وتنفجر المياه * وشبان
مدينة الشمس وبسطة بالسيف يسقطون * والنساء في السبي يذهبن * وفي طفناس يظلم النهار
عند ما اكسر هناك مساكن مصر * ويبيد هناك كبرياء قوتها * ويغشاها السحابة *
وبناتها مسبيون يساقون * واصنع احكاما في مصر * ويعلمون اني انا الرب * وكان في السنة
الحادية عشر * في الشهر الاول * في السابع من الشهر * كان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان
كسرت ذراعي فرعون ملك مصر * وها هو ليس يسال ليعطي الشفا * ليعطي عليه
مرهما * ليعطي قوة ليتناول سيفا * لاجل هذا هكذا يقول الرب الرب * ها انا على
فرعون * ملك مصر * فاكسر ذراعيه الرفيعتين * وارمي بسيفه من يده * وابدد
مصر بين الامم * وادريهم في الكور * واقوي ذراعي ملك بابل * وادفع سيفي
في يده * وياتي به على مصر * وينهب نهبها * ويغنم غنايمها * واقوي ذراعي ملك
بابل * وذراعا فرعون تسقطان * ويعلمون اني انا الرب * عند ما اعطي سيفي بيد
ملك بابل ويمده * وابدد مصر في الامم * وادريهم في البلدان * ويعلم جميع المصريين
اني انا الرب *

* *In cujus populo erunt pernicioſiſſimi gentium,* 11
miſſi ad perdendam illam: hi omnes
exerent gladios ſuos contra Ægyptum,
& replebitur terra vulneratis. Reddamque 12
fluvios eorum deſertos, & perdam terram
univerſam per manum alienorum :
ego Dominus locutus ſum. Nam ita dicit 13
Dominus Dominus; Et extinguam
magnates è Menphi, & principes è terra
Ægypti, ita ut non ſint ampliùs : Perdam 14
terram Phathores, ignemque dabo
ſuper San : & exercebo vindictam in
urbem Jovis : Effundam iram meam 15
ſuper San fortitudinem Ægypti : &
perdam multitudinem Menphi : Dabo 16
ignem ſuper Ægyptum : peribit San :
fietque hiatus in urbe Jovis. Diſrumpentur 17
aquæ : & juvenes urbis Solis
& Baſtæ, gladio cadent : & mulieres
in captivitatem abibunt. Et in 18
Taphnes tenebreſcet dies, quum ibi
contrivero habitationes Ægypti, & perierit
ibi ſuperbia potentiæ ejus, obruerit
eam nubes, & filiæ ejus captivæ
fuerint abductæ. Demum judicia faciam 19
in Ægypto; ſcientque me eſſe
Dominum. Præterea contigit anno 20
undecimo, menſe primo, ſeptimâ menſis;
ut fieret ſermo Domini ad me, dicens;
O fili hominis, fregi brachia 21
Pharaonis regis Ægypti; en tamen
ipſe non poſtulat ut præbeatur ſibi
medela, ut applicetur ſibi malagma, ut
reſtituantur ſibi vires ad capiendum
gladium. Propterea ſic ait Dominus 22
Dominus; Ecce me contra Pharaonem
regem Ægypti, & frangam brachia ejus
excelſa, dejiciamque gladium ejus
è manu ipſius : Diſſeminabo Ægyptios 23
inter gentes, & diſpellam eos per provincias.
Brachia verò regis Babelis roborabo, 24
tradamque gladium meum in
manum ipſius, ut eo invadat Ægyptum,
deprædetur prædam ejus, & diripiat
ſpolia ejus. Roborabo inquam, brachia 25
regis Babelis, brachia verò Pharaonis
concident : & experientur me
eſſe Dominum, quum dedero gladium
meum in manum regis Babelis, & extenderit
eum. Ita diſſeminabo Ægyptum 26
inter gentes, & diſpellam eos
per regiones : ſcientque omnes Ægyptii
me eſſe Dominum.

יחזקאל : לא

CAP. XXXI. לא

fuit : menſis *una* in , tertio in , anno undecimo in ,fuit Et
וַיְהִי בְּאַחַת עֶשְׂרֵה שָׁנָה בַּשְּׁלִישִׁי בְּאֶחָד לַחֹדֶשׁ הָיָה 1
ad dic hominis Fili : dicendo , me ad Domini verbum
דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם אֱמֹר אֶל־ 2
es ſimilis *quem Ad* : ejus *turbam* ad & , Ægypti regem Parhoh
פַּרְעֹה מֶלֶךְ־מִצְרַיִם וְאֶל־הֲמוֹנוֹ אֶל־מִי דָּמִיתָ
,*fronde* pulchra ,Libano in cedrus Aſſur Ecce ? tua magnitudine in
בְגָדְלֶךָ׃ הִנֵּה אַשּׁוּר אֶרֶז בַּלְּבָנוֹן יְפֵה עָנָף 3
fuit *implicata* inter & : altitudine excelſa & ,inumbrans *ſylva cædua* &
וְחֹרֶשׁ מֵצַל וּגְבַהּ קוֹמָה וּבֵין עֲבֹתִים הָיְתָה
: illam exaltavit vorago ,eam fecerunt creſcere Aquæ .ejus cacumen
צַמַּרְתּוֹ׃ מַיִם גִּדְּלוּהוּ תְּהוֹם רֹמְמָתְהוּ 4
ſuos *aquæductus* & ,ejus plantationis circuitus *vadens* ejus flumina
אֶת־נַהֲרֹתֶיהָ הֹלֵךְ סְבִיבוֹת מַטָּעָהּ וְאֶת־תְּעָלֹתֶיהָ
ejus altitudo eſt elevata Propterea .agri ligna univerſa ad miſit
שִׁלְחָה אֶל כָּל־עֲצֵי הַשָּׂדֶה׃ עַל־כֵּן גָּבְהָא קֹמָתוֹ 5
, ejus rami ſunt multiplicati Et .agri lignis omnibus præ
מִכֹּל עֲצֵי הַשָּׂדֶה וַתִּרְבֶּינָה סַרְעַפֹּתָיו
.*eam mittendo in* multas aquas propter , ejus rami ſunt prolongati &
וַתֶּאֱרַכְנָה פֹארֹתָו מִמַּיִם רַבִּים בְּשַׁלְּחוֹ׃
ejus ramis ſub & ,cœlorum *volatile omne* nidificaverunt ejus ramis In
בִּסְעַפֹּתָיו קִנְּנוּ כָּל־עוֹף הַשָּׁמַיִם וְתַחַת פֹּארֹתָיו 6
omnes habitaverunt illius umbra in & : agri *fera omnis* genuerunt
יָלְדוּ כֹּל חַיַּת הַשָּׂדֶה וּבְצִלּוֹ יֵשְׁבוּ כֹּל
longitudine in , ſua magnitudine in pulchruit Et .multæ gentes
גּוֹיִם רַבִּים׃ וַיִּיף בְּגָדְלוֹ בְּאֹרֶךְ 7
Cedri .multas aquas *ad* ejus radix fuit quia : ſuorum ramorum
דָּלִיּוֹתָיו כִּי־הָיָה שָׁרְשׁוֹ אֶל־מַיִם רַבִּים׃ אֲרָזִים 8
ſimiles fuerunt non abietes , Dei horto in eam obſcuraverunt non
לֹא־עֲמָמֻהוּ בְּגַן־אֱלֹהִים בְּרוֹשִׁים לֹא דָמוּ
arbor Omnis .ejus rami ſicut fuerunt non caſtaneæ & , ejus *ramos ad*
אֶל־סְעַפֹּתָיו וְעַרְמֹנִים לֹא־הָיוּ כְּפֹארֹתָיו כָּל־עֵץ
Pulchrum .ſua pulchritudine in *eum ad* ſimilis fuit non Dei horto in
בְּגַן־אֱלֹהִים לֹא־דָמָה אֵלָיו בְּיָפְיוֹ׃ יָפֶה 9
omnes eum ſunt æmulatæ & : ejus ramorum multitudine in eum feci
עֲשִׂיתִיו בְּרֹב דָּלִיּוֹתָיו וַיְקַנְאֻהוּ כָּל־
dixit ſic Propterea .Dei horto in quæ ,Heden arbores
עֲצֵי־עֵדֶן אֲשֶׁר בְּגַן הָאֱלֹהִים׃ לָכֵן כֹּה אָמַר 10
dedit & : *ſtatura in* es ſublimatus quòd eo Pro : Deus Dominus
אֲדֹנָי יְהוִה יַעַן אֲשֶׁר גָּבַהְתָּ בְּקוֹמָה וַיִּתֵּן
.ſua celſitudine in ejus cor eſt elevatū & ,*implicata* inter *ad* ſuā ſummitatē
צַמַּרְתּוֹ אֶל־בֵּין עֲבוֹתִים וְרָם לְבָבוֹ בְּגָבְהוֹ׃
; ei faciet Faciendo .gentium *Dei* manum in eum tradidi Et
וְאֶתְּנֵהוּ בְּיַד אֵיל גּוֹיִם עָשׂוֹ יַעֲשֶׂה לוֹ 11
,gentium fortes ,alieni eum ſucciderunt Et .eum ejeci ejus *impietate in*
בְּרִשְׁעוֹ גֵּרַשְׁתִּהוּ׃ וַיִּכְרְתֻהוּ זָרִים עָרִיצֵי גוֹיִם 12
corruerunt vallibus cunctis in & , montes *ad* eum dimiſerunt &
וַיִּטְּשֻׁהוּ אֶל־הֶהָרִים וּבְכָל־גֵּאָיוֹת נָפְלוּ
:terræ *omnibus* univerſis in ejus rami ſunt confracti & , ejus rami
דָלִיּוֹתָיו וַתִּשָּׁבַרְנָה פֹרֹאתָיו בְּכֹל אֲפִיקֵי הָאָרֶץ
.eum reliquerunt & , terræ populi omnes ejus umbra ab deſcenderunt &
וַיֵּרְדוּ מִצִּלּוֹ כָּל־עַמֵּי הָאָרֶץ וַיִּטְּשֻׁהוּ׃
ejus ramos *ad* & : cœlorum *volatile omne* habitabant ejus ruinam Super
עַל־מַפַּלְתּוֹ יִשְׁכְּנוּ כָּל־עוֹף הַשָּׁמַיִם וְאֶל־פֹּארֹתָיו 13
.agri *fera omnis* erant
הָיוּ כֹּל חַיַּת הַשָּׂדֶה׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXXI.

1 ET factum eſt in anno undeci-
mo, tertio menſe, unâ menſis,fa-
ctum eſt verbum Domini ad me,
2 dicens; Fili hominis,dic Phara-
oni regi Ægypti, & populo ejus;
Cui ſimilis factus es in magnitu-
3 dine tua? Ecce Aſſur quaſi cedr⁹
in Libano,pulcher ramis,& fron-
dibus nemoroſus,excelſúſque al-
titudine,& inter condenſas fron-
4 des elevatum eſt cacumen ej⁹. A-
quæ nutrierunt illum, abyſſ⁹ ex-
altavit illum:flumina ejus mana-
bant in circuitu radicum ejus, &
rivos ſuos emiſit ad univerſa li-
5 gna regionis. Propterea elevata
eſt altitudo ejus ſuper omnia li-
gna regionis:et multiplicata ſunt
arbuſta ejus, & elevati ſunt rami
6 ejus præ aquis multis. Cúmque
extendiſſet umbram ſuam, in ra-
mis ej⁹ fecerunt nidos omnia vo-
latilia cœli, & ſub frondib⁹ ejus
genuerunt omnes beſtiæ ſaltuum,
& ſub umbraculo illi⁹ habitabat
7 cœtus Gentium plurimarum. E-
rátque pulcherrimus in magnitu-
dine ſua, & in dilatatione arbu-
ſtorum ſuorum : erat enim radix
8 illius juxta aquas multas. Cedri
non fuerunt altiores illo in para-
diſo Dei, abietes non adæquave-
runt ſummitatem ejus, & platani
non fuerunt æquæ frondib⁹ illius:
omne lignum paradiſi Dei non
eſt aſſimilatum illi, & pulchritu-
9 dini ejus. Quoniam ſpecioſum
feci eum,& multis,condenſíſque
frondib⁹ : & æmulata ſunt eum
omnia ligna voluptatis, quæ e-
10 rant in paradiſo Dei. Propterea
hæc dicit Domin⁹ Deus; Pro eo
quòd ſublimat⁹ eſt in altitudine,
& dedit ſummitatem ſuam vi-
rentem atque condenſam, & ele-
vatum eſt cor ejus in altitudine
11 ſua: Tradidi eum in manu for-
tiſſimi Gentium,faciens faciet ei:
juxta impietatem ejus ejeci eum.
12 Et ſuccident eum alieni, & cru-
deliſſimi nationum, & projicient
eum ſuper montes, & in cunctis
convallibus corruent rami ejus,
& confringentur arbuſta ejus in
univerſis rupibus terræ : & re-
cedent de umbraculo ejus omnes
populi terræ,& relinquent eum.
13 In ruina ejus habitaverunt omnia
volatilia cœli, & in ramis ejus
fuerunt univerſæ beſtiæ regionis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. λα΄.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἑνδεκάτῳ ἔτει, ἐν
τῷ τρίτῳ μηνὶ, μιᾷ τοῦ μηνὸς, ἐγένετο
2 λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀν-
θρώπου, εἰπὸν πρὸς Φαραὼ βασιλέα Αἰ-
γύπτου ϗ τῷ πλήθει αὐτοῦ, Τίνι ὡμοίω-
3 σας σεαυτὸν ἐν τῷ ὕψει σου; Ἰδοὺ Ἀσσοὺρ
κυπάρισσος ἐν τῷ Λιβάνῳ, ϗ καλὸς τῇ πα-
ραφυάσι, (α) ϗ ὑψηλὸς τῷ μεγέθει, (β) εἰς
4 μέσον νεφελῶν ἐγένετο ἡ ἀρχὴ αὐτοῦ, Ὕ-
δωρ ἐξέθρεψεν αὐτὸν, ἡ ἄβυσσος ὕψωσεν
αὐτὸν, τοὺς ποταμοὺς αὐτῆς ἤγαγε κύκλῳ
τῶν φυτῶν αὐτοῦ, ϗ τὰ συστήματα αὐτῆς
(γ) ἐξαπέστειλεν εἰς πάντα τὰ ξύλα τοῦ
5 πεδίου. Ἕνεκεν τούτου ὑψώθη τὸ μέγεθος
αὐτοῦ παρὰ πάντα τὰ ξύλα τοῦ πεδίου, ϗ ἐ-
πλατύνθησαν οἱ κλάδοι (δ) αὐτοῦ ἀφ᾽ ὕδατος
6 πολλοῦ. Ἐν ταῖς παραφυάσιν αὐτοῦ ἐνόσσευ-
σαν πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, ϗ ὑπο-
κάτω τῶν κλάδων αὐτοῦ ἐγέννησαν πάντα
τὰ θηρία τοῦ πεδίου, (ε) ἐν τῇ σκιᾷ αὐτοῦ
7 κατῴκησε πᾶν πλῆθος ἐθνῶν. Καὶ ἐγένε-
το καλὸς ἐν τῷ ὕψει αὐτοῦ διὰ τὸ πλῆθος
τῶν κλάδων αὐτοῦ, ὅτι (ζ) ἐγεννήθησαν αἱ
8 ῥίζαι αὐτοῦ εἰς ὕδωρ πολύ. (η) Καὶ κυπά-
ρισσοι τοιαῦται ἐν τῷ παραδείσῳ τοῦ θεοῦ,
(θ) ϗ αἱ πίτυες οὐχ ὅμοιαι ταῖς παραφυ-
άσιν αὐτοῦ, ϗ ἐλάται οὐκ ἐγένοντο (ι) ὅμοιαι
τοῖς κλάδοις αὐτοῦ. πᾶν ξύλον ἐν τῷ πα-
ραδείσῳ τοῦ θεοῦ οὐχ ὡμοιώθη αὐτῷ ἐν τῷ
9 κάλλει αὐτοῦ, Διὰ τὸ πλῆθος τῶν κλά-
δων αὐτοῦ· ϗ ἐζήλωσαν αὐτὸν τὰ ξύλα τοῦ
10 παραδείσου τῆς τρυφῆς τοῦ θεοῦ. Διατοῦτο
τάδε (κ) λέγει κύριος, Ἀνθ᾽ ὧν ἐγένου μέγας
τῷ μεγέθει, ϗ ἔδωκας τὴν ἀρχήν σου εἰς
μέσον (λ) νεφελῶν, ϗ εἶδον ἐν τῷ ὑψωθῆ-
11 ναι αὐτόν· Καὶ παρέδωκα αὐτὸν εἰς χεῖ-
ρας ἄρχοντος ἐθνῶν, ϗ ἐποίησε τὴν ἀπώ-
12 λειαν αὐτοῦ. Καὶ (μ) ἐξωλόθρευσαν αὐτὸν
ἀλλότριοι λοιμοὶ ἀπὸ ἐθνῶν, ϗ κατέβα-
λον αὐτὸν ἐπὶ τῶν ὀρέων· ἐν πάσαις ταῖς
φάραγξιν (ν) ἔπεσαν οἱ κλάδοι αὐτοῦ, ϗ συν-
ετρίβη τὰ στελέχη αὐτοῦ ἐν παντὶ πεδίῳ τῆς
γῆς, ϗ κατέβησαν ἀπὸ τῆς σκέπης αὐτῶν
πάντες οἱ λαοὶ τῶν ἐθνῶν, ϗ ἠδάφισαν
13 αὐτόν. Ἐπὶ τὴν πτῶσιν αὐτοῦ ἀνεπαύσαν-
το πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, ϗ ἐπὶ τὰ
στελέχη αὐτοῦ (ξ) ἐγίνοντο πάντα τὰ θη-
ρία τοῦ ἀγροῦ,

CAP. XXXI.

ET factum eſt in undecimo 1
anno, in tertio menſe, unâ men-
ſis, factum eſt verbum Domini
ad me, dicens; Fili hominis, 2
dic ad Pharaonem regem Ægy-
pti, & multitudini ejus; Cui
aſſimilâſti te in altitudine tua?
Ecce Aſſur cypariſſus in Liba- 3
no, & pulcher (a) propagini-
bus, & excelſus magnitudine, in
medio nubium factum eſt princi-
pium ejus: Aqua nutrivit e- 4
um, abyſſus exaltavit eum, flu-
vios ſuos duxit per circuitum
plantarum ejus, & congregatio-
nes ſuas emiſit ad omnia ligna
campi. Propterea elevata eſt 5
magnitudo ejus ſuper omnia li-
gna campi: & dilatati ſunt ra-
mi (b) ejus ab aqua (c) multa.
In propaginibus ejus nidificave- 6
runt omnia volatilia cœli: &
ſub ramis ejus genuerunt omnes
beſtiæ campi. In umbra illius ha-
bitavit omnis multitudo gentiū.
Et erat pulcher in altitudine ſua 7
propter multitudinem ramorum
ſuorum: erant enim radices il-
lius in aqua multa. Et cypa- 8
riſſi (d) tales in paradiſo Dei,
& pini non ſimiles propaginibus
ejus, & abietes non fuerunt ſimi-
les ramis ejus. Omne lignum in
paradiſo Dei non eſt aſſimilatum
ei in pulchritudine ejus. Pro- 9
pter multitudinem ramorum (e) e-
jus. Et æmulata ſunt eum ligna
paradiſi delitiarum Dei. Pro- 10
pterea hæc dicit Dominus; Pro
eo quòd factus (f) es magnus
magnitudine; & dediſti princi-
pium tuum in medio (g) nubi-
um; & vidi dum ipſe exalta-
retur, Et tradidi eum in ma- 11
nus principis gentium: & (h) fe-
cit perditionem ejus. Et exter- 12
minaverunt eum alieni peſtilen-
tes de gentibus, & dejecerunt
eum ſuper montes: in cunctis
convallibus corruerunt rami e-
jus: & contritæ ſunt ſtirpes ejus
in omni campo terræ: & deſcen-
derunt de tegmine (i) eorum o-
mnes populi gentium: & ſtra-
verunt eum. In ruina ejus re- 13
quieverunt omnia volatilia cœ-
li: & ſuper truncos ejus fue-
runt omnes beſtiæ agri:

MS. A. (α) ϗ πυκνὸς ἐν τῇ σκέπῃ, ϗ ὑψηλὸς (β) ϗ εἰς μέσον τῶν
νεφελῶν (γ) ἤγαγεν κύκλῳ τῶν φυτῶν αὐτοῦ, ϗ ἐξαπέστειλεν (δ) αὐτοῦ, ϗ
ὑψώθησαν αἱ παραφυάδες αὐτοῦ ἐφ᾽ ὕδατος (ε) ὑπὸ τὴν σκιὰν (ζ) ἐγέννησαν
(η) Κυπάρισσοι τοιαῦται οὐκ ἐγεννήθησαν ἐν τῷ (θ) ϗ πίτυες (ι) ὅμοιοι (κ)
λέγει ἀδωναῒ κύριος, (λ) τῶν νεφελῶν, (μ) ἐξωλέθρευσαν (ν) ἔπεσον
(ξ) ἐγένοντο

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

לא

וַהֲוָה בְּחַדָא עַסְרֵי שְׁנִין בִּתְלִיתָאָה בְּחַד לְיַרְחָא הֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִמִּי 1
לְמֵימַר׃ בַּר אָדָם אֱמַר לְפַרְעֹה מַלְכָּא דְמִצְרַיִם וּלְאַתְרְגוּשְׁתֵּיהּ לְמַן דְּמֵיתָא בְּתוּקְפָּךְ׃ 2
הָא אַתּוּרָאָה דָּמֵי לְאַרְזָא בְלִבְנָן דְּנוֹפֵיהּ שַׁפִּיר וְסוֹכֵיהּ מַטְלַן וְרָם בְּקוֹמָה וְעַל נַגְדִין 3
שְׁלַח שָׁרְשׁוֹהִי׃ בְּעַמְמַיָא סַגִּי בְּסוֹמְכוּתָא תַּקִּיף יַת מַלְכַיָא שַׁעְבֵּיד לִתְחוֹת מַלְכוּתֵיהּ 4
וְיַת שִׁלְטוֹנוֹהִי מַנִּי עַל כָּל מְדִינַת אַרְעָא׃ עַל כֵּן רָם בְּתוּקְפֵיהּ מִכָּל מַלְכֵי אַרְעָא 5
וּסְגִיאָה מַשְׁרְיָתֵיהּ וְאִתְנַצַּחוּ סוֹמְכְוָתֵיהּ עַל עַמְמִין סַגִּיאִין בְּאִתְנַצְּחוּתֵיהּ׃ בְּמַשְׁרְיָתֵיהּ 6
כְּבֵישׁ כָּל כְּרַכִּין תַּקִּיפִין וּתְחוֹת שִׁלְטוֹנוֹהִי שַׁעְבֵּיד כָּל מְדִינַת אַרְעָא וּבִטְלַל מַלְכוּתֵיהּ
יְתִיבוּ כָּל עַמְמִין סַגִּיאִין׃ וְאִתְנַצַּח בְּסוֹמְכְוָתֵיהּ בְּסַגֵּי גִבָּרוֹהִי אֲרֵי הֲוָת אֵימְתֵיהּ עַל 7
עַמְמִין סַגִּיאִין׃ מַלְכִין תַּקִּיפִין לָא אִתְנַצַּחוּ לְקִבְלֵיהּ בְּתֻקּוֹף גְּבוּרְתָּא דַהֲוָת עִמֵּיהּ מִן 8
קֳדָם יְיָ שִׁלְטוֹנִין לָא קָמוּ קֳדָם מַשְׁרְיָתֵיהּ וְגִבָּרִין לָא יְכִילוּ בְּסוֹמְכְוָתֵיהּ בְּתֻקּוֹף גְּבוּרָא
דַהֲוָת עִמֵּיהּ מִן קֳדָם יְיָ לָא דָמֵי לֵיהּ בְּתוּקְפֵיהּ׃ שַׁפִּיר עֲבַדְתֵּיהּ בְּסַגֵּי גִבָּרוֹהִי וְזָעוּ מִן 9
קֳדָמוֹהִי כָּל מַלְכֵי קֶדֶם בְּתֻקּוֹף גְּבוּרָא דַהֲוָת עִמֵּיהּ מִן קֳדָם יְיָ׃ בְּכֵן כִּדְנַן אֲמַר 10
יְיָ אֱלֹהִים חֲלַף דְּרַמְתָּא בְּקוֹמָה וִיהַב מְרוּתֵיהּ עַל מַלְכְוָתָא וְרָם לִבֵּיהּ
בְּתוּקְפֵיהּ׃ וְאֶמְסְרִנֵּיהּ בְּיַד תַּקִּיף עַמְמַיָא אִתְפְּרַע מִנֵּיהּ כְּחוֹבֵי תַּרְכְתֵּיהּ׃ וְשֵׁיצִיאוּהִי 11 12
נוּכְרָאִין תַּקִּיפֵי עַמְמַיָא וּרְטַשׁוּהִי עַל טוּרַיָא וּבְכָל חֵילַיָא נְפַלָא מַשְׁרְיָתֵיהּ וְאִתְבַּדָּרוּ
סוֹמְכְוָתֵיהּ בְּכָל פְּצִידֵי אַרְעָא וּנְחַתוּ מִטְּלַל מַלְכוּתֵיהּ כָּל עַמְמֵי אַרְעָא
וּרְטַשׁוּהִי׃ עַל מַפֹּלֶת קְטִילוֹהִי שָׁרוּ כָּל עוֹפָא דִשְׁמַיָא וְעַל פִּגְרֵי מַשְׁרְיָתֵיהּ נְחָא 13
כָּל חֵיוַת בָּרָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXXI.

ET factum eſt undecimo anno, tertio menſe, prima die menſis, factum eſt 1
verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: Fili hominis, dic ad Pha- 2
raonem regem Ægypti, & ad multitudinem ejus: Cui ſimilis factus es in for-
titudine tua? Ecce Aſſur ſimilis erat cedro in Libano, cujus ramus pulcher 3
eſt, & propagines ejus umbram faciunt, & excelſus ſtatura; & juxta torren-
tes miſit radices ſuas. In populis multiplicatus eſt, auxiliis roboratus eſt, re- 4
ges ſubjecit regno ſuo, & principes ſuos conſtituit ſuper omnes provincias
terræ. Ideò elatus eſt in fortitudine ſua ſupra omnes reges terræ, & multi- 5
plicati ſunt exercitus ejus, & prævaluerunt auxiliatores ejus populis multis
victoriâ ejus. Exercitu ſuo ſubjugavit omnes arces fortiſſimas, & ſub prin- 6
cipibus ſuis ſubjecit omnes provincias terræ, & in umbra regni ejus habita-
verunt omnes populi numeroſi. Et ita invaluit auxiliatoribus ſuis, multitudi- 7
ne fortium ſuorum, ut factus ſit terror ejus ſuper populos multos. Reges for- 8
tes non prævaluerunt adverſus eum, ob fortitudinem potentiæ quæ erat cum
eo à facie Domini. Nulli duces conſtiterunt ante agmina ejus, nec fortes fu-
erunt ſuperiores ejus auxiliis, ob fortitudinem potentiæ qua præditus erat à
Domino: nullus fuit ei ſimilis fortitudine. Specioſum enim feci eum multi- 9
tudine fortium ſuorum; & tremuerunt à facie ejus omnes reges Orientis,
propter fortitudinem potentiæ quæ erat cum eo à facie Domini. Propterea 10
hæc dicit Dominus Deus: Pro eo quòd tete extuliſti ſtatura, & dedit ſubje-
ctionem ſuam ſuper regna, & elevatum eſt cor ejus in fortitudine ſua. Tradi- 11
di eum in manum fortiſſimi populorum, qui ultionem ſumpſit ex eo; in pec-
cato ſuo ejeci eum. Et conſumpſerunt eum alieni robuſtiſſimi populorum, & 12
projecerunt eum ſuper montes, & in cunctis convallibus cecidit exercitus
ejus, diſperſíque ſunt auxiliatores ejus in univerſis rivis terræ, & deſcende-
runt ex umbra regni ejus omnes *populi* terræ, & projecerunt eum. Super 13
ruinam occiſorum ejus habitaverunt omnes volucres cœli, & ſuper cadavera
exercitus ejus quieverunt omnes beſtiæ agri.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܐ *

CAP. XXXI.

[illegible]

Anno undecimo, menſe tertio, primâ men- 1
ſis, fuit ad me ſermo Domini, dicendo; Fili 2
hominis, dic Pharaoni regi Ægypti, & robo-
ri ejus; Cuinam ſimilis es in magnificentia
tua? Ecce Aſſyrius cedrus *erat* Libani, cu- 3
jus pulchri erant ramuſculi, denſa umbra, alta
ſtatura, cujus cacumen erat inter condenſa *ne-
morum*: Aquæ nutriverant eam, abyſſus 4
extulerat: cujus plantarum flumina circun-
ſepſerat: quæ virgulta ſua jecerat ſup omnes
arbores deſerti: Adeóque ſtatura ejus lon- 5
gè ſuperaverat omnes arbores deſerti, multi-
plicati fuerant rami, & producta virgulta,
propter copiam aquarũ quæ nutriverant eam.
In ramuſculis ejus nidificabant omnes cœli 6
volucres, ſub frondibus parturiebant omnes
beſtiæ deſerti, & in umbra ejus ſedebant po-
puli multi: Denique pulcherrima erat ma- 7
gnitudine ſuâ & multitudine ramuſculorum
ſuorũ, quia radices ejꝰ erant ad aquas multas.
Cedri nequaquam ſuperabant eam in paradi- 8
ſo Dei, & abietes non erant ſimiles ramis e-
jus, neque populi *arbores* ſimiles erant fron-
dibus ejus, nulla denique arbor in paradiſo
Dei adæquabat eam pulchritudine. Pulchrã 9
effeceram eam multitudine ramorum ejus, ita
ut inviderent ei omnes arbores Eden paradiſi
Dei. Propterea ſic ait Dominus dominorũ; 10
Quandoquidẽ extulit ſe in ſtatura ſua, & ger-
minavit cacumen ejus inter condenſa, & ele-
vatum eſt cor ejus in magnitudine ſua; Tra- 11
dam eum in manum fortiſſimi gentium, qui
tractabit eum ſecundùm peccatum ipſius, &
perdet eum. Perdéntque eum extranei for- 12
tiſſimi gentium, & projicient eum in monti-
bus; in omnibus vallibus decident virgulta
ipſius, & comminuentur rami ejus in omni-
bus terræ vallibus; deſcendent ex umbra ejus
omnes populi terræ, & deſerent eum: Cum- 13
que ceciderit, habitabunt ſuper eum omnes
cœli volucres, & ſub ramis ejus erunt omnes
beſtiæ deſerti:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الحادي والثلثون *

* الاصحاح السابع عشر *

CAP. XXXI.

Textus decimus ſeptimus.

* وكان في السنة الحادية عشر * في الشهر الثالث * في اول يوم من الشهر * كان قول الرب الي
قايلا * يا ابن الانسان * قل لفرعون ملك مصر ولكثرته * بماذا شبهت ذاتك في ترفعك * ها
الموصل سربينه في لبنان * وحسن في الاغصان * ومرتفع في عظمته * وفي وسط السحب صارت
رياسته * الماء انشاه * والعمق رفعه * جرت انهاره حول غروسه * وارسل شجوبه الي كل شجر
الغاب * من اجل هذا ارتفعت عظمته اكثر من جميع شجر الغاب * وطالت اغصانه من
الماء الكثير * في فروعه عششت كل طيور السماء * وتحت اغصانه ولدت وحوش الغاب * تحت
ظله استظل كل كثير الامم * وصار حسنا في ارتفاعه لاجل طول اغصانه * لان اصوله صارت
في الماء الكثير * هي نفسها ارزات في فردوس الله والصنوبرات ليست شبيهة بفروعه * والدلب
لم تكن شبيهات باغصانه * كل شجر في فردوس الله ليست تشبهه في حسنه * لاجل كثرة
اغصانه * وغايروه شجر فردوس نعيم الله * لاجل هذا هكذا يقول الرب الرب * من
اجل انك صرت عظيما بعظمتك * واعطيت رياستك في وسط السحب * وبطره
في ترفعه * واسلمه الي ايدي رييس الامم * وصنع هلاكه * واستاصلوه
الغرباء المفسدون من الامم * وانزلوه من الجبال * في جميع المدن سقطت
اغصانه * وتكسرت فروعه في كل بقعة من الارض * ونزلوا من ستره شعوب
الامم وداسوه * على سقطته استراحت كل طيور السماء * وعلى فروعه صارت
كل وحوش الحقل *

Deinde factum eſt anno undecimo, 1
menſe tertio, primâ die menſis, ut eſſet ſer-
mo Domini ad me, dicens; O fili hominis, 2
dic Pharaoni regi Ægypti, & multitudini
ejus; Cui rei comparâſti teipſum in
ſuperbia tua? Ecce Aſſur cupreſſus erat 3
in Libano, ſpecioſus ramis, altus magni-
tudine, ejuſque principatus in mediis nu-
bibus. Aqua nutrivit eum, abyſſus extu- 4
lit eum, deduxit flumina ſua circum
plantas ſuas, protulitque condenſos ra-
mos ſuos ad omnes arbores ſylvarum:
Propterea extulit ſe magnitudo ejus 5
pluſquam omnium arborum ſylveſtrium,
& produxerunt ſe rami ejus ob aquam
multam. In apicibus ejus nidificârunt 6
omnes volucres cœli, & ſub ramis ejus
pepererunt beſtiæ ſylveſtres: ſub umbram
ejus recepit ſe omnis multitudo gentium: 7
Factuſque eſt pulcherrimus altitudine
ſuâ ob longitudinem ramorum ſuorum,
quòd radices ejus eſſent in aqua multa.
Ipſæmet cedri in paradiſo Dei, atque 8
pini, non erant comparandæ cacumini-
bus ejus, & populi non erant ſimiles
ramis ejus: nulla arbor in paradiſo Dei
adæquabatur ei pulchritudine, Propter 9
multitudinem ramorum ejus: imò invi-
debant ei arbores paradiſi deliciarum
Dei. Idcirco ſic dicit Dominus Domi- 10
nus; Quia magnificâſti te in magnitu-
dine tua, & collocâſti principatum tuum
in mediis nubibus; ideo videns te in
exaltatione tua, Tradidi te in manus 11
principis gentium, qui excidium tibi
afferet: Extirpabunt eum exteri inter gen- 12
tes perniciosiſſimi, & deturbabunt eum
de montibus: in omnibus urbibus cadent
rami ejus, & conterentur ſummitates
ejus in quavis terræ planitie: nam de-
ſcendentes è tegmine ſuo populi gentium,
conculcabunt eum. Super ruinam ejus 13
requieſcent omnes cœli volucres, &
ſuper cacumina ejus erunt omnes beſtiæ
campi:

יחזקאל: לב

nec ,aquarum ligna omnia sua *proceritate* in elevabuntur non Quamobrem
14 לְמַעַן אֲשֶׁר לֹא־יִגְבְּהוּ בְקוֹמָתָם כָּל־עֲצֵי־מַיִם וְלֹא־
eorum ulni stabunt neque , *implicata* inter *ad suum cacumen* dabunt
יִתְּנוּ אֶת־צַמַּרְתָּם אֶל־בֵּין עֲבֹתִים וְלֹא־יַעַמְדוּ אֲלֵיהֶם
sunt traditi ipsi omnes quia : aquarū potatores omnes ,sua sublimitate in
בְּגָבְהָם כָּל־שֹׁתֵי מָיִם כִּי כֻלָּם נִתְּנוּ
.lacum descendentes ad hominis filiorū medio in *inferiorem terram ad* ,morti
לַמָּוֶת אֶל־אֶרֶץ תַּחְתִּית בְּתוֹךְ בְּנֵי אָדָם אֶל־יוֹרְדֵי בוֹר׃
infernum ad *eum descendere* die In :Deus Dominus dixit Sic
15 כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה בְּיוֹם רִדְתּוֹ שְׁאֹלָה
,ej⁹ flumina prohibui &,voraginem eum super feci operire ,lugere feci
הֶאֱבַלְתִּי כִּסֵּתִי עָלָיו אֶת־תְּהוֹם וָאֶמְנַע נַהֲרוֹתֶיהָ
omnia &,Lebanon eum super feci *denigrare* & : multæ aquæ sunt *occlusæ* &
וַיִּכָּלְאוּ מַיִם רַבִּים וָאַקְדִּר עָלָיו לְבָנוֹן וְכָל־
ejus ruinæ *voce* A *.animi deliquium passum* eum super agri ligna
16 עֲצֵי הַשָּׂדֶה עָלָיו עֻלְפֶּה׃ מִקּוֹל מַפַּלְתּוֹ
descendētib⁹ cum infernū ad eum *me dimittere in* , gentes feci commovere
הִרְעַשְׁתִּי גוֹיִם בְּהוֹרִדִי אֹתוֹ שְׁאֹלָה אֶת־יוֹרְדֵי
, *electio* , Heden ligna omnia infima terra in sunt cōsolata & *: lacum*
בוֹר וַיִּנָּחֲמוּ בְּאֶרֶץ תַּחְתִּית כָּל־עֲצֵי עֵדֶן מִבְחַר
descenderūt eo cum ipsi Etiam .aquas bibentes omnes ,Libani bonum &
17 וְטוֹב־לְבָנוֹן כָּל־שֹׁתֵי מָיִם׃ גַּם־הֵם אִתּוֹ יָרְדוּ
ej⁹ umbra in sederunt,ej⁹ brachium & : gladio interfectos ad ,infernū ad
שְׁאֹלָה אֶל־חַלְלֵי־חָרֶב וּזְרֹעוֹ יָשְׁבוּ בְצִלּוֹ
magnitudine in &,gloria in sic es assimilatus *quem Ad* .gentium medio in
18 בְּתוֹךְ גּוֹיִם׃ אֶל־מִי דָמִיתָ כָּכָה בְּכָבוֹד וּבְגֹדֶל
terram ad Heden lignis cum es factus descendere & : Heden ligna inter
בַּעֲצֵי־עֵדֶן וְהוּרַדְתָּ אֶת־עֲצֵי־עֵדֶן אֶל־אֶרֶץ
.gladio interfectis cum dormies incircuncisorum medio in , infimam
תַּחְתִּית בְּתוֹךְ עֲרֵלִים תִּשְׁכַּב אֶת־חַלְלֵי־חֶרֶב
.Deus Dominus dixit ,ejus *turba* omnis & , Parhoh Hic
הוּא פַרְעֹה וְכָל־הֲמוֹנֹה נְאֻם אֲדֹנָי יֱהוִה׃

CAP. XXXII. לב

,mensis *una* in ,mense duodecimo in ,anno duodecimo in ,fuit Et
1 וַיְהִי בִּשְׁתֵּי עֶשְׂרֵה שָׁנָה בִּשְׁנֵי־עָשָׂר חֹדֶשׁ בְּאֶחָד לַחֹדֶשׁ
lamentū leva ,hominis Fili :dicendo me ad Domini verbum fuit
2 הָיָה דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃ בֶּן־אָדָם שָׂא קִינָה
:es assimilat⁹ gentiū Catulo : eū ad *dices* & ,Ægypti regem Parhoh super
עַל־פַּרְעֹה מֶלֶךְ־מִצְרַיִם וְאָמַרְתָּ אֵלָיו כְּפִיר גּוֹיִם נִדְמֵיתָ
turbabas &,tua flumina *in* educebas & , maribus in cetus sicut tu &
וְאַתָּה כַּתַּנִּים בַּיַּמִּים וַתָּגַח בְּנַהֲרוֹתֶיךָ וַתִּדְלַח־
Dominus dixit Sic .eorum flumina conculcabas & ,tuis pedib⁹ *in* aquas
3 מַיִם בְּרַגְלֶיךָ וַתִּרְפֹּס נַהֲרוֹתָם׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי
:multorū populorū cœtu in meum rete te super expandam Et : Deus
יֱהוִה וּפָרַשְׂתִּי עָלֶיךָ אֶת־רִשְׁתִּי בִּקְהַל עַמִּים רַבִּים
super ,terra in te dimittam Et .mea sagena *in* te faciam ascendere &
4 וְהֶעֱלוּךָ בְּחֶרְמִי׃ וּנְטַשְׁתִּיךָ בָאָרֶץ עַל־
te super faciam habitare Et .te faciam projicere agri *facies*
פְּנֵי הַשָּׂדֶה אֲטִילֶךָ וְהִשְׁכַּנְתִּי עָלֶיךָ
.terræ universæ *feram* te de faciam saturare & , cœlorum *volatile omne*
כָּל־עוֹף הַשָּׁמַיִם וְהִשְׂבַּעְתִּי מִמְּךָ חַיַּת כָּל־הָאָרֶץ׃
.tua celsitudine valles implebo & : montes super tuā carnē dabo Et
5 וְנָתַתִּי אֶת־בְּשָׂרְךָ עַל־הֶהָרִים וּמִלֵּאתִי הַגֵּאָיוֹת רָמוּתֶךָ׃
: montes ad tuo sanguine de *tuæ natationis* terram faciam irrigare Et
6 וְהִשְׁקֵיתִי אֶרֶץ צָפָתְךָ מִדָּמְךָ אֶל־הֶהָרִים
, cœlos ,te *extinguendo in* ,operiam Et .te de implebuntur torrentes &
7 וַאֲפִקִים יִמָּלְאוּן מִמֶּךָּ׃ וְכִסֵּיתִי בְכַבּוֹתְךָ שָׁמַיִם
non luna & , *cum* tegam nube in Solem :eorū stellas faciā nigrescere &
וְהִקְדַּרְתִּי אֶת־כֹּכְבֵיהֶם שֶׁמֶשׁ בֶּעָנָן אֲכַסֶּנּוּ וְיָרֵחַ לֹא־
.suum lumen faciet lucescere
יָאִיר אוֹרוֹ׃

Versio VULG. LAT.

14 Quam ob rem non elevabuntur in altitudine sua omnia ligna aquarum, nec ponent sublimitatē suam inter nemorosa atque frondosa, nec stabunt in sublimitate sua omnia quæ irrigantur aquis: quia omnes traditi sunt in mortem ad terram ultimam, in medio filiorum hominū, ad eos qui 15 descendunt in lacum. Hæc dicit Domin⁹ Deus; In die quando descendit ad inferos, induxi luctū, operui eum abysso: & prohibui flumina ejus, & coercui aquas multas: contristat⁹ est super eum Liban⁹, & omnia ligna agri con- 16 cussa sunt. A sonitu ruinæ ejus commovi Gentes, cùm deducerem eum ad infernū cum his qui descendebant in lacum: & consolata sunt in terra infima omnia ligna voluptatis egregia atque præclara in Libano, universa 17 quæ irrigabantur aquis. Nam & ipsi cum eo descendent in infernū ad interfectos gladio: & brachium uniuscujusque sedebit sub umbraculo ej⁹ in medio nationū. 18 Cui assimilat⁹ es, ô inclyte atque sublimis inter ligna voluptatis? Ecce deduct⁹ es cum lignis voluptatis ad terram ultimam: in medio incircumcisorū dormies, cum eis qui interfecti sunt gladio: ipse est Pharao, & omnis multitudo ejus, dicit Domin⁹ Deus.

CAP. XXXII.

1 ET factū est, duodecimo anno, in mense duodecimo, in una mensis, factum est verbū Dñi ad me, 2 dicens; Fili hominis, assume lamentum super Pharaonem regē Ægypti, & dices ad eum; Leoni Gentium assimilat⁹ es, & draconi qui est in mari: & ventilabas cornu in fluminib⁹ tuis, & conturbabas aquas pedib⁹ tuis, & con- 3 culcabas flumina earū. Propterea hæc dicit Dñs De⁹; Expandā sup te rete meum in multitudine populorū multorum, & extrahā 4 te in sagena mea. Et projiciam te in terram, super faciem agri abjiciam te: & habitare faciam sup te omnia volatilia cœli, & saturabo de te bestias universæ terræ. 5 Et dabo carnes tuas super mon- 6 tes, & implebo colles tuos sanie tuâ. Et irrigabo terram fœtore sanguinis tui super montes, & 7 valles implebuntur ex te. Et operiam, cùm extinct⁹ fueris, cœlum, & nigrescere faciam stellas ejus: Solem nube tegam, & Luna non dabit lumen suum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

14 Ὅπως μὴ ὑψωθῶσιν ἐν τῷ μεγέθει αὐτῶν πάντα τὰ ξύλα τὰ ἐν τῷ ὕδατι· καὶ (ο) ἔδωκαν τὴν ἀρχὴν αὐτῶν εἰς μέσον νεφελῶν, καὶ οὐκ ἔστησαν ἐν τῷ ὕψει αὐτῶν πρὸς (π) αὐτά. πάντες οἱ πίνοντες ὕδωρ, (ρ) πάντες ἐδόθησαν εἰς θάνατον, εἰς (σ) γῆς βάθος, ἐν μέσῳ υἱῶν ἀνθρώπων πρὸς καταβαίνοντας εἰς βό- 15 θρον. Τάδε λέγει (τ) κύριος κύριος, Ἐν ᾗ ἡμέρᾳ κατέβη εἰς ᾅδου, (υ) ἐπένθησεν αὐτὸν ἡ ἄβυσσος. καὶ ἐπέστησα τοὺς ποταμοὺς αὐτῆς, καὶ ἐκώλυσα πλῆθος ὕδατος, καὶ ἐσκότασεν ἐπ' αὐτὸν ὁ Λίβανος, πάντα τὰ ξύ- 16 λα τοῦ πεδίου ἐπ' αὐτῷ ἐξελύθησαν. (φ) Ἀπὸ τῆς φωνῆς τῆς πτώσεως αὐτοῦ ἐσείσθησαν τὰ ἔθνη, ὅτε κατεβίβαζον αὐτὸν εἰς ᾅδου μετὰ τῶν καταβαινόντων εἰς λάκκον, καὶ παρεκάλουν αὐτὸν ἐν γῇ (χ) πάντα τὰ ξύλα τῆς τρυφῆς, καὶ τὰ ἐκλεκτὰ τοῦ Λιβάνου πάντα τὰ πί- 17 νοντα ὕδωρ. Καὶ γὰρ αὐτοὶ κατέβησαν μετ' αὐτοῦ εἰς ᾅδου (ψ) ἐν τοῖς τραυματίαις ἀπὸ μαχαίρας, καὶ τὸ σπέρμα αὐτοῦ (ω) οἱ κατοικοῦντες ὑπὸ τὴν σκέπην αὐτοῦ ἐν μέσῳ τῆς 18 ζωῆς αὐτῶν ἀπώλοντο. Τίνι ὡμοιώθης, κατάβηθι, καὶ καταβιβάσθητι μετὰ τῶν ξύλων τῆς τρυφῆς εἰς (α) γῆς βάθος. ἐν μέσῳ ἀπεριτμήτων κοιμηθήσῃ μετὰ τραυματιῶν μαχαίρας. οὕτως Φαραὼ καὶ (β) τὸ πλῆθος τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, λέγει κύριος κύριος.

ut non exaltentur in magnitudine sua omnia ligna, quæ in aqua, & (k) dederunt principium suum in medio nubium, nec steterunt in altitudine sua (l) ad se omnes bibentes aquam: (m) omnes dati sunt in mortem, in terræ profundum, in medio filiorum hominum, (n) ad eos qui descendunt in foveam. Hæc dicit Dominus Dominus, In die, quâ descendit ad infernum, luxit eum abyssus. Et (o) cohibui flumina ejus, & (p) inhibui multitudinem aquæ. Et contenebratus est super eum Libanus: omnia ligna campi in eo defecerunt. A sonitu ruinæ ejus commotæ sunt gentes, quando deducebam eum ad infernum cum descendentibus in lacum. Et consolabantur eum (q) in terra omnia ligna deliciarum, & electa Libani omnia, quæ bibebant aquam. Nam & ipsi descenderunt cum eo ad infernum in vulneratis à gladio: & semen ejus, qui habitabant sub tegmine ejus, in medio vitæ suæ perierunt. Cui (r) assimilatus es? (s) descende, & deducere cum lignis deliciarum in terræ profundum. In medio incircumcisorum dormies cum his qui interfecti sunt gladio. Sic Pharao, & multitudo fortitudinis ejus, dicit Dominus Dominus.

MS. A. (ο) οὐκ ἔδωκαν (π) αὐτόν. (ρ) ἀλλὰ πάντες (σ) γῆν βάθους, (τ) ἀδωναῒ κύριος, (υ) ἐπέστησα ἐπ' αὐτὸν τὴν ἄβυσσον, καὶ ἐκώλυσα τοὺς ποταμοὺς αὐτῆς, καὶ ἐκώλυσεν πλῆθος ὕδατος, καὶ ἐπένθησεν αὐτὸν ὁ Λίβανος, καὶ ἐξέστησαν ἐπ' αὐτῷ πάντα τὰ ξύλα τοῦ παιδίου· (φ) Καὶ ἐσείσθησαν ἔθνη ἀπὸ τῆς φωνῆς τῆς πτώσεως αὐτοῦ, (χ) κάτω πάντα (ψ) μετὰ τραυματιῶν μαχαίρας, (ω) πάντες οἱ (α) γῆν βάθους. (β) πᾶν τὸ

ΚΕΦ. λβ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ (α) δωδεκάτῳ ἔτει, ἐν τῷ δεκάτῳ μηνὶ, μιᾷ τοῦ μηνὸς, ἐγένετο λό- 2 γος κυρίου πρός με, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, λάβε θρῆνον ἐπὶ Φαραὼ βασιλέα Αἰγύπτου, καὶ ἐρεῖς αὐτῷ, Λέοντι ἐθνῶν ὡμοιώθης σὺ, καὶ ὡς (˜) δράκων ὁ ἐν τῇ θαλάσσῃ, καὶ ἐκεράτιζες (β) τοῖς ποταμοῖς σου, καὶ ἐτάρασσες (γ) ὕδωρ τοῖς ποσί σου, καὶ κατεπάτεις τοὺς πο- 3 ταμούς σου. Τάδε λέγει (δ) κύριος, Καὶ περιβαλῶ ἐπὶ σὲ (ε) δίκτυα λαῶν πολλῶν, καὶ 4 ἀνάξω σε ἐν τῷ ἀγκίστρῳ μου, Καὶ ἐκτενῶ σε ἐπὶ τὴν γῆν. πεδία (ζ) πλησθήσεται, καὶ ἐπικαθιῶ ἐπὶ σὲ πάντα τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐμπλήσω (η) πάντα τὰ θηρία πάσης τῆς 5 γῆς. Καὶ δώσω τὰς σάρκας σου ἐπὶ τὰ ὄρη, 6 καὶ ἐμπλήσω ἀπὸ τοῦ αἵματός (θ) σου. Καὶ ποτισθήσεται ἡ γῆ ἀπὸ τῶν (ι) προχωρημάτων σου, ἀπὸ τοῦ πλήθους σου ἐπὶ τῶν ὀρέων. φάραγγας 7 ἐμπλήσω ἀπὸ σοῦ, Καὶ κατακαλύψω ἐν τῷ σβεσθῆναί σε οὐρανὸν, καὶ συσκοτάσω (κ) τὰ ἄστρα αὐτοῦ, ἥλιον ἐν νεφέλῃ καλύψω, καὶ (λ) σελήνη οὐ μὴ φάνῃ τὸ φῶς αὐτῆς.

CAP. XXXII.

1 ET factū est in (a) duodecimo anno, in decimo mense, unâ mensis, factum est verbū Domini ad me, dicens; 2 Fili hominis, assume lamentū super Pharaonem regem Ægypti, & dices ei; Leoni gentiū assimilatus es tu, & quasi (b) draco, qui in mari: & cornupetebas (c) fluminibus tuis, & conturbabas aquā pedibus tuis: & conculcabas flumina tua. 3 Hæc dicit Dominus; Et circumjiciam super te (d) retia populorū multorum: & extraham te in hamo meo: 4 Et extendam te super terram. Camp(e) replebuntur: & sedere faciam super te omnia volatilia cœli, & (f) saturabo omnes bestias universæ terræ. 5 Et dabo carnes tuas super montes, & implebo de sanguine (g) tuo: 6 Et irrigabitur terra de stercoribus tuis à (h) multitudine tua super montes. Valles implebo ex te: 7 Et operiā cū extinctus fueris, cœlū, & tenebrescere faciā stellas ej⁹: Solē in nube operiā: et Luna nō dabit lumē suū.

MS. A. (α) ἐν δεκάτῳ (˜) ὁ δράκων (β) τοὺς ποταμοὺς (γ) τὸ ὕδωρ (δ) ἀδωναῒ κύριος, (ε) δίκτυόν μου, καὶ ἐν ἐκκλησίᾳ λαῶν πολλῶν, (ζ) πλησθήσεταί σου, καὶ (η) ἐκ σοῦ πάντα (θ) σου παρὰ γῆν. (ι) χωρημάτων σου, καὶ ἀπὸ (κ) τοὺς ἀστέρας τοῦ οὐρανοῦ, (λ) ἡ σελήνη οὐ δώσει τὸ φῶς αὐτῆς. Καὶ πάντα

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 בְּדִיל דְלָא יִרְאָמוּן בְּתוּקְפְהוֹן כָּל מַלְכֵי קֶדֶם וְלָא יִתְּנוּן יָת מְרוּתְהוֹן עַל מַלְכְוָתָא
וְלָא יִתְרַבְרְבוּן לְהוֹן בְּתוּקְפֵיהוֹן כָּל עַבְדֵי מַלְכוּ אֲרֵי כוּלְהוֹן אִתְמְסַרוּ לְמוֹתָא לְאַרְעָא
15 אַרְעִיתָא בְּגוֹ בְּנֵי אֱנָשָׁא עִם נָחְתֵי גוֹב בֵּית אֲבַדָנָא׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים בְּיוֹם אַחְתוּתִי
יָתֵיהּ לִשְׁאוֹל אִתְאַבַּלוּ עֲלוֹהִי חֲפַת עָקָא יָת עַלְמָא וַחֲרוּבָא מְדִינָתָא וְזָעוּ עַמְמִין
16 סַגִיאִין וַחֲשׁוֹכוּ עֲלוֹהִי אַפֵּי מַלְכַיָא וְכָל מַלְכֵי עַמְמַיָא עֲלוֹהִי טְפַחוּ כִתְפָא׃ מִקָּל
מַפַּלְתֵּיהּ אֲזָעִית עַמְמַיָא בְּאַחְתוּתִי יָתֵיהּ לִשְׁאוֹל עִם נָחְתֵי גוֹב בֵּית אֲבַדָנָא וְאִתְנַחֲמוּ
17 בְּאַרְעָא אַרְעִיתָא כָּל מַלְכֵי קֶדֶם שִׁלְטוֹנִין וַעֲתִירֵי נִכְסַיָא כָּל עַבְדֵי מַלְכוּ׃ אַף אִנּוּן
עִמֵּיהּ אַחְתוּ לִשְׁאוֹל עִם קְטִילֵי חַרְבָּא וְשִׁלְטוֹנוֹהִי אִתַּבָּרוּ מַתְקִיפְהוֹן בְּגוֹ מַלְכְוָתָא׃
18 לְמַן דְמֵיתָ כְּדֵין בִּיקָר וּבִרְבוּ בְּמַלְכֵי קֶדֶם וְתִתְּחַת עִם מַלְכֵי קֶדֶם לְאַרְעָא אַרְעִיתָא בְּגוֹ
חַיָבַיָא תִשְׁכּוֹב עִם קְטִילֵי חַרְבָּא הוּא פַּרְעֹה וְכָל אִתְרְגוּשְׁתֵּיהּ אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים׃

לב

1 וַהֲוָה בְּתַרְתָּא עַסְרֵי שְׁנִין בִּתְרֵי עֲסַר יַרְחִין בְּחַד לְיַרְחָא הֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ
2 עִמִּי לְמֵימָר׃ בַּר אָדָם טוֹל אִלְיָא עַל פַּרְעֹה מַלְכָּא דְמִצְרַיִם וְתֵימַר לֵיהּ תַּקִּיף בְּעַמְמַיָא
הֲוֵיתָא וְאַתְּ כְּתַנִּינָא בְּיַמַּיָא וְאַגַחְתָּא בְּמַשְׁרְיָתָךְ וַאֲזָעְתָּא עַמְמַיָא בְּסוֹמְכְוָתָךְ וְאַחֲרֵבְתָּא
3 מְדִינָתְהוֹן׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים וְאֶפְרוֹס עֲלָךְ יָת מְצַדְתִּי בִּקְהָל עַמְמִין סַגִיאִין וְתִתְאַחַד
4 בִּסְרִיגָתִי׃ וְאַרְטְשִׁנָךְ בְּאַרְעָא עַל אַפֵּי בָרָא אַרְמֵי נְבֶלְתָּךְ וְאַשְׁרֵי עֲלָךְ כָּל עוֹפָא דִשְׁמַיָא
5 וְאַסְבַּע מִנָךְ חֵיוַת כָּל אַרְעָא׃ וְאֶתֵּן יָת בְּסַר קְטִילָךְ עַל טוּרַיָא וְיִתְמְלוֹן חֵילַיָא פִּגְרֵי
6 מַשְׁרְיָתָךְ׃ וְאַרְוֵי אַרְעָא דְהַנְיָתָא מִדְמָךְ עַל טוּרַיָא וּפְצִידַיָא יִתְמְלוֹן מִנָךְ׃ וְתַחְפִּנָךְ עָקָא
7 בְּאַכְהָיוּתִי יָת זִיו יְקַר מַלְכוּתָךְ מִן שְׁמַיָא יִזְעֲרוּן עַם מַשְׁרְיָתָךְ דַהֲווֹ סַגִיאִין כְּכוֹכְבַיָא
מֶלֶךְ בְּמַשְׁרְיָתֵיהּ יַחְפִּנָךְ כַּעֲנָנָא דְסָלֵיק וַחֲפֵי יָת שִׁמְשָׁא וּכְסִהֲרָא בְּיוֹמָא לָא מַזְהַר
נְהוֹרֵיהּ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

14 Ut non eleventur fortitudine sua omnes reges Orientis, nec dent tyrannidem suam super regna, nec sese efferant potentia sua omnes tenentes regnum; quia universi traditi sunt in mortem in terra inferiori in medio filiorum hominum cum descendentibus in lacum domus perditionis. 15 Hæc dicit Dominus Deus: In die quo descendere feci eum in infernum, luxerunt super eum; operuit orbem tribulatio, & desertæ sunt provinciæ, & contremuerunt populi multi, & denigratæ sunt propter eum facies regum, & omnes reges populorum propter eum percusserunt humerum. 16 A voce ruinæ ejus contremiscere feci populos quando descendere feci eum in infernum cum descendentibus in lacum domus perditionis, & consolati sunt in terra inferiori omnes reges Orientis, principes & divites substantiis, omnes tenentes regnum. 17 Ipsi quoque descenderunt cum eo in infernum cum interfectis gladio, & principes ejus contriti sunt, *quos roborabat* in medio regnorum. 18 Cuinam similis es nunc in magnitudine & in gloria inter reges Orientis? itaque detraheris cum regibus Orientis in terram inferiorem, in medio peccatorum dormies cum interfectis gladio; hic est Pharao & omnis multitudo ejus, ait Dominus Deus.

CAP. XXXII.

1 ET factum est in duodecimo anno, mense duodecimo, prima die mensis, factum est verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens: 2 Fili hominis, assume lamentum super Pharaonem regem Ægypti, & dices ei: Fortis in populis fuisti, & tu sicut *draco* qui *est* in mari, expugnâsti exercitu tuo, & commovisti populos cum auxiliis tuis, & vastâsti provincias eorum. 3 Hæc dicit Dominus Deus: Expandam super te rete meum in turba populorum multorum, & capieris in sagena mea. 4 Et dimittam te humi: super faciem agri projiciam cadaver tuum, & habitare faciam super te omnes aves cœli, & saturabo ex te bestias universæ terræ. 5 Et dabo carnes occisorum tuorum super montes, & implebuntur convalles cadaveribus exercitus tui. 6 Et inebriabo terram pinguem sanguine tuo super montes, & rivi implebuntur ex te. 7 Et operiet te tribulatio, cùm extinxero splendorem gloriæ regni tui de cœlis; & imminuentur populi exercitus tui, qui sunt multi sicut stellæ. Rex cum exercitu suo operiet te sicut nubes quæ ascendit & operit solem, & sicut luna quæ in die non splendet lumine suo.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܕܠܐ ܢܬܪܝܡܘܢ ܒܩܘܡܬܗܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܡܝܐ. ܘܠܐ ܢܬܠܘܢ ܫܘܟܝܗܘܢ ܒܝܬ
ܥܒܐ. ܘܠܐ ܢܩܘܡܘܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܐܝܟܘܬܗܘܢ ܟܠ ܫܬܝ ܡܝܐ. ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܐܫܬܠ
ܠܡܘܬܐ. ܠܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ ܒܝܬ ܒܢܝܢܫܐ ܕܢܚܬܝܢ ܠܓܘܒܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܒܝܘܡܐ
ܠܓܘܒܐ ܥܒܕܬ ܐܒܠܐ. ܟܣܝܬ ܥܠܘܗܝ ܬܗܘܡܐ. ܘܟܠܝܬ ܢܗܪ̈ܘܬܗ
ܘܐܬܟܠܝܘ ܡܝ̈ܐ ܣܓܝ̈ܐ. ܘܐܩܕܪܬ ܥܠܘܗܝ ܠܠܒܢܢ. ܘܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܚܩܠܐ ܐܬܚܡܠܘ
* ܡܢ ܩܠܐ ܕܡܦܘܠܬܗ ܐܙܕܘܥܬ ܐܪܥܐ. ܟܕ ܐܚܬܬܗ ܠܫܝܘܠ ܥܡ ܢܚ̈ܬܝ ܓܘܒܐ
ܐܬܒܝܐܘ ܒܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ. ܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܥܕܝܢ. ܓܒ̈ܝܐ ܘܫ̈ܦܝܪܐ ܕܠܒܢܢ. ܟܠ ܫܬܝ ܡܝܐ
* ܐܦ ܗܢܘܢ. ܢܚܬܘ ܥܡܗ ܠܫܝܘܠ ܠܘܬ ܩܛܝܠܝ ܚܪܒܐ. ܘܙܪܥܗ. ܝܬܒ ܒܛܠܠܗ
ܒܝܬ ܥܡ̈ܡܐ. * ܠܡܢܐ ܡܢ ܐܝܠܢܐ ܕܥܕܝܢ ܐܬܕܡܝܬ ܒܫܘܒܚܐ ܘܒܪܘܪܒܘܬܐ. ܘܢܚܬܬ ܥܡ ܐܝ
ܕܥܕܝܢ ܠܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ ܒܝܬ ܥܘܪ̈ܠܐ ܬܫܟܘܒ ܥܡ ܩܛܝܠܝ ܚܪܒܐ. ܗܘ ܦܪܥܘܢ
ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. *ܩܦܠܐܘܢ * ܠܒ *
* ܒܫܢܬ ܚܕܥܣܪܐ ܒܝܪܚܐ ܬܪܥܣܪ. ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ. ܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪ
ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ. ܫܩܘܠ ܐܠܝܬܐ ܥܠ ܦܪܥܘܢ ܡܠܟܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܐܪ
ܕܥܡ̈ܡܐ ܐܬܕܡܝܬ. ܘܐܢܬ ܐܝܟ ܬܢܝܢܐ ܕܒܝܡܐ. ܘܢܓܚܬ ܒܢܗܪ̈ܘܬܟ. ܘܕܠܚܬ ܡܝ
ܒܪ̈ܓܠܝܟ. ܘܕܫܬ ܢܗܪ̈ܘܬܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܦܪܣ ܐܢܐ ܥܠ
ܡܨܝܕܬܝ ܒܟܢܘܫܬܐ ܕܥܡ̈ܡܐ ܣܓܝ̈ܐ. ܘܢܣܩܘܢܟ ܒܡܨܝܕܬܝ. * ܘܐܪܡܝܟ ܒܐܪܥܐ. ܘܥ
ܐܦ̈ܝ ܚܩܠܐ ܐܫܕܝܟ. ܘܐܫܪܐ ܥܠܝܟ ܟܠܗ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܐܣܒܥ ܡܢܟ. ܟܠ
ܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܪܡܐ ܒܣܪܟ ܥܠ ܛܘܪ̈ܐ. ܘܢܬܡܠܘܢ ܢܚ̈ܠܐ ܡܢ ܪܚܫܟ. * ܘܐܫܩܐ ܐܪܥ
ܕܙܩܝܦܘܬܟ ܡܢ ܕܡܟ. ܘܛܘܪ̈ܐ ܘܢܚ̈ܠܐ ܢܬܡܠܘܢ ܡܢܟ. * ܘܐܟܣܐ ܒܡܕܥܟܟ ܫܡܝܐ. ܘܐܩܕ
ܟܘܟܒܝܗܘܢ. ܫܡܫܐ ܒܥܢܢܐ ܢܬܟܣܐ. ܘܣܗܪܐ ܠܐ ܢܢܗܪ ܢܘܗܪܗ.

Ut non exaltent ſe ſtaturis ſuis ullæ arbores aquarum, neque germinent cacumina earum inter condenſa, neque aſſurgant, neque ſimiles ſint eis aquis irriguæ; quandoquidem illæ omnes traditæ ſunt morti in ima terra inter homines qui deſcendunt in foveam. 14 Sic ait Dominus dominorum; Quo die deſcendit in foveam, luctum feci; obtexi eum abyſſo, & coercui flumina, & cohibitæ fuerunt aquæ multæ; atratum reddidi propter eum Libanum, & omnes arbores deſerti elanguerunt. 15 Præ ſono caſûs ejus commota eſt terra: cúmque demiſiſſem eum in infernum cum deſcendentibus in foveam, conſolationem perceperunt in ima terra omnes arbores Eden de ſelectiſſimis & pulcherrimis Libani, quæ bibunt aquas; 16 Quòd etiam ipſæ deſcenderint cum eo in infernum apud confoſſos gladio, ſemen autem ejus manſerit ſub umbra ejus inter gentes. 17 Cuinam ex arboribus Eden ſimilis es gloriâ et magnitudine, quandoquidem deſcendiſti cum arboribus Eden in imam terram, inter præputiatos jacebis cum iis qui gladio occiſi ſunt? Is eſt Pharaon et omnis potentia ipſius, dicit Dominus dominorum. 18

CAP. XXXII.

ANno undecimo, menſe duodecimo, primâ menſis, fuit ad me ſermo Domini, dicendo, 1 Fili hominis, profer lamentum de Pharaone rege Ægypti, & dic illi; Leoni gentium te comparas, tu verò ſimilis es draconi marino: illiſiſti in fluminibus tuis, conturbâſti aquas pedibus tuis, & conculcâſti fluvios earum. 2 Sic ait Dominus dominorum; Ecce expandam ſuper te rete meum in congregatione populorum multorum; qui cùm extraxerint te reti meo, 3 Projiciam te in terram, & in agri ſuperficie dejiciam te: faciam ut habitent ſuper te omnes cœli volucres, & ſaturabo ex te omnes terræ beſtias: 4 Projiciam carnes tuas ſuper montes, & implebuntur valles vermibus tuis: 5 Irrigabo terram ſpecularum tuarum ſanguine tuo, & montes valleſque implebuntur te: 6 Operiam in extinctione tua cœlos, & obtenebrabo ſtellas eorum: ſol nubibus obtegetur, & luna non fulgebit lumine ſuo: 7

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* كيلا يرتفع بعظمته جميع الشجر التي في الماء * ولا تعطي رياستهن الي وسط السحب
ولا يقف في ارتفاعهن جميع شاربي الماء * اسلموا للموت جميعا في عمق الارض * في وسط بني
البشر * مع النازلين في الحفر * هكذا يقول الرب الرب * في يوم نزل الي الجحيم غشيه
الحزن * واقمت عليه العمق * ومنعت انهارها * ومنعت كثير الماء * وناح عليه لبنان * جميع
شجر الغاب انحلت به * ومن صوت سقطته تزلزلت الامم * لما احدرته الي الجحيم مع
الهابطين في الحفر * وسلته في الارض اسفل جميع شجر النعيم والمختار من لبنان * جميع
شاربات الماء * ولان هاولاء نزلوا معه الي الجحيم * وذريته الساكنون تحت ستره في وسط
حياتهم هلكن * عماذا تشبهت * انزل مع اشجار النعيم الي عمق الارض * في وسط الغلف
تكون * تضطجع مع المجروحين بالسيف * هكذا فرعون وكل بيته يقول الرب الرب *

* الفصل الثاني والثلثون *

* وكان في السنة الثانية عشر * في الشهر الثاني عشر * في اول يوم من الشهر * كان قول الرب
الي قايلا * يا ابن الانسان * خذ نوحا على فرعون ملك مصر وقول له * تشبهت باسد الامم
وانت مثل تنين في البحر * واطحت بانهارك * واقلقت الماء بقدميك * ودست انهارك * هكذا
يقول الرب الرب * اطرح عليك شباك شعوب كثيرة * واجتذبك بشباكي * وامدك على
الارض وتمتلي البقاع منك * واجلس عليك كل طيور السماء * واشبع منك كل وحوش جميع
الارض * واجعل لحماتك على الجبال * واملاها من دمك * وتروي الارض من فضلاتك
ومن اعضايك على الجبال * واملا الاودية منك * واغشاك عند ما تطفي السماء * واظلم
كواكب السماء * واغطي الشمس بسحابه * والقمر لا يضي دون *

Ut non extollantur ob magnitudinem ejus omnes arbores quæ ſunt in aquis, neque evehant principatum ſuum ad medias nubes, neque erigant ſe ob altitudinem ſuam omnes aquam bibentes: traditi ſunt omnes ad mortem in ima terra, in medio filiorum hominum, cum deſcendentibus in foveam. 14 *Sic ait Dominus Dominus; In die quâ deſcendit in infernum, obruit eum mœror, extuli ſuper eum abyſſum, ejuſque flumina compeſcui, & cohibui multitudinem aquarum: gemuit propter eum Libanus, omnes arbores ſylvæ propter eum liquatæ ſunt:* 15 *Et ex ruinæ ejus fragore contremuerunt gentes, cùm deturbâſſem eum in infernum cum deſcendentibus in lacum: & conſolabantur eum in terra deorſum omnes arbores deliciarum, & ſelectiſſimæ Libani, omnes bibentes aquam.* 16 *Et quandoquidem iſti deſcenderunt cum eo in infernum, & ſtirps ejus habitantes ſub tegmine ipſius, in medio vitæ ſuæ perierunt;* 17 *Cui rei te comparas? deſcende cum arboribus deliciarum in profundum terræ, in medium incircunciſorum, cum vulneratis gladio concumbe. Ita Pharaon totaque domus ejus, dicit Dominus Dominus.* 18

CAP. XXXII.

ITem contigit anno duodecimo, menſe duodecimo, primâ die ejuſdem menſis; ut eſſet ſermo Domini ad me, dicens; 1 *O fili hominis, compone lamentationem de Pharaone rege Ægypti, & dicas illi; Leoni gentium te comparâſti, & fuiſti inſtar draconis in mari, cornupetiſti fluminibus tuis, conturbâſti aquam pedibus tuis, & flumina tua conculcâſti.* 2 *Sic dicit Dominus Dominus; Faciam ſuper te retia populorum multorum, trahamque te hamo meo:* 3 *Proſtrabo te humi, & implebuntur te valles: faciam ut ſedeant ſuper te omnes cœli volucres, & ſatiabo de te omnes totius terræ beſtias.* 4 *Ponam carnes tuas ſuper montes, & implebo eos ſanguine tuo:* 5 *Irrigabitur tellus reliquiis tuis & membris tuis ſuper montes, valleſque de te replebo:* 6 *Obnuam te cùm extinctum fuerit lumen cœli, obtenebravero ſtellas cœli, ſolem obtexero nubibus ejus, & lunæ lux minimè ſplenduerit,* 7

יחזקאל : לב

dabo & : te super faciam *nigrescere* cœlis in lucis luminaria Omnia
8 כל־מאורי אור בשמים אקדירם עליך ונתתי
faciam irasci Et .Deus Dominus dixit ,tuã terram super *tenebrositatem*
9 חשך על־ארצך נאם אדני יהוה: והכעסתי
gentibus in tuam contritionem *me inducendo in* ,multorum populorum cor
לב עמים רבים בהביאי שברך בגוים
populos te super faciam stupescere Et .*eas* nôsti non quas terras super
10 על־ארצות אשר לא־ידעתם: והשמותי עליך עמים
me vibrando in ,formidine te super formidabunt eorum reges & ,multos
רבים ומלכיהם ישערו עליך שער בעופפי
vir momenta ad exterrebuntur & : eorum facies super meum gladium
חרבי על־פניהם וחרדו לרגעים איש
Gladius : Deus Dominus dixit sic Quia .tuæ ruinæ die in ,suo animo in
11 לנפשו ביום מפלתך: כי כה אמר אדני יהוה חרב
,tuam *turbam* faciam cadere fortium gladiis In .tibi veniet Babel regis
12 מלך־בבל תבואך: בחרבות גבורים אפיל המונך
, Ægypti superbiam vastabunt & : ipsi omnes gentium fortes
עריצי גוים כלם ושדדו את־גאון מצרים
,ejus *jumentum omne* faciam perdere Et .*ejus turba omnis* disperdetur &
13 ונשמד כל־המונה: והאבדתי את־כל־בהמתה
ungulæ & ,ultrà hominis pes eas calcabit non & : multas aquas *à super*
מעל מים רבים ולא תדלחם רגל־אדם עוד ופרסות
,eorum aquas faciam mergere Tunc .eas *calcabit* non *animalis*
14 בהמה לא תדלחם: אז אשקיע מימיהם
.Deus Dominus dixit ; faciam ire oleum velut eorum flumina &
ונהרותם כשמן אוליך נאם אדני יהוה:
terra desolabitur & ,desolationem Ægypti terram *me dando In*
15 בתתי את־ארץ מצרים שממה ונשמה ארץ
scient & : ea in habitantes omnes *me percutiendo in* ,sua plenitudine à
ממלאה בהכותי את־כל־יושבי בה וידעו
gentium filiæ ,eam *deplorate* & , *ipsa* Lamentum .Dominus *ego* quod
16 כי־אני יהוה: קינה היא וקוננוה בנות הגוים
deflebunt ejus *turbam* omnẽ super & ,Ægyptum super : eam *deplorabunt*
תקוננה אותה על־מצרים ועל־כל־המונה תקוננה
, anno undecimo in fuit Et .Deus Dominus dixit , *eam*
17 אותה נאם אדני יהוה: ויהי בשתי עשרה שנה
: dicendo ,me ad Domini verbum fuit ,mensis decima quinta in
בחמשה עשר לחדש היה דבר־יהוה אלי לאמר:
,*illam* descendere fac & , Ægypti *turbam super conquerere* ,hominis Fili
18 בן־אדם נהה על־המון מצרים והורדהו
descẽdentib⁹ cum ,inferorum terram ad *illustrium* gentium *filias* & ipsam
אותה ובנות גוים אדרם אל־ארץ תחתיות את־יורדי
.*præputiatis* cum *jace* & ,Descende ? *pulchritudine præstas* *quo Ex* .*lacum*
19 בור: ממי נעמת רדה והשכבה את־ערלים:
trahite ,est data Gladio .cadent gladio interfectorum medio In
20 בתוך חללי־חרב יפלו חרב נתנה משכו
medio de potentium fortes ei Loquentur .ejus *turbas* omnes & , eam
21 אותה וכל־המוניה: ידברו־לו אלי גבורים מתוך
incircuncisis *jacuerunt* descenderunt : suis auxiliatoribus cum , inferni
שאול את־עזריו ירדו שכבו הערלים
ejus circuitibus ejus cœtus omnis & , Assur Ibi .gladio interfectis
22 חללי־חרב: שם אשור וכל־קהלה סביבותיו
Cujus .gladio in *cadentes* interfecti ipsi omnes : ejus sepulchra
23 קברתיו כלם חללים הנפלים בחרב: אשר
circuitus ejus cœtus fuit & ,*lacus* lateribus in *ejus* sepulchra sunt posita
נתנו קברתיה בירכתי־בור ויהי קהלה סביבות
dederunt qui ,gladio in *cadentes* interfecti ipsi omnes : ejus sepulchri
קברתה כלם חללים נפלים בחרב אשר־נתנו
.viventium terra in formidinem
חתית בארץ חיים:

Versio VULG. LAT.

8 Omnia luminaria cœli mœrere faciam super te : & dabo tenebras super terrã tuã, dicit Dñs Deus, cùm ceciderint vulnerati tui in medio terræ, ait Dñs De⁹. 9 Et irritabo cor populorum multorum, cùm induxero contritionẽ tuã in gentibus super terras, quas 10 nescis. Et stupescere faciã super te populos multos : & reges eorum horrore nimio formidabunt super te, cùm volare cœperit gladius meus super facies eorum: & obstupescent repentè singuli pro anima sua in die ruinæ 11 tuæ. Quia hæc dicit Dñs Deus; Gladius regis Babylonis veniet 12 tibi, In gladiis fortium dejiciam multitudinẽ tuã : inexpugnabiles omnes Gentes hæ : & vastabunt superbiam Ægypti, & dis-13 sipabitur multitudo ej⁹. Et perdam omnia jumenta ej⁹, quæ erant super aquas plurimas : & non conturbabit eas pes hominis ultrà, neq; ungula jumento-14 rum turbabit eas. Tunc purissimas reddã aquas eorũ, & flumina eorũ quasi oleũ adducã, ait 15 Dñs De⁹ : Cùm dedero terram Ægypti desolatã : deseretur autem terra à plenitudine sua, quando percussero omnes habitatores ej⁹ : & scient quia ego 16 Dñs. Planctus est, & plangent eum : filiæ Gentiũ plangent eũ : super Ægyptum, & super multitudinẽ ej⁹ plangent eum, ait Do-17 minus Deus. Et factũ est in duodecimo anno, in quintadecima mensis, factum est verbum Do-18 mini ad me, dicens; Fili hominis, cane lugubre super multitudinem Ægypti : & detrahe eam ipsam, & filias Gentium robustarum, ad terram ultimam, cum his qui descendunt in lacum. 19 Quo pulchrior es? descende, 20 & dormi cum incircumcisis. In medio interfectorum gladio cadent : gladius dat⁹ est, attraxerunt eam, & omnes populos ej⁹. 21 Loquentur ei potentissimi robustorũ de medio inferni, qui cum auxiliatoribus ej⁹ descenderunt, & dormierunt incircumcisi, in-22 terfecti gladio. Ibi Assur, & omnis multitudo ej⁹: in circuitu illi⁹ sepulchra ejus: omnes interfecti, & qui ceciderunt gladio. 23 Quorum data sunt sepulchra in novissimis laci: et facta est multitudo ejus per gyrum sepulchri ejus : universi interfecti, cadentesque gladio, qui dederant quondam formidinem in terra viventium.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

8 Πάντα τὰ φαίνοντα φῶς ἐν τῷ οὐρανῷ, συσκοτάσουσιν ἐπὶ σέ· καὶ δώσω σκότος ἐπὶ τὴν γῆν (μ), λέγει κύριος κύριος (ν). 9 Καὶ παροργιῶ καρδίαν λαῶν πολλῶν, ἡνίκα ἂν (ξ) ἄγω αἰχμαλωσίαν σου εἰς τὰ 10 ἔθνη, εἰς (ο) γῆν ἣν οὐκ ἔγνως. Καὶ στυγνάσουσιν ἐπὶ σὲ (π) ἔθνη πολλὰ, καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν ἐκστάσει ἐκστήσονται, ἐν τῷ (ρ) πέτασθαι τὴν ῥομφαίαν μου ἐπὶ πρόσωπα αὐτῶν, προσδεχόμενοι τὴν πτῶσιν αὐτῶν (σ) 11 ἀφ' ἡμέρας πτώσεώς σου. Ὅτι τάδε λέγει (τ) κύριος κύριος, Ῥομφαία βασιλέως Βα-12 βυλῶνος ἥξει σοι Ἐν μαχαίραις γιγάντων, καὶ καταβαλῶ τὴν ἰσχύν σου, λοιμοὶ ἀπὸ ἐθνῶν πάντες, καὶ ἀπολοῦσι τὴν ὕβριν Αἰγύπτου, καὶ 13 συντριβήσεται πᾶσα ἡ ἰσχὺς αὐτῆς. Καὶ ἀπολῶ πάντα τὰ κτήνη αὐτῆς ἀφ' ὕδατος πολλοῦ, καὶ οὐ μὴ ταράξῃ αὐτὸ (υ) ποὺς ἀνθρώπου ἔτι, καὶ ἴχνος (φ) κτηνῶν οὐ μὴ κα-14 ταπατήσῃ αὐτό. Οὕτως τότε ἡσυχάσει τὰ ὕδατα αὐτῶν, καὶ οἱ ποταμοὶ αὐτῶν ὡς ἔλαιον πορεύσονται, λέγει (χ) κύ-15 ριος, Ὅταν δῶ Αἴγυπτον εἰς ἀπώλειαν, καὶ ἐρημωθῇ ἡ γῆ σὺν τῇ πληρώσει αὐτῆς, ὅταν (ʹ) διασπερῶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας ἐν αὐτῇ, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ 16 εἰμι κύριος. Θρῆνός ἐστι, καὶ (ψ) θρηνήσεις αὐτόν, καὶ αἱ θυγατέρες τῶν ἐθνῶν θρηνήσουσιν αὐτόν, ἐπ' Αἴγυπτον, καὶ ἐπὶ πᾶσαν τὴν ἰσχὺν αὐτῆς θρηνήσουσιν αὐτήν, λέγει 17 κύριος κύριος. Καὶ (ω) ἐγενήθη ἐν τῷ δωδεκάτῳ ἔτει (α) τοῦ πρώτου μηνὸς, πεντεκαιδεκάτῃ τοῦ μηνὸς, ἐγένετο λόγος κυ-18 ρίου πρός με, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, θρήνησον ἐπὶ τὴν (β) ἰσχὺν Αἰγύπτου, καὶ καταβιβάσουσιν αὐτῆς τὰς θυγατέρας τὰ ἔθνη νεκρὰς εἰς τὸ βάθος τῆς γῆς, πρὸς τοὺς 19 καταβαίνοντας εἰς βόθρον· (γ) Ἐν μέσῳ μαχαίρας τραυματιῶν πεσοῦνται μετ' αὐτοῦ, καὶ κοιμηθήσεται πᾶσα ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ. καὶ ἐροῦσίν σοι οἱ γίγαντες, Ἐν βάθει βόθρου γίνου, Τίνος κρείττων εἶ; (δ) καὶ κατάβηθι, καὶ κοι-20 μήθητι μετὰ ἀπεριτμήτων, Ἐν μέσῳ τραυ-21 ματιῶν μαχαίρας. Ἐκεῖ Ἀσσοὺρ καὶ πᾶσα ἡ 22 συναγωγὴ αὐτοῦ, πάντες τραυματίαι 23 ἐκεῖ ἐδόθησαν, (ε) Καὶ ἡ ταφὴ αὐτῶν ἐν βάθει βόθρου, καὶ ἐγενήθη ἡ συναγωγὴ (ζ) αὐτοῦ περικύκλῳ τοῦ μνήματος αὐτοῦ, πάντες (η) οἱ τραυματίαι οἱ πεπτωκότες μαχαίρᾳ, (θ) οἱ δόντες τὸν φόβον αὐτῶν ἐπὶ γῆς ζωῆς.

MS.A. (μ) σου, (ν) ὁ θεός. (ξ) ἀγάγω (ο) τὴν γῆν (π) ἔθνη, καὶ οἱ (ρ) πετάσθαι ῥομφαίαν μου ἐπὶ πρόσωπον (σ) ἀπὸ (τ) ἀδωναῒ κύριος, Ῥομφαία (υ) ἔτι πούς ἀνθρώπου, καὶ (φ) κτήνους (χ) ἀδωναῒ κύριος, (ʹ) διασπείρω (ψ) θρηνήσουσιν (ω) ἐγένετο (α) ἐν τῷ πρώτῳ μηνὶ, (β) γῆν (γ) ἐξ ὑδάτων εὐπρεποῦς κατάβηθι, καὶ κοιμήθητι μετὰ ἀπεριτμήτων, Ἐμ μέσῳ τραυματιῶν μαχαίρᾳ πεσοῦνται (δ) κατάβηθι, (ε) Ἡ ταφὴ (ζ) αὐτῶν (η) τραυματίαι (θ) οἱ ἔδωκαν τὰς ταφὰς αὐτῆς ἐν μηροῖς λάκκου, καὶ ἐγενήθη ἐκκλησία ὑπὲρ κύκλῳ τῆς ταφῆς αὐτοῦ, πάντες αὐτοὶ τραυματίαι, πίπτοντες μαχαίρᾳ, οἱ δόντες

Omnia ostendentia lumen in cœlo, contenebrescent in te: & dabo tenebras super terram, ait Dominus Dominus: Et irritabo cor populo- 8 9 *rum multorum; cum adduxero captivitatem tuam in gentes, ad terram, quam nescis. Et contrista-* 10 *buntur super te gentes multæ: & reges earũ stupore stupebunt, cum (i) volare cœperit gladius meus super facies eorum, (k) expectantes ruinam suam à die ruinæ tuæ. Quia hæc dicit Dominus Domi-* 11 *nus; Gladius regis Babylonis veniet tibi In gladiis gigantum: &* 12 *dejiciam fortitudinem tuam: pestilentes de gentib⁹ cuncti, et perdent (l) injuriam Ægypti: & conteretur omnis fortitudo illius. Et* 13 *perdam omnia jumenta ejus ab aqua multa: & non conturbabit eam pes hominis ultrà: & vestigium jumentorũ non calcabit eã. (m) Ita tunc quiescent aquæ eo-* 14 *rum: et flumina eorũ, quasi oleum (n) ibunt, dicit Dominus: Cùm de-* 15 *dero Ægyptũ in perditionem, et desolata fuerit terra cum plenitudine sua: cùm disseminavero omnes habitatores ejus. Et scient, quia ego sum Dominus. Planctus* 16 *est, & (o) planges eum: & filiæ gentium plangent (p) eum: super Ægyptum, & super omnem fortitudinem ejus plangent eam, ait Domin⁹ Dominus. Et factũ est in* 17 *duodecimo anno (q) primi mensis, quintadecimã mensis, factus est sermo Domini ad me, dicens: Fili* 18 *hominis, plange super (r) fortitudinem Ægypti: & deducent ejus filias gentes mortuas in profundum terræ, ad eos, qui descendunt in (ſ) foveam; In medio vulne-* 19 *ratorum gladio cadent cum eo: & dormiet omnis fortitudo ejus: & dicent tibi gigantes; In (t) profundo foveæ esto: quo melior es? & descende, et dormi cum incircumcisis In medio vulneratorum gla-* 20 21 *dio. Ibi Assur, & omnis congregatio ejus: omnes vulnerati ibi* 22 *dati sunt: Et sepulchra eorum* 23 *in profundo foveæ: & facta est congregatio ejus in circuitu sepulchri ejus: omnes vulnerati, qui ceciderant (u) gladio: qui dederunt timorem suum in terra vitæ.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 כל שבילי ארחתיך דמתקנין ונטירן בגויך הא כמנהרי זהריא בשמיא אקלקלנון עלך
9 ותחפי עקא כקבלא ית ארעך אמר יי אלהים : ואזיע לב עממין סגיאין באיתיותי תבירי
10 קרבך לביני עממיא למדינן דלא ידעתנון : ואצדי עלך עממין סגיאין ומלכיהון
יתמהון עלך תימהא באיתיותי עלך דקטלין בחרבא ואנון חזן ויזועון מן קדם תברהון
11 גבר לנפשיה ביום מפלת קטילך : ארי כדנן אמר יי אלהים קטולי חרבא מלכא דבבל
12 ייתון עלך : בחרבא דגבריא אמגר משריתך תקיפי עממיא כולהון ויבזון ית תקוף
13 מצרים ותשתיצי כל אתרגושתהא : ואוביד ית כל בעירה מעל מיין סגיאין ולא
14 תזועונון רגלי דאנשא עוד ופרסת בעירא לא תזועונון : בכן אשקיט לעממיא ומלכיהון
15 בניח אדבר אמר יי אלהים : כד אתן ית ארעא דמצרים צדו ותצדי ארעא ומלהא
16 באיתיותי מחא על כל דיתבין בה וידעון ארי אנא יי : אמר נביא אליא היא נבואתא
ותהי לאליא כפרני עממיא יללון יתה על מצרים ועל כל אתרגושתה יללון יתה
17 אמר יי אלהים : והוה בתרתא עסרי שנין בחמשא עסר לירחא הוה פתגם נבואה
18 מן קדם יי עמי למימר : בר אדם אתנבי על אתרגושת מצרים ותברה לה ולכפרני
19 עממיא תקיפיא אתנבי דיתמסרון לארעא ארעיתא עם נחתי גוב בית אבדנא : ממן
20 את גבר חורת ושכיב עם חיביא : בגו קטילי חרבא יתרמון לה לחרבא יתמסרון
21 לשיצאה יתהון וית כל אתרגושתהון : ימללון עמיה תקיפי גבריא מגו שאול
22 עם סעדוהי נחיתו שכיבו חיביא קטילי חרבא : תמן אתור וכל משריתיה סחרניתהון
23 קבריהון כולהון קטילין דאיתקטלו בחרבא : דאתמסרו לקבורא בכיפי גוב בית
אבדנא והות משריתהון סחרניתהון קבריהון כולהון קטיליא דאיתקטלו בחרבא
דאתמסרו לתבר על דשליטו בארעא דישראל :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Omnes calles itinerũ tuorũ qui directi erant, & asservati *in medio tui*, sicut 8 luminaria lucentia in cœlis, dissipabo eos super te : & operiet tribulatio, sicut tenebræ, terram tuam, ait Dñs De⁹. Et commovebo cor populorũ mul- 9 torum cùm adduxero *contritos belli tui* inter populos, & ad provincias quas nescisti. Et stupescere faciã super te populos multos, & reges eorũ ad- 10 mirabuntur super te miratione, cùm adduxero super te eos qui occidunt gladio ; & ipsi videbunt & contremiscent à facie interit⁹ sui, singuli pro anima sua in die ruinæ occisorũ tuorũ. Quia hæc dicit Dñs De⁹ : Occidentes 11 gladio regis Babylonis venient contra te. *Gladio* fortiũ corruere faciã ex- 12 ercitũ tuum: robusti populorũ universi vastabunt fortitudinem Ægypti, & consumetur omnis multitudo ej⁹. Et perdam omnia jumenta ej⁹ quæ erant 13 super aquas multas ; & non *conturbabunt* eas *pedes* hominis ampliùs, & ungulæ jumenti non turbabunt eas. Tunc quiescere faciã populos, & reges 14 eorũ in requiẽ deducã, ait Dñs De⁹. Cùm dedero terrã Ægypti desolatã, & 15 desolabitur terra *& plenitudo* ej⁹ ; cùm adduxero percussionẽ super omnes habitantes in ea : & sciẽnt quia ego Dñs. Dixit propheta, Lamentabilis pro- 16 phetia est, & erit in lamentationẽ : villæ populorũ lamentabuntur eam sup Ægyptũ, & super omnẽ multitudinẽ ej⁹ lamentabuntur eã, ait Dñs De⁹. Et 17 factũ est duodecimo anno, quintadecima die mensis, factum est verbũ prophetiæ à facie Dñi mecum, dicens : Fili hominis, vaticinare super multitudi- 18 nem Ægypti, & contere eã ipsã, & villas populorũ robustorũ ; vaticinare q̃ tradentur terræ inferiori cum descendentib⁹ in lacũ dom⁹ perditionis. Quo 19 potentior es tu? descende & dormi cum peccatorib⁹. In medio occisorum 20 gladio cadent, gladio tradentur ut consumat eos & omnẽ multitudinẽ eorũ. Loquentur cum eo potentes, & fortes de medio inferni cum auxiliatorib⁹ 21 suis descenderunt, & dormierunt peccatores interfecti gladio. Ibi Assur & 22 omnis exercit⁹ ej⁹ ; in circuitu eorũ sepulchra ipsorũ, omnes interfecti qui occisi sunt gladio. Qui traditi sunt sepulturæ in intimo lacu dom⁹ perditionis, & fuit exercit⁹ eorum in circuitu sepulchrorũ ipsorũ, universi interfecti qui occisi sunt gladio, qui traditi sunt in exitium, pro eo quod dominati sunt in terram Israel.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܟܠܗܘܢ ܢܗܝܪܐ ܕܢܗܪܝܢ ܒܫܡܝܐ. ܐܚܫܟ ܐܢܘܢ ܥܠܝܟ. ܘܐܬܠ ܚܫܘܟܐ ܒܐܪܥܟ 8
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܐܪܓܙ ܠܒܐ ܕܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܡܐ ܕܐܝܬܝܬ ܬܒܪܟ ܥܡ 9
ܥܡܡܐ : ܘܒܡܕܝܢܬܐ ܕܠܐ ܝܕܥܬ ܐܢܬ ܠܗܘܢ .· * ܘܐܬܡܗ ܥܠܝܟ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. 10
ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܢܪܬܬܘܢ. ܡܐ ܕܐܪܬܝܬ ܣܝܦܝ ܥܠ ܐܦܝܗܘܢ. ܘܢܪܬܬܘܢ ܘܢܬܪܗܒܘܢ ܐܢܫ
ܒܢܦܫܗ. ܒܝܘܡܐ ܕܡܦܘܠܬܟ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܣܝܦܗ ܕܡܠܟܐ 11
ܕܒܒܠ ܢܐܬܐ ܥܠܝܟ. * ܒܣܝܦܐ ܕܓܢܒܪܐ ܐܪܡܐ ܚܝܠܟ. ܘܥܫܝܢܝܗܘܢ ܕܥܡܡܐ 12
ܕܟܠܗܘܢ. ܘܢܒܙܘܢ ܚܝܠܗ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܢܬܒܙܙ ܟܠܗ ܥܘܬܪܗ. * ܘܐܘܒܕ ܒܥܝܪܗ ܡܢ 13
ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܠܐ ܬܕܠܚ ܐܢܘܢ ܬܘܒ ܪܓܠܐ ܕܒܪܢܫܐ. ܘܦܪܣܬܐ ܕܒܥܝܪܐ
* ܗܝܕܝܢ ܐܫܩܥ ܡܝܗܘܢ. ܘܢܗܪܘܬܗܘܢ ܐܝܟ ܡܫܚܐ ܐܪܕܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܡܐ 14
ܕܐܬܠ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܠܚܘܪܒܐ. ܘܬܚܪܘܒ ܐܪܥܐ ܒܡܠܝܗ̇. ܡܐ ܕܐܡܚܐ ܠܟܠܗܘܢ 15
ܥܡܘܪܝܗ̇. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܐܠܝܬܐ ܗܝ ܘܢܐܠܝܢܗ̇ ܒܢܬܗܘܢ ܕܥܡܡܐ ܢܐܠܝܢ 16
ܥܠܗ̇. ܥܠ ܡܨܪܝܢ ܘܥܠ ܟܠܗ ܚܝܠܗ̇ ܢܐܠܝܢܗ̇. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܒܫܢܬܐ 17
ܚܕܥܣܪܐ ܒܚܡܫܬܥܣܪ ܒܝܪܚܐ .· ܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܘܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ 18
ܐܠܝ ܐܠܝܬܐ ܥܠ ܚܝܠܗ ܕܡܨܪܝܢ .· ܘܐܚܬܝܗ̇ ܠܗ̇ ܥܡ ܒܢܬܗ ܕܥܡܡܐ ܥܫܝܢܐ.
ܠܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ ܥܡ ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. * ܡܢ ܡܝܐ ܒܣܝܡܐ ܢܚܘܬ. ܘܐܬܪܡܐ ܥܡ ܥܘܪܠܐ. 19
* ܥܡ ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܢܓܪܘܢ ܠܗ. ܘܠܟܠܗ ܚܝܠܗ. * ܘܢܡܠܠܘܢ ܥܡ 20 21
ܓܢܒܪܝܗܘܢ ܫܠܝܛܢܐ ܕܥܡܡܐ ܡܢ ܓܘ ܫܝܘܠ. ܘܢܚܬܘܢ. ܘܢܫܟܒܘܢ ܥܡ ܥܘܪܠܐ ܥܡ
ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ. * ܬܡܢ ܐܬܘܪ ܘܟܠܗ ܟܢܫܗ. ܚܕܪ ܩܒܪܗ. ܟܠܗܘܢ ܩܛܝܠܐ ܕܢܦܠܘ 22
ܒܣܝܦܐ. * ܕܥܒܕ ܩܒܪܗ ܒܫܘܦܘܗܝ ܕܓܘܒܐ. ܘܗܘܐ ܟܢܫܗ ܚܕܪ ܩܒܪܗ. ܟܠܗܘܢ 23
ܩܛܝܠܐ ܕܢܦܠܘ ܒܣܝܦܐ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܘ ܬܒܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ.

Omnia luminaria quæ lucent in cœlo, ſuper 8
te obſcurabo, & faciam tenebras in terra tua,
dicit Dominus dominorum : Et ad iram con- 9
citabo cor populorum multorum, quum in-
duxero fractionem tuam inter gentes, & in
urbes quas ignoras : Et faciam ut obſtupe- 10
ſcant de te populi multi, extimeantque reges
eorum, quum coruſcare fecero gladium me-
um ſuper facies eorum : timebunt inquam,
& expaveſcent quiſque in ſemetipſo in die
caſûs tui. Sic ait Dominus dominorum ; 11
Gladius regis Babylonis invadet te. Gladio 12
gigantum omniumque robuſtiſſimorum inter
gentes dejiciam robur tuum; prædabuntur
robur Ægypti, & diripientur omnes divitiæ
ipſius. Perdam jumenta ejus ab aquis mul- 13
tis, & pes humanus non turbabit eas ampliùs,
neque ungulæ jumentorum. Tunc diſponam 14
aquas eorum, & fluvios eorum fluere faciam
tanquam oleum, ait Dominus dominorum :
Quum redegero terram Ægypti in deſolatio- 15
nem, & vaſtata fuerit univerſa terra : quum
percuſſero omnes habitatores ejus : & experi-
entur me eſſe Dominum. Lamentatio eſt, & 16
filiæ populorum lamentabuntur eam ; de Æ-
gypto & de omnibus divitiis ejus lamenta-
buntur eam, dicit Dominus dominorum.
Anno undecimo, decimâ quintâ menſis, fuit 17
ad me ſermo Domini, dicendo ; Fili homi- 18
nis, profer lamentationem de potentia Ægy-
pti, eamque demitte cum ipſa inter gentes ro-
buſtas, in imam terram, cum deſcendenti-
bus in foveam, *dicens* ; Ex aquis jucundis 19
deſcende, & jace cum præputiatis. Cum 20
gladio confoſſis cadent, & trahent eum to-
tamque potentiam ejus. Et alloquentur ju- 21
venes eorum principes gentium ex inferis, &
deſcendent cubabuntque præputiati cum
gladio confoſſis. Illic Aſſur cum tota con- 22
gregatione ſua ſunt circa ſepulchrum ejus; o-
mnes interfecti qui gladio ceciderunt : Qui 23
fecit ſepulchrum ſuum in marginibus foveæ,
ejuſque ſepulchrum circumſtat congregatio i-
pſius ; omnes interfecti qui gladio ceciderunt,
eò quòd fractionem fecerint in terra vivo-
rum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وجميع المنيرات نورا في السماء يظلمون بك * واعطي ظلمة علي ارضك يقول الرب 8
الرب * واغضب قلب شعوب كثيرين * حين اجلب سبيك في الامم * في ارض لا تعرفها. 9
* ويعبسون عليك امم كثيرين * وملوكهم يحيرون حين * عند ما امدد سيفي علي 10
وجوههم * يتوقعون سقطهم منذ يوم سقطتك * لان هكذا يقول الرب * سيف ملك 11
بابل ياتي اليك بسيوف الجبابرة * واطرح قوتك * وجميع المفسدين من الامم يهلكون 12
كبرياء مصر * وينكسر كل قوتها * واهلك جميع بهايمها * من الماء الكثير * فلا تكون 13
ايضا قدم انسان * واثر بهيمة لا يطاه هكذا * حينيذ تسكن مياههم * وانهارهم تسير 14
مثل الزيت يقول ادوناي الرب * اذ ادفع مصر للهلاك * وتخرب الارض بكمالها * اذ ابدد 15
جميع السكان فيها * ويعلمون اني انا الرب * نوح هو * وينوحونه * وبنات الامم ينحنه علي 16
مصر * وعلي جميع قوتها ينحنه * يقول ادوناي الرب * وكان في السنة الثانية عشر * في 17
الشهر الاول * في خمسة عشر من الشهر * كان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * نح علي 18
قوة مصر * وينزلون الامم بناتها امواتا الي عمق الارض مع الهابطين في الجب * في وسط 20
الجرحا بالسيف يسقطون معه * ويضطجع كل قوته * ويقولون لك الجبابرة * صر في عمق 21
الجب * انت افضل ممن * انزل واضطجع مع الغير مختونين * في وسط الجرحا 19
بالسيف * هناك الموصل وكل جمعه وجميع الجرحا * هناك اعطيوا اقبارهم في عمق الجب 22
* وصار جمعه حول قبره * جميع الجرحا الساقطين بالسيف * الذين اعطوا خوفهم علي 23
ارض الحياة *

Denique omnia lumine micantia in cælo 8
obtenebrata fuerint in te: daboq; tenebras
ſuper terram tuam, dicit Dominus Domi-
nus, Et ad iram provocabo cor populorũ 9
multorum; quum adduxero captivita-
tem tuam inter gentes, in terram quam
non noſti. Et contriſtabuntur de te populi 10
multi, regeſque eorum ſtupore perfunden-
tur, quum extendero gladium meum con-
tra faciem eorum; expectantes ruinam
ſuam poſt diem ruinæ tuæ. Sic enim di- 11
cit Dominus; Gladius regis Babelis veniet
ad te cum gladiis gigantum : Et dejiciam 12
fortitudinem tuam : & omnes gentium
pernicioſiſſimi perdent ſuperbiã Ægypti,
ita ut frangatur totum robur ipſius. Per- 13
dam quoque omnia ipſius jumenta ob
aquam tam multam ut eam neque pes
humanus queat ampliùs tranſire, ne-
que jumenti veſtigium pariter calca-
re. Tunc quieſcent aquæ eorum, & 14
flumina eorum quaſi oleum fluent, di-
cit Adonai Dominus : Quum tradi- 15
dero Ægyptum excidio, & vaſtata fu-
erit univerſa terra : quum diſperſero
omnes habitantes in ea : & cognoſcent
me eſſe Dominum. Lamentum eſt quod 16
lamentabuntur, & filiæ populorum lamen-
tabuntur illud de Ægypto, & de tota
potentia ejus lamentabuntur illud, dicit
Adonai Dominus. Contigit etiam anno 17
duodecimo, menſe primo, decimâ quintâ
ejuſdem menſis; ut eſſet ſermo Domini
ad me, dicens; O fili hominis, lamen- 18
tare fortitudinem Ægypti : deducent
enim populi filias ejus mortuas in pro-
fundũ terræ cum deſcendentib⁹ in foveã:
Inter gladio vulneratos cum eo deſcen- 20
dent, jacebitque tota potentia ipſius. Di- 21
centque tibi gigantes; Eſto in profundo
foveæ: Tu quonam præſtantior es? de- 19
ſcende, & jace cum incircumciſis, in me-
dio vulneratorum gladio. Illic Aſſur 22
cum tota turba ſua, omneſque vulne-
rati, illic habuerunt ſepulturas ſuas in
profundo foveæ: Ejuſque turba circa ſe- 23
pulchrum ejus eſt, omnes vulnerati qui
gladio occubuerunt, qui terrorem ſuum
incutiebant ſuper terram vitæ.

יחזקאל : לג

interfecti hi omnes ,ejꝰ ſepulchri circuitus ejꝰ *turba* omnis & ,Helam Ibi
24 שם עילם וכל־המונה סביבות קברתה כלם חללים
,inferiorum terram ad *præputiati* deſcenderunt qui ,gladio in *cadentes*
הנפלים בחרב אשר־ירדו ערלים אל־ארץ תחתיות
,ſuã ignominiã portaverũt &,viventiũ terra in ſuũ terrorem dederunt qui
אשר נתנו חתיתם בארץ חיים וישאו כלמתם
,ei cubile poſuerunt *occiſorum* medio In *.lacum* deſcendentibus cum
25 את־יורדי בור: בתוך חללים נתנו משכב לה
,incircuncisi hi omnes :ejus ſepulchra ejus circuitus ejus *turba univerſa in*
בכל־המונה סביבותיו קברתה כלם ערלים
portaverũt &,*vitarum* terra in eorũ terror eſt datus quia ,gladio interfecti
חללי־חרב כי־נתן חתיתם בארץ חיים וישאו
.eſt *datus* interfectorũ medio in ,*lacum* deſcendentibus cum ,ſuã ignominiã
כלמתם את־יורדי בור בתוך חללים נתן:
:ejus ſepulchra ,ejus circuitibus ,ejus *turba* omnis & ,Tubal ,Meſech Ibi
26 שם משך תבל וכל־המונה סביבותיו קברותיה
ſuam formidinem dederunt quia ,gladio interfecti incircuncisi hi omnes
כלם ערלים מחללי חרב כי־נתנו חתיתם
cadentibus , fortibus cum *accumbent* non Et *.vitarum* terra in
בארץ חיים: 27 ולא ישכבו את־גבורים נפלים
dederunt & ,*ſui belli* *viſis* cum infernũ deſcenderũt qui : incircuncisis de
מערלים אשר ירדו־שאול בכלי־מלחמתם ויתנו
,eorũ oſſibus in *eorũ iniquitates fuit* & ,ſuis capitibus ſub ſuos gladios
את־חרבותם תחת ראשיהם ותהי עונתם על־עצמותם
incircunciſorũ medio in tu Et .viventium terra in fortium terror quia
כי־חתית גבורים בארץ חיים: 28 ואתה בתוך ערלים
,ejus reges ,Edom Ibi .gladio interfectis cum *jacebis* & ,conterêris
תשבר ותשכב את־חללי־חרב: 29 שמה אדום מלכיה
interfectis cum ſua fortitudine cum ſunt *dati* qui ,ejus *prælati* omnes &
וכל־נשיאיה אשר־נתנו בגבורתם את־חללי־
.*lacum* deſcendentibus cum & ,*accubabunt* incircuncisis cum Ipſi .gladio
חרב המה את־ערלים ישכבו ואת־יורדי בור:
deſcenderũt qui ,*Sidonius omnis* & ,ipſi omnes aquilonis principes Ibi
30 שמה נסיכי צפון כלם וכל־צדני אשר־ירדו
jacebunt & ,*erubeſcentes* ſua fortitudine à ,ſuo terrore in interfectis cum
את־חללים בחתיתם מגבורתם בושים וישכבו
cum ,ſuum pudorem portaverunt & ,gladio interfectis cum incircuncisi
ערלים את־חללי־חרב וישאו כלמתם את־
ſuper conſolabitur & ,Parhoh videbit Eos *.lacum* deſcendentibus
יורדי בור: 31 אותם יראה פרעה ונחם על־
dixit ,ejus *virium* omnis & ,Parhoh ,gladio *interfectis* , ſua *turba* omni
כל־המונה חללי־חרב פרעה וכל־חילו נאם
: viventium terra in *meam contritionem* dedi Quia .Deus Dominus
32 אדני יהוה: כי־נתתי את־חתיתו בארץ חיים
,gladio interfectis cum incircunciſorum medio in eſt *jacere* factus &
והשכב בתוך ערלים את־חללי־חרב
.Deus Dominus dixit ,ejus *turba* omnis & , Parhoh
פרעה וכל־המונה נאם אדני יהוה:

CAP. XXXIII. לג

ad loquere ,hominis Fili : dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et
1 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר: 2 בן־אדם דבר אל־
eam ſuper induxero Quum *Terram* ,eos ad *dices* & ,tui populi filios
בני־עמך ואמרת אליהם ארץ כי־אביא עליה
,ſuis noviſſimis de unum virum terræ populus tulerint & : gladium
חרב ולקחו עם־הארץ איש אחד מקציהם
venientem gladium viderit Et .ſpeculatorem in ſibi eum *dederint* &
3 ונתנו אתו להם לצפה: וראה את־החרב באה
.populum præmonuerit & ,buccina in clanxerit & : terram ſuper
על־הארץ ותקע בשופר והזהיר את־העם:

Verſio VULG. LAT.

24 Ibi Ælam , & omnis multitudo ejꝰ per gyrũ ſepulchri ſui: omnes hi interfecti , ruentéſque gladio: qui deſcenderunt incircumciſi ad terrã ultimã : qui poſuerunt terrorem ſuũ in terra viventiũ, & portaverunt ignominiã ſuã cum his qui deſcendunt in lacum. 25 In medio interfectorum poſuerunt cubile ejus in univerſis populis ejꝰ : in circuitu ejus ſepulchrum illius : omnes hi incircumciſi, interfectíque gladio : dederunt enim terroré ſuũ in terra viventium, & portaverunt ignominiã ſuã cũ his qui deſcendunt in lacum : in medio interfectorũ poſiti ſunt. 26 Ibi Moſoch & Thubal, & omnis multitudo ejꝰ : in circuitu ejꝰ ſepulchra illiꝰ : omnes hi incircumciſi, interfectíque & cadentes gladio : quia dederunt formidiné ſuã in terra viventiũ. 27 Et non dormient cũ fortibꝰ, cadentibúſq; & incircumciſis, qui deſcenderunt ad infernũ cũ armis ſuis , & poſuerunt gladios ſuos ſub capitibꝰ ſuis, & fuerunt iniquitates eorũ in oſſibꝰ eorum: quia terror fortium facti ſunt in terra viventiũ. 28 Et tu ergò in medio incircumciſorum conterêris, et dormies cũ interfectis gladio. 29 Ibi Idumæa, et reges ejꝰ, et omnes duces ejꝰ, qui dati ſunt cũ exercitu ſuo cum interfectis gladio : & qui cũ incircumciſis dormierunt, & cũ his qui deſcendunt in lacũ. 30 Ibi principes Aquilonis omnes, & univerſi venatores : qui deducti ſunt cũ interfectis, paventes, & in ſua fortitudine confuſi : qui dormierunt incircumciſi cũ interfectis gladio , & portaverunt confuſioné ſuam cum his qui deſcendunt in lacum. 31 Vidit eos Pharao, & conſolatꝰ eſt ſuper univerſa multitudine ſua, quæ interfecta eſt gladio ; Pharao, & omnis exercitꝰ ejꝰ, ait Dñs Deꝰ : 32 Quia dedi terrorem meũ in terra viventium, et dormivit in medio incircumciſorum cum interfectis gladio ; Pharao, & omnis multudo ejus ; ait Dominus Deus.

CAP. XXXIII.

1 ET factum eſt verbum Dñi ad me, dicens ; 2 Fili hominis, loquere ad filios populi tui, & dices ad eos; Terra cùm induxero ſup eã gladiũ, & tulerit populꝰ terræ virum unũ de noviſſimis ſuis, & conſtituerit eum ſuper ſe ſpeculatoré: 3 Et ille viderit gladiũ venienté ſup terrã, & cecinerit buccinâ, & annuntiaverit populo :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

24 Ἐκεῖ Αἰλὰμ καὶ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτοῦ περικύκλῳ τοῦ μνήματος αὐτοῦ, πάντες οἱ τραυματίαι οἱ πεπτωκότες (θ) μαχαίρᾳ, καὶ οἱ καταβαίνοντες ἀπερίτμητοι εἰς (ι) γῆς βάθος, οἱ δεδωκότες (κ) αὐτοῦ φόβον ἐπὶ γῆς ζωῆς. καὶ ἔλαβον τὴν βάσανον αὐτῶν μετὰ τῶν καταβαινόντων εἰς βόθρον, 25 Ἐν μέσῳ τραυματιῶν. 26 Ἐκεῖ ἐδόθησαν Μοσὸχ, καὶ Θοβὲλ, καὶ πᾶσα ἡ ἰσχὺς (λ) αὐτοῦ περικύκλῳ τοῦ μνήματος αὐτοῦ, πάντες τραυματίαι αὐτοῦ, πάντες (μ) ἀπερίτμητοι τραυματίαι ἀπὸ μαχαίρας, οἱ δεδωκότες τὸν φόβον αὐτῶν ἐπὶ (ν) γῆς ζωῆς. 27 Καὶ ἐκοιμήθησαν μετὰ τῶν γιγάντων (ξ) τῶν πεπτωκότων ἀπ' αἰῶνος, οἱ κατέβησαν εἰς ᾅδου ἐν ὅπλοις πολεμικοῖς (ο), καὶ ἔθηκαν τὰς μαχαίρας αὐτῶν ὑπὸ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν, καὶ ἐγενήθησαν αἱ ἀνομίαι αὐτῶν ἐπὶ τῶν (π) ὀστέων αὐτῶν, ὅτι ἐξεφόβησαν (ρ) πάντας ἐν τῇ ζωῇ αὐτῶν. 28 Καὶ σὺ ἐν μέσῳ ἀπεριτμήτων (σ) κοιμηθήσῃ 29 μετὰ τετραυματισμένων μαχαίρᾳ. Ἐκεῖ (τ) ἐδόθησαν οἱ ἄρχοντες Ἀσσοὺρ, οἱ δόντες τὴν ἰσχὺν (υ) αὐτοῦ εἰς τραῦμα μαχαίρας· (φ) οὗτοι μετὰ τραυματιῶν ἐκοιμήθησαν, μετὰ καταβαινόντων εἰς βόθρον. 30 Ἐκεῖ (χ) οἱ ἄρχοντες τοῦ Βοῤῥᾶ πάντες (ψ) στρατηγοὶ Ἀσσοὺρ, οἱ καταβαίνοντες τραυματίαι, σὺν τῷ φόβῳ αὐτῶν καὶ τῇ ἰσχύϊ αὐτῶν (ω) ἐκοιμήθησαν ἀπερίτμητοι μετὰ (α) τραυματιῶν μαχαίρας, καὶ (β) ἀπήνεγκαν τὴν βάσανον αὐτῶν μετὰ τῶν 31 καταβαινόντων εἰς βόθρον. Ἐκείνους ὄψεται βασιλεὺς Φαραὼ, καὶ παρακληθήσεται ἐπὶ (γ) πᾶσαν τὴν ἰσχὺν αὐτῶν, λέγει κύριος κύ32ριος. Ὅτι δέδωκα τὸν φόβον (δ) αὐτοῦ ἐπὶ γῆς ζωῆς, καὶ κοιμηθήσεται ἐν μέσῳ ἀπεριτμήτων μετὰ (ε) τραυματιῶν μαχαίρας Φαραὼ, καὶ πᾶν τὸ πλῆθος αὐτοῦ μετ' αὐτοῦ, (ζ) λέγει κύριος κύριος.

Ibi Ælam , & omnis fortitudo ejus in circuitu ſepulchri ejus : omnes vulnerati, qui ceciderunt gladio, & qui deſcendunt incircuncisi in terræ profundum : qui dederunt terrorem ſuum in terra vitæ : & acceperunt tormentum ſuum cum his, qui deſcendunt in foveam In medio vulneratorum. 24 25 *Ibi dati ſunt Moſoch, & Thobel,* 26 *& omnis fortitudo (x) ejus in circuitu ſepulchri ejus, omnes vulnerati ejus, univerſi incircuncisi, vulnerati à gladio : qui dederunt terrorem ſuum ſuper terram vitæ : Et (y) dormierunt* 27 *cum gigantibus, qui ceciderunt ab æterno, qui deſcenderunt in infernum cum armis bellicis, & poſuerunt gladios ſuos ſub capitibus ſuis : & factæ ſunt iniquitates eorum ſuper oſſa eorum: quia terruerunt (z) omnes in vita ſui. Et tu in medio incircunciſorum (ω) dormies cum vulneratis gladio.* 28 *Ibi (aa) dati ſunt* 29 *principes Aſſur, qui dederunt fortitudinem ejus in vulnere gladii : iſti cum vulneratis dormierunt, cum deſcendentibus in foveam. Ibi principes Aquilonis* 30 *(bb) omnes magiſtratus Aſſur, (cc) deſcendentes vulnerati, cum terrore ſuo, & in fortitudine ſua dormierunt incircuncisi cum vulneratis gladio: & abſtulerunt tormentum ſuum cum deſcendentibus in foveam. Videbit* 31 *eos Pharao, & conſolationem accipiet ſuper omni fortitudine eorum, (dd) dicit Dominus Dominus: Quia dedi formidinem* 32 *ejus ſuper terram vitæ : & dormiet in medio incircunciſorum cum vulneratis gladio Pharao, et omnis multitudo ejus cum eo, dicit Dominus Dominus.*

MS.A (θ) μαχαίραις, (ι) γῆν βάθους, οἱ (κ) τὸν φόβον αὐτῶν ἐπὶ τῆς ζωῆς. (λ) αὐτῶν (μ) ἀπερίτμητοι μαχαίρας, (ν) τῆς ζωῆς. (ξ) πεπτωκότες ἀπ' (ο) αὐτῶν, οἳ ἔθηκαν (π) ὀστῶν (ρ) γίγαντας ἐν (σ) συντριβήσῃ καὶ κοιμηθήσῃ (τ) Ἐδὼμ καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῆς, καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες Ἀσσύριοι, οἱ (υ) αὐτῆς (φ) αὐτοὶ ἐκοιμήθησαν μετὰ τραυματιῶν μαχαίρας, ἐκοιμήθησαν μετὰ (χ) πάντες οἱ (ψ) αὐτοὶ πάντες στρατηγοὶ (ω) καὶ ἐκοιμήθησαν (α) τετραυματισμένων (β) ἔλαβον τὴν (γ) πάσῃ τῇ ἰσχύϊ αὐτῶν, τραυματίαι μαχαίρᾳ Φαραὼ, καὶ πᾶσα ἡ δύναμις αὐτοῦ, λέγει κύριος ὁ θεός. (δ) αὐτῶν ἐπὶ τῆς ζωῆς, (ε) τραυματίας (ζ) λέγει κύριος κύριος ὁ θεός.

ΚΕΦ. λγ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ2γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, λάλησον τοῖς υἱοῖς τοῦ λαοῦ σου, καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Γῆ ἐφ' ἣν ἂν (α) ἐπάγω ῥομφαίαν, καὶ λάβῃ ὁ λαὸς τῆς γῆς ἄνθρωπον ἕνα ἐξ αὐτῶν, καὶ δῶσιν αὐτὸν 3 ἑαυτοῖς (β) εἰς σκοπὸν, Καὶ ἴδῃ τὴν ῥομφαίαν ἐρχομένην ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ (γ) σαλπίσῃ τῇ σάλπιγγι, καὶ σημάνῃ τῷ λαῷ,

CAP. XXXIII.

1 ET factum eſt verbum Domini ad me, dicens ; 2 Fili hominis, loquere filiis populi tui, & dices ad eos ; Terra, ſuper quam induxero gladium, & aſſumpſerit populus terræ hominem unum de ſuis, & dederint eum ſibi in ſpeculatorem , 3 Et viderit gladium venientem ſuper terram, & cecinerit tubâ , & ſignificaverit populo:

MS.A. (α) ἐπαγάγω κρίμα αἵματος, καὶ λάβῃ (β) σκοπὸν, (γ) σαλπίσῃ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

24 תמן עילם וכל אתרגושתה סחרנותהון קבריהון כולהון קטיליא דאתקטלו בחרבא
דאתחתו חיביא לארעא ארעיתא דאתמסירו לחבר על דשליטו בארעא דישראל
25 וקבילו אתכנעותהון עם נחתי גוב בית אבדנא: בגו קטיליא אתמנא בית משכבהון
להון בכל אתרגושתהון סחרנותהון קבריהון כולהון חיביא קטלי חרבא דאתמסרו
לחבר על דשליטו בארעא דישראל וקבילו אתכנעותהון עם נחתי גוב בית אבדנא
26 בגו קטיליא אתמסירו: תמן משך ותובל וכל משריתהון סחרניהון קברתהון כולהון
27 חיביא קטילי חרבא דאתמסרו לחבר על דשליטו בארעא דישראל: ולא
ישכבון עם גבריא דאתקטלו מחיביא דאתחתו לשאול במני קרביהון ויהבו ית
סיפיהון תחות רישיהון והוו חוביהון על גרמיהון ארי אתמסירו לחבר גבריא על
28 דשליטו לארעא דישראל: ואת בגו חיביא תתבר ותשכוב עם קטילי חרבא:
29 תמן אדום מלכהא וכל רברבהא דאתמסירו בגבורתהון עם קטילי חרבא אנון
30 עם חיביא ישכבון ועם נחתי גוב בית אבדנא: תמן רברבי צפונא כולהון וכל
צידונאי דאתחתו עם קטיליא באתברותהון מגבורתהון בהתין ושכיבו חיביא עם
31 קטילי חרבא וקבילו אתכנעותהון עם נחתי גוב בית אבדנא: יתהון יחזי פרעה
32 ויתנחם על כל אתרגושתיה קטילי חרבא פרעה וכל משריתיה אמר יי אלהים: ארי
אתמסירו לחבר גבריא על דשליטו בארעא דישראל ושכיבו בגו חיביא עם קטילי
חרבא דפרעה וכל אתרגושתיה אמר יי אלהים:
לג
1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר: בר אדם אתנבי לבני עמך ותימר 2
להון ארעא ארי איתי עלה דקטלין בחרבא וידברון עמא דארעא גברא חד מביניהון
3 וימנון יתיה להון לאזהרא: ויחזי ית דקטלין בחרבא אתן על ארעא ויתקע
בשופרא ויזהר ית עמא:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

24 Ibi Elam & omnis multitudo ejꝰ, & per gyrũ eorũ ſepulchra ipſorũ; univerſi interfecti qui occiſi ſunt gladio, qui detracti ſunt peccatores in terrã inferioré, qui traditi ſunt in excidiũ, pro eo quòd dominati ſunt in terram Iſrael, & acceperunt ignominiã ſuã cum deſcendentibꝰ in lacum domꝰ perditionis. 25 In medio occiſorũ conſtituta eſt domꝰ cubationis eorum, cum tota eorũ turba, in circuitu eorum ſepulchra ipſorũ ; omnes hi peccatores *interficientes* gladio, qui traditi ſunt ad interitũ, pro eo quòd dominati ſunt in terrã Iſrael, & ſuſceperunt confuſioné ſuã cum deſcendentibꝰ lacũ domꝰ perditionis, in medio occiſorũ traditi ſunt. 26 Ibi Moſoch & Tubal, & *omnes exercitus eorum*, in circuitu eorũ ſepulchra ipſorũ, omnes hi peccatores interfecti gladio, qui traditi ſũt ad interitũ pro eo quòd dominati ſunt in terram Iſrael. 27 Et non dormient cũ fortibꝰ qui occiſi ſunt à peccatoribꝰ qui detracti ſunt in infernũ cum armis bellicis ſuis, & poſuerunt gladios ſuos ſub capitibꝰ ſuis, & fuerunt peccata eorũ ſuper oſſa ipſorũ; quia traditi ſunt in interitũ fortes, pro eo ꝙ dominationé exercuerint in terrã Iſrael. 28 Tu auté in medio peccatorũ conterêris, et dormies cum interfectis gladio. 29 Ibi Idumæa & reges ejꝰ & omnes principes ejꝰ, qui traditi ſunt cum fortitudine ſua cum interfectis gladio; ipſi cum peccatoribꝰ dormient, & cum deſcendentibꝰ in lacũ domꝰ perditionis. 30 Ibi principes Aquilonis univerſi, & omnes Sidonii, qui deſcenderunt cum interfectis, quando contriti fuerunt à fortitudine ſua confuſi ; & dormierunt peccatores cum interfectis gladio, & ſuſceperunt confuſioné ſuam cum deſcendentibꝰ in lacũ domꝰ perditionis. 31 Eos videbit Pharao & ſeſe ſolabitur ſup omni multitudine ſua; interfecti gladio Pharao & omnis exercitꝰ ejꝰ, ait Dñs Deꝰ. 32 Quia traditi ſunt in excidiũ fortes, eò quòd dominati ſunt in terrã Iſrael; & dormierunt in medio peccatorum, & cum interfectis gladio Pharao, & omnis multitudo ejus, ait Dñs Deus.

CAP. XXXIII.

1 ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens : 2 Fili hominis , vaticinare ad filios populi tui , & dices ad eos : Terra cùm adduxero ſuper eam eos qui occidunt gladio, & tulerit populus terræ virum unum de medio ſui, & conſtituerit eum ſibi in ſpeculatorem. 3 Et viderit illos qui occidunt gladio , venientes ſuper terram , et cecinerit buccina, et admonuerit populum,

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܡܢ ܥܝܠܡ ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ ܚܕܪ ܩܒܪܗ. ܟܠܗܘܢ ܩܛܝܠܐ ܕܢܦܠܘ ܒܣܝܦܐ. ܘܢܚܬܘ
ܥܘܪܠܐ ܠܐܪܥܐ ܬܚܬܝܬܐ. ܥܠ ܕܥܒܕܘ ܬܒܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. ܘܩܒܠܘ ܨܥܪܗܘܢ. ܥܡ ܢܚܬܝ
ܓܘܒܐ. * ܘܒܝܢܝ ܩܛܝܠܐ ܥܒܕ ܠܗ ܡܫܟܒܐ. ܒܓܘ ܚܝܠܗ. ܘܚܕܪܝܢ ܠܩܒܪܗ
ܟܠܗܘܢ ܥܘܪܠܐ ܕܐܬܩܛܠܘ ܒܣܝܦܐ. ܥܠ ܕܥܒܕܘ ܬܒܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. ܘܩܒܠܘ ܨܥܪܗܘܢ ܥܡ
ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. ܘܒܝܢܝ ܩܛܝܠܐ ܐܬܡܢܝܘ. * ܬܡܢ ܡܫܟ ܘܬܘܒܠ ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ ܚܕܪ
ܩܒܪܗ. ܟܠܗܘܢ ܥܘܪܠܐ ܕܐܬܩܛܠܘ ܒܣܝܦܐ ܥܠ ܕܥܒܕܘ ܬܒܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. * ܢܫܟܒܘܢ
ܥܡ ܓܢܒܪܐ ܕܢܦܠܘ ܡܢ ܥܘܪܠܐ. ܕܢܚܬܘ ܠܫܝܘܠ ܒܡܐܢܝ ܩܪܒܗܘܢ. ܘܣܡܘ
ܣܝܦܝܗܘܢ ܬܚܝܬ ܪܫܝܗܘܢ. ܘܗܘܬ ܥܘܠܗܘܢ ܥܠ ܓܪܡܝܗܘܢ. ܥܠ
ܕܒܓܢܒܪܘܬܗܘܢ ܬܒܪܐ ܥܒܕܘ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. * ܐܦ ܐܢܬ. ܒܝܢܝ ܥܘܪܠܐ ܬܬܒܪ ܘܬܫܟܘܒ ܥܡ
ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ. * ܬܡܢ ܐܕܘܡ ܘܡܠܟܝܗ ܘܟܠܗܘܢ ܪܘܪܒܢܝܗ ܕܐܬܝܗܒܘ ܒܓܢܒܪܘܬܗܘܢ
ܥܡ ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ. ܥܡ ܥܘܪܠܐ ܢܫܟܒܘܢ ܘܥܡ ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. * ܬܡܢ ܫܠܝܛܢܐ ܕܓܪܒܝܐ
ܘܟܠܗܘܢ ܨܝܕܢܝܐ. ܕܢܚܬܘ ܥܡ ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ. ܟܕ ܒܗܬܝܢ ܘܬܒܝܪܝܢ ܡܢ ܓܢܒܪܘܬܗܘܢ
ܘܫܟܒܘ ܥܘܪܠܐ ܥܡ ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ. ܘܩܒܠܘ ܨܥܪܗܘܢ ܥܡ ܢܚܬܝ ܓܘܒܐ. * ܠܗܠܝܢ
ܢܚܙܐ ܦܪܥܘܢ. ܘܢܬܒܝܐ ܥܠ ܟܠܗ ܚܝܠܗ ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ. ܦܪܥܘܢ ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ.
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܝܗܒܬ ܬܒܪܗ ܒܐܪܥܐ ܕܚܝܐ. ܘܐܫܟܒܬܗ ܒܝܢܝ ܥܘܪܠܐ ܥܡ
ܩܛܝܠܝ ܣܝܦܐ. ܦܪܥܘܢ ܗܘ ܘܟܠܗ ܚܝܠܗ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ.

* ܫܠܡܘ * ܠܒ *

* ܙܘܗܪܐ ܘܒܘܝܐܐ *

* ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ:
* ܒܪܢܫܐ. ܡܠܠ ܥܡ ܒܢܝ ܥܡܟ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܐܪܥܐ ܡܐ ܕܐܝܬܝܬ ܥܠܝܗ ܚܪܒܐ
ܣܝܦܐ. ܢܣܒܘܢ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ ܓܒܪܐ ܚܕ ܡܢܗܘܢ. ܘܢܩܝܡܘܢܝܗܝ ܠܗܘܢ ܕܘܩܐ. * ܘܢܚܙܐ
ܣܝܦܐ ܕܐܬܐ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܢܩܥ ܒܩܪܢܐ. ܘܢܙܗܪ ܠܥܡܐ.

Illic Ilam totuſque exercitus ejus circa ſepulchrum ipſius ſunt; omnes confoſſi qui gladio ceciderunt, & deſcenderunt incircuncisi in imam terram, eò quòd fractionem fecerint in terra vivorum; & reportaverunt ignominiā ſuam cum deſcendentibus in foveam: 24

Et inter occiſos fecit ſibi cubile in medio copiarū ſuarum, & circunſtant ſepulchrū ejus omnes incircuncisi qui gladio interfecti fuerunt, eò quòd confractionem fecerint in terra vivorū; & reportaverunt ignominiam ſuam cum deſcendentibus in foveam, & inter occiſos annumerati ſunt. 25

Illic Moſoch, & Thubel cum toto exercitu ſuo circa ſepulchrum ejus ſunt; omnes incircuncisi qui gladio interfecti ſunt, eò quòd confractionem fecerint in terra viventium: 26

Jacebunt cum gigantibus qui ceciderunt ex incircunciſis, qui deſcenderunt in inferos cum inſtrumentis ſuis bellicis, & poſuerunt gladios ſuos ſub capitibus ſuis; & recidit iniquitas eorum in oſſa ipſorū, eò quòd fortitudine ſuâ contritionem feciſſent in terra viventium. 27

Tu ergò inter præputiatos jacebis, & cubabis cum occiſis gladio. 28

Illic Edom cum regibus ſuis cunctiſque principibus ſuis, qui annumerati ſunt in fortitudine ſua inter confoſſos gladio; cum incircunciſis cubabunt, & cum deſcendentibus in foveam. 29

Illic dynaſtæ Aquilonis, omneſque Sidonii, qui deſcenderunt cum occiſis gladio, erubeſcentes & fracti à fortitudine ſua, & cubaverunt incircuncisi cum occiſis gladio, & reportaverunt ignominiam ſuam cum deſcendentibus in foveam. 30

Hos videns Pharaon conſolationem capiet de cunctis copiis ſuis gladio interfectis, Pharaon *inquam* & omnes copiæ ipſius, ait Dn̄s dominorum. 31

Feci enim contritionem ejus in terra viventium, et cubare feci eum inter incircunciſos cum interfectis gladio, Pharaonem ipſum & omnes copias ejus, dicit Domin⁹ dominorum. 32

CAP. XXXIII.

Hortatio & conſolatio.

DEinde fuit ad me ſermo Domini dicendo: 1

Fili hominis, alloquere populares tuos, & dic eis, Quum adduxero gladium ſuper terram, accipiant populus terræ illius virum aliquem ex eis, & conſtituant eum ſibi ſpeculatorem. 2

Is cùm viderit gladium advenientem ſuper eos, clangat buccinâ, moneatque populū: 3

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* * هناك الاهواز * وكل جيشه حول قبره * جميع الجرحا الساقطين بالسيف والهابطين
الغلف الي عمق الارض * الذين اعطوا خوفهم على ارض الحياة * واخذوا عذابهم مع الهابطين
في الجب * في وسط الجرحا *

* الاصحاح الثامن عشر *

* هناك اعطيوا موشك
وتوبال * وكل قومهم حول قبره * جميع جرحاه * جميع الغلف مخوفين جرحا من السيف
والذين اعطوا خوفهم علي ارض الحيوة * اضطجعوا مع الجبابرة الساقطين منذ الدهر
الذين نزلوا الي الجحيم باسلحة حربية * ووضعوا سيوفهم تحت روسهم * وصارت اثامهم على
عظامهم * لانهم اخافوا الجبابرة في حياتهم * وانت في وسط الغلف ترقد * مع المجروحين
بالسيف * هناك ادوم وملوكها وجميع روسائها * الذين اعطوا قوتهم لجراح السيف * هولاء
مع الجرحا اضطجعوا * مع الهابطين في الجب * هناك روساء الكبرياء * هاولاء جميعهم
اجناد الموصل * النازلون جرحا * مع خوفهم وقوتهم اضطجعوا غير مختونين مع
المجروحين بالسيف * وحملوا عقابهم مع الهابطين في الجب * اوليك يعاينهم فرعون
ويتعزي بكل قوتهم * يقول الرب الرب * لاني اعطيت خوفه على ارض الحياة * ويضطجع
في وسط الغلف مع المجروحين بالسيف * فرعون وكل كثرته * يقول الرب الرب *

* الفصل الثالث والثلثون *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * كلم بني شعبك وقول لهم * الارض التي اجلب
عليها انا سيفا * ياخذ شعب الارض انسانا واحدا منها * ويعطوه لهم ربيبة * وينظر السيف
الاتي على الارض * وينفخ بالبوق * وينذر الشعب

Illic Elamita, totuſque exercitus ejus circa ſepulchrum ipſius, omnes vulnerati, gladio dejecti, & incircunciſi, qui deſcenderunt in ima terræ, qui formidinem ſuam incuſſerant ſuper terram vitæ; pœnam reportantes cum deſcendentibus in foveam, inter vulneratos. 24 25

Textus decimus octavus.

Illic collocati fuerunt Moſoch & Thubal omneſque ipſorum copiæ circa ſepulchrum uniuſcujuſque: omnes utriuſque vulnerati, omnes incircunciſi, gladio vulnerati, quique metū ſuum incuſſerant ſuper terram vitæ; 26

Jacuerunt cum gigantibus qui ceciderunt ab æterno, qui deſcenderunt in infernum armis bellicis, & poſuerunt gladios ſuos ſub capitibus ſuis, & reciderunt iniquitates eorum in oſſa eorum, eò quòd terrorem incuſſerint gigantibus, dum viverent. 27

Tu itaque in medio præputiatorum jacebis unà cum gladio vulneratis. 28

Illic Edom, & reges ejus, omneſque principes ejus, qui robur ſuum expoſuerunt vulneri gladii: hi cum vulneratis jacuerunt, cum deſcendentibus in lacum. 29

Illic principes Aquilonis; omnes iſti milites Aſſur, qui vulnerati deſcenderunt, cum terrore & fortitudine ſuâ incircunciſi jacuerunt cum vulneratis gladio, & reportaverunt pœnam ſuam cum deſcendentibus in foveam. 30

Iſtos videbit Pharaon, & conſolationem percipiet ex omni fortitudine eorum, ait Dominus Dominus; 31

Quia dedi terrorem ejus ſuper terram vitæ: jacebitque in medio præputiatorum cum vulneratis gladio Pharaon & tota multitudo ipſius, ait Dominus Dominus. 32

CAP. XXXIII.

PRæterea fuit ſermo Domini ad me, dicens; 1

O fili hominis, alloquere populares tuos, & dicas eis; Siquando ſuper terram aliquam induxero gladium, ſumpſerit autem populus terræ illius aliquem ex ea hominum, & conſtituerint eum ſibi ſpeculatorem, 2

Atque is viderit gladium venientem ſuper terram illam, & buccinâ clanxerit populumque monuerit; 3

,gladius veneritque ,caverit non & ,buccinæ vocem audiens audierit Et
4 ושמע השמע את־קול השופר ולא נזהר ותבוא חרב
,audivit buccinæ Vocem .erit ejus caput in ejus ſanguis ;eū tulerit &
5 ותקחהו דמו בראשו יהיה : את קול השופר שמע
.eruit ſuā animā ,cavit ipſe & : erit ipſum in ejus Sanguis .cavit non &
ולא נזהר דמו בו יהיה והוא נזהר נפשו מלט :
,buccina in clanxerit non &,venientē gladium viderit cùm ſpeculator Et
6 והצפה כי־יראה את־החרב באה ולא־תקע בשופר
ipſe ; animā eis de tulerit & ,gladius venerit & ,caverit non populus &
והעם לא־נזהר ותבוא חרב ותקח מהם נפש הוא
.requiram ſpeculatoris manu de ejus ſanguinē & ,eſt captus ſua iniquitate in
בעונו נלקח ודמו מיד־הצפה אדרש :
audies & : Iſrael domui te dedi ſpeculatorē ,hominis fili tu Et
7 ואתה בן־אדם צפה נתתיך לבית ישראל ושמעת
Impie ,impio me dicendo In .me ex eos præmonebis &,verbū meo ore de
8 מפי דבר והזהרת אתם ממני : באמרי לרשע רשע
ipſe :ſua via à impium ſibi cavendū ad,fueris locut⁹ non & :morieris moriēdo
מות תמות ולא דברת להזהיר רשע מדרכו הוא
.requiram tua manu de ejus ſanguinē & ,morietur ſua iniquitate in impius
רשע בעונו ימות ודמו מידך אבקש :
non & ,ea ab ſe avertendū ad ,ſua via de impium præmonueris cùm tu Et
9 ואתה כי־הזהרת רשע מדרכו לשוב ממנה ולא־
tuā animā tu & ,morietur ſua iniquitate in ipſe : ſua via à fuerit averſus
שב מדרכו הוא בעונו ימות ואתה נפשך
Recte : Iſrael domum ad dic ,hominis fili tu Et .liberâſti
10 הצלת : ואתה בן־אדם אמר אל־בית ישראל כן
,nos ſuper noſtra peccata & ,noſtræ prævaricationes quia :dicendo dixiſtis
אמרתם לאמר כי־פשעינו וחטאתינו עלינו
Vivens : eos ad Dic ? vivemus quomodo & ,tabefacti nos ipſa ꝑpter &
11 ובם אנחנו נמקים ואיך נחיה : אמר אליהם חי־
quinimo ,impii morte in volam ſi ,Deus Dominus dixit ,ego
אני נאם אדני יהוה אם־אחפץ במות הרשע כי אם
convertimini ,Convertimini .vivet & ,ſua via à impium ſe avertendo in
בשוב רשע מדרכו וחיה שובו שובו
fili tu Et ? Iſrael domus moriemini quid ad & ,malis veſtris viis à
12 מדרכיכם הרעים ולמה תמותו בית ישראל : ואתה בן־
eum eruet non juſti Juſtitia :tui populi filios ad Dic ,hominis
אדם אמר אל־בני־עמך צדקת הצדיק לא תצילנו
die in ,ea in corruet non impii impietate & ,ejus prævaricationis die in
ביום פשעו ורשעת הרשע לא־יכשל בה ביום
die in ,eā propter vivere poterit non juſtus & :ſua impietate ab ſe convertere
שובו מרשעו וצדיק לא יוכל לחיות בה ביום
,ſua juſtitia ſuper confidit ipſe & ,vivet vivendo ,juſto me dicendo In .eū peccare
13 חטאתו : באמרי לצדיק חיה יחיה והוא־בטח על־צדקתו
ſua iniquitate in &,memorabūtur non ej⁹ juſtitiæ omnes:iniquitatē fecerit &
ועשה עול כל־צדקתו לא תזכרן ובעולו
:morieris moriendo ,impio me dicendo in Et .morietur ea in ,fecit quam
14 אשר־עשה בו ימות : ובאמרי לרשע מות תמות
Pignus .juſtitiam & ,judicium fecerit & ,ſuo peccato à fuerit averſus &
15 ושב מחטאתו ועשה משפט וצדקה : חבל
,ambulaverit vitarum ſtatutis in ,reddiderit rapinam ,impius reſtituerit
ישיב רשע גזלה ישלם בחקות החיים הלך
Omnia .morietur non ,vivet vivendo : iniquitatem faciendum non ad
16 לבלתי עשות עול חיו יחיה לא ימות : כל־
juſtitiam & judicium : ei memorabūtur non ,peccavit quæ ejus peccata
חטאתו אשר חטא לא תזכרנה לו משפט וצדקה
via dirigetur non : tui populi filii dixerunt Et .vivet vivendo ,fecit
17 עשה חיו יחיה : ואמרו בני עמך לא יתכן דרך
juſtum ſe avertendo In .dirigetur non ipſorum via ipſorum & : Domini
18 אדני והמה דרכם לא־יתכן : בשוב־צדיק
.eis in morietur & ,iniquitatem fecerit & ,ſua juſtitia à
מצדקתו ועשה עול ומת בהם :

Verſio VULG. LAT.

4 Audiens autem, quiſquis ille eſt,
ſonitū buccinæ, & non ſe obſer-
vaverit, veneritq; gladi⁹, et tule-
rit eū: ſanguis ipſi⁹ ſup caput ej⁹
5 erit. Sonum buccinæ audivit, &
non ſe obſervavit, ſanguis ej⁹ in
ipſo erit: ſi autem ſe cuſtodie-
6 rit, animā ſuā ſalvabit. Quòd ſi
ſpeculator viderit gladiū veni-
entem, et non inſonuerit bucci-
nâ: & popul⁹ ſe non cuſtodierit,
veneritq; gladi⁹, & tulerit de eis
animā: ille quidem in iniquitate
ſua capt⁹ eſt, ſanguinē autē ej⁹ de
7 manu ſpeculatoris requirā. Et, tu
fili hominis, ſpeculatorē dedi te
domui Iſrael: audiens ergò ex ore
meo ſermonē, annuntiabis eis ex
8 me. Si me dicente ad impiū; Im-
pie, morte morieris: non fueris
locut⁹ ut ſe cuſtodiat impi⁹ à via
ſua: ipſe impi⁹ in iniquitate ſua
morietur, ſanguinē autem ej⁹ de
9 manu tua requiram. Si autē an-
nuntiante te ad impium ut à viis
ſuis convertatur, non fuerit con-
verſ⁹ à via ſua: ipſe in iniquitate
ſua morietur: porrò tu animā
10 tuā liberâſti. Tu ergò, fili ho-
minis, dic ad domum Iſrael;
Sic locuti eſtis, dicentes; Iniqui-
tates noſtræ, & peccata noſtra ſu-
per nos ſunt, & in ipſis nos ta-
beſcim⁹: quomodò ergò vivere
11 poterim⁹? Dic ad eos; Vivo ego,
dicit Dñs De⁹: nolo mortē impii,
ſed ut convertatur impius à via
ſua, & vivat. Convertimini, con-
vertimini à viis veſtris peſſimis:
& quarè moriemini, dom⁹ Iſrael?
12 Tu itaq;, fili hominis, dic ad fi-
lios populi tui; Juſtitia juſti non
liberabit eum in quacunque die
peccaverit: & impietas impii
non nocebit ei, in quacunq; die
converſ⁹ fuerit ab impietate ſua:
& juſt⁹ non poterit vivere in ju-
ſtitia ſua, in quacunq; die pecca-
13 verit. Etiā ſi dixero juſto ꝙ vitā
vivat, & cōfiſ⁹ in juſtitia ſua fe-
cerit iniquitatē: omnes juſtitiæ
ejus oblivioni tradentur, & in
iniquitate ſua, quā operat⁹ eſt, in
14 ipſa morietur. Si autē dixero im-
pio; Morte morieris: & egerit
pœnitentiā à peccato ſuo, fece-
15 ritq; judiciū & juſtitiā, Et pign⁹
reſtituerit ille impi⁹, rapināq;
reddiderit, in mādatis vitæ am-
bulaverit, nec fecerit quidquā in-
juſtū: vitā vivet, & nō morietur.
16 Omnia peccata ej⁹, quæ peccavit,
nō imputabūtur ei: judiciū et ju-
17 ſtitiā fecit, vitā vivet. Et dixerunt
filii populi tui; Non eſt æqui pon-
deris via Dñi: & ipſorū via inju-
18 ſta eſt. Cùm enim receſſerit juſt⁹
à juſtitia ſua, feceritque iniquita-
tes, morietur in eis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ ἀκούσῃ ὁ ἀκούσας (γ) τῆς φωνῆς τῆς σάλπι-
γγος, καὶ μὴ φυλάξηται, καὶ (δ) ἐπέλθῃ ἡ ῥομ-
φαία, καὶ καταλάβῃ αὐτὸν, τὸ αἷμα αὐτοῦ ἐπὶ
5 (ε) τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ ἔσται. Ὅτι τὴν φωνὴν τῆς σάλ-
πιγγος ἀκούσας οὐκ ἐφυλάξατο (ζ), τὸ αἷμα
αὐτοῦ ἐπ' (η) αὐτοῦ ἔσται· καὶ οὗτος ὅτι ἐφυλάξα-
6 το, τὴν ψυχὴν αὐτοῦ ἐξείλατο. Καὶ ὁ σκοπὸς
ἐὰν ἴδῃ τὴν ῥομφαίαν ἐρχομένην, καὶ μὴ ση-
μάνῃ (θ) τῇ σάλπιγγι, καὶ ὁ λαὸς μὴ φυλάξη-
ται, καὶ ἐλθοῦσα ἡ ῥομφαία λάβῃ ἐξ αὐτῶν ψυ-
χὴν, αὕτη διὰ τὴν αὐτοῦ ἀνομίαν ἐλήφθη, καὶ τὸ
7 αἷμα (ι) χειρὸς τοῦ σκοποῦ ἐκζητήσω. Καὶ
σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, σκοπὸν δέδωκά σε τῷ οἴκῳ
8 Ἰσραὴλ, καὶ ἀκούσῃ ἐκ στόματός μου λόγον. Ἐν
τῷ εἰπεῖν με τῷ (κ) ἁμαρτωλῷ, Θανάτῳ θα-
νατωθήσῃ, καὶ (λ) μὴ λαλήσῃς τοῦ φυλάξασθαι τὸν
ἀσεβῆ ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ, αὐτὸς ὁ ἄνομος τῇ
ἀνομίᾳ αὐτοῦ ἀποθανεῖται, (μ) τὸ δὲ αἷμα
9 αὐτοῦ ἐκ τῆς χειρός σου ἐκζητήσω. Σὺ δὲ ἐὰν
προαπαγγείλῃς τῷ ἀσεβεῖ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ (ν)
ἀποστρέψαι ἀπ' αὐτῆς, καὶ μὴ ἀποστρέψῃ ἀπὸ τῆς
ὁδοῦ αὐτοῦ, οὗτος τῇ (ξ) ἀσεβείᾳ αὐτοῦ ἀποθανεῖ-
10 ται, καὶ σὺ τὴν (ο) ψυχὴν σαυτοῦ ἐξῄρησαι. Καὶ
σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, εἰπὸν τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ,
Οὕτως ἐλαλήσατε λέγοντες, Αἱ πλάναι ἡμῶν,
καὶ αἱ ἀνομίαι ἡμῶν ἐφ' (π) ἡμῖν εἰσι, καὶ ἐν
11 αὐταῖς ἡμεῖς τηκόμεθα, καὶ πῶς ζησόμεθα; Εἰπὸν
αὐτοῖς, Ζῶ ἐγὼ, (ρ) τάδε λέγει κύριος, Οὐ
βούλομαι τὸν θάνατον τοῦ (σ) ἀσεβοῦς, ὡς (τ) ἀ-
ποστρέψαι τὸν ἀσεβῆ ἀπὸ τῆς ὁδοῦ αὐτοῦ (υ), καὶ ζῆν
αὐτόν. Ἀποστροφῇ ἀποστρέψατε (φ) ἀπὸ τῆς ὁδοῦ
ὑμῶν· καὶ ἵνα τί ἀποθνήσκετε οἶκος Ἰσραήλ;
12 (χ) Εἰπὸν πρὸς τοὺς υἱοὺς τοῦ λαοῦ σου, Δικαι-
οσύνη δικαίου οὐ μὴ ἐξέληται αὐτὸν, ἐν ᾗ ἂν ἡ-
μέρᾳ πλανηθῇ· καὶ ἀνομία (ψ) ἀσεβοῦς οὐ μὴ
κακώσῃ αὐτὸν, ἐν ᾗ ἂν ἡμέρᾳ ἀποστρέψῃ ἀπὸ
τῆς ἀνομίας αὐτοῦ· καὶ δίκαιος οὐ μὴ (ω) δύνηται
13 σωθῆναι (α). Ἐν τῷ εἰπεῖν με τῷ δικαίῳ, (β)
οὗτος πέποιθεν ἐπὶ τῇ δικαιοσύνῃ αὐτοῦ, καὶ (ϛ)
ποιήσει ἀνομίαν, πᾶσαι αἱ δικαιοσύναι αὐτοῦ
(δ) οὐ μὴ ἀναμνησθῶσιν, ἐν τῇ ἀδικίᾳ αὐτοῦ
14 ᾗ ἐποίησεν, ἐν αὐτῇ ἀποθανεῖται. Καὶ ἐν τῷ
εἰπεῖν με τῷ ἀσεβεῖ, Θανάτῳ θανατωθή-
σῃ, καὶ (ε) ἀποστρέψει ἀπὸ τῆς ἁμαρτίας αὐτοῦ, καὶ
15 (˜) ποιήσει κρίμα καὶ δικαιοσύνην, Καὶ (ζ) ἐνε-
χύρασμα ἀποδῷ, καὶ ἁρπάσματα ἀποτίσει, ἐν
προστάγμασι ζωῆς διαπορεύηται, τοῦ μὴ ποιῆ-
σαι ἄδικον, ζωῇ ζήσεται, καὶ οὐ μὴ (η) ἀποθάνῃ.
16 Πᾶσαι αἱ ἁμαρτίαι αὐτοῦ ἃς (θ) ἥμαρτεν, οὐ
μὴ ἀναμνησθῶσιν, ὅτι κρίμα καὶ δικαιοσύνην
17 ἐποίησεν, ἐν (ι) αὐτοῖς ζήσεται. Καὶ ἐροῦσιν οἱ υἱ-
οὶ τοῦ λαοῦ σου, Οὐκ εὐθεῖα ἡ ὁδὸς τοῦ κυρίου·
18 καὶ αὕτη ἡ ὁδὸς αὐτῶν οὐκ εὐθεῖα. Ἐν τῷ ἀπο-
στρέψαι δίκαιον ἀπὸ τῆς δικαιοσύνης αὐτοῦ, καὶ
ποιήσει (λ) ἀνομίας, καὶ ἀποθανεῖται ἐν (λ) αὐταῖς.

Et audiverit audiens vocē tubæ, 4
& non ſe obſervaverit, et venerit
gladi⁹, & comprehenderit eum;
ſanguis ipſi⁹ ſuper caput ipſi⁹ erit;
Quia vocē tubæ audiens non ſe 5
obſervavit: ſanguis ipſius ſuper
ipſū erit: & hic, quia cuſtodivit
ſe, animā ſuā liberavit. Quòd ſi 6
ſpeculator viderit gladiū venien-
te, & non ſignificaverit tubâ, &
popul⁹ nō ſe cuſtodierit, & veni-
ens gladi⁹ tulerit de his animam:
ipſa propter iniquitatē ſuā capta
eſt: & (a) ſanguinē de manu ſpe-
culatoris requirā. Et tu, fili homi- 7
nis, ſpeculatorē dedi te domui Iſ-
rael, & audieris ex ore meo (b)
ſermonē, In dicendo me peccato- 8
ri, (c) Morte morieris, & non fue-
ris loquut⁹, ut cuſtodiat ſe impi⁹ à
via ſua; ipſe iniqu⁹ in iniquitate ſuā
morietur: ſanguinem autē ejus de
manu tua requirā. Tu autē ſi præ- 9
nuntiaveris impio viā ſuā, ut a-
vertat ſe ab ea, et nō averterit ſe
à via ſua; hic impietate ſuā mo-
rietur: & tu animā tuā liberâſti.
Et tu, fili hominis, dic domui Iſ- 10
rael; Sic loquuti eſtis, dicentes; Er-
rores noſtri, & iniquitates noſtræ
ſuper nos ſunt: & in ipſis nos ta-
beſcimus: & quomodò vivemus?
Dic eis; Vivo ego: hæc dicit Do- 11
minus; Non volo mortem impii,
ſicut converti impiū à via ſua,
et ipſum vivere. Converſione con-
vertimini à via (d) veſtra: & ut-
quid morimini, dom⁹ Iſrael? (e)
Dic ad filios populi tui; Juſtitia 12
juſti non liberabit eū, in quacun-
que die erraverit: & iniquitas
impii non nocebit ei, in quacunq;
die converſus fuerit ab iniquita-
te ſua. Et juſtus (f) non poterit
ſalvari. In dicendo me (g) juſto, 13
hic confidit in ſua juſtitia, & fa-
ciet iniquitatem; omnes juſtitiæ
ej⁹ non memorabuntur: in injuſti-
tia ſua, quam fecit, in ea morie-
tur. Et in dicendo me impio; Mor- 14
te morieris, & avertet ſe à pec-
cato ſuo, & faciet judicium, &
juſtitiā, Et pignus reſtituerit, & 15
rapinas reddiderit, in manda-
tis vitæ ambulaverit, non fa-
ciendo injuſtum; vitā vivet, &
non morietur: Omnia peccata e- 16
jus, quæ peccavit, non memora-
buntur: quia judicium & juſti-
am fecit; in ipſis vivet. Et di- 17
cent filii populi tui; Non eſt e-
recta via Domini: Et ipſa via eo-
rum non eſt recta. In recedendo 18
juſtum à juſtitia ſua, & faciet
iniquitates, & morietur in eis.

MS. A. (γ) τὴν φωνὴν (δ) ἐλθοῦσα ἡ ῥομφαία καταλάβῃ (ε) τὴν κεφαλὴν (ζ) τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, τὸ (η) αὐτοῦ (θ) τῷ λαῷ τῇ (ι) αὐτοῦ ἐκ τῆς χειρὸς (κ) ἀνόμῳ, (λ) ἐὰν μὴ λαλήσῃς τοὺς λόγους τοῦ ἀποστῆσαι τὸν ἄνομον ἀπὸ (μ) καὶ τὸ αἷμα (ν) τοῦ ἀποστρέψαι αὐτὸν ἀπ' αὐτῆς, (ξ) ἀνομίᾳ (ο) ψυχήν σου ἐρρύσω. (π) ἡμᾶς (ρ) λέγει ἀδωναὶ κύριος, (σ) ἁμαρτωλοῦ, (τ) τὸ ἀποστρέψαι (υ) τῆς πονηρᾶς, καὶ ζῆν (φ) ἀπὸ τῶν ὁδῶν ὑμῶν τῶν πονηρῶν· (χ) Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, εἰπὸν (ψ) ἀνόμου (ω) δυνήσεται (α) ἐν ἡμέρᾳ ἁμαρτίας αὐτοῦ. Ἐν (β) Ζωῇ ζήσῃ, καὶ οὗτος (ϛ) ἐὰν ποιήσῃ ἀδικίαν, πᾶσαι (δ) ἃς ἐποίησεν οὐ μὴ μνησθῶσιν, (ε) ἀποστρέψῃ ἀπὸ τῆς ἀσεβείας (˜) ποιήσῃ (ζ) εἰ ἐνέχυρον καὶ ἅρπαγμα (η) ἀποθανεῖται. (θ) ἐποίησεν, οὐ μὴ μνησθῶσιν ἔπ, (ι) αὐτοῖς (κ) ἀνομίαν, (λ) αὐτῇ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 וישמע די שמע ית קל שופרא ולא אודהר ואתו קטולי חרבא ודברוהי חובת קטוליה
5 ברישיה יהי : ית קל שופרא שמע ולא אודהר חובת קטוליה ביה תהי והוא אודהר
6 נפשיה שיזיב : ומזהרנא ארי יחזי ית דקטלין בחרבא אתן ולא תקע בשופרא ועמא
לא אודהר ואתו קטולי חרבא ודברו מנהון נפשא הוא בחוביה אדבר ודמה מיד
7 מזהרנא אתבע : ואת בר אדם מליף מניתך לבית ישראל ותקבל ממימרי פתגם
8 ותזהר יתהון מלמחטי קדמי : בדאמרית לרשיעא רשיעא ממת תמות ולא מללתא
9 לאזהרא רשיעא מארחיה הוא רשיעא בחוביה ימות ודמיה מן ידך אתבע : ואת ארי
אזהרתא רשיעא מארחיה למתב מנה ולא תב מארחיה הוא בחוביה ימות ואת נפשך
10 שיזבתא : ואת בר אדם אמר לבית ישראל כן אמרתון למימר ארי חובנא וחטאנא
11 עלנא מתיהבין ובהון אנחנא מתמסין ואיכדין נחי : אמר להון קים אנא אמר יי אלהים
אם רעינא במית רשיעא אלהן כד יתוב רשיעא מארחיה ויחי תובו תובו מארחתכון
12 בישתא ולמה תמותון בית ישראל : ואת בר אדם אמר לבני עמך זכות זכאה לא
תשזבניה ביומא דחובתיה וחובת חיבא לא יתקל בה ביומא דיתוב מחוביה וצדיקא
13 לא יכול לאתקימא ביה ביומא דחובתיה : בדאמרית לזכאה מחא יחי והוא
יתרחיץ על זכותיה ועבד שקר כל זכותיה לא ידכרן ובשקריה דעבד ביה ימות :
14 ובדאמרית לרשיעא ממת תמות ויתוב מחובוהי ויעביד דין דקשוט וזכו : משכונא
15 יתיב רשיעא גזילא שלם בגזירת חייא הליך בדיל דלא למעבד שקר מחא יחי ולא
16 ימות : כל חובוהי דחב לא ידכרן ליה דין דקשוט עבד וזכו מחא יחי : ויימרון
17 בני עמך לא מפרשן לנא אורחת טובא דיי ואנון אורחתהון דילהון לא תקנן : כד
18 יתוב זכאה מזכותיה ויעביד שקר וימות בהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et audierit quicunque audierit vocē buccinæ, & non ſibi caverit, & vene- 4
rint occidentes gladio, & tulerint eum; reat⁹ occiſionis ej⁹ in caput ipſius
erit. Vocē buccinæ audivit, & non ſibi cavit: reat⁹ occiſionis ej⁹ in ipſum 5
recidet. Si autē ſibi caverit, animā ſuā liberavit. Si autē ſpeculator viderit 6
occidentes gladio qui veniunt, & non cecinerit tuba, & popul⁹ non fuerit
admonit⁹, & venerint occidentes gladio, & tulerint ex eis animā: ipſe quidē
in iniquitate ſua capt⁹ eſt, ſed ſanguinē ej⁹ de manu ſpeculatoris requiram.
Et tu fili hominis doctorē conſtitui te domui Iſrael, & ſuſcipies à verbo meo 7
ſermonē, & monebis eos ne peccent coram me. Cùm dixero impio, Impie 8
morte morieris; & non locut⁹ fueris ut admonitū impium à peccato ſuo
retrahas: ipſe impi⁹ in peccato ſuo morietur, & ſanguinē ej⁹ de manu tua
requirā. Si autē tu admonueris impiū ut convertatur à via ſua, & non fuerit 9
converſus à via ſua; ipſe in peccato ſuo morietur, & tu animā tuam liberâſti.
Tu autem fili hominis dic domui Iſrael, Sic locuti eſtis, dicentes: Quia 10
delicta noſtra & peccata noſtra ſuper nos ſunt poſita, & in ipſis nos tabe-
ſcimus, & quomodo vivem⁹? Dic eis, Vivo ego, dicit Domin⁹ De⁹: ſi volo 11
mortē impii, ſed ut convertatur impius à via ſua, & vivat. Convertimini,
convertimini à via veſtra mala: & quare moriemini dom⁹ Iſrael? Tu au- 12
tem fili hominis dic ad filios populi tui. Juſtitia juſti non liberabit eum
in die qua peccaverit, & impietas impii non [faciet ut] corruat in eam,
in quacunque die converſus fuerit à peccato ſuo. Et juſtus non poterit
permanere in ea, in die qua peccaverit. Cùm dixero juſto, Vivens vivet, 13
& ipſe confiſus fuerit in juſtitia ſua, & fecerit iniquitatem; omnes ju-
ſtitiæ ejus non erunt in memoria, & in iniquitate ſua quā fecit, in ipſa mo-
rietur. Et cùm dixero impio, Morte morieris, & converſus fuerit à peccatis 14
ſuis, & fecerit judicium verum & juſtitiam: Pignus reſtituerit ille impius, 15
rapinam reddiderit, in decretis vitæ ambulaverit, ut non faciat iniquitatē:
vivens vivet, & non morietur. Omnia peccata ej⁹ quæ adm. ſit, non memo- 16
rabuntur ei: judiciū verū & juſtitiā fecit, vivens vivet. Et dicent filii populi 17
tui, Non ſūt nobis expoſitæ viæ bonitatis Dñi, et ipſorū viæ non ſunt rectæ. 18
Cùm converſ⁹ fuerit juſt⁹ à juſtitia ſua, et fecerit iniquitatē, morietur in eis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܡܢ ܕܢܫܡܥ ܩܠܐ ܕܩܪܢܐ ܘܠܐ ܢܙܕܗܪ : ܘܬܐܬܐ ܚܪܒܐ ܘܬܣܒܝܘܗܝ ܠܗ . ܕܡܗ ܒܪܫܗ .
ܕܐܙܕܗܪ ܢܦܫܗ ܡܦܠܛ . * ܘܕܘܩܐ ܕܝܢ ܡܐ ܕܚܙܐ ܚܪܒܐ ܕܐܬܝܐ . ܘܠܐ ܩܪܐ ܒܩܪܢܐ . ܘܥܡܐ
ܘܠܐ ܐܬܙܗܪ . ܘܐܬܬ ܚܪܒܐ ܘܢܣܒܬ ܡܢܗܘܢ ܢܦܫܐ . ܗܝ ܢܦܫܐ ܒܚܛܗܝܗ ܐܬܢܣܒܬ .
ܐܝܕܘܗܝ ܕܕܘܩܐ ܐܬܒܥܐ . * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ . ܕܘܩܐ ܝܗܒܬܟ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ .
ܡܢ ܦܘܡܝ ܡܠܬܐ . ܘܬܙܗܪ ܐܢܘܢ ܡܢܝ . * ܡܐ ܕܐܡܪܬ ܠܪܫܝܥܐ ܕܡܡܬ ܬܡܘܬ .
ܠܗ ܠܪܫܝܥܐ ܕܢܙܕܗܪ ܡܢ ܐܘܪܚܗ . ܗܘ ܪܫܝܥܐ ܒܚܛܗܘܗܝ ܢܡܘܬ .
* ܐܢܬ ܕܝܢ ܐܢ ܐܙܗܪܬܝܗܝ ܠܪܫܝܥܐ ܕܢܬܦܢܐ ܡܢ ܐܘܪܚܗ . ܘܠܐ ܐܬܦܢܝ .
ܘܐܢܬ ܢܦܫܟ ܦܠܛܬ . * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ . ܐܡܪ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܐܝܠ .
[illegible]

Quicunque audito ſono buccinæ non caverit 4
ſibi, venienſque gladius auferat eum; hu-
jus ſanguis in caput ſuum erit. Verùm ſi 5
caveat ſibi, animam ſuam eripiet. Speculator 6
autem cùm viderit gladium advenientem, ſi
non clanxerit buccinâ, populumque non mo-
nuerit, & adveniens gladius aliquam ex eis
animam abſtulerit; illa quidem anima ſuis in
peccatis auferetur, ſed ſanguinem ejꝰ è mani-
bus ſpeculatoris repoſcam. Te itaque fili ho- 7
minis, ſpeculatorem dedi te Iſraelitis, ut ſis
audiens ab ore meo verbum, tum moneas eos 8
nomine meo. Cùm dixero ſcelerato *alicui*,
Omnino morieris; tu verò non dixeris eidē
ſcelerato ut caveat ſibi à via ſua; ſceleratus ille
in ſcelere quidem ſuo morietur, at ſanguinem
ejus è manibꝰ tuis repoſcam. Quòd ſi tu mo- 9
nueris ſceleratum ut retrahat ſe à via ſua, ne-
que retraxerit ſe; ipſe quidem in ſcelere ſuo
morietur, tu autem animā tuam eripueris. Tu 10
igitur fili hominis, dic Iſraelitis; Ita dicitis,
Scelꝰ noſtrum & peccata noſtra nobis incum-
bunt, & in ipſis putreſcimꝰ; quomodo vive-
remus? Dic eis, Per vitam meā, inquit Dn̄s do- 11
minorum, nolo mortem ſcelerati; ſed ut re-
vertatur ſceleratus à ſcelere ſuo, & vivat.
Convertimini & retrahite vos à viis veſtris
pravis, ac ne moriamini Iſraelitæ. Tu ergo 12
fili hominis, dic popularibꝰ tuis; Juſtitia ju-
ſti nequaquā ſalvabit eum in die quo pecca-
verit, neque ſceleratꝰ impinget in ſcelus ſuum
quo die regreſſus fuerit à ſcelere ſuo, *ut* ne-
que juſtus vivet quo die peccaverit. Cùm di- 13
xero juſto *cuipiam*, Omnino vives, is autem ju-
ſtitiâ ſuâ fretꝰ, poſtea ſcelꝰ commiſerit; tota
juſtitia quam fecerat, non memorabitur ei;
ſed in ſcelere quod commiſit, morietur. Et 14
cùm dixero ſcelerato *cuipiam*, Omnino morie-
ris, is autem retrahat ſe à peccatis ſuis, & ex-
erceat judiciū atque juſtitiam; Pignus quod 15
acceperat, reſtituat; quod rapuerat, reddat; in
vitæ præceptis ambulet, neque ſcelꝰ commit-
tat; omnino vivet, & non morietur: Et pec- 16
cata quælibet quæ commiſerat non memora-
buntur ei; ſed per judicium & juſtitiam quā
fecerit, vivet. Dicunt etiam populares tui, 17
Non eſt recta via Dn̄i: viæ quidem ipſorū non
ſunt rectæ. Cùm retraxerit ſe juſtus à juſtitia ſua, ſceluſque commiſerit, in eo morietur: 18

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والسامع الذي يسمع صوت البوق ولا يتحفظ ٭ وياتي السيف ويدركه ٭ دمه على راسه
يكون ٭ لانه سمع صوت البوق ٭ ولم يتحفظ ٭ دمه عليه يكون ٭ وهذا انه
تحفظ ٭ خلص نفسه ٭ والربيئة اذا نظر السيف اتيا ٭ ولم يبين للشعب بالبوق
والشعب لم يتحفظ ٭ وياتي السيف يدرك نفسا منهم ٭ هذه باثمها اخذت ٭ ودمها من يد
الربيئة اطلبه ٭ وانت يا ابن الانسان ٭ اعطيتك ربيئة لبيت اسرائيل فتسمع من فمي كلمة
* عندما اقول للاثيم بالموت تموت ٭ وان لم تتكلم باقوالي ليبتعد الاثيم من طريقه ٭ الاثيم
نفسه يموت باثمه ٭ ودمه من يدك اطلبه ٭ وانت ان سبقت فاخبرت المنافق بطريقه ليرجع
عنها ٭ ولا يرجع من طريقه ٭ هذا يموت باثمه ٭ وانت تحيي نفسك ٭ وانت يا ابن الانسان قل
لبيت اسرائيل ٭ هكذا تكلمتم قايلين ٭ ضلالاتنا واثامنا هن علينا ٭ ونحن نذوب
فكيف نعيش ٭ قل لهم حي انا يقول ادوناي الرب ٭ لا اشاء موت الخاطي ٭ مثل ان يرجع
المنافق من طريقه الشرير ويحيي ٭ ارجعوا رجعة من طرقكم الشرير ٭ فلماذا تموتون يا
بيت اسرائيل ٭ وانت يا ابن الانسان قل لبني شعبك ٭ عدل الصديق لا يخلصه في يوم
يضل ٭ واثم الاثيم لا يضره في اليوم الذي يرجع فيه من اثمه ٭ والصديق لا يستطيع
ان يخلص في خطيته ٭ عندما اقول للصديق تحيا حياة ٭ وهذا يثق بعدله ٭ فان صنع
ظلما ٭ كل معدلاته التي صنعها لا تذكر بظلمه الذي صنعه به يموت ٭ وعندما
اقول للمنافق بالموت تموت ٭ ويرجع من نفاقه ٭ ويصنع حكما وعدلا ٭ ويرد الرهن والاختطاف
ويسير بوصية الحيوة الا يصنع ظلما ٭ يحيا حياة ولا يموت ٭ وجميع خطاياه التي صنعها لا
تذكر بعد ٭ لانه صنع حكما وعدلا ٭ فبها يعيش ٭ ويقول بنو شعبك ٭ ليس طريق الرب
مستقيمة ٭ وهذه طرقهم ليست مستقيمة ٭ عندما يرجع الصديق من عدله ويصنع اثما ٭ ويموت به

Si quis auſcultans audito buccinæ ſono, 4
non caveat ſibi, veniatque gladius, &
apprehendat eum; hujus ſanguis ſuper
caput ipſius erit: quia audito buccinæ
ſono non cavit ſibi, ſanguis ejus ſuper
ipſum erit. Quòd ſi is caverit ſibi, ani- 5
mam ſuam ſervabit. Verùm ſpeculator 6
cùm viderit gladium venientem, popu-
lumque buccinâ minimè monuerit, neque
caverit ſibi populus; & veniens gladi-
us aliquam ex iis animam prehenderit:
hæc in ſua iniquitate tolletur, at ſangui-
nem ejus de manu ſpeculatoris requiram.
Jam te O fili hominis, ſpeculatorem con- 7
ſtitui domui Iſraelis, ut audias ab ore
meo verbum, Quum dixero peccatori, 8
Morte morieris; nam ſi non retuleris ſer-
mones meos, ut iniquus ille recedat à
via ſua; illemet iniquus morietur in ſua
iniquitate, at ſanguinem ejus de manu
tua requiram. Verùm ſi tu præmonueris 9
impium illum de via ſua, ut recedat ab ea,
nec tamen receſſerit à via ſua; is in ſua
iniquitate morietur, at tu animam tuam
ſervabis. Jam tu O fili hominis, dic do- 10
mui Iſraelis; Ita loquimini dicentes;
Errores noſtri & iniquitates noſtræ ſu-
per nos ſunt, & in ipſis nos liqueſci-
mus; quomodo ergò viveremus? Dic eis, 11
Vivo ego, dicit Adonai Dominus, non
volo mortem peccatoris, ut volo converti
impium à via ſua mala, & vivere. Sedulò
convertimini à viis veſtris malis: quo ſum
enim moreremini O domus Iſraelis? Tu 12
igitur O fili hominis, dic popularibus tuis,
Æquitas juſti non eripiet eum in die
quâ erraverit, neque ſcelerati flagitium
nocebit illi in die quâ convertetur à fla-
gitio ſuo, neque juſtus ſalvari poterit
in die peccati ſui. Cùm dixero juſto, Vi- 13
tam vives; & is juſtitiâ ſuâ confiſus,
impietatem ſi committat; omnes juſtitiæ
ipſius quas fecerat, haud memorabuntur:
in impietate ſua quam commiſerit, in ea-
dem morietur. Ita cùm dixero impio, 14
Morte morieris; is autem ab impietate
ſuâ convertatur, faciatque judicium &
juſtitiam, Pignus & rapinam reſtituat, 15
& ambulet in præcepto vitæ, ut impie
non agat; vitam vivet, neque morietur:
Et omnia peccata ſua quæ fecerat, non 16
memorabuntur amplius: quia fecit judi-
cium et juſtitiā, per hæc etiā vivet. Præterea 17
et dicunt populares tui, Non eſt recta via
Domini: immò hujuſmodi eorum via non eſt
recta. Cùm averterit ſe juſtus à juſtitia 18
ſua, & iniquitatem fecerit, in ipſa morietur.

יחזקאל : לג

:justitiam & ,judicium fecerit & ,sua impietate ab *impium se avertendo* Et
19 ובשוב רשע מרשעתו ועשה משפט וצדקה
.Domini via *dirigetur* Non ,dixistis Et .vivet ipse ipsa propter
20 עליהם הוא יחיה: ואמרתם לא יתכן דרך אדני
fuit Et .Israel domus vos judicabo *suas vias* juxta *Virum*
21 איש כדרכיו אשפוט אתכם בית ישראל: ויהי
,nostræ transmigrationis mensis quinta in,decimo in,anno duodecimo in
בשתי עשרה שנה בעשרי בחמשה לחדש לגלותנו
.civitas est Percussa : dicendo ,Jerusalaim de evasor me ad venit
בא־אלי הפליט מירושלם לאמר הכתה העיר:
,*evasorem venire ante* ,*vespera in* me ad fuit Domini manus Et
22 ויד־יהוה היתה אלי בערב לפני בוא הפליט
aperuit *se* & : mane *in* me ad *venire usque* ,meum os aperuitque
ויפתח את־פי עד־בוא אלי בבקר ויפתח
,me ad Domini verbum fuit Et .amplius *obmutui* non & ,meum os
23 פי ולא נאלמתי עוד: ויהי דבר־יהוה אלי
humum super isti solitudinum habitatores ,hominis Fili : dicendo
24 לאמר: בן־אדם ישבי החרבות האלה על־אדמת
possedit & ,Abraham erat Unus : dicendo *dicentes* Israel
ישראל אמרים לאמר אחד היה אברהם ויירש את־
.possessionem in terra est data nobis : multi nos & : terram
הארץ ואנחנו רבים לנו נתנה הארץ למורשה:
sanguine *Super* : Deus Dominus dixit Sic : eos ad dic Idcirco
25 לכן אמר אליהם כה־אמר אדני יהוה על־הדם
sanguinem & ,vestra idola ad *levabitis* vestros oculos & ,*comedetis*
תאכלו ועינכם תשאו אל־גלוליכם ודם
,vestro gladio *super* Stetistis ?possidebitis terram & :*fundetis*
26 תשפכו והארץ תירשו: עמדתם על־חרבכם
: polluistis sui *socii* uxorem unusquisque & ,abominationem fecistis
עשיתן תועבה ואיש את־אשת רעהו טמאתם
Dominus dixit Sic : eos ad dices Sic ?possidebitis terram &
27 והארץ תירשו: כה־תאמר אלהם כה־אמר אדני
,ceciderint gladio in ,solitudinibus in qui *non si* ,ego *Vivens* : Deus
יהוה חי־אני אם־לא אשר בחרבות בחרב יפלו
: *illum comedendum* ad ,*illum* tradidi bestiæ agri *faciebus super* qui &
ואשר על־פני השדה לחיה נתתיו לאכלו
dabo Et .morientur peste *in* ,speluncis in & *munitionibus* in qui &
28 ואשר במצדות ובמערות בדבר ימותו: ונתתי את־
: ejus fortitudinis superbia cessabit & ,*solitudinem & desolationem* terram
הארץ שממה ומשמה ונשבת גאון עזה
quòd scient Et .*transeunte* non à ,Israel montes desolabuntur &
29 ושממו הרי ישראל מאין עובר: וידעו כי־
,desertum & ,solitudinem terram *me dando in* : Dominus *ego*
אני יהוה בתתי את־הארץ שממה ומשמה
fili tu Et .fecerunt quas ,suas abominationes universas propter
30 על כל־תועבתם אשר עשו: ואתה בן־
ostiis in & ,parietes juxta te *in* *obloquentes* ,tui populi filii ,hominis
אדם בני עמך הנדברים בך אצל הקירות ובפתחי
suo fratre cum unusquisque ,*uno* cum *unus locutus est* & : domorum
הבתים ודבר־חד את־אחד איש את־אחיו
cum à egrediens verbum quod audite & ,nunc Venite : dicendo
לאמר באו־נא ושמעו מה הדבר היוצא מאת
sedebunt & ,populi ingressum secundum te ad venient Et .Domino
31 יהוה: ויבואו אליך כמבוא־עם וישבו
;facient non ea & ,tua verba audient & ,meus populus *tuas facies ad*
לפניך עמי ושמעו את־דבריך ואותם לא יעשו
suam *appetitionem* post ,*facientes* *ipsi* suo ore in subsannationes quia
כי־עגבים בפיהם המה עשים אחרי בצעם
.*ambulans* eorum cor
לבם הלך:

Versio VULG. LAT.

19 Et cùm recesserit impiꝰ ab impietate
sua,fecerítq; judicium et
20 justitiam, vivet in eis. Et dicitis;
Non est recta via Dñi. Unumquemq;
juxta vias suas judicabo
21 de vobis,domꝰ Israel. Et factum
est in duodecimo anno, in decimo
mense, in quinta mensis
transmigrationis nostræ,venit ad
me qui fugerat de Jerusalem, dicens;
22 Vastata est civitas. Manꝰ
autem Domini facta fuerat ad
me vesperè, antequàm veniret
qui fugerat : aperuítque os
meum donec veniret ad me
manè, & aperto ore meo non
23 silui ampliús. Et factum est
24 verbũ Dñi ad me, dicens; Fili
hominis,qui habitant in ruinosis
his super humũ Israel,loquentes
aiunt; Unꝰ erat Abrahã,& hæreditate
possedit terrã: nos autem
multi sumꝰ, nobis data est terra
25 in possessionẽ. Idcircò dices ad
eos; Hæc dicit Dñs Deꝰ; Qui
in sanguine comeditis,& oculos
vestros levatis ad immunditias
vestras, & sanguinem funditis :
numquid terram hæreditate possidebitis?
26 Stetistis in gladiis vestris,
fecistis abominationes, &
unusquisque uxorem proximi sui
polluit : & terrã hæreditate possidebitis?
27 Hæc dices ad eos; Sic
dicit Dominꝰ Deꝰ;Vivo ego,quia
qui in ruinosis habitant, gladio
cadent: & qui in agro est,bestiis
tradetur ad devorandum : qui
autem in præsidiis & speluncis
28 sunt, peste morientur. Et
dabo terram in solitudinem, &
in desertum, & deficiet superba
fortitudo ejꝰ : & desolabuntur
montes Israel, eò quòd nullꝰ sit
29 qui per eos transeat. Et scient
quia ego Dominꝰ, cùm dedero
terram eorum desolatam, & desertam,
propter universas abominationes
suas, quas operati
30 sunt. Et tu,fili hominis: filii populi
tui, qui loquuntur de te
juxta muros, & in ostiis domorum,
& dicunt unus ad alterum,
vir ad proximum suum
loquentes; Venite, & audiamus
quis sit sermo egrediens à
31 Domino. Et veniunt ad te,
quasi si ingrediatur populus, &
sedent coram te populus meus:
& audiunt sermones tuos, &
non faciunt eos : quia in canticum
oris sui vertunt illos, &
avaritiam suam sequitur cor eorum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

19 Καὶ ἐν τῷ ἀποστρέψαι τὸν ἁμαρτωλὸν
ἀπὸ τῆς ἀνομίας αὐτοῦ, καὶ (") ποιήσει κρίμα
καὶ δικαιοσύνην, ἐν αὐτοῖς αὐτὸς ζήσεται.
20 Καὶ τοῦτό ἐστιν ὃ εἴπατε, Οὐκ εὐθεῖα
ἡ ὁδὸς κυρίου. ἕκαστον (μ) ἐν ταῖς
ὁδοῖς αὐτοῦ κρινῶ ὑμᾶς, οἶκος (ν) Ἰσραήλ.
21 Καὶ ἐγενήθη ἐν τῷ δωδεκάτῳ
ἔτει, ἐν τῷ δωδεκάτῳ μηνί, πέμπτῃ τοῦ
μηνὸς τῆς αἰχμαλωσίας ἡμῶν, ἦλθε
(ξ) πρός με ὁ ἀνασωθεὶς ἀπὸ Ἱερουσαλήμ,
22 λέγων, Ἑάλω ἡ πόλις, Καὶ (ο) χεὶρ
κυρίου ἐγενήθη ἐπ' ἐμὲ ἑσπέρας πρὶν ἐλθεῖν
αὐτὸν (π), καὶ ἤνοιξέ μου τὸ στόμα,
ὡς ἦλθε πρός με τὸ πρωΐ· καὶ (ρ) ἀνοιχθέν
τὸ στόμα μου, οὐ συνεσχέθη ἔτι.
23 Καὶ (σ) ἐγενήθη λόγος κυρίου πρός με,
24 λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, οἱ κατοικοῦντες
τὰς ἠρημωμένας ἐπὶ τῆς γῆς τοῦ
Ἰσραήλ, λέγουσιν, Εἷς ἦν Ἀβραάμ, καὶ
κατέσχε τὴν γῆν, καὶ ἡμεῖς πλείους ἐσμέν,
27 ἡμῖν δέδοται ἡ γῆ εἰς κατάσχεσιν. (τ) Διατοῦτο
εἰπὸν αὐτοῖς, Τάδε λέγει κύριος
κύριος, Ζῶ ἐγώ, εἰ μὴν οἱ ἐν ταῖς
ἠρημωμέναις (υ) μαχαίραις πεσοῦνται, καὶ
οἱ ἐπὶ προσώπου τοῦ πεδίου τοῖς θηρίοις
τοῦ ἀγροῦ δοθήσονται εἰς κατάβρωμα,
καὶ τοὺς ἐν ταῖς τετειχισμέναις, καὶ
τοὺς ἐν τοῖς σπηλαίοις θανάτῳ ἀποκτενῶ.
28 Καὶ δώσω τὴν γῆν ἔρημον, καὶ ἀπολεῖται
ἡ ὕβρις τῆς ἰσχύος αὐτῆς, καὶ
(φ) ἐρημωθήσεται τὰ ὄρη τοῦ Ἰσραὴλ
29 διὰ τὸ μὴ εἶναι διαπορευόμενον. Καὶ γνώσονται
ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. καὶ ποιήσω
τὴν γῆν αὐτῶν ἔρημον, καὶ ἐρημωθήσεται
διὰ πάντα τὰ βδελύγματα
30 αὐτῶν ἃ ἐποίησαν. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου,
οἱ υἱοὶ τοῦ λαοῦ σου οἱ λαλοῦντες
περὶ σοῦ παρὰ τὰ τείχη καὶ ἐν τοῖς πυλῶσι
τῶν οἰκιῶν, καὶ (χ) λαλοῦσιν ἄνθρωπος
τῷ ἀδελφῷ αὐτοῦ, λέγοντες,
Συνέλθωμεν, καὶ (") ἀκούσωμεν τὰ ἐκπορευόμενα
31 παρὰ κυρίου. (ψ) Ἔρχονται πρὸς
σέ, ὡς συμπορεύεται λαός, καὶ κάθηνται
ἐναντίον σου (ω), καὶ ἀκούουσι τὰ ῥήματά
σου, καὶ αὐτὰ οὐ μὴ (α) ποιήσουσιν,
ὅτι ψεῦδος ἐν τῷ στόματι αὐτῶν,
καὶ ὀπίσω τῶν μιασμάτων (β) ἡ καρδία αὐτῶν.

Et in recedendo peccatorem ab 19
iniquitate sua, & faciet judicium,
& justitiam; in ipsis
ipse vivet. Et hoc est, quod 20
dixistis; Non recta via Domini.
Unumquemque in viis suis
judicabo vos, domus Israel. Et 21
factum est in duodecimo (h) anno,
in (i) duodecimo mense,
quintâ mensis captivitatis nostræ,
venit ad me, qui salvatus
fuerat de Hierusalem, dicens;
Capta est civitas: Et manus 22
Domini facta fuerat super me
vesperè, antequã ille veniret: &
aperuit os meum; (k) donec venit
ad me mané. Et apertum
os meum non se cohibuit ultrà.
Et factum est verbum Domini 23
ad me, dicens; Fili hominis, 24
qui habitant desertas super terram
Israel, dicunt; Unus erat
Abraam, & possedit terram: &
nos plures sumus: nobis data est
terra in (l) possessionem. Idcir- 27
cò dic eis; Hæc dicit Dominus
Dominus; Vivo ego, si non,
qui in desertis, cadent gladiis,
& qui super faciem campi, bestiis
agri dabuntur in devorationem;
& eos, qui in muratis,
& eos qui in speluncis, morte
interficiam. Et dabo terram 28
desertum: & peribit superbia
fortitudinis ejus: & desolabuntur
montes Israel, eo quòd non
sit qui transeat. Et scient, quia 29
ego sum Dominus. Et faciam
terram eorum desertum: &
desolabitur propter universas
abominationes ipsorum, quas fecerunt.
Et tu, fili hominis, filii 30
populi tui loquentes de te juxta
muros, & in ostiis domorum,
& loquuntur homo fratri suo, dicentes;
Conveniamus, & audiamus,
quæ egrediuntur à Domino:
Veniunt ad te, quomodò 31
congregari solet populus, & sedent
(m) coram te, & audiunt
verba tua, & ea non facient:
quoniam mendacium in ore (n)
eorum, & post (o) contaminationes
cor eorum.

MS. A. (") ποιήσῃ (μ) κατὰ τὰς ὁδοὺς ὑμῶν κρινῶ ὑμᾶς, (ν) Ἰσραήλ,
λέγει κύριος. Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ (ξ) ὁ ἀνασωθεὶς πρός με ἀπὸ (ο) ἐ-
γένετο ἐπ' ἐμὲ χεὶρ κυρίου ἑσπέρας (π) πρός με, καὶ ἤνοιξεν τὸ στόμα
μου, ἕως ἦλθεν (ρ) ἀνοιχθέν μου τὸ στόμα, οὐ συνεκλείσθη ἔτι. (σ) ἐγένε-
25 το (τ) Διατοῦτο εἰπὲ πρὸς αὐτούς, Οὕτως εἶπεν ἀδωναῒ κύριος, Ἐπὶ
τῷ αἵματι φάγεσθαι, καὶ ὀφθαλμοὺς ὑμῶν λήμψεσθαι πρὸς ἴδωλα ὑμῶν,
26 καὶ αἷμα ἐκχεῖσθαι· καὶ τὴν γῆν κληρονομήσεται; Ἔστητε ἐπὶ τῇ ῥομφαίᾳ
ὑμῶν, ἐποιήσατε βδέλυγμα, καὶ ἀνὴρ τὸν πλησίον αὐτοῦ ἐμιάνατε· καὶ
τὴν γῆν κληρονομήσεται οὕτως; Διατοῦτο εἰπὸν αὐτοῖς, Τάδε λέγει
κύριος κύριος, (υ) μαχαίρᾳ (φ) ἐρημωθήσονται τὰ ὄρη Ἰσραήλ (χ) ἐ-
λάλουν (") ἀκούσωμεν (ψ) Καὶ ἔρχονται (ω) ὁ λαός μου, καὶ ἀκούσωσιν (α) ποι-
ήσωσιν, (β) αὐτῶν ἡ καρδία ἐστίν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 וכד יתוב רשיעא מחובוהי ויעביד דין דקשוט וזכו עליהון הוא יתקים: 20 ואמרתון לא
מפרשן לנא אורחת טובא דיי אנש כאורחיה אתפרע מנכון בית ישראל: 21 והוה
בתרתא עסרי שנין בעשיראה בחמשא לירחא לגלותנא אתא לותי משיזבא
22 מירושלם למימר אתרעת קרתא: ונבואה מן קדם יי הות עמי ברמשא קדם מיתי
23 משיזבא ופתח ית פומי עד מיתי לותי בצפרא ואפתח פומי ולא שתקית עוד: והוה
24 פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר: בר אדם יתבי חורבתא האלין על ארעא
דישראל אמרין למימר חד הוה אברהם בעלמא וירית ית ארעא ואנחנא סגיאין
25 לנא יהיבא ארעא למירתה: בכן אמר להון כדנן אמר יי אלהים על דם זכי אתון
אכלין ועיניכון אתון זקפין לפולחן טעותכון ודם זכי אתון אשדין וארעא אתון
26 מדמן למירתה: ואתעתדתון על תוקפיכון עבדתון תועיבא וגבר ית אתת
27 חבריה סאבתון וארעא אתון מדמן למירתה: כדנן תימר להון כדנן אמר יי אלהים
קים אנא אם לא די בחרבא בחרבא יתקטלון ודי על אפי ברא לחיתא מסרתיה
28 לשציותהון ודי במצדתא ובמערתא במותא ימותון: ואתן ית ארעא לצדו
29 ואשתממו ויבטל יקר תוקפה ויצדון טורי ישראל מבלי עדי: וידעון ארי אנא יי
30 בדאתן ית ארעא לצדו ואשתממו על כל תועבתהון דעבדו: ואת בר אדם בני עמך
דרנן בך בסטר כתליא ובתרעי בתיא וממלל חד עם חד גבר ית אחוהי למימר אתו
31 כען ושמעו מה פתגמא דנפק מן קדם יי: וייתון עלך כמיתי גברין תלמידין ויתיבון
קדמך עמי ושמעין ית פתגמך ויתהון לא יעבדון ארי תולעבא בפומהון אנון עבדין
בתר ממון אונסיהון לבהון טעי:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et cùm conversus fuerit impius à peccatis suis, & fecerit judicium verum 19
& justitiam, ipse vivet in eis. Et dixistis, Non sunt expositæ nobis 20
viæ bonitatis Domini. Juxta viam uniuscujusque retribuam vobis domus
Israel. Et factum est duodecimo anno, decimo mense, quinta die mensis 21
transmigrationis nostræ, venit ad me qui evasit de Jerusalem, dicens: Dirupta
est civitas. Et prophetia à facie Domini facta est mecum vesperi antequam 22
veniret qui evaserat; & aperuit os meum donec veniret ad me mane, &
aperui os meũ, & non silui ampliꝰ. Et factum est verbum prophetiæ à facie 23
Dñi mecũ, dicens: Fili hominis qui habitant in solitudinibus istis super terram 24
Israel loquuntur, dicentes: Unus fuit Abraham in orbe, & hæreditate
possedit terrã, & nos sumꝰ multi; nobis data est terra ut eã possideamꝰ. Idcircò 25
dic ad eos, Hæc dicit Dñs Deꝰ, super sanguinẽ innocentẽ vos comeditis,
et oculos vestros attollitis vos ad cultũ idolorũ vestrorũ, & sanguinẽ innocentem
effunditis, & putatis vos possessuros terram? Stetistis in fortitudine 26
vestra, fecistis abominationem, & unusquisque uxorem proximi sui polluistis,
& putatis vos possessuros terram? Hæc dices ad eos, Hæc dicit 27
Dominus Deꝰ, Vivo ego, quia qui in solitudinibꝰ sunt, gladio occidentur;
& qui super faciem agri est, bestiis tradidi eum ut consumant *eos*; &
qui in munitionibus, & in speluncis sunt, peste morientur. Et dabo terram 28
in vastitatem & stuporem; & cessabit *gloria* fortitudinis ejus, & desolabuntur
montes Israel absque transeunte. Et scient, quia ego Dominus, 29
cùm dedero terram in vastitatem & stuporem propter omnes abominationes
eorum quas fecerunt. Tu autem fili hominis, filii populi tui 30
murmurant de te juxta parietes, & in ostiis domorum, & loquitur alter
cum altero, & quisque cum fratre suo, dicendo: Venite nunc & audite
quodnam sit verbum quod egreditur à facie Domini. Et venient ad te 31
sicut veniunt viri discipuli, & sedebunt coram te populus meus, & audient
verba tua, sed ea non facient; quia irrisionem ipsi edunt ore suo; &
post pecuniam quam vi abstulerunt, cor eorum errat.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܡܐ ܕܗܦܟ ܥܘܠܐ ܡܢ ܥܘܠܗ ܘܥܒܕ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܒܗܘܢ ܢܚܐ. * ܘܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܕܠܐ ܬܪܝܨܐ ܐܘܪܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܢܫ ܐܢܫ ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܗ ܐܕܘܢܟܘܢ. ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܒܫܢܬ ܚܕܥܣܪܐ ܒܚܡܫܐ ܒܝܪܚܐ ܕܥܣܪܐ ܕܫܒܝܬܢ. ܐܬܐ ܠܘܬܝ ܐܢܫ ܕܐܫܬܘܙܒ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܐܬܚܪܒܬ ܡܕܝܢܬܐ. * ܘܥܕܠܐ ܕܢܐܬܐ ܗܘ ܕܐܫܬܘܙܒ. ܗܘܬ ܥܠܝ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ ܒܪܡܫܐ. ܘܦܬܚ ܦܘܡܝ. ܥܕܡܐ ܕܐܬܐ ܠܘܬܝ ܗܘ ܕܐܫܬܘܙܒ ܒܨܦܪܐ. ܘܟܕ ܐܬܦܬܚ ܦܘܡܝ ܬܘܒ ܠܐ ܐܬܐܠܡ. * ܘܗܘܬ ܥܠܝ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܗ ܕܐܢܫܐ. ܗܢܘܢ ܕܝܬܒܝܢ ܒܚܘܪܒܐ ܗܠܝܢ ܕܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪܝܢ. ܐܒܪܗܡ ܕܚܕ ܗܘܐ. ܝܪܬ ܐܪܥܐ: ܚܢܢ ܕܣܓܝܐܐ ܚܢܢ ܠܐ ܢܐܪܬܝܗ ܠܗ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܥܠ ܕܡܐ ܐܟܠܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܥܝܢܝܟܘܢ ܠܦܬܟܪܝܟܘܢ ܡܪܝܡܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܕܡܐ ܫܬܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܪܢܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܡܐܪܬ ܐܪܥܐ. * ܩܡܬܘܢ ܐܢܬܘܢ ܥܠ ܚܪܒܟܘܢ. ܘܥܒܕܬܘܢ ܐܢܬܘܢ ܛܢܦܘܬܐ. ܘܐܢܫ ܐܢܬܬܗ ܕܚܒܪܗ ܡܛܢܦܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܪܢܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܡܐܪܬ ܐܪܥܐ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܚܝ ܐܢܐ ܕܟܠ ܕܒܚܘܪܒܐ ܐܢܘܢ. ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܟܠ ܕܒܚܩܠܐ ܠܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܐܬܠܝܘܗܝ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. ܘܟܠ ܕܒܥܫܝܢܐ ܘܕܒܡܥܪܐ. ܒܡܘܬܐ ܢܡܘܬܘܢ. * ܘܐܬܠ ܐܪܥܐ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܬܡܗܐ. ܘܢܒܛܠ ܡܢܗ ܫܘܒܗܪܐ ܕܥܫܢܗ. ܘܢܚܪܒܘܢ ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܢ ܕܠܐ ܥܒܪ ܒܗܘܢ. * ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܟܕ ܐܬܠܝܗ ܠܐܪܥܐ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܬܡܗܐ. ܡܛܠ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܗܘܢ ܕܥܒܕܘ. * ܘܐܢܬ ܒܪܗ ܕܐܢܫܐ. ܒܢܝ ܥܡܟ ܕܡܬܚܫܒܝܢ ܥܠܝܟ ܠܘܬ ܫܘܪܐ ܘܒܬܪܥܐ ܕܒܬܐ. ܘܡܡܠܠܝܢ ܚܕ ܥܡ ܚܕ. ܓܒܪܐ ܥܡ ܐܚܘܗܝ. ܘܐܡܪܝܢ. ܬܘ ܫܡܥܘ ܡܢܐ ܡܠܬܐ ܢܦܩܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܐܬܝܢ ܠܘܬܟ ܥܡܐ. ܘܝܬܒܝܢ ܩܕܡܝܟ. ܘܫܡܥܝܢ ܡܠܝܟ. ܘܠܐ ܥܒܕܝܢ ܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܕܓܠܘܬܐ ܒܦܘܡܗܘܢ. ܘܒܬܪ ܬܪܥܝܬܐ ܕܠܒܗܘܢ ܐܙܠܝܢ.

* Et cùm retraxerit ſe ſceleratus à ſcelere ſuo, 19
feceritque judicium & juſtitiam; per ea vi-
vet: Et diceretis iniquam eſſe viam Domini? 20
Quemque cum viis ſuis judicabo, vos Iſraeli-
tæ. Anno undecimo, quintâ menſis decimi à 21
captivitate noſtra, venit ad me quidam qui
evaſerat è Jeruſalem, dixitque mihi, Vaſtata
eſt urbs. Antequam autem veniret ad me is 22
qui evaſerat, adfuerat mihi manus Domini
veſperè, aperueràtque os meum, donec is qui
evaſerat ad me manè veniret: & cum aper-
tum fuiſſet os meum, non eſt ampliùs occlu-
ſum. Rurſus fuit ad me ſermo Domini, di- 23
cendo; Fili hominis Iſti qui habitant in va- 24
ſtitatibus hiſce terræ Iſraelis, dicunt; Abra-
ham qui unus erat, poſſedit terram: nos qui
multi ſumus, annon poſſideremus eam? Iccir- 25
co dic eis; Sic ait Dominus dominorum, Cum
ſanguine comeditis, oculos veſtros ad idola
veſtra attollitis, ſanguinem bibitis, & terram
poſſidere velletis? Inſiſtitis gladiis veſtris, 26
abominationem facitis, quiſque uxorem ſocii
ſui impuratis, & terram poſſidere velletis?
Dic eis, Sic ait Dominus dominorum, Per 27
vitam meam, omnes qui ſunt in vaſtitatibus,
gladio cadent, & omnes qui ſunt in agro,
cibum beſtiis tradam eos: qui verò in hiati-
bus & ſpeluncis, peſte morientur. Et redi- 28
gam terram iſtam in excidium & ſtuporem,
ceſſabitque ex ea faſtus roboris ejus, & deſo-
labuntur montes Iſraelis ex penuria viato-
rum. Ita experientur me eſſe Dominum, quum 29
redegero terram iſtam in excidium & ſtupo-
rem propter tot abominationes quas fecerunt.
Tu ergò fili hominis, populares tui qui de te 30
cogitant ſecus parietes & ad oſtia domorum,
loquuntur alter cum altero, vir cum fratre
ſuo, & dicunt, Venite, audite quid ſermo-
nis egrediatur à conſpectu Domini: Et ve- 31
nientes ad te populus, coram te ſedent, ſer-
mones tuos audiunt, nec faciunt eos; quia
mendacium eſt in ore ipſorum, & conſilia qui-
dem cordis ſui ſectantur:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وعندما يرجع الخاطي من إثمه ويصنع حكما وعدلا بها هو يحيي * وهذا الذي تقولونه ليست طريق الرب مستقيمة * أدين كل واحد منكم كطريقكم يا بيت اسرايل يقول الرب * وكان في السنة الثانية عشر * في الشهر الثاني عشر * في الخامس من الشهر لسبينا أتى المخلص من أيروسليم * قايلا * هلكت المدينة * وكانت يد الرب علي مساء من قبل أن يأتي إلي * وفتحت فمي حتى أتى إلي بالغداة * وفتح فمي ولم يغلق بعد * وكان قول الرب إلي قايلا * يا ابن الانسان * الساكنون الخربات على أرض اسرايل يقولون * ابرهيم كان واحدا * وضبط الأرض * ونحن كثيرون نحن * أعطيت الأرض لنا للاضباط * لأجل هذا قل لهم * هكذا يقول ادوناي الرب * تأكلون على الدم * وترفعون أعينكم إلى أصنامكم * وتهرقون الدم * وترثون الأرض * وقفتم بسيفكم * صنعتم رذالات * ونجستم الرجل قريبه * وترثون الأرض هكذا * لأجل هذا قل لهم * هكذا يقول الرب الرب حي أنا * بالحقيقة الذين في الخربات بالسيف يسقطون * والذين على وجه البقعة يسلمون لوحوش الحقل طعاما * والذين في الحصينات * والذين في المغاير اقتلهم بالموت * وأعطي الأرض للخراب * ويهلك كبرياء قوتها * وتخرب جبال اسرايل * من أجل أنه لا يكون من يسلك فيها * ويعلمون أني أنا الرب أنا * وأجعل أرضهم خرابا * وتخرب لأجل جميع رذالاتهم التي صنعوها * وأنت يا ابن الانسان * بنو شعبك المتكلمون فيك على الاسوار وفي أبواب البيوت * ويتكلموا انسان فانسان مع أخيه قايلين * نجتمع ونسمع البارزات من قبل الرب * ويأتون إليك حتى يجتمع الشعب * ويجلس أمامك شعبي * ويسمعون كلماتك ولا يعملون بها * لأن الكذب في فمهم * وقلبهم خلف نجاساتهم *

* *Et cùm averterit ſe peccator ab iniquitate* 19
ſua, feceritque judicium & juſtitiam,
per hæc ipſe vivet. Hoc eſt propter 20
quod dicitis, Non eſt recta via Domini:
ideò *judicabo unumquenque veſtrûm ſe-*
cundùm viam veſtram O domus Iſraelis,
ait Dominus. *Et factum eſt anno duo-* 21
decimo, menſe duodecimo, quintâ ejuſ-
dem menſis à captivitate noſtra, ut ve-
niret qui eripuerat ſe ex Jeruſalem, di-
cens; Periit urbs. Adfuerat autem ma- 22
nus Domini mihi veſperè antequam ad me
veniſſet, aperueràtque os meum, donec
ad me manè veniſſet: apertum eſt autem
os meum, & non eſt ampliùs clauſum.
Fuit etiam ſermo Domini ad me, dicens; 23
O fili hominis, Qui ruinas habitant ſu- 24
per terram Iſraelis, dicunt; Abraham u-
nus erat, tamen poſſedit terram: nos au-
tem plures ſumus: nobis data eſt terra
poſſidenda. Propterea dic eis, Ita dicit 25
Adonai Dominus; Comeditis ſuper ſan-
guinem, & attollitis oculos veſtros ad
idola veſtra, & ſanguinem effunditis, &
terram poſſideretis? Gladio veſtro ſubſi- 26
ſtitis, abominanda committitis, quiſque
proximum ſuum contaminatis, & terram
hoc pacto poſſideretis? Iccirco dic eis, Ita 27
dicit Dominus Dominus; Vivo ego, verè
qui in ruinis ſunt, gladio occumbent; &
qui ſunt ſuper faciem ſolitudinis, beſtiis
agri in eſcam tradentur; eos autem qui in
munitionibus, & eos qui in cavernis, mor-
te occîdam. Tradámque terram vaſtita- 28
ti, & peribit arrogantia fortitudinis e-
jus; & vaſtabuntur montes Iſraelis, quia
non erit qui ambulet in eis: Et cogno- 29
ſcent quòd ego ſum Dominus. Et redi-
gam terram eorum in ruinam, & vaſta-
bitur ob omnes abominationes eorum quas
perpetrârunt. Tu etiam O fili hominis, 30
populares tui, qui de te loquuntur ſuper
muros & in oſtiis domorum, & locuti
ſunt unuſquiſque cum fratre ſuo, dicen-
tes; Conveniamus, & audiamus quæ
prodeunt è conſpectu Domini: Veniunt 31
ad te, ut congregetur populus, & ſe-
det coram te populus meus, audiúntque
verba tua, ſed non faciunt ea; quia men-
dacium eſt in ore eorum, & cor eorum
ſectatur turpitudines eorum:

bene & , vocis pulchræ *amantium* canticum sicut eis tu ecce Et
32 והנך להם כשיר עגבים יפה קול ומטב
.ea *ipsi non facientes &* , tua verba audient & : *pulsare* scientis
נגן ושמעו את־דבריך ועשים אינם אותם:
fuit propheta quod scient & ,*veniens* ecce : illud *veniendo in* Et
33 ובבאה הנה באה וידעו כי נביא היה
.eorum medio in
בתוכם:

CAP. XXXIV. לד

super propheta ,hominis Fili : dicendo,me ad Domini verbum fuit Et
1 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר: בן־אדם הנבא על־
2 Sic : *pastores ad* eos ad *dices* & , propheta : Israel pastores
רועי ישראל הנבא ואמרת אליהם לרעים כה־
pascentes fuerunt qui , Israel pastoribus Væ : Deus Dominus dixit
אמר אדני יהוה הוי רעי־ישראל אשר היו רעים
, *comedetis Adipem* ? pastores *pascent pecus* nónne : semetipsos
3 אותם הלוא הצאן ירעו הרעים: את־החלב תאכלו
.*pascetis* non *pecus* : *sacrificabitis* crassum , *induetis* lanam &
ואת־הצמר תלבשו הבריאה תזבחו הצאן לא תרעו:
, sanâstis non infirmam & , roborâstis non Languentes
4 את־הנחלות לא חזקתם ואת־החולה לא־רפאתם
& , reduxistis non *expulsam* & , alligâstis non confractam &
ולנשברת לא חבשתם ואת־הנדחת לא השבתם ואת־
.*ferocia in* & , eis estis dominati *robore in* & : quæsîstis non perditam
האבדת לא בקשתם ובחזקה רדיתם אתם ובפרך:
feræ omni *cibum* in fuerunt & : pastore absque sunt dispersæ Et
5 ותפוצינה מבלי רעה ותהיינה לאכלה לכל־חית
, montibus cunctis in *meum pecus* Erraverunt .sunt dispersæ & , agri
6 השדה ותפוצינה: ישגו צאני בכל־ההרים
sunt dispersæ terræ *facies omnes* super & : excelsum collem omnem super &
ועל כל־גבעה רמה ועל כל־פני הארץ נפצו
audite pastores Propterea .*requirens non & quærens* non &,*mea pec⁹*
7 צאני ואין דורש ואין מבקש: לכן רעים שמעו את־
esse pro non si , Deus Dominus dixit ,ego *Vivens* .Domini verbũ
8 דבר יהוה: חי־אני נאם אדני יהוה אם־לא יען היות־
omni devorationem in *meum pecus* fuerunt &,direptionem in *meum pec⁹*
צאני לבז ותהיינה צאני לאכלה לכל־
mei pastores quæsierunt non & , pastore absque agri bestiæ
חית השדה מאין רעה ולא־דרשו רעי את־
non *meum pecus* & , semetipsos pastores paverunt sed : *meum pecus*
צאני וירעו הרעים אותם ואת־צאני לא
Sic .Domini verbum audite pastores Propterea .paverunt
9 10 רעו: לכן הרעים שמעו דבר־יהוה: כה־
requiram & , pastores ad *ego* Ecce : Deus Dominus dixit
אמר אדני יהוה הנני אל־הרעים ודרשתי את־
non & , *pecus pascendo à*,eos faciam cessare &,eorum manu de *meum pecus*
צאני מידם והשבתים מרעות צאן ולא־
,eorum ore de *meum pec⁹* eruam & : semetipsos pastores amplius pascent
ירעו עוד הרעים אותם והצלתי צאני מפיהם
: Deus Dominus dixit sic Quia .escam in eis erunt non &
11 ולא־תהיין להם לאכלה: כי כה אמר אדני יהוה
disquisitio Sicut .eas quæram & , *meum pecus* requiram & ego ,*ego* Ecce
12 הנני־אני ודרשתי את־צאני ובקרתים: כבקרת
sic , dispersarum *suæ pecudis* medio in *eum esse* die in *sui gregis pastoris*
רעה עדרו ביום היותו בתוך־צאנו נפרשות כן
locis omnibus de eas eruam & : *meum pecus* requiram
אבקר את־צאני והצלתי אתהם מכל־המקומת
.caliginis & , nubis die in *illuc* fuerant dispersæ *quò*
אשר־נפצו שם ביום ענן וערפל:

Verſio VULG. LAT.

32 Et es eis quasi carmen musicum,
quod suavi dulcíque sono cani-
tur: & audiunt verba tua, & non
33 faciunt ea. Et cùm venerit quod
prædictũ est, (ecce enim venit,)
tunc scient quòd prophetes fue-
rit inter eos.

CAP. XXXIV.

1 ET factum est verbum Domini
2 ad me, dicens; Fili hominis, pro-
pheta de pastoribus Israel: pro-
pheta, & dices pastoribus; Hæc
dicit Dominus Deus; Væ pasto-
ribus Israel, qui pascebant semet-
ipsos: nónne greges à pastorib⁹
3 pascuntur? Lac comedebatis, et
lanis operiebamini, et quod cras-
sum erat occidebatis: gregem au-
4 tem meũ non pascebatis. Quod
infirmum fuit non consolidâstis,
& quod ægrotum non sanâstis,
quod confractum est non alligâ-
stis, & quod abjectum est non re-
duxistis, & quod perierat non
quæsistis: sed cum austeritate im-
perabatis eis, & cum potentia.
5 Et dispersæ sunt oves meæ, eò
quòd non esset pastor: & factæ
sunt in devorationem omnium
bestiarum agri, & dispersæ sunt.
6 Erraverunt greges mei in cun-
ctis montibus, & in universo col-
le excelso: & super omnem fa-
ciem terræ dispersi sunt greges
mei, & non erat qui require-
rat, non erat, inquam, qui re-
7 quireret. Propterea, pastores, au-
8 dite verbum Domini: Vivo ego,
dicit Dominus Deus; quia pro eo
quòd facti sunt greges mei in ra-
pinam, & oves meæ in devora-
tionem omnium bestiarum agri,
eò quòd non esset pastor: neque
enim quæsierũt pastores mei gre-
gem meum: sed pascebant pasto-
res semetipsos, & greges meos
9 non pascebant: Propterea, pa-
stores, audite verbum Domini:
10 Hæc dicit Dominus Deus; Ecce
ego ipse super pastores requiram
gregem meum de manu eorum,
et cessare faciam eos ut ultrà non
pascant gregem, nec pascant am-
pliùs pastores semetipsos: & li-
berabo gregem meum de ore eo-
rum, & non erit ultrà eis in escã.
11 Quia hæc dicit Dominus Deus;
Ecce ego ipse requiram oves
12 meas, & visitabo eas. Sicut vi-
sitat pastor gregem suum, in
die quando fuerit in medio oviũ
suarum dissipatarum: sic visita-
bo oves meas, & liberabo eas de
omnibus locis, in quibus disper-
sæ fuerant in die nubis & cali-
ginis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

32 Καὶ γίνῃ αὐτοῖς ὡς φωνὴ ψαλτηρίου ἡδυφώ-
νου, εὐαρμόστου, καὶ (γ) ἀκούσονταί σου τὰ ῥή-
33 ματα, καὶ οὐ μὴ ποιήσουσιν αὐτά. Καὶ (δ) ἡ-
νίκα ἐὰν ἔλθῃ, ἐροῦσιν, Ἰδοὺ ἥκει· καὶ γνώ-
σονται ὅτι προφήτης ἦν ἐν μέσῳ αὐτῶν.

MS.A. (γ) ἀκούοντες τὰ ῥήματά σου, οὐ μὴ (δ) ἔσται ἡνίκα

Et es eis, quasi vox psalterii dul- 32
cisoni, concinni: & audient ver-
ba tua, & non facient (p) ea: Et 33
cùm venerit, dicent; Ecce venit: et
scient, quia propheta erat in me-
dio eorum.

ΚΕΦ. λδʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-
2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, προφήτευσον ἐπὶ τοὺς
ποιμένας τοῦ Ἰσραὴλ, προφήτευσον, καὶ εἰ-
πὸν (α) τοῖς ποιμέσι, Τάδε λέγει κύριος
3 κύριος, Ὦ ποιμένες Ἰσραὴλ, μὴ (β) βό-
σκουσι ποιμένες ἑαυτούς; (γ) οὐ τὰ πρόβα-
τα βόσκουσιν οἱ ποιμένες; Ἰδοὺ τὸ γάλα
(δ) κατέσθετε, καὶ τὰ ἔρια περιβάλλεσθε, καὶ
τὸ παχὺ (ε) σφάζετε, καὶ τὰ πρόβατά μου
4 (ζ) οὐ βόσκετε. Τὸ (η) ἠσθενηκὸς οὐκ ἐνισχύ-
σατε, καὶ τὸ κακῶς (θ) ἔχον οὐκ ἐσωματοποι-
ήσατε, καὶ τὸ συντετριμμένον οὐ κατεδήσατε,
καὶ τὸ πλανώμενον οὐκ (ι) ἀπεστρέψατε, καὶ τὸ
ἀπολωλὸς οὐκ ἐζητήσατε, καὶ τὸ ἰσχυρὸν
5 κατειργάσασθε μόχθῳ. Καὶ (ι) διεσπάρη τὰ
πρόβατά μου, διὰ τὸ μὴ εἶναι ποιμένας, καὶ (κ)
ἐγενήθη εἰς κατάβρωμα πᾶσι τοῖς θηρίοις
6 τοῦ (λ) ἀγροῦ. Καὶ διεσπάρη τὰ πρόβατά μου
ἐν παντὶ ὄρει, καὶ ἐπὶ πάντα βουνὸν ὑψηλὸν,
καὶ ἐπὶ (μ) προσώπου τῆς γῆς διεσπάρη (ν), καὶ
7 οὐκ ἦν ὁ (ξ) ἐκζητῶν οὐδὲ ὁ ἀποστρέφων. Διὰ
8 τοῦτο ποιμένες ἀκούσατε λόγον κυρίου. Ζῶ
ἐγὼ, λέγει κύριος κύριος, εἰ μὴν ἀντὶ
τοῦ γενέσθαι τὰ πρόβατά μου εἰς προνομὴν,
καὶ γενέσθαι τὰ πρόβατά μου εἰς κατάβρωμα
πᾶσι τοῖς θηρίοις τοῦ (ο) πεδίου, παρὰ τὸ μὴ
εἶναι ποιμένας, καὶ οὐκ ἐξεζήτησαν (π) οἱ ποιμέ-
νες τὰ πρόβατά μου, καὶ ἐβόσκησαν οἱ ποιμέ-
νες ἑαυτοὺς, τὰ δὲ πρόβατά μου οὐκ ἐβόσκησαν.
9 Ἀντὶ τούτου ποιμένες (ρ), Τάδε λέγει κύ-
10 ριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ τοὺς ποιμένας,
καὶ ἐκζητήσω τὰ πρόβατά μου ἐκ τῶν χειρῶν
αὐτῶν, καὶ ἀποστρέψω αὐτοὺς τοῦ μὴ ποιμαί-
νειν τὰ πρόβατά μου, καὶ οὐ (σ) βοσκήσουσιν
ἔτι οἱ ποιμένες αὐτά· καὶ ἐξελοῦμαι τὰ πρό-
βατά μου ἐκ τοῦ στόματος αὐτῶν, καὶ οὐκ (τ)
11 ἔσονται αὐτοῖς ἔτι εἰς κατάβρωμα. Διότι
τάδε λέγει κύριος κύριος (υ), Ἰδοὺ ἐγὼ
ἐκζητήσω τὰ πρόβατά μου, καὶ ἐπισκέψομαι
12 αὐτά. (φ) Ὥσπερ ζητεῖ ὁ ποιμὴν τὸ ποί-
μνιον αὐτοῦ ἐν ἡμέρᾳ (χ) ὅταν ᾖ γνόφος
καὶ νεφέλη ἐν μέσῳ προβάτων διακεχωρι-
σμένων, οὕτως ἐκζητήσω τὰ πρόβατά μου,
καὶ (ψ) ἀπελάσω αὐτὰ ἀπὸ παντὸς τόπου οὗ
διεσπάρησαν ἐκεῖ ἐν ἡμέρᾳ νεφέλης καὶ
γνόφου.

CAP. XXXIV.

ET factum est verbum Domini 1
ad me, dicens; Fili hominis, pro- 2
pheta ad pastores Israel; propheta,
& dic pastoribus; Hæc dicit Do-
minus Dominus; O pastores Is- 3
rael, nunquid pascunt pastores
semetipsos? Nónne oves pascunt
ipsi pastores? Ecce lac comeditis,
& lanis operimini, et quod cras-
sum est, occiditis, & oves meas
non pascitis. Quod infirmũ fuit, 4
non confortâstis; & (a) quod æ-
grotum, non sanâstis; & quod
contritum, non alligâstis; et quod
errabat, non reduxistis; & quod
perierat, non quæsîstis; & quod
forte erat, afflixistis (b) labore.
Et dispersæ sunt oves meæ, eò 5
quod non essent pastores: et factæ
sunt in devorationem omnibus
bestiis agri. Et dispersæ sunt oves 6
meæ in omni monte, & super o-
mnem collem excelsum: & super
faciem (c) terræ dispersæ sunt: et
non erat, qui requireret, neque
qui reduceret. Propterea, pastores, 7
audite verbum Domini. Vivo ego, 8
dicit Dominus Dominus, si non
pro eo quòd factæ sunt oves meæ
in rapinam, & factæ sunt oves
meæ in devorationem omnibus
bestiis campi, eò quòd non essent
pastores; (& non quæsierunt pa-
stores oves meas, & paverunt
pastores semetipsos, oves autem
meas non paverunt;) Pro hoc, (d) 9
pastores, Hæc dicit Dominus Do- 10
minus; Ecce ego super pastores, et
requiram oves meas de manibus
eorum, & amovebo eos, ne pa-
scant oves meas, & non pascent
ampliùs pastores eas: & libera-
bo oves meas de ore eorum; &
non erunt eis ultrà in devoratio-
nem. Quia hæc dicit Dominus 11
Dominus; Ecce ego requiram o-
ves meas, & visitabo eas. Sicut 12
(e) quærit pastor gregem suum,
in die quando fuerit caligo, &
nubes in medio (f) ovium sepa-
ratarum; sic requiram oves meas,
& eruam eas de omni loco, in
quo dispersæ fuerant illùc in die
nubis, & caliginis.

MS.A. (α) αὐτοῖς, Τάδε (β) οἱ ποιμαίνες βόσκουσιν (γ) οὐχὶ (δ) κατεσθίετε, (ε) ἐσφάζετε (ζ) οὐκ ἐβόσκετε. (η) *ἠσθενηκῶς (θ) *ἔχων (ι) ἐπεστρέψατε, (ι) διεσπάρησαν (κ) ἐγενήθησαν (λ) ἀγροῦ, καὶ τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ. Καὶ διεσπάρησαν (μ) παντὶ προσώπῳ πάσης τῆς (ν) τὰ πρόβατά μου, καὶ (ξ) ζητῶν (ο) ἀγροῦ, (π) τὰ πρόβατά μου οἱ ποιμαίνες, (ρ) ἀκούσατε λόγον κυρίου, Τάδε λέγει ἀδωναῒ κύριος, (σ) μὴ (τ) ἔτι ἔσονται αὐτοῖς εἰς (υ) ὁ θεὸς, (φ) Ὡς ἐπισκέπτετε ὁ (χ) γνόφου καὶ νεφέλης ἐμμέσῳ προβάτων αὐτοῦ (ψ) συνάξω

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

32 והא את להון כזמר אבובין דבסים קלידה ומוטב לנגנא ושמעין ית פתגמך
33 ולמעבדהון לית אנון צבן: ובמיתיה הא אתיא וידעון ארי נביא הוה ביניהון:

לד

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר: בר אדם אתנבי על פרנסי ישראל אתנבי
ותימר להון לפרנסיא כדנן אמר יי אלהים וי על פרנסיא דישראל דהוו מפרנסין
3 נפשיהון הלא לפרנסא עמא אתמניאו פרנסיא: ית טובא אתון אכלין ועמר נקי אתון
4 לבשין פטימיא אתון נכסין לעמא ליתיכון מפרנסין: ית כאיביא לא תקפתון
ולמריעיא לא אסיתון ולתביריא לא צמדתון וית דאטלטלו לא אתיבתון וית דאבדו
5 לא בעיתון ובתוקפא פלחתון בהון ובקשיו: ואתבדרו מבלי פרנס ואתמסרו
6 לאשתצאה לכל מלכות עממיא ואטלטלו: טעו עמי בכל טוריא ועל כל רמא מנטלא
7 ועל כל אפי ארעא אתבדרו עמי ולית דתבע ולית דבעי: בכן פרנסין קבילו ית
8 פתגמא דיי: קים אנא אמר יי אלהים אם לא חלף דהוו עמי לבזא ואתמסרו עמי
לאשתיצאה לכל מלכות עממיא מבלי פרנס ולא תבעו פרנסיא ית עמי ופרניסו
9 פרנסיא ית נפשיהון וית עמי לא פרניסו: בכן פרנסיא רשיעיא תיבו לאוריתא ואנא
10 עתיד לרחמא עליכון אציתו לאולפן אוריתא וקבלו פתגמא דיי: כדנן אמר יי
אלהים הא אנא שלח רוגזי על פרנסיא ואתבע ית עמי מידהון ואבטלנון מלפרנסא
עמא ולא יפרנסון עוד פרנסיא נפשהון ואשיזיב עמי מידהון ולא יתמסרון בידהון
11 12 לאשתיצאה: ארי כדנן אמר יי אלהים הא אנא מתגלי ואתבע ית עמי ואבקרינון: כמא
דמבקר רעיא עדריה ביומא דהוי בגו ענה ומפרש להון כן אבקר ית עמי ואשיזיב
יתהון מכל אתריא דאתבדרו לתמן ביום עננא ואמיטתא:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ecce tu es eis quasi cantio organorum, cujus sonus suavis est & bene 32
psallit: & audiunt sermones tuos & nolunt facere eos. Cùm autem id ve- 33
nerit, ecce venit; & scient quia propheta fuit in medio eorum.

CAP. XXXIV.

ET factum est verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens: Fili hominis, 1 2
vaticinare super gubernatores Israel; vaticinare, & dices ipsis gubernato-
ribus: Hæc dicit Dñs Deus, Væ gubernatoribus Israel qui nutrierunt semet-
ipsos. Nónne ad gubernandum populum meum constituti sunt gubernato-
res? Bonum vos comeditis & lana munda vos induimini, pinguia vos occi- 3
ditis; populum autem non gubernatis. Dolentes non confortatis & infir- 4
mos non sanatis, & confractos non obligatis; & eos qui aberraverunt non
reducitis, & eos qui perierunt non quæritis, & illis potenter & durè impe-
ratis. Itáque dispersi sunt absque gubernatore. & traditi sunt ut consuman- 5
tur omnibus regnis populorum: & migraverunt. Errant populus meus per 6
omnes montes, & super omnes colles editos, & super omnem faciem terræ
dispersi sunt popul⁹ meus, & non est qui quærat nec qui requirat. Propterea 7
gubernatores suscipite verbum Dñi. Vivo ego, dicit Dñs Deus, quia pro eo 8
quòd factus est populus meus in direptionem, & traditus est populus meus
consumendus omnibus regnis populorum absque gubernatore: & non quæ-
sierunt gubernatores populum meum, sed gubernarunt gubernatores semet-
ipsos, & populum meum non gubernarunt. Propterea gubernatores impii, 9
*revertimini ad legem & ego miserturus sum vestri: attendite ad discipli-
nam legis*, & suscipite verbum Dñi. Hæc dicit Dñs Deus. Ecce ego mitto 10
furorem meum super gubernatores: & requiram populum meum de mani-
bus eorum, & cessare eos faciam à gubernatione populi mei. Et non nutri-
ent ampliùs gubernatores semetipsos: & liberabo populum meum de mani-
bus eorum, & non tradentur in manum eorum consumendi. Quia hæc dicit 11
Dominus Deus: Ecce ego revelabor & vestigabo populum meum, &
requiram eos. Sicut requirit pastor gregem suum in die quo est in medio 12
ovium suarum & dividit eas: sic requiram populum meum, & liberabo eos
de omnibus locis quò dispersi sunt in die nubilo, & caliginoso.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܡܬܚܫܒ ܐܢܬ ܠܗܘܢ. ܐܝܟ ܙܡܝܪܬܐ. ܘܐܝܟ ܩܠܐ ܒܣܝܡܐ. ܘܐܝܟ ܩܝܬܪܐ ܢܩܫܐ ܘܫܡܥܝܢ
ܡܠܝܟ. ܘܠܐ ܥܒܕܝܢ ܠܗܝܢ. * ܘܡܐ ܕܗܘܝ ܐܝܟ ܡܠܝܟ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܢܒܝܐ
ܐܝܬ ܒܝܢܬܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܕ *

* ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܪܥܘܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ.
ܐܬܢܒܐ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܪܥܘܬܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܐܘ ܪܥܘܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܕܪܥܝܢ
ܢܦܫܗܘܢ. ܠܐ ܗܘܐ ܠܥܢܐ ܪܥܝܢ ܪܥܘܬܐ. * ܬܪܒܐ. ܐܟܠܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܥܡܪܐ ܠܒܫܝܢ
ܐܢܬܘܢ. ܘܡܦܛܡܬܐ. ܢܟܣܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܥܢܐ. ܠܐ ܪܥܝܢ ܐܢܬܘܢ. * ܠܡܚܝܠܬܐ ܠܐ ܚܝܠܬܘܢ. ܠܟܪܝܗܬܐ
ܠܐ ܐܣܝܬܘܢ. ܘܠܬܒܝܪܬܐ ܠܐ ܚܒܫܬܘܢ. ܘܠܛܥܝܬܐ. ܠܐ ܐܗܦܟܬܘܢ. ܘܠܐܒܝܕܬܐ. ܠܐ ܒܥܝܬܘܢ.
ܐܠܐ ܒܩܫܝܘܬܐ ܫܥܒܕܬܘܢ ܐܢܝܢ. * ܘܐܬܒܕܪܝ ܥܢܝ ܡܢ ܕܠܐ ܪܥܝܐ. ܘܗܘܝ
ܠܡܐܟܘܠܬܐ. ܠܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ. * ܘܛܥܝ ܥܢܝ ܒܟܠܗܘܢ ܛܘܪܐ. ܘܥܠ ܟܠ ܪܡܬܐ
ܪܡܬܐ. ܘܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܐܬܒܕܪܘ ܥܢܝ. ܘܠܝܬ ܕܒܥܐ ܘܠܝܬ ܕܡܟܢܫ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܪܥܘܬܐ
ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܕܠܐ ܕܗܘܬ ܥܢܝ
ܠܒܙܬܐ: ܘܗܘܬ ܥܢܝ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. ܠܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ ܡܢ ܕܠܐ ܪܥܝܐ: ܘܠܐ ܒܥܘ
ܪܥܘܬܐ ܠܥܢܝ. ܐܠܐ ܪܥܘ ܪܥܘܬܐ ܠܢܦܫܗܘܢ. ܘܠܥܢܝ ܠܐ ܪܥܘ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܪܥܘܬܐ
ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠ ܪܥܘܬܐ. ܘܐܬܒܥ ܥܢܝ
ܡܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܐܒܛܠ ܐܢܘܢ ܕܠܐ ܢܪܥܘܢ ܥܢܝ. ܘܠܐ ܢܪܥܘܢ ܬܘܒ ܪܥܘܬܐ ܠܢܦܫܗܘܢ. ܘܐܦܨܐ ܥܢܝ ܡܢ ܦܘܡܗܘܢ. ܘܠܐ
ܢܗܘܝܢ ܠܗܘܢ. ܠܡܐܟܘܠܬܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܐܬܒܥ ܥܢܝ. ܘܐܣܥܘܪ ܐܢܝܢ
ܐܢܝܢ. * ܐܝܟ ܕܡܣܥܪ ܪܥܝܐ ܠܡܪܥܝܬܗ ܒܝܘܡܐ ܕܥܠܥܠܐ. ܗܟܢܐ ܐܣܥܘܪ ܥܢܝ. ܘܐܦܨܐ ܐܢܝܢ
ܡܢ ܟܠ ܐܬܪ ܕܐܬܒܕܪܘ ܬܡܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܥܢܢܐ. ܘܕܥܪܦܠܐ.

Cenſeris apud eos quaſi cantio *quædam*, & 32
quaſi vox ſonora, aut quaſi cithara dulciſona:
audiunt ſermones tuos, & non perficiunt eos:
Sed cùm evenerint ſermones tui, tunc agnoſcent 33
te eſſe prophetam inter eos.

CAP. XXXIV.

Fuit etiam ad me ſermo Domini, dicendo; 1
Fili hominis, vaticinare contra paſtores Iſraelis, 2
vaticinare, & dic eis; Paſtores, ſic ait
Dñs dominorum; O paſtores Iſraelis qui paſcunt
ſeipſos, nónne oves paſci *debent* à paſtoribus?
Pingues comeditis, & lanam earum 3
induitis: ſaginatas mactatis, & oves minimè
paſcitis: Debilem haud confirmâſtis, ægrotam 4
non curâſtis, confractam non alligâſtis, errantem
non reduxiſtis, & perditã non quæſiviſtis;
ſed violenter ſubjeciſtis eas: Adeóque 5
diſperſæ ſunt oves meæ defectu paſtoris, &
factæ ſunt cibo omnibus beſtiis deſerti; Aberraverunt 6
oves meæ in cunctis montibus, &
ſuper omnem collem excelſum; & per totam
terram diſperſæ ſunt oves meæ, nemine repoſcente,
neque congregante. Iccirco audite 7
paſtores, ſermonem Domini: Per vitam meam, 8
inquit Dominus dominorum, quia factæ
ſunt oves meæ in direptionem, & factæ ſunt
oves meæ cibus omnibus deſerti beſtiis defectu
paſtoris; & non paſcunt paſtores oves
meas, ſed paſcunt paſtores ſeipſos, oves autem
meas non paſcunt: Iccirco paſtores, audite 9
ſermonem Domini: Sic ait Dominus 10
dominorum; Ecce me contra paſtores, & repoſcam
oves meas in manibus eorum, tum
faciam eos ceſſare ne paſcant ampliùs oves
meas, & liberabo oves meas ex ore eorum,
ne poſthac ſint ipſis cibo. Sic ait Dominus 11
dominorum, Ecce repoſcam oves meas, &
viſitabo eas. Quemadmodum viſitat paſtor 12
gregem ſuum in die venti vehementis, ita
viſitabo oves meas, & colligam eas ex omnibus
locis in quæ diſperſæ fuerint in die nubilo
& caliginoſo.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويكون لهم مثل صوت مزمار لذيذ الصوت حسن الوصل ويسمعون كلماتك ولا يعملون
بها * ويكون حين اذ ياتي * يقولون ها قد اتي * ويعلمون انك نبي في وسطهم *

* الفصل الرابع والثلثون *

الاصحاح التاسع عشر *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان. تنبا على رعاة بني اسرايل * تنبا وقل لهم.
هكذا يقول الرب. يا رعاة اسرايل * هل الرعاة يرعون ذواتهم * اليست الرعاة ترعي الخراف
* ها تاكلون اللبن * وتلبسون الصوف * وتذبحون السمين * وخرافي لم ترعوها * الضعيف
لم تقووه * والذي به سو لم تداووه * والمكسور لم تصلحوه * والضال لم تردوه * والهالك
لم تطلبوه * والقوي عملتموه في التعب * فتفرقت غنمي من اجل انه لم يكن لها رعاة
وصارت ماكلا لكل وحوش الحقل وطيور السماء * وتفرقت غنمي في كل جبل * وعلي كل
تل عال * وعلي وجه كل الارض تفرقت غنمي * ولم يكن من يطلبها * ولا من يردها
* لاجل هذا يا ايها الرعاة اسمعوا قول الرب * حي انا يقول الرب الرب * بالحقيقة عوض
ان تصير غنمي للنهب * وان تصير غنمي ماكلا لجميع وحوش الحقل * من اجل انه
لم يكن لها رعاة * ولم تطلب الرعاة غنمي * ورعت الرعاة ذواتهم * ولم يرعوا غنمي.
* بدل هذا ايها الرعاة اسمعوا قول الرب * هكذا يقول ادوناي الرب. ها انا على الرعاة
واطلب غنمي من يدهم * واصرفهم ان لا يرعوا غنمي. ولا ترعاها الرعاة ايضا واخلص
غنمي من فمهم * ولا تصير لهم بعد ماكلا * من اجل انه هكذا يقول الرب الرب
الالاه ها انا اطلب غنمي واتعهدها * كما يتعهد الراعي قطيعه في يوم الضبابة والسحابة
في وسط خرافه المتفرقة. هكذا اطلب خرافي واجمعها من كل موضع حيث تفرقت هناك
في يوم سحابة وضبابة.

Es apud eos veluti ſonus pſalterii dulciſoni 32
concinnè aptati: audiunt verba
tua, & non perficiunt ea: Fiet autem 33
quum evenerit, ut dicant; Ecce jam evenit;
& cognoſcant te prophetam eſſe
in medio eorum.

CAP. XXXIV.

Textus decimuſnonus.

Deinde fuit ſermo Domini ad me, di- 1
cens; O fili hominis, propheta con- 2
tra paſtores filiorum Iſraelis: propheta, et
dic eis; Ita dicit Dominus; O paſtores
Iſraelis, num paſtores paſcunt ſemetipſos?
annon paſtores paſcunt agnos? En come- 3
ditis lac, et veſtimini lanâ, pingues jugu-
latis, & agnos meos non paſcitis. Debi- 4
lem non corroborâſtis, morbo laboranti
medelam non attuliſtis, fractum non alli-
gâſtis, errantem non reduxiſtis, perdi-
tum non quæſiviſtis, & fortem labore
exercuiſtis: Et diſperſæ ſunt oves meæ, 5
quòd paſtores non haberent; factæque
ſunt eſca omnibus feris agri & volucri-
bus cœli: Et diſperſæ ſunt oves meæ in 6
omni monte, & ſuper omnem collem
ſublimem; & ſuper faciem totius terræ
diſperſæ ſunt oves meæ, nec fuit qui
quæreret eas, neque qui reduceret eas.
Propterea O paſtores, audite ſermonem 7
Domini. Vivo ego, dicit Dominus Do- 8
minus; Verè, pro eo quòd factæ ſunt o-
ves meæ in direptionem, factæque ſunt
oves meæ cibus omnibus feris agri, eò
quòd non habuerint paſtores, & non
quæſiverint paſtores oves meas; paſtores
ſemetipſos paverint, non autem paverint
oves meas: Hac de cauſa O paſtores, 9
audite ſermonem Domini. Sic dicit A- 10
donai Dominus; Ecce me contra paſto-
res, & requiram oves meas de manu
eorum, & amovebo eos ne paſcant oves
meas; neque paſcent eas ampliùs paſto-
res: eripiam oves meas ex ore eorum,
& non erunt eis deinceps in cibum.
Sic enim dicit Dominus, Dominus De- 11
us; En ego quæram oves meas, & re-
viſitam eas. Quemadmodum reviſit pa- 12
ſtor gregem ſuam in die caliginoſo et nu-
bili, in medio agnorum ſuorum ſegre-
gatorum; ita requiram agnos meos, &
colligam eos ex omni loco, ubi diſperſi
fuerint illuc in die nubilo & caligi-
noſo.

יחזקאל : לד

eas inducam & , terris è eas congregabo &,populis è eas educam Et
13 והוצאתים מן־העמים וקבצתים מן־הארצות והביאותים
cunctis in & , rivis in ,Israel montibus in eas pascam &:suam *humum* in
אל־אדמתם ורעיתים אל־הרי ישראל באפיקים ובכל
montibus in &,eas pascam *bona pascua* In .terræ habitationibus
14 מושבי הארץ: במרעה־טוב ארעה אתם ובהרי
,*bona pascua* in accubabunt ibi : earum pascua erit Israel *celsitudinis*
מרום־ישראל יהיה נוהם שם תרבצנה בנוה טוב
pascam Ego .Israel montes *ad* pascent *pingue pascuum &*
15 ומרעה שמן תרעינה אל־הרי ישראל: אני ארעה
Perditam .Deus Domin⁹ dixit,eas faciã accubare ego &,*meũ pecus*
16 צאני ואני ארביצם נאם אדני יהוה: את־האבדת
& , alligabo confractam & , reducam *expulsam* & , requiram
אבקש ואת־הנדחת אשיב ולנשברת אחבש ואת־
, disperdam fortem & , pinguem & : roborabo languidam
החולה אחזק ואת־השמנה ואת־החזקה אשמיד
: Deus Dominus dixit sic *meum pecus* vos Et .judicio in *illam* pascam
17 ארענה במשפט: ואתנה צאני כה אמר אדני יהוה
parum Nunquid .hircos & ,arietes,pecus *ad*,pecus inter *judicans* ego Ecce
18 הנני שפט בין־שה לשה לאילים ולעתודים: המעט
vestrarum pascuarum residuum & , paveritis *bonum pascuum* vobis à
מכם המרעה הטוב תרעו ויתר מרעיכם
& ;biberitis *aquarum fundum &* ; vestris pedibus *in* conculcaveritis
תרמסו ברגליכם ומשקע־מים תשתו ואת
conculcationẽ *meum pecus* Et?conculcaveritis vestris pedib⁹ in residuas
19 הנותרים ברגליכם תרפשון: וצאני מרמס
.biberunt vestrorum pedum *calcationem &* , paverunt vestrorum pedum
רגליכם תרעינה ומרפש רגליכם תשתינה:
judicabo & , ego ,*ego* Ecce : eos ad Deus Dominus dixit sic Propterea
20 לכן כה אמר אדני יהוה אליהם הנני־אני ושפטתי
humero in & latere in ꝓ eo Pro.macilentũ pec⁹ inter &,pingue pecus inter
21 בין־שה בריה ובין שה רזה: יען בצד ובכתף
donec *: languidas* omnes cornupetistis vestris cornib⁹ in &,vos *impelletis*
תהדפו ובקרניכם תנגחו כל־הנחלות עד אשר
non & ,*meo pecori faciam salutem* Et ? *extra ad* eas dispergeretis
22 הפיצותם אותנה אל־החוצה: והושעתי לצאני ולא־
suscitabo Et .*agnum ad ,agnam* inter judicabo & :rapinã in ultrà erunt
23 תהיינה עוד לבז ושפטתי בין שה לשה: והקמתי
Ipse .David meus servus eas pascet & ,unum pastorem eas super
עליהם רעה אחד ורעה אתהן את עבדי דויד הוא
ero Dominus ego Et .pastorem in eis erit ipse & , eas pascet
24 ירעה אותם והוא יהיה להן לרעה: ואני יהוה אהיה
Ego .: eorum medio in *prælatus* ,David meus servus & ,Deum in eis
להם לאלהים ועבדי דוד נשיא בתוכם אני
, pacis pactum eis *exscindam* Et .sum locutus Dominus
25 יהוה דברתי: וכרתי להם ברית שלום
deserto in habitabunt & : terra de *malam bestiam* faciam cessare &
והשבתי חיה־רעה מן־הארץ וישבו במדבר
circuitus & , eas *dabo* Et .sylvis in dormient & , *fiducia in*
26 לבטח וישנו ביערים: ונתתי אותם וסביבות
: suo tempore in pluviam faciam descendere & :benedictionem mei collis
גבעתי ברכה והורדתי הגשם בעתו
, suum fructum agri *lignum* dabit Et .erunt benedictionis pluviæ
27 גשמי ברכה יהיו: ונתן עץ השדה את־פריו
: *fiducia in* suam *humum* super erunt & , suum fructum dabit terra &
והארץ תתן יבולה והיו על־אדמתם לבטח
, eorum *jugi vectes me frangendo in* , Dominus *ego* quod scient &
וידעו כי־אני יהוה בשברי את־מטות עלם
.eis in facientium manu de eos eruero &
והצלתים מיד העבדים בהם:

Versio VULG. LAT.

13 Et educam eas de populis, & congregabo eas de terris, & inducam eas in terram suam: & pascam eas in montib⁹ Israel, in rivis, & in cunctis sedibus terræ. 14 In pascuis uberrimis pascam eas, & in montibus excelsis Israel erunt pascua earum: ibi requiescent in herbis virentibus, & in pascuis pinguib⁹ pascentur super 15 montes Israel. Ego pascam oves meas, & ego eas accubare faciã, 16 dicit Dominus Deus. Quod perierat requiram, & quod abjectũ erat reducam, & quod confractum fuerat alligabo, & quod infirmum fuerat consolidabo, & quod pingue & forte custodiam: 17 & pascam illas in judicio. Vos autem, greges mei, hæc dicit Dominus Deus; Ecce ego judico inter pecus & pecus, arietum & 18 hircorum. Nónne satis vobis erat pascua bona depasci? insupèr & reliquias pascuarum vestrarum conculcâstis pedibus vestris: & cùm purissimam aquam biberetis, reliquam pedibus vestris tur19babatis. Et oves meæ his, quæ conculcata pedib⁹ vestris fuerãt, pascebantur: & quæ pedes vestri 20 turbaverant, hæc bibebant. Proptereà hæc dicit Domin⁹ Deus ad vos; Ecce ego ipse judico inter 21 pecus pingue, et macilentum: Pro eo quòd laterib⁹ & humeris impingebatis, & cornibus vestris ventilabatis omnia infirma pecora, donec dispergerentur forás: 22 Salvabo gregem meum, & non erit ultrà in rapinam, & judica23bo inter pecus & pecus. ET SUSCITABO SUPER EAS PASTOREM UNUM, qui pascat eas, servum meum David: ipse pascet eas, & 24 ipse erit eis in pastorem. Ego autem Dominus ero eis in Deum: & serv⁹ me⁹ David princeps in medio eorum: ego Dominus locut⁹ 25 sum. Et faciam cum eis pactum pacis, & cessare faciam bestias pessimas de terra: & qui habitant in deserto, securi dormient in sal26tibus. Et ponam eos in circuitu collis mei benedictionem: & deducam imbrem in tempore suo: 27 pluviæ benedictionis erunt. Et dabit lignum agri fructum suum, & terra dabit germen suum, & erunt in terra sua absque timore: & scient quia ego Dominus, cùm contrivero catenas jugi eorum, & eruero eos de manu imperantium sibi.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

13 Καὶ ἐξάξω αὐτοὺς ἐκ τῶν ἐθνῶν, καὶ συνάξω αὐτοὺς (ω) ἀπὸ τῶν χωρῶν, καὶ εἰσάξω αὐτοὺς εἰς τὴν γῆν αὐτῶν, καὶ βοσκήσω αὐτοὺς ἐπὶ τὰ ὄρη Ἰσραὴλ, καὶ ἐν ταῖς φά14ραγξι, καὶ ἐν πάσῃ κατοικίᾳ τῆς γῆς. (α) Ἐν νομῇ ἀγαθῇ βοσκήσω αὐτοὺς, ἐν τῷ ὄρει τῷ ὑψηλῷ (β) Ἰσραήλ. καὶ ἔσονται αἱ μάνδραι αὐτῶν ἐκεῖ, καὶ κοιμηθήσονται, καὶ ἐκεῖ ἀναπαύσονται ἐν τρυφῇ ἀγαθῇ, καὶ ἐν νομῇ πίονι βοσκηθήσονται ἐπὶ τῶν ὀρέων (γ) Ἰσ15ραήλ. Ἐγὼ βοσκήσω τὰ πρόβατά μου, καὶ ἐγὼ ἀναπαύσω αὐτὰ, καὶ (δ) γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος· τάδε λέγει κύριος κύ16ριος. Τὸ ἀπολωλὸς (ε) ζητήσω, καὶ τὸ (ζ) πλανώμενον ἀποστρέψω, καὶ τὸ συντετριμμένον καταδήσω, καὶ τὸ ἐκλεῖπον ἐνισχύσω, καὶ τὸ ἰσχυρὸν φυλάξω, καὶ βοσκήσω αὐτὰ 17 μετὰ κρίματος. Καὶ ὑμεῖς (η) πρόβατα, τάδε λέγει κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ διακρινῶ ἀναμέσον προβάτου καὶ προβάτου, (θ) 18 κριῶν καὶ τράγων. Καὶ οὐχ ἱκανὸν ὑμῖν, ὅτι τὴν καλὴν νομὴν ἐνέμεσθε, καὶ τὰ κατάλοιπα τῆς νομῆς (ι) ὑμῶν κατεπατεῖτε τοῖς ποσὶν ὑμῶν; καὶ τὸ καθεστηκὸς ὕδωρ ἐπίνετε, καὶ τὸ λοιπὸν τοῖς ποσὶν ὑμῶν ἐταράσ19σετε; Καὶ τὰ πρόβατά μου τὰ πατήματα τῶν ποδῶν ὑμῶν ἐνέμοντο, καὶ τὸ τεταραγμένον ὕδωρ ὑπὸ τῶν ποδῶν ὑμῶν ἔπινον. 20 Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος κύριος (κ), Ἰδοὺ ἐγὼ διακρινῶ ἀναμέσον προβάτου ἰ21σχυροῦ καὶ ἀναμέσον προβάτου ἀσθενοῦς. Ἐπὶ ταῖς πλευραῖς καὶ τοῖς ὤμοις ὑμῶν διωθεῖσθε, καὶ τοῖς κέρασιν ὑμῶν ἐκερατίζετε, καὶ πᾶν 22 τὸ ἐκλεῖπον ἐξεθλίβετε. Καὶ σώσω τὰ πρόβατά μου, καὶ (λ) οὐ μὴ ὦσιν ἔτι εἰς προνομὴν, καὶ κρινῶ ἀναμέσον κριοῦ πρὸς κριόν. 23 Καὶ ἀναστήσω (μ) ἐπ' αὐτοὺς ποιμένα ἕνα, καὶ ποιμανεῖ αὐτοὺς, τὸν δοῦλόν μου Δαυίδ, καὶ 24 ἔσται αὐτῶν ποιμήν, Καὶ ἐγὼ κύριος ἔσομαι αὐτοῖς εἰς θεὸν, καὶ Δαυὶδ ἄρχων ἐν 25 μέσῳ αὐτῶν· ἐγὼ κύριος ἐλάλησα. Καὶ διαθήσομαι τῷ Δαυὶδ διαθήκην εἰρήνης, καὶ (ν) ἀφανιῶ θηρία πονηρὰ ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ κατοικήσουσιν ἐν τῇ ἐρήμῳ, καὶ ὑπνώσουσιν 26 ἐν τοῖς δρυμοῖς. Καὶ (ξ) δώσω αὐτοὺς περικύκλῳ τοῦ ὄρους μου· καὶ δώσω τὸν ὑετὸν ὑμῖν, 27 ὑετὸν εὐλογίας. Καὶ τὰ ξύλα (ο) τὰ ἐν τῷ πεδίῳ δώσει τὸν καρπὸν αὐτῶν, καὶ ἡ γῆ δώσει (π) τὴν ἰσχὺν αὐτῆς, καὶ κατοικήσουσιν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν ἐν ἐλπίδι εἰρήνης, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, ἐν τῷ συντρῖψαί με τὸν ζυγὸν (ρ) αὐτῶν, καὶ ἐξελοῦμαι αὐτοὺς ἐκ χειρὸς τῶν καταδουλωσαμένων αὐτούς.

MS.A. (ω) ἐκ τῶν (α) Νομῇ ἀγαθῇ (β) ἐν τῷ ὄρει Ἰσραήλ. (γ) τοῦ Ἰσραήλ. (δ) ἐπιγνώσονται διότι (ε) ἐκζητήσω, (ζ) πεπλανημένον ἐπιστρέψω, (η) τὰ πρόβατα, (θ) κριοῦ καὶ τράγου. (ι) τοῖς ποσὶν ὑμῶν κατεπατεῖτε; (κ) ὁ θεός, (λ) οὐκέτι ἔσονται ἔτι εἰς (μ) αὐτοῖς ποιμένα ἕτερον, (ν) ἀπολῶ (ξ) ἔσονται κύκλῳ τοῦ ὄρους μου· καὶ ἀποστελῶ ὑετὸν εὐλογίας αὐτοῖς. (ο) τοῦ παιδίου ἀποδώσει τὸν καρπὸν αὐτοῖς, (π) τὸν καρπὸν αὐτῆς, (ρ) τοῦ κλοιοῦ αὐτῶν· ἐξελοῦμαι

Et educam eos de gentibus, & 13 congregabo eos de regionibus, & inducam eos in terram suam, & pascam eos in montibus Israel, & in vallibus, et in omni habitatione terræ. In pascua bona pascam 14 eos, in monte excelso (c) Israel. Et erunt ovilia eorum ibi; et dormient, & ibi requiescent in deliciis bonis, & in pascua pingui pascentur super montes Israel. Ego pascam oves meas: & ego 15 faciam requiescere eas: & (d) scient, quia ego sum Dominus: Hæc dicit Dominus Dominus: Quod perierat, requiram; et quod 16 errabat, reducam; & quod contritum, alligabo; & quod deficerat, confortabo; & quod forte, custodiam, & pascam eas cum judicio. Et vos (i) oves, hæc dicit 17 Dominus Dominus; Ecce ego dijudicabo inter ovem & ovem, arietes & hircos. Et nonne satis 18 vobis erat, quia bonam pascuam depascebatis; et reliquias pascuæ vestræ conculcabatis pedibus vestris? & collectam aquã bibebatis; & reliquum pedibus vestris turbabatis? Et oves meæ concul- 19 cationes pedum vestrorum pascebant, & aquam conturbatam à pedibus vestris bibebant. Propter- 20 eà hæc dicit Domin⁹ Dominus; Ecce ego dijudicabo inter ovem fortem, & inter ovem infirmam. In lateribus, & humeris 21 vestris propulsabatis, & cornibus vestris (k) ventilabatis, & omnem, quæ deficiebat, affligebatis. Et salvabo oves meas: & non 22 erunt ultrà in rapinam: & judicabo inter arietem (l) ad arietem. Et suscitabo super eos pastorem 23 unum, & pascet eos, servum meum David. Et erit eorum pastor: Et ego Dominus ero eis in Deum: 24 & David princeps in medio eorum. Ego Dominus loquutus sum. Et disponam (m) David testamen- 25 tum pacis: & delebo bestias pessimas de terra, et habitabunt in (n) deserto, et somnum capient in saltibus. Et (o) dabo eos in circuitu 26 montis mei: et (p) dabo pluviam vobis, pluviã benedictionis. Et li- 27 gna quæ in campo, dabunt fructũ suum: et terra dabit fortitudinem suam: et habitabunt in terra sua in spe pacis: et scient, quia ego sum Domin⁹, cùm contrivero (q) jugum eorum, et eruero eos de manu servire eos facientium.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

13 ואפקנון מבני עממיא ואכנשנון מן מדינתא ואעלנון לארעהון ואפרנסנון על טורי
14 ישראל בפצידיא ובכל מותבי ארעא: בפרנוס טב אפרנס יתהון ובטור קודשא
דישראל יהבית מישריהון תמן ישרון באתר דיאי ופרנוס טב יתפרנסון על טורי
15 16 ישראל: אנא אפרנס ית עמי ואנא אשרנון לרוחצן אמר יי אלהים: ית דאבדו
אתבע וית דאטלטלו אתיב ולתביריא אצמוד ולמרעיא אסובר וית חטאיא וית חיביא
17 אשיצי ואפרנס עמי בדינא: ואתון עמי כדנן אמר יי אלהים הא אנא דאן בין
18 גבר לגבר לחטאיא ולחיביא: הזער לכון דפרנוס טב אתון מתפרנסין ומותר
פרנוסכון דישין ברגליכון ומשתי מתקן אתון שתן וית מותרא ברגליכון אתון
19 20 דישין: ועמי מותר מיכל שמשיכון אכלין ומותר משתי שמשיכון שתן: בכן כדנן
21 אמר יי אלהים להון הא אנא מתגלי ואדון בין גבר עתיר ובין גבר מסכן: חלף
דברשע ובדרע דחקתון ובתוקפא תברתון כל כאיביא עד דבדרתון יתהון לביני
22 23 מדינתא: ואפרוק לעמי ולא יתמסרון עוד לבזא ואדון בין גבר לגבר: ואקים
עליהון פרנס חד ויפרנס יתהון ית דוד עבדי הוא יפרנס יתהון והוא יהי להון
24 לפרנס: ואנא יי אהוי להון לאלהא ועבדי דוד מלכא ביניהון אנא יי גזרית במימרי:
25 ואגזר להון קים שלם ואבטל חיתא בישתא מן ארעא ויתבון במדברא לרוחצן
26 ויתעתקון בחורשיא: ואשרי יתהון סחור סחור לבית מקדשי ויהון מבורכין
27 ואחית להון מטר בכיר בעדניה מטרין דברכן יהון: ויתן אילן חקלא ית אבידיה
וארעא תתן עללתה ויהון על ארעהון לרוחצן וידעון ארי אנא יי כד אתבר ית
ניר תוקפהון ואשזבנון מיד דמפלחין בהון:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et educam eos de medio populorum, & congregabo eos de *provinciis*; & 13 inducam eos in terram suam, & nutriam eos in montibus Israel, in rivis & in omnibus habitationibus terræ. Alimento bono nutriam eos, & in monte 14 sancto Israel *dedi habitationem* eorum; ibi habitabunt in loco specioso, & alimento bono pascentur super montes Israel. Ego gubernabo populum 15 meum, & ego habitare eos faciam confidenter, ait Dñs Deus. Illos qui peri- 16 erant requiram; & illos qui transmigraverant reducam, & confractos alligabo, & infirmos portabo, & impios & peccatores consumam; & gubernabo populum meum in judicio. Et vos popule meus, hæc dicit Dñs Deus: 17 Ecce ego judico inter virum, & virum, peccatores & impios. Nunquid pa- 18 rùm vobis est quòd nutrimento bono vos nutriti estis, nisi etiam residuum nutrimenti vestri pedibus conculceris? & quòd potum præparatum vos bibitis, nisi etiam reliquias pedibus vestris calcetis? Et populus meus reli- 19 quias cibi ministrorum vestrorum comedunt, & reliquias potus ministrorum vestrorum bibunt. Proptereà hæc dicit Dñs Deus ad eos, Ecce ego revelabor 20 & judicabo inter virum divitem, & virum pauperem. Pro eo quòd in im- 21 pietate & in brachio impellebatis, & in fortitudine confringebatis omnes dolentes, donec dispersistis eos per provincias. Et redimam populum meum, 22 & non tradentur direptioni ultrà, & judicabo inter virum & virum. Et 23 suscitabo super eos gubernatorem unum, & gubernabit eos, David servum meum; ipse gubernabit eos, & ipse erit eis in gubernatorem. Et ego Dñs 24 ero eis in Deum, & servus meus David rex inter eos. Ego Dñs decrevi in verbo meo. Et feriam cum eis pactũ pacis, et cessare faciam bestias malas de 25 terra, et habitabunt in deserto confidenter; et inveterabuntur in *saltu*. Et 26 habitare eos faciam in circuitu sanctuarii mei; & erũt benedicti: et deducam eis imbrem temporaneum in tempore suo; pluviæ benedictionis erunt. Et 27 dabit arbor agri fructum suum, et terra dabit germen suum, et erunt in terra sua confidenter. Et scient quia ego Dñs cùm confregero jugum fortitudinis eorum, et liberavero eos de manibus eorum qui ipsis servis utebantur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܦܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܘܐܟܢܫ ܐܢܘܢ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܐܥܠ ܐܢܘܢ. ܠܐܪܥܗܘܢ. ܘܐܪܥܐ
ܐܢܘܢ ܒܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܒܢܚܠܐ. ܘܒܟܠܗܘܢ ܡܬܒܐ ܕܐܪܥܐ. * ܒܡܪܥܝܐ ܛܒܐ ܐܪܥܐ
ܐܢܘܢ. ܘܒܛܘܪܐ ܪܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܢܗܘܐ ܕܝܪܗܘܢ. ܬܡܢ ܢܪܒܥܘܢ. ܒܕܝܪܐ ܛܒܐ. ܘܒܪܥܝܐ
ܫܡܝܢܐ ܢܪܥܘܢ. ܒܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܐܢܐ ܐܪܥܐ ܥܢܝ. ܘܐܢܐ ܐܪܒܥ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܡܪܘܬܐ. * ܕܐܒܝܕܐ ܐܒܥܐ. ܘܕܛܥܝܐ ܐܗܦܟ. ܘܠܬܒܝܪܐ ܐܚܒܘܫ. ܘܠܕܟܪܝܗܐ ܐܚܝܠ. ܘܠܫܡܝܢܐ
ܘܠܥܫܝܢܐ ܐܛܪ. ܘܐܪܥܐ ܐܢܘܢ ܒܕܝܢܐ. * ܠܟܘܢ ܕܝܢ ܥܢܝ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ
ܐܢܐ ܕܐܢ ܐܢܐ ܒܝܬ ܥܢܐ ܠܥܢܐ. ܘܒܝܬ ܕܟܪܐ ܠܕܟܪܐ. * ܠܐ ܣܦܩ ܠܟܘܢ ܪܥܘܬܐ. ܪܥܝܐ ܛܒܐ
ܪܥܝܬܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܫܪܟܐ ܕܪܥܝܟܘܢ. ܕܫܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܪܓܠܝܟܘܢ. ܘܡܝܐ ܨܠܝܠܐ ܫܬܝܢ ܐܢܬܘܢ
ܘܫܪܟܐ ܕܡܝܐ ܕܐܘܬܪܬܘܢ ܐܢܬܘܢ. ܕܠܚܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܪܓܠܝܟܘܢ. * ܘܥܢܝ ܕܝܢ ܪܥܝܐ ܕܕܫ ܪܓܠܝܟܘܢ
ܪܥܝܢ ܘܡܝܐ ܕܕܠܚ ܪܓܠܝܟܘܢ ܫܬܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܕܐܢ
ܐܢܐ ܥܢܐ ܫܡܝܢܬܐ ܠܥܢܐ ܟܚܝܫܬܐ. * ܠܐ ܕܒܓܒܝܟܘܢ ܗܘܝܬܘܢ ܡܕܚܩܝܢ ܘܒܩܪܢܝܟܘܢ
ܘܡܢܓܚܝܬܘܢ ܗܘܝܬܘܢ ܠܟܠܗܝܢ ܟܪܝܗܬܐ. ܥܕܡܐ ܕܒܕܪܬܘܢ ܐܢܝܢ ܠܒܪ. * ܘܐܦܪܘܩ
ܠܥܢܝ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܬܘܒ ܠܒܙܬܐ. ܘܐܕܘܢ ܒܝܬ ܥܢܐ ܠܥܢܐ. ܘܒܝܬ ܕܟܪܐ ܠܕܟܪܐ.
* ܘܐܩܝܡ ܥܠܝܗܘܢ ܪܥܝܐ. ܘܢܪܥܐ ܐܢܝܢ. ܕܘܝܕ ܥܒܕܝ ܗܘ ܢܪܥܐ ܐܢܝܢ. ܘܗܘ ܢܗܘܐ ܠܗܝܢ
ܪܥܝܐ. * ܘܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. ܘܕܘܝܕ ܥܒܕܝ ܢܗܘܐ. ܪܝܫܐ ܒܝܢܬܗܘܢ.
* ܘܐܩܝܡ ܠܗܘܢ ܩܝܡܐ ܕܫܠܡܐ. ܘܐܒܛܠ ܚܝܘܬܐ ܒܝܫܬܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܢܥܡܪܘܢ
ܒܡܕܒܪܐ ܒܬܘܟܠܢܐ. ܘܢܕܡܟܘܢ ܒܥܒܐ. * ܘܐܬܠ ܠܗܘܢ ܒܘܪܟܬܐ ܚܕܪ ܪܡܬܝ. ܘܐܚܬ
ܡܛܪܐ ܒܙܒܢܗ. ܘܢܗܘܐ ܡܛܪܐ ܕܒܘܪܟܬܐ. * ܘܐܝܠܢܐ ܕܐܪܥܐ ܢܬܠܘܢ ܦܐܪܐ. ܘܐܪܥܐ
ܬܬܠ ܥܠܠܬܗ. ܘܢܬܒܘܢ ܥܠ ܐܪܥܗܘܢ ܒܬܘܟܠܢܐ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܟܕ ܐܬܒܪ
ܢܝܪܗܘܢ. ܘܐܦܪܘܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܡܫܥܒܕܝܢ ܠܗܘܢ.

* Educam eas è gentibus, & colligam eas ex urbibus, adducam eas in terram earum, & paſcam eas in montibus Iſraelis, in vallibus, & in omnibus *locis* habitabilibus terræ. 13

In paſcuo optimo paſcam eas, & in excelſis montibus Iſraelis erit caula earum: ibi cubabunt in caula optima, & paſcuum pingue depaſcent in montibus Iſraelis. 14

Ego paſcam oves meas, & ego faciam eas recubare, ait Dñs dominorum. 15

Perditam quæram, errantem reducam, confractam obligabo, debilem firmabo, pinguem & craſſam conſervabo, & paſcam eas debito modo. 16

Vobis autem oves meæ, ſic dicit Dñs dominorum; Ecce judicabo inter ovem & ovem, & inter arietẽ & arietem. 17

Annon ſufficit vobis paſtores paſcuum bonum quod depaſcitis, ut reliquum paſcui veſtri pedibus veſtris conculcetis? & aquam bibentes, reſiduam quam relinquitis, pedibus veſtris conturbetis? 18

Et oves meæ depaſcant conculcatum pedibus veſtris, & bibant aquas quas pedes veſtri conturbârunt? 19

Propterea ſic ait Dominus dominorum; Ecce judicabo inter ovem pinguem & ovem macilentam: 20

Eò quòd illæ *pingues* lateribus humeriſque ſuis impellebant, & cornibus ſuis impetebant omnes infirmas, donec eas foràs diſperſerint: 21

Et eripiam oves meas, ne ſint ampliùs illis direptioni; judicans inter ovem et ovem, et inter arietem et arietem. 22

Et conſtituam ſuper eas paſtorem, qui paſcat eas: David ſervus me⁹ ipſe paſcet eas, ipſéque erit eis paſtor: 23

Ego verò Dominus ero eis Deus, et David ſervus meus erit princeps inter ipſos: 24

Statuam eis fœdus pacis et abolebo feras pernicioſas de terra: habitabunt in deſerto ſecurè, et dormient in ſylva; 25

Dabo eis benedictionem meam circa collem meum, et demittam pluviam tempeſtivam: erítque pluvia benedictionis. 26

Et arbores terræ edent fructus, et terra dabit proventus ſuos, demum habitabunt in terra ſua ſecurè: et agnoſcent me eſſe Dominum, quum fregero jugum eorum, et eripuero eos de manu ſubigentium eos. 27

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* واخرجهم من الامم * واجمعهم من الكور * وادخلهم الي ارضهم * وارعاهم على جبال
اسرايل * وفي الاوديه * وفي كل مسكن الارض * في مرعي صالح * ارعاهم في الجبل
المرتفع * في جبل اسرايل * ويصير حيرهم هناك * ويضطجعون * وهناك يستريحون في نعيم
طيب * وفي مرعي دسم يرعون على جبال اسرايل * انا ارعي غنمي * وانا اريحها * ويعلمون
اني انا الرب * هكذا يقول الرب الرب * اطلب الهالك * وارد الضال * واجبر المكسور
واقوي الفاني * واحفظ القوي * وارعاها بحكم * وانتم ايها الخراف * هكذا يقول الرب
الرب * ها انا احكم بين خروف وخروف * وكبش وتيس * فليس يجب لكم انكم ترعون
مرعي حسنا * وبقايا المرعي تدوسونها بارجلكم * وتشربون الماء الصافي * والبقيه اقلقتموها
بارجلكم * وخرافي رعت مداسات اقدامكم * وشربت الماء المضطرب من ارجلكم * لاجل هذا
هكذا يقول الرب الرب الاله * ها انا احكم بين خروف قوي وبين خروف ضعيف
* بجوانبكم واكتافكم تدفعوها * وبقرونكم تنطحوها * وكل فان اخرجتموه
* واخلص غنمي * ولا تصير بعد ايضا للنهب * واحكم بين كبش مع كبش
* واقيم لها راعيا اخر * داود عبدي * فيرعاهم ويكون لهم راع * وانا الرب اكون لهم
الها * وداود رييسا في وسطهم * انا الرب تكلمت * واعهد لداود عهد السلامه * واهلك
الوحوش الشرير من الارض * ويسكنون في البريه * وينامون في الغابات * ويكونون حول
جبلي * وارسل لهم مطر البركه * وشجر الصحرا تعطي ثمرها لهم * والارض تعطي
ثمرها * ويسكنون على ارضهم في رجاء السلامه * ويعلمون اني انا الرب * عند ما اكسر
نير طوقهم * واخلصهم من يد الذين استعبدوهم

* *Educam eos è gentibus, & colligam eos è regionibus, introducam eos in terram eorum, & paſcam eos ſuper montibus Iſraelis, & in vallibus, & in omni habitaculo terræ,* 13

In optimo paſcuo: paſcam eos in monte ſublimi, in monte Iſraelis: & erunt ibi caula eorum, & cubabunt, ibique requieſcent in delitiis jucundiſſimis, & in paſcuo ſuaviſſimo paſcentur ſuper montibus Iſraelis. 14

Ego paſcam oves meas, & ego refocillabo eas; & ſcient me eſſe Dominum. Ita dicit Dominus Dominus; 15

Quæram perditum, reducam errantem, conſolidabo fractum, confirmabo deficientem, & fortem conſervabo, denique paſcam eas cum judicio. 16

Et vos O agni, ſic dicit Dominus Dominus; En ego judicabo inter agnum & agnum, arietem & hircum. 17

Sanè vos dedecet veſci optimo paſcuo, reliquum verò paſcuum conculcare pedibus veſtris: & aquam bibere limpidam, reliquam verò pedibus veſtris perturbare: 18

Agnos meos pedibus veſtris conculcata depaſcere, & aquam bibere pedibus veſtris perturbatam. 19

Iccircò ſic ait Dominus, Dominus Deus; Ecce ego judicabo inter agnum fortem & inter agnum debilem. 20

Lateribus & humeris veſtris propulſabatis eas, & cornibus veſtris ventilabatis, omnémque deficientem ejeciſtis. 21

Et eripiam oves meas, nec erunt poſthac ampliùs in direptionem, & judicabo inter arietem cum ariete. 22

Et conſtituam eis paſtorem alium, Davidem ſervum meum, qui paſcet eos, & erit eis paſtor. 23

Et ego Dominus ero ipſis Deus, & David princeps in medio ipſorum: ego Dominus locutus ſum. 24

Et pangam cum Davide fœdus pacis, & perdam beſtias malas de terra; ita ut habitent in deſerto, & dormiant in ſylvis. 25

Et erunt circum montem meum, mittamque eis pluviam benedictionis, 26

Et arbores campi reddent eis fructum ſuum, & tellus dabit fruges ſuas: & habitabunt ſuper terram ſuam in ſpe pacis: ſciéntque me eſſe Dominum, quum fregero jugum numellæ eorum, & eripuero eos de manu eorum qui ſervitute preſſerunt eos: 27

: cas comedet non terræ bestia & , gentibus præda ultrà erunt non Et
28 ולא־יהיו עוד בז לגוים וחית הארץ לא תאכלם
plantationem eis suscitabo Et .exterrens non & ,fiducia in habitabunt &
29 וישבו לבטח ואין מחריד : והקמתי להם מטע
ultrà portabunt nec ,terra in fame consumpti ultrà erunt non &:nominé in
לשם ולא־יהיו עוד אספי רעב בארץ ולא־ישאו עוד
; eis cum eorum Deus Dominus ego quòd scient Et .gentium ignominiam
30 כלמת הגוים : וידעו כי אני יהוה אלהיהם אתם
,meum pecus vos Et .Deus Dominus dixit , Israel domus meꝰ populꝰ ipsi &
31 והמה עמי בית ישראל נאם אדני יהוה : ואתן צאני
.Deus Dominus dixit ,vester Deus ego ; vos homo meæ pascuæ pecus
צאן מרעיתי אדם אתם אני אלהיכם נאם אדני יהוה :

CAP. XXXV. לה

super tuas facies pone ,hominis Fili : dicendo,me ad Domini verbum fuit Et
1 2 ויהי דבר־יהוה אלי לאמר : בן־אדם שים פניך על־
Dominus dixit Sic , ei dices Et .eum super propheta & ,Sehir montem
3 הר שעיר והנבא עליו : ואמרת לו כה אמר אדני
,te super meam manum extendam &:Sehir mons te ad ego Ecce , Deus
יהוה הנני אליך הר־שעיר ונטיתי ידי עליך
,ponam desolationem tuas Urbes .solitudinem &,desolationem te dabo &
4 ונתתיך שממה ומשמה : עריך חרבה אשים
tibi esse Pro .Dominus ego quòd scies & ; eris desolatio tu &
5 ואתה שממה תהיה וידעת כי־אני יהוה : יען היות לך
tempore in;gladii manus super ,Israel filios effudisti & ,seculi inimicitiam
איבת עולם ותגר את־בני־ישראל על־ידי חרב בעת
dixit , ego vivens Propterea.finis iniquitatis tempore in,eorum contritionis
6 אידם בעת עון קץ : לכן חי־אני נאם
non si : te persequetur sanguis &,te faciam sanguini quia,Deus Dominꝰ
אדני יהוה כי־לדם אעשך ודם ירדפך אם־לא
montem dabo Et .te persequetur sanguis & ,habueris odio sanguinem
7 דם שנאת ודם ירדפך : ונתתי את־הר
, transeuntem eo de succidam & ; solitudinem &,desolationem in Sehir
שעיר לשממה ושממה והכרתי ממנו עבר
;tuis vallibꝰ &,tuis collibꝰ:ejꝰ occisis ejus montes implebo Et.redeuntē &
8 ושב : ומלאתי את־הריו חלליו גבעותיך וגאותיך
Solitudines .eis in cadent gladio interfecti tuis torrentibus omnibꝰ &
9 וכל־אפיקיך חללי־חרב יפלו בהם : שממות
ego quòd scietis & : habitabuntur non tuæ civitates &,te tradam seculi
עולם אתנך ועריך לא תישבנה וידעתם כי־אני
mihi terræ duæ & , gentes Duæ , te dicere Pro .Dominus
10 יהוה : יען אמרך את־שני הגוים ואת־שתי הארצות לי
, ego vivens Propterea .erat ibi Dominus &:eam possidebimus & , erunt
11 תהיינה וירשנוה ויהוה שם היה : לכן חי־אני
quem tuũ zelũ secundũ &,tuã irã secundùm faciam &,Deus Dominus dixit
נאם אדני יהוה ועשיתי כאפך וכקנאתך אשר
.te judicavero cùm ,eis in ero cognitꝰ &;eos in tua odia propter ,fecisti
עשיתה משנאתיך בם ונודעתי בם כאשר אשפטך :
quæ , tua convicia omnia Audivi .Dominus ego quòd scies Et
12 וידעת כי אני יהוה שמעתי את־כל־נאצותיך אשר
sunt dati nobis ;sunt Desolati,dicendo , Israel montes contra dixisti
אמרת על־הרי ישראל לאמר שממה לנו נתנו
me super auxistis & , vestro ore in me super magnificâstis Et.devorandum ad
13 לאכלה : ותגדילו עלי בפיכם והעתרתם עלי
omnem lætari Sicut :Deus Dominus dixit Sic .audivi ego ; vestra verba
14 דבריכם אני שמעתי : כה אמר אדני יהוה כשמח כל־
domus hæreditate ob tuam lætitiam Juxta .tibi faciam , desolatione terram
15 הארץ שממה אעשה־לך : כשמחתך לנחלת בית־
erit desolatio : tibi faciam sic , est desolata quòd super , Israel
ישראל על אשר־שממה כן אעשה־לך שממה תהיה
.Dominus ego quòd scient & ; ipsa tota Edom omnis & , Sehir mons
הר־שעיר וכל־אדום כלה וידעו כי־אני יהוה :

Versio VULG. LAT.

28 Et non erunt ultrà in rapinam in Gentibus, neque bestiæ terræ devorabunt eos: sed habitabūt confidenter absque ullo terrore. 29 Et suscitabo eis germen nominatū: & non erūt ultrà imminuti fame in terra, neque portabunt ultrà opprobriū gentiū. 30 Et scient quia ego Dñs Deus eorū cum eis, & ipsi populꝰ meus, domus Israel: ait Dñs Deus. 31 Vos autē greges mei, greges pascuæ meæ, homines estis: & ego Dominus Deus vester, dicit Dominus Deus.

CAP. XXXV.

1 Et factus est sermo Domini ad me, dicens; 2 Fili hominis, pone faciem tuā adversùm montē Seir, & prophetabis de eo, & dices illi; 3 Hæc dicit Dominꝰ Deus; Ecce ego ad te, mons Seir, & extendam manū meam super te, & dabo te 4 desolatum atque desertum. Urbes tuas demoliar, & tu desertꝰ eris: 5 & scies quia ego Dñs. Eò quòd fueris inimicꝰ sempiternꝰ, & concluseris filios Israel in manꝰ gladii in tempore afflictionis eorū, in tempore iniquitatis extremæ. 6 Propterea, Vivo ego, dicit Dñs Deus; quoniā sanguini tradam te, & sanguis te persequetur: & cùm sanguinem oderis, sanguis persequetur te. 7 Et dabo montem Seir desolatum atque desertum: & auferam de eo euntem, & redeuntem. 8 Et implebo montes ejus occisorum suorum: in collibus tuis, & in vallibus tuis, atque in torrentibꝰ interfecti gladio cadent. 9 In solitudines sempiternas tradā te, & civitates tuæ non habitabuntur: & scietis quia ego Dominus Deus. 10 Eò quòd dixeris; Duæ gentes, & duæ terræ meæ erunt, & hæreditate possidebo eas: cùm 11 Dominus esset ibi: Propterea, Vivo ego, dicit Dominus Deus; quia faciam juxta iram tuam, & secundùm zelum tuum, quem fecisti odio habens eos: & notꝰ efficiar per eos cùm te judicavero. 12 Et scies quia ego Dominus audivi universa opprobria tua, quæ locutꝰ es de montibus Israel, dicens; Deserti, nobis ad devorandum dati sunt. 13 Et insurrexistis super me ore vestro, & derogâstis adversùm me verba vestra: ego 14 audivi. Hæc dicit Dominꝰ Deus; Lætante universâ terrâ, in solitu- 15 dinem te redigam. Sicuti gavisus es super hæreditatem domûs Israel, eò quòd fuerit dissipata, sic faciam tibi: dissipatus eris, mons Seir, & Idumæa omnis; & scient quia ego Dominus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

28 Καὶ οὐκ (σ) ἔσονται ἔτι ἐν προνομῇ τοῖς ἔθνεσι, καὶ τὰ θηρία τῆς γῆς οὐκέτι μὴ (τ) φάγωσιν αὐτούς· καὶ κατοικήσουσιν ἐν ἐλπίδι, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἐκφοβῶν αὐτούς. 29 Καὶ ἀναστήσω αὐτοῖς φυτὸν εἰρήνης, καὶ οὐκέτι ἔσονται ἀπολλύμενοι λιμῷ ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ ὀνειδισμὸν ἐθνῶν οὐ μὴ ἐνέγκωσιν ἔτι. 30 Καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν, καὶ αὐτοὶ λαός μου. Οἶκος (υ) Ἰσραήλ, λέγει κύριος κύριος, 31 (φ) Πρόβατά μου καὶ πρόβατα (χ) ποιμνίου μου ἐστὲ, καὶ ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς ὑμῶν, λέγει κύριος κύριος.

28 Et non erunt ultrà in rapinam gentibus, & bestiæ terræ non ultrà devorabunt eos. Et habitabunt in spe: & non erit qui exterreat eos. 29 Et suscitabo eis plantationem (r) pacis: & non erunt ultrà pereuntes fame in terra: neque portabūt amplius opprobriū gentiū. 30 Et scient, quia ego sū Dominꝰ Deus (s) eorū, & ipsi populus meꝰ. Domꝰ Israel, dicit Dñs Dñs, 31 (t) Oves meæ, et oves gregis mei estis: & ego Dominus Deus vester, dicit Dominus Dominus.

MS.A. (σ) ἔτι ἔσονται ἐν (τ) ποιήσει αὐτούς· (υ) τοῦ Ἰσραήλ, (φ) Καὶ ὑμεῖς πρόβατά (χ) τοῦ ποιμνίου

ΚΕΦ. λε΄.

1 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέγων, 2 Υἱὲ ἀνθρώπου, ἐπιστήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπ᾽ ὄρος Σηείρ, καὶ προφήτευσον (α) εἰς αὐτὸ, καὶ εἰπὸν αὐτῷ, 3 Τάδε (β) λέγει κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ ὄρος Σηείρ, καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ σὲ, καὶ δώσω σε 4 (γ) εἰς ἔρημον, καὶ ἐρημωθήσῃ, Καὶ (δ) ταῖς πόλεσί σου ἐρημίαν ποιήσω, καὶ σὺ ἔρημος ἔσῃ, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. 5 Ἀντὶ τοῦ γενέσθαι σε ἐχθρὰν (ε) αἰωνίαν, καὶ ἐνεκάθισας τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ δόλῳ, ἐν (ζ) χερσὶ ἐχθρῶν μαχαίρᾳ ἐν καιρῷ ἀδικίας, ἐπ᾽ 6 ἐσχάτων, Διὰ τοῦτο, Ζῶ ἐγὼ, λέγει κύριος κύριος, εἰ μὴν εἰς αἷμα ἥμαρτες, καὶ (η) αἷμα 7 διώξεταί σε. Καὶ δώσω (θ) ὄρος Σηείρ εἰς ἔρημον, καὶ ἠρημωμένον, καὶ ἀπολῶ ἀπ᾽ αὐτοῦ 8 ἀνθρώπους καὶ κτήνη, Καὶ ἐμπλήσω τῶν τραυματιῶν (ι) βουνούς σου καὶ τὰς φάραγγάς σου, καὶ ἐν πᾶσι τοῖς πεδίοις σου τετραυματισμένοι 9 μαχαίρᾳ πεσοῦνται ἐν σοί. (') Ἐρημίαν αἰώνιον θήσομαί σε, καὶ αἱ πόλεις σου οὐ μὴ κατοικηθῶσιν ἔτι, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγώ εἰμι 10 κύριος. (κ) Διὰ τὸ εἰπεῖν σε, Τὰ δύο ἔθνη, καὶ αἱ δύο χῶραι (λ) ἐμαὶ ἔσονται, καὶ κληρονομήσω αὐτὰς, καὶ (μ) κύριος ἐκεῖ ἐστι· 11 Διὰ τοῦτο, Ζῶ ἐγὼ, λέγει (ν) κύριος, καὶ ποιήσω σοι κατὰ τὴν ἔχθραν σου, (ξ) καὶ γνωσθήσομαί σοι 12 ἡνίκα (ο) ἂν κρινῶ σε, Καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. ἤκουσα τῆς φωνῆς τῶν βλασφημιῶν σου, ὅτι εἶπας, Τὰ ὄρη Ἰσραὴλ ἔρημα ἡμῖν 13 δέδονται εἰς (π) κατάβρωμα, Καὶ ἐμεγαλορρημόνησας ἐπ᾽ ἐμὲ τῷ στόματί σου, (ρ) ἐγὼ 14 ἤκουσα. Τάδε λέγει κύριος, Ἐν τῇ εὐφροσύνῃ πάσης τῆς γῆς ἔρημον (σ) ποιήσω σε. 15 Ἔρημον ἔσῃ ὄρος Σηείρ, καὶ πᾶσα ἡ Ἰδουμαία, (τ) καὶ ἐξαναλωθήσεται, καὶ γνώσῃ ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν.

CAP. XXXV.

1 Et factus est sermo Domini ad me, dicens; 2 Fili hominis, converte faciem tuam super montem Seir, & propheta ad eum, & dic ei; 3 Hæc dicit Dominꝰ Dominꝰ, Ecce ego ad te, mons Seir: & extendā manum meam super te, & dabo te in solitudinem, & desolaberis: 4 Et (a) urbibus tuis solitudinem faciā: & tu desertum eris, et scies, quia ego sum Dominꝰ: 5 Eò quòd fueris (b) tu inimica sempiterna, & insederis domui Israel fraudulenter in (c) manu inimicorum gladio in tempore (d) iniquitatis in extremis, 6 Propterea, Vivo ego, dicit Dominꝰ Dominus, quoniam in sanguinem peccâsti, & sanguis persequetur (e) te. 7 Et dabo montem Seir in desertū, et desolatū: et disperdā de eo homines, et (f) jumenta: 8 Et implebo vulneratis colles tuos, et valles tuas: et in omnibꝰ campis tuis vulnerati gladio cadent in te. 9 Solitudinē sempiternam ponam te: et civitates tuæ non habitabuntur ultrà: et scies, quia ego sum Dominus: 10 Eò quòd dixeris, Duæ gentes, et duæ regiones meæ erūt, et hæreditate possidebo eas: et Dominꝰ ibi est. 11 Propterea, Vivo ego, dicit Dominꝰ, et faciam tibi juxta inimicitiā (g) tuam: et notus efficiar tibi, cū judicavero te: 12 Et scies quia ego sum Dominus. Audivi vocē blasphemiarū tuarū, (h) quia dixisti; Montes Israel deserti nobis dati sunt in devorationē. 13 Et magnificè loquutus es super me ore (i) tuo: ego audivi. 14 Hæc dicit Dominus; In lætitia universæ terræ desertū (k) faciam te: 15 Desertus eris, mons Seir: et omnis Idumæa, et (l) consumentur: et scies, quia ego sum Dominus Deus eorum.

MS.A. (α) ἐπ᾽ αὐτὸ, (β) λέγει κύριος, Ἰδοὺ (γ) ἔρημον, (δ) ἐν ταῖς (ε) αἰώνιον, (ζ) καιρῷ ἐχθρῶν ἐν χειρὶ μαχαίρας ἐν καιρῷ (η) αἷμά σε διώξεται. (θ) τὸ ὄρος (ι) σου τοὺς βουνούς σου καὶ πάσας τὰς (') Καὶ ἐρημίαν (κ) Διότι εἶπας, Τὰ δύο (λ) ἐμαί εἰσιν, (μ) ὁ κύριος (ν) κύριος κύριος, καὶ ποιήσω ἐν σοὶ (ξ) καὶ κατὰ τὸν ζῆλόν σου ὃν ἐποίησας ἐκ τοῦ μεμισηκέναι σε ἐν αὐτοῖς, καὶ γνωσθήσομαί (ο) ἐὰν (π) κατάχεσιν, (ρ) καὶ ἐγὼ ἤκουσα, φησὶν κύριος. Τάδε λέγει (σ) ἔσῃ ὄρος (τ) ἐξολεθρευθήσεται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

28 ולא יהון עוד בזא לעממיא ומלכות ארעא לא ישיצנין ויתבון לרוחצן ולית דמניד :
29 ואקים להון נצבא לקימא ולא יהון עוד מטלטלי כפנא בארעא ולא יקבלון עוד
30 אתכנעות עממיא : וידעון ארי אנא יי אלההון מימרי בסעדהון ואנון עמי בית ישראל
31 אמר יי אלהים : ואתון עמי עם דאתקרי שמי עליהון בית ישראל אתון אנא אלהכון
אמר יי אלהים :

לה

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם קביל נבואה על טורא דשעיר
3 ותתנבי עלוהי : ותימר ליה כדנן אמר יי אלהים הא אנא שלח רוגזי עלך טורא
4 דשעיר ואריס מחת גבורתי עלך ואתננך לצדו ולאשתממו : קרויך חורבא אשוי ואת
5 לצדו תהי ותדע ארי אנא יי : חלף דהות לך דבבות עלם יתבבתא ית בני ישראל על
6 ידי קטולי חרבא בעדן תבריהון בעדן תושלימת חוביהון : בכן קים אנא אמר יי
אלהים ארי לקטול אעבדנך ודקטלין בחרבא ירדפונך אם לא דמא סניתון ואשדי
7 דמא ירדפונך : ואתן ית טורא דשעיר לצדו ולאשתממו ואשיצי מניה דעדי ודתאב :
8 ואמלי ית טורוהי קטילוהי רמתוהי וחילוהי וכל פצידוהי קטילי חרבא יתרמון בהון :
9 10 צדו עלם אתננך וקרויך לא יתיתבן ותדעון ארי אנא יי : חלף דאמרת ית תרין עממין
11 וית תרתין מדינן דילי אנון ואירתנין וקדם יי גלין מחשבת לבא : בכן קים אנא
אמר יי אלהים ואעביד כרוגזך וכחימתך דעבדתא מדסנית להון ואתגלי לאיטבא
12 להון כד אתפרע מנך : ותדע ארי אנא יי שמע ית כל ארגזותך דאמרת על טורי ארעא
13 דישראל למימר צדיאת לנא אתמסירו לאשתיצאה : ואתרברבתון עלי במלי פומכון
14 ואסגיתון עלי פתגמיכון קדמי שמיע : כדנן אמר יי אלהים כמחדי כל ארעא צדו
15 אעביד לך : כמא דחדיתא על אחסנת בית ישראל דצדיאת ארעהון כן אעביד לך
צדו תהי טורא דשעיר וכל אדום כולה וידעון ארי אנא יי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

28 Et non erunt ultrà in direptionem populis, & regna terræ non consument eos, 29 & habitabunt confidenter: & non erit qui commoveat eos. Et suscitabo eis plantationē ut permaneant, & non erunt ultra transmigrantes propter famem in terra, & non suscipient ultrà ignominiam populorum. 30 Et scient quia ego Dñs Deus eorum, in quorum auxiliū erit Verbum meum; & ipsi erunt populꝰ meus domꝰ Israel, ait Dñs Deꝰ. 31 Vos autem estis populꝰ meꝰ, populꝰ sup quem invocatū est nomen meū: domꝰ Israel estis vos, & ego Dñs vester, ait Dñs Deꝰ.

CAP. XXXV.

1 Et factum est verbum prophetiæ à facie Dñi mecum, dicens: 2 Fili hominis, suscipe prophetiam super montem Seir, & vaticinare super eum. 3 Et dices ei, Hæc dicit Dñs Deus, Ecce ego mitto furorem meum super te mons Seir, & levabo plagam potentiæ meæ super te, & dabo te in desolationem & stuporem. 4 Civitates tuas desertas ponam, & tu in desolationem eris; & scies quia ego Dñs. 5 Pro eo quòd fuit tibi inimicitia æterna, & tradidisti filios Israel in manꝰ occidentium gladio in tempore interitꝰ eorum, in tempore retributionis peccatorum eorum. 6 Propterea vivo ego, dicit Dñs Deus, quia in occisionem faciam te; & qui occidunt gladio persequentur te: & ni [ut] sanguinem odisti, sic effundentes sanguinem persequentur te. 7 Et dabo montem Seir in desolationem & in stuporem; & consummabo ex eo transeuntem, & redeuntem. 8 Et implebo montes ejus occisis ipsiꝰ: & in collibꝰ ejus, & in vallibꝰ, & in cunctis rivis ejꝰ interfecti gladio projicientur. 9 Te in æternam vastitatem redigam, & civitates tuæ non habitabuntur; & scietis quia ego Dñs. 10 Pro eo quòd dixisti. Duo populi, & duæ provinciæ meæ erunt, & possidebo eos; & coram Dño manifestæ sunt cogitationes cordis. 11 Propterea vivo ego, dicit Dñs Deus, quia faciam juxta irā tuam, & juxta indignationem tuam quam fecisti, pro eo quòd odisti eos, & revelabor, ut benefaciam eis cùm ultionem sumam ex te. 12 Et scies quia ego Dñs *audiens omnem irritationem tuā*: qui dixisti de montibꝰ terræ Israel, dicendo: Deserta est; nobis traditi sunt consumendi. 13 Et magnificati estis super me verbis oris vestri, & multiplicâstis super me sermones vestros qui auditi sunt coram me. 14 Hæc dicit Dñs Deus, Cùm lætata fuerit universa terra, desolationem faciam in te. 15 Sicut lætus es propter hæreditatem domꝰ Israel, quia deserta est terra eorum, sic faciam tibi: vastꝰ eris mons Seir, & omnis Idumæa universa: & scient quia ego Dñs.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܬܘܒ ܒܙܬܐ ܠܥܡܡܐ. ܘܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܠܐ ܢܐܟܠܢܘܢ. ܘܢܬܒܘܢ ܠܬܘܟܠܢ. ܘܠܐ
ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܡܙܝܥܢܐ. * ܘܐܩܝܡ ܠܗܘܢ ܢܨܒܬܐ ܕܫܠܡܐ. ܘܠܐ ܢܫܬܢܩܘܢ ܬܘܒ ܒܟܦܢܐ
ܒܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܢܩܒܠܘܢ ܚܣܕܐ ܕܥܡܡܐ. * ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܥܡܝ
ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܐܢܬܘܢ ܕܝܢ ܥܢܝ ܥܢܐ ܕܡܪܥܝܬܝ. ܒܢܝܢܫܐ
ܐܢܬܘܢ. ܘܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܠܗ *
* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܠܛܘܪܐ ܕܣܥܝܪ. ܘܐܬܢܒܝ
ܥܠܘܗܝ. ܘܐܡܪ ܠܗ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ ܛܘܪܐ ܕܣܥܝܪ. ܘܐܪܝܡ ܐܝܕܝ
ܥܠܝܟ. ܘܐܥܒܕܝܟ ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܫܡܡܘܬܐ. * ܘܩܘܪܝܟܝ ܐܥܒܕ ܠܚܘܪܒܐ. ܘܐܢܬ ܬܗܘܐ ܠܚܘܪܒܐ
ܘܬܕܥ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܚܠܦ ܕܗܘܬ ܠܟ ܒܥܠܕܒܒܘܬܐ ܠܥܠܡ. ܘܐܫܠܡܬ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ
ܠܐܝܕܐ ܕܣܝܦܐ ܒܙܒܢܐ ܕܬܒܪܗܘܢ. ܘܒܙܒܢܐ ܕܥܘܠܐ ܕܚܪܬܗܘܢ. * ܡܛܠܗܢܐ ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܡܪܘܬܐ. ܕܠܕܡܐ ܐܥܒܕܟ. ܘܕܡܐ ܢܪܕܦܟ. ܕܡܐ ܕܣܢܝܬ. ܗܘ ܕܡܐ ܢܪܕܦܟ. * ܘܐܥܒܕܝܘܗܝ
ܠܛܘܪܐ ܕܣܥܝܪ. ܠܚܘܪܒܐ ܘܠܫܡܡܘܬܐ. ܘܐܘܒܕ ܡܢܗ ܕܥܒܪ ܘܕܗܦܟ. * ܘܐܡܠܐ ܛܘܪܘܗܝ ܩܛ
ܝܠܘܗܝ. ܒܫܘܥܝܟ ܘܒܪܡܬܟ ܘܒܢܚܠܝܟ. ܩܛܝܠܐ ܕܣܝܦܐ ܢܦܠܘܢ ܒܗܘܢ. * ܘܐܥܒܕܟ
ܚܘܪܒܐ ܕܥܠܡ. ܘܩܘܪܝܟܝ ܠܐ ܢܬܝܬܒܢ. ܘܬܕܥ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܚܠܦ ܕܐܡܪܬ ܕܬܪܝܢ ܥܡܡܝܢ
ܘܬܪܬܝܢ ܡܠܟܘܬܐ. ܕܝܠܝ ܐܢܝܢ: ܘܐܢܐ ܐܪܬ ܐܢܝܢ. ܘܡܪܝܐ ܬܡܢ ܗܘܐ. * ܡܛܠܗܢܐ ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܕܐܥܒܕ ܠܟ ܐܝܟ ܪܘܓܙܟ. ܘܐܝܟ ܥܠܕܒܒܘܬܟ ܕܥܒܕܬ. ܘܣܢܝܬ ܐܢܘܢ
ܘܐܬܝܕܥ ܒܗܘܢ. ܡܐ ܕܕܢܬ ܐܢܐ ܠܟ. * ܘܬܕܥ ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܫܡܥܬ ܟܠܗܘܢ ܓܘܕܦܝܟ. ܕܐܡܪܬ ܥܠ
ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܕܚܪܒܘ ܐܢܘܢ: ܘܡܐܟܘܠܬܐ ܐܝܬܝܗܘܢ ܠܢ. * ܘܐܘܪܒܬܘܢ ܥܠܝ ܦܘܡܟܘܢ
ܘܐܣܓܝܬܘܢ ܥܠܝ ܡܠܝܟܘܢ. ܘܐܢܐ ܫܡܥܬ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܠܛܘܪܐ ܕܣܥܝܪ. ܕܒܚܕܘܬܐ
ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܠܚܘܪܒܐ ܐܥܒܕܟ. * ܚܠܦ ܕܚܕܝܬ ܥܠ ܝܪܬܘܬܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܕܐܬܚܪܒܬ.
ܗܟܢܐ ܐܥܒܕ ܠܟ. ܠܚܘܪܒܐ ܬܗܘܐ ܛܘܪܐ ܕܣܥܝܪ. ܘܐܕܘܡ ܟܠܗ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.

Non erunt ampliùs in prædâ populis, neq; de- 28
vorabunt eos feræ ſylveſtres; ſed habitabunt
ſecurè, nec erit eis quod moleſtet. Suſcitabo eis 29
plantam pacis, & non cruciabuntur ampliùs
fame in terra, neq; ferent ampliùs opprobriũ
gentium: Sciéntque me eſſe Dñm Deum ipſo- 30
rum, & ipſos eſſe populum meũ Iſraeliticum,
ait Dñs dominorum. Vos autem oves meæ, 31
oves gregis mei, homines eſtis, ego verò Do-
minus Deus veſter, ait Dominus dominorum.

CAP. XXXV.

Rurſus fuit ad me ſermo Dñi, dicendo; Fili 1
hominis, diſpone faciem tuã verſùs montem 2
Seir, & vaticinare contra eum, & dic illi; Sic 3
ait Dñs dominorum, Ecce me contra te mons
Seir, & extollã ſuper te manũ meã, redigámq;
te in vaſtitatem & ſtuporem: Urbes tuas redi- 4
gam in ſolitudinem, & tu eris vaſtitati: & ex-
perieris me eſſe Dñm. Eò quòd inimicitiam 5
habueris perpetuam, & tradideris filios Iſra-
elis in manũ gladii tempore infortunii eorum,
& tempore iniquitatis eorum extremæ: Ideo 6
per vitã meam, dicit Dñs dominorũ, ſanguini
exponã te, & ſanguis perſequetur te: ſanguis
quem odio proſecutus es, idem ſanguis te per-
ſequetur. Nam redigã montem Seir in excidi- 7
um & ſtuporem, perdam ex eo euntem ac red-
euntem, Et implebo montes ejus confoſſis 8
ipſius: in rupibꝰ, collibꝰ, & vallibꝰ tuis cadent
interfecti gladio. Reddam te deſolatũ in æter- 9
num, & urbes tuæ non habitabuntur; et expe-
rieris me eſſe Dñm. Quia dixiſti, Duo *hi* po- 10
puli et duo regna, mea ſunt, et ego poſſidebo
ea; quanvis Dñs illic adeſſet: Iccirco per vi- 11
tam meã, ait Dñs dominorũ, faciã tibi ſecun-
dùm irã tuã et ſecundùm inimicitiã tuã quam
exercuiſti, et *quâ* illos odiſti; ut conſpicuus fiã
per eos, quum judicavero te, Et cognoſcas me 12
Dñm audiviſſe omnes blaſphemias tuas quas
protuliſti de montibꝰ Iſraelis, eos *videlicet* de-
ſolatos eſſe, cibũ noſtrũ futuros. Protendiſtis 13
contra me os veſtrũ, et multiplicâſtis contra
me verba veſtra, et ego audivi. Sic dicit Dñs 14
dominorũ ad montẽ Seir ſitũ in delitiis totius
terræ, In vaſtitatem redigam te. Quia gaviſus 15
es quòd poſſeſſio Iſraelitarum deſolata ſit, eo-
dem modo faciam tibi: in excidium ibis O
mons Seir et Idumæa tota; ut cognoſcatur
me eſſe Dominum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولا يصيرون ايضا نهبا في الامم * ووحوش الارض لا تاكلهم ايضا * ويسكنون في طمانينة * ولا
يكون من يروعهم * واقيم لهم غرس السلامة * ولا يصيرون ايضا هالكين بالجوع في
الارض * ولا يتحملون ايضا تعيير الامم * ويعلمون اني انا الرب الههم * وهم شعبي بيت اسرائيل
يقول الرب الرب * وانتم خرافي وخراف قطيعي انتم * وانا الرب الهكم * يقول الرب الرب *

* الفصل الخامس والثلثون *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان رد وجهك على جبل ساعير وتنبا عليه وقل له
* هكذا يقول الرب ها انا عليك يا جبل ساعير * وامد يدي عليك * واعطيك للخراب وتخرب
* وفي مدنك اصنع الخراب * وانت تصير قفرا * وتعلم اني انا الرب * عوض ان تصير عداوة
ابدية * وجلست في بيت اسرائيل بالغش في زمن الاعداء بيد السيف * وفي وقت الظلم في
الاواخر * لاجل هذا حي انا يقول الرب الرب * بالحقيقة اخطيت بالدم * والدم يطردك *
* واعطي جبل ساعير للقفر وخرب * واهلك منه الناس والبهايم * واملا تلالك من جرحاك
وجميع اوديتك * وفي كل بقاعك يسقط المجروحون بالسيف * واصنعك خربة ابدية * ومدنك
لا تسكن بعد * وتعلم اني انا الرب * من اجل انك قلت * ان الامتين والبلدين هما
لي وارثهما * والرب هو هناك * لاجل هذا حي انا يقول الرب الرب * واصنع فيك كعداوتك
وكغيرتك التي صنعتها من بغضتك فيهم * واعرفك حينيذ اني ادينك * وتعلم اني انا الرب
سمعت صوت تجديفاتك * لانك قلت جبال اسرائيل خراب * اعطيت لنا للضبط * وعظمت علي
القول بفمك * وانا سمعت قال الرب * هكذا يقول الرب * في سرور كل الارض تصير خرابا
جبل ساعير * وكل ادوم مستاصل * وتعلم اني انا الرب الههم

Non erunt ampliùs direptioni inter gentes, 28
& beſtiæ terræ poſthac non vexabunt eos;
ſed habitabunt ſecurè, nec erit qui terreat
eos. Et ſuſcitabo eis plantationem pacis, 29
& non erunt poſthac pereuntes fame ſu-
per terram, neque ferent poſthac oppro-
brium gentium: Et ſcient me eſſe Do- 30
minum Deum ſuum, ſe autem eſſe popu-
lum meum domum Iſraelis, dicit Dominus
Dominus: Vos agnos meos & agnos 31
gregis mei eſſe, me autem Dominũ Deum
veſtrum, dicit Dominus Dominus.

CAP. XXXV.

Fuit adhuc ſermo Domini ad me, di- 1
cens; O fili hominis, verte faciem tuam 2
verſùs montem Seir, propheta de illo, &
dic ei; Sic ait Dominus, Ecce me ad- 3
verſùm te O mons Seir, & extendam ma-
num meam ſuper te, dabóque te vaſtatio-
ni, & vaſtaberis. In urbibus quoque tuis 4
faciam vaſtitatem, & tu fies ſolitudo:
ſciéſque me eſſe Dominum, Eò quòd fue- 5
ris inimicitia ſempiterna, & ſederis in
domo Iſraelis cum dolo in tempore inimi-
corum in manu gladii, & in tempore ini-
quitatis in extremis: Idcircò, Vivo ego, 6
dicit Dominus Dominus, ſanguine quidem
peccâſti, & ſanguis te perſequetur. Et 7
redigam montem Seir in ſolitudinem, &
vaſtabitur: & perdam ex eo homines at-
que jumenta: Implebo colles tuos vul- 8
neratis, omnéſque valles tuas: & in o-
mnibus campis tuis cadent vulnerati gla-
dio: Redigam te in ruinam ſempiternã, 9
& urbes tuæ non habitabuntur ampliùs:
ſciéſque me eſſe Dominum. Quia dixi- 10
ſti; Duo ſanè populi, duæque regiones iſtæ
meæ ſunt, & poſſidebo eas; quum Domi-
nus illic adſit: Ideò, Vivo ego, dicit Do- 11
minus Dominus; & agam tecum ſe-
cundùm inimicitiam tuam & ſecun-
dum æmulationem tuam quam feciſti ex
odio tuo erga eos, & notum faciam tunc
tibi quòd ego judicabo te: Et cogno- 12
ſces me eſſe Dominum. Audivi vocẽ blaſ-
phemiarum tuarum: dixiſti enim, Montes
Iſraelis vaſtati ſunt, ceſſerunt nobis in ac-
quiſitionem: Et magnificâſti contra me 13
ſermonem ore tuo, & ego audivi, dicit
Dominus. Ita dicit Dominus, Cum ex- 14
ultatione totius terræ fies ruina O mons
Seir, Et tota Idumæa eradicabitur: & 15
ſcies me eſſe Dominum Deum illorum.

יחזקאל : לו

CAP. XXXVI. לו

Montes ,dices & , Iſrael montes *ad* propheta , hominis fili tu Et
1 וְאַתָּה בֶן־אָדָם הִנָּבֵא אֶל־הָרֵי יִשְׂרָאֵל וְאָמַרְתָּ הָרֵי
Quia ,Deus Dominus dixit Sic .Domini verbum audite Iſrael
2 יִשְׂרָאֵל שִׁמְעוּ דְּבַר־יְהוָה : כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה יַעַן
hæreditatem in *ſeculi* excelſa & ; Euge vos ſuper inimicus dixit
אָמַר הָאוֹיֵב עֲלֵיכֶם הֶאָח וּבָמוֹת עוֹלָם לְמוֹרָשָׁה
Dominus dixit Sic , *dices* & , vaticinare Propterea .nobis *fuit*
3 הָיְתָה לָּנוּ : לָכֵן הִנָּבֵא וְאָמַרְתָּ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי
vos exiſtendum ad ,undique vos *abſorbere & ,deſolare propter* Pro : Deus
יְהוִה יַעַן בְּיַעַן שַׁמּוֹת וְשָׁאֹף אֶתְכֶם מִסָּבִיב לִהְיוֹתְכֶם
, linguæ labrum ſuper aſcendiſtis & ,*gentium reſiduo hæreditatem*
מוֹרָשָׁה לִשְׁאֵרִית הַגּוֹיִם וַתֵּעָלוּ עַל־שְׂפַת לָשׁוֹן
verbum audite , Iſrael montes Propterea .populi oblocutionē &
4 וְדִבַּת־עָם : לָכֵן הָרֵי יִשְׂרָאֵל שִׁמְעוּ דְּבַר־
, collibus & , montibus Deus Dominus dixit Sic : Dei Domini
אֲדֹנָי יְהוִה כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה לֶהָרִים וְלַגְּבָעוֹת
, derelictis urbibus & , deſolatis deſertis ,vallibus & , torrentibus
לָאֲפִיקִים וְלַגֵּאָיוֹת לֶחֳרָבוֹת הַשֹּׁמְמוֹת וְלֶעָרִים הַנֶּעֱזָבוֹת
gentium reſiduo ſubſannationem in & , direptionem in fuerunt quæ
אֲשֶׁר הָיוּ לְבַז וּלְלַעַג לִשְׁאֵרִית הַגּוֹיִם
igne in *non Si* : Deus Dominus dixit ſic Propterea .undique quæ
5 אֲשֶׁר מִסָּבִיב : לָכֵן כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה אִם־לֹא בְּאֵשׁ
; totam Edom ſuper & , *gentium reſiduum* ſuper ſum locutus mei zeli
קִנְאָתִי דִבַּרְתִּי עַל־שְׁאֵרִית הַגּוֹיִם וְעַל־אֱדוֹם כֻּלָּא
omnis lætitia *in* hæreditatem in ſibi meam terram *dederunt* quæ
אֲשֶׁר נָתְנוּ־אֶת־אַרְצִי לָהֶם לְמוֹרָשָׁה בְּשִׂמְחַת כָּל־
Idcircò .direptionem in *ejus expulſionem propter* ,animi contemptu *in* ,cordis
6 לֵבָב בִּשְׁאָט נֶפֶשׁ לְמַעַן מִגְרָשָׁהּ לָבַז : לָכֵן
, collibus & , montibus *dices* & , Iſrael humum ſuper vaticinare
הִנָּבֵא עַל־אַדְמַת יִשְׂרָאֵל וְאָמַרְתָּ לֶהָרִים וְלַגְּבָעוֹת
,meo zelo in *ego* Ecce,Deus Dominus dixit Sic ,vallibus & ,torrentibus
לָאֲפִיקִים וְלַגֵּאָיוֹת כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הִנְנִי בְקִנְאָתִי
.portaveritis gentium ignominiam quòd eò ,ſum locutus meo furore in &
וּבַחֲמָתִי דִּבַּרְתִּי יַעַן כְּלִמַּת גּוֹיִם נְשָׂאתֶם :
non ſi : meam manum levavi Ego , Deus Dominus dixit ſic Idcircò
7 לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה אֲנִי נָשָׂאתִי אֶת־יָדִי אִם־לֹא
vos Et .portaverint ſuã ignominiam ,*ipſæ* undique vobis quæ gentes
8 הַגּוֹיִם אֲשֶׁר לָכֶם מִסָּבִיב הֵמָּה כְּלִמָּתָם יִשָּׂאוּ : וְאַתֶּם
afferetis veſtrum fructum & , dabitis *veſtram frondem* Iſrael montes
הָרֵי יִשְׂרָאֵל עַנְפְּכֶם תִּתֵּנוּ וּפֶרְיְכֶם תִּשְׂאוּ
Quia .*veniendum ad* appropinquaverunt quoniam : Iſrael meo populo
9 לְעַמִּי יִשְׂרָאֵל כִּי קֵרְבוּ לָבוֹא : כִּי
.feremini & , colemini & , vos ad convertar & , vos ad *ego* ecce
הִנְנִי אֲלֵיכֶם וּפָנִיתִי אֲלֵיכֶם וְנֶעֱבַדְתֶּם וְנִזְרַעְתֶּם :
:totam Iſrael domum omnem,*hominem* vos ſuper faciam multiplicare Et
10 וְהִרְבֵּיתִי עֲלֵיכֶם אָדָם כָּל־בֵּית יִשְׂרָאֵל כֻּלֹּה
faciam multiplicare Et.ædificabuntur deſerta & ,civitates habitabuntur &
11 וְנֹשְׁבוּ הֶעָרִים וְהֶחֳרָבוֹת תִּבָּנֶינָה : וְהִרְבֵּיתִי
: creſcent & ,multiplicabuntur & , *animal &* , *hominem* vos ſuper
עֲלֵיכֶם אָדָם וּבְהֵמָה וְרָבוּ וּפָרוּ
faciam meliora & ,veſtras antiquitates ſecundùm vos faciam habitare &
וְהוֹשַׁבְתִּי אֶתְכֶם כְּקַדְמוֹתֵיכֶם וְהֵטִבֹתִי
faciam venire Et .Dominus *ego* quòd ſcietis & , veſtra priora quàm
12 מֵרִאשֹׁתֵיכֶם וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה : וְהוֹלַכְתִּי
eris & ,te poſſidebunt & , Iſrael meum populum , *hominem* vos ſuper
עֲלֵיכֶם אָדָם אֶת־עַמִּי יִשְׂרָאֵל וִירֵשׁוּךָ וְהָיִיתָ
.eos orbare ultrà addes non & ; hæreditatem in eis
לָהֶם לְנַחֲלָה וְלֹא־תוֹסִף עוֹד לְשַׁכְּלָם :

Verſio VULG. LAT.

CAP. XXXVI.

1 TU autem, fili hominis, propheta ſuper montes Iſrael, & dices ; Montes Iſrael, audite verbũ Domini : 2 Hæc dicit Dominus Deus ; Eò quòd dixerit inimicus de vobis ; Euge, altitudines ſempiternæ in hæreditatem datæ ſunt nobis : 3 Propterea vaticinare, & dic ; Hæc dicit Dominus Deus ; Pro eo quòd deſolati eſtis, & conculcati per circuitum, & facti in hæreditatem reliquis Gentibus, & aſcendiſtis ſuper labium linguæ, & opprobrium populi : 4 Propterea, montes Iſrael, audite verbum Domini Dei : Hæc dicit Dominus Deus montibus, & collibus, torrentibus, vallibúſque, & deſertis, parietinis, & urbibus derelictis, quæ depopulatæ ſunt, & ſubſannatæ à reliquis Gentibus per circuitum. 5 Propterea hæc dicit Dominus Deus ; Quoniam in igne zeli mei locut⁹ ſum de reliquis Gentibus, & de Idumæa univerſa, quæ dederunt terram meam ſibi in hæreditatem cum gaudio, & toto corde & ex animo : & ejecerunt eam ut vaſtarent : 6 Idcircò vaticinare ſuper humum Iſrael, & dices montibus & collibus, jugis & vallibus ; Hæc dicit Dominus Deus ; Ecce ego in zelo meo, & in furore meo locutus ſum, eò quòd confuſionem Gentium ſuſtinueritis. 7 Idcircò hæc dicit Dominus Deus ; Ego levavi manum meam, ut Gentes, quæ in circuitu veſtro ſunt, ipſæ confuſionem 8 ſuam portent. Vos autem, montes Iſrael, ramos veſtros germinetis, & fructum veſtrum afferatis populo meo Iſrael : propè enim 9 eſt ut veniat : Quia ecce ego ad vos, & convertar ad vos, & arabimini, & accipietis ſementem. 10 Et multiplicabo in vobis homines, omnémque domum Iſrael : & habitabuntur civitates, & ruinoſa 11 inſtaurabuntur. Et replebo vos hominibus, & jumentis : & multiplicabuntur, & creſcent : & habitare vos faciam ſicut à principio, boniſque donabo majoribus, quàm habuiſtis ab initio : & ſcietis quia ego Dominus. 12 Et adducam ſuper vos homines, populum meum Iſrael, & hæreditate poſſidebunt te : & eris eis in hæreditatem, & non addes ultrà ut abſque eis ſis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. λς΄.

1 ΚΑὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου προφήτευσον ἐπὶ τὰ ὄρη Ἰσραὴλ, καὶ εἰπὸν τοῖς ὄρεσι τοῦ Ἰσραὴλ, Ἀκούσατε λόγον κυρίου. 2 Τάδε λέγει κύριος κύριος, Ἀνθ' (α) οὗ εἶπεν ἐφ' ὑμᾶς ὁ ἐχθρὸς, Εὖγε, ἔρημα αἰώνια εἰς κατάσχεσιν 3 ἡμῖν ἐγενήθη· Διατοῦτο προφήτευσον, καὶ εἰπὸν, Τάδε λέγει κύριος κύριος (β), Ἀντὶ τοῦ ἀτιμασθῆναι ὑμᾶς, καὶ μισηθῆναι ὑμᾶς (γ) ὑπὸ τῶν κύκλῳ ὑμῶν, τοῦ εἶναι (δ) ὑμᾶς εἰς κατάσχεσιν τοῖς καταλοίποις ἔθνεσι, καὶ (ε) ἀνέβητε λάλημα γλώσσῃ, καὶ εἰς 4 ὀνείδισμα ἔθνεσι, Διατοῦτο ὄρη Ἰσραὴλ ἀκούσατε λόγον κυρίου· τάδε λέγει κύριος τοῖς ὄρεσι, καὶ τοῖς βουνοῖς, καὶ τοῖς χειμάρροις, καὶ ταῖς φάραγξι, (ζ) καὶ τοῖς ἐξηρημωμένοις καὶ ἠφανισμένοις, καὶ ταῖς πόλεσι ταῖς (η) ἐγκαταλελειμμέναις, καὶ ἐγένοντο εἰς προνομὴν, καὶ εἰς καταπάτημα τοῖς καταλειφθεῖσιν ἔθνεσιν (ˮ) περικύκλῳ, 5 Διατοῦτο τάδε (θ) λέγει κύριος κύριος, Εἰ μὴν ἐν πυρὶ θυμοῦ μου ἐλάλησα ἐπὶ τὰ λοιπὰ ἔθνη, καὶ ἐπὶ τὴν Ἰδουμαίαν πᾶσαν, ὅτι ἔδωκαν (ι) τὴν γῆν μου ἑαυτοῖς εἰς κατάσχεσιν μετ' εὐφροσύνης, ἀτιμάσαντες ψυχὰς, τοῦ ἀφανίσαι ἐν προνομῇ· 6 Διατοῦτο προφήτευσον ἐπὶ τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ εἰπὸν τοῖς ὄρεσι, καὶ τοῖς βουνοῖς, καὶ ταῖς φάραγξι, καὶ ταῖς νάπαις, Τάδε λέγει (κ) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐν τῷ ζήλῳ μου, καὶ ἐν τῷ θυμῷ μου ἐλάλησα, ἀντὶ τοῦ ὀνειδισμοὺς ἐθνῶν ἐνέγκαι 7 ὑμᾶς· Διατοῦτο (λ) ἐγὼ ἀρῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ τὰ ἔθνη τὰ περικύκλῳ ὑμῶν· οὗτοι τὴν 8 ἀτιμίαν αὐτῶν λήψονται. Ὑμῶν δὲ ὄρη Ἰσραὴλ τὴν σταφυλὴν καὶ τὸν καρπὸν (μ) ὑμῶν καταφάγεται ὁ λαός μου, ὅτι ἐλπίζουσι τοῦ 9 ἐλθεῖν. (ν) Ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐφ' ὑμᾶς, καὶ ἐπιβλέψω ἐφ' ὑμᾶς, καὶ κατεργασθήσεσθε, (ξ) 10 καὶ σπαρήσεσθε, Καὶ πληθυνῶ ἐφ' ὑμᾶς ἀνθρώπους, πᾶν οἶκον Ἰσραὴλ εἰς τέλος, καὶ κατοικηθήσονται αἱ (ο) πόλεις, καὶ (π) ἡ ἠρημωμένη 11 οἰκοδομηθήσεται. Καὶ πληθυνῶ ἐφ' ὑμᾶς ἀνθρώπους, καὶ κτήνη, καὶ κατοικιῶ ὑμᾶς ὡς τὸ ἐν ἀρχῇ ὑμῶν, καὶ εὖ ποιήσω ὑμᾶς, ὥσπερ (ρ) τὰ ἔμπροσθεν ὑμῶν, 12 καὶ γνώσεσθε ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. Καὶ (σ) γεννήσω ἐφ' ὑμᾶς ἀνθρώπους τὸν λαόν μου Ἰσραὴλ, καὶ κληρονομήσουσιν ὑμᾶς, καὶ ἔσεσθε αὐτοῖς εἰς κατάσχεσιν· καὶ οὐ μὴ (τ) προστεθῆτε ἔτι ἀτεκνωθῆναι ἀπ' αὐτῶν.

CAP. XXXVI.

1 ET tu, fili hominis, propheta ſuper montes Iſrael, & dic montibus Iſrael ; Audite verbum Domini: 2 Hæc dicit Dominus Dominus ; Eò quòd dixit ſuper vos inimicus ; Euge, (a) ſolitudines ſempiternæ in poſſeſſionem nobis factæ ſunt ; 3 Propterea vaticinare, & dic ; Hæc dicit Domin' Dominus ; (b) Pro eo quòd deſpecti eſtis vos, & odio habiti ab his qui in circuitu veſtro ſunt, ut eſſetis in poſſeſſionem reliquis gentibus, et (c) aſcendiſtis loquela linguæ, & in opprobrium gentibus ; 4 Propterea, montes Iſrael, audite verbum Domini : Hæc dicit Dominus montibus, & collibus, & torrentibus, & vallibus, & deſolatis, & diſſipatis, & urbibus derelictis, (d) & factæ ſunt in direptionem, & in conculcationem reliquis gentibus per circuitum. 5 Propterea hæc dicit Domin' Dominus ; Quia in igne furoris mei loquutus ſum ſuper reliquas gentes, et ſuper Idumæam univerſam : quia dederunt terram meam ſibi in poſſeſſionem cum gaudio, (e) deſpicientes animas, ut delerent eas in vaſtatione : 6 Idcircò vaticinare ſuper terram Iſrael : & dic montibus, & collibus, & vallibus, & locis nemoroſis ; Hæc dicit Dominus ; Ecce ego in zelo meo, & in furore meo loquutus ſum, eò quòd opprobria gentium portaveritis. 7 (f) Idcircò ego levabo manum meam ſuper gentes quæ in circuitu veſtro : ipſæ ignominiam ſuam portabunt. 8 Veſtram autem, montes Iſrael, uvã, et fructum veſtrum comedet populus meus : quia ſperant venire. 9 Quoniam ecce ego ad vos, & reſpiciam ad vos, & colemini, et accipietis ſementem, 10 Et multiplicabo in vobis homines, omnem domum Iſrael in finem : et habitabuntur civitates : et deſerta ædificabitur. 11 Et multiplicabo in vobis homines, et (g) jumenta : et habitare vos faciam, ſicut in principio veſtro, et benè faciam vobis, ſicut anteriora veſtra : et ſcietis, quia ego ſum Dominus. 12 Et generabo ſuper vos homines, populum meum Iſrael : et hæreditate poſſidebunt vos : et eritis eis in poſſeſſionem : et non addetis ultrà, ut abſque liberis vos faciant.

MS.A. (α) ὧν εἶπεν ὁ *ἐχθρὸς ἐφ' ὑμᾶς, Εὖγε, εὖγε, (β) ὁ θεὸς, (γ) ἀπὸ τῶν ἐθνῶν τῶν (δ) ἡμᾶς (ε) ἐγένεσθε λάλημα γλώσσης, (ζ) καὶ ταῖς νάπαις, ταῖς ἐρημωμέναις καὶ ἠφανισμέναις, (η) καταλελειμμέναις, αἳ ἐγένοντο εἰς προνομὴν, καὶ καταπάτημα (ˮ) τοῖς περικύκλῳ, (θ) λέγει κύριος, Εἰ μὴν (ι) ἑαυτοῖς τὴν γῆν μου εἰς (κ) ἀδωναῒ κύριος, (λ) ἰδοὺ ἐγὼ αἴρω (μ) φάγεται ὁ (ν) Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπιβλέψω (ξ) Καὶ πληθυνῶ (ο) πόλεις ὑμῶν, καὶ (π) ἠρημωμέναι, οἰκοδομηθήσονται. Καὶ (ρ) τὸ (σ) δώσω ἐφ' (τ) προστεθήσεσθε

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

לו

1 ואת בר אדם אתנבי על טורי ישראל ותימר טורי ישראל קבילו פתגם יי : כדנן אמר
2 יי אלהים חלף די אמר סנאה עליכון חדוא ובמת עלם לירותא הות לנא : בכן אתנבי
3 ותימר כדנן אמר יי אלהים חלף די אתרברבו וחלף דחשיבו לאחרבא ולאצדאה
יתכון מסחור סחור למהויכון ירותא לשארא דעממיא ואתאמרתון על שפת לישן
4 ורננת עם : בכן טורי ישראל קבילו פתגמא דיי אלהים כדנן אמר יי אלהים לטוריא
ולרמתא לפצידיא ולחיליא ולחרבתא צדיתא ולקרויא שביקתא דהואה לחוך וללעב
5 לשארא דעממיא דמסחור סחור : בכן כדנן אמר יי אלהים אם לא באשת פורענותי
גזרית במימרי על שארא דעממיא ועל אדומאי כולהון דיהבו ית ארעא בית שכנתי
6 להון לירותא בחדות כל לב בצפוח נפש בדיל לתרכותה למבזה : בכן אתנבי על
ארעא דישראל ותימר לטוריא ולרמתא לפצידיא ולחיליא כדנן אמר יי אלהים הא
7 אנא ברוגזי ובחימתי גזרית במימרי חלף דאתכנעות עממיא קבלתון : בכן כדנן אמר
יי אלהים אנא קימית במימרי אם לא עממיא די בזו יתכון מסחור סחור אנון
8 אתכנעותהון יקבלון : ואתון טורי ישראל אבבון תצלחון ופיריכון תטענון לעמי
9 ישראל ארי קריב יום פורקני למיתי : ארי הא אנא מתגלי עליכון ואתפני במימרי
10 לאיטבא לכון ותתפלחון ותזדרעון : ואסגי עליכון אנשא כל בית ישראל כולהון
11 ויתיתבן קרויא וחרבתא תתבנין : ואסגי עליכון אנשא ובעירא ויסגון ויפשון ואתיב
12 יתכון כדמן קדמין ואוטיב לכון מדמן אולא ותדעון ארי אנא יי : ואסגי עליכון אנשא
ית עמי ישראל ויחסנונך ותהי להון לאחסנא ולא תוסיף עוד לתכלותהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. XXXVI.

1 ET tu fili hominis vaticinare ſuper montes Iſrael, & dices : Montes Iſrael ſuſcipite verbum Dñi. 2 Hæc dicit Dñs Deus, Pro eo quòd dixit inimic⁹ ſuper vos, Euge, & excelſa ſeculi in hæreditatem erunt nobis. 3 Propterea vaticinare, & dices : Hæc dicit Dñs Deus, Pro eo quòd magnificati ſunt, & pro eo quòd cogitaverunt evertere & vaſtare vos per circuitum, ut eſſetis hæreditas reliquiis populorum, & carpti eſtis labio linguæ & detractione populi. 4 Propterea montes Iſrael ſuſcipite verbum Dñi : Hæc dicit Dñs Deus montibus & collibus, torrentibus & convallib⁹ & deſertis deſolatis, & urbibus relictis quæ fuerunt in deriſum, & in ſubſannationem reliquis populis qui erant per circuitum. 5 Propterea hæc dicit Dñs Deus : Niſi in igne ultionis meæ decreverim in verbo meo ſuper reliquos populos ; & ſuper Idumæos omnes, qui poſuerunt terram dom⁹ majeſtatis meæ in hæreditatem ſibi, cum gaudio ex toto corde, & inſultatione animi, ut ejicerent eam, & ut vaſtarent eam. 6 Propterea vaticinare ſuper terram Iſrael, & dices montibus & collibus, & rivis & convallibus : Hæc dicit Dñs Deus, Ecce ego in furore meo, & in indignatione mea decrevi in verbo meo, eò quòd confuſionem populorum ſuſtinuiſtis. 7 Propterea hæc dicit Dñs Deus : Ecce ego juravi in verbo meo, niſi populi qui vaſtaverunt vos per circuitum, ipſi confuſionem ſuam ſuſcipient. 8 Vos autem montes Iſrael germine veſtro proficietis, & fructum veſtrum portabitis populo meo Iſrael : quia propè eſt ut veniat dies redemptionis meæ. 9 Quia ecce ego apparebo ſuper vos, & reſpiciam in verbo meo, ut benefaciam vobis ; & colemini, & ſeminabimini. 10 Et multiplicabo in vobis homines omnem domum Iſrael univerſam, & habitabuntur civitates & deſerta, & reædificabuntur. 11 Et multiplicabo ſuper vos homines & jumenta, & multiplicabuntur & creſcent : & habitare faciam vos ſicut à principio, & benefaciam vobis ſicut ab initio : & ſcietis quia ego Dñs. 12 Et multiplicabo ſuper vos homines populum meum Iſrael, & poſſidebunt te, & eris eis in hæreditatem, & non addes ultrà ut eos orbes.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܗ *

* ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪ ܠܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ
ܕܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܥܠ ܕܐܡܪ ܒܥܠܕܒܒܟܘܢ ܥܠܝܟܘܢ ܐܚ܂ ܘܐܡܪ ܕܪܡܬܐ
ܕܥܠܡ ܠܡ ܗܘܝ ܠܢ ܠܝܪܬܘܬܐ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܢܒܐ ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.
ܥܠ ܕܐܬܚܣܕܬܘܢ ܘܐܬܒܙܬܘܢ: ܘܐܬܓܕܦܬܘܢ ܡܢ ܐܝܠܝܢ ܕܚܕܪܝܢ ܠܟܘܢ: ܘܗܘܝܬܘܢ
ܝܪܬܘܬܐ ܠܫܪܟܐ ܕܥܡܡܐ: ܘܣܠܩܬܘܢ ܒܡܡܠܠ ܕܠܫܢܐ ܘܒܬܪܥܝܬܐ ܕܥܡܡܐ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ
ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܠܛܘܪܐ
ܘܠܪܡܬܐ ܘܠܢܚܠܐ ܘܠܦܩܥܬܐ ܘܠܚܘܪܒܐ ܨܕܝܐ ܘܠܡܕܝܢܬܐ ܫܒܝܩܬܐ ܕܗܘܝ ܠܒܙܬܐ
ܘܠܡܓܚܟܢܘܬܐ ܠܫܪܟܐ ܕܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܢ ܠܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܒܢܘܪܐ
ܕܛܢܢܝ ܡܠܠܬ ܥܠ ܫܪܟܐ ܕܥܡܡܐ ܘܥܠ ܟܠܗ ܐܕܘܡ. ܕܝܗܒܘ ܠܗܘܢ ܐܪܥܝ ܝܪܬܘܬܐ.
ܒܚܕܘܬܐ ܕܠܒܗܘܢ ܨܥܪܘ ܢܦܫܬܐ. ܕܢܒܙܘܢ ܐܢܝܢ ܘܢܫܒܘܢ ܐܢܝܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܢܒܐ ܥܠ
ܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪ ܠܛܘܪܐ ܘܠܪܡܬܐ ܘܠܢܚܠܐ ܘܠܦܩܥܬܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ.
ܗܐ ܐܢܐ ܡܡܠܠ ܒܛܢܢܝ ܘܒܚܡܬܝ. ܥܠ ܕܩܒܠܬܘܢ ܚܣܕܐ ܕܥܡܡܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܥܠ ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܢ ܠܟܘܢ. ܕܚܣܕܗܘܢ ܢܩܒܠܘܢ.
* ܐܢܬܘܢ ܕܝܢ ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܛܪܦܝܟܘܢ ܬܐܟܠܘܢ. ܘܦܐܪܝܟܘܢ ܬܪܒܘܢ ܠܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ.
ܡܛܠ ܕܩܪܝܒܝܢ ܠܡܐܬܐ. * ܗܐ ܓܝܪ ܡܬܦܢܐ ܐܢܐ ܠܘܬܟܘܢ. ܘܬܬܦܠܚܘܢ ܘܬܙܕܪܥܘܢ.
* ܘܐܣܓܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܢܝܢܫܐ ܕܟܠܗ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܬܝܬܒܢ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܚܘܪܒܐ
ܢܬܒܢܘܢ. * ܘܐܣܓܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܢܝ ܐܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. ܘܢܣܓܘܢ ܘܢܦܫܘܢ. ܘܐܘܬܒܟܘܢ
ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ. ܘܐܛܐܒ ܠܟܘܢ ܐܝܟ ܕܒܫܘܪܝܐ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ.
* ܘܐܗܠܟ ܒܟܘܢ ܒܢܝܢܫܐ. ܠܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܐܪܬܘܢܟܘܢ. ܘܬܗܘܘܢ ܠܗܘܢ ܠܝܪܬܘܬܐ.
ܘܠܐ ܬܘܣܦܘܢ ܠܡܬܟܠܘ.

CAP. XXXVI.

Tu quoque fili hominis, vaticinare de 1
montibus Iſraelis, et dic montibus Iſraelis;
Audite ſermonem Domini, Sic ait Dominus 2
dominorum; Quia de vobis dixit inimicus,
Euge; et dixit, Colles iſti æterni nobis futuri
ſunt in hæreditatem: Iccirco vaticinare, 3
et dic; Sic ait Dominus dominorum, Quia
probris affecti eſtis, exuſti, et blaſphemiis appetiti
ab iis qui circum vos ſunt; fuiſtis hæreditaria
poſſeſſio reliquis gentibus, & ſubjecti
ſermoni linguarum & cogitationi gentium
: Iccirco audite ſermonem Domini dominorum, 4
montes Iſraelis: Sic ait Dominus dominorum
montibus, collibus, vallibus, planitiebus,
vaſtitatibus deſolatis, & urbibus
derelictis quæ fuerunt direptioni & ſubſannationi
reliquis gentibus circunjacentibus
eis. Iccirco ſic ait Dominus dominorum; In 5
igne zeli mei locutus ſum contra cæteras gentes
& contra totam Idumæam. Quia fecerunt
ſibi terram meam hæreditatem: cum gaudio
cordis ſui ignominiâ affecerunt animas, capiendo
& deprædando eas: Iccirco vaticinare 6
de terra Iſraelis, & dic montibus, collibus,
vallibus, & planitiebus; Sic ait Dominus dominorum,
Ecce ego loquor in zelo & irâ
mea: Quia tuliſtis opprobrium gentium;
Iccirco, Sic ait Dominus dominorum; Ecce 7
ego levavi manum meam ſuper gentes quæ
vos circunſtant, quòd ipſæ reportabunt opprobrium
ſuum: Vos autem montes Iſraelis, 8
frondes veſtras edetis, & fructus veſtros nutrietis
populo meo Iſraeli, quia brevi ſunt venturi.
Nam ecce convertar ad vos, & arabimini 9
atque ſeremini: Et multiplicabo ſuper 10
vos homines omnium Iſraelitarum, urbes habitabuntur,
& ruinæ reædificabuntur. Multiplicabo 11
inquam, ſuper vos homines & jumenta,
& creſcent atque multiplicabuntur:
& collocabo vos ut antea, & benefaciam
vobis ut initio; & agnoſcetis me eſſe Dominum:
Faciámque ut ambulent in vobis 12
homines, *nempè* populus meus Iſrael, poſſideant
vos, & ſitis eis in hæreditatem, nec adjiciatis
ampliùs orbari.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل السادس والثلثون * * الاصحاح العشرون *

* وانت يا ابن الانسان تنبا على جبال اسرائيل. وقل لجبال اسرائيل. اسمعوا قول الرب * هكذا
يقول الرب الرب. من اجل ان العدو قال عليكم نعما نعما. خربات ابدية اذ صيرت لنا
للضبط * لاجل هذا تنبا وقل. هكذا يقول الرب الرب الاله. عوض ان اهدمتم وبغضتم من
الامم الذين حولكم. لتكونوا للضبط في بقايا الامم * وصرتم قولا للسان. وعارا في الامم.
* لاجل هذا يا جبال اسرائيل اسمعوا قول الرب. هكذا يقول الرب للجبال والتلال. والاودية
والغدران. والغابات الخربة الدائرة. وللمدن المتروكة. التي صارت للنهب. وموطيا لبقية
الامم الذين حولها * لاجل هذا هكذا يقول الرب. بالحقيقة بنار غضبي تكلمت على بقية
الامم. وعلى ادوم كلها. لانهم اعطوا لهم ارضي للضبط بسرور. واهانوا نفوسا ليفقدوها بالنهب.
* لاجل هذا تنبا على ارض اسرائيل. وقل للجبال والتلال. والغدران والغابات. هكذا يقول
ادوناي الرب. ها انا بغيرتي وبغضبي تكلمت. عوض ان تحملوا تعيير الامم * لاجل هذا
ها انا ارفع يدي على الامم الذين حولكم. هولاء ياخذون اهانتهم منكم يا جبال اسرائيل.
* وياكل شعبي العنب والثمر. لانهم يرجون ان ياتوا * ها انا اطلع عليكم. وتستعملون.
* واكثر عليكم الناس. كل بيت اسرائيل الى النهاية. وتسكن مدنكم. والخربات تبنى.
* واكثر عليكم الناس والبهائم. واسكنكم كما في اوليتكم. واصنع بكم جيدا كالزمان
الاول. وتعلمون اني انا الرب * واعطي عليكم الناس شعبي اسرائيل. ويرثونكم وتكونون
لهم للضبط. ولا تعودون ان تثكلوا منهم ايضا.

CAP. XXXVI.

Textus vigeſimus.

Et tu O fili hominis, propheta de montibus 1
Iſraelis, & dic montibus Iſraelis;
Audite ſermonem Domini. Sic ait Dominus 2
Dominus; Quia inimicus dixit de
vobis, Euge, euge; ruinæ ſempiternæ ceſſerunt
jam nobis in poſſeſſionem: Idcircò 3
propheta, & dic; Ita dicit Dominus,
Dominus Deus; Quia deſpectui &
odio fuiſtis apud gentes quæ circum vos
ſunt, ut eſſetis poſſeſſioni inter reliquas
gentes; & facti eſtis dicterium linguæ
& opprobrium inter gentes: Propterea 4
O montes Iſraelis, audite ſermonem Domini.
Sic dicit Dominus montibus &
collibus, vallibus & torrentibus, ſylvis
deſtructis & deſolatis, urbibuſque derelictis
quæ factæ ſunt in direptionem &
conculcationem reliquis gentibus quæ circunſtant
eas: Propterea ſic dicit Dominus; 5
Reverà in igne furoris mei locutus
ſum de reliquis gentibus, deque tota
Idumæa: quia terram meam in poſſeſſionem
arrogârunt ſibi cum exultatione, &
deſpexerunt animas ut extinguerent eas
in direptione. Propterea vaticinare de 6
terra Iſraelis, & dic montibus & collibus,
torrentibus ac ſylvis; Ita dicit Adonai
Dominus; Ecce ego in zelo & furore
meo locutus ſum: Quia opprobrium gentium
patimini; Propterea ego levabo manum 7
meam ſuper gentes, quæ circum vos
ſunt: hæ reportabunt ignominiam ſuam à
vobis O montes Iſraelis: Comedétque populus 8
meus uvas & fructum. Quia ſperant
ſe venturos, Ecce ego reſpiciam 9
vos, & colemini: Et multiplicabo ſuper 10
vos homines, univerſam domum Iſraelis,
ſupra modum: & urbes veſtræ habitabuntur,
& deſtructa reſtaurabuntur.
Multiplicabo inquam, ſuper vos homines 11
& jumenta, cultos reddam vos ut antea,
& rectè diſponam vos ut priſtino tempore:
& ſcietis me eſſe Dominum. Dabóque 12
ſuper vos homines, populum meum
Iſraelem, qui vos poſſidebunt, & eritis
illis in poſſeſſionem, et poſthac non orbabimini
amplius illis.

devoratrix ; vobis dicentes quòd eo Pro , Deus Dominus dixit Sic
כה אמר אדני יהוה יען אמרים לכם אכלת 13
hominem Propterea .fuiſti tuarum gentium orbatrix & ; tu homines
אדם אתי ומשכלת גויך היית : לכן אדם 14
dixit ; amplius orbare facies non tuas gentes &,amplius devorabis non
לא תאכלי עוד וגויך לא תכשלי עוד נאם
, gentium ignominiam amplius te in faciam audire non Et .Deus Domin⁹
ארני יהוה : ולא אשמיע אליך עוד כלמת הגוים 15
facies impingere non tuas gentes &:ultrà portabis non populorũ probrũ &
וחרפת עמים לא תשאי עוד וגויך לא תכשלי
: dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .Deus Dominus dixit,ampliùs
16 עוד נאם אדני יהוה : ויהי דבר יהוה אלי לאמר :
polluerunt & ,ſuam humum ſuper habitantes Iſrael domus ,hominis Fili
17 בן אדם בית ישראל ישבים על אדמתם ויטמאו
fuit elongatæ immunditia ſicut ; ſuis ſtudiis in & , ſua via in eam
אותה בדרכם ובעלילותם כטמאת הנדה היתה
ſanguinem ſuper eos ſuper meam iram effudi Et .meas facies ad eorum via
דרכם לפני : ואשפך חמתי עליהם על הדם 18
.eam polluerunt ſuis idolis in & ;terram ſuper effuderunt quem
אשר שפכו על הארץ ובגלוליהם טמאוה :
, eorum viam juxta : terras in ſunt ventilati &,gentes in eos diſperſi Et
19 ואפיץ אותם בגוים ויזרו בארצות כדרכם
venerunt quò gentes ad venit Et .eos judicavi eorum ſtudia juxta &
20 ובעלילותם שפטתים : ויבוא אל הגוים אשר באו
Domini Populus,eis dicendo in;meæ ſanctitatis nomen polluerunt & ,illuc
שם ויחללו את שם קדשי באמר להם עם יהוה
; meæ ſanctitatis nomine ſuper peperci Et .ſunt egreſſi ejus terra de & ,hi
21 אלה ומארצו יצאו : ואחמל על שם קדשי
.illuc ſunt ingreſſi quò ,gentibus in , Iſrael domus illud polluerunt quod
אשר חללהו בית ישראל בגוים אשר באו שמה :
Non , Deus Dominus dixit Sic , Iſrael domui dic Idcircò
לכן אמר לבית ישראל כה אמר אדני יהוה לא 22
,meæ ſanctitatis nomen ad quinimò ; Iſrael domus faciens ego vos propter
למענכם אני עשה בית ישראל כי אם לשם קדשי
ſanctificabo Et .illuc veniſtis quò gentibus in polluiſtis quod
23 אשר חללתם בגוים אשר באתם שם : וקדשתי
polluiſtis quod , gentibus in pollutum , magnum meum nomen
את שמי הגדול המחלל בגוים אשר חללתם
Dominus ait ,Dominus ego quòd gentes ſcient & : earum medio in
בתוכם וידעו הגוים כי אני יהוה נאם אדני
vos Tollámque .eorum oculis in vobis in me ſanctificari in , Deus
יהוה בהקדשי בכם לעיניכם : ולקחתי אתכם 24
faciam venire & : terris univerſis de vos congregabo & , gentibus de
מן הגוים וקבצתי אתכם מכל הארצות והבאתי
, mundas aquas vos ſuper ſpargam Et .veſtram terram in vos
אתכם אל אדמתכם : וזרקתי עליכם מים טהורים 25
univerſis ab & , veſtris inquinamentis omnibus ab : mundabimini &
וטהרתם מכל טמאותיכם ומכל
ſpiritum &,novum cor vobis dabo Et .vos mundabo veſtris idolis
26 גלוליכם אטהר אתכם : ונתתי לכם לב חדש ורוח
,veſtra carne è lapidis cor amovebo & : veſtro interiore in dabo novum
חדשה אתן בקרבכם והסרתי את לב האבן מבשרכם
; veſtro interiori in dabo meum ſpiritum Et .carneum cor vobis dabo &
27 ונתתי לכם לב בשר : ואת רוחי אתן בקרבכם
,cuſtodiatis mea judicia &,ambuletis meis ſtatutis in quod faciam &
ועשיתי את אשר בחקי תלכו ומשפטי תשמרו
: veſtris patribus dedi quam terra in habitabitis Et .faciatis &
ועשיתם : וישבתם בארץ אשר נתתי לאבתיכם 28
.Deum in vobis ero ego &,populum in mihi eritis &
והייתם לי לעם ואנכי אהיה לכם לאלהים :

Verſio VULG. LAT.

3 Hæc dicit Dominus Deus ; Pro
eo quòd dicunt de vobis ; Devo-
ratrix hominum es, & ſuffocans
14 gentem tuam : Proptereà homi-
nes non comedes ampliùs, &
gentem tuam non necabis ultrà,
15 ait Dominus Deus : Nec auditã
faciam in te ampliùs confuſionẽ
Gentium, & opprobrium popu-
lorum nequaquam portabis, &
gentẽ tuam non amittes ampliùs,
16 ait Dominus Deus. Et factum eſt
verbum Domini ad me, dicens ;
17 Fili hominis, domus Iſrael habi-
taverunt in humo ſua,& pollue-
rũt eam in viis ſuis,& in ſtudiis
ſuis:juxta immunditiã menſtrua-
tæ facta eſt via eorum coram me.
18 Et effudi indignationem meam
ſuper eos pro ſanguine,quem fu-
derunt ſuper terram, & in idolis
19 ſuis polluerunt eam. Et diſperſi
eos in Gentes, & ventilati ſunt
in terras:juxta vias eorum, & ad-
inventiones eorum judicavi eos.
20 Et ingreſſi ſũt ad Gentes ad quas
introierunt, & polluerũt nomen
ſanctum meum, cùm diceretur de
eis ; Populus Domini iſte eſt, &
21 de terra ejus ingreſſi ſunt. Et pe-
perci nomini ſancto meo, quod
polluerat domus Iſrael in Genti-
22 bus, ad quas ingreſſi ſunt. Idcir-
cò dices domui Iſrael ; Hæc dicit
Dñs De⁹ ; Non propter vos ego
faciam, domus Iſrael,ſed propter
nomen ſanctum meum,quod pol-
luiſtis in Gentib⁹, ad quas intrá-
23 ſtis. Et ſanctificabo nomen meũ
magnum, quod pollutum eſt in-
ter Gentes, quod polluiſtis in
medio earum : ut ſciant Gentes
quia ego Domin⁹, ait Dominus
exercituum, cùm ſanctificat⁹ fue-
24 ro in vobis coram eis. Tollam
quippe vos de Gentibus, & con-
gregabo vos de univerſis terris,
& adducam vos in terram ve-
25 ſtram. Et effundam ſuper vos a-
quam mundam, & mundabimini
ab omnib⁹ inquinamentis ve-
ſtris, & ab univerſis idolis veſtris
26 mundabo vos. Et dabo vobis
cor novum, & ſpiritum novum
ponam in medio veſtrî : & aufe-
ram cor lapideũ de carne veſtra,
27 & dabo vobis cor carneum. Et
ſpiritum meum ponam in medio
veſtri : & faciam ut in præceptis
meis ambuletis, & judicia mea
28 cuſtodiatis & operemini. Et
habitabitis in terra, quam dedi
patrib⁹ veſtris : & eritis mihi in
populum, & ego ero vobis in
Deum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

13 Τάδε λέγει (υ) κύριος κύριος, Ἀνθ᾽ ὧν
εἶπάν σοι, Κατέσθουσα ἀνθρώπους εἶ, καὶ ἠ-
14 τεκνωμένη ὑπὸ τοῦ ἔθνους σου ἐγένου· Διατοῦ-
το ἀνθρώπους οὐκέτι φάγεσαι, καὶ τὸ ἔθνος
σου οὐκ (φ) ἀτεκνώσεις ἔτι, λέγει κύριος
15 κύριος. Καὶ οὐκ ἀκουσθήσεται οὐκέτι ἐφ᾽ ὑμᾶς
ἀτιμία ἐθνῶν, καὶ (χ) ὀνειδισμοὺς λαῶν οὐ
μὴ ἀνενέγκητε ἔτι, λέγει (ψ) κύριος κύ-
16 ριος. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με,
17 λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, οἶκος Ἰσραὴλ (ω)
κατῴκησεν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν, καὶ (α) ἐμία-
ναν αὐτὴν ἐν τῇ ὁδῷ αὐτῶν, καὶ ἐν τοῖς εἰ-
δώλοις αὐτῶν, καὶ ἐν ταῖς ἀκαθαρσίαις αὐ-
τῶν, (β) καὶ κατὰ τὴν ἀκαθαρσίαν τῆς ἀποκαθη-
μένης ἐγενήθη ἡ ὁδὸς αὐτῶν πρὸ προσώπου
18 μου· Καὶ ἐξέχεα τὸν θυμόν μου ἐπ᾽ αὐ-
19 τοὺς (γ), Καὶ διέσπειρα αὐτοὺς εἰς τὰ ἔθνη, καὶ
ἐλίκμησα αὐτοὺς εἰς τὰς χώρας, κατὰ (δ)
τὴν ὁδὸν αὐτῶν, καὶ κατὰ τὴν ἁμαρτίαν αὐτῶν
20 ἔκρινα αὐτούς. Καὶ (ε) εἰσῆλθον εἰς τὰ
ἔθνη, οὗ (ζ) εἰσῆλθον ἐκεῖ, καὶ ἐβεβήλωσαν
τὸ ὄνομά μου τὸ ἅγιον ἐν τῷ λέγεσθαι αὐτούς,
Λαὸς κυρίου οὗτοι, καὶ ἐκ τῆς γῆς (η) αὐτοῦ ἐξε-
21 ληλύθασιν. Καὶ ἐφεισάμην αὐτῶν διὰ τὸ ὄ-
νομά μου τὸ ἅγιον, ὃ ἐβεβήλωσαν οἶκος Ἰσ-
ραὴλ ἐν τοῖς ἔθνεσιν, οὗ εἰσήλθοσαν ἐκεῖ.
22 Διατοῦτο εἰπὸν τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ, Τάδε
λέγει (θ) κύριος, Οὐχ ὑμῖν ἐγὼ ποιῶ
οἶκος Ἰσραήλ, ἀλλ᾽ ἢ διὰ τὸ ὄνομά μου τὸ
ἅγιον, ὃ ἐβεβηλώσατε ἐν τοῖς ἔθνεσιν, οὗ
23 (ʼ) εἰσήλθετε ἐκεῖ. Καὶ ἁγιάσω τὸ ὄνομά μου
τὸ (ι) μέγα, τὸ βεβηλωθὲν ἐν τοῖς ἔθνε-
σιν, ὃ ἐβεβηλώσατε ἐν μέσῳ αὐτῶν, καὶ
γνώσονται τὰ ἔθνη ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, (κ)
ἐν τῷ ἁγιασθῆναί με ἐν ὑμῖν κατ᾽ ὀφθαλ-
24 μοὺς αὐτῶν. Καὶ λήψομαι ὑμᾶς ἐκ τῶν ἐ-
θνῶν, καὶ ἀθροίσω ὑμᾶς ἐκ πασῶν τῶν γαι-
25 ῶν, καὶ εἰσάξω ὑμᾶς εἰς τὴν γῆν ὑμῶν, Καὶ
ῥανῶ ἐφ᾽ ὑμᾶς (ʼ) καθαρὸν ὕδωρ, καὶ καθαρι-
σθήσεσθε ἀπὸ πασῶν τῶν ἀκαθαρσιῶν ὑμῶν,
καὶ ἀπὸ πάντων τῶν εἰδώλων ὑμῶν, καὶ καθα-
26 ριῶ ὑμᾶς· Καὶ δώσω ὑμῖν καρδίαν καινήν,
καὶ πνεῦμα καινὸν δώσω ἐν ὑμῖν, καὶ ἀφελῶ
τὴν καρδίαν τὴν λιθίνην ἐκ τῆς σαρκὸς ὑμῶν,
27 καὶ δώσω ὑμῖν καρδίαν σαρκίνην· Καὶ
τὸ πνεῦμά μου δώσω ἐν ὑμῖν, καὶ ποιήσω
ἵνα ἐν τοῖς δικαιώμασί μου πορεύησθε, καὶ
τὰ κρίματά μου (ʼ) φυλάξησθε, καὶ ποιή-
28 σητε. Καὶ κατοικήσετε ἐπὶ τῆς γῆς ἧς
ἔδωκα τοῖς πατράσιν ὑμῶν, καὶ ἔσεσθέ μοι
εἰς λαόν, καὶ ἐγὼ ἔσομαι ὑμῖν εἰς θεόν.

Hæc dicit Dominus Dominus:
Pro eo quòd dixerunt tibi, 13
Devoratrix hominum es, & abſ-
que liberis de gente tua facta es:
Proptereà homines non comedes 14
ampliùs, & gentem tuam non
non orbabis ultrà, ait Domi-
Dominus: Et non audietur ultrà 15
ſuper vos ignominia gentium: &
opprobria populorum nequaquam
portabitis (i) ampliùs, ait Domi-
nus Dominus. Et factum eſt ver- 16
bum Domini ad me, dicens; Fili 17
hominis, domus Iſrael habitavit
in terra ſua: & polluerunt eam
in via ſua, & in idolis ſuis, et in
ſuis immunditiis: Et juxta im-
munditiam menſtruatæ facta eſt
via eorum coram me: Et effudi 18
furorem meum ſuper (k) eos: Et 19
diſſeminavi eos in gentes, et ven-
tilavi eos in regiones: juxta vi-
am eorum & juxta (l) peccatum
eorum judicavi eos. Et ingreſſi 20
ſunt ad gentes, quò ingreſſi ſunt
illuc, & polluerunt nomen ſan-
ctum meum, cùm (m) diceretur
ipſi, Populus Domini iſti: & de
terra ejus egreſſi ſunt. Et peperci 21
eis propter nomen meum ſanctum,
quod polluerant domus Iſrael in
gentibus, quò ingreſſi ſunt illuc.
Idcircò dic domui Iſrael, Hæc 22
dicit Dominus; Non vobis ego
facio, domus Iſrael, ſed propter
nomen meum ſanctum, quod pol-
luiſtis in gentibus, quò intraſtis
illuc. Et ſanctificabo nomen me- 23
um magnum, quod pollutum eſt
in gentibus, quod polluiſtis in me-
dio earum: & ſcient gentes, quia
ego ſum Dominus; cùm ſanctifi-
catus fuero in vobis ante oculos
earum. Et tollam vos de gentib⁹, 24
& congregabo vos de univerſis
terris, & introducam vos in ter-
ram veſtram. Et aſpergam ſuper 25
vos aquam mundam: & munda-
bimini ab omnibus immunditiis
veſtris, & ab omnibus idolis ve-
ſtris, (n) & mundabo vos. Et da- 26
bo vobis cor novum: & ſpiritum
novum dabo in vobis: et auferam
cor lapideum de carne veſtra: et
dabo vobis cor carneum: Et ſpi- 27
ritum meum dabo in vobis: et fa-
ciam, ut in juſtificationibus meis
ambuletis, et judicia mea cuſto-
diatis, et (o) faciatis. Et habita- 28
bitis in terra, quam dedi patribus
veſtris: et eritis mihi in populum:
et ego ero vobis in Deum.

MS. A. (υ) ἀδωναῒ κύριος, (φ) ἀτεκνώσεις σε οὐκέτι, λέγει ἀδωναῒ κύριος.
(χ) ὀνειδισμὸν ἐθνῶν οὐ μὴ ἐνέγκησθε (ψ) κύριος ὁ θεός. (ω) κατῴκησαν (α) ἐν ταῖς
ἀκαθαρσίαις αὐτῶν ἐμίαναν αὐτὴν ἐν τῇ (β) κατὰ τὴν ἀκαθαρσίαν τῆς ἀφέδρου
ἐγενήθη (γ) περὶ τοῦ αἵματος οὗ ἐξέχεαν ἐν τῇ γῇ, καὶ ἐν τοῖς εἰδώλοις
αὐτῶν ἐμίαναν αὐτήν. Καὶ διέσπειρα (δ) τὰς ὁδοὺς αὐτῶν, καὶ κατὰ τὰς ἀνομίας
αὐτῶν ἔκρινα (ε) εἰσήλθοσαν (ζ) εἰσήλθοσαν (η) αὐτῶν ἐξήλθοσαν. (θ) ἀδω-
ναῒ κύριος, (ʼ) εἰσήλθατε (ι) ἅγιον, τὸ (κ) λέγει ἀδωναῒ κύριος, ἐν τῷ (ʼ) ὕ-
δωρ καθαρόν, (ʼ) φυλάξεσθε, καὶ ποιήσετε.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

13 כדנן אמר יי אלהים חלף דאמרין לכון מקטלת אנשא את ומתכלת עמיך הוית :
14 בכן אנשא לא תקטלין עוד ועמיך לא תתכלין עוד אמר יי אלהים : ולא אשמע ליך
15 עוד אתכנעות עממיא וחסודי עממיא לא תקבלין עוד ועמיך לא תתכלין עוד אמר יי
16 אלהים : והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : בר אדם בית ישראל יתבין
17 על ארעהון וסאיבו יתה באורחתהון ובעובדיהון כסואבת אתתא טומאה הות
18 אורחתהון קדמי : ושפיכית חימתי עליהון על דם זכי דאשדו על ארעא ובפולחן
19 טעותהון סאבוה : ואגליתי יתהון לביני עממיא ואתבדרו במדינתא כאורחתהון
20 בישתא וכעובדיהון מקלקליא אתפרעית מנהון : ועלו לביני עממיא דאתגליאו
לתמן על דאחילו ית שמא דקודשי בדאמרין להון אם עמיה דיי אלין ואיכדין מארעא
21 בית שכינתיה גלו : וחסית על שמא דקודשי דאחילוהי בית ישראל ביני עממיא
22 דאתגליאו לתמן : בכן אמר לבית ישראל כדנן אמר יי אלהים לא בדילכון אנא
עביד בית ישראל אלהין על שמא דקודשי דאחילתון ביני עממיא דאתגליתון לתמן :
23 ואקדש ית שמי רבא דאתחל ביני עממיא דאחלתון ביניהון וידעון עממיא ארי אנא
24 יי אמר יי אלהים כד אתקדש בכון לעיניהון : ואקריב יתכון מביני עממיא ואכניש
25 יתכון מכל מדינתא ואעיל יתכון לארעכון : ואשבוק לחוביכון כמא דמדכן במי
אדיותא ובקטם תורתא דחטאתא ותדכון מכל סאבתכון ומכל טעותכון אדכי
26 יתכון : ואתן לכון לב דחיל ורוח דחילא אתן במעיכון ואתבר לבא רשיעא דתקיף
27 תקיף כאבנא מבסרכון ואתן לכון לב דחיל קדמי למעבד רעותי : וית רוח קודשי
28 אתן במעיכון ואעביד דבקימי תהכון ודיני תטרון ותעבדון : ותיתבון בארעא
די יהבית לאבהתכון ותהון קדמי לעם ואנא אהוי לכון לאלהא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dñs Deus : Pro eo quòd dicunt tibi, Interficiens homines es tu 13
& abſq; liberis faciens populum tuum. Proptereà homines non interficies 14
amplius, & populum tuum non facies ultrà abſq; liberis, ait Dñs Deus. Nec 15
audire faciam te ultrà ignominiam populorum, nec opprobrium gentium
ſuſtinebis, nec tuam ampliùs gentem orbabis, inquit Dñs Deus. Et factum 16
eſt verbum prophetiæ à facie Dñi ad me, dicens : Fili hominis, domus Iſrael 17
habitaverunt in terra ſua, & polluerunt eam in viis ſuis, & operibus ſuis :
juxta pollutionem mulieris immundæ fuit via eorum coram me. Et effudi in- 18
dignationem meam ſuper eos propter ſanguinem innocentem, quem effude-
runt ſuper terram : & cultu idolorum ſuorum polluerunt eam. Et migrare 19
feci eos inter populos, & diſperſi eos per provincias: juxta *vias* illorum peſ-
ſimas, & juxta opera eorum corrupta ultionem ſumpſi ex eis. Et ingreſſi 20
ſunt inter populos, ad quos migraverunt, pro eo quòd violaverunt nomen
ſanctum meum, cùm dicebant eis, Si populus Dñi ſunt iſti, quomodo ergo
migraverunt à terra domus majeſtatis ejus ? Et peperci nomini ſancto meo, 21
quod violaverunt dom⁹ Iſrael inter populos ad quos migraverunt. Proptereà 22
dic domui Iſrael: Hæc dicit Dñs De⁹ : Non propter vos ego facio dom⁹ Iſrael,
ſed propter nomen ſanctum meum, quod prophanaſtis inter populos ad quos
migraſtis. Et ſanctificabo nomen meum magnum, quod violatum eſt inter 23
populos, quod violaſtis inter eos ; & ſcient populi quia ego Dñs, ait Dñs
Deus : cùm ſanctificatus fuero in vobis ante oculos eorum. Et applicabo 24
vos de medio populorum, & congregabo vos de omnibus provinciis, & in-
troducam vos in terram veſtram. Et dimittam peccata veſtra, ſicut mundan- 25
tur aqua aſperſionis, & cinere vaccæ quæ [*immolatur*] pro peccato : &
mundabimini ab omnibus immunditiis veſtris, & ab omnibus idolis veſtris
mundabo vos. Et dabo vobis cor timens, & ſpiritum *timentem* dabo in viſce- 26
ribus veſtris, & conteram cor impium, quod eſt durum ſicut lapis, de carne
veſtra, & dabo vobis cor timens coram me, ut faciat voluntatem meam. Et 27
ſpiritum ſanctũ meum dabo in viſceribꝰ veſtris, & faciam ut in præceptis meis
ambuletis, & judicia mea cuſtodiatis & faciatis. Et habitabitis in terra quam 28
dedi patrib⁹ veſtris : & eritis coram me in populum, & ego ero vobis in Deum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܡܪܝܢ ܠܟܝ ܐܟܠܬ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܐܢܬܝ ܘܡܬܟܠܢܝܬܐ ܠܥܡܟܝ
* ܡܛܠܗܢܐ ܒܢܝ̈ܢܫܐ. ܠܐ ܬܐܟܠܝܢ. ܘܥܡܡܝܟܝ ܬܘܒ. ܠܐ ܬܬܟܠܝܢ. ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. * ܘܠܐ
ܐܫܡܥ ܥܠܝܟܝ ܚܣܕܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܚܣܕܝܗܘܢ ܬܘܒ ܠܐ ܬܣܝܒܪܝܢ. ܘܥܡܡܝܟܝ ܬܘܒ ܠܐ ܬܬܟܠܝܢ
ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪܢܫܐ. ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ
ܝܬܒܝܢ ܒܐܪܥܗܘܢ. ܘܛܢܦܘܗ ܒܐܘܪܚܬܗܘܢ ܘܒܥܒܕܝܗܘܢ. ܘܐܝܟ ܛܢܦܘܬܐ ܕܕܣܬܘܢܬܐ
ܗܟܢܐ ܗܘܬ ܐܘܪܚܗܘܢ ܩܕܡܝ. * ܘܐܫܕܬ ܪܘܓܙܝ ܥܠܝܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܐ ܕܐܫܕܘ ܥܠ ܐܪܥܐ
ܘܛܢܦܘܗ ܒܦܬܟܪܝܗܘܢ. * ܘܒܕܪܬ ܐܢܘܢ ܒܥܡܡܐ. ܘܙܪܝܬ ܐܢܘܢ ܒܡܕܝܢ̈ܬܐ. ܘܐܝܟ
ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܘܐܝܟ ܥܒܕܝܗܘܢ ܕܢܬ ܐܢܘܢ. * ܘܐܙܠܘ ܠܥܡܡܐ ܠܥܡܡܐ. ܘܛܢܦܘ ܫܡܐ
ܕܩܘܕܫܝ. ܘܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܗܠܝܢ ܥܡܗ ܕܐܠܗܐ ܐܢܘܢ. ܘܡܢ ܐܪܥܗ ܢܦܩܘ
* ܘܚܣܬ ܥܠ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ. ܕܛܢܦܘܗܝ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܕܐܙܠܘ ܠܬܡܢ
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܠܐ ܗܘܐ ܡܛܠܬܟܘܢ
ܥܒܕ ܐܢܐ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܠܐ ܡܛܠ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ. ܕܛܢܦܬܘܢܝܗܝ ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܕܐܙܠܬܘܢ
ܠܬܡܢ. * ܘܐܩܕܫ ܫܡܝ ܪܒܐ. ܕܐܬܛܢܦ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. ܕܛܢܦܬܘܢܝܗܝ ܒܝܢܬܗܘܢ
ܘܢܕܥܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܟܕ ܐܬܩܕܫ ܒܟܘܢ ܠܥܝܢܝܗܘܢ
* ܘܐܕܒܪܟܘܢ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܘܐܟܢܫܟܘܢ ܡܢ ܡܕܝܢ̈ܬܐ. ܘܐܝܬܝܟܘܢ ܠܐܪܥܟܘܢ. * ܘܐܙܠܚ
ܥܠܝܟܘܢ ܡܝܐ ܕܟܝܐ. ܘܐܕܟܐܟܘܢ ܡܢ ܟܠܗ ܛܢܦܘܬܟܘܢ. ܘܡܢ ܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪܝܟܘܢ
* ܘܐܬܠ ܠܟܘܢ ܠܒܐ ܚܕܬܐ. ܘܪܘܚܐ ܚܕܬܐ ܐܬܠ ܒܓܘܟܘܢ. ܘܐܥܒܪ ܠܒܐ ܕܟܐܦܐ ܡܢ
ܒܣܪܟܘܢ. ܘܐܬܠ ܠܟܘܢ ܠܒܐ ܕܒܣܪܐ. * ܘܐܬܠ ܪܘܚܝ ܒܓܘܟܘܢ. ܘܐܥܒܕ ܕܒܦܘܩܕܢܝ
ܬܗܠܟܘܢ. ܘܕܝܢܝ ܬܛܪܘܢ. ܘܬܥܒܕܘܢ ܐܢܘܢ. * ܘܬܬܒܘܢ ܒܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܐܒܗܝܟܘܢ.
ܘܬܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܟܘܢ ܠܐܠܗܐ.

Sic ait Dominus dominorum; Quia dicunt 13
tibi, Devoratrix hominum es, & populi tui
orbatrix; Poſthac homines nequaquam devo- 14
rabis, neque populum tuum orbabis ampliùs,
ait Dominus dominorum: Neque patiar poſt- 15
hac ut audiatur de te opprobrium gentium, &
convitia earum non feres ampliùs, ait Domi-
nus dominorum. Deinde fuit ad me ſermo 16
Domini, dicendo, Fili hominis, Iſraelitæ ha- 17
bitantes in terra ſua, polluerunt eam viis &
actionibus ſuis, & qualis eſt impuritas men-
ſtrua patientis, talis erat via ipſorum coram
me: Quapropter effudi iram meam ſuper eos 18
propter ſanguinem quem effuderunt ſuper
terrā, et contaminaverunt eam idolis ſuis: Diſ- 19
ſipavi eos inter gentes, & diſperſi eos per ur-
bes: & ſecundùm vias eorum, & ſecundùm
actiones eorum judicavi eos. Cúmque abi- 20
iſſent inter gentes, prophanaverunt nomen
ſanctiſſimum meum; ita ut dicerent eis gen-
tes, Iſtíne populus Dei ſunt, & ex ejus terra
prodierunt? Itaque clementiâ commotus ſum 21
erga nomen meum ſanctiſſimum quod pro-
phanaverunt Iſraelitæ inter gentes ad quas
abierunt: Ideò dic Iſraelitis; Sic ait Domi- 22
nus dominorum; Haudquaquam propter vos
facturus ſum Iſraelitæ, ſed propter nomen
ſanctiſſimum meum quod prophanâſtis inter
gentes ad quas abiiſtis: Ut ſanctificem nomen 23
meum maximum quod prophanatum eſt inter
gentes, quod prophanâſtis inter eas; & ſcient
gentes me eſſe Dominum, ait Dominus do-
minorum, quum ſanctificatus fuero in vobis
coram ipſis. Aſſumam vos è gentibus, colli- 24
gam vos ex urbibus, & adducam vos in ter-
ram veſtram. Aſpergam vos aquis mundis, & 25
mundabo vos omnibus impuritatibus veſtris,
omnibúſque idolis veſtris: Dabo vobis cor 26
novum, & ſpiritum novum indam præcordiis
veſtris; & amoto corde lapideo de carne ve-
ſtra, dabo vobis cor carneum: Ponam ſpiri- 27
tum meum in præcordiis veſtris, & efficiam
ut in præceptis meis ambuletis, judicia mea
ſervetis & perficiatis; Atque *ita* habitetis in 28
terra quam dedi majoribus veſtris, ſitis mihi
populus, & ego ſim vobis Deus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يقول ادوناي الرب. من اجل انهم قالوا لك انت اكلة الناس. وصرت مثكولة من
امتك * لاجل هذا لا تاكلين الناس ايضا. وامتك لا تثكلك ايضا. قال ادوناي الرب * ولا
تسمع عليكم ايضا اهانة الامم. ولا تحملونها ايضا. يقول الرب الاله * وكان قول الرب الي قايلا
* يا ابن الانسان. بيت اسرايل سكنوا علي ارضهم. وبنجاساتهم نجسوها بطرقهم. واصنامهم
وبنجاساتهم كنجاسة الحايض صارت ارضهم امام وجهي * وافضت غضبي عليهم من
اجل الدم الذي اراقوه في الارض. وباوثانهم نجسوها * فبددتهم في الامم. وذريتهم في البلدان
كطرقهم وكاثامهم دنتهم * ودخلوا الي الامم حيث دخلوا هناك. ودنسوا اسمي القدوس
عندما قالوا شعب الرب هم. ومن ارضهم خرجوا * وشفقت عليهم لاجل اسمي القدوس
الذي دنسه بيت اسرايل في الامم حيث دخلوا هناك * لاجل هذا قل لبيت اسرايل. هكذا
يقول ادوناي الرب. ليس لكم صنعت انا يا بيت اسرايل. لكن لاجل اسمي القدوس
الذي دنستموه في الامم حيث دخلتم هناك * واقدس اسمي القدوس المدنس في الامم
الذي دنستموه في وسطهم. ويعلم الامم اني انا الرب. يقول ادوناي الرب. عندما اتقدس
فيكم بعيونهم * واخذكم من الامم. واجمعكم من جميع الارضين. وادخلكم الي
ارضكم * وانضح عليكم ماء نقيا. وتطهرون من جميع نجاساتكم ومن جميع
اوثانكم * واطهركم. واعطيكم قلبا جديدا. وروحا جديدا اعطي فيكم * وانزع
القلب الحجري من جسدكم. واعطيكم قلبا لحميا * وروحي اعطي فيكم. واجعلكم كي
تسيروا بمعادلي. وتحفظون احكامي وتصنعوها * وتسكنون علي الارض التي اعطيتها
لابايكم * وتكونون لي شعبا. وانا اكون لكم الها.

Ita dicit Adonai Dominus; Quia dixe- 13
runt tibi, Tu devoratrix hominum es, &
facta es orbata gente tuâ: Propter eà 14
non devorabis ampliùs homines, & gens
tua non orbabitur te ampliùs, dixit Ado-
nai Dominus: Non audietur ampliùs 15
de vobis ignominia gentium, nec ampliùs
patiemini eam, dicit Dominus Deus. Fuit 16
etiam ſermo Domini ad me, dicens; O 17
fili hominis, domus Iſraelis ſuper terram
ſuam habitantes, ſordibus ſuis pollue-
bant eam in viis ſuis; adeóque propter
idola & turpitudines eorum, velut ſor-
des menſtrua patientis facta fuerat terra
eorum coram facie mea: Ideò fudi ſu- 18
per eos furorem meum. Propter ſangui-
nem quem in terra fuderunt, eámque ſuis
idolis contaminaverunt; Diſperſi eos 19
inter gentes, & diſſeminavi eos per re-
giones: ſecundùm vias eorum, & ſe-
cundùm iniquitates eorum judicavi eos.
Ad gentes autem ingreſſi quocunque in- 20
greſſi ſunt, polluerunt nomen meum ſa-
croſanctum, cùm dicerent populum Do-
mini ſe eſſe, & de terra ſua exiiſſe. At- 21
tamen peperci eis propter nomen meum ſa-
croſanctum quod polluerat domus Iſraelis
inter gentes ad quas ingreſſi ſunt. Pro- 22
pterea dic domui Iſraelis; Ita dicit Ado-
nai Dominus, Non veſtri causâ feci ego
O domus Iſraelis, ſed propter nomen
meum ſacroſanctum quod polluiſtis inter
gentes ad quas ingreſſi eſtis. Et ſancti- 23
ficabo nomen meum ſacroſanctum propha-
natum inter gentes, quod prophanâſtis in
medio earum: & ſcient gentes me eſſe
Dominum, dicit Adonai Dominus, quum
ſanctificatus fuero in vobis coram oculis
earum. Recipiam vos è gentibus, & 24
colligam vos ex omnibus terris, introdu-
camque vos in terram veſtram; Et a- 25
ſpergam vos aquâ mundâ, & emundabi-
mini cunctis ſordibus veſtris, cunctiſque
idolis veſtris. Mundabo vos inquam, 26
& dabo vobis cor novum, & ſpiritum no-
vum indam vobis; & auferam cor lapi-
deum è corpore veſtro, dabóque vobis cor
carneum. Spiritum meum dabo in vo- 27
bis, & efficiam ut ambuletis in juſtitiis
meis, judicia mea cuſtodiatis & perfici-
atis: Adeóque habitabitis ſuper terram 28
quam dedi patribus veſtris; & eritis
mihi populus, & ego ero vobis Deus.

vocabo & ; veſtris inquinamentis univerſis de vos ſervabo Et
29 והושעתי אתכם מכל טמאותיכם וקראתי
vobis ſuper dabo non & , illud faciam multiplicare &, frumentum ad
אל־הדגן והרביתי אתו ולא־אתן עליכם
agri germen & , ligni fructum faciam multiplicare Et famem
30 רעב : והרביתי את־פרי העץ ותנובת השדה
gentibus in famis probrum ultrà capiatis non quod propter
למען אשר לא תקחו עוד חרפת רעב בגוים :
, veſtrorum ſtudiorum & , malarum veſtrarum viarum recordabimini Et
31 וזכרתם את־דרכיכם הרעים ומעלליכם
, veſtras iniquitates ſuper, veſtris faciebus in vos reprobabitis & : bona non quæ
אשר לא־טובים ונקטתם בפניכם על עונתיכם
dixit , faciens ego vos propter Non . veſtras abominationes ſuper &
32 ועל תועבותיכם : לא למענכם אני־עשה נאם
veſtris viis de erubeſcite & , pudeat : vobis ſit notum , Deus Dominus
אדני יהוה יודע לכם בושו והכלמו מדרכיכם
die In , Deus Dominus dixit Sic . Iſrael domus
33 בית ישראל : כה אמר אדני יהוה ביום
faciam habitare & : veſtris iniquitatibus omnibus ab vos me mundare
טהרי אתכם מכל עונותיכם והושבתי
deſolata terra Et . deſolatæ erunt ædificatæ & , urbes
34 את־הערים ונבנו החרבות : והארץ הנשמה
. tranſeuntis omnis oculis in deſolatio fuit quod eo pro coletur
תעבד תחת אשר היתה שממה לעיני כל־עובר :
: Heden hortus ſicut eſt facta deſolata iſta Terra , dicent Et
35 ואמרו הארץ הלזו הנשמה היתה כגן־עדן
munitæ , dirutæ & , deſolatæ & , deſertæ civitates &
והערים החרבות והנשמות והנהרסות בצורות
, veſtris circuitibus relinquentur quæ gentes ſcient Et . habitantur
36 ישבו : וידעו הגוים אשר ישארו סביבותיכם
: deſolatum plantavi , diruta ædificavi Dominus ego quod
כי אני יהוה בניתי הנהרסות נטעתי הנשמה
, Deus Dominus dixit Sic . feci & , ſum locutus Dominus ego
37 אני יהוה דברתי ועשיתי : כה אמר אדני יהוה
; eis faciendum ad , Iſrael domui requirar hoc Adhuc
עוד זאת אדרש לבית־ישראל לעשות להם
pecus ut , ſanctificatum pecus Ut . hominis pecus ſicut eos multiplicabo
38 ארבה אתם כצאן אדם : כצאן קדשים כצאן
deſertæ civitates erunt ſic , ejus ſtatis temporibus in Jeruſalaim
ירושלם במועדיה כן תהיינה הערים החרבות
. Dominus ego quod ſcient & : hominis pecore plenæ
מלאות צאן אדם וידעו כי־אני יהוה :

Verſio VULG. LAT.

29 Et ſalvabo vos ex univerſis inquinamentis veſtris: & vocabo frumentum, & multiplicabo illud, & non imponam vobis famem. 30 Et multiplicabo fructum ligni, & genimina agri, ut non portetis ultrà opprobrium famis in Gentibus. 31 Et recordabimini viarum veſtrarum peſſimarum, ſtudiorúmque non bonorum: & diſplicebunt vobis iniquitates veſtræ, & ſcelera veſtra. 32 Non propter vos ego faciam, ait Dominus Deus, notum ſit vobis: confundimini, & erubeſcite ſuper viis veſtris, domus Iſrael. 33 Hæc dicit Dominus Deus; In die, qua mundavero vos ex omnibus iniquitatibus veſtris, & inhabitari fecero urbes, & inſtauravero ruinoſa, 34 Et terra deſerta fuerit exculta, quæ quondam erat deſolata in oculis omnis viatoris, 35 Dicent; Terra illa inculta, facta eſt ut hortus voluptatis: & civitates deſertæ, & deſtitutæ atque ſuffoſſæ, munitæ ſederunt. 36 Et ſcient Gentes quæcunque derelictæ fuerint in circuitu veſtro, quia ego Dominus ædificavi diſſipata, plantavique inculta, ego Dominus locutus ſim, & fecerim. 37 Hæc dicit Dominus Deus; Adhuc in hoc invenient me domus Iſrael, ut faciam eis: Multiplicabo eos ſicut gregem hominum. 38 Ut gregem ſanctum, ut gregem Jeruſalem in ſolennitatibus ejus: Sic erunt civitates deſertæ, plenæ gregibus hominum: & ſcient quia ego Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

29 Καὶ σώσω ὑμᾶς ἐκ πασῶν τῶν ἀκαθαρσιῶν ὑμῶν, καὶ καλέσω τὸν σῖτον, καὶ πληθυνῶ αὐτὸν, καὶ οὐ δώσω ἐφ' ὑμᾶς λιμόν. 30 Καὶ πληθυνῶ τὸν καρπὸν τοῦ ξύλου, καὶ τὰ (λ) γεννήματα τοῦ ἀγροῦ, (μ) ὅπως ἂν μὴ λάβητε ὀνειδισμὸν λιμοῦ ἐν τοῖς ἔθνεσι. 31 Καὶ μνησθήσεσθε τὰς ὁδοὺς ὑμῶν τὰς πονηρὰς, καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα ὑμῶν τὰ μὴ ἀγαθὰ, καὶ προσοχθιεῖτε κατὰ πρόσωπον αὐτῶν ἐν ταῖς ἀνομίαις ὑμῶν, καὶ (ν) ἐπὶ τοῖς βδελύγμασιν αὐτῶν. 32 Οὐ δι' ὑμᾶς ἐγὼ ποιῶ, λέγει (ξ) κύριος κύριος, γνωστὸν ἔσται ὑμῖν· αἰσχύνθητε καὶ ἐντράπητε ἐκ τῶν ὁδῶν ὑμῶν οἶκος (ο) Ἰσραήλ. 33 Τάδε λέγει ἀδωναὶ κύριος, Ἐν ἡμέρᾳ ᾗ καθαριῶ ὑμᾶς ἐκ πασῶν (π) ἀνομιῶν ὑμῶν, καὶ κατοικιῶ τὰς πόλεις, καὶ οἰκοδομηθήσονται (ρ) ἔρημοι, 34 Καὶ ἡ γῆ ἡ ἠφανισμένη ἐργασθήσεται, ἀνθ' ὧν ὅτι ἠφανισμένη ἐγενήθη κατ' ὀφθαλμοὺς παντὸς (σ) παροδεύοντος. 35 Καὶ ἐροῦσιν, Ἡ γῆ ἐκείνη (τ) ἡ ἠφανισμένη ἐγενήθη ὡς κῆπος τρυφῆς, καὶ αἱ πόλεις αἱ ἔρημοι καὶ ἠφανισμέναι καὶ κατεσκαμμέναι ὀχυραὶ ἐκάθισαν. 36 Καὶ γνώσονται τὰ ἔθνη, ὅσα ἂν καταλειφθῶσι κύκλῳ ὑμῶν, ὅτι (υ) ἐγὼ κύριος ᾠκοδόμησα τὰς καθῃρημένας, καὶ κατεφύτευσα τὰς ἠφανισμένας· (φ) ἐγὼ κύριος ἐλάλησα, καὶ ποιήσω. 37 Τάδε λέγει (χ) ἀδωναὶ κύριος, Ἔτι τοῦτο (ψ) ζητηθήσομαι τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ τοῦ ποιῆσαι αὐτοῖς· πληθυνῶ αὐτοὺς ὡς πρόβατα ἀνθρώπους, 38 Ὡς πρόβατα ἅγια, ὡς πρόβατα Ἱερουσαλὴμ ἐν ταῖς ἑορταῖς αὐτῆς· οὕτως ἔσονται αἱ πόλεις αἱ ἔρημοι πλήρεις προβάτων ἀνθρώπων. καὶ γνώσονται ὅτι (ω) ἐγὼ κύριος.

MS.A. (λ) γεννήματα (μ) ὅπως μὴ λάβητε ἔτι ὀνειδισμὸν * λαοῦ ἐν (ν) ἐπὶ τοῖς (ξ) κύριος ὁ θεὸς, γνωστὸν ἔσται (ο) Ἰσραὴλ, λέγει κύριος. Τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς, Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ᾗ (π) τῶν ἀνομιῶν (ρ) αἱ ἔρημοι, Καὶ ἡ γῆ ἡ ἠφανισμένη (σ) διοδεύοντος. (τ) ἡ ἠφανισμένη (υ) ἐγώ εἰμι κύριος· (φ) ὅτι ἐγὼ κύριος κύριος (χ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (ψ) ζητηθήσομαι (ω) ἐγώ εἰμι κύριος.

Et ſalvos vos faciam ex univerſis immunditiis veſtris: & vocabo frumentum, & multiplicabo illud: & non dabo ſuper vos famem. Et multiplicabo fructum ligni, & genimina agri: ut non (μ) portetis opprobrium famis in gentibus. Et recordabimini viarum veſtrarum peſſimarum, ſtudiorumque veſtrorum non bonorum: & diſplicebitis ante faciem (ν) ipſorum in iniquitatibus veſtris, & ſuper abominationibus veſtris. Non propter vos ego facio, dicit Dominus Dominus: notum eſt vobis. Confundimini, & erubeſcite de viis veſtris, domus Iſrael. Hæc dicit Adonai Dominus; In die, quâ mundabo vos ex omnibus iniquitatibus veſtris, & habitari faciam urbes, & ædificabuntur ſolitudines, Et terra deſerta excoletur, pro eo quod deſolata erat ante oculos omnis viatoris: Et dicent; Terra illa deſerta facta eſt, ut hortus deliciarum: & civitates deſertæ, & diſſipatæ, atque ſuffoſſæ, munitæ ſederunt. Et ſcient gentes, quæ derelictæ fuerint in circuitu veſtro, quia ego Dominus ædificavi deſtructas, & plantavi deletas. Ego Dominus loquutus ſum, & faciam. Hæc dicit Adonai Dominus; Adhuc in hoc quærar domui Iſrael, ut faciam eos: Multiplicabo eos, ſicut oves, homines, ut oves ſanctas, ut oves Hieruſalem in ſolemnitatibus ejus. Sic erunt civitates deſertæ plenæ ovium (ω) hominum. Et ſcient quia ego Dominus.

CAP. XXXVII. לז

, DOMINUS ſpiritu in me eduxit & , DOMINI manus me ſuper Fuit
1 היתה עלי יד־יהוה ויוצאני ברוח יהוה
. oſſibus plenus ipſe & ; campi medio in me fecit requieſcere &
ויניחני בתוך הבקעה והיא מלאה עצמות :
multa ecce & : undique , undique ea juxta me fecit tranſire Et
2 והעבירני עליהם סביב סביב והנה רבות
dixit Et . valde ſicca ecce & , campi faciei ſuper valdè
מאד על־פני הבקעה והנה יבשות מאד : ויאמר 3
, dixi & ? hæc oſſa vivent nunquid , hominis Fili , me ad
אלי בן־אדם התחיינה העצמות האלה ואמר
Vaticinare , me ad dixit Et . noſti tu Deus Domine
4 אדני יהוה אתה ידעת : ויאמר אלי הנבא
ſicca Oſſa , eis ad dices & ; iſtis oſſibus ſuper
על־העצמות האלה ואמרת אליהם העצמות היבשות
. DOMINI verbum audite
שמעו דבר־יהוה :

CAP. XXXVII.

1 Facta eſt ſuper me manus Domini, & eduxit me in ſpiritu Domini: & dimiſit me in medio campi, qui erat plenus oſſibus: 2 Et circumduxit me per ea in gyro: erant autem multa valde ſuper faciem campi, ſiccáque vehementer. 3 Et dixit ad me: Fili hominis, putaſne vivent oſſa iſta? Et dixi; Domine Deus, tu noſti. 4 Et dixit ad me; Vaticinare de oſſibus iſtis: & dices eis, Oſſa arida, audite verbum Domini.

ΚΕΦ. λζ'.

1 Καὶ ἐγένετο ἐπ' ἐμὲ χεὶρ κυρίου, καὶ ἐξήγαγέ με ἐν πνεύματι κύριος, καὶ ἔθηκέ με ἐν μέσῳ τοῦ πεδίου, καὶ τοῦτο ἦν μεστὸν ὀστέων ἀνθρωπίνων, 2 Καὶ περιήγαγέ με ἐπ' αὐτὰ κυκλόθεν κύκλῳ, καὶ ἰδοὺ πολλὰ σφόδρα ἐπὶ προσώπου τοῦ πεδίου, (α) ξηρὰ σφόδρα. 3 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώπου, εἰ ζήσεται τὰ (β) ὀστέα ταῦτα; καὶ εἶπα, Κύριε κύριε, σὺ ἐπίστῃ (γ) ταῦτα. 4 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Προφήτευσον ἐπὶ τὰ ὀστᾶ ταῦτα, καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, Τὰ ὀστᾶ τὰ ξηρὰ, ἀκούσατε λόγον κυρίου.

MS.A. (α) καὶ ἰδοὺ ξηρὰ (β) ὀστᾶ (γ) αὐτά.

CAP. XXXVII.

Et facta eſt ſuper me manus Domini: & eduxit me in ſpiritu (α) Dominus: & poſuit me in medio campi: & hic erat plenus oſſium hominum: Et circumduxit me ſuper ea per gyrum in circuitu: & ecce multa nimis ſuper faciem campi, arida vehementer. Et dixit ad me; Fili hominis, ſi vivent oſſa hæc? Et dixi; Domine Domine, tu noſti hæc. Et dixit ad me; Propheta ſuper oſſa iſta, et dices eis; Oſſa arida, audite verbum Domini:

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

29 ואפרוק יתכון מכל סואבתכון ואברך ית עבורא ואסגי יתיה ולא אתן עליכון
30 כפנא : ואסגי ית פרי אילנא ועללת חקלא בדיל דלא תקבלון עוד חסודי כפנא
31 בני עממיא : ותדכרון ית אורחיכון בישתא ועובדיכון דלא תקנין ותתנקון
32 ותהון חזן על חוביכון ועל תועבתכון : לא בדילכון אנא עביד אמר יי אלהים
33 יתידע לכון בהיתו ואתכניעו מאורחתכון בית ישראל : כדנן אמר יי אלהים
34 ביומא דאדכי יתכון מכל חוביכון ואותיב ית קרויא ויתבנין חורבתא : וארעא
35 דהות צדיא תתפלח חלף דהות צדו לעיני כל דעדי : ויימרון ארעא דנן דישראל
דהות צדיא תבת למהוי כגנתא דעדן וקרויא חרבתא וצדיתא ומפגרתא כריכין
36 תקיפין יתיבו : וידעון עממיא די ישתארון סחרניכון ארי אנא יי בניתי מפגרתא קיימית
37 צדיתא אנא יי גזרית במימרי ואקים : כדנן אמר יי אלהים עוד דא אשתאל לכון
38 במימרי לבית ישראל למעבד להון אסגנון באנשא ואצלחנון בבעירא : כעמא
קדישא כעמא דמדכן ואתן לירושלם בזמן מועדי פסחא כן יהוין קרויא ארעא
דישראל דהואה חרבן יהון מלין אנשא דעמא בית ישראל וידעון ארי אנא יי :

לז

1 שרת עלי רוח נבואה מן קדם יי ואפקני ברוח נבואה די שרת עלי מן קדם יי
2 ואשרני בגו בקעתא והיא מליא גרמי אנשא : ואעברני עליהון סחור סחור והא
3 סגיאן לחדא על אפי בקעתא והא יבשין לחדא : ואמר לי בר אדם התיחן גרמיא
4 האלין ואמרית יי אלהים את גלי קדמך : ואמר לי אתנבי על גרמיא האלין ותימר
להון גרמיא יבישיא קבילו פתגמא דיי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſalvabo vos ab univerſis inquinamentis veſtris, & benedicam frumento, & multiplicabo illud, & non dabo in vobis famem. Et multiplicabo fructum arboris, & germen agri, ut non ſuſcipiatis amplius opprobrium famis inter populos. Et recordabimini viarum veſtrarum peſſimarum, & operum veſtrorum quæ non fuerunt recta, & ingemiſcetis ipſi videntes, ob peccata veſtra, & abominationes veſtras. Non propter vos ego facio, dicit Dominus Deus: notum ſit vobis, confundimini & erubeſcite à viis veſtris domus Iſrael. Hæc dicit Dominus Deus, In die qua mundavero vos ab omnibus iniquitatibus veſtris; & habitabiles reddam urbes, & conſtruentur ruinæ. Et terra quæ deſolata fuerat excoletur, pro eo quòd fuit vaſtata in oculis omnis tranſeuntis. Et dicent, Terra hæc Iſrael quæ fuerat deſerta, converſa eſt ut ſit ſicut hortus voluptatis, & civitates deſertæ, & deſolatæ, & deſtructæ arces, jam munitæ inhabitantur. Et ſcient populi qui remanſerint in circuitu veſtro, quia ego Dominus ædificavi deſtructa, ſuſcitavi deſolata: ego Dominus decrevi in verbo meo, & confirmabo. Hæc dicit Dominus Deus, Adhuc requiſitus ero in verbo meo à domo Iſrael ut faciam hoc eis: multiplicabo eos hominibus, & proficere faciam eos in pecoribus. Sicut populus ſanctus, ſicut populus qui mundatur, & venit in Jeruſalem tempore ſolemnitatis Phaſe; ſic urbes terræ Iſrael quæ erant deſertæ, erunt plenæ hominibus populi domus Iſrael; & ſcient quia ego Dominus.

CAP. XXXVII.

Reſedit ſuper me ſpiritus prophetiæ à facie Domini; & eduxit me in ſpiritu prophetiæ quæ reſederat ſuper me à facie Domini, & poſuit me in medio campi qui erat plenus oſſibus hominum. Et traduxit me ſuper ea in circuitu: & ecce erant multa valde ſuper faciem campi, & ecce erant ſicca admodum. Et dixit ad me: Fili hominis, nunquid reviviſcent oſſa iſta? Et dixi: Domine [illegible]

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܦܪܘܩܟܘܢ ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܟܘܢ܂ ܘܐܩܪܐ ܠܥܒܘܪܐ܂ ܘܐܣܓܝܘܗܝ܂ ܘܠܐ ܐܬܠ
ܥܠܝܟܘܢ ܟܦܢܐ܂ * ܘܐܣܓܐ ܦܐܪܐ ܕܐܝܠܢܐ܂ ܘܥܠܠܬܐ ܕܚܩܠܐ܂ ܘܬܘܒ ܠܐ ܬܩܒܠܘܢ ܚܣܕܐ
ܕܟܦܢܐ ܒܝܬ ܥܡܡܐ܂ * ܘܬܬܕܟܪܘܢ ܠܐܘܪܚܬܟܘܢ ܒܝܫܬܐ܂ ܘܥܒܕܝܟܘܢ ܣܢܝܐܐ܂
ܘܬܬܢܟܦܘܢ ܐܦܝܟܘܢ ܒܥܘܠܟܘܢ ܘܒܛܢܦܘܬܟܘܢ܂ * ܘܕܥܘ ܕܠܐ ܗܘܐ ܡܛܠܬܟܘܢ ܥܒܕ
ܐܢܐ ܗܠܝܢ܃ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ܂ ܒܗܬܘ ܘܐܬܟܠܝܘ ܡܢ ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܒܝܫܬܐ܂ ܘܠܐ ܬܡܘܬܘܢ
ܒܝܬ ܝܣܪܝܠ܃ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ܂ ܒܝܘܡܐ ܕܡܕܟܐ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܡܢ ܟܠܗ
ܥܘܠܟܘܢ܃ ܡܘܬܒ ܐܢܐ ܡܕܝܢܬܐ܂ ܘܒܢܐ ܐܢܐ ܚܘܪܒܐ܂ * ܘܐܪܥܐ ܕܚܪܒܐ ܗܘܬ ܬܬܦܠܚ
ܕܚܪܒܐ ܗܘܬ ܒܥܝܢܝ ܟܠ ܥܒܪܝ ܐܘܪܚܐ܂ * ܘܢܐܡܪܘܢ܃ ܐܪܥܐ ܗܝ ܚܪܒܬܐ܂ ܗܘܬ ܐܝܟ ܦܪܕܝܣܐ ܕܥܕܢ܂
ܘܡܕܝܢܬܐ ܕܚܪܒܢ ܗܘܝ ܘܐܬܥܩܪ܂ ܗܘܝ ܟܪܟܐ ܚܣܝܢܐ܂ * ܘܢܕܥܘܢ ܥܡܡܐ ܕܢܫܬܚܪܘܢ
ܚܕܪܝܟܘܢ܃ ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܒܢܐ ܐܢܐ ܕܡܬܥܩܪܢ܂ ܘܢܨܒ ܐܢܐ ܚܪܒܬܐ܂ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ ܐܡܪܬ ܘܥܒܕ
ܐܢܐ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ܂ ܬܘܒ ܒܗܕܐ ܐܢܐ ܡܬܒܥܐ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܕܐܥܒܕ ܠܗܘܢ
ܘܐܣܓܐ ܐܢܘܢ܂ ܐܝܟ ܥܢܐ ܕܒܢܝ ܐܢܫܐ܂ * ܐܝܟ ܥܢܐ ܩܕܝܫܬܐ܂ ܘܐܝܟ ܥܢܐ ܕܐܘܪܫܠܡ
ܒܥܐܕܐ ܕܝܠܗ܃ ܗܟܢܐ ܢܗܘܝܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܚܪܒܢ ܗܘܝ܂ ܘܢܬܡܠܝܢ ܥܢܐ
ܕܒܢܝܢܫܐ܂ ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂

* ܦܘܠܓܗ * ܫܠܡ *

* ܠܙ [illegible] * ܘܗܘܬ ܥܠܝ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܘܐܦܩܢܝ ܒܪܘܚܗ
ܡܪܝܐ܂ ܘܐܣܝܡܢܝ ܒܦܩܥܬܐ܂ ܘܡܠܝܐ ܗܘܬ ܓܪܡܐ܂ * ܘܐܥܒܪܢܝ ܥܠܝܗܘܢ ܚܕܪܝܗܘܢ܂
ܘܚܙܝܬ ܕܣܓܝܐܝܢ ܛܒ ܒܦܩܥܬܐ܂ ܘܝܒܝܫܢ ܛܒ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܚܝܝܢ
ܓܪܡܐ ܗܠܝܢ܂ ܘܐܡܪܬ܂ ܐܢܬ ܗܘ ܝܕܥ ܐܢܬ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܓܪܡܐ
ܗܠܝܢ܂ ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ܂ ܓܪܡܐ ܝܒܝܫܐ܂ ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ܂

* Eripiam vos ab omnibus impuritatib⁹ vestris, 29
advocabo frumentum & multiplicabo illud,
& non adducã super vos famem: Multiplicabo 30
fructus arborũ & proventus terræ, & posthac
non patiemini opprobrium famis inter
gentes. Ibique recordabimini viarum vestrarum 31
reprobarum, & actionum vestrarum stolidarum,
& rugabuntur facies vestræ propter
iniquitatem vestrã & abominationes vestras.
Verùm scitote nequaquam propter vos hæc 32
sum facturus, ait Dominus dominorum. Erubescite,
& cohibete vos à viis vestris pessimis,
& ne moriamini Israelitæ. Sic ait Dominus 33
dominorum; Quâ die mundabo vos ab omnibus
iniquitatibus vestris, habitatas reddam
urbes, & reædificabo ruinas; Terra quæ deserta 34
erat & inculta in oculis omnium viatorum,
coletur: Dicéntque, Terra illa deserta, 35
facta est similis paradiso Edenis, & urbes
quæ dirutæ erant & eversæ, factæ sunt munitiones
fortissimæ. Ita cognoscent populi qui 36
reliqui manebunt circa vos, me Dominum reædificare
quæ destructa sunt, & conserere quæ
deserta: ego Dominus dixi, & faciam. Sic 37
ait Dominus dominorum; Ob id etiam Israelitas
requiro, ut faciam ipsis, & multiplicem
eos tanquam oves hominum. Ut oves 38
sanctæ, & ut oves Jerosolymæ in tempore solennitatum
ejus, ita erunt urbes quæ desertæ
fuerant; implebuntur enim ovibus hominum:
& cognoscent me esse Dominum.

CAP. XXXVII.

De revivificentia mortuorum.

DEinde fuit super me manus Domini, educénsque 1
me per spiritum suum Dominus, collocavit
me in planitie quæ plena erat ossibus:
Traduxítque me super ea circunquaque; & 2
vidi plurima esse admodum in ea planitie, &
admodum sicca. Tum dixit mihi; Fili hominis, 3
victuráne sunt ossa ista? Dixi, Tu quidem
nôsti Domine dominorum. Dixit verò 4
mihi, Vaticinare de ossibus istis, & dic eis;
Ossa arida, audite sermonem Domini.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* واخلصكم من جميع نجاساتكم وادعوا القمح واكثره ولا اعطي عليكم قحطا
* واكثر ثمر الشجر وغلات الحقل كي لا تاخذون ايضا تعيير الجوع في الامم * ولا
تذكرون ايضا طرقكم الشريرة ولا اعمالكم الغير صالحة ولا تسامون لوجوههم بآثامكم
ورذائلكم * فلست لاجلكم انا اصنع هذا يقول الرب الاله. يكون معروفا لكم
اخجلوا واستحيوا من طرقكم يا بيت اسرائيل يقول الرب * هكذا يقول الرب الاله في ذلك
اليوم الذي فيه اطهركم من جميع آثامكم واسكنكم المدن وتبنى الخرابات * وتستعمل
الارض الداثرة من اجل ان الارض صارت داثرة لعيون كل مجتاز * ويقولون صارت تلك
الارض الداثرة مثل بستان نعيم والمدن الخراب الداثرة المهدمة جلست حصينة * وتعلم
الامم الذين بقوا حولكم اني انا الرب بنيت الخرابات وغرست الداثرات لاني انا الرب الرب
تكلمت وسأصنع * هكذا يقول الرب الرب الاله. هذه ايضا الطلبة سأصنع لبيت اسرائيل
لاصنع لهم واكثرهم مثل خراف اناسا * مثل خراف مقدسة مثل خراف اورشليم في
اعيادها. هكذا تصير المدن الخراب مملوة من خراف الناس. ويعلمون اني انا الرب

٭ الفصل السابع والثلثون ٭

٭ الاصحاح الحادي والعشرون ٭

* وكانت علي يد الرب. واخرجني بروح الرب ووضعني في وسط الصحراء. وهذه كانت
مملوة من عظام الناس * واوقفني عليها من حولها دايرا. واذا هي كثيرة جدا على وجه
الصحراء. وهي يابسة جدا * وقال لي يا ابن الانسان اتحيا هذه العظام. فقلت يا رب يا رب
انت تعلم هذه * فقال لي يا ابن الانسان تنبأ على هذه العظام فتقول لهم. ايتها العظام
اليابسة اسمعي قول الرب

* *Et liberabo vos ab omnibus immunditiis* 29
vestris. Advocabo frumentum, & multiplicabo
illud, nec inferam vobis annonæ
* *caritatem: Et multiplicabo fructus arborum* 30
& proventus agrorum, ut non reportetis
amplius improperium famis inter
gentes. Non revocabitis amplius in memoriam 31
vias vestras malas, neque actiones
vestras improbas; nec æmulabimini
vultus eorum iniquitatibus & abominationibus
vestris. Non quidem propter 32
vos hæc faciam, dicit Dominus Deus,
notum sit vobis. Confundimini & erubescite
de viis vestris O domus Israelis, ait
Dominus. Ita dicit Dominus Deus, Eo 33
die quo mundabo vos ab omnibus iniquitatibus
vestris, faciam quoque ut habitetis
in urbibus: restaurabuntur ruinæ, Et 34
tellus inculta coletur (nam tellus deserta
facta est ob oculos omnium viatorum,)
Dicentque; Facta est illa tellus inculta, 35
similis horto deliciarum; & urbes dirutæ,
incultæ, suffossæ, resederunt munitæ.
Et agnoscent gentes quæ circa vos remanserunt, 36
me Dominum restaurâsse ruinas,
& plantâsse terras incultas: quia
ego Dominus Dominus locutus sum, etiam
faciam. Ita dicit Dominus, Dominus 37
Deus; Hinc adhuc faciam requisitionem
domûs Israelis, ut faciam eis, & multos
reddam eos, ut agnos, hominis; Ut 38
agnos sanctos, ut agnos Jerosolymæ in
festivitatibus ejus. Sic urbes dirutæ plenæ
fient agnis humanis, & cognoscent
me esse Dominum.

CAP. XXXVII.

Textus vigesimus primus.

* *ET fuit super me manus Domini, &* 1
eduxit me in spiritu Domini, posuitque
me in medio solitudinis (hæc autem plena
erat ossibus hominis.) Et cum circumduxisset 2
me undequaque circum ea,
(& hæc quidem perquam plurima erant
super faciem solitudinis illius, eaque admodum
sicca) Dixit mihi; O fili hominis, 3
num victura sunt hæc ossa? Dixi,
O Domine, O Domine, tu id nôsti. Tum 4
dixit mihi; O fili hominis, vaticinare de
ossibus istis, & dicas eis; O ossa sicca, audite
sermonem Domini.

יְחֶזְקֵאל : לז

ego Ecce ,his oſſibus Deus Dominus dixit Sic
5 כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה לָעֲצָמוֹת הָאֵלֶּה הִנֵּה אֲנִי
, nervos vos ſuper dabo Et .vivetis & ,ſpiritum vos in *introducens*
6 מֵבִיא בָכֶם רוּחַ וִחְיִיתֶם : וְנָתַתִּי עֲלֵיכֶם גִּידִים
, pelle vos *ſuper* *incruſtabo* & ,carnem vos ſuper faciam aſcendere &
וְהַעֲלֵתִי עֲלֵיכֶם בָּשָׂר וְקָרַמְתִּי עֲלֵיכֶם עוֹר
.Dominus *ego* quòd ſcietis & ; vivetis & ,ſpiritum vobis in *dabo* &
וְנָתַתִּי בָכֶם רוּחַ וִחְיִיתֶם וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה :
,me *prophetare ſecundùm* *vox* fuit & : *ſum juſſus* ſicut prophetavi Et
7 וְנִבֵּאתִי כַּאֲשֶׁר צֻוֵּיתִי וַיְהִי־קוֹל כְּהִנָּבְאִי
.ſuum os ad os oſſa acceſſerunt & ,commotio ecce &
וְהִנֵּה־רַעַשׁ וַתִּקְרְבוּ עֲצָמוֹת עֶצֶם אֶל־עַצְמוֹ :
incruſtarat & ,aſcenderat caro & ,nervi ea ſuper ecce & ,vidi Et
8 וְרָאִיתִי וְהִנֵּה עֲלֵיהֶם גִּדִים וּבָשָׂר עָלָה וַיִּקְרַם
,me ad dixit Et .eis in non ſpiritus & ; deſuper pelle ea ſuper
9 עֲלֵיהֶם עוֹר מִלְמָעְלָה וְרוּחַ אֵין בָּהֶם : וַיֹּאמֶר אֵלַי
ad *dices* & ,hominis fili vaticinare ; ſpiritum ad Vaticinare
הִנָּבֵא אֶל־הָרוּחַ הִנָּבֵא בֶן־אָדָם וְאָמַרְתָּ אֶל־
veni ventis quatuor A ,Deus Dominus dixit Sic ,ſpiritum
הָרוּחַ כֹּה־אָמַר ׀ אֲדֹנָי יְהוִה מֵאַרְבַּע רוּחוֹת בֹּאִי
ſicut prophetavi Et .vivent & ,iſtos interfectos in ſuffla & ,ſpiritus
10 הָרוּחַ וּפְחִי בַּהֲרוּגִים הָאֵלֶּה וְיִחְיוּ : וְהִנַּבֵּאתִי כַּאֲשֶׁר
ſteterúntque ,vixerunt & ,ſpiritus ea in eſt ingreſſus & :mihi præceperat
צִוָּנִי וַתָּבוֹא בָהֶם הָרוּחַ וַיִּחְיוּ וַיַּעַמְדוּ
Fili ,me ad dixit Et .valde ,valde *magna virtus* ſuos pedes ſuper
11 עַל־רַגְלֵיהֶם חַיִל גָּדוֹל מְאֹד מְאֹד : וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־
ecce : *ipſi* Iſrael domus univerſa ,hæc oſſa ,hominis
אָדָם הָעֲצָמוֹת הָאֵלֶּה כָּל־בֵּית יִשְׂרָאֵל הֵמָּה הִנֵּה
ſumus ſucciſi ,noſtra ſpes periit & ,noſtra oſſa Aruerunt ,*dicentes*
אֹמְרִים יָבְשׁוּ עַצְמוֹתֵינוּ וְאָבְדָה תִקְוָתֵנוּ נִגְזַרְנוּ
Dominus dixit Sic ,eos ad *dices* & ,vaticinare Propterea .nobis
12 לָנוּ : לָכֵן הִנָּבֵא וְאָמַרְתָּ אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי
faciam aſcendere & ,*veſtra ſepulchra* *aperiens* ego Ecce ,Deus
יְהוִה הִנֵּה אֲנִי פֹתֵחַ אֶת־קִבְרוֹתֵיכֶם וְהַעֲלֵיתִי
ad vos faciam venire & : mi populus ,veſtris *ſepulchris* è vos
אֶתְכֶם מִקִּבְרוֹתֵיכֶם עַמִּי וְהֵבֵאתִי אֶתְכֶם אֶל־
me aperiendo in ,Dominus *ego* quòd ſcietis Et .Iſrael *humum*
13 אַדְמַת יִשְׂרָאֵל : וִידַעְתֶּם כִּי־אֲנִי יְהוָה בְּפִתְחִי
,veſtris *ſepulchris* è vos *me aſcendere faciendo in* & ,veſtra ſepulchra
אֶת־קִבְרוֹתֵיכֶם וּבְהַעֲלוֹתִי אֶתְכֶם מִקִּבְרוֹתֵיכֶם
, vivetis & ,vobis in meum ſpiritum dabo Et .mi populus
14 עַמִּי : וְנָתַתִּי רוּחִי בָכֶם וִחְיִיתֶם
quod ſcietis & : veſtram humum ſuper vos faciam requieſcere &
וְהִנַּחְתִּי אֶתְכֶם עַל־אַדְמַתְכֶם וִידַעְתֶּם כִּי
fuit Et .Dominus dixit ,feci & ,ſum locutus Dominus ego
15 אֲנִי יְהוָה דִּבַּרְתִּי וְעָשִׂיתִי נְאֻם־יְהוָה : וַיְהִי
ſume ,hominis fili tu Et :dicendo ,me ad Domini verbum
16 דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר : וְאַתָּה בֶן־אָדָם קַח־
Iſrael filiis & ,Jehudæ *eo ſuper* ſcribe & ; unum lignum tibi
לְךָ עֵץ אֶחָד וּכְתֹב עָלָיו לִיהוּדָה וְלִבְנֵי יִשְׂרָאֵל
ligno ,Joſeph ,eo *ſuper* ſcribe & ,*unum* lignum tolle & : ejus ſociis
חֲבֵרָו וּלְקַח עֵץ אֶחָד וּכְתוֹב עָלָיו לְיוֹסֵף עֵץ
ea *fac accedere* Et .ejus ſociorum ,Iſrael domui cunctæ & ,Ephraim
17 אֶפְרַיִם וְכָל־בֵּית יִשְׂרָאֵל חֲבֵרָו : וְקָרַב אֹתָם
.*tua manu in ſingula in* erunt & : unum lignum *in* ,*tibi* *unum* *ad* *unum*
אֶחָד אֶל־אֶחָד לְךָ לְעֵץ אֶחָד וְהָיוּ לַאֲחָדִים בְּיָדֶךָ :
indicabis Nónne : dicendo ,tui populi filii te ad dixerint cùm Et
18 וְכַאֲשֶׁר יֹאמְרוּ אֵלֶיךָ בְּנֵי עַמְּךָ לֵאמֹר הֲלוֹא־תַגִּיד
? tibi iſta quid ,nobis
לָנוּ מַה־אֵלֶּה לָּךְ :

Verſio VULG. LAT.

5 Hæc dicit Dominus Deus oſſibus
his ; Ecce ego intromittã in vos
6 ſpiritum, & vivetis. Et dabo ſu-
per vos nervos, & ſuccreſcere fa-
ciam ſuper vos carnes, & ſuper-
extendam in vobis cutem : &
dabo vobis ſpiritum, & vivetis,
7 & ſcietis quia ego Dñs. Et pro-
phetavi ſicut præceperat mihi :
factus eſt autem ſonitꝰ, prophe-
tante me, & ecce commotio : &
acceſſerunt oſſa ad oſſa, unum-
8 quodque ad juncturam ſuam. Et
vidi, & ecce ſuper ea nervi &
carnes aſcenderunt : & extenta
eſt in eis cutis deſupèr, & ſpiri-
9 tum non habebant. Et dixit ad
me ; Vaticinare ad ſpiritum, va-
ticinare, fili hominis, & dices ad
ſpiritum ; Hæc dicit Dominus
Deꝰ ; A quatuor ventis veni ſpi-
ritus, & inſuffla ſuper interfectos
10 iſtos, & reviviſcant. Et prophe-
tavi ſicut præceperat mihi : &
ingreſſus eſt in ea ſpiritus, &
vixerunt : ſteterúntque ſuper pe-
des ſuos exercitus grandis nimis
11 valdé. Et dixit ad me ; Fili ho-
minis, oſſa hæc univerſa, domus
Iſrael eſt : ipſi dicunt ; Aruerunt
oſſa noſtra, & periit ſpes noſtra,
12 & abſciſſi ſumus. Propterea va-
ticinare, & dices ad eos ; Hæc di-
cit Dominus Deus ; Ecce ego a-
periam tumulos veſtros, & edu-
cam vos de ſepulchris veſtris, po-
pulus meus : & inducam vos in
13 terram Iſrael. Et ſcietis quia ego
Dominus, cùm aperuero ſepul-
chra veſtra, & eduxero vos de
tumulis veſtris, popule meus :
14 Et dedero ſpiritum meum in vo-
bis, & vixeritis, & requieſcere
vos faciã ſuper humũ veſtrã : &
ſcietis quia ego Dominꝰ locutus
ſum, & feci, ait Dominꝰ Deus.
15 Et factꝰ eſt ſermo Domini ad
16 me, dicens ; Et tu, fili hominis,
ſume tibi lignum unum : & ſcri-
be ſuper illud ; Judæ, & filiorum
Iſrael ſociorum ejꝰ : et tolle li-
gnum alterum, et ſcribe ſuper il-
lud ; Joſeph ligno Ephraim, et
cunctæ domui Iſrael, ſociorúm-
17 que ejꝰ. Et adjunge illa, unum
ad alterum tibi in lignum unum :
et erunt in unionem in manu
18 tua. Cùm autem dixerint ad te
filii populi tui, loquentes ; Nónne
indicas nobis quid in his tibi
velis ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Τάδε λέγει (δ) κύριος τοῖς ὀστέοις τούτοις, Ἰδοὺ ἐγὼ φέρω (ε) ἐφ᾽ ὑμᾶς πνεῦμα
6 ζωῆς, Καὶ δώσω ἐφ᾽ ὑμᾶς νεῦρα, καὶ ἀνάξω ἐφ᾽ ὑμᾶς (ζ) σάρκα, καὶ ἐκτενῶ ἐφ᾽ ὑμᾶς δέρμα, καὶ δώσω πνεῦμά μου (η) εἰς ὑμᾶς, καὶ ζήσεσθε, καὶ γνώσεσθε ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος. Καὶ
7 (ʺ) προεφήτευσα, καθὼς ἐνετείλατό μοι (θ). καὶ ἐγένετο (ι) ἐν τῷ ἐμὲ προφητεῦσαι, καὶ ἰδοὺ σεισμὸς, καὶ προσήγαγε τὰ ὀστᾶ ἑκά-
8 τερον πρὸς τὴν ἁρμονίαν αὐτοῦ. Καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ, ἐπ᾽ αὐτὰ νεῦρα καὶ σάρκες (κ) ἐφύοντο, καὶ ἀνέβαινεν ἐπ᾽ αὐτὰ (λ) δέρματα ἐπάνω, καὶ πνεῦμα οὐκ ἦν (μ) ἐπ᾽
9 αὐτοῖς. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Προφήτευσον (ν) ἐπὶ τὸ πνεῦμα, προφήτευσον υἱὲ ἀνθρώπου, καὶ εἰπὸν τῷ πνεύματι, Τάδε λέγει (ξ) κύριος, Ἐκ τῶν τεσσάρων πνευμάτων ἐλθὲ, καὶ ἐμφύσησον εἰς τοὺς νεκροὺς τούτους,
10 καὶ ζησάτωσαν. Καὶ (ο) προεφήτευσα καθότι ἐνετείλατό μοι, καὶ εἰσῆλθεν εἰς αὐτοὺς (π) τὸ πνεῦμα, καὶ ἔζησαν, καὶ ἔστησαν ἐπὶ τῶν ποδῶν αὐτῶν, συναγωγὴ (ρ) πολλὴ σφό-
11 δρα. Καὶ ἐλάλησε κύριος πρὸς μὲ, λέγων, Υἱὲ ἀνθρώπου, τὰ ὀστᾶ ταῦτα πᾶς οἶκος Ἰσραήλ ἐστιν, καὶ αὐτοὶ λέγουσι, Ξηρὰ γέγονε τὰ ὀστᾶ ἡμῶν, ἀπόλωλεν ἡ
12 ἐλπὶς ἡμῶν, διαπεφωνήκαμεν. Διατοῦτο προφήτευσον, καὶ εἰπὸν (σ), Τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἀνοίγω (τ) τὰ μνήματα ὑμῶν, καὶ ἀνάξω ὑμᾶς ἐκ τῶν μνημάτων ὑμῶν, καὶ εἰσάξω ὑμᾶς εἰς τὴν γῆν τοῦ
13 Ἰσραήλ· Καὶ γνώσεσθε ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος, ἐν τῷ ἀνοῖξαί με τοὺς τάφους ὑμῶν, τοῦ ἀναγαγεῖν με (υ) ἐκ τῶν τάφων τὸν
14 λαόν μου. Καὶ δώσω πνεῦμά μου εἰς ὑμᾶς, καὶ ζήσεσθε, καὶ θήσομαι ὑμᾶς ἐπὶ τὴν γῆν ὑμῶν, καὶ γνώσεσθε ὅτι ἐγὼ κύριος λελάληκα καὶ ποιήσω, λέγει (φ) κύριος.
15 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέ-
16 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, λάβε σεαυτῷ ῥάβδον, καὶ γράψον ἐπ᾽ αὐτὴν τὸν Ἰούδαν, καὶ τοὺς υἱοὺς (χ) Ἰσραὴλ τοὺς προσκειμένους (ψ) ἐπ᾽ αὐτόν· καὶ ῥάβδον δευτέραν λήψῃ σεαυτῷ, καὶ γράψεις αὐτὴν τῷ Ἰωσὴφ, ῥάβδον Ἐφραίμ, καὶ πάντας τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ τοὺς (ω) προστεθέντας πρὸς αὐτόν.
17 Καὶ συνάψεις αὐτὰς προσαλλήλας (ʺ) σεαυτῷ, εἰς ῥάβδον μίαν τοῦ δῆσαι (α) ἑαυτὰς,
18 καὶ ἔσονται ἐν τῇ χειρί σου. Καὶ ἔσται ὅταν λέγωσι πρὸς σὲ οἱ υἱοὶ τοῦ λαοῦ σου, (β) Οὐκ ἀναγγέλλεις ἡμῖν, τί ἐστι ταῦτά σοι;

Hæc dicit Dominus oſſibus iſtis; 5
Ecce ego affero ſuper vos ſpiritũ
vitæ, Et dabo ſuper vos nervos, 6
& inducam ſuper vos carnem, et
extendam ſuper vos pellem, &
dabo ſpiritum meum in vos: &
vivetis; & cognoſcetis, quoniam
ego ſum Dominus. Et prophetavi, 7
ſicut præcepit mihi. Et factum
(c) eſt, cùm ego propheta rem: &
ecce commotio: & accedebant oſ-
ſa (d) invicèm ad juncturam ſu-
am. Et vidi: & ecce ſuper ea 8
nervi & carnes oriebantur: &
aſcendebant ſuper ea pelles deſu-
pèr: & ſpiritus non erat in eis.
Et dixit ad me; Propheta ſuper 9
ſpiritum, propheta, fili hominis, et
dic ſpiritui; Hæc dicit Dominus;
A quatuor ſpiritibus (e) veni, &
inſuffla in mortuos iſtos, & vi-
vant. Et prophetavi, ſicut præ- 10
ceperat mihi. Et ingreſſus eſt in
eos ſpiritus: & vixerunt: & ſte-
terunt in pedibus ſuis, (f) congre-
gatio multa (g) nimis. Et loqu- 11
tus eſt Dominus ad me, dicens;
Fili hominis, oſſa hæc omnis do-
mus Iſrael eſt: & ipſi dicunt; A-
rida facta ſunt oſſa noſtra: periit
ſpes noſtra: (h) diſſonuimus. Pro- 12
pterea vaticinare, & dic; Hæc
dicit Dominus; Ecce ego aperio
memorias veſtras: & reducam
vos de ſepulchris veſtris: &
introducam vos in terram Iſra-
el: Et cognoſcetis quoniam ego 13
ſum Dominus; cùm aperuero ſe-
pulchra veſtra: ut educam (i) de
ſepulchris populum meum. Et 14
dabo ſpiritum meum in vobis &
vivetis: & ponam vos ſuper ter-
ram veſtrã: & cognoſcetis quia
ego Dominus. Locutus ſum, &
faciam, dicit Dominus. Et factum 15
eſt ſermo Domini ad me, dicens;
Fili hominis, aſſume tibi (k) vir- 16
gam: & ſcribe ſuper eam Ju-
dam, & filios Iſrael, qui appo-
ſiti ſunt ei. Et virgam ſecundam
aſſumes tibi: Et ſcribes eam (l)
ipſi Joſeph, virgam Ephraem, &
omnes filios Iſrael, qui appoſiti
ſunt ei. Et conjunges eas invi- 17
cèm tibi in virgam unam, ut co-
pules eas: & erunt in manu tua.
Et erit, quando dixerint tibi filii 18
populi mei, Non indicas nobis,
quid ſint iſta tibi?

MS.A. (δ) κύριος κύριος (ε) εἰς ὑμᾶς (ζ) σάρκας, (η) ἐφ᾽ ὑμᾶς, (ʺ) ἐπροφήτευσα, (θ) κύριος. (ι) φωνὴ ἐν τῷ ἐμὲ προφητεύειν, (κ) ἀνεφύοντο, (λ) δέρμα (μ) ἐν αὐτοῖς. (ν) υἱὲ ἀνθρώπου, προφήτευσον ἐπὶ τὸ πνεῦμα, καὶ εἰπὸν (ξ) κύριος κύριος, Ἐλθὲ ἐκ τῶν τεσσάρων ἀνέμων τοῦ οὐρανοῦ, ἐλθὲ τὸ πνεῦμα, καὶ ἐμφύσησον (ο) ἐπροφήτευσα καθὼς (π) πνεῦμα ζωῆς, καὶ (ρ) μεγάλη (σ) πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει ἀδωναῒ κύριος, (τ) ὑμῶν τὰ μνήματα, (υ) ὑμᾶς ἐκ τῶν τάφων ὑμῶν τοῦ (φ) κύριος κύριος. (χ) αὐτῆς τοὺς (ψ) πρὸς (ω) προσκειμένους πρὸς (ʺ) σεαυτῷ, (α) αὐτὰς, (β) λέγοντες Οὐκ ἀπαγγελεῖς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 כדנן אמר יי אלהים לגרמיא האלין הא אנא מעיל בכון רוחא ותחון : ואתן עליכון
6 גידין ואסיק עליכון בסרא ואקרום עליכון משכא ואתן בכון רוחא ותחון ותדעון
7 ארי אנא יי : ואתנביתי כמא דאתפקדית והוה קל כאתנביותי והא זיעו וקריבו
8 גרמיא גרמא לות חבריה : וחזית והא עליהון גידין ובסרא סליק וקרם עליהון
9 משכא מלעלא ורוחא לית בהון : ואמר לי אתנבי על רוחא אתנבי בר אדם
ותימר לרוחא כדנן אמר יי אלהים מארבע רוחיא אתיא רוחא ועולי בקטיליא
10 האלין ויחון : ואתנביתי כמא די פקדני ועלת בהון רוחא ויחיו וקמו על רגליהון
11 משרין סגיאן לחדא לחדא : ואמר לי בר אדם גרמיא האלין כל בית ישראל
12 אנון הא אנון אמרין יבשו גרמנא פסק סברנא אבדנא לנא : בכן אתנבי ותימר
להון כדנן אמר יי אלהים הא אנא פתחית ית קבריכון ואסק יתכון מקבריכון עמי
13 ואעיל יתכון לארעא דישראל : ותדעון ארי אנא יי כד אפתח ית קבריכון וכד
14 אסיק יתכון מגו קבריכון עמי : ואתן רוחי בכון ותחון ואשרי יתכון על ארעכון
15 ותדעון ארי אנא יי גזרית במימרי ואקים אמר יי : והוה פתגם נבואה מן קדם
16 יי עמי למימר : ואת בר אדם סב לך לוחא חדא וכתוב עלוהי לשבטא דיהודה
ולבני ישראל אחיהון וסב לוחא חדא וכתוב עלוהי שבטא דיוסף די הוא
17 שבטא דאפרים וכל בית ישראל אחיהון : ותקריב יתהון חד לות חד לך ללוחא
18 חד ויהון לחוד בידך : וכד יימרון לך בני עמך למימר הלא תחוי לנא מה
אלין לך :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dominus Deus oſſibus his : ecce ego intromittam in vos ſpiri- 5
tum, & vivetis. Et dabo ſuper vos nervos, & creſcere faciam ſuper vos car- 6
nem, & ſuperinducam ſuper vos cutem, & dabo vobis ſpiritum, & vivetis;
& ſcietis, quia ego Dominus. Et prophetavi ſicut præceptum fuit mihi : & 7
facta eſt vox cùm prophetarem ; & ecce commotio : & acceſſerunt oſſa ad
ſuum quodque os. Et vidi, & ecce ſuper ea nervi, & caro ſuccrevit, & ſu- 8
perextenſa eſt illis cutis deſuper. & ſpiritus non erat in eis. Et dixit ad 9
me, Vaticinare ad ſpiritum, vaticinare fili hominis, & dices ſpiritui, Hæc
dicit Dominus Deus, A quatuor ventis veni ſpiritus, & ingredere in inter-
fectos iſtos, & vivant. Et prophetavi ſicut præcepit mihi, & ingreſſus eſt 10
ſpiritus in eos, & vixerunt, & ſteterunt ſuper pedes ſuos, exercitus magnus
nimis valdè. Et dixit ad me, Fili hominis, oſſa hæc omnis domus Iſrael 11
ſunt : ecce ipſi dicunt, Aruerunt oſſa noſtra, ſucciſa eſt ſpes noſtra, & peri-
mus. Propterea vaticinare, & dices ad eos : Hæc dicit Dominus Deus, Ecce 12
ego aperiam ſepulchra veſtra, & aſcendere vos faciam de ſepulchris veſtris
popule mi, & inducam vos in terram Iſrael. Et ſcietis quia ego Dominus, 13
cùm aperuero ſepulchra veſtra, & aſcendere vos fecero de medio ſepul-
chrorum veſtrorum, popule mi. Et dabo ſpiritum meum in vobis & vive- 14
tis, & habitare vos faciam ſuper terram veſtram : & ſcietis, quia ego Do-
minus decrevi in verbo meo, & firmabo illud, ait Dominus. Et factum eſt 15
verbum prophetiæ à facie Domini mecum, dicens : Et tu fili hominis, tolle 16
tibi tabulam unam & ſcribe ſuper eam tribui Juda, & filiis Iſrael fratribus
eorum ; & tolle tabulam alteram, & ſcribe ſuper illam *tribui* Joſeph, *quæ*
eſt tribus Ephraim, & cunctæ domui Iſrael fratribus ejus. Et applicabis 17
eas unam ad alteram tibi in tabulam unam ; & erunt in unam in manu tua.
Et cùm dixerint tibi filii populi tui, dicendo : Nónne indicabis nobis quid 18
ſunt iſta tibi ?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ ܠܓܪ̈ܡܐ ܗܠܝܢ܂ ܗܐ ܐܢܐ ܡܥܠ ܐܢܐ ܒܟܘܢ ܪܘܚܐ܂ ܘܬܐܚܘܢ܂
* ܘܐܬܠ ܥܠܝܟܘܢ ܓܝܕܐ܂ ܘܐܣܩ ܥܠܝܟܘܢ ܒܣܪܐ܂ ܘܐܓܠܘܕ ܥܠܝܟܘܢ ܡܫܟܐ܂ ܘܐܬܠ ܒܟܘܢ
ܪܘܚܐ ܘܬܐܚܘܢ܂ ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ * ܘܐܬܢܒܝܬ ܐܝܟ ܕܦܩܕܢܝ܂ ܘܟܕ ܐܬܢܒܝܬ܂ ܗܘܐ
ܩܠܐ ܘܙܘܥܐ܂ ܘܩܪܒܘ ܓܪ̈ܡܐ ܓܪܡܐ ܠܘܬ ܫܘܠܡܗ܂ * ܘܚܙܝܬ ܕܣܠܩܘ ܥܠܝܗܘܢ ܓܝܕܐ
ܘܒܣܪܐ܂ ܘܐܬܦܪܣ ܥܠܝܗܘܢ ܡܫܟܐ ܡܢ ܠܥܠ܂ ܘܪܘܚܐ ܠܝܬ ܗܘܐ ܒܗܘܢ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ
ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܪܘܚܐ܂ ܐܬܢܒܐ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܘܐܡܪ ܠܪܘܚܐ܂ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂ ܬܐ ܪܘܚܐ ܡܢ
ܐܪܒܥ ܪ̈ܘܚܐ܂ ܘܦܘܚ ܒܗܠܝܢ ܩܛܝ̈ܠܐ ܘܢܐܚܘܢ܂ * ܘܐܬܢܒܝܬ ܐܝܟ ܕܦܩܕܢܝ܂ ܘܥܠܬ
ܒܗܘܢ ܪܘܚܐ ܘܚܝܘ܂ ܘܩܡܘ ܥܠ ܪ̈ܓܠܝܗܘܢ܂ ܚܝܠܐ ܪܒܐ ܛܒ ܛܒ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܒܪ ܐܢܫܐ܂
ܗܠܝܢ ܓܪ̈ܡܐ ܟܠܗܘܢ܂ ܕܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ ܐܢܘܢ܂ ܕܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܝܒܫܘ ܓܪ̈ܡܝܢ܂ ܘܐܒܕ
ܣܒܪܢ܂ ܘܐܬܓܙܪܢ ܠܢ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܬܢܒܐ ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ܂ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂ ܗܐ
ܦܬܚ ܐܢܐ ܩܒܪ̈ܝܟܘܢ܂ ܘܡܦܩ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܡܢ ܩܒܪ̈ܝܟܘܢ܂ ܘܡܥܠ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܠܐܪܥܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ܂ * ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ ܡܐ ܕܦܬܚܬ ܩܒܪ̈ܝܟܘܢ܂ ܘܡܐ ܕܐܦܩܬܟܘܢ ܡܢ
ܩܒܪ̈ܝܟܘܢ܂ * ܘܐܬܠ ܪܘܚܝ ܒܟܘܢ ܘܬܐܚܘܢ܂ ܘܐܫܪܝܟܘܢ ܒܐܪܥܟܘܢ܂ ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ
ܐܢܐ ܡܪܝܐ܂ ܡܠܠܬ ܘܥܒܕܬ܂ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ܂

* ܥܠ ܕܣܠܩܝܢ ܘܗܘܝܢ ܚܕ ܥܡܐ ܘܚܕܐ ܡܠܟܘܬܐ *

* ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܠܡܐܡܪ܂ * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܪ ܐܢܫܐ܂ ܣܒ ܠܟ ܩܝܣܐ
ܚܕ܂ ܘܟܬܘܒ ܥܠܘܗܝ ܠܝܗܘܕܐ ܘܠܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ ܚܒܪ̈ܘܗܝ܂ ܘܣܒ ܩܝܣܐ ܐܚܪܢܐ܂
ܘܟܬܘܒ ܥܠܘܗܝ ܠܝܘܣܦ ܩܝܣܐ ܕܐܦܪܝܡ܂ ܘܠܟܠܗܘܢ ܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ ܚܒܪ̈ܘܗܝ܂
* ܘܩܪܒ ܐܢܘܢ ܚܕ ܥܡ ܚܕ܂ ܘܢܗܘܘܢ ܚܕ ܩܝܣܐ ܒܐܝܕܟ܂ * ܘܐܢ ܢܐܡܪܘܢ ܠܟ ܒܢܝ̈
ܥܡܟ܂ ܚܘܝܢ܂ ܡܢܐ ܐܢܝܢ ܗܠܝܢ܂

* Sic ait Dominus dominorum oſſibus iſtis; 5
Ecce ego inducturus ſum in vos ſpiritum, &
vivetis. Nervos dabo ſuper vos, faciam ut 6
aſcendat ſuper vos caro, obducam vos pelle,
indámque vobis ſpiritum, & vivetis: ſcietiſq;
me eſſe Dñm. Itaq; vaticinatus ſum quemad- 7
modum præceperat mihi: cúmq, vaticinatus
eſſem, fact° eſt ſon° & ſtrepitus, & acceſſerunt
oſſa, *quodlibet* os ad juncturam ſuam: Et vidi 8
aſcendiſſe ſuper ea nervos & carnem, obdu-
ctámq ſuper ea pellem supernè, ſpiritũ autem
eis nullum ineſſe. Dixit ergò mihi; Vaticinare 9
de ſpiritu, vaticinare fili hominis, & dic ſpi-
ritui; Sic ait Dominus dominorum, Veni ſpi-
ritus è quatuor ventis, & perfla hos inter-
fectos, ut vivant. Et cum vaticinatus eſſem 10
quemadmodum præceperat mihi, ingreſſus eſt
in ea ſpiritus, & revixerunt, ſteterúntque ſu-
per pedes ſuos, exercitus admodum copioſus.
Deinde dixit mihi; Fili hominis, omnia hæc 11
oſſa filiorum ſunt Iſraelis, qui dicebant; Aru-
erunt oſſa noſtra, periit ſpes noſtra, defecimus.
Iccirco vaticinare, & dic eis; Sic ait Dñs do- 12
minorum, Ecce aperiam ſepulchra veſtra, &
extraham vos è ſepulchris veſtris, adducámq;
vos in terram Iſraelis; Et ſcietis me eſſe Do- 13
minum. Cùm aperuero ſepulchra veſtra,
cúmque extraxero vos è ſepulchris veſtris; in- 14
dam vobis ſpiritum meum, & vivetis, & col-
locabo vos in terra veſtra; & cognoſcetis me
eſſe Dominum, dixi, & faciam ait Dominus
dominorum:

De eo quòd aſcenſuri eſſent, & unus populus unumq; regnum futuri.

* Rurſus fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 15
Tu autem fili hominis, accipe tibi lignum 16
unum, & ſcribe ſuper illud Judam et filios Iſ-
raelis, ſocios ejus; deinde accipe lignum al-
terum, et ſcribe ſuper illud Joſephum (*in eo-
dem* ligno Aphremi) omnéſque filios Iſraelis,
ſocios ipſius. Tum admove ea unum ad al- 17
terum, ſintque lignum unum in manu tua.
Quòd ſi tibi dixerint populares tui, Oſtende 18
nobis quid hæc ſint;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يقول الرب الرب لهذه العظام ها انا اجلب اليكم روح حياة * واعطي عليكم
عصبا واصعد عليكم لحما وامدد عليكم جلدا واعطي عليكم روحي وتحيون
وتعلمون اني انا الرب انا * فتنبيت كما امرني الرب وكان صوت عند ما تنبات واذا زلزلة
وقربت العظام العظم الي مفصله * ونظرت واذا عليها عصب ونبتت لحومها وصعد عليها
جلد من فوقها ولم تك فيها روح * وقال لي تنبا يا ابن الانسان تنبا على الروح وقل
للروح * هكذا يقول الرب الرب من اربعة رياح السماء ات ايها الروح وانفخي في هذه
الاموات وليعيشوا * فتنبيت كما امرني ودخلت فيهم روح الحياة وعاشوا ووقفوا على اقدامهم
جمع كبير جدا جدا * وتكلم الرب معي قايلا يا ابن الانسان هذه العظام هي كل
بيت اسرايل * وهم يقولون عظامنا صارت يابسة وهلك رجاونا ودثرنا * لاجل هذا تنبا وقل
لهم * هكذا يقول الرب الرب ها انا افتح اجداثكم واصعدكم من قبوركم يا شعبي وادخلكم
الي ارض اسرايل * وتعلمون اني انا الرب وانا عند ما افتح قبوركم لاصعدكم من قبوركم يا
شعبي * واعطي روحي فيكم وتحيون واضعكم في ارضكم وتعلمون اني انا الرب انا
تكلمت وساصنع يقول الرب الرب

* النبوة في صعود بني اسرايل من ارض بابل وانهم يصيرون شعبا واحدا ومملكة واحدة

* وكان قول الرب الي قايلا * يا بن الانسان خذ لك عصا واكتب عليها يهودا وبنيه
الدخيلين اليه وخذ لك عصا ثانية واكتبها ليوسف عصا افرام وجميع بني اسرايل
المنضمين اليه * واجمعهما الي بعضهما بعض لك عصا واحدة لتربطهما ويكونا لك في يدك
* ويكون اذ يقولون لك بنو شعبك قايلين لم تخبرنا ما هي هذه لك

* *Ita dicit Dominus Dominus oſſibus iſtis;* 5
Ecce ego allaturus ſum vobis ſpiritum
vitæ, *Et daturus ſuper vos nervos, fa-* 6
cturus ut aſcendat ſuper vos caro, exten-
ſurus ſuper vos cutem, tum daturus ſu-
per vos ſpiritum meum, & vivetis; ſci-
etiſque me Dominum eſſe. *Itaque vati-* 7
cinatus ſum, quemadmodum præceperat
mihi Dominus, fuitque ſonus ubi vati-
cinatus eſſem, & ecce terræmotus qui ad-
movit oſſa, quodlibet *os ad juncturam*
ſuam. *Tum vidi, & ecce ſuper ea ner-* 8
vi, exortæ ſunt carnes eorum, & aſcen-
dit ſuper ea cutis ſupernè: at nondum
erat in eis ſpiritus, *Quarè dixit mihi;* 9
Propheta O fili hominis, propheta de ſpi-
ritu, & dic ſpiritui; Ita dicit Dominus
Dominus; E quatuor cœli ventis veni O
ſpiritus, & inſla in hos mortuos, vivánt-
que. *Prophetavi igitur, ut præceperat* 10
mihi, ingreſſúſque eſt in ea ſpiritus vita-
lis, & revixerunt, ſteterúntque in pedes
ſuos, turba quàm maximè copioſa. *Tum* 11
allocutus eſt me Dominus, dicens; O fili
hominis, hæc oſſa ſunt domus Iſraelis
univerſa. Jam ipſi dicunt; Oſſa noſtra
facta ſunt arida, periit ſpes noſtra, in-
terivimus: *Ideò propheta, & dic eis;* 12
Ita dicit Dominus Dominus; Ecce ego
aperiam monumenta veſtra, & extraham
vos è ſepulchris veſtris O mi popule, &
introducam vos in terram Iſraelis: *Et* 13
ſcietis me eſſe Dominum. Et ego cùm
aperuero ſepulchra veſtra, extraham vos
è ſepulchris veſtris O mi popule; *Da-* 14
bóque ſpiritum meum in vos, & vive-
tis: ponámque vos in terra veſtra, &
ſcietis me Dominum eſſe. Locutus ſum,
& præſtabo, dicit Dominus Dominus.

Prophetia de aſcenſu filiorum Iſraelis è terra Babelis: eóſque futuros populum unum & regnum unum.

* *Deinde fuit ſermo Domini ad me, di-* 15
cens; *O fili hominis, ſume tibi virgam,* 16
& inſcribe illi Judam & filios ejus ſibi
colonos: ſumes etiam tibi virgam alte-
ram, & ſcribes eam Joſephi, virgam
Aphræmi & omnium filiorum Iſraelis ab
eo oriundorum: *Tum compinges eas* 17
tibi alteram cum altera in baculum unum,
colligando eas; ſintque tibi in manu tua.
Et erit, cùm tibi dixerint populares tui, 18
dicentes; Annon indicares nobis quid hæc
tibi ſit?

יחזקאל : לח

lignum *capiens ego* Ecce , Deus Dominus dixit Sic ,eos ad Loquere
19 דַּבֵּר אֲלֵהֶם כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הִנֵּה אֲנִי לֹקֵחַ אֶת־עֵץ
dabo & ; ejus socias Israel tribus & , Ephraim manu in quod ,Joseph
יוֹסֵף אֲשֶׁר בְּיַד־אֶפְרַיִם וְשִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל חֲבֵרָו וְנָתַתִּי
, unum lignum *in* eas faciam & , Jehudah ligno cum *ipsum super* eas
אוֹתָם עָלָיו אֶת־עֵץ יְהוּדָה וַעֲשִׂיתִם לְעֵץ אֶחָד
eis super scribes quibus ligna erunt Et.mea manu in unum erunt Et
20 וְהָיוּ אֶחָד בְּיָדִי : וְהָיוּ הָעֵצִים אֲשֶׁר־תִּכְתֹּב עֲלֵיהֶם
Dominus dixit Sic : eos ad loquere Et .eorum oculis in tua manu in
21 בְּיָדְךָ לְעֵינֵיהֶם : וְדַבֵּר אֲלֵיהֶם כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי
quò gentes inter ab Israel filios *capiens* ego Ecce ,Deus
יְהוִה הִנֵּה אֲנִי לֹקֵחַ אֶת־בְּנֵי יִשְׂרָאֵל מִבֵּין הַגּוֹיִם אֲשֶׁר
in eos faciam venire & ,undique eos congregabo & *illu* ierunt
הָלְכוּ־שָׁם וְקִבַּצְתִּי אֹתָם מִסָּבִיב וְהֵבֵאתִי אוֹתָם אֶל־
montibus in ,terra in unam gentem *in* eos faciam Et .suam terram
22 אַדְמָתָם : וְעָשִׂיתִי אֹתָם לְגוֹי אֶחָד בָּאָרֶץ בְּהָרֵי
erunt non & : regem in ipsis universis erit unus rex & : Israel
יִשְׂרָאֵל וּמֶלֶךְ אֶחָד יִהְיֶה לְכֻלָּם לְמֶלֶךְ וְלֹא יִהְיֶה־
regna duo in amplius *dimidiabuntur* non & , gentes *duas in* ultrà
עוֹד לִשְׁנֵי גוֹיִם וְלֹא יֵחָצוּ עוֹד לִשְׁתֵּי מַמְלָכוֹת
, suis *fœditatibus* in & , suis idolis in ultrà se polluent Nec .amplius
23 עוֹד : וְלֹא יִטַּמְּאוּ עוֹד בְּגִלּוּלֵיהֶם וּבְשִׁקּוּצֵיהֶם
universis de eos faciam salvos & : suis prævaricationibus cunctis in &
וּבְכֹל פִּשְׁעֵיהֶם וְהוֹשַׁעְתִּי אֹתָם מִכֹּל
, eos emundabo & ; *eis in* peccaverunt quibus , suis habitationibus
מוֹשְׁבֹתֵיהֶם אֲשֶׁר חָטְאוּ בָהֶם וְטִהַרְתִּי אוֹתָם
meus servus Et .Deum in eis ero ego &,populum in mihi erunt &
24 וְהָיוּ־לִי לְעָם וַאֲנִי אֶהְיֶה לָהֶם לֵאלֹהִים : וְעַבְדִּי
: ipsis universis erit unus pastor & , eos super rex David
דָוִד מֶלֶךְ עֲלֵיהֶם וְרוֹעֶה אֶחָד יִהְיֶה לְכֻלָּם
.ea facient &,custodient mea *statuta* &,ambulabunt meis judiciis in &
וּבְמִשְׁפָּטַי יֵלֵכוּ וְחֻקֹּתַי יִשְׁמְרוּ וְעָשׂוּ אוֹתָם :
qua , Jahacob meo servo dedi quam terram super habitabunt &
25 וְיָשְׁבוּ עַל־הָאָרֶץ אֲשֶׁר נָתַתִּי לְעַבְדִּי לְיַעֲקֹב אֲשֶׁר
,eorum filii & ipsi eam super habitabunt &: vestri patres *ea in* habitaverunt
יָשְׁבוּ־בָהּ אֲבוֹתֵיכֶם וְיָשְׁבוּ עָלֶיהָ הֵמָּה וּבְנֵיהֶם
eis *prælatus* meus servus David &;seculum in usq; eorũ filiorum filii &
וּבְנֵי בְנֵיהֶם עַד־עוֹלָם וְדָוִד עַבְדִּי נָשִׂיא לָהֶם
erit *seculi* pactum , pacis fœdus eis *exscindam* Et .seculum in
26 לְעוֹלָם : וְכָרַתִּי לָהֶם בְּרִית שָׁלוֹם בְּרִית עוֹלָם יִהְיֶה
dabo & , eos faciam multiplicare & ,eos *dabo* & : eis
אוֹתָם וּנְתַתִּים וְהִרְבֵּיתִי אוֹתָם וְנָתַתִּי אֶת־
meum tabernaculũ erit Et .seculum in eorũ medio in meã sanctificationẽ
27 מִקְדָּשִׁי בְּתוֹכָם לְעוֹלָם : וְהָיָה מִשְׁכָּנִי
.populum in mihi erunt ipsi & ; Deum in eis ero & , eis *super*
עֲלֵיהֶם וְהָיִיתִי לָהֶם לֵאלֹהִים וְהֵמָּה יִהְיוּ־לִי לְעָם :
, Israel *sanctificans* Dominus ego quòd gentes scient Et
28 וְיָדְעוּ הַגּוֹיִם כִּי אֲנִי יְהוָה מְקַדֵּשׁ אֶת־יִשְׂרָאֵל
.*seculum* in eorum medio in *meam sanctificationem existendo in*
בִּהְיוֹת מִקְדָּשִׁי בְּתוֹכָם לְעוֹלָם :

CAP. XXXVIII. לח

pone , hominis Fili : dicendo , me ad Domini verbum fuit Et
1 וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר : 2 בֶּן־אָדָם שִׂים
; Tubal & Mesech capitis *prælatum* , Maghog terram ,Ghog *ad tuas facies*
פָּנֶיךָ אֶל־גּוֹג אֶרֶץ הַמָּגוֹג נְשִׂיא רֹאשׁ מֶשֶׁךְ וְתֻבָל
ego Ecce : Deus Dominus dixit Sic , *dices* Et .eum super vaticinare &
3 וְהִנָּבֵא עָלָיו : וְאָמַרְתָּ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה הִנְנִי
.Tubal & ,Mesech capitis *prælatum* Ghog te ad
אֵלֶיךָ גּוֹג נְשִׂיא רֹאשׁ מֶשֶׁךְ וְתֻבָל :

Versio VULG. LAT.

19 Loquêris ad eos ; Hæc dicit Domin⁹ Deus ; Ecce ego assumam lignum Joseph, quod est in manu Ephraim, & tribus Israel, quæ sunt ei adjunctæ : & dabo eas pariter cum ligno Juda, & faciam eas in lignũ unum : & erunt unum in manu ejus. 20 Erunt autem ligna, super quæ scripseris in manu tua, in oculis eorum. 21 Et dices ad eos ; Hæc dicit Domin⁹ Deus ; Ecce ego assumam filios Israel de medio nationum, ad quas abierunt : & congregabo eos undique, & adducam eos in humum suam. 22 Et faciam eos in gentem unam in terra in montibus Israel, & rex unus erit omnibus imperans : & non erunt ultrà duæ gentes, nec dividentur 23 ampliùs in duo regna. Neque polluentur ultrà in idolis suis, & abominationib⁹ suis, & cunctis iniquitatib⁹ suis : & salvos eos faciam de universis sedibus, in quibus peccaverunt, & emundabo eos : & erunt mihi populus, & ego ero eis Deus. 24 Et servus meus David rex super eos, & pastor unus erit omnium eorum : in judiciis meis ambulabunt, & mandata mea custodient, & facient ea. 25 Et habitabunt super terram, quam dedi servo meo Jacob, in qua habitaverunt patres vestri : & habitabunt super eam ipsi, & filii eorum, & filii filiorum eorum, usque in sempiternum : & David serv⁹ me⁹ princeps eorum in perpetuum. 26 Et percutiam illis fœdus pacis, pactum sempiternum erit eis : & fundabo eos, & multiplicabo, & dabo sanctificationem meam in medio eorum in perpetuum. 27 Et erit tabernaculum meum in eis : & ero eis Deus, & ipsi erunt 28 mihi popul⁹. Et scient gentes quia ego Domin⁹ sanctificator Israel, cùm fuerit sanctificatio mea in medio eorum in perpetuum.

CAP. XXXVIII.

1 ET factus est sermo Domini ad 2 me, dicens ; Fili hominis, pone faciem tuam contra Gog, terram Magog, principem capitis Mosoch & Thubal : & vaticinare 3 de eo, Et dices ad eum ; Hæc dicit Domin⁹ Deus ; Ecce ego ad te, Gog, principẽ capitis Mosoch & Thubal,

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Translatione LATINA.

19 Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει (γ) κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ λήψομαι τὴν φυλὴν Ἰωσὴφ, (δ) τὴν διὰ χειρὸς Ἐφραὶμ, καὶ τὰς φυλὰς (ε) Ἰσραὴλ τὰς προσκειμένας πρὸς αὐτὸν, καὶ δώσω αὐτοὺς ἐπὶ τὴν φυλὴν (ζ) Ἰούδα, καὶ ἔσονται εἰς ῥάβδον μίαν (η) τῇ χειρὶ Ἰούδα. 20 Καὶ ἔσονται αἱ ῥάβδοι ἐφ᾽ αἷς σὺ ἔγραψας ἐπ᾽ αὐταῖς, ἐν τῇ χειρί σου ἐνώπιον αὐτῶν. 21 Καὶ ἐρεῖς αὐτοῖς, Τάδε λέγει (θ) κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ λαμβάνω πάντα οἶκον Ἰσραὴλ ἐκ μέσου τῶν ἐθνῶν, οὗ εἰσήλθοσαν ἐκεῖ, καὶ συνάξω αὐτοὺς ἀπὸ πάντων τῶν περικύκλῳ αὐτῶν, καὶ εἰσάξω αὐτοὺς 22 εἰς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ, Καὶ δώσω αὐτοὺς εἰς ἔθνος ἐν τῇ γῇ μου, καὶ ἐν τοῖς ὄρεσιν (ι) Ἰσραήλ. καὶ ἄρχων εἷς ἔσται (κ) αὐτῶν, καὶ οὐκ ἔσονται (λ) ἔτι εἰς δύο ἔθνη, οὐδὲ μὴ 23 διαιρεθῶσιν οὐκέτι εἰς δύο βασιλείας, Ἵνα μὴ μιαίνωνται ἔτι ἐν τοῖς εἰδώλοις (μ) αὐτῶν. καὶ ῥύσομαι αὐτοὺς ἀπὸ πασῶν τῶν ἀνομιῶν αὐτῶν, ὧν ἡμάρτοσαν ἐν αὐταῖς, καὶ καθαριῶ αὐτοὺς, καὶ ἔσονταί μοι εἰς λαὸν, καὶ ἐγὼ κύριος ἔσομαι αὐτοῖς εἰς θεόν. 24 Καὶ ὁ δοῦλός μου Δαυὶδ ἄρχων ἐν μέσῳ αὐτῶν, (ν) ἔσται ποιμὴν εἷς πάντων, ὅτι ἐν τοῖς προστάγμασί μου (ξ) πορεύσονται, καὶ τὰ κρίματά μου (ο) φυλάξονται, καὶ ποιήσουσιν 25 αὐτά. Καὶ κατοικήσουσιν ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν, ἣν ἐγὼ δέδωκα τῷ δούλῳ μου Ἰακὼβ, οὗ κατῴκησαν ἐκεῖ οἱ πατέρες αὐτῶν, καὶ κατοικήσουσιν ἐπ᾽ αὐτῆς (π) αὐτοί· καὶ Δαυὶδ ὁ δοῦλός μου ἄρχων (ρ) εἰς τὸν αἰῶνα. 26 Καὶ διαθήσομαι αὐτοῖς διαθήκην εἰρήνης, (σ) διαθήκη αἰωνία ἔσται μετ᾽ αὐτῶν· καὶ θήσω τὰ ἅγιά μου ἐν μέσῳ αὐτῶν εἰς τὸν 27 αἰῶνα, Καὶ ἔσται ἡ κατασκήνωσίς μου ἐν αὐτοῖς, καὶ ἔσομαι αὐτοῖς (τ) θεὸς, καὶ (υ) 28 αὐτοί μου ἔσονται λαός. Καὶ γνώσονται (φ) τὰ ἔθνη ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ ἁγιάζων αὐτοὺς, ἐν τῷ εἶναι τὰ ἅγιά μου ἐν μέσῳ αὐτῶν εἰς τὸν (χ) αἰῶνα.

Et dices ad eos ; Hæc dicit Dominus ; Ecce ego assumam tribum Joseph, quæ in manu Ephraim, et tribus Israel, quæ adjunctæ sunt ei : & dabo eos super tribum Judam : & erunt in virgam unam (m) manui Juda. 20 *Et erunt virgæ, in quibus tu scripsisti in eis, in manu tua coram eis.* 21 *Et dices eis ; Hæc dicit Domin⁹ Dominus ; Ecce ego assumo omnem domum Israel de medio gentium, quò ingressi sunt illuc : & congregabo eos ex omnibus, qui in circuitu eorum sunt : & inducam eos in terram Israel :* 22 *Et dabo eos in (n) gentem in terra mea, & in montibus Israel. Et princeps unus erit (o) eorum : & non erunt ultrà in duas gentes : nec dividentur ultrà in duo regna :* 23 *ut non polluantur ultrà in idolis (p) suis. Et eruã eos ex omnib⁹ iniquitatibus eorũ, in quib⁹ peccaverũt in eis : & mundabo eos : & erunt mihi in populum : & ego Dominus ero eis in Deum.* 24 *Et servus meus David princeps in medio eorum; & erit pastor unus omnium : quia in præceptis meis ambulabunt, & judicia mea custodient, et facient ea.* 25 *Et habitabunt in terra sua, quam ego dedi servo meo Jacob, ubi habitaverunt illic patres eorum : & habitabunt in ea (q) ipsi. Et David servus meus (r) princeps in perpetuum :* 26 *Et disponam eis testamentum pacis : testamentum sempiternum erit cum eis. Et (s) ponam Sancta mea in medio eorum in perpetuum :* 27 *Et erit tabernaculum meum in eis : & ero eis Deus : et ipsi meus erunt populus.* 28 *Et scient gentes, quia ego sum Dominus, qui sanctifico eos ; cùm fuerint Sancta mea in medio eorum in perpetuum.*

MS.A. (γ) ἀδωναὶ κύριος, (δ) διὰ χειρὸς (ε) τοῦ Ἰσραὴλ (ζ) τοῦ Ἰούδα, (η) ἐν τῇ (θ) ἀδωναὶ κύριος ὁ θεὸς, (ι) τοῦ Ἰσραήλ. (κ) πάντων αὐτῶν, (λ) οὐκέτι (μ) αὐτῶν, ἐν οἷς ἡμάρτοσαν ἐν αὐτοῖς, καὶ ἐν τοῖς προσοχθίσμασιν αὐτῶν, καὶ ἐν πάσαις ταῖς βασιλείαις αὐτῶν. καὶ ῥύσομαι (ν) καὶ ποιμὴν εἷς ἔσται πάντων, (ξ) πορεύσωνται, (ο) φυλάξωνται, (π) αὐτοὶ, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν, καὶ οἱ υἱοὶ τῶν υἱῶν αὐτῶν ἕως αἰῶνος· καὶ ἰδοὺ Δαυὶδ (ρ) αὐτῶν ἔσται εἰς (σ) καὶ διαθήκη (τ) εἰς θεὸν, (υ) αὐτοὶ ἔσονταί μοι λαός. (φ) ὅτι ἐγὼ (χ) αἰῶνα, λέγει κύριος.

ΚΕΦ. λη´.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρός με, λέ- 2 γων, Υἱὲ ἀνθρώπου, στήρισον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ Γὼγ, καὶ τὴν γῆν τοῦ Μαγὼγ, ἄρχοντα ῥὼς (α) Μεσὸχ, καὶ Θοβὲλ, καὶ προφήτευσον ἐπ᾽ αὐτόν. 3 Καὶ εἰπὸν αὐτῷ, Τάδε λέγει (β) κύριος κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ (γ) ἄρχοντα ῥὼς, (*) Μεσὸχ, καὶ Θοβὲλ,

CAP. XXXVIII.

1 *ET factus est sermo Domini ad me, dicens ;* 2 *Fili hominis, obfirma faciem tuam super (a) Gog, & terram Magog, principem Rhos Mesoch, & Thobel : & vaticinare super eum.* 3 *Et dic ei ; Hæc dicit Domin⁹ Dominus : Ecce ego super te principem Rhos Mesoch, & Thobel :*

MS.A. (α) Μοσὸχ, (β) ἀδωναὶ κύριος, (γ) Γὼγ καὶ ἄρχοντα (*) Μοσὸχ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 אתנבי להון כדנן אמר יי אלהים הא אנא מקריב ית שבטא דיוסף די הוא שבטא
דאפרים ושבטי ישראל אחיהון ואחבר יתהון עלוהי ית שבטא דיהודה ואעבדנון
20 לעמא חד ויהון חד קדמי : ויהון לוחיא די תכתוב עליהון בידך לעיניהון : 21 ואתנבי
להון כדנן אמר יי אלהים הא אנא מקריב ית בני ישראל מביני עממיא דאתגליאו
22 לתמן ואכנוש יתהון מסחור סחור ואעיל יתהון לארעהון : ואעביד יתהון לעמא
חד בארעא בטור קודשא דישראל ומלכא חד יהי לכולהון למהוי מלכא ולא יהון
23 עוד לתרין עממין ולא יתפלגון עוד לתרתין מלכון עוד : ולא יסתאבון עוד בטעותהון
ובשקוציהון ובכל מרדיהון ואפרוק יתהון מכל מותבניהון דחבו קדמי בהון ואדכי
24 יתהון ויהון קדמי לעם ואנא אהוי להון לאלהא : ועבדי דוד מלכא עליהון ופרנס
25 חד יהי לכולהון ובדיני יהכון וקימי יטרון ויעבדון יתהון : ויתיבון על ארעא
דיהבית לעבדי ליעקב דיתיבו בה אבהתכון ויתבון עלה אנון ובניהון ובני בניהון
26 עד עלמא ודוד עבדי מלכא להון לעלם : ואגזר להון קים שלם קים עלם
27 יהי עמהון ואברכנון ואסגי יתהון ואתן ית מקדשי ביניהון לעלם : ואשרי שכינתי
28 ביניהון ואהוי להון לאלהא ואנון יהון קדמי לעם : וידעון עממיא ארי אנא יי מקדש
ית ישראל במהוי מקדשי ביניהון לעלם :

לח

1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר : 2 בר אדם קבל נבואה על גוג ארעא מגוג
3 רב ריש משך ותובל ואתנבי עלוהי : ותימר כדנן אמר יי אלהים הא אנא שלח רוגזי
עלך גוג רב ריש משך ותובל :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

19 Et prophetabis eis : Hæc dicit Dñs Deus, Ecce ego applicabo tribum Joseph, quæ est tribus Ephraim & tribus Israel fratres eorum ; & conjungam cum eis tribum Juda : & faciam eos in *populum unum*, & erunt unum coram me. 20 Erunt autem tabulæ super quas scripseris in manu tua in oculis eorum. 21 Et prophetabis eis : Hæc dicit Dñs Deus, Ecce ego applicabo filios Israel de medio populorum ad quos transmigraverunt ; & congregabo eos undique, & introducam eos in terram eorum. 22 Et faciam eos in populum unum in terra in monte sancto Israel, & rex unus erit omnibus, ut sit rex : & non erunt ultrà duo populi, nec dividentur amplius in duo regna. 23 Nec polluentur ampliùs idolis suis, & abominationibus suis, & omnibus prævaricationibus suis. Et redimam eos de omnibus habitationibus suis in quibus me offenderunt ; & emundabo eos, & erunt coram me in populum, & ego ero eis in Deum. 24 Et servus meus David erit rex super eos ; & gubernator unus erit omnium eorum : & in judiciis meis ambulabunt, & mandata mea custodient & facient ea. 25 Et habitabunt in terra quam dedi servo meo Jacob, in qua habitaverunt patres vestri, & habitabunt in ea ipsi & filii eorum & filii filiorum eorum usque in æternum ; & David servus meus rex eorum in sempiternum. 26 Et feriam cum eis fœdus pacis : pactum perpetuum erit cum eis : & benedicam eis, & multiplicabo eos : & dabo sanctuarium meum in medio eorum in æternum. 27 Et habitare faciam majestatem meam inter eos, & ero eis in Deum, & ipsi erunt coram me in populum. 28 Et scient populi quia ego Dñs sanctificator Israel, cùm fuerit sanctuarium meum inter eos in æternum.

CAP. XXXVIII.

1 ET factum est verbum prophetiæ à facie Dñi mecum, dicens : 2 Fili hominis accipe prophetiam super Gog terram Magog, summum principem Mesech & Thubal ; & prophetabis de eo. 3 Et dices : Hæc dicit Dñs Deus, Ecce ego mitto iram meam super te Gog summe princeps Mesech & Thubal.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܢܣܒ ܐܢܐ ܩܝܣܐ ܕܝܘܣܦ ܕܒܐܝܕܗ ܕܐܦܪܝܡ ܘܫܒܛܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܚܒܪܘܗܝ. ܘܐܬܠ ܐܢܘܢ ܥܡ ܩܝܣܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܐܥܒܕ ܐܢܘܢ ܩܝܣܐ ܚܕ. ܘܢܗܘܘܢ ܚܕ ܒܐܝܕܝ. * ܘܩܝܣܐ ܕܟܬܒ ܐܢܬ ܥܠܝܗܘܢ ܢܗܘܘܢ ܒܐܝܕܟ ܠܥܝܢܝܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܢܣܒ ܐܢܐ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢ ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܕܐܙܠܘ ܠܬܡܢ. ܘܐܟܢܫ ܐܢܘܢ. ܘܐܥܠ ܐܢܘܢ ܠܐܪܥܗܘܢ. * ܘܐܥܒܕ ܐܢܘܢ ܥܡܐ ܚܕ ܒܐܪܥܐ ܒܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܡܠܟܐ ܚܕ ܢܗܘܐ ܠܟܠܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܬܘܒ ܬܪܝܢ ܥܡܡܝܢ. ܘܠܐ ܢܬܦܠܓܘܢ ܬܘܒ ܠܬܪܬܝܢ ܡܠܟܘܢ. * ܘܠܐ ܢܬܛܢܦܘܢ ܬܘܒ ܒܦܬܟܪܝܗܘܢ ܘܒܛܢܦܘܬܗܘܢ. ܘܒܟܠܗܘܢ ܥܘܠܝܗܘܢ. ܘܐܦܪܘܩ ܐܢܘܢ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܡܘܬܒܝܗܘܢ ܕܚܛܘ ܒܗܘܢ. ܘܐܕܟܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. * ܘܥܒܕܝ ܕܘܝܕ ܡܠܟܐ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܪܥܝܐ ܚܕ ܢܗܘܐ ܠܟܠܗܘܢ. ܘܒܕܝܢܝ ܢܗܠܟܘܢ. ܘܦܘܩܕܢܝ ܢܛܪܘܢ ܘܢܥܒܕܘܢ ܐܢܘܢ. * ܘܢܥܡܪܘܢ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܝܗܒܬ ܠܥܒܕܝ ܝܥܩܘܒ. ܕܥܡܪܘ ܒܗ ܐܒܗܬܗܘܢ. ܘܢܥܡܪܘܢ ܥܠܝܗ ܗܢܘܢ ܘܒܢܝܗܘܢ ܘܒܢܝ ܒܢܝܗܘܢ ܠܥܠܡ. ܘܕܘܝܕ ܥܒܕܝ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܡܕܒܪܢܐ ܠܥܠܡ. * ܘܐܩܝܡ ܠܗܘܢ ܩܝܡܐ ܕܫܝܢܐ. ܘܩܝܡܐ ܕܠܥܠܡ ܢܗܘܐ ܥܡܗܘܢ. ܘܐܣܓܐ ܐܢܘܢ. ܘܐܬܠ ܡܩܕܫܝ ܒܝܢܬܗܘܢ ܠܥܠܡ. * ܘܢܗܘܐ ܡܫܪܝܝ ܒܝܢܬܗܘܢ. ܘܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. ܘܗܢܘܢ ܢܗܘܘܢ ܠܝ ܥܡܐ. * ܘܢܕܥܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܕܡܩܕܫ ܐܢܐ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܟܕ ܢܗܘܐ ܡܩܕܫܝ ܒܝܢܬܗܘܢ ܠܥܠܡ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܚ *

* ܥܠ ܓܘܓܝܐ ܘܡܓܘܓܝܐ ܕܥܬܝܕܝܢ ܠܡܣܩ ܥܠܝܗܘܢ ܟܕ ܣܠܩܘ ܡܢ ܒܒܠ.

* ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܒܪ ܐܢܫܐ ܣܝܡ ܐܦܝܟ ܠܘܩܒܠ ܓܘܓ ܘܠܘܩܒܠ ܐܪܥܐ ܕܡܓܘܓ ܡܕܒܪܢܐ ܘܪܝܫܐ ܕܡܫܟ ܘܬܘܒܠ. ܘܐܬܢܒܐ ܥܠܘܗܝ * ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܠܘܩܒܠܟ ܓܘܓ ܡܕܒܪܢܐ ܘܪܝܫܐ ܕܡܫܟ ܘܬܘܒܠ.

Dic eis, Sic ait Dominus dominorum; Ecce sumpturus sum lignũ Josephi quod est in manu Aphremi, & tribus Israelis socias ejus, & componam eas cum ligno Judæ, efficiámque eas lignum unũ, & erunt unum in manu mea. 19

Ligna verò super quæ tu scribis, cape manu tuâ coram eis: 20

Et dic illis, Sic ait Dominus dominorum, Ecce sumpturus sum filios Israelis è gentibus ad quas abierunt, congregabo eos, & reducam eos in terram suam: 21

Et efficiam eos populum unum in terra, in montibus Israelis: & rex unus erit omnibus, nec erunt ampliùs duo populi, neque dividentur ampliùs in duo regna: 22

Non polluent se ampliùs idolis suis & abominationib' suis, aut ullâ iniquitate suâ; sed liberabo eos ex omni loco incolatûs eorum, in quo peccaverunt, & mundabo eos: eruntque mihi populus, & ego ero ipsis Deus. 23

Serv' meus David regnabit super eos, & erit pastor ipsis omnib': in judiciis meis ambulabunt, præcepta mea servabunt, & facient ea: 24

Et habitabunt in terra quam dedi servo meo Jacobo, in qua habitaverunt patres eorum; habitabunt inquam, in ea ipsi & filii ac nepotes eorum in perpetuũ; & David serv' meus erit illis gubernator in seculum. 25

Pangam eis fœd' pacis, & fœd' perpetuum erit cum eis, multiplicabo eos, ponámque sanctuarium meum inter ipsos in perpetuum; 26

Erit inquam, loc' habitationis meæ inter ipsos, eróque eis De', & ipsi erunt mihi populus: 27

Et cognoscent populi me esse Dominum sanctificanté Israelem, quum fuerit inter ipsos sanctuariũ meum in perpetuũ. 28

CAP. XXXVIII.

De Gogæis & Magogæis: quòd ascensuri sunt adversùs eos, quum ascenderint è Babylone.

Deinde fuit ad me sermo Domini dicendo; 1

Fili hominis, pone faciẽ tuam versùs Gogam, & versùs terram Magogi rectoris ac principis Mosoch & Thubel, vaticinare adversùs eum, & dic; 2

Sic ait Dominus dominorum, Ecce me adversùm te Gog rector & princeps Mosochi & Thubelis: 3

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فتقول لهم * هكذا يقول ادوناي الرب * ها انا آخذ قبيلة يوسف بيد افرام * وقبايل اسرايل المنتمين اليه * وادفعهم الى قبيلة يهودا * ويكونون عصا واحدة في يد يهودا * ويكونان العصاتان التي كتبت عليها في يدك امامهم * وتقول لهم * هكذا يقول ادوناي الرب الاله * ها انا آخذ جميع بيت اسرايل من وسط الامم حيث دخلوا هناك * واجمعهم من جميع الذين حولهم * وادخلهم الى ارض اسرايل * واجعلهم امة واحدة في ارضي وفي جبال اسرايل * ورييس واحد يكون لجميعهم * ولا يصيرون ايضا امتان * ولا ينقسمون الى مملكتين * لكي لا ينجسوا ايضا باوثانهم التي اخطاوا بها وبرذايلهم * وفي جميع ممالكهم * وانجيهم من جميع اثامهم التي اخطاوا بها * واطهرهم * ويكونون لي شعبا * وانا اكون لهم الها * وعبدي داود رييس في وسطهم * وراع واحد يكون لجميعهم * لانهم يسيرون باوامري * ويحفظون احكامي ويصنعوها * ويسكنون على ارضهم التي انا اعطيتها لعبدي يعقوب * حيث سكن هناك اباوهم * ويسكنون عليها هم وبنوهم وبنو بنيهم الى الدهر * وها داود عبدي يكون رييسهم الى الابد * واعهد لهم عهد السلامة * ويكون عهدا ابديا معهم * واضع مقادسي في وسطهم الى الابد * ويكون مسكني فيهم * واكون لهم الها * وهم يكونون لي شعبا * ويعلمون اني انا الرب انا الذي اقدسهم * عندما تكون مقادسي في وسطهم الى الابد يقول الرب *

الفصل الثامن والثلثون *

* النبوة في اجوج وماجوج * الذين حاربوهم اذ صعدوا من ارض بابل *

* وكان قول الرب الي قايلا * يا ابن الانسان * ثبت وجهك على جوج وارض ماجوج رييس روس موصوخ وتوبال * وتنبأ عليه وقل له * هكذا يقول ادوناي الرب * ها انا عليك يا جوج ورييس روس موصوخ وتوبال *

Ut respondeas eis; Ita dicit Adonai Dominus; Ecce ego sumam familiam Josephi per manum Aphremi, & familias Israelis oriundas ab eo, daboque eas familiæ Judæ, & erunt baculus unus in manu Judæ. 19

Erunt ergò duæ virgæ super quas scripseris in manu tua coram eis: 20

Et dices eis; Ita dicit Adonai Dominus Deus Ecce ego recipiam totam domum Israelis è medio gentium, inde quò fuãt ingressi, & colligam eos ex omnibus circumjacentibus, & introducam eos in terram Israelis: 21

Et efficiam eos gentem unam in terra mea & in montibus Israelis, princeps idem erit omnibus; & non erunt ampliùs duæ gentes, neque dividentur in duo regna: 22

ut ne polluantur deinceps idolis suis in quibus peccabant, & abominationibus suis; atque id in omnibus regnis eorum: sed liberabo eos ab omnibus iniquitatibus eorum quibus delinquebant, & mundabo eos; eruntque mihi populus, & ego ero ipsis Deus: 23

Et servus meus David princeps in medio eorum, et pastor unus erit omnibus, ambulabunt enim in mandatis meis, judicia mea servabunt ac perficient: 24

Et habitabunt super terram suam quam ego dedi servo meo Jacobo, ubi habitaverunt patres eorum: habitabunt inquam, super eam ipsi & filii atq; nepotes eorum, in perpetuum: & ecce David servus meus erit princeps eorum in æternum. 25

Et inibo cum eis fœdus pacis, eritq; fœdus æternum cum eis: 26

Et ponam Sancta mea in medio eorum in perpetuum, eritque habitatio mea in ipsis: & ero ipsis Deus, & ipsi erunt mihi populus: 27

Et scient me Dominum esse qui sanctifico eos, quum fuerint Sancta mea in medio eorum in perpetuum, dicit Dominus. 28

CAP. XXXVIII.

Prophetia contra Agog & Magog, qui bellum intulerunt eis ubi ascendissent è terra Babelis.

Fuit etiã sermo Domini ad me, dicens; 1

O fili hominis, confirma faciem tuam contra Gog & terram Magog principis principum Mosoch & Thobel: propheta contra eum, & dic illi; 2

Ita dicit Adonai Dominus, Ecce me adversum te O Gog, et princeps principum Mosoch et Thobel: 3

יחזקאל: לח

,te faciam exire &: tuis maxillis in hamos dabo & ,te reducam Et
4 וְשׁוֹבַבְתִּיךָ וְנָתַתִּי חַחִים בִּלְחָיֶיךָ וְהוֹצֵאתִי אוֹתְךָ
:ipſos omnes *univerſitate* veſtitos equites & ,equos,tuũ exercitũ omnẽ &
וְאֶת־כָּל־חֵילֶךָ סוּסִים וּפָרָשִׁים לְבֻשֵׁי מִכְלוֹל כֻּלָּם
,Paras .ipſi omnes gladios tenentes ; *clypeum & ,ſcutum multus cætus*
5 קָהָל רָב צִנָּה וּמָגֵן תֹּפְשֵׂי חֲרָבוֹת כֻּלָּם׃ פָּרַס
omnes & ,Ghomer .*galeam & clypeum* ipſi omnes : eis cum Put & ,Chus
6 כּוּשׁ וּפוּט אִתָּם כֻּלָּם מָגֵן וְכוֹבָע׃ גֹּמֶר וְכָל־
:ejus *alæ omnes* & ,Aquilonis latera Togarmah domus ,ejus *alæ*
אֲגַפֶּיהָ בֵּית תּוֹגַרְמָה יַרְכְּתֵי צָפוֹן וְאֶת־כָּל־אֲגַפָּיו
omnis & tu ,tibi præpara & ,te Præpara .tecum multi populi
7 עַמִּים רַבִּים אִתָּךְ׃ הִכֹּן וְהָכֵן לְךָ אַתָּה וְכָל־
diebus A .cuſtodiam in eis eris & ; te ad ſe *congregantes ,tua concio*
8 קְהָלֶךָ הַנִּקְהָלִים עָלֶיךָ וְהָיִיתָ לָהֶם לְמִשְׁמָר׃ מִיָּמִים
terram ad venies annorum noviſſimo in : viſitaberis *multis*
רַבִּים תִּפָּקֵד בְּאַחֲרִית הַשָּׁנִים תָּבוֹא אֶל־אֶרֶץ
montes *ſuper* , multis populis è congregatam ,gladio à *reductam*
מְשׁוֹבֶבֶת מֵחֶרֶב מְקֻבֶּצֶת מֵעַמִּים רַבִּים עַל הָרֵי
,eſt educta populis è hæc & :ſemper deſolationẽ in fuerunt qui , Iſrael
יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר־הָיוּ לְחָרְבָּה תָּמִיד וְהִיא מֵעַמִּים הוּצָאָה
,venies ,*tempeſtas* ſicut aſcendes Et .ipſi omnes *fiducia in* habitabunt &
9 וְיָשְׁבוּ לָבֶטַח כֻּלָּם׃ וְעָלִיתָ כַּשֹּׁאָה תָבוֹא
populi & ,*tuæ alæ omnes* & ,tu ,eris terram *operiendum ad* nubes tanquã
כֶּעָנָן לְכַסּוֹת הָאָרֶץ תִּהְיֶה אַתָּה וְכָל־אֲגַפֶּיךָ וְעַמִּים
illa die in ,erit & : Deus Dominus dixit Sic .tecum multi
10 רַבִּים אוֹתָךְ׃ כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא
.malam cogitationem cogitabis & ,tuum cor ſuper verba aſcendent
יַעֲלוּ דְבָרִים עַל־לְבָבֶךָ וְחָשַׁבְתָּ מַחֲשֶׁבֶת רָעָה׃
habitantes ,quieſcentes veniam ,villarum terram ſuper Aſcendam ,dices Et
11 וְאָמַרְתָּ אֶעֱלֶה עַל־אֶרֶץ פְּרָזוֹת אָבוֹא הַשֹּׁקְטִים יֹשְׁבֵי
non *ſores* & , vectes & : muro abſque *habitantes* hi omnes : *fiducia in*
לָבֶטַח כֻּלָּם יֹשְׁבִים בְּאֵין חוֹמָה וּבְרִיחַ וּדְלָתַיִם אֵין
reducendum ad : prædam *prædandum ad &* , *ſpolium ſpoliandum Ad* .eis
12 לָהֶם׃ לִשְׁלֹל שָׁלָל וְלָבֹז בַּז לְהָשִׁיב
,gentibus è *collectum* populum *ad* & , *habitata* deſolata ſuper tuã manum
יָדְךָ עַל־חֳרָבוֹת נוֹשָׁבֹת וְאֶל־עַם מְאֻסָּף מִגּוֹיִם
.terræ umbilico *ſuper* habitantes ,*emptionem & ,acquiſitionem* facientem
עֹשֶׂה מִקְנֶה וְקִנְיָן יֹשְׁבֵי עַל־טַבּוּר הָאָרֶץ׃
dicent ejus leunculi omnes & ,Tarſis negotiatores &,Dedan &,Scheba
13 שְׁבָא וּדְדָן וְסֹחֲרֵי תַרְשִׁישׁ וְכָל־כְּפִירֶיהָ יֹאמְרוּ
prædam prædandũ ad nũquid ?*veniens tu ſpolium* ſpoliandũ ad Nũquid ,tibi
לְךָ הֲלִשְׁלֹל שָׁלָל אַתָּה בָא הֲלָבֹז בַּז
capiendum ad,aurum & argentum *tollendum ad ,tuam concionem* feciſti cõgregare
הִקְהַלְתָּ קְהָלֶךָ לָשֵׂאת כֶּסֶף וְזָהָב לָקַחַת
vaticinare Propterea ?*magnum ſpolium ſpoliandum ad,emptionem & acquiſitionem*
14 מִקְנֶה וְקִנְיָן לִשְׁלֹל שָׁלָל גָּדוֹל׃ לָכֵן הִנָּבֵא
die in Nonne :Deus Dominus dixit Sic ,Ghog ad *dices* & ,hominis fili
בֶּן־אָדָם וְאָמַרְתָּ לְגוֹג כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִה הֲלוֹא בַּיּוֹם
venies Et ? ſcies ,*fiducia in* Iſrael *meum populum habitando in* , illa
15 הַהוּא בְּשֶׁבֶת עַמִּי יִשְׂרָאֵל לָבֶטַח תֵּדָע׃ וּבָאתָ
equitantes : tecum multi populi & , tu Aquilonis lateribus è tuo loco è
מִמְּקוֹמְךָ מִיַּרְכְּתֵי צָפוֹן אַתָּה וְעַמִּים רַבִּים אִתָּךְ רֹכְבֵי
aſcendes Et .multus exercitus & ,magnus cœtus ,ipſi univerſi equos
16 סוּסִים כֻּלָּם קָהָל גָּדוֹל וְחַיִל רָב׃ וְעָלִיתָ
noviſſimo in : terram *operiendum ad* nubes ſicut ,Iſrael meũ populũ ſuper
עַל־עַמִּי יִשְׂרָאֵל כֶּעָנָן לְכַסּוֹת הָאָרֶץ בְּאַחֲרִית
ſciendum ad ,meam terram ſuper te faciam venire & , eris dierum
הַיָּמִים תִּהְיֶה וַהֲבִאוֹתִיךָ עַל־אַרְצִי לְמַעַן דַּעַת
.Ghog eorũ oculis in te in me *ſanctificando in* , me gentes
הַגּוֹיִם אֹתִי בְּהִקָּדְשִׁי בְךָ לְעֵינֵיהֶם גּוֹג׃

Verſio VULG. LAT.

4 Et circumagam te, et ponam
frænum in maxillis tuis: et educam
te, et omnem exercitum
tuum, equos et equites veſtitos
loricis univerſos, multitudinem
magnam, haſtam et clypeum arripientium
5 et gladiũ. Perſæ, Æthiopes,
et Libyes cũ eis, omnes
6 ſcutati et galeati. Gomer, et univerſa
agmina ejꝰ, domꝰ Thogorma,
latera Aquilonis, et totum
robur ejꝰ; populíque multi tecum.
7 Præpara, et inſtrue te, et
omnem multitudinem tuã, quæ
coacervata eſt ad te: et eſto eis
8 in præceptum. Poſt dies multos
viſitaberis: in noviſſimo annorum
venies ad terram, quæ reverſa
eſt à gladio, et congregata
eſt de populis multis ad montes
Iſrael, qui fuerunt deſerti jugiter:
hæc de populis educta eſt,
et habitabunt in ea confidenter
9 univerſi. Aſcendens autem quaſi
tempeſtas venies, et quaſi nubes,
ut operias terram tu, et
omnia agmina tua, et populi
10 multi tecũ. Hæc dicit Dñs Deꝰ; In
die illa aſcendent ſermones ſup
cor tuũ, et cogitabis cogitationẽ
11 peſſimam: Et dices; Aſcendam
ad terram abſque muro: veniam
ad quieſcentes, habitantéſque ſecuré:
hi omnes habitant ſine
muro, vectes et portæ non ſunt
12 eis: Ut diripias ſpolia, et invadas
prædam, ut inferas manũ tuam
ſuper eos, qui deſerti fuerant,
et poſteà reſtituti, et ſuper populum,
qui eſt congregatus ex
Gentibꝰ, qui poſſidere cœpit, et
13 eſſe habitator umbilici terræ. Saba,
et Dedan, et negotiatores
Tharſis, et omnes leones ejꝰ dicent
tibi; Numquid ad ſumenda
ſpolia tu venis? ecce ad diripiendam
prædam congregâſti
multitudinẽ tuã, ut tollas argentum,
& aurũ, & auferas ſupellectilé,
atq; ſubſtantiã, & diripias
14 manubias infinitas. Propterea
vaticinare, fili hominis, & dices
ad Gog; Hæc dicit Dñs Deꝰ;
Numquid non in die illo, cùm
habitaverit populus meus Iſrael
15 confidenter, ſcies? Et venies de
loco tuo à lateribꝰ Aquilonis tu,
& populi multi tecũ, aſcenſores
equorũ univerſi, cœtꝰ magnus, &
16 exercitꝰ vehemens. Et aſcendes
ſup populũ meũ Iſrael quaſi nubes,
ut operias terrã. In noviſſimis
diebꝰ eris, & adducã te ſup
terrã meam: ut ſciant Gentes
me, cùm ſanctificatus fuero in te
in oculis eorum, O Gog.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ συνάξω σε, ϗ πᾶσαν τὴν δύναμίν σου,
ἵππους καὶ ἱππεῖς ἐνδεδυμένους θώρακας
πάντας συναγωγὴ πολλὴ, πέλται ϗ περικεφαλαῖαι
5 ϗ μάχαιραι· Πέρσαι, ϗ Αἰθίοπες,
ϗ Λίβυες, (δ) πάντες περικεφαλαίαις
6 ϗ πέλταις, Γομὲρ, ϗ πάντες οἱ περὶ
αὐτὸν, οἶκος τοῦ (ε) Θοργαμὰ, ἀπ' ἐσχάτου
Βοῤῥᾶ, ϗ πάντες οἱ περὶ αὐτὸν, ϗ ἔθνη
7 πολλὰ μετὰ σοῦ. Ἑτοιμάσθητι, (ζ) ἑτοίμασον
σεαυτὸν σὺ, ϗ πᾶσα ἡ συναγωγή σου (η) ἡ
συνηγμένη μετὰ σοῦ, ϗ ἔσῃ μοι εἰς προφυλακήν.
8 Ἀφ' ἡμερῶν πλειόνων (θ) ἑτοιμασθήσεται,
ϗ ἐπ' ἐσχάτου ἐτῶν ἐλεύσεται, ϗ
ἥξει εἰς τὴν γῆν τὴν ἀπεστραμμένην ἀπὸ μαχαίρας,
συνηγμένων ἀπὸ ἐθνῶν πολλῶν
(ι) ἐπὶ γῆν Ἰσραὴλ, ἣ ἐγενήθη ἔρημος δι'
ὅλου· ϗ (κ) οὗτος ἐξ ἐθνῶν ἐξελήλυθε, ϗ
9 κατοικήσουσιν ἐπ' εἰρήνης ἅπαντες. Καὶ
ἀναβήσῃ ὡς ὑετὸς, ϗ ἥξεις ὡς νεφέλη κατακαλύψαι
γῆν, ϗ (λ) ἔσῃ σὺ ϗ πάντες
10 οἱ περὶ σὲ, ϗ ἔθνη πολλὰ μετὰ σοῦ. Τάδε
λέγει (μ) κύριος κύριος, Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ
ἐκείνῃ, ἀναβήσεται ῥήματα ἐπὶ τὴν καρδίαν
11 σου, ϗ λογιῇ λογισμοὺς πονηροὺς, Καὶ ἐρεῖς,
Ἀναβήσομαι ἐπὶ γῆν (ν) ἀπεῤῥιμμένην, ἥξω
ἐπὶ ἡσυχάζοντας ἐν (ξ) τῇ ἡσυχίᾳ, ϗ οἰκοῦντας
ἐπ' εἰρήνης, πάντας κατοικοῦντας
(ο) γῆν, ἐν ᾗ οὐχ ὑπάρχει τεῖχος, οὐδὲ μοχλοὶ,
12 ϗ θύραι οὐκ εἰσὶν (π) αὐτοῖς, Προνομεῦσαι
προνομὴν, ϗ (ρ) σκῦλα σκυλεῦσαι
αὐτῶν, τοῦ ἐπιστρέψαι χεῖράς μου εἰς τὴν
ἠρημωμένην ἣ κατῳκίσθη, ϗ (σ) ἐπ' ἔθνος
συνηγμένον ἀπὸ ἐθνῶν πολλῶν, πεποιηκότας
κτήσεις, κατοικοῦντας ἐπὶ τὸν ὀμφαλὸν
13 τῆς γῆς. (¨) Σαββὰ, ϗ Δαιδὰν, ϗ (τ) ἔμποροι
Καρχηδόνιοι, ϗ πᾶσαι αἱ κῶμαι αὐτῶν
ἐροῦσί σοι, (υ) Εἰς προνομὴν τοῦ προνομεῦσαι
σὺ ἔρχῃ, καὶ σκυλεῦσαι σκῦλα,
συνήγαγες συναγωγήν σου λαβεῖν ἀργύριον
ϗ χρυσίον, ἀπενέγκασθαι (φ) κτῆσιν,
14 τοῦ σκυλεῦσαι σκῦλα. Διατοῦτο
προφήτευσον υἱὲ ἀνθρώπου, ϗ εἰπὸν τῷ Γὼγ,
Τάδε λέγει (χ) κύριος, Οὐκ ἐν τῇ ἡμέρᾳ
ἐκείνῃ, ἐν τῷ κατοικισθῆναι τὸν λαόν μου
15 Ἰσραὴλ ἐπ' εἰρήνης, (ψ) ἐγερθήσῃ, Καὶ ἥξεις
ἐκ τοῦ τόπου σου ἀπ' ἐσχάτου Βοῤῥᾶ, ϗ
ἔθνη πολλὰ μετὰ σοῦ; ἀναβάται ἵππων πάντες,
συναγωγὴ μεγάλη ϗ δύναμις πολλή.
16 Καὶ ἀναβήσῃ ἐπὶ τὸν λαόν μου Ἰσραὴλ ὡς
νεφέλη καλύψαι γῆν· ἐπ' ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν
ἔσται, ϗ ἀνάξω σε ἐπὶ τὴν γῆν μου, ἵνα
γνῶσι πάντα τὰ ἔθνη ἐμὲ, ἐν τῷ ἁγιασθῆναί
με ἐν σοὶ ἐνώπιον αὐτῶν.

Et (b) congregabo te, & omnem 4
exercitum tuum, equos, & equites
veſtitos loricis univerſos
(c) congregatione multâ, peltæ,
& galeæ, & gladii. Perſæ, & 5
Æthiopes, & Libyes, omnes galeis,
& peltis, Gomer, & omnes, 6
qui circa eum, domus
Thorgama ab extremo Aquilonis,
& (d) omnes qui circa eum:
& gentes multæ tecum. Præparare, 7
præpara te, tu, & omnis
congregatio tua, quæ collecta eſt
tecum: & eris mihi in cuſtodiam.
*A diebus primis * præparabitur,* 8
& in noviſſimo annorum
veniet; & veniet in terram, quæ
perverſa eſt à gladio, collecta de
gentibus multis ſuper terram Iſrael,
quæ facta eſt deſerta omninò.
(e) Et hic ex gentibus egreſſus
eſt: & habitabunt in pace
(f) omnes. Et aſcendes, ſicut 9
pluvia, & (g) venies, ſicut nubes
ad operiendam terram: &
(h) eris tu, & omnes, qui circa
te, & gentes multæ tecum. Hæc 10
dicit Dominus Dominus, Et erit
in die illa, aſcendent verba ſuper
cor tuum: & cogitabis cogitationes
peſſimas, Et dices; Aſcendam 11
ſuper terram abjectam: veniam
ſuper quieſcentes in quiete,
& habitantes in pace, omnes habitantes
terram, in qua non eſt
murus neq; vectes, & portæ non
ſunt eis, Ad prædandum prædã, 12
& ſpoliandum ſpolia eorum, ad
convertendum manum meam in
deſolatam, quæ habitata eſt, &
ſuper gentem collectam de gentibus
multis, qui fecerunt poſſeſſiones,
habitantes ſuper umbilicum
terræ. Sabba, & Dedan, 13
& negotiatores (i) Carthaginenſes,
& omnes villæ eorum dicent
tibi; Ad prædandum prædam tu
venis, & ſpoliandum ſpolia: congregaſti
congregationem tuam
ad tollendum argentum, & aurum,
ad auferandum (k) poſſeſſionem,
ad ſpoliandum (l) ſpolia.
Propterea vaticinare, fili hominis, 14
& dic ad Gog; Hæc dicit
Dominus; Nonne in die illa,
cùm habitaverit populus meꝰ Iſrael
in pace, (m) conſurges? Et 15
venies de loco tuo ab extremo Aquilonis,
& gentes multæ tecum:
aſcenſores equorum omnes, congregatio
magna, & exercitus
multus. Et aſcendes ſuper populũ 16
meum Iſrael, quaſi nubes, ut operias
terram. In noviſſimus diebus
erit: & adducam te ſuper terram
meã: ut ſciant omnes gentes me; cũ ſanctificatus fuero in te coram eis.

MS. A. (δ) ϗ Λυδοὶ, πάντες ἐν περικεφαλαίαις (ε) Θεργαμὰ, (ζ) ϗ ἑτοίμασον (η) οἱ συνηγμένοι (θ) ἐτῶν ἑτοιμασθήσονται, ϗ ἐπ' ἐσχάτου (ι) εἰς τὴν γῆν τοῦ Ἰσραὴλ, (κ) αὐτὸς ἐξελήλυθεν ἐκ τῶν ἐθνῶν, (λ) ἔσῃ (μ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (ν) ἀπεῤῥιμμένην, (ξ) ἡσυχίᾳ, ϗ καθοικοῦντας (ο) πόλεις, ἐν αἷς οὐχ (π) αὐταῖς, (ρ) σκυλεῦσαι σκῦλα, τοῦ ἐπιστρέψαι τὴν χεῖρά μου (σ) ἐπὶ (¨) Σαβὰ, (τ) οἱ ἔμποροι Χαλκηδόνος, ϗ πᾶσαι αἱ χῶραι αὐτῶν (υ) Τοῦ προνομεῦσαι εἰς προνομὴν σὺ (φ) κτήσεις, (χ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, Οὐχὶ (ψ) ἐξεγερθήσῃ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 ואשדלנך ואתן שירין על ליסתך ואפיק יתך וית כל משריתך סוסון ופרשין לבושי
5 גמיר כולהון משרין סגיאן די מזינין בעגילין ותריסין אחדי סיפין כולהון : פרסאי
6 כושאי ופוטאי עמהון כולהון מזינין בעגילין וקולסין : גמר וכל משריתהא מדינת
7 גרממיא סיפי צפונא וית כל משריתהון עממין סגיאין די עמך : אזדרזו ואתקין לך
8 את וכל משריתך דאתכנישו עלך ותהי להון למטרא : מיומין סגיאין תמני משריתך
בסוף שניא תהך על ארעא דתבו עלה מקטלי חרבא דאתכנשו מעממין סגיאין על
טורי ארעא דישראל דהוו לחרבא תדירא ואנון מביני עממיא אתגליאו ויתיבו
9 לרוחצן כולהון : ותסק כאתרגושתא תיתי כעננא דסליק וחפי ית ארעא תהי את
10 וכל משריתך ועממין סגיאין די עמך : כדנן אמר יי אלהים ויהי בעדנא ההיא יסקון
11 הרהורין על לבך ותחשב מחשבן בישן : ותימר אסק על ארעא דיתבא שליוא בקרוי
פצחיא אהך על עמא דשקטין ושרן לרוחצן כולהון יתבין בלא שורא ועברין ודשין
12 לית להון : למבז בזא ולמעדי עדאה לכנשא משריתך על חרבתא דאתיתבא ועל
עמא דאתכנשו מביני עממיא דאצלחו בנכסין וקנינין יתבין על תוקפא דארעא :
13 שבא ודדן ותגרי ימא וכל מלכהא יימרון לך הלמבז בזא את אתי הלמעדי עדאה
14 כנישת משריתך למסב כסף ודהב למשבי נכסין וקנינין למעדי עדי סגי : בכן אתנבי
בר אדם ותימר לגוג כדנן אמר יי אלהים הלא בעדנא ההיא כד יתבון עמי ישראל
15 לרוחצן תדע פורענות גבורתי : ותיתי מאתרך מסיפי צפונא את ועממין סגיאין די
16 עמך רכבי סוסון כולהון משרין סגיאין ועם סגי : ותסק על עמי ישראל כעננא
דסליק וחפי ית ארעא בסוף יומיא תהי ואיתינך על ארעא בית שכנתי בדיל דידעון
עממיא פורענות גבורתי כד אתקדש בך דיהון חזן בפורענותך גוג :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et perſuadebo tibi, et ponam circulos in maxillas tuas, & educam te & omnem 4
exercitum tuum, equos & equites indutos omnimoda veſte univerſos, exercitus
multos clypeis armatos & ſcutis: tenentes gladios univerſi erunt. Perſæ, 5
Æthiopes & Libyes cum eis, univerſi armati clypeis & galeis. Gomer 6
& omnis exercitus ejus; provincia Germaniæ, fines Aquilonis, & omnis exercitus
eorum; multi populi qui tecum ſunt. Accingere & præparate, & 7
omnes copias tuas, quæ congregatæ ſunt *ad te*; & eris eis in cuſtodiam. A 8
diebus multis conſtitues exercitum tuum: in fine annorum ibis ad terram,
contra quam converſi ſunt occidentes gladio, qui congregati ſunt de populis
multis ad montes Iſrael, qui fuerant [*expoſiti*] vaſtationi jugiter: &
ipſi de medio populorum migraverunt, & habitaverunt confidenter univerſi.
Et aſcendes quaſi tempeſtas: venies quaſi nubes quæ aſcendit & operit terram; 9
ſic eris tu & omnis exercitus tuus, & populi multi qui tecum ſunt. Hæc 10
dicit Dominus Deus: Et erit in tempore illo, aſcendent cogitationes ſuper cor
tuum, & cogitabis cogitationes malas; Et dices: Aſcendam ad terram quæ 11
habitatur *ſecurè* urbibus abſque muris; ibo ad populum quieſcentem & habitantem
confidenter: univerſi hi habitant abſque muro, & vectes & portæ
non ſunt eis: Ut depræderis prædam & auferas ſpolium, & congreges exercitum 12
tuum ſuper deſerta, quæ habitata ſunt; & ſuper populum qui congregati
ſunt de medio populorum; proſperati ſunt enim in divitiis & poſſeſſionibus
habitantes in fortitudine terræ. Saba & Dedan, & negotiatores 13
maris, & omnes reges ejus dicent tibi: Nunquid ad prædandum prædam tu
venis? & ad auferendum ſpolium congregâſti exercitum tuum? ut tollas argentum
& aurum, ut capias ſupellectilia atque ſubſtantias, ut auferas ſpolia
multa? Propterea vaticinare fili hominis, & dices ad Gog: Hæc dicit Dominus 14
Deus: Nonne in tempore illo cùm habitaverit populus meus Iſrael
confidenter ſcies ultionem potentiæ meæ? Et *venies* de loco tuo de finibus 15
Aquilonis, tu & populi multi qui tecum ſunt, aſcenſores equorum univerſi,
exercitus multi, & populus multus. Et aſcendes ſuper populum meum 16
Iſrael, ſicut nubes quæ elevatur & operit terram: in fine dierum eris, & adducam
te ſup terram domꝰ majeſtatis meæ, ut ſciant populi ultionem potentiæ
meæ cum ſanctificatus fuero in te, ipſis videntibus ultionem tuam ô Gog.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܟܢܫܟ ܘܐܪܡܐ ܦܓܘܡܐ ܒܦܟܝܟ ܘܐܦܩܟ ܡܢ ܐܬܪܟ ܠܟ. ܘܠܟܠܗ ܚܝܠܟ. ܪܟܫܐ 4
ܘܦܪܫܐ ܕܠܒܝܫܝܢ ܙܝܢܐ. ܟܠܗܘܢ ܟܢܫܐ ܪܒܐ. ܒܪܘܡܚܐ ܘܒܬܪܣܐ. ܘܐܚܝܕܝܢ ܣܝܦܐ.
* ܟܠܗܘܢ ܦܪܣܝܐ ܘܟܘܫܝܐ ܘܦܘܛܝܐ ܥܡܗܘܢ. ܒܬܪܣܐ ܘܒܣܢܘܪܬܐ. * ܓܘܡܪ ܘܟܠܗ 5 6
ܚܝܠܗ. ܘܒܝܬ ܬܘܓܪܡܐ. ܘܣܛܪܘܗܝ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܟܠܗ ܚܝܠܗܘܢ. ܘܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ
ܕܥܡܟ. * ܐܬܛܝܒ ܐܢܬ ܘܟܠܗ ܟܢܫܐ ܕܟܢܝܫ ܥܡܟ. ܘܗܘܝܬ ܠܗܘܢ ܠܡܛܪܐ. * ܡܢ 7 8
ܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ ܐܬܦܩܕܬ. ܘܒܚܪܬܐ ܕܫܢܝܐ ܬܐܬܐ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. ܘܥܠ ܐܪܥܐ
ܕܐܬܦܢܝܬ ܡܢ ܚܪܒܐ. ܘܐܬܟܢܫܬ ܡܢ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܝܬܒܝܢ ܒܗ ܟܠܗܘܢ ܠܫܠܝܐ.
* ܘܬܣܩ ܐܝܟ ܕܠܘܚܡܐ. ܘܐܝܟ ܥܢܢܐ ܕܡܟܣܝܐ ܠܐܪܥܐ. ܐܢܬ ܘܟܠܗ ܚܝܠܟ. ܘܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ 9
ܕܥܡܟ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܣܩܢ ܡܠܐ ܥܠ ܠܒܟ. ܘܬܬܚܫܒ 10
ܡܚܫܒܬܐ ܒܝܫܬܐ. ܘܬܐܡܪ. * ܐܣܩ ܥܠ ܐܪܥܐ ܦܘܪܝܬܐ. ܘܐܐܬܐ ܥܠ ܐܝܠܝܢ ܕܝܬܒܝܢ 11
ܠܫܠܝܐ. ܕܠܐ ܫܘܪܐ ܘܠܐ ܣܘܓܪܐ. ܘܠܐ ܬܪܥܐ ܐܝܬ ܠܗܘܢ. * ܕܬܒܘܙ ܒܙܬܐ. ܘܬܒܘܙ ܒܙܬܐ. 12
ܘܬܗܦܘܟ ܐܝܕܟ ܥܠ ܚܘܪܒܐ ܕܐܬܝܬܒܘ. ܘܥܠ ܥܡܐ ܕܐܬܟܢܫ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܕܩܢܐ ܒܥܝܪܐ
ܘܩܢܝܢܐ. ܘܝܬܒܝܢ ܥܠ ܫܘܦܪܗ ܕܐܪܥܐ. * ܫܒܐ ܘܕܪܢ. ܘܬܓܪܐ ܕܬܪܫܝܫ. ܘܟܠܗܘܢ 13
ܩܘܪܝܐ ܢܐܡܪܘܢ ܠܟ. ܐܬܝܬ ܠܡܒܙ ܒܙܬܐ. ܘܠܡܚܛܦ ܚܛܘܦܝܐ. ܘܟܢܫܬ ܟܢܘܫܬܟ
ܕܬܚܛܘܦ ܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ. ܘܬܣܒ ܒܥܝܪܐ ܘܩܢܝܢܐ. ܘܬܕܒܪ ܕܒܪܐ ܪܒܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ 14
ܐܬܢܒܐ ܒܪ ܐܢܫܐ ܀ ܘܐܡܪ ܠܓܘܓ ܘܠܡܓܘܓ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܒܗܘ ܝܘܡܐ
ܕܝܬܒ ܥܡܝ ܐܝܣܪܐܝܠ ܠܫܠܝܐ. ܬܕܥ. * ܘܬܐܬܐ ܡܢ ܐܬܪܟ ܡܢ ܣܘܦܝܗܘܢ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܥܡܡܐ 15
ܣܓܝܐܐ ܕܥܡܟ. ܪܟܝܒܝ ܪܟܫܐ ܟܠܗܘܢ. ܟܢܫܐ ܪܒܐ ܘܚܝܠܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܬܣܩ ܥܠ ܥܡܝ 16
ܐܝܣܪܐܝܠ. ܐܝܟ ܥܢܢܐ ܕܡܟܣܝܐ ܠܐܪܥܐ. ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ ܬܐܬܐ. ܘܐܝܬܝܟ ܠܐܪܥܝ. ܘܢܕܥܘܢܢܝ
ܥܡܡܐ ܡܢ ܕܐܬܩܕܫ ܒܟ ܩܕܡܝܗܘܢ.

Colligam te,et injectâ paſtomide maxillis tuis 4
educam te è patria tua, te *inquam*, totúmque
exercitum tuum, equos & equites armis
indutos, omnes turmam ingentem, lanceis
clypeíſque *inſtructos*, gladióſque tenentes :
Omnes Perſas, Æthiopas, & Putæos cum ipſis, 5
ſcutatos & galeatos : Gomer, totúmque 6
exercitum ejus, & Thogormæos, latera
Aquilonis, omnéſque copias eorum, denique
populos numeroſos qui tecum ſunt. Paratus 7
eſto tu & omnis turba quæ tecum eſt
congregata, & ſis eis cuſtodiæ. A priſcis 8
diebus viſitatus fuiſti, & in fine annorum invaderes
montes Iſraelis & terram quæ requievit
à gladio, congregatam ex populis
multis, in qua omnes tranquillè degunt ? Et 9
aſcenderes quaſi perturbatio,& ut nubes terram
tegens, tu & omnis exercitus tuus, gentéſque
numeroſæ quæ tecum ſunt ? Sic ait 10
Dominus dominorum ; Eo die verſabis animo
tuo verba, & cogitationem pravam cogitabis,
ac dices ; Aſcendam contra terram 11
uberem, & invadam eos qui ſecurè habitant,
qui neque muros, neque ſeras, neque
portas habent ; Ad prædam capiendam, & 12
diripiendum ſpolium , ad reducendam manum
tuam contra vaſtitates rehabitatas, &
contra populum è gentib⁹ collectum, jumenta
poſſidentem & armenta, in pulchritudine
terræ habitantem. Seba, & Daran, mercatores 13
Tharſis, omnéſque civitates dicent tibi;
Veniſti ad prædandum prædam, & diripiendum
ſpolia ; & congregâſti cœtum tuum ut
raperes argentum & aurum, tolleres jumenta
& armenta, magnámque ſupellectilem abducere:
Iccirco vaticinare fili hominis,& dic 14
Gogo atque Magogo;Sic ait Dominus dominorum,
Quâ die habitaverit populus meus
Iſrael tutò, experieris. Venies enim ex patria 15
tua, ex oris Aquilonaribus cum populis
multis qui tecum ſunt, inſidentibus equis omnibus,
cœtu maximo & exercitu copioſiſſimo :
Et aſcendes contra populum meum Iſraelem 16
velut nubes terram tegens : in fine
quidem dierum venies,adducámque te in terram
meam ; ſed cognoſcent me gentes ex eo
quòd me ſanctificabo in te coram eis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* واجمعك وكل جيشك * الخيل والخيالة لابسي الدروع جميعا في جمع كثير * مزاريق وخود 4
وسيوف * الفرس والحبوش * واهل النوبة * واللوديون جميعهم بالخود والمزاريق * جومر وجميع 5 6
اصحابه * بيت ترغاما من آخر الجربياء * وجميع آله * وامم كثيرة معك * استعد وهيي نفسك 7
انت وكل جمعك المجتمعين معك * ويكون لي حارسا * منذ ايام السنين الكثيرة يتهيا * والي آخر 8
السنين ياتي * ويقبل الي الارض المنصرفة من سيف المجموعين من امم كثيرة * الي ارض اسرائيل
التي صارت برية بكمالها * وهو خرج من الامم * ويسكنون على السلامة جميعهم * وتصعد مثل 9
المطر * وتاتي مثل سحابة لتغشا الارض * وتسقط انت وجميع الذين حولك * وامم كثيرة معك *
* هكذا يقول الرب الرب الاله * ويكون في ذلك اليوم تصعد الكلمات على قلبك * وتفكر فكرات 10
شرير وتقول * اصعد على الارض المطروحة * اتي على الهاديين في سكون * والساكنين على 11
السلامة * جميع ساكني المدن في رسوخ * حيث لا يكون سور ولا متاريس * ولا يكون ثم ابواب
* لنهب نهبا ونغنم غنائما * لارد يدي على الخربة التي سكنت * وعلي امم مجموعة من امم 12
كثيرين صنعت مقتنيات * السكان على سرة الارض * صابا ودادان * وتجار خلقدونية * وكل كورها 13
يقولون لك * لننهب نهبا * انت تاتي وتغنم غنايم * جمعت مجمعك لتاخذ فضة وذهبا * وتاخذ قنايا
لتغنم غنايم * لاجل هذا تنبا يا ابن الانسان وقل لجوج * هكذا يقول الرب الرب الاله * اليس في 14
ذلك اليوم * عند ما يسكن شعبي اسرائيل على السلامة * تقوم وتاتي من موضعك من آخر 15
الجربياء * وامم كثيرة معك * جميعهم ركاب خيل * جمع عظيم وجيش كثير * وتصعد على 16
شعبي اسرائيل مثل سحابة لتغطي الارض * في الايام الاخيرة يكون واصعدك على ارضي لكي
تعرفني كل الامم عند ما اتقدس بك امامهم *

Et congregabo te, totumque exercitum 4
tuum, equos & equites loricis indutos pariter,
cum turma ingenti, ſpiculis, galeis,
& gladiis : Perſas, & Æthiopes, Nubas, 5
& Lydios omnes cum galeis & ſpiculis :
Gomer, omneſque ſocios ejus : domum 6
Thorgama ab extremo Aquilone, totamq;
ſectam ipſius, & gentes plurimas tecum.
Præſto ſis, teq; para, tu & univerſa turma 7
tua tecum ſtipati, & eſto mihi cuſtos.
Inde à diebus annorum multorum ſeſe parat, 8
& ad finem annorum veniet, recipietque
ſe in terram quæ effugerat gladium
congregatorum è multis gentibus, in terram
ſcilicet Iſraelis quæ tota deſerta evaſit
: Is inquam, è gentibus egredietur,
et habitabunt omnes pacificè. Aſcendes 9
autem ſicut imber, et nubis inſtar veniens
ad obruendam terram : verùm corrues tu
et omnes te ſtipantes, plurimæque tecum
gentes. Ita dicit Dominus, Dominus Deus. 10
Et erit eo die ut aſcendant verba in
cor tuum, et cogitationes pravas mediteris,
ac dicas ; Aſcendam contra terram 11
dejectam, veniam adversùs tranquillos in
quiete et pacatè habitantes, omnes incolas
urbium perennes, ubi non ſunt mœnia neque
propugnacula, neque ſunt ibi portæ ;
Ut capiamus prædã, & ſpolia diripiamus; 12
ut manum meam convertam in deſolatam
quæ habitata eſt, et in gentes coactas è
multis gentibus, quæ opes acquiſiverunt,
habitantes ſuper umbilicum terræ. Saba, et 13
Dædan, et negotiatores Chalcedoniæ, omneſque
earũ provinciæ dicent tibi; Prædemur
prædam : tu venias, et ſpolia diripies. Collegiſti
cœtum tuum ad tollendum argentum
et aurum, ad capiendas opes, ad rapiendum
ſpolia. Propterea vaticinare O 14
fili hominis, et dic ad Gog ; Ita dicit Dominus,
Dominus Deus ; Nonne in die illo
quum habitaverit populus meus Iſrael pacificè,
Surges et venies è loco tuo ab extremo 15
Aquilone multis cum gentibus,
omnibus equorum conſcenſoribus, cœtu
maximo, exercitu copioſiſſimo ? Et aſcendes 16
contra populum meum Iſraelem ceu
nubes ad tegendam terram ? Poſtremis
diebus faciam ut aſcendas contra terram
meam, ut me cognoſcant omnes gentes,
cùm ſanctificatus in te fuero coram eis.

יחזקאל : לח

diebus in ſum locutus quo , ille tu Num ,Deus Dominus dixit Sic
17 כה־אמר אדני יהוה האתה־הוא אשר־דברתי בימים
prophetantium Iſrael prophetarum meorũ ſervorum *manu in* antiquis
קדמונים ביד עבדי נביאי ישראל הנבאים
erit Et ? eos ſuper te *adducendum ad* ,annorum illorum diebus in
18 בימים ההם שנים להביא אתך עליהם: והיה
Dominus dixit ,Iſrael *humum* ſuper Ghog *venire die in* ,illa die in
ביום ההוא ביום בוא גוג על־אדמת ישראל נאם אדני
meæ iræ igne in ,meo zelo in Et .meo furore in,mea ira aſcendet ,Deus
19 יהוה תעלה חמתי באפי: ובקנאתי באש־עברתי
ſuper magnus commotio fuerit illa die in *non ſi* ,ſum locutus
דברתי אם־לא ביום ההוא יהיה רעש גדול על
volatile & ,maris piſces *meis faciebus* à contremiſcent Et .Iſrael *humum*
20 אדמת ישראל: ורעשו מפני דגי הים ועוף
,*humum* ſuper *repens* reptile omne & ,agri *beſtia* & ,cœli
השמים וחית השדה וכל־הרמש הרמש על־האדמה
cadent & ,montes diruentur & :*humi faciebus ſuper* qui *homo omnis* &
וכל האדם אשר על־פני האדמה ונהרסו ההרים ונפלו
eum *ſuper* vocabo Et .*cadet* terram in murus omnis & ,gradus
21 המדרגות וכל־חומה לארץ תפול: וקראתי עליו
viri gladius : Deus Dominus dixit ,gladium meis mõtibus cunctis in
לכל־הרי חרב נאם אדני יהוה חרב איש
:ſanguine *in* &,peſte *in* eo cum judicabor Et .erit ſuum fratrem in
22 באחיו תהיה: ונשפטתי אתו בדבר ובדם
faciã pluere ſulphur & ignem ,*Elgabis* lapides & ,inundantẽ imbrem &
וגשם שוטף ואבני אלגביש אש וגפרית אמטיר
.eo cum qui ,multos populos ſuper & ,ejus *alas* ſuper & ,eum ſuper
עליו ועל־אגפיו ועל־עמים רבים אשר אתו:
gentiũ oculis in me faciam ſcire & ,me ſanctificabo &,me magnificabo Et
23 והתגדלתי והתקדשתי ונודעתי לעיני גוים
.Dominus *ego* quòd ſcient & ;multarum
רבים וידעו כי־אני יהוה:

CAP. XXXIX. לט

dixit Sic ,*dices* & ,Ghog ſuper vaticinare ,hominis fili tu Et
1 ואתה בן־אדם הנבא על־גוג ואמרת כה אמר
.Tubal &,Meſech capitis *prælatum* Ghog te ad *ego* Ecce ,Deus Dominus
אדני יהוה הנני אליך גוג נשיא ראש משך ותבל:
;Aquilonis lateribus è te faciã aſcendere & ,te *ſextabo* & ,te *reducam* Et
2 ושבבתיך וששאתיך והעליתיך מירכתי צפון
tuum arcum faciam percutere Et .Iſrael montes ſuper te faciã venire &
3 והבאותך על־הרי ישראל: והכיתי קשתך
.dejiciam tua dextera manu de tuas ſagittas & ;tua ſiniſtra manu de
מיד שמאלך וחציך מיד ימינך אפיל:
qui populi & ,*tuæ alæ omnes* & tu cades Iſrael montes Super
4 על־הרי ישראל תפול אתה וכל־אגפיך ועמים אשר
.devorandũ ad te dedi agri *beſtiæ* & ,*alæ omni* ,*avi* ,*volucri* :tecum
אתך לעיט צפור כל־כנף וחית השדה נתתיך לאכלה:
.Deus Dominus dixit,ſum locutus ego quia ;cades agri *facies* Super
5 על־פני השדה תפול כי אני דברתי נאם אדני יהוה:
:*fiducia in* inſulas habitantibus in & ,Maghog in ignem mittam Et
6 ושלחתי־אש במגוג ובישבי האיים לבטח
meæ ſanctitatis nomen Et .DOMINUS *ego* quòd ſcient &
7 וידעו כי־אני יהוה: ואת־שם קדשי
nomen *polluam* non & ,Iſrael mei populi medio in faciam ſcire
אודיע בתוך עמי ישראל ולא־אחל את־שם־
ſanctus ,Dominus *ego* quòd gentes ſcient & :ultrà *meæ ſanctitatis*
קדשי עוד וידעו הגוים כי־אני יהוה קדוש
.Iſrael *in*
בישראל:

Verſio VULG. LAT.

17 Hæc dicit Dominꝰ Deꝰ; Tu ergò
ille es, de quo locutꝰ ſum in diebus
antiquis, in manu ſervorum
meorum prophetarum Iſrael, qui
prophetaverunt in diebꝰ illorũ
temporum, ut adducerem te ſuper
18 eos. Et erit in die illa, in
die adventûs Gog ſuper terram
Iſrael, ait Dominꝰ Deꝰ, aſcendet
indignatio mea in furore meo.
19 Et in zelo meo, in igne iræ meæ
locutꝰ ſum; Quia in die illa erit
commotio magna ſuper terram
20 Iſrael: Et commovebuntur à
facie mea piſces maris, & volucres
cœli, & beſtiæ agri, &
omne reptile quod movetur ſuper
humum, cunctíque homines
qui ſunt ſuper faciem terræ: &
ſubvertentur montes, & cadent
ſepes, & omnis murꝰ corruet in
21 terram. Et convocabo adverſùs
eum in cunctis montibus meis
gladium, ait Dominꝰ Deꝰ: gladius
uniuſcujuſque in fratrem
22 ſuum dirigetur. Et judicabo eum
peſte & ſanguine, & imbre vehementi,
& lapidibꝰ immenſis:
ignem & ſulphur pluam ſuper
eum, & ſuper exercitum ejꝰ, &
ſuper populos multos, qui ſunt
23 cum eo. Et magnificabor, &
ſanctificabor: & notus ero in
oculis multarum gentium, &
ſcient quia ego Dominus.

CAP. XXXIX.

1 TU autem, fili hominis, vaticinare
adverſùm Gog, & dices;
Hæc dicit Dominꝰ Deꝰ; Ecce
ego ſuper te, Gog, principem capitis
2 Moſoch & Thubal: Et circumagam
te, & educam te, &
aſcendere te faciam de lateribꝰ
Aquilonis: & adducam te ſuper
3 montes Iſrael. Et percutiam arcũ
tuum in manu ſiniſtra tua, & ſagittas
tuas de manu dextera tua
4 dejiciam. Super montes Iſrael
cades tu, & omnia agmina tua,
& populi tui, qui ſunt tecũ: feris,
avibꝰ, omníq; volatili, & beſtiis
terræ, dedi te ad devorandũ.
5 Super faciem agri cades: quia
ego locutꝰ ſum, ait Dominꝰ Deꝰ.
6 Et immittã ignem in Magog, &
in his qui habitant in inſulis
confidenter: & ſcient quia ego
7 Dñs. Et nomen ſanctum meum
notum faciam in medio populi
mei Iſrael, & non polluam nomen
ſanctum meum ampliús:
& ſcient Gentes, quia ego Dominus,
Sanctus Iſrael.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

17 Τάδε λέγει (ω) κύριος κύριος τῷ Γὼγ, Σὺ
εἶ περὶ οὗ ἐλάλησα (α) πρὸ ἡμερῶν τῶν ἔμπροσθεν,
διὰ χειρὸς τῶν δούλων μου τῶν προφητῶν
τοῦ Ἰσραὴλ, ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις καὶ ἔτεσι,
18 τοῦ ἀναγαγεῖν σε ἐπ' αὐτούς. Καὶ ἔσται
ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἐν ἡμέρᾳ ᾗ ἂν ἔλθῃ
Γὼγ ἐπὶ τὴν γῆν (β) Ἰσραὴλ, λέγει (γ)
19 κύριος κύριος, ἀναβήσεται ὁ θυμός μου, Καὶ
ὁ ζῆλός μου· ἐν πυρὶ τῆς ὀργῆς μου ἐλάλησα,
Εἰ μὴν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται σεισμὸς
20 μέγας ἐπὶ (δ) γῆς Ἰσραήλ· Καὶ σεισθήσονται
ἀπὸ προσώπου (") κυρίου οἱ ἰχθύες τῆς θαλάσσης,
καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ τὰ θηρία
τοῦ πεδίου, καὶ πάντα τὰ ἑρπετὰ τὰ ἕρποντα
ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ πάντες οἱ ἄνθρωποι
οἱ ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς· καὶ (ε) ῥαγήσεται
τὰ ὄρη, καὶ πεσοῦνται αἱ φάραγγες, καὶ πᾶν
21 τεῖχος ἐπὶ τὴν γῆν πεσεῖται. Καὶ καλέσω
ἐπ' αὐτὸ καὶ πᾶν (ζ) φόβον, λέγει κύριος·
μάχαιρα ἀνθρώπου ἐπὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ
22 ἔσται. Καὶ κρινῶ αὐτὸν θανάτῳ, καὶ αἵματι,
καὶ ὑετῷ κατακλύζοντι, καὶ λίθοις χαλάζης,
καὶ πῦρ καὶ θεῖον βρέξω ἐπ' αὐτὸν, καὶ ἐπὶ
πάντας τοὺς μετ' αὐτοῦ, καὶ (η) ἐπ' ἔθνη πολλὰ
23 μετ' αὐτοῦ. Καὶ μεγαλυνθήσομαι, καὶ ἁγιασθήσομαι,
καὶ ἐνδοξασθήσομαι, καὶ γνωσθήσομαι
ἐναντίον ἐθνῶν πολλῶν, καὶ γνώσονται
ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος.

Hæc dicit Dominus Dominus ad 17
Gog; Tu es, de quo loquutus
ſum ante dies priores per manum
ſervorum meorum prophetarum
(n) Iſrael, in diebus illis, & annis,
ut adducerem te ſuper eos.
Et erit in die illa, in die, quâ venerit 18
Gog ſuper terram Iſrael,
ait Dominus Dominus, aſcendet
furor meus, Et zelus meus: in 19
igne iræ meæ loquutus ſum; Si
non in die illa erit commotio magna
ſuper terram Iſrael: Et 20
commovebuntur à facie Domini
piſces maris, & volatilia cœli,
& beſtiæ campi, & omnia reptilia,
quæ repunt ſuper humum,
cunctique homines qui ſunt ſuper
faciem terræ: & ſcindentur
montes, & cadent valles: &
omnis murus in terram corruet.
Et (o) vocabo ſuper ipſum etiam 21
omnem formidinem, dicit Dominus.
Gladius hominis ſuper fratrem
ſuum erit. Et judicabo 22
eum peſte, & ſanguine, & pluviâ
inundante, & lapidibus grandinis;
& ignem & ſulphur pluam
ſuper eum, & ſuper omnes
qui cum eo, & ſuper gentes multas
cum eo. Et magnificabor, & 23
ſanctificabor, & glorificabor, et
notꝰ ero *in conſpectu gentiũ multarũ:*
& ſcient, quia ego ſũ Dñs.

MS. A. (ω) ἀδωναῒ κύριος ὁ θεὸς τῷ (α) ἀφ' (β) τοῦ Ἰσραὴλ, (γ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, (δ) τῆς γῆς τοῦ Ἰσραήλ· (") τοῦ κυρίου (ε) ῥαγήσονται (ζ) φόβον μαχαίρας, λέγει κύριος κύριος· (η) ἐπὶ

ΚΕΦ. λθ'.

1 ΚΑὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου προφήτευσον ἐπὶ
Γὼγ, καὶ εἰπὸν, Τάδε λέγει (α) κύριος, Ἰδοὺ
ἐγὼ ἐπὶ σὲ Γὼγ ἄρχοντα Ῥὼς, (β) Μεσὸχ,
2 καὶ Θοβέλ. Καὶ συνάξω σε, καὶ καθοδηγήσω
σε, καὶ (γ) ἀναβιβῶ σε (") ἐπ' ἐσχάτου τοῦ
Βοῤῥᾶ, καὶ (δ) ἀνάξω σε ἐπὶ τὰ ὄρη (ε) τοῦ
3 Ἰσραήλ. Καὶ ἀπολῶ τὸ τόξον σου (ζ) ἀπὸ
τῆς χειρός σου τῆς ἀριστερᾶς, καὶ τὰ τοξεύματά
σου ἀπὸ τῆς χειρός σου τῆς δεξιᾶς, καὶ καταβαλῶ
4 σε Ἐπὶ τὰ ὄρη (η) τὰ Ἰσραὴλ, καὶ
πεσῇ σὺ καὶ πάντες οἱ περὶ σὲ, καὶ τὰ ἔθνη
τὰ μετὰ σοῦ δοθήσονται εἰς πλήθη ὀρνέων,
παντὶ πετεινῷ, καὶ πᾶσι τοῖς θηρίοις τοῦ πεδίου
5 δέδωκά σε καταβρωθῆναι. Ἐπὶ
προσώπου τοῦ πεδίου πεσῇ, ὅτι ἐγὼ ἐλάλησα,
6 λέγει (θ) κύριος. Καὶ ἀποστελῶ πῦρ (ι)
ἐπὶ Γὼγ, καὶ κατοικηθήσονται αἱ νῆσοι ἐπ'
εἰρήνης, καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος.
7 Καὶ τὸ ὄνομά μου τὸ ἅγιον γνωσθήσεται ἐν
μέσῳ λαοῦ μου Ἰσραὴλ, καὶ οὐ βεβηλωθήσεται
τὸ ὄνομά μου τὸ ἅγιον οὐκέτι, καὶ γνώσονται
(κ) τὰ ἔθνη ὅτι ἐγώ εἰμι (λ) κύριος,
ἅγιος ἐν Ἰσραήλ.

CAP. XXXIX.

ET tu, fili hominis, vaticinare 1
ſuper Gog, & dic; Hæc dicit
Dominus; Ecce ego ſuper te, Gog,
principem Rhos, Meſoch, &
Thobel: Et congregabo te: & 2
deducam te, & faciam aſcendere
te (a) deſuper extremo Aquilonis:
& adducam te ſuper
montes Iſrael. Et (b) perdam 3
arcum tuũ de manu tua ſiniſtra,
& ſagittas tuas de manu tua
dextera: & dejiciam te Super 4
montes Iſrael: & cades tu, &
omnes, qui circa te: & gentes,
quæ tecum, dabuntur ad multitudines
avium: omni volatili,
& omnibus beſtiis campi
dedi te ad devorandum. Super 5
faciem campi cades, quia ego loquutus
ſum, dicit Dominus. Et 6
emittam ignem in (c) Gog: &
habitabuntur inſulæ in pace: &
ſcient, quia ego ſum Dominus.
Et nomen meum ſanctum notum 7
fiet in medio populi mei Iſrael:
& non polluetur nomen meum
ſanctum amplius: & ſcient
gentes, quoniam ego ſum Dominus,
Sanctus in Iſrael.

MS. A. (α) κύριος κύριος, (β) Μοσὸχ, καὶ Θοβέρ. (γ) ἀναβιβάσω (") ἀπ' (δ) συνάξω (ε) τοῦ (ζ) ἐκ (η) τοῦ (θ) κύριος κύριος. (ι) ἐπὶ σὲ, καὶ κατοικισθήσονται (κ) πάντα τὰ (λ) κύριος κύριος, ὁ ἅγιος Ἰσραήλ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 כדנן אמר יי אלהים האת הוא דמללית ביומי קדם ביד עבדי נביי ישראל דאתנביאו
18 ביומי האנון מלקדמת דנא שנין סגיאן לאיתאה יתך עליהון: ויהי בעדנא ההיא ביום
19 מיתי גוג על ארעא דישראל אמר יי אלהים ידליק רגזי וחמתי: ובאתגלאה פורענותי
במדלק אשת רוגזי גזרית במימרי אם לא ביומא ההוא יהי זיע סגי על ארעא דישראל:
20 ויזועון מן קדמי נוני ימא ועופא דשמיא וחית ברא וכל רחשא דרחיש על ארעא וכל
אנשא די על אפי ארעא ויתפגרון טוריא ויתתלשון מגדליא וכל שור רם לארעא
21 יתחמר: ואזמנניה למפל בחרבא על טורי ישראל עמי אמר יי אלהים חרב גבר
22 באחוהי תהי: ואתפרע מניה במותא ובקטלא ומטר מנבר ואבני אלגביש אשתא
23 ונופריתא אמטר עלוהי ועל משריתיה ועל עממין סגיאין די עמיה: ואתרבי ואתקדש
ואגלי גבורתי לעיני עממין סגיאין וידעון ארי אנא יי:

לט

1 ואת בר אדם אתנבי על גוג ותימר כדנן אמר יי אלהים הא אנא שלח רוגזי עלך גוג
2 רב ריש משך ותובל: ואשדלנך ואטענך ואסקנך מסיפי צפונא ואיתנך על טורי
3 ישראל: וארמי קשתך מיד סמאלך ונררך מיד ימינך אמגר: 4 על טורי ארעא דישראל
תתרמי נבלתך את וכל משריתך ועממין די עמך לעופא צפר כל די פרח ולחית ברא
5 מסרתך לאשתיצאה: על אפי ברא תתרמי נבלתך ארי אנא גזרית במימרי אמר יי
6 אלהים: ואדליק אשתא במגוג וביתבי נגותא דשרן לרוחצן וידעון ארי אנא יי: 7 וית
שמא דקודשי אגלי בגו עמי ישראל ולא אחיל ית שמא דקודשי עוד וידעון עממיא
ארי אנא יי קדישא אשרתי שכנתי בישראל:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hæc dicit Dominus Deus, Nunquid tu es de quo locutus ſum in diebus antiquis 17
per manum ſervorum meorum prophetarum Iſrael? qui prophetaverunt
à diebus illis, ab antiquo jam multis annis tranſactis, fore, ut adducerem
te ſuper eos. Et erit tempore illo, die quo venerit Gog ſuper terram Iſrael, 18
ait Dominus Deus, ſuccendetur furor meus, & indignatio mea. Et cùm revelata 19
fuerit vindicta mea, ut ſuccendatur ignis furoris mei: decrevi in verbo
meo quòd in die illa erit commotio magna ſuper terram Iſrael. Et commovebuntur 20
à facie mea piſces maris, & volucres cœli, & beſtiæ agri, &
omne reptile quod reptat ſuper terram, & omnes homines qui erunt ſuper
faciem terræ, & ſubvertentur montes & evellentur turres, & omnis murus
excelſus in terram corruet. Et præparabo eum ut cadat in gladio ſuper montes 21
Iſraelis populi mei, ait Dominus Deus: gladius uniuſcujuſque erit in fratrem
ſuum. Et ultionem ſumam ex eo in peſte & occiſione: & pluviam vehementem, 22
& lapides grandinis, & ignem, & ſulphur pluam ſuper eum, &
ſuper exercitum ejus, & ſuper populos multos qui cum eo erunt. Et magnificabor, 23
& ſanctificabor, & revelabo potentiam meam in oculis populorum
multorum; & ſcient, quia ego Dominus.

CAP. XXXIX.

ET tu fili hominis vaticinare adverſùs Gog, & dices: Hæc dicit Dominus 1
Deus, Ecce ego mitto furorem meum ſuper te Gog, ſumme princeps Meſech
& Thubal. Et perſuadebo tibi, & ſeducam te, & aſcendere te faciam à finibus 2
Aquilonis, et adducam te ſuper montes Iſrael. Et projiciam arcum tuum 3
de manu ſiniſtra tua, et ſagittas tuas de manu dextera tua dejiciam. Et 4
ſuper montes terræ Iſrael projicietur cadaver tuum: te et omnes exercitus
tuos, et populos qui ſunt tecum, avibus volucribus, omníque volatili
et beſtiis agri tradidi conſumendos. Super faciem agri projicietur cadaver 5
tuum, quia ego decrevi in verbo meo, ait Dominus Deus. Et ſuccendam 6
ignem in Magog, et in incolis inſularum qui habitant confidenter: et ſcient,
quia ego Dominus. Et nomen ſanctum meum revelabo in medio populi mei 7
Iſrael, et non violabo nomen ſanctum meum ampliùs: et ſcient populi, quia
ego Dominus ſanctus qui habitare feci majeſtatem meam in Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܐܢܬܘ ܗܘ ܕܐܡܪܬ ܠܩܕܡܝܢ ܒܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ. ܒܐܝܕܐ ܕܥܒܕܝ 17
ܢܒܝܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܕܡܬܢܒܝܢ ܗܘܘ ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ. ܘܒܫܢܝܐ ܗܢܘܢ ܕܐܝܬܝܟ ܥܠܝܗܘܢ.
* ܒܗܘ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܕܢܐܬܐ ܓܘܓ. ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܬܣܩ ܚܡܬܝ 18
ܒܚܡܬܝ ܘܒܛܢܢܝ. * ܒܢܘܪܐ ܕܪܘܓܙܝ ܡܠܠܬ. ܕܒܗܘ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܢܗܘܐ ܙܘܥܐ ܪܒܐ 19
ܒܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܢܙܘܥܘܢ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܢܘܢܐ ܕܝܡܐ. ܘܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ. 20
ܘܟܠ ܪܚܫܐ ܕܪܚܫ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܒܢܝܢܫܐ ܕܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ. ܘܢܬܗܦܟܘܢ ܛܘܪܐ
ܘܢܦܠܘܢ ܡܓܕܠܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܫܘܪܐ ܠܐܪܥܐ ܢܦܠܘܢ. * ܘܐܩܪܐ ܥܠܘܗܝ ܚܪܒܐ ܒܟܠܗܘܢ 21
ܛܘܪܝ: ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܚܪܒܗ ܕܓܒܪܐ ܒܐܚܘܗܝ ܬܗܘܐ. * ܘܐܬܕܝܢ ܥܡܗ ܒܡܘܬܐ 22
ܘܒܕܡܐ. ܘܡܛܪܐ ܕܫܛܦ ܘܟܐܦܐ ܕܒܪܕܐ. ܘܢܘܪܐ ܘܟܒܪܝܬܐ ܐܚܬ ܥܠܘܗܝ. ܘܥܠ ܪܘܪܒܢܘܗܝ.
ܘܥܠ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܕܥܡܗ. * ܘܐܬܪܘܪܒ ܘܐܬܩܕܫ ܩܕܡ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ 23
ܐܢܐ ܡܪܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܠܛ *

* ܘܐܢܬ ܒܪܢܫܐ. ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܓܘܓ. ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟ ܓܘܓ 1
ܡܕܒܪܢܐ ܘܪܝܫܐ ܕܡܫܟ ܘܬܘܒܠ. * ܘܐܫܝܢܟ ܘܐܟܢܫܟ ܘܐܣܩܟ ܡܢ ܥܒܪܝ ܓܪܒܝܐ. 2
ܘܐܝܬܝܟ ܠܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܐܦܝܠ ܩܫܬܟ ܡܢ ܣܡܠܟ. ܘܓܐܪܝܟ ܡܢ ܝܡܝܢܟ. * ܘܒܛܘܪܐ 3
ܕܐܝܣܪܝܠ ܬܦܠ ܐܢܬ. ܘܟܠܗ ܚܝܠܟ ܘܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܕܥܡܟ. ܠܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ 4
ܘܠܚܝܘܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܝܗܒܬܟ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. * ܘܥܠ ܐܦܝ ܕܒܪܐ ܬܦܠ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܠܠܬ 5
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܥܠ ܡܓܘܓ. ܘܥܠ ܝܬܒܝ ܓܙܪܬܐ ܕܫܠܝܐ. ܘܢܕܥܘܢ 6
ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ. * ܘܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ ܐܘܕܥ ܒܓܘ ܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܐܛܡܐ ܫܡܐ 7
ܕܩܘܕܫܝ. ܘܢܕܥܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܩܕܝܫܐ ܕܐܝܣܪܝܠ.

Sic ait Dominus dominorum;Tu ne es ille de 17
quo prædixerã priſcis dieb⁹ per ſervos meos
prophetas Iſraelis,qui diebus illis & annis illis prophetabant, quòd adducturus eſſem te
contra eos? Eodem illo die quo invaſerit 18
Gog terram Iſraelis, ait Dñs dominorum; exardeſcet ira mea in excandeſcentia mea & in
zelo meo: In igne furoris mei locutus ſum, 19
quòd eodem illo die erit concuſſio magna in
terra Iſraelis: Et concutientur à conſpectu 20
ejus piſces maris,volucres cœli,beſtiæ deſerti, omne reptile quod reptat ſuper terram, &
omnes homines qui ſunt ſuper faciem terræ:
deſtruentur montes,concident turres, omnéſque muri in terram corruent. Sed gladiũ ad- 21
vocabo contra eum in cunctis montib⁹ meis,
ait Dominus dominorum;gladius cujuſque in
fratrem ſuum vertetur: Et condemnabo eum 22
morte & ſanguine; & pluviam converrentẽ,
lapides ſiliceos,ignem,ac ſulphur demittã ſuper eum, ſuper principes ejus, & ſuper populos multos qui cum eo erunt. Et magnifica- 23
bor atque ſanctificabor coram gentibus multis, & experientur me eſſe Dominum.

CAP. XXXIX.

PRæterea tu fili hominis, vaticinare contra 1
Gogum, & dic; Sic ait Dominus dominorum, Ecce me adverſùm te Gog rector &
princeps Moſochi & Thubelis. Pacatũ red- 2
dam te, congregabo te, & aſcendere te faciã
ex oris Aquilonarib⁹;cúmque adduxero te ad
montes Iſraelis, Efficiam ut fallatur arcus tu⁹ 3
è ſiniſtra tua,& ſagittæ tuæ è dextera tua: In 4
montib⁹ Iſraelis concides tu, totúſque exercitus tuus, & populi multi qui tecum erunt:
volucrib⁹ cœli,& beſtiis terræ dabo te devorandum:Et in ſuperficie deſerti corrues;quo- 5
niam ego locutus ſum, ait Dñs dominorum:
Et immittam ignem ſuper Magog & ſup habitatores inſularum qui in tuto ſunt;& expe- 6
rientur me eſſe Dominum: Et nomen ſanctiſ- 7
ſimum meum notum faciam in medio populi mei Iſraelis, & non prophanabo ampliùs
ſanctiſſimum nomen meum: ſciéntque gentes
me eſſe Dominum,Sanctum Iſraelis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح الثاني والعشرون * هكذا يقول ادوناي الرب الاله لجوج * انت الذي من 17
اجلك تكلمت منذ الايام التي من قبل بيد عبيدي انبياء اسرائيل في تلك الايام والسنين
ان اصعدك عليهم * ويكون في ذلك اليوم * في اليوم الذي ياتي فيه جوج على ارض اسرائيل 18
يقول الرب الرب الاله * يصعد غضبي وغيرتي * بنار رجزي تكلمت * يقينا ذلك اليوم تكون زلزلة 19
عظيمة على ارض اسرائيل * وتتزلزل من وجه الرب سمك البحر * وطيور السماء * ووحوش 20
الصحراء * وكل الحشرات التي تدب على الارض * وجميع البشر الذين على وجه الارض * وتنسف
الجبال * وتسقط الاودية * وكل سور على الارض يسقط * وادعوا عليهم كل خوف السيف * 21
يقول الرب الرب * وسيف الانسان على اخيه يكون * وادينه بموت وبدم * وبمطر مغرق * 22
وحجارة برد * وامطر عليه نارا وكبريتا * وعلى جميع من معه * وعلى امم كثيرين معه * 23
* واتعظم واتقدس واتمجد * واعرف امام الامم الكثيرين * ويعلمون اني انا الرب انا *

* الفصل التاسع والثلثون *

* وانت يا ابن الانسان * تنبا على جوج وقل * هكذا يقول الرب الرب * ها انا عليك يا 1
جوج رييس روس موسوخ وتوبال * واجمعك * واهديك * واصعدك من اخر الجربياء * واجمعك 2
على جبال اسرائيل * واهلك قوسك من يدك اليسرى * ونشابك من يدك اليمنى * واطرحك 3
على جبال اسرائيل * وتسقط انت وجميع اصحابك * والامم التي معك تسلم لكثرة الطيور لكل 4
طاير * ولجميع وحوش الصحراء دفعتك لتوكل * على وجه الصحراء تسقط * لاني انا تكلمت 5
يقول الرب الرب * وارسل عليك نارا * وتسكن الجزاير بالسلامة * ويعلمون اني انا الرب انا * 6
* ويعرف اسمي القدوس في وسط شعبي اسرائيل * ولا يتدنس اسمي القدوس بعد * ويعلم جميع 7
الامم اني انا الرب انا * قدوس اسرائيل *

Textus vigeſimus ſecundus.

Sic dicit Adonai Dominus Deus ad Gog; 17
Tu es ille de quo locutus ſum inde à
priſtinis diebus per ſervos meos prophetas
Iſraelis, in diebus & annis illis, quòd
adducturus eſſem te contra ipſos. Et 18
futurum eſt eo die, quo die veniet
Gog adverſùs terram Iſraelis (dicit
Dominus, Dominus Deus) ut aſcendat
ira mea & zelus meus: In igne furoris 19
mei locutus ſum; certiſſimè eo die erit
concuſſio magna ſuper terram Iſraelis;
Et concutientur à facie Domini piſces 20
maris, volucres cœli, beſtiæ campi, &
omnia reptilia quæ repunt ſuper terram,
omneſque homines qui ſunt ſuper faciem terræ: diſrumpentur montes, cadent
valles, & omnis murus in terram corruet. Advocabo in eos omnem gladii 21
terrorem, ait Dominus Dominus: &
cujuſque gladius in fratrem ſuum erit.
Condemnabo eum cæde & ſanguine, plu- 22
viâ obruente, & lapidibus grandinis:
ignem & ſulphur pluam ſuper eum &
ſuper omnes qui cum eo erunt, & ſuper
gentes multas quæ cum eo erunt. Sic 23
magnificabor, ſanctificabor, glorificabor,
& innoteſcam coram gentibus multis: &
cognoſcent me Dominum eſſe.

CAP. XXXIX.

ET tu O fili hominis, propheta contra 1
Gog, & dic; Sic ait Dominus; Ecce
me adverſùm te O Gog princeps principum Moſoch & Thobel: Congregabo 2
te, ducamque te, & aſcendere te faciam ab extremo Aquilone, & congregabo te ſuper montes Iſraelis: Et per- 3
dam arcum tuum è manu tua ſiniſtra,
ſagittaſque tuas è manu tua dextera:
Proſternam te ſuper montes Iſraelis, ca- 4
deſque tu et omnes tui ſtipatores: multitudini volucrum, omnigenis volucribus,
et omnibus beſtiis campeſtribus tradam
te comedendum: Super faciem campi 5
cades, quia ego locutus ſum, dicit
Dominus Dominus. Mittam ſuper te 6
ignem, et inſulæ pacatè habitabunt,
ſcientque me Dominum eſſe. Et notum 7
fiet nomen meum ſacroſanctum in medio
populi mei Iſraelis, neque polluetur deinceps nomen meum ſacroſanctum; et
ſcient gentes univerſæ me Dominum eſſe,
Sanctum Iſraelis.

יחזקאל : לט

qua dies Hæc ; Deus Dominus dixit ,est factum & , venit Ecce
8 הנה באה ונהיתה נאם אדני יהוה הוא היום אשר
,succendent & , Israel civitatū habitatores egredientur Et .sum locutus
9 דברתי: ויצאו ישבי ערי ישראל ובערו
,*sagittis in* & , *arcu in* ,*scutum* & ,*clypeum* & ,*armatura in* comburent &
והשיקו בנשק ומגן וצנה בקשת ובחצים
.annis septem *ignem eis in* succendent & ;*lancea in* & ,manus *baculo in* &
ובמקל יד וברמח ובערו בהם אש שבע שנים:
, sylvis de succident nec , agro de ligna portabunt non Et
10 ולא־ישאו עצים מן־השדה ולא יחטבו מן־היערים
, *suos spoliatores* spoliabunt & ; *ignem accendent armatura in* quoniam
כי בנשק יבערו־אש ושללו את־שלליהם
erit Et .Deus Dominus dixit ,suos prædatores prædabuntur &
11 ובזזו את־בזזיהם נאם אדני יהוה: והיה
vallem , Israel in sepulchri ibi locum Ghog ipsi dabo , illa die in
ביום ההוא אתן לגוג מקום־שם קבר בישראל גי
: transeuntes ipsa *obturans* & ,maris Orientem ad transeuntium
העברים קדמת הים וחסמת היא את־העברים
Vallem vocabunt & ,ejus *turbam* omnem & , Ghog ibi sepelient &
וקברו שם את־גוג ואת־כל־המונה וקראו גיא
mundandum ad , Israel domus eos sepelient Et .Ghog Hamon
12 המון גוג: וקברום בית ישראל למען טהר את־
, terræ populus omnis sepelient Et .mensibus septem , terram
13 הארץ שבעה חדשים: וקברו כל־עם הארץ
viros Et .Deus Dominus dixit,me *glorificari* die ,nomen in eis erit &
14 והיה להם לשם יום הכבדי נאם אדני יהוה: ואנשי
,transeuntibus cum sepelientes , *terra in* transeuntes seligent *jugiter*
תמיד יבדילו עברים בארץ מקברים את־העברים את־
mensium septem fine à : eā *mūdandū ad* ,terræ *faciebus super* remanentes
הנותרים על־פני הארץ לטהרה מקצה שבעה־חדשים
,hominis os videbit & , *terra in* transeuntes transibunt Et .inquirent
15 יחקרו: ועברו העברים בארץ וראה עצם אדם
in sepelientes illud sepeliant donec ; *titulum* illud juxta ædificabit &
ובנה אצלו ציון עד קברו אתו המקברים אל־
mundabunt & ,Hamonah civitatis nomen etiam Et .Ghog Hamon valle
16 גיא המון גוג: וגם שם־עיר המונה וטהרו
avi Dic ,Deus Dominus dixit sic,hominis fili tu Et .terram
17 הארץ: ואתה בן־אדם כה־אמר אדני יהוה אמר לצפור
vos cōgregate,venite &,vos cōgregate , agri bestiæ omni & , *alæ omnis*
כל־כנף ולכל חית השדה הקבצו ובאו האספו
sacrificium , vobis *immolans ego* quod meum sacrificium *super* undique
מסביב על־זבחי אשר אני זבח לכם זבח
.sanguinem bibetis & ,carnem comedetis & ; Israel montes super grande
גדול על הרי ישראל ואכלתם בשר ושתיתם דם:
; bibetis terræ *prælatorum* sanguinem & , comedetis fortium Carnem
18 בשר גבורים תאכלו ודם־נשיאי הארץ תשתו
Basan bubalorum , *vitulorum* , hircorum & , agnorum , arietum
אילים כרים ועתודים פרים מריאי בשן
bibetis & , saturitatem ad adipem comedetis Et .eorum cunctorum
19 כלם: ואכלתם־חלב לשבעה ושתיתם
.vobis sacrificavi quod meo sacrificio de , ebrietatem ad sanguinem
דם לשכרון מזבחי אשר־זבחתי לכם:
omni & , *forti* , *curru* & , *equo* meam mensam super saturabimini Et
20 ושבעתם על־שלחני סוס ורכב גבור וכל־
meam gloriam dabo Et .Deus Dominus dixit ; *belli viro*
21 איש מלחמה נאם אדני יהוה: ונתתי את־כבודי
, feci quod ,meum judicium gentes omnes videbunt & : gentibus in
בגוים וראו כל־הגוים את־משפטי אשר עשיתי
.eis in posui quam meam manum &
ואת־ידי אשר־שמתי בהם:

Versio VULG. LAT.

8 Ecce venit,& factum est, ait Dominus Deus : hæc est dies,de qua 9 locutꝰ sum. Et egredientur habitatores de civitatibꝰ Israel, & succendent, & comburent arma, clypeum, & hastas,arcum, & sagittas, & baculos manuum, & contos : & succendent ea igni 10 septem annis. Et non portabunt ligna de regionibꝰ, neque succident de saltibꝰ : quoniam arma succendent igni, & deprædabuntur eos, quibꝰ prædæ fuerant,& diripient vastatores suos, ait Dominꝰ Deus. 11 Et erit in die illa ; dabo Gog locum nominatum sepulchrum in Israel : vallem viatorum ad Orientem maris, quæ obstupescere faciet prætereuntes: & sepelient ibi Gog, & omnem multitudinem ejus, & vocabitur 12 Vallis multitudinis Gog. Et sepelient eos domus Israel,ut mun- 13 dent terram septem mensibus.Sepeliet autem eum omnis populꝰ terræ, & erit eis nominata dies, in qua glorificatꝰ sū, ait Dominꝰ 14 Deus. Et viros jugiter constituent lustrantes terram, qui sepeliant & requirant eos qui remanserant super faciem terræ, ut emundent eam : post menses autem septem quærere incipient. 15 Et circuibunt peragrantes terram : cúmque viderint os hominis, statuent juxta illud titulum, donec sepeliant illud pollinctores in valle multitudinis Gog. 16 Nomen autem civitatis,Amona: 17 & mundabunt terram. Tu ergò fili hominis, hæc dicit Dominꝰ Deus ; Dic omni volucri, & universis avibꝰ, cunctísque bestiis agri ; Convenite,properate,concurrite undique ad victimam meā,quam ego immolo vobis,victimam grandem super montes Israel : ut comedatis carnem, & 18 bibatis sanguinem. Carnes fortium comedetis, & sanguinem principum terræ bibetis ; arietū & agnorum, & hircorum, taurorúmque & altilium,& pingui- 19 um omnium. Et comedetis adipem in saturitatem, & bibetis sanguinem in ebrietatem, de victima quam ego immolabo vo- 20 bis: Et saturabimini super mensam meam de equo, & equite forti, & de universis viris bella- 21 toribꝰ, ait Dominꝰ Deus. Et ponam gloriam meam in Gentibꝰ : & videbunt omnes gentes judicium meum, quod fecerim ; & manum meam, quam posuerim super eos.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

8 Ἰδοὺ ἥκει, καὶ γνώσῃ ὅτι ἔσται, λέγει κύριος κύριος (μ)· αὕτη ἐστὶν ἡ ἡμέρα ἐν ᾗ ἐλάλη- 9 σα. Καὶ ἐξελεύσονται οἱ κατοικοῦντες τὰς πόλεις Ἰσραὴλ, καὶ καύσουσιν ἐν τοῖς ὅπλοις, πέλταις καὶ κοντοῖς, καὶ τόξοις καὶ τοξεύμασι, καὶ ῥάβδοις χειρῶν, καὶ λόγχαις, 10 καὶ καύσουσιν ἐν αὐτοῖς πῦρ ἑπτὰ ἔτη. Καὶ οὐ μὴ λάβωσι ξύλα ἐκ τοῦ πεδίου, οὐδὲ μὴ κόψωσιν ἐκ τῶν δρυμῶν, ἀλλ᾽ ἢ τὰ ὅπλα κατακαύσουσι πυρί· καὶ προνομεύσουσιν τοὺς προνομεύσαντας αὐτοὺς, καὶ σκυλεύσουσι τοὺς σκυλεύσαντας αὐτοὺς, λέγει κύρι- 11 ος. Καὶ ἔσται, ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ δώσω τῷ Γὼγ τόπον ὀνομαστὸν, μνημεῖον ἐν Ἰσραὴλ, τὸ πολυάνδρειον τῶν ἐπελθόντων πρὸς (ν) τῇ θαλάσσῃ, καὶ περιοικοδομήσουσι τὸ περιστόμιον τῆς φάραγγος, καὶ (ξ) κατορύξουσιν ἐκεῖ τὸν Γὼγ καὶ πᾶν τὸ πλῆθος αὐτοῦ, καὶ κληθήσεται (ο) τότε Τὸ πολυ- 12 άνδριον τοῦ Γώγ. Καὶ (π) κατορύξουσιν αὐτοὺς οἶκος (ρ) Ἰσραὴλ, ἵνα καθαρι- 13 σθῇ ἡ γῆ ἐν ἑπταμήνῳ. Καὶ κατορύξουσιν αὐτοὺς πᾶς ὁ λαὸς τῆς γῆς, καὶ ἔσται αὐτοῖς (σ) ὀνομαστὸν, ᾗ ἡμέρᾳ (τ) ἐδοξάσθην, 14 λέγει κύριος. Καὶ ἄνδρας διαπαντὸς διαστελοῦσιν ἐπιπορευομένοις (υ) τὴν γῆν, θάψαι τοὺς καταλελειμμένοις ἐπὶ προσώπου τῆς γῆς, καθαρίσαι αὐτὴν μετὰ τὴν ἑπτά- 15 μηνον, καὶ (φ) ἐκζητήσουσι. Καὶ πᾶς ὁ διαπορευόμενος τὴν γῆν, καὶ ἰδὼν ὀστοῦν ἀνθρώπου, οἰκοδομήσει παρ᾽ (χ) αὐτῷ σημεῖον, ἕως ὅτου θάψωσιν αὐτὸ οἱ θάπτοντες εἰς (ψ) γαὶ τὸ πολυάνδριον τοῦ Γώγ. 16 Καὶ γὰρ τὸ ὄνομα τῆς πόλεως, Πολυάν- 17 δριον. καὶ καθαρισθήσεται ἡ γῆ. Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου εἰπὸν, Τάδε λέγει κύριος, Εἰπὸν παντὶ ὀρνέῳ πετεινῷ, καὶ πρὸς πάντα τὰ θηρία τοῦ (ω) πεδίου, Συνάχθητε καὶ ἔρχεσθε, συνάχθητε ἀπὸ πάντων τῶν περικύκλῳ ἐπὶ τὴν θυσίαν μου, ἣν τέθυκα ὑμῖν θυσίαν μεγάλην ἐπὶ τὰ ὄρη Ἰσραὴλ, 18 καὶ φάγεσθε κρέα, καὶ πίεσθε αἷμα. Κρέα γιγάντων φάγεσθε, καὶ αἷμα ἀρχόντων τῆς γῆς πίεσθε. κριοὺς καὶ μόσχους καὶ τράγους· καὶ 19 οἱ μόσχοι ἐστεατωμένοι πάντες. Καὶ φάγεσθε στέαρ εἰς πλησμονὴν, καὶ πίεσθε αἷμα εἰς μέθην ἀπὸ τῆς θυσίας μου, ἧς ἔθυσα ὑ- 20 μῖν. Καὶ ἐμπλησθήσεσθε ἐπὶ τῆς τραπέζης μου, ἵππον καὶ ἀναβάτην (α) καὶ γίγαντα καὶ πάντα ἄνδρα πολεμιστὴν, λέγει 21 (β) κύριος. Καὶ δώσω τὴν δόξαν μου ἐν ὑμῖν, καὶ ὄψονται πάντα τὰ ἔθνη τὴν κρίσιν μου ἣν ἐποίησα, καὶ τὴν χεῖρά μου ἣν ἐπήγαγον ἐπ᾽ αὐτούς.

Ecce venit, & scies, quoniam erit, dicit Dominus Dominus. Hæc est dies, in (d) qua loquutus sum. 9 *Et egredientur habitatores urbium Israel, & (c) succendent in armis, peltis, & contis, & arcubus, & sagittis, & baculis manuum, & lanceis: & succendent in eis ignem septem annis:* 10 *Et non assument ligna de campo, neque succident de saltibus : sed arma comburent igni: & deprædabuntur eos, quibus prædæ fuerant, & spoliabunt spoliatores suos, ait Dominus.* 11 *Et erit in die illa, dabo Gog locum nominatum, monumentum in Israel, polyandrion (f) eorum qui venerint ad mare: & ædificabunt per circuitum os vallis: & (g) defodient ibi Gog, & omnem multitudinem ejus: & vocabitur (h) tunc Polyandrion Gog.* 12 *Et defodient eos domus Israel; ut mundetur terra in septem mensibus:* 13 *Et defodient eos omnis populus terræ: & erit eis (i) inclytum, quâ die glorificatus fuerit, ait Dominus.* 14 *Et viros jugiter secernent, circumeuntes terram ad sepeliendum (k) eos, qui remanserint super faciem terræ, ut emundent eam, post septem menses, (l) & quærent.* 15 *Et omnis peragrans terram, & videns os hominis, ædificabit apud illud, signum; donec sepeliant illud pollinctores in Gai polyandrio Gog.* 16 *Nam & nomen (m) civitatis, Polyandrion. Et mundabitur terra.* 17 *Et tu, fili hominis, dic; Hæc dicit Dominus; Dic omni avi volatili, & ad omnes bestias campi; Congregamini, & venite: congregamini ab omnibus per circuitum ad victimam meam, quam immolavi vobis, victimam grandem super montes Israel: & comedetis carnes, & bibetis sanguinem:* 18 *Carnes gigantum comedetis, & sanguinem principum terræ bibetis, (n) arietes, & vitulos, & hircos: & vituli omnes adipati.* 19 *Et comedetis adipē ad saturitatem: & bibetis sanguinem ad ebrietatem de victima mea, quam immolavi vobis.* 20 *Et saturabimini super mensam meam de equo, & ascensore, & gigante, & omni viro bellatore, ait Dominus.* 21 *Et dabo gloriam meam in vobis: & videbunt omnes gentes judicium meum, quod feci, & manum meam, quam induxi super eos.*

MS. A. (μ) ὁ θεός· (ν) τὴν θάλασσαν, (ξ) κατορύξωσιν (ο) Τὸ γαὶ τὸ (π) κατορύξωσιν (ρ) τοῦ Ἰσραὴλ, (σ) εἰς ὀνομαστὸν, (τ) ᾗ ἐδοξάσθην, (υ) πᾶσαν τὴν γῆν, (φ) ἐκζητήσουσιν ἀκριβῶς. Καὶ ἔσται πᾶς ὁ διαπορευόμενος πᾶσαν τὴν γῆν, (χ) αὐτὸ (ψ) τὸ γαὶ τὸ (ω) ἀγροῦ, (α) γίγαντα (β) κύριος κύριος.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 הא אתיא ותתקים אמר יי אלהים הוא יומא די גזרית במימרי: ויפקון יתבי קרוי
9 ארעא דישראל ויהון שגרין ומסתוברין במני זיני בעגלין ותרסין בקשתן ובגררין
10 ובאעי מורנין ורומחין וידלקון בהון נורא שבע שנין: ולא יסבון אעין מן חקלא ולא
יקצון מן חורשא ארי במני זינא ידלקון נורא ויבזון ית בזזיהון ויעדי ית עדיהון אמר יי
11 אלהים: ויהי בעדנא ההיא אתן לגוג אתר כשר לבית קבורא בישראל בחילתא
מגיזתא מדנחי ים גנוסר וסמכא היא לתרין טוריא ויקברון תמן ית גוג וית כל
12 אתרגושתיה ויקרון חילת אתרגושת גוג: ויקברונון בית ישראל בדיל לדכאה ית
13 ארעא שבעא ירחין: ויקברון כל עמא דארעא ויהי להון לשום יום אתיקרותי אמר
14 יי אלהים: וגברין ימנון תדירא למהוי עדן בארעא מקברין עם דעדן ית די אשתארו
15 על אפי ארעא לדכיותה מסוף שבעא ירחין ישרון למבדק: ועדי אורחא דעדן
בארעא די אם יחזי גרמא דאנשא ויבני לותיה ציונא עד דיקברון יתיה די מקברין
16 בחילת אתרגושת גוג: ואף לתמן יתרמון קטילי רומי קרתא דסגיאין אתרגושתהא
17 וידכון ארעא: ואת בר אדם כדנן אמר יי אלהים אמר לעופא צפר כל די פרח ולכל
חית ברא אתכנישו ואתו אתקרבו מסחור סחור על קטילי די אנא קטיל לכון קטול
18 סגי על טורי ישראל ותיכלון בסרא ותשתון דמא: בסר גברין תיכלון ודם רברבי
19 ארעא תשתון מלכין שלטונין וטורנין גברין עתירי נכסיא כולהון: ותיכלון תרבא
20 למסבע ותשתון דמא מבסר קטילין די אנא קטיל לכון: ותסבעון על טורי ישראל
21 סוסון ורתיכין גברין וכל גברי עבדי קרבא אמר יי אלהים: ואתן ית יקרי בעממיא
ויחזון כל עממיא ית פורענותי דעבדית וית גבורתי דשויתי בהון:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce venit & confirmabitur, ait Dominꝰ Deꝰ : hæc est dies quam decrevi in 8 verbo meo. Et egredientur habitatores civitatū terræ Israel,& calefient, & 9 illustrabuntur armis bellicis,clypeis & scutis, & arcubus, & sagittis,& jaculorum & lancearum lignis:& succendent his ignem septem annis. Et non tol- 10 lent ligna de agro , nec succident de saltu, quia armis bellicis succendent ignem,& deprædabuntur deprædatores suos,& expoliabunt expoliatores suos, ait Dominꝰ Deꝰ. Et erit in tempore illo,& dabo ipsi Gog locum aptū in domū 11 sepulchri in Israel in Valle vadorum ad orientem maris Genesar;ea conjuncta est duobꝰ montibꝰ ; & sepelient ibi Gog, & omnem multitudinem ejꝰ, & vocabunt Vallem multitudinis Gog. Et sepelient eos domus Israel, ut mundent 12 terram septem mensibꝰ. Et sepelient eos omnis populꝰ terræ, & erit eis in 13 nomen dies in quo me glorificavero, ait Dominꝰ Deꝰ. Et viros jugiter con- 14 stituent, ut transeant per terram, sepelientes cum his qui transeunt, eos qui remanserant super faciem terræ,ut emundent eam : post septem menses incipient quærere. Et si quis transiens per viam eorum,qui transeunt per terram, 15 viderit ossa hominum,construet juxta illa titulum, donec sepeliant illa humatores in Valle multitudinis Gog. Ibi quoque projicientur occisi excellæ civi- 16 tatis cujꝰ turmæ multæ sunt, & emundabunt terram. Tu autem fili hominis : 17 Hæc dicit Dominꝰ Deꝰ,Dic avibus,passeribus,omníque volatili, & omni bestiæ agri, Congregamini & venite , appropinquate undique ad interfectos quos ego occido vobis occisione magna super montes Israel,et comedetis carnem & bibetis sanguinem. Carnem fortium comedetis, & sanguinem prin- 18 cipum terræ bibetis, regum, principum, & ducum fortium, opibus divitum omnium. Et comedetis adipem ad satietatem , & bibetis sanguinem 19 de carne occisorum , quos ego occido vobis. Et saturabimini super 20 montes *Israel equis , & quadrigis , fortibus & omnibus viris bellatoribus,* ait Dominus Deus. Et dabo gloriam meam in populis, & videbunt 21 omnes populi ultionem meam quam feci, & potentiam meam quam posui in eis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܐ ܡܛܝ ܒܥܓܠܐ ܝܘܡܐ ܕܐܡܪܬ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܢܦܩܘܢ ܥܡܘܪܐ ܕܩܘܪܝܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܘܩܕܘܢ ܢܘܪܐ ܒܙܝܢܐ ܘܬܪܣܐ ܘܢܝܙܟܐ. ܘܩܫܬܐ ܘܓܐܪܐ. ܘܚܘܛܪܐ
ܕܐܝܕܝܐ ܘܪܘܡܚܐ. ܘܢܘܩܕܘܢ ܒܗܘܢ ܢܘܪܐ ܫܒܥ ܫܢܝܢ. * ܘܠܐ ܢܣܒܘܢ ܩܝܣܐ
ܠܐ ܡܢ ܚܩܠܐ ܘܕܥܒܐ. ܐܠܐ ܡܢ ܙܝܢܝܗܘܢ ܢܘܩܕܘܢ ܢܘܪܐ. ܘܢܒܙܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܒܙܘ
ܐܢܘܢ. ܘܢܒܙܘܢ ܠܐܝܠܝܢ ܕܒܙܘ ܐܢܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܬܠ ܠܓܘܓ
ܕܘܟܬܐ ܠܩܒܘܪܐ ܒܐܝܣܪܝܠ. ܢܚܠܐ ܪܒܐ ܕܒܡܕܢܚܗ ܕܝܡܐ. ܘܢܣܟܪܘܢ
ܠܢܚܠܐ. ܘܢܩܒܪܘܢ ܬܡܢ ܠܓܘܓ. ܘܠܟܠܗ ܚܝܠܗ. ܘܢܬܩܪܐ ܢܚܠܐ ܕܡܦܘܠܬܗ
ܕܓܘܓ. * ܘܫܒܥܐ ܝܪܚܝܢ ܢܩܒܪܘܢ ܐܢܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܬܬܕܟܐ ܐܪܥܐ. * ܘܢܩܒܪܘܢ
ܐܢܘܢ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܫܡܐ ܒܝܘܡܐ ܕܐܫܬܒܚܬ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܒܬܪ
ܫܒܥܐ ܝܪܚܝܢ ܢܗܘܘܢ ܓܒܪܐ ܡܬܟܪܟܝܢ ܐܡܝܢܐܝܬ ܒܐܪܥܐ. ܘܩܒܪܝܢ ܠܐܢܫ
ܕܡܫܬܚܪܝܢ ܒܐܪܥܐ. ܠܡܕܟܝܘ ܠܐܪܥܐ. * ܘܟܠ ܕܥܒܪ ܒܐܪܥܐ ܘܚܙܐ ܓܪܡܐ ܕܒܪܢܫܐ. ܢܒܢܐ ܠܘܬܗ
ܨܘܝܐ. ܥܕܡܐ ܕܐܬܝܢ ܢܩܒܪܘܢ ܠܗ ܗܢܘܢ ܕܩܒܪܝܢ ܒܢܚܠܐ ܕܓܘܓ. * ܘܫܡܗ
ܕܡܕܝܢܬܐ ܪܒܬܐ. ܘܢܕܟܘܢܗ ܠܐܪܥܐ. * ܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܐܡܪ ܠܟܠܗ
ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܠܟܠܗ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܐܬܟܢܫܘ ܘܬܘ ܡܢ ܟܠ
ܕܘܟ. ܠܕܒܚܬܐ ܪܒܬܐ ܕܕܒܚ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܒܛܘܪܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܬܐܟܠܘܢ ܒܣܪܐ. ܘܬܫܬܘܢ
ܕܡܐ. * ܒܣܪܐ ܕܓܢܒܪܐ ܬܐܟܠܘܢ. ܘܕܡܐ ܕܪܘܪܒܢܐ ܕܐܪܥܐ ܬܫܬܘܢ. ܕܟܪܐ ܘܕܡܦܛܡܐ
ܘܕܓܒܪܐ ܘܕܬܘܪܐ ܕܡܬܢܢ ܟܠܗܘܢ. * ܘܬܐܟܠܘܢ ܒܣܪܐ ܘܬܣܒܥܘܢ. ܘܬܫܬܘܢ ܕܡܐ
ܘܬܪܘܘܢ. ܡܢ ܕܒܚܬܐ ܪܒܬܐ ܕܕܒܚ ܐܢܐ ܠܟܘܢ. * ܘܬܣܒܥܘܢ ܡܢ ܦܬܘܪܝ
ܒܣܪܐ ܕܪܟܫܐ ܘܕܪܟܫܝܗܘܢ. ܘܕܓܢܒܪܐ ܘܕܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܐܬܠ ܫܘܒܚܝ ܒܥܡܡܐ. ܘܢܚܙܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܝܢܐ ܕܥܒܕܬ: ܘܐܝܕܝ ܕܣܡܬ ܒܗܘܢ.

Ecce brevi adveniet dies quem prædixi, in- 8
quit Dominus dominorum; Quum exibunt 9
habitatores civitatum Iſraelis, ignémque in-
jicient in arma, clypeos, jacula, arcus, ſagittas,
fuſtes manuarios, & lanceas; & ex iis igne
comburent ſeptem annis. Haud egentes li- 10
gnorum campi aut ſylvæ; ſed ex armis eorum
igne comburent: et prædabuntur eos qui præ-
dati fuerant ipſos, & ſpoliabunt eos qui ſpo-
liaverant ipſos, ait Dominus dominorum.
Eodem illo die dabo ibi Gogo locum ſepul- 11
chri in Iſraele, vallem magnã quæ eſt ad Ori-
entalem *plagam* maris: & obturabunt eam
vallem, cùm ibi ſepelierint Gogum totúmque
exercitum ejus; & vocabitur, Vallis excidii
Gogi. Septem menſium *ſpatio* ſepelient eos 12
Iſraelitæ, & purgabitur terra: Sepelient 13
inquam, eos totus terræ popul⁹, fiétque ipſis
nomen quâ die glorificabor, ait Dominus. Et 14
poſt ſeptẽ menſes erunt homines jugiter am-
bulantes per terram illam, & ſepelientes eos
qui reſidui fuerint ſuper terram, ut purgetur.
Et quicunque per terram tranſiens viderit os 15
humanum, titulum componet juxta illud, do-
nec veniant ad aſportandum illud hi qui ſe-
pelient in valle Gogi. Vocabitur autem no- 16
men urbis illius, Maxima: ſic terrã purgabunt.
Tu verò fili hominis, dic omnib⁹ volucribus 17
cœli & omnib⁹ beſtiis deſerti; Sic ait Domi-
nus dominorum, Congregamini & venite ex
omni loco ad magnam victimam quam ma-
ctaturus ſum vobis in montibus Iſraelis; ut
comedatis carnẽ, & bibatis ſanguinem; Car- 18
nem gigantum comedatis, & ſanguinem prin-
cipum terræ bibatis, arietum, & ſaginatorũ,
hominum, atque juvencorum Baſanis omni-
um. Comedetis autem carnem, ſaturabimi- 19
ni; ſanguinem bibetis, & inebriabimini, ex
magna victima quam mactaturus ſum vobis:
Saturabimini inquam, de menſa mea carne 20
equorum & equitum eorum, gigantum, & o-
mnium virorum bellatorum, ait Dominus do-
minorum. Et comparabo mihi gloriam a- 21
pud gentes, quum viderint gentes judicium
quod fecero, & manum meam quam ipſis im-
poſuero.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ها اني * وتعلم انه يكون * يقول الرب الرب الاله * هذا هو اليوم الذي فيه تكلمت * وتخرج
سكان مدن اسرائيل * ويوقدون بالاسلحة * والمزاريق * والاترسة * والقسي * والنشاب * وعصي
الايدي * والحراب * ويوقدون بهم النار سبعة سنين * ولا ياخذون حطبا من الصحراء * ولا
يقطعون من الغياض شيا * لكن يحرقون الاسلحة بالنار * وينهبون الذين نهبوهم * ويغنمون
الذين غنموهم يقول الرب * ويكون في ذلك اليوم اعطي لجوج موضعا مسمي * ذكرا في اسرائيل
وادي الذين ياتون الي البحر * ويبنون سد الوادي * ويدفنون هناك جوج وكل جمعه * ويدعي
وادي جوج * ويدفنونهم بيت اسرائيل * كي تطهر الارض * في سبعة اشهر * ويدفنهم كل شعب
الارض * ويكون لهم للتسمية اليوم الذي فيه تمجدت يقول الرب * ويامرون كل حين الرجال
السايرين علي كل الارض * ان يدفنوا المتبقيين علي وجه الارض ليطهروها * بعد سبعة اشهر
ويتطلبون باستقصاء * ويكون كل ساير علي كل الارض ينظر عظم انسان * يبني عليها ذكرا
الي ان يدفنوها الدافنون في وادي جوج * ولان اسم المدينة الوادي * وتطهر الارض * وانت
يا ابن الانسان قل * هكذا يقول الرب * قل لكل طير طاير * ولجميع وحوش الحقل * اجتمعوا
وايتوا * اجتمعوا من جميع المحيطين * علي ذبيحتي التي ذبحتها لكم * ذبيحة عظيمة * علي جبال
اسرائيل * وتاكلون لحما * وتشربون دما * تاكلون لحم الجبابرة * وتشربون دم روساء الارض
كباشا وعجولا وتيوسا * وتصيرون عجولا قوية باجمعكم * وتاكلون شحما للشبع * وتشربون
دما للسكر * من ذبيحتي التي ذبحتها لكم * وتمتلون علي مايدتي فرسا وراكبا * جبارا وكل
رجل محارب * يقول الرب الرب * واعطي مجدي فيكم * ويعاين كل الامم حكمي الذي صنعته
ويدي التي جلبتها عليهم *

Ecce venit, & ſcies futurum eſſe, dicit 8
Dominus, Dominus Deus: hæc eſt dies de
qua locutus ſum: Et egredientur cives 9
urbium Iſraelis, & comburent arma, ſpi-
cula, clypeos, arcus, ſagittas, baculos
manuarios, & lanceas, iiſque ignem ac-
cendent ſeptem annis. Non accipient li- 10
gna è campo, nec cædent quicquam è ſyl-
vis, ſed arma igne comburent: & diri-
pient eos à quibus diripiebantur, & ſpo-
liabunt eos qui ſpolia ab ipſis capiebant,
dicit Dominus. Et erit eo die ut dem ipſi 11
Gog locum nominatum, memoriam in
Iſraele, vallem venientium ad mare:
ædificabunt enim oſtium vallis, &
ſepelient ibi Gog, totamque turbam ipſius:
& vocabitur, Vallis Gog. Sepelient au- 12
tem eos Iſraelitæ, ut purgetur terra,
ſeptem menſibus. Sepeliet inquam, eos 13
totus terræ populus: eritque eis nomini
dies quâ glorificatus fuero, inquit Domi-
nus. Et inceſſanter præcipient viris to- 14
tam eam terram peragrantibus, ut ſepeli-
ant remanentes in ſuperficie terræ, qua-
tenus emundent eam, poſt ſeptem men-
ſes: & quærent eos diligenter. Et erit 15
ut quicunque terram illam peragrans
viderit os humanum, extruat ſuper illud
monimentum, quoad ſepeliant illud
pollinctores in valle Gog; (Et verò no- 16
men urbis, Vallis) ut emundetur terra.
Tu ergò O fili hominis, dic (ita dicit 17
Dominus) dic omni volucri volanti, &
cunctis beſtiis campeſtribus; Congregami-
ni, & venite; congregamini ex omnibus
locis adjacentibus ad victimam meam
quam vobis mactavi, victimam magnam,
ſuper montes Iſraelis; & comedetis
carnem, bibetiſque ſanguinem. Comede- 18
tis carnem gigantum, & bibetis ſan-
guinem principum terræ, arietes, vitulos,
& hircos; & evadetis omnes, vituli
robuſti. Comedetis autem carnem ad ſa- 19
tietatem, & ſanguinem bibetis ad ebri-
etatem, ex mea victima quam vobis
mactavi: Et implebimini ſuper menſa 20
mea equo & equite, gigante & omni
viro bellicoſo, inquit Dominus Dominus.
Et prodam gloriam meam per vos, & 21
videbunt omnes gentes judicium meum
quod exercuero, & manum meam quam
in eos intulero:

יְחֶזְקֵאל : מ

à ; eorum Deus Dominus *ego* quòd , Iſrael domus ſcient Et
22 וְיָדְעוּ בֵּית יִשְׂרָאֵל כִּי אֲנִי יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם מִן־
ſua iniquitate in quòd gentes ſcient Et *.ultrà* & , illa die
23 הַיּוֹם הַהוּא וָהָלְאָה׃ וְיָדְעוּ הַגּוֹיִם כִּי בַעֲוֺנָם
,me in ſunt prævaricati quòd propterea , Iſrael domus ſunt ducti captivi
גָּלוּ בֵית־יִשְׂרָאֵל עַל אֲשֶׁר מָעֲלוּ־בִי
,eorum hoſtium manum in eos tradidi & : eis ab *meas facies* abſcondi &
וָאַסְתִּר פָּנַי מֵהֶם וָאֶתְּנֵם בְּיַד צָרֵיהֶם
,eorum immunditiam Secundùm .ill univerſi gladio in ceciderunt &
24 וַיִּפְּלוּ בַחֶרֶב כֻּלָּם׃ כְּטֻמְאָתָם
meas facies abſcondi & : eis cum feci eorum prævaricationes ſcdm &
וּכְפִשְׁעֵיהֶם עָשִׂיתִי אֹתָם וָאַסְתִּר פָּנַי
faciam redire Nunc ,Deus Dominus dixit ſic Propterea .eis ab
25 מֵהֶם׃ לָכֵן כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה עַתָּה אָשִׁיב
zelabo & ; Iſrael domus omnis miſerebor & ,Jahacob captivitatem
אֶת־שְׁבִית יַעֲקֹב וְרִחַמְתִּי כָּל־בֵּית יִשְׂרָאֵל וְקִנֵּאתִי
omnem & ,ſuam ignominiam portabunt Et *.meæ ſanctitatis nomini*
26 לְשֵׁם קָדְשִׁי׃ וְנָשׂוּ אֶת־כְּלִמָּתָם וְאֶת־כָּל־
ſuper *eos habitando in* ,me in ſunt prævaricati qua ,ſuam prævaricationem
מַעֲלָם אֲשֶׁר מָעֲלוּ־בִי בְּשִׁבְתָּם עַל־
è eos *me reducendo In .exterrens* non & *,fiducia in* ſuam *humum*
27 אַדְמָתָם לָבֶטַח וְאֵין מַחֲרִיד׃ בְּשׁוֹבְבִי אוֹתָם מִן־
; ſuorum inimicorum terris è eos congregavero & , populis
הָעַמִּים וְקִבַּצְתִּי אֹתָם מֵאַרְצוֹת אֹיְבֵיהֶם
ſcient Et .plurimarum gentium oculis in eis in fuero ſanctificatus &
28 וְנִקְדַּשְׁתִּי בָם לְעֵינֵי הַגּוֹיִם רַבִּים׃ וְיָדְעוּ
,gentes ad eos *me transferendo in* ,eorum Deus Dominus *ego* quòd
כִּי אֲנִי יְהוָה אֱלֹהֵיהֶם בְּהַגְלוֹתִי אֹתָם אֶל־הַגּוֹיִם
.ibi eis ex ultrà relinquam non & :ſuam *humum ad* eos congregavero &
וְכִנַּסְתִּים אֶל־אַדְמָתָם וְלֹא־אוֹתִיר עוֹד מֵהֶם שָׁם׃
effudi quia ; eis ab *meas facies* ultrà abſcondam non Et
29 וְלֹא־אַסְתִּיר עוֹד פָּנַי מֵהֶם אֲשֶׁר שָׁפַכְתִּי
.Deus Dominus dixit , Iſrael domum ſuper meum ſpiritum
אֶת־רוּחִי עַל־בֵּית יִשְׂרָאֵל נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃

CAP. XL. מ

, anni *capite* in ,noſtræ tranſmigrationis anno quinto & vigeſimo In
1 בְּעֶשְׂרִים וְחָמֵשׁ שָׁנָה לְגָלוּתֵנוּ בְּרֹאשׁ הַשָּׁנָה
eſt percuſſa poſtquam , anno decimoquarto in ,menſis decima *in*
בֶּעָשׂוֹר לַחֹדֶשׁ בְּאַרְבַּע עֶשְׂרֵה שָׁנָה אַחַר אֲשֶׁר הֻכְּתָה
, Domini *manus* me ſuper fuit *,illius diei corpore* in , civitas
הָעִיר בְּעֶצֶם הַיּוֹם הַזֶּה הָיְתָה עָלַי יַד־יְהוָה
in me adduxit Dei viſionibus In .illuc me adduxit &
2 וַיָּבֵא אֹתִי שָׁמָּה׃ בְּמַרְאוֹת אֱלֹהִים הֱבִיאַנִי אֶל־
eum ſuper & *,valde* excelſum montem *ad* me dimiſit & , Iſrael terram
אֶרֶץ יִשְׂרָאֵל וַיְנִיחֵנִי אֶל־הַר גָּבֹהַּ מְאֹד וְעָלָיו
ecce & : illuc me adduxit Et .Meridie à civitatis ædificium tanquã
3 כְּמִבְנֵה־עִיר מִנֶּגֶב׃ וַיָּבֵיא אוֹתִי שָׁמָּה וְהִנֵּה־
,ejus manu in *linorum* filum & , æris aſpectus ſicut *ejus* aſpectus , vir
אִישׁ מַרְאֵהוּ כְּמַרְאֵה נְחֹשֶׁת וּפְתִיל־פִּשְׁתִּים בְּיָדוֹ
me ad eſt locutus Et .porta in *ſtans ipſe* & : menſuræ calamus &
4 וּקְנֵה הַמִּדָּה וְהוּא עֹמֵד בַּשָּׁעַר׃ וַיְדַבֵּר אֵלַי
pone & , audi tuis auribus in & ,tuis oculis in vide ,hominis Fili , vir
הָאִישׁ בֶּן־אָדָם רְאֵה בְעֵינֶיךָ וּבְאָזְנֶיךָ שְּׁמָע וְשִׂים
pro quia , tibi *oſtendens ego* quæ , omnibus tuum cor
לִבְּךָ לְכֹל אֲשֶׁר־אֲנִי מַרְאֶה אוֹתָךְ כִּי לְמַעַן
tu quæ omnia annuntia : huc es adductus tibi *oſtendi*
הַרְאוֹתְכָה הֻבָאתָה הֵנָּה הַגֵּד אֶת־כָּל־אֲשֶׁר־אַתָּה
.Iſrael domui *videns*
רֹאֶה לְבֵית יִשְׂרָאֵל׃

Verſio VULG. LAT.

22 Et ſcient domus Iſrael, quia ego Dominꝰ Deꝰ eorum, à die illa, & deincéps. 23 Et ſcient Gentes quoniam in iniquitate ſua capta ſit domus Iſrael, eò quòd dereliquerint me, & abſconderim faciem meam ab eis: & tradiderim eos in manꝰ hoſtium, & ceciderint in gladio univerſi. 24 Juxta immunditiam eorum & ſcelꝰ feci eis, & abſcondi faciem meam ab illis. 25 Propterea hæc dicit Dominꝰ Deꝰ; Nunc reducam captivitatem Jacob, & miſerebor omnis domûs Iſrael: & aſſumam zelum pro nomine ſancto meo. 26 Et portabunt confuſionem ſuam, & omnẽ prævaricationem, quâ prævaricati ſunt in me, cùm habitaverint in terra ſua confidenter neminem formidantes: 27 Et reduxero eos de populis, & congregavero de terris inimicorum ſuorum, & ſanctificatꝰ fuero in eis, in oculis gentium plurimarum. 28 Et ſcient quia ego Dominꝰ Deꝰ eorum; eò quòd tranſtulerim eos in nationes, & congregaverim eos ſuper terram ſuam, & non dereliquerim quemquam ex eis 29 ibi. Et non abſcondam ultrà faciem meam ab eis, eò quòd effuderim ſpiritum meum ſuper omnem domum Iſrael, ait Dominꝰ Deus.

CAP. XL.

1 IN vigeſimo quinto anno tranſmigrationis noſtræ, in exordio anni, decimâ menſis, quartodecimo anno poſtquàm percuſſa eſt civitas: in ipſa hac die facta eſt ſuper me manꝰ Domini, & ad-2 duxit me illuc. In viſionibꝰ Dei adduxit me in terram Iſrael, & dimiſit me ſuper montem excelſum nimis: ſuper quem erat quaſi ædificium civitatis vergen-3 tis ad Auſtrum. Et introduxit me illuc: & ecce vir, cujꝰ erat ſpecies quaſi ſpecies æris, & funiculꝰ lineus in manu ejꝰ, & calamꝰ menſuræ in manu ejꝰ: ſta-4 bat autem in porta. Et locutꝰ eſt ad me idem vir; Fili hominis, vide oculis tuis, & auribꝰ tuis audi, & pone cor tuum in omnia, quæ ego oſtendam tibi, quia ut oſtendantur tibi adductꝰ es huc: annuntia omnia, quæ tu vides, domui Iſrael.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

22 Καὶ γνώσονται οἶκος Ἰσραὴλ, ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν, ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύ-23 της καὶ ἐπέκεινα. Καὶ γνώσονται πάντα τὰ ἔθνη, ὅτι διὰ τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν ᾐχμαλωτεύθησαν οἶκος Ἰσραὴλ, ἀνθ' ὧν ἠθέτησαν εἰς ἐμὲ, καὶ ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν μου ἀπ' αὐτῶν, καὶ παρέδωκα αὐτοὺς εἰς χεῖρας τῶν ἐχθρῶν αὐτῶν, καὶ (γ) ἔπεσον πάντες 24 μαχαίρᾳ. Κατὰ τὰς ἀκαθαρσίας αὐτῶν, καὶ κατὰ τὰ ἀνομήματα αὐτῶν ἐποίησα αὐτοῖς, καὶ ἀπέστρεψα τὸ πρόσωπόν μου ἀπ' αὐτῶν. 25 Διατοῦτο τάδε λέγει (δ) κύριος κύριος, Νῦν ἀποστρέψω αἰχμαλωσίαν (ε) ἐν Ἰακὼβ, καὶ ἐλεήσω τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, καὶ ζηλώσω διὰ 26 τὸ ὄνομα τὸ ἅγιόν μου. Καὶ (ζ) λήψονται τὴν ἀτιμίαν αὐτῶν, καὶ τὴν ἀδικίαν ἣν ἠδίκησαν ἐν τῷ κατοικισθῆναι αὐτοὺς ἐπὶ τὴν γῆν αὐτῶν ἐπ' εἰρήνης· 27 καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἐκφοβῶν, Ἐν τῷ ἀποστρέψαι με αὐτοὺς ἐκ τῶν ἐθνῶν, καὶ συναγαγεῖν με αὐτοὺς ἐκ τῶν χωρῶν τῶν ἐθνῶν· καὶ ἁγιασθή-28 σομαι ἐν αὐτοῖς ἐνώπιον (η) τῶν ἐθνῶν. Καὶ γνώσονται ὅτι ἐγώ εἰμι κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν, ἐν τῷ ἐπιφανῆναί με αὐτοῖς ἐν τοῖς 29 ἔθνεσι. Καὶ οὐκ ἀποστρέψω οὐκέτι τὸ πρόσωπόν μου ἀπ' αὐτῶν, ἀνθ' ὧν ἐξέχεα τὸν θυμόν μου ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, λέγει κύριος κύριος.

MS. A. (γ) ἔπεσον (δ) κύριος κύριος ὁ θεὸς, Νῦν ἀναστρέψω τὴν (ε) Ἰακὼβ, (ζ) λήμψομαι (η) ἐθνῶν πολλῶν.

Et ſcient domus Iſrael, quia ego ſum Dominus Deus eorum à die hac, & deinceps. 22 *23 Et ſcient omnes gentes, quoniam propter peccata ſua capti fuerunt domus Iſrael, eò quòd prævaricati ſunt in me; & averti faciem meam ab eis. & tradidi eos in manus inimicorũ eorũ: & ceciderunt omnes gladio.* 24 *Juxta immunditias eorum, & juxta iniquitates eorum, feci eis: & averti faciem meam ab eis.* 25 *Propterea hæc dicit Dominus Dominus; Nunc reducam captivitatem in (o) Jacob: & miſerebor domui Iſrael: & aſſumam zelum propter nomen ſanctum meum.* 26 *Et portabunt ignominiam ſuam, & injuſtitiam, quâ injuſtè egerunt, cùm habitaverint in terra ſua in pace, & non erit qui exterreat.* 27 *Cùm reduxero eos de gentibus, & congregavero eos de (p) regionibus gentium: & ſanctificabor in eis coram gentibus.* 28 *Et ſcient, quia ego ſum Dominus Deus eorum, cum apparuero eis in (q) gentibus.* 29 *Et non avertam ultrà faciem meam ab eis; eò quòd effuderim furorem meum ſuper domum Iſrael, ait Dominus Dominus.*

ΚΕΦ. μ'.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ πέμπτῳ καὶ εἰκοστῷ ἔτει τῆς αἰχμαλωσίας ἡμῶν, ἐν τῷ πρώτῳ μηνὶ, δεκάτῃ τοῦ μηνὸς, ἐν τῷ τεσσαρεσκαιδεκάτῳ ἔτει μετὰ τὸ (α) ἁλῶναι τὴν πόλιν, ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐγένετο (β) ἐπ' ἐμὲ χεὶρ 2 κυρίου, Καὶ ἤγαγέ με ἐν ὁράσει θεοῦ εἰς τὴν γῆν (γ) Ἰσραὴλ, καὶ ἔθηκέ με ἐπ' (δ) ὄρος ὑψηλὸν σφόδρα, καὶ ἐπ' αὐτῷ ὡσεὶ οἰ-3 κοδομὴ πόλεως ἀπέναντι, Καὶ εἰσήγαγέ με ἐκεῖ· καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ, καὶ ἡ ὅρασις αὐτοῦ ἦν ὡσεὶ ὅρασις χαλκοῦ στίλβοντος, καὶ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ ἦν σπαρτίον οἰκοδόμων, καὶ κάλαμος (ε) μέτρον, καὶ αὐτὸς εἱστήκει ἐπὶ τῆς πύλης. 4 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ ὁ ἀνὴρ, (ζ) Ὃν ἑώρακας υἱὲ ἀνθρώπου ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς σου ἴδε, καὶ ἐν τοῖς ὠσί σου ἄκουε, καὶ τάξον εἰς τὴν καρδίαν σου πάντα ὅσα ἐγὼ δεικνύω σοι, διότι ἕνεκα τοῦ δεῖξαί σοι εἰσελήλυθας ὧδε, καὶ δείξεις πάντα ὅσα σὺ ὁρᾷς τῷ οἴκῳ (η) τοῦ Ἰσραήλ.

MS. A. (α) ἁλωθῆναι (β) χεὶρ κυρίου ἐπ' ἐμὲ, (γ) τοῦ Ἰσραὴλ, (δ) ὄρους ὑψηλοῦ σφόδρα, καὶ ἐπ' αὐτοῦ (ε) μέτρον ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ (ζ) Ἑώρακας σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, ἴδε ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς σου, καὶ (η) Ἰσραήλ.

CAP. XL.

1 *ET factum eſt in quinto & vigeſimo anno captivitatis noſtræ, in primo menſe, decimâ menſis, in quarto decimo anno, poſtquàm capta eſt civitas, in die illa facta eſt ſuper me manus Domini:* 2 *Et adduxit me in viſione Dei in terram Iſrael: & poſuit me ſuper montem excelſum nimis: & in eo quaſi ædificium civitatis è regione.* 3 *Et introduxit me illuc; & ecce vir; & aſpectus ejus erat, quaſi aſpectus æris ſplendentis: & in manu ejus erat funiculus cementariorum, & calamus menſuræ: & ipſe ſtabat in porta.* 4 *Et dixit ad me vir; (a) Quem vidiſti, fili hominis? in oculis tuis vide, & in auribus tuis audi: & pone in cor tuum omnia, quæ oſtendero tibi: quia, ut oſtendantur tibi; ingreſſus es huc. Et monſtrabis omnia quæ tu vides, domui Iſrael.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 וידעון בית ישראל ארי אנא יי אלההון מן יומא ההוא ולהלא : וידעון עממיא ארי
23 בחוביהון גלו בית ישראל על דשקרו במימרי וסליקית שכנתי מנהון ומסרתנון ביד
24 סנאיהון ואתקטלו בחרבא כולהון : כסואבתהון וכמרדיהון אתפרעית מנהון
25 וסליקית שכנתי מנהון : בכן כדנן אמר יי אלהים כען אתיב ית גלות יעקב וארחם
כל בית ישראל ואתפרע פורענות גבורתי מן עממיא על דאחילו ית שמא דקודשי :
26 ויקבלון ית אתכנעותהון וית כל שקריהון דשקרו במימרי במתבהון על ארעהון
27 לרוחצן ולית דמניד : כד אתיב יתהון מביני עממיא ואכניש יתהון מן מדינתא בעלי
28 דבביהון ואתקדש בהון לעיני עממין סגיאין : וידעון ארי אנא יי אלההון ועל דחבו
קדמי אגליתי יתהון לביני עממיא וכדו דתבו כנשתנון לארעהון ולא אשאר עוד
29 מנהון תמן : ולא אסלק עוד שכנתי מנהון דשפיכית ית רוח קדשי על בית ישראל
אמר יי אלהים :

מ

1 בעשרין וחמש שנין לגלותנא ברישא דשתא בעשרא לירחא בארבע עסרי שנין בתר
דאתרעת קרתא בכרן יומא הדין שרת עלי רוח נבואה מן קדם יי ואעיל יתי לתמן :
2 ברוח נבואה דשרת עלי מן קדם יי אעלני לארעא דישראל ואשרני על טור רם
3 לחדא ועלוהי כבנין קרתא מדרומא : ואעיל יתי לתמן והא גברא חזויה כחזו נחשא
4 וחוט דכתנא בידיה וקני משחתא והוא קאם בתרעא : ומלל עמי גברא בר אדם חזי
בעינך ובאודנך שמע ושוי לבך לכל די אנא מחוי יתך ארי בדיל לאחזיותך אתותבת
הלכא חוי ית כל דאת חזי לבית ישראל :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ſcient domꝰ Iſrael, quia ego Dominꝰ Deus eorum à die illa & deinceps. 22 Et ſcient populi, quia propter peccata ſua migravit domꝰ Iſrael, pro eo quòd 23 prævaricata eſt in verbum meum, & abſtuli majeſtatem meam ab eis, et tradidi eos in manum inimicorum ſuorum, & interfecti ſunt gladio univerſi. 24 Juxta immunditias ſuas & rebelliones ſuas ultionem ſumpſi ex eis, & abſtuli majeſtatem meam ab eis. 25 Idcirco hæc dicit Dominꝰ Deꝰ, Nunc reducam captivitatem Jacob & miſerebor univerſæ domꝰ Iſrael, & ulciſcar ultionem potentiæ meæ de populis, pro eo quòd violaverunt nomen ſanctum meum. 26 Et ſuſcipient confuſionem ſuam, & omnes prævaricationes ſuas, quibꝰ prævaricati ſunt in verbum meum cùm habitarent ſuper terram ſuam confidenter; & non erit qui exterreat eos. 27 Cùm reduxero eos de medio populorum, & congregavero eos de provinciis inimicorum ſuorum; & ſanctificatꝰ fuero in eis in oculis populorum multorum. 28 Et ſcient, quia ego Dominꝰ Deus eorum, &, pro eo quòd peccaverunt coram me, tranſtulerim eos inter populos; & nunc quia converſi ſunt, congregaverim eos ad terram ſuam: reliquum faciam ultrà quenquam ex eis ibi. 29 Neque auferam amplius majeſtatem meam ab eis; quia effudi ſpiritum ſanctum meum ſuper domum Iſrael, ait Dominus Deus.

CAP. XL.

1 VIceſimoquinto anno tranſmigrationis noſtræ in exordio anni, decimâ menſis, quartodecimo anno poſtquàm dirupta eſt civitas, in hac eadem die reſedit ſuper me ſpiritus propheticus à facie Dñi; & adduxit me illuc. 2 In ſpiritu prophetico qui reſedit ſuper me à facie Domini, induxit me in terram Iſrael, & poſuit me ſuper montem excelſum valdè; & ſuper eum erat quaſi ædificium civitatis ab Auſtro. 3 Et introduxit me illuc. Et ecce vir cujus aſpectus erat quaſi aſpectus æris, & funiculus lineus in manu ejus, & calamus menſuræ: & ecce ſtabat in porta. 4 Et locutus eſt ad me vir, [*dicens:*] Fili hominis vide oculis tuis, & auribus tuis audi, & pone cor tuum ad omnia quæ ego oſtendam tibi: quia ut oſtendantur tibi, adductus es huc. Annuntia omnia quæ tu vides, domui Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܕܥܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܗܘ ܘܠܗܠ. * ܘܢܕܥܘܢ
ܥܡܡܐ. ܕܡܛܠ ܚܘܒܝܗܘܢ ܐܫܬܒܝܘ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܕܐܥܠܘ ܒܝ. ܘܐܗܦܟܬ ܐܦܝ
ܡܢܗܘܢ. ܘܐܫܠܡܬ ܐܢܘܢ ܒܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܢܦܠܘ ܟܠܗܘܢ ܒܚܪܒܐ. * ܐܝܟ
ܛܢܦܘܬܗܘܢ. ܘܐܝܟ ܥܘܠܗܘܢ. ܥܒܕܬ ܠܗܘܢ. ܘܐܗܦܟܬ ܐܦܝ ܡܢܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܗܫܐ ܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܐܪܚܡ ܥܠ ܟܠܗ
ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܛܢ ܥܠ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ. * ܘܢܩܒܠܘܢ ܟܠܗ ܚܣܕܗܘܢ
ܘܥܘܠܗܘܢ ܕܐܥܠܘ ܒܝ. ܟܕ ܝܬܒܝܢ ܥܠ ܐܪܥܗܘܢ ܒܫܠܝܐ ܘܠܝܬ ܠܗܘܢ ܡܢ ܕܡܙܝܥ. * ܟܕ
ܕܡܦܢܐ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܥܡܡܐ. ܘܡܟܢܫ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ. ܘܐܬܩܕܫ
ܒܗܘܢ ܩܕܡ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܢܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܕܐܫܒܝܬ ܐܢܘܢ ܒܝܬ
ܥܡܡܐ. ܘܐܢܐ ܐܟܢܫ ܐܢܘܢ ܠܐܪܥܗܘܢ. ܘܠܐ ܐܘܬܪ ܡܢܗܘܢ ܬܡܢ. * ܘܠܐ ܐܗܦܘܟ ܐܦܝ ܡܢܗܘܢ
ܬܘܒ. ܐܠܐ ܐܫܕ ܪܘܚܝ ܥܠ ܟܠܗ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡ * * ܒܢܝܢܐ ܕܗܝܟܠܐ *

* ܒܫܢܬ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫ ܕܫܒܝܬܢ. ܒܪܝܫ ܫܢܬܐ ܒܥܣܪܐ ܒܝܪܚܐ. ܒܫܢܬ
ܐܪܒܥܣܪܐ ܒܬܪ ܕܐܬܚܪܒܬ ܡܕܝܢܬܐ. ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܢܐ. ܗܘܬ ܥܠܝ ܐܝܕܗ ܕܡܪܝܐ.
* ܘܐܝܬܝܢܝ ܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܒܚܙܘܐ ܕܐܠܗܐ. ܘܐܩܝܡܢܝ ܥܠ ܛܘܪܐ ܪܡܐ ܛܒ. ܘܥܠܗ ܗܘܐ
ܒܬܝܡܢܗ ܐܝܟ ܒܢܝܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. * ܘܐܝܬܝܢܝ ܠܬܡܢ. ܘܚܙܝܬ ܓܒܪܐ.
ܘܚܙܘܗ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܢܚܫܐ. ܘܚܒܠܐ ܕܟܬܢܐ ܒܐܝܕܗ. ܘܩܢܝܐ ܕܡܫܘܚܬܐ. ܘܩܐܡ ܗܘܐ
ܒܬܪܥܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܓܒܪܐ ܗܘ. ܒܪ ܐܢܫܐ ܚܙܝ ܒܥܝܢܝܟ. ܘܫܡܥ ܒܐܕܢܝܟ. ܘܣܝܡ
ܒܠܒܟ ܟܠܡܕܡ ܕܡܚܘܐ ܐܢܐ ܠܟ. ܡܛܠ ܕܠܡܚܘܝܘܬܟ ܐܬܝܬ ܠܗܪܟܐ. ܘܟܠܡܕܡ
ܕܚܙܐ ܐܢܬ ܚܘܐ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ.

Cognoſcent etiam Iſraelitæ me eſſe Dominum 22
Deum ipſorum, ab illa die & deinceps :
Et cognoſcent gentes quòd propter iniquitatem 23
ſuam captivi ducti ſint Iſraelitæ : quia
prævaricati ſunt contra me, ideò averterim
faciem meam ab eis, tradiderim eos in manû
inimicorum eorum, & gladio ceciderint omnes :
Denique ſecundùm impuritatem 24
eorum, & juxta iniquitatem ipſorum rependerim
eis, & averterim faciem meam ab eis.
Iccircò ſic ait Dominus dominorum ; Jam re- 25
ſtituam captivos Jacobi, & miſerebor totius
domûs Iſraelis, & zelo commovebor propter
nomen ſanctitatis meæ : (Quandoquidem 26
tulerint omnem ignominiam & iniquitatem
ſuam quâ prævaricati ſunt contra me, quando
ſedebant in terra ſua ſecurè, nemine moleſtiam
illis inferente.) Colligendo eos ex 27
gentibus, & admovendo eos ex urbibus inimicorum
ſuorum, & ſanctificando me per
eos coram gentibus multis. Et agnoſcent 28
quòd ego Dominus Deus eorum effeci ut captivi
ducerentur inter gentes, ego colligam
eos ad terram eorum, & neminem ex eis ibi
relinquam, Neque avertam faciem meam ab 29
eis;ſed effundam ſpiritum meum ſuper totam
domum Iſraelis, dicit Dominus dominorum.

CAP. XL.

Reædificatio templi.

ANno vigeſimo quinto captivitatis noſtræ, 1
initio anni, decimâ menſis, anno decimo
quarto poſtquam vaſtata fuerat urbs ; eodem
ipſo die fuit ſuper me manus Domini : Per- 2
duxitque me in terram Iſraelis in viſione
Dei, & collocavit me ſuper montem valdè
excelſum, ſuper quem in plaga ipſius Meridionali
extabat velut ædificium urbis. Cúm- 3
que me perduxiſſet illuc, vidi virum cujus
aſpectus ſimilis erat aſpectui æris : funiculum
lineum & arundinem menſoriam *in* manu
ſuâ *tenebat*, ſtabátque in porta. Vir iſte 4
mihi dixit ; Fili hominis, perſpice oculis tuis,
auribus tuis audi, & repone in animo tuo
quicquid oſtenſurus ſum tibi (nam ad oſtendendum
tibi huc veni) & quicquid videris,
indica filiis Iſraelis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويعلم بيت إسرائيل أني أنا الرب إلاههم أنا * منذ هذا اليوم وبعد * ويعلم جميع الأمم أن
لأجل خطاياهم سبي بيت إسرائيل * من أجل أنهم عصوني * فصرفت وجهي عنهم * وأسلمهم إلى
أيدي الأعداء * وسقطوا جميعهم بالسيف * كنجاساتهم وكآثامهم صنعت بهم * وصرفت وجهي
عنهم * لأجل هذا هكذا يقول الرب الرب الإله * الآن أرد سبي يعقوب * وأرحم بيت إسرائيل * وأغار
لأجل اسمي القدوس * وآخذ إهانتهم والظلم الذي ظلموه * عندما يسكنوا في أرضهم
بالسلامة ولا يكون من يخوفهم * عندما أردهم من الأمم * وأجمعهم من بلدان الأمم * وأتقدس
فيهم أمام الأمم الكثيرين * ويعلمون أني أنا الرب إلههم أنا * عندما أتظاهر لهم في الأمم * ولا
أصرف وجهي عنهم بعد * من أجل أني أفضت غضبي على بيت إسرائيل * يقول الرب الرب *

* الفصل الأربعون *

* النبوة التي رآها حزقيال النبي في بني الهيكل * من بعد رد سبي
إسرائيل ورجوعهم من أرض بابل *

* وكان في سنة خمس وعشرين لسبينا * في الشهر الأول * في عشر من الشهر * في السنة الرابعة
عشر من بعد أن خربت المدينة * في ذلك اليوم كانت يد الرب علي * وجاء بي بوحي الله إلى
أرض إسرائيل * ووضعني على جبل عال جدا * وعليه مثل بناء مدينة مقابلي * وأدخلني هناك
وإذا رجل ومنظره كان مثل منظر نحاس يلصف * وكان في يده خيط البنائين * وقصبة قياس في
يده وهو واقف على الباب * وقال لي الرجل * أرأيت أنت يا ابن الإنسان * انظر بعينيك * واسمع
بأذنيك * ورتب في قلبك كما أنا أظهر لك * من أجل أنك دخلت إلى ههنا من أجل أن أظهر
لك * وتظهر أنت جميع ما تراه لبيت إسرائيل *

*Et cognoſcet domus Iſraelis me Dominum 22
Deum ſuum eſſe, ab hoc die &
inpoſterùm Cognoſcent etiam gentes uni- 23
verſæ quod propter peccata ſua captivi
ſint abducti Iſraelitæ : eò quòd in me
rebellârint, averterim faciem meam ab
eis, tradiderim eos in manus inimicorum,
& occubuerint omnes gladio. Juxta 24
immunditias & iniquitates eorum egerim
cum eis, & faciem meam ab eis averterim.
Propterea ſic ait Dominus, Domi- 25
nus Deus ; Jam reducam captivitatem
Jacobi, & miſerebor domûs Iſraelis,
zeloque movebor pro ſacroſancto nomine
meo : Et auferam contemptum & tyran- 26
nidem quâ oppreſſi ſunt : quum habitaverint
in terra ſua pacificè, nec fuerit
qui terreat eos : Quum reduxero eos è 27
gentibus, collegero eos è regionibus gentium,
& ſanctificatus fuero in eis coram
gentibus multis. Scientque me Dominum 28
Deum ſuum eſſe, cùm ipſis apparuero
inter gentes, Et ampliùs non avertero fa- 29
ciem meam ab eis : eò quòd effuderim
furorem meum ſuper domum Iſraelis, ait
Dominus Dominus.*

CAP. XL.

Prophetia quam vidit Hezechiel propheta, de reædificatione templi post reductam Iſraelis captivitatem, & reditum eorum de terra Babelis.

*ET factum eſt anno captivitatis noſtræ 1
vigeſimo quinto, menſe primo, decimâ
menſis, anno quartodecimo ab urbe deſtructa;
ut eodem die eſſet manus Domini
ſuper me, Duceretque me revelatione 2
divinâ in terram Iſraelis, poneretque ſuper
montem valde ſublimem, ſuper quem
erat velut ædificium urbis ex adverſo
mihi. Cúmque me illuc introduxiſſet, ecce 3
virum cujus aſpectus erat velut aſpectus
æris coruſcantis, cujus in manu erat
funiculus cementariorum, calamum menſorium
manu ſuâ* tenebat, *ſtabatque ad
portam. Vir iſte mihi dixit ; Vidiſtine tu 4
O fili hominis ? vide oculis tuis, auribus
tuis audi, & diſpone in corde tuo prout
ego tibi ſum indicaturus : (huc enim ideò
ingreſſus es, ut indicarem tibi) tum tu
indicabis omnia quæ videris, domui
Iſraelis.*

יחזקאל : מ

viri manu in & : undique undique domum extra ab murus ecce Et
5 והנה חומה מחוץ לבית סביב סביב וביד האיש 5
est mensus & : palmi & ,cubito in cubitorum sex mensuræ calamus
קנה המדה שש־אמות באמה וטפח וימד את־
venit Et .uno calamo proceritatem & , uno calamo ædificii latitudinē
6 רחב הבנין קנה אחד וקומה קנה אחד : ויבוא
: ejus gradus in ascendit & ,Orientem ad via ejus facies cujus portam ad
אל־שער אשר פניו דרך הקדימה ויעל במעלתו
limen & ,latitudine uno calamo portæ limen est mensus &
וימד ׀ את־סף השער קנה אחד רחב ואת סף
,longitudine uno calamo thalamum Et .latitudine uno calamo unum
7 אחד קנה אחד רחב : והתא קנה אחד ארך
limen & : cubitis quinque thalamos inter & ,latitudine uno calamo &
וקנה אחד רחב ובין התאים חמש אמות וסף
.uno calamo domo à portæ vestibulum juxta à portæ
השער מאצל אולם השער מהבית קנה אחד :
est mensus Et .uno calamo domo à portæ vestibulum est mensus Et
8 9 וימד את אלם השער מהבית קנה אחד : וימד את־
: cubitis duobus ejus postes & , cubitis octo portæ vestibulum
אלם השער שמנה אמות ואילו שתים אמות
Orientis viam portæ thalami Et .domo à portæ vestibulum &
10 ואלם השער מהבית : ותאי השער דרך הקדים
; ipsorum trium una mensura , inde tres & , hinc tres
שלשה מפה ושלשה מפה מדה אחת לשלשתם
ostii latitudinem est mensus Et .inde & ,hinc postibus una mēsura &
11 ומדה אחת לאילם מפה ומפו : וימד את־רחב פתח־
.cubitis tredecim portæ longitudinē,cubitis decem portæ
השער עשר אמות ארך השער שלוש עשרה אמות :
terminum uno cubito & , uno cubito thalamorum facies ad terminum Et
12 וגבול לפני התאות אמה אחת ואמה־אחת גבול
.inde cubitorum sex & ,hinc cubitorum sex thalamus & : hinc
מפה והתא שש־אמות מפה ושש אמות מפו :
latitudinem ipsius tectum ad thalami tecto à portam est mensus Et
13 וימד את־השער מגג התא לגגו רחב
fecit Et .ostium contra ostium ;cubitis quinque & viginti
14 עשרים וחמש אמות פתח נגד פתח : ויעש את־
circum portæ atrii postem ad & :cubitorum sexaginta postes
אילים ששים אמה ואל־איל החצר השער סביב ׀
portæ vestibuli *facies ad super* *introitus* *portæ* *faciebus super* Et .*circum*
15 סביב : ועל פני השער היאתון על־לפני אלם השער
in *clausæ* fenestræ Et .cubiti quinquaginta , interioris
16 הפנימי חמשים אמה : וחלונות אטמות אל־
sic & , *circum* *circum* portam intra eorum postibus in & ,thalamis
התאים ואל אליהמה לפנימה לשער סביב סביב וכן
.palmæ *postem ad* & ,intrinsecus *circum* *circum* fenestræ & :*vestibulis* in
לאלמות וחלונות סביב סביב לפנימה ואל־איל תמרים :
pavimentū & ,cubicula ecce & ,exterius atrium ad me adduxit Et
17 ויביאני אל־החצר החיצונה והנה לשכות ורצפה
.pavimento in cubicula triginta ;circa circum atrio factum
עשוי לחצר סביב סביב שלשים לשכות אל־הרצפה :
longitudinis regione è portarum *humerum ad* pavimentum Et
18 והרצפה אל־כתף השערים לעמת ארך
latitudinem est mensus Et .inferius pavimentum , portarum
19 השערים הרצפה התחתונה : וימד רחב
,extrinsecus interioris atrii *facies ad* inferioris portæ *faciebus* à
מלפני השער התחתונה לפני החצר הפנימי מחוץ
cujus , portæ Et .Aquilonem & ,Orientem ad , cubitos centum
20 מאה אמה הקדים והצפון : והשער אשר
,ej⁹ longitudinē est mensus ,exteriori atrio in Aquilonis viam *ejus* facies
פניו דרך הצפון לחצר החיצונה מדד ארכו
.ejus latitudinem &
ורחבו :

Versio VULG. LAT.

5 Et ecce mur⁹ forinsec⁹ in circuitu domûs undique, & in manu viri calam⁹ mensuræ sex cubitorum, & palmo: & mensus est latitudinem ædificii calamo uno, altitudinem quoque calamo uno. 6 Et venit ad portam, quæ respiciebat viam Orientalem, & ascendit per gradus ejus: & mensus est limen portæ calamo uno latitudinem, id est, limen unum calamo 7 uno in latitudine: Et thalamum uno calamo in longum, & uno calamo in latum: & inter thalamos, 8 quinque cubitos: Et limen portæ juxta vestibulum portæ 9 intrinsecùs, calamo uno. Et mensus est vestibulum portæ octo cubitorum, & frontem ej⁹ duob⁹ cubitis: vestibulum autem portæ 10 erat intrinsecùs. Porrò thalami portæ ad viam Orientalem, tres hinc & tres indé: mensura una trium, & mensura una frontiū ex 11 utraque parte. Et mensus est latitudinem liminis portæ, decem cubitorum: & longitudinē portæ, 12 tredecim cubitorum: Et marginem ante thalamos cubiti unius: & cubit⁹ un⁹ finis utrinque: thalami autem, sex cubitorum e- 13 rant hinc & indé. Et mensus est portam à tecto thalami, usque ad tectum ej⁹, latitudinem vigintiquinque cubitorum: ostium con- 14 tra ostium. Et fecit frontes per sexaginta cubitos: & ad frontem atrium portæ undique per circu- 15 itum. Et ante faciem portæ, quæ pertingebat usque ad faciem vestibuli portæ interioris, quinqua- 16 ginta cubitos. Et fenestras obliquas in thalamis, & in frontibus eorum, quæ erant intra portam undique per circuitum: similiter autem erant & in vestibulis fenestræ per gyrum intrinsecùs, & ante frontes pictura palmarum. 17 Et eduxit me ad atrium exteri⁹, & ecce gazophylacia, & pavimentum stratum lapide in atrio per circuitum: triginta gazophy- 18 lacia in circuitu pavimenti. Et pavimentum in fronte portarū, secundùm longitudinem porta- 19 rum erat inferius. Et mensus est latitudinem à facie portæ inferioris usque ad frontem atrii interioris extrinsecùs, centum cubitos ad Orientem, & ad Aquilo- 20 nem. Portam quoque, quæ respiciebat viam Aquilonis atrii exterioris, mensus est tam in longitudine, quàm in latitudine.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

5 Καὶ ἰδοὺ περίβολος ἔξωθεν τοῦ οἴκου κύκλῳ, ϗ ἐν τῇ χειρὶ τοῦ ἀνδρὸς κάλαμος, τὸ μέτρον (θ) πηχῶν ἓξ ἐν πήχει ϗ παλαιστῆς· ϗ διεμέτρησε τὸ προτείχισμα, (ι) πλάτος ἴσον τῷ καλάμῳ, ϗ τὸ ὕψος αὐτοῦ ἴσον τῷ 6 καλάμῳ. Καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν πύλην τὴν βλέπουσαν κατὰ ἀνατολὰς ἐν ἑπτὰ ἀναβαθμοῖς, ϗ διεμέτρησε τὸ (κ) αἰλὰμ τῆς πύλης 7 ἴσον τῷ καλάμῳ. Καὶ τὸ θεὲ ἴσον τῷ καλάμῳ τὸ μῆκος, ϗ ἴσον τῷ καλάμῳ τὸ πλάτος, ϗ τὸ αἰλὰμ ἀναμέσον τοῦ (λ) θεηλὰθ πηχῶν ἕξ· ϗ τὸ θεὲ τὸ δεύτερον, ἴσον τῷ καλάμῳ (μ) πλάτος, ϗ ἴσον τῷ καλάμῳ μῆκος, ϗ τὸ αἰλὰμ πήχεων πέν- 8 τε· Καὶ τὸ θεὲ τὸ τρίτον, ἴσον τῷ καλάμῳ (ν) μῆκος, ϗ ἴσον τῷ καλάμῳ (ξ) πλάτος. 9 Καὶ τὸ αἰλὰμ τοῦ πυλῶνος, πλησίον τοῦ αἰλὰμ τῆς πύλης (ο) πηχῶν ὀκτὼ, ϗ τὰ αἰλεὺ πηχῶν (π) δύο· ϗ (ρ) τὰ αἰλὰμ τῆς πύ- 10 λης ἔσωθεν, Καὶ (σ) τὰ θεὲ τῆς πύλης τοῦ θεὲ κατέναντι, τρεῖς ἔνθεν ϗ τρεῖς ἔνθεν, ϗ μέτρον ἓν τοῖς τρισίν· (τ) μέτρον ἓν τοῖς αἰ- 11 λὰμ ἔνθεν ϗ ἔνθεν. Καὶ διεμέτρησε τὸ πλάτος τῆς θύρας τοῦ πυλῶνος (υ) πηχῶν δέκα, ϗ τὸ εὖρος τοῦ πυλῶνος (φ) πηχῶν 12 δεκατριῶν· Καὶ πῆχυς ἐπισυναγόμενος (χ) ἐπὶ πρόσωπον τῶν θεεὶμ ἔνθεν ϗ ἔνθεν, ϗ τὸ θεὲ (ψ) πηχῶν ἓξ ἔνθεν ϗ πηχῶν ἓξ ἔν- 13 θεν. Καὶ διεμέτρησε τὴν πύλην ἀπὸ τοῦ (ω) τοίχου τοῦ θεὲ ἐπὶ τὸν τοῖχον τοῦ θεὲ, (α) πλάτος πήχεις εἴκοσι ϗ πέντε· αὕτη πύλη ἐπὶ πύ- 14 λην. Καὶ τὸ αἴθριον τοῦ αἰλὰμ τῆς πύλης ἔξωθεν, πήχεις (β) εἴκοσι θεεὶμ τῆς πύλης 15 κύκλῳ. Καὶ τὸ αἴθριον τῆς πύλης ἔξωθεν, εἰς τὸ αἴθριον (γ) αἰλὰμ τῆς πύλης ἔσωθεν 16 (δ) πηχῶν πεντήκοντα. Καὶ θυρίδες κρυπταὶ ἐπὶ (ε) τὸ θεεὶμ, ϗ ἐπὶ τὰ αἰλὰμ ἔσωθεν τῆς πύλης τῆς αὐλῆς κυκλόθεν· ϗ ὡσαύτως τοῖς αἰλὰμ (ζ) θυρίδες κύκλῳ ἔσωθεν, ϗ ἐπὶ τὸ αἰλὰμ φοίνικες ἔνθεν ϗ ἔν- 17 θεν. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν, ϗ ἰδοὺ (η) παστοφόρια, ϗ περίστυλα κύκλῳ τῆς αὐλῆς, τριάκοντα παστοφόρια 18 ἐν τοῖς περιστύλοις, Καὶ (θ) αἱ στοαὶ κατὰ νώτου τῶν πυλῶν, κατὰ τὸ μῆκος τῶν πυ- 19 λῶν τὸ περίστυλον (ι) τὸ ὑποκάτω. Καὶ διεμέτρησε τὸ πλάτος τῆς αὐλῆς, ἀπὸ τοῦ αἰθρίου τῆς πύλης τῆς ἐξωτέρας ἔσωθεν ἐπὶ τὸ αἴθριον τῆς πύλης τῆς βλεπούσης ἔξω, πήχεις ἑκατὸν τῆς βλεπούσης (κ) κατὰ ἀνατο- 20 λάς. ϗ (λ) ἤγαγέ με ἐπὶ Βορρᾶν, Καὶ ἰδοὺ πύλη βλέπουσα πρὸς Βορρᾶν τῇ αὐλῇ τῇ ἐξωτέρᾳ, ϗ διεμέτρησεν αὐτὴν, τό, τε μῆκος αὐτῆς ϗ τὸ πλάτος,

5 *Et ecce murus extra domum per gyrum: & in manu viri calamus, mensura cubitorum sex in cubito, & palæstes. Et mensus est (b) antemurale, latitudinem æqualem calamo, & (c) altitudinem ejus æqualem calamo.* 6 *Et ingressus est portam, quæ respiciebat Orientem in (d) septem gradibus: & mensus est (e) Ælam portæ æqualem calamo:* 7 *Et Thee æqualem calamo longitudine: & æqualem calamo latitudine: (f) & Ælam in (g) medio Theelath cubitorum sex. Et Thee secundum æqualem calamo latitudine, & æqualem calamo longitudine: & Ælam cubitorum quinque:* 8 *Et Thee tertium, æqualem calamo longitudine, & æqualem calamo latitudine:* 9 *Et Ælam portæ, qui juxta Ælam portæ, cubitorum octo: Et (h) Æleu cubitorum duorum: & (i) Ælā portæ intrinsec⁹;* 10 *Et Thee portæ Thee è regione, tres hinc et tres (k) indé: & mensura in trib⁹: mensura una Ælam hinc & indé.* 11 *Et mensus est latitudinem (l) introitus portæ decem cubitorum: & (m) latitudinē portæ cubitorum tredecim.* 12 *Et cubitus redigebatur in (n) conspectu Theim hinc & indé: & (o) Thee cubitorū sex hinc, & cubitorum sex indé.* 13 *Et mensus est portam à muro Thee ad parietem Thee, latitudinem vigintiquinq; cubitorum: Hæc porta contra portam.* 14 *Et (p) sub divo Ælam portæ extrinsecùs cubiti viginti Theim portæ per circuitum.* 15 *Et sub divo portæ extrinsecùs in sub divo Ælam portæ intrinsecùs quinquaginta cubitorum:* 16 *Et fenestræ (q) absconditæ super Theim, & super Ælam intra portam atrii per circuitum: Et similiter ipsis Ælam fenestras in circuitu intrinsecus: & super Ælam (r) palmæ hinc et indé.* 17 *Et introduxit me in atriū interius: & ecce (s) pastophoria, & (t) intercolumnia in circuitu atrii, triginta pastophoria in intercolumniis,* 18 *Et porticus ad dorsum januarum: secundùm longitudinem januarum intercolumnium inferius.* 19 *Et mensus est latitudinem aulæ ab eo loco, qui erat sub divo portæ exterioris ab intus sub divo portæ respicientis extra, cubitos centum respicientis ad Orientem. Et adduxit me ad Aquilonem:* 20 *Et ecce porta respiciens ad Aquilonem atrio exteriori: & mensus est ea, longitudinem ej⁹, & latitudinem,*

MS. A. (θ) πήχεων (ι) τὸ πλάτος (κ) θεὲ ἓξ ἔνθεν ϗ ἓξ ἔνθεν, ϗ τὸ αἰλὰμ (λ) θεὲ (μ) τὸ πλάτος, ϗ τὸ αἰλὰμ (ν) τὸ μῆκος, (ξ) τὸ πλάτος. (ο) ἔσωθεν ἴσον τῷ καλάμῳ, ϗ διεμέτρησεν τὸ ἐλὰμ τῆς πύλης πηχῶν ὀκτὼ, ϗ τὸ αἰλεὺ (π) δέκα· (ρ) τὸ αἰλὰμ (σ) τὸ θεὲ τῆς πύλης θεὲ (τ) ϗ μέτρον ἐν τῷ ἐλὰμ (υ) πήχεων (φ) πήχεων (χ) κατὰ πρόσωπον τῷ θεὲ πήχεος ἑνὸς, ϗ πήχεος ἑνὸς, ὅριον ἔνθεν ϗ ἔνθεν, (ψ) πήχεων ἓξ ἔνθεν ϗ πήχεων (ω) τείχους (α) πλάτος εἰκοσιπέντε· αὕτη (β) εἴκοσι πέντε, ϗ τὸ θεεμ (γ) τῆς πύλης τοῦ αἰλὰμ τῆς πύλης (δ) πήχεων ὀκτώ. Καὶ θυρίδες (ε) τὰ θεὲ, ἔσωθεν τῆς πύλης (ζ) θυρίδες (η) γαζοφυλάκια, ϗ (θ) στοαὶ (ι) τῷ (κ) καὶ (λ) εἰσήγαγεν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 והא שורא מברא לביתא סחור סחור וביד גברא קני משחתא דחד מנהון שית
אמין באמתא דהיא אמא ופשך ומשח ית פותיא דבנינא קניא חד ורומא קניא חד :
6 ועל לתרעא דפתיח לאורח מדנחא וסליק בדרגוהי ומשח ית ספא דתרעא קניא
7 חד פותיא וית ספא חד קניא חד פותיא : ותאא קניא חד אורכא וקניא חד פותיא
ובין תוייא כתלא חמש אמין וספא דתרעא מקביל אולמא דתרעא מלגיו קניא חד :
8 9 ומשח ית אולמא דתרעא מלגיו קניא חד : ומשח ית אולמא דתרעא תמני אמין
10 ואלוהי תרתין אמין ואולמא דתרעא מלגיו : ותוי תרעא באורח מדנחא תלתא מכא
11 ותלתא מכא משחתא חדא לתלתיהון ומשחתא חדא לאיליא מכא ומכא : ומשח
12 ית פותיא דמעלנא דתרעא עסר אמין אורכא דתרעא תלת עסרי אמין : ותחומא די
קדם תויא אמתא חדא ואמתא חדא תחומא מכא ותוא שית אמין מכא ושית אמין
13 מכא : ומשח ית תרעא מאגר תוא לאגריה פותיא עסרין וחמש אמין תרע לקביל
14 תרע : ועבד ית אליא שתין אמין רומהון ועל אלא דדרתא דתרעא סחור סחור :
15 16 וקדם תרעא מציעאה די קדם אולמא דתרעא גואה חמשין אמין : וכוין סתימן לתויא
ולאליהן מגיו לתרעא סחור סחור וכן לאולמיא וכוין סחור סחור לגיו ועל אליא
17 כותרתא : ואעלני לדרתא בריתא והא לשכן ורצפתא עביד לדרתא סחור סחור
18 תלתין לשכן על רצפתא : ורצפתא לעברא דתרעיא לקביל אורכא דתרעיא רצפתא
19 ארעיתא : ומשח פותיא מן קדם תרעא מציעאה דקדם דרתא גויתא מברא מאה
20 אמין למדנחא ולצפונא : ותרעא דפתיח לאורח צפונא לדרתא בריתא משח
אורכיה ופותיה :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et ecce murus extra domum per circuitum, & in manu viri calami mensura 5
ex quibus unus erat sex cubitorum in cubito qui est cubitus & palmus : &
mensus est latitudinem ædificii calamo uno, & altitudinem calamo uno. Et 6
ingressus est per portam quæ aperta erat ad viam Orientalem, & ascendit
per gradus ejus ; & mensus est limen portæ calamo uno in latitudinem, & li-
men unum calamo uno in latitudinem. Et thalamum calamo uno in longitu- 7
dinem, & calamo uno in latitudinem, & inter thalamos paries quinque cu-
bitorum, & limen portæ juxta vestibulum portæ intrinsecus calamo uno. Et 8
mensus est vestibulum portæ interioris calamo uno. Et mensus est vestibu- 9
lum portæ octo cubitis ; & frontes ejus duobus cubitis : vestibulum autem
portæ erat intrinsecus. Et thalami portæ in via Orientali tres hinc & tres in- 10
dè ; mensura una erat illorum trium, & mensura una erat frontium hinc &
inde. Et mensus est latitudinem introitus portæ decem cubitis, & longi- 11
tudinem portæ tredecim cubitis. Et marginem quæ erat ante thalamos cubi- 12
to uno, & cubito uno marginem hinc. Thalamus autem erat sex cubitorum
hinc, & sex cubitorum inde. Et mensus est portam à tecto thalami usque ad 13
tectum ejus, latitudinem viginti quinque cubitorum, ostium contra ostium.
Et fecit frontes, sexaginta *cubitorum* altitudo earum erat, & super frontem 14
atrii portæ per circuitum. Et ante portam mediam quæ erat ante vestibulum 15
portæ interioris erant quinquaginta cubiti. Et fenestræ obturatæ erant in 16
thalamis & in frontibus eorum intra portam per circuitum, & similiter in
vestibulis : & fenestræ per circuitum intrinsecus, & super frontes capitella.
Et introduxit me in atrium exterius, & ecce gazophylacia, & pavimentum 17
factum in atrio per circuitum, triginta gazophylacia super pavimentum. Et 18
pavimentum in latere portarum, secundùm longitudinem portarum pavi-
mentum inferius. Et mensus est latitudinem a facie portæ mediæ quæ erat in 19
conspectu atrii interioris extrinsecus, centum cubitis ad Orientem & ad
Aquilonem. Et portam quæ aperta erat ad viam Aquilonis ad atrium exteri- 20
us ; mensus est longitudinem ejus & latitudinem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܚܙܝܬ ܫܘܪܐ ܕܚܕܪ ܠܗ ܠܒܝܬܐ ܗܘ. ܘܩܢܝܐ ܕܡܫܘܚܬܐ ܒܐܝܕܗ ܕܓܒܪܐ ܗܘ. ܫܬ
ܐܡܝܢ ܗܘܐ ܗܘܐ ܘܦܫܟܐ. ܘܡܫܚ ܦܬܝܗ ܕܒܢܝܢܐ ܩܢܝܐ ܚܕ. ܘܪܘܡܗ ܩܢܝܐ ܚܕ.
* ܘܐܬܐ ܠܬܪܥܐ ܕܚܙܐ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܣܠܩ ܒܕܪܓܘܗܝ. ܘܡܫܚ ܣܦܐ ܕܬܪܥܐ. ܩܢܝܐ ܚܕ
ܠܦܬܝܗ. ܘܣܦܐ ܐܚܪܢܐ. ܩܢܝܐ ܚܕ ܠܦܬܝܗ. * ܘܦܪܣܬܕܐ ܩܢܝܐ ܚܕ ܠܐܘܪܟܗ
ܘܩܢܝܐ ܚܕ ܠܦܬܝܗ. ܘܒܝܬ ܦܪܣܬܕܐ. ܚܡܫ ܐܡܝܢ. ܘܣܦܗ ܕܬܪܥܐ ܡܢ ܠܓܘ
ܡܢ ܦܪܣܬܕܐ ܕܬܪܥܐ. ܩܢܝܐ ܚܕ. * ܘܡܫܚ ܠܦܪܣܬܕܐ ܕܬܪܥܐ. ܬܡܢܐ ܐܡܝܢ
ܘܣܦܗ ܕܬܪܥܐ ܡܢ ܠܓܘ. ܬܪܬܝܢ ܐܡܝܢ. * ܘܓܘܗ ܕܬܪܥܐ ܕܡܕܢܚܐ. ܬܠܬܐ
ܗܪܟܐ. ܘܬܠܬܐ ܗܪܟܐ. ܘܡܫܘܚܬܐ ܚܕܐ ܠܬܠܬܝܗܘܢ. ܘܡܫܘܚܬܐ ܚܕܐ ܠܦܪܣܬܕܐ
ܕܗܪܟܐ ܘܗܪܟܐ. * ܘܡܫܚ ܦܬܝܗ ܕܡܥܠܢܐ ܕܬܪܥܐ. ܥܣܪ ܐܡܝܢ. ܘܐܘܪܟܗ ܕܬܪܥܐ
ܬܠܬܥܣܪܐ ܐܡܝܢ. * ܘܬܚܘܡܐ ܕܩܕܡ ܐܣܦܐ. ܐܡܬܐ ܚܕܐ ܗܪܟܐ ܘܗܪܟܐ. ܘܡܢ
ܠܓܘ ܫܬ ܐܡܝܢ ܗܪܟܐ. ܘܫܬ ܐܡܝܢ ܗܪܟܐ. * ܘܡܫܚܗ ܠܬܪܥܐ ܡܢ ܐܓܪܗ. ܠܐܓܪܗ. ܦܬܝܐ
ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫ ܐܡܝܢ. ܘܬܪܥܐ ܠܘܩܒܠ ܬܪܥܐ. * ܘܥܒܕ ܦܐܬܐ ܕܬܪܥܐ. ܫܬܝܢ
ܐܡܝܢ. ܘܦܐܬܐ ܕܬܪܥܐ ܒܪܝܐ ܫܬܝܢ ܐܡܝܢ. * ܘܦܐܬܐ ܕܬܪܥܐ ܓܘܝܐ. ܚܡܫܝܢ
ܐܡܝܢ. * ܘܟܘܐ ܕܡܨܛܠܢ ܡܢ ܠܓܘ ܘܩܛܝܢܢ ܠܒܪ. ܥܠ ܣܛܐ ܘܥܠ ܦܪܣܬܕܐ
ܕܬܪܥܐ. ܘܟܘܐ ܚܕܪܢ ܗܘܝ ܠܗܝܢ ܡܢ ܠܓܘ. * ܘܐܥܠܢܝ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܘܚܙܝܬ ܕܪܓܐ
ܚܕܪ ܚܕܪ. ܬܠܬܝܢ ܕܪܓܝܢ ܚܕ ܠܥܠ ܡܢ ܚܕ. * ܘܕܪܓܐ ܕܥܠ ܓܒܐ ܕܬܪܥܐ
ܕܠܘܩܒܠ ܐܘܪܟܗܘܢ ܕܕܪܓܐ. * ܘܡܫܚ ܦܬܝܗ ܡܢ ܩܕܡ ܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ. ܡܐܐ ܐܡܝܢ
ܠܡܕܢܚܐ ܘܠܓܪܒܝܐ. * ܘܬܪܥܐ ܕܠܘܩܒܠܗ ܡܢ ܓܪܒܝܐ ܕܕܪܬܐ. ܡܫܚ ܐܘܪܟܗ
ܘܦܬܝܗ.

Itaque vidi murum ambientem domum illam, & in manu viri illius arundinem menſoriam quæ conſtabat ſex ulnis & palmo: menſúſque eſt latitudinem ædificii arundine unâ, & altitudinem ejus arundine unâ. 5

Deinde veniens ad portam quæ reſpiciebat Orientem verſùs, aſcendit per gradus ejus, & menſus eſt veſtibulum portæ arundine unâ in latitudinem ejus, & veſtibulum alterum arundine unâ in latitudinem ejus: 6 Et paraſtadem arundine unâ in longitudnem ejus, & arundine unâ in latitudinem ejus; inter paraſtades autem quinque cubitos; 7 veſtibulum verò portæ intra paraſtades portæ arundinem unam. 8 Et menſus eſt paraſtades portæ octo cubitis, & limen portæ intrinſecùs duobus cubitis. 9 Intra portam Orientalem tres erant *paraſtades* hinc, & tres inde, eademque menſura ternis illis, & dimenſio eadem paraſtadibus quæ erant hinc inde. 10 Menſus eſt etiam latitudinem oſtii portæ decem cubitorum, & longitudinem portæ tredecim cubitorum. 11 Terminus autem qui erat ante limen, unius cubiti hinc inde; intrinſecùs verò ſex cubitorum hinc, & ſex cubitorum inde. 12 Ita menſus eſt portam ab *uno* ipſius tecto ad *alterum* ipſius tectum, latitudine vigintiquinque cubitorum: & porta erat è regione portæ. 13 Structura frontis portæ erat ſexaginta cubitorum, & frons alterius portæ exterioris ſexaginta cubitorum; 14 Frons autem portæ interioris quinquaginta cubitorum. 15 Feneſtræ intrinſecùs obliquæ, extrinſecùs arctæ ſuper epiſtylium & ſuper paraſtades portæ, & feneſtræ circundabant ea intrinſecùs. 16 Deinde introduxit me in atrium exterius, ubi vidi gradus circunquaque, triginta gradus, unum ſuper alterum, 17 Et gradus qui erant ſecus januam quæ reſpiciebat longitudinem graduum. 18 Menſus etiam eſt latitudinem ejus à fronte januæ atrii centum cubitos, ad Orientem & Aquilonem. 19 Et januæ huic oppoſitæ ab Aquilonari parte atrii, menſus eſt longitudinem atque latitudinem: 20

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح الثالث والعشرون * وإذا سور من خارج البيت يحيط به * وبيد الرجل
قصبة قياس ستة أذرع بالذراع وفتر * فقاس البناء عرضا مساو للقصبة * وارتفاعه مساو للقصبة *
* ودخل الى الباب الناظر نحو المشرق في سبعة درج * وقاس التاء ستة من هاهنا ومن هاهنا *
والام الباب مساو للقصبة * والتاء مساو للقصبة طولا * ومساو للقصبة عرضا * والام بين التاء
ستة أذرع * والتاء الثاني مساو للقصبة عرضا * والام خمسة أذرع * والتاء الثالث مساو للقصبة
طولا * ومساو للقصبة عرضا * والام الدهليز قريب الام الباب من داخل مساو للقصبة * وقاس
الام الباب ثمانية أذرع * والاو عشر أذرع * والام الباب من داخل * وتاء الباب تاء مقابل *
ثلاثة من ههنا وثلاثة من هاهنا * وقياس واحد للثلاثة * وقياس واحد للالام من هاهنا ومن
هاهنا * وقاس عرض باب الدهليز عشر أذرع * وسعة الدهليز ثلاثة عشر ذراعا * وذراع يجمع
لوجه التاء * ذراع واحد * وذراع واحد حدّ من هاهنا ومن هاهنا * والتاء ستة أذرع من هاهنا
وستة أذرع من هاهنا * وقاس الباب من سور التاء الى حائط التاء عرضا * خمسة وعشرين ذراعا *
هذا الباب الى الباب * ومعقمة الام الباب من خارج * خمسة وعشرين ذراعا * وتاء الباب يحيط *
* ومعقمة الباب من خارج * الى معقمة باب الام الباب من داخل * ثمانية أذرع * وطاقات خفية
على التاء * من داخل باب الدار من حولها * وهكذا للالام كوى تحيط من داخل * وعلى الالام
نخل من هاهنا ومن ههنا * وأدخلني الى الدار الداخلة * وإذا خزاين * وثلاثون درجة حول
الدار * وعماريات في الدرج * وأروقة في ظهر الابواب * بطول الابواب * الدرجة للسفل * وقاس
عرض الدار من معقمة الباب الخارج من داخل الى معقمة الباب الناظر الى خارج * ماية ذراع *
الناظر نحو المشارق * وأدخلني الى الجربياء * وإذا باب ناظر نحو الجربياء في الدار الخارجة *
وقاسه طولا وعرضا *

Textus vigeſimus tertius.

En igitur murum ab extima domûs parte, ambientem illam; & in manu viri illius calamum, menſuram videlicet *ſex cubitorum in cubito, & ſpithamæ. Et menſus eſt ædificii latitudinem æqualem calamo, & altitudinem ejus æqualem calamo:* 5 *Tum ad portam quæ reſpicit verſùs Orientem, per ſeptem gradus ingreſſus, menſus eſt Thaim* (i. thalamos) *ſex hinc inde. Ulam* (i. veſtibulum) *portæ æquale erat calamo;* 6 *Et Thaa æqualis calamo longitudine, & æqualis calamo latitudine: Ulam autem inter Thaim, ſex cubitorum. Thaa ſecundus æqualis calamo altitudine: & Ulam quinque cubitorum.* 7 *Thaa verò tertius æqualis erat calamo longitudine, & æqualis calamo latitudine. Ulam autem porticûs vicinæ Ulamo portæ intrinſecùs æqualis calamo.* 8 *Menſus eſt etiam Ulam portæ, octo cubitorum: & Ælau* (i. poſtes ejus) *decem cubitorum: & Ulam portæ intrinſecùs.* 9 *Thaim portæ, thaim erant ſeſe reſpicientes, tres hinc, & tres inde; eademque menſura ternis: eadem quoque menſura Ulam hinc inde.* 10 *Deinde menſus eſt latitudinem oſtii porticûs, decem cubitorum; amplitudinem verò porticûs, tredecim cubitorum:* 11 *Et cubitus jungebatur è regione Thaim, cubitus* videlicet *unus. Cubiti unius erant paraſtades ejus hinc inde: Thaim autem ſex cubitorum hinc, & ſex cubitorum inde.* 12 *Et menſus eſt oſtium à muro Thaa* unius *uſque ad parietem Thaa* alterius *in latitudinem, vigintiquinque cubitorum. Hujuſmodi erat* menſura *ab oſtio ad oſtium.* 13 *Podion Ulam portæ extrinſecùs, vigintiquinque cubitorum: & Thaim portæ erant in circuitu:* 14 *Podion verò portæ extrinſecùs uſque ad podion oſtii Ulam portæ intrinſecùs, octo cubitorum.* 15 *Feneſtellæ ſecretæ erant ſuper Thaim intra portam atrii circunquaque: & pari modo Ulam feneſtellas habebat intrinſecùs circunquaque: & ſuper Ulam, palmæ* cernebantur *hinc inde.* 16 *Poſtea introduxit me in atrium interius, & ecce cellas, & triginta gradus circa atrium, & cancellos in gradibus,* 17 *Et porticus in tergo portarum: pro longitudine portarum erat gradus* quilibet *ad imum uſque.* 18 *Et menſus eſt latitudinem atrii à podio portæ exterioris intrinſecùs, uſque ad podion portæ reſpicientis extra, centum cubitos, reſpicientis verſùs Oriente.* 19 *Deinde introduxit me in* partem *Aquilonarem & ecce portam reſpicientem verſùs Aquilonem in atrio exteriori; & menſus eſt eam in longitudine et latitudinem.* 20

יחזקאל: מ

ejus *vestibula* &,ejus postes & , inde tres & ,hinc tres ejus thalami Et
21 וְתָאָו שְׁלוֹשָׁה מִפּוֹ וּשְׁלֹשָׁה מִפּוֹ וְאֵלָו וְאֵלַמָּו
cubitorum quinquaginta : primæ portæ mensuram secundùm *fuit*
הָיָה כְּמִדַּת הַשַּׁעַר הָרִאשׁוֹן חֲמִשִּׁים אַמָּה
.*cubito in* viginti & quinque latitudo & , ejus longitudo
אָרְכּוֹ וְרֹחַב חָמֵשׁ וְעֶשְׂרִים בָּאַמָּה׃
mensuram secundùm ejus palmæ & , ejus *vestibula* & , ejus fenestræ Et
22 וְחַלּוֹנָו וְאֵילַמָּו וְתִמֹרָו כְּמִדַּת
ascendent septem *gradibus in* & : Orientis viam *ej⁹* facies cujus , portæ
הַשַּׁעַר אֲשֶׁר פָּנָיו דֶּרֶךְ הַקָּדִים וּבְמַעֲלוֹת שֶׁבַע יַעֲלוּ־
interioris atrii porta Et .*eorum facies ad* ejus *vestibula* & , *ea in*
23 בוֹ וְאֵילַמָּו לִפְנֵיהֶם׃ וְשַׁעַר לֶחָצֵר הַפְּנִימִי
porta à est mensus & : *Orientem &* ,*Aquilonem ad* portam contra
נֶגֶד הַשַּׁעַר לַצָּפוֹן וְלַקָּדִים וַיָּמָד מִשַּׁעַר
,*Austri* viam fecit pergere me Et .cubitos centum portam ad
24 אֶל־שַׁעַר מֵאָה אַמָּה׃ וַיּוֹלִכֵנִי דֶּרֶךְ הַדָּרוֹם
ejus *vestibula* & ,ejus postes est mensus & : *Austri* viam porta ecce &
וְהִנֵּה־שַׁעַר דֶּרֶךְ הַדָּרוֹם וּמָדַד אֵילָו וְאֵילַמָּו
circum ejus *vestibula* & , *ei* fenestræ Et .has mensuras juxta
25 כַּמִּדּוֹת הָאֵלֶּה׃ וְחַלּוֹנִים לוֹ וּלְאֵילַמָּו סָבִיב ׀
,longitudo cubitorum quinquaginta : istæ fenestræ sicut , circa
סָבִיב כְּהַחַלֹּנוֹת הָאֵלֶּה חֲמִשִּׁים אַמָּה אֹרֶךְ
,ej⁹ gradus septem gradus Et .cubitorum viginti & quinque latitudo &
26 וְרֹחַב חָמֵשׁ וְעֶשְׂרִים אַמָּה׃ וּמַעֲלוֹת שִׁבְעָה עֹלוֹתוֹ
inde *una* & , hinc una , ei palmæ & : *eorũ facies ad* ejus *vestibula* &
וְאֵילַמָּו לִפְנֵיהֶם וְתִמֹּרִים לוֹ אֶחָד מִפּוֹ וְאֶחָד מִפּוֹ
est mensus & ;*Austri* viam interioris atrii portam Et .ej⁹ poste in
27 אֶל־אֵילָו׃ וְשַׁעַר לֶחָצֵר הַפְּנִימִי דֶּרֶךְ הַדָּרוֹם וַיָּמָד
me introduxit Et .cubitos centum , *Austri* viam portam ad porta à
28 מִשַּׁעַר אֶל־הַשַּׁעַר דֶּרֶךְ הַדָּרוֹם מֵאָה אַמּוֹת׃ וַיְבִיאֵנִי
Austri portam est mensus & : *Austri porta in* interius atrium in
אֶל־חָצֵר הַפְּנִימִי בְּשַׁעַר הַדָּרוֹם וַיָּמָד אֶת־הַשַּׁעַר הַדָּרוֹם
ej⁹ *vestibula* & ,ej⁹ postes &,ej⁹ thalami Et .has mensuras secundùm
29 כַּמִּדּוֹת הָאֵלֶּה׃ וְתָאָו וְאֵלָו וְאֵלַמָּו
, circa circum ej⁹ *vestibula* & , *ei* fenestræ & : istas mensuras sećdm
כַּמִּדּוֹת הָאֵלֶּה וְחַלּוֹנוֹת לוֹ וּלְאֵלַמָּו סָבִיב ׀ סָבִיב
quinque & viginti latitudinis & ,longitudinis cubitorum quinquaginta
חֲמִשִּׁים אַמָּה אֹרֶךְ וְרֹחַב עֶשְׂרִים וְחָמֵשׁ
viginti & quinque longitudinis , circa circum *vestibula* Et .cubitorum
30 אַמּוֹת׃ וְאֵלַמּוֹת סָבִיב ׀ סָבִיב אֹרֶךְ חָמֵשׁ וְעֶשְׂרִים
atrium ad ejus *vestibula* Et .cubitorũ quinque latitudinis & ,cubitorũ
31 אַמָּה וְרֹחַב חָמֵשׁ אַמּוֹת׃ וְאֵלַמָּו אֶל־חָצֵר
.ejus gradus octo gradus & ; ejus *postes ad* palmæ & , *exterius*
הַחִיצֹנָה וְתִמֹרִים אֶל־אֵילָו וּמַעֲלוֹת שְׁמוֹנֶה מַעֲלוֹ׃
est mensus & : *Orientis via* interius atrium in me introduxit Et
32 וַיְבִיאֵנִי אֶל־הֶחָצֵר הַפְּנִימִי דֶּרֶךְ הַקָּדִים וַיָּמָד
,ejus thalamos Et .has mensuras secundùm portam
33 אֶת־הַשַּׁעַר כַּמִּדּוֹת הָאֵלֶּה׃ וְתָאָו
fenestræ & , istas mensuras secundùm ejus *vestibula* & ,ejus postes &
וְאֵלָו וְאֵלַמָּו כַּמִּדּוֹת הָאֵלֶּה וְחַלּוֹנוֹת
,cubitorum quinquaginta longitudinis ; circa circum ejus *vestibulis* & ,*ei*
לוֹ וּלְאֵלַמָּו סָבִיב ׀ סָבִיב אֹרֶךְ חֲמִשִּׁים אַמָּה
ejus *vestibula* Et .cubitorum viginti & quinque latitudinis &
34 וְרֹחַב חָמֵשׁ וְעֶשְׂרִים אַמָּה׃ וְאֵלַמָּו
octo & : inde & hinc ejus poste in palmæ & , exteriori atrio
לֶחָצֵר הַחִיצוֹנָה וְתִמֹרִים אֶל־אֵלָו מִפּוֹ וּמִפּוֹ וּשְׁמֹנֶה
: *Aquilonis* portam in me introduxit Et .ejus gradus , gradus
35 מַעֲלוֹת מַעֲלוֹ׃ וַיְבִיאֵנִי אֶל־שַׁעַר הַצָּפוֹן
.istas mensuras secundùm est mensus &
וּמָדַד כַּמִּדּוֹת הָאֵלֶּה׃

Versio VULG. LAT.

21 Et thalamos ejus tres hinc, & tres indé : & frontem ejus, & vestibulum ej⁹ secundùm mensuram portæ prioris, quinquaginta cubitorum longitudinem ej⁹, & latitudinem viginti quinque cubitorum. 22 Fenestræ autem ej⁹, & vestibulum, & sculpturæ secundùm mensuram portæ, quæ respiciebat ad Orientem : & septem graduum erat ascensus ej⁹, & vestibulum ante eam. 23 Et porta atrii interioris contra portam Aquilonis, & Orientalem : & mensus est à porta usque ad portam centum cubitos. 24 Et eduxit me ad viam Australem : & ecce porta quæ respiciebat ad Austrum: & mensus est frontem ej⁹, & vestibulum ejus, juxta mensuras superiores. 25 Et fenestras ej⁹, & vestibula in circuitu, sicut fenestras cæteras : quinquaginta cubitorum longitudine, & latitudine viginti quinque cubitorum. 26 Et in gradib⁹ septem ascendebatur ad eam : & vestibulum ante fores ej⁹: & cælatæ palmæ erant, una hinc, & altera indè in 27 fronte ej⁹. Et porta atrii interioris in via Australi: & mensus est à porta usque ad portam in 28 via Australi, centum cubitos. Et introduxit me in atrium interius ad portam Australem : & mensus est portam juxta mensuras superiores. 29 Thalamum ej⁹, & frontem ej⁹, & vestibulum ej⁹ eisdem mensuris : & fenestras ejus, & vestibulum ejus in circuitu, quinquaginta cubitos longitudinis, & latitudinis vi- 30 gintiquinque cubitos. Et vestibulum per gyrum longitudine vigintiquinque cubitorum, & la- 31 titudine quinque cubitorum. Et vestibulum ejus ad atrium exterius, & palmas ejus in fronte : & octo gradus erant, quibus ascen- 32 debatur per eam. Et introduxit me in atrium interius per viam Orientalem : & mensus est portam secundùm mensuras su- 33 periores. Thalamum ejus, & frontem ejus, & vestibulum ej⁹, sicut suprá : & fenestras ej⁹, & vestibula ej⁹ in circuitu, longitudine quinquaginta cubitorum, et latitudine vigintiquinq; cubi- 34 torum. Et vestibulum ejus, id est, atrii exterioris : et palmæ cælatæ in fronte ej⁹ hinc et indé : et in octo gradibus ascensus ej⁹. 35 Et introduxit me ad portam, quæ respiciebat ad Aquilonem : et mensus est secundùm mensuras superiores.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

21 Καὶ τὸ θεὲ τρεῖς ἔνθεν ϗ τρεῖς ἔνθεν, καὶ (κ) τὸ αἰλεὺ, ϗ τὰ αἰλαμμὼν, ϗ τοὺς φοίνικας αὐτῆς. ϗ ἐγένετο κατὰ τὰ μέτρα τῆς πύλης τῆς βλεπούσης κατὰ ἀνατολὰς, (λ) πηχῶν πεντήκοντα τὸ μῆκος αὐτῆς, ϗ (μ) πηχῶν εἰκοσιπέντε τὸ εὖρος αὐτῆς· 22 Καὶ αἱ θυρίδες αὐτῆς, ϗ τὰ αἰλαμμὼν, ϗ οἱ φοίνικες αὐτῆς καθὼς ἡ πύλη ἡ βλέπουσα (ˉ) κατὰ ἀνατολάς· ϗ ἐν ἑπτὰ (ν) κλημακτῆρσιν ἀνέβαινον ἐπ᾽ αὐτὸν, ϗ τὰ αἰλαμμὼ ἔσωθεν· 23 Καὶ (ξ) πύλη τῇ αὐλῇ τῇ ἐσωτέρᾳ βλέπουσα ἐπὶ πύλην τοῦ Βορρᾶ, ὃν τρόπον τῆς πύλης τῆς βλεπούσης (˜) κατὰ ἀνατολάς. ϗ διεμέτρησε τὴν αὐλὴν ἀπὸ πύλης ἐπὶ πύλην, πήχεις ἑκατόν. 24 Καὶ (ο) ἤγαγέ με κατὰ Νότον, ϗ ἰδοὺ πύλη βλέπουσα πρὸς Νότον, ϗ διεμέτρησεν αὐτὴν, ϗ τὰ θεὲ, ϗ τὰ αἰλεὺ, ϗ τὰ (π) αἰλαμμὼν, κατὰ τὰ μέτρα (ρ) ταῦτα. 25 Καὶ αἱ θυρίδες αὐτῆς, ϗ τὰ (σ) αἰλαμμὼν κυκλόθεν, καθὼς αἱ θυρίδες τοῦ αἰλάμ, (˙) πηχῶν πεντήκοντα τὸ μῆκος αὐτῆς, ϗ (τ) πηχῶν εἰκοσιπέντε τὸ εὖρος 26 αὐτῆς, Καὶ ἑπτὰ (υ) κλημακτῆρες αὐτῇ, ϗ αἰλαμμὼν ἔσωθεν, ϗ φοίνικες (φ) αὐτῇ, 27 εἷς ἔνθεν ϗ εἷς ἔνθεν ἐπὶ τὰ αἰλεῦ. Καὶ πύλη κατέναντι τῆς πύλης τῆς αὐλῆς τῆς ἐσωτέρας πρὸς Νότον. ϗ διεμέτρησε τὴν αὐλὴν ἀπὸ πύλης ἐπὶ πύλην, πήχεις ἑκατὸν (χ) τὸ εὖρος πρὸς (ψ) Νότον. 28 Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν τῆς πύλης τῆς πρὸς Νότον, ϗ διεμέτρησε τὴν πύλην κατὰ τὰ μέτρα (ω) ταῦτα, 29 Καὶ τὰ 30 θεὲ, ϗ τὰ αἰλεῦ, ϗ τὰ (α) αἰλαμμὼν κατὰ τὰ μέτρα (β) ταῦτα, ϗ θυρίδες αὐτῇ, ϗ (γ) τῷ αἰλαμμὼν κύκλῳ, πήχεις πεντήκοντα τὸ μῆκος αὐτῆς, ϗ τὸ (δ) εὖρος πήχεις εἰκοσιπέντε 31 (ε) Τοῦ αἰλὰμ εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐξωτέραν, ϗ φοίνικες τῷ αἰλεῦ, ϗ ὀκτὼ 32 (ζ) κλημακτῆρες. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν πύλην τὴν βλέπουσαν (¨) κατὰ ἀνατολὰς, καὶ διεμέτρησεν αὐτὴν κατὰ τὰ μέτρα ταῦτα, 33 Καὶ τὰ θεὲ, ϗ τὰ αἰλεῦ, ϗ τὰ (η) αἰλαμμὼν κατὰ τὰ μέτρα ταῦτα, ϗ θυρίδες αὐτῇ ϗ αἰλαμμὼν κύκλῳ, πήχεις πεντήκοντα μῆκος αὐτῆς, ϗ (˜) εὖρος αὐτῆς πήχεις εἰκοσιπέντε· 34 Καὶ (θ) αἰλαμμὼν εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν, ϗ φοίνικες ἐπὶ τοῦ αἰλεῦ ἔνθεν ϗ 35 ἔνθεν, ϗ ὀκτὼ (ι) κλημακτῆρες αὐτῇ. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν πύλην τὴν πρὸς Βορρᾶν, ϗ διεμέτρησε κατὰ τὰ μέτρα ταῦτα,

Et (u) Thee tres hinc, & tres 21 *indé : & Æleu, & Ælammon, & palmas ejus. Et factum est secundùm mensuras portæ, quæ respicit Orientem, quinquaginta cubitorum longitudo ejus, & latitudo ejus vigintiquinque cubitorum : Et fenestræ ejus, &* 22 *Ælammon, & palmæ ejus, sicut porta, quæ respiciebat Orientem. Et in gradibus septem ascendebant ad eum : & Ælammon intrinsecus: Et porta atrii interioris* 23 *respiciens ad portam Aquilonis, sicut porta, quæ respicit ad Orientem. Et mensus est atrium à porta ad portam, cubitos centum. Et duxit me (x) ad Au-* 24 *strum: & ecce porta respiciens ad Austrum. Et mensus est eam, & Thee, & Æleu, & Ælammon, juxta mensuras has. Et fenestræ ejus, & Ælammon* 25 *in circuitu, sicut fenestræ Ælam: cubitorum quinquaginta longitudo ejus, & cubitorum vigintiquinque latitudo ejus: Et se-* 26 *ptem gradus ei, & Ælammon intrinsecus, & palmæ ei, una hinc, & una indè super Æleu. Et porta è (y) regione portæ a-* 27 *trii interioris ad Austrum. Et mensus est atrium à porta ad portam, cubitos centum latitudine ad Austrum. Et introdu-* 28 *xit me in atrium interius portæ, quæ ad Austrum: & mensus est portam juxta mensuras has,* 29 *Et Thee, & Æleu, & Ælam-* 30 *mon, juxta mensuras has : & fenestræ ei, & Ælammon in circuitu, cubitorum quinquaginta longitudo ejus, & latitudo cubitorum vigintiquinque. Ipsius* 31 *Ælam in atrium exterius, & palmæ Æleu, & octo gradus. Et (z) introduxit me ad portam* 32 *respicientem ad Orientem: & mensus est eam juxta mensuras has,* 33 *Et Thee, & Æleu, & Ælammon, juxta mensuras has: & fenestræ ei, & Ælammon in circuitu, cubitorum quinquaginta longitudo ejus; & latitudo ejus cubitorum vigintiquinque :* 34 *Et Ælammon in atrium interius, & palmæ super Æleu hinc, & indé : & octo gradus ei.* 35 *Et introduxit me ad portam, quæ ad Aquilonem: & mensus est juxta mensuras has.*

MS. A. (κ) τὰ ἐλεοῦ ϗ τὸ ἐλαμμὼν, (λ) πήχεων (μ) πήχεων (ˉ) καὶ (ν) κλιμακτῆρσιν ἀνέβαινον ἐπ᾽ αὐτὴν, (ξ) τῇ πύλῃ (˜) καὶ (ο) εἰσήγαγέν (π) αἰλαμμὼθ, (ρ) τὰ αὐτά. (σ) αἰλαμμὼθ (˙) πήχεων (τ) πήχεων (υ) κλιμακτῆρες αὐτῇ, ϗ ἐλαμμὼθ (φ) αὐτῆς, (χ) ϗ τὸ (ψ) Νότον πήχεις εἰκοσιπέντε. Καὶ (ω) τὰ αὐτὰ, (α) αἰλαμμὼθ (β) τὰ αὐτὰ, (γ) τὰ αἰλαμμὼθ (δ) εὖρος αὐτῆς (ε) ϗ αἰλαμμὼθ κύκλῳ μῆκος πεντεκαιείκοσι πήχεων, ϗ πλάτος πέντε πήχεων, ϗ αἰλαμμὼν εἰς τὴν αὐλὴν (ζ) κλιμακτῆρες. (¨) καὶ (η) αἰλαμμὼθ κατὰ τὰ μέτρα τὰ αὐτὰ, ϗ αἱ θυρίδες αὐτῆς, ϗ τὰ αἰλαμμὼθ (˜) τὸ εὖρος (θ) αἰλαμμὼθ (ι) κλιμακτῆρες

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

21 וְתִוּוהִי תְּלָתָא מִכָּא וּתְלָתָא מִכָּא וְאֵלוֹהִי וְאוּלַמּוֹהִי הֲוָת כְּמִשְׁחַת תַּרְעָא קַדְמָאָה
22 חַמְשִׁין אַמִּין אוּרְכֵּיהּ וּפוּתְיָא עֶסְרִין וַחֲמֵשׁ אַמִּין׃ וְכַוּוהִי וְאוּלַמּוֹהִי וְכוֹתְרָתֵיהּ
כְּמִשְׁחַת תַּרְעָא דְּפָתִיחַ לְאוֹרַח מַדִּנְחָא וּבְדַרְגִּין שִׁבְעָא סָלְקִין בֵּיהּ וְאוּלַמּוֹהִי
23 קֳדָמֵיהוֹן׃ וְתַרְעָא לְדַרְתָּא גַוָּיתָא לְקָבֵיל תַּרְעָא דְּפָתִיחַ לְצִפּוּנָא וּלְמַדִּנְחָא וּמְשַׁח
24 מִתְּרַע לִתְרַע מְאָה אַמִּין׃ וְאוֹבְלַנִי בְּאוֹרַח דָּרוֹמָא וְהָא תַּרְעָא חַד פָּתִיחַ לְאוֹרַח
25 דָּרוֹמָא וּמְשַׁח אֵלוֹהִי וְאוּלַמּוֹהִי כְּמִשְׁחָתָא הָאִלֵּין׃ וְכַוִּין לֵיהּ וּלְאוּלַמּוֹהִי סְחוֹר
26 סְחוֹר כְּכַוַּיָּא הָאִלֵּין חַמְשִׁין אַמִּין אוּרְכָּא וּפוּתְיָא עֶסְרִין וַחֲמֵשׁ אַמִּין׃ וְדַרְגִּין שִׁבְעָא
27 דַּרְגּוֹהִי וְאוּלַמּוֹהִי קֳדָמֵיהוֹן וְכוֹתְרָן לֵיהּ חֲדָא מִכָּא וַחֲדָא מִכָּא עַל אֵלוֹהִי׃ וְתַרְעָא
לְדַרְתָּא גַוָּיתָא בְּאוֹרַח דָּרוֹמָא וּמְשַׁח מִתְּרַע לִתְרַע בְּאוֹרַח דָּרוֹמָא מְאָה אַמִּין׃
28 וְאַעֲלַנִי לְדַרְתָּא גַוָּיתָא בִּתְרַע דָּרוֹמָא וּמְשַׁח יַת תְּרַע דָּרוֹמָא כְּמִשְׁחָתָא הָאִלֵּין׃
29 וְתִוּוהִי וְאֵלוֹהִי וְאוּלַמּוֹהִי כְּמִשְׁחָתָא הָאִלֵּין וְכַוִּין לֵהּ וּלְאוּלַמּוֹהִי סְחוֹר סְחוֹר חַמְשִׁין
30 אַמִּין אוּרְכָּא וּפוּתְיָא עֶסְרִין וַחֲמֵשׁ אַמִּין׃ וְאוּלַמַּיָּא סְחוֹר סְחוֹר אוּרְכָּא עֶסְרִין
31 וַחֲמֵשׁ אַמִּין וּפוּתְיָא חֲמֵשׁ אַמִּין׃ וְאוּלַמּוֹהִי לְדַרְתָּא בָּרַיְתָא וְכוֹתְרָן עַל אֵלוֹהִי
32 וְדַרְגִּין תְּמַנְיָא דַּרְגּוֹהִי׃ וְאַעֲלַנִי לְדַרְתָּא גַוָּיתָא בְּאוֹרַח מַדִּנְחָא וּמְשַׁח יַת תַּרְעָא
33 כְּמִשְׁחָתָא הָאִלֵּין׃ וְתִוּוהִי וְאֵלוֹהִי וְאוּלַמּוֹהִי כְּמִשְׁחָתָא הָאִלֵּין וְכַוִּין לֵיהּ וּלְאוּלַמּוֹהִי
34 סְחוֹר סְחוֹר אוּרְכָּא חַמְשִׁין אַמִּין וּפוּתְיָא עֶסְרִין וַחֲמֵשׁ אַמִּין׃ וְאוּלַמּוֹהִי לְדַרְתָּא
35 בָּרַיְתָא וְכוֹתְרָן עַל אֵלוֹהִי מִכָּא וּמִכָּא וּתְמַנְיָא דַּרְגִּין דַּרְגּוֹהִי׃ וְאַעֲלַנִי לִתְרַע צִפּוּנָא
וּמְשַׁח כְּמִשְׁחָתָא הָאִלֵּין׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et thalami ejus tres hinc & tres inde ; & frontes ejus, & vestibula ejus secundùm mensuram portæ prioris erant: quinquaginta cubitorum erat longitudo ejus, & latitudo vigintiquinque cubitorum. 22 Et fenestræ ejus & vestibula ejus, & capitella ejus juxta mensuram portæ, quæ aperta erat ad viam Orientalem. Et septem gradibus ascendebant per eam, & vestibula ejus ante eos. 23 Et porta atrii interioris contra portam quæ aperta erat ad Aquilonem & Orientem ; & mensus est à porta usque ad portam centum cubitos. 24 Et duxit me per viam Australem, & ecce porta una aperta ad viam Australem. Et mensus est frontes ejus, & vestibula ejus juxta mensuras istas. 25 Et fenestræ erant ei & vestibulis ejus per circuitum, sicut fenestræ istæ : quinquaginta cubitorum longitudinis, & latitudinis viginti quinque cubitorum. 26 Et septem gradus erant gradus ejus, & vestibula ejus ante eos, & capitella ei erant unum hinc & unum inde super postes ejus. 27 Et porta atrii interioris in via Australi. Et mensus est à porta usque ad portam in via Australi, centum cubitos. 28 Et introduxit me ad atrium interius per portam Australem ; & mensus est portam Australem juxta mensuras istas: 29 Et thalamos ejus, & frontes ejus, & vestibula ejus juxta mensuras istas. Et fenestræ ei erant & vestibulis ejus in circuitu quinquaginta cubitorum longitudinis, & latitudinis viginti quinque cubitorum. 30 Et vestibula per circuitum longitudinis vigintiquinque cubitorum, & latitudinis quinque cubitorum. 31 Et vestibula ejus [*spectabant*] ad atrium exterius, & capitella super postes ejus, sed octo gradus erant gradus ejus. 32 Et introduxit me in atrium interius per viam Orientalem : & mensus est portam secundùm mensuras istas: 33 Et thalamos ejus, & postes ejus, & vestibula ejus secundùm mensuras istas : & fenestræ erant ei, et vestibulis ejus per circuitum longitudinis quinquaginta cubitorum, et latitudinis viginti quinque cubitorum, 34 Et vestibula ejus [*spectabant*] ad atrium exterius, et capitella super postes ejus hinc & inde, et octo gradus erant gradus ejus. 35 Et introduxit me ad portam Aquilonarem, et mensus est juxta mensuras istas.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܡܫܘܚܬܗ ܬܠܬܐ ܡܟܐ ܘܬܠܬܐ ܡܟܐ. ܐܝܟ ܡܫܘܚܬܗ ܕܬܪܥܐ ܩܕܡܝܐ. ܚܡܫܝܢ
ܐܡܝܢ ܐܘܪܟܗ. ܘܦܬܝܗ ܥܣܪܝܢ ܐܡܝܢ ܘܚܡܫ. * ܘܟܘܝܗ ܘܦܪܣܛܕܘܣܘܗܝ. ܐܝܟ
ܡܫܘܚܬܐ ܕܬܪܥܐ ܕܚܙܐ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܒܫܒܥ ܕܪܓܝܢ ܣܠܩܝܢ ܠܗ. ܘܐܣܛܘܦܐ ܩܕܡ
ܦܪܣܛܕܘܣܘܗܝ. * ܘܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܕܠܘܩܒܠ ܬܪܥܐ ܕܒܝܬ ܓܪܒܝܐ ܠܡܕܢܚܐ. ܡܫܚ ܡܢ
ܬܪܥܐ ܠܬܪܥܐ. ܡܐܐ ܐܡܝܢ. * ܘܐܘܒܠܢܝ ܠܐܘܪܚܐ ܕܬܝܡܢܐ. ܘܚܙܝܬܗ ܠܬܪܥܐ ܕܬܝܡܢܐ.
ܘܡܫܚ ܦܪܣܛܕܘܣܘܗܝ ܘܐܣܛܘܢܘܗܝ. ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܡܫܘܚܬܐ. * ܘܟܘܐ ܐܝܬ ܠܗ
ܘܠܦܪܣܛܕܘܣܘܗܝ ܚܕܪ ܚܕܪ. ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܟܘܐ. ܘܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ ܐܘܪܟܗ. ܘܥܣܪܝܢ
ܘܚܡܫ ܦܬܝܗ. * ܘܒܫܒܥ ܕܪܓܝܢ ܣܠܩܝܢ ܠܗ. ܘܐܣܛܘܦܐ ܩܕܡ ܦܪܣܛܕܘܣܘܗܝ. ܘܕܩܠܐ
ܐܝܬ ܠܗ. ܚܕ ܡܟܐ ܘܚܕ ܡܟܐ. ܥܠ ܦܪܣܛܕܘܣܘܗܝ. * ܘܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܕܠܘܩܒܠ
ܕܬܝܡܢܐ. ܡܫܚ ܡܢ ܬܪܥܐ ܠܬܪܥܐ. ܡܐܐ ܐܡܝܢ. * ܘܐܥܠܢܝ ܠܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܠܬܪܥܐ
ܕܬܝܡܢܐ. ܘܡܫܚܗ ܠܬܪܥܐ ܬܝܡܢܝܐ. ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܡܫܘܚܬܐ. * ܘܓܘܝܗ
ܘܦܪܣܛܕܘܣܘܗܝ ܘܐܣܟܦܬܗ. ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܐܚܪܢܝܬܐ ܡܫܘܚܬܐ. ܘܟܘܐ ܐܝܬ ܠܗ
ܘܠܦܪܣܛܕܘܣܘܗܝ ܚܕܪ ܚܕܪ. ܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ ܐܘܪܟܗ. ܘܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫ ܦܬܝܗ.
* ܘܐܠܡܘܬܗ ܚܕܪ ܚܕܪ ܠܗ. ܐܘܪܟܗܘܢ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗܘܢ ܚܡܫ
ܐܡܝܢ. * ܘܦܪܣܛܕܘܣܝܗ ܕܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܘܕܩܠܐ ܐܝܬ ܒܗܘܢ. ܘܕܪܓܝܗܘܢ ܬܡܢܐ. * ܘܐܥܠܢܝ
ܠܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܠܐܘܪܚܐ ܕܡܕܢܚܐ. ܘܡܫܚܗ ܠܬܪܥܐ. ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܡܫܘܚܬܐ.
* ܘܓܘܝܗ ܘܦܪܣܛܕܘܣܘܗܝ ܘܐܣܟܦܬܗ. ܘܟܘܐ ܐܝܬ ܠܗ ܘܠܦܪܣܛܕܘܣܘܗܝ. ܚܕܪ ܚܕܪ.
ܐܘܪܟܐ ܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܐ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫ ܐܡܝܢ. * ܘܐܣܛܘܦܐ ܕܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ.
ܘܕܩܠܐ ܐܝܬ ܒܦܪܣܛܕܘܣܘܗܝ. ܡܟܐ ܘܡܟܐ. ܘܬܡܢܐ ܕܪܓܝܢ ܠܗ. * ܘܐܥܠܢܝ ܠܬܪܥܐ
ܕܓܪܒܝܐ. ܘܡܫܚ ܐܝܟ ܗܠܝܢ ܡܫܘܚܬܐ.

Fuitque menſura ejus, triū hinc & trium inde, 21
juxta menſuram januæ primæ : quinquaginta
cubitorum longitudo ejus, latitudo verò
vigintiquinque cubitorū. Feneſtræ & paraſtades 22
ejus, ejuſdem erant menſuræ cum iis januæ
quæ reſpiciebat Orientem: ſeptem gradibꝰ aſcendebatur
ad eam, ante quos erat limen. Januas 23
etiā atrii interioris oppoſitas januæ quæ
erat Aquilonē inter & Orientem, menſus eſt;
à janua ad januam centum cubitos. Deinde 24
ꝑduxit me verſùs Meridiem, ubi vidi januam
Meridionalē: & menſꝰ eſt paraſtades & pilas
ejus, iiſdem ac præcedentibus menſuris. Feneſtras 25
hæc *janua* & paraſtades ejus habebāt
circunquaque, ſimiles feneſtris præcedentibꝰ:
& quinquaginta cubitorum erat longitudo ipſius,
latitudo verò vigintiquinque. Septem 26
quoque gradibꝰ ad hanc aſcendebatur, & limen
erat ante ipſam: & palmas habebat, unā
hinc, alterā inde ſuper paraſtades ſuas. Januas 27
etiam atrii interioris, quæ Meridiē verſùs erant,
menſus eſt; à janua ad januam centū cubitos.
Tum introduxit me in atrium interius 28
ꝑ januam Meridionalē, menſúſque eſt januā
Meridionalē iiſdem cum præcedentibꝰ menſuris :
Et pars hujus intima, paraſtades, & limina 29
iſtius erant earundē cum præcedentibus
dimenſionum: Feneſtras tam hæc quàm paraſtades
ejus habebant circunquaque: quinquaginta
cubitorum erat longitudo ejus, latitudo
verò vigintiquinque : Et balauſtia ejus cingebant 30
eam, quorum longitudo erat vigintiquinque
cubitorū, latitudo verò quinque cubitorum.
In paraſtadibus autem atrii exterioris 31
palmæ inerant, & gradus earum octo.
Deinde introduxit me in atrium interiꝰ Orientem 32
verſùs, menſúſque eſt januam ſecundùm
menſuras illas; Et partem ipſius intimam, 33
& paraſtades, atque limina ipſius. Feneſtras
tam ipſa quàm paraſtades ejus habebant
circunquaque : longitudo erat quinquaginta
cubitorū, latitudo verò vigintiquinque
cubitorum : Limen erat *quale* atrii exterioris: 34
palmæ quoque erant in paraſtadibus hinc
inde: habebátque octo gradus. Similiter introduxit 35
me ad portam Aquilonarē, & menſus
eſt ſecundùm prædictas menſuras,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والتاء ثلاثة من ههنا وثلاثة من ههنا * والالاو واللاموث ونخيله * فكان كقياس
الباب الناظر نحو المشارق * خمسون ذراعا طوله * وخمسة وعشرون ذراعا عرضه * وكواه
واللاموث ونخيله * كمثل الباب الناظر نحو المشارق * وصعد في سبعة درج عليه *
واللاموث من داخل * ولباب الدار الداخلة الناظر الى باب الجربياء * كمثل ما
للباب الناظر نحو المشارق * وقاس الدار من الباب الى الباب * مائة ذراع * وادخلني
نحو التيمن * واذا باب ناظر الى التيمن وقاسه * والتاء والالاو واللاموث * كهذه القياسات
بعينها * وكواه واللاموث من حوله * كمثل كوا الالام * خمسون ذراعا طوله * وخمسة
وعشرون ذراعا عرضه * وله سبعة درج * واللاموث من داخل * ونخيله واحدة من ههنا
وواحدة من ههنا على الالاو * وباب قبالة باب الدار الداخلة نحو التيمن * وقاس
الدار من الباب الى الباب مائة ذراع * والعرض نحو التيمن خمسة وعشرون ذراعا *
* وادخلني الى الدار الداخلة التي للباب الذي نحو التيمن * وقاس الباب كهذه
القياسات نفسها * ولها كوى واللاموث داير * خمسون ذراعا طولها * وخمسة وعشرون
ذراعا عرضها * واللاموث تحيطه * خمسة وعشرون ذراعا طولها * وخمسة اذرع عرضها *
* واللاموث للدار الخارجة ونخيل للالاو وثمانية درج * وادخلني الى الباب الناظر
نحو المشارق * وقاسه كهذه القياسات نفسها * والتاء واللالاو واللاموث كهذه
القياسات نفسها * وكواه * واللاموث للدار الداخلة * ونخيل على اللالاو من
ههنا ومن ههنا * وثمانية درج لها * وادخلني الى الباب الذي في الجربياء وقاس
كهذه القياسات *

Et Thaim tres hinc, & tres inde; & Ælau, & Ælammoth, (i. teſtudines) *& palmas ejus : fuitque* (*juxta menſuram reſpicientis verſùs Orientem*) *quinquaginta cubitorum longitudo ejus, & vigintiquinque cubitorum latitudo ejus :* 21
Feneſtræ ejus, & Ælammoth, ejuſque palmæ, ſimiles erant portæ reſpicientis verſùs Orientem : aſcenditque per ſeptem gradus ad eam : & Ælammoth erant intrinſecùs. 22
Porta atrii inferioris Aquilonarem portam reſpiciens, eadem habebat quæ porta reſpiciens Orientem verſùs. Et menſus eſt atrium à porta ad portam, centum cubitos. 23
Deinde introduxit me verſùs Meridiem, & ecce porta reſpiciens Meridiem; menſuſque eſt eam, & Thaa, Ælau, & Ælammoth, juxta eaſdem has menſuras. 24
Feneſtræ ejus, & Ælammoth quæ circa eam, ſimiles erant feneſtris Ulam : quinquaginta cubitorum longitudo ejus, & vigintiquinque cubitorum latitudo ejus. 25
Huic etiam erant ſeptem gradus, & Ælammoth intrinſecùs, palmæque ejus hinc una, inde altera ſuper Ælau : Et porta ex adverſo portæ atrii interioris Meridiem verſùs. 26
Et menſus eſt atrium à porta ad portam, centum cubitos: latitudo verò Meridiem verſùs, vigintiquinque cubitorum. 27
Inde introduxit me in atrium interius portæ quæ erat Meridiem verſùs; & menſus eſt portam ſimilibus omninò menſuris. 28
Feneſtras etiam hoc habebat & Ælammoth circunquaque : quinquaginta cubitorum erat longitudo ejus, & vigintiquinque cubitorum latitudo ejus : 29
Et Ælammoth cingebant illud, vigintiquinque cubitorum longitudine, quinque cubitorum latitudine. 30
Ælammoth etiam habebat atrium exterius, palmas Ælau, et octo gradus. 31
Inde me introduxit ad portam reſpicientem Orientem verſùs, et menſus eſt eam iiſdem prorſùs dimenſionibus. 32
Et Thaa, Ælau, et Ælammoth earundem prorſùs erant dimenſionum, necnon feneſtræ ipſius : 33
Ælammoth quoque habebat atrium interius : et palmæ erant ſuper Ælau hinc inde : et octo gradus habebat. 34
Deinde introduxit me ad portam quæ erat ad Aquilonem, menſuſque eſt ſimiles hiſce dimenſiones, 35

יחזקאל : מ

circum ei feneſtræ & ;ejus *veſtibula* & ,ejus poſtes ;ejus Thalamos
36 תָּאָו אֵלָו וְאֵלַמָּו וְחַלּוֹנוֹת לוֹ סָבִיב׀
quinque latitudinis & ,cubitorum quinquaginta longitudinis ; circa
סָבִיב אֹרֶךְ חֲמִשִּׁים אַמָּה וְרֹחַב חָמֵשׁ
palmæ & ,exteriori atrio ejus poſtes Et .cubitorum viginti &
37 וְעֶשְׂרִים אַמָּה : וְאֵילָו לֶחָצֵר הַחִיצוֹנָה וְתִמֹרִים
.ejus gradus ,gradus octo & : inde & ,hinc ejus poſtibus in
אֶל־אֵילָו מִפּוֹ וּמִפּוֹ וּשְׁמֹנֶה מַעֲלוֹת מַעֲלוֹ :
abluent ibi ;portarum poſtibus in ejus oſtium & ,cubiculum Et
38 וְלִשְׁכָּה וּפִתְחָהּ בְּאֵילִים הַשְּׁעָרִים שָׁם יָדִיחוּ אֶת־
duæ & ,hinc menſæ duæ portæ veſtibulo in Et .*aſcenſionem*
39 הָעֹלָה : וּבְאֻלָם הַשַּׁעַר שְׁנַיִם שֻׁלְחָנוֹת מִפּוֹ וּשְׁנַיִם
,*aſcenſionem* eas *ad* *mactandum* ad ; inde menſæ
שֻׁלְחָנוֹת מִפֹּה לִשְׁחוֹט אֲלֵיהֶם הָעוֹלָה
extra *humerum* ad Et .delicto pro ſacrificiū &,peccato pro ſacrificiū &
40 וְהַחַטָּאת וְהָאָשָׁם : וְאֶל־הַכָּתֵף מִחוּצָה
ad & ;menſæ duæ ,*Aquilonis* portæ oſtium ad ,gradum
לָעוֹלֶה לְפֶתַח הַשַּׁעַר הַצָּפוֹנָה שְׁנַיִם שֻׁלְחָנוֹת וְאֶל־
.menſæ duæ ,portæ veſtibulo in *qui* ,alterum *humerum*
הַכָּתֵף הָאַחֶרֶת אֲשֶׁר לְאֻלָם הַשַּׁעַר שְׁנַיִם שֻׁלְחָנוֹת :
latus ad inde menſæ quatuor & ,hinc menſæ Quatuor
41 אַרְבָּעָה שֻׁלְחָנוֹת מִפֹּה וְאַרְבָּעָה שֻׁלְחָנוֹת מִפֹּה לְכֶתֶף
quatuor Et .*mactabunt* eas *ad* menſæ octo ; portæ
42 הַשָּׁעַר שְׁמוֹנָה שֻׁלְחָנוֹת אֲלֵיהֶם יִשְׁחָטוּ : וְאַרְבָּעָה
unius cubiti longitudinis *dolationis* lapidibus *aſcenſionem* ad menſæ
שֻׁלְחָנוֹת לָעוֹלָה אַבְנֵי גָזִית אֹרֶךְ אַמָּה אַחַת
cubiti altitudinis & ; dimidii & ,unius cubiti latitudinis &,dimidii &
וָחֵצִי וְרֹחַב אַמָּה אַחַת וָחֵצִי וְגֹבַהּ אַמָּה
mactabunt quibus vaſa ponent & eas *ad* ; unius
אֶחָת אֲלֵיהֶם וְיַנִּיחוּ אֶת־הַכֵּלִים אֲשֶׁר יִשְׁחֲטוּ אֶת־
præparatæ unius palmi cremathræ Et .ſacrificium & ,*eis in* *aſcenſionem*
43 הָעוֹלָה בָּם וְהַזָּבַח : וְהַשְׁפַתַּיִם טֹפַח אֶחָד מוּכָנִים
.*appropinquationis* caro menſas *ad* & : circa circum *domo in*
בַּבַּיִת סָבִיב׀ סָבִיב וְאֶל־הַשֻּׁלְחָנוֹת בְּשַׂר הַקָּרְבָּן :
,interiori atrio in cantorum cubicula interiorem portam *ad* extra Et
44 וּמִחוּצָה לַשַּׁעַר הַפְּנִימִי לִשְׁכוֹת שָׁרִים בֶּחָצֵר הַפְּנִימִי
;*Auſtri* viam eorum facies & ,*Aquilonis* portæ *humerum* ad quod
אֲשֶׁר אֶל־כֶּתֶף שַׁעַר הַצָּפוֹן וּפְנֵיהֶם דֶּרֶךְ הַדָּרוֹם
.*Aquilonis* viam facies ,*Orientis* portæ *humerum* ad unum
אֶחָד אֶל־כֶּתֶף שַׁעַר הַקָּדִים פְּנֵי דֶּרֶךְ הַצָּפֹן :
,*Auſtri* viam *ejus* facies cujus ,cubiculum Hoc ,me ad eſt locutus Et
45 וַיְדַבֵּר אֵלַי זֹה הַלִּשְׁכָּה אֲשֶׁר פָּנֶיהָ דֶּרֶךְ הַדָּרוֹם
cubiculum Et .domus cuſtodiam cuſtodientium ſacerdotum
46 לַכֹּהֲנִים שֹׁמְרֵי מִשְׁמֶרֶת הַבָּיִת : וְהַלִּשְׁכָּה
cuſtodiam cuſtodientium ſacerdotum ,*Aquilonis* viam *ejus* facies cujus
אֲשֶׁר פָּנֶיהָ דֶּרֶךְ הַצָּפוֹן לַכֹּהֲנִים שֹׁמְרֵי מִשְׁמֶרֶת
,Dominum ad Levi filiis de *appropinquantes* ,Sadoc filii iſti : altaris
הַמִּזְבֵּחַ הֵמָּה בְנֵי־צָדוֹק הַקְּרֵבִים מִבְּנֵי־לֵוִי אֶל־יְהוָה
,cubitorum centum longitudo : atrium eſt menſus Et .ei *miniſtrandum ad*
47 לְשָׁרְתוֹ : וַיָּמָד אֶת־הֶחָצֵר אֹרֶךְ מֵאָה אַמָּה
.*domus facies ad* altare & : quadratum ,cubitorum centum latitudo &
וְרֹחַב מֵאָה אַמָּה מְרֻבָּעַת וְהַמִּזְבֵּחַ לִפְנֵי הַבָּיִת :
quinque,veſtibuli poſtē eſt menſus &,domus veſtibulū in me introduxit Et
48 וַיְבִאֵנִי אֶל־אֻלָם הַבַּיִת וַיָּמָד אֵל אֻלָם חָמֵשׁ
trium portæ latitudo & : inde cubitorum quinque & ,hinc cubitorum
אַמּוֹת מִפֹּה וְחָמֵשׁ אַמּוֹת מִפֹּה וְרֹחַב הַשַּׁעַר שָׁלֹשׁ
.inde cubitorum trium & ,hinc cubitorum
אַמּוֹת מִפּוֹ וְשָׁלֹשׁ אַמּוֹת מִפּוֹ :

Verſio VULG. LAT.

36 Thalamum ejus, & frontem ej⁹,
& veſtibulum ejus, & feneſtras
ejus per circuitum, longitudine
quinquaginta cubitorum, & latitudine
vigintiquinque cubitorum.
37 Et veſtibulum ejus reſpiciebat
ad atrium exterius : &
cælatura palmarum in fronte ejus
hinc & indé : in octo gradibus
38 aſcenſus ejus. Et per ſingula
gazophylacia oſtium in frontibus
portarum:ibi lavabant holocauſtum.
39 Et in veſtibulo portæ,
duæ menſæ hinc,et duæ menſæ
indé : ut immoletur ſuper eas
holocauſtum, & pro peccato, et
40 pro delicto. Et ad latus exterius
, quod aſcendit ad oſtium
portæ,quæ pergit ad Aquilonem,
duæ menſæ : & ad latus alterum
ante veſtibulum portæ, duæ menſæ.
41 Quatuor menſæ hinc, et quatuor
menſæ indé : per latera portæ
octo menſæ erant, ſuper quas
42 immolabant. Quatuor autem
menſæ ad holocauſtum, de lapidibus
quadris extructæ:longitudine
cubiti unius & dimidii : &
latitudine cubiti unius & dimidii
: & altitudine cubiti unius :
ſuper quas ponant vaſa, in quib⁹
immolatur holocauſtum, & victima.
43 Et labia earum palmi unius,
reflexa intrinſecùs per circuitum
: ſuper menſas autem
44 carnes oblationis. Et extra portam
interioré,gazophylacia cantorum
in atrio interiori, quod
erat in latere portæ reſpicientis
ad Aquilonem : & facies eorum
contra viam Auſtralem, una ex
latere portæ Orientalis, quæ reſpiciebat
45 ad viam Aquilonis. Et
dixit ad me ; Hoc eſt gazophylacium,
quod reſpicit viam Meridianam
: ſacerdotum erit , qui
excubant in cuſtodiis templi.
46 Porrò gazophylacium, quod reſpicit
ad viam Aquilonis, ſacerdotum
erit, qui excubant ad miniſterium
altaris:iſti ſunt filii Sadoc,
qui accedunt de filiis Levi
47 ad Dominum ut miniſtrent ei. Et
menſus eſt atrium longitudine
centum cubitorum, & latitudine
centum cubitorum per quadrum:
& altare ante faciem templi.
48 Et introduxit me in veſtibulum
templi : & menſus eſt veſtibulum
quinque cubitis hinc,&
quinque cubitis indé : & latitudinem
portæ trium cubitorum
hinc, & trium cubitorum indé.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

36 Καὶ τὰ θεὲ, καὶ τὰ αἰλεὺ, καὶ τὰ (λ) αἰλαμμὼν,
καὶ θυρίδες αὐτῇ κύκλῳ, καὶ τὸ αἰλαμμὼν
αὐτῆς, πήχεις πεντήκοντα (μ) μῆκος
37 αὐτῆς, καὶ εὖρος πήχεις εἰκοσιπέντε. Καὶ
(ν) τὰ αἰλαμμὼν εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐξωτέραν,
καὶ φοίνικες τῷ αἰλεὺ ἔνθεν καὶ ἔνθεν,
38 καὶ ὀκτὼ (ξ) κλημακτῆρες αὐτῇ. Τὰ
παστοφόρεια αὐτῆς, καὶ τὰ θυρώματα αὐτῆς,
39 Καὶ τὰ (ο) αἰλαμμὼν αὐτῆς ἐπὶ τῆς πύλης τῆς
δευτέρας ἔκρισις, (π) ὅπως σφάζωσιν ἐν
αὐτῇ τὰ ὑπὲρ ἀμπλίας, καὶ τὰ ὑπὲρ ἀγνοίας.
40 Καὶ κατὰ νώτου τοῦ (ρ) ῥύακος τῶν
ὁλοκαυτωμάτων τῆς βλεπούσης πρὸς Βοῤῥᾶν,
δύο τράπεζαι πρὸς ἀνατολὰς κατὰ νώτου
τῆς δευτέρας, καὶ τοῦ αἰλὰμ τῆς πύλης δύο
41 (σ) τράπεζαι κατ' ἀνατολάς. Τέσσαρες ἔνθεν,
καὶ τέσσαρες ἔνθεν κατὰ νώτου τῆς πύλης, ἐπ'
(τ) αὐτὰς σφάζουσι τὰ θύματα. κατέναντι
42 τῶν ὀκτὼ τραπεζῶν τῶν (υ) θυμάτων, Καὶ
τέσσαρες τράπεζαι τῶν ὁλοκαυτωμάτων λίθιναι
λελαξευμέναι, (˜) πήχεως καὶ ἡμίσους
τὸ πλάτος, καὶ πήχεων δύο (φ) ἡμίσους τὸ
μῆκος, καὶ ἐπὶ πῆχυν τὸ ὕψος· ἐπ' (χ) αὐτὰς
ἐπιθήσουσι τὰ σκεύη, ἐν οἷς σφάζουσιν
43 ἐκεῖ τὰ ὁλοκαυτώματα καὶ τὰ θύματα. Καὶ
παλαιστὴν ἕξουσι γεῖσος λελαξευμένον (ψ)
ἔσωθεν κύκλῳ, καὶ ἐπὶ τὰς τραπέζας ἐπάνωθεν
στέγας, τοῦ καλύπτεσθαι ἀπὸ τοῦ ὑετοῦ,
44 καὶ ἀπὸ τῆς ξηρασίας. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς
τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν· καὶ ἰδοὺ δύο ἐξέδραι
ἐν τῇ αὐλῇ τῇ ἐσωτέρᾳ, μία κατὰ
νώτου τῆς πύλης τῆς βλεπούσης πρὸς Βοῤῥᾶν,
φέρουσα πρὸς Νότον, καὶ μία κατὰ νώτου
τῆς πύλης τῆς πρὸς Νότον, βλεπούσης δὲ
45 πρὸς Βοῤῥᾶν. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Ἡ ἐξέδρα
αὕτη ἡ βλέπουσα πρὸς Νότον, τοῖς ἱερεῦσι
τοῖς φυλάσσουσι τὴν φυλακὴν τοῦ οἴκου,
46 Καὶ ἡ ἐξέδρα ἡ βλέπουσα πρὸς Βοῤῥᾶν,
τοῖς ἱερεῦσι τοῖς φυλάσσουσι τὴν φυλακὴν
τοῦ θυσιαστηρίου· ἐκεῖνοί εἰσιν οἱ υἱοὶ
Σαδδοὺκ, οἱ ἐγγίζοντες ἐκ τοῦ Λευὶ πρὸς
47 κύριον, λειτουργεῖν αὐτῷ. Καὶ διεμέτρησε
τὴν αὐλὴν, μῆκος (ω) πηχῶν ἑκατὸν, καὶ
εὖρος (α) πήχεις ἑκατὸν, ἐπὶ τὰ (¨) τέσσαρα
μέρη αὐτῆς, καὶ τὸ θυσιαστήριον ἀπέναντι
48 τοῦ οἴκου. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὸ αἰλὰμ
τοῦ οἴκου· καὶ διεμέτρησε τὸ (β) αἰλ
τοῦ αἰλὰμ πηχῶν πέντε τὸ πλάτος ἔνθεν,
καὶ (γ) πηχῶν πέντε ἔνθεν, καὶ τὸ εὖρος
τοῦ θυρώματος (˝) πηχῶν δεκατεσσάρων, καὶ
ἐπωμίδες τῆς θύρας τοῦ αἰλὰμ (δ) πηχῶν
τριῶν ἔνθεν, καὶ (ε) πηχῶν τριῶν ἔνθεν.

Et Thee, & Æleu, & Ælammon : 36
& feneſtræ ei in circuitu :
& Ælammon ejus, cubitorum
quinquaginta longitudo ejus : &
latitudo cubitorum vigintiquinque :
Et Ælammon in atrium 37
exterius, & palmæ Æleu hinc
& indè : & octo gradus ei : Paſtophoria 38
ejus, & januæ ejus, Et 39
Ælammon ejus ſuper portam ſecundam
(ω) aquæ ductus, ut
immolent in ea, quæ pro peccato,
& quæ pro ignorantia : Et (aa) 40
ad dorſum rivuli holocauſtomatum
reſpicientis ad Aquilonem
duæ menſæ ad Orientem ad dorſum
ſecundæ, & Ælam portæ
duæ menſæ ad Orientem: Quatuor 41
hinc, & quatuor inde ad
dorſum portæ : ſuper ipſas jugulant
victimas. E regione octo
menſarum victimarum, Etiam 42
quatuor menſæ holocauſtomatum
lapideæ dolatæ : cubiti cum dimidio
latitudo, & cubitorum duorum
cum dimidio longitudo, &
ſuper cubitum altitudo. Super
ea imponent vaſa, in quibus jugulant
ibi holocauſtomata, & victimas.
(bb) Et palæſten habebunt 43
Giſum dolatum intrinſecùs
per circuitum, & ſuper menſas
deſuper tecta, ut operientur à
pluvia & à ſiccitate. Et 44
introduxit me in atrium interius
: & ecce duæ exedræ in
atrio interiori, una ad dorſum
portæ reſpicientis ad Aquilonem,
quæ fert ad Auſtrum: &
una ad dorſum portæ, quæ ad
Auſtrum, reſpicientis autem ad
Aquilonem. Et dixit ad me ; 45
Exedra hæc, quæ reſpicit ad Auſtrum,
ſacerdotibus cuſtodientibus
cuſtodiam domûs : Et exedra 46
reſpiciens ad Aquilonem,
ſacerdotibus cuſtodientibus cuſtodiam
altaris. Illi ſunt filii
Sadduc, qui accedunt de Levi
ad Dominum, miniſtrare ei. Et 47
menſus eſt atrium, longitudinem
cubitorum centum, & latitudinem
cubitorum centū ad quatuor
partes ejus, & altare è regione
domûs. Et introduxit me in 48
Ælam domûs. Et menſus eſt
Æl ipſius Ælam, cubitorum
quinque latitudinem hinc, & cubitorum
quinque indè, & latitudinem
portæ cubitorum quatuordecim
: & (cc) humeri oſtii
Ælam cubitorum trium hinc, &
cubitorum trium inde :

MS. A. (λ) αἰλαμμὼθ, καὶ αἱ θυρίδες αὐτοῦς κύκλῳ, καὶ τὰ αἰλαμμὼθ αὐτῆς κύκλῳ, πήχεις (μ) τὸ μῆκος αὐτῆς, καὶ εὖρος αὐτῆς πήχεις (ν) αἰλαμμὼθ (ξ) κλειμακτῆρες (ο) αἰλαμμὼθ (π) ἐκεῖ πλυνοῦσιν τὴν ὁλοκαύτωσιν. Ἐν δὲ τῷ αἰλὰμ τῆς πύλης δύο τράπεζαι ἔνθεν, καὶ δύο τράπεζαι ἔνθεν ἐκ χρυσίου, ὅπως φάζωσιν τὴν ὁλοκαύτωσιν, καὶ τὰ ὑπὲρ (ρ) ῥόακος (σ) τράπεζαι, καὶ * η τράπεζαι κατ' (τ) αὐτὰ σφάζουσιν, (υ) θυμιαμάτων, (˜) πήχεος (φ) καὶ ἡμίσους (χ) αὐτὰς ἐπιθήσουσιν, * ἐν οἷς (ψ) ἔξωθεν (ω) πήχεων (α) πήχεων (¨) τέσσαρα (β) αἰλὰμ πήχεων (γ) πήχεων (˝) πήχεων (δ) πήχεων (ε) πήχεων

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

36 תָּוּוהִי אִלוֹהִי וְאוּלַמּוֹהִי וְכַוִין לֵיהּ סְחוֹר סְחוֹר אוּרְכָּא חַמְשִׁין אַמִּין וּפוּתְיָא עֶסְרִין
37 וְחָמֵשׁ אַמִּין : וְאִלוֹהִי לְדַרְתָּא בָּרַיְתָא וְכוֹתָרִין עַל אִלוֹהִי מִכָּא וּמִכָּא וְתַמְנְיָא דַרְגִּין
38 דַּרְגוֹהִי : וְלִשְׁכַּתָּא וּפִתְחַהּ בְּאֶלְיָא דְתַרְעַיָא תַּמָּן מְתַקְנִין יָת עֲלָתָא : וּבְאוּלַמָּא
39 דְתַרְעָא תְּרֵין פְּתוֹרִין מִכָּא וּתְרֵין פְּתוֹרִין מִכָּא לְמִכַּס עֲלֵיהוֹן עֲלָתָא וְחַטָּאתָא
40 וַאֲשָׁמָא : וּלְעִבְרָא דְמִבְּרָא לְמִסְקָנָא בְּמַעֲלָנָא דִתְרַע צִפּוּנָא תְּרֵין פְּתוֹרִין וּלְעִבְרָא
41 אוֹחֲרָנָא דִלְאוּלַמָּא דְתַרְעָא תְּרֵין פְּתוֹרִין : אַרְבְּעָא פְתוֹרִין מִכָּא וְאַרְבְּעָא פְתוֹרִין
42 מִכָּא לְעִבְרָא דְתַרְעָא תַּמְנְיָא פְתוֹרִין בֵּינֵיהוֹן נָכְסִין : וְאַרְבְּעָא פְתוֹרִין לַעֲלָתָא
בְּאַבְנֵי גְזִית אוּרְכָּא אַמְּתָא חֲדָא וּפַלְגָא וּפוּתְיָא אַמְּתָא חֲדָא וּפַלְגָא וְרוּמֵיהּ אַמְּתָא
43 חֲדָא עֲלֵיהוֹן וִיחַתוּן יָת מָנַיָא דִיכְסוּן יָת עֲלָתָא בְּהוֹן וְנִכְסַת קוּדְשַׁיָא : וְעַנְקְלִין נָפְקִין
פְּשַׁךְ חַד קְבִיעִין בְּעַמּוּדֵי בֵית מַטְבְּחַיָא מִגָּיו לְאוּלַמַּיָא סְחוֹר סְחוֹר וְעַל פְּתוֹרַיָא בְּשַׂר
44 קוּרְבָּנַיָא : וּמִבְּרָא לְתַרְעָא גַוָּאָה לִשְׁכַּת לֵוָאֵי בְּדַרְתָּא גַוַּיְתָא דִי לְעִבַר תְּרַע צִפּוּנָא
45 וְאַפֵּיהוֹן לְאוֹרַח דָּרוֹמָא חַד לְעִבַר תְּרַע מַדִּנְחָא אַפֵּי אוֹרַח צִפּוּנָא : וּמַלֵּיל עִמִּי דָא
46 לִשְׁכַּתָּא דִפְתִיחָא לְאוֹרַח דָּרוֹמָא לְכָהֲנַיָא נָטְרֵי מַטְּרַת בֵּיתָא : וְלִשְׁכַּתָּא דִפְתִיחָא
לְאוֹרַח צִפּוּנָא לְכָהֲנַיָא נָטְרֵי מַטְּרַת מַדְבְּחָא אִנּוּן בְּנֵי צָדוֹק דְקָרְבִין מִבְּנֵי לֵוִי
47 לְפוּלְחָנָא דַיְיָ לְשַׁמָּשָׁא קֳדָמוֹהִי : וּמְשַׁח יָת דַּרְתָּא אוּרְכָּא מְאָה אַמִּין וּפוּתְיָא מְאָה
48 אַמִּין מְרַבַּע וּמַדְבְּחָא דִי קֳדָם בֵּיתָא : וְאַעֲלַנִי לְאוּלַמָּא דְבֵיתָא וּמְשַׁח אֵלָא דְאוּלַמָּא
חֲמֵשׁ אַמִּין מִכָּא וַחֲמֵשׁ אַמִּין מִכָּא וּפוּתְיָא דְתַרְעָא תְּלָת אַמִּין מִכָּא וּתְלָת
אַמִּין מִכָּא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Thalamos ejus, poſtes ejus, & veſtibula ejus : & feneſtræ erant ei per circuitum 36
longitudinis quinquaginta cubitorum, & latitudinis vigintiquinque cubitorum.
Poſtéſque ejus erant atrio exteriori, & capitella erant ſuper poſtes 37
ejus hinc & inde, & octo gradus erant gradus ejus. Et gazophylacium erat & 38
oſtium ejus in frontibus portarum: ibi præparabant holocauſtum. Et in veſtibulo 39
portæ erant duæ menſæ hinc & duæ menſæ indè, ut immolaretur ſuper
eas holocauſtum & ſacrificium pro peccato & pro delicto. Et ad latus exterius 40
aſcenſus in introitu portæ Aquilonis erant duæ menſæ, & ad latus alterum
quod erat ad veſtibulum portæ erant duæ menſæ. Quatuor menſæ hinc & 41
quatuor menſæ indè ad latus portæ : octo menſæ in quibus immolabant.
Quatuor autem menſæ erant ad holocauſtum ex lapidibus dolatis longitudine 42
cubiti unius & dimidii, & latitudine cubiti unius & dimidii, & altitudine
cubiti unius,ſuper quas ponebant vaſa in quibus immolabant holocauſtum &
victimas ſanctificatas. Et uncini egrediebantur [*longitudine*] unius palmi defixi 43
in columnis domus macelli intra veſtibula per circuitum : & ſuper menſas
erat caro *oblationum*. Et extra portam interiorem erat gazophylacium 44
Levitarum in atrio interiori quod erat ad latus portæ Aquilonaris: & facies
earum ad viam Auſtralem, una ad latus portæ Orientalis quæ reſpiciebat ad
viam Aquilonis. Et locutus eſt mecum, [*dicens:*] Hoc gazophylacium quod 45
apertum eſt ad viam Auſtralem, erit Sacerdotibus qui cuſtodiunt cuſtodiam
domus. Et gazophylacium quod apertum eſt ad viam Aquilonarem, erit Sacerdotibus 46
qui cuſtodiunt cuſtodiam altaris : iſti ſunt filii Sadok qui accedunt
de filiis Levi ad cultum Domini, ut miniſtrent coram eo. Et menſus eſt atrium 47
longitudine centum cubitorum, & latitudine centum cubitorum quadratum,
& altare quod erat ante domum. Et introduxit me in veſtibulum domus, 48
& menſus eſt frontem veſtibuli : quinque cubitos hinc & quinque cubitos
indè : & latitudo portæ trium cubitorum hinc, & trium cubitorum indè.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܬܐܘܢܘܗܝ ܘܦܪܣܛܕܘܗܝ ܘܐܣܩܘܦܬܗ܂ ܘܟܘ̈ܐ ܚܕܪ ܚܕܪ ܠܗ܂ ܐܘܪܟܗ ܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ
ܘܦܬܝܗ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫ܂ * ܘܦܪܣܛܕܘܗܝ ܕܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ܂ ܘܬܠܠܐ ܐܝܟ ܠܦܪܣܛܕܘܬܐ ܡܟܐ
ܘܡܟܐ܂ ܘܬܡܢܝܐ ܠܗ ܕܪ̈ܓܝܢ܂ * ܘܐܟܣܕܪܐ ܬܪܥܗ ܒܦܪܣܛܕܘܬܐ ܕܬܪܥܐ܂ ܘܬܡܢ
ܡܩܪܒܝܢ ܗܘܘ ܥܠܘܬܐ܂ * ܘܠܦܪܣܛܕܘܬܐ ܕܬܪܥܐ܂ ܬܪܝܢ ܦܬܘܪ̈ܝܢ ܡܟܐ܂ ܘܬܪܝܢ ܦܬܘܪ̈ܝܢ
ܡܟܐ܂ ܠܡܟܣ ܥܠܝܗܘܢ ܥܠܘܬܐ܂ ܘܩܘܪ̈ܒܢܐ ܘܚܘܣܝܐ ܕܚܛܗ̈ܐ܂ * ܘܠܣܛܪܗ ܕܬܪܥܐ
ܓܪܒܝܝܐ ܕܠܒܪ ܡܢ ܒܝܬ ܥܠܘܬܐ܂ ܬܪܝܢ ܦܬܘܪ̈ܝܢ܂ ܘܠܣܛܪܐ ܐܚܪܢܐ ܕܦܪܣܛܕܘܬܐ܂ ܬܪܝܢ
ܦܬܘܪ̈ܝܢ܂ * ܐܪܒܥܐ ܦܬܘܪ̈ܝܢ ܡܟܐ܂ ܘܐܪܒܥܐ ܦܬܘܪ̈ܝܢ ܡܟܐ܂ ܠܦܪܣܛܕܘܬܗ
ܕܬܪܥܐ܂ ܘܬܡܢܝܐ ܗܘܘ ܦܬܘܪ̈ܝܢ ܕܢܟܣܝܢ ܥܠܝܗܘܢ܂ * ܘܐܪܒܥܐ ܦܬܘܪ̈ܝܢ ܕܟܐܦܐ
ܦܣܝܠܬܐ ܠܥܠܘܬܐ ܥܠܘܬܐ܂ ܐܘܪܟܗܘܢ ܐܡܬܐ ܘܦܠܓܐ܂ ܘܦܬܝܗܘܢ܂ ܐܡܬܐ ܘܦܠܓܐ܂
ܘܥܠܝܗܘܢ ܣܝܡܝܢ ܡܐܢܐ ܕܢܟܣܝܢ ܗܘܘ ܒܗܘܢ ܥܠܘܬܐ ܘܕܒܚܬܐ܂ * ܘܫܦܘܬܗܘܢ
ܦܫܝܛ ܦܫܝܛ ܟܡ ܚܕܪܝܢ܂ ܘܥܠ ܦܬܘܪ̈ܐ ܣܝܡܝܢ ܗܘܘ ܒܣܪܐ ܕܩܘܪ̈ܒܢܐ܂ * ܘܠܒܪ ܡܢ
ܬܪܥܐ ܓܘܝܐ܂ ܫܟܢ̈ܐ ܕܪ̈ܘܪܒܢܐ܂ ܒܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܕܒܣܛܪ ܬܪܥܐ ܓܪܒܝܝܐ܂ ܘܦܢܝܢ ܗܘܘ
ܠܬܝܡܢܐ܂ ܡܢ ܣܛܪܐ ܕܬܪܥܐ ܡܕܢܚܝܐ ܕܠܘܩܒܠ ܪܘܚܐ ܓܪܒܝܝܬܐ܂ * ܘܐܡܪ ܠܝ܂ ܗܕܐ
ܐܟܣܕܪܐ ܕܚܙܝܐ ܠܬܝܡܢܐ܂ ܠܟܗܢ̈ܐ ܕܢܛܪܝܢ ܡܛܪܬܐ ܕܒܝܬܐ܂ * ܘܐܟܣܕܪܐ ܕܚܙܝܐ
ܠܓܪܒܝܐ܂ ܠܟܗܢ̈ܐ ܒܢܝ̈ ܨܕܘܩ ܕܢܛܪܝܢ ܡܛܪܬܐ ܕܡܕܒܚܐ܂ ܕܡܬܩܪܒܝܢ ܡܢ ܒܢܝ̈
ܠܘܝ܂ ܠܡܫܡܫܘ ܠܡܫܡܫܘܬܗ ܕܡܪܝܐ܂ * ܘܡܫܚ ܠܕܪܬܐ ܐܘܪܟܐ܂ ܡܐܐ ܐܡܝܢ܂ ܘܦܬܝܐ
ܡܐܐ ܐܡܝܢ ܡܪܒܥܐܝܬ܂ ܘܡܕܒܚܐ ܐܝܬ ܗܘܐ ܩܕܡ ܒܝܬܐ܂ * ܘܐܥܠܢܝ ܠܐܣܩܘܦܬܐ
ܕܒܝܬܐ܂ ܘܡܫܚܗ ܠܐܣܩܘܦܬܐ܂ ܚܡܫ ܐܡܝܢ ܡܟܐ܂ ܘܚܡܫ ܐܡܝܢ ܡܟܐ܂ ܘܦܬܝܗ
ܕܬܪܥܐ ܬܠܬ ܐܡܝܢ ܡܟܐ܂ ܘܬܠܬ ܐܡܝܢ ܡܟܐ܂

Tam intimam ipſius partem, quàm paraſta- 36
des, ac limina ipſius : & feneſtræ circunda-
bant eam. Longitudo ejus erat quinquaginta
cubitorum, latitudo vigintiquinque. Para- 37
ſtades erant *quales* atrii exterioris : & palmæ
erant in paraſtadibus hinc inde : & octo gra-
dus habebat. Exedræ janua erat in ipſis por- 38
tæ paraſtadibus, ibíque ponebant holocauſta:
Et ad januarum paraſtades duæ erant hinc 39
menſæ, & duæ inde menſæ ; ad jugulandum
ſuper eas holocauſta, oblationes, & expiatio-
nem peccatorum. Ad latus etiam portæ A- 40
quilonaris, quod erat extra *locum* holocauſto-
rum, duæ erant menſæ ; & ad alterum para-
ſtadum latus duæ menſæ : Quatuor *ſcilicet* 41
menſæ hinc, & quatuor inde menſæ, ad para-
ſtades portæ : ſic octo erant menſæ ſuper quas
jugulabant. Quatuor autem menſæ è lapi- 42
de cæſo erant pro holocauſtis, longitudine cu-
biti cum dimidio, & latitudine cubiti cum
dimidio : & ſuper has ponebant inſtrumenta
quibus jugulabant holocauſta & victimam :
Iſtarúmque labra, ſingularum erant licharum 43
per circuitum : & ſuper menſas ponebant
carnem oblationum. Extra portam interio- 44
rem erant diverſoria magnatum, in atrio in-
teriore quod erat ad latus portæ Aquilonaris;
& reſpiciebant Auſtrum à latere portæ Ori-
entalis, quod erat oppoſitum vento Aquilo-
nari. Tum dixit mihi, Exedra iſta quæ ſpe- 45
ctat Meridiem, ſacerdotum eſt cuſtodientium
cuſtodiam domûs : Exedra verò quæ ſpectat 46
Aquilonem, ſacerdotum eſt filiorum Sadoc
cuſtodientium cuſtodiam altaris, qui admit-
tuntur à filiis Levi ad obeundum miniſterium
Domini. Menſúſque eſt atrium iſtud longi- 47
tudine centum cubitorum, & latitudine cen-
tum cubitorum, formæ quadrangularis : &
altare extabat ante domum. Inde me ad- 48
duxit ad limen domûs, menſúſque eſt limen
quinque cubitorum hinc, & quinque cubito-
rum inde : latitudinem verò portæ trium cu-
bitorum hinc, & trium cubitorum inde.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* والتاء والالاو واللالموت* وكواه تحيطه* والموته تحيطه* خمسون ذراعا طوله* وخمسه وعشرون
ذراعا عرضه* والالموت للدار الخارجة* ونخل* للالاو من هاهنا ومن هاهنا* وثمانيه درج لها*
* عماريانها وكواها والموتها على الباب* الباب الثاني* وهناك نبع يغسلون المحرقه *وفي الام الباب
مايدتان من هاهنا* ومايدتان من هاهنا من ذهب* كي يذبحوا المحرقه* وما هو من اجل
الخطيه* وما هو من اجل الجهل *وفي ظهر رواق المحرقات الناظر الي الجربياء* مايدتان نحو
المشارق* في ظهر الباب الثاني والام الباب* مايدتان ومايدتان نحو المشارق * اربعه من هاهنا*
واربعه من هاهنا في ظهر الباب* عليها يذبحون الذبايح* قبالة الثمانية موايد التي للنحور
* واربعة موايد للمحرقات حجريه منقوره* العرض ذراع ونصف* والطول ذراعان ونصف*
والارتفاع ذراع* عليها يضعون وفيها يذبحون المحرقات والذبايح *ولها افريز منقور* طوله فتر
من خارجها يحيط* وعلي الموايد من فوقها ستور* لتوقيها من المطر ومن اليبوسة* وادخلني
الي الدار الداخلة* واذا مقصورتان في الدار الداخلة* واحده في ظهر الباب الناظر الي
الجربياء* حاملة الي التيمن* وواحده في ظهر الباب الذي نحو التيمن والناظر الي الجربياء
وقال لي هذه المقصوره الناظره الي التيمن* للكهنة الذين يحرسون حرس البيت* والمقصوره
الناظره الي الجربياء* للكهنة الذين يحرسون المذبح* واوليك هم بنو صادوق القريبون من
لاوي الي الرب ليخدموه* وقاس الدار طولا مايه ذراع* وعرضا مايه ذراع* على اربعة جوانبها
والمذبح قبالة البيت* وادخلني الي رواق البيت* وقاس الرواق خمسة اذرع عرضا من ههنا
وخمسه اذرع من ههنا* وسعه الجاري اربعه عشر ذراعا* واكتاف باب الرواق ثلاثه اذرع
من هاهنا* وثلاثه اذرع من ههنا*

Et Thaa, Ælau, & Ælammoth : & fe- 36
neſtræ ejus cingebant eam: & Ælammoth
ejus cingebant eam : quinquaginta cubi-
torum erat longitudo ipſius , & vigínti-
quinque cubitorum latitudo. Ælammoth 37
habebat atrium exterius : Ælau palmas
hinc inde : & octo gradus habebat.
Cancelli , feneſtræ, & Ælammoth ejus 38
ſuper portam erant, portam nempe *ſecun-*
dam. Ibi quoque fons erat ad lavandum 39
holocauſtum. Et in Ulam portæ, duæ
erant hinc menſæ, & duæ inde menſæ
aureæ ad jugulandum holocauſtum , &
quod erat pro peccato , & quod erat pro
ignorantia. Et in dorſo porticûs holo- 40
cauſtorum reſpicientis Aquilonem verſùs,
menſæ duæ Orientem verſùs : in dorſo
portæ ſecundæ & Ulam portæ, menſæ duæ
& menſæ duæ Orientem verſùs : Qua- 41
tuor hinc, & quatuor inde in dorſo por-
tæ, ſuper quas jugulabant ſacrificia. E
regione octo menſarum jugulationi deſti-
natarum, Quatuor etiam erant pro holo- 42
cauſtis menſæ lapideæ excavatæ, quarum
latitudo cubiti erat cum dimidio , longi-
tudo duorum cubitorum cum dimidio,
cubiti verò profunditas : ſuper has
ponebant, & in his jugulabant holocauſta
& ſacrificia : Habebantque crepidinem 43
concavam longitudine lichæ extrinſecùs
ambientem : & ſuper eaſdem menſas
opercula ſupernè, ad defendendas eas à
pluvia & à ſiccitate. Præterea intro- 44
duxit me in atrium interius, & ecce duo
pulpita cantorum in atrio interiori, unum
à tergo januæ reſpicientis ad Aquilonem,
ferentis ad Auſtrum : alterum à tergo
januæ quæ erat Auſtrum verſùs , &
ſpectabat Aquilonem. Tum dixit mihi ; 45
Hoc pulpitum quod Auſtrum ſpectat,
ſacerdotum eſt cuſtodientium cuſtodiam
domûs : Pulpitum verò quod Aquilonem 46
ſpectat, ſacerdotum qui cuſtodiunt altare:
& illi ſunt filii Sadoc accedentes è Levi
ad Dominum, ut miniſtrent ei. Et menſus 47
eſt atrium hoc longitudine centum cubi-
torum, et latitudine centum cubitorum,
in quatuor ejus latera : et altare erat è
regione domûs. Inde me introduxit in 48
porticum domûs, et menſus eſt porticum,
quinque cubitorum in latitudinem hinc,
et quinq; cubitorum inde : latitudo foris
quatuordecim erat cubitorum : et humeri
januæ porticûs, trium cubitorum hinc, et
trium cubitorum inde

יחזקאל : מא

undecim latitudo & ,cubitorum viginti vestibuli Longitudo
אֹרֶךְ הָאֻלָם עֶשְׂרִים אַמָּה וְרֹחַב עַשְׁתֵּי עֶשְׂרֵה 49
ad columnæ & : illud ad ascendent quibus gradibus in & ,cubitorum .
אַמָּה וּבַמַּעֲלוֹת אֲשֶׁר יַעֲלוּ אֵלָיו וְעַמֻּדִים אֶל־
.inde una & ,hinc una ,postes
הָאֵילִים אֶחָד מִפֹּה וְאֶחָד מִפֹּה׃

CAP. XLI. מא

cubitorũ sex : postes est mensus & ;templum ad me introduxit Et
וַיְבִיאֵנִי אֶל־הַהֵיכָל וַיָּמָד אֶת־הָאֵילִים שֵׁשׁ־אַמּוֹת 1
.tentorii latitudo ,inde latitudo cubitorum sex & ,hinc latitudo
רֹחַב מִפּוֹ וְשֵׁשׁ־אַמּוֹת רֹחַב־מִפֹּה רֹחַב הָאֹהֶל׃
quinque ostii humeri & , cubitorum decem ostii latitudo Et
וְרֹחַב הַפֶּתַח עֶשֶׂר אַמּוֹת וְכִתְפוֹת הַפֶּתַח חָמֵשׁ 2
ej° longitudinẽ est mensus & : inde cubitorum quinque & ,hinc cubitorũ
אַמּוֹת מִפּוֹ וְחָמֵשׁ אַמּוֹת מִפּוֹ וַיָּמָד אָרְכּוֹ
est ingressus Et .cubitis viginti latitudinem & ,cubitis quadraginta
אַרְבָּעִים אַמָּה וְרֹחַב עֶשְׂרִים אַמָּה׃ וּבָא 3
sex ostium & : cubitis duobus ostii postem est mensus & ,intrinsecus
לִפְנִימָה וַיָּמָד אֵיל־הַפֶּתַח שְׁתַּיִם אַמּוֹת וְהַפֶּתַח שֵׁשׁ
ej° longitudinẽ est mensus Et .cubitis septem ostii latitudinẽ & ,cubitis
אַמּוֹת וְרֹחַב הַפֶּתַח שֶׁבַע אַמּוֹת׃ וַיָּמָד אֶת־אָרְכּוֹ 4
: templi facies ad cubitis viginti latitudinẽ & ,cubitis viginti
עֶשְׂרִים אַמָּה וְרֹחַב עֶשְׂרִים אַמָּה אֶל־פְּנֵי הַהֵיכָל
parietem est mensus Et .sanctitatum sanctitas Hoc ,me ad dixit &
וַיֹּאמֶר אֵלַי זֶה קֹדֶשׁ הַקֳּדָשִׁים׃ וַיָּמָד קִיר־ 5
circum ,cubitis quatuor costæ latitudinẽ & ;cubitis sex domus
הַבַּיִת שֵׁשׁ אַמּוֹת וְרֹחַב הַצֵּלָע אַרְבַּע אַמּוֹת סָבִיב׀
, costam ad costa , costæ Et .undique domui circa
סָבִיב לַבַּיִת סָבִיב׃ וְהַצְּלָעוֹת צֵלָע אֶל־צֵלָע 6
costis ad domui qui pariete in venientes & , pedum triginta & trium
שָׁלוֹשׁ וּשְׁלֹשִׁים פְּעָמִים וּבָאוֹת בַּקִּיר אֲשֶׁר־לַבַּיִת לַצְּלָעוֹת
pariete in apprehensæ essent non & : apprehensæ existendum ad ,circa circum
סָבִיב׀ סָבִיב לִהְיוֹת אֲחוּזִים וְלֹא־יִהְיוּ אֲחוּזִים בְּקִיר
quia ,appendices desuper desuper circuibat &,dilatabatur Et .domus
הַבָּיִת׃ וְרָחֲבָה וְנָסְבָה לְמַעְלָה לְמַעְלָה לַצְּלָעוֹת כִּי 7
idcirco : domui circa circum desuper ,desuper domus circundata
מוּסַב־הַבַּיִת לְמַעְלָה לְמַעְלָה סָבִיב׀ סָבִיב לַבַּיִת עַל־כֵּן
superius super ascendebat inferius sic & : superius domus latitudo
רֹחַב־לַבַּיִת לְמָעְלָה וְכֵן הַתַּחְתּוֹנָה יַעֲלֶה עַל־הָעֶלְיוֹנָה
fundamenta :undique,undique altitudinẽ domus vidi Et .medium ad
לַתִּיכוֹנָה׃ וְרָאִיתִי לַבַּיִת גֹּבַהּ סָבִיב׀ סָבִיב מוּסְדוֹת 8
;parietis Latitudo .axillæ cubitorum sex calamo pleno costarum
הַצְּלָעוֹת מְלוֹ הַקָּנֶה שֵׁשׁ אַמּוֹת אַצִּילָה׃ רֹחַב הַקִּיר 9
domus derelictum quod & : cubitorum quinque , extra ad costæ qui
אֲשֶׁר־לַצֵּלָע אֶל־הַחוּץ חָמֵשׁ אַמּוֹת וַאֲשֶׁר מֻנָּח בֵּית
viginti latitudo cubicula inter Et .intrinsecus quod appendicum
צְלָעוֹת אֲשֶׁר לַבָּיִת׃ וּבֵין הַלְּשָׁכוֹת רֹחַב עֶשְׂרִים 10
appendicis ostium Et .circa circum domus circuitu cubitorum
אַמָּה סָבִיב לַבַּיִת סָבִיב׀ סָבִיב׃ וּפֶתַח הַצֵּלָע 11
latitudo &:Meridiẽ ad unum ostiũ &,Aquilonis viam unum ostiũ derelicto
לַמֻּנָּח פֶּתַח אֶחָד דֶּרֶךְ הַצָּפוֹן וּפֶתַח אֶחָד לַדָּרוֹם וְרֹחַב
ad quod ædificium Et .circa circum cubitorũ quinque derelicti loci
מְקוֹם הַמֻּנָּח חָמֵשׁ אַמּוֹת סָבִיב׀ סָבִיב׃ וְהַבִּנְיָן אֲשֶׁר אֶל־ 12
cubitorũ septuaginta latitudinis ,maris viæ angulũ sepositi tabulati facies
פְּנֵי הַגִּזְרָה פְּאַת דֶּרֶךְ־הַיָּם רֹחַב שִׁבְעִים אַמָּה
ej° lõgitudo & : circa circum latitudinis cubitorũ quinque ædificii paries &
וְקִיר הַבִּנְיָן חָמֵשׁ־אַמּוֹת רֹחַב סָבִיב׀ סָבִיב וְאָרְכּוֹ
:cubitorũ centum longitudo :domum est mensus Et .cubitorum nonaginta
תִּשְׁעִים אַמָּה׃ וּמָדַד אֶת־הַבַּיִת אֹרֶךְ מֵאָה אַמָּה 13
.cubitorũ centum longitudine ej° parietes &,ædificiũ &,sepositum tabulatũ &
וְהַגִּזְרָה וְהַבִּנְיָה וְקִירוֹתֶיהָ אֹרֶךְ מֵאָה אַמָּה׃

Versio VULG. LAT.

49 Longitudinem autem vestibuli viginti cubitorum, & latitudinẽ undecim cubitorum, & octo gradibus ascendebatur ad eam. Et columnæ erant in frontibus; una hinc, & altera indé.

CAP. XLI.

1 Et introduxit me in templum, & mensus est frontes, sex cubitos latitudinis hinc, & sex cubitos indè, latitudinem taberna-
2 culi. Et latitudo portæ, decem cubitorum erat: & latera portæ, quinque cubitis hinc, et quinque cubitis indé: & mensus est longitudinem ejus quadraginta cubitorum, & latitudinem vigin-
3 ti cubitorum. Et introgressus intrinsecùs mensus est in fronte portæ duos cubitos: & portam, sex cubitorum: & latitudinem
4 portæ, septem cubitorum. Et mensus est longitudinem ejus viginti cubitorum, & latitudinem ejus viginti cubitorum, ante faciem templi: & dixit ad me;
5 Hoc est Sanctum sanctorum. Et mensus est parietem domûs sex cubitorum: et latitudinem lateris quatuor cubitorum undique
6 per circuitum domûs. Latera autem, latus ad latus, bis triginta tria: & erant eminentia, quæ ingrederentur per parietem domûs, in lateribus per circuitũ, ut continerent, & non attinge-
7 rent parietem templi. Et platea erat in rotundum, ascendens sursum per cochleam, & in cœnaculum templi deferebat per gyrum: idcircò latius erat templũ in superioribus: & sic de inferioribus ascendebatur ad superi-
8 ora in medium. Et vidi in domo altitudinem per circuitum, fundata latera ad mensuram ca-
9 lami sex cubitorum spatio: Et latitudinem per parietem lateris forinsecùs quinque cubitorum: et erat interior domûs in lateri-
10 bus domûs. Et inter gazophylacia latitudinem viginti cubitorum in circuitu domûs undique,
11 Et ostium lateris ad orationem: ostium unum ad viam Aquilonis, & ostium unum ad viam Australem: et latitudinem loci ad orationem, quinque cubitorũ in cir-
12 cuitu. Et ædificium, quod erat separatũ, versúmque ad viam respicientem ad mare, latitudinis septuaginta cubitorum: paries autem ædificii, quinque cubitorum latitudinis per circuitum: & longitudo ejus nonaginta cu-
13 bitorum. Et mensus est domûs longitudinem, centum cubitorum: & quod separatum erat ædificium, & parietes ejus, longitudinis centum cubitorum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

49 Καὶ τὸ μῆκος τοῦ αἰλὰμ (ζ) πηχῶν εἴκοσι, ϗ τὸ εὖρος (η) πηχῶν δώδεκα· ϗ ἐπὶ δέκα ἀναβαθμῶν ἀνέβαινον ἐπ' αὐτὸ, ϗ στῦλοι ἦσαν ἐπὶ (θ) τὸ αἰλὰμ, εἷς ἔνθεν ϗ εἷς ἔνθεν.

MS.A. (ζ) πήχεις (η) πήχεις (θ) τὰ

ΚΕΦ. μα΄.

1 Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὸν ναὸν, (α) ᾧ διεμέτρησε τὸ αἰλὰμ (β) πηχῶν ἓξ τὸ πλάτος ἔνθεν, ϗ (γ) πηχῶν ἓξ τὸ εὖρος τοῦ αἰλὰμ
2 ἔνθεν, Καὶ τὸ εὖρος τοῦ πυλῶνος (δ) πηχῶν δέκα, ϗ ἐπωμίδες τοῦ πυλῶνος (ε) πηχῶν πέντε ἔνθεν, ϗ (ζ) πηχῶν πέντε ἔνθεν· ϗ διεμέτρησε τὸ μῆκος (η) αὐτοῦ πηχῶν τεσσαράκοντα, ϗ τὸ εὖρος πηχῶν εἴ-
3 κοσι. Καὶ εἰσῆλθεν εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν, ϗ διεμέτρησε τὸ (θ) αἰλ τοῦ θυρώματος πηχῶν δύο, ϗ τὸ θύρωμα (ι) πηχῶν ἓξ, ϗ τὰς ἐπωμίδας τοῦ θυρώματος (κ) πηχῶν ἑπτὰ ἔνθεν, ϗ (λ) πηχῶν ἑπτὰ ἔνθεν.
4 Καὶ διεμέτρησε (μ) τὸ μῆκος τῶν θυρῶν πηχῶν τεσσαράκοντα, ϗ τὸ εὖρος πηχῶν εἴκοσι, κατὰ πρόσωπον τοῦ ναοῦ. ϗ (ν) εἶπε,
5 Τοῦτο τὸ ἅγιον τῶν ἁγίων. Καὶ διεμέτρησε τὸ τοῖχον τοῦ οἴκου (ξ) πηχῶν ἓξ, ϗ τὸ εὖρος τῆς πλευρᾶς (ο) πηχῶν τεσσάρων κυκλόθεν,
6 Καὶ (π) πλευρὰ πλευρὸν ἐπὶ πλευρὸν τριάκοντα (ρ) τρὶς δίς· ϗ διάστημα ἐν τῷ τοίχῳ τοῦ οἴκου ἐν τοῖς πλευροῖς (σ) κύκλῳ, τοῦ εἶναι τοῖς ἐπιλαμβανομένοις ὁρᾶν, ὅπως τὸ
7 παράπαν μὴ ἅπτωνται τῶν τοίχων τοῦ οἴκου. Καὶ τὸ εὖρος τῆς ἀνωτέρας τῶν πλευρῶν κατὰ τὸ πρόσθεμα ἐκ τοῦ (τ) τοίχου, πρὸς τὴν ἀνωτέραν κύκλῳ τοῦ οἴκου, ὅπως διαπλατύνηται ἄνωθεν, ϗ ἐκ τῶν κάτωθεν ἀναβαίνωσιν ἐπὶ
8 τὰ ὑπερῷα, Καὶ ἐκ τῶν (υ) γεισῶν ἐπὶ τὰ τριώροφα, ϗ τὸ θραὲλ τοῦ οἴκου ὕψος κύκλῳ διάστημα τῶν πλευρῶν ἴσον τῷ καλάμῳ (φ)
9 πηχῶν ἓξ, διαστήματα, Καὶ εὖρος τοῦ τοίχου τῆς πλευρᾶς ἔξωθεν (χ) πηχῶν πέντε, ϗ τὰ ἀπόλοιπα (ψ) τὰ ἀναμέσον τῶν πλευ-
10 ρῶν τοῦ οἴκου, Καὶ ἀναμέσον τῶν ἐξεδρῶν (ω) εὖρος πηχῶν εἴκοσι, τὸ περιφερὲς (α) τῷ
11 οἴκῳ κύκλῳ. Καὶ αἱ (β) θύραι τῶν ἐξεδρῶν ἐπὶ τὸ ἀπόλοιπον τῆς θύρας τῆς μιᾶς τῆς πρὸς Βορρᾶν· ϗ ἡ θύρα ἡ μία πρὸς Νότον· ϗ τὸ εὖρος τοῦ φωτὸς τοῦ ἀπολοίπου πηχῶν
12 πέντε πλάτος κυκλόθεν. Καὶ τὸ διορίζον κατὰ πρόσωπον τοῦ ἀπολοίπου, ὡς πρὸς θάλασσαν, (γ) πηχῶν ἑβδομήκοντα πλάτος, τοῦ τοίχου τοῦ διορίζοντος (δ) πηχῶν πέντε εὖρος κυκλόθεν, ϗ μῆκος αὐτοῦ (ε) πη-
13 χῶν ἐνενήκοντα. Καὶ διεμέτρησε κατέναντι τοῦ οἴκου μῆκος (ζ) πηχῶν ἑκατὸν, ϗ τὰ ἀπόλοιπα ϗ τὰ διορίζοντα, ϗ οἱ τοῖχοι αὐτῶν μῆκος (˜) πηχῶν ἑκατόν.

Et longitudo Ælam cubitorum viginti: et latitudo cubitorũ duodecim: & super decẽ grad° ascẽdebãt ad illud: & columnæ erant ad Ælam una hinc, et una inde. 49

CAP. XLI.

Et introduxit me in templum: (a) cui mensus est (b) Ælã, cubitorum sex latitudinem hinc, & cubitorum sex latitudinem Ælam indè, 1 *Et latitudinem portæ cubitorum decem; & humeri portæ, cubitorum quinque hinc; & cubitorum quinque indè. Et mensus est longitudinem ejus quadraginta cubitorum, & latitudinem viginti cubitorum.* 2 *Et ingressus est in atrium interius: & mensus est (c) Æl portæ, cubitorum duorũ, & portam sex cubitorum, & humeros portæ septem cubitorum hinc, & septem cubitorum inde.* 3 *Et mensus est longitudinem ostiorum, cubitorum (d) quadraginta, & latitudinem cubitorum viginti, ad faciem templi. Et dixit;* 4 *Hoc est Sanctum sanctorum. Et mensus est parietem domûs, cubitorum sex, & latitudinem lateris cubitorum quatuor per circuitum:* 5 *Et latera, latus ad latus, triginta trium bis: & intervallum in pariete domûs in lateribus per circuitum, ut esset apprehendentibus ad videndum, ut omninò non attingerent parietes domûs:* 6 *Et latitudinẽ superioris laterũ juxta additamentum ex pariete ad superius in circuitu domûs, ut dilatetur desupèr, & ex inferioribus ascendant ad superiora,* 7 *Et de (e) Gisis ad tristega, & Thrael domus altitudinem per circuitũ, intervallum laterum æquale calamo cubitorum sex, intervalla,* 8 *Et latitudinem parietis lateris forinsecùs cubitorum quinque, & reliqua, quæ inter latera domûs,* 9 *Et inter exedras, latitudinem cubitorũ viginti, circumferentiã domui in circuitu.* 10 *Et porta exedrarum ad reliquum portæ unius, quæ ad (f) Aquilonem: & ostium unum ad Austrum: & latitudo (g) luminis (h) reliqui, cubitorum quinque latitudo in circuitu.* 11 *Et quod separat ad faciem reliqui quasi ad mare, cubitorum septuaginta latitudo, parietis separantis cubitorum quinque latitudo in circuitu, & longitudo ejus cubitorum nonaginta.* 12 *Et mensus est contra domum longitudinem cubitorum centum; & reliqua, & separantia, & parietes eorum, longitudinem cubitorũ centum:* 13

MS. A. (α) ϗ διεμέτρησεν (β) πήχεις (γ) πήχεις (δ) πήχεων (ε) πήχεων (ζ) πήχεις (η) αὐτῆς πήχεις τεσσεράκοντα, ϗ εὖρος πήχεις (θ) αἰλὰμ τοῦ θυρώματος πήχεις (ι) πήχεις (κ) πήχεις (λ) πήχεις (μ) τὸ * εὖρος τῶν θυρωμάτων πήχεις τεσσεράκοντα, ϗ εὖρος πήχεις (ν) εἶπεν πρὸς μὲ, (ξ) πήχεις (ο) πήχεις τέσσαρες (π) τὰ πλευρὰ (ρ) ϗ τρὶς (σ) τοῦ οἴκου κύκλῳ, (τ) οἴκου, (υ) μέσων ἐπὶ τὰ τριώροφα, καὶ τοῦ θραὲλ (φ) πήχεων διάστημα, Καὶ (χ) πήχεων (ψ) ἀναμέσον (ω) ϗ εὖρος πήχεων (α) τοῦ οἴκου (β) θυρίδες (γ) πήχεων (δ) πήχεων (ε) πήχεων (ζ) πήχεων (˜) πήχεων

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

אורכא דאולמא עסרין אמין ופותיא חד עסרי אמין ובדרגין דסלקין ליה ועמודיא 49
על אליא חד מכא וחד מכא׃
מא
ואעלני להיכלא ומשח ית אליא שת אמין פותיא מכא ושית אמין פותיא מכא פותיא 1
דמשכנא׃ ופותיא דתרעא עסר אמין וכתפי תרעא חמיש אמין מכא וחמש אמין 2
מכא ומשח אורכיה ארבעין אמין ופותיא עסרין אמין׃ ועל לגיו ומשח אילא דתרעא 3
תרתין אמין ותרעא שת אמין ופותיא דתרעא שבע אמין׃ ומשח ית אורכיה עסרין 4
אמין ופותיא עסרין אמין די קדם היכלא ואמר לי דין בית קודש קודשיא׃ ומשח 5
כותלא דביתא שת אמין ופותיא דמחצתא ארבע אמין סחור סחור מקף לביתא
סחור סחור׃ ומחיציא מחיצא על מחיצא תלתין ותלת חדא עסרי בסדרא קביעין 6
בכתלא דמגיו למחיצא סחור סחור למהוי רישי שריתא ניחין על זיזא ולא יהוין
שריתא מעברן בכתלי ביתא׃ ופותיא מסיבתא וסלקא לעלא לעלא מן מחיציא 7
ארי מקפא ביתא לסלקא לעלא לעלא סחור סחור לגיו על כן פתי ביתא מלעלא וכן
במסבתא סלקין מן ארעיתא לעליתא באורח מציעתא׃ וחזית לביתא רומא סחור 8
סחור משכללן מחיציא משחת קניא שית אמין רוח׃ פותיא דכתלא דמחיצתא 9
דלברא חמש אמין ואתר שביק בית מחיציא דלגיו׃ ובין לשכתא פותיא עסרין אמין 10
סחור סחור מקף לביתא סחור סחור׃ ותרעא דמחיצתא לאתר שביק תרעא חד 11
פתיח לאורח צפונא ותרעא חד פתיח לדרומא ופותיא דאתר שביק חמש אמין סחור
סחור׃ ובנינא דקדם בצורתא רוח אורח מערבא פותיא שבעין אמין וכתלא דבנינא 12
חמש אמין פותיא סחור סחור ואורכיה תשעין אמין׃ ומשח ית ביתא אורכא מאה 13
אמין ובצורתא ובנינא וכתליא אורכא מאה אמין׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Longitudo vestibuli viginti cubitorum, & latitudo undecim cubitorum, & per gradus ascendebant ad illud: & columnæ erant juxta postes, una hinc & una indè. 49

CAP. XLI.

Et introduxit me in templum, & mensus est postes sex cubitorum latitudinis hinc, & sex cubitorum latitudinis indè, latitudine tabernaculi. 1 Et latitudo portæ decem cubitorum erat, & latera portæ quinque cubitorum hinc, & quinque cubitorum indè: & mensus est longitudinem ejus quadraginta cubitis, & latitudinem viginti cubitis. 2 Et ingressus est interiùs, & mensus est postem portæ duobus cubitis, & portam sex cubitis, & latitudinem portæ septem cubitis. 3 Et mensus est longitudinem ejus viginti cubitis, & latitudinem viginti cubitis ante templum: & dixit ad me, Hoc est *(domus)* sanctum sanctorum. 4 Et mensus est parietem domus sex cubitis, & latitudinem tabulati quatuor cubitis per circuitum circuiens domum per gyrum. 5 Tabulata autem, tabulatum super tabulatum, triginta tria, undena per ordinem, defixa parieti intra tabulata per circuitum, ut capita trabium requiescerent super illud quod eminebat, neque trabes penetrarent per parietes domus. 6 At platea circuibat & ascendebat sursum sursum à tabulatis, quia circuibat domum *ascendendo* sursum sursum per circuitum intrinsecus: ideò latior erat domus in superioribus, & sic per cochleam ascendebant de inferioribus ad superiora per viam mediam. 7 Et vidi in domo altitudinem per circuitum, fundata tabulata mensura calami, sex cubitorum spatio. 8 Et latitudo parietis tabulati forinsecus quinque cubitorum, & locus relictus in loco tabulatorum intrinsecus. 9 Et inter gazophylacia latitudo viginti cubitorum in circuitu circum domum per gyrum. 10 Et porta tabulati ad locum relictum, ostium unum apertum ad viam Aquilonarem, & ostium unum apertum ad Austrum: & latitudo loci relicti quinque cubitorum in circuitu. 11 Et ædificium quod erat ante conseptum versus viam Occidentis, latitudinis septuaginta cubitorum: paries autem ædificii quinque cubitorum latitudinis in circuitu, & longitudinis nonaginta cubitorum. 12 Et mensus est ipsam domum, longitudo erat centum cubitorum: & conseptum & ædificium & parietes ejus centum cubitorum. 13

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܘܪܟܗ ܕܐܣܛܘܦܐ ܥܣܪܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܚܕܥܣܪܐ ܐܡܝܢ. ܘܒܕܪܓܐ ܣܠܩܝܢ ܠܗ
ܘܥܡܘܕܐ ܩܝܡܝܢ ܥܠ ܦܪܘܣܛܕܝܗ. ܚܕ ܡܢ ܗܪܟܐ ܘܚܕ ܡܢ ܗܪܟܐ * ܩܦܠܐܘܢ * ܡܐ *
* ܘܐܥܠܢܝ ܠܗܝܟܠܐ. ܘܡܫܚܗ ܠܦܪܘܣܛܕܐ. ܫܬ ܐܡܝܢ ܦܬܝܗ ܡܢ ܗܪܟܐ. ܘܫܬ ܐܡܝܢ
ܦܬܝܗ ܡܢ ܗܪܟܐ. * ܘܦܬܝܗ ܕܡܫܟܢܐ ܘܦܬܝܗ ܕܬܪܥܐ. ܥܣܪ ܐܡܝܢ. ܘܣܛܪܘܗܝ
ܕܬܪܥܐ ܚܡܫ ܐܡܝܢ ܡܢ ܗܪܟܐ. ܘܚܡܫ ܐܡܝܢ ܡܢ ܗܪܟܐ. ܘܡܫܚ ܐܘܪܟܗ ܐܪܒܥܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ
ܥܣܪܝܢ ܐܡܝܢ. * ܘܥܠ ܠܓܘ ܘܡܫܚܗ ܠܦܪܘܣܛܕܐ ܕܬܪܥܐ. ܬܪܬܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܬܪܥܐ ܫܬ
ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܫܒܥ ܐܡܝܢ. * ܘܡܫܚ ܐܘܪܟܗ ܥܣܪܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܥܣܪܝܢ
ܐܡܝܢ. ܠܘܩܒܠ ܗܝܟܠܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܢܘ ܩܘܕܫ ܩܘܕܫܐ. * ܘܡܫܚ ܐܫܬܗ ܕܒܝܬܐ ܫܬ
ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܕܓܦܐ ܫܒܥ ܐܡܝܢ ܡܢ ܚܕܪ ܚܕܪ ܒܝܬܐ. * ܘܓܦܐ ܓܦܐ ܥܠ ܓܦܐ ܬܠܬܝܢ
ܘܬܠܬ ܙܒܢܝܢ. ܘܥܐܠܝܢ ܗܘܘ ܓܦܐ ܒܫܘܪܐ ܕܒܝܬܐ. ܡܢ ܚܕܪ ܚܕܪ. ܕܢܗܘܘܢ ܐܚܝܕܝܢ.
ܘܡܬܦܪܫܝܢ ܡܢ ܫܘܪܐ. * ܘܢܦܩܝܢ ܠܥܠ. ܘܚܕܪܝܢ ܓܦܐ. ܕܢܚܕܪܘܢ ܠܒܝܬܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܠܒܝܬܐ.
ܕܢܦܘܫ ܒܝܬܐ ܡܢ ܠܥܠ. ܘܡܢ ܬܚܬ ܢܗܘܘܢ ܣܠܩܝܢ ܠܡܨܥܝܬܐ. ܘܡܢ ܡܨܥܝܬܐ
ܠܥܠܝܬܐ. * ܘܚܙܝܬ ܪܘܡܗ ܕܒܝܬܐ ܡܢ ܚܕܪ ܚܕܪ. ܘܦܪܝܫܝܢ ܗܘܘ ܓܦܐ ܡܢ ܚܕܐ. ܡܫܘ
ܩܢܝܐ ܟܠܗ. ܫܬ ܐܡܝܢ. * ܘܦܬܝܗ ܕܫܘܪܐ ܕܓܦܐ ܕܠܒܪ. ܚܡܫ ܐܡܝܢ. ܘܡܢ ܠܓܘ
ܚܡܫ ܐܡܝܢ. * ܘܒܝܬ ܐܟܣܕܪܐ ܦܬܝܐ ܥܣܪܝܢ ܐܡܝܢ ܡܢ ܚܕܪ ܒܝܬܐ. * ܘܬܪܥ
ܓܦܐ ܕܫܒܝܩܐ ܬܪܝܢ. ܚܕ ܠܬܝܡܢܐ. ܘܚܕ ܠܓܪܒܝܐ. ܘܦܬܝܗ ܕܫܒܝܩܐ ܚܡܫ
ܐܡܝܢ. * ܘܒܢܝܢܐ ܕܩܕܡ ܦܪܘܣܛܕܐ ܕܒܡܥܪܒܐ. ܦܬܝܗ ܫܒܥܝܢ ܐܡܝܢ. * ܘܫܘܪܗ
ܕܒܢܝܢܐ ܚܡܫ ܐܡܝܢ ܦܬܝܗ ܡܢ ܚܕܪ. ܘܐܘܪܟܗ ܬܫܥܝܢ ܐܡܝܢ. * ܘܡܫܚܗ ܠܒܝܬܐ
ܐܘܪܟܗ ܡܐܐ ܐܡܝܢ. ܘܐܣܛܘܢܐ ܘܒܢܝܢܐ ܘܫܘܪܝܗ. ܐܘܪܟܐ ܡܐܐ ܐܡܝܢ.

* Longitudo liminis erat viginti cubitorum, 49
latitudo verò undecim cubitorum: gradibus
aſcendebatur ad illud, & columnæ ſtabant ad
paraſtades ejus, una hinc, inde altera.

CAP. XLI.

DEinde introduxit me in templum, menſuſ- 1
que eſt paraſtadem, ſex cubitorum latitudi-
nem ejus hinc, & ſex cubitorum latitudinem
ejus inde. Latitudo tabernaculi, & latitudo 2
januæ erat decem cubitorum; latera verò ja-
nuæ quinque cubitorum hinc, & quinque cu-
bitorum inde: & menſus eſt longitudinem
ejꝰ quadraginta cubitorum, latitudinem verò
viginti cubitorum. Et ingreſſus intrinſecùs 3
menſus eſt paraſtadem januæ duorum cubito-
rum, januam verò ſex cubitorum, & latitudi-
dem ejus ſeptem cubitorum. Tum menſus eſt 4
longitudinẽ ejus viginti cubitorum, & latitu-
dinem ejus viginti cubitorum è regione tem-
pli: dixitque mihi, Hoc eſt Sanctum Sancto-
rum. Item menſus eſt parietem domûs ſex 5
cubitorum, & latitudinem coſtæ ſeptem cu-
bitorum quaquaverſùs circa domum. Et qui- 6
dem coſtæ, erant coſta ſuper coſtam triginta
tribus vicibus, & ingrediebantur hæ coſtæ in
parietem domûs circunquaque; ita ut firmæ
quidem eſſent, ſed ſeparatæ à pariete. Cohæ- 7
rebant autem ſupernè hæ coſtæ, ita ut domum
ſupernè circuncingerent; quatenus amplior
eſſet domus ſupernè, & ex imo aſcendi
poſſet ad mediana, & ex medianis ad ſu-
prema. Similiter vidi altitudinem domûs 8
circunquaque: & ſejunctæ erant coſtæ ab-
invicem arundine integrâ, ſex cubitis. Lati- 9
tudo parietis *cujuſlibet* coſtæ extrinſecùs
quinq; erat cubitorũ, & intrinſecùs quinque
cubitorũ. Inter exedras *intercedebat* latitudo 10
viginti cubitorum circa domũ. Oſtium coſtæ 11
derelictum, *duplex erat*; unum verſùs Meri-
diem, alterum verſùs Aquilonem: & latitudo
oſtii derelicti erat quinq; cubitorũ. Ædificii 12
autem quod reſpondebat areæ quæ erat in porta
Occidentali, latitudo erat ſeptuaginta cubi-
torũ: & parietis ædificii quinque cubitorũ la-
titudo circunquaque, longitudo verò nonaginta cubitorum. Deinde menſus eſt domum longitudine centum cubitorum, et areâ ædificii parietũ longitudine centũ cubitorũ, 13

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وطول الرواق عشرون ذراعا * وعرضه اثني عشر ذراعا * وصعد اليه على عشر درج
وعامودان كانا على الرواق واحد من هاهنا * وواحد من هاهنا *

* الفصل الحادي والاربعون * الاصحاح الرابع والعشرون *

* وادخلني الى الهيكل * وقاس الرواق * ستة ادرع عرضه من ههنا * وستة ادرع سعة الرواق
من هاهنا * وسعة الباب عشر ادرع * واكتاف الباب خمسة ادرع من هاهنا * وخمسة ادرع
من هاهنا * وقاس طوله اربعين ذراعا * وعرضه عشرين ذراعا * ودخل الى الدار الداخلة
وقاس رواق الجارية ذراعين * والجارية ستة ادرع * واكتاف الجارية سبعة ادرع من ههنا
وسبعة ادرع من ههنا * وقاس طول الجاريات اربعين ذراعا * وسعتهن عشرين ذراعا على
واجهة الهيكل * وقال لي * هذا قدس القديسين * وقاس حائط البيت ستة ادرع * وعرض
الجانب اربعة ادرع من حوله * والجوانب جانب على جانب * ثلاثين وثلثة في اثنين * والباحة
في حائط البيت في جوانب البيت محيطة * لتكون للآخذين ان ينظروا كيلا يلمسوا
حيطان البيت بالكلية * وسعة علو الاجناب كالزيادة من البيت الى العلو تحيط البيت
كيلا يتسع من فوق * ومن الاسفل يصعدون الى العلالي * ومن الاوسط الى الثالث طباق
* وارتفاع البيت تحيط مساوة الجوانب مساو للقصبة مسافة الادرع * وعرض حائط الجانب من خارج
خمسة ادرع * والبواقي بين جوانب البيت وبين المقاصير * والاتساع عشرون ذراعا يدور البيت
من حوله * وكوا المقاصير على فضلة الباب الواحد الذي نحو الجربياء * والباب الواحد نحو
التيمن * وسعة نور الفضلة خمسة ادرع عرضا من حوله * والفاصل الى واجهة الفضلة نحو البحر
سبعون ذراعا * عرض الحائط الفاصل خمسة ادرع سعته من حوله * وطوله تسعون ذراعا
* وقاس قبالة البيت مائة ذراع طولا * والبواقي والفواصل والحيطان طولهم مائة ذراع

* *Longitudo verò porticûs, viginti cubito-* 49
rum: et latitudo ejus duodecim cubitorum:
aſcenditq; ad eam ſuper decem gradus:
& duæ erant columnæ ſuper porticum,
una hinc, indè altera.

CAP. XLI.

Textus vigeſimus quartus.

P*Rætereà introduxit me in templum: et* 1
menſus eſt porticum, ſex cubitorum latitu-
dinem ejus hinc, & ſex cubitorum ampli-
tudinem porticûs indè. Amplitudo januæ 2
decem erat cubitorum, humeri verò januæ
quinq; cubitorum hinc, & quinque cubito-
rum indè: menſúſque eſt longitudinem
ejus quadraginta cubitorum, latitudinem
verò viginti cubitorum. Deindè ingreſſus 3
atrium interius, menſus eſt porticum fori-
um duorum cubitorum: porrò fores ſex
erant cubitorum: humeri autem forium
ſeptem cubitorum hinc, et ſeptem cubito-
rum indè. Et menſus eſt longitudinem 4
forium, quadraginta cubitorum; et latitu-
dinem earum viginti cubitorum à fronte
templi: et dixit mihi; Hoc eſt Sanctum
ſanctorum. Tum menſus eſt parietem do- 5
mûs, ſex cubitorum, et latitudinem la-
terum quatuor cubitorum circunquaque.
Latera verò erant latus ſuper latus, bis 6
triginta tria: et interſtitium in pariete
domûs in lateribus domûs circunquaque,
ut eſſet videre cupientibus, ne omninò tan-
gerent parietes domûs. Et latitudo ſubli- 7
mitatis laterum, ut additamentum, ex do-
mo ad ſummum cingebat domum, ne la-
tior eſſet ſuperiùs: et ex imo aſcendebant
ad cœnacula, et è medianis ad tertiam
contignationem. Altitudo domûs per cir- 8
cuitum ſpatii laterum, æqualis erat cala-
mo, ſpatio ſex cubitorum: Latitudo verò 9
parietis cujuſque lateris forinſecùs, quinq;
cubitorum: Reliqua inter latera domûs et 10
inter cantorum pulpita: et amplitudo vi-
ginti cubitorum circa domum erat unde-
quaq. Feneſtræ pulpitorum erant ſupra ſu- 11
perfluitatem portæ unius quæ erat verſùs
Aquilonem, et portæ alterius quæ verſùs
Auſtrum: amplitudo autem luminis il-
lius ſuperfluitatis, quinque cubitorum erat
in latitudinem circunquaque. Separatio è 12
regione ſuperfluitatis verſùs mare, ſeptua-
ginta cubitorum: latitudo parietis ſeparan-
tis, quinque cubitorum amplitudinem con-
tinebat undequaque, longitudo verò nona-
ginta cubitorũ. Deindè menſus eſt à fron- 13
te domûs cubitos centum in longitudinem:
et reliquorum, et ſeparationum, atque parie-
tum longitudo fuit centum cubitorum;

יחזקאל : מב

centum orientem ad *ſepoſiti tabulati* & , domus *facierum* latitudo Et
14 ורחב פני הבית והגזרה לקדים מאה
ſepoſiti tabulati facies ad ædificii longitudinem eſt menſus Et .cubitorum
15 אמה : ומדד ארך הבנין אל פני הגזרה
; cubitis centum inde & , hinc ejus *angulos &* , *ejus poſteriora ſuper* quod
אשר על אחריה ואתוקיהא מפו ומפו מאה אמה
feneſtras & , Limina .atrii veſtibula & , interius templum &
16 וההיכל הפנימי ואלמי החצר : הספים והחלונים
opertum limen contra , *ipſis tribus in circa angulos & , arctas*
האטמות והאתיקים סביב לשלשתם נגד הסף שחיף
feneſtræ & : feneſtras ad uſque terra Et .circa circum *ligno*
עץ סביב סביב והארץ עד החלנות והחלנות
, interiorem domum ad uſque *&* , oſtium *deſuper Super* .opertæ
17 מכסות : על מעל הפתח ועד הבית הפנימי
, interiori in , circa circum pariete omni in & , forinſecus &
ולחוץ ואל כל הקיר סביב סביב בפנימי
palma & : *palmis* & , Cherubim factus Et .menſuras exteriori in &
18 ובחיצון מדות : ועשוי כרובים ותמרים ותמרה
hominis facies Et .Cherub facies duæque , Cherub , Cherub inter
19 בין כרוב לכרוב ושנים פנים לכרוב : ופני אדם
factum : inde palmam *ad* catuli facies & , hinc palmam *ad*
אל התמרה מפו ופני כפיר אל התמרה מפו עשוי
deſuper ad uſque terra A .circa circum *domum omnem ad*
20 אל כל הבית סביב סביב : מהארץ עד מעל
.templi parietem & : factæ palmæ & , Cherubim oſtium
הפתח הכרובים והתמרים עשוים וקיר ההיכל :
.aſpectus ſicut *aſpectus* ſanctitatis *facies* Et : *quadratus* poſtis Templi
21 ההיכל מזוזת רבעה ופני הקדש המראה כמראה :
duorum ejus longitudo & , altitudo cubitorum trium lignei Altaris
22 המזבח עץ שלוש אמות גבה וארכו שתים
: *ligni* ejus parietes & , ejus longitudo & , ei ejus anguli & , cubitorum
אמות ומקצעותיו לו וארכו וקירתיו עץ
duæ Et .*Domini facies ad* quæ , menſa Hæc : me ad eſt locutus &
23 וידבר אלי זה השלחן אשר לפני יהוה : ושתים
: *foribus fores duæ* Et .ſanctitati & , templo *fores*
24 דלתות להיכל ולקדש : ושתים דלתות לדלתות
valvæ duæ & , uni *valvæ duæ valvæ plicatiles duæ*
שתים מוסבות דלתות שתים לדלת אחת ושתי דלתות
, Cherubim templi *foribus in eas ad facta* Et .alteri
25 לאחרת : ועשויה אליהן אל דלתות ההיכל כרובים
ad ligni trabs & : parietibus factæ quemadmodum , *palmæ &*
ותמרים כאשר עשוים לקירות ועב עץ אל
, hinc palmæ & , *arctæ* feneſtræ Et .forinſecus *veſtibuli facies*
26 פני האולם מהחוץ : וחלונים אטמות ותמרים מפו
.*trabes* & , domus *coſtæ* & : veſtibuli *humeros ad* inde &
ומפו אל כתפות האולם וצלעות הבית והעבים :

CAP. XLII. מב

: aquilonis viam , viam exterius atrium ad me eduxit Et
1 ויוצאני אל החצר החיצונה הדרך דרך הצפון
, *ſepoſitum tabulatum* contra quod , cubiculum ad me fecit ingredi &
ויבאני אל הלשכה אשר נגד הגזרה
longitudinis facies Ad .aquilonem ad ædificium contra quod &
2 ואשר נגד הבנין אל הצפון : אל פני ארך
quinquaginta latitudinis & : aquilonis oſtium centum cubitorum
אמות המאה פתח הצפון והרחב חמשים
contra & , interiori atrio qui viginti *Coram* .cubitorum
3 אמות : נגד העשרים אשר לחצר הפנימי ונגד
anguli facies ad angulus : exteriori atrio quod pavimentum
רצפה אשר לחצר החיצונה אתיק אל פני אתיק
.tertiis in
בשלשים :

Verſio VULG. LAT.

14 Latitudo autem ante faciem domûs, & ejꝰ ꝙ erat ſeparatū contra Orientē, centum cubitorū. 15 Et menſꝰ eſt longitudinē ædificii contra faciem ejꝰ ꝙ erat ſeparatum ad dorſum: ethecas ex utraque parte centum cubitorū: & templum interius, & veſtibula 16 atrii. Limina, & feneſtras obliquas, & ethecas in circuitu per tres partes, contra uniuſcujuſque limen, ſtratū que ligno per gyrum in circuitu: terra autē uſq; ad feneſtras, & feneſtræ clauſæ 17 ſuper oſtia. Et uſque ad domum interiorem, & forinſecùs per omnem parietem in circuitu intrinſecùs, & forinſecùs, ad men-18 ſuram. Et fabrefacta Cherubim & palmæ: & palma inter Cherub & Cherub, duáſque facies 19 habebat Cherub. Faciem hominis juxta palmam ex hac parte, & faciem leonis juxta palmam ex alia parte, expreſſam per omnem 20 domū in circuitu. De terra uſq; ad ſuperiora portæ, Cherubim et palmæ cælatæ erant in pariete 21 templi. Limen quadrangulum, & facies Sanctuarii, aſpectꝰ contra 22 aſpectū. Altaris lignei triū cubitorū altitudo: & longitudo ejꝰ duorū cubitorū: & anguli ejus, & longitudo ejꝰ, & parietes ejus lignei. Et locutꝰ eſt ad me; Hæc 23 eſt menſa corā Dño. Et duo oſtia erant in templo et in Sanctuario. 24 Et in duobus oſtiis ex utraque parte bina erant oſtiola, quæ in ſe invicē plicabantur: bina enim oſtia erant ex utraque parte oſti-25 orum. Et cælata erant in ipſis oſtiis templi Cherubim, et ſculpturæ palmarum, ſicut in parietibus quoque expreſſæ erant: quam ob rem et groſſiora erant ligna in veſtibuli fronte forinſe-26 cùs. Super quæ feneſtræ obliquæ, et ſimilitudo palmarū hinc atq; indè in humerulis veſtibuli, ſecundùm latera domûs, latitudinémque parietum.

CAP. XLII.

1 ET eduxit me in atrium exterius per viā ducentem ad Aquilonem, et introduxit me in gazophylacium, ꝙ erat contra ſeparatū ædificiū, et contra ædem 2 vergentem ad Aquilonē. In facie longitudinis, centū cubitos oſtii Aquilonis: et latitudinis quin-3 quaginta cubitos, Contra viginti cubitos atrii interioris, et contra pavimentum ſtratum lapide atrii exterioris, ubi erat porticus juncta porticui triplici.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Καὶ τὸ εὖρος κατὰ πρόσωπον τοῦ οἴκου, ϗ τὰ 15 ἀπόλοιπα κατέναντι πηχῶν ἑκατόν. Καὶ διεμέτρησε (η) μῆκος τοῦ διορίζοντος κατὰ πρόσωπον τοῦ ἀπολοίπου τῆς κατόπισθεν τοῦ οἴκου ἐκείνου, ϗ τὰ ἀπόλοιπα ἔνθεν ϗ ἔνθεν πηχῶν ἑκατὸν τὸ μῆκος· ϗ ὁ ναὸς, ϗ αἱ γωνίαι, ϗ τὸ αἰλὰμ τὸ ἐξώτερον, πε-16 φατνωμένα. Καὶ αἱ θυρίδες δικτυωταὶ, ὑποφαύσεις κύκλῳ τοῖς τρισὶν, ὥστε διακύπτειν. ϗ ὁ οἶκος ϗ τὰ πλησίον ἐξυλωμένα κύκλῳ, ϗ τὸ ἔδαφος, ϗ ἐκ τοῦ ἐδάφους ἕως τῶν θυρίδων· ϗ αἱ θυρίδες ἀναπτυσσόμεναι τρισσῶς εἰς τὸ διακύπτειν. 17 Καὶ ἕως πλησίον τῆς ἐσωτέρας ϗ ἕως τῆς ἐξωτέρας, ϗ ἐφ' ὅλον τὸν (θ) τοῖχον κύκλῳ ἐν τῷ 18 ἔσωθεν ϗ ἐν τῷ ἔξωθεν (ι), Γεγλυμμένα χερουβὶμ, ϗ φοίνικες ἀναμέσον χερουβ ϗ ἀναμέσον χερούβ. δύο πρόσωπα τῷ χε-19 ρούβ· Πρόσωπον ἀνθρώπου πρὸς τὸν φοίνικα ἔνθεν ϗ ἔνθεν, ϗ πρόσωπον λέοντος πρὸς τὸν φοίνικα ἔνθεν ϗ ἔνθεν· διαγε-20 γλυμμένος (κ) ὁ οἶκος κυκλόθεν. Ἐκ τοῦ ἐδάφους ἕως τοῦ φατνώματος, τὰ (λ) χερουβὶμ ϗ οἱ φοίνικες διαγεγλυμμένοι. Καὶ 21 τὸ ἅγιον ϗ ὁ ναὸς (μ) ἀναπτυσσόμενος τετράγωνα, κατὰ πρόσωπον τῶν ἁγίων ὅρασις 22 ὡς ὄψις Θυσιαστηρίου ξυλίνου, (ν) πηχῶν τριῶν τὸ ὕψος αὐτοῦ, ϗ τὸ μῆκος (ξ) πηχῶν δύο, ϗ τὸ εὖρος (ο) πηχῶν δύο· ϗ κέρατα εἶχε, ϗ ἡ βάσις αὐτοῦ ϗ οἱ τοῖχοι αὐτοῦ ξύλινοι. ϗ εἶπε πρὸς μὲ, Αὕτη ἡ τρά-23 πεζα (π), ἡ πρὸ προσώπου κυρίου. Καὶ δύο θυρώματα τῷ ναῷ, (ρ) ϗ δύο θυρώματα τῷ 24 ἁγίῳ, Τοῖς δυσὶ θυρώμασι τοῖς στροφωτοῖς· δύο θυρώματα τῷ ἑνὶ, ϗ δύο θυρώ-25 ματα τῇ (σ) θύρᾳ τῇ δευτέρᾳ. Καὶ γλυφὴ ἐπ' αὐτῶν, ϗ ἐπὶ τὰ θυρώματα τοῦ ναοῦ (τ) χερουβὶμ· ϗ φοίνικες κατὰ τὴν γλυφὴν τῶν ἁγίων, ϗ σπουδαῖα ξύλα κατὰ πρόσωπον τοῦ 26 αἰλὰμ ἔξωθεν, Καὶ θυρίδες κρυπταί. ϗ διεμέτρησεν ἔνθεν καὶ ἔνθεν, εἰς τὰ ὀροφώματα τοῦ αἰλὰμ, ϗ τὰ πλευρὰ τοῦ οἴκου (υ) ἐζυγωμένα.

MS. A. (η) τὸ τεῖχον τοῦ (θ) οἶκον κυκλόθεν ἐν τῷ (ι) μέτρα, Καὶ γεγλυμμένα χερουβεὶν, ϗ φοίνικες· ϗ φοίνιξ ἀναμέσον * χερουβεὶμ χερούβ. (κ) ὅλος ὁ οἶκος (λ) χερουβεὶν (μ) ἀναπτυσσόμενα (ν) πήχεων (ξ) πήχεων (ο) πήχεων (π) κατὰ πρόσωπον (ρ) ϗ τῷ ἁγίῳ δύο θυρώματα, Τοῖς δυσὶν θυρώμασιν τοῖς (σ) δευτέρα θύρα. (τ) Χερουβείν· (υ) ἐξυλωμένα.

Et latitudinem contra faciem 14 *templi, & reliqua e contra cubitorum centum.* 15 *Et menſus eſt longitudinem ſeparantis contra faciem (i) reliqui, quæ erant poſt tergum domûs illius, & reliqua hinc & indè, cubitorum centum longitudinem: Et (k) templum & anguli, & Ælam exterius ſtrata ligno:* 16 *Et feneſtræ in modum retis factæ, (l) illuminationes in circuitu tribus, ad proſpiciendum. Et domus, & ea quæ proxima erant, ſtrata ligno per circuitum, & pavimentum, & de pavimento uſque ad feneſtras: & feneſtræ aperiebantur tripliciter, ut proſpiceretur per eas.* 17 *Et (m) uſque propè interiorem, & uſque ad exteriorē, & per omnē parietem in circuitu intrinſecꝰ, & (n) extrinſecùs,* 18 *Cælata Cherubim & palmæ inter Cherub, & Cherub. Duæ facies Cherub:* 19 *Facies hominis ad palmā hinc (o) & hinc, & facies leonis ad palmam indè, & indè: cælata domꝰ in circuitu.* 20 *A pavimento uſq; ad (p) laqueare, Cherubim, & palmæ cælatæ.* 21 *Et Sanctuariū & templū aperiebantur per quatuor angulos contra faciem Sanctorum: viſio, quaſi ſpecies* 22 *Altaris lignei: trium cubitorum altitudo ejus, & longitudo cubitorum duorum, & latitudo cubitorum duorum: & cornua habebat: & baſis ejus, & parietes ejus lignei. Et dixit ad me; Hæc eſt menſa, quæ ante faciem Domini.* 23 *Et duo oſtia templo, & duo oſtia Sanctuario,* 24 *Duobus oſtiis verſatilibus: duo oſtia uni, & duo oſtia portæ ſecundæ:* 25 *Et cælatura ſuper eas, & ſuper oſtia templi Cherubim, & palmæ juxta ſculpturam Sanctorum, & (q) neceſſaria ligna (r) ad faciem Ælam forinſecùs,* 26 *Et feneſtræ abſconditæ. Et menſus eſt hinc & indè, in laquearia Ælam, & latera domûs (ſ) æqui ponderis.*

ΚΕΦ. λα'.

1 ΚΑὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν αὐλὴν τὴν (˜) ἐσωτέραν κατὰ ἀνατολὰς, κατέναντι τῆς πύλης τῆς πρὸς Βορρᾶν, ϗ εἰσήγαγέ με· ϗ ἰδοὺ ἐξέδραι (α) πέντε, ἐχόμεναι τοῦ ἀπολοίπου, ϗ ἐχόμεναι τοῦ διορίζοντος πρὸς Βορρᾶν. (β) 2 Ἐπὶ πήχεις ἑκατὸν μῆκος πρὸς Βορρᾶν, ϗ 3 τὸ πλάτος πεντήκοντα (γ), Διαγεγραμμέναι ὃν τρόπον αἱ πύλαι τῆς αὐλῆς τῆς ἐσωτέρας, ϗ ὃν τρόπον τὰ περίστυλα τῆς αὐλῆς τῆς ἐξωτέρας (˜) ἐστιχισμέναι, ἀντιπρόσωποι στοαὶ τρισσαί.

MS. A. (˜) ἐξωτέραν (α) δεκαπέντε, (β) Κατὰ πρόσωπον ἐπὶ (γ) πήχεων, (˜) ἐστιχισμένα,

CAP. XLII.

ET (a) introduxit me in atriū 1 *(b) interius ad Orientem contra portam, quæ ad Aquilonem: & introduxit me: & ecce exedræ quinq; juxta reliquū ad ſitum, & juxta ſeparans ad (c) Aquilonem,* 2 *Ad cubitos centum longitudo ad Aquilonem, & latitudo quinquaginta:* 3 *Deſcriptæ, ſicut portæ atrii interioris, & ſicut columnæ atrii exterioris (d) per ordinem contra faciem porticus ternæ:*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ופותיא דקדם ביתא ובצורתא למדנחא מאה אמין : ומשח אורכא דבנינא דקדם
15 בצורתא דלאחורהא וזויתהא מכא ומכא מאה אמין והיכלא גואה ואולמי דרתא :
16 ספיא וכוין סתימן ועתיקיא סחור סחור לתלתיהון לקבל ספא דחפי נסרין דארזא
17 סחור סחור וארעא עד כויא וכוין סתימן : עד לעלא מן תרעא ומן ביתא גואה ולברא
18 ועל כל כותלא סחור סחור מלגיו ומלברא משחן : וגליף כרובין וכותרן וכותרתא
19 בין כרובא לכרובא ותרין אפין לכרובא : ואפי אנשא עביד לכותרתא מכא ואפי אריא
20 עביד לכותרתא מכא גליף על כל ביתא סחור סחור : מארעא עד לעלא מתרעא
21 כרובין וכותרן גליפן וכן לכתלא דהיכלא : היכלא דספוהי מרבעין ואפי בית כפורי
22 חזויה כחזו יקריה : לקבל מדבחא פתורא דאעא תלת אמין רומיה ואורכיה תרתין
23 אמין וזוין ליה ואורכיה וכותלוהי דאעא ומלל עמי דין פתורא דקדם יי : ותרתין
24 דשין להיכלא ולבית כפורי : ותרתין דשין אמהן לדשיא תרתין מקפן דשין תרתין
25 לדשא חד ותרתין דשין לאוחרנתא : וגליף עליהון על דשי היכלא כרובין וכותרן
26 כמא דגליף על כותליא וסקפתא דאעא על אפי אולמא מלברא : וכוין סתימן וכותרתא
מכא ומכא על כתפי אולמא ומחיצת ביתא וסקפתא :

מב

1 ואפקני לדרתא בריתא באורח תרעא דפתיח לאורח צפונא ואעלני ללשכתא דקדם
2 בצורתא ודקדם בנינא לצפונא : לקבל אורכא דאמין מאה תרעא חד דפתיח לצפונא
3 ופותיא חמשין אמין : לקביל עסרין דלדרתא גויתא וקביל דלצפונא רצפתא
דפתיחא לדרתא בריתא זוי לקביל זוי בתלתין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

14 Et latitudo quæ erat ante domum & conſeptū ad Orientem, centū cubitorū erat. 15 Et menſus eſt longitudinem ædificii quod erat ante conſeptum ad poſteriora ejus & angulos ejꝰ hinc, & indè, centum cubitis: & templum interiꝰ & veſtibula atrii, 16 Et limina, & feneſtras obturatas & appendices in circuitu ternas exadverſo liminis quod opertū erat tabulis cedrinis in circuitu, idque à ſolo uſque ad feneſtras, feneſtræ autē obturatæ erant. 17 Uſque ſupra portam & à domo interiori & forinſecꝰ, & ſuper omnes parietes per circuitum intus & foris juxta menſuram. 18 Et ſculpſit Cherubim & capitella, & capitellum inter Cherub & Cherub: & duas facies habebat Cherub. 19 Facies hominis erat facta ex una parte capitelli, & facies leonis facta ex altera parte capitelli, ſculptæ ſuper totam domum per circuitum. 20 A terra autem uſque ſuper portam, Cherubim & capitella cælata erant, & ſimiliter in pariete templi. 21 Templi autem limina quadrata, & facies domus propitiatorii, & aſpectus ejꝰ ſicut aſpectus gloriæ *ejus*. 22 Menſa autem lignea erat ante altare, cujꝰ altitudo erat trium cubitorum, & longitudo ejus duorum cubitorum: & anguli erant ei, & longitudo, & parietes ejꝰ lignei erant: & locutus eſt ad me: Hæc eſt menſa quæ eſt coram Dño. 23 Et duo oſtia erant in templo & in domo propitiatorii: 24 Et geminæ fores erant velut matres his oſtiis: bina erant oſtiola verſatilia, duo oſtiola [*inquam*] in oſtio uno, & duo oſtiola in altero. 25 Et cælata erant in ipſis oſtiis templi Cherubim & capitella ſicut cælata erant in parietibus: & trabs lignea ſuper faciem veſtibuli extrinſecus. 26 Et feneſtræ obturatæ, & capitella hinc et indè in humeris veſtibuli, et tabulata domus et ſuperluminaria.

CAP. XLII.

1 ET eduxit me in atrium exterius per viam portæ quæ aperta eſt ad viam Aquilonis: et introduxit me in gazophylacium quod erat ante conſeptum et ante ædificium vergens ad Aquilonem. 2 E regione longitudinis centum cubitorum erat porta una quæ patebat ad Aquilonem, et latitudinis quinquaginta cubitorum. 3 E regione viginti cubitorum atrii interioris, e regione *Aquilonis* pavimenti illius quod apertum erat ad atrium exterius, angulos contra angulos triplices.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

14 * ܘܦܬܝܐ ܠܘܩܒܠ ܒܝܬܐ. ܘܕܪܬܐ ܡܕܢܚܝܬܐ. ܡܐܐ ܐܡܝܢ. * ܘܡܫܚ ܐܘܪܟܗ
15 16 ܕܒܢܝܢܐ ܕܩܕܡ ܕܪܬܐ ܘܡܫܟܢܗ ܘܐܣܛܘܢܘܗܝ ܡܟܐ. ܘܡܟܐ. ܡܐܐ ܐܡܝܢ. * ܘܗܝܟܠܐ
ܓܘܝܐ. ܘܦܪܘܣܛܕܐ ܕܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ . ܘܣܩܦܐ. ܘܟܘܐ. ܘܐܣܛܘܢܐ ܡܢ ܚܕܪܝܢ. ܘܡܛܠܠܝܢܗܘܢ
17 ܠܬܪܥܐ. ܩܕܡ ܩܝܣܐ. ܡܢ ܚܕܪܝܢ. ܘܐܘܪܟܗ ܥܕܡܐ ܠܟܘܐ. * ܘܟܘܐ ܡܛܫܝܢ ܠܥܠ ܡܢ ܬܪܥܐ
ܕܒܝܬܐ ܓܘܝܐ. ܘܠܒܪ: ܘܟܠܗܘܢ ܐܣܬܐ ܡܢ ܚܕܪ ܚܕܪ . ܡܫܚ ܡܢ ܠܒܪ. ܘܡܢ ܠܓܘ.
18 * ܘܥܒܝܕ ܟܪܘܒܐ. ܘܕܩܠܐ. ܘܕܩܠܐ ܒܝܢ ܟܪܘܒܐ ܠܟܪܘܒܐ. ܘܬܪܝܢ ܐܦܝܢ ܠܟܪܘܒܐ. * ܘܐܦܐ
19 ܕܒܪܢܫܐ ܠܘܬ ܕܩܠܐ ܡܟܐ ܘܡܟܐ . ܥܒܝܕ ܠܟܠܗ ܒܝܬܐ ܚܕܪ ܚܕܪ. * ܡܢ ܐܪܥܐ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠ
20 ܡܢ ܬܪܥܐ . ܟܪܘܒܐ. ܘܕܩܠܐ. ܥܒܝܕܝܢ. * ܘܫܘܪܐ ܕܗܝܟܠܐ. ܡܪܒܥܐ ܗܘܐ. ܘܐܦܝ ܩܘܕܫܐ
21 ܚܙܝܢ . ܐܝܟ ܚܙܘܗ ܕܡܕܒܚܐ ܕܩܝܣܐ. * ܕܪܘܡܗ ܬܠܬ ܐܡܝܢ. ܘܐܘܪܟܗ. ܬܪܬܝܢ ܐܡܝܢ.
22 ܘܙܘܝܬܐ ܐܝܬ ܠܗ. ܘܐܘܪܟܗ ܘܐܣܛܘܢܘܗܝ ܕܩܝܣܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܢܐ ܦܬܘܪܐ ܕܩܕܡ ܡܪܝܐ.
23 * * ܘܬܪܝܢ ܬܪܝܢ ܬܪܥܝܢ ܠܡܨܪܥܐ. ܬܪܝܢ ܠܡܨܪܥܐ ܚܕ . ܘܬܪܝܢ ܠܡܨܪܥܐ ܐܚܪܢܐ.
24 25 * ܘܥܒܝܕ ܥܠܝܗܘܢ ܥܠ ܬܪܥܐ ܕܗܝܟܠܐ . ܟܪܘܒܐ ܘܕܩܠܐ. ܐܝܟ ܕܥܒܝܕܝܢ ܥܠ ܫܘܪܐ.
26 * ܘܦܬܘܗܝ ܕܦܪܘܣܛܕܐ. ܡܛܫܝܢ ܩܝܣܐ ܡܢ ܠܒܪ. ܘܟܘܐ. ܡܨܠܢܝܢ. ܘܕܩܠܐ ܐܝܟ ܗܕܐ
ܘܡܟܐ ܥܠ ܣܛܪܘܗܝ ܕܦܪܘܣܛܕܐ. ܘܥܠܥܘܗܝ ܕܒܝܬܐ. ܡܛܫܝܢ ܕܩܝܣܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܒ *

1 * ܘܐܦܩܢܝ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ ܠܐܘܪܚܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܐܥܠܢܝ ܠܐܟܣܕܪܐ ܕܠܘܩܒܠ ܕܪܬܐ
2 ܘܠܘܩܒܠ ܒܢܝܢܐ ܓܪܒܝܐ. * ܠܘܩܒܠ ܐܘܪܟܐ ܕܡܐܐ ܐܡܝܢ ܬܪܥܐ ܓܪܒܝܐ. ܘܦܬܝܐ
3 ܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ. * ܠܘܩܒܠ ܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ. ܘܠܘܩܒܠ ܕܪܓܐ ܕܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ
ܕܒܢܝܢ ܚܕ ܥܠ ܚܕ ܠܬܠܬܐ ܛܒܩܝܢ.

Latitudine verò pro portione domûs : area 14
autem Orientalis centū erat cubitorū. Denique 15
menſus eſt longitudinem ædificii quod
erat ante aream, & poſticam ejus partem,
ejuſque balauſtia hinc inde, centum cubitorū:
Templum quoq; interius, paraſtades januarū 16
atrii, podia, feneſtras, & balauſtia circunquaque.
Cæterùm tres iſtæ portæ tectorium
habebant ligneū circunquaque, cujꝰ longitudo
ad feneſtras uſq; *pertingebat* : Ipſæq; feneſtræ 17
obtectæ erant ſuper oſtium domûs interioris.
Foris quoq; parietes omnes circunquaq;
menſus eſt extrinſecùs & intrinſecùs.
Elaboratū autem erat Cherubinis & palmis ; 18
nam palma inter duos quoſq; Cherubinos *intercedebat*,
binæq; facies erant cuiq; Cherubino,
Et facies humana ſuper palmas hinc indé: 19
ita elaborata erat tota domus circunquaque.
A ſolo & ultra portas uſque, Cherubini & 20
palmæ erant fabrefactæ. Paries templi quadratꝰ 21
erat: & frons Sanctuarii conſpicua, ſimilis
erat formæ altaris lignei, Cujus altitudo 22
trium erat cubitorum, longitudo verò duorū
cubitorum: angulos habebat: & longitudo atque
balauſtia ejus erant lignea : dixitque
mihi, Hæc eſt menſa quæ eſt coram Domino.
Geminæ erant valvæ ſingulis foribus, binæ 23
foribꝰ unis, & binæ foribus alteris : Atque 24
ſuper his templi foribꝰ fabrefacti erant Che- 25
rubini & palmæ, quemadmodū fabrefacti erāt
in parietibꝰ. Frons paraſtadis obtecta erat ligno 26
extrinſecùs : feneſtræ obliquæ: & palmæ
utrinq; ſuper latera paraſtadis: ſimiliter coſtæ
domûs obtectæ erant aſſeribus.

CAP. XLII.

DEinde educens me ad atrium exterius aquilonem 1
verſùs, introduxit me in exedram
quæ erat ante aream & ante ædificium aquilonare :
Ante longitudinem centum cubitorum 2
portæ Aquilonaris, & latitudinem quinquaginta
cubitorum : Ante januam atrii interioris, 3
& ante gradus atrii interioris, qui
extructi erant alter ſuper alterum tribus contignationibus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

14 15 * وعرضهم على واجهة البيت والبواقي المقابلة مائة ذراع * وقاس حائط الفاصل على واجهة
16 الفصلة للذين من خلف ذلك البيت والبواقي من ههنا ومن ههنا مائة ذراع طولا * والهيكل
وزواياه والرواق الخارج ملوحات بالخشب وكوا مشبكة مناور تحيط بالثلاثة ليطل منها والبيت
17 وجوانبه ملوح بالخشب دائرا والأرض ومن الأرض إلى الكوا * والكوا مفتحة بتثليث ليطل
وإلى جانب الداخلة وإلى الخارجة وعلى البيت كله من حوله فيما من داخل وفيما من خارج
18 * مقادير وشاروبيمات منحوتة ونخل ونخلة وسط الشاروبيمات شاروبيمان وجوه الشاروبيمات
19 * وجه إنسان نحو النخلة من ههنا ومن ههنا ووجه أسد نحو النخلة من ههنا ومن ههنا
20 21 * والبيت كله منحوت من حوله من الأرض إلى السقف والشاروبيمات والنخيل منحوتة * والقدس
22 والهيكل منبسطة مربعة ولوجه الأقداس منظر مثل هيئة مذبح خشبي * ارتفاعه ثلثة أذرع
وطوله ذراعا وعرضه ذراعا وله قرون وقواعده وحيطانه خشبية وقال لي هذه المائدة لوجه
23 24 الرب * ونجاريتان للهيكل وللقدس نجاريتان * للنجاريتين نجاريتان للواحد ونجاريتان
25 للباب الثاني * وعليهم نقش وعلى نجاريات الهيكل شاروبيمات ونخيل كنقش الأقداس
26 * وأخشاب نقية على واجهة الرواق من خارج وكوا خفية * وقاس من ههنا ومن ههنا إلى
علالي الرواق وجوانب البيت ملوحة بالخشب

* الفصل الثاني والأربعون

1 * وأدخلني إلى الدار الخارجة نحو المشارق قباله الباب الذي إلى الجربياء وأدخلني وإذا
2 خمس عشر معصون قريبة من الفصلة وقريبة من الفاصل نحو الجربياء للوجه * مائة ذراع
3 طولها نحو الجربياء وعرضها خمسون ذراعا مرسومات على نحو أبواب الدار الداخلة وكمثل
دعائم الدار الخارجة مستورات مستويات الوجوه أسطوانات مثلثة

Latitudo verò à fronte domûs & reliquorum oppoſitorum, centum cubitorum. 14
Menſus eſt etiam parietem ſeparationis 15
contra faciem ſuperfluitatis, eorum quæ
erant à tergo domûs illius ; & reliqua
hinc & inde, centum cubitos in longitudinem.
Porrò templum, anguli ipſius, & 16
porticus exterior obtecta erant aſſeribus
ligneis. Feneſtræ cancellatæ, nempe *luminaternas illas* portas *ambientia, ut ex iis*
proſpici poſſet. *Et domus ac latera ipſius*
aſſeribus operta ligneis circunquaque, necnon
pavimentum, & à pavimento ad feneſtras.
Feneſtræ apertæ erant triplici figura, 17
ut per eas proſpiceretur : & tam
ad intimarum atque ad extimarum latus,
quàm ſuper totam domum circunquaque,
tam intrinſecùs quàm forinſecùs ; Metationes 18
erant & Cherubini cælati cum
palmis : & palma inter Cherubinos. Geminorum
Cherubinorum erant facies illorum
Cherubinorum : Facies humana verſùs 19
palmā hinc inde, et facies leonis verſùs
alteram *palmam hinc inde. Itaque tota* 20
domus erat undequaque cælata, à pavimento
ad laqueare: & Cherubini ac palmæ
cælatæ. Sanctuarium autem ac templum 21
patentia erant & quadrata : & à fronte
Sanctuarii forma quædam erat ſimilis figuræ
altaris lignei, Cujus altitudo trium 22
erat cubitorum, longitudo cubiti, latitudo
cubiti, cornua habebat, & baſis ac parietes
ejus lignei. Dixitque mihi, Hæc eſt
menſa ante faciem Domini. Binas valvas 23
habebat templum, & binas valvas Sanctuarium,
Binis foribus, binæ erant valvæ 24
unis, & binæ valvæ portæ ſecundæ :
Et ſuper iis cælatura, necnon ſuper valvis 25
templi (nempe *Cherubini et palmæ*) *ſimilis*
cælaturæ Sanctuarii : Ligna expolita 26
erant ſuper frontem porticûs extrinſecùs,
et feneſtræ occultæ. Et menſus eſt hinc
inde, uſque ad cœnacula porticûs : latera
domûs obducta erant aſſeribus ligneis.

CAP. XLII.

INde me introduxit in atrium exterius 1
Orientem verſùs, contrà portam quæ erat
ad Aquilonem, Cùmque introduxiſſet
me, ecce quindecim exedras cantorum
vicinas ſuperfluitati, et vicinas ſeparationi
verſùs Aquilonarem plagam frontis :
Quarum longitudo centum erat cubitorum 2
Aquilonem verſùs, latitudo verò
quinquaginta cubitorum : Deſignatæ ad 3
modum portarum atrii interioris : et ad
modum columnarum atrii exterioris,
porticus triplices occultæ æqualium frontium.

יחזקאל : מב

cubitorum viginti deambulatorium *cubiculorum* *facies ad* Et
4 וְלִפְנֵי הַלְּשָׁכוֹת מַהֲלַךְ עֶשֶׂר אַמּוֹת
eorum aperturæ & , unius cubiti viæ *interius* *ad* latitudinis
רֹחַב אֶל־הַפְּנִימִית דֶּרֶךְ אַמָּה אַחַת וּפִתְחֵיהֶם
capiebant quia : *brevia* superiora cubicula Et .aquilonem ad
5 לַצָּפוֹן׃ וְהַלְּשָׁכוֹת הָעֶלְיוֹנֹת קְצֻרוֹת כִּי־יוֹכְלוּ
.ædificii mediis & , inferioribus ex ipsis ex *angulos*
אַתִּיקִים מֵהֵנָּה מֵהַתַּחְתֹּנוֹת וּמֵהַתִּיכֹנוֹת בִּנְיָן׃
columnæ sicut columnæ eis non & , *ipsa* tertiata Quia
6 כִּי מְשֻׁלָּשׁוֹת הֵנָּה וְאֵין לָהֶן עַמּוּדִים כְּעַמּוּדֵי
mediis à & , inferioribus *ab* *est separatum* propterea : atriorum
הַחֲצֵרוֹת עַל־כֵּן נֶאֱצַל מֵהַתַּחְתֹּנוֹת וּמֵהַתִּיכֹנוֹת
via cubicula contra forinsecus *quæ* *maceriæ* Et .terra à
7 מֵהָאָרֶץ׃ וְגָדֵר אֲשֶׁר־לַחוּץ לְעֻמַּת הַלְּשָׁכוֹת דֶּרֶךְ
quinquaginta *ejus* longitudo : cubiculorum *facies* *ad* exterioris atrii
הֶחָצֵר הַחִצוֹנָה אֶל־פְּנֵי הַלְּשָׁכוֹת אָרְכּוֹ חֲמִשִּׁים
exteriori atrio quæ ,cubiculorum longitudo Quia .cubitorum
8 אַמָּה׃ כִּי־אֹרֶךְ הַלְּשָׁכוֹת אֲשֶׁר לֶחָצֵר הַחִצוֹנָה
centum templi *facies* *super* ecce & : cubitorum quinquaginta
חֲמִשִּׁים אַמָּה וְהִנֵּה עַל־פְּנֵי הַהֵיכָל מֵאָה
oriente ab introitus : ista cubicula subter *de* Et .cubitorum
9 אַמָּה׃ וּמִתַּחְתָּה לִשְׁכוֹת הָאֵלֶּה הַמָּבוֹא מֵהַקָּדִים
latitudine In .exteriori atrio ab , ea in *ipsum ingrediendo in*
10 בְּבֹאוֹ לָהֵנָּה מֵהֶחָצֵר הַחִצֹנָה׃ בְּרֹחַב
ad & : *sepositi tabulati* *facies* *ad* orientalis viæ atrii *maceriæ*
גֶּדֶר הֶחָצֵר דֶּרֶךְ הַקָּדִים אֶל־פְּנֵי הַגִּזְרָה וְאֶל־
aspectum secundùm *eorum facies ad* via Et .cubicula *ædificii* *facies*
11 פְּנֵי הַבִּנְיָן לְשָׁכוֹת׃ וְדֶרֶךְ לִפְנֵיהֶם כְּמַרְאֵה
,eorum longitudinem secundùm , aquilonis via quæ , cubiculorum
הַלְּשָׁכוֹת אֲשֶׁר דֶּרֶךְ הַצָּפוֹן כְּאָרְכָּן
,eorum *normas* secundùm & ,eorum exitus omnes & : eorum latitudo sic
כֵּן רָחְבָּן וְכֹל מוֹצָאֵיהֶן וּכְמִשְׁפְּטֵיהֶן
via quæ cubiculorum ostia secundùm Et .eorum ostia secundùm &
12 וּכְפִתְחֵיהֶן׃ וּכְפִתְחֵי הַלְּשָׁכוֹת אֲשֶׁר דֶּרֶךְ
elegantis *maceriæ faciebus in viæ* , viæ capite in ostium *austri*
הַדָּרוֹם פֶּתַח בְּרֹאשׁ דָּרֶךְ דֶּרֶךְ בִּפְנֵי הַגְּדֶרֶת הֲגִינָה
aquilonis Cubicula : me ad dixit Et .ipsa *ingrediendo in* *orientis* *via*
13 דֶּרֶךְ הַקָּדִים בְּבוֹאָן׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי לִשְׁכוֹת הַצָּפוֹן
cubicula hæc , *sepositi tabulati* *facies* *ad* quæ , *austri* cubicula
לִשְׁכוֹת הַדָּרוֹם אֲשֶׁר אֶל־פְּנֵי הַגִּזְרָה הֵנָּה לִשְׁכוֹת
propinqui qui sacerdotes *ibi* comedent quibus sanctitatis
הַקֹּדֶשׁ אֲשֶׁר יֹאכְלוּ־שָׁם הַכֹּהֲנִים אֲשֶׁר־קְרוֹבִים
sanctificationes ponent Ibi .sanctificationum *sanctificationes* , Domino
לַיהוָה קָדְשֵׁי הַקֳּדָשִׁים שָׁם יַנִּיחוּ קָדְשֵׁי
, delicto pro & ,peccato pro sacrificium & , *munus* & ,sanctificationum
הַקֳּדָשִׁים וְהַמִּנְחָה וְהַחַטָּאת וְהָאָשָׁם
non & , sacerdotes ipsa *ingrediendo In* .sanctus locus quia
14 כִּי הַמָּקוֹם קָדֹשׁ׃ בְּבֹאָם הַכֹּהֲנִים וְלֹא־
reponent ibi & : exterius atrium *ad* sanctitate de egredientur
יֵצְאוּ מֵהַקֹּדֶשׁ אֶל־הֶחָצֵר הַחִיצוֹנָה וְשָׁם יַנִּיחוּ
: *ipsa* sanctitas quia , *eis in* ministrabunt quibus ,sua vestimenta
בִּגְדֵיהֶם אֲשֶׁר־יְשָׁרְתוּ בָהֶן כִּי־קֹדֶשׁ הֵנָּה
.populo quæ ad accedent & , aliis vestimentis vestienturque
יִלְבְּשׁוּ בְּגָדִים אֲחֵרִים וְקָרְבוּ אֶל־אֲשֶׁר לָעָם׃
via me adduxit & , interioris domus mensuras complevit Et
15 וְכִלָּה אֶת־מִדּוֹת הַבַּיִת הַפְּנִימִי וְהוֹצִיאַנִי דֶּרֶךְ
circum eam est mensus & : *Orientis* viam *ejus* facies cujus , portæ
הַשַּׁעַר אֲשֶׁר פָּנָיו דֶּרֶךְ הַקָּדִים וּמְדָדוֹ סָבִיב
.circa
סָבִיב׃

Versio VULG. LAT.

4 Et ante gazophylacia deambulatio decem cubitorum latitudinis, ad interiora respiciens viæ cubiti unius. Et ostia eorum ad 5 Aquilonem: Ubi erant gazophylacia in superioribus humiliora: quia supportabant porticus, quæ ex illis eminebant de inferiori- 6 bus, & de mediis ædificii. Tristega enim erant, & non habebant columnas, sicut erant columnæ atriorum: propterea eminebant de inferioribus, & de mediis à terra cubitis quinqua- 7 ginta. Et peribolus exterior secundùm gazophylacia, quæ erant in via atrii exterioris ante gazophylacia: longitudo ejus quin- 8 quaginta cubitorum. Quia longitudo erat gazophylaciorum atrii exterioris, quinquaginta cubitorum: & longitudo ante faciem templi, centum cubitorum. 9 Et erat subter gazophylacia hæc introitus ab Oriente ingredien- 10 tium in ea de atrio exteriori. In latitudine periboli atrii, quod erat contra viam Orientalem, in faciem ædificii separati, & erant ante ædificium gazophylacia. 11 Et via ante faciem eorum, juxta similitudinem gazophylaciorum, quæ erant in via Aquilonis: secundùm longitudinem eorum, sic & latitudo eorum: & omnis introitus eorum, & si- 12 militudines, & ostia eorum. Secundùm ostia gazophylaciorum, quæ erant in via respiciente ad Notum: ostium in capite viæ; quæ via erat ante vestibulum separatum per viam Orientalem 13 ingredientibus. Et dixit ad me; Gazophylacia Aquilonis, & gazophylacia Austri, quæ sunt ante ædificium separatum: hæc sunt gazophylacia sancta: in quibus vescuntur sacerdotes, qui appropinquant ad Dominum in Sancta sanctorum: ibi ponent Sancta sanctorũ, & oblationem pro peccato, & pro delicto: locus enim 14 sanctus est. Cùm autem ingressi fuerint sacerdotes, non egredientur de Sanctis in atrium exterius: & ibi reponent vestimenta sua, in quibus ministrant, quia sancta sunt: vestientúrque vestimentis aliis, & sic procedent ad 15 populum. Cúmque complésset mensuras domûs interioris, eduxit me per viam portæ, quæ respiciebat ad viam Orientalem: & mensus est eam undique per circuitum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

4 Καὶ κατέναντι τῶν ἐξεδρῶν περίπατος πηχῶν δέκα τὸ πλάτος, ἐπὶ πήχεις ἑκατὸν τὸ μῆκος, καὶ τὰ θυρώματα αὐτῶν πρὸς 5 Βορρᾶν, Καὶ οἱ περίπατοι οἱ ὑπερῷοι ὡσαύτως· ὅτι ἐξείχετο τὸ περίστυλον ἐξ αὐτοῦ, ἐκ τοῦ ὑποκάτωθεν περιστύλου, καὶ τὸ (δ) διάστημα. οὕτως περίστυλον καὶ (ε) διάστημα, καὶ 6 οὕτως (ζ) στοαὶ δύο. Διότι τριπλαῖ ἦσαν, καὶ στύλους οὐκ εἶχον καθὼς οἱ στῦλοι τῶν (η) ἐξωτέρων· διὰ τοῦτο ἐξείχοντο τῶν ὑποκάτωθεν 7 καὶ τῶν μέσων ἀπὸ τῆς γῆς. Καὶ φῶς ἔξωθεν, ὃν τρόπον (θ) αἱ ἐξέδραι τῆς αὐλῆς τῆς ἐξωτέρας, αἱ βλέπουσαι ἀπέναντι τῶν ἐξεδρῶν τῶν πρὸς Βορρᾶν, μῆκος (ι) πηχῶν πεντή- 8 κοντα. Ὅτι τὸ μῆκος τῶν ἐξεδρῶν τῶν βλεπουσῶν εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐξωτέραν, ἦν (κ) πηχῶν πεντήκοντα, καὶ αὗταί εἰσιν (λ) αἱ ἀντιπρόσωποι ταύταις· τὸ πᾶν (μ) πηχῶν 9 ἑκατόν. Καὶ αἱ θύραι τῶν ἐξεδρῶν τούτων τῆς εἰσόδου τῆς πρὸς ἀνατολὰς, τοῦ εἰσπορεύεσθαι 10 δι' αὐτῶν ἐκ τῆς αὐλῆς τῆς ἐξωτέρας, Κατὰ τὸ φῶς τοῦ ἐν ἀρχῇ (ν) περιπάτου, καὶ τὰ πρὸς Νότον κατὰ πρόσωπον τοῦ Νότου, κατὰ πρόσωπον τοῦ ἀπολοίπου, καὶ κατὰ πρόσωπον 11 τοῦ διορίζοντος, καὶ αἱ ἐξέδραι. Καὶ ὁ περίπατος κατὰ πρόσωπον αὐτῶν, κατὰ τὰ μέτρα (ʹ) ἐξεδρῶν, τῶν πρὸς Βορρᾶν (ʺ) καὶ κατὰ τὸ μῆκος αὐτῶν, καὶ κατὰ τὸ εὖρος αὐτῶν, καὶ κατὰ πάσας τὰς ἐξόδους αὐτῶν, καὶ κατὰ πάσας τὰς ἐπιστροφὰς αὐτῶν, καὶ κατὰ τὰ φῶτα αὐτῶν, καὶ 12 κατὰ τὰ θυρώματα αὐτῶν, Τῶν ἐξεδρῶν τῶν πρὸς Νότον, καὶ κατὰ τὰ θυρώματα ἀπ' ἀρχῆς τοῦ περιπάτου, ὡς ἐπὶ φῶς διαστήματος καλάμου, καὶ (·) κατὰ ἀνατολὰς τοῦ εἰσπορεύεσθαι 13 δι' αὐτῆς. Καὶ εἶπε πρός με, Αἱ ἐξέδραι αἱ πρὸς Βορρᾶν, καὶ αἱ ἐξέδραι αἱ πρὸς Νότον, (ξ) οὖσαι κατὰ πρόσωπον τῶν (ʺ) διαστημάτων, αὗταί εἰσιν αἱ ἐξέδραι τοῦ ἁγίου, ἐν αἷς φάγονται ἐκεῖ οἱ ἱερεῖς (ο) υἱοὶ Σαδδοὺκ, οἱ ἐγγίζοντες πρὸς κύριον, τὰ ἅγια τῶν (ʹ) ἁγίων, καὶ ἐκεῖ θήσουσι τὰ ἅγια τῶν ἁγίων, καὶ τὴν θυσίαν, καὶ τὰ περὶ ἁμαρτίας, καὶ τὰ 14 περὶ ἀγνοίας, διότι ὁ τόπος (π) ἅγιος. Οὐκ εἰσελεύσονται ἐκεῖ πάρεξ τῶν ἱερέων, (ʹ) οὐκ ἐξελεύσονται ἐκ τοῦ ἁγίου εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐξωτέραν, ὅπως διαπαντὸς ἅγιοι ὦσιν οἱ προσάγοντες, καὶ μὴ ἅπτωνται τοῦ στολισμοῦ αὐτῶν, ἐν οἷς λειτουργοῦσιν ἐν αὐτοῖς, διότι ἅγιά ἐστι· καὶ ἐνδύσονται ἱμάτια ἕτερα, ὅταν ἅπτωνται 15 τοῦ λαοῦ. Καὶ συνετελέσθη ἡ διαμέτρησις τοῦ οἴκου ἔσωθεν· καὶ ἐξήγαγέ με καθ' ὁδὸν τῆς πύλης τῆς βλεπούσης (ʹ) πρὸς ἀνατολὰς, καὶ διεμέτρησε τὸ ὑπόδειγμα τοῦ οἴκου κυκλόθεν ἐν διατάξει.

Et contra exedras deambulatio 4 *cubitorum decem latitudo, per cubitos centum (e) longitudo: Et ostia earum ad Aquilonem: Et de-* 5 *ambulationes cœnaculorum similiter: quia eminebat columnatum ex eo, ex inferiore columnatio, & spatium. Sic columnatum, & spatium, & sic porticus (f) duæ. (g) Quia triplices erant, & co-* 6 *lumnas non habebant, sicut columnæ exteriorum. Propterea (h) eminebant ab his quæ erant inferius, & à mediis de terra. Et (i)* 7 *lumen exterius, sicut exedræ atrii exterioris, quæ respiciebant contra exedras Aquilonis, longitudine cubitorum quinquaginta. Longitudo enim exedrarum re-* 8 *spicientium in atrium exterius, erat cubitorum quinquaginta: & hæ sunt contra faciem his: omnes cubitorum centum. Et ostia ex-* 9 *edrarum istarum ad introitum Orientalem, ad ingrediendum per ea ex atrio exteriori Secundum* 10 *lumen, quod erat in principio deambulationis (k) & ad Austrum, ad faciem Austri, ad faciem reliqui ædificii, & ad faciem separati. Et exedræ, Et deambulatio* 11 *contra faciem suam, juxta mensuras exedrarum, quæ ad Aquilonem, & secundùm longitudinem earum, & secundùm latitudinem earum, & secundùm omnes exitus earum, & secundùm omnes introitus earũ, & secundũ lumina earum, & secundùm ostia earum, Exedrarum, quæ contra* 12 *Meridiem; & secundùm ostia à principio deambulacri, usque ad luminare spatio calami, & ut ad Orientem iretur per ea. Et dixit* 13 *ad me; Exedræ quæ ad Aquilonem, & exedræ quæ ad Austrum, quæ sunt ad faciem spatiorum, hæ sunt exedræ Sanctuarii, in quibus vescentur ibi sacerdotes, (l) filii Sadduc, qui appropinquant ad Dominum, Sancta sanctorum: et ibi ponent Sancta sanctorum, et sacrificium, et quæ pro peccato, et quæ pro ignorantia: locus enim sanctus est. Non* 14 *ingredientur illuc, nisi sacerdotes: non egredientur de Sanctuario in atrium exterius; ut perpetuò sancti sint qui (m) offerunt. Et non tangent vestimentum eorum, in quibus ministrant in eis, quia sancta sunt. Et vestientur vestimentis aliis, quando tangent populum. Et consummata est men-* 15 *suratio domûs interioris. Et eduxit me per viam portæ respicientis ad Orientem: et mensus est similitudinem domûs per circuitum in ordine.*

MS.A. (δ) διάστεμα. (ε) διάστεμα, (ζ) στοάι. Διότι (η) ἐξωτέρων (θ) καὶ αἱ (ι) πήχεων (κ) πήχεων (λ) ἀντιπρόσωποι (μ) πήχεων (ν) τοῦ περιπάτου, (ʹ) τῶν ἐξεδρῶν, (ʺ) κατὰ τὸ (·) κατ' (ξ) αἱ οὖσαι (ʺ) διαστημάτων, (ο) οἱ υἱοὶ (ʹ) ἁγίων, καὶ τὴν θυσίαν, (π) ἅγιός ἐστιν. Οὐκ εἰσελεύσονται (ʹ) καὶ οὐκ (ʹ) κατ'

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 וְקֳדָם לִשְׁכָּתָא מַהֲלַךְ עֲסַר אַמִּין פּוּתְיָא לְגָיו אוֹרַח אַמְּתָא חֲדָא וְתַרְעֵיהֶן פְּתִיחִין
5 לְצִפּוּנָא ׃ וְלִשְׁכָּתָא עִלָּיָתָא דְּחִיקָן אֲרֵי נְסִיבָן זָוְיָא מִנְּהֶן מֵאַרְעָיָתָא
6 וּמִמְּצִיעָתָא בִּנְיָנָא ׃ אֲרֵי מְתַלְּתָן אִנּוּן וְלֵית לְהוֹן עַמּוּדִין כְּעַמּוּדֵי דָּרָתָא עַל כֵּן
7 דְּחִיקָן מֵאַרְעָיָתָא וּמִמְּצִיעָתָא מֵאַרְעָא ׃ וְכוּתְלָא דִּלְבָרָא לְקָבֵיל לִשְׁכָּתָא אוֹרַח
8 דָּרְתָא בָּרָיְתָא דִּקְדָם לִשְׁכָּתָא אוֹרְכֵּיהּ חַמְשִׁין אַמִּין ׃ אֲרֵי אוֹרְכָּא דְּלִשְׁכָּתָא
9 דִּלְדָרְתָא בָּרָיְתָא חַמְשִׁין אַמִּין וְהָוְיָן עַל אַפֵּי הֵיכְלָא מְאָה אַמִּין ׃ וּמִלְּרַע
10 לְלִשְׁכָּתָא הָאִלֵּין מַעֲלָנָא מִמַּדִּנְחָא דְּעָלִין לְהֶן מִדָּרְתָא בָּרָיְתָא ׃ בְּפוּתְיָא
11 דְּכוּתְלָא דְּדָרְתָא בְּאוֹרַח מַדִּנְחָא דִּקְדָם בְּצוּרְתָא וּדִקְדָם בִּנְיָנָא לִשְׁכַּן ׃ וְאוֹרַח
קֳדָמֵיהוֹן כְּחֵזוּ לִשְׁכָּתָא דִּפְתִיחָן לְאוֹרַח צִפּוּנָא כְּאוֹרְכֵּיהֶן כֵּן פּוּתְיְהֶן וְכָל
12 מַפְּקָנֵיהֶן וּכְרָחְזֵי לְהֶן וּכְתַרְעֵיהֶן ׃ וּכְתַרְעֵי לִשְׁכָּתָא דִּפְתִיחַ לְאוֹרַח דָּרוֹמָא תְּרַע
13 בְּרֵישׁ אוֹרַח אוֹרַח קֳדָם דּוּכַן לֵוָאֵי אוֹרַח מַדִּנְחָא בְּמַעֲלָנְהֶן ׃ וַאֲמַר לִי לִשְׁכַּת
צִפּוּנָא לִשְׁכַּת דָּרוֹמָא דִּקְדָם בְּצוּרְתָא אִנּוּן לִשְׁכַּת קוּדְשָׁא דְּיֵיכְלוּן תַּמָּן כָּהֲנַיָּא
דְּקָרִיבִין לְשַׁמָּשָׁא קֳדָם יְיָ קוֹדֶשׁ קוּרְשַׁיָּא תַּמָּן יְיַחֲתוּן קוּדְשַׁיָּא קוּדְשַׁיָּא וּמִנְחָתָא
14 וְחַטָּאתָא וַאֲשָׁמָא אֲרֵי אַתְרָא קַדִּישׁ ׃ בְּמֵעַלְהוֹן כָּהֲנַיָּא וְלָא יִפְקוּן מִקּוּדְשָׁא
לְדָרְתָא בָּרָיְתָא וְתַמָּן יְיַחֲתוּן לְבוּשֵׁיהוֹן דִּישַׁמְּשׁוּן בְּהוֹן אֲרֵי קוּדְשָׁא אִנּוּן וְיִלְבְּשׁוּן
15 לְבוּשִׁין אוֹחֲרָנִין וְיִתְעָרְבוּן עִם עַמָּא ׃ וְשֵׁיצִי יָת מִשְׁחַת בֵּיתָא גַּוָּאָה וְאַפְּקַנִי בְּאוֹרַח
תַּרְעָא דִּפְתִיחַ לְאוֹרַח מַדִּנְחָא וּמְשַׁחֵיהּ סְחוֹר סְחוֹר ׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et ante gazophylacia erat deambulatorium decem cubitorum latitudi- 4 nis ad interiora: via cubiti unius, & ostia eorum aperta erant ad Aquilonem. Et gazophylacia superiora erant strictiora, quia interci- 5 piebant ex eis prominentias ab inferioribus & à mediis ædificii. Tri- 6 plicia enim erant, & non habebant columnas sicut [*erant*] columnæ atriorum; ideò strictiora erant inferioribus & mediis à terra. Et paries 7 exterior è regione gazophylaciorum ad viam atrii exterioris quod erat ante gazophylacia; longitudinis fuit quinquaginta cubitorum. Quia 8 longitudo gazophylaciorum atrii exterioris quinquaginta cubitorum erat, & erant secundùm faciem templi centum cubiti. Et subter gazophyla- 9 cia ista erat introitus ab Oriente ingredientium in ea ab atrio exteri- 10 ori. In latitudine autem parietis atrii in via Orientali quæ erat ante septum & quæ ante ædificium, erant gazophylacia. Et via erat ante ea 11 juxta aspectum gazophylaciorum quæ aperta erant ad viam Aquilonis: secundùm longitudinem eorum, sic latitudo eorum, & omnes exitus eorum, & quod ad ea pertinet, & secundùm portas eorum. Et se- 12 cundùm portas gazophylaciorum quæ apertæ erant ad viam Australem, erat ostium in capite viæ; quæ via erat ante suggestum Levitarum per viam Orientalem ingredientibus. Et dixit ad me: Gazophylacia 13 Aquilonis & gazophylacia Austri quæ sunt ante septum, hæc sunt gazophylacia sancta in quibus comedent Sacerdotes, qui accedunt ad ministrandum coram Domino, sacrosancta: ibi reponent sacrosancta & oblationem & sacrificium pro peccato & pro delicto; quia locus sanctus est. Cùm autem ingressi fuerint Sacerdotes, non egredientur ex 14 sancto ad atrium exterius: quin ibi ponent vestimenta sua quibus ministrant, quia sancta sunt; & vestientur vestimentis aliis, & commiscebuntur cum populo. Et consummavit mensuras domus interioris, & 15 eduxit me per viam portæ quæ aperta erat ad Orientem, & mensus est eam per circuitum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܩܕܡ ܐܟܣܕܪܐ. ܗܘܐ ܡܗܠܟܬܐ. ܒܥܣܪ ܐܡܝܢ. ܦܬܝܐ. ܘܐܘܪܟܐ. ܡܐܐ ܐܡܝܢ
ܘܬܪܥܐ ܕܒܝܬ ܡܗܠܟܬܐ ܠܓܪܒܝܐ. * ܘܐܟܣܕܪܐ ܥܠܝܬܐ ܙܥܘܪܝܢ ܗܘܘ. ܡܛܠ
ܕܐܟܠܝܢ ܗܘܘ ܒܗܘܢ ܕܪܓܐ. * ܡܬܠܬܝܢ ܗܘܘ ܓܝܪ. ܘܠܝܬ ܗܘܐ ܠܗܘܢ ܥܡܘܕܐ
ܐܝܟ ܥܡܘܕܐ ܕܕܪܬܐ. ܡܬܒܨܪܢ ܗܘܝ ܡܢ ܬܚܬܝܬܐ ܘܡܢ ܡܨܥܝܬܐ.
* ܘܫܘܪܐ ܕܠܒܪ. ܕܠܘܩܒܠ ܐܟܣܕܪܐ. ܐܘܪܟܐ. ܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ. * ܡܛܠ ܕܐܘܪܟܐ
ܕܐܟܣܕܪܐ ܕܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܠܘܩܒܠ ܗܝܟܠܐ. ܡܐܐ ܐܡܝܢ. * ܘܬܪܥܐ
ܕܐܟܣܕܪܐ ܕܡܥܠܢܐ ܡܕܢܚܝܐ. ܕܥܐܠ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. * ܒܦܬܝܗ ܕܐܣܬܐ ܕܕܪܬܐ.
ܡܥܠܢܐ ܡܕܢܚܝܐ. ܩܕܡ ܪܘܚܬܐ. ܘܩܕܡ ܒܢܝܢܐ ܕܐܟܣܕܪܐ. * ܘܐܘܪܚܐ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܘܚܙܘܗܘܢ
ܕܐܟܣܕܪܐ ܕܠܓܪܒܝܐ. ܐܘܪܟܗܘܢ. ܐܝܟ ܦܬܝܗܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ
ܡܦܩܢܝܗܘܢ. ܘܡܥܠܢܝܗܘܢ ܘܚܙܘܗܘܢ ܘܬܪܥܝܗܘܢ. * ܐܝܟ ܬܪܥܐ ܕܐܟܣܕܪܐ
ܕܬܝܡܢܐ ܕܚܙܝܢ. ܬܪܥܐ ܒܪܝܫ ܐܘܪܚܐ. ܐܘܪܚܐ ܕܩܕܡ ܫܘܪܐ. ܕܚܙܐ ܢܚܠܐ
ܡܕܢܚܝܐ ܐܝܟ ܕܪܕܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܐܟܣܕܪܐ ܓܪܒܝܐ. ܘܐܟܣܕܪܐ ܬܝܡܢܝܐ. ܕܩܕܡ ܪܘܚܬܐ
ܗܠܝܢ ܐܢܝܢ ܐܟܣܕܪܐ. ܐܝܟܐ ܕܐܟܠܝܢ ܟܗܢܐ ܕܡܩܪܒܝܢ ܠܡܪܝܐ. ܩܘܕܫ ܩܘܕܫܐ. ܬܡܢ
ܣܝܡܝܢ ܩܘܕܫ ܩܘܕܫܐ. ܘܣܡܝܕܐ. ܘܚܛܝܬܐ ܕܣܟܠܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܪܐ ܗܘ ܩܕܝܫܐ. * ܘܡܐ
ܕܥܐܠܝܢ ܟܗܢܐ. ܠܐ ܢܦܩܝܢ ܡܢ ܩܘܕܫܐ. ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܐܠܐ ܬܡܢ ܣܝܡܝܢ
ܡܐܢܝܗܘܢ. ܕܒܗܘܢ ܡܫܡܫܝܢ ܒܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܩܘܕܫܐ ܐܢܘܢ. ܘܠܒܫܝܢ ܡܐܢܐ ܐܚܪܢܐ
ܘܡܩܪܒܝܢ ܩܘܪܒܢܐ ܚܠܦ ܥܡܐ. * ܘܫܠܡ ܡܫܘܚܬܗ ܕܒܝܬܐ ܓܘܝܐ. ܘܐܦܩܢܝ
ܠܐܘܪܚܐ ܕܬܪܥܐ ܕܚܙܐ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܡܫܚܗ ܡܢ ܚܕܪ.

Ante exedram erat ambulacrum decem cu- 4
bitorum latitudine, longitudine verò centum
cubitorum : oſtium verò ambulacri Aquilonem
ſpectabat. Exedræ ſuperiores minores 5
erant, quia ingredebantur in eas gradus
: Triſtegæ enim erant, nec habebant 6
columnas quales erant columnæ atrii ; ideo
minores erant imis & medianis. Parietis 7
autem extimi qui erat ex oppoſito exedræ, longitudo
quinquaginta cubitorum erat : Nam 8
longitudo exedræ atrii exterioris erat quinquaginta
cubitorum, ante templum verò
centum cubitorum. Janua exedræ oſtii O- 9
rientalis quod intrabat ad atrium exterius,
Erat in latitudine parietis atrii : oſtium O- 10
rientale erat ante aream & ante ædificium
exedrarum. Via erat ante has *exedras*, & 11
aſpectus exedrarum quæ verſùs Aquilonem
ſpectabant, longitudo par erat latitudini : &
omnes exitus & aditus earum, aſpectus & januæ
earum, Similes erant januis exedrarum 12
quæ Merdiem verſùs ſpectabant: janua erat
in principio viæ, via *verò* ante parietem
qui reſpicit vallem Orientalem quâ ratione
decurrit. Et dixit mihi, Exedræ Aquilona- 13
res, & exedræ Meridionales quæ ſunt ante
aream ; hæ ſunt exedræ ubi comedunt
ſacerdotes qui offerunt Domino Sancta Sanctorum
: ibi ponunt Sanctum Sanctorum,
ſimilam, & expiationem peccatorum,
quia locus eſt ſanctus. Nam cùm ingreſſi 14
fuerint ſacerdotes, non egrediuntur è Sancto
ad atrium exterius ; ſed ibi reponunt
veſtes ſuas quibus miniſtrant, quia ſacræ
ſunt ; tum aliis veſtibus induti offerunt ſacrificia
pro populo. Abſolutis demenſioni- 15
bus domûs interioris, eduxit me ad viam
portæ quæ reſpiciebat Orientem, & menſus
eſt eam undequaque.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* وقبالة المقاصير ممشاة عشر اذرع عرضها * ومائة ذراع طولها * ومجاريها نحو الجربياء *
* والمماشي العليا هكذا * لانه كان لها ركن منها من تحت ركن * والناحية هكذا ركن
وناحية هكذا * الاسطوانات من اجل انها كانت مثلثة * وليس لها عمد كعمد المقاصير * لاجل
هذا كان لها خراجات من الاسافل ومن الاواسط من الارض * ونور من خارج على المثال
* ومقاصير الدار الخارجة الناظر قبالة المقاصير التي نحو الجربياء * طولها خمسون ذراعا * لان
طول المقاصير الناظر الي الدار الخارجة كان خمسون ذراعا * وهذه هي مستوية الوجوه * جميعها
مائة ذراع * وابواب هذه المقاصير للمدخل الذي نحو المشارق * ليدخل منها من الدار
الخارجة * كنور الممشاة التي في المبداء * والتي نحو التيمن * على واجهة التيمن * على واجهة
الفضلة * وعلي واجهة الفاصل * والمقاصير والممشاة على وجههم * كمقادير المقاصير التي نحو
الجربياء * كطولهم وكعرضهم * وكجميع مخارجهم * وكجميع ترجيعاتهم * وكتدويراتهم *
* وكمجارياتهم * اعني المقاصير التي نحو التيمن * وكالمجاريات التي من اول الممشاة * على نحو
نور مسافة القصبة * وليمشي فيها الي المشارق * وقال لي * المقاصير التي نحو الجربياء
والمقاصير التي نحو التيمن * الكائنات على واجهة الكباس * هذه هي مقاصير القدس * التي
فيها تأكل الكهنة * هناك بنو صادوق القريبون الي الرب * اقدس القديسين * والذبيحة
والذي من اجل الخطية * والذي من اجل الجهل * من اجل انه الموضع المقدس هو * ولا
يدخل هناك غير الكهنة * ولا يخرجون من القدس الي الدار الخارجة * لكي كل حين الذين
يقربون يكونوا اطهارا * ولا يلمسون حللهم التي بها يخدمون * من اجل انها مقدسة * ويلبسون
ثيابا اخر اذ يلمسون الشعب * وكملت مساحة البيت من داخل * فاخرجني على طريق الباب
الناظر الي المشارق * وقاس مثال البيت من داير في رتبته *

E regione exedrarum ambulacrum erat 4
latitudinis decem cubitorum, & centum
cubitorum longitudinis : oſtia verò ipſius
Aquilonem verſùs. Ambulacra ſuperiora 5
erant ſimilia : nam fulcrum ex ipſiſmet
ſubter fulcrum habebant & interſtitium,
ſimile fulcrum, & interſtitium ſimile.
Porticus, quia triplices erant, nec habe- 6
bant columnas ut columnas exedrarum ;
idcircò prominentias habebant ex imis &
ex medianis inde à ſolo ; & lumen forinſecùs
juxta architecturam. Exedrarum 7
autem atrii exterioris, quæ ſpectabant ex
adverſo exedrarum quæ ſitæ erant verſùs
Aquilonem, longitudo erat quinquaginta
cubitorum : Quia longitudo exe- 8
drarum ſpectantium atrium exterius, erat
quinquaginta cubitorum : atque iſtæ æquales
frontes habebant, omnes centum
cubitorum. Januæ verò earundem exe- 9
drarum, reſpondebant oſtio quod erat
verſùs Orientem ; ut per eas pateret aditus
ex atrio exteriori, Secundùm lu- 10
men ambulacri quod erat in principio,
& quod erat verſùs Meridiem, ad frontem
Auſtralem, ad frontem ſuperfluitatis,
& ad frontem ſeparationis, Itaque *tam* 11
exedræ quàm ambulacra ex eorum oppoſito
jacebant, earundem dimenſionum atque
exedræ quæ ſpectabant Aquilonem,
ejuſdem longitudinis, ejuſdemque latitudinis,
ſimilium penitùs prominentiarum,
& ſimilium depreſſionum, ſimilium luminum,
Similium denique ſorium (exe- 12
dras intelligo illas quæ erant verſùs Meridiem)
& ut exedræ illæ quæ à principio
ambulacri, juxta lumen ſpatii calami ;
& ut per illud ambulare quis poſ-
ſet ad Orientem. Tum dixit mihi, Tam 13
exedræ quæ ſunt Aquilonem verſùs, quàm
exedræ quæ verſùs Meridiem, exiſtentes
ex adverſo arietum ; hæ ſunt exedræ
Sanctuarii in quibus comedunt ſacerdotes.
Ibi filii Sadoc Domino vicini, Sanctiſſimum
Sanctorum, victima, quod pro peccato,
quódque pro ignorantia offertur.
Nam is locus eſt ille ſanctus, Quo 14
non niſi ſacerdotes ingrediuntur, neque
egrediuntur è Sanctuario ad atrium exterius
: ut jugiter qui ſacrificant, mundi
ſint ; & ne tangant alii *ſtolas eorum quibus*
miniſtrant, eò quòd ſacræ ſint : imò
aliis veſtibus induantur, ſiquando
populum tetigerint. Itaque abſolutâ di- 15
menſione domûs ab interiori parte, eduxit
me per viam portæ reſpicientis
ad Orientem, & menſus eſt figuram
domûs per circuitum ex ordine.

יחזקאל : מב

quingentis :menſuræ calamo in *Orientis* *ventum* eſt Menſus
16 מָדַד רוּחַ הַקָּדִים בִּקְנֵה הַמִּדָּה חֲמֵשׁ־אמות
:Aquilonis *ventum* eſt Menſus *.undique* menſuræ calamo *in* calamis
17 קָנִים בִּקְנֵה הַמִּדָּה סָבִיב׃ מָדַד רוּחַ הַצָּפוֹן
Ventum *.circum* menſuræ calamo *in* calamis quingentis
18 חֲמֵשׁ־מֵאוֹת קָנִים בִּקְנֵה הַמִּדָּה סָבִיב׃ אֵת רוּחַ
.menſuræ calamo *in* calamis quingentis :eſt menſus *Auſtri*
הַדָּרוֹם מָדַד חֲמֵשׁ־מֵאוֹת קָנִים בִּקְנֵה הַמִּדָּה׃
calamis quingentis eſt menſus *:maris* *ventum* ad Circuivit
19 סָבַב אֶל־רוּחַ הַיָּם מָדַד חֲמֵשׁ־מֵאוֹת קָנִים
, ei *murus* ,*ipſum* eſt menſus *ventos* quatuor *Ad* .menſuræ calamo *in*
20 בִּקְנֵה הַמִּדָּה׃ לְאַרְבַּע רוּחוֹת מְדָדוֹ חוֹמָה לוֹ
, quingentis latitudinem & , quingentis longitudinem , circa circum
סָבִיב ׀ סָבִיב אֹרֶךְ חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְרֹחַב חֲמֵשׁ מֵאוֹת
.prophanum ſanctum inter dividendum ad
לְהַבְדִּיל בֵּין הַקֹּדֶשׁ לְחֹל׃

CAP. XLIII. מג

viam *reſpiciens* quæ portam :portam ad me fecit ambulare Et
1 וַיּוֹלִכֵנִי אֶל־הַשָּׁעַר שַׁעַר אֲשֶׁר פֹּנֶה דֶּרֶךְ
via de *veniens* Iſrael Dei gloria ecce Et *.Orientis*
2 הַקָּדִים׃ וְהִנֵּה כְּבוֹד אֱלֹהֵי יִשְׂרָאֵל בָּא מִדֶּרֶךְ
terra & :multarum aquarum vox tanquam ejus vox Et *:Orientis*
הַקָּדִים וְקוֹלוֹ כְּקוֹל מַיִם רַבִּים וְהָאָרֶץ
quam viſio viſionem ſecundùm Et .ejus *gloria à* ſplendebat
3 הֵאִירָה מִכְּבֹדוֹ׃ וּכְמַרְאֵה הַמַּרְאֶה אֲשֶׁר
corrumpendum ad me veniendo in , vidi quam viſionem ſecundùm vidi
רָאִיתִי כַּמַּרְאֶה אֲשֶׁר־רָאִיתִי בְּבֹאִי לְשַׁחֵת
ad vidi quam viſionem ſecundùm viſiones Et .civitatem
אֶת־הָעִיר וּמַרְאוֹת כַּמַּרְאֶה אֲשֶׁר רָאִיתִי אֶל־
Domini gloria Et *.meas facies* *ad* cecidi & :Chebar fluvium
4 נְהַר כְּבָר וָאֶפֹּל אֶל־פָּנָי׃ וּכְבוֹד יְהוָה
viam *ejus* facies cujus , portæ *via* :domum ad eſt ingreſſa
בָּא אֶל־הַבָּיִת דֶּרֶךְ שַׁעַר אֲשֶׁר פָּנָיו דֶּרֶךְ
atrium in me introduxit & ,ſpiritus me elevavit Et *.Orientis*
5 הַקָּדִים׃ וַתִּשָּׂאֵנִי רוּחַ וַתְּבִאֵנִי אֶל־הֶחָצֵר
audivi Et .domum Domini gloria repleverat ecce & :interius
6 הַפְּנִימִי וְהִנֵּה מָלֵא כְבוֹד־יְהוָה הַבָּיִת׃ וָאֶשְׁמַע
.me juxta *ſtans* *fuit* vir & :domo de me ad dictum
מִדַּבֵּר אֵלַי מֵהַבָּיִת וְאִישׁ הָיָה עֹמֵד אֶצְלִי׃
& , mei ſolii locus hominis Fili , me ad dixit Et
7 וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־אָדָם אֶת־מְקוֹם כִּסְאִי וְאֶת־
medio in *ibi* habitabo quo meorum pedum plantarum locus
מְקוֹם כַּפּוֹת רַגְלַי אֲשֶׁר אֶשְׁכָּן־שָׁם בְּתוֹךְ
domus ultrà polluent non & :ſeculum in Iſrael filiorum
בְּנֵי־יִשְׂרָאֵל לְעוֹלָם וְלֹא יְטַמְּאוּ עוֹד בֵּית־
,ſua fornicatione *in* eorum reges & ipſi ,*meæ ſanctitatis* nomen Iſrael
יִשְׂרָאֵל שֵׁם קָדְשִׁי הֵמָּה וּמַלְכֵיהֶם בִּזְנוּתָם
ſuum limen *ipſos dando In* .ſuis excelſis ſuorum regum cadaveribus *in* &
8 וּבְפִגְרֵי מַלְכֵיהֶם בָּמוֹתָם׃ בְּתִתָּם סִפָּם
paries & , meum poſtem juxta ſuum poſtem & , meo limine cum
אֶת־סִפִּי וּמְזוּזָתָם אֵצֶל מְזוּזָתִי וְהַקִּיר
meæ ſanctitatis nomen polluerunt & :eos inter & , me inter
בֵּינִי וּבֵינֵיהֶם וְטִמְּאוּ ׀ אֶת־שֵׁם קָדְשִׁי
eos conſumpſi & ;fecerunt quas ,ſuis abominationibus *in*
בְּתוֹעֲבוֹתָם אֲשֶׁר עָשׂוּ וָאֲכַל אוֹתָם
.meo *naſo* in
בְּאַפִּי׃

Verſio VULG. LAT.

16 Menſus eſt autem contra ventum
Orientalem calamo menſuræ,
quingentos calamos in calamo
17 menſuræ per circuitum. Et
menſus eſt contra ventum Aquilonis
quingentos calamos in
18 calamo menſuræ per gyrum. Et
ad ventum Auſtralem menſus
eſt quingentos calamos in calamo
19 menſuræ per circuitum. Et
ad ventum Occidentalem menſus
eſt quingentos calamos in
20 calamo menſuræ. Per quatuor
ventos menſus eſt murum ejus
undique per circuitum, longitudinem
quingentorum cubitorum,
& latitudinem quingentorum
cubitorum, dividentem
inter Sanctuarium & vulgi
locum.

CAP. XLIII.

1 Et duxit me ad portam, quæ
reſpiciebat ad viam Orientalem.
2 Et ecce gloria Dei Iſrael
ingrediebatur per viam Orientalem
: & vox erat ei quaſi vox
aquarum multarum, & terra
3 ſplendebat à majeſtate ejus. Et
vidi viſionem, ſecundùm ſpeciem,
quam videram, quando venit
ut diſperderet civitatem : &
ſpecies ſecundùm aſpectum, quē
videram juxta fluvium Chobar :
& cecidi ſuper faciem meam.
4 Et majeſtas Domini ingreſſa eſt
templum per viam portæ, quæ
5 reſpiciebat ad Orientem. Et
elevavit me ſpiritus, & introduxit
me in atrium interius : &
ecce repleta erat gloriâ Domini
6 domus. Et audivi loquentem
ad me de domo, & vir qui
7 ſtabat juxta me, Dixit ad me ;
Fili hominis, locus ſolii mei, &
locus veſtigiorum pedum meorum,
ubi habito in medio filiorum
Iſrael in æternum : & non
polluent ultrà domus Iſrael nomen
ſanctum meum, ipſi &
reges eorum in fornicationibus
ſuis, & in ruinis regum ſuorum,
8 & in excelſis. Qui fabricati
ſunt limen ſuum juxta limen
meum, & poſtes ſuos juxta
poſtes meos : & murus erat
inter me & eos : & polluerunt
nomen ſanctum meum in abominationibus,
quas fecerunt :
propter quod conſumpſi eos in
ira mea.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Καὶ ἔστη κατὰ νώτου τῆς πύλης τῆς βλεπούσης
(') κατ' ἀνατολὰς, ϗ διεμέτρησε πεντακοσίους
17 ἐν τῷ καλάμῳ τοῦ μέτρου. Καὶ
ἐπέστρεψε πρὸς Βοῤῥᾶν, ϗ διεμέτρησε τὸ
κατὰ πρόσωπον τοῦ Βοῤῥᾶ, πήχεις πεντακοσίους
19 ἐν τῷ καλάμῳ τοῦ μέτρου. Καὶ
ἐπέστρεψε πρὸς θάλασσαν, ϗ διεμέτρησε
τὸ κατὰ πρόσωπον (ρ) θαλάσσης, πεντακοσίους
18 ἐν τῷ καλάμῳ τοῦ μέτρου. Καὶ
ἐπέστρεψε πρὸς Νότον, ϗ διεμέτρησε
(σ) κατέναντι τοῦ Νότου, πεντακοσίους ἐν
20 τῷ καλάμῳ τοῦ μέτρου, (τ) Τὰ τέσσαρα
μέρη τοῦ αὐτοῦ (υ) καλάμου. ϗ διέταξεν
αὐτὸν, ϗ περίβολον (φ) αὐτῶν κύκλῳ,
πεντακοσίων πρὸς ἀνατολὰς, ϗ πεντακοσίων
(χ) πηχῶν εὖρος, τοῦ διαστέλλειν ἀναμέσον
τῶν ἁγίων, ϗ ἀναμέσον τοῦ προτειχίσματος,
τοῦ ἐν διατάξει τοῦ οἴκου.

MS. A. (') κατ' (ρ) τῆς θαλάσσης, (σ) κατὰ πρόσωπον τοῦ Νότου (τ) Εἰς τὰ (υ) μέτρου. (φ) αὐτὸν (χ) πήχεων

Et ſtetit ad tergum portæ reſpicientis ad Orientem : & 16
menſus eſt quingentos in calamo menſuræ. Et convertit ſe 17
ad Aquilonem, & menſus eſt
id quod ad faciem Aquilonis,
cubitos quingentos in calamo
menſuræ. Et convertit ſe ad 19
Mare : & menſus eſt, quod ad
faciem Maris, quingentos in calamo
menſuræ. Et convertit ſe 18
ad Auſtrum, & menſus eſt
contra Auſtrum quingentos in
calamo menſuræ, Quatuor partes 20
ejus (π) calamo. Et (ο) diſpoſuit ipſum, & murum eorum
per circuitum, (ρ) quingentorum ad Orientem, & quingentorum
cubitorum latitudinem ad
dividendum inter medium Sanctorum, & antemuralis, quod
in ordine domûs.

ΚΕΦ. μγ'.

1 Καὶ ἤγαγέ με ἐπὶ τὴν πύλην τὴν
βλέπουσαν (') κατὰ ἀνατολὰς, ϗ ἐξήγαγέ
2 με. Καὶ ἰδοὺ δόξα Θεοῦ Ἰσραὴλ ἤρχετο
κατὰ τὴν (α) ὁδὸν τὴν πρὸς ἀνατολὰς,
ϗ φωνὴ τῆς παρεμβολῆς, ὡς φωνὴ διπλασιαζόντων
πολλῶν· ϗ ἡ γῆ ἐξέλαμπεν
ὡς φέγγος ἀπὸ τῆς δόξης (β) κυκλόθεν.
3 Καὶ ἡ ὅρασις ἣν ἴδον, κατὰ τὴν
ὅρασιν ἣν ἴδον, ὅτε εἰσεπορευόμην τοῦ
χρῖσαι τὴν πόλιν. ϗ ἡ ὅρασις τοῦ ἅρματος
οὗ ἴδον, κατὰ τὴν ὅρασιν (γ) ἣν ἴδον
ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ τοῦ Χοβάρ. ϗ πίπτω ἐπὶ
4 πρόσωπόν μου. Καὶ δόξα κυρίου εἰσῆλθεν
εἰς τὸν οἶκον, κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς
πύλης τῆς βλεπούσης (') κατ' ἀνατολάς.
5 Καὶ ἀνέλαβέ με πνεῦμα, ϗ εἰσήγαγέ με
εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν· ϗ ἰδοὺ
6 πλήρης δόξης (δ) ὁ κυρίου οἶκος. Καὶ
ἔστην, ϗ ἰδοὺ φωνὴ ἐκ τοῦ οἴκου λαλοῦντος
πρὸς μὲ, (') ϗ ὁ ἀνὴρ εἱστήκει ἐχόμενός μου,
7 Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, (ε) Υἱὲ ἀνθρώπου, ἑώρακας
τὸν τόπον τοῦ θρόνου μου, ϗ τὸν τόπον
τοῦ ἴχνους τῶν ποδῶν μου, ἐν οἷς (") κατασκηνώσει
τὸ ὄνομά μου ἐν μέσῳ (ζ) οἴκου Ἰσραὴλ
τὸν αἰῶνα· ϗ οὐ βεβηλώσουσιν οὐκέτι (η) οἶκος
Ἰσραὴλ τὸ ὄνομα τὸ ἅγιόν μου, αὐτοὶ
ϗ οἱ ἡγούμενοι αὐτῶν ἐν τῇ πορνείᾳ
αὐτῶν, ϗ ἐν τοῖς φόνοις τῶν ἡγουμένων ἐν
8 μέσῳ αὐτῶν, Ἐν τῷ τιθέναι αὐτοὺς τὸ
πρόθυρόν μου ἐν τοῖς προθύροις αὐτῶν, ϗ
τὰς φλιάς μου ἐχομένας τῶν φλιῶν αὐτῶν·
ϗ ἔδωκαν τὸν τοῖχόν μου ὡς συνεχόμενον
ἐμοῦ ϗ αὐτῶν, ϗ ἐβεβήλωσαν τὸ ὄνομα τὸ
ἅγιόν μου ἐν ταῖς ἀνομίαις αὐτῶν αἷς ἐποίουν.
ϗ ἐξέτριψα αὐτοὺς ἐν θυμῷ μου, ϗ ἐν
φόνῳ.

MS. A. (') κατ' (α) ὁδὸν τῆς πύλης τῆς βλεπούσης πρὸς (β) κυκλόθεν. (γ) ὃ (') κατ' (δ) κυρίου ὁ (') ϗ ἀνὴρ (ε) Ἑώρακας, υἱὲ ἀνθρώπου, (") κατασκηνώσει (ζ) τοῦ οἴκου Ἰσραὴλ εἰς τὸν αἰῶνα· ϗ οὐ μὴ (η) ὁ οἶκος Ἰσραὴλ τὸ ὄνομά μου τὸ ἅγιον, αὐτοὶ

CAP. XLIII.

Et adduxit me ad portam, 1
quæ reſpiciebat ad Orientem :
& eduxit me. Et ecce gloria 2
Dei Iſrael veniebat per viam
Orientis, & vox caſtrorum,
quaſi (a) vox geminantium multorum
: & terra reſplendebat
quaſi fulgor à gloria per circuitum
: Et viſio, quam vidi, 3
ſecundùm viſionem, quam videram,
quando ingrediebar ut
(b) ungerem civitatem. Et
viſio currûs, quem vidi, ſecundùm
viſionem, quam videram
ſuper fluvium Chobar. Et cado
in faciem meam. Et gloria Domini 4
ingreſſa eſt domum per viam
portæ, quæ reſpiciebat Orientem.
Et aſſumpſit me ſpiritus, 5
& introduxit me in atrium
interius : & ecce plena gloriæ
Domini domus. Et ſteti, 6
& ecce vox de domo loquentis
ad me ; & vir ſtabat juxta
me : Et dixit ad me ; Vidiſti, 7
fili hominis, locum ſolii mei, &
locum veſtigii pedum meorum ;
in quibus habitabit nomen meum
in medio domûs Iſrael in
ſempiternum. Et non contaminabunt
ultrà domus Iſrael nomen
ſanctum meum, ipſi, &
duces eorum in fornicatione ſua,
& in homicidiis ducum in medio
ſuî, Cùm ponerent limen 8
meum in liminibus ſuis, & poſtes
meos juxta poſtes ſuos. Et
dederunt parietem meum, quaſi
(c) connexum inter ſe & me :
& contaminaverunt nomen ſanctum
meum in iniquitatibus ſuis,
quas faciebant. Et contrivi
eos in furore meo, & in occiſione.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 משח רוח קדומא בקני משחתא חמש מאה קנין בקני משחתא סחור סחור : משח
17 רוח צפונא חמש מאה קנין בקני משחתא סחור סחור : ית רוח דרומא משח
18 חמש מאה קנין בקני משחתא : אסתחר לרוח מערבא משח חמש מאה קנין
19 בקני משחתא : לארבע רוחיא משחיה שורא ליה סחור סחור אורכא חמש מאה
20 ופותיא חמש מאה לאפרשא בין קדשא לחולא :

מג

1 ואובילני לתרעא תרעא דפתיח לאורח מדנחא : והא יקר אלהא דישראל אתגלי
2 מאורח מדנחא וקל מברכי שמיה כקל מיין סגיאין וארעא נהרת מזיו יקריה : וכחזו
3 חזוא דחזיתי כחזוא דחזיתי באתנביותי לחבלא ית קרתא וחזוא כחזו דחזיתי
4 על נהר כבר ואשתטחית על אפי : ויקרא דיי אתגלי בביתא באורח תרעא דפתיח
5 לאורח מדנחא : ונטלתני רוחא ואעלתני לדרתא גויתא והא אתמלי יקרא
6 דיי ביתא : ושמעית די ממלל עמי מלגיו וגברא הוה קאים לקבלי : ואמר לי
7 בר אדם דין אתר בית כורסי יקרי ודין אתר בית אשריות שכינתי דאשרי שכינתי
תמן בגו בני ישראל לעלם ולא יסאבון עוד בית ישראל שמא דקודשי אנון
8 ומלכיהון בטעותהון ובפגרי מלכיהון במותיהון : במתנהון ספיהון לקבל ספי
בית מקדשי ובניניהון בסטר עזרתי וכותל בית מקדשי בין מימרי וביניהון וסאיבו
ית שמא דקודשי בתועבתהון דעבדו ושציתי יתהון ברוגזי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Menſuſque eſt plagam Orientalem calamo menſuræ quingentis calamis 16
per ambitum calamo menſuræ. Menſuſque eſt plagam Aquilonarem quin- 17
gentis calamis calamo menſuræ per circuitum. Et plagam Auſtralem men- 18
ſus eſt quingentis calamis calamo menſuræ. Converſuſq; ad Occidentalem 19
plagam, menſus eſt [*eam*] quingentis calamis, calamo menſuræ. Per 20
quatuor ventos menſus eſt eam : murus erat ei per circuitum longitudinis
quingentorum & latitudinis quingentorum, ut divideret inter ſanctum &
laicum.

CAP. XLIII.

Et adduxit me ad portam, portam [*inquam*] quæ aperta erat ad viam 1
Orientalem. Et ecce gloria Dei Iſrael revelata eſt à via Orientali, & vox 2
benedicentium nomen ejus ſicut vox aquarum multarum : & terra ſplen-
debat à ſplendore gloriæ ejus. Et ſecundùm aſpectum viſionis quam vidi, 3
ſecundum viſionē quam vidi cùm prophetarē ad diſperdendā civitatem : &
viſio erat ſicut viſio, quam videram ſuper fluvium Chobar : & cecidi pronus
ſuper faciem meam. Et gloria Domini revelata eſt in domo in via portæ 4
quæ aperta eſt ad viam Orientalem. Et elevavit me ſpiritus, & introduxit 5
me in atrium interius, & ecce impleta eſt domus gloria Domini. Et au- 6
divi loquentem mecum in interiori parte domus, & quidam ſtabat coram
me. Et dixit ad me : Fili hominis, iſte eſt loc⁹ dom⁹ ſolii gloriæ meæ, & iſte 7
eſt locus domus habitationis majeſtatis meæ in quo habitare faciam maje-
ſtatem meam in medio filiorum Iſrael in æternum : & non contamina-
bunt ultrà domus Iſrael nomen ſanctum meum ipſi & reges eorum in ido-
lis ſuis, & in cadaveribus regum ſuorum *cum obierint*. Dum ponerent li- 8
men ſuum juxta limina domus ſanctuarii mei, & ædificia ſua in latere atrii
mei : (& paries domus ſanctuarii mei inter Verbum meum & inter eos,)
& pollucrent nomen ſanctum meum abominationibus ſuis quas fecerunt : & conſumpſi eos in ira mea.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 * ܘܡܫܚ ܠܪܘܚܐ ܕܡܕܢܚܐ . ܒܩܢܝܐ ܕܡܫܘܚܬܐ ܚܡܫܡܐܐ ܩܢܝܢ܀ * ܘܡܫܚ
17 ܠܪܘܚܐ ܕܓܪܒܝܐ . ܒܩܢܝܐ ܕܡܫܘܚܬܐ ܚܡܫܡܐܐ ܩܢܝܢ ܚܕܪ ܚܕܪ܀ * ܘܡܫܚ
18 ܠܪܘܚܐ ܕܬܝܡܢܐ . ܚܡܫܡܐܐ ܩܢܝܢ ܒܩܢܝܐ ܕܡܫܘܚܬܐ܀ * ܘܡܫܚ ܠܪܘܚܐ
19 ܕܡܥܪܒܐ . ܚܡܫܡܐܐ ܩܢܝܢ ܒܩܢܝܐ ܕܡܫܘܚܬܐ܀ * ܠܐܪܒܥ ܪܘܚܝܢ ܡܫܚܗ ܘܫܘܪܐ ܠܗ ܚܕܪ
20 ܚܕܪ . ܐܘܪܟܗ ܚܡܫܡܐܐ ܘܦܬܝܗ ܚܡܫܡܐܐ܀ ܕܢܦܪܘܫ ܒܝܬ ܩܘܕܫܐ ܠܚܘܠܐ܀

Menſus eſt enim plagam Orientalem arundine menſoriâ, quingentas arundines. 16 Deinde menſus eſt plagam Aquilonarem arundine menſoriâ, quingentas arundines per circuitum. 17 Menſus eſt etiam plagam Meridionalem, quingentas arundines arundine menſoriâ. 18 Denique menſus eſt plagam Occidentalem, quingentas arundines arundine menſoriâ. 19 In quatuor plagas ejus menſus eſt illam, & murum circunquaque, cujus longitudo fuit quingentorum *cubitorum*, & latitudo quingentorum, ut diſtingueret inter ſacrum & prophanum. 10

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܓ *

CAP. XLIII.

1 * ܘܐܘܒܠܢܝ ܠܬܪܥܐ ܕܚܐܪ ܠܡܕܢܚܐ܀ * ܘܗܐ ܫܘܒܚܗ ܕܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܐܬܐ
2 ܡܢ ܐܘܪܚܐ ܕܡܕܢܚܐ . ܘܩܠܗ ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܡܝܐ ܣܓܝܐܐ . ܘܐܪܥܐ ܢܗܪܬ ܡܢ
3 ܫܘܒܚܗ܀ * ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܚܙܝܬ ܥܠ ܢܗܪ ܟܒܪ . ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ܀ * ܘܫܘܒܚܗ
4 ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܠܒܝܬܐ . ܒܐܘܪܚܐ ܕܬܪܥܐ ܕܚܐܪ ܠܡܕܢܚܐ܀ * ܘܫܩܠܬܢܝ ܪܘܚܐ
5 ܘܐܥܠܬܢܝ ܠܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܘܚܙܝܬ ܕܡܠܐ ܗܘܐ ܒܝܬܐ ܕܡܪܝܐ ܫܘܒܚܗ܀ * ܘܫܡܥܬ
6 ܡܢ ܕܡܡܠܠ ܥܡܝ ܡܢ ܒܝܬܐ . ܘܓܒܪܐ ܩܐܡ ܗܘܐ ܠܘܬܝ܀ * ܘܐܡܪ ܠܝ . ܒܪ ܐܢܫܐ .
7 ܐܬܪܐ ܕܟܘܪܣܝܝ ܘܐܬܪܐ ܕܦܣܬܐ ܕܪ̈ܓܠܝ . ܕܐܥܡܪ ܬܡܢ ܒܝܢܬ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ : ܠܥܠܡ .
ܘܬܘܒ ܠܐ ܢܛܢܦܘܢ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ . ܗܢܘܢ ܠܐ ܢܛܢܦܘܢ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ . ܗܢܘܢ
ܘܡܠܟܝܗܘܢ ܒܙܢܝܘܬܗܘܢ . ܘܒܫܠܕܐ ܕܡܠܟܝܗܘܢ ܘܒܦܬܟܪܝܗܘܢ܀ * ܕܝܗܒܝܢ 8
ܗܘܘ ܬܪܥܝܗܘܢ ܠܘܬ ܬܪܥܝ . ܘܣܩܘܦܝܗܘܢ ܠܘܬ ܣܩܘܦܝ . ܘܐܫܬܐ
ܗܘܬ ܒܝܢܝ ܠܒܝܢܝܗܘܢ . ܘܛܢܦܘ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ ܒܥܘܠܐ ܕܥܒܕܘ . ܘܫܘܨܝܬ ܐܢܘܢ
ܒܪܘܓܙܝ܀

POſtea perduxit me ad portam quæ ſpectat Orientem verſùs: 1 Et ecce gloria Dei Iſraelis veniebat à plaga Orientali, & vox ejus tanquam ſonus aquarum multarum, & terra reſplenduit ab ejus gloria, 2 Juxta viſionem quam videram prope fluvium Chobar: quapropter procidi in faciem meam. 3 Cúmque gloria Domini domum ingreſſa eſſet per viam portæ quæ ſpectabat Orientem, 4 Suſtulit me ſpiritus, introduxitque in atrium interius, & vidi repletam fuiſſe domum Domini gloriâ ipſius. 5 Et audivi quæ dixit mihi è domo; interim vir ille ſtabat juxta me. 6 Dixit autem mihi, Fili hominis, locus ſedis meæ, & locus plantarum pedum meorum, quem inhabito inter filios Iſraelis; erit in perpetuum: & non polluentur ampliùs Iſraelitæ, neque polluent ampliùs nomen ſanctitatis meæ ipſi neque reges ipſorum ſcortatione ſuâ, & cadaveribus regum ſuorum, & idolis ſuis. 7 Quorum fores faciebant prope fores meas, & podia prope mea podia; adeoque paries *tantùm* intererat inter me & illa. Cúmque contaminâſſent nomen ſanctitatis meæ ſcelere quod perpetrârunt, confeci eos in ira mea. 8

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * ووقف على ظهر الباب الناظر الي المشارق * وقاس خمسماية ذراع بقصبة القياس *
17 [ومسح الطريق للغربي بقصبة المساحة خمسماية قصبة كما يدور * MS. Oxon.]
18 * ورجع الي التيمن * وقاس على واجهة التيمن خمسمية بقصبة القياس [MS.Oxon. * ومسح
19 الطريق البحري خمسماية قصبة بقصبة المساحة] * باربعة اجزاء هذا القياس ورتبه
20 * وسور دايرا خمسماية الي المشارق * وخمسماية ذراع سعته * ليفصل ما بين الاقداس وبين
البناء الذي في رتبة البيت *

Et conſiſtens à tergo portæ reſpicientis ad Orientem, menſus eſt quingentos cubitos calamo menſorio. 16 [MS.Oxon. *Et menſus eſt plagam Aquilonarem calamo menſorio quingentas arundines per circuitum.*] 17 *Tum vertit ſe ad Meridiem, & menſus eſt verſùs plagam Meridionalem quingentos calamo menſorio.* 18 [MS.Oxon. *Et menſus eſt plagam Occidentalem quingentas arundines arundine menſoriâ;*] 19 *In quaternas hujus menſuræ partes, & diſpoſuit eam. Murus ejus per circuitum, quingentorum erat ad Orientem, & quingentorum cubitorum amplitudo ejus; ut divideret inter ædificium quod erat in ordine domûs.* 20

* الفصل الثالث والاربعون *

* الاصحاح الخامس والعشرون *

1 * واتي بي الي الباب الناظر نحو المشارق * واخرجني واذا مجد اله اسرايل اتي في طريق الباب
2 الناظر نحو المشارق * وصوت عسكر مثل صوت اضعاف كثيرين * واشرقت الارض مثل نور
من مجد الرب من حولها * والرويا التي رايتها لما دخلت لامسح المدينة ومنظر المركبة 3
التي رايتها * كمنظر التي رايتها علي نهر خوبار * فسقطت على وجهي * ومجد الرب دخل 4
الي البيت في طريق الباب الناظر نحو المشارق * فحملني الروح وادخلني الي الدار الداخلة 5
واذا البيت مملو من مجد الرب * فوقفت واذا صوت من البيت يتكلم معي * ووقف رجل 6
بجانبي * وقال لي * رايت يا ابن الانسان موضع كرسي وموضع اثر قدمي * الذين فيهما 7
يسكن اسمي في وسط بيت اسرايل الي الابد * ولا يدنسون ايضا بيت اسرايل اسمي القدوس 8
هم وبنوهم بزناهم وبقتالات المقدمين في وسطهم * عند ما وضعوا ابوابي عند ابوابهم
وعتباتي بجانب عتباتهم * واعطوا جداري مثل ضابط بيني وبينهم * ودنسوا اسمي القدوس
باثامهم التي صنعوها * فكسرتهم بغضبي وقتلتهم بالقتل *

CAP. XLIII.

Textus vigeſimus quintus,

I*Nde me duxit ad portam reſpicientem verſùs Orientem.* 1 *Cúmque eduxiſſet me, ecce gloria Dei Iſraelis venit per viam portæ reſpicientis Orientem verſùs, & vox exercitûs quaſi vox multiplicium: reſulſitque terra ceu lumen, propter gloriam Domini, circunquaque.* 2 *(Porrò viſio quam vidi cùm ingreſſus ſum ad ungendam* vel metiendam *urbem, & ſpecies currûs quem vidi, ſimilis erat ſpeciei illius quem videram juxta fluvium Chobar) & cecidi in faciem meam.* 3 *Gloriâ Domini domum ingreſſâ per viam portæ reſpicientis Orientem verſus,* 4 *Aſportavit me ſpiritus, & introduxit in atrium interius: & ecce domus plena erat gloriâ Domini.* 5 *Cúmque ſteuiſſem, ecce vocem è domo colloquentem mecum: ſtetit enim vir quidam ad latus meum,* 6 *Dixitque mihi; Vidiſti O fili hominis locum ſedis meæ & locum veſtigii pedum meorum, in quibus habitabit nomen meum in medio filiorum Iſraelis in æternum? & poſthac non prophanabunt domus Iſraelis nomen ſanctum meum, ipſi neque filii eorum, fornicatione ſuâ & cædibus præpoſitorum inter ipſos.* 7 *Ubi collocâſſent portas meas prope portas ſuas, & limina mea ad latus liminum ſuorum; & poſuiſſent parietem meum quaſi me & ipſos complectentem, & prophanâſſent nomen ſanctum meum iniquitatibus quas commiſerant; contrivi eos in ira mea, eoſque cæde peremi.* 8

יחזקאל : מג

: me à ſuorum regum cadavera & ,ſuam fornicationem elongent Nunc
עַתָּה יְרַחֲקוּ אֶת־זְנוּתָם וּפִגְרֵי מַלְכֵיהֶם מִמֶּנִּי 9
annuntia hominis fili Tu .ſeculum in eorum medio in habitabo &
וְשָׁכַנְתִּי בְתוֹכָם לְעוֹלָם׃ אַתָּה בֶן־אָדָם הַגֵּד 10
: ſuæ iniquitates propter erubeſcant & ,domum Iſrael domui
אֶת־בֵּית־יִשְׂרָאֵל אֶת־הַבַּיִת וְיִכָּלְמוּ מֵעֲוֺנוֹתֵיהֶם
,fecerunt quæ omnibus de erubuerint ſi Et .exemplar metiantur &
וּמָדְדוּ אֶת־תָּכְנִית׃ וְאִם־נִכְלְמוּ מִכֹּל אֲשֶׁר־עָשׂוּ 11
,ejus introitus & ,ejus exitus & ,ejus diſpoſitionem & , domus figuram
צוּרַת הַבַּיִת וּתְכוּנָתוֹ וּמוֹצָאָיו וּמוֹבָאָיו
omnes & ,ejus *figuras omnes* & ,ejus *ſtatuta omnia* & ,ejus figuras omnes &
וְכָל־צוּרֹתָו וְאֵת כָּל־חֻקֹּתָיו וְכָל־צוּרֹתָו וְכָל־
cuſtodiant & : eorum oculis in ſcribe & , eos fac ſcire ; ejus leges
תּוֹרֹתָו הוֹדַע אוֹתָם וּכְתֹב לְעֵינֵיהֶם וְיִשְׁמְרוּ אֶת־
Iſta .*ea* facient & ,ejus *ſtatuta omnia* & ,ejus formam omnem
כָּל־צוּרָתוֹ וְאֶת־כָּל־חֻקֹּתָיו וְעָשׂוּ אוֹתָם׃ זֹאת 12
circa circum ,ejus terminus omnis ,montis *caput* ſuper : domus lex
תּוֹרַת הַבָּיִת עַל־רֹאשׁ הָהָר כָּל־גְּבֻלוֹ סָבִיב ׀ סָבִיב
menſuræ iſtæ Et .domus lex iſta Ecce .ſanctitatum ſanctitas
קֹדֶשׁ קָדָשִׁים הִנֵּה־זֹאת תּוֹרַת הַבָּיִת׃ וְאֵלֶּה מִדּוֹת 13
cubiti & , *cubiti ſinus &* : *palmus &* ,cubitus cubitus ;cubitis in altaris
הַמִּזְבֵּחַ בָּאַמּוֹת אַמָּה אַמָּה וָטֹפַח וְחֵיק הָאַמָּה וְאַמָּה
hæc & : unius *pugilli circum* ejus labium ad *ejus terminus &* ,latitudo
רֹחַב וּגְבוּלָהּ אֶל־שְׂפָתָהּ סָבִיב זֶרֶת הָאֶחָד וְזֶה
inferius auxilii atrium ad uſque terræ *ſinu* à Et .altaris *præeminentia*
גַּב הַמִּזְבֵּחַ׃ וּמֵחֵיק הָאָרֶץ עַד־הָעֲזָרָה הַתַּחְתּוֹנָה 14
, minori *auxilii atrio* à Et .unius cubiti latitudo & , cubiti duo
שְׁתַּיִם אַמּוֹת וְרֹחַב אַמָּה אֶחָת וּמֵהָעֲזָרָה הַקְּטַנָּה
.cubiti latitudo & , cubiti quatuor *magnum auxilii atrium* ad uſque
עַד־הָעֲזָרָה הַגְּדוֹלָה אַרְבַּע אַמּוֹת וְרֹחַב הָאַמָּה׃
cornua , ſuprà & *Dei leone à &* : cubitorum quatuor *Dei mons* Et
וְהַהַרְאֵל אַרְבַּע אַמּוֹת וּמֵהָאֲרִאֵיל וּלְמַעְלָה הַקְּרָנוֹת 15
duodecim *in* longitudine viginti duo *Ariel* Et .quatuor
אַרְבַּע׃ וְהָאֲרִאֵיל שְׁתֵּים עֶשְׂרֵה אֹרֶךְ בִּשְׁתֵּים עֶשְׂרֵה 16
auxilii atrium Et .*ſuas quadraturas* quatuor *ad* quadratum ,latitudinis
רֹחַב רָבוּעַ אֶל־אַרְבַּעַת רְבָעָיו׃ וְהָעֲזָרָה 17
ad latitudinis quatuordecim *in* longitudinis quatuordecim
אַרְבַּע עֶשְׂרֵה אֹרֶךְ בְּאַרְבַּע עֶשְׂרֵה רֹחַב אֶל־
, cubiti dimidii *eam circum terminus* & : ejus *quadraturæ* quatuor
אַרְבַּעַת רְבָעֶיהָ וְהַגְּבוּל סָבִיב אוֹתָהּ חֲצִי הָאַמָּה
.orientem *reſpicere* ejus gradus Et .*circum* cubiti ei *ſinus &*
וְהַחֵיק־לָהּ אַמָּה סָבִיב וּמַעֲלֹתֵהוּ פְּנוֹת קָדִים׃
Hæc : *Dominus* Dominus dixit Sic ,hominis Fili ,me ad dixit Et
וַיֹּאמֶר אֵלַי בֶּן־אָדָם כֹּה אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה אֵלֶּה 18
illud ſuper *faciendum aſcendere* ad : illud *fieri* die in altaris ſtatuta
חֻקּוֹת הַמִּזְבֵּחַ בְּיוֹם הֵעָשׂוֹתוֹ לְהַעֲלוֹת עָלָיו
ad dabis Et .ſanguinem illud ſuper ſpargendum ad & ,*aſcenſionem*
עוֹלָה וְלִזְרֹק עָלָיו דָּם׃ וְנָתַתָּה אֶל־ 19
,me ad *propinqui* , Sadoc ſemine de *ipſi* qui , *Levitas ſacerdotes*
הַכֹּהֲנִים הַלְוִיִּם אֲשֶׁר הֵם מִזֶּרַע צָדוֹק הַקְּרֹבִים אֵלַי
bovis filium vitulum : mihi *miniſtrandum ad* ,*Dominus* Dominus ait
נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה לְשָׁרְתֵנִי פַּר בֶּן־בָּקָר
quatuor *ſuper dabis* & ,ej⁹ ſanguine de aſſumes Et .peccato pro *ſacrificiū ad*
לְחַטָּאת׃ וְלָקַחְתָּ מִדָּמוֹ וְנָתַתָּה עַל־אַרְבַּע 20
: *circum terminum ad &* ,*auxilii atrii* angulis quatuor in & ,ejus cornibus
קַרְנֹתָיו וְאֶל־אַרְבַּע פִּנּוֹת הָעֲזָרָה וְאֶל־הַגְּבוּל סָבִיב
:peccato pro vitulum tolles Et .illud expiabis & ,illud mundabis &
וְחִטֵּאתָ אוֹתוֹ וְכִפַּרְתָּהוּ׃ וְלָקַחְתָּ אֵת הַפָּר הַחַטָּאת 21
.ſanctuarium extra domus *præcepto in* eum comburet &
וּשְׂרָפוֹ בְּמִפְקַד הַבַּיִת מִחוּץ לַמִּקְדָּשׁ׃

Verſio VULG. LAT.

9 Nunc ergò repellant procul fornicationem
ſuam, & ruinas regū
ſuorum à me: & habitabo in medio
10 eorum ſemper. Tu autem, fili
hominis, oſtende domui Iſrael
templum, & confundantur ab iniquitatibus
ſuis, & metiantur fabricā:
11 Et erubeſcant ex omnibus
quæ fecerunt: Figuram domûs,
& fabricæ ejus exitus, & introitus,
& omnē diſcriptionem ej⁹, &
univerſa præcepta ejus, cunctúmque
ordinem ejus, & omnes leges
ejus oſtende eis, & ſcribes in
oculis eorū: ut cuſtodiant omnes
deſcriptiones ejus, & præcepta illius,
12 & faciant ea. Iſta eſt lex dom⁹
in ſummitate montis: Omnis
finis ej⁹ in circuitu, Sanctum ſanctorum
eſt: hæc eſt ergò lex domûs.
13 Iſtæ autem menſuræ altaris
in cubito veriſſimo, qui habebat
cubitum & palmum: in ſinu
ejus erat cubitus & cubitus in
latitudine, & definitio ej⁹ uſque
ad labium ejus, & in circuitu,
palmus unus: hæc quoq; erat foſſa
14 altaris. Et de ſinu terræ uſque
ad crepidinem noviſſimam duo
cubiti, & latitudo cubiti unius: et
à crepidine minore uſq; ad crepidinem
majorem quatuor cubiti,
15 & latitudo cubiti unius. Ipſe
autem Ariel quatuor cubitorum:
& ab Ariel uſque ad ſurſū, cornua
16 quatuor. Et Ariel duodecim
cubitorum in longitudine per
duodecim cubitos latitudinis:
17 quadrangulatū æquis laterib⁹. Et
crepido quatuordecim cubitorū
lōgitudinis, p̄ quatuordecim cubitos
latitudinis in quatuor angulis
ejus: & corona in circuitu
ej⁹ dimidii cubiti, & ſin⁹ ej⁹ uni⁹
cubiti per circuitum: grad⁹ autē
18 ej⁹ verſi ad Orientē. Et dixit ad
me; Fili hominis, hæc dicit Domin⁹
De⁹; Hi ſunt rit⁹ altaris, in
quacunque die fuerit fabricatū;
ut offeratur ſuper illud holocauſtū,
19 & effundatur ſanguis. Et dabis
ſacerdotib⁹, & Levitis, qui
ſunt de ſemine Sadoc, qui accedunt
ad me, ait Domin⁹ De⁹, ut
offerant mihi vitulum de armento
20 pro peccato. Et aſſumens de
ſanguine ej⁹, pones ſuper quatuor
cornua ejus, & ſuper quatuor
angulos crepidinis, & ſuper coronam
in circuitu: & mundabis
21 illud, & expiabis. Et tolles vitulū,
qui oblatus fuerit pro peccato:
& combures eum in ſeparato
loco domûs extra Sanctuarium.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

9 Καὶ νῦν ἀπωσάσθωσαν τὴν πορνείαν αὐτῶν, καὶ
τοὺς φόνους τῶν ἡγουμένων αὐτῶν ἀπ' ἐμοῦ, καὶ
κατασκηνώσω ἐν μέσῳ αὐτῶν (θ) τὸν αἰῶνα.
10 Καὶ σὺ υἱὲ ἀνθρώπου, δεῖξον τῷ οἴκῳ
Ἰσραὴλ τὸν οἶκον· καὶ κοπάσουσιν ἀπὸ τῶν ἁμαρτιῶν
αὐτῶν· καὶ τὴν ὅρασιν αὐτοῦ, καὶ τὴν διάταξιν
11 αὐτοῦ. Καὶ αὐτοὶ λήψονται τὴν κόλασιν
αὐτῶν περὶ πάντων ὧν ἐποίησαν. καὶ διαγράψεις
τὸν οἶκον, (ι) καὶ τὰς ἐξόδους αὐτοῦ,
καὶ τὴν ὑπόστασιν αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ προστάγματα
αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ νόμιμα αὐτοῦ γνωριεῖς
αὐτοῖς, καὶ (κ) διαγράψεις ἐναντίον
αὐτῶν· καὶ φυλάξονται πάντα τὰ δικαιώματά
μου, καὶ πάντα τὰ προστάγματά μου, καὶ
12 ποιήσουσιν αὐτά. Καὶ τὴν διαγραφὴν τοῦ οἴκου
ἐπὶ τῆς κορυφῆς τοῦ ὄρους, πάντα τὰ ὅρια αὐτοῦ
13 κυκλόθεν ἅγια ἁγίων (λ). Καὶ ταῦτα
τὰ μέτρα τοῦ θυσιαστηρίου ἐν πήχει τοῦ πήχεως,
καὶ παλαιστῆς, (μ) κόλπωμα βάθος ἐπὶ πῆχυν,
καὶ πῆχυς τὸ εὖρος, καὶ γεῖσος ἐπὶ
(ν) τὸ χεῖλος αὐτοῦ κυκλόθεν, σπιθαμῆς.
14 καὶ τοῦτο τὸ ὕψος τοῦ θυσιαστηρίου Ἐκ βάθους
τῆς ἀρχῆς τοῦ κοιλώματος αὐτοῦ, πρὸς τὸ ἱλαστήριον
τὸ μέγα (ξ) τοῦτο, ὑποκάτωθεν
πηχῶν δύο, καὶ τὸ εὖρος πήχεως· καὶ ἀπὸ
τοῦ ἱλαστηρίου τοῦ μικροῦ ἐπὶ τὸ ἱλαστήριον τὸ
μέγα, πήχεις τέσσαρες, καὶ εὖρος (ο) πῆχυς.
15 Καὶ τὸ ἀριὴλ πηχῶν τεσσάρων, καὶ ἀπὸ
τοῦ ἀριὴλ, καὶ ὑπεράνω τῶν κεράτων πῆχυς.
16 Καὶ τὸ ἀριὴλ πηχῶν δώδεκα μήκους,
ἐπὶ πήχεις δώδεκα (π), τετράγωνον ἐπὶ
17 τὰ τέσσαρα μέρη αὐτοῦ. Καὶ τὸ ἱλαστήριον
πηχῶν δεκατεσσάρων τὸ μῆκος, ἐπὶ πήχεις
δεκατέσσαρας τὸ εὖρος (ρ) ἐπὶ τέσσαρα
μέρη αὐτοῦ, καὶ τὸ γεῖσος (ʹ) αὐτῷ κυκλόθεν
κυκλούμενον αὐτῷ ἥμισυ πήχεως·
καὶ τὸ κύκλωμα αὐτοῦ πῆχυς κυκλόθεν, καὶ
οἱ (σ) κλιμακτῆρες αὐτοῦ βλέποντες (˝) κατὰ
18 ἀνατολάς. Καὶ εἶπε πρός με, Υἱὲ ἀνθρώπου,
τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς Ἰσραὴλ,
Ταῦτα τὰ προστάγματα τοῦ θυσιαστηρίου ἐν
ἡμέρᾳ ποιήσεως αὐτοῦ, τοῦ ἀναφέρειν ἐπ'
αὐτοῦ (τ) ὁλοκαυτώματα, καὶ προσχέειν πρὸς
19 αὐτὸ αἷμα. Καὶ δώσεις τοῖς ἱερεῦσι τοῖς
Λευίταις (υ) τοῖς ἐκ τοῦ σπέρματος Σαδδοὺκ
(φ) τοῖς ἐγγίζουσι πρός με, λέγει κύριος
ὁ θεὸς (χ), τοῦ λειτουργεῖν μοι μόσχον
20 ἐκ βοῶν περὶ ἁμαρτίας. Καὶ λήψονται
ἐκ τοῦ αἵματος αὐτοῦ, καὶ ἐπιθήσουσιν ἐπὶ τὰ (·)
τέσσαρα κέρατα τοῦ θυσιαστηρίου, καὶ ἐπὶ τὰς
τέσσαρας γωνίας τοῦ ἱλαστηρίου, καὶ ἐπὶ τὴν βάσιν
21 κύκλῳ, (†) καὶ ἐξιλάσονται (ʺ) αὐτό. Καὶ
λήψονται τὸν μόσχον τὸν (ω) περὶ ἁμαρτίας, καὶ
κατακαυθήσεται ἐν τῷ ἀποκεχωρισμένῳ
τοῦ οἴκου, ἔξωθεν τῶν ἁγίων.

MS.A. (θ) εἰς τὸν (ι) καὶ τὴν ἑτοιμασίαν αὐτοῦ, καὶ τὰς ἐξόδους αὐτοῦ, καὶ τὰς εἰσόδους αὐτοῦ, καὶ τὰς (κ) διαγραφὰς (λ) εἰσίν· οὗτος ὁ νόμος τοῦ οἴκου. Καὶ (μ) τὸ κόλπωμα βάθος πῆχυς ἐπὶ πῆχυν, καὶ πῆχυς (ν) τοῦ χείλους (ξ) τὸ ὑποκάτωθεν (ο) πήχεως. (π) πλάτους, τετράγωνον (ρ) πλεγμένον ἐπὶ τὰ τέσσερα (ʹ) αὐτῶν (σ) κλιμακτῆρες (˝) κατ' (τ) τὰ ὁλοκαυτώματα, καὶ προσχέειν πρὸς τὸ αἷμα. (υ) ἐκ τοῦ (φ) καὶ τοῖς (χ) τοῦ Λευΐ, λειτουργεῖν (·) τέσσερα (†) καὶ περιραντιεῖς αὐτὸ, καὶ (ʺ) αὐτόν. (ω) ὑπὲρ

Et nunc abjiciant fornicationem 9
ſuam, & (d) homicidia ducum
ſuorum à me: & habitabo in medio
eorum in ſempiternum. Et tu, 10
fili hominis, oſtende domui Iſrael
domum, & ceſſabunt à peccatis
ſuis: & viſionem ejus, & diſpoſitionem
(e) illius: Et ipſi ſuſtinebunt 11
tormentum ſuum pro omnibus
quæ fecerunt. Et deſcribes
domum, (f) & exitus ejus, &
ſubſtantiam ejus: & omnia præcepta
illius, et omnia legitima (g)
eius oſtendes illis, & deſcribes
coram eis: & cuſtodient omnes
juſtificationes meas, & omnia
præcepta mea, & facient ea: Et 12
deſcriptionem domûs in vertice
montis: omnes termini ejus in
circuitu Sancta ſanctorum ſunt.
Et (h) hæ menſuræ altaris in cubito 13
(i) cubiti, & palæſtes, ſinus
profundi per cubitum, & cubitus
latitudinis, & (k) giſus per labium
ejus in circuitu, palmi unius.
Et hæc eſt altitudo altaris
A (l) profundo exordii cavitatis 14
ejus ad propitiatorium magnum,
quod erat ſubter, cubitorum duorum,
& latitudo cubiti. Et à
(m) propitiatorio minori ad propitiatoriū
majus cubiti quatuor, et
latitudo cubitus. Et (n) Ariel cubitorum 15
quatuor: & ab Ariel,
& uſque ad ſuperiora cornuum
cubitus. Ipſum autem Ariel duodecim 16
cubitos habebat in longitudine,
ad cubitos (o) duodecim,
quatuor angulorum per quatuor
partes ejus. Et propitiatorium, 17
quatuordecim cubitorum longitudo,
ad cubitos quatuordecim latitudo
per quatuor partes ejus: et
giſus ei per circuitum gyrans illud,
dimidio cubito: & circuitus
ejus, cubitus per gyrum: & gradus
ejus reſpicientes ad Orientem.
Et dixit ad me; Fili hominis, 18
hæc dicit Dominus Deus Iſrael;
Hec ſunt præcepta altaris
in die effectionis ejus, ut offerantur
ſuper eo holocauſtomata, &
effundatur ſuper illud ſanguis. Et 19
dabis ſacerdotibus Levitis, qui
ſunt ex ſemine Sadduc, qui appropinquant
ad me, dicit Dominus
Deus, ut miniſtrent mihi vitulum
de bobus pro peccato: Et tollent 20
de ſanguine ejus, et ponent
ſuper quatuor cornua altaris, &
ſuper quatuor angulos propitiatorii,
et ſuper baſim in circuitu, et
expiabunt illud. Et tollent vitulum 21
qui pro peccato: & comburetur
in loco ſeparato domûs extra
Sancta.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

כְּעַן יְרַחֲקוּן יָת טַעֲוָתְהוֹן וּפִגְרֵי מַלְכֵיהוֹן מִלְּמֶחֱטֵי קֳדָמַי וְאַשְׁרֵי שְׁכִנְתִּי בֵּינֵיהוֹן לְעָלַם׃ 9
אַתְּ בַּר אָדָם חֲוִי יָת בֵּית יִשְׂרָאֵל יָת בֵּיתָא וְיִתְכַּנְעוּן מֵחוֹבֵיהוֹן וְיִמְשְׁחוּן יָת תִּקּוּסֵיהּ׃ 10
וְאִם יִתְכַּנְעוּן מִכֹּל דַּעֲבַדוּ בְּמֶחֱזֵיהוֹן צוּרַת בֵּיתָא וְתִקּוּסֵיהּ וּמַפְּקָנוֹהִי וּמַעֲלָנוֹהִי 11
וְכָל צוּרָתֵיהּ וְיָת כָּל גְּזֵירָתֵיהּ וְכָל צוּרָתֵיהּ וְכָל דַּחֲזֵי לֵיהּ הוֹדַע יָתְהוֹן וּכְתִיב לְעֵינֵיהוֹן
וְיִטְּרוּן יָת כָּל צוּרָתֵיהּ וְיָת כָּל גְּזֵירָתֵיהּ וְיַעְבְּדוּן יָתְהוֹן׃ דָּא אוֹרַיְתָא דְבֵיתָא עַל רֵישׁ 12
טוּרָא כָּל תְּחוּמֵיהּ סְחוֹר סְחוֹר קֹדֶשׁ קוּדְשַׁיָּא הָא דָא אוֹרַיְתָא דְבֵיתָא׃ וְאִלֵּין מִשְׁחַת 13
מַדְבְּחָא בְּאַמַּיָּא בְּאַמְּתָא דְּהִיא אַמָּה וּפָשַׁךְ וְתַשְׁוִיתָא אַמְּתָא וְאַמְּתָא פּוּתְיָא וְגִדְנְפָא
מַקִּיף לַהּ עַל סִפְתַּהּ סְחוֹר זַרְתָּא חֲדָא וְדֵין תִּקּוּס מַדְבְּחָא׃ וּמִתַּשְׁוִית אַרְעָא עַד 14
מְסַמְּתָא אַרְעִיתָא תַּרְתֵּין אַמִּין וּפוּתְיָא אַמְּתָא חֲדָא וּמִמְּסַמְּתָא זְעֵרְתָּא עַד מְסַמְּתָא
רַבְּתָא אַרְבַּע אַמִּין וּפוּתְיָא אַמְּתָא׃ וּמַדְבְּחָא אַרְבַּע אַמִּין וּמִמַּדְבְּחָא וּלְעֵלָּא קַרְנָתָא 15
אַרְבַּע׃ וּמַדְבְּחָא תַּרְתָּא עַסְרֵי אוּרְכָּא בְּתַרְתָּא עַסְרֵי פוּתְיָא מְרַבַּע עַל אַרְבְּעָא 16
סִטְרוֹהִי׃ וּמְסַמְּתָא אַרְבַּע עַסְרֵי אוּרְכָּא בְּאַרְבַּע עַסְרֵי פוּתְיָא עַל אַרְבַּע סִטְרָהָא 17
וְגִדְנְפָא מַקִּיף לַהּ סְחוֹר סְחוֹר פַּלְגוּת אַמְּתָא וְתַשְׁוִיתָא לַהּ אַמְּתָא סְחוֹר סְחוֹר וְדַרְגִּין
דְּסָלְקִין לַהּ מִתְפַּנַּן לְמַדִּנְחָא׃ וַאֲמַר לִי בַּר אָדָם כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים אִלֵּין גְּזֵירַת 18
מַדְבְּחָא בְּיוֹם אִתְעַבָּדוּתֵיהּ לְאַסָּקָא עֲלוֹהִי עֲלָתָא וּלְמִזְרַק עֲלוֹהִי דַּם נִכְסַת קוּדְשַׁיָּא׃
וְתִתֵּן לְכָהֲנַיָּא לֵוָאֵי דִּי אִנּוּן מִזַּרְעָא דְּצָדוֹק דְּקָרִיבִין לְפוּלְחָנִי אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לְשַׁמָּשָׁא 19
קֳדָמַי תּוֹר בַּר תּוֹרֵי לְחַטָּאתָא׃ וְתִסַּב מִדְּמֵיהּ וְתִתֵּן עַל אַרְבַּע קַרְנָתֵיהּ וְעַל אַרְבַּע זָוְיָת 20
מְסַמְּתָא וְעַל תְּחוּמָא סְחוֹר סְחוֹר וּתְדַכֵּי יָתֵיהּ וּתְכַפַּר עֲלוֹהִי׃ וְתִסַּב יָת תּוֹרָא דְחַטָּאתָא 21
וְיוֹקְדִנֵּיהּ בַּאֲתַר דַּחֲזֵי לְבֵיתָא מִבָּרָא לְמַקְדְּשָׁא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Nunc projicient idola ſua, & cadavera regum ſuorum, ut non peccent coram 9
me: & habitare faciam majeſtatem meam in medio eorū in æternum. Tu autem 10
fili hominis oſtende domui Iſrael domū, & confundantur à peccatis ſuis
& metiantur fabricā ej⁹. Quòd ſi erubuerint ex omnib⁹ quæ fecerunt cùm 11
viderint figurā dom⁹ & fabricam ej⁹, & exit⁹ ej⁹ & introitus ej⁹, & omnes
figuras ej⁹, & omnia inſtituta ej⁹, & omnes formas ej⁹, & omnia quæ ad eam
pertinent oſtende eis, & ſcribe ante oculos eorū ut cuſtodiant omnes figuras
ej⁹, & omnia inſtituta ej⁹, & faciant ea. Hæc eſt lex dom⁹ in vertice montis, 12
et omnis termin⁹ ej⁹ per circuitū Sanctū ſanctorū: iſta eſt lex dom⁹. Et hæ ſūt 13
menſuræ altaris in cubitis, in cubito qui habet cubitū & palmum: & fundamentū
ej⁹ cubiti uni⁹ & cubiti latitudinis: & clauſura ej⁹ in circuitu ſuper labiū
ej⁹ circumquaq; palmi uni⁹: & iſta erat compoſitio altaris. Et à fundamento 14
terræ uſque ad atrium inferi⁹ duo cubiti, & latitudo cubiti unius: &
ab atrio minori uſque ad atrium maj⁹ quatuor cubiti, & latitudo cubiti uni⁹.
Et altare quatuor cubitorum; & ab altari & ſurſum, cornua quatuor. 15
Et altare duodecim habebat in longitudine cum duodecim latitudinis, quadratum 16
quatuor ſuis lateribus. Et atrium quatuordecim cubitorum longitudinis 17
& quatuordecim latitudinis ex quatuor lateribus ſuis, & clauſura circum
illud per gyrum dimidii cubiti; & fundamentum ei erat unius cubiti
per circuitum, & *gradus* per *quos* aſcendebant ad illud reſpiciebant ad Orientem.
Et dixit ad me: Fili hominis, hæc dicit Dn̄s De⁹: Hi ſunt ritus altaris 18
in die quo factū fuerit ut offeratur ſuper illud holocauſtum, & ut diſpergatur
ſuper illud ſanguis victimarum ſanctificatarum. Et dabis Sacerdotib⁹ Levitis 19
qui ſunt de ſemine Sadok qui accedunt ad cultum meum, ait Dominus Deus,
ut miniſtrent coram me, vitulum filium bovis pro peccato. Et tolles 20
de ſanguine ejus, & dabis ſuper quatuor cornua ejus, & ſuper quatuor
angulos atrii & ſuper terminum ejus in circuitu, & luſtrabis illud & expiabis
illud. Et tolles vitulum pro peccato, & comburetur in loco apto domus 21
extra ſanctuarium.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܫܐ ܢܪܚܩܘܢ ܙܢܝܘܬܗܘܢ ܘܫܠܕܐ ܕܡܠܟܝܗܘܢ ܡܢ ܩܕܡܝ. ܘܐܫܪܐ ܒܝܢܬܗܘܢ
ܠܥܠܡ. * ܘܐܢܬ ܒܪ ܐܢܫܐ܆ ܚܘܝܘܗܝ ܠܒܝܬܐ ܗܢܐ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܬܟܢܥܘܢ
ܡܢ ܥܘܠܗܘܢ܆ ܘܢܡܫܚܘܢ ܠܗ. ܘܢܫܬܟܚܘܢ ܒܕܡܘܬܗ ܕܒܝܬܐ. * ܘܐܢ ܢܬܒܗܬܘܢ ܡܢ ܟܠ
ܕܥܒܕܘ܆ ܨܘܪܬܗ ܕܒܝܬܐ ܘܬܟܢܝܬܗ ܘܡܦܩܢܘܗܝ ܘܡܥܠܢܘܗܝ܆ ܘܟܠܗ ܨܘܪܬܗ ܚܘܝ
ܐܢܘܢ. ܘܟܬܘܒ ܠܥܝܢܝܗܘܢ܆ ܕܢܛܪܘܢ ܟܠܗܝܢ ܨܘܪܬܗ ܘܟܠܗ ܬܟܢܝܬܗ ܘܢܥܒܕܘܢ ܐܢܝܢ.
* ܗܢܘ ܚܙܘܐ ܕܒܝܬܐ ܥܠ ܪܫܗ ܕܛܘܪܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܬܚܘܡܘܗܝ ܚܕܪܢܝܗ. ܩܘܕܫ ܩܘܕܫܐ ܐܢܘܢ.
* ܘܗܠܝܢ ܡܫܘܚܬܗ ܕܡܕܒܚܐ ܒܐܡܝܢ. ܐܡܬܐ ܘܦܘܫܟܐ. ܥܘܒܗ ܕܐܡܬܐ܆ ܐܡܬܐ. ܘܬܢܦܐ
ܐܝܬ ܠܗ ܒܣܦܬܗ ܙܪܬܐ ܚܕ ܚܕܪܢܝܗ. ܘܗܟܢܐ ܒܓܒܗ. * ܘܡܢ ܐܪܥܐ ܥܕܡܐ ܠܥܕܪܬܐ ܬܚܬܝܬܐ
ܬܪܬܝܢ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܐܡܬܐ ܚܕܐ. ܘܡܢ ܥܕܪܬܐ ܬܚܬܝܬܐ ܥܕܡܐ ܠܥܕܪܬܐ ܪܒܬܐ܆ ܐܪܒܥ ܐܡܝܢ.
ܘܦܬܝܗ ܐܡܬܐ. * ܘܗܕܐܝܠ ܐܪܒܥ ܐܡܝܢ. ܘܡܢ ܗܕܐܝܠ ܘܠܥܠ ܩܪܢܬܐ ܐܪܒܥ.
* ܘܐܘܪܟܗ ܕܗܕܐܝܠ ܬܪܬܥܣܪܐ ܐܡܝܢ܆ ܘܦܬܝܗ ܬܪܬܥܣܪܐ. ܡܪܒܥ ܠܐܪܒܥܐ ܦܢܘܬܗ.
* ܘܥܕܪܬܐ ܐܘܪܟܗ ܐܪܒܥܣܪܐ ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܐܪܒܥܣܪܐ܆ ܠܐܪܒܥܐ ܦܢܘܬܗ. ܘܬܢܦܐ
ܘܥܕܪܬܐ ܕܚܕܪܐ ܠܗ. ܦܠܓܘܬ ܐܡܬܐ. ܘܥܘܒܐ ܐܝܬ ܠܗ ܚܕܪܢܝܗ. ܘܕܪܓܘܗܝ
ܚܙܝܢ ܠܡܕܢܚܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ܆ ܒܪ ܐܢܫܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܗܠܝܢ ܢܡܘܣܘܗܝ
ܕܡܕܒܚܐ ܒܝܘܡܐ ܕܢܬܒܢܐ. ܠܡܣܩ ܥܠܘܗܝ ܥܠܬܐ. ܘܠܡܙܠܦܘ ܕܡܐ ܥܠܘܗܝ.
* ܘܬܬܠ ܠܟܗܢܐ ܘܠܠܘܝܐ ܕܡܢ ܙܪܥܗ ܕܨܕܘܩ܆ ܕܡܬܩܪܒܝܢ ܠܘܬܝ܆ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ
ܠܡܫܡܫܘܬܝ܆ ܬܘܪܐ ܒܪ ܒܩܪܐ ܠܚܘܣܝܐ ܕܚܛܗܐ. * ܘܣܒ ܡܢ ܕܡܗ. ܘܪܣ
ܥܠ ܐܪܒܥ ܩܪܢܬܗ ܕܡܕܒܚܐ. ܘܥܠ ܐܪܒܥ ܙܘܝܬܗ ܕܥܕܪܬܐ. ܘܥܠ ܬܢܦܐ ܕܚܕܪܐ ܠܗ.
ܘܪܣ ܥܠܘܗܝ ܘܬܕܟܝܘܗܝ. * ܘܣܒ ܬܘܪܐ ܕܚܛܗܐ. ܘܢܩܪܒܘܢܗ ܠܣܛܪ
ܒܝܬܐ ܠܒܪ ܡܢ ܡܩܕܫܐ.

Poſthàc amovebunt ſcortationẽ ſuã & cadavera 9
regum ſuorũ à conſpectu meo, & habitabo
inter eos in perpetuũ. Tu igitur fili hominis, 10
oſtende domum iſtã Iſraelitis, & ſeſe cohibeant
à ſcelere quo contra me deliquerunt,
& metiantur figurã domûs. Quòd ſi retrahant 11
ſeſe ab his quæ fecerunt, formas domûs & conſtitutionem
ejus, aditus exitúſq; ipſius, totam
deniq; formam ipſius oſtende eis, & deſcribe
corã eis; ut obſervent omnes figuras ejus, totámq;
deſcriptionem ejus, & faciant eas. Hæc 12
eſt ſpecies domûs ſupra montis cacumine *ſitæ*,
& omnes termini ejus circunquaque Sancti
Sanctorũ ſunt. Hæ ſunt dimenſiones altaris per 13
cubitos *ſumendo cubitum pro* cubito & palmo:
ſinus ejus cubitalis erat, cubiti *unius*: &
balauſtium habebat labrum ejus, ſpithamale
circunquaque: eodémq; modo in latere ipſius.
A ſolo balauſtium infimum uſque, duo cubiti; 14
& hujus latitudo cubitus unus: à balauſtio
autem infimo ad ſupremum uſq; quatuor cubiti,
latitudo verò cubitus. Hedael quatuor erat 15
cubitorum; & ab Hedaele ſurſum verſùs, cornua
quatuor. Longitudo Hedaelis duodecim 16
cubitorum, & latitudo duodecim: quadratus
erat per quaterna ipſius latera. Balauſtii ejus 17
longitudo quatuordecim cubitorum, & quatuordecim
latitudo per quaterna ipſius latera:
nam balauſtiũ & crepido quæ cingebat eum,
dimidii erat cubiti: ſinúmque habebat circunquaque:
& gradus ejus reſpiciebant Orientẽ
verſús. Tum dixit mihi, Fili hominis, ſic dicit 18
Dñs dominorum; Hæ ſunto leges altaris quâ
die fabricatum fuerit: Offerent ſuper illud
holocauſtũ, ſpargéntq; ſanguinem ſuper illud.
Dabo ſacerdotibus & Levitis qui ſunt ex ſemine 19
Sadoci, qui ad me accedunt (ait Dominus
dominorum) ut mihi miniſtrent, taurum
bovinum in expiationem peccatorum. Hujus 20
è ſanguine ſumes, ſpargeſq; per quaterna altaris
cornua, per quatuor balauſtii ejus angulos,
pérque crepidinem quæ cingit illud: ſparges
inquam ſuper illud, & mundabitur. Deinde 21
ſumes taurum expiationis, & offerent eum ad
latus domûs extra Sanctuarium.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والآن يبعدوا زناهم وقتلات مقدميهم عني * واسكن في وسطهم الى الابد * وانت يا ابن
الانسان * اظهر لبيت اسرايل البيت ومثله ورسمه * ويكفون من خطاياهم * فهم ياخذون
عقابهم من جميع ما صنعوا * وترسم البيت وهيئته * وخارجه ومداخله * وقوامه وجميع
اوامره وجميع نواميسه تعرفهم * وترسمها امامهم * ويحفظون جميع حقوقي وجميع اوامري
ويصنعونها * ورسم البيت على راس الجبل وجميع حدوده من حوله هي اقداس القديسين
وهذا ناموس البيت * وهذه مقادير المذبح بذراع الذراع وشبر * عمق حضنه ذراع على
ذراع * وذراع سعته * وافريز شبر على حافته من حوله * وهذا ارتفاع المذبح * من عمق بدو
تجويفه الى المغفر الاكبر الذي من اسفل * ذراعان * وسعته ذراع * ومن المغفر الاصغر
الى المغفر الاكبر اربعة اذرع * وعرضه ذراع * والاريال اربعة اذرع * ومن الاريال وفوق
القرون ذراع * وطول الاريال اثني عشر ذراعا * واثني عشر ذراعا عرضه * مربع على اربعة
نواحيه * والمغفر اربعة عشر ذراعا طوله واربعة عشر ذراعا عرضه * مربع على اربعة نواحيه
وافريزهم من داير يحوطهم نصف ذراع * ومحيطه ذراع من داير ودرجاته تنظر نحو المشارق
* وقال لي * يا ابن الانسان * هكذا يقول الرب اله اسرايل هذه اوامر المذبح في يوم صنعته
ليرفعوا عليه المحرقات * وينضحون الدم * وتعطي للكهنة اللاويين من ذرية صادوق
والقريبين الي * يقول الرب اله لاوي * عجلا من البقر من اجل الخطية ليخدموني
* وياخذون من دمه * ويضعون على اربعة قرون المذبح * وعلى اربعة زوايا المغفر وعلى القاعدة
داير * وينضحوه ويستغفرون به * وياخذون العجل الذي من اجل الخطية * ويحرق
جانب البيت من خارج الاقداس *

Jam verò amoveant fornicationem ſuam 9
& cædes præpoſitorum ſuorum à me, &
habitabo in medio eorum in æternum. Et 10
tu O fili hominis, oſtende domui Iſraelis
domum & figuram ejus, ordinémque ipſius,
ut ceſſent à peccatis ſuis: Et 11
quidem ipſi reportabunt pœnam ſuam pro
omnibus quæ fecerunt. Deſcribes inquam,
domum, diſponéſque diſpoſitionem ejus,
egreſſus, ingreſſus, & ſubſiſtentiam ipſius,
& omnia præcepta omnéſque leges
ejus ſignificabis illis, & deſcribes coram
eis: ut cuſtodiant omnia decreta mea, omniaque
præcepta mea & perficiant illa.
Deſcriptio autem domûs ſuper montis 12
verticem eſto, & omnes ejus termini circunquaque
ſunto, Sancta Sanctorum. Atque
hæc eſt lex domûs. Hæ verò ſunt 13
dimenſiones altaris per cubitum ex *cubito*
& ſpithamâ compoſitum: *Profunditas*
ſinûs ejus cubitus erat ſuper cubitum, &
amplitudo ejus cubitalis: & crepido palmaris
oras ejus undique cingebat. Hæc 14
eſt altitudo altaris: ab imo principii cavitatis
ejus uſque ad propitiatorium majus
quod erat infrà, cubiti duo; latitudo
verò ipſius, cubitus: à propitiatorio autem
minori ad propitiatorium majus, quatuor
cubiti; latitudo verò ipſius, cubitus.
Ariel quatuor cubitorum erat; & ab Ariete 15
& ſupra cornua, cubitus. Longitudo 16
Arielis, duodecim cubitorum, & duodecim
cubitorum latitudo ejus: quadratum
erat in quaternis lateribus ſuis. Propitiatorii 17
longitudo erat quatuordecim cubitorum,
& cubitorum quatuordecim latitudo
ipſius: quadratum erat per quaterna
latera: & crepido eorum undique cingebat
ea, ſemicubitalis: & ambitus ejus circunquaque,
cubitalis: & gradus ejus ſpectabant
Orientem verſús. Dixítque mihi, 18
O fili hominis, Ita dicit Dominus Deus
Iſraelis, Hæc ſunto præcepta altaris in die
quâ conficietur, ut offerant ſuper illud holocauſta,
& ſanguinem aſpergant. Et dabis 19
ſacerdotibus Levitis de ſtirpe Sadoc,
proximè ad me accedentibus (ait Dominus
Deus Levi) vitulum bovinum pro peccato,
ut mihi miniſtrent: Tolléntque de ſanguine 20
ejus, ponéntque ſuper quaterna altaris
cornua, ſuper quaternos propitiatorii
angulos, & ſuper baſim per circuitũ: eúmque
ſpargentes, veniam per eum poſtulabunt.
Deinde tollent vitulum qui eſt pro 21
peccato, & comburetur ad latus domûs,
extra Sancta.

:peccato pro perfectum caprarum hircum offeres ſecunda die *in* Et
22 וּבַיּוֹם הַשֵּׁנִי תַּקְרִיב שְׂעִיר־עִזִּים תָּמִים לְחַטָּאת
te complendo In .vitulo *in* expiaverunt ſicut altare expiabunt &
23 וְחִטְּאוּ אֶת־הַמִּזְבֵּחַ כַּאֲשֶׁר חִטְּאוּ בַּפָּר׃ בְּכַלּוֹתְךָ
de arietem & ,perfectum vaccæ filium vitulum offeres , *expiando ab*
מֵחַטֵּא תַּקְרִיב פַּר בֶּן־בָּקָר תָּמִים וְאַיִל מִן־
projicient & : *Domini facies ad* eos offeres Et .perfectum *pecore*
24 הַצֹּאן תָּמִים׃ וְהִקְרַבְתָּם לִפְנֵי יְהוָה וְהִשְׁלִיכוּ
.Domino *aſcenſionem eos facient aſcendere* & :ſal eos ſuper ſacerdotes
הַכֹּהֲנִים עֲלֵיהֶם מֶלַח וְהֶעֱלוּ אוֹתָם עֹלָה לַיהוָה׃
filium vitulum & : die pro *peccati* hircum facies diebus Septem
25 שִׁבְעַת יָמִים תַּעֲשֶׂה שְׂעִיר־חַטָּאת לַיּוֹם וּפַר בֶּן־
diebus Septem .facient perfectos *pecore* de arietem & ,bovis
26 בָּקָר וְאַיִל מִן־הַצֹּאן תְּמִימִים יַעֲשׂוּ׃ שִׁבְעַת יָמִים
.ſuas manus *implebunt* & : illud mundabunt & , altare expiabunt
יְכַפְּרוּ אֶת־הַמִּזְבֵּחַ וְטִהֲרוּ אֹתוֹ וּמִלְאוּ יָדוֹ׃
facient ultrà & , octava die in erit & : dies *conſummabunt* Et
27 וִיכַלּוּ אֶת־הַיָּמִים וְהָיָה בַיּוֹם הַשְּׁמִינִי וָהָלְאָה יַעֲשׂוּ
,veſtra pacifica & ,*veſtras aſcenſiones* altare ſuper ſacerdotes
הַכֹּהֲנִים עַל־הַמִּזְבֵּחַ אֶת־עוֹלוֹתֵיכֶם וְאֶת־שַׁלְמֵיכֶם
.*Dominus* Dominus ait , *vos* *volam* &
וְרָצָאתִי אֶתְכֶם נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה׃

CAP. XLIV. מד

reſpicientis exterioris ſanctuarii portæ viam me fecit redire Et
1 וַיָּשֶׁב אֹתִי דֶּרֶךְ שַׁעַר הַמִּקְדָּשׁ הַחִיצוֹן הַפֹּנֶה
hæc Porta : Dominus me ad dixit Et .clauſa *ipſa* & : orientem
2 קָדִים וְהוּא סָגוּר׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי יְהוָה הַשַּׁעַר הַזֶּה
quoniam : eam *in* ingredietur non vir & ,aperietur non : erit clauſa
סָגוּר יִהְיֶה לֹא יִפָּתֵחַ וְאִישׁ לֹא־יָבֹא בוֹ כִּי
.clauſa eritque : eam *in* eſt ingreſſus Iſrael Deus Dominus
3 יְהוָה אֱלֹהֵי־יִשְׂרָאֵל בָּא בוֹ וְהָיָה סָגוּר׃ אֶת־
facies ad panem *comedendum ad* ea in manebit ipſe princeps ,Principis
הַנָּשִׂיא נָשִׂיא הוּא יֵשֶׁב־בּוֹ לֶאֱכוֹל־לֶחֶם לִפְנֵי
.egredietur ejus *via à* & , ingredietur portæ veſtibuli *via à : Domini*
יְהוָה מִדֶּרֶךְ אוּלָם הַשַּׁעַר יָבוֹא וּמִדַּרְכּוֹ יֵצֵא׃
ecce & , vidi & *: domus facies ad Aquilonis* portæ *via* me adduxit Et
4 וַיְבִיאֵנִי דֶּרֶךְ־שַׁעַר הַצָּפוֹן אֶל־פְּנֵי הַבַּיִת וָאֵרֶא וְהִנֵּה
.*meæ facies ad* cecidi & : Domini domum Domini gloria implevit
מָלֵא כְבוֹד־יְהוָה אֶת־בֵּית יְהוָה וָאֶפֹּל אֶל־פָּנָי׃
vide & , tuum cor pone hominis fili , Dominus me ad dixit Et
5 וַיֹּאמֶר אֵלַי יְהוָה בֶּן־אָדָם שִׂים לִבְּךָ וּרְאֵה
loquens ego quæ omnia audi tuis auribus *in* &,tuis oculis *in*
בְעֵינֶיךָ וּבְאָזְנֶיךָ שְׁמָע אֵת כָּל־אֲשֶׁר אֲנִי מְדַבֵּר
: ejus legibus cunctis de & ,Domini domus ſtatutis omnibus de tecum
אֹתָךְ לְכָל־חֻקּוֹת בֵּית־יְהוָה וּלְכָל־תּוֹרֹתָו
.ſanctuarii exitus omnes *in* domus ingreſſu in tuum cor pones Et
וְשַׂמְתָּ לִבְּךָ לִמְבוֹא הַבַּיִת בְּכֹל מוֹצָאֵי הַמִּקְדָּשׁ׃
Dominus dixit Sic , Iſrael domum ad rebellem ad dices Et
6 וְאָמַרְתָּ אֶל־מֶרִי אֶל־בֵּית יִשְׂרָאֵל כֹּה אָמַר אֲדֹנָי
domus veſtris abominationibus omnibus de vobis *Multum : Dominus*
יְהוִה רַב־לָכֶם מִכָּל־תּוֹעֲבוֹתֵיכֶם בֵּית
præputiatos & ,corde *præputiatos alienigenæ* filios *vos inducendo In* .Iſrael
7 יִשְׂרָאֵל׃ בַּהֲבִיאֲכֶם בְּנֵי־נֵכָר עַרְלֵי־לֵב וְעַרְלֵי
, meam domum ipſam polluendũ ad meo ſanctuario in *exiſtendum ad* ,carne
בָשָׂר לִהְיוֹת בְּמִקְדָּשִׁי לְחַלְּלוֹ אֶת־בֵּיתִי
infregeritis &,ſanguinem & ,adipem ,meum panem *vos offerendo in*
בְּהַקְרִיבְכֶם אֶת־לַחְמִי חֵלֶב וָדָם וַיָּפֵרוּ אֶת־
.veſtris abominationibus omnibus in meum pactum
בְּרִיתִי אֶל כָּל־תּוֹעֲבוֹתֵיכֶם׃

Verſio VULG. LAT.

22 Et in die ſecunda offeres hircum
caprarũ immaculatum pro peccato
: & expiabunt altare, ſicut
23 expiaverunt in vitulo. Cúmque
compleveris expians illud, offeres
vitulum de armento immaculatum,
& arietem de grege immaculatum.
24 Et offeres eos in
conſpectu Domini : & mittent
ſacerdotes ſuper eos ſal, & offerent
eos holocauſtum Domino.
25 Septem diebus facies hircum
pro peccato quotidié : & vitulum
de armento, & arietem de
pecoribus,immaculatos offerent.
26 Septem diebus expiabunt altare,
& mundabunt illud : & implebunt
27 manum ejus. Expletis autem
diebus, in die octava & ultrà,
facient ſacerdotes ſuper altare
holocauſta veſtra, & quæ
pro pace offerunt:et placatus ero
vobis, ait Dominus Deus.

CAP. XLIV.

1 ET convertit me in viam portæ
Sanctuarii exterioris, quæ reſpiciebat
ad Orientem : & erat
2 clauſa. Et dixit Dominus ad me;
Porta hæc clauſa erit : non aperietur,
& vir non tranſibit per
eam : quoniam Dominus Deus
Iſrael ingreſſus eſt per eam, eritque
3 clauſa Principi. Princeps
ipſe ſedebit in ea, ut comedat
panem coram Domino: per viam
portæ veſtibuli ingredietur, &
4 per viam ejus egredietur. Et
adduxit me per viam portæ Aquilonis
in conſpectu domûs : &
vidi, & ecce implevit gloria Domini
domum Domini : & cecidi
5 in faciem meam. Et dixit ad me
Dominus ; Fili hominis,pone cor
tuum, & vide oculis tuis, & auribus
tuis audi omnia, quæ ego
loquor ad te de univerſis ceremoniis
domûs Domini, & de
cunctis legibus ejus : & pones
cor tuum in viis templi per omnes
6 exitus Sanctuarii. Et dices
ad exaſperantem me domum Iſrael
; Hæc dicit Dominus Deus ;
Sufficiant vobis omnia ſcelera
7 veſtra,domus Iſrael : Eò quòd
inducitis filios alienos incircumciſos
corde,& incircumciſos carne,
ut ſint in Sanctuario meo, &
polluant domum meam : & offertis
panes meos, adipem, &
ſanguinem : & diſſolvitis pactum
meum in omnibus ſceleribus
veſtris.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

22 Καὶ τῇ ἡμέρᾳ τῇ δευτέρᾳ λήψονται ἐρίφους
δύο (α) αἰγῶν ἀμώμους ὑπὲρ ἁμαρτίας,
ϗ ἐξιλάσονται τὸ θυσιαστήριον, (β)
23 καθότι ἐξιλάσαντο ἐν τῷ μόσχῳ. Καὶ μετὰ
τὸ συντελέσαι (γ) τὸν ἐξιλασμὸν, προσοίσουσι
μόσχον ἐκ βοῶν ἄμωμον, ϗ κριὸν ἐκ
24 (δ) προβάτων ἄμωμον, Καὶ προσοίσετε
ἐναντίον κυρίου· ϗ (¨) ἐπιῤῥίψουσιν οἱ ἱερεῖς
ἐπ᾽ αὐτὰ (ε) ἅλα, ϗ ἀνοίσουσιν αὐτὰ
25 ὁλοκαυτώματα τῷ κυρίῳ. Ἑπτὰ ἡμέρας
ποιήσεις ἔριφον ὑπὲρ ἁμαρτίας καθ᾽ ἡμέραν,
ϗ μόσχον ἐκ βοῶν, ϗ κριὸν ἐκ (ζ)
26 προβάτων, ἄμωμα ποιήσουσιν Ἑπτὰ ἡμέρας.
καὶ ἐξιλάσονται τὸ θυσιαστήριον,
ϗ (¨) καθαριοῦσιν αὐτό· ϗ πλήσουσι (η) χεῖρας
27 αὐτῶν. Καὶ ἔσται ἀπὸ τῆς ἡμέρας τῆς ὀγδόης
ϗ ἐπέκεινα, ποιήσουσιν οἱ ἱερεῖς ἐπὶ
τὸ θυσιαστήριον τὰ ὁλοκαυτώματα ὑμῶν,
ϗ τὰ τοῦ σωτηρίου ὑμῶν· ϗ προσδέξομαι
ὑμᾶς, λέγει κύριος.

MS.A. (α) ἀπὸ αἰγῶν (β) καθὼς (γ) σε τὸν (δ) τῶν προβάτων (¨) ἐπιρρίψουσιν (ε) ἅλας, (ζ) τῶν προβάτων, (¨) καθαρίσουσιν (η) τὰς χεῖρας αὐτῆς.

Et die ſecundâ tollent hædos 22
duos de capris immaculatos pro
peccato : & expiabunt altare,
ſicut expiârunt in vitulo. Et 23
cùm compleveris expiationem ;
offerent vitulum de bobus immaculatum,
& arietem de ovibus
immaculatum : Et offeretis 24
coram Domino. Et aſpergent
ſacerdotes ſuper ea ſal : et
offerent ea holocauſta Domino.
Septem diebus facies hædum 25
pro peccato quotidiè ; & vitulum
de bobus, & arietem de
ovibus immaculatos facient. Septem 26
diebus. Et expiabunt altare,
& mundabunt illud : &
implebunt (p) manus ſuas. Et 27
erit à die octavo, et ultrà, facient
ſacerdotes ſuper altare holocauſta
veſtra, & quæ pro ſalute
veſtra : & ſuſcipiam vos,
dicit Dominus.

ΚΕΦ. μδʹ.

1 ΚΑὶ ἐπέστρεψέ με κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης
τῶν ἁγίων τῆς ἐξωτέρας τῆς βλεπούσης κατὰ ἀνατολάς·
2 ϗ αὕτη ἦν κεκλεισμένη. Καὶ εἶπε
κύριος πρὸς μὲ, Ἡ πύλη αὕτη κεκλεισμένη
(α) ἔσται, οὐκ ἀνοιχθήσεται, ϗ οὐδεὶς μὴ διέλθῃ
δι᾽ αὐτῆς· ὅτι κύριος ὁ θεὸς (β) Ἰσραὴλ
εἰσελεύσεται δι᾽ αὐτῆς, ϗ ἔσται κεκλεισμένη.
3 Διότι ὁ ἡγούμενος (γ) οὗτος καθήσεται
ἐν αὐτῇ, τοῦ φαγεῖν ἄρτον ἐναντίον κυρίου·
κατὰ τὴν ὁδὸν αιλαμ τῆς πύλης εἰσελεύσεται,
ϗ κατὰ τὴν ὁδὸν αὐτοῦ ἐξελεύσεται.
4 Καὶ εἰσήγαγέ με κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης τῆς
πρὸς Βοῤῥᾶν, κατέναντι τοῦ οἴκου. ϗ ἴδον,
ϗ ἰδοὺ πλήρης δόξης ὁ οἶκος (δ) τοῦ κυρίου·
5 ϗ πίπτω ἐπὶ πρόσωπόν μου. Καὶ εἶπε
κύριος πρὸς μὲ, Υἱὲ ἀνθρώπου, τάξον εἰς
τὴν καρδίαν σου, ϗ ἴδε τοῖς ὀφθαλμοῖς (ε),
ϗ τοῖς ὠσί σου ἄκουε πάντα ὅσα ἐγὼ λαλῶ
μετὰ σοῦ, κατὰ πάντα τὰ προστάγματα
(ζ) τοῦ οἴκου κυρίου, ϗ (η) πάντα τὰ νόμιμα
αὐτοῦ. ϗ τάξεις τὴν καρδίαν σου εἰς
τὴν εἴσοδον τοῦ οἴκου, κατὰ πάσας τὰς ἐξόδους
6 αὐτοῦ, ἐν πᾶσι τοῖς ἁγίοις. Καὶ ἐρεῖς
πρὸς τὸν οἶκον τὸν παραπικραίνοντα,
πρὸς τὸν οἶκον τοῦ Ἰσραὴλ, Τάδε λέγει
κύριος ὁ θεὸς, Ἱκανούσθω ὑμῖν ἀπὸ πασῶν
τῶν ἀνομιῶν ὑμῶν, οἶκος (θ) Ἰσραὴλ,
7 Τοῦ εἰσαγαγεῖν ὑμᾶς υἱοὺς ἀλλογενεῖς, ἀπεριτμήτους
καρδίᾳ, ϗ ἀπεριτμήτους σαρκὶ, τοῦ
γίνεσθαι ἐν τοῖς ἁγίοις μου, ϗ βεβηλοῦν
αὐτὰ, ἐν τῷ προσφέρειν ὑμᾶς ἄρτους (ι),
σάρκας, ϗ αἷμα· ϗ παρεβαίνετε τὴν διαθήκην
μου ἐν πάσαις ταῖς ἀνομίαις ὑμῶν,

MS.A. (α) ἔσται, ϗ οὐδεὶς (β) τοῦ Ἰσραὴλ (γ) αὐτῆς καθήσεται (δ) κυρίου (ε) σου, ϗ (ζ) οἴκου (η) κατὰ πάντα (θ) τοῦ Ἰσραὴλ, (ι) μου, ϗ σάρκας

CAP. XLIV.

ET convertit me ad viam portæ 1
Sanctorum exterioris, reſpicientis
ad Orientem : & hæc erat
clauſa. Et dixit Dominus ad 2
me ; Porta hæc clauſa erit : non
aperietur, & nemo tranſibit per
eam : quoniam Dominus Deus
Iſrael ingredietur per eam : &
erit clauſa. Quia dux ipſe ſedebit 3
in ea, ut comedat panem
coram Domino. Per viam (a)
Ælam portæ ingredietur, & per
viam ejus egredietur. Et introduxit 4
me per viam portæ, quæ
ad Aquilonem è regione domûs.
Et vidi : & ecce plena gloriæ
domus Domini : & cado ſuper
faciem meam. Et dixit Dominus 5
ad me ; Fili hominis, pone
in corde tuo, & vide oculis, et
auribus tuis audi omnia, quæ ego
loquor tecum ſecundùm omnia
præcepta domûs Domini, et
omnia legitima ejus. Et pones
cor tuum ad introitum domûs
juxta omnes exitus ejus in omnibus
Sanctis. Et dices ad domum 6
(b) exaſperantem, ad domum
Iſrael ; Hæc dicit Dominus
Deus ; Sufficiat vobis de omnibus
iniquitatibus veſtris, domus
Iſrael, Eò quòd induxiſtis filios 7
alienigenas incircumciſos corde,
& incircumciſos carne, ut ſint in
Sanctis meis, & polluant ea : in
offerendo vos panes, (c) carnes,
& ſanguinem ; et præteribatis
teſtamentum meum in omnibus
iniquitatibus veſtris :

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

22 וביומא תנינא תקריב צפיר בר עזי שלים לחטתא ותדכי ית מדבחא כמא דדכיאו
23 בתורא : בשציותך מלדכאה תקריב תור בר תורי שלים ודכר מן ענא שלים :
24 ותקרבנון קדם יי ויתנון כהניא עליהון מלחא ויסקון יתהון עלתא קדם יי :
25 שבעא יומין תעביד צפירא דחטתא ליומא ותור בר תורי ודכר מן ענא שלימין
26 יעבדון : שבעא יומין יכפרון על מדבחא וידכון יתיה ויקריבון קורבנידיה : וישלמון
27 ית יומיא ויהי ביומא תמינאה ולהלא יעבדון כהניא על מדבחא ית עלותכון וית
נכסת קודשיכון ויתקבלון קורבניכון ברעוא אמר יי אלהים :

מד

1 ואתיב יתי אורח תרע מקדשא בראה דפתיח למדנחא והוא אחיד : ואמר יי לי
2 תרע הדין אחיד יהא ולא יתפתח ואנש לא יעול ביה ארי יי אלהא דישראל אתגלי
3 עלוהי ויהי אחיד : לרבא יהא רבא הוא יתיב ביה למיכל לחמא קדם יי מאורח
4 אולמא דתרעא יעול ומאורחיה יפוק : ואעלני אורח תרע צפונא דקדם ביתא
5 וחזית והא אתמלי יקרא דיי ית בית מקדשא דיי ואשתטחית על אפי : ואמר לי
יי בר אדם שוי לבך וחזי בעינך ובאודנך שמע ית כל דאנא ממלל עמך לכל גזירת
בית מקדשא דיי ולכל דחזי ליה ותשוי לבך למעלני ביתא בכל מפקני מקדשא :
6 ותימר לעמא סרבנא לדבית ישראל כדנן אמר יי אלהים סגי לכון מכל תועבתכון
7 בית ישראל : באיתיותכון בני עממיא רשיעי לבא וערלי בסרא למהוי במקדשי
לאפסא ית עזרתי בקרבכון ית קורבני תרב ודם נכסת קודשין ואשניאו קימי
על כל תועבתכון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et in die ſecunda offeres hircum filium caprarum integrum pro peccato : & 22
mundabis altare ſicut mundaverunt in vitulo. Cúmque compleveris emundationem, 23
offeres vitulum de bobus integrum, & arietem de ovibus integrum.
Et offeres eos coram Dño : & dabunt Sacerdotes ſuper eos ſalem, 24
& offerent eos holocauſtum coram Dño. Septem diebus offeres hircum pro 25
peccato quotidie, & vitulum de bobus, & arietem de ovibus integros facient.
Septem diebus expiabunt ſuper altare, & mundabunt illud, & offerent oblationem 26
ejus. Et complebuntur dies, & erit à die octavo & deinceps facient 27
Sacerdotes ſuper altare holocauſta veſtra & victimas ſanctificatas veſtras,
& ſuſcipientur oblationes veſtræ voluntariè, ait Dñs Deus.

CAP. XLIV.

ET convertit me per viam portæ ſanctuarii exterioris quæ aperiebatur ad 1
Orientem, & ipſa erat clauſa. Et dixit ad me Dñs : Porta hæc clauſa erit : 2
& non aperietur, & vir non intrabit per eam, quia *Dominus Deus Iſrael*
revelabitur ſuper eam, & erit clauſa. Principi erit, princeps ipſe ſedebit 3
in ea ut comedat panem coram Dño : à via veſtibuli portæ ingredietur &
per viam ejuſdem egredietur. Et introduxit me per viam Aquilonis quæ 4
erat ante domum ; & vidi & ecce implevit gloria Dñi domum ſanctuarii
Dñi : & cecidi pronus ſuper faciem meam. Et dixit ad me Dñs : Fili hominis 5
pone cor tuum, & vide oculis tuis, & auribus tuis audi omnia quæ
ego loquor tecum de univerſis cæremoniis domus ſanctuarii Dñi, & de
omnibus quæ ad eam pertinent, & pones cor tuum ad ingreſſus domus per
omnes exitus ſanctuarii. Et dices ad populum rebellem ad domum Iſrael : 6
Hæc dicit Dñs Deus : Sufficiant vobis omnes abominationes veſtræ domus
Iſrael. Cùm adduceretis filios populorum impios corde & incircumciſos 7
carne, ut eſſent in ſanctuario meo ad prophanandum atrium meum, cùm
offerretis oblationem meam adipem, & ſanguinem victimarum ſanctificatarum :
irritum fecerunt pactum meum omnibus abominationibus veſtris.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܒܝܘܡܐ ܕܬܪܝܢ ∴ ܩܪܒ ܠܚܛܗܬܐ ∴ ܨܦܝܪܐ ܕܥܙܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. ܘܢܕܟܘܢܗ 22
ܠܡܕܒܚܐ ܐܝܟ ܕܕܟܝܘܗܝ ܒܬܘܪܐ. * ܘܡܐ ܕܫܠܡܬ ܠܡܕܟܝܘ ∴ ܩܪܒ ܬܘܪܐ ܒܪ ܒܩܪܐ 23
ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. ܘܕܟܪܐ ܡܢ ܥܢܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. * ܘܩܪܒ ܐܢܘܢ ܥܠܘܬܐ ܫܡܠܝܬܐ 24
ܠܡܪܝܐ. * ܘܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ ܬܩܪܒܘܢ ܨܦܝܪܐ ܚܕ ܒܝܘܡ ܠܚܛܗܬܐ. ܘܬܘܪܐ ܚܕ ܒܪ ܒܩܪܐ. 25
ܘܕܟܪܐ ܡܢ ܥܢܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. * ܢܗܘܘܢ ܡܩܪܒܝܢ ܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ. ܘܢܚܣܘܢܗ 26
ܠܡܕܒܚܐ ܘܢܡܠܘܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. * ܘܡܐ ܕܫܠܡܘ ܝܘܡܬܐ ܗܠܝܢ ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܫܒܥܐ ܘܠܗܠ ∴ 27
ܢܥܒܕܘܢ ܟܗܢܐ ܥܠ ܡܕܒܚܐ. ܥܠܘܬܗܘܢ ܘܩܘܕܫܝܗܘܢ. ܘܐܬܪܥܐ ܒܗܘܢ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܕ *

* ܘܐܗܦܟܢܝ ܠܐܘܪܚܐ 1
ܕܬܪܥܐ ܕܡܩܕܫܐ ܒܪܝܐ ܕܚܐܪ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܚܙܝܬܗ ܐܚܝܕ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܬܪܥܐ ܗܢܐ ܢܗܘܐ 2
ܐܚܝܕ. ܘܠܐ ܢܬܦܬܚ. ܘܐܢܫ ܠܐ ܢܥܘܠ ܒܗ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܥܐܠ ܒܗ.
ܢܗܘܐ ܐܚܝܕ. * ܡܕܒܪܢܐ ܢܬܒ ܒܗ. ܘܢܐܟܘܠ ܠܚܡܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܡܢ ܐܘܪܚܐ ܕܐܣܟܦܬܐ 3
ܕܬܪܥܐ ܢܥܘܠ. ܘܒܗ ܢܦܘܩ. * ܘܐܥܠܢܝ ܠܐܘܪܚܐ ܕܬܪܥܐ ܓܪܒܝܝܐ ܕܩܕܡ ܒܝܬܐ. ܘܚܙܝܬ 4
ܕܐܬܡܠܝ ܒܝܬܐ ܫܘܒܚܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܒܪܢܫܐ. ܣܝܡ 5
ܒܠܒܟ. ܘܚܙܝ ܒܥܝܢܝܟ. ܘܫܡܥ ܒܐܕܢܝܟ ܟܠ ܡܕܡ ܕܡܡܠܠ ܐܢܐ ܥܡܟ. ܘܟܠܗܘܢ
ܢܡܘܣܘܗܝ ܕܒܝܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܨܘܪ̈ܬܗ. ܘܣܝܡ ܠܒܟ ܠܡܥܠܢܘܗܝ ܕܒܝܬܐ
ܘܠܡܦܩܢܘܗܝ ܕܡܩܕܫܐ. * ܘܐܡܪ ܠܒܝܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܡܪܡܪܢܐ ∴ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ 6
ܡܪܘܬܐ. ܠܐ ܣܦܩ ܠܟܘܢ ܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܟܘܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ ∴ * ܐܠܐ ܐܦ ܡܥܠܝܢ 7
ܐܢܬܘܢ ܡܢ ܒܢܝ ܢܘܟܪܝܐ ܕܥܘܪܠܝܢ ܒܠܒܗܘܢ ܘܒܒܣܪܗܘܢ ܒܡܩܕܫܝ : ܘܗܘܝܢ
ܡܛܢܦܝܢ ܘܡܬܢܓܕܝܢ ܒܝܬܝ ∴ ܘܡܩܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܠ ܠܚܡܝ ܬܪܒܐ ܘܕܡܐ.
ܘܡܥܒܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܩܝܡܝ ܒܟܠܗܝܢ ܛܢܦܘܬܟܘܢ.

* Die ſecundo offer pro expiatione hircum ca- 22
prinum in quo nullum ſit vitium, & mundent
altare quemadmodum mundaverant illud tau-
ro. Et cùm abſolveris mundare, offer taurum 23
bovinum in quo nullum ſit vitium, & arietem
ex ovibus in quo nullum ſit vitium: Offer in- 24
quam, illos in holocauſta perfecta Domino. Et 25
ſeptem diebus offeretis hircum unum quotidie
in expiationem, & taurum unum bovinum, &
arietem ex ovibus in quo nullum ſit vitium.
Sint offerentes *hæc* ſeptem diebus, & mun- 26
dent altare, conſecrentque manus ſuas. Et 27
cùm exacti fuerint illi dies, à die ſeptimo et
deinceps, tunc offerent ſacerdotes ſuper al-
tare holocauſta ſua et oblationes ſuas, quibus
oblectabor, ait Dominus dominorum.

CAP. XLIV.

DEinde reduxit me ad viam portæ exterio- 1
ris Sanctuarii, quæ reſpiciebat Orienté, vidiq;
eam clauſam: Et dixit mihi Dominus, porta 2
hæc erit clauſa et non aperietur, nec quiſquam
ingredietur per eam, quia Dominus Deus Iſ-
raelis ingreditur per eam: eſto clauſa. Rector 3
ſedebit in ea comedétque panem coram Do-
mino: viâ liminis *hujus* portæ ingredie-
tur, eâdemque egredietur. Et introduxit 4
me ad viam portæ Aquilonaris quæ erat
ante domum; vidíque repletam eſſe domum
gloriâ Domini: quapropter procidi in fa-
ciem meam. Tum dixit mihi Dñs; Fili ho- 5
minis, repone in corde tuo, perſpice oculis
tuis, & audi auribus tuis quicquid loquor te-
cum, omnéſque leges domûs, & omnes figu-
ras ejus; & adhibe animum tuum ad aditus
domûs, & exitus Sanctuarii. Et dic ad domum 6
Iſraelis rebellem; Sic ait Dominus domino-
rum, Annon ſufficiebant vobis tot impurita-
tes veſtræ O Iſraelitæ? Sed etiam adducitis 7
ex alienigenis qui ſunt incircuncisi corde
ſuo, & incircuncisi carne ſuâ, & verſan-
tur in Sanctuario meo, & polluunt domum
meam? offertis ſuper panem meum adipem
& ſanguinem, & violatis fœdus meum tot
impuritatibus veſtris?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وفي اليوم الثاني ياخذون جديين من المعز بغير عيب من اجل الخطية * ويستغفرون على 22
المذبح كما استغفروا بالعجل * وبعد ان تكمل الاستغفار يقدمون عجلاً من البقر لا عيب 23
فيه * وكبشاً من الغنم لا عيب فيه * ويقدموهما امام الرب * ويلقي الكهنة عليهما ملحاً * 24
ويرفعوهما محرقات للرب * سبعة ايام تصنع جدياً من اجل الخطية كل يوم * وعجلاً من البقر 25
وكبشاً من الغنم لا عيب فيهم * يصنعون ذلك سبعة ايام * ويستغفرون على المذبح ويطهروه 26
ويغسلون ايديهم * ويكون من اليوم الثامن وبعد * يصنعون الكهنة على المذبح محرقاتكم 27
وما هو لخلاصكم * واقبلكم يقول الرب الرب *

* الفصل الرابع والاربعون *

* وردني في طريق باب الاقداس الخارج الناظر نحو المشارق * وهذا كان مغلقاً * وقال لي الرب * 1 2
هذا الباب يكون مغلقاً * لا يفتح * ولا يعبر ولا واحد فيه * لان الرب اله اسرائيل يدخل فيه
ويخرج * ويكون مغلقاً * من اجل ان هذا المقدم يجلس عليه لياكل خبزاً امام الرب * في 3
طريق رواق الباب يدخل وفي طريقه يخرج * وادخلني في طريق باب الاقداس الذي نحو 4
الجربياء امام البيت * فنظرت واذا البيت مملو من مجد الرب * فسقطت على وجهي * وقال 5
لي الرب * يا ابن الانسان * رتب في قلبك * وانظر بعينيك * واسمع باذنيك بجميع ما انا
اتكلم به معك * بكل اوامر بيت الرب * وبكل نواميسه * ورتب قلبك في مدخل البيت *
بجميع مخارجه * في جميع الاقداس * وتقول للبيت الممرمر * لبيت اسرائيل * هكذا يقول الرب 6
الاله * اما تكتفون بكل اثامكم يا بيت اسرائيل * حتى تدخلوا الابناء الغرباء الجنس 7
الغير مختونين بالقلب والغير مختونين باللحم * ليكونوا في اقداسي ويدنسوها عندما
يقدمون خبزاً ولحماً ودماً * وتجاوزتم عهدي بجميع اثامكم *

* *Die ſecundo tollent duos hædos capri-* 22
nos immaculatos pro peccato, & veni-
am expoſcent ſuper altare, quemadmo-
dum veniam poposcerant per vitulum.
Poſtquam expleveris veniæ petitionem, 23
offerent vitulum bovinum immaculatum,
& arietem ovinum vitio carentem: Et 24
utrumq; offerent coram Domino: jacient
ſacerdotes ſalem ſuper utrumque: et attol-
lent utrumq; in holocauſta Domino Septem 25
diebus facies hœdum pro peccato ſingulis
diebus, et vitulum bovinum, & arietem
ovinum vitii expertes. Facient hoc ſe- 26
ptem diebus, & veniam poſcent ſuper
altare, & mundabunt illud; & lavabunt
manus ſuas. Et erit ab octavo die & 27
deinceps, ut faciant ſacerdotes ſuper
altare holocauſta veſtra & quæ pertinent
ad ſalutem veſtram: & ſuſcipiam vos,
dicit Dominus Dominus.

CAP. XLIV.

* *INde me reduxit per viam portæ San-* 1
ctorum exterioris reſpicientis Orientem
verſùs: & hæc erat clauſa. Dixitque 2
mihi Dominus; Hæc porta erit clauſa,
non aperietur, & nemo per eam tranſibit:
quia Dominus Deus Iſraelis per eam in-
gredietur & egredietur. Erit inquam,
clauſa; Quia dux iſte ſedebit in ea ad 3
panem edendum coram Domino: per viam
porticûs hujus portæ ingredietur, & per
viam ejuſdem egredietur. Deinde intro- 4
duxit me per viam portæ ſanctorum,
quæ reſpiciebat Aquilonem contra domum.
Cùmque reſpexiſſem, ecce domus plena
erat gloriâ Domini: quarè cecidi pronus.
Tum dixit mihi Dominus, Fili hominis, 5
diſpone in corde tuo, vide oculis tuis,
& auribus tuis audi quidquid loquor te-
cum de omnibus præceptis domûs Do-
mini, & de omnibus legibus ejus: &
cor tuum diſpones ad introitum domûs,
ad omnes exitus ejus, ad omnia Sancta.
Et dices domui huic exaſperanti, do- 6
mui Iſraelis; Sic ait Dominus Deus,
Annon contenti eſtis tot ſceleribus ve-
ſtris O domus Iſraelis, ut introducatis 7
filios alieni generis, incircuncisos corde,
& incircuncisos carne; ut ſint in San-
ctis meis, & prophanent ea offerendo
panem, carnem, & ſanguinem? Tranſ-
greſſi eſtis fœdus meum tot iniquitatibus
veſtris,

cuſtodes poſuiſtis &,mearum ſanctitatum cuſtodiam ſervâſtis non Et
8 ולא שמרתם משמרת קדשי ותשימון לשמרי
: *Dominus* Dominus dixit Sic .vobis meo ſanctuario in meæ cuſtodiæ
9 משמרתי במקדשי לכם: כה אמר אדני יהוה
ingredietur non,carne *præputiatus* &,corde *præputiatus* alienigenæ filius Omnis
כל־בן־נכר ערל לב וערל בשר לא יבוא
filiorum medio in qui ,alienigenæ filio omni ab : meum ſanctuarium *ad*
אל־מקדשי לכל־בן־נכר אשר בתוך בני
errando in ,me *deſuper* ſe elongaverunt qui Levitæ *Quinimo* .Iſrael
10 ישראל: כי אם־הלוים אשר רחקו מעלי בתעות
portabunt & : ſua idola poſt ,me *deſuper* erraverunt qui ,Iſrael
ישראל אשר תעו מעלי אחרי גלוליהם ונשאו
ad præfecturæ ,miniſtri meo ſanctuario in erunt Et.*ſuam iniquitatem*
11 עונם: והיו במקדשי משרתים פקדות אל־
mactabunt ipſi :domus miniſtri & ,domus *portas*
שערי הבית ומשרתים את־הבית המה ישחטו את־
,eorum *facies ad* ſtabunt ipſi & ,populo victimam & ,*aſcenſionem*
העלה ואת־הזבח לעם והמה יעמדו לפניהם
facies ad illis miniſtraverunt quòd eo Pro .eis *miniſtrandum ad*
12 לשרתם: יען אשר ישרתו אותם לפני
,iniquitatis offendiculũ in Iſrael domui fuerunt &,ſuorum idolorum
גלוליהם והיו לבית־ישראל למכשול עון
,*Dominus* Dominus dixit ,eos ſuper meam manum levavi idcircò
על־כן נשאתי ידי עליהם נאם אדני יהוה
me ad appropinquabunt non Et .*ſuam iniquitatem* portabunt &
13 ונשאו עונם: ולא־יגשו אלי
meas ſanctificationes omnes *ſuper accedendũ ad* &,mihi ſacerdotio *fungendũ ad*
לכהן לי ולגשת על־כל־קדשי
,ſuam ignominiam portabunt & : ſanctitatum *ſanctitates* ad
אל־קדשי הקדשים ונשאו כלמתם
cuſtodes eos dabo Et .fecerunt quas ,ſuas abominationes &
14 ותועבותם אשר עשו: ונתתי אותם שמרי
.eo in fiet quod omni in &,ejus *ſervitio* omni in : domus cuſtodiæ
משמרת הבית לכל עבדתו ולכל אשר יעשה בו:
cuſtodierunt qui ,Sadoc filii Levitæ Sacerdotes Et
15 והכהנים ° הלוים בני צדוק אשר שמרו את־
ipſi ,me *deſuper* Iſrael *filios errando in* ,mei ſanctuarii cuſtodiam
משמרת מקדשי בתעות בני־ישראל מעלי המה
offerendum ad meas facies ad ſtabunt& :mihi *miniſtrandum ad* ,me ad accedent
יקרבו אלי לשרתני ועמדו לפני להקריב
ingredientur Ipſi .*Dominus* Dominus ait ,ſanguinem & ,adipem mihi
16 לי חלב ודם נאם אדני יהוה: המה יבאו
meam menſam ad accedent ipſi & ,meum ſanctuarium *ad*
אל־מקדשי והמה יקרבו אל־שלחני
,erit Et .meam cuſtodiam cuſtodiant & : mihi *miniſtrandum ad*
17 לשרתני ושמרו את־משמרתי: והיה
linorum veſtibus interioris atrii portas ad *ipſos ingrediendo in*
בבואם אל־שערי החצר הפנימית בגדי פשתים
in eos *miniſtrando in* ,lana eos ſuper aſcendet non & : ſe induent
ילבשו ולא־יעלה עליהם צמר בשרתם בשערי
erunt *linorum* Cidares .intrinſecus & ,interioris atrii
18 החצר הפנימית וביתה: פארי פשתים יהיו על־
: eorum lumbis *ſuper* erunt *linorum* feminalia & ,eorum caput
ראשם ומכנסי פשתים יהיו על־מתניהם
ad ,exterius atrium ad *eos egrediendo in* Et.*ſudore in* ſe accingent non
19 לא יחגרו ביזע: ובצאתם אל־החצר החיצונה אל־
quibus ,ſuis veſtimentis ſe exuent ,populum ad exterius atrium
החצר החיצונה אל־העם יפשטו את־בגדיהם אשר־
ſe veſtiẽt & *ſanctitatis* cubiculis in ea reponent &,*eis in miniſtrantes* ipſi
המה משרתם בם והניחו אותם בלשכת הקדש ולבשו
.ſuis veſtibus in populum ſanctificabunt non & ,aliis veſtimentis
בגדים אחרים ולא־יקדשו את־העם בבגדיהם:

Verſio VULG. LAT.

8 Et non ſervâſtis præcepta San-
ctuarii mei: & poſuiſtis cuſtodes
obſervationum mearum in San-
9 ctuario meo vobiſmetipſis. Hæc
dicit Dominus Deus; Omnis ali-
enigena incircumciſus corde, &
incircumciſus carne, non ingre-
dietur Sanctuariũ meum, omnis
filius alienus qui eſt in medio fi-
10 liorum Iſrael. Sed & Levitæ,qui
longè receſſerunt à me in errore
filiorum Iſrael, & erraverunt à
me poſt idola ſua, & portave-
11 runt iniquitatem ſuam: Erunt
in Sanctuario meo æditui,& ja-
nitores portarum domûs, & mi-
niſtri domûs:ipſi mactabunt ho-
locauſta,& victimas populi : &
ipſi ſtabunt in conſpectu eorum,
12 ut miniſtrent eis. Pro eo quòd
miniſtraverunt illis in conſpectu
idolorum ſuorum, & facti ſunt
domui Iſrael in offendiculum
iniquitatis : idcircò levavi ma-
num meam ſuper eos, ait Domi-
nus Deus, & portabunt iniqui-
13 tatem ſuam : Et non appropin-
quabunt ad me ut ſacerdotio fun-
gantur mihi, neque accedent ad
omne Sanctuarium meum juxta
Sancta ſanctorum : ſed porta-
bunt confuſionem ſuam, & ſce-
14 lera ſua quæ fecerunt. Et dabo
eos janitores domûs in omni mi-
niſterio ejus, & in univerſis quæ
15 fient in ea. Sacerdotes autem &
Levitæ filii Sadoc, qui cuſtodie-
runt ceremonias Sanctuarii mei,
cùm errarent filii Iſrael à me,ipſi
accedent ad me ut miniſtrent
mihi : & ſtabunt in conſpectu
meo ut offerant mihi adipem, &
ſanguinem, ait Dominus Deus.
16 Ipſi ingredientur Sanctuarium
meum, & ipſi accedent ad men-
ſam meam ut miniſtrent mihi, &
cuſtodiant ceremonias meas.
17 Cúmque ingredientur portas a-
trii interioris, veſtibus lineis in-
duentur : nec aſcendet ſuper eos
quidquam laneum, quando mi-
niſtrant in portis atrii interioris
18 & intrinſecùs. Vittæ lineæ erunt
in capitibus eorum, & feminalia
linea erunt in lumbis eorum, &
19 non accingentur in ſudore.Cúm-
que egredientur atrium exterius
ad populum, exuent ſe veſtimen-
tis ſuis, in quibus miniſtraverant,
& reponent ea in gazophylacio
Sanctuarii, & veſtient ſe veſti-
mentis aliis : & non ſanctifica-
bunt populum in veſtibus ſuis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Καὶ (κ) διετάξατε τοῦ φυλάσσειν φυλακὰς ἐν
9 τοῖς ἁγίοις μου. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος
ὁ θεός, Πᾶς υἱὸς ἀλλογενὴς ἀπερίτμητος
καρδίᾳ καὶ ἀπερίτμητος σαρκί, οὐκ εἰσελεύσεται
εἰς τὰ ἅγιά μου ἐν πᾶσιν υἱοῖς ἀλλογενῶν, τῶν
10 ὄντων ἐν μέσῳ οἴκου Ἰσραήλ. Ἀλλ' ἢ οἱ
Λευῖται, οἵτινες (') ἀφήλαντο ἀπ' ἐμοῦ ἐν τῷ
πλανᾶσθαι τὸν Ἰσραὴλ (λ) ἀπ' ἐμοῦ κατόπι-
σθεν τῶν ἐνθυμημάτων αὐτῶν· καὶ λήψονται
11 (") ἀδικίαν αὐτῶν, Καὶ ἔσονται ἐν τοῖς ἁ-
γίοις μου λειτουργοῦντες, θυρωροὶ ἐπὶ τῶν
πυλῶν τοῦ οἴκου, καὶ λειτουργοῦντες τῷ οἴ-
κῳ (μ)· οὗτοι σφάξουσι (ν) τὰς θυσίας καὶ
τὰ ὁλοκαυτώματα τῷ λαῷ, καὶ οὗτοι στή-
σονται ἐναντίον τοῦ λαοῦ, (ξ) τοῦ λειτουρ-
12 γεῖν αὐτοῖς, Ἀνθ' ὧν ἐλειτούργουν αὐ-
τοῖς πρὸ προσώπου τῶν εἰδώλων αὐτῶν· καὶ
ἐγένετο (ο) τῷ οἴκῳ Ἰσραὴλ εἰς κόλασιν
ἀδικίας. (π) ἕνεκα τούτου ἦρα τὴν χεῖρά μου
13 ἐπ' αὐτούς, λέγει κύριος ὁ θεός, (ρ) Καὶ
οὐκ ἐγγιοῦσι πρὸς μὲ τοῦ ἱερατεύειν μοι,
οὐδὲ τοῦ (σ) προσάγειν πρὸς τὰ ἅγια υἱῶν
(τ) τοῦ Ἰσραήλ, οὐδὲ πρὸς τὰ ἅγια τῶν ἁ-
γίων μου· καὶ λήψονται (υ) ἀτιμίαν αὐτῶν
14 ἐν τῇ πλανήσει ᾗ ἐπλανήθησαν. (φ) Κατά-
ξουσιν αὐτοὺς φυλάσσειν φυλακὰς τοῦ οἴκου
εἰς πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ, καὶ εἰς πάντα
15 ὅσα ἂν ποιήσωσιν. Οἱ ἱερεῖς οἱ Λευῖται,
οἱ υἱοὶ τοῦ Σαδδούκ, οἵτινες ἐφυλάξαντο
τὰς φυλακὰς τῶν ἁγίων μου, ἐν τῷ πλανᾶ-
σθαι (·) οἶκον Ἰσραὴλ ἀπ' ἐμοῦ, οὗτοι προσά-
ξουσι πρὸς μέ, τοῦ λειτουργεῖν μοι, καὶ
στήσονται πρὸ προσώπου μου, τοῦ προσφέρειν
(χ) μοι θυσίαν, στέαρ καὶ αἷμα, λέγει κύ-
16 ριος ὁ θεός. Οὗτοι εἰσελεύσονται εἰς τὰ
ἅγιά μου, καὶ οὗτοι προσελεύσονται πρὸς
τὴν τράπεζάν μου, τοῦ λειτουργεῖν μοι, καὶ
17 φυλάξουσι τὰς φυλακάς μου. Καὶ ἔσται ἐν
τῷ εἰσπορεύεσθαι αὐτοὺς τὰς πύλας τῆς αὐ-
λῆς τῆς ἐσωτέρας, στολὰς λινᾶς ἐνδύσονται·
(ψ) καὶ οὐκ ἐνδύσονται ἔρια ἐν τῷ λειτουρ-
γεῖν αὐτοὺς ἀπὸ τῆς πύλης τῆς ἐσωτέρας
18 (ω) αὐλῆς. Καὶ κιδάρεις λινᾶς ἕξουσιν
ἐπὶ ταῖς κεφαλαῖς αὐτῶν, καὶ περισκελῆ λινᾶ
ἕξουσιν ἐπὶ (α) τὰς ὀσφύας αὐτῶν, καὶ οὐ
19 περιζώσονται βίᾳ. Καὶ ἐν τῷ ἐκπορεύεσθαι
αὐτοὺς εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐξωτέραν πρὸς
τὸν λαόν, ἐκδύσονται τὰς στολὰς αὐτῶν,
ἐν αἷς αὐτοὶ λειτουργοῦσιν ἐν αὐταῖς· καὶ
θήσουσιν αὐτὰς ἐν ταῖς ἐξέδραις τῶν ἁγίων, καὶ
ἐνδύσονται στολὰς ἑτέρας, καὶ οὐ μὴ ἁγιάσω-
σι τὸν λαὸν ἐν ταῖς στολαῖς αὐτῶν.

Et (d) diſpoſuiſtis cuſtodire cu- 8
ſtodias in Sanctis meis. Propterea 9
hæc dicit Dominus Deus; Omnis
filius alienigena incircumciſus
corde, & incircumciſus car-
ne non ingredietur in Sancta
mea in omnibus filiis alienigena-
rum, qui ſunt in medio domûs
Iſrael: Sed Levitæ, qui (e) reſili- 10
erunt à me, cum erraret Iſrael à
me poſt cogitationes ſuas; & ac-
cipient iniquitatem ſuam: Et e- 11
runt in Sanctis meis miniſtrantes,
oſtiarii in portis domûs, & mi-
niſtri domûs: iſti immolabunt ſa-
crificia, & holocauſta populo: et
iſti ſtabunt ante populum, ut
miniſtrent eis, Pro eo quòd mi- 12
niſtraverunt eis ante faciem I-
dolorum ſuorum: & factum eſt
domui Iſrael in tormentum
iniquitatis. Propterea levavi
manum meam ſuper eos,
dicit Dominus Deus; Et non 13
accedent ad me, ut ſacerdotio
fungantur mihi: neque ut offe-
rant ad Sancta filiorum Iſrael,
nec ad Sancta ſanctorum meo-
rum. Et ſuſcipient ignominiam
ſuam in errore, quo erraverunt.
Demittent eos, ut ſervent cuſto- 14
dias domûs in omnia opera ejus,
& in univerſa quæ (f) fece-
rint. Sacerdotes Levitæ filii 15
Sadduc, qui cuſtodierunt cu-
ſtodias Sanctorum meorum, cum
erraret domus Iſrael à me, iſti
accedent ad me, ut miniſtrent
mihi: & ſtabunt ante faciem
meam, ut offerant mihi hoſtiam,
adipem, & ſanguinem, dicit
Dominus Deus. Iſti ingredien- 16
tur in Sancta mea: & iſti ac-
cedent ad menſam meam, ut
miniſtrent mihi: & obſerva-
bunt cuſtodias meas. Et erit, 17
in ingrediendo eos portas atrii
interioris, ſtolis lineis induentur:
& non induentur lanificis,
quando miniſtrant, à porta in-
terioris atrii. Et Cidaras line- 18
as habebunt ſuper capita ſua:
& feminalia linea habebunt ſu-
per lumbos ſuos: & non accin-
gentur (g) violenter. Et in e- 19
grediendo ipſos in atrium exterius
ad populum, exuent ſe ſtolis ſuis,
in quibus miniſtrant in eis: &
ponent eas in exedris Sanctorum,
& veſtient ſe ſtolis aliis: &
non ſanctificabunt populum in
ſtolis ſuis:

MS.A. (κ) οὐκ ἐφυλάξατε τὴν φυλακὴν τῶν ἁγίων μου, καὶ διετάξατε
(') ἀφείλαντο (λ) οἱ ἐπλανήθησαν ἀπ' (") τὴν ἀδικίαν (μ) κυρίου (ν) τὰ ὁλο-
καυτώματα καὶ τὰς θυσίας τῷ (ξ) λειτουργεῖν (ο) τῷ Ἰσραὴλ (π) ἕνεκεν
(ρ) καὶ λήμψονται τὴν ἀτιμίαν αὐτῶν, Καὶ ἐκ (σ) προσαγαγεῖν (τ) Ἰσραήλ,
(υ) τὴν ἀτιμίαν (φ) Καὶ τάξουσιν (·) τὸν οἶκον (χ) θυσίαν, (ψ) οὐκ (ω) αὐλῆς
καὶ ἔσω. Καὶ (α) ταῖς ὀσφύσιν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ולא נטרתון מטרת קודשי ומניתון לנטרי מטרת מימרי במקדשי לכון : כדנן אמר יי 8
אלהים כל בר עממין רשיעי לבא ועורלי בסרא לא יעלון למקדשי לכל בני עממיא די 9
בגו בני ישראל : אלהן לואי דאתרחיקו מדחלתי במטעי ישראל דטעו מבתר פולחני 10
בתר טעותכון ויקבלון חוביהון : ויהון במקדשי משמשין ממנן על תרעי ביתא 11
ומשמשין ית ביתא אנון יכסון ית עלתא וית נכסת קודשיא די לעמא ואנון יקומון
קדמיהון לשמשותהון : חלף דהוו משמשין יתהון קדם טעותהון והוו לבית ישראל 12
לתקלת חובין על כן קימית במימרי עליהון אמר יי אלהים ויקבלון חוביהון : ולא 13
יתקרבון לפולחני לשמשא קדמי ולמקרב על כל קודשי לקודשי קודשיא ויתקבלון
אתכנעותהון ותועבתהון די עבדו : ומניתי יתהון נטרי מטרת ביתא לכל פולחניה 14
ולכל דיתעביד ביה : וכהניא לואי בני צדוק די נטרו ית מטרת מקדשי במטעי 15
בני ישראל מבתר פולחני אנון יתקרבון לפולחני לשמשא קדמי וישמשון על
מדבחי לקרבא קדמי תרב ודם נכסת קודשין אמר יי אלהים : אנון יעלון למקדשי 16
ואנון יתקרבון לפתורי לחם אפיא לשמשא קדמי ויטרון ית מטרת מימרי : ויהי 17
במעלהון לתרעי דרתא גויתא לבושי בוצא ילבשון ולא יהי עליהון כסות עמר
בשמשותהון בתרעי דרתא גויתא ולגיו : קובעין דבוץ יהון על רישיהון ומכנסין 18
דבוץ יהון על חרציהון ולא יזרזון על חרציהון אלהין על לבביהון יזרזון : ובמפקהון 19
מדרתא דקודשא לדרתא בריתא לאתערבא עם עמא ישלחון ית לבושיהון די אנון
משמשין בהון ויחתון יתהון בלשכת קודשא וילבשון לבושין אוחרנין ולא יתערבון
עם עמא בלבושיהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et non cuſtodiſtis cuſtodiam ſanctuarii mei : & conſtituiſtis cuſtodientes 8
obſervationem verbi mei in ſanctuario meo vobiſmetipſis. Hæc dicit Dñs 9
Deus : Omnes filii populorum impii corde & incircuncifi carne non in-
gredientur ſanctuarium meum, ex omnibus filiis populorum qui ſunt in
medio filiorum Iſrael : Sed Levitæ qui longè receſſerunt à timore mei cùm 10
aberrarent filii Iſrael qui erraverunt à cultu meo poſt idola *veſtra*, & ſuſci-
pient iniquitatem ſuam. Erúntq; in ſanctuario meo miniſtri conſtituti ſuper 11
portas domus, & miniſtrabunt in domo : ipſi mactabunt holocauſta & vi-
ctimas ſanctificatas populi, & ipſi ſtabunt coram eis ut miniſtrent eis : Pro 12
eo quòd miniſtrabant eis coram idolis ſuis, & erant domui Iſrael in offendi-
culum peccatorum. Ideò juravi verbo meo eis, ait Dñs Deus, & ſuſcipient
iniquitatem ſuam. Et non appropinquabunt ad cultum meum ut miniſtrent 13
coram me, & ut offerant omnia ſancta mea juxta ſancta ſanctorum; & ſuſci-
pient confuſionem ſuam & abominationes ſuas quas fecerunt. Et conſtituam 14
eos cuſtodientes cuſtodiam domus ad omne miniſterium ejus, & ad omnia
quæ fient in ea. Sacerdotes autem Levitæ filii Sadok qui cuſtodierunt cuſto- 15
diam ſanctuarii mei cùm errarent filii Iſrael à cultu meo; ipſi accedent ad
cultum meum ut miniſtrent coram me : & miniſtrabunt ſuper altare meum
ut offerant coram me adipem & ſanguinem victimarum ſanctificatarum, ait
Dñs Deus. Ipſi ingredientur in ſanctuarium meum, & ipſi admovebunt ad 16
menſam meam panem propoſitionis ut miniſtrent coram me, & ſervabunt
obſervationem verbi mei. Et erit cùm ingreſſi fuerint portas atrii interioris, 17
veſtibus lineis induentur, & non erit ſuper eos indumentum laneum cùm
miniſtrabunt in portis atrii interioris & intrinſecus. Tiaræ lineæ erunt ſuper 18
capita eorum, & femoralia linea ſuper lumbos eorum : & non accingen-
tur ſuper lumbos ſuos, ſed ad cor ſuum accingentur. Et cùm egredientur ab 19
atrio ſancto ad atrium exterius ut commiſceantur cum populo, exuent veſti-
menta ſua quibus miniſtrabant, & ponent ea in gazophylaciis ſanctis, & in-
duentur veſtibus aliis, & non commiſcebuntur cum populo in veſtibus ſuis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܐ ܢܛܪܬܘܢ ܡܛܪܬܐ ܕܡܩܕܫܝ. ܐܠܐ ܥܒܕܬܘܢ ܢܛܘܪ̈ܐ ܕܡܛܪܬܐ ܕܡܩܕܫܝ. ܢܛܘܪ̈ܝܟܘܢ
ܕܝܠܟܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܟܠ ܒܪ ܢܘܟܪܝܐ ܕܥܪܠ ܠܒܗ ܘܥܪܠ
ܒܒܣܪܗ. ܠܐ ܢܥܘܠ ܠܡܩܕܫܝ. ܟܠ ܒܪ ܢܘܟܪܝܐ ܕܐܝܬ ܒܝܢܝ ܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ. * ܐܦܠܐ
ܠܘܝ̈ܐ ܕܪܚܩܘ ܡܢܝ. ܟܕ ܛܥܘ ܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢܝ. ܒܬܪ ܦܬܟܪ̈ܝܗܘܢ. ܘܢܩܒܠܘܢ
ܚܛܗܝܗܘܢ. * ܘܗܘܘ ܒܡܩܕܫܝ. ܘܡܫܡܫܝܢ ܗܘܘ ܒܬܪܥܐ ܕܒܝܬܐ. ܗܢܘܢ ܢܟܣܘܢ
ܥܠܘܬܐ ܘܕܒܚ̈ܐ ܕܥܡܐ. ܘܗܢܘܢ ܢܩܘܡܘܢ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܘܢܫܡܫܘܢ ܐܢܘܢ. * ܡܛܠ
ܕܫܡܫܘ ܐܢܘܢ ܩܕܡ ܦܬܟܪ̈ܝܗܘܢ. ܘܗܘܘ ܠܬܘܩܠܬܐ ܕܥܘܠܐ ܠܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ. ܡܛܠ
ܗܢܐ ܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܥܠܝܗܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܘܢܩܒܠܘܢ ܚܛܗܝܗܘܢ. * ܘܠܐ ܢܬܩܪܒܘܢ
ܠܘܬܝ ܠܡܫܡܫܘܬܝ. ܘܠܐ ܢܬܩܪܒܘܢ ܠܟܠܗܘܢ ܩܘܕ̈ܫܝ ܩܘܕܫ ܩܘܕ̈ܫܐ. ܘܢܩܒܠܘܢ
ܟܠܗ ܒܗܬܬܗܘܢ ܘܟܠܗ ܛܢܦܘܬܗܘܢ ܕܥܒܕܘ. * ܘܐܥܒܕ ܐܢܘܢ ܢܛܘܪ̈ܝ ܡܛܪܬܐ ܕܒܝܬܐ.
ܘܥܒܕܝ ܥܒܕܐ ܕܟܠܡܕܡ ܕܗܘܐ ܒܗ. * ܘܟܗܢ̈ܐ ܠܘܝ̈ܐ ܒܢܝ̈ ܨܕܘܩ. ܕܢܛܪܘ ܡܛܪܬܐ
ܕܡܩܕܫܝ. ܟܕ ܛܥܘ ܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ ܡܢܝ. ܗܢܘܢ ܢܬܩܪܒܘܢ ܠܘܬܝ ܠܡܫܡܫܘܬܝ.
ܘܗܢܘܢ ܢܩܘܡܘܢ ܩܕܡܝ. ܘܢܩܪܒܘܢ ܠܝ ܬܪܒܐ ܘܕܡܐ ܐܡܪ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. * ܗܢܘܢ ܢܥܠܘܢ
ܠܡܩܕܫܝ. ܘܗܢܘܢ ܢܬܩܪܒܘܢ ܠܦܬܘܪܝ ܠܡܫܡܫܘܬܝ. ܘܢܛܪܘܢ ܡܛܪܬܝ. * ܘܡܐ
ܕܥܐܠܝܢ ܠܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ. ܡܐܢ̈ܐ ܕܟܬܢܐ ܢܠܒܫܘܢ. ܘܥܡܪܐ ܠܐ ܢܠܒܫܘܢ. * ܘܡܐ
ܕܡܫܡܫܝܢ ܒܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ. ܘܠܓܘ. ܟܘܒ̈ܥܐ ܕܟܬܢܐ ܢܣܝܡܘܢ
ܒܪܫܝܗܘܢ. ܘܦܪ̈ܙܘܡܐ ܕܟܬܢܐ ܢܐܣܘܢ ܒܚܨܝܗܘܢ. * ܘܡܐ ܕܢܦܩܝܢ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ
ܠܘܬ ܥܡܐ. ܢܫܠܚܘܢ ܡܐܢܝܗܘܢ ܕܡܫܡܫܝܢ ܒܗܘܢ. ܘܢܫܒܩܘܢ ܐܢܘܢ ܒܐܣܛܘ̈ܐ
ܕܩܘܕܫܐ. ܘܢܠܒܫܘܢ ܡܐܢ̈ܐ ܐܚܪ̈ܢܐ. ܘܠܐ ܢܩܕܫܘܢ ܠܥܡܐ ܒܡܐܢܝܗܘܢ.

Cuſtodias Sanctuarii mei minimè cuſtoditis, 8 ſed cuſtodientes cuſtodiam Sanctuarii mei feciſtis cuſtodes veſtros. Sic ait Dñs dominorũ; 9 Nullus alienigena incircuncīſus carne ſuâ, ingrediatur Sanctuarium meum, nullus *inquam* alienigenarum qui ſunt inter filios Iſraelis: Neq; Levitæ qui receſſerunt à me quando ab- 10 errârunt à me filii Iſraelis poſt idola ſua. Hi quidem reportabunt iniquitatem ſuam: Ma- 11 nebunt enim in Sanctuario meo, ſed erunt miniſtrantes in porta domûs. Ipſi jugulabunt holocauſta & ſacrificia populi, iidémque ſtabunt coram eis, & miniſtrabunt eis; Eò quòd 12 miniſtraverint eis coram idolis eorum, & fuerint offendiculo iniquitatis filiis Iſraelis. Iccirco levavi manum meam contra ipſos, ait Dominus dominorum, ut reportent iniquitatem ſuam. Non enim accedent in conſpectũ meum 13 ad miniſtrandum mihi, neque accedent ad ulla ſacra mea in Sancta ſanctorum; ſed reportabunt omnem ignominiam ſuam, & omnem abominationem ſuam quam fecerunt: Et red- 14 dam eos cuſtodes cuſtodiæ domûs & exercentes opus omnium rerum quæ fiunt in ea. Sa- 15 cerdotes verò atque Levitæ filii Sadoci, qui cuſtodierunt cuſtodiam Sanctuarii mei dum aberrarent à me Iſraelitæ, ipſi accedent ad me ut miniſtrent mihi, ipſíque ſtabunt coram me, & offerent mihi adipem & ſanguinem, ait Dominus dominorum: Ipſi ingredientur San- 16 ctuarium meum, ipſi accedent ad menſam meam, ut mihi miniſtrent, & cuſtodiant cuſtodias meas. Cùm autem ingredientur per por- 17 tam atrii interioris, veſtes lineas induant, laneas autem ne induant: Cúmque miniſtra- 18 verint in porta atrii intimi & interiùs, tiaras lineas imponant capitibus ſuis, & perizomatibus lineis præcingant lumbos ſuos. Verùm 19 cùm exierint in atrium exterius ad populum, deponant veſtes ſuas quibus miniſtrant, & relinquant eas in exedris ſancturarii, aliáſque veſtes induant, ne ſanctificent populum veſtibus ſuis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولم تحفظوا حرس أقداسي * وأمرتم أن يحرسوا حارس في أقداسي * لأجل هذا هكذا يقول
الرب الإله * كل ابن غريب الجنس غير مختون بالقلب وغير مختون باللحم * لا يدخل إلى
أقداسي في بني غرباء الجنس الكائنين في وسط بيت إسرائيل * ولا اللاويون الذين تباعدوا
مني عندما ضل إسرائيل * الذين ضلوا عني خلف فكراتهم * ويأخذون ظلمهم * فيصيرون
في أقداسي يخدمون بوابين على أبواب البيت * ويخدمون بيت الرب * هؤلاء يذبحون المحرقات
والذبائح للشعب * وهؤلاء يقفون أمام الشعب ليخدموه * من أجل أنهم خدموه أمام وجه
أصنامهم * وصار لإسرائيل عقاب ظلم * من أجل هذا رفعت يدي عليهم * يقول الرب الإله *
ويأخذون إهانتهم * ولا يقتربون إلي ليخدموني * ولا ليقربوا على أقداس إسرائيل ولا على أقداس
أقداسي * ويأخذون إهانتهم بالضلالة التي ضلوا بها * ويرتبونهم ليحرسوا حارس البيت
في كل أعماله *

Non cuſtodiſtis cuſtodiam Sanctorum meorum, imò cuſtodiri juſſiſtis cuſtodias alias in Sanctis meis. 8 *Proptereà ſic di-* 9 *cit Dominus Deus; Nemo filiorum alieni generis, incircunciſorum corde, & incircunciſorum carne; ingrediatur Sancta mea, & filiis alienigenis exiſtentibus in medio domûs Iſraelis:* *Neque Levitæ illi* 10 *qui à me receſſerunt, cùm aberravit Iſrael, qui aberrârunt à me poſt cogitationes ſuas: imò reportabant impietatem ſuam,* *Et erunt in Sanctis meis exercentes mini-* 11 *ſteriũ janitorũ ad januas domûs, inſervientéq; domui Domini. Hi mactabunt holocauſta et ſacrificia populo, atq; hi ſtabunt coram populo ut miniſtrent ei;* *Quòd ipſi* 12 *miniſtraverint ei ante faciem idolorum ſuorum, & ceſſerit Iſraeli in pœnam impietatis. Proptereà levavi manum meam contra iſtos, dicit Dominus Deus, & reportabunt infamiam ſuam:* *Et non ac-* 13 *cedent ad me ut miniſtrent mihi, nec ut offerant ad ſancta Iſraelis, neque ad Sancta Sanctorum meorum: ſic reportabunt infamiam ſuam ob errorem quo aberraverunt:* *Et deſtinabunt eos ad cuſto-* 14 *diendum cuſtodias domûs in cunctis negotiis ejus.*

* الإصحاح السادس والعشرون *

Textus vigeſimus ſextus.

* وفي كل ما تصنعه الكهنة * اللاويون بنو صادوق الذين حفظوا حارس أقداسي عندما
ضل بيت إسرائيل عني * هؤلاء يقدمون إلي ليخدموني * ويقفون أمام وجهي ليقربوا ذبيحة شحما
ودما * يقول الرب الإله * هؤلاء يدخلون إلى أقداسي * وهؤلاء يتقدمون إلى مائدتي ليخدموني
ويحفظون حارسي * ويصير عندما يدخلون أبواب الدار الداخلة يلبسون حلل كتان
ولا يلبسون صوفا عندما يخدمون من باب الدار الداخلة وداخل * ويكون لهم طيالس
كتان على رؤوسهم * ويكون لهم سراويلات كتان على حقاهم * ولا يمنطقون بعسف *
* وعندما يخرجون إلى الدار الخارجة إلى الشعب * يخلعون حللهم التي فيها هم يخدمون
ويضعوها في مقاصير الأقداس * ويلبسون حللا أخر * ولا يقدسون الشعب بحللهم *

In iis omnibus quæ præſtant ſacerdotes; 15 *Levitæ filii Sadoc, qui cuſtodierunt cuſtodias Sanctorum meorum quando aberravit à me domus Iſraelis; ipſi ad me accedent ut mihi miniſtrent, & ſtabunt coram facie mea ad offerendum victimam, adipem, & ſanguinem, dicit Dominus Deus.* *Ipſi ingredientur in Sancta mea,* 16 *& ipſi accedent ad menſam meam, ut mihi miniſtrent, & obſervent cuſtodias meas.* *Et erit cùm ingredientur oſtia* 17 *atrii interioris, ut induantur ſtolis lineis, & non induantur lanâ quando miniſtrabunt, à porta atrii interioris & ulteriùs.* *Habebunt cidaras lineas ſuper capita ſua,* 18 *& habebunt feminalia linea ſuper lumbos ſuos: & non accingent ſe cum violentiis.* *Cùm autem egredientur in atri-* 19 *um exterius ad populum, deponent ſtolas ſuas quibus ipſi miniſtrant, & reponent eas in exedris Sanctorum veſtiéntque ſe ſtolis aliis, ne ſanctificent populum ſtolis ſuis.*

יחזקאל : מד

æquè tondendo : demittent non cæſariem &, radent non ſuum caput Et
20 וְרֹאשָׁם לֹא יְגַלֵּחוּ וּפֶרַע לֹא יְשַׁלֵּחוּ כָּסוֹם
omnis bibent non vinum Et .ſua capita attondebunt *æquè*
21 יִכְסְמוּ אֶת־רָאשֵׁיהֶם׃ וְיַיִן לֹא־יִשְׁתּוּ כָּל־
, viduam Et .interius atrium *ad eos intrando in* : ſacerdos
22 כֹּהֵן בְּבוֹאָם אֶל־הֶחָצֵר הַפְּנִימִית׃ וְאַלְמָנָה
virgines *quinimo* , uxores in ſibi accipient non *expulſam* &
וּגְרוּשָׁה לֹא־יִקְחוּ לָהֶם לְנָשִׁים כִּי אִם־בְּתוּלֹת
, vidua fuerit quæ , viduam & , Iſrael domus ſemine de
מִזֶּרַע בֵּית יִשְׂרָאֵל וְהָאַלְמָנָה אֲשֶׁר־תִּהְיֶה אַלְמָנָה
ſanctum inter docebunt meum populum Et .accipient ſacerdote à
23 מִכֹּהֵן יִקָּחוּ׃ וְאֶת־עַמִּי יוֹרוּ בֵּין קֹדֶשׁ
ſuper Et *.eos facient ſcire* mundum *ad* immundum inter & :profanum *ad*
24 לְחֹל וּבֵין־טָמֵא לְטָהוֹר יוֹדִעֻם׃ וְעַל־
: eam judicabunt *meis judiciis in* : *judicium* ad ſtabunt ipſi controverſia
רִיב הֵמָּה יַעַמְדוּ לִשְׁפֹּט בְּמִשְׁפָּטַי וּשְׁפָטֻהוּ
meis *ſtatutis temporibus* omnibus in mea *ſtatuta* & , meas leges &
וְאֶת־תּוֹרֹתַי וְאֶת־חֻקֹּתַי בְּכָל־מוֹעֲדַי
hominem mortuum ad Et .ſanctificabunt mea ſabbatha & , cuſtodient
25 יִשְׁמֹרוּ וְאֶת־שַׁבְּתוֹתַי יְקַדֵּשׁוּ׃ וְאֶל־מֵת אָדָם
,filiū *ad* &,matrem *ad* &,patrem *ad quinimo*:ſe *polluendum ad*,ingredietur non
לֹא יָבוֹא לְטָמְאָה כִּי אִם־לְאָב וּלְאֵם וּלְבֵן
viro fuerit non quæ , ſororem *ad* & ,fratrem *ad* , filiam *ad* &
וּלְבַת לְאָח וּלְאָחוֹת אֲשֶׁר־לֹא־הָיְתָה לְאִישׁ
numerabunt dies ſeptem : *ipſum mundationem poſt* Et .ſe *contaminabunt*
26 יִטַּמָּאוּ׃ וְאַחֲרֵי טָהֳרָתוֹ שִׁבְעַת יָמִים יִסְפְּרוּ־
, interius atrium ad ſanctitatem *ad illum ingrediendi* die in Et .ſibi
27 לוֹ׃ וּבְיוֹם בֹּאוֹ אֶל־הַקֹּדֶשׁ אֶל־הֶחָצֵר הַפְּנִימִית
ait : ſuo peccato pro oblationem offeret ,ſanctitate in *miniſtrandum ad*
לְשָׁרֵת בַּקֹּדֶשׁ יַקְרִיב חַטָּאתוֹ נְאֻם
Ego .hæreditatem in eis erit Et .*Dominus* Dominus
28 אֲדֹנָי יֱהֹוִה׃ וְהָיְתָה לָהֶם לְנַחֲלָה אֲנִי
ego ; Iſrael in eis dabitis non poſſeſſionem & :eorum hæreditas
נַחֲלָתָם וַאֲחֻזָּה לֹא־תִתְּנוּ לָהֶם בְּיִשְׂרָאֵל אֲנִי
ipſi delicto pro & ,peccato pro ſacrificium & , *Munus* .eorum poſſeſſio
29 אֲחֻזָּתָם׃ הַמִּנְחָה וְהַחַטָּאת וְהָאָשָׁם הֵמָּה
.erit *eis* Iſrael in *anathema* omne & : *ea* comedent
יֹאכְלוּם וְכָל־חֵרֶם בְּיִשְׂרָאֵל לָהֶם יִהְיֶה׃
oblatio omnis & , omnium primitivorum omnium *principium* Et
30 וְרֵאשִׁית כָּל־בִּכּוּרֵי כֹל וְכָל־תְּרוּמַת
: erit ſacerdotum , veſtris oblationibus omnibus ex omnium
כֹּל מִכֹּל תְּרוּמוֹתֵיכֶם לַכֹּהֲנִים יִהְיֶה
reponendum ad , ſacerdoti dabitis veſtrarum paſtarum *principium* &
וְרֵאשִׁית עֲרִסוֹתֵיכֶם תִּתְּנוּ לַכֹּהֵן לְהָנִיחַ
, *ave* de , raptum &,morticinium Omne .*tuam domum ad* benedictionē
31 בְּרָכָה אֶל־בֵּיתֶךָ׃ כָּל־נְבֵלָה וּטְרֵפָה מִן־הָעוֹף
.ſacerdotes comedent non : *jumento* de &
וּמִן־הַבְּהֵמָה לֹא יֹאכְלוּ הַכֹּהֲנִים׃

CAP. XLV. מה

oblationem offeretis ,hæreditatem in terram *vos faciendo cadere in* Et
1 וּבְהַפִּילְכֶם אֶת־הָאָרֶץ בְּנַחֲלָה תָּרִימוּ תְרוּמָה
viginti & quinque longitudo ; terra de ſanctitatem Domino
לַיהוָה קֹדֶשׁ מִן־הָאָרֶץ אֹרֶךְ חֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים
omni in *ipſa* Sanctitas : millium decem latitudo &,*longitudine* millium
אֶלֶף אֹרֶךְ וְרֹחַב עֲשָׂרָה אָלֶף קֹדֶשׁ־הוּא בְכָל־
quingenti , *ſanctitatem in* hoc ex *Erit* .*circum* ejus termino
2 גְּבוּלָהּ סָבִיב׃ יִהְיֶה מִזֶּה אֶל־הַקֹּדֶשׁ חֲמֵשׁ מֵאוֹת
cubitorum quinquaginta & : *circum* quadratum quingentis *in*
בַּחֲמֵשׁ מֵאוֹת מְרֻבָּע סָבִיב וַחֲמִשִּׁים אַמָּה
.*circum* ei ſuburbanum
מִגְרָשׁ לוֹ סָבִיב׃

Verſio VULG. LAT.

20 Caput autem ſuum non radent,
neque comam nutrient : ſed tondentes
21 attondent capita ſua. Et
vinum non bibet omnis ſacerdos
quando ingreſſurus eſt atrium
22 interius. Et viduam & repudiatam
non accipient uxores, ſed
virgines de ſemine domûs Iſrael
: ſed & viduam, quæ fuerit
23 vidua à ſacerdote, accipient. Et
populum meum docebunt quid
ſit inter ſanctum & pollutum, &
inter mundum & immundum
24 oſtendent eis. Et cùm fuerit
controverſia, ſtabunt in judiciis
meis, & judicabunt : leges meas,
& præcepta mea in omnibus ſolennitatibus
meis cuſtodient, &
25 Sabbata mea ſanctificabunt. Et
ad mortuum hominem non ingredientur,
ne polluantur, niſi
ad patrem & matrem, & filium
& filiam, & fratrem & ſororem,
quæ alterum virum non habuerit
: in quibus contaminabuntur.
26 Et poſtquàm fuerit emundatus :
ſeptem dies numerabuntur ei.
27 Et in die introitûs ſui in Sanctuarium
ad atrium interius, ut miniſtret
mihi in Sanctuario, offeret
pro peccato ſuo, ait Dominus
28 Deus. Non erit autem eis hæreditas,
ego hæreditas eorum : &
poſſeſſionem non dabitis eis in
Iſrael ; ego enim poſſeſſio eorum.
29 Victimam & pro peccato
& pro delicto ipſi comedent :
& omne votum in Iſrael ipſorum
30 erit. Et primitiva omnium
primogenitorum, & omnia
libamenta ex omnibus quæ offeruntur,
ſacerdotum erunt : &
primitiva ciborum veſtrorum
dabitis ſacerdoti, ut reponat benedictionem
31 domui tuæ. Omne
morticinum, & captum à beſtia
de avibus & de pecoribus non
comedent Sacerdotes.

CAP. XLV.

1 Cúmque cœperitis terram dividere
ſortitò, ſeparate primitias
Domino, ſanctificatum de
terra, longitudine viginti quinque
millia, & latitudine decem
millia : ſanctificatum erit in omni
termino ejus per circuitum.
2 Et erit ex omni parte ſanctificatum
quingentos per quingentos,
quadrifariàm per circuitum : &
quinquaginta cubitis in ſuburbana
ejus per gyrum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

20 Καὶ τὰς κεφαλὰς αὐτῶν (β) οὐ ξυρήσονται, ϗ
τὰς κόμας αὐτῶν (γ) οὐ ψιλώσουσι, καλύπτοντες
(δ) καλύψουσι τὰς κεφαλὰς αὐτῶν.
21 Καὶ οἶνον οὐ μὴ πίωσι πᾶς ἱερεὺς, ἐν τῷ
εἰσπορεύεσθαι αὐτοὺς εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐσωτέραν.
22 Καὶ χήραν ϗ ἐκβεβλημένην (ε) οὐ λήψονται
ἑαυτοῖς εἰς γυναῖκα, ἀλλ' ἢ παρθένον
ἐκ τοῦ σπέρματος Ἰσραήλ· ϗ χήρα ἐὰν
23 γένηται ἐξ ἱερέως, λήψονται. Καὶ τὸν λαόν μου
διδάξουσιν ἀναμέσον ἁγίου ϗ βεβήλου, ϗ
ἀναμέσον (ζ) ἀκαθάρτου ϗ καθαροῦ γνωριοῦσιν
24 αὐτοῖς. Καὶ ἐπὶ κρίσιν αἵματος οὗτοι
ἐπιστήσονται τοῦ διακρίνειν· τὰ δικαιώματά
μου δικαιώσουσι, ϗ τὰ κρίματά μου κρινοῦσι,
ϗ τὰ νόμιμά μου ϗ τὰ προστάγματά
μου ἐν πάσαις ταῖς ἑορταῖς μου φυλάξονται,
25 ϗ τὰ σάββατά μου ἁγιάσουσι. Καὶ
ἐπὶ ψυχὴν ἀνθρώπου οὐκ εἰσελεύσονται τοῦ
μιανθῆναι, ἀλλ' ἢ ἐπὶ πατρὶ, ϗ ἐπὶ μητρὶ,
ϗ ἐπὶ υἱῷ, ϗ ἐπὶ θυγατρὶ, ϗ ἐπὶ ἀδελφῷ (η),
ϗ ἐπὶ ἀδελφῇ αὐτοῦ, ἣ οὐ γέγονεν ἀνδρὶ,
26 μιανθήσεται. Καὶ μετὰ τὸ καθαρισθῆναι
αὐτὸν, ἑπτὰ ἡμέρας (ʺ) ἐξαριθμήσῃ αὐτῷ.
27 Καὶ ᾗ ἂν ἡμέρᾳ εἰσπορεύωνται εἰς τὴν αὐλὴν
τὴν ἐσωτέραν τοῦ λειτουργεῖν ἐν τῷ ἁγίῳ,
προσοίσουσιν ἱλασμὸν, λέγει κύριος
28 ὁ θεὸς, Καὶ ἔσται αὐτοῖς εἰς κληρονομίαν.
ἐγὼ κληρονομία αὐτοῖς, ϗ
κατάσχεσις αὐτοῖς οὐ δοθήσεται ἐν τοῖς
υἱοῖς Ἰσραὴλ, ὅτι ἐγὼ κατάσχεσις (θ)
29 αὐτῶν. Καὶ τὰς θυσίας, ϗ τὰ ὑπὲρ ἁμαρτίας,
ϗ τὰ ὑπὲρ ἀγνοίας, οὗτοι φάγονται·
ϗ πᾶν ἀφόρισμα ἐν τῷ Ἰσραὴλ
30 αὐτοῖς ἔσται, (ι) Ἀπαρχαὶ πάντων, ϗ
τὰ πρωτότοκα πάντων, ϗ τὰ ἀφαιρέματα
πάντα (κ)· ἐκ πάντων τῶν ἀπαρχῶν ὑμῶν,
τοῖς ἱερεῦσιν ἔσται· ϗ τὰ (ʺ) πρωτογεννήματα
ὑμῶν δώσετε τῷ ἱερεῖ, τοῦ θεῖναι
31 εὐλογίας ὑμῶν ἐπὶ τοὺς οἴκους ὑμῶν. Καὶ
πᾶν θνησιμαῖον ϗ θηριάλωτον ἐκ τῶν
πετεινῶν, ϗ ἐκ τῶν κτηνῶν, οὐ φάγονται
οἱ ἱερεῖς.

MS.A. (β) οὐ μὴ (γ) οὐ μὴ (δ) καλύψωσιν (ε) οὐ μὴ (ζ) καθαροῦ ϗ ἀναμέσον ἀκαθάρτου γνωριοῦσιν (η) αὐτοῦ, (ʺ) ἐξαριθμήσει (θ) αὐτοῖς. (ι) Καὶ ἀπαρχαὶ (κ) ὑμῶν· (ʺ) πρωτογεννήματα

ΚΕΦ. με'.

1 ΚΑὶ ἐν τῷ καταμετρεῖσθαι ὑμᾶς τὴν
γῆν ἐν κληρονομίᾳ, ἀφοριεῖτε ἀπαρχὴν
τῷ κυρίῳ, ἅγιον ἀπὸ τῆς γῆς πέντε ϗ εἴκοσι
χιλιάδας μῆκος, καὶ εὖρος εἴκοσι
2 χιλιάδας, ἅγιον ἔσται ἐν πᾶσι τοῖς
ὁρίοις αὐτοῦ κυκλόθεν. Καὶ ἔσται ἐκ τούτου
(α) ἁγιάσματα, πεντακόσιοι ἐπὶ πεντακοσίους,
τετράγωνον κυκλόθεν, ϗ (β)
πεντήκοντα πήχεις διάστημα αὐτῶν κυκλόθεν.

MS.A. (α) εἰς ἁγίασμα, (β) πήχεις πεντήκοντα

Et capita ſua non radent, & comas ſuas non ad (h) tondebunt : operientes operient capita ſua. Et vinum non bibent omnis ſacerdos, in ingrediendo ipſos in atrium interius. Et viduam, & ejectam non accipient ſibi in uxorem, ſed virginem de ſemine Iſrael : & viduam, ſi fuerit de ſacerdote, accipient. Et populum meum docebunt inter ſanctum & pollutum, & inter immundum & mundum oſtendent eis. Et in judicio ſanguinis ipſi ſtabunt ad dijudicandum : juſtificationes meas juſtificabunt, & judicia mea judicabunt, & legitima mea, & præcepta mea in omnibus ſolennitatibus meis cuſtodient ; & ſabbata mea ſanctificabunt. Et (i) ſuper animam hominis non ingredientur ad polluendum ſe : ſed ſuper patre, & ſuper matre, & ſuper filio, & ſuper filia, & ſuper fratre, & ſuper ſorore ſua, quæ non fuit viro, contaminabitur. Et poſtquàm fuerit ipſe mundatus, ſeptem dies enumerabit ſibi : Et quâ die ingrediantur in atrium interius ad miniſtrandum in Sancto, offerent placationem, dicit Dominꝰ Deꝰ. Et (k) erit eis in hæreditatem. Ego hæreditas eis. Et poſſeſſio eis non dabitur in filiis Iſrael : quia ego poſſeſſio eorū. Et (l) ſacrificia, & quæ pro peccato, et quæ pro ignorantia ipſi comedent : omnis ſeparatio in Iſrael ipſis erit, Primitiæ omnium, & primitiva omnium, & ſeparationes omnes : de omnibus primitiis veſtris, ſacerdotibus erit : & primitiva veſtra dabitis ſacerdoti ; ut ponat benedictiones (m) veſtras ſuper domos veſtras. Et omne morticinum, & captum à beſtiis de avibus, & pecoribus, non comedant ſacerdotes.

CAP. XLV.

Et in metiendo vos terram in hereditatem, ſeparate primitias Domino, ſanctum de terra quinque & viginti millia longitudinis, & (a) viginti millia latitudinis : ſanctum erit in omnibus terminis ejus per circuitum. Et (b) erunt ex hoc ſanctificationes, quingenti per quingentos, quadratum per circuitum : & quinquaginta cubiti (c) ſpatium eorum per gyrum.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 וְרֵישֵׁיהוֹן לָא יְגַלְּחוּן וּפֵרוּעַ לָא יְרַבּוּן סַפָּרָא יְסַפְּרוּן יַת שְׂעַר רֵישֵׁיהוֹן׃ וַחֲמַר לָא
21 22 יִשְׁתּוּן כָּל כָּהֵן בְּמֵעַלְהוֹן לְדַרְתָּא גַוָּיְתָא׃ וְאַרְמְלָא וּמְתָרְכָא לָא יִסְּבוּן לְהוֹן לִנְשִׁין
אֱלָהֵן בְּתוּלָתָא מִזַּרְעָא דְבֵית יִשְׂרָאֵל וְאַרְמַלְתָּא דִי תְהֵי אַרְמַלְתָּא שְׁאָר כָּהֲנַיָּא יִסְּבוּן׃
23 24 וְיַת עַמִּי יַלְּפוּן בֵּין קוּדְשָׁא לְחוּלָא וּבֵין מְסָאֲבָא לְדַכְיָא יְהוֹדְעוּנוּן׃ וְעַל פְּלֻגּוּת דִּינָא
אִנּוּן יְקוּמוּן לְמֵדַן בְּדִינֵי רְעוּתִי יְדוּנוּן וְיַת אוֹרָיְתִי וְיַת קְיָמַי בְּכָל מוֹעֲדַי יִטְּרוּן וְיַת יוֹמֵי
25 שַׁבַּיָּא דִילִי יְקַדְּשׁוּן׃ וְעַל מִיתָא דֶאֱנָשָׁא לָא יֵעוּל לְאִסְתָּאָבָא אֱלָהֵן לְאַב וּלְאֵם וּלְבַר
26 וּלְבְרַת לְאַח וּלְאַחְתָּא דְלָא הֲוָת לִגְבַר יִסְתַּאֲבוּן׃ וּבָתַר דְּכוּתֵיהּ שַׁבְעָא יוֹמִין יִמְנוּן
27 לֵיהּ׃ וּבְיוֹם מֵעַלֵיהּ לְקוּדְשָׁא לְדַרְתָּא גַוָּיְתָא לְשַׁמָּשָׁא בְקוּדְשָׁא יְקָרֵיב חַטָּאתֵיהּ אֲמַר
28 יְיָ אֱלֹהִים׃ וּתְהֵי לְהוֹן לְאַחְסָנָא חוּלָק מוֹתַר קוּרְבָּנַי חוּלַקְהוֹן וְאַחְסָנָא לָא תִתְּנוּן לְהוֹן
29 בְּיִשְׂרָאֵל מַתְּנָן דִּיהֲבֵית לְהוֹן אִנּוּן אַחְסַנְתְּהוֹן׃ מִנְחָתָא חַטָּאתָא וַאֲשָׁמָא אִנּוּן יֵיכְלוּנֵיהּ
30 וְכָל חֶרְמָא בְּיִשְׂרָאֵל לְהוֹן יְהֵי׃ וְרֵישׁ כָּל בִּכּוּרֵי כוּלָּא וְכָל אַפְרָשׁוּת כּוּלָּא מִכָּל
אַפְרָשׁוּתֵיכוֹן לְכָהֲנַיָּא יְהֵי וְרֵישׁ אַצְוָתְכוֹן תִּתְּנוּן לְכָהֲנָא לְאַשְׁרָאָה בִּרְכְתָא בְּבֵיתָךְ׃
31 כָּל נְבֵלָא וּתְבִירָא מִן עוֹפָא וּמִן בְּעִירָא לָא יֵיכְלוּן כָּהֲנַיָּא׃

מה

1 וּבְפַלָּגוּתְכוֹן יַת אַרְעָא בְּאַחְסָנָא תַּפְרְשׁוּן אַפְרָשׁוּתָא קֳדָם יְיָ קוּדְשָׁא מִן אַרְעָא אֻרְכָּא
עֶשְׂרִין וְחַמְשָׁא אַלְפִין אֻרְכָּא וּפוּתְיָא עַסְרָא אַלְפִין קוּדְשָׁא הוּא בְּכָל תְּחוּמַהּ סְחוֹר
2 סְחוֹר׃ יְהֵי מִדֵּין לְקוּדְשָׁא חֲמֵשׁ מְאָה בַּחֲמֵשׁ מְאָה מְרַבַּע סְחוֹר סְחוֹר וְחַמְשִׁין אַמִּין
רָוְחָא לֵיהּ סְחוֹר סְחוֹר׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et caput ſuum non radent, nec comam nutrient, ſed tondendo attondebunt 20
capillos capitis ſui. Et vinum non bibent ulli Sacerdotes ingreſſuri in atrium 21
interius. Et viduam & repudiatam non accipient ſibi in uxores; ſed 22
virgines quæ fuerint de genere Iſraelitico; & viduam quæ fuerit vidua ab
aliis Sacerdotibus accipient. Et populum meum docebunt quid ſit inter 23
ſanctum & prophanum, & quid ſit inter mundum & immundum oſtendent
eis. Et in controverſia judicii ſtabunt ipſi ut judicent : in judiciis voluntatis 24
meæ judicabunt, & legem meam & pacta mea in omnibꝰ ſolennitatibꝰ meis
cuſtodient, & dies Sabbathorum meorum ſanctificabunt. Et ad mortuū hominem 25
non ingredientur ne polluantur, niſi ad patrem & ad matrem, & ad filiū
& ad filiam, & fratrem, & ſororem quæ non fuit nupta viro; in quibus ſeſe
contaminabunt. Et poſtquàm emundatꝰ fuerit, ſeptem ei dies enumerabũtur. 26
Et in die quo introibit ſanctuarium in atrium interius ut miniſtret in ſanctuario, 27
offeret pro peccato ſuo, ait Dñs Deus. Et erit eis in *hæreditatis* portionem, 28
& reſiduum oblationum mearum erit pars eorum : & hæreditatem non
dabitis eis in Iſrael : dona quæ dedi eis, ipſa ſunt hæreditas eorum. Munus 29
& ſacrificium pro peccato & pro delicto ipſi comedent : & omne anathema
in Iſrael ipſorum erit. Et primitiæ omnium primitivorum cujuſvis 30
[*fructus*] & omnes exemptiones omnium rerum quas ſeparâſtis [*Domino*]
Sacerdotibus erunt : & primitias maſſarum veſtrarum dabitis Sacerdoti, ut
reponatur benedictio in domo tua. Omne morticinium & dilaceratum de 31
avibus & pecoribus non comedent Sacerdotes.

CAP XLV.

Et cùm diviſeritis terram in poſſeſſionem, ſeparabitis primitias coram 1
Dño ſanctitatem de terra, longitudine viginti quinque millium, & latitudine
decem millium : ſanctitas erit in omni termino ejus per circuitum. Et ex 2
hoc erunt pro ſanctitate quingenti per quingentos, quadratum in circuitu;
& quinquaginta cubitorum ſpatium ei erit per circuitum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܣܥܪܗܘܢ ܠܐ ܢܓܠܚܘܢ. ܘܓܕܘܠܝܗܘܢ ܠܐ ܢܪܒܘܢ. ܐܠܐ ܡܩܦܣܘ ܢܩܦܣܘܢ
* ܘܚܡܪܐ ܠܐ ܢܫܬܘܢ ܟܗܢܐ ܟܕ ܥܐܠܝܢ ܠܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ. * ܐܪܡܠܬܐ ܘܫܒܝܩܬܐ
ܠܐ ܢܣܒܘܢ ܠܗܘܢ ܢܫܐ. ܐܠܐ ܐܢ ܒܬܘܠܬܐ ܡܢ ܙܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܘ ܐܪܡܠܬܐ ܕܡܬܐܪܡܠܐ
ܡܢ ܟܗܢܐ ܢܣܒܘܢ. * ܘܢܠܦܘܢ ܠܥܡܝ ܒܝܬ ܩܘܕܫܐ ܠܚܘܠܐ. ܘܢܘܕܥܘܢܘܢ ܒܝܬ ܛܡܐ
ܠܕܟܝܐ. * ܘܥܠ ܕܝܢܐ ܗܢܘܢ ܢܩܘܡܘܢ ܠܡܕܢ. ܒܕܝܢܝ ܢܕܘܢܘܢ. ܘܢܡܘܣܝ ܘܦܘܩܕܢܝ
ܢܛܪܘܢ. ܒܟܠܗܘܢ ܥܐܕܝ ܕܙܒܢܐ. ܘܫܒܬܝ ܢܩܕܫܘܢ. * ܘܥܠ ܡܝܬܐ ܕܒܪܢܫܐ
ܠܐ ܢܥܠܘܢ. ܕܠܐ ܢܣܬܝܒܘܢ. ܐܠܐ ܒܐܒܘܗܝ. ܐܘ ܒܐܡܗ. ܐܘ ܒܒܪܗ. ܐܘ ܒܒܪܬܗ. ܐܘ ܒܐܚܘܗܝ
ܐܘ ܒܚܬܗ ܒܬܘܠܬܐ ܕܠܐ ܗܘܬ ܠܓܒܪܐ ܢܣܬܝܒܘܢ. * ܘܒܬܪ ܕܢܣܬܝܒ
ܢܡܢܐ ܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ. ܘܗܝܕܝܢ ܢܬܕܟܐ. * ܘܒܝܘܡܐ ܕܥܐܠ ܠܡܩܕܫܐ
ܓܘܝܬܐ ܠܡܫܡܫܘ ܒܩܘܕܫܐ. ܢܩܪܒ ܚܛܗܝܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܘܬܗܘܐ ܠܗܘܢ
ܠܝܪܬܘܬܐ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܝܪܬܘܬܗܘܢ. ܘܡܢܬܐ ܠܐ ܬܬܠܘܢ ܠܗܘܢ ܒܐܝܣܪܝܠ. ܐܢܐ
ܡܢܬܗܘܢ. * ܣܡܝܕܐ ܘܚܛܗܝܐ ܕܐܣܟܠܘܬܐ ܗܢܘܢ ܢܐܟܠܘܢ. ܘܟܠ ܚܪܡܐ ܕܒܐܝܣܪܝܠ
ܕܝܠܗܘܢ ܢܗܘܐ. * ܘܪܫ ܟܠ ܒܘܟܪܐ ܘܟܠܗ ܩܘܪܒܢܐ ܕܢܕܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܕܟܗܢܐ
ܘܪܫ ܠܫܝܫܟܘܢ ܬܬܠܘܢ ܠܟܗܢܐ. ܕܬܗܘܐ ܒܘܪܟܬܐ ܒܒܬܝܟܘܢ. * ܘܟܠ ܕܬܒܝܪ
ܡܢ ܦܪܚܬܐ ܘܡܢ ܚܝܘܬܐ. ܠܐ ܢܐܟܠܘܢ ܟܗܢܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܗ *

* ܘܡܐ ܕܡܦܠܓܝܢ ܐܢܬܘܢ ܐܪܥܐ. ܦܪܘܫܘ ܦܘܪܫܢܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܩܕܫܘ ܡܢ
ܘܢܗܘܐ ܐܘܪܟܗ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܢܗ
ܬܚܘܡܘܗܝ ܩܕܝܫܐ ܢܗܘܐ ܚܕܪ ܚܕܪ. * ܘܢܗܘܐ ܠܡܩܕܫܐ ܚܡܫܡܐܐ
ܒܚܡܫܡܐܐ. ܘܢܗܘܐ ܡܪܒܥ ܚܕܪ ܚܕܪ. ܘܚܡܫܝܢ ܐܡܝܢ ܦܬܝܘܬܗ.

20 Capita ſua ne tondeant, & cincinnos ſuos ne nutriant, ſed omnino radant capita ſua. 21 Vinum ne bibant ſacerdotes, cùm erunt ingreſſuri in atrium intimum. 22 Viduam aut repudiatam ne ducant ſibi uxores; ſed tantùm virginem è ſemine Iſraelitico, aut viduam quæ vidua *relicta* fuerit à ſacerdote, ducent. 23 Doceant populum meum *diſcrimen* inter ſacrum & prophanum, & notam faciant illi *differentiam* inter immundum & mundum. 24 Quod autem ad judicia, ipſi præſideant ad judicandum: ſecundùm judicia mea judicent: leges meas & decreta mea ſervent ſingulis temporibus ſolennitatum mearum, et ſabbatha mea ſanctificent. 25 Ad cadaver humanum ne ingrediantur, ut non contaminentur: ſed in patre aut matre ſuâ, filio aut filiâ ſuâ, fratre ſuo aut ſorore ſuâ virgine, quæ non fuerit viro *nupta*, contaminabunt ſeſe. 26 Verùm poſtquam contaminaverit ſe, numeret ſibi ſeptem dies ac tunc mundet ſeſe: 27 Eóque die quo ingredietur Sanctuarium in atrium intimum ad miniſtrandum in Sanctuario, offerat expiationem ſuam, ait Dominus dominorum; 28 Et ſit *hæc* illis in hæreditatem, Ego ſum hæreditas eorum: portionem ne detis eis in Iſraele, ego ſum portio eorum. 29 Similam & expiationem peccatorum ipſi comedent; & omne anathema quod fuerit in Iſraele, ipſorum eſto. 30 Primitiæ omnium primogenitorum cujuſcunque voti quod dicaveritis, ſacerdotum eſto: primitias quoque maſſarum veſtrarum date ſacerdotibus, ut ſit benedictio in domibus veſtris. 31 Cruciatum & laniatum à volucribus aut feris, ne comedant ſacerdotes.

A C P. XLV.

1 Cumque terram dividetis, ſeparate ſeparationem Domino, & conſecrate partem terræ cujus longitudo ſit vigintiquinque millium *cubitorum*, latitudo verò decem millium: & omnes hujus termini ſint ſancti circunquaque: 2 Sítque in Sanctuarium, quingentorũ in quingentos; & ſit quadrata quoquoverſúm: & quinquaginta cubitorum area ipſius.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولا يحلقون روسهم * ولا يرفعون جممهم * ويغطون روسهم تغطية * ولا يشربون خمرا كل
عند ما يدخل الي الدار الداخلة * وارملة ومطلقة لا ياخذوها لهم امراة * لكن
من ذرية اسرايل * وان تكن ارملة من كاهن ياخذوها * ويعلمون شعبي الفرق بين
الطاهر والنجس * وبين النقي وبين الغير نقي يعرفوهم * وعلي حكم الدم هم
ليميزوا * ويبررن حقوقي * ويحكمون احكامي * ويحفظون نواميسي واوامري في كل اعيادي
ويقدسون سبوتي * ولا يدخلون علي نفس انسان ليتنجسوا * لكن علي الاب وعلي الام *
الابن وعلي الابنة * وعلي اخيه وعلي اخته التي لم تصر لرجل ليتنجس * وبعد ان
سبعة ايام يعد له ستة * وفي اليوم الذي يدخلون فيه الي الدار الداخلة ليخدموا
القدس * يقدموا استغفارا * يقول الرب الاله * ويكون لهم ميراثا * انا ميراث لهم *
لهم لا يعطي في بني اسرايل * لاني انا ضبط لهم * والذبايح * وما هو عن الخطية *
هو عن الجهل هم ياكلوه * وكل مفرز في اسرايل يكون لهم * واوايل كل شي *
كل شي * وكل خصوصياتكم من جميع اوايلكم * يكون للكهنة * وابكار غلاتكم
للكاهن * لتضعوا بركتكم علي بيوتكم * وكل ميتة * وما افترسه الوحش من
ومن البهايم * لا تاكله الكهنة *

* الفصل الخامس والاربعون *

* وعند ما تقسمون الارض بالميراث * افرزوا اولا للرب قدسا من الارض خمسة وعشرين
طولا * وعرضا عشرين الفا * يكون قدسا في جميع حدوده من حوله * ويكون من هذا
القدس خمسماية في خمسماية * مربعا ما دار * وخمسين ذراعا رحبهم ما دار *

20 *Non radent capita ſua, neque ſuccingent cincinnos ſuos, & operiendo operient capita ſua.* 21 *Nullus ſacerdos vinum bibet cùm ingredietur in atrium interius.* 22 *Viduam & repudiatam non ſument ſibi uxorem, ſed virginem de ſtirpe Iſraelis: at ſi fuerit vidua à ſacerdote, ſument eam.* 23 *Docebunt populum meum diſcrimen inter ſacrum & profanum, & inter mundum & immundum indicabunt eis.* 24 *In judicio ſanguinis ipſi ſtabunt ad diſcernendum: juſtificabunt ſtatuta mea, & judicabunt judicia mea: leges atque præcepta mea ſervabunt in omnibus ſolennitatibus meis, & ſabbatha mea ſanctificabunt.* 25 *Non ingredientur ad animam hominis, ut polluant ſeſe: præterquam ad patrem & ad matrem, ad filium & ad filiam, ad fratrem ſuum & ad ſororem ſuam quæ non fuerit locata marito ut polluaretur.* 26 *Et poſteaquam mundatus fuerit ſeptem diebus, numeret ſibi ſex:* 27 *Et eo die quo ingredientur in atrium interius ad miniſtrandum in Sanctuario, offerant expiationem, dicit Dominus Deus;* 28 *Eritque eis in hæreditatem: ego ſum hæreditas eorum; quarè poſſeſſio non dabitur iis inter filios Iſraelis, quandoquidem ego ſum poſſeſſio eorum.* 29 *Sacrificia, & quod eſt pro peccato, & quod eſt pro ignorantia, ipſi comedent: & omne ſeparatum in Iſraele, ipſorum erit.* 30 *Primitiæ rerum omnium, & omnium primogenita, cunctæque ſegregationes veſtræ ex omnibus primitiis veſtris, erunt ſacerdotum. Primitias quoque frugum veſtrarum dabitis ſacerdoti, ut ponatis benedictionem veſtram ſuper domos veſtras.* 31 *Omne morticinum, & quicquid prædâ captum fuerit à belluis, ſive volucribus ſive beſtiis, non comedent ſacerdotes.*

CAP. XLV.

1 *Cum autem terram divideritis in hæreditatem, ſeparate primum Domino ſanctum de terra, viginti quinque millia in longitudinem, in latitudinem verò viginti millia: ſanctum eſto in omnibus terminis ſuis undequaque.* 2 *Et eſto ab hoc ad Sanctuarium, quingenti per quingentos, quadratum per circuitum: & quinquaginta cubitorum plateæ eorum undique.*

יחזקאל : מה

viginti & ,quinque longitudinem mensurabis ista mensura à Et
3 ומן־המדה הזאת תמוד ארך חמש ועשרים
,sanctuarium erit ipso in Et .millium decem latitudinem & : millium
אלף ורחב עשרת אלפים ובו־יהיה המקדש
ministris sacerdotibus ipsa terra de Sanctitas .sanctitatum sanctitas
4 קדש קדשים: קדש מן־הארץ הוא לכהנים משרתי
erit & : Domino ministrandum ad *accedentibus* , erit sanctuarii
המקדש יהיה הקרבים לשרת את־יהוה והיה
quinque Et .sanctuario sanctuarium & ,domibus locus eis
5 להם מקום לבתים ומקדש למקדש: וחמשה
Levitis erit & :latitudo millium decem & ,longitudo millium viginti &
ועשרים אלף ארך ועשרת אלפים רחב יהיה ללוים
possessionem Et .cubicula viginti possessionem in *ipsis* domus ministris
6 משרתי הבית להם לאחזה עשרים לשכת: ואחזת
,quinque longitudo & ,latitudo millium quinque , dabitis civitatis
העיר תתנו חמשת אלפים רחב וארך חמשה
Israel domui omni : sanctitatis oblationem contra millium viginti &
ועשרים אלף לעמת תרומת הקדש לכל־בית ישראל
possessionē *ad* &,sanctitatis oblationē *ad* inde & ,hinc principi Et .erit
7 יהיה: ולנשיא מזה ומזה לתרומת הקדש ולאחזת
urbis *possessionis facies ad* & ,sanctitatis *oblationis facies ad* civitatis
העיר אל־פני תרומת־הקדש ואל־פני אחזת העיר
longitudo & :Orientem ad orientali angulo ab & ,*mare ad maris* angulo ab
מפאת־ים ימה ומפאת קדמה קדימה וארך
.orientalem terminum ad *maris* termino à *partium unius regione* è
לעמות אחד החלקים מגבול ים אל־גבול קדימה:
populabuntur non & : Israel in possessionem in ei erit terra In
8 לארץ יהיה־לו לאחזה בישראל ולא־יונו
Israel domui dabunt terram & ,meum populum mei *prælati* ultrà
עוד נשיאי את־עמי והארץ יתנו לבית־ישראל
prælati vobis *Multum* ,*Dominus* Dominus dixit Sic .eorum tribus per
9 לשבטיהם: כה־אמר אדני יהוה רב־לכם נשיאי
justitiam & judicium *&* , *amovete* vastationem & ,*violentiam* , Israel
ישראל חמס ושד הסירו ומשפט וצדקה
Dominus dixit ,meo populo *desuper* vestras *exactiones tollite* : facite
עשו הרימו גרשתיכם מעל עמי נאם אדני
erit *justitiæ* batus & ,*justitiæ* Ephah & ,*justitiæ* *Bilances* .*Dominus*
10 יהוה: מאזני־צדק ואיפת־צדק ובת־צדק יהי
decimum *tollendum ad* ,erit unius *ponderis* batus & , Ephah .vobis
11 לכם: האיפה והבת תכן אחד יהיה לשאת מעשר
erit chomer *ad* ; Ephah chomer decimum & : batus chomer
החמר הבת ועשירת החמר האיפה אל־החמר יהיה
; sechalim viginti : obolorum viginti Sechel Et .ejus *æquilibrium*
12 מתכנתו: והשקל עשרים גרה עשרים שקלים
mina sechel quinque & decem ,sechalim viginti & quinque
חמשה ועשרים שקלים עשרה וחמשה שקל המנה
partem sextam ; offeretis quam oblatio Ista .vobis erit
13 יהיה לכם: זאת התרומה אשר תרימו ששית
chomer de Ephah *sextabitis* & ,*triticorum* chomer de Ephah
האיפה מחמר החטים וששיתם האיפה מחמר
bati decimum olei batum olei *statutum* Et .*hordeorum*
14 השערים: וחק השמן הבת השמן מעשר הבת
.chomer batim decem quia : chomer bati decem ; coro de
מן־הכר עשרת הבתים חמר כי־עשרת הבתים חמר:
, Israel *irriguo de* ducentis è *pecore* de unam agnam Et
15 ושה־אחת מן־הצאן מן־המאתים ממשקה ישראל
ait ,eos *super* expiandum ad : pacifica in & ,*ascensionem &* , *munus* in
למנחה ולעולה ולשלמים לכפר עליהם נאם
.*Dominus* Dominus
אדני יהוה:

Versio VULG. LAT.

3 Et à mensura ista mensurabis
longitudiné vigintiquinque millium, & latitudinem decem millium, & in ipso erit templum,
4 Sanctúmque sanctorum. Sanctificatum de terra erit sacerdotibꝰ
ministris Sanctuarii, qui ascendunt ad ministerium Domini: &
erit eis locus in domos, & in
5 Sanctuarium sanctitatis. Vigintiquinque autem millia longitudinis, & decem millia latitudinis
erunt Levitis, qui ministrant domui: ipsi possidebunt viginti ga-
6 zophylacia. Et possessionem civitatis dabitis quinque millia latitudinis, & longitudinis vigintiquinque millia, secundùm separationem Sanctuarii, omni do-
7 mui Israel. Principi quoque hinc
& indé in separationē Sanctuarii, & in possessionem civitatis,
contra faciem separationis Sanctuarii, & contra faciem possessionis urbis: à latere Maris usque
ad Mare, & à latere Orientis usque ad Orientem: Longitudinis
autem juxta unamquamque partem à termino Occidentali usque
8 ad terminum Orientalem. De
terra erit ei possessio in Israel:
& non depopulabuntur ultrà
principes populum meum: sed
terram dabunt domui Israel se-
9 cundùm tribus eorum. Hæc dicit Dominus Deus; Sufficiat vobis, principes Israel: iniquitatem
& rapinas intermittite, & judicium & justitiam facite, separate confinia vestra à populo meo,
10 ait Dominus Deus. Statera justa,
& ephi justum, & batus justus
11 erit vobis. Ephi & batus æqualia, & unius mensuræ erunt: ut
capiat decimam partem cori batus, & decimã partem cori ephi:
juxta mensuram cori erit æqua
12 libratio eorum. Siclus autem viginti obolos habet. Porrò viginti sicli, & vigintiquinque sicli,
& quindecim sicli, mnam faci-
13 unt. Et hæ sunt primitiæ, quas
tolletis: sextam partem ephi de
coro frumenti, & sextam partem
14 ephi de coro hordei. Mensura
quoque olei, batus olei, decima
pars cori est: & decem bati corum faciunt: quia decem bati
15 implent corum. Et arietem unum de grege ducentorum, de
his quæ nutriunt Israel in sacrificium, & in holocaustũ, & in pacifica, ad expiandum pro eis, ait
Dominus Deus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

3 Καὶ ἐκ ταύτης τῆς διαμετρήσεως διαμετρήσεις μῆκος πέντε ϗ εἴκοσι χιλιάδας, ϗ
εὖρος εἴκοσι χιλιάδας· ϗ ἐν αὐτῇ ἔ-
4 σται (γ) ἅγια τῶν ἁγίων. Ἀπὸ τῆς γῆς
ἔσται τοῖς ἱερεῦσι τοῖς λειτουργοῦσιν ἐν
τῷ ἁγίῳ, ϗ ἔσται τοῖς ἐγγίζουσι (δ) λειτουργεῖν τῷ κυρίῳ· ϗ ἔσται αὐτοῖς τόπος
εἰς οἴκους ἀφωρισμένους τῷ ἁγιασμῷ αὐ-
5 τῶν, Εἴκοσι ϗ πέντε (ε) χιλιάδας μῆκος,
ϗ εὖρος εἴκοσι χιλιάδες· ϗ τοῖς Λευίταις τοῖς λειτουργοῦσι τῷ οἴκῳ, αὐτοῖς εἰς
6 κατάσχεσιν πόλεις τοῦ κατοικεῖν. Καὶ τὴν
κατάσχεσιν τῆς πόλεως δώσεις πέντε χιλιάδας εὖρος, ϗ μῆκος πέντε ϗ εἴκοσι χιλιάδας, ὃν τρόπον (ζ) ἡ ἀπαρχὴ τῶν ἁγίων
7 παντὶ οἴκῳ Ἰσραὴλ ἔσονται. Καὶ τῷ ἡγουμένῳ ἐκ τούτου, ϗ ἀπὸ τούτου εἰς τὰς ἀπαρχὰς τῶν ἁγίων, εἰς κατάσχεσιν τῆς πόλεως, κατὰ πρόσωπον (η) τῶν ἀπαρχῶν τῶν
ἁγίων, ϗ κατὰ πρόσωπον τῆς κατασχέσεως
τῆς πόλεως τὰ πρὸς θάλασσαν, ϗ ἀπὸ τῶν
πρὸς θάλασσαν (θ) πρὸς ἀνατολάς· ϗ τὸ
μῆκος ὡς μία τῶν μερίδων ἀπὸ τῶν ὁρίων
τῶν πρὸς θάλασσαν, ϗ τὸ μῆκος ἐπὶ τὰ
8 ὅρια τὰ πρὸς ἀνατολὰς τῆς γῆς. Καὶ ἔσται
αὐτῷ εἰς κατάσχεσιν ἐν τῷ Ἰσραήλ, ϗ
οὐ καταδυναστεύσουσιν οὐκέτι οἱ ἀφηγούμενοι τοῦ Ἰσραὴλ τὸν λαόν μου, ϗ τὴν γῆν κατακληρονομήσουσιν οἶκος Ἰσραὴλ κατὰ
9 φυλὰς αὐτῶν. Τάδε λέγει κύριος (ι)
θεός, Ἱκανούσθω ὑμῖν οἱ ἀφηγούμενοι τοῦ
Ἰσραήλ, (κ) ἀδικίαν ϗ ταλαιπωρίαν ἀφέλεσθε, (λ) κρίμα ϗ δικαιοσύνην ποιήσατε· (μ) ἐξάρατε καταδυναστείαν ἀπὸ
10 τοῦ λαοῦ μου, λέγει κύριος (ν) θεός. Ζυγὸς
δίκαιος, ϗ μέτρον δίκαιον, ϗ χοῖνιξ δι-
11 καία ἔσται ὑμῖν τοῦ μέτρου, Καὶ ἡ χοῖνιξ
ὁμοίως μία ἔσται τοῦ λαμβάνειν. τὸ δέκατον τοῦ γομὸρ, (ξ) χοῖνιξ, καὶ τὸ δέκατον τοῦ γομὸρ, πρὸς τὸ γομὸρ ἔσται τὸ
12 ἴσον ϗ τὰ στάθμια, Εἴκοσι ὀβολοί, (ο)
πέντε σίκλοι, πέντε ϗ (π) σίκλοι δέκα,
ϗ πεντήκοντα σίκλοι ἡ μνᾶ ἔσται ὑμῖν.
13 Καὶ αὕτη ἡ ἀπαρχὴ ἣν ἀφοριεῖτε, (ρ) ἕκτον μέτρου ἀπὸ τοῦ γομὸρ τοῦ πυροῦ, ϗ τὸ
ἕκτον (σ) αὐτοῦ τοῦ οἰφὶ ἀπὸ τοῦ κόρου τῶν
14 κριθῶν. Καὶ (τ) τὸ πρόσταγμα τοῦ ἐλαίου
κοτύλην ἐλαίου ἀπὸ (υ) δέκα κοτυλῶν,
15 ὅτι αἱ δέκα κοτύλαι εἰσὶ γομόρ. Καὶ πρόβατον (φ) ἀπὸ τῶν προβάτων ἀπὸ δέκα ἀφαίρεμα ἐκ πασῶν τῶν πατριῶν τοῦ Ἰσραήλ, εἰς θυσίας, ϗ εἰς ὁλοκαυτώματα, ϗ
εἰς (χ) σωτηρίου τοῦ ἐξιλάσκεσθαι περὶ ὑμῶν,
λέγει κύριος (ψ) θεός.

Et à mensura ista mensurabis 3
longitudinem quinque & viginti
millia, & latitudinem viginti
millia. Et in ipsa erunt (d) Sancta sanctorum. De terra erit sacerdotibus ministrantibus in Sancto: & erit eis, qui accedunt ministrare Domino. Et erit eis locus
in domibus (e) separatis sanctificationi ipsorum, Viginti & 5
quinque millia longitudo: &
latitudo viginti millia. Et Levitis, qui ministrant domui, ipsis
in possessionem (f) civitates
ad habitandum. Et possessio- 6
nem civitatis dabis, quinque
millia latitudinis, & longitudinis quinque & viginti millia:
quemadmodum primitiæ Sanctorum, omni domui Israel erunt. Et duci hinc, & inde 7
in primitias Sanctorum, in possessionem civitatis, contra faciem primitiarum Sanctorum, &
contra faciem possessionis civitatis ea quæ ad mare, (g) & ab iis
quæ ad mare ad Orientem: &
longitudo sicut una partium, à
terminis qui ad mare, &
longitudo ad terminos qui ad Orientem terræ. Et erit ei in pos- 8
sessionem in Israel: & non oppriment ultrà duces Israel populum meum: & terram hæreditabunt domus Israel secundùm
tribus suas. Hæc dicit Dominus 9
Deus; Sufficiat vobis, Duces Israel: iniquitatem & vexationem
(h) auferte: judicium & justitiam facite: tollite oppressionem de populo meo, ait Dominus
Deus. Statera justa; & mensu- 10
sura justa, & chœnix justus erit
vobis ad mensurã: Et chœnix si- 11
militer unus erit ad accipiendũ.
Decima pars gomor, chœnix; &
decima pars (i) gomor: ad (k)
gomor erit æqualitas & pondera,
Viginti oboli: (l) quinque sicli, 12
quinque & sicli decem, & quinquaginta sicli mina erit vobis. Et 13
hæ sunt primitiæ, quas separabitis: sextam partem (m) mensuræ de gomor tritici, &
sextam partem (n) ipsius ephi
de coro hordei: Et præceptum 14
olei, cotylam olei de decem cotylis: quia decem cotylæ sunt (o)
gomor. Et ovem de ovibus ex 15
decem, demptio ex omnibus patriis Israel in sacrificia, & in
holocaustomata, & in oblationem salutaris ad expiandum pro
vobis, ait Dominus Deus.

MS.A. (γ) τὸ ἁγίασμα τῶν ἁγίων. Ἅγιον ἀπὸ τῆς (δ) ἐν αὐτοῖς λειτουργεῖν
(ε) χιλιάδες μῆκος, ϗ εἴκοσι χιλιάδες εὖρος ἔσται τοῖς (ζ) ϗ ἡ (η)* τῆς* πόλεως κατὰ πρόσωπον τῶν ἀπαρχῶν (θ) τὰ πρὸς (ι) ὁ θεός, (κ)* τὸν λαόν μου ϗ
τὴν γῆν κατακληρονομήσουσιν οἶκος τοῦ Ἰσραήλ, ἀδικίαν (λ) ϗ κρίμα (μ) ϗ
ἐξάρατε (ν) ὁ θεός. Ζυγὸν δίκαιον, (ξ) ἡ χοῖνιξ τὸ μέτρον πρὸς τὸ γομὸρ
ἔσται ἴσον (ο) οἱ πέντε (π) οἱ δέκα σίκλοι, δέκα (ρ)* ἕκατον τοῦ μέτρου (σ) τοῦ
οἰφὶ ἀπὸ τοῦ γομὸρ κόρου τῶν (τ) τὰ προστάγματα (υ) τῶν δέκα (φ) ἓν ἀπὸ
τῶν δέκα προβάτων ἀφαίρεμα (χ) σωτήριον τοῦ ἐξιλάσασθαι (ψ) ὁ θεός.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 ומן משחתא הדא תמשח אורכא עסרין וחמשא אלפין ופותיא עשרא אלפין וביה
4 יהי מקדשא קודש קודשין: קודשא מן ארעא הוא לכהניא די משמשין בבית מקדשא
דיי יהי דקריבין לשמשא קדם יי ויהי להון אתר שביק לביתא וכבשא למקדשא:
5 ועסרין וחמשא אלפין אורכא ועסרא אלפין פותיא ויהי לליואי משמשי ביתא להון
6 לאחסנא עסרין לשכן: ואחסנת קרתא תתנון חמשא אלפין פותיא ואורכא עשרין
7 וחמשא אלפין לקבל אפרשות קודשא לכל בית ישראל יהי: ולרבא מכא ומכא
לאפרשות קודשא ולאחסנת קרתא לקבל אפרשות קודשא ולקבל אחסנת קרתא
מרוח מערבא מערבא ומרוח מדנחא מדנחא ואורכא לקבל חד מן חולקיא מתחום
8 מערבא עד תחום מדנחא: דא ארעא תהי לרבא לאחסנתא בישראל ולא יינסון
9 עוד רברבי ית עמי וארעא יתנון לבית ישראל לשבטיהון: כדנן אמר יי אלהים
סגי לכון רברבי ישראל חטפא ובוזא אעדו ודין דקשוט וזכו עבידו סליקו תקלתכון
10 מגו עמי אמר יי אלהים: מוזנין דקשוט ומכילן דקשוט ובתין דקשוט יהי לכון:
11 מכילתא וביתא טקוס חד יהי לכון סכום תלת סאין למסב מעשר כורא במכילתא
12 רטיבא ביתא ועסר כורא יבישא מכילתא מן כורא יהי טקוסיה: וסלעא עסרין
מעין תלתות מניא עסרין סלעין מני כספא עסרין וחמש סלעין רבעות מניא חמש
13 עסרי סלעין כולהון שתין מנין ומני רבא קודשא יהי לכון: דא אפרשותא דתפרשון
14 חד מן שתא במכילתא מכור חטין וחד מן שתא במכילתא מכור סערין: ודחזי למסב
מן משחא במכילתא רטיבא מעשורא ביתא מן כורא חד מן עסרא הויא ביתא בכורא
15 ארי עסר בתין כורא: ואמר חד מן ענא מן מאתן דחזי למסב מפטמיא דישראל
למנחתא ולעלתא ולנכסת קודשיא לכפרא עליהון אמר יי אלהים:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et à mensura hac metieris longitudinem vigintiquinq; millia, & latitudinem 3
decem millia, in quo erit sanctuarium sanctum sanctorum. Sanctificatum de 4
terra erit Sacerdotibꝰ qui ministrant in domo sanctuarii *Domini*, qui accedunt
ad ministrandum coram Dño: & erit eis locus relictus pro domibus, & strata
via ad sanctuarium. Viginti autem quinq; millia longitudinis, & decem millia 5
latitudinis erunt Levitis ministris domus: ipsis erunt in possessionem viginti
gazophylacia. Et possessionem civitatis dabitis quinq; millia latitudinis, & 6
longitudinis viginti quinq; millia, secundùm separationem sanctitatis, omni
domui Israel erit. Principi autem hinc & indè in separationem sanctitatis 7
& in possessionem civitatis, & contra separationem sanctitatis, & contra
possessionem civitatis à parte Occidentali ad Occidentem, & à plaga Orientali in Orientem: longitudo autem erit secundùm unamquamque partem
à termino Occidentali in terminum Orientalem. Hæc terra erit principi in 8
possessionem in Israel, & non depopulabuntur ultrà principes mei populum
meum, & terram dabunt domui Israel secundùm tribus eorum. Hæc dicit 9
Dñs Deus: Sufficiat vobis principes Israel, rapinam & prædam auferte, &
judicium verum & justitiam operamini; auferte offendicula vestra de medio populi mei, ait Dñs Deus. Stateræ justæ, & mensuræ justæ, & bati justi 10
erunt vobis: Mensuræ & bati eadem ratio erit vobis, numeri trium sato- 11
rum, ut capiat batus decimam partem cori in mensura liquidorum, & decimam partem cori in mensura aridorum: ex coro erit æqualitas utriusque.
Et siclus viginti obolos habet; tertia pars mnæ viginti siclos habet: mna 12
argentea viginti & quinque siclos: quarta pars mnæ quindecim siclos
habet: omnes sexaginta sunt mna: & mna magna sancta erit vobis. Ista 13
est separatio quam separabitis, sextam partem mensuræ de coro tritici, &
sextam partem mensuræ de coro hordei. Et quod pertinet ut tollatur de 14
oleo in mensura liquidorum, est decima pars bati de coro: quia decima
pars cori est batus: corus enim decem batos habet. Et agnus unus de ovi- 15
bus ducentis quem oportet accipere de pinguibus Israel in munus, & in holocaustum, & in victimam sanctificatam ad expiandum pro eis, ait Dominus Deus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܡܢ ܗܕܐ ܡܫܘܚܬܐ ܐܘܪܟܐ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܦܬܝܐ ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܒܗ
ܢܗܘܐ ܩܘܕܫ ܩܘܕܫܐ. * ܘܩܘܕܫܐ ܕܐܪܥܐ. ܢܗܘܐ ܠܟܗܢܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܡܩܕܫܐ ܕܡܪܝܐ.
ܘܡܬܩܪܒܝܢ ܠܡܫܡܫܘܬܗ ܠܡܪܝܐ. ܘܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܐܬܪܐ ܠܒܬܐ. ܘܡܩܕܫܐ ܠܡܩܕܫܐ.
* ܘܢܗܘܐ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ ܐܘܪܟܐ. ܘܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ ܦܬܝܐ. ܘܢܗܘܐ ܐܘܚܕܢܐ
ܠܠܘܝܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܒܒܝܬܐ. ܥܣܪܝܢ ܒܬܝܢ. ܐܘܚܕܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. * ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ
ܦܬܝܐ. ܘܐܘܪܟܐ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܠܘܩܒܠ ܦܘܪܫܢܐ ܕܡܩܕܫܐ. ܢܗܘܐ
ܠܟܠܗܘܢ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܠܡܕܒܪܢܐ ܕܥܡܐ. ܠܦܘܪܫܢܐ ܕܡܩܕܫܐ ܘܠܐܘܚܕܢܐ
ܕܡܕܝܢܬܐ. ܡܢ ܡܕܢܚܐ ܘܡܢ ܡܥܪܒܐ. ܘܐܘܪܟܐ ܢܗܘܐ ܠܘܩܒܠ ܦܠܓܘܬܐ. ܡܢ
ܡܕܢܚܐ ܠܡܥܪܒܐ. * ܢܗܘܐ ܐܘܚܕܢܐ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܢܐܢܘܢ ܬܘܒ ܡܕܒܪܢܐ
ܕܥܡܝ. ܘܐܪܥܐ ܢܬܠܘܢ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܠܫܒܛܝܗܘܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܣܦܩ
ܠܟܘܢ. ܪܘܪܒܢܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܥܒܪܘ ܡܢܟܘܢ ܚܛܘܦܝܐ ܘܒܙܬܐ. ܘܥܒܕܘ ܕܝܢܐ ܘܙܕܝܩܘܬܐ.
ܘܐܥܒܪܘ ܫܘܥܒܕܟܘܢ ܡܢ ܥܡܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. * ܡܣܐܬܐ ܕܟܐܢܘܬܐ. ܘܡܬܩܠܐ
ܕܟܐܢܘܬܐ. ܘܟܝܠܬܐ ܕܟܐܢܘܬܐ ܢܗܘܝܢ ܠܟܘܢ. * ܟܝܠܬܐ ܘܡܬܩܠܐ ܐܫܘܘ. ܕܬܗܘܘܢ
ܫܩܠܝܢ ܡܥܣܪܐ ܚܕ ܡܢ ܥܣܪܐ ܫܘܝܐܝܬ. * ܘܡܬܩܠܐ ܢܗܘܘܢ ܥܣܪܝܢ. ܡܬܩܠܐ
ܕܝܠܗܘܢ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܡܥܝܢ. ܘܡܬܩܠܐ ܕܚܡܫܬܥܣܪ: ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܡܢܝܐ.
* ܘܗܢܐ ܦܘܪܫܢܐ ܦܪܘܫܘ. ܚܕ ܡܢ ܫܬ ܡܢܘܬܐ ܕܟܘܪܐ ܕܚܛܐ. ܘܚܕ ܡܢ ܫܬ
ܡܢܘܬܐ ܕܣܥܪܐ. * ܘܡܫܚܐ ܡܢ ܥܣܪܐ ܟܝܠܢ ܕܗܘܐ ܟܘܪܐ. ܢܣܒܘܢ: ܡܥܣܪܬܐ
ܟܝܠܬܐ ܚܕܐ. * ܘܐܡܪܐ ܚܕܐ ܢܣܒ ܡܢ ܡܐܬܝܢ ܥܢܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܠܣܡܝܕܐ. ܘܠܩܘܪܒܢܐ
ܘܠܥܠܘܬܐ ܠܚܘܣܝܐ. ܕܢܚܣܐ ܐܢܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ.

Ex hac menſura, *nempè* longitudine vigin- 3
tiquinque millium & latitudine decem mil-
lium, & in hac, eſto Sanctum Sanctorum.
Atque hoc terræ Sanctum, erit Sacerdotum
qui miniſtrant Sanctuario Domini, & acce- 4
dunt adminiſtrandum Domino; ut ſit eis lo-
cus *ille* pro domibus, & Sanctuarium pro
Sanctuario. Sit etiam vingintiquinque mil- 5
lium longitudo, & decem millium latitudo:
ſitque poſſeſsio Levitarum qui miniſtrant in
domo, viginti domus, poſſeſsione urbis. Quin- 6
que millium latitudo, longitudo verò vigınti-
quinque millium, è regione *loci* ſeparati pro
Sanctuario, ſit pro omnibus Iſraelitis: Et 7
pro rectore populi, in ſeparationem Sanctu-
arii & poſſeſsionem urbis, ab Oriente & ab
Occidente: longitudo verò ſit juxta partiti-
onem ab Oriente in Occidentem. Sit poſ- 8
ſeſsio filiorum Iſraelis, ut moleſti non ſint
ampliùs eis rectores populi mei, ſed ter-
ram dent filiis Iſraelis per tribus eorum. Sic 9
ait Dominus dominorum; Sufficit vobis prin-
cipes Iſraelis, tollite à vobis violentiam &
rapinam, facite judicium & juſtitiam, & amo-
vete oppreſsionem veſtram à populo meo, di-
cit Dominus dominorum. Statera juſta, pon- 10
dera juſta, & menſura juſta ſint apud vos.
Menſuram & pondus æqua reddite, ut deci- 11
mas, unum è denis æquè capiatis. Pondera 12
ſint viginti, pondus autem *quodlibet* ex his,
vigintiquinque ſit obolorum; & pondus quin-
decim *obolorum* eſto vobis mina. Hanc ſe- 13
parationem ſeparate; Unam è ſex partibus
chori triticei, & unam è ſex partibus hor-
deacei. De oleo verò, ex decem menſuris 14
quibus conſtat chorus, decimam ſumant
menſuram unam: Et oviculam unam è du- 15
centenis ovibus Iſraelis, pro ſimila, ſacrifi-
ciis, & holocauſtis: ut expiet eos, ait Do-
minus dominorum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ومن هذه المساحة تقيس طولا خمسة وعشرين الفا * وعرضا عشرين الفا * وفيها يكون
مقدس القديسين * قدسا من الارض يكون للكهنة الذين يخدمون في القدس * ويكون
للمقربين منهم ليخدموا الرب * ويكون لهم موضع للبيوت المخصوصة لتقديسهم * خمسة
وعشرين الفا طولا * وعشرين الفا عرضا * يكون للاويين الذين يخدمون البيت ضبطا لهم
مدنا ليسكنوها * وضبط المدينة تجعله خمسة الف عرضا * وطولا خمسة وعشرون الفا * كمثل
اول الاقداس يكون لبيت اسرائيل * وللمقدم من هذا ومن هذا في اوايل الاقداس * واوجه
ضبط المدينة * لناحية البحر * ومن ناحية البحر الي المشارق * والطول مثل واحد من الاقسام
من الحدود التي نحو البحر * والطول على الحدود التي نحو مشارق الارض * ويكون له للضبط
في اسرائيل * ولا يتسلطون ايضا المقدمون على اسرائيل شعبي * ويرث بيت اسرائيل الارض
لقبايلهم * هكذا يقول الرب الاله * يكفيكم يا مقدمي اسرائيل ترثون شعبي والارض
يا بيت اسرائيل انزعوا الظلم والشقوة * واصنعوا حكما وعدلا * ارفعوا التسلط يقول الرب
الاله * ميزان عادل * وقياس عادل * وكيل عادل يكون لكم الكيل * وهذا كيل واحد
يكون * لتاخذوا عشر العومور * والكيل يكون مساويا لكيل العومور * والصنجات عشرون
دانقا * الخمسة مثاقيل خمسة * والعشرة مثاقيل عشرة * وخمسون مثقالا يكون المنو لكم * وهذه
البداية التي تفرزوها * مائة كيل من العومور حنطة * وسدس الويبة من العومور كر
شعير * واوامر الزيت * مكيال زيت من عشرة مكاييل * لان العشرة مكاييل هي العومور
* وخروفا واحدا من عشرة خراف * خصوصية من جميع ابوات اسرائيل * للذبايح والمحرقات
وللخلاص * لتستغفروا عنكم * يقول الرب الاله *

Ab hac menſura vigintiquinque millia di- 3
metieris in longitudinem, & viginti millia
in latitudinem: & in hac erit Sanctua-
rium Sanctorum. Sanctum de terra ce- 4
det ſacerdotibus qui miniſtrant in San-
ctuario: cedet inquam, accedentibus ex
eis ad miniſtrandum Domino: eritque eis
locus pro domibus deſtinatus ad ſacra con-
ficiendum ab ipſis. Vigintiquinque mil- 5
lium longitudine, & viginti millium la-
titudine erit Levitis qui miniſtrant domui,
in poſſeſſionem eorum, urbes videlicet
ut in iis habitent. Poſſeſſionem autem 6
cujuſque *urbis facies quinque millium la-*
titudine, longitudine verò vigintiquin-
que millium: quemadmodum primitiæ
Sanctorum erit domui Iſraelis. Duci ve- 7
rò ab hac & ab illa parte *in principio*
Sanctorum, & è regione poſſeſſionis ur-
bis, ad plagam maritimam, & à plaga
maritima ad Orientem: longitudo autem
eſto par uni è portionibus terminorum
qui ſunt verſùs mare: & longitudo iſta
ſit *ſecùs terminos qui* porriguntur *ver-*
ſùs plagam terræ Orientalem. Erit hoc 8
illi in poſſeſſionem in Iſraele, ut non do-
minentur poſthac duces in Iſraelem po-
pulum meum, ſed poſſideat domus Iſ-
raelis terram per tribus ſuas. Ita dicit 9
Dominus Deus, Sufficiat vobis O duces
Iſraelis poſſidere populum meum & ter-
ram. O domus Iſraelis, amovete iniquita-
tem & vexationem, & exercete judi-
cium & juſtitiam: amovete dominium,
dicit Dominus Deus. Statera juſta, di- 10
menſio juſta, & menſura juſta ſit men-
ſura veſtra. Atque hæc una erit menſu- 11
ra: ut accipiatis decimam partem go-
mor: & menſura ſit æqualis menſuræ
Gomor: Bilances, viginti obolorum: quin- 12
que ſicli, quinque: & decem ſicli, decem:
& quinquaginta ſiclorum eſto mina apud
vos. Hæ autem ſunto primitiæ quas ſe- 13
parabitis: centum menſuras gomor triti-
ci, & ſextam partem vaibæ gomor, cho-
rum hordei. Præcepta verò circa oleum 14
ſunto: menſura olei ex decem menſuris:
nam decem menſuræ ſunt gomor. Et a- 15
gnum unum è denis agnis, rem peculia-
rem ab omnibus paternis domibus Iſrae-
lis; pro ſacrificiis & holocauſtis, & pro
ſalute: ut veniam rogetis pro vobis, ait
Dominus Deus.

יחזקאל : מו

, ista oblatione in erunt terræ populus Omnis
16 כֹּל הָעָם הָאָרֶץ יִהְיוּ אֶל־הַתְּרוּמָה הַזֹּאת
, *ascensiones* erit *prælato* *super* Et .Israel in *prælato*
17 לַנָּשִׂיא בְּיִשְׂרָאֵל׃ וְעַל־הַנָּשִׂיא יִהְיֶה הָעוֹלוֹת
, Calendis *in* & , solennitatibus in libamen & , *munus* &
וְהַמִּנְחָה וְהַנֵּסֶךְ בַּחַגִּים וּבֶחֳדָשִׁים
ipse : Israel domus solennitatibus universis in sabbathis *in* &
וּבַשַּׁבָּתוֹת בְּכָל־מוֹעֲדֵי בֵּית יִשְׂרָאֵל הוּא־
, *ascensionem* & , *munus* & , peccato pro oblationem faciet
יַעֲשֶׂה אֶת־הַחַטָּאת וְאֶת־הַמִּנְחָה וְאֶת־הָעוֹלָה
Sic .Israel domum *propter* expiandum ad pacifica &
18 וְאֶת־הַשְּׁלָמִים לְכַפֵּר בְּעַד בֵּית־יִשְׂרָאֵל׃ כֹּה־
mensis *uno* in primo *In* : *DOMINUS* Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה בָּרִאשׁוֹן בְּאֶחָד לַחֹדֶשׁ
mundabis & : *perfectum* bovis filium vitulum sumes
תִּקַּח פַּר־בֶּן־בָּקָר תָּמִים וְחִטֵּאתָ אֶת־
, peccato pro oblationis sanguine de sacerdos tollet Et : sanctuarium
19 הַמִּקְדָּשׁ׃ וְלָקַח הַכֹּהֵן מִדַּם הַחַטָּאת
auxilii atrii angulis quatuor in & , domus poste in *dabit* &
וְנָתַן אֶל־מְזוּזַת הַבַּיִת וְאֶל־אַרְבַּע פִּנּוֹת הָעֲזָרָה
.interioris atrii portæ poste *super* & : *altare ad*
לַמִּזְבֵּחַ וְעַל־מְזוּזַת שַׁעַר הֶחָצֵר הַפְּנִימִית׃
: *simplici à* & , *errante* *viro à* *mense in* septima in facies sic Et
20 וְכֵן תַּעֲשֶׂה בְּשִׁבְעָה בַחֹדֶשׁ מֵאִישׁ שֹׁגֶה וּמִפֶּתִי
decima quarta in primo In .domum expiabitis &
21 וְכִפַּרְתֶּם אֶת־הַבָּיִת׃ בָּרִאשׁוֹן בְּאַרְבָּעָה עָשָׂר
septem solennitas : Pesach vobis erit , mensis die
יוֹם לַחֹדֶשׁ יִהְיֶה לָכֶם הַפָּסַח חָג שְׁבֻעוֹת
die in *prælatus* faciet Et .*comedetur* infermentata , dierum
22 יָמִים מַצּוֹת יֵאָכֵל׃ וְעָשָׂה הַנָּשִׂיא בַּיּוֹם
vitulum , terræ populo universo pro & , se pro illa
הַהוּא בַּעֲדוֹ וּבְעַד כָּל־עַם הָאָרֶץ פַּר
ascensionem faciet solennitatis diebus septem Et .peccato pro *sacrificii*
23 חַטָּאת׃ וְשִׁבְעַת יְמֵי־הֶחָג יַעֲשֶׂה עוֹלָה
integros arietes septem & , vitulos septem DOMINO
לַיהוָה שִׁבְעַת פָּרִים וְשִׁבְעַת אֵילִים תְּמִימִם
hircum peccato pro *sacrificium* & : diebus septem , die in
לַיּוֹם שִׁבְעַת הַיָּמִים וְחַטָּאת שְׂעִיר
, Ephah & , *vitulum ad* , Ephah *munus* Et .diem per caprarum
24 עִזִּים לַיּוֹם׃ וּמִנְחָה אֵיפָה לַפָּר וְאֵיפָה
, septimo *In* .Ephah *ad* Hin olei & : faciet *arietem ad*
25 לָאַיִל יַעֲשֶׂה וְשֶׁמֶן הִין לָאֵיפָה׃ בַּשְּׁבִיעִי
faciet solennitate in mensis die decimaquinta in
בַּחֲמִשָּׁה עָשָׂר יוֹם לַחֹדֶשׁ בֶּחָג יַעֲשֶׂה
, holocausto *sicut*, peccato pro *sacrificium sicut* : diebus septem ista sicut
כָאֵלֶּה שִׁבְעַת הַיָּמִים כַּחַטָּאת כָּעֹלָה
.oleo *sicut* & , *munere* *sicut* &
וְכַמִּנְחָה וְכַשָּׁמֶן׃

CAP. XLVI. מו

interioris atrii Porta : *DOMINUS* Dominus dixit Sic
1 כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יְהוִה שַׁעַר הֶחָצֵר הַפְּנִימִית
die *in* & : operis diebus sex clausa erit Orientem *respiciens*
הַפֹּנָה קָדִים יִהְיֶה סָגוּר שֵׁשֶׁת יְמֵי הַמַּעֲשֶׂה וּבְיוֹם
.aperietur *mensis* die *in* & , aperietur sabbathi
הַשַּׁבָּת יִפָּתֵחַ וּבְיוֹם הַחֹדֶשׁ יִפָּתֵחַ׃

Versio VULG. LAT.

16 Omnis populus terræ tenebitur
primitiis his principi in Israel.
17 Et super principem erunt holocausta, & sacrificium, & libamina in solennitatibus, & in
Calendis, & in Sabbatis, & in
universis solennitatibus domûs
Israel: ipse faciet pro peccato
sacrificium, & holocaustum, &
pacifica ad expiandum pro domo Israel.
18 Hæc dicit Dominus
Deus; In primo mense, unâ
mensis, sumes vitulum de armento immaculatum, & expiabis
19 Sanctuarium. Et tollet sacerdos de sanguine quod erit
pro peccato: & ponet in postibus domûs, & in quatuor angulis crepidinis altaris, & in postibus
20 portæ atrii interioris. Et
sic facies in septima mensis, pro
unoquoque qui ignoravit, &
errore deceptus est, & expiabis
21 pro domo. In primo mense,
quartadecimâ die mensis, erit
vobis Paschæ solennitas: septem dieb⁹ azyma comedentur.
22 Et faciet princeps in die illa pro
se, & pro universo populo terræ,
23 vitulum pro peccato. Et
in septem dierum solennitate
faciet holocaustum Domino septem vitulos, & septem arietes
immaculatos quotidiè septem
diebus: & pro peccato hircum
24 caprarum quotidiè. Et sacrificium ephi per vitulum, & ephi
per arietem faciet: & olei hin
25 per singula ephi. Septimo mense, quintadecimâ die mensis, in
solennitate, faciet sicut suprà dicta sunt per septem dies, tam
pro peccato, quàm pro holocausto, & in sacrificio, & in
oleo.

CAP. XLVI.

1 HÆc dicit Dominus Deus; Porta atrii interioris, quæ respicit ad Orientem, erit clausa sex diebus, in quibus opus fit: die autem Sabbati aperietur, sed & in die Calendarum aperietur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

16 Καὶ πᾶς ὁ λαὸς δώσει τὴν ἀπαρχὴν ταύ-
17 την τῷ ἀφηγουμένῳ τοῦ Ἰσραήλ. Καὶ
διὰ τοῦ ἀφηγουμένου ἔσται τὰ ὁλοκαυτώματα, καὶ αἱ θυσίαι, καὶ αἱ σπονδαὶ (ω)
ἐν ταῖς ἑορταῖς, καὶ ἐν ταῖς νουμηνίαις, καὶ
ἐν τοῖς σαββάτοις, καὶ ἐν πάσαις ταῖς ἑορταῖς οἴκου Ἰσραήλ· αὐτὸς ποιήσει τὰ ὑπὲρ ἁμαρτίας, καὶ τὴν θυσίαν, καὶ τὰ ὁλοκαυτώματα, καὶ τὰ τοῦ σωτηρίου, τοῦ ἐξιλά-
18 σκεσθαι ὑπὲρ τοῦ οἴκου Ἰσραήλ. Τάδε
λέγει κύριος (α) θεός, Ἐν τῷ πρώτῳ
μηνί, μιᾷ τοῦ μηνός, λήψεσθε μόσχον ἐκ
βοῶν ἄμωμον, τοῦ ἐξιλάσασθαι τὸ ἅγιον.
19 Καὶ λήψεται ὁ ἱερεὺς ἀπὸ τοῦ αἵματος (β)
τοῦ ἐξιλασμοῦ, καὶ δώσει ἐπὶ τὰς φλιὰς
τοῦ οἴκου, καὶ ἐπὶ τὰς τέσσαρας γωνίας τοῦ
ἱεροῦ, καὶ ἐπὶ τὸ θυσιαστήριον, καὶ ἐπὶ τὰς
φλιὰς τῆς πύλης τῆς αὐλῆς τῆς ἐσωτέρας.
20 Καὶ οὕτως ποιήσεις ἐν τῷ μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ· μιᾷ τοῦ μηνὸς λήψῃ παρ᾽ ἑκάστου
(γ) ἀπόμοιραν· καὶ ἐξιλάσεσθε τὸν οἶκον.
21 Καὶ ἐν τῷ πρώτῳ (δ), τεσσαρεσκαιδεκάτῃ
τοῦ μηνός, ἔσται ὑμῖν τὸ πάσχα ἑορτή· ἑ-
22 πτὰ ἡμέρας ἄζυμα ἔδεσθε. Καὶ ποιήσει ὁ
ἀφηγούμενος ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ὑπὲρ
αὐτοῦ, καὶ (ε) τοῦ οἴκου, καὶ ὑπὲρ παντὸς τοῦ
23 λαοῦ τῆς γῆς, μόσχον ὑπὲρ ἁμαρτίας. Καὶ
τὰς ἑπτὰ ἡμέρας τῆς ἑορτῆς (ζ) ποιήσει
ὁλοκαυτώματα τῷ κυρίῳ ἑπτὰ μόσχους καὶ
ἑπτὰ κριοὺς ἀμώμους καθ᾽ ἡμέραν, τὰς ἑπτὰ ἡμέρας, καὶ ὑπὲρ ἁμαρτίας, ἔριφον
24 αἰγῶν καθ᾽ ἡμέραν, καὶ θυσίαν. Καὶ πέμματα τῷ μόσχῳ, καὶ (η) πέμματα τῷ κριῷ
ποιήσεις, καὶ ἐλαίου τὸ εἲν τῷ πέμματι.
25 Καὶ ἐν τῷ ἑβδόμῳ μηνί, πεντεκαιδεκάτῃ (θ) τοῦ μηνός, ἐν τῇ ἑορτῇ ποιήσεις
κατὰ ταῦτα, ἑπτὰ ἡμέρας, καθὼς τὰ ὑπὲρ
τῆς ἁμαρτίας, καὶ καθὼς τὰ ὁλοκαυτώματα,
καὶ καθὼς τὸ (ι) μαναά, καὶ καθὼς τὸ ἔλαιον.

Et omnis populus dabit primitias has duci Israel: 17 Et per ducem erunt holocausta, & sacrificia, & libamina in solennitatibus, & in neomeniis, & in sabbatis, & in universis solennitatibus domûs Israel. Ipse faciet, quæ pro peccato, & sacrificium, & holocausta, & quæ ipsius salutaris, ad expiandum pro domo Israel. 18 Hec dicit Dominus Deus; In primo mense, unâ mensis, sumetis vitulum de bobus immaculatum ad expiandum Sanctuarium. 19 Et tollet sacerdos de sanguine expiationis, & dabit super limina domûs, & super quatuor angulos (β) templi, & super altare, & super limina portæ atrii interioris. 20 Et sic facies in mense septimo, unâ mensis, sumes ab unoquoque (γ) portionem: & expiabitis domum. 21 Et in primo, quartadecimâ mensis, erit vobis Pascha solennitas. Septem diebus azyma comedetis. 22 Et faciet dux in illa die pro se, & domo, & pro universo populo terræ vitulum pro peccato: 23 Et septem diebus solennitatis faciet holocaustomata Domino septem vitulos, & septem arietes immaculatos quotidie septem diebus: et pro peccato hædum caprarum quotidiè, et sacrificium: 24 Et (γ) coctionem vitulo, et coctiones arieti facies, et olei (ſ) In coctioni. 25 Et in septimo mense quintadecimâ mensis, in solennitate facies juxta ea septem diebus, sicut quæ pro peccato, et sicut holocaustomata, et sicut manaa, et sicut oleum.

MS.A. (ω) ἔσονται ἐν ταῖς (α) ὁ θεός, (β) τοῦ μόσχου τοῦ ἐξιλασμοῦ, (γ) *ἀγνοοῦντος καὶ ἀπὸ νηπίου· καὶ ἐξιλάσεσθαι (δ) μηνὶ (ε) ὑπὲρ τοῦ (ζ) ποιήσεις (η) πέμμα (θ) ἡμέρᾳ τοῦ (ι) μαννά,

ΚΕΦ. μϛʹ.

1 Τάδε λέγει κύριος (α) θεός, Ἡ πύλη ἡ ἐν τῇ αὐλῇ τῇ ἐσωτέρᾳ, ἡ βλέπουσα πρὸς ἀνατολάς, ἔσται κεκλεισμένη ἓξ ἡμέρας τὰς ἐνεργούς· (β) ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων ἀνοιχθῇ, καὶ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς νουμηνίας ἀνοιχθήσεται.

CAP. XLVI.

HÆc dicit Dominus Deus; 1 Porta, quæ in atrio interiori, respiciens ad Orientem, erit clausa sex in diebus, quibus opus fit: in die autem sabbatorum aperietur: et in die Neomeniæ aperietur.

MS.A. (α) ὁ θεός, Πύλη ἡ (β) ἐν δὲ τῇ ἡμέρᾳ τοῦ σαββάτου ἀνοιχθήσεται.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 כל עמא דארעא יהון עבדין ית אפרשותא הדא לרבא בישראל : ועל רבא
17 יהי עלתא ומנחתא ונסכיא בחגיא ובירחיא ובשביא ובכל מועדי בית ישראל
הוא יעביד ית חטאתא וית מנחתא וית עלתא וית נכסת קודשיא לכפרא על
18 בית ישראל : כדנן אמר יי אלהים בקדמאה בחד לירחא תסב תור בר תורי
19 שלים ותדכי ית מקדשא : ויסב כהנא מדמא דחטתא ויתן על סקופת ביתא
20 ועל ארבע זוית מסמכתא למדבחא ועל סקופת תרע דדרתא גויתא : וכן תעביד
21 בשבעא בירחא מגבר דמשתלי ומטפש ותכפרון על ביתא : בניסן בארבעא
22 עסרא יומא לירחא יהי לכון פסחא חגא שבעא יומין פטיריא יתאכיל : ויעביד
23 רבא ביומא ההוא חלופוהי וחלף כל עמא דארעא תורא דחטאתא : ושבעא
יומי דחגא יעביד עלתא קדם יי שבעא תורין ושבעא דכרין שלמין ליומא
24 שבעת יומין וחטאתא צפיר בר עזי ליומא : ומנחתא מכלתא לתורא ומכלתא
25 לדכרא יעביד ומשחא מלי הינא למכלתא : בשביעאה בחמשת עסרא יומא
לירחא בחגא יעביד כאלן שבעא יומין כחטאתא וכעלתא וכמנחתא וכמשחא :

מו

1 כדנן אמר יי אלהים תרעא דדרתא גויתא דפתיח למדנחא יהי אחיד שתא
יומי חולא וביומא דשבתא יהי פתיח וביומא דירחא יהי פתיח :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Omnis popul⁹ terræ facient separationem istam principi Israel. Et ad prin- 16
cipem pertinebit [*dare*] holocausta, & munera & libamina in festivitatibus, 17
& in Calendis & in Sabbathis, & in omnibus solennitatibus domus Israel:
ipse faciet sacrificium pro peccato, & munus, & holocaustum, & victimas sanctificatas ad expiandum pro domo Israel. Hæc dicit Dominus Deus: 18
Primo mense, prima die mensis, sumes vitulum de bobus integrum, &
emundabis sanctuarium. Et tollet Sacerdos de sanguine sacrificii quod erit 19
pro peccato, & dabit super limen domus, & super quatuor angulos crepidinis altaris, & super limen portæ atrii interioris. Et sic facies in septima 20
die mensis à viro qui per ignorantiam erraverit aut per insipientiam: &
expiabitis pro domo. In primo mense quartadecima die mensis erit vobis 21
Phase solennitas septem diebus: azymum comedetur. Et faciet princeps 22
in die illa pro se & pro omni populo terræ vitulum pro peccato. Et septem 23
diebus solennitatis faciet holocaustum coram Domino septem vitulos &
septem arietes immaculatos in unoquoque die septem dierum, & pro peccato hircum de capris quotidie. Et pro munere mensuram ephi in bovem, 24
& mensuram ephi in arietem faciet, & mensuram hin plenam oleo per singula ephi. In septimo mense quinta decima die mensis in solennitate, faciet 25
sicut hæc septem diebus, juxta sacrificium pro peccato, & juxta holocaustum, & juxta munus, & juxta oleum.

CAP. XLVI.

HÆc dicit Dominus Deus: Porta atrii interioris quæ aperta est ad Ori- 1
entem, erit clausa sex diebus operis, & in die Sabbathi erit aperta, & in
die Calendarum erit aperta.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

ܘܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܢܦܪܫܘܢ ܦܘܪܫܢܐ ܗܢܐ ܠܡܕܒܪܢܐ ܕܐܝܣܪ *
ܘܥܠ ܡܕܒܪܢܐ ܢܗܘܘܢ. ܢܣܩ ܥܠܘܬܐ. ܘܣܡܝܕܐ ܘܢܘܩܝܐ. ܒܪܝܫ ܝܪܚܐ ܘܒܫ *
ܘܒܟܠܗܘܢ ܥܐܕܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܗܘ ܢܩܪܒ ܚܛܝܬܐ ܕܚܛܗܐ. ܘܣܡܝܕܐ ܘ
ܘܢܩܝܐ ܘܥܠܘܬܐ. ܘܩܘܪܒܢܐ ܕܡܚܣܝܢ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪ
ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ ܩܕܡܝܐ. ܣܒ ܬܘܪܐ ܚܕ ܒܪ ܒܩܪܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. ܘܕ
ܠܡܩܕܫܐ. * ܘܢܣܒ ܟܗܢܐ ܡܢ ܕܡܐ ܕܚܛܝܬܐ. ܘܢܪܘܣ ܥܠ ܣܩܘܦܬܗ ܕ
ܘܥܠ ܐܪܒܥ ܙܘܝܬܗ ܕܡܕܒܚܐ. ܘܥܠ ܣܩܘܦܬܗ ܕܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ. * ܘܗܟܢܐ
ܒܫܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܠܟܠ ܐܢܫ ܕܣܟܠ ܘܛܥܐ. ܘܡܚܣܝܢ ܠܒܝܬܐ. * ܘܒܐܪ
ܒܝܪܚܐ ܩܕܡܝܐ. ܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܦܨܚܐ ܘܥܐܕܐ. ܘܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ ܦܛܝܪܐ ܬܐܟܠܘܢ. * ܘܢܥ
ܡܕܒܪܢܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܚܠܦܘܗܝ ܘܚܠܦ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ. ܬܘܪܐ ܠܚܛܗܐ
* ܘܫܒܥܐ ܝܘܡܝܢ ܕܥܐܕܐ ܢܩܪܒ ܥܠܘܬܐ ܠܡܪܝܐ. ܫܒܥܐ ܬܘܪܝܢ ܘܫܒܥܐ ܕܟܪܝܢ ܕܠܝܬ ܒܗܘܢ ܡܘܡܐ. ܘ
ܕܥܙܐ. ܠܟܠ ܝܘܡ ܠܚܛܗܐ. * ܘܣܡܝܕܐ ܣܐܬܐ ܚܕܐ ܠܬܘܪܐ. ܢ
ܠܬܘܪܐ. ܘܣܐܬܐ ܠܕܟܪܐ. ܘܡܫܚܐ ܗܝܢܐ ܠܣܐܬܐ ܚܕܐ. ܘܡ
ܘܡܫܚܐ ܠܣܐܬܐ. * ܘܒܚܡܫܬܥܣܪ ܒܝܪܚܐ ܫܒܝܥܝܐ. ܢܥܒܕ ܥܐܕܐ. ܐܝܟ ܗܠܝܢ
ܝܘܡܝܢ. ܐܝܟ ܚܛܝܬܐ ܕܚܛܗܐ. ܘܐܝܟ ܥܠܘܬܐ. ܘܐܝܟ ܣܡܝܕܐ ܘܐܝܟ ܡܫܚܐ.

Univerſus terræ populus ſeparet hujuſmodi 16
ſeparationem pro rectore Iſraelis. Rectoris 17
autem erit *ſuppeditare* holocauſta, ſimilam,
& libamen initio menſium, ſabbathis omnibúſque feſtis domûs Iſraelis : ipſe offeret
expiationem peccatorum, ſimilam, libamen,
& holocauſta, ſacrificia quibus expiat filios
Iſraelis. Sic ait Dominus dominorum; Pri- 18
mâ *die* menſis primi accipe taurum unum bovinum in quo non ſit vitium, & expia Sanctuarium : Sumátque ſacerdos de ſanguine pia- 19
culi, & ſpargat ſuper limina domûs, ſuper
quatuor angulos altaris, & ſuper limen portæ atrii intimi. Hoc modo faciat ſeptimâ *die* 20
menſis quicunque ſtultitiam aut errorem commiſerit : & domum expient. Quartadecimâ 21
menſis primi eſto vobis Paſcha & feſtum, &
ſeptem diebus azymum comedetis. Offeretq, 22
rector eâdē illâ die pro ſeipſo & pro toto terræ populo, taurum in expiationem peccatorum : Et ſeptem illius feſti diebus offeret ho- 23
locauſta Domino, ſeptem boves & ſeptem
arietes in quibus nullum ſit vitium : & pro
expiatione peccatorum, hircum caprarum
quolibet die : Similæ verò ſatum *unum* pro 24
bove, & ſatum pro ariete : oleíque heminam
pro *quolibet* ſato. Præterea decimaquintâ 25
menſis ſeptimi celebret feſtum, quemadmodum ſeptem hiſce diebus tam quoad expiationem peccatorum & quoad holocauſta, quàm
quoad ſimilam & quoad oleum.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܘ *

CAP. XLVI.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܓܘܝܬܐ ܕܚܐܪ ܠܡܕܢܚܐ. ܢܗܘܐ
ܫܬܐ ܝܘܡܝܢ ܕܥܒܕܝܢ ܒܗܘܢ ܥܒܕܐ. ܘܒܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ ܢܬܦܬܚ. ܘܒ
ܒܪܝܫ ܝܪܚܐ ܢܬܦܬܚ.

SIc ait Dominus dominorum, Porta atrii 1
intimi, quæ reſpicit Orientem, ſit clauſa
ſex diebus quibus opus exercetur : die verò ſeptimo aperiatur, & die initii menſis
aperiatur :

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وكل الشعب يعطي هذه البداية لمقدم اسرايل * ومن قبل المقدم تكون المحر
والذبايح والقوارين تكون في الاعياد وفي روس الشهور * وفي السبوت وفي جميع اعياد ب
اسرايل * هو يصنع ما هو عن الخطية والذبيحة والمحرقات * وما هو للخلاص * ليستغفر
بيت اسرايل * هذا يقول الرب الاله * في الشهر الاول * في اول يوم من الشهر * تاخذون عج
من البقر لا عيب فيه * ليستغفروا في القدس * وياخذ الكاهن من دم العجل الذ
للاستغفار * ويجعل على عتبات البيت * وعلى اربع زوايا الهيكل * وعلى المذبح * وعلى عتب
باب الدار الداخلة * هكذا تصنع في الشهر السابع في اول يوم من الشهر * تاخذ م
كل واحد هو طاهر ومن طفل * وتستغفر في البيت * وفي الشهر الاول * في الرابع عشر
الشهر * يكون لكم عيد الفصح * سبعة ايام تاكلون فطيرا * ويصنع المقدم في ذ
اليوم عنه وعن البيت وعن جميع شعب الارض * عجلا من اجل الخطية * وسبعة ا
العيد يصنع المحرقات للرب * سبعة عجول وسبعة كباش غير معابة * كل يوم في السب
الايام * وعن الخطية جديا من المعز كل يوم * وذبيحة * وجريبا للعجل * وجريبا للكب
تصنعه * وقسط زيت للجريب * وفي الشهر السابع * في خمسة عشر يوم من الشهر في العيد تص
هكذا سبعة ايام * كمثل ما هو عن الخطية * وكمثل المحرقات * وكمثل المن * وكمثل الزيت *

Totus populus dabit has primitias duci 16
Iſraelis. Et à duce erunt holocauſta, 17
& ſacrificia, atque alabaſtra : erunt
inquam in feſtis, in principiis menſium, in Sabbathis, in omnibus denique
ſolennitatibus domûs Iſraelis : ipſe faciet
quod eſt pro peccato, & ſacrificio, &
holocauſtis, & quod eſt pro ſalute ; ut
venia poſtuletur pro domo Iſraelis. Hec 18
dicit Dominus Deus, Menſe primo, primâ die menſis, ſumetis vitulum bovinum in quo nullum ſit vitium, ut veniam poſcatis in Sanctuario : Sumátque 19
ſacerdos de ſanguine vituli qui eſt pro
poſcenda venia, ponátque ſuper liminibus domûs, ſuper quatuor angulis templi, ſuper altari, & ſuper liminibus
januæ atrii interioris. Idem facies men- 20
ſe ſeptimo, primâ die menſis : ſumes
à quocunque mundus fuerit, & à
puero, veniámque poſtulabis in domo.
Et menſe primo, quartadecimâ men- 21
ſis, eſto vobis ſolennitas Paſchalis : ſeptem diebus comedetis azymum : Fa- 22
ciétque dux eâ die pro ſe, pro domo,
& pro univerſo terræ populo, vitulum pro peccato. Et ſeptem illis die- 23
bus ſolennitatis faciet holocauſta Domino, ſeptem vitulos, & ſeptem arietes
immaculatos, ſeptem iis diebus quotidié : & pro peccato, hædum è capris
ſingulis diebus. Et ſacrificium : & 24
gjaribum (menſuræ genus) *pro vitulo,*
& gjaribum pro hædo facies, & queſtum (menſuræ genus) *olei in gjaribum.*
Menſe demum ſeptimo, quintadecimâ 25
die menſis in ſolennitate, idem facies ſeptem diebus, ut id quod eſt pro peccato, & ut holocauſta, ut man : & ut
oleum.

* الفصل السادس والاربعون *

* الاصحاح السابع والعشرون *

CAP. XLVI.

Textus vigeſimus ſeptimus.

* هكذا يقول الرب الاله * الباب الذي في الدار الداخلة * الناظر الى المشارق * يكون مغل
ستة الايام العمالة * وفي يوم السبوت يفتح * وفي يوم راس الشهر يفتح *

I*Ta dicit Dominus Deus, Oſtium quod* 1
eſt in atrio interiori, reſpiciens Orientem verſùs, clauſum eſto ſex diebus operi addictis : *die verò Sabbathorum aperiatur,*
& die kalendarum menſis aperiatur.

יחזקאל : מו

ſtabit & , deforis portæ veſtibuli *via* *prælatus* intrabit Et
2 וּבָא הַנָּשִׂיא דֶּרֶךְ אוּלָם הַשַּׁעַר מִחוּץ וְעָמַד
, ejus *aſcenſionem* ſacerdotes facient & : portæ *poſte* *ſuper*
עַל־מְזוּזַת הַשַּׁעַר וְעָשׂוּ הַכֹּהֲנִים אֶת־עוֹלָתוֹ
, portæ limen ſuper ſe incurvabit & , ejus pacifica &
וְאֶת־שְׁלָמָיו וְהִשְׁתַּחֲוָה עַל־מִפְתַּן הַשַּׁעַר
.veſperam ad uſque claudetur non porta Et .egredietur &
וְיָצָא וְהַשַּׁעַר לֹא־יִסָּגֵר עַד־הָעָרֶב׃
ipſius portæ oſtium terræ populus ſe incurvabit Et
3 וְהִשְׁתַּחֲווּ עַם־הָאָרֶץ פֶּתַח הַשַּׁעַר הַהוּא
aſcenſionem Et .DOMINI *facies ad* ,Calendis in & , ſabbathis in
4 בַּשַּׁבָּתוֹת וּבֶחֳדָשִׁים לִפְנֵי יְהוָה׃ וְהָעֹלָה
ſex , ſabbathi die in : DOMINO *prælatus* offeret *quam*
אֲשֶׁר־יַקְרִב הַנָּשִׂיא לַיהוָה בְּיוֹם הַשַּׁבָּת שִׁשָּׁה
Ephah *munus* Et .*integrum* arietem & , *integros* agnos
5 כְבָשִׂים תְּמִימִם וְאַיִל תָּמִים׃ וּמִנְחָה אֵיפָה
, olei & : ſuæ manus donum *munus* agnis in & , *arietem ad*
לָאַיִל וְלַכְּבָשִׂים מִנְחָה מַתַּת יָדוֹ וְשֶׁמֶן
, bovis filius vitulus , *novilunii* die in Et .Ephah *ad* Hin
6 הִין לָאֵיפָה׃ וּבְיוֹם הַחֹדֶשׁ פַּר בֶּן־בָּקָר
.erunt *integri* , aries & , agni ſex & : *integri*
תְּמִימִם וְשֵׁשֶׁת כְּבָשִׂים וָאַיִל תְּמִימִם יִהְיוּ׃
, *munus* faciet arietem per Ephah & , vitulum per Ephah Et
7 וְאֵיפָה לַפָּר וְאֵיפָה לָאַיִל יַעֲשֶׂה מִנְחָה
Hin olei & : ejus manus apprehenderit ſicut agnis in &
וְלַכְּבָשִׂים כַּאֲשֶׁר תַּשִּׂיג יָדוֹ וְשֶׁמֶן הִין
veſtibuli *via* : *prælatum* *ingrediendo in* Et .Ephah per
8 לָאֵיפָה׃ וּבְבוֹא הַנָּשִׂיא דֶּרֶךְ אוּלָם
intrando in Et .exibit *ejus* viam *in* & , ingredietur portæ
9 הַשַּׁעַר יָבוֹא וּבְדַרְכּוֹ יֵצֵא׃ וּבְבוֹא
ingrediens ſolennitatibus in DOMINI *facies ad* terræ *populum*
עַם־הָאָרֶץ לִפְנֵי יְהוָה בַּמּוֹעֲדִים הַבָּא
portæ *via* egredietur , ſe *incurvandum ad* *Aquilonis* portæ viam
דֶּרֶךְ שַׁעַר צָפוֹן לְהִשְׁתַּחֲוֹת יֵצֵא דֶּרֶךְ־שַׁעַר
via egredietur , meridianæ portæ *viam* *ingrediens &* : *meridiei*
נֶגֶב וְהַבָּא דֶּרֶךְ־שַׁעַר נֶגֶב יֵצֵא דֶּרֶךְ־
quam , portæ *via* revertetur Non .aquilonaris portæ
שַׁעַר צָפוֹנָה לֹא יָשׁוּב דֶּרֶךְ הַשַּׁעַר אֲשֶׁר־
, *prælatus* Et .egredientur illius regione è ſed , *eam in* eſt ingreſſus
10 בָּא בוֹ כִּי נִכְחוֹ יֵצְאוּ׃ וְהַנָּשִׂיא
, *ipſos exeundo in* & , ingredietur , *ipſos ingrediendo in* , eorum medio in
בְּתוֹכָם בְּבוֹאָם יָבוֹא וּבְצֵאתָם
munus erit *ſtatutis temporibus* in & ,feſtivitatibus in Et .egredientur
11 יֵצֵאוּ׃ וּבַחַגִּים וּבַמּוֹעֲדִים תִּהְיֶה הַמִּנְחָה
donum agnis in & , arietem per Ephah & ,vitulum per Ephah
אֵיפָה לַפָּר וְאֵיפָה לָאַיִל וְלַכְּבָשִׂים מַתַּת
fecerit cùm Et .Ephah per Hin olei & : ejus manus
12 יָדוֹ וְשֶׁמֶן הִין לָאֵיפָה׃ וְכִי־יַעֲשֶׂה
devotionem pacifica aut ,*aſcenſionem* *ſpontaneam* *prælatus*
הַנָּשִׂיא נְדָבָה עוֹלָה אוֹ־שְׁלָמִים נְדָבָה
, Orientem reſpicientem portam ei aperiet & , DOMINO
לַיהוָה וּפָתַח לוֹ אֶת־הַשַּׁעַר הַפֹּנֶה קָדִים
faciet ſic , ſua pacifica & , *ſuam aſcenſionem* faciet &
וְעָשָׂה אֶת־עֹלָתוֹ וְאֶת־שְׁלָמָיו כַּאֲשֶׁר יַעֲשֶׂה
poſt portam claudet & , egredietur & : ſabbathi die in
בְּיוֹם הַשַּׁבָּת וְיָצָא וְסָגַר אֶת־הַשַּׁעַר אַחֲרֵי
aſcenſionem facies *integrum* *ejus anni* filium agnum Et .*ipſum egredi*
13 צֵאתוֹ׃ וְכֶבֶשׂ בֶּן־שְׁנָתוֹ תָּמִים תַּעֲשֶׂה עוֹלָה
.illud facies mane *in mane in* : DOMINO diem per
לַיּוֹם לַיהוָה בַּבֹּקֶר בַּבֹּקֶר תַּעֲשֶׂה אֹתוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

2 Et intrabit princeps per viam veſtibuli portæ deforis, & ſtabit in limine portæ: & facient ſacerdotes holocauſtum ejus, & pacifica ejus: & adorabit ſuper limen portæ, & egredietur: porta autem non claudetur uſque ad veſperam. 3 Et adorabit populus terræ ad oſtium portæ illius in Sabbatis, & in Calendis, coram Domino. 4 Holocauſtum autem hoc offeret princeps Domino; in die Sabbati ſex agnos immaculatos, & arietem immaculatum. 5 Et ſacrificium ephi per arietem: in agnis autem ſacrificium quod dederit manus ejus: & olei hin per ſingula ephi. 6 In die autem Calendarum vitulum de armento immaculatum: & ſex agni & arietes immaculati erunt. 7 Et ephi per vitulum, ephi quoque per arietem faciet ſacrificium: de agnis autem, ſicut invenerit manus ejus: & olei hin per ſingula ephi. 8 Cùmque ingreſſurus eſt princeps, per viam veſtibuli portæ ingrediatur, & per eandem viam exeat. 9 Et cùm intrabit populus terræ in conſpectu Domini in ſolennitatibus: qui ingreditur per portam Aquilonis, ut adoret, egrediatur per viam portæ Meridianæ: porrò qui ingreditur per viam portæ Meridianæ, egrediatur per viam portæ Aquilonis: non revertetur per viam portæ, per quam ingreſſus eſt, ſed è regione illius egredietur. 10 Princeps autem in medio eorum cum ingredientibus ingredietur, & cum egredientibus egredietur. 11 Et in nundinis, & in ſolennitatibus erit ſacrificium ephi per vitulum, & ephi per arietem: agnis autem erit ſacrificium ſicut invenerit manus ejus: & olei hin per ſingula ephi. 12 Cùm autem fecerit princeps ſpontaneum holocauſtum, aut pacifica voluntaria Domino; aperietur ei porta quæ reſpicit ad Orientem, & faciet holocauſtum ſuum, & pacifica ſua, ſicut fieri ſolet in die Sabbati: & egredietur, claudetúrque porta poſtquàm exierit. 13 Et agnum ejuſdem anni immaculatum faciet holocauſtum quotidiè Domino: ſemper manè faciet illud.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

2 Καὶ εἰσελεύσεται ὁ ἀφηγούμενος κατὰ τὴν ὁδὸν τοῦ αιλαμ τῆς πύλης τῆς (γ) ἔσωθεν, καὶ στήσεται ἐπὶ τὰ πρόθυρα τῆς πύλης, καὶ ποιήσουσιν οἱ ἱερεῖς τὰ ὁλοκαυτώματα αὐτοῦ, καὶ τὰ τοῦ σωτηρίου αὐτοῦ· καὶ προσκυνήσει ἐπὶ τοῦ προθύρου τῆς πύλης, καὶ ἐξελεύσεται, καὶ ἡ πύλη οὐ μὴ κλεισθῇ ἕως ἑσπέρας. 3 Καὶ προσκυνήσει ὁ λαὸς τῆς γῆς κατὰ τὰ πρόθυρα τῆς πύλης ἐκείνης, καὶ ἐν τοῖς σαββάτοις, καὶ ἐν ταῖς νουμηνίαις, ἐναντίον (δ) κυρίου. 4 Καὶ τὰ ὁλοκαυτώματα προσοίσει ὁ ἀφηγούμενος τῷ κυρίῳ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων, ἓξ ἀμνοὺς ἀμώμους, καὶ κριὸν ἄμωμον, 5 Καὶ (ε) μαναα, πέμμα τῷ κριῷ, καὶ τοῖς ἀμνοῖς θυσίαν, δόμα (ζ) χειρὸς αὐτοῦ, καὶ ἐλαίου τὸ εἲν τῷ πέμματι. 6 Καὶ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῆς νουμηνίας μόσχον (η) ἄμωμον, καὶ ἓξ ἀμνοὺς, καὶ κριὸς ἄμωμος ἔσται, 7 Καὶ πέμμα τῷ κριῷ, καὶ πέμμα τῷ μόσχῳ ἔσται (θ) μαναα, καὶ τοῖς ἀμνοῖς, καθὼς ἂν (ι) ἐκποιῇ ἡ χεὶρ αὐτοῦ, καὶ ἐλαίου τὸ εἲν τῷ πέμματι. 8 Καὶ ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι τὸν ἀφηγούμενον, κατὰ τὴν ὁδὸν τοῦ αιλαμ τῆς πύλης εἰσελεύσεται, καὶ κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης ἐξελεύσεται. 9 Καὶ (κ) ὅταν εἰσπορεύηται ὁ λαὸς τῆς γῆς ἐναντίον κυρίου ἐν ταῖς ἑορταῖς, ὁ εἰσπορευόμενος κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης (λ) τῆς βλεπούσης πρὸς Βορρᾶν προσκυνεῖν, ἐξελεύσεται κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης τῆς πρὸς Νότον, καὶ ὁ εἰσπορευόμενος κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης τῆς πρὸς Νότον, ἐξελεύσεται κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης τῆς πρὸς Βορρᾶν· οὐκ ἀναστρέψει κατὰ τὴν πύλην (μ) εἰς ἣν εἰσελήλυθεν, ἀλλ' ἢ κατ' εὐθὺ αὐτῆς ἐξελεύσεται. 10 Καὶ ὁ ἀφηγούμενος ἐν μέσῳ αὐτῶν, ἐν τῷ εἰσπορεύεσθαι αὐτοὺς εἰσελεύσεται μετ' αὐτῶν, καὶ ἐν τῷ ἐκπορεύεσθαι αὐτοὺς ἐξελεύσεται (ν). 11 Καὶ ἐν ταῖς ἑορταῖς καὶ ἐν ταῖς πανηγύρεσιν ἔσται τὸ (ξ) μαναα πέμμα τῷ μόσχῳ, καὶ πέμμα τῷ κριῷ, (ο) καὶ τοῖς ἀμνοῖς, καθὼς ἂν ἐκποιῇ ἡ χεὶρ αὐτοῦ, καὶ ἐλαίου τὸ εἲν τῷ πέμματι. 12 Ἐὰν δὲ ποιήσῃ ὁ ἀφηγούμενος ὁμολογίαν ὁλοκαύτωμα σωτηρίου τῷ κυρίῳ, καὶ (‘) ἀνοίξῃ ἑαυτῷ τὴν πύλην τὴν βλέπουσαν (¨) κατὰ ἀνατολὰς, καὶ (˙) ποιήσῃ τὸ ὁλοκαύτωμα αὐτοῦ, καὶ τὰ τοῦ σωτηρίου αὐτοῦ, ὃν τρόπον ποιεῖ ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῶν σαββάτων· καὶ ἐξελεύσεται, καὶ κλείσει τὰς θύρας μετὰ τὸ ἐξελθεῖν αὐτόν. 13 Καὶ ἀμνὸν ἐνιαύσιον ἄμωμον ποιήσει (π) εἰς ὁλοκαύτωμα καθ' ἡμέραν τῷ κυρίῳ, πρωῒ ποιήσει αὐτόν.

2 Et intrabit dux per viam Ælam portæ (a) interioris, & ſtabit ſuper veſtibula portæ. Et facient ſacerdotes holocauſta ejus, & quæ ſalutaris ejus. Et adorabit ſuper veſtibulum portæ: & egredietur: & porta non claudetur uſque ad veſperam. 3 Et adorabit populus terræ ad veſtibula portæ illius, & in Sabbatis, & in Neomeniis coram Domino. 4 Et holocauſta offeret dux Domino in die Sabbatorum, ſex agnos immaculatos, & arietem immaculatum, 5 Et manaa, (b) coctionem arieti, & agnis ſacrificium, donum manus ſuæ, & olei In coctioni. 6 Et in die Neomeniæ vitulum immaculatum, & ſex agnos: & aries immaculatus erit: 7 Et coctio arieti, & coctio vitulo erit manaa, & agnis, ſicut ſufficerit manus ejus: & olei In coctioni. 8 Et in ingrediendo ducem per viam Ælam portæ ingredietur, & per viam portæ egredietur. 9 Et cùm intrabit populus terræ in conſpectu Domini in ſolennitatibus, qui ingreditur per viam portæ reſpicientis ad Aquilonem, ut adoret; egredietur per viam portæ, quæ ad Auſtrum: & qui ingreditur per viam portæ, quæ ad Auſtrum, egredietur per viam portæ, quæ ad Aquilonem: non revertetur per portam, in quam ingreſſus eſt: ſed in directum ejus egredietur. 10 Et dux in medio eorum; in ingrediendo eos, ingredietur cum eis: & in egrediendo ipſos, egredietur. 11 Et in ſolennitatibus, & in nundinis erit manaa coctio vitulo, & coctio arieti, & agnis, ſicut valuerit manus ejus, et olei In coctioni. 12 Si autem fecerit dux (c) confeſſionem, holocauſtum (d) ſalutaris Domino; et aperiet ſibi portam reſpicientem ad Orientem: et faciet holocauſtum ſuum, et ea quæ ſalutaris ſui; ſicut facit in die Sabbatorum. Et egredietur: et claudet oſtia poſtquàm ipſe egreſſus fuerit: 13 Et agnum anniculum immaculatum faciet in holocauſtum quotidiè Domino: manè faciet eum.

MS.A. (γ) ἔξωθεν, (δ) τοῦ κυρίου. Καὶ τὸ ὁλοκαύτωμα (ε) μαννά, (ζ) τῆς χειρὸς (η) υἱὸν βουκολίου ἄμωμον, (θ) μαννὰ (ι) εὐποιῇ (κ) ἔσται ὅταν εἰσπορεύηται ὁ λαὸς ἐναντίον (λ) τῆς πρὸς Βορρᾶν (μ) ἣν εἰσελήλυθεν (ν) μετ' αὐτῶν. Καὶ (ξ) μαννὰ (ο) τοῖς δὲ ἀμνοῖς, (‘) ἀνοίξει (¨) κατ' (˙) ποιήσει (π) ὁλοκαύτωμα,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 ויעול רַבָּא באורח אולמא דתרעא מלברא ויקום על סקופת תרעא ויעבדון
כהניא ית עלתיה וית נכסת קודשיה ויסגוד על סקופת תרעא ויפוק ותרעא לא
3 יתאחיד עד רמשא : ויסגדון עמא דארעא במעלנא דתרעא ההוא בשביא
4 ובירחיא קדם יי : ועלתא די יקריב רבא קדם יי ביומא דשבתא שתא אמרין
5 שלמין ודכר שלים : ומנחתא מכלתא לדכרא ולאמריא מנחתא מדבק ידיה
6 ומשחא מלו הינא למכלתא : וביומא דירחא תור בר תורי שלים ושתא אמרין
7 ודכר שלמין יהון : ומכלתא לתורא ומכלתא לדכרא יעביד מנחתא ולאמריא
8 כמא דתדביק ידיה ומשחא מלו הינא למכלתא : ובמעל רבא באורח אולמא
9 דתרעא יעול ובאורחיה יפוק : ובמעל עמא דארעא למסגד קדם יי במועדיא
דעלל באורח תרע צפונא למסגד יפוק באורח תרע דרומא ודיעול באורח תרע
דרומא יפוק באורח תרע צפונא לא יתוב באורח תרע די על ביה ארי לקבליה
10 11 יפוק : ורבא ביניהון במיעלהון ייעול ובמפקהון יפקון : ובחגיא ובמועדיא תהי
מנחתא מכלתא לתורא ומכלתא לדכרא ולאמריא דתדביק ידיה ומשחא מלי
12 הינא למכלתא : וארי יעביד רבא נדבתא עלתא או נכסת קודשיא נדבתא קדם
יי ויפתח ליה ית תרעא דפתיח למדנחא ויעביד ית עלתיה וית נכסת קודשוהי
13 כמא די עבד ביומא דשבתא ויפוק ויחוד ית תרעא בתר מפקיה : ואמר בר
שתיה שלים תעביד עלתא ליומא קדם יי בצפר בצפר תעביד יתיה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

2 Et ingredietur princeps per viam veſtibuli portæ exterioris, & ſtabit in limine portæ: & facient Sacerdotes holocauſtum ejus & ſacras ejus hoſtias, & adorabit ſuper limen portæ, & egredietur: porta autem non claudetur uſque ad veſperam. 3 Et adorabit populus terræ in introitu portæ illius in Sabbathis & in Calendis coram Dño. 4 Holocauſtum autem auferet princeps coram Dño in die Sabbathi ſex agnos immaculatos, & arietem immaculatum. 5 Et in munus menſuram ephi in arietem, & in ſingulos agnos juxta munus quod apprehenderit manus ejus, & olei plenum hin per ſingula ephi. 6 Et in die Calendarum vitulum de bobus immaculatum, & ſex agni & arietes immaculati erunt. 7 Et ephi in vitulum & ephi in arietem faciet pro munere & in agnos ſicut apprehenderit manus ejus, & plenum hin olei ad menſuram. 8 Et cùm ingreſſus fuerit princeps per viam veſtibuli portæ ingredietur, & per eandem viam exibit. 9 Et cùm ingreſſus fuerit populus terræ ut adoret coram Dño in ſolennitatibus; qui ingreſſus fuerit per viam portæ Aquilonis ad orandum, egredietur per viam portæ Auſtralis: & qui ingreſſus fuerit per viam portæ Auſtralis, exibit per viam portæ Aquilonis: non revertetur per viam portæ per quam ingreſſus eſt, ſed è regione ejus egredietur. 10 Princeps autem in medio eorum cùm ingreſſi fuerint ingredietur, & cùm exierint exibit. 11 Et in feſtivitatibus & in ſolennitatibus erit munus menſura ephi in vitulum, & menſura ephi in arietem, & in agnos quot apprehenderit manus ejus: & plenum hin olei ad menſuram. 12 Et cùm fecerit princeps ſpontaneum holocauſtum aut victimam ſanctificatam ſpontaneam coram Dño, aperiet ſibi portam quæ aperitur ad Orientem, & faciet holocauſtum ſuum & victimam ſanctificatam ſuam ſicut fieri ſolet in die Sabbathi, & egredietur et claudet portam poſt exitum ſuum. 13 Et agnum anniculum immaculatum facies holocauſtum quotidiè coram Domino; manè manè facies illud.

Verſio *S Y R I A C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

* ܘܢܥܘܠ ܡܕܒܪܢܐ ܒܡܥܠܢܐ ܕܐܣܬܘܦܐ ܕܬܪܥܐ ܡܢ ܠܒܪ. ܘܢܩܘܡ ܥܠ ܐܣܬܘܦܗ
ܕܬܪܥܐ. ܘܢܥܒܕܘܢ ܟܗܢܐ ܥܠܘܬܗ ܘܢܟܣܬܗ. ܘܢܣܓܘܕ ܒܐܣܬܘܦܐ
ܕܬܪܥܐ ܘܢܦܘܩ. ܘܬܪܥܐ ܠܐ ܢܬܐܚܕ ܥܕܡܐ ܠܪܡܫܐ. * ܘܢܣܓܕܘܢ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ ܒܡܥܠܢܗ
ܕܬܪܥܐ ܗܘ. ܒܫܒܐ ܘܒܪܝܫ ܝܪܚܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܥܠܬܐ ܕܡܩܪܒ ܡܕܒܪܢܐ ܩܕܡ
ܡܪܝܐ ܒܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ. ܫܬܐ ܐܡܪܝܢ ܕܠܝܬ ܒܗܘܢ ܡܘܡܐ. ܘܕܟܪܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ.
* ܘܣܡܝܕܐ ܢܩܪܒ. ܣܐܬܐ ܠܬܘܪܐ ܘܣܐܬܐ ܠܕܟܪܐ. ܘܠܐܡܪܐ ܐܝܟ ܕܡܛܝܐ ܐܝܕܗ. ܘܡܫܚܐ ܗܝܢ
ܠܣܐܬܐ. * ܘܒܝܘܡܐ ܕܪܝܫ ܝܪܚܐ. ܬܘܪܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. ܘܫܬܐ ܐܡܪܝܢ ܕܠܝܬ
ܒܗܘܢ ܡܘܡܐ. ܘܕܟܪܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܘܡܐ. * ܘܣܡܝܕܐ ܢܩܪܒ. ܣܐܬܐ ܠܬܘܪܐ ܘܣܐܬܐ
ܠܕܟܪܐ. ܘܠܐܡܪܐ ܐܝܟ ܕܡܛܝܐ ܐܝܕܗ. ܘܡܫܚܐ ܗܝܢ ܠܣܐܬܐ. * ܘܡܐ ܕܥܐܠ
ܡܕܒܪܢܐ. ܒܐܣܬܘܦܐ ܕܬܪܥܐ ܢܥܘܠ. ܘܒܗ ܢܦܘܩ. * ܘܡܐ ܕܥܐܠܝܢ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ
ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܒܥܕܢܐ ܕܥܐܕܐ. ܡܢ ܕܥܐܠ ܒܬܪܥܐ ܓܪܒܝܐ ܠܡܣܓܕ. ܢܦܘܩ ܒܗ
ܒܬܪܥܐ ܬܝܡܢܝܐ. ܘܡܢ ܕܥܐܠ ܒܬܪܥܐ ܬܝܡܢܝܐ. ܢܦܘܩ ܒܗ ܒܬܪܥܐ ܓܪܒܝܐ. ܘܠܐ
ܢܗܦܘܟ ܒܬܪܥܐ ܕܥܐܠ. ܐܠܐ ܠܘܩܒܠܗ ܢܦܘܩ. * ܡܕܒܪܢܐ ܕܝܢ ܒܡܨܥܬܗܘܢ. ܒܬܪܥܐ
ܕܥܐܠ. ܒܗ ܢܦܘܩ. * ܘܒܥܐܕܐ ܢܗܘܐ ܣܡܝܕܐ ܣܐܬܐ ܠܬܘܪܐ ܘܣܐܬܐ
ܠܕܟܪܐ. ܘܠܐܡܪܐ ܝܗܒ. ܐܝܟ ܕܡܛܝܐ ܐܝܕܗ. ܘܡܫܚܐ ܗܝܢ ܠܣܐܬܐ. * ܘܡܐ
ܕܡܩܪܒ ܡܕܒܪܢܐ. ܥܠܬܐ ܐܘ ܩܘܪܒܢܐ ܦܘܪܫܢܐ ܠܡܪܝܐ. ܢܦܬܚܘܢ ܠܗ
ܬܪܥܐ ܕܚܐܪ ܠܡܕܢܚܐ ܕܐܚܝܕ. ܘܢܩܪܒ ܥܠܘܬܗ ܘܢܟܣܬܗ. ܘܢܐܚܘܕܝܘܗܝ
ܠܬܪܥܐ. ܘܗܝܕܝܢ ܢܦܘܩ. ܐܝܟ ܕܥܒܕ ܒܝܘܡܐ ܕܫܒܬܐ. * ܘܐܡܪܐ ܒܪ ܫܢܬܗ ܕܠܝܬ ܒܗ
ܡܘܡܐ ܢܗܘܐ ܡܩܪܒ ܒܟܠܝܘܡ. ܥܠܬܐ ܠܡܪܝܐ. ܡܢ ܨܦܪ ܠܨܦܪ.

* Et ingrediens rector per oſtium liminis portæ 2
deforis, ſtet ſuper limen portæ, offerántque
interim ſacerdotes holocauſta ipſius & ſacrificia ipſius : & poſtquam adoravit in limine
portæ, exeat : porta verò ne claudatur ad
veſperam uſque. Adorabúntque populus ter- 3
ræ in oſtio portæ illius, ſabbathis & initio
menſium, coram Domino. Porrò holocauſta 4
quæ offeret rector corā Domino die ſabbathi,
erunt ſex agni in quibus nullum ſit vitium, &
aries in quo nullum ſit vitium. De ſimila verò 5
offeret ſatum pro bove, & ſatum pro ariete,
& pro agno ſecundùm facultatem ſuam : de
oleo autem heminam pro ſato. Die verò in- 6
itii menſis, bovem in quo nullum ſit vitium,
et ſex agnos in quibus nullum ſit vitium, &
arietem in quo nullum ſit vitium. Paritérque 7
de ſimila offeret ſatum pro bove, ſatum pro
ariete, & pro agno ſecundùm facultatē ſuam:
de oleo verò heminā pro ſato *quolibet*. Quo- 8
ties ingredietur rector, per portæ limen ingrediatur, & per idem egrediatur. Sed cùm in- 9
gredientur populus terræ coram Dño tempore feſtivo; qui ingreſſus fuerit per portam
Aquilonarem ad adorandum, egrediatur per
portam Auſtralem : et qui ingreſſus fuerit per
portam Auſtralem, egrediatur per portam Aquilonarem : ne revertatur per portam per
quam ingredietur, ſed per ſibi oppoſitā egrediatur. At rector qui fuerit inter vos, quâ 10
portâ ingreſſus fuerit, eâdem egrediatur. Et 11
feſtivo tempore ſit de ſimila ſatum pro bove,
ſatum pro ariete, & pro agno juxta cujuſque
facultatem : de oleo verò hemina pro ſato.
Præterea quum offeret rector holocauſta aut 12
munera, ſeparationem Domino, aperiatur ipſi
porta reſpiciens Orientem, quæ clauſa eſſe
ſolet : & poſtquam obtulerit holocauſta &
munera ſua, claudat portam, ac tum egrediatur, quemadmodum facere *conſuevit* die ſabbathi. Agnum quoque anniculum in quo nul- 13
lum ſit vitium, offerat quotidie holocauſtum
Domino, ſingulis matutinis.

Verſio *A R A B I C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

* ويدخل المقدم في طريق الام الباب الذي من خارج * ويقف على دهاليز الباب
ويصنعون الكهنة محرقاته وما هو لخلاصه * ويسجد على دهليز ذلك الباب ويخرج * والباب
لا يغلق الى المساء * ويسجد شعب الارض لدهاليز ذلك الباب * في السبوت وفي روس
الشهور امام الرب * والمحرقة يقدمها المقدم للرب في يوم السبوت * ستة حملان لا عيب
فيها * وكبشا لا عيب فيه * وجريب من للكبش * وللحملان ذبيحة عطية يدك * ووسط
ريت للجريب * وفي يوم راس الشهر * عجلا من ذود البقر لا عيب فيه * وستة حملان
وكبشا يكون لا عيب فيه * وجريبا للكبش * وجريبا للعاجل يكون منا * وللحملان
كما يمكن ان تصنع يدك حسنا * ووسط ريت للجريب * وعند ما يدخل المقدم في طريق
الام الباب يدخل * وفي طريق الباب يخرج * ويكون اذا دخل الشعب امام الرب في
الاعياد * الداخل في طريق الباب الذي نحو الجربياء ليسجد * يخرج في طريق الباب
الذي نحو التيمن * والداخل في طريق الباب الذي نحو التيمن * يخرج في طريق
الباب الذي نحو الجربياء * ولا يرجع في الباب الذي دخل فيه * ولكن بازايه يخرج
* والمقدم في وسطهم * عند ما يدخلون يدخل معهم * وعند ما يخرجون يخرج معهم
* وفي الاعياد وفي المواسم يكون من جريب للعاجل * وجريب للكبش وللحملان كما يمكن
ان تصنع يدك حسنا * ووسط ريتا للجريب * واذا صنع المقدم اعترافا محرقة خلاص للرب
فيفتح له الباب الناظر الى المشارق * فيصنع محرقته وما هو لخلاصه * كما يصنع في يوم
السبوت * ويخرج ويغلق الابواب من بعد ان يخرج * وحملا حوليا لا عيب فيه * يصنعه محرقة
كل يوم للرب * بالغداة يصنعه *

* *Et ingrediens dux per viam illam por-* 2
tæ extrinſecæ, conſiſtet ad porticus
januæ : cúmque perfecerint ſacerdotes
holocauſta ipſius & quæ ad ſalutem
ejus pertinent, adorabit ſuper ejus ja-
nuæ porticum, & egredietur : janua
verò non claudetur ad veſperam uſque.
Et adorabit terræ populus ad illius 3
januæ porticum tam in ſabbathis quàm
kalendis menſium, coram Domino. Ho- 4
locauſtum verò quod offeret dux Do-
mino in die ſabbathorum, ſex erunt
agni ſine macula, & aries ſine macu-
la, Gjarib man pro ariete, & pro 5
agnis ſacrificium, donum manûs ſuæ,
& queſtus olei pro gjaribo. Die verò 6
kalendarum menſis, vitulus de grege
boum ſine vitio, ſex agni, & aries
in quo nullum ſit vitium : Et gjarib 7
pro ariete, & gjarib pro vitulo, erit
man, atque pro agnis : ut meliùs fa-
cere poterit manus ejus : & queſtus
olei pro gjaribo. Quando ingredietur 8
dux, per viam illam portæ ingredie-
tur, & per viam portæ egredietur.
Erit autem cùm ingredietur populus 9
coram Domino in diebus feſtis, ut quiſ-
quis ingreſſus fuerit per viam portæ
quæ eſt Aquilonem verſùs ad adoran-
dum, egrediatur per viam portæ quæ
eſt Meridiem verſùs ; & quiſquis in-
greſſus fuerit per viam portæ quæ eſt
Meridiem verſùs, egrediatur per viam
portæ quæ eſt Aquilonem verſùs : non
revertetur per portam per quam ingreſ-
ſus eſt, ſed per oppoſitam ſibi egredi-
etur. Dux autem erit in medio eo- 10
rum : cùm ingredientur, intrabit cum
ipſis ; & cùm egredientur, cum ipſis
exibit. In ſolennitatibus & in nun- 11
dinis erit man gjarib pro vitulo, &
gjarib pro ariete & pro agnis, prout
poterit benefacere manus ejus, & que-
ſtus olei pro gjaribo. Quoties autem 12
fecerit dux gratiarum actionem, holo-
cauſtum ſalutis Domino, aperiet ſibi
portam quæ reſpicit ad Orientem, fa-
ciétque holocauſtum ſuum & quæ per-
tinent ad ſalutem ſuam, quemadmodum
facere conſuevit in die ſabbathorum :
tum egredietur, claudétque portas poſt-
quam egreſſus fuerit. Et agnum an- 13
niculum in quo nulla ſit macula, fa-
ciet holocauſtum ſingulis diebus Domi-
no : in matutino faciet eum.

יחזקאל : מו

, Ephah partem ſextam mane *in* *mane in* eo ſuper facies *munus* Et
14 וּמִנְחָה תַעֲשֶׂה עָלָיו בַּבֹּקֶר בַּבֹּקֶר שִׁשִּׁית הָאֵיפָה
Domino *munus* , ſimilam *ſubigendam* ad , Hin partem tertiam olei &
וְשֶׁמֶן שְׁלִישִׁית הַהִין לָרֹס אֶת־הַסֹּלֶת מִנְחָה לַיהֹוָה
& , *munus* & , agnum facient Et .jugiter *ſeculi* ſtatutis
15 חֻקּוֹת עוֹלָם תָּמִיד : וְעָשׂוּ אֶת־הַכֶּבֶשׂ וְאֶת־הַמִּנְחָה וְאֶת־
Dominus dixit Sic *.jugitatis aſcenſionem* : mane *in mane in* oleum
16 הַשֶּׁמֶן בַּבֹּקֶר בַּבֹּקֶר עוֹלַת תָּמִיד : כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי
,ejus hæreditatē in ſuis filiis de *viro* donum *prælatus* dederit *Cum:Dominꝰ*
יֱהֹוִה כִּי־יִתֵּן הַנָּשִׂיא מַתָּנָה לְאִישׁ מִבָּנָיו נַחֲלָתוֹ
cùm Et .hæreditatem in , *ipſa* , eorum *poſſeſſio* : erit ejus *filiis* *ipſi*
17 הִיא לְבָנָיו תִּהְיֶה אֲחֻזָּתָם הִיא בְּנַחֲלָה : וְכִי־
illius erit & , *ſuis* ſervis de uni ſua hæreditate de donum dederit
יִתֵּן מַתָּנָה מִנַּחֲלָתוֹ לְאַחַד מֵעֲבָדָיו וְהָיְתָה לּוֹ
,ejꝰ hæreditas *Veruntamē:prælatum* ad revertetur &,libertatis annum ad uſq;
עַד־שְׁנַת הַדְּרוֹר וְשָׁבַת לַנָּשִׂיא אַךְ נַחֲלָתוֹ
hæreditate de *prælatus* accipiet non Et .erit *eis* , ejus filiorum
18 בָּנָיו לָהֶם תִּהְיֶה : וְלֹא־יִקַּח הַנָּשִׂיא מִנַּחֲלַת
ſua poſſeſſione De .eorum poſſeſſione de , eos *populandum ad* populi
הָעָם לְהוֹנֹתָם מֵאֲחֻזָּתָם מֵאֲחֻזָּתוֹ
,meꝰ populꝰ diſpergantur non *quod* *propter* : ſuis filiis dabit hæreditatem
יַנְחִל אֶת־בָּנָיו לְמַעַן אֲשֶׁר לֹא־יָפֻצוּ עַמִּי
humero ſuper qui , ingreſſum *in* me introduxit Et .ſua poſſeſſione à *vir*
19 אִישׁ מֵאֲחֻזָּתוֹ : וַיְבִיאֵנִי בַמָּבוֹא אֲשֶׁר עַל־כֶּתֶף
;Aquilonē ad *reſpicientia ſacerdotes ad* ſanctitatis cubicula in portæ
הַשַּׁעַר אֶל־הַלְּשָׁכוֹת הַקֹּדֶשׁ אֶל־הַכֹּהֲנִים הַפֹּנוֹת צָפוֹנָה
locus Iſte : me ad dixit Et .*mare* ad lateribus in locus ibi ecce &
20 וְהִנֵּה־שָׁם מָקוֹם בַּיַּרְכָתָם יָמָּה : וַיֹּאמֶר אֵלַי זֶה הַמָּקוֹם
: peccato pro &,delicto pro oblationem ſacerdotes *ibi* coquent quo
אֲשֶׁר יְבַשְּׁלוּ־שָׁם הַכֹּהֲנִים אֶת־הָאָשָׁם וְאֶת־הַחַטָּאת
atrium *ad educendum* non *ad* , *munus* coquent quo
אֲשֶׁר יֹאפוּ אֶת־הַמִּנְחָה לְבִלְתִּי הוֹצִיא אֶל־הֶחָצֵר
atrium *ad* me eduxit Et .populum ſanctificandum ad , exterius
21 הַחִיצוֹנָה לְקַדֵּשׁ אֶת־הָעָם : וַיּוֹצִיאֵנִי אֶל־הֶחָצֵר
ecce & : atrii angulos quatuor *ad* me fecit tranſire & , exterius
הַחִיצֹנָה וַיַּעֲבִרֵנִי אֶל־אַרְבַּעַת מִקְצוֹעֵי הֶחָצֵר וְהִנֵּה
quatuor In *.atrii angulo in atrium , atrii angulo in atrium*
22 חָצֵר בְּמִקְצֹעַ הֶחָצֵר חָצֵר בְּמִקְצֹעַ הֶחָצֵר : בְּאַרְבַּעַת
triginta &,longitudine quadraginta ligata atria atrii angulis
מִקְצְעֹת הֶחָצֵר חֲצֵרוֹת קְטֻרוֹת אַרְבָּעִים אֹרֶךְ וּשְׁלֹשִׁים
circum ordo Et *.angulatis* ipſis quatuor una menſura:latitudine
23 רֹחַב מִדָּה אַחַת לְאַרְבַּעְתָּם מְהֻקְצָעוֹת : וְטוּר סָבִיב
parietes ſubter *facta* culinæ & : *ipſis* quatuor *circum eis in*
בָּהֶם סָבִיב לְאַרְבַּעְתָּם וּמְבַשְּׁלוֹת עָשׂוּי מִתַּחַת הַטִּירוֹת
qua , coquentium domus Iſtæ : me ad dixit Et *.circum*
24 סָבִיב : וַיֹּאמֶר אֵלַי אֵלֶּה בֵּית הַמְבַשְּׁלִים אֲשֶׁר
.populi victimam domus miniſtri *ibi* coquent
יְבַשְּׁלוּ־שָׁם מְשָׁרְתֵי הַבַּיִת אֶת־זֶבַח הָעָם :

CAP. XLVII. מז

deſub egredientes aquæ ecce & , domus oſtium ad me convertit Et
1 וַיְשִׁבֵנִי אֶל־פֶּתַח הַבַּיִת וְהִנֵּה־מַיִם יֹצְאִים מִתַּחַת
aquæ Et : Orientem domus facies nam:Orientem ad domus limine
מִפְתַּן הַבַּיִת קָדִימָה כִּי־פְנֵי הַבַּיִת קָדִים וְהַמַּיִם
.altaris meridie à dextero domus *humero ab ſubter* de *deſcendentes*
יֹרְדִים מִתַּחַת מִכֶּתֶף הַבַּיִת הַיְמָנִית מִנֶּגֶב לַמִּזְבֵּחַ :
extra viam *me circuire fecit* & ,aquilonaris portæ *via* me eduxit Et
2 וַיּוֹצִאֵנִי דֶּרֶךְ־שַׁעַר צָפוֹנָה וַיְסִבֵּנִי דֶּרֶךְ חוּץ
aquæ ecce Et .Orientem reſpicientem viam extrinſecus portam *ad*
אֶל־שַׁעַר הַחוּץ דֶּרֶךְ הַפּוֹנֶה קָדִים וְהִנֵּה־מַיִם
.dextero *humero ab ſcaturientes*
מְפַכִּים מִן־הַכָּתֵף הַיְמָנִית :

Verſio VULG. LAT.

14 Et faciet ſacrificium ſuper eo cata manè manè ſextam partem ephi, & de oleo tertiam partem hin, ut miſceatur ſimilæ: ſacrificium Domino legitimum, juge 15 atque perpetuum. Facient agnum, & ſacrificium, & oleum cata manè manè: holocauſtum 16 ſempiternum. Hæc dicit Dominus Deus; Si dederit princeps donum alicui de filiis ſuis: hæreditas ejus, filiorum ſuorum erit, 17 poſſidebunt eam hæreditariè. Si autem dederit legatum de hæreditate ſua uni ſervorum ſuorum, erit illius uſque ad annum remiſſionis, & revertetur ad principem: hæreditas autem ejus, filiis 18 ejus erit. Et non accipiet princeps de hæreditate populi per violentiam, & de poſſeſſione eorum: ſed de poſſeſſione ſua hæreditatem dabit filiis ſuis: ut non diſpergatur populus meus unuſquiſque à poſſeſſione ſua. 19 Et introduxit me per ingreſſum, qui erat ex latere portæ, in gazophylacia Sanctuarii ad ſacerdotes, quæ reſpiciebant ad Aquilonem: & erat ibi locus vergens ad Oc- 20 cidentem. Et dixit ad me; Iſte eſt locus ubi coquent ſacerdotes pro peccato, & pro delicto: ubi coquent ſacrificium, ut non efferant in atrium exterius, & ſanctificetur populus. 21 Et eduxit me in atrium exterius, & circumduxit me per quatuor angulos atrii: & ecce atriolū erat in angulo atrii, atriola ſingula per angulos atrii. 22 In quatuor angulis atrii atriola diſpoſita, quadraginta cubitorum per longum, & triginta per latum: menſuræ unius quatuor e- 23 rant. Et paries per circuitum ambiens quatuor atriola: & culinæ fabricatæ erant ſubter porticus per gyrum. 24 Et dixit ad me; Hæc eſt domus culinarum, in qua coquent miniſtri domûs Domini victimas populi.

CAP. XLVII.

1 ET convertit me ad portam domûs, & ecce aquæ egrediebantur ſubter limen domûs ad Orientem: facies enim domûs reſpiciebat ad Orientē: aquæ autem deſcendebant in latus templi dextrum ad Meridiem altaris. 2 Et eduxit me per viā portæ Aquilonis, & convertit me ad viam foras portam exteriorem, viam quæ reſpiciebat ad Orientem: & ecce aquæ redundantes à latere dextro.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

14 Καὶ (ρ) μαναὰ ποιήσει ἐπ᾽ αὐτῷ πρωΐ, ἕκτον τοῦ μέτρου, καὶ ἐλαίου (σ) τρίτον τοῦ εἶν τοῦ ἀναμίξαι τὴν σεμίδαλιν (τ) μαναὰ 15 τῷ κυρίῳ, πρόσταγμα (υ) διαπαντὸς. Ποιήσετε τὸν ἀμνόν· καὶ τὸ (φ) μαναὰ, καὶ τὸ ἔλαιον ποιήσετε (χ) πρωΐ, ὁλοκαύτω- 16 μα διαπαντός. Τάδε λέγει (ψ) κύριος θεὸς, Ἐὰν δῷ ὁ ἀφηγούμενος δόμα ἑνὶ ἐκ τῶν υἱῶν αὐτοῦ (ω) ἐκ τῆς κληρονομίας αὐτοῦ, τοῦτο τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ (α) ἔσται κατάσχεσις 17 κληρονομία. Ἐὰν δὲ δῷ δόμα (β) ἑνὶ τῶν παίδων αὐτοῦ, καὶ ἔσται αὐτῷ ἕως τοῦ ἔτους τῆς ἀφέσεως, καὶ ἀποδώσει τῷ ἀφηγουμένῳ. πλὴν τῆς κληρονομίας τῶν υἱῶν αὐ- 18 τοῦ αὐτοῖς ἔσται. Καὶ οὐ μὴ λάβῃ ὁ ἀφηγούμενος ἐκ τῆς κληρονομίας τοῦ λαοῦ (γ), τοῦ καταδυναστεῦσαι αὐτοὺς, ἐκ τῆς κατασχέσεως (δ) αὐτοῦ κατακληρονομήσει τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ, ὅπως μὴ διασκορπίζηται ὁ λαός μου, ἕκαστος (ε) ἐκ τῆς κατασχέσεως 19 αὐτοῦ. Καὶ εἰσήγαγέ με εἰς τὴν εἴσοδον τὴν κατὰ νώτου τῆς πύλης, εἰς τὴν ἐξέδραν τῶν ἁγίων τῶν ἱερέων, τὴν βλέπουσαν πρὸς Βορρᾶν· καὶ ἰδοὺ ἐκεῖ τόπος κεχωρισμέ- 20 νος. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Οὗτος ὁ τόπος ἐστὶν, οὗ ἑψήσουσιν ἐκεῖ οἱ ἱερεῖς τὰ ὑπὲρ (ζ) ἀγνοίας καὶ τὰ ὑπὲρ ἁμαρτίας, καὶ ἐκεῖ πέψουσι τὸ (η) μαναὰ τὸ παράπαν, τοῦ μὴ ἐκφέρειν εἰς τὴν αὐλὴν 21 τὴν ἐξωτέραν, τοῦ ἁγιάζειν τὸν λαόν. Καὶ ἐξήγαγέ με εἰς τὴν αὐλὴν τὴν ἐξωτέραν, καὶ περιήγαγέ με ἐπὶ τὰ (ʹ) τέσσαρα μέρη τῆς αὐλῆς· καὶ ἰδοὺ αὐλὴ κατὰ (θ) τὰ 22 κλίτη τῆς αὐλῆς, (ι) Κατὰ τὸ κλίτος αὐλὴ, αὐλὴ ἐπὶ τὰ (κ) τέσσαρα, καὶ τῆς αὐλῆς αὐλὴ μικρὰ μήκους (λ) πηχῶν τεσσαράκοντα, καὶ εὖρος (μ) πηχῶν τριάκοντα, 23 μέτρον ἓν τῶν τεσσάρων· Καὶ ἐξέδραι κύκλῳ ἐν αὐταῖς, κύκλῳ ταῖς τέσσαρσι· καὶ μαγειρεῖα γεγονότα ὑποκάτω τῶν ἐξεδρῶν 24 κύκλῳ. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Οὗτοι οἱ οἶκοι τῶν (ν) μαγείρων, οὗ ἑψήσουσιν ἐκεῖ οἱ λειτουργοῦντες τῷ οἴκῳ τὰ θύματα τοῦ λαοῦ.

MS.A. (ρ) μαννὰ (σ) τὸ τρίτον (τ) μαννὰ (υ) αἰώνιον διαπαντὸς (φ) μαννὰ, (χ) πρωΐ, (ψ) ἀδωναῒ κύριος, Ἐὰν (ω) τοῦ ἐκ τῆς (α) ἔσται κατάσχεσις αὐτῶν αὕτη ἐν κληρονομίᾳ· (β) ἐκ τῆς κληρονομίας αὐτοῦ ἑνὶ (γ) αὐτοῦ, καταδυναστεῦσαι (δ) αὐτοῦ, ἀπὸ τῆς κληρονομίας αὐτοῦ κατακληρονομήσει (ε) ἀπὸ τῆς (ζ) τῆς ἀγνοίας καὶ τὰ ὑπὲρ τῆς ἁμαρτίας, (η) μαννὰ (ʹ) τέσσαρα (θ) κλίτη (ι) Αὐλὴ κατὰ (κ) τέσσαρα κλίτη τῆς αὐλῆς (λ) πήχεων τεσσαράκοντα, (μ) πήχεων (ν) μαγειρείων,

ΚΕΦ. μζʹ.

1 ΚΑὶ εἰσήγαγέ με ἐπὶ τὰ πρόθυρα τοῦ οἴκου· καὶ ἰδοὺ ὕδωρ ἐξεπορεύετο (α) ὑποκάτωθεν τοῦ αἰθρίου κατὰ ἀνατολὰς, ὅτι τὸ πρόσωπον τοῦ οἴκου ἔβλεπε (ʹ) κατὰ ἀνατολὰς, καὶ τὸ ὕδωρ κατέβαινεν ἀπὸ τοῦ κλίτους τοῦ δεξιοῦ, ἀπὸ Νότου ἐπὶ τὸ θυσι- 2 αστήριον. Καὶ ἐξήγαγέ με κατὰ τὴν ὁδὸν τῆς πύλης τῆς πρὸς Βορρᾶν, καὶ περιήγαγέ με τὴν ὁδὸν ἔξωθεν πρὸς τὴν πύλην τῆς αὐλῆς τῆς βλεπούσης (") κατὰ ἀνατολάς· καὶ ἰδοὺ τὸ ὕδωρ κατεφέρετο ἀπὸ τοῦ κλίτους τοῦ δεξιοῦ,

MS.A. (α) ὑποκάτω τοῦ αἰθρίου τοῦ οἴκου κατ᾽ (ʹ) κατ᾽ (") κατ᾽

Et (e) manaa faciet ſuper eo, 14 manè, ſextam partem menſuræ, & de oleo tertiam partem In ad miſcendam ſimilam manaa Domino, præceptum perpetuum: Fa- 15 cietis agnum, et manaa: & oleum facietis manè, holocauſtum ſempiternum. Hæc dicit Dominꝰ Dꝰ; 16 Si dederit dux donum uni ex filiis ſuis de hæreditate ſua; hoc filiis ejus erit poſſeſſio hæreditas. Si autem dederit donum uni ex 17 pueris ſuis; et erit ei uſque ad annum remiſſionis: et reddet duci; veruntamen de hæreditate filiorum ejus ipſis erit. Et non tol- 18 let princeps de hæreditate populi opprimendo eos: de poſſeſſione ſua hæreditatem dabit filiis ſuis; ut non diſpergatur populus meus, unuſquiſque à poſſeſſione ſua. Et 19 introduxit me in ingreſſum (f) ejus, quæ ad tergum portæ, in exedram Sanctorum, ſacerdotum, reſpicientem ad Aquilonem: et ecce ibi locus ſeparatus: Et dixit ad 20 me; Iſte eſt locus, ubi coquent ibi ſacerdotes quæ pro ignorantia, et quæ pro peccato: et ibi coquent manaa omninò: ut non offerant in atrium exteriꝰ ad ſanctificandum populum. Et eduxit me in atrium 21 exterius: et circumduxit me per quatuor partes atrii: et ecce atrium ad latera atrii, (g) Ad latus 22 atrium, atrium ſuper quatuor; et atrii atrium parvum longitudinis cubitorum quadraginta, et latitudo cubitorum triginta: menſura una quatuor. Et exe- 23 dræ per circuitum in eis, per circuitum ipſis quatuor: et culinæ factæ ſub exedris per gyrum. Et 24 dixit ad me; Hæ ſunt domus coquorum, ubi coquent ibi miniſtri domûs victimas populi.

CAP. XLVII.

ET introduxit me ad veſtibu- 1 la domûs: et ecce aqua (a) egrediebatur de ſubdio domûs ad Orientem: facies enim domûs reſpiciebat ad Orientem: et aqua deſcendebat à latere dextro, ab Auſtro ad altare. Et eduxit me 2 per viam portæ, quæ ad Aquilonem: et circunduxit me per viam exteriorem ad portam atrii reſpicientis ad Orientem: et ecce aqua deferebatur à latere dextro,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

14 ומנחתא תעבד עלוהי בצפר בצפר חד מן שתא במכלתא ומשחא תלתות הינא
15 לערבא ית סולתא מנחתא קדם יי קים עלם תדירא : יעבדון ית אמרא וית מנחתא וית
16 משחתא בצפר בצפר עלתא תדירא : כדנן אמר יי אלהים ארי יתן רבא מתנא לחד
17 מבנוהי אחסנתיה היא לבנוהי תהי אחידתהון היא באחסנא : וארי יתן מתנא
מאחסנתיה לחד מעבדוהי ותהי ליה עד שתא דיובלא ותתיב לרבא ברם אחסנתיה
18 די בנוהי דילהון תהי : ולא יסב רבא מאחסנת עמא למינסהון מאחסנתהון
19 מאחסנתיה יחסין לבנוהי בדיל דלא יתבדרון עמי גבר מאחסנתיה : ואעלני במעלנא
די לעבר תרעא ללשכת קודשיא דכהניא די פתיחן צפונא והא תמן אתרא בסופיהון
20 מערבא : ואמר לי דין אתרא דיבשלון תמן כהניא ית אשמא וית חטאתא די ייפון ית
21 מנחתא בדיל דלא לאפקא לדרתא בריתא לאתערבא עם עמא : ואפקני לדרתא
בריתא ואעברני על ארבע זוית דרתא והא דרתא בזוית דרתא ודרתא בזוית דרתא :
22 בארבעה זוית דרתא דרתא מקטרן ארבעין ארכא ותלתין פותיא משחתא חדא
23 לארבעתהון דדרתא : ונדבכין עבידין להון סחור לארבעתהון ואתר מתקן לבשלא
24 עביד מלרע לנדבכיא סחור סחור : ואמר לי דין אתר מתקן לבשליא דיבשלון תמן
משמשי ביתא ית נכסת קודשיא דעמא :

מז

1 ואתיבני לתרע ביתא והא מיא נפקין מתחות סקופת ביתא מדנחא ארי אפי ביתא
2 למדנחא ומיא נחתין מלרע מעבר סקופת ביתא לימינא מדרום למדבחא : ואפקני
באורח תרע צפונא ואסחרני באורח דלברא לתרעא בראה אורח תרעא דפתח
למדנחא והא מיא נפקין מן עברא דימינא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et munus facies ſuper eum manè manè, ſextam partem ephi, & olei tertiam 14 partem hin, ut commiſceatur cum ſimila munus coram Dño fœdere ſempiterno jugiter. Facientque agnum & munus & oleum manè manè holocau- 15 ſtum jugiter. Hæc dicit Dñs Deus: Cùm dederit princeps donum uni de 16 filiis ſuis, poſſeſſio ejus poſſeſſio filiorum erit: poſſeſſio eorum eſt in hæreditate. Et ſi dederit donum de poſſeſſione ſua uni de ſervis ſuis, erit illius 17 uſque ad annum jubilei: & revertetur ad principem, veruntamen hæreditas ejus filiis ejus erit. Et non accipiet princeps de hæreditate populi, ut per 18 violentiam accipiat de hæreditate eorum: ſed de hæreditate ſua hæreditatem dabit filiis ſuis, ut non diſpergatur populus meus unuſquiſque de hæreditate ſua. Et introduxit me per introitum qui erat in latere portæ in gazo- 19 phylacia ſacra Sacerdotum quæ aperta erant ad Aquilonem: & ecce ibi erat locus in fine eorum ad Occidentem. Et dixit mihi: Iſte eſt locus ubi 20 coquent Sacerdotes [*carnes*] ſacrificii pro delicto & pro peccato, & ubi coquent [*panem*] muneris, ut non efferant in atrium exterius, ne commiſceantur cum populo. Et eduxit me in atrium exterius, & traduxit me per 21 quatuor angulos atrii: & ecce atriolum erat in angulo atrii, atriolum in angulo atrii. Per quatuor angulos atrii erant atriola conjuncta quadraginta 22 cubitorum longitudinis & triginta latitudinis: menſura una erat quatuor atriolis. Et parietes facti erant ipſis per circuitum ipſorum quatuor, & lo- 23 cus *præparatus* ad coquendum fabricatus erat ſub parietibus per circuitum. 24 Et dixit ad me: Iſte eſt locus præparatus ad coquendum, in quo coquent miniſtri domus victimas ſanctificatas populi.

CAP. XLVII.

ET convertit me ad portam domus, & ecce aquæ egrediebantur de ſub li- 1 mine domus ab Oriente: erat enim facies domus ad Orientem: aquæ autem deſcendebant inferiùs à latere liminis domus ad dexteram ab Auſtrali parte altaris. Et eduxit me per viam portæ Aquilonis, & circumduxit me 2 per viam exteriorem portæ exterioris, viam portæ quæ aperiebatur ad Orientem; & ecce aquæ egrediebantur à latere dextro.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܣܡܝܕܐ ܢܩܪܒ ܥܠܘܗܝ ܟܠ ܨܦܪ ܨܦܪ. ܫܬܐ ܡܢ ܬܠܬܐ ܒܣܐܬܐ. ܘܡܫܚܐ. ܬܠܬܐ ܡܢ
ܗܝܢܐ ܠܡܦܠܦܠܘ ܣܡܝܕܐ ܠܩܘܪܒܢܐ ܠܡܪܝܐ. ܢܡܘܣܐ ܠܥܠܡ. ܐܡܝܢܐܝܬ.
* ܘܢܩܪܒܘܢ ܐܡܪܐ ܘܣܡܝܕܐ ܘܡܫܚܐ. ܟܠ ܨܦܪ ܨܦܪ. ܥܠܬܐ ܡܫܡܠܝܬܐ. ܐܡܝܢܐܝܬ.
* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܡܕܒܪܢܐ ܟܕ ܢܬܠ ܡܘܗܒܬܐ ܠܚܕ ܡܢ ܒܢܘܗܝ. ܝܪܬܘܬܗ
ܠܒܢܘܗܝ ܬܗܘܐ. * ܘܟܕ ܢܬܠ ܡܘܗܒܬܐ ܡܢ ܝܪܬܘܬܗ ܠܚܕ ܡܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܬܗܘܐ ܠܗ
ܥܕܡܐ ܠܫܢܬܐ ܕܚܐܪܘܬܐ. ܘܬܗܦܘܟ ܠܗ ܠܡܕܒܪܢܐ. ܝܪܬܘܬܐ ܕܝܢ ܕܒܢܘܗܝ ܠܗܘܢ ܬܗܘܐ.
* ܘܠܐ ܢܣܒ ܡܕܒܪܢܐ ܡܢ ܝܪܬܘܬܗ ܕܥܡܐ. ܘܠܐ ܢܛܠܡ ܐܢܘܢ ܡܢ ܩܢܝܢܗܘܢ. ܐܠܐ ܡܢ ܝܪܬܘܬܗ
ܢܘܪܬ ܠܒܢܘܗܝ. ܕܠܐ ܢܬܒܕܪܘܢ ܥܡܝ. ܐܢܫ ܡܢ ܝܪܬܘܬܗ. * ܘܐܥܠܢܝ ܒܡܥܠܢܐ ܕܥܠ
ܓܢܒ ܬܪܥܐ ܕܐܟܣܕܪܐ ܓܘܝܬܐ ܕܩܘܕܫܐ ܕܟܗܢܐ. ܕܚܙܝܐ ܠܓܪܒܝܐ. ܘܚܙܝܬ ܕܐܝܬ ܬܡܢ ܐܬܪܐ
ܒܣܘܦܝܗܘܢ ܡܢ ܡܥܪܒܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܢܘ ܐܬܪܐ ܕܡܒܫܠܝܢ ܬܡܢ ܟܗܢܐ ܚܛܗܝܐ
ܘܚܛܗܐ. ܘܐܦܝܢ ܬܡܢ ܣܡܝܕܐ. ܕܠܐ ܢܦܩܘܢ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܘܢܩܕܫܘܢ ܠܥܡܐ.
* ܘܐܦܩܢܝ ܠܕܪܬܐ ܒܪܝܬܐ. ܘܐܥܒܪܢܝ ܥܠ ܐܪܒܥܐ ܣܛܪܘܗܝ ܕܕܪܬܐ. ܘܚܙܝܬ ܕܪܬܐ ܒܣܛܪ ܕܪܬܐ
ܘܕܪܬܐ ܐܚܪܬܐ ܒܣܛܪ ܕܪܬܐ ܐܚܪܬܐ. * ܒܐܪܒܥܐ ܣܛܪܘܗܝ ܕܕܪܬܐ. ܕܪܐ ܙܥܘܪܬܐ. ܐܪܒܥܝܢ ܐܡܝܢ
ܐܘܪܟܗܘܢ. ܘܬܠܬܝܢ ܦܬܝܗܘܢ. * ܘܐܟܣܕܪܐ ܚܕܪ ܠܐܪܒܥܬܗܘܢ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܢܘ
ܒܝܬ ܡܒܫܠܐ. ܕܡܒܫܠܝܢ ܬܡܢ ܡܫܡܫܢܐ ܕܒܝܬܐ ܢܟܣܬܐ ܕܥܡܐ.

Et de ſimila offerat cum eo ſingulis matuti- 14
nis, ſextam partem ſati; oleique tertiam par-
tem heminæ ad commiſcendam ſimilam Do-
mino, lege perpetuâ jugiter. Ita offerent 15
agnos ſimilam & oleum quolibet manè, ho-
lolocauſtum jugiter. Sic ait Dominus domi- 16
norum; Quum dederit rector donum alicui
è filiis ſuis, poſſeſſio ejus erit filiorum ejus.
Quum autem donum dederit de poſſeſſione 17
ſua alicui ſervorum ſuorum, ipſius erit uſque
ad annum quo manumittetur, tum redibit ad
ipſum rectorem: poſſeſsio verò filiorum ejus,
ipſorum erit. Et ne accipiat rector de poſ- 18
ſeſsione populi, néve deturbet eos de poſſeſ-
ſione eorum; ſed de poſſeſsione ſua hæredita-
ditatem tradat filiis ſuis, ne diſpergantur po-
pulus meus quiſque de poſſeſsione ſua. Poſtea 19
introduxit me per aditum qui erat ſecus janu-
am exedræ intimæ Sanctuarii ſacerdotum, quæ
reſpiciebat Aquilonem: vidíque ibi eſſe lo-
cum *quendam* ad margines ejus ab Occidente.
Et dixit mihi, Hic eſt locus in quo coquunt 20
ſacerdotes expiationem peccatorum, & in
quo ſimilam depſunt, ne egrediantur ad atriū
exterius, & ſanctificent populum. Tum edu- 21
cens me ad atrium exterius traduxit per qua-
tuor latera atrii, & vidi atrium in latere atrii,
atriúmque alterum in latere alterius atrii, In 22
quatuor lateribus iſtius atrii, atria exigua,
quadraginta cubitorum longitudine, triginta
verò latitudine: Et exedræ circundabant iſta 23
quatuor. Dixítq; mihi, Hæc eſt culina in qua 24
victimam populi coquunt miniſtri domûs.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܙ *

CAP. XLVII.

* ܘܗܦܟ ܐܥܠܢܝ ܠܬܪܥܗ ܕܒܝܬܐ. ܘܚܙܝܬ ܡܝܐ ܕܢܦܩܝܢ ܡܢ ܬܚܝܬ ܐܣܩܘܦܬܐ
ܡܕܢܚܝܬܐ ܕܒܝܬܐ. ܘܢܚܬܝܢ ܗܘܘ ܡܝܐ ܡܢ ܣܛܪܗ ܕܒܝܬܐ. ܡܢ ܬܝܡܢܗ ܕܡܕܒܚܐ.
* ܘܐܦܩܢܝ ܠܬܪܥܐ ܓܪܒܝܐ. ܘܐܚܕܪܢܝ ܡܢ ܠܒܪ ܠܘܬ ܬܪܥܐ ܕܕܪܬܐ ܕܚܙܐ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܚܙܝܬ
ܡܝܐ ܕܢܦܩܝܢ ܡܢ ܣܛܪܗ ܕܝܡܝܢܐ.

ET cùm rurſus introduxiſſet me per por- 1
tam domûs, vidi aquas exeuntes de ſub limi-
ne Orientali domûs: & aquæ illæ decurre-
bant à latere domûs ab Auſtrali plaga altaris.
Inde me eduxit per portam Aquilonarem, & 2
circunduxit me foris ſecus portam atrii, quæ
reſpiciebat Orientem: vidíque aquas egre-
dientes è latere ipſius dextro.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ومنا يصنع عليه بالغداة سدس كيل * وثلث قسط زيتا * ليخلط السميذ منا للرب * امرا ابدا
كل حين * يصنع الحمل والمن والزيت يصنع بالغداة محرقة كل حين * هكذا يقول
ادوناي الرب * اذا اعطي المقدم عطية لواحد من بنيه الذي من ميراثه * هذا تكون
لبنيه هذه ضبط الميراث * واذا اعطي عطية من ميراثه لواحد من عبيده * فتكون له الي
سنة الصفح * ويردها للمقدم * لكن ميراث بنيه يكون لهم * ولا ياخذ المقدم من ميراث شعبي
ليتسلط عليهم * من ضبطه من ميراثه يورث لبنيه * كيلا يتفرق شعبي كل واحد من ضبطه
* وادخلني مدخل الباب الذي في الظهر الي مقصورة اقداس الكهنة * الناظر الي الجربياء
واذا هناك موضع معتزل * وقال لي * هذا هو الموضع حيث تطبخ هناك الكهنة ما هو من
اجل الجهل * وما هو من اجل الخطية * وهناك يخبزون المن الذي عن الكل * ليلا يخرجوها
الي هذه الدار الخارجة ليقدسوا الشعب * واخرجني الي الدار الخارجة * وطوفني على اربع نواحي
الدار * واذا دار في جوانب الدار ودار في الجانب الاخر * على اربعة جوانب الدار دار صغير
طولها اربعون ذراعا * وعرضها ثلثون ذراعا * قياس في الاربعة * ومقاصير دائرة بها * دائر
بالاربعة * ومطابخ صائرة اسفل المقاصير دائرة * وقال لي * هولاء بيوت المطابخ حيث يطبخ هناك
الذين يخدمون البيت ذبائح الشعب *

* الفصل السابع والاربعون *

* وادخلني الي دهاليز البيت * واذا ماء خرج من تحت معتبة البيت في المشارق * لان وجه
البيت ناظر نحو المشارق * والماء نزل من الجانب الايمن من التيمن الي المذبح * واخرجني في
طريق الباب الذي نحو الجربياء * وطوفني الطريق من خارج الي باب الدار الناظر نحو
المشارق واذا ماء جري من الجانب الايمن *

Et man faciet ſuper eum in matutino 14
ſextam partem menſuræ, & tertiam
partem queſti olei ad miſcendum ſimi-
lam, man Domino. Præcepto ſempiter-
no perenni tempore. Faciet agnum & 15
man, oleumque faciet in matutino, ho-
locauſtum perenni tempore. Ita dicit 16
Adonai Dominus; Cùm dederit dux
donum alicui filiorum ſuorum hæredum
ſuorum, illud manebit filiis ejus, illud
erit poſſeſſio hæreditaria. Verùm ſi 17
donum dederit ex hæreditate ſua alicui
ſervorum ſuorum, manebit huic uſque
ad annum remiſſionis, tum reſtituet il-
lud duci: ſed hæreditas filiorum ejus,
ipſis manebit. Et ne rapiat dux ex hæ- 18
reditate populi mei, opprimendo eos: ex
poſſeſſione ſua, ex hæreditate ſua relin-
quat hæreditatem filiis ſuis, ut non
diſpergatur populus meus unuſquiſque
à poſſeſſione ſua. Deinde introduxit 19
me in aditum portæ quæ erat à tergo
exedræ Sanctuarii ſacerdotum, ſpectan-
tis ad Aquilonem: & ecce ibi locum
ſeparatum. Dixitque mihi, Hic eſt 20
locus ubi coquunt ſacerdotes id quod
eſt pro ignorantia, & quod eſt pro
peccato: ibidémque depſunt man quod
pro his omnibus: ne efferentes illa in
hoc atrium exterius, populum ſanctifi-
cent. Inde me eduxit ad atrium ex- 21
terius, circunduxitque me per quater-
na atrii latera: & ecce atrium ad la-
tera ejus atrii, & atrium ad alterum
latus. Ad quaterna ejus atrii latera, 22
atrium erat parvum, longitudine qua-
draginta cubitorum, latitudine triginta
cubitorum: menſura quatuor iſtis ea-
dem: Et exedræ circum ea, circum 23
ipſa quatuor jacebant: & culinæ factæ
ſub exedris per gyrum. Et dixit mihi, 24
Hæ ſunt domus culinariæ, ubi co-
quunt ii qui miniſtrant domui, ſacrifi-
cia populi.

CAP. XLVII.

INde me introduxit in porticus domûs, 1
& ecce aqua effluebat de ſub limine do-
mûs ad Orientem: frons enim domûs ſpe-
ctabat Orientem versùs: & aqua illa de-
ſcendebat à latere dextro, ab Auſtro ad
altare. Poſteà eduxit me per viam por- 2
tæ quæ erat Aquilonem versùs, circun-
duxitque per viam forinſecùs ad portam
atrii ſpectantem ad Orientem: & ecce a-
qua decurrebat à latere dextro.

יחזקאל : מז

eſt menſus Et .ejus manu in *linea* & ,Orientem *virum* *egrediendo In*
3 בצאת־האיש קדים וקו בידו וימד
,*talorum* aquas , aquas *in* me fecit tranſire & , cubito in mille
אלף באמה ויעברני במים מי אפסים׃
.*poplitum* aquas , aquas *in* me fecit tranſire & , mille eſt menſus Et
4 וימד אלף ויעברני במים מים ברכים
.*lumborum* aquas me fecit tranſire & , mille eſt menſus Et
וימד אלף ויעברני מי מתנים׃
: tranſire poteram non quem , torrentem , mille eſt menſus Et
5 וימד אלף נחל אשר לא־אוכל לעבר
qui , *torrentem* ; *natationis* aquæ , aquæ ſe elevaverant quoniam
כי־גאו המים מי שחו נחל אשר
fili vidiſti Nonne : me ad dixit Et .*tranſibatur* non
6 לא־יעבר׃ ויאמר אלי הראית בן־
labium *ſuper* me convertit & , me ire fecit Et ? hominis
אדם ויולכני וישבני על־שפת
torrentis *labium* *ad* ecce & , me *convertendo In* .torrentis
7 הנחל׃ בשובני והנה אל־שפת הנחל
: me ad dixit Et .inde & , hinc : valdè *multum* *lignum*
8 עץ רב מאד מזה ומזה׃ ויאמר אלי
, orientalem *revolutionem* ad *egredientes* iſtæ Aquæ
המים האלה יוצאים אל־הגלילה הקדמונה
mare *ad* mare intrabunt & : planitiem *ſuper* deſcendent &
וירדו על־הערבה ובאו הימה אל־הימה
anima omnis , erit Et .aquæ ſanabuntur & , *eductæ*
9 המוצאים ונרפאו המים׃ והיה כל־נפש
illuc *intraverit* *quod* *omne* *ad* , *ſerpet* quæ ,vivens
חיה אשר־ישרץ אל כל־אשר יבוא שם
quia : valde *multus* *piſcis* *erit* & : vivet , torrentes duo
נחלים יחיה והיה הדגה רבה מאד כי
omne vivet & ,ſanabuntur & , iſtæ aquæ illuc intraverunt
באו שמה המים האלה וירפאו וחי כל
eo *ſuper* ſtabunt , erit Et .torrens illuc intraverit *quod*
10 אשר־יבוא שמה הנחל׃ והיה יעמדו עליו
extenſio ,Heghlaim Hen ad uſque & , Ghedi---Hen ab piſcatores
דוגים מעין גדי ועד־עין עגלים משטוח
maris piſcis ſicut ,eorum *piſcis* *erit* ſua ſpecie In .erunt *reticulis*
לחרמים יהיו למינה תהיה דגתם כדגת הים
, ſanabuntur non & , ejus *foſſæ* &,ejus Cœnoſa .valde *multus* , magni
11 הגדול רבה מאד׃ בצאתו וגבאיו ולא ירפאו
ejus *labium* *ſuper* aſcendet torrentem *ſuper* Et .dabuntur *ſalem* in
12 למלח נתנו׃ ועל־הנחל יעלה על־שפתו
nec , ejus folium defluet non : *cibi* *lignum* *omne* indè & hinc
מזה ומזה כל־עץ־מאכל לא־יבול עלהו ולא־
ejus aquæ quia , maturabit ſuis menſibus *In* .ejus fructus conſumetur
יתם פריו לחדשיו יבכר כי מימיו
, cibum in ejus fructus erit Et .*egredientes* *ipſæ* ſanctuario de
מן־המקדש המה יוצאים והיו פריו למאכל
Iſte : *Dominus* Dominus dixit Sic .*medelam* ad ejus folium &
13 ועלהו לתרופה׃ כה אמר אדני יהוה גה
duodecim terram dividetis hæreditatem quo terminus
גבול אשר תתנחלו את־הארץ לשני עשר
eam accipietis hæreditate Et .*funiculi* Joſeph : Iſrael tribubus
14 שבטי ישראל יוסף חבלים׃ ונחלתם אותה
eam *dandum ad* , meam manum levavi quam ſuus frater ſicut *vir*
איש כאחיו אשר נשאתי את־ידי לתתה
.hæreditatem in vobis hæc terra cadet & : veſtris patribus
לאבתיכם ונפלה הארץ הזאת לכם בנחלה׃
mari à , aquilonarem *angulum* ad terræ terminus hic Et
15 וזה גבול הארץ לפאת צפונה מן־הים
.Sedad in veniendum ad , Chethlon via magno
הגדול הדרך חתלן לבוא צדדה׃

Verſio VULG. LAT.

3 Cùm egrederetur vir ad Orientem, qui habebat funiculum
in manu ſua, & menſus eſt mille
cubitos : & traduxit me per a-
4 quam uſque ad talos. Rurſúmque menſus eſt mille, & traduxit
me per aquam uſque ad genua :
5 Et menſus eſt mille, & traduxit
me per aquam uſque ad renes.
Et menſus eſt mille, torrentem,
quem non potui pertranſire :
quoniam intumuerant aquæ profundi torrentis, qui non poteſt
6 tranſvadari. Et dixit ad me ;
Certè vidiſti, fili hominis. Et
eduxit me, & convertit ad ri-
7 pam torrentis. Cúmque me
convertiſſem, ecce in ripa torrentis ligna multa nimis ex utra-
8 que parte. Et ait ad me ; Aquæ
iſtæ, quæ egrediuntur ad tumulos ſabuli Orientalis, & deſcendunt ad plana deſerti, intrabunt
mare, & exibunt, & ſanabuntur
9 aquæ. Et omnis anima vivens,
quæ ſerpit, quocunque venerit
torrens, vivet : & erunt piſces
multi ſatis poſtquàm venerint
illuc aquæ iſtæ, & ſanabuntur,&
vivent omnia, ad quæ venerit
10 torrens. Et ſtabunt ſuper illas
piſcatores, ab Engaddi uſque ad
Engallim ſiccatio ſagenarum
erit : plurimæ ſpecies erunt piſcium ejus, ſicut piſces Maris
11 magni, multitudinis nimiæ : In
littoribus autem ejus, & in paluſtribus non ſanabuntur, quia
12 in ſalinas dabuntur. Et ſuper
torrentem orietur in ripis ejus
ex utraque parte omne lignum
pomiferum : non defluet folium
ex eo, & non deficiet fructus ejus : per ſingulos menſes afferet
primitiva, quia aquæ ejus de
Sanctuario egredientur: & erunt
fructus ejus in cibum, & folia e-
13 jus ad medicinam. Hæc dicit
Dominus Deus ; Hic eſt terminus, in quo poſſidebitis terram
in duodecim tribubus Iſrael :
quia Joſeph duplicem funiculum
14 habet. Poſſidebitis autem eam
ſinguli æquè ut frater ſuus;ſuper
quam levavi manum meam ut
darem patribus veſtris : & cadet
terra hæc vobis in poſſeſſionem.
15 Hic eſt autem terminus terræ :
ad plagam Septentrionalem, à
Mari magno via Hethalon, venientibus Sedada,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καθὼς ἔξοδος ἀνδρὸς ἐξεναντίας· καὶ μέτρον ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ· καὶ διεμέτρησε χιλίους ἐν τῷ μέτρῳ, καὶ διῆλθεν ἐν
4 τῷ ὕδατι ὕδωρ ἀφέσεως· Καὶ διεμέτρησε (β) χιλίους, καὶ διῆλθεν ἐν τῷ ὕδατι ὕδωρ
5 ἕως τῶν μηρῶν· Καὶ διεμέτρησε χιλίους (γ), καὶ διῆλθεν ὕδωρ ἕως ὀσφύος. καὶ διεμέτρησε χιλίους, καὶ οὐκ ἠδύνατο διελθεῖν, ὅτι ἐξύβριζεν (δ) ὡς χειμάῤῥου
6 ὃν οὐ διαβήσονται. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, (ε) Ἑώρακας υἱὲ ἀνθρώπου; καὶ (ζ) ἤγαγέ με, καὶ ἐπέστρεψέ με ἐπὶ τὸ χεῖλος τοῦ
7 ποταμοῦ, Ἐν τῇ ἐπιστροφῇ μου· καὶ ἰδοὺ ἐπὶ τοῦ χείλους τοῦ ποταμοῦ δένδρα (η) πολλὰ σφό-
8 δρα ἔνθεν καὶ ἔνθεν. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Τὸ ὕδωρ τοῦτο τὸ ἐκπορευόμενον εἰς τὴν Γαλιλαίαν τὴν πρὸς ἀνατολὰς, καὶ κατέβαινεν ἐπὶ τὴν Ἀραβίαν, καὶ ἤρχετο ἕως ἐπὶ τὴν θάλασσαν ἐπὶ τὸ ὕδωρ τῆς (θ) διεκβολῆς,
9 καὶ ὑγιάσει τὰ ὕδατα· Καὶ ἔσται πᾶσα ψυχὴ τῶν ζώων τῶν ἐκζεόντων, ἐπὶ πάντα ἐφ' ἃ ἂν ἐπέλθῃ ἐκεῖ ὁ ποταμὸς, ζήσεται· καὶ ἔσται ἐκεῖ ἰχθὺς πολὺς σφόδρα, ὅτι ἥκει ἐκεῖ τὸ ὕδωρ τοῦτο, καὶ ὑγιάσει, καὶ ζήσεται, πᾶν ἐφ' ὃ ἂν (ι) ἔλθῃ
10 ὁ ποταμὸς ἐκεῖ, ζήσεται. Καὶ στήσονται ἐκεῖ ἁλιεῖς ἀπὸ (κ) Ἰνγαδεὶν ἕως Ἐναγαλλείμ· ψυγμὸς σαγηνῶν ἔσται, καθ' (λ) ἑαυτὴν ἔσται· καὶ οἱ ἰχθύες αὐτῆς ὡς οἱ ἰχθύες τῆς θαλάσσης τῆς μεγάλης, πλῆθος πολὺ σφό-
11 δρα. Καὶ (μ) ἐν τῇ διεκβολῇ αὐτοῦ, καὶ ἐν τῇ ἐπιστροφῇ αὐτοῦ, καὶ ἐν τῇ ὑπεράρσει αὐτοῦ, οὐ μὴ ὑγιάσωσιν, εἰς ἅλας δέ-
12 δονται. Καὶ ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ (ν) ἀναβήσεται, ἐπὶ τοῦ χείλους αὐτοῦ ἔνθεν καὶ ἔνθεν, πᾶν ξύλον βρώσιμον, οὐ μὴ παλαιωθῇ (ξ) ἐπ' αὐτοῦ, οὐδὲ μὴ ἐκλείπῃ ὁ καρπὸς αὐτοῦ, τῆς καινότητος (ο) αὐτοῦ πρωτοβολήσει, ὅτι τὰ ὕδατα αὐτῶν ἐκ τῶν ἁγίων ταῦτα ἐκπορεύεται, καὶ ἔσται ὁ καρπὸς αὐτῶν εἰς βρῶσιν, καὶ (π) ἀνάβα-
13 σις αὐτῶν εἰς ὑγίειαν. Τάδε λέγει κύριος (ρ) θεὸς, Ταῦτα τὰ ὅρια κατακληρονομήσετε τῆς γῆς, ταῖς δώδεκα φυλαῖς τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ πρόσθεσις σχοινίσματος.
14 Καὶ κατακληρονομήσετε αὐτὴν ἕκαστος καθὼς ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ, εἰς ἣν ἦρα τὴν χεῖρά μου, τοῦ δοῦναι (σ) τοῖς πατράσιν αὐτῶν, καὶ πεσεῖται ἡ γῆ αὕτη ὑμῖν ἐν κληρονομίᾳ.
15 Καὶ ταῦτα τὰ ὅρια τῆς (ς) γῆς τῆς πρὸς Βοῤῥᾶν, ἀπὸ (τ) θαλάσσης τῆς μεγάλης τῆς καταβαινούσης καὶ περισχιζούσης τῆς εἰσόδου (υ) Ἡμασελδὰμ,

MS.A. (β) ἐν τῷ μέτρῳ χιλίους (γ) χειμάῤῥους, καὶ (δ) τὸ ὕδωρ *ὕδωρ ἕως ῥοῖζος χειμάῤῥου ὃ οὐ (ε) Εἰ ἑώρακας (ζ) ἀπήγαγέν με, καὶ ἐπέστρεψεν ἐπὶ (η) πολλὰ ἔνθεν καὶ ἔνθεν. (θ) ἐκβολῆς, (ι) ἐπέλθῃ (κ) Ἐνγαδδεὶν ἕως Ἐναγαλείμ· (λ) αὐτήν ἐστιν· καὶ οἱ ἰχθύες τῆς θαλάσσης τῆς μεγάλης οἱ ἰχθύες αὐτῆς, πλῆθος (μ)* ἔστη διεκβολῇ (ν) ἀναβήσει, (ξ) ἐξ αὐτοῦ, (ο) πρωτοβολήσει, διότι (π) ἡ ἀνάβασις αὐτῆς εἰς ὑγίαν. (ρ) ὁ θεὸς, (σ) αὐτὴν τοῖς (ς) γῆς πρὸς (τ) τῆς θαλάσσης (υ) Ἡμαθελδὰμ, Μαωθηρὰς Ἐφραμλειὰμ ἀναμέσον τῶν ὁρίων Ἡμὰθ, καὶ ἀναμέσον τῶν ὁρίων Δαμασκοῦ, Εὐνὰν καὶ τῆς Εὐνὰν, αἵ εἰσιν

3 (b) *Sicut exitus viri ex adverſo: & menſura in manu ejus. Et menſus eſt (c) mille in menſura: et tranſivit in aqua aquam remiſſionis:*
4 *Et menſus eſt mille: & tranſivit in aqua aquam uſque ad femora:*
5 *Et menſus eſt mille: et tranſivit aquā uſque ad lumbos: Et menſus eſt mille: & non potuit tranſire: (d) quoniam intumuit, ſicut torrentis, quem non pertranſibunt.*
6 *Et dixit ad me; Vidiſti, fili hominis? Et duxit me, & convertit me ad labium fluminis,*
7 *In (e) converſione mea, & ecce ſuper labium fluminis arbores multæ nimis hinc & indè.*
8 *Et dixit ad me; Aqua iſta, quæ egreditur (f) in Galilæam, quæ ad Orientem, & (g) deſcendebat in Arabiam, & veniebat uſque ad mare ad Aquam (h) exitûs; & ſanabit aquas:*
9 *Et erit omnis anima animalium (i) ebullientium, ad omnia, ad quæ ſupervenerit illuc fluvius, vivet: & erit ibi piſcis multus valdè: quia venit illuc aqua hæc, & ſanabit, & vivet: omne, ad quod venerit fluvius illuc, vivet.*
10 *Et ſtabunt ibi piſcatores: ab (k) Ingadim uſque ad Enagallim, ſiccatio ſagenarum erit. Secundum ſe erit, & piſces ejus, ſicut piſces Maris magni, multitudo magna nimis.*
11 *Et in exitu ejus, & in converſione ejus, & in elatione ejus non (l) ſanabunt: in ſales data ſunt.*
12 *Et ſuper fluvium aſcendet ſuper labium ejus hinc, & indè omne lignum eſcarium: (m) non veteraſcet in eo, neque deficiet fructus ejus: de (n) novitate ſua primitiva dabit: quia aquæ eorum è Sanctis (o) hæ egrediuntur: & erit fructus eorum in eſcam, & aſcenſio eorum ad ſanitatem.*
13 *Hæc dicit Dominus Deus; Hi termini hæreditabitis terræ duodecim tribubus Iſrael: (p) augmentum funiculi.*
14 *Et hæreditabitis eam unuſquiſque, ſicut frater ſuus, in quam levavi manum meam, ut darem patribus ipſorum. Et cadet terra hæc vobis in hæreditatem.*
15 *Et hi ſunt termini terræ, quæ ad Aquilonem, à Mari magno (q) deſcendente & abſcindente, introitu Emaſeldam,*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 במפק גברא מדנחא וחוט דמשחתא בידיה ומשח אלף אמין באמתא ואעבירני
4 במיא מי קרסולין׃ ומשח אלפיא ואעבירני במיא מי רכובין ומשח אלפא
5 ואעבירני מי חרצין׃ ומשח אלפא נחלא דלא יכלית למעבר ארי תקיפו מיא
6 מי סחיא נחלא דלא אפשר לאתעברא׃ ואמר לי החזיתא בר אדם ואובלני
7 ואתיבני על כיף נחלא׃ במתבי והא על כיף נחלא אילן סגי לחדא מכא
8 ומכא׃ ואמר לי מיא האלין נפקין בגלילא מדנחא ונחתין במישרא ועלין בימא
9 לימא רבא מתפקין ומתסן מיא׃ ויהי כל נפשא חיתא די רחשא לכל אתר די
עלון לתמן מי נחלא יחון ויהון נוניא סגי לחדא ארי עלין לתמן מיא האלין
10 ומתסן ומתקימין לכל אתר די יעלון לתמן מי נחלא׃ ויהי אתר למקם עלוהי
צידין מעין גדי ועד עין עגלים משטח לצידין יהון למינהון יהון נוניהון כנוני ימא
11 רבא סגי לחדא׃ בצוהי ופצירוהי לא יתסון למחפורין דמלח יהון׃ ועל נחלא
12 יסק אילן על כיפיה מכא ומכא כל אילן דמיכל לא יתרון טרפוהי ולא יפסק
אביה ירח בירח יהי עביד פרין ארי מוהי מן מקדשא אנון נפקין ויהון אביה
13 למיכל וטרפוהי לאסותא׃ כדנן אמר יי אלהים דין תחומא דתחסנון ית
14 ארעא לתרי עסר שבטי ישראל יוסף יתקבל תרין חולקין׃ ותחסנון יתה גבר
כאחוהי די קימית במימרי למתנה לאבהתכון ותתפליג ארעא הדא לכון
15 באחסנא׃ ודין תחום ארעא לרוח צפונא מן ימא רבא אורח חתלון למעלנא
רצדד׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Cùm egrederetur vir ab Oriente & funiculus menſuræ erat in manu ejus, & 3
menſus eſt mille cubitos in cubito, & traduxit me per aquas uſque ad talos.
Et menſus eſt mille, & traduxit me per aquas uſque ad genua : & menſus eſt 4
mille, & traduxit me per aquas uſque ad lumbos. Et menſus eſt mille, [& 5
ecce] torrens quem non potui pertranſire, quia prævaluerant aquæ aquæ
natationis, torrens qui non poteſt tranſvadari. Et dixit ad me : Nonne 6
vidiſti fili hominis ? & duxit me & convertit me ad ripam torrentis. Et 7
cùm reverſus eſſem,ecce ſuper ripam torrentis arbores multæ admodum hinc
& indè. Et dixit ad me : Aquæ iſtæ egrediuntur in tractum Orientalem, & 8
deſcendunt ad planitiem, & intrant per mare in mare magnum ; & egrediuntur & ſanantur aquæ. Et erit, omnis anima vivens quæ ſerpit, in 9
quemcunque locum intraverint aquæ torrentis, vivet, & erunt piſces multi valdè ; quia venient illuc aquæ iſtæ, & ſanabuntur & permanebunt in
omni loco quò intraverint aquæ torrentis. Et erit locus ubi ſtent piſca- 10
tores ab Engadi & uſque ad Eneglaim : expanſio piſcatorum erit : ſecundùm ſpecies ſuas erunt piſces eorum ſicut piſces maris magni multi nimis. Piſcinæ autem ejus & paludes non ſanabuntur, erunt enim in fodi- 11
nas ſalis. Et juxta torrentem aſcendet omne lignum in ripis ejus hinc & in- 12
dè : omnis arboris cujus fructus comeditur, non defluent folia, nec ceſſabunt fructus ejus ; per ſingulos menſes faciet fructum, quia aquæ ejus de ſanctuario egredientur, & erunt fructus ejus in cibum,& folia ejus in medicinam. Hæc dicit Dominus Deus : Hic eſt terminus in quo poſſidebitis 13
terram per duodecim tribus Iſrael : Joſeph accipiet duas portiones. Et 14
poſſidebitis eam ſinguli ſicut frater ſuus : quia juravi in verbo meo quod
darem eam patribus veſtris : & dividetur terra iſta vobis in hæreditatem.
Et iſte eſt terminus terræ ad plagam Septentrionalem, à mari magno via 15
Hethlon ad introitum Sedada.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܘܟܕ ܢܦܩ ܓܒܪܐ ܠܡܕܢܚܐ . ܘܚܘܛܐ ܕܡܫܘܚܬܐ ܒܐܝܕܗ. ܘܡܫܚ ܐܠܦ ܐܡܝܢ. ܘܐܥܒܪܢܝ
ܒܡܝܐ. ܥܕܡܐ ܠܩܘܪܣܠܐ. ܘܡܫܚ ܐܠܦ ܐܡܝܢ. * ܘܐܥܒܪܢܝ ܒܡܝܐ. ܥܕܡܐ
ܠܒܘܪܟܐ. ܘܡܫܚ ܐܠܦ ܐܡܝܢ. ܘܐܥܒܪܢܝ ܒܡܝܐ. ܥܕܡܐ ܠܚܨܐ. ܘܡܫܚ ܐܠ
ܐܡܝܢ. * ܢܚܠܐ . ܕܠܐ ܐܢܫ ܡܫܟܚ ܠܡܥܒܪܗ. ܡܛܠ ܕܐܣܓܝܘ ܡܝܐ ܘܡܛܐ
ܢܚܠܐ . ܘܠܐ ܐܢܫ ܡܫܟܚ ܠܡܥܒܪܗ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܚܙܝܬ ܒܪ ܐܢܫܐ . ܘܐܘܒܠܢܝ
ܘܐܘܬܒܢܝ ܥܠ ܣܦܬܗ ܕܢܚܠܐ. * ܘܟܕ ܗܦܟܬ . ܚܙܝܬ ܥܠ ܣܦܬܗ ܕܢܚܠܐ.
ܐܝܠܢܐ ܣܓܝܐܐ ܛܒ ܡܟܐ ܘܡܟܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܡܝܐ ܗܠܝܢ ܕܢܦܩܝܢ ܠܓܠܝ
ܕܡܕܢܚܐ ܘܢܚܬܝܢ ܠܓܪܒܝܐ . ܘܢܦܠܝܢ ܒܝܡܐ ܒܡܝܐ ܣܪܝܐ. ܘܡܬܚܠܝܢ ܡܝܐ
* ܘܟܠ ܢܦܫܐ ܚܝܬܐ ܕܪܚܫܐ ܐܝܟܐ ܕܐܙܠ ܡܝܐ ܕܢܚܠܐ . ܬܚܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܢܘܢܐ ܣܓܝܐܐ
ܡܛܠ ܡܝܐ ܗܢܘܢ. ܕܢܥܠܘܢ ܠܬܡܢ ܘܢܬܚܠܘܢ ܡܝܐ. * ܘܢܩܘܡܘܢ ܥܠܘܗܝ ܨܝܕܐ. ܡܢ ܥܝܢ
ܓܕܝ ܘܥܕܡܐ ܠܥܝܢ ܥܓܠܝܢ. ܡܫܛܚܐ ܕܡܨܝܕܬܐ ܢܗܘܘܢ ܘܢܗܘܘܢ ܒܗ ܢܘܢܐ ܣܓܝܐܐ
ܐܝܟ ܕܝܡܐ ܪܒܐ. * ܘܡܦܩܢܘܗܝ ܘܡܥܠܢܘܗܝ ܠܐ ܢܬܒܣܡܘܢ. ܐܠܐ ܢܗܘܘܢ ܡܠܝܚܐ. * ܘܥܠ
ܢܚܠܐ ܢܣܩܘܢ ܥܠ ܣܦܘܬܗ ܡܟܐ ܘܡܟܐ. ܟܠ ܐܝܠܢ ܕܡܐܟܘܠܬܐ. ܠܐ ܢܬܪܘܢ
ܛܪܦܝܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܚܣܪܘܢ ܦܐܪܝܗܘܢ. ܘܒܟܠ ܪܝܫ ܝܪܚ. ܢܗܘܘܢ ܡܒܟܪܝܢ. ܡܛܠ
ܕܡܝܐ ܕܫܬܝܢ. ܡܢ ܡܩܕܫܐ ܢܦܩܝܢ. ܢܗܘܘܢ ܦܐܪܝܗܘܢ ܠܡܐܟܘܠܬܐ . ܘܛܪܦܝܗܘܢ
ܠܐܣܝܘܬܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܢܚܠܐ ܕܬܚܘܡܝܗܘܢ ܕܝܪܬܝܢ ܠܗ ܠܐܪܥܐ. ܬܪܬܥܣܪ ܫܒܛܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܕܝܘܣܦ ܒܚܒܠܐ. * ܘܬܐܪܬܘܢܗ ܐܢܫ ܐܝܟ ܐܚܘܗܝ. ܕܐܪܝܡܬ ܐܝܕܝ ܕܐܬܠܝܗ
ܠܐܒܗܝܟܘܢ. ܘܬܦܠ ܠܟܘܢ ܐܪܥܐ ܒܝܪܬܘܬܐ. * ܘܗܢܘ ܬܚܘܡܗ ܕܐܪܥܐ. ܠܓܪܒܝܐ ܡܢ
ܝܡܐ ܪܒܐ . ܐܘܪܚܐ ܕܚܛܠܘܢ. ܕܡܥܠܐ ܠܨܕܕ.

Cúmque egreſſus eſſet vir ille, glorioſus erat, menſurâ manu ſuâ tenens, & menſus eſt mille cubitos : deinde progredi me fecit per aquas ad talos uſque, & menſus eſt mille cubitos : 3
Tum progredi me fecit per aquas ad genua uſque, & menſus eſt mille cubitos : rurſum progredi me fecit per aquas ad lumbos uſque, & menſus eſt mille cubitos; 4
Torrentem quem nemo vadare poterat, quia creverant aquæ & intumuerat torrens adeo ut nemo poſſet eum tranſvadare. 5
Et dixit mihi, Vidéſne fili hominis? Deinde perduxit me collocavitque ſuper ripam torrentis : 6
Et cùm ſediſſem, vidi ſupra torrentis ripam arbores plurimas admodum hinc inde. 7
Dixítque mihi; Aquæ iſtæ quæ progrediuntur versùs Galilæam quæ eſt ad Orientem, defluúntque ad Aquilonē; inde decidunt in mare in aquas fœtentes, fiúntque ſuaves aquæ illæ : 8
Atque ita omnes animæ viventes quæ gignuntur ubi ſunt aquæ torrentis hujus, vivunt, fiúntque piſces plurimi propter aquas iſtas; quòd ibi ſe exonerent, & ſuaves reddantur aquæ illæ : 9
Quapropter commorabuntur illic piſcatores, & ab In-god uſque ad In-eglin erunt loca ad expandenda retia : erúntque in eo piſces plurimi ſicut maris magni. 10
At exitus & ingreſſus ejus minimè dulceſcent, ſed ſaliti manebunt. 11
Et ad ipſummet torrentem pullulabunt ſuper ripas ejus hinc inde omnigenæ arbores eſculentæ, quarum folia minimè labentur, neque fructus deficient; & quovis initio menſium præcoces fructus edent : quoniam aquæ quas ebibent, è Sanctuario egrediuntur, erunt fructus earum in cibum, & folia in medicinam. 12
Sic dicit Dominus dominorum; Torrentes limitis eorum qui poſſeſſuri ſunt hanc terram, duodecim tribuū Iſraelis erunt atque Joſephi, funiculo *dividendi* : 13
Ut poſſideatis eam quiſque à fratribus ſuis, quam ſublatâ manu *juravi* me daturum patrib⁹ veſtris; dividetur inquam, inter vos terra in poſſeſſionem. 14
Hic eſt ergò terminus terræ: Aquilonem versùs inde à mari magno, iter Hethronis quod ingreditur in Sedad : 15

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* كمثل خروج الرجل مقابلي * وقياس في يدك * فقاس الفا بالقياس * وعبر في الما ماء نبع
وقاس الفا بالقياس * وعبر في الما ماء الي الفخذين * وقاس الف واد * وجاز الما الي الحقو
وقاس الفا * فلم يستطع ان يعبر * لان الما فاض جدا * ماء الي فرية الوادي لا يجوزون فيه
* وقال لي * ارايت يا ابن الانسان * وروحني وعادني الي ساطي النهر * وفي عودي واذا على
ساطي النهر اشجار كثيرة من هاهنا ومن هاهنا * وقال لي * هذا الما الخارج الي الجليل
الذي نحو المشارق * ونزل الي ارابيا * واتي حتي الي البحر الي ماء البعد * فيشفي المياه * ويكون
كل نفس الحيوانات الذين يتناسلون * على كل ما ياتي عليه النهر هناك يحيي * ويكون هناك
سمك كثير جدا * لان هذا الما اتي هناك ويعافيها * فيحيي * لان كل ما ياتي عليه النهر هناك
يحيي * ويقف هناك الصيادون * من انعجدين الي انعاجليم يكون نصب الشباك عليها * وكسمك
البحر الاعظم اسماكه كثير كثير جدا * ووقف مخرجه * وفي عوده وفي ارتفاعه لا
يتقدسون * يتنجرون للملح * وعلي النهر يصعد على ساطيه من هاهنا ومن ههنا كل شجر
ماكولة * ولا تبلي منه ولا تفني ثمرتها * اذ تبتدي تخرج للتجديد * من اجل ان هذه المياه
هي من الاقداس تخرج * ويكون ثمرهم للاكل * وصعدهم للشفا *

Velut exitus viri ex adverſo mei, & menſura in manu ejus. Et menſus eſt mille in menſura: & tranſivit per aquā, aquam fontis, & menſus eſt mille in menſura. 3
Rurſus per aquam tranſivit aquam uſque ad femora, & menſus eſt mille torrentes : & penetravit aquam ad lumbum uſque, & menſus eſt mille : 4
Nec potuit progredi, quia aqua vehementer inundabat, aqua ad oram torrentis, quæ penetrari non poterat. 5
Dixitque mihi, Vidiſtine O fili hominis? Tum abduxit me, reduxitque ad ripam fluminis. 6
Quò cùm reverſus eſſem, ecce ad ripam fluminis arbores plurimas hinc inde. 7
Et dixit mihi, Aqua iſta quæ effluit ad Galilæam quæ eſt Orientem verſus, decurritque in Arabiam, & pervenit uſque ad mare, ad aquam remotam; ſanabit aquas. 8
Et erit ut omnis anima animantium quæ progignuntur, omne id ſuper quod flumen iſtud advenerit, vivat; & futuri ſint illic piſces admodum plurimi : quoniam aqua iſta eò ventura eſt, illaſque ſanatura; ideò vivent. Nam omne id ſuper quod flumen iſtud advenerit, vivit. 9
Et manebunt ibi piſcatores : ab Engaddin uſque ad Engalim erit ſuper eas teſio retium : & ut piſces maris magni, erunt piſces ejus, copiâ abundantiſſimâ. 10
Et conſiſtet exitus ejus, & in regreſſu & elatione ejus non ſanctificabuntur, ſuffientur ſali. 11
Et ſuper fluminis ripa creſcet hinc inde omnis arbor eſculenta, & non deerunt ab eo neque deficient fructus earum, cùm ad novitatem prodire cœperint; quoniam aquæ è Sanctuario effluunt : & erunt fructus earum in eſcam, & incrementum earum in ſanitatem. 12

* الاصحاح الثامن والعشرون *

Textus vigeſimus octavus.

* هكذا يقول الرب الاله * هذه حدود الارض التي تورث لاثني عشر قبايل في اسرايل زيادة
الحبل * ويرثها كل واحد كمثل اخيه * هذه التي رفعت يدي عليها لاعطيها لاباهم * وتسقط
هذه الارض لكم في الميراث * وهذه حدود الارض نحو الجربياء من البحر الاعظم الذي ينزل
ويسمى مدخل اعمات *

Ita dicit Dominus Deus; Hi ſunt termini terræ quæ in hæreditatem tradetur duodecim familiis filiorum Iſraelis augmento funiculi, 13
Quámque hæreditariò poſſidebit unuſquiſque ſicut frater ſuus. Hæc eſt de qua levavi manum meam daturum me patribus eorum : atq; hæc terra continget vobis in hæreditatem. 14
Hi ſunt igitur terræ limites Aquilonem versùs, à mari maximo quod deſcendit ac dividit aditum Emath : 15

יחזקאל : מז

inter &,Dammeſec terminum inter quæ Sibraim ,Berothah ,Chamath
16 חמת ברותה סברים אשר בין־גבול דמשק ובין
.Chauran terminum ad quæ ,Hathichon Chaſer ; Chamath terminum
גבול חמת חצר התיכון אשר אל־גבול חורן:
,Dammeſec terminus ,Henon ,Chaſar mari à terminus erit Et
17 והיה גבול מן־הים חצר עינון גבול דמשק
.Aquilonis angulum & : Chamath terminus & ,Aquilonem ad Aquilo &
וצפון צפונה וגבול חמת ואת פאת צפון:
,Dammeſec inter ab & ,Chauran inter ab orientalem angulum Et
18 ופאת קדים מבין חורן ומבין דמשק
ſuper termino à Jarden Iſrael terram inter ab & ,Ghilhad inter ab &
ומבין הגלעד ומבין ארץ ישראל הירדן מגבול על־
angulum Et orientalem angulum & : metiemini orientale mare
19 הים הקדמוני תמדו ואת פאת קדימה: ופאת
contradictionum aquas ad uſque Thamar à ,auſtrum ad meridiei
נגב תימנה מתמר עד־מי מריבות
.Meridiem ad Auſtri angulum & : magnum mare ad torrentem ,Cades
קדש נחלה אל־הים הגדול ואת פאת תימנה נגבה:
introitum ad contra uſque termino à magnum mare maris angulum Et
20 ופאת־ים הים הגדול מגבול עד־נכח לבוא
hanc terram dividetis Et .maris angulus hic : Chamath
21 חמת זאת פאת־ים: וחלקתם את הארץ הזאת
hæreditatem in eam cadere facietis ,erit Et .Iſrael tribubus vobis
22 לכם לשבטי ישראל: והיה תפלו אותה בנחלה
genuerint qui ,veſtrum medio in peregrinantibus peregrinis & , vobis
לכם ולהגרים הגרים בתוככם אשר הולדו
filios inter indigena ſicut vobis erunt & : veſtrum medio in filios
בנים בתוככם והיו לכם כאזרח בבני
.Iſrael tribuum medio in hæreditate in cadent vobiſcum , Iſrael
ישראל אתכם יפלו בנחלה בתוך שבטי ישראל:
dabitis ibi , eo cum peregrinus peregrinans qua tribu in , erit Et
23 והיה בשבט אשר־גר הגר אתו שם תתנו
.Dominus Dominus dixit ,ejus hæreditatem
נחלתו נאם אדני יהוה:

CAP. XLVIII. מח

manum ad aquilonem ad fine à : tribuum nomina hæc Et
1 ואלה שמות השבטים מקצה צפונה אל־יד
,Dammeſec terminus ,Henan ,Chaſar ,Chamath veniendo Chethlon viæ
דרך־חתלן לבוא־חמת חצר עינן גבול דמשק
,mare orientalis angulus ei erunt Et .Chamath manum ad Aquilonem ad
צפונה אל־יד חמת והיו־לו פאת קדים הים
angulum ad uſque orientali angulo ab Dan terminum ſuper Et .una Dan
2 דן אחד: ועל גבול דן מפאת קדים עד־פאת
,Orientali angulo ab Aſer terminum ſuper Et .una Aſer ,maris
3 ימה אשר אחד: ועל גבול אשר מפאת קדימה
terminum ſuper Et .una Naphthali , maris angulum ad uſque &
4 ועד־פאת־ימה נפתלי אחד: ועל גבול
.una Menaſſeh ,maris angulum ad uſque,Orientali angulo ab Naphthali
נפתלי מפאת קדמה עד־פאת־ימה מנשה אחד:
angulum ad uſque ,Orientali angulo ab ,Menaſſeh terminum ſuper Et
5 ועל גבול מנשה מפאת קדמה עד־פאת
,Orientali angulo ab Ephraim terminum ſuper Et .una Ephraim ,maris
6 ימה אפרים אחד: ועל גבול אפרים מפאת קדים
.una Reuben ,maris angulum ad uſque &
ועד־פאת־ימה ראובן אחד:

Verſio VULG. LAT.

16 Emath, Berotha, Sabarim, quæ eſt inter terminum Damaſci & confinium Emath, domus Tichon, quæ eſt juxta terminum Auran. 17 Et erit terminus à Mari uſque ad atrium Enon terminus Damaſci, & ab Aquilone ad Aquilonem: terminus Emath plaga Septentrionalis. 18 Porrò plaga Orientalis de medio Auran, & de medio Damaſci, & de medio Galaad, & de medio terræ Iſrael, Jordanis diſterminans ad mare Orientale, metiemini etiam plagam Orientalem. 19 Plaga autem Auſtralis meridiana, à Thamar uſque ad aquas Contradictionis Cades: & torrens uſque ad Mare magnum: & hæc eſt plaga ad Meridiem auſtralis. 20 Et plaga Maris, Mare magnum à confinio per directum, donec venias Emath: hæc eſt plaga Maris. 21 Et dividetis terram iſtam vobis ꝑ tribus Iſrael: 22 Et mittetis eam in hæreditatem vobis, & advenis, qui acceſſerint ad vos, qui genuerint filios in medio veſtrûm: & erunt vobis ſicut indigenæ inter filios Iſrael: vobiſcum divident poſſeſſionem in medio tribuum Iſrael. 23 In tribu autem quacunque fuerit advena, ibi dabitis poſſeſſionem illi, ait Dominus Deus.

CAP. XLVIII.

1 ET hæc nomina tribuum à finibus Aquilonis juxta viam Hethalon pergentibus Emath, atrium Enan terminus Damaſci ad Aquilonem juxta viam Emath: Et erit ei plaga Orientalis Mare, Dan una. 2 Et ſuper terminum Dan, à plaga Orientali uſque ad plagam Maris, Aſer una: 3 Et ſuper terminum Aſer, à plaga Orientali uſque ad plagam Maris, Nephthali una. 4 Et ſuper terminum Nephthali, à plaga Orientali uſque ad plagam Maris, Manaſſe una. 5 Et ſuper terminum Manaſſe, à plaga Orientali uſque ad plagam Maris, Ephraim una. 6 Et ſuper terminum Ephraim, à plaga Orientali uſque ad plagam Maris, Ruben una.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Μααβθηρὰς Ἑβραμηλιὰμ ἀναμέσον ὁρίων Δαμασκοῦ καὶ ἀναμέσον ὁρίων Ἡμαθεὶ, αὐλὴ τοῦ Σαυνὰν, αἵ εἰσιν ἐπάνω τῶν ὁρίων Αὐρανίτιδος. 17 Ταῦτα τὰ ὅρια ἀπὸ τῆς θαλάσσης, ἀπὸ τῆς αὐλῆς τοῦ Αἰνὰν, ὅρια Δαμασκοῦ, καὶ τὰ πρὸς (φ) Βορρᾶν. 18 Καὶ τὰ πρὸς ἀνατολὰς ἀναμέσον τῆς (χ) Αὐρανίτιδος, καὶ ἀναμέσον Δαμασκοῦ, καὶ ἀναμέσον τῆς Γαλααδίτιδος, καὶ ἀναμέσον τῆς γῆς τοῦ Ἰσραὴλ, ὁ Ἰορδάνης διορίζει ἐπὶ τὴν θάλασσαν, τὴν πρὸς ἀνατολὰς φοινικῶνος· ταῦτα τὰ πρὸς ἀνατολάς. 19 Καὶ τὰ πρὸς Νότον καὶ Λίβα ἀπὸ Θαιμὰν καὶ φοινικῶνος, ἕως ὕδατος Μαριμὼθ (ψ) Καδὴμ, παρεκτεῖνον ἐπὶ τὴν θάλασσαν τὴν μεγάλην· τοῦτο τὸ μέρος Νότος καὶ Λίψ. 20 Τοῦτο τὸ μέρος τῆς θαλάσσης τῆς μεγάλης (ω) ὁρίζει, ἕως κατέναντι τῆς εἰσόδου Ἡμὰθ, ἕως εἰσόδου αὐτοῦ· ταῦτά ἐστι τὰ πρὸς θάλασσαν Ἡμάθ. 21 Καὶ (α) διαμερίσετε τὴν γῆν ταύτην αὐτοῖς, (β) ταῖς φυλαῖς τοῦ Ἰσραήλ. 22 Βαλεῖτε αὐτὴν ἐν κλήρῳ, ὑμῖν καὶ τοῖς προσηλύτοις τοῖς (γ) παροικοῦσιν ἐν μέσῳ ὑμῶν, οἵτινες ἐγέννησαν υἱοὺς ἐν μέσῳ ὑμῶν, καὶ ἔσονται (δ) ὑμῖν ὡς αὐτόχθονες ἐν τοῖς υἱοῖς τοῦ Ἰσραήλ· μεθ᾽ ὑμῶν φάγονται ἐν κληρονομίᾳ ἐν μέσῳ τῶν (ε) φυλῶν τοῦ Ἰσραήλ. 23 Καὶ ἔσονται ἐν φυλῇ προσηλύτων ἐν τοῖς προσηλύτοις τοῖς μετ᾽ αὐτῶν· ἐκεῖ δώσετε κληρονομίαν αὐτοῖς, λέγει κύριος (ζ) θεός.

MS. A. (φ) Βορρᾶν κατὰ Βορρᾶν, καὶ τὸ ὅριον Αἰμὰθ τὸ ὅριον Βορρᾶ. Καὶ τὰ πρὸς (χ) Ὡρανίτιδος, (ψ) Καδὴς, (ω) διορίζει, (α) * διεμέτρησεν (β) καὶ ταῖς (γ) προσοικοῦσιν (δ) ὑμῖν (ε) τῶν Ἰσραὴλ, (ζ) ὁ θεός.

Maabbethas Hebamathan inter terminos Damaſci, & terminos Emath, atrium Sauam: quæ ſunt ſupra terminos Auranitidis. Hi ſunt termini à Mari ab atrio Ænan, termini Damaſci, & qui ad Aquilonem (φ). Et qui ad Orientem, inter Lauranitidem, & Damaſcum, & inter Galaaditidem, & terram Iſrael, Jordanis diſterminat ad Mare, quod ad Orientem Phœnicis. Hi ad Orientem. Et qui ad Auſtrum, & Africum à Theman, & palmeto uſque ad aquam Marimoth Cadim extendens ad Mare magnum. Hæc pars (ψ) Auſter, & Africus: Hæc pars Maris magni diſterminat, uſque contra introitum Emath, uſque ad introitum ejus. Hi ſunt qui ad mare Emath. Et partiemini hanc terram illis tribubus Iſrael: Mittetis eam in ſortem vobis, & advenis qui incolant in medio veſtri, qui genuerint filios in medio veſtri: & erunt vobis quaſi indigenæ in filiis Iſrael: vobiſcum comedent in hæreditate in medio tribuum Iſrael: Et erunt in tribu advenarum inter advenas, qui vobiſcum: ibi dabitis hæreditatem eis, ait Dominus Deus.

ΚΕΦ. μη'.

1 ΚΑὶ ταῦτα τὰ ὀνόματα τῶν φυλῶν ἀπὸ τῆς ἀρχῆς τῆς πρὸς Βορρᾶν, κατὰ τὸ (α) μέρος τῆς καταβάσεως τοῦ περισχίζοντος ἐπὶ τὴν εἴσοδον τῆς Ἡμὰθ αὐλῆς τοῦ (β) Αἰλὰμ, ὅριον Δαμασκοῦ πρὸς Βορρᾶν κατὰ (γ) μέρος Ἡμὰθ αὐλῆς. καὶ ἔσται αὐτοῖς τὰ πρὸς ἀνατολὰς ἕως πρὸς θάλασσαν, Δὰν, μία. 2 Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων (δ) τοῦ Δὰν τὰ πρὸς ἀνατολὰς, (ε) ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν, Ἀσὴρ, μία. 3 Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων (ζ) Ἀσὴρ, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς, ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν, Νεφθαλὶμ, μία. 4 Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων (η) Νεφθαλὶμ, ἀπὸ ἀνατολῶν, ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν, Μανασσῆ, μία. 5 Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων Μανασσῆ, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς, (θ) τῶν πρὸς θάλασσαν, Ἐφραὶμ, μία. 6 Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων Ἐφραὶμ, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς, ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν, Ῥουβὴν μία.

MS. A. (α) μέρους (β) Αἰνὰν, (γ) τὸ μέρος (δ) Δὰν πρὸς (ε) ἕως πρὸς θάλασσαν, Ἀσὴρ, (ζ) Ἀσὴρ, (η) Νεφθαλὶ, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς, ἕως (θ) ἕως τῶν

CAP. XLVIII.

ET hæc nomina tribuum ab initio, quod ad Aquilonem, ſecundum partem deſcenſus præſcindentis ad introitum Emath atrii (a) Ælam, terminus Damaſci ad Aquilonem, ſecundum partem Emath atrii. Et erunt eis, quæ ad Orientem uſque ad Mare, Dan (b) una. Et à terminis Dan, quæ ad Orientem uſque ad Mare, Aſſer una. Et à terminis Aſſer, ab iis quæ ad Orientem uſque ad ea quæ ad Mare, Nephthalim una. Et à terminis Nephthalim, ab Oriente uſque ad ea quæ ad Mare, Manaſſes una. Et à terminis Manaſſe, ab iis quæ ad Orientem ad ea quæ ad Mare, Ephraim una. Et à terminis Ephraim, ab iis quæ ad Orientem uſque ad ea quæ ad Mare, Ruben una.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 חמת ברותה סברים די בין תחום דמשק ובין תחום חמת בירכת עגבאי די על תחום
17 חורן: ויהי תחומא מן ימא חצר עינון תחום דמשק וצפונא צפונא ותחום חמת וית
18 רוח צפונא: ורוח מדנחא מבין חורן ומבין דמשק ומבין גלעד ומבין ארעא דישראל
19 ירדנא מתחומא די על ימא מדנחא תמשחון וית רוח קדומא: ורוח עבר דרומא
20 מיריחו עד מי מצות רקם אחסנא לימא רבא וית רוח דרומא דדרומא: ורוח מערבא
21 ימא רבא מתחומא עד מקביל מעלנא דחמת דא רוח מערבא: ותפלגון ית ארעא
22 הדא לכון לשבטיא דישראל: ויהי דתפלגון יתה באחסנא לכון ולגיוריא די יתגיירון
ביניכון דאולידו בנין ביניכון ויהון לכון כיציבא בבני ישראל עמכון יפלגון באחסנא
23 בגו שבטי ישראל: ויהי שבטא די יתגייר גיורא בגויה תמן תתנון אחסנתיה אמר
יי אלהים:

מח

1 ואלין שמהת שבטיא מסיפי צפונא על תחום אורח חתלון מעלנא דחמת חצר
עינן תחום דמשק צפונא על תחום חמת ויהון ליה רוח קדומא מערבא דן חד:
2 ועל תחום דן מרוח מדנחא עד רוח מערבא אשר חד: ועל תחום אשר
3 מרוח מדנחא ועד רוח מערבא נפתלי חד: ועל תחום נפתלי מרוח מדנחא
4 עד רוח מערבא מנשה חד: ועל תחום מנשה מרוח מדנחא עד רוח מערבא
5 אפרים חד: ועל תחום אפרים מרוח מדנחא ועד רוח מערבא ראובן חד:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Hamath, Beroth, Sebarim, quæ eſt inter terminum Damaſci, & inter terminum Hamath, piſcina Agbitica, quæ eſt juxta terminum Hauran. Et erit terminus à mari in Haſerenan & terminus Damaſci: & ab Aquilone in Aquilonem & terminus Hamath & plaga Septentrionalis. Et plagam Orientalem de medio Hauran, et de medio Damaſci, & de medio Gilgad, & de medio terræ Iſrael ad Iordanem, à termino qui eſt ad mare Orientale metiemini, & plagam Orientalem. Plagam autem lateris Auſtralis ab Jericho uſque ad aquas contradictionis Cades, poſſeſſionem uſque ad mare magnum, & plagam Meridionalem Auſtri. Et à plaga Occidentali mare magnum, à termino uſque è regione introitus Hamath: hæc eſt plaga Occidentalis. Et dividetis terram iſtam vobis per tribus Iſrael. Et erit cùm dividetis eam vobis in hæreditatem & proſelytis qui peregrinantur inter vos, qui genuerunt filios inter vos, & erunt vobis ſicut indigenæ in filiis Iſrael, vobiſcum divident poſſeſſionem in medio tribuum Iſrael. Et in quacunque tribu fuerit proſelytus, ibi dabitis ei poſſeſſionem, ait Dominus Deus.

CAP. XLVIII.

ET hæc ſunt nomina tribuum: à finibus Aquilonis juxta terminum viæ Hethlon ad introitum Hamath, Haſarenan terminus Damaſci ab Aquilone juxta terminum Hamath erit ei à plaga Orientali in Occidentem, Dan una. Et juxta terminum Dan à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Aſſer una. Et juxta terminum Aſſer à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Neptali una. Et juxta terminum Neptali à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Manaſſe una. Et juxta terminum Manaſſe à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Ephraim una. Et juxta terminum Ephraim à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Ruben una.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܚܡܬ ܘܒܪܘܬ. ܘܣܦܪܘܝܡ ܕܒܝܢ ܬܚܘܡܐ ܕܕܪܡܣܘܩ. ܘܒܝܢ ܬܚܘܡܐ ܕܚܡܬ
ܘܚܨܪ ܡܨܥܝܬܐ ܕܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܚܘܪܢ. * ܘܢܗܘܐ ܬܚܘܡܐ ܡܢ ܝܡܐ ܠܚܨܪܥܝܢܢ ܕܥܠ ܬܚܘܡܐ
ܕܕܪܡܣܘܩ. ܘܨܦܘܢ ܕܥܠ ܓܪܒܝܐ ܕܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܚܡܬ. ܗܕܐ ܗܝ ܦܢܝܬܐ ܕܓܪܒܝܐ. * ܘܡܢ ܦܢܝܬܐ
ܕܡܕܢܚܐ. ܡܢ ܒܝܬ ܚܘܪܢ ܘܡܢ ܒܝܬ ܕܪܡܣܘܩ. ܘܡܢ ܒܝܬ ܓܠܥܕ ܘܡܢ ܒܝܬ ܐܪܥܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܝܘܪܕܢܢ ܡܬܚܡ ܥܠ ܝܡܐ ܡܕܢܚܝܐ ܕܬܡܪ. ܗܕܐ ܗܝ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ. * ܘܦܢܝܬܐ
ܕܬܝܡܢܐ. ܡܢ ܬܡܪ ܘܥܕܡܐ ܠܡܝܐ ܕܡܪܝܒܬ ܪܩܡ ܬܗܘܐ ܝܪܬܘܬܗ ܕܝܡܐ ܪܒܐ. * ܘܢܬܚܡ ܥܕܡܐ
ܠܢܟܚ ܕܐܝܬ ܒܡܥܠܢܐ ܕܚܡܬ. ܗܕܐ ܗܝ ܦܢܝܬܐ ܕܡܥܪܒܐ. * ܘܬܦܠܓܘܢܗ ܠܐܪܥܐ ܗܕܐ
ܠܫܪܒܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܡܐ ܕܦܠܓܬܘܢܗ ܠܝܪܬܘܬܐ ܠܟܘܢ. ܘܠܐܝܠܝܢ ܕܡܬܦܢܝܢ
ܠܘܬܝ ܕܥܡܪܝܢ ܒܝܢܬܟܘܢ. ܘܐܘܠܕܘ ܒܢܝܐ ܒܝܢܬܟܘܢ. ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ.
ܘܥܡܟܘܢ ܢܦܠܓܘܢ ܝܪܬܘܬܐ ܒܝܬ ܫܪܒܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܫܪܒܬܐ ܕܐܝܬ ܒܗ
ܐܢܫܐ ܕܡܬܦܢܐ ܠܘܬܝ. ܬܡܢ ܬܬܠܘܢ ܠܗ ܝܪܬܘܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܡܚ *

* ܘܗܠܝܢ ܫܡܗܐ ܕܫܒܛܐ. ܡܢ ܣܘܦܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܠܘܬ ܐܘܪܚܐ ܕܚܬܠܘܢ ܕܡܥܠܢܐ ܕܚܡܬ
ܘܚܨܪ ܥܝܢܢ. ܠܬܚܘܡܐ ܕܕܪܡܣܘܩ ܕܓܪܒܝܐ ܕܥܠ ܝܕ ܚܡܬ. ܗܕܐ ܗܝ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ
ܕܝܡܐ. ܕܕܢ. * ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܕܢ. ܡܢ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܥܕܡܐ ܠܦܢܝܬܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܐܫܝܪ.
* ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܐܫܝܪ. ܡܢ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܥܕܡܐ ܠܦܢܝܬܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܢܦܬܠܝ.
* ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܢܦܬܠܝ. ܡܢ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܥܕܡܐ ܠܦܢܝܬܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܡܢܫܐ.
* ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܡܢܫܐ. ܡܢ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܥܕܡܐ ܠܦܢܝܬܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܪܘܒܝܠ.
* ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܪܘܒܝܠ. ܡܢ ܦܢܝܬܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܥܕܡܐ ܠܦܢܝܬܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܐܦܪܝܡ.

Et Hamath, Beruth, & Sepharvaim quæ eſt 16
inter limites Damaſci, & inter limites Hamathæ : & Haſor media quæ eſt in limite
Hauranis, Eritque terminus à mari uſque 17
ad Haſor-inan quæ eſt in limite Damaſci : &
Sephion quæ eſt ad Aquilonem, ſita in termino Hamathæ : hæc eſt plaga Aquilonaris.
A plaga verò Orientali, ab Haurane, à Da- 18
maſco, à Gelaade, & à terra Iſraelis, atque
Jordane circumſcribetur limes ſecus mare
Orientale Thamaris : hæc eſt plaga Orientalis. Plaga verò Meridionalis, à Thamare 19
uſque ad aquas Meribath-Cadeſi *erit* poſſeſſio maris magni : Et terminabitur uſque ad 20
Nechah quæ eſt in aditu Hamathæ : hæc eſt
plaga Occidentalis. Dividetis ergò terram 21
iſtam inter familias Iſraelis. Cùmque divi- 22
ſeritis eam in hæreditatem vobis & iis qui
convertuntur ad me, qui indigenæ ſunt inter
vos, & liberos procreaverunt inter vos; erunt
ſicut filii Iſraelis, & vobiſcum ſortientur hæreditatem inter familias Iſraelis. Et in fa- 23
milia illa in qua fuerit is qui ad me converſus eſt, dabunt ipſi hæreditatem, ait Dominus
dominorum.

CAP. XLVIII.

HÆc ſunt nomina tribuum : Ab extremo 1
Aquilone ſecus viam Hethronis quæ eſt in
aditu ad Hamath & Haſor-inan, ad terminum Damaſci Aquilonarem qui eſt ſecus Hamath, (hæc eſt Orientalis plaga maris,) Danis
erit. Juxta terminum Danis, ab Orientali 2
plaga uſque ad plagam Occidentalem, Aſeris.
Juxta terminum Aſeris, ab Orientali plaga 3
uſque ad plagam Occidentalem, Nephtali.
Juxta terminum Nephtali, à plaga Orien- 4
tali uſque ad plagam Occidentalem, Manaſſis. Juxta terminum Manaſſis, à plaga 5
Orientali uſque ad plagam Occidentalem,
Rubelis. Juxta terminum Rubelis, ab Ori- 6
entali plaga uſque ad plagam Occidentalem,
Aphremi.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وبين حدود دمسق اونان * الدام * ماوس * تيراس * افرام * ايليام * بين حدود اماث * وبين
حدود دمسق اونان. ومن اونان التي هي فوق حدود حوران * هذه الحدود من البحر ومن دار
انان حدود دمسق. والذين نحو الجربياء في الجربياء. وحد اماث حد الجربياء * والذين نحو
المشارق بين حوران * وبين دمسق * وبين جلعاد * وبين ارض اسرايل. الاردن يفصل الي بحر
الغور الذي نحو المشارق. هذه نحو المشارق * والتي نحو التيمن والغرب. من تامان والغور
الي ماء مارعوث قادس. ممتدا الي البحر الاعظم. هذه الناحيه والتيمن والغرب * هذه ناحيه البحر
الاعظم تفصل الي قبالة مدخل اماث. الي مدخله. هذه هي التي نحو بحر اماث * وقاس هذه
الارض لهم ولقبايل اسرايل * هذه تضعونها لكم بالقرعة. وللدخلاء الذين يسكنون في
وسطكم. الذين ولدوا بنين في وسطكم * ويكونون لكم مثل اهل الارض في بني اسرايل. معكم
ياكلون بالميراث في وسط بني اسرايل * ويصيرون في قبيلة الدخلاء. في الدخلاء الذين معكم
هناك تعطون لهم ميراثا. يقول الرب الاله *

* الفصل الثامن والاربعون *

* وهذه اسماء القبايل من البدء الذي نحو الجربياء بقياس النزول الذي يسق الي مدخل
اماث دار انان. حد دمسق نحو الجربياء في ناحية دار اماث. ويكون لهم الذين نحو المشارق
حتي الي البحر. لدان واحد * ومن حدود دان. من الذين نحو المشارق الي الذين نحو البحر
اسير واحد * ومن حدود اسير. من الذين نحو المشارق الي الذين نحو البحر. لنفتاليم واحد
* ومن حدود نفتاليم. من الذين نحو المشارق الي الذين نحو البحر. لمنسي واحد * ومن
حدود منسي. من الذين نحو المشارق الي الذين نحو البحر. لافرام واحد * ومن حدود افرام
من الذين نحو المشارق الي الذين نحو البحر. لروبين واحد *

Et inter limites Damaſci-Unan, Eldam, 16
Mios, Thiras, Ephram, Iliam, inter
limites Emath, & inter limites Damaſci-Unan. Ab Unan verò quæ eſt
ſuper limites Horan, Hi ſunt limites à 17
mari : & ab atrio Enan, limites Damaſci : & qui ſunt Aquilonem verſùs,
in ipſo Aquilone : & terminus Emath,
terminus Aquilonaris. Eos autem qui 18
ſunt Orientem verſùs inter Horan, &
inter Damaſcum, inter Galaad, & inter terram Iſraelis; Jordanis ſeparabit uſque ad mare vallis quæ eſt Orientem verſùs : Hi Orientem verſùs.
Qui autem Meridiem verſùs & Occi- 19
dentem, à Theman & ora maritima
uſque ad aquam Marimoth Cades, tendendo verſùs mare maximum; ea plaga
eſto Meridionalis & Occidentalis. Hæc 20
maximi plaga maris ſeparabit uſque ad
oppoſitum ingreſſui Emath, ad ingreſſum ejus uſque : Hi ſunt qui ſpectant
verſùs mare Emath. Et menſus eſt 21
terram hanc ipſis & familiis Iſraelis.
Hanc ſorte diſponetis vobis & indigenis 22
qui habitant inter vos, qui filias genuerunt inter vos : & erunt apud vos
ut terrigenæ inter filios Iſraelis. Vobiſcum comedent in hæreditate in medio filiorum Iſraelis. Eruntque in 23
familia indigenarum, inter indigenas
qui vobiſcum ſunt : ibi dabitis eis
hæreditatem, dicit Dominus Deus.

CAP. XLVIII.

ET Hæc ſunt nomina tribuum ab eo 1
principio quod eſt Aquilonem verſùs
juxta menſuram clivi qui ſeparat uſque
ad introitum Emath atrii Enan, terminus Damaſci, verſùs Aquilonem, ad
plagam atrii Emath. Et ipſorum erunt
limites qui ſunt Orientem verſùs uſque
ad mare, Dani una. A terminis Danis, 2
ab his qui ſunt Orientem verſùs uſque
ad eos qui mare ſpectant, Aſer una. A 3
terminis Aſer, ab his qui ſunt Orientem
verſùs ad eos uſque qui ſunt verſùs
mare, Nephtalim una. A terminis Nephtalim, ab his qui ſunt Orientem verſùs 4
ad eos uſque qui verſùs mare, Manaſſi
una. A terminis Manaſſis, ab his qui ſunt 5
Orientem verſùs ad eos uſque qui verſùs
mare, Ephremo una. A terminis Ephremi, 6
ab his qui ſunt Orientem verſùs ad eos
uſque qui ſunt verſùs mare, Rubeni una.

יחזקאל: מח

,*maris angulum* ad usque ,Orientali *angulo ab* Reuben terminum *super* Et
7 ועל גבול ראובן מפאת קדימה עד־פאת ימה
,Orientali *angulo ab* Jehudah terminum *super* Et .una Jehudah
8 יהודה אחד: ועל גבול יהודה מפאת קדים
quinque *elevabitis* quam ,oblatio erit ,*maris angulum* ad usque
עד־פאת ימה תהיה התרומה אשר־תרימו חמשה
partium una sicut ,longitudinis &,latitudinis millium viginti &
ועשרים אלף רחב וארך כאחד החלקים
ſanctuarium erit Et .*maris angulum* ad usque ,Orientali *angulo ab*
מפאת קדימה עד־פאת־ימה והיה המקדש
longitudo :Domino *elevabitis* quam Oblatio .ejus medio in
9 בתוכה: התרומה אשר תרימו ליהוה ארך
.millium decem latitudo & ,millium viginti & quinque
חמשה ועשרים אלף ורחב עשרת אלפים:
Aquilonem ad ſacerdotibus ſanctitatis oblatio erit iſtis Et
10 ולאלה תהיה תרומת־הקדש לכהנים צפונה
,millia decem latitudinis *mare ad* & ,millia viginti & quinque
חמשה ועשרים אלף וימה רחב עשרת אלפים
meridiem ad & ,millia decem latitudinis Orientem ad &
וקדימה רחב עשרת אלפים ונגבה
ſanctuarium erit & :millia viginti & quinque longitudinis
ארך חמשה ועשרים אלף והיה מקדש־
,Sadoc filiis de *ſanctificato* Sacerdotibus .ejus medio in Domini
11 יהוה בתוכו: לכהנים המקדש מבני צדוק
errando in ,erraverunt non qui ,meam cuſtodiam cuſtodierunt qui
אשר שמרו משמרתי אשר לא־תעו בתעות
eis erit Et .Levitæ erraverunt ſicut ,Iſrael *filios*
12 בני ישראל כאשר תעו הלוים: והיתה להם
terminum *ad* :ſanctitatum ſanctitas ,terræ oblatione de oblatum
תרומיה מתרומת הארץ קדש קדשים אל־גבול
quinque ,ſacerdotum terminum contra Levitæ Et .Levitarum
13 הלוים: והלוים לעמת גבול הכהנים חמשה
.millium decem latitudinis & ,longitudinis millium viginti &
ועשרים אלף ארך ורחב עשרת אלפים
decem latitudo & ,millium viginti & quinque longitudo Omnis
כל־ארך חמשה ועשרים אלף ורחב עשרת
neque ,*commutabit* non & ,eo ex venundabunt non Et .millium
14 אלפים: ולא־ימכרו ממנו ולא־ימר ולא
.DOMINO ſanctitas quia :terræ *principium faciet transire*
יעבור ראשית הארץ כי־קדש ליהוה:
,quinque *facies ſuper* latitudine in *reſiduum* millia quinque Et
15 וחמשת אלפים הנותר ברחב על־פני חמשה
:ſuburbanũ in &,habitaculũ in civitatis *ipſum prophanum millium* viginti &
ועשרים אלף חל־הוא לעיר למושב ולמגרש
angulus ejus menſuræ hæ Et .ejus medio in civitas erit &
16 והיתה העיר בתוכה: ואלה מדותיה פאת
meridiei angulus & ,millium quatuor & quingentorum *Aquilonis*
צפון חמש מאות וארבעת אלפים ופאת־נגב
Orientali *angulo ab* & :millium quatuor & ,quingentorum
חמש חמש מאות וארבעת אלפים ומפאת קדים
,quingentorum *maris angulus* & ;millium quatuor & ,quingentorum
חמש מאות וארבעת אלפים ופאת־ימה חמש מאות
Aquilonem ad civitatis ſuburbanum erit Et .millium quatuor &
17 וארבעת אלפים: והיה מגרש לעיר צפונה
;ducentorum & quinquaginta meridiem ad & ,ducentorũ & quinquaginta
חמשים ומאתים ונגבה חמשים ומאתים
quinquaginta *mare* ad & ;ducentorum & quinquaginta ,Orientem ad &
וקדימה חמשים ומאתים וימה חמשים
.ducentorum &
ומאתים:

Verſio VULG. LAT.

7 Et ſuper terminum Ruben, à plaga Orientali uſque ad plagam Maris, Juda una. 8 Et ſuper terminum Juda, à plaga Orientali uſque ad plagam Maris, erunt primitiæ, quas ſeparabitis, vigintiquinque millibus latitudinis & longitudinis, ſicuti ſingulæ partes à plaga Orientali uſque ad plagam Maris: & erit Sanctuarium in medio ejus. 9 Primitiæ, quas ſeparabitis Domino: longitudo vigintiquinque millibus, & latitudo decem millibus. 10 Hæ autem erunt primitiæ Sanctuarii ſacerdotum: ad Aquilonem longitudinis vigintiquinque millia, & ad Mare latitudinis decem millia, ſed & ad Orientem latitudinis decem millia, & ad Meridiem longitudinis viginti quinque millia: & erit Sanctuarium Domini in medio ejus. 11 Sacerdotibus Sanctuarium erit de filiis Sadoc, qui cuſtodierunt ceremonias meas, & non erraverunt cùm errarent filii Iſrael, ſicut erraverunt & Levitæ. 12 Et erunt eis primitiæ de primitiis terræ Sanctum ſanctorum, juxta terminum Levitarum. 13 Sed & Levitis ſimiliter juxta fines ſacerdotum vigintiquinque millia longitudinis, & latitudinis decem millia. Omnis longitudo viginti & quinque millium, & latitudo decem millium. 14 Et non venundabunt ex eo, neque mutabunt, neque transferentur primitiæ terræ, quia ſanctificatæ ſunt Domino. 15 Quinque millia autem quæ ſuperſunt in latitudine per vigintiquinque millia, profana erunt urbis in habitaculum, & in ſuburbana: & erit civitas in medio ejus. 16 Et hæ menſuræ ejus: ad plagam Septentrionalem, quingenta & quatuor millia: & ad plagam Meridianam, quingenta & quatuor millia: & ad plagam Orientalem, quingenta & quatuor millia: & ad plagam Occidentalem, quingenta & quatuor millia. 17 Erunt autem ſuburbana civitatis ad Aquilonem ducenta quinquaginta, & ad Meridiem ducenta quinquaginta, & ad Orientem ducenta quinquaginta, & ad Mare ducenta quinquaginta.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων Ῥουβὴν, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς, ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν, Ἰούδα, μία. 8 Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων Ἰούδα, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς (ι), ἔσται ἡ ἀπαρχὴ τοῦ ἀφορισμοῦ πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάδες εὖρος, καὶ μῆκος, καθὼς μία τῶν μερίδων ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς, καὶ ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν· καὶ 9 ἔσται τὸ ἅγιον ἐν μέσῳ αὐτῶν. (κ) Ἀπαρχὴν, ἣν ἀφοριοῦσι τῷ (λ) κυρίῳ, μῆκος πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάδες, καὶ εὖρος 10 εἴκοσι (μ) πέντε χιλιάδες. Τούτων ἔσται ἡ ἀπαρχὴ τῶν ἁγίων τοῖς ἱερεῦσι, πρὸς Βορρᾶν, πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάδες· καὶ πρὸς θάλασσαν, (ν) δέκα χιλιάδες· καὶ πρὸς Νότον, (ξ) εἴκοσι καὶ πέντε χιλιάδες· καὶ τὸ ὄρος τῶν ἁγίων ἔσται ἐν 11 μέσῳ αὐτοῦ. Τοῖς ἱερεῦσι, τοῖς ἡγιασμένοις υἱοῖς Σαδδοὺκ, τοῖς φυλάσσουσι τὰς φυλακὰς τοῦ οἴκου, οἵτινες οὐκ ἐπλανήθησαν ἐν τῇ πλανήσει (ο) υἱῶν Ἰσραὴλ, ὃν τρόπον ἐπλανήθησαν οἱ Λευῖται. 12 Καὶ ἔσται αὐτοῖς ἡ ἀπαρχὴ δεδομένη ἐκ τῶν ἀπαρχῶν (π) τῆς γῆς, ἅγιον ἁγίων 13 ἀπὸ τῶν (ρ) ὁρίων τῶν Λευιτῶν. Τοῖς δὲ Λευίταις (σ) τὰ ἐχόμενα τῶν ὁρίων τῶν ἱερέων, μῆκος πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάδες, καὶ εὖρος δέκα χιλιάδες· πᾶν τὸ μῆκος πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάδες, καὶ 14 εὖρος εἴκοσι χιλιάδες. Οὐ πραθήσεται ἐξ (τ) αὐτοῦ, οὐδὲ καταμετρηθήσεται, οὐδὲ ἀφαιρεθήσεται τὰ (υ) πρωτογεννήματα τῆς γῆς, ὅτι ἅγιόν ἐστι τῷ κυρίῳ. 15 Τὰς δὲ πέντε χιλιάδας τὰς περισσὰς ἐπὶ τῷ πλάτει ἐπὶ ταῖς πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάσι, προτείχισμα ἔσται τῇ πόλει εἰς τὴν κατοικίαν, καὶ εἰς διάστημα αὐτοῦ· 16 καὶ ἔσται ἡ πόλις ἐν μέσῳ αὐτοῦ. Καὶ ταῦτα τὰ μέτρα αὐτῆς· ἀπὸ τῶν πρὸς Βορρᾶν, πεντακόσιοι καὶ τετρακισχίλιοι, καὶ ἀπὸ τῶν πρὸς Νότον, πεντακόσιοι καὶ τέσσαρες χιλιάδες, καὶ ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς, πεντακόσιοι καὶ τέσσαρες χιλιάδες, καὶ ἀπὸ τῶν πρὸς θάλασσαν, 17 τετρακισχιλίοις (φ) πεντακοσίοις. Καὶ ἔσται διάστημα τῇ πόλει πρὸς (χ) Βορρᾶν διακόσιοι πεντήκοντα, καὶ πρὸς Νότον διακόσιοι καὶ πεντήκοντα, καὶ πρὸς ἀνατολὰς διακόσιοι πεντήκοντα, καὶ πρὸς θάλασσαν διακόσιοι πεντήκοντα.

7 *Et à terminis Ruben, ab iis quæ ad Orientem uſque ad Mare, Juda una.* 8 *Et à terminis Juda, ab iis quæ ad Orientem, erunt primitiæ ſeparationis, quinque & viginti millia latitudo, & longitudo, ſicut una partium ab iis quæ ad Orientem, & uſque ad ea quæ ad Mare: & erit Sanctuarium in medio eorum.* 9 *(c) Primitias, quas ſeparabunt Domino, longitudo quinque & viginti millia, & latitudo (d) viginti quinque millia.* 10 *(e) Ex his erunt primitiæ Sanctorum ſacerdotibus: ad Aquilonem quinque & viginti millia: & ad Mare (f) decem millia: & ad Auſtrum viginti & quinque millia: & mons Sanctorum erit in medio ejus.* 11 *Sacerdotibus ſanctificatis filiis Sadduc cuſtodientibus cuſtodias domûs, qui non erraverunt in errore filiorum Iſrael, ſicut erraverunt Levitæ.* 12 *Et erunt eis primitiæ data de primitiis terræ, Sanctum ſanctorum de terminis Levitarum.* 13 *Levitis autem juxta fines ſacerdotum, longitudo quinque & viginti millia, & latitudo decem millia: omnis longitudo quinque & viginti millia, (g) & latitudo viginti millia.* 14 *Non vendetur ex eo, neque menſurabitur, neq; auferentur primitiæ terræ, quia ſanctum eſt Domino.* 15 *Quinque millia autem, quæ ſuperſunt in latitudine in quinque & viginti millibus, (h) antemurale erit civitati in habitaculum, & in (i) ſpatium ejus: Et erit civitas in medio ejus.* 16 *Et hæ menſuræ ejus: ab iis quæ ad Aquilonem, quingenti & quater mille: & ab his, quæ ad Auſtrum, quingenti & quatuor millia: & ab his quæ ad Orientem, quingenti & quatuor millia; & ab his quæ ad Mare, quater mille quingenti.* 17 *Et erit ſpatium civitati ad Aquilonem ducenti quinquaginta, & ad Auſtrum ducenti & quinquaginta, & ad Orientem ducenti (k) quinquaginta, & ad Mare ducenti quinquaginta.*

MS. A. (ι) ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν, ἡ ἀπαρχὴ (κ) Ἀπαρχὴ, (λ) κυρίῳ, πέντε καὶ (μ) καὶ πέντε (ν) πλάτος δέκα (ξ) μῆκος εἴκοσι (ο) τῶν υἱῶν (π) τῶν ἁγίων, ἅγιον (ρ) ἀπαρχῶν (σ) ἐχόμενα (τ) αὐτῶν, (υ) πρωτογεννήματα (φ) καὶ πεντακοσίοις. (χ) Βορρᾶν, * πεντήκοντα, καὶ τὸ περισσὸν τοῦ μήκους

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 ועל תחום ראובן מרוח מדנחא עד רוח מערבא יהודה חד: ועל תחום יהודה מרוח
8 מדנחא עד רוח מערבא תהי אפרשותא דתפרשון עסרין וחמש אלפין פותיא
ואורכא כחד מן חלקיא מרוח מדנחא עד רוח מערבא ויהי כבש מקדשא בגויה:
9 אפרשותא די תפרשון קדם יי אורכא עסרין וחמשא אלפין ופותיא עסרא אלפין:
10 ולאלן תהי אפרשות קודשא לכהניא צפונא עסרין וחמשא אלפין ולמערבא פותיא
עסרא אלפין ולמדנחא פותיא עסרא אלפין ולדרומא אורכא עסרין וחמשא אלפין
11 ויהי כבש מקדשא דיי בגויה: לכהניא דקדישין מבני צדוק דנטרו מטרת מימרי דלא
12 טעו בטעות בני ישראל כמא דטעו ליואי: ותהי להון אפרשותא מאפרשות ארעא
13 קודש קודשין על תחום ליואי: וליואי לקבל תחום כהניא עסרין וחמשא אלפין אורכא
14 ופותיא עסרא אלפין כל אורכא עסרין וחמשא אלפין ופותיא עסרא אלפין: ולא
15 יזבנון מניה ולא יחליף ולא יעביר ריש ארעא ארי קודשא קדם יי: וחמשא אלפין
דאשתארו בפותיא על אפי עסרין וחמשא אלפין חולא הוא לקרתא למותב ולרוח
16 ויהי כבש קרתא בגויה: ואלין משחתהא לרוח צפונא ארבע אלפין וחמש מאה
ולרוח דרומא ארבע אלפין וחמש מאה ולרוח מדנחא ארבע אלפין וחמש מאה
17 ולרוח מערבא ארבע אלפין וחמש מאה: ויהי רוחא לקרתא לצפונא
מאתן וחמשין ודרומא מאתן וחמשין ומדינחא מאתן וחמשין ומערבא מאתן
וחמשין:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina:

Et juxta terminum Ruben à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Juda una. Et juxta terminum Juda à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem erit ſeparatio quam ſeparabitis, viginti quinque millium latitudinis, longitudinis verò ſicut unius ex aliis partibus à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem: & erit via ſtrata ſanctuarii in medio ejus. Separatio quam ſeparabitis coram Domino, habebit longitudinem viginti quinque millium, & latitudinem decem millium. Et his erit ſeparatio ſancta [*nempe*] Sacerdotibus: ad Aquilonem, [*longitudinis*] viginti quinque millium, & ad Occidentem latitudinis decem millium, & ad Orientem latitudinis decem millium, & ad Auſtrum longitudinis viginti quinque millium: & erit ſtrata via ſanctuarii in medio ejus. Sacerdotibus qui ſanctificati ſunt de filiis Sadok qui cuſtodierunt cuſtodiam verbi mei, & non erraverunt cùm errarent filii Iſrael, ſicut erraverunt Levitæ. Et erit eis ſeparatio de ſeparatione terræ ſanctitas ſanctitatum juxta terminum Levitarum. Et Levitis juxta terminum Sacerdotum viginti quinque millia longitudinis & latitudinis decem millia: omnis longitudo, viginti quinque millia, & latitudo decem millia. Et non venundabunt ex eo, nec commutabunt; nec transferentur primitiæ terræ, quia ſanctificatæ ſunt coram Domino. Et quinque millia quæ ſuperſunt in latitudine è regione viginti quinque millium, erunt prophana ad urbem, ad habitaculum & ad ſuburbana: & erit ſtrata via civitatis in medio ejus. Et hæ ſunt menſuræ ejus: ad plagam Septentrionalem quatuor millia & quingenta; & ad plagam Meridionalem quatuor millia & quingenta; & à plaga Orientali quatuor millia & quingenta; & ad plagam Occidentalem itidem quatuor millia & quingenta. Et ſuburbanum urbis ad Aquilonem erit ducentorum & quinquaginta; & ad Auſtrum ducentorum & quinquaginta; & ad Orientem ducentorum & quinquaginta; & ad Occidentem ducentorum & quinquaginta.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܐܦܪܝܡ ܀ ܡܢ ܪܘܚܐ ܕܡܕܢܚܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܪܘܚܐ ܕܡܥܪܒܐ. ܕܝܗܘܕܐ.
* ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܝܗܘܕܐ ܀ ܡܢ ܪܘܚܐ ܕܡܕܢܚܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܪܘܚܐ ܕܡܥܪܒܐ ܀ ܢܗܘܐ
ܦܘܪܫܢܐ ܕܦܪܫܝܢ ܐܢܬܘܢ ܀ ܦܬܝܐ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܐܘܪܟܐ. ܐܝܟ ܚܕܐ ܡܢ
ܡܢܘܬܐ. ܡܢ ܪܘܚܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܥܕܡܐ ܠܪܘܚܐ ܕܡܥܪܒܐ ܀ ܢܗܘܐ ܡܩܕܫܐ ܒܓܘܗ.
* ܦܘܪܫܢܐ ܕܦܪܫܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܡܪܝܐ ܀ ܐܘܪܟܐ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܦܬܝܐ.
ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. * ܘܠܟܗܢܐ ܢܗܘܐ ܦܘܪܫܢܐ. ܕܩܘܕܫܐ. ܠܓܪܒܝܐ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ
ܐܠܦܝܢ. ܘܦܬܝܐ. ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܠܡܥܪܒܐ. ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܠܡܕܢܚܐ. ܥܣܪܐ
ܐܠܦܝܢ. ܘܠܬܝܡܢܐ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܢܗܘܐ ܡܩܕܫܐ ܕܡܪܝܐ ܒܓܘܗ.
* ܘܢܗܘܐ ܠܟܗܢܐ ܕܡܩܕܫܝܢ ܡܢ ܒܢܝ ܨܕܘܩ ܕܢܛܪܘ ܡܛܪܬܝ. ܘܠܐ ܛܥܘ ܐܝܟ ܕܛܥܘ
ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܝܟ ܕܛܥܘ ܠܘܝܐ. * ܘܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܦܘܪܫܢܐ ܡܢ ܦܘܪܫܢܗ ܕܐܪܥܐ.
ܩܘܕܫ ܩܘܕܫܐ ܠܘܬ ܬܚܘܡܐ ܕܠܘܝܐ. * ܘܠܘܝܐ ܠܘܩܒܠ ܬܚܘܡܐ ܕܟܗܢܐ. ܐܘܪܟܐ
ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܦܬܝܐ. ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. ܟܠܗ ܐܘܪܟܗܘܢ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ
ܐܠܦܝܢ. ܘܦܬܝܐ. ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ. * ܠܐ ܢܙܒܢܘܢ ܡܢܗ. ܘܠܐ ܢܚܠܦܘܢ. ܘܠܐ ܢܥܒܪܘܢ
ܪܫܝܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܩܘܕܫܐ ܗܘ ܕܡܪܝܐ. * ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ ܕܡܫܬܚܪܝܢ: ܥܠ ܦܬܝܐ ܥܣܪܝܢ
ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܢܗܘܘܢ ܠܡܕܝܢܬܐ ܠܡܥܡܪܐ ܘܠܦܪܕܝܣܐ. ܘܬܗܘܐ ܡܕܝܢܬܐ ܒܓܘܗ.
* ܘܗܠܝܢ ܡܫܘܚܬܗ. ܓܪܒܝܐ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ ܘܚܡܫܡܐܐ. ܘܡܕܢܚܐ ܐܪܒܥܐ
ܐܠܦܝܢ ܘܚܡܫܡܐܐ. ܘܬܝܡܢܐ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ ܘܚܡܫܡܐܐ. ܘܡܥܪܒܐ ܐܪܒܥܐ
ܐܠܦܝܢ ܘܚܡܫܡܐܐ. * ܘܢܗܘܐ ܦܪܕܝܣܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܀ ܠܓܪܒܝܐ ܡܐܬܝܢ ܘܚܡܫܝܢ.
ܘܠܡܥܪܒܐ ܡܐܬܝܢ ܘܚܡܫܝܢ. ܘܠܬܝܡܢܐ ܡܐܬܝܢ ܘܚܡܫܝܢ. ܘܠܡܕܢܚܐ ܡܐܬܝܢ
ܘܚܡܫܝܢ.

Juxta terminum Aphremi, ab Orientali pla- 7
ga uſque ad plagam Occidentalem, Judæ.
Juxta terminum Judæ, ab Orientali plaga uſ- 8
que ad plagam Occidentalem, erit ſeparatio
quam ſeparaturi eſtis, latitudinis vigintiquin-
que millium, longitudinis verò paris uni por-
tionum: & à plaga Orientali uſque ad plagã
Occidentalem erit Sanctuarium in medio hu-
jus *longitudinis*. Separationis quam ſepara- 9
turi eſtis Domino, longitudo ſit vigintiquin-
que millium, latitudo verò decem millium.
Pro ſacerdotibus auté erit ſeparatio Sanctua- 10
rii; Aquilonem verſùs vigintiquinque millia,
latitudine verò decem millia, & Occidentem
versùs decem millia, & Orientem versùs de-
cem millia, & Meridiem versùs vigintiquin-
que millia: in cujus medio erit Sanctuarium
Domini. Erit inquam, pro ſacerdotibus qui 11
cõſecrati fuerint ex filiis Sadoci, qui obſerva-
verunt obſervationes meas, & non errave-
runt quemadmodum erraverunt filii Iſraelis,
& quemadmodum erraverunt Levitæ. Pro 12
iſtis erit ſeparatio de ſeparatione terræ in
Sanctum ſanctorum, juxta terminum Levita-
rum. Et Levitæ erunt è regione termini ſa- 13
cerdotum, longitudine vigintiquinque milli-
um, latitudine vero decem millium: totum
ſpatium eorum vigintiquinque millia, latitu-
dine decem millium. Non vendent ex eo, 14
neque permutabunt, neque transferent pri-
mitias terræ, quia ſacrum Domini eſt. Cæte- 15
rùm quinque millium *latitudo* quæ ſupereſt,
cum *longitudine* vigintiquinque millium, ſpa-
tium eſto pro urbe, civibus, & plateis, ut ſit
urbs in medio ipſius. Hæ autem erunt di- 16
menſiones ejus: Aquilonem versùs quater
mille quingentorum, Orientem versùs quater
mille quingentorum, Meridiem versùs quater
mille quingentorum, & Occidentem versùs
quater mille quingentorum. Urbis autem 17
platea erit Aquilonem versùs ducentorum
quinquaginta, Occidentem versùs ducentorũ
quinquaginta, Meridiem versùs ducentorum
quinquaginta, & Orientem versùs ducento-
rum quinquaginta.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ومن حدود روبين * من الذين نحو المشارق إلي الذين نحو البحر * ليهودا واحد * ومن 7 8
حدود يهودا * من الذين نحو المشارق إلي الذين نحو البحر * بدو الاختصاص * خمسة
وعشرون الفا عرضا * والطول كمثل واحد من الاجزاء * من الذين نحو المشارق إلي
الذين نحو البحر * ويكون القدس في وسطهم * البدو الذي يفرزونه للرب * خمسة 9
وعشرين الفا طولا * والعرض خمسة وعشرين الفا * يكون بدو هذه الاقداس 10
للكهنة * نحو الجربياء خمسة وعشرين الفا * والي البحر عرضا عشرة الف * والي الجنوب
طولا خمسة وعشرين الفا * وجبل الاقداس يكون في وسطه * للكهنة المقدسين بني 11
صادوق الذين يحرسون محارس البيت * الذين لم يضلوا بضلالة بني اسرائيل كما ضل
اللاويون * ويكون لهم البدو المعطي من اوايل الاقداس * قدس القديسين من اوايل 12
اللاويين * ويكون للاويين الي جانب حدود الكهنة * الطول خمسة وعشرين الفا * والعرض 13
عشرة الف * الطول كله خمسة وعشرون الفا * والعرض عشرون الفا * لا يباع منهم ولا يقاس 14
ولا ينزع اول غلات الارض * لانها قدس الرب هي * والخمسة الف الزايدة في العرض على 15
الخمسة وعشرين الفا * يكون بناء للمدينة للسكني ولمسافته * ويكون المدينة في
وسطه * وهذه مقاديرها * من الذين نحو الجربياء اربعة الف وخمسماية * ومن الذين نحو 16
الجنوب اربعة الف وخمسماية * ومن الذين نحو المشارق اربعة الف وخمسماية * ومن الذين
نحو البحر اربعة الف وخمسماية * ويكون المسافة للمدينة نحو الجربياء مايتين 17
وخمسين * ونحو الجنوب مايتين وخمسين * ونحو المشارق مايتين وخمسين * ونحو
البحر مايتين وخمسين *

A terminis Rubenis, ab his qui ſunt 7
Orientem verſùs ad eos qui verſùs
mare, Judæ una. A terminis Judæ, ab 8
his qui ſunt Orientem verſùs ad eos qui
verſùs mare, erunt primitiæ dicationis,
vigintiquinq; millia latitudine, longitudo
verò par erit uni partium, ab iis ter-
minis qui ſunt Orientem verſùs ad eos
uſque qui mare verſùs: & erit ſanctu-
arium in medio iſtorum. Primitiæ quas 9
Domino ſeparabunt, erunt vigintiquin-
que millia longitudine, & latitudine
vigintiquinque millia. Primitiæ horum 10
ſacrorum, ſacerdotum erunt: Aquilo-
nem verſùs vigintiquinque millia;
mare verſùs quoad latitudinem, de-
cem millia; & Meridiem verſùs
quoad longitudinem, vigintiquinque
millia. Et mons ſanctorum erit in
medio ejus. Pro ſacerdotibus ſancti- 11
ficatis, filiis Sadoc cuſtodientibus
cuſtodias ædis, qui non aberrârunt
in errore filiorum Iſraelis, quemad-
modum aberrârunt Levitæ. Horum 12
erunt primitiæ conceſſæ ex primitiis
ſacrorum, ſanctum ſanctorum de pri-
mitiis Levitarum. Erit autem pro Le- 13
vitis prope limites ſacerdotum, longi-
tudo vigintiquinque millia, & latitu-
do decem millia: tota longitudo vigin-
tiquinque millia, & latitudo viginti
millia. Non vendentur ab eis, neque 14
menſurabuntur, neq; auferentur primitiæ
frugum terræ, quia ſacræ Domino ſunt.
Quinque millia verò quæ in latitudine 15
excedunt vigintiquinque millia, erunt
pro urbis ædificio ad habitandum, &
pro ſpatio ipſius. Eritque urbs in medio
ejus: Atque hæ dimenſiones ejus: 16
Ab his quæ ſunt Aquilonem verſùs,
quater mille quingenti: ab his quæ
Meridiem verſùs, quater mille quin-
genti: & ab his quæ mare verſùs, qua-
ter mille quingenti. Et ſpatium urbis 17
erit, Aquilonem verſùs, ducenti quin-
quaginta: Meridiem verſùs, ducen-
ti quinquaginta: Orientem verſùs, du-
centi quinquaginta: mare verſùs du-
centi quinquaginta.

, ſanctitatis oblationis regione è longitudine in *reſiduum* Et
18 וְהַנּוֹתָר בָּאֹרֶךְ לְעֻמַּת ׀ תְּרוּמַת הַקֹּדֶשׁ
erit & ,*mare* ad millia decem & ,Orientem ad millia decem
עֲשֶׂרֶת אֲלָפִים קָדִימָה וַעֲשֶׂרֶת אֲלָפִים יָמָּה וְהָיָה
panem in ejus *proventus* erit & : ſanctitatis oblationis regione è
לְעֻמַּת תְּרוּמַת הַקֹּדֶשׁ וְהָיְתָה תְבוּאָתֹה לְלֶחֶם
omnibus ex ei ſervient ,civitatis *ſervitor* Et .civitatis ſervitoribus
19 לְעֹבְדֵי הָעִיר : וְהָעֹבֵד הָעִיר יַעַבְדוּהוּ מִכֹּל
viginti & , quinque oblatio Omnis .Iſrael tribubus
20 שִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל : כָּל־הַתְּרוּמָה חֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים
offeretis partem quartam : millibus viginti & quinque *in* millium
אֶלֶף בַּחֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים אֶלֶף רְבִיעִית תָּרִימוּ
reſiduum Et .civitatis poſſeſſionem *ad* ſanctitatis oblationem
21 אֶת־תְּרוּמַת הַקֹּדֶשׁ אֶל־אֲחֻזַּת הָעִיר : וְהַנּוֹתָר
poſſeſſionem ad & ,*ſanctitatis* oblationem ad inde & , hinc *prælato*
לַנָּשִׂיא מִזֶּה ׀ וּמִזֶּה ׀ לִתְרוּמַת־הַקֹּדֶשׁ וְלַאֲחֻזַּת
oblationis *millium* viginti & , quinque *facies* *ad* civitatis
הָעִיר אֶל־פְּנֵי חֲמִשָּׁה וְעֶשְׂרִים אֶלֶף ׀ תְּרוּמָה
quinque *facies* *ſuper* *mare* ad & ,Orientalem terminum ad uſque
עַד־גְּבוּל קָדִימָה וְיָמָּה עַל־פְּנֵי חֲמִשָּׁה
partes contra *mare ad* terminum *ſuper* millia viginti &
וְעֶשְׂרִים אֶלֶף עַל־גְּבוּל יָמָּה לְעֻמַּת חֲלָקִים
domus ſanctuarium & , ſanctitatis oblatio erit & *: prælato*
לַנָּשִׂיא וְהָיְתָה תְּרוּמַת הַקֹּדֶשׁ וּמִקְדַּשׁ הַבַּיִת
civitatis poſſeſſione de & ,Levitarum poſſeſſione de Et .ejus medio in
22 בְּתוֹכֹה : וּמֵאֲחֻזַּת הַלְוִיִּם וּמֵאֲחֻזַּת הָעִיר
inter & , Jehudah terminum inter : erit *prælato* quod medio in
בְּתוֹךְ אֲשֶׁר לַנָּשִׂיא יִהְיֶה בֵּין ׀ גְּבוּל יְהוּדָה וּבֵין
; tribuum reſiduum Et .erit *prælato* , Binjamin terminum
23 גְּבוּל בִּנְיָמִן לַנָּשִׂיא יִהְיֶה : וְיֶתֶר הַשְּׁבָטִים
.una Binjamin , *maris* *angulum* ad uſque Orientali *angulo ab*
מִפְּאַת קָדִימָה עַד־פְּאַת־יָמָּה בִּנְיָמִן אֶחָד :
angulum ad uſque Orientali *angulo ab* Binjamin terminum *ſuper* Et
24 וְעַל ׀ גְּבוּל בִּנְיָמִן מִפְּאַת קָדִימָה עַד־פְּאַת־
angulo ab Simhon terminum *ſuper* Et .una Simhon , *maris*
25 יָמָּה שִׁמְעוֹן אֶחָד : וְעַל ׀ גְּבוּל שִׁמְעוֹן מִפְּאַת
ſuper Et .una Iſaſchar *: maris* *angulum* ad uſque Orientali
26 קָדִימָה עַד־פְּאַת־יָמָּה יִשָּׂשכָר אֶחָד : וְעַל ׀
: maris *angulum* ad uſque Orientali *angulo ab* Iſaſchar terminum
גְּבוּל יִשָּׂשכָר מִפְּאַת קָדִימָה עַד־פְּאַת־יָמָּה
Orientali *angulo ab* Zebulun terminum *ſuper* Et .una Zebulun
27 זְבוּלֻן אֶחָד : וְעַל ׀ גְּבוּל זְבוּלֻן מִפְּאַת קָדִימָה
Ghad terminum *ſuper* Et .una Ghad *: maris* *angulum* ad uſque
28 עַד־פְּאַת־יָמָּה גָּד אֶחָד : וְעַל גְּבוּל גָּד
aquæ Thamar à terminus erit & : meridiem ad Auſtri *angulum* ad
אֶל־פְּאַת נֶגֶב תֵּימָנָה וְהָיָה גְבוּל מִתָּמָר מֵי
Hæc .magnum mare *ſuper* hæreditas , Cades contradictionis
29 מְרִיבַת קָדֵשׁ נַחֲלָה עַל־הַיָּם הַגָּדוֹל : זֹאת
hæ & : Iſrael tribubus hæreditate de *facietis cadere* quam , terra
הָאָרֶץ אֲשֶׁר־תַּפִּילוּ מִנַּחֲלָה לְשִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל וְאֵלֶּה
: civitatis egreſſus hi Et .*Dominus* Dominus dixit ,earum portiones
30 מַחְלְקוֹתָם נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה : וְאֵלֶּה תּוֹצְאֹת הָעִיר
.menſura millium quatuor & ,quingentorum *Aquilonis* *angulo ab*
מִפְּאַת צָפוֹן חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְאַרְבַּעַת אֲלָפִים מִדָּה :
tres portæ , Iſrael tribuum nomina *ſuper* civitatis portæ Et
31 וְשַׁעֲרֵי הָעִיר עַל־שְׁמוֹת שִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל שְׁעָרִים שְׁלוֹשָׁה
porta , una Jehudah porta , una Reuben porta : Aquilonem Ad
צָפוֹנָה שַׁעַר רְאוּבֵן אֶחָד שַׁעַר יְהוּדָה אֶחָד שַׁעַר
.una Levi
לֵוִי אֶחָד :

Verſio VULG. LAT.

18 Quod autem reliquum fuerit in
longitudine ſecundùm primitias
Sanctuarii, decem millia in Orientem,
& decem millia in Occidentem, erunt ſicut primitiæ
Sanctuarii : & erunt fruges ejus
in panes his qui ſerviunt civitati.
19 Servientes autem civitati,
operabuntur ex omnibus tribubus
20 Iſrael. Omnes primitiæ vigintiquinque
millium, per vigintiquinque millia in quadrum,
ſeparabuntur in primitias Sanctuarii,
& in poſſeſſionem civitatis.
21 Quod autem reliquum
fuerit, principis erit ex omni
parte primitiarum Sanctuarii, &
poſſeſſionis civitatis è regione
vigintiquinque millium primitiarum
uſque ad terminum Orientalem : ſed & ad Mare, è regione
vigintiquinque millium
uſque ad terminum Maris, ſimiliter
in partibus principis erit :
& erunt primitiæ Sanctuarii, &
Sanctuarium templi in medio ejus.
22 De poſſeſſione autem Levitarum,
& de poſſeſſione civitatis
in medio partium principis :
erit inter terminum Juda,
& inter terminum Benjamin, &
23 ad principem pertinebit. Et
reliquis tribubus : A plaga Orientali
uſque ad plagam Occi-
24 dentalem, Benjamin una. Et
contra terminum Benjamin, à
plaga Orientali uſque ad plagam
Occidentalem, Simeon una.
25 Et ſuper terminum Simeonis, à
plaga Orientali uſque ad plagam
Occidentalem, Iſſachar una.
26 Et ſuper terminum Iſſachar, à
plaga Orientali uſque ad plagam
Occidentalem, Zabulon
27 una. Et ſuper terminum Zabulon,
à plaga Orientali uſque ad
28 plagam Maris, Gad una. Et ſuper
terminum Gad, ad plagam
Auſtri in Meridie : & erit finis
de Thamar uſque ad aquas Contradictionis
Cades, hæreditas
29 contra mare Magnum. Hæc eſt
terra, quam mittetis in ſortem
tribubus Iſrael : & hæ partitiones
earum, ait Dominus Deus.
30 Et hi egreſſus civitatis : A plaga
Septentrionali quingentos &
31 quatuor millia menſurabis. Et
portæ civitatis ex nominibus tribuum
Iſrael, portæ tres à Septentrione,
porta Ruben una,
porta Juda una, porta Levi una.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

18 Καὶ τὸ περισσὸν τοῦ μήκους τὸ ἐχόμενον
τῶν ἀπαρχῶν τῶν ἁγίων, δέκα χιλιάδες
πρὸς ἀνατολὰς, καὶ δέκα χιλιάδες
πρὸς θάλασσαν· ϗ ἔσονται αἱ ἀπαρχαὶ
τοῦ ἁγίου, ϗ ἔσται τὰ (†) γεννήματα
αὐτῆς εἰς ἄρτους τοῖς ἐργαζομένοις
19 τὴν πόλιν. Οἱ δὲ ἐργαζόμενοι τὴν
πόλιν ἐργῶνται αὐτὴν ἐκ πασῶν τῶν
20 φυλῶν τοῦ Ἰσραήλ. Πᾶσα ἡ ἀπαρχὴ,
πέντε καὶ εἴκοσι χιλιάδες ἐπὶ πέντε ϗ
εἴκοσι χιλιάδας τετράγωνον· ἀφοριεῖτε
αὐτοῦ τὴν ἀπαρχὴν τοῦ ἁγίου, ἀπὸ τῆς
21 κατασχέσεως τῆς πόλεως. Τὸ δὲ περισσὸν
(ω) τῷ ἀφηγουμένῳ ἐκ τοῦδε ϗ ἐκ
τοῦδε ἀπὸ τ̃ ἀπαρχῶν τοῦ ἁγίου, ϗ εἰς τ̃
κατάσχεσιν τ̃ πόλεως, (α) ἐπὶ πέντε ϗ
εἴκοσι χιλιάδας μῆκος, ἕως τῶν ὁρίων
τῶν πρὸς ἀνατολὰς ϗ πρὸς θάλασσαν,
(β) ἐπὶ πέντε ϗ εἴκοσι χιλιάδας ἕως
τῶν ὁρίων τῶν πρὸς (γ) θάλασσαν, ἐχόμενα
τῶν μερίδων τοῦ ἀφηγουμένου· ϗ
ἔσται ἡ ἀπαρχὴ τῶν ἁγίων ϗ τὸ ἁγίασμα
22 τοῦ οἴκου ἐν μέσῳ αὐτῆς. (δ) Καὶ
παρὰ τῶν Λευιτῶν, ἀπὸ τῆς κατασχέσεως
τῆς πόλεως ἐν μέσῳ τῶν ἀφηγουμένων
ἔσται ἀναμέσον τῶν ὁρίων Ἰούδα,
καὶ ἀναμέσον τῶν ὁρίων Βενιαμὶν,
23 (ε) ϗ τῶν ἀφηγουμένων ἔσται. Καὶ
τὸ περισσὸν τῶν φυλῶν, ἀπὸ τῶν πρὸς
ἀνατολὰς, ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν,
24 Βενιαμὶν, μία. Καὶ ἀπὸ τ̃ ὁρίων τ̃ Βενιαμὶν,
ἀπὸ τ̃ πρὸς ἀνατολὰς, ἕως τ̃ πρὸς
25 θάλασσαν, Συμεὼν, μία. Καὶ ἀπὸ τῶν
ὁρίων τῶν Συμεὼν, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς,
ἕως τῶν πρὸς θάλασσαν,
26 Ἰσσάχαρ, μία. Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων (ϛ) τ̃
Ἰσσάχαρ, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς, ἕως
τῶν πρὸς θάλασσαν, Ζαβουλὼν, μία.
27 Καὶ ἀπὸ τῶν ὁρίων (ζ) τῶν Ζαβουλὼν,
ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς, ἕως τ̃ πρὸς
28 θάλασσαν, Γὰδ, μία. Καὶ ἀπὸ τῶν
ὁρίων (η) τῶν Γὰδ, ἀπὸ τῶν πρὸς ἀνατολὰς,
ἕως τῶν πρὸς Λίβα· ϗ ἔσται
τὰ ὅρια αὐτοῦ ἀπὸ Θαιμὰν, ϗ ὕδατος
Βαριμὼθ Κάδης, (θ) κληρονομίας, ἕως
29 τῆς θαλάσσης τῆς μεγάλης. Αὕτη ἡ γῆ,
ἣν βαλεῖτε, ἐν κλήρῳ ταῖς φυλαῖς
(ι) τοῦ Ἰσραήλ· ϗ οὗτοι οἱ διαμερισμοὶ
30 αὐτῶν, λέγει κύριος (κ) θεός. Καὶ αὗται
αἱ διεκβολαὶ τῆς πόλεως αἱ πρὸς
Βορρᾶν, τετρακισχίλιοι καὶ πεντακόσιοι
31 μέτρῳ. Καὶ αἱ πύλαι τῆς πόλεως,
ἐπ' ὀνόμασι (λ) φυλῶν τοῦ Ἰσραήλ. πύλαι
τρεῖς (μ) πρὸς Βορρᾶν, πύλη Ῥουβὴν,
μία, ϗ πύλη Ἰούδα, μία, ϗ πύλη Λευῒ, μία.

Quod autem ſuperérit longitudinis 18
juxta primitias Sanctorum,
decem millia ad Orientem,
& decem millia ad Mare.
Et (l) erunt primitiæ Sanctuarii:
& erunt genimina ejus
in panes, in his qui operantur
civitati. Qui autem operantur 19
civitati; operabuntur ei
ex omnibus tribubus Iſrael.
Omnes primitiæ quinque & 20
viginti millia per quinque &
viginti millia in quadrum: ſeparabitis
ipſius primitias Sanctuarii
à poſſeſſione civitatis.
Quod autem ſuperérit; duci 21
ex hoc, & ex hoc à primitiis
Sanctuarii, & in poſſeſſionē civitatis,
(m) ad quinq & viginti
millia longitudo, uſque ad terminos
eorum quæ ad Orientem &
ad Mare, ad quinque & viginti
millia, *uſque ad terminos*
eorum quæ ad Mare,
juxta partes ducis: & erunt
primitiæ Sanctorum, & ſanctificatio
domûs in medio ejus.
Et de Levitis de poſſeſſione 22
civitatis in medio, Ducum erit:
inter terminos Juda, & inter
terminos Benjamin, (n) &
Ducum erit. Et quod ſupereſt 23
tribuum, ab his quæ ad Orientem,
uſque ad ea quæ ad Mare,
Benjamin, una. Et à terminis 24
Benjamin, ab his quæ ad Orientem,
uſque ad ea quæ ad
Mare, Symeon una. Et à terminis 25
Symeon, ab his quæ ad Orientem,
uſque ad ea quæ ad Mare, Iſſachar
una. Et à terminis Iſſachar, 26
ab his quæ ad Orientem,
uſque ad ea quæ ad Mare, Zabulon
una. Et à terminis Zabulon, 27
ab his quæ ad Orientem,
uſque ad ea quæ ad Mare, Gad
una. Et à terminis Gad, ab 28
his quæ ad Orientem, uſque ad
ea quæ ad Africum: & erunt
termini ejus à Theman,
& aquæ (o) Barimoth Cades,
(p) hæreditatis uſque ad mare
Magnum. Hæc eſt terra, quam 29
mittetis in ſortem tribubus Iſrael:
& hæ ſunt partitiones
earum, ait Dominus Deus.
Et hi ſunt (q) egreſſus civitatis, 30
qui ad Aquilonem, quater
mille & quingenti menſuræ.
Et portæ civitatis in nominibus 31
tribuum Iſrael. Portæ tres
ad Aquilonem, porta Ruben
una, & porta Juda una, &
porta Levi una.

MS. A. (†) γεννήματα (ω) τοῦ ἀφηγουμένου ἐκ τούτου ἀπὸ τῶν ἀπαρχῶν τ̃ ἁγίων, (α) κατὰ πρόσωπον ἐπὶ εἴκοσι ϗ πέντε χιλιάδας (β) ἐπὶ πρόσωπον ἐπὶ (γ) ἀνατολὰς, ϗ ἐχόμενα (δ) Ἀπὸ τ̃ κατασχέσεως τῶν Λευιτῶν, ϗ ἀπὸ τῆς (ε) τῶν ἀφηγουμένων (ϛ) Ἰσσάχαρ, (ζ) Ζαβουλὼν, (η) Γὰδ, ϗ ἕως πρὸς Λίβα· ϗ ἔσται ὅρια (θ) κληρονομία ἕως θαλάσσης (ι) Ἰσραήλ· (κ) ὁ θεός. (λ) τ̃ φυλῶν (μ) αἱ τρεῖς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

18 וּדְאִשְׁתְּאַר בְּאוּרְכָּא לָקֳבֵל אַפְרָשׁוּת קוּדְשָׁא עַסְרָא אַלְפִין לְמַדְנְחָא עַסְרָא
אַלְפִין לְמַעְרְבָא וִיהֵי לָקֳבֵל אַפְרָשׁוּת קוּדְשָׁא וּתְהֵי עֲלַלְתֵּיהּ לְמֵיכַל לִדְמִפַּלְחִין
19 בְּקַרְתָּא : וּדְמִפַלַּח בְּקַרְתָּא יִפְלְחוּנֵיהּ מִכָּל שִׁבְטֵי יִשְׂרָאֵל : 20 וְכָל אַפְרָשׁוּתָא
עֶסְרִין וְחַמְשָׁא אַלְפָא וְעֶסְרִין וְחַמְשָׁא אַלְפָא מְרַבַּע תַּפְרְשׁוּן יָת אַפְרָשׁוּת
21 קוּדְשָׁא לְאַחְסָנַת קַרְתָּא : וּדְאִשְׁתְּאַר לְרַבָּא מִכָּא וּמִכָּא לְאַפְרָשׁוּת קוּדְשָׁא
וּלְאַחְסָנַת קַרְתָּא לָקֳבֵיל חַמְשָׁא וְעֶסְרִין אַלְפִין אַפְרָשׁוּתָא עַד תְּחוּם מַדְנְחָא
וּמַעְרְבָא לָקֳבֵל עֶסְרִין וְחַמְשָׁא אַלְפִין עַד תְּחוּם מַעְרְבָא לָקֳבֵיל חַד מִן חֻלָקַיָּא
22 לְרַבָּא וּתְהֵי אַפְרָשׁוּת קוּדְשָׁא וְכִבְשׁ מַקְדַּשׁ בֵּיתָא בְּגַוֵּיהּ : וּמֵאַחְסָנַת לֵוָאֵי
וּמֵאַחְסָנַת קַרְתָּא בִּמְצִיעִין דִּלְרַבָּא יְהֵי בֵּין תְּחוּם יְהוּדָה וּבֵין תְּחוּם בִּנְיָמִן
23 24 לְרַבָּא יְהֵי : וּשְׁאָר שִׁבְטַיָּא מֵרוּחַ מַדְנְחָא וְעַד רוּחַ מַעְרְבָא בִּנְיָמִן חַד : וְעַל
25 תְּחוּם בִּנְיָמִן מֵרוּחַ מַדְנְחָא עַד רוּחַ מַעְרְבָא שִׁמְעוֹן חַד : וְעַל תְּחוּם שִׁמְעוֹן
26 מֵרוּחַ מַדְנְחָא וְעַד רוּחַ מַעְרְבָא יִשָּׂשכָר חַד : וְעַל תְּחוּם יִשָּׂשכָר מֵרוּחַ מַדְנְחָא
27 עַד רוּחַ מַעְרְבָא זְבוּלֻן חַד : וְעַל תְּחוּם זְבוּלֻן מֵרוּחַ מַדְנְחָא עַד רוּחַ מַעְרְבָא
28 גָּד חַד : וְעַל תְּחוּם גָּד לְרוּחַ עֲבַר דָּרוֹמָא וִיהֵי תְּחוּם מִירִיחוֹ מֵי מַצּוּת רְקַם
29 אַחְסָנָא לְיַמָּא רַבָּא : דָּא אַרְעָא דְּתַפְלְגוּן לְאַחְסָנָא לְשִׁבְטַיָּא דְּיִשְׂרָאֵל וְאִלֵּין
30 פַּלְגוּתְהוֹן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים : וְאִלֵּין מַפְּקָנֵי קַרְתָּא מֵרוּחַ צִפּוּנָא אַרְבַּע אַלְפִין וַחֲמֵשׁ
31 מְאָה מְשַׁחְתָּא : וְתַרְעֵי קַרְתָּא עַל שְׁמָהַת שִׁבְטַיָּא דְּיִשְׂרָאֵל תַּרְעִין תְּלָתָא פְּתִיחִין
לְצִפּוּנָא תְּרַע רְאוּבֵן חַד תְּרַע יְהוּדָה חַד תְּרַע לֵוִי חַד :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quod autem reliquum fuerit in longitudine ſecundùm ſeparationem ſanctitatis, 18
viginti millia ad Orientem, & viginti millia ad Occidentem; & erit
juxta ſeparationem ſanctitatis, eritque fructus ejus in cibum his qui ſerviunt
in civitate. Et qui ſerviunt in civitate, operabuntur eam ex omnibus tribubus 19
Iſrael. *Et* omnis ſeparatio erit viginti quinque millium cum viginti 20
quinque millibus : in quadrum ſeparabitis ſeparationem ſanctitatis in
poſſeſſionem civitatis. Et quod reliquum fuerit, principis erit hinc & inde 21
in ſeparationem ſanctitatis & in poſſeſſionem civitatis è regione viginti
quinque millium ſeparationis uſque ad terminum Orientalem. Et ad Occidentem
è regione viginti quinque millium uſque ad terminum Occidentis
è regione uniuſcujuſque partium, principis erit. Et erit ſeparatio ſancta,
& via ſtrata ſanctuarii domus in medio ejus. Et de poſſeſſione Levitarum 22
& de poſſeſſione civitatis in intermediis quæ principis erunt; quod
fuerit inter terminum Juda & terminum Benjamin, principis erit. Et reliquum 23
tribuum, à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Benjamin
una. Et juxta terminum Benjamin à plaga Orientali uſque ad plagam 24
Occidentalem, Simeon una. Et juxta terminū Simeon à plaga Orientali uſq; 25
ad plagam Occidentalem, Iſſachar una. Et juxta terminum Iſſachar à plaga 26
Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Zabulon una. Et juxta terminum 27
Zabulon à plaga Orientali uſque ad plagam Occidentalem, Gad una.
Et juxta terminum Gad ad plagam partis Auſtralis; & erit terminus à Jericho 28
uſque ad aquas contradictionis Cades, hæreditas uſque ad mare magnum.
Hæc eſt terra quam dividetis in poſſeſſionem tribubus Iſrael, & hæ 29
ſunt diviſiones eorum ait Dominus Deus. Hi autem ſunt egreſſus civitatis à 30
plaga Septentrionali, quatuor millia & quingenta in menſura. Et portæ civitatis 31
erunt ſecundùm nomina tribuum Iſrael; tres portæ apertæ ad
Septentrionem; porta Ruben una, porta Juda una, porta Levi una.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܕܫܚܪ: ܠܘܩܒܠ ܦܘܪܫܢܐ ܕܩܘܕܫܐ. ܥܣܪܐ ܐܠܦܝܢ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܥܣܪ
ܐܠܦܝܢ ܠܡܥܪܒܐ. ܘܢܗܘܐ ܠܘܩܒܠ ܦܘܪܫܢܐ ܕܩܘܕܫܐ. ܘܬܗܘܐ ܥܠܠܬܗ ܠܡܐܟܘܠܬ
ܠܐܝܠܝܢ ܕܦܠܚܝܢ ܠܡܕܝܢܬܐ. * ܘܐܝܠܝܢ ܕܦܠܚܝܢ ܠܡܕܝܢܬܐ. ܢܦܠܚܘܢ. ܡܢ ܟܠܗܘܢ
ܫܒܛܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܟܠܗ ܦܘܪܫܢܐ. ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܒܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ
ܐܠܦܝܢ. ܘܬܦܪܫܘܢ ܦܘܪܫܢܐ ܕܩܘܕܫܐ ܥܡ ܐܘܚܕܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. * ܘܕܫܚܪ: ܠܪܝܫܐ
ܕܡܕܝܢܬܐ. ܘܡܢ ܦܘܪܫܢܐ ܕܩܘܕܫܐ. ܘܡܢ ܐܘܚܕܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܠܘܩܒܠ ܬܚܘܡܐ ܕܡܕܢܚܐ
ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܠܡܥܪܒܐ ܥܣܪܝܢ ܘܚܡܫܐ ܐܠܦܝܢ. ܠܘܩܒܠ ܬܚܘܡܐ ܕܡܥܪ
ܠܘܩܒܠ ܦܠܓܘܬܗ ܕܡܕܒܪܢܐ. ܘܢܗܘܐ ܦܘܪܫܢܐ ܕܩܘܕܫܐ. ܘܡܩܕܫܐ ܕܒܝܬܐ. ܒܡܨܥܬ
* ܘܡܢ ܐܘܚܕܢܐ ܕܠܘܝܐ. ܘܡܢ ܐܘܚܕܢܐ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܒܡܨܥܬܐ ܕܡܕܒܪܢܐ. ܢܗܘܐ. ܠܡܕܒܪܢ
ܒܝܬ ܬܚܘܡܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܠܬܚܘܡܐ ܕܒܢܝܡܝܢ. * ܫܪܟܐ ܕܝܢ ܕܫܒܛܐ. ܡܢ ܪܘ
ܡܕܢܚܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܪܘܚ ܡܥܪܒܐ. ܠܒܢܝܡܝܢ. * ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܒܢܝܡܝܢ. ܡܢ
ܡܕܢܚܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܪܘܚ ܡܥܪܒܐ. ܠܫܡܥܘܢ. * ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܫܡܥܘܢ. ܡܢ
ܪܘܚ ܡܕܢܚܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܪܘܚ ܡܥܪܒܐ. ܠܐܝܣܟܪ. * ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܐܝܣܟܪ. ܡܢ ܪܘ
ܡܕܢܚܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܪܘܚ ܡܥܪܒܐ. ܠܙܒܘܠܘܢ. * ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܙܒܘܠܘܢ. ܡܢ ܪܘܚ ܡܕܢܚ
ܘܥܕܡܐ ܠܪܘܚ ܡܥܪܒܐ. ܠܓܕ. * ܘܥܠ ܬܚܘܡܐ ܕܓܕ. ܡܢ ܪܘܚ ܬܝܡܢܐ. ܢܗܘܐ ܬܚܘܡ
ܡܢ ܬܐܡܢ. ܘܥܕܡܐ ܠܡܝܐ ܕܡܨܘܬܐ ܕܪܩܡ. ܝܪܬܘܬܗ ܥܠ ܝܡܐ ܪܒܐ. * ܗܕܐ ܗܝ ܐܪܥܐ ܕܬܦܠܓ
ܒܝܪܬܘܬܐ ܠܫܒܛܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܗܠܝܢ ܐܢܘܢ ܦܠܓܘܬܗܘܢ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܝܐ. * ܘܗܠܝܢ
ܡܦܩܢܝܗ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܡܢ ܪܘܚ ܓܪܒܝܐ. ܡܫܘܚܬܐ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ. ܘܚܡܫܡܐ
* ܘܬܪܥܝܗ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܥܠ ܫܡܗܐ ܕܫܒܛܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܬܠ
ܬܪܥܝܢ. ܚܕ ܕܪܘܒܝܠ. ܘܚܕ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܚܕ ܕܠܘܝ.

Spatii verò quod ſupererit ex adverſo ſepa- 18
rationis Sanctuarii, *nempe* decem millium
versùs Orientem, & decem millium versùs
Occidentem, & erit ex adverſo ſeparationis
Sanctuarii; proventus ejus eſto in cibum iis
qui miniſtrant urbi. Ei enim qui urbi mini- 19
ſtrat, miniſtretur ab omnibus familiis Iſraelis.
Itaque tota ſeparatio erit vigintiquinque 20
millia per vigintiquinque millia: unde cùm
ſeparaveritis ſeparationem Sanctuarii à poſ-
ſeſſione urbis, Quod ſupererit, erit recto- 21
ris urbis. A ſeparatione Sanctuarii & à poſ-
ſeſſione urbis versùs terminum Orientalem
erunt vigintiquinque millia, & Occidentem
versùs vigintiquinque millia in termino Oc-
cidentali e regione portionis rectoris: in cu-
jus medio erit ſeparatio Sanctuarii & San-
ctuarium domûs. Et etiam à poſſeſſione Le- 22
vitarum & poſſeſſione urbis erit portio recto-
ris: erit in urbe inter terminum Judæ & ter-
minum Benjaminis. Quod autem ad reli- 23
quas tribus; à latere Orientali uſque ad latus
Occidentale, Benjaminis erit. Et juxta ter- 24
minum Benjaminis, à latere Orientali uſque
ad latus Occidentale, erit Simeonis. Juxta 25
terminum Simeonis, à latere Orientali uſ-
que ad latus Occidentale, Iſacharis. Juxta 26
terminum Iſacharis, à latere Orientali uſque
ad latus Occidentale, Zebolonis. Juxta ter- 27
minum Zebolonis, à latere Orientali uſque
ad latus Occidentale, Gadis. Denique juxta 28
terminum Gadis à latere Meridionali, erit
terminus ejus: à Thamare uſque ad aquas
Meribath-Cades erit hæreditas ejus ſecus
mare magnum. Hæc eſt terra quam divi- 29
detis in hæreditatem inter filios Iſraelis: at-
que hæ ſunt portiones eorum, ait Dominus
dominorum. Hi autem ſunt exitus urbis: 30
A latere Aquilonis, menſura quatuor millium
quingentorum. Portæ urbis de nominibus 31
tribuum filiorum Iſraelis erunt: ad Aqui-
lonem tres portæ; una Rubelis, una Judæ, &
una Levi.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* وزيادة الطول الذي بجانب اوايل الاقداس ٭ عشرة الف نحو المشارق ٭ وعشرة الف نحو
البحر ٭ ويكون اوايل القدس ٭ ويكون غلاتها اخبازا لعمالي المدينة * وعمالو المدينة
يعملونها من جميع قبايل اسرايل * والبدء كله خمسة وعشرون في خمسة وعشرين الفا
مربع ٭ وافرزوا مبداء القدس نفسه من ضبط المدينة * وزيادة المقدم ٭ من هذا ومن
اوايل الاقداس ٭ والي ضبط المدينة ٭ في الواجهة على خمسة وعشرين الفا طولا الي
الحدود التي نحو المشارق ٭ والي البحر في الواجهة على خمسة وعشرين الفا الي الحدود التي
نحو المشارق ٭ والي جانب اجزاء المقدم ٭ ويكون مبداء الاقداس وقدس البيت في وسطها
* من ضبط اللاويين ٭ ومن ضبط المدينة يكون في وسط المقدمين ٭ بين حدود
يهودا وبين حدود بنيامين يكون للمقدمين * * وزيادة القبايل ٭ من الذين نحو
المشارق الي الذين نحو البحر ٭ لسمعان واحدة * ومن حدود سمعان ٭ من الذين نحو المشارق
الي الذين نحو البحر ٭ ايساخر واحدة * ومن حدود ايساخر ٭ من الذين نحو
المشارق الي الذين نحو البحر ٭ لزابلون واحدة * ومن حدود زابلون ٭ من الذين
نحو المشارق الي الذين نحو البحر ٭ لجاد واحدة * ومن حدود جاد والي الغرب ٭ فتكون
حدوده من تامان ٭ وماء باريعوث قادس ميراث الي البحر الاعظم * هذه الارض التي
تقسمونها بالقرعة لقبايل اسرايل ٭ وهذه حصصهم يقول الرب الاله * وهذه مخارج
المدينة التي نحو الجربياء ٭ اربعة الف وخمسماية بالقياس * وابواب المدينة باسما
قبايل اسرايل ٭ الثلاثة ابواب التي نحو الجربياء ٭ باب واحد لروبيل ٭ وباب واحد ليهودا
وباب واحد للاوي ٭

Reſidua verò longitudo quæ eſt ſe- 18
cus primitias ſanctorum, decem mil-
lia verſus Orientem, & decem mil-
lia verſùs mare; erunt primitiæ
Sanctuarii, & fruges ejus erunt in
panes pro operariis urbis. Operarii 19
autem urbis extruentes eam, erunt
ex omnibus tribubus Iſraelis. Igitur 20
primitiæ omnes erunt vigintiquinque
millia per vigintiquinque millia, qua-
dratæ. Et ſeparate primitias ejuſdem
Sanctuarii à poſſeſſione urbis. Quod au- 21
tem ſupereſt ex hoc & ex primitiis
ſanctorum uſque ad poſſeſſionem urbis,
principis erit è regione in vigintiquinque
millia longitudine, uſque ad terminos
qui ſunt Orientem verſùs, & uſque ad
mare è regione, in vigintiquinque mil-
lia, uſque ad terminos qui ſunt Orien-
tem verſùs, & uſque ad latus partium
principis: eruntque primitiæ ſacrorum,
& Sanctuarium ædis in medio eorum,
De poſſeſſione Levitarum: & de poſſeſ- 22
ſione urbis erit in medio principum; inter
limites Judæ, & inter limites Benja- 23
min erit pro principibus. Quod autem 24
ad reſiduas tribus: ab his quæ ſunt Ori-
entem verſùs uſque ad ea quæ mare
verſùs, Simeonis erit una. Et à ter- 25
minis Simeonis, ab his qui ſunt Orientem
verſùs, uſque ad eos qui mare verſùs,
Iſacharis una. A terminis Iſacharis, ab 26
his qui Orientem verſùs ad eos uſque qui
mare verſùs, Zibolonis una. A termi- 27
nis Zibolonis, ab his qui ſunt Orientem
verſùs uſque ad eos qui mare verſùs,
Gadis una. A terminis Gad uſque ad 28
Occidentem erunt termini ipſius à The-
man & aquâ Barimoth-Cades, poſſeſ-
ſio, uſque ad mare maximum. Hæc eſt 29
terra quam ſorte diſponetis familiis Iſrae-
lis, & hæ ſunt portiones eorum, dicit
Dominus Deus. Et hi ſunt egreſſus ur- 30
bis qui reſpiciunt Aquilonem: quater
mille quingenti in menſura. Et portæ 31
urbis erunt de nominibus familiarum
Iſraelis: Trium portarum quæ ſunt
Aquilonem verſùs, porta una eſto Ru-
beni, porta una Judæ, & porta una
Levi.

דניאל : א

portæ & ,millium quatuor & quingentorum Orientalem *angulum* ad Et
32 וְאֶל־פְּאַת קָדִימָה חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְאַרְבַּעַת אֲלָפִים וּשְׁעָרִים
.una Dan porta ,una Binjamin porta , una Joſeph porta Et .tres
שְׁלֹשָׁה וְשַׁעַר יוֹסֵף אֶחָד שַׁעַר בִּנְיָמִן אֶחָד שַׁעַר דָּן אֶחָד׃
, menſura millium quatuor & quingentorum *meridiei angulum* Et
33 וּפְאַת־נֶגְבָּה חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְאַרְבַּעַת אֲלָפִים מִדָּה
, una Iſaſchar porta , una Simhon porta : tres portæ &
וּשְׁעָרִים שְׁלֹשָׁה שַׁעַר שִׁמְעוֹן אֶחָד שַׁעַר יִשָּׂשכָר אֶחָד
quatuor & ,quingentorum , *maris Angulum* .una Zebulun porta
34 שַׁעַר זְבוּלֻן אֶחָד׃ פְּאַת־יָמָּה חֲמֵשׁ מֵאוֹת וְאַרְבַּעַת
, una Aſer porta ,una Ghad porta : tres eorũ portæ , millium
אֲלָפִים שַׁעֲרֵיהֶם שְׁלֹשָׁה שַׁעַר גָּד אֶחָד שַׁעַר אָשֵׁר אֶחָד
nomen & :millium decem octo *Circum* .una Naphthali porta
35 שַׁעַר נַפְתָּלִי אֶחָד׃ סָבִיב שְׁמֹנָה עָשָׂר אָלֶף וְשֵׁם־
.ibidem DOMINUS die ex civitatis
הָעִיר מִיּוֹם יְהוָה שָׁמָּה׃

Verſio VULG. LAT.

32 Et ad plagam Orientalem, quingentos & quatuor millia: & portæ tres, porta Joſeph una, porta Benjamin una, porta Dan una. 33 Et ad plagam Meridianam, quingentos & quatuor millia metieris: & portæ tres, porta Simeonis una, porta Iſſachar una, porta Zabulon una. 34 Et ad plagam Occidentalem, quingentos & quatuor millia: & portæ eorum tres, porta Gad una, porta Aſer una, porta Nephthali una. 35 Per circuitum, decem & octo millia: & nomen civitatis ex illa die, Dominus ibidem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

32 Καὶ τὰ πρὸς ἀνατολὰς τετρακισχίλιοι καὶ πεντακόσιοι· ϗ πύλαι τρεῖς, πύλη Ἰωσὴφ, μία, ϗ πύλη Βενιαμὶν, μία, ϗ πύλη Δὰν, μία. 33 Καὶ τὰ πρὸς Νότον τετρακισχίλιοι ϗ πεντακόσιοι μέτρῳ· ϗ πύλαι τρεῖς, πύλη Συμεὼν, μία, ϗ πύλη Ἰσάχαρ, μία, ϗ πύλη Ζαβουλὼν, μία. 34 Καὶ τὰ πρὸς θάλασσαν τετρακισχίλιοι ϗ πεντακόσιοι μέτρῳ· (ν) πύλαι τρεῖς, πύλη Γὰδ, μία, ϗ πύλη (ξ) Ἀσὴρ, μία, ϗ πύλη Νεφθαλὶμ, μία. 35 Κύκλωμα, δέκα ϗ ὀκτὼ χιλιάδες. ϗ τὸ ὄνομα τῆς πόλεως, ἀφ' ἧς ἂν ἡμέρας (ο) γένηται, ἔσται τὸ ὄνομα αὐτῆς.

Et quæ ad Orientem quatuor millia & quingenti: & portæ tres, porta Joſeph una, & porta Benjamin una, & porta Dan una. 32 Et quæ ad Auſtrum, quatuor millia & quingenti menſura: & portæ tres, porta Symeon una, & porta Iſſachar una, & porta Zabulon una. 33 Et quæ ad Mare, quatuor mille & quingenti menſura: portæ tres, porta Gad una et porta Aſſer una, & porta Nephthalim una. 34 Circuitus, decem & octo millia. Et nomen civitatis, ex qua die facta fuerit, erit nomen ejus. 35

MS.A. (ν) ϗ πύλαι (ξ) Ἀσὴρ, (ο) γένηται, Κύριος ἐκεῖ, ἔσται τὸ Ἰεζεκιὴλ προφήτης.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

32 ולרוח מדנחא ארבעה אלפין וחמש מאה ותרעין תלתא תרע יוסף חד תרע בנימן
33 חד תרע דן חד׃ ולרוח דרומא ארבעא אלפין וחמש מאה משחן ותרעין תלתא תרע
34 שמעון חד תרע יששכר חד תרע זבולן חד׃ ורוח מערבא ארבע אלפין וחמש מאה
35 תרעיהון תלתא תרע גד חד תרע אשר חד תרע נפתלי חד׃ סחור סחור תמנת עסר
אלפין ושמא דקרתא דמתפריש מיומא די ישרי יי שכנתיה תמן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et ad plagam Orientalem quatuor millia & quingenta, & portæ tres; porta 32 Joſeph una, porta Benjamin una, porta Dan una. Et ad plagam Auſtralem 33 quatuor millia & quingenta in menſura, & portæ tres; porta Simeon una, porta Iſſachar una, porta Zabulon una. Et ad plagam Occidentalem quatuor 34 millia & quingenta, & portæ tres; porta Gad una, porta Aſſer una, porta Neptali una. Per circuitum decem & octo millia, & nomen civitatis decla- 35 rabitur à die qua habitare fecerit Dominus majeſtatem ſuam ibi.

ספר דניאל

CAPUT I. א

.eam *ſuper* obſedit & , Jeruſalaim Babel rex Nebuchadneſar venit : Jehudah regis Jehojachim regni tertio anno In
1 בִּשְׁנַת שָׁלוֹשׁ לְמַלְכוּת יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה בָּא נְבוּכַדְנֶאצַּר מֶלֶךְ־בָּבֶל יְרוּשָׁלַם וַיָּצַר עָלֶיהָ׃
terra ea adduxit & , Dei domus vaſorum partem & , Jehudah regem Jehojachim ejus manum in Dominus dedit Et
2 וַיִּתֵּן אֲדֹנָי בְּיָדוֹ אֶת־יְהוֹיָקִים מֶלֶךְ־יְהוּדָה וּמִקְצָת כְּלֵי בֵית־הָאֱלֹהִים וַיְבִיאֵם אֶרֶץ־
,ſuorũ eunuchorũ *magiſtrum* Aſpenaz ad rex Dixitque .ſui dei theſauri domum intulit vaſa & : ſui dei domum, Sinhar
3 שִׁנְעָר בֵּית אֱלֹהָיו וְאֶת־הַכֵּלִים הֵבִיא בֵּית אוֹצַר אֱלֹהָיו׃ וַיֹּאמֶר הַמֶּלֶךְ לְאַשְׁפְּנַז רַב סָרִיסָיו
bonos & ,macula omnis *eis in* non quibus Pueros .principibus de & , regni ſemine de & ,Iſrael filiis de *introducendũ ad*
4 לְהָבִיא מִבְּנֵי יִשְׂרָאֵל וּמִזֶּרַע הַמְּלוּכָה וּמִן־הַפַּרְתְּמִים׃ יְלָדִים אֲשֶׁר אֵין־בָּהֶם כָּל־מְאוּם וְטוֹבֵי
palatio in ſtandum ad ,*eis in vigor* quibus & ,*ſcientiam* intelligentes & ,ſcientiã ſcientes & ,ſapientia omni in *intelligentes* & , aſpectu
מַרְאֶה וּמַשְׂכִּלִים בְּכָל־חָכְמָה וְיֹדְעֵי דַעַת וּמְבִינֵי מַדָּע וַאֲשֶׁר כֹּחַ בָּהֶם לַעֲמֹד בְּהֵיכַל
, *regis eſcæ buccella de ſuo die in diei rem* rex eis conſtituit Et .Chaſdim linguam &,*literaturam eos docendum ad* & : regis
5 הַמֶּלֶךְ וּלְלַמְּדָם סֵפֶר וּלְשׁוֹן כַּשְׂדִּים׃ וַיְמַן לָהֶם הַמֶּלֶךְ דְּבַר־יוֹם בְּיוֹמוֹ מִפַּת־בַּג הַמֶּלֶךְ
filiis de eos inter *fuit* Et .*regis facies ad* ſtarent eorum *extremitas* & : tribus annis eos *evehendum ad* & ,ſui potus vino de &
6 וּמִיֵּין מִשְׁתָּיו וּלְגַדְּלָם שָׁנִים שָׁלוֹשׁ וּמִקְצָתָם יַעַמְדוּ לִפְנֵי הַמֶּלֶךְ׃ וַיְהִי בָהֶם מִבְּנֵי
Danieli impoſuit & : nomina eunuchorum princeps eis impoſuit Et .Hazarjah & , Miſael ,Chananjah ,Daniel ,Jehudah
7 יְהוּדָה דָּנִיֵּאל חֲנַנְיָה מִישָׁאֵל וַעֲזַרְיָה׃ וַיָּשֶׂם לָהֶם שַׂר הַסָּרִיסִים שֵׁמוֹת וַיָּשֶׂם לְדָנִיֵּאל
.nego-Habed ,Hazarjah & ; Meſach , Miſaeli & ; Sadrach ,Chananjah & ; Beltheſaſar
בֵּלְטְשַׁאצַּר וְלַחֲנַנְיָה שַׁדְרַךְ וּלְמִישָׁאֵל מֵישַׁךְ וְלַעֲזַרְיָה עֲבֵד נְגוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

Prophetia DANIELIS.

CAP. I.

1 ANno tertio regni Joakim regis Juda, venit Nabuchodonoſor rex Babylonis in Jeruſalem, & obſedit eam: 2 Et tradidit Dominus in manu ejus Joakim regem Juda, & partem vaſorum domûs Dei: & aſportavit ea in terram Sennaar in domum dei ſui, & vaſa intulit in domum Theſauri dei ſui. 3 Et ait rex Aſphenez præpoſito eunuchorũ, ut introduceret de filiis Iſrael, & de ſemine regio & tyrannorum, 4 Pueros, in quibus nulla eſſet macula, decoros formâ, & eruditos omni ſapientiâ, cautos ſcientiâ, & doctos diſciplinâ, & qui poſſent ſtare in palatio regis, ut doceret eos literas, & linguam Chaldæorum. 5 Et conſtituit eis rex annonam per ſingulos dies de cibis ſuis, & de vino unde bibebat ipſe, ut enutriti tribus annis, poſteà ſtarent in conſpectu regis. 6 Fuerunt ergò inter eos de filiis Juda, Daniel, Ananias, Miſael, & Azarias. 7 Et impoſuit eis præpoſitus eunuchorum nomina; Danieli, Baltaſſar; Ananiæ, Sidrach; Miſaeli, Miſach; & Azariæ, Abdenago.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܕܢܝܐܝܠ ܢܒܝܐ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

1 * ܒܫܢܬ ܬܠܬ ܠܡܠܟܘܬܗ ܕܝܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ ·. ܐܬܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ
2 ܕܒܒܠ ܠܐܘܪܫܠܡ ܘܐܚܕܗ. * ܘܐܫܠܡܗ ܡܪܝܐ ܒܐܝܕܗ. ܠܝܘܝܩܝܡ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ.
ܘܡܐܢܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ·. ܘܐܝܬܝ ܐܢܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܫܢܥܪ ܠܒܝܬ ܦܬܟܪܗ. ܘܡܐܢܐ ܐܥܠ
3 ܠܒܝܬ ܓܙܐ ܕܦܬܟܪܗ. * ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ ܠܐܫܦܙ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ ·. ܕܢܝܬܐ ܡܢ ܒܢܝ
4 ܐܝܣܪܝܠ ·. ܘܡܢ ܙܪܥܐ ܕܡܠܟܘܬܐ. ܘܡܢ ܦܪܬܘܝܐ ·. * ܛܠܝܐ ܕܡܘܡܐ ܠܝܬ ܒܗܘܢ.
ܘܫܦܝܪܝܢ ܒܚܙܘܗܘܢ. ܘܡܣܬܟܠܝܢ ܒܟܠܗ ܚܟܡܬܐ. ܘܝܕܥܝܢ ܝܕܥܬܐ ·. ܘܡܣܬܟܠܝܢ
ܡܕܥܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܐܝܬ ܒܗܘܢ ܚܝܠܐ ܠܡܩܡ ܒܗܝܟܠܗ ܕܡܠܟܐ ܠܡܫܡܫܘܬܗ. ܘܠܡܠܦܘ
5 ܐܢܘܢ ܣܦܪܐ ܘܡܠܬܐ ܕܟܠܕܝܐ. * ܘܦܣܩ ܠܗܘܢ ܡܠܟܐ ܦܣܩܬܐ ܕܝܘܡܐ ·. ܡܢ
ܦܬܒܓܐ ܕܡܠܟܐ. ܘܡܢ ܚܡܪܐ ܕܫܬܐ. ܘܡܪܒܐ ܐܢܘܢ ܫܢܝܢ ܬܠܬ ·. ܘܒܬܪܟܢ
6 ܢܩܘܡܘܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. * ܘܗܘܘ ܒܗܘܢ ܡܢ ܒܢܝ ܝܗܘܕܐ ·. ܕܢܝܐܝܠ. ܘܚܢܢܝܐ. ܘܡܝܫܐܝܠ.
7 ܘܥܙܪܝܐ. * ܘܣܡ ܠܗܘܢ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ ܫܡܗܐ. ܠܕܢܝܐܝܠ ܒܠܛܫܨܪ. ܘܠܚܢܢܝܐ
ܫܕܪܟ. ܘܠܡܝܫܐܝܠ ܡܝܫܟ ·. ܘܠܥܙܪܝܐ ܥܒܕܢܓܘ.

SEQUITUR

PROPHETIA DANIELIS PROPHETÆ.

CAP I.

1 ANno tertio regni Jojacimi regis Judæ venit Nebuchadnoſar rex Babylonis Jeruſalem, & obſedit eam; 2 Et tradidit eam Dominus in manum ejus, atque Jojacimum regem Judæ: & vaſa domûs Domini aſportavit in terrã Senaar ad ædem idoli ſui, eademque vaſa intulit in theſaurum idoli ſui. 3 Edixit etiam rex Aſphezo aulicorum præfecto, ut adduceret è filiis Iſrael, è ſemine regio, & ex Parthis, 4 Pueros in quibus nullum eſſet vitium, qui decori eſſent aſpectu, ſapientiâ prudentes, ſcientiarũ periti, & ingenio perſpicaces, quique idonei eſſent ad conſiſtendum in palatio regis ut miniſtrarent ei, & addiſcerent ſcripturã & linguam Chaldæorum. 5 Et conſtituit rex illis demenſũ quotidianũ de pulmentis regiis deque vino quod bibebat: ut cùm educati eſſent annis tribus, tum demum conſiſterent coram rege. 6 Inter hos fuerunt de filiis Judæ, Daniel, & Hanania, Miſael, & Azaria: 7 Quibus impoſuit præfectus aulicorũ nomina; vocavit enim Danielem Blitſaſar, Hananiam Sedrach, Miſaelem Maiſach, & Azariam Ebednago.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܡܕܢܚܐ ܡܫܘܚܬܐ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ ܘܚܡܫܡܐܐ. ܘܬܪ̈ܥܐ ܬܠܬܐ. ܚܕ ܕܝܘܣܦ.
ܚܕ ܕܒܢܝܡܝܢ. ܘܚܕ ܕܕܢ. * ܘܠܬܝܡܢܐ ܡܫܘܚܬܐ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ ܘܚܡܫܡܐܐ. ܘܬܪ̈ܥܐ ܬܠܬܐ.
ܚܕ ܕܫܡܥܘܢ. ܚܕ ܕܐܝܣܟܪ. ܘܚܕ ܕܙܒܘܠܘܢ. * ܘܠܡܥܪܒܐ ܡܫܘܚܬܐ ܐܪܒܥܐ ܐܠܦܝܢ
ܘܚܡܫܡܐܐ. ܘܬܪ̈ܥܐ ܬܠܬܐ. ܚܕ ܕܓܕ. ܚܕ ܕܐܫܝܪ. ܘܚܕ ܕܢܦܬܠܝ. * ܘܚܘܕܪܗ
ܬܡܢܬܥܣܪ ܐܠܦܝܢ. ܘܫܡܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܡܢ ܝܘܡܢܐ. ܡܪܝܐ ܫܡܗ.

* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܚܙܩܝܐܝܠ *

Ad Orientem menſura quatuor milliũ quingentorum, & tres portæ; una Joſephi, una 32
Benjaminis, & una Danis. Ad Auſtrum 33
menſura quater millium quingentorum, &
tres portæ; una Simeonis, una Iſacharis, &
una Zebolonis. Ad Occidentem menſura 34
quater millium quingentorum, & tres portæ; una Gadis, una Aſeris, & una Nephtali.
Ambitus ejus decem & octo millium: 35
nomen autem urbis, inde à diebus
ejus Dominum vocavit
eam.

Prophetiæ Hezecielis finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والذين نحو المشارق اربعة الف وخمسمية * وثلثة ابواب * باب واحد ليوسف * وباب واحد
لبنيامين * وباب واحد لدان * والذين نحو التيمن اربعة الف وخمسمية بالقياس * وثلاثة ابواب *
باب واحد لسمعان * وباب واحد لايساخر * وباب واحد لزابلون * والذين نحو البحر اربعة الف
وخمسماية بالقياس * وثلثة ابواب * باب واحد لجاد * وباب واحد لاسير * وباب واحد لنفتاليم *
* والداير ثمانية عشر الفا * واسم المدينة منذ ذلك اليوم يكون الرب * يكون هناك اسمها *

* تمت نبوة حزقيال بن بوزي * بمعونة الرب جل جلاله *

Qui autem ſunt Orientem verſùs, quater mille quingenti, & portæ tres: porta una Joſepho, porta una Benjamini, 32
& porta una Dani. Qui Meridiem 33
verſùs, quater mille quingenti in menſura, & portæ tres: porta una Simeoni,
porta una Iſachari, & porta una Zaboloni. Qui demum Occidentem verſùs, 34
quater mille quingenti in menſura, & portæ tres: porta una Gadi, porta una
Aſeri, & porta una Nephtalimo. Am- 35
bitus eſt decem & octo millium. Nomen urbis ab ea die erit Dominus, erit ibi nomen ejus.

Abſoluta eſt Prophetia Hezecielis filii Buzi, ſub auſpiciis
Domini glorioſiſſimi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

ΔΑΝΙΗ'Λ.

ΚΕΦ. α'.

(†) ἘΝ ἔτει τρίτῳ τῆς βασιλείας Ἰωακεὶμ βασιλέως Ἰούδα, ἦλθε Ναβουχοδονόσορ (') ὁ βασιλεὺς Βαβυλῶνος εἰς
Ἱερουσαλὴμ, καὶ ἐπολιόρκει αὐτήν. Καὶ ἔδωκε Κύριος ἐν χειρὶ αὐτοῦ τὸν Ἰωακεὶμ βασιλέα Ἰούδα, καὶ ἀπὸ μέ-
ρους τῶν σκευῶν οἴκου τοῦ θεοῦ· καὶ ἤνεγκεν αὐτὰ εἰς γῆν Σενναὰρ (α) οἴκου τοῦ θεοῦ αὐτοῦ, καὶ τὰ σκεύη εἰσήνεγ-
κεν εἰς τὸν (") οἶκον θησαυροῦ τοῦ θεοῦ αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ Ἀσφανὲζ τῷ ἀρχιευνούχῳ αὐτοῦ, εἰσαγα-
γεῖν ἀπὸ τῶν υἱῶν τῆς αἰχμαλωσίας Ἰσραὴλ, καὶ ἀπὸ τοῦ σπέρματος τῆς βασιλείας, καὶ ἀπὸ τῶν (β) φορθομμὶν,
νεανίσκους, οἷς οὐκ ἔστιν ἐν αὐτοῖς μῶμος, καὶ (") καλοὺς τῇ ὄψει, καὶ συνιέντας ἐν πάσῃ σοφίᾳ, καὶ γινώσκοντας γνῶ-
σιν, καὶ διανοουμένους φρόνησιν, καὶ οἷς ἐστιν ἰσχὺς ἐν αὐτοῖς (γ) ἑστάναι ἐν τῷ οἴκῳ ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, καὶ διδά-
ξαι αὐτοὺς γράμματα καὶ γλῶσσαν Χαλδαίων. Καὶ διέταξεν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς τὸ τῆς ἡμέρας καθ' ἡμέραν, ἀπὸ
τῆς τραπέζης τοῦ βασιλέως, καὶ ἀπὸ τοῦ οἴνου τοῦ πότου αὐτοῦ, καὶ θρέψαι αὐτοὺς ἔτη τρία, καὶ μετὰ ταῦτα στῆναι ἐνώ-
πιον τοῦ βασιλέως. Καὶ ἐγένετο (δ) ἐν αὐτοῖς ἐκ τῶν υἱῶν Ἰούδα, Δανιὴλ, καὶ Ἀνανίας, καὶ (ε) Ἀζαρίας, καὶ Μισαήλ.
Καὶ ἐπέθηκεν αὐτοῖς ὁ ἀρχιευνοῦχος ὀνόματα· τῷ Δανιὴλ (ς) Βαλτάσαρ, καὶ τῷ Ἀνανίᾳ Σεδρὰχ, καὶ τῷ Μι-
σαὴλ (') Μισὰχ, καὶ τῷ Ἀζαρίᾳ Ἀβδεναγώ.

DANIEL.

CAP. I.

IN anno tertio regni (a) Joacim regis Juda, venit Nabuchodonoſor 1
rex Babylonis in Hieruſalem, & obſidebat eam. Et dedit Dominus in 2
manu ejus Joacim regem Juda, & de parte vaſorum domûs Dei. Et
aſportavit ea in terram (b) Sennaar domûs dei ſui: & vaſa intulit in
domum theſauri dei ſui. Et ait rex Aſphanez præpoſito eunuchorum ſu- 3
orum, ut introduceret de filiis captivitatis Iſrael: et de (c) ſemine re- 4
gni, & de (d) Phorthommin, Pueros, (e) quibus non eſt in eis macula, &
pulchros ſpecie, & intelligentes in omni ſapientia, & ſcientes ſcientiam,
& cogitantes prudentiam, & quibus eſt robur in eis ſtandi in domo co-
ram rege, & doceret eos literas, & linguam Chaldæorum, (Et con- 5
ſtituit eis rex quod in diem, quotidiè de menſa regis, & de vino potûs
ipſius,) & nutriret eos annis tribus, & poſteà ſtarent in conſpectu regis.
Et fuerunt in eis de filiis Juda, Daniel, & Ananias, & Azarias, & 6
Miſael. Et impoſuit eis præpoſitus eunuchorum nomina; Danieli, Baltaſar; 7
& Ananiæ, Sedrach; et Miſaeli, Miſach; et Aſariæ, Abdenago.

MS.A. (†) ὍΡΑΣΙΣ β'. (') βασιλεὺς (α) οἶκον (") οἶκον τοῦ θεοῦ (β) πορθεμμείν, (") *καλοὶ (γ) ἑστάναι ἐνώπιον τοῦ (δ) αὐτοῖς (ε) Μισαὴλ καὶ Ἀζαρίας. (ς) Βαρτάσαρ, (') Μισάκ.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* تبتدي بعون الله نبوة دانيال النبي *

* الفصل الاول *

* الاصحاح الاول *

* في السنة الثالثة من مملكة يواقيم ملك يهودا * اتي بختنصر ملك بابل الي ايرسليم
وحاصرها * ودفع الرب في يده يواقيم ملك يهودا * ومن جزء اواني بيت الله * حملهم الي ارض
العراق بيت الهه * والاواني ادخلها الي بيت خزن الهه * وقال الملك لاصفانار رييس
خصيانه * ان يدخل من بني سبي اسرايل * ومن ذرية المملكة * ومن الاكرة * شبانا لا
يكون فيهم عيب * وحسني المنظر * وفهماء بكل حكمة * وعارفون بالعلم * وفطنون
بالذهن * ويكون فيهم قوة ليقوموا في البيت امام الملك * ويعلموهم الخطوط ولسان
الكلدانيين * ورتب لهم الملك وظيفة اليوم كل يوم من مايدة الملك ومن خمر مشربه
ويربوهم ثلث سنين * وبعد هذا يقفوا امام الملك * وكان فيهم من بني يهودا دانيال
وحنانيا وميصاييل وعازاريا * ووضع لهم رييس الخصيان اسماء لدانيال بلطشاصر وسدراخ
ميصاخ * ولعازاريا عبدناغو *

INCIPIMUS, JUVANTE DEO,

PROPHETIAM

DANIELIS PROPHETÆ.

CAPUT PRIMUM.

Textus primus.

ANno tertio regni Joacimi regis Ju- 1
dæ, venit Bochtonaſſar rex Babelis Je-
roſolymam, & obſedit eam: Tradidit- 2
que Dominus in manum ejus Joacimum
regem Judæ, & partem vaſorum do-
mûs Dei, quæ aſportavit in terram
Arac domum dei ſui, & vaſa intulit
in domum theſauri dei ſui. Et ait rex 3
Aſphenazo principi eunuchorum ſuorum,
ut introduceret de captivis Iſraelitis
tam regiæ ſtirpis quàm agricolarum, Ado- 4
leſcentulos in quibus nulla eſſet labes,
pulchros aſpectu, omni ſapientiâ peri-
tos, ſcientiâ præditos, & ingenio con-
ſideratos, in quibus eſſet facultas ſtandi
in palatio coram rege, & addiſcendi
ſcripturam & linguam Chaldæorum. Et 5
aſſignavit eis rex demenſum diurnum
quotidianum de menſa regia deque vino
potûs ſui: ut annis tribus enutriti, poſteà
ſiſterentur ante regem. Inter eos fuerunt 6
de filiis Judæ Daniel, Hanania, Miſael,
& Azaria: Quibus impoſuit prin- 7
ceps Eunuchorum nomina; Danieli Bal-
taſaſar, & Sedrach, Miſach, & Azariæ
Abdenago.

דניאל : ב

prin.ipe à requisivit & : ej⁹ *potuum* vino in & , *regis escæ buccella* in se pollueret non *quòd* ,suo corde *super* Daniel proposuit Et
8 וַיָּשֶׂם דָּנִיֵּאל עַל־לִבּוֹ אֲשֶׁר לֹא־יִתְגָּאַל בְּפַתְבַּג הַמֶּלֶךְ וּבְיֵין מִשְׁתָּיו וַיְבַקֵּשׁ מִשַּׂר
principis facies ad : misericordias in &,misericordiam in Danielem Deus dedit Et .se pollueret non *quòd* ,eunuchorum
9 הַסָּרִיסִים אֲשֶׁר לֹא יִתְגָּאָל : וַיִּתֵּן הָאֱלֹהִים אֶת־דָּנִיֵּאל לְחֶסֶד וּלְרַחֲמִים לִפְנֵי שַׂר
&,vestram escam constituit qui ,regem meũ dominum *ego Timens* :Danielẽ ad eunuchorũ princeps Dixitque .eunuchorũ
10 הַסָּרִיסִים : וַיֹּאמֶר שַׂר הַסָּרִיסִים לְדָנִיֵּאל יָרֵא אֲנִי אֶת־אֲדֹנִי הַמֶּלֶךְ אֲשֶׁר מִנָּה אֶת־מַאֲכַלְכֶם וְאֶת־
condemnabitis &,vestrã similitudinẽ secũdũ qui ,pueris *præ tristes* vestros vultus *videbit quid ad* qui : *vestros potus*
מִשְׁתֵּיכֶם אֲשֶׁר לָמָּה יִרְאֶה אֶת־פְּנֵיכֶם זֹעֲפִים מִן־הַיְלָדִים אֲשֶׁר כְּגִילְכֶם וְחִיַּבְתֶּם
,Chananjah ,Daniel super eunuchorum princeps constituerat quem , Melsar ad Daniel dixit Et .regi meum caput
11 אֶת־רֹאשִׁי לַמֶּלֶךְ : וַיֹּאמֶר דָּנִיֵּאל אֶל־הַמֶּלְצַר אֲשֶׁר מִנָּה שַׂר הַסָּרִיסִים עַל־דָּנִיֵּאל חֲנַנְיָה
.bibemus &,aquam &,comedemus & ,*seminibus* de nobis dent & : decem diebus tuos servos obsecro Tenta .Hazarjah & , Misael
12 מִישָׁאֵל וַעֲזַרְיָה : נַס־נָא אֶת־עֲבָדֶיךָ יָמִים עֲשָׂרָה וְיִתְּנוּ־לָנוּ מִן־הַזֵּרֹעִים וְנֹאכְלָה וּמַיִם וְנִשְׁתֶּה :
cum fac , videris sicut & : *regis* cibi *buccella vescentium* puerorum aspectus & ,nostri aspectus *tuas facies ad* videantur Et
13 וְיֵרָאוּ לְפָנֶיךָ מַרְאֵינוּ וּמַרְאֵה הַיְלָדִים הָאֹכְלִים אֵת פַּת־בַּג הַמֶּלֶךְ וְכַאֲשֶׁר תִּרְאֵה עֲשֵׂה עִם־
,*bonus* eorũ aspectus est visus decem dierum fine in Et .decem diebus eos tentavit & : hoc *verbo* in eis *obaudivit* Et .tuis servis
14 15 עֲבָדֶיךָ : וַיִּשְׁמַע לָהֶם לַדָּבָר הַזֶּה וַיְנַסֵּם יָמִים עֲשָׂרָה : וּמִקְצָת יָמִים עֲשָׂרָה נִרְאָה מַרְאֵיהֶם טוֹב
,eorũ cibi portionẽ *ferens* Melsar fuit Et .*regis* cibi *buccella vescentibus* pueris omnibus præ : carne pinguiores &
16 וּבְרִיאֵי בָּשָׂר מִן־כָּל־הַיְלָדִים הָאֹכְלִים אֵת פַּתְבַּג הַמֶּלֶךְ : וַיְהִי הַמֶּלְצַר נֹשֵׂא אֶת־פַּתְבָּגָם
omni in intellectũ &,scientiam Deus *eis* dedit ipsis quatuor istis pueris Et .*semina* eis *dans* & : eorũ *potuum* vinũ &
17 וְיֵין מִשְׁתֵּיהֶם וְנֹתֵן לָהֶם זֵרְעֹנִים : וְהַיְלָדִים הָאֵלֶּה אַרְבַּעְתָּם נָתַן לָהֶם הָאֱלֹהִים מַדָּע וְהַשְׂכֵּל בְּכָל־
:eos *introducendũ ad* , rex dixit quibus dierum fine in Et .somnia & *visione omni in* fecit intelligere Danielẽ & :sapientiã &,libro
18 סֵפֶר וְחָכְמָה וְדָנִיֵּאל הֵבִין בְּכָל־חָזוֹן וַחֲלֹמוֹת : וּלְמִקְצָת הַיָּמִים אֲשֶׁר־אָמַר הַמֶּלֶךְ לַהֲבִיאָם
illis universis de est inventus non & , rex eis cum est locutus Et .Nebuchadnesar *facies ad* eunuchorum princeps eos introduxit &
19 וַיְבִיאֵם שַׂר הַסָּרִיסִים לִפְנֵי נְבֻכַדְנֶצַּר : וַיְדַבֵּר אִתָּם הַמֶּלֶךְ וְלֹא נִמְצָא מִכֻּלָּם
quod ,intelligentiæ ,sapientiæ verbum omne Et .*regis facies ad* steterunt & : Hazarjah & , Misael ,Chananjah ,Daniel sicut
20 כְּדָנִיֵּאל חֲנַנְיָה מִישָׁאֵל וַעֲזַרְיָה וַיַּעַמְדוּ לִפְנֵי הַמֶּלֶךְ : וְכֹל דְּבַר חָכְמַת בִּינָה אֲשֶׁר־
fuit Et .suo regno omni in qui ,*sophos* ,genethliacos omnes super *manibus* decem eos invenit & : rex eis ab *quæsivit*
21 בִּקֵּשׁ מֵהֶם הַמֶּלֶךְ וַיִּמְצָאֵם עֶשֶׂר יָדוֹת עַל כָּל־הַחַרְטֻמִּים הָאַשָּׁפִים אֲשֶׁר בְּכָל־מַלְכוּתוֹ : וַיְהִי
.regis Chores *unum* annum ad usque Daniel
דָּנִיֵּאל עַד־שְׁנַת אַחַת לְכוֹרֶשׁ הַמֶּלֶךְ :

Versio VULG. LAT.

Proposuit autem Daniel in corde suo, ne pollueretur de 8
mensa regis, neque de vino potûs ejus: & rogavit eunuchorum præpositum ne contaminaretur. Dedit autem Deus 9
Danieli gratiam & misericordiam in conspectu principis eunuchorum. Et ait princeps eunuchorum ad Danielem; 10
Timeo ego dominum meum regem, qui constituit vobis cibum & potum: qui si viderit vultus vestros macilentiores præ cæteris adolescentibus coævis vestris, condemnabitis caput meum regi. Et dixit Daniel ad Malasar, quem con- 11
stituerat princeps eunuchorum super Danielem, Ananiam, Misaelem, & Azariam; Tenta nos, obsecro, servos tu- 12
os diebus decem, & dentur nobis legumina ad vescendum, & aqua ad bibendum: Et contemplare vultus nostros, 13
& vultus puerorum qui vescuntur cibo regio: & sicut videris, facies cum servis tuis. Qui, audito sermone hujus- 14
cemodi, tentavit eos dieb⁹ decem. Post dies autem decẽ, 15
apparuerunt vultus eorum meliores & corpulentiores præ omnibus pueris, qui vescebantur cibo regio. Porrò Ma- 16
lasar tollebat cibaria, & vinum potûs eorum: dabátque eis legumina. Pueris autem his dedit Deus scientiam & di- 17
sciplinam, in omni libro & sapientia: Danieli autem intelligentiam omnium visionum & somniorum. Completis 18
itaque diebus, post quos dixerat rex ut introducerentur: introduxit eos præpositus eunuchorum in conspectu Nabuchodonosor. Cúmque eis locutus fuisset rex, non sunt in- 19
venti tales de universis, ut Daniel, Ananias, Misael, & Azarias: & steterunt in conspectu regis. Et omne verbum sa- 20
pientiæ & intellectûs, quod sciscitatus est ab eis rex, invenit in eis decuplùm, super cunctos ariolos & magos, qui erant in universo regno ejus. Fuit autem Daniel usque ad 21
annum primum Cyri regis.

CAP. II. ב

est fractus ej⁹ somnus &,ej⁹ spiritus *se terruit vicibus* & : somnia Nebuchadnesar somniavit Nebuchadnesar regni secundo anno *in* Et
1 וּבִשְׁנַת שְׁתַּיִם לְמַלְכוּת נְבֻכַדְנֶצַּר חָלַם נְבֻכַדְנֶצַּר חֲלֹמוֹת וַתִּתְפָּעֶם רוּחוֹ וּשְׁנָתוֹ נִהְיְתָה
,venerũt & :sua somnia regi *indicandũ ad* ,Chasdim & , maleficos & ,*sophos* & ,genethliacos *vocandũ ad* rex dixit Et .*eo super*
2 עָלָיו : וַיֹּאמֶר הַמֶּלֶךְ לִקְרֹא לַחַרְטֻמִּים וְלָאַשָּׁפִים וְלַמְכַשְּׁפִים וְלַכַּשְׂדִּים לְהַגִּיד לַמֶּלֶךְ חֲלֹמֹתָיו וַיָּבֹאוּ
.somnium *sciendum ad*,me⁹ spiritus *se terruit vicibus* &:somniavi Somniando : rex eis Dixitque .*regis facies ad* steterũt &
3 וַיַּעַמְדוּ לִפְנֵי הַמֶּלֶךְ : וַיֹּאמֶר לָהֶם הַמֶּלֶךְ חֲלוֹם חָלָמְתִּי וַתִּפָּעֶם רוּחִי לָדַעַת אֶת־הַחֲלוֹם : 3

CAP. II.

IN anno secundo regni Nabuchodonosor, vidit Nabuchodonosor somnium, & conterritus est spiritus ejus, & somnium ejus fugit ab eo. Præcepit autem rex, ut convocaren- 2
tur arioli, & magi, & malefici, & Chaldæi, ut indicarent regi somnia sua: qui cùm venissent, steterunt coram rege. Et dixit ad eos rex; Vidi somnium: & mente confusus 3
ignoro quid viderim.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

8 ܘܣܡ ܕܢܝܐܝܠ ܒܠܒܗ . ܕܠܐ ܢܐܟܘܠ ܡܢ ܦܬܒܓܐ ܕܡܠܟܐ . ܘܠܐ ܢܫܬܐ ܡܢ ܚܡܪܐ *
9 ܕܫܬܐ. ܘܒܥܐ ܡܢ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ. ܕܠܐ ܢܘܟܠܘܗܝ. * ܘܝܗܒ ܡܪܝܐ ܠܛܝܒܘܬܐ ܘܠܪ̈ܚܡܐ
10 ܠܕܢܝܐܝܠ ܩܕܡ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ. * ܘܐܡܪ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܕܚܠ ܐܢܐ ܡܢ ܡܪܝ
ܡܠܟܐ. ܕܦܩܕ ܥܠ ܡܐܟܘܠܟܘܢ ܘܥܠ ܡܫܬܝܟܘܢ. ܕܟܕ ܢܚܙܐ ܐܦܝܟܘܢ ܟܡܝܪܢ ܡܢ
11 ܛܠܝܐ ܒܢܝ ܫܢܝܟܘܢ. ܘܬܚܝܒܘܢ ܪܫܝ ܠܡܠܟܐ. * ܘܐܡܪ ܕܢܝܐܝܠ ܠܡܢܝܣܪ. ܕܐܫܠܛܗ ܪܒ
12 ܡܗܝܡܢܐ ܥܠ ܕܢܝܐܝܠ ܘܥܠ ܚܢܢܝܐ. ܘܥܠ ܡܝܫܐܝܠ. ܘܥܠ ܥܙܪܝܐ. * ܢܣܝ ܐܢܘܢ
13 ܠܥܒ̈ܕܝܟ ܝܘܡܬܐ ܥܣܪܐ. ܘܢܬܠܘܢ ܠܢ ܙܪ̈ܥܘܢܐ ܠܡܐܟܠ. ܘܡܝܐ ܠܡܫܬܐ. * ܘܢܚܙܐ
ܚܙܘܢ. ܘܚܙܘܐ ܕܛܠܝܐ ܕܐܟܠܝܢ ܡܢ ܦܬܒܓܐ ܕܡܠܟܐ . ܘܐܝܟ ܕܚܙܐ ܐܢܬ ܗܟܢܐ
14 ܥܒܕ ܥܡ ܥܒ̈ܕܝܟ. * ܘܫܡܥ ܠܡܠܬܗܘܢ ܗܕܐ. ܘܢܣܐ ܐܢܘܢ ܝܘܡܬܐ ܥܣܪܐ.
15 * ܘܡܢ ܒܬܪ ܥܣܪܐ ܝܘܡܝܢ . ܚܙܐ ܐܦܝܗܘܢ ܫܦܝܪܝܢ ܘܡܫܡܢ ܒܣܪܗܘܢ . ܝܬܝܪ ܡܢ
16 ܛܠܝܐ ܟܠܗܘܢ ܕܐܟܠܝܢ ܡܢ ܦܬܒܓܐ ܕܡܠܟܐ. * ܘܡܢܝܣܪ ܢܣܒ ܗܘܐ ܠܗ ܡܫܘܚܬܗܘܢ.
17 ܘܚܡܪܐ ܕܡܫܬܝܗܘܢ. ܘܝܗܒ ܗܘܐ ܠܗܘܢ ܙܪ̈ܥܘܢܐ ܠܡܐܟܠ ܘܡܝܐ ܠܡܫܬܐ. * ܘܠܛܠܝܐ
ܗܠܝܢ ܐܪܒܥܬܗܘܢ. ܝܗܒ ܠܗܘܢ ܐܠܗܐ ܝܕܥܬܐ ܘܣܘܟܠܐ ܒܟܠ ܣܦܪ ܘܒܚܟܡܬܐ.
18 ܘܕܢܝܐܝܠ ܡܣܬܟܠ ܗܘܐ ܒܟܠ ܚܙܘܝܢ ܘܒܚܠܡܝܢ. * ܘܡܢ ܒܬܪ ܕܫܠܡܘ ܝܘܡܬܐ ܕܦܩܕ
19 ܡܠܟܐ. ܐܝܬܝ ܐܢܘܢ ܪܒ ܡܗܝܡܢܐ ܩܕܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. * ܘܡܠܠ ܥܡܗܘܢ
ܡܠܟܐ. ܘܠܐ ܐܫܬܟܚ ܒܟܠܗܘܢ ܐܟܘ ܕܢܝܐܝܠ ܘܚܢܢܝܐ. ܘܡܝܫܐܝܠ ܘܥܙܪܝܐ.
20 ܘܩܡܘ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. * ܘܒܟܠ ܡܠܐ ܕܚܟܡܬܐ ܘܕܣܘܟܠܐ ܕܫܐܠ ܐܢܘܢ ܡܠܟܐ.
21 ܐܫܟܚ ܐܢܘܢ ܕܡܝܬܪܝܢ ܥܣܪ ܐܦܝܢ. ܥܠ ܟܠ ܚܪ̈ܫܐ ܘܐܫ̈ܘܦܐ ܕܐܝܬ ܒܡܠܟܘܬܗ.
* ܘܗܘܐ ܕܢܝܐܝܠ. ܥܕܡܐ ܠܫܢܬ ܚܕܐ ܕܟܘܪܫ ܡܠܟܐ.

Statuens autem Daniel animo suo se non 8
comesturum de pulmentis regis, neque bibiturum de vino quod *is* bibebat, rogavit præfectum aulicorum ne comedenda sibi præberet. (Gratiosum autem reddiderat Danie- 9
lem Dominus apud aulicorum præfectum,) Dixit aulicorum præfectus Danieli, Timeo 10
dominum meum regem qui cibum potúmque vestrum indixit, ne cernens vultus vestros magìs tetricos quàm puerorum coætaneorum vestrorum, præcîdat caput meum rex. Di- 11
xit autem Daniel Menisari cui præfectus aulicorum curam demandaverat Danielis, Hananiæ, Misaelis, & Azariæ; Proba servos 12
tuos diebus decem, dentúrque nobis legumina ad edendum & aqua ad bibendum; Deinde considerabis colorem nostrum & co- 13
lorem puerorum qui comedunt è pulmentis regiis; & prout videris, sic age cum servis tuis. Acquievit ille huic eorum propositio- 14
ni, & probavit eos diebus decem: Et post 15
decem dies deprehendit vultus eorum pulchriores, & carnem eorum pinguiorem multò quàm cunctorum puerorum qui vescebantur pulmentis regiis. Itaque Menisar capie- 16
bat sibi demensum eorum & vinum potionis eorum, & dabat eis legumina ad edendum & aquam ad bibendum. Interea qua- 17
tuor hisce pueris contulit Deus scientiam atque intelligentiam in omni literatura & sapientia: & Daniel sagacissimus erat in omnibus visionibus & somniis. Exactis diebus 18
quos rex præfinierat, adduxit eos præfectus aulicorum ad regem Nebuchadnosarem. Et 19
cùm allocutus eos esset rex, neminem inter omnes invenit parem Danieli, Hananiæ, Misaeli, & Azariæ: Steterunt enim coram rege, Et in rebus quibusque ad peritiam & 20
intelligentiam pertinentibus, quas requisivit ab eis rex, invenit eos decuplò præstantiores omnibus incantatoribus & hariolis qui erant in regno suo. Mansítque Daniel usque ad 21
ad annum primum Cyri regis.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

1 ܒܫܢܬ ܬܪܬܝܢ ܕܡܠܟܘܬܗ ܕܢܒܘܟܕܢܨܪ. ܚܠܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܚܠܡܐ. ܘܐܬܬܙܝܥܬ ܪܘܚܗ *
2 ܘܫܢܬܗ ܗܘܬ ܥܠܘܗܝ. * ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ ܠܡܩܪܐ ܠܚܪ̈ܫܐ ܘܠܐܫ̈ܘܦܐ . ܘܠܡܟܫ̈ܦܐ
3 ܘܠܟܠܕ̈ܝܐ. ܠܡܚܘܝܘ ܠܡܠܟܐ ܚܠܡܗ. ܘܐܬܘ. ܘܩܡܘ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ
ܡܠܟܐ. ܚܠܡܐ ܚܠܡܬ . ܘܐܬܬܙܝܥܬ ܪܘܚܝ ܠܡܕܥܗ ܠܚܠܡܐ.

CAP. II.

ANno secundo regni Nebuchadnosaris, 1
somnavit Nebuchadnosar somnia, quibus insanivit animus ejus & perduravit in eo somnus ejus. Quapropter edixit rex ut convo- 2
carentur incantatores & harioli, magi & Chaldæi, ad indicandum regi somnium suum. Qui cùm venissent & stetissent coram rege, 3
Dixit eis rex; Somnium vidi, & dementatus animus meus ut sciam illud somnium.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

8 Καὶ ἔθετο Δανιὴλ (ζ) εἰς τὴν καρδίαν αὐτοῦ, ὡς οὐ μὴ ἀλισγηθῇ ἐν τῇ τραπέζῃ τοῦ βασιλέως, ϗ ἐν τῷ οἴνῳ ἀπὸ τοῦ ποτοῦ αὐτοῦ· ϗ ἠξίωσε τὸν ἀρχιευνοῦχον, ὡς οὐ μὴ ἀλισγηθῇ. 9 Καὶ ἔδωκεν ὁ θεὸς τὸν Δανιὴλ εἰς ἔλεον καὶ (η) οἰκτιρμὸν ἐνώπιον τοῦ ἀρχιευνούχου. 10 Καὶ εἶπεν ὁ ἀρχιευνοῦχος τῷ Δανιὴλ, Φοβοῦμαι ἐγὼ τὸν κύριόν μου τὸν βασιλέα, τὸν ἐκτάξαντα τὴν βρῶσιν ὑμῶν ϗ τὴν πόσιν ὑμῶν, μή ποτε ἴδῃ τὰ πρόσωπα ὑμῶν σκυθρωπὰ παρὰ τὰ παιδάρια τὰ (θ) συνήλικα ὑμῶν, ϗ καταδικάσητε τὴν κεφαλήν μου τῷ βασιλεῖ. 11 Καὶ εἶπε Δανιὴλ πρὸς (ι) Ἀμελσὰδ, ὃν κατέστησεν ὁ ἀρχιευνοῦχος ἐπὶ Δανιὴλ, (κ) Ἀνανίαν, Μισαὴλ, Ἀζαρίαν, 12 Πείρασον δὴ τοὺς παῖδάς σου ἡμέρας δέκα, ϗ δότωσαν ἡμῖν ἀπὸ τῶν σπερμάτων (λ), ϗ φαγώμεθα, ϗ ὕδωρ πώμεθα, 13 Καὶ ὀφθήτωσαν ἐνώπιόν σου αἱ ἰδέαι ἡμῶν, καὶ αἱ ἰδέαι τῶν παιδαρίων τῶν (μ) ἐσθόντων τὴν τράπεζαν τοῦ βασιλέως, καὶ καθὼς ἐὰν ἴδῃς, ποίησον μετὰ τῶν (ν) παίδων σου. 14 Καὶ εἰσήκουσεν αὐτῶν, ϗ ἐπείρασεν αὐτοὺς ἡμέρας δέκα. 15 Καὶ μετὰ τὸ τέλος τῶν δέκα ἡμερῶν, ὤφθησαν αἱ ἰδέαι αὐτῶν ἀγαθαὶ ϗ (ξ) ἰσχυραὶ ταῖς σαρξὶν ὑπὲρ τὰ παιδάρια τὰ (ο) ἔσθοντα τὴν τράπεζαν τοῦ βασιλέως. 16 Καὶ ἐγένετο (π) Ἀμελσὰδ ἀναιρούμενος τὸ δεῖπνον αὐτῶν, ϗ τὸν οἶνον τοῦ πόματος αὐτῶν, ϗ ἐδίδου αὐτοῖς σπέρματα (ρ). 17 Καὶ τὰ παιδάρια ταῦτα οἱ τέσσαρες αὐτοὶ, ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ θεὸς σύνεσιν ϗ φρόνησιν ἐν πάσῃ γραμματικῇ ϗ σοφίᾳ· καὶ Δανιὴλ συνῆκεν ἐν πάσῃ ὁράσει ϗ ἐνυπνίοις. 18 Καὶ μετὰ τὸ τέλος τῶν ἡμερῶν, ὧν εἶπεν ὁ βασιλεὺς εἰσαγαγεῖν αὐτοὺς, ϗ εἰσήγαγεν αὐτοὺς ὁ ἀρχιευνοῦχος ἐναντίον Ναβουχοδονόσορ. 19 Καὶ ἐλάλησε μετ' αὐτῶν ὁ βασιλεύς. καὶ (") οὐχ εὑρέθησαν ἐκ πάντων αὐτῶν ὅμοιοι Δανιὴλ, ϗ Ἀνανίᾳ, ϗ Μισαὴλ, καὶ Ἀζαρίᾳ· ϗ ἔστησαν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. 20 Καὶ ἐν παντὶ ῥήματι σοφίας καὶ ἐπιστήμης, ὧν ἐζήτησε παρ' αὐτῶν ὁ βασιλεὺς, εὗρεν αὐτοὺς δεκαπλασίονας παρὰ πάντας τοὺς ἐπαοιδοὺς ϗ τοὺς μάγους τοὺς ὄντας (σ) ἐν πάσῃ τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ. 21 Καὶ ἐγένετο Δανιὴλ ἕως ἔτους ἑνὸς Κύρου τοῦ βασιλέως. (†)

Et poſuit Daniel in corde ſuo, ut non (f) pollueretur in menſa regis, & in vino de potu ejus: & rogavit eunuchorum præpoſitum, ne contaminaretur. Et dedit Deus Danielem in miſericordiam, & miſerationem in conſpectu principis eunuchorum: Et dixit princeps eunuchorum Danieli; Timeo ego dominum meum regem, qui conſtituit cibum veſtrum, & potum veſtrum, ne fortè videat facies veſtras triſtes præ adoleſcentibus coævis veſtris, & (g) condemnetis caput meum regi. Et dixit Daniel ad Amelſad, quem conſtituerat princeps eunuchorum ſuper Danielem, Ananiam, Miſael, Azariam; (h) Tenta, obſecro, pueros tuos diebus decem: & dent nobis de (i) ſeminibus, & comedamus, & aquam bibamus, Et appareant coram te vultus noſtri, & vultus puerorum qui edunt menſam regis: & ſicut videris, facito cum pueris tuis. Et exaudivit eos: & (k) tentavit eos diebus decem. Et poſt finem decem dierum apparuerunt vultus eorum boni & robuſti carnibus, ſuper pueros qui edebant menſam regis. Et fuit Amelſad tollens cibum eorum, & vinum potûs eorum, & dabat eis (l) ſemina. Et (m) pueri hi, quatuor ipſi, dedit eis Deus intellectum, & prudentiam in omni (n) literatura, & ſapientia. Et Daniel intellexit in omni viſione, & ſomniis. Et poſt finem dierum, quos dixerat rex introducendi eos, & introduxit eos præpoſitus eunuchorum in conſpectu Nabuchodonoſor: Et loquutus eſt cum eis rex: & non ſunt inventi de univerſis ipſis ſimiles Danieli, & Ananiæ, & Miſael, & Azariæ, & ſteterunt in conſpectu regis: Et in omni verbo ſapientiæ, & ſcientiæ, quæcunque ſciſcitatus eſt ab eis rex, invenit eos decuplò majores præ omnibus (o) incantatoribus, & magis, qui erant in univerſo regno ejus. Et fuit Daniel uſque ad annum unum Cyri regis.

MS. A. (ζ) ἐπὶ (η) εἰς οἰκτιρμὸν (θ) συνηλικείᾳ (ι) Ἀμβσὰρ, (κ) ϗ Ἀνανίαν, ϗ Μισαὴλ, ϗ Ἀζαρίαν, (λ) τῆς γῆς, ϗ φαγόμεθα, ϗ ὕδωρ πιόμεθα, (μ) ἐσθιόντων (ν) παιδαρίων σου. (ξ)* ἰσχυροὶ (ο) ἐσθίοντα (π) Ἀμβσὰρ (ρ) τοῖς τέσσαρσιν παιδαρίοις. Καὶ ἔδωκεν αὐτοῖς ὁ θεὸς (") οὐκ (σ) ἐν τῇ βασιλείᾳ (†) ὍΡΑΣΙΣ β'.

ΚΕΦ. β'.

CAP. II.

1 (†) Ἐν τῷ ἔτει τῷ δευτέρῳ (α) τῆς βασιλείας, ἐνυπνιάσθη Ναβουχοδονόσορ ἐνύπνιον, ϗ ἐξέστη τὸ πνεῦμα αὐτοῦ, καὶ ὁ ὕπνος αὐτοῦ ἐγένετο ἀπ' αὐτοῦ. 2 Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς καλέσαι τοὺς ἐπαοιδοὺς, ϗ τοὺς μάγους, ϗ τοὺς φαρμακοὺς, ϗ τοὺς Χαλδαίους, τοῦ ἀναγγεῖλαι τῷ βασιλεῖ τὰ ἐνύπνια αὐτοῦ. ϗ (β) ἦλθαν, ϗ ἔστησαν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. 3 Καὶ εἶπεν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς, (γ) Ἠνυπνιάσθην, ϗ ἐξέστη τὸ πνεῦμά μου, τοῦ γνῶναι τὸ ἐνύπνιον.

In anno (a) ſecundo regni ſomniavit Nabuchodonoſor ſomnium: & obſtupuit ſpiritus ejus: & ſomnus ejus* fuit ab eo. Et dixit rex, ut vocarent (b) incantatores, & magos, & maleficos, & Chaldæos ad annuntiandum regi ſomnia ejus. Et venerunt, & ſteterunt coram rege. Et dixit eis rex; Somniavi, & (c) obſtupuit ſpiritus meus ad cognoſcendum ſomnium.

MS. A. (†) ὍΡΑΣΙΣ γ'. (α) τῆς βασιλείας Ναβουχοδονόσορ, (β) ἦλθον, (γ) Ἐνυπνιάσθην,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

8 * فوضع دانيال في قلبه انه لا يتدنس بمايدة الملك وبخمر شربه * وسال رييس الخصيان انه لا يتدنس * 9 واعطي الله دانيال للرحمة والرافة امام رييس الخصيان * 10 وقال رييس الخصيان لدانيال * انا اخاف سيدي الملك * اوصي بطعمكم وبشربكم * ليلا يري وجوهكم متغيرة عن الغلمان اقرانكم * فتذنبون نفسي عند الملك * 11 فقال دانيال لمناصر الذي اقامه رييس الخصيان على دانيال وحنانيا ومصاييل وعزريا * 12 جرب عبيدك عشرة ايام وليعطونا من حبوب الارض فناكل * 13 وتظهر امامك سحنانا وسحنات الغلمان الذين ياكلون من مايدة الملك * وكما تري اصنع مع عبيدك * 14 فسمع لهم وجربهم عشرة ايام * 15 وبعد انقضاء العشرة ايام رويت سحناهم صالحات * واقوياء في اجسادهم اكثر من الغلمان الذين ياكلون من مايدة الملك * 16 وكان مناصر يستملك غداهم وخمر شربهم * ويعطيهم حبوبا للاربعة الغلمان * 17 وهولاء الغلمان الاربعة اعطاهم الله فهما وذكاء في كل نحو وحكمة * ودانيال فهم في كل رويا وفي المنامات * 18 وبعد انقضاء الايام التي قال الملك ان يدخلوهم اليه * فادخلهم رييس الخصيان امام بختنصر * 19 وتكلم معهم الملك ولم يوجد من جميعهم من يشبه دانيال وحنانيا ومصاييل وعزاريا * ووقفوا امام الملك * 20 وبكل كلمة حكمة وفقه طلب منهم الملك * فوجدهم عشرة اضعاف افضل من جميع الرقايين والمجوس الذين كانوا في مملكته * 21 وصار دانيال الي سنة احدي لكورش الملك *

8 Decernens autem Daniel in corde ſuo non contaminaturum ſe menſâ regis neque vino potûs ejus, precatus eſt principem Eunuchorum, ne contaminaretur. 9 (Tribuerat autem Deus Danieli gratiam & benevolentiam apud principem Eunuchorum.) 10 Ait princeps Eunuchorum Danieli; Ego timeo quin dominus meus rex qui cibum & potum veſtrum aſſignavit, videat facies veſtras diverſas ab adoleſcentium coætaneorum veſtrorum, & culpâ damnetis animam meam apud regem. 11 Dixit Daniel Manaſari quem præfecerat princeps Eunuchorum Danieli, Hananiæ, Miſaeli, & Azariæ; 12 Experire ſervos tuos decem diebus: dent nobis de leguminibus terræ ut comedamus; 13 Tum appareant coram te ſpecies noſtræ & ſpecies adoleſcentum qui veſcuntur de menſa regis; & prout videris, age cum ſervis tuis. 14 Obtemperavit igitur eis, & expertus eſt eos diebus decem: 15 Et poſt exactos decem dies, apparuerunt ſpecies eorum optimæ, ipſique validiores corpore præ adoleſcentibus qui veſcebantur de menſa regis. 16 Quocirca Manaſar cibum eorum & vinum potûs eorum ſibi vindicans, dabat legumina iis quatuor adoleſcentibus. 17 Porrò adoleſcentibus hiſce quatuor conceſſit Deus ingenium & acumen in omni eloquentia & ſapientia: Daniel autem intelligebat omnem viſionem & ſomnia quæque. 18 Elapſis itaque diebus quibus præceperat rex ut introducerent eos ad ſe, introduxit eos princeps eunuchorum coram Bochtonaſſare. 19 Allocutuſque eos rex, neminem invenit inter omnes, qui ſimilis eſſet Danieli, Hananiæ, Miſaëli, & Azariæ. Cùm enim ſtetiſſent coram rege, 20 In omni verbo ſapientiæ & prudentiæ quod petiit ab eis rex, invenit eos decuplò præſtantiores cunctis incantatoribus & magis qui erant in regno ſuo. 21 Fuitque Daniel uſque ad annum primum Cyri regis.

* الفصل الثاني *

* الوحي الثالث *

1 * في السنة الثانية من ملك بختنصر حلم بختنصر حلما * وذهلت روحه * ونومه سار عنه * 2 * فقال الملك ان يدعوا الرقايين والمجوس والسحرة والكلدانيين ليخبروا الملك بحلمه * 3 فاتوا ووقفوا امام الملك * فقال لهم الملك * حلمت وذهلت روحي لاعرف الحلم *

CAP. II.

Revelatio tertia.

1 ANno ſecundo regni Bochtonaſſaris, ſomniavit Bochtonaſſar ſomnium: unde obſtupuit ſpiritus ejus, & ſomnus ejus receſſit ab eo. 2 Itaque juſſit rex convocari incantatores, magos, veneficos & Chaldæos; ut indicarent regi ſomnium ejus. 3 Quibus advenientibus & coram rege aſtantibus, Dixit rex; Somniavi, & obſtupeſcit ſpiritus meus ad ſciendum ſomnium.

.indicabimus interpretationem & ,tuis ſervis ſomnium Dic .vive *ſecula* in Rex : *Aramicè* regem ad Chaſdim ſunt locuti Et
וידברו הכשדים למלך ארמית מלכא לעלמין חיי אמר חלמא לעבדיך ופשרא נחוא׃ 4
fruſta ,ejus interpretationem &,ſomnium me ſcire *facietis* non *En* .*effluxit* me à *Verbum* : Chaſdim ad dixit & ,rex Reſpondit
ענה מלכא ואמר לכשדיא מלתה מני אזדא הן לא תהודעונני חלמא ופשרה הדמין 5
,*erogationem* & ,dona ,indicaveritis ejus interpretationem & ,ſomnium *ecce* Et .ponentur *ſterquilinium* veſtræ domus & ,ſiemini
תתעבדון ובתיכון נולי יתשמון׃ והן חלמא ופשרה תהחון מתנן ונבזבה 6
,ſecundò Reſponderunt .mihi indicate ejꝰ interpretationē & ,ſomnium propterea : mea facie à recipietis magnum honorem &
ויקר שגיא תקבלון מן קדמי להן חלמא ופשרה החוני׃ ענו תנינות 7
certo *Ex* : dixit & , rex Reſpondit .indicabimus ejus interpretationem & ,ſuis ſervis dicat ſomnium Rex : *dicentes* &
ואמרין מלכא חלמא יאמר לעבדוהי ופשרה נהחוה׃ ענה מלכא ואמר מן יציב 8
,me ſcire feceritis non ſomnium ſi *Quod* .verbum me à *effluxerit* quòd videatis *quod reſpectu omni* : *ementes* *vos* tempus quod *ego* *ſciens*
ידע אנה די עדנא אנתון זבנין כל קבל די חזיתון די אזדא מני מלתא׃ די הן חלמא לא תהודענני 9
propterea : mutetur tempus donec , me coram dicendum ad *præparaſtis* corruptū & ,mendacem ſermonem &, veſtra lex *ipſa* una
חדה היא דתכון ומלה כדבה ושחיתה הזמנתון למאמר קדמי עד די עדנא ישתנא להן
eſt Non : *dicentes* & ,rege coram Chaſdim Reſponderunt .mihi indicabitis ejꝰ interpretationē quòd ſciam &,mihi dicite ſomnium
חלמא אמרו לי ואנדע די פשרה תהחונני׃ ענו כשדיא קדם מלכא ואמרין לא איתי 10
poſtulavit non *iſtum ut ſermonem,potens &,magnus* rex omnis *quod reſpectu omni* : indicare poſſit regis ſermonē qui ,aridam ſuper homo
אנש על יבשתא די מלת מלכא יוכל להחויה כל קבל די כל מלך רב ושליט מלה כדנה לא שאל
: rege coram *illum* indicet qui eſt non alius & , gravis ,*poſtulans* rex quem ſermo Et .Chaſdi & ,*ſophum* &,genethliacū omnē
לכל חרטם ואשף וכשדי׃ ומלתא די מלכה שאל יקירה ואחרן לא איתי די יחונה קדם מלכא 11
perdendū ad dixit *&* :*multū eſt iratus &* ,*ſævit* rex *hoc reſpectu Omni* .*ipſa* eſt non carne cum *eorū* habitatio quorū ,Deos præter
להן אלהין די מדרהון עם בשרא לא איתוהי׃ כל קבל דנה מלכא בנס וקצף שגיא ואמר להובדה 12
tunc *In* .*interfici ad* ejꝰ ſocios & ,Danielem quæſierunt & :interficiebantur ſapientes &,eſt egreſſa lex Et .Babel ſapientes omnes
לכל חכימי בבל׃ ודתא נפקת וחכימיא מתקטלין ובעו דניאל וחברוהי להתקטלה׃ באדין 13 14
.Babel ſapientes interficiendū ad *exierat qui* , *regis* *tū* ,*carnificum* principē Arioch ad ſtatutum &,cōſilium fecit redire Daniel
דניאל התיב עטא וטעם לאריוך רב טבחיא די מלכא די נפק לקטלה לחכימי בבל׃
fecit notum ſermonē Tunc ? regis facie à *feſtinans* lex quid Propter , regis præfectum Arioch ad dixit &,Reſpondit
ענה ואמר לאריוך שליטא די מלכא על מה דתא מהחצפה מן קדם מלכא אדין מלתא הודע 15
.regi *indicandum ad* interpretationē & ,ſibi daret tempus ut : rege à quæſivit &,eſt ingreſſus Daniel Et .Danieli Arioch
אריוך לדניאל׃ ודניאל על ובעה מן מלכא די זמן ינתן לה ופשרא להחויה למלכא׃ 16
quærendū ad miſericordias Et .notificavit ſermonē ſuis ſociis Hazarjah &,Miſael,Chananjah & :perrexit ſuā domum in Daniel Tunc
אדין דניאל לביתה אזל ולחנניה מישאל ועזריה חברוהי מלתא הודע׃ ורחמין למבעא 17 18
Tunc .Babel *ſapientum reſiduo* cum ejus *ſocios* & , Daniel *perderent* non ut : iſto ſecreto ſuper cœlorum Dei facie à
מן קדם אלה שמיא על רזא דנה די לא יהבדון דניאל וחברוהי עם שאר חכימי בבל׃ אדין 19
exiſtendū ad ,dixit & ,Daniel *Reſpondit* .cœlorum Deo benedixit Daniel tunc : eſt revelatū ſecretū noctis viſione in Danieli
לדניאל בחזוא די ליליא רזא גלי אדין דניאל ברך לאלה שמיא׃ ענה דניאל ואמר להוא 20
.*ipſa ei quæ* fortitudo & ,ſapientia quia : ſeculum in uſque & , ſeculo à benedictum Dei *quod ipſius* nomen
שמה די אלהא מברך מן עלמא ועד עלמא די חכמתא וגבורתא די לה היא׃

Verſio VULG. LAT.

Reſponderúntq; Chaldæi regi Syriacè; Rex, in ſempiternū 4
vive: dic ſomnium ſervis tuis, & interpretationem ejus indicabimus.
Et reſpondens rex ait Chaldæis; Sermo receſſit 5
à me: niſi indicaveritis mihi ſomnium, & conjecturam
ejus, peribitis vos, & domus veſtræ publicabuntur. Si autē 6
ſomniū, & conjecturam ejus narraveritis, præmia, & dona,
& honorem multum accipietis à me: ſomnium igitur, &
interpretationem ejus indicate mihi. Reſponderunt ſecundò, 7
atque dixerunt; Rex ſomnium dicat ſervis ſuis, & interpretationem
illius indicabimus. Reſpondit rex, & ait; Certè 8
novi quòd tempus redimitis, ſcientes quòd receſſerit à me
ſermo. Si ergò ſomnium non indicaveritis mihi, una eſt de 9
vobis ſententia, quòd interpretationē quoq; fallacē & deceptione
plenam compoſueritis, ut loquamini mihi donec
tempꝰ pertranſeat. Somniū itaque dicite mihi; ut ſciā quòd
interpretationem quoq; ejꝰ verā loquamini. Reſpondentes 10
ergò Chaldæi corā rege, dixerunt; Non eſt homo ſuper terrā,
qui ſermonem tuum, rex, poſſit implere: ſed neque regum
quiſquam magnꝰ & potens verbū hujuſcemodi ſciſcitatur
ab omni ariolo, & mago, & Chaldæo. Sermo enim, quem 11
tu quæris, rex, gravis eſt: nec reperietur quiſquā, qui indicet
illum in conſpectu regis: exceptis diis, quorum non eſt cum
hominibꝰ converſatio. Quo audito, rex in furore & in ira 12
magna præcepit, ut perirent omnes ſapientes Babylonis.
Et egreſſâ ſententiâ, ſapientes interficiebantur: quærebantúrq; 13
Daniel & ſocii ejꝰ, ut perirent. Tunc Daniel requiſivit 14
de lege atq; ſententia, ab Arioch principe militiæ regis,
qui egreſſꝰ fuerat ad interficiendos ſapientes Babylonis. Et 15
interrogavit eū, qui à rege poteſtatē acceperat, quā ob cauſā
tam crudelis ſententia à facie regis eſſet egreſſa. Cū ergò
rē indicâſſet Arioch Danieli, Daniel ingreſſꝰ rogavit regē, 16
ut tempus daret ſibi ad ſolutionē indicandā regi. Et ingreſſꝰ 17
eſt domū ſuā, Ananiæq; & Miſaeli & Azariæ ſociis
ſuis indicavit negotiū: Ut quærerent miſericordiā à facie 18
Dei cœli ſuper ſacramento iſto, & non perirent Daniel
& ſocii ejꝰ cū cæteris ſapientibꝰ Babylonis. Tunc Danieli 19
myſterium per viſionem nocte revelatum eſt: & benedixit
Daniel Deum cœli, Et locutus ait; Sit nomen Domini 20
benedictum à ſeculo & uſque in ſeculum: quia ſapientia &
fortitudo ejus ſunt.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܡܠܠܘ ܟܠܕܝܐ ܩܕܡ ܡܠܟܐ ܐܪܡܐܝܬ. ܘܐܡܪܝܢ. ܡܠܟܐ. ܠܥܠܡ ܚܝܝ. ܐܡܪ ܚܠܡܐ 4
ܠܥܒܕܝܟ. ܘܦܘܫܩܗ ܢܚܘܐ. * ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܟܠܕܝܐ. ܫܪܝܪܐܝܬ ܡܠܬܐ 5
ܕܐܡܪܐ. ܐܢ ܠܐ ܬܘܕܥܘܢܢܝ ܚܠܡܐ ܘܦܘܫܩܗ. ܗܕܡ ܗܕܡ ܬܬܦܣܩܘܢ. ܘܒܬܝܟܘܢ ܢܬܒܙܙܘܢ.
* ܘܐܢ ܚܠܡܐ ܘܦܘܫܩܗ ܬܘܕܥܘܢܢܝ. ܡܘܗܒܬܐ ܘܥܘܬܪܐ ܘܐܝܩܪܐ ܣܓܝܐܐ ܬܩܒܠܘܢ ܡܢܝ. 6
ܒܠܚܘܕ ܚܠܡܐ ܘܦܘܫܩܗ ܚܘܐܘܢܝ. * ܥܢܘ ܬܘܒ ܘܐܡܪܝܢ ܠܗ. ܡܠܟܐ ܚܠܡܐ ܢܐܡܪ 7
ܠܥܒܕܘܗܝ. ܘܦܘܫܩܗ ܢܚܘܐ. * ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ. ܫܪܝܪܐܝܬ ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܙܒܢܐ ܗܘ 8
ܡܩܒܠܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܡܛܠ ܕܚܙܝܬܘܢ ܕܫܪܝܪܐ ܡܠܬܝ. * ܕܐܢ ܚܠܡܐ ܠܐ ܬܘܕܥܘܢܢܝ. 9
ܚܕܐ ܗܝ ܕܝܢܟܘܢ. ܘܡܠܬܐ ܕܓܠܬܐ ܘܫܘܚܬܐ ܐܙܕܡܢܬܘܢ ܠܡܐܡܪ ܩܕܡܝ. ܥܕܡܐ ܕܙܒܢܐ
ܢܥܒܪ. ܐܠܐ ܚܠܡܐ ܐܡܪܘ ܠܝ. ܘܐܕܥ ܕܦܘܫܩܗ ܬܚܘܘܢܢܝ. * ܥܢܘ ܟܠܕܝܐ 10
ܘܐܡܪܝܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܠܝܬ ܒܪܢܫܐ ܥܠ ܝܒܫܐ ܕܡܠܬܗ ܕܡܠܟܐ ܡܫܟܚ ܠܡܚܘܝܘ. ܘܐܦܠܐ ܟܠ
ܡܠܟܐ ܪܒܐ ܘܫܠܝܛ. ܡܠܬܐ ܐܝܟ ܗܕܐ ܫܐܠ. ܠܟܠ ܚܪܫ ܘܐܫܘܦ ܘܟܠܕܝ.
* ܘܡܠܬܐ ܕܡܠܟܐ ܫܐܠ ܝܩܝܪܐ. ܘܐܢܫ ܠܐ ܐܝܬ ܕܢܚܘܝܗ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܐܠܐ ܐܢ 11
ܐܠܗ̈ܐ ܕܥܡܪܗܘܢ ܠܐ ܗܘܐ ܥܡ ܒܢܝ ܒܣܪܐ. * ܗܝܕܝܢ ܡܠܟܐ ܐܬܚܡܬ ܘܐܬܟܪܝ. 12
ܘܒܪܘܓܙܐ ܣܓܝܐܐ ܐܡܪ. ܠܡܘܒܕܘ ܠܟܠܗܘܢ ܚܟܝܡܐ ܕܒܒܠ. * ܘܢܦܩܬ ܕܬܐ 13
ܘܚܟܝܡܐ ܡܬܩܛܠܝܢ. ܘܒܥܘ ܠܡܩܛܠ ܠܕܢܝܐܝܠ ܘܠܚܒܪܘܗܝ. * ܗܝܕܝܢ ܕܢܝܐܝܠ 14
ܐܬܪܥܝ ܘܐܬܡܠܟ. ܘܐܡܪ ܠܐܪܝܘܟ ܪܒ ܢܚܘܬܐ ܕܡܠܟܐ. ܗܘ ܕܢܦܩ ܠܡܩܛܠܘ ܠܚܟܝܡܐ
ܕܒܒܠ. * ܥܠ ܡܢܐ ܗܟܢܐ ܡܬܚܦܛܐ ܦܘܩܕܢܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܘܐܘܕܥܗ ܡܠܬܐ ܐܪܝܘܟ 15
ܠܕܢܝܐܝܠ. * ܘܕܢܝܐܝܠ ܒܥܐ ܡܢ ܡܠܟܐ ܕܢܬܠ ܠܗ ܙܒܢܐ. ܘܦܘܫܩܐ ܠܡܠܟܐ ܢܚܘܐ. 16
* ܗܝܕܝܢ ܕܢܝܐܝܠ ܠܒܝܬܗ ܐܙܠ. ܘܠܚܢܢܝܐ ܘܠܡܝܫܐܝܠ ܘܠܥܙܪܝܐ ܚܒܪܘܗܝ 17
ܡܠܬܐ ܗܕܐ ܓܠܝ. * ܘܕܢܒܥܘܢ ܪ̈ܚܡܐ ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܐ ܕܫܡܝܐ ܥܠ ܐܪܙܐ ܗܢܐ. ܕܠܐ 18
ܢܐܒܕܘܢ ܕܢܝܐܝܠ ܘܚܒܪܘܗܝ ܥܡ ܫܪܟܐ ܕܚܟܝܡܐ ܕܒܒܠ. * ܗܝܕܝܢ ܠܕܢܝܐܝܠ ܒܚܙܘܐ 19
ܕܠܠܝܐ. ܐܪܙܐ ܐܬܓܠܝ. ܘܕܢܝܐܝܠ ܒܪܟ ܠܐܠܗܐ ܕܫܡܝܐ. * ܥܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܘܐܡܪ. ܢܗܘܐ 20
ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܡܒܪܟ. ܡܢ ܥܠܡ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ. ܕܚܟܡܬܐ ܘܓܢܒܪܘܬܐ
ܕܝܠܗ ܗܝ.

Tum Chaldæi Syriacè coram rege locuti, dixerunt; 4
Rex, in ſecula vivas: dic ſomnium
ſervis tuis, tum explicationem eius nos indicabimus.
Reſpondit rex, dixítque Chaldæis; 5
Certiſſimum eſt verbum quod pronuntio,
quòd niſi indicaveritis ſomnium & explicationem
ejus, membratim concidemini, & domus
veſtræ diripientur: Sin autem ſomnium 6
& explicationem ejus indicaveritis mihi,
dona, & divitias, gloriámque multam accipietis
à me; dummodo ſomnium & explicationem
ejus indicetis mihi. Reſpondentibus 7
iterum ac dicentibus; Rex ſomnium dicat ſervis
ſuis, tum explicationem ejus nos indicabimus;
Reſpondit rex, & ait; Reverà intelligo 8
vos tempus poſtulare, quandoquidem
videtis certiſſimū eſſe verbum meum, Quòd 9
niſi ſomnium indicetis mihi, una eademque
futura ſit ſors veſtra: & verbū falſum ac inane
coram me dicere vos decreviſſe, quoad
tempus elabatur. At ſomnium narrate mihi,
ut ſciam explicationem quoque ejus vos mihi
indicaturos. Reſponderunt Chaldæi dicentes 10
coram rege; Nemo eſt ſuper terram qui
verbum regis indicare poſſit, nec ullus unquam
rex magnus ac potens ejuſmodi rem
poſtulavit ab ullo præſtigiatore, hariolo, aut
Chaldæo: Et res quam rex petit, graviſſima 11
eſt; neque reperitur quiſquam qui eam indicet
regi, præter deos quorum habitatio non
eſt cum mortalibus. Tunc rex vehementi 12
percitus irâ, ſummo cum furore edixit ut perderentur
omnes ſapientes Babylonis. Edicto 13
promulgato interficiebantur ſapientes,
voluerúntque interficere Danielem & ſocios
ejus. Tunc Daniel cùm animo conſilióque 14
rem pervolviſſet, dixit ad Arioch ducem illum
ſatellitii regii, qui exierat ad interficiendum
ſapientes Babylonis; Qua de cauſa edictum 15
iſtud *tantopere* urget nomine regis?
Cúmque rem indicaſſet Arioch Danieli, 16
Rogavit Daniel regem ut tempus ſibi concederet,
quatenus interpretationem regi indicaret.
Tunc Daniel domum ſuam rediens, 17
Hananiæ, Miſaeli, & Azariæ ſociis ſuis
rem iſtam expoſuit, Ut miſericordiam peterent 18
à Deo cœli pro myſterio iſto, ne perirent
Daniel & ſocii ejus unà cum reliquis
ſapientibus Babylonis. Tunc Danieli in viſione 19
nocturna myſterium fuit revelatum:
quapropter Daniel benedixit Deo cœli. Reſpondens 20
Daniel dixit; Sit nomen Domini
benedictum à ſeculo in ſeculum uſque: nam
ſapientia & potentia ipſius eſt:

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

(δ) ἐλάλησαν οἱ Χαλδαῖοι τῷ βασιλεῖ Συριϛὶ, Βασιλεῦ, εἰς τȣ̀ς αἰῶνας ζῆθι. Σὺ εἰπὸν τὸ ἐνύπνιον τοῖς
ί σου, ϗ τὴν σύγκρισιν ἀναγγελȣ̃μεν. Ἀπεκρίθη ὁ βασιλεὺς (ε) τοῖς Χαλδαίοις, Ὁ λόγος ἀπ᾽ ἐμȣ̃
ν. ἐὰν (ζ) μὴ γνωρίσητέ μοι τὸ ἐνύπνιον ϗ τὴν σύγκρισιν (η), εἰς ἀπώλειαν ἔσεσθε, ϗ οἱ οἶκοι ὑμῶν δι-
γήσονται. Ἐὰν δὲ τὸ ἐνύπνιον ϗ τὴν σύγκρισιν αὐτȣ̃ γνωρίσητέ μοι, δόματα ϗ (θ) δωρεὰς ϗ τι-
πολλὴν λήψεσθε παρ᾽ ἐμȣ̃. πλὴν τὸ ἐνύπνιον ϗ τὴν σύγκρισιν αὐτȣ̃ ἀπαγγείλατέ μοι. Ἀπεκρίθησαν
εύτερον, ϗ εἶπαν, Ὁ βασιλεὺς εἰπάτω τὸ ἐνύπνιον τοῖς παισὶν αὐτȣ̃, ϗ τὴν σύγκρισιν (κ) ἀναγγελȣ̃-
Καὶ ἀπεκρίθη ὁ βασιλεὺς, ϗ εἶπεν, Ἐπ᾽ ἀληθείας οἶδα ἐγὼ ὅτι καιρὸν ὑμεῖς ἐξαγοράζετε· καθότι
ετε ὅτι ἀπέστη ἀπ᾽ ἐμȣ̃ τὸ ῥῆμα. Ἐὰν οὖν τὸ ἐνύπνιον μὴ ἀπαγγείλητέ μοι, οἶδα ὅτι ῥῆμα ψευδὲς ϗ
θαρμένον συνέθεσθε εἰπεῖν (μ) ἐνώπιόν μου, ἕως ἂν ὁ καιρὸς παρέλθῃ. τὸ ἐνύπνιόν μου εἴπατέ μοι, ϗ γνώ-
(ν) ὅτι ϗ τὴν σύγκρισιν αὐτȣ̃ ἀναγγελεῖτέ μοι. Ἀπεκρίθησαν (ξ) οἱ Χαλδαῖοι ἐνώπιον τȣ̃ βασιλέως, καὶ
ιν, Οὐκ ἔστιν ἄνθρωπος ἐπὶ τῆς ξηρᾶς, ὅστις (ο) τὸ ῥῆμα τȣ̃ βασιλέως δυνήσεται γνωρίσαι, καθότι πᾶς
λεὺς μέγας ϗ ἄρχων ῥῆμα (π) τοιȣ̃τον οὐκ ἐπερωτᾷ ἐπαοιδὸν μάγον (ρ) ϗ Χαλδαῖον. Ὅτι ὁ λόγος ὃν
σιλεὺς ἐπερωτᾷ, βαρύς, ϗ ἕτερος οὐκ ἔστιν ὃς ἀναγγελεῖ αὐτὸν ἐνώπιον τȣ̃ βασιλέως, ἀλλ᾽ (σ) οἱ θεοὶ, ὧν
ιν ἡ κατοικία μετὰ πάσης σαρκός. Τότε ὁ βασιλεὺς ἐν θυμῷ ϗ ὀργῇ εἶπεν ἀπολέσαι πάντας τȣ̀ς σοφȣ̀ς Βα-
ῶνος. Καὶ τὸ δόγμα ἐξῆλθε, ϗ οἱ σοφοὶ ἀπεκτέννοντο· ϗ ἐζήτησαν Δανιὴλ ϗ τȣ̀ς φίλους αὐτȣ̃ ἀν-
. Τότε Δανιὴλ ἀπεκρίθη βουλὴν ϗ γνώμην τῷ Ἀριὼχ τῷ ἀρχιμαγείρῳ τȣ̃ βασιλέως, ὃς ἐξῆλθεν (τ) ἀν-
τȣ̀ς σοφȣ̀ς (υ) Βαβυλῶνος, Ἄρχων τȣ̃ βασιλέως, περὶ τίνος ἐξῆλθεν ἡ γνώμη ἡ ἀναιδὴς (φ) ἐκ
ώπου τȣ̃ βασιλέως; ἐγνώρισε δὲ (χ) ὁ Ἀριὼχ τὸ ῥῆμα τῷ Δανιήλ. Καὶ Δανιὴλ ἠξίωσεν τὸν βα-
α ὅπως χρόνον δῷ αὐτῷ, ϗ τὴν σύγκρισιν αὐτȣ̃ ἀναγγελῇ τῷ βασιλεῖ. Καὶ εἰσῆλθε Δανιὴλ
ὸν οἶκον αὐτȣ̃, ϗ τῷ Ἀνανίᾳ ϗ τῷ Μισαὴλ καὶ τῷ Ἀζαρίᾳ τοῖς φίλοις αὐτȣ̃ τὸ ῥῆμα ἐγνώρισε.
οἰκτιρμοὺς ἐζήτουν παρὰ τȣ̃ θεοῦ τȣ̃ οὐρανοῦ ὑπὲρ τȣ̃ μυστηρίου τούτου, (ψ) ὅπως ἂν μὴ ἀπόλωνται
ιὴλ καὶ οἱ φίλοι αὐτȣ̃ μετὰ τῶν ἐπιλοίπων σοφῶν Βαβυλῶνος. (ω) Τότε τῷ Δανιὴλ ἐν ὁράμα-
τῆς νυκτὸς τὸ μυστήριον ἀπεκαλύφθη· ϗ (α) εὐλόγησε τὸν θεὸν τȣ̃ οὐρανȣ̃ Δανιὴλ, Καὶ εἶπεν,
τὸ ὄνομα τοῦ θεοῦ εὐλογημένον ἀπὸ τȣ̃ αἰῶνος, καὶ ἕως τȣ̃ αἰῶνος, ὅτι ἡ σοφία ϗ ἡ (β) σύν-
αὐτȣ̃ ἐστι.

Et loquuti ſunt Chaldæi regi Syriacè; Rex, in ſecula vive. Dic ſomnium 4
pueris tuis: & conjecturam indicabimus. Reſpondit rex Chaldæis; Sermo 5
receſſit à me. Niſi indicaveritis mihi ſomnium, & conjecturam; in perdi-
tionem eritis: & domus veſtræ diripientur. Si autem ſomnium & conje- 6
cturam ejus indicaveritis mihi; præmia, & dona, & honorem multum ac-
cipietis à me: tantummodò ſomnium & conjecturam ejus indicate mihi.
Reſponderunt ſecundò, & dixerunt; Rex dicat ſomnium pueris ſuis, & 7
conjecturam indicabimus. Et reſpondit rex, & dixit; In veritate novi ego, 8
quòd vos redimitis (d) tempus, ſecundũ quod videtis, quia (e) diſceſſit à me
verbum. Si ergò ſomniũ non indicaveritis mihi; ſcio, quia verbũ falſum & 9
corruptum compoſuiſtis ad dicendum coram me, donec tempus pertranſeat.
Somnium meum dicite mihi; & ſciam quia etiam conjecturam ejus indica-
bitis mihi. Reſponderunt Chaldæi coram rege, & dicunt; Non eſt homo ſu- 10
per aridam, qui verbum regis poſſit notum facere: ſicuti omnis rex magnus,
& princeps verbũ hujuſmodi non ſciſcitatur ab incantatore, mago, & Chal-
dæo. Quia ſermo, quem rex interrogat, gravis eſt: & alius non eſt, qui in- 11
dicet illum in conſpectu regis, niſi dii, quorum non eſt habitatio cum omni
carne. Tunc rex in furore & ira dixit, ut perderent omnes ſapientes Baby- 12
lonis. Et ſententia egreſſa eſt, & ſapientes interficiebantur: & quæſierunt 13
Danielem, & amicos ejus ad interficiendũ. Tum Daniel reſpondit conſiliũ 14
& ſententiam Arioch principi coquorum regis, qui egreſſus fuerat ad in-
terficiendos ſapientes (f) Babylonis; Princeps regis, pro quo egreſſa eſt ſenten- 15
tia impudens à facie regis? Indicavit autem Arioch verbum Danieli. Et 16
Daniel rogavit regem, ut tempus daret ſibi, & conjecturam ejus indicaret
regi. Et ingreſſus eſt Daniel in domum ſuam: & Ananiæ, & Miſaeli, 17
& Azariæ amicis ſuis verbum indicavit: Et miſerationes quærebant à 18
Deo cœli pro myſterio hoc; ut non perirent Daniel & amici ejus cum cæ-
teris ſapientibus Babylonis. Tunc Danieli in viſione noctis myſterium re- 19
velatum eſt. Et benedixit Deum cœli Daniel, Et dixit; Sit nomen Dei 20
benedictum à ſeculo, & uſque in ſeculum: quia ſapientia, & intelligen-
tia ejus ſunt.

MS. A. (δ) εἶπον (ε) ϗ εἶπεν τοῖς (ζ) οὖν μὴ (η) αὐτȣ̃, (θ) δωρεὰν (ι) οἱ Χαλδαῖοι, ϗ εἶπαν ἐκ δευτέρου, Ὁ βασιλεὺς (κ) αὐτȣ̃ ἀναγγελȣ̃μεν. Ἀπεκρίθη (λ) οἴδατε,
ἐνώπιον ἐμȣ̃, (ν) ὅτι τὴν (ξ) πάλιν οἱ (ο) δυνήσεται τὸ ῥῆμα τȣ̃ βασιλέως γνωρίσαι, (π) τοιȣ̃το (ρ) Χαλδαῖον, (σ) ἢ θεοὶ, (τ) ἀναιλεῖν (υ) Βαβυλῶνος, ϗ ἐπυνθάνε-
αὐτȣ̃, λέγων, Ἄρχων (φ) αὕτη ἐκ (χ) τὸ ῥῆμα Ἀριὼχ τῷ βασιλεῖ. Καὶ εἰσῆλθεν Δανιὴλ, καὶ ἠξίωσεν ἀπὸ τȣ̃ βασιλέως, ὅπως χρόνον (ψ) ὅπως μὴ (ω) Τῷ δὲ Δα-
(α) ηὐλόγησεν (β) σύνεσις ϗ ἡ ἰσχὺς αὐτȣ̃

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فتكلم الكلدانيون مع الملك بالسريانية * عِشْ ايها الملك الي الدهر * انت قل الحل
لعبيدك * ونحن نخبر بتعبيره * فاجاب الملك وقال للكلدانيين * القول بعد عني * وان
لم تعرفوني بالحلم وبتاويله * تصيرون للهلاك * وبيوتكم تنهب * فان عرفتموني بالحلم
وبتاويله * تنالون مني عطايا ومواهب وكرامة كثيرة * فاخبروني بالحلم وبتاويله *
* فاجابوا ثانية وقالوا * ليقل الملك الحلم لعبيده ونخبره بتاويله * فاجاب الملك وقال
بالحق علمت انا انكم انتم انما تشترون وقتا * من اجل انكم تعلمون ان القول بعد عني
* فان لم تخبروني بالحلم * علمت ان القول كذب وفاسد * فابتدوا ان تقولوا امامي الى ان
يجوز الزمان * حلمي قولوه لي * فقد علمت انكم تخبروني بتاويله * فاجاب الكلدانيون
ايضا امام الملك وقالوا * ليس انسان على اليابسة يستطيع ان يعرف كلمة الملك * من اجل
انه كل ملك عظيم ورئيس لم يسال عن هذه الكلمة راقيا ولا ساحرا ولا كلدانيا * لان
القول الذي سال الملك عنه * فليس يستطيع احد ان يخبر به امام الملك * الا الالهة الذين
ليس لهم سكن مع كل ذي لحم * حينئذ الملك قال بغضب وغيظ كثير ان يهلكوا كل
حكماء بابل * وخرج امر بقتل الحكماء * وطلبوا ان يقتلوا دانيال واصحابه * حينئذ
دانيال اجاب بمشورة وراي لاريوخ رئيس طباخي الملك الذي خرج ليقتل حكماء بابل *
* واستفحص منه قايلا * يا رئيس الملك من اجل ماذا خرج هذا الراي الوقح من وجه
الملك * فعرف اريوخ الملك بهذه الكلمة * ودانيال دخل وسال الملك لكي يعطيه
زمانا * ويخبر الملك بتاويله * ودخل دانيال الى بيته * وعرف حنانيا وميصاييل وعزريا
اصحابه بهذه الكلمة * وطلبوا رافات من قبل اله السماء من اجل هذا السر * ليلا يهلك
دانيال واصحابه مع ساير حكماء بابل * حينئذ كشف هذا السر لدانيال في رويا الليل *
فبارك دانيال اله السماء * وقال * يكون اسم الله مباركا من الدهر والى الدهر * لان له الحكمة
والفهم والجبروت *

Allocuti ſunt Chaldæi regem Syriacè; 4
Vivas O rex in perpetuum; tu dicas ſo-
mnium ſervis tuis, & nos exponemus
interpretationem ejus. Reſpondens rex 5
ait Chaldæis, Sermo receſſit à me: &
niſi notum feceritis mihi ſomnium & in-
terpretationem ejus, in perditionem ab-
ibitis, & domus veſtræ diripientur: Ve- 6
rùm ſi notum feceritis mihi ſomnium
& interpretationem ejus, obtinebitis à
me dona, & munera, atque honorem
multum: notum ergò facite mihi ſo-
mnium & interpretationem ejus. Re- 7
ſponderunt ſecundò, & dixerunt; Di-
cat rex ſomnium ſervis ſuis, & nos in-
terpretationem ejus exponemus. Re- 8
ſpondit rex dicens; Planè novi ego vos
quidem tempus redimere, eò quòd nove-
ritis ſermonem à me receſſiſſe. Quòd 9
ſi ſomnium non indicaveritis mihi, in-
telligam rem veſtram falſam eſſe &
corruptam: incipite ergò diſſerere co-
ram me donec tempus labatur: ſomni-
um meum dicite mihi: nam interpre-
tationem ejus vos indicaturos eſſe mi-
hi, jam novi. Reſponderunt Chaldæi 10
rurſus coram rege, & dixerunt; Nul-
lus eſt homo ſuper aridam, qui notum
facere poſſit verbum regis; quia nullus
rex magnus aut princeps poſtularet hu-
juſmodi verbum ab ullo incantatore, ve-
nefico, aut Chaldæo. Sermonem enim de 11
quo rex petit, nullus alius indicare po-
teſt coram rege, niſi dii quibus non eſt
cohabitatio cum ullo mortali. Tunc rex 12
magna cum ira & excandeſcentia dixit,
ut perderent omnes ſapientes Babelis:
Et promulgato ejus edicto de cæde ſa- 13
pientum; volebant interficere Danielem
& ſocios ejus. Tunc Daniel maturo 14
conſilio & prudentiâ reſpondit Ariocho
principi coquorum regis, qui egreſſus fu-
erat ad occidendum ſapientes Babelis:
Nam ſciſcitans ab eo, dixit, O princeps 15
regis, qua de re prodiit conſilium hoc du-
rum à conſpectu regis? Quod verbum
cùm notum feciſſet Arioch regi, In- 16
greſſus eſt Daniel, & rogavit regem
ut tempus ſibi daret ad indicandum re-
gi interpretationem ejus. Tum Daniele 17
domum ſuam regreſſo, & Hananiâ,
Miſaele, atque Azariâ ſociis ſuis hac
de re monitis; Poſtulaverunt miſera- 18
tiones à Deo cœli pro hujuſmodi arcano,
ne perirent Daniel & ſocii ejus cum re-
liquis ſapientibus Babelis. Tunc rete- 19
ctum fuit arcanum illud Danieli in vi-
ſione nocturna: quare benedixit Daniel
Deo cœli, Et ait; Benedictum ſit no- 20
men Dei à ſeculo ad ſeculum uſque;
quoniam ipſius eſt ſapientia, intelligen-
tia, & fortitudo.

דניאל: ב

ſcientibus ſcientiam & ,ſapientibus ſapientiam *dans* : reges *ſtabiliens* & , reges *removens* , *opportunitates* & ,tempora *mutans* ipſe Et

21 וְהוּא מְהַשְׁנֵא עִדָּנַיָּא וְזִמְנַיָּא מְהַעְדֵּה מַלְכִין וּמְהָקֵים מַלְכִין יָהֵב חָכְמְתָא לְחַכִּימִין וּמַנְדְּעָא לְיָדְעֵי

Deus Tibi .manet eo cum lux & ,*tenebroſitate in quid* novit : *abſtruſa* & , *profunda revelans Ipſe* .intelligentiam

22 23 בִינָה׃ הוּא גָּלֵא עַמִּיקָתָא וּמְסַתְּרָתָא יָדַע מָה בַחֲשׁוֹכָא וּנְהוֹרָא עִמֵּהּ שְׁרֵא׃ לָךְ אֱלָהּ

quia ,te à quæſivimus quod,me feciſti ſcire nunc & : mihi dediſti fortitudinē & ſapientiam quia , *ego celebrans & ,confitens* mei patris

אֲבָהָתִי מְהוֹדֵא וּמְשַׁבַּח אֲנָה דִּי חָכְמְתָא וּגְבוּרְתָא יְהַבְתְּ לִי וּכְעַן הוֹדַעְתַּנִי דִּי־בְעֵינָא מִנָּךְ דִּי־

ſapientes perdendū ad rex conſtituerat quem,Arioch *ſuper* eſt ingreſſus Daniel *hoc reſpectu Omni* .nos feciſti ſcire regis ſermonē

24 מִלַּת מַלְכָּא הוֹדַעְתֶּנָא׃ כָּל־קֳבֵל דְּנָה דָּנִיֵּאל עַל עַל־אַרְיוֹךְ דִּי מַנִּי מַלְכָּא לְהוֹבָדָה לְחַכִּימֵי

.indicabo regi interpretationē & , rege coram me introduc ,perdas ne Babel Sapientes : ei dixit ſic & ,Abiit .Babel

בָבֶל אֲזַל וְכֵן אֲמַר־לֵהּ לְחַכִּימֵי בָבֶל אַל־תְּהוֹבֵד הַעֵלְנִי קֳדָם מַלְכָּא וּפִשְׁרָא לְמַלְכָּא אֲחַוֵּא׃

quæ captivitatis filiis de virum inveni *Quòd* : ei dixit ſic & : rege coram Danielem introduxit feſtinatione *in* Arioch Tunc

25 אֱדַיִן אַרְיוֹךְ בְּהִתְבְּהָלָה הַנְעֵל לְדָנִיֵּאל קֳדָם מַלְכָּא וְכֵן אֲמַר־לֵהּ דִּי־הַשְׁכַּחַת גְּבַר מִן־בְּנֵי גָלוּתָא דִּי

potens tu es Nunquid : Belthesaſar *ejus* nomen cujus,Danieli dixit & , rex Reſpondit .notificabit regi ſolutionē qui ,Jehudah

26 יְהוּד דִּי פִשְׁרָא לְמַלְכָּא יְהוֹדַע׃ עָנֵה מַלְכָּא וְאָמַר לְדָנִיֵּאל דִּי שְׁמֵהּ בֵּלְטְשַׁאצַּר הַאִיתָיךְ כָּהֵל

rex quod Secretum : dixit & , rege coram Daniel Reſpondit ? ejº interpretationē & ,vidi quod ,ſomnium mihi *notificandū ad*

27 לְהוֹדָעֻתַנִי חֶלְמָא דִּי־חֲזֵית וּפִשְׁרֵהּ׃ עָנֵה דָנִיֵּאל קֳדָם מַלְכָּא וְאָמַר רָזָא דִּי־מַלְכָּא

,ſecreta *revelans* cœlis in Deus eſt Veruntamen .regi indicare *potentes ,decretores* ,genethliaci , *ſophi* ,ſapientes non ,*poſtulans*

28 שָׁאֵל לָא חַכִּימִין אָשְׁפִין חַרְטֻמִּין גָּזְרִין יָכְלִין לְהַחֲוָיָה לְמַלְכָּא׃ בְּרַם אִיתַי אֱלָהּ בִּשְׁמַיָּא גָּלֵא רָזִין

,tuo cubili *ſuper* tui capitis *viſiones* & tuū Somnium .dierum noviſſimo in *exiſtendū ad* quod *quid* Nebuchadneſar regi notificavit &

וְהוֹדַע לְמַלְכָּא נְבוּכַדְנֶצַּר מָה דִּי לֶהֱוֵא בְּאַחֲרִית יוֹמַיָּא חֶלְמָךְ וְחֶזְוֵי רֵאשָׁךְ עַל־מִשְׁכְּבָךְ

,ſecreta *revelans* & : hac poſt *exiſtendum ad quod* quid,aſcenderunt tuo cubili *ſuper* tuæ cogitationes rex Tu .*ipſum hoc*

29 דְּנָה הוּא׃ אַנְתְּה מַלְכָּא רַעְיוֹנָךְ עַל־מִשְׁכְּבָךְ סְלִקוּ מָה דִּי לֶהֱוֵא אַחֲרֵי דְנָה וְגָלֵא רָזַיָּא

,*mihi* eſt revelatū hoc ſecretū ,viventibº omnibus præ me in eſt quæ *ſapientia in non ego* Et .*exiſtendum ad* quod *quid* te fecit ſcire

30 הוֹדְעָךְ מָה־דִי לֶהֱוֵא׃ וַאֲנָה לָא בְחָכְמָה דִּי־אִיתַי בִּי מִן־כָּל־חַיַּיָּא רָזָא דְנָה גֱּלִי לִי

, *fuiſti videns* rex Tu .ſcires tui cordis cogitationes & ,notificarent regi interpretationē ut *verbum ſuper* ſed

31 לָהֵן עַל־דִּבְרַת דִּי פִשְׁרָא לְמַלְכָּא יְהוֹדְעוּן וְרַעְיוֹנֵי לִבְבָךְ תִּנְדַּע׃ אַנְתְּה מַלְכָּא חָזֵה הֲוַיְתָ

ſtatuæ Hujus .terribilis ejº forma & : te contra *ſtans præſtans ejus ſplendor* &,magna *hæc* imago ,grandis una imago ecce &

32 וַאֲלוּ צְלֵם חַד שַׂגִּיא צַלְמָא דִּכֵּן רַב וְזִיוֵהּ יַתִּיר קָאֵם לְקָבְלָךְ וְרֵוֵהּ דְּחִיל׃ הוּא צַלְמָא

ejus pedes : *ferro de* ejus Tibiæ .*ære de* ejº femora &,ejus *viſcera* ,*argento de* ejº brachia &,ejº pectus ,*bono* auro *de ejus* caput

33 רֵאשֵׁהּ דִּי־דְהַב טָב חֲדוֹהִי וּדְרָעוֹהִי דִּי כְסַף מְעוֹהִי וְיַרְכָתֵהּ דִּי נְחָשׁ׃ שָׁקוֹהִי דִּי פַרְזֶל רַגְלוֹהִי

ſtatuam percuſſit &,manibus in non qui ,lapis eſt abſciſſus *quo uſque eras Videns* .*teſta de eis ex &* , *ferro de eis ex*

34 מִנְּהֵין דִּי פַרְזֶל וּמִנְּהֵין דִּי חֲסַף׃ חָזֵה הֲוַיְתָ עַד דִּי הִתְגְּזֶרֶת אֶבֶן דִּי־לָא בִידַיִן וּמְחָת לְצַלְמָא

,argentum , æs , teſta , ferrum pariter ſunt cõtrita tunc *In* .eos *comminuit &* , *teſta &* ,*ferro* de ſuis pedibº *ſuper*

35 עַל־רַגְלוֹהִי דִּי פַרְזְלָא וְחַסְפָּא וְהַדֵּקֶת הִמּוֹן׃ בֵּאדַיִן דָּקוּ כַחֲדָה פַּרְזְלָא חַסְפָּא נְחָשָׁא כַּסְפָּא

qui lapis Et .eis *eſt inventus* non locus omnis & ,ventus *ea tulit &* ,æſtatis areis de *palea* ſicut fuerunt & ,aurum &

וְדַהֲבָא וַהֲווֹ כְּעוּר מִן־אִדְּרֵי־קַיִט וּנְשָׂא הִמּוֹן רוּחָא וְכָל־אֲתַר לָא־הִשְׁתְּכַח לְהוֹן וְאַבְנָא דִּי־

.terram omnem implevit & ,*magnum montem in* eſt effectus ſtatuam percuſſit

מְחָת לְצַלְמָא הֲוָת לְטוּר רַב וּמְלָת כָּל־אַרְעָא׃

Verſio VULG. LAT.

Et ipſe mutat tempora, & ætates : transfert regna, atque 21
conſtituit : dat ſapientiam ſapientibus, & ſcientiam intel-
ligentibus diſciplinam : Ipſe revelat profunda, & abſ- 22
condita, & novit in tenebris conſtituta : & lux cum eo
eſt. Tibi,Deus patrum noſtrorum,confiteor,téque laudo: 23
quia ſapientiam & fortitudinem dediſti mihi : & nunc o-
ſtendiſti mihi quæ rogavimus te, quia ſermonem regis ape-
ruiſti nobis. Poſt hæc Daniel ingreſſus ad Arioch, quem 24
conſtituerat rex ut perderet ſapientes Babylonis, ſic ei lo-
cutus eſt ; Sapientes Babylonis ne perdas : introduc me
in conſpectu regis, & ſolutionem regi narrabo. Tunc 25
Arioch feſtinus introduxit Danielem ad regem, & dixit ei;
Inveni hominem de filiis tranſmigrationis Juda, qui ſolu-
tionem regi annuntiet. Reſpondit rex, & dixit Danieli, 26
cujus nomen erat Baltaſſar ; Putáſne verè potes mihi in-
dicare ſomnium, quod vidi, & interpretationem ejus?
Et reſpondens Daniel coram rege, ait ; Myſterium, quod 27
rex interrogat, ſapientes, magi, arioli, & aruſpices neque-
unt indicare regi. Sed eſt Deus in cœlo revelans myſte- 28
ria, qui indicavit tibi, rex Nabuchodonoſor, quæ ventura
ſunt in noviſſimis temporibus. Somnium tuum & viſio-
nes capitis tui in cubili tuo hujuſcemodi ſunt : Tu,rex, 29
cogitare cœpiſti in ſtrato tuo,quid eſſet futurum poſt hæc:
& qui revelat myſteria, oſtendit tibi quæ ventura ſunt.
Mihi quoque non in ſapientia, quæ eſt in me plus quàm 30
in cunctis viventibus, ſacramentum hoc revelatum eſt:
ſed ut increpatio regi manifeſta fieret, & cogitationes
mentis tuæ ſcires. Tu,rex,videbas, & ecce quaſi ſtatua 31
una grandis : ſtatua illa magna, & ſtaturâ ſublimis ſtabat
contra te, & intuitus ejus erat terribilis. Hujus ſtatuæ 32
caput ex auro optimo erat, pectus autem & brachia de
argento, porrò venter & femora ex ære. Tibiæ autem 33
ferreæ, pedum quædam pars erat ferrea, quædam autem
fictilis. Videbas ita, donec abſciſſus eſt lapis de monte 34
ſine manibus : & percuſſit ſtatuam in pedibus ejus ferreis
& fictilibus, & comminuit eos. Tunc contrita ſunt pa- 35
riter ferrum, teſta, æs, argentum, & aurum, & redacta
quaſi in favillam æſtivæ areæ, quæ rapta ſunt vento :
nullúſque locus inventus eſt eis : lapis autem, qui per-
cuſſerat ſtatuam, factus eſt mons magnus, & implevit uni-
verſam terram.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܗܘ ܡܫܚܠܦ ܙܒܢܐ ܘܥܕܢܐ. ܡܥܒܪ ܡܠܟܐ ܘܡܩܝܡ ܡܠܟܐ. ܝܗܒ ܚܟܡܬܐ 21
ܠܚܟܝܡܐ. ܘܡܕܥܐ ܠܝܕܥܝ ܣܘܟܠܐ. * ܗܘ ܓܠܐ ܥܡܝܩܬܐ. ܘܟܣܝܬܐ. ܘܝܕܥ ܡܐ 22
ܕܒܚܫܘܟܐ. ܘܢܘܗܪܐ ܠܘܬܗ ܫܪܐ. * ܠܟ ܐܠܗܐ ܕܐܒܗܝ ܡܘܕܐ ܐܢܐ. ܘܡܫܒܚ ܐܢܐ. 23
ܕܚܟܡܬܐ ܘܓܢܒܪܘܬܐ ܝܗܒܬ ܠܝ. ܘܗܫܐ ܐܘܕܥܬܢܝ ܕܒܥܝܢ ܡܢܟ. ܘܡܠܬܐ ܕܡܠܟܐ
ܐܘܕܥܬܢܝ. * ܘܒܗ ܒܫܥܬܐ ܥܠ ܕܢܝܐܝܠ ܠܘܬ ܐܪܝܘܟ. ܗܘ ܕܦܩܕ ܠܗ ܡܠܟܐ ܠܡܘܒܕܘ 24
ܠܚܟܝܡܐ ܕܒܒܠ. ܘܐܙܠ ܘܐܡܪ ܠܗ. ܠܚܟܝܡܐ ܕܒܒܠ ܠܐ ܬܘܒܕ. ܐܠܐ
ܐܥܠܢܝ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܘܦܘܫܩܐ ܠܡܠܟܐ ܐܚܘܐ. * ܗܝܕܝܢ ܐܪܝܘܟ ܒܣܘܪܗܒܐ 25
ܐܥܠܗ ܠܕܢܝܐܝܠ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܕܐܫܟܚܬ ܓܒܪܐ ܡܢ ܒܢܝ ܓܠܘܬܐ
ܕܝܗܘܕ. ܕܦܘܫܩܐ ܠܡܠܟܐ ܢܘܕܥ. * ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܕܢܝܐܝܠ ܕܫܡܗ ܒܠܛܫܐܨܪ. 26
ܡܫܟܚ ܐܢܬ ܠܡܘܕܥܘܬܢܝ. ܚܠܡܐ ܕܚܙܝܬ ܘܦܘܫܩܗ. * ܥܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܘܐܡܪ ܩܕܡ 27
ܡܠܟܐ. ܪܐܙܐ ܕܡܠܟܐ ܫܐܠ. ܠܐ ܚܟܝܡܐ ܘܠܐ ܡܓܘܫܐ ܘܠܐ ܚܪܫܐ ܘܠܐ ܐܫܘܦܐ
ܡܫܟܚܝܢ ܠܡܚܘܝܘ ܠܡܠܟܐ. * ܐܠܐ ܐܝܬ ܐܠܗܐ ܒܫܡܝܐ ܓܠܐ ܪܐܙܐ. ܘܗܘܝܘ 28
ܠܡܠܟܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ. ܡܕܡ ܕܗܘܐ ܒܚܪܬ ܝܘܡܬܐ. ܚܠܡܟ ܘܚܙܘܐ ܕܪܝܫܟ
ܕܥܠ ܡܫܟܒܟ ܗܢܘ. * ܐܢܬ ܡܠܟܐ ܡܚܫܒܬܟ ܥܠ ܠܒܟ ܣܠܩܝ. ܥܠ ܡܕܡ 29
ܕܢܗܘܐ ܒܚܪܬܐ. ܘܓܠܐ ܪܐܙܐ ܐܘܕܥܟ ܡܐ ܕܢܗܘܐ. * ܘܐܢܐ ܠܐ ܗܘܐ ܡܛܠ ܕܐܝܬ ܒܝ 30
ܚܟܡܬܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܚܝܐ. ܐܬܓܠܝ ܠܝ ܪܐܙܐ ܗܢܐ. ܐܠܐ ܡܛܠ ܕܦܘܫܩܐ ܢܬܝܕܥ
ܠܡܠܟܐ. ܘܡܕܡ ܕܐܬܚܫܒܬ ܒܠܒܟ ܬܕܥ. * ܐܢܬ ܡܠܟܐ ܚܙܐ ܗܘܝܬ. ܘܗܐ 31
ܨܠܡܐ ܚܕ ܪܒܐ. ܘܫܘܦܪܗ ܝܬܝܪ. ܩܐܡ ܗܘܐ ܠܘܩܒܠܟ. ܘܚܙܘܗ ܕܚܝܠ. * ܘܗܢܐ ܨܠܡܐ ܪܝܫܗ 32
ܕܕܗܒܐ ܛܒܐ. ܚܕܝܘܗܝ ܘܕܪܥܘܗܝ ܕܣܐܡܐ. ܟܪܣܗ ܘܡܬܢܘܗܝ ܕܢܚܫܐ. * ܫܩܘܗܝ 33
ܕܦܪܙܠܐ. ܪܓܠܘܗܝ ܡܢܗܘܢ ܕܦܪܙܠܐ ܘܡܢܗܘܢ ܕܚܣܦܐ. * ܘܚܙܝܬ ܕܐܬܓܙܪܬ ܟܐܦܐ 34
ܕܠܐ ܒܐܝܕܝܢ. ܘܡܚܬܗ ܠܨܠܡܐ. ܥܠ ܪܓܠܘܗܝ ܕܦܪܙܠܐ ܘܕܚܣܦܐ. ܘܕܩܬ ܐܢܘܢ ܠܓܡܪ.
* ܗܝܕܝܢ ܐܬܕܩܘ ܐܟܚܕܐ ܦܪܙܠܐ. ܘܚܣܦܐ. ܘܢܚܫܐ. ܘܣܐܡܐ. ܘܕܗܒܐ. ܘܗܘܘ ܐܝܟ ܥܘܪܐ ܕܐܕܪܐ 35
ܕܩܝܛܐ. ܘܫܩܠܬ ܐܢܘܢ ܪܘܚܐ. ܘܐܬܪܐ ܠܐ ܐܫܬܟܚ ܠܗܘܢ. ܘܟܐܦܐ
ܕܡܚܬܗ ܠܨܠܡܐ. ܗܘܬ ܠܛܘܪܐ ܪܒܐ. ܘܡܠܬ ܟܠܗ ܐܪܥܐ.

Ipſe tempora mutat ac tempeſtates : trans- 21
fert reges,& alios erigit : ſapientiam præbet
ſapientibus, & prudentiam intellectu prædi-
tis : Ipſe retegit profunda & arcana, novit 22
quod latet in obſcuro, & lumen penes ipſum
eſt. Tibi Deus patrum meorum gratias ago, 23
laudémque dico ; quòd ſapientiam & poten-
tiam dederis mihi, & nunc notum mihi fe-
ceris quod à te poſtulavimus, & verbum re-
gis indicaveris mihi. Et illicò ingreſſus eſt 24
Daniel ad Arioch cui mandaverat rex ut in-
terficeret ſapientes Babylonis, adiénſque
eum ſic eſt allocutus ; Sapientes Babylonis
ne perdas, ſed introduc me ad regem & ex-
plicationem regi indicabo. Tunc Arioch 25
celerrimè introduxit Danielem ad regem &
dixit ei ; Reperi virum inter captivos Judæ-
os, qui explicationem regi indicaturus eſt.
Reſpondens rex ait Danieli, cujus nomen erat 26
Blitſaſar ; Potéſne indicare mihi ſomnium
quod vidi, & explicationem ejus? Reſpon- 27
dens Daniel dixit coram rege ; Arcanum
quod rex petit, neque ſapientes, neque ma-
gi, neque præſtigiatores, neque harioli ex-
ponere poſſunt regi : Verùm adeſt Deus 28
cœli myſteriorum revelator, qui notum facit
regi Nebuchadnoſari quod futurum eſt po-
ſtremis diebus. Somnium tuum, & viſio ca-
pitis tui quæ *contigit* ſuper cubili tuo, ea eſt.
Tibi rex, cogitationes tuæ animum tuum oc- 29
cupavêre de his quæ poſthac eventura ſunt,
& arcanorum revelator notum fecit tibi quæ
futura ſunt. Mihi autem, non quòd major 30
inſit in me ſapientia quàm cunctis viventi-
bus, revelatum fuit mihi myſterium iſtud;
ſed ut explicatio pateat regi, & quæ animo
tuo cogitâſti, cognoſcas. Tu rex videbas, 31
& ecce ſtatua quædam ingens, eximii admo-
dum nitoris ſtabat ante te, Hujus aſpectus
horrendus erat : Caput ejus ex auro opti- 32
mo, pectus & brachia argentea, venter &
femora ænea : Crura ferrea, pedes partim 33
ferrei,partim teſtacei. Deinde vidiſti lapi- 34
dem haud manibus exciſum percuſſiſſe ſtatu-
am illam ad pedes ejus ferreos atque teſta-
ceos, & minutiſſimè contudiſſe eos : Adeo- 35
que comminuta fuiſſe ferrum, æs, teſtam, ar-
gentum, & aurum ; & quaſi in areæ æſtivæ
glumam redacta, abrepta fuiſſe à vento ve-
hementi, & nullum eis locum inventum eſſe:
lapidem autem illum qui ſtatuam percuſſe-
rat, evaſiſſe montem ingentem, eoque reple-
tam eſſe terram univerſam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Interpretatione LATINA.

Καὶ αὐτὸς ἀλλοιοῖ καιροὺς καὶ χρόνους, καθιστᾷ βασιλεῖς, καὶ μεθιστᾷ, διδοὺς σοφίαν τοῖς σοφοῖς, καὶ φρόνησιν τοῖς εἰδόσι σύνεσιν. Αὐτὸς ἀποκαλύπτει βαθέα καὶ ἀπόκρυφα, γινώσκων τὰ ἐν τῷ σκότει, καὶ τὸ φῶς μετ' αὐτοῦ ἐστι. Σοὶ ὁ Θεὸς τῶν πατέρων μου ἐξομολογοῦμαι καὶ αἰνῶ, ὅτι σοφίαν καὶ δύναμιν (γ) δέδωκάς μοι, καὶ ἐγνώρισάς μοι ἃ ἠξιώσαμεν παρὰ σοῦ, καὶ τὸ ὅραμα τοῦ βασιλέως ἐγνώρισάς μοι. Καὶ ἦλθε Δανιὴλ πρὸς Ἀριὼχ, ὃν κατέστησεν ὁ βασιλεὺς ἀπολέσαι τοὺς σοφοὺς Βαβυλῶνος, καὶ εἶπεν αὐτῷ, Τοὺς σοφοὺς Βαβυλῶνος μὴ ἀπολέσῃς, εἰσάγαγε δέ με ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, καὶ τὴν σύγκρισιν τῷ βασιλεῖ ἀναγγελῶ. Τότε Ἀριὼχ ἐν σπουδῇ εἰσήγαγε τὸν Δανιὴλ ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, καὶ εἶπεν αὐτῷ, Εὕρηκα ἄνδρα ἐκ τῶν υἱῶν τῆς αἰχμαλωσίας τῆς Ἰουδαίας, ὅστις τὸ σύγκριμα τῷ βασιλεῖ ἀναγγελεῖ. Καὶ ἀπεκρίθη ὁ βασιλεὺς, καὶ εἶπε τῷ Δανιὴλ, οὗ τὸ ὄνομα (δ) Βαλτάσαρ, Εἰ δύνασαί μοι ἀναγγεῖλαι τὸ (ε) ἐνύπνιον ὃ ἴδον, καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ; Καὶ ἀπεκρίθη Δανιὴλ ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, καὶ εἶπε, Τὸ μυστήριον ὃ ὁ βασιλεὺς ἐπερωτᾷ, οὐκ ἔστι σοφῶν, μάγων, ἐπαοιδῶν, γαζαρηνῶν ἀναγγεῖλαι τῷ βασιλεῖ· Ἀλλ' (ζ) ἢ ἔστι Θεὸς ἐν οὐρανῷ ἀποκαλύπτων μυστήρια, καὶ ἐγνώρισε τῷ βασιλεῖ Ναβουχοδονόσορ, ἃ δεῖ γενέσθαι ἐπ' ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν. Τὸ ἐνύπνιόν σου καὶ αἱ ὁράσεις τῆς κεφαλῆς σου ἐπὶ τῆς κοίτης σου, τοῦτό (η) ἐστι Βασιλεῦ· οἱ διαλογισμοί σου ἐπὶ τῆς κοίτης σου ἀνέβησαν τί δεῖ γενέσθαι μετὰ ταῦτα· καὶ ὁ ἀποκαλύπτων μυστήρια ἐγνώρισέ σοι ἃ δεῖ γενέσθαι. Καὶ ἐμοὶ (θ) δὲ οὐκ ἐν σοφίᾳ τῇ οὔσῃ ἐν ἐμοὶ παρὰ πάντας τοὺς ζῶντας, τὸ μυστήριον (ι) τοῦτο ἀπεκαλύφθη, ἀλλ' ἕνεκεν τοῦ τὴν σύγκρισιν τῷ βασιλεῖ γνωρίσαι, ἵνα τοὺς διαλογισμοὺς τῆς καρδίας σου γνῷς. Σὺ βασιλεῦ ἐθεώρεις, καὶ ἰδοὺ εἰκὼν μία, μεγάλη ἡ εἰκὼν ἐκείνη, καὶ ἡ (κ) πρόσοψις αὐτῆς ὑπερφερής, ἑστῶσα πρὸ προσώπου, καὶ ἡ ὅρασις αὐτῆς φοβερά. (λ) Εἰκὼν, ἧς ἡ κεφαλὴ χρυσίου (μ) χρηστοῦ, αἱ χεῖρες καὶ τὸ στῆθος καὶ οἱ βραχίονες αὐτῆς ἀργυροῖ, ἡ κοιλία καὶ οἱ μηροὶ χαλκοῖ, Αἱ κνῆμαι σιδηραῖ, οἱ πόδες μέρος μέν τι σιδηροῦν, (ν) καὶ μέρος δέ τι ὀστράκινον. Ἐθεώρεις (ξ) ἕως ἀπεσχίσθη λίθος ἐξ ὄρους ἄνευ χειρῶν, καὶ ἐπάταξε τὴν εἰκόνα ἐπὶ τοὺς πόδας τοὺς σιδηροῦς καὶ ὀστρακίνους, καὶ ἐλέπτυνεν αὐτοὺς εἰς τέλος. Τότε ἐλεπτύνθησαν εἰσάπαξ (ο) τὸ ὄστρακον, ὁ σίδηρος, ὁ χαλκὸς, ὁ ἄργυρος, ὁ χρυσὸς· καὶ (˝) ἐγένετο ὡσεὶ κονιορτὸς ἀπὸ ἅλωνος θερινῆς· καὶ ἐξῆρεν αὐτὰ τὸ πλῆθος τοῦ πνεύματος, καὶ τόπος οὐχ εὑρέθη αὐτοῖς. καὶ ὁ λίθος ὁ πατάξας τὴν εἰκόνα, ἐγενήθη ὄρος μέγα, καὶ ἐπλήρωσε πᾶσαν τὴν γῆν.

Et ipſe mutat tempora, & ætates : conſtituit reges, & transfert : dans 21
ſapientiam ſapientibus, & prudentiam intelligentibus diſciplinam. Ipſe 22
revelat profunda, & abſcondita, cognoſcens quæ in tenebris : & lux cum
eo eſt. Tibi, Deus patrum meorum, confiteor, & laudo, quia ſapientiam & 23
fortitudinem dediſti mihi : & oſtendiſti mihi, quæ rogavimus te : & vi-
ſionem regis notam feciſti mihi. Et venit Daniel ad Arioch, quem conſti- 24
tuerat rex, ut perderet ſapientes Babylonis, & dixit ei ; Sapientes Baby-
lonis, ne perdas : ſed introduc me in conſpectu regis : & conjecturam re-
gi narrabo. Tunc Arioch in feſtinatione introduxit Danielem ad regem, & 25
dixit ei ; Inveni virum de filiis captivitatis Judææ, qui conjecturam re-
gi indicabit. Et reſpondit rex, & dixit Danieli, cujus nomen erat Bal- 26
taſar ; Si potes mihi indicare ſomnium, quod vidi, & conjecturam ejus?
Et reſpondit Daniel coram rege, & dixit ; Myſterium, quod rex in- 27
terrogat, non eſt ſapientum, magorum, incantatorum, Gazarenorum, in-
dicare regi : Sed eſt Deus in cœlo revelans myſteria : & nota fecit regi 28
Nabuchodonoſor, quæ oportet fieri in noviſſimis diebus. Somnium tuum,
& viſiones capitis tui in cubili tuo, hoc eſt, O rex. Cogitationes tuæ in 29
cubili tuo aſcenderunt, quid futurum ſit (g) poſt hæc : & qui revelat my-
ſteria, oſtendit tibi, quæ oporteat fieri. Et mihi autem non in ſapientia, quæ 30
ſit in me præ omnibus viventibus, myſterium hoc revelatum eſt ; ſed ut
conjecturam regi manifeſtam faciam; ut cogitationes cordis tui ſcias. Tu, 31
rex, videbas, & ecce (h) imago una, magna imago illa, & aſpectus ipſi-
us ſublimis, ſtans ante faciem tuam : & intuitus ejus erat terribilis ;
Imago, cujus caput ex auro optimo erat : manus, & pectus, & brachia 32
ejus argentea : venter, & femora ænea, Et tibiæ ferreæ : pedes, pars 33
quidem ferrea, & pars quædam teſtea. Videbas, donec abſciſſus eſt la- 34
pis de monte ſine manibus : & percuſſit imaginem ſuper pedes ferreos,
& teſteos : & comminuit eos in finem. Tunc comminuta ſunt pariter 35
teſta, ferrum, æs, argentum, aurum : & facta ſunt quaſi pulvis de area
æſtiva : & ſuſtulit ea multitudo ſpiritûs ; & locus non eſt inventus eis.
Et lapis, qui percuſſerat imaginem, factus eſt mons magnus, & implevit
univerſam terram.

MS. A. (γ) ἔδωκάς μοι, καὶ νῦν ἐγνώρισάς (δ) Βαρτάσαρ, (ε) ἐνύπνιον, καὶ τὴν (ζ) ἔστιν ὁ Θεὸς (η) ἐστιν· Σὺ βασιλεῦ ἐθεώρεις· οἱ (θ) οὐκ ἐν (ι) ἀπεκαλύφθη, (κ) ὄψις (λ) Ἡ εἰκὼν, (μ) καθαροῦ, (ν) μέρος δέ (ξ) ἕως οὗ ἐτμήθη λίθος (ο) ὁ σίδηρος, τὸ ὄστρακον, ὁ χαλκὸς, (˝) ἐγένοντο

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وهو يبدل الاوقات والازمنة * يقيم ملوكا ويزيلها * يعطي الحكمة للحكماء * والذهن لعالمي
الفهم * وهو يكشف العميقات والخفيات * يعلم ما في الظلام * والنور معه هو * لك يا اله آبائي
اعترف واسبح * لانك اعطيتني حكمة وقوة * وانت اعطيتني ما سألناه منك * وعرفتني
رويا الملك *

* الاصحاح الثاني *

* ودخل دانيال الى اريوخ الذي اقامه الملك ليهلك حكماء بابل * وقال له * لا تهلك
حكماء بابل * ادخلني امام الملك فاخبر الملك بالتاويل * حينئذ اريوخ ادخل دانيال بسرعة
امام الملك * وقال له * وجدت رجلا من بني سبي يهودا * هذا يخبر الملك بالتاويل * فاجاب
الملك وقال لدانيال الذي اسمه بلطشاصر * هل تقدر ان تخبرني بالحلم الذي رايته
وبتاويله * فاجاب دانيال امام الملك وقال * السر الذي سال عنه الملك * ليس احد من الحكماء
والمجوس والرقايين والسحرة يخبر الملك * الا الاله الذي في السماء كاشف الاسرار * عرف الملك
بختنصر ما ينبغي ان يكون في الايام الاخيرة * حلمك رويا راسك على مضجعك هو هذا
* انت ايها الملك افكارك على مضجعك صعدت بما ينبغي ان يكون بعد هذا * وكاشف الاسرار
عرفك بما ينبغي ان يكون * وليس لي بالحكمة الكاينة في اكثر من جميع الاحياء كشف
لي هذا السر * لكن من اجل ان يعرف الملك بالتاويل * لكي تعلم افكار قلبك * انت ايها
الملك رايت * واذا صورة واحدة عظيمة * وتلك الصورة وطلعتها كثير البهاء جدا
قايمة امام وجهك * ومنظرها * مخوف * الصورة راسها من ذهب نقي طيب * يداها وصدرها
وذراعاها فضة * بطنها وفخذاها نحاسا * ساقاها حديدا * قدماها جزء حديدا وجزء ما خزفا
* ورايت الى ان قطع حجر من جبل بغير يدين * وضرب الصورة على القدمين النحاس والخزف
ودقهما ناعما الى الغاية * حينئذ دق في من الخزف والحديد والنحاس والفضة والذهب
وصارت مثل غبار من بيدر صيفي * وحملها كثير الريح * فلم يوجد لها موضع * والحجر
الذي ضرب الصورة * صار جبلا عظيما * وملا كل الارض *

Ipſe mutat tempora & tempeſtates : con- 21
ſtituit reges, & deponit eos : confert
ſapientiam ſapientibus, & ingenium
ſcientibus prudentiam : Ipſe detegit pro- 22
funda & arcana : novit quicquid eſt
in tenebris, & lux penes eum eſt. Tibi 23
O Deus patrum meorum, confiteor, te-
que laudo ; quòd præſtiteris mihi ſapien-
tiam & fortitudinem, túque mihi de-
deris quod à te poſtulavimus, & notam
feceris mihi viſionem regis.

Textus ſecundus.

Deinde ingreſſus eſt Daniel ad Arioch 24
quem conſtituerat rex ad perdendum
ſapientes Babelis, & ait illi ; Ne per-
das ſapientes Babelis : introduc me co-
ram rege, & indicabo regi interpre-
tationem. Tunc Arioch Daniele ad re- 25
gem feſtinanter introducto, dixit illi ;
Inveni virum de captivis Judæ, is in-
dicabit regi interpretationem. Reſpon- 26
dit rex, & ait Danieli cujus nomen
erat Baltaſaſar ; Num poteris indicare
mihi ſomnium quod vidi, & interpre-
tationem ejus ? Reſpondit Daniel co- 27
ram rege, & ait ; Arcanum de quo
rex inquirit, nemo ſapientum, mago-
rum, incantatorum, aut veneficorum
indicaturus eſt regi. Sed Deus qui eſt 28
in cœlo, revelator arcanorum, notum
fecit regi Bochtonaſſari quæ contingere
debent ultimis diebus. Somnium tuum,
viſio ſcilicet *capitis tui ſuper cubili*
tuo, hoc eſt. Tibi O rex, cogitationes 29
tuæ ſuper cubili tuo aſcenderunt de his
quæ poſtea futura ſunt, & arcanorum
revelator nota fecit tibi quæ contingere
debent. Neque verò mihi, per ſapienti- 30
am quæ major extet in me quàm cun-
ctis viventibus, revelatum eſt arca-
num iſtud ; ſed ut nota fiat regi inter-
pretatio, quatenus ſcias cogitationes cor-
dis tui. Tu O rex vidiſti cùm ecce 31
imago quædam magna, eâque imago cu-
jus lumina erant ingentis admodum
majeſtatis, ſtabat ante faciem tuam;
cujus aſpectus formidabilis. Imaginis 32
ejus caput erat ex auro puro & optimo ;
manus, pectus, & brachia argentea,
venter & femora ænea. Crura ferrea : 33
pedes partim ferrei, partim verò teſta-
cei. Deinde vidiſti donec lapis è mon- 34
te ſine manibus abſciſſus eſt, percuſſit-
que imaginem ſuper pedes æneos &
teſtaceos, & comminuit eos in particulas
ſummè tenues. Tunc comminuta ſunt 35
ſimul ac ſemel teſta, ferrum, æs, argen-
tum, & aurum ; et facta ſunt ceu
pulviſculus ex area æſtiva, et aſpor-
tavit ea multitudo venti, nec inventus
eſt eis locus. Tum lapis ille qui per-
cuſſerat imaginem, factus eſt mons
magnus, et implevit univerſam ter-
ram.

דניאל׃ ב

Deus quia ,regum rex rex Tu .rege coram dicemus *ejus* interpretationem & ,somnium Hoc

36 דנה חלמא ופשרה נאמר קדם־מלכא׃ 37 אנתה מלכא מלך מלכיא די אלה

bestiam ,*hominis filii habitantes* quibus *omnibus in* Et .tibi dedit gloriam & fortitudinem & ,potentiam ,regnum cœlorum

38 שמיא מלכותא חסנא ותקפא ויקרא יהב־לך׃ ובכל־די דארין בני־אנשא חיות

auro de ipsius caput ipse tu : ipsis omnibus in *te constituit dominum* & ,tua manu in dedit *cœlorum volatile* & ,agri

ברא ועוף־שמיא יהב בידך והשלטך בכלהון אנתה־הוא ראשה די דהבא׃

universam in dominabitur quod ,*ære de* aliud tertium regnum & ,te *præ inferius* aliud regnum consurget te post Et

39 ובתרך תקום מלכו אחרי ארעא מנך ומלכו תליתאה אחרי די נחשא די תשלט בכל־

,omnia *atterens &* ,*comminuens* ferrum *quo respectu omni* :ferrum sicut forte erit quartum regnum Et .*terram*

40 ארעא׃ ומלכו רביעיא תהוה תקיפה כפרזלא כל־קבל די פרזלא מהדק וחשל כלא

eis ex digitos & ,pedes vidisti quod Et .conteret & ,comminuet ,hæc omnia *conterens* quod ferrum sicut &

41 וכפרזלא די־מרעע כל־אלין תדק ותרע׃ ודי־חזיתה רגליא ואצבעתא מנהין

respectu omni : eo in *existendum ad* ferri planta de & ,erit divisum regnum ,*ferri eis ex &* ,*figuli quæ testæ*

חסף די־פחר ומנהין פרזל מלכו פליגה תהוה ומן־נצבתא די פרזלא להוא־בה כל־קבל

parte ex :*testæ eis ex &* ,*ferri eis ex* pedum digitos Et .*luti* testa *in* mixtum ferrum vidisti quod

42 די חזיתה פרזלא מערב בחסף טינא׃ ואצבעת רגליא מנהון פרזל ומנהין חסף מן־קצת

se miscentes ,*luti* testa *in* mixtum ferrum vidisti quod Et .contritum erit *ea* ex & ,forte erit regnum

43 מלכותא תהוה תקיפה ומנה תהוא תבירה׃ ודי חזית פרזלא מערב בחסף טינא מתערבין

se miscens non ferrum sicut *ecce* : *illo* cum *hunc adhærentes existendum ad* non & ,hominis semine *in existendum ad*

להון בזרע אנשא ולא־להון דבקין דנה עם־דנה הא־כדי פרזלא לא מתערב

non *secula* in quod ,regnum cœlorum Deus suscitabit ,ipsorum regum *eorum* diebus in Et .testa cum

44 עם־חספא׃ וביומיהון די מלכיא אנון יקים אלה שמיא מלכו די לעלמין לא

stabit ipsum & ,regna ista omnia consumet & ,comminuet : dimittetur non alteri populo *ejus* regnum & ,corrumpetur

תתחבל ומלכותה לעם אחרן לא תשתבק תדק ותסף כל־אלין מלכותא והיא תקום

,ferrum comminuit & ,manibus in non qui lapis est abscissus monte de quòd ,vidisti *quo respectu Omni* .secula in

45 לעלמיא׃ כל־קבל די־חזית די מטורא אתגזרת אבן די־לא בידין והדקת פרזלא

,somnium verum & : hæc post ,*existendum ad quod quid* regi notificavit *magnus* Deus ,aurum & ,argentum ,testam ,æs

נחשא חספא כספא ודהבא אלה רב הודע למלכא מה די להוא אחרי דנה ויציב חלמא

fragrantias & ,*munus* & : se incurvavit Danieli & ,*suas facies* super cecidit Nebuchadnesar rex tunc *In* .ejus interpretatio fidelis &

46 ומהימן פשרה׃ באדין מלכא נבוכדנצר נפל על־אנפוהי ולדניאל סגד ומנחה וניחחין

dominus & ,deorum Deus *ipse* vester Deus quòd ,*veritate* A : dixit & ,Daniel ad rex *Respondit* .ei *libandum ad* dixit

47 אמר לנסכה לה׃ ענה מלכא לדניאל ואמר מן־קשט די אלהכון הוא אלה אלהין ומרא

multa magna munera & ,magnificavit Danielem rex Tunc .hoc secretum revelare potuisti quia : secreta revelans & ,regum

48 מלכין וגלה רזין די יכלת למגלא רזא דנה׃ אדין מלכא לדניאל רבי ומתנן רברבן שגיאן

postulavit Daniel Et .Babel sapientes omnes super ,*magistratuum* principē & ,Babel *provincia omni super* eum præfecit & ,ei dedit

49 יהב־לה והשלטה על כל־מדינת בבל ורב־סגנין על כל־חכימי בבל׃ ודניאל בעא

.regis *porta in* Daniel & : nego-Habed & ,Mesach ,Sedrach ,Babel *provinciæ quæ administratione super* præfecit & ,rege à

מן־מלכא ומני על עבידתא די מדינת בבל לשדרך מישך ועבד נגו ודניאל בתרע מלכא׃

Versio VULG. LAT.

Hoc est somnium : Interpretationem quoque ejus dicemus coram te, rex. 37 Tu rex regum es : & Deus cœli, regnum, & fortitudinem, et imperium, et gloriam dedit tibi : 38 Et omnia in quibus habitant filii hominum, et bestiæ agri : volucres quoque cœli dedit in manu tua, & sub ditione tua universa constituit : tu es ergò caput aureum. 39 Et post te consurget regnum aliud minus te argenteum : & regnum tertium aliud æreum, quod imperabit universæ terræ. 40 Et regnum quartum erit velut ferrum : quomodò ferrum comminuit & domat omnia, sic comminuet & conteret omnia hæc. 41 Porrò quia vidisti pedum, & digitorum partem testæ figuli, et partem ferream : regnum divisum erit, quod tamen de plantario ferri orietur, secundùm quod vidisti ferrum mistum testæ ex luto. 42 Et digitos pedum ex parte ferreos, et ex parte fictiles : ex parte regnum erit solidum, & ex parte contritum. 43 Quòd autem vidisti ferrum mistum testæ ex luto, commiscebuntur quidem humano semine, sed non adhærebunt sibi, sicuti ferrum misceri non potest testæ. 44 In diebus autem regnorum illorum, suscitabit Deus cœli regnum, quod in æternum non dissipabitur, & regnum ejus alteri populo non tradetur : comminuet autem, & consumet universa regna hæc : et ipsum stabit in æternum. 45 Secundùm quod vidisti, quòd de monte abscissus est lapis sine manibus, & comminuit testam, & ferrum, et æs, et argentum, & aurum, Deus magnus ostendit regi quæ ventura sunt posteá : & verum est somnium, & fidelis interpretatio ejus. 46 Tunc rex Nabuchodonosor cecidit in faciem suam, & Danielem adoravit, et hostias et incensum præcepit ut sacrificarent ei. 47 Loquens ergò rex, ait Danieli ; Verè Deus vester Deus deorum est, et Dominus regum, et revelans mysteria : quoniam tu potuisti aperire hoc sacramentum. 48 Tunc rex Danielem in sublime extulit, et munera multa et magna dedit ei : & constituit eum principem super omnes provincias Babylonis, & præfectum magistratuum super cunctos sapientes Babylonis. 49 Daniel autem postulavit à rege, & constituit super opera provinciæ Babylonis, Sidrach, Misach, et Abdenago : ipse autem Daniel erat in foribus regis.

Versio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

36 * ܗܢܘ ܚܠܡܐ. ܘܦܘܫܩܗ ܐܡܪ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. 37 * ܐܢܬ ܡܠܟܐ ܡܠܟ ܡܠܟܐ .. ܠܟ ܐܠܗܐ
ܡܪܝܡܐ. ܡܠܟܘܬܐ ܚܣܝܢܬܐ ܘܐܝܩܪܐ ܝܗܒ ܠܟ. 38 * ܘܒܟܠ ܐܬܪ ܕܥܡܪܝܢ ܒܗ ܒܢܝܢܫܐ.
ܘܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. ܝܗܒ ܒܐܝܕܝܟ. ܘܐܫܠܛܟ ܥܠ ܟܠܗܘܢ. ܐܢܬ ܗܘ ܪܫܐ
ܕܕܗܒܐ. 39 * ܘܒܬܪܟ ܬܩܘܡ ܡܠܟܘܬܐ ܐܚܪܬܐ ܡܟܝܟܐ ܡܢܟ. ܘܡܠܟܘܬܐ ܐܚܪܬܐ ܬܠܝܬܝܬܐ
ܕܢܚܫܐ ܕܬܫܠܛ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. 40 * ܘܡܠܟܘܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ ܬܗܘܐ ܥܫܝܢܐ ܐܝܟ
ܦܪܙܠܐ. ܘܐܝܟ ܕܦܪܙܠܐ ܡܕܩ ܘܡܫܚܩ ܟܠ .. ܗܟܢܐ ܗܝ ܬܕܘܩ ܘܬܫܥܒܕ ܟܠ.
41 * ܘܕܚܙܝܬ ܪܓܠܐ ܘܨܒܥܬܐ .. ܡܢܗܘܢ ܕܚܣܦܐ ܕܦܚܪܐ. ܘܡܢܗܘܢ ܕܦܪܙܠܐ .. ܡܠܟܘܬܐ
ܦܠܝܓܬܐ ܬܗܘܐ. ܘܡܢ ܫܪܫܐ ܕܦܪܙܠܐ ܢܗܘܐ ܒܗ. ܐܝܟܢܐ ܕܚܙܝܬ ܦܪܙܠܐ ܕܡܚܠܛ ܒܚܣܦܐ
ܕܛܝܢܐ. 42 * ܘܨܒܥܬܐ ܕܪܓܠܐ ܕܚܙܝܬ .. ܡܢܗܘܢ ܕܦܪܙܠܐ ܘܡܢܗܘܢ ܕܚܣܦܐ .. ܡܢ ܡܢܗ
43 ܡܠܟܘܬܐ ܬܗܘܐ ܥܫܝܢܐ .. ܘܡܢܗ ܬܗܘܐ ܬܒܝܪܐ. * ܘܕܚܙܝܬ ܦܪܙܠܐ ܕܡܚܠܛ ܒܚܣܦܐ
ܕܛܝܢܐ .. ܢܬܚܠܛܘܢ ܒܙܪܥܐ ܕܐܢܫܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܢܩܝܦܝܢ ܚܕ ܥܡ ܚܕ .. ܐܝܟ ܕܦܪܙܠܐ ܠܐ
44 ܡܬܚܠܛ ܥܡ ܛܝܢܐ. * ܘܒܝܘܡܬܗܘܢ ܕܡܠܟܐ ܗܢܘܢ .. ܢܩܝܡ ܐܠܗܐ ܕܫܡܝܐ ..
ܡܠܟܘܬܐ ܕܠܥܠܡ ܠܐ ܬܬܚܒܠ. ܘܡܠܟܘܬܐ ܠܥܡܐ ܐܚܪܢܐ ܠܐ ܬܫܬܒܩ. ܐܠܐ ܬܕܘܩ
45 ܘܬܫܠܡ ܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ ܗܠܝܢ. ܘܗܝ ܬܩܘܡ ܠܥܠܡܝܢ. * ܐܝܟܢܐ ܕܚܙܝܬ ܕܡܢ
ܛܘܪܐ ܐܬܓܙܪܬ ܟܐܦܐ ܕܠܐ ܒܐܝܕܝܢ .. ܘܕܩܬ ܦܪܙܠܐ ܘܢܚܫܐ ܘܚܣܦܐ ܘܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ. ܐܠܗܐ
46 ܪܒܐ ܐܘܕܥܟ ܡܐ ܕܥܬܝܕ ܠܡܗܘܐ ܒܚܪܬܐ. ܫܪܝܪ ܚܠܡܐ. ܘܡܗܝܡܢ ܦܘܫܩܗ. * ܗܝܕܝܢ
ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ .. ܢܦܠ ܥܠ ܐܦܘܗܝ. ܘܠܕܢܝܐܝܠ ܣܓܕ. ܘܒܣܡܐ ܘܩܘܪܒܢܐ ܐܡܪ
47 ܠܡܩܪܒܘ ܠܗ. * ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܒܩܘܫܬܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܗܘܝܘ ܐܠܗ
ܐܠܗܐ. ܘܡܪܐ ܡܠܟܐ. ܘܓܠܐ ܪܐܙܐ. ܕܐܫܟܚܬ ܠܡܓܠܝܘ ܪܐܙܐ ܗܢܐ. 48 * ܗܝܕܝܢ ܡܠܟܐ
ܐܪܒܝ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܘܡܘܗܒܬܐ ܣܓܝܐܬܐ ܝܗܒ ܠܗ. ܘܐܫܠܛܗ ܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ
ܕܒܒܠ. ܘܐܩܝܡܗ ܪܫܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܪܒܝ ܚܝܠܐ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܚܟܝܡܐ ܕܒܒܠ.
49 * ܘܕܢܝܐܝܠ ܒܥܐ ܡܢ ܡܠܟܐ .. ܘܐܫܠܛ ܥܠ ܥܒܕܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܕܒܒܠ .. ܠܫܕܪܟ ܡܝܫܟ
ܘܠܥܒܕܢܓܘ. ܘܕܢܝܐܝܠ ܗܘܐ ܒܬܪܥܐ ܕܡܠܟܐ.

36 Hujusmodi erat somnium : jam explicationem ejus dicam regi. 37 Tibi O rex, regum regi, Deus altissimus regnum potens & gloriam largitus est : 38 Et omnem locum in quo degunt homines, volucres cœli, & bestiæ terræ, tradidit in manus tuas, téque præfecit iis omnibus : tu es caput illud aureum. 39 Post te verò surget regnum alterum te humilius : tum regnum aliud tertium, quod æneum erit, dominabitur in tota terra : 40 Denique regnum quartum durum erit sicut ferrum ; & quemadmodum ferrum tundit & comminuit omnia, sic illud omnia conteret ac domabit. 41 Quod autem vidisti pedes ac digitos partim esse ex argilla figuli, partim ex ferro ; regnum erit divisum, & ex origine ferri manebit in eo, quemadmodum vidisti ferrum mixtum testæ luteæ. 42 Digiti verò pedum, quos vidisti partim ferreos, partim testaceos ; *portendunt* partem ejus regni fore duram, & partem fore fragilem. 43 Quod vidisti ferrum testæ luteæ mixtum, *indicat* sic miscendos quidem eos humano semine, sed alterum cum altero non cohæsuros, perinde ac ferrum non commiscetur cum luto. 44 Porrò diebus regum istorum suscitabit Deus cœli regnum quod in secula non corrumpetur, quódque regnum alteri populo non relinquet : sed comminutis & consumptis omnibus iis regnis, ipsum manebit in perpetuum ; 45 Quemadmodum vidisti lapidem è monte haud manibus excisum comminuisse ferrum, æs, argillam, argentum, & aurum. Deus maximus nota fecit tibi quæ futura sunt posteris diebus. Verum est somnium, & fidelis interpretatio ejus. 46 Tunc Nabuchadnosar rex procidit in faciem suam, Danielem adoravit, & thura muneráque dixit ei offerenda. 47 Respondens rex ait Danieli ; Verè Deus vester, Deus deorum est, Dominus regum, & revelator arcanorum ; quandoquidem potuisti arcanum hoc declarare : 48 Tunc rex magnificavit Danielem, munera multa dedit ei, præfecit eum toti terræ Babylonis, & principem statuit eum super omnes militiæ duces omnésque sapientes Babylonis. 49 Denique Daniele regem postulante, præfecit administrationi urbis Babylonicæ Sedrachum, Masachum, & Ebednagum : Daniel autem mansit in aula regia.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

36 Τοῦτό ἐστι τὸ ἐνύπνιον, καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ ἐροῦμεν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. Σὺ βασιλεῦ βασιλεὺς
37 βασιλέων, ᾧ ὁ θεὸς τοῦ οὐρανοῦ βασιλείαν ἰσχυρὰν καὶ κραταιὰν καὶ ἔντιμον ἔδωκεν. Ἐν παντὶ τόπῳ,
38 ὅπου κατοικοῦσιν οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων· θηρία τε ἀγροῦ, καὶ πετεινὰ (ʺ) οὐρανοῦ, καὶ ἰχθύας τῆς θαλάσσης
39 ἔδωκεν ἐν τῇ χειρί σου, καὶ κατέστησέ σε κύριον πάντων. Σὺ εἶ ἡ κεφαλὴ ἡ χρυσῆ. Καὶ ὀπίσω σου
ἀναστήσεται βασιλεία ἑτέρα ἥττων σου, (π) καὶ βασιλεία τρίτη, (ρ) ἥτις ἐστὶν ὁ χαλκὸς, ἣ κυριεύσει πά-
40 σης τῆς γῆς, Καὶ βασιλεία τετάρτη (σ), ἥτις ἔσται ἰσχυρὰ ὡς σίδηρος· ὃν τρόπον ὁ σίδηρος λεπτύνει
41 καὶ δαμάζει πάντα, οὕτως πάντα λεπτυνεῖ καὶ (ʹ) δαμάσει. Καὶ ὅτι εἶδες τοὺς πόδας, καὶ τοὺς δακτύλους,
μέρος μέν τι ὀστράκινον (τ), μέρος δέ τι σιδηροῦν, βασιλεία διῃρημένη ἔσται, καὶ ἀπὸ τῆς ῥίζης τῆς
42 σιδηρᾶς ἔσται ἐν αὐτῇ, ὃν τρόπον εἶδες τὸν σίδηρον ἀναμεμιγμένον τῷ ὀστράκῳ. Καὶ οἱ δάκτυλοι τῶν ποδῶν
μέρος μέν τι σιδηροῦν, μέρος δέ τι ὀστράκινον, μέρος τι τῆς βασιλείας ἔσται ἰσχυρὸν, καὶ (υ) ἀπ' αὐτῆς ἔσται
43 συντριβόμενον. Ὅτι εἶδες τὸν σίδηρον ἀναμεμιγμένον τῷ ὀστράκῳ, συμμιγεῖς ἔσονται ἐν σπέρματι ἀνθρώπων,
καὶ οὐκ ἔσονται (φ) προσκολλώμενοι οὗτος μετὰ τούτου, καθὼς ὁ σίδηρος οὐκ ἀναμίγνυται (χ) μετὰ τοῦ ὀστράκου.
44 Καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις τῶν βασιλέων ἐκείνων, ἀναστήσει ὁ θεὸς τοῦ οὐρανοῦ βασιλείαν, ἥτις εἰς (ψ) τοὺς
αἰῶνας οὐ διαφθαρήσεται, καὶ ἡ βασιλεία αὐτοῦ λαῷ ἑτέρῳ οὐχ ὑπολειφθήσεται, λεπτυνεῖ (ω) καὶ λικμήσει
45 πάσας τὰς βασιλείας, καὶ αὕτη ἀναστήσεται εἰς τοὺς αἰῶνας, Ὃν τρόπον εἶδες, ὅτι ἀπὸ ὄρους ἐτμήθη λί-
θος ἄνευ χειρῶν, καὶ ἐλέπτυνε τὸ ὄστρακον, τὸν σίδηρον, τὸν χαλκὸν, τὸν ἄργυρον, τὸν χρυσόν. ὁ θε-
ὸς ὁ μέγας ἐγνώρισε τῷ βασιλεῖ ἃ δεῖ γενέσθαι μετὰ ταῦτα· καὶ ἀληθινὸν τὸ ἐνύπνιον, καὶ πιστὴ ἡ σύγ-
46 κρισις αὐτοῦ. Τότε ὁ βασιλεὺς Ναβουχοδονόσορ ἔπεσεν ἐπὶ πρόσωπον, καὶ τῷ Δανιὴλ προσεκύνησε, καὶ
47 (α) μαναὰ καὶ εὐωδίας εἶπε σπεῖσαι αὐτῷ. Καὶ ἀποκριθεὶς ὁ βασιλεὺς, εἶπε τῷ Δανιὴλ, Ἐπ' ἀληθεί-
ας ὁ θεὸς ὑμῶν, αὐτός ἐστι θεὸς θεῶν, καὶ κύριος (β) τῶν βασιλέων, ὁ ἀποκαλύπτων μυστήρια, ὅτι (γ)
48 ἠδυνάσθης ἀποκαλύψαι τὸ μυστήριον τοῦτο. Καὶ ἐμεγάλυνεν ὁ βασιλεὺς τὸν Δανιὴλ, καὶ δόματα (δ) με-
γάλα καὶ πολλὰ ἔδωκεν αὐτῷ, καὶ κατέστησεν αὐτὸν ἐπὶ πάσης χώρας Βαβυλῶνος, καὶ ἄρχοντα σατραπῶν
(ε) ἐπὶ πάντας τοὺς σοφοὺς Βαβυλῶνος. Καὶ Δανιὴλ ἠτήσατο παρὰ τοῦ βασιλέως, καὶ κατέστησεν ἐ-
49 πὶ τὰ ἔργα τῆς χώρας Βαβυλῶνος τὸν Σεδρὰχ, (ζ) Μισὰχ, καὶ Ἀβδεναγώ. καὶ Δανιὴλ ἦν ἐν τῇ αὐ-
λῇ τοῦ βασιλέως.

Hoc eſt ſomnium : & conjecturam ejus dicemus coram rege. Tu, O rex, 36
rex regum es, cui Deus cæli regnum forte, & validum, & honoratum 37
dedit In omni loco, ubi habitant filii hominum : & beſtias agri, & vo- 38
lucres cœli, & piſces maris dedit in manu tua : & conſtituit te domi-
num omnium. Tu es caput aureum : Et poſt te conſurget regnum aliud 39
(i)minus te : & regnum tertium, quod eſt æs, quod imperabit univerſæ
terræ : Et regnum quartum, quod erit forte, veluti ferrum. Quomodò 40
ferrum comminuit, & domat omnia ; ſic omnia comminuet, & domabit.
Et quia vidiſti pedes, & digitos, partem quidem aliquam teſteam, par- 41
tem verò quandam ferream ; regnum diviſum erit : & à radice ferrea
erit in eo, quemadmodùm vidiſti ferrum admiſtum teſtæ. Et digiti pe- 42
dum pars quidem ferrea, pars verò teſtea ; pars quædam regni erit fortis,
& de eo erit contritum. Quia vidiſti ferrum admiſtum teſtæ ; commiſta 43
erunt in ſemine hominum : & non adhærebunt hoc ad hoc, ſicut ferrum
non immiſcetur cum teſta. Et in diebus regum illorum, ſuſcitabit Deus 44
cæli regnum, quod in ſecula non diſſipabitur : & regnum ejus alteri
populo non relinquetur: comminuet & ventilabit univerſa regna : & ipſum
ſtabit in ſecula : Sicut vidiſti, quòd de monte abſciſſus eſt lapis ſine mani- 45
bus, & comminuebat teſtam, ferrum, æs, argentum, aurum. Deus
magnus oſtendit regi, quæ oportet fieri poſt hæc : & verum eſt ſomnium :
& fidelis conjectura ejus. Tunc rex Nabuchodonoſor cecidit in faciem, & 46
Danielem adoravit : & (k)manaa, & ſuavitates odoris dixit ut libaren-
tur ei. Et reſpondens rex dixit Danieli ; In veritate Deus veſter ipſe eſt 47
Deus Deorum, & dominus regum, revelans myſteria : quoniam potuiſti
revelare myſterium hoc. Et magnificavit rex Danielem, & munera ma- 48
gna & multa dedit ei : & conſtituit eum ſuper univerſam regionem Ba-
bylonis, & principem ſatraparum ſuper omnes ſapientes Babylonis. Et Da- 49
niel poſtulavit à rege : & conſtituit ſuper opera provinciæ Babylonis, Se-
drach, Miſach, et Abdenago. Et Daniel erat in aula regis.

MS.A. (ʺ) τοῦ οὐρανοῦ, (π) ἥτις ἐστὶν ὁ ἄργυρος, καὶ βασιλεία (ρ) ἣ ἐστιν (σ) ἔσται ἰσχυρὰ ὡς (ʹ) δαμάζει. (τ) κεραμίου, μέρος (υ) ἐπ' αὐτῆς (φ) προσκολλώμενος οὗτος (χ) τῷ ὀστράκῳ. (ψ) τὸν αἰῶνα οὐ (ω) δὲ καὶ (α) μαννὰ (β) τῶν κυρίων, καὶ βασιλεὺς τῶν βασιλέων, ἀποκαλύπτων μυστήρια, (γ) ἐδυνήθης (δ) πολλὰ καὶ μεγάλα (ε) καὶ ἐπὶ (ζ) Μισὰχ, Ἀβδεναγώ.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

36 * هذا هو الحلم * وتاويله اقوله امام الملك * انت ايها الملك ملك الملوك الذي اعطاه 37
38 اله السماء مملكة قوية وعزيزة ومكرمة * وفي كل موضع حيث تسكن بنو البشر وحوش
الحقل * وطيور السماء * وسمك البحر * دفعها في يدك * واقامك سيدا للكل * انت هو
39 راس الذهب * وخلفك تقوم مملكة اخرى دونك التي هي الفضة * ومملكة ثالثة
40 التي هي النحاس * هذه تسود كل الارض * ومملكة رابعة تكون قوية مثل الحديد *
41 كما ان الحديد يدق ويرض كلا * هكذا تدق وترض الكل * ولانك رايت القدمين
والاصابع جزء ما خزفا وجزء ما حديدا * هذه المملكة تكون منقسمة * ومن اصل
42 الحديد يكون * كما رايت الحديد مختلطا بالخزف * واصابع القدمين جزء ما
حديدا وجزء ما خزفا * يكون جزء ما من هذه المملكة قويا ومنها يكون منكسرا *
43 لانك رايت الحديد مختلطا بالخزف * يكونون مختلطين في ذرية البشر * ولا يكونون
44 ملتصقين هذا مع هذا * كمثل ان الحديد لا يختلط مع الخزف * وفي ايام تلك الممالك
يقيم اله السماء مملكة * هذه لا تفسد الى الدهور * ومملكته لا تذر لشعب اخر *
45 وتدق وتذري جميع الممالك * وهذه تقوم الى الدهور * كما رايت انه من جبل قطع
حجر بغير يدين * ودق الخزف والحديد والنحاس والفضة والذهب * الاله العظيم عرف
46 الملك ما ينبغي ان يكون بعد هذه * والحلم حقيقي * وتاويله صدق * حينئذ
47 نبوخذنصر الملك خر على وجهه وسجد لدانيال * وقال ان يقرب له هدايا وطيوبا * واجاب
الملك وقال لدانيال * بالحق الهكم هو اله الالهة * ورب الارباب * وملك الملوك *
48 وكاشف الاسرار * لانه اقتدر ان يكشف هذا السر * وعظم الملك لدانيال * ودفع له
عطايا كثيرة وعظيمة * واقامه على كل كورة بابل * ورئيسا على عظماء الجيوش * وعلى جميع
49 حكماء بابل * ودانيال سال من الملك * فاقام على اعمال كورة بابل صدراخ وميساخ وعبدناغو *
وكان دانيال في دار الملك

Hoc eſt ſomnium : interpretationem quo- 36
que ejus dicam coram rege. Tu O 37
rex, rex regum, cui dedit cæli Deus
regnum munitum, potens, & honoran-
dum : Et ubicunque degunt homines, 38
beſtiæ campi, volucres cœli, & piſces
maris ; tradidit in manum tuam, teque
conſtituit omnium dominum : tu inquam
es caput aureum. Tibi verò ſuccedet 39
regnum alterum poſt te, quod eſt argen-
tum : & regnum tertium, quod eſt
æs : hoc dominabitur univerſæ terræ :
Denique regnum quartum duriſſimum 40
erit veluti ferrum : quemadmodum fer-
rum comminuit & contundit omnia,
ſic illud omnia conteret & contundet.
Et quia vidiſti pedes ac digitos partim 41
teſtaceos, partim ferreos, regnum il-
lud erit diviſum, & ex origine ferri
erit, quemadmodum vidiſti ferrum
cum teſta commiſtum. Porrò digiti pe- 42
dum partim teſtacei, partim ferrei :
pars quædam ejus regni potens erit,
pars autem erit confracta. Quia vi- 43
diſti ferrum cum teſta commiſtum,
commiſti quidem erunt cum genere hu-
mano, ſed non erunt cohærentes alter
cum altero, quemadmodum ferrum mi-
nimè miſcetur cum teſta. In diebus 44
regnorum illorum ſuſcitabit Deus cœli
regnum : illud non corrumpetur in ſe-
cula, neque regnum ejus devolvetur
ad alium populum ; ſed contundet ſpar-
getque omnia regna, ipſo in ſecula
manente ; Quemadmodum vidiſti è 45
monte exciſum eſſe lapidem ſine mani-
bus, & comminuiſſe teſtam, ferrum,
æs, argentum, & aurum. Deus maxi-
mus nota fecit regi quæ poſthac contin-
gere debent. Somnium certum eſt, &
interpretatio ejus vera. Tunc Bocb- 46
tonaſſar rex corruit ſuper faciem ſu-
am, adoravitque Danielem, & dixit
ut offerrentur ei munera & odores.
Tum reſpondit rex, & dixit Danieli ; 47
Verè Deus veſter eſt Deus deorum,
Dominus dominorum, rex regum, &
revelator arcanorum ; quia potuit ar-
canum hoc patefacere. Magnificavit 48
autem rex Danielem, & largitus eſt
ei munera multa & magna ; conſtituit
eum ſuper totam provinciam Babelis,
& præpoſuit ducibus agminum, cun-
ctiſque ſapientibus Babelis. Præterea 49
Daniele regem rogante, curam com-
miſit provinciæ Babelis Sedracho, Miſa-
cho, & Abdenago : Daniel verò man-
ſit in aula regia.

דָּנִיֵּאל : ג
CAP. III. ג

eam ſtatuit : ſex cubitorum ejus latitudo ,ſexaginta cubitorum ejus altitudo ,*auro de* imaginem fecit rex Nebuchadneſar
1 נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא עֲבַד צְלֵם דִּי־דְהַב רוּמֵהּ אַמִּין שִׁתִּין פְּתָיֵהּ אַמִּין שִׁת אֲקִימֵהּ
duces & ,*magiſtratus* ,*rege à ſecundos* congregandum ad miſit rex Nebuchadneſar Et .Babel provincia in ,Dura campo in
2 בְּבִקְעַת דּוּרָא בִּמְדִינַת בָּבֶל׃ וּנְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא שְׁלַח לְמִכְנַשׁ ׀ לַאֲחַשְׁדַּרְפְּנַיָּא סִגְנַיָּא וּפַחֲוָתָא
,imaginis dedicationem ad *veniendum ad* : provinciarum præfectos omnes & ,Tiphthæos ,Dethabræos ,Ghedebræos ,Adarghezeræos
אֲדַרְגָּזְרַיָּא גְדָבְרַיָּא דְּתָבְרַיָּא תִּפְתָּיֵא וְכֹל שִׁלְטֹנֵי מְדִינָתָא לְמֵתֵא לַחֲנֻכַּת צַלְמָא
.Ghedebræi ,Adarghezeræi ,duces & ,*magiſtratus* ,*rege à ſecundi ſe congregantes* tunc *In* .rex Nebuchadneſar erexerat quam
3 דִּי הֲקֵים נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא׃ בֵּאדַיִן מִתְכַּנְּשִׁין אֲחַשְׁדַּרְפְּנַיָּא סִגְנַיָּא וּפַחֲוָתָא אֲדַרְגָּזְרַיָּא גְדָבְרַיָּא
ſtantes & : rex Nebuchadneſar erexerat quam imaginis dedicationem ad ,provinciarum præfecti omnes & ,Tiphthæi ,Dethabræi
דְּתָבְרַיָּא תִּפְתָּיֵא וְכֹל שִׁלְטֹנֵי מְדִינָתָא לַחֲנֻכַּת צַלְמָא דִּי הֲקֵים נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא וְקָאְמִין
.linguis & ,*nationibus* , populis *dicentes* Vobis : *virtute in clamans* præco Et .Nebuchadneſar erexerat quam imagine coram
4 לָקֳבֵל צַלְמָא דִּי הֲקֵים נְבוּכַדְנֶצַּר׃ וְכָרוֹזָא קָרֵא בְחָיִל לְכוֹן אָמְרִין עַמְמַיָּא אֻמַּיָּא וְלִשָּׁנַיָּא׃
: *cantus ſpecierum omnium* & ,ſymphoniæ , *pſalteriorum* , ſambucæ , citharæ , fiſtulæ , cornu *vocem* audieritis quo tempore *In*
5 בְּעִדָּנָא דִּי־תִשְׁמְעוּן קָל קַרְנָא מַשְׁרוֹקִיתָא קִיתָרֹס סַבְּכָא פְּסַנְתֵּרִין סוּמְפֹּנְיָא וְכֹל זְנֵי זְמָרָא
eo in ,genuflexerit & ,*ceciderit* non quiſquis Et .rex Nebuchadneſar fecit erigere quam ,*auri* imagini genuflectetis & , *cadetis*
6 תִּפְּלוּן וְתִסְגְּדוּן לְצֶלֶם דַּהֲבָא דִּי הֲקֵים נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא׃ וּמַן־דִּי־לָא יִפֵּל וְיִסְגֻּד בַּהּ
populi omnes *audientes quod ſecundum* tempore eo *in hoc reſpectu Omni* .ardentis ignis fornacis medium in projicietur hora
7 שַׁעֲתָא יִתְרְמֵא לְגוֹא־אַתּוּן נוּרָא יָקִדְתָּא׃ כָּל־קֳבֵל דְּנָה בֵּהּ זִמְנָא כְּדִי שָׁמְעִין כָּל־עַמְמַיָּא
linguæ & ,*nationes* , populi omnes *cadentes ;cantus ſpecieru omniũ &* ,*pſalteriorum* ,ſambucæ , citharæ , fiſtulæ , cornu *vocem*
קָל קַרְנָא מַשְׁרוֹקִיתָא קִיתָרֹס שַׂבְּכָא פְּסַנְטֵרִין וְכֹל זְנֵי זְמָרָא נָפְלִין כָּל־עַמְמַיָּא אֻמַּיָּא וְלִשָּׁנַיָּא
viri acceſſerunt tempore ipſo in *hoc reſpectu Omni* .rex Nebuchadneſar fecerat erigere quam ,*auri imagini ſe incurvantes*
8 סָגְדִין לְצֶלֶם דַּהֲבָא דִּי הֲקֵים נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא׃ כָּל־קֳבֵל דְּנָה בֵּהּ זִמְנָא קְרִבוּ גֻּבְרִין
.vive *ſecula* in Rex : regem Nebuchadneſar ad : *dicentes &* ,*Reſponderunt* .*Jebudæorum eorum accuſationes* accuſaverũt & : Chaſdim
9 כַּשְׂדָּאִין וַאֲכַלוּ קַרְצֵיהוֹן דִּי יְהוּדָיֵא׃ עֲנוֹ וְאָמְרִין לִנְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא מַלְכָּא לְעָלְמִין חֱיִי׃
, *pſalteriorum* , ſambucæ , citharæ , fiſtulæ , cornu *vocem* audierit qui ,homo omnis quòd ,decretum poſuiſti rex Tu
10 אַנְתְּה מַלְכָּא שָׂמְתָּ טְעֵם דִּי כָל־אֱנָשׁ דִּי יִשְׁמַע קָל קַרְנָא מַשְׁרֹקִיתָא קִיתָרֹס שַׂבְּכָא פְסַנְתֵּרִין
projicietur : ſe incurvaverit & ,*cadet* non quiſquis Et .*auri* imagini ſe incurvet & ,*cadat : cantus ſpecierum omnium* & ,ſymphoniæ &
11 וְסוּמְפֹּנְיָא וְכֹל זְנֵי זְמָרָא יִפֵּל וְיִסְגֻּד לְצֶלֶם דַּהֲבָא׃ וּמַן־דִּי־לָא יִפֵּל וְיִסְגֻּד יִתְרְמֵא
,Sadrach ,Babel *provinciæ opus* ſuper *eos* conſtituiſti quos , Jehudæi viri Sunt .ardentis ignis fornacis medium in
12 לְגוֹא־אַתּוּן נוּרָא יָקִדְתָּא׃ אִיתַי גֻּבְרִין יְהוּדָאיִן דִּי־מַנִּיתָ יָתְהוֹן עַל־עֲבִידַת מְדִינַת בָּבֶל שַׁדְרַךְ
quam ,*auri* imagini *&* ,*colentes* non tuos Deos :decretum , rex te ſuper poſuerunt non iſti viri : nego-Habed & ,Meſach
מֵישַׁךְ וַעֲבֵד נְגוֹ גֻּבְרַיָּא אִלֵּךְ לָא־שָׂמוּ עֲלָךְ מַלְכָּא טְעֵם לֵאלָהָךְ לָא פָלְחִין וּלְצֶלֶם דַּהֲבָא דִּי
.nego-Habed & ,Meſach ,Sadrach *adducendum ad* dixit ira & furore in Nebuchadneſar tunc *In* .ſe *incurvantes* non ,feciſti erigere
13 הֲקֵימְתָּ לָא סָגְדִין׃ בֵּאדַיִן נְבוּכַדְנֶצַּר בִּרְגַז וַחֲמָה אֲמַר לְהַיְתָיָה לְשַׁדְרַךְ מֵישַׁךְ וַעֲבֵד נְגוֹ
,Meſach ,Sadrach *deſolatio Nunquid* : eis dixit & ,Nebuchadneſar *Reſpondit* .rege coram ſunt adducti iſti viri tunc *In*
14 בֵּאדַיִן גֻּבְרַיָּא אִלֵּךְ הֵיתָיוּ קֳדָם מַלְכָּא׃ עָנֵה נְבוּכַדְנֶצַּר וְאָמַר לְהוֹן הַצְדָּא שַׁדְרַךְ מֵישַׁךְ
? *genuflectentes* non ,feci erigere quam ,*auri* imagini & ,*colentes vos eſtis* non meos deos ,nego-Habed &
וַעֲבֵד נְגוֹ לֵאלָהַי לָא אִיתֵיכוֹן פָּלְחִין וּלְצֶלֶם דַּהֲבָא דִּי הֲקֵימֶת לָא סָגְדִין׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. III.

NAbuchodonoſor rex fecit ſtatuam auream, altitudine cubitorum ſexaginta, latitudine cubitorum ſex, & ſtatuit eam in campo Dura provinciæ Babylonis. Itaque Nabuchodonoſor rex miſit ad congregandos ſa- 2
trapas, magiſtratus, & judices, duces, & tyrannos, & præfectos, omnéſque principes regionum, ut convenirent ad dedicationem ſtatuæ, quam erexerat Nabuchodonoſor rex. Tunc congregati ſunt ſatrapæ, magiſtratus,
& judices, duces, & tyranni, & optimates qui erant in 3
poteſtatibus conſtituti, & univerſi principes regionum, ut convenirent ad dedicationem ſtatuæ, quam erexerat Nabuchodonoſor rex: ſtabant autem in conſpectu ſtatuæ, quam poſuerat Nabuchodonoſor rex: Et 4
præco clamabat valenter; Vobis dicitur populis,
tribubus, & linguis: In hora, quâ audieritis ſonitum 5
tubæ, & fiſtulæ, & citharæ, ſambucæ, & pſalterii, & ſymphoniæ, & univerſi generis muſicorum, cadentes adorate ſtatuam auream, quam conſtituit Nabuchodonoſor rex. Si quis autem non proſtratus adoraverit, 6
eâdem horâ mittetur in fornacem ignis ardentis. Poſt 7
hæc igitur ſtatim ut audierunt omnes populi ſonitum tubæ, fiſtulæ, & citharæ, ſambucæ, & pſalterii, & ſymphoniæ, & omnis generis muſicorum: cadentes omnes populi, tribus, & linguæ, adoraverunt ſtatuam auream, quam conſtituerat Nabuchodonoſor rex. Sta- 8
tímque in ipſo tempore accedentes viri Chaldæi accuſaverunt Judæos: Dixerúntque Nabuchodonoſor 9
regi; Rex, in æternum vive: Tu, rex, poſuiſti decretum, 10
ut omnis homo, qui audierit ſonitum tubæ, fiſtulæ, & citharæ, ſambucæ, & pſalterii, & ſymphoniæ, & univerſi generis muſicorum, proſternat ſe, & adoret ſtatuam auream: Si quis autem non procidens adoraverit, 11
mittatur in fornacem ignis ardentis. Sunt ergò viri 12
Judæi, quos conſtituiſti ſuper opera regionis Babylonis, Sidrach, Miſach, & Abdenago: viri iſti contempſerunt, rex, decretum tuum: deos tuos non colunt, & ſtatuam auream, quam erexiſti, non adorant. Tunc Na- 13
buchodonoſor in furore & in ira præcepit, ut adducerentur Sidrach, Miſach, & Abdenago: qui confeſtim adducti ſunt in conſpectu regis. Pronuntiánſque Na- 14
buchodonoſor rex, ait eis; Verénè, Sidrach, Miſach, & Abdenago, deos meos non colitis, & ſtatuam auream, quam conſtitui, non adoratis?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

1 * ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ . ܥܒܕ ܨܠܡܐ ܚܕ ܕܕܗܒܐ. ܘܪܘܡܗ ܐܡܝܢ ܫܬܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܐܡܝܢ
2 ܫܬ. ܘܐܩܝܡܗ ܒܦܩܥܬܐ ܕܕܘܪܐ ܒܐܪܥܐ ܕܒܒܠ. * ܘܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ . ܫܕܪ ܠܡܟܢܫܘ
ܠܪܒܝ ܚܝܠܐ ܘܠܡܪܘܬܐ ܘܠܗܓܡܘܢܐ. ܘܠܐܓܪܕܝܐ ܘܠܓܪܒܕܝܐ. ܘܠܬܪܒܕܝܐ ܘܠܛܒܬܝܐ.
ܘܠܟܠ ܫܠܝܛܢܝ ܡܕܝܢܬܐ. ܠܡܐܬܐ ܠܚܘܕܬܗ ܕܨܠܡܐ ܚܕܬܐ ܕܐܩܝܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ.
3 * ܗܝܕܝܢ ܐܬܟܢܫܘ ܟܠܗܘܢ، ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܘܡܪܘܬܐ ܘܗܓܡܘܢܐ. ܘܐܓܪܕܝܐ ܘܓܪܒܕܝܐ ܘܬܪܒܕܝܐ
ܘܛܒܬܝܐ ܘܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܝ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܐܬܘ ܠܚܘܕܬܗ ܕܨܠܡܐ ܚܕܬܐ ܕܐܩܝܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ.
4 ܘܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܠܘܩܒܠ ܨܠܡܐ ܕܐܩܝܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. * ܘܟܪܘܙܐ ܩܪܐ ܒܚܝܠ.
5 ܘܐܡܪ. ܠܟܘܢ ܐܡܪܝܢ ܥܡܡܐ.. ܐܡܘܬܐ ܘܠܫܢܐ. * ܒܫܥܬܐ ܕܫܡܥܝܢ ܐܢܬܘܢ ܩܠܐ
ܕܩܪܢܐ ܘܫܦܘܦܪܐ. ܘܟܢܪܐ ܘܩܝܬܪܐ. ܘܣܘܡܦܘܢܝܐ. ܘܟܠ ܙܢܝ ܙܡܪܐ. ܬܦܠܘܢ، ܘܬܣܓܕܘܢ
6 ܠܨܠܡܐ ܕܕܗܒܐ ܕܐܩܝܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. * ܘܡܢ ܕܠܐ ܢܦܠ ܢܣܓܘܕ . ܒܗ ܒܫܥܬܐ
7 ܢܫܬܕܐ ܠܓܘ ܐܬܘܢܐ ܕܢܘܪܐ ܝܩܕܬܐ. * ܘܒܫܥܬܐ ܕܫܡܥܝܢ ܗܘܘ ܥܡܡܐ ܩܠ ܩܪܢܐ
ܘܫܦܘܦܪܐ : ܘܟܢܪܐ ܘܩܝܬܪܐ. ܘܣܘܡܦܘܢܝܐ ܘܟܠ ܙܢܝ ܙܡܪܐ . ܢܦܠܝܢ ܗܘܘ ܟܠܗܘܢ
ܥܡܡܐ ܐܡܘܬܐ ܘܠܫܢܐ. ܘܣܓܕܝܢ ܠܨܠܡܐ ܕܕܗܒܐ ܕܐܩܝܡ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ.
8 * ܘܒܗ ܒܫܥܬܐ ܩܪܒܘ ܓܒܪܐ ܟܠܕܝܐ. ܘܐܟܠܘ ܩܪܨܝܗܘܢ ܕܝܗܘܕܝܐ. * ܘܐܡܪܘ ܠܢܒܘܟܕܢܨܪ
9 ܡܠܟܐ. ܡܠܟܐ ܠܥܠܡ ܚܝܝ. * ܐܢܬ ܦܩܕܬ . ܕܟܠ ܕܫܡܥ ܩܠ ܩܪܢܐ ܘܫܦܘܦܪܐ.
10 ܘܟܢܪܐ ܘܩܝܬܪܐ. ܘܣܘܡܦܘܢܝܐ. ܘܟܠ ܙܢܝ ܙܡܪܐ . ܢܦܠ. ܘܢܣܓܘܕ ܠܨܠܡܐ ܕܕܗܒܐ
11 ܕܐܩܝܡܬ. * ܘܡܢ ܕܠܐ ܢܦܠ ܢܣܓܘܕ . ܒܗ ܒܫܥܬܐ ܢܫܬܕܐ ܠܓܘ ܐܬܘܢܐ ܕܢܘܪܐ ܝܩܕܬܐ.
12 * ܐܝܬ ܐܠܝܢ ܓܒܪܐ ܝܗܘܕܝܐ : ܕܐܩܝܡܬ ܐܢܘܢ ܥܠ ܥܒܕܐ ܕܡܕܝܢܬܐ ܕܒܒܠ . ܫܕܪܟ ܡܝܫܟ
ܘܥܒܕܢܓܘ . ܓܒܪܐ ܗܠܝܢ. ܠܐ ܢܣܒܘܟ ܡܠܟܐ . ܘܠܐܠܗܟ ܠܐ ܦܠܚܝܢ . ܘܠܨܠܡܐ
13 ܕܕܗܒܐ ܕܐܩܝܡܬ ܠܐ ܣܓܕܝܢ. * ܗܝܕܝܢ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. ܒܚܡܬܐ ܘܒܪܘܓܙܐ ܐܡܪ:
14 ܠܡܝܬܝܘ ܠܫܕܪܟ ܘܠܡܝܫܟ ܘܠܥܒܕܢܓܘ. ܘܐܝܬܝܘ ܐܢܘܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. * ܥܢܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ
ܡܠܟܐ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܒܫܪܪܐ ܫܕܪܟ ܡܝܫܟ ܘܥܒܕܢܓܘ : ܠܐܠܗܝ ܠܐ ܦܠܚܝܢ
ܐܢܬܘܢ. ܘܠܨܠܡܐ ܕܕܗܒܐ ܕܐܩܝܡܬ . ܠܐ ܣܓܕܝܢ ܐܢܬܘܢ.

CAP. III.

NEbuchadnoſar rex factâ ſtatuâ quâdam 1
aureâ cujus altitudo erat ſexaginta cubitorum, latitudo verò ſex cubitorum; erexit eam in campo Dura in terra Babylonica.
Deinde Nebuchadnoſar rex miſit convoca- 2
tum duces militiæ, dominos ac præſides, Agardæos, Gerabdæos, Therabdæos, Tibthæos, omneſque urbium præfectos; ut venirent ad ſolennitatem ſtatuæ novæ quam erexerat Nebuchadnoſar rex. Tunc congregati omnes 3
militiæ duces, domini, ac præſides, Agardæi, Gerabdæi, Therabdæi, Tibthæi, & omnes urbium præfecti; venerunt ad ſolennitatem ſtatuæ novæ quam erexerat Nebuchadnoſar rex. Cúmque ſtarent ante ſtatuam quam erexerat Nebuchadnoſar rex, Præco 4
altâ voce proclamavit ac dixit; Vobis edicitur O populi, nationes, & linguæ: Sta- 5
tim atque audieritis ſonum cornu, fiſtulæ, citharæ, fidium, ſymphoniæ, & omnia genera muſices, corruentes adorate ſtatuam auream quam erexit Nebuchadnoſar rex. Quiſ- 6
quis autem non prociderit & adoraverit, eâdem horâ projicietur in fornacem ignis ardentis. Itaque ſtatim ut audiebant po- 7
puli ſonum cornu, tibiæ, citharæ, fidium, ſymphoniæ, omniaque concentûs genera; procidebant omnes populi, nationes, & linguæ, & adorabant ſtatuam auream quam erexerat Nebuchadnoſar rex, Eodem tem- 8
pore acceſſerunt viri Chaldæi, & accuſaverunt Judæos, Dixeruntque Nebuchad- 9
noſari regi; Rex æternùm vivas. Tu præ- 10
cepiſti ut quiſquis audito ſono tubæ, fiſtulæ, citharæ, fidium, ſymphoniæ, & omnis generis muſicorum, procideret adoraretque ſtatuam auream quam erexiſti: Is au- 11
tem qui non procideret adoraretque, illicò projiceretur in fornacem ignis ardentis.
Adſunt hic viri Judæi quos præfeciſti ne- 12
gotiis urbis Babylonicæ, Sedrach, Maiſach, & Ebednago: viri iſti nullam tui rationem habent O rex, deum tuum non colunt, neque ſtatuam auream quam erexiſti, adorant. Tunc Nebuchadnoſar rex 13
ira & furore *ſuccenſus* præcepit adduci Sedrachum, Maiſachum, & Ebednagum.
Quibus ad regem adductis, Reſpondit Ne- 14
buchadnoſar rex, & ait illis; Verénè Sedrach, Maiſach, & Ebednago deum meum non colitis, & ſtatuam auream quam erexi, non adoratis?

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. γʹ.

1 †ΕΤους ὀκτωκαιδεκάτου Ναβουχοδονόσορ (α) ὁ βασιλεὺς ἐποίησεν εἰκόνα χρυσῆν, ὕψος αὐτῆς πήχεων
2 ἑξήκοντα, εὖρος αὐτῆς πήχεων ἕξ· καὶ ἔστησεν αὐτὴν ἐν πεδίῳ Δεειρᾶ, ἐν χώρᾳ Βαβυλῶνος. Καὶ
ἀπέστειλε συναγαγεῖν τοὺς ὑπάτους, καὶ τοὺς στρατηγοὺς, καὶ τοὺς τοπάρχας, ἡγουμένους, καὶ τυράννους, καὶ
τοὺς ἐπ' ἐξουσιῶν, καὶ πάντας τοὺς ἄρχοντας τῶν χωρῶν, ἐλθεῖν εἰς (β) τὰ ἐγκαίνια τῆς εἰκόνος.
3 Καὶ συνήχθησαν οἱ τοπάρχαι, ὕπατοι, στρατηγοὶ, ἡγούμενοι, τύραννοι μεγάλοι, οἱ ἐπ' ἐξουσιῶν,
καὶ πάντες οἱ ἄρχοντες τῶν χωρῶν, εἰς τὸν ἐγκαινισμὸν τῆς εἰκόνος, ἧς ἔστησεν Ναβουχοδονό-
4 σορ ὁ βασιλεύς· (γ) καὶ εἱστήκεισαν ἐνώπιον τῆς εἰκόνος (δ). Καὶ ὁ κήρυξ ἐβόα ἐν ἰσχύϊ,
5 Ὑμῖν λέγεται (ε) λαοῖς, φυλαὶ, γλῶσσαι, Ἧ ἂν ὥρᾳ ἀκούσητε (ζ) φωνῆς σάλπιγγος, σύριγγός τε, καὶ
κιθάρας, σαμβύκης τε, καὶ ψαλτηρίου, (η) καὶ παντὸς γένους μουσικῶν, πίπτοντες προσκυνήσετε τῇ εἰκόνι τῇ
6 χρυσῇ ᾗ ἔστησε Ναβουχοδονόσορ ὁ βασιλεύς. Καὶ ὃς ἂν μὴ (θ) πεσὼν προσκυνήσῃ, αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἐμ-
7 βληθήσεται εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρὸς τὴν καιομένην. Καὶ ἐγένετο ὅταν (ι) ἤκουον οἱ λαοὶ τῆς φω-
νῆς τῆς σάλπιγγος, σύριγγός τε, καὶ κιθάρας, σαμβύκης τε, καὶ ψαλτηρίου, (κ) καὶ παντὸς γένους μου-
σικῶν, πίπτοντες πάντες οἱ (ʹ) λαοὶ, φυλαὶ, γλῶσσαι, προσεκύνουν τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ (λ) ἣν ἔστησεν Να-
8 βουχοδονόσορ ὁ βασιλεύς. Τότε (μ) προσήλθοσαν ἄνδρες Χαλδαῖοι, καὶ (ν) διέβαλον τοὺς Ἰουδαίους
9 τῷ βασιλεῖ· Βασιλεῦ, εἰς τοὺς αἰῶνας ζῆθι. Σὺ βασιλεῦ ἔθηκας δόγμα, πάντα ἄνθρωπον ὃς ἂν ἀ-
10 κούσῃ τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος, σύριγγός τε, καὶ κιθάρας, (ξ) σαμβύκης, καὶ ψαλτηρίου, (ο) καὶ παντὸς γέ-
11 νους μουσικῶν, Καὶ μὴ πεσὼν προσκυνήσῃ τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ, (ʺ) ἐμβληθήσεται εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυ-
12 ρὸς τὴν καιομένην. Εἰσὶν ἄνδρες Ἰουδαῖοι, οὓς κατέστησας ἐπὶ τὰ ἔργα τῆς χώρας Βαβυλῶνος, (π) Σε-
δρὰχ, Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, οἳ οὐχ ὑπήκουσαν βασιλεῦ τῷ δόγματί σου, (ρ) τοῖς θεοῖς σου οὐ λατρεύ-
13 ουσι, καὶ τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ ᾗ ἔστησας, οὐ προσκυνοῦσι. Τότε Ναβουχοδονόσορ ἐν θυμῷ καὶ ὀργῇ εἶπεν ἀ-
14 γαγεῖν ÷ (σ) Σεδρὰχ, Μισὰχ, καὶ Ἀβδεναγώ. καὶ ἤχθησαν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. Καὶ ἀπεκρίθη Ναβουχο-
δονόσορ, καὶ εἶπεν αὐτοῖς, Εἰ ἀληθῶς (τ) Σεδρὰχ, Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, τοῖς θεοῖς μου οὐ λατρεύετε, καὶ
τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ ᾗ ἔστησα οὐ προσκυνεῖτε;

C A P. I I I.

ANno (a) decimo octavo Nabuchodonoſor rex fecit imaginem auream, 1
altitudo ejus cubitorum ſexaginta, latitudo ejus cubitorum ſex. Et
ſtatuit eam in campo (b) Deira, in provincia Babylonis. Et miſit ad congre- 2
gandos Conſules, & Duces, & Toparchas, Præfectos, & Tyrannos, & eos
qui erant in poteſtate conſtituti, & omnes principes regionum, ut venirent ad
dedicationem imaginis, [quam ſtatuerat Nabuchodonoſor rex.] Et congrega- 3
ti ſunt Toparchæ, Conſules, Duces, Præfecti, Tyranni magni, qui erant
in poteſtate conſtituti, & omnes principes regionum, ad dedicati-
onem imaginis, quam ſtatuerat Nabuchodonoſor rex. Et ſteterunt
in conſpectu (c) imaginis. Et præco clamabat in fortitudine; Vobis 4
dicitur (d) populis, tribus, linguæ, Quâcunque horâ audieritis vocem tu- 5
bæ, & fiſtulæ, & citharæ, ſambucæq; & (e) pſalterii, & univerſi generis
muſicorum; cadentes adorate imaginem auream, quam ſtatuit Nabucho-
donoſor rex. Quicunque autem non adoraverit, cadens; eâdem horâ mit- 6
tetur in fornacem ignis ardentem. Et factum eſt, quando audiebant populi 7
vocem tubæ, & fiſtulæ, & citharæ, ſambucæque, & pſalterii, & omnis ge-
neris muſicorum, cadentes omnes populi, tribus, linguæ, adorabant imagi-
nem auream, quam ſtatuerat Nabuchodonoſor rex. Tunc acceſſerunt viri 8
Chaldæi, & accuſaverunt Judæos (f) Regi [Nabuchodonoſor;] Rex, in ſecula 9
vive. Tu, rex, poſuiſti decretum, quòd omnis homo, quicunque audierit vo- 10
cem tubæ, & fiſtulæ, & citharæ, ſambucæ, & pſalterii, & omnis generis
muſicorum, Et non adoraverit cadens imaginem auream; mittetur in for- 11
nacem ignis ardentem. Sunt viri Judæi, quos conſtituiſti ſuper opera regio- 12
nis Babylonis, Sedrach, Miſach, Abdenago, qui non obedierunt, rex, decreto
tuo; deos tuos non colunt, & imaginem auream, quam ſtatuiſti, non ado-
rant. Tunc Nabuchodonoſor in furore, & ira dixit, ut adducerent Sedrach, 13
Miſach, & Abdenago. Et adducti ſunt in conſpectu regis. Et reſpondit Na- 14
buchodonoſor, & dixit eis; Si verè Sedrach, Miſach, Abdenago, deos
meos non colitis, & imaginem auream, quam ſtatui, non adoratis?

MS.A. †ᵛΟΡΑΣΙΣ δʹ. (α) ἐποίησεν (β) ÷*ἐγκαινισμὸν τῆς εἰκόνος, ἧς ἔστησεν Ναβουχοδονόσορ ὁ βασιλεύς. Καὶ (γ) καὶ συνήχθησαν οἱ τοπάρχαι, καὶ ἱστήκεισαν (δ) ἧς ἔστησεν Ναβουχοδονόσορ. Καὶ ὁ (ε) ἔθνη, λαοὶ, φυλαὶ, (ζ) τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος, (η) καὶ συμφωνίας, καὶ (θ) προσκυνήσῃ, (ι) ἤκουσαν (κ) καὶ συμφωνίας, καὶ (ʹ) λαοὶ προσεκύνουν (λ) ᾗ (μ) προσῆλθον (ν) διέβαλλον τοὺς Ἰουδαίους, καὶ ὑποβαλόντες εἶπον Ναβουχοδονόσορ τῷ βασιλεῖ, (ξ) σαμβύκης τε, (ο) καὶ συμφωνίας, καὶ (ʺ) ἐμβληθήσεται (π) Σεδρὰκ, Μισὰκ, Ἀβδεναγὼ, οἱ ἄνδρες ἐκεῖνοι οὐχ (ρ) καὶ τοῖς (σ) Σεδρὰκ, Μισὰκ, καὶ ÷ (τ) Σεδρὰκ, Μισὰκ, καὶ Ἀβδεναγὼ,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثالث * * الرويا الرابع *

* وفي السنة الثامنة عشر بختنصر الملك صنع صورة ذهب * ارتفاعها ستون ذراعا وعرضها 1
ست اذرع * واقامها في بقعة دايير في بلد بابل * وارسل بختنصر الملك ليجمع الوزراء والجند 2
ورؤساء المواضع والمقدمين والمملكين والذين لهم السلطان * وجميع رؤساء البلدان ليأتوا
لتجديد الصورة الذهب التي اقامها بختنصر الملك * فاجتمع رؤساء المواضع والوزراء والجند 3
والمقدمون والمملكون والعظماء الذين لهم السلطان * وجميع رؤساء البلدان لتجديد
الصورة التي اقامها بختنصر الملك * ووقفوا امام الصورة التي اقامها بختنصر * والمنادي 4
صرخ بقوة * لكم يقال ايها الامم والشعوب والقبايل والالسن * انكم في الساعة التي تسمعون 5
فيها صوت البوق والناي والكنارات والونج والمزمار والصفاقات وكل جنس الغناء * خروا
ساجدين للصورة الذهب التي اقامها بختنصر الملك * ومن لا يخر ساجدا في هذه الساعة 6
يلقى في اتون النار المتوقدة *

* الاصحاح الثالث *

* وكان لما سمع الشعوب صوت البوق والناي والكنارات والونج والمزمار والصفاقات وكل 7
جنس الغناء * خر جميع الشعوب والقبايل والالسن * وسجدوا للصورة الذهب التي اقامها
بختنصر الملك * حينيذ اتى رجال كلدانيون محلوا بيهود * وقالوا للملك * عش ايها 8 9
الملك الى الدهور * انت ايها الملك وضعت امرا ان كل انسان اذا سمع صوت البوق 10
والناي والكنارات والونج والمزمار والصفاقات وكل جنس الغناء * ولا يخر ساجدا للصورة 11
الذهب * يلقى في اتون النار المتوقدة * وثم رجال يهود الذين اقمتهم على جميع اعمال 12
كورة بابل * صدراخ وميصاخ وعبدناغو * اوليك الرجال لم يطيعوا امرك ايها الملك * ولم
يعبدوا الهتك * ولم يسجدوا للصورة الذهب التي اقمتها * حينيذ بختنصر قال بغضب 13
وحنق ان ياتوا بصدراخ وميصاخ وعبدناغو * واوليك الرجال قدموا امام الملك * فاجاب 14
بختنصر وقال لهم * احقا يا صدراخ وميصاخ وعبدناغو لم تعبدوا الهي * والصورة الذهب
التي اقمتها لم تسجدوا لها *

C A P. I I I.

Revelatio quarta.

ANno decimo octavo, Bochtonaſſar 1
rex fecit imaginem auream, cujus altitu-
do erat ſexaginta cubitorum, latitudo
ſex cubitorum: & erexit eam in campo
Daiir in regione Babelis. Miſitque Boch- 2
tonaſſar rex congregatum proreges, &
milites, toparchas, præpoſitos, dominos,
eos quibus erat poteſtas, & omnes clima-
tum principes; ut venirent ad dedicatio-
nem imaginis aureæ quam erexerat
Bochtonaſſar rex. Itaque congregati to- 3
parchæ, proreges, milites, duces, domi-
ni, magnates quibus erat poteſtas, &
omnes climatum principes ad dedicati-
onem imaginis quàm erexerat Bochtonaſ-
ſar. Tum præco elatâ voce exclamavit; 4
Vobis edicitur ô gentes, populi, nationes,
& linguæ; ut quâ horâ audieritis ſo- 5
num buccinæ, tibiæ, citharæ, lyræ, pſal-
terii, fiſtulæ, omniumque generum mu-
ſicorum; corruatis adorantes imaginem
auream quam erexit Bochtonaſſar rex.
Quicunque verò non corruerit adorans, 6
hâc horâ projicietur in fornacem ignis
ardentem.

Texcus tertius.

Quarè cùm audiſſent populi ſonum buc- 7
cinæ, tibiæ, citharæ, lyræ, pſalterii, fiſtu-
læ, omniumq; generum muſicorum; cor-
ruentes omnes populi, nationes, & linguæ
adoraverunt imaginem auream quàm e-
rexerat Bochtonaſſar rex. Tunc vene- 8
runt viri quidam Chaldæi, & accuſa-
verunt Judæos quoſdam, Et dixerunt 9
regi; Vive ô rex in ſecula. Tu ô rex 10
impoſuiſti edictum ut quilibet homo, u-
bi audiſſet ſonum buccinæ, tibiæ, citha-
ræ, lyræ, pſalterii, fiſtulæ, & omnigenæ
muſicæ; Si non corrueret adorans ima- 11
ginem auream, projiceretur in fornacem
ignis ardentem. Jam ſunt hîc viri qui- 12
dam Judæi, quibus demandâſti cun-
cta negotia provinciæ Babelis: Sedrach,
Miſach, & Abdenago: iſti viri non ob-
temperârunt edicto tuo ô rex, deos tuos
non coluerunt, neque adoraverunt ima-
ginem auream quam erexiſti. Tunc Boch- 13
tonaſſar cum ira & furore dixit ut ad-
ducerent Sedrachum, Miſachum, & Ab-
denagum. Iis ergò viris ante regem ad-
ductis, Reſpondit Bochtonaſſar, & ait; 14
Verùmne eſt ô Sedrach, Miſach, & Ab-
denago, vos non coluiſſe deos meos, neque
adorâſſe imaginem auream quam e-
rexi?

דניאל : ג

,psalterium ,sambucæ ,citharæ ,fistulæ ,cornu vocem audieritis quo tempore in ut parati vos estis ecce Nunc

15 כען הן איתיכון עתידין די בעדנא די תשמעון קל קרנא משרוקיתא קיתרס שבכא פסנתרין

hora ipsa in ,genuflexeritis non ecce Et ? feci quam ,imagini genuflectatis & ,cadatis ,cantus specierum omnium & ,symphoniæ &

וסומפניה וכל זני זמרא תפלון ותסגדון לצלמא די עבדת והן לא תסגדון בה שעתא

Sadrach Responderunt ? meis manibus de vos eruat qui ,Deus ipse quis Et .ardentis ignis fornacis medium in projiciemini

16 תתרמון לגוא אתון נורא יקדתא ומן הוא אלה די ישיזבנכון מן ידי : ענו שדרך

.tibi respondere verbo hoc super nos curantes non ,Nebuchadnesar : regi dicentes & ,nego-Habed & ,Mesach

מישך ועבד נגו ואמרין למלכא נבוכדנצר לא חשחין אנחנא על דנה פתגם להתבותך :

rex tua manu de & ,ardentis ignis fornace de : nos liberandum ad potens ,colentes nos quem noster Deus est Ecce

17 הן איתי אלהנא די אנחנא פלחין יכל לשיזבותנא מן אתון נורא יקדתא ומן ידך מלכא

quam ,auri imagini & ,colentes nos sumus non tuos deos quod ,rex tibi existendum ad notum ,non ecce Et .eruet

18 ישיזב : והן לא ידיע להוא לך מלכא די לאלהיך לא איתנא פלחין ולצלם דהבא די

super est immutata ejus vultus imago & ,furore est repletus Nebuchadnesar tunc In .genuflectemus non ,fecisti erigere

19 הקימת לא נסגד : באדין נבוכדנצר התמלי חמא וצלם אנפוהי אשתנו על

erat visum quod super septies semel fornacem succendendum ad ,dixit & ,respondit : nego-Habed & ,Mesach ,Sedrach

שדרך מישך ועבד נגו ענה ואמר למזא לאתונא חד שבעה על די חזה

: nego-Habed & ,Mesach ,Sadrach ligandum ad dixit ,suo exercitu in qui ,robore fortibus viris Et .eam succendere

20 למזיה : ולגברין גברי חיל די בחילה אמר לכפתה לשדרך מישך ועבד נגו

,suis cucullis & ,suis femoralibus ,suis saraballis in ,sunt ligati isti viri tunc In .ardentis ignis fornacem in projiciendum ad

21 למרמא לאתון נורא יקדתא : באדין גבריא אלך כפתו בסרבליהון פטשיהון וכרבלתהון

regis verbum quod propterea hoc respectu Omni .ardentis ignis fornacis medium in sunt projecti Et .suis vestibus &

22 ולבשיהון ורמיו לגוא אתון נורא יקדתא : כל קבל דנה מן די מלת מלכא

eos occidit ,nego-Habed & ,Mesach ,Sadrach fecerant ascendere qui illos viros : præstanter succensa fornax & ,urgens

מחצפה ואתונא אזה יתירה גבריא אלך די הסקו לשדרך מישך ועבד נגו קטל המון

ignis fornacis medium in ceciderunt ,nego-Habed & ,Mesach ,Sadrach illi tres isti viri Et .ignis scintilla

23 שביבא די נורא : וגבריא אלך תלתהון שדרך מישך ועבד נגו נפלו לגוא אתון נורא

Nonne : suis auctoribus dixit & ,respondit : festinando in surrexit & ,obstupuit rex Nebuchadnesar Tunc .ligati ardentis

24 יקדתא מכפתין : אדין נבוכדנצר מלכא תוה וקם בהתבהלה ענה ואמר להדברוהי הלא

,Respondit .rex Verè ; regi dicentes & ,Respondentes ? ligatos ignis medium in projecimus tres viros

25 גברין תלתה רמינא לגוא נורא מכפתין ענין ואמרין למלכא יציבא מלכא : ענה

: eis in est non corruptio & ,ignis medio in ambulantes solutos quatuor viros videns ego Ecce : dixit &

ואמר הא אנה חזה גברין ארבעה שרין מהלכין בגו נורא וחבל לא איתי בהון

,ardentis ignis fornacis ostium ad Nebuchadnesar accessit tunc In .Dei filio est similis quarti quæ ejus species &

26 ורוה די רביעיא דמה לבר אלהין : באדין קרב נבוכדנצר לתרע אתון נורא יקדתא

egredientes tunc in : venite & ,egredimini ,excelsi Dei qui ejus servi ,nego Habed & ,Mesach ,Sedrach : dicens & ,respondens

ענה ואמר שדרך מישך ועבד נגו עבדוהי די אלהא עליא פקו ואתו באדין נפקין

.ignis medio de ,nego-Habed & ,Mesach ,Sedrach

שדרך מישך ועבד נגו מן גוא נורא :

Versio VULG. LAT.

Nunc ergò si estis parati, quâcunq; horâ audieritis sonitū tubæ, fistulæ, citharæ, sambucæ, et psalterii, & symphoniæ, omnisque generis musicorum, prosternite vos, & adorate statuam quam feci : quòd si non adoraveritis, eâdem horâ mittemini in fornacem ignis ardentis : & quis est Deus, qui eripiet vos de manu mea ? 15 Respondentes Sidrach, Misach, & Abdenago, dixerunt regi Nabuchodonosor ; Non oportet nos de hac re respondere tibi. 16 Ecce enim Deus noster, quem colimus, potest eripere nos de camino ignis ardentis, & de manibus tuis, ô rex, liberare. 17 Quòd si noluerit, notum sit tibi, rex, quia deos tuos non colimus, & statuam auream, quam erexisti, non adoramus. 18 Tunc Nabuchodonosor repletus est furore : & aspectus faciei illius immutatus est super Sidrach, Misach, & Abdenago, & præcepit ut succenderetur fornax septuplùm quàm succendi consueverat. 19 Et viris fortissimis de exercitu suo jussit, ut ligatis pedibus Sidrach, Misach, & Abdenago, mitterent eos in fornacem ignis ardentis. 20 Et confestim viri isti vincti cum braccis suis, & tiaris, & calceamentis, & vestibus, missi sunt in medium fornacis ignis ardentis : 21 Nam jussio regis urgebat : fornax autem succensa erat nimis. 22 Porrò viros illos qui miserant Sidrach, Misach, & Abdenago, interfecit flamma ignis. Viri autem hi tres, id est, Sidrach, Misach, & Abdenago, ceciderunt in medio camino ignis ardentis, colligati. 23

Tunc Nabuchodonosor rex obstupuit, & surrexit properè, & ait optimatibus suis ; Nónne tres viros misimus in medium ignis compeditos ? 91 Qui respondentes regi, dixerunt ; Verè, rex. Respondit, & ait ; Ecce ego video quatuor viros solutos, & ambulantes in medio ignis, & nihil corruptionis in eis est, & species quarti similis filio Dei. 92 Tunc accessit Nabuchodonosor ad ostium fornacis ignis ardentis, & ait ; Sidrach, Misach & Abdenago, servi Dei excelsi, egredimini, & venite. Statímque egressi sunt Sidrach, Misach, & Abdenago de medio ignis. 93

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 [illegible]

[illegible]

[illegible]

16 [illegible]

[illegible]

17 [illegible]

18 [illegible]

[illegible]

19 [illegible]

[illegible]

20 [illegible]

21 [illegible]

[illegible]

22 [illegible]

[illegible]

23 [illegible]

[illegible]

91 [illegible]

[illegible]

92 [illegible]

[illegible]

93 [illegible]

[illegible]

[illegible]

Jam si parati estis ut quâ horâ audieritis sonum tubæ, fistulæ, citharæ, fidiū, symphoniæ, & omnis generis musicorū; procidatis & adoretis statuam auream quam feci, *bene cedet vobis* : sin autem non adoraveritis, illicò projiciemini in fornacem ignis ardentis : & quis est Deus vester ut eripiat vos è manibus meis ? 15 Respondentes Sedrach, Maisach, & Ebednago dixerunt Nebuchadnosari regi; 16 Non opus est nobis hac de re responsum tibi reddere: 17 Adest enim Deus noster quem colimus, qui cum potentia liberare nos valet à fornace ignis ardentis, & è manibus tuis O rex eripere nos. 18 Verùm scias O rex, deum tuum nos minimè culturos, neq; statuam aureā quam erexisti, adoraturos. 19 Tunc Nebuchadnosar rex furore est repletus, & serenitas vultûs ejus immutata est contra Sedrachum, Maisachum, & Ebednagum; jussitque accendi fornacem septuplò plus quàm accendi *consueverat*: 20 Et viris robore validissimis præcepit, ut vincirent Sedrachum, Maisachum, & Ebednagum, eosque projicerent in fornacem ignis ardentis. 21 Tunc viri illi vinxerunt eos cum femoralibus suis, thoracibus, vestibus, tiarisque suis, & projecerunt eos in fornacem ignis ardentis; 22 Nam jussio regis urgebat. Porrò fornax erat præter modum accensa : & viros illos qui Sedrachum, Maisachum, & Ebednagum accusaverant, interfecit flamma ignis ardentis : 23 Tres autem illi viri, Sedrach, Maisach, & Ebednago, cùm mediam in fornacem ignis ardentis vincti cecidissent,

91 Tunc Nebuchadnosar rex obstupuit, summoque pavore correptus respondit ac dixit proceribus suis; Nonne tres illos viros projecimus in fornacem ignis ardentis vinctos? Responderunt dicentes ad regem; Ita sane rex. 92 Respondit rex, & ait; Ecce video viros illos solutos, ambulantes in medio ignis, nullamque in eis esse labem ; & formam quarti similem filio deorum. 93 Tunc accessit Nebuchadnosar rex ad ostium fornacis ignis ardentis, & respondens ait; Sedrach, Maisach, & Ebednago servi Dei excelsi, egredimini, & venite. Tunc egressi sunt Sedrach, Maisach, & Ebednago è fornace ignis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

Νῦν οὖν εἰ ἔχετε ἑτοίμως, ἵνα ὡς ἂν ἀκούσητε τῆς φωνῆς τῆς σάλπιγγος, σύριγγός τε, καὶ κιθάρας, σαμβύκης τε, καὶ ψαλτηρίου, καὶ συμφωνίας, (υ) καὶ παντὸς γένους μουσικῶν, πεσόντες προσκυνήσητε τῇ εἰκόνι τῇ χρυσῇ ἣν ἐποίησα· ἐὰν δὲ μὴ προσκυνήσητε, αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἐμβληθήσεσθε εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρὸς τὴν καιομένην· καὶ τίς ἐστι (φ) θεὸς ὃς ἐξελεῖται ὑμᾶς ἐκ (χ) χειρός μου; Καὶ ἀπεκρίθησαν (ψ) Σεδρὰχ, Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, λέγοντες τῷ βασιλεῖ Ναβουχοδονόσορ, Οὐ χρείαν ἔχομεν ἡμεῖς περὶ τοῦ ῥήματος τούτου ἀποκριθῆναί σοι. Ἔστι γὰρ (ω) θεὸς ἡμῶν ἐν οὐρανοῖς, ᾧ ἡμεῖς λατρεύομεν, δυνατὸς ἐξελέσθαι ἡμᾶς ἐκ τῆς καμίνου τοῦ πυρὸς τῆς καιομένης, καὶ ἐκ (α) τῶν χειρῶν σου βασιλεῦ ῥύσεται ἡμᾶς. Καὶ ἐὰν μὴ, γνωστὸν ἔστω σοι βασιλεῦ, ὅτι τοῖς θεοῖς σου οὐ λατρεύομεν, καὶ τῇ εἰκόνι (β) ἣ ἔστησας οὐ προσκυνοῦμεν. Τότε Ναβουχοδονόσορ (γ) ἐπλήσθη θυμοῦ, καὶ ἡ ὄψις τοῦ προσώπου αὐτοῦ ἠλλοιώθη ἐπὶ (δ) Σεδρὰχ, Μισὰχ, καὶ Ἀβδεναγὼ, καὶ εἶπεν ἐκκαῦσαι τὴν κάμινον ἑπταπλασίως, ἕως (ε) οὗ εἰς τέλος ἐκκαῇ. Καὶ ἄνδρας ἰσχυροὺς ἰσχύϊ εἶπε, πεδήσαντας τὸν (ζ) Σεδρὰχ, Μισὰχ, καὶ Ἀβδεναγὼ, ἐμβαλεῖν εἰς τὴν κάμινον τοῦ πυρὸς τὴν καιομένην. Τότε οἱ ἄνδρες ἐκεῖνοι ἐπεδήθησαν σὺν τοῖς σαραβάροις αὐτῶν, καὶ τιάραις, καὶ περικνημῖσιν, καὶ (η) ἐβλήθησαν εἰς τὸ μέσον τῆς καμίνου τοῦ πυρὸς τῆς καιομένης, Ἐπεὶ τὸ ῥῆμα τοῦ βασιλέως (θ) ὑπερίσχυεν· καὶ ἡ κάμινος ἐξεκαύθη ἐκ περισσοῦ· (ι) Καὶ οἱ τρεῖς οὗτοι Σεδρὰχ, Μισὰχ, καὶ Ἀβδεναγὼ, ἔπεσον εἰς μέσον τῆς καμίνου (κ) τῆς καιομένης πεπεδημένοι;

Nunc ergò, (g) ſi eſtis parati, ut in quocunque tempore audieritis vocem 15
tubæ, & fiſtulæ, & citharæ, ſambucæq;, & pſalterii, & ſympho-
niæ, & omnis generis muſicorum, cadentes adoretis imaginem auream,
quam feci? Quòd ſi non adoraveritis; eâdem horâ mittemini in fornacem
ignis ardentem. Et quis eſt Deus, qui eripiat vos de manu mea? Et 16
reſponderunt Sedrach, Miſach, Abdenago, dicentes regi (h) Nabucho-
donoſor; Non opus habemus nos de verbo hoc reſpondere tibi. Eſt enim 17
Deus noſter in cœlis, quem nos colimus, potens eripere nos de camino
ignis ardente: & de manibus tuis, ô rex, liberabit nos. Et ſi non; notum 18
ſit tibi, rex; quia deos tuos non colimus, & imaginem, quam ſtatuiſti,
non adoramus. Tunc Nabuchodonoſor repletus eſt furore: & aſpectus 19
faciei illius commutatus eſt ſuper Sedrach, Miſach, & Abdenago: &
dixit, ut ſuccenderent fornacem in ſeptuplum, donec in finem ardeat: Et 20
dixit, ut viri fortes fortitudine ligantes Sedrach, Miſach, & Abde-
nago, mitterent in fornacem ignis ardentem. Tunc viri illi vincti ſunt 21
cum (i) Sarabaris ſuis, & tiaris, & tibialibus: & miſſi ſunt in me-
dium fornacis ignis ardentis: Quia verbum regis urgebat: & fornax 22
ſuccenſa erat nimis. (k) Et tres iſti Sedrach, Miſach, & Abdenago, ce- 23
ciderunt in medio camino ignis ardente colligati.

Καὶ Ναβουχοδονόσορ ἤκουσεν ὑμνούντων αὐτῶν, καὶ ἐθαύμασε, καὶ ἐξανέστη ἐν σπουδῇ, καὶ εἶπε τοῖς μεγιστᾶσιν αὐτοῦ, Οὐχὶ ἄνδρας τρεῖς (α) ἐβάλομεν εἰς τὸ μέσον τοῦ πυρὸς πεπεδημένους; καὶ (") εἶπον τῷ βασιλεῖ, Ἀληθῶς βασιλεῦ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, (β) Ὧ δὲ ἐγὼ ὁρῶ ἄνδρας τέσσαρας λελυμένους, καὶ περιπατοῦντας ἐν μέσῳ τοῦ πυρὸς, καὶ διαφθορὰ οὐκ ἔστιν (·) ἐν αὐτοῖς, καὶ ἡ ὅρασις τοῦ τετάρτου ὁμοία υἱῷ θεοῦ. Τότε προσῆλθε Ναβουχοδονόσορ πρὸς τὴν θύραν τῆς καμίνου τοῦ πυρὸς τῆς καιομένης, καὶ εἶπε, (γ) Σεδρὰχ, Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, οἱ δοῦλοι τοῦ (¨) θεοῦ τοῦ ὑψίστου, ἐξέλθετε καὶ δεῦτε, καὶ ἐξῆλθον (¨) Σεδρὰχ, Μισὰχ, Ἀβδεναγὼ, ἐκ μέσου τοῦ πυρός.

Et Nabuchodonoſor audivit laudantes illos, & obſtupuit, & ſurrexit pro- 91
perè, & ait optimatibus ſuis; Nónne tres viros miſimus in medium ignis
compeditos? Et dixerunt regi; Verè, rex. Et dixit rex; Ego autem vi- 92
deo viros quatuor ſolutos, & ambulantes in medio ignis: & corruptio
non eſt in eis: et ſpecies quarti ſimilitudo (y) filii Dei. Tunc acceſſit Na- 93
buchodonoſor ad oſtium fornacis ignis ardentis, et ait; Sedrach, Mi-
ſach, Abdenago, ſervi Dei excelſi, egredimini, et venite. Et egreſſi ſunt
Sedrach, Miſach, Abdenago, de medio ignis.

MS.A. (υ) πεσόντες προσκυνεῖτε (φ) ὁ θεὸς (χ) τῶν χειρῶν (ψ) Σεδρὰκ, Μισάκ, (ω) ὁ θεὸς (α) τῆς χειρός σου (β) τῇ χρυσῇ ἣ (γ) ὁ βασιλεὺς (δ) Σεδρὰκ, Μισάκ, Ἀβδεναγὼ, (ε) εἰς (ζ) Σεδρὰκ, Μισάκ, (η) ἐνδύμασιν αὐτῶν, καὶ ἐμβλήθησαν εἰς μέσον (θ) ὑπερίσχυσεν· (ι) καὶ τοὺς ἄνδρας ἐκείνους τοὺς βάλλοντας Σεδρὰκ, Μισάκ, Ἀβδεναγὼ ἀπέκτεινεν ἡ φλὸξ τοῦ πυρός. Καὶ οἱ τρεῖς οὗτοι Σεδρὰκ, Μισάκ, Ἀβδεναγὼ, (κ) τοῦ πυρὸς τῆς

(α) ἐνεβάλομεν εἰς μέσον (") εἶπαν (β) Ἰδοὺ ἐγὼ (·) αὐτοῖς, (γ) Σεδρὰκ, Μισάκ, (¨) θεοῦ, ἐξέλθατε καὶ δεῦτε ἔξω, (¨) Σεδρὰκ, Μισάκ,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والآن إن كان لكم استعداد لكي إذا سمعتم صوت البوق والناي والكينار والونج
والمزمار والصفار وكل جنس الغناء * تخرون سجدا للصورة التي صنعتها * وإن لم تسجدوا
في هذه الساعة تلقون في أتون النار المتوقد * ومن هو الإله الذي يخلصكم من يدي *
* فأجاب صدراخ وميصاخ وعبدناغو * قائلين للملك بختنصر * ليس لنا حاجة نحن من أجل
هذه الكلمة أن نجاوبك * لأن إلهنا هو في السموات الذي له نحن نعبد * وهو قادر أن
يخلصنا من أتون النار المتوقد * ومن يديك أيها الملك ينجينا * وإن كان لا * ليكن
معروفا عندك أيها الملك * أن آلهتك لا نعبدها * والصورة الذهب التي أقمتها لا نسجد لها *
* حينئذ بختنصر امتلى غضبا * وتغير منظر وجهه على صدراخ وميصاخ وعبدناغو *
وقال أوقدوا أتون النار سبعة أضعاف * إلى أن يحمى إلى الغاية * وقال لرجال أقوياء بالقوة
اربطوا صدراخ وميصاخ وعبدناغو * وألقوهم في أتون النار المتوقد * حينئذ أولئك
الرجال ربطوا بسراويلاتهم وتيجانهم وأخفافهم وأثوابهم * وألقوا في أتون النار المتوقد *
* من أجل أن كلمة الملك تلح قويا جدا * والأتون أوقد كثيرا جدا سبعة أضعاف *
وأولئك الرجال الذين ألقوا صدراخ وميصاخ وعبدناغو * قتلهم لهيب النار من
حولهم * وأولئك الثلاثة صدراخ وميصاخ وعبدناغو * سقطوا في وسط أتون النار
المتوقد موثوقين *

Nunc ergò ſi parati eſtis ut audito ſono 15
buccinæ, tibiæ, citharæ, lyræ, pſalterii, fiſtu-
læ, omniſque generis muſicæ, corruatis
adorantes imaginem quam feci: Quòd
ſi non adoretis, hâc horâ projiciemini in
fornacem ignis ardentem: & quis eſt
Deus qui eripiat vos è manibus meis?
Reſponderunt Sedrach, Miſach, & Ab- 16
denago, dicentes Bochtonaſſari regi; Non
opus eſt nobis de hoc verbo reſpondere
tibi. Nam Deus noſter in cœlis eſt, quem 17
nos adoramus, & is potens eſt ad libe-
randum nos à fornace ignis ardenti, &
è manibus tuis O rex, eripiendum.
Quòd ſi minùs; notum tibi ſit O rex, nos 18
deos tuos minimè culturos, neque ima-
ginem auream quam erexiſti, adoratu-
ros. Tunc Bochtonaſſar furore plenus, 19
ita ut immutaretur ſpecies vultûs ejus,
contra Sedrach, Miſach, & Abdenago,
dixit; Accendite fornacem ignis in
ſeptuplum, ut ſummum in modum ardeat.
Tum dixit viris robore valentiſſimis; 20
Ligate Sedrachum, Miſachum, & Ab-
denagum; & projicite eos in fornacem
ignis ardentem. Tunc iſti viri cum fe- 21
moralibus, tiaris, tibialibus, & veſti-
mentis ſuis ligati, projecti fuerunt in
fornacem ignis ardentem; Nam verbum 22
regis magnoperè perurgebat. Fornax
autem vehementiſſimè accenſa erat in
ſeptuplum: adeoque viros illos qui pro-
jecerant Sedrachum, Miſachum, &
Abdenagum, interfecit flamma ignis
circumerumpens. Tres autem illi, Se- 23
drach, Miſach, & Abdenago, in medi-
am fornacem ignis ardentem vincti ca-
dentes,

Quæ hic ſequuntur in Exemplaribus Syriacis, Arabicis, Græcis & Latinis, Oratio ſc. Azariæ cum Cantico ipſius & ſociorum, cùm non habeantur in codicibus Hebraicis, viſum eſt, unà cum Hiſtoria Suſannæ, atque Belis & Draconis, ſeorſim imprimere: quæ vel ad finem Danielis, vel cum reliquis libris, de quorum authoritate dubitatur, pro cujuſque arbitrio compingi poſſunt. Vide admonitionem ad finem Nehemiæ, Tom. 2.

* وبختنصر سمعهم يسبحون فتعجب * وقام بسرعة وقال لعظمائه * أليس ثلاثة رجال ألقينا في
وسط النار موثوقين * فقالوا للملك * بالحقيقة أيها الملك * فقال الملك * فأنا أرى أربعة
رجال محلولين وماشيين وسط النار * وليس يوجد فيهم فساد * ومنظر الرابع شبيه بابن الله *
* حينئذ تقدم بختنصر إلى أتون النار المتوقد وقال * يا صدراخ وميصاخ وعبدناغو عبيد
الله العلي * اخرجوا وهلموا * فخرج صدراخ وميصاخ وعبدناغو من وسط النار *

Quarè Bochtonaſſar audiens eos laudan- 91
tes, obſtupuit, & celeriter ſurgens dixit
magnatibus ſuis; Annon tres viros pro-
jecimus in medium ignem vinctos? 92
Dixerunt regi; Verum eſt O rex. Dixit
rex; Ego tamen video quatuor viros ſo-
lutos ambulantes in medio ignis, & nul-
lam eſſe in eis corruptionem; & aſpectum
quarti ſimilem filio Dei. Tunc accedens 93
Bochtonaſſar ad fornacem ignis arden-
tem, ait; O Sedrach, Miſach, & Abde-
nago, ſervi Dei ſupremi, egredimini & ve-
nite: egreſſique ſunt Sedrach, Miſach, &
Abdenago è medio ignis.

דניאל : ד

fuerat dominatus non quia ,iſtos viros *intuentes* regis *ductores* & ,duces & *: magiſtratus rege à ſecundi ſe congregantes* Et
27 ומתכנשין אחשדרפניא סגניא ופחותא והדברי מלכא חזין לגבריא אלך די לא־שלט
transferat non ignis odor & ; erant *mutata* non eorũ *ſaraballa* & ,erat aduſtus non eorum capitis *crinis* & ,eorũ corporibus *in* ignis
נורא בגשמהון ושער ראשהון לא התחרך וסרבליהון לא שנו וריח נור לא עדת
,ſuum angelum miſit qui ,nego-Habed & ,Meſach ,Sadrach *qui eorum Deus* Benedictus : dixit & ,Nebuchadneſar *Reſpondit* .eos *in*
28 בהון : ענה נבוכדנצר ואמר בריך אלההון די־שדרך מישך ועבד נגו די־שלח מלאכה
,ſervirent non ut ,ſua corpora tradiderunt & ,mutaverunt regis verbum & : eo *ſuper* ſperaverunt qui ,ſuos ſervos eruit &
ושיזב לעבדוהי די התרחצו עלוהי ומלת מלכא שניו ויהבו גשמהון די לא־יפלחון
quæ ,lingua & ,*natio* populus omnis ut decretum poſitum me à Et .ſuo Deo niſi Deo omni genuflecterent nec
29 ולא־יסגדון לכל־אלה להן לאלההון : ומני שים טעם די כל־עם אמה ולשן די־
omni : ponatur *ſterquilinium* ejus domus & ,fiat fruſta ,nego-Habed & ,Meſach ,Sadrach *qui eorum* Deum *ſuper errorem* dixerit
יאמר שלה על אלההון די־שדרך מישך ועבד נגוא הדמין יתעבד וביתה נולי ישתוה כל־
,nego-Habed & ,Meſach ,Sadrach *fecit proſperare* rex tunc *In* .hic ſicut eruere poſſit qui ,*alius* Deus eſt non quòd *reſpectu*
30 קבל די לא איתי אלה אחרן די־יכל להצלה כדנה : באדין מלכא הצלח לשדרך מישך ועבד נגו
vobis Pax ,terra univerſa in *habitantes* qui ,linguis & ,*nationibus* ,populis omnibus rex Nebuchadneſar .Babel provincia in
31 במדינת בבל : נבוכדנצר מלכא לכל־עממיא אמיא ולשניא די־דארין בכל־ארעא שלמכון
quod ſecundũ n ejus Signa .*indicare* me coram eſt decorum ,excelſus Deus mecum fecit quæ mirabilia & ,Signa .multiplicetur
32 ישגא : אתיא ותמהיא די עבד עמי אלהא עליא שפר קדמי להחויה : אתוהי כמה
33 .generatione & ,generatione cum ejus poteſtas & , *ſeculi* regnum ejus Regnum .fortia quod ſecundùm ejus mirabilia & ,magna
רברבין ותמהוהי כמה תקיפין מלכותה מלכות עלם ושלטנה עם־דר ודר :

CAP. IV. ד

ſuper conceptus & : me terruit & ,vidi Somnium .meo palatio in *frondoſus* & ,mea domo in eram quietus Nebuchadneſar Ego
1 אנה נבוכדנצר שלה הוית בביתי ורענן בהיכלי : חלם חזית וידחלנני והרהרין על־
2 qui : Babel ſapientes omnes me *coram introducendũ ad* decretũ eſt poſitum me à Et .me terrebant mei capitis viſiones & ,meo cubili
3 משכבי וחזוי ראשי יבהלנני : ומני שים טעם להנעלה קדמי לכל חכימי בבל די־
ego *dicens* ſomnium & : divini & ,Chaſdim ,*ſophi* ,genethliaci *ingredientes* tunc *In* .me facerent ſcire ſomnii interpretationẽ
4 פשר חלמא יהודענני : באדין עללין חרטמיא אשפיא כשדיא וגזריא וחלמא אמר אנה
ejus nomen cujus ,Daniel me coram *intravit noviſſimum ad uſque* Et .mihi *notificantes* non ejus interpretationem & ,eis coram
5 קדמיהון ופשרה לא־מהודעין לי : ועד אחרין על קדמי דניאל די־שמה
Belthefaſar .dixi ipſo coram ſomnium & ,*eo in* ſanctorum Deorum ſpiritus quo & ,mei Dei nomen ſecundùm ,Belthefaſar
6 בלטשאצר כשם אלהי ודי רוח־אלהין קדישין בה וחלמא קדמוהי אמרת : בלטשאצר
: tibi *negotium facit* non ſecretum omne & ,te in ſanctorum Deorum ſpiritus quòd novi ego *quod* ,genethliacorum *magiſter*
רב חרטמיא די אנה ידעת די רוח אלהין קדישין בך וכל־רז לא־אנס לך :
ecce & ,*fui videns* : meo cubili *ſuper* mei capitis *viſiones* Et dic ejus interpretationem & ,vidi quod ,mei ſomnii viſiones
7 חזוי חלמי די־חזית ופשרה אמר : וחזוי ראשי על־משכבי חזה הוית ואלו
,cœlum ad pertingebat ejus altitudo & : fortis & ,arbor erat Magna .*multa* ejus altitudo & ,terræ medio in arbor
8 אילן בגו ארעא ורומה שגיא : רבה אילנא ותקף ורומה ימטא לשמיא
.terræ univerſæ finem ad ejus aſpectus &
וחזותה לסוף כל־ארעא :

Verſio VULG. LAT.

Et congregati ſatrapæ, & magiſtratus, & judices, & poten- 94
tes regis contemplabantur viros illos, quoniam nihil po-
teſtatis habuiſſet ignis in corporibus eorum, & capillus
capitis eorum non eſſet aduſtus, & ſarabala eorum non
fuiſſent immutata, & odor ignis non tranſiiſſet per eos. Et 95
erumpens Nabuchodonoſor, ait; Benedictus Deus eorum,
Sidrach videlicèt, Miſach, & Abdenago, qui miſit Angelum
ſuũ, & eruit ſervos ſuos, qui crediderunt in eum: & verbũ
regis immutaverũt, & tradiderũt corpora ſua ne ſervirent,
& ne adorarent omnem deum, excepto Deo ſuo. A me ergò 96
poſitũ eſt hoc decretũ, ut omnis populus, tribus, & lingua,
quæcunque locuta fuerit blaſphemiam contra Deum Si-
drach, Miſach, & Abdenago, diſpereat, & dom⁹ ejus vaſte-
tur: neque enim eſt alius Deus, qui poſſit ita ſalvare. Tunc 97
rex promovit Sidrach, Miſach & Abdenago in provincia
Babylonis. NABUCHODONOSOR rex, omnib⁹ populis, 98
gentib⁹, & linguis, qui habitant in univerſa terra, Pax vobis
multiplicetur. Signa & mirabilia fecit apud me Deus ex- 99
celſus. Placuit ergò mihi prædicare Signa ejus, quia 100
magna ſunt; & mirabilia ejus, quia fortia: & regnum ejus
regnum ſempiternum, & poteſtas ejus in generationem &
generationem.

CAP. IV.

Ego Nabuchodonoſor quietus eram in domo mea, & 1
florens in palatio meo: Somnium vidi, quod perterruit 2
me: & cogitationes meæ in ſtrato meo, & viſiones capitis
mei, conturbaverunt me. Et per me propoſitum eſt decre- 3
tum, ut introducerentur in conſpectu meo cuncti ſapientes
Babylonis, & ut ſolutionem ſomnii indicarent mihi. Tunc 4
ingrediebantur arioli, magi, Chaldæi, & aruſpices, & ſo-
mnium narravi in conſpectu eorum: & ſolutionem ej⁹ non
indicaverunt mihi: Donec collega ingreſſus eſt in con- 5
ſpectu meo Daniel, cui nomen Baltaſſar ſecundùm nomen
dei mei, qui habet ſpiritum deorum ſanctorum in ſemet-
ipſo: & ſomnium coram ipſo locut⁹ ſum. Baltaſſar prin- 6
ceps ariolorum, quoniam ego ſcio quòd ſpiritum ſanctorũ
deorum habeas in te, & omne ſacramentum non eſt im-
poſſibile tibi: viſiones ſomniorum meorum, quas vidi, &
ſolutionem earum narra. Viſio capitis mei in cubili meo: 7
Videbam, & ecce arbor in medio terræ, & altitudo ej⁹ ni-
mia. Magna arbor, & fortis: & proceritas ej⁹ contingens 8
cœlum: aſpectus illius erat uſque ad terminos univerſæ
terræ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

94 ܘܐܬܟܢܫܘ * ܟܢܫܐ ܟܠܗܘܢ. ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܘܡܕܒܪܢܐ ܘܡܪܘܬܐ. ܘܪܘܪܒܢܐ ܕܡܠܟܐ.
ܚܙܝܢ ܗܘܘ ܠܓܒܪܐ ܗܢܘܢ. ܕܠܐ ܐܫܬܠܛܬ ܢܘܪܐ ܒܦܓܪܗܘܢ. ܘܣܥܪܐ ܕܪܫܝܗܘܢ ܠܐ
95 ܐܬܚܪܟ. ܘܡܪܒܠܬܗܘܢ ܠܐ ܝܩܕܘ. ܘܪܝܚܐ ܕܢܘܪܐ ܠܐ ܥܒܪ ܒܗܘܢ. * ܥܢܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ
ܘܐܡܪ. ܡܒܪܟܘ ܗܘ ܐܠܗܗܘܢ ܕܫܕܪܟ ܘܡܝܫܟ ܘܥܒܕܢܓܘ. ܕܫܕܪ ܡܠܐܟܗ. ܘܦܪܩ
ܠܥܒܕܘܗܝ ܕܐܬܬܟܠܘ ܒܗ. ܘܡܠܬܗ ܕܡܠܟܐ ܫܢܝܘ. ܘܝܗܒܘ ܦܓܪܝܗܘܢ
96 ܕܠܐ ܢܦܠܚܘܢ. ܘܠܐ ܢܣܓܕܘܢ ܠܟܠ ܐܠܗ. ܐܠܐ ܐܢ ܠܐܠܗܗܘܢ. * ܘܡܢܝ ܦܩܝܕ ܐܢܐ.
ܕܟܠ ܥܡܡܐ ܘܐܘܡܐ ܘܠܫܢܐ: ܕܢܓܕܦ ܥܠ ܐܠܗܗܘܢ ܕܫܕܪܟ ܘܡܝܫܟ ܘܥܒܕܢܓܘ.
ܗܕܡܐ ܗܕܡܐ ܢܬܦܣܩܘܢ. ܘܒܬܝܗܘܢ ܢܬܒܙܙܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܐܠܗ ܐܚܪܢ ܕܡܫܟܚ
97 ܠܡܦܪܩܘ ܐܝܟ ܗܢܐ. * ܗܝܕܝܢ ܐܘܪܒ ܡܠܟܐ ܠܫܕܪܟ ܘܡܝܫܟ ܘܥܒܕܢܓܘ ܥܠ ܐܬܪܐ ܕܒܒܠ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

1 * ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ. ܟܬܒ ܠܟܠ ܥܡܡܐ ܘܠܫܢܐ ܕܥܡܪܝܢ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܫܠܡܟܘܢ
2 ܢܣܓܐ ܠܟܘܢ. * ܐܬܘܬܐ ܘܬܕܡܪܬܐ ܕܥܒܕ ܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ ܫܦܪ ܩܕܡܝ ܠܡܚܘܝܘ.
3 * ܐܬܘܬܗ ܟܡܐ ܪܘܪܒܢ. ܘܬܕܡܪܬܗ ܟܡܐ ܥܫܝܢܢ. ܡܠܟܘܬܗ ܡܠܟܘܬܐ ܕܠܥܠܡ.
4 ܘܫܘܠܛܢܗ ܠܕܪ ܕܪܝܢ. * ܐܢܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ. ܫܠܐ ܗܘܝܬ ܒܒܝܬܝ. ܘܢܝܚ ܒܗܝܟܠܝ.
5 6 * ܘܚܠܡܐ ܚܙܝܬ. ܘܐܙܝܥܢܝ. ܘܚܙܘܐ ܕܪܫܝ ܕܠܚܘܢܝ. * ܘܐܢܐ ܦܩܕܬ ܕܢܥܠܘܢ
7 ܩܕܡܝ ܟܠܗܘܢ ܚܟܝܡܐ ܕܒܒܠ. ܕܦܫܪܐ ܕܚܠܡܐ ܢܘܕܥܘܢܢܝ. * ܘܥܠܘ
ܩܕܡܝ ܚܪܫܐ ܘܐܫܦܐ ܘܡܓܘܫܐ ܘܟܠܕܝܐ. ܘܚܠܡܐ ܐܡܪܬ ܩܕܡܝܗܘܢ.
8 ܘܦܫܪܗ ܠܐ ܐܘܕܥܘܢܝ. * ܠܚܪܬܐ ܥܠ ܩܕܡܝ ܕܢܝܐܝܠ ܗܢܐ ܕܫܡܗ ܒܠܛܫܐܨܪ ܥܠ ܫܡ
9 ܐܠܗܝ. ܕܪܘܚ ܐܠܗܐ ܩܕܝܫܐ ܐܝܬ ܒܗ. ܘܚܠܡܐ ܩܕܡܘܗܝ ܐܡܪܬ. * ܒܠܛܫܐܨܪ
ܪܒ ܚܟܝܡܐ. ܕܐܢܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܕܪܘܚ ܐܠܗܐ ܩܕܝܫܐ ܐܝܬ ܒܟ. ܘܟܠ ܐܪܙܐ ܠܐ ܐܬܟܣܝ
10 ܡܢܟ. ܒܚܙܘܐ ܕܚܠܡܝ. ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܚܙܘܐ ܕܪܫܝ. ܘܦܘܫܩܗ ܐܢܬ ܐܡܪ ܠܝ. * ܚܙܐ ܗܘܝܬ
11 ܒܡܫܟܒܝ. ܐܝܠܢܐ ܒܡܨܥܬ ܐܪܥܐ. ܘܪܘܡܗ ܣܓܝ. * ܘܐܬܪܘܪܒ ܐܝܠܢܐ ܘܥܫܢ.
ܘܪܘܡܗ ܡܛܐ ܠܫܡܝܐ. ܘܚܙܘܗ ܠܣܘܦܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ.

Et congregatæ turbæ omnes, duces militiæ, 94
principes, domini, & magnates regis, videbant ignem nullam vim habuiſſe in carnem virorum illorum, neque capillum capitis eorum uſtulatum fuiſſe, neque femoralia eorum exuſta, neque ignis odorem pervaſiſſe eos. Prolocutus Nebuchadnoſar rex ait; 95
Benedictus ſit Deus Sedrachi, Maiſachi, & Ebednaghi: qui mittens Angelum ſuum eripuit ſervos ſuos qui confiſi ſunt in ipſo; & verbum regis contemnentes expoſuerunt corpus ſuum, ut nullum deum colerent aut adorarent præter Deum ſuum. Quapropter ju- 96
beo ut quicunque populus, natio, aut lingua blaſphemaverit in Deum Sedrachi, Maiſachi, & Ebednaghi, membratim lanietur, & domus ejus diripiatur: ſiquidem nullus eſt alius deus qui liberare poſſit in hunc modum. Tunc evexit rex Sedrachum, Maiſachum, & 97
Ebednagum ſuper provinciam Babylonis.

CAP. IV.

Nebuchadnoſar rex ſcripſit omnibus po- 1
pulis & linguis degentibus in tota terra *his verbis*: Pax multiplicetur vobis. Signa & 2
miracula quæ fecit Deus excelſus libet mihi indicare: Signa ejus quàm magna ſint, & 3
miracula ejus quàm ingentia: regnum ejus regnum æternum, & dominium ejus in generationem generationum eſſe. Ego Nebuchad- 4
noſar dum tranquillus eſſem domi meæ, & pacificus in palatio meo; Somnium vidi, & 5
conturbatus ſum, & viſiones capitis mei exagitaverunt me. Quamobrem juſſi ut ad- 6
ducerentur coram me omnes ſapientes Babylonis, ad explicationem ſomniorum mihi indicandum. Cúmque ingreſſi eſſent ad me 7
præſtigiatores & harioli, magi & Chaldæi; propoſui eis ſomnium, at explicationem ejus non declaraverunt mihi. Tandem ingreſſus 8
eſt ad me Daniel iſte cui nomen eſt Blitſaſar de nomine dei mei, in quo eſt ſpiritus deorum ſanctorum, eique ſomnium propoſui, *dicens*, Blitſaſar ſapientum maxime, in quo 9
ſpiritum deorum ſanctorum ineſſe novi, nec ullum arcanum te latere: In viſione ſomnii mei videbam viſionem capitis mei: interpretationem ejus tu dicito mihi. Videbam 10
in cubili meo arborem in medio terræ, eximiæ proceritatis. Tum creviſſe arborem, & 11
ingentem evaſiſſe, adeo ut ſummitas ejus ad cœlum uſque pertingeret, & aſpectus ejus ad omnes terræ extremitates:

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

Καὶ συνάγονται οἱ σατράπαι, καὶ οἱ στρατηγοὶ, καὶ οἱ τοπάρχαι, καὶ οἱ δυνάσται τοῦ βασιλέως, καὶ ἐθεώρουν τοὺς ἄνδρας, ὅτι οὐκ ἐκυρίευσε τὸ πῦρ τοῦ σώματος αὐτῶν, καὶ ἡ θρὶξ τῆς κεφαλῆς αὐτῶν οὐκ ἐφλογίσθη, καὶ τὰ σαράβαρα αὐτῶν οὐκ ἠλλοιώθη, καὶ ὀσμὴ πυρὸς οὐκ ἦν ἐν (δ) αὐτοῖς. Καὶ ἀπεκρίθη (ʺ) Ναβουχοδονόσορ ὁ βασιλεὺς, καὶ εἶπεν, Εὐλογητὸς ὁ θεὸς τοῦ (ε) Σεδράχ, Μισάχ, Ἀβδεναγὼ, ὃς ἀπέστειλε τὸν ἄγγελον αὐτοῦ, καὶ ἐξείλατο τοὺς παῖδας αὐτοῦ, ὅτι ἐπεποίθεισαν ἐπ' αὐτῷ· καὶ τὸ ῥῆμα τοῦ βασιλέως ἠλλοίωσαν, καὶ παρέδωκαν τὰ σώματα αὐτῶν εἰς πῦρ, ὅπως μὴ λατρεύσωσι (ζ) μηδὲ προσκυνήσωσι παντὶ θεῷ, ἀλλ' ἢ τῷ θεῷ αὐτῶν. Καὶ ἐγὼ ἐκτίθεμαι (η) τὸ δόγμα· Πᾶς λαὸς, φυλὴ, γλῶσσα, ἢ (θ) ἐὰν εἴπῃ βλασφημίαν κατὰ τοῦ θεοῦ (ι) Σεδράχ, Μισάχ, Ἀβδεναγὼ, εἰς ἀπώλειαν ἔσονται, καὶ οἱ οἶκοι αὐτῶν (κ) εἰς διαρπαγὴν, καθότι οὐκ ἔστι θεὸς ἕτερος ὅστις δυνήσεται ῥύσασθαι οὕτως. Τότε (λ) ὁ βασιλεὺς κατεύθυνε τὸν Σεδράχ, Μισάχ, Ἀβδεναγὼ, ἐν τῇ χώρᾳ Βαβυλῶνος, καὶ ηὔξησεν αὐτοὺς, καὶ ἠξίωσεν αὐτοὺς (μ) ἡγεῖσθαι πάντων τῶν Ἰουδαίων, τῶν (ν) ἐν τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ. † Ναβουχοδονόσορ ὁ βασιλεὺς πᾶσι τοῖς λαοῖς, φυλαῖς, (ξ) καὶ γλώσσαις, τοῖς οἰκοῦσιν ἐν πάσῃ τῇ γῇ, εἰρήνη ὑμῖν πληθυνθείη. Τὰ σημεῖα καὶ τὰ τέρατα ἃ ἐποίησε μετ' ἐμοῦ ὁ θεὸς ὁ ὕψιστος, ἤρεσεν ἐναντίον ἐμοῦ ἀναγγεῖλαι ὑμῖν, Ὡς μεγάλα καὶ ἰσχυρὰ, ἡ βασιλεία αὐτοῦ, βασιλεία αἰώνιος, καὶ ἡ ἐξουσία αὐτοῦ εἰς (ο) γενεὰν καὶ γενεάν.

Et congregantur Satrapæ, & Duces, & Toparchæ, & potentes regis: & contemplabantur viros: quoniam nihil poteſtatis habuiſſet ignis in corpore eorum; & capillus capitis eorum non eſſet aduſtus, & ſarabara eorum non fuiſſent immutata, & odor ignis non eſſet in (z) eis. 94

Et reſpondit Nabuchodonoſor rex, & ait; Benedictus Deus Sedrach, Miſach, Abdenago, qui miſit angelum ſuum, & eruit ſervos ſuos; quia crediderunt in eum: & verbum regis immutaverunt, & tradiderunt corpora ſua in ignem; ne ſervirent, neque adorarent omnem deum præter Deum ſuum. 95

Et ego propono decretum: Omnis populus, tribus, lingua, quæcunque dixerit blaſphemiam contra Deum Sedrach, Miſach, Abdenago; in perditionem erunt, & domus eorum in direptionem; ſicuti non eſt Deus alius qui poſſit ita ſalvare. 96

Tunc rex promovit Sedrach, Miſach, Abdenago, in regione Babylonis, & (ω) amplificavit eos, & dignos habuit ipſos, qui præeſſent omnibus Judæis, qui in regno ſuo. 97

(aa) Nabuchodonoſor rex omnibus populis, tribubus, & linguis, habitantibus in univerſa terra: Pax vobis multiplicetur: 98

Signa, & prodigia, quæ fecit mecum Deus excelſus, placuit in conſpectu meo annuntiare vobis, 99

Quàm magna, & fortia: regnum ejus, regnum ſempiternum: & poteſtas ejus in generationem & generationem. 100

MS.A. (δ) αὐτοῖς· καὶ προσεκύνησεν ὁ βασιλεὺς ἐνώπιον αὐτῶν τῷ κυρίῳ. Καὶ (ʺ) Ναβουχοδονόσορ, καὶ εἶπεν, (ε) Σεδράκ, Μισάκ, (ζ) παντὶ θεῷ, ἀλλ' (η) δόγμα· (θ) ἂν (ι) Σεδράκ, Μισάκ, (κ) διαρπαγήσονται, (λ) κατηύθυνεν ὁ βασιλεὺς τὸν Σεδράκ, Μισάκ, Ἀβδεναγὼ ἐπὶ τὰ ἔργα τῆς χώρας Βαβυλῶνος, (μ) * καὶ ἠξίωσεν αὐτοὺς ἡγεῖσθαι (ν) ὄντων ἐν †ὉΡΑΣΙΣ δʹ. ὉΡΑΣΙΣ εʹ. (ξ) γλώσσαις, (ο) γενεὰς γενεῶν.

ΚΕΦ. δʹ.

Ἐγὼ Ναβουχοδονόσορ εὐθηνῶν ἤμην ἐν τῷ οἴκῳ μου, καὶ εὐθηνῶν (α). Ἐνύπνιον ἴδον, καὶ ἐφοβέρισέ με, καὶ ἐταράχθην ἐπὶ τῆς κοίτης μου, καὶ αἱ ὁράσεις τῆς κεφαλῆς μου (β) ἐτάραξάν με. Καὶ δι' ἐμοῦ ἐτέθη δόγμα τοῦ εἰσαγαγεῖν ἐνώπιόν μου πάντας τοὺς σοφοὺς Βαβυλῶνος, ὅπως τὴν σύγκρισιν τοῦ ἐνυπνίου γνωρίσωσί μοι. Καὶ εἰσεπορεύοντο οἱ ἐπαοιδοὶ, μάγοι, γαζαρηνοὶ, (γ) Χαλδαῖοι· καὶ τὸ ἐνύπνιον (δ) ἐγὼ εἶπα ἐνώπιον αὐτῶν· καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ οὐκ ἐγνώρισάν μοι, (ε) Ἕως ἦλθε Δανιὴλ, οὗ τὸ ὄνομα Βαλτάσαρ κατὰ τὸ ὄνομα τοῦ θεοῦ μου, ὃς πνεῦμα θεοῦ ἅγιον ἐν ἑαυτῷ ἔχει· (ζ) ᾧ εἶπα, Βαλτάσαρ ὁ ἄρχων τῶν ἐπαοιδῶν, ὃν ἐγὼ ἔγνων ὅτι πνεῦμα θεοῦ ἅγιον (η) ἐν σοὶ, καὶ πᾶν μυστήριον οὐκ (θ) ἀδυνατεῖ σε, ἄκουσον τὴν ὅρασιν τοῦ (ι) ἐνυπνίου μου, οὗ ἴδον, καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ εἰπόν μοι. Ἐπὶ τῆς κοίτης μου ἐθεώρουν, καὶ ἰδοὺ δένδρον ἐν μέσῳ τῆς γῆς, καὶ τὸ ὕψος αὐτοῦ πολύ. Ἐμεγαλύνθη τὸ δένδρον (κ) καὶ ἴσχυσε, καὶ τὸ ὕψος αὐτοῦ ἔφθασεν ἕως τοῦ οὐρανοῦ, καὶ τὸ κύτος αὐτοῦ εἰς (λ) τὸ πέρας ἁπάσης τῆς γῆς,

CAP. IV.

Ego Nabuchodonoſor abundans eram in domo mea, & (a) florens. 1

Somnium vidi, & perterruit me: & turbatus ſum in cubili meo: 2

& viſiones capitis mei conturbaverunt me. Et per me propoſitum eſt decretum introducendi in conſpectu meo omnes ſapientes Babylonis; ut conjecturam ſomnii indicarent mihi. 3

Et ingrediebantur, (b) incantatores, magi, Gazareni, Chaldæi: & ſomnium ego dixi in conſpectu eorum: & conjecturam ejus non indicârunt mihi: 4

Donec (c) venit Daniel, cujus nomen Baltaſar ſecundùm nomen dei mei: qui ſpiritum (d) Dei ſanctum in ſemetipſo habet. 5

Cui dixi; Baltaſar princeps incantatorum, quem ego novi, quòd ſpiritus Dei ſanctus in te, & omne ſacramentum non (e) eſt impoſſibile tibi: audi viſionem ſomnii mei, quod vidi: & conjecturam ejus dic mihi. 6

(f) In cubili meo videbam: & ecce arbor in medio terræ, & altitudo ejus multa. 7

Magnificata eſt arbor, & invaluit: & altitudo ejus pervenit uſque ad cœlum: & (g) moles ejus ad (h) terminum univerſæ terræ: 8

MS.A. (α) ἐπὶ τοῦ θρόνου μου. Ἐνύπνιον (β) συνετάραξάν (γ) καὶ οἱ Χαλδαῖοι· (δ) εἶπα ἐγὼ (ε) Ἕως οὗ ἦλθε (ζ) καὶ τὸ ἐνύπνιον ἐνώπιον αὐτοῦ εἶπα· Βαλτάσαρ (η) ἐν ἑαυτῷ ἔχει, καὶ (θ) ἀδυνατήσει (ι) ἐνυπνίου, καὶ τὴν (κ) ἐκεῖνο καὶ (λ) τὰ πέρατα πάσης

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* واجتمع عظماء الجيوش والجند * ورؤساء المواضع * واقوياء الملك * ونظروا الرجال ان
النار لم تملك اجسادهم * ولم تحرق شعر راسهم * ولم تتبدل لباساتهم * ولم تكن فيهم
رايحة النار * فسجد امامهم الملك للرب * واجاب بختنصر وقال * مبارك اله صدراخ وميصاخ
وعبدناغو * الذي ارسل ملاكه وانقذ عبيده لانهم توكلوا عليه * وغيروا كلمة
الملك * واسلموا اجسادهم للنار * كيلا يعبدوا ولا يسجدوا لكل اله الا لالههم * والآن
اضع امرا * كل شعب وقبيلة ولسان يقول تجديفا على اله صدراخ وميصاخ وعبدناغو
يصيرون للهلاك وبيوتهم للنهب * لانه ليس اله اخر يستطيع ان ينجي هكذا * حينيذ
الملك اقام صدراخ وميصاخ وعبدناغو في كورة بابل واعلاهم واهلهم ان يرؤسوا جميع
اليهود الكاينين في مملكته *

94 * Et congregati duces exercituum & milites, toparchæ, & potentes regis, viderunt ignem in eorum virorum corpora nullam habuiſſe poteſtatem, neq; combuſſiſſe pilos capitis eorum, neque mutata fuiſſe femoralia eorum, neque eſſe in eis odorem ignis.

95 Rex autem adoravit coram eis Dominum, & reſpondens Bochtonaſſar ait; Benedictus Deus Sedrachi, Miſachi, & Abdenaghi; qui miſit Angelum ſuum, & eripuit ſervos ſuos, quòd confiſi ſint in eo; & mutato regis verbo tradiderint corpora ſua igni, ut ne colerent aut adorarent ullum deum præter Deum ſuum.

96 Ego etiam propono decretum: Quicunque populus, natio, aut lingua blaſphemiam protulerit in Deum Sedrachi, Miſachi, & Abdenaghi, addicantur exitio, & domus eorum direptioni: quandoquidem non eſt alius Deus qui ſic liberare poſſit.

97 Tunc rex evexit Sedrachum, Miſachum, & Abdenaghum in provincia Babelis; amplificavit eos, & dignos effecit qui præeſſent omnibus Judæis qui erant in regno ſuo.

* الفصل الرابع *

* الرويا الخامس *

* من بختنصر الملك لكل الشعوب والقبايل والالسن السكان في كل الارض
السلم يكثر لكم * الايات والجرايح التي صنعها الله العلي معي * حسن امامي
لاخبركم بها * لانها عظيمة وقوية * ومملكته مملكة ابدية * وسلطانه الي جيل
وجيل * انا بختنصر كنت مستريحا في بيتي * ومخصبا على كرسي * رايت حلما
فافزعني * واضطربت على مضجعي * ومناظر راسي اقلقتني * ومن قبلي وضع امر
ان يدخلوا قدامي جميع حكماء بابل * لكي يعرفوني تاويل الحلم * فدخلت
الرقاؤون والمجوس والسحرة والكلدانيون * فقلت الحلم امامهم ولم يعرفوني تاويله * فدخل
دانيال الذي اسمه بلطشاصر على اسم الهي الذي له فيه روح القدوس * وقلت
انا الحلم امامه * يا بلطشاصر رييس الرقايين * الذي انا اعرفه ان روح الله القدوس
فيك وكل سر لا يعسر عليك * اسمع منظر الحلم الذي رايته * وقل لي
تاويله ومناظر راسي * على مضجعي نظرت واذا شجرة في وسط الارض * وارتفاعها
كبير * عظمت الشجرة وقويت * وارتفاعها بلغ الي السماء * وسعتها الي اقطار
كل الارض *

CAP. IV.

Viſio quinta.

1 * A Bochtonaſſare rege omnibus populis, nationibus, & linguis habitantibus in totâ terrâ: pax multiplicetur vobis.

2 Signa & prodigia quæ Deus ſupremus mecum egit, placet mihi vobis enarrare.

3 Siquidem magna ſunt ac fortia: regnum ejus regnum ſempiternum, & imperium ejus in generationem & generationem.

4 Ego Bochtonaſſar cùm proſper eſſem domi meæ, & abundans ſuper ſolio meo;

5 Vidi ſomnium quod me terruit, conturbatus ſum ſuper cubile meum, & viſiones capitis mei anxerunt me.

6 Quarè fuit à me propoſitum decretum, ut ingrederentur coram me omnes ſapientes Babelis ad exponendum mihi interpretationem ſomnii.

7 Et ingreſſis incantatoribus, magis, veneficis, & Chaldæis, propoſitoque ſomnio coram eis, non expoſuerunt mihi interpretationem ejus.

8 Ingreſſo autem Daniele, cujus nomen eſt Baltaſaſar juxta nomen dei mei qui ſpiritum Dei ſanctum habet in illo; ſomnium propoſui coram eo:

9 O Baltaſaſar princeps incantatorum, in quo ego ſpiritum Dei ſanctum ineſſe novi, & cui nullum arcanum eſt arduum; audi viſionem ſomnii quod vidi, & dic mihi interpretationem ejus & viſiones capitis mei.

10 Super cubili meo vidi, cùm ecce arbor in medio terræ, maximæ altitudinis.

11 Crevit arbor & invaluit, altitudo ejus ad cœlum uſque pervenit, et latitudo ejus ad extrema totius terræ:

habitabant ejus ramis in & ,agri bestia faciebat umbrā se sub : ea in universis esca &,multus ejus fructus &,pulcher ejus Ramus

9 עָפְיֵהּ שַׁפִּיר וְאִנְבֵּהּ שַׂגִּיא וּמָזוֹן לְכֹלָּא־בֵהּ תְּחֹתוֹהִי תַּטְלֵל ׀ חֵיוַת בָּרָא וּבְעַנְפוֹהִי יְדוּרָן

sanctus & ,vigil ecce & : meo strato super ,mei capitis visionibus in fui Videns .caro omnis vescebatur ea ex & ,cœli volucres

10 צִפְּרֵי שְׁמַיָּא וּמִנֵּהּ יִתְּזִין כָּל־בִּשְׂרָא׃ חָזֵה הֲוֵית בְּחֶזְוֵי רֵאשִׁי עַל־מִשְׁכְּבִי וַאֲלוּ עִיר וְקַדִּישׁ

,ejus frondem excutite ,ejus ramos præcidite & , arborem Succidite : dicens sic & ,virtute in Clamans .descendens cœlo de

11 מִן־שְׁמַיָּא נָחִת׃ קָרֵא בְחַיִל וְכֵן אָמַר גֹּדּוּ אִילָנָא וְקַצִּצוּ עַנְפוֹהִי אַתַּרוּ עָפְיֵהּ

terra in ejus radicum radicem Veruntamen .ejus ramis à volucres & , ea sub de bestia vagetur : ejus fructum dispergite &

12 וּבַדַּרוּ אִנְבֵּהּ תְּנֻד חֵיוְתָא מִן־תַּחְתּוֹהִי וְצִפְּרַיָּא מִן־עַנְפוֹהִי׃ בְּרַם עִקַּר שָׁרְשׁוֹהִי בְּאַרְעָא

herba in ejus pars bestia cum & ,tingatur cœli rore in & : agri ꝗ gramine in æris & , ferri ꝗ vinculo in & , finite

שְׁבֻקוּ וּבֶאֱסוּר דִּי־פַרְזֶל וּנְחָשׁ בְּדִתְאָא דִּי בָרָא וּבְטַל שְׁמַיָּא יִצְטַבַּע וְעִם־חֵיוְתָא חֲלָקֵהּ בַּעֲשַׂב

vigilum decreto In .eum super mutentur tempora septem & : ei detur bestiæ cor & , mutent homine ab ejus Cor .terræ

13 14 אַרְעָא׃ לִבְבֵהּ מִן־אֲנָשָׁא יְשַׁנּוֹן וּלְבַב חֵיוָא יִתְיְהִב לֵהּ וְשִׁבְעָה עִדָּנִין יַחְלְפוּן עֲלוֹהִי׃ בִּגְזֵרַת עִירִין

, hominis regno in altissimus dominetur quòd ,viventes cognoscant quo verbum ad usque : petitio sanctorum sermone & ,verbum

פִּתְגָמָא וּמֵאמַר קַדִּישִׁין שְׁאֵלְתָא עַד־דִּבְרַת דִּי יִנְדְּעוּן חַיַּיָּא דִּי־שַׁלִּיט עִלָּאָה בְּמַלְכוּת אֲנָשָׁא

:Nebuchadnesar rex ego vidi somnium Hoc .illud super constituet hominum humilem & ,illud dabit voluerit quod cui &

15 וּלְמַן־דִּי יִצְבֵּא יִתְּנִנַּהּ וּשְׁפַל אֲנָשִׁים יְקִים עֲלַהּ׃ דְּנָה חֶלְמָא חֲזֵית אֲנָה מַלְכָּא נְבוּכַדְנֶצַּר

.mihi notificare interpretationē valentes non mei regni sapientes omnes quod respectu omni ,dic ejꝰ interpretationē Belthesasar tu &

וְאַנְתְּה בֵלְטְשַׁאצַּר פִּשְׁרֵא אֱמַר כָּל־קֳבֵל דִּי ׀ כָּל־חַכִּימֵי מַלְכוּתִי לָא־יָכְלִין פִּשְׁרָא לְהוֹדָעוּתַנִי

hora in est obstupefactus , Belthesasar ejus nomen cujus ,Daniel Tunc .te in sanctorum Deorum spiritus quia ,valens tu Et

16 וְאַנְתְּה כָּהֵל דִּי רוּחַ־אֱלָהִין קַדִּישִׁין בָּךְ׃ אֱדַיִן דָּנִיֵּאל דִּי־שְׁמֵהּ בֵּלְטְשַׁאצַּר אֶשְׁתּוֹמַם כְּשָׁעָה

.te terreat non ejus interpretatio & ,somnium , Belthesasar : dicens & , rex Respondens .eum terrebant ejus cogitationes & , una

חֲדָה וְרַעְיֹנֹהִי יְבַהֲלֻנֵּהּ עָנֵה מַלְכָּא וְאָמַר בֵּלְטְשַׁאצַּר חֶלְמָא וּפִשְׁרֵא אַל־יְבַהֲלָךְ

quæ ,vidisti quam ,Arbor .tuis hostibus ejus interpretatio & ,tuis inimicis somnium ,mi Domine : dixit & , Belthesasar Respondit

17 עָנֵה בֵלְטְשַׁאצַּר וְאָמַר מָרִאי חֶלְמָא לְשָׂנְאָךְ וּפִשְׁרֵהּ לְעָרָךְ׃ אִילָנָא דִּי חֲזַיְתָ דִּי

,multus ejꝰ fructus &,pulchra ejꝰ frons Et .terram omnem in ejꝰ aspectus &,cœlum ad pertingebat ejꝰ altitudo & :invaluerat &,creverat

18 רְבָה וּתְקִף וְרוּמֵהּ יִמְטֵא לִשְׁמַיָּא וַחֲזוֹתֵהּ לְכָל־אַרְעָא׃ וְעָפְיֵהּ שַׁפִּיר וְאִנְבֵּהּ שַׂגִּיא

qui ,rex ipse Tu .cœlorum volucres habitabant ejus ramis in & ,agri bestia habitabat eam subter : ea in omnibus esca &

19 וּמָזוֹן לְכֹלָּא־בֵהּ תְּחֹתוֹהִי תְּדוּר חֵיוַת בָּרָא וּבְעַנְפוֹהִי יִשְׁכְּנָן צִפְּרֵי שְׁמַיָּא׃ אַנְתְּה־הוּא מַלְכָּא דִּי

,vigilem rex vidit quod Et terræ finem ad tua potestas & ,cœlum ad pervenit &,crevit tua magnitudo &:es roboratꝰ &,es magnificatꝰ

20 רְבַית וּתְקֵפְתְּ וּרְבוּתָךְ רְבָת וּמְטָת לִשְׁמַיָּא וְשָׁלְטָנָךְ לְסוֹף אַרְעָא׃ וְדִי חֲזָה מַלְכָּא עִיר

,dimittite terra in ejus radicum radicem attamen,eam corrumpite & ,arborem Succidite: dicentem & ,cœlis è descendentem sanctū &

וְקַדִּישׁ נָחִת ׀ מִן־שְׁמַיָּא וְאָמַר גֹּדּוּ אִילָנָא וְחַבְּלוּהִי בְּרַם עִקַּר שָׁרְשׁוֹהִי בְּאַרְעָא שְׁבֻקוּ

tempora septem donec ,ejus pars agri bestia cum & ,intingatur cœli rore in & : agri ꝗ herba in ,æris & ,ferri quod vinculo in &

וּבֶאֱסוּר דִּי־פַרְזֶל וּנְחָשׁ בְּדִתְאָא דִּי בָרָא וּבְטַל שְׁמַיָּא יִצְטַבַּע וְעִם־חֵיוַת בָּרָא חֲלָקֵהּ עַד דִּי־שִׁבְעָה עִדָּנִין

.regem meum dominum super pervenit quod ,hoc altissimi decretum & : rex interpretatio Hæc .eum super mutentur

21 יַחְלְפוּן עֲלוֹהִי׃ דְּנָה פִשְׁרָא מַלְכָּא וּגְזֵרַת עִלָּאָה הִיא דִּי מְטָת עַל־מָרִאי מַלְכָּא׃

Versio VULG. LAT.

Folia ejus pulcherrima, & fructus ejus nimius: & esca 9 universorum in ea: ſubter eam habitabant animalia & beſtiæ, & in ramis ejus converſabantur volucres cœli: & ex ea veſcebatur omnis caro. Videbam in viſione 10 capitis mei ſuper ſtratum meum, & ecce Vigil & Sanctus de cœlo deſcendit. Clamavit fortiter, & ſic ait; 11 Succidite arborem, & præcidite ramos ejus: excutite folia ejus, & diſpergite fructus ejus: fugiant beſtiæ quæ ſubter eam ſunt, & volucres de ramis ejus. Veruntamen 12 germen radicum ejus in terra ſinite, & alligetur vinculo ferreo & æreo, in herbis quæ foris ſunt, & rore cœli tingatur, & cum feris pars ejus in herba terræ. Cor ejus ab humano commutetur, & cor feræ detur ei: 13 & ſeptem tempora mutentur ſuper eum. In ſententia 14 Vigilum decretum eſt, & ſermo Sanctorum, & petitio: donec cognoſcant viventes, quoniam dominatur Excelſus in regno hominum: & cuicunque voluerit, dabit illud, & humillimum hominem conſtituet ſuper eum. Hoc ſomnium vidi ego Nabuchodonoſor rex: tu ergò 15 Baltaſſar interpretationem narra feſtinus: quia omnes ſapientes regni mei non queunt ſolutionem edicere mihi: tu autem potes, quia ſpiritus deorum ſanctorum in te eſt. Tunc Daniel, cujus nomen Baltaſſar, cœpit 16 intra ſemetipſum tacitus cogitare quaſi unâ horâ: & cogitationes ejus conturbabant eum. Reſpondens autem rex ait; Baltaſſar, ſomnium & interpretatio ejus non conturbent te. Reſpondit Baltaſſar, & dixit; Domine mi, ſomnium his qui te oderunt, & interpretatio ejus hoſtibus tuis ſit. Arborem quam vidiſti ſublimem atque 17 robuſtam, cujus altitudo pertingit ad cœlum, & aſpectus illius in omnem terram: Et rami ejus pulcherrimi, & 18 fructus ejus nimius, & eſca omnium in ea, ſubter eam habitantes beſtiæ agri, & in ramis ejus commorantes aves cœli: Tu es rex, qui magnificatus es, & invaluiſti: & 19 magnitudo tua crevit, & pervenit uſque ad cœlum, & poteſtas tua in terminos univerſæ terræ. Quòd autem 20 vidit rex Vigilem & Sanctum deſcendere de cœlo, & dicere; Succidite arborem, & diſſipate illam, attamen germen radicum ejus in terra dimittite, & vinciatur ferro & ære in herbis foris, & rore cœli conſpergatur, & cum feris ſit pabulum ejus, donec ſeptem tempora mutentur ſuper eum: Hæc eſt interpretatio ſententiæ Altiſſimi, 21 quæ pervenit ſuper dominum meum regem:

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

12 *ܛܪ̈ܦܘܗܝ ܫܦܝܪܝܢ܂ ܘܦܐܪܗ ܣܓܝ܂ ܘܡܬܪܣܝܢܘܬܐ ܠܟܠ ܒܣܪ ܐܝܬ ܒܗ܂ ܬܚܘܬܘܗܝ
ܫܪܝܢ܆ ܟܠܗܝܢ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ܂ ܘܒܣܘܟܘܗܝ ܥܫܢܝܢ ܟܠܗܘܢ ܦܪ̈ܚܬܐ ܕܫܡܝܐ܂ ܘܡܢܗ ܒܣܘܦܐ
13 ܡܬܬܪܣܐ ܗܘܐ ܟܠܗ ܒܣܪ܂ * ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܒܚܙܘܐ ܕܪܫܝ ܕܥܠ ܡܫܟܒܝ܂ ܥܝܪܐ ܘܩܕܝܫܐ
14 ܕܢܚܬ ܡܢ ܫܡܝܐ܂ * ܘܩܪܐ ܒܚܝܠܐ ܘܗܟܢܐ ܐܡܪ܂ ܦܣܘܩܘ ܐܝܠܢܐ ܘܦܫܚܘ ܣܘܟܘ̈ܗܝ
ܘܐܬܪܘ ܛܪ̈ܦܘܗܝ ܘܒܕܪܘ ܦܐܪܗ܂ ܢܥܪܩܢ ܚܝܘܬܐ ܡܢ ܬܚܘܬܘܗܝ܂ ܘܦܪ̈ܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܡܢ
15 ܣܘܟܘ̈ܗܝ܂ * ܒܪܡ ܥܩܪܐ ܕܫܪ̈ܫܘܗܝ ܒܐܪܥܐ ܫܒܘܩܘ܂ ܒܐܣܘܪܐ ܕܦܪܙܠܐ ܘܢܚܫܐ܂ ܒܬܕܐܐ ܕܒܪܐ܂ ܒܛܠܐ
16 ܕܫܡܝܐ ܢܬܛܡܫ܂ ܘܥܡ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܡܥܡܪܗ ܒܥܣܒܐ ܕܐܪܥܐ܂ * ܘܠܒܗ ܡܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ
17 ܢܫܬܢܐ܂ ܘܠܒܐ ܕܚܝܘܬܐ ܢܬܝܗܒ ܠܗ܂ ܘܫܒܥܐ ܥܕܢܝܢ ܢܬܚܠܦܘܢ ܥܠܘܗܝ܂ * ܒܦܘܩܕܢ
ܥܝܪܐ ܦܬܓܡܐ܂ ܘܒܡܐܡܪܐ ܕܩܕܝܫܐ ܫܐܠܬܐ܂ ܕܢܕܥܘܢ ܚܝܐ ܕܫܠܝܛ ܗܘ ܥܠܝܐ ܒܡܠܟܘܬܐ
18 ܕܒܢܝ̈ܢܫܐ܂ ܘܠܡܢ ܕܨܒܐ ܢܬܠܝܗ܂ ܘܠܡܟܝܟܐ ܕܒܢܝ̈ܢܫܐ ܢܩܝܡ ܥܠܝܗ܂ * ܗܢܐ ܚܠܡܐ ܚܙܝܬ ܐܢܐ
ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܡܠܟܐ܂ ܘܐܢܬ ܒܠܛܫܨܪ܂ ܦܫܪܗ ܐܡܪ ܠܝ܂ ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܚܟܝ̈ܡܐ ܕܡܠܟܘܬܝ܂
ܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܦܫܪܐ ܠܡܘܕܥܘܬܝ܂ ܘܐܢܬ ܕܢܝܐܝܠ ܡܫܟܚ ܐܢܬ܂ ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܕܐܠܗܐ ܩܕܝ̈ܫܐ
19 ܐܝܬ ܒܟ܂ * ܗܝܕܝܢ ܕܢܝܐܝܠ ܕܫܡܗ ܒܠܛܫܨܪ܂ ܐܫܬܘܡܡ ܐܝܟ ܫܥܐ ܚܕܐ܂ ܘܡܚܫܒܬܗ ܕܠܘܚܘܗܝ܂
ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ܂ ܒܠܛܫܨܪ܂ ܚܠܡܐ ܘܦܫܪܗ ܠܐ ܢܕܠܚܘܢܟ܂ ܥܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܘܐܡܪ܂
20 ܡܪܝ܂ ܚܠܡܐ ܠܣܢ̈ܐܝܟ܂ ܘܦܫܪܗ ܠܒܥܠܕܒ̈ܒܝܟ܂ * ܐܝܠܢܐ ܕܚܙܝܬ ܕܪܒܐ܂ ܘܥܫܢ܃
21 ܘܪܘܡܗ ܡܛܐ ܠܫܡܝܐ܂ ܘܚܙܘܗ ܠܟܠ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ܃ * ܛܪ̈ܦܘܗܝ ܫܦܝܪܝܢ
ܘܦܐܪܗ ܣܓܝ܂ ܘܡܬܪܣܝܢܘܬܐ ܠܟܠ ܒܣܪ ܐܝܬ ܒܗ܂ ܬܚܘܬܘܗܝ ܫܪܝܢ܆ ܟܠܗܝܢ
ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ܂ ܘܒܣܘܟܘܗܝ ܥܫܢܝܢ ܟܠܗܘܢ ܦܪ̈ܚܬܐ ܕܫܡܝܐ܃ ܘܡܢܗ ܡܬܬܪܣܐ ܗܘܐ
22 ܟܠܗ ܒܣܪ܂ * ܐܢܬ ܗܘ ܡܠܟܐ ܕܪܒܝܬ ܘܥܫܢܬ܂ ܘܪܒܝܬ ܘܡܛܝܬ ܠܫܡܝܐ܂ ܘܫܘܠܛܢܟ
23 ܠܟܠ ܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ܂ * ܘܕܚܙܐ ܡܠܟܐ ܠܥܝܪܐ ܘܩܕܝܫܐ܂ ܕܢܚܬ ܡܢ ܫܡܝܐ܂ ܘܩܪܐ ܒܚܝܠܐ
ܘܐܡܪ܂ ܦܣܘܩܘ ܐܝܠܢܐ ܘܚܒܠܘܗܝ܂ ܒܪܡ ܥܩܪܐ ܕܫܪ̈ܫܘܗܝ ܒܐܪܥܐ ܫܒܘܩܘ܂ ܒܐܣܘܪܐ
ܕܦܪܙܠܐ ܘܢܚܫܐ܂ ܒܬܕܐܐ ܕܒܪܐ܂ ܘܒܛܠܐ ܕܫܡܝܐ ܢܬܛܡܫ܂ ܘܥܡ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܡܥܡܪܗ
ܒܥܣܒܐ ܕܐܪܥܐ܂ ܘܠܒܗ ܡܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܢܫܬܢܐ܃ ܘܠܒܐ ܕܚܝܘܬܐ ܢܬܝܗܒ ܠܗ܂
24 ܥܕܡܐ ܕܫܒܥܐ ܥܕܢܝܢ ܢܬܚܠܦܘܢ ܥܠܘܗܝ܂ * ܗܢܘ ܦܫܪܗ ܡܠܟܐ܂ ܦܘܩܕܢܐ ܕܥܠܝܐ
ܕܡܛܐ ܥܠ ܡܪܝ ܡܠܟܐ܂

Frondes ejus erant pulcherrimæ, & fructus 12 ejus plurimi, cibuſque pro omni carne erat in ea: ſub ea degebant omnes beſtiæ ſylveſtres, & in ramis ejus habitabant omnes cœli volucres: demum ex ea veſcebatur omnis caro. Videbam in viſione capitis mei quod erat ſu- 13 per cubili meo, Vigilem & Sanctum de cœlo deſcendentem, Altâ voce clamantem, atque 14 ita dicentem; Exſcindite arborem, & diſcerpite ramos ejus, excutite folia, fructus diſpergite: abſcedant beſtiæ ne ſubſint ei, & volucres cœli è ramis ejus. Verùm ſtirpem radi- 15 cum ejus in terra relinquite in vinculo ferreo æneóque, in gramine campeſtri: rore cœli intingatur, & cum beſtiis agri ſit habitatio ejus in herba terræ: Animus ejus ab humano 16 mutetur, & animus belluinus detur ei; ſeptemque tempora evolvantur ſuper eam. Ex 17 mandato Vigilis hæc ſententia eſt, & ex decreto Sancti poſtulatum iſtud: quatenus cognoſcant viventes *ita* dominari Excelſum in regno hominum, ut cui voluerit det illud, & abjectiſſimum hominum ad illud evehat. Hoc 18 ſomnium vidi ego Nebuchadnoſar rex: jam tu Blitſaſar interpretationem ejus dic mihi, quia omnes ſapientes regni mei nequeunt exponere mihi; tu verò Daniel potes, quòd ſpiritus deorum ſanctorum inſit tibi. Tunc 19 Daniel, cui nomen Blitſaſar, cùm obſtupuiſſet circiter horam unam, & cogitationes ſuæ perturbâſſent eum; reſpondit rex, & dixit; Blitſaſar, ſomnium & interpretatio ejus ne te perturbent. Reſpondit Daniel, & ait; Domine mi, ſomnium iſtud oſoribus tuis *eveniat*, & interpretatio ejus inimicis tuis. Arbor 20 quam vidiſti creviſſe & ingentem evaſiſſe, adeò ut ſummitas ejus ad cœlum uſque pertingeret, & aſpectus ejus ad extremas quaſq; terræ partes, Cujus frondes pulcherrimæ, & 21 fructus plurimi, cui cibus inerat pro omni carne, ſub qua degebant omnes feræ campeſtres, cujus in ramis habitabant omnes cœli volucres, & ex qua veſcebatur omnis caro: Tu es ô rex, qui creviſti & maximus evaſiſti: 22 Creviſti, & ad cœlum perveniſti, & dominium tuum in omnes fines terræ. Quod autem 23 vidit rex Vigilem & Sanctum è cœlo deſcendentem, altâ voce clamantem, atque dicentem; Exſcindite arborem & deſtruite eam; verùm ſtirpem radicum ejus in terra relinquite in vinculo ferreo æneóque, in gramine campeſtri; ut rore cœli intingatur, & cum beſtiis agri ſit habitatio ejus in herba terræ: animus ejus ex humano mutetur, & animus belluinus detur ei, donec tempora ſeptem evolvantur ſuper eam: Hæc eſt interpretatio 24 *ejus* O rex: Sententia Altiſſimi ſuperveniet domino meo regi

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Translatione LATINA.

Τὰ φύλλα αὐτοῦ ὡραῖα, ϗ ὁ καρπὸς αὐτοῦ πολύς, ϗ τροφὴ πάντων ἐν αὐτῷ, ϗ ὑποκάτω αὐτοῦ κατεσκήνουν τὰ θηρία τὰ ἄγρια, ϗ ἐν τοῖς κλάδοις αὐτοῦ κατῴκουν τὰ ὄρνεα τοῦ οὐρανοῦ, ϗ ἐξ αὐτοῦ ἐτρέφετο πᾶσα σάρξ. Ἐθεώρουν ἐν ὁράματι τῆς νυκτὸς ἐπὶ τῆς κοίτης (μ) μου, ϗ ἰδοὺ εἲρ, ϗ ἅγιος ἀπ' οὐρανοῦ κατέβη, Καὶ ἐφώνησεν ἐν ἰσχύϊ, ϗ οὕτως εἶπεν, Ἐκκόψατε τὸ δένδρον, ϗ ἐκτίλατε τοὺς (ν) κλάδους αὐτοῦ, ϗ ἐκτινάξατε τὰ φύλλα αὐτοῦ, ϗ διασκορπίσατε (ξ) τὸν καρπὸν αὐτοῦ· σαλευθήτωσαν τὰ θηρία ὑποκάτωθεν αὐτοῦ, ϗ τὰ ὄρνεα ἀπὸ τῶν κλάδων αὐτοῦ. Πλὴν τὴν φυὴν τῶν ῥιζῶν αὐτοῦ ἐν τῇ γῇ ἐάσατε, ϗ ἐν δεσμῷ σιδηρῷ ϗ χαλκῷ, ϗ ἐν τῇ χλόῃ τῇ ἔξω, ϗ ἐν τῇ δρόσῳ τοῦ οὐρανοῦ κοιτασθήσεται, ϗ μετὰ τῶν θηρίων ἡ μερὶς αὐτοῦ ἐν τῷ χόρτῳ τῆς γῆς. Ἡ καρδία αὐτοῦ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων ἀλλοιωθήσεται, ϗ καρδία θηρίου δοθήσεται αὐτῷ, ϗ ἑπτὰ καιροὶ ἀλλαγήσονται ἐπ' αὐτόν. Διὰ συγκρίματος εἲρ ὁ λόγος, (ο) ϗ ῥῆμα ἁγίων τὸ ἐπερώτημα, ἵνα γνῶσιν οἱ ζῶντες, ὅτι κύριός ἐστιν ὁ ὕψιστος τῆς βασιλείας τῶν ἀνθρώπων, ϗ ᾧ ἐὰν δόξῃ, δώσει αὐτήν, ϗ ἐξουδένωμα ἀνθρώπων (π) ἀναστήσει ἐπ' αὐτήν. Τοῦτο τὸ ἐνύπνιον ὃ ἴδον ἐγὼ Ναβουχοδονόσορ ὁ βασιλεύς, ϗ σὺ Βαλτάσαρ τὸ σύγκριμα εἰπόν, ὅτι πάντες οἱ σοφοὶ τῆς βασιλείας μου οὐ δύνανται τὸ σύγκριμα αὐτοῦ δηλῶσαί μοι· ϗ σὺ Δανιὴλ δύνασαι, ὅτι πνεῦμα θεοῦ (ρ) ἅγιον ἐν σοί. Τότε Δανιήλ, οὗ τὸ ὄνομα (σ) Βαλτάσαρ, ἀπηνεώθη ὡσεὶ ὥραν μίαν, ϗ οἱ διαλογισμοὶ αὐτοῦ συνετάρασσον αὐτόν. (τ) καὶ ἀπεκρίθη Βαλτάσαρ, εἶπε, (υ) Κύριε, τὸ ἐνύπνιον ἔστω τοῖς μισοῦσί σε, ϗ ἡ σύγκρισις αὐτοῦ τοῖς ἐχθροῖς σου. Τὸ δένδρον ὃ εἶδες τὸ μεγαλυνθὲν ϗ τὸ ἰσχυκός, οὗ τὸ ὕψος (φ) ἔφθανεν εἰς τὸν οὐρανόν, καὶ τὸ κύτος αὐτοῦ εἰς πᾶσαν τὴν γῆν, (χ) Καὶ τὰ φύλλα αὐτοῦ εὐθαλῆ, καὶ ὁ καρπὸς αὐτοῦ πολύς, ϗ τροφὴ πᾶσιν ἐν αὐτῷ· ὑποκάτω αὐτοῦ κατῴκουν τὰ θηρία τὰ ἄγρια, καὶ ἐν τοῖς κλάδοις αὐτοῦ (ψ) κατεσκήνουν τὰ ὄρνεα τοῦ οὐρανοῦ, σὺ εἶ, βασιλεῦ, ὅτι ἐμεγαλύνθης ϗ ἴσχυσας, ϗ ἡ μεγαλωσύνη σου ἐμεγαλύνθη, ϗ ἔφθασεν εἰς τὸν οὐρανόν, καὶ ἡ (') κυριεία σου εἰς τὰ πέρατα τῆς γῆς. Καὶ ὅτι εἶδεν ὁ βασιλεὺς εἲρ, ϗ ἅγιον καταβαίνοντα (") ἀπὸ τοῦ οὐρανοῦ, ϗ εἶπεν, Ἐκτίλατε τὸ δένδρον, ϗ διαφθείρατε αὐτό, πλὴν τὴν φυὴν τῶν ῥιζῶν αὐτοῦ (ω) ἐν τῇ γῇ ἐάσατε, ϗ ἐν δεσμῷ σιδηρῷ (α) καὶ ἐν χαλκῷ, καὶ ἐν τῇ χλόῃ τῇ ἔξω, καὶ ἐν τῇ δρόσῳ τοῦ οὐρανοῦ αὐλισθήσεται, καὶ μετὰ θηρίων ἀγρίων ἡ μερὶς αὐτοῦ, ἕως οὗ ἑπτὰ καιροὶ ἀλλοιωθῶσιν ἐπ' αὐτόν· Τοῦτο ἡ σύγκρισις αὐτοῦ, βασιλεῦ, ϗ σύγκριμα ὑψίστου ἐστίν, ὃ ἔφθασεν ἐπὶ τὸν κύριόν μου τὸν βασιλέα,

Folia ejus pulchra : & fructus ejus multus : & esca universorum in 9
ea : & subter eam habitabant bestiæ agrestes : et in ramis ejus habitabant
volucres cœli : & ex ea vescebatur omnis caro. Videbam in visione noctis 10
in cubili meo : Et ecce (i) Hir, et Sanctus de cœlo descendit, Clamavitque 11
fortiter, et sic ait ; Succidite arborem, et evellite ramos ejus, & excutite
folia ejus, et dispergite fructum ejus : moveantur bestiæ desubter eam, et
volucres de ramis ejus. Veruntamen germen radicum ejus in terra sinite : 12
et in vinculo ferreo, et æreo, et in herba, quæ foris est, et in rore cœli cu-
babit : et cum bestiis pars ejus in herba terræ. Cor ejus ab hominibus com- 13
mutabitur : et cor feræ dabitur ei : et septem tempora mutabuntur super
eum. Per decretum Hir sermo : et verbum, Sanctorum petitio : ut cog- 4
noscant viventes, quòd Dominus est ipse Altissimus regni hominum, et
cuicunque voluerit, dabit illud, & quod pro nihilo habetur ab ho-
minibus, eriget super illud. Hoc est somnium, quod vidi ego Na- 15
buchodonosor rex : Et tu, Baltasar, conjecturam* dicito : quia omnes sa-
pientes regni mei non possunt conjecturam ejus indicare mihi. Tu autem,
Daniel, potes : quia spiritus Dei sanctus est in te. Tunc Daniel, cujus 16
nomen Baltasar, (k) obstupuit quasi horâ unâ : & cogitationes ejus con-
turbabant (l) eum. Et respondit Baltasar, et dixit ; Domine, somnium sit
his qui te oderunt : et conjectura ejus hostibus tuis. Arbor, quam vidisti 17
magnificatam, et corroboratam, cujus altitudo perveniebat ad cœlum, et
latitudo ejus in omnem terram, Et folia ejus florentia, et fructus ejus 18
multus, et esca omnibus in ea, subter eam habitabant bestiæ agri, et in ra-
mis ejus commorabantur aves cœli ; Tu es, ô rex, quia magnificatus es, 19
et invaluisti, et magnitudo tua magnificata est, et pervenit ad cœlum, et
potestas tua ad terminos terræ. Quòd autem vidit rex Hir, et Sanctum 20
descendentem de cœlo, et dixit ; Evellite arborem, et dissipate illam, at-
tamen germen radicum ejus in terra dimittite, et in vinculo ferreo, et in
ære, et in herba, quæ foris, et in rore cœli commorabitur, et cum bestiis
agrestibus pars ejus, donec septem tempora mutentur super eum ; Hæc est 21
conjectura ejus, ô rex : et sententia Altissimi est, quæ pervenit super do-
minum meum regem :

MS.A. (μ) μου ἐγρήγορος ϗ (ν)* καρπὸς (ξ) τοὺς καρποὺς (ο) ϗ λόγος (π) ἀναστήσεται (ρ) ἐν σοὶ ἅγιον. (σ) Βαρτάσαρ, (τ) ϗ ἀπεκρίθη ὁ βασιλεὺς, ϗ εἶπεν, Βαρτάσαρ, τὸ ἐνύπνιον ϗ ἡ σύγκρισις μὴ κατασπευσάτω σε. καὶ ἀπεκρίθη Βαρτάσαρ ϗ (υ) Κύριε, ἔστω τὸ ἐνύπνιον τοῖς (φ) ἔφθασεν (χ) Τὰ φύλλα (ψ) κατῴκουν (') κυριεία (") ἐκ τοῦ (ω) ἐάσατε ἐν τῇ γῇ, (α) ϗ χαλκῷ,

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* أوراقها بهية * وثمرها كثير * وغذاء الكل فيها * وتحتها أوت الوحوش البرية * وفي أغصانها
سكنت طيور السماء * ومنها اغتذى كل جسد * نظرت في رؤيا الليل على مضجعي 13
وإذا يقظان وقدوس نزل من السماء * وصوت بقوة وقال هكذا * اقطعوا الشجرة وانزعوا 14
أغصانها * وانفضوا أوراقها * وبددوا ثمرها * لتتزعزع الوحوش من تحتها * والطيور من
أغصانها * لكن غرس أصولها دعوه في الأرض * وبرباط حديد ونحاس * وفي العشب 15
الذي من خارج وطل السماء يسكن * ومع الوحوش نصيبه في عشب الأرض * وقلبه 16
يتبدل من البشر * ويعطي له قلب وحش * ويتبدل عليه سبعة أزمنة * وبحكم يقظان 17
القول * وكلمة القديسين المسئلة * لكي تعلم الأحياء أن الرب هو العالي على مملكة
البشر * ويعطيها لمن يرى * ويقيم عليها رذلة الناس * هذا المنام الذي رأيته أنا الملك 18
بختنصر * وأنت يا بلطشاصر قل التأويل * لأن جميع حكماء مملكتي لا يستطيعون أن
يبدوا تأويله * وأنت يا دانيال تستطيع * لأن روح الله القدوس فيك * حينئذ دانيال 19
الذي اسمه بلطشاصر * أطرق نحو ساعة واحدة * وأفكاره أقلقته * فأجاب الملك وقال
يا بلطشاصر المنام والتأويل لا يقلقاك * فأجاب بلطشاصر وقال له * يا سيد يكون الحلم
لمبغضيك * وتأويله لأعدائك * الشجرة التي رأيتها عظمت وقويت * وبلغ ارتفاعها إلى 20
السماء * وسعتها إلى كل الأرض * وأوراقها خصبة * وثمرها كثير * وفيها طعام للكل * تحتها 21
سكنت الوحوش البرية * وفي أغصانها استظلت طيور السماء * أنت أيها الملك * لأنك 22
عظمت وقويت * وعظمتك عظمت وبلغت إلى السماء * وسيادتك إلى أقطار الأرض * وأن 23
الملك رأى يقظان وقدوسا نزل من السماء وقال * اجتثوا الشجرة وأفسدوها * لكن أعادة
جبلة أصولها دعوه في الأرض * وبرباط حديد ونحاس * وفي العشب الذي خارجا وفي طل
السماء يتدبر * ومع الوحوش البرية نصيبه إلى أن يتبدل عليه سبعة أزمنة * هذا تأويله 24
أيها الملك * جرم العلي هو الذي بلغ إلى سيدي الملك *

* Folia ejus erant formosa, fructus uberri- 12
mus, ut omnium esca esset in ea : sub
eam se recipiebant animalia campestria,
& in ramis ejus habitabant volucres cœ-
li : & ex ea vescebatur omne corpus.
Vidi in visione nocturna super cubili 13
meo, cùm ecce Vigil & Sanctus descendit
è cœlo. Et clarâ voce clamavit, & 14
ita dixit ; Succidite arborem, & evel-
lite ramos ejus, excutite folia ejus, &
fructus ejus dispergite : moveantur ani-
malia de sub ipsa, & volucres è ramis
ejus. At verò plantam radicum ejus 15
in terra sinite, & in vinculo ferreo
æneoque : in herba viridi quæ foris est,
& rore cœli habitet, & cum belluis sit
pars ejus in herba terræ : Cor ejus im- 16
mutetur ab hominibus, & detur ei cor
bestiæ ; septémque tempora mutentur su-
per eum. Ex decreto quidem Vigilis est 17
sermo, & ex verbo Sanctorum petitio :
ut sciant viventes quòd Dominus super-
eminet regno hominum, & dat illud
cui arbitratur, & evehit ad illud abje-
ctissimos hominum. Hoc est somnium 18
quod vidi ego rex Bochtonassar : tu O
Baltasasar dic interpretationem : nam
omnes sapientes regni mei nequeunt indi-
care interpretationem ejus ; tu verò O
Daniel potes, quia spiritus Dei sanctus
est in te. Tunc Daniel cujus nomen erat 19
Baltasasar, vultum taciturnus demisit
circiter horam unam, & cogitationes
ejus conturbabant eum : sed affatus eum
rex ait ; O Baltasasar, somnium & inter-
pretatio ejus ne te conturbent. Respondit
Baltasasar, & ait illi, O domine, somnium
osoribus tuis sit, & interpretatio ejus
hostibus tuis. Arbor quam vidisti cre- 20
visse & invaluisse, altitudinem ejus ad
cœlum usque pervenisse, & latitudinem
ejus ad universam terram ; Folia ejus 21
uberasse, & fructum ejus permultum,
escam in ea omnibus esse, sub ea habi-
tare animalia campestria, & in ramis
ejus umbram petere volucres cœli : Tu es 22
O rex : tu enim magnificatus es & in-
valuisti ; amplitudo tua crevit, & ad
cœlum usque pervenit ; & dominatus
tuus ad extremas terræ partes. Quòd 23
autem rex viderit Vigilem & Sanctum
descendisse de cœlo & dixisse ; Denuda-
te arborem & corrumpite eam, sed re-
staurationem plasmatis radicum ejus in
terra sinite, & in vinculo ferreo æneó-
que ; & in gramine quod foris est, inque
rore cœli commoretur ; & cum belluis
sylvestribus sit pars ejus, quousque mu-
tentur super eum septem tempora : Hæc 24
est interpretatio ejus O rex : Decretum
Altissimi est quod pervenit ad dominum
meum regem.

tore ex & , ſapient tibi bobus ſicut herba & ,tuam habitationem eſſe fundum ad agri feræ cum & , homine ab trudentes te Et

22 וְלָךְ טָרְדִין מִן־אֲנָשָׁא וְעִם־חֵיוַת בָּרָא לֶהֱוֵה מְדֹרָךְ וְעִשְׂבָּא כְתוֹרִין לָךְ יְטַעֲמוּן וּמִטַּל

, hominis regno in altiſſimus dominator quod ſcias donec , te ſuper mutabuntur tempora ſeptem & , tingentes te cœlorum

שְׁמַיָּא לָךְ מְצַבְּעִין וְשִׁבְעָה עִדָּנִין יַחְלְפוּן עֲלָיךְ עַד דִּי־תִנְדַּע דִּי־שַׁלִּיט עִלָּאָה בְּמַלְכוּת אֲנָשָׁא

ex : conſtans tibi tuum regnum , arboris quæ ejus radicum radicem dimittere dixerunt quod Et.illud dabit,voluerit cui ei &

23 וּלְמַן־דִּי יִצְבֵּא יִתְּנִנַּהּ׃ וְדִי אֲמַרוּ לְמִשְׁבַּק עִקַּר שָׁרְשׁוֹהִי דִּי אִילָנָא מַלְכוּתָךְ לָךְ קַיָּמָה מִן־

, redime juſtitia in tua peccata & , te ſuper ſit pulchrum meum conſilium , rex Quamobrem .cœli dominantes quod cognoveris quo

24 דִּי תִנְדַּע דִּי שַׁלִּטִן שְׁמַיָּא׃ לָהֵן מַלְכָּא מִלְכִּי יִשְׁפַּר עֲלָיךְ וַחֲטָיָךְ בְּצִדְקָה פְרֻק

.regem Nebuchadneſar ſuper venit Omne .tuæ paci prolongatio erit ecce:afflictorum miſerando in tuas iniquitates &

25 וַעֲוָיָתָךְ בְּמִחַן עֲנָיִן הֵן תֶּהֱוֵא אַרְכָה לִשְׁלֵוְתָךְ׃ כֹּלָּא מְטָא עַל־נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא׃

Nonne : ait & , rex Reſpondit .fuit deambulans Babel regni palatio ſuper : duodecim lunarum fine In

26 27 לִקְצָת יַרְחִין תְּרֵי־עֲשַׂר עַל־הֵיכַל מַלְכוּתָא דִּי בָבֶל מְהַלֵּךְ הֲוָה׃ עָנֵה מַלְכָּא וְאָמַר הֲלָא

? mei decoris gloriam in & , meæ fortitudinis robore in , regni domum in eam ædificavi ego quam : magna Babel ipſa hæc

דָּא־הִיא בָּבֶל רַבְּתָא דִּי־אֲנָה בֱנַיְתַהּ לְבֵית מַלְכוּ בִּתְקַף חִסְנִי וְלִיקָר הַדְרִי׃

.te à tranſivit regnum , rex Nebuchadneſar , dicentes Tibi .eſt delapſa cœlis è vox , regis ore in ſermo Adhuc

28 עוֹד מִלְּתָא בְּפֻם מַלְכָּא קָל מִן־שְׁמַיָּא נְפַל לָךְ אָמְרִין נְבוּכַדְנֶצַּר מַלְכָּא מַלְכוּתָה עֲדָת מִנָּךְ׃

mutabuntur tempora ſeptem & , ſapient tibi bobus ſicut herba ,tua habitatio agri beſtia cum & , trudentes te homine ab Et

29 וּמִן־אֲנָשָׁא לָךְ טָרְדִין וְעִם־חֵיוַת בָּרָא מְדֹרָךְ עִשְׂבָּא כְתוֹרִין לָךְ יְטַעֲמוּן וְשִׁבְעָה עִדָּנִין יַחְלְפוּן

ſermo hora ea In .illud dabit voluerit cui ei & , hominis regno in altiſſimus dominator quod agnoſcas donec , te ſuper

30 עֲלָיךְ עַד דִּי־תִנְדַּע דִּי־שַׁלִּיט עִלָּאָה בְּמַלְכוּת אֲנָשָׁא וּלְמַן־דִּי יִצְבֵּא יִתְּנִנַּהּ׃ בַּהּ־שַׁעֲתָא מִלְּתָא

:tingebatur ejus corpus cœlorum rore de & , comedebat boves ut herbam & , eſt detruſus homine ex &,Nebuchadneſar ſuper eſt finitus

סָפַת עַל־נְבוּכַדְנֶצַּר וּמִן־אֲנָשָׁא טְרִיד וְעִשְׂבָּא כְתוֹרִין יֵאכֻל וּמִטַּל שְׁמַיָּא גִּשְׁמֵהּ יִצְטַבַּע

cœlos ad meos oculos Nebuchadneſar ego dierum fine in Et .avium ſicut ejus ungues & ,crevit aquilarum ſicut ejus capillus donec

31 עַד דִּי שַׂעְרֵהּ כְּנִשְׁרִין רְבָה וְטִפְרוֹהִי כְצִפְּרִין׃ וְלִקְצָת יוֹמַיָּה אֲנָה נְבוּכַדְנֶצַּר עַיְנַי לִשְׁמַיָּא

poteſtas ,ejus poteſtas quia ,glorificavi & ,laudavi ſeculi viventem & ;benedixi altiſſimo & ,eſt reverſa me ſuper mea cognitio & ,levavi

נִטְלֵת וּמַנְדְּעִי עֲלַי יְתוּב וּלְעִלָּיאָ בָּרְכֵת וּלְחַי עָלְמָא שַׁבְּחֵת וְהַדְּרֵת דִּי שָׁלְטָנֵהּ שָׁלְטָן

ſuam voluntatem juxta &,reputati nihil tanquam terræ habitatores omnes Et.generatione & generatione cum ejus regnum & ; ſeculi

32 עָלַם וּמַלְכוּתֵהּ עִם־דָּר וְדָר׃ וְכָל־דָּיְרֵי אַרְעָא כְּלָה חֲשִׁיבִין וּכְמִצְבְּיֵהּ

ipſo In ? feciſti Quid : ei dicat &,ejus manum in percutiat qui eſt non & :terræ habitatoribus & ,cœlorum exercitu in faciens

33 עָבֵד בְּחֵיל שְׁמַיָּא וְדָאְרֵי אַרְעָא וְלָא אִיתַי דִּי־יְמַחֵא בִידֵהּ וְיֵאמַר לֵהּ מָה עֲבַדְתְּ׃ בֵּהּ־

, mei duces me & , me ſuper redit meus ſplendor & meus decor mei regni gloriam ad & , me ſuper eſt reverſa mea cognitio tempore

זִמְנָא מַנְדְּעִי יְתוּב עֲלַי וְלִיקַר מַלְכוּתִי הַדְרִי וְזִוִי יְתוּב עֲלַי וְלִי הַדָּבְרַי

ego Nunc .mihi eſt addita amplior magnificentia & , eſt confirmatum meo regno ſuper & : quæſierunt mei principes &

34 וְרַבְרְבָנַי יְבַעוֹן וְעַל־מַלְכוּתִי הָתְקְנַת וּרְבוּ יַתִּירָה הוּסְפַת לִי׃ כְּעַן אֲנָה

qui &:judicium ejus ſemitæ & ,veritas ejus opera omnia quia,cœlorum regem glorificans & , exaltans & , laudans Nebuchadneſar

נְבוּכַדְנֶצַּר מְשַׁבַּח וּמְרוֹמֵם וּמְהַדַּר לְמֶלֶךְ שְׁמַיָּא דִּי כָל־מַעֲבָדוֹהִי קְשֹׁט וְאֹרְחָתֵהּ דִּין וְדִי

.humiliare valens ſuperbia in ambulantes

מַהְלְכִין בְּגֵוָה יָכִל לְהַשְׁפָּלָה׃

Verſio VULG. LAT.

Ejicient te ab hominibus, & cum beſtiis feriſque erit habitatio tua, & fœnum ut bos comedes, & rore cœli infunderis: ſeptem quoque tempora mutabuntur ſuper te, donec ſcias quòd dominetur Excelſus ſuper regnum hominum, & cuicunque voluerit, det illud. Quòd autem præcepit ut relinqueretur germen radicum ejus, id eſt, arboris: regnum tuum tibi manebit, poſtquàm cognoveris poteſtatem eſſe cœleſtem. Quam ob rem, rex conſilium meum placeat tibi, & peccata tua eleemoſynis redime, & iniquitates tuas miſericordiis pauperum: forſitan ignoſcet delictis tuis. Omnia hæc venerunt ſuper Nabuchodonoſor regem. Poſt finem menſium duodecim, in aula Babylonis deambulabat. Reſpondítque rex, & ait; Nonne hæc eſt Babylon magna, quam ego ædificavi in domum regni, in robore fortitudinis meæ, & in gloria decóris mei? Cúmque ſermo adhuc eſſet in ore regis, vox de cœlo ruit: Tibi dicitur, Nabuchodonoſor rex; Regnum tuum tranſibit à te, Et ab hominibus ejicient te, & cum beſtiis & feris erit habitatio tua: fœnum quaſi bos comedes, & ſeptem tempora mutabuntur ſuper te, donec ſcias quòd dominetur Excelſus in regno hominum, & cuicunque voluerit, det illud. Eâdem horâ ſermo completus eſt ſuper Nabuchodonoſor, & ex hominibus abjectus eſt, & fœnum ut bos comédit, & rore cœli corpus ejus infectum eſt: donec capilli ejus in ſimilitudinem aquilarum creſcerent, & ungues ejus quaſi avium. Igitur poſt finem dierum, ego Nabuchodonoſor oculos meos ad cœlum levavi, & ſenſus meus redditus eſt mihi: & Altiſſimo benedixi, & viventem in ſempiternum laudavi, & glorificavi: quia poteſtas ejus poteſtas ſempiterna, & regnum ejus in generationem & generationem. Et omnes habitatores terræ apud eum in nihilum reputati ſunt: juxta voluntatem enim ſuam facit tam in virtutibus cœli quàm in habitatoribus terræ: & non eſt qui reſiſtat manui ejus, & dicat ei; Quarè feciſti? In ipſo tempore ſenſus meus reverſus eſt ad me, & ad honorem regni mei decorémque perveni: & figura mea reverſa eſt ad me: & optimates mei, & magiſtratus mei requiſierunt me, & in regno meo reſtitutus ſum: & magnificentia amplior addita eſt mihi. Nunc igitur ego Nabuchodonoſor laudo, & magnifico, & glorifico regem cœli: quia omnia opera ejus vera, & viæ ejus judicia, & gradientes in ſuperbia poteſt humiliare.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

25 [illegible]
[illegible]
26 [illegible]
27 [illegible]
28 [illegible]
29 [illegible]
[illegible]
30 [illegible]
31 [illegible]
32 [illegible]
[illegible]
[illegible]
33 [illegible]
[illegible]
[illegible]
34 [illegible]
[illegible]
35 [illegible]
[illegible]
36 [illegible]
[illegible]
37 [illegible]
[illegible]
[illegible]

Nam ab hominibus te depellent & cum beſtiis agri erit habitatio tua, herbámque velut bovi comedendam tibi præbebunt, rore cœli intingêris, ſeptémque tempora ſuper te evolventur: uſque dum agnoſcas dominari Excelſum in regno hominum, ita ut cui voluerit, conferat illud. Quòd autem dixit ut relinqueretur ſtirps radicum arboris, regnum tuum tibi manebit, ubi cognoveris dominium de cœlo eſſe. Proindè conſilium meum probetur tibi, & peccata tua eleemoſynis redime, & iniquitatem tuam miſericordiâ erga imbecillos: uſquedùm amoveat à te inſipientias tuas. Hæc omnia contigerunt Nebuchadnoſari regi. Poſt menſes duodecim, ſuper palatium regni ſui quod erat Babylone, deambulabat Nebuchadnoſar rex, Et proloquens dicebat; Nónne hæc eſt Babylon magna quam ego ædificavi in regiam meam, ad imperium meum potentiſſimum, & gloriam meam? Sermone hoc adhuc verſante in ore regis, vox advenit è cœlo; Tibi dicitur Nebuchadnoſar rex, regnum tuum à te elapſum eſſe: Ex hominibus te depellendum, & cum beſtiis agri fore habitationem tuam, fœno ceu bovem te cibandum, & rore cœli intingendum, ſeptémque tempora ſuper te evolvenda: donec ſcias dominari Deum excelſum in regno hominum, ut cui voluerit, conferat illud, & abjectiſſimum hominum ad illud evehat. Eâdem hora verbum illud impletum eſt de Nebuchadnoſare rege: nam ex hominibus depulſus fœnum ceu bos comêdit, & rore cœli tinctus eſt: adeoque pili ejus creverunt ut aquilarum, & ungues ejus ut volucrum. Cum autem exacti fuiſſent dies illi, ego Nebuchadnoſar rex oculos meos in cœlum ſuſtuli, mens mea rediit ad me, Excelſo benedixi, viventem in ſecula laudavi & exornavi; quòd dominium ejus dominium ſit ſempiternum, & regnum ejus in generationem generationum: Omnes habitatores terræ ut nihil ab eo reputentur, & quicquid vult agat tam in exercitibus cœli quàm in habitatoribus terræ: neque ſit qui manum ejus criminetur, ac dicat ei, Quid agis? Eo ipſo tempore mens mea rediit ad me, & magnates mei, ducéſque militiæ meæ requiſiverunt me, in regno meo fui confirmatus, & amplitudo major adjecta fuit mihi. Proindè ego Nebuchadnoſar laudo, extollo, atque celebro cœli regem; quòd omnia opera ejus ſint ex juſtitia, & viæ ejus judicium: & eos qui inſolenter incedunt, poſſit humiliare.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

Καί σε ἐκδιώξουσιν ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων, καὶ μετὰ θηρίων ἀγρίων ἔσαι ἡ κατοικία σου, καὶ χόρτον ὡς βοῦν ψωμιοῦσί σε, καὶ ἀπὸ τῆς δρόσου τοῦ οὐρανοῦ αὐλισθήσῃ, καὶ ἑπτὰ καιροὶ ἀλλαγήσονται ἐπὶ σέ, ἕως οὗ γνῷς ὅτι κυριεύει ὁ ὕψιστος τῆς βασιλείας τῶν ἀνθρώπων, καὶ ᾧ ἂν δόξῃ, δώσει αὐτήν. Καὶ ὅτι (β) εἶπαν, Ἐάσατε τὴν (γ) φυὴν τῶν ῥιζῶν τοῦ δένδρου· ἡ βασιλεία σου σοὶ μένει, ἀφ᾽ ἧς ἂν γνῷς τὴν ἐξουσίαν τὴν (δ) ἐπουράνιον. Διατοῦτο βασιλεῦ ἡ βουλή μου ἀρεσάτω σοι, καὶ τὰς ἁμαρτίας σου ἐν ἐλεημοσύναις λύτρωσαι, καὶ τὰς ἀδικίας (ε) ἐν οἰκτιρμοῖς πενήτων· ἴσως ἔσαι μακρόθυμος τοῖς παραπτώμασί σου ὁ θεός. Ταῦτα πάντα ἔφθασεν ἐπὶ Ναβουχοδονόσορ τὸν βασιλέα. Μετὰ δωδεκάμηνον, ἐπὶ τῷ ναῷ τῆς βασιλείας αὐτοῦ ἐν Βαβυλῶνι περιπατῶν, Ἀπεκρίθη (ζ) ὁ βασιλεύς, καὶ εἶπεν, Οὐχ αὕτη ἐστὶ Βαβυλὼν ἡ μεγάλη, ἣν ἐγὼ ᾠκοδόμησα εἰς οἶκον βασιλείας, ἐν τῷ κράτει τῆς ἰσχύος μου, εἰς τιμὴν τῆς δόξης μου; Ἔτι τοῦ λόγου (η) ἐν τῷ στόματι τοῦ βασιλέως ὄντος, φωνὴ (θ) ἀπ᾽ οὐρανοῦ ἐγένετο, Σοὶ λέγουσι Ναβουχοδονόσορ βασιλεῦ, Ἡ βασιλεία (ι) παρῆλθεν ἀπὸ σοῦ, Καὶ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων σε (κ) ἐκδιώκουσι, καὶ μετὰ θηρίων ἀγρίων ἡ κατοικία σου, καὶ χόρτον ὡς βοῦν (*) ψωμιοῦσί σε, καὶ ἑπτὰ καιροὶ ἀλλαγήσονται ἐπὶ σέ, (λ) ἕως γνῷς ὅτι κυριεύει ὁ ὕψιστος τῆς βασιλείας τῶν ἀνθρώπων, καὶ ᾧ (μ) ἂν δόξῃ, δώσει αὐτήν. Αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ὁ λόγος συνετελέσθη ἐπὶ Ναβουχοδονόσορ (ν), καὶ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων ἐξεδιώχθη, καὶ χόρτον ὡς βοῦς ἤσθιε, καὶ ἀπὸ τῆς δρόσου τοῦ οὐρανοῦ τὸ σῶμα αὐτοῦ ἐβάφη, (ξ) ἕως αἱ τρίχες αὐτοῦ ὡς λεόντων ἐμεγαλύνθησαν, καὶ οἱ ὄνυχες αὐτοῦ ὡς ὀρνέων. Καὶ μετὰ τὸ πλῆθος τῶν ἡμερῶν, ἐγὼ Ναβουχοδονόσορ τοὺς ὀφθαλμούς μου εἰς τὸν οὐρανὸν ἀνέλαβον, καὶ αἱ φρένες μου ἐπ᾽ ἐμὲ ἐπεστράφησαν, καὶ τῷ ὑψίστῳ ηὐλόγησα, καὶ τῷ ζῶντι εἰς (ο) τὸν αἰῶνα ᾔνεσα, καὶ ἐδόξασα, ὅτι ἡ ἐξουσία αὐτοῦ ἐξουσία αἰώνιος, καὶ ἡ βασιλεία αὐτοῦ εἰς γενεὰν καὶ γενεάν, καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν ὡς οὐδὲν ἐλογίσθησαν· καὶ κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ ποιεῖ ἐν τῇ δυνάμει τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐν τῇ κατοικίᾳ τῆς γῆς· καὶ οὐκ ἔστιν ὃς ἀντιποιήσεται τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἐρεῖ αὐτῷ, Τί ἐποίησας; Αὐτῷ τῷ καιρῷ αἱ φρένες μου ἐπεστράφησαν ἐπ᾽ ἐμέ, καὶ εἰς τὴν τιμὴν τῆς βασιλείας μου ἦλθον· καὶ ἡ μορφή μου ἐπέστρεψεν ἐπ᾽ ἐμέ, καὶ οἱ τύραννοί μου, καὶ οἱ μεγιστᾶνές μου ἐζήτουν με, καὶ ἐπὶ τὴν βασιλείαν μου ἐκραταιώθην, καὶ μεγαλωσύνη περισσοτέρα προσετέθη μοι. Νῦν οὖν ἐγὼ Ναβουχοδονόσορ αἰνῶ καὶ ὑπερυψῶ καὶ δοξάζω τὸν βασιλέα τοῦ οὐρανοῦ, ὅτι πάντα τὰ ἔργα αὐτοῦ ἀληθινά, καὶ αἱ τρίβοι αὐτοῦ κρίσεις, καὶ πάντας τοὺς πορευομένους ἐν ὑπερηφανίᾳ δύναται ταπεινῶσαι. (†)

Et ejicient te ab hominibus, & cum beſtiis agreſtibus erit habitatio tua: 22
& fœno, ut bovem, paſcent te: & de (m) rore cœli commoraberis: &
ſeptem tempora mutabuntur ſuper te: donec ſcias, quòd dominatur Excelſus
ſuper regnum hominum, & cuicunque voluerit, dabit illud. Quòd 23
autem (n) dixerunt, Dimittite germen radicum arboris; regnum tuum tibi
manet, poſtquàm cognoveris poteſtatem cœleſtem. Quamobrem, rex, conſilium 24
meum placeat tibi: & peccata tua in eleemoſynis redime, & iniquitates
in miſerationibus pauperum: fortaſſe erit longanimis delictis tuis
Deus. Omnia hæc venerunt ſuper Nabuchodonoſor regem. Poſt duodecim 25
menſes, in aula regni ſui, in Babylone ambulans Reſpondit rex, & 26
dixit; Nónne hæc eſt Babylon magna, quam ego ædificavi in domum regni, 27
in robore fortitudinis meæ, in honorem gloriæ meæ? Cum adhuc ſermo 28
eſſet in ore regis, vox de cœlo facta eſt; Tibi (o) dicunt, Nabuchodonoſor
rex; Regnum tranſiit à te, Et ab hominibus te ejiciunt, & cum 29
beſtiis agreſtibus habitatio tua, & fœno, ut bovem, cibabunt te: & ſeptem
tempora mutabuntur ſuper te: donec ſcias, quòd dominatur Excelſus
ſuper regnum hominum, & cuicunque voluerit, dabit illud. Eâdem horâ 30
ſermo completus eſt ſuper Nabuchodonoſor: & ex hominibus ejectus eſt,
& fœnum, ut bos, comêdit, & de rore cœli corpus ejus infectum eſt; donec
capilli ejus, quaſi leonum, creverunt, & ungues ejus, quaſi avium.
Et poſt finem dierum ego Nabuchodonoſor oculos meos ad cœlum (p) levavi, 31
& renes mei ad me reverſi ſunt: & Altiſſimo benedixi, & Viventem
in ſempiternum laudavi, & glorificavi, quia poteſtas ejus, poteſtas
ſempiterna, & regnum ejus in generationem, & generationem: Et omnes 32
habitatores terræ, quaſi nihil, computati ſunt. Et juxta voluntatem ſuam
facit in virtute cœli, & in habitatione terræ: & non eſt qui reſiſtat manui
ejus, & dicat ei, Quid feciſti? Ipſo tempore renes mei reverſi ſunt ad 33
me: & ad honorem regni mei veni: & figura mea reverſa eſt ad me: &
tyranni mei, & magiſtratus mei quærebant me: & in regno meo confortatus
ſum: & magnificentia amplior addita eſt mihi. Nunc igitur ego 34
Nabuchodonoſor laudo, & ſuperexalto, & glorifico regem cœli, quia
omnia opera ejus vera, & ſemitæ ejus judicia: & omnes gradientes in ſuperbia poteſt humiliare.

MS.A. (*) ψωμιοῦσιν (β) εἶπεν, (γ) φυὴν τοῦ δένδρου (δ) ἐπουράνιον. (ε) σου ἐν (ζ) καὶ εἶπεν, Οὐκ (η) ἐν στόματι (θ) ἐκ τοῦ οὐρανοῦ (ι) σου παρῆλθεν (κ) ἐκδιώξουσιν, (*) ψωμιοῦσιν (λ) ἕως οὗ γνῷς (μ) ἐὰν (ν) τὸν βασιλέα, καὶ (ξ) ἕως οὗ (ο) τοὺς αἰῶνας (†) ὍΡΑΣΙΣ ε΄.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ويطردوك من الناس * ومع الوحوش البرية يكون مسكنك * ويطعموك العشب مثل الثور
ومن طل السماء تتندى * وسبعة ازمنة تتبدل عليك * الي ان تعلم ان العلي يسود مملكة
البشر * ويعطيها لمن يرا * ولانه قال اتركوا اعادة جبلة اصول الشجر في الارض *
مملكتك لك باقية * اذ تعلم السلطان السماي * لاجل هذا ايها الملك لترضيك مشورتي *
انقذ خطاياك بالمراحم * ومظالمك برافات المساكين * عسي يكون الله طويل الروح علي
سقطاتك * هذه كلها ادركت بختنصر الملك * بعد اثني عشر شهرا في هيكل مملكته
ببابل وهو يمشي * اجاب الملك وقال * أليس هذه هي بابل العظمي التي انا بنيتها
لبيت المملكة بعز قوتي لكرامة مجدي * وبينما الكلمة في فم الملك كاينة * صار صوت
من السماء * لك يقال يا بختنصر الملك * مملكتك زالت عنك * ومن البشر يطردونك *
ومع الوحوش البرية مسكنك * يطعموك العشب مثل الثور * ويتغير عليك سبعة ازمنة *
الي ان تعلم ان العلي يملك مملكة البشر ويعطيها لمن يرا * في هذه الساعة بعينها تمت
الكلمة علي بختنصر * وطرد من الناس * واكل العشب مثل الثور * واصطبغ جسده من
طل السماء * وعظم شعره مثل شعر الاسد * واظفاره مثل مخاليب الطيور * وبعد انقضاء
الايام انا بختنصر رفعت عيني الي السماء * ورجع علي عقلي * وباركت العلي * والحي الي
الابد سبحت ومجدت * لان سلطانه سلطان ابدي * ومملكته الي جيل وجيل * وجميع سكان
الارض حسبوا كلا شي * وكارادته يصنع في قوة السماء وفي مسكن الارض * وليس من يقاوم
يده ويقول له ماذا صنعت * في هذا الوقت بعينه رجع الي عقلي وعدت الي كرامة مملكتي *
وعاد لي شكلي * وولاتي وعظماي طلبوني * وتقويت علي مملكتي * وعادت لي العظمة
مضاعفة * والان انا بختنصر اسبح وامجد ملك السماء * لان كل اعماله حقيقية * وسبله
احكام * ويقدر ان يواضع جميع السالكين بالعظمة *

* *Expellent te ex hominibus, & cum belluis* 25
ſylveſtribus erit habitatio tua; herbâ ceu bovem te cibabunt, & ſub rore
cœli commoraberis, ſeptémque tempora mutabuntur ſuper te: quouſque ſcias
Altiſſimum dominari regno hominum, illúdque dare cui arbitratur. Quia vero 26
dixit, Sinite reſtaurationem plaſmatis radicum arboris in terra; regnum tuum
tibi manſurum eſt, cùm cognoveris poteſtatem cœleſtem. Quapropter O rex, 27
gratum habeas conſilium meum: redime peccata tua miſericordiis, & impietates
tuas pietatibus erga pauperes: forſitan erit Deus longanimis erga lapſus tuos. Hæc 28
omnia evenerunt Bochtonaſſari regi Poſt 29
duodecim menſes in palatio regni ſui in Babele, dum deambularet. Prolocutus 30
enim rex ait; Annon hæc eſt Babel magna, quam ego ædificavi in domum regiam
cum fortitudine roboris mei ad honorem gloriæ meæ? Dúmque verbum hoc in 31
regis ore verſaretur, facta eſt hæc vox de cœlo; Tibi dicitur O Bochtonaſſar
rex, Regnum tuum à te devolutum eſt:
Ab hominibus ejicient te, & cum belluis 32
ſylveſtribus erit habitatio tua, herbâ te ceu bovem cibabunt, ſeptémque tempora
ſuper te mutabuntur: donec ſcias Altiſſimum poſſidere regnum hominum,
illúdque conferre cui arbitratus fuerit.
Eâdem ipſâ horâ completum eſt verbum 33
ſuper Bochtonaſſarem: expulſus enim fuit ex hominibus, herbam ceu bos comedit,
perfuſum fuit corpus ejus rore cœli, creverunt pili ejus ut pili leonum, &
ungues ejus ut ungues volucrum. Poſt 34
finem autem dierum illorum, ego Bochtonaſſar levavi oculos meos ad cœlum,
& redeunte ad me judicio meo, benedixi Altiſſimo, & in æternum Viventem
laudavi atque celebravi; quòd imperium ejus ſit imperium æternum, & regnum
ejus in generationem & generationem; Terricolæ omnes ut nihili æſtimentur, 35
et pro voluntate ſua agat virtuti cœli et habitationi terræ, neque ſit
qui manui ejus reſiſtat, ac dicat, Quid
feciſti? Eodem illo tempore rediit ad 36
me judicium meum, reſtitutus fui ad honorem regni mei, recuperavi ſpeciem
meam, et dynaſtæ ac principes mei poſtulaverunt me, confirmatus fui in regno
meo, et rediit ad me magnificentia duplicata. Nunc igitur ego Bochtonaſſar 37
laudo et glorifico regem cœli; quòd omnes actiones ejus legitimæ ſint, et viæ ejus
juſtæ; et deprimere poſſit omnes ſuperbè incedentes.

דניאל : ה

CAP. V. ה

ſipere in dixit Belſaſar : bibit vinum mille contra & : mille ſuis principibus multum panem fecit rex Belſaſar
1 בלשאצר מלכא עבד לחם רב לרברבנוהי אלף ולקבל אלפא חמרא שתה׃ בלשאצר אמר בטעם 2
biberunt & : Jeruſalaim in quod palatio de ejus pater Nebuchadneſar eduxerat quæ , argenti & auri vaſa afferendum ad vini
חמרא להיתיה למאני דהבא וכספא די הנפק נבוכדנצר אבוהי מן היכלא די בירושלם וישתון
templo de eduxerant quæ , auri vaſa ſunt allata tunc In .ejus concubinæ & ,ejus conjuges , ejus principes & , rex eis in
3 בהון מלכא ורברבנוהי שגלתה ולחנתה׃ באדין היתיו מאני דהבא די הנפקו מן היכלא
Biberunt .ejus concubinæ & ,ejus conjuges ,ejus principes & , rex eis in biberunt & : Jeruſalem in quod Dei domus quod
4 די בית אלהא די בירושלם ואשתיו בהון מלכא ורברבנוהי שגלתה ולחנתה׃ אשתיו
qui digiti ſunt egreſſi hora ipſa In .lapidis & ,ligni , ferri , æris , argenti & , auri deos laudaverunt & : vinum
5 חמרא ושבחו לאלהי דהבא וכספא נחשא פרזלא אעא ואבנא׃ בה שעתה נפקו אצבען די
quæ manus palmam videns rex & : regis quod palatii parietis quod gypſo ſuper candelabrum contra ſcribentes & ,hominis man
יד אנש וכתבן לקבל נברשתא על גירא די כתל היכלא די מלכא ומלכא חזה פס ידא די
, ſoluta ejus lumbi ligamina & : eum conturbaverunt ejus cogitationes & ,ipſum mutaverunt ejus ſplendores regis Tunc .ſcribebat
6 כתבה׃ אדין מלכא זיוהי שנוהי ורעינהי יבהלונה וקטרי חרצה משתרין
, rex reſpondit : divinos & ,Chaldæos , ſophos introducendum ad virtute in rex Clamans .ſunt colliſa illud ad hoc ejus genua &
7 וארכבתה דא לדא נקשן׃ קרא מלכא בחיל להעלה לאשפיא כשדיא וגזריא ענה מלכא
,veſtietur purpura,mihi indicaverit ejus interpretationē &,hanc ſcripturam legerit qui , homo omnis Quòd : Babel ſapientibus dixit &
ואמר לחכימי בבל די כל אנש די יקרה כתבה דנה ופשרה יחונני ארגונא ילבש
non & : regis ſapientes omnes ſunt ingreſſi Tunc .imperabit regno in tertius & ,ejus collo ſuper auri quæ torques &
8 והמונכא די דהבא על צוארה ותלתי במלכותא ישלט׃ אדין עללין כל חכימי מלכא ולא
, territus multum Belſaſar rex Tunc .regi notificare ejus interpretationem & , legere ſcripturam valentes
9 כהלין כתבא למקרא ופשרא להודעה למלכא׃ אדין מלכא בלשאצר שגיא מתבהל
domum in ejus principum & , regis verba adverſum Regina .perplexi ejus principes & :eo ſuper mutati ejus ſplendores &
10 וזיוהי שנין עלוהי ורברבנוהי משתבשין׃ מלכתא לקבל מלי מלכא ורברבנוהי לבית
.mutentur non tui ſplendores &,tuæ cogitationes te terreant non: vive ſæcula in Rex : dixit & , regina reſpondit :eſt ingreſſa convivii
משתיא עללת ענת מלכתא ואמרת מלכא לעלמין חיי אל יבהלוך רעיונך וזיויך אל ישתנו׃
ſapientia & , intelligentia & ,illuminatio ,tui patris diebus in & ,eo in ſanctorum deorum ſpiritus quo , tuo regno in vir Eſt
11 איתי גבר במלכותך די רוח אלהין קדישין בה וביומי אבוך נהירו ושכלתנו וחכמה
,Chaldæorum,ſophorum,genethliacorum principem tuus pater Nebuchadneſar rex & ; eo in eſt inventa Deorum ſapientiam ſecundùm
כחכמת אלהין השתכחת בה ומלכא נבכדנצר אבוך רב חרטמין אשפין כשדאין
, ſomnia interpretans intellectus & ,ſcientia & ,abundans ſpiritus quòd reſpectu Omni .rex tuus pater eum conſtituit,divinorum
12 גזרין הקימה אבוך מלכא׃ כל קבל די רוח יתירה ומנדע ושכלתנו מפשר חלמין
Daniel nunc : Belteſaſar eius nomen impoſuit rex cui ,Daniele in ,eo in ſit inventa nodos ſolvens & , ænigmatum indicatio &
ואחוית אחידן ומשרא קטרין השתכחת בה בדניאל די מלכא שם שמה בלטשאצר כען דניאל
Tu , Danieli dixit & , rex reſpondit : rege coram eſt adductus Daniel Tunc .indicabit interpretationem & ,vocetur
13 יתקרי ופשרה יהחוה׃ באדין דניאל העל קדם מלכא ענה מלכא ואמר לדניאל אנתה
? Jehudah de meus pater rex adduxit quem , Jehudah captivitatis filiis de qui , Daniel ipſe
הוא דניאל די מן בני גלותא די יהוד די היתי מלכא אבי מן יהוד׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. V.

BAltaſſar rex fecit grande convivium optimatibus ſuis mille : & unuſquiſque ſecundùm ſuam bibebat ætatem. Præcepit ergò jam temulentus, ut afferrentur vaſa aurea & argentea, quæ aſportaverat Nabuchodonoſor pater ejus de templo, quod fuit in Jeruſalem, ut biberent in eis rex & optimates ejus, uxoreſque ejus, & concubinæ. Tunc allata ſunt vaſa aurea, & argentea, quæ aſportaverat de templo, quod fuerat in Jeruſalem : & biberunt in eis rex, & optimates ejus, uxores & concubinæ illius. Bibebant vinum, & laudabant deos ſuos aureos, & argenteos, æreos, ferreos, ligneóſque & lapideos. In eadem hora apparuerunt digiti, quaſi manûs hominis ſcribentis contra candelabrum in ſuperficie parietis aulæ regiæ : & rex aſpiciebat articulos manûs ſcribentis. Tunc facies regis commutata eſt, & cogitationes ejus conturbabant eum : & compages renum ejus ſolvebantur, & genua ejus ad ſe invicem collidebantur. Exclamavit itaque rex fortiter, ut introducerent magos, Chaldæos, & aruſpices. Et proloquens rex ait ſapientibus Babylonis, Quicunque legerit ſcripturam hanc, & interpretationem ejus manifeſtam mihi fecerit, purpurá veſtietur, & torquem auream habebit in collo, & tertius in regno meo erit. Tunc ingreſſi omnes ſapientes regis, non potuerunt nec ſcripturam legere, nec interpretationem indicare regi. Unde rex Baltaſſar ſatis conturbatus eſt, & vultus illius immutatus eſt : ſed & optimates ejus turbabantur. Regina autem, pro re quæ acciderat regi, & optimatibus ejus, domum convivii ingreſſa eſt : & proloquens ait ; Rex, in æternum vive : non te conturbent cogitationes tuæ, neque facies tua immutetur. Eſt vir in regno tuo, qui ſpiritum deorum ſanctorum habet in ſe : & in diebus patris tui ſcientia & ſapientia inventæ ſunt in eo: nam & rex Nabuchodonoſor pater tuus, principem magorum, incantatorum, Chaldæorum, & aruſpicum conſtituit eum, pater, inquam, tuus, ô rex : Quia ſpiritus amplior, & prudentia, intelligentiaque & interpretatio ſomniorum, & oſtenſio ſecretorum ac ſolutio ligatorum, inventæ ſunt in eo, hoc eſt, in Daniele : cui rex impoſuit nomen Baltaſſar : nunc itaque Daniel vocetur, & interpretationem narrabit. Igitur introductus eſt Daniel coram rege. Ad quem præfatus rex ait ; Tu es Daniel de filiis captivitatis Judæ, quem adduxit pater meus rex de Judæa ?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *

1 ܒܠܛܫܨܪ ܡܠܟܐ. ܥܒܕ ܚܫܡܝܬܐ ܪܒܬܐ ܠܪܘܪܒܢܘܗܝ. ܘܠܘܩܒܠ ܐܠܦܐ
2 ܚܡܪܐ ܫܬܐ ܗܘܐ. * ܘܐܡܪ ܒܠܛܫܨܪ ܟܕ ܛܥܡ ܚܡܪܐ ܠܡܝܬܝܘ ܡܐܢܐ ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ.
ܕܐܦܩ ܡܢ ܗܝܟܠܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ ܐܒܘܗܝ. ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. ܢܫܬܘܢ ܒܗܘܢ ܡܠܟܐ ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ.
3 ܘܢܫܘܗܝ ܘܦܠܚܬܗ. * ܗܝܕܝܢ ܐܝܬܝܘ ܡܐܢܐ ܕܕܗܒܐ ܕܐܦܩ ܡܢ ܗܝܟܠܐ ܕܐܠܗܐ ܕܒܐܘܪܫܠܡ.
4 ܘܐܫܬܝܘ ܒܗܘܢ ܡܠܟܐ ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ. ܘܢܫܘܗܝ ܘܦܠܚܬܗ. * ܐܫܬܝܘ ܚܡܪܐ. ܘܫܒܚܘ
5 ܠܐܠܗܐ ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ. ܘܕܢܚܫܐ ܘܕܦܪܙܠܐ. ܘܕܩܝܣܐ ܘܕܟܐܦܐ. * ܒܗܝ ܫܥܬܐ. ܢܦܩ
ܨܒܥܬܐ ܕܐܝܕܐ ܕܒܪܢܫܐ. ܘܟܬܒܢ ܠܘܩܒܠ ܢܒܪܫܬܐ. ܥܠ ܓܝܪܐ ܕܫܘܪܐ ܕܒܗܝܟܠܐ ܕܡܠܟܐ.
6 ܘܡܠܟܐ ܚܙܐ ܦܣܬܐ ܕܐܝܕܐ ܕܟܬܒܐ. * ܗܝܕܝܢ ܡܠܟܐ ܙܝܘܗܝ ܫܢܝ. ܘܪܥܝܢܘܗܝ ܢܒܗܠܘܢܗ.
7 ܘܚܘܨܘܗܝ ܐܫܬܪܝܘ. ܘܒܘܪܟܘܗܝ ܢܩܫܢ ܗܘܝ ܚܕܐ ܒܚܕܐ. * ܘܩܪܐ ܡܠܟܐ ܒܚܝܠܐ: ܠܡܥܠܘ
ܠܐܫܦܐ ܘܟܠܕܝܐ. ܘܚܪܫܐ ܘܚܟܝܡܐ. ܘܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܚܟܝܡܐ ܕܒܒܠ.
ܟܠ ܐܢܫ ܕܢܩܪܐ ܟܬܒܐ ܗܢܐ. ܘܦܘܫܩܗ ܢܚܘܝܢܝ. ܐܪܓܘܢܐ ܢܠܒܫ. ܘܗܡܝܢܟܐ ܕܕܗܒܐ
8 ܥܠ ܨܘܪܗ. ܘܬܠܝܬܝܐ ܒܡܠܟܘܬܐ ܢܫܠܛ. * ܗܝܕܝܢ ܥܐܠܝܢ ܗܘܘ ܚܟܝܡܐ ܕܡܠܟܐ. ܘܠܐ
9 ܡܫܟܚܝܢ ܗܘܘ ܠܡܩܪܐ ܟܬܒܐ. ܘܦܘܫܩܗ ܠܡܘܕܥܘ ܠܡܠܟܐ. * ܗܝܕܝܢ ܡܠܟܐ ܒܠܛܫܨܪ
10 ܛܒ ܐܬܕܠܚ. ܘܙܝܘܗܝ ܐܫܬܢܝ ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ ܡܬܡܗܝܢ ܗܘܘ. * ܘܡܠܟܬܐ ܡܛܠ
ܡܠܝ ܡܠܟܐ ܘܪܘܪܒܢܘܗܝ ܠܒܝܬ ܡܫܬܝܐ ܥܠܬ. ܘܥܢܬ ܘܐܡܪܬ ܠܡܠܟܐ. ܡܠܟܐ
11 ܠܥܠܡ ܚܝܝ. ܪܥܝܢܝܟ ܠܐ ܢܒܗܠܘܢܟ. ܘܙܝܘܝܟ ܠܐ ܢܫܬܢܘܢ. * ܐܝܬ ܓܒܪܐ ܒܡܠܟܘܬܟ.
ܕܪܘܚ ܐܠܗܐ ܩܕܝܫܐ ܐܝܬ ܒܗ. ܘܒܝܘܡܝ ܐܒܘܟ. ܢܗܝܪܘܬܐ ܘܣܘܟܠܐ.
ܘܚܟܡܬܐ ܣܓܝܐܬܐ. ܐܝܟ ܚܟܡܬܐ ܕܐܠܗܐ ܐܫܬܟܚܬ ܒܗ. ܘܡܠܟܐ ܢܒܘܟܕܢܨܪ
12 ܐܒܘܟ. ܪܒ ܚܪܛܘܡܐ ܘܐܫܦܐ ܘܟܠܕܝܐ ܘܚܪܫܐ. ܐܩܝܡܗ. * ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܘܣܘܟܠܐ
ܘܣܘܟܠܐ ܝܬܝܪܐ ܐܫܬܟܚ ܒܗ. ܦܫܪ ܚܠܡܐ. ܘܡܚܘܐ ܐܘܚܕܬܐ. ܘܫܪܐ ܩܛܪܐ. ܕܢܝܐܝܠ
13 ܕܡܠܟܐ ܣܡ ܫܡܗ ܒܠܛܫܨܪ. ܗܫܐ ܕܢܝܐܝܠ ܢܬܩܪܐ. ܘܦܘܫܩܗ ܢܚܘܐ. * ܗܝܕܝܢ
ܕܢܝܐܝܠ ܥܠ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܐܢܬ ܗܘ ܕܢܝܐܝܠ ܕܡܢ ܒܢܝ
ܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕ. ܕܐܝܬܝ ܐܒܝ ܡܠܟܐ ܡܢ ܝܗܘܕ.

CAP. V.

BLitſaſar rex facto convivio magno mille proceribus ſuis, coram his mille vinum bibebat : Juſſitque Blitſaſar cùm vinum jam deguſtâſſet, afferri vaſa aurea & argentea quæ ex templo exportaverat Nebuchadnoſar pater ejus de Jeruſalem ; ut biberent in eis rex & proceres ejus, uxores & concubinæ ejus. Tunc allatis vaſis aureis quæ exportaverat ex templo Dei quod erat Jeroſolymis, biberunt in eis rex & proceres ejus, uxores & concubinæ ipſius. Bibentes vinum laudabant deos aureos & argenteos, & æneos, ferreos, ligneos, atque lapideos. Eâdem horâ egreſſi digiti manûs humanæ, ſcribebant ex adverſo lucernæ in calce parietis qui erat in palatio regis, rege vidente volam manûs quæ ſcribebat. Tunc regis ſerenitate immutatâ, & mente conturbatâ, vinculis dorſi ejus diſſolutis, & genibus ejus mutuùm colliſis, Inclamavit rex altâ voce ut adducerentur hanioli & Chaldæi, magi & ſapientes : tum proloquens rex ait ſapientibus Babylonis ; Quiquis legerit ſcripturam iſtam, & interpretationem ejus indicaverit mihi, purpureis induetur, & torques aureus collo ejus imponetur, tertiæque parti in regno dominabitur. Tunc accedebant ſapientes regis, nec poterant ſcripturam legere, neque interpretationem ejus regi notam facere. Tunc rege Blitſaſare admodum conturbato, ejuſque ſerenitate immutatâ, & proceribus ejus attonitis ; Regina propter verba regis & proceres ejus ad convivii locum ingreſſa eſt, & proloquens dixit regi ; Rex, æternùm vivas : cogitationes tuæ ne te perterreant, & ſplendores tui ne immutentur. Adeſt in regno tuo vir cui ſpiritus deorum ſanctorum ineſt, & patris tui temporibus lux, intelligentia, & ſapientia multa, par ſapientiæ deorum inventa eſt in eo : adeo ut rex Nebuchadnoſar pater tuus præſtigiatorum, hariolorum, magorum, atque Chaldæorum principem conſtituerit eum. Quia ſpiritus, prudentia, & intelligentia major inventa eſt in eo. *Is* interpretatur ſomnia, ediſſerit ænigmata, & ſolvit nodos : Daniel *is eſt*, cui rex impoſuerat nomen Blitſaſar : Jam Daniel advocetur, & interpretationem indicabit. Tunc Daniele ad regem ingreſſo, prolocutus eſt rex dixitque Danieli ; Tu es Daniel de captivis Judææ, quos adduxit pater meus rex de Judæa ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ε΄.

Βαλτάσαρ ὁ βασιλεὺς ἐποίησε δεῖπνον (β) μέγα τοῖς μεγιστᾶσιν αὐτοῦ χιλίοις, καὶ κατέναντι τῶν χιλίων ὁ οἶνος. Καὶ πίνων Βαλτάσαρ εἶπεν ἐν τῇ γεύσει τοῦ οἴνου, τοῦ ἐνεγκεῖν τὰ σκεύη τὰ χρυσᾶ καὶ τὰ ἀργυρᾶ, ἃ ἐξήνεγκεν Ναβουχοδονόσορ ὁ πατὴρ αὐτοῦ ἐκ τοῦ ναοῦ τοῦ ἐν Ἱερουσαλήμ, καὶ πιέτωσαν ἐν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς, καὶ οἱ μεγιστᾶνες αὐτοῦ, καὶ αἱ παλλακαὶ αὐτοῦ, καὶ αἱ παράκοιτοι αὐτοῦ. Καὶ (γ) ἠνέχθησαν τὰ σκεύη τὰ χρυσᾶ καὶ τὰ ἀργυρᾶ, ἃ ἐξήνεγκεν ἐκ τοῦ ναοῦ (δ) τοῦ θεοῦ τοῦ ἐν Ἱερουσαλήμ, καὶ ἔπινον ἐν αὐτοῖς ὁ βασιλεὺς, καὶ οἱ μεγιστᾶνες αὐτοῦ, (ε) καὶ αἱ παλλακαὶ αὐτοῦ, καὶ αἱ παράκοιτοι αὐτοῦ. Ἔπινον οἶνον, καὶ ᾔνεσαν τοὺς θεοὺς τοὺς χρυσοῦς, καὶ ἀργυροῦς, καὶ χαλκοῦς, καὶ σιδηροῦς, καὶ ξυλίνους, καὶ (ζ) λιθίνους. Ἐν αὐτῇ τῇ ὥρᾳ ἐξῆλθον δάκτυλοι χειρὸς ἀνθρώπου, καὶ ἔγραφον κατέναντι τῆς λαμπάδος ἐπὶ τὸ κονίαμα τοῦ τοίχου τοῦ οἴκου τοῦ βασιλέως, καὶ ὁ βασιλεὺς ἐθεώρει τοὺς ἀστραγάλους τῆς χειρὸς τῆς γραφούσης. Τότε τοῦ βασιλέως ἡ μορφὴ ἠλλοιώθη, καὶ οἱ διαλογισμοὶ αὐτοῦ συνετάρασσον αὐτόν, καὶ οἱ σύνδεσμοι τῆς ὀσφύος αὐτοῦ διελύοντο, καὶ τὰ γόνατα αὐτοῦ συνεκροτοῦντο. Καὶ ἐβόησεν ὁ βασιλεὺς ἐν ἰσχύϊ, τοῦ εἰσαγαγεῖν μάγους, Χαλδαίους, γαζαρηνούς· καὶ εἶπε τοῖς σοφοῖς Βαβυλῶνος, Ὃς (η) ἂν ἀναγνῷ τὴν γραφὴν ταύτην, καὶ τὴν σύγκρισιν (θ) γνωρίσῃ μοι, πορφύραν ἐνδύσεται, καὶ ὁ μανιάκης ὁ χρυσοῦς (ι) ἐπὶ τὸν τράχηλον αὐτοῦ, καὶ τρίτος ἐν τῇ βασιλείᾳ μου ἄρξει. Καὶ εἰσεπορεύοντο (κ) πάντες οἱ σοφοὶ τοῦ βασιλέως, καὶ οὐκ ἠδύναντο τὴν γραφὴν ἀναγνῶναι, οὐδὲ τὴν σύγκρισιν γνωρίσαι τῷ βασιλεῖ. Καὶ ὁ βασιλεὺς Βαλτάσαρ (λ) ἐταράχθη, καὶ ἡ μορφὴ αὐτοῦ ἠλλοιώθη (μ) ἐν αὐτῷ, καὶ οἱ μεγιστᾶνες αὐτοῦ (ν) συνεταράσσοντο. Καὶ εἰσῆλθεν ἡ βασίλισσα εἰς τὸν οἶκον τοῦ πότου, (ξ) καὶ εἶπε, Βασιλεῦ, εἰς τὸν αἰῶνα ζῆθι· μὴ ταρασσέτωσάν σε οἱ διαλογισμοί σου, καὶ ἡ μορφή σου μὴ ἀλλοιούσθω. Ἔστιν ἀνὴρ ἐν τῇ βασιλείᾳ σου, ἐν ᾧ πνεῦμα θεοῦ (ο)· καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ πατρός σου, γρηγόρησις καὶ σύνεσις εὑρέθη ἐν αὐτῷ, καὶ ὁ βασιλεὺς Ναβουχοδονόσορ ὁ πατήρ σου ἄρχοντα ἐπαοιδῶν, μάγων, Χαλδαίων, γαζαρηνῶν, κατέστησεν (π) αὐτόν, Ὅτι πνεῦμα περισσὸν ἐν αὐτῷ, καὶ φρόνησις καὶ σύνεσις ἐν αὐτῷ, συγκρίνων ἐνύπνια, καὶ ἀναγγέλλων κρατούμενα, καὶ λύων συνδέσμους, Δανιήλ· καὶ ὁ βασιλεὺς ἐπέθηκεν (ρ) ὄνομα αὐτῷ, Βαλτάσαρ. νῦν οὖν κληθήτω, καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτοῦ ἀναγγελεῖ σοι. Τότε Δανιὴλ εἰσήχθη ἐνώπιον τοῦ βασιλέως. καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ Δανιήλ, Σὺ εἶ Δανιὴλ, ὁ ἀπὸ τῶν υἱῶν τῆς αἰχμαλωσίας τῆς Ἰουδαίας, ἧς ἤγαγεν ὁ βασιλεὺς ὁ πατήρ μου;

CAP. V.

Baltaſar rex fecit grande convivium optimatibus ſuis mille: & è (a) re- 1
gione ipſorum mille, vinum. Et bibens Baltaſar dixit in guſtu vini, ut af- 2
ferentur vaſa aurea, et argentea, quæ aſportaverat Nabuchodonoſor pater ejus
de templo quod fuit in Hieruſalem: & biberent in eis rex, & optimates ejus,
& ſcorta ejus, & concubinæ ejus. Et allata ſunt vaſa aurea, & argen- 3
tea, quæ aſportaverat de templo Dei, quod in Hieruſalem: & bibebant in
eis rex, & optimates ejus, & ſcorta ejus, & concubinæ ejus. Bibebant 4
vinum, & laudabant deos aureos, & argenteos, & æreos, & ferreos, &
ligneos, & (b) lapideos. In eadem hora egreſſi ſunt digiti manûs hominis, & 5
ſcribebant e regione lampadis in tectorio parietis domûs regis: et rex aſpici-
ebat articulos manûs ſcribentis. Tunc regis forma commutata eſt: & co- 6
gitationes ejus conturbabant eum: & compages renum ejus ſolvebantur:
& genua ejus collidebantur. Et clamavit rex in fortitudine, ut introdu- 7
cerent Magos, Chaldæos, Gazarenos. Et dixit ſapientibus Babylonis; Qui-
cunque legerit ſcripturam hanc, & conjecturam ejus manifeſtam mihi fe-
cerit, purpurâ veſtietur, & torques aurea ſuper collum ejus: & * tertius
in regno meo principabitur. Et ingrediebantur omnes ſapientes regis, & 8
non poterant ſcripturam legere, neque conjecturam indicare regi. Et rex 9
Baltaſar conturbatus eſt: & forma ejus immutata eſt in illo: et optima-
tes ejus turbabantur. Et ingreſſa eſt Regina in domum convivii, et dixit; 10
Rex, in æternum vive. Non conturbent te cogitationes tuæ: et forma tua
non immutetur. Eſt vir in regno tuo, in quo eſt ſpiritus Dei: et in diebus 11
patris tui vigilantia, & intelligentia inventæ ſunt in eo: et rex Nabucho-
donoſor pater tuus principem incantatorum, Magorum, Chaldæorum, Ga-
zarenorum, conſtituit eum: Quia ſpiritus amplior in eo, et prudentia, et 12
intellectus in eo, conjiciens ſomnia, et indicans (c) abſcondita, et ſolvens
colligationes, Daniel: et rex impoſuit ei nomen Baltaſar. Nunc itaque vo-
cetur: et conjecturam ejus indicabit tibi. Tunc Daniel introductus eſt co- 13
ram rege: et dixit rex Danieli; Tu es Daniel, qui de filiis captivitatis
Judææ, quam adduxit rex pater meus?

MS.A. (α) ὍΡΑΣΙΣ ϛ΄. Βαλτάσαρ (β) τοῖς μεγιστᾶσιν αὐτοῦ ἀνδράσιν χιλίοις, (γ) ἠνέχθησαν (δ) τοῦ ἐν Ἱερουσαλήμ, (ε) καὶ αἱ παράκοιτοι αὐτοῦ, καὶ αἱ παλλακαὶ αὐτοῦ. Ἔπινον οἶνον, (ζ) λιθίνους καὶ τὸν θεὸν τοῦ αἰῶνος οὐκ ηὐλόγησαν τὸν ἔχοντα ἐξουσίαν τοῦ πνεύματος αὐτῶν. Ἐν αὐτῇ (η) ἐὰν (θ) αὐτῆς (ι) ἔσται περὶ τὸν (κ) οἱ σοφοὶ (λ) πολὺ ἐταράχθη, (μ) ἐπ' αὐτῷ, (ν) συνετάρασσον αὐτόν. (ξ) καὶ ἀπεκρίθη ἡ βασίλισσα, καὶ εἶπεν, Βασιλεῦ, εἰς τοὺς αἰῶνας (ο) ἅγιον· (π) αὐτὸν ὁ πατήρ σου ὁ βασιλεύς, Ὅτι (ρ) αὐτῷ ὄνομα,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* الفصل الخامس *

* الرويا السادس *

* بلطشاصر الملك صنع عشاء عظيما لعظمايه لالف رجل · والخمر بازاء الالوف * وشرب
بلطشاصر وقال في ذوق الخمر ان يحضروا الاواني الذهب والفضة التي احضرها بختنصر ابوه
من الهيكل الذي بايروسليم · وليشرب فيها الملك وعظماوه · وسراريه ونساوه * فاتي بالانيه
الذهب والفضة التي احضرها من هيكل الله الذي بايروسليم · وشرب فيها الملك وعظماوه
وسراريه ونساوه * شربوا خمرا وسبحوا لالهة الذهب والفضة · والنحاس والحديد · والخشب
والحجارة · ولم يباركوا اله السماء الذي له سلطان روحهم * وفي هذه الساعة خرجت انامل
يد انسان · وكتبت قبالة المصباح على كلس حايط بيت الملك · والملك ينظر انامل اليد
تكتب * حينيذ تغير شكل الملك · واقلقه افكاره · وانحلت عقد حقوه · واصطكت
ركبتاه * وصرخ الملك بصوت عظيم · ليدخلوا مجوس كلدانيين منجمين · واجاب الملك
وقال لحكماء بابل ان الذي يقرا هذه الكتابة ويعرفني تاويلها · يلبس برفيرا · وطوق ذهب
يكون على عنقه · ويسود ثالث في مملكتي * فدخل جميع حكماء الملك · ولم يستطيعوا ان
يقراوا الكتابة · ولا ان يعرفوا الملك التاويل * والملك بلطشاصر اضطرب · وتغير شكله ·
وقلقت عظماوه * ودخلت الملكة الي بيت الشراب · واجابت الملكة وقالت · عش ايها الملك
الي الدهر · لا تقلقك افكارك · ولا يتغير شكلك * ثم رجل في مملكتك فيه روح الله
القدوس · وفي ايام ابيك وجدت فيه يقظة وفهم · والملك بختنصر ابوك اقامه رييسا للرقايين
الكلدانيين والمنجمين * لان روحا مضعفة هي فيه · وذهن وفهم وجدا فيه · ويعبر الاحلام
ويخبر بالاوابد · ويحل العقد · هو دانيال · والملك وضع له اسما بلطشاصر · والان ليدعي
ويخبرك بتاويله * حينيذ دانيال دخل امام الملك · فقال الملك لدانيال · انت هو دانيال
الذي من بني سبي يهودا · الذي جلبه ابي الملك ·

CAP. V.

Viſio ſexta.

Baltaſaſar rex fecit cœnam magnam 1
principibus ſuis mille viris, & vinum e-
rat è regione millium. Cùmque bibiſſet 2
Baltaſaſar, dixit in guſtu vini ut affer-
rent vaſa aurea & argentea quæ attulerat
Bochtonaſſar pater ſuus è templo quod
erat in Jeruſalem, & ut biberent in eis
rex & principes ejus, concubinæ & uxo-
res ejus. Igitur allatis vaſis aureis & 3
argenteis quæ advexerat è templo Dei
quod erat in Jeruſalem, biberunt in eis
rex & principes ejus, concubinæ & uxo-
res ejus. Cùm vinum bibiſſent, lauda- 4
verunt deos aureos, argenteos, æneos,
ferreos, ligneos & lapideos; Deum verò
cœli cui poteſtas eſt in ſpiritum eorum,
non benedixerunt. Eâdem horâ egreſſæ 5
ſunt ſummitates digitorum manûs huma-
næ, & ſcripſerunt ex adverſo facis ſu-
per calcem parietis domûs regiæ, rege
ſpectante ſummos manûs digitos ſcri-
bentes. Tunc inverſa eſt ſpecies regis, 6
& conturbaverunt eum cogitationes ſuæ,
ſoluti ſunt nodi lumbi ejus, & colliſe-
runt ſe genua ipſius. Quapropter ex- 7
clamavit rex altâ voce: Ingrediantur
magi Chaldæorum aſtrologorum: tum al-
locutus rex ſapientes Babylis, ait; Qui-
cunque legerit ſcripturam hanc, & no-
tam fecerit mihi interpretationem ejus;
induetur purpurâ, & collare aureum erit
ſuper collum ejus, & tertius dominabi-
tur in regno meo. Itaque cùm ingreſſi 8
fuiſſent omnes ſapientes regis, & non
potuiſſent legere ſcripturam, neque no-
tam facere regi interpretationem; Rex 9
Baltaſaſar conturbatus eſt, & ſpecies ejus
inverſa, & exagitati principes ejus.
Verùm ingreſſâ reginâ in locum convivii, 10
prolocuta eſt regina, & ait; Vive O rex
in æternum: ne te perturbent cogitati-
ones tuæ, neve immutetur ſpecies tua.
Eſt hîc in regno tuo vir quidam cui ineſt 11
ſpiritus Dei ſanctus, in quo ſub diebus
patris tui, inventa eſt vigilantia & intel-
lectus, quem rex Bochtonaſſar pater tuus
conſtituit principem incantatorum, Chal-
dæorum, & aſtrologorum; Quòd ſpi- 12
ritus duplicatus ſit in eo, & ingenium
atque intellectus inventa ſint in ipſo, in-
terpretetur ſomnia, aperiat occulta, no-
dóſque reſolvat: Daniel is eſt, cui rex
nomen impoſuerat Baltaſaſar: is nunc
advocetur, & indicabit tibi interpretatio-
nem ejus. Tunc Daniele ad regem in- 13
greſſo, dixit rex Danieli; Tune es Da-
niel de captivis Judææ, quem pater meus
rex adduxit?

דָּנִיֵּאל : ה

te in est inventa abundans sapientia & , intellectus & illustratio & ; te in Deorum spiritus quod , te super audivi Et
14 וְשִׁמְעֵת עֲלָיךְ דִּי רוּחַ אֱלָהִין בָּךְ וְנַהִירוּ וְשָׂכְלְתָנוּ וְחָכְמָה יַתִּירָה הִשְׁתְּכַחַת בָּךְ׃
; mihi notificandum ad ejus interpretationem & , legerent hanc scripturam qui , sophi sapientes me coram sunt adducti nunc Et
15 וּכְעַן הֻעַלּוּ קָדָמַי חַכִּימַיָּא אָשְׁפַיָּא דִּי־כְתָבָה דְנָה יִקְרוֹן וּפִשְׁרֵהּ לְהוֹדָעֻתַנִי
modos & , interpretari interpretationes poteris quod , te super audivi ego Et .indicare sermonis interpretationem valentes non &
16 וְלָא־כָהֲלִין פְּשַׁר־מִלְּתָא לְהַחֲוָיָה׃ וַאֲנָה שִׁמְעֵת עֲלָיךְ דִּי־תִוכֻל פִּשְׁרִין לְמִפְשַׁר וְקִטְרִין
quæ torques & , vestieris purpura , mihi notificare ejus interpretationem & , legere scripturam poteris en nunc : solvere
לְמִשְׁרֵא כְּעַן הֵן תּוּכַל כְּתָבָא לְמִקְרֵא וּפִשְׁרֵהּ לְהוֹדָעוּתַנִי אַרְגְּוָנָא תִלְבַּשׁ וְהַמוֹנְכָא דִי־
tua Munera , rege coram dicens & , Daniel respondens Tunc .dominaberis regno in tertius & , tuo collo super auri
17 דַהֲבָא עַל־צַוְּארָךְ וְתַלְתָּא בְּמַלְכוּתָא תִּשְׁלַט׃ בֵּאדַיִן עָנֵה דָנִיֵּאל וְאָמַר קֳדָם מַלְכָּא מַתְּנָתָךְ
Tu .ei notificabo interpretationem & , regi legam scripturam veruntamen : da alteri tua honoraria & , existendum ad tibi
18 לָךְ לֶהֶוְיָן וּנְבָזְבְּיָתָךְ לְאָחֳרָן הַב בְּרַם כְּתָבָא אֶקְרֵא לְמַלְכָּא וּפִשְׁרָא אֲהוֹדְעִנֵּהּ׃ אַנְתָּה
magnificentiâ propter Et .tuo patri Nebuchadnesar dedit decorem & , gloriam & , magnificentiâ & , regnum altissimus Deus ; rex
19 מַלְכָּא אֱלָהָא עִלָּאָה מַלְכוּתָא וּרְבוּתָא וִיקָרָא וְהַדְרָא יְהַב לִנְבֻכַדְנֶצַּר אֲבוּךְ׃ וּמִן־רְבוּתָא
, occidens erat , volens erat quos : ejus facie à timentes & trementes fuerunt linguæ & nationes , populi omnes , ei dedit quam
דִּי יְהַב־לֵהּ כֹּל עַמְמַיָּא אֻמַיָּא וְלִשָּׁנַיָּא הֲווֹ זָאֲעִין וְדָחֲלִין מִן־קֳדָמוֹהִי דִּי־הֲוָא צָבֵא הֲוָה קָטֵל
quando Et .humilians erat , volens erat quos & , extollens erat , volens erat quos & , vivificans erat , volens erat quos &
20 וְדִי־הֲוָה צָבֵא הֲוָה מַחֵא וְדִי־הֲוָה צָבֵא הֲוָה מָרִים וְדִי־הֲוָא צָבֵא הֲוָא מַשְׁפִּל׃ וּכְדִי
gloriam & , sui regni solio de est factus descendere : superbiam ad est roboratus ejus spiritus & , ejus cor fuit elevatum
רִם לִבְבֵהּ וְרוּחֵהּ תִּקְפַת לַהֲזָדָה הָנְחַת מִן־כָּרְסֵא מַלְכוּתֵהּ וִיקָרֵהּ
herba : ejus habitatio onagris cum & , adæquatum bestiis cum ejus cor & , est detrusus hominis filiis à Et .eo ab abstulerunt
21 הֶעְדִּיו מִנֵּהּ׃ וּמִן־בְּנֵי אֲנָשָׁא טְרִיד וְלִבְבֵהּ עִם־חֵיוְתָא שַׁוִי וְעִם־עֲרָדַיָּא מְדוֹרֵהּ עִשְׂבָּא
regno in altissimus Deus potens quod cognovit donec ; fuit tinctum ejus corpus cœlorum rore è & , ei sapuerunt bobus ut
כְתוֹרִין יְטַעֲמוּנֵּהּ וּמִטַּל שְׁמַיָּא גִּשְׁמֵהּ יִצְטַבַּע עַד דִּי־יְדַע דִּי־שַׁלִּיט אֱלָהָא עִלָּאָה בְּמַלְכוּת
respectu omni , tuum cor humiliasti non Belsasar ejus filius tu Et .illud super constituet , voluerit quem eum & , hominis
22 אֲנָשָׁא וּלְמַן־דִּי יִצְבֵּא יְהָקֵים עֲלַיהּ׃ וְאַנְתָּה בְּרֵהּ בֵּלְשַׁאצַּר לָא הַשְׁפֵּלְתְּ לִבְבָךְ כָּל־קֳבֵל
, tu & , te coram attulerunt ejus domus quæ vasa & , es elevatus cœli Dominum super Et scires hoc totum quòd
23 דִּי כָּל־דְּנָה יְדַעְתְּ׃ וְעַל־מָרֵא שְׁמַיָּא הִתְרוֹמַמְתְּ וּלְמָאנַיָּא דִּי־בַיְתֵהּ הַיְתִיו קָדָמָךְ וְאַנְתָּה
, ligni , ferri , æris , auri & , argenti deos & : eis in bibentes vinum tuæ concubinæ & , tuæ uxores , tui principes &
וְרַבְרְבָנָיךְ שֵׁגְלָתָךְ וּלְחֵנָתָךְ חַמְרָא שָׁתַיִן בְּהוֹן וְלֵאלָהֵי כַסְפָּא וְדַהֲבָא נְחָשָׁא פַרְזְלָא אָעָא
omnes & , ejus manu in tua mens cujus , Deum & : laudasti , scientes neque , audientes neque , videntes non qui , lapidis &
וְאַבְנָא דִּי לָא־חָזַיִן וְלָא־שָׁמְעִין וְלָא יָדְעִין שַׁבַּחְתָּ וְלֵאלָהָא דִּי־נִשְׁמְתָךְ בִּידֵהּ וְכָל־
hæc Et .est designata hæc scriptura & , manus ... palma est missa ejus facie à Tunc .honorâsti non , eum apud tuæ viæ
24 25 אֹרְחָתָךְ לֵהּ לָא הַדַּרְתָּ׃ בֵּאדַיִן מִן־קֳדָמוֹהִי שְׁלִיחַ פַּסָּא דִי־יְדָא וּכְתָבָא דְנָה רְשִׁים׃ וּדְנָה
Deus Numeravit , Mene : sermonis interpretatio Hæc .Upharsin , Techel , Mene , Mene ; est designata quæ scriptura
26 כְתָבָא דִּי רְשִׁים מְנֵא מְנֵא תְּקֵל וּפַרְסִין׃ דְּנָה פְּשַׁר מִלְּתָא מְנֵא מְנָה־אֱלָהָא
.imminutus es inventus & , bilancibus in es Appensus , Techel .illud complevit & , tuum regnum
27 מַלְכוּתָךְ וְהַשְׁלְמַהּ׃ תְּקֵל תְּקִילְתָּה בְמֹאזַנְיָא וְהִשְׁתְּכַחַתְּ חַסִּיר׃

Versio VULG. LAT.

Audivi de te, quoniam ſpiritum deorum habeas: & ſcientia intelligentiaque ac ſapientia ampliores inventæ ſunt in te. Et nunc introgreſſi ſunt in conſpectu meo ſapientes magi, ut ſcripturam hanc legerent, & interpretationem ejus indicarent mihi: & nequiverunt ſenſum hujus ſermonis edicere. Porrò ego audivi de te, quòd poſſis obſcura interpretari, & ligata diſſolvere; ſi ergò vales ſcripturam legere, & interpretationem ejus indicare mihi, purpurâ veſtieris, & torquem auream circa collum tuum habebis, & tertius in regno meo princeps eris. Ad quæ reſpondens Daniel, ait coram rege; Munera tua ſint tibi, & dona domûs tuæ alteri da: ſcripturam autem legam tibi, rex, & interpretationem ejus oſtendam tibi. O rex, Deus Altiſſimus, regnum & magnificentiam, gloriam & honorem dedit Nabuchodonoſor patri tuo. Et propter magnificentiam quam dederat ei, univerſi populi, tribus & linguæ tremebant & metuebant eum: quos volebat, interficiebat: & quos volebat, percutiebat: & quos volebat, exaltabat: & quos volebat, humiliabat. Quando autem elevatum eſt cor ejus, & ſpiritus illius confirmatus eſt ad ſuperbiam, depoſitus eſt de ſolio regni ſui, & gloria ejus ablata eſt: Et à filiis hominum ejectus eſt, ſed & cor ejus cum beſtiis poſitum eſt, & cum onagris erat habitatio ejus: fœnum quoque ut bos comedebat, & rore cœli corpus ejus infectum eſt, donec cognoſceret quòd poteſtatem haberet Altiſſimus in regno hominum: & quemcunque voluerit ſuſcitabit ſuper illud. Tu quoque filius ejus Baltaſſar, non humiliâſti cor tuum, cùm ſcires hæc omnia: Sed adverſum Dominatorem cœli elevatus es: & vaſa domûs ejus allata ſunt coram te: & tu, & optimates tui, & uxores tuæ, & concubinæ tuæ, vinum bibiſtis in eis: deos quoque argenteos, & aureos, & æreos, ferreos, ligneóſque & lapideos, qui non vident, neque audiunt, neque ſentiunt, laudâſti: porrò Deum, qui habet flatum tuum in manu ſua, & omnes vias tuas, non glorificâſti. Idcircò ab eo miſſus eſt articulus manûs, quæ ſcripſit hoc, quod exaratum eſt. Hæc eſt autem ſcriptura, quæ digeſta eſt: MANE, THECEL, PHARES. Et hæc eſt interpretatio ſermonis. MANE: numeravit Deus regnum tuum, & complevit illud. THECEL: appenſus es in ſtatera, & inventus es minus habens.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

14 [illegible]
15 [illegible]
16 [illegible]
[illegible]
[illegible]
17 [illegible]
18 [illegible]
[illegible]
19 [illegible]
[illegible]
20 [illegible]
21 [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
22 [illegible]
23 [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
24 [illegible]
25 [illegible]
[illegible]
[illegible]

* Audivi de te ſpiritum deorum ſanctorum ineſſe tibi, & lucem, prudentiam, atque ſapientiam ampliſſimam in te reperiri. Ingreſſi ſunt coram me præſtigiatores & harioli, ut ſcripturam hanc legerent, & interpretationem ejus indicarent mihi: ſed non potuerunt interpretationem rei exponere mihi. Ego verò audivi de te, poſſe te interpretationes explanare, & nodos ſolvere: ſi potueris ſcripturam hanc legere, & interpretationem ejus notam mihi facere; purpureis induêris, torques aureus imponetur collo tuo, & tertiæ regni parti dominaberis. Tunc reſpondens Daniel dixit regi; Munera tua tibi maneant, & gloriam domûs tuæ aliis confer: cæterùm ſcripturam iſtam ego regi legam, & interpretationem illius indicabo ei. O rex, Deus excelſus regnum & amplitudinem, honorem atque gloriam dederat Nebuchadnoſari patri tuo: Et ob amplitudinem quam contulerat ei, omnes populi, nationes, & linguæ metuebant atque timebant eum: quos volebat occidebat, & quos volebat ſervabat, quos volebat extollebat, & quos volebat deprimebat. Sed cùm animus ejus intumuiſſet, & ſpiritus ejus obduratus eſſet ad inique ſe gerendum; decidit è ſolio regni ſui, & decus ejus ademptum eſt ab eo: Ex hominibus depulſus eſt, & animus ejus ferino ſimilis effectus, cum onagris verſatus eſt, ac fœno ceu bovem cibârunt eum, rore cœli corpus ejus intinctum, adeoque pili ejus creverant in modum aquilarum, & ungues ejus in modum volucrum: donec agnovit dominari Deum ſupremum in regno hominum, ita ut cui voluerit conferat illud, & abjectiſſimum hominum evehat ad illud. Tu autem Bltſaſar filius ejus, non ſummiſiſti cor tuum, cùm hæc omnia ſcires: Imò contra Dominum cœli adeò te extuliſti, ut vaſa domûs ejus coram te ſint allata, & tu proceréſque tui, uxores & concubinæ tuæ vinum biberitis in eis; & deos aureos & argenteos, æneos ferreóſque, ligneos atque lapideos, qui nec vident, nec audiunt, neque cognoſcunt, laudaveris: Deum verò cujus in manibus eſt halitus tuus, & cujus ſunt omnes viæ tuæ, nequaquam laudaveris, neque glorificaveris. Tunc à conſpectu ejus miſſa eſt vola manûs, & ſcripturam iſtam exaravit. Quod autem ad ſcripturam hanc exaratam, Mene, mena, tecquel, apharſin: Hæc eſt rei interpretatio: Mene, Numeravit Deus regnum tuum, & tradidit illud: Tecquel appenſus es in bilance, & inventus es minoris ponderis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

Ἤκουσα περὶ σοῦ ὅτι πνεῦμα θεοῦ ἐν σοί, καὶ γρηγόρησις, καὶ σύνεσις, καὶ σοφία περισσὴ εὑρέθη ἐν σοί. Καὶ νῦν εἰσῆλθον (σ) ἐνώπιόν μου οἱ σοφοί, μάγοι, γαζαρηνοί, ἵνα τὴν γραφὴν (τ) ταύτην ἀναγνῶσι, καὶ τὴν σύγκρισιν (υ) γνωρίσωσί μοι, καὶ οὐκ ἠδυνήθησαν ἀναγγεῖλαί μοι. Καὶ ἐγὼ ἤκουσα περὶ σοῦ, ὅτι (φ) δύνασαι κρίματα συγκρῖναι. νῦν οὖν ἐὰν δυνηθῇς τὴν (′) γραφὴν ἀναγνῶναι, καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτῆς γνωρίσαι μοι, πορφύραν ἐνδύσῃ, καὶ ὁ μανιάκης ὁ χρυσοῦς ἔσται (χ) ἐπὶ τῷ τραχήλῳ σου, καὶ τρίτος ἐν τῇ βασιλείᾳ μου ἄρξεις. (ψ) Καὶ εἶπε Δανιὴλ ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, Τὰ δόματά σου (ω) σοὶ ἔστω, καὶ τὴν δωρεὰν τῆς οἰκίας σου ἑτέρῳ δός, ἐγὼ δὲ τὴν γραφὴν ἀναγνώσομαι (α), καὶ τὴν σύγκρισιν αὐτῆς γνωρίσω σοι, Βασιλεῦ. ὁ θεὸς ὁ ὕψιστος τὴν βασιλείαν, καὶ τὴν μεγαλωσύνην, καὶ τὴν τιμήν, καὶ τὴν δόξαν ἔδωκε Ναβουχοδονόσορ τῷ πατρί σου. Καὶ ἀπὸ τῆς μεγαλωσύνης ἧς ἔδωκεν αὐτῷ, πάντες οἱ λαοί, φυλαί, γλῶσσαι ἦσαν τρέμοντες καὶ φοβούμενοι ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ· οὓς (β) ἠβούλετο αὐτὸς ἀνῄρει, καὶ οὓς (γ) ἠβούλετο αὐτὸς ἔτυπτεν, καὶ οὓς (δ) ἠβούλετο αὐτὸς (ε) ὕψου, καὶ οὓς ἠβούλετο αὐτὸς ἐταπείνου. Καὶ ὅτε ὑψώθη ἡ καρδία αὐτοῦ, καὶ τὸ πνεῦμα αὐτοῦ ἐκραταιώθη τοῦ (ζ) ὑπερηφανεύσασθαι, κατηνέχθη ἀπὸ τοῦ θρόνου τῆς βασιλείας (η), καὶ ἡ τιμὴ ἀφῃρέθη ἀπ᾿ αὐτοῦ. Καὶ ἀπὸ τῶν ἀνθρώπων ἐξεδιώχθη, καὶ ἡ καρδία αὐτοῦ μετὰ τῶν θηρίων ἐδόθη, καὶ (θ) μετὰ τῶν ὀνάγρων ἡ κατοικία αὐτοῦ, καὶ χόρτον ὡς βοῦν ἐψώμιζον αὐτόν, καὶ ἀπὸ τῆς δρόσου τοῦ οὐρανοῦ τὸ σῶμα αὐτοῦ ἐβάφη, ἕως οὗ ἔγνω ὅτι κυριεύει (ι) ὁ θεὸς ὁ ὕψιστος τῆς βασιλείας τῶν ἀνθρώπων, καὶ ᾧ (κ) ἂν δόξῃ, δώσει αὐτήν. Καὶ σὺ (λ) οὖν ὁ υἱὸς αὐτοῦ Βαλτάσαρ οὐκ ἐταπείνωσας τὴν καρδίαν σου (μ) κατενώπιον τοῦ θεοῦ. οὐ πάντα ταῦτα ἔγνως; Καὶ ἐπὶ τὸν κύριον θεὸν τοῦ οὐρανοῦ ὑψώθης, καὶ τὰ σκεύη τοῦ οἴκου αὐτοῦ (ν) ἤνεγκαν ἐνώπιόν σου, καὶ σὺ καὶ οἱ μεγιστᾶνές σου, καὶ αἱ παλλακαί σου, καὶ (ξ) αἱ παράκοιτοί σου οἶνον ἐπίνετε ἐν αὐτοῖς, καὶ τοὺς θεοὺς τοὺς χρυσοῦς, καὶ ἀργυροῦς, καὶ χαλκοῦς, καὶ σιδηροῦς, καὶ ξυλίνους, καὶ λιθίνους, οἳ οὐ βλέπουσι, καὶ (ο) οἳ οὐκ ἀκούουσι, καὶ οὐ γινώσκουσιν, ᾔνεσας, καὶ τὸν θεὸν οὗ ἡ πνοή σου ἐν (″) χειρὶ αὐτοῦ καὶ πᾶσαι αἱ ὁδοί σου, αὐτὸν οὐκ ἐδόξασας. Διὰ τοῦτο ἐκ προσώπου αὐτοῦ ἀπεστάλη ἀστράγαλος χειρός, καὶ τὴν γραφὴν ταύτην ἐνέταξε. Καὶ αὕτη ἡ γραφὴ (π) ἐντεταγμένη, Μανή, Θεκέλ, Φάρες. Τοῦτο τὸ σύγκριμα τοῦ ῥήματος· Μανή, ἐμέτρησεν ὁ θεὸς τὴν βασιλείαν σου, καὶ ἐπλήρωσεν αὐτήν. Θεκέλ, ἐστάθη ἐν ζυγῷ, καὶ εὑρέθη ὑστεροῦσα.

Audivi de te, quia ſpiritus Dei in te, & vigilantia, & intelligentia, & 14
ſapientia amplior inventæ ſunt in te. Et nunc ingreſſi ſunt in conſpectu 15
meo ſapientes, magi, Gazaveni, ut ſcripturam hanc legerent, & con-
jecturam ejus indicarent mihi: & non potuerunt indicare mihi. Et 16
ego audivi de te, quia potes conjecturas conjicere. Nunc igitur ſi pote-
ris ſcripturam legere, & conjecturam ejus indicare mihi; purpurâ
veſtieris, & torques aureus erit ſuper collum tuum, & tertius in
regno meo principaberis. Et dixit Daniel coram rege; Munera tua ſint 17
tibi; & donum domûs tuæ alteri des, Ego autem ſcripturam legam,
& conjecturam ejus oſtendam tibi. O rex, Deus altiſſimus regnum, & 18
magnificentiam, & honorem, & gloriam dedit Navuchodonoſor patri
tuo: Et à magnificentia, quam dederat ei, omnes populi, tribus, lin- 19
guæ erant trementes, & metuentes à facie ejus: quos volebat, ipſe in-
terficiebat; & quos volebat, ipſe percutiebat; & quos volebat, ipſe ex-
altabat; & quos volebat, ipſe humiliabat. Et quando elevatum eſt cor 20
ejus, & ſpiritus ejus obfirmatus eſt ad ſuperbiendum; depoſitus eſt de
ſolio regni; & honor ablatus eſt ab eo: Et ex hominibus ejectus eſt: & 21
cor ejus cum beſtiis datum eſt, & cum onagris habitatio ejus: & fœno,
ut bovem, cibaverunt eum, & de rore cœli corpus ejus infectum eſt, do-
nec cognovit, quia dominatur Deus altiſſimus ſuper regnum hominum;
& cuicunque voluerit, dabit illud. Et tu igitur, filius ejus Baltaſar, 22
non humiliâſti cor tuum coram Deo: nónne omnia hæc noras? Et ſu- 23
per Dominum Deum cœli elevatus es: & vaſa domûs (d) ejus attule-
runt coram te: & tu, & optimates tui, & ſcorta tua, & concubinæ
tuæ vinum bibebatis in eis: deóſque aureos, & argenteos, & æneos, et
ferreos, et ligneos, et lapideos, qui non vident, neque audiunt, neque
ſentiunt, laudâſti: et Deum, cujus ſpiratio tua in manu ejus, et omnes
viæ tuæ, ipſum non glorificâſti. Idcircò à facie ejus miſſus eſt articulus 24
manûs, et ſcripturam hanc ordinavit. Et hæc eſt ſcriptura ordinata, 25
Mane, Thecel, Phares. Hec eſt interpretatio verbi: Mane, menſus eſt 26
Deus regnum tuum, et complevit illud. Thecel, appenſum eſt in ſtatera, 27
et inventum eſt minus habens.

MS.A. (σ) ἐνώπιον ἐμοῦ (τ) ἀναγνῶσιν, (υ) αὐτῆς (φ) σὺ δύνασαι κρίματα συγκρίνειν. (′) γραφὴν ταύτην (χ) περὶ τὸν τράχηλόν σου, (ψ) Τότε ἀπεκρίθη Δανιὴλ
(ω) σὶν σοὶ (α) τῷ βασιλεῖ, καὶ τὴν (β) ἐβούλετο (γ) ἐβούλετο (δ) ἐβούλετο (ε) ὑψοῖ, καὶ οὓς ἐβούλετο (ζ) ὑπερηφανεύσασθαι, (η) αὐτοῦ, (θ) μετὰ ὀνάγρων (ι) ὁ ὕψιστος (κ) ἐὰν (λ)
ἱὸς (μ) ἐνώπιον (ν) ἤνεγκας (ξ) *οἱ (ο) οὐ γινώσκουσιν, (″) τῇ χειρὶ (π) ἡ ἐντεταγμένη,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* سمعت عنك ان روح الله القدوس فيك. ويقظة وفهم وحكمة مضعفة وجدت فيك.
* والان دخل امامي الحكماء المجوس المنجمون لكي يقراوا هذه الكتابة ويعرفوني تاويلها.
فلم يستطيعوا ان يخبروني * وانا سمعت عنك انك تقدر تعبر الكلمات. والان ان
قدرت تقرا الكتابة وتعرفني تاويلها. تلبس برفيرا. ويكون طوق ذهب على عنقك.
وتسود ثلث في مملكتي * حينئذ اجاب دانيال وقال امام الملك. عطاياك تكون معك.
وموهبة بيتك اعطيها لاخر. وانا اقرا الكتابة للملك. واعرفك بتاويلها * ايها الملك
الاله العلي اعطى لبختنصر ابيك المملكة والعظمة والكرامة والمجد * ومن العظمة
التي اعطاها له. جميع الشعوب والقبايل والالسن كانوا مرتعدين وخايفين من وجهه
وهو كان يقتل الذين يشاء. ويضرب الذين يشاء. ويرفع الذين يشاء. ويذل الذين
يشاء * ولما ارتفع قلبه. وقويت روحه ليتعظم. انزل عن كرسي مملكته. ونزعت
عنه كرامته * وطرد من البشر. واعطي قلبه مع الوحوش. ومع حمير الوحش كان
مسكنه. واطعموه العشب مثل الثور. وانصبغ جسده من طل السماء. الى ان عرف
ان الله العلي يسود مملكة الناس. ويعطيها لمن يرا * وانت ابنه بلطشاصر لم
تواضع قلبك قدام الله. ولا عرفت كل هذا * وترفعت على الرب اله السماء. وقدموا
انية بيته امامك. وانت وعظماوك وسراريك ونساوك شربت خمرا بهم. والهتك الذهب
والفضة والنحاس والحديد. والخشب والحجارة التي لا تنظر ولا تسمع ولا تعلم سبحتهم
والهك الذي نسمتك في يديه وجميع طرقك لم تمجده * لاجل هذا من وجهه ارسل
اعلى يد ورتبت هذه الكتابة * وهذه الكتابة المرسومة. مقيس موزون مقسوم
* وهذا تاويل الكلمة. مقيس قاس الله مملكتك واكملها * موزون وزنت في الميزان
ووجدت ناقصة.

Audivi de te ſpiritum Dei ſanctum in- 14
eſſe tibi, & vigilantiam, intelligentiam,
& ſapientiam duplicatam in te reper-
tam. Jam ingreſſi ſunt ad me ſapien- 15
tes, magi, aſtrologi; ut ſcripturam hanc
legerent, & interpretationem indicarent
mihi: verùm non potuerunt indicare
mihi. Porrò audivi de te, poſſe te 16
verba interpretari. Jam ſi poſſis hanc
ſcripturam legere, & indicare mihi inter-
pretationem ejus; induêris purpurâ,
eritque collare aureum in collo tuo, &
tertius dominaberis in regno meo. Tunc 17
reſpondit Daniel, dixitque coram re-
ge; Munera tua penes te maneant,
& donum domûs tuæ alteri concede:
ego quidem legam ſcripturam hanc re-
gi, & notam faciam tibi interpreta-
tionem ejus. O rex, Deus ſupremus 18
contulerat Bichtonaſſari patri tuo re-
gnum, magnificentiam, honorem, atque
gloriam: Et propter magnificentiam 19
quam contulerat ei, omnes populi, na-
tiones, & linguæ verebantur & me-
tuebant vultum ejus: & ipſe interfi-
ciebat quos volebat, percutiebat quos
volebat, evehebat quos volebat, et hu-
miliabat quos volebat. Cum autem 20
elatum fuiſſet cor ejus, et ſpiritus ejus
obfirmatus ad ſuperbiendum; depoſitus
fuit de ſolio regni ſui, et ablatus ab eo
honor ipſius: Ejectus fuit ex homi- 21
nibus, et datum illi cor cum beſtiis,
cum onagris fuit habitatio ejus, cibârunt
eum fœno quaſi bovem, et perfuſum
eſt corpus ejus rore cœli: quoad cogno-
viſſet Deum ſupremum dominari regno
hominum, et conferre illud cui arbi-
tratus fuerit. Jam tu Baltaſaſar fili- 22
us ejus, non humiliâſti cor tuum co-
ram Deo, neque cognovìſti hæc omnia:
Sed contra Dominum Deum cœli ſuper- 23
biviſti, et attulerunt tibi vaſa domûs
ejus, & tu ac principes tui, concubinæ
et uxores tuæ bibiſti vinum in eis;
et deos tuos aureos, argenteos, æne-
os, et ferreos, ligneos, atque lapideos,
qui neque vident, neque audiunt, neque
cognoſcunt, laudâſti: Deum verò tu-
um in cujus manibus exiſtit ſpiratio
tua et omnes ſemitæ tuæ, non glorifi-
câſti. Idcircò à conſpectu ejus miſſi 24
ſunt digiti manûs qui ſcripturam hanc
diſpoſuerunt. Cæterùm hæc eſt ſcriptura 25
illa exarata; Menſuratum, Appenſum,
Diviſum. Et hæc eſt interpretatio ver- 26
bi; Menſuratum, menſus eſt Deus re-
gnum tuum, et complevit illud:
Appenſum, appenſum eſt in ſtatera, et 27
inventum eſt deficiens.

28 , purpura Danielem induerunt & , Belſaſar dixit Tunc .Paras & Madai eſt datum & ,tuum regnum eſt diviſum ,Peres
פרס פריסת מלכותך ויהיבת למדי ופרס: באדין ׀ אמר בלשאצר והלבשו לדניאל ארגונא
29 nocte in ipſa In .regno in tertium imperantem exiſtendum ad quòd,eo ſuper prædicaverunt &:ej⁹ collo ſuper auri quæ torques &
30 והמונכא די דהבא על צוארה והכרזו עלוהי די להוא שליט תלתא במלכותא: בה בליליא
.duorum & ſexaginta annorum jam ; regnum ſuſcepit Medus Dariaves Et .Chaldæus rex Belſaſar eſt interfect⁹
31 קטיל בלשאצר מלכא כשדיא: חצי הספר ודריוש מדיא קבל מלכותא כבר שנין שתין ותרתין:

CAP. VI. ו

.regno toto in exiſtendum ad qui;viginti & centum ſecundos rege à regnum ſuper conſtituit &,Dariaves coram fuit Pulchrum
1 שפר קדם דריוש והקים על מלכותא לאחשדרפניא מאה ועשרין די להון בכל מלכותא:
rex & , conſilium eis dantes ipſi principes magni eſſent quibus : eis ex unus Daniel quibus ,tres præſides illis ab ſupra Et
2 ועלא מנהון סרכין תלתה די דניאל חד מנהון די להון אחשדרפניא אלין יהבין להון טעמא ומלכא
ſpiritus quòd reſpectu omni ,magnos principes & præſides ſuper ſuperans erat ipſe Daniel Tunc .affectus damno eſſet non
3 לא להוא נזק: אדין דניאל דנה הוא מתנצח על סרכיא ואחשדרפניא כל קבל די רוח
quærentes fuerunt ſatrapæ & ,præſides Tunc .regnum totum ſuper eum conſtituere cogitabat rex & : eo in præſtans
4 יתירא בה ומלכא עשית להקמותה על כל מלכותא: אדין סרכיא ואחשדרפניא הוו בעין
reſpectu omni , invenire valentes non corruptelam &,occaſionem omnem & : regni parte ex Danielem contra invenire occaſionem
עלה להשכחה לדניאל מצד מלכותא וכל עלה ושחיתה לא יכלין להשכחה כל קבל
non Quia ,dicentes iſti viri Tunc .eo ſuper inveniretur non corruptela & ,error omnis & , ipſe fidelis quòd
5 די מהימן הוא וכל שלו ושחיתה לא השתכחת עלוהי: אדין גבריא אלך אמרין די לא
, præſides Tunc .ſui Dei lege in eum contra inveniamus niſi ;occaſionem omnem hunc Danielem contra inveniemus
6 נהשכח לדניאל דנה כל עלא להן השכחנא עלוהי בדת אלהה: אדין סרכיא
inierunt Conſilium .vive ſecula in rex Dariaves ,ei dicentes ſic & ;regem ſuper convenerunt tumultuariè iſti ſatrapæ &
7 ואחשדרפניא אלן הרגשו על מלכא וכן אמרין לה דריוש מלכא לעלמין חיי: אתיעטו
; obvinctionem roborate & , regis ſtatutum ſtatuere , duces & , ductores , ſatrapæ & , magiſtratus , regni præſides omnes
כל סרכי מלכותא סגניא ואחשדרפניא הדבריא ופחותא לקימה קים מלכא ולתקפה אסר
lacum in projiciatur , rex te à niſi , triginta dies ad uſque homine & Deo omni ab petitionem petierit qui omnis quòd
די כל די יבעא בעו מן כל אלה ואנש עד יומין תלתין להן מנך מלכא יתרמא לגב
non ut ,Paras & Madai legem juxta mutandum ad non ut ; ſcripturam deſignabis & ,obvinctionem confirmabis rex Nunc .leonum
8 אריותא: כען מלכא תקים אסרא ותרשם כתבא די לא להשניה כדת מדי ופרס די לא
deſignata quòd cognovit quando Daniel Et .obvinctionem &,ſcripturam deſignavit Dariaves rex , hoc reſpectu Omni .tranſgrediatur
9 תעדא: כל קבל דנה מלכא דריוש רשם כתבא ואסרא: ודניאל כדי ידע די רשים
10 die in tribus temporibus & : Jeruſalaim contra ſuo cænaculo in ſibi apertis feneſtris & ; ſuam domum in eſt ingreſſus , ſcriptura
כתבא על לביתה וכוין פתיחן לה בעליתה נגד ירושלם וזמנין תלתה ביומא
.hoc ante ab faciens fuerat quo pacto omni Domino coram confitens & , orans & , ſua genua ſuper genuflectens ipſe
הוא ברך על ברכוהי ומצלא ומודא קדם אלהה כל קבל די הוא עבד מן קדמת דנה:
.ſuo Deo coram deprecantem & poſtulantem Danielem invenerunt &,venerunt tumultuariè illi viri Tunc
11 אדין גבריא אלך הרגשו והשכחו לדניאל בעא ומתחנן קדם אלהה:

Verſio VULG. LAT.

PHARES : diviſum eſt regnum tuum, & datum eſt 28
Medis & Perſis. Tunc, jubente rege, indutus eſt Daniel 29
purpurâ, & circumdata eſt torques aurea collo ejus : &
prædicatum eſt de eo quòd haberet poteſtatem tertius in
regno ſuo. Eâdem nocte interfectus eſt Baltaſſar rex Chal- 30
dæus. Et Darius Medus ſucceſſit in regnum annos natus 31
ſexaginta duos.

CAP. VI.

PLacuit Dario, & conſtituit ſuper regnum ſatrapas cen- 1
tum viginti, ut eſſent in toto regno ſuo : Et ſuper eos 2
principes tres, ex quibus Daniel unus erat : ut ſatrapæ illis
redderent rationem, & rex non ſuſtineret moleſtiam. Igi- 3
tur Daniel ſuperabat omnes principes & ſatrapas : quia
ſpiritus Dei amplior erat in illo. Porrò rex cogitabat 4
conſtituere eum ſuper omne regnum : undè principes &
ſatrapæ quærebant occaſionem ut invenirent Danieli ex la-
tere regis : nullámque cauſam & ſuſpicionem reperire po-
tuerunt, eò quòd fidelis eſſet, & omnis culpa & ſuſpicio
non inveniretur in eo. Dixerunt ergò viri illi; Non in- 5
veniemus Danieli huic aliquam occaſionem, niſi fortè in
lege Dei ſui. Tunc principes & ſatrapæ ſurripuerunt re- 6
gi, & ſic locuti ſunt ei; Dari rex, in æternum vive: Con- 7
ſilium inierunt omnes principes regni tui, magiſtratus, &
ſatrapæ, ſenatores, & judices, ut decretum imperatorium
exeat, & edictum : Ut omnis qui petierit aliquam petitio-
nem à quocunque Deo & homine, uſque ad triginta dies,
niſi à te, rex, mittatur in lacum leonum. Nunc itaque, rex, 8
confirma ſententiam, & ſcribe decretum : ut non immute-
tur quod ſtatutum eſt à Medis & Perſis, nec prævaricari
cuiquam liceat. Porrò rex Darius propoſuit edictum, & 9
ſtatuit. Quod cùm Daniel comperiſſet, id eſt, conſtitu- 10
tam legem, ingreſſus eſt domum ſuam : & feneſtris apertis
in cœnaculo ſuo contra Jeruſalem tribus temporibus in
die flectebat genua ſua, & adorabat, confitebatúrque co-
ram Deo ſuo, ſicut & antè facere conſueverat. Viri ergò 11
illi curioſiùs inquirentes, invenerunt Danielem orantem &
obſecrantem Deum ſuum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

28 * ܦܪܣ. ܦܪܝܣܐ ܗܝ ܡܠܟܘܬܟ ܘܐܫܬܠܡܬ ܠܡܕܝܐ ܘܠܦܪܣܝܐ. * ܗܝܕܝܢ ܐܡܪ ܡܠܟܐ
29 ܒܠܛܫܐܨܪ. ܘܐܠܒܫܘܗܝ ܠܕܢܝܐܝܠ ܐܪܓܘܢܐ. ܘܗܡܝܢܟܐ ܕܕܗܒܐ ܐܬܬܣܝܡ ܥܠ ܨܘܪܗ. ܘܐܟܪܙܘ ܥܠܘܗܝ
30 ܕܢܗܘܐ ܫܠܝܛ ܬܠܬܐ ܒܡܠܟܘܬܐ. * ܒܗ ܒܠܠܝܐ ܩܛܝܠ ܒܠܛܫܐܨܪ ܡܠܟܐ ܟܠܕܝܐ.
ܘܕܪܝܘܫ ܡܕܝܐ ܩܒܠ ܡܠܟܘܬܐ. ܐܝܟ ܒܪ ܫܢܝܢ ܫܬܝܢ ܘܬܪܬܝܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

1 * ܘܫܦܪ ܩܕܡ ܕܪܝܘܫ. ܘܐܩܝܡ ܒܡܠܟܘܬܗ ܪܒܝ ܚܝܠܐ ܡܐܐ ܘܥܣܪܝܢ. ܕܢܗܘܘܢ ܒܟܠܗ̇
2 ܡܠܟܘܬܗ. * ܘܥܠܝܗܘܢ ܡܕܒܪܢܐ ܬܠܬܐ. ܘܕܢܝܐܝܠ ܚܕ ܡܢܗܘܢ. ܕܢܗܘܘܢ ܪܒܝ
3 ܚܝܠܐ ܗܠܝܢ ܝܗܒܝܢ ܠܗܘܢ ܚܘܫܒܢܐ. ܘܡܠܟܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܡܬܢܙܩ. * ܗܝܕܝܢ
ܕܢܝܐܝܠ ܡܬܝܬܪ ܗܘܐ. ܡܢ ܟܠܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܡܝܬܪܬܐ ܐܝܬ ܗܘܬ ܒܗ. ܘܡܠܟܐ
4 ܐܬܚܫܒ ܠܡܩܡܘܬܗ ܥܠ ܟܠܗ̇ ܡܠܟܘܬܗ. * ܗܝܕܝܢ ܡܕܒܪܢܐ ܘܪܒܝ ܚܝܠܐ. ܒܥܝܢ
ܗܘܘ ܥܠܬܐ ܕܢܫܟܚܘܢ ܥܠ ܕܢܝܐܝܠ ܡܢ ܨܒܘܬ ܡܠܟܘܬܐ. ܘܟܠ ܫܚܬܐ ܘܥܠܠ ܠܐ ܐܫܟܚܘ
ܒܗ. ܡܛܠ ܕܡܗܝܡܢ ܗܘܐ ܒܐܠܗܗ. ܘܫܘܪܥܐ ܕܣܟܠܘܬܐ ܠܐ ܐܫܟܚܘ ܒܗ.
5 * ܘܐܡܪܝܢ ܓܒܪܐ ܗܠܝܢ. ܠܐ ܡܫܟܚܝܢܢ ܥܠ ܕܢܝܐܝܠ ܗܢܐ ܥܠܬܐ. ܐܠܐ ܐܢ ܐܫܟܚܢ ܥܠܘܗܝ
6 ܒܢܡܘܣܐ ܕܐܠܗܗ. * ܗܝܕܝܢ ܩܪܒܘ ܡܕܒܪܢܐ ܘܪܒܝ ܚܝܠܐ ܠܘܬ ܡܠܟܐ. ܘܐܡܪܝܢ ܠܗ.
7 ܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ ܠܥܠܡ ܚܝ. * ܐܬܡܠܟܘ ܟܠܗܘܢ ܡܕܒܪܢܐ ܕܡܠܟܘܬܐ : ܘܐܦܪܟܝܐ
ܘܪܒܝ ܚܝܠܐ ܘܡܪܘܬܐ. ܠܡܩܡܘ ܩܝܡܐ ܒܡܠܟܐ. ܘܠܡܚܣܢܘ ܐܣܪܐ. ܕܟܠ ܕܢܒܥܐ ܒܥܘ
ܡܢ ܟܠ ܐܠܗܐ ܘܐܢܫ. ܥܕܡܐ ܠܬܠܬܝܢ ܝܘܡܝܢ : ܐܠܐ ܐܢ ܡܢܟ ܡܠܟܐ. ܢܬܪܡܐ
8 ܒܓܘܒܐ ܕܐܪܝܘܬܐ. * ܡܟܝܠ ܡܠܟܐ. ܦܩܘܕ ܦܘܩܕܢܐ ܗܢܐ. ܘܟܬܘܒ ܟܬܒܐ. ܕܠܐ
9 ܢܥܒܪ ܒܢܡܘܣܐ ܕܡܕܝܐ ܘܦܪܣܝܐ. ܘܠܐ ܢܫܬܚܠܦ. * ܗܝܕܝܢ ܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ. ܪܫܡ
10 ܟܬܒܐ. ܘܦܩܕ ܦܘܩܕܢܐ. * ܘܟܕ ܝܕܥ ܕܢܝܐܝܠ ܕܐܬܪܫܡ ܟܬܒܐ. ܥܠ ܠܒܝܬܗ.
ܘܟܘܐ ܦܬܝܚܢ ܗܘܝ ܒܥܠܝܬܗ. ܠܘܩܒܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܬܠܬ ܙܒܢܝܢ ܒܝܘܡܐ ܒܪܟ ܗܘܐ
11 ܥܠ ܒܘܪܟܘܗܝ. ܘܡܨܠܐ ܘܡܘܕܐ ܩܕܡ ܐܠܗܗ. ܐܝܟܢܐ ܕܥܒܕ ܗܘܐ ܡܢ ܩܕܝܡ. * ܗܝܕܝܢ
ܓܒܪܐ ܗܠܝܢ. ܪܓܫܘ ܘܐܫܟܚܘܗܝ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܕܒܥܐ ܘܡܬܟܫܦ ܩܕܡ ܐܠܗܗ.

Pheres, diviſum eſt regnum tuum, traditúm- 28
que Medis ac Perſis. Tunc edixit rex Blit- 29
ſaſar, & induerunt Danielem purpureis, &
torques aureus fuit impoſitus collo ejus, &
proclamaverunt de eo ipſum dominaturum
tertiæ regni parti. Eâdem nocte interfectus 30
eſt Blitſaſar rex Chaldæus : & Darius Me-
dus regnum accepit natus annos circiter ſex-
aginta duos.

CAP. VI.

PLacuit autem Dario creare in regno ſuo 1
duces militiæ centum viginti, qui præeſſent
toti regno ſuo : Et ſuper iſtos, præſides tres, 2
quorum unus fuit Daniel; ut duces illi mili-
tiæ his rationem redderent, ac proinde rex
nullâ moleſtiâ afficeretur. Tunc Danielem, 3
ut erat cæteris præſtantior, eò quòd excel-
lentiori ſpiritu præditus eſſet; cogitavit rex
univerſo regno ſuo præficere. Tunc præſi- 4
des & militiæ duces, quærebant occaſionem
aliquam contra Danielem invenire ab admi-
niſtratione regni : ſed nullum crimen aut
occaſionem invenerunt adverſùs eum, quòd
fidelis eſſet in Deo ſuo. Cùm ergò nullius cri-
men facinoris inveniſſent adverſùs eum, Di- 5
xerunt viri illi; Nullam reperiemus contra
Danielem iſtum occaſionem, niſi reperiamus
aliquid adverſùs eum in lege Dei ſui. Tunc 6
accedentes præſides & militiæ duces ad re-
gem, dixerunt ei; Darie rex, æternùm vive:
Decreverunt omnes regni præſides, proce- 7
res, militiæ duces, ac domini, fœdus inire
in *honorem* regis, & obſtringere ſe vinculo:
ut quicunque petierit petitionem ab ullo deo
aut homine uſque ad dies triginta, præter-
quàm à te rex, conjiciatur in foveam leonum.
Itaque rex, mandatum hoc imperes, & ſcri- 8
ptum exares, quòd juxta legem Medorum
& Perſarum non excidat néve immutetur.
Tunc Darius rex ſcriptum exaravit, & man- 9
davit edictum. Daniel autem cum noviſſet 10
exaratum eſſe ſcriptum, ingreſſus eſt domum
ſuam. Porrò feneſtræ erant apertæ cœnaculo
ejus Jeroſolymam verſùs, tribuſque vici-
bus quotidie in genua procumbens orabat &
gratias agebat Deo ſuo, quemadmodum fa-
ciebat antea. Tunc viri illi obſervantes 11
deprehenderunt Danielem precantem atque
ſupplicantem coram Deo ſuo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

φάρες, διήρηται ἡ βασιλεία σου, καὶ ἐδόθη Μήδοις καὶ Πέρσαις. Καὶ εἶπε Βαλτάσαρ, καὶ ἐνέδυσαν τὸν Δανιὴλ πορφύραν, καὶ τὸν μανιάκην τὸν χρυσοῦν περιέθηκαν περὶ τὸν τράχηλον αὐτοῦ, καὶ ἐκήρυξε περὶ αὐτοῦ, (ρ) εἶναι αὐτὸν ἄρχοντα τρίτον ἐν τῇ (σ) βασιλείᾳ. † Ἐν αὐτῇ τῇ νυκτὶ ἀνῃρέθη (τ) Βαλτάσαρ ὁ βασιλεὺς ὁ Χαλδαῖος, Καὶ Δαρεῖος ὁ Μῆδος παρέλαβε τὴν βασιλείαν, ὢν ἐτῶν ἑξήκοντα δύο.

MS.A. (ρ) τοῦ εἶναι (σ) βασιλείᾳ αὐτοῦ. † ὉΡΑΣΙΣ ϛʹ. ὉΡΑΣΙΣ ζʹ. (τ) Βαλτάσαρ, καὶ Δαρεῖος

Phares, diviſum eſt regnum tuum, & datum eſt Medis & Perſis. Et 28
dixit Baltaſar: & induerunt Danielem purpurâ, & torquem aureum 29
circumdederunt collo ejus: & prædicavit de eo, ipſum eſſe principem tertium in regno. In eadem nocte interfectus eſt Baltaſar rex Chaldæus: 30
Et (e) Darius Medus aſſumpſit regnum, annos natus ſexaginta duos. 31

ΚΕΦ. ϛʹ.

Καὶ ἤρεσεν ἐνώπιον Δαρείου, καὶ κατέστησεν ἐπὶ τῆς βασιλείας σατράπας ἑκατὸν εἴκοσι, τοῦ εἶναι αὐτοὺς ἐν (α) ὅλῃ τῇ βασιλείᾳ αὐτοῦ, Καὶ ἐπάνω αὐτῶν τακτικοὺς τρεῖς, (β) ὧν ἦν Δανιὴλ εἷς ἐξ αὐτῶν, τοῦ ἀποδιδόναι αὐτοῖς τοὺς σατράπας λόγον, ὅπως ὁ βασιλεὺς μὴ ἐνοχλῆται. Καὶ ἦν Δανιὴλ ὑπὲρ αὐτούς, ὅτι πνεῦμα περισσὸν (γ) ἐν αὐτῷ, Καὶ ὁ βασιλεὺς κατέστησεν αὐτὸν ἐφ' ὅλης τῆς βασιλείας αὐτοῦ. καὶ οἱ τακτικοὶ καὶ οἱ σατράπαι ἐζήτουν πρόφασιν εὑρεῖν κατὰ Δανιήλ· καὶ πᾶσαν πρόφασιν καὶ παράπτωμα καὶ (δ) ἀμπλάκημα οὐχ εὗρον κατ' αὐτοῦ, ὅτι πιστὸς ἦν. Καὶ εἶπον οἱ τακτικοί, Οὐχ εὑρήσομεν κατὰ Δανιὴλ πρόφασιν, εἰ μὴ ἐν (ε) νομίμοις θεοῦ αὐτοῦ. Τότε οἱ τακτικοὶ καὶ οἱ σατράπαι παρέστησαν τῷ βασιλεῖ, καὶ εἶπαν αὐτῷ, Δαρεῖε βασιλεῦ, εἰς τοὺς αἰῶνας ζῆθι. Συνεβουλεύσαντο πάντες οἱ ἐπὶ τῆς βασιλείας σου στρατηγοὶ καὶ σατράπαι, ὕπατοι καὶ τοπάρχαι, τοῦ στῆσαι (ζ) στάσει βασιλικῇ, καὶ ἐνισχῦσαι ὁρισμόν, ὅπως ὃς ἂν (η) αἰτήσῃ αἴτημα παρὰ παντὸς θεοῦ καὶ (ʹ) ἀνθρώπου, ἕως ἡμερῶν τριάκοντα, ἀλλ' ἢ παρὰ σοῦ βασιλεῦ, (ʹʹ) ἐμβληθήσεται εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων. Νῦν οὖν βασιλεῦ στῆσον (θ) τὸν ὁρισμόν, καὶ ἔκθες γραφήν, ὅπως μὴ ἀλλοιωθῇ τὸ δόγμα (ι) Περσῶν καὶ Μήδων. Τότε ὁ βασιλεὺς Δαρεῖος ἐπέταξε γραφῆναι τὸ δόγμα. Καὶ Δανιὴλ ἡνίκα ἔγνω ὅτι ἐνετάγη τὸ δόγμα, εἰσῆλθεν εἰς τὸν οἶκον (κ) αὐτοῦ· καὶ αἱ θυρίδες (ʹʹ) ἀνεῳγμέναι αὐτῷ ἐν τοῖς ὑπερῴοις αὐτοῦ κατέναντι Ἱερουσαλήμ, καὶ καιροὺς τρεῖς τῆς ἡμέρας ἦν κάμπτων ἐπὶ τὰ γόνατα αὐτοῦ, καὶ προσευχόμενος καὶ ἐξομολογούμενος ἐναντίον τοῦ θεοῦ αὐτοῦ, καθὼς ἦν ποιῶν ἔμπροσθεν. Τότε οἱ ἄνδρες ἐκεῖνοι παρετήρησαν, καὶ εὗρον τὸν Δανιὴλ ἀξιοῦντα καὶ δεόμενον τοῦ θεοῦ αὐτοῦ.

CAP. VI.

ET placuit coram Dario: & conſtituit ſupra regnum Satrapas centum 1
viginti, ut eſſent in toto regno ſuo: Et ſuper eos (a) Ordinatores tres, 2
quorum erat Daniel unus ex eis, ut Satrapæ illis redderent rationem; ut
rex non ſuſtineret moleſtias. Et erat Daniel ſuper eos: quia ſpiritus amplior 3
erat in eo: Et rex (b) conſtituit eum ſuper omne regnum ſuum. 4
Et Ordinatores, & Satrapæ quærebant invenire occaſionem contra (c)
Danielem: & omnem occaſionem & delictum, & (d) peccatum non invenerunt
in illo, eò quòd fidelis erat. Et dixerunt Ordinatores; Non 5
inveniemus contra Danielem occaſionem, niſi in legitimis Dei ſui. Tunc 6
Ordinatores, & Satrapæ aſtiterunt regi, & dixerunt ei; Dari rex, in æternum
vive. Conſilium inierunt omnes, qui ſuper regnum tuum, Duces, 7
& Satrapæ, Conſules, & Toparchæ, ſtatuere ſtatuto regio, & confirmare
conſtitutionem; ut quicunque petierit petitionem à quocunque Deo, &
homine, uſque ad triginta dies, niſi à te, rex; mittatur in lacum leonum.
Nunc igitur, rex, ſtatue conſtitutionem, & propone ſcripturam; ut non immutetur 8
decretum Perſarum, & Medorum. Tunc rex Darius juſſit ſcribi 9
decretum. Et Daniel, quando cognovit conſtitutum eſſe decretum, intravit 10
in domum ſuam: & feneſtræ apertæ ei in cœnaculis ſuis contra
Hieruſalem: & tribus temporibus diei erat flectens ſe ſuper genua ſua,
& orans, & confitens coram Deo ſuo, ſicut antè facere conſueverat. Tunc 11
viri illi obſervârunt, & invenerunt Danielem obſecrantem, & orantem
Deum ſuum.

MS.A. (α) πάσῃ τῇ (β) ὧν (γ) ἦν ἐπ' αὐτῷ, (δ) ἀμβλάκημα (ε) νόμοις (ζ) στάσιν βασιλικήν, (η) αἰτήσηται αἴτημα (ʹ) ἀνθρώπων, (ʹʹ) ἐμβληθήσεται (θ) ὁρισμόν, (ι) Μήδων καὶ Περσῶν. (κ) ἑαυτοῦ· (ʹʹ) ἠνεῳγμέναι

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* مقسوم قسمت مملكتك ودفعت للماهيين والفرس * حينيذ قال بلطساصر فالبسوا دانيال البرفير ووضعوا طوق الذهب على عنقه * ونادى من اجله ان يكون رييسا ثالثا في مملكته * وفي هذه الليلة قتل بلطساصر الملك الكلداني *

* Diviſum, diviſum eſt regnum tuum, 28
traditúmque Medis ac Perſis. Tunc 29
edicente Baltaſaſare, induerunt Danielem purpurâ, & impoſuerunt collare
aureum ſuper collum ejus, & proclamavit de eo, quòd eſſet princeps tertius
in regno ſuo. Eâdem nocte interfectus eſt Baltaſaſar rex Chaldæus. 30

* الفصل السادس *

* الرويا السابع *

CAP. VI.

Viſio ſeptima.

* وداريوس الماهي اخذ المملكة وهو نحو من اثنين وستين سنة * وحسن امام داريوس واقام على المملكة عظماء جيوش مايه وعشرين ليكونوا في كل مملكته * وفوقهم ثلاث ولاة * وكان دانيال واحدا منهم * ليعطي عظماء الجيوش القول لهم * كيلا يتاذا الملك * وكان دانيال فوقهم * لان روحا مضعفة كانت له * واقامه الملك على مملكته * والولاة وعظماء الجيوش تطلبوا ليجدوا علة على دانيال * فلم يجدوا عليه كل علة ولا زلة ولا جريمة * لانه كان امينا * فقالت الولاة * لم نجد على دانيال علة الا بنواميس الهه * حينيذ وقفت الولاة وعظماء الجيوش للملك * وقالوا له * يا داريوس الملك عش الى الدهور * تشاور جميع الذين على مملكتك * الجند وعظماء الجيوش * والوزراء ورؤساء المواضع * ان يعملوا عهدا ملوكيا * ويرسموا رسما * لكي من يلتمس مسيلة من اله ومن البشر الى ثلثين يوما الا منك ايها الملك * يلقى في جب الاسد * والان ايها الملك اقم رسما وضع كتابة * كيلا يتغير راي الماديين والفرس * حينيذ الملك داريوس امر ان يكتب هذا الراي * وحين علم دانيال ان هذا الراي رسم * دخل الى بيته * وكانت له طاقات مفتوحة في علاليه بازاء اورسليم * وثلاث اوقات في اليوم كان يجثوا على ركبتيه ويصلي ويعترف امام الهه * كما كان يصنع من قبل * حينيذ اوليك الرجال ترصدوا * فوجدوا دانيال يطلب ويتضرع امام الهه *

* DArius autem Medus accepit re- 1
gnum dum annum ageret circiter ſexageſimum
ſecundum. Placuitque Dario
præficere regno principes militiæ centum
viginti, ut eſſent in toto regno ſuo:
Et ſuper hos, tres eparchos; (erat au- 2
tem Daniel unus ex iſtis) ut ad hos
rem deferrent principes militiæ, ne rex
moleſtiam pateretur. Cùm ergò Daniel 3
his ſuperior eſſet, eò quòd duplicatum
ſpiritum haberet; & rex præfeciſſet
eum regno ſuo: Eparchi & princi- 4
pes militiæ exoptaverunt invenire occaſionem
aliquam contra Danielem. Verùm
non invenientes contra eum ullam
occaſionem, culpam, aut facinus, eò
quòd fidelis eſſet: Dixerunt eparchi, 5
Non inveniemus contra Danielem occaſionem
ullam, niſi prætextu legum
Dei ſui. Tunc eparchi & principes 6
militiæ aſtantes regi, dixerunt ei; O
Darie rex, in ſecula vive: Conſilium 7
inierunt omnes præfecti regni tui, milites,
& duces militiæ, proreges, &
toparchæ, de ſtatuendo fœdere regio,
& ſtatutum decernendo; ut quicunque
petitionem rogaret ab ullo deo aut
homine uſque ad triginta dies, præterquam
à te O rex; projiciatur in
foveam leonum. Nunc igitur O rex, 8
decerne ſtatutum, & propone ſcripturam,
ne mutetur ſententia Medorum & Perſarum.
Tunc Darius rex juſſit ut 9
ſcriberetur decretum illud. Cùmque 10
reſciviſſet Daniel exaratam eſſe decretum
illud, ingreſſus eſt domum ſuam.
Habebat autem feneſtras apertas
in cœnaculis ſuis ex adverſo Ieroſolymæ,
& tribus vicibus quotidie flexis
genibus orabat & confitebatur Deo
ſuo, quemadmodum antehac faciebat.
Tunc illi viri obſervantes, & depre- 11
hendentes Danielem precantem & obſecrantem
coram Deo ſuo;

petierit qui homo omnis quòd ,designâsti *obvinctionem* Nonne , *regis obvinctione* super rege coram *dicentes* & ,accesserunt Tunc

12 באדין קרבו ואמרין קדם־מלכא על־אסר מלכא הלא אסר רשמת די כל־אנש די־יבעא

,dixit & , rex respondit ? leonum lacum in projiceretur , rex te à nisi , triginta dies ad usque homine & ,Deo omni ab

מן־כל־אלה ואנש עד־יומין תלתין להן מנך מלכא יתרמא לגוב אריותא ענה מלכא ואמר

Daniel quòd , rege coram *dicentes* & ,responderunt Tunc .transgredietur non qui , *Paras & Madai* legem juxta sermo *Constans*

13 יציבא מלתא כדת־מדי ופרס די־לא תעדא: באדין ענו ואמרין קדם מלכא די דניאל

temporibus & : *designâsti quam obvinctionem super* & , *rationem* rex te super posuit non , Jehudah *quæ* captivitatis filiis de qui

די מן־בני גלותא די יהוד לא־שם עליך מלכא טעם ועל־אסרא די רשמת וזמנין

Daniel super & ,*eo super fuit malum* multùm ,audisset sermonem cùm , rex Tunc .suam petitionem *petens* die in tribus

14 תלתה ביומא בעא בעותה: אדין מלכא כדי מלתא שמע שגיא באש עלוהי ועל דניאל

tumultuariè venerunt illi viri Tunc .eum eruere *satagens fuit* Solis *occasus* ad usq; & :eum *eruendum ad* ,cor posuit

15 שם בל לשיזבותה ועד מעלי שמשא הוה משתדר להצלותה: באדין גבריא אלך הרגשו

rex quod statutum & , *obvinctionem omnem* quòd ,*Paras & Madai* lex quòd , rex Scito , regi *dicentes &* ,*regem super*

על־מלכא ואמרין למלכא דע מלכא די־דת למדי ופרס די־כל־אסר וקים די־מלכא

respondit : leonum *τῶν* lacum in projecerunt & , Danielem adduxerunt &,dixit rex Tunc .mutandum *ad* non , statuerit

16 יהקים לא להשניה: באדין מלכא אמר והיתיו לדניאל ורמו לגבא די אריותא ענה

, unus lapis est allatus Et .te eripiet ipse , *continuatione in ei serviens* tu cui , tuus Deus ,Danielem ad dixit & , rex

17 מלכא ואמר לדניאל אלהך די אנתה פלח־לה בתדירא הוא ישיזבנך: והיתית אבן חדה

voluntas *immutaretur* non ut ,suorum principum annulo *in* &,suo annulo *in* rex *eum* obsignavit & :laci os super est positus &

ושמת על־פם גבא וחתמה מלכא בעזקתה ובעזקת רברבנוהי די לא־תשנא צבו

est elongatus ejus somnus & : *se* coram *introduci fecit* non *mensam* &,*jejunus pernoctavit* &,suum palatium in rex abiit Tunc .Daniele in

18 בדניאל: אדין אזל מלכא להיכלה ובת טות ודחון לא־הנעל קדמוהי ושנתה נדת

.perrexit leonum *τῶν* lacum ad festinatione cum & , *splendore in* surrexit diluculo *in* rex Tunc .eo *super*

19 עלוהי: באדין מלכא בשפרפרא יקום בנגהא ובהתבהלה לגבא די־אריותא אזל:

Dei serve Daniel , Danielem ad dixit & , rex *respondit*:vocavit *dolenti* voce *in* Danielem , lacui *eum appropinquare secundùm* Et

20 וכמקרבה לגבא לדניאל בקל עציב זעק ענה מלכא ואמר לדניאל דניאל עבד אלהא

rege cum Daniel Tunc ? leonibus à te liberare potuit nunquid ,*perseverantia in ei serviens* tu cui,tu Deus,viventis

21 חיא אלהך די אנתה פלח־לה בתדירא היכל לשיזבותך מן־אריותא: אדין דניאל עם־מלכא

quod respectu omni ,me *corrupere* non & ,leonum os conclusit & ,suum angelum misit meus Deus .vive *secula in* Rex , est locutus

22 מלל מלכא לעלמין חיי: אלהי שלח מלאכה וסגר פם אריותא ולא חבלוני כל־קבל די

,eo super fuit *bonus multum* rex Tunc .feci non corruptelam rex te coram etiam &,mihi est inventa *puritas* eo coram

23 קדמוהי זכו השתכחת לי ואף קדמיך מלכא חבולה לא עבדת: באדין מלכא שגיא טאב עלוהי

quia ,eo in est inventa non *corruptio* omnis &,lacu de Daniel est *factus ascendere* &:lacu de *faciendum ascendere ad dixit* Danielem &

ולדניאל אמר להנסקה מן־גבא והסק דניאל מן־גבא וכל־חבל לא־השתכח בה די

sunt projecti leonū lacū in &,Daniel *quæ ejus accusationes* accusaverūt qui illi viri sunt adducti & ,rex dixit Et .suo Deo *in* credidit

24 הימן באלהה: ואמר מלכא והיתיו גבריא אלך די־אכלו קרצוהי די דניאל ולגב אריותא רמו

.contriverunt eorum ossa omnia & ,leones eis in sunt dominati donec , laci *fundum* ad pervenerunt non &:eorū uxores &,eorum filii , ipsi

אנון בניהון ונשיהון ולא־מטו לארעית גבא עד די־שלטו בהון אריותא וכל־גרמיהון הדקו:

Versio VULG. LAT.

Et accedentes locuti sunt regi super edicto; Rex, numquid non constituisti, ut omnis homo, qui rogaret quemquam de diis & hominibus, usque ad dies triginta, nisi te, rex, mitteretur in lacum leonum? Ad quos respondens rex, ait; Verus est sermo, juxta decretum Medorum atque Persarum, quod prævaricari non licet. 12 Tunc respondentes dixerunt coram rege; Daniel de filiis captivitatis Juda, non curavit de lege tua, & de edicto quod constituisti: sed tribus temporibus per diem orat obsecratione sua. 13 Quod verbum cùm audîsset rex, satis contristatus est: & pro Daniele posuit cor ut liberaret eum, & usque ad occasum Solis laborabat ut erueret illum. 14 Viri autem illi intelligentes regem, dixerunt ei; Scito, rex, quia lex Medorum atque Persarum est, ut omne decretum, quod constituerit rex, non liceat immutari. 15 Tunc rex præcepit; & adduxerunt Danielem, & miserunt eum in lacum leonum. Dixítque rex Danieli; Deus tuus, quem colis semper, ipse liberabit te. 16 Allatúsque est lapis unus, & positus est super os laci: quem obsignavit rex annulo suo, & annulo optimatum suorum, nequid fieret contra Danielem. 17 Et abiit rex in domum suam, & dormivit incœnatus, cibíque non sunt allati coram eo, insupèr & somnus recessit ab eo. 18 Tunc rex primo diluculo consurgens, festinus ad lacum leonum perrexit: 19 Appropinquánsque lacui, Danielem voce lachrymabili inclamavit: & affatus est eum; Daniel, serve Dei viventis, Deus tuus, cui tu servis semper, putásne valuit te liberare à leonibus? 20 Et Daniel regi respondens ait; Rex, in æternum vive: 21 Deus meus misit angelum suum, & conclusit ora leonum, & non nocuerunt mihi: quia coram eo justitia inventa est in me; sed & corā te, rex, delictū non feci. 22 Tunc vehementer rex gavisus est super eo, & Danielem præcepit educi de lacu: eductúsque est Daniel de lacu, & nulla læsio inventa est in eo, quia credidit Deo suo. 23 Jubente autem rege, adducti sunt viri illi, qui accusaverant Danielem: & in lacum leonum missi sunt, ipsi, & filii, & uxores eorum: & non pervenerunt usque ad pavimentum laci, donec arriperent eos leones, & omnia ossa eorum comminuerunt. 24

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

12 ܗܝܕܝܢ ܩܪܒܘ ܘܐܡܪܝܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܡܠܟܐ ܠܥܠܡ ܚܝܝ. ܠܐ ܦܘܩܕܢܐ ܦܩܕܬ ܡܠܟܐ*
ܘܪܫܡܬ.· ܕܟܠܢܫ ܕܢܒܥܐ ܒܥܘܬܐ ܡܢ ܟܠ ܐܠܗ ܘܐܢܫ: ܥܕܡܐ ܠܬܠܬܝܢ ܝܘܡܝܢ: ܐܠܐ
ܡܢܟ ܡܠܟܐ.· ܢܬܪܡܐ ܠܓܘܒܐ ܕܐܪܝܘܬܐ.· ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ. ܫܪܝܪܐ ܗܝ ܡܠܬܐ.· ܐܝܟ
13 ܢܡܘܣܐ ܕܡܕܝ ܘܦܪܣ ܕܠܐ ܥܒܪ. *ܗܝܕܝܢ ܥܢܘ ܘܐܡܪܝܢ ܩܕܡ ܡܠܟܐ. ܕܢܝܐܝܠ ܡܢ ܒܢܝ
ܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕ.· ܠܐ ܚܐܫ ܠܟ ܡܠܟܐ ܘܠܐ ܦܘܩܕܢܐ ܕܦܩܕܬ. ܐܠܐ ܬܠܬ ܙܒܢܝܢ ܒܝܘܡܐ ܒܥܐ ܒܥܘܬܗ·
14 ܗܝܕܝܢ ܡܠܟܐ ܟܕ ܫܡܥ ܡܠܬܐ ܗܕܐ.· ܣܓܝ ܒܐܫ ܠܗ. ܘܣܡ ܒܪܥܝܢܗ ܕܢܦܨܝܘܗܝ*
15 ܠܕܢܝܐܝܠ. ܘܥܕܡܐ ܠܡܥܪܒܝ ܫܡܫܐ ܡܬܟܬܫ ܗܘܐ ܕܢܦܨܝܘܗܝ. *ܗܝܕܝܢ ܓܒܪܐ ܗܢܘܢ·
ܐܪܓܫܘ ܥܠ ܡܠܟܐ.· ܘܐܡܪܝܢ ܠܗ. ܕܥ ܡܠܟܐ.· ܕܢܡܘܣܐ ܐܝܬ ܠܡܕܝ ܘܠܦܪܣ. ܕܟܠ
16 ܦܘܩܕܢ ܘܩܝܡ ܕܢܩܝܡ ܡܠܟܐ ܠܐ ܢܫܬܢܐ. *ܗܝܕܝܢ ܐܡܪ ܡܠܟܐ.· ܘܐܝܬܝܘܗܝ ܠܕܢܝܐܝܠ.
ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܒܓܘܒܐ ܕܐܪܝܘܬܐ. ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܐܠܗܟ ܕܐܢܬ ܦܠܚ ܐܢܬ
17 ܠܗ ܐܡܝܢܐܝܬ. ܗܘ ܢܦܨܝܟ. *ܘܐܝܬܝܘ ܟܐܦܐ ܚܕܐ ܪܒܬܐ.· ܘܣܡܘܗ ܥܠ ܦܘܡܗ ܕܓܘܒܐ.
18 ܘܚܬܡܗ ܡܠܟܐ ܒܥܙܩܬܗ. ܘܒܥܙܩܬܐ ܕܪܘܪܒܢܘܗܝ.· ܕܠܐ ܢܫܬܢܐ ܨܒܘ ܒܕܢܝܐܝܠ. *ܗܝܕܝܢ
ܐܙܠ ܡܠܟܐ ܠܒܝܬ ܡܠܟܘܬܗ. ܘܒܬ ܛܘܐ. ܘܡܐܟܘܠܬܐ ܠܐ ܐܥܠܘ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܫܢܬܗ ܢܕܬ
19 ܡܢܗ. *ܗܝܕܝܢ ܡܠܟܐ ܒܨܦܪܐ ܩܡ ܒܥܓܠܐ ܘܒܣܘܪܗܒܐ.· ܘܥܡܠ ܠܓܘܒܐ ܕܐܪܝܘܬܐ ܐܙܠ.
20 *ܘܟܕ ܩܪܒ ܠܓܘܒܐ.· ܠܕܢܝܐܝܠ. ܒܩܠܐ ܪܡܐ ܩܪܐ. ܥܢܐ ܡܠܟܐ ܘܐܡܪ ܠܕܢܝܐܝܠ. ܕܢܝܐܝܠ
ܥܒܕܗ ܕܐܠܗܐ ܚܝܐ.· ܐܠܗܟ ܕܐܢܬ ܦܠܚ ܠܗ ܐܡܝܢܐܝܬ.· ܐܫܟܚ ܠܡܦܨܝܘܬܟ ܡܢ
21 22 ܐܪܝܘܬܐ. *ܗܝܕܝܢ ܕܢܝܐܝܠ ܥܡ ܡܠܟܐ ܡܠܠ. ܘܐܡܪ. ܡܠܟܐ ܠܥܠܡ ܚܝܝ. *ܐܠܗܝ
ܫܕܪ ܡܠܐܟܗ.· ܘܣܟܪ ܦܘܡܗܘܢ ܕܐܪܝܘܬܐ. ܘܠܐ ܚܒܠܘܢܝ. ܡܛܠ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܐܫܬܟܚܬ
23 ܩܕܡܘܗܝ. ܘܐܦ ܩܕܡܝܟ ܡܠܟܐ ܣܟܠܘܬܐ ܠܐ ܥܒܕܬ. *ܗܝܕܝܢ ܛܒ ܡܠܟܐ ܚܕܝ
ܥܠܘܗܝ. ܘܐܡܪ ܠܡܣܩܘܬܗ ܠܕܢܝܐܝܠ ܡܢ ܓܘܒܐ. ܘܐܣܩܘܗܝ ܠܕܢܝܐܝܠ ܡܢ
ܓܘܒܐ.· ܘܡܕܡ ܚܒܠܐ ܠܐ ܐܫܬܟܚ ܒܗ. ܡܛܠ ܕܗܝܡܢ ܗܘܐ ܒܐܠܗܗ.
24 *ܘܐܡܪ ܡܠܟܐ. ܘܐܝܬܝܘ ܓܒܪܐ ܗܢܘܢ ܕܐܟܠܘ ܩܪܨܘܗܝ ܕܕܢܝܐܝܠ.· ܘܐܪܡܝܘ ܐܢܘܢ
ܒܓܘܒܐ ܕܐܪܝܘܬܐ. ܗܢܘܢ ܘܒܢܝܗܘܢ ܘܢܫܝܗܘܢ. ܘܥܕ ܠܐ
ܡܛܘ ܠܐܪܥܗ ܕܓܘܒܐ.· ܫܠܛܘ ܒܗܘܢ ܐܪܝܘܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܓܪܡܝܗܘܢ ܕܩܘ.

Quarè accedentes dixerunt coram rege; 12 Rex, in pepetuum vive, Nónne sententiam decrevisti rex, & exarâsti, ut quicunque peteret petitionem ab ullo deo aut homine usque ad triginta dies, præterquàm à te rex, conjiceretur in foveam leonum? Respondens rex ait; Verum est verbum secundùm legem Medorum & Persarum inviolabilem. Tunc responderunt dicentes coram rege; 13 Daniel de captivis Judææ non curat te neque sententiam quam decrevisti, sed tribus vicibus fundit preces suas. Tunc rex, audito 14 hoc verbo, ægrè admodum tulit, mentémque adhibuit ut liberaret Danielem, & usque ad solis occasum contendit ut eum liberaret. Verùm illi viri perstrepentes contra regem 15 dixerunt ei; Scito rex, legem esse apud Medos & Persas, ut ulla sententia aut statutum quod rex decreverit, non mutetur. Tunc 16 rege jubente adduxerunt Danielem, & conjecerunt in foveam leonum: & prolocutus rex ait Danieli; Deus tuus quem tu colis jugiter, ipse te liberet. Et attulerunt lapidem 17 quendam magnum, imposuerúntque super os foveæ, & obsignavit illum rex annulo suo & annulo procerum suorum, ne quicquam mutaretur in Danielem. Tunc recepit 18 se rex in palatium suum, & pernoctavit incœnatus, cibus non fuit allatus coram eo, & somnus ejus ab eo recessit. Tunc rex diluculò 19 surrexit festinus, & properè ad foveam leonum accurrit: Cúmque accessit ad 20 foveam, Danielem altâ voce inclamavit: Danielem allocutus rex ait; Daniel serve Dei viventis, Deus tuus quem tu semper colis, potuítne liberare te à leonibus? Tunc 21 Daniel regem allocutus dixit; Rex æternum vive: Deus meus misit angelum suum, & 22 conclusit ora leonum, & non læserunt me: quoniam justitia coram eo reperta est in me; quin etiam coram te rex, crimen haud commisi. Tunc rex apud semetipsum vehementer 23 contentus, jussit Danielem extrahi è fovea: & cum extractus esset Daniel è fovea, nulla læsio reperta est in eo; quia crediderat in Deum suum. Deinde dixit rex, 24 Adducite viros illos qui Danielem accusaverunt, eósque projicite in foveam leonum cum uxoribus & liberis suis: quos cùm projecissent in foveam, priusquàm ad imum foveæ pervenissent, invaserunt eos leones, & omnia ipsorum ossa comminuerunt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

Καὶ προσελθόντες λέγουσι τῷ βασιλεῖ, Βασιλεῦ, (λ) οὐχ ὁρισμὸν ἔταξας, ὅπως πᾶς ἄνθρωπος ὃς ἂν (μ) αἰτήσῃ παρὰ παντὸς θεοῦ καὶ ἀνθρώπου αἴτημα, ἕως ἡμερῶν τριάκοντα, ἀλλ' ἢ παρὰ σοῦ βασιλεῦ, ἐμβληθήσεται εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων; καὶ εἶπεν ὁ βασιλεύς, Ἀληθινὸς ὁ λόγος, καὶ τὸ δόγμα Μήδων καὶ Περσῶν οὐ παρελεύσεται. Τότε ἀπεκρίθησαν καὶ λέγουσιν ἐνώπιον τοῦ βασιλέως, Δανιὴλ ὁ ἀπὸ τῶν υἱῶν τῆς αἰχμαλωσίας τῆς Ἰουδαίας, οὐχ ὑπετάγη τῷ δόγματί σου (ν), καὶ καιροὺς τρεῖς τῆς ἡμέρας (ξ) αἰτεῖ παρὰ τοῦ θεοῦ αὐτοῦ τὰ αἰτήματα αὐτοῦ. Τότε ὁ βασιλεύς, ὡς τὸ ῥῆμα ἤκουσε, πολὺ ἐλυπήθη ἐπ' αὐτῷ, καὶ περὶ τοῦ Δανιὴλ ἠγωνίσατο τοῦ ἐξελέσθαι αὐτόν, καὶ ἕως ἑσπέρας ἦν ἀγωνιζόμενος τοῦ ἐξελέσθαι αὐτόν. Τότε οἱ ἄνδρες ἐκεῖνοι λέγουσι τῷ βασιλεῖ, Γνῶθι βασιλεῦ, ὅτι τὸ δόγμα Μήδοις καὶ Πέρσαις, τοῦ πᾶν ὁρισμὸν καὶ στάσιν (ο) ἣν ἂν ὁ βασιλεὺς στήσῃ, οὐ δεῖ παραλλάξαι. Τότε ὁ βασιλεὺς εἶπε καὶ ἤγαγον τὸν Δανιὴλ, καὶ ἐνέβαλον αὐτὸν εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων. καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς τῷ Δανιὴλ, Ὁ θεός σου (ʹ) ᾧ σὺ λατρεύεις ἐνδελεχῶς, αὐτὸς ἐξελεῖταί σε. Καὶ (π) ἤνεγκαν λίθον, καὶ ἐπέθηκαν ἐπὶ τὸ στόμα τοῦ λάκκου, καὶ ἐσφραγίσατο (ρ) ὁ βασιλεὺς ἐν τῷ δακτυλίῳ αὐτοῦ, καὶ ἐν τῷ δακτυλίῳ τῶν μεγιστάνων αὐτοῦ, ὅπως μὴ ἀλλοιωθῇ πρᾶγμα ἐν τῷ Δανιὴλ. Καὶ ἀπῆλθεν ὁ βασιλεὺς εἰς τὸν οἶκον αὐτοῦ, καὶ ἐκοιμήθη ἄδειπνος, καὶ ἐδέσματα οὐκ (σ) εἰσήνεγκαν αὐτῷ· καὶ ὁ ὕπνος ἀπέστη ἀπ' αὐτοῦ. καὶ ἔκλεισεν ὁ θεὸς τὰ στόματα τῶν λεόντων, καὶ οὐ παρηνώχλησαν τῷ Δανιὴλ. Τότε ὁ βασιλεὺς ἀνέστη τὸ πρωῒ ἐν φωτί, καὶ ἐν σπουδῇ ἦλθεν ἐπὶ τὸν λάκκον τῶν λεόντων. Καὶ ἐν τῷ ἐγγίζειν αὐτὸν τῷ λάκκῳ, (τ) ἐβόησε φωνῇ ἰσχυρᾷ, Δανιὴλ, ὁ δοῦλος τοῦ θεοῦ τοῦ ζῶντος, ὁ θεός σου (ʺ) ᾧ σὺ λατρεύεις ἐνδελεχῶς, εἰ (υ) ἠδυνήθη ἐξελέσθαι σε ἐκ στόματος τῶν λεόντων; Καὶ εἶπε Δανιὴλ τῷ βασιλεῖ, Βασιλεῦ, εἰς τοὺς αἰῶνας ζῆθι. Ὁ θεός μου ἀπέστειλεν τὸν ἄγγελον αὐτοῦ, καὶ ἐνέφραξεν τὰ στόματα τῶν λεόντων, καὶ οὐκ ἐλυμήναντό με, ὅτι (φ) κατέναντι αὐτοῦ εὐθύτης εὑρέθη (χ) ἐμοί, καὶ ἐνώπιον δέ σου βασιλεῦ παράπτωμα οὐκ ἐποίησα. Τότε ὁ βασιλεὺς πολὺ ἠγαθύνθη ἐπ' αὐτῷ, καὶ τὸν Δανιὴλ εἶπεν ἀνενέγκαι ἐκ τοῦ λάκκου. καὶ ἀνηνέχθη Δανιὴλ ἐκ τοῦ λάκκου, καὶ πᾶσα διαφθορὰ (˙) οὐχ εὑρέθη ἐν αὐτῷ, ὅτι ἐπίστευσεν (ψ) ἐν τῷ θεῷ αὐτοῦ. Καὶ εἶπεν ὁ βασιλεὺς, καὶ (ω) ἤγαγον τοὺς ἄνδρας τοὺς διαβαλόντας τὸν Δανιὴλ, καὶ εἰς τὸν λάκκον τῶν λεόντων (α) ἐνεβλήθησαν αὐτοὶ, καὶ οἱ υἱοὶ αὐτῶν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν· καὶ οὐκ ἔφθασαν εἰς τὸ ἔδαφος τοῦ λάκκου, ἕως οὗ ἐκυρίευσαν αὐτῶν οἱ λέοντες, καὶ πάντα τὰ ὀστᾶ αὐτῶν ἐλέπτυναν.

Et accedentes dicunt regi; Rex, nónne conſtitutionem poſuiſti; ut omnis 12
homo, quicunque petierit à quocunque Deo, & homine, petitionem, uſque
ad triginta dies, niſi à te, rex, mittatur in lacum leonum? Et dixit rex;
Verus eſt ſermo: & decretum Medorum & Perſarum non prætermit-
tetur. Tunc reſponderunt, & dicunt coram rege; Daniel, qui de filiis 13
captivitatis Judææ, non ſubdidit ſe decreto tuo, & tribus temporibus diei
petit à Deo ſuo petitiones ſuas. Tunc rex, ut audivit verbum, valdè con- 14
triſtatus eſt in eo: & pro Daniele in agonia erat ad liberandum eum: &
uſque ad veſperam laborabat eruere eum. Tunc viri illi dicunt regi; 15
Scito, rex, quia decretum Medis & Perſis, omnem conſtitutionem, & ſta-
tutum, quodcunque rex ſtatuerit, non oportere immutari. Tunc rex dixit: 16
& adduxerunt Danielem, & miſerunt eum in lacum leonum. Et dixit
rex Danieli; Deus tuus, quem tu colis ſemper, ipſe liberabit te. Et attu- 17
lerunt lapidem, & impoſuerunt ſuper os laci: & obſignavit rex in annu-
lo ſuo, & in annulo optimatum ſuorum; ne quid ſecus fieret in Danielem.
Et abiit rex in domum ſuam, & dormivit incœnatus: & cibos non at- 18
tulerunt ei: & ſomnus receſſit ab eo. Et (e) concluſerat Deus ora leo-
num, & non afficerant moleſtiâ Danielem. Tunc rex ſurrexit manè in 19
diluculo: & in feſtinatione venit ad lacum leonum. Et cùm appropin- 20
quaret ipſe lacui, clamavit voce forti; Daniel, ſerve Dei viventis, Deus tuus,
cui tu ſervis ſemper, ſi potuit liberare te de ore leonum? Et ait Daniel 21
regi; Rex, in ſecula vive. Deus meus miſit angelum ſuum, & obſtru- 22
xit ora leonum, & non nocuerunt mihi: quia coram eo rectitudo in-
venta eſt (f) mihi: ſed & coram te, rex, delictum non feci. Tunc, rex, 23
vehementer gaviſus eſt ſuper eo: & Danielem dixit educi de lacu. Et e-
ductus eſt Daniel de lacu: & nulla læſio inventa eſt in eo: quia credi-
dit in Deo ſuo. Et dixit rex; et adducti ſunt viri, qui accuſaverant 24
Danielem: et in lacum leonum miſſi ſunt, ipſi, et filii eorum, et uxores
eorum: et non pervenerunt ad pavimentum laci; donec dominati ſunt eo-
rum leones, et omnia oſſa eorum comminuerunt.

MS.A. (λ) οὐχὶ ὁρισμὸν (μ) αἰτήσηται (ν) περὶ τοῦ ὁρισμοῦ οὗ ἔταξας, καὶ (ξ) αἰτεῖτε (ο) ἣν ὁ βασιλεὺς στήσῃ, (ʹ) ᾧ λατρεύῃς (π) ἤνεγκεν λίθον, καὶ ἐπέθηκεν (ρ) ἐν τῷ (σ) εἰσηνέχθη αὐτῷ καὶ ὁ ὕπνος αὐτοῦ ἐγένετο ἀπ' αὐτοῦ. (τ) τῷ Δανιὴλ ἐβόησεν φωνῇ μεγάλῃ, Δανιὴλ, (ʺ) ᾧ λατρεύῃς (υ) ἐδυνάσθη (φ) κατεναντίον (χ) ἐν ἐμοί, (˙) οὐκ (ψ) τῷ θεῷ (ω) ἤγαγον (α) ἐβλήθησαν.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* فدخلوا للملك قايلين · ايها الملك اليس رسمت رسما لكي كل انسان يلتمس من 12
اله او انسان مسألة الي ثلاثين يوما الا من قبلك ايها الملك · يلقي في جب الاسد · فقال
الملك · القول حقيقي · وراي المادين والفرس لا يزول * حينيذ اجابوا وقالوا امام الملك 13
دانيال الذي من بني سبي اليهودية لم يخضع لامرك · وثلاث اوقات في اليوم كان
يلتمس من الهه مسالاته * حينيذ الملك لما سمع الكلمة حزن عليه كثيرا · واجتهد 14
من اجل دانيال ان ينجيه · والي المساء كان مجتهدا ان ينجيه * حينيذ اوليك الرجال 15
قالوا للملك · اعلم ايها الملك ان للمادين والفرس رايا · كل رسم وعهد يعمه الملك لا
يبدله احد * حينيذ قال الملك · فاتوا بدانيال والقوه في جب الاسد · وقال الملك لدانيال · 16
الاله الذي انت تعبده دايما هو ينجيك * واتوا بحجر واحد ووضعوه علي فم الجب 17
وختم الملك بخاتمه وبخاتم عظمايه · كيلا يحدث امر بدانيال * ومضي الملك الي بيته 18
واضطجع بغير عشاء · ولم يدخلوا له اطعمة · ونفر النوم عنه · واغلق الله افواه الاسد
فلم تؤذ دانيال * حينيذ قام الملك بالغداة في النور · واتي بسرعة الي جب الاسد · 19
* وعندما قرب للجب صاح لدانيال بصوت قوي · يا دانيال عبد الله الحي · الهك الذي 20
انت تعبده دايما هل قدر ان ينجيك من فم الاسد * فقال دانيال · ايها الملك عش 21
الي الدهور * الهي ارسل ملاكه · وسد افواه الاسد فلم تؤذيني · لان الاستقامة وجدت 22
في امامه · ولم اصنع قدامك زلة ايها الملك * حينيذ الملك تعجب كثيرا به · وقال 23
ان يصعدوا دانيال من الجب · فاصعد دانيال من الجب · ولم يوجد فيه شي من
الفساد · لانه امن بالهه * وقال الملك · فاتوا بالرجال الذين محلوا بدانيال · والقوا في 24
جب الاسد هم وبنوهم ونساوهم · ولم يبلغوا الي ارض الجب الي ان تسلطت عليهم الاسد
ودقوا جميع عظامهم ·

Regem adierunt dicentes; O rex, nonne 12
decretum conſtituiſti, ut quicunque po-
ſtularet ab ullo deo & homine petitionem
ullam uſque ad triginta dies, præter-
quam à te O rex; projiceretur in foveam
leonum? Dixit rex, Verus eſt ſermo; &
decretum Medorum atque Perſarum non
eſt prætereundum. Tunc reſponderunt 13
ac dixerunt coram rege; Daniel qui eſt è
captivis Judææ, non obtemperavit man-
dato tuo; ſed tribus vicibus quotidie pe-
titiones ſuas poſtulat à Deo ſuo. Tunc 14
rex cùm audiſſet hujuſmodi verbum,
contriſtatus eſt propter eum vehementer;
& curam adhibuit propter Danielem ut
eriperet eum, & ad veſperam uſque ſoli-
citus fuit de eripiendo illo. Tunc illi 15
viri dixerunt ad regem; Noveris O rex,
apud Medos & Perſas eſſe decretum, o-
mne ſtatutum & ſignum quod rex conſti-
tuit, à nemine mutandum. Tunc di- 16
cente rege adduxerunt Danielem, & pro-
jecerunt in foveam leonum: dixitque
rex Danieli; Deus quem tu ſemper ado-
ras, ipſe te liberet. Attuleruntque la- 17
pidem quendam, poſueruntque ſuper os
foveæ, & obſignavit rex annulo ſuo &
annulo magnatum ſuorum, ne quid acci-
deret Danieli. Tum rex domum ſuam 18
reverſus, cubavit ſine cœna; non enim
introduxerunt ad eum cibos: quin etiam
receſſit ab eo ſomnus. Deus autem clau-
ſit ora leonum, & non læſerunt Danie-
lem. Tunc rex manè ſurgens cum lu- 19
ce, feſtinanter ſe contulit ad foveam
leonum. Et cùm acceſſiſſet ad foveam, 20
Danielem inclamavit altâ voce; O Da-
niel ſerve Dei viventis, Deus tuus quem
tu ſemper adoras, potuitne liberare te ab
ore leonum? Dixit Daniel; O rex, in 21
ſecula vive; Deus meus miſit Ange- 22
lum ſuum, clauſitque ora leonum, &
non nocuerunt mihi; quia rectitudo in-
venta eſt in me coram ipſo, & culpam
coram te O rex non commiſi. Tunc rex 23
magnopere eum demiratus, dixit ut
extraherent Danielem è fovea: ex-
tractóque Daniele de fovea, nihil
corruptionis inventum eſt in eo; quia
crediderat in Deum ſuum. Præcipi- 24
ente autem rege, adducti fuerunt vi-
ri qui Danielem accuſaverant, et in
foveam leonum projecti, tam ipſi
quàm filii et uxores eorum: et pri-
uſquam perveniſſent ad foveæ ſolum,
invaſerunt eos leones, et comminuerunt
omnia oſſa eorum.

דניאל : ז

A.multiplicetur vobis pax ,terra univerſa in *habitantes* qui ,linguis &,*nationibus* ,populis omnibus ſcripſit rex Dariaves Tunc

25 26 באדין דריוש מלכא כתב לכל־עממיא אמיא ולשניא די־דארין בכל־ארעא שלמכון ישגא : מן־

quoniã;Danielis *qui ejus* Dei facie à *timentes &* ,*contremiſcentes ſint* mei regni imperio univerſo in ut ,decretum poſitum mea facie

קדמי שים טעם די בכל־שלטן מלכותי להון זאעין ודחלין מן־קדם אלההדי־דניאל די־

,liberans &,Eruens .finem ad uſque ejus poteſtas &;corrumpetur non quod ej° regnũ & ,ſecula in permanens &,vivens Deus ipſe

27 הוא אלהא חיא וקים לעלמין ומלכותה די־לא תתחבל ושלטנה עד־סופא : משיזב ומצל

eſt proſperatus ipſe Daniel Et .leonum *manu* de Danielem eruit qui : terra in & , cœlo in mirabilia & ſigna faciens &

28 ועבד אתין ותמהין בשמיא ובארעא די שיזב לדניאל מן־יד אריותא : ודניאל דנה הצלח

.Perſæ Chores regno in & , Dariaves regno in

במלכות דריוש ובמלכות כורש פרסאה :

CAP. VII. ז

caput ,ſcripſit ſomnium tunc : ejus cubili *ſuper* ej° capitis *viſiones* &,vidit ſomniũ Daniel ,Babel regis Belſaſar *uno* anno In

1 בשנת חדה לבלשאצר מלך בבל דניאל חלם חזה וחזוי ראשה על־משכבה באדין חלמא כתב ראש

.magno mari in *pugnantes* cœli venti quatuor ecce & , nocte *cum* mea viſione in *fui Videns*,dixit &,Daniel *Reſpondit* .*dixit* verborũ

2 מלין אמר : ענה דניאל ואמר חזה הוית בחזוי עם־ליליא וארו ארבע רוחי שמיא מגיחן לימא רבא :

eram videns ; ei aquilæ *quæ* alæ & , leo ſicut Prima .*iſta ab illa variantes*;mari è *aſcendentes* grandes beſtiæ quatuor Et

3 4 וארבע חיון רברבן סלקן מן־ימא שנין דא מן־דא : קדמיתא כאריה וגפין די־נשר לה חזה הוית

ecce Et .ei eſt datum hominis cor & , ſtetit homo tanquam pedes ſuper & ,terra à eſt elevata & ,ejus alæ ſunt evulſæ donec

5 עד די־מריטו גפיה ונטילת מן־ארעא ועל־רגלין כאנש הקימת ולבב אנש יהיב לה : וארו

,Surge , ei *dicentes* ſic &:ej° dentes inter ej° ore in *coſtæ tres* & , ſtetit unum latus ad & ,urſo ſimilis ſecunda alia beſtia

חיוה אחרי תנינה דמיה לדב ולשטר־חד הקמת ותלת עלעין בפמה בין שניה וכן אמרין לה קומי

quatuor &:ej° dorſo ſuper avis *quæ* quatuor alæ ei &,pard° veluti alia ecce & , *eram videns* hoc Poſt .*multam* carnem comede

6 אכלי בשר שגיא : באתר דנה חזה הוית וארו אחרי כנמר ולה גפין ארבע די־עוף על־גביה וארבעה

, formidoloſa quarta beſtia ecce & ,noctis *viſionibus* in *fui videns* hoc Poſt .ei data poteſtas & ,beſtiæ capita

7 ראשין לחיותא ושלטן יהיב לה : באתר דנה חזה הוית בחזוי ליליא וארו חיוה רביעיא דחילה

ipſa & : *conculcans* ſuis pedibus in reſiduum &,*comminuens &*,*comedens* ,magni ei *ferri qui* dentes &,*abundanter* fortis & ,terribilis &

ואמתני ותקיפא יתירה ושנין די־פרזל לה רברבן אכלה ומדקה ושארא ברגליה רפסה והיא

parvum aliud cornu ecce & ,cornua *in fui Attentus* .ei decem cornua & ,eam ante quæ , beſtiis omnibus ab *varia*

8 משניה מן־כל־חיותא די קדמיה וקרנין עשר לה : משתכל הוית בקרניא ואלו קרן אחרי זעירה

, iſto cornu in hominis oculi tanquã oculi ecce & : ejus facie à ſunt evulſa primis cornibus de tria & , ea inter aſcendebat

סלקת ביניהן ותלת מן־קרניא קדמיתא אתעקרו מן־קדמיה ואלו עינין כעיני אנשא בקרנא־דא

pil° &,candidum nix ſicut ej° veſtimentum;ſedit dierum antiqu° &,ſunt elati throni donec *fui Videns* .grandia loquens os &

9 ופם ממלל רברבן : חזה הוית עד די כרסון רמיו ועתיק יומין יתב לבושה כתלג חור ושער

: ejus facie à *egrediens &*,*trahens ignis* Fluvius .ardens ignis ejus rotæ,ignis flammæ ejus thronus,pura lana ſicut ejus capitis

10 ראשה כעמר נקא כרסיה שביבין די־נור גלגלוהי נור דלק : נהר די־נור נגד ונפק מן־קדמוהי

.ſunt aperti libri & , ſedit judicium : ſtabant eo coram *myriadum myrias* & ,ei miniſtrabant millium *mille*

אלף אלפים ישמשונה ורבו רבון קדמוהי יקומון דינא יתב וספרין פתיחו :

Verſio VULG. LAT.

Tunc Darius rex ſcripſit univerſis populis, tribubus, & linguis habitantibus in univerſa terra: PAX vobis multiplicetur. A me conſtitutum eſt decretum, ut in univerſo imperio & regno meo, tremiſcant & paveant Deum Danielis. Ipſe eſt enim Deus vivens, & æternus in ſecula: & regnum ejus non diſſipabitur, & poteſtas ejus uſque in æternum. Ipſe liberator, atque ſalvator, faciens ſigna, & mirabilia in cœlo & in terra: qui liberavit Danielem de lacu leonum. Porrò Daniel perſeveravit uſque ad regnum Darii, regnúmque Cyri Perſæ.

CAP. VII.

ANno primo Baltaſſar regis Babylonis, Daniel ſomnium vidit: viſio autem capitis ejus in cubili ſuo: & ſomnium ſcribens, brevi ſermone comprehendit: ſummatímque perſtringens, ait; Videbam in viſione mea nocte, & ecce quatuor venti cœli pugnabant in mari Magno. Et quatuor beſtiæ grandes aſcendebant de mari diverſæ inter ſe. Prima quaſi leæna, & alas habebat aquilæ: aſpiciebam donec evulſæ ſunt alæ ejus, & ſublata eſt de terra, & ſuper pedes quaſi homo ſtetit, & cor hominis datum eſt ei. Et ecce beſtia alia ſimilis urſo in parte ſtetit: & tres ordines erant in ore ejus, & in dentibus ejus, & ſic dicebant ei; Surge, comede carnes plurimas. Poſt hæc aſpiciebam, & ecce alia quaſi pardus, & alas habebat quaſi avis, quatuor ſuper ſe, & quatuor capita erant in beſtia, & poteſtas data eſt ei. Poſt hæc aſpiciebam in viſione noctis, & ecce beſtia quarta terribilis, atque mirabilis, & fortis nimis, dentes ferreos habebat magnos, comedens atque comminuens, & reliqua pedibus ſuis conculcans: diſſimilis autem erat cæteris beſtiis, quas videram ante eam, & habebat cornua decem: Conſiderabam cornua, & ecce cornu aliud parvulum ortum eſt de medio eorum: & tria de cornibus primis evulſa ſunt à facie ejus: & ecce oculi, quaſi oculi hominis erant in cornu iſto, & os loquens ingentia. Aſpiciebam donec throni poſiti ſunt, & Antiquus dierum ſedit: veſtimentum ejus candidum quaſi nix, & capilli capitis ejus quaſi lana munda: thronus ejus flammæ ignis: rotæ ejus ignis accenſus. Fluvius igneus, rapidúſque egrediebatur à facie ejus: millia millium miniſtrabant ei, & decies millies centena millia aſſiſtebant ei: judicium ſedit, & libri aperti ſunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

25 * ܗܝܕܝܢ ܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ. ܟܬܒ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܘܐܡܘܬܐ ܘܠܫܢܐ ܕܥܡܪܝܢ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ

26 ܫܠܡܟܘܢ ܢܣܓܐ ܠܟܘܢ. * ܡܢ ܩܕܡܝ ܐܬܬܣܝܡ ܛܥܡܐ. ܕܒܟܠܗ ܫܘܠܛܢ ܡܠܟܘܬܝ.. ܢܗܘܘܢ

ܙܝܥܝܢ ܘܕܚܠܝܢ ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܗܗ ܕܕܢܝܐܝܠ. ܕܗܘܝܘ ܐܠܗܐ ܚܝܐ. ܘܩܝܡ ܠܥܠܡܝܢ.

27 ܘܡܠܟܘܬܗ ܠܐ ܡܬܚܒܠܐ. ܘܫܘܠܛܢܗ ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܐ. * ܦܪܩ ܘܡܦܨܐ ܘܡܫܘܙܒ. ܘܥܒܕ

28 ܐܬܘܬܐ ܘܬܕܡܪܬܐ ܒܫܡܝܐ ܘܒܐܪܥܐ. ܕܦܨܝܗ ܠܕܢܝܐܝܠ ܡܢ ܐܪܝܘܬܐ. * ܘܕܢܝܐܝܠ ܐܬܪܒܝ ܒܡܠܟܘܬܗ

ܕܕܪܝܘܫ. ܘܒܡܠܟܘܬܗ ܕܟܘܪܫ ܦܪܣܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *

1 * ܒܫܢܬ ܚܕܐ ܕܡܠܟܘܬܗ ܕܒܠܛܫܨܪ ܡܠܟܐ ܕܒܒܠ. ܕܢܝܐܝܠ. ܚܠܡܐ ܚܙܐ. ܘܚܙܘܐ ܕܪܫܗ

2 ܥܠ ܡܫܟܒܗ. ܗܝܕܝܢ ܚܠܡܐ ܟܬܒ. ܘܪܫ ܡܠܘܗܝ ܐܡܪ. * ܥܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܘܐܡܪ. ܚܙܐ

3 ܗܘܝܬ ܒܚܙܘܐ ܕܠܠܝܐ. ܘܗܐ ܐܪܒܥ ܪܘܚܝܢ ܕܫܡܝܐ ܡܓܝܚܢ ܠܝܡܐ ܪܒܐ. * ܘܐܪܒܥ ܚܝܘܢ ܪܘܪܒܢ

4 ܣܠܩܢ ܡܢ ܝܡܐ. ܘܫܚܠܦܢ ܚܕܐ ܡܢ ܚܕܐ. * ܡܠܟܘܬܐ ܕܒܒܠܝܐ* ܩܕܡܝܬܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐ. ܘܓܦܐ

ܕܢܫܪܐ ܐܝܬ ܠܗ. ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܕܐܬܬܡܪܛ ܓܦܝܗ. ܘܐܫܬܩܠܬ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܥܠ ܪܓܠܝܗ ܐܝܟ

5 ܒܪܢܫܐ ܩܡܬ ܘܠܒܐ ܕܒܪܢܫܐ ܐܬܝܗܒ ܠܗ. * ܡܠܟܘܬܐ ܕܡܕܝܐ* ܘܚܝܘܬܐ ܐܚܪܬܐ ܬܢܝܢܬܐ ܕܡܝܐ ܠܕܒܐ.

ܘܥܠ ܣܛܪ ܚܕ ܩܡܬ. ܘܬܠܬ ܥܠܥܝܢ ܒܦܘܡܗ ܒܝܬ ܫܢܝܗ. ܘܗܟܢܐ ܐܡܪܝܢ ܠܗ. ܩܘܡܝ

6 ܐܟܘܠܝ ܒܣܪܐ ܣܓܝܐܐ. * ܡܠܟܘܬܐ ܕܦܪܣܝܐ* ܒܬܪ ܗܠܝܢ ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܚܝܘܬܐ ܐܚܪܬܐ ܐܝܟ

7 ܢܡܪܐ. ܘܐܝܬ ܠܗ ܐܪܒܥ ܓܦܐ ܕܦܪܚܬܐ ܥܠ ܓܒܝܗ. ܘܐܪܒܥܐ ܪܫܝܢ ܐܝܬ ܠܗ ܠܚܝܘܬܐ

ܗܝ. ܘܫܘܠܛܢܐ ܐܬܝܗܒ ܠܗ. * ܡܠܟܘܬܐ ܕܝܘܢܝܐ* ܒܬܪ ܗܠܝܢ. ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܒܚܙܘܐ

ܕܠܠܝܐ. ܚܝܘܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ ܕܚܝܠܬܐ. ܘܬܡܝܗܬܐ. ܘܚܣܝܢܐ ܛܒ. ܘܫܢܝܗ ܕܦܪܙܠܐ ܐܝܬ

ܠܗ. ܪܘܪܒܢ. ܐܟܠܐ. ܘܡܕܩܐ. ܘܕܫܚܪܐ ܒܪܓܠܝܗ ܕܫܐ. ܘܗܝ ܡܫܚܠܦܐ ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܚܝܘܬܐ

8 ܕܩܕܡܝܗ. ܘܩܪܢܬܐ ܥܣܪ ܐܝܬ ܠܗ. * ܘܡܣܬܟܠ ܗܘܝܬ ܒܩܪܢܬܗ. *ܐܢܛܝܘܟܘܣ* ܘܗܐ ܩܪܢܐ

ܚܕܐ ܙܥܘܪܬܐ ܣܠܩܬ ܡܢ ܒܝܢܬܗܘܢ. ܘܬܠܬ ܡܢ ܩܪܢܬܐ ܩܕܡܝܬܐ ܐܬܥܩܪ ܡܢ ܩܕܡܝܗ.

9 ܘܥܝܢܐ ܐܝܟ ܥܝܢܝ ܒܪܢܫܐ ܒܩܪܢܐ ܗܝ. ܘܦܘܡܐ ܡܡܠܠ ܪܘܪܒܬܐ. * ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܥܕܡܐ ܕܟܘܪܣܘܬܐ

ܐܬܬܣܝܡܘ. ܘܥܬܝܩ ܝܘܡܬܐ ܝܬܒ. ܠܒܘܫܗ ܐܝܟ ܬܠܓܐ ܚܘܪܐ. ܘܣܥܪܐ ܕܪܫܗ ܐܝܟ

10 ܥܡܪܐ ܕܟܝܐ. ܟܘܪܣܝܗ ܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܓܝܓܠܘܗܝ ܕܢܘܪܐ ܝܩܕܬܐ. * ܢܗܪܐ ܕܢܘܪܐ

ܢܓܕ. ܘܢܦܩ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܐܠܦ ܐܠܦܝܢ ܡܫܡܫܝܢ ܠܗ. ܘܪܒܘ ܪܒܘܢ ܩܝܡܝܢ

ܩܕܡܘܗܝ. ܕܝܢܐ ܝܬܒ. ܘܣܦܪܐ ܐܬܦܬܚܘ.

Tunc Darius rex ſcripſit: Omnibus populis, nationibus, & linguis in tota terra degentibus, pax multiplicetur vobis. A me lata lex eſt, ut in tota ditione regni mei metuant & revereantur Deum Danielis, quòd ipſe ſit Deus vivus & permanens in ſecula, regnum ejus incorruptum, & dominatus ejus in finem uſque. Redimit, liberat, & eripit, editque ſigna & portenta in cœlo & in terra; qui liberavit Danielem à leonibus. Porrò Daniel magnificatus eſt in regno Darii & regno Cyri Perſæ.

CAP. VII.

ANno primo regni Blitſaſaris regis Babyloniæ, Daniel ſomnium vidit & viſiones capitis ſui quas *habuit* ſuper cubili ſuo: tunc ſomnium ſcripſit, & ſummam ſermonum ſuorum expoſuit. Prolocutus Daniel dixit; Videbam in viſione nocturna, & ecce quatuor venti cœli turgefaciebant mare Magnum, Et quatuor ingentes belluæ emergebant è mari, eæq; inter ſe diverſæ. *Regnum Babyloniorum.* Prima ſimilis erat leoni, habebatq; alas aquilinas. Videbam evulſas eſſe alas ejus, & ab humo ſublatam, in pedes ſuos velut hominem ſtetiſſe, & cor humanum inditum ei fuiſſe. *Regnum Medorum.* Bellua ſecunda ſimilis erat urſo, uni lateri incumbebat, & tres coſtas in ore ſuo habebat inter dentes ſuos: huic ita dicebant; Surge, comede carnem multam. *Regnum Perſarum.* Poſtea videbam aliam belluam pardo ſimilem, habentem quatuor alas volucris in lateribus ſuis: quatuor etiam capita habebat ea bellua, eique datum eſt imperium. *Regnum Græcorum.* Denique videbam in viſione nocturna belluam quartam horrendam, ingentem, ſummèque robuſtam: dentes magnos ferreos habebat: comedebat comminuebatque; & quod relinquebat pedibus conculcabat: erat hæc diverſa ab omnibus belluis quæ præceſſerant eam: & habebat cornua decem. Dum ejus cornua conſiderarem, *Antiochus*, cornu unum parvum emerſit è medio illorum, & tria ex cornibus prioribus evulſa fuerunt ab hujus conſpectu: oculi ſimiles oculis humanis erant in iſto cornu, & os ejus loquebatur grandia. Videbam ſubſellia poſita eſſe, & Antiquum dierum ſediſſe; cujus veſtimentum erat ceu nix candidiſſima, & capilli capitis ceu lana munda: cujus ſolium flamma ignea, & rotæ ejus ignis ardens. Fluvius igneus fluens & egrediens à conſpectu ejus: millies mille miniſtrabant ei, & myrias myriadum aſtabant coram eo: Judex ſedit, & libri aperti ſunt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

(β) Δαρεῖος ὁ βασιλεὺς ἔγραψε πᾶσι τοῖς λαοῖς, φυλαῖς, γλώσσαις, τοῖς οἰκοῦσιν ἐν πάσῃ τῇ Εἰρήνη ὑμῖν πληθυνθείη. Ἐκ προσώπου μου ἐτέθη δόγμα (γ) τοῦτο ἐν πάσῃ ἀρχῇ τῆς βασιλείας τρέμοντας ϗ φοβουμένους ἀπὸ προσώπου τοῦ θεοῦ Δανιήλ, ὅτι (δ) αὐτός ἐστι θεὸς ζῶν, ϗ μένων τοὺς αἰῶνας, ϗ ἡ βασιλεία αὐτοῦ οὐ διαφθαρήσεται, ϗ ἡ (ε) κυρεία αὐτοῦ ἕως τέλους. Ἀντιλαμβάνεται ϗ ῥύεται, ϗ ποιεῖ σημεῖα ϗ τέρατα (ζ) ἐν τῷ οὐρανῷ ϗ ἐπὶ τῆς γῆς, ὅστις ἐξείλατο τὸν Δανιὴλ ἐκ χειρὸς τῶν λεόντων. Καὶ Δανιὴλ κατηύθυνεν ἐν τῇ βασιλείᾳ Δαρείου, ϗ ἐν τῇ βασιλείᾳ Κύρου τοῦ Πέρσου. †

MS.A. (β) ὁ βασιλεὺς Δαρεῖος (γ) τὸ ἐν (δ) αὐτὸς θεὸς ζῶν, (ε) κυριεία (ζ) ἐν οὐρανῷ

† ὍΡΑΣΙΣ ζ'.

Κ Ε Φ. ζ'.

Ἐν ἔτει πρώτῳ (α) τῷ Βαλτάσαρ βασιλέως Χαλδαίων, Δανιὴλ ἐνύπνιον εἶδε, ϗ αἱ ὁράσεις τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ ἐπὶ τῆς κοίτης αὐτοῦ· ϗ τὸ (') ἐνύπνιον αὐτοῦ ἔγραψεν. Ἐγὼ Δανιὴλ ἐθεώρουν (β)· ϗ ἰδοὺ τέσσαρες ἄνεμοι τοῦ οὐρανοῦ προσέβαλλον εἰς τὴν θάλασσαν τὴν μεγάλην· Καὶ (") τέσσαρα θηρία μεγάλα ἀνέβαινον ἐκ τῆς θαλάσσης, διαφέροντα ἀλλήλων. Τὸ πρῶτον ὡσεὶ λέαινα (γ), ϗ πτερὰ αὐτῆς ὡς ἀετοῦ. Ἐθεώρουν ἕως οὗ ἐξετίλη τὰ πτερὰ αὐτῆς· ϗ (δ) ἐξήρθη ἀπὸ τῆς γῆς, ϗ ἐπὶ ποδῶν ἀνθρώπου ἐστάθη, ϗ καρδία ἀνθρώπου ἐδόθη αὐτῇ. Καὶ ἰδοὺ θηρίον δεύτερον ὅμοιον ἄρκῳ, ϗ εἰς μέρος ἓν ἐστάθη, ϗ (ε) τρεῖς πλευραὶ ἐν τῷ στόματι αὐτῆς, ἀναμέσον τῶν ὀδόντων αὐτῆς· ϗ οὕτως ἔλεγον αὐτῇ, Ἀνάστηθι, φάγε σάρκας πολλάς. Ὀπίσω τούτου ἐθεώρουν, ϗ ἰδοὺ θηρίον ἕτερον ὡσεὶ πάρδαλις· καὶ αὐτῇ πτερὰ (') τέσσαρα πετεινοῦ ὑπεράνω αὐτῆς, ϗ τέσσαρες κεφαλαὶ τῷ θηρίῳ, ϗ ἐξουσία ἐδόθη (") αὐτῇ. Ὀπίσω τούτου ἐθεώρουν, ϗ ἰδοὺ θηρίον τέταρτον φοβερὸν ϗ ἔκθαμβον, (ζ) ἰσχυρὸν περισσῶς, ϗ οἱ ὀδόντες αὐτοῦ σιδηροῖ (η), ἐσθίον, καὶ λεπτῦνον, ϗ τὰ ἐπίλοιπα τοῖς ποσὶν αὐτοῦ συνεπάτει, ϗ αὐτὸ διάφορον περισσῶς παρὰ πάντα τὰ θηρία τὰ ἔμπροσθεν αὐτοῦ· ϗ (θ) κέρατα δέκα αὐτῷ. Προσενόουν τοῖς κέρασιν αὐτοῦ, ϗ ἰδοὺ κέρας ἕτερον μικρὸν ἀνέβη ἐν μέσῳ αὐτῶν, ϗ τρία κέρατα τῶν ἔμπροσθεν αὐτοῦ (ι) ἐξεῤῥιζώθη ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ· ϗ ἰδοὺ ὀφθαλμοὶ, ὡσεὶ ὀφθαλμοὶ ἀνθρώπου ἐν τῷ κέρατι τούτῳ, ϗ στόμα λαλοῦν μεγάλα. Ἐθεώρουν ἕως ὅτου (κ) οἱ θρόνοι ἐτέθησαν, ϗ παλαιὸς ἡμερῶν ἐκάθητο, ϗ τὸ ἔνδυμα αὐτοῦ (λ) λευκὸν ὡσεὶ χιὼν, ϗ ἡ θρὶξ τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ ὡσεὶ ἔριον καθαρὸν, ὁ θρόνος αὐτοῦ φλὸξ πυρὸς, οἱ τροχοὶ αὐτοῦ πῦρ φλέγον. Ποταμὸς πυρὸς (μ) εἷλκεν ἔμπροσθεν αὐτοῦ· χίλιαι χιλιάδες ἐλειτούργουν αὐτῷ, ϗ μύριαι μυριάδες παρειστήκεισαν αὐτῷ. κριτήριον ἐκάθισε, ϗ βίβλοι ἠνεῴχθησαν.

MS.A. † ὍΡΑΣΙΣ η'. (α) Βαλτάσαρ (') ἐνύπνιον ἔγραψεν. (β) ἐν ὁράματι τῆς νυκτός· ϗ ἰδοὺ (") τέσσερα (γ) ἔχουσα πτερὰ, ϗ πτερὰ (δ) ἐξηγέρθη (ε) τρία πλευρὰ (') τέσσερα (") αὐτῷ. (ζ) ϗ ἰσχυρὸν περισσῶς *παρὰ πάντα τὰ θηρία τὰ ἔμπροσθεν αὐτοῦ· ϗ κέρατα δέκα αὐτῷ. | οἱ ὀδόντες (η) μεγάλοι, ἐσθίον, (θ) δέκα κέρατα (ι) ἐξεριζώθη (κ) θρόνοι (λ) ὡσεὶ χιὼν λευκόν, (μ) ἐκπορευόμενος εἷλκεν

Tunc Darius rex ſcripſit univerſis populis, tribubus, linguis, habitantibus 25
in univerſa terra: Pax vobis multiplicetur. A facie noſtra poſitum eſt de- 26
cretum (g) hoc in omni principatu regni mei, ſint trementes, & metuant à
facie Dei Danielis. Ipſe enim eſt Deus vivens, & manens in ſecula: &
regnum ejus non diſſipabitur, & dominatio ejus uſque in finem. Suſcipit, 27
& liberat, & facit ſigna, & prodigia in cœlo, & in terra: qui liberavit
Danielem de (h) manu leonum. Et Daniel proſperè egit in regno Darii, & 28
in regno Cyri Perſæ.

C A P. VII.

In anno primo Baltaſar regis Chaldæorum, Daniel ſomnium vidit: & 1
viſiones capitis ejus in cubili ejus. Et ſomnium ſuum (a) ſcripſit. Ego 2
Daniel (b) videbam: & ecce quatuor venti cœli irruebant in mare Ma-
gnum: Et quatuor beſtiæ grandes aſcendebant de mari diverſæ inter ſe. 3
Prima, quaſi leæna, & alæ ejus, ſicut aquilæ. Aſpiciebam, donec avul- 4
ſæ ſunt alæ ejus: & ſublata eſt de terra: & ſuper pedes hominis ſtetit,
& cor hominis datum eſt ei. Et ecce beſtia ſecunda ſimilis urſo, & in par- 5
te una ſtetit: & tres coſtæ in ore ejus inter dentes ejus. Et ſic dicebant ei;
Surge, comede carnes multas. Poſt hanc aſpiciebam: & ecce beſtia alia, 6
quaſi pardus: & huic alæ quatuor volucris ſuper ipſam: & quatuor ca-
pita beſtiæ: & poteſtas data eſt ei. Poſt hanc aſpiciebam: & ecce beſtia 7
quarta terribilis, atque mirabilis, fortis nimis: & dentes ejus (c) fer-
rei: comedens, atque comminuens: & reliqua pedibus ſuis conculcabat:
& ipſa diverſa nimis præ omnibus beſtiis, quæ ante eam: & cornua de-
cem ei. Conſiderabam cornua ejus: & ecce cornu aliud parvulum aſcen- 8
dit in medio eorum: Et tria ejus cornua de iis quæ antea, evulſa ſunt à
facie ejus. Et ecce oculi, quaſi oculi hominis in cornu iſto, & os loquens
*(d) grandia. Aſpiciebam, donec throni poſiti ſunt, & * Antiquus dierum* 9
ſedit. Et veſtimentum ejus candidum, quaſi nix: & capillus capitis ejus,
quaſi lana munda: thronus ejus flamma ignis: rotæ ejus ignis flagrans.
Flumen ignis (e) trahebat in conſpectu ejus. Mille millia deſerviebant ei: 10
*& * dena millia denûm millium aſſiſtebant ei. Judicium ſedit, & libri*
aperti ſunt.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* حينيذ داريوس الملك كتب لكل الشعوب والقبايل والالسن السكان بكل الارض. السلم
يكثر لكم * من وجهي وضع امر ليكون كل من في رياسة مملكتي مرتعدين وخايفين
من وجه اله دانيال. لانه هو الاله الحي والدايم الي الدهور. مملكته لا تفسد. وسلطانه الي
الغاية * يعضد وينجي. ويصنع ايات وجرايح في السماء وعلي الارض. الذي نجا دانيال من
يد الاسد * واستقام دانيال في مملكة داريوس الملك. وفي مملكة كيرش الفارسي *

* الفصل السابع *

* الرويا الثامن *

* في السنة الاولي لبلطشاصر ملك الكلدانيين * راي دانيال مناما. ومناظر راسه علي
مضجعه. وكتب المنام * انا دانيال رايت في رويايي ليلا. واذا اربعة رياح السماء هاجت
الي البحر الاعظم * واربعة وحوش كبار صعدوا من البحر يتميز بعضهم من بعض * الاول
مثل لبوة لها جناحان. وجناحاها مثل نسر ينظر. واذا جناحاها نتفا. وخرجت من الارض.
وقامت علي رجلي انسان. واعطي لها قلب انسان * واذا الوحش الثاني شبيه بالدب. وفي
ناحية واحدة قام. وثلاثة اضلاع في فمه بين اسنانه. وهكذا قالوا له. قم كل لحما كثيرا.
* ومن خلف هذا نظرت. واذا وحش اخر مثل النمر. وله اربعة اجنحة طاير من فوقه.
واربعة رووس للوحش. واعطي له سلطان * ومن خلف هذا نظرت. واذا وحش رابع مخوف
ومهول وقوي بالاكثر. واسنانه حديد كبار ياكل ويدق. وما تبقي يدوسه برجليه. وهو
متميز بالاكثر من جميع الوحوش من قبله. وله عشر قرون * وتاملت في قرونه. واذا قرن اخر
صغير صعد في وسطهم. وثلاثة قرون قلعت من قدامه من وجهه. واذا عينان مثل عيني
انسان في هذا القرن. وفم يتكلم بالعظايم * نظرت واذا كراسي وضعت. والعتيق الايام
جلس ولباسه ابيض مثل الثلج. وشعر راسه مثل الصوف النقي. وكرسيه لهيب نار وبكراته
نار متقد * ونهر نار يجري ويخرج من قدامه. والوف الوف يخدمونه. وربوات ربوات وقوف
امامه. وانتصب موضع الحكم. وفتحت الاسفار.

* *Tunc Darius rex ſcripſit omnibus popu-* 25
lis, nationibus, & linguis habitantibus in
tota terra: Pax multiplicetur vobis. A 26
me proponitur decretum, ut quicunque
extant in dominio regni mei, paveant ti-
meántque faciem Dei Danielis, quoniam
ipſe eſt Deus vivus & in ſecula perpe-
tuus: regnum ejus nunquam corrum-
petur, & imperium ejus erit ad finem uſ-
que. Auxiliatur, & liberat, editque 27
ſigna & prodigia in cœlo & ſuper ter-
ram; qui Danielem eripuit è manu leo-
num. Cæterùm Daniel proſperè egit in 28
regno Darii regis, & in regno Cyri
Perſæ.

CAP. VII.

Viſio octava.

* *Anno primo Baltaſaſaris regis Chal-* 1
dæorum vidit Daniel ſomnium (viſiones
autem capitis ejus fuerunt ſuper cubile
ipſius) ſcripſitque ſomnium: Ego Daniel 2
vidi in viſione mea nocturna, & ecce qua-
tuor venti cœli furebant in mare maxi-
mum, Et quatuor magnæ belluæ aſcen- 3
debant è mari, diverſæ altera ab altera.
Prima ſimilis erat leænæ habenti duas a- 4
las, & alæ ipſius quaſi aquilæ. Vidi etiam,
& ecce avulſæ ſunt alæ ipſius, & egreſſa
eſt è terra, ſtetitque in pedes humanos, &
datum eſt ei cor humanum. Deinde ecce 5
bellua ſecunda ſimilis urſo, qui in parte
una ſtetit, tres habens coſtas in ore ſuo in-
ter dentes ſuos: huic ita dixerunt; Surge,
comede carnem multam. Poſt hanc vidi, 6
& ecce belluam aliam pardo ſimilem,
* *quatuor volucris alas habentem ſuperné:*
& quatuor capita habebat hæc bellua: &
data eſt ei poteſtas. Poſt hanc etiam vi- 7
di, & ecce bellua quarta formidabilis &
horrenda, & ſummoperè fortis: dentes
ejus erant ferrei, ingentes: comedebat,
& comminuebat; & quod remanebat,
pedibus conculcabat: erat autem hæc ma-
gis diverſa à cæteris belluis præcedenti-
bus, & habebat cornua decem. Me au- 8
tem contemplante cornua ejus, ecce cornu
aliud parvum ſuccrevit inter illa, &
tria cornua evulſa ſunt à conſpectu & à
facie iſtius: duo præterea oculi ſimiles
oculis humanis erant in iſto cornu, & os
ejus grandia loquebatur. Vidi, et ecce 9
ſedes poſitæ fuerunt, et Antiquus dierum
ſedit, cujus veſtitus albus erat ſicut nix,
et capilli capitis ſicut lana munda: ſedes
ejus, flamma ignis; et rotæ ejus, ignis
ardens: Pluvius igneus effluebat et e- 10
grediebatur à conſpectu ejus: millia mil-
lium miniſtrabant ei, et myriades myria-
dum aſtantes erant ei: paratus fuit lo-
cus judicii, et aperti ſunt libri.

דניאל: ז

,beſtia eſt interfecta donec *eram videns* *: loquens* cornu quos grandium ſermonum *voce à interim fui Videns*
11 חזה הוית באדין מן־קל מליא רברבתא די קרנא ממללה חזה הוית עד די קטילת חיותא
longitudo & ;earum *poteſtatem abſtulerant beſtiarum reſiduo* Et .ignis combuſtionem ad eſt traditum & ,ejus corpus eſt perditum &
12 והובד גשמה ויהיבת ליקדת אשא: ושאר חיותא העדיו שלטנהון וארכה
cœli nubibus cum ecce & ,noctis viſionibus in *fui Videns* .tempus & ,tempus ad uſque eis eſſet data *vitis* in
13 בחיין יהיבת להון עד־זמן ועדן: חזה הוית בחזוי ליליא וארו עם־ענני שמיא
dedit ei Et .eum fecerunt appropinquare eo coram & ,pervenit dierum antiquum ad uſque & *:erat veniens* hominis filius tanquam
14 כבר אנש אתה הוא ועד־עתיק יומיא מטה וקדמוהי הקרבוהי: ולה יהב
non quæ ,*ſeculi* poteſtas ejus poteſtas :ſervient ei linguæ & *nationes* ,populi omnes & ,regnum & ,gloriam & ,poteſtatem
שלטן ויקר ומלכו וכל עממיא אמיא ולשניא לה יפלחון שלטנה שלטן עלם די־לא
viſiones & ,*vaginæ* medio in Daniel ego ,meus ſpiritus *fuit Æger* .corrumpetur non quod ejus regnum & ,auferetur
15 יעדה ומלכותה די־לא תתחבל: אתכרית רוחי אנה דניאל בגו נדנה וחזוי
,mihi dixit & ;hoc omne ſuper eo ab quærebam *certitudinem* & ,aſſiſtentibus de unum *ſuper* Acceſſi .me terrebant mei capitis
16 ראשי יבהלנני: קרבת על־חד מן־קאמיא ויציבא אבעא־מנה על־כל־דנה ואמר־לי
conſurgent reges quatuor ;quatuor *ipſa* quæ ,magnæ beſtiæ Iſtæ .me fecit ſcire ſermonum interpretationem &
17 ופשר מליא יהודענני: אלין חיותא רברבתא די אנין ארבע ארבעה מלכין יקומון
ſeculum in uſque & ,ſeculum in uſque regnum poſſidebunt & ;altiſſimorum ſanctorum regnum ſuſcipient Et .terra de
18 מן־ארעא: ויקבלון מלכותא קדישי עליונין ויחסנון מלכותא עד־עלמא ועד עלם
ejus dentes,*abundanter* formidoloſa : ipſis cunctis à *varians ipſa* quæ ,*quartam beſtiam ſuper verum* volui Tunc .ſeculorum
19 עלמיא: אדין צבית ליצבא על־חיותא רביעיתא די־הות שניה מן־כלהון דחילה יתירה שניה
quæ ,decem cornibus ſuper Et *.conculcans* ſuis pedibus *in* reſiduum & ,*comminuens ,comedens ,æris* ejus ungues & ,*ferri*
20 די־פרזל וטפרה די־נחש אכלה מדקה ושארא ברגליה רפסה: ועל־קרניא עשר די
,grandia loquens os & ,*ei* oculi & *iſtud* cornu & :tria ejus facie à ceciderant & ,aſcendebat quod altero & ,ejus capite in
בראשה ואחרי די סלקת ונפלו מן־קדמיה תלת וקרנא דכן ועינין לה ופם ממלל רברבן
.eis *prævalens* & :ſanctis cum *prælium faciens ſic* quod cornu & ,*eram Videns* .ſuis ſociis *præ magnus* ejus aſpectus &
21 וחזוה רב מן־חברתה: חזה הוית וקרנא דכן עבדא קרב עם־קדישין ויכלה להן:
.Sancti poſſidebant regnum & ,advenit tempus & ;altiſſimis ſanctis eſt datum judicium & ,dierum antiquus venit Donec
22 עד די־אתה עתיק יומיא ודינא יהב לקדישי עליונין וזמנא מטה ומלכותא החסנו קדישין:
univerſam devorabit & : regnis omnibus *ab differet* quod ,terra in erit quartum regnum quarta Beſtia ,ait Sic
23 כן אמר חיותא רביעיתא מלכו רביעיא תהוא בארעא די תשנא מן־כל־מלכותא ותאכל כל־
alius & ;conſurgent reges decem ,regno ipſo ex ,decem cornua Et .eam comminuet & ,eam *calcabit* & ,terram
24 ארעא ותדושנה ותדקנה: וקרניא עשר מנה מלכותה עשרה מלכין יקמון ואחרן
,loquetur altiſſimi parte ex ſermones Et .humiliabit reges tres & ,prioribus *à differet* ipſe & ,eos poſt conſurget
25 יקום אחריהן והוא ישנא מן־קדמיא ותלתה מלכין יהשפל: ומלין לצד עליא ימלל
,tempora & ,tempus ad uſque ejus manu in tradentur & ,legem & ,tempora mutare putabit & *:abolebit* altiſſimorum ſanctos &
ולקדישי עליונין יבלא ויסבר להשניה זמנין ודת ויתיהבון בידה עד־עדן ועדנין
.temporis *partem* &
ופלג עדן:

Verſio VULG. LAT.

Aſpiciebam propter vocem ſermonum grandium, quos 11
cornu illud loquebatur : & vidi quoniam interfecta eſſet
beſtia, & periſſet corpus ejus, & traditum eſſet ad comburendum
igni : Aliarum quoque beſtiarum ablata eſſet 12
poteſtas, & tempora vitæ conſtituta eſſent eis uſque ad
tempus & tempus. Aſpiciebam ergò in viſione noctis, & 13
ecce cum nubibus cœli quaſi filius hominis veniebat, &
uſque ad Antiquum dierum pervenit: & in conſpectu ejus
obtulerunt eum. Et dedit ei poteſtatem, & honorem, & 14
regnum : & omnes populi, tribus, & linguæ ipſi ſervient:
poteſtas ejus, poteſtas æterna, quæ non auferetur : & regnum
ejus, quod non corrumpetur. Horruit ſpiritus meus, 15
ego Daniel territus ſum in his, & viſiones capitis mei conturbaverunt
me. Acceſſi ad unum de aſſiſtentibus, & veritatem 16
quærebam ab eo de omnibus his. Qui dixit mihi
interpretationem ſermonum, & docuit me : Hæ quatuor 17
beſtiæ magnæ, quatuor ſunt regna, quæ conſurgent de terra.
Suſcipient autem regnum Sancti Dei altiſſimi: & obtinebunt 18
regnum uſque in ſeculum, & ſeculum ſeculorum.
Poſt hoc volui diligenter diſcere de beſtia quarta, quæ erat 19
diſſimilis valdè ab omnibus, & terribilis nimis : dentes &
ungues ejus ferrei : comedebat, & comminuebat, reliqua
pedibus ſuis conculcabat : Et de cornibus decem, quæ 20
habebat in capite : & de alio, quod ortum fuerat, ante
quod ceciderant tria cornua : & de cornu illo, quod habebat
oculos, & os loquens grandia, & majus erat cæteris.
Aſpiciebam, & ecce cornu illud faciebat bellum adverſus 21
Sanctos, & prævalebat eis, Donec venit Antiquus dierum, 22
& judicium dedit Sanctis Excelſi, & tempus advénit, &
regnum obtinuerunt Sancti. Et ſic ait; Beſtia quarta, regnum 23
quartum erit in terra, quod majus erit omnibus regnis,
& devorabit univerſam terram, & conculcabit, &
comminuet eam. Porrò cornua decem ipſius regni, decem 24
reges erunt : & alius conſurget poſt eos, & ipſe potentior
erit prioribus, & tres reges humiliabit. Et ſermones 25
contra Excelſum loquetur, & Sanctos Altiſſimi conteret
: & putabit quòd poſſit mutare tempora, & leges, &
tradentur in manu ejus uſque ad tempus, & tempora, &
dimidium temporis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 * ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܠܗ ܕܐܬܩܛܠܬ ܚܝܘܬܐ ܗܝ. ܘܐܒܕ ܦܓܪܗ. ܘܐܫܬܠܡܬ ܠܝܩܕܢܐ ܕܢܘܪܐ.
12 * ܘܫܪܟܐ ܕܚܝܘܬܐ ܐܬܥܒܪ ܡܢ ܫܘܠܛܢܗܝܢ. ܘܢܓܪܐ ܕܚܝܐ ܐܬܝܗܒ
13 ܠܗܝܢ ܥܕ ܙܒܢ ܘܥܕܢ. * ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܥܠ ܥܢܢܝ ܫܡܝܐ ܐܝܟ ܒܪ ܐܢܫܐ ܐܬܐ.
14 ܘܥܕܡܐ ܠܥܬܝܩ ܝܘܡܬܐ ܡܛܐ: ܘܩܕܡܘܗܝ ܩܪܒܘܗܝ. * ܘܠܗ ܝܗܒ
ܫܘܠܛܢܐ: ܘܐܝܩܪܐ ܘܡܠܟܘܬܐ. ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܐܡܘܬܐ ܘܠܫܢܐ ܠܗ
ܢܦܠܚܘܢ. ܫܘܠܛܢܗ ܫܘܠܛܢ ܠܥܠܡ ܘܠܐ ܥܒܪ. ܘܡܠܟܘܬܗ ܠܐ ܡܬܚܒܠܐ.
15 * ܐܬܟܪܝܬ ܪܘܚܝ ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܒܓܘ ܡܫܟܒܝ. ܘܚܙܘܐ ܕܪܝܫܝ ܫܓܫܘܢܢܝ.
16 * ܘܩܪܒܬ ܠܘܬ ܚܕ ܡܢ ܡܫܡܫܢܐ. ܘܫܪܪܐ ܒܥܝܬ ܡܢܗ ܥܠ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ.
17 ܘܐܡܪ ܠܝ ܫܪܪܐ. ܘܦܘܫܩ ܡܠܝ ܐܘܕܥܢܝ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܠܝܢ ܚܝܘܬܐ ܪܘܪܒܬܐ
18 ܕܚܙܝܬ. ܐܪܒܥܐ ܡܠܟܝܢ ܢܩܘܡܘܢ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܘܢܩܒܠܘܢ ܡܠܟܘܬܐ
19 ܩܕܝܫܐ ܕܡܪܝܡܐ. ܘܢܐܚܕܘܢ ܡܠܟܘܬܐ ܠܥܠܡ ܘܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ. * ܗܝܕܝܢ
ܨܒܝܬ ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܠܡܥܩܒܘ ܥܠ ܚܝܘܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ. ܕܫܢܝܐ ܗܘܬ ܡܢ ܟܠܗܝܢ
ܚܝܘܬܐ. ܘܕܚܝܠܐ ܝܬܝܪܐܝܬ. ܫܢܝܗ ܕܦܪܙܠܐ. ܘܛܦܪܝܗ ܕܢܚܫܐ. ܐܟܠܐ. ܘܡܕܩܐ.
20 ܘܫܪܟܐ ܒܪܓܠܝܗ ܕܝܫܐ. * ܘܥܠ ܩܪܢܬܐ ܥܣܪ ܕܒܪܝܫܗ. ܘܥܠ ܐܚܪܬܐ ܕܣܠܩܬ ܡܢ
ܒܝܢܬܗܘܢ. ܘܢܦܠܘ ܡܢ ܩܕܡܝܗ ܬܠܬ. ܩܪܢܐ ܗܝ ܕܥܝܢܐ ܐܝܬ ܠܗ. ܘܦܘܡܐ
21 ܡܡܠܠ ܪܘܪܒܢ. ܘܚܙܘܗ ܪܒ ܡܢ ܕܚܒܪܬܗ. * ܐܢܛܝܘܟܘܣ * ܚܙܐ ܗܘܝܬ ܩܪܢܐ ܗܝ.
22 ܕܥܒܕܐ ܩܪܒܐ ܥܡ ܩܕܝܫܐ. ܘܡܫܟܚܐ ܠܗܘܢ. * ܥܕܡܐ ܕܐܬܐ ܥܬܝܩ ܝܘܡܬܐ. ܘܕܝܢܐ
23 ܝܗܒ ܠܩܕܝܫܐ ܕܡܪܝܡܐ. ܘܙܒܢܐ ܡܛܐ. ܘܡܠܟܘܬܐ ܐܚܕܘ ܩܕܝܫܐ. * ܘܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܠܝ. ܚܝܘܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ. ܡܠܟܘܬܐ ܪܒܝܥܝܬܐ ܬܗܘܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܬܬܪܝܡ ܥܠ ܟܠܗܝܢ
24 ܡܠܟܘܬܐ. ܘܬܐܟܘܠ ܐܪܥܐ ܟܠܗ. ܘܬܕܘܫܝܗ ܘܬܕܩܝܗ. * ܘܩܪܢܬܐ ܥܣܪ. ܡܢ ܡܠܟܘܬܐ.
ܗܝ ܥܣܪܐ ܡܠܟܝܢ ܢܩܘܡܘܢ. ܘܐܚܪܢܐ ܢܩܘܡ ܒܬܪܗܘܢ. ܘܗܘ ܢܫܢܐ ܡܢ ܩܕܡܝܐ. ܘܬܠܬܐ
25 ܡܠܟܝܢ ܢܫܦܠ. * ܘܡܠܠ ܠܘܩܒܠ ܡܪܝܡܐ ܢܡܠܠ. ܘܠܘܩܒܠ ܩܕܝܫܐ ܕܡܪܝܡܐ ܢܟܠ. ܘܢܣܒܪ
ܠܡܫܚܠܦܘ ܙܒܢܐ. ܘܢܡܘܣܐ. ܘܢܬܝܗܒܘܢ ܒܐܝܕܗ. ܥܕܡܐ ܠܥܕܢ ܥܕܢܝܢ
ܘܦܠܓܘܬ ܥܕܢ.

Videbam interfectam eſſe belluam illam, & 11
periiſſe corpus ejus, & traditam eſſe incendio
ignis : Reliquas verò belluas depoſitas eſſe 12
à dominatu ſuo, ſpatium tamen ac vitam eis
conceſſam uſque ad tempus & terminum præfinitum.
Videbam ſuper cœli nubes quendam 13
ceu filium hominis veniſſe, & uſque ad
Antiquum dierum acceſſiſſe, eique oblatum
fuiſſe. Huic datus fuit dominatus, honos, & 14
regnum ; ut omnes populi, nationes, ac linguæ
ſervirent ei : dominium ejus dominium
eſt perpetuum & minimè fluxum, & regnum
ejus incorruptum. Doluit ſpiritus meus mei 15
Danielis in cubili meo, & viſiones capitis mei
conturbaverunt me. Itaque accedens ad unum 16
ex iis miniſtris, veritatem ab eo indagavi
de his omnibus : qui dixit mihi veritatem,
& interpretationem verborum meorum expoſuit
mihi. Is mihi dixit ; Quatuor illæ belluæ 17
magnæ quas vidiſti, quatuor *figurant* reges
in terra ſurrecturos. Tum regnum accipient 18
Sancti *Dei* excelſi, & regnum poſſidebunt
in ſeculum & in ſeculum ſeculorum. Tunc optavi 19
ego Daniel inveſtigare de quarta bellua
quæ diverſa erat ab omnibus belluis, & admodum
horrenda : cujus dentes ferrei, ungues
ænei : comedebat comminuebatque, &
quod relinquebat, pedibus conculcabat : Similiter 20
de cornibus decem quæ habebat in
capite ſuo, deque illo alio quo emergente de
medio illorum, tria ceciderunt à conſpectu
ipſius : cornu inquam, illo quod oculos habebat,
cujus os grandia loquebatur, cujus denique
ſpecies major erat quàm ſociorum ejus.
Antiochus. Videbam illud cornu bellum gerere 21
cum Sanctis, eorumque fortitudinem ſuperare
: Donec veniret Antiquus dierum, & 22
judicium daret Sanctis Excelſi, & adveniente
tempore regnum poſſiderent Sancti. Sic autem 23
dixit mihi ; Bellua illa quarta, regnum
quartum erit in terra, quod præſtabit regnis
omnibus, comedet univerſam terram, & conculcabit
& conteret eam. Cornua vero decem 24
ſignificant ex *eodem* regno decem reges
ſurrecturum, qui præcedentes ſuperabit, &
tres reges deprimet : Verba adverſùs Excelſum 25
loquetur, & adverſùs Sanctos Excelſi
fraudem : & credet ſe mutaturum tempora,
terminos præfinitos, ac leges: & *quidem* tradentur
in manum ejus uſque ad præfinitum
quoddam tempus temporum, & dimidium
tempus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

11 Ἐθεώρουν τότε ἀπὸ φωνῆς τῶν (ν) λόγων τῶν μεγάλων, ὧν τὸ κέρας ἐκεῖνο ἐλάλει, ἕως (ξ) ἀνῃρέθη τὸ θηρίον, ϗ ἀπώλετο, ϗ τὸ σῶμα αὐτοῦ ἐδόθη εἰς καῦσιν πυρός. Καὶ τῶν λοιπῶν θηρίων (ο) μετεστάθη ἡ ἀρχὴ, ϗ μακρότης ζωῆς ἐδόθη αὐτοῖς ἕως καιροῦ ϗ καιροῦ. Ἐθεώρουν ἐν ὁράματι τῆς νυκτὸς, ϗ ἰδοὺ μετὰ τῶν νεφελῶν τοῦ οὐρανοῦ, ὡς υἱὸς ἀνθρώπου ἐρχόμενος (π), καὶ ἕως τοῦ παλαιοῦ τῶν ἡμερῶν ἔφθασε, (ρ) καὶ προσηνέχθη αὐτῷ. Καὶ αὐτῷ ἐδόθη ἡ ἀρχὴ ϗ ἡ τιμὴ ϗ ἡ βασιλεία, ϗ πάντες οἱ λαοὶ, φυλαὶ, (σ) καὶ γλῶσσαι αὐτῷ δουλεύουσιν· ἡ ἐξουσία αὐτοῦ, ἐξουσία αἰώνιος, ἥτις οὐ παρελεύσεται, ϗ ἡ βασιλεία αὐτοῦ οὐ διαφθαρήσεται. Ἔφριξε τὸ πνεῦμά μου ἐν τῇ ἕξει μου, ἐγὼ Δανιὴλ, ϗ αἱ ὁράσεις τῆς κεφαλῆς μου ἐτάρασσόν με. Καὶ προσῆλθον ἑνὶ τῶν ἑστηκότων, καὶ τὴν ἀκρίβειαν ἐζήτουν παρ᾿ αὐτοῦ μαθεῖν περὶ πάντων τούτων. ϗ εἶπέ μοι τὴν ἀκρίβειαν, καὶ τὴν σύγκρισιν τῶν λόγων ἐγνώρισέ μοι. Ταῦτα τὰ θηρία (τ) τὰ τέσσαρα, τέσσαρες βασιλεῖαι ἀναστήσονται ἐπὶ τῆς γῆς, αἳ ἀρθήσονται· Καὶ παραλήψονται τὴν βασιλείαν ἅγιοι ὑψίστου, ϗ καθέξουσιν αὐτὴν ἕως αἰῶνος τῶν αἰώνων. Καὶ ἐζήτουν ἀκριβῶς περὶ τοῦ θηρίου τοῦ τετάρτου· ὅτι ἦν διαφέρον παρὰ πᾶν θηρίον, φοβερὸν περισσῶς, οἱ ὀδόντες αὐτοῦ σιδηροῖ, καὶ (υ) ὄνυχες αὐτοῦ χαλκοῖ, ἐσθίον, καὶ λεπτῦνον, καὶ τὰ ἐπίλοιπα τοῖς ποσὶν αὐτοῦ συνεπάτει. Καὶ περὶ τῶν κεράτων αὐτοῦ τῶν δέκα τῶν ἐν τῇ κεφαλῇ αὐτοῦ, καὶ τοῦ ἑτέρου τοῦ ἀναβάντος, καὶ ἐκτινάξαντος τῶν (φ) πρώτων, ᾧ οἱ ὀφθαλμοὶ ϗ στόμα λαλοῦν μεγάλα, καὶ ἡ ὅρασις αὐτοῦ, (χ) μείζων τῶν λοιπῶν. Ἐθεώρουν, καὶ τὸ κέρας ἐκεῖνο ἐποίει πόλεμον μετὰ τῶν ἁγίων, καὶ (ψ) ἴσχυσε πρὸς αὐτοὺς, (ω) Ἕως οὗ ἦλθεν ὁ παλαιὸς (d) ἡμερῶν, καὶ τὸ κρίμα ἔδωκεν ἁγίοις ὑψίστου· καὶ ὁ καιρὸς ἔφθασε, καὶ τὴν βασιλείαν κατέσχον οἱ ἅγιοι. Καὶ εἶπε, Τὸ θηρίον τὸ τέταρτον, βασιλεία τετάρτη ἔσται ἐν τῇ γῇ, ἥτις διοίσει παρὰ πάσας τὰς βασιλείας, ϗ καταφάγεται πᾶσαν τὴν γῆν, καὶ συμπατήσει αὐτὴν ϗ κατακόψει. Καὶ τὰ δέκα κέρατα αὐτοῦ, δέκα βασιλεῖς ἀναστήσονται, καὶ ὀπίσω (α) αὐτῶν ἀναστήσεται ἕτερος, ὃς διοίσει κακοῖς πάντας τοὺς ἔμπροσθεν, ϗ τρεῖς βασιλεῖς ταπεινώσει, Καὶ λόγους πρὸς τὸν ὕψιστον λαλήσει, ϗ τοὺς ἁγίους ὑψίστου παλαιώσει, ϗ ὑπονοήσει τοῦ ἀλλοιῶσαι καιροὺς ϗ νόμον, ϗ δοθήσεται ἐν χειρὶ αὐτοῦ (β) ἕως καιροῦ ϗ καιρῶν καί γε ἥμισυ καιροῦ.

Aſpiciebam tunc à voce ſermonum grandium, quos cornu illud loqueba- 11
tur; quoadusque interfecta eſt beſtia, & periit, & corpus ejus datum eſt
in combuſtionem ignis. Et cæterarum beſtiarum tranſlatus eſt principatus: 12
& longitudo vitæ data eſt eis uſque ad tempus, & tempus. Aſpiciebam 13
in viſione noctis: & ecce cum nubibus cœli, quaſi filius hominis veniens: &
uſque ad Antiquum dierum pervênit: & (f) oblatus eſt ei: Et datus eſt 14
ipſi principatus, & honor, & regnum: & (g) omnes populi, tribus, &
linguæ ipſi ſervient. Poteſtas ejus, poteſtas ſempiterna, quæ non per-
tranſibit: & regnum ejus non corrumpetur. Horruit ſpiritus meus: 15
(h) in habitu meo ego Daniel: & viſiones capitis mei conturbabant me.
Et acceſſi ad unum aſſiſtentium: & veritatem quærebam ab eo diſcere 16
de omnibus his. Et dixit mihi veritatem; & interpretationem ſermonum
notam mihi fecit. Hæ quatuor (i) beſtiæ; quatuor regna conſurgent 17
ſuper terram: quæ auferentur. Et ſuſcipient regnum Sancti Altiſſimi: 18
& obtinebunt illud uſque in ſeculum ſeculorum. Et quærebam diligen- 19
ter de beſtia quarta: (quia erat diſſimilis ab omni beſtia, terribilis nimis:
dentes ejus ferrei, & ungues ejus ænei: comedens, & comminuens: &
reliqua pedibus ſuis conculcabat:) Et de cornibus ejus decem, quæ in capi- 20
te ejus, & alio, quod aſcenderat, & excuſſerat de (k) primis, cui oculi,
& os loquens grandia, & aſpectus ejus major cæteris. Aſpiciebam: & 21
cornu illud faciebat bellum cum Sanctis, & prævalebat erga eos, Donec 22
venit Antiquus dierum, & judicium dedit Sanctis Excelſi: & tempus
advênit: & regnum obtinuerunt Sancti. Et dixit; Beſtia quarta, 23
regnum quartum erit in terra, quod ſuperabit omnia regna, & devorabit
univerſam terram, et conculcabit eam, et comminuet. Et decem cor- 24
nua ejus, decem reges conſurgent, et poſt eos conſurget alius: qui ſupe-
rabit (l) malis omnes priores, et tres reges humiliabit: Et ſermones 25
contra Excelſum loquetur: et Sanctos Altiſſimi (m) faciet veteraſcere:
& (n) cogitabit mutare tempora, et legem: et tradentur in manu ejus uſque
ad tempus, et tempora, et etiam dimidium temporis.

MS.A. (ν) λόγων, *ὧν ἐλάλει, ὧν (ξ) τὸ θηρίον ἐκεῖνο ἀνῃρέθη, (ο) ἡ ἀρχὴ μετεστάθη, (π) ἦν, ϗ (ρ) ἐνώπιον αὐτοῦ προσήγαγον αὐτόν. Καὶ αὐτῷ ἐδόθη (σ) γλῶσσαι αὐτῷ δουλεύουσιν· (τ) τὰ μεγάλα τὰ τέσσαρα, (υ) οἱ ὄνυχες (φ) προτέρων τρία, κέρας ἐκεῖνο ᾧ οἱ (χ) μείζω (ψ) ἴσχυεν (ω) Ἕως ἦλθεν (d) τῶν ἡμερῶν, (α) αὐτοῦ (β) ἕως καιροῦ * καὶ καιροῦ ϗ καιρῶν ϗ ἥμισυ

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ونظرت حينيذ من صوت الكلمات العظيمة التي تكلم بها ذلك القرن * حتى قتل 11
ذلك الوحش وهلك * واعطي جسده لتحريق النار * ونقلت رياسة بقية الوحوش * واعطي 12
لها طول حياة زمان ووقت * ونظرت في رويا الليل * واذا مع سحب السماء مثل ابن انسان 13
كان اتيا * وبلغ الي العتيق الايام * وقرب امامه * واعطيت له الرياسة والكرامة والمملكة * 14
وجميع الشعوب والقبايل والالسن يتعبدون له * وسلطانه سلطان ابدي الذي لا يزول *
ومملكته لا تفسد * فصغرت نفسي انا دانيال في حواسي * ومناظر راسي اقلقتني * 15
* وتقدمت لواحد من القيام * وطلبت منه التحقيق من اجل هولاء كلهم * فقال لي 16
التحقيق * واعلمني تاويل الكلمات * هولاء الوحوش الاربعة الكبار * اربع ممالك تقوم 17
على الارض * هنك تنزع * واخذ قديسوا العلي المملكة * ويستحوذون عليها الي الابد 18
والي ابد الاباد * فطلبت بتحقيق من اجل الوحش الرابع لانه كان مميزا عن كل 19
وحش * ومخوفا بالاكثر * اسنانه حديد * ومخالبه نحاس * ياكل ويدق * وما تبقي
يدوسه برجليه * ومن اجل قرونه العشر التي في راسه * واذ صعد الاخر نفض ثلاثة 20
من الاولين * وذلك القرن له عينان * وفم يتكلم بالعظايم * ومنظره اعظم من الباقي *
* ونظرت ذلك القرن صنع حربا مع القديسين * وقوي عليهم * حتى جاء العتيق الايام 21 22
واعطي الحكم لقديسي العلي * والزمان بلغ * واخذت القديسون المملكة * فقال * 23
الوحش الرابع مملكة رابعة تكون في الارض * هنك تعلو جميع الممالك * وتاكل كل
الارض وتدوسها وتدقها * والعشر قرونه عشر ملوك يقومون * ومن خلفهم يقوم اخر 24
هذا يفوق بالشرور جميع من قبله * ويذل ثلاثة ملوك * ويتكلم على العلي كلاما 25
ويضل قديسي العلي * ويظن ان يغير الاوقات والناموس * ويدفع في يده الي وقت
اوقات ونصف وقت *

Vidi etiam tunc à voce ſermonum ma- 11
gnorum quos protulerat illud cornu,
donec interfecta eſt bellua illa, periitque,
& traditum fuit corpus incendio ignis.
Et tranſlatus eſt principatus reliquarum 12
belluarum, ſed conceſſa eis longitudo
ætatis, ſpatii, & temporis. Prætereà 13
vidi in viſione nocturna, & ecce cum
nubibus cœli quaſi filius hominis veni-
ebat, & pervênit uſque ad Antiquum
dierum: & cùm oblatus fuiſſet co-
ram eo, Datus fuit ei principatus, ho- 14
nor, atque regnum: & omnes populi,
nationes, ac linguæ ſervient ei: poteſtas
ejus poteſtas æterna quæ nunqua mdeficiet,
& regnum ejus nunquam corrumpetur.
Quapropter cùm extenuata fuiſſet anima 15
mea mei Danielis in ſenſibus meis, &
viſiones capitis mei conturbarent me;
Acceſſi ad unum ex aſtantibus, & ex- 16
ploratus ſum ab eo veritatem, & notam
fecit mihi interpretationem verborum.
Hæ belluæ quatuor ingentes, quatuor 17
ſunt regna ſuper terram ſurrectura.
His ablatis, Sancti Altiſſimi regnum 18
accipient, et potientur eo in æternum
et in æternitatem æternitatum. Deinde 19
exploratus ſum veritatem de quarta
bellua, utpote diverſa ab omnibus bel-
luis, et magnopere formidabili; cujus
dentes erant ferrei, ungues ænei; com-
edebat et comminuebat, quódque rema-
nebat, pedibus conculcabat: Déque 20
cornibus ejus decem quæ capite gere-
bat: et cur aliud ſuccreſcens tria prio-
rum excuſſerit, idémque cornu oculos
haberet, et os grandia loquens, et ſpe-
cies ejus reliquis major eſſet. Vide- 21
ram etiam cornu illud bellum geſſiſſe
contra Sanctos, eiſque prævaluiſſe, Do- 22
nec veniſſet Antiquus dierum, dediſſét-
que regnum Sanctis Altiſſimi; et tem-
pore adveniente, Sancti regnum obtinu-
iſſent. Dixit; Bellua quarta, regnum 23
quartum erit in terra: hoc omnia re-
gna ſuperabit, comedet univerſam ter-
ram, conculcabit et conteret eam. Cor- 24
nua ipſius decem, ſunt reges decem
ſurrecturi; poſt quos ſurget alius, qui
malis omnes prædeceſſores ſuos ſupe-
rabit, et reges tres humiliabit. Adver- 25
ſùs Altiſſimum verba obloquetur, ſe-
ducet Sanctos Excelſi, putabítque ſe
mutare poſſe tempora et legem: et
quidem dabitur hoc in manum ejus ad
tempus temporum et dimidium tem-
poris.

דניאל : ח

magnitudo &, poteſtas &, regnum Et .finem in uſque *perdendum &* ,*delendum ad* ,auferent ejus poteſtatē & ;ſedebit judicium Et
26 וְדִינָא יִתִּב וְשָׁלְטָנֵהּ יְהַעְדּוֹן לְהַשְׁמָדָה וּלְהוֹבָדָה עַד־סוֹפָא׃ וּמַלְכוּתָה וְשָׁלְטָנָא וּרְבוּתָא 27
poteſtates omnes & ,*ſeculi* regnum ejus regnum : altiſſimorum ſanctorum populo eſt *datum* cœlum omne ſubter *regnorum*
דִּי מַלְכְוָת תְּחוֹת כָּל־שְׁמַיָּא יְהִיבַת לְעַם קַדִּישֵׁי עֶלְיוֹנִין מַלְכוּתֵהּ מַלְכוּת עָלַם וְכֹל שָׁלְטָנַיָּא
mei ſplendores & ,me terruerunt meæ cogitationes multùm ,Daniel ego : verbi finis uſque Huc .obedient & ,ſervient ei
28 לֵהּ יִפְלְחוּן וְיִשְׁתַּמְּעוּן׃ עַד־כָּה סוֹפָא דִי־מִלְּתָא אֲנָה דָנִיֵּאל שַׂגִּיא ׀ רַעְיוֹנַי יְבַהֲלֻנַּנִי וְזִיוַי
.conſervavi meo corde in ſermonem & ,me *ſuper ſunt immutati*
יִשְׁתַּנּוֹן עֲלַי וּמִלְּתָא בְּלִבִּי נִטְרֵת׃

CAP. VIII. ח

.principio in *me ad* apparuit *poſtquam* Daniel ego : *me ad* apparuit viſio ,regis Balſaſar regni tertio anno In
1 בִּשְׁנַת שָׁלוֹשׁ לְמַלְכוּת בֵּלְאשַׁצַּר הַמֶּלֶךְ חָזוֹן נִרְאָה אֵלַי אֲנִי דָנִיֵּאל אַחֲרֵי הַנִּרְאָה אֵלַי בַּתְּחִלָּה׃
ego & ,viſione in vidi & : provincia Helam in quæ ,*metropoli* Suſan in *ego & ,me videndo in* fuit & ,viſione in vidi Et
2 וָאֶרְאֶה בֶּחָזוֹן וַיְהִי בִּרְאֹתִי וַאֲנִי בְּשׁוּשַׁן הַבִּירָה אֲשֶׁר בְּעֵילָם הַמְּדִינָה וָאֶרְאֶה בֶּחָזוֹן וַאֲנִי
; cornua ei & ,*rivi facies ad ſtans* unus aries ecce & , vidi & ,meos oculos levavi Et .Ulai *rivum ſuper* eram
3 הָיִיתִי עַל־אוּבַל אוּלָי׃ וָאֶשָּׂא עֵינַי וָאֶרְאֶה וְהִנֵּה ׀ אַיִל אֶחָד עֹמֵד לִפְנֵי הָאֻבָל וְלוֹ קְרָנָיִם
cornupetentem arietem Vidi .noviſſimo in *aſcendens excelſum &* ,*ſecundo præ excelſum* unum & , excelſa cornua &
4 וְהַקְּרָנַיִם גְּבֹהוֹת וְהָאַחַת גְּבֹהָה מִן־הַשֵּׁנִית וְהַגְּבֹהָה עֹלָה בָּאַחֲרֹנָה׃ רָאִיתִי אֶת־הָאַיִל מְנַגֵּחַ
fecit & : ejus manu de *eruens* nec ,*ejus facies ad* ſtabant non beſtiæ omnes & ,Meridiem *ad* & ,Aquilonem & ,*mare* ad
יָמָּה וְצָפוֹנָה וָנֶגְבָּה וְכָל־חַיּוֹת לֹא־יַעַמְדוּ לְפָנָיו וְאֵין מַצִּיל מִיָּדוֹ וְעָשָׂה
facies ſuper Occidente ab *veniens* caprarum hircus ecce & ; perpendens eram ego Et .eſt magnificatus & ,ſuā voluntatē ſecundùm
5 כִרְצֹנוֹ וְהִגְדִּיל׃ וַאֲנִי ׀ הָיִיתִי מֵבִין וְהִנֵּה צְפִיר־הָעִזִּים בָּא מִן־הַמַּעֲרָב עַל־פְּנֵי
, cornua habentem arietem ad uſque venit Et .ejus oculos inter *viſionis* cornu hirco & : terram *in tangens* non & , terræ totius
6 כָל־הָאָרֶץ וְאֵין נוֹגֵעַ בָּאָרֶץ וְהַצָּפִיר קֶרֶן חָזוּת בֵּין עֵינָיו׃ וַיָּבֹא עַד־הָאַיִל בַּעַל הַקְּרָנַיִם
,arietem *juxta pertingentem* eum vidi Et .ſuæ fortitudinis ira in eum ad cucurrit & ; fluvium ante ſtantem videram quem
7 אֲשֶׁר רָאִיתִי עֹמֵד לִפְנֵי הָאֻבָל וַיָּרָץ אֵלָיו בַּחֲמַת כֹּחוֹ׃ וּרְאִיתִיו מַגִּיעַ ׀ אֵצֶל הָאַיִל
ſtandum ad ,ariete in fortitudo erat non & ,ejus cornua duo *confregit* & ,arietem percuſſit & ,eum *in eſt commotus bile* &
וַיִּתְמַרְמַר אֵלָיו וַיַּךְ אֶת־הָאַיִל וַיְשַׁבֵּר אֶת־שְׁתֵּי קְרָנָיו וְלֹא־הָיָה כֹחַ בָּאַיִל לַעֲמֹד
caprarum hircus Et .ejus manu de arietem *eruens* erat non & ,eum conculcavit & ,terram in eum projecit & ; eum ante
8 לְפָנָיו וַיַּשְׁלִיכֵהוּ אַרְצָה וַיִּרְמְסֵהוּ וְלֹא־הָיָה מַצִּיל לָאַיִל מִיָּדוֹ׃ וּצְפִיר הָעִזִּים
quatuor in ,eo pro quatuor *apparentia* aſcenderunt & ,magnum cornu eſt fractum ,*illum roborari ut* & : *valde uſque* eſt magnificatus
הִגְדִּיל עַד־מְאֹד וּכְעָצְמוֹ נִשְׁבְּרָה הַקֶּרֶן הַגְּדוֹלָה וַתַּעֲלֶנָה חָזוּת אַרְבַּע תַּחְתֶּיהָ לְאַרְבַּע
,Orientem ad & ,Meridiem ad *præſtanter* crevit & ; parvum unum cornu eſt egreſſum illis ex uno ex Et .cœli ventos
9 רוּחוֹת הַשָּׁמָיִם׃ וּמִן־הָאַחַת מֵהֶם יָצָא קֶרֶן־אַחַת מִצְּעִירָה וַתִּגְדַּל־יֶתֶר אֶל־הַנֶּגֶב וְאֶל־הַמִּזְרָח
.eas conculcavit & , ſtellis de & ,exercitu de terram dejecit & ; cœlorum exercitum ad uſque crevit Et .*ornatum* ad &
10 וְאֶל־הַצֶּבִי׃ וַתִּגְדַּל עַד־צְבָא הַשָּׁמָיִם וַתַּפֵּל אַרְצָה מִן־הַצָּבָא וּמִן־הַכּוֹכָבִים וַתִּרְמְסֵם׃
exercitus Et .ejus *ſanctuarii* locus eſt projectus & , juge eſt ablatum eo ab & ; eſt magnificatus exercitus principem ad uſque Et
11 12 וְעַד שַׂר־הַצָּבָא הִגְדִּיל וּמִמֶּנּוּ הֻרַם הַתָּמִיד וְהֻשְׁלַךְ מְכוֹן מִקְדָּשׁוֹ׃ וְצָבָא
.proſperabitur & , faciet & , terram in veritatem projiciet & ,*prævaricatione in* juge contra dabitur
תִּנָּתֵן עַל־הַתָּמִיד בְּפָשַׁע וְתַשְׁלֵךְ אֱמֶת אַרְצָה וְעָשְׂתָה וְהִצְלִיחָה׃

Verſio VULG. LAT.

Et judicium ſedebit, ut auferatur potentia, & conteratur, 26
& diſpereat uſque in finem. Regnum autem, & poteſtas, 27
& magnitudo regni, quæ eſt ſubter omne cœlum, detur
populo Sanctorum Altiſſimi : cujus regnum, regnum ſempiternum
eſt, & omnes reges ſervient ei, & obedient.
Hucuſque finis verbi. Ego Daniel multùm cogitationibus 28
meis conturbabar, & facies mea mutata eſt in me : verbum
autem in corde meo conſervavi.

CAP. VIII.

Anno tertio regni Baltaſſar regis, viſio apparuit mihi. 1
Ego Daniel, poſt id quod videram in principio, Vidi in 2
viſione mea, cùm eſſem in Suſis caſtro, quod eſt in Ælam
regione : vidi autem in viſione eſſe me ſuper portam Ulai.
Et levavi oculos meos, & vidi : & ecce aries unus ſtabat 3
ante paludem, habens cornua excelſa, & unum excelſius
altero atque ſuccreſcens. Poſteà Vidi arietem cornibus 4
ventilantem contra Occidentem, & contra Aquilonem,
& contra Meridiem, & omnes beſtiæ non poterant reſiſtere
ei, neque liberari de manu ejus : fecítque ſecundùm
voluntatem ſuam, & magnificatus eſt. Et ego in- 5
telligebam : ecce autem hircus caprarum veniebat ab
Occidente ſuper faciem totius terræ, & non tangebat terram
: porrò hircus habebat cornu inſigne inter oculos
ſuos. Et venit uſque ad arietem illum cornutum, quem 6
videram ſtantem ante portam, & cucurrit ad eum in impetu
fortitudinis ſuæ. Cúmque appropinquâſſet prope 7
arietem, efferatus eſt in eum, & percuſſit arietem, &
comminuit duo cornua ejus, & non poterat aries reſiſtere
ei : cúmque eum miſiſſet in terram, conculcavit, & nemo
quibat liberare arietem de manu ejus. Hircus autem 8
caprarum magnus factus eſt nimis : cúmque creviſſet, fractum
eſt cornu magnum, & orta ſunt quatuor cornua ſubter
illud per quatuor ventos cœli. De uno autem ex eis 9
egreſſum eſt cornu unum modicum : & factum eſt grande
contra Meridiem, & contra Orientem, & contra fortitudinem.
Et magnificatum eſt uſque ad fortitudinem cœli : 10
& dejecit de fortitudine, & de ſtellis, & conculcavit eas.
Et uſque ad principem fortitudinis magnificatum eſt : & ab 11
eo tulit juge ſacrificium, & dejecit locum ſanctificationis
ejus. Robur autem datum eſt ei contra juge ſacrifi- 12
cium propter peccata : & proſternetur veritas in terra, &
faciet, & proſperabitur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

26 * ܘܕܝܢܐ ܝܬܒ. ܘܫܘܠܛܢܗ ܢܥܒܪܘܢ ܡܢܗ. ܠܡܚܒܠܘܬܗ ܘܠܡܘܒܕܘܬܗ. ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܐ 26
27 ܕܡܠܟܘܬܐ. * ܘܫܘܠܛܢܐ ܘܪܒܘܬܐ ܘܡܠܟܘܬܐ ܕܬܚܝܬ ܫܡܝܐ. ܢܬܝܗܒ ܠܥܡܐ ܩܕܝܫܐ 27
ܕܥܠܝܐ. ܘܡܠܟܘܬܗ ܡܠܟܘܬܐ ܕܠܥܠܡ. ܘܟܠ ܫܘܠܛܢܐ ܠܗ ܢܦܠܚܘܢ. ܘܢܫܬܡܥܘܢ.
28 * ܥܕܡܐ ܠܗܪܟܐ ܣܘܦܗ ܕܡܠܬܐ. ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܛܒ ܪܥܝܢܝ ܕܝܠܝ ܫܓܫܘܢܢܝ. ܘܙܝܘܝ ܐܫܬܢܝܘ 28
ܥܠܝ. ܘܡܠܬܐ ܒܠܒܝ ܢܛܪܬ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܚ * ܒܫܢܬ ܬܠܬ 1

ܕܡܠܟܘܬܗ ܕܒܠܛܫܨܪ ܡܠܟܐ. ܚܙܘܐ ܐܬܚܙܝ ܠܝ ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ. ܡܢ ܒܬܪ ܚܙܘܐ ܩܕܡܝܐ ܕܐܬܚܙܝ
ܠܝ. * ܚܙܝܬ ܒܚܠܡܝ. ܕܐܝܬܝ ܗܘܝܬ ܒܫܘܫܢ ܒܝܪܬܐ ܕܒܥܝܠܡ ܡܕܝܢܬܐ. ܘܚܙܝܬ ܒܚܠܡܝ. 2
ܕܩܐܡ ܐܢܐ ܥܠ ܐܒܘܠ ܐܘܠܝ. * ܕܪܝܘܫ ܡܕܝܐ * ܘܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ. ܘܗܐ ܕܟܪܐ ܚܕ ܩܐܡ 3
ܩܕܡ ܐܒܘܠ. ܘܐܝܬ ܠܗ ܩܪܢܬܐ. ܘܩܪܢܬܗ ܪ̈ܡܢ. ܘܚܕܐ ܪܡܐ ܡܢ ܚܒܪܬܗ. ܘܗܝ ܕܪܡܐ ܣܠܩܬ ܒܚܪܬܐ.
* ܚܙܝܬ ܠܕܟܪܐ ܕܡܢܓܚ ܠܡܥܪܒܐ. ܘܠܓܪܒܝܐ ܘܠܬܝܡܢܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܚܝܘܬܐ ܠܐ 4
ܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܠܐ ܐܝܬ ܕܡܦܨܐ ܡܢ ܐܝܕܗ. ܘܥܒܕ ܐܝܟ ܕܨܒܐ. ܘܐܬܪܘܪܒ. ܘܐܢܐ
ܡܣܬܟܠ ܗܘܝܬ. * ܨܦܝܪܐ ܕܥܙܐ ܐܠܟܣܢܕܪܘܣ ܒܪ ܦܝܠܝܦܘܣ * ܘܨܦܝܪܐ ܕܥܙܐ ܐܬܐ ܡܢ 5
ܡܥܪܒܐ ܥܠ ܐܦܝ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܢܩܦ ܗܘܐ ܒܐܪܥܐ. ܘܨܦܝܪܐ ܩܪܢܐ ܡܬܚܙܝܐ ܒܝܬ ܥܝܢܘܗܝ.
* ܘܐܬܐ ܥܕܡܐ ܠܕܟܪܐ ܗܘ ܕܚܙܝܬ ܗܘܝܬ ܠܗ ܩܐܡ ܩܕܡ ܐܒܘܠ. * ܘܪܗܛ 6 7
ܠܘܬܗ ܒܚܡܬ ܚܝܠܗ. ܘܡܛܝܗ ܠܕܟܪܐ. ܘܐܬܚܡܬ ܥܠܘܗܝ. ܘܡܚܝܗ ܠܕܟܪܐ. ܘܬܒܪ
ܬܪܬܝܢ ܩܪܢܬܗ. * ܕܟܪܐ ܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ ܡܕܝܐ * ܘܠܐ ܗܘܐ ܒܗ ܚܝܠܐ ܒܕܟܪܐ ܠܡܩܡ
ܠܘܩܒܠܗ. ܘܫܕܝܗ ܒܐܪܥܐ ܘܕܫܗ. ܘܠܐ ܗܘܐ ܕܡܦܨܐ ܠܗ ܠܕܟܪܐ. ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ ܕܨܦܝܪܐ
ܕܥܙܐ. * ܘܨܦܝܪܐ ܕܥܙܐ ܪܒ ܛܒ. ܘܟܕ ܐܬܬܩܦ ܐܬܬܒܪܬ ܩܪܢܗ ܪܒܬܐ. * ܡܘܬܗ ܕܐܠܟܣܢܕܪܘܣ 8
ܒܪ ܦܝܠܝܦܘܣ * ܘܣܠܩ ܕܡܬܚܙܝܢ ܐܪܒܥ ܬܚܘܬܝܗ. ܠܐܪܒܥ ܪܘܚܐ ܕܫܡܝܐ.
* * ܐܢܛܝܟܘܣ ܐܦܝܦܢܣ. ܐܪܒܥܐ ܥܒܕܘܗܝ ܕܐܠܟܣܢܕܪܘܣ ܒܪ ܦܝܠܝܦܘܣ ܕܐܡܠܟܘ 9
ܒܬܪܗ * ܘܡܢ ܚܕܐ ܡܢܗܝܢ ܢܦܩܬ ܩܪܢܐ ܚܕܐ ܙܥܘܪܬܐ. ܘܪܒܬ ܛܒ ܠܬܝܡܢܐ.
ܘܠܡܕܢܚܐ. * ܘܪܒܬ ܥܕܡܐ ܠܚܝܠܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܐܦܠܬ ܠܐܪܥܐ ܡܢ ܚܝܠܐ ܘܡܢ ܟܘܟܒܐ. 10
ܘܕܫܬ ܐܢܘܢ. * ܘܥܕܡܐ ܠܪܫ ܚܝܠܐ ܐܬܪܘܪܒ. ܘܡܢܗ ܐܥܒܪ ܐܡܝܢܘܬܐ. ܘܥܩܪ ܐܬܪܐ ܕܡܩܕܫܗ. 11
* ܘܚܝܠܐ ܐܬܝܗܒ ܠܗ ܥܠ ܐܡܝܢܘܬܐ ܒܚܛܗ̈ܐ. ܘܐܫܬܘܝ ܡܩܕܫܐ ܠܐܪܥܐ ܘܥܒܕ ܘܐܨܠܚ. 12

Verùm judice ſedente, auferent ab eo domi- 26
natum ejus, ut vaſtent ac perdant eum uſque
ad regni exterminium. Dominatus autem, 27
& majeſtas, ac regnum quod ſub cœlo eſt,
tradetur populo ſancto Altiſſimi : regnum
ejus regnum erit perpetuum, & omnes dominationes
ei ſervient & obedient. Hucuſque 28
finis eſto ſermonis. Me Danielem vehementer
anxerunt cogitationes meæ, ſpecies mea immutata
eſt, & rem iſtam in corde meo ſervavi.

CAP. VIII.

Anno tertio regni Blitſaſaris regis, viſio 1
apparuit mihi Danieli poſt viſionem illam primam
quæ apparuerat mihi. Vidi in ſomnio 2
meo eſſe me in Suſan palatio quod eſt in urbe
Ilam : vidíque in ſomnio meo conſiſtere me
prope Abul-Ulai : *Darius Medus.* Et ſub- 3
latis oculis vidiſſe me, cùm ecce aries quidam
conſiſtebat ante Abul : is habebat cornua,
ejuſque cornua prælonga erant; ſed unum
altero longius : & quod longius erat, poſteriùs
ſuccrevit. Vidi arietem illum cornu- 4
petentem Occidentem, Aquilonem, & Meridiem
verſùs ; nullámque beſtiam reſiſtere
illi, & neminem manus ejus effugere : fecitque
pro libito, & elevatum eſſe, me conſiderante.
Hircus caprarum Alexander Philippi filius.
Tum hircus caprarum venit ab Occidente 5
per faciem totius terræ, nihilque lædebat in
terra. Huic hirco cornu conſpiciebatur in
fronte. Venit autem & acceſſit uſque ad 6
arietem illum bicornem, quem videram conſiſtentem
ante Abul : Suóque impetu in eum
accurrens pervênit ad arietem; & excan- 7
deſcens in eum, ferit arietem, fregítque ambo
cornua ejus : *Aries Darius rex Medus* :
neque fuit facultas in ariete reſiſtendi illi : &
dejiciens illum in terram, conculcavit illum,
neque fuit qui eriperet arietem de manibus
hirci caprarum. Hircus caprarum crevit ad- 8
modùm ; cúmque grandis effectus eſſet, fractum
eſt cornu ipſius magnum : *Obitus Alexandri
filii Philippi* : tum enata ſunt loco illius
quatuor conſpicua in quatuor cœli ventos.
*Antiochus Epiphanes: quatuor ſervi Alexandri
filii Philippi, qui regnaverunt poſt obitum
ejus.* De quorum uno prodiit cornu quoddam 9
parvum, quòd crevit præcipuè Meridiem
& Orientem verſus : Crevit autem 10
uſque ad exercitus cœli, dejecítque in terram
tam ex illis exercitibus quàm de ſtellis &
conculcavit eas. Quin & ad principes exer- 11
citûs uſque pervênit, & abſtulit ab eo æternitatem,
(1. *juge ſacrificium*) evertítque fundamentum
Sanctuarii ejus. Et robur datum 12
eſt ei contra æternitatem propter peccata, &
Sanctuarium ſolo æquatum eſt : & proſpero
ſucceſſu profecit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

26 Καὶ τὸ κριτήριον (γ) ἐκάθισε, ϗ τὴν ἀρχὴν μεταστήσουσι τοῦ ἀφανίσαι, ϗ τοῦ ἀπολέσαι ἕως τέλους.
27 Καὶ ἡ βασιλεία ϗ ἡ ἐξουσία ϗ ἡ μεγαλωσύνη τῶν βασιλέων τῶν ὑποκάτω παντὸς τοῦ οὐρανοῦ, (δ) ἐδόθη ἁγίοις ὑψίστου· ϗ ἡ βασιλεία αὐτοῦ, βασιλεία αἰώνιος, ϗ πᾶσαι αἱ ἀρχαὶ αὐτῷ δουλεύσουσι ϗ ὑπακούσονται.
28 Ἕως ὧδε τὸ πέρας τοῦ λόγου. ἐγὼ Δανιὴλ, (ε) οἱ διαλογισμοί μου ἐπὶ πολὺ συνετάρασσόν με, ϗ ἡ μορφή μου (ζ) ἠλλοιώθη, ϗ τὸ ῥῆμα ἐν τῇ καρδίᾳ μου (η) διετήρησα. †

MS. A. (λ) καθίσῃ, (δ) ϗ ἐδόθη (ε) ἐπὶ πολὺ οἱ διαλογισμοί μου (ζ) ἠλλοιώθη ἐπ' ἐμοὶ, (η) συνετήρησα. †Ὅρασις η'.

Et judicium ſedit: et principatum transferent, ut aboleatur, et diſperget uſque in finem. 26
Et regnum, et poteſtas, et magnitudo regum, qui ſubter omne cœlum, data ſunt Sanctis Altiſſimi. Et regnum ejus regnum ſempiternum: et omnes principatus ſervient ei, et obedient. 27
Hucuſque finis verbi. Ego Daniel: cogitationes meæ multùm conturbabant me: et (o) forma mea mutata eſt: verbum autem in corde meo conſervavi. 28

ΚΕΦ. η'.

1 †Ἐν ἔτει τρίτῳ τῆς βασιλείας (") Βαλτάσαρ τοῦ βασιλέως ὅρασις ὤφθη πρὸς μέ· (α) ἐγὼ Δανιὴλ μετὰ τὴν ὀφθεῖσάν μοι τὴν ἀρχήν.
2 Καὶ ἤμην ἐν Σούσοις τῇ βάρει, ἥ ἐστιν ἐν χώρᾳ Αἰλάμ· (β) ϗ ἤμην ἐπὶ τοῦ Οὐβάλ.
3 Καὶ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, ϗ ἴδον· ϗ ἰδοὺ κριὸς εἷς ἑστηκὼς πρὸ τοῦ Οὐβάλ· ϗ αὐτῷ (γ) κέρατα ὑψηλά· ϗ τὸ ἓν ὑψηλότερον τοῦ ἑτέρου, ϗ τὸ (δ) ὑψηλὸν ἀνέβαινεν ἐπ' ἐσχάτων.
4 Καὶ ἴδον τὸν κριὸν κερατίζοντα κατὰ θάλασσαν, ϗ Βορρᾶν, ϗ (ε) Νότον· ϗ πάντα τὰ θηρία οὐ (ζ) στήσεται ἐνώπιον αὐτοῦ· ϗ οὐκ ἦν ὁ ἐξαιρούμενος ἐκ χειρὸς αὐτοῦ, ϗ ἐποίησε κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ, ϗ ἐμεγαλύνθη.
5 Καὶ ἐγὼ ἤμην συνιῶν, ϗ ἰδοὺ τράγος αἰγῶν ἤρχετο ἀπὸ Λιβὸς ἐπὶ πρόσωπον πάσης τῆς γῆς, ϗ οὐκ ἦν (η) ἁπτόμενος τῆς γῆς· ϗ τῷ τράγῳ (θ) κέρας μέσον τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ.
6 Καὶ ἦλθεν ἕως τοῦ κριοῦ τοῦ τὰ κέρατα ἔχοντος, οὗ ἴδον (ι) ἑστῶτος ἐνώπιον τοῦ Οὐβάλ, ϗ ἔδραμε πρὸς αὐτὸν ἐν ὁρμῇ τῆς ἰσχύος αὐτοῦ.
7 Καὶ (') ἴδον αὐτὸν φθάνοντα ἕως τοῦ κριοῦ, ϗ (κ) ἐξηγριάνθη πρὸς αὐτὸν, ϗ ἔπαισε τὸν κριὸν, ϗ συνέτριψεν ἀμφότερα τὰ κέρατα αὐτοῦ. ϗ οὐκ ἦν ἰσχὺς τῷ κριῷ, τοῦ στῆναι ἐνώπιον αὐτοῦ· ϗ (") ἔρριψεν αὐτὸν ἐπὶ τὴν γῆν, ϗ συνεπάτησεν αὐτὸν, ϗ οὐκ ἦν ὁ ἐξαιρούμενος τὸν κριὸν ἐκ χειρὸς αὐτοῦ.
8 Καὶ ὁ τράγος τῶν αἰγῶν, ἐμεγαλύνθη ἕως σφόδρα. ϗ ἐν τῷ ἰσχῦσαι αὐτὸν, συνετρίβη τὸ κέρας αὐτοῦ τὸ μέγα· ϗ ἀνέβη ἕτερα κέρατα (") τέσσαρα ὑποκάτω αὐτοῦ εἰς τοὺς τέσσαρας ἀνέμους τοῦ οὐρανοῦ.
9 Καὶ ἐκ τοῦ ἑνὸς αὐτῶν ἐξῆλθε κέρας ἰσχυρὸν, ϗ ἐμεγαλύνθη περισσῶς πρὸς τὸν (λ) Νότον, ϗ πρὸς τὴν δύναμιν.
10 Καὶ ἐμεγαλύνθη ἕως τῆς δυνάμεως τοῦ οὐρανοῦ· ϗ ἔπεσεν ἐπὶ τὴν γῆν ἀπὸ τῆς δυνάμεως τοῦ οὐρανοῦ (μ) ϗ ἀπὸ τῶν ἄστρων, καὶ συνεπάτησαν αὐτά.
11 Καὶ ἕως οὗ ὁ ἀρχιστράτηγος ῥύσηται τὴν αἰχμαλωσίαν, ϗ δι' αὐτὸν θυσία (') ἐρράχθη, (ν) ϗ κατευοδώθη αὐτῷ· ϗ τὸ ἅγιον ἐρημωθήσεται.
12 Καὶ ἐδόθη ἐπὶ τὴν θυσίαν ἁμαρτία, ϗ (ξ) ἐρρίφη χαμαὶ ἡ δικαιοσύνη· ϗ ἐποίησε, ϗ (ο) εὐωδώθη.

CAP. VIII.

IN anno tertio regni Baltaſar regis viſio apparuit mihi: Ego Daniel poſt eam quæ apparuerat mihi in principio. 1
Et (a) eram in Suſis caſtro, quod eſt in regione Ælam. Et eram ſuper (b) Ubal: 2
Et levavi oculos meos: et vidi: et ecce aries unus ſtans ante Ubal: et ei cornua excelſa, et unum excelſius altero: et quod (c) excelſum, aſcendebat ſuper noviſſima. 3
Et vidi arietem cornibus ventilantem contra Mare, et Aquilonem, et Auſtrum: et omnes beſtiæ non ſtabunt coram eo; et non erat, qui erueret de manu ejus: fecitque ſecundùm voluntatem ſuam, et magnificatus eſt. 4
Et ego eram intelligens: et ecce hircus caprarum veniebat ab Africo ſuper faciem totius terræ: et non erat tangens terram: et hirco cornu (d) medium oculorum ejus: 5
Et venit uſque ad arietem illum, qui habebat cornua, quem videram (e) ſtans ante Ubal: et cucurrit ad eum in impetu fortitudinis ſuæ. 6
Et vidi eum advenientem uſque ad arietem: et efferatus eſt in eum, & percuſſit arietem, & contrivit duo cornua ejus: & non erat fortitudo arieti ſtandi coram eo. Et projecit eum in terram, & conculcavit eum: & non erat qui liberaret arietem de manu ejus. 7
Et hircus caprarum magnificatus eſt uſque valdè. Et dum ipſe invaleſceret, contritum eſt cornu illius magnum: & aſcenderunt alia cornua quatuor ſubter illud per quatuor ventos cœli. 8
Et de uno ex eis egreſſum eſt cornu unum (f) forte, & magnificatum eſt nimis contra Auſtrum, & (g) contra fortitudinem: 9
Et magnificatum eſt uſque ad virtutem cœli: & (h) dejecit in terram de virtute cœli, & ſtellis, & (i) conculcaverunt eas, 10
Et (k) quoadusque dux militiæ liberaverit captivitatem. Et propter eum ſacrificium (l) contritum eſt, & proſperè erit ei. Et Sanctuarium deſolabitur: 11
Et datum eſt ſuper ſacrificium peccatum, & projecta eſt humi juſtitia. Et fecit, & proſperabitur. 12

MS. A. †Ὅρασις θ'. (") Βαρτάσαρ (α) ἐγὼ Δανιὴλ, * ἐγὼ Δανιὴλ (β) ϗ ἴδον ἐν ὁράματι, ϗ ἤμην (γ) κέρατα, ϗ τὰ κέρατα ὑψηλά· (δ) ὑψηλότερον (ε) Νότον, ϗ Λίβα· (ζ) στήσονται (η) ὁ ἁπτόμενος (θ) κέρας θεωρητὸν ἀναμέσον τῶν (ι) ἑστῶτος ἀναμέσον τῶν (') ἴδον φθάνοντα (κ) ἐξηγριώθη (") ἔρριψεν (") τέσσαρα (λ) Νότον, ϗ πρὸς ἀνατολὴν, ϗ πρὸς τὴν δύναμιν· Ἐμεγαλύνθη (μ) ϗ τῶν ἄστρων, ϗ συνεπατήθη. Καὶ ἕως (') ἐταράχθη (ν) ϗ [illegible], ϗ κατευοδώθη (ξ) ἐρρίφη (ο) κατευοδώθη.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وينصب موضع الحكم * وينقلون الرياسة ليفسدوا ويهلكوا الى النهاية * والمملكة والسلطان 26
والعظمة التي للملوك الذين تحت السماء كلها * اعطيت لقديسي العلي * ومملكته مملكة 27
ابدية * وكل الرياسات له تتعبد * الى هاهنا نهاية القول * انا دانيال اقلقتني افكاري بالاكثر * 28
وشكلي تغير علي * وحفظت الكلمة في قلبي *

* الفصل الثامن *

* الرويا التاسع *

* في السنة الثالثة من مملكة بلطشاصر الملك ظهرت لي رويا انا دانيال من بعد الاولى 1
التي ظهرت لي * اني كنت بالسوس في القصر الذي هو في كورة الاهواز * ونظرت في 2
الرويا اني كنت على الدهليز * فرفعت عيني ونظرت * واذا كبش واحد قايم قدام الدهليز 3
وله قرنان * والقرنان مرتفعان * والواحد اعلى من الاخر * والاعلى صعد في الاخر * ونظرت الكبش 4
ينطح نحو البحر والجربياء والتيمن * وجميع الوحوش لا يقفون امامه * ولم يكن من ينجي من
يده * وصنع كارادته وعظم * وانا كنت في السوس اتفطن * واذا تيس من المعز اقبل من 5
الغرب على وجه كل الارض * ولم يكن يلمس الارض * وللتيس قرن يري بين عينيه * واتى الى 6
الكبش الذي له القرنان * الذي نظرته قايما امام الدهليز * فاسرع اليه بوثبة قوته * ونظرته 7
بلغ الى الكبش * وتوحش عليه * وضرب الكبش * وكسر قرنيه كليهما * ولم يكن للكبش قوة
ليقف امامه * وطرحه على الارض وداسه * ولم يكن من ينجي الكبش من يده * والتيس 8
من المعز عظم الى الغاية * وعند ما تقوى انكسر قرنه الكبير * وصعدت اربعة قرون
اخر من تحته الى اربعة ارياح السماء * ومن احدهم خرج قرن واحد قوي وعظم بالاكثر الى 9
التيمن والى الشرق والى الغرب * وعظم الى جيش السماء * واهبط الى الارض من جيش السماء 10
ومن الكواكب وداسهم * الى ان ينجي رييس الاجناد السبي * ولاجله رتبت الذبيحة * وصارت 11
واستقامت له * والقدس يخرب * واعطيت الخطية على الذبيحة * وطرح العدل الى الارض * 12
وصنع وانجح *

At erigetur locus judicii, transferentque principatum, ita ut penitùs corrumpantur & pereant: 26
Et regnum, poteſtas, et amplitudo quam poſſident reges qui extant ſub toto cœlo; dabitur ſanctis Excelſi: & regnum ejus regnum erit ſempiternum, et omnes principatus ſubdentur illi. 27
Hucuſque finis ſermonis. Me Danielem cogitationes meæ nimiùm exagitaverunt, & ſpecies mea immutata eſt mihi, & verbum hoc in corde meo ſervavi. 28

CAP. VIII.

Viſio nona.

ANno tertio regni Baltaſaſaris regis, apparuit viſio mihi Danieli poſt primam illam quæ apparuerat mihi: 1
Quòd ſcilicet eram in Sus in palatio quod eſt in provincia Ælamitarum, & in viſione videbar mihi eſſe ſupra porticum: 2
Sublatiſque oculis vidi, & ecce aries unus ſtans ante porticum, habens duo cornua: cornua verò longa erant, & unum altero longius; & quod longius erat, emerſit poſteriùs. 3
Vidi etiam arietem illum cornibus ferientem verſus Mare, Aquilonem, & Meridiem; & nullum animal reſiſtere ei, nec eſſe quenquam qui eriperet è manu ejus; ſed feciſſe pro voluntate ſua, & magnificatum eſſe, dum ego eſſem in Sus iſta contemplans. 4
Deinde ecce hircus de capris venit ab Occidente ſuper faciem univerſæ terræ, & terram non tangebat: atque hircus iſte cornu habebat conſpicuum inter oculos ſuos. 5
Hic venit ad arietem habentem duo cornua, quem videram ſtantem ante porticum; 6
Et accurrit ad eum impetu fortitudinis ſuæ. Hunc vidi perveniſſe ad arietem, & ferociſſe in eum, percuſſoque ariete fregiſſe utrumque cornu ipſius; ita ut nulla eſſet arieti facultas reſiſtendi ei: ſed humi proſtratum conculcavit eum, nec fuit qui eriperet arietem de manu ejus. 7
Hircus hic è capris magnus evaſit præter modum: & cùm vires acquiſiviſſet, fractum eſt cornu ipſius majus: & ſub eo ſuccreverunt quatuor alia cornua in quaternos cœli ventos. 8
Ex uno iſtorum egreſſum eſt cornu unum forte, quod maximopere crevit ad Meridiem, ad Ortum, & ad Occaſum: 9
Imò crevit uſque ad exercitum cœleſtem, dejecitque in terram è cœleſti exercitu & è ſtellis, & conculcavit eos: 10
(Donec redemerit princeps exercituum captivos, propter quem inſtitutum eſt ſacrificium. Fiet autem ut proſperè ſuccedat ei.) 11
Item Sanctuarium deſtruetur, & collocabitur peccatum ſuper ſacrificium, & juſtitia humi projicietur: hæc faciet, & proſperabitur. 12

דניאל: ח

prævaricatio & , juge visio Usquequo ,loquenti cuidam *sanctus* unus dixit & ; loquentē *sanctum* unum audivi Et

13 ואשמעה אחד־קדוש מדבר ויאמר אחד קדוש לפלמוני המדבר עד־מתי החזון התמיד והפשע

; trecentis & mille ,mane vesperā ad Usque ,me ad dixit Et ? conculcationem exercitum & ,*sanctitatem &* , *dare* desolans

14 שמם תת וקדש וצבא מרמס׃ ויאמר אלי עד ערב בקר אלפים ושלש מאות

me coram *stans* ecce & ,intelligentiam *quæsivi* & , visionem Daniel ego *me videndo in* , fuit Et .*sanctitas* justificabitur &

15 ונצדק קדש׃ ויהי בראתי אני דניאל את־החזון ואבקשה בינה והנה עמד לנגדי

.visionem istum fac intelligere,Gabriel , dixit & ,clamavit & ; Ulai inter hominis vocem audivi Et .viri aspectus tanquā

16 כמראה־גבר׃ ואשמע קול־אדם בין אולי ויקרא ויאמר גבריאל הבן להלז את־המראה׃

tempus ad quia,hominis fili Intellige,me ad dixit & ;*meas facies super* corrui &,sum territus,*ipsum veniendo in* &;meū *stare* juxta venit Et

17 ויבא אצל עמדי ובבאו נבעתי ואפלה על־פני ויאמר אלי הבן בן־אדם כי לעת־

.meum *stare super* me fecit stare &,me *in* tetigit &;terram in,*meas facies super sum correptus sopore*,mecum *ipsum loquendo in* Et .visionis finis

18 קץ החזון׃ ובדברו עמי נרדמתי על־פני ארצה ויגע־בי ויעמידני על־עמדי׃

habentem vidisti quem , Aries .finis *statutum* ad quia ; iræ novissimo in erit quod te *faciens* cognoscere ego Ecce ,dixit Et

19 20 ויאמר הנני מודיעך את אשר־יהיה באחרית הזעם כי למועד קץ׃ האיל אשר־ראית בעל

rex *ipse* ,ejus oculos inter quod , grande cornu & : *Javan* rex *pilosus* hircus Et .*Paras & Madai* reges ; cornua

21 הקרנים מלכי מדי ופרס׃ והצפיר השעיר מלך יון והקרן הגדולה אשר בין־עיניו הוא המלך

.ejus fortitudine in non & , stabunt gente de regna quatuor ; eo pro quatuor steterunt & ,est contritum Et .primus

22 הראשון׃ והנשברת ותעמדנה ארבע תחתיה ארבע מלכיות מגוי יעמדנה ולא בכחו׃

roborabitur Et .ænigmata intelligens & ,*faciebus* fortis rex stabit ; prævaricatores *consummari secundum*,eorū regni novissimo in Et

23 ובאחרית מלכותם כהתם הפשעים יעמד מלך עז־פנים ומבין חידות׃ ועצם

24 .sanctorum populum & ,robustos *corrumpet* & ; faciet & ,prosperabitur & ,*corrumpet mirabilia* &,sua fortitudine *in* nō &,ejus fortitudo

כחו ולא בכחו ונפלאות ישחית והצליח ועשה והשחית עצומים ועם־קדשים׃

: multos *corrumpet tranquillitate* in & ,se magnificabit ejus corde in & ,ejus manu in dolus prosperabitur & ejus intellectum *super* Et

25 ועל־שכלו והצליח מרמה בידו ובלבבו יגדיל ובשלוה ישחית רבים

: *ipsa* veritas ,est dicta quæ ,*matutini & vesperæ* visio Et .conteretur *manus nihilo in* & ,stabit principum principem *super &*

26 ועל שר־שרים יעמד ובאפס יד ישבר׃ ומראה הערב והבקר אשר נאמר אמת הוא

feci & , surrexi & , dies ægrotavi & ,sum *affectus* Daniel ego Et .multos dies ad quia ,visionem *obstrue* tu &

27 ואתה סתם החזון כי לימים רבים׃ ואני דניאל נהייתי ונחליתי ימים ואקום ואעשה את־

.erudiens non & ; visione super stupebam & ; regis opus

מלאכת המלך ואשתומם על־המראה ואין מבין׃

CAP. IX. ט

anno In .Chasdim regnum super rex fuit constitutus qui ; *Madai* semine de Achasueros filii Dariaves uno anno In

1 בשנת אחת לדריוש בן־אחשורוש מזרע מדי אשר המלך על מלכות כשדים׃ בשנת

2 Irmejah ad DOMINI verbum fuit quo ,annorum numerum ; libris in intellexi Daniel ego , *ipsum regnare uno*

אחת למלכו אני דניאל בינתי בספרים מספר השנים אשר היה דבר־יהוה אל־ירמיה

.annos septuaginta Jerusalaim desolationes complendum ad ,prophetam

הנביא למלאות לחרבות ירושלם שבעים שנה׃

Versio VULG. LAT.

Et audivi unum de Sanctis loquentem: & dixit unus Sanctus alteri nescio cui loquenti; Usquequò visio, & juge sacrificium, & peccatum desolationis, quæ facta est; & Sanctuarium, & fortitudo conculcabitur ? 13 Et dixit ei; Usque ad vesperam & manè , dies duo millia trecenti : & mundabitur Sanctuarium. 14 Factum est autem cùm viderem ego Daniel visionem, & quærerem intelligentiam : ecce stetit in conspectu meo quasi species viri. 15 Et audivi vocem viri inter Ulai : & clamavit, & ait ; Gabriel, fac intelligere istum visionem. 16 Et venit, & stetit juxta ubi ego stabam : cúmque venisset, pavens corrui in faciem meam, & ait ad me ; Intellige, fili hominis, quoniam in tempore finis complebitur visio. 17 Cúmque loqueretur ad me, collapsus sum pronus in terrram : & tetigit me, & statuit me in gradu meo, 18 Dixítque mihi, Ego ostendam tibi quæ futura sunt in novissimo maledictionis : quoniam habet tempus finem suum. 19 Aries, quem vidisti habere cornua, rex Medorum est atque Persarum. 20 Porrò hircus caprarum, rex Græcorum est, & cornu grande, quod erat inter oculos ejus, ipse est rex primus. 21 Quòd autem fracto illo surrexerunt quatuor pro eo : quatuor reges de gente ejus consurgent, sed non in fortitudine ejus, 22 Et post regnum eorum, cùm creverint iniquitates, consurget rex impudens facie, & intelligens propositiones. 23 Et roborabitur fortitudo ejus, sed non in viribus suis : & suprà quàm credi potest, universa vastabit, & prosperabitur, & faciet. Et interficiet robustos, & populum Sanctorum 24 Secundùm voluntatem suam, & dirigetur dolus in manu ejus: & cor suum magnificabit, & in copia rerum omnium occîdet plurimos : et contra principem principum consurget, et sine manu conteretur. 25 Et visio vesperè et manè quæ dicta est, vera est : tu ergò visionem signa, quia post multos dies erit. 26 Et ego Daniel langui, et ægrotavi per dies : cúmque surrexissem, faciebam opera regis, et stupebam ad visionem, et non erat qui interpretaretur. 27

CAP. IX.

In anno primo Darii filii Assueri de semine Medorum, qui imperavit super regnum Chaldæorum : 1 Anno uno regni ejus, ego Daniel intellexi in libris numerum annorum, de quo factus est sermo Domini ad Jeremiam prophetam, ut complerentur desolationis Jerusalem septuaginta anni. 2

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

13 * ܘܫܡܥܬ ܚܕ ܩܕܝܫܐ ܕܡܡܠܠ. ܘܐܡܪ ܚܕ ܩܕܝܫܐ ܠܦܠܡܘܢܝ ܕܡܡܠܠ. ܥܕܡܐ
14 ܠܐܡܬܝ ܚܙܘܐ ܕܐܡܝܢܘܬܐ. ܘܥܘܠܐ ܘܚܒܠܐ ܢܫܠܡ. ܘܩܘܕܫܐ ܘܚܝܠܐ ܢܬܕܝܫ. * ܘܐܡܪ
15 ܠܗ. ܥܕ ܪܡܫܐ ܘܨܦܪܐ. ܬܪܝܢ ܐܠܦܝܢ ܘܬܠܬ ܡܐܐ. ܗܝܕܝܢ ܙܟܝܐ ܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܟܕ ܚܙܝܬ ܐܢܐ
ܕܢܝܐܝܠ ܚܙܘܐ ܗܢܐ. ܒܥܝܬ ܠܡܣܬܟܠܘ. ܘܗܐ ܩܡ ܠܘܩܒܠܝ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܓܒܪܐ.
16 * ܘܫܡܥܬ ܩܠܐ ܕܒܪܢܫܐ ܡܢ ܡܨܥܬ ܐܘܠܝ. ܕܩܥܐ ܘܐܡܪ. ܓܒܪܐܝܠ. ܦܫܩ ܠܗܢܐ
17 ܚܙܘܐ ܗܢܐ. * ܘܐܬܐ ܠܘܬ ܐܬܪ ܕܩܐܡ ܐܢܐ. ܘܟܕ ܐܬܐ. ܙܥܬ ܘܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ. ܘܐܡܪ
18 ܠܝ. ܐܣܬܟܠ ܒܪܢܫܐ ܃ ܡܛܠ ܕܠܙܒܢܐ ܣܝܡܐ ܚܙܘܐ ܗܢܐ. * ܘܟܕ ܡܡܠܠ ܥܡܝ.
19 ܐܬܟܪܟܬ ܥܠ ܐܦܝ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܩܪܒ ܒܝ. ܘܐܩܝܡܢܝ ܥܠ ܡܩܡܝ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܐ
20 ܐܢܐ ܡܘܕܥ ܐܢܐ ܠܟ. ܡܐ ܕܥܬܝܕ ܠܡܗܘܐ ܒܫܘܠܡ ܪܘܓܙܐ ܒܙܒܢܐ ܣܝܡܐ. * ܕܪܝܘܫ ܡܕܝܐ * ܕܟܪܐ
21 ܕܚܙܝܬ ܕܩܪܢܬܐ ܠܗ. ܡܠܟܐ ܗܘ ܕܡܕܝ ܘܦܪܣ. * ܠܟܣܢܕܪܘܣ * ܘܨܦܝܪܐ ܕܥܙܐ. ܡܠܟܐ
22 ܕܝܘܢܝܐ. ܘܩܪܢܐ ܪܒܬܐ ܕܐܝܬ ܒܝܬ ܥܝܢܘܗܝ ܃ ܗܘܝܘ ܩܕܡܝܐ ܡܠܟܐ. * ܘܕܐܬܬܒܪܬ ܘܩܡܝ
23 ܐܪܒܥ ܡܢ ܬܚܘܬܗ. ܐܪܒܥܐ ܡܠܟܝܢ ܡܢ ܥܡܐ ܢܩܘܡܘܢ. ܘܠܐ ܒܚܝܠܗܘܢ. * ܘܒܣܘܦ
ܡܠܟܘܬܗܘܢ. ܟܕ ܢܫܠܡܘܢ ܚܛܗܐ ܃ ܢܩܘܡ ܡܠܟܐ. ܥܙܝܙ ܐܦܐ ܘܡܣܬܟܠ ܐܘܚܕܢ.
24 * ܘܬܩܝܦ ܚܝܠܗ. ܘܠܐ ܒܚܝܠܗ ܕܢܦܫܗ. ܘܬܕܡܪܬܐ ܢܚܒܠ. ܘܢܨܠܚ. ܘܢܥܒܕ ܘܢܚܒܠ
25 ܥܫܝܢܐ. ܘܥܡܐ ܕܩܕܝܫܐ. * ܘܒܐܘܚܕܢܗ ܢܨܠܚ ܢܟܠܐ ܒܐܝܕܗ. ܘܠܒܗ ܢܬܬܪܝܡ.
ܘܡܫܠܡܐ ܢܚܒܠ ܣܓܝܐܐ. ܘܥܠ ܪܝܫ ܪܝܫܢܐ ܢܩܘܡ. ܘܡܚܕܐ ܐܦ ܢܬܬܒܪ.
26 * ܘܚܙܘܐ ܕܪܡܫܐ ܘܕܨܦܪܐ ܕܐܬܐܡܪ ܃ ܫܪܝܪܐ ܗܘ. ܘܐܢܬ ܕܝܢ ܕܢܝܐܝܠ ܃ ܟܣܝܘܗܝ ܠܚܙܘܐ
27 ܗܢܐ. ܡܛܠ ܕܠܝܘܡܬܐ ܗܘ ܣܓܝܐܐ. * ܘܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܃ ܐܬܬܙܝܥܬ ܘܟܪܗܬ ܝܘܡܬܐ.
ܘܩܡܬ ܘܥܒܕܬ ܥܒܝܕܬܐ ܕܡܠܟܐ. ܘܬܘܗܬ ܒܚܙܘܐ. ܘܠܝܬ ܕܡܣܬܟܠ.

*ܩܦܠܐܘܢ * ܛ *

1 * ܒܫܢܬ ܚܕܐ ܕܕܪܝܘܫ ܒܪ ܐܚܫܝܪܫ ܡܢ ܙܪܥܐ ܕܡܕܝܐ : ܕܐܡܠܟ ܒܡܠܟܘܬܐ ܕܟܠܕܝܐ.
2 * ܒܫܢܬ ܚܕܐ ܠܡܠܟܘܬܗ ܃ ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܐܣܬܟܠܬ ܒܣܦܪܐ ܒܡܢܝܢ ܫܢܝܐ.
3 ܚܙܝܬ ܕܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܐܡܪ ܐܪܡܝܐ ܢܒܝܐ ܃ ܟܕ ܢܫܠܡܘܢ ܠܚܘܪܒܢܗ ܕܐܘܪܫܠܡ
ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ.

Deinde audivi Sanctum quendam loquentem, dixítque Sanctus quidam ad quendam qui loquebatur ; Quousque tandem visio hæc de æternitate, & scelus atque vastatio complebitur ? & Sanctuarium & exercitus conculcabitur ? 13 Qui respondit ei, Usque ad vesperas & matutina bis mille trecenta : tum vincet justitia. 14 Cùm autem vidissem ego Daniel visionem istam, optavi intelligere : et ecce stetit ante me quædam quasi forma viri : 15 Et audivi vocem humanam de medio Ulai clamantem ac dicentem ; Gabriel, declara huic visionem istam. 16 Venit ergò ad me ubi stabam : cúmque venisset ad me, perterritus sum, et procidi in faciem meam. 17 Sed dixit mihi ; Intellige fili hominis, nam tempore definito erit visio hæc. Dum autem loqueretur mecum, provolvi me in faciem meam super terram : at tetigit me, erexítque in stationem meam, 18 Et dixit mihi, En ego ostendam tibi quid futurum sit ad finem indignationis tempore definito. 19 *Darius Medus.* Aries quem vidisti præditum cornibus, rex est Medorum et Persarum : 20 *Alexander.* Hircus autem caprarum, rex Græcorum : Cornu verò magnum quod est in fronte ipsius, est primus rex. 21 Quòd autem hoc effracto emerserint *alia* quatuor loco ipsius, quatuor reges ea de gente surrecturos *indicat*, sed non propriâ virtute. 22 Sub finem regni istorum, cùm expleverint scelera ; exurget rex prædurae faciei, & regnandi peritus, 23 Potens robore, licèt non suâpte virtute : miris modis vastabit, & prosper erit : progredietur, & perdet robustos & populum Sanctorum : 24 Sub ejus regno prosperabitur dolus in manu ipsius, cor ejus elevabitur, & confestim perdet multos : denique adversùs principem principum exurget, sed illicò frangetur. 25 Cæterùm visio illa quæ de mane & vespere dicta est, verissima est : tu verò Daniel, cela visionem hanc, quia ad multos dies est. 26 Et ego Daniel exterritus sum, & ad dies aliquot perturbatus : posteà convalescens procuravi negotia regis : stupens tamen eram ob visionem istam, at nemo animadvertebat. 27

CAP. IX.

Anno primo Darii filii Ahseri de semine Medorum, quo regnavit in regno Chaldæorum : 1 Anno *inquam* primo regni ejus, ego Daniel considerans in scriptura numerum annorum, vidi fuisse sermonem illum Domini quem prædixit Jeremia propheta, Cùm expleti fuerint vastitati Jerosolymorum anni septuaginta. 2

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

13 Καὶ ἤκουσα (π) ἑνὸς ἁγίου λαλοῦντος. καὶ εἶπεν εἷς ἅγιος τῷ (ρ) φελμουνὶ τῷ λαλοῦντι, Ἕως πότε ἡ ὅρασις στήσεται, ἡ θυσία ἡ ἀρθεῖσα, καὶ ἡ ἁμαρτία ἐρημώσεως ἡ δοθεῖσα, καὶ τὸ ἅγιον καὶ ἡ δύναμις συμπατηθήσεται; 14 Καὶ εἶπεν αὐτῷ, Ἕως ἑσπέρας καὶ πρωῒ ἡμέραι δισχίλιαι καὶ (σ) τετρακόσιαι, καὶ καθαρισθήσεται τὸ ἅγιον. 15 Καὶ ἐγένετο ἐν τῷ ἰδεῖν με, ἐγὼ Δανιὴλ, τὴν ὅρασιν, καὶ ἐζήτουν σύνεσιν, καὶ ἰδοὺ ἔστη ἐνώπιον ἐμοῦ ὡς ὅρασις ἀνδρός. 16 Καὶ ἤκουσα φωνὴν ἀνδρὸς ἀναμέσον τοῦ Οὐβάλ, καὶ ἐκάλεσε, καὶ εἶπε, Γαβριὴλ σύνετισον ἐκεῖνον τὴν ὅρασιν. 17 Καὶ ἦλθε, καὶ ἔστη (τ) ἐχόμενός τῆς στάσεώς μου. καὶ ἐν τῷ ἐλθεῖν αὐτὸν ἐθαμβήθην, καὶ πίπτω ἐπὶ πρόσωπόν μου. καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Σύνες υἱὲ ἀνθρώπου· ἔτι γὰρ εἰς καιροῦ πέρας ἡ ὅρασις. 18 Καὶ ἐν τῷ λαλεῖν αὐτὸν μετ' ἐμοῦ, (υ) πίπτω ἐπὶ πρόσωπόν μου ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἥψατό μου, καὶ ἔστησέ με ἐπὶ (φ) πόδας. 19 Καὶ εἶπεν, Ἰδοὺ ἐγὼ γνωρίζω σοι τὰ ἐσόμενα ἐπ' (χ) ἐσχάτων τῆς ὀργῆς· ἔτι γὰρ εἰς καιροῦ πέρας ἡ ὅρασις. 20 Ὁ κριὸς ὃν εἶδες, ὁ ἔχων τὰ κέρατα, βασιλεὺς (ψ) Μήδων καὶ Περσῶν. 21 Ὁ τράγος τῶν αἰγῶν, βασιλεὺς Ἑλλήνων· καὶ τὸ κέρας τὸ μέγα ὃ ἦν ἀναμέσον τῶν ὀφθαλμῶν αὐτοῦ, αὐτός ἐστιν ὁ βασιλεὺς ὁ πρῶτος. 22 Καὶ τοῦ συντριβέντος οὗ ἔστησαν (ω) τέσσαρα κέρατα ὑποκάτω, τέσσαρες βασιλεῖς ἐκ τοῦ ἔθνους αὐτοῦ ἀναστήσονται, καὶ οὐκ ἐν τῇ ἰσχύι (α) αὐτῶν. 23 Καὶ ἐπ' ἐσχάτων τῆς βασιλείας αὐτῶν, πληρουμένων τῶν ἁμαρτιῶν αὐτῶν, ἀναστήσεται βασιλεὺς ἀναιδὴς προσώπῳ, καὶ συνιῶν προβλήματα. 24 Καὶ κραταιὰ ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ, (β) καὶ θαυμαστὰ διαφθερεῖ, καὶ κατευθυνεῖ, καὶ ποιήσει, καὶ διαφθερεῖ ἰσχυροὺς, καὶ λαὸν ἅγιον. 25 Καὶ (γ) ζυγὸς τοῦ κλοιοῦ αὐτοῦ κατευθυνεῖ, δόλος ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, καὶ ἐν καρδίᾳ αὐτοῦ μεγαλυνθήσεται, καὶ δόλῳ διαφθερεῖ πολλοὺς, καὶ ἐπὶ (δ) ἀπωλείας πολλῶν στήσεται· καὶ ὡς ὠὰ χειρὶ συντρίψει. 26 Καὶ ἡ ὅρασις τῆς ἑσπέρας καὶ τῆς (ε) πρωΐας τῆς ῥηθείσης ἀληθῶς ἐστι· καὶ σὺ σφράγισον τὴν ὅρασιν, ὅτι εἰς ἡμέρας πολλάς. 27 Καὶ ἐγὼ Δανιὴλ ἐκοιμήθην, καὶ ἐμαλακίσθην, καὶ ἀνέστην, καὶ ἐποίουν τὰ ἔργα τοῦ βασιλέως, καὶ ἐθαύμαζον τὴν ὅρασιν, καὶ οὐκ ἦν ὁ συνιῶν. †

Et audivi unum Sanctum loquentem. Et dixit unus Sanctus (m) Phelmoni loquenti; uſquequò viſio ſtabit, ſacrificium ablatum, & peccatum deſolationis, quod datum eſt: & Sanctuarium, & fortitudo conculcabitur? 13 Et dixit ei; Uſque ad veſperam & manè dies duo millia, & (n) quadringenti; & mundabitur Sanctuarium. 14 Factum eſt autem, cùm viderem ego Daniel viſionem, & quærebam intelligentiam; & ecce ſtetit in conſpectu meo quaſi ſpecies viri: 15 Et audivi vocem viri inter Ubal: & vocavit, & dixit; Gabriel, fac iſtum intelligere viſionem. 16 Et venit, & ſtetit juxta ſtationem meam. Et cùm ille veniſſet, expavi, & corruo in faciem meam. Et ait ad me; Intellige, fili hominis: adhuc enim in temporis finem (o) viſio. 17 Cúmque loqueretur ipſe mecum; cado in faciem meam ſuper terram. Et tetigit me, & ſtatuit me ſuper pedes. 18 Et dixit; Ecce ego oſtendo tibi, quæ futura ſunt in (p) noviſſimis iræ. Adhuc enim in temporis finem viſio. 19 Aries, quem vidiſti, qui habebat cornua, rex Medorum eſt, atque Perſarum. 20 Hircus caprarum, rex Græcorum: & cornu grande, quod erat inter oculos ejus, ipſe eſt rex primus. 21 Quòd autem confracto illo ſurrexerunt quatuor cornua ſubtèr; quatuor reges de gente ejus conſurgent, & non in fortitudine (q) ſua. 22 Et in noviſſimis regni eorum, completis peccatis eorum, conſurget rex impudens facie, & intelligens propoſitiones: 23 Et robuſta fortitudo (r) ejus: & mirabiliter vaſtabit: & proſperabitur, & faciet: & diſperdet robuſtos, & populum ſanctum. 24 Et jugum catenæ ejus dirigetur: dolus in manu ejus, & in corde ejus magnificabitur: & dolo corrumpet multos: & ſuper perditionem multorum (ſ) ſtabit: & quaſi ova manu conteret. 25 Et viſio veſperæ, & manè, quæ dicta eſt, verè eſt. Et tu ſigna viſionem, quia in dies multos. 26 Et ego Daniel decubui, & (t) langui: Et ſurrexi, & faciebam opera regis, & admirabar viſionem: & non erat qui intelligeret. 27

MS. A. (π) ἑνὸς λαλοῦντος. (ρ) φελμωνὶ (σ) τριακόσιαι, (τ) ἀναμέσον τῆς (υ) ἐθαμβήθην, καὶ πίπτω (φ) πόδας μου, Καὶ εἶπέν μοι, (χ) ἐσχάτου (ψ) Περσῶν καὶ Μήδων. Καὶ ὁ τράγος (ω) ὑποκάτω τέσσερα κέρατα, (α) αὐτοῦ. Καὶ ἐπ' ἐσχάτῳ τῆς (β) καὶ οὐκ ἐν τῇ ἰσχύϊ αὐτοῦ, καὶ θαυμαστὰ (γ) ὁ ζυγὸς (δ) ἀπώλεια (ε) πρωϊνῆς τῆς ῥηθείσης ἀληθής † ὍΡΑΣΙΣ θ'.

ΚΕΦ. θ'.

1 Ἐν τῷ πρώτῳ ἔτει (α) Δαρείου τοῦ υἱοῦ Ἀσουήρου, ἀπὸ τοῦ σπέρματος (β) τῶν Μήδων, ὃς ἐβασίλευσεν ἐπὶ τῆς βασιλείας (γ) Χαλδαίων, 2 Ἐγὼ Δανιὴλ συνῆκα ἐν ταῖς βίβλοις τὸν ἀριθμὸν τῶν (δ) ἐτῶν, ὃς ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἱερεμίαν τὸν προφήτην, εἰς συμπλήρωσιν ἐρημώσεως Ἱερουσαλὴμ ἑβδομήκοντα ἔτη.

CAP. IX.

In primo anno Darii filii Aſſueri, ex ſemine Medorum, qui regnavit ſuper regnum (a) Chaldæorum, 1 Ego Daniel intellexi in libris numerum annorum, (b) qui factus eſt ſermo Domini ad Hieremiam prophetam, in completionem deſolationis Hieruſalem ſeptuaginta anni. 2

MS. A. † ὍΡΑΣΙΣ ι'. (α) ἐπὶ Δαρείου (β) Μήδων, (γ) Χαλδαίων, Ἐν ἔτει ἑνὶ τῆς βασιλείας αὐτοῦ, ἐγὼ (δ) ἡμερῶν, ὅς

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وَسَمِعْتُ وَاحِدًا مِنَ ٱلْمَلَائِكَةِ ٱلْأَطْهَارِ مُتَكَلِّمًا * وَقَالَ طَاهِرٌ وَاحِدٌ لِفَلْمُونِي ٱلْمُتَكَلِّمِ * إِلَى مَتَى 13
الرُّوِيَا تَكُونُ * وَيُرْفَعُ ٱلذَّبِيحَةُ * وَخَطِيَّةُ ٱلْخَرَابِ تُعْطَى * وَيُدَاسُ ٱلْقُدْسُ وَٱلْقُوَّةُ * فَقَالَ لَهُ * إِلَى 14
مَسَاءٍ وَصَبَاحِ أَلْفَيْنِ وَثَلَثِمَايَةِ يَوْمٍ * وَيُطَهَّرُ ٱلْقُدْسُ * وَكَانَ لَمَّا نَظَرْتُ أَنَا دَانِيَالُ ٱلرُّوِيَا فَطَلَبْتُ 15
فَهْمًا * وَإِذْ قَدْ وَقَفَ أَمَامِي مِثْلُ مَنْظَرِ رَجُلٍ * وَسَمِعْتُ صَوْتَ رَجُلٍ بَيْنَ ٱلدِّهْلِيزِ * فَدَعَا وَقَالَ * 16
يَا جِبْرِيِيلُ فَهِّمْ ذَاكَ ٱلرُّوِيَا * فَأَتَى وَوَقَفَ قَرِيبَ وَقْفِي * وَعِنْدَ مَا أَتَى فَزِعْتُ وَسَقَطْتُ عَلَى وَجْهِي * 17
فَقَالَ لِي * أَفْهَمْ يَا ٱبْنَ ٱلْإِنْسَانِ * مِنْ أَجْلِ أَنَّ ٱلرُّوِيَا إِلَى نِهَايَةِ ٱلزَّمَانِ * وَفِيمَا هُوَ يَتَكَلَّمُ مَعِي 18
فَزِعْتُ وَسَقَطْتُ عَلَى وَجْهِي * فَلَمَسَنِي وَأَقَامَنِي عَلَى قَدَمَيَّ * وَقَالَ لِي * هَا أَنَا أُعَرِّفُكَ ٱلْكَايِنَاتِ فِي 19
أَخِرِ ٱلسُّخْطَةِ * مِنْ أَجْلِ أَنَّ ٱلرُّوِيَا إِلَى نِهَايَةِ ٱلزَّمَانِ * ٱلْكَبْشُ ٱلَّذِي رَأَيْتَهُ ٱلَّذِي لَهُ قَرْنَانِ * 20
مَلِكُ ٱلْمَادِيِّينَ وَٱلْفُرْسِ * وَٱلتَّيْسُ مِنَ ٱلْمَعْزِ مَلِكُ ٱلْيُونَانِيِّينَ * وَٱلْقَرْنُ ٱلْكَبِيرُ ٱلَّذِي كَانَ بَيْنَ 21
عَيْنَيْهِ هُوَ ٱلْمَلِكُ ٱلْأَوَّلُ * وَإِذِ ٱنْكَسَرَ قَامَتْ أَرْبَعَةُ قُرُونٍ مِنْ تَحْتِهِ * أَرْبَعَةُ مُلُوكٍ مِنْ أُمَّةٍ يَقُومُونَ * 22
وَلَيْسَ بِقُوَّتِهِ * وَفِي أَخِرِ مَمْلَكَتِهِمْ إِذْ تَكْمُلُ خَطَايَاهُمْ * يَقُومُ مَلِكٌ وَقِحٌ بِٱلْوَجْهِ * وَيَفْهَمُ ٱلْمُجَادَلَاتِ * 23
* وَقُوَّتُهُ مَنِيعَةٌ * وَلَيْسَ بِقُوَّتِهِ * وَيُفْسِدُ ٱلْعَجِيبَاتِ * وَيَسْتَقِيمُ وَيَصْنَعُ * وَيُفْسِدُ ٱلْأَقْوِيَاءَ وَٱلشَّعْبَ 24
ٱلطَّاهِرَ * وَنِيرُ إِصْرِهِ يَسْتَقِيمُ * وَٱلْغِشُّ فِي يَدِهِ * وَيَعْظُمُ بِقَلْبِهِ * وَبِٱلْغِشِّ يُفْسِدُ كَثِيرِينَ * وَهَلَاكَ 25
كَثِيرِينَ يَقُومُ * وَمِثْلَ ٱلْبَيْضِ يُكَسِّرُهُمْ بِيَدِهِ * وَرُوِيَا ٱلْمَسَاءِ وَٱلصَّبَاحِ ٱلَّتِي قِيلَتْ حَقِيقِيَّةٌ 26
هِيَ * وَٱكْتُمِ ٱلرُّوِيَا لِأَنَّهَا إِلَى أَيَّامٍ كَثِيرَةٍ * وَأَنَا دَانِيَالُ رَقَدْتُ وَوَجِعْتُ أَيَّامًا * وَقُمْتُ وَصَنَعْتُ 27
أَعْمَالَ ٱلْمَلِكِ * وَتَعَجَّبْتُ مِنَ ٱلرُّوِيَا * وَلَمْ يَكُنْ مَنْ يَفْهَمُ *

* Et audivi unum ex Angelis ſanctis loquentem, & dixit Sanctus quidam cuidam loquenti; Quouſque viſio hæc continget, & auferetur ſacrificium, peccatum deſolationis exponetur, & conculcabitur Sanctuarium & robur? 13 Dixit ei, uſq; ad veſperam & matutinum bis mille & trecentorum dierum: tum mundabitur Sanctuarium. 14 Fuit autem cùm vidiſſem ego Daniel viſionem iſtam, ut requirente me intelligentiam, ecce ſtaret coram me quaſi ſpecies viri: 15 Et audirem vocem viri inter porticum, clamantis ac dicentis; O Gabriel, declara huic viſionem. 16 Qui veniens ſtetit prope ſtationem meam: & cùm veniſſet, expavi, & procidi in faciem meam. Dixit verò mihi; Intellige O fili hominis, quoniam viſio hæc erit ad finem temporis. 17 Dum ipſe alloqueretur me, timui, & in faciem meam procidi: ſed tetigit me, erexitque ſuper plantas meas. 18 Et dixit mihi; Ecce ego indicabo tibi futura in fine indignationis, nam viſio hæc ad finem temporis erit. 19 Aries quem vidiſti duo habentem cornua, rex Medorum eſt & Perſarum: 20 Hircus autem è capris, rex Græcorum: Cornu autem magnum quod erat inter oculos ejus, eſt rex primus. 21 Eo effracto quod ſucceſſerint cornua quatuor pro illo, reges quatuor de gente ipſius ſurrecturi ſunt, imparis tamen fortitudinis. 22 In fine regni iſtorum, cùm expleta fuerint peccata eorum, exurget rex ſeveri vultûs, diſputationum peritus: 23 Cujus robur ingens erit, ſed non ſuo robore: is miracula deſtruet, & proſperè erit, facietque: corrumpet fortes & populum ſanctum: 24 Jugum oneris ejus proſperum erit: fraus erit in manu ipſius, & ſuperbiet in corde ſuo: per fraudem corrumpet multos, & per multorum interitum ſubſiſtet: & quidem perinde ac ova franget eos manu ſuâ. 25 Præterea viſio illa veſperæ & matutini, quæ dicta eſt; vera eſt: ſed viſionem abſconde, quia eſt ad multos dies. 26 Porrò ego Daniel decubui, & dolui diebus aliquot; deinde ſurgens egi negotia regis: mirabar tamen viſionem, & non fuit qui intelligeret. 27

* ٱلْفَصْلُ ٱلتَّاسِعُ *

* ٱلرُّوِيَا ٱلْعَاشِرُ *

1 * فِي ٱلسَّنَةِ ٱلْأُولَى لِدَارِيُوسَ بْنِ أَحْشِيرِشَ مِنْ نَسْلِ ٱلْمَاهِيِّينَ * ٱلَّذِي مَلَكَ عَلَى مَمْلَكَةِ
2 ٱلْكَلْدَانِيِّينَ * فِي سَنَةِ إِحْدَى لِمُلْكِهِ أَنَا دَانِيَالُ تَفَهَّمْتُ فِي ٱلْكُتُبِ عَدَدَ ٱلسِّنِينَ * قَوْلَ ٱلرَّبِّ
ٱلَّذِي كَانَ إِلَى إِرْمِيَاءَ ٱلنَّبِيِّ لِكَمَالِ خَرَابِ أُورُشَلِيمَ سَبْعِينَ سَنَةً *

CAP. IX.

Viſio decima.

Anno primo Darii filii Achſiri de ſtirpe Medorum, qui poſſedit regnum Chaldæorum: 1 Anno primo regni ejus, ego Daniel conſideravi in libris numerum annorum, ſermonem videlicet Domini qui fuerat ad Jeremiam prophetam, Ad finem vaſtationis Jeroſolymorum annos fore ſeptuaginta. 2

דניאל : ט

.cinere & ,ſacco & ,jejunio in , deprecationes & , orationem quærendum ad , Deum Dominum ad meas facies dedi Et

וָאֶתְּנָה אֶת־פָּנַי אֶל־אֲדֹנָי הָאֱלֹהִים לְבַקֵּשׁ תְּפִלָּה וְתַחֲנוּנִים בְּצוֹם וְשַׂק וָאֵפֶר׃ 3

cuſtodiens ,terribilis & ,magne Deus Domine Obſecro ,dixi & ;confeſſus ſum & ,meum Deum Dominum oravi Et

וָאֶתְפַּלְלָה לַיהוָה אֱלֹהַי וָאֶתְוַדֶּה וָאֹמְרָה אָנָּא אֲדֹנָי הָאֵל הַגָּדוֹל וְהַנּוֹרָא שֹׁמֵר 4

;rebellavim⁹ & ,egimus impiè & ,pervertimus & ,Peccavim⁹ .ejus mandata cuſtodientib⁹ & ,eum diligentibus miſericordiã & pactum

הַבְּרִית וְהַחֶסֶד לְאֹהֲבָיו וּלְשֹׁמְרֵי מִצְוֹתָיו׃ חָטָאנוּ וְעָוִינוּ וְהִרְשַׁעְנוּ וּמָרָדְנוּ 5

,tuo nomine in ſunt locuti qui , prophetas tuos ſervos ad audivimus non Et .tuis judiciis à & ,tuis mandatis à recedere &

וְסוֹר מִמִּצְוֹתֶךָ וּמִמִּשְׁפָּטֶיךָ׃ וְלֹא שָׁמַעְנוּ אֶל־עֲבָדֶיךָ הַנְּבִיאִים אֲשֶׁר דִּבְּרוּ בְּשִׁמְךָ 6

die ſicut facierum pudor nobis & ,juſtitia Domine Tibi .terræ populum omnem ad & ,noſtros patres & ,noſtros principes ,noſtros reges ad

אֶל־מְלָכֵינוּ שָׂרֵינוּ וַאֲבֹתֵינוּ וְאֶל כָּל־עַם הָאָרֶץ׃ לְךָ אֲדֹנָי הַצְּדָקָה וְלָנוּ בֹּשֶׁת הַפָּנִים כַּיּוֹם 7

quò ,terris univerſis in ,longinquis & ,propinquis ,Iſrael omni & , Jeruſalaim habitatoribus & ,Jehudah viro ;hac

הַזֶּה לְאִישׁ יְהוּדָה וּלְיוֹשְׁבֵי יְרוּשָׁלִַם וּלְכָל־יִשְׂרָאֵל הַקְּרֹבִים וְהָרְחֹקִים בְּכָל־הָאֲרָצוֹת אֲשֶׁר

,noſtris principibus,noſtris regibus ,facierum pudor nobis Domine .te in ſunt prævaricati qua ,eorum prævaricatione in illuc eos expuliſti

הִדַּחְתָּם שָׁם בְּמַעֲלָם אֲשֶׁר מָעֲלוּ־בָךְ׃ אֲדֹנָי לָנוּ בֹּשֶׁת הַפָּנִים לִמְלָכֵינוּ לְשָׂרֵינוּ 8

non Et .eum in fuimus rebelles quia ;indulgentiæ & ,miſericordiæ noſtro Deo Domino .tibi peccavimus quia ,noſtris patribus &

וְלַאֲבֹתֵינוּ אֲשֶׁר חָטָאנוּ לָךְ׃ לַאדֹנָי אֱלֹהֵינוּ הָרַחֲמִים וְהַסְּלִחוֹת כִּי מָרַדְנוּ בּוֹ׃ וְלֹא 9 10

.prophetarum ſuorum ſervorum manu in noſtras facies ad dedit quas ,ejus legibus in eundum ad ,noſtri Dei Domini voce in obedivimus

שָׁמַעְנוּ בְּקוֹל יְהוָה אֱלֹהֵינוּ לָלֶכֶת בְּתוֹרֹתָיו אֲשֶׁר נָתַן לְפָנֵינוּ בְּיַד עֲבָדָיו הַנְּבִיאִים׃

,jusjurandum & ,execratio nos ſuper ſtillavit & :tua voce in audiendum non ad ,recedere &,tuam legem ſunt tranſgreſſi Iſrael omnis Et

וְכָל־יִשְׂרָאֵל עָבְרוּ אֶת־תּוֹרָתֶךָ וְסוֹר לְבִלְתִּי שְׁמוֹעַ בְּקֹלֶךָ וַתִּתַּךְ עָלֵינוּ הָאָלָה וְהַשְּׁבֻעָה 11

ſuper & ,nos ſuper eſt locutus quæ ſua verba ſtatuit Et .ei peccavimus quia ,Dei ſervi Moſeh lege in eſt ſcriptum quod

אֲשֶׁר כְּתוּבָה בְּתוֹרַת מֹשֶׁה עֶבֶד־הָאֱלֹהִים כִּי חָטָאנוּ לוֹ׃ וַיָּקֶם אֶת־דְּבָרָיו אֲשֶׁר־דִּבֶּר עָלֵינוּ וְעַל 12

quemadmodum ,cœlo omni ſub fuit factum non quod ;grande malũ nos ſup adducendũ ad ,nos judicaverunt qui ,noſtros judices

שֹׁפְטֵינוּ אֲשֶׁר שְׁפָטוּנוּ לְהָבִיא עָלֵינוּ רָעָה גְדֹלָה אֲשֶׁר לֹא־נֶעֶשְׂתָה תַּחַת כָּל־הַשָּׁמַיִם כַּאֲשֶׁר

facies ſumus deprecati non & ;nos ſup venit hoc malum omne ,Moſeh lege in eſt ſcriptum Sicut .Jeruſalaim in eſt factum

נֶעֶשְׂתָה בִּירוּשָׁלִָם׃ כַּאֲשֶׁר כָּתוּב בְּתוֹרַת מֹשֶׁה אֵת כָּל־הָרָעָה הַזֹּאת בָּאָה עָלֵינוּ וְלֹא־חִלִּינוּ אֶת־פְּנֵי 13

,malum ſuper Dominus vigilavit Et .tuam veritatem intelligendũ ad & ,noſtris iniquitatib⁹ ab nos avertendum ad ,noſtri Dei Domini

יְהוָה אֱלֹהֵינוּ לָשׁוּב מֵעֲוֹנֵנוּ וּלְהַשְׂכִּיל בַּאֲמִתֶּךָ׃ וַיִּשְׁקֹד יְהוָה עַל־הָרָעָה 14

.ejus voce in audivimus non & ,fecit quæ ,ſuis operib⁹ omnib⁹ ſuper noſter Deus Dominus juſtus quia ;nos ſuper illud adduxit &

וַיְבִיאֶהָ עָלֵינוּ כִּי־צַדִּיק יְהוָה אֱלֹהֵינוּ עַל־כָּל־מַעֲשָׂיו אֲשֶׁר עָשָׂה וְלֹא שָׁמַעְנוּ בְּקֹלוֹ׃

diẽ ſecundũ nomẽ tibi feciſti & ,forti manu in Ægypti terra de tuum populum eduxiſti qui ,noſter Deus Domine nunc Et

וְעַתָּה אֲדֹנָי אֱלֹהֵינוּ אֲשֶׁר הוֹצֵאתָ אֶת־עַמְּךָ מֵאֶרֶץ מִצְרַיִם בְּיָד חֲזָקָה וַתַּעַשׂ־לְךָ שֵׁם כַּיּוֹם 15

monte,Jeruſalaim tua civitate à tua ira & ,tu⁹ naſus nunc avertatur tuas juſtitias omnes ſecũdum Domine .egim⁹ impiè ,peccavim⁹ ;hanc

הַזֶּה חָטָאנוּ רָשָׁעְנוּ׃ אֲדֹנָי כְּכָל־צִדְקֹתֶךָ יָשָׁב־נָא אַפְּךָ וַחֲמָתְךָ מֵעִירְךָ יְרוּשָׁלִַם הַר־ 16

.noſtris circuitibus cunctis opprobrium in tuus populus & Jeruſalaim ,noſtrorũ patrũ iniquitatib⁹ in & noſtris peccatis in quia ;tuæ ſanctitatis

קָדְשֶׁךָ כִּי בַחֲטָאֵינוּ וּבַעֲוֹנוֹת אֲבֹתֵינוּ יְרוּשָׁלִַם וְעַמְּךָ לְחֶרְפָּה לְכָל־סְבִיבֹתֵינוּ׃

Verſio VULG. LAT.

Et poſui faciem meam ad Dominum Deum meum rogare 3
& deprecari in jejuniis, ſacco, & cinere. Et oravi Dominum 4
Deum meum, & confeſſus ſum, & dixi; Obſecro,
Domine Deus magne & terribilis, cuſtodiens pactum & miſericordiam
diligentibus te, & cuſtodientibus mandata tua:
Peccavimus, iniquitatem fecimus, impiè egimus, & receſſimus: 5
& declinavimus à mandatis tuis, ac judiciis. Non 6
obedivimus ſervis tuis prophetis, qui locuti ſunt in nomine
tuo regibus noſtris, principibus noſtris, patribus noſtris,
omníque populo terræ. Tibi, Domine, juſtitia: nobis 7
autem confuſio faciei, ſicut eſt hodiè viro Juda, & habitatoribus
Jeruſalem, & omni Iſrael, his qui propè ſunt, &
his qui procul, in univerſis terris, ad quas ejeciſti eos propter
iniquitates eorum, in quibus peccaverunt in te. Domine, 8
nobis confuſio faciei, regibus noſtris, principibus noſtris,
& patribus noſtris, qui peccaverunt. Tibi autem Domino 9
Deo noſtro miſericordia, & propitiatio, quia receſſimus
à te: Et non audivimus vocem Domini Dei noſtri, ut 10
ambularemus in lege ejus, quam poſuit nobis per ſervos
ſuos prophetas. Et omnis Iſrael prævaricati ſunt legem 11
tuam, & declinaverunt ne audirent vocem tuam, & ſtillavit
ſuper nos maledictio, & deteſtatio, quæ ſcripta eſt in
libro Moyſi ſervi Dei; quia peccavimus ei. Et ſtatuit ſermones 12
ſuos, quos locutus eſt ſuper nos, & ſuper principes
noſtros, qui judicaverunt nos, ut ſuperinduceret in nos magnum
malum, quale nunquam fuit ſub omni cœlo, ſecundũ
quod factum eſt in Jeruſalem. Sicut ſcriptum eſt in lege 13
Moyſi, omne malum hoc venit ſuper nos: & non rogavimus
faciem tuam, Domine Deus noſter, ut reverteremur ab iniquitatibus
noſtris, & cogitaremus veritatem tuam. Et vigilavit 14
Dominus ſuper malitiam, & adduxit eam ſuper nos:
juſtus Dominus Deus noſter in omnibus operibus ſuis, quæ
fecit: non enim audivimus vocem ejus. Et nunc, Domine 15
Deus noſter, qui eduxiſti populum tuum de terra Ægypti
in manu forti, & feciſti tibi nomen ſecundùm diem hanc:
peccavimus, iniquitatem fecimus, Domine, in omnem juſtitiam 16
tuam: avertatur, obſecro, ira tua, & furor tuus à civitate
tua Jeruſalem, & monte ſancto tuo. Propter peccata
enim noſtra, & iniquitates patrum noſtrorum, Jeruſalem
& populus tuus in opprobrium ſunt omnibus per circuitum
noſtrum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܪܡܝܬ ܐܦܝ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ . ܠܡܒܥܐ ܒܨܠܘܬܐ ܘܒܒܥܘܬܐ . ܘܒܨܘܡܐ . 3
ܘܒܣܩܐ ܘܒܩܛܡܐ . * ܘܨܠܝܬ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ ܘܐܘܕܝܬ ܘܐܡܪܬ . ܒܒܥܘ ܡܪܝܐ 4
ܐܠܗܐ ܪܒܐ ܘܕܚܝܠܐ .· ܢܛܪ ܩܝܡܐ ܘܛܝܒܘܬܐ ܠܡܚܒܘܗܝ ܘܠܐܝܠܝܢ ܕܢܛܪܝܢ
ܦܘܩܕܢܘܗܝ .· * ܚܛܝܢ . ܘܐܣܟܠܢ . ܘܐܪܫܥܢ ܘܡܪܕܢ . ܘܣܛܝܢ ܡܢ ܦܘܩܕܢܝܟ . 5
ܘܡܢ ܕܝܢܝܟ . * ܘܠܐ ܫܡܥܢ ܠܥܒܕܝܟ ܢܒܝܐ ܕܡܠܠܘ ܒܫܡܟ .· ܥܠ ܡܠܟܝܢ 6
ܘܪܘܪܒܢܝܢ ܘܐܒܗܝܢ .· ܘܥܠ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ . * ܕܝܠܟ ܡܪܝܐ ܙܕܝܩܘܬܐ .· ܘܕܝܠܢ 7
ܒܗܬܬܐ ܕܐܦܐ ܐܝܟ ܕܝܘܡܢܐ . ܠܝܗܘܕܝܐ ܘܠܥܡܘܪܝ ܐܘܪܫܠܡ . ܘܠܟܠܗ ܐܝܣܪܐܝܠ 8
ܕܩܪܝܒܝܢ ܘܪܚܝܩܝܢ .· ܒܟܠ ܐܪܥܬܐ ܕܒܕܪܬ ܐܢܘܢ ܠܬܡܢ .· ܒܥܘܠܗܘܢ
ܕܐܥܘܠܘ ܒܟ . * ܡܪܝܐ ܕܝܠܢ ܒܗܬܬܐ ܕܐܦܐ ܠܡܠܟܝܢ ܘܠܪܘܪܒܢܝܢ ܘܠܐܒܗܝܢ . ܡܛܠ 9
ܕܚܛܝܢ ܠܟ . * ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܪܚܡܐ ܘܫܘܒܩܢܐ ܕܚܛܗܐ . ܕܡܪܕܢ ܒܗ . * ܘܠܐ ܫܡܥܢ 10
ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ .· ܠܡܗܠܟܘ ܒܢܡܘܣܘܗܝ . ܕܣܡ ܩܕܡܝܢ ܒܝܕ ܥܒܕܘܗܝ
ܢܒܝܐ . * ܘܟܠܗ ܐܝܣܪܐܝܠ ܥܒܪܘ ܥܠ ܢܡܘܣܟ . ܘܣܛܘ . ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܒܩܠܟ . 11
ܘܐܝܬܝܬ ܥܠܝܗܘܢ ܠܘܛܬܐ ܘܡܘܡܬܐ .· ܕܟܬܝܒܢ ܒܢܡܘܣܐ ܕܡܘܫܐ ܥܒܕܗ
ܕܐܠܗܐ . ܡܛܠ ܕܚܛܝܢ ܠܗ . * ܘܐܩܝܡ ܡܠܘܗܝ ܕܡܠܠ ܥܠܝܢ . ܘܥܠ ܕܝܢܝܢ 12
ܕܕܢܘܢ . ܠܡܝܬܝܘ ܥܠܝܢ ܒܝܫܬܐ ܪܒܬܐ .· ܕܠܐ ܐܬܥܒܕܬ ܐܟܘܬܗ ܬܚܝܬ ܫܡܝܐ .·
ܐܝܟ ܕܐܬܥܒܕܬ ܒܐܘܪܫܠܡ . * ܐܝܟ ܕܟܬܝܒ ܒܢܡܘܣܐ ܕܡܘܫܐ . ܟܠܗ ܒܝܫܬܐ 13
ܗܕܐ ܐܬܬ ܥܠܝܢ . ܘܠܐ ܒܥܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ .· ܕܢܗܦܘܟ ܡܢ ܥܘܠܢ . ܘܢܣܬܟܠ
ܒܗܝܡܢܘܬܟ . ܘܫܩܕ ܡܪܝܐ ܒܝܫܬܐ ܘܐܝܬܝܗ ܥܠܝܢ . ܡܛܠ ܕܙܕܝܩ ܗܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ . 14
ܒܟܠܗܘܢ ܥܒܕܘܗܝ ܕܥܒܕ . ܘܠܐ ܫܡܥܢ ܒܩܠܗ . * ܘܗܫܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ .· 15
ܕܐܦܩܬ ܠܥܡܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܒܐܝܕܐ ܥܫܝܢܬܐ .· ܘܥܒܕܬ ܠܟ ܫܡܐ .
ܐܝܟ ܕܝܘܡܢܐ .· ܚܛܝܢ ܘܐܪܫܥܢ . * ܡܪܝܐ .· ܐܝܟ ܟܠܗ ܙܕܝܩܘܬܟ ܕܥܒܕܬ 16
ܒܢ .· ܢܗܦܘܟ ܪܘܓܙܟ ܘܚܡܬܟ ܡܢ ܡܕܝܢܬܟ ܐܘܪܫܠܡ . ܘܡܢ ܛܘܪܐ ܩܕܝܫܐ .
ܡܛܠ ܕܒܚܛܗܝܢ ܘܒܥܘܠܐ ܕܐܒܗܝܢ .· ܥܡܟ ܐܬܒܕܪ ܒܟܠ ܐܬܪܘܬܐ . ܘܐܘܪܫܠܡ
ܚܣܕܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ .

Quapropter extuli faciem meam ad Dominum 3
Deum, ut cum oratione, ſupplicatione,
jejunio, ſacco, & cinere precarer: Et orans 4
coram Domino Deo meo, confeſſus ſum
ac dixi; Obſecro Domine Deus maxime &
formidabilis, ſervans pactum & benignitatem
erga diligentes te, & eos qui cuſtodiunt
præcepta tua: Peccavimus, ſtultè impieque 5
egimus, rebellavimus, & defleximus à
præceptis & juribus tuis: Neque auſcultavimus 6
ſervis tuis prophetis qui nomine
tuo locuti ſunt de regibus, principibus, &
patribus noſtris, déque toto terræ populo.
Tua Domine eſt juſtitia, noſtrûm verò pudor 7
faciei, ut hodiernâ die, Judæorum, civium
Jeruſalem, omniúmque Iſraelitarum tam propinquorum
quàm remotorum, in omnibus
terris in quas diſperſiſti eos propter ſcelus
quod in te commiſerunt. Domine, penes 8
nos eſt rubor vult⁹, penes reges noſtros, principes,
& patres noſtros, quia peccavimus in
te: Penes Dominum Deum miſericordia 9
& venia peccatorum. Quandoquidem rebellavimus
in eum, Nec obedivimus voci Domini 10
Dei noſtri ut ambularemus in legibus ejus,
quas propoſuit nobis per ſervos ſuos prophetas;
Sed omnes Iſraelitæ tranſgreſſi ſunt 11
legem tuam, deflexerunt, & non obtemperaverunt
voci tuæ: ideò induxiſti ſuper eos
maledictiones & adjurationes quæ ſcriptæ
ſunt in lege Moſis ſervi Dei. Quia peccavimus
in eum, Præſtitit verba quæ pronuntiaverat 12
contra nos & contra judices noſtros
qui nos judicabant; inducendo ſuper nos calamitatem
tantam, ut nulla talis evenerit ſub
cœlo, qualis evênit in Jeruſalem. Quemadmodum 13
ſcriptum eſt in lege Moſis, totum
hoc malum ſupervenit nobis; nec tamen deprecati
ſumus Dominum Deum noſtrum, revertendo
ab iniquitate noſtra, & perpendendo
fidem tuam. Quocirca excitavit Dominus 14
malum, adduxitque illud ſuper nos: nam
juſtus eſt Dominus Deus noſter in cunctis operibus
ſuis quæ præſtitit, quòd ipſius voci
non auſcultaverimus. Jam Domine Deus 15
noſter, qui eduxiſti populum tuum de terra
Ægypti manu robuſtâ, & comparaſti tibi
nomen, quale eſt hodiè; peccavimus, & impiè
egimus. Domine, ſecundùm totam juſtitiam 16
tuam quam in nos exercuiſti, recedat
ira tua & furor tuus ab urbe tua Jeruſalem
& à monte ſancto tuo: ob peccata enim noſtra,
& ob ſcelus patrum noſtrorum populus
tuus diſperſus eſt in omnes regiones, & Jeruſalem
ludibrio expoſita eſt omnibus gentibus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καὶ ἔδωκα τὸ πρόσωπόν μου πρὸς κύριον τὸν θεὸν (δ), τοῦ ἐκζητῆσαι προσευχὴν καὶ (ε) δεήσεις, ἐν νη-
4 στείαις καὶ (ζ) σάκκῳ. Καὶ προσευξάμην πρὸς κύριον τὸν θεόν μου, καὶ ἐξωμολογησάμην, καὶ εἶπα, Κύ-
ριε ὁ θεὸς ὁ μέγας καὶ θαυμαστὸς, ὁ φυλάσσων τὴν διαθήκην σου, καὶ τὸ ἔλεός σου τοῖς ἀγαπῶσί σε,
5 καὶ τοῖς φυλάσσουσι τὰς ἐντολάς σου, Ἡμάρτομεν, (η) ἠδικήσαμεν, ἠνομήσαμεν, καὶ ἀπέστημεν καὶ ἐξεκλί-
6 ναμεν ἀπὸ τῶν ἐντολῶν σου, καὶ ἀπὸ τῶν κριμάτων σου, Καὶ οὐκ εἰσηκούσαμεν τῶν δούλων σου τῶν προ-
φητῶν, οἳ ἐλάλουν ἐν τῷ ὀνόματί σου πρὸς τοὺς βασιλεῖς ἡμῶν, καὶ ἄρχοντας ἡμῶν, καὶ πατέρας ἡμῶν, καὶ
7 πρὸς πάντα τὸν λαὸν τῆς γῆς. Σοὶ κύριε ἡ δικαιοσύνη, καὶ ἡμῖν ἡ αἰσχύνη τοῦ προσώπου, ὡς ἡ ἡμέ-
ρα αὕτη, ἀνδρὶ Ἰούδα, καὶ τοῖς (θ) ἐνοικοῦσιν ἐν Ἱερουσαλὴμ, καὶ παντὶ Ἰσραὴλ, τοῖς ἐγγὺς καὶ τοῖς
8 μακρὰν ἐν πάσῃ τῇ γῇ, οὗ διέσπειρας αὐτοὺς ἐκεῖ, ἐν (ι) ἀθεσίᾳ αὐτῶν ᾗ (κ) ἠθέτησαν. Ἐν σοὶ κύ-
ριε ἐστὶν ἡμῶν ἡ δικαιοσύνη, καὶ ἡμῖν ἡ αἰσχύνη τοῦ προσώπου, καὶ τοῖς βασιλεῦσιν ἡμῶν, καὶ τοῖς ἄρχουσιν ἡ-
9 μῶν, καὶ τοῖς πατράσιν ἡμῶν, οἵτινες (λ) ἡμάρτομεν. Σοὶ κυρίῳ τῷ θεῷ ἡμῶν οἱ οἰκτιρμοὶ, καὶ οἱ
10 ἱλασμοὶ, ὅτι (μ) ἀπέστημεν, Καὶ οὐκ εἰσηκούσαμεν τῆς φωνῆς κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν, πορεύεσθαι (ν) ἐν τοῖς
11 νόμοις αὐτοῦ, οἷς ἔδωκε κατὰ πρόσωπον ἡμῶν ἐν χερσὶ τῶν δούλων αὐτοῦ τῶν προφητῶν. Καὶ πᾶς Ἰσ-
ραὴλ παρέβησαν τὸν νόμον σου, καὶ ἐξέκλιναν τοῦ μὴ (ξ) ἀκοῦσαι τῆς φωνῆς σου· καὶ ἐπῆλθεν ἐφ᾽ ἡ-
μᾶς ἡ κατάρα, καὶ ὁ ὅρκος ὁ γεγραμμένος ἐν νόμῳ (ο) Μωυσέως δούλου τοῦ θεοῦ, ὅτι ἡμάρτομεν αὐτῷ. Καὶ
12 ἔστησε τοὺς λόγους αὐτοῦ οὓς ἐλάλησεν ἐφ᾽ ἡμᾶς, καὶ ἐπὶ τοὺς κριτὰς ἡμῶν, οἳ ἔκρινον ἡμᾶς, ἐπαγαγεῖν ἐφ᾽
ἡμᾶς κακὰ μεγάλα, (π) οἷα οὐ γέγονεν ὑποκάτω παντὸς τοῦ οὐρανοῦ, κατὰ τὰ (ρ) γενόμενα ἐν Ἱερουσα-
13 λὴμ, Καθὼς γέγραπται (σ) ἐν τῷ νόμῳ Μωυσῆ. πάντα τὰ κακὰ ταῦτα ἦλθεν ἐφ᾽ ἡμᾶς· καὶ οὐκ
ἐδεήθημεν τοῦ προσώπου κυρίου τοῦ θεοῦ ἡμῶν, ἀποστρέψαι ἀπὸ τῶν ἀδικιῶν ἡμῶν, καὶ τοῦ συνιέναι ἐν
14 πάσῃ ἀληθείᾳ σου. Καὶ ἐγρηγόρησε (τ) κύριος, καὶ ἐπήγαγεν αὐτὰ ἐφ᾽ ἡμᾶς, ὅτι (υ) δίκαιος κύριος
ὁ θεὸς ἡμῶν ἐπὶ πᾶσαν τὴν ποίησιν αὐτοῦ ἣν ἐποίησε, καὶ οὐκ εἰσηκούσαμεν τῆς φωνῆς αὐτοῦ. Καὶ νῦν
15 κύριε ὁ θεὸς ἡμῶν, ὃς ἐξήγαγες τὸν λαόν σου ἐκ γῆς Αἰγύπτου ἐν χειρὶ κραταιᾷ, καὶ ἐποίησας σεαυ-
16 τῷ ὄνομα ὡς ἡ ἡμέρα αὕτη, ἡμάρτομεν, ἠνομήσαμεν. Κύριε ἐν πάσῃ ἐλεημοσύνῃ σου, ἀποστραφή-
τω δὴ ὁ θυμός σου, καὶ ἡ ὀργή σου ἀπὸ τῆς πόλεώς σου Ἱερουσαλὴμ ὄρους ἁγίου σου, ὅτι ἡμάρ-
τομεν, (φ) καὶ ἐν ταῖς ἀδικίαις ἡμῶν, καὶ τῶν πατέρων ἡμῶν, Ἱερουσαλὴμ, καὶ ὁ λαός σου εἰς ὀνειδι-
σμὸν ἐγένετο ἐν πᾶσι τοῖς περικύκλῳ ἡμῶν.

Et dedi faciem meam ad Dominum Deum , quærendo deprecationem, & 3
orationes in jejuniis, et ſacco. Et oravi ad Dominum Deum meum,& 4
confeſſus ſum, & dixi; Domine Deus magne, & mirabilis, qui cuſto-
dis teſtamentum tuum, & miſericordiam tuam diligentibus te, & cuſto-
dientibus mandata tua: Peccavimus, (c) injuſtè egimus, iniquè egi- 5
mus, & receſſimus, & declinavimus à mandatis tuis, atque à judiciis
tuis : Et non exaudivimus ſervos tuos prophetas, qui loquebantur in 6
nomine tuo regibus noſtris, & principibus noſtris, & patribus noſtris,
omnique populo terræ. Tibi, Domine, juſtitia: nobis autem confuſio 7
faciei, ſicut dies hæc, viro Juda, & habitatoribus Hieruſalem,& omni
Iſrael ; his, qui prope ſunt, & his qui procul, in univerſa terra, quò diſ-
ſeminâſti eos illuc, in prævaricatione eorum,quâ prævaricati ſunt. (d) In 8
te, Domine, eſt noſtra juſtitia,& nobis confuſio faciei, & regibus noſtris,
& principibus noſtris, & patribus noſtris: qui peccavimus. Tibi Do- 9
mino Deo noſtro miſerationes,& propitiationes: quia(e)receſſimus, Et 10
non exaudivimus vocem Domini Dei noſtri,ut ambularemus in legibus ejus,
quas dedit ante faciem noſtram in manibus ſervorum ſuorum prophetarum.
Et omnis Iſrael prævaricati ſunt legem tuam : & declinaverunt, ne au- 11
dirent vocem tuam. Et ſupervenit ſuper nos maledictio,& juramentum
ſcriptum in lege Moyſi ſervi Dei ; quia peccavimus ei. Et ſtatuit ſermo- 12
nes ſuos, quos loquutus eſt ſuper nos, & ſuper judices noſtros, qui judica-
bant nos, ut ſuperinducerent in nos mala magna, qualia non fuerunt ſub
omni cælo, ſecundùm ea quæ facta ſunt in Hieruſalem, Sicut ſcriptum 13
eſt in lege Moyſi. Omnia mala hæc venerunt ſuper nos ; & non rogavi-
mus faciem Domini Dei noſtri ; ut reverteremur ab iniquitatibus noſtris, &
intelligeremus in omni veritate tua. Et vigilavit (f) Dominus, & ad- 14
duxit ea ſuper nos,quoniam juſtus Dominus Deus noſter in omni opere ſuo,
quod fecit : & non exaudivimus vocem ejus. Et nunc, Domine Deus 15
noſter, qui eduxiſti populum tuum de terra Ægypti in manu forti, & fe-
ciſti tibi nomen, ſicut dies hæc, peccavimus, iniquitatem fecimus : Do- 16
mine, in (g) omni miſericordia tua , avertatur, obſecro, furor tuus, &
ira tua à civitate tua Hieruſalem, monte ſancto tuo, quia peccavimus:
& in noſtris iniquitatibus, & patrum noſtrorum,Hieruſalem, & populus tuus in opprobrium factus eſt in omnibus qui per circuitum noſtrum.

MS. A. (δ) τοῦ οὐρανοῦ, τὸ (ε) δέησιν, (ζ) σάκκῳ καὶ σποδῷ. Καὶ προσηυξάμην πρὸς κύριον τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐξωμολογησάμην, (η) ἠνομήσαμεν, ἠσεβήσαμεν, ἠδικήσαμεν, καὶ ἀπέστημεν (θ) κατοικοῦσιν Ἱερουσαλὴμ, (ι) ἀθετήσει (κ) ἠθέτησάν σε κύριε. Σοὶ κύριε ἡ δικαιοσύνη, (λ) ἡμάρτομέν σοι. τῷ κυρίῳ θεῷ (μ) ἀπέστημεν ἀπὸ κυρίου, Καὶ (ν) τοῖς νόμοις (ξ) εἰσακοῦσαι (ο) Μωσεῖ δούλῳ (π) ἃ οὐ (ρ) γεγραμμένα (σ) ἐν νόμῳ Μωσῆ. (τ) κύριος ὁ θεὸς ἡμῶν ἐπὶ τὴν κακίαν, καὶ ἐπήγαγεν (υ) δίκαιος ὁ θεὸς ἡμῶν (φ) ἐν ταῖς

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

3 * فأعطيت وجهي للرب الهي لأطلب بالصلاة والتضرع بالاصوام والمسح والرماد * وصليت 4
الي الرب الهي * واعترفت وقلت * ايها الرب الاله العظيم العجيب * الذي يحفظ عهدك
ورحمتك للذين يحبونك ويحفظون وصاياك * أخطأنا * اثمنا * ظلمنا * نافقنا * وتباعدنا وحدنا 5
عن وصاياك وعن احكامك * ولم نسمع من عبيدك الانبياء الذين تكلموا باسمك مع ملوكنا 6
ورؤسائنا وآبائنا * ومع كل شعب الارض * لك يا رب العدل * ولنا خزي الوجه * مثل هذا 7
اليوم * لرجل يهوذا * ولسكان ايروشليم * ولكل اسرائيل القرباء والبعداء * في كل الارض حيث
بددتنا هناك بعصيانهم الذي عصوك به يا رب * لك يا رب العدل * ولنا خزي الوجه 8
ولملوكنا ولرؤسائنا ولآبائنا * نحن الذين أخطأنا اليك ايها الرب الهنا * ولك الرأفات 9
والمغفرات * لانا تباعدنا من الرب * ولم نسمع صوت الرب الهنا * لنسير بنواميسه التي أعطانا 10
اياها لوجهنا بايدي عبيدك الانبياء * وكل اسرائيل تجاوزوا ناموسك * وحادوا الا يسمعوا 11
صوتك * وجاءت علينا اللعنة والحلف المكتوب في ناموس موسي عبد الله * لانا اخطانا له
* فاقام كلماته التي تكلم بها علينا وعلي قضاتنا الذين دانونا * ليجلب علينا شرورا 12
عظيمة لم يكن مثلها تحت كل السماء * كما صارت في ايروشليم * كما كتب في 13
ناموس موسي * كل هذه الشرور أتت علينا * ولم نطلب وجه الرب الهنا * لنرجع عن
ظلمنا ونتفهم في كل حقك * وسهر الرب الهنا علي الشر * وجلب هذه علينا * لان الرب 14
الهنا عدل في كل صنيعه الذي صنعه * ولم نسمع صوته * والان ايها الرب الهنا * الذي 15
أخرجت شعبك من ارض مصر بيد عزيز * وصنعت لك اسما كمثل هذا اليوم * أخطأنا
أثمنا ظلمنا يا رب في كل مراحمك * فليرجع غضبك وحنقك عن مدينتك ايروشليم جبلك 16
المقدس * لانا اخطانا بظلاماتنا وبظلامات آبائنا الذين بايروشليم * وصار شعبك للعار
عند الذين حولنا *

Quarè addixi faciem meam Domino 3
Deo meo , ut rogarem cum oratione &
obſecratione, cum jejuniis, ſacco, & ci-
nere. Et orans ad Dominum Deum me- 4
um confeſſus dixi ; O Domine Deus ma-
gne & admirande,qui ſervas pactum tu-
um & miſericordiam tuam erga illos qui
te amant & ſervant præcepta tua : Pec- 5
cavimus, deliquimus,perverſè & impiè
egimus, receſſimus & deflexmus à præ-
ceptis & judiciis tuis : Non obtempera- 6
vimus ſervis tuis prophetis,qui nomine
tuo locuti ſunt cum regibus, principibus,
& patribus noſtris, cúmque univerſo po-
pulo terræ. Tibi O Domine juſtitia,nobis 7
autem rubor vultûs, qualis eſt hodierno
die,viro Judæ,habitatoribus Jeruſalem,
totique Iſraeli,tam proximis quàm remo-
tis in tota terra , quocunque diſperſiſti
nos propter rebellionem ipſorum quâ de-
fecerunt à te O Domine. Tibi O Domine 8
juſtitia, nobis autem, & regibus, princi-
pibus, ac patribus noſtris rubor vultûs.
Nos ſumus qui peccavimus in te O Do-
mine Deus noſter : At penes te ſunt 9
miſerationes & indulgentiæ. Quia re-
ceſſimus à Domino, Et non auſcultavi- 10
mus voci Domini Dei noſtri ut ambu-
laremus in legibus ejus, quas propoſue-
rat nobis ob oculos per ſervos ſuos pro-
phetas ; Imò omnes Iſraelitæ præter- 11
greſſi ſunt legem tuam , & deflexerunt
quominùs audirent vocem tuam : Ideò
venit ſuper nos maledictio & adjuratio
ſcripta in lege Moſis ſervi Dei. Quia
peccavimus in eum , Præſtitit verba ſua 12
quæ locutus fuerat contra nos & contra
judices noſtros qui nos judicabant ; infe-
rendo nobis miſerias ingentes quibus non
fuerunt pares ſub toto cœlo , quales ac-
ciderunt in Jeruſalem. Prout ſcriptum 13
eſt in lege Moſis, omnia iſta mala vene-
runt ſuper nos ; & tamen non ſumus de-
precati vultum Dei noſtri, deſiſtendo ab
impietate noſtra, & animum adverten-
do ad omnem veritatem tuam. Ideò 14
vigilavit Dominus Deus noſter ad mi-
ſeriam, & hæc intulit nobis ; quia Do-
minus Deus noſter juſtiſſimus eſt in omni
opere quod geſſit, & non auſcultavimus
voci ipſius. Nunc ergò O Domine Deus 15
noſter,qui eduxiſti populum tuum de
terra Ægypti manu potenti,& comparâſti
tibi nomen quale eſt hodierno die ; pec-
cavimus, perverſè & impiè egimus O
Domine in omnes miſerationes tuas.
Avertatur jam ira et indignatio tua ab 16
urbe tua Jeruſalem monte ſancto tuo :
peccavimus enim criminibus noſtris et
criminibus patrum noſtrorum qui erant
in Jeruſalem, et factus eſt populus tuus
opprobrio apud eos qui circa nos ſunt.

propter desolatum tuū sanctuariū super *tuas facies* illustra &,ej⁹ deprecationes *ad* &,tui servi orationem noster Deus audi nunc Et

17 וְעַתָּה שְׁמַע אֱלֹהֵינוּ אֶל־תְּפִלַּת עַבְדְּךָ וְאֶל־תַּחֲנוּנָיו וְהָאֵר פָּנֶיךָ עַל־מִקְדָּשְׁךָ הַשָּׁמֵם לְמַעַן

est invocatum quam civitatē &,nostras desolationes vide &,tuos oculos aperi ; audi & ,tuā aurē meus Deus Inclina .Dominum

18 אֲדֹנָי׃ הַטֵּה אֱלֹהַי ׀ אָזְנְךָ וּשְׁמָע פְּקַח עֵינֶיךָ וּרְאֵה שֹׁמְמֹתֵינוּ וְהָעִיר אֲשֶׁר־נִקְרָא

.multis tuis miserationibus *super* sed,*tuas facies ad* nostras preces *facientes cadere nos* nostris justitiis *super* non quia ;eā *super* tuū nomē

שִׁמְךָ עָלֶיהָ כִּי ׀ לֹא עַל־צִדְקֹתֵינוּ אֲנַחְנוּ מַפִּילִים תַּחֲנוּנֵינוּ לְפָנֶיךָ כִּי עַל־רַחֲמֶיךָ הָרַבִּים׃

tuū nomē quia ,meus Deus temetipsum propter ;moreris ne , fac & attende ,Domine ,parce Domine ,exaudi Domine

19 אֲדֹנָי ׀ שְׁמָעָה אֲדֹנָי ׀ סְלָחָה אֲדֹנָי הַקֲשִׁיבָה וַעֲשֵׂה אַל־תְּאַחַר לְמַעַנְךָ אֱלֹהַי כִּי־שִׁמְךָ

mei populi peccatum &,meū peccatū *confitens* & ,*orans* & ,*loquens* ego adhuc Et .tuū populū super &,tuā civitatē super est invocatū

20 נִקְרָא עַל־עִירְךָ וְעַל־עַמֶּךָ׃ וְעוֹד אֲנִי מְדַבֵּר וּמִתְפַּלֵּל וּמִתְוַדֶּה חַטָּאתִי וְחַטַּאת עַמִּי

;oratione in *loquens* ego adhuc Et .mei Dei *sanctitatis* monte *super* meo Deo Domino coram meā deprecationē *dejiciens* & : Israel

21 יִשְׂרָאֵל וּמַפִּיל תְּחִנָּתִי לִפְנֵי יְהוָה אֱלֹהַי עַל הַר־קֹדֶשׁ אֱלֹהָי׃ וְעוֹד אֲנִי מְדַבֵּר בַּתְּפִלָּה

.*vesperæ muneris tempus secundùm* me *ad tangens*,*lassitudine in* volans ,principio in visione in videram quem , Gabriel vir &

וְהָאִישׁ גַּבְרִיאֵל אֲשֶׁר רָאִיתִי בֶחָזוֹן בַּתְּחִלָּה מֻעָף בִּיעָף נֹגֵעַ אֵלַי כְּעֵת מִנְחַת־עָרֶב׃

principio In .intelligentiā te *faciendū* intelligere *ad*,sum egressus nunc Daniel ,dixit & ; mecum est locut⁹ & ,me fecit intelligere Et

22 וַיָּבֶן וַיְדַבֵּר עִמִּי וַיֹּאמַר דָּנִיֵּאל עַתָּה יָצָאתִי לְהַשְׂכִּילְךָ בִינָה׃ 23 בִּתְחִלַּת

.*visione in* intellige & ,*verbo in* intellige & : *tu* desideriorū quia,*indicandū ad* veni ego & ,verbum est egressum tuarū deprecationū

תַּחֲנוּנֶיךָ יָצָא דָבָר וַאֲנִי בָּאתִי לְהַגִּיד כִּי חֲמוּדוֹת אָתָּה וּבִין בַּדָּבָר וְהָבֵן בַּמַּרְאֶה׃

sigillandum ad &,prævaricationem consumendū ad,*tuæ sanctitatis* civitatē super & ,tuū populū super *decisa* septuaginta Hebdomadæ

24 שָׁבֻעִים שִׁבְעִים נֶחְתַּךְ עַל־עַמְּךָ ׀ וְעַל־עִיר קָדְשֶׁךָ לְכַלֵּא הַפֶּשַׁע וּלְחָתֵם

ungendum ad &,prophetam &,visionem *sigillandum* ad & ; seculorū justitiā adducendū ad & ,iniquitatē expiandū ad & , peccata

חַטָּאוֹת וּלְכַפֵּר עָוֺן וּלְהָבִיא צֶדֶק עֹלָמִים וְלַחְתֹּם חָזוֹן וְנָבִיא וְלִמְשֹׁחַ

unctum ad usque Jerusalaim ædificandum ad &,faciendum reverti ad,sermonis exitu ab intelliges & ,scies Et .sanctitatum sanctitatē

25 קֹדֶשׁ קָדָשִׁים׃ וְתֵדַע וְתַשְׂכֵּל מִן־מֹצָא דָבָר לְהָשִׁיב וְלִבְנוֹת יְרוּשָׁלִַם עַד־מָשִׁיחַ

.temporum *coarctatione* in & , *fossa* & platea ædificabitur & ,redibit duæ & sexaginta hebdomadæ & :septem hebdomadæ,ducem

נָגִיד שָׁבֻעִים שִׁבְעָה וְשָׁבֻעִים שִׁשִּׁים וּשְׁנַיִם תָּשׁוּב וְנִבְנְתָה רְחוֹב וְחָרוּץ וּבְצוֹק הָעִתִּים׃

ej⁹ finis & ,venturi ducis populus *corrumpet sanctitatem* &,civitatem & :ei non &,*unctus* excidetur duas & sexaginta hebdomadas post Et

26 וְאַחֲרֵי הַשָּׁבֻעִים שִׁשִּׁים וּשְׁנַיִם יִכָּרֵת מָשִׁיחַ וְאֵין לוֹ וְהָעִיר וְהַקֹּדֶשׁ יַשְׁחִית עַם נָגִיד הַבָּא וְקִצּוֹ

dimidio & : una hebdomada multis pactum roboravit Et .desolationes *decisa* ,belli finem ad usque & ,inundatione in

27 בַשֶּׁטֶף וְעַד קֵץ מִלְחָמָה נֶחֱרֶצֶת שֹׁמֵמוֹת׃ וְהִגְבִּיר בְּרִית לָרַבִּים שָׁבוּעַ אֶחָד וַחֲצִי

decisam & ,consummationem ad usque & ,*stupefaciens* abominationum *alam* super & ,*munus* & ,sacrificium faciet cessare *hebdomadæ*

הַשָּׁבוּעַ יַשְׁבִּית זֶבַח וּמִנְחָה וְעַל כְּנַף שִׁקּוּצִים מְשֹׁמֵם וְעַד־כָּלָה וְנֶחֱרָצָה

.*obstupescentem* super se effundet

תִּתַּךְ עַל־שֹׁמֵם׃

CAP. X. י

,verbum *veritas* & : Belthesasar *ejus* nomen vocatur cujus ,Danieli est revelatum verbum ,*Paras* regis Chores tertio anno In

1 בִּשְׁנַת שָׁלוֹשׁ לְכוֹרֶשׁ מֶלֶךְ פָּרַס דָּבָר נִגְלָה לְדָנִיֵּאל אֲשֶׁר־נִקְרָא שְׁמוֹ בֵּלְטְשַׁאצַּר וֶאֱמֶת הַדָּבָר

.visione in *ei* intelligentia & ,verbum intellexit & ,magna militia &

וְצָבָא גָדוֹל וּבִין אֶת־הַדָּבָר וּבִינָה לוֹ בַּמַּרְאֶה׃

Versio VULG. LAT.

17 Nunc ergò exaudi, Deus noster, orationem servi tui, & preces ejus: & ostende faciem tuam super Sanctuarium tuum, quod desertū est propter temetipsum. 18 Inclina, Deus meus, aurem tuam, & audi: aperi oculos tuos, et vide desolationem nostram, & civitatem, super quam invocatum est nomen tuum: neque enim in justificationibus nostris prosternimus preces ante faciem tuam, sed in miserationibus tuis multis. 19 Exaudi, Domine; placare, Domine: attende et fac: ne morêris propter temetipsum, Deus meus: quia nomen tuum invocatum est super civitatem, & super populū tuum. 20 Cúmque adhuc loquerer, & orarem, & confiterer peccata mea, et peccata populi mei Israel, & prosternerem preces meas in conspectu Dei mei, pro monte sancto Dei mei: 21 Adhuc me loquente in oratione, ecce vir Gabriel, quem viderā in visione à principio, citò volans tetigit me in tempore sacrificii vespertini. 22 Et docuit me, & locutus est mihi, dixitque; Daniel, nunc egressus sum ut docerem te, & intelligeres. 23 Ab exordio precum tuarum egressus est sermo: ego autem veni ut indicarem tibi, quia vir desideriorum es: tu ergò animadverte sermonem, & intellige visionem. 24 Septuaginta hebdomades abbreviatæ sunt super populum tuum, & super urbem sanctam tuam, ut consummetur prævaricatio, & finem accipiat peccatum, et deleatur iniquitas, et adducatur justitia sempiterna, & impleatur visio, & prophetia, et ungatur Sanctus sanctorum. 25 Scito ergò, & animadverte: Ab exitu sermonis, ut iterùm ædificetur Jerusalem, usque ad Christum ducem, hebdomades septem, & hebdomades sexaginta duæ erunt: & rursum ædificabitur platea, et muri in angustia temporum. 26 Et post hebdomades sexaginta duas occidetur Christus: et non erit ejus populus, qui eum negaturus est. Et civitatem & Sanctuarium dissipabit populus cum duce venturo: & finis ejus vastitas, et post finem belli statuta desolatio. 27 Confirmabit autem pactum multis hebdomadâ unâ: et in dimidio hebdomadis deficiet hostia et sacrificium: et erit in templo abominatio desolationis: & usque ad consummationem & finem perseverabit desolatio.

CAP. X.

1 ANno tertio Cyri regis Persarum, verbum revelatum est Danieli cognomento Baltassar, & verbū verum, et fortitudo magna: intellexítque sermonem: intelligentia enim est opus in visione.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

17 [illegible]

18 [illegible]

19 [illegible]

20 [illegible]

21 [illegible]

22 [illegible]

23 [illegible]

24 [illegible]

25 [illegible]

26 [illegible]

27 [illegible]

17 Jam audi Deus orationem servi tui & obsecrationem nostram, & serenum redde vultum tuum erga Sanctuarium tuum quod abiit in ruinam; propter nomen tuum Domine. 18 Inclina mi Deus aurem tuam, & audi; aperi oculos tuos, & vide ruinas & vastitates nostras atque urbis super quam invocatum est nomen tuum: neque enim justitiâ nostrâ freti te obsecramus, sed amplissimis miserationibus tuis. 19 Domine, ausculta & fac, néve morêris; propter nomen tuum Deus meus: siquidem nomen tuum invocatum est super urbem tuam & super populum tuum. 20 Dum ego orarem, & confiterer delicta mea & delicta populi mei Israelis, funderemque supplicationem meam ante Dominum Deum pro monte sancto Dei mei: 21 Dum inquam, in oratione loquerer, vir ille Gabriel quem antea videram in visione, celerrimo volatu advolavit & venit è cœlo, accessitque ad me tempore sacrificii vespertini: 22 Et cùm venisset, allocutus est me, dixitque mihi; Daniel, modò egressus sum ad docendum te ut intelligas. 23 Initio orationis tuæ prodiit sermo, ideo veni indicatum tibi, cùm sis cupidus: considera sermonem, & intellige visionem. 24 Septuaginta hebdomadæ morabuntur super populum tuum & super civitatem sanctitatis tuam ut aboleantur scelera, & consumantur peccata; ut remittatur iniquitas, & adducatur justitia quæ est ab æterno, ut compleantur visio & prophetæ, & usque ad Christum, Sanctum sanctorum. 25 Igitur scias & intelligas: Ab egressu verbi usque ad reædificationem Jerosolymæ & ad adventum Christi regis, hebdomadæ septem erunt, & hebdomadæ sexaginta duæ: *tum* iterum ædificabit Jerosolymam, & vicos atque plateas ejus usque ad finem temporis. 26 Post hebdomadas autem sexaginta duas occidetur Christus, & non erit penes ipsam: Civitas etiam sanctitatis destruetur cum rege venturo, & exitium ejus erit cum erasione usque ad finem belli sententiæ vastitatis. 27 Et grave reddet fœdus multis hebdomadâ unâ & dimidium hebdomadæ, abolebitque sacrificium & oblationem: denique super extremitates abominationis incumbet vastitas: usque ad consummationem sententiæ manebit in vastitate.

CAP. X.

1 [illegible]

1 ANno tertio Cyri regis Persarum, sermo revelatus est Danieli, cujus nomen vocatum fuit Blitsasar: verus est sermo, sed magno conatu deprehenditur sermo; attamen intellexit visionem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Interpretatione LATINA.

17 Καὶ (χ) νῦν εἰσάκουσον κύριε ὁ θεὸς ἡμῶν τῆς προσευχῆς τοῦ δούλου σου ϗ τὰς δεήσεις αὐτοῦ, ϗ ἐπιφάνον τὸ πρόσωπόν σου ἐπὶ τὸ ἁγίασμά σου τὸ ἔρημον, (ψ) ἕνεκέν σου κύριε. 18 Κλῖνον ὁ θεός μου τὸ οὖς σου, ϗ ἄκουσον· (ω) ἄνοιξον τοὺς ὀφθαλμούς σου, ϗ ἴδε τὸν ἀφανισμὸν ἡμῶν, ϗ τῆς πόλεώς σου (α) ἐφ' ἧς ἐπικέκληται τὸ ὄνομά σου ἐπ' αὐτῆς· ὅτι οὐκ ἐπὶ ταῖς δικαιοσύναις (β) ἡμῶν ῥιπτοῦμεν τὸν οἰκτιρμὸν ἡμῶν ἐνώπιόν σου, ἀλλ' ἐπὶ τοὺς οἰκτιρμούς σου τοὺς πολλοὺς κύριε. 19 (γ) Εἰσάκουσον κύριε, ἱλάσθητι κύριε, πρόσχες κύριε· μὴ χρονίσῃς ἕνεκέν σου ὁ θεός μου, ὅτι τὸ ὄνομά σου ἐπικέκληται ἐπὶ τὴν πόλιν σου, ϗ ἐπὶ τὸν λαόν σου. 20 Καὶ ἔτι (¨) ἐμοῦ λαλοῦντος, ϗ προσευχομένου, ϗ (δ) ἐξαγορεύοντος τὰς ἁμαρτίας μου, ϗ τὰς ἁμαρτίας τοῦ λαοῦ μου Ἰσραήλ, ϗ ῥιπτοῦντος τὸ ἔλεόν μου ἐναντίον (ε) τοῦ κυρίου τοῦ θεοῦ μου περὶ τοῦ ὄρους τοῦ (ζ) ἁγίου, 21 Καὶ ἔτι ἐμοῦ λαλοῦντος ἐν τῇ προσευχῇ, ϗ ἰδοὺ ἀνὴρ Γαβριὴλ, ὃν ἴδον ἐν τῇ ὁράσει ἐν τῇ ἀρχῇ, πετόμενος, ϗ ἥψατό μου, ὡσεὶ ὥραν θυσίας ἑσπερινῆς. 22 Καὶ συνέτισέ με, ϗ ἐλάλησε μετ' ἐμοῦ, ϗ εἶπε, Δανιὴλ, νῦν ἐξῆλθον συμβιβάσαι σε σύνεσιν. 23 Ἐν ἀρχῇ τῆς (η) δεήσεώς σου, ἐξῆλθε λόγος, ϗ ἐγὼ ἦλθον τοῦ ἀναγγεῖλαί σοι, ὅτι ἀνὴρ ἐπιθυμιῶν (θ) εἶ σύ, ϗ ἐννοήθητι ἐν τῷ ῥήματι, ϗ σύνες ἐν τῇ ὀπτασίᾳ. 24 Ἑβδομήκοντα ἑβδομάδες συνετμήθησαν ἐπὶ τὸν λαόν σου (ι), ϗ ἐπὶ τὴν πόλιν τὴν (κ) ἁγίαν, τοῦ (λ) συντελεσθῆναι ἁμαρτίαν, ϗ τοῦ σφραγίσαι (μ) ἁμαρτίας, ϗ ἀπαλεῖψαι τὰς (ν) ἀδικίας, ϗ τοῦ ἐξιλάσασθαι ἀδικίας, ϗ τοῦ ἀγαγεῖν δικαιοσύνην αἰώνιον, ϗ τοῦ σφραγίσαι ὅρασιν ϗ προφήτην, ϗ τοῦ χρῖσαι ἅγιον ἁγίων. 25 Καὶ γνώσῃ ϗ συνήσεις· ἀπὸ ἐξόδου λόγου τοῦ ἀποκριθῆναι, ϗ τοῦ οἰκοδομῆσαι Ἱερουσαλὴμ, ἕως Χριστοῦ ἡγουμένου ἑβδομάδες ἑπτὰ, ϗ ἑβδομάδες ἑξήκοντα δύο. ϗ ἐπιστρέψει, ϗ οἰκοδομηθήσεται πλατεῖα, ϗ (ξ) τεῖχος, ϗ ἐκκενωθήσονται οἱ καιροί. 26 Καὶ μετὰ τὰς ἑβδομάδας τὰς ἑξηκονταδύο, (ο) ἐξολοθρευθήσεται χρῖσμα, ϗ κρίμα οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ· ϗ τὴν πόλιν, ϗ τὸ ἅγιον διαφθερεῖ σὺν τῷ ἡγουμένῳ τῷ ἐρχομένῳ, (π) ἐκκοπήσονται ἐν κατακλυσμῷ, ϗ ἕως τέλους πολέμου (ρ) συντετμημένου τάξει, ἀφανισμοῖς. 27 Καὶ δυναμώσει διαθήκην πολλοῖς ἑβδομὰς μία. ϗ ἐν τῷ (σ) ἡμίσει τῆς ἑβδομάδος ἀρθήσεταί μου θυσία ϗ σπονδὴ, ϗ ἐπὶ τὸ ἱερὸν βδέλυγμα τῶν ἐρημώσεων (τ), ϗ ἕως τῆς συντελείας καιροῦ συντέλεια δοθήσεται ἐπὶ τὴν ἐρήμωσιν. †

Et nunc exaudi, Domine Deus noster, orationem ſervi tui, & preces ejus: & oſtende faciem tuam ſuper Sanctuarium tuum, quod deſertum eſt: Propter te, Domine. 17 Inclina, Deus meus, aurem tuam, & audi: aperi oculos tuos, & vide deſolationem noſtram, & civitatis tuæ, ſuper quam invocatum eſt nomen tuum ſuper eam. Quia non in noſtris juſtitiis proſternimus miſerationem noſtram coram te, ſed in miſerationibus tuis multis, Domine. 18 Exaudi, Domine: placare, Domine: attende, Domine: *ne moreris propter temetipſum, Deus meus: quia nomen tuum invocatum eſt ſuper civitatem tuam, & ſuper populum tuum. 19 Et adhuc me loquente, & orante, & confitente peccata mea, & peccata populi mei Iſrael, & proſternente miſericordiam meam in conſpectu Domini Dei mei pro monte ſancto, 20 Et adhuc me loquente in oratione: & ecce vir Gabriel, quem videram in viſione à principio, volans: & tetigit me quaſi horâ ſacrificii veſpertini. 21 Et docuit me, & loquutus eſt mecum, & dixit; Daniel, nunc exivi imbuere te intelligentiâ. 22 In principio obſecrationis tuæ, exivit ſermo: & ego veni, ut adnuntiem tibi: quia (h) vir deſideriorum tu es. Et cogita in verbo, & intellige in viſione. 23 Septuaginta hebdomades, *breviatæ ſunt ſuper plebem tuam, & ſuper civitatem (i) ſanctam, (k) ut conſumetur peccatum, & ſignentur peccata, & deleantur iniquitates, & exorentur iniquitates, & adducatur juſtitia ſempiterna, & (l) ſignetur viſio, & propheta, & ungatur Sanctus ſanctorum. 24 Et ſcies, & intelliges: ab exitu ſermonis ad (m) reſpondendum, & ædificandum Hieruſalem uſque ad Chriſtum ducem hebdomades ſeptem, & hebdomades ſexaginta duæ. Et (n) revertetur, & ædificabitur platea, & murus: & (o) evacuabuntur tempora: 25 Et poſt hebdomadas ſexaginta *duas (p) exterminabitur unctio: & judicium non eſt in eo: et (q) civitatem & Sanctuarium diſſipabit cum duce adveniente: excidentur in (r) diluvio, & uſq; ad finem belli conciſi, (ſ) ordine, deſolationibus. 26 Et confirmabit teſtamentum multis hebdomada una. Et in dimidio hebdomadis (t) auferetur meum ſacrificium, & libamen: et in templo abominatio deſolationum: et uſque ad conſummationem temporis conſummatio dabitur ſuper deſolationem. 27

MS. A. (χ) νῦν κύριε ὁ θεὸς ἡμῶν εἰσάκουσον τῆς (ψ) εἵνεκεν (ω) ϗ ἄνοιξον (α) Ἱρουσαλὴμ ἐφ' (β) ἡμῶν ἡμεῖς ῥιπτοῦμεν (γ) Κύριε ἄκουσον, κύριε ἱλάσθητι, κύριε πρόσχες, κύριε ποίησον· ϗ μὴ χρονίσῃς ἕνεκέν σου κύριε ὁ θεός (¨) μου (δ) ἐξαγορεύοντός μου τὰς ἁμαρτίας μου, ϗ τὰς (ε) τοῦ θεοῦ μου (ζ) ἁγίου τοῦ θεοῦ μου, Καὶ ἔτι μου λαλοῦντος ϗ προσευχομένου ἐν τῇ προσευχῇ, ἰδοὺ (η) δεήσεως, ἐξῆλθεν (θ) σὺ εἶ, (ι) Ἰσραήλ, (κ) ἁγίαν σου, (λ) συντελέσαι (μ) ὅρασιν ἁμαρτίας, (ν) ἀνομίας, (ξ) περὶ τεῖχος, (ο) ἐξολοθρευθήσεται (π) ϗ ἐκκοπήσονται (ρ) συντετμημένου (σ)* ἥμισυ τῆς ἑβδομάδος καταπαύσει θυσιαστήριον ϗ θυσίαν, ϗ ἕως πτερυγίου ἀπὸ ἀφανισμοῦ, ϗ ἕως συντελείας σπουδῆς τάξει ἐπὶ ἀφανισμοῦ, ϗ δυναμώσει διαθήκην πολλοῖς ἑβδομὰς μία, ϗ ἐν τῷ * ἥμισυ τῆς ἑβδομάδος ἀρθήσεταί (τ) ἔσται, ϗ † "ΟΡΑΣΙΣ ι'.

ΚΕΦ. ι'.

1 Ἐν ἔτει τρίτῳ Κύρου βασιλέως Περσῶν λόγος ἀπεκαλύφθη τῷ Δανιὴλ, οὗ τὸ ὄνομα ἐπεκλήθη Βαλτάσαρ· ϗ ἀληθινὸς ὁ λόγος, ϗ δύναμις μεγάλη ϗ σύνεσις ἐδόθη αὐτῷ ἐν τῇ ὀπτασίᾳ.

MS. A. "ΟΡΑΣΙΣ. ια'.

CAP. X.

In anno tertio Cyri regis Perſarum verbum revelatum eſt Danieli, cujus nomen vocatum eſt Baltaſar. Et verbum verum, et fortitudo magna, et intelligentia data eſt ei in viſione. 1

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 * والآن اسمع ايها الرب الهنا صلاة عبدك وتضرعاته * واظهر وجهك على مقدسك الخراب * من
18 اجلك يا رب * امل يا الهي سمعك واسمع * افتح عينيك وانظر هلاكنا وهلاك مدينتك التي
دعي اسمك عليها * لانا ليس على عدلنا نحن نطرح رافتنا امامك * لكن على رافاتك
19 الكثيرة يا رب * اسمع يا رب * اغفر يا رب * انصت يا رب * واصنع ولا تبطئ من اجلك ايها الرب
20 الهي * لان اسمك دعي على مدينتك وعلى شعبك * فبينما انا اتكلم واصلي * واعترف
بخطاياي وخطايا شعبي اسرائيل * والقي رحمتي امام الرب الهي من اجل الجبل المقدس الذي
21 لالهي * وبينما انا متكلم في صلاتي * واذا الرجل جبريل الذي رايته في الرؤيا في المبداء * طار
22 ولمسني نحو ساعة الذبيحة المسائية * وفهمني وتكلم معي وقال * يا دانيال الآن خرجت لاعلمك
23 الفهم * في مبداء تضرعك خرج القول * وانا اتيت لاخبرك * لانك رجل الشهوات انت * فتفطن
24 بقوتك * وتفهم في الرؤيا * سبعون سابوعا قطعت على شعبك وعلى المدينة المقدسة * لتفني
الخطايا * وتختم الخطايا * وتمحي الاثام * ويستغفر عن الظلم * ويجلب العدل الابدي * وتختم
25 الرؤيا والنبوة * ويمسح قدس القديسين * وتعرف وتفهم من مخرج القول لتجاوب وتبني اورشليم
الى المسيح المقدم سبعة اسابيع * واثنان وستون اسبوعا * فتعود وتبني الرحبة والسور وتفرغ
26 الازمان * وبعد السبعة اسابيع والاثنين وستين اسبوعا تستاصل المسحة * ولا يكون فيه حكم
ويفسد المدينة والموضع المقدس مع المقدم الاتي * ويقطعون بطوفان * الى اخر الحرب المحروم
27 يرتب الفساد * ويقوي عهدا للكثيرين اسبوع واحد * وفي نصف الاسبوع تكف المذابح والذبائح
والى الجناح يكون الفساد * والى الانقضاء * وبسرعة يرتب على الفساد * ويقوي عهدا للكثيرين
اسبوع واحد * وفي نصف الاسبوع تنزع ذبائحي وسكابي * وعلى القدس تكون رذلة الخراب *
والى انقضاء الوقت يعطي انقضاء على الخراب *

Nunc inquam, exaudi O Domine Deus noſter, preces & obſecrationes ſervi tui, & fac appareat facies tua ſuper Sanctuarium tuum deſolatum, propter teipſum O Domine. 17 Admove O Deus meus auditum tuum, & audi; aperi oculos tuos, & aſpice exitium noſtrum & excidium urbis tuæ ſuper quam invocatum eſt nomen tuum: non enim juſtitiis noſtris innixi nos proſternimus miſerationem noſtram coram te, ſed miſerationibus tuis plurimis innixi O Domine. 18 Exaudi O Domine, parce O Domine, auſcultia O Domine, fac & ne tardes; propter temetipſum O Domine Deus meus: quandoquidem nomen tuum invocatum eſt ſuper urbem tuam, & ſuper populum tuum. 19 Dum ego loquerer & orarem, & confiterer peccata mea & peccata populi mei Iſraelis, & proſternerem miſerationem meam coram Domino Deo meo pro monte ſancto Dei mei: 20 Dum inquam, loquerer in oratione mea, ecce vir ille Gabriel quem initio videram in viſione, volavit, tetigitque me ſub horam ſacrificii veſpertini. 21 Is informans me, allocutus eſt me, dixitque; O Daniel, nunc egreſſus ſum ut doceam te ſenſum. 22 In principio ſupplicationis tuæ prodiit ſermo, & ego veni ut indicarem tibi, quandoquidem vir deſideriorum es: itaque animadverte pro viribus tuis, & conſidera viſionem. 23 Septuaginta hebdomades præfinitæ ſunt ſuper populum tuum & ſuper urbem ſanctam, ut abſumantur peccata, & obſignentur peccata, & deleantur iniquitates, & impetretur venia pro impietate, & adducatur juſtitia ſempiterna, & obſignetur viſio & prophetia, & ungatur Sanctum ſanctorum. 24 Scias etiam & intelligas: ab egreſſu ſermonis, ut reſpondeat & ædificetur Jeruſalem, uſq; ad Chriſtum ducem, ſeptem hebdomades erunt, & ſexaginta duæ hebdomades: tunc iterum ædificabitur platea & murus, & terminabuntur tempora. 25 Et poſt ſeptem hebdomades & ſexaginta duas hebdomades eradicabitur unctio, & non erit in eo judicium, & deſtruet urbem & locum ſanctum unà cum duce venturo: & exſcindentur diluvio: uſque ad finem belli præſcripti diſponetur vaſtatio. 26 Confirmabit autem pactum multis hebdomas una, & in medio hebdomadis ceſſabunt altaria & ſacrificia; & uſque ad extremitatem erit vaſtitas, et uſque ad finem. 27 Statimque diſponet ad vaſtitatem, et pactum confirmabit multis hebdomas una: et in dimidio hebdomadis auferetur ſacrificium meum et libamen meum: et ſuper Sanctuarium erit abominatio ruinæ: et uſque ad conſummationem temporis imponetur finis ruinæ.

* الفصل العاشر *

* الرؤيا الحادية عشر *

1 * في السنة الثالثة لكورش ملك الفرس * كشفت كلمة لدانيال الذي دعي اسمه
بلطشاصر * والكلمة حقيقة * وقوة عظيمة وفهم اعطي له في الرؤيا *

CAP. X.

Viſio undecima.

Anno tertio Cyri regis Perſarum, revelatum fuit verbum Danieli, cui impoſitum fuerat nomen Baltaſaſar, (et quidem verbum eſt verum,) et magna vis atque intelligentia conceſſa fuit illi in viſione. 1

vitum & caro & ,comedi non desideriorū Panem .diebus hebdomadarum trium *lugens fui* Daniel ego illis diebus In
2 בימים ההם אני דניאל הייתי מתאבל שלשה שבעים ימים: לחם חמדות לא אכלתי ובשר ויין
quarta & vigesima die in Et .dies hebdomadarum trium *complere ad usque* ;sum unctus non ungendo &,meū os in *venit* non
3 לא בא אל פי וסוך לא סכתי עד מלאת שלשת שבעים ימים: וביום עשרים וארבעה
ecce & , vidi & ,meos oculos levavi Et .Chiddechel *ipsum* ,magni fluminis *manum super* eram *ego &* ; primi mensis
4 לחדש הראשון ואני הייתי על יד הנהר הגדול הוא חדקל: ואשא את עיני וארא והנה
,fulguris aspectus velut ej° facies &,Tarsis sicut ej° corpus Et *.obrizi auri missa in* accincti ej° lumbi & : lineis vestitus unus vir
5 איש אחד לבוש בדים ומתניו חגרים בכתם אופז: וגויתו כתרשיש ופניו כמראה ברק
.tumultus vox sicut ej° verborum vox & *: politi* æris *oculus* sicut ejus pedes & ,ejus brachia & ,ignis lampades ut ejus oculi &
6 ועיניו כלפידי אש וזרעתיו ומרגלתיו כעין נחשת קלל וקול דבריו כקול המון:
terror sed : visionem viderunt non,mecum erant qui viri & : visionem solus Daniel ego vidi Et
7 וראיתי אני דניאל לבדי את המראה והאנשים אשר היו עמי לא ראו את המראה אבל חרדה
,hanc magnam visionem vidi & , solus sum relictus ego Et .absconditum in fugerunt & ,eos super irruit magnus
8 גדלה נפלה עליהם ויברחו בהחבא: ואני נשארתי לבדי ואראה את המראה הגדלה הזאת
vocem audivi Et .fortitudinem retinui non &,corruptionē *in* me in est *versa* mea vis & ;fortitudo me in remansit non &
9 ולא נשאר בי כח והודי נהפך עלי למשחית ולא עצרתי כח: ואשמע את קול
.terram super *meæ facies &* ,*meas facies* super soporatus fui ego & ,ej° verborū vocem *me audire secundum* & : ejus verborum
דבריו וכשמעי את קול דבריו ואני הייתי נרדם על פני ופני ארצה:
vir Daniel , me ad dixit Et .mearū manuum palmas & ,mea genua super me fecit movere & ; me *in* tetigit manus ecce Et
10 והנה יד נגעה בי ותניעני על ברכי וכפות ידי: ויאמר אלי דניאל איש
11 *ipsum loquendo in* & : te ad sum missus nunc quia,tuū *stare* super sta & , te ad *loquens* ego quæ , *verbis in* intellige desideriorū
חמדות הבן בדברים אשר אנכי דבר אליך ועמד על עמדך כי עתה שלחתי אליך ובדברו
quo primo die ex quia ,Daniel timeas Ne ,me ad ait Et .tremens steti , hoc verbum mecum
12 עמי את הדבר הזה עמדתי מרעיד: ויאמר אלי אל תירא דניאל כי מן היום הראשון אשר
princeps Et *tuis verbis in* veni ego & tua verba sunt exaudita ,tuo Deo coram te affigendū ad &,intelligedū ad tuū cor dedisti
13 נתת את לבך להבין ולהתענות לפני אלהיך נשמעו דבריך ואני באתי בדבריך: ושר
:mihi auxiliandū ad venit *primorum principum* unus Michael ecce & ,*die* uno & viginti me contra *stans* Persidis regni
מלכות פרס עמד לנגדי עשרים ואחד יום והנה מיכאל אחד השרים הראשנים בא לעזרני
novissimo in tuo populo est eventurum quod ,te *faciendum* intelligere *ad* veni Et .*Paras reges* apud ibi remansi ego &
14 ואני נותרתי שם אצל מלכי פרס: ובאתי להבינך את אשר יקרה לעמך באחרית
.obmutui & ,terram ad *meas facies dedi* , hæc verba secundum mecum *ipsum loquendo in* Et .dies in visio adhuc quoniam ;dierum
15 הימים כי עוד חזון לימים: ובדברו עמי כדברים האלה נתתי פני ארצה ונאלמתי:
,me contra stantem ad dixi & ,sum locut° & ,meū os aperui & ;mea labia *super tangens* hominis *filiorum* similitudo tanquā ecce Et
16 והנה כדמות בני אדם נגע על שפתי ואפתח פי ואדברה ואמרה אל העמד לנגדי
loqui illius mei domini servus poterit quomodo Et .fortitudinē retinui non &,me *super mea tormina sunt versa* visione in ,mi Domine
17 אדני במראה נהפכו צירי עלי ולא עצרתי כח: והיך יוכל עבד אדני זה לדבר
.me in remansit non *mens* & ,fortitudo me in stetit non *tunc* ex *ego* & ? illo meo domino cum
עם אדני זה ואני מעתה לא יעמד בי כח ונשמה לא נשארה בי:

Versio VULG. LAT.

In diebus illis ego Daniel lugebam trium hebdomadarum
diebus, Panem desiderabilem non comedi, & caro & vinum 3
non introierunt in os meum, sed neque unguento unctus
sum : donec complerentur trium hebdomadarum dies.
Die autem vigesimâ & quartâ mensis primi, eram juxta fluvium 4
magnum, qui est Tigris. Et levavi oculos meos, & 5
vidi : & ecce vir unus vestitus lineis, & renes ejus accincti
auro obrizo : Et corpus ejus quasi chrysolithus, & facies 6
ejus velut species fulguris, & oculi ejus ut lampas ardens
: & brachia ejus, & quæ deorsum sunt usque ad pedes,
quasi species æris candentis : & vox sermonum ejus
ut vox multitudinis. Vidi autem ego Daniel solus visionem 7
: porrò viri, qui erant mecum, non viderunt, sed terror
nimius irruit super eos, & fugerunt in absconditum.
Ego autem relictus solus vidi visionem grandem hanc : & 8
non remansit in me fortitudo, sed & species mea immutata
est in me, & emarcui, nec habui quidquam virium.
Et audivi vocem sermonum ejus : & audiens jacebam consternatus 9
super faciem meam, & vultus meus hærebat terræ.
Et ecce manus tetigit me, & erexit me super genua 10
mea, & super articulos manuum mearum. Et dixit ad me; 11
Daniel vir desideriorum, intellige verba, quæ ego loquor
ad te, & sta in gradu tuo : nunc enim sum missus ad te.
Cùmque dixisset mihi sermonem illum, steti tremens. Et 12
ait ad me ; Noli metuere, Daniel : quia ex die primo, quo
posuisti cor tuum ad intelligendum ut te affligeres in conspectu
Dei tui, exaudita sunt verba tua : & ego veni propter
sermones tuos. Princeps autem regni Persarum restitit 13
mihi viginti et uno diebus : & ecce Michael unus de
principibus primis venit in adjutorium meum, & ego remansi
ibi juxta regem Persarum. Veni autem ut docerem 14
te quæ ventura sunt populo tuo in novissimis diebus, quoniam
adhuc visio in dies. Cùmque loqueretur mihi hujuscemodi 15
verbis, dejeci vultum meum ad terram, & tacui.
Et ecce quasi similitudo filii hominis tetigit labia mea : & 16
aperiens os meum locutus sum : & dixi ad eum qui stabat
contra me : Domine mi, in visione tua dissolutæ sunt compages
meæ, et nihil in me remansit virium. Et quomodo 17
poterit servus Domini mei loqui cum Domino meo ? nihil
enim in me remansit virium, sed & halitus meus intercluditur.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

2 * ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܀ ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܗܘܝܬ ܐܒܝܠ ܬܠܬܐ ܫܒܘܥܝܢ ܕܝܘܡܬܐ ܀
3 * ܠܚܡܐ ܕܪܓܬܐ ܠܐ ܐܟܠܬ. ܘܚܡܪܐ ܘܒܣܪܐ ܠܐ ܥܠ ܠܦܘܡܝ. ܘܡܫܚܐ ܠܐ ܐܬܡܫܚܬ.
4 ܥܕܡܐ ܕܫܠܡܘ ܬܠܬܐ ܫܒܘܥܝܢ ܕܝܘܡܬܐ. * ܒܝܘܡ ܥܣܪܝܢ ܘܐܪܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܩܕܡܝܐ ܀
5 ܐܢܐ ܗܘܝܬ ܥܠ ܝܕ ܢܗܪܐ ܪܒܐ ܦܪܬ. * ܘܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ ܀ ܘܗܐ ܓܒܪܐ ܚܕ ܠܒܝܫ
6 ܒܠܒܘܫܐ ܕܐܝܩܪܐ: ܘܚܨܘܗܝ ܚܝܨܝܢ ܒܫܘܒܚܐ ܕܐܝܩܪܐ. * ܘܚܙܘܗ ܡܫܚܠܦ ܗܘܐ. ܘܠܐ
ܐܝܬ ܗܘܐ ܠܗ ܕܡܘܬܐ. ܘܐܦܘܗܝ ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܒܪܩܐ. ܘܥܝܢܘܗܝ ܐܝܟ ܠܡܦܐܕܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܕܪܥܘܗܝ
ܘܟܬܦܬܗ ܐܝܟ ܙܠܝܩܐ ܕܢܚܫܐ ܕܡܨܛܠܚ. ܘܩܠܐ ܕܡܡܠܠܘܗܝ ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܡܫܪܝܬܐ ܣܓܝܐܐ.
7 * ܘܚܙܝܬ ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܒܠܚܘܕܝ ܚܙܘܐ ܗܢܐ. ܘܓܒܪܐ ܕܗܘܘ ܥܡܝ ܠܐ ܚܙܘ. ܐܠܐ ܕܚܠܬܐ ܪܒܬܐ
8 ܢܦܠܬ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܥܪܩܘ ܡܢ ܕܚܠܬܐ. * ܘܐܢܐ ܒܠܚܘܕܝ ܐܫܬܒܩܬ ܘܚܙܝܬ ܚܙܘܐ
ܗܢܐ ܪܒܐ. ܘܠܐ ܐܫܬܚܪܬ ܒܝ ܚܝܠܐ. ܘܓܘܝ ܐܬܗܦܟܘ ܠܡܚܒܠܢܘܬܐ. ܘܠܐ ܗܘܐ ܒܝ ܚܝܠܐ.
9 * ܘܟܕ ܫܡܥܬ ܩܠܐ ܕܡܠܘܗܝ. ܢܦܠܬ ܥܠ ܐܦܝ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܘܗܐ ܐܝܕܐ ܩܪܒܬ ܒܝ.
10
11 ܘܐܩܝܡܬܢܝ ܥܠ ܒܘܪܟܝ ܘܥܠ ܦܣܬ ܐܝܕܝ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܩܘܡ ܕܢܝܐܝܠ ܓܒܪܐ ܕܪܓܬܐ.
ܘܐܣܬܟܠ ܒܦܬܓܡܐ ܕܡܡܠܠ ܐܢܐ ܥܡܟ. ܘܩܘܡ ܥܠ ܩܝܡܟ. ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܐܫܬܕܪܬ
12 ܠܘܬܟ. ܘܟܕ ܡܡܠܠ ܗܘܐ ܥܡܝ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ. ܩܡܬ ܟܕ ܪܬܝܬ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܠܐ ܬܕܚܠ
ܕܢܝܐܝܠ: ܡܛܠ ܕܡܢ ܝܘܡܐ ܩܕܡܝܐ ܕܝܗܒܬ ܠܒܟ ܠܡܣܬܟܠܘ. ܘܠܡܬܡܟܟܘ ܩܕܡ
13 ܐܠܗܟ. ܐܫܬܡܥܘ ܡܠܝܟ. ܘܐܢܐ ܐܬܝܬ ܒܡܠܝܟ. * ܘܪܫܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܦܪܣ.
ܩܡ ܠܘܩܒܠܝ ܥܣܪܝܢ ܘܚܕ ܝܘܡܝܢ. ܘܗܐ ܡܝܟܐܝܠ ܚܕ ܡܢ ܪ̈ܫܢܐ ܩܕܡܝܐ ܐܬܐ ܠܡܥܕܪܢܝ. ܘܐܢܐ
14 ܐܬܟܠܝܬ ܬܡܢ ܠܘܩܒܠ ܡܠܟܐ ܕܦܪܣ. * ܘܐܬܝܬ ܠܡܘܕܥܘܬܟ ܡܕܡ ܕܥܬܝܕ ܕܢܗܘܐ ܠܥܡܟ ܒܚܪܬ ܝܘܡܬܐ.
15 ܡܛܠ ܕܥܕܟܝܠ ܚܙܘܐ ܠܚܪܬ ܝܘܡܬܐ. * ܘܟܕ ܡܡܠܠ ܗܘܐ ܥܡܝ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ. ܐܪܟܢܬ ܐܦܝ ܠܐܪܥܐ ܘܫܬܩܬ. * ܘܗܐ
16 ܐܝܟ ܕܡܘܬܐ ܕܒܪܢܫܐ ܩܪܒܬ ܠܣܦܘܬܝ. ܘܦܬܚܬ ܦܘܡܝ ܘܡܠܠܬ. * ܘܐܡܪܬ ܠܗܘ ܕܩܐܡ ܗܘܐ ܠܘܩܒܠܝ
ܡܪܝ ܒܚܙܘܐ ܗܢܐ ܐܬܗܦܟܘ ܓܘܝ ܒܝ. ܘܠܐ ܐܫܬܚܪܬ ܚܝܠܐ.
17 * ܘܐܝܟܢܐ ܡܫܟܚ ܥܒܕܐ ܕܡܪܝ ܗܢܐ ܠܡܡܠܠܘ ܥܡ ܡܪܝ ܗܢܐ. ܘܗܫܐ ܠܐ ܩܡ ܒܝ ܚܝܠܐ. ܘܢܫܡܬܐ ܠܐ
ܐܫܬܚܪܬ ܒܝ.

In diebus illis ego Daniel luctui me dedi trium 2
hebdomadarum diebus : Cibum delectabilem 3
non comedi, vinum & caro non
sunt ingressa os meum, neque unguento me
unxi, donec explerentur trium hebdomadarum
dies. Die vigesimâ quartâ mensis primi 4
eram secus fluvium magnum Eufratem;
Et sublatis oculis vidi, & ecce vir quidam indutus 5
magnificentissimis vestibus, cujus lumbi
præcincti erant majestate gloriæ, Cujus 6
aspectus varius erat, neque formam habebat
: vultus ejus similis speciei fulguris, oculi
ejus similes lampadibus igneis, brachia &
humeri ejus similia scintillis æris nitentis, &
vox sermonum ejus similis strepitui exercituum 7
multorum. Hanc visionem ego Daniel
solus vidi, viri autem illi qui mecum erant,
non viderunt ; sed magnâ formidine perculsis,
& præ timore fugientibus, Ego solus 8
remansi, & vidi visionem hanc magnam:
unde viribus destitutus fui, præcordia mea
volutata sunt ad interitum, neque manserunt
in me vires. Et cùm audissem vocem verborum 9
ejus, cecidi in faciem meam super terram
: Sed ecce manus tetigit me, erexitque 10
me super genua mea & super palmas manuum
mearum. Et dixit mihi; Sta Daniel 11
vir cupide, & intellige sermonem quem tibi
locuturus sum ; sta rectus : nunc enim ad te
missus sum. Dum hisce me verbis alloqueretur,
steti contremiscens. Tum dixit mihi, 12
Ne timeto Daniel : nam inde à primo die
quo animum tuum ad scientiam applicuisti,
sistendo te coram Deo tuo ; exaudita fuerunt
verba tua, & ego verborum tuorum causâ
veni. Præses regni Persarum adversatus est 13
mihi uno & viginti diebus : at ecce Michael
unus è principibus primariis venit ad auxiliandum
mihi : retardatus itaque sum ibi
contra præsidem Persarum. Jam venio indicatum 14
tibi id quod eventurum est populo
tuo postremis diebus : quoniam adhuc visio
ad finem usque dierum. Dum hisce me verbis 15
alloqueretur, demisi vultum meum in
terram, & obmutui. Sed ecce quasi forma 16
quædam humana tetigit labia mea, aperuique
os meum, & locutus dixi ad eum qui stabat
ante me ; Domine mi, propter visionem
volutata sunt in me præcordia mea, ita ut stare
non potuerim: Quomodo ergò posset servus 17
tanti Domini loqui cum tanto Domino
meo ; cùm ecce nullæ sint in me vires, & aura
vitalis non supersit in me ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

3 Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἐγὼ Δανιὴλ ἤμην πενθῶν τρεῖς ἑβδομάδας ἡμερῶν, Ἄρτον ἐπιθυμιῶν οὐκ ἔφαγον,
καὶ κρέας καὶ οἶνος οὐκ εἰσῆλθεν εἰς τὸ στόμα μου, καὶ ἄλειμμα οὐκ ἠλειψάμην, ἕως πληρώσεως τριῶν ἑβδομάδων
4 ἡμερῶν. Ἐν ἡμέρᾳ εἰκοστῇ (*) τετάρτῃ τοῦ μηνὸς τοῦ πρώτου, καὶ ἐγὼ ἤμην ἐχόμενα τοῦ ποταμοῦ τοῦ μεγάλου, αὐτός
5 ἐστι Τίγρις (α) Ἐδδεκέλ. Καὶ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ εἷς ἐνδεδυμένος βαδδὶν, καὶ
6 ἡ ὀσφὺς αὐτοῦ περιεζωσμένη ἐν χρυσίῳ Ὠφάζ, Καὶ τὸ σῶμα αὐτοῦ ὡσεὶ Θαρσὶς, καὶ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ὡς
(β) ἡ ὅρασις ἀστραπῆς, καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτοῦ (γ) ὡσεὶ λαμπάδες πυρὸς, καὶ οἱ βραχίονες αὐτοῦ καὶ τὰ σκέλη
7 ὡς ὅρασις χαλκοῦ στίλβοντος, καὶ ἡ φωνὴ τῶν λόγων αὐτοῦ ὡς φωνὴ ὄχλου. Καὶ ἴδον ἐγὼ Δανιὴλ μόνος τὴν
ὀπτασίαν, καὶ οἱ ἄνδρες οἱ μετ' ἐμοῦ οὐκ ἴδον τὴν ὀπτασίαν· ἀλλ' ἡ ἔκστασις μεγάλη ἐπέπεσεν ἐπ' αὐτοὺς, καὶ ἔφυγον
8 ἐν φόβῳ. (δ) Καὶ ἐγὼ ὑπελείφθην μόνος, καὶ ἴδον τὴν ὀπτασίαν τὴν μεγάλην ταύτην, καὶ οὐχ ὑπελείφθη
9 ἐν ἐμοὶ ἰσχὺς, καὶ ἡ (ε) δόξα μου μετεστράφη εἰς διαφθοράν· καὶ οὐκ ἐκράτησα ἰσχύος. Καὶ ἤκουσα τὴν
φωνὴν τῶν λόγων αὐτοῦ· καὶ ἐν τῷ ἀκοῦσαί με (ζ) αὐτοῦ, ἤμην κατανενυγμένος, καὶ τὸ πρόσωπόν μου ἐπὶ τὴν
10 11 γῆν. Καὶ ἰδοὺ χεὶρ ἁπτομένη μου, καὶ ἤγειρέ με ἐπὶ τὰ γόνατά μου (η). Καὶ εἶπε πρός με, Δανιὴλ ἀνὴρ ἐπιθυμιῶν,
σύνες ἐν τοῖς λόγοις οἷς ἐγὼ λαλῶ πρὸς σὲ, καὶ στῆθι ἐπὶ τῇ στάσει σου, ὅτι νῦν ἀπεστάλην πρὸς σέ.
12 Καὶ ἐν τῷ λαλῆσαι αὐτὸν πρός με τὸν λόγον τοῦτον, ἀνέστην ἔντρομος. Καὶ εἶπε πρός με, Μὴ φοβοῦ (θ) Δανιὴλ,
ὅτι ἀπὸ τῆς πρώτης ἡμέρας ἧς ἔδωκας τὴν καρδίαν σου τοῦ συνεῖναι, καὶ (ι) κακωθῆναι ἐναντίον κυρίου
13 τοῦ θεοῦ σου, ἠκούσθησαν οἱ λόγοι σου, καὶ ἐγὼ ἦλθον ἐν τοῖς λόγοις σου. Καὶ ὁ ἄρχων βασιλείας Περσῶν εἱστήκει
ἐξεναντίας μου (κ) εἴκοσι καὶ μίαν ἡμέραν· καὶ ἰδοὺ Μιχαὴλ εἷς τῶν ἀρχόντων (λ) ἦλθε βοηθῆσαί
14 μοι, καὶ αὐτὸν κατέλιπον ἐκεῖ μετὰ τοῦ ἄρχοντος βασιλείας Περσῶν, Καὶ ἦλθον συνετίσαι σε ὅσα ἀπαντήσεται
15 τῷ λαῷ σου ἐπ' ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν, ὅτι (μ) ἔτι ἡ ὅρασις εἰς ἡμέρας. Καὶ ἐν τῷ λαλῆσαι αὐτὸν
16 μετ' ἐμοῦ κατὰ τοὺς λόγους τούτους, ἔδωκα τὸ πρόσωπόν μου ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ κατενύγην. Καὶ ἰδοὺ ὡς ὁμοίωσις
υἱοῦ ἀνθρώπου ἥψατο τῶν χειλέων μου. (ν) καὶ ἤνοιξα τὸ στόμα μου, καὶ ἐλάλησα, καὶ εἶπα πρὸς τὸν ἑστῶτα ἐναντίον
17 μου, Κύριε, ἐν τῇ ὀπτασίᾳ σου ἐστράφη τὰ ἐντός μου ἐν ἐμοὶ, καὶ οὐκ ἔσχον ἰσχύν. Καὶ πῶς δυνήσεται ὁ
παῖς σου κύριε λαλῆσαι μετὰ τοῦ κυρίου μου τούτου; καὶ ἐγὼ, ἀπὸ τοῦ νῦν οὐ στήσεται ἐν ἐμοὶ ἰσχὺς, καὶ (ξ) πνεῦμα
οὐχ ὑπελείφθη ἐν ἐμοί.

In diebus illis ego Daniel eram lugens tres hebdomadas dierum : 2
*Panem * deſideriorum non comêdi : & caro, & vinum non introierunt* 3
in os meum : & unguento non ſum unctus uſque ad completionem trium
hebdomadum dierum. In die vigeſima quarta menſis (a) primi & ego 4
eram juxta fluvium magnum : (ipſe eſt (b) Tigris Eddecel :) Et levavi 5
oculos meos, & vidi : & ecce vir unus veſtitus (c) Baddin ; & renes ejus
(d) accincti auro Ophaz : Et corpus ejus quaſi Tharſis : & facies ejus, vel- 6
uti ſpecies fulguris : & oculi ejus, ut lampades ignis : & brachia ejus, &
crura, quaſi ſpecies æris candentis : & vox ſermonum ejus, ut vox multitudinis.
Et vidi ego Daniel ſolus viſionem : & viri, qui erant mecum, 7
non viderunt viſionem : ſed terror magnus irruit ſuper eos : & fugerunt
in timore. Et ego relictus ſum ſolus, & vidi viſionem grandem hanc : & 8
non remanſit in me fortitudo : & gloria mea converſa eſt in corruptionem :
& non retinui fortitudinem. Et audivi vocem ſermonum ejus : & audiens 9
ego (e) eum, eram compunctus : & facies mea ſuper terram. Et ecce manus 10
tangens me : & erexit me ſuper genua (f) mea : Et dixit ad me ; Daniel, 11
(g) vir deſideriorum, intellige in verbis, quæ ego loquor ad te ; & ſta in gra-
du tuo : nunc enim ſum miſſus ad te. Cúmque dixiſſet ipſe ad me ſermonem
iſtum ; ſurrexi tremens. Et dixit ad me ; Noli metuere, Daniel, quia ex 12
die primo, quo poſuiſti cor tuum ad intelligendum, & affligendum te coram
Domino Deo tuo ; audita ſunt verba tua : & ego veni in verbis tuis. Et 13
princeps regni Perſarum ſtetit ex adverſo mihi viginti & uno diebus. Et
ecce Michael unus de (h) principibus venit ad auxiliandum mihi : & ipſum
reliqui ibi cum principe regni Perſarum : Et veni, ut docerem te, quæ oc- 14
current populo tuo in noviſſimis diebus : quoniam adhuc viſio in dies. Cúm- 15
que loqueretur ipſe mecum ſecundùm hujuſcemodi verba ; dedi faciem me-
am in terram, et compunctus ſum. Et ecce quaſi ſimilitudo filii hominis te- 16
tigit labia mea. Et aperui os meum, et loquutus ſum, et dixi ad eum, qui
ſtabat contra me : (i) Domine, in viſione tua converſa ſunt interiora mea in
me : et non retinui fortitudinem. Et quomodò poterit ſervus tuus, Domine, loqui cum Domino meo iſto ? Et
(k) ego, ex nunc non ſtabit in me fortitudo : et non remanſit ſpiritus in me. 17

MS.A. (*) καὶ τετάρτῃ (α) Ἐνδεκέλ. (β) ὅρασις (γ) ὡς (δ) Κἀγὼ (ε) Ὄψις μου (ζ) φωνὴν ῥημάτων αὐτοῦ, (η) καὶ ταρσοὺς χειρῶν μου. Καὶ (θ) Δανιὴλ, * ἧς ἔδωκας ✝ (ι) τοῦ κακωθῆναι (κ) καὶ εἴκοσι (λ) τῶν πρώτων ἦλθε (μ) ὅρασις εἰς (ν) καὶ ἐλάλησα, καὶ (ξ) πνοή

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* وفي تلك الايام انا دانيال كنت حزينا ثلاثة اسابيع اياما * خبز الشهوات لم آكل * ولحم 3
وخمر لم يدخل في فمي * ولم ادهن دهنه الى ان كملت ثلاثة اسابيع اياما * وكان في السنة 4
الثامنة عشر * في اليوم الرابع والعشرين من الشهر الاول * وانا كنت قريبا من النهر العظيم
الذي هو الدجلة اداكل * فرفعت عيني ونظرت واذا رجل واحد لابس ثياب كرامة * 5
وحقوه ممنطق بذهب اوفاز * وجسمه مثل ترسيس * ووجهه مثل منظر البرق * وعيناه 6
كمصباحي نار * وذراعاه وساقاه مثل منظر نحاس يلمع * وصوت كلماته كصوت جمع *
* ونظرت انا دانيال وحدي الرؤيا * والرجال الذين معي لم يروا الرؤيا * لكن وقعت عليهم 7
بهتة * وهربوا بخوف * وانا بقيت وحدي * وابصرت هذه الرؤيا العظيمة * ولم تبق لي قوة * 8
وانقلب نجدي الى فساد * ولم امسك قوة * وسمعت صوت كلماته * وعند ما سمعت صوت كلماته 9
صرت متخشعا ووجهي على الارض * واذا يد لمستني واقامتني على ركبتي واسباط رجلي * وقال 10 11
لي * يا دانيال رجل الشهوات تفهم في الكلمات التي اتكلم معك بهن * وقم على مقامك * لاني
الان ارسلت اليك * وبينما هو يتكلم معي هذه الكلمة قمت مرتعدا * فقال لا تخف يا دانيال * 12
لان منذ اليوم الاول الذي فيه اعطيت قلبك لتفهم ولتسعى امام الرب الهك سمعت
كلماتك * وانا اتيت في كلماتك * ورئيس مملكة الفرس قام بازائي احدا وعشرين يوما * وها 13
ميخائيل الواحد من الرؤساء الاولين اتى ليعينني * وخلفته هناك مع رئيس مملكة الفرس *
* واتيت لافهمك ما يلتقي شعبك في الايام الاخيرة * لان الرؤيا ايضا الى ايام * وبينما هو 14 15
يتكلم معي بهذا الكلام * اعطيت وجهي على الارض وخشعت * واذا مثل شبه ابن انسان 16
ولمس شفتي * ففتحت فمي وتكلمت * وقلت للواقف امامي * يا سيد في رؤياي انقلب داخلي
في * ولم املك قوة * وكيف يقدر عبدك يا سيد ان اتكلم مع سيدي هذا * وانا منذ الان 17
لم تبق في قوة * ولم تبق في نسمة *

Et iis diebus ego Daniel mœſtus fui tribus 2
dierum hebdomadibus : Panem volupta- 3
tum non comêdi, caro & vinum non ſunt
ingreſſa in os meum, neque unxi me un-
ctione ullâ, donec abſolverentur tres di-
erum hebdomades. Itaque contigit anno 4
decimo octavo, die vigeſimâ quartâ men-
ſis primi, ut exiſtens prope fluvium ma-
gnum qui eſt Tigris Eddekel, Levarem 5
oculos meos & viderem cùm ecce vir
quidam indutus veſtibus honoris, cujus
lumbus præcinctus erat auro Ophaz, Cor- 6
pus ejus ſimile lapidi tharſis, vultus ejus
quaſi aſpectus fulguris, oculi ejus veluti
geminæ faces igneæ, brachia & crura ve-
lut aſpectus æris coruſcantis, & vox
verborum ejus ut vox turbæ. Vidi autem 7
ego Daniel ſolus viſionem iſtam ; nam
viri illi qui mecum erant, non viderunt
hanc viſionem ; ſed obruti ſtupore fuge-
runt cum formidine : Et ego ſolus relictus 8
vidi viſionem hanc maximam, neque re-
manſit mihi virtus, ſed immutatus eſt ni-
tor meus in corruptionem, & non obtinui
vires. Deinde audivi vocem verborum 9
ejus ; & cùm audiſſem vocem verborum
ejus, ſupplicare cœpi vultu humo hæren-
te : Sed ecce manus tetigit me, erexitque 10
ſuper genua mea et extremos pedes meos.
Et dixit mihi ; O Daniel vir deſiderio- 11
rum, conſidera verba quæ ego habiturus
ſum tecum, & ſta in ſtatione tua ; nunc
enim miſſus ſum ad te. Dum ipſe mecum
inſtitueret hujuſmodi ſermonem, ſteti tre-
mens. Quamobrem dixit, Ne timeas O 12
Daniel : quoniam à primo die quo animum
tuum adhibuiſti ad intelligendum & la-
borandum coram Domino Deo tuo, exau-
dita fuerunt verba tua : Et ego veniſſem
pro verbis tuis ; Sed princeps regni Perſa- 13
rum ſtetit mihi ab adverſo uno & vigin-
ti diebus. Verùm ecce Michael unus è
præcipuis principibus, venit ad auxilian-
dum mihi ; & eum ibi reliqui cum prin-
cipe regni Perſarum, Et veni ut decla- 14
rem tibi quæ ſunt eventura populo tuo po-
ſtremis diebus : quoniam viſio adhuc eſt
ad dies aliquot. Dum is alloqueretur me 15
hujuſmodi ſermone, demiſi vultum meum
in terram, & ſupplicavi. Tum ecce quaſi 16
ſpecies filii hominis, tetigit labia mea, &
aperui os meum, locutuſque ſum, ac dixi
ad eum qui ſtabat coram me ; O domine,
in viſione mea volutata ſunt intra me vi-
ſcera mea, nec ullas poſſideo vires. Quo 17
igitur pacto poſſet ſervus tuus O domine
alloqui dominum meum iſtum ; quando-
quidem ex nunc nullæ manſerunt in me
vires, neque ſupereſt in me halitus ?

דניאל : יא

18 ,te conforta ,tibi pax ,desideriorū vir timeas Ne ,dixit Et .me confortavit &,hominis visio tanquā ,me *in* tetigit & ,addidit Et
19 וַיֹּסֶף וַיִּגַּע־בִּי כְּמַרְאֵה אָדָם וַיְחַזְּקֵנִי׃ וַיֹּאמֶר אַל־תִּירָא אִישׁ־חֲמֻדוֹת שָׁלוֹם לָךְ חֲזַק
nosti Num ,ait Et .me confortasti quia ,meus dominus Loquatur ,dixi & ,sum confortat⁹ ,mecū *ipsum loqui secundū* & :te robora &
20 וַחֲזָק וּכְדַבְּרוֹ עִמִּי הִתְחַזַּקְתִּי וָאֹמְרָה יְדַבֵּר אֲדֹנִי כִּי חִזַּקְתָּנִי׃ וַיֹּאמֶר הֲיָדַעְתָּ
.venit *Javan* princeps ecce & ,*egrediens* ego & : Persidis principe cum *bellandum ad* ,revertar nunc & ? te ad venerim quid ut
לָמָּה־בָּאתִי אֵלֶיךָ וְעַתָּה אָשׁוּב לְהִלָּחֵם עִם־שַׂר פָּרָס וַאֲנִי יוֹצֵא וְהִנֵּה שַׂר־יָוָן בָּא׃
.vester princeps Michael nisi ,his super mecum *se fortificans* unus non & :veritatis scriptura in *designatum* tibi annuntiabo Sed
21 אֲבָל אַגִּיד לְךָ אֶת־הָרָשׁוּם בִּכְתָב אֱמֶת וְאֵין אֶחָד מִתְחַזֵּק עִמִּי עַל־אֵלֶּה כִּי אִם־מִיכָאֵל שַׂרְכֶם׃

CAP. XI. יא

Ecce :tibi annuntiabo veritatem nunc Et. eum roborandum ad & confortandū ad *me stare* ,Medi Dariaves *uno* anno in ego Et
1 וַאֲנִי בִּשְׁנַת אַחַת לְדָרְיָוֶשׁ הַמָּדִי עָמְדִי לְמַחֲזִיק וּלְמָעוֹז לוֹ׃ וְעַתָּה אֱמֶת אַגִּיד לָךְ הִנֵּה־
2 *sua opulentia in ipsum roborari secundū* & :omnib⁹ præ *magna opulentia* ditabitur quartus & ,Perside in *stantes* reges tres adhuc
עוֹד שְׁלֹשָׁה מְלָכִים עֹמְדִים לְפָרַס וְהָרְבִיעִי יַעֲשִׁיר עֹשֶׁר־גָּדוֹל מִכֹּל וּכְחֶזְקָתוֹ בְעָשְׁרוֹ
.suā voluntatē secundū faciet & ,multo dominio dominabitur & ,fortis rex stabit Et .*Javan regno cum* omnes suscitabit
3 יָעִיר הַכֹּל אֵת מַלְכוּת יָוָן׃ וְעָמַד מֶלֶךְ גִּבּוֹר וּמָשַׁל מִמְשָׁל רַב וְעָשָׂה כִּרְצוֹנוֹ׃
ej⁹ dominiū secundū non &,ej⁹ posteritatē in non & ;cœlorum ventos quatuor in dividetur &,ej⁹ regnū conteretur,*ipsū stare secundū* Et
4 וּכְעָמְדוֹ תִּשָּׁבֵר מַלְכוּתוֹ וְתֵחָץ לְאַרְבַּע רוּחוֹת הַשָּׁמָיִם וְלֹא לְאַחֲרִיתוֹ וְלֹא כְמָשְׁלוֹ
;ejus principib⁹ de & ,Austri rex confortabitur Et .istos præter aliis & ,ej⁹ regnū extirpabitur quia ,est dominat⁹ quo
5 אֲשֶׁר מָשָׁל כִּי תִנָּתֵשׁ מַלְכוּתוֹ וְלַאֲחֵרִים מִלְּבַד־אֵלֶּה׃ וְיֶחֱזַק מֶלֶךְ־הַנֶּגֶב וּמִן־שָׂרָיו
veniet Austri regis filia & ,cōjungētur annorū fine in Et .ej⁹ dominatio multa dominatio ,dominabitur & ,eum sup roborabitur &
6 וְיֶחֱזַק עָלָיו וּמָשָׁל מִמְשָׁל רַב מֶמְשַׁלְתּוֹ׃ וּלְקֵץ שָׁנִים יִתְחַבָּרוּ וּבַת מֶלֶךְ־הַנֶּגֶב תָּבוֹא
,ipsa tradetur & ;ej⁹ semen & ,stabit non & ,brachii fortitudinē obtinebit non & ;rectitudines *faciendum ad* ,Aquilonis regem ad
אֶל־מֶלֶךְ הַצָּפוֹן לַעֲשׂוֹת מֵישָׁרִים וְלֹא־תַעְצֹר כּוֹחַ הַזְּרוֹעַ וְלֹא יַעֲמֹד וּזְרֹעוֹ וְתִנָּתֵן הִיא
,exercitū ad veniet et ;ej⁹ *basis* ej⁹ radicum *virgulto* de stabit Et .temporibus in eam confortans et ,ejus genitor et ,eam adducentes et
7 וּמְבִיאֶיהָ וְהַיֹּלְדָהּ וּמַחֲזִקָהּ בָּעִתִּים׃ וְעָמַד מִנֵּצֶר שָׁרָשֶׁיהָ כַּנּוֹ וְיָבֹא אֶל־הַחַיִל
,eorum principibus cum eorum Deus etiam Et .confortabitur et eis in faciet et ,Aquilonis regis munitionem *in* ingredietur et
8 וְיָבֹא בְּמָעוֹז מֶלֶךְ הַצָּפוֹן וְעָשָׂה בָהֶם וְהֶחֱזִיק׃ וְגַם אֱלֹהֵיהֶם עִם־נְסִכֵיהֶם
.Aquilonis *rege à* stabit annos ipse & : Ægyptum adducet captivitatem in *auri & ,argenti* ,eorum *desiderii* vasis cum
עִם־כְּלֵי חֶמְדָּתָם כֶּסֶף וְזָהָב בַּשְּׁבִי יָבִא מִצְרָיִם וְהוּא שָׁנִים יַעֲמֹד מִמֶּלֶךְ הַצָּפוֹן׃

Versio VULG. LAT.

Rursum ergò tetigit me quasi visio hominis, & confortavit me, Et dixit; Noli timere, vir desideriorum : pax tibi : confortare, & esto robustus. Cúmque loqueretur mecum, convalui, & dixi ; Loquere, Domine mi, quia confortasti me. Et ait ; Numquid scis quarè venerim ad te ? & nunc revertar ut prælier adversùm principem Persarum : cum ego egrederer, apparuit princeps Græcorum veniens. Verumtamen annuntiabo tibi quod expressum est in scriptura veritatis : & nemo est adjutor meus in omnibus his, nisi Michael princeps vester.

CAP. XI.

EGo autem ab anno primo Darii Medi stabam ut confortaretur, & roboraretur. Et nunc veritatem annuntiabo tibi. Ecce adhuc tres reges stabunt in Perside, & quartus ditabitur opibus nimiis super omnes : & cùm invaluerit divitiis suis, concitabit omnes adversùm regnum Græciæ. Surget verò rex fortis, & dominabitur potestate multa, & faciet quod placuerit ei. Et cùm steterit, conteretur regnum ejus, & dividetur in quatuor ventos cœli; sed non in posteros ejus, neque secundùm potentiam illius, quâ dominatus est : lacerabitur enim regnum ejus etiam in externos, exceptis his. Et confortabitur rex Austri : & de Principibus ejus prævalebit super eum, & dominabitur ditione : multa enim dominatio ejus. Et post finem annorum fœderabuntur : filiáque regis Austri veniet ad regem Aquilonis facere amicitiam, & non obtinebit fortitudinem brachii, nec stabit semen ejus : & tradetur ipsa, & qui adduxerunt eam, adolescentes ejus, & qui confortabant eam in temporib⁹. Et stabit de germine radicū ej⁹ plantatio : & veniet cum exercitu, & ingredietur provinciam regis Aquilonis : & abutetur eis, & obtinebit. Insupèr & deos eorū, & sculptilia, vasa quoq; pretiosa argenti & auri, captiva ducet in Ægyptum : ipse prævalebit adversùs regem Aquilonis.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

18 [illegible]
19 [illegible]
20 [illegible]
21 [illegible]
1 [illegible]
2 [illegible]
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]
7 [illegible]
8 [illegible]

Rursus tetigit me quasi forma humana, & confirmavit me, Dixítque mihi ; Ne timeto vir cupide, pax tibi, confirmare, animúmque resume. Dum loqueretur mecum, recepi me, & dixi ; Loquatur Dominus meus, quia recepi me. Qui dixit mihi ; Nostine quam ob rem venerim ad te ? Jam redeo ad bellum gerendum contra præsidem Persidis, sed & me egrediente en advenit præses Græcorum. Verùm indicabo tibi quod exaratum est in libro veritatis, licèt nemo me juverit in his omnib⁹, nisi Michael præses vester & ego.

CAP. XI.

AB anno *enim* primo Darii Medi surrexit ad juvandum me & opem mihi ferendum : Quapropter veritatem ostendam tibi. Tres adhuc reges surrecturi sunt in Perside : *Darius Ahsiri filius*, deinde quartus ingenti copiâ divitiarum superabit omnes; cúmque magnus evaserit in patria sua, concitabit omnia regna Græcorum. Surget etiam rex potentissim⁹, *Alexander primus Philippi filius*, qui dominabitur dominatione amplâ, agetque pro voluntate sua. Eo adhuc existente, frangetur regnum ejus ; frangetur inquam, in quatuor cœli ventos : (*hoc est, in quatuor Alexandri filii Philippi servos, qui regnaverunt post obitum ejus eò quòd prolem non habuerit. Regnaverunt* autem *post eum, unus in Ægypto, alter in Syria, alius in Asia, alius denique in Babylonia. Qui verò suis cum posteris invicem bellum gessêre, fuerunt Ptolemæus ad Meridiem in Ægypto, Demetrius in Syria in medio, & Antiochus Epiphanes ad Aquilonem in Asia*) sed nequaquam simili gladio, neque simili dominatione quâ dominatus est. Attamen evelletur regnū illius: nec erit aliis præter istos. *Ptolemæus rex Ægypti contra Alexandrum minorem filium Philippi. Antiochus Asiaticus*, Et magnificabitur rex Austri cum principibus suis, & prævalebit ei, & dominabitur dominatu magno: (*de Ptolemæo loquitur:*) Sed exactis aliquot annis fœdere jungentur: filiā Ptolemæi dabit Alexandro fratri Antiochi & Petri: & filia regis Austri abibit ad regem Aquilonis. *Alexander abiens* assumet Pataram Ptolemæi filiam ut sit sibi uxor, ad hoc ut pacem inter eos conciliet : (*Ptolemæus venit contra Alexandrum generum suum ad occidendum eum*) at non poterit, propter metū quo ipsa afficietur. Imo *filia Ptolemæi quæ dabitur Demetrio post occisum Alexandri mariti sui*, tradetur ipsa, & qui adduxerint eam, adolescentulæ ejus, & qui subsidio fuerint ei, illis temporibus. Surgetque de stirpe seminis ejus super patriam ipsius; qui veniens cum exercitu, & invadens cum potentia regem Aquilonis, permeabit eos, & præpollebit : Et deos eorum, & supellectiles eorum exquisitas, argentū, aurum, atque captivos abducet in Ægyptum : atque hic duplo magìs elevabitur supra regē Aquilonis, *Ptolemæus scilicèt supra Alexandrum*

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Interpretatione LATINA.

19 Καὶ προσέθετο, καὶ ἥψατό μου ὡς ὅρασις ἀνθρώπου, καὶ ἐνίσχυσέ με, Καὶ εἶπέ μοι, Μὴ φοβοῦ ἀνὴρ ἐπιθυμιῶν, εἰρήνη σοι· ἀνδρίζου καὶ ἴσχυε. καὶ ἐν τῷ λαλῆσαι αὐτὸν μετ' ἐμοῦ, ἴσχυσα, καὶ εἶπα, Λαλείτω ὁ κύριός μου, 20 ὅτι ἐνίσχυσάς με. Καὶ (ο) εἶπεν, Εἰ οἶδας ἱνατί ἦλθον πρὸς σέ; καὶ νῦν (π) ἐπιστρέψω τοῦ πολεμῆσαι μετὰ (ρ) 21 τοῦ ἄρχοντος Περσῶν· καὶ ἐγὼ (σ) εἰσεπορευόμην, καὶ ὁ ἄρχων τῶν Ἑλλήνων ἤρχετο. Ἀλλ' ἢ ἀναγγελῶ σοι τὸ ἐντεταγμένον ἐν γραφῇ ἀληθείας, καὶ οὐκ ἔστιν εἷς ἀντεχόμενος μετ' ἐμοῦ (τ) περὶ τούτων, ἀλλ' (υ) ἢ Μιχαὴλ ὁ ἄρχων ὑμῶν.

MS. A. (ο) εἶπέν μοι, (π) ἐπιστρέφω (ρ) ἀρχόντων (σ) ἐξεπορευόμην, (τ) ὑπὲρ (υ) ἡμῖν Μιχαὴλ

Et addidit, & tetigit me quaſi viſio hominis, & confortavit me, 18 *Et dixit mihi; Noli timere, vir deſideriorum: pax tibi. Viriliter age, &* 19 *confortare. Cùmque loqueretur ipſe mecum; convalui; & dixi; Loquatur Dominus meus, quia confortâſti me. Et dixit; Nunquid ſcis, quarè ve-* 20 *nerim ad te? Et nunc revertar, ut prælier cum principe Perſarum: & ego ingrediebar, & princeps Græcorum veniebat. Veruntamen annuntiabo* 21 *tibi, quod conſtitutum eſt in ſcriptura veritatis. Et non eſt unus adhærens mihi de his, niſi Michael princeps veſter.*

ΚΕΦ. ιαʹ.

1 2 Καὶ ἐγὼ ἐν ἔτει πρώτῳ Κύρου ἔστην εἰς κράτος καὶ ἰσχύν. Καὶ νῦν ἀλήθειαν ἀναγγελῶ σοι· ἰδοὺ ἔτι τρεῖς βασιλεῖς ἀναστήσονται ἐν τῇ Περσίδι, καὶ ὁ τέταρτος πλουτήσει πλοῦτον μέγαν παρὰ πάντας· 3 καὶ μετὰ τὸ κρατῆσαι αὐτὸν τοῦ πλούτου αὐτοῦ, ἐπαναστήσεται πάσαις βασιλείαις Ἑλλήνων. Καὶ ἀναστήσεται βασιλεὺς δυνατός, καὶ κυριεύσει κυρείας πολλῆς, καὶ ποιήσει κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ. 4 Καὶ ὡς ἂν στῇ ἡ βασιλεία αὐτοῦ, συντριβήσεται, καὶ διαιρεθήσεται εἰς τοὺς τέσσαρας ἀνέμους τοῦ οὐρανοῦ, καὶ οὐκ εἰς τὰ ἔσχατα αὐτοῦ, οὐδὲ κατὰ τὴν κυρείαν αὐτοῦ, ἣν ἐκυρίευσεν, ὅτι ἐκπλήσεται ἡ βασιλεία αὐτοῦ, 5 καὶ ἑτέροις ἐκτὸς (α) τούτων. Καὶ ἐνισχύσει ὁ βασιλεὺς τοῦ Νότου· (') καὶ εἷς τῶν ἀρχόντων αὐτοῦ ἐνισχύ- 6 σει ἐπ' αὐτόν, καὶ κυριεύσει κυρείαν πολλήν. Καὶ μετὰ τὰ ἔτη αὐτοῦ (β) συμμιγήσονται, καὶ θυγάτηρ βασιλέως τοῦ Νότου εἰσελεύσεται πρὸς βασιλέα τοῦ Βορρᾶ, τοῦ ποιῆσαι συνθήκας μετ' αὐτοῦ, καὶ οὐ κρατήσει ἰσχύος βραχίονος, καὶ οὐ στήσεται τὸ σπέρμα αὐτοῦ, καὶ παραδοθήσεται αὐτή, καὶ οἱ φέροντες 7 αὐτήν, καὶ ἡ νεᾶνις, καὶ ὁ κατισχύων αὐτὴν ἐν τοῖς καιροῖς. (γ) Ἀναστήσεται ἐκ τοῦ ἄνθους τῆς ῥίζης αὐτῆς (δ), τῆς ἑτοιμασίας αὐτοῦ, καὶ ἥξει πρὸς τὴν δύναμιν, καὶ εἰσελεύσεται εἰς τὰ ὑποστηρίγ- 8 ματα τοῦ βασιλέως τοῦ Βορρᾶ, καὶ ποιήσει (ε) ἐν αὐτοῖς, καὶ κατισχύσει. Καί γε τοὺς θεοὺς αὐτῶν (ζ) μετὰ τῶν χωνευτῶν αὐτῶν, πᾶν σκεῦος ἐπιθυμητὸν αὐτῶν, ἀργυροῦν καὶ χρυσοῦν, μετὰ αἰχμαλωσίας οἴσει εἰς Αἴγυπτον, καὶ αὐτὸς στήσεται ὑπὲρ βασιλέα τοῦ Βορρᾶ.

CAP. XI.

Et (a) ego in anno (b) primo Cyri ſtabam ad robur, & fortitudinem. 1 *Et nunc veritatem annuntiabo tibi. Ecce adhuc tres reges ſurgent in Per-* 2 *ſide: & quartus ditabitur divitiis magnis ſuper omnes: & cùm invaluerit ipſe divitiis ſuis; inſurget ſuper omnia regna Græcorum. Et ſurget* 3 *rex potens: & dominabitur dominatione multâ: & faciet ſecundùm voluntatem ſuam. Et cùm ſteterit regnum ejus; contereture, & dividetur* 4 *in quatuor ventos cœli, & non in noviſſima ſua, neque ſecundùm dominationem ſuam, quâ dominatus eſt: quia extirpabitur regnum ejus, & (c) alius præter iſtos. Et confortabitur rex Auſtri: & unus de principibus* 5 *(d) ipſis prævalebit ſuper eum: & dominabitur dominatione (e) multâ. Et poſt annos illius commiſcebuntur: filiáque regis Auſtri ingredietur ad* 6 *regem Aquilonis, facere fœdera cum eo: & non obtinebit fortitudinem brachii, nec ſtabit ſemen ejus: & tradetur ipſa, & qui adducebant eam, & adoleſcentula, & confortans eam in temporibus. Surget de flore radicis* 7 *ejus, (f) præparationis illius: & veniet ad virtutem: & ingredietur in ſuſtentacula regis Aquilonis: & faciet in eis & obtinebit. Etiam deos* 8 *eorum cum fuſilibus eorum, omne vas deſiderabile eorum argenti & auri cum captivitate ducet in Ægyptum: & ipſe ſtabit ſuper regem Aquilonis.*

MS. A. (α) τούτων δοθήσεται. Καὶ (') καὶ ἐνισχύσει ἐπ' αὐτῶν εἷς τῶν ἀρχόντων αὐτοῦ, καὶ κυριεύσει κυρείας πολλῆς ἐπ' ἐξουσίας αὐτοῦ. Καὶ μετὰ (β) ἐπισυμμιγήσονται, καὶ ἡ θυγάτηρ βασιλεὺς (γ) Καὶ ἀναστήσεται (δ) ἐπὶ τοῦ (ε) αὐτοῖς, (ζ) καταστρέψει μετὰ

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

18 19 * وعاد فلمسني مثل منظر انسان وقواني * وقال لي * لا تخف يا رجل الشهوات * السلام لك *
تشجع وتقو * واذ هو يتكلم معي تقويت وقلت * ليتكلم سيدي لانك قويتني *
20 * فقال لي * أعلمت لماذا أتيت اليك * والآن ارجع لاحارب مع رييس الفرس * وانا خارج *
21 واذا رييس اليونانيين اتي * ولكني اخبرك بالمرسوم في كتاب الحق * وليس احد يساعد معي
من اجل هذه الا ميخاييل رييسكم *

Quarè denuò tetigit me quaſi ſpecies 18 *hominis, & confortavit me, Dixitque* 19 *mihi; Ne timeas O vir deſideriorum, pax tibi, ſume animos & confortare. Dum ipſe alloqueretur me, confortatus ſum, & dixi; Loquatur dominus meus, nam confortâſti me. Dixit mi-* 20 *hi; Noſtine quorſum venerim ad te? Jam redeo pugnatum contra principem Perſarum, jámque egredior, quia ecce princeps regni Græcorum venit. Sed tamen declarabo tibi exaratum in* 21 *libro veritatis, licèt nemo ſit qui me juvet in his, præter Michaelem principem veſtrum.*

* الفصل الحادي عشر *

1 2 * وانا في السنة الاولى لكورش وقفت بقوة وعز * والآن اخبرك بالحق * ها ثلاث مملكات
ايضا تقوم في الفرس * والرابع يستغني غنا عظيما * اكثر من جميعهم * ومن بعد ان
3 يضبط هو غناه * يقوم في جميع مملكات اليونانيين * ويقوم ملك قوي * ويسود سيادة
4 كبيرة * ويصنع كارادته * واذا قامت مملكته * تنكسر وتنقسم الى اربعة رياح السماء *
وليس كاواخره ولا كسيادته التي سادها * لان مملكته تقلع وتعطى لآخرين غير هؤلاء *
5 * ويتقوى ملك الجنوب * وواحد من روسايهم يتقوى عليهم * ويسود سيادة كبيرة
6 على سلطانه * وبعد سنيه يختلطون * وابنة ملك الجنوب تدخل الى ملك الجربياء
لتصنع مواثيق معه * فلا يضبط قوة ذراعه * ولا يقوم زرعه * وتدفع هي والذين
7 اتوا بها * والشابة ومقويها في الازمان * ويقوم من زهر اصلها على هيئته * ويأتي بقوة *
8 ويدخل الى محكمات ملك الجربياء * ويصنع بهم * ويتقوى * ويكسر آلهتهم مع
مسبوكاتهم * كل آنية لهم مشتهاة من فضة وذهب * ويدخل بالسبي الى مصر * وهو يقوم
اكثر من ملك الجربياء *

CAP. XI.

Quapropter ego anno primo Cyri, 1 *cùm viribus & potentiâ ſuperaverim, Jam indicabo tibi veritatem. Ecce tria* 2 *regna ſunt adhuc ſurrectura in Perſide, & quartus ditabitur divitiis maximis pluſquam ii omnes; & poſtquam obtinuerit iſte divitias ſuas, ſtabit in omnibus regnis Græcorum. De-* 3 *inde exurget rex potens, qui dominabitur dominatione ampliſſimâ, facietque pro voluntate ſua. Sed cùm ſteterit* 4 *regnum ejus, frangetur, & dividetur in quatuor cœli ventos; & non ſecundùm noviſſima illius, neque ſecundùm dominationem ejus quâ dominatus eſt: nam regnum ejus evelletur, & tradetur aliis præter iſtos. Et confor-* 5 *tabitur rex Auſtri, & unus è principibus eorum prævalebit eis, & dominabitur dominatione amplâ in regno ſuo. Poſt annos autem iſtius, conſortium* 6 *habebunt; & filia regis Auſtri adibit regem Aquilonis ad ineunda cum eo fœdera: ſed non obtinebit vim brachium iſtius, neque ſubſiſtet ſemen ejus: & illa tradetur cum iis qui adduxerint eam, tam adoleſcentula quàm confortans eam in temporibus. Ex ex flore ſtirpis illius ſtabit apparatui ſuo, veniet cum fortitudine, &* 7 *ingredietur in munitiones regis Aquilonis, afficiet eos, & confirmabitur: Confringetque deos eorum cum fuſilibus eorum: omnia vaſa eorum ex-* 8 *petibilia argentea & aurea, necnon captivos, inferet in Ægyptum. Is elevabitur pluſquàm rex Aquilonis,*

דניאל: יא

exercituum *turbam colligent* & ,*ſe miſcebunt* ejus filii Et .ſuam *humum* ad revertetur & , Auſtri rex regnum in intrabit Et
9 ובא במלכות מלך הנגב ושב אל־אדמתו׃ ובניו יתגרו ואספו המון חילים
movebitur bile Et .ejus *fortitudinem* ad uſque irritabitur & ,revertetur & ; tranſibit & ,inundabit & ,veniendo veniet & ,plurimorum
10 רבים ובא בוא ושטף ועבר וישב ויתגרה עד־מעזה׃ ויתמרמר
.ejus manu in *turba* dabitur & ,magnam *turbam* faciet ſtare & ;Aquilonis rege cum *eo cum* pugnabit & ,egredietur & ,Auſtri rex
11 מלך הנגב ויצא ונלחם עמו עם־מלך הצפון והעמיד המון רב ונתן ההמון בידו׃
faciet ſtare &,Aquilonis rex revertetur Et .roborabitur non &,millia decem dejiciet & ; ſuũ cor exaltabit,multitudo elevabitur Et
12 ונשא ההמון ירום לבבו והפיל רבאות ולא יעוז׃ ושב מלך הצפון והעמיד
.multa ſubſtantia *in* & , magno exercitu *in veniendo* veniet annorum temporum fine in & *: priore præ multam turbam*
13 המון רב מן־הראשון ולקץ העתים שנים יבוא בוא בחיל גדול וברכוש רב׃
,viſionem *faciendum ſtare ad*,elevabuntur tui populi diſſipatorum filii & ; Auſtri regem *ſuper* ſtabunt multi illis temporibus in Et
14 ובעתים ההם רבים יעמדו על־מלך הנגב ובני פריצי עמך ינשאו להעמיד חזון
, ſtabunt non Auſtri brachia & ; *munitionum* civitatem capiet & , aggerem effundet &,Aquilonis rex veniet Et .corruant &
15 ונכשלו׃ ויבא מלך הצפון וישפך סוללה ולכד עיר מבצרות וזרעות הנגב לא יעמדו
ſtans non & ,ſuã voluntatem ſecundùm eum ad veniens faciet Et .reſiſtendum ad fortitudo non &,ejus electorum populo &
16 ועם מבחריו ואין כח לעמד׃ ויעש הבא אליו כרצונו ואין עומד
,ej⁹ regnum omne fortitudine *in ingrediendum ad ,ſuas facies* ponet Et .ejus manu in deficiet &,*ornamenti* terra in ſtabit & ;*ej⁹ facies ad*
17 לפניו ויעמד בארץ־הצבי וכלה בידו׃ וישם פניו לבוא בתקף כל־מלכותו
convertet Et .erit ei non & , ſtabit non &,illam *corrumpendum ad* ei dabit mulierum filiam & : faciet & ,eo cum *recti* &
18 וישרים עמו ועשה ובת הנשים יתן־לו להשחיתה ולא תעמד ולא־לו תהיה׃ וישב
convertet Et .ei inferat ſuum probrum ne , *ei ejus opprobrium gubernator* faciet ceſſare & : multas capiet &,inſulas ad *ſuas facies*
19 פניו לאיים ולכד רבים והשבית קצין חרפתו לו בלתי חרפתו ישיב לו׃ וישב
gloria , exactorem transferens ejus *baſi ſuper* ſtabit Et .invenietur non & ,corruet & ,impinget & ,ejus terræ *fortalicia* ad *ſuas facies*
20 פניו למעוזי ארצו ונכשל ונפל ולא ימצא׃ ועמד על־כנו מעביר נוגש הדר
dabunt non &,deſpectus ejus *baſi ſuper* ſtabit Et .prælio in non & , *faciebus* in non &,conteretur *unis* diebus in & : regni
21 מלכות ובימים אחדים ישבר ולא באפים ולא במלחמה׃ ועמד על־כנו נבזה ולא־נתנו
inundabuntur inundatione brachia Et .blanditiis in regnum *apprehendet* & ,*quiete* in veniet & ; regni gloriam *eo ſuper*
22 עליו הוד מלכות ובא בשלוה והחזיק מלכות בחלקלקות׃ וזרעות השטף ישטפו
ſe roborabit &,aſcendet & : dolum faciet ,*eum ad ſe aſſociando ab* Et .fœderis dux etiam & .conterentur & ,ejus *faciebus* à
23 מלפניו וישברו וגם נגיד ברית׃ ומן־התחברות אליו יעשה מרמה ועלה ועצם
: ejus patrum patres & ,ejus patres fecerunt non quæ faciet & ,ingredietur *provinciæ pinguia in* & ,*quietem In* .gente modica *in*
24 במעט־גוי׃ בשלוה ובמשמני מדינה יבוא ועשה אשר לא־עשו אבתיו ואבות אבתיו
.tempus ad uſque & ,ſuis cogitationibus cogitabit munitiones *ſuper* & ; diſperdet *eis* ſubſtantiam & ,*ſpolium* & ,prædam
בזה ושלל ורכוש להם יבזור ועל מבצרים יחשב מחשבתיו ועד־עת׃

Verſio VULG. LAT.

Et intrabit in regnum rex Auſtri, & revertetur ad terram ſuam. Filii autem ejus provocabuntur, & congregabunt multitudinem exercituum plurimorum: & veniet properans, & inundans: & revertetur, & concitabitur, & congredietur cum robore ejus. Et provocatus rex Auſtri egredietur, & pugnabit adverſùs regem Aquilonis, & præparabit multitudinem nimiam, & dabitur multitudo in manu ejus. Et capiet multitudinem, & exaltabitur cor ejus, & dejiciet multa millia, ſed non prævalebit. Convertetur enim rex Aquilonis, & præparabit multitudinem multò majorem quàm priús: & in fine temporum annorúmque, veniet properans cum exercitu magno, & opibus nimiis. Et in temporibus illis multi conſurgent adverſùs regem Auſtri: filii quoque prævaricatorum populi tui extollentur ut impleant viſionem, & corruent. Et veniet rex Aquilonis, & comportabit aggerem, & capiet urbes munitiſſimas: & brachia Auſtri non ſuſtinebunt, & conſurgent electi ejus ad reſiſtendum, & non erit fortitudo. Et faciet veniens ſuper eum juxta placitum ſuum, & non erit qui ſtet contra faciem ejus: & ſtabit in terra inclyta, & conſumetur in manu ejus. Et ponet faciem ſuam ut veniat ad tenendum univerſum regnum ejus, & recta faciet cum eo: & filiam fœminarum dabit ei, ut evertat illud: & non ſtabit, nec illius erit. Et convertet faciem ſuam ad inſulas, & capiet multas: & ceſſare faciet principem opprobrii ſui, & opprobrium ejus convertetur in eum. Et convertet faciem ſuam ad imperium terræ ſuæ, & impinget, & corruet, & non invenietur. Et ſtabit in loco ejus viliſſimus, & indignus decore regio: & in paucis diebus conteretur, non in furore nec in prælio. Et ſtabit in loco ejus deſpectus, & non tribuetur ei honor regius: & veniet clàm, et obtinebit regnum in fraudulentia. Et brachia pugnantis expugnabuntur à facie ejus, et conterentur: inſupèr et dux fœderis. Et poſt amicitias, cum eo faciet dolum: et aſcendet, et ſuperabit in modico populo. Et abundantes, et uberes urbes ingredietur: faciet quæ non fecerunt patres ejus, et patres patrum ejus: rapinas, et prædam, et divitias eorum diſſipabit, et contra firmiſſimas cogitationes inibit: et hoc uſque ad tempus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

9 * ܘܢܥܘܠ ܒܬܘܩܦ ܡܠܟܐ ܕܬܝܡܢܐ ܘܢܗܦܘܟ ܠܐܪܥܗ. * ܘܦܛܠܡܐܘܣ ܘܒܢܘܗܝ
10 ܢܬܓܪܘܢ. ܘܢܟܢܫܘܢ ܚܝܠܘܬܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܢܐܬܘܢ ܥܠܘܗܝ. ܘܢܚܛܦܘܢ ܘܢܥܒܪܘܢ.
11 ܘܢܗܦܟܘܢ ܘܢܬܓܪܘܢ ܥܕܡܐ ܠܚܣܢܐ. * ܘܢܬܚܡܬ ܐܢܛܝܟܘܣ ܘܛܪܝܦܘܢ ܥܠ
ܦܛܠܡܐܘܣ * ܘܢܬܚܡܬ ܡܠܟܐ ܕܬܝܡܢܐ. ܘܢܦܘܩ ܠܐܘܪܥܗ ܕܡܠܟܐ ܕܓܪܒܝܐ.
12 ܘܢܩܝܡ ܚܝܠܐ ܪܒ. ܘܢܫܬܠܡ ܚܝܠܐ ܗܘ ܒܐܝܕܗ. * ܘܒܬܒܪܗ ܕܚܝܠܐ. ܘܢܬܪܝܡ
13 ܠܒܗ * ܒܪܗ ܕܐܠܟܣܢܕܪܘܣ * ܘܢܪܡܐ ܪܒܘܬܐ. ܘܠܐ ܢܬܚܝܠ. * ܘܢܗܦܘܟ ܡܠܟܐ
ܕܓܪܒܝܐ. ܘܢܩܝܡ ܚܝܠܐ ܕܣܓܝ ܡܢ ܩܕܡܝܐ. ܘܠܫܘܠܡ ܙܒܢܐ. ܟܕ ܐܬܐ ܢܐܬܐ ܥܦܝܦܐ ܒ
14 ܚܝܠܐ ܣܓܝ. ܘܒܩܢܝܢܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܣܓܝܐܐ ܢܩܘܡܘܢ ܥܠ ܡܠܟܐ
15 ܕܓܪܒܝܐ. ܘܒܢܝ ܥܘܠܐ ܕܥܡܟ. ܢܬܪܝܡܘܢ ܠܡܩܡܘ ܚܙܘܐ ܘܢܬܬܩܠܘܢ. * ܘܢܐܬܐ
ܡܠܟܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܢܣܝܡ ܟܡܐܢܐ ܘܢܟܒܘܫ ܩܘܪܝܐ ܚܣܝܢܬܐ. ܘܕܪܥܐ ܕܬܝܡܢܐ ܠܐ
ܢܩܘܡ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܚܝܠܐ ܠܡܩܡ. ܘܓܒܝܐ ܕܒܥܡܐ ܢܩܘܡܘܢ ܠܘܩܒܠܗ. ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢ.
16 ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܚܝܠܐ ܠܡܩܡ. * ܘܢܥܒܕ ܗܘ ܕܐܬܐ ܠܘܬܗ ܐܝܟ ܨܒܝܢܗ. ܘܠܝܬ
ܕܢܩܘܡ ܠܘܩܒܠܗ. ܘܢܩܘܡ ܒܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܬܫܬܠܡ ܒܐܝܕܘܗܝ.
17 * ܘܢܣܝܡ ܐܦܘܗܝ ܠܡܥܠ ܒܬܘܩܦ ܟܠ ܡܠܟܘܬܐ. ܘܟܠܗ ܥܡܗ
ܢܦܘܩ. ܘܒܪܬ ܐܢܫܐ ܢܬܠ ܠܗ ܠܡܚܒܠܘܬܗ. ܘܠܐ ܬܩܘܡ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ ܕܝܠܗ.
18 * ܘܢܗܦܘܟ ܐܦܘܗܝ ܠܘܬ ܓܙܪܬܐ ܕܝܡܐ. ܘܢܟܒܘܫ ܣܓܝܐܐ. ܘܢܒܛܠ ܫܠܝܛܐ ܕܡܚܣܕ
19 ܠܗ. ܘܚܣܕܗ ܢܗܦܘܟ ܥܠܘܗܝ. * ܘܢܗܦܘܟ ܐܦܘܗܝ ܠܘܬ ܬܘܩܦܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܢܬܬܩܠ
20 ܘܢܦܠ. ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ. * ܘܢܩܘܡ ܥܠ ܕܘܟܬܗ. ܡܚܒܠ ܬܘܩܦܐ ܘܗܕܪ ܡܠܟܘܬܐ.
21 ܘܒܝܘܡܬܐ ܩܠܝܠܐ ܢܬܬܒܪ. ܠܐ ܒܪܘܓܙܐ. ܘܠܐ ܒܩܪܒܐ. * ܘܢܩܘܡ ܥܠ ܕܘܟܬܗ. ܫܝܛܐ. ܘܠܐ
ܢܬܝܗܒ ܠܗ ܐܝܩܪܐ ܕܡܠܟܘܬܐ. ܘܢܐܬܐ ܒܫܠܝܐ. ܘܢܐܚܘܕ ܡܠܟܘܬܐ ܒܢܟܠܐ.
22 23 * ܘܬܘܩܦܗܘܢ ܕܩܘܪܝܐ ܢܬܒܙܙ. ܐܦ ܡܕܒܪܢܐ ܕܕܝܬܩܐ. * ܘܡܢ ܐܝܠܝܢ
24 ܕܡܫܬܘܬܦܝܢ ܥܡܗ ܢܥܒܕܘܢ ܒܗ ܢܟܠܐ. * ܘܢܣܩ ܘܢܬܚܝܠ ܒܥܡܐ
ܙܥܘܪܐ. ܘܒܡܫܡܢܝ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܘܢܥܒܕ ܡܕܡ ܕܠܐ ܥܒܕܘ ܐܒܗܘܗܝ ܘܐܒܗܬܐ ܕܐܒܗܘܗܝ.
ܒܙܬܐ ܘܫܒܝܬܐ ܘܩܢܝܢܗܘܢ ܢܕܒܪ. ܘܥܠ ܩܘܪܝܗܘܢ ܢܚܫܘܒ ܡܚܫܒܬܐ.

Itaque ingredietur cum potentia rex Auſtri, cum redibit in terram ſuam. Ptolemæus & filii ejus irritati cogent adverſùs eum copias multas, & invadent eum, rapient, & tranſibunt, & reverſi irritabuntur uſque ad munitionem. *Irritantur Antiochus & Triphon contra Ptolemæum.* Unde irritatus rex Auſtri egredietur in occurſum regis Aquilonis, & excitabit exercitum copioſiſſimum, adeo ut exercitus ille tradatur in manum ejus. Poſt cladem exercitûs illius inſoleſcet cor ejus, *nempe Alexandri filii ipſius*, ſternetque multos: at non firmabitur. Nam reverſus rex Aquilonis coget exercitum priore copioſiorem; & exacto aliquanto tempore, veniendo veniet duplo majore cum exercitu, opibúſque permultis. Eo tempore multi inſurgent contra regem Aquilonis, filii vero ſcelerati, populus tuus, extollentur ad afferendam viſionem, & deſtruentur. Etenim veniens rex Aquilonis ponet inſidias, & capiet arces munitas; & brachium Auſtri non reſiſtet, quia non habebunt reſiſtendi facultatem: delectiſſimi quoque inter populum reſiſtent, ſed non poterunt; quia non erit eis reſiſtendi facultas. Quarè faciet is qui aggreſſurus eſt eum, pro voluntate ſua, nec erit qui reſiſtat ei; ſtabítque in terra Iſraelis, quæ tradetur in manus ejus. Deinde faciem ſuam diſponet ad ingrediendum in robur omnium regnorum; & quidem totus populus ejus progredietur: & filia hominum dabitur ei ut corrumpat eam; ipſa verò non perſtabit, nec illius erit. Itaque vertet faciem ſuam ad inſulas maris, & multos domabit: exſcindetque principem qui probris afficiebat eum, & probrum ipſius retorquebit in eum. Tum demum faciem ſuam diſponet contra terræ robur: & deſtruetur & corruet, nec invenietur. In hujus ſede ſuccedet deſtructor potentiæ & decoris regnorum, ſed paucos intra dies conteretur, non irâ neque certamine. Hujus etiam loco ſuccedet humilis *quidam* cui non tribuetur honos regnorum: veniet autem tacitè, & regnum aſtibus uſurpabit. Et robur urbium diripietur, etiam rector fœderis. Et ex his qui commercium habebunt cum eo, dolum ſtruent in ipſum. Et aſcendens fortem ſe reddet parvo populo & ditiſſimis urbium, faciétque quod non fecerant patres ejus neque patres patrum ejus, & ſpolia, captivos, atque poſſeſſionem eorum abducet, & contra urbes eorum cogitabit cogitationes:

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

9 Καὶ εἰσελεύσεται εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ βασιλέως τοῦ Νότου, καὶ ἀναστρέψει εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ. Καὶ οἱ υἱοὶ
10 αὐτοῦ συνάξουσιν (η) ὄχλον ἀναμέσον πολλῶν· καὶ ἐλεύσεται ἐρχόμενος καὶ κατακλύζων, καὶ παρελεύσεται,
καὶ (θ) καθίεται, καὶ συμπροσπλακήσεται ἕως τῆς ἰσχύος αὐτοῦ. Καὶ ἀγριανθήσεται (ι) βασιλεὺς τοῦ Νό-
11 του, καὶ ἐξελεύσεται, καὶ πολεμήσει μετὰ (κ) τοῦ βασιλέως τοῦ Βορρᾶ, καὶ στήσει ὄχλον πολὺν, καὶ παραδοθή-
12 σεται ὁ ὄχλος ἐν χειρὶ αὐτοῦ, Καὶ λήψεται τὸν ὄχλον, καὶ (λ) ὑψωθήσεται ἡ καρδία αὐτοῦ, καὶ κατα-
13 βαλεῖ μυριάδας, καὶ οὐ κατισχύσει. Καὶ ἐπιστρέψει ὁ βασιλεὺς τοῦ Βορρᾶ, καὶ (μ) ἄξει ὄχλον πολὺν ὑπὲρ
τὸν πρότερον· καὶ εἰς τὸ τέλος τῶν καιρῶν ἐνιαυτῶν ἐπελεύσεται εἰσόδια ἐν δυνάμει μεγάλῃ, καὶ ἐν
14 ὑπάρξει πολλῇ. Καὶ ἐν τοῖς καιροῖς ἐκείνοις πολλοὶ ἐπαναστήσονται ἐπὶ βασιλέα τοῦ Νότου, καὶ οἱ υἱοὶ
τῶν λοιμῶν τοῦ λαοῦ σου ἐπαρθήσονται, τοῦ στῆσαι ὅρασιν, καὶ ἀσθενήσουσι. Καὶ εἰσελεύσεται (ν) βασιλεὺς
15 τοῦ Βορρᾶ, καὶ ἐκχεεῖ πρόσχωμα, καὶ συλλήψεται πόλεις ὀχυράς, καὶ οἱ βραχίονες τοῦ βασιλέως τοῦ Νότου
16 (ξ) στήσονται, καὶ ἀναστήσονται οἱ ἐκλεκτοὶ αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔσται ἰσχὺς τοῦ στῆναι. Καὶ ποιήσει ὁ εἰσπορευό-
μενος πρὸς αὐτὸν κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔστιν ἑστὼς κατὰ πρόσωπον αὐτοῦ· καὶ (ο) στήσεται ἐν τῇ γῇ
17 τοῦ σαβεὶ, καὶ τελεσθήσεται ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ. Καὶ τάξει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ εἰσελθεῖν ἐν ἰσχύϊ πάσης τῆς
βασιλείας αὐτοῦ, καὶ εὐθεῖα πάντα μετ᾽ αὐτοῦ ποιήσει. καὶ θυγατέρα τῶν γυναικῶν δώσει αὐτῷ (π) δια-
18 φθεῖραι αὐτὴν, καὶ οὐ μὴ παραμείνῃ, καὶ οὐκ αὐτῷ ἔσται. Καὶ ἐπιστρέψει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ εἰς τὰς νήσους,
καὶ συλλήψεται πολλὰς, καὶ (ρ) καταπαύσει ἄρχοντας ὀνειδισμοῦ αὐτῶν, πλὴν (σ) ὀνειδισμὸς αὐτοῦ ἐπιστρέψει
19 αὐτῷ. Καὶ ἐπιστρέψει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ εἰς τὴν (τ) ἰσχὺν τῆς γῆς αὐτοῦ, καὶ ἀσθενήσει, καὶ πεσεῖται, καὶ
20 οὐχ εὑρεθήσεται. Καὶ ἀναστήσεται ἐκ τῆς ῥίζης αὐτοῦ φυτὸν (υ) τῆς βασιλείας ἐπὶ τὴν ἑτοιμασίαν
αὐτοῦ παραβιβάζων, πράσσων δόξαν βασιλείας. καὶ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις (·) ἔτι συντριβήσεται, καὶ
21 οὐκ ἐν προσώποις, οὐδὲ ἐν πολέμῳ. Στήσεται ἐπὶ τὴν ἑτοιμασίαν αὐτοῦ, ἐξουδενώθη, καὶ οὐκ ἔδωκαν
22 ἐπ᾽ αὐτὸν δόξαν βασιλείας. καὶ ἥξει ἐν εὐθηνίᾳ, καὶ κατισχύσει βασιλείας ἐν ὀλισθήμασι, Καὶ βραχίο-
νας τοῦ κατακλύζοντος (φ) κατακλυσθήσονται ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, καὶ συντριβήσονται, καὶ ἡγούμενος
23 διαθήκης. Καὶ ἀπὸ τῶν συναναμίξεων πρὸς αὐτὸν ποιήσει δόλον, καὶ ἀναβήσεται, καὶ ὑπερισχύσει (χ) αὐτοὺς ἐν
24 ὀλίγῳ ἔθνει. Καὶ ἐν εὐθηνίᾳ, καὶ ἐν (¨) πίοσι χώραις ἥξει, καὶ ποιήσει ἃ οὐκ ἐποίησαν οἱ πατέρες αὐτοῦ καὶ (ψ)
πατέρες τῶν πατέρων αὐτοῦ· προνομὴν καὶ σκῦλα καὶ (ω) ὕπαρξιν αὐτοῖς διασκορπιεῖ, καὶ ἐπ᾽ Αἴγυπτον λογιεῖ-
ται (α) λογισμὸς καὶ ἕως καιροῦ.

Et intrabit in regnum regis Auſtri: & revertetur ad terram ſuam: 9
Et filii ejus congregabunt turbam (g) inter medium multorum. Et ve- 10
niet adveniens, & inundans: & pertranſibit, & ſedebit, & congredie-
tur uſque ad fortitudinem ejus. Et efferabitur rex Auſtri, & egredietur, 11
& pugnabit cum rege Aquilonis: & faciet ſtare turbam multam: & tra-
detur turba in manu ejus: Et capiet multitudinem: & exaltabitur cor 12
ejus: & dejiciet decem millia: & non prævalebit. Et convertetur rex 13
Aquilonis, & adducet turbam multam ſuper priorem: & in fine (h) tem-
porum annorum ingredietur ingreſſiones in virtute magna, & in ſubſtantia
multa. Et in temporibus illis multi conſurgent ſuper regem Auſtri: & filii 14
peſtilentium populi tui extollentur, ut ſtatuant viſionem, & infirmabuntur.
Et ingredietur rex Aquilonis: & effundet aggerem, & capiet urbes mu- 15
nitas: & brachia regis Auſtri (i) ſtabunt: & conſurgent electi ejus:
& non erit fortitudo ad ſtandum. Et faciet ingrediens adverſùs eum ſe- 16
cundùm voluntatem ſuam: & non eſt, qui ſtet contra faciem
ejus. Et ſtabit (k) in terra Sabi, & conſumetur in manu ejus.
Et ponet faciem ſuam, ut ingrediatur in fortitudine totius regni ſui: 17
& recta omnia faciet cum eo. Et filiam fœminarum dabit ei,
ut evertat illum: & non permanebit, & non erit ei. Et conver- 18
tet faciem ſuam ad inſulas: & capiet multas: & ceſſare faciet prin-
cipes opprobrii ſui: veruntamen opprobrium ejus converteteur ei. Et con- 19
vertet faciem ſuam ad fortitudinem terræ ſuæ: & infirmabitur, & corru-
et, & non invenietur. Et ſurget de radice ejus planta regni, ad præpara- 20
tionem ipſius transferens, faciens gloriam regni. Et in diebus illis adhuc
conteretur, et non in faciebus, neque in bello: Stabit ſuper præparationem 21
ejus. Contemptus fuit: et non dederunt ſuper eum gloriam regni. Et ve-
niet in tranquillitate, & obtinebit regnum in lubricitatibus: Et brachia 22
inundantis inundabuntur à facie ejus, & conterentur, et dux teſtamenti; Et 23
ex commiſtionibus adverſùs eum faciet dolum: et aſcendet, et prævalebit
in eos in modica gente. In (l) proſperitatem, et in (m) pingues regiones 24
veniet: et faciet quæ non fecerunt patres ejus, et patres patrum ejus, dire-
ptionem, et ſpolia, et ſubſtantiam eis diſſipabit. Et ſuper Ægyptum cogita-
bit cogitationes, et uſque ad tempus.

MS. A. (η) ὄχλον δυνάμεων πολλῶν· καὶ εἰσελεύσεται ἐρχόμενος (θ) καθιεῖται, καὶ προσσυμπλακήσονται (ι) καὶ ὁ βασιλεὺς τοῦ Νότου ἐξελεύσεται, (κ) βασιλέως (λ) ὑπερυψωθήσεται (μ) ἄξει (ν) ὁ βασιλεὺς (ξ) οὐ στήσονται, (ο) στήσονται ἐν γῇ τοῦ Σαββείρ, καὶ συντελεσθήσεται (π) τοῦ διαφθεῖραι (ρ) κατακαύσει (σ) ὁ ὀνειδισμὸς (τ) ἀρχὴν (υ) βασιλείας (·) συντριβήσεται, (φ) καὶ κατακλυσθήσονται (χ) αὐτοῦ (¨) πλίοσιν (ψ) οἱ πατέρες (ω) ὕπαρξιν διασκορπίσει, (α) διαλογισμοὺς αὐτοῦ καὶ

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

9 10 * ويدخل الى مملكة ملك الجنوب * ويعود الى ارضه * وبنوه يجمعون جمع جيوش
11 كثير * ويأتي ويدخل ويعبر * ويمضي ويجلس * ويتلبك حتى قوته * ويستشيط
ملك الجنوب * ويخرج ويحارب مع ملك الجربياء ويقيم جمعا كثيرا * ويدفع الجمع في
12 13 يده * ويأخذ الجمع * ويتعالى قلبه * ويطرح ربوات * ولا يقوى * ويرجع ملك
الجربياء ويأخذ جمعا كثيرا اكثر من الاول * والى تمام ازمنة السنين ياتي دخول
14 بقوة عظيمة وموجود كثير * وفي تلك الازمنة يقوم كثيرون على ملك الجنوب *
15 وبنو بقايا شعبك يشرعون * لتقوم الرؤيا * ويضعفون * ويدخل ملك الجربياء *
ويهرق على التراب * ويأخذ مدنا حصينة * وذراعا ملك الجنوب لا يقومان * ويقوم
16 مختاريه * ولا تكون قوة ليبقى * ويصنع الداخل اليه كارادته * ولا يكون قائم
17 لوجهه * ويقوم في ارض صابيين ويستكمل بيده * ويرتب وجهه ليدخل بقوة كل
مملكته * ليصنع جميع من معه مستقيما * وابنة النسوان يعطيها له ليفسدها * فلا
18 تثبت ولا تكون له * ويرد وجهه الى الجزائر * ويأخذ كثيرات * ويحرق رؤساء تعييرهم
19 لكن تعييره يعود له * ويرد وجهه الى قوة ارضه * فتضعف وتسقط ولا توجد
20 * ويقوم من اصله غرس مملكة على تهيئته * ويزيل متعمدا شرف المملكة *
21 وفي تلك الايام ينكسر * وليس بالوجوه ولا بالحرب يقوم على تهيئته * احتقر ولم
22 يعط عليه شرف المملكة * ويأتي بخصب * ويضبط الملك بالزلل * وذراعا المغرق
23 فيغرقان من وجهه وينكسران * ومقدم العهد * ومن المختلطات له يصنع غشا
24 ويصعدون * ويقوى عليه بأمة قليلة * وبخصب وفي كور كثيرين ياتي * ويصنع
ما لم تصنعه اباوه واباء اباييه * نهبا وغنايم * ويفرق لهم مالا * ويفكر على مصر
فكراته حتى الزمان *

Et ingredietur in regnum regis Aquilonis. 9
Tum revertetur in terram ſuam, Et filii 10
ejus colligent turbam exercituum mul-
torum; & veniens ingredietur & ob-
ruet, & abiens ſedebit, eritque per-
plexa vel ipſa fortitudo ejus. Qua- 11
propter enitetur rex Auſtri, & prod-
ibit bellabitque contra regem Aquilo-
nis concitâ turbâ plurimâ: & trade-
tur turba illa in manum ejus; Capiet- 12
que turbam, & elevabitur cor ejus,
proſtrabitque myriades; at non præ-
valebit. Nam rex Aquilonis iterum 13
aſſumet turbam plurimam priori copio-
ſiorem, & ad finem temporum anno-
rum veniet ingrediens magno cum ro-
bore, & multa cum ſubſtantia. Iis 14
temporibus inſurgent multi contra re-
gem Auſtri: & filii reliquiarum popu-
li tui auferentur, ut ſubſiſtat viſio,
& infirmabuntur. Et ingredietur 15
rex Aquilonis, & ſanguinem ef-
fundet ſuper terram, capietque urbes
munitas: & brachia regis Auſtri non re-
ſiſtent: & conſurgent electi ejus, &
non erit facultas reſiſtendi. Proinde 16
faciet is qui ingredietur ad eum, pro
ſua voluntate; nec erit qui reſiſtat ei:
ſtabitque in terra Sabiin, & conſu-
metur in manu ejus. Deinde faciem ſu- 17
am diſponet ad ingrediendum cum o-
mnibus regni ſui viribus, ut quiſquis
cum eo fuerit, proſperè agat: & fili-
am mulierum tradet ei, ut evertat
eam; atque hæc non permanebit, nec
erit ipſius. Tum vertet faciem ſuam ad 18
inſulas, capietque multas, & combu-
ret principes improperii ipſorum, ſed
improperium ipſius recidet in ipſum.
Denique faciem ſuam vertet ad fortitu- 19
dinem terræ ſuæ; ſed infirmabitur, ca-
det, & non invenietur. Et exurget ex 20
ejus radice planta regni ſuper apparatum
ejus, removebitque ambientem dignita-
tem regiam, & iis diebus conteretur, &
neque faciebus (blanditiis) *neque bello*
ſtabit ſuper apparatum ejus. Deſpicie- 21
tur, & non tribuetur ei dignitas regia.
Sed veniet in proſperitatem, et regnum
lubricitatibus obtinebit: Et brachia 22
obruentis obruentur à conſpectu ejus et
conterentur, necnon dux fœderis. Et 23
ex commerciis ſuis dolum componet;
quæ quidem progredientur, ita ut præ-
valeat illi gente cum pauca. Et in 24
proſperitatem provinciaſque multas ve-
niet, et præſtabit quod non præſtiterant
patres ejus neq; patres patrum ejus, diri-
piendo et prædando: et diſtribuet illis pe-
cuniam, et cogitabit adverſùs Ægyptum
cogitationes ſuas uſque ad tempus.

דניאל : יא

exercitu *in* bellum ad *se miscebit* Austri rex & : magno exercitu *in* Austri regem *super suum* cor & ,*suam fortitudinem excitabit* Et

25 ויער כחו ולבבו על־מלך הנגב בחיל גדול ומלך הנגב יתגרה למלחמה בחיל

ejus escæ buccellam comedentes Et .cogitationes eum *super* cogitabunt quia ,stabit non & : *valde usque forti* & ,magno

26 גדול ועצום עד־מאד ולא יעמד כי־יחשבו עליו מחשבות: ואכלי פתבגו

,*malignandum ad eorum* cor regum ipsorum duorū Et .multi interfecti cadent & ; inundabitur ejus exercitus & ,eum conterent

27 ישברוהו וחילו ישטוף ונפלו חללים רבים: ושניהם המלכים לבבם למרע

suam terram in revertetur Et .tempus certum ad finis adhuc quia,*prosperabitur* non & :loquentur mendacium una mensa *super* &

28 ועל־שלחן אחד כזב ידברו ולא תצלח כי־עוד קץ למועד: וישב ארצו

veniet & ,revertetur *statutum* tempus Ad .suam terram ad revertetur & ,faciet & : *sanctitatis* pactum *super* ejus cor & ,*magna substantia in*

29 ברכוש גדול ולבבו על־ברית קדש ועשה ושב לארצו: למועד ישוב ובא

irascetur & ,revertetur & ,*atteretur* & ,Chittim *Sim* eo cum venient Et .posterius sic & , prius sicut erit non & ; Austrum in

30 בנגב ולא־תהיה כראשנה וכאחרונה: ובאו בו ציים כתים ונכאה ושב וזעם

: stabunt eo ex brachia Et .*sanctitatis* pactum derelinquentes super intelliget & ,revertetur & ; faciet & ,*sanctitatis* pactum *super*

31 על־ברית־קודש ועשה ושב ויבן על־עזבי ברית קדש: וזרעים ממנו יעמדו

pacti prævaricatores Et .*obstupefacientem* abominationem *dabunt* & , juge removebunt & ,fortitudinis sanctuarium polluent &

32 וחללו המקדש המעוז והסירו התמיד ונתנו השקוץ משמם: ומרשיעי ברית

; multos faciet intelligere populi intelligentes Et .facient &,tenebunt suum Deum *scientum* populus & :blanditiis *in* faciet simulare

33 יחניף בחלקות ועם ידעי אלהיו יחזקו ועשו: ומשכילי עם יבינו לרבים

copulabuntur & ; parvo auxilio juvabuntur ,*ipsos corruere in* Et .diebus præda *in* & ,captivitate *in* ,flamma *in* & ,gladio *in* corruent &

34 ונכשלו בחרב ובלהבה בשבי ובבזה ימים: ובהכשלם יעזרו עזר מעט ונלוו

ad usque dealbificandū ad & ,mundandū ad & ,eis *in* conflandū ad ,corruent intelligentibus de Et .*blanditiis in* multi eis *super*

35 עליהם רבים בחלקלקות: ומן־המשכילים יכשלו לצרוף בהם ולברר וללבן עד־

omnē super se magnificabit & ,se elevabit & , rex suam voluntatē juxta faciet Et .tempus *statutum* ad adhuc quia ; finis tempus

36 עת קץ כי־עוד למועד: ועשה כרצנו המלך ויתרומם ויתגדל על־כל־

.est facta ,*est decisa* quia , iræ consummationē ad usque prosperabitur & ; mirabilia loquetur deorum Deum *super* & , deum

אל ועל אל אלים ידבר נפלאות והצליח עד־כלה זעם כי־נחרצה נעשתה:

universa *super* quia ; intelliget non Deum omnem *super* & ,mulierum *desiderium super* & ,intelliget non suorum patrum Deum *super* Et

37 ועל־אלהי אבתיו לא יבין ועל־חמדת נשים ועל־כל אלוה לא יבין כי על־כל

,auro *in* : *glorificabit* ,ejus patres *eum* noverunt non quem deum & ; *glorificabit sua basi super* Mahuzim Deum Et .se magnificabit

38 יתגדל: ולאלה מעזים על־כנו יכבד ולאלוה אשר לא־ידעהו אבתיו יכבד בזהב

multi[illegible] ,*agnoscet quem* ,alieno Deo cum Mahuzim munitionib⁹ faciet Et .desiderabilib⁹ *in* &,pretioso lapide *in* &,argento *in* &

39 ובכסף ובאבן יקרה ובחמדות: ועשה למבצרי מעזים עם אלוה נכר אשר הכיר ירבה

,Austri rex eo cum se cornupetet finis tempore in Et .pretio *in* dividet *humum* & , multis in eos faciet dominari & ; gloriam

40 כבוד והמשילם ברבים ואדמה יחלק במחיר: ובעת קץ יתנגח עמו מלך הנגב

.transibit & ,inundabit & ,terras *in* ingredietur & ; multis navibus *in* & ,equitibus *in* & ,*curru in* Aquilonis rex eum *super turbinabit* &

וישתער עליו מלך הצפון ברכב ובפרשים ובאניות רבות ובא בארצות ושטף ועבר:

.Hammon filiorum *principium* & ,Moab & , Edom ; ejus manu de evadent istæ & ; corruent multæ & ,*decoris* terram *in* intrabit Et

41 ובא בארץ הצבי ורבות יכשלו ואלה ימלטו מידו אדום ומואב וראשית בני עמון:

Versio VULG. LAT.

25 Et concitabitur fortitudo ejus, & cor ejus adversùm regem Austri in exercitu magno : & rex Austri provocabitur ad bellum multis auxiliis, & fortibus nimis : & non stabunt, quia inibunt adversùs eum consilia. 26 Et comedentes panem cum eo, conterent illum, exercitúsque ejus opprimetur : & cadent interfecti plurimi. 27 Duorum quoque regum cor erit ut malefaciant, & ad mensam unam mendacium loquentur, & non proficient : quia adhuc finis in aliud tempus. 28 Et revertetur in terram suam cum opibus multis : & cor ejus adversùm testamentum sanctum, & faciet, & revertetur in terram suam. 29 Statuto tempore revertetur, & veniet ad Austrum : & non erit priori simile novissimum. 30 Et venient super eum Trieres & Romani : & percutietur & revertetur, & indignabitur contra testamentum Sanctuarii, & faciet : revertetúrque & cogitabit adversùm eos, qui dereliquerunt testamentum Sanctuarii. 31 Et brachia ex eo stabunt, & polluent Sanctuarium fortitudinis, & auferent juge sacrificium : & dabunt abominationem in desolationem. 32 Et impii in testamentum simulabunt fraudulenter : populus autem sciens Deum suum, obtinebit, & faciet. 33 Et docti in populo docebunt plurimos : & ruent in gladio, & in flamma, & in captivitate, & in rapina dierum. 34 Cùmque corruerint, sublevabuntur auxilio parvulo : & applicabuntur eis plurimi fraudulenter. 35 Et de eruditis ruent, ut conflentur, & eligantur, & dealbentur usque ad tempus præfinitum : quia adhuc aliud tempus erit. 36 Et faciet juxta voluntatem suam rex, & elevabitur, & magnificabitur adversùs omnem deum : & adversùs Deum deorum loquetur magnifica, & dirigetur, donec compleatur iracundia : perpetrata quippe est definitio. 37 Et Deum patrum suorum non reputabit : & erit in concupiscentiis fœminarum, nec quemquam deorum curabit : quia adversùm universa consurget. 38 Deum autem Maozim in loco suo venerabitur : & deum, quem ignoraverunt patres ejus, colet auro, & argento, & lapide pretioso, rebúsque pretiosis. 39 Et faciet ut muniat Maozim cum deo alieno, quem cognovit, & multiplicabit gloriam, & dabit eis potestatem in multis, & terram dividet gratuitó. 40 Et in tempore præfinito præliabitur adversùs eum rex Austri, & quasi tempestas veniet contra illum rex Aquilonis, in curribus, & in equitibus, & in classe magna, & ingredietur terras, et conteret, et pertransiet. 41 Et introibit in terram gloriosam, & multæ corruent : hæ autem solæ salvabuntur de manu ejus, Edom, & Moab, & principium filiorum Ammon.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

25 * ܘܥܕܡܐ ܠܙܒܢܐ. ܢܬܬܥܝܪܘܢ ܚܝܠܘܗܝ ܘܠܒܗ ܥܠ ܡܠܟܐ ܕܬܝܡܢܐ. ܘܡܠܟܐ ܕܬܝܡܢܐ
ܢܬܓܪܐ ܠܩܪܒܐ ܒܚܝܠܐ ܪܒܐ. ܘܚܣܝܢ ܙܘܕܐܝܬ. ܘܠܐ ܢܩܘܡ. ܡܛܠ ܕܢܬܚܫܒܘܢ
26 ܥܠܘܗܝ ܡܚܫܒܬܐ. * ܘܐܟܠܝ ܦܬܓܡܗ ܢܬܒܪܘܢܗ. ܘܚܝܠܗ ܢܬܒܕܪ. ܘܢܦܠܘܢ
27 ܩܛܝܠܐ ܣܓܝܐܐ. * ܘܬܪܝܗܘܢ ܡܠܟܐ ܗܠܝܢ. ܠܒܗܘܢ ܠܒܝܫܬܐ. ܘܥܠ ܚܕ ܦܬܘܪܐ.
28 ܕܓܠܐ ܢܡܠܠܘܢ. ܘܠܐ ܢܨܠܚܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܛܐ ܩܨܐ ܠܙܒܢܗ. * ܘܢܗܦܘܟ ܠܐܪܥܗ ܒܚܝܠܐ
29 ܣܓܝܐܐ. ܘܠܒܗ ܠܘܩܒܠ ܩܝܡܐ ܩܕܝܫܐ. * ܘܢܥܒܕ ܐܝܟ ܕܒܩܕܡܝܬܐ. ܐܦ ܒܐܚܪܝܬܐ.
30 * ܘܢܐܬܘܢ ܥܠܘܗܝ ܡܫܪܝܬܐ ܕܟܬܝܐ ܘܢܬܒܪܘܢܗ. ܘܢܗܦܘܟ ܘܢܪܓܙ ܥܠ ܩܝܡܐ ܩܕܝܫܐ.
31 ܘܢܬܒܝܢ ܒܐܝܠܝܢ ܕܫܒܩܘ ܩܝܡܐ ܩܕܝܫܐ. * ܘܥܫܝܢܝܗܘܢ ܡܢܗܘܢ. ܢܩܘܡܘܢ. ܘܢܛܢܦܘܢ
32 ܡܩܕܫܐ ܥܫܝܢܐ. ܘܢܥܒܪܘܢ ܕܒܚܐ. ܘܢܬܠܘܢ ܛܢܦܘܬܐ ܠܚܒܠܐ. * ܘܪܫܝܥܐ ܕܥܒܕܝܢ ܥܠ
33 ܩܝܡܐ ܢܚܝܒ ܐܢܘܢ. ܘܥܡܐ ܕܝܕܥ ܕܚܠܬܐ ܢܬܚܝܠ. * ܘܙܕܝܩܐ ܕܒܥܡܐ ܢܠܦܘܢ
ܠܣܓܝܐܐ. ܘܢܬܬܩܠܘܢ ܒܣܝܦܐ. ܒܢܘܪܐ ܘܒܫܒܝܬܐ ܘܒܒܙܬܐ. ܝܘܡܬܐ ܐܠܦ.
34 * ܘܡܐ ܕܐܬܬܩܠܘ . ܢܬܥܕܪܘܢ ܒܥܘܕܪܢܐ ܙܥܘܪܐ. * ܘܢܬܢܩܦܘܢ ܠܗܘܢ ܣܓܝܐܐ
35 ܒܢܟܠܐ. * ܘܡܢ ܚܟܝܡܐ ܢܬܬܩܠܘܢ. ܠܡܒܚܢܘ ܒܗܘܢ.
36 ܘܠܡܣܬܟܠܘ ܥܕܡܐ ܠܙܒܢܐ ܩܨܝܐ. ܡܛܠ ܕܥܘܕ ܙܒܢܐ ܪܒܐ. * ܘܢܥܒܕ ܡܠܟܐ ܐܝܟ
ܨܒܝܢܗ. ܘܢܬܪܘܪܒ ܥܠ ܟܠ ܐܠܗ. ܘܥܠ ܐܠܗ ܐܠܗܝܢ. ܢܡܠܠ ܪܘܪܒܢ. ܘܢܨܠܚ
37 ܥܕ ܢܫܬܠܡ ܪܘܓܙܐ. ܡܛܠ ܕܦܣܩܬܐ ܐܬܓܙܪܬ. * ܘܠܐܠܗܐ ܕܐܒܗܘܗܝ ܠܐ ܢܬܒܝܢ.
38 ܘܠܐ ܪܓܬ ܢܫܐ ܘܠܐ ܟܠ ܐܠܗ ܠܐ ܢܬܒܝܢ. ܐܠܐ ܥܠ ܟܠ ܢܬܪܘܪܒ. * ܘܠܐܠܗܐ
ܥܫܝܢܐ ܥܠ ܡܘܬܒܗ ܢܫܒܚ. ܘܠܐܠܗܐ ܕܠܐ ܝܕܥܘ ܐܒܗܘܗܝ ܢܫܒܚ. ܒܕܗܒܐ ܘܒܣܐܡܐ.
39 ܘܒܟܐܦܐ ܛܒܬܐ ܘܒܪܓܝܓܬܐ. * ܘܢܥܒܪ ܠܡܕܝܢܬܐ ܥܫܝܢܬܐ ܥܠ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ. ܕܢܚܙܐ.
40 ܘܢܫܠܛ ܒܣܓܝܐܐ. ܘܐܪܥܐ ܢܦܠܓ ܒܕܡܝܐ. * ܘܒܙܒܢܐ ܚܪܝܐ ܢܬܟܬܫ ܥܡܗ ܡܠܟܐ
ܕܬܝܡܢܐ. ܘܢܬܥܝܪ ܥܠܘܗܝ ܡܠܟܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܒܪܟܒܐ ܘܒܦܪܫܐ ܘܒܐܠܦܐ ܣܓܝܐܐ.
41 ܘܢܥܒܪ ܒܐܪܥܐ. * ܘܢܡܛܐ ܠܐܪܥܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܣܓܝܐܐ ܢܬܩܛܠܘܢ. ܘܗܠܝܢ ܢܬܦܨܘܢ
ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ. ܐܕܘܡ ܘܡܘܐܒ. ܘܫܪܟܐ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ.

25 Et usque ad tempus aliquod excitabunt se vires & animus ejus contra regem Austri. Rex quoque Austri provocabitur ad bellum ingenti cum exercitu ; & quidem fortis erit admodum, sed non subsistet, quia technas machinabuntur in eum ; 26 Et comedentes pulmentum ejus, frangent eum ; & exercitus ejus dissipabitur, cadéntque confossi multi. 27 Amborum regum istorum animus ad malum *intentus erit*, & super eadem mensa fraudem loquentur : sed non prosperabuntur, quia perducto ad terminum suum tempore, 28 Revertetur in terram suam copioso cum exercitu : & animus ejus *vertetur* contra fœdus sanctum : 29 Faciétque ut initio, sic etiam postremó. 30 Venient autem contra eum acies Cithæorum, & conterent eum : rursúsque indignabitur contra fœdus sanctum, & rationem habebit eorum qui deseruerint fœdus sanctum. 31 Et fortissimi eorum ex ipsis exurgentes, polluent Sanctuarium munitum, amovebunt sacrificia, ponéntque abominationem ad corruptelam. 32 Porrò eos qui perfidè agent contra fœdus, condemnabit ; & populus qui religionem agnoscet, confirmabitur : 33 Et justi inter populum, docebunt multos ; & impingentur gladio, igni, captivitati, atque direptioni, diebus mille. 34 Postquàm autem corruerint, adjuvabuntur adjumento parvo, adjungent enim se illis multi cum simulatione. 35 Quin etiam è sapientibus corruent, ut per eos probent & intelligant usque ad tempus præfinitum : quoniam adhuc superest longum spatium tempori illi. 36 Rex enim faciet pro sua libidine, efferétque se præ omnibus diis, & contra Deum deorum grandia loquetur : & quidem prosperabitur, donec consummetur indignatio ; quandoquidem sententia lata est. 37 Deum etiam patrum suorum non curabit, concupiscentiam mulierum aut ullum deum nihili æstimabit, sed super omnes efferet sese. 38 Deum autem fortem super sedem suam glorificabit, Deum patribus suis ignotum glorificabit auro, argento, gemmis optimis, & *rebus quibusque* desideratissimis. 39 Transibitque ad urbes munitas contra deos alienos, ut videat & dominetur multis : & terram pretio distribuet. 40 Tempore autem postremo dimicabit in eum rex Austri, & concitabitur in eum rex Aquilonis cum bijugis, & equitib⁹, navibúsq; multis : terrā permeabit, 41 Perveniétque ad terrā Israelis, & multi interficientur : hi autē evadent manu ei⁹, Edom, Moab, & reliqui Ammonitarum.

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Translatione LATINA.

25 Καὶ ἐξεγερθήσεται ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ, ϗ ἡ καρδία αὐτοῦ (β) ἐπὶ βασιλέα τοῦ Νότου ἐν δυνάμει μεγάλῃ. ϗ ὁ βασι-
λεὺς τοῦ Νότου συνάψει πόλεμον (γ) ἐν δυνάμει μεγάλῃ ϗ ἰσχυρᾷ σφόδρα, ϗ οὐ στήσονται, ὅτι λογιοῦνται ἐπ' αὐ-
26 τὸν λογισμοὺς, Καὶ φάγονται τὰ δέοντα αὐτοῦ, ϗ συντρίψουσιν (δ) αὐτὸν, ϗ δυνάμεις κατακλύσει, ϗ πεσοῦνται
27 τραυματίαι πολλοί. Καὶ ἀμφότεροι οἱ βασιλεῖς, αἱ καρδίαι αὐτῶν εἰς πονηρίαν, ϗ ἐπὶ τραπέζῃ μιᾷ ψευδῆ λα-
28 λήσουσι, ϗ οὐ κατευθυνεῖ, ὅτι ἔτι πέρας εἰς καιρόν. Καὶ ἐπιστρέψει εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ ἐν ὑπάρξει πολλῇ, ϗ ἡ καρ-
29 δία αὐτοῦ ἐπὶ διαθήκην ἁγίαν, ϗ ποιήσει, ϗ ἐπιστρέψει εἰς τὴν γῆν αὐτοῦ. Εἰς τὸν καιρὸν ἐπιστρέψει, ϗ ἥξει ἐν
30 τῷ Νότῳ, ϗ οὐκ ἔσται ὡς ἡ πρώτη ϗ (ε) ἡ ἐσχάτη. Καὶ εἰσελεύσονται (ζ) ἐν αὐτῷ οἱ ἐκπορευόμενοι Κίτιοι, ϗ τα-
πεινωθήσεται, ϗ ἐπιστρέψει, ϗ θυμωθήσεται ἐπὶ διαθήκην ἁγίαν· ϗ ποιήσει, ϗ ἐπιστρέψει, ϗ συνήσει ἐπὶ
31 τοὺς καταλιπόντας διαθήκην ἁγίαν. Καὶ (η) σπέρματα ἐξ αὐτοῦ ἀναστήσονται, ϗ βεβηλώσουσι τὸ ἁγίασμα τῆς
32 (θ) δυναστείας, ϗ μεταστήσουσι τὸν (ι) ἐνδελεχισμὸν, ϗ δώσουσι βδέλυγμα (κ) ἠφανισμένον, Καὶ οἱ ἀνομοῦν-
33 τες διαθήκην ἐπάξουσιν ἐν ὀλισθήμασι. ϗ λαὸς (λ) γινώσκοντες θεὸν αὐτοῦ κατισχύσουσι, ϗ ποιήσουσι, Καὶ
οἱ συνετοὶ (μ) τοῦ λαοῦ συνήσουσιν εἰς πολλὰ, ϗ ἀσθενήσουσιν ἐν ῥομφαίᾳ, ϗ ἐν φλογὶ, ϗ ἐν αἰχμαλωσίᾳ, καὶ
34 ἐν διαρπαγῇ ἡμερῶν. Καὶ ἐν τῷ ἀσθενῆσαι αὐτοὺς, βοηθήσονται βοήθειαν μικρὰν, ϗ προστεθήσονται (ν) πρὸς
35 αὐτοὺς πολλοὶ ἐν ὀλισθήμασι. Καὶ ἀπὸ τῶν συνιέντων ἀσθενήσουσι, τοῦ πυρῶσαι αὐτοὺς, (ξ) ϗ τοῦ ἐκλέξασθαι,
36 ϗ τοῦ ἀποκαλυφθῆναι ἕως καιροῦ πέρας, ὅτι ἔτι εἰς καιρόν. Καὶ ποιήσει κατὰ τὸ θέλημα αὐτοῦ. (ο) ϗ ὁ βασι-
λεὺς ὑψωθήσεται ϗ μεγαλυνθήσεται (π) ἐπὶ πάντα θεὸν, ϗ λαλήσει ὑπέρογκα, ϗ κατευθυνεῖ μέχρις οὗ συν-
37 τελεσθῇ ἡ ὀργή, εἰς γὰρ συντέλειαν γίνεται. Καὶ ἐπὶ πάντας θεοὺς τῶν πατέρων (ρ) αὐτοῦ οὐ συνήσει, ϗ ἐπι-
38 θυμίᾳ γυναικῶν, ϗ ἐπὶ πᾶν θεὸν οὐ συνήσει, ὅτι ἐπὶ πάντας μεγαλυνθήσεται. Καὶ θεὸν (σ) μαωζεὶμ ἐπὶ τό-
που αὐτοῦ (τ) δοξάσει, ϗ θεὸν ὃν οὐκ ἔγνωσαν οἱ πατέρες αὐτοῦ, δοξάσει ἐν (‥) χρυσῷ καὶ ἀργύρῳ καὶ λίθῳ τιμίῳ, ϗ
39 ἐν ἐπιθυμήμασι. Καὶ ποιήσει τοῖς ὀχυρώμασι τῶν καταφυγῶν μετὰ θεοῦ ἀλλοτρίου, ϗ πληθυνεῖ δόξαν, καὶ
40 ὑποτάξει αὐτοῖς πολλοὺς, ϗ γῆν διελεῖ ἐν δώροις. Καὶ ἐν (υ) καιροῦ πέρατι συγκερατισθήσεται μετὰ τοῦ βασι-
λέως τοῦ Νότου· ϗ συναχθήσεται (φ) ἐπ' αὐτὸν βασιλεὺς τοῦ Βορρᾶ ἐν ἅρμασι ϗ ἐν ἱππεῦσι ϗ ἐν ναυσὶ πολ-
41 λαῖς, ϗ (χ) εἰσελεύσονται εἰς τὴν γῆν, ϗ συντρίψει, ϗ παρελεύσεται, Καὶ εἰσελεύσεται εἰς τὴν γῆν τοῦ
Σαβαεὶμ, ϗ πολλοὶ ἀσθενήσουσι. καὶ οὗτοι διασωθήσονται ἐκ χειρὸς αὐτοῦ, Ἐδὼμ, καὶ Μωὰβ, καὶ ἀρχὴ
υἱῶν Ἀμμών.

Et excitabitur fortitudo ejus, & cor ejus super regem Austri in virtute ma- 25
gna. Et rex Austri conteret prælium in virtute magna, & forti nimis; &
non stabunt: quia cogitabunt super eum cogitationes: Et comedent neces- 26
saria ejus, & conterent eum: & virtutes (n) inundabit: & cadent in-
terfecti multi. Et utrique reges, corda eorum ad malitiam: & ad men- 27
sam unam mendacia loquentur: & non proficiet; quia adhuc finis in tem-
pus. Et revertetur in terram suam in substantia multa: & cor ejus super 28
testamentum sanctum: & faciet, & revertetur in terram suam. Ad tem- 29
pus revertetur, & veniet ad Austrum: & non erit (o) sicut prima, eti-
am novissima. Et ingredientur ad illum egredientes Citii: & humilia- 30
bitur, & revertetur, & indignabitur super testamentum sanctum. Et fa-
ciet, ac revertetur, & intelliget super eos, qui dereliquerunt testamentum
sanctum. Et (p) semina ex eo consurgent: & polluent sanctificationem 31
fortitudinis: & transferent juge sacrificium: & dabunt abominationem
(q) desolatam: Et qui iniquè agunt, testamentum inducent in lubricitati- 32
bus. Et populus scientes Deum suum obtinebunt, & facient: Et intelli- 33
gentes de populo intelligent in multa: & infirmabuntur in gladio, & in
flamma, & in captivitate, & in rapina dierum. Cùmque infirmati fuerint; 34
adjuvabuntur adjumento parvulo: & applicabuntur eis multi in lubricita-
tibus. Et de intelligentibus infirmabuntur ad conflandum eos, & seligen- 35
dum, & (r) revelandum usque ad temporis terminum: quia adhuc in
tempus. Et faciet juxta voluntatem suam: Et rex elevabitur, & magni- 36
ficabitur adversùs omnem (ſ) deum: & loquetur ingentia: & dirige-
tur; donec compleatur ira: in (t) consummationem enim fit. Et super 37
omnes deos patrum suorum non intelliget: & (u) concupiscentia fœmina-
rum: & super omnem deum non intelliget, quia super omnem magnifi-
cabitur. Et Deum (x) Maozim in loco suo glorificabit: & Deum, quem 38
ignoraverunt patres ejus, glorificabit in auro, & argento, & lapide preti-
oso, & in concupiscentiis. Et faciet munitionibus (y) confugiorum cum deo 39
alieno: & multiplicabit gloriam: & subjiciet ipsis multos: & terram di-
videt in donis. Et in temporis termino concertabit cum rege Austri: 40
et congregabitur super eum rex Aquilonis in curribus, et equitibus, et navibus multis: et (z) ingredientur in terram. Et (ω) conteret, et transibit,
Et introibit in terram (aa) Sabaim: et multi infirmabuntur. Et hi salvabuntur de manu ejus, Edom, et Moab, et principium filiorum Ammon. 41

MS.A. (β) * ϗ βασιλέα (γ) ϗ ἐν (δ) αὐτοῦ, (ε) ὡς ἡ (ζ) οἱ ἐν αὐτῷ ϗ οἱ (η) βραχίονες ϗ σπέρματα (θ) δυνάμεως, (ι) ἐνδελέχισον, (κ) ἠφανισμένον, Καὶ λαοὶ ἀνομοῦντες διαθήκην ἐξάξουσιν (λ) γινώσκων (μ) λαοῦ μου (ν) ἐπ' αὐτοὺς (ξ) τοῦ ἐκλέξασθαι, (ο) ϗ ὑψωθήσεται (π) ὁ βασιλεὺς ἐπὶ πάντα θεὸν, ϗ ἐπὶ τὸν θεὸν τῶν θεῶν, ϗ λαλήσει (ρ) αὐτοῦ συνήσει, ϗ ἐπιθυμίαν γυναικῶν, ϗ ἐπὶ πάντα θεὸν (σ) μαωζεὶ (τ) οὐ δοξάσει, (‥) χρυσίῳ (υ) τῷ καιρῷ (φ) μετ' αὐτοῦ, (χ) εἰσελεύσεται

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

وينهض قوته وقلبه على ملك الجنوب بقوة عظيمة * وملك الجنوب يجمع حربا * وجيش 25
عظيم وقوة عزيزة * ولا يقفون * لأن يفكرون عليه افكارا * وياكلون واجباته * ويكسرونه * 26
ويغرق جيشه * ويسقط جرحا كثيرون * والملوك معا * وقلبهم على الشر * وعلى مايدة واحدة 27
يتكلمون بالكذب * ولا يستقيم * لأن الانتهاء الى زمان ايضا * ويرجع الى ارضه بمال كثير * 28
وقلبه على عهد مقدس * ويصنع * ويعود الى ارضه الى الزمان * ويعود وياتي في الجنوب * وليس 29
يكون مثل الاولى ولا مثل الاخير * ويدخلون الذين فيه والخارجون الكتيون * ويذل 30
ويرتد فيغتاض على العهد الطاهر * ويصنع ويعود ويفطن في الذين تركوا العهد الطاهر *
* والاذرعة والذرية يقومون منه * وينجسون مقدس الاقتدار * ويزيلون الدوام * ويعطون رذلة 31
فاسدة * ويأثمون في العهد * ويجلبون بالزلل * والشعب العارف بالهه يقوون ويصنعون * 32
* وفهماء الشعب يفهمون كثيرا * ويضعفون بالسيف وبالحريق والسبي وبالنهب اياما * وعند 33 34
ما يضعفون يعانون معونة صغيرة * ويزيدون عليهم كثيرون بالزلل * ويضعفون ليحرقوهم 35
ويختاروهم * وليكشفوا الى الزمان * لان الانتهاء ايضا الى زمان * ويصنع كارادته * والملك 36
يرتفع * ويعظم على كل اله وعلى اله الالهة * ويتكلم بالكبائر * ويستقيم الى ان تنقضي السخطة *
لانها تصير الى نهاية * وعلى جميع الهة ابايه لا يفهم * على شهوة النساء وعلى كل اله لا يفهم * 37
لانه يعظم على الكل * ويمجد الهه عزيزا على موضعه * ويمجد الها لم تعرفه اباوه * بذهب 38
وفضة * وحجر مكرم * وبشهوات * ويصنع بحصون الملتجيين باله غريب * لكي يعرف ويكثر 39
مجدا * ويخضع لهم كثيرين * ويقسم الارض بالهدايا * وفي الزمان يتناطح بقرنه مع ملك 40
الجنوب * ويجمع عليه ملك الجربياء بمركبات وفرسان وسفن كثيرة * ويدخل الى الارض
ويكسر * ويبلغ ويدخل الى ارض صابين * وكثيرون يضعفون * وهولاء يخلصون من يده 41
ادوم وموآب وبدو بني عمون *

Et elevabitur fortitudo ejus & animus 25
ejus contra regē Austri summo cū robore.
Rex quoq; Austri bellū coget magno cum
exercitu & virtute potenti; sed non resi-
stent: nam cogitabunt in eum cogitationes,
Et comedent necessaria ipsius, & fran- 26
gent eum, & obruet exercitum ejus, ca-
dentq; vulnerati multi, Et reges pariter. 27
Et cor eorum ad malum erit, & super
eadem mensa loquentur mendacium: at
non prosperabitur, quia terminus adhuc est
ad tempus. Itaq; redibit in terram suam 28
cum pecunia multa, animo ad sanctum fœ-
dus propenso. Cúmq; fecerit, & reversus 29
fuerit in terram suam tempore præfixo;
iterum veniet ad Austrum: sed non erit
ut primâ vice, neq; ut postremâ. Nam in- 30
gredientibus qui sunt in eo, & externis
Cethæis, deprimetur: & aversus indigna-
bitur contra fœdus illud sanctum: cúmq;
fecerit, revertetur & considerabit eos qui
dereliquerunt fœdus sanctum. Et brachia 31
atque progenies exurgent ex eo, & pro-
phanabunt Sanctuarium potentiæ, &
amovebunt juge sacrificium, collocabuntq;
abominationem perniciosam, Iniquè a- 32
gent in fœdus, & inducent lubricitates:
sed populus qui Deum suum novit, con-
fortabuntur & facient; Et prudentes 33
populi multùm intelligent: & infirma-
buntur gladio, incendio, captivitate, &
direptione, diebus aliquot. Cúmq; infir- 34
mati fuerint, juvabuntur auxilio parvo:
& aggravabunt eos multi lubricitati-
bus, Et infirmabuntur: ut comburant 35
eos, & seligant eos, et ut declarentur
tempore statuto: nam terminus adhuc est
ad tempus aliud. Et faciet pro voluntate 36
sua, & elevabit se rex iste, magnificabit-
que se super omnem deum & super De-
um deorum, & grandia loquetur, atque
prosperabitur donec cesset indignatio;
nam perventura est ad terminum usque.
Ne ad omnes quidem patrum suorum 37
deos attendet; ad desiderium fœmina-
rum, aut ad ullum deum non attendet:
quia extollet se super omnes: Honora- 38
bitque Deum suum, fortis in loco suo:
honorabit inquam, Deum quem non cogno-
verunt patres ejus, auro, argento, lapide
pretioso, & rebus exquisitis: Et afficiet 39
arces confugientium ad deum alienum;
ut notior fiat, & majorem sibi gloriam
acquirat: & subjiciet eis multos, divi-
detque terram in munera: Et processu 40
temporis impetet cornu suo regem Austri,
& congregabitur adversùs eum rex
Aquilonis cum curribus, & equitibus,
navibusque multis: & invadet terram,
conteretque: Et perveniet, et ingredi- 41
etur in terram Sabin, et multi infirma-
buntur: at hi manum ejus effugient,
Edom, et Moab, et principium filiorum
Ammon.

דניאל: יב

,argenti & auri thesauris in dominabitur Et .evasionem in erit non Ægypti terra & ; terras in suam manum mittet Et
42 וישלח ידו בארצות וארץ מצרים לא תהיה לפליטה: ומשל במכמני הזהב והכסף 43
:Aquilone ab & ,Oriente ab eum terrebunt rumores Et .ejus gressibus in Chusim & ,Lubim & : Ægypti *desiderabilibus* omnibus *in* &
44 ובכל חמדות מצרים ולבים וכשים במצעדיו: ושמעות יבהלהו ממזרח ומצפון
monte in ,maria inter sui palatii *tentoria* plantabit Et .multos interficiendum *ad* &,perdendum ad magna ira *in* egredietur &
45 ויצא בחמא גדלה להשמיד ולהחרים רבים: ויטע אהלי אפדנו בין ימים להר
.ei adjutor non & ,ejus summitatem ad usque veniet & ; sanctitatis *decoris*
צבי־קדש ובא עד־קצו ואין עוזר לו:

CAP. XII. יב

est factum non quod ,angustiæ tempus erit & ,tui populi filiis *super* stans ,magnus princeps Michael stabit illo tempore in Et
1 ובעת ההיא יעמד מיכאל השר הגדול העמד על־בני עמך והיתה עת צרה אשר לא־נהיתה
multi Et .libro in scriptus inventus omnis tuus populus evadet ipso tempore in & : hoc tempus ad usque *gentem existendo ab*
2 מהיות גוי עד העת ההיא ובעת ההיא ימלט עמך כל־הנמצא כתוב בספר: ורבים
fulgebunt intelligentes Et .*seculi* cōtemptū ad opprobria ad ii & ,*seculi vitas* ad ii ; expergiscētur pulveris *humi dormientibus* è
3 מישני אדמת־עפר יקיצו אלה לחיי עולם ואלה לחרפות לדראון עולם: והמשכילים יזהרו
, verba *obstrue* Daniel tu Et .*perpetuum* & ,seculum in stellæ sicut multos justificantes & ; *expansionis* splendor sicut
4 כזהר הרקיע ומצדיקי הרבים ככוכבים לעולם ועד: ואתה דניאל סתם הדברים
ecce & , Daniel ego vidi Et .scientia multiplicabitur & ,multi discurrent : finis tempus ad usque librum signa &
5 וחתם הספר עד־עת קץ ישטטו רבים ותרבה הדעת: וראיתי אני דניאל והנה
, lineis induto viro dixit Et .fluminis *labium* ad inde *unus* & ,fluminis *labium* ad hinc unus ; stantes alii duo
6 שנים אחרים עמדים אחד הנה לשפת היאר ואחד הנה לשפת היאר: ויאמר לאיש לבוש הבדים
desuper qui , lineis indutum virum audivi Et ?mirabilium finis quo Usque ; fluminis aquas *desuper* qui
7 אשר ממעל למימי היאר עד־מתי קץ הפלאות: ואשמע את־האיש לבוש הבדים אשר ממעל
,*statutum* tempus ad quia ; *seculi vivente in* juravit & ,cœlos ad suā sinistrā & ,suā dexterā elevavit & ,fluminis aquas
למימי היאר וירם ימינו ושמאלו אל־השמים וישבע בחי העולם כי למועד
ego Et .hæc universa consummabuntur,sanctitatis populi manus *dispergere consummare secundū* & : dimidium & ,*statuta* tempora
8 מועדים וחצי וככלות נפץ יד־עם־קדש תכלינה כל־אלה: ואני
signata & ,*obstrusa* quia ; Daniel Vade , dixit Et ?horum novissimo quid ,Domine , dixi & : intellexi non & , audivi
9 שמעתי ולא אבין ואמרה אדני מה אחרית אלה: ויאמר לך דניאל כי־סתמים וחתמים
intelligent non & , impii agent impiè &,multi se *conflabunt* &,dealbabuntur &,se Purificabunt .finis tempus ad usque verba
10 הדברים עד־עת קץ: יתבררו ויתלבנו ויצרפו רבים והרשיעו רשעים ולא יבינו
,mille dies ; *obstupefacientem abominationē dandū ad* & , juge fuerit remotū tempore à Et .intelligent intelligentes & ; impii omnes
11 כל־רשעים והמשכלים יבינו: ומעת הוסר התמיד ולתת שקוץ שמם ימים אלף
tu Et .quinque & triginta , trecentos , mille dies ad attinget & ,*expectantis Beatitudines* .nonaginta & , ducenti
12 13 מאתים ותשעים: אשרי המחכה ויגיע לימים אלף שלש מאות שלשים וחמשה: ואתה
.dierum fine in tua sorte in stabis & , requiesces & : finem ad vade
לך לקץ ותנוח ותעמד לגרלך לקץ הימין:

Versio VULG. LAT.

Et mittet manum suam in terras : & terra Ægypti non ef- 42
fugiet. Et dominabitur thesaurorum auri & argenti, & in 43
omnibus pretiosis Ægypti : per Libyam quoque & Æthi-
opiam transibit. Et fama turbabit eum ab Oriente & ab 44
Aquilone: & veniet in multitudine magna, ut conterat &
interficiat plurimos. Et figet tabernaculum suum Apadno 45
inter maria, super montem inclytum & sanctum : & veniet usque ad summitatem ejus, & nemo auxiliabitur ei.

CAP. XII.

IN tempore autem illo consurget Michael princeps ma- 1
gnus, qui stat pro filiis populi tui : & veniet tempus quale
non fuit ab eo ex quo gentes esse cœperunt usque ad tem-
pus illud. Et in tempore illo salvabitur populus tuus,
omnis qui inventus fuerit scriptus in libro. Et multi de his 2
qui dormiunt in terræ pulvere, evigilabunt ; alii in vitam
æternam, & alii in opprobrium, ut videant semper. Qui 3
autem docti fuerint, fulgebunt quasi splendor firmamenti :
& qui ad justitiam erudiunt multos, quasi stellæ in perpetu-
as æternitates. Tu autem, Daniel, claude sermones, & si- 4
gna librum, usque ad tempus statutum : plurimi pertransi-
bunt & multiplex erit scientia. Et vidi ego Daniel, & ec- 5
ce quasi duo alii stabant : unus hinc super ripam fluminis,
& alius indè ex altera ripa fluminis. Et dixi viro, qui erat 6
indutus lineis, qui stabat super aquas fluminis ; Usquequò
finis horum mirabilium ? Et audivi virum, qui indutus 7
erat lineis, qui stabat super aquas fluminis, cùm elevâsset
dexteram & sinistram suam in cœlum, & jurâsset per Vi-
ventem in æternum, quia in tempus, & tempora, & dimi-
dium temporis. Et cùm completa fuerit dispersio manûs
populi sancti, complebuntur universa hæc. Et ego audivi, 8
& non intellexi. Et dixi ; Domine mi, quid erit post hæc ?
Et ait ; Vade, Daniel, quia clausi sunt, signatique sermo- 9
nes, usque ad præfinitum tempus. Eligentur, & dealba- 10
buntur, & quasi ignis probabuntur multi : & impiè agent
impii, neque intelligent omnes impii, porrò docti intelli-
gent. Et à tempore cùm ablatum fuerit juge sacrificium, 11
& posita fuerit abominatio in desolationem, dies mille du-
centi nonaginta. Beatus, qui expectat, & pervenit usque 12
ad dies mille trecentos trigintaquinque. Tu autem vade ad 13
præfinitum : & requiesces, & stabis in sorte tua in finem
dierum.

Hucusque Danielem in Hebræo volumine legimus. Quæ sequuntur usque ad finem libri, de Theodotionis editione translata sunt.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

42 * ܘܢܦܫܘܛ ܐܝܕܗ ܒܐܬܪܘܬܐ. ܘܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܠܐ ܬܫܬܘܙܒ ܡܢ ܐܝܕܘܗܝ. * ܘܢܫܠܛ ܒܣܝܡܬܐ
43 ܕܕܗܒܐ ܘܕܣܐܡܐ ܘܒܟܠ ܪܓܝܓܬܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܠܘܒܝܐ ܘܟܘܫܝܐ ܢܗܘܘܢ ܒܡܥܕܪܢܘܬܗ.
44 * ܘܫܡܥܐ ܢܫܓܘܫܘܢܗ ܡܢ ܡܕܢܚܐ ܘܡܢ ܓܪܒܝܐ. ܘܢܦܘܩ ܒܚܡܬܐ ܪܒܬܐ ܠܡܩܛܠ
45 ܘܠܡܘܒܕܘ ܠܣܓܝܐܐ. * ܘܢܩܒܥ ܡܫܟܢܗ ܒܐܬܪܐ ܦܩܥܬܐ. ܒܝܬ ܝܡܐ ܠܛܘܪܐ ܘܢܛܪ
ܡܩܕܫܗ. ܘܢܡܛܐ ܚܪܬܗ ܕܙܒܢܗ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܡܥܕܪܢܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ *

1 * ܘܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܢܩܘܡ ܡܝܟܐܝܠ ܡܠܐܟܐ ܪܒܐ ܕܩܐܡ ܥܠ ܒܢܝ ܥܡܟ. ܘܢܗܘܐ ܙܒܢܐ
ܕܐܘܠܨܢܐ. ܕܠܐ ܗܘܐ ܕܟܘܬܗ ܡܢ ܝܘܡܬ ܥܠܡܐ. ܘܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ. ܢܫܬܘܙܒ ܡܢ ܒܢܝ
2 ܥܡܟ. ܟܠ ܕܢܫܬܟܚ ܕܟܬܝܒ ܒܣܦܪܐ. * ܘܣܓܝܐܐ ܕܕܡܟܝܢ ܒܥܦܪܐ
ܢܬܬܥܝܪܘܢ. ܗܠܝܢ ܠܚܝܐ ܕܠܥܠܡ. ܘܗܠܝܢ ܠܚܒܠܐ ܘܠܚܣܕܐ ܕܚܒܪܝܗܘܢ ܠܥܠܡ.
3 * ܘܥܒܕܝ ܛܒܬܐ ܘܡܣܬܟܠܢܐ. ܢܢܗܪܘܢ. ܐܝܟ ܢܘܗܪܗ ܕܪܩܝܥܐ. ܘܗܠܝܢ ܕܡܙܕܕܩܝܢ
ܠܣܓܝܐܐ. ܢܢܗܪܘܢ ܘܢܩܘܡܘܢ ܐܝܟ ܟܘܟܒܐ ܕܒܫܡܝܐ. ܠܥܠܡ ܘܠܥܠܡ ܥܠܡܝܢ.
4 * ܘܐܢܬ ܕܝܢ ܕܢܝܐܝܠ. ܣܝܡ ܚܪܬܐ ܠܡܠܐ ܗܠܝܢ. ܘܫܬܘܩ. ܘܚܬܘܡ ܟܬܒܐ ܗܢܐ ܥܕܡܐ ܠܙܒܢ
5 ܚܪܬܐ. ܘܢܒܥܘܢ ܣܓܝܐܐ. ܘܬܣܓܐ ܝܕܥܬܐ. * ܘܚܙܝܬ ܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ. ܘܗܐ ܬܪܝܢ ܐܚܪܢܝܢ ܩܝܡܝܢ
6 ܚܕ ܠܗܪܟܐ ܕܣܦܬ ܢܗܪܐ. ܘܚܕ ܠܗܪܟܐ. * ܘܐܡܪܘ ܠܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ ܠܒܘܫܐ ܕܐܝܩܪܐ.
7 ܕܩܐܡ ܗܘܐ ܥܠ ܡܝܐ ܕܢܗܪܐ. ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܗܘ ܫܘܠܡܐ. * ܘܫܡܥܬ ܠܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ
ܠܒܘܫܐ ܕܐܝܩܪܐ. ܕܩܐܡ ܗܘܐ ܥܠ ܡܝܐ ܕܢܗܪܐ. ܕܐܪܝܡ ܝܡܝܢܗ ܘܣܡܠܗ ܠܫܡܝܐ. ܘܝܡܐ
ܒܚܝܐ ܕܥܠܡܐ. ܕܠܒܬܪ ܙܒܢ ܙܒܢܝܢ ܘܦܠܓܘܬ ܙܒܢܐ. ܘܡܐ ܕܢܬܦܪܩܘܢ ܐܝܕܝܐ ܕܟܠ ܥܡܐ ܩܕܝܫܐ.
8 ܢܫܬܠܡܘܢ ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ. * ܘܐܢܐ ܕܢܝܐܝܠ ܫܡܥܬ. ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܬ. ܘܐܡܪܬ. ܡܪܝ ܡܢܐ ܒܬܪ
9 ܗܠܝܢ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܙܠ ܕܢܝܐܝܠ. ܡܛܠ ܕܟܣܝܢ ܐܢܘܢ ܘܚܬܝܡܝܢ ܡܠܐ ܗܠܝܢ ܥܕܡܐ ܠܙܒܢܐ.
10 * ܢܬܕܟܘܢ. ܘܢܬܚܘܪܘܢ. ܘܢܬܒܚܪܘܢ ܣܓܝܐܐ. ܘܢܚܛܘܢ ܚܛܝܐ. ܘܠܐ ܢܣܬܟܠܘܢ ܟܠܗܘܢ
11 ܚܛܝܐ. ܥܒܕܝ ܛܒܬܐ ܕܝܢ ܢܣܬܟܠܘܢ. * ܘܡܢ ܙܒܢܐ ܕܢܒܛܠ ܕܒܚܐ. ܢܬܝܗܒ ܛܢܦܘܬܐ
12 ܠܚܒܠܐ. ܝܘܡܝܢ ܐܠܦ ܘܡܐܬܝܢ ܘܬܫܥܝܢ. * ܛܘܒܘܗܝ ܠܡܢ ܕܡܣܟܐ ܕܢܡܛܐ
13 ܠܝܘܡܝܢ ܐܠܦ ܘܬܠܬܡܐܐ ܘܬܠܬܝܢ ܘܚܡܫܐ. * ܘܐܢܬ ܕܢܝܐܝܠ. ܙܠ ܠܚܪܬܐ ܘܢܘܚ.
ܘܬܩܘܡ ܒܙܒܢܟ. ܒܚܘܪܬ ܝܘܡܬܐ.

* ܫܠܡ ܕܢܝܐܝܠ *

Extendet quoq; manū suam ad provincias, & 42
terra Ægypti non effugiet man⁹ ej⁹: Sed do- 43
minabitur thesauro auri & argenti, & preti-
osis quibusq; reb⁹ Ægypti : & Libyes Æthi-
opesq; erunt in auxiliū ipsius. Rumorib⁹ autē 44
urgentibus eum ab Oriente & ab Aquilone,
prodibit magna cum ira ad occidendum &
perdendum plurimos : Figétque tentorium 45
suum in loco plano, mare inter ac montem, &
servabit Sanctuarium ejus: adveniente verò
fine temporis ejus, nemo erit illi adjutor.

CAP. XII.

EOdem illo tempore exurget Michael an- 1
gelus maximus, præpositus popularibus tuis :
erit autem tempus angustiæ, cui simile nun-
quam extitit à diebus seculorum: & eodem il-
lo tempore servabitur è popularib⁹ tuis qui-
quis inventus fuerit scriptus in libro. Et mul- 2
ti qui in pulvere dormiunt, expergiscentur ;
quidam ad vitam æternam, quidam verò ad
interitum & opprobrium sociorum suorum
æternum. Agentes bona & prudentes splende- 3
bunt sicut lumen firmamenti ; & qui justifi-
cant multos, fulgebunt stabuntque ceu stellæ
quæ sunt in cœlo, in seculum & in seculum
seculorum. Tu quidem Daniel, impone finem 4
sermonibus istis, & tace, & obsigna librum
istum ad postremū usque tempus : perquirent
multi, & augebitur scientia. Tum vidi ego 5
Daniel, & ecce duo alii stantes, unus ad hanc
fluminis ripam, alter ad illam. Qui dixerunt 6
viro illi induto vestibus gloriosissimis, qui sta-
bat super aquas fluminis ; Quando tandem e-
rit hic finis ? Et audivi virum illum indutum 7
vestibus magnificis, qui stabat super aquas flu-
minis, sublatâ cœlum versùs dexterâ & sini-
strâ suâ, jurâsse per Viventem æternùm ; quòd
post tempus temporum & dimidium tempo-
ris, & quo tempore liberabuntur manus to-
ti⁹ populi sancti; perficienda sunt hæc omnia.
Cúmq; ego Daniel audiens non intelligerem, 8
dixi; Domine mi, quid post hæc *futurum* est?
Qui dixit mihi ; Abi Daniel : nam occulti 9
sunt & obsignati sermones isti usque ad tem-
pus præfinitum. Purgabuntur, dealbabuntur, 10
& probabuntur multi : peccatores peccabunt,
& non intelligent omnes peccatores; agentes
autem bona intelligent. Et à quo tempore 11
cessabit sacrificium, ponetur abominatio ad
corruptelam diebus mille ducentis nonagin-
ta. Beatus ille qui præstolabitur ut perveni- 12
at ad dies mille trecentos trigintaquinque.
Cæterùm tu Daniel, abi, ad finem usque qui- 13
esce: tum resurges tempore tuo, in fine dierum.

Absolutus est Daniel.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

42 43 Καὶ ἐκτενεῖ τὴν (ˀ) χεῖρα ἐπὶ τὴν γῆν, ϗ γῆ Αἰγύπτου οὐκ ἔσται εἰς σωτηρίαν. Καὶ κυριεύσει ἐν τοῖς ἀποκρύφοις τοῦ
(ψ) χρυσοῦ ϗ τοῦ ἀργύρου, ϗ ἐν πᾶσιν ἐπιθυμητοῖς Αἰγύπτου, ϗ Λιβύων, ϗ Αἰθιόπων, ἐν τοῖς ὀχυρώμασιν αὐ-
44 τῶν. Καὶ ἀκοαὶ ϗ σπουδαὶ ταράξουσιν αὐτὸν ἐξ ἀνατολῶν ϗ ἀπὸ Βορρᾶ· ϗ ἥξει ἐν θυμῷ πολλῷ, τοῦ ἀφανίσαι
45 (ω) πολλούς. Καὶ πήξει τὴν σκηνὴν αὐτοῦ (α) ἐφαδανῷ, ἀναμέσον τῶν θαλασσῶν, εἰς ὄρος (β) σαβαεὶν ἅγιον, ἥξει
ἕως μέρους αὐτοῦ, ϗ οὐκ ἔστιν ὁ ῥυόμενος αὐτόν.

Et extendet manum ſuper terram: & terra Ægypti non erit in ſa- 42
lutem. Et dominabitur in reconditis auri, & argenti, & in omnibus 43
deſiderabilibus Ægypti, & Lybum, & Æthiopum, in munitionibus eorum.
Et rumores, & feſtinationes turbabunt eum ab Oriente, & ab Aquilone. Et 44
veniet in furore multo ad (bb) diſperdendum multos: Et figet tabernaculum 45
ſuum (cc) Ephadano in medio marium in monte (dd) Sabain ſancto: veniet
uſque ad partem ejus: & non eſt qui eruat eum.

MS. A. (ˀ) χεῖρα αὐτοῦ (ψ) χρυσίου ϗ τοῦ ἀργυρίου, ϗ πᾶσιν (ω) ϗ τοῦ ἀναθεματίσαι πολλούς. (α) ἐν φαδανῷ, (β) σαβεὶν ἅγιον, ϗ ἥξει ἕως μέρους ὄρους αὐτοῦ,

ΚΕΦ. ιβ΄.

1 Καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἀναστήσεται Μιχαὴλ ὁ ἄρχων ὁ μέγας, ὁ ἑστηκὼς ἐπὶ τοὺς υἱοὺς τοῦ λαοῦ σου· ϗ ἔσται και-
ρὸς θλίψεως, θλίψις οἵα οὐ γέγονεν (α) ἀφ᾽ οὗ γεγένηται ἔθνος ἐν τῇ γῇ, ἕως τοῦ καιροῦ ἐκείνου. (β) ἐν τῷ
2 καιρῷ ἐκείνῳ σωθήσεται ὁ λαός σου πᾶς (γ) ὁ γεγραμμένος ἐν τῇ βίβλῳ. Καὶ πολλοὶ τῶν καθευδόντων ἐν
3 γῆς χώματι (δ) ἐξεγερθήσονται, οὗτοι εἰς ζωὴν αἰώνιον, ϗ οὗτοι εἰς ὀνειδισμὸν ϗ εἰς αἰσχύνην αἰώνιον. Καὶ
οἱ συνιέντες (ε) λάμψουσιν ὡς ἡ λαμπρότης τοῦ στερεώματος, ϗ ἀπὸ τῶν δικαίων τῶν πολλῶν ὡς οἱ ἀστέρες εἰς
4 τοὺς αἰῶνας, ϗ ἔτι. Καὶ σὺ Δανιὴλ ἔμφραξον (ζ) τοὺς λόγους, ϗ σφράγισον τὸ βιβλίον ἕως καιροῦ συντελείας,
5 ἕως διδαχθῶσι πολλοὶ ϗ πληθυνθῇ ἡ γνῶσις. Καὶ ἴδον ἐγὼ Δανιήλ, ϗ ἰδοὺ δύο ἕτεροι εἱστήκεισαν, εἷς ἐντεῦ-
6 θεν τοῦ χείλους τοῦ ποταμοῦ, ϗ εἷς ἐντεῦθεν τοῦ χείλους τοῦ ποταμοῦ. Καὶ (η) εἶπε τῷ ἀνδρὶ τῷ ἐνδεδυμένῳ τὰ
7 βαδδίν, ὃς ἦν ἐπάνω τοῦ ὕδατος τοῦ ποταμοῦ, Ἕως πότε τὸ πέρας ὧν εἴρηκας τῶν θαυμασίων· Καὶ ἤκουσα
τοῦ ἀνδρὸς τοῦ ἐνδεδυμένου τὰ βαδδίν, ὃς ἦν ἐπάνω τοῦ ὕδατος τοῦ ποταμοῦ· ϗ ὕψωσε τὴν δεξιὰν αὐτοῦ ϗ
τὴν ἀριστερὰν αὐτοῦ εἰς τὸν οὐρανόν, ϗ ὤμοσεν ἐν τῷ ζῶντι εἰς τὸν αἰῶνα, ὅτι εἰς καιρὸν (θ) καιρῶν ϗ ἥμισυ καιροῦ, ἐν
8 τῷ συντελεσθῆναι διασκορπισμὸν γνώσονται πάντα ταῦτα. (ι) Καὶ ἐγὼ ἤκουσα, ϗ οὐ συνῆκα· ϗ εἶπα, Κύριε,
9 τί (κ) τὰ ἔσχατα τούτων; Καὶ εἶπεν, Δεῦρο Δανιήλ, ὅτι (λ) ἐμπεφραγμένοι ϗ ἐσφραγισμένοι οἱ λόγοι ἕως και-
10 ροῦ πέρας. Ἐκλεγῶσι, ϗ (μ) ἐκλευκανθῶσι, ϗ πυρωθῶσι, ϗ ἁγιασθῶσι πολλοί· ϗ (ν) ἀνομήσωσιν ἄνομοι,
11 ϗ οὐ συνήσουσι πάντες ἄνομοι, ϗ οἱ νοήμονες συνήσουσι. Καὶ ἀπὸ καιροῦ τῆς ἀπαλλάξεως τοῦ ἐνδελεχισμοῦ, (ξ) ϗ
12 δοθήσεται τὸ βδέλυγμα ἐρημώσεως, ἡμέραι χίλιαι διακόσιαι ἐνενήκοντα. Μακάριος ὁ (˙) ὑπομένων ϗ
13 φθάσας εἰς ἡμέρας χιλίας τριακοσίας τριακονταπέντε. Καὶ σὺ δεῦρο, ϗ ἀναπαύου· ἔτι γὰρ ἡμέραι (ο) ϗ ὧραι
εἰς ἀναπλήρωσιν συντελείας, (˜) ϗ ἀναστήσῃ εἰς τὸν κλῆρόν σου εἰς συντέλειαν ἡμερῶν. †

CAP. XII.

Et in tempore illo conſurget Michael princeps magnus, qui ſtat pro filiis 1
populi tui. Et erit tempus tribulationis, tribulatio, qualis non fuit, ex quo fa-
cta eſt gens in terra uſque ad tempus illud. In tempore illo ſalvabitur po-
pulus tuus omnis, qui ſcriptus fuerit in libro. Et multi de his qui dormiunt 2
in terræ pulvere, evigilabunt, alii in vitam æternam, & alii in opprobrium,
& confuſionem æternam. Et intelligentes ſulgebunt quaſi ſplendor firma- 3
menti: & (a) de juſtis plurimis, quaſi ſtellæ in ſecula, & ultrà. Tu autem, 4
Daniel, claude ſermones, & ſigna librum uſque ad tempus conſummationis;
donec doceantur multi, & multiplicetur ſcientia. Et vidi ego Daniel; & 5
ecce alii duo ſtabant, unus hinc ſuper labium fluminis, & alius indè ex
alio labio fluminis. Et (b) dixit viro, qui indutus erat Baddin, qui ſtabat 6
ſuper aquam fluminis; Uſquequò finis iſtorum, quæ dixiſti, mirabilium?
Et audivi virum, qui indutus erat Baddin, qui ſtabat ſuper aquam fluminis: 7
& elevavit dexteram ſuam, & ſiniſtram ſuam in cœlum: & juravit in Vi-
vente in æternum; Quia in tempus (c) temporum, & dimidium temporis, cùm
completa fuerit diſperſio, cognoſcent univerſa hæc. Et ego audivi, & non 8
intellexi. Et dixi; Domine, quid noviſſima horum? Et dixit; Vade, Da- 9
niel; quia clauſi ſignatique ſunt ſermones uſque ad temporis finem. Eli- 10
gentur, & dealbabuntur, & quaſi per ignem probabuntur, & ſanctificabuntur
multi: & iniquè agent iniqui: neq; intelligent omnes iniqui: & docti intel-
ligent. Et à tempore mutationis jugis ſacrificii, & dabitur abominatio de- 11
ſolationis, dies mille ducenti nonaginta. Beatus qui expectat, et pervenit ad 12
dies mille trecentos triginta quinq;. Tu autem [Daniel] vade, et quieſce. Adhuc enim dies, (d) et horæ in completionem conſummationis : et reſurges in ſorte tua in conſummatione dierum. 13

MS. A. (α) ἀφ᾽ ἧς γεγένηται ἔθνος ἐπὶ τῆς γῆς, (β) ϗ ἐν (γ) ὁ εὑρεθεὶς ὁ γεγραμμένος (δ) ἐγερθήσονται, (ε) ἐκλάμψουσιν (ζ) τὸ βιβλίον, ϗ σφράγισον τοὺς λόγους ἕως καιροῦ (η) εἶπον (θ) ϗ καιροὺς ϗ εἰς ἥμισυ καιροῦ, ἐν τῷ συντελέσαι διασκορπισμὸν λαοῦ ἡγιασμένου, ϗ γνώσονται (ι) Κἀγὼ (κ) ἔσχατα (λ) ἐμπεφραγμένοι (μ) πυρωθῶσιν, (ν) ἀνθήσουσιν (ξ) ἀφ᾽ οὗ ἀνέστη ἡ θυσία διαπαντός, ϗ ἑτοιμάσθη δοθῆναι τὸ βδέλυγμα τῆς ἐρημώσεως, ἡμέραις χιλίαις διακοσίαις ἐνενήκοντα. (˙) ὑπομείνας (ο) εἰσὶν εἰς (˜) ϗ ἀναπαύσῃ ϗ ἀναστήσῃ †ὍΡΑΣΙΣ ια΄.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ويمد يده على الارض * وارض مصر لا تكون للخلاص * ويسود في مخابي الذهب والفضة * 42 43
وفي كل مشتهيات مصر * والنوبة والحبش في حصونهم * والسماعات والمرسات تقلقه من 44
المشارق ومن الجربياء * ويأتي بحنق كثير ليبيد ويحرم كثيرين * وينصب مظلته في 45
مكان سهل بين البحور على جبل صابايين المقدس * ويأتي الى حده ولا يكون من
ينجيه *

Et cùm extendet manum ſuam ſuper ter- 42
ram, etiam terra Ægypti non erit inco-
lumis; Sed potietur latebrarum auri & 43
argenti, omniumque rerum exquiſitarum
Ægypti. Verùm Nubæ & Æthiopes in
arcibus ſuis: Et rumores falſæque famæ 44
conturbabunt eum ab Oriente & ab Aqui-
lone: quapropter veniet cum ira magna
ad perdendum & abolendos multos: Fi- 45
getque tabernaculum ſuum in loco plano
inter maria, ſuper monte Sabain ſancto:
veniet inquam, ad limites ejus uſque, nec
erit qui eripiat eum.

* الفصل الثاني عشر *

* وفي ذلك الزمان يقوم ميخاييل الرييس العظيم القايم على بني شعبك * ويكون زمان 1
ضيقة * ضيقة لم يكن مثلها منذ صارت الامة على الارض حتى ذلك الزمان * وفي
ذلك الزمان يخلص شعبك * كل من وجد مكتوبا في السفر * وكثيرون من الهاجعين في 2
تراب الارض يستيقظون * هاولاء لحياة ابدية * وهاولاء للتعيير وخزي ابدي * والفهمون 3
يزهرون مثل بهاء الجلد * ومن الصديقين كثيرين مثل النجوم * الى الاباد وايضا * وانت 4
يا دانيال اكتم الكلمات الى زمان الانتهاء * حتى يتعلم كثيرون * ويكثر المعرفة *
* ونظرت انا دانيال * واذا اثنان آخران وقفا واحد من ههنا على شاطي النهر * وآخر من 5
ههنا على شاطي النهر * وقالا للرجل اللابس اثواب الوقار الذي كان فوق ماء النهر * الى 6
متى نهاية العجايب التي قلتها * وسمعت الرجل اللابس اثواب الوقار * الذي كان فوق 7
النهر * ورفع يمينه ويساره الى السماء * وحلف بالحي الى الابد * انه الى الوقت ووقتين ونصف
وقت * عند ما يكمل تفرق يد الشعب المقدس * يفهمون هذه كلها * وانا سمعت ولم افهم 8
فقلت يا سيدي ما اواخر هاولاء * وما هذه الامثال * فقال هلم يا دانيال * ان هذه الكلمات 9
مكتومة ومختومة الى نهاية الزمان * يصطفون ويبيضون ويختبرون ويتقدسون كثيرون * 10
والاثمة يأثمون * وجميع الاثمة لا يفهمون * والفهماء يفهمون * ومن زمان تغيير الدوام * مدة 11
قامت ذبيحة كل حين * وتهيت لتعطي رذلة الخراب * الفا ومايتين وتسعين يوما * مغبوط 12
الذي يصبر ويبلغ الى الف وثلثمية خمسة وثلثين يوما * وانت هلم واسترح * لان هذه 13
ايضا ايام وساعات لكمال الانتهاء * وتستريح وتقوم لميراثك الى انتهاء الايام *

CAP. XII.

Eo tempore conſurget Michael princeps 1
magnus qui præeſt popularibus tuis: eritq;
tempus calamitatis, tantæ calamitatis ut
nulla ſimilis acciderit ex quo condita fuit
gens ſuper terram uſque ad illud tempus:
eoque tempore ſalvabitur populus tuus,
quicunque inventus fuerit ſcriptus in li-
bro. Et multi ex dormientibus in pul- 2
vere terræ, evigilabunt; hi ad vitam æ-
ternam, illi verò ad opprobrium & igno-
miniam æternam. Prudentes quidem 3
nitebunt ſicut ſplendor firmamenti; &
de juſtis multis, tanquam ſtellæ, ad æ-
ternitates uſque, & ultrà. Tu verò O 4
Daniel, reconde verba iſta uſque ad tem-
pus termini, donec addiſcant multi, &
multiplicetur ſcientia. Deindè vidi ego 5
Daniel, & ecce duo alii ſteterunt u-
nus hinc ad ripam fluminis, alter indè
ad ripam fluminis; Et dixerunt vi- 6
ro illi induto veſtibus honoris, qui erat
ſuper aquam fluminis; Quouſque ter-
minus erit mirabilium illorum quæ di-
xiſti? Et audivi virum illum indu- 7
tum veſtibus honoris, qui erat ſuper
flumen, ſublatâ dexterâ & ſiniſtrâ ſuâ
cœlum verſùs, juráſſe per Viventem
in æternum; quòd poſt tempus, &
duo tempora, & dimidium temporis,
ubi expleta eſſet diſperſio manûs po-
puli ſancti, intellecturi ſunt hæc omnia.
Cùm ego hæc audiſſem, nec intellexiſſem, 8
dixi, O Domine, quænam erunt iſto-
rum noviſſima? & quænam ſunt hæ
comparationes? Dixit, Abi O Da- 9
niel; nam hæc verba recondita ſunt et
obſignata uſque ad terminum temporis.
Eligentur, dealbabuntur, probabun- 10
tur, & ſanctificabuntur multi: iniqui
iniquè agent, & omnes iniqui non
intelligent; prudentes autem intelligent.
Et à termino mutationis jugis cultûs, 11
ex quo ſubſtiterit ſacrificium omnis
temporis, & præſtò fuerit ut collocetur
abominatio deſolationis, mille ducenti 12
nonaginta dies erunt. Beatus qui ex-
pectabit & perveniet ad mille trecentos
trigintaquinque dies. Tu autem vade, 13
& quieſce; hi enim adhuc ſunt dies
& horæ ad conſummationem termini:
quieſces autem, & reſurges ad hære-
ditatem tuam in finem uſque die-
rum.

HOSEE.

ספר הושע : א ב

CAP. I. א

diebus in ,Beeri filium Hoseah ad fuit quod Domini Verbum
1 דְּבַר־יְהוָה׀ אֲשֶׁר הָיָה אֶל־הוֹשֵׁעַ בֶּן־בְּאֵרִי בִּימֵי
diebus in & ;Jehudah regum Jechizchijah ,Achaz ,Jotham ,Huzijah
עֻזִּיָּה יוֹתָם אָחָז יְחִזְקִיָּה מַלְכֵי יְהוּדָה וּבִימֵי
Dominus est locutum Principio .Israel regis Joas filii Jarobham
2 יָרָבְעָם בֶּן־יוֹאָשׁ מֶלֶךְ יִשְׂרָאֵל׃ תְּחִלַּת דִּבֶּר־יְהוָה
uxorem tibi accipe ,Vade ,Hoseah ad Dominus dixit & :Hoseah in
בְּהוֹשֵׁעַ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֶל־הוֹשֵׁעַ לֵךְ קַח־לְךָ אֵשֶׁת
terra fornicabitur fornicando quia ,fornicationũ natos & ,fornicationum
זְנוּנִים וְיַלְדֵי זְנוּנִים כִּי־זָנֹה תִזְנֶה הָאָרֶץ
:Diblaim filiam Ghomer accepit & ,ivit Et .Dominum post à
3 מֵאַחֲרֵי יְהוָה׃ וַיֵּלֶךְ וַיִּקַּח אֶת־גֹּמֶר בַּת־דִּבְלָיִם
Voca ,eum ad Dominus dixit Et .filium ei peperit & ,concepit &
4 וַתַּהַר וַתֵּלֶד־לוֹ בֵּן׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלָיו קְרָא
sanguines visitabo & ,paululum adhuc quoniam :Izrehel ejus nomen
שְׁמוֹ יִזְרְעֶאל כִּי־עוֹד מְעַט וּפָקַדְתִּי אֶת־דְּמֵי
.Israel domus regnum faciam cessare & ,Jehu domum super ,Izrehel
יִזְרְעֶאל עַל־בֵּית יֵהוּא וְהִשְׁבַּתִּי מַמְלְכוּת בֵּית יִשְׂרָאֵל׃
valle in Israel arcum conteram & ;illa die in erit Et
5 וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא וְשָׁבַרְתִּי אֶת־קֶשֶׁת יִשְׂרָאֵל בְּעֵמֶק
Voca ,ei dixit & ,filiam peperit & ,adhuc concepit Et .Izrehel
6 יִזְרְעֶאל׃ וַתַּהַר עוֹד וַתֵּלֶד בַּת וַיֹּאמֶר לוֹ קְרָא
domus miserear ultrà addam non quia ;Ruchamah-Lo ejus nomen
שְׁמָהּ לֹא רֻחָמָה כִּי לֹא אוֹסִיף עוֹד אֲרַחֵם אֶת־בֵּית
,miserebor Jehudah domui Et .eos tollam tollendo quia ,Israel
7 יִשְׂרָאֵל כִּי־נָשֹׂא אֶשָּׂא לָהֶם׃ וְאֶת־בֵּית יְהוּדָה אֲרַחֵם
,arcu in eos servabo non & :suo Deo Domino in eos faciam salvos &
וְהוֹשַׁעְתִּים בַּיהוָה אֱלֹהֵיהֶם וְלֹא אוֹשִׁיעֵם בְּקֶשֶׁת
-Lo ablactavit Et .equitibus in & ,equis in ,bello in & ,gladio in &
8 וּבְחֶרֶב וּבְמִלְחָמָה בְּסוּסִים וּבְפָרָשִׁים׃ וַתִּגְמֹל אֶת־לֹא
ejus nomen Voca ,dixit Et .filium peperit & ,concepit & ,Ruchamah
9 רֻחָמָה וַתַּהַר וַתֵּלֶד בֵּן׃ וַיֹּאמֶר קְרָא שְׁמוֹ
ero non ego & ,meus populus non vos quia ;Hammi-Lo
לֹא עַמִּי כִּי אַתֶּם לֹא עַמִּי וְאָנֹכִי לֹא־אֶהְיֶה
quæ ,maris arena sicut Israel filiorum numerus erit Et .vobis
10 לָכֶם׃ וְהָיָה מִסְפַּר בְּנֵי־יִשְׂרָאֵל כְּחוֹל הַיָּם אֲשֶׁר
dicetur quo loco in erit & :numerabitur non & ,mensurabitur non
לֹא־יִמַּד וְלֹא יִסָּפֵר וְהָיָה בִּמְקוֹם אֲשֶׁר־יֵאָמֵר
.Viventis Dei Filii ,eis dicetur ;vos meus populus Non ,eis
לָהֶם לֹא־עַמִּי אַתֶּם יֵאָמֵר לָהֶם בְּנֵי אֵל־חָי׃
sibi ponent & ,pariter Israel filii & ,Jehudah filii congregabuntur Et
11 וְנִקְבְּצוּ בְּנֵי־יְהוּדָה וּבְנֵי־יִשְׂרָאֵל יַחְדָּו וְשָׂמוּ לָהֶם
.Izrehel dies magnus quia ;terra de ascendent & ,unum caput
רֹאשׁ אֶחָד וְעָלוּ מִן־הָאָרֶץ כִּי גָדוֹל יוֹם יִזְרְעֶאל׃

CAP. II. ב

.Ruchamah vestris sororibus & ;Hammi vestris fratribus Dicite
1 אִמְרוּ לַאֲחֵיכֶם עַמִּי וְלַאֲחוֹתֵיכֶם רֻחָמָה׃
;mea uxor non ipsa quoniam ,contendite ,vestra matre cum Contendite
2 רִיבוּ בְאִמְּכֶם רִיבוּ כִּי־הִיא לֹא אִשְׁתִּי
,suis faciebus à suas fornicationes auferat & :ejus vir non ego &
וְאָנֹכִי לֹא אִישָׁהּ וְתָסֵר זְנוּנֶיהָ מִפָּנֶיהָ
.sua ubera inter ab sua adulteria &
וְנַאֲפוּפֶיהָ מִבֵּין שָׁדֶיהָ׃

Versio VULG. LAT.

PROPHETIA OSEE.

CAP. I.

1 VErbum Domini, quod fa-
ctum est ad Osee filium Beeri, in
diebus Oziæ, Joathan, Achaz,
Ezechiæ, regum Juda, & in die-
bus Jeroboam filii Joas regis
2 Israel. Principium loquendi Do-
mino in Osee: & dixit Domi-
nus ad Osee; Vade, sume tibi
uxorem fornicationum, & fac ti-
bi filios fornicationum: quia
fornicans fornicabitur terra à
3 Domino. Et abiit, & accepit
Gomer filiam Debelaim: & con-
4 cepit, & peperit ei filium. Et
dixit Dominus ad eum; Voca
nomen ejus Jezrahel: quoniam
adhuc modicum, & visitabo san-
guinem Jezrahel super domum
Jehu, & quiescere faciam re-
5 gnum domûs Israel. Et in illa
die conteram arcum Israel in val-
le Jezrahel. Et concepit adhuc,
6 & peperit filiam. Et dixit ei;
Voca nomen ejus, Absq; miseri-
cordia: quia nõ addam ultrà mise-
reri domui Israel, sed oblivione
7 obliviscar eorum. Et domui Juda
miserebor, & salvabo eos in Do-
mino Deo suo: & non salvabo
eos in arcu, & gladio, & in bello,
8 & in equis, & in equitibus. Et
ablactavit eam, quæ erat Absque
misericordia. Et concepit, & pe-
9 perit filium. Et dixit; Voca no-
men ejus, Non populus meus:
quia vos non populus meus, &
10 ego non ero vester. Et erit nume-
rus filiorum Israel quasi arena
maris, quæ sine mensura est, &
non numerabitur. Et erit in loco
ubi dicetur eis; Non populus me-
us vos: dicetur eis; Filii Dei vi-
11 ventis. Et congregabuntur filii
Juda, & filii Israel pariter: &
ponent sibimet caput unum, &
ascendent de terra: quia magnus
dies Jezrahel.

CAP. II.

1 DIcite fratribus vestris; Po-
pulus meus: & sorori vestræ;
2 Misericordiam consecuta. Judi-
cate matrem vestram, judicate:
quoniam ipsa non uxor mea,
& ego non vir ejus. Auferat
fornicationes suas à facie sua,
& adulteria sua de medio uberum
suorum.

Versio GRÆCA LXX. Interp. Cum Translatione LATINA.

ὨΣΗΕ' Α'.

ΚΕΦ. α'.

1 Λόγος κυρίου, ὃς ἐγενήθη πρὸς Ὠσηὲ τὸν
τοῦ Βεηρεὶ, ἐν ἡμέραις Ὀζίου, καὶ Ἰωάθαμ,
καὶ Ἄχαζ, καὶ Ἐζεκίου βασιλέων Ἰούδα, καὶ
ἐν ἡμέραις Ἱεροβοὰμ (α) υἱοῦ Ἰωὰς βασιλέως
2 Ἰσραήλ. Ἀρχὴ λόγου κυρίου (β) ἐν Ὠσηέ.
καὶ εἶπε κύριος πρὸς Ὠσηὲ, (γ) Βάδιζε,
λάβε σεαυτῷ γυναῖκα πορνείας, καὶ τέκνα
πορνείας, διότι ἐκπορνεύουσα ἐκπορνεύσει
3 ἡ γῆ ἀπὸ ὄπισθεν τοῦ κυρίου. Καὶ ἐπορεύθη,
καὶ ἔλαβε τὴν Γόμερ θυγατέρα Δεβηλαίμ· καὶ
4 συνέλαβε καὶ ἔτεκεν αὐτῷ υἱόν. Καὶ εἶπε
κύριος πρὸς αὐτὸν, Κάλεσον τὸ ὄνομα αὐ-
τοῦ Ἰεζραὲλ, διότι ἔτι μικρὸν, καὶ ἐκ-
δικήσω τὸ αἷμα τοῦ Ἰεζραὲλ ἐπὶ τὸν
οἶκον Ἰούδα, καὶ καταπαύσω βασιλείαν οἴκου
5 Ἰσραήλ. Καὶ ἔσται, ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ
συντρίψω τὸ τόξον τοῦ Ἰσραὴλ ἐν (δ) κοι-
6 λάδι τοῦ Ἰεζραέλ. Καὶ συνέλαβεν ἔτι,
καὶ ἔτεκε θυγατέρα. καὶ εἶπεν αὐτῷ, Κάλε-
σον τὸ ὄνομα αὐτῆς, Οὐκ ἠλεημένη, διότι οὐ
μὴ προσθήσω ἔτι ἐλεῆσαι τὸν οἶκον (ε) Ἰσρα-
ὴλ, ἀλλ' ἢ ἀντιτασσόμενος ἀντιτάξομαι αὐ-
7 τοῖς. Τοὺς δὲ υἱοὺς Ἰούδα ἐλεήσω, καὶ σώσω αὐ-
τοὺς ἐν κυρίῳ θεῷ αὐτῶν, καὶ οὐ σώσω αὐτοὺς
ἐν τόξῳ, (ζ) οὐδὲ ἐν ῥομφαίᾳ, (η) οὐδὲ ἐν πο-
λέμῳ, (θ) οὐδὲ ἐν ἵπποις, οὐδὲ ἐν ἱππεῦσι.
8 Καὶ ἀπεγαλάκτισε τὴν Οὐκ ἠλεημένην· καὶ
9 συνέλαβεν ἔτι, καὶ ἔτεκεν υἱόν. Καὶ εἶπε,
Κάλεσον τὸ ὄνομα αὐτοῦ, Οὐ λαός μου,
διότι ὑμεῖς οὐ λαός μου, καὶ ἐγὼ οὐκ εἰμὶ ὑ-
10 μῶν. Καὶ ἦν ὁ ἀριθμὸς τῶν υἱῶν Ἰσραὴλ, ὡς
ἡ ἄμμος τῆς θαλάσσης, ἣ οὐκ ἐκμετρηθήσεται,
οὐδὲ ἐξαριθμηθήσεται. καὶ ἔσται, ἐν τῷ τό-
πῳ, οὗ ἐρρέθη αὐτοῖς, Οὐ λαός μου ὑμεῖς,
(ι) κληθήσονται καὶ αὐτοὶ υἱοὶ θεοῦ ζῶντος.
11 Καὶ συναχθήσονται (κ) υἱοὶ Ἰούδα, καὶ οἱ υἱοὶ
Ἰσραὴλ ἐπὶ τὸ αὐτὸ, καὶ θήσονται (λ) ἑαυτοῖς
ἀρχὴν μίαν, καὶ ἀναβήσονται ἐκ τῆς γῆς,
ὅτι μεγάλη ἡ ἡμέρα τοῦ Ἰεζραέλ.

MS. A. ὨΣΗΕ' Α'. (α) τοῦ υἱοῦ (β) πρὸς (γ) Λάβε σεαυτῷ, (δ) τῇ κοιλάδι
(ε) τοῦ Ἰσραὴλ, (ζ) οὔτε (η) οὔτε (θ) οὔτε ἐν ἅρμασιν, οὔτε ἐν ἵπποις, οὔτε (ι) οὐκ
κληθήσονται υἱοὶ (κ) οἱ υἱοὶ (λ) αὐτοῖς

ΚΕΦ. β'.

1 Εἴπατε τοῖς ἀδελφοῖς ὑμῶν, Λαός μου, καὶ
2 τῇ ἀδελφῇ ὑμῶν, Ἠλεημένη. Κρίθητε
πρὸς τὴν μητέρα ὑμῶν, κρίθητε, ὅτι αὕτη οὐ
γυνή μου, καὶ ἐγὼ οὐκ ἀνὴρ αὐτῆς. καὶ ἐξαρῶ
τὴν πορνείαν αὐτῆς ἐκ προσώπου μου, καὶ τὴν
μοιχείαν αὐτῆς ἐκ μέσου μαστῶν αὐτῆς,

OSEE.

CAP. I.

VERBUM Domini, quod 1
factum est ad Osee filium Beeri
in diebus Oziæ, & Joatham, &
Achaz, & Ezeciæ regum Juda,
& in diebus Heroboã filii Jo-
as regis Israel. Principium verbi 2
Domini (a) in Osee. Et dixit Do-
minus ad Osee; Vade, tolle tibi u-
xorem fornicationis, & filios for-
nicationis: quia fornicans forni-
cabitur terra à (b) post Dominũ.
Et abiit, & accepit Gomer filiam 3
Debelaim. Et concepit, & peperit
ei filium. Et dixit Dominus ad 4
eum; Voca nomen ejus Jezrael:
quia adhuc modicum: & ulci-
scar sanguinem Jezrael super do-
mũ (c) Juda: & quiescere faciã
regnũ domûs Israel. Et erit, in 5
die illa conteram arcum Israel in
valle Jezrael. Et concepit ad- 6
huc, & peperit filiam. Et dixit
ei; Voca nomen ejus, (d) Absq; mi-
sericordia: quia nequaquã addã
ultrà misereri domui Israel: sed
adversans adversabor eis. Filio- 7
rum autem Juda miserebor: &
salvabo eos in Domino Deo suo:
& non salvabo eos in arcu, neque
in gladio, neq; in (e) bello, neq; in
equis, neq; in equitibus. Et abla- 8
ctavit eã, quæ erat Absq; mise-
ricordia. Et concepit adhuc, &
peperit filium. Et dixit; Voca no- 9
men ejus, Non populus meus: quia
vos non populus meus: & ego
non sum vester. Et (f) erat nume- 10
rus filiorum Israel, sicut arena
maris, quæ non mensurabitur, nec
numerabitur. Et erit, in loco, ubi
dictum est eis; Non populus meus
vos: vocabuntur & ipsi filii Dei
viventis. Et congregabuntur filii 11
Juda, & filii Israel simul: &
ponent sibi principatum unum, &
ascendent de terra: quoniam ma-
gnus est dies Jezrael.

CAP. II.

DIcite fratri vestro, Populus 1
meus: & sorori vestræ, Miseri-
cordia consequuta. Judicamini 2
cum matre vestra, judicamini:
quia hæc nõ uxor mea & ego nõ
vir ejus. Et auferam fornicationẽ
ejus à facie mea, & adulterium
ejus de medio uberum illius.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 פתגם נבואה מן קדם יי דהוה עם הושע בר בארי ביומי עזיה יותם אחז יחזקיה מלכיא
2 דבית יהודה וביומי ירבעם בר יואש מלכא דישראל : שרוית פתגמא דיי בהושע ואמר
יי להושע איזיל אתנבי נבואה על יתבי קרתא טעותא דאנון מוספין למחטי ארי מטעא
3 יטעון דירי ארעא מבתר פולחנא דיי : ואזל ואתנבי עליהון דאם יתובון ישתבק להון
4 ואם לא כמא דמתר עלי תאנין יתרון ואוסיפו ועבדו עובדין בישין : ואמר יי ליה קרא
שומהון מבדריא ארי עוד צבחר כזער ואסער דם פלחי טעותא דאשד יהוא ביזרעאל
דקטלנון על דפלחו לבעלא תבו אנון למטעי בתר עגליא דבבית אל בכן אחשבניה
5 דם זכי על בית יהוא ואבטל מלכותא מבית ישראל : ויהי בעדנא ההיא ואתבר ית תקוף
6 עבדי קרב ישראל במישר יזרעאל : ואוסיפו ועבדו עובדין בישין ואמר ליה קרי שומהון
דלא רחימין בעובדיהון ארי לא אוסיף עוד לרחמא על בית ישראל ברם אם יתובון
7 משבק אשבוק להון : ועל דבית יהודה ארחם ואפרקנון במימרא דיי אלההון ולא
8 יתפרקון בקשתא ובחרבא ובעבדי קרבא בסוסון ובפרשין : ודריהון דאתגליאו לביני
9 עממיא אשתכחו דלא הוו רחימין בעובדיהון ואוסיפו ועבדו עובדין בישין : ואמר קרי
שומהון לא עמי ארי אתון לא עמי בדלית אתון מקימין פתגמי אוריתי מימרי לא הוה
10 בסעדיכון : ויהי מנין בני ישראל סגי כחלא דימא דלא מתכל ודלא מתמני ויהי באתרא
דאתגליאו ביני עממיא כד עברו על אוריתא ואתאמר להון לא עמי אתון יתובון
11 ויתרבון ויתאמר להון עמיה דאלהא קימא : ויתכנשון בני יהודה ובני ישראל כחדא
וימנון להון ריש חד מן בית דוד ויסקון מן ארעא גלותהון ארי רב יום כנישתהון :

ב

1 נביא אמרו לאחיכון עמי תובו לאוריתי ועל כנשתכון ארחם : אוכחו לכנשתא דישראל
2 ואמרו לה ארי היא לא מתעניא בפולחני ומימרי לא מקבל צלותה עד דתעדי עובדהא
בישיא מקבל אפהא ופולחן טעותהא מבין קרויהא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAPUT I.

VErbum prophetiæ à facie Domini quod factum est cum Osea filio Be- 1
eri, in diebus Oziæ, Jotham, Achaz, Ezechiæ regum domus Juda, & in die-
bus Jeroboam filii Joas regis Israel. Principium verbi Dñi in Osea; & 2
dixit Dñs ad Oseam; Vade, prophetiza *prophetiam* contra habitatores ci-
vitatis idololatræ, qui addunt peccare; quia errando errabunt habitatores
terræ à cultu Dñi. Et abiit & prophetavit super eos; Quòd si conversi fu- 3
erint, remittetur eis: *sin minus*, sicut defluunt folia ficulneæ defluent; at
addiderunt & fecerunt opera mala. Et dixit Dñs ad eum, Voca nomen eo- 4
rum Dispersos: quia ferè adhuc modicum est, & visitabo sanguinem colen-
tium idola, quem effudit Jehu in Jezreel, quos occidit quòd servirent Baal,
& conversi sunt etiam ipsi ut errarent post vitulos qui erant in Bethel.
Ideò reputabo illum sanguinem innocentem super domum Jehu, & cessare
faciam regnum domus Israel. Et erit in tempore illo, & conteram fortitu- 5
dinem bellatorum Israel in valle Jezreel. Et addiderunt, & fecerunt 6
opera mala, & dixit ei: Voca nomen eorum, Non misericordiam consecuti
in operib⁹ suis: quia non addam ultrà misereri dom⁹ Israel: veruntamen si
conversi fuerint, dimittendo dimittam eis. Et domus Jehudah miserebor, & 7
salvabo eos, in verbo Dñi Dei ipsorũ, & non salvabuntur in arcu, gladio,
& in bellatoribus, in equis & equitibus. Habitatores autem eorũ qui ex- 8
torres transportati sunt inter populos, inventi sunt misericordia indigni in
operib⁹ suis: sed addiderunt & fecerunt opera mala. Et ait, Voca nomen 9
eorum Non popul⁹ me⁹, quia vos non estis popul⁹ me⁹, eò quòd vos non
confirmetis verba legis meæ: Verbum meũ non erit in adjutoriũ vestrum.
Et erit numer⁹ filiorũ Israel copios⁹ sicut arena maris, quæ nec mensurari 10
nec numerari potest: & erit in loco quo exules acti fuerint inter populos,
quando transgressi fuerint *legem*, & dictũ fuerit eis, Non estis popul⁹ meus:
convertentur & magnificabuntur, diceturq; eis, Popule Dei vivi. Et con- 11
gregabuntur filii Jehuda & filii Israel simul, & constituent sibi principẽ
unum de domo David, atque ascendent de terra transmigrationis suæ; quia
magnus erit dies congregationis eorum.

CAP. II.

PRophetæ dicite fratrib⁹ vestris, Popule mi, convertimini ad legẽ meã, & 1
congregationis vestræ miserebor. Arguite cœtũ Israel, & dicite ei, quia 2
ipsa non addicit se cultui meo. Verbũ meũ non suscipiet orationẽ ej⁹, donec
auferat opera sua mala à conspectu vultus sui, & cultum idolorum suorum de medio civitatis suæ

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܟܬܒܐ ܕܬܪܥܣܪ ܢܒܝܐ *

* ܢܒܝܘܬܗ ܕܗܘܫܥ ܢܒܝܐ * * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܠܘܬ ܗܘܫܥ ܒܪ ܒܐܪܝ. ܒܝܘܡܝ̈ ܥܘܙܝܐ ܘܝܘܬܡ ܘܐܚܙ ܘܚܙܩܝܐ 1
ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܒܝܘܡܝ̈ܗܘܢ ܕܝܘܪܒܥܡ ܒܪ ܝܘܐܫ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܪܫ ܦܬܓܡܗ 2
ܕܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܠܘܬ ܗܘܫܥ. ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܗܘܫܥ. ܙܠ ܣܒ ܠܟ ܐܢܬܬܐ ܕܙܢܝܘܬܐ. ܘܒܢܝ̈ܐ
ܕܙܢܝܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܡܙܢܝܘ ܙܢܝܐ ܐܪܥܐ ܡܢ ܒܬܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܙܠ ܘܢܣܒ ܠܗ ܠܓܘܡܪ 3
ܒܪܬ ܕܒܠܝܡ. ܘܒܛܢܬ ܘܝܠܕܬ ܠܗ ܒܪܐ. * ܘܐܡܪ ܠܗ ܡܪܝܐ. ܩܪܝ ܫܡܗ ܝܙܪܥܝܠ. ܡܛܠ 4
ܕܬܘܒ ܩܠܝܠ ܬܒܥ ܐܢܐ ܕܡܗ ܕܝܙܪܥܝܠ ܥܠ ܒܝܬܗ ܕܝܗܘ. ܘܐܒܛܠ ܡܠܟܘܬܐ ܕܒܝܬ
ܐܝܣܪܝܠ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܬܒܪ ܩܫܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܒܥܘܡܩܐ ܕܝܙܪܥܝܠ. 5
* ܘܒܛܢܬ ܬܘܒ ܘܝܠܕܬ ܒܪܬܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܩܪܝ ܫܡܗ ܠܐ ܐܬܪܚܡܬ. ܡܛܠ ܕܠܐ 6
ܡܘܣܦ ܐܢܐ ܬܘܒ ܠܡܪܚܡܘ ܥܠ ܒܝܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܠܐ ܡܫܩܠ ܫܩܠ ܐܢܐ ܠܗܘܢ.
* ܠܒܝܬܐ ܕܝܢ ܕܝܗܘܕܐ ܐܪܚܡ. ܘܐܦܪܘܩ ܐܢܘܢ ܒܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܠܐ ܒܩܫܬܐ ܐܦܪܘܩ ܐܢܘܢ 7
ܐܦܠܐ ܒܣܝܦܐ. ܐܦܠܐ ܒܩܪܒܐ. ܘܠܐ ܒܪ̈ܟܫܐ. ܐܦܠܐ ܒܦܪ̈ܫܐ. * ܘܚܣܠܬ ܠܗ ܠܠܐ ܐܬܪܚܡܬ. ܘܒܛܢܬ 8
ܬܘܒ ܘܝܠܕܬ ܒܪܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܩܪܝ ܫܡܗ ܠܐ ܥܡܝ. ܡܛܠ ܕܐܢܬܘܢ ܠܐ ܥܡܝ ܐܢܬܘܢ 9
ܘܐܢܐ ܠܐ ܐܗܘܐ ܠܟܘܢ. * ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܡܢܝܢܐ ܕܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ ܐܝܟ ܚܠܐ ܕܝܡܐ: ܕܠܐ ܡܬܟܝܠ ܘܠܐ 10
ܡܬܡܢܐ: ܘܢܗܘܐ ܒܐܬܪܐ ܕܐܬܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܠܐ ܥܡܝ ܐܢܬܘܢ. ܬܡܢ ܢܬܩܪܘܢ ܒܢܝ̈ܐ ܠܐܠܗܐ ܚܝܐ.
* ܘܢܬܟܢܫܘܢ ܒܢܝ̈ ܝܗܘܕܐ ܘܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ ܐܟܚܕܐ. ܘܢܥܒܕܘܢ ܠܗܘܢ ܪܫܐ ܚܕ 11
ܘܢܣܩܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܪܒ ܗܘ ܝܘܡܗ ܕܝܙܪܥܝܠ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܒ * ܦܪ 1
ܐܡܪܘ ܠܐܚܝ̈ܟܘܢ ܥܡܝ. ܘܠܐܚܘ̈ܬܟܘܢ ܐܬܪܚܡܬ. * ܕܘܢܘ ܥܡ ܐܡܟܘܢ ܕܘܢܘ. ܡܛܠ ܕܗܝ ܠܐ ܗܘܬ 2
ܐܢܬܬܝ. ܘܐܢܐ ܠܐ ܗܘܝܬ ܒܥܠܗ. ܬܥܒܪ ܙܢܝܘܬܗ ܡܢ ܐܦܝ̈ܗ. ܘܓܘܪܗ ܡܢ ܒܝܬ ܬܕ̈ܝܗ.

Sequitur Liber

DUODECIM PROPHETARUM.

PROPHETIA

HOSEÆ Prophetæ.

CAP. I.

SErmo Domini, qui fuit ad Hoſeam filium Beri, temporibus Uziæ, Jothami, Ahazi, & Hezeciæ regum Judæ; & temporibus Jorabaami filii Joaſi regis Iſraelis. 1

Principio ſermonis Domini, qui fuit ad Hoſeam, dixit Dominus Hoſeæ; Vade, ſume tibi uxorem fornicariam & liberos fornicarios, quoniam valdè fornicatura eſt terra averſata à Domino. 2

Abiens itaque ſumpſit ſibi Gomeram filiam Debeliami, quæ concepit ac peperit illi filium: 3

Dixitque ei Dñs; Voca nomen ejus, Izareelem; nam brevi ulturus ſum ſanguinem Izareelis à domo Johu, & aboleturus regnum Iſraelitarũ. 4

Eodem illo die frangã arcum Iſraelis in valle Izareelis. 5

Rurſus concepit peperitque filiam: & dixit mihi Dñs; Voca nomen ejus, Non conſecuta miſericordiam; quoniam non ſum ampliùs miſerturus Iſraelitarum, ſed eos penitùs ablaturus. 6

Domûs autẽ Judæ miſerturus, eoſq; ſervaturus per Dñm Deum ipſorum: non arcu ſervabo eos, neque gladio, neque bello, non equis, neque equitibus. 7

Poſtquam ablactâſſet eam quæ Non eſt miſericordiã conſecuta, rurſus concepit peperitque filium: 8

Et dixit mihi Dñs; Voca nomen ejus, Non populus meus; quoniam vos non eſtis populus meus, nec ego futur⁹ ſum veſter: 9

Neq; erit numer⁹ Iſraelitarũ par arenæ maris, quæ neq; menſurari neq; numerari *poteſt*. Sed erit eò loci quò dicebatur iſtis, Non popul⁹ meus eſtis, ut ibidẽ vocentur filii Deo viventi. 10

Et congregabuntur filii Judæ & filii Iſraelis ſimul, & conſtituẽt ſibi principẽ unũ, & aſcendent à terra; quia magnus erit dies Izareelis. 11

CAP. II.

VOcate fratres veſtros, Populus meus; & ſorores veſtras, Miſericordiam conſecuta. 1

Contendite cum matre veſtra, contendite; quoniam ipſa non eſt uxor mea, neq; ego ſum maritus ejus. Amoveat ſcortationem ſuam à facie ſua, & adulteriũ ſuum de medio uberũ ſuorũ; 2

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الروف الرحيم * * الانبياء الصغار *

* اولهم نبوة هوسع * وهو عوريا بن بابيري *

* الفصل الاول * * الاصحاح الاول *

* كلمة الرب التي صارت الي عوريا بن بابيري * في ايام عوريا * ويواقيم * واحاز وحزقيا ملك يهودا 1
وفي ايام يوربعام بن يواش ملك اسرايل * بدو كلمة الرب لهوسع * قال الرب لهوسع * امض خذ 2
لك امراة زنا واولاد زنا * من اجل ان الارض زانية تزني من خلف الرب * فمضي واخذ جامار من 3
بيت لحم * فحبلت وولدت ابنا * فقال الرب له * ادع اسمه ايزرعل من اجل اني عن قليل انتقم 4
دم ايزرعل علي بيت يهودا * واصرف المملكة من بيت اسرايل * ويكون في ذلك اليوم اكسر 5
قوس اسرايل في وادي ايزرعل * وحبلت ايضا وولدت ابنة * فقال له * ادع اسمها غير مرحومة * من 6
اجل اني لست اريد ايضا ان ارحم بيت اسرايل * لكني مبعد ابعدهم * واما بني يهودا فارحمهم 7
واخلصهم بالرب الههم * ولست اخلصهم بقوس ولا بسيف * ولا بمركبات * ولا بحرب * ولا بخيل
ولا بفرسان * وفطمت الغير مرحومة * وحبلت ايضا وولدت ابنا * فقال ادع اسمه ليس شعبي 8 9
من اجل انكم انتم لستم شعبي * وانا لست انا لكم * وكان عدد بني اسرايل مثل رمل البحر 10
الذي لا يكال ولا يحصي * ويكون في الموضع الذي قيل لهم فيه لستم شعبي انتم يدعون
هولاء بنو الله الحي * ويجمع بنو يهودا وبنو اسرايل معا * ويجعلون لهم رياسة واحدة * ويصعدون 11
من الارض * لان يوم ايزرعل عظيم * الفصل الثاني *
* قولوا لاخوتكم شعبي * ولاخواتكم مرحومة * حاكموا مع امكم حاكموا * لان هي 1 2
ليست امراتي * وانا لست رجلها * وانزع زناها عن وجهي * وفسقها من بين ثدييها *

IN NOMINE DEI PIISSIMI Clementiſſimi.

PROPHETÆ MINORES.

Primùm

Prophetia HOSEÆ,

qui eſt Uzia filius Beeri.

CAP. I.

Textus primus.

VErbum Domini quod factum eſt ad Uzam filium Beeri, in diebus Uziæ, Joacimi, Achazi, & Hezeciæ regis Judæ, & in diebus Jerobaami filii Joaſi regis Iſraelis. 1

Initium verbi Domini ad Hoſeam. Dixit Dominus Hoſeæ; Age, ſume tibi uxorem fornicationis, & filios fornicationis, quia terra fornicaria eſt, fornicans à tergo Domini. 2

Quare abiit, ſumpſitque Gjamarem Bethlehemitidem; quæ cùm concepiſſet, peperiſſetque filium; 3

Dixit ei Dominus, Voca nomen ejus, Izreelem; quia mox ulturus ſum ſanguinem Izareelis ſuper domum Judæ, & diverſurus regnum è domo Iſraelis. 4

Et erit eo die, ut frangam arcum Iſraelis in valle Izareelis, 5

Cùm iterum concepiſſet, ac peperiſſet filiam; dixit ad eum, Voca nomen ejus, Non miſerandam; quia non ſum ampliùs miſeraturus domûs Iſraelis, ſed amovens amoturus eos. 6

At verò filiorũ Judæ miſerebor, & ſalvabo eos per Dominum Deum ipſorum, ac non ſalvabo eos arcu, neq; gladio, neq; curribus, neq; bello, nec equis, nec equitibus. 7

Cùm ablactâſſet Non miſerandam, concepit adhuc, peperitq; filiũ: 8

Et dixit, Voca nomen ejus, Non populus meus; quia vos non eſtis populus meus, & ego non ſum veſter. 9

Erit quidem numerus filiorum Iſraelis tanquam arenæ maris, quæ immenſa eſt & innumera: ſed futurum eſt ut in loco in quo dicebatur eis, Vos non eſtis populus meus; vocentur iſti filii Dei vivi: 10

Et filii Judæ ac filii Iſraelis unà convenientes, conſtituent ſibi principatum unum, & aſcendant è terra; quia dies Izareelis magnus eſt futurus. 11

CAP. II.

DIcite fratri veſtro, Populus meus; & ſorori veſtræ, Miſeranda. 1

Litigate cum matre veſtra, litigate: quoniam hæc non eſt uxor mea, & ego non ſum vir ejus: & auferam fornicationem ejus à facie mea, & adulterium ejus de medio uberum ejus: 2

הושע : ב

.ſe naſci diem ſecundùm eam ſtatuam & ,nudam eam expoliem fortè Ne
3 פן אפשיטנה ערמה והצגתיה כיום הולדה
,ſiccitatis terram velut eam ponam & ,deſertum tanquam eam ponam &
ושמתיה כמדבר ושתה כארץ ציה
filii quia ;miſerebor non ejus filiorum Et .ſiti in eam interficiam &
4 והמתיה בצמא: ואת בניה לא ארחם כי בני
eſt affecta pudore ,eorum mater eſt fornicata Quia .ipſi fornicationum
5 זנונים המה: כי זנתה אמם הובישה
dantes meos amatores poſt Vadam ,dixit quia :eorum conceptrix
הורתם כי אמרה אלכה אחרי מאהבי נתני
,meum oleum ,meum linum & ,meam lanam ,meas aquas & ,meum panem
לחמי ומימי צמרי ופשתי שמני
:ſpinis in tuam viam ſepiens ego ecce Propterea .meas potationes &
6 ושקויי: לכן הנני שך את דרכך בסירים
ſequetur Et .inveniet non ſuas ſemitas & ,ſepem ſepiam &
7 וגדרתי את גדרה ונתיבותיה לא תמצא: ורדפה את
:inveniet non & ,eos quæret & ,eos apprehendet non & ,ſuos amatores
מאהביה ולא תשיג אתם ובקשתם ולא תמצא
bonum quia ,priorem meum virum ad revertar & ,Vadam ,dicet &
ואמרה אלכה ואשובה אל אישי הראשון כי טוב
ei dedi ego quia ,neſcivit hæc Et .nunc præ tunc mihi
8 לי אז מעתה: והיא לא ידעה כי אנכי נתתי לה
aurum & ,ei multiplicavi argentum & :oleum & ,muſtum & ,frumentum
הדגן והתירוש והיצהר וכסף הרביתי לה וזהב
meum frumentum ſumam & ,convertar Idcirco .Bahal fecerunt
9 עשו לבעל: לכן אשוב ולקחתי דגני
,meā lanā auferam & :ſuo ſtatuto tempore in meum muſtum & ,ſuo tempore in
בעתו ותירושי במועדו והצלתי צמרי
revelabo nunc Et .ejus nuditatem operiendum ad ,meū linum &
10 ופשתי לכסות את ערותה: ועתה אגלה את
.meā manu de eam eruet non vir & ;ejus amatorū oculis in ejus vilitatem
נבלתה לעיני מאהביה ואיש לא יצילנה מידי:
,ejus neomeniam ,ejus ſolemnitatem ,ejus gaudium omne faciam ceſſare Et
11 והשבתי כל משושה חגה חדשה
,ejus vineam faciam deſolare Et .ejus feſtivitatē omnem & ;ejus ſabbatha &
12 ושבתה וכל מועדה: והשמתי גפנה
mihi dederunt quod ,mihi ipſa Donum ,dixit quòd eò ,ejus ficum &
ותאנתה אשר אמרה אתנה המה לי אשר נתנו לי
.agri fera ea comedet & ,ſylvam in ea ponam & :mei amatores
מאהבי ושמתים ליער ואכלתם חית השדה:
,eis adolebat quibus ,Behalim dies eam ſuper viſitabo Et
13 ופקדתי עליה את ימי הבעלים אשר תקטיר להם
:ſuos amatores poſt ibat & ,ſuo monili & ,ſua inaure ornabatur &
ותעד נזמה וחליתה ותלך אחרי מאהביה
ego ecce Propterea .Dominus dixit ,obliviſcebatur mei &
14 ואתי שכחה נאם יהוה: לכן הנה אנכי
dabo Et .ejus cor ſuper loquar & ;deſertum eā faciam ire & ;eam ſeducens
15 מפתיה והלכתיה המדבר ודברתי על לבה: ונתתי
:ſpei oſtium in Hachor vallem & ,inde ſuas vineas ei
לה את כרמיה משם ואת עמק עכור לפתח תקוה
eam aſcendere diem juxta & ,ſuarum adoleſcentiarum dies juxta ibi reſpondebit &
וענתה שמה כימי נעוריה וכיום עלותה
vocabis ,Dominus ait ,illo die in erit Et .Ægypti terrā è
16 מארץ מצרים: והיה ביום ההוא נאם יהוה תקראי
.Bahali ultrà me vocabis non & ;meus maritus
אישי ולא תקראי לי עוד בעלי:

Verſio VULG. LAT.

3 Ne fortè expoliem eam nudam, & ſtatuam eam ſecundùm diem nativitatis ſuæ: & ponam eam quaſi ſolitudinem, & ſtatuam eam velut terram inviam, & interficiā eam ſiti. 4 Et filiorum illius non miſerebor: quoniā filii fornicationum ſunt. 5 Quia fornicata eſt mater eorum, confuſa eſt quæ concepit eos: quia dixit; Vadam poſt amatores meos, qui dant panes mihi, & aquas meas, lanam meam, & linum meum, oleum meū, & potum meū. 6 Propter hoc ecce ego ſepiam viam tuam ſpinis, & ſepiam eam maceriā, & ſemitas ſuas non inveniet. 7 Et ſequetur amatores ſuos, & non apprehendet eos: & quæret eos, & non inveniet: & dicet; Vadā, & revertar ad virum meū priorem: quia benè mihi erat tunc magis quàm nunc. 8 Et hæc neſcivit, quia ego dedi ei frumentū, & vinum, & oleum, & argentum multiplicavi ei, et aurum, quæ fecerunt Baal. 9 Idcircò convertar, et ſumam frumentum meum in tempore ſuo, et vinum meum in tempore ſuo, et liberabo lanam meam et linum meum, quæ operiebant ignominiam ejus. 10 Et nunc revelabo ſtultitiam ejus in oculis amatorum ejus: et vir non eruet eam de manu mea: 11 Et ceſſare faciam omne gaudium ejus, ſolennitatem ejus, neomeniam ejus, ſabbatum ejus, et omnia feſta tempora ejus. 12 Et corrumpam vineam ejus, et ficum ejus: de quibus dixit; Mercedes hæ, meæ ſunt, quas dederunt mihi amatores mei: et ponam eam in ſaltum, et comedet eam beſtia agri. 13 Et viſitabo ſuper eam dies Baalim quibus accendebat incenſum, et ornabatur in aure ſua, et monili ſuo, et ibat poſt amatores ſuos, et meî obliviſcebatur, dicit Dominus. 14 Propter hoc, ecce ego lactabo eam, et ducam eam in ſolitudinem: et loquar ad cor ejus. 15 Et dabo ei vinitores ejus ex eodem loco, et vallem Achor ad aperiendam ſpem: et canet ibi juxta dies juventutis ſuæ, et juxta dies aſcenſionis ſuæ de terra Ægypti. 16 Et erit in die illa, ait Dominus: vocabit me, Vir meus: et non vocabit me ultrà, Baali.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Ὅπως ἂν ἐκδύσω αὐτὴν γυμνὴν, καὶ ἀποκαταστήσω αὐτὴν καθὼς ἡμέρα γενέσεως αὐτῆς· καὶ (α) θήσω αὐτὴν ἔρημον, καὶ τάξω αὐτὴν ὡς γῆν ἄνυδρον, καὶ ἀποκτενῶ αὐτὴν ἐν δίψει. 4 Καὶ τὰ τέκνα αὐτῆς οὐ μὴ ἐλεήσω, ὅτι τέκνα πορνείας ἐστίν. 5 Ὅτι ἐξεπόρνευσεν ἡ μήτηρ αὐτῶν, κατῄσχυνεν ἡ τεκοῦσα αὐτά· (β) ὅτι εἶπε, Πορεύσομαι ὀπίσω τῶν ἐραστῶν μου, τῶν διδόντων μοι τοὺς ἄρτους μου, καὶ τὸ ὕδωρ μου, καὶ τὰ ἱμάτιά μου, καὶ τὰ ὀθόνιά μου, (*) τὸ ἔλαιόν μου, καὶ πάντα ὅσα μοι καθήκει. 6 Διὰ τοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ φράσσω τὴν ὁδὸν αὐτῆς ἐν σκόλοψι, καὶ ἀνοικοδομήσω τὰς ὁδοὺς (γ), καὶ τὴν τρίβον αὐτῆς οὐ μὴ εὕρῃ. 7 Καὶ καταδιώξεται τοὺς ἐραστὰς αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ καταλάβῃ αὐτούς· καὶ ζητήσει αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ εὕρῃ αὐτούς. καὶ ἐρεῖ, Πορεύσομαι, καὶ ἐπιστρέψω πρὸς τὸν ἄνδρα μου τὸν πρότερον, ὅτι καλῶς μοι ἦν τότε, ἢ νῦν. 8 Καὶ αὐτὴ οὐκ ἔγνω ὅτι ἐγὼ δέδωκα αὐτῇ τὸν σῖτον, καὶ τὸν οἶνον, καὶ τὸ ἔλαιον, καὶ ἀργύριον ἐπλήθυνα αὐτῇ· αὐτὴ δὲ ἀργυρᾶ καὶ χρυσᾶ 9 ἐποίησε τῇ Βάαλ. Διὰ τοῦτο ἐπιστρέψω, καὶ κομιοῦμαι τὸν σῖτόν μου καθ' ὥραν αὐτοῦ, καὶ τὸν οἶνόν μου ἐν καιρῷ αὐτοῦ· καὶ ἀφελοῦμαι τὰ ἱμάτιά μου, καὶ τὰ ὀθόνιά μου, τοῦ μὴ καλύπτειν 10 τὴν ἀσχημοσύνην αὐτῆς. Καὶ νῦν ἀποκαλύψω τὴν ἀκαθαρσίαν αὐτῆς (δ) ἐνώπιον τῶν ἐραστῶν αὐτῆς, καὶ (ε) οὐδεὶς οὐ μὴ ἐξέληται αὐτὴν ἐκ 11 χειρός μου. Καὶ ἀποστρέψω πάσας τὰς εὐφροσύνας αὐτῆς, (ζ) ἑορτὰς αὐτῆς, καὶ τὰς νουμηνίας αὐτῆς, καὶ τὰ σάββατα αὐτῆς, καὶ 12 πάσας τὰς πανηγύρεις αὐτῆς. Καὶ ἀφανιῶ ἄμπελον αὐτῆς, καὶ τὰς συκᾶς αὐτῆς, ὅσα εἶπε, Μισθώματά μου ταῦτά ἐστιν ἃ ἔδωκάν μοι οἱ ἐρασταί μου· καὶ θήσομαι αὐτὰ εἰς μαρτύριον, καὶ καταφάγεται αὐτὰ τὰ θηρία τοῦ ἀγροῦ, καὶ τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ, καὶ 13 τὰ ἑρπετὰ τῆς γῆς. Καὶ ἐκδικήσω ἐπ' αὐτὴν τὰς ἡμέρας τῶν Βααλεὶμ, ἐν αἷς ἐπέθυεν αὐτοῖς· καὶ περιετίθετο ( ) τὰ ἐνώτια αὐτῆς, καὶ τὰ καθόρμια αὐτῆς, καὶ ἐπορεύετο ὀπίσω τῶν ἐραστῶν αὐτῆς, ἐμοῦ δὲ ἐπελάθετο, λέγει 14 κύριος. Διὰ τοῦτο ἰδοὺ ἐγὼ πλανῶ αὐτὴν, καὶ τάξω αὐτὴν ὡς ἔρημον, καὶ λαλήσω 15 ἐπὶ τὴν καρδίαν αὐτῆς. Καὶ δώσω αὐτῇ τὰ κτήματα αὐτῆς ἐκεῖθεν, καὶ τὴν κοιλάδα Ἀχὼρ διανοῖξαι σύνεσιν αὐτῆς· καὶ ταπεινωθήσεται ἐκεῖ κατὰ τὰς ἡμέρας νηπιότητος αὐτῆς, καὶ κατὰ τὰς ἡμέρας ἀναβάσεως αὐτῆς ἐκ 16 γῆς Αἰγύπτου. Καὶ ἔσται ἐν (η) τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος, καλέσει με Ὁ ἀνήρ μου, καὶ οὐ καλέσει με (θ) ἔτι Βααλείμ.

3 Ut exuam eam nudam, & reſtituam eam juxta diem nativitatis ejus. Et ponam eam ut (a) deſertum, & ſtatuam eam, ſicut terram ſine aqua: & occidam illam in ſiti. 4 Et filiorum ejus non miſerebor: quia filii fornicationis ſunt. 5 Quia fornicata eſt mater eorum, confuſa eſt, quæ peperit eos. Dixit enim; Vadam poſt amatores meos, qui dant mihi panes meos, & aquam meam, & veſtimenta mea, & linteamina mea, (*) oleum meum, & omnia, quæ mihi neceſſaria ſunt. 6 Propterea ecce ego ſepiam viam ejus in ſudibus, & (c) ædificabo vias: & ſemitam ſuam non inveniet. 7 Et perſequetur amatores ſuos, & non apprehendet illos: & quæret eos, & non inveniet eos. Et dicet; Vadam, & revertar ad virum meum priorem: quia melius mihi erat tunc, quàm nunc. 8 Et ipſa neſcivit, quia ego dedi ei frumentum, & vinum & oleum, & argentum multiplicavi ei: hæc autem argentea, & aurea fecit (d) in Baal. 9 Propterea revertar, & tollam triticum meum in tempore ſuo, & vinum meum in tempore ſuo: & auferam veſtimenta mea, & linteamina mea, ne operiant ignominiam ejus. 10 Et nunc revelabo immunditiam ejus in conſpectu amatorum illius: & nullus eruet eam de manu mea. 11 Et avertam omnes lætitias ejus, ſolemnitates illius, & neomenias illius, & ſabbata illius, & omnes feſtivitates illius. 12 Et perdam vineam ejus, & ficus illius: quæ dixit; Mercedes meæ iſtæ ſunt, quas dederunt mihi amatores mei. Et ponam (e) ea in teſtimonium: & comedent ea beſtiæ agri, (f) & volatilia cœli, & reptilia terræ. 13 Et ulciſcar ſuper eam dies Baalim; in quibus immolabit eis, & circumdabat [ſibi] inaures ſuas et monilia ſua, & ibat poſt amatores ſuos: mei autem oblita eſt, dicit Dominus. 14 Ideò ecce ego ſeducam eam, & ponam illam, quaſi deſertum, & loquar ad cor ejus; 15 Et dabo ei poſſeſſiones ſuas inde, & vallem Achor (g) ad aperiendam intelligentiam ejus. Et (h) humiliabitur illic juxta dies infantiæ ſuæ et juxta dies aſcenſionis ejus de terra Ægypti. 16 Et erit in die illa, ait Dominus, vocabit me; Vir meus: & non vocabit me ultrà, Baalim.

MS. A. (α) θήσομαι αὐτὴν ὡς ἔρημον, (β) εἶπεν, (*) Ἀκολουθήσω ὀπίσω (*) καὶ τὸ (γ) αὐτῆς (δ) ἐναντίον (ε) οὐδεὶς (ζ) καὶ τὰς ἑορτὰς (*) ἐνώτια (η) ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ καλέσει με Ὁ ἀνήρ μου, λέγει κύριος, καὶ οὐ (θ) οὐκέτι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 דמלא אסלק שכנתי מנה ואעדי יקרה ואשוינה רטישא כיומיא קדמאי עד לא אתקריבת
לפולחני ויחול רוגזי עלה כמא דחל על עם דרא דעברו על אוריתי במדברא ואשוי
4 ארעא צדיא ואקטלנה בצורתא: וית בנהא לא ארחם ארי בנין דטען אנין: 5 ארי טעת
כנשתהון בתר נביי שקרא בהיתו מלפיהון ארי אמרה אהך בתר עממיא רחמי מספקי
6 מיכלי ומשתי כסות מילא ובוץ משח כל פרנוסי: בכן הא אנא מקלקל ית ארחתיך כמא
7 דסיגין בכביא ואפסוק כמא דמפסקין בכתליא ושבילהא לא תשכח: ותרדף שלם
עם עממיא רחמהא ולא תדבק יתהון ותבעי סעיד ולא תשכח ותימר אהך ואתיב
לפולחן רבוני קדמאה ארי טב לי כד הויתי פלחא קדמוהי מכען לא אפלח לטעותא:
8 ואנון לא ידעין ארי אנא ברכית להון עבורא וחמרא ומשחא וכספא אסגיתי להון
9 ודהבא מניה עבדו לטעותא: בכן יתוב מימרי למטל עיבורא בעדן אדריה וחמרא
10 בעדן מעצרתיה ואציל כסות מילא ובוץ דיהבית לה לכסאה ית קלנה: וכען אגלי ית
11 קלנה לעיני עממיא רחמהא ואנש לא ישזבנה מן ידי: ואבטל כל חדותהא חגהא
12 ירחהא ושבתהא וכל מועדהא: ואצדי פרי גופנה ותינה דהורת אמרה יקר אנון לי
13 דיהבו לי עממיא רחמי ואשוינון לחורשא ותיכלנון חית ברא: ואסער עלה ית יומיא
דהוית פלחא לטעותא דמסקא להון בוסמין הוית דמיא לאתתא דשבקת ית בעלה
ואתקינת בקדשהא ובחליטת מרגליתהא וטעת בתר רחמהא כן כנשת ישראל
14 רחמת למפלח לטעותא ופולחני שבקת אמר יי: בכן הא אנא משעבד לה לאוריתא
ואעבד לה נסין וגבורן כמא דעבדית לה במדברא וביד עבדי נביא אמליל תנחומין על
15 לבהא: ואמני להית פרנסהא מתמן וית מישר עכור לתתמודי נפש ויתנדון תמן
למימרי כיומי קדם ואף אנא אעביד להון נסין וגבורן כיום מסקהון מארעא דמצרים:
16 ויהי בעדנא ההוא אמר יי תתנהון לפולחני ולא תפלחון עוד לטעות עממיא:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ne fortè ſubducā majeſtatē meā ab ea, & auferā gloriā ejus, & ponā illam 3 derelictā ſicut dieb⁹ priſcorū, antequā acceſſiſſet ad cultū meū: & reſidebit furor me⁹ ſuper eam, ſicut reſedit ſuper populū generationis, qui tranſgreſſi ſunt legē meā in deſerto; & ponam terrā deſertā, & interficiam eam ſiti. Et filiorū ej⁹ non miſerebor quia filii, qui idololatriā perpetrant, ſunt. 4 Quia fornicata eſt congregatio eorum poſt pſeudoprophetas; confuſi ſunt 5 doctores eorū: *quia* dicebat, Sequar populos amatores meos ſuppeditantes cibum meū & potum meū, veſtimenta ſericea & byſſina, oleū & omnia alimenta mea. Propterea ecce ego diſſipo vias tuas in modū eorū qui ſepi- 6 unt ſpinis, & intercludam veluti qui parietib⁹ cingunt: & ſemitas ſuas non inveniet. Et perſequetur pacē cum populis amatorib⁹ ſuis, ſed ab illis mi- 7 nime obtinebit; & quæret adjutoriū, & non inveniet: tunc dicet, Vadam & revertar ad *cultum Domini mei prioris*, quia bene erat mihi quando ſerviebā coram eo: deinceps non ſerviā idolis. Ipſi autem neſciebant, quia 8 ego benedixi eis frumento & vino & oleo: & argentū multiplicavi eis, & aurū, ex quo confecerunt idola. Propterea revocabitur verbū meū ut aufe- 9 rat frumentū in tempore quo reconditur in area; & vinum, tempore quo in torculari premetur: & detraham indumentū ſericeū & byſſinū, quod dederā ei ad operiendā ignominiā ſuam. Nunc verò revelabo ej⁹ ignomini- 10 am in oculis populorū amatorū ej⁹: & nemo liberabit eam de manu mea. Et ceſſare faciā omnia ej⁹ gaudia, feſtivitates ej⁹, calendas ej⁹, & ſabbatha 11 ej⁹, & omnes ſolennitates ej⁹. Et deſolabo fructū vineæ ejus, & ficulneæ 12 ejus: quandoquidē dixit, Præmium iſta ſunt mihi, quod dederunt mihi populi amatores mei, ſed ponam ea in ſaltum, & comedet ea beſtia agri. Et vi- 13 ſitabo ſuper eam dies, quibus ſerviebat idolis, *quibus* adolebat aromata, [*quando*] ſimilis erat mulieri quæ maritum ſuū deſeruit, & adornata inauribus ſuis, & monilib⁹ margaritarum ſuarum, aberravit poſt amatores ſuos: ſic cœt⁹ Iſrael maluit ſervire idolis, & cultū meū dereliquit, dicit Dñs. Pro- 14 pterea ecce ego ſubjiciā eam Legi, & operabor illi miracula & grandia [illegible] nora, qualia edidi illi in deſerto, & [illegible] ſervorū meorū prophetarum loquar conſolationes ad cor ejus. [illegible] 15 vallē Achor ad delicias animæ, [illegible] ego [illegible] que fecera[illegible] aſcenderunt de terra Ægypti. Et erit in tempore illo, ait Dominus, vocabitis [illegible] 16

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܕܠܐ ܐܫܠܚܝܗ̇ ܥܪܛܠܝܐ. ܘܐܩܝܡܝܗ̇ ܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܐܬܝܠܕܬ ܒܗ. ܘܐܥܒܕܝܗ̇ ܐܝܟ 3
ܡܕܒܪܐ. ܘܐܝܟ ܐܪܥܐ ܨܗܝܐ. ܘܐܩܛܠܝܗ̇ ܒܨܗܝܐ. * ܘܥܠ ܒܢܝܗ̇ ܠܐ ܐܪܚܡ. 4
ܡܛܠ ܕܒܢܝ ܙܢܝܘܬܐ ܐܢܘܢ. * ܡܛܠ ܕܙܢܝܬ ܐܡܗܘܢ. ܘܐܒܗܬܬ ܝܠܕܬܗܘܢ. ܘܐܡܪܬ 5
ܕܐܙܠ ܒܬܪ ܪܚܡܝ. ܕܝܗܒܝܢ ܠܝ ܠܚܡܝ ܘܡܝܐ. ܘܢܚܬܝ ܘܟܬܢܝ. ܘܡܫܚܝ ܘܟܠ
ܕܡܬܒܥܐ ܠܝ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܐܢܐ ܣܝܓ ܐܢܐ ܐܘܪܚܬܗ̇ ܒܟܘܒܐ. ܘܐܣܓܘܪ 6
ܫܒܝܠܝܗ̇. ܘܐܘܪܚܐ ܠܐ ܬܫܟܚ. * ܘܬܪܕܘܦ ܒܬܪ ܪܚܡܝܗ̇. ܘܠܐ ܬܕܪܟ ܐܢܘܢ. ܘܬܒܥܐ 7
ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܬܫܟܚ ܐܢܘܢ. ܘܬܐܡܪ. ܐܗܦܘܟ ܐܙܠ ܠܘܬ ܒܥܠܝ ܩܕܡܝܐ. ܡܛܠ
ܕܛܒ ܗܘܐ ܠܝ ܗܝܕܝܟ ܡܢ ܗܫܐ. * ܗܝ ܕܝܢ ܠܐ ܝܕܥܬ ܕܐܢܐ ܝܗܒܬ ܠܗ̇ ܥܒܘܪܐ 8
ܘܚܡܪܐ ܘܡܫܚܐ. ܘܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ ܐܣܓܝܬ ܠܗ̇. ܘܥܒܕܘܗܝ ܠܒܥܠ.
* ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܗܦܘܟ ܐܣܒ ܥܒܘܪܝ ܒܥܕܢܗ. ܘܚܡܪܝ ܒܙܒܢܗ. ܘܐܦܪܘܩ ܥܡܪܝ 9
ܘܟܬܢܝ. ܕܢܟܣܐ ܒܗܬܬܗ̇. * ܘܗܫܐ ܐܓܠܐ ܨܥܪܗ̇ ܩܕܡ ܪܚܡܝܗ̇. 10
ܘܐܢܫ ܠܐ ܢܦܨܝܗ̇ ܡܢ ܐܝܕܝ. * ܘܐܒܛܠ ܟܠܗ̇ ܚܕܘܬܗ̇. ܥܐܕܝܗ̇. ܘܪܫܝ ܝܪܚܝܗ̇. 11
ܘܫܒܬܗ̇. ܘܟܠܗܘܢ ܥܐܕܝܗ̇. * ܘܐܚܪܒ ܓܦܬܗ̇. ܘܬܐܢܬܗ̇. ܕܐܡܪܬ ܕܐܓܪܐ 12
ܐܢܝܢ ܕܝܗܒܘ ܠܝ ܪܚܡܝ. ܘܐܥܒܕ ܐܢܝܢ ܥܒܐ. ܘܢܐܟܠܢ ܐܢܝܢ ܚܝܘܬ ܒܪܐ. * ܘܐܣܥܘܪ 13
ܥܠܝܗ̇ ܝܘܡܬܐ ܕܒܥܠܐ ܕܡܣܩܐ ܗܘܬ ܠܗܘܢ ܒܣܡܐ. ܘܡܨܛܒܬܐ ܒܩܕܫܝܗ̇ ܘܒܫܪܘܝܗ̇.
ܘܐܙܠܐ ܒܬܪ ܪܚܡܝܗ̇. ܘܠܝ ܛܥܝܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܐ ܐܢܐ ܡܦܝܣ ܐܢܐ ܠܗ̇. 14
ܘܡܕܒܪ ܐܢܐ ܠܗ̇ ܠܡܕܒܪܐ. ܘܡܡܠܠ ܐܢܐ ܥܠ ܠܒܗ̇. * ܘܐܬܠ ܠܗ̇ ܟܪܡܝܗ̇ ܡܢ ܬܡܢ. 15
ܘܥܘܡܩܐ ܕܥܟܘܪ. ܠܡܦܬܚ ܣܘܟܠܗ̇. ܘܬܬܡܟܟ ܬܡܢ ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܛܠܝܘܬܗ̇. ܘܐܝܟ
ܝܘܡܐ ܕܣܠܩܬ ܒܗ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܢܗܘܐ ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܬܩܪܝܢܢܝ 16
ܓܒܪܝ. ܘܠܐ ܬܩܪܝܢܢܝ ܬܘܒ ܒܥܠܝ.

Ne eam planè denudem, & reddam eam qualis 3
erat die quo nata eſt, reddamque eam ut
deſertum & ut terram ſiticuloſam, & extinguam
eam ſiti; Et filiorum ejus non miſereſcam, 4
cùm ſint filii fornicariæ: Fornicata eſt 5
enim mater eorum, & pudefacta genitrix eorum:
dixitque, Sequar amaſios meos dantes
panem meum & aquam meam, veſtes meas,
& linum meum, oleum meum, & quicquid
mihi neceſſarium eſt. Idcirco ecce ego obducam 6
vias ejus tribulis, & obſepiam ſemitas
ejus, ut viam non inveniat: Sectetur amaſios 7
ſuos, & non aſſequatur: quærat eos, & non
inveniat: tandem dicat; Revertar, adibo
maritum meum priorem, quoniam tunc meliùs
erat mihi quàm nunc. Cùm verò ipſa non 8
agnoverit quòd ego dediſſem ei frumentum,
vinum, & oleum; & argentum atque aurum
multiplicâſſem ei, ex quo confecerunt Baalem:
Idcirco reverſus recipiam frumentum 9
meum tempore ſuo, & vinum meum tempore
ſuo; recipiamque lanam meam & linum
meum quod dederam ut tegeret ignominiam
ſuam. Poſthac retegam turpitudinem ejus coram 10
amaſiis ejus, & nemo eripiet eam è manibus
meis. Et abolebo omne gaudium ejus, 11
ſolennitates & neomenias ejus, ſabbathum
ejus, & omnes dies feſtos ejus: Devaſtabo 12
quoque vites ejus & ficus ejus, de quibus dixit,
Munera ſunt quæ dederunt mihi amaſii
mei; & redigam eas in ſylvam, & comedent
eas beſtiæ deſerti: Et viſitabo contra eam 13
dies Baalis, quibus thura adolebat; & aptatis
inauribus unionibuſque ſuis, ſequebatur
amaſios ſuos; mei autem oblita eſt, dicit
Dominus. His de rebus ecce allecturus ſum 14
eam, & ad deſertum perducturus, & conſolaturus
eam: Et illinc daturus ei vineas ſuas, 15
vallem Achar; ut aperiatur intellectus ejus,
& humilietur ibi ut diebus pueritiæ ſuæ,
& ut eo die quo aſcendit è terra Ægypti.
Eritque die illo, dicit Dominus, ut vocet me 16
Vir mi, non autem vocet me deinceps Baali.
(i. *mi marite*)

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

*لكي اجردها عريانة • واعيدها كيوم ميلادها • واجعلها كالبرية • واضعها مثل 3
ارض عديمة الماء • واقتلها بالعطش * ولا ارحم اولادها • لانهم اولاد زنا * لان امهم زنت 4 5
خربت التي ولدتهم • لانها قالت لانطلقن خلف اصدقاي الذين يعطوني خبزي ومايي
وثيابي ولفايفي • ودهني • وكلما ينبغي لي * لاجل هذا ها انا اسيج طريقها بالشوك • وابني 6
مسالكها • فلا تجد لها سبيلا * واطرد اصدقاها فلا تدركهم • وتطلبهم فلا تجدهم 7
وتقول امضي وارجع الي رجلي الاول • لان الخير لي كان حينيذ اكثر من الان * وهي 8
لم تعلم اني اعطيتها القمح والخمر والزيت واكثرت لها الفضة وهي صنعت الفضة والذهب
لباعل * لاجل هذا ارجع فاخذ بري في ساعته • وخمري في زمانه • وانزع ثيابي ولفايفي 9
الا تغطي خزيها * والان اكشف عورتها امام اصدقاها ولا واحد لا يخلصها من يدي • 10
* واصرف جميع افراحها • ورووس شهورها • وسبوتها • وجميع مواسمها * وافسد كرمها وتينها 11 12
التي قالت هذه اجرتي اللاتي اعطانيها اصدقايي • واجعلها شهادة • وياكلها وحوش
القفر • وطيور السماء • ودبابات الارض * وانتقم فيها ايام باعال التي فيها تبخر لهم 13
وتلبس اقرطتها وقلايدها • وتمضي خلف اصدقاها • وتنسيني يقول الرب * لاجل 14
هذا ها انا ذا اضلها • واجعلها قفرا • واتكلم على قلبها * واعطيها قناياها من ثم 15
وغور اخور • لتفتح فهمها • وتتضع هناك كايام طفوليتها • وكايام صعودها من ارض
مصر * ويكون في ذلك اليوم يقول الرب • تدعوني رجلي • ولا تدعوني ايضا 16
باعل •

ut ſpoliem eam nudam, & reſtituam 3
talem qualis fuerat die nativitatis ſuæ,
reddam eã ut deſertũ, & diſponam eam
ut terram aquâ carentem, & interficiam
eam ſiti: Et filiorum ejus non miſerear, 4
eò quòd ſint filii fornicationis.
Nam fornicata eſt mater eorum, inverecunda 5
facta eſt quæ genuit eos;
quia dixit, Equidem ſequar amatores
meos qui ſuppeditant mihi panem meum
& aquam meam, veſtes & faſcias meas,
unguentum meum, & quidquid mihi
opus eſt. Propterea ecce ego ſpinis viam 6
ejus occludam, & ſemitas ejus ædificabo,
ut non inveniat ſibi ſemitam ullam.
Expellam amatores ejus, & non 7
aſſequetur eos; quæret illos, & non inveniet:
tum dicet, Vadam & redibo ad
virum meum priorem; quia meliùs erat
mihi tunc quàm nunc. Et ipſa non 8
agnoverat quòd ego dediſſem ei frumentum,
vinum, & oleum; quódque multum
argenti contuliſſem ei, ipſa verò addixerit
argentum & aurum Baali. Propterea 9
converſus eripiam frumentum
meum horâ ſtatutâ, & vinũ meũ tempore
ſuo; detrahamque veſtes meas & faſcias
meas, ne operiant pudenda ipſius. Et nunc 10
detegam turpitudinem ejus coram amatoribus
ejus, nemine liberante eam de
manu mea: Et amovebo omnes lætitias 11
ejus, & initia menſium ejus, ſabbatha
ejus, omneſque nundinas ejus: Et corrumpam 12
vitem ejus & ficum ejus de quibus
dicit, Hæ ſunt mercedes meæ quas
dederunt mihi amatores mei: & exponam
eam in teſtimonium, & devorabunt
eam beſtiæ deſerti, volatilia cœli, &
reptilia terræ: Et ulciſcar in ipſa dies 13
Baalum, quibus thus adolebat eis; &
inauribus atque monilibus ſuis induta,
ibat poſt amatores ſuos, mei oblita, dicit
Dominus. Propterea en ego ſeducam 14
eam, & redigam eam in ſolitudinem, &
loquar ad cor ejus: Et dabo illi poſſeſſiones 15
ſuas inde, & vallem Achor, ut
aperiat intellectum ſuum: & humiliabitur
illic ut diebus pueritiæ ſuæ, & ut
diebus aſcenſionis ſuæ de terra Ægypti.
Et erit eo die, dicit Dominus, ut vocet me 16
Vir mi, ac non vocet me amplius Baal.

הושע : ג ד

memorabũtur non & ; ejus ore de Behalim nomina removebo Et
17 והסרתי את־שמות הבעלים מפיה ולא־יזכרו
cum , illa die in fœdus eis *exscindam* Et .eorum nomine in ultrà
18 עוד בשמם : וכרתי להם ברית ביום ההוא עם־
,arcum & *: humi reptili* & , cœlorum *volatili* cum & , agri *fera*
חית השדה ועם־עוף השמים ורמש האדמה וקשת
fiducia in eos *recumbere* faciã & , terra de conteram bellum & ,gladium &
וחרב ומלחמה אשבור מן־הארץ והשכבתים לבטח :
,justitia in mihi te desponsabo & ; seculum in mihi te desponsabo Et
19 וארשתיך לי לעולם וארשתיך לי בצדק
mihi te desponsabo Et :miserationibus *in* &,misericordia *in* &,judicio *in* &
20 ובמשפט ובחסד וברחמים : וארשתיך לי
illa die in , erit Et .Dominum scies & , fide in
21 באמונה וידעת את־יהוה : והיה ביום ההוא
exaudient ipsi & ; cœlos exaudiam ,Dominus dicit ,exaudiam
אענה נאם־יהוה אענה את־השמים והם יענו
,*mustum* & ,triticum exaudiet terra Et .terram
22 את־הארץ : והארץ תענה את־הדגן ואת־התירוש
eam seminabo Et .Izrehel exaudient hæc & ; oleum *recens* &
23 ואת־היצהר והם יענו את־יזרעאל : וזרעתיה
.Hammi-Lo ad dicam & ; Ruchamah-Lo miserebor & ,terra in mihi
לי בארץ ורחמתי את־לא רחמה ואמרתי ללא־עמי
.meus Deus , dicet ipse & : tu meus Populus
עמי־אתה והוא יאמר אלהי :

CAP. III ג

,*socii* dilectam mulierem dilige ,vade Adhuc ,me ad Dominus dixit Et
1 ויאמר יהוה אלי עוד לך אהב־אשה אהבת רע
ipsi & ,Israel filios ad Domini dilectionem secundùm ; adulteram &
ומנאפת כאהבת יהוה את־בני ישראל והם
.uvarum dolia *diligentes* & , alienos deos ad *respicientes*
פנים אל־אלהים אחרים ואהבי אשישי ענבים :
,*hordeorum Chomer* & ; argenteis quindecim *in* mihi eam *sum mercatus* Et
2 ואכרה לי בחמשה עשר כסף וחמר שערים
:mihi *sedebis* multos Dies ,eam ad dixi Et .*hordeorum Lethech &*
3 ולתך שערים : ואמר אליה ימים רבים תשבי לי
dies Quia .te ad ego etiam & ; *viro* sis ne & ,fornicaberis ne
4 לא תזני ולא תהיי לאיש וגם־אני אליך : כי ימים
non & ,*princeps non &* , rex *non* , Israel filii manebunt multos
רבים ישבו בני ישראל אין מלך ואין שר ואין
Postea .Teraphim & , Ephod *non &* ; *statua non &* , *sacrificium*
5 זבח ואין מצבה ואין אפוד ותרפים : אחר
suum Deum Dominum quærent & , Israel filii revertentur
ישבו בני ישראל ובקשו את־יהוה אלהיהם
ejus bonum ad & ,Dominum *ad* pavebunt & : suum regem David &
ואת דויד מלכם ופחדו אל־יהוה ואל־טובו
.dierum novissimo in
באחרית הימים :

CAP. IV. ד

cum Domino *lis* quia : Israel filii Domini verbum Audite
1 שמעו דבר־יהוה בני ישראל כי ריב ליהוה עם־
scientia non & ,misericordia non & ,veritas non quia ,terræ habitatorib⁹
יושבי הארץ כי־אין אמת ואין־חסד ואין־דעת
: adulterari & ,furari & ,occidere & ,negare &,*Pejerare* .terra in Dei
2 אלהים בארץ : אלה וכחש ורצח וגנב ונאף
.*tetigerunt sanguinibus in sanguines* & ,fregerunt
פרצו ודמים בדמים נגעו :

Verſio VULG. LAT.

17 Et auferam nomina Baalim de ore ejus, & non recordabitur 18 ultrà nominis eorum. Et percutiam cum eis fœdus in die illa, cum beſtia agri, & cum volucre cœli, & cum reptili terræ: & arcum, & gladium, & bellum conteram de terra: & dormire eos faciam fiducialiter. 19 Et ſponſabo te mihi in ſempiternum: & ſponſabo te mihi in juſtitia, & judicio, & in miſericordia, & in 20 miſerationibus. Et ſponſabo te mihi in fide: & ſcies quia ego 21 Dominus. Et erit in die illa: Exaudiam, dicit Dominus, exaudiam cœlos, & illi exaudient 22 terram. Et terra exaudiet triticum, et vinum, & oleum: et 23 hæc exaudient Jezrahel. Et ſeminabo eam mihi in terra, et miſerebor ejus, quæ fuit Abſque 24 miſericordia. Et dicam Non populo meo; Populus meus es tu: et ipſe dicet; Deus meus es tu.

CAP. III.

1 Et dixit Dominus ad me; Adhuc vade, et dilige mulierem dilectam amico et adulteram: ſicut diligit Dominus filios Iſrael, et ipſi reſpiciunt ad deos alienos, et diligunt vinacia uvarum. 2 Et fodi eam mihi quindecim argenteis, et coro hordei, et di- 3 midio coro hordei. Et dixi ad eam; Dies multos expectabis me: non fornicaberis, et non eris viro: ſed et ego expectabo te. 4 Quia dies multos ſedebunt filii Iſrael ſine rege, et ſine principe, et ſine ſacrificio, et ſine altari, et ſine ephod, et ſine theraphim. 5 Et poſt hæc revertentur filii Iſrael, et quærent Dominum Deum ſuum, et David regem ſuum: et pavebunt ad Dominum, et ad bonum ej⁹, in noviſſimo dierum.

CAP. IV.

1 Audite verbum Domini, filii Iſrael, quia judicium Domino cum habitatoribus terræ: non eſt enim veritas, et non eſt miſericordia, et non eſt ſcientia 2 Dei in terra. Maledictum, et mendacium, et homicidium, et furtum, et adulterium inundaverunt, et ſanguis ſanguinem tetigit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Καὶ ἐξαρῶ τὰ ὀνόματα τῶν Βααλεὶμ ἐκ στόματος αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ μνησθῶσιν (ι) οὐκέτι 18 τὰ ὀνόματα αὐτῶν. Καὶ διαθήσομαι αὐτοῖς (ι) διαθήκην ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ μετὰ τῶν θηρίων τοῦ ἀγροῦ, καὶ μετὰ τῶν πετεινῶν τοῦ οὐρανοῦ, καὶ (κ) τῶν ἑρπετῶν τῆς γῆς· καὶ τόξον, καὶ ῥομφαίαν, καὶ πόλεμον συντρίψω ἀπὸ τῆς 19 γῆς, καὶ κατοικιῶ σε ἐπ᾽ ἐλπίδι. Καὶ μνηστεύσομαί σε ἐμαυτῷ εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ μνηστεύσομαί σε ἐμαυτῷ ἐν δικαιοσύνῃ, καὶ ἐν 20 κρίματι, καὶ ἐν ἐλέει, καὶ ἐν οἰκτιρμοῖς, Καὶ μνηστεύσομαί σε ἐμαυτῷ ἐν πίστει, καὶ ἐπι- 21 γνώσῃ τὸν κύριον. Καὶ ἔσται ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, λέγει κύριος, ἐπακούσομαι τῷ οὐρα- 22 νῷ, καὶ (λ) αὐτὸς ἐπακούσεται τῇ γῇ, Καὶ ἡ γῆ ἐπακούσεται τὸν σῖτον, καὶ τὸν οἶνον, καὶ τὸ ἔλαιον, καὶ αὐτὰ ἐπακούσεται τῷ Ἰεζραέλ. 23 Καὶ σπερῶ αὐτὴν ἐμαυτῷ ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ 24 (μ) ἀγαπήσω τὴν Οὐκ ἠγαπημένην, Καὶ ἐρῶ τῷ Οὐ λαῷ μου, Λαός μου εἶ σύ· καὶ αὐτὸς ἐρεῖ, Κύριος ὁ θεός μου εἶ σύ.

MS.A. (ι) ἔτι (ι) ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ διαθήκην μετὰ (κ) μετὰ τῶν (λ) ὁ οὐρανὸς (μ) ἐλεήσω τὴν οὐκ ἠλεημένην, Καὶ

Et auferam nomina Baalim de ore ejus: & non recordabuntur ultrà nominum eorũ. Et disponã 17 18 *eis teſtamentum in die illa cum beſtiis agri, & cum volatilibus cœli, & reptilibus terræ. Et arcũ, & gladium, & bellum conteram de terra, & habitare (i) te faciam in ſpe. Et ſponſabo te mihi in* 19 *ſempiternum: & ſponſabo te mihi in juſtitia, & in judicio, & in miſericordia, & in miſerationibus: Et ſponſabo te mihi in fide:* 20 *& (k) cognoſces Dominum. Et* 21 *erit in die illa, dicit Dominus: Exaudiam cœlum: & ipſum exaudiet terram: Et terra exaudiet* 22 *frumentum, & vinum, & oleum: & hæc exaudient Iezrael. Et ſe-* 23 *minabo eam mihi ſuper terram, & (l) diligam Non dilectam, Et* 24 *dicam Non populo meo; Populus meus es tu. Et ipſe dicet; Dominus Deus meus es tu.*

ΚΕΦ. γ΄.

1 ΚΑὶ εἶπε κύριος πρός με, Ἔτι πορεύθητι, καὶ ἀγάπησον γυναῖκα ἀγαπῶσαν πονηρὰ, καὶ μοιχαλίν, καθὼς ἀγαπᾷ ὁ θεὸς τοὺς υἱοὺς Ἰσραὴλ, καὶ αὐτοὶ (α) ἐπιβλέπουσιν ἐπὶ θεοὺς ἀλλοτρίους, καὶ φιλοῦσι πέμματα 2 μετὰ (β) σταφίδος. Καὶ ἐμισθωσάμην ἐμαυτῷ πεντεκαίδεκα ἀργυρίου, καὶ γομὸρ 3 κριθῶν, καὶ νέβελ οἴνου. Καὶ εἶπα πρὸς αὐτὴν, Ἡμέρας πολλὰς καθήσῃ ἐπ᾽ ἐμοί· καὶ οὐ μὴ πορνεύσῃς, οὐδὲ μὴ γένῃ ἀνδρὶ (γ), 4 καὶ ἐγὼ ἐπὶ σοί. Διότι ἡμέρας πολλὰς καθήσονται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, οὐκ ὄντος βασιλέως, οὐδὲ ὄντος ἄρχοντος, (δ) οὐδὲ οὔσης θυσίας, οὐδὲ ὄντος θυσιαστηρίου, (ε) 5 οὐδὲ ἱερατείας, οὐδὲ δήλων. Καὶ μετὰ ταῦτα ἐπιστρέψουσιν οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ, καὶ ἐπιζητήσουσι (ζ) κύριον τὸν θεὸν αὐτῶν, καὶ Δαυὶδ τὸν βασιλέα αὐτῶν, καὶ ἐκστήσονται ἐπὶ τῷ κυρίῳ, καὶ ἐπὶ τοῖς ἀγαθοῖς αὐτοῦ ἐπ᾽ ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν.

MS.A. (α) ἀποβλέπουσιν (β) σταφίδων. (γ) ἑτέρῳ, κἀγὼ (δ) οὐκ (ε) οὔτε ἱερατείας, οὔτε (ζ) τὸν κύριον θεὸν

CAP. III.

Et dixit Dominus ad me; Adhuc vade, & dilige mulierem diligentem mala, et adulteram: ſicut diligit Deus filios Iſrael: & ipſi reſpiciunt ad deos alienos, & amant coctiones cum (a) vinaciis. Et (b) conduxi mihi quindecim 2 *argenteis, & Gomor hordei, & (c) Nebel vini. Et dixi ad eam:* 3 *Dies multos ſedebis (d) ſuper me: & non fornicaberis, nec eris (e) viro: & ego ſuper te. Quia die-* 4 *bus multis ſedebunt filii Iſrael ſine rege, ſine principe, ſine ſacrificio, ſine altari, ſine ſacerdotio, (f) ſine manifeſtationibus. Et poſt* 5 *hæc revertentur filii Iſrael: & quærent Dominum Deum ſuum, & David regem ſuum: & ſtupebunt ad Dominum, & ſuper bonis ejus in (g) noviſſimis diebus.*

ΚΕΦ. δ΄.

1 ἈΚούσατε λόγον κυρίου υἱοὶ Ἰσραὴλ, (α) ὅτι κρίσις τῷ κυρίῳ πρὸς τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν, διότι οὐκ ἔστιν ἀλήθεια, οὐδὲ ἔλεος, οὐδὲ ἐπίγνωσις θεοῦ ἐπὶ τῆς γῆς. 2 Ἀρὰ, καὶ ψεῦδος, καὶ φόνος, καὶ κλοπὴ, καὶ μοιχεία κέχυται ἐπὶ τῆς γῆς, καὶ αἵματα ἐφ᾽ αἵμασι μίσγουσι.

MS.A. (α) διότι

CAP. IV.

Audite verbum Domini, filii Iſrael: quia judicium Domino ad habitatores terræ: quia non eſt veritas, neque miſericordia, neque ſcientia Dei ſuper terram. Maledictio, 2 *& mendacium, & homicidium, & furtum, & adulterium effuſum eſt ſuper terram; & (a) ſanguines in ſanguinibus miſcent.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 18 ואעדי ית שום טעות עממיא מפומהון ולא יהי דכרן שומהון עוד : ואגזר להון קים
בעדנא ההיא דיהון שלם עם חית ברא ועם עופא דשמיא ורחשא דארעא וקשתא
19 וחרבא ועבדי קרבא אבטל מן ארעא ואשרנון לרוחצן : ואקימנכון קדמי לעלם
20 ואקימנכון קדמי בקושטא ובדינא ובחסדא וברחמי : ואקימנכון קדמי בהימנותא
21 ותדעון למדחל מן קדם יי : ויהי בעדנא ההיא אקבל צלותכון אמר יי אפקיד ית שמיא
22 ואנון יחתון מטרא על ארעא : וארעא תרבי עבורא וחמרא ומשחא ואנון יספקון
23 לגלות עמי : ואקימנכון קדמי בארעא בית שכנתי וארחם עליהון דלא רחימין בעובדיהון
ואימר לדהויתי אמר להון לא עמי ברם עמי אתון והוא יימר אלהי :

ג

1 ואמר יי לי עוד אזל אתנבי נבואה על בית ישראל דאנון דמן לאתתא דרחימא על
בעלה ומזניא עלוהי וכל כדן רחים לה ולא צבי למפטרה כן רחימת יי על בני ישראל
ואנון מתפנן בתר טעות עממיא ברם אם יתובון ישתבק להון ויהון דמן לגבר דאשתלי
2 ואמר מלא בחבריה : ופרקתנון במימרי ביום חמשא עסר לירח ניסן ויהבית כסף
תקליא בפור לנפשהון ואמרית דיהון מקרבין קדמי עומר ארמותא מעללת סערין :
3 נביא אמר לה כנשתא דישראל חוביכון גרמו לכון דתגלון יומין סגיאין תתנהון
4 לפולחני לא תטעון ולא תפלחון לטעותא ואף אנא עתיד לרחמא עליכון : ארי יומין
סגיאין יתבון בני ישראל לית מלכא מדבית דוד ולית דעביד שולטן על ישראל ולית
5 דדבח לרעוא בירושלם ולית קמתא בשמרון ולית אפוד ומחוי : בתר כן יתובון בני
ישראל ויתבעון ית פולחנא דיי אלההון וישתמעון למשיחא בר דוד מלכהון ויתנהון
לפולחנא דיי וסני טוביה דיתי להון בסוף יומיא :

ד

1 קבילו פתגמא דיי בני ישראל ארי דינא קדם יי עם יתבי ארעא ארי לית עבדי קושטא
2 ולית גמלי חסדא ולית דמהלכין בדחלתא דיי בארעא : יימן לשקר וכדבין וקטלי
נפשן וגנבין וניפין ומולדין בנין מנשי חבריהון והובין על חובין מוספין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et auferam nomen idolorum populorũ de ore eorum, & non fiet memoria 17 nominis eorũ in poſterũ. 18 Et feriã eis pactũ in tempore illo, ut degant pacificè cum fera agreſti, & cum volucre cœli atque reptili terræ: & arcũ & gladiũ ac bellatores exterminabo de terra, & habitare eos faciã confidenter. 19 Et conſolidabo vos corã me in æternũ, ſtabiliámque vos in veritate & judicio, & in miſericordia & miſerationib⁹. 20 Deniq; confirmabo vos corã me in fide; & ſcietis timere à facie Dñi. 21 Erit verò tunc temporis, ſuſcipiã orationẽ veſtrã, ait Dñs: mandabo cœlis, & ipſi dimittent pluviam ſuper terrã. 22 Et terra producet frumentũ & vinũ oleúmque, quæ ſint factura ſatis tranſmigrationi populi mei. 23 Et ſtabiliam *vos* corã me in terra dom⁹ majeſtatis meæ; & miſerebor illorũ qui erant miſericordia indigni propter opera ſua: & dicã iis quib⁹ dicebam, Non popul⁹ meus, utique popul⁹ me⁹ eſtis vos; & ipſi reſpondebunt, Deus meus.

CAP. III.

Et dixit Dñs ad me iterũ: Vade, vaticinare prophetiam adverſum domũ Iſrael; qui ſimiles ſunt mulieri chariſſimæ ſuo marito; quæ licet fornicetur ſub eo, adeò tamen diligit eã, ut non velit dimittere eam: talis eſt dilectio Dñi erga filios Iſrael; at ipſi ſe vertunt ad idola populorum: veruntamen ſi convertantur, dimittetur eis, & aſſimilabuntur viro qui ignoranter peccavit, & dixit ſermonem in *ſocium ſuũ*. 2 Et redemi eos per verbum meũ die quintadecima menſis Niſan, & dedi argentum in pondere pro pretio redemptionis animarũ eorum: & dixi, ut offerrent coram me manipulum elevationis de frugibus hordeaceis. 3 Propheta dic ei, Congregatio Iſrael, peccata veſtra in cauſa fuerunt vobis, ut exularetis quam plurimis diebus: applicabitis vos cultui meo, non fornicabimini neque famulabimini idolis, ego quoque miſerturus ſum veſtri. 4 Quia diebus multis manebunt filii Iſrael abſque rege de domo David [*prognato*.] & abſque dominium capeſſente in Iſrael; nec erit qui ſacrificet in beneplacitũ in Jeruſalẽ, neq; erit in Samaria excelſũ, nec non Ephod, nec qui reſponſum reddat. 5 Poſtea pœnitentia ducentur filii Iſrael & quærent cultũ Dñi Dei ſui, & obedient Chriſto filio David regi ſuo, atque ſtudebunt cultui Dñi, & multiplicabitur bonitas ej⁹ quæ adventura eſt eis in fine dierum.

CAP. IV.

Suſcipite verbũ Dñi *filii* Iſrael, ſiquidẽ diſceptatio corã Dño eſt cum habitatorib⁹ terræ, quia non ſunt operatores veritatis, nec retribuentes miſericordiã, neq; qui ambulent in timore Dñi in terra. 2 Jurant falſò, & mentiuntur, occidúntq; animas & furantur, & adulteria committentes generant filios ex uxoribus proximorum ſuorum: & aggregant peccata peccatis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܐܥܒܪ ܫܡܗܐ ܕܒܥܠܐ ܡܢ ܦܘܡܗ. ܘܠܐ ܢܬܕܟܪܘܢ ܬܘܒ ܒܫܡܗܘܢ. * ܘܐܩܝܡ ܠܗܘܢ ܩܝܡܐ 17 18
ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܀ ܥܡ ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ ܘܥܡ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܥܡ ܪܚܫܐ ܕܐܪܥܐ * ܘܩܫܬܐ
ܘܣܝܦܐ ܘܩܪܒܐ ܐܒܛܠ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܐܫܪܐ ܐܢܘܢ ܒܬܘܟܠܢܐ. * ܘܐܡܟܪܝܟܝ ܠܝ ܠܥܠܡ. 19
ܘܐܡܟܪܝܟܝ ܠܝ ܒܟܐܢܘܬܐ ܘܒܕܝܢܐ. ܘܒܛܝܒܘܬܐ ܘܒܪܚܡܐ. * ܘܐܡܟܪܝܟܝ ܠܝ ܒܗܝܡܢܘܬܐ 20
ܘܬܕܥܝܢ ܠܡܪܝܐ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܀ ܐܥܢܐ ܠܫܡܝܐ. ܘܗܢܘܢ ܢܥܢܘܢ 21
ܠܐܪܥܐ. * ܘܐܪܥܐ ܬܥܢܐ ܠܥܒܘܪܐ. ܘܠܚܡܪܐ ܘܠܡܫܚܐ. ܘܗܢܘܢ ܢܥܢܘܢ ܠܐܝܙܪܥܝܠ. 22
* ܘܐܙܪܥܝܗ ܠܝ ܒܐܪܥܐ. ܘܐܪܚܡ ܠܠܐ ܪܚܝܡܬܐ. ܘܐܡܪ ܠܠܐ ܥܡܝ ܥܡܝ ܀ ܘܗܘ 23
ܢܐܡܪ ܠܝ ܐܠܗܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

* ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܬܘܒ ܙܠ ܪܚܡ ܐܢܬܬܐ ܓܝܪܬܐ ܕܪܚܡܐ ܒܝܫܬܐ ܀ ܐܝܟ ܕܪܚܡ ܡܪܝܐ 1
ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܀ ܘܗܢܘܢ ܐܬܦܢܝܘ ܒܬܪ ܐܠܗܐ ܢܘܟܪܝܐ ܀ ܘܪܚܡܘ ܕܘܫܐ ܕܥܢܒܐ.
* ܘܙܒܢܬܗ ܠܝ ܒܚܡܫܬܥܣܪ ܕܟܣܦ. ܘܒܟܘܪ ܘܦܠܓ ܣܥܪܐ. * ܘܐܡܪܬ ܠܗ ܝܘܡܬܐ
ܣܓܝܐܐ ܬܬܒܝܢ ܠܝ. ܠܐ ܬܙܢܝܢ ܘܠܐ ܬܗܘܝܢ ܠܓܒܪ. ܘܐܦ ܐܢܐ ܐܗܘܐ ܠܟܝ. * ܡܛܠ
ܕܝܘܡܬܐ ܣܓܝܐܐ ܢܬܒܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ : ܕܠܐ ܡܠܟܐ ܘܕܠܐ ܫܠܝܛܐ ܀ ܘܕܠܐ ܕܒܚܬܐ ܘܕܠܐ
ܡܕܒܚܐ ܀ ܘܕܠܐ ܠܒܫ ܐܦܘܕܐ ܘܣܐܡ ܒܣܡܐ. * ܘܡܢ ܒܬܪܟܢ ܢܬܦܢܘܢ ܒܢܝ
ܐܝܣܪܝܠ ܀ ܘܢܒܥܘܢ ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܘܠܕܘܝܕ ܡܠܟܗܘܢ. ܘܢܕܥܘܢ ܠܡܪܝܐ
ܘܠܛܝܒܘܬܗ ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ : ܡܛܠ ܕܕܝܢܐ ܠܡܪܝܐ ܥܡ 1
ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܩܘܫܬܐ ܘܐܦܠܐ ܛܝܒܘܬܐ ܀ ܘܐܦܠܐ ܝܕܥܬܗ ܕܐܠܗܐ
ܒܐܪܥܐ. * ܠܘܛܬܐ : ܘܟܕܒܘܬܐ : ܘܩܛܠܐ : ܘܓܢܒܘܬܐ : ܘܓܘܪܐ ܣܓܝܘ. ܘܕܡܐ
ܒܕܡܐ ܚܠܛܘ.

Et amovebo nomen Baalis ab ore ipſius, nec mentionem ultrà facient nominis ejus. 17 Et pangam fœdus pro ipſis eo die cum beſtiis deſerti, & cum volucribus cœli, & reptilibus terræ: arcum, gladium, ac bellum abolebo de terra, & efficiam ut habitent ſecuri: 18 Et deſponſabo te mihi in perpetuum, deſponſabo inquam, te mihi in juſtitia & judicio, in gratia & miſerationibus: 19 Deſponſabo te mihi fide, & cognoſces Dominum. 20 Et erit eo die, dicit Dominus, ut reſpondeam cœlis, ipſi verò terræ reſpondeant, 21 Et terra reſpondeat frumento, vino, & oleo; & iſta reſpondeant Izareeli. 22 Et ſeminabo eam mihi in terra, & miſericordiâ utar erga Non conſecutam miſericordiam: & Non populum meum vocabo, Popule meus; & ipſe vocabit me, Deus meus. 23

CAP. III.

DEinde dixit mihi Dominus; Vade rurſus, ama mulierem adulteram amantem ſcelera: quemadmodum cùm dilexerit Dominus filios Iſraelis, ipſi tamen converterunt ſe poſt deos alienos, & amaverunt macerata uvarum paſſarum. 1 Itaque emi illam mihi quindecim argenteis, & ſeſqui-modio hordei: 2 Et dixi illi; Diebus multis ſedeas apud me; ne ſcorteris, néve tui copiam facias cuiquam: viciſſim ego ero apud te. 3 Nam diebus multis ſeſſuri ſunt Iſraelitæ ſine rege, & ſine principe, ſine ſacrificio, & ſine altari, ſine induente ephod, & adolente thura. 4 Poſtea revertentur Iſraelitæ, & requirent Dominum Deum ſuum, & Davidem regem ſuum: & cognoſcent Dominum & bonitatem ejus, diebus noviſſimis. 5

CAP. IV.

AUdite ſermonem Domini, Iſraelitæ; quia lis eſt Domino cum habitatoribus terræ, quòd nulla ſit fides, neque beneficentia, neque agnitio Dei in terra. 1 Maledictio, mendacium, cædes, furtum, & adulterium multiplicata ſunt, & ſanguinem cum ſanguine commiſcuerunt. 2

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

17 * وأنزع أسماء باعل من فمها ۔ ولا تذكر أيضا أسماهم * وأعهد لهم في ذلك اليوم عهدا 18
مع وحوش القفر ۔ ومع طيور السماء ۔ ومع دبابات الأرض ۔ وأكسر القوس والسيف والحرب
من الأرض ۔ وأسكنك على الرجاء * وأخطبك لذاتي إلى الأبد ۔ وأخطبك لذاتي بالعدل 19
والحكم ۔ وبالرحمة والرأفات * وأخطبك لذاتي بالإيمان ۔ وتعرفين الرب * ويكون في ذلك 20 21
اليوم يقول الرب ۔ أستجيب للسماء ۔ والسماء تستجيب للأرض * والأرض تستجيب للقمح 22
والقمح والخمر والزيت وهؤلاء يستجيبون لإسرائيل * وأزرعها لذاتي على الأرض ۔ وأرحم 23
الغير مرحومة * وأقول للذين ليسوا شعبي شعبي أنت ۔ وهو يقول ۔ الرب إلهي أنت ۔ 24

* الفصل الثالث ۔

1 * وقال لي الرب ۔ امض وحب امرأة تحب الشر والفجور كما أحب الله بني إسرائيل ۔ وهم ينظرون
2 إلى الآلهة الغرباء ۔ ويحبون المكدود مع الزبيب * وأجرتها لذاتي بخمسة عشر من الفضة ۔ وقومر
3 من الشعير ۔ ونبل من الخمر * وقلت لها ۔ أياما كثيرين تجلسي عندي ۔ ولا تزني ولا
4 تكوني لرجل آخر ۔ وأنا لك * من أجل أن بني إسرائيل يجلسون أياما كثيرين بغير ملك
5 ولا رئيس ۔ ولا ذبيحة ولا مذبح ۔ ولا كهنوت ولا مرشد * وبعد هذا يرجع بنو إسرائيل
يطلبون الرب وداود ملكهم ۔ ويعترفون بالرب وخيراته في الأيام الآخرة ۔

۔ الفصل الرابع ۔ ۔ الإصحاح الثاني ۔

1 * اسمعوا قول الرب يا بني إسرائيل ۔ من أجل أن للرب حكومة مع سكان الأرض ۔ من أجل
2 أنه ليس حق موجودا ۔ ولا رحمة ولا معرفة بالله على الأرض * لعنة وكذب ۔ وقتل وسرقة
وفسق أهرق على الأرض ۔ ويخلطون الدماء بالدماء ۔

Amovebo enim nomina Baal ab ore ejus, ut non recordetur ampliùs nominum eorum. 17 *Et pangam eis illo die fœdus cum beſtiis deſerti, cum volatilibus cœli, & cum reptilibus terræ: & frangam arcum, gladium, ac bellum de terra: & faciam ut habites in ſpe.* 18 *Et deſponſabo te mihi in perpetuum, deſponſabo te mihi in juſtitia & judicio, in miſericordia & miſerationibus:* 19 *Deſponſabo te mihi in fide, & agnoſces Dominum.* 20 *Erit etiam eo die, dicit Dominus, ut exaudiam cœlum, cœlum exaudiat terram,* 21 *Terra frumentum exaudiat; & frumentum, vinum, et oleum; atque iſta exaudiant Iſraelem.* 22 *Et ſeminabo eam mihi ſuper terram, & miſerebor Non miſerandæ.* 23 *Et dicam iis qui Non ſunt populus meus, Populus meus es; & ipſe dicet, Dominus Deus meus es.* 24

CAP. III.

PRæterea dixit mihi Dominus; Abi, et ama mulierem amantem flagitia & adulterium; quemadmodum amavit Deus filios Iſraelis, & ipſi reſpiciunt ad deos alienos, & amant depſitam cum uvis paſſis maſſam. 1 *Igitur conduxi eam mihi quindecim argenteis, gomer hordei, & nebel vini:* 2 *Et dixi ei; Diebus multis ſedebis apud me, non fornicaberis, neque eris alteri viro: ego viciſſim tuus ero.* 3 *Nam filii Iſraelis ſedebunt dies multos ſine rege & ſine principe, ſine ſacrificio & ſine altari, ſine ſacerdotio & ſine docente.* 4 *Et poſt hæc reverſi filii Iſraelis quærent Dominum & Davidem regem ſuum, & fatebuntur Dominum & beneficia ejus diebus poſtremis.* 5

CAP. IV.

Textus ſecundus.

AUdite ſermonem Domini ô filii Iſraelis; nam contentio eſt Domino cum habitatoribus terræ, eò quòd non extet veritas, neque miſericordia, neque agnitio Dei ſuper terram. 1 *Maledictio, & mendacium, cædes, furtum, & adulterium effuſum eſt ſuper terram, miſcentque ſanguines cum ſanguinibus.* 2

הושע : ד

bestia in ,ea in habitans omnis infirmabitur & , terra lugebit Propterea
3 עַל־כֵּן תֶּאֱבַל הָאָרֶץ וְאֻמְלַל כָּל־יוֹשֵׁב בָּהּ בְּחַיַּת
Verè .colligentur maris pisces etiam & ; cœlorum volatili in & , agri
הַשָּׂדֶה וּבְעוֹף הַשָּׁמָיִם וְגַם־דְּגֵי הַיָּם יֵאָסֵפוּ: אַךְ 4
judicantes tanquam tuus populus & ; vir arguat non & litiget non vir
אִישׁ אַל־יָרֵב וְאַל־יוֹכַח אִישׁ וְעַמְּךָ כִּמְרִיבֵי
; nocte ,tecum propheta etiam corruet & , hodie corrues Et .sacerdotem
כֹהֵן: וְכָשַׁלְתָּ הַיּוֹם וְכָשַׁל גַּם־נָבִיא עִמְּךָ לָיְלָה 5
quia ; scientia absque meus populus sunt Succisi .tuam matrem succidam &
וְדָמִיתִי אִמֶּךָ: נִדְמוּ עַמִּי מִבְּלִי הַדָּעַת כִּי 6
: mihi fungendo sacerdotio à te reprobabo & repulisti scientiam tu
אַתָּה הַדַּעַת מָאַסְתָּ וְאֶמְאָסְאךָ מִכַּהֵן לִי
.ego etiam tuorum filiorum obliviscar , tui Dei legis es oblitus &
וַתִּשְׁכַּח תּוֹרַת אֱלֹהֶיךָ אֶשְׁכַּח בָּנֶיךָ גַּם־אָנִי:
eorum gloriam : mihi peccaverunt sic ,eorum multitudinem Secundùm
7 כְּרֻבָּם כֵּן חָטְאוּ־לִי כְּבוֹדָם
ad & ; comederunt mei populi Peccatum .commutabo ignominiam in
8 בְּקָלוֹן אָמִיר: חַטַּאת עַמִּי יֹאכֵלוּ וְאֶל־
,populus sicut fuit Et .suam animam levaverunt eorum iniquitatem
9 עֲוֺנָם יִשְׂאוּ נַפְשׁוֹ: וְהָיָה כָעָם
.ei reddam ejus studia & ,ejus vias eum super visitabo & ; sacerdos sic
כַּכֹּהֵן וּפָקַדְתִּי עָלָיו דְּרָכָיו וּמַעֲלָלָיו אָשִׁיב לוֹ:
quoniã : erumpent non &,sunt fornicati ; saturabuntur non &,comedent Et
10 וְאָכְלוּ וְלֹא יִשְׂבָּעוּ הִזְנוּ וְלֹא יִפְרֹצוּ כִּי־
,vinum & ,Fornicatio .custodiendum ad dereliquerunt Dominum
11 אֶת־יְהוָה עָזְבוּ לִשְׁמֹר: זְנוּת וְיַיִן
ejus baculus & ,postulabit suo ligno in meus Populus .cor capiet mustum &
12 וְתִירוֹשׁ יִקַּח־לֵב: עַמִּי בְּעֵצוֹ יִשְׁאָל וּמַקְלוֹ
sunt fornicati & ,fecit errare fornicationum spiritus nam : ei annuntiabit
יַגִּיד לוֹ כִּי רוּחַ זְנוּנִים הִתְעָה וַיִּזְנוּ
super & ,immolaverunt montium capita Super .suis diis desuper
13 מִתַּחַת אֱלֹהֵיהֶם: עַל־רָאשֵׁי הֶהָרִים יְזַבֵּחוּ וְעַל־
quia ,terebinthum & ,populum & ,quercum subtus ,adoleverunt colles
הַגְּבָעוֹת יְקַטֵּרוּ תַּחַת אַלּוֹן וְלִבְנֶה וְאֵלָה כִּי־
vestræ nurus & , vestræ filiæ fornicabuntur ideo : ejus umbra bona
טוֹב צִלָּהּ עַל־כֵּן תִּזְנֶינָה בְּנוֹתֵיכֶם וְכַלּוֹתֵיכֶם
,fuerint fornicatæ cùm ,vestras filias super visitabo Non .erunt adulteræ
14 תְּנָאַפְנָה. לֹא־אֶפְקוֹד עַל־בְּנוֹתֵיכֶם כִּי תִזְנֶינָה
cum hi quoniam ,commiserint adulteria cùm vestras nurus super &
וְעַל־כַּלּוֹתֵיכֶם כִּי תְנָאַפְנָה כִּי־הֵם עִם־
populus & : sacrificaverunt scortis cum & ,se diviserunt meretricibus
הַזֹּנוֹת יְפָרֵדוּ וְעִם־הַקְּדֵשׁוֹת יְזַבֵּחוּ וְעָם
delinquat ne , Israel tu fornicans Si .cespitabit ,intelliget non
15 לֹא־יָבִין יִלָּבֵט: אִם־זֹנֶה אַתָּה יִשְׂרָאֵל אַל־יֶאְשַׁם
, Beth-aven ascendatis ne & ,Ghilghal ingrediamini ne & ; Jehudah
יְהוּדָה וְאַל־תָּבֹאוּ הַגִּלְגָּל וְאַל־תַּעֲלוּ בֵּית אָוֶן
declinans vacca sicut Quoniam .Dominus Vivens , juretis ne &
16 וְאַל־תִּשָּׁבְעוּ חַי־יְהוָה: כִּי כְּפָרָה סֹרֵרָה
agnum tanquam Dominus eos pascet nunc : Israel declinavit
סָרַר יִשְׂרָאֵל עַתָּה יִרְעֵם יְהוָה כְּכֶבֶשׂ
Recessit .eum dimitte , Ephraim dolorum Socius .latitudine in
17 18 בַּמֶּרְחָב: חֲבוּר עֲצַבִּים אֶפְרָיִם הַנַּח־לוֹ: סָר
ignominiam afferte ,dilexerunt ,sunt fornicati fornicando ; eorum potus
סָבְאָם הַזְנֵה הִזְנוּ אָהֲבוּ הֵבוּ קָלוֹן
afficientur pudore & : suis alis in eam spiritus Ligavit .ejus clypei
19 מָגִנֶּיהָ: צָרַר רוּחַ אוֹתָהּ בִּכְנָפֶיהָ וְיֵבֹשׁוּ
.suis sacrificiis à
מִזִּבְחוֹתָם:

Versio VULG. LAT.

3 Propter hoc lugebit terra, & infirmabitur omnis qui habitat in ea, in bestia agri, & in volucre cœli: sed & pisces maris congregabuntur. 4 Veruntamen unusquisque non judicet: & non arguatur vir: populus enim tuus, sicut hi 5 qui contradicunt sacerdoti. Et corrues hodiè, & corruet etiam propheta tecum: nocte tacere feci matrem tuam. 6 Conticuit populus meus, eò quòd non habuerit scientiam: quia tu scientiam repulisti, repellam te, ne sacerdotio fungaris mihi: & oblita es legis Dei tui, obliviscar filiorum tuorum & ego. 7 Secundùm multitudinem eorum, sic peccaverunt mihi: gloriam eorum in ignominiam commutabo. 8 Peccata populi mei comedent, & ad iniquitatem eorum sublevabunt animas eorum. 9 Et erit sicut populus, sic sacerdos: & visitabo super eum vias ejus, & cogitationes ejus reddam ei. 10 Et comedent, & non saturabuntur: fornicati sunt, & non cessaverunt: quoniam Dominum dereliquerunt in non custodiendo. 11 Fornicatio, & vinum, & ebrietas auferunt cor. 12 Populus meus in ligno suo interrogavit, & baculus ejus annuntiavit ei: spiritus enim fornicationum decepit eos, & fornicati sunt à Deo suo. 13 Super capita montium sacrificabant, & super colles accendebant thymiama; subtus quercum, & populum, & therebinthum, quia bona erat umbra ejus: ideò fornicabuntur filiæ vestræ, & sponsæ vestræ adulteræ erunt. 14 Non visitabo super filias vestras cùm fuerint fornicatæ, & super sponsas vestras cùm adulteraverint: quoniam ipsi cum meretricibus conversabantur, & cum effœminatis sacrificabant, & populus non intelligens vapulabit. 15 Si fornicaris tu, Israel, non delinquat saltem Juda: & nolite ingredi in Galgala, & ne ascenderitis in Bethaven, neque juraveritis; Vivit Dominus. 16 Quoniam sicut vacca lasciviens declinavit Israel: nunc pascet eos Dominus, quasi agnum in latitudine. 17 Particeps idolorum Ephraim, dimitte eum. 18 Separatum est convivium eorum, fornicatione fornicati sunt: dilexerunt afferre ignominiam protectores ejus. 19 Ligavit eum spiritus in alis suis, & confundentur à sacrificiis suis.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

3 Διὰ τοῦτο πενθήσει ἡ γῆ, καὶ σμικρυνθήσεται σὺν πᾶσι τοῖς κατοικοῦσιν αὐτὴν, σὺν τοῖς θηρίοις τοῦ ἀγροῦ, καὶ σὺν τοῖς ἑρπετοῖς τῆς γῆς, καὶ σὺν τοῖς πετεινοῖς τοῦ οὐρανοῦ, καὶ οἱ ἰχθύες τῆς θαλάσσης ἐκλείψουσιν. 4 Ὅπως (β) μηδεὶς μήτε δικάζηται, μήτε ἐλέγχῃ μηδείς· ὁ δὲ λαός μου ὡς ἀντιλεγόμενος ἱερεύς. 5 Καὶ ἀσθενήσει ἡμέρας, καὶ ἀσθενήσει (γ) ὁ προφήτης μετὰ σοῦ. νυκτὶ ὡμοίωσα τὴν μητέρα σου. 6 (δ) Ὡμοιώθη ὁ λαός μου, ὡς οὐκ ἔχων γνῶσιν. ὅτι σὺ ἐπίγνωσιν ἀπώσω, (ε) κἀγὼ ἀπώσομαί σε, τοῦ μὴ ἱερατεύειν μοι· καὶ ἐπελάθου (ζ) νόμον θεοῦ σου, κἀγὼ ἐπιλήσομαι τέκνων σου. 7 Κατὰ τὸ πλῆθος αὐτῶν, οὕτως ἥμαρτόν μοι· 8 τὴν δόξαν αὐτῶν εἰς ἀτιμίαν (η) θήσομαι. Ἁμαρτίας λαοῦ μου φάγονται· καὶ ἐν ταῖς ἀδικίαις 9 αὐτῶν λήψονται τὰς ψυχὰς αὐτῶν. Καὶ ἔσται καθὼς ὁ λαὸς, οὕτως καὶ ὁ ἱερεύς· καὶ ἐκδικήσω ἐπ' αὐτὸν τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, καὶ τὰ διαβούλια 10 αὐτοῦ ἀνταποδώσω αὐτῷ. Καὶ φάγονται, καὶ οὐ μὴ ἐμπλησθῶσιν· ἐπόρνευσαν, καὶ οὐ μὴ (θ) κατευθύνωσι· διότι τὸν κύριον ἐγκατέλιπον τοῦ 11 φυλάξαι. Πορνείαν καὶ οἶνον καὶ μέθυσμα ἐ- 12 δέξατο καρδία Λαοῦ μου. ἐν συμβόλοις ἐπηρώτων, καὶ ἐν ῥάβδοις αὐτοῦ ἀπήγγελλον αὐτῷ. πνεύματι πορνείας ἐπλανήθησαν, καὶ ἐξε- 13 πόρνευσαν ἀπὸ τοῦ θεοῦ αὐτῶν. Ἐπὶ τὰς κορυφὰς τῶν ὀρέων ἐθυσίαζον, καὶ ἐπὶ τοὺς βουνοὺς ἔθυον ὑποκάτω δρυὸς, καὶ λεύκης, καὶ δένδρου συσκιάζοντος, ὅτι καλὸν σκέπη· διὰ τοῦτο ἐκπορνεύσουσιν αἱ θυγατέρες ὑμῶν, καὶ αἱ νύμ- 14 φαι ὑμῶν μοιχεύσουσι. Καὶ οὐ μὴ ἐπισκέψωμαι ἐπὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν ὅταν (ι) πορνεύσωσι, καὶ ἐπὶ τὰς νύμφας ὑμῶν ὅταν (κ) μοιχεύσωσι· ὅτι αὐτοὶ μετὰ τῶν πορνῶν συνεφύροντο, καὶ μετὰ τῶν τετελεσμένων ἔθυον, καὶ ὁ λαὸς ὁ συνιὼν συνεπλέκετο μετὰ πόρ- 15 νης. Σὺ δὲ Ἰσραὴλ μὴ ἀγνόει, καὶ Ἰούδα μὴ εἰσπορεύεσθε εἰς Γάλγαλα, καὶ μὴ ἀναβαίνετε εἰς τὸν (λ) οἶκον Ὤν, καὶ μὴ ὀμνύετε ζῶντα κύ- 16 ριον. (μ) Διότι ὡς δάμαλις παροιστρῶσα παροίστρησεν Ἰσραήλ· νῦν νεμήσει αὐτοὺς 17 κύριος ὡς ἀμνὸν ἐν εὐρυχώρῳ. Μέτοχος εἰδώλων Ἐφραὶμ ἔθηκεν ἑαυτῷ σκάνδαλα, 18 ᾙρέτισε Χαναναίους. πορνεύοντες ἐξεπόρνευσαν, ἠγάπησαν ἀτιμίαν ἐκ φρυάγματος 19 (ν) αὐτῶν. Συστροφὴ πνεύματος σὺ εἶ ἐν ταῖς πτέρυξιν (ξ) αὐτῆς, καὶ καταισχυνθήσονται ἐκ τῶν θυσιαστηρίων αὐτῶν.

3 Ideò lugebit terra, & minuetur cum omnibus, qui habitant eam, cum bestiis agri & cum serpentibus terræ, & cum volatilibus cœli: & pisces maris deficient, 4 ut nullus neque judicetur, neque arguatur quisquam. Populus autem meus, quasi sacerdos, cui contradicitur: 5 Et infirmabitur per diem: & infirmabitur propheta (b) tecum. Nocti assimilavi matrem tuam. 6 Assimilatus est populus meus, quasi non habens scientiam. Quia tu scientiam repulisti; & ego repellam te, ne sacerdotio fungaris mihi: & oblita es legis Dei tui: & ego obliviscar filiorum tuorum. 7 Secundùm multitudinem eorum sic peccaverunt mihi. Gloriam eorum in ignominiam ponam. 8 Peccata populi mei comedent: & in iniquitatibus eorum (c) accipient animas eorum. 9 Et erit sicut populus, sic et sacerdos. Et ulciscar super eum vias ejus, et cogitationes illius reddam ei. 10 Et comedent, et non implebuntur: fornicati sunt, et non dirigentur: quia Dominum reliquerunt (d) ad custodiendum. 11 Fornicationem, et vinum, et ebrietatem suscepit cor Populi mei. 12 In (e) auguriis interrogabant: et in virgis (f) ejus annuntiabant ei. Spiritu fornicationis seducti sunt: et fornicati sunt à Deo suo. 13 Super vertices montium sacrificabant, et super colles immolabant, subter quercum, et populum, et nemorosam arborem: quia bonum erat umbraculum. Propterea fornicabuntur filiæ vestræ, et sponsæ vestræ mœchabuntur. 14 Et non visitabo super filias vestras, cũ fuerint fornicatæ, et super sponsas vestras, cũ adulteraverint. Quoniam ipsi cum meretricibus miscebantur, et cum (g) initiatis immolabant: et popul⁹ [non] intelligens adhærebat meretrici. 15 Tu autem, Israel, ne ignores, et Juda: nolite ingredi in Galgala, et ne ascendatis in domum (h) On, et ne juretis (i) viventem Dominum: 16 Quoniam sicut vacca asilo percussa insanivit Israel. Nunc pascet eos Dominus, sicut agnum in spatioso. 17 Particeps idolorũ Ephraem posuit sibi scandala: 18 (k) Provocavit Chananæos. Fornicantes fornicati sunt: dilexerunt ignominiam ex fremitu ejus. 19 Turbo spiritus (l) tu es in alis ejus, et confundentur ex altaribus suis.

MS. A. (β) μηθεὶς (γ) καὶ προφήτης (δ) Νυκτὶ ὡμοιώθη (ε) καὶ ἐγὼ (ζ) νόμου (η) θήσω. (θ) κατευθυνοῦσι· (ι) πορνεύωσιν, (κ) μοιχεύωσιν· διότι καὶ αὐτοὶ (λ) οἶκον τῆς ἀδικίας, καὶ (μ) Ὅτι ὡς δάμαλις (ν) αὐτῶν. (ξ) αὐτῶν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 על כן תחרוב ארעא ויצדי כל דיתיב בה בחית ברא ובעופא דשמיא ואף נוני ימא יזערון
4 מן קדם חוביהון: ברם על דאמרין ספר לא יליף ולא יוכח נביא ועמך נצן עם מלפיהון:
5 ותתקלון ביממא ויתקלון אף נביייא דשקרא די עמכון כד בליליא ואבהית כנשתכון:
6 אטפשו עמי מבלי דעתא ארי את מדע דחלתי קצתא וארחקנך מלשמשא קדמי ועל
7 דאתנשיתא אוריתא דאלהך ארחיק בנך אף אנא: כמא דאסגיתי להון עללתא כן
8 אסגיאו למחטי קדמי יקרהון בקלנא חליפו: כהניא פסו למיכל חטות עמי בדיל
9 לאוספא חובין על חובי נפשהון: ויהי כמא דאשוי חילונאה ככהנא לאפסא קודשיהון
אפיס ית יקרהון ואשוי דיקיר לבסיר בדיל לאתפרע מנהון כארחתהון בישתא
10 וכעובדיהון מקלקליא אתיב להון: ויכלון ולא יסבעון יסבון נשין ולא יולדון בנין ארי
11 12 ית פולחנא דיי שבקו ולא נטרו: זנותא וחמרא ורויתא שלף ומטעי ית לבהון: עמי די
בצלם אעיה שאיל ומדמי דחוטריה מחוי ליה ארי רוח דטעו אטעיתנון וטעו מבתר
13 פולחנא דאלההון: על רישי טוריא מדבחין ועל רמתא מסקין בוסמין תחות בלוט
ולבן ובוטמא ארי מעפי טוליה על כן מזנין בנתכון דהואה לכון מבנת עממיא
14 וכלתכון דנסבתון לבניכון מן עממיא ניפן: לא אסער על בנתכון ארי מזנין ועל כלתכון
ארי מניפן ארי אנון עם זניתא מסתיען ועם נפקת ברא אכלין ושתן ועם דרא דלא
15 אסתכל באוריתא הלא אתרטש: אם טען אתון דבית ישראל לא יתחיבון דבית יהודה
16 לא תיתון לגלגלא ולא תסקון לביתאל ולא תשתבעון לשקר קים הוא יי: ארי כתורא
דאתפטם ובעט כן מרד בסני טובא ישראל כען ידברנון יי כאמר בחיר בבקעה:
17 18 אתחברו לטעותא בית ישראל שבקו להון ית פולחנא: שלטוניהון אסגיאו שירון
19 מן אונס בכן טעו ואתפניאו בתר זנותא רחמו דתיתי להון קלנא רברביהון: עובדי
רברביהון לא תקנין כמא דלית אפשר למצר רוח בכנף כען איתי עליהון סנאה
ויבהתון מאגורי טעותהון:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

3 Hanc ob causã vastabitur terra & exterminio delebitur omnis qui habitat in ea à bestia agri & volucre cœli: quin & pisces maris diminutioné patientur ob illorũ peccata. 4 Verũ eò quòd dicant, Scriba non doceat, nec reprehendat propheta; popul⁹ verò tu⁹ litigat cum doctorib⁹ suis. 5 Et corruetis hodie, corruent quoque pariter pseudoprophetæ qui vobiscum versantur, tanquã in nocte, & confusione induã congregationẽ vestrã. 6 Insipiens fact⁹ est popul⁹ me⁹ absque scientia, quia tu scire timorẽ mei detestatus es, & abjiciã te ne ministres corã me: propterea etiã ꝙ oblit⁹ est legis Dei tui, expellã filios tuos etiã ego. 7 Sicut multiplicavi eis fruges, sic multũ peccare addiderunt corã me, gloriam suã cum ignominia commutaverunt. 8 Sacerdotes se polluerunt comedendo oblationẽ pro peccato populi mei, ut adderent peccata peccatis animarũ eorũ. 9 Erit itaque cùm collocavero laicũ *sicut* sacerdotẽ ad contaminandas solennitates *eorum*, prophanabo gloriã eorũ, atque ponã gloriosũ in contemptibilẽ, ut ultionẽ sumã ab eis juxta vias eorũ malas, & secundũ opera eorũ corrupta reddam eis. 10 Et comedent, & non saturabuntur; accipient uxores, sed non generabunt filios: quia cultũ Dñi reliquerunt & non custodierunt. 11 Fornicatio, vinũ & ebrietas educit, & in errorẽ compellit corda eorũ. 12 Popul⁹ me⁹ simulachrũ ligni sui consulit, & putat baculũ suũ posse sibi responsũ dare, quia spirit⁹ erroris ad errorẽ adegit eos, & aberrarunt *a cultu* Dei sui. 13 Sup culmina montiũ sacrificant, & super colles adolent thymiamata sub ulmo, platano & quercu, eò quòd densa sit umbra ej⁹. Ideò fornicantur filiæ vestræ quas suscepistis de filiabus populorũ: & nur⁹ vestræ quas accepistis filiis vestris ex populis, adulteria committunt. 14 Non animadvertam in filias vestras cùm fornicatæ fuerint, & in nurus vestras cùm adulterium perpetraverint: ipsi enim cum meretricibus societate se jungunt, atque cum scorto comessantur, & potant; populus autem generationis qui non intellexit legem, nónne collidetur. 15 Si erratis vos ô [*viri*] dom⁹ Israel, saltẽ nõ scelere convincantur viri dom⁹ Jehuda, neq; veniatis in Galgalam, neque ascendatis in Bethel, nec juretis in vanũ, vivit namq; Dñs. 16 Quoniã sicut bos qui saginatur & recalcitrat, sic rebellavit propter multitudinẽ bonorũ Israel. Nunc deducet eos Dñs, quasi agnũ electũ in planitie. 17 Participes idolorũ facti sunt viri dom⁹ Israel, dereliquerunt suã religionem. 18 Principes eorũ multiplicaverunt convivia ex rapina. Idolo erraverunt & se converterunt post fornicationẽ quam dilexerunt, ut exiniret sibi in ignominiam, proceres eorum. 19 Opera magnatum illorum haud recta sunt, quemadmodum constrictus non potest teneri ventus in ala: nunc adducam contra eos inimicum; & confusione obtegentur ob aras idolorum suorum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܬܬܒ ܐܪܥܐ ܒܐܒܠܐ. ܘܢܐܒܠܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗ. ܘܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܘܦܪܚܬܐ
4 ܕܫܡܝܐ. ܘܐܦ ܢܘ̈ܢܐ ܕܝܡܐ ܢܣܬܝܦܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܢܫ ܠܐ ܕܐܢ. ܘܠܐ ܡܟܣ. ܘܥܡܟ. ܐܝܟ
5 ܟܗܢܐ ܡܬܚܪܐ. * ܘܬܬܩܠ ܒܐܝܡܡܐ. ܘܬܬܩܠ ܐܦ ܢܒܝܐ ܕܥܡܟ. ܒܠܠܝܐ.
6 ܘܫܬܩܬ ܐܡܟ. * ܫܬܩ ܥܡܝ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܠܗ ܝܕܥܬܐ. ܐܝܟ ܕܐܢܬ ܐܣܠܝܬ
ܝܕܥܬܐ. ܘܐܣܠܝܟ ܡܢ ܟܗܢܘܬܐ. ܘܛܥܝܬ ܢܡܘܣܗ ܕܐܠܗܟ. ܐܦ ܐܢܐ. ܐܛܥܐ
7 8 ܠܒܢܝܟ. * ܐܝܟ ܣܘܓܐܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܚܛܘ ܠܝ. ܐܝܩܪܗܘܢ. ܒܨܥܪܐ ܐܫܚܠܦ. * ܚܛܗܐ
9 ܕܥܡܝ. ܐܟܠܘ. ܘܠܥܘܠܗܘܢ. ܐܪܝܡܘ ܢܦܫܗܘܢ. * ܘܗܘܐ ܟܗܢܐ. ܐܝܟ ܥܡܐ.
10 ܘܐܣܥܘܪ ܥܠܝܗܘܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ. ܘܥܒܕܝܗܘܢ. ܐܦܪܘܥ ܐܢܘܢ. * ܢܐܟܠܘܢ. ܘܠܐ ܢܣܒܥܘܢ.
11 ܙܢܘ. ܘܠܐ ܣܓܝܘ. ܡܛܠ ܕܫܒܩܘܗܝ ܠܡܪܝܐ. * ܘܐܚܒܘ ܙܢܝܘܬܐ. ܚܡܪܐ. ܘܪܘܝܘܬܐ
12 ܢܣܒܬ ܠܒܗܘܢ. * ܥܡܝ. ܒܨܒܝܢܗ ܫܐܠ. ܘܚܘܛܪܗ. ܚܘܝ ܠܗ. ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ
13 ܕܙܢܝܘܬܐ ܐܛܥܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܣܛܘ ܡܢ ܐܠܗܗܘܢ. * ܥܠ ܪ̈ܫܝ ܛܘܪ̈ܐ ܕܒܚܘ. ܘܥܠ ܪ̈ܡܬܐ
ܣܡܘ ܒܣ̈ܡܐ. ܬܚܝܬ ܒܠܘܛܐ. ܘܚܘܪܐ. ܘܒܛܡܬܐ ܕܛܒ ܛܠܠܗ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܬܙܢܝܢ
14 ܒܢ̈ܬܟܘܢ. ܘܟܠ̈ܬܟܘܢ ܬܓܘܪܢ. * ܠܐ ܐܣܥܘܪ ܥܠ ܒܢ̈ܬܟܘܢ ܡܐ ܕܙܢܝ̈ܢ. ܘܠܐ ܥܠ ܟܠ̈ܬܟܘܢ
ܡܐ ܕܓܘܪ̈ܢ. ܡܛܠ ܕܗܢܝܢ. ܥܡ ܙܢܝܬܐ ܡܬܚܠܛܢ. ܘܗܢܘܢ. ܥܡ ܢܫ̈ܐ ܡܦܩܢ̈ܝܬܐ
15 ܡܕܒܚܝܢ. ܘܥܡܐ ܕܠܐ ܡܣܬܟܠ. ܥܦܩ ܙܢܝܬܐ. * ܐܢܬ ܕܝܢ ܐܝܣܪܝܠ. ܠܐ ܬܚܝܒ
ܠܝܗܘܕܐ. ܘܠܐ ܬܐܙܠܘܢ ܠܓܠܓܠ. ܘܠܐ ܬܣܩܘܢ ܠܒܝܬ ܐܘܢ. ܘܠܐ ܬܐܡܪܘܢ ܚܝ ܗܘ ܡܪܝܐ.
16 * ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܬܘܪܬܐ ܕܡܪܕܐ ܡܢ ܢܝܪܐ. ܗܟܢܐ ܡܪܕ. ܒܢ̈ܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܗܫܐ ܢܪܥܐ
17 ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܐܡܪܐ ܒܡܪܥܝܬܐ ܪܘܝܚܬܐ. * ܫܘܬܦܐ ܕܦܬܟܪ̈ܐ ܐܦܪܝܡ. ܫܒܘܩ
18 19 ܠܗ. * ܟܠܗܘܢ ܙܢܘ. ܘܐܚܒܘ ܨܥܪܐ ܘܦܬܟܪ̈ܐ. * ܬܨܪܘܪ ܪܘܚܐ ܒܟܢܦܝܗܘܢ. ܘܢܒܗܬܘܢ
ܡܢ ܡܕܒܚܝܗܘܢ.

Propterea ſedebit in luctu terra, & gement 3
omnes habitatores ejus, tum beſtiæ deſerti,
tum volucres cœli; quin etiam piſces maris
conſumentur. Quia nemo judicat neque cor- 4
ripit, & populus tuus æque ac ſacerdos con-
tendit: Ideo offendis interdiu, & offendit 5
etiam propheta qui tecum eſt, noctu: & con-
ticuit mater tua: Conticuit populus meus, 6
quòd non ſit in eo ſcientia. Cùm enim tu ſci-
entiam rejeceris, rejiciam te à ſacerdotio: &
cùm oblitus ſis legis Dei tui, obliviſcar ego
quoque filiorum tuorum. Quotquot ſunt, to- 7
tidem peccaverunt, & gloriam ſuam in dede-
cus mutaverunt. Peccatum populi mei come- 8
derunt, & ſceleri eorum dejecerunt animas
ſuas: Et effectus eſt Sacerdos, qualis eſt po- 9
pulus. Ideo viſitabo ſuper eos vias eorum, &
opera eorum rependam eis. Comedent, & 10
non ſaturabuntur: ſcortabuntur, & non mul-
tiplicabuntur; quia Dominum dereliquerunt,
Et amaverunt ſcortationem; & vinum atque 11
ebrietas intercepit mentem eorum: Populus 12
meus proprium judicium conſuluit, & pro-
prius baculus indicavit illi. Quia ſpiritus
fornicationis ſeduxit eos, & averterunt ſe à
Deo ſuo, Supra vertices montium ſacrifica- 13
verunt, & ſuper colles adoleverunt thura,
ſub quercu, populo, & terebintho cujus pul-
chra erat umbra: Idcirco ſcortabuntur filiæ
veſtræ, & nurus veſtræ mœchabuntur. Non 14
animadvertam in filias veſtras cùm ſcortatæ
fuerint, neque nurus veſtras cùm mœchatæ
fuerint: nam iſtæ cum fornicatoribus com-
miſcent ſeſe, & illi cum fœminis curſantibus
per plateas ſacrificant; & populus rationis
expers amplexatus eſt ſcortum. Tu verò Iſ- 15
rael, ne reum facias Judam, ne abeatis ad
Galgalem, néve aſcendatis ad Bethaven, né-
ve dicatis, Per Deum vivum. Nam inſtar ju- 16
vencæ rebellantis contra jugum, ita rebella-
verunt Iſraelitæ: ac proinde paſcet eos Do-
minus velut agnos in amplo campo. Parti- 17
ceps idolorum eſt Aphrem; ſine illum. Omnes 18
fornicati ſunt, & amaverunt ignominiam &
idola. Stridebit ventus in alis eorum, & pu- 19
defient propter altaria ſua.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 * لاجل هذا تحزن الارض * وتقل مع جميع سكانها * مع وحوش الحقل * مع دبابات الارض
4 ومع طيور السماء وحيتان البحر تفني * كيف ولا واحد ليس يقضي * ولا واحد لا يوبخ
5 وشعبي مثل كاهن مماري * ويضعف نهارا * ويضعف النبي معك * امك شبهتها بليل *
6 * وشعبي يشبه كمن ليس له معرفه * لانك انت اقصيت العلم * وانا اقصيك من ان
7 تكهن الي * ونسيت ناموس الهك * وانا انسي اولادك * ككثرتهم هكذا اخطوا الي *
8 اصنع مجدهم للهوان * ياكلون خطايا شعبي * وبظلاماتهم ياخذون نفوسهم * وكما يصير 9
10 شعبي * هكذا والكاهن * واقضي عليه بطرقه * واكافيه بافكاره * وياكلون ولا يمتلون
11 زنوا ولم يستقيموا * من اجل انهم تركوا الرب * ليحفظوا الزنا والسكر * وقبل قلب شعبي
12 الخمر * في المشورات سالوه * وبعصيه اخبروه * ظلوا بروح الزنا * وارتدوا عن الههم * على 13
روس الجبال ذبحوا * وعلى الاكام ذبحوا * تحت البلوطة والحور * والشجرة الظليلة *
لانها تستر جيدا * لاجل هذا تزني بناتكم * وكناتكم يفسقن * ولا اتعهد على 14
بناتكم اذا زنين * وعلى كناتكم اذا فسقن * من اجل ان هاولاء مع الزناة اختلطوا
ومع الزواني ذبحوا * والشعب الفهم تلبك مع الزانية * وانت يا اسرائيل لا تجهل * ويا يهودا
15 لا تدخل الي الجلجال * ولا تصعدوا الي بيت الظلم * ولا تحلفوا بالرب الحي * لان 16
مثل عجلة شاردة شرد اسرائيل * الان الرب يرعاهم مثل حمل في الموضع الواسع * افرايم 17
شريك الاوثان * وضع له شكوكا * ارضوا الكنعانيين * زناء زنوا احبوا الهوان * من زجر 18 19
انقلاب الريح انت في اجنحتها * ويخزون من مذابحهم *

Idcircò mœrebit terra, & minuetur cum 3
omnibus habitatoribus ſuis, cum beſtiis
agri, cum reptilibus terræ; et cum vola-
tilibus cœli & piſcibus maris interibit.
Quomodo nemo judicat, nec quiſquam 4
arguit? & populus meus ut ſacerdos
rixatur, Et infirmatur interdiu, & infir- 5
matur propheta tecum? Matrem tuam
cum nocte comparavi: Et populus meus 6
ſimilis eſt ei qui nullam habet cognitio-
nem. Quia tu procul amoviſti ſcientiam,
ego quoque procul amovebo te à ſacerdo-
tali munere fungendo erga me: oblitus es
legis Dei tui, ego etiam obliviſcar fi-
liorum tuorum. Secundùm multitudi- 7
nem ſuam, ita peccaverunt in me. Ex-
ponam gloriam eorum ignominiæ. Come- 8
dunt peccata populi mei, et iniquitatibus
ſuis tollunt animas eorum. Et qualis 9
efficitur populus meus, talis etiam ſacer-
dos. At judicabo eum juxta vias ſuas,
et retribuam ei juxta cogitationes ſuas.
Comedent, et non explebuntur: fornicati 10
ſunt, at non proſperati; quia deſerue-
runt Dominum, ut ſervarent fornicatio- 11
nem et ebrietatem: et cor populi mei vi-
num excepit. In conſultationib⁹ interroga- 12
verunt eum, et in baculis ejus indicave-
runt ei: erraverunt ſpiritu fornicatio-
nis, et averterunt ſe à Deo ſuo. Super 13
cacumina montium ſacrificaverunt, et
ſuper colles immolaverunt, ſubter quer-
cum, et populum, et arborem umbriferam,
quia commodè tegebant. Propterea for-
nicantur filiæ veſtræ, et nurus veſtræ
adulterantur. Neque viſito filias ve- 14
ſtras cùm fornicatæ fuerint, neque nu-
rus veſtras cùm adulteratæ fuerint:
quoniam iſti cum fornicatoribus miſcue-
runt ſeſe, et cum fornicatoribus ſacri-
ficaverunt, et populus prudens implica-
vit ſe ſum meretrice. Jam tu O Iſrael 15
ne deſipias; et O Juda, ne ingrediaris in
Galgalem; et ne aſcendatis ad domum
impietatis, néve juretis per Dominum vi-
ventem. Nam ut vitula refractaria, re- 16
fragatus eſt Iſrael. Nunc Dominus paſcet
eos velut agnum in loco ſpatioſo.
Aphrem conſors idolorum poſuit ſibi ſcan- 17
dala: Satisfecerunt Chananæis: forni- 18
cando fornicati ſunt: amaverunt infa-
miam. A fremitu [illegible] 19
[illegible] alas ejus, et erubeſcent ob altaria ſua.

CAP. V. ה

regis domus & , Iſrael domus attendite & ,ſacerdotes hoc Audite
1 שמעו־זאת הכהנים והקשיבו בית ישראל ובית המלך
,Miſpah *in* fuiſtis laqueus quoniā : judicium vobis quia ,auſcultate
האזינו כי לכם המשפט כי־פח הייתם למצפה
declinantes jugulandum ad Et .Tabor ſuper expanſum rete &
2 ורשת פרושה על־תבור : ושחטה שטים
, Ephraim novi Ego .ipſis omnibus *eruditio* ego & ; *profundaverunt*
3 העמיקו ואני מוסר לכלם : אני ידעתי אפרים
,Ephraim es fornicatus nunc quia : me à eſt abſconditus non Iſrael &
וישראל לא־נכחד ממני כי עתה הזנית אפרים
ad *revertendum ad ſua ſtudia dabunt* Non .Iſrael ſe polluit
4 נטמא ישראל : לא יתנו מעלליהם לשוב אל־
Dominum & ,eorum *interiori in fornicationum* ſpiritus quia :ſuum Deum
אלהיהם כי רוח זנונים בקרבם ואת־יהוה
, Iſrael & : ejus *faciebus* in Iſrael ſuperbia *reſpondebit* Et .cognoverūt non
5 לא ידעו : וענה גאון־ישראל בפניו וישראל
.eis cum Jehudah etiam *corruit* ; *ſua iniquitate in* ruent Ephraim &
ואפרים יכשלו בעונם כשל גם־יהודה עמם :
non & , Dominum quærendum ad ibunt *ſuo bove in &* , *ſuo pecore In*
6 בצאנם ובבקרם ילכו לבקש את־יהוה ולא
filios quia ,ſunt prævaricati Dominum In .eis ab ſe *ſubtraxit* ; invenient
7 ימצאו חלץ מהם : ביהוה בגדו כי־בנים
.eorum partibus cum menſis eos *comedet* nunc : genuerunt alienos
זרים ילדו עתה יאכלם חדש את־חלקיהם :
taratantarizate : Ramah in tuba ,Ghibhah in buccina Clangite
8 תקעו שופר בגבעה חצצרה ברמה הריעו
die in erit deſolationem in Ephraim .Benjamin te poſt , Beth-aven
9 בית און אחריך בנימין : אפרים לשמה תהיה ביום
principes Fuerunt .*verum feci notum* Iſrael tribubus in : correctionis
10 תוכחה בשבטי ישראל הודעתי נאמנה : היו שרי
aquam tanquam effundam eos ſuper : terminum *transferentes ut* Jehudah
יהודה כמסיגי גבול עליהם אשפוך כמים
quoniam ; judicio fractus ,Ephraim Oppreſſus .meam *indignationem*
11 עברתי : עשוק אפרים רצוץ משפט כי
; Ephraim tinea ſicut *ego* Et .*jube* poſt *ivit* ,*voluit*
12 הואיל הלך אחרי־צו : ואני כעש לאפרים
,ſuū languorem Ephraim vidit Et .Jehudah domui putredo tanquā &
13 וכרקב לבית יהודה : וירא אפרים את־חליו
ad miſit & , Aſſur ad Ephraim abiit & ,ſuam plagam Jehudah &
ויהודה את־מזרו וילך אפרים אל־אשור וישלח אל־
vobis à *curabit* non & ,vos ſanare poterit non ipſe & : Jareb regem
מלך ירב והוא לא יוכל לרפא לכם ולא־יגהה מכם
leunculus veluti & , Ephraim *panthera* ut *ego* Quia .plagam *purulentam*
14 מזור : כי אנכי כשחל לאפרים וככפיר
eruens non & ,tollam ,vadam & ,rapiam ego ego ; Jehudah domui
לבית יהודה אני אני אטרף ואלך אשא ואין מציל :
quærant & ,*delinquant* donec ,meum locum ad revertar ,Vadam
15 אלך אשובה אל־מקומי עד אשר־יאשמו ובקשו
.me quærent *manè ipſis* tribulatione in : *meas facies*
פני בצר להם ישחרנני :

CAP. VI. ו

; nos ſanabit & ,rapuit ipſe quia ,Dominum ad revertamur & ,Venite
1 לכו ונשובה אל־יהוה כי הוא טרף וירפאנו
die in ; *diebus duobus à* nos Vivificabit .nos *faſcia* alligabit & ,percuſſit
2 יך ויחבשנו : יחינו מימים ביום
.ejus *facies ad* vivemus & ,nos ſuſcitabit tertia
השלישי יקמנו ונחיה לפניו :

Verſio VULG. LAT.

CAP. V.

1 Audite hoc, ſacerdotes; & attendite, domus Iſrael; & domus regis, auſcultate: quia vobis judicium eſt: quoniam laqueus facti eſtis Speculationi, & rete expanſum ſuper Thabor. 2 Et victimas declinâſtis in profundum: & ego 3 eruditor omnium eorum. Ego ſcio Ephraim, & Iſrael non eſt abſconditus à me: quia nunc fornicatus eſt Ephraim, contaminatus eſt 4 Iſrael. Non dabunt cogitationes ſuas ut revertantur ad Deum ſuum: quia ſpiritus fornicationum in medio eorū, & Dñm non 5 cognoverunt. Et reſpondebit arrogantia Iſrael in facie ejus: & Iſrael & Ephraim ruent in iniquitate ſua, ruet etiā Judas cum eis. 6 In gregibus ſuis, & in armentis ſuis vadent ad quærendum Dñm, & non invenient: ablatus eſt ab 7 eis. In Dñm prævaricati ſunt, quia filios alienos genuerunt: nunc devorabit eos menſis cum partibus 8 ſuis. Clangite buccinâ in Gabaa, tubâ in Rama: ululate in Bethaven, poſt tergum tuum, 9 Benjamin. Ephraim in deſolatione erit in die correptionis: In tribubus 10 Iſrael oſtendi fidem. Facti ſunt principes Juda quaſi aſſumentes terminum: ſuper eos effundam, 11 quaſi aquam, iram meam. Calumniam patiens eſt Ephraim, fractus judicio: quoniam cœpit abire 12 poſt ſordes. Et ego quaſi tinea Ephraim: & quaſi putredo domui 13 Juda. Et vidit Ephraim languorem ſuum, & Juda vinculum ſuum: & abiit Ephraim ad Aſſur, & miſit ad regem Ultorem: & ipſe non poterit ſanare vos, nec ſolvere 14 poterit à vobis vinculum. Quoniā ego quaſi leæna Ephraim, & quaſi catulus leonis domui Juda: ego, 15 ego capiam & vadam: tollam, & non eſt qui eruat. Vadens revertar ad locum meum: donec deficiatis, & quæratis faciem meam.

CAP. VI.

1 In tribulatione ſua manè conſurgent ad me: Venite, & 2 revertamur ad Dominum: Quia ipſe cœpit, & ſanabit nos: percutiet, 3 & curabit nos. Vivificabit nos poſt duos dies: in die tertia ſuſcitabit nos, & vivemus in conſpectu ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. ε΄.

1 Ἀκούσατε ταῦτα οἱ ἱερεῖς, καὶ προσέχετε οἶκος Ἰσραὴλ, καὶ (α) ὁ οἶκος τοῦ βασιλέως ἐνωτίζεσθε, διότι πρὸς ὑμᾶς ἐστι τὸ κρίμα, ὅτι παγὶς ἐγενήθητε τῇ Σκοπιᾷ, καὶ ὡς δί- 2 κτυον ἐκτεταμένον ἐπὶ τὸ Ἰταβύριον, Ὃ οἱ ἀγρεύοντες τὴν θήραν κατέπηξαν. ἐγὼ δὲ παι- 3 δευτὴς ὑμῶν, Ἐγὼ ἔγνων τὸν Ἐφραὶμ, καὶ Ἰσραὴλ οὐκ (β) ἄπεστιν ἀπ' ἐμοῦ· διότι νῦν ἐξεπόρνευσεν Ἐφραὶμ, ἐμιάνθη Ἰσραήλ. 4 Οὐκ ἔδωκαν τὰ διαβούλια αὐτῶν τοῦ ἐπιστρέψαι πρὸς τὸν θεὸν αὐτῶν, ὅτι πνεῦμα πορνείας ἐν 5 αὐτοῖς ἐστι· τὸν δὲ κύριον οὐκ ἐπέγνωσαν. Καὶ ταπεινωθήσεται ἡ ὕβρις τοῦ Ἰσραὴλ εἰς πρόσωπον αὐτοῦ· καὶ Ἰσραὴλ καὶ Ἐφραὶμ ἀσθενήσουσιν ἐν ταῖς ἀδικίαις αὐτῶν· καὶ ἀσθενήσει (γ) καὶ 6 Ἰούδας μετ' αὐτῶν. Μετὰ προβάτων καὶ μόσχων πορεύσονται τοῦ ἐκζητῆσαι τὸν κύριον, καὶ οὐ μὴ εὕρωσιν αὐτόν· ὅτι (δ) ἐκκέκλικεν ἀπ' αὐ- 7 τῶν, Ὅτι τὸν κύριον ἐγκατέλιπον, (ε) ὅτι τέκνα ἀλλότρια ἐγεννήθησαν αὐτοῖς· νῦν καταφάγεται αὐτοὺς ἡ (ζ) ἐρυσίβη, καὶ τοὺς κλήρους αὐ- 8 τῶν. Σαλπίσατε σάλπιγγι ἐπὶ τοὺς βουνοὺς, ἠχήσατε ἐπὶ τῶν ὑψηλῶν, κηρύξατε ἐν τῷ οἴκῳ 9 Ὢν, ἐξέστη Βενιαμὶν, Ἐφραὶμ εἰς ἀφανισμὸν ἐγένετο ἐν ἡμέραις ἐλέγχου. ἐν ταῖς φυ- 10 λαῖς τοῦ Ἰσραὴλ ἔδειξα πιστά. Ἐγένοντο οἱ ἄρχοντες Ἰούδα ὡς μετατιθέντες ὅρια, ἐπ' 11 αὐτοὺς ἐκχεῶ ὡς ὕδωρ τὸ ὅρμημά μου. Κατεδυνάστευσεν Ἐφραὶμ τὸν ἀντίδικον αὐτοῦ, κατεπάτησε (η) τὸ κρίμα, ὅτι ἤρξατο πορεύεσθαι 12 ὀπίσω τῶν ματαίων. Καὶ ἐγὼ ὡς ταραχὴ τῷ 13 Ἐφραὶμ, καὶ ὡς κέντρον τῷ οἴκῳ Ἰούδα. Καὶ εἶδεν Ἐφραὶμ τὴν νόσον αὐτοῦ, καὶ Ἰούδας τὴν ὀδύνην αὐτοῦ. καὶ ἐπορεύθη Ἐφραὶμ πρὸς Ἀσσυρίους, καὶ ἀπέστειλε πρέσβεις πρὸς βασιλέα Ἰαρείμ· καὶ (θ) αὐτὸς οὐκ ἠδυνάσθη ἰάσασθαι ὑμᾶς, 14 καὶ οὐ μὴ διαπαύσῃ ἐξ ὑμῶν ὀδύνη. Διότι ἐγώ εἰμι ὡς πανθὴρ τῷ Ἐφραὶμ, καὶ ὡς λέων τῷ οἴκῳ Ἰούδα. καὶ ἐγὼ ἁρπῶμαι, καὶ πορεύσομαι, 15 καὶ λήψομαι, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἐξαιρούμενος. Πορεύσομαι καὶ ἐπιστρέψω εἰς τὸν τόπον μου, ἕως οὗ ἀφανισθῶσι, καὶ (ι) ζητήσουσι τὸ πρόσωπόν μου.

MS.A. (α) οἶκος (β) ἄπεστιν (γ) καί γε (δ) ἐξέκλινεν (ε) καὶ τέκνα (ζ) ἐρυσίβη, (η) κρίμα, (θ) αὐτὸς (ι) ἐπιζητήσουσιν

ΚΕΦ. ϛ΄.

1 Ἐν θλίψει αὐτῶν ὀρθριοῦσι πρός με, λέγοντες, Πορευθῶμεν, καὶ ἐπιστρέψωμεν πρὸς 2 κύριον τὸν θεὸν ἡμῶν, Ὅτι αὐτὸς ἥρπακε, καὶ ἰάσεται ἡμᾶς, πατάξει, καὶ μοτώσει ἡμᾶς, 3 Ὑγιάσει ἡμᾶς μετὰ δύο ἡμέρας· ἐν τῇ ἡμέρᾳ τῇ τρίτῃ (α) ἐξαναστησόμεθα, καὶ ζησόμεθα ἐνώπιον αὐτοῦ,

MS.A. (α) ἀναστησόμεθα,

CAP. V.

Audite hæc, ſacerdotes; & attendite, domus Iſrael; & domus regis, auribus percipite: ad vos enim eſt judicium: quia laquei facti eſtis Speculationi, & ſicut rete expanſum ſuper (a) Itabyrium: 2 Quod, qui capiunt venationem, confixerunt. Ego enim magiſter veſter: 3 Ego cognovi Ephræm: & Iſrael non receſſit à me. Quia nunc fornicatus eſt Ephræm: commaculatus eſt Iſrael: 4 Non dederunt cogitationes ſuas, ut reverterentur ad Deum ſuum: quia ſpiritus fornicationis eſt in eis: Dominum autem non cognoverunt. 5 Et humiliabitur (b) injuria Iſrael in faciem ejus. Et Iſrael, & Ephræm infirmabuntur in iniquitatibus ſuis. Et infirmabitur etiam Judas cum eis. 6 Cum ovibus, & vitulis ibunt ad quærendum Dominum, & non invenient eum. Declinavit enim ab illis: 7 Quia Dominum reliquerunt; quia filios alienos genuerunt ſibi: nunc devorabit eos (c) rubigo, & (d) cleros eorum. 8 Clangite tubâ ſuper colles, ſonate ſuper excelſa, prædicate in domo On: mente excidit Benjamin: 9 Ephræm in deſolationem factus eſt in diebus correptionis. In tribubus Iſrael oſtendi fidelia: 10 Facti ſunt principes Juda, quaſi transferentes terminos: ſuper eos effundam, ſicut aquam, impetum meum. 11 Oppreſſit Ephræm adverſarium ſuum, conculcavit judicium: quia cœpit abire poſt vana. 12 Et ego, quaſi conturbatio Ephræm, & quaſi ſtimulus domui Juda. 13 Et vidit Ephræm infirmitatem ſuam, & Judas dolorem ſuum. Et abiit Ephræm ad Aſſyrios, & miſit (e) legatos ad regem (f) Jarim. Et ipſe non potuit (g) ſanare vos: & non ceſſabit à vobis (h) dolor. 14 Quia ego ſum quaſi panther Ephræm, & quaſi leo domui Juda. Et ego rapiam, & vadam, & tollam: & non erit, qui eruat. Ibo, & revertar in locum meum; donec diſpereant, & quærent faciem meam. 15

CAP. VI.

1 In tribulatione ſua manè vigilabunt ad me, dicentes; Eamus, & revertamur ad Dominum Deum noſtrum: 2 Quia ipſe (a) rapuit, & ſanabit nos; percutiet, & (b) curabit nos: 3 Sanos nos faciet poſt dies duos: in die tertio reſurgemus, & vivemus coram eo,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ה

1 שמעו דא כהניא וקבילו בית ישראל ובית מלכא אציתו הלא לכון למדע דינא ארי
2 תקלא הויתון למלפכון וכמצדא דפריסא על טור רם : ודבחן לטעון מסגן ואנא מיתי
3 יסורין לכולהון : קדמי גלן עובדי דבית אפרים ודבית ישראל לא מטמרין מן קדמי ארי
4 כען טען בית אפרים אסתאבו בית ישראל : לא שבקין עובדיהון למתב לפולחנא
5 דאלההון ארי רוח דטעו ביניהון ואולפן מן קדם יי לא תבעו : וימאך יקר ישראל ואנון
חזן ודבית ישראל ודבית אפרים יתקלון בחוביהון יתקלון אף דבית יהודה עמהון :
6 בענהון ובתוריהון יהכון למתבע אולפן מן קדם יי ולא ישכחון סליק שכנתי מנהון :
7 במימרא דיי שקרו ארי בנין מבנת עממיא קימו להון כען איתי עליהון עממין ירח בירח
8 ויבזון ית פרי ארעהון : נביא ארימו קלכון כדשופרא אתנבו דייתון עליהון עממיא
קטולין על דאמלכו ית שאול דמגבעתא אצוחו כד בחצוצרתא אמרו דייתון עליהון
מלכין במשריתהון על דלא קבילו לפתגמי שמואל דמרמתא בסרו עליהון יבבות
עבדי קרבא על דשקרו במימרי ואסתחרו לאחורא מבתר פולחני ולא פלחו קדמי
9 במקדשא די בארע שבטא בנימין : בית אפרים לצדו תהי ביום תושלמת חובין ברם
10 בשבטיא דישראל הודעת אוריתא : הוו רברבי יהודה כמשני תחום עליהון אשפוך
11 כמיא חמתי : אניסין דבית אפרים כבישין בדיניהון ארי אתפניאו דיניהון למטעי בתר
12 13 ממון דשקר : ומימרי כעשא לדבית אפרים וכרקבא לדבית יהודה : וחזא אפרים ית
מרעיה ויהודה ית מכאוביה ואזלו דבית אפרים לאתור ושלחו למלכא דייתי לאתפרע
14 להון נביא אמר להון הוא לא יכיל לאסאה לכון ולא יניח מנכון מכאיב : ארי מימרי
כליתא לדבית אפרים וכבר אריון לדבית יהודה אנא במימרי אקטול ואעדי ארים
15 גבורתי ולית דמשזיב : אסלק שכנתי אתוב למדור קודשי די בשמיא עד דידעון דחבו
ויבעון מן קדמי כד תעוק להון יבעון דחלתי :

ח

1 יימרון אתו ונתוב לפלחנא דיי ארי הוא די מחנא ויסגנא ודאיתי עלנא תבר יניח לנא :
2 יחיננא ליומי נחמתא דעתידין למיתי ביום אחיות מיתיא יקימננא ונחי קדמוהי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. V.

Audite hoc ſacerdotes & attendite domꝰ Iſrael, & domꝰ regis auſcultate. 1 Nunquid veſtra refert dignoſcere judiciū? offendiculū etenim fuiſtis doctoribꝰ veſtris, & veluti rete ꝙ expanſū eſt ſup montē excelſū. 2 Et ſacrificant idolis largiſſimè, & ego adduco correptiones ſup omnes illos. 3 Palā nota mihi ſunt opera Ephraim, & domꝰ Iſrael non abſcondita ſunt à conſpectu meo, ſiquidē nunc erraverūt viri domꝰ Ephraim, contaminata eſt domꝰ Iſraelitica. 4 Nō miſſa faciunt opera ſua quò convertantur ad cultū Dei ſui, quia ſpiritꝰ erroris verſatur inter eos, & doctrinā à facie Dñi non quæſiverunt. 5 Et deprimetur gloria Iſrael ipſis videntibus; & domꝰ Iſrael atq; familia Ephraim corruent in peccatis ſuis, corruent perinde viri domꝰ Jehuda cum eis. 6 Cùm ovibꝰ ſuis ac bobꝰ ibunt quæſitū reſponſū à facie Dñi, ſed non invenient; [*quippe*] ſubduxit ſe majeſtas *mea* ab eis. 7 In verbū Dñi perperam egerunt, quia filios de filiabꝰ gentiū ſibi ſtatuerunt, nunc adducā adverſū eos populos per ſingulos menſes qui populabuntur fructꝰ terræ eorū. 8 Prophetæ levate vocē veſtram velut buccinâ, prophetate venturos contra eos populos interfectores, eò quòd crearunt regē Saulem, qui erat de Gabaa: proclamate veluti tubâ, prædicite adventuros adverſū eos reges cum ſuis exercitibꝰ, eò ꝙ minimè ſuſceperint verba Samuelis, qui erat de Ramatha: annuntiate eis vociferationē bellatorū, eò ꝙ prævaricati ſunt in verbū meū, & converſi ſunt retrorſū à cultu meo, nec ſervierunt corā me in *ſanctuario quod* ſtat in terra tribꝰ Benjamin. 9 Domus Ephraim in deſolationē *erit* in die retributionis peccatorū: veruntamē in tribubꝰ Iſrael notā feci legē. 10 Fuerūt principes Jehuda quaſi mutantes terminū: ſup eos effundā ſicut aquas irā meā. 11 Vim patientes ſunt viri domus Ephraim oppreſſi in judiciis ſuis: quia ſe verterunt judices eorū, ut errarent poſt mammona iniquitatis. 12 Verbū autē meū erit quaſi tinea domui Ephraim, 13 & quaſi putredo domui Jehuda. Et vidit Ephraim infirmitatē ſuā, & Jehuda dolorē ſuū: & abierunt viri domꝰ Ephraim ad Aſſur, & miſerūt ad regē ut adventaret ultū eos. Propheta dic eis, Non poterit ſanitatē conferre vobis, neq; ſedabit veſtrū dolorē. 14 Verbū enim meū quaſi leæna erit domui Ephraim, & quaſi catulꝰ leonū domui Jehuda. Ego in verbo meo occidā, tranſibo, & extollā *potentiā meā*, nec erit qui eruat. 15 Auferā majeſtatē meā, revertar in habitaculū ſanctitatis meæ ꝙ eſt in cœlis, donec norint ſe peccâſſe et deprecentur ante me; cum ingruerit eis anguſtia, requirent timorem mei.

CAP. VI.

1 Dicent, Venite & revertamur ad cultum Dñi: nam ipſe qui percuſſit nos, & ſanabit nos; & qui induxit ſuper nos interitum, refocillabit nos. 2 Vita donabit nos in diebus conſolationis qui venturi ſunt, in die reſurrectionis mortuorum ſuſcitabit nos & vivemus coram eo.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ * ܫܡܥܘ ܗܕܐ ܟܗܢܐ: ܘܐܨܬܘ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ.. ܘܒܝܬ 1
ܡܠܟܐ ܨܘܬܘ. ܡܛܠ ܕܕܝܠܟܘܢ ܗܘ ܕܝܢܐ. ܕܦܚܐ ܗܘܝܬܘܢ ܠܕܘܩܐ. ܘܡܨܝܕܬܐ ܦܪܝܣܬܐ
ܥܠ ܛܒܘܪ: * ܘܨܝܕܐ ܕܨܝܕܝܢ. ܛܡܪܘ ܦܚܐ. ܐܢܐ ܕܝܢ ܐܪܕܐ ܐܢܘܢ. * ܐܢܐ ܝܕܥܬ ܠܐܦܪܝܡ. 2 3
ܘܐܝܣܪܝܠ ܠܐ ܛܫܐ ܡܢܝ. ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܙܢܝ ܐܦܪܝܡ. ܘܐܬܛܢܦ ܐܝܣܪܝܠ.. * ܠܐ ܫܒܩܘ 4
ܠܗܘܢ ܥܒܕܝܗܘܢ. ܕܢܬܦܢܘܢ ܠܘܬ ܐܠܗܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܕܙܢܝܘܬܐ ܒܓܘܗܘܢ.
ܘܠܡܪܝܐ ܠܐ ܝܕܥܘ. * ܘܢܬܡܟܟ ܫܘܒܗܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܩܕܡܘܗܝ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܘܐܦܪܝܡ 5
ܢܬܬܩܠܘܢ ܒܥܘܠܗܘܢ. ܘܢܬܬܩܠ ܐܦ ܝܗܘܕܐ ܥܡܗܘܢ. * ܒܥܢܗܘܢ ܘܒܬܘܪܝܗܘܢ 6
ܢܐܙܠܘܢ ܠܡܒܥܝܗ ܠܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢܝܗܝ. ܡܛܠ ܕܦܪܩ ܡܢܗܘܢ. * ܒܡܪܝܐ 7
ܓܝܪ ܕܓܠܘ: ܡܛܠ ܕܒܢܝܐ ܢܘܟܪܝܐ ܐܘܠܕܘ. * ܩܪܘ ܒܫܝܦܘܪܐ ܒܓܒܥܬܐ. ܘܩܪܢܐ ܒܪܡܬܐ. 8
ܐܙܥܩܘ ܒܝܬ ܐܘܢ: ܒܬܪܟ ܒܢܝܡܝܢ. * ܐܦܪܝܡ ܠܚܘܒܠܐ ܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܟܣܢܘܬܐ. 9
ܒܫܒܛܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܘܕܥܬ ܗܝܡܢܘܬܐ. * ܗܘܘ ܪܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܐܝܟ ܗܢܘܢ ܕܡܫܢܝܢ 10
ܬܚܘܡܐ. ܥܠܝܗܘܢ ܐܫܘܕ ܚܡܬܝ ܐܝܟ ܡܝܐ. * ܥܫܝܩ ܐܦܪܝܡ ܘܐܬܕܝܢ. ܡܛܠ 11
ܕܨܒܐ ܠܡܐܙܠ ܒܬܪ ܣܪܝܩܘܬܐ. * ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ ܐܝܟ ܫܓܘܫܝܐ ܠܐܦܪܝܡ.. ܘܐܝܟ ܐܪܝܐ ܠܒܝܬ 12
ܝܗܘܕܐ. * ܘܚܙܐ ܐܦܪܝܡ ܟܐܒܘܗܝ. ܘܝܗܘܕܐ ܟܐܒܘܗܝ. ܘܐܙܠ ܐܦܪܝܡ ܠܐܬܘܪ. ܘܫܕܪ ܠܘܬ 13
ܡܠܟܐ ܕܝܪܒ.. ܘܗܘ ܠܐ ܡܫܟܚ ܠܡܐܣܝܘ ܠܟܘܢ. ܘܠܐ ܢܥܒܪ ܡܢܟܘܢ ܟܐܒܐ. * ܡܛܠ 14
ܕܐܢܐ ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܠܐܦܪܝܡ.. ܘܐܝܟ ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. ܐܢܐ ܐܚܛܘܦ ܘܐܙܠ.. ܘܐܫܩܘܠ
ܘܠܝܬ ܕܡܦܨܐ. * ܐܗܦܘܟ ܐܙܠ ܠܐܬܪܝ.. ܥܕܡܐ ܕܢܬܚܝܒܘܢ ܘܢܒܥܘܢ ܐܦܝ. ܘܒܐܘܠܨܢܗܘܢ 15
ܢܩܕܡܘܢ ܠܘܬܝ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *
* ܘܢܐܡܪܘܢ. ܢܗܦܘܟ ܢܐܙܠ ܠܘܬ ܡܪܝܐ. ܕܡܚܢ. ܗܘ ܢܐܣܝܢ. ܘܬܒܪܢ. ܗܘ ܢܚܒܫܢ 1
* ܘܢܚܝܢ ܠܝܘܡܬܐ. ܘܒܝܘܡܐ ܕܬܠܬܐ ܢܩܝܡܢ. ܘܢܚܐ ܩܕܡܘܗܝ. 2

CAP. V.

AUdite hoc Sacerdotes, auſcultate Iſraelitæ, 1 & domus regis aurem præbete, nam ad vos pertinet judicium, qui laquei facti eſtis ſpeculatoribus, & rete expanſum ſuper Thabore, Et 2 venatores venantes, abſcondentes laqueos, equidem hos homines caſtigabo. Ego novi 3 Aphremum, & Iſrael me non latet. Quia nunc ſcortatus eſt Aphrem, & polluit ſe Iſrael, Non 4 permittunt eis facinora eorum convertere ſe ad Deum ſuum. Quia ſpiritus ſcortationis eſt in præcordiis eorũ, & Dominum non cognoſcunt; Humiliabitur faſtus Iſraelis coram ipſo, 5 & Iſrael atque Aphrem impingentur ſcelere ſuo, & impingetur etiam Juda cum eis. Cum 6 ovibus & bobus ſuis ibunt quæſitum Dominum, & non invenient eum; quia receſſit ab 7 eis. Siquidem in Dominum mentiti ſunt, quia filios extraneos pepererunt. Clangite buccinâ 8 in colle, & cornu in Rama: clanxerunt Bethavanitæ poſt te Benjamin. Aphrem in vaſta- 9 tionem abibit die correptionis: in natione Iſraelitica notam faciã fidem. Facti ſunt prin- 10 cipes Judæ ſimiles iis qui movent terminum: ſuper eos effundam iram meam ſicut aquam. Premitur Aphrem & urgetur in judicio, quia 11 voluit ſectari vanitates. Et ego ero ceu pertur- 12 batio Aphremo, & ſicut leo Judæis. Sed vi- 13 dens Aphrem ægritudines ſuas, & Juda dolores ſuos; contulit ſe Aphrem ad Aſſur, miſitque ad regem Jareb: ſed is neque mederi poteſt vobis, neque curare vos à doloribus veſtris. Nam ego ſum ut leo Aphremo, & ut 14 catulus leonis Judæis: ego prædabor, abibo, & aſportabo, nemine vindicante. Reverſus 15 abibo in locum meum, donec victi requirant faciam meam, & calamitate ſua accedant ad me diluculò,

CAP. VI.

ET dicant; Revertamur, eamus ad Domi- 1 num: qui nos percuſsit, ipſemet ſanabit nos: qui nos fregit, idem obligabit nos, Vivóſque 2 ſervabit nos diebus *aliquot*: & die tertiâ ſuſcitabit nos, & vivemus coram eo,

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

1 * الفصل الخامس * اسمعوا هذا ايها الكهنة * واصغ يا بيت اسرايل * وانصتوا يا
بيت الملك * من اجل ان الحكم هو معكم * لانكم صرتم فخا في المسالك * ومثل شبكة
2 3 مبسوطة علي جبل تابور * التي نصبها الصيادون للصيد * وانا موديكم * انا عرفت افرام
4 واسرايل لم يبعد عني * من اجل ان افرام زنا * الآن تنجس اسرايل * لم يعطوا اراوهم ليرجعوا
5 الي الههم * لان روح الزنا هو فيهم * ولم يعرفوا الرب * ويذل تكبر اسرايل في وجهه * واسرايل
6 وافرام يضعفان بظلاماتهما * ويضعف يهودا معهما * مع الخراف والعجول يسيرون ليطلبوا
7 الرب * ولا يجدونه * لانه مال عنهم * لانهم تركوا الرب * لان الاولاد الغرباء ولدوا لهم * الآن
8 ياكلهم القمل واراضيهم * بوقوا بالبوق على الاكام * غنوا على المرتفعات * نادوا في البيت
9 بنيامين دهش * افرام صار للهلاك في ايام التبكيت * في قبايل اسرايل اظهرت امانات *
10 11 * صاروا روساء يهودا مثل مغيري الحدود * عليهم اصب مثل الماء غضبي * تقوي افرام
12 على خصمه * وداس الحكم * لانه ابتداء ان يسير خلف الاباطيل * وانا مثل الاضطراب
13 لافرام * ومثل المنخاس لبيت يهودا * وعلم افرام مرضه ويهودا وجعه * ومضي افرام الي الموصليين *
وارسل شفعاء الي ملك يارم * وهو لم يقدر ان يشفيكم * ولم يكف الوجع منكم *
14 * من اجل اني انا مثل النمر لافرام * ومثل الاسد لبيت يهودا * وانا اخطف واذهب * واخذ
15 وليس يكون منقذ * امضي واعود الي موضعي الي ان يفنوا * ويطلبون وجهي في شدتهم
يبكرون الي * * الفصل السادس *
1 * قايلين * تعالوا نذهب ونرجع الي الرب الهنا * لانه هو خطف وشفانا * يضرب ويداوينا *
3 * يعافينا بعد يومين * في اليوم الثالث * نقوم ونحيا امامه *

CAP. V.

AUdite hæc O ſacerdotes, aurem præ- 1 be O domus Iſraelis, & auſculta O domus regis; quia judicium penes vos eſt: nam facti eſtis laqueus in via, & ſicut rete expanſum ſuper monte Thabor, Quod venatores tetenderunt ad venan- 2 dum: Ego ſanè caſtigaturus ſum vos. Ego novi Aphremum, et Iſrael non longè 3 abeſt à me. Quia Aphrem fornicatus eſt, nunc conſpurcatus Iſrael; Non adhi- 4 bent mentes ſuas ut revertantur ad Deum ſuum. Quandoquidem ſpiritus fornicationis eſt in eis, nec Dominum agnoſcunt; Deprimetur arrogantia Iſraelis in con- 5 ſpectu ipſius, & tam Iſrael quàm Aphrem infirmabuntur ob iniquitates ſuas, & infirmabitur Juda cum ipſis. Cum agnis et 6 vitulis ibunt quæſitum Dominum, ſed non invenient eum; quia deflexit ab eis, Eò 7 quòd dereliquerint Dominum: quia filii extranei nati ſunt in eis, pediculi devorabunt eos & terras eorum. Clangite buc- 8 cinâ ſuper collibus, concentum edite ſuper excelſis, clamate in domo; Benjamin obſtupuit, Aphrem ad interitum reda- 9 ctus eſt in diebus correptionis, in tribubus Iſraelis patefeci fidelitates. Facti ſunt 10 principes Judæ ſimiles immutantibus limites, ſuper eos effundam velut aquam impetum meum. Prævaluit Aphrem ad- 11 verſariis ſuis; & conculcavit judicium, quia cœpit abire poſt vanitates. At ego 12 fui tanquam perturbatio Aphremo, & tanquam ſtimulus domui Judæ. Verùm 13 ſentiens Aphrem morbum ſuum, & Juda dolorem ſuum, abiit Aphrem ad Aſſyrios, miſitque ſuffragatores ad regem Jarim; ſed is non potuit ſanare vos, neque deſiit à vobis dolor. Quoniam ego ſum tan- 14 quam panthera Aphremo, & tanquam leo domui Judæ: & ego rapiam & abibo; tollam, & non erit qui eruat. Abiens re- 15 vertar ad locum meum, donec abſumantur: & quærent faciem meam in tribulatione ſua, manè ſurgent ad me,

CAP. VI.

DIcentes; Agite, eamus & revertamur 1 ad Dominum Deum noſtrum: quoniam ipſe rapuit, tum ſanavit nos; percutiet, tum medebitur nobis; Sanitatem reſtituet nobis 2 poſt biduum, die tertio; & reſurgemus, vivemúſque coram eo;

הושע : ז

est præparatus aurora tanquam: Dominum *sciendum ad sequemur*, Sciemusque
3 ונדעה נרדפה לדעת את־יהוה כשחר נכון
temporane° serotin° veluti, nobis imber tanquam veniet & ; ejus egressus
מצאו ויבוא כגשם לנו כמלקוש יורה
? Jehudah tibi faciam quid ? Ephraim tibi faciam Quid .terræ
4 ארץ : מה אעשה־לך אפרים מה אעשה־לך יהודה
.vadens *manicans* ros tanquam &, matutina nubes ut vestra misericordia &
וחסדכם כענן־בקר וכטל משכים הלך :
: mei oris verbis *in* eos occidi , prophetas *in* succidi Propterea
5 על־כן חצבתי בנביאים הרגתים באמרי־פי
;sacrificium non & ,*volui* misericordiam Quia .*egredietur* lux tua judicia &
6 ומשפטיך אור יצא : כי חסד חפצתי ולא־זבח
sunt transgressi Adam sicut ipsi Et .*ascensionibus* præ Dei scientiam &
7 ודעת אלהים מעלות : והמה כאדם עברו
;iniquitatem operantiū civitas Ghilhad. me in sunt prævaricati ibi pactum
8 ברית שם בגדו בי : גלעד קרית פעלי און
sacerdotum *societatem* ,latrones virum *expectare juxta* Et. sanguine à fœdata
9 עקבה מדם : וכחכי איש גדודים חבר כהנים
Israel domo In .fecerunt *scelus* quia : *humero* interficiebant via
10 דרך ירצחו שכמה כי זמה עשו : בבית ישראל
.Israel se contaminavit ,Ephraim fornicatio ibi ; *turpitudinem* vidi
ראיתי שעריריה שם זנות לאפרים נטמא ישראל :
.mei populi captivitatē *me convertendo in*; tibi *messem* posuit Jehudah Etiam
11 גם־יהודה שת קציר לך בשובי שבות עמי :

CAP. VII. ז

malitiæ &, Ephraim iniquitas se discooperuit & ,Israel *me sanare Secundùm*
1 כרפאי לישראל ונגלה עון אפרים ורעות
latro spoliavit ,est ingressus fur & :mendaciū sunt operati quia ,Someron
שמרון כי פעלו שקר וגנב יבוא פשט גדוד
eorum malitiæ omnis , suo corde in *dicent* non Et .foris
2 בחוץ : ובל־יאמרו ללבבם כל־רעתם
meis faciebus coram, eorum *studia* eos circundederunt nunc : sum recordatus
זכרתי עתה סבבום מעלליהם נגד פני
suis mendaciis *in* & ; regem lætificaverunt sua malitia *In* .*fuerunt*
3 היו : ברעתם ישמחו־מלך ובכחשיהם
: *panifice* à succensus clibanus sicut , *adulterantes* ii Omnes .principes
4 שרים : כלם מנאפים כמו תנור בערה מאפה
Die .*eam fermentari ad usque pastam subigendo à excitando ab* cessabit
5 ישבות מעיר מלוש בצק עד־חמצתו : יום
suā manū protraxit ; vino à utre principes fecerunt ægrotare *nostri regis*
מלכנו החלו שרים חמת מיין משך ידו
, suum cor clibanum veluti applicuerunt Quia .illusoribus cum
6 את־לצצים : כי־קרבו כתנור לבם
succensus ipse manè ,eos coquens dormivit nocte tota ; *eos insidiando* in
בארבם כל־הלילה ישן אפהם בקר הוא בער
, clibanus veluti se calefecerunt Omnes .flammæ ignis tanquam
7 כאש להבה : כלם יחמו כתנור
clamans non ,ceciderunt eorum reges omnes ;suos judices devoraverunt &
ואכלו את־שפטיהם כל־מלכיהם נפלו אין־קרא
Ephraim ; se commiscuit *ipse* populis *in* Ephraim .me ad eos inter
8 בהם אלי : אפרים בעמים הוא יתבולל אפרים
: nescivit ipse &,ejus robur alieni Comederunt .*versum* non *libum* fuit
9 היה עגה בלי הפוכה : אכלו זרים כחו והוא לא ידע
.nescivit *ipse* & ,eo in se sparsit canicies etiam
גם־שיבה זרקה בו והוא לא ידע :

Versio VULG. LAT.

Sciemus, sequemúrque ut cogno-
scamus Dominum: quasi diluculū
præparatus est egressus ejus, & ve-
niet quasi imber nobis tempora-
4 neus, & serotinus terræ. Quid fa-
ciam tibi, Ephraim? quid faciam
tibi, Juda? misericordia vestra
quasi nubes matutina, & quasi ros
5 manè pertransiens. Propter hoc
dolavi in prophetis, occîdi eos in
verbis oris mei: & judicia tua
6 quasi lux egredientur. Quia mise-
ricordiam volui, & non sacrificiū;
& scientiam Dei, plusquàm ho-
7 locausta. Ipsi autem sicut Adam
transgressi sunt pactum, ibi præ-
8 varicati sunt in me. Galaad civi-
tas operantium idolum, supplan-
9 tata sanguine. Et quasi fauces vi-
rorum latronum, particeps sacer-
dotum, in via interficientium per-
gentes de Sichem: quia scel° ope-
10 rati sunt. In domo Israel vidi hor-
rendū: ibi fornicationes Ephraim:
11 contaminatus est Israel. Sed &, Ju-
da, pone messem tibi, cùm conver-
tero captivitatem populi mei.

CAP. VII.

1 CUm sanare vellem Israel, re-
velata est iniquitas Ephraim, &
malitia Samariæ, quia operati sunt
mendaciū: & fur ingressus est spo-
2 lians, latrunculus foris. Et ne fortè
dicant in cordibus suis, omnē ma-
litiam eorum me recordatū: nunc
circumdederunt eos adinventio-
nes suæ, corā facie mea factæ sunt.
3 In malitia sua lætificaverunt re-
gem: & in mendaciis suis princi-
4 pes. Omnes adulterantes, quasi
clibanus succensus à coquente:
quievit paululùm civitas à com-
mistione fermenti, donec fermen-
5 taretur totum. Dies regis nostri:
cœperunt principes furere à vi-
no: extendit manum suam cum
6 illusoribus. Quia applicuerunt
quasi clibanum cor suum, cùm
insidiaretur eis: totâ nocte dormi-
vit coquens eos, manè ipse suc-
7 census quasi ignis flammæ. Omnes
calefacti sunt quasi clibanus, &
devoraverunt judices suos: omnes
reges eorum ceciderunt: non est
8 qui clamet in eis ad me. Ephraim
in populis ipse commiscebatur:
Ephraim factus est subcinericius
9 panis, qui non reversatur. Come-
derunt alieni robur ejus, & ipse
nescivit: sed & cani effusi sunt
in eo, & ipse ignoravit.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

Καὶ γνωσόμεθα. διώξωμεν τοῦ γνῶναι τὸν κύ-
ριον· ὡς ὄρθρον ἕτοιμον εὑρήσομεν αὐτὸν, καὶ
ἥξει ὡς ὑετὸς ἡμῖν πρώϊμος καὶ ὄψιμος (β)
4 γῇ. Τί σοι ποιήσω Ἐφραίμ; τί σοι ποιήσω
Ἰούδα; τὸ δὲ ἔλεος ὑμῶν ὡς νεφέλη πρωϊ-
5 νὴ, καὶ ὡς δρόσος ὀρθρινὴ πορευομένη. Δια-
τοῦτο ἀπεθέρισα τοὺς προφήτας ὑμῶν· ἀπέ-
κτεινα αὐτοὺς ἐν (γ) ῥήματι στόματός μου· καὶ
6 τὸ κρίμα μου ὡς φῶς ἐξελεύσεται. Διότι ἔ-
λεος θέλω (δ) ἢ θυσίαν, καὶ ἐπίγνωσιν θεοῦ
7 ἢ ὁλοκαυτώματα. Αὐτοὶ δέ εἰσιν ὡς ἄν-
θρωπος παραβαίνων διαθήκην. ἐκεῖ κατε-
8 φρόνησέ μου Γαλαὰδ πόλις, ἐργαζομένη
9 μάταια, ταράσσουσα ὕδωρ, Καὶ ἡ ἰσχύς σου
ἀνδρὸς πειρατοῦ. ἔκρυψαν ἱερεῖς ὁδὸν (ε),
10 ἐφόνευσαν Σίκιμα, ὅτι ἀνομίαν ἐποίησαν. Ἐν
τῷ οἴκῳ (ζ) τοῦ Ἰσραὴλ εἶδον φρικώδη, ἐκεῖ
11 πορνείαν τοῦ Ἐφραίμ. ἐμιάνθη Ἰσραὴλ Καὶ
(η) Ἰούδα. ἄρχου τρυγᾷν σεαυτῷ, ἐν τῷ
ἐπιστρέφειν με τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ μου.

MS.A. (β) τῇ γῇ. (γ) ῥήμασιν (δ) καὶ οὐ (ε) κυρίου, (ζ) Ἰσραὴλ· (η) Ἰούδας.

ΚΕΦ. ζ΄.

1 ἘΝ τῷ ἰάσασθαί με τὸν Ἰσραὴλ, καὶ ἀπο-
καλυφθήσεται ἡ ἀδικία Ἐφραίμ, καὶ ἡ κακία
Σαμαρείας, ὅτι εἰργάσαντο ψευδῆ. καὶ κλέ-
πτης πρὸς αὐτὸν εἰσελεύσεται, ἐκδιδύσκων
2 λῃστὴς ἐν τῇ ὁδῷ αὐτοῦ, Ὅπως (α) συνᾴ-
δωσιν ὡς ᾄδοντες τῇ καρδίᾳ αὐτῶν. πά-
σας τὰς κακίας αὐτῶν ἐμνήσθην. νῦν (β)
ἐκύκλωσαν αὐτοὺς τὰ διαβούλια αὐτῶν,
3 ἀπέναντι τοῦ προσώπου μου ἐγένοντο. Ἐν ταῖς
κακίαις αὐτῶν εὔφραναν βασιλεῖς, καὶ ἐν
4 τοῖς ψεύδεσιν αὐτῶν ἄρχοντας. Πάντες
μοιχεύοντες ὡς κλίβανος καιόμενος εἰς
πέψιν κατακαύματος ἀπὸ τῆς φλογὸς, ἀπὸ
φυράσεως στέατος, ἕως τοῦ ζυμωθῆναι αὐτό.
5 (γ) Ἡμέραι τῶν βασιλέων ὑμῶν, ἤρξαντο οἱ
ἄρχοντες θυμοῦσθαι ἐξ οἴνου, ἐξέτεινε τὴν χεῖ-
6 ρα αὐτοῦ μετὰ λοιμῶν. Διότι ἀνεκαύθησαν ὡς
κλίβανος αἱ καρδίαι αὐτῶν, ἐν τῷ κατα-
ράσσειν αὐτοὺς ὅλην τὴν νύκτα· ὕπνου Ἐφραὶμ
ἐνεπλήσθη, πρωῒ (ͨ) ἐνεγενήθη, ἀνεκαύθη ὡς
7 (δ) πυρὸς φέγγος. Πάντες ἐθερμάνθησαν
ὡς κλίβανος (ε), καὶ κατέφαγον τοὺς κριτὰς
αὐτῶν· πάντες οἱ βασιλεῖς αὐτῶν (θ) ἔπεσαν,
οὐκ ἦν (ι) ἐν αὐτοῖς ὁ ἐπικαλούμενος πρὸς
8 μέ. Ἐφραὶμ ἐν τοῖς λαοῖς αὐτοῦ (κ) συνε-
μίγνυτο, Ἐφραὶμ ἐγένετο ἐγκρυφίας, οὐ με-
9 ταστρεφόμενος. Κατέφαγον ἀλλότριοι τὴν
ἰσχὺν αὐτοῦ, αὐτὸς δὲ οὐκ (λ) ἔγνω· καὶ πολιαὶ
ἐξήνθησαν αὐτῷ, καὶ αὐτὸς οὐκ ἔγνω.

MS.A. (α) Συνᾴδουσιν ὡς συνᾴδοντες (β) ἐκύκλωσεν (γ) Αἱ ἡμέραι (ͨ) ἐγενήθη, (δ) πῦρ (ε) πυρὸς καιομένου αἱ καρδίαι αὐτῶν, καὶ κατέφαγεν πῦρ τοὺς κριτὰς (θ) ἔπεσον, (ι) ὁ ἐπικαλούμενος ἐν αὐτοῖς πρὸς ἐμέ. (κ) Συνανεμίγνυτο, (λ) ἐπέγνω·

Et sciemus. Persequamur, ut cog-
noscamus Dominum: quasi manè
paratum inveniemus eum: & ve-
niet nobis quasi pluvia tempora-
nea, & serotina terræ. Quid fa- 4
ciam tibi, Ephræm? Quid faciam
tibi, Juda? Misericordia autem
vestra, quasi nubes matutina, &
quasi ros matutinus pertransiens.
Propterea succîdi prophetas ve- 5
stros: occîdi eos in verbo oris mei:
& judicium (c) meum, quasi lux
egredietur. Quia misericordiam 6
volo, (d) quàm sacrificium, &
scientiam Dei magis, quàm holo-
causta. Ipsi verò sunt, sicut homo 7
(e) præteriens testamentum. (f)
Ibi contempsit me Galaad, civi- 8
tas, quæ operatur vana, et contur-
bat aquā: Et (g) fortitudo tua vi- 9
ri piratæ. Abscōderūt sacerdotes
(h) viā, interfecerūt Sicima, quia
iniquitatē operati sunt. In domo 10
Israel vidi horribilia, ibi fornica-
tionem Ephræm: contaminat° est
Israel, Et (i) Juda. Incipe vindemiare tibi ; cùm convertero captivitatē populi mei. 11

CAP. VII.

Cum (a) sanarē ego Israel, et 1
(b) revelabitur iniquitas Ephræm,
& malitia Samariæ: quia operati
sunt mendacia. Et fur ad eum (c)
ingredietur, spolians latro in via
ejus: ut concinant quasi canentes 2
corde suo. Omnes malitias eorum
recordatus sum. Nunc circun-
dederūt eos (d) cogitationes suæ:
contrà faciē meā factæ sunt. In 3
malitiis suis lætificaverunt (e) re-
ges, et in mendaciis suis principes.
Omnes adulterantes, quasi cliban° 4
accensus ad coquendum, (f) de-
ustionis à flamma à commistio-
ne fermenti, donec (g) ipsum fer-
mentaretur. Dies regum vestrorū. 5
Cœperunt principes furere à vino:
extendit manum suā cum pesti-
lentib°: Quia succensa sunt, quasi 6
cliban°, corda eorū; cū (h) præci-
pitarētur ipsi totâ nocte, Ephræm
somno repletus est: manè factum
est: accensus est, quasi ignis flam-
ma. Omnes calefacti sunt, quasi 7
(i) cliban°: & devoraverunt ju-
dices suos. Omnes reges eorum ce-
ciderunt: non (k) fuit in eis, qui
invocaret me. Ephræm in populis 8
suis commiscebatur: Ephræm fa-
ctus est subcineritius, qui non re-
versatur. Comederunt alieni forti- 9
tudinem ejus, ipse verò nescivit:
& cani effloruerunt ei, & ipse
ignoravit.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 ונילף נרדוף למדע ית דחלתא דיי כנהור צפרא דמקשיט במפקיה וייתין ברכן לנא
4 כמטר מנבר כלקישא דמרוי ארעא : מן קדם דין דקשוט מא אעבד לכון דבית אפרים
5 מא אעביד לכון דבית יהודה וטבותכון כענן צפרא וכטלא דמוחי פסיק : על כן
דאזהרתנון בשליחות נביי ולא תבו איתתי עליהון קטולין על דעברו על מימר רעותי
6 ודיני כנהור נפק : ארי בעבדי חסדא רעוא קדמי מדבח ועבדי אוריתא דיי ממסקי
7 עלון : ואנון כדריא קדמאי עברו על קימי ובארעא טבא דיהבית להון למעבד רעותי
8 תמן שקרו במימרי : גלעד קרית אנוסין בנכלין אשדין דם זכי : וכמא די מסבר אנש
9 למשרין אתחברו אנון וכהניהון באורחא חדא קטלין נפשן כתף חד ארי עצת חטאין
10 עבדו : בבית ישראל חזיתי שנו אשניאו קימא דגזיר עמהון דלא למפלח לטעותא
תבו אנון למטעי בתר עגליא בביתאל תמן טעו בית אפרים אסתאבו בית ישראל :
11 אף דבית יהודה שריאו לאסגאה חוביהון אף להון ימטי חובין באתבותי גלות עמי :

ז

1 כמתבעי חובי ישראל ויתגלין עוית אפרים ובישת שמרון ארי עבדו שקר ובליליא
2 בבתיא גנבין ובמדברא בימשא קפחין : לא מחשבין בלבהון דכל בישתהון גלין
3 קדמי כען יקפוננון עובדיהון בישיא די קדמי הוו גלן : בסריקתהון מחדן מלכא
4 ובכדיבהון רברבין : כולהון מחמדין למנף נשי חבריהון דלקין כתנורא דאולהון
נחתומא בכן יגלון בפריע מקרויהון כמא דמוחן לקימא מחשבת רשעא ועל דלא
אדכרו נסין וגבורן דאתעבידו להון ביום מסקהון ממצרים מעדן מלש לישא עד לא
5 חמע : יומא דמניאו עליהון מלכהון שריאו רברביא למשתי עמיה חמר נגד לידיה
6 סיעת שקרין : ארי אתקרבו לעצת חטאין ולא עכיבו כתנורא בער לבהון
7 באתכמוניהון כל ליליא מוריך רוגזהון עד צפרא הוא דליק כאשא שלהובי : כולהון
מחממין כתנורא ובלישן שקריהון מחיבין ית דיניהון כל מלכיהון אתקטלו לית
8 דמצלי מנהון קדמי : בית אפרים בעממיא אנון אתערבו בית אפרים דמן לחררא
9 דעד לא אתהפכת אתאכלת : בזו עממיא נכסיהון ואנון לא ידעין אף חלישותא
מטתנון ואנון לא מסתכלין :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et discem° & consectabimur ut cognoscam° timorē Dñi, quasi lux matutina 3
quæ in ortu suo [*omnia*] collustrat: & venient benedictiones nobis quasi im-
ber inundans, & veluti serotin° qui terram humectat. A facie judicii veri 4
quid faciam vobis domus Ephraim? quid faciam vobis domus Jehuda?
certè benignitas vestra quasi nubes matutina, & velut ros qui citò de-
ficit. Pro eo quòd monui eos per legationem prophetarum meorum, 5
nec sunt pœnitentia ducti, adducam sup eos trucidatores, propterea quòd
transgressi sunt verba voluntatis meæ: profectò judiciū meum quasi lux ori-
etur. Namq; in his qui exercent misericordiam voluntas coram me est, magis 6
quàm in sacrificio: & in operantib° legem Dñi magis quàm in offerentibus
holocausta. At ipsi sicuti generationes priscæ transgressi sunt pactū meum, & 7
in terra bona quam dedi eis ut ibi exequerentur voluntatē meam, prævaricati
sunt in verbū meū. Galaad civitas est vim inferentium, dolosè effundentium 8
sanguinem innocentum. Et quemadmodū observat vir exercitum, consociati 9
sunt ipsi ac sacerdotes eorū: in eadem via occidunt animas consensu uno, quia
consiliū impiorū executi sunt. In domo Israel vidi commutationem, irritum 10
fecerunt pactū quod pepigi cum eis, nimirū ut non servirent idolis: conver-
si sunt ut errarēt post vitulos in Bethel: ibi aberraverūt viri dom° Ephraim,
contaminati sunt viri dom° Israel. Quinetiam viri dom° Jehuda cœperunt 11
multiplicare peccata *sua*: ad eos pariter pertinget *reat°* cùm convertero ca-
ptivitatem populi mei.

CAP. VII.

CUm exquirerem peccata Israel, detectæ sunt iniquitates Ephraim, & ma- 1
litia Samariæ, quandoquidem operati sunt falsitatē & noctu in domib°
furantur, & interdiu in deserto grassantur. Nec interim reputant in cordib° 2
suis omnia ipsorum maleficia manifesta esse coram me: mox circumvenient
eos opera eorum mala, quæ coram me aperta sunt. Vanitatib° suis exhilarant 3
regem & mendaciis suis principes. Universi cupiunt comprimere uxores pro- 4
ximorū suorū: æstuant instar clibani quem accendit sibi pistor: quamobrem
migrabunt citò ex civitatib° suis, non secus ac festinant ad opere complendā
cogitationem impiam: & quia minimè fuerunt memores miraculorum, &
rerum magnarum gestarum, quæ operata sunt eis die qua ascenderunt ex Æ-
gypto, ab eo tempore quo subacta fuit massa, antequam fermentaretur. Die 5
quo constituerunt super se regem suum, exorsi sunt magnates compotare cum
eo vinū, attraxit ad manū suam turbā falsidicorū. Accesserunt enim *ad* con- 6
silium peccatorū, & non sunt cunctati, perinde ac cliban° ardet cor eorum
in insidiis suis: tota nocte protrahitur furor eorū usque manè, æstuat in
morē ignis flammiferi. Omnes calefacti sunt quasi cliban°, & in lingua men- 7
daciorū condemnant judices suos; omnes reges eorū necati sunt: nec ull° est
eorū qui deprecetur corā me. Dom° Ephraim inter populos commisti sunt: 8
similis est dom° Ephraim subcineritio pani qui antequam versetur comeditur.
Diripuerunt populi substantias eorum, & ipsi non norunt: infirmitas etiamnum assecuta est eos, & non intelligunt. 9

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܘܢܕܥ ܠܡܪܕܐ ܠܝܕܥܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܕܬܩܢ ܡܦܩܗ. ܘܢܐܬܐ ܠܢ ܐܝܟ ܡܛܪܐ

4 ܘܐܝܟ ܠܩܫܐ ܕܡܪܘܐ ܠܐܪܥܐ. * ܡܢܐ ܐܥܒܕ ܠܟ ܐܦܪܝܡ. ܘܡܢܐ ܐܥܒܕ ܠܟ ܝܗܘܕܐ.

5 ܛܝܒܘܬܟܘܢ ܐܝܟ ܥܢܢܐ ܕܨܦܪܐ. ܘܐܝܟ ܛܠܐ ܕܡܩܕܡ ܘܥܒܪ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܦܣܩܬ ܢܒܝܐ.

6 ܘܩܛܠܬ ܐܢܘܢ ܒܡܐܡܪ ܦܘܡܝ. ܘܕܝܢܝ ܐܝܟ ܢܘܗܪܐ ܢܦܘܩ. * ܡܛܠ ܕܛܝܒܘܬܐ ܨܒܝܬ

7 ܘܠܐ ܕܒܚܬܐ. ܘܝܕܥܬܗ ܕܐܠܗܐ ܝܬܝܪ ܡܢ ܝܩܕܐ. * ܘܗܢܘܢ ܐܝܟ ܒܪܢܫܐ ܥܒܪܘ ܩܝܡܝ.

8 ܘܬܡܢ ܕܓܠܘ ܒܝ. * ܓܠܥܕ ܡܕܝܢܬܐ ܗܝ ܕܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. ܘܡܥܩܒܬܐ ܕܕܡܐ. ܚܝܠܟܝ

9 ܐܝܟ ܕܓܒܪܐ ܓܝܣܐ. * ܐܬܚܒܪܘ ܟܗܢܐ ܒܐܘܪܚܐ. ܘܩܛܠܘ ܠܫܟܝܡ. ܡܛܠ ܕܥܘܠ

10 ܥܒܕܘ. * ܒܒܝܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܚܙܝܬ ܬܕܡܘܪܬܐ. ܬܡܢ ܙܢܝ ܐܦܪܝܡ. ܘܐܬܛܢܦ ܐܝܣܪܝܠ.

11 * ܘܐܦ ܝܗܘܕܐ. ܥܒܕ ܠܟ ܩܛܦܐ. ܟܕ ܕܡܗܦܟܢܐ ܐܢܐ ܫܒܝܬܗ ܕܥܡܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *

1 * ܟܕ ܐܣܝܬ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܬܓܠܝܬ ܥܘܠܗ ܕܐܦܪܝܡ

ܘܒܝܫܘܬܗ ܕܫܡܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܘ ܫܘܩܪܐ ܩܕܡܝ. ܘܓܢܒܐ ܥܐܠ ܗܘܐ. ܘܡܫܠܚܝܢ ܓܝܣܐ

2 ܒܫܘܩܐ. * ܘܠܐ ܐܡܪܝܢ ܒܠܒܗܘܢ. ܕܟܠܗܝܢ ܒܝܫܬܗܘܢ ܥܗܝܕ ܐܢܐ. ܗܫܐ ܢܚܕܪܘܢ ܐܢܘܢ

3 ܥܒܕܝܗܘܢ. ܕܗܘܘ ܩܕܡ ܐܦܝ. * ܒܒܝܫܘܬܗܘܢ ܚܕܝܘ ܡܠܟܐ. ܘܒܕܓܠܘܬܗܘܢ. * ܟܠܗܘܢ

4 ܫܠܝܛܢܝܗܘܢ ܓܝܪܝܢ. ܐܝܟ ܬܢܘܪܐ ܕܝܩܕ ܠܡܐܦܝܬܐ. ܢܒܛܠ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܠܐܫ ܠܝܫܐ

5 ܥܕܡܐ ܕܢܚܡܥ. * ܝܘܡܐ ܕܡܠܟܝܢ. ܫܪܝܘ ܪܘܪܒܢܐ ܠܡܬܚܡܬܘ ܡܢ ܚܡܪܐ. ܢܓܕܘ ܐܝܕܝܗܘܢ

6 ܥܡ ܒܝܫܐ. * ܡܛܠ ܕܚܡ ܠܒܗܘܢ. ܐܝܟ ܬܢܘܪܐ ܒܡܟܡܢܝܗܘܢ. ܘܟܠܗ ܠܠܝܐ ܫܟܝܟ

7 ܪܘܓܙܗܘܢ. ܘܨܦܪܐ ܢܦܩ ܗܘܐ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܡܫܠܗܒܐ. * ܟܠܗܘܢ ܚܡܘ ܐܝܟ ܬܢܘܪܐ. ܘܐܟܠܘ

8 ܠܕܝܢܝܗܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܡܠܟܝܗܘܢ ܢܦܠܘ. ܘܠܝܬ ܒܗܘܢ ܕܩܪܐ ܠܝ. * ܐܦܪܝܡ ܒܥܡܡܐ

9 ܐܬܚܠܛ. ܐܦܪܝܡ ܗܘܐ ܓܪܨܬܐ. ܕܥܕܠܐ ܐܬܗܦܟܬ ܐܬܐܟܠܬ. * ܘܐܟܠܘ ܢܘܟܪܝܐ ܚܝܠܗ

ܘܗܘ ܠܐ ܝܕܥ. ܘܣܝܒܘܬܐ ܢܦܩܬ ܠܗ. ܘܠܐ ܝܕܥ.

* Et diſcemus ire ad agnitionem Dñi ut *ad* aurorā cujus cert⁹ eſt exortus : adveniétq; nobis ut pluvia & ut vernus imber inebrians tellurem. 3 Quid facerem tibi Aphrem ? quid facerem tibi Juda ? bonitas veſtra ſimilis eſt nubi matutinæ, & ſimilis rori diluculò cadenti & prætereunti. 4 Propterea diſſecui prophetas, & interfeci eos dicto oris mei, & judiciū meum ut lumen exorietur. 5 Nam bonitate delector, non ſacrificio, & cognitione Dei magis quàm holocauſtis: 6 Ipſi tamen ut filius hominis tranſgreſſi ſunt fœdus meum, & ibidem perfidè mecum egerunt. 7 Gelaad, urbs illa operantium iniquitatem, & ſanguine conſperſa, robur tuū ut viri latronis. 8 Conſpirárunt ſacerdotes in via, & occiderunt Sechum; quia ſceleratè agunt. 9 In domo Iſraelis vidi rem ſtupendam : ibi ſcortatus eſt Aphrem, & polluit ſe Iſrael. 10 Et *tu* quoque Juda, para tibi vindemiam. Dum 11 * reducerem captivos populi mei,

CAP. VII.

Dum ſanarem Iſraelem, tum prodidit ſe ſcelus Aphrem, & malitia Samariæ; nam perfidiam coram me committebant, & fur ingrediebatur, & turma ſpoliabat in plateis; 1 Nec tamen dicebant apud ſemetipſos, omnium flagitiorū ſuorum me eſſe memorem, jam circundabunt eos facinora ſua quæ perpetrata ſunt coram facie mea. 2 Malitiâ ſuâ & mendacio ſuo reges exhilarant : 3 Omnes principes eorum mœchantur, ut clibanus ardens ad coctionem panis : deficiet ab urbe ſubigens maſſam donec fermentetur. 4 Die regum noſtrorum cœperunt magnates vino furere, traxerunt manus ſuas cum ſceleratis : 5 Incaluit enim ceu fornax cor eorum in inſidiis ſuis : & totâ nocte ſedabatur furor eorum, manè verò ignis flammæque inſtar exardeſcebat. 6 Omnes incaluerunt ut furnus, & conſumpſerunt judices ſuos : omnes reges eorum ceciderunt, nec eſt inter eos, qui me invocet. 7 Aphrem inter gentes miſcuit ſeſe, Aphrem factus eſt placenta quæ antequam cocta eſſet comeſta fuit. 8 Ita comederunt alieni robur ejus, ipſo minimè advertente : cani exorti ſunt ei, nec animadvertit. 9

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 * ويعلم نسير * لنعرف الرب مثل الصبح المعد نجده * ويأتينا مثل المطر اولا وآخرا للارض *

4 * ماذا اصنع بك يا افرام * وماذا اصنع بك يا يهوذا * ورحمتكم مثل السحابة الصبحية *

5 ومثل الندا السحري الذاهب * لاجل هذا حصدت انبياوكم * قتلتهم بكلمات فمي *

6 وحكمي مثل النور يخرج * من اجل اني اريد رحمة لا ذبيحة * والمعرفة بالله اكثر من

7 8 المحرقات * وهولاء هم مثل انسان تعدا عهدا هناك * احتقرتني جلعاد * المدينة الفاعلة

9 الاباطيل * المقلقة للماء * وقوتك قوة رجل متلصص * الكهنة اخفوا طريق الرب * قتلوا

10 سكيما * لانهم صنعوا اثما * في بيت اسرائيل * نظرت هناك زنا مرهبا لافرام * وتنجس اسرائيل

11 ويهوذا * ابتدي بقطاف لذاتك عند ما ارد سبي شعبي *

* الفصل السابع *

1 * حين اشفي اسرائيل * وينكشف ظلم افرام * وشر سامرة * لانهم عملوا الافك * واللص اليه

2 يدخل * يسلب اللص في طريقه * كي يدرسوا مثل الدارسين في قلبهم * جميع مظالمهم

3 ذكرت * الان احدقوا بهم مؤامرتهم صارت امام وجهي * بسرورهم فرحوا ملوكا * وبكذبهم روساء *

4 * جميع الفسقة مثل تنور متقد للخبز بحرارة من اللهيب * من عاجين الدرمك الى ان يختمر *

5 6 * ايام ملوككم * ابتدأت الروساء ان تغضب من الخمر * مد يده بفساد * من اجل ان قلوبهم

توقدت مثل تنور عند ما يلعنون الليل كله * امتلى افرام نوما * صار الصباح * وتوقد

7 مثل ضوء نار * حميت قلوبهم مثل تنور جميعا * واكلوا قضاتهم * جميع ملوكهم سقطوا *

ولم يكن فيهم من يدعوا الي *

* الاصحاح الثالث *

8 9 * افرام اختلط في شعوبه * افرام صار قرصا لا يرجع * اكلت الغرباء قوته وهو لا يعلم * ازهرت

له شعرات بيض ولم يدر *

* *Et addiſcemus incedere, ut cognoſcamus Dominum : tanquam auroram paratam inveniemus eum, & veniet ad nos ut pluvia temporanea & ſerotina ad terram.* 3 *Quid faciam tibi O Aphrem ? & quid faciam tibi O Juda ? cùm miſericordia veſtra ſimilis ſit nubi matutinæ, & ſimilis rori matutino præterlabenti ?* 4 *Propterea meſſui prophetas veſtros, peremi eos verbis oris mei, & judicium meum ut lux egredietur.* 5 *Ego enim volo miſericordiam, non ſacrificium ; & agnitionem Dei potiùs quàm holocauſta.* 6 *At iſti ſunt ſimiles homini fœdus illic prævaricanti.* 7 *Sprevit me Galaad urbs vanitatum operatrix, conturbatrix aquarum : & fortitudo tua, fortitudo viri latrocinantis.* 8 *Sacerdotes abſconderunt viam Domini, occiderunt Sichimam, quia fecerunt iniquitatem* 9 *In domo Iſraelis. Ibi vidi ſcortationem horrendam apud Aphremum, & contaminâſſe ſe Iſraelem & Judam.* 10 *Incipe vindemiare tibimetipſi, cùm reduxero captivitatem populi mei,* 11

CAP. VII.

Cum ſanavero Iſraelem, & detecta fuerit impietas Aphremi, & improbitas Samariæ ; quia fecerunt mendacium : & fur ad eum ingreditur, ſpoliat latro in via ejus ; 1 *ut repeterent more repetentium in corde ſuo : omnium impietatum eorum recordatus ſum : nunc circundederunt eos, machinatio eorum facta eſt coram facie mea.* 2 *Sceleribus ſuis lætificaverunt reges, & mendacio ſuo principes.* 3 *Omnes adulteri ſunt ſimiles furno accenſo ad panem calore flammeo : ex maſſa ſimilaginis donec fermentetur,* 4 *Dies regum veſtrorum. Cœperunt principes iraſci à vino : extendit manum ſuam cum corruptione :* 5 *Quia corda eorum exarſerunt ſicut fornax, dum totâ nocte maledicunt : repletus eſt Aphrem ſomno: mane facto, exarſit ut ſplendor ignis.* 6 *Incaluerunt corda eorum omnium ceu fornax, & comederunt judices ſuos : omnes reges eorum ceciderunt, nec fuit inter eos qui clamaret ad me.* 7

Textus tertius.

Aphrem miſcuit ſe inter populos ſuos, Aphrem factus eſt placenta minimè rediens : 8 *Comederunt extranei robur ejus, ipſo non percipiente : effloruerunt ei pili cani, ipſo non ſentiente.* 9

Dominū ad sunt reversi non &;ej° facieb° in Israel superbia est contestata Et
10 וְעָנָה גְאוֹן־יִשְׂרָאֵל בְּפָנָיו וְלֹא־שָׁבוּ אֶל־יְהוָה
Ephraim fuit Et .hoc toto cum eum quæsierunt nec ,suum Deum
11 אֱלֹהֵיהֶם וְלֹא בִקְשֻׁהוּ בְּכָל־זֹאת׃ וַיְהִי אֶפְרַיִם
.abierunt Assur ,invocabant Ægyptum : *cor non stolida* columba veluti
כְּיוֹנָה פוֹתָה אֵין לֵב מִצְרַיִם קָרָאוּ אַשּׁוּר הָלָכוּ׃
cœlorum *volatile* ut ,meum rete eos super expandam abierint Cùm
12 כַּאֲשֶׁר יֵלֵכוּ אֶפְרוֹשׂ עֲלֵיהֶם רִשְׁתִּי כְּעוֹף הַשָּׁמַיִם
Væ .eorum cœtus *auditionem juxta* eos castigabo;eos faciam descendere
13 אוֹרִידֵם אַיְסִרֵם כְּשֵׁמַע לַעֲדָתָם׃ אוֹי
sunt prævaricati quoniam , eis vastitas , me à *vagati sunt* quoniam , eis
לָהֶם כִּי־נָדְדוּ מִמֶּנִּי שֹׁד לָהֶם כִּי־פָשְׁעוּ
non Et .mendacia me *super* sunt locuti ipsi & ,eos redemi ego & : me in
14 בִי וְאָנֹכִי אֶפְדֵּם וְהֵמָּה דִּבְּרוּ עָלַי כְּזָבִים׃ וְלֹא־
super : suis cubilibus *super* ulularunt *quia*,suo corde in me ad clamaverunt
זָעֲקוּ אֵלַי בְּלִבָּם כִּי יְיֵלִילוּ עַל־מִשְׁכְּבוֹתָם עַל־
roboravi ,*ligavi* ego Et .me *à defecerunt*,se *congregaverunt* mustū &,triticum
15 דָּגָן וְתִירוֹשׁ יִתְגּוֹרָרוּ יָסוּרוּ בִי׃ וַאֲנִי יִסַּרְתִּי חִזַּקְתִּי
,*suprà* non Revertentur .malum cogitaverunt me contra & ; eorum brachia
16 זְרוֹעֹתָם וְאֵלַי יְחַשְּׁבוּ־רָע׃ יָשׁוּבוּ לֹא עָל
eorum principes gladio *in* cadent : *doli* arcus tanquam fuerunt
הָיוּ כְּקֶשֶׁת רְמִיָּה יִפְּלוּ בַחֶרֶב שָׂרֵיהֶם
.Ægypti terra in eorum subsannatioIsta .suæ linguæ furorem propter
מִזַּעַם לְשׁוֹנָם זוֹ לַעְגָּם בְּאֶרֶץ מִצְרָיִם׃

CAP. VIII. ח

quòd eo pro:Domini domum super aquila veluti,tubam tuum palatum Ad
1 אֶל־חִכְּךָ שֹׁפָר כַּנֶּשֶׁר עַל־בֵּית יְהוָה יַעַן
me Ad.sunt prævaricati meam legem *super* &,meum pactum sunt trangressi
עָבְרוּ בְרִיתִי וְעַל־תּוֹרָתִי פָּשָׁעוּ׃ לִי 2
Israel *Elongavit* .*Israel* te cognovimus , meus Deus ,clamabunt
3 יִזְעָקוּ אֱלֹהַי יְדַעֲנוּךָ יִשְׂרָאֵל׃ זָנַח יִשְׂרָאֵל
; me ex non & ,fecerunt regnare Ipsi .eum persequetur inimicus ;bonum
4 טוֹב אוֹיֵב יִרְדְּפוֹ׃ הֵם הִמְלִיכוּ וְלֹא מִמֶּנִּי
fecerunt suo auro & ,suo argento :cognovi non &,constituerunt principem
הֵשִׂירוּ וְלֹא יָדָעְתִּי כַּסְפָּם וּזְהָבָם עָשׂוּ
, Someron *tuus* vitulus *Rejecit* .excisio erit ideo , *dolores* sibi
5 לָהֶם עֲצַבִּים לְמַעַן יִכָּרֵת׃ זָנַח עֶגְלֵךְ שֹׁמְרוֹן
? innocentiam potuerunt non usquequo ; eos in meus furor est iratus
חָרָה אַפִּי בָּם עַד־מָתַי לֹא יוּכְלוּ נִקָּיֹן׃
; *ipse* Deus non & ,illum fecit artifex , ipse & Israel ex Quia
6 כִּי מִיִּשְׂרָאֵל וְהוּא חָרָשׁ עָשָׂהוּ וְלֹא אֱלֹהִים הוּא
,seminaverunt ventum Quia .Someron vitulus *erit contritiones* quoniam
7 כִּי־שְׁבָבִים יִהְיֶה עֵגֶל שֹׁמְרוֹן׃ כִּי רוּחַ יִזְרָעוּ
: farinam faciet non ,germen *ei* non stanti culmo : metent turbinem &
וְסוּפָתָה יִקְצֹרוּ קָמָה אֵין־לוֹ צֶמַח בְּלִי יַעֲשֶׂה־קֶּמַח
fuerunt nunc : Israel est *Absorptus*.eam deglutient alieni ,fecerit fortè si
8 אוּלַי יַעֲשֶׂה זָרִים יִבְלָעֻהוּ׃ נִבְלַע יִשְׂרָאֵל עַתָּה הָיוּ
ascenderunt ipsi Quia .*eo in voluntas* non vas tanquam *gentibus* in
9 בַגּוֹיִם כִּכְלִי אֵין־חֵפֶץ בּוֹ׃ כִּי־הֵמָּה עָלוּ
.*amores mercede expetierunt* Ephraim : sibi solitarius onager , Assur
אַשּׁוּר פֶּרֶא בּוֹדֵד לוֹ אֶפְרַיִם הִתְנוּ אֲהָבִים׃
dolebunt & ; eas congregabo nunc ,gentes *ad miserūt munera quia* Etiam
10 גַּם כִּי־יִתְנוּ בַגּוֹיִם עַתָּה אֲקַבְּצֵם וַיָּחֵלּוּ
Ephraim multiplicavit Quoniam.principum,regis onus propter paululum
11 מְּעָט מִמַּשָּׂא מֶלֶךְ שָׂרִים׃ כִּי־הִרְבָּה אֶפְרַיִם
.peccandum ad altaria ei fuerunt ; peccandum ad altaria
מִזְבְּחוֹת לַחֲטֹא הָיוּ־לוֹ מִזְבְּחוֹת לַחֲטֹא׃

Versio VULG. LAT.

10 Et humiliabitur superbia Israel in facie ejus : nec reversi sunt ad Dominum Deum suum, & non quæsierunt eum in omnibus his. 11 Et factus est Ephraim quasi columba seducta non habens cor : Ægyptū invocabant, ad Assyrios 12 abierunt. Et cùm profecti fuerint, expandam super eos rete meum : quasi volucrē cœli detraham eos, cædam eos secundùm auditionem 13 cœtûs eorū. Væ eis, quoniam recesserunt à me : vastabuntur, quia prævaricati sūt in me; & ego redemi eos : & ipsi locuti sunt con- 14 tra me mendacia, Et non clamaverunt ad me in corde suo, sed ululabant in cubilib° suis: super triticum & vinum ruminabant, re- 15 cesserunt à me. Et ego erudivi eos, & confortavi brachia eorum : & 16 in me cogitaverunt malitiam. Reversi sunt ut essent absque jugo : facti sunt quasi arcus dolosus: cadent in gladio principes eorum, à furore linguæ suæ. Ista subsannatio eorum in terra Ægypti.

CAP. VIII.

1 IN gutture tuo sit tuba quasi aquila super domum Domini : pro eo quòd transgressi sunt fœdus meum, & legem meam prævari- 2 cati sunt. Me invocabunt ; Deus 3 meus, cògnovimus te Israel. Projecit Israel bonum, inimicus per- 4 sequetur eum. Ipsi regnaverunt, et non ex me : principes extiterunt, & non cognovi : argentum suum & aurum suum fecerunt sibi ido- 5 la, ut interirent: Projectus est vitulus tuus, Samaria, iratus est furor meus in eos : usquequò non 6 poterunt emundari ? Quia ex Israel & ipse est : artifex fecit illum, & non est Deus : quoniam in aranearū telas erit vitulus Samariæ. 7 Quia ventum seminabunt, & turbinem metent : culmus stans non est in eo, germen non faciet farinam : quod & si fecerit, alieni 8 comedent eam. Devoratus est Israel : nunc factus est in nationib° 9 quasi vas immundum. Quia ipsi ascenderunt ad Assur, onager solitarius sibi : Ephraim munera de- 10 derunt amatoribus. Sed & cùm mercede conduxerint nationes, nunc congregabo eos : & quiescent paulisper ab onere regis, & 11 principum. Quia multiplicavit Ephraim altaria ad peccandum : factæ sunt ei aræ in delictum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

10 Καὶ ταπεινωθήσεται ἡ ὕβρις Ἰσραὴλ εἰς πρόσωπον αὐτοῦ. καὶ οὐκ ἐπέστρεψαν πρὸς κύριον τὸν θεὸν αὐτῶν, καὶ οὐκ ἐξεζήτησαν αὐτὸν 11 ἐν πᾶσι τούτοις. Καὶ ἦν Ἐφραὶμ ὡς περιστερὰ ἄνους, οὐκ ἔχουσα καρδίαν· Αἴγυπτον ἐπεκαλεῖτο, καὶ εἰς Ἀσσυρίους ἐπορεύθησαν. 12 Καθὼς ἂν πορεύωνται, ἐπιβαλῶ ἐπ' αὐτοὺς τὸ δίκτυόν μου, καθὼς τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ κατάξω αὐτούς, παιδεύσω αὐτοὺς ἐν τῇ ἀ- 13 κοῇ τῆς θλίψεως αὐτῶν. Οὐαὶ αὐτοῖς, ὅτι ἀπεπήδησαν ἀπ' ἐμοῦ· (λ) δείλαιοί εἰσιν, ὅτι ἠσέβησαν εἰς ἐμέ. ἐγὼ δὲ ἐλυτρωσάμην αὐτούς, 14 αὐτοὶ δὲ κατελάλησαν κατ' ἐμοῦ ψευδῆ. Καὶ οὐκ ἐβόησαν πρός με αἱ καρδίαι αὐτῶν, ἀλλ' ἢ ὠλόλυζον ἐν ταῖς κοίταις αὐτῶν· ἐπὶ σί- 15 τῳ καὶ οἴνῳ κατετέμνοντο. Ἐπαιδεύθησαν ἐν ἐμοί, (μ) κἀγὼ κατίσχυσα τοὺς βραχίονας αὐτῶν, (ν) καὶ εἰς ἐμὲ ἐλογίσαντο πονηρά. 16 Ἀπεστράφησαν εἰς (ξ) οὐδέν, ἐγένοντο ὡς τόξον ἐντεταμένον· πεσοῦνται ἐν ῥομφαίᾳ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν (ο) δι' ἀπαιδευσίαν γλώσσης αὐτῶν· οὗτος ὁ φαυλισμὸς αὐτῶν ἐν γῇ Αἰγύπτῳ.

MS.A. (λ) *δείλαιοι (μ) καὶ ἐγὼ (ν) εἰς ἐμὲ (ξ) οὐθέν, (ο) διὰ

ΚΕΦ. η'.

1 Εἰς κόλπον αὐτῶν, ὡς γῆ, ὡς ἀετὸς ἐπ' οἶκον κυρίου, ἀνθ' ὧν παρέβησαν τὴν διαθήκην 2 μου, καὶ κατὰ τοῦ νόμου μου ἠσέβησαν. Ἐμὲ κε- 3 κράξονται, Ὁ θεὸς ἐγνώκαμέν σε. Ὅτι Ἰσραὴλ ἀπεστρέψατο ἀγαθά, ἐχθρὸν κα- 4 τεδίωξαν. Ἑαυτοῖς ἐβασίλευσαν, καὶ οὐ δι' ἐμοῦ, ἦρξαν, καὶ οὐκ ἐγνώρισάν μοι. τὸ ἀργύριον αὐτῶν, καὶ τὸ χρυσίον αὐτῶν ἐποίησαν ἑαυτοῖς εἴδωλα, ὅπως (α) ἐξολοθρευθῶσιν. 5 Ἀπότριψαι τὸν μόσχον σου Σαμάρεια, παρωξύνθη ὁ θυμός μου ἐπ' αὐτούς. ἕως τίνος 6 οὐ μὴ δύνωνται καθαρισθῆναι Ἐν τῷ Ἰσραήλ; καὶ αὐτὸ τέκτων ἐποίησε, καὶ οὐ θεός ἐστι· διότι πλανῶν ἦν ὁ μόσχος σου Σαμά- 7 ρεια. Ὅτι (β) ἀνεμόφθορα ἔσπειραν, καὶ ἡ καταστροφὴ αὐτῶν ἐκδέξεται αὐτά. δράγμα (γ) οὐκ ἔχον ἰσχὺν τοῦ ποιῆσαι ἄλευρον· ἐὰν δὲ καὶ ποιήσῃ, ἀλλότριοι καταφάγονται αὐτό. 8 Κατεπόθη Ἰσραήλ, νῦν ἐγένετο ἐν τοῖς 9 ἔθνεσιν ὡς σκεῦος ἄχρηστον, Ὅτι αὐτοὶ ἀνέβησαν εἰς Ἀσσυρίους. ἀνέθαλεν καθ' ἑαυτὸν 10 Ἐφραίμ· δῶρα (δ) ἠγάπησαν, Διὰ τοῦτο παραδοθήσονται ἐν τοῖς ἔθνεσι· νῦν εἰσδέξομαι αὐτούς, καὶ κοπάσουσι (ε) μικρὸν τοῦ 11 χρίειν βασιλέα καὶ ἄρχοντας. Ὅτι ἐπλήθυνεν Ἐφραὶμ θυσιαστήρια, εἰς (ζ) ἁμαρτίας ἐγένοντο αὐτῷ θυσιαστήρια (η) ἠγαπημένα.

MS.A. (α) ἐξολεθρευθῶσιν (β) ἀνεμοφθόρια (γ) οὐκ (δ) ἠγάπησεν, Διὰ τοῦτο παρεδόθησαν (ε) τοῦ χρίειν (ζ) ἁμαρτίαν (η) τὰ ἠγαπημένα.

10 Et humiliabitur contumelia Israel in facie ejus. Et non sunt reversi ad Dominum Deum suum, & non quæsierunt eum in omnibus his. 11 Et erat Ephrem, quasi columba (l) insipiens, non habens cor. Ægyptum invocabat, & in Assyrios abierunt. 12 Sicut ibunt, mittam super eos rete meum: ut volatilia cœli, detraham illos: corripiam eos in auditu tribulationis eorum. 13 Væ eis, quoniam (m) resilierunt à me. (n) Misericuli sunt, quoniam impiè egerunt in me. Ego verò redemi eos: ipsi verò loquuti sunt contra me mendacia. 14 Et non clamaverunt ad me corda eorum, sed ululabant in cubilibus suis. Super tritico, & vino discabantur: 15 Eruditi sunt in me. Et ego confortavi brachia eorum: et contra me cogitaverunt mala. 16 Conversi sunt in nihilum: facti sunt quasi arcus intentus. Cadent in gladio principes eorum propter imperitiam linguæ eorum. Hec est subsannatio eorum in terra Ægypto.

CAP. VIII.

1 IN (a) sinu eorum, quasi terra: sicut aquila super domum Domini: pro eo, quòd transgressi sunt testamentum meum, & contra legem meam impiè egerunt. 2 Me clamabunt, Deus, cognovimus te: 3 Quia Israel (b) aversatus est bona: inimicum persequuti sunt: 4 (c) Sibimetipsis regnaverunt, & non per me: principes extiterunt, et non indicaverunt mihi: argentum suum, & aurum suum fecerunt sibi idola, ut dispereant. 5 Projice vitulum tuum, Samaria: concitatus est furor meus super eos. Usquequò non poterunt emundari 6 In Israel? Et hoc artifex fecit, & non est Deus: quia (d) seducens erat vitulus tuus, Samaria: 7 Quia corrupta vento seminaverunt: et subversio eorum suscipiet ea. Manipulus non habens vires, ut faciat farinam: quod, etsi fecerit; alieni comedent eam. 8 Devoratus est Israel: nunc factus est in nationibus, quasi vas inutile. 9 Quia ipsi ascenderunt ad Assyrios; germinavit apud seipsum Ephrem. 10 Munera dilexerunt: Idcircò tradentur in gentibus. Nunc suscipiam eos: et quiescent parùm, ut ungant regem, et principes. 11 Quia multiplicavit Ephrem altaria;

(e) in peccata facta sunt ei altaria dilecta.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 וימאך יקר ישראל ואנון חזן על דלא תבו לפולחנא דיי אלההון ולא בעו מן קדמוהי
11 בכל דא : והוו בית ישראל דמן כיונה שריחתא דאתנסיבו בנהא ולית לה לב
12 למצרים אתקרבו לאתור גלו : באתר דיהכון אפרוס עליהון מצדתי כעופא דשמיא
13 אטלטלנון יסורין איתי עליהון על דשמעו לעצתהון : וי להון ארי אתרחקו מדחלתי
בזוזין איתי עליהון ארי מרדו במימרי ואנא הויתי פריק להון ואנון ממללין קדמי
14 כדיבין : ולא מצלן קדמי בלבהון בכן מיללין על ערסתהון בסגי עבורא וחמרא דהוו
15 כנשין מרדו במימרי : וכמא די אנא מיתי עליהון יסורין ומתקיף על דרעיהון כן אף
16 אנון חשבין לאוספא קדמי בישן : תבו למרוד מן אוריתא לא על דאבאישית להון
דמן אנון כקשת נכילא יתקטלון בחרבא רברביהון מעמקות לישנהון אלין עובדיהון
עד דאנון בארעא דמצרים :

ח

1 נביא בחכך אכלי כד בשופרא אמר הא כנשרא דמשתדי כן יסק מלך במשריתיה וישרי
2 על בית מקדשא דיי חלף דעברו על קימי ועל אוריתי מרדו : בכל עדן דאתיא עליהון
עקא מצלן קדמי ואמרין כען ידענא ארי לית לנא אלהא בר מנך פרוקנא ארי אנחנא
3 עמך ישראל : טעו בית ישראל מבתר פולחני די בדיליה אנא מיתי עליהון טובא
4 מכען סנאה ירדפנון : אנון אמליכו ולא ממימרי רביאו ולא מרעותי כספהון ודהבהון
5 דאסיקו להון ממצרים עבדו להון טעון בדיל דישתיצון : טעו בתר עגלא דשמרון
6 תקיף רוגזי בהון עד אימתי לא יכלון למזכי : ארי מישראל הוא נבי אומן הוא עבדיה
7 דחלא דלית בה צרוך הוא ארי לנסרי לוחין יהי עגלא דשמרון : בית ישראל דמן
לדרוח זרע ועלעול חציד קמה לית לידה נוב לא יעבד מאים יקנון נכסין עממיא
8 יבזונינון : אתבזיז ישראל כען הוו בעממיא כמנא דלית צרוך ביה : ארי אנון גלו
9 לאתור על דהליכו ברעות נפשהון כערד מרוד בית ישראל אתמסרו ביד עממיא
10 דרחימו : אף אם ישוון בית ישראל דחלתי על לבהון מביני עממיא אקריב גלותהון
11 ואפילו יחכמון כזעיר אעדי מנהון מרות מלכין ושלטונין : ארי אסגאו דבית אפרים
אגורין למחטי הוו להון אגורי טעותהון לתקלא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

10 Atque humiliabitur gloria Israel ipsis cernentibus, propterea quòd non redierunt ad cultum Domini Dei sui, nec sunt deprecati præsentiam ejus in his omnibus. 11 Et facti sunt viri domus Israel similes columbæ simplici, cujus filii capti sunt & non habet cor: ad Ægyptum accesserunt, in Assur migraverunt. 12 Quocúnque ierint, expandam super eos rete meum : quasi volucrem cœli vagari faciam eos, correptiones adducam super eos, propterea quòd sint obsecuti suis consiliis. 13 Væ eis quoniam longè recesserunt à timore mei: prædones inducam super eos, quòd rebelles fuerint in verbum meum: cùm ego essem eorum redemptor, ipsi proferebant corā me mendacia. 14 Non autem orant corā me in cordib° suis, quin potius ululāt in lectulis suis præ ubertate tritici & vini quæ collegerunt: rebellaverunt in verbum meū. 15 Quoties verò adduco adversùs eos correptiones & roboro brachia eorū, toties ipsi *moliuntur addere* corā me mala. 16 Aversi sunt ut deficerent à lege, non quòd malum intulerim eis, similes sūt arcui doloso: perimētur gladio principes eorū propter *profunditatē* linguæ eorum. Ista erant opera eorum dum essent in terra Ægypti.

CAP. VIII.

1 PRopheta gutture tuo clamita quasi in tuba. Dic: Ecce sicut aquila quæ sese motitat, sic ascendet rex cū exercitu suo & castrametabitur contra domū sanctuarii Domini, pro eo quòd transgressi sunt pactum meum, & legem meam prævaricati sunt. 2 Omni tempore quo *venit* super eos *angustia*, orant coram me dicentes : Nunc pro comperto tenemus, quòd non sit nobis De° præter te: redime nos, quandoquidē sum° popul° tuus Israel. 3 Erraverunt domus Israel à cultu meo, cujus de causa adducebā eis bona : in posterum hostis persequetur eos. 4 Regē sibi creârunt, & non ex sententia mea; constituerunt principes, sed non ex voluntate mea : ex argento & auro suo quod sustulerunt sibi ex Ægypto, confecerunt in suū usum idola propter quæ excidentur. 5 Erraverunt ad vitulū Samariæ : exarsit furor meus in eos quamdiu non potuerunt se purgare. 6 Quia ex Israel est, ipsum compaginib° junxit artifex, ipse fecit eum, Deus est in quo non est utilitas : etenim in minuta tabularū redigetur vitul° Samariæ. 7 Domus Israel similis est ei quod vent° disseminat & turbo demetit, in quo non est stans seges, proventum non faciet : quòd si fortè opes comparaverint, gentes deprædabuntur eas. 8 Prædæ patuit Israel, nunc fuerūt inter populos quasi vas inutile. 9 Quippe qui exularunt in Assur, pro eò quòd ambulaverint in voluntate animæ suæ, tanquā onager effer°: dom° Israel traditi sunt in manū populorū quos adamarunt. 10 Attamen si recondant dom° Israel timorem mei in corde suo, cogam transmigrationem eorum de medio populorum: & si paulisper sapiant, auferā ab eis dominiū regū et principū. 11 Quia multiplicaverunt domus Ephraim altaria peccandi gratia: versa sunt eis altaria idolorum suorum in ruinam.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

ܘܐܬܡܟܟ * ܫܘܒܗܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ ܩܕܡܘܗܝ܂ ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܘ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ܂ ܘܠܐ ܒܥܐܘܗܝ܂ 10
ܘܗܘܐ * ܐܦܪܝܡ ܐܝܟ ܝܘܢܐ ܣܟܠܬܐ ܕܠܝܬ ܠܗ ܠܒܐ܂ ܠܡܨܪܝܢ ܐܙܠܘ܂ ܘܠܐܬܘܪ ܐܙܠܘ܂ * ܠܐܝܟܐ 11 12
ܕܐܙܠܘܢ܂ ܐܦܪܘܣ ܥܠܝܗܘܢ ܡܨܝܕܬܝ܂ ܘܐܝܟ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܐܚܬ ܐܢܘܢ܂ ܘܐܪܕܐ ܐܢܘܢ܂ ܐܝܟ
ܫܡܥܐ ܕܣܗܕܘܬܗܘܢ܂ * ܘܝ ܠܗܘܢ܂ ܕܢܕܘ ܡܢܝ܂ ܒܝܫܬܐ ܐܝܬܐ ܥܠܝܗܘܢ܂ ܕܐܥܠܘ 13
ܒܝ܂ ܐܢܐ ܓܝܪ ܦܪܩܬ ܐܢܘܢ܂ ܘܗܢܘܢ ܡܠܠܘ ܥܠܝ ܕܓܠܘܬܐ܂ * ܘܠܐ ܩܥܘ ܠܘܬܝ ܡܢ ܟܠܗ 14
ܠܒܗܘܢ܂ ܐܠܐ ܐܬܐܢܚܘ ܥܠ ܡܫܟܒܝܗܘܢ܂ ܥܠ ܥܒܘܪܐ ܘܥܠ ܚܡܪܐ ܡܬܥܩܝܢ܂ ܘܡܪܕܘ
ܒܝ܂ * ܘܐܢܐ ܪܕܝܬ܂ ܘܐܚܣܢܬ ܕܪܥܝܗܘܢ܂ ܘܥܠܝ ܐܬܚܫܒܘ ܒܝܫܬܐ܂ * ܐܬܗܦܟܘ ܠܐ 15 16
ܡܕܡ܂ ܘܗܘܘ ܐܝܟ ܩܫܬܐ ܢܟܝܠܬܐ܂ ܢܦܠܘܢ ܒܚܪܒܐ ܪܘܪܒܢܝܗܘܢ܂ ܡܢ ܡܪܚܘܬܐ
ܕܠܫܢܗܘܢ܂ ܗܢܐ ܗܘ ܒܘܪܟܗܘܢ ܕܒܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ܂ * ܩܦܠܐܘܢ * ܚ *
ܦܘܡܟ * ܐܝܟ ܩܪܢܐ܂ ܘܐܝܟ ܢܫܪܐ ܥܠ ܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܚܠܦ ܕܥܒܪܘ ܥܠ ܩܝܡܝ܂ ܘܥܠ ܢܡܘܣܝ 1
ܐܥܘܠܘ܂ * ܠܝ ܩܥܘ ܘܐܡܪܝܢ܂ ܝܕܥܝܢ ܠܟ ܐܠܗܢ܂ * ܛܥܐ ܐܝܣܪܝܠ ܛܒܬܐ܂ ܘܡܛܠܗܕܐ ܪܕܦ 2 3
ܐܢܘܢ܂ * ܐܡܠܟܘ ܘܠܐ ܡܢܝ܂ ܘܐܫܬܠܛܘ܂ ܘܠܐ ܐܘܕܥܘܢܝ܂ ܣܐܡܗܘܢ ܘܕܗܒܗܘܢ܂ ܥܒܕܘ 4
ܠܗܘܢ ܦܬܟܪܐ ܕܢܐܒܕܘܢ܂ * ܛܥܘ ܒܥܓܠܟܝ ܫܡܪܝܢ܂ ܘܐܬܚܡܬ ܪܘܓܙܝ ܒܗܘܢ܂ 5
ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܠܐ ܡܫܟܚܝܢ ܠܡܬܕܟܝܘ܂ * ܡܛܠ ܕܡܢ ܐܝܣܪܝܠ ܗܘ܂ ܘܢܓܪܐ ܥܒܕܗ܂ 6
ܘܠܐ ܗܘܐ ܐܠܗܐ܂ ܐܠܐ ܠܛܘܥܝܝܐ ܗܘܐ ܥܓܠܟܝ ܫܡܪܝܢ܂ * ܡܛܠ ܕܪܘܚܐ ܙܪܥܘ܂ ܘܥܠܥܠܐ 7
ܚܨܕܘ܂ ܘܫܒܠܬܐ ܠܝܬ ܠܗܘܢ܂ ܘܐܦܠܐ ܩܛܠܐ ܕܥܒܕ ܩܡܚܐ܂ ܘܐܠܘ ܥܒܕ ܗܘܐ ܠܗܘܢ܂
ܢܟܪܝܐ ܐܟܠܝܢ ܗܘܘ ܠܗ܂ * ܐܬܒܠܥ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܘܗܫܐ ܗܘܘ ܒܥܡܡܐ܂ ܐܝܟ ܡܐܢܐ ܕܠܝܬ 8
ܒܗ ܨܒܝܢܐ܂ * ܡܛܠ ܕܗܢܘܢ ܣܠܩܘ ܠܐܬܘܪ܂ ܐܝܟ ܥܪܕܐ ܝܚܝܕܝܐ܂ ܐܦܪܝܡ ܡܘܗܒܬܐ ܪܚܡ܂ 9
* ܐܦܢ ܢܬܡܣܪܘܢ ܒܥܡܡܐ܂ ܐܟܢܫ ܐܢܘܢ܂ ܘܢܬܬܢܝܚܘܢ ܩܠܝܠ ܡܢ ܡܘܒܠܐ ܕܡܠܟܐ 10
ܘܕܫܠܝܛܢܐ܂ * ܡܛܠ ܕܐܣܓܝ ܐܦܪܝܡ ܡܕܒܚܐ ܠܡܚܛܐ܂ ܘܗܘܘ ܠܗ ܡܕܒܚܐ 11
ܠܚܛܗܐ ܪܒܐ܂

Humiliatus eſt faſtus Iſraelis in conſpectu ejus, 10 attamen converterunt ſe ad Dominum Deum ſuum neq; requiſiverunt eum. Sed factus eſt 11 Aphrem ſimilis colũbæ ſtolidæ corde carenti: Ægyptum adierunt, & ad Aſſur profecti ſunt. Quocunq; abierint, expandam ſuper eos rete 12 meum, & ut volucres cœli deſcendere faciam eos, & caſtigabo eos ſecundùm auditũ conteſtationis eorũ. Væ illis quòd à me migrârint: 13 malum adducam ſuper eos quòd perfidè mecum egerint: ego enim redemi eos, ipſi verò locuti ſunt contra me mendacium: Neque 14 clamaverunt ad me ex toto animo ſuo; ſed gemuerunt ſuper cubili ſuo, de frumento deque vino anxii, & rebellârunt contra me: Ideò 15 caſtigavi: corroboravi brachium eorum, & contra me machinati ſunt malum. Obliquârunt 16 ſe nulla de cauſa, & facti ſunt velut arcus fallax: gladio occumbent magnates eorum ob audaciam linguæ ſuæ; talis erit implicatio eorum, qualis fuit in terra Ægypti.

CAP. VIII.

Os tuum ut buccina ſit, & ut aquila contra 1 domum Dñi: quia tranſgreſſi ſunt fœdus meum, & in legem meam ſceleratè ſe geſſerunt, Ad me clamant, & dicunt; Agnoſcimus te 2 Deus noſter. Oblitus eſt Iſrael probitatis, 3 ideò perſecut⁹ eſt eos inimicus. Regnaverunt, 4 ſed non ex me; dominati ſunt, at non monuerunt me: argentum & aurũ ſuum verterunt ſibi in idola, ut perirent. Erraverunt ob vitulum 5 tuum O Samaria, ideò exarſit in eos ira mea; quouſq; non poterunt innocenter agere? Nam 6 ab Iſraele fuit is *vitulus*, & artifex compoſuit illum; proinde non eſt Deus, ſed ad errorem fuit vitulus tuus O Samaria. Quia ventum 7 ſeruerunt, etiam turbinem meſſuerunt, nec habent culmum, neque ſpicam producentem farinam: & ſi haberent, extranei comederent eam. Abſorpti ſunt Iſraelitæ, & facti jam 8 ſunt inter gentes quaſi vas nullius uſûs: Quoniam 9 iſti aſcenderunt ad Aſſur quaſi onager ſolitarius, Aphrem dona dilexit. Quamvis 10 tradantur inter gentes, congregabo *tamen* eos, ut quieſcant pauliſper ab onere regum & principum. Quia multiplicavit Aphrem altaria 11 ad peccandum, & fuerunt ei altaria ad crimen ingens:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ويذل كبرياء اسرايل الي وجهه * ولم يرجعوا الي الرب الههم * ولم يطلبوه في جميع هذه 10
* وكان افرام مثل حمامة جاهلة ليس لها قلب طلب مصر ومضوا الي الموصليين * وحيثما 11 12
يمضون ابسط عليهم شبكتي * كطاير السماء انزلهم * اودبهم بسماع شدتهم * ويل لهم 13
لانهم بعدوا عني * هم اشقياء لانهم نافقوا علي * وانا انقذتهم * وهم تكلموا علي كذبا * ولم 14
يصرخوا الي قلوبهم * لكن ولولوا في مضاجعهم انقطعوا بالقمح والخمر * ادبوا بي * وانا قويت 15
اذرعهم * وعلي فكروا شرا * عادوا الي لا شي * صاروا مثل قوس موتور * يسقط بالسيف رؤساوهم 16
لعدم ادب لسانهم * هكذا طلاحهم بمصر *

* الفصل الثامن *

* في حضنهم مثل الارض * مثل نسر علي بيت الرب * من اجل انهم تعدوا عهدي * 1
ونافقوا علي ناموسي * يصرخون الي اللهم عرفناك * ان اسرايل رد عنه الصلاح * طردوا 2 3
العدو * ملكوا من ذواتهم وليس من قبلي * راسوا ولم يعرفوني * فضتهم وذهبهم صنعوهم 4
اصناما كي يستاصلوا * دق عجلك يا سامرة * احتد غضبي عليهم * الي متي لا 5
يستطيعون ان يتطهروا في اسرايل * صنعه نجار وليس هو اله * من اجل ان عجلك 6
هو مضل يا سامرة * انهم زرعوا ريحا فاسدة * وحصدهم يقبلها * اغمار ليس لها قوة لتصنع 7
دقيقا * وان هي صنعت تاكله الغرباء * ابتلع اسرايل * الان صار في الامم مثل اناء غير 8
صالح * لانهم صعدوا الي الموصليين * خصب افرام في ذاته * احبوا الرشا * لاجل هذا 9 10
يسلمون للامم * الان اقبلهم ويهدون قليلا ليمسحوا ملكا ورؤساء * لان افرام اكثر المذابح 11
مذابحه المحبوبة صارت له للخطية *

Deprimitur arrogantia Iſraelis ante faciem ipſius, attamen non ſunt reverſi ad Dominum Deum ſuum, neque quæſierunt eum cum his omnibus. 10 *Et factus eſt Aphrem ut columba ſtulta, mente carens: quæſivit Ægyptum, & iverunt ad Aſſyrios.* 11 *At quocunque abierint, expandam ſuper eos rete meum, ut aves cœli deſcendere faciam eos, caſtigabo eos in auditu tribulationis ſuæ.* 12 *Væ illis, quia receſſerunt à me: miſeri ſunt, quia impiè geſſerunt in me, cùm ego redemerim eos: & ipſi locuti ſunt contra me mendaciter:* 13 *Et non clamaverunt ad me corda eorum, ſed ululaverunt in cubilibus ſuis: exciſi ſunt propter frumentum & vinum:* 14 *Caſtigati fuerunt per me: ego confirmaveram brachia eorum, contra me tamen cogitaverunt malum.* 15 *Converterunt ſe ad nihil, facti ſunt velut arcus intentus: occumbent gladio principes eorum ob ineruditionem linguæ eorum. Sic improbitas eorum in Ægypto,* 16

CAP. VIII.

Fuit in ſinu eorum ſicut terra, ſicut aquila ſuper domum Domini; quia tranſgreſſi fuerant fœdus meum, & impiè ſe geſſerant contra legem meam. 1 *Clamant ad me; O Deus, cognoſcimus te.* 2 *Etenim Iſrael avertit à ſe bonitatem: perſecuti ſunt inimicum.* 3 *Regnaverunt à ſemetipſis, non à me: principes facti ſunt, nec indicaverunt mihi: argentum & aurum ſuum conflaverunt in idola, ut eradicarentur.* 4 *Comminue vitulum tuum O Samaria: efferbuit in eos ira mea: quouſque non poterunt mundare ſe in Iſraele?* 5 *Fecit illum faber, nec Deus eſt: quia vitulus tuus ſeductor eſt O Samaria;* 6 *Ideò ventum fœtidum ſeminaverunt, & ſubverſio eorum ſuſcipiet eum; manipuli non valentes facere farinam, & ſi fecerint, comedent eam extranei.* 7 *Abſorptus eſt Iſrael, jam factus eſt inter gentes quaſi vas inutile.* 8 *Quia aſcenderunt ad Aſſyrios, uber factus eſt Aphrem in ſemetipſo: dilexerunt munera,* 9 *Ideò tradentur gentibus. Nunc recipiam eos, & quieſcent paulumper; ut ungant regem & principes.* 10 *Quia Aphrem multiplicavit altaria, altaria ſua dilecta ceſſerunt ei in peccatum;* 11

הושע : ט

Hoſtiis .ſunt reputata *alienum* ſicut : meæ legis *præcipua* ei Scripſi
12 אכתוב־לו רבו תורתי כמו־זר נחשבו : זבחי 13
non Dominus ,comederunt & , carnem ſacrificaverunt meorum donorum
הבהבי יזבחו בשר ויאכלו יהוה לא
,eorum peccata viſitabit & ,eorum iniquitatis recordabitur nunc : ea *voluit*
רצם עתה יזכר עונם ויפקד חטאתם
, ſui factoris Iſrael eſt oblitus Et .revertentur Ægyptum ipſi
המה מצרים ישובו : וישכח ישראל את־עשהו 14
: munitas urbes multiplicavit Jehudah & , *templa* ædificavit &
ויבן היכלות ויהודה הרבה ערים בצרות
.ejus ædes *comedet* & , ejus civitates in ignem mittam &
ושלחתי אש בעריו ואכלה ארמנתיה :

CAP. IX. ט

es fornicatus quia ,populi ſicut exultationem ad Iſrael læteris Ne
1 אל־תשמח ישראל אל־גיל כעמים כי זנית
Area .tritici areas omnes ſuper mercedem dilexiſti : tuo Deo *deſuper*
2 מעל אלהיך אהבת אתנן על כל־גרנות דגן : גרן
habitabunt Non .ea in mentietur muſtum & ; eos paſcet non torcular &
3 ויקב לא ירעם ותירוש יכחש בה : לא ישבו
polluta Aſſur in & ,Ægyptum Ephraim revertetur & ; Domini terra in
בארץ יהוה ושב אפרים מצרים ובאשור טמא
eorum ſacrificia ,ei *dulceſcent* nec,vinum Domino libabunt Non .comedent
4 יאכלו : לא־יסכו ליהוה יין ולא יערבו־לו זבחיהם
quia ; ſe contaminabunt,eum *comedentes* omnes ; eis lugentium panis ſicut
כלחם אונים להם כל־אכליו יטמאו כי
facietis Quid .Domini domum intrabit non eorum *animæ* eorum panis
5 לחמם לנפשם לא יבוא בית יהוה : מה־תעשו
abierunt ecce Quia ? Domini feſtivitatis die in & ; ſolemnitatis die in
6 ליום מועד וליום חג־יהוה : כי־הנה הלכו
deſiderium:eos ſepeliet Moph,eos congregabit Ægyptus,vaſtitatem propter
משד מצרים תקבצם מף תקברם מחמד
Venerunt .eorum tabernaculis in *ſpina* ,*ea poſſidebit* urtica ,eorum argenti
7 לכספם קימוש יירשם חוח באהליהם : באו
ſtultum ; Iſrael ſcient ,retributionis dies venerunt ,viſitationis dies
ימי הפקדה באו ימי השלם ידעו ישראל אויל
,tuæ iniquitatis multitudine *ſuper* , *venti* virum ,furioſum ,prophetam
הנביא משגע איש הרוח על רב עונך
; meo Deo cum Ephraim Speculatorem .odium multum &
8 ורבה משטמה : צפה אפרים עם־אלהי
domo in odium , ejus vias omnes ſuper aucupis laqueus ,prophetam
נביא פח יקוש על־כל־דרכיו משטמה בבית
recordabitur ;Ghibhah dies ſecundùm corruperunt,*Profundaverunt*.ejus Dei
9 אלהיו : העמיקו שחתו כימי הגבעה יזכור
deſerto in uvas Tanquam .eorum peccata viſitabit , eorum iniquitatis
10 עונם יפקוד חטאותם : כענבים במדבר
vidi ejus *principio* in ,ficu in *maturum fructum* veluti Iſrael inveni
מצאתי ישראל כבכורה בתאנה בראשיתה ראיתי
, *pudori* ſe ſeparaverunt &,Pehor-Bahal ſunt ingreſſi ipſi : veſtros patres
אבותיכם המה באו בעל־פעור וינזרו לבשת
avis tanquā Ephraim .eorum amorem ſecundùm abominationes fuerunt &
11 ויהיו שקוצים כאהבם : אפרים כעוף
Quia .conceptu à & , utero ab & ,partu à ; eorum gloria , avolabit
12 יתעופף כבודם מלדה ומבטן ומהריון : כי
væ etiam quia ; *homine ab* eos orbabo & , ſuos filios enutrierint ſi
אם־יגדלו את־בניהם ושכלתים מאדם כי־גם־אוי
.eis ab *me recedendo in* eis
להם בשורי מהם :

Verſio VULG. LAT.

12 Scribā ei multiplices leges meas, quæ velut alienæ computatæ ſunt. 13 Hoſtias offerent, immolabunt carnes, & comedent, & Dominus non ſuſcipiet eas: nunc recordabitur iniquitatis eorum, & viſitabit peccata eorum: ipſi in Ægyptum convertentur. 14 Et oblitus eſt Iſrael factoris ſui, & ædificavit delubra: & Judas multiplicavit urbes munitas: & mittam ignem in civitates ejus, & devorabit ædes illius.

CAP. IX.

1 Noli lætari Iſrael, noli exultare ſicut populi: quia fornicatus es à Deo tuo, dilexiſti mercedem ſuper omnes areas tritici. 2 Area & torcular non paſcet eos, & vinum mentietur eis. 3 Non habitabunt in terra Domini: reverſus eſt Ephraim in Ægyptum, & in Aſſyriis pollutum comêdit. 4 Non libabunt Domino vinum, & non placebunt ei: ſacrificia eorum, quaſi panis lugentium: omnes, qui comedent eum, contaminabuntur: quia panis eorum animæ ipſorū, non intrabit in domum Domini. 5 Quid facietis in die ſolenni, in die feſtivitatis Domini? 6 Ecce enim profecti ſunt à vaſtitate: Ægyptus congregabit eos, Memphis ſepeliet eos: deſiderabile argentum eorum urtica hæreditabit, lappa in tabernaculis eorum. 7 Venerunt dies viſitationis, venerunt dies retributionis: ſcitote, Iſrael, ſtultum prophetam, inſanum virum ſpiritualem, propter multitudinem iniquitatis tuæ, & multitudinem 8 amentiæ. Speculator Ephraim cum Deo meo: propheta laqueus ruinæ factus eſt ſuper omnes vias ejus, inſania in domo Dei ejus. 9 Profundè peccaverunt, ſicut in diebus Gabaa: recordabitur iniquitatis eorum, & viſitabit peccata eorum. 10 Quaſi uvas in deſerto, & inveni Iſrael: quaſi prima poma ficulneæ in cacumine ejus, vidi patres eorum: ipſi autem intraverunt ad Beelphegor, & abalienati ſunt in confuſionem, & facti ſunt abominabiles, ſicut ea quæ dilexerunt. 11 Ephraim quaſi avis avolavit, gloria eorum à partu, & ab utero, & à 12 conceptu. Quòd & ſi enutrierint filios ſuos, abſque liberis eos faciam in hominibus: ſed & væ eis cùm receſſero ab eis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 Καταγράψω αὐτῷ πλῆθος, ϗ τὰ νόμιμα αὐτοῦ εἰς ἀλλότρια ἐλογίσθησαν, θυσιαστήρια τὰ ἠγαπημένα. 13 Διότι ἐὰν θύσωσι θυσίαν, ϗ φάγωσι κρέα, κύριος οὐ προσδέξεται αὐτά. νῦν μνησθήσεται τὰς ἀδικίας αὐτῶν, ϗ ἐκδικήσει τὰς ἁμαρτίας αὐτῶν· αὐτοὶ (θ) εἰς Αἴγυπτον ἀπέστρεψαν, ϗ ἐν 14 Ἀσσυρίοις ἀκάθαρτα φάγονται. Καὶ ἐπελάθετο Ἰσραὴλ τοῦ ποιήσαντος αὐτὸν, ϗ ᾠκοδόμησε τεμένη· ϗ Ἰούδας ἐπλήθυνε πόλεις τετειχισμένας. ϗ ἐξαποστελῶ πῦρ εἰς τὰς πόλεις αὐτοῦ, ϗ καταφάγεται τὰ θεμέλια (ι) αὐτῶν. MS. A. (θ) ἢ εἰς (ι) αὐτοῦ.

ΚΕΦ. Θʹ.

1 Μὴ χαῖρε Ἰσραὴλ, μηδὲ εὐφραίνου καθὼς οἱ λαοὶ, διότι ἐπόρνευσας ἀπὸ τοῦ θεοῦ σου· ἠγάπησας δόματα ἐπὶ πάντα ἅλωνα 2 σίτου. Ἅλων ϗ ληνὸς οὐκ ἔγνω αὐτοὺς, ϗ ὁ 3 οἶνος ἐψεύσατο αὐτούς. Οὐ κατῴκησαν ἐν τῇ γῇ τοῦ κυρίου· κατῴκησεν Ἐφραὶμ (α) Αἴγυπτον, ϗ ἐν Ἀσσυρίοις ἀκάθαρτα φά-4 γονται. Οὐκ ἔσπεισαν τῷ κυρίῳ οἶνον, ϗ οὐκ (β) ἥδυναν αὐτῷ· αἱ θυσίαι αὐτῶν, ὡς ἄρτος πένθους αὐτοῖς· πάντες οἱ (γ) ἐσθίοντες αὐτὰ μιανθήσονται, διότι οἱ ἄρτοι αὐτῶν ταῖς ψυχαῖς αὐτῶν οὐκ εἰσελεύσονται εἰς 5 (δ) τὸν οἶκον κυρίου. Τί ποιήσετε ἐν (ε) ἡμέραις πανηγύρεως, ϗ ἐν (ζ) ἡμέρᾳ ἑορτῆς 6 τοῦ κυρίου; Διὰ τοῦτο ἰδοὺ (η) πορεύονται ἐκ ταλαιπωρίας Αἰγύπτου, ϗ ἐκδέξεται αὐτοὺς Μέμφις, ϗ θάψει αὐτοὺς Μαχμάς· τὸ ἀργύριον αὐτῶν ὄλεθρος (θ) κληρονομήσει αὐτὸ, ἄκανθαι ἐν τοῖς σκηνώμασιν αὐ-7 τῶν. Ἥκασιν αἱ ἡμέραι τῆς (ι) ἐκδικήσεως, ἥκασιν αἱ ἡμέραι τῆς ἀνταποδόσεώς σου, ϗ κακωθήσεται Ἰσραὴλ ὥσπερ ὁ προφήτης ὁ παρεξεστηκὼς, ἄνθρωπος ὁ πνευματοφόρος. ὑπὸ τοῦ πλήθους τῶν ἀδικιῶν σου ἐπληθύνθη 8 (κ) μανία σου. Σκοπὸς Ἐφραὶμ μετὰ θεοῦ· προφήτης παγὶς σκολιὰ ἐπὶ πάσας τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ, μανίαν ἐν οἴκῳ (ꝺ) θεοῦ κατέπη-9 ξαν. Ἐφθάρησαν κατὰ τὰς ἡμέρας τοῦ βουνοῦ, μνησθήσεται ἀδικίας (λ) αὐτῶν, ἐκδικήσει ἁ-10 μαρτίας αὐτῶν. Ὡς σταφυλὴν ἐν ἐρήμῳ εὗρον τὸν Ἰσραὴλ, ϗ ὡς σκοπὸν ἐν συκῇ πρώϊμον (μ) πατέρας αὐτῶν εἶδον. αὐτοὶ εἰσῆλθον πρὸς τὸν Βεελφεγὼρ, ϗ ἀπηλλοτριώθησαν εἰς αἰσχύνην, ϗ ἐγένοντο (ν) οἱ ἐβδελυγμένοι, 11 ὡς οἱ ἠγαπημένοι. Ἐφραὶμ ὡς ὄρνεον ἐξεπετάσθη, αἱ δόξαι αὐτῶν ἐκ τόκων ϗ ὠ-12 δίνων ϗ συλλήψεων. Διότι ϗ ἐὰν ἐκθρέψωσι τὰ τέκνα αὐτῶν, ἀτεκνωθήσονται ἐξ ἀνθρώπων· διότι ϗ οὐαὶ αὐτοῖς ἐστι· σάρξ μου ἐξ αὐτῶν.

MS. A. (α) εἰς Αἴγυπτον, (β) ἥδυναντο (γ) ἔσθοντες (δ) οἶκον (ε) ἡμέρᾳ (ζ) ἡμέραις (η) πορεύσονται (θ) κληρονομήσει, ἄκανθαι (ι) ἐκδικήσεώς σου, (κ) * μνεία σου. (ꝺ) κυρίου κατέπηξαν. (λ) αὐτοῦ, ϗ ἐκδικήσει ἁμαρτίας αὐτοῦ. (μ) εἶδον πατέρας αὐτῶν. (ν) οἱ ἠγαπημένοι ὡς ἐβδελυγμένοι,

Scribam ei multitudinem: & legitima ejus in aliena reputata ſunt, altaria (f) dilecta. Quia ſi immolaverint hoſtiam, & comederint carnes; Domin⁹ non ſuſcipiet ea. Nunc recordabitur iniquitates eorum, & ulciſcetur peccata eorum. Ipſi in Ægyptum converſi ſunt: (g) & in Aſſyriis immunda comedent. Et oblitus eſt Iſrael eum, qui fecit illum: & ædificaverunt delubra. Et Judas multiplicavit urbes muratas. Et emittam ignem in civitates ejus: et devorabit fundamēta (h) eārū. 12 13 14

CAP. IX.

Noli gaudere Iſrael, & noli lætari, ſicut populi: quia fornicatus es à Deo tuo. Dilexiſti munera ſuper omnem aream tritici: Area, & torcular non cognovit eos: & vinum mentitum eſt illis. Non habitaverunt in terra Domini: habitavit Ephrem Ægyptū: et in Aſſyriis immunda (a) comedent. Non libaverunt Domino vinum, & non placuerunt ei. Sacrificia eorum, quaſi panis luctûs eis: omnes, qui manducaverunt ea, contaminabuntur: quia panes (b) eorum animabus eorum, non intrabūt in domū Domini. Quid facietis in dieb⁹ conventûs, & in die ſolemnitatis Domini? Ideò ecce (c) vadunt de miſeria Ægypti: & ſuſcipiet eos Memphis: & ſepeliet eos (d) Machmas: argentū eorū, interitus poſſidebit illud: ſpinæ in tabernaculis eorum. Venerunt dies ultionis, venerūt dies retributionis *tuæ: et affligetur Iſrael, ſicut propheta inſaniens, homo (e) qui à ſpiritu agitatur. Propter multitudinem iniquitatū tuarū, multiplicata eſt (f) amentia tua. Speculator Ephrem cū Deo: propheta laqueus tortuoſus ſuper omnes vias ejus: inſaniam in domo Dei confixerunt. Corrupti ſunt ſecundùm dies collis: recordabitur iniquitates eorum, ulciſcetur peccata eorum. Sicut uvā in deſerto, inveni Iſrael: & ſicut (g) ſcopum in ficu temporaneā vidi patres eorum. Ipſi ingreſſi ſunt ad Beelphegor, & abalienati ſunt in confuſionem: et facti ſunt (h) abominabiles; ſicut dilecti. Ephræm quaſi avis avolavit: gloriæ eorum ex partu, et parturitionib⁹, & conceptibus: Quia, etiam ſi enutrierint filios ſuos; ſine filiis erunt ex hominibus: quia & væ eis eſt; (i) caro mea ex eis.* 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 כתבית להון סניאות אוריתי ואנון כעממיא אתחשיבו : דבחין דמנכן מן אונס 13
דבחין בסרא ואכלין וקדם יי לא רעוא בהון כען יסער חוביהון ויתפרע עויתהון אנון
14 למצרים יתובון : ושבק ישראל ית פולחן עבדיה ובנא היכלין לטעותא ודבית
יהודה אסגיאו קרוין כריכן ואשלח אשתא בקרווהי ותשיצי בירניתהא :

ט

1 לא תחדון דבית ישראל ולא תבועון כנימוסי עממיא ארי טעיתון מבתר פולחנא
2 דאלהכון רחמתון למפלח לטעותא על כל אדרי עבורא : מאדרא ומעצרתא לא יתזונון
3 וחמרא לא יסופיק להון : לא יתובון בארע שכנתא דיי ויתובון דבית אפרים למצרים
4 לאתור יגלון מסאב ייכלון : לא ינסכון קדם יי נסכין דחמר ולא יתקבלון לרעוא
קורבניהון דבחיהון כלחם מרחק להון כל דייכלניה יסתאב ארי קורבניהון על נפשהון
5 לא מכפר להון בבית מקדשא דיי : מה תעבדון ליום מועדא וליום חגא דיי : ארי 6
הא יגלון מן קדם בזוזין למצרים יתכנשון למפיס יתקברון בית חמדת כספהון
7 קרסלין ישרון בהון חתולין בבירניתהון : אתו יומי סעורנא אתו יומי תשלמת חובין
ידעון דבית ישראל דהוו מתנבן להון נביי קושטא ומשעממין להון נביי שקרא על
8 דאסגיאו חובך ותקיפו חטאך : מסכן בית ישראל די יתקים להון פולחן טעותא
9 לנבייהון קולין צלן על כל אורחתהון מסגן תקלא בבית מקדשא דאלההון : אסגיאו
10 לחבלא כיומי גבעתא יסער חוביהון ויתפרע עויתהון : כגופן דשתיל על עינא
דמיא כן במדברא ארע מימרי לישראל כבכורה בתאנתא די באול מאבבא חב בית
11 אבהתכון ואנון אתחברו לבעל פעור וטעו לבהתא והוו שקוצין כרחמיהון : בית
ישראל כעופא דאפרחיהי מקניה ואטלטל כן גלא יקרהון ולד לא יסגון ומפרי
12 מעיהון לא יחדון ועל דאתמנעו רגליהון מלאתחזאה בבית מקדשי : ארי אם ירבון
ית בניהון ואתכלנון מלמהוי גברין ארי וי להון כד איסלק שכינתי מנהון :

PARAPH CHALD. Verſio Latina.

Conſcripſi eis multiplicitatem legis meæ: ipſi autem velut gentes reputati ſunt. 12 Sacrificant quæ ex rapina colligunt, mactant carnes & veſcuntur; 13 ſed non eſt beneplacitum coram Dño in eis. Nunc viſitabit peccata eorum & ulciſcetur iniquitates eorum; ipſi in Ægyptum revertentur. Et dimiſit 14 Iſrael cultum factoris ſui, & extruxit templa idolis; viri verò domus Jehuda multiplicaverunt civitates munitas: ſed immittam ignem in civitates ejus & conſumet palatia ejus.

CAP. IX.

Ne lætemini viri domus Iſrael, neq; exultetis juxta conſuetudines popu- 1 lorum, aberrâſtis namque à cultu Dei veſtri: dilexiſtis ſervire idolis pro omnibus areis frumenti. Ab area, & à torculari non nutrientur, vinum non 2 ſufficiet eis. Non habitabunt in terra majeſtatis Dñi, ſed revertentur viri 3 domus Ephraim in Ægyptum & ad Aſſur migrabunt, immundum comedent. Non libabunt coram Dño libamina vini, nec ſuſcipientur cum beneplacito 4 oblationes eorum; ſacrificia eorum erunt eis inſtar panis abominabilis: omnis qui eo veſcetur contaminabitur, nequaquam enim eorum oblatio expiabit pro ipſis animas eorum in æde ſanctuarii Dñi. Quid facturi eſtis in 5 die ſolennitatis atque in die feſtivitatis dominicæ? Ecce namque extorres 6 erunt à facie vaſtatorum; in Ægyptum congregabuntur, in Memphi ſepelientur: in domo deſiderabili argenti eorum urticæ degent, & cati erunt in eorum prætoriis. Advenerunt dies animadverſionis, ingruerunt dies re- 7 tributionis peccatorum: ſcient qui ex domo Iſrael, prophetas illis prædixiſſe veritatem: tenebras verò illis offudiſſe pſeudoprophetas, ita ut adaugerent iniquitates tuas, & confortarent peccata tua. Proſpicientes qui ſunt ex domo 8 Iſrael, quò permaneat eis cultus idolorum ſuorum; prophetis ſuis laqueos tendunt ſuper omnes eorum vias, multiplicant laqueos in domo ſanctuarii Dei ſui. Adauxere corruptionem ſicut in diebus Gabaa; pœnas ſumet pec- 9 catorum eorum, puniet illorum iniquitates. Sicut vitis quæ plantata eſt 10 juxta fontem aquarum, ſic in deſerto occurrit verbum meum Iſraeli; quaſi primos fructus in ficu, quos in principio producit, dilexi patres veſtros: Ipſi verò adjunxerunt ſe Beel-Peor, & erraverunt in confuſione, & facti ſunt abominabiles ſecundùm quod dilexerunt. Domus Iſrael, ſicut avis, quam 11 abegerunt à nido ſuo, transfert ſe; ſic receſſit gloria eorum: liberos non multiplicabunt, & ob fructum ventris ſui non lætabuntur, quòd prohibuerint 12 pedes ſuos ne comparerēt in domo ſanctuarii mei. Nam etiamſi enutrierint filios ſuos, orbabo eos ne in viros evadant; quia etiam væ eis cùm ſuſtulero majeſtatē meam ab eis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܟܬܒܬ ܠܗ ܣܘܓܐܐ ܕܢܡܘܣܝ. ܘܐܝܟ ܢܘܟܪܝܬܐ ܚܫܒ ܐܢܝܢ ܠܡܠܝ. * ܕܒܚܐ 12
ܓܒܝܐ ܡܕܒܚܝܢ ܘܒܣܪܐ ܐܟܠܝܢ. ܘܡܪܝܐ ܠܐ ܨܒܐ ܒܗܘܢ. ܡܟܝܠ ܢܥܗܕ ܥܘܠܗܘܢ 13
ܘܢܣܥܘܪ ܚܛܗܝܗܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܠܡܨܪܝܢ ܢܗܦܟܘܢ. * ܛܥܐ ܐܝܣܪܝܠ ܠܥܒܕܗ ܘܒܢܐ 14
ܗܝܟܠܐ. ܘܝܗܘܕܐ ܐܣܓܝ ܡܕܝܢܬܐ ܥܫܝܢܬܐ. ܘܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܡܕܝܢܬܗ
ܘܬܐܟܘܠ ܐܫܬܐܣܘܗܝ. * ܦܘܠܓܐ * ܛ * ܠܐ ܬܚܕܐ ܐܝܣܪܝܠ :: ܘܠܐ 1
ܬܪܘܙ ܐܝܟ ܥܡܡܐ. ܡܛܠ ܕܛܥܝܬ ܡܢ ܐܠܗܟ. ܘܪܚܡܬ ܡܘܗܒܬܐ ܡܢ ܟܠ ܐܕܪܐ. * ܡܢ 2
ܐܕܪܐ ܘܡܢ ܡܥܨܪܬܐ ܠܐ ܢܣܒܥܘܢ. ܘܡܫܚܐ ܢܟܕܒ ܒܗܘܢ. * ܠܐ ܢܬܒܘܢ ܒܐܪܥܗ ܕܡܪܝܐ. 3
ܐܠܐ ܢܗܦܘܟ ܐܦܪܝܡ ܠܡܨܪܝܢ. ܘܒܐܬܘܪ ܛܢܦܘܬܐ ܢܐܟܠܘܢ. * ܠܐ ܢܢܩܘܢ ܠܡܪܝܐ ܚܡܪܐ. 4
ܘܠܐ ܢܒܣܡܘܢ ܠܗ ܕܒܚܝܗܘܢ. ܐܝܟ ܠܚܡܐ ܕܐܒܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ. ܟܠ ܐܟܘܠܘܗܝ
ܢܬܛܢܦܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܚܡܐ ܕܢܦܫܗܘܢ. ܠܐ ܢܥܘܠ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܢܐ ܬܥܒܕܘܢ 5
ܒܝܘܡܐ ܕܥܐܕܐ. ܘܒܝܘܡܐ ܕܥܐܕܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܗܢܘܢ ܐܙܠܘ ܠܒܙܬܐ. ܘܡܨܪܝܢ ܬܟܢܫ 6
ܐܢܘܢ. ܘܡܦܝܣ ܬܩܒܘܪ ܐܢܘܢ. ܪܓܝܓܐ ܕܣܐܡܗܘܢ. ܢܘܟܪܝܐ ܢܐܪܬܘܢܝܗܝ. ܘܟܘܒܐ
ܒܡܫܟܢܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܐܬܘ ܝܘܡܬܐ ܕܬܒܥܬܐ. ܡܛܘ ܝܘܡܬܐ ܕܦܘܪܥܢܐ. ܢܕܥ ܐܝܣܪܝܠ ܣܟܠܐ 7
ܢܒܝܐ ܫܛܝܐ. ܓܒܪܐ ܕܠܒܝܫ ܠܗ ܪܘܚܐ ܕܫܛܝܘܬܐ. ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܥܘܠܟ. ܐܣܓܝܬ
ܙܢܝܘܬܟ. * ܕܘܩܐ ܐܦܪܝܡ ܥܡ ܐܠܗܝ. ܢܒܝܐ ܦܚܐ ܕܬܘܩܠܬܐ. ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܐܘܪܚܬܗ. 8
ܘܙܢܝܘܬܐ ܒܒܝܬܗ ܕܐܠܗܐ. * ܥܡܩܘ ܘܚܒܠܘ ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܓܒܥܬܐ. ܡܟܝܠ ܢܥܗܕ 9
ܥܘܠܗܘܢ. ܘܢܣܥܘܪ ܚܛܗܝܗܘܢ. * ܐܝܟ ܥܢܒܐ ܒܡܕܒܪܐ ܐܫܟܚܬ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܝܟ 10
ܬܐܬܐ ܒܟܘܪܬܐ ܚܙܝܬ ܠܐܒܗܝܗܘܢ. ܘܗܢܘܢ ܥܠܘ ܠܒܥܠ ܦܥܘܪ. ܘܐܬܢܙܪܘ ܠܒܗܬܬܐ.
ܘܗܘܘ ܫܩܘܨܐ ܐܝܟ ܕܪܚܡܘ. * ܐܦܪܝܡ ܐܝܟ ܦܪܚܬܐ ܦܪܚ ܐܝܩܪܗܘܢ. ܡܢ ܡܘܠܕܐ 11
ܘܡܢ ܟܪܣܐ. ܘܡܢ ܒܛܢܐ. * ܐܦ ܐܢ ܢܪܒܘܢ ܒܢܝܐ. ܐܚܪܒ ܐܢܘܢ ܡܢ ܒܢܝܢܫܐ. ܡܛܠ 12
ܕܘܝ ܠܗܘܢ. ܡܬܦܪܥ ܐܢܐ ܡܢܗܘܢ.

* Cúmque præſcripſiſſem ei multitudinem le- 12
gum mearum, tamen ut peregrina reputavit
verba mea : Victimas ſelectas ſacrificant, & 13
carnem edunt; quibus non oblectatur Domi-
nus : Ideò recordabitur iniquitatis eorum, &
viſitabit peccata eorum, & ipſi in Ægyptum
revertentur. Oblitus eſt Iſrael factoris ſui,& 14
extruxit templa : Juda multiplicavit urbes
munitas, at immitam ignem in urbes ejus,
conſumétque arces ejus.

CAP. IX.

NE ſlæteris Iſrael néve exultes,more genti- 1
um,eò quòd aberraveris à Deo tuo,& munera
dilexeris ex omnibus areis. At ab area & à 2
torculari non ſaturabuntur, & oleum fallet
eos. Non permanebunt in terra Domini, ſed 3
revertetur Aphrem in Ægyptum,& in Aſſyria
contaminatione veſcentur.Non libabunt Do- 4
mino vinum,neque condient eo ſacrificia ſua:
perinde ac panis anguſtiæ erit illis : omnes
comedentes eum polluentur, quia panis ani-
mæ ipſorum non ingredietur in domum Dñi.
Quid facietis die feſto,& die ſolennitatis Do- 5
mini ? Nam iſti in prædam abierunt,Ægyptus 6
colliget eos, & Mephes ſepeliet eos, exquiſitũ
argentum eorũ extranei poſſidebunt, & ſpinæ
orientur in tentoriis eorum. Advenerunt dies 7
animadverſionis, inſtant dies retributionis :
agnoſcet Iſrael demens prophetam ſtultum,
virum indutum ſpiritu ſtultitiæ : propter mul-
titudinem ſceleris tui,crevit laſcivia tua. Spe- 8
culator eſt Aphrem cum Deo meo, propheta
laqueus offenſionis eſt ad omnes vias ejus, &
laſcivia in domo Dei. In ima penetrârunt, 9
& corruptionem commiſerunt,ut diebus col-
lis : proinde recordabitur iniquitatis eorum,
& viſitabit peccata eorum. Ut uvas in deſerto 10
repereram Iſraelem,atque ut ficum præcocem
videram patres eorum : verùm ipſi ingreſſi
ſunt ad Beel-phegor, & nazaræos ſe fecerunt
ignominiæ, & dediderunt ſe abominationi
prout amaverunt. Aphremitarum gloria tan- 11
quam volucris avolavit,inde à partu,à ventre,
& à conceptu. Etiamſi filios educaverint,ex- 12
tinguam eos ex hominibus : nam, væ illis,ul-
tionem ſumpturus ſum ab eis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* اروع له كثير وشرايعي حسبت غريبات * المذابح المحبوبة * من اجل انهم ان ذبحوا ذبيحة 12 13
فياكلون لحما * الرب لا يقبلها * الآن يذكر مظالمهم * وينتقم خطاياهم * هم رجعوا الى مصر
وفي الموصليين ياكلون الانجاس * ونسي اسرائيل صانعه * وبنوا هياكل * ويهودا اكثر 14
المدن المحصنة * فارسل نارا الى مدنه وتاكل اساساتها * الفصل التاسع *
* لا تفرح يا اسرائيل * ولا تسر كمثل الشعوب * لانك ضللت عن الهك * احببت العطايا 1
على كل بيادر الحنطة * البيدر والمعصر لم يعرفاهم * والخمر كذبهم * لم يسكنوا 2 3
ارض الرب * سكن افرام في مصر * وفي الموصليين ياكلون الانجاس * لم يهرقوا خمرا 4
للرب * ولم تطب له ذبائحهم * مثل خبز حزن لهم * جميع الآكلين يتنجسون * من اجل
ان اخبارهم لنفوسهم * لم تدخل الى بيت الرب * ماذا تصنعون في ايام الموسم وفي ايام 5
عيد الرب * لاجل هذا هوذا يسيرون من شقوة مصر * وتقبلهم ممفيس * وتدفنهم مخماس 6
البلاء يرث فضتهم * الاشواك في مساكنهم * اتت ايام الانتقام * اتت ايام مكافاتك * 7
ويتاذا اسرائيل مثل النبي الاحمق * الانسان اللابس الروح * من كثرة ظلاماتك كثر
وسواسك * افرام رقيبه مع الهه * النبي فخ معوج * على جميع طرقه وسواس * انزلوا في 8
بيت الرب * فسدوا كايام الاكمة * يذكر ظلمهم * ينتقم خطاياهم * مثل عنبة في برية 9 10
وجدوا اسرائيل * ومثل ناطور اولي في تينة وجدوا اباهم * هم دخلوا الى باعل فاغور * وتغربوا
للخزي * والمحبوبون صاروا كالمرذولين * افرام طار مثل طائر امجادهم منذ الولاد والطلقات 11
والحبل * من اجل انهم ان ربوا اولادهم سيثكلون من البشر * من اجل ان الويل لهم 12
هو * جسدي منهم افرام *

* *Exagitabo multitudinem ipſius : jura verò* 12
mea reputata ſunt aliena. Altaria di- 13
lecta (quia cùm immolant victimam,
comedunt carnem) Dominus nequaquam
accipit ea. Jam recordabitur impietatum
eorum, & ulciſcetur peccata eorum. Ipſi
reverſi ſunt in Ægyptum, & inter Aſſy-
rios comedent immunda. Oblitus eſt Iſ- 14
rael factoris ſui, & ædificaverunt tem-
pla : Juda quoque multiplicavit urbes
munitas, ſed immittam ignem in urbes
ejus, devorabitque fundamenta earum.

CAP. IX.

NE *gaudeas O Iſrael, néve lateris ut* 1
reliquæ *gentes ; quoniam aberrâſti à Deo*
tuo,amâſti munera ſuper omnes areas fru-
menti. Area & torcular non agnoſcet 2
eos, & vinum mentietur eis. Non ha- 3
bitabunt in terra Domini, habitabit A-
phrem in Ægypto, inter Aſſyrios comedent
immunda. Non libabunt vinum Domi- 4
no, neque placebunt ei ſacrificia eorum,
ut panis mœroris erunt eis ; omnes come-
dentes contaminabuntur : panes enim
eorum pro ipſis ſunt, non ingrediuntur
domum Domini. Quid facietis in die- 5
bus nundinarum, & in diebus feſtis Do-
mini ? Propterea ecce abeuntes eos à 6
miſeria Ægypti, excipiet Memphis, &
ſepeliet eos Machmas, calamitas hæres
erit argenti eorum, & ſentes in habitacu-
lis eorum. Advenerunt dies ultionis, ad- 7
venerunt dies retributionis tuæ : & læde-
tur Iſrael ut propheta inſanus, homo ſpi-
ritum ſimulans : propter multitudinem
impietatum tuarum, multiplicata eſt a-
mentia tua. Aphrem ſpeculator eſt cum 8
Deo ſuo ; propheta laqueus eſt obliquus ;
ſuper omnes vias ejus adeſt amentia : de-
ſcendere fecerunt in domo Domini : Cor- 9
rupti ſunt ut diebus collis, Recordabitur
impietatis eorum , ulciſcetur peccata
eorum. Ut uvam in deſerto repererunt 10
Iſraelem, & ut cuſtodem primum in ficu
repererunt patrem eorum. Ipſi ingreſſi
ſunt ad Baalphegor, & abalienaverunt ſe
turpitudini ; & qui erant dilecti, facti
ſunt ut deſpecti. Aphrem volavit ut a- 11
vis ; gloriæ eorum inde à nativitate,
partu, & conceptu. Nam etſi filios 12
ſuos educaverint, orbabuntur ex homini-
bus : quia væ illis eſt : corpus meum ex
ipſis eſt Aphrem.

הושע : י

Ephraim & :habitaculo in plantata Sor in vidi ut Ephraim
13 אֶפְרַיִם כַּאֲשֶׁר־רָאִיתִי לְצוֹר שְׁתוּלָה בְנָוֶה וְאֶפְרַיִם
quid ,Domine eis Da .suos filios interfectorem ad educendum ad
14 לְהוֹצִיא אֶל־הֹרֵג בָּנָיו׃ תֶּן־לָהֶם יְהוָה מַה־
Omnis .arentia ubera & ,*orbantem* vulvam eis da ?dabis
15 תִּתֵּן תֶּן־לָהֶם רֶחֶם מַשְׁכִּיל וְשָׁדַיִם צֹמְקִים׃ כָּל־
malitiam *super* eos habui exosos ibi quia ,Ghilghal in eorum malitia
רָעָתָם בַּגִּלְגָּל כִּי־שָׁם שְׂנֵאתִים עַל רֹעַ
omnes ,eos *diligere* addam non ; eos ejiciam mea domo è ,eorum *studiorum*
מַעַלְלֵיהֶם מִבֵּיתִי אֲגָרְשֵׁם לֹא אוֹסֵף אַהֲבָתָם כָּל־
,exaruit eorum radix ,Ephraim eſt Percuſſus .declinantes eorũ principes
16 שָׂרֵיהֶם סוֹרְרִים׃ הֻכָּה אֶפְרַיִם שָׁרְשָׁם יָבֵשׁ
deſiderabilia interficiam & ,genuerint *cùm* etiam : faciant non fructum
פְּרִי בְלִי־יַעֲשׂוּן גַּם כִּי יֵלֵדוּן וְהֵמַתִּי מַחֲמַדֵּי
erunt & ;eum audierunt non quia ,meus Deus eos Abjiciet .eorũ uteri
17 בִטְנָם׃ יִמְאָסֵם אֱלֹהַי כִּי לֹא שָׁמְעוּ לוֹ וְיִהְיוּ
.*gentibus in* vagi
נֹדְדִים בַּגּוֹיִם׃

CAP. X. י

,ejus fructũ *multiplicare ſecũdùm* :ſibi ponet fructum , Iſrael vacua Vitis
1 גֶּפֶן בּוֹקֵק יִשְׂרָאֵל פְּרִי יְשַׁוֶּה־לּוֹ כְּרֹב לְפִרְיוֹ
.ſtatuas benefecerunt,ejus terræ *benefacere ſecundùm* ,altaria multiplicavit
הִרְבָּה לַמִּזְבְּחוֹת כְּטוֹב לְאַרְצוֹ הֵיטִיבוּ מַצֵּבוֹת׃
,eorum aras confringet ipſe : deſolabuntur nunc ,eorum cor ſe Diviſit
2 חָלַק לִבָּם עַתָּה יֶאְשָׁמוּ הוּא יַעֲרֹף מִזְבְּחוֹתָם
: nobis rex Non ,*dicent* nunc Quia .eorum ſtatuas vaſtabit
3 יְשֹׁדֵד מַצֵּבוֹתָם׃ כִּי עַתָּה יֹאמְרוּ אֵין מֶלֶךְ לָנוּ
? nobis faciet quid rex & : Dominum *timuimus* non nam
כִּי לֹא יָרֵאנוּ אֶת־יְהוָה וְהַמֶּלֶךְ מַה־יַּעֲשֶׂה־לָּנוּ׃
germinabit & ; fœdus *excidendo* ,mendaciter jurando verba ſunt Locuti
4 דִּבְּרוּ דְבָרִים אָלוֹת שָׁוְא כָּרֹת בְּרִית וּפָרַח
Aven-Beth vitulas Ad .agri ſulcos ſuper judicium *caput* ſicut
5 כָּרֹאשׁ מִשְׁפָּט עַל תַּלְמֵי שָׂדָי׃ לְעֶגְלוֹת בֵּית אָוֶן
,ejus populus eum ſuper luxit quia ; Someron *habitator* pavebunt
יָגוּרוּ שְׁכַן שֹׁמְרוֹן כִּי־אָבַל עָלָיו עַמּוֹ
migravit quia ,ejus gloria ſuper,exultaverant eum ſuper ejus ſacerdotes &
וּכְמָרָיו עָלָיו יָגִילוּ עַל־כְּבוֹדוֹ כִּי־גָלָה
; Jareb regi munus ducetur Aſſur in ipſemet Etiam .eo ab
6 מִמֶּנּוּ׃ גַּם־אוֹתוֹ לְאַשּׁוּר יוּבָל מִנְחָה לְמֶלֶךְ יָרֵב
.ſuo conſilio à Iſrael afficietur pudore & ,capiet Ephraim pudor
בָּשְׁנָה אֶפְרַיִם יִקָּח וְיֵבוֹשׁ יִשְׂרָאֵל מֵעֲצָתוֹ׃
.aquæ *faciebus ſuper* ſpuma ut ; ejus rex Someron eſt Succiſus
7 נִדְמֶה שֹׁמְרוֹן מַלְכָּהּ כְּקֶצֶף עַל־פְּנֵי־מָיִם׃
tribulus & ſpina , Iſrael peccatum Aven excelſa diſperdentur Et
8 וְנִשְׁמְדוּ בָּמוֹת אָוֶן חַטַּאת יִשְׂרָאֵל קוֹץ וְדַרְדַּר
, collibus & ; nos Operite ,montibus dicent & : eorum aras ſuper aſcendet
יַעֲלֶה עַל־מִזְבְּחוֹתָם וְאָמְרוּ לֶהָרִים כַּסּוּנוּ וְלַגְּבָעוֹת
,ſteterunt ibi : Iſrael peccâſti ,Ghibhah diebus A .nos ſuper Cadite
9 נִפְלוּ עָלֵינוּ׃ מִימֵי הַגִּבְעָה חָטָאתָ יִשְׂרָאֵל שָׁם עָמָדוּ
.iniquitatis filios ſuper prælium Ghibhah in eos comprehendet non
לֹא־תַשִּׂיגֵם בַגִּבְעָה מִלְחָמָה עַל־בְּנֵי עַלְוָה׃
, populi eos ſuper congregabuntur & ; eos corripiam *& meo deſiderio In*
10 בְּאַוָּתִי וְאֶסֳּרֵם וְאֻסְּפוּ עֲלֵיהֶם עַמִּים
.ſuas iniquitates duas propter *eos corripere in*
בְּאָסְרָם לִשְׁתֵּי עֵינֹתָם׃

Verſio VULG. LAT.

13 Ephraim, ut vidi, Tyrus erat fundata in pulchritudine : & Ephraim educet ad interfectorem 14 filios ſuos. Da eis, Dñe. Quid dabis eis? Da eis vulvam ſine liberis, & ubera arentia. 15 Omnes nequitiæ eorum in Galgal, quia ibi exoſos habui eos : propter malitiam adinventionum eorum, de domo mea ejiciam eos : non addam ut diligam eos, omnes principes eorum recedentes. 16 Percuſſus eſt Ephraim, radix eorum exſiccata eſt : fructum nequaquam facient. Quòd & ſi genuerint, interficiam amantiſſima uteri eorũ. 17 Abjiciet eos Deus meus, quia non audierunt eum : & erunt vagi in nationibus.

CAP. X.

1 Vitis frondoſa Iſrael, fructus adæquatus eſt ei : ſecundùm multitudinem fructûs ſui multiplicavit altaria, juxta ubertatem terræ 2 ſuæ exuberavit ſimulachris. Diviſum eſt cor eorum, nunc interibunt : ipſe confringet ſimulachra eorum, depopulabitur aras eo- 3 rum. Quia nunc dicent ; Non eſt rex nobis : non enim timemus Dominum : & rex quid faciet no- 4 bis? Loquimini verba viſionis inutilis, & ferietis fœdus : & germinabit quaſi amaritudo judi- 5 cium ſuper ſulcos agri. Vaccas Bethaven coluerunt habitatores Samariæ : quia luxit ſuper eum populus ejus, & æditui ejus ſuper eum exultaverunt in gloria ejus, 6 quia migravit ab eo. Siquidem & ipſe in Aſſur delatus eſt, munus regi ultori : confuſio Ephraim capiet, & confundetur Iſrael in 7 voluntate ſua. Tranſire fecit Samaria regem ſuum quaſi ſpumam 8 ſuper faciem aquæ. Et diſperdentur excelſa idoli, peccatum Iſraël : lappa & tribulus aſcendet ſuper aras eorum : & dicent montibus ; Operite nos : & collibus ; Ca- 9 dite ſuper nos. Ex diebus Gabaa, peccavit Iſrael, ibi ſteterunt : non comprehendet eos in Gabaa præ- 10 lium ſuper filios iniquitatis. Juxta deſiderium meum corripiam eos : congregabuntur ſuper eos populi, cùm corripientur propter duas iniquitates ſuas.

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

13 Ἐφραὶμ, ὃν τρόπον εἶδον, εἰς θήραν παρέστησαν τὰ τέκνα αὐτῶν, καὶ Ἐφραὶμ, τοῦ ἐξα- 14 γαγεῖν εἰς ἀποκέντησιν τὰ τέκνα αὐτοῦ. Δὸς αὐτοῖς κύριε, τί δώσεις αὐτοῖς; (*) μήτραν ἀ- 15 τεκνοῦσαν, καὶ μαστοὺς ξηρούς. Πᾶσαι αἱ κακίαι αὐτῶν (ξ) ἐν Γαλγὰλ, ὅτι ἐκεῖ ἐμίσησα αὐτούς. διὰ τὰς κακίας τῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν, ἐκ τοῦ οἴκου μου ἐκβαλῶ αὐτοὺς, οὐ μὴ προσθήσω τοῦ ἀγαπῆσαι αὐτούς· πάντες οἱ ἄρχοντες 16 αὐτῶν ἀπειθοῦντες. Ἐπόνεσεν Ἐφραὶμ· τὰς ῥίζας αὐτοῦ ἐξηράνθη, καρπὸν οὐκ ἔτι μὴ ἐνέγκῃ· διότι καὶ ἐὰν γεννήσωσιν, ἀποκτενῶ 17 τὰ ἐπιθυμήματα κοιλίας αὐτῶν. Ἀπώσεται αὐτοὺς ὁ θεὸς, ὅτι οὐκ εἰσήκουσαν αὐτοῦ, καὶ ἔσονται (ο) πλανῆται ἐν τοῖς ἔθνεσιν.

MS.A. (*) Δὸς αὐτοῖς μήτραν (ξ) εἰς Γαλγὰλ, ὅτι ἐκεῖ αὐτοὺς ἐμίσησα. (ο) ὡς πλανῆται

ΚΕΦ. ι'.

1 Ἄμπελος εὐκληματοῦσα Ἰσραὴλ, ὁ καρπὸς (α) εὐθηνῶν αὐτῆς· κατὰ τὸ πλῆθος τῶν καρπῶν (*) αὐτοῦ, ἐπλήθυνε τὰ θυσιαστήρια· (β) κατὰ τὰ ἀγαθὰ τῆς γῆς αὐτοῦ, ᾠκοδόμησε 2 στήλας. Ἐμέρισαν καρδίας αὐτῶν, νῦν ἀφανισθήσονται· αὐτὸς κατασκάψει τὰ θυσιαστήρια αὐτῶν, ταλαιπωρήσουσιν αἱ στῆλαι αὐτῶν. 3 Διότι νῦν ἐροῦσιν, Οὐκ ἔστι βασιλεὺς ἡμῖν, ὅτι οὐκ ἐφοβήθημεν τὸν κύριον. ὁ δὲ βασιλεὺς 4 τί ποιήσει ἡμῖν, Λαλῶν ῥήματα προφάσεις ψευδεῖς; διαθήσεται διαθήκην, ἀνατελεῖ ὡς 5 ἄγρωστις, κρίμα ἐπὶ χέρσον ἀγροῦ. Τῷ μόσχῳ τοῦ οἴκου Ὢν παροικήσουσιν οἱ κατοικοῦντες Σαμάρειαν, (γ) ὅτι ἐπένθησεν λαὸς αὐτοῦ ἐπ᾽ αὐτόν· καὶ καθὼς παρεπίκραναν αὐτὸν, ἐπιχαροῦνται ἐπὶ τὴν δόξαν αὐτοῦ, ὅτι μετῳκίσθη 6 ἀπ᾽ αὐτοῦ. Καὶ αὐτὸν εἰς Ἀσσυρίους δήσαντες, ἀπήνεγκαν ξένια τῷ βασιλεῖ Ἰαρείμ. ἐν δόματι Ἐφραὶμ δέξεται, καὶ αἰσχυνθήσεται 7 Ἰσραὴλ ἐν τῇ βουλῇ αὐτοῦ. Ἀπέρριψε Σαμάρεια (δ) βασιλέα αὐτῆς ὡς φρύγανον ἐπὶ 8 (ε) προσώπου ὕδατος. Καὶ ἐξαρθήσονται βωμοὶ Ὢν ἁμαρτήματα τοῦ Ἰσραὴλ, ἄκανθαι καὶ τρίβολοι ἀναβήσονται ἐπὶ τὰ θυσιαστήρια αὐτῶν. καὶ ἐροῦσι τοῖς ὄρεσι, (ζ) Καλύψατε ἡμᾶς, καὶ τοῖς βουνοῖς, Πέσατε ἐφ᾽ 9 ἡμᾶς. Ἀφ᾽ οὗ οἱ βουνοὶ, ἥμαρτεν Ἰσραὴλ, ἐκεῖ ἔστησαν· οὐ μὴ καταλάβῃ αὐτοὺς ἐν τῷ βουνῷ πόλεμος ἐπὶ (η) τὰ τέκνα ἀδικίας (θ) 10 Παιδεῦσαι αὐτούς. καὶ συναχθήσονται ἐπ᾽ αὐτοὺς λαοὶ, ἐν τῷ παιδεύεσθαι αὐτοὺς ἐν ταῖς δυσὶν ἀδικίαις αὐτῶν.

MS.A. (α) αὐτῆς εὐθηνῶν· (*) αὐτοῦ, (β) καὶ κατὰ (γ) διὰ τοῦτο ἐπένθησεν ὁ λαὸς (δ) τὸν βασιλέα (ε) πρόσωπον (ζ) Πέσετε ἐφ᾽ ἡμᾶς, καὶ τοῖς βουνοῖς, Καλύψατε ἡμᾶς. (η) τέκνα (θ) Ἦλθεν παιδεῦσαι

Ephræm, ſicut vidi, in (ξ) captionem præbuerunt filios ſuos, & Ephræm, ut educeret ad interfectionem filios ſuos. Da eis, Domine. 14 Quid dabis eis? vulvam ſine filiis, & ubera arentia. 15 Omnes nequitiæ eorum in Galgal, quia ibi exoſos habui eos. Propter malitias adinventionum eorũ de domo mea ejiciã eos : non addam ut diligam eos. Omnes principes eorum inobedientes. 16 Doluit Ephræm, radices ſuas arefactus eſt : fructũ nequaquã ultrà afferet : quia, etſi genuerint; interficiam deſiderabilia uteri eorũ. 17 Repellet eos Deus : quia non exaudierunt eum, & erunt vagi in nationibus.

CAP. X.

1 Vitis (a) bonas habẽs propagines Iſrael. fructus abundans ejus : ſecundùm multitudinẽ fructuũ ſuorum multiplicavit altaria : ſecundùm bona terræ (b) ejus ædificavit titulos. 2 Diviſerunt corda ſua : nunc peribunt. Ipſe ſuffodiet altaria eorum : affligentur tituli eorũ. 3 Propterea nunc dicent; Non eſt rex nobis, quia non timuimus Dominum. Rex autẽ quid faciet nobis, 4 Loquens verba, occaſiones mendaces? Diſponet teſtamentũ : orietur ſicut gramen, judiciũ ſuper deſertum agri. 5 Apud vitulum (c) domûs On morabuntur, qui habitant in Samaria : quia luxit populus ejus ſuper eũ. Et ſicut irritaverunt illũ ; gaudebunt ſuper gloria ejus : quia tranſlata eſt ab eo : 6 Et ipſum in Aſſyrios ligantes, tulerunt munera regi (d) Iarim : (e) domo Ephræm ſuſcipiet, & confundetur Iſrael in cõſilio ſuo. 7 Projecit Samaria regẽ ſuũ, ſicut (f) cremium ſuper faciem aquæ : 8 Et auferentur aræ On peccata Iſrael : Spinæ et tribuli aſcendẽt ſuper altaria eorũ. Et dicent montibus ; Operite nos : & collibus ; Cadite ſuper nos. 9 Ex quo colles ſũt ; peccavit Iſrael : Ibi ſteterunt. Non comprehendet eos in colle (g) bellum ſuper filios iniquitatis, 10 Ut corriperem eos. Et congregabuntur ſuper illos populi : quando correpti fuerint in duabus iniquitatibus ſuis.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

13 כנשתא דישראל במעבדה אוריתא דמיא לצור באצלחותא בשליותה חבו דבית
14 אפרים לקטלא לפולחן טעותא בניהון : הב להון יי ית תושלמת עובדיהון הב להון
15 רחם מתכיל ותדין יבשין : כל בישתהון גלין קדמי בגלגלא ארי תמן רחיקתנון על
בישות עובדיהון מבית מקדשי אתרכנון לא אוסיף לרחמא עליהון דכל רברביהון
16 מרדין : בית ישראל דמן לאילנא דקלא שרשוהי מלרע ויבש נופיה מלעילא נוב לא
17 יעבד אף אם ירבון בנין ואקטול שפר מעיהון : ירחיקנון אלהי ארי לא קבילו
למימריה ויהון מטלטלין בני עממיא :

י

1 גפן בוזא ישראל דהוה גפן נציב במעבדיה אוריתא פרי עובדיהון גרמו להון דיגלון
כד אסגיתי להון עללא אסגיאו פולחן לאגוריהון כד איתיתי טובא לארעהון אוטיבו
2 לקמתהון : אתפלג לבהון מן אוריתא כען יחובון כען איתי עליהון סנאה יחור
3 קדלהון דאגוריהון יבוז קמתהון : ארי כען ימרון לית מלכא לנא ארי לא דחלנא מן
4 קדם יי ומלכא מה יעבד לנא : ממללין מלין דאונס יימן לשקר ללמא גזרין קים כען
5 איתי עליהון כרישי חיון בישין דין שקריהון על תחומי חקלן : על די פלחו לעגליא
בביתאל מלך במשריתיה יסק עליהון ויגלי יתהון יסבון מנהון עגלא דשמרון ארי
6 אתאבלו עלוהי עמיה ופלחוהי עלוהי יבועון על יקריה ארי גלא מניה : אף יתיה
לאתור יובלון קורבנא למלכא דייתי לאתפרעא להון נביא אמר להון בהתא דבית
7 אפרים יקבלון ויבהתון דבית ישראל ממלכי עצתהון : בהתת שמרון במלכה
8 כרותחא על אפי מיא : ויצדין במת ביתאל חובי ישראל גרמו להון דיגלון כובין
ואטדין יסקון על אגוריהון כען איתי עליהון עקא דמותא דיהון דמן כאלו טוריא חפן
9 להון ורמתא נפלו עליהון : מיומי גבעתא חטיתון בית ישראל תמן קמו מרדו במימרי
למנאה עליהון מלכא ואף לא זכיאו דתתקים להון מלכותא בגבעתא תמן אתו עליהון
10 עבדי קרבא לקטלא אבהן עם בנין סליקו : במימרי איתיתי עליהון יסורין וכנישת
עליהון עממיא ושליטו בהון כמיסר פדנא על תרתין עונתיה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Donec cœtꝰ Iſrael opere complevit legem, par erat Tyro in proſperitate ſua 13 atq; abundantia : peccaverunt qui de domo Ephraim, mactando cultui idolorum filios ſuos. 14 Da eis Dñe retributionem operũ ſuorum, tribue eis vulvam orbantem & ubera arentia. 15 Omnes illorũ nequitiæ manifeſtæ fuerunt coram me in Galgal, nam ibi execratꝰ ſum eos ; propter malitiã operũ ſuorũ de domo ſanctuarii mei ejiciam eos, nec addam illos amore proſequi cùm omnes principes eorũ ſint rebelles. 16 Domꝰ Iſrael ſimilis eſt arbori cujꝰ radix uredine percuſſa eſt deorſũ, & ſiccatur *ramꝰ* ejꝰ ſurſũ ; fructũ non faciet : etiamſi educaverint filios, interficiã viſcerũ ipſorũ pulchritudinẽ. 17 Reprobabit eos Deus meꝰ, quia non attentionẽ præbuerũt verbo ejꝰ, atq; errones erũt inter populos.

CAP. X.

Vitis vaſtata eſt Iſrael quæ erat plantata cùm exequeretur legem : 1 fructus operum ipſorum eis in cauſa fuere ut exulent : quando auxi eis proventum, multiplicârunt cultum altaribus ſuis : quando adduxi bonum terræ eorum, benefecerunt ſtatuis ſuis. 2 Diviſum eſt cor eorum à lege, nunc delinquent, mox adducam adverſus eos inimicum qui ſubvertat cacumen altarium eorum, & devaſtet eorum ſtatuas. 3 Nunc enim dicent, Non eſt rex nobis, quippe non timuimus à facie Dñi : & rex quid facturꝰ eſt nobis? 4 Loquuntur verba violenta, jurant in vanum, fruſtrà feriunt fœdꝰ : nunc adducam contra ipſos quaſi capita ſerpentum maleficorum, judicium mendaciorum ſuorum, ſuper terminos agrorũ. 5 Propterea quòd venerati ſunt vitulos in Bethel, aſcendet contra eos rex cum exercitu ſuo, & in tranſmigrationem ducet eos, tollent ab eis vitulum Samariæ, jam enim luxit propter eum populꝰ ejus, & cultores ipſius, qui propter ipſum exultabant, ob gloriam ejus, receſſit enim ab eis. 6 Ipſum quoq; in Aſſur deferent munus regi qui veniet punitum eos. Propheta dicit eis, Confuſionem qui de domo Ephraim, accipient, & confundetur domus Iſrael à conſultationibus conſilii ſui. 7 Confuſa eſt Samaria cum rege ſuo, quaſi ſpuma in ſuperficie aquarum. 8 Atque deſolabuntur excelſa Bethel. Peccata Iſrael fuerunt eis in cauſa ut exulent : ſpinæ & tribuli conſcendent ſuper aras eorum. Nunc adducam ſuper eos tribulationem, ut perinde ſint ac ſi montes operiant eos, & colles cadant ſuper eos. 9 A diebus Gabaa peccâſtis ô qui de domo Iſrael : ibi ſteterunt, prævaricati ſunt in verbum meum præficiendo ſup ſe regem, nec etiam digni habiti ſunt quibꝰ permaneret regnum in Gabaa : illuc invaſerunt eos bellatores qui ut patres cum filiis occiderent aſcenderunt. 10 In verbo meo adduxi ſuper eos correptiones, & congregavi adverſùm eos populos : & dominium exercuerunt in eos in modum quo ligantur juga boum ad duos ſulcos.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܦܪܝܡ ܐܝܟ ܕܚܙܝܬ ܠܨܘܪ ܕܫܬܝܠܐ ܒܒܢܝܢܘܗ. ܗܟܢܐ ܐܦܪܝܡ ܢܦܩ ܒܢܘܗܝ ܠܩܛܠܐ. 13
* ܗܒ ܠܗܘܢ ܡܪܝܐ ܡܕܡ ܕܝܗܒ ܐܢܬ. ܗܒ ܠܗܘܢ ܡܪܒܥܐ ܡܬܟܠܢܐ ܘܬܕܝܐ ܝܒܝܫܐ. 14
* ܟܠܗܘܢ ܒܝܫܬܗܘܢ ܒܓܠܓܠ. ܡܛܠ ܕܬܡܢ ܣܢܝܬ ܐܢܘܢ ܒܒܝܫܘܬ ܥܒܕܝܗܘܢ. ܡܢ 15
ܒܝܬܝ ܐܦܩ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܐܘܣܦ ܠܡܪܚܡܘ ܥܠܝܗܘܢ. ܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܝܗܘܢ. ܡܪܘܕܝܢ.
* ܡܚܐ ܐܦܪܝܡ ܒܥܩܪܐ. ܘܝܒܫ. ܘܠܐ ܢܥܒܕ ܦܐܪܐ. ܘܐܢ ܢܘܠܕܘܢ ܒܢܝܐ. ܐܩܛܘܠ ܪܓܝܓܬܐ 16
ܕܟܪܣܗܘܢ. * ܘܢܣܠܐ ܐܢܘܢ ܐܠܗܝ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܫܡܥܘܗܝ. ܘܢܗܘܘܢ ܛܥܝܢ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. 17

Aphrem, quemadmodum vidiſti Tyrum con- 13
ſitam ædificiis ſuis, ita Aphrem producet fi-
lios ſuos ad necem. Da eis, Domine, quod da- 14
turus es: da eis vulvam ſterilem, & ubera
arida. Omnia ſcelera eorum in Galgale *fue-* 15
runt, nam ibi odi eos propter nequitiam fa-
cinorum ſuorum; è domo mea ejiciam eos, &
non pergam miſereri eorum: omnes prin-
cipes eorum ſunt refractarii. Percuſſus eſt 16
Aphrem in radice, exaruit ne fructus afferat:
& ſi fortè filios genuerint, morte afficiã opta-
tum viſcerum eorum. Spernétque eos Deus 17
meus, quia non auſcultaverunt ei; & erunt
errabundi inter gentes.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *

* ܓܦܬܐ ܕܡܥܒܪܐ ܐܝܣܪܝܠ ܕܥܒܕܐ ܦܐܪܐ. ܐܝܟ ܣܘܓܐܐ ܕܦܐܪܘܗܝ. ܐܣܓܝܘ ܡܕܒܚܐ. 1
ܘܐܝܟ ܛܒܘܬܐ ܕܐܪܥܗܘܢ. ܒܢܘ ܩܝܡܬܐ. * ܐܬܦܠܓ ܠܒܗܘܢ. ܡܢ ܗܫܐ ܢܬܚܝܒܘܢ. ܗܘ 2
ܢܥܩܘܪ ܡܕܒܚܝܗܘܢ. ܘܢܒܙܘܙ ܩܝܡܬܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܡܟܝܠ ܢܐܡܪܘܢ. ܠܝܬ ܠܢ 3
ܡܠܟܐ. ܡܢ ܡܪܝܐ ܠܐ ܕܚܠܢ: ܡܠܟܐ ܡܢܐ ܢܥܒܕ ܠܢ. * ܡܡܠܠܘ ܡܠܐ ܕܬܟܠܬܐ ܕܓܠܐ. 4
ܦܣܩܘ ܕܝܬܩܐ. ܘܦܪܥ ܕܝܢܐ ܐܝܟ ܟܘܒܐ ܒܚܩܠܐ ܕܐܪܥܐ ܒܝܪܐ. * ܠܥܓܠܐ ܕܒܝܬ ܐܘܢ 5
ܢܗܘܘܢ ܬܘܬܒܐ ܥܡܘܪܐ ܕܫܡܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܝܬܒܘ ܥܠܘܗܝ ܒܐܒܠܐ ܥܡܗ. ܘܟܘܡܪܘܗܝ.
ܥܠܘܗܝ ܢܚܕܘܢ. ܘܥܠ ܐܝܩܪܗ ܕܓܠܐ ܡܢܗ. * ܘܐܦ ܠܗ ܠܐܬܘܪ ܢܘܒܠܘܢ ܩܘܪܒܢܐ 6
ܠܡܠܟܐ ܕܝܪܒ. ܒܗܬܬܐ ܢܩܒܠ ܐܦܪܝܡ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܢܒܗܬ ܒܡܠܟܗ. * ܫܕܬ ܫܡܪܝܢ 7
ܡܠܟܗ. ܐܝܟ ܓܠܐ ܥܠ ܐܦܝ ܡܝܐ. * ܘܢܬܥܩܪܘܢ ܦܬܟܪܐ ܕܐܘܢ. ܣܘܪܚܢܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. 8
ܟܘܒܐ ܘܕܪܕܪܐ ܢܣܩܘܢ ܥܠ ܡܕܒܚܝܗܘܢ. ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܛܘܪܐ ܕܚܦܘܢ. ܘܠܪܡܬܐ ܕܢܦܠܘܢ
ܥܠܝܗܘܢ. * ܡܢ ܝܘܡܬܐ ܕܪܡܬܐ ܚܛܝܬ ܐܝܣܪܝܠ: ܬܡܢ ܩܡܘ. ܘܠܐ ܢܕܪܟ 9
ܐܢܘܢ ܩܪܒܐ ܒܪܡܬܐ ܥܠ ܒܢܝ ܥܘܠܐ. * ܒܡܪܕܘܬܝ ܐܪܕܐ ܐܢܘܢ. ܘܢܬܟܢܫܘܢ ܥܠܝܗܘܢ 10
ܥܡܡܐ. ܡܐ ܕܡܬܪܕܝܢ ܥܠ ܬܪܬܝܢ ܣܟܠܘܬܗܘܢ.

CAP. X.

Vitis palmitum eſt Iſrael, quæ fructus edi- 1
dit: ſecundùm copiam fructuum ejus multi-
plicaverunt altaria, & ſecundùm ubertatem
terræ ſuæ extruxerunt aras. Diviſum eſt cor 2
eorum, exinde rei ſunt. Ipſe evertet altaria
eorum, & diripiet aras eorum: Ut in poſte- 3
rum dicant; Regem non habemus, Dominum
non timemus, rex quid facturus eſſet nobis?
Locuti ſunt verba rationum falſarum, decre- 4
verunt pactum, & germinavit judicium ſicut
vepretum in agro terræ incultæ. Ad vitulum 5
Beth-aven peregrinabuntur habitatores Sa-
mariæ; quia ſederunt propter eum in luctu
populus ejus & ſacrificuli ejus, de eodem
quoque geſtient, deque gloria ipſius quòd
migraverit ab eo. Quia & ad Aſſyriam uſq; 6
deferent munera regi Jareb: pudorem per-
cipiet Aphrem, & Iſrael erubeſcet in conſilio
ſuo. Abjiciet Samaria regem ſuum, ceu feſtu- 7
cam ſuper faciem aquarum: Et deſtruentur 8
fana Aven, peccatum Iſraelis: ſpinæ & tri-
buli ſuccreſcent in aris eorum: & dicent
montibus, Operite nos, & collibus ut cadant
ſuper eos. Inde à diebus collis peccâſti Iſra- 9
el: ibíne ſubſiſterent, nec aſſequeretur bel-
lum in colle filios ſceleratos? In correptio- 10
ne mea erudiam eos, & congregabuntur ad-
versùs eos gentes, quando caſtigabuntur
propter duas ſtultitias ſuas.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

13 14 * على ما رايت اقاموا اولادهم للصيد * وافرام ان يخرج اولاده للطعن * اعطهم يا رب * ماذا
15 تعطيهم * اعطهم بطنا غير مولد * وثديا جافة * جميع قبائحهم في الجلجال * لاني هناك
ابغضتهم لاجل قبائح اعمالهم * من بيتي اخرجهم * ولا اعود احبهم * جميع روسائهم عصاة *
16 * اتعب افرام اصوله * جف وليس يعطي ثمر بعد * من اجل انهم وان ولدوا اقتل شهوات
17 بطونهم * الله يقصيهم لانهم لم يسمعوا له * ويصيرون ضالين في الامم *

Prout vidi, addixerunt filios eorum ve- 13
natui, & Aphremum ut produceret filios
ſuos ad confoſſionem. Da illis, O Domi- 14
ne, quid dabis eis? da illis uterum non
generantem, & ubera ſicca; Omnes tur- 15
pitudines eorum in Galgale perpetratas:
illic enim odi eos propter turpitudines
actionum ſuarum: è domo mea expellam
eos, & non diligam eos ampliùs: omnes
principes eorum ſunt rebelles. Fatigavit 16
Aphrem radices ſuas, exaruit, neque pro-
feret fructum deinceps: quia licèt genue-
rint, occîdam deſideria uterorum eorum.
Procul amovebit eos Deus, quia non ob- 17
temperaverunt ei; & erunt vagi inter
gentes.

* الفصل العاشر *

1 * اسرائيل كرمة تفرع حسنا * ثمرها خصبة * ككثرة ثمرته اكثر المذابح * وكخيرات ارضه
2 بنى النصبات * فرقوا قلوبهم * الآن يبادون * وهو يهدم مذابحهم * تسبي نصباتهم * من 3
اجل انهم يقولون * الآن ليس لنا ملك * لانا لم نخف الرب * والملك ماذا يصنع لنا
4 * يتكلم بكلمات عللا كاذبة * يعهد عهدا * يشرق مثل النجيل حكم على ارض حقل
5 بور * لعجل بيت اون يتغربون سكان سامرة * لان شعبه حزن عليه * وكما مرمروه يشمتون
6 بمجده لانه سبي منهم * ويربطوه الى الموصليين * يقدمون هدايا لملك يارم * يقبل افرام
7 بالعطية * ويخزى اسرائيل في مشورته * طرحت سامرة ملكها مثل قشة على وجه الماء *
8 * وتستاصل هياكل اون خطايا اسرائيل * اشواك وحسك تصعد على مذابحهم * ويقولون
للجبال غطينا * وللاكام قعي علينا *

CAP. X.

Iſrael vitis eſt bene germinans, fructus 1
ejus abundans: juxta multitudinem fru-
ctuum ſuorum multiplicavit altaria, &
juxta bona terræ ſuæ ædificavit titulos.
Diviſerunt corda ſua: nunc perdentur, & 2
ipſe deſtruet altaria eorum, affligentur ti-
tuli eorum: Quia dicunt, Nunc non eſt 3
nobis rex; Deum enim non metuimus, &
rex quid faceret nobis? Loquitur verbis 4
rationes mendaces, fœdus pangit; oritur
ſicut gramen judicium, ſuper terram agri
inculti. Ad vitulum domûs On peregri- 5
nabuntur habitatores Samariæ, quia po-
pulus ejus contriſtatus eſt propter eum:
& quemadmodum irritaverunt eum, in-
ſultabunt gloriæ ejus, quòd captus ſit ex
eis, Et vinxerint eum ad Aſſyrios. Offe- 6
rent munera regi Jarim, afferet Aphrem
donum, & erubeſcet Iſrael in conſilio ſuo.
Rejecit Samaria regem ſuum tanquam fe- 7
ſtucam ſuper faciem aquæ: Et evellentur 8
templa On, peccata Iſraelis: ſpinæ & ſen-
tes enaſcentur ſuper altaria eorum: & di-
cent montibus, Tegite nos; & collibus,
Cadite ſuper nos.

* الاصحاح الرابع *

9 * منذ كانت الاكام اخطى اسرائيل * هناك قاموا * لا يدركهم في الاكمة حرب على اولاد
10 الظلم الى ليؤدبهم * ويجمعون عليهم الشعوب * ليتادبوا هم بظلاماتهم *

Textus quartus.

Ex quo fuerunt colles, peccavit Iſrael: ibi 9
manſerunt: non comprehendet eos in colle:
bellum ſuper filios iniquitatis venit, ut
erudiret eos: Et congregabuntur adver- 10
ſùs eos populi, ut erudiantur ipſi propter
iniquitates ſuas.

super transivi ego & triturare diligens *docta* vitula Ephraim Et
11 וְאֶפְרַיִם עֶגְלָה מְלֻמָּדָה אֹהַבְתִּי לָדוּשׁ וַאֲנִי עָבַרְתִּי עַל־
agricolabit, Jehudah arabit, Ephraim faciam equitare: ejus *cervicis bonitatē*
טוּב צַוָּארָהּ אַרְכִּיב אֶפְרַיִם יַחֲרוֹשׁ יְהוּדָה יְשַׂדֶּד־
arate, *misericordiæ os ad* metite, justitiam ad vobis Seminate. Jahacob sibi
12 לוֹ יַעֲקֹב׃ זִרְעוּ לָכֶם לִצְדָקָה קִצְרוּ לְפִי־חֶסֶד נִירוּ
doceat &, veniat donec, Dominum requirendi tempus &; arationem vobis
לָכֶם נִיר וְעֵת לִדְרוֹשׁ אֶת־יְהוָה עַד־יָבוֹא וְיֹרֶה
comedistis, messuistis iniquitatem, impietatem Arastis .vos justitiam
13 צֶדֶק לָכֶם׃ חֲרַשְׁתֶּם־רֶשַׁע עַוְלָתָה קְצַרְתֶּם אֲכַלְתֶּם
.tuorum fortium *multitudine in, tua via in* es fisus quia; mendacii frugem
פְּרִי־כָחַשׁ כִּי־בָטַחְתָּ בְדַרְכְּךָ בְּרֹב גִּבּוֹרֶיךָ׃
vastabitur tuæ munitiones omnes &, tuis populis in *sonitus* consurget Et
14 וְקָאם שָׁאוֹן בְּעַמֶּךָ וְכָל־מִבְצָרֶיךָ יוּשַּׁד
super mater : belli die in Arbeel domum Salman *vastare* secundùm
כְּשֹׁד שַׁלְמַן בֵּית אַרְבֵאל בְּיוֹם מִלְחָמָה אֵם עַל־
malitiæ faciebus à Bethel vobis fecit Sicut .est allisa filios
15 בָּנִים רֻטָּשָׁה׃ כָּכָה עָשָׂה לָכֶם בֵּית־אֵל מִפְּנֵי רָעַת
.Israel rex est succisus succidendo aurora in; vestræ malitiæ
רָעַתְכֶם בַּשַּׁחַר נִדְמֹה נִדְמָה מֶלֶךְ יִשְׂרָאֵל׃

CAP. XI. יא

.meum filium vocavi Ægypto ex &; eum dilexi &, Israel puer Quia
1 כִּי נַעַר יִשְׂרָאֵל וָאֹהֲבֵהוּ וּמִמִּצְרַיִם קָרָאתִי לִבְנִי׃
, sacrificaverunt Behalim, eorum *faciebus* à abierunt sic; eos Vocaverunt
2 קָרְאוּ לָהֶם כֵּן הָלְכוּ מִפְּנֵיהֶם לַבְּעָלִים יְזַבֵּחוּ
super eos *cepit*, Ephraim *ire assuefeci* ego Et .suffiverunt sculptilibus &
3 וְלַפְּסִלִים יְקַטֵּרוּן׃ וְאָנֹכִי תִרְגַּלְתִּי לְאֶפְרַיִם קָחָם עַל־
hominis funibus In .eos curaverim quòd cognoverunt non &: suis brachiis
4 זְרוֹעֹתָיו וְלֹא יָדְעוּ כִּי רְפָאתִים׃ בְּחַבְלֵי אָדָם
jugum exaltantes tanquā eis ero &, charitatis funibus *in*, eos traham
אֶמְשְׁכֵם בַּעֲבֹתוֹת אַהֲבָה וָאֶהְיֶה לָהֶם כִּמְרִימֵי עֹל
terram ad revertetur Non .cibum eum ad declinabo &; eorū maxillis *super*
5 עַל לְחֵיהֶם וְאַט אֵלָיו אוֹכִיל׃ לֹא יָשׁוּב אֶל־אֶרֶץ
impendebit Et .converti *renuerunt* quoniam; ej⁹ rex ipse Assur *&*, Ægypti
6 מִצְרַיִם וְאַשּׁוּר הוּא מַלְכּוֹ כִּי מֵאֲנוּ לָשׁוּב׃ וְחָלָה
.eorū consilia propter, cōedet &, ej⁹ *membra* cōsumet &, ej⁹ urbibus in gladius
חֶרֶב בְּעָרָיו וְכִלְּתָה בַדָּיו וְאָכָלָה מִמֹּעֲצוֹתֵיהֶם׃
, eū vocabāt excelsum ad &; *me à aversionem* propter *suspensi* meus populus Et
7 וְעַמִּי תְלוּאִים לִמְשׁוּבָתִי וְאֶל־עַל יִקְרָאֻהוּ
! Israel te tradam, Ephraim te *dabo* Quomodo .*exaltavit non* simul
8 יַחַד לֹא יְרוֹמֵם׃ אֵיךְ אֶתֶּנְךָ אֶפְרַיִם אֲמַגֶּנְךָ יִשְׂרָאֵל
me *super* est cōversum! Seboim ut te ponam, Adamah sicut te *dabo* quomodo
אֵיךְ אֶתֶּנְךָ כְאַדְמָה אֲשִׂימְךָ כִּצְבֹאיִם נֶהְפַּךְ עָלַי
; mei furoris iram faciam Non .meæ pœnitudines *sunt comota* pariter, meū cor
9 לִבִּי יַחַד נִכְמְרוּ נִחוּמָי׃ לֹא אֶעֱשֶׂה חֲרוֹן אַפִּי
: vir non &, *ego* Deus quoniam; Ephraim *corrumpendum* ad convertar non
לֹא אָשׁוּב לְשַׁחֵת אֶפְרָיִם כִּי אֵל אָנֹכִי וְלֹא־אִישׁ
Dominum Post .civitatem in ingrediar non &, sanctus *tuo meriori* in
10 בְּקִרְבְּךָ קָדוֹשׁ וְלֹא אָבוֹא בְּעִיר׃ אַחֲרֵי יְהוָה
filii pavebunt &, rugiet ipse quia: rugiet leo veluti, ambulabunt
יֵלְכוּ כְּאַרְיֵה יִשְׁאָג כִּי־הוּא יִשְׁאַג וְיֶחֶרְדוּ בָנִים
: Assur terra è columba veluti &, Ægypto *ab avis* ut Pavebunt .*mari à*
11 מִיָּם׃ יֶחֶרְדוּ כְצִפּוֹר מִמִּצְרַיִם וּכְיוֹנָה מֵאֶרֶץ אַשּׁוּר
.Dominus dixit, suis domibus *super* eos *faciam sedere* &
וְהוֹשַׁבְתִּים עַל־בָּתֵּיהֶם נְאֻם־יְהוָה׃

Versio VULG. LAT.

11 Ephraim vitula docta diligere trituram, & ego transivi super pulchritudinē colli ejus: ascendā sup
Ephraim, arabit Judas, confringet
12 sibi sulcos Jacob. Seminate vobis
in justitia, & metite in ore misericordiæ, innovate vobis novale:
tempus autem requirendi Dñm,
cùm venerit qui docebit vos justitiam.
13 Arâstis impietatē, iniquitatem
messuistis, comedistis frugem
mendacii: quia confisus es in viis
tuis, in multitudine fortiū tuorum.
14 Consurget tumult⁹ in populo tuo:
& omnes munitiones tuæ vastabuntur, sicut vastatus est Salmana à
domo ejus qui judicavit Baal in
die prælii, matre super filias allisâ.
15 Sic fecit vobis Bethel, à facie malitiæ nequitiarum vestrarum.

CAP. XI.

1 Sicut manè transiit, ptransiit rex
Israel. Quia puer Israel, & dilexi
eum: & ex Ægypto vocavi filium
2 meum. Vocaverunt eos, sic abierunt à facie eorū: Baalim immolabant, & simulachris sacrificabāt.
3 Et ego quasi nutritius Ephraim,
portabā eos in brachiis meis: &
4 nescierunt quòd curarē eos. In funiculis Adam trahā eos, in vinculis charitatis: & ero eis quasi exaltans jugū sup maxillas eorum: &
declinavi ad eum ut vesceretur.
5 Non revertetur in terrā Ægypti,
& Assur ipse rex ejus: quoniā no-
6 luerunt converti. Cœpit gladius
in civitatib⁹ ejus, & consumet electos ejus, & comedet capita eorū.
7 Et popul⁹ me⁹ pendebit ad reditū
meum: jugū autem imponetur eis
8 simul, ꝙ non auferetur. Quomodò dabo te, Ephraim; protegā te,
Israel? quomodò dabo te sicut Adama, ponam te ut Seboim? Conversū est in me cor meum, pariter
conturbata est pœnitudo mea.
9 Non faciam furorē iræ meæ: non
convertar ut disperdā Ephraim:
quoniā De⁹ ego, & non homo: in
medio tuî Sanct⁹, et non ingrediar
10 civitatē. Post Dñm ambulabunt,
quasi leo rugiet: quia ipse rugiet,
11 et formidabunt filii maris. Et avolabunt quasi avis ex Ægypto, et
quasi columba de terra Assyriorum: et collocabo eos in domibus
suis, dicit Dominus.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 Ἐφραὶμ δάμαλις δεδιδαγμένη ἀγαπᾷν
νεῖκος, ἐγὼ δὲ ἐπελεύσομαι ἐπὶ τὸ κάλλιστον
τοῦ τραχήλου αὐτῆς. ἐπιβιβῶ Ἐφραὶμ, (ι)
παρασιωπήσομαι Ἰούδαν, ἐνισχύσει αὐτῷ
12 Ἰακώβ. Σπείρατε ἑαυτοῖς εἰς δικαιοσύνην,
τρυγήσατε (κ) εἰς καρπὸν ζωῆς, φωτίσατε
ἑαυτοῖς φῶς γνώσεως, ἐκζητήσατε τὸν κύριον
ἕως τοῦ ἐλθεῖν (λ) γεννήματα δικαιοσύνης
13 ὑμῖν. Ἱνατί παρεσιωπήσατε ἀσέβειαν, καὶ
τὰς ἀδικίας αὐτῆς ἐτρυγήσατε; ἐφάγετε
καρπὸν ψευδῆ, ὅτι ἤλπισας ἐν (μ) τοῖς ἁμαρτήμασί
14 σου, ἐν πλήθει δυνάμεώς σου. Καὶ
ἐξαναστήσεται ἀπώλεια ἐν τῷ λαῷ σου, καὶ
πάντα τὰ περιτετειχισμένα σου (ν) οἰχήσεται.
ὡς ἄρχων Σαλαμὰν ἐκ τοῦ οἴκου (ξ) τοῦ
Ἱεροβοὰμ, ἐν ἡμέραις πολέμου μητέρα ἐπὶ
15 τέκνοις ἠδάφισαν, Οὕτως ποιήσω ὑμῖν οἶκος
τοῦ Ἰσραὴλ ἀπὸ προσώπου (ο) ἀδικίας κακιῶν ὑμῶν.

ΚΕΦ. ιαʹ.

1 Ὄρθρου ἀπερρίφησαν, ἀπερρίφη βασιλεὺς (α) Ἰσραήλ. ὅτι νήπιος Ἰσραὴλ, καὶ
ἐγὼ (β) ἠγάπησα αὐτὸν, καὶ ἐξ Αἰγύπτου
2 μετεκάλεσα τὰ τέκνα αὐτοῦ. Καθὼς (ʹ) μετεκάλεσα αὐτοὺς, οὕτως ἀπῴχοντο ἐκ προσώπου μου· αὐτοὶ τοῖς Βααλεὶμ ἔθυον, καὶ τοῖς
3 γλυπτοῖς ἐθυμίων. Καὶ ἐγὼ συνεπόδισα
τὸν Ἐφραὶμ, ἀνέλαβον αὐτὸν ἐπὶ τὸν βραχίονά
4 μου, καὶ οὐκ ἔγνωσαν ὅτι ἴαμαι αὐτούς. Ἐν
διαφθορᾷ ἀνθρώπων ἐξέτεινα αὐτοὺς ἐν
δεσμοῖς ἀγαπήσεώς μου, καὶ (γ) ἔσομαι αὐτοῖς ὡς ῥαπίζων ἄνθρωπος ἐπὶ τὰς σιαγόνας αὐτοῦ· καὶ ἐπιβλέψομαι πρὸς αὐτὸν,
5 δυνήσομαι αὐτῷ. Κατῴκησεν Ἐφραὶμ ἐν
Αἰγύπτῳ, καὶ Ἀσσοὺρ αὐτὸς βασιλεὺς αὐτοῦ·
6 ὅτι οὐκ ἠθέλησεν ἐπιστρέψαι. Καὶ ἠσθένησεν
(δ) ἐν ῥομφαίᾳ ἐν ταῖς πόλεσιν αὐτοῦ, καὶ κατέπαυσεν ἐν ταῖς χερσὶν αὐτοῦ. καὶ φάγονται ἐκ τῶν
7 διαβουλίων αὐτῶν, Καὶ ὁ λαὸς αὐτοῦ ἐπικρεμάμενος ἐκ τῆς κατοικίας αὐτοῦ. (ε) καὶ ὁ
θεὸς ἐπὶ τὰ τίμια αὐτοῦ θυμωθήσεται, καὶ οὐ
8 μὴ ὑψώσῃ αὐτόν. Τί σε (ζ) διαθῶμαι Ἐφραίμ; ὑπερασπιῶ σου Ἰσραήλ; τί σε διαθῶ; ὡς Ἀδαμὰ θήσομαί σε, καὶ ὡς Σεβοεὶμ. μετεστράφη ἡ καρδία μου ἐν τῷ αὐτῷ,
9 συνεταράχθη ἡ μεταμέλειά μου. Οὐ μὴ ποιήσω κατὰ τὴν ὀργὴν τοῦ θυμοῦ μου· οὐ μὴ ἐγκαταλίπω τοῦ ἐξαλειφθῆναι τὸν Ἐφραίμ· διότι
θεὸς ἐγώ εἰμι, καὶ οὐκ ἄνθρωπος, ἐν σοὶ ἅγιος,
10 καὶ οὐκ εἰσελεύσομαι εἰς πόλιν. Ὀπίσω κυρίου πορεύσομαι· ὡς λέων ἐρεύξεται,
ὅτι αὐτὸς ὠρύσεται, καὶ ἐκστήσονται τέκνα ὑδάτων. (η) Ἐκστήσονται ὡς
ὄρνεον ἐξ Αἰγύπτου, καὶ ὡς περιστερὰ ἐκ γῆς Ἀσσυρίων· καὶ ἀποκαταστήσω αὐτοὺς εἰς τοὺς οἴκους αὐτῶν, λέγει κύριος.

Ephræm vitula docta diligere contentionem. Ego autē veniā super pulchritudinē colli ej⁹. Supponā Ephræm: reticebo Judā, roborabitur sibi Jacob. 11
Seminate vobis in justitia, vindemiate in fructū vitæ, illuminate vobis lumen (h) scientiæ, quærite Dominū donec veniant fruges justitiæ vobis. 12
Quid reticuistis (i) impietatē, & iniquitates ej⁹ vindemiâstis? Cōedistis fructū mendacē, quia sperâsti in (k) peccatis tuis, in multitudine fortitudinis tuæ. 13
Et cōsurget perditio in populo tuo: & omnia murata tua abibunt: sicut princeps Salmanan de domo (l) Heroboam, in diebus belli, matrē super filios alliserunt; 14
Sic faciam vobis, domus Israel, à (m) facie injustitiæ malitiarum vestrarum. 15

CAP. XI.

Manè (a) projecti sunt: project⁹ est rex Israel: quia parvulus Israel: & ego dilexi eum, & ex Ægypto (b) vocavi filios ej⁹. 1
Sicut vocavi eos; ita abierunt à facie mea ipsi. Baalim immolabāt, et sculptilibus adolebant. 2
Et ego (c) ligavi pedes Ephræm, suscepi eum super brachiū meū: et non cognoverunt, quia sanavi illos: 3
In corruptione hominum extendi eos in vinculis charitatis meæ. Et (d) ero illis, quasi dans alapas homo super maxillas ejus: & respiciā ad eū, (e) prævalebo ei. 4
Habitavit Ephræm in Ægypto: et Assur ipse rex ejus: quia noluit converti: 5
Et infirmatus est (f) in gladio in civitatibus, et cessavit in manib⁹ suis. Et comedēt de cogitationib⁹ suis: 6
Et popul⁹ ejus suspensus ex incolatu suo. Et Deus super pretiosa ejus irascetur, & non exaltabit eum. 7
Quomodò te (g) disponam, Ephræm? (h) protegam te, Israel? Quid te disponā? Sicut Adama, ponam te, et sicut Seboim. Conversum est cor meū in ipso: conturbata est pœnitudo mea. 8
Non faciam juxta iram furoris mei, non derelinquā, ut deleatur Ephræm: quoniā Deus ego sum, et non homo: in te Sanct⁹, et non ingrediar in civitatem. 9
Post Dominū (i) ambulabo. Sicut leo, rugiet: quia ipse rugiet, et formidabunt filii aquarū. 10
(k) Pavebunt, quasi avis ex Ægypto, et quasi columba de terra Assyriorum. Et restituam eos in domos suas, dicit Dominus. 11

MS.A. (ι) καὶ παρασιωπήσομαι (κ) ἑαυτοῖς εἰς (λ) γεννήματα (μ) ἁμαρτήμασιν (ν) οἰκήσεται. (ξ) Ἱεροβαὰλ, (ο) κακιῶν ὑμῶν.

Κεφ. ιαʹ. MS.A. (α) τοῦ Ἰσραήλ. διότι (β) ἠγάπηκα (ʹ) μετεκαλέσατο (γ) ἐγὼ ἔσομαι (δ) ῥομφαία (ε) ὁ δὲ θεὸς (ζ) διαθῶ (η) Καὶ ἐκστήσονται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 כנשתא דישראל דמיא לעגלתא דמלפין לה למרדי ולא אלפא רחמא להלכא
ברעות נפשה ואנא פרקית יתהון משעבוד מצרים אעדיתי ניר תקוף מצוריהון
אשריתי בית ישראל על תקוף ארעא דאמוראה כבישין קדמיהון דבית יהודה
אחסנית יתהון אחסנתא דקימית לאבוהון יעקב : בית ישראל עבידו לכון עובדין
טבין הליכו בארחא דקושטא קיימו לכון אולפן אוריתא הא בכל עדן נביא אמרין
לכון תבו לדחלתא דיי כען יתגלי וייתי זכון לכון : אתעשתתון לכון אונס רשע עבדתון
14 אתקבלתון תושלמת עובדיכון ארי אתרחצתא בארחתך בסגי גברך : ויקום אתרגושא
בעמך וכל כרכך יתבזון כבזת שלמא בכמנא ביומא דקרבא אם על בנין קטילת :
15 כן גרמו לכון חובין דחבתון בביתאל מן קדם בישות עובדיכון בסופא בהירת ואתכנע
מלכא דישראל :

יא

1 ארי רבי הוה ישראל ורחמתיה וממצרים קריתי להון בנין : שלחית נביי לאלפא
2 להון ואנון טעו מקבל אפיהון לטעותא מדבחין ולצלמניא מסקין בוסמין : ואנא 3
במלאך שליח מן קדמי דברית באורח תקנא לישראל ונטלתינון כדעל דרעין
4 ולא ידעין דמן קדמי מתרחם עליהון : במגרת בנין רחימין נגדתינון בתקוף רחמא
והוה מימרי להון כאכרא טבא דמקיל בכתף תוריא ומוריך בלחיאתהון ואף כד הוו
5 במדברא אסגיתי להון טובא למיכל : לא יתובון לארעא דמצרים ברם אתוראה ישלוט
6 בהון ארי מסרבין למתב : ותחול חרבא בקרוהי ותקטל גברוהי ותשיצי רברבוהי
7 ממלכי עצתהון : ועמי פליגין למתב לאוריתי ובמרועא קשיא יתערעון כחדא לא
8 יהכון בקומא זקופה : איכדין אמסרנך אפרים אשצנך ישראל איכדין אבדרנך כאדמה
9 אשונך כצבויים מתערע מימר קימי לקבלי כחדא אתגוללו רחמי : לא אעבד תקוף
רוגזי ולא יתוב מימרי לחבלא בית ישראל ארי אלהא אנא מימרי לעלמא קים ולית
עובדי כעובדי בסרא דדירין על ארעא כן גזרית במימרי דביניכון שכנתי קדישא ולא
10 אחלף בקרוא אוחרי עוד ירושלם : בתר פולחנא דיי יהכון מימריה כאריא דמכלי ארי
11 הוא יכלי ויתכנשון גלותא ממערבא : כעופא דאתי בגלי כן ייתון דגלו לארעא
דמצרים וכיונה דיתבא לגו שובכא כן יתובון דאטלטלו לארעא דאתור ואתבנון
בשלם לבתיהון ומימרי יהי בסעדהון אמר יי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Cœtus Israel similis est vitulæ quam arare docent, & non discit; dilexit in voluntate 11
animæ suæ ambulare: at ego liberavi *eos* à servitute Ægyptiorū: abstuli
jugum durum à cervicib⁹ *eorum*, collocavi domum Israeliticā in fortitudine
terræ Ammorrhæorum qui subjugati sunt coram eis, hæreditare feci
domum Juda possessionē pro qua juraverā patri eorum Jacob. Dom⁹ Israel 12
agite vobis opera bona, ambulate per viā *veritatis*, stabilite vobis doctrinam
legis: ecce omni tempore prophetæ dicūt vobis, Recipite vos ad timorē Dñi:
nunc enim revelabitur & adferet vobis justitiā. Machinati estis *vobis* rapinā, 13
impietatē commisistis, recepistis retributionē operum vestrorum, etenim confisus
es in viis tuis propter multitudinē fortium tuorum. Nihilomin⁹ consurget 14
tumult⁹ in populo tuo, & omnes arces tuæ vastabuntur, sicut vastatur pacificus
per insidias in die belli: mater super filios occisa est. Talium causa 15
fuerunt vobis peccata, quæ patrastis in Bethel, propter improbitatem operum
vestrorum: confusus est porrò & probro affectus est rex Israel.

CAP. XI.

Quando puer erat Israel, diligebam eum, & ex Ægypto vocavi eos filios. 1
Misi prophetas meos ut erudirent eos, sed ipsi illorum conspectum refugerūt: 2
idolis sacrificantes, & simulachris adolentes aromata. Atq; ego per angelum 3
missum à facie mea deduxi Israel per congruā viam, & portavi eos ferme in
brachiis, licet nescirent à facie mea misericordiam super ipsos extare. Sicuti 4
moris est trahi filios dilectos, traxi eos fortitudine charitatis: fuitq; Verbum
meū eis sicut agricola bon⁹ qui allevat humerum boum & [*frena*] relaxat in
maxillis eorum: adhúcq; etiamnum in deserto degentib⁹ multa suppeditavi
eis bona, quib⁹ vescerentur. Non revertentur in terrā Ægypti, sed Assur dominabitur 5
eis, quoniam renuerunt converti. Et versabitur gladi⁹ in civitatib⁹ 6
ej⁹, & concidet fortes ejus, & consumet proceres ejus à consultationibus consilii
eorum. Populus autem me⁹ hæsitat se convertere ad legem meam, sed in 7
infirmitatem gravem incurrent simul, non ambulabunt erecta statura. Quomodo 8
tradam te Ephraim? exterminabo te Israel: quomodo dispergam te
sicut Adama? ponam te velut Seboim; obviam fit mihi verbum pacti mei:
simul *convolutæ sunt commiserationes meæ*. Non exequar iram furoris mei, 9
nec convertetur verbum meum causa disperdendæ domus Israel, siquidem
Deus ego cùm sim, verbum meum in æternum permanet, nec sunt opera mea
qualia *opera* [*filiorum*] carnis, qui morantur in terra: sic decrevi in verbo
meo, [*nempe*] ut inter vos sit majestas mea sancta: certè non permutabo amplius
Jerusalem pro alia civitate. Post cultum Domini ambulabunt, & Verbum 10
ejus sicut leo erit qui rugit; statim enim ac rugiet, congregabuntur exules
ab Occidente. Sicut avis quæ apertè venit, sic venient qui in exilium 11
acti fuerunt in terram Ægypti: & sicut columba quæ revertetur ad columbare
suum, sic redibunt qui deportati sunt in terram Assur: sanè reducam eos
in pace ad domos suas, & Verbum meū aderit in patrocinium eorū, ait Dñs.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܦܪܝܡ ܥܓܠܬܐ ܡܠܦܬܐ ܕܪܚܡܐ ܠܡܕܪܫܘ. ܘܐܢܐ ܥܒܪܬ ܥܠ ܨܘܪܗ. ܐܪܟܒ ܠܐܦܪܝܡ 11
ܘܢܕܪܘܫ ܝܗܘܕܐ. ܘܢܒܙܘܙ ܝܥܩܘܒ. * ܙܪܘܥܘ ܠܟܘܢ ܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܚܨܘܕܘ ܦܘܡܗ ܕܛܝܒܘܬܐ. 12
ܐܢܗܪܘ ܠܟܘܢ ܢܘܗܪܐ. ܡܛܠ ܕܙܒܢܐ ܗܘ ܠܡܒܥܝܗ ܠܡܪܝܐ. ܥܕܡܐ ܕܢܐܬܐ ܘܢܚܘܐ ܠܟܘܢ
ܙܕܝܩܘܬܗ. * ܕܒܪܬܘܢ ܚܛܝܬܐ ܘܥܘܠܐ. ܘܚܨܕܬܘܢ ܘܐܟܠܬܘܢ ܦܐܪܐ ܕܕܓܠܘܬܐ. ܡܛܠ 13
ܕܐܬܬܟܠܬܘܢ ܥܠ ܐܘܪܚܬܟܘܢ. ܘܥܠ ܣܘܓܐܐ ܕܚܝܠܟܘܢ. * ܢܩܘܡ ܐܒܕܢܐ ܒܥܡܟ. ܘܟܠܗܘܢ 14
ܟܪܟܝܟ ܢܬܒܙܙܘܢ ܐܝܟ ܒܙܬܐ ܕܫܠܡܢ: ܡܢ ܒܝܬ ܐܝܠ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ. ܐܡܐ ܥܠ ܒܢܝܗ
ܢܛܪܦܘܢ: * ܗܟܢܐ ܢܥܒܕܘܢ ܠܟܘܢ ܒܝܬ ܐܝܠ. ܡܢ ܩܕܡ ܒܝܫܬܐ ܕܒܝܫܘܬܟܘܢ. 15

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܐ *   * ܒܨܦܪܐ ܬܘܗ ܘܫܬܩ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܡܛܠ ܕܟܕ ܛܠܝܐ ܗܘܐ 1
ܐܝܣܪܝܠ ܪܚܡܬܗ. ܘܡܢ ܡܨܪܝܢ ܩܪܝܬܗ ܠܒܪܝ. * ܐܝܟ ܕܩܪܘ ܐܢܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܙܠܘ ܡܢ 2
ܩܕܡܝ. ܘܠܒܥܠܐ ܕܒܚܘ. ܘܠܦܬܟܪܐ ܣܡܘ ܒܣܡܐ. * ܘܐܢܐ ܕܒܪܬ ܠܐܦܪܝܡ. ܘܩܒܠܬ 3
ܐܢܘܢ ܥܠ ܕܪܥܝ. ܘܠܐ ܝܕܥܘ ܕܐܣܝܬ ܐܢܘܢ. * ܒܚܒܠܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܢܓܕܬ ܐܢܘܢ. ܘܒܫܘܫܠܬܐ 4
ܕܪܚܡܬܐ. ܘܗܘܝܬ ܠܗܘܢ. ܐܝܟ ܗܘ ܕܡܪܝܡ ܢܝܪܐ ܡܢ ܦܟܝܗܘܢ. ܘܐܪܟܢܬ ܠܗܘܢ. ܘܐܟܠܘ.
* ܠܐ ܢܗܦܟܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܬܘܪܝܐ ܗܘ ܡܠܟܗܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܨܒܘ ܠܡܬܦܢܝܘ. * ܢܚܠܫ 5 6
ܣܝܦܐ ܒܩܘܪܝܗܘܢ. ܘܢܬܓܠܐ ܡܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. ܘܢܐܟܠܘܢ ܡܢ ܬܪܥܝܬܗܘܢ. * ܘܥܡܝ 7
ܬܠܝܢ ܠܡܬܦܢܝܘ ܠܘܬܝ. ܘܠܐܠܗܐ ܢܩܪܘܢ. ܘܡܚܕܐ ܢܚܘܣ. ܘܠܐ ܢܬܪܘܡ. * ܐܝܟܢܐ ܐܣܬܪܟ 8
ܐܦܪܝܡ. ܐܘ ܐܝܟܢܐ ܐܥܕܪܟ ܐܝܣܪܝܠ: ܐܘ ܐܝܟܢܐ ܐܥܒܕܟ. ܐܝܟ ܐܕܡܐ. ܐܘ ܐܝܟ ܨܒܘܐܝܡ.
ܐܬܗܦܟ ܥܠܝ ܠܒܝ. ܘܐܬܚܡܘ ܪܚܡܝ. * ܠܐ ܐܥܒܕ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܝ. ܘܠܐ ܐܘܣܦ ܠܡܚܒܠܘ 9
ܠܐܦܪܝܡ. ܡܛܠ ܕܐܠܗܐ ܐܢܐ. ܘܠܐ ܗܘܝܬ ܒܪܢܫܐ ܒܝܢܬܟܘܢ. ܩܕܝܫܐ ܐܢܐ. ܘܠܐ ܐܥܘܠ
ܠܡܕܝܢܬܐ. * ܒܬܪ ܡܪܝܐ ܢܐܙܠܘܢ. ܐܝܟ ܐܪܝܐ ܕܢܗܡ. ܡܛܠ ܕܗܘ ܢܢܗܡ. ܘܢܙܘܥܘܢ 10
ܒܢܝ ܥܡܐ. * ܘܢܙܘܥܘܢ ܐܝܟ ܨܦܪܐ ܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܘܐܝܟ ܝܘܢܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܐܬܘܪ. 11
ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܠܡܫܪܝܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* Aphrem eſt vitula edocta amans triturare, & ego tranſivi ſuper collum ejus: inequitabo Aphremum, triturabit Juda, & Jacob diripiet. 11
Serite vobis juſtitiam, & metite os (i. *ſummum*) probitatis: accendite vobis lucernam, quia tempus eſt quærendi Dñm, donec veniat & oſtendat vobis juſtitiã ſuã. 12
Duxiſtis aratrũ peccati & impietatis, & meſſuiſtis atq; comediſtis fructus mendacii. Quia confiſi eſtis viis veſtris, & multitudini roboris veſtri, 13
Invadet excidium populum tuum, & omnes urbes tuæ diripientur ut direptione Salmæ, inde à Beth-il, in die belli: matrem ſuper filios ejus allident. 14
Ita facient vobis, O Beth-il, propter peſſimam malitiam veſtram. 15

CAP. XI.

IN aurora admiratus eſt & obſtupuit rex Iſraelis, quia dum puer eſſet Iſrael, dilexi eum, & inde ab Ægypto vocavi eum filium meum. 1
Prout vocaverunt eos, ita abierunt à conſpectu meo, & Baali ſacrificaverunt, & ſculptilibus thura adhibuerunt. 2
Ego Aphremum rexi, eóſque ſuper brachia mea excepi: nihilominus non agnoſcunt me ſanâſſe eos. 3
Funibus humanis traxi eos, & vinculis amoris: & fui eis tanquam is qui aufert jugum à cervice eorum: & inclinavi eis, ut comederent. 4
Non revertentur in terram Ægypti, ſed Aſſyrius erit rex eorum, quia noluerunt converti. 5
Infirmabitur gladius in urbibus eorum, & evaneſcet è manib⁹ eorum, comedéntque de conſiliis ſuis. 6
Populus meus hæſitat in redeundo ad me: Deum verò vocent, ſtatímque curam habebit, nec extolletur. 7
Quomodo protegerem te Aphrem? aut quomodo juvarem te Iſrael? aut qualem te redderem? ut Adamam, an ut Seboim? Inverſum eſt cor meum, & profuſa ſunt viſcera mea: 8
Non perficiam æſtum iræ meæ, neque conſumam ampliùs Aphremum: quia Deus ego ſum, ac non homo, inter vos: ſanctus ſum, nec urbem ingrediar. 9
Dominum ſequentur ut leonem rugientem: nam ipſo rugiente pavebunt filii populum, 10
Tum exſilient ut volucres ex Ægypto, & ut columbæ de terra Aſſur: & reducam eos ad ſedem eorum, dixit Dominus. 11

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* افرام عجلة معلمة ان تحب الغلبة * وانا اتي على حسن عنقها. اركب افرام * واسكت يهودا. 11
يقويه يعقوب * ازرعوا لكم عدلا * اقطفوا ثمر الحياة * اضيئوا لكم نور المعرفة * اطلبوا الرب 12
الى ان ياتي لكم * يا اولاد العدل لماذا غفلتم عن النفاق. وقطفتم مظالمه. اكلتم ثمر كاذبة. 13
لانك وثقت بمركباتك بكثرة جيشك * ويدور الهلاك في شعبك. وينهب جميع حصونك مثل 14
رئيس سالامان. في بيت يوربعام في ايام الحرب ضربوا الام بالاولاد * هكذا اصنع بكم يا 15
بيت اسرائيل من وجه قبايحكم *

* الفصل الحادي عشر *

* سحرا طردوا. طرح ملك اسرائيل. من اجل ان اسرائيل منذ كان طفلا فانا احببته. ومن 1
مصر دعوت اولاده * كما دعوتهم. هكذا بعدوا عن وجهي. هم لاوثان ايم ذبحوا. وللمنحوتات 2
بخروا * وانا قيدت افرام. واخذته على ذراعي. ولم يعلموا اني اشفيهم * بفساد البشر مددتهم 3 4
برباطات حبي. واصير لهم مثل انسان لاطم على خديه. وانظر اليه. واقتدر عليه * سكن 5
افرام في ارض مصر والموصل هو ملكه. لانه لم يشا ان يرجع * وضعف السيف في مدنه. 6
وانكف في يديه. وياكلون من رواياتهم * وشعبي متعلق من غربته. والله يغضب على كرامته 7
ولا يرفعه * لماذا اودك يا افرام * واستر عليك يا اسرائيل. لماذا اعزك. مثل اداما اصنعك ومثل 8
صبويم * انفعل قلبي في ذاتي. انقلبت ندامتي * لا اصنع كهيضة غضبي. ولا ادرك ان 9
ابيد افرام * من اجل اني انا الله انا. ولست انسانا. فيك قدوس. ولا ادخل الى المدينة * خلف 10
الرب اسير. مثل اسد يزئر لانه هو يزار. ويتحير اولاد المياه * ويتحير مثل طاير من مصر 11
وكمثل حمامة من ارض الموصليين * واردهم الى بيوتهم يقول الرب *

* *Aphrem vitula eſt aſſueta diligere victoriam: at ego invadam pulchritudinem colli ejus, inequitabo Aphrem, & ſilere faciam Judam, corroborabit eum Jacob.* 11
Seminate vobis æquitatem, legite fructum vitæ, accendite vobis lumen ſcientiæ, petite Dominum donec veniat ad vos. 12
O filii æquitatis, quare neglexiſtis impietatem, iniquitates ejus tamen vindemiâſtis, fructum mendacem comediſtis? Quia ſpem collocâſti in curribus tuis, in multitudine exercitûs tui; 13
Ideò graſſabitur pernicies in populo tuo, & diripientur omnes munitiones tuæ, ut egit princeps Salaman; in domo Jerobaami, diebus belli, matrem percuſſerunt cum filiis. 14
Ita faciam vobis, O domus Iſraelis propter turpitudines veſtras. 15

CAP. XI.

MAnè projecti ſunt, projectus eſt rex Iſraelis: quoniam Iſraelem ex quo parvulus erat, ego dilexi, & ex Ægypto vocavi filios ejus. 1
Quemadmodum vocavi eos, ita receſſerunt à facie mea: ipſi idolis Aim ſacrificaverunt, & ſculptilibus thus adoleverunt. 2
Ego vinxi Aphremum, & tuli eum ſuper brachium meum: attamen ignorant quòd ego ſanaturus ſum eos. 3
In corruptione hominum, extendi eos vinculis amoris mei, & fiam eis velut homo percutiens genas ſuas, reſpiciam eum & prævalebo ei. 4
Habitavit Aphrem in terra Ægypti, & Aſſyria rex ejus eſt; quia noluit reverti. 5
Et infirmatus eſt gladius in urbibus ejus, & continuit ſe in manibus ejus; comedéntque ex opinionibus ſuis. 6
Populus meus pendet ab incolatu ſuo, & Deus iraſcetur honoribus ejus, & non exaltabit eum. 7
Cur amo te O Aphrem, protego te O Iſrael? cur honoro te? ut Adamam reddam te, & ut Seboim. Immutatus eſt in me animus meus, inverſa eſt pœnitudo mea: 8
Non agam ſecundùm impetum iræ meæ, neque permittam ut perdam Aphremum; quia Deus ego ſum, ac non homo, in te ſanctus; neque ingrediar urbem. 9
Poſt Dominum incedam, ut leo rugiet: nam ipſo rugiente ſtupebunt filii aquarum. 10
Stupebunt inquam velut avis ex Ægypto, & velut columba de terra Aſſyriorum: eos autem reſtituam ad domos ſuas, dicit Dominus. 11

הושע : יב יג

CAP. XII. יב

: Iſrael domus dolo in & , Ephraim mendacio in me Circumderunt
1 סְבָבֻנִי בְכַחַשׁ אֶפְרַיִם וּבְמִרְמָה בֵּית יִשְׂרָאֵל
Ephraim .eſt fidelis ſanctis cum & ,Deo cum dominans adhuc Jehudah &
2 וִיהוּדָה עֹד רָד עִם־אֵל וְעִם־קְדוֹשִׁים נֶאֱמָן׃ אֶפְרַיִם
vaſtitatem & mendacium die omni ; Eurum ſequens & ,ventum paſcens
רֹעֶה רוּחַ וְרֹדֵף קָדִים כָּל־הַיּוֹם כָּזָב וָשֹׁד
.ducetur Ægyptum in oleum & ,excident Aſſur cum fœdus & multiplicabit
יַרְבֶּה וּבְרִית עִם־אַשּׁוּר יִכְרֹתוּ וְשֶׁמֶן לְמִצְרַיִם יוּבָל׃
,ej⁹ vias juxta ,Jahacob ſuper viſitandũ ad & ; Jehudah cum Domino lis &
3 וְרִיב לַיהוָה עִם־יְהוּדָה וְלִפְקֹד עַל־יַעֲקֹב כִּדְרָכָיו
; ſuum fratrem ſupplantavit utero In .ei reddet ejus ſtudia juxta
4 כְּמַעֲלָלָיו יָשִׁיב לוֹ׃ בַּבֶּטֶן עָקַב אֶת־אָחִיו
, angelum in fuit princeps Et .Deo cum fuit princeps ſua fortitudine in &
5 וּבְאוֹנוֹ שָׂרָה אֶת־אֱלֹהִים׃ וַיָּשַׂר אֶל־מַלְאָךְ
eſt locutus ibi &,eum invenit Bethel : eum rogavit & ,flevit;prævaluit &
וַיֻּכָל בָּכָה וַיִּתְחַנֶּן־לוֹ בֵּית־אֵל יִמְצָאֶנּוּ וְשָׁם יְדַבֵּר
.ejus memoriale Dominus ; exercituum Deus Dominus Et nobiſcum
6 עִמָּנוּ׃ וַיהוָה אֱלֹהֵי הַצְּבָאוֹת יְהוָה זִכְרוֹ׃
expecta : &,cuſtodi judicium & miſericordiam.converteris tuũ Deum ad tu &
7 וְאַתָּה בֵּאלֹהֶיךָ תָשׁוּב חֶסֶד וּמִשְׁפָּט שְׁמֹר וְקַוֵּה
opprimere doli bilancibus ejus manu in Mercatoris .ſemper tuum Deum ad
8 אֶל־אֱלֹהֶיךָ תָּמִיד׃ כְּנַעַן בְּיָדוֹ מֹאזְנֵי מִרְמָה לַעֲשֹׁק
:mihi robur inveni , ſum ditatus Veruntamen ,Ephraim dixit Et .dilexit
9 אָהֵב׃ וַיֹּאמֶר אֶפְרַיִם אַךְ עָשַׁרְתִּי מָצָאתִי אוֹן לִי
.peccatum quæ,iniquitatem mihi invenient non meis laboribus omnibus
כָּל־יְגִיעַי לֹא יִמְצְאוּ־לִי עָוֺן אֲשֶׁר־חֵטְא׃
te faciam habitare adhuc , Ægypti terra è , tuus Deus Dominus ego Et
10 וְאָנֹכִי יְהוָה אֱלֹהֶיךָ מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם עֹד אוֹשִׁיבְךָ
ego & , prophetis ſuper ſum locut⁹ Et.feſtivitatis dies ſecundũ tentoriis in
11 בָאֳהָלִים כִּימֵי מוֹעֵד׃ וְדִבַּרְתִּי עַל־הַנְּבִיאִים וְאָנֹכִי
?iniquitas Ghilhad Si .aſſimilabo prophetarum manu in&:multiplicavi viſionẽ
12 חָזוֹן הִרְבֵּיתִי וּבְיַד הַנְּבִיאִים אֲדַמֶּה׃ אִם־גִּלְעָד אָוֶן
etiam : immolaverunt boves Ghilgal in ,fuerunt mendacium veruntamen
אַךְ־שָׁוְא הָיוּ בַּגִּלְגָּל שְׁוָרִים זִבֵּחוּ גַּם
agrum Jahacob fugit Et .agrorum ſulcos ſuper acervi ſicut eorum altaria
13 מִזְבְּחוֹתָם כְּגַלִּים עַל תַּלְמֵי שָׂדָי׃ וַיִּבְרַח יַעֲקֹב שְׂדֵה
propheta in Et .cuſtodivit uxore in & , uxore in Iſrael ſervivit & ;Aram
14 אֲרָם וַיַּעֲבֹד יִשְׂרָאֵל בְּאִשָּׁה וּבְאִשָּׁה שָׁמָר׃ וּבְנָבִיא
propheta in & ; Ægypto ex Iſrael Dominus fecit aſcendere
הֶעֱלָה יְהוָה אֶת־יִשְׂרָאֵל מִמִּצְרָיִם וּבְנָבִיא
ejus ſanguines & ; acerbitatibus Ephraim fecit Iraſci .ſe cuſtodivit
15 נִשְׁמָר׃ הִכְעִיס אֶפְרַיִם תַּמְרוּרִים וְדָמָיו
.ſuus Dominus ei reddet ejus opprobrium & , deferet eum ſuper
עָלָיו יִטּוֹשׁ וְחֶרְפָּתוֹ יָשִׁיב לוֹ אֲדֹנָיו׃

CAP. XIII. יג

deliquit & : Iſrael in ipſe elevavit ,tremor , Ephraim loqui Secundùm
1 כְּדַבֵּר אֶפְרַיִם רְתֵת נָשָׂא הוּא בְּיִשְׂרָאֵל וַיֶּאְשַׁם
ſibi fecerunt & , peccare addiderunt nunc Et .eſt mortuus & ,Bahal in
2 בַּבַּעַל וַיָּמֹת׃ וְעַתָּה יוֹסִפוּ לַחֲטֹא וַיַּעֲשׂוּ לָהֶם
artificum opus dolores , ſua intelligentia in ſuo argento ex conflatile
מַסֵּכָה מִכַּסְפָּם כִּתְבוּנָם עֲצַבִּים מַעֲשֵׂה חָרָשִׁים
.oſculentur vitulos , hominem Sacrificantes ,dicentes ipſi illis : totum
כֻּלֹּה לָהֶם הֵם אֹמְרִים זֹבְחֵי אָדָם עֲגָלִים יִשָּׁקוּן׃
: vadens mane ros ſicut & , matutini nubes veluti erunt Idcircò
3 לָכֵן יִהְיוּ כַּעֲנַן־בֹּקֶר וְכַטַּל מַשְׁכִּים הֹלֵךְ
.fumario è fumus ſicut & ,area ab exturbabitur gluma ſicut
כְּמֹץ יְסֹעֵר מִגֹּרֶן וּכְעָשָׁן מֵאֲרֻבָּה׃

Verſio VULG. LAT.

12 Circumdedit me in negatione Ephraim, & in dolo domus Iſrael :
Judas autem teſtis deſcendit cum
Deo, & cum Sanctis fidelis.

CAP. XII.

1 EPhraim paſcit ventum, & ſequitur
æſtum : totâ die mendaciũ
& vaſtitatem multiplicat: & fœd⁹
cum Aſſyriis iniit,& oleum in Æ-
2 gyptum ferebat. Judicium ergò
Dñi cum Juda,& viſitatio ſup Jacob:
juxta vias ejus,& juxta adin-
3 ventiones ejus reddet ei. In utero
ſupplantavit fratrem ſuum : &
in fortitudine ſua directus eſt cum
4 Angelo. Et invaluit ad angelum,
& confortatus eſt: flevit,& rogavit
eum, in Bethel invenit eum,et
5 ibi locutus eſt nobiſcum. Et Dominus
Deus exercituum,Dñs me-
6 moriale ejus. Et tu ad Deum tuũ
converteris: miſericordiam & judicium
cuſtodi, & ſpera in Deo
7 tuo ſemper. Chanaan, in manu
ejus ſtatera doloſa, calumniam di-
8 lexit. Et dixit Ephraim;Veruntamen
dives effectus ſum, inveni
idolum mihi : omnes labores mei
non invenient mihi iniquitatem,
9 quam peccavi. Et ego Dñs Deus
tuus ex terra Ægypti, adhuc ſedere
te faciam in tabernaculis, ſicut
10 in dieb⁹ feſtivitatis.Et locut⁹ ſum
ſuper prophetas, & ego viſionem
multiplicavi,& in manu propheta-
11 tarum aſſimilatus ſum. Si Galaad
idolum,ergò fruſtrà erant in Galgal
bobus immolantes:nam & altaria
eorum quaſi acervi ſuper ſul-
12 cos agri. Fugit Jacob in regionẽ
Syriæ, & ſervivit Iſrael in uxo-
13 rem, & in uxorem ſervavit, In
propheta autem eduxit Dominus
Iſrael de Ægypto : & in propheta
14 ſervatus eſt. Ad iracundiam me
provocavit Ephraim in amaritudinibus
ſuis, & ſanguis ejus ſuper
eum veniet, & opprobrium ejus
reſtituet ei Dominus ſuus.

CAP. XIII.

1 LOquente Ephraim,horror invaſit
Iſrael, & deliquit in Baal,et
2 mortuus eſt. Et nunc addiderunt
ad peccandum : fecerúntque ſibi
conflatile de argento ſuo quaſi ſimilitudinem
idolorum, factura
artificum totum eſt : his ipſi dicunt;
Immolate homines vitulos
3 adorantes. Idcircò erunt quaſi
nubes matutina, & ſicut ros matutinus
præteriens, ſicut pulvis
turbine raptus ex area, & ſicut
fumus de fumario.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

12 Ἐκύκλωσέ με ἐν ψεύδει Ἐφραὶμ, ϗ ἐν ἀ-
σεβείαις (θ) οἶκος Ἰσραὴλ, ϗ Ἰούδα. νῦν
ἔγνω αὐτοὺς ὁ θεὸς, ϗ (ι) ὁ λαὸς ἅγιος
κεκλήσεται θεοῦ.

ΚΕΦ. ιβʹ.

1 Ο Δὲ Ἐφραὶμ πονηρὸν πνεῦμα, ἐδί-
ωξε καύσωνα ὅλην τὴν ἡμέραν· κενὰ ϗ μά-
ταια ἐπλήθυνε, ϗ διαθήκην μετὰ Ἀσσυρίων
διέθετο, ϗ ἔλαιον εἰς Αἴγυπτον ἐνεπορεύε-
2 το. Καὶ κρίσις τῷ κυρίῳ πρὸς (α) Ἰούδαν, τοῦ
ἐκδικῆσαι τὸν Ἰακὼβ κατὰ τὰς ὁδοὺς αὐτοῦ ϗ
κατὰ τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτοῦ (β) ἀποδώσει
3 αὐτῷ. Ἐν τῇ κοιλίᾳ ἐπτέρνισε τὸν ἀδελφὸν
αὐτοῦ, ϗ ἐν κόποις αὐτοῦ ἐνίσχυσε πρὸς (γ)
4 θεόν. Καὶ ἐνίσχυσε μετὰ ἀγγέλου, ϗ ἠδυνάσθη.
ἔκλαυσαν, ϗ ἐδεήθησάν μου· ἐν τῷ (δ) οἴκῳ
Ὢν εὕροσάν με, ϗ ἐκεῖ ἐλαλήθη πρὸς
5 (ε) αὐτούς. Ὁ δὲ κύριος ὁ θεὸς ὁ παντο-
6 κράτωρ ἔσται μνημόσυνον αὐτοῦ. Καὶ σὺ ἐν
θεῷ σου ἐπιστρέψῃς, ἔλεον ϗ κρίμα φυλάσ-
σου, ϗ ἔγγιζε πρὸς τὸν θεόν σου διαπαντός.
7 Χαναὰν, ἐν χειρὶ αὐτοῦ ζυγὸς ἀδικίας,
8 καταδυναστεύειν ἠγάπησε. Καὶ εἶπεν Ἐ-
φραὶμ, Πλὴν πεπλούτηκα, εὕρηκα ἀναψυ-
χὴν ἐμαυτῷ. πάντες οἱ πόνοι αὐτοῦ οὐχ εὑ-
ρεθήσονται αὐτῷ, (ζ) δι' ἀδικίας ἃς ἥμαρ-
9 τεν. Ἐγὼ δὲ κύριος ὁ θεός σου ἀνήγαγόν
σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, ἔτι κατοικιῶ σε ἐν
10 σκηναῖς, καθὼς (η) ἡμέραι ἑορτῆς. Καὶ λα-
λήσω πρὸς προφήτας, ϗ ἐγὼ ὁράσεις ἐπλή-
11 θυνα, ϗ ἐν χερσὶ προφητῶν ὡμοιώθην. Εἰ
μὴ Γαλαάδ ἐστιν, ἄρα ψευδεῖς ἦσαν ἐν Γα-
λαὰδ ἄρχοντες θυσιάζοντες, ϗ τὰ θυσια-
στήρια αὐτῶν, ὡς χελῶναι ἐπὶ χέρσον ἀγροῦ.
12 Καὶ ἀνεχώρησεν Ἰακὼβ εἰς πεδίον Συρί-
ας, ϗ ἐδούλευσεν Ἰσραὴλ ἐν γυναικὶ, ϗ
13 (θ) γυναικὶ ἐφυλάξατο. Καὶ ἐν προφήτῃ
ἀνήγαγε κύριος τὸν Ἰσραὴλ (ι) ἐκ γῆς Αἰ-
14 γύπτου, ϗ ἐν προφήτῃ διεφυλάχθη. Ἐθύ-
μωσεν Ἐφραὶμ, ϗ παρώργισε, ϗ τὸ αἷμα
αὐτοῦ ἐπ' αὐτὸν ἐκχυθήσεται, ϗ τὸν ὀνειδι-
σμὸν αὐτοῦ ἀνταποδώσει (κ) κύριος αὐτῷ.

ΚΕΦ. ιγʹ.

1 ΚΑτὰ τὸν λόγον Ἐφραὶμ δικαιώματα (α)
ἔλαβεν αὐτὸς ἐν τῷ Ἰσραὴλ, ϗ ἔθετο αὐ-
2 τὰ τῇ Βάαλ ϗ ἀπέθανε. (β) Καὶ νῦν προσ-
έθεντο τοῦ ἁμαρτάνειν (γ), ϗ ἐποίησαν ἑαυ-
τοῖς χώνευμα ἐκ τοῦ ἀργυρίου (δ) αὐτῶν,
κατ' εἰκόνα εἰδώλων, ἔργα τεκτόνων συν-
τετελεσμένα αὐτοῖς. αὐτοὶ λέγουσι, Θύσα-
3 τε ἀνθρώπους, μόσχοι γὰρ ἐκλελοίπασι. Διὰ
τοῦτο ἔσονται ὡς νεφέλη πρωϊνὴ, ϗ ὡς δρό-
σος ὀρθρινὴ πορευομένη, (ε) ὡς χνοῦς ἀπο-
φυσώμενος ἀφ' ἅλωνος, ϗ ὡς ἀτμὶς (ζ)
ἀπὸ δακρύων.

Circumdedit me in mendacio Ephrem, & in impietatibus domus 12
Iſrael, & Juda. Nunc (ι) cognovit eos Deus: & populus ſanctus
vocabitur Dei.

CAP. XII.

EPhræm autem peſſimus ſpiritus, 1
perſequutus eſt æſtũ totâ die:
inania, & vana multiplicavit, &
teſtamentũ cum Aſſyriis pepigit,
& oleum in Ægyptum mercabatur.
Et judiciũ Domino cũ Juda, 2
ut ulciſcatur Jacob : juxta vias
ejus, & juxta adinventiones ejus
reddet ei. In utero ſupplantavit 3
fratrẽ ſuũ : & in laboribus ſuis
prævaluit erga Deum: Et confor- 4
tatus eſt cum angelo, & potuit.
(a) Fleverunt, & deprecati ſunt
me: in domo On invenerunt me: et
ibi dictum eſt ad eos : Dominus 5
autẽ Deus omnipotens erit memoriale
ejus. Et tu in Deo tuo con- 6
verteris: miſericordiã, & judiciũ
cuſtodi, & appropinqua Deo
tuo ſemper. Chanaan, in manu e- 7
jus ſtatera iniquitatis, opprimere
per potentiam dilexit. Et dixit E- 8
phræm, Veruntamen dives effect⁹
ſum, inveni requiem mihi. Omnes
labores ejus non invenientur ei
propter iniquitates, in quibus peccavit.
Ego autem Dominus Deus 9
tuus eduxi te de terra Ægypti:
adhuc habitare te faciã in tabernaculis,
ſicut (b) dies ſolemnitatis.
Et loquar ad prophetas, & ego 10
viſiones multiplicavi, & in manibus
prophetarum aſſimilat⁹ ſum.
Si non Galaad eſt; ergò falſi erant 11
in (c) Galaad principes immolantes:
& altaria eorũ, quaſi (d) teſtudines
ſuper deſertũ agri. Et re- 12
ceſſit Jacob in campũ Syriæ, &
ſervivit Iſrael in uxore, et (e)
uxore cuſtodivit. Et in propheta e- 13
duxit Domin⁹ Iſrael de terra Ægypti:
& in propheta ſervatus eſt.
(f) Indignari fecit Ephræm, & ad 14
iracundiã provocavit: & ſanguis
ej⁹ ſuper ipſũ effundetur: & opprobriũ
illi⁹ reſtituet ei Domin⁹.

CAP. XIII.

JUxta verbum Ephræm (a) ju- 1
ſtificationes accepit ipſe in Iſrael:
& poſuit (b) eas Baal & mortu⁹
eſt. Et nunc appoſuerunt ut pec- 2
carẽt: et fecerũt ſibi conflatile ex
argento ſuo ſecundùm imaginem
idolorũ, opera artificũ completa.
His ipſi dicunt, Immolate (c) ho-
mines: vituli enim defecerunt. Id- 3
circò erũt quaſi nubes matutina,
& ſicut ros matutinus pertranſiens,
ſicut pulvis exufflat⁹ ab area,
& ſicut vapor (d) de lachrymis.

MS.A. (θ) οἴκου (ι) λαὸς ἅγιος κληθήσεται Κεφ. ιβʹ. MS.A. (α) τὸν Ἰούδαν,
(β) ἀνταποδώσῃ (γ) τὸν θεόν. (δ) οἴκῳ μου εὕροσάν (ε) αὐτόν. (ζ) διὰ (η) ἡμέρα (θ) ἐν γυναικὶ (ι) ἐξ Αἰγύπτου, (κ) αὐτῷ κύριος.
Κεφ. ιγʹ. MS.A. (α) αὐτὸς ἔλαβεν (β) Καὶ προσέθετο (γ) ἔτι, ϗ (δ) ἑαυτῶν, (ε) ὥσπερ χοῦς (ζ) ἐκ καπνοδόχης. Ἐγὼ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 אסגיאו קדמי כדבין דבית אפרים ובנכליהון דבית ישראל ודבית יהודה הוו מתקפין
בפלחנא עד דגלא עמא דאלהא מארעהון ואנון דהוו פלחין קדמי בבית מקדשא
מתקרן עמא קדישא בכן הוו קימין :

יב

1 בית ישראל דמן לדזרע רוח ועלעול חצד כל יומא כדבין ובזא מסגן וקים עם אתוראה
2 אקימו וקורבנא למצרים מובלין : ודינא קדם יי עם דבית יהודה ולאסערא על יעקב
3 כארחתיה וכעובדוהי תקניא יתיב ליה : נביא אמר להון הלא יעקב עד דלא אתיליד
4 אמיר דיסגי מן אחוהי ובתוקפיה אתרברב עם מלאכא : ואתרברב עם מלאכא ויכיל
5 בכה ובעא מניה בביתאל אתגלי עלוהי ותמן ימלל עמנא : נביא אמר להון הוא יי
אלהי צבאות דאתגלי על אברהם יצחק ויעקב וכמא דאמיר על ידי משה דכרניה
6 לכל דר ודר : ואת בפולחנא דאלהך תתקף חסדא ודינא טר וסבר לפורקנא דאלהך
7 8 תדירא : לא תהוון כתגרין דבידיהון מוזנן דנכיל למנס רחמין : ואמרו דבית
אפרים ברם עתרנא אשכחנא אונס לנא נביא אמר להון כל עותרכון לא יתקים לכון
9 ביום תושלמת חובכון : ואנא יי אלהך דאפקתך מארעא דמצרים עוד אותיבנך
10 במשכנין כיומי קדם : ומללית עם נביא ואנא נבואן אסגיתי וביד נביא שלחית :
11 אם בגלעד הוו אנוסין ברם בבית גלגלא תורין לטעון דבחו אף אגוריהון אסגיאו
12 כיגרין על תחומי חקלא : נביא אמר להון הלא יעקב אבוכון אזל לחקלי ארם ופלח
13 ישראל באתתא ובאתתא נטר ענא : ואף כד נחתו אבהתכון למצרים נביא שלח
14 יי ואסיק ית ישראל ממצרים ועל ידי נביא אתנטר : מרגזין דבית אפרים מוספין
למחטי וחובת דם זכי דאשיד עלוהי יתוב וחסודיה יתיב ליה רבוניה :

יג

1 כד ממלל חד מבית אפרים רתיתא אחיד להון לעממיא מתרברבין הוו בישראל וכדו
2 דחבו עד דפלחו לטעותא מתקטלין : וכען מוספין למחטי ועבדו להון מתכא
מכספהון כדמותהון צלמנין עובד אומנין כולהון להון אנון מטען נביי שקרא דבחין
3 לעובדי ידי אנשא תוריא לעגליא נשקין : בכן יהון כענן צפרא וכטלא דמותי פסיק
כמוצא דנשבא רוח מאדרא וכתננא מבית נורא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Multiplicaverunt coram me mendacia, prognati domus Ephraim; et dolos 11
ſuos, orti de familia Iſrael : proles verò domus Juda validi fuerunt in cultu,
donec exulavit populus Dei de terra ſua, et illi qui venerationẽ exhibuerũt
coram me in domo ſanctuarii, vocantur Populus ſanctus, in eo quòd fuerunt
ſtabiles.

CAP. XII.

DOmus Iſrael comparantur ei qui ſeminat ventum,& metit turbinem totâ 1
die: mendacia & prædam multiplicant,& fœdus cum Aſſur ſtatuerunt,&
munera in Ægyptum deferunt. Et judicium eſt coram Dño cum domo Juda, 2
ut animadvertat in Jahacob juxta vias ſuas,& ſecundũ opera ſua recta reddat
ei. Propheta dic eis : Nónne de Jahacob antequam natus eſſet, prædictum 3
eſt, quòd major evaderet fratre ſuo, & fortitudine ſua prævaluit Angelo?
Prævaluit quidem Angelo & ſuperavit; flevit & deprecatus eſt eum : in 4
Bethel revelatus eſt ei, ibíque nobiſcum loquetur. Propheta dic eis : Ipſe 5
eſt Dñs Deus exercituum, qui apparuit Abrahamo, Iſaac & Jacob; & ſicut
traditum eſt per manus Moyſis, memoriale ejus erit in generatione & generationem.
Tu autem in cultu Dei tui confortaberis : miſericordiam & 6
judicium cuſtodi, & præſtolare redemptionem Dei tui jugiter. Ne ſitis ſicut 7
mercatores, in quorum manibus ſunt bilances doloſæ, rapinæ ſtudentes.
Et dixerunt qui de domo Ephraim, Utiq; locupletati ſumus,nacti ſum⁹ nobis 8
rapinam. Propheta dic eis : Omnes divitiæ veſtræ non permanſuræ ſunt
vobis in die retributionis peccatorum *veſtrorum*. Et ego Dñs Deus tuus, qui 9
eduxi te de terra Ægypti adhuc habitare te faciam in tabernaculis ſicut in
dieb⁹ antiquis. Atq; ego locut⁹ ſum cum prophetis,& ipſe prophetias multi- 10
plicavi atq; per manũ prophetarũ miſi. Si in Galaad graſſatores fuere : certè 11
in fano Galgal vitulos idolis immolarunt, quin etiam aras ſuas multitudine
æquaverunt acervis ſuper terminos *agri*. Propheta dic eis : Nónne 12
Jahacob pater veſter abiit ad agros Syriæ, & ſervivit Iſrael pro uxore, &
pro uxore cuſtodivit oves? Quin etiam quando deſcenderunt patres veſtri 13
in Ægyptum, prophetam legavit Dñs qui aſcendere fecit Iſrael de Ægypto,
ac per manus prophetæ ſervatus eſt. Ad iracundiam provocant progeniti do- 14
mus Ephraim, peccare adjicientes, & delictum ſanguinis juſti quem effudit,
in eum recidet, & opprobrium ipſius reddet ei Dominus ſuus.

CAP. XIII.

CUm loquitur nonnullus de domo Ephraim, tremor apprehendit populos, 1
principes *fuerunt* in Iſrael : nunc verò quia *averſi ſunt uſq*; quòd coluerunt
idola, neci traduntur. Ac nunc addunt peccare, & fabricati ſunt ſibi conflati- 2
le de argento ſuo ad ſimilitudinem ſuam : ſimulachra opus artificum univerſa
ſunt, *quæ ipſos errare faciunt* : Pſeudoprophetæ [illegible] celebrant operi manu- 3
um hominis, bov[illegible] olant vitulis. Ideo erunt ſicut nubes matutina, & ſicut ros qui citò deficit, ſicut ſtipula quã exufflat vent⁹ de area, denique ſicut fumus de fumario.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ * ܚܕܪܘܢܝ ܒܕܓܠܘܬܐ ܐܦܪܝܡ. ܘܒܢܟܠܐ ܕܐܝܣܪܝܠ ܘܝܗܘܕܐ 1
ܥܕܡܐ ܕܢܚܬ ܥܡܐ ܕܐܠܗܐ. ܥܡܐ ܩܕܝܫܐ ܘܡܗܝܡܢܐ. * ܐܦܪܝܡ ܪܥܐ ܪܘܚܐ. 2
ܘܪܕܦ ܠܫܘܒܐ ܝܘܡܐ ܟܠܗ. ܕܓܠܘܬܐ ܘܒܙܬܐ ܐܣܓܝܘ. ܘܩܝܡܐ ܥܡ ܐܬܘܪܝܐ ܦܣܩܘ.
ܘܡܫܚܐ ܠܡܨܪܝܢ ܐܘܒܠܘ. * ܘܕܝܢܐ ܐܝܬ ܠܡܪܝܐ ܥܡ ܝܗܘܕܐ. ܘܢܦܩܘܕ ܠܝܥܩܘܒ ܐܝܟ 3
ܐܘܪܚܬܗ. ܘܐܝܟ ܥܒܕܘܗܝ ܢܦܪܥܝܘܗܝ. * ܒܟܪܣܐ ܥܩܒ ܠܐܚܘܗܝ. ܘܒܥܘܫܢܗ 4
ܐܬܪܘܪܒ ܩܕܡ ܐܠܗܐ. * ܘܐܬܥܫܢ ܥܡ ܡܠܐܟܐ. ܘܒܥܐ ܡܢܗ. ܒܒܝܬ ܐܝܠ ܐܫܟܚܗ. ܘܬܡܢ 5
ܡܠܠ ܥܡܗ. * ܘܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܬܕܟܪܗ. * ܘܐܢܬ ܗܫܐ ܬܘܒ ܠܘܬ ܐܠܗܟ. 6
ܘܛܝܒܘܬܐ ܘܕܝܢܐ ܛܪ. ܣܟܝ ܠܐܠܗܟ ܐܡܝܢܐܝܬ. * ܡܣܐܬܐ ܕܢܟܠܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܟܢܥܢ 7 8
ܘܠܡܥܠܒܘ ܪܚܡ. * ܘܐܡܪ ܐܦܪܝܡ ܕܟܕ ܥܬܪܬ ܐܫܟܚܬ ܟܐܒܐ. ܘܟܠܗ ܥܡܠܝ ܠܐ ܣܦܩ ܠܝ 9
ܥܠ ܚܛܗܐ ܕܚܛܝܬ. * ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ ܕܐܣܩܬܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܬܘܒ ܐܘܬܒܟ 10
ܒܡܫܟܢܐ ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܥܐܕܐ. * ܘܡܠܠܬ ܥܡ ܢܒܝܐ. ܘܐܢܐ ܚܙܘܢܝ ܐܣܓܝܬ. ܘܒܐܝܕ 11
ܢܒܝܐ ܐܬܕܡܝܬ. * ܒܓܠܥܕ ܟܐܒܐ. ܘܒܓܠܓܠ ܠܣܪܝܩܘܬܐ ܕܒܚܘ ܬܘܪܐ. ܘܐܦ 12
ܡܕܒܚܝܗܘܢ ܐܝܟ ܓܠܠܐ ܒܚܩܠܐ ܕܐܪܥܐ ܒܝܪܐ. * ܘܥܪܩ ܝܥܩܘܒ ܠܐܪܥܐ ܕܐܪܡ. ܘܦܠܚ 13
ܐܝܣܪܝܠ ܒܐܢܬܬܐ. ܘܡܛܠ ܐܢܬܬܐ ܢܛܪ. * ܘܒܢܒܝܐ ܐܣܩ ܡܪܝܐ ܠܐܝܣܪܝܠ ܡܢ 14
ܡܨܪܝܢ. ܘܒܢܒܝܐ ܐܬܢܛܪ. * ܐܪܓܙ ܐܦܪܝܡ ܘܐܡܪܪ. ܘܕܡܗ ܥܠܘܗܝ ܢܬܐܫܕ. ܘܚܣܕܗ 15
ܢܦܪܥ ܠܗ ܡܪܗ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܝܓ * ܟܕ ܡܡܠܠ ܐܦܪܝܡ ܙܐܥ ܗܘܐ. ܘܗܘܐ 1
ܪܒܐ ܒܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܬܚܝܒ ܒܒܥܠܐ ܘܡܝܬ. * ܘܗܫܐ ܐܘܣܦܘ ܠܡܚܛܐ. ܘܥܒܕܘ ܠܗܘܢ 2
ܢܣܟܐ ܡܢ ܣܐܡܗܘܢ. ܒܕܡܘܬܗܘܢ. ܦܬܟܪܐ ܥܒܕܐ ܕܐܘܡܢܐ. ܘܐܡܪܝܢ ܗܘܘ ܠܗܘܢ.
ܕܒܚܝ ܒܢܝܢܫܐ. ܘܠܥܓܠܐ ܢܫܩܘ. * ܡܛܠܗܢܐ ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܥܢܢܐ ܕܨܦܪܐ. ܘܐܝܟ 3
ܛܠܐ ܕܡܫܟܪ ܘܥܒܪ. ܘܐܝܟ ܥܘܪܐ ܕܦܪܚ ܡܢ ܐܕܪܐ. ܘܐܝܟ ܬܢܢܐ ܡܢ ܟܘܬܐ.

CAP. XII.

Circundedit me Aphrem mendacio, & domus 1
Iſraelis ac Judæ dolo; donec deſcenderet
populꝰ Dei, populus ſanctꝰ & fidelis. Aphrem 2
pavit ventum, & ſectatꝰ eſt turbinem totâ die:
mendaciũ & rapinã multiplicaverunt, & fœdus
cum Aſſyrio pepigerunt, oleúmq; in Ægyptum
deportaverunt. Lis eſt Domino cum Juda, 3
& animadvertet in Jacobum ſecundùm vias
ejus, & ſecundùm facinora ejus rependet
ei. In vulva enim decepit fratrẽ ſuum, & robore 4
ſuo magnificavit ſe corã Deo, Et prævaluit 5
Angelo ita ut deprecaretur eum: in Bethil
invenit eum, & ibi allocutus eſt eum: Et 6
Dñs Deus potentiſſimus recordatꝰ eſt ejus. Tu 7
itaq; convertere ad Deum tuũ, & probitatem
atq; judiciũ obſerva, expecta Deum tuũ jugiter.
Statera doloſa eſt in manu Chanaanis, & 8
opprimere gaudet. Et dixit Aphrem; Cùm 9
ditatus ſum, inveni mihi dolores; at omnis labor
meus non ſufficit mihi pro peccato quod
peccavi. Ego ſum Dñs Deus tuus qui extraxi 10
te à terra Ægypti: adhuc te collocabo in tentoriis,
ut diebꝰ ſolennibus. Et locutꝰ ſum cum 11
prophetis, & ego viſiones meas multiplicavi,
& per prophetas me figuravi. In Galaade dolores, 12
& in Galgala vanitati ſacrificâſtis boves;
quin & altaria veſtra ſunt quaſi teſtudines
in campo terræ incultæ. Et fugit Jacob ad terrã 13
Aram, ſervivítq; Iſrael pro muliere, & propter
mulierem *injuncta ſibi* ſervavit. Et per prophetas 14
extraxit Dñs Iſraelem ex Ægypto, &
per prophetas cuſtoditus fuit. Iram & amaritudinem 15
excitavit Aphrem, ideò ſanguis ejus
ſuper ipſum effundetur, & opprobrium ejus
reddet ei Dominus ejus.

CAP. XIII.

Dum loqueretur *Deus*, Aphrem tremebat, 1
proinde factus fuerat magnus in Iſraele, ſed
reatum obiens cauſâ Baalis, mortuus eſt. Et 2
nunc pergentes peccare, fecerunt ſibi fuſile ex
argento ſuo in ſimilitudinem ſuam, idolum
opus artificis. Dicebant autem eis *prophetæ*,
O qui ſacrificatis homines & vitulum oſculamini.
Iccirco eritis ut nubes matutina, & ut 3
ros manè ſtillans & evaneſcens, utque feſtuca
evolans ex area, & ut fumus è feneſtra.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثاني عشر * أحاط بي أفرام بالكذب وبيت إسرائيل ويهودا بالنفاق 1
الآن عرفهم الله والشعب المقدس يميل عن الله * وأفرام الروح الشرير طرد السموم النهار كله 2
كثر جديدات وأباطيل وصنع عهدا مع الموصليين وسار بالدهن الى مصر * والحكم 3
للرب مع يهودا لينتقم من يعقوب كطرقه وكأعماله يكافيه * في البطن عرقب أخاه وبأتعابه 4
تقوى مع الله * وتقوى مع الملاك وتلذذ بكوا وطلبوني في بيتي وجدوني وهناك قيل له 5
* والرب الاله الضابط الكل يكون ذكره * وأنت بالهك ترجع احفظ الرحمة والحكم 6 7
واقترب الى الهك كل حين * كنعان في يده ميزان ظلم احب ان يتجبر * وقال أفرام اني 8 9
استغنيت وجدت راحة لذاتي جميع أتعابه لا توجد له لأجل الظلامات التي أخطأ بها
* وأنا الرب الهك أصعدتك من أرض مصر أسكنك أيضا في الخيم كيوم العيد 10
* وأتكلم مع الأنبياء وأنا أكثرت المناظر وبأيدي الأنبياء تشبهت * الا جلعاد هو لعنة 11 12
كانوا كذبة في عاد رؤساء ذابحون ومذابحهم مثل السلاحف على أرض الحقل البور * وانفرد 13
يعقوب الى بقعة الشام وتعبد إسرائيل بامرأة واحتفظ للمرأة * وبالنبي أصعد الرب إسرائيل من 14
مصر وبالنبي حفظ * أغتاظ أفرام وغضب ودمه عليه يراق ويكافيه الرب بتعييره * 15

* الفصل الثالث عشر *

* ككلمة أفرام هو أخذ معادل في إسرائيل ووضعها للبعل ومات * وعاد ليخطي وصنعوا لهم 1 2
سبيكا من فضتهم كصورة أوثان أعمال نجارين مكملة معهم هم يقولون اذبحوا الناس لأن 3
العجول متروكة * لأجل هذا يصيرون مثل سحابة بكرية ومثل ندا سحري ذاهب
وكمثل غبار منفوخ من البيدر وكمثل بخار من دخان

CAP. XII.

Circundedit me Aphrem mendacio, & domus 1
Iſraelis ac Judæ perfidiâ. Nunc
cognovit eos ***Deus***, *& populus ſanctus*
deflectet à Deo. Aphrem ſpiritus peſſimus 2
inſectatus eſt ventum calidum totâ
die, multiplicavit novitates & vanitates,
fœdus inivit cum Aſſyriis, tulitque
oleum in Ægyptum. Etiam diſceptatio 3
eſt Domino cum Juda, ut vindictam
ſumat à Jacobo ſecundùm vias ejus, &
ſecundùm actiones ejus rependat illi. In 4
utero ſupplantavit fratrem ſuum, &
in laboribus ſuis corroboravit ſe cum
Deo, Confortavitque ſe cum Angelo, 5
& voluptatem percepit. Flentes
quæſiverunt me, in domo mea invenerunt
me, ibique dictum fuit ei: Et Dominus 6
Deus omnitenens erit memoriale ipſius.
Tu ergò per Deum tuum convertere, obſerva 7
miſericordiam & judicium, & accede
ad Deum tuum omni tempore. Chanaanis 8
in manu ſtatera eſt iniqua, amat
præpollere. Dixitque Aphrem; Equidem 9
factus ſum dives, inveni mihi requiem:
omnes labores ejus nequaquam ſubſiſtent
ei, propter iniquitates quibus peccavit.
Ego autem Dominus Deus tuus eduxi te 10
de terra Ægypti, habitare te faciam adhuc
in tabernaculis ut die feſto, Et loquar 11
cum prophetis: ego viſiones multiplicavi,
& per prophetas aſſimilatus ſum.
Verùm Galaad eſt maledictio, mendaces 12
erant in Aad principes ſacrificantes, &
altaria eorum quaſi teſtudines ſuper tellurem
agri inculti. Et ſeceſſit Jacob in 13
campum Syriæ, & ſervituti ſubdidit ſe
Jacob propter uxorem, & ſervatus eſt
uxori. Et per prophetam eduxit Dominus 14
Iſraelem ex Ægypto, perque prophetam
ſervatus eſt. Iratus eſt Aphrem 15
& indignatus, & ſanguis ejus ſuper
ipſum effundetur, & retribuet illi Dominus
propter opprobrium ipſius.

CAP. XIII.

Juxta verbum Aphremi ſuſcepit ipſe ju- 1
ſtificationes in Iſraele; ſed addicens eas
Baali, mortuus eſt: Et rediens ad peccatum 2
fecerunt ſibi conflatile ex argento
ſuo juxta imaginem idolorum, opera artificum
perfecta apud ipſos. Ipſi dicunt,
Sacrificate homines, quia vituli deſpiciuntur:
Propterea fient ſicut nubes 3
matutina, & ſicut ros matutinus deficiens,
ſicut pulvis exſufflatus ex area, &
ſicut vapor à fumo.

הוֹשֵׁעַ : יד

me præter Deum & ; Ægypti terra è tuus Deus Dominus ego Et
4 וְאָנֹכִי יְהוָה אֱלֹהֶיךָ מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם וֵאלֹהִים זוּלָתִי
; deſerto in te novi Ego .me abſque non ſervator & , neſcies
5 לֹא תֵדָע וּמוֹשִׁיעַ אַיִן בִּלְתִּי׃ אֲנִי יְדַעְתִּיךָ בַּמִּדְבָּר
,ſunt ſaturati,ſunt ſaturati *& ſuum paſcuum* Juxta .*locorum torridorũ* terra in
6 בְּאֶרֶץ תַּלְאֻבוֹת׃ כְּמַרְעִיתָם וַיִּשְׂבָּעוּ שָׂבְעוּ
tanquam eis fui Et .mei ſunt obliti idcircò ; eorum cor eſt elevatũ &
7 וַיָּרָם לִבָּם עַל־כֵּן שְׁכֵחוּנִי׃ וָאֱהִי לָהֶם כְּמוֹ־
urſus tanquam eis Occurram .*obſervabo* viam *ſuper* pardus ſicut : leo
8 שָׁחַל כְּנָמֵר עַל־דֶּרֶךְ אָשׁוּר׃ אֶפְגְּשֵׁם כְּדֹב
ibi eos conſumam & ; eorum cordis clauſuram dirumpam & , orbatus
שַׁכּוּל וְאֶקְרַע סְגוֹר לִבָּם וְאֹכְלֵם שָׁם
quia ,Iſrael *tua Corruptela* .eos ſcindet agri beſtia ,leo veluti
9 כְּלָבִיא חַיַּת הַשָּׂדֶה תְּבַקְּעֵם׃ שִׁחֶתְךָ יִשְׂרָאֵל כִּי־
omnibus in te ſervet *&* , *ubi* tuus rex , Ero .*tuo auxilio in* me in
10 בִי בְעֶזְרֶךָ׃ אֱהִי מַלְכְּךָ אֵפוֹא וְיוֹשִׁיעֲךָ בְּכָל־
.principes & ,regem mihi Da , dixiſti quibus,tui judices &:tuis urbibꝰ
עָרֶיךָ וְשֹׁפְטֶיךָ אֲשֶׁר אָמַרְתָּ תְּנָה־לִּי מֶלֶךְ וְשָׂרִים׃
iniquitas Ligata .mea ira in abſtuli &,meo furore in regem tibi Dedi
11 12 אֶתֶּן־לְךָ מֶלֶךְ בְּאַפִּי וְאֶקַּח בְּעֶבְרָתִי׃ צָרוּר עֲוֺן
: ei venient parturientis Dolores .ejus *peccatum abſconditum* , Ephraim
13 אֶפְרַיִם צְפוּנָה חַטָּאתוֹ׃ חֶבְלֵי יוֹלֵדָה יָבֹאוּ לוֹ
.filiorum *alvi ruptura* in ſtetiſſet non *tempore* quia ,ſapiens non filius ipſe
הוּא־בֵן לֹא חָכָם כִּי־עֵת לֹא־יַעֲמֹד בְּמִשְׁבַּר בָּנִים׃
tua *peſtis* ero : eos redimam morte à , eos redimam inferni *manu* E
14 מִיַּד שְׁאוֹל אֶפְדֵּם מִמָּוֶת אֶגְאָלֵם אֱהִי דְבָרֶיךָ
.meis oculis ab ſe abſcondet conſolatio ,inferne *tua excìſio* ero , mors
מָוֶת אֱהִי קָטָבְךָ שְׁאוֹל נֹחַם יִסָּתֵר מֵעֵינָי׃
Domini ventus Orientalis veniet ; *creſcet* fratres inter ipſe *Nam*
15 כִּי הוּא בֵּין אַחִים יַפְרִיא יָבוֹא קָדִים רוּחַ יְהוָה
ipſe ,ejus fontem ſiccabit & ,ejus *vena areſcet* & , aſcendens deſerto è
מִמִּדְבָּר עֹלֶה וְיֵבוֹשׁ מְקוֹרוֹ וְיֶחֱרַב מַעְיָנוֹ הוּא
.*deſiderii* vaſorum omnium theſaurum diripiet
יִשְׁסֶה אוֹצַר כָּל־כְּלִי חֶמְדָּה׃

CAP. XIV. יד

gladio *in* ; ſuum Deum in rebellavit quia , Someron Deſolabitur
1 תֶּאְשַׁם שֹׁמְרוֹן כִּי מָרְתָה בֵּאלֹהֶיהָ בַּחֶרֶב
.diſrumpentur ejus prægnantes & ,allidentur eorum parvuli , cadent
יִפֹּלוּ עֹלְלֵיהֶם יְרֻטָּשׁוּ וְהָרִיּוֹתָיו יְבֻקָּעוּ׃
quoniam : tuum Deum Dominum ad *uſque* Iſrael Revertere
2 שׁוּבָה יִשְׂרָאֵל עַד יְהוָה אֱלֹהֶיךָ כִּי
convertimini & , verba vobiſcum Tollite .*tua iniquitate in* corruiſti
3 כָשַׁלְתָּ בַּעֲוֺנֶךָ׃ קְחוּ עִמָּכֶם דְּבָרִים וְשׁוּבוּ
, iniquitatem *tolles* Omnem : eum ad Dicite .Dominum ad
אֶל־יְהוָה אִמְרוּ אֵלָיו כָּל־תִּשָּׂא עָוֺן
Aſſur .noſtrorum labiorum vitulos reddemus & ,bonum accipe &
4 וְקַח־טוֹב וּנְשַׁלְּמָה פָרִים שְׂפָתֵינוּ׃ אַשּׁוּר
dicemus non & : *equitabimus* non equum ſuper , nos ſervabit non
לֹא יוֹשִׁיעֵנוּ עַל־סוּס לֹא נִרְכָּב וְלֹא־נֹאמַר
eſt miſeratio te in quia : noſtrarum manuum operi , noſtri Dei,ultrà
עוֹד אֱלֹהֵינוּ לְמַעֲשֵׂה יָדֵינוּ אֲשֶׁר־בְּךָ יְרֻחַם
eſt averſus quia : *ultro* eos diligam ; eorum *averſionem* Sanabo .pupilli
5 יָתוֹם׃ אֶרְפָּא מְשׁוּבָתָם אֹהֲבֵם נְדָבָה כִּי שָׁב
.eo ab meus *naſus*
אַפִּי מִמֶּנּוּ׃

Verſio VULG. LAT.

4 Ego autem Dominus Deus tuus ex terra Ægypti : & Deum abſq; me neſcies, & ſalvator non eſt 5 præter me. Ego cognovi te in 6 deſerto, in terra ſolitudinis. Juxta paſcua ſua adimpleti ſunt, & ſaturati ſunt : & levaverunt cor 7 ſuum, & obliti ſunt meî. Et ego ero eis quaſi leæna, ſicut pardus 8 in via Aſſyriorum. Occurram eis quaſi urſa raptis catulis, & dirumpam interiora jecoris eorum: & conſumam eos ibi quaſi leo, 9 beſtia agri ſcindet eos. Perditio tua, Iſrael : tantummodò in me 10 auxilium tuum. Ubi eſt rex tuus? maximè nunc ſalvet te in omnibus urbibus tuis : & judices tui, de quibus dixiſti ; Da mihi re- 11 gem, & principes. Dabo tibi regem in furore meo, & auferam 12 in indignatione mea. Colligata eſt iniquitas Ephraim, abſcondi- 13 tum peccatum ejus. Dolores parturientis venient ei : ipſe filius non ſapiens : nunc enim non ſtabit in contritione filiorum. 14 De manu mortis liberabo eos, de morte redimam eos : ero mors tua, ô mors : morſus tuus ero, inferne : conſolatio abſcon- 15 dita eſt ab oculis meis. Quia ipſe inter fratres dividet : adducet urentem ventum Dominus de deſerto aſcendentem : & ſiccabit venas ejus, & deſolabit fontem ejus, & ipſe diripiet theſaurum omnis vaſis deſiderabilis.

CAP. XIV.

1 PEreat Samaria, quoniam ad amaritudinem concitavit Deum ſuum : in gladio pereant, parvuli eorum elidantur, & fœtæ ejus di- 2 ſcindantur. Convertere, Iſrael, ad Dominum Deum tuum : quoniam corruiſti in iniquitate tua. 3 Tollite vobiſcum verba, & convertimini ad Dominum : & dicite ei ; Omnem aufer iniquitatem, accipe bonum : & reddemus vitulos labiorum noſtrorum. 4 Aſſur non ſalvabit nos, ſuper equum non aſcendemus, nec dicemus ultrà ; Dii noſtri opera manuum noſtrarum : quia ejus, qui in te eſt, miſereberis pupilli. 5 Sanabo contritiones eorum, diligam eos ſpontaneé : quia averſus eſt furor meus ab eis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

4 Ἐγὼ δὲ κύριος ὁ θεός σου ὁ στερεῶν (η) τὸν οὐρανὸν, καὶ κτίζων γῆν, οὗ αἱ χεῖρες ἔκτισαν πᾶσαν τὴν στρατιὰν τοῦ οὐρανοῦ, καὶ οὐ παρέδειξά σοι αὐτὰ τοῦ πορεύεσθαι ὀπίσω αὐτῶν. καὶ ἐγὼ ἀνήγαγόν σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ θεὸν πλὴν ἐμοῦ οὐ γνώσῃ, καὶ σώζων οὐκ ἔστι πάρεξ 5 ἐμοῦ. Ἐγὼ ἐποίμαινόν σε ἐν τῇ ἐρήμῳ, ἐν 6 γῇ ἀοικήτῳ Κατὰ τὰς νομὰς αὐτῶν, (θ) καὶ ἐνεπλήσθησαν εἰς πλησμονὴν, καὶ ὑψώθησαν αἱ καρδίαι αὐτῶν· ἕνεκα τούτου ἐπελάθοντό 7 μου. Καὶ ἔσομαι αὐτοῖς ὡς πανθὴρ, καὶ 8 ὡς πάρδαλις κατὰ τὴν ὁδὸν Ἀσσυρίων Ἀπαντήσομαι αὐτοῖς ὡς ἄρκος (ι) ἡ ἀπορουμένη, καὶ διαῤῥήξω συγκλεισμὸν καρδίας αὐτῶν, καὶ (κ) καταφάγονται αὐτοὺς ἐκεῖ σκύμνοι δρυμοῦ, θηρία ἀγροῦ διασπάσει αὐτούς. 9 Τῇ διαφθορᾷ σου Ἰσραὴλ τίς βοηθήσει; 10 Ποῦ ὁ βασιλεύς σου οὗτος; καὶ διασωσάτω σε ἐν πάσαις ταῖς πόλεσί σου. κρινάτω σε ὃν εἶ- 11 πας, Δός μοι βασιλέα καὶ ἄρχοντα. Καὶ ἔδωκά σοι βασιλέα ἐν ὀργῇ μου, καὶ ἔσχον ἐν 12 τῷ θυμῷ μου. Συστροφὴν ἀδικίας Ἐφραὶμ, 13 ἐγκεκρυμμένη ἡ (λ) ἁμαρτία αὐτοῦ, Ὠδῖνες ὡς τικτούσης ἥξουσιν αὐτῷ. οὗτος ὁ υἱός σου ὁ φρόνιμος, διότι οὐ μὴ ὑποστῇ ἐν συντριβῇ 14 τέκνων. Ἐκ χειρὸς ᾅδου ῥύσομαι (μ), καὶ ἐκ θανάτου λυτρώσομαι αὐτούς. ποῦ ἡ δίκη σου θάνατε; ποῦ τὸ κέντρον σου ᾅδη; παράκλη- 15 σις κέκρυπται (ν) ἀπὸ ὀφθαλμῶν μου. Διότι οὗτος ἀναμέσον ἀδελφῶν (ξ) διαστελεῖ, ἐπάξει (ο) καύσωνα ἄνεμον κύριος ἐκ τῆς ἐρήμου ἐπ᾽ αὐτὸν, καὶ ἀναξηρανεῖ τὰς φλέβας αὐτοῦ, ἐξερημώσει τὰς πηγὰς αὐτοῦ· (π) αὐτὸς καταξηρανεῖ τὴν γῆν αὐτοῦ, καὶ πάντα τὰ σκεύη τὰ ἐπιθυμητὰ αὐτοῦ.

Ego autem Dominus Deꝰ tuus (e) firmans cœlum, et creans terram, cujus manus (f) creaverũt omnẽ militiã cœli: et non oſtẽdi ea tibi, ut ambulares poſt ea. Et ego eduxi te de terra Ægypti: & Deum præter me non cognoſces, & ſalvator non eſt abſque me. 5 Ego paſcebã te in ſolitudine, in terra inhabitabili 6 Secundùm paſcua ſua. Et repleti ſunt in ſaturitate, & elevata ſunt corda eorum: idcircò obliti ſunt meî. 7 Et ero eis quaſi panther, & ſicut pardus in via Aſſyriorum, 8 Occurram eis, ſicut urſa indigens cibo, & diſrumpã concluſionem cordis eorũ: & devorabunt eos ibi catuli ſylvæ, beſtiæ agri diſcerpent eos. 9 Corruptioni tuæ, Iſrael, quis auxiliabitur? 10 ubi eſt rex tuus iſte? et ſalvum te faciat in cunctis urbibus tuis. Judicet te, de quo dixiſti; Da mihi regẽ, & principẽ. 11 Et dedi tibi regem in irâ meâ: & (g) habui in furore meo. 12 (h) Conglobationem iniquitatis Ephræm: abſconditũ peccatũ ejꝰ: 13 Dolores quaſi parturientis venient ei. Iſte eſt filius tuus ſapiens : quia nunc non ſubſiſtet in contritione filiorũ. De manu inferni liberabo, & de morte redimã illos. 14 ubi eſt (i) cauſa tua, mors? ubi eſt (k) aculeꝰ tuꝰ, inferne? Conſolatio abſcondita eſt ab oculis meis: 15 Quia hic inter fratres dividet. Adducet urentẽ ventũ Dominus de deſerto ſuper ipſum, & ſiccabit venas ejus, deſolabit fontes illius. Ipſe arefaciet terrã ejꝰ, et omnia vaſa deſiderabilia (l) ejus.

MS.A. (η) οὐρανὸν, (θ) ἐνεπλήσθησαν (ι) ἀπορουμένη, (κ) φάγονται (λ) ἀδικεία αὐτοῦ, Ὠδῖνες ἥξουσιν αὐτῷ ὡς τικτούσης. (μ) αὐτοὺς, ἐκ θανάτου (ν) ἐξ (ξ) διαστέλλει, (ο) ἄνεμον καύσωνα ἐκ τῆς ἐρήμου κύριος ἐπ᾽ αὐτὸν, (π) οὗτος

ΚΕΦ. ιδʹ.

1 Ἀφανισθήσεται Σαμάρεια, ὅτι ἀντέστη πρὸς τὸν θεὸν αὐτῆς. ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται αὐτοὶ, καὶ τὰ ὑποτίτθια αὐτῶν ἐδαφισθήσονται, καὶ αἱ ἐν γαστρὶ ἔχουσαι αὐτῶν δι- 2 αῤῥαγήσονται. (') Ἐπιστράφηθι Ἰσραὴλ πρὸς κύριον τὸν θεόν σου, διότι (") ἠσθένησαν ἐν ταῖς 3 ἀδικίαις σου. Λάβετε μεθ᾽ ἑαυτῶν λόγους, καὶ ἐπιστράφητε πρὸς κύριον τὸν θεὸν ὑμῶν· εἴπατε αὐτῷ, ὅπως μὴ λάβητε ἀδικίαν, καὶ (α) λάβητε ἀγαθὰ, καὶ ἀνταποδώσομεν 4 καρπὸν χειλέων ἡμῶν. Ἀσσοὺρ οὐ μὴ σώσῃ ἡμᾶς, ἐφ᾽ (β) ἵππον οὐκ ἀναβησόμεθα· οὐκ ἔτι 5 μὴ (") εἴπωμεν, Θεοὶ ἡμῶν, τοῖς ἔργοις τῶν χειρῶν ἡμῶν· ὁ ἐν σοὶ ἐλεήσει ὀρφανόν. Ἰάσομαι τὰς κατοικίας αὐτῶν, ἀγαπήσω αὐτοὺς ὁμολόγως, (γ) ὅτι ἀπέστρεψεν τὴν ὀργήν μου ἀπ᾽ αὐτοῦ.

CAP. XIV.

1 DIſperdetur (a) Samaria, quoniam reſtitit Deo ſuo. In gladio corruent (b) ipſi, & lactentes eorũ allidentur, & eorum habentes in utero dirumpentur. 2 Convertere, Iſrael, ad Dominũ Deũ tuũ: quia (c) infirmati ſunt in iniquitatibus tuis. 3 Sumite vobiſcum ſermones, & revertimini ad Dominũ Deũ veſtrum. Dicite ei: ut non tollatis iniquitatẽ, ſed aſſumatis bona: & reddemus fructũ labiorũ noſtrorum. 4 Aſſur non ſalvabit nos: ſuper equum non aſcendemus: nequaquàm ultrà dicemus; Dii noſtri, operibus manuũ noſtrarũ: qui in te eſt, miſerebitur pupilli. 5 Sanabo habitationes eorũ: diligã eos manifeſté : quia (d) avertit iram meam à ſe.

MS.A. (') Ἐπιστράφητι (") ἠσθένησας (α) λάβετε (β) ἵππων (") εἴπωμεν, (γ) διότι ἀποστρέψω τὴν ὀργήν μου ἀπ᾽ αὐτῶν. Καὶ ἔσομαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 ואנא יי אלהך דאסקתך מארעא דמצרים ואלהא בר מני לא תדע ופריק לית אלא
5 אנא : אנא סופקית צורכיהון במדברא בארעא דהויתון תאבין בה לכל מדעם : כד
6 זנתנון סבעו מסבע וראם לבהון על כן שבקו להון ית פולחני : והוה מימרי להון
7 כליתא כנמרא כמן על שבילא : ערע מימרי בהון כדוב מתכל ותברית רשע לבהון
8 וקטלתנון תמן כבני אריון כחית שנא דמבזעא שציתנון : כד מחבלין אתון בית ישראל
9 עובדיכון שלטין בכון עממיא וכד תיבין אתון לאוריתא מימרי הוה בסעדכון : אן
10 מלכך כען ויפרקנך בכל קרוך ודינך דאת אמרת מני עלי מלך ושלטון : מניתי עלך
11 מלכא ברוגזי ואעדיתי בחמתי : גניזין חובי בית אפרים נטירין לאתפרעא כל חוביהון :
12 עקא וזיע כחבלין על ילדה ייתון עלוהי הוא בר דאתרבי ולא חכים למידע דחלתי
13 ארי כען איתי עלוהי עקא כאתתא דיתבה על מתברה וחיל לית להלמילד : בית
14 ישראל מיד קטול פרקתנון וממחבלא שזבתנון כען יהי מימרי בהון לקטול ופתגמי
15 לחבלא על דעברו על אוריתי אסלק שכנתי מנהון : ארי אנון מתקרן בנין ועובדין
מקלקלין אסגיאו כען איתי עליהון מלך תקיף כרוח קדומא במימרא דיי מאורח
מדברא יסק ויחרב בית גנזוהי ויצדי קרית מלכותיה הוא יבוז אוצרין כל מני
חמדתא :

יד

1 תחוב שמרון ארי סריבת על מימר אלהא בחרבא יתקטלון ועולמהון יטרפון
2 ומעדיתהון יתבזעו : תוב ישראל לדחלתא דיי אלהך ארי אתקלתא בחובך : קריבו
3 עמכון פתגמין דאתודאה ותובו לפלחנא דיי אמרו קדמוהי קריב קדמך למשבק על
עוין ונתקבל הא כטבין ויהוין מלי ספותנא מתקבלין קדמך כתורין לרעוא על
4 מדבחא : מלכי אתור לא יפרקננא על רכבי סוסון לא נתרחץ ולא נימר עוד אלהנא
5 לעובדי ידנא דמן קדמך אתרחם על אבהתנא כד הוו במצרים הא כיתמין : אקבלנון
בתיובתהון אשבוק לחוביהון ארחמנון כד יתיבון בנדבא ארי תב רוגזי מנהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ego verò ſum Dñs Deus tuus qui aſcendere te feci de terra Ægypti: 4 Deum itaq; præter me non agnoſces, nec eſt ſalvator niſi ego. 5 Ego tribui vobis neceſſaria in deſerto, in terra in qua deſiderabatis omnia. 6 Quando enutrivi eos, ſaturitate ſunt oppleti, & elevatũ eſt cor eorũ, ob idq; miſſũ cultũ meũ fecerũt. 7 Quapropter fuit Verbũ meũ eis quaſi leæna, & velut pardꝰ qui inſidiatur prope viã. 8 Occurrit Verbũ meũ eis quaſi urſa orbata: & confregi impietatẽ cordis eorũ, & occidi eos ibi in modũ catulorũ leonũ : ſicut beſtia dentata quæ dilacerat conſumpſi eos. 9 Cùm vos depravatis opera veſtra ô domꝰ Iſrael, dominantur in vos populi : ſed quoties converſi eſtis ad legẽ meã, Verbum meũ fuit vobis præſidio. 10 Ubi eſt nunc rex tuꝰ ut ſalvet te in omnibꝰ urbibꝰ tuis ? & judices tui, de quibꝰ dixiſti, Conſtitue ſuper me regẽ & principem ? 11 Conſtitui ſuper te regem in furore meo, jamque abſtuli in ira mea. 12 Repoſita ſunt peccata Ephraim, ſervata ſunt ut pœnis mulctẽ univerſa eorũ ſcelera. 13 Tribulatio atq; perturbatio invadent eos ſicut dolores parientis : ipſe filius eſt qui grandior factus haud ſapuit quò timorem mei cognoſceret; nunc adducam contra eum coarctationẽ tanquam mulieris quæ aſſidet ſellæ parturientium, nec virtꝰ ſuppetit ei pariendi. 14 Domum Iſrael de manu *occidentis* redemi & ab exterminio delente erui eos : mox erit Verbũ meum contra eos in necem, & Verbũ meũ ad diſperdendum : eò quòd tranſgreſſi ſunt legem meã, tollam majeſtatẽ meam ab eis. 15 Quia ipſi vocati ſunt filii & multiplicaverunt opera corrupta, nunc adducam in eos regẽ fortẽ, ſicut ventũ urentẽ in verbo Dñi qui de via deſerti aſcendet, & deſtruet domꝰ theſaurorũ illorũ, & deſolabit civitatem regni eorũ ; ipſe diripiet cellaria, omnia vaſa deſiderabilia.

CAP. XIV.

1 PEccati rea eſt Samaria, quandoquidem rebellavit in verbum Dei : gladio occidentur, juvenes eorũ allidentur, & prægnantes eorum ſcindentur. 2 Revertere Iſrael ad timorem Dñi Dei tui, quia corruiſti in flagitio tuo. 3 Afferte vobiſcum verba confeſſionis, & convertimini ad religionem Dñi : dicite corã eo, Propè eſt coram te ut dimittas delicta, & *ſuſcipiamur* utique quaſi *boni*, & ſint eloquia labiorum noſtrorum penes te accepta, tanquam boves in beneplacitum ſuper altari. 4 Reges Aſſyrii haud ſalvabunt nos, nec in equorũ aſcenſoribus confidentiam reponemꝰ : nec ultrà dicemꝰ Deum noſtrum operibꝰ manuum noſtrarum, eò quòd à te miſertum ſit patrum noſtrorum, quando erant in Ægypto pupillorũ inſtar. 5 Acceptabo eos in converſione ſua; ignoſcam peccatis eorum, et eorum miſerebor cùm converſi fuerint liberali animo, averſus eſt enim furor meus ab eis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ ܕܐܣܩܬܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܐܠܗܐ ܣܛܪ ܡܢܝ ܠܐ ܬܕܥ. ܘܠܝܬ
ܕܦܪܩ ܐܠܐ ܐܢܐ. * ܐܢܐ ܪܥܝܬܟ ܒܡܕܒܪܐ ܒܐܪܥܐ ܨܗܝܬܐ ܕܠܐ ܡܬܥܡܪܐ. * ܘܐܪܥܝܬ ܐܢܘܢ. ܘܣܒܥܘ
ܟܪܣܗܘܢ. ܘܐܬܪܝܡ ܠܒܗܘܢ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܛܥܘܢܝ. * ܘܗܘܝܬ ܠܗܘܢ ܐܝܟ ܐܪܝܐ. ܘܐܝܟ
ܢܡܪܐ ܒܐܘܪܚܐ ܕܐܬܘܪ. * ܐܦܓܥ ܒܗܘܢ ܐܝܟ ܕܒܐ ܕܬܟܝܠܐ. ܘܐܨܪܘܝ ܣܝܓܐ ܕܠܒܗܘܢ.
ܘܐܟܠ ܐܢܘܢ ܬܡܢ ܐܪܝܐ. ܘܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ ܬܒܙܥ ܐܢܘܢ. * ܚܒܠܬܟ ܐܝܣܪܝܠ. ܡܢܘ ܢܥܕܪܟ.
* ܐܝܟܘ ܗܘ ܡܠܟܟ. ܢܦܪܩܟ ܘܟܠܗܘܢ ܩܘܪܝܟܝ. ܘܕܝܢܟ ܕܫܐܠܬ ܡܢܝ. ܘܐܡܪܬ. ܗܒ ܠܝ
ܡܠܟܐ ܘܫܠܝܛܐ. * ܝܗܒܬ ܠܟ ܡܠܟܐ ܒܪܘܓܙܝ. ܘܢܣܒܬܗ ܒܚܡܬܝ. * ܨܪܝܪܐ ܥܘܠܗ
ܕܐܦܪܝܡ. ܘܛܫܝܐ ܚܛܝܬܗ. * ܚܒܠܐ ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ ܢܐܬܘܢ ܠܗ. ܡܛܠ ܕܒܪܐ ܗܘ ܠܐ
ܚܟܝܡ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܩܘܡ ܒܬܒܪܐ ܕܒܢܝܐ. * ܡܢ ܐܝܕ ܫܝܘܠ ܐܦܪܘܩ ܐܢܘܢ. ܘܡܢ ܡܘܬܐ ܐܦ
ܐܢܘܢ. ܐܝܟܘ ܗܝ ܙܟܘܬܟ ܡܘܬܐ: ܐܘ ܐܝܟܘ ܗܘ ܥܘܩܣܟ ܫܝܘܠ: ܒܘܝܐܐ ܢܛܫܐ ܡܢ
ܥܝܢܝ. * ܡܛܠ ܕܗܘ ܒܝܬ ܐܚܐ ܢܦܪܘܫ. ܢܐܬܐ ܩܕܝܡܐ ܪܘܚܐ ܕܡܪܝܐ ܡܢ ܡܕܒܪܐ. ܘܢܝܒܫ
ܡܒܘܥܘܗܝ ܘܢܚܪܒ ܡܥܝܢܘܗܝ. ܘܗܘ ܢܒܘܙ ܣܝܡܬܐ ܕܟܠ ܡܐܢܝܢ ܪܓܝܓܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܕ *

* ܬܬܚܪܒ ܫܡܪܝܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܡܪܬ ܠܐܠܗܗ. ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܥܘܠܠܝܗܘܢ ܢܬܪܛܫܘܢ.
ܘܡܥܒܪܢܝܬܗܘܢ ܢܬܒܩܥܢ. * ܐܬܦܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟ. ܡܛܠ
ܕܐܬܬܩܠܬ ܒܥܘܠܟ. * ܣܒܘ ܥܡܟܘܢ ܡܠܐ. ܘܐܬܦܢܘ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ.
ܘܐܡܪܘ ܠܗ ܕܢܫܒܘܩ ܠܟܘܢ ܚܛܗܝܟܘܢ. ܘܩܒܠܘ ܛܒܬܐ. ܘܢܦܪܘܥܟܘܢ ܦܐܪܐ
ܕܣܦܘܬܟܘܢ. * ܘܐܡܪܘ. ܐܬܘܪܝܐ ܠܐ ܢܦܪܩܢ. ܘܥܠ ܪܟܫܐ ܠܐ ܢܪܟܒ. ܘܠܐ ܢܐܡܪ ܬܘܒ
ܠܐܠܗܐ ܠܥܒܕ ܐܝܕܝܢ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܡܪܚܡ ܐܢܬ ܥܠ ܝܬܡܐ. * ܐܐܣܐ ܬܝܒܘܬܗܘܢ.
ܘܐܪܚܡ ܢܕܪܝܗܘܢ. ܘܬܗܦܘܟ ܪܘܓܙܝ ܡܢܗܘܢ.

* Ego ſum Dominus Deus tuus qui extraxi te de terra Ægypti: Deum ullum præter me ne cognoſcito; neque enim eſt qui liberet, niſi ego. 4
Ego te pavi in deſerto in terra inhabitata. 5
Pavi eos, & cùm explevissent ventrem ſuum, elevatum eſt cor eorum; ideò obliti ſunt mei. 6
Et factus ſum eis tanquam leo, & tanquam pardus in via Aſſyriæ. 7
Irruam in eos velut urſus rapax, & lacerabo membranam cordis eorum: & devorabit eos ibi leo, & fera ſylveſtris exenterabit eos. 8
Perdidi te O Iſrael, quis auxiliaretur tibi? 9
Ubi eſt jam rex tuus? liberet te omnéſque urbes tuas: & ubi judex tuus quem petieras à me dicens; Da mihi regem & principem? 10
Dedi tibi regem in ira mea, eúmq; abſtuli in furore meo. 11
Colligata eſt iniquitas Aphremi, & reconditũ peccatũ ejus. 12
Dolores ut parturientis evenient ei, quia filius eſt minimè ſapiens. 13
Jam verò non permanebit in doloribus filiorũ: De manu inferi liberabo eos, & à morte eruã eos. Ubi jam eſt victoria tua, mors? aut ubi eſt ſtimulus tuus, inferne? Conſolatio delitescit ab oculis meis. 14
Quoniã ipſe fratres ab invicèm ſeparabit, veniet *ventus* Orientalis, ventus Dñi è deſerto erumpet, vaſtabítq; fontes ejus, & areſaciet ſcaturigines ejus; idémq; diripiet theſaurũ ſupellectilium quarumcunq; exquiſitiſſimarum. 15

CAP. XIV.

Rea erit Samaria, quòd exaſperaverit Deum ſuum: gladio occumbent, parvuli eorum collidentur, & prægnantes eorum exenterabuntur. 1
Revertere Iſrael, ad Dñm Deum tuum, quoniã impegiſti in iniquitatem tuam. 2
Sumite vobiſcum verba, & revertimini ad Dñm Deum veſtrum, & dicite illi ut dimittat vobis iniquitatem veſtram; & bona ſuſcipite: rependet enim vobis fructus labiorum veſtrorum. 3
Et dicite, Aſſyrius non liberabit nos, & equos non conſcendemus, neque vocabimus in poſterum deos opus manuum noſtrarum: tu enim miſereris pupillorum. 4
Sanam reddam pœnitentiam eorum, & amabo vota eorum, recedétque ira mea ab eis. 5

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وانا الرب الهك مثبت السماء وخالق الارض * يداي خلقت جميع اجناد السماء * ولم اشهرها
لك لئلا تمضي خلفها * وانا اصعدتك من ارض مصر والها غيري لم تعرف * ولم يكن مخلص
سواي * انا رعيتك في البرية * في ارض غير مسكونة * كمراعيهم * وامتلوا شبعا * وارتفعت
قلوبهم * من اجل هذا نسوني * فاصير لهم مثل الشبل ومثل النمر في طريق الموصليين
* واستقبلهم مثل الدبة الجايعة * واشق حجاب قلبهم * وتاكلهم هناك اشبال الغيضة * وتفسخهم
وحوش الحقل * في فسادك يا اسرايل من يعينك * اين ملكك هذا * فليخلصك في جميع
مدنك * ليحكم لك الذي قلت اعطني ملكا ورييسا * فاعطيتك ملكا برجزي * وقبضته
بغضبي * بتصروه في الظلم * اثام خطية مكتومة * تاتي له الطلقات مثل التي تلد * هذا
ابنك العاقل * من اجل انه لا يقوم في انكسار الاولاد * من يد الجحيم انجيهم * ومن الموت
انقذهم * اين عقوبتك يا موت * اين شوكتك يا جحيم * التعزية حجبت عن عيني * من
اجل ان هذا يفصل بين الاخوة * الرب يجلب ريح سموم من البرية عليه * ويجفف عروقه
ويخرب ينابيعه * وكل انيته المشتهاة *

* الفصل الرابع عشر *

* تهلك سامرة لانها عاندت الهها * بالسيف يسقطون هم * ورضعانهم يضربون بالارض
وحواملهم يشقون *

* الاصحاح الخامس *

* ارجع يا اسرايل الى الرب الهك * من اجل انك ضعفت بظلاماتك * خذوا معكم كلاما
وارجعوا الى الرب الهكم * قولوا له كيلا تاخذون ظلما * وتاخذون صلاحا * ونكافي من
شفاهنا * الموصلي لا يخلصنا * على الخيل لا نركب * لا نقول بعد الهنا بعمل ايدينا * الذي
فيك يرحم يتيما * اشفي بيوتهم * سأحبهم بانفاق * من اجل اني ارد رجزي عنهم

* *Ego autem ſum Dominus Deus tuus firmans cœlum, & creans terram: manus meæ creaverunt cunctam cœli militiam, ſed non patefeci eam tibi, ne ſequereris eam: ego etiam eduxi te de terra Ægypti: Deum præter me non cognoviſti, nec alius fuit præter me ſervator:* 4
Ego pavi te in deſerto, in terra inhabitata. 5
Cum paſti fuiſſent, & ſaturitate repleti, elevata ſunt corda eorum; ideò obliti ſunt mei. 6
Proinde ero illis ſicut catulus leonis, & ſicut pardus in via Aſſyriorum: 7
Et occurram eis velut urſa fame æſtuans, & diſrumpam velum cordis eorum: & devorabunt eos ibi leunculi ſylvæ, & diſcerpent eos beſtiæ campi. 8
In corruptione tua O Iſrael, quis auxiliabitur tibi? 9
Ubi eſt rex iſte tuus? liberet te in cunctis urbibus tuis: judicet tibi is de quo dixiſti, Da mihi regem & principem: 10
Dedique tibi regem in ira mea, & prehendi eum in furore meo, 11
Propter ſceleratam vitæ rationem. Aphremi peccatum ſecretum eſt. 12
Advenient ipſi dolores ut ejus quæ parturit. Hic eſt filius tuus prudens, quia non ſtabit in contritione filiorum. 13
De manu inferi eripiam eos, & à morte liberabo eos. Ubi eſt pœna tua O mors? ubi ſpina tua O inferne? Conſolatio abdidit ſe ab oculis meis, 14
Quoniam iſte ſeparabit fratres. Dominus adducet ventum uredinis è deſerto ſuper eum, & areſaciet radices ejus, vaſtabit fontes ejus & optatiſſima quæque vaſa ipſius. 15

CAP. XIV.

Peribit Samaria, quia reſtitit Deo ſuo: gladio corruent ipſi, & lactentes eorum ad humum allidentur, & prægnantes eorum diſſindentur. 1

Textus quintus.

Revertere O Iſrael ad Dominum Deum tuum, quoniam infirmatus es in iniquitatibus tuis. 2
Sumite vobiſcum ſermones, & revertimini ad Dominum Deum veſtrum: dicite illi, ut non recipiatis iniquitatem veſtram, *ſed recipiatis bonum: & referemus fructum labiorum noſtrorum.* 3
Aſſyria non liberabit nos, equos non conſcendemus, non dicemus deinceps, Dii noſtri ſunt ex opere manuum noſtrarum: qui in te eſt, miſereatur pupilli: 4
Sanabo domos eorum, diligam eos confiditer. Ego enim avertam iram meam ab eis. 5

יואל : א

percutiet & : lilium tanquam germinabit , Iſraeli ros tanquam Ero
6 אֶהְיֶה כַטַּל לְיִשְׂרָאֵל יִפְרַח כַּשּׁוֹשַׁנָּה וְיַךְ
olea tanquam erit & , ejus *ramuli* Ibunt .Libanus tanquam ejus radices
7 שָׁרָשָׁיו כַּלְּבָנוֹן׃ יֵלְכוּ יֹנְקוֹתָיו וִיהִי כַזַּיִת
ſedentes Revertentur .Libani tanquam ei odor & : ejus gloria
8 הוֹדוֹ וְרֵיחַ לוֹ כַּלְּבָנוֹן׃ יָשֻׁבוּ יֹשְׁבֵי
ejus *memoria* : vitis ſicut *germinabunt* &,triticum vivificabunt,ejus umbra in
בְצִלּוֹ יְחַיּוּ דָגָן וְיִפְרְחוּ כַגָּפֶן זִכְרוֹ
ego ? *dolores* ad ultrà mihi Quid , Ephraim .Libani vinum ſicut
9 כְּיֵין לְבָנוֹן׃ אֶפְרַיִם מַה־לִּי עוֹד לָעֲצַבִּים אֲנִי
tuus fructus me ex ; *frondoſa* abies ut ego : eum reſpiciam & ,exaudiam
עָנִיתִי וַאֲשׁוּרֶנּוּ אֲנִי כִּבְרוֹשׁ רַעֲנָן מִמֶּנִּי פֶּרְיְךָ
? iſta ſciet & , intelligens ? iſta intelliget & ,ſapiens Quis .eſt inventus
10 נִמְצָא׃ מִי חָכָם וְיָבֵן אֵלֶּה נָבוֹן וְיֵדָעֵם
: eis in ambulabunt juſti & ,Domini viæ rectæ quia
כִּי־יְשָׁרִים דַּרְכֵי יְהוָה וְצַדִּקִים יֵלְכוּ בָם
.eis in corruent prævaricatores *&*
וּפֹשְׁעִים יִכָּשְׁלוּ בָם׃

Verſio VULG. LAT.

6 Ero quaſi ros, Iſrael germinabit ſicut lilium, & erumpet radix e-
7 jus ut Libani. Ibunt rami ejus, & erit quaſi oliva gloria ejus, &
8 odor ejus ut Libani. Convertentur ſedentes in umbra ejus: vivent tritico, & germinabunt quaſi vinea: memoriale ejus ſicut vi-
9 num Libani. Ephraim, quid mihi ultrà idola? ego exaudiam, & dirigam eum ego ut abietem virentem: ex me fructus tuus in-
10 ventus eſt. Quis ſapiens, & intelliget iſta? intelligens, & ſciet hæc? quia rectæ viæ Domini, & juſti ambulabunt in eis: prævaricatores verò corruent in eis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Ἔσομαι ὡς δρόσος τῷ Ἰσραὴλ, ἀνθήσει ὡς κρίνον, καὶ βαλεῖ τὰς ῥίζας αὐτοῦ (δ) ὡς
7 ὁ Λίβανος. Πορεύσονται οἱ κλάδοι αὐτοῦ, καὶ ἔσται ὡς ἐλαία κατάκαρπος, καὶ ἡ ὀσφρασία
8 αὐτοῦ ὡς Λιβάνου. Ἐπιστρέψουσι καὶ καθιοῦνται ὑπὸ τὴν σκέπην αὐτοῦ, ζήσονται καὶ μεθυσθήσονται σίτῳ· καὶ ἐξανθήσει ὡς ἄμπελος· (ε)
9 μνημόσυνον αὐτοῦ, ὡς οἶνος Λιβάνου. Τῷ Ἐφραίμ. τί (ζ) αὐτῷ ἔτι καὶ εἰδώλοις; ἐγὼ ἐταπείνωσα αὐτὸν, καὶ (η) κατισχύσω αὐτόν. ἐγὼ ὡς ἄρκευθος πυκάζουσα, ἐξ ἐμοῦ ὁ καρ-
10 πός σου εὕρηται. Τίς σοφὸς καὶ συνήσει ταῦτα; ἢ συνετὸς καὶ ἐπιγνώσεται αὐτά; (θ) ὅτι εὐθεῖαι αἱ ὁδοὶ τοῦ κυρίου, καὶ δίκαιοι πορεύσονται ἐν αὐταῖς, οἱ δὲ ἀσεβεῖς ἀσθενήσουσιν ἐν αὐταῖς.

Ero quaſi ros Iſrael: florebit, ut lilium, & mittet radices ſuas, quaſi 6
Libanus: Ibunt rami ejus: & erit quaſi oliva fructifera, & odor illius, quaſi Libani. 7 *Convertentur, & ſedebunt ſub umbra ejus: vivent, et (e) inebriabuntur frumento: & efflorebit, ut vinea; memoriale ejus, quaſi vinum Libani* 8 *Ephræm. Quid ei ultrà, & idolis?* 9 *Ego humiliavi eum, & confortabo illum. Ego, ſicut juniperus condenſa: ex me fructus tuus inventus eſt.* 10 *Quis ſapiens, & intelliget hæc? aut intelligens, & cognoſcet ea? Quia rectæ viæ Domini: & juſti ambulabunt in eis: qui autem impii ſunt, infirmabuntur in illis.*

MS.A. (δ) ὡς Λίβανος. (ε) τὸ μνημόσυνον (ζ) ἔτι αὐτῷ (η) ἐγὼ κατισχύσω (θ) διότι ὩΣΗΕ Α'.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 יהי מימרי כטלא לישראל יזהרון כשושנא ויתבון על תקוף ארעהון כאילן לבנן
7 דמשלח עוברתיה : יסגון בנין ובנן ויהי כזיו מנרת קודשא זיוהון וריחהון כריח
8 קטורת בוסמיא : יתכנשון מביני גלותהון יתבון בטלל משיחהון ויחון מתיא ויסגי
טובא בארעא יהי דכרן טבותהון עלל ולא פסק כדכרן יבבות חצוצרתא על חמר
9 עתיק דמתנסך בבית מקדשא : יימרון דבית ישראל מה לנא עוד למפלח לטעותא
אנא במימרי אקבל צלותהון דישראל וארחם עלוהי אנא במימרי אעבדניה
10 כבירון שפירן דמן קדמי סליחה לתיובתהון משתכחא : מן חכים דיסבר אלין סוכלתן
וידענון ארי תקנן אורחתא דיי וצדיקיא דהליכו בה יחון בהון בחיי עלמא ורשיעיא
יתמסרון לגיהנם על דלא הליכו בהון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Erit Verbum meum ſicut ros Iſraeli, ſplendebunt ſicut lilium, & habitabunt 6 in robore terræ ſuæ ſicut arbor Libani quæ diffundit ſuam propaginem. Accreſcent filiis ac filiabus, & erit ſplendor eorum ſicut ſplendor candela- 7 bri ſanctitatis, & odor eorum velut odor incenſi aromatum. Congrega- 8 buntur de medio captivitatis ſuæ, habitabunt in umbra Chriſti ſui, & vivent mortui, accreſcétque bonum in terra: erit memoriale bonitatis eorum fructificans & indeficiens juxta ac memoria clangoris tubarum ſuper vino veteri, quod libari ſolet in domo ſanctuarii. Dicent [*prognati*] domus Iſ- 9 rael, Quid ad nos [*attinet*] ultrà ſervire idolis? ego in verbo meo ſuſcipiam orationem Iſrael atque miſerebor ipſius, in verbo meo efficiam illum ſicut abietem pulchrã, quia à me remiſſio ob pœnitentiam illorũ invenietur. Quis 10 ſapiens, ut conſideret iſta? prudens, & ipſa percipiat? equidem rectæ ſunt viæ Dñi, & juſti qui incedunt per eas, ob ipſaſmet vita vivent ſempiterna. Impii verò tradentur gehennæ, eò quòd non ambulaverunt per illas.

ספר יואל : א

CAP. I. א

.Pethuel filium Joel ad fuit quod Domini Verbum
1 דְּבַר־יְהוָה אֲשֶׁר הָיָה אֶל־יוֹאֵל בֶּן־פְּתוּאֵל׃
habitatores omnes percipite auribus & , ſenes hoc Audite
2 שִׁמְעוּ־זֹאת הַזְּקֵנִים וְהַאֲזִינוּ כֹּל יוֹשְׁבֵי
diebus in *ſi* & , veſtris diebus in hoc fuerit an : terræ
הָאָרֶץ הֶהָיְתָה זֹּאת בִּימֵיכֶם וְאִם בִּימֵי
veſtri filii & : narrate veſtris filiis hoc Super .veſtrorum patrum
3 אֲבֹתֵיכֶם׃ עָלֶיהָ לִבְנֵיכֶם סַפֵּרוּ וּבְנֵיכֶם
Ghazam Reſiduum .alteræ generationi eorum filii & , ſuis filiis
4 לִבְנֵיהֶם וּבְנֵיהֶם לְדוֹר אַחֵר׃ יֶתֶר הַגָּזָם
, *Jelec* comedit locuſtæ reſiduum & , locuſta comedit
אָכַל הָאַרְבֶּה וְיֶתֶר הָאַרְבֶּה אָכַל הַיֶּלֶק
, ebrii Expergiſcimini .chaſil comedit bruchi reſiduum &
5 וְיֶתֶר הַיֶּלֶק אָכַל הֶחָסִיל׃ הָקִיצוּ שִׁכּוֹרִים
, novum vinum *ſuper* : vinum *bibentes* omnes ululate & , flete &
וּבְכוּ וְהֵילִלוּ כָּל־שֹׁתֵי יָיִן עַל־עָסִיס
ſuper aſcendit gens Nam .veſtro ore ab *eſt exciſum* quoniam
6 כִּי נִכְרַת מִפִּיכֶם׃ כִּי־גוֹי עָלָה עַל־
, leonis dentes ejus Dentes .*numerus* *non* & , fortis meam terram
אַרְצִי עָצוּם וְאֵין מִסְפָּר שִׁנָּיו שִׁנֵּי אַרְיֵה
, deſolationem in meam vitem Poſuit .ei leonis molares &
7 וּמְתַלְּעוֹת לָבִיא לוֹ׃ שָׂם גַּפְנִי לְשַׁמָּה
, eam nudavit Nudando .decorticationem in meam ficum &
וּתְאֵנָתִי לִקְצָפָה חָשֹׂף חֲשָׂפָהּ
virgo tanquam *Ulula* .ejus *ſlicatiles* rami ſunt facti albi : fecit projicere &
8 וְהִשְׁלִיךְ הִלְבִּינוּ שָׂרִיגֶיהָ׃ אֱלִי כִּבְתוּלָה
eſt Exciſum *ſuarum pueritiarum patronum* ſuper ſacco accincta
9 חֲגֻרַת־שַׂק עַל־בַּעַל נְעוּרֶיהָ׃ הָכְרַת
ſacerdotes luxerunt : DOMINI domo de libatio & , *munus*
מִנְחָה וָנֶסֶךְ מִבֵּית יְהוָה אָבְלוּ הַכֹּהֲנִים
.DOMINI miniſtri
מְשָׁרְתֵי יְהוָה׃

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA *JOEL.*

CAP. I.

1 VErbum Domini, quod factum
2 eſt ad Joel filium Phatuel. Audite hoc, ſenes; & auribus percipite, omnes habitatores terræ: ſi factum eſt iſtud in diebus veſtris, aut in diebus patrum veſtrorum?
3 Super hoc filiis veſtris narrate, & filii veſtri filiis ſuis, & filii eorum
4 generationi alteræ. Reſiduum erucæ comêdit locuſta, & reſiduũ locuſtæ comêdit bruchus, & reſi-
5 duũ bruchi comêdit rubigo. Expergiſcimini ebrii, & flete, & ululate omnes, qui bibitis vinum in dulcedine: quoniam periit ab ore
6 veſtro. Gens enim aſcendit ſuper terram meam, fortis & innumerabilis: dentes ejus ut dentes leonis: & molares ejus ut catuli leo-
7 nis. Poſuit vineam meam in deſertum, & ficum meam decorticavit: nudans ſpoliavit eam, & projecit: albi facti ſunt rami e-
8 jus. Plange quaſi virgo accincta ſacco ſuper virum pubertatis
9 ſuæ. Periit ſacrificium & libatio de domo Domini: luxerunt ſacerdotes miniſtri Domini.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΙΩΗ'Λ Δ'. *JOEL.*

ΚΕΦ. α'.

1 Λόγος κυρίου, ὃς ἐγενήθη πρὸς Ἰωὴλ τὸν
2 τοῦ Βαθουήλ. Ἀκούσατε (α) ταῦτα οἱ πρεσβύτεροι, καὶ ἐνωτίσασθε πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν, εἰ γέγονε τοιαῦτα ἐν ταῖς ἡμέραις ὑμῶν, ἢ ἐν ταῖς ἡμέραις τῶν πατέρων ὑμῶν;
3 Ὑπὲρ αὐτῶν τοῖς τέκνοις ὑμῶν διηγήσασθε, καὶ τὰ τέκνα ὑμῶν τοῖς τέκνοις αὐτῶν, καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν εἰς γενεὰν ἑτέραν.
4 Τὰ κατάλοιπα τῆς κάμπης κατέφαγεν ἡ ἀκρὶς, καὶ τὰ κατάλοιπα τῆς ἀκρίδος κατέφαγεν ὁ βροῦχος, καὶ τὰ κατάλοιπα τοῦ βρούχου
5 κατέφαγεν ἡ (β) ἐρυσίβη. Ἐκνήψατε οἱ μεθύοντες ἐξ οἴνου αὐτῶν, καὶ κλαύσατε· θρηνήσατε πάντες οἱ πίνοντες οἶνον εἰς μέθην, ὅτι (γ) ἐξήρθη ἐκ στόματος ὑμῶν εὐφροσύνη καὶ
6 χαρά. Ὅτι ἔθνος ἀνέβη ἐπὶ τὴν γῆν μου ἰσχυρὸν καὶ ἀναρίθμητον, οἱ ὀδόντες αὐτοῦ ὀδόντες λέοντος, καὶ αἱ μύλαι αὐτοῦ σκύμνου.
7 Ἔθετο τὴν ἄμπελόν μου εἰς ἀφανισμὸν, καὶ τὰς συκᾶς μου εἰς συγκλασμόν· ἐρευνῶν ἐξηρεύνησεν (δ) αὐτὴν, καὶ ἔρριψεν· ἐλεύκανε
8 κλήματα αὐτῆς. Θρήνησον πρὸς με ὑπὲρ νύμφην περιεζωσμένην σάκκον, ἐπὶ
9 τὸν ἄνδρα αὐτῆς τὸν παρθενικόν. Ἐξῆρται θυσία καὶ σπονδὴ ἐξ οἴκου κυρίου. πενθεῖτε οἱ ἱερεῖς οἱ λειτουργοῦντες (ε) θυσιαστηρίῳ κυρίου.

CAP. I.

VErbum Domini, quod factum eſt ad Joel filium Bathuel. 1 *Audite hæc, ſenes; et auribus percipite, omnes habitatores terræ:* 2 *ſi facta ſunt talia in diebus veſtris, aut in diebus patrum veſtrorum. Pro his, filiis veſtris narrate, &* 3 *filii veſtri filiis ſuis, & filii eorum in generationem alteram. (a) Reſidua erucæ comêdit locuſta, et* 4 *reſidua locuſtæ comêdit bruchus, & reſidua bruchi comêdit rubigo. Evigilate, qui ebrii eſtis ex vi-* 5 *no veſtro, & plorate: plangite omnes, qui bibitis vinum ad ebrietatem: quoniam ablatum eſt de ore veſtro (b) gaudium, & lætitia. Quia gens aſcendit ſuper ter-* 6 *ram meam fortis, & innumerabilis: dentes ejus, dentes leonis, & molares ejus, catuli leonis. Poſuit* 7 *vineam meam in diſſipationem, & ficus meas in confractionem. Scrutans ſcrutatus eſt eam, & projecit: dealbavit ramos ejus.* 8 *Plange ad me ſuper ſponſam accinctam cilicio ſuper virum virgineum. Ablatum eſt ſacrificium, & libatio de domo Domini.* 9 *Lugete ſacerdotes, qui miniſtratis altari Domini.*

MS.A. ἸΩΗ'Λ Δ'. (α) δὴ ταῦτα (β) ἐρισύβη. (γ) ἐξῆρται ἐκ στόματος (δ) καὶ ἔρριψεν ἐλεύκανεν κλήματα (ε) θυσιαστηρίῳ, Ὅτι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 פתגם נבואה מן קדם יי דהוה עם יואל בר פתואל : שמעו דא סביא ואציתו כל יתבי
2 ארעא ההות דא ביומיכון ואם ביומי אבהתכון : עלה לבניכון אשתעו ובניכון לבניהון
3 ובניהון לדר אחרן : מותר זחלא אכל גובא ומותר גובא אכל פרחא ומותר פרחא
4 אכל שומשא : אתערו רויא ובכו ואילילו כל שתי חמר על חמר מרת ארי אתמנע
5 מפומכון : ארי עמא סליק על ארעי תקיף ולית מנין שנוהי שני אריא וניבוהי כבר
6 אריון : שוי פירי גופני עמי לצדו ותינתהון למפחת נפש מקלף קליף ורמא חירו
7 שבשהא : כנשתא דישראל עבידי אליא כבתולתא דאסירא סקא למספד על בעל
8 עולימתהא : פסקו קרבנין ונסכין מבית מקדשא דיי אתאבלו כהניא דמשמשין
9 בבית מקדשא דיי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT. I.

VErbum prophetiæ à facie Dñi quod factum eſt ad Joel filium Pathuel. Audite hoc ſenes, & auribus percipite omnes incolæ terræ, num tale fuerit in diebus veſtris, aut diebus majorum veſtrorum. De ipſo filiis veſtris narrate, & filii veſtri filiis ſuis, filii demum eorum generationi alii. Reſiduum erucæ comedit locuſta, & reſiduum locuſtæ corraſit bruchus; atque reliquias bruchi conſumpſit rubigo. Expergiſcimini ebrii, flete & ululate omnes potatores vini cauſa vini meri, quoniam vetitum eſt ori veſtro. Etenim populus aſcendit ſuper terram meam fortis & innumerus: dentes ejus, dentes leonis, & molares ejus quales catuli leonum. Poſuit fructus vinearum populi mei in vaſtitatem, & ficus eorum in exhalationem animæ decorticando decorticavit, atque projecit: albi facti ſunt rami ejus. Cœtus Iſrael agite lamentum veluti virgo quæ accingitur ſacco plangendi gratia ſuper viro adoleſcentiæ ſuæ. Ceſſaverunt oblationes atque libamina de domo ſanctuarii Domini: ejularunt ſacerdotes miniſtrantes in domo ſanctuarii Domini.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܗܘܐ ܐܝܟ ܛܠܐ ܠܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܦܪܥ ܐܝܟ ܫܘܫܢܬܐ. ܘܢܪܡܐ ܥܩܪܘܗܝ ܐܝܟ ܕܠܒܢܢ. 6
* ܘܢܣܓܘܢ ܣܘܟܘܗܝ. ܘܢܗܘܐ ܐܝܟ ܙܝܬܐ ܕܫܦܝܪ ܒܦܐܪܘܗܝ. ܘܪܝܚܗ ܐܝܟ ܕܠܒܢܢ. 7
* ܘܢܬܦܢܘܢ. ܘܢܬܒܘܢ ܒܛܠܠܗ. ܘܢܚܘܢ ܡܢ ܥܒܘܪܐ. ܘܢܦܪܥܘܢ ܐܝܟ ܓܦܬܐ. 8
ܘܕܘܟܪܢܗܘܢ ܐܝܟ ܚܡܪܐ ܕܠܒܢܢ. * ܘܢܐܡܪ ܐܦܪܝܡ. ܡܢܐ ܠܝ ܬܘܒ ܥܡ ܦܬܟܪܐ. ܐܢܐ 9
ܡܟܟܬܗ. ܘܐܢܐ ܐܫܒܚܝܘܗܝ. ܐܝܟ ܒܪܘܬܐ ܡܛܠܠܬܐ. ܡܢܝ ܓܝܪ ܡܫܬܟܚܝܢ ܦܐܪܝܟ. * ܡܢܘ 10
ܚܟܝܡܐ ܘܢܣܬܟܠ ܗܠܝܢ. ܘܡܣܬܟܠܐ ܘܢܕܥ ܐܢܝܢ: ܕܬܪܝܨܢ ܐܘܪܚܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܙܕܝܩܐ
ܢܗܠܟܘܢ ܒܗܝܢ. ܘܥܘܠܐ ܢܬܬܩܠܘܢ ܒܗܝܢ.

* ܫܠܡ ܗܘܫܥ ܢܒܝܐ *

Et ero ſicut ros Iſraeli, florebitque ſicut lilium, & radices ſuas jaciet ut Libanicas: 6 Pullulabunt rami ejus, & erit ſicut olea fructibus ſuis decorata, & odor ejus Libanico ſimilis. 7 Reædificabuntur, & ſedebunt in 8 umbra ejus, vivent ex frumento, & germinabunt ſicut vitis, & memoria eorum ſicut vinũ Libani. Et dicet Aphrem; Quid mihi amplius cum idolis? Ego humiliavi eum, et ego glorificabo eum quaſi pinum opacam: nam ex me inveniuntur fructus tui. 9 Qui ſapiens 10 eſt, intelliget hæc; et qui prudens eſt cognoſcet ea: nam rectæ ſunt viæ Domini, & juſti ambulant in eis, injuſti verò impingunt in eis.

Hoſeæ Prophetæ finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وأصير مثل الندى لاسرائيل * يزهر مثل السوسنة * ويضع اصوله مثل لبنان * تسير اغصانه * 6
ويصير مثل الزيتونة الثمين * ورائحته مثل لبنان * يرجعون ويجلسون تحت ظله * ويحيون 7
ويسكرون بالحنطة * يزهر مثل كرمة * ذكره مثل خمر لبنان * لافرام ما له ايضا وللاصنام * 8
انا واضعه وانا اقويه * انا مثل شجرة العرعر الخصبة * مني يوجد ثمرك * من الحكيم 9
فيفهم هذه * او فهم فيعرفها * من اجل ان طرق الرب مستقيمة * والصديقون يسيرون فيها * 10
والمنافقون يضعفون فيها *

* تمت نبوة هوشع النبي * بركاته تكون معنا * امين *

Et ero ſicut ros Iſraeli: florebit ſicut lilium, figetq; radices ſuas ſicut Libanus: 6 *Diffundent ſe rami ejus: & erit ſimilis* 7 *olivæ frugiferæ, & odor ejus Libano ſimilis. Revertentur, & ſedebunt ſub um-* 8 *bra illius: vivent, & inebriabuntur frumento: florebit ſicut vitis, memoria ejus ut vinum Libani. Aphremo quid eſt adhuc* 9 *cum idolis? Ego humiliavi eum, & ego confortabo eum. Ego ſum ſimilis arbori cypreſſinæ uberrimæ: ex me invenitur fructus tuus. Quicunq; ſapiens eſt, intelliget* 10 *hæc; aut prudens, & cognoſcet ea: nam viæ Domini rectæ ſunt, & juſti incedunt in eis, impii verò debilitantur in eis.*

Abſoluta eſt Prophetia Hoſeæ Prophetæ, cujus benedictiones adſint nobis, Amen.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

---

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܝܘܐܝܠ ܢܒܝܐ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܝܘܐܝܠ ܒܪ ܒܬܘܐܝܠ. * ܫܡܥܘ ܗܕܐ ܟܗܢܐ: ܘܨܘܬܘ ܟܠ 1 2
ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܠܐ ܗܘܬ ܐܝܟ ܗܕܐ ܒܝܘܡܝܟܘܢ. ܐܘ ܒܝܘܡܝ ܐܒܗܝܟܘܢ. * ܐܫܬܥܘ 3
ܥܠܝܗ ܠܒܢܝܟܘܢ. ܘܒܢܝܟܘܢ ܠܒܢܝܗܘܢ. ܘܒܢܝܗܘܢ ܠܕܪܐ ܐܚܪܢܐ. * ܕܫܒܩ ܙܚܠܐ 4
ܐܟܠܗ ܩܡܨܐ ܦܪܚܐ. ܘܕܫܒܩ ܩܡܨܐ ܦܪܚܐ. ܐܟܠ ܩܡܨܐ ܙܚܠܐ. ܘܕܫܒܩ ܙܚܠܐ
ܐܟܠ ܓܘܒܐ. * ܐܬܬܥܝܪܘ ܪܘܝܐ: ܘܒܟܘ. ܘܐܝܠܠܘ ܟܠ ܫܬܝ ܚܡܪܐ: ܥܠ ܚܡܪܐ 5
ܕܥܒܪ ܡܢ ܦܘܡܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܥܡܐ ܣܠܩ ܠܐܪܥܝ. ܥܫܝܢ ܘܠܝܬ ܠܗ ܡܢܝܢܐ. 6
ܫܢܘܗܝ ܐܝܟ ܫܢܐ ܕܐܪܝܐ. ܘܢܝܒܘܗܝ ܐܝܟ ܕܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ. * ܣܡܗ ܠܓܦܬܝ 7
ܠܚܘܪܒܐ. ܘܬܐܢܬܝ ܠܡܦܫܚܐ. ܦܫܚܗ ܦܫܚܐ. ܘܫܕܝܗ ܘܚܘܪܝ ܫܒܫܒܘܗܝ. * ܝܠܠܝ ܐܝܟ ܒܬܘܠܬܐ 8
ܕܚܓܝܪܐ ܣܩܐ ܥܠ ܒܥܠܐ ܕܛܠܝܘܬܗ. * ܒܛܠ ܣܡܝܕܐ ܘܢܘܣܟܐ ܡܢ ܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܝܬܒܘ 9
ܒܐܒܠܐ ܡܠܟܐ. ܘܟܗܢܐ ܕܡܫܡܫܝܢ ܠܡܪܝܐ.

SEQUITUR PROPHETIA
JOELIS PROPHETÆ.

CAP. I.

SErmo Domini qui fuit ad Joëlem filium 1 Bethuelis. Audite hoc Sacerdotes, & auſcultate 2 omnes incolæ terræ, num contigerit quicquam ſimile in diebus veſtris aut diebus patrum veſtrorum. De hoc narrate filiis ve- 3 ſtris, & filii veſtri filiis ſuis, & horum filii generationi poſteræ. Quod reliquum fecit 4 eruca, comêdit locuſta volans; quod reliquum fecit locuſta volans, comêdit locuſta reptans; & quod reliquum fecit locuſta reptans, comêdit gryllus. Expergiſcimini ebrii, 5 & flete, ac ejulate omnes vini potores, propter vinum, quòd tranſierit ab ore veſtro. Nam populus invaſit terram meam, potens 6 & innumerus, cujus dentes ſimiles ſunt dentibus leonis, & canini ejus ſimiles caninis catuli leonis. Redegit vitim meam ad vaſti- 7 tatem, & ficum meam ad divulſionem: divulſit & abjecit eam, & alba reddidit flagella ejus. Ejula ſicut virgo accincta ſacco 8 propter maritum adoleſcentiæ ſuæ. Deſiit ſi- 9 mila & libamen de domo Dñi: ſederunt in luctu reges, & ſacerdotes qui Dño miniſtrant.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الرؤوف الرحيم * بدو ترجمة يوييل النبي بركاته علينا *

* الفصل الاول * الاصحاح السادس * وهو الاول من النبوة *

* قول الرب الذي صار الى يوييل بن باتوييل * اسمعوا هذه ايها الشيوخ * وانصتوا يا جميع 1 2
سكان الارض * هل صارت هذه في ايامكم * او في ايام ابائكم * اخبروا عنها لاولادكم * واولادكم 3
لاولادهم * واولادهم لجيل اخر * الذي فضل عن الدود اكله الجراد * والذي فضل عن 4
الجراد * اكله الجندب * والذي فضل عن الجندب اكله القمل * استيقظوا ايها السكارى 5
من خمرهم وابكوا نوحوا يا جميع شاربي الخمر للسكر * ان السرور والفرح نزعا عن فمكم * لان 6
امة قوية وغير محصاة صعدت على ارضي * اسنانها اسنان اسد * وانيابها انياب شبل * وضعت 7
كرمي للفناء * وتيني للتمسيح * فتشت تفتيشا وطرحتها * ابيضت قضبانها * نوحي على اكثر 8
من عروس اتزرت بالمسوح على رجلها العذروي * انتزعت الذبيحة والقارورة من بيت الرب * 9
اعولوا ايها الكهنة الذين يخدمون المذبح لانه شقي *

IN NOMINE DEI PIISSIMI, CLEMENTISSIMI.

Principium interpretationis
JOELIS PROPHETÆ,
CUJUS BENEDICTIONES
ſint ſuper nos.

CAPUT PRIMUM.

Textus ſextus, qui eſt hujus
Prophetiæ primus.

SErmo Domini qui factus eſt ad Joëlem filiũ Bathuelis. Audite hæc O ſenes, 1 2 *& auſcultate O omnes habitatores terræ, num acciderint hæc in diebus veſtris, aut in diebus patrum veſtrorum. De his* 3 *narrate filiis veſtris, & filii veſtri filiis ſuis, & filii iſtorum poſteritati alteri. Re-* 4 *ſiduum vermium comêdit locuſta, reſiduum locuſtæ comêdit bruchus, & reſiduum bruchi comederunt pediculi. Evigi-* 5 *late O ebrii, ex vino veſtro, & flete; plangite O omnes bibentes vinum ad ebrietatem: quia gaudium & lætitia ablata ſunt ab ore veſtro. Gens enim robuſta & in-* 6 *numera aſcendit ſuper terram meam; dentes ejus dentes leonis, & canini ejus canini leunculi. Redegit vitim meam ad* 7 *conſumptionem, & ficus meas ad diſcerptionem: diligenter ſcrutata eſt & dejecit eas, albi facti ſunt rami earum. Lamentare me pluſquam ſponſa accincta* 8 *cilicio propter virum ſuum virgineum. Ablatum eſt ſacrificium & alabaſtrum,* 9 *è domo Domini. Dolete O ſacerdotes qui miniſtratis altari, quoniã id afflictum eſt.*

יואל : ב

,triticum est devastatum quia : humus *luxit* , ager est Vastatus
10 שדד שדה אבלה אדמה כי שדד דגן
,agricolæ vos afficite Pudore .*recens* oleum est *infirmatum* ,*mustum* aruit
11 הוביש תירוש אמלל יצהר : הבישו אכרים
messis periit quia : hordeum *super* &,frumentum super vinitores ululate
הילילו כרמים על־חטה ועל־שעורה כי־אבד קציר
etiam,malogranatum : est *infirmata* ficus & , aruit Vitis .agri
12 שדה : הגפן הובישה והתאנה אמללה רמון גם־
à gaudium aruit quia , aruerunt agri *ligna omnia* ,malus &,palma
תמר ותפוח כל־עצי השדה יבשו כי־הביש ששון מן־
ululate , sacerdotes plangite & ,vos Accingite .hominum filiis
13 בני אדם : חגרו וספדו הכהנים הילילו
: mei Dei ministri saccis in *pernoctate* ,ingredimini , altaris ministri
משרתי מזבח באו לינו בשקים משרתי אלהי
.libatio & , *munus* vestri Dei domo de est prohibitum quoniam
כי נמנע מבית אלהיכם מנחה ונסך :
habitatores omnes ,senes *colligite* ,*retentionem* vocate ,jejunium Sanctificate
14 קדשו־צום קראו עצרה אספו זקנים כל ישבי
.Dominum ad clamate & : vestri Dei Domini domum terræ
הארץ בית יהוה אלהיכם וזעקו אל־יהוה :
vastitas tanquam & , Domini dies propè quia : diei Ahah
15 אהה ליום כי קרוב יום יהוה וכשד
,est excisa esca nostris oculis coram Nónne .veniet Omnipotente ab
16 משדי יבוא : הלא נגד עינינו אכל נכרת
grana Computruerunt ? exultatio & , lætitia nostri Dei domo de
17 מבית אלהינו שמחה וגיל : עבשו פרדות
quoniã :horrea sunt dissipata,thesauri sunt desolati , *suis glebis* sub
תחת מגרפתיהם נשמו אצרות נהרסו ממגרות כי
greges sunt confusi , *jumentum ingemuit* Cur .triticum aruit
18 הביש דגן : מה־נאנחה בהמה נבכו עדרי
.sunt desolati *pecoris* greges Etiam .eis pascua non quia , *bovis*
בקר כי אין מרעה להם גם־עדרי הצאן נאשמו :
,deserti *herbifera loca* consumpsit ignis quia ,clamabo Domine te Ad
19 אליך יהוה אקרא כי־אש אכלה נאות מדבר
animalia Etiam .agri *ligna omnia* succendit flamma &
20 ולהבה להטה כל־עצי השדה : גם־בהמות
,aquarum rivi sunt exsiccati quoniam : te ad *vociferabitur* agri
שדה תערוג אליך כי יבשו אפיקי מים
.deserti pascua consumpsit ignis &
ואש אכלה נאות המדבר :

CAP. II. ב

.*meæ sanctitatis* monte in taratantarizate & , Sijon in tuba Clangite
1 תקעו שופר בציון והריעו בהר קדשי
quia,Domini dies venit quia , terræ habitatores omnes Contremiscant
ירגזו כל יושבי הארץ כי־בא יום־יהוה כי
,*obscuritatis* & ,nubis dies ,caliginis & *tenebrositatis* Dies .*propinqua*
2 קרוב : יום חשך ואפלה יום ענן וערפל
ille sicut ; fortis & ,multus populus : montes super expansa aurora veluti
כשחר פרש על־ההרים עם רב ועצום כמהו
annos ad usque addet non eum post & , seculo à fuit non
לא נהיה מן־העולם ואחריו לא יוסף עד־שני
, ignis *comedit* ejus *facies Ad* .generationis & , generationis
3 דור ודור : לפניו אכלה אש
,*ejus facies ad* terra Heden hortus Tanquam .flamma exuret eũ post &
ואחריו תלהט להבה כגן־עדן הארץ לפניו
.ei erit non *evasio* etiam & ,solitudinis desertum eum post &
ואחריו מדבר שממה וגם־פליטה לא־היתה לו :
.current sic ,equites tanquã & : ejus aspectus equorum aspect⁹ Tanquam
4 כמראה סוסים מראהו וכפרשים כן ירוצון :

Versio VULG. LAT.

10 Depopulata est regio, luxit humus: quoniam devastatum est triticum, confusum est vinum, elanguit oleum. 11 Confusi sunt agricolæ, ululaverunt vinitores super frumento & hordeo, quia periit messis agri. 12 Vinea confusa est, & ficus elanguit: malogranatum, & palma, & malum, & omnia ligna agri aruerunt: quia confusum est gaudium à filiis hominum. 13 Accingite vos, & plangite, sacerdotes; ululate, ministri altaris: ingredimini, cubate in sacco, ministri Dei mei: quoniam interiit de domo Dei vestri sacrificium & libatio. 14 Sanctificate jejunium, vocate cœtum, congregate senes, omnes habitatores terræ in domum Dei vestri: & clamate ad Dominum; 15 A, a, a, diei: quia propè est dies Domini, & quasi vastitas à Potente veniet. 16 Numquid non coram oculis vestris alimenta perierunt de domo Dei nostri, lætitia & exultatio? 17 Computruerunt jumenta in stercore suo, demolita sunt horrea, dissipatæ sunt apothecæ: quoniam confusum est triticum. 18 Quid ingemuit animal, mugierunt greges armenti? Quia non est pascua eis: sed & greges pecorum disperierunt. 19 Ad te, Domine, clamabo: quia ignis comêdit speciosa deserti, & flamma succendit omnia ligna regionis. 20 Sed & bestiæ agri, quasi area sitiens imbrem, suspexerunt ad te: quoniam exsiccati sunt fontes aquarum, & ignis devoravit speciosa deserti,

CAP. II.

1 Canite tubâ in Sion, ululate in monte sancto meo, conturbentur omnes habitatores terræ: Quia venit dies Domini, quia propè est 2 Dies tenebrarum & caliginis, dies nubis & turbinis: quasi manè expansum super montes populus multus & fortis: similis ei non fuit à principio, & post eum non erit usque in annos generationis & generationis. 3 Ante faciem ejus ignis vorans, & post eum exurens flamma: quasi hortus voluptatis terra coram eo, & post eum solitudo deserti, neq; est qui effugiat eum. 4 Quasi aspectus equorum, aspectus eorum: & quasi equites, sic current.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

10 Ὅτι τεταλαιπώρηκε τὰ πεδία· πενθείτω ἡ γῆ, ὅτι τεταλαιπώρηκε σῖτος· ἐξηράνθη οἶνος, ὠλιγώθη ἔλαιον, 11 Ἐξηράνθησαν (ζ) γεωργοί. θρηνεῖτε κτήματα ὑπὲρ πυροῦ καὶ κριθῆς, ὅτι ἀπόλωλε τρυγητὸς ἐξ ἀγροῦ. 12 Ἡ ἄμπελος ἐξηράνθη, καὶ αἱ συκαῖ ὠλιγώθησαν· ῥοὰ, καὶ φοίνιξ, καὶ μῆλον, καὶ πάντα τὰ ξύλα τοῦ ἀγροῦ ἐξηράνθησαν, ὅτι ᾔσχυναν χαρὰν οἱ υἱοὶ τῶν ἀνθρώπων. 13 Περιζώσασθε καὶ κόπτεσθε οἱ ἱερεῖς, θρηνεῖτε οἱ λειτουργοῦντες θυσιαστηρίῳ·(ϛ) εἰσέλθετε, ὑπνώσατε ἐν σάκκοις λειτουργοῦντες θεῷ, ὅτι ἀπέσχηκεν ἐξ οἴκου θεοῦ ὑμῶν 14 θυσία καὶ σπονδή. Ἁγιάσατε νηστείαν, κηρύξατε θεραπείαν, συναγάγετε πρεσβυτέρους, πάντας κατοικοῦντας γῆν εἰς οἶκον (η) θεοῦ ὑμῶν, καὶ κεκράξετε πρὸς κύριον ἐκτενῶς, (θ) 15 Οἴμοι, οἴμοι, οἴμοι εἰς ἡμέραν, ὅτι ἐγγὺς ἡ ἡμέρα κυρίου, καὶ ὡς ταλαιπωρία ἐκ ταλαιπωρίας ἥξει. 16 Κατέναντι τῶν ὀφθαλμῶν ὑμῶν βρώματα (ι) ἐξωλοθρεύθη, ἐξ οἴκου θεοῦ ὑμῶν εὐφροσύνη καὶ χαρά. 17 Ἐσκίρτησαν δαμάλεις ἐπὶ ταῖς φάτναις αὐτῶν, ἠφανίσθησαν θησαυροὶ, κατεσκάφησαν ληνοὶ, ὅτι ἐξηράνθη σῖτος. τί ἀποθήσομεν ἑαυτοῖς; 18 Ἔκλαυσαν βουκόλια βοῶν, ὅτι οὐχ ὑπῆρχε νομὴ αὐτοῖς, καὶ τὰ ποίμνια τῶν προβάτων (κ) ἠφανίσθησαν. 19 Πρὸς σὲ κύριε βοήσομαι, ὅτι πῦρ ἀνήλωσε τὰ ὡραῖα τῆς ἐρήμου, καὶ φλὸξ ἀνῆψε πάντα τὰ ξύλα τοῦ ἀγροῦ, 20 Καὶ τὰ κτήνη τοῦ πεδίου (λ) ἀνέβλεψαν πρὸς σὲ, (μ) ὅτι ἐξηράνθησαν ἀφέσεις ὑδάτων, καὶ πῦρ κατέφαγε τὰ ὡραῖα τῆς ἐρήμου.

Quoniam desolati sunt campi: 10 *lugeat terra, quoniam afflictum est triticum, aruit vinum, imminutum est oleum,* 11 *Aruerunt agricolæ. Lugete possessiones pro frumento, & hordeo, quia periit vindemia de agro.* 12 *Vinea aruit, & ficus imminutæ sunt. Malogranatum, & palma, & malum, & omnia ligna agri arefacta sunt: quoniam confuderunt gaudium filii hominum.* 13 *Accingite vos, & plangite, sacerdotes; lamentamini, qui ministratis altari: ingredimini, dormite in saccis, ministri Dei: quoniam defecit de domo Dei vestri sacrificium, & libatio.* 14 *Sanctificate jejunium, prædicate (d) curationem, congregate senes, omnes habitatores terræ in domum Dei vestri, & clamate ad Dominum vehementer,* 15 *Heu mihi, heu mihi, heu mihi in die: quoniam juxta est dies Domini, & quasi miseria de miseria veniet.* 16 *(e) Ante oculos vestros alimenta perierunt, de domo Dei nostri lætitia & gaudium.* 17 *Subsultaverunt vituli in præsepibus suis, dissipati sunt thesauri, suffossa sunt torcularia: Quia arefactum est triticum, quid reponemus nobis?* 18 *Fleverunt armenta boum, quia non erant pascua eis: & greges ovium disperierunt.* 19 *Ad te, Domine, clamabo: quoniam ignis consumpsit speciosa deserti, & flamma succendit omnia ligna agri:* 20 *Et jumenta campi (f) suspexerunt ad te: quoniam arefactæ sunt emissiones aquarum, & ignis devoravit speciosa deserti.*

MS. A. (ζ) οἱ γεωργοί. (ϛ) εἰσέλθατε, (η) κυρίου θεοῦ (θ) Οἴμμοι, οἴμμοι, οἴμμοι (ι) ἐξολεθρεύθη, (κ) ἠφανίσθη. (λ) ἀνέβλεψεν (μ) ἐξηράνθησαν.

ΚΕΦ. β'.

1 Σαλπίσατε σάλπιγγι ἐν Σιὼν, κηρύξατε ἐν ὄρει ἁγίῳ μου, καὶ (α) συγχυθήτωσαν πάντες οἱ κατοικοῦντες τὴν γῆν, διότι 2 πάρεστιν (β) ἡμέρα κυρίου, ὅτι ἐγγὺς (γ) Ἡμέρα σκότους καὶ γνόφου, ἡμέρα νεφέλης καὶ ὁμίχλης· ὡς ὄρθρος χυθήσεται ἐπὶ τὰ ὄρη λαὸς πολὺς καὶ ἰσχυρὸς, ὅμοιος (ϛ) αὐτῷ οὐ γέγονεν ἀπὸ τοῦ αἰῶνος, καὶ μετ' αὐτὸν οὐ προστεθήσεται ἕως ἐτῶν εἰς γενεὰς γενεῶν. 3 Τὰ ἔμπροσθεν αὐτοῦ πῦρ ἀναλίσκον, καὶ τὰ (δ) ὀπίσω αὐτοῦ ἀναπτομένη φλόξ. ὡς παράδεισος τρυφῆς ἡ γῆ πρὸ προσώπου αὐτοῦ, καὶ τὰ ὄπισθεν αὐτοῦ πεδίον ἀφανισμοῦ, καὶ 4 ἀνασωζόμενος οὐκ (ε) ἔσται αὐτῷ. Ὡς ὅρασις ἵππων (ζ) ἡ ὅρασις αὐτῶν, καὶ ὡς ἱππεῖς οὕτως καταδιώξονται.

CAP. II.

1 *Canite tubâ in Sion, prædicate in monte sancto meo: & conturbentur omnes habitatores terræ: quoniam adest dies Domini: quoniam juxta est* 2 *Dies tenebrarum & caliginis, dies nubis, & nebulæ: sicut manè fundetur super montes: populus multus, & fortis: similis ei non fuit à seculo: & post eum non (a) adjicietur usque ad annos in (b) generationes generationum.* 3 *(c) Quæ ante eum, consumens ignis; & quæ post eum, flamma succensa. Sicut paradisus voluptatis terra ante faciem ejus: & posteriora illius, [sicut] campus solitudinis: &, qui salvetur, non erit ei.* 4 *Sicut aspectus equorum, aspectus eorum: & sicut equites, sic persequentur.*

MS. A. (α) Συναχθήτωσαν (β) ἡ ἡμέρα τοῦ κυρίου, (γ) ἡ ἡμέρα τοῦ κυρίου, Ἡ ἡμέρα (ϛ) αὐτοῦ (δ) ὄπισθεν (ε) ἔστιν. Ὡς ὅρασις (ζ) ἡ ὄψεις αὐτῶν, καὶ οἱ ἱππεῖς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 אתבזיזו חקליא חרובת ארעא ארי סף עבורא יבישו גופניא נתרו זיתיא : בהיתו
11 אכריא אלילו מפלחי כרמיא על חטין ועל סערין ארי סף חצד חקלא : גופניא יבישו
12 ותיניא נתרא רמונין אף דקלין וחזור כל אילני חקלא יבישו ארי פסקת חדותא מבני
13 אנשא : אסרו וספידו כהניא אילילו דמשמשין על מדבחא עולו ביתו בסקיא
14 דמשמשין קדם אלהי ארי אתמנע מבית מקדשא דאלהכון קורבנין ונסכין : גזרו
תעני ערעו כנישא כנישו סביא כל יתבי ארעא ועולו לבית מקדשא דיי אלהכון וצלו
15 קדם יי : וי מן קדם יומא ארי קריב יומא דעתיד למיתי מן קדם יי וכבזא דמן קדם יי
16 שדי ייתי : הלא עוד דאנחנא חזן עבורא סף פסק מבית מקדשא דאלהנא חדוא
17 וביע : אתמסיאו גרבי חמר תחות מגופתהון צדיאו אוצריא אתפגרו חסניא ארי סף
18 עבורא : לחדא מתאנחא בעירא מתערבלן בקרן דתורין ארי לית רעיא להון אף
19 עדרי ענא צדיאו : קדמך יי אנא מצלי ארי קדום תקיף כאשא אסף דירות מדברא
20 ושלהוביתא שיצאת כל אילני חקלא : אף חיות ברא מסברא קדמך ארי יבישו
פצידי מיא וקדום תקיף כאשא אסף דירות מדברא :

ב

1 תקעו שופרא בציון יביבו בטור קודשי יזועון כל יתבי ארעא ארי מטא יומא למיתי
2 מן קדם יי ארי קריב : יום חשוך וקבלא יום עננא ואמטתא כנהור צפרא פריס על
טוריא עם סגי ותקיף דכותיה לא הוה מן עלמא ובתרוהי לא יוסיף עד שני דר ודר :
3 קדמוהי אכלא אשתא ובתרוהי משיציא שלהוביתא כגנא דעדן ארעא קדמוהי
4 ובתרוהי מדבר צדו ואף שזבא לית ליה לרשיעיא : כחזו סוסותא חזוהון וכפרשיא
כן רהטין :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Vastati sunt agri, desolata est terra, quoniam consumptum est frumentum, aru- 10
erunt vites, defluxerunt olivæ. Pudore suffundimini agricolæ, ululate cul- 11
tores vinearum propter triticum & hordeum, periit enim messis agri. Vi- 12
tes aruerunt, & ficus decidêre, maláque granata, similiter palmæ, *malus*, atq;
universæ arbores agri exaruerunt: profectò desiit gaudium à filiis hominum.
Accingite vos & plangite sacerdotes, ululate qui ministerio fungimini super 13
altari: ingredimini, excubate in saccis qui ministratis coram Deo meo, siqui-
dem prohibitæ sunt à domo sanctuarii Dei vestri oblationes ac libamina. De- 14
cernite jejuniũ, convocate cœtum, congregate senes omnes habitatores terræ,
& introite in domum sanctuarii Domini Dei vestri, atque precemini coram
Domino. Væ à conspectu diei; prope fit enim dies, qui venturus est à facie 15
Domini, qui sicut vastitas à facie Omnipotentis veniet. *Nónne* adhuc spe- 16
ctantibus nobis frumentum desiit, defecit à domo sanctuarii Dei nostri gau-
dium & exultatio? Computruerunt dolia vini sub operculis suis, destructa 17
sunt cellaria, diruta sunt horrea, defecit namque frumentum. Magnopere in- 18
gemiscit animal; coarctantur boum armenta, quod non sit pascuum eis: greges
quoque ovium confecti sunt. Coram te Domine ego oro, quia incendium ve- 19
hemens sicut ignis, disperdidit habitacula deserti, & flamma consumpsit
omnes arbores agri. Quin etiam bestiæ agrestes spectant coram te, quòd ex- 20
siccati sint rivi aquarũ, & æstus fortis sicut ignis consũpsit habitacula deserti.

CAP. II.

Clangite tuba in Sion, vociferamini in monte sanctitatis meæ: contremi- 1
scant omnes habitatores terræ, quia contigit dies qui venturus est à facie Do-
mini, jam [*inquam*] instat. Dies tenebrarum & caliginis, dies nubilosa atque 2
tenebricosa. Quemadmodum lux matutina quæ expanditur super montes, po-
pulus multiplex & potens qualis haud fuit unquam, nec postea redintegrabi-
tur in annos generationis atque generationis. Ante eum voravit ignis, & post 3
eum consumpsit flamma: quasi paradisus voluptatis erat terra coram eo, &
post eum, desertum vastitas, sed nec liberatio est impiis in eo. Qualis visio 4
equorum, talis eorum aspectus; et sicut equites ita currunt.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܬܒܙܙ ܚܩܠܐ ܘܝܬܒܬ ܒܐܒܠܐ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܒܙܙ ܥܒܘܪܐ. ܘܝܒܫ ܚܡܪܐ ܘܚܪܒܘ 10
ܙܝܬܐ. * ܒܗܬܘ ܐܟܪܐ ܘܐܝܠܠܘ ܟܪܡܐ. ܡܛܠ ܚܛܐ ܘܡܛܠ ܣܥܪܐ. ܕܐܒܕ ܚܨܕܐ ܕܚܩܠܐ. 11
* ܓܦܬܐ ܝܒܫܬ. ܘܬܐܢܬܐ ܚܪܒܬ. ܪܘܡܢܐ ܘܕܩܠܐ ܘܚܙܘܪܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܚܩܠܐ 12
ܝܒܫܘ. ܡܛܠ ܕܐܬܒܛܠ ܚܕܘܬܐ ܡܢ ܒܢܝ ܐܢܫܐ. * ܟܗܢܐ ܐܬܥܛܦܘ ܣܩܐ ܘܐܪܩܕܘ ܘܐܝܠܠܘ 13
ܡܫܡܫܢܐ ܕܡܕܒܚܐ: ܥܘܠܘ ܒܘܬܘ ܒܣܩܐ ܡܫܡܫܢܘܗܝ ܕܐܠܗܝ. ܡܛܠ ܕܐܬܟܠܝ ܡܢ
ܒܝܬܗ ܕܐܠܗܟܘܢ ܩܘܪܒܢܐ ܘܢܘܩܝܐ. * ܩܕܫܘ ܨܘܡܐ. ܩܪܘ ܟܢܘܫܬܐ. ܐܟܢܫܘ ܩܫܝܫܐ 14
ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܘܩܥܘ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ.
ܘܐܡܪܘ. * ܐܘܗ ܐܘܗ ܠܝܘܡܐ. ܕܩܪܝܒ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܒܙܬܐ ܡܢ ܐܠܗܐ ܐܬܝܐ. * ܘܗܐ 15 16
ܠܥܝܢܝܢ ܐܬܓܙܪܬ ܡܐܟܘܠܬܐ ܡܢ ܒܝܬܗ ܕܐܠܗܢ. ܘܚܕܘܬܐ ܘܕܘܨܐ. * ܥܦܫܘ ܥܓܠܬܐ 17
ܥܠ ܐܘܪܘܬܗܝܢ. ܐܬܚܪܒܘ ܐܘܨܪܐ. ܐܬܗܦܟܝ ܡܥܨܪܬܐ. ܘܝܒܫ ܥܒܘܪܐ. * ܐܬܬܢܚܬ ܒܥܝܪܐ. 18
ܘܒܟܝܢ ܒܩܪܐ ܕܬܘܪܐ. ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܪܥܝܐ. ܐܦ ܓܙܪܐ ܕܥܢܐ ܣܦܘ. * ܠܘܬܟ ܡܪܝܐ ܐܩܪܐ. 19
ܡܛܠ ܕܐܟܠܬ ܢܘܪܐ ܠܥܡܪܐ ܕܡܕܒܪܐ. ܘܫܠܗܒܝܬܐ ܐܘܩܕܬ ܠܟܠܗܘܢ ܐܝܠܢܐ ܕܕܒܪܐ. * ܐܦ 20
ܚܝܘܬܐ ܕܕܒܪܐ ܓܥܝܢ ܠܘܬܟ. ܡܛܠ ܕܝܒܫܘ ܡܒܘܥܐ ܕܡܝܐ. ܘܐܟܠܬ ܢܘܪܐ ܠܥܡܪܐ ܕܡܕܒܪܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

* ܩܪܘ ܫܝܦܘܪܐ ܒܨܗܝܘܢ. ܘܩܥܘ ܒܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ. ܢܙܘܥܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ. 1
ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܩܪܒ ܝܘܡܐ ܕܚܫܘܟܐ ܘܕܥܡܛܢܐ. ܝܘܡܐ ܕܥܢܢܐ 2
ܘܕܥܪܦܠܐ. ܐܝܟ ܫܦܪܐ ܕܦܪܝܣ ܥܠ ܛܘܪܐ. ܥܡܐ ܣܓܝܐܐ ܘܥܫܝܢܐ. ܕܐܟܘܬܗ ܠܐ ܗܘܐ ܡܢ
ܥܠܡ. ܘܒܬܪܗ ܠܐ ܢܗܘܐ. ܥܕܡܐ ܠܫܢܝ ܕܕܪܕܪܝܢ. * ܩܕܡܘܗܝ ܐܟܠܐ ܢܘܪܐ. ܘܒܬܪܗ 3
ܡܘܩܕܐ ܫܠܗܒܝܬܐ. ܐܝܟ ܦܪܕܝܣܐ ܕܥܕܢ. ܐܪܥܐ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܒܬܪܗ ܡܕܒܪܐ ܚܪܒܐ.
ܘܠܝܬ ܕܡܫܬܘܙܒ ܡܢܗ. * ܐܝܟ ܚܙܘܐ ܕܪܟܫܐ ܚܙܘܗ. ܘܐܝܟ ܦܪܫܐ ܗܟܢܐ ܪܗܛܝܢ. 4

Depopulatus eſt ager, & ſedit in luctu terra; quia direptum eſt frumentum, aruit vinum, & vaſtatæ ſunt oleæ. 10 Erubuerunt agricolæ, & ululaverũt vinitores propter frumenta & propter hordea, ꝙ deſierit meſſis agri. 11 Vitis aruit, ficus vaſtata eſt; malogranata, palmæ, poma, & omnes arbores agri aruerunt: quia deſiit gaudium à filiis hominum. 12 Sacerdotes, accingimini ſaccis: plorate & ululate, miniſtri altaris: ingredimini, pernoctate in ſaccis, miniſtri Dei mei; quia prohibitum eſt à domo Dei veſtri ſacrificium & libamen. 13 Sanctificate jejuniũ, convocate cœtum, congregamini ſacerdotes omnéſque habitatores terræ, ad domum Domini Dei veſtri, clamitate ad Dominum Deum veſtrum, & dicite; 14 Eheu, eheu diem iſtum; nam propinquus eſt dies Domini, & direptio à Domino ventura eſt: 15 Et ecce coram oculis noſtris ceſſaverunt eſcæ de domo Dei noſtri, & gaudiũ atque exultatio. 16 Incœnatæ manſerunt juvencæ ſuper præſepibus ſuis, vaſtata ſunt horrea, torcularia deſtructa, & aruit frumentum. 17 Ingemiſcit jumentum, & flent armenta boum, quia non habent paſcua: etiam greges ovium conſumpti ſunt. 18 Ad te Domine clamo, quia comedit ignis habitacula deſerti, & flamma combuſſit omnes arbores ſolitudinis. 19 Quin & beſtiæ ſylveſtres ad te mugiunt, quòd exaruerint alvei aquarum, & conſumpſerit ignis habitacula deſerti. 20

CAP. II.

CLangite buccinâ in Sione, vociferamini in monte ſanctitatis meæ, contremiſcant omnes habitatores terræ; quoniam advenit dies Domini, 1 Et appropinquavit dies tenebrarum & caliginis, dies nubis & nebulæ, tanquam aurora ſuper montes expanſa; populus multus & robuſtus cui par non fuit à ſeculo, & poſt quem non eſt futurus uſque ad annos generationis generationum. 2 Ante illum devorabit ignis, & poſt ipſum flamma comburet: ut paradiſus voluptatis erit terra ante illum, poſt ipſũ verò ut ſolitudo deſerta; nec erit qui ſe eripiat ab eo. 3 Ut aſpectus equorum, aſpectus ejus; & ut equites, ita current. 4

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* لتحزن الارض لان القمح شقي * جف الخمر * قل الزيت * جفت الفلاحون * نوحي ايها المواشي 10 11
اكثر من القمح والشعير * لان القطاف هلك من الحقل * الكرمة جفت * التين قل * الرمان 12
والنخل والتفاح وجميع اشجار الحقل جفت * لان بني البشر اخزوا الفرح * اتزروا وابكوا ايها 13
الكهنة * نوحوا يا خدام المذبح * ادخلوا ناموا بالمسوح يا خدام الله * لان الذبيحة والقارون
امتنعتا من بيت الهكم * قدسوا الصوم * نادوا بالخدمة * اجمعوا الشيوخ * جميع سكان الارض 14
الي بيت الهكم * اصرخوا للرب بامتداد * الويل لي * الويل لي * الويل لي في اليوم * لان يوم الرب 15
قريب * كمثل شقوة من شقوة ياتي * تجاه عيونكم نفذت الاطعمة من بيت الهكم * السرور 16
والفرح * طربت العجاجيل على مذاودها * فنيت الذخاير * هدمت المعاصر * لان القمح جف * 17
* ماذا نذخر لها * بكت اذواد البقر لانه ليس لها مرعي * وقطعان الغنم انقرضت * اليك يا 18 19
رب اصرخ * لان النار ابادت مباهي البرية * واللهيب احرق جميع اشجار الحقل * وبهايم 20
الصحراء تنظر اليك * لان غدران المياه جفت * والنار اكلت مباهي البرية *

* الفصل الثاني *

* بوقوا بالبوق في صهيون * نادوا في جبلي المقدس * وليختلط جميع سكان الارض * من اجل 1
ان يوم الرب حضر * انه قرب يوم ظلمة وغيم * يوم سحابة وضبابة * مثل سحر ينبسط على 2
الجبال شعب كثير وقوي * لم يكن له شبه منذ الدهر * وبعده لا يعود الي سنين الي
جيل الاجيال * من قدامه نار اكلة * ومن خلفه لهيب ملتهب * مثل فردوس النعيم 3
الارض قدام وجهه * ومن خلفه صحراء الفناء * وليس من ينجو * مثل مناظر الخيل منظره 4
ومثل فرسان هكذا يركضون *

Doleat terra, quia frumentum afflictum eſt, aruit vinum, defecit oleum, 10 *Aruerunt agricolæ. Ejulate armenta pluſquam frumentum & hordeum, quia periit ex agro vindemia,* 11 *Vitis aruit, ficus defecerunt, malogranata, dactyli, poma, & omnes arbores agri exaruerunt: quoniam filii hominum pudeſecerunt gaudium.* 12 *Accingite vos & plangite O Sacerdotes, ejulate O miniſtri altaris, ingredimini dormite cum ciliciis O miniſtri Dei; quia ſacrificium & alabaſtrum cohibita ſunt è domo Dei veſtri.* 13 *Sanctificate jejunium, proclamate miniſterium, congregate ſeniores & omnes habitatores terræ ad domum Dei veſtri, clamate ad Dominum potenſè,* 14 *Væ mihi, væ mihi, væ mihi in die iſta; quia dies Domini propinquus eſt, ut miſeria de miſeria veniet.* 15 *Coram oculis veſtris conſumpti ſunt cibi de domo Dei veſtri, gaudium & lætitia.* 16 *Subſilierunt vituli ſuper præſepia ſua, conſumpta eſt annona, torcularia deſtructa. Quandoquidem aruit frumentum,* 17 *Quid reponemus eis? Fleverunt armenta boum, quia non eſt eis paſcuum, & greges ovium exciſi ſunt.* 18 *Ad te O Domine clamo, quoniam ignis conſumpſit venuſtates deſerti, & flamma combuſſit omnes arbores agri.* 19 *Etiam deſerti jumenta ad te ſuſpiciunt, quia rivuli aquarum exaruerunt, & ignis devoravit venuſtates deſerti.* 20

CAP. II.

CLangite buccinâ in Sion, proclamate in monte ſancto meo, & commiſceantur omnes habitatores terræ; quia dies Domini adeſt: 1 *Adeſt quidem dies tenebroſus & caliginoſus, dies nubilus & nebuloſus. Velut aurora pandetur ſuper montes populus multus ac fortis, cui par non fuit à ſeculo, & poſt quem non ſuccedet ad annos plurimos, ad generationem generationum.* 2 *Ante ipſum ignis devorans erit, & poſt ipſũ flamma accenſa: ut paradiſus voluptatis erit terra ante faciem ejus, & à tergo ipſius deſertum interitûs; nec erit qui evadat.* 3 *Similis equorum ſpeciebus erit ſpecies ejus; & ut equites, ita current.* 4

יואל : ב

flammæ *vox* ſicut,ſubſilient montium capita ſuper quadrigarum *vox* Sicut
5 כְּקוֹל מַרְכָּבוֹת עַל־רָאשֵׁי הֶהָרִים יְרַקֵּדוּן כְּקוֹל לַהַב
.bellum præparatus fortis populus velut : ſtipulam *devorantis* ignis
אֵשׁ אֹכְלָה קָשׁ כְּעַם עָצוּם עֱרוּךְ מִלְחָמָה׃
.*fuliginem* contrahent vultus omnes : populi dolebunt ejus *faciebus* A
6 מִפָּנָיו יָחִילוּ עַמִּים כָּל־פָּנִים קִבְּצוּ פָארוּר׃
: murum aſcendent *belli* viri tanquam , current potentes Sicut
7 כְּגִבּוֹרִים יְרֻצוּן כְּאַנְשֵׁי מִלְחָמָה יַעֲלוּ חוֹמָה
.*ſuis viis deflectent* non & , ambulabunt ſuis viis in *vir* &
וְאִישׁ בִּדְרָכָיו יֵלֵכוּן וְלֹא יְעַבְּטוּן אֹרְחוֹתָם׃
ſuper & : *ibunt* ſuo calle in *vir* , *urgebunt* non ſuum fratrem *vir* Et
8 וְאִישׁ אָחִיו לֹא יִדְחָקוּן גֶּבֶר בִּמְסִלָּתוֹ יֵלֵכוּן וּבְעַד
muro in ,*armis crepabunt* urbe In .*erunt avari* non , *cadent miſſile*
9 הַשֶּׁלַח יִפֹּלוּ לֹא יִבְצָעוּ׃ בָּעִיר יָשֹׁקּוּ בַּחוֹמָה
.fur veluti intrabunt feneſtras per : aſcendent domos in ,current
יְרֻצוּן בַּבָּתִּים יַעֲלוּ בְּעַד הַחַלּוֹנִים יָבֹאוּ כַּגַּנָּב׃
luna & , ſol : cœli tremuerunt , terra ſe movit *ejus facies Ad*
10 לְפָנָיו רָגְזָה אֶרֶץ רָעֲשׁוּ שָׁמָיִם שֶׁמֶשׁ וְיָרֵחַ
DOMINUS Et .ſuum ſplendorem retraxerunt ſtellæ & ,*nigruerunt*
11 קָדָרוּ וְכוֹכָבִים אָסְפוּ נָגְהָם׃ וַיהוָה
valde multa quia ,*ſui exercitus facies ad* ſuam vocem dedit
נָתַן קוֹלוֹ לִפְנֵי חֵילוֹ כִּי רַב מְאֹד
magnus quia : ejus verbum *faciens fortis* quia ,ejus *caſtrametatio*
מַחֲנֵהוּ כִּי עָצוּם עֹשֵׂה דְבָרוֹ כִּי־גָדוֹל
nunc etiam Et ? eum ſuſtinebit quis & ,valde terribilis & ,Domini dies
12 יוֹם־יְהוָה וְנוֹרָא מְאֹד וּמִי יְכִילֶנּוּ׃ וְגַם־עַתָּה
,jejunio in & : veſtro corde toto in me ad Convertimini :Dominus dixit
נְאֻם־יְהוָה שֻׁבוּ עָדַי בְּכָל־לְבַבְכֶם וּבְצוֹם
,veſtra veſtimenta non &,veſtrum cor ſcindite Et .planctu *in* &,fletu *in* &
13 וּבִבְכִי וּבְמִסְפֵּד׃ וְקִרְעוּ לְבַבְכֶם וְאַל־בִּגְדֵיכֶם
,*gratioſus* quia : veſtrum Deum DOMINUM ad convertimini &
וְשׁוּבוּ אֶל־יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם כִּי־חַנּוּן
ſuper pœnitens &,*miſericordia multus & ,naribus longus , ipſe* miſerator &
וְרַחוּם הוּא אֶרֶךְ אַפַּיִם וְרַב־חֶסֶד וְנִחָם עַל־
relinquat & , eum pœniteat & , convertatur *ſciens* Quis .malum
14 הָרָעָה׃ מִי יוֹדֵעַ יָשׁוּב וְנִחָם וְהִשְׁאִיר
? veſtro Deo Domino libamen & , *munus* ,benedictionem ſe poſt
אַחֲרָיו בְּרָכָה מִנְחָה וָנֶסֶךְ לַיהוָה אֱלֹהֵיכֶם׃
.*retentionem* vocate ,jejunium ſanctificate : Sijon in buccina Clangite
15 תִּקְעוּ שׁוֹפָר בְּצִיּוֹן קַדְּשׁוּ־צוֹם קִרְאוּ עֲצָרָה׃
, ſenes congregate , eccleſiam ſanctificate , populum Congregate
16 אִסְפוּ־עָם קַדְּשׁוּ קָהָל קִבְצוּ זְקֵנִים
,ſuo cubili de ſponſus egrediatur : ubera ſugentes & ,parvulos colligite
אִסְפוּ עוֹלָלִים וְיֹנְקֵי שָׁדָיִם יֵצֵא חָתָן מֵחֶדְרוֹ
,ſacerdotes plorent altare & veſtibulum Inter .ſuo thalamo de ſponſa &
17 וְכַלָּה מֵחֻפָּתָהּ׃ בֵּין הָאוּלָם וְלַמִּזְבֵּחַ יִבְכּוּ הַכֹּהֲנִים
,tuo populo *ſuper* Domine Parce : dicant & ; Domini miniſtri
מְשָׁרְתֵי יְהוָה וְיֹאמְרוּ חוּסָה יְהוָה עַל־עַמֶּךָ
.*gentes eos in dominandum ad* opprobrium in tuã hæreditatem des ne &
וְאַל־תִּתֵּן נַחֲלָתְךָ לְחֶרְפָּה לִמְשָׁל־בָּם גּוֹיִם
eſt zelatus Et ? eorum Deus ubi : populis in ſunt dicturi Quare
18 לָמָּה יֹאמְרוּ בָעַמִּים אַיֵּה אֱלֹהֵיהֶם׃ וַיְקַנֵּא
reſpondit Et .ſuo populo *ſuper* pepercit & : ſua terra pro Dominus
19 יְהוָה לְאַרְצוֹ וַיַּחְמֹל עַל־עַמּוֹ׃ וַיַּעַן
,frumentum vobis *mittens ego* Ecce : ſuo populo dixit & , Dominus
יְהוָה וַיֹּאמֶר לְעַמּוֹ הִנְנִי שֹׁלֵחַ לָכֶם אֶת־הַדָּגָן
dabo non & : *eo* vos ſaturabitis & , *novum* oleum & , *muſtum* &
וְהַתִּירוֹשׁ וְהַיִּצְהָר וּשְׂבַעְתֶּם אֹתוֹ וְלֹא־אֶתֵּן
.gentibus in opprobrium ultrà vos
אֶתְכֶם עוֹד חֶרְפָּה בַּגּוֹיִם׃

Verſio VULG. LAT.

5 Sicut ſonitus quadrigarum ſuper capita montium exilient, ſicut ſonitus flammæ ignis devorantis ſtipulam, velut populus fortis præparatus ad prælium. 6 A facie ejus cruciabuntur populi: omnes vultus redigentur in ollam. 7 Sicut fortes current: quaſi viri bellatores aſcendent murum: viri in viis ſuis gradientur, & non declinabunt à ſemitis ſuis. 8 Unuſquiſq; fratrem ſuum non coarctabit, ſinguli in calle ſuo ambulabunt: ſed & p feneſtras cadent, & non demolientur. 9 Urbẽ ingredientur, in muro current: domos conſcendent, per feneſtras intrabunt quaſi fur. 10 A facie ejus contremuit terra, moti ſunt cœli: Sol & Luna obtenebrati ſunt, & ſtellæ retraxerunt ſplendorem ſuum. 11 Et Dominus dedit vocem ſuam ante faciem exercitûs ſui: quia multa ſunt nimis caſtra ejus, quia fortia & facientia verbum ejus: magnus enim dies Domini, & terribilis valdé: & quis ſuſtinebit eum? 12 Nunc ergò dicit Dominus; Convertimini ad me in toto corde veſtro, in jejunio, & in fletu, 13 & in planctu. Et ſcindite corda veſtra, & non veſtimenta veſtra, & convertimini ad Dominum Deum veſtrum: quia benignus & miſericors eſt, patiens & multæ miſericordiæ, & præſtabilis ſuper 14 malitia. Quis ſcit ſi convertatur, & ignoſcat, & relinquat poſt ſe benedictionem, ſacrificium & libamen Domino Deo veſtro? 15 Canite tubâ in Sion, ſanctificate je16junium, vocate cœtum, Congregate populum, ſanctificate eccleſiam, coadunate ſenes, congregate parvulos, & ſugentes ubera: egrediatur ſponſus de cubili ſuo, 17 & ſponſa de thalamo ſuo. Inter veſtibulum & altare plorabunt ſacerdotes miniſtri Domini, & dicent; Parce, Domine, parce populo tuo: & ne des hæreditatem tuam in opprobrium, ut dominentur eis nationes: quarè dicunt in populis; Ubi eſt Deus eorum? 18 Zelatus eſt Dominus terram ſuã, 19 & pepercit populo ſuo: Et reſpondit Dominus, & dixit populo ſuo; Ecce ego mittam vobis frumentum, & vinum, & oleum, & replebimini eis: & non dabo vos ultrà opprobrium in Gentibus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Ὡς φωνὴ ἁρμάτων ἐπὶ τὰς κορυφὰς τῶν ὀρέων ἐξαλοῦνται, καὶ ὡς φωνὴ φλογὸς πυρὸς κατεσθιούσης καλάμην, καὶ ὡς λαὸς πολὺς καὶ ἰσχυρὸς παρατασσόμενος εἰς πόλεμον. 6 Ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ συντριβήσονται λαοὶ, πᾶν πρόσωπον ὡς πρόσκαυμα χύτρας. 7 Ὡς μαχηταὶ δραμοῦνται, καὶ ὡς ἄνδρες πολεμισταὶ ἀναβήσονται ἐπὶ τὰ τείχη, καὶ ἕκαστος ἐν τῇ ὁδῷ αὐτοῦ πορεύσεται, καὶ οὐ μὴ (˜)ἐκκλίνωσι τὰς τρίβους 8 αὐτῶν. Καὶ ἕκαστος ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ οὐκ ἀφέξεται. καταβαρυνόμενοι ἐν τοῖς ὅπλοις αὐτῶν πορεύσονται, καὶ ἐν τοῖς βέλεσιν αὐτῶν 9 πεσοῦνται, καὶ οὐ μὴ (η)συντελεσθῶσι. Τῆς πόλεως ἐπιλήψονται, καὶ ἐπὶ τῶν τειχέων δραμοῦνται, καὶ ἐπὶ (θ) τὰς οἰκίας ἀναβήσονται, καὶ 10 διὰ θυρίδων εἰσελεύσονται ὡς κλέπται. Πρὸ προσώπου (ι) αὐτοῦ συγχυθήσεται ἡ γῆ, καὶ σεισθήσεται ὁ οὐρανός· ὁ ἥλιος καὶ ἡ σελήνη συσκοτάσουσι, καὶ (κ) ἄστρα δύσουσι τὸ φέγγος 11 αὐτῶν. Καὶ κύριος δώσει φωνὴν αὐτοῦ πρὸ προσώπου δυνάμεως αὐτοῦ, ὅτι πολλή ἐστι σφόδρα ἡ παρεμβολὴ αὐτοῦ, ὅτι ἰσχυρὰ ἔργα λόγων αὐτοῦ· διότι μεγάλη (λ) ἡ ἡμέρα κυρίου, ἐπιφανὴς σφόδρα, καὶ τίς ἔσται ἱκανὸς 12 αὐτῇ; Καὶ νῦν λέγει κύριος ὁ θεὸς ὑμῶν, Ἐπιστράφητε πρὸς μὲ ἐξ ὅλης τῆς καρδίας ὑμῶν, (μ) καὶ ἐν νηστείᾳ, καὶ ἐν κλαυθμῷ, καὶ ἐν 13 κοπετῷ, Καὶ διαῤῥήξατε τὰς καρδίας ὑμῶν, καὶ μὴ τὰ ἱμάτια ὑμῶν· καὶ ἐπιστράφητε πρὸς κύριον τὸν θεὸν ὑμῶν, ὅτι ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων ἐστὶ, μακρόθυμος καὶ πολυέλεος, 14 καὶ μετανοῶν ἐπὶ ταῖς κακίαις. Τίς οἶδεν εἰ ἐπιστρέψει, καὶ μετανοήσει, καὶ ὑπολείψεται ὀπίσω αὐτοῦ εὐλογίαν, (ν) καὶ θυσίαν, καὶ σπονδὴν κυρίῳ τῷ θεῷ (ξ) ὑμῶν; 15 Σαλπίσατε σάλπιγγι ἐν Σιὼν, ἁγιάσατε νηστείαν, κηρύξατε θεραπείαν, 16 Συναγάγετε (ο) λαὸν, ἁγιάσατε ἐκκλησίαν, ἐκλέξασθε πρεσβυτέρους, Συναγάγετε νήπια θηλάζοντα μαστοὺς, (π) ἐξελθέτω νυμφίος ἐκ τοῦ κοιτῶνος αὐτοῦ, καὶ 17 νύμφη ἐκ τοῦ παστοῦ αὐτῆς. Ἀναμέσον τῆς κρηπίδος τοῦ θυσιαστηρίου, κλαύσονται οἱ ἱερεῖς οἱ λειτουργοῦντες (ρ) τῷ κυρίῳ, καὶ ἐροῦσι, Φεῖσαι κύριε τοῦ λαοῦ σου, καὶ μὴ δῷς τὴν κληρονομίαν σου εἰς ὄνειδος, τοῦ κατάρξαι αὐτῶν ἔθνη, ὅπως μὴ εἴπωσιν ἐν τοῖς ἔθνεσι, 18 Ποῦ ἐστιν (σ) ὁ θεὸς αὐτῶν; Καὶ ἐζήλωσε κύριος τὴν γῆν αὐτοῦ, καὶ ἐφείσατο τοῦ λαοῦ αὐτοῦ. 19 Καὶ ἀπεκρίθη κύριος, καὶ εἶπε τῷ λαῷ αὐτοῦ, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐξαποστέλλω ὑμῖν τὸν σῖτον καὶ τὸν οἶνον καὶ τὸ ἔλαιον, καὶ ἐμπλησθήσεσθε αὐτῶν, καὶ οὐ δώσω ὑμᾶς οὐκέτι εἰς ὀνειδισμὸν ἐν τοῖς ἔθνεσι.

Sicut vox quadrigarum ſuper vertices montium exilient, & ſicut vox flammæ ignis devorantis ſtipulam, & ſicut populus multus & fortis præparatus ad prælium. 6 *A facie ejus conterentur populi: omnis vultus, ſicut aduſtio ollæ.* 7 *Sicut pugnatores current; & ſicut viri bellatores, aſcendent ſuper muros: & unuſquiſque in via ſua ambulabit: & non declinabunt à ſemitis ſuis:* 8 *Et unuſquiſque à fratre ſuo non recedet. Aggravati in armis ſuis ibunt, & in jaculis ſuis cadent, & non conſumentur.* 9 *Urbem apprehendent, & ſuper muros (d) current, & ſuper domos aſcendent, & per feneſtras intrabunt, ſicut fures.* 10 *Ante faciem ejus confundetur terra, & commovebitur cœlum: Sol, & Luna contenebrabuntur, & ſtellæ deponent lumen ſuum.* 11 *Et Dominus dabit vocem ſuam ante faciem fortitudinis ſuæ: quoniam multa ſunt nimis caſtra ejus, quoniam fortia opera ſermonum illius: quia magna dies Domini, (e) illuſtris nimis: & quis erit ſufficiens ad eam?* 12 *Et nunc dicit Dominus Deus veſter; Convertimini ad me ex toto corde veſtro, & in (f) jejunio, & in fletu, & in planctu,* 13 *Et ſcindite corda veſtra, & non veſtimenta veſtra: & convertimini ad Dominum Deum veſtrum: quia miſericors, & miſerator eſt, patiens, & multæ miſericordiæ, & pœnitens ſuper malitiis.* 14 *Quis novit, ſi revertatur, & pœniteat, & relinquat poſt ſe benedictionem, & ſacrificium, & libamen Domino Deo veſtro?* 15 *Clangite tubâ in Sion, ſanctificate jejunium, prædicate curationem,* 16 *Congregate populum, ſanctificate Eccleſiam, eligite ſenes, congregate parvulos ſugentes ubera.* 17 *Egrediatur ſponſus de cubili ſuo, & ſponſa de (g) thalamo ſuo. Inter crepidinem (h) altaris, plorabunt ſacerdotes miniſtri Domini, & dicent; Parce, Domine, populo tuo, & ne dederis hæreditatem tuam in opprobrium: ut dominentur eorum gentes: ne dicant in nationibus, Ubi eſt Deus eorum?* 18 *Et zelatus eſt Dominus terram ſuam, & pepercit populo ſuo:* 19 *Et reſpondit Dominus, & dixit populo ſuo; Ecce ego mitto vobis frumentum, & vinum, & oleum: et implebimini eis: et non dabo vos ultrà in opprobrium in gentibus:*

MS. A. (˜)ἐκκλινοῦσιν * τοὺς τρίβους (η) συντελέσουσιν. (θ) τὰς οἰκίας (ι) αὐτῶν (κ) τὰ ἄστρα (λ) ἡμέρα τοῦ κυρίου, μεγάλη καὶ ἐπιφανὴς σφόδρα, καὶ τίς ἱκανός ἐστιν αὐτῇ. Καὶ νῦν (μ) ἐν νηστείᾳ, (ν) θυσίαν, (ξ) ἡμῶν; (ο) τὸν λαὸν, (π) ἐξελθάτω (ρ) κυρίῳ, (σ) κύριος ὁ θεὸς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 כקל רתיכיא על רישי טוריא מקפצין כקל שלהובית אישתא דמשיציא כקשא יבישא
6 כעמא תקיפא דידע סדרי קרבא : מן קדמוהי יזועון עממיא כל אפיא אתחפיאו
7 אכרום אוכמין כקדירא : כגבריא רהטין כגברי עבדי קרבא סלקין לשורא וגבר
8 באורחיה אזלין ולא מעכבין אורחתהון : וגבר אחוהי לא דחקין גבר בכבישיה
9 אזלין לאתר דאנון שליחין קטלין ולא מקבלין ממון : בקרתא מזדינין על שורא
10 רהטין בבתיא סלקין מן חרכיא עלין כגנבין : קדמוהי חרובת ארעא זעו שמיא
11 שמשא וסיהרא קבלו וכוכביא כנשו זהורהון : ויי ארים מימריה קדם משריתיה ארי
סגי לחדא משריתיה ארי תקיפין עבדי מימריה ארי רב יומא דעתיד למיתי מן קדם
12 יי וחסין לחדא ומן יכיל לסוברותיה : ואף כען אמר יי תובו לפולחני בכל לבכון
13 ובצומא ובבכיתא ובמספדא : ואעדו רשע לבכון ולא בבזוע לבושיכון ותובו
לפולחנא דיי אלהכון ארי חננא ורחמנא הוא מרחיק רגז ומסגי למעבד טבון וקשוט
14 ומתיב מימריה מלאיתאה בישא : מן ידע דאית ביה חובין יתוב מנהון ויתרחם
עלוהי וכל מן דיתוב ישתבקון ליה חובוהי ויקבל ברכן ונחמן וצלותיה כגבר
15 דמקריב קורבנין ונסכין בבית מקדשא דיי אלהכון : תקעו שופרא בציון גזרו תעני
16 ערעו כנישא : כנשו עמא זמינו קהלא כנושו סביא איתו טליא וינקי תדיא יפוק חתנא
17 מאדרון בית משכביה וכלתא מבית גנונהא : בין אולמא ולמדבחא יבכון כהניא
דמשמשין קדם יי ויימרון חוס יי על עמך ואל תתן אחסנתך לחיסודין למשלט בהון
18 עממיא למה יימרון בעממיא אן דאיתפריקו במימר אלהכון : וחס יי על ארעיה
19 ורחים על עמיה : ואתיב יי ואמר לעמיה הא אנא מברך לכון עבורא וחמרא ומשחא
ותסבעון יתיה ולא אתן יתכון עוד חיסודי כפנא בני עממיא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

5 Sicut ſtrepitus quadrigarum ſuper faſtigia montium ſubſiliunt, ſicut crepitus flammæ ignis abſumentis ſtipulam ſiccam: ſic populus validus qui novit acies bellicas. 6 Ad aſpectum ejus contremiſcent populi, omnes vultus operientur fuligine, nigri quaſi ollæ. 7 Sicut fortes excurrunt, velut viri bellatores conſcendunt murum, & unuſquiſque via ſua graditur, nec morantur in viis ſuis. 8 Atque nullus fratrem ſuum coarctat, ſinguli per callem ſuum procedunt, ad locum quò miſſi ſunt *trucidant*; nec recipiunt pecuniam. 9 In civitate armati ſuper murum excurrunt, domos ſcandunt, per feneſtras intrant more latronum. 10 Coram eo direpta eſt terra, moti ſunt cœli, Sol & Luna obtenebrati ſunt, ſtellæ reſtrinxerunt ſplendorem ſuum. 11 Dominus autem levavit verbum ſuum coram exercitu ſuo, quia copioſus eſt valdè exercitus ejus: certè fortes exequutores verbi ejus; magnus námque dies qui venturus eſt à facie Domini, & terribilis admodum: & quis poterit illum ſuſtinere? 12 Nunc quoque dicit Dominus, Convertimini ad cultum meum in toto corde veſtro, & in jejunio ac fletu, planctúque. 13 Et auferte impietatem cordis veſtri, & non cum dilaceratione veſtimentorum veſtrorum, atque revertimini ad cultum Domini Dei veſtri, quippe clemens & miſericors eſt, ipſe iram differt & *multiplicat beneficia & veritatem*, revocátque verbum ſuum ab inducendo malo. 14 Qui ſcit penes ſe eſſe peccata, abſcedat ab eis, & miſericordia applicabitur ei: & quicunque pœnitentiam egerit, dimittentur ei peccata ſua, & recipiet benedictiones atque conſolationes, erítque ejus oratio ſicut viri qui offert oblationes, & libamina in æde ſanctuarii Domini Dei veſtri. 15 Clangite tubâ in Sion, indicite jejunium, convocate cœtum. 16 Congregate populum, aſſignate concionem, congregate ſenes, adducite parvulos & ſugentes ubera, egrediatur ſponſus de conclavi cubiculi ſui, & ſponſa de domo thalami ſui. 17 Inter veſtibulum & altare ejulabunt ſacerdotes, qui miniſtrant coram Domino, & dicent, Miſerere Domine populi tui, & ne des hæreditatem tuam in opprobria quò dominentur eis gentes: quare dicent inter populos, Ubi ſunt qui redempti ſunt verbo Dei ſui? 18 Pepercit itaque Dominus terræ ſuæ, & miſertus eſt populi ſui. 19 Et reſpondit Dominus, & dixit populo ſuo, Ecce benedico vobis frumentum, vinum & oleum; & eo ſaturabimini: neque dabo vos ampliùs opprobria famis inter populos.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܝܟ ܩܠܐ ܕܡܪ̈ܟܒܬܐ ܕܪ̈ܝܫܝܗܘܢ ܕܛܘܪ̈ܐ ܡܫܬܘܪܝܢ. ܘܐܝܟ ܩܠܐ ܕܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ ܕܐܟܠܐ ܚܨܕܐ. 5
ܘܐܝܟ ܥܡܐ ܥܫܝܢܐ ܕܡܛܝܒ ܠܩܪܒܐ. * ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܢܙܘܥܘܢ ܥܡ̈ܡܐ. ܘܟܠ ܐܦ̈ܐ ܢܐܟܡܢ 6
ܐܝܟ ܫܘܚܪܐ ܕܩܕܪܐ. * ܐܝܟ ܓܢܒܪ̈ܐ ܢܪܗܛܘܢ. ܘܐܝܟ ܓܒܪ̈ܐ ܡܩܪ̈ܒܢܐ ܢܣܩܘܢ ܠܫܘܪܐ. ܘܓܒܪ 7
ܒܐܘܪܚܗ ܢܐܙܠ. ܘܠܐ ܢܣܛܘܢ ܡܢ ܐܘܪ̈ܚܬܗܘܢ. * ܘܓܒܪ ܠܐܚܘܗܝ ܠܐ ܢܕܚܩܘܢ. ܐܠܐ ܓܒܪ 8
ܒܫܒܝܠܗ ܢܐܙܠ. ܡܢ ܝܘܩܪܐ ܕܙܝܢܝܗܘܢ. ܢܦܠܘܢ. ܘܠܐ ܢܦܩܘܢ ܠܒܪ. * ܒܡܕܝܢ̈ܬܐ 9
ܢܣܩܘܢ. ܘܥܠ ܫܘܪ̈ܐ ܢܪܗܛܘܢ. ܘܒܒ̈ܬܐ ܢܣܩܘܢ. ܘܡܢ ܟܘ̈ܐ ܢܥܠܘܢ. ܐܝܟ ܓܢܒܐ.
* ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܬܬܙܝܥ ܐܪܥܐ ܘܢܬܬܙܝܥܘܢ ܫܡܝܐ. ܫܡܫܐ ܘܣܗܪܐ ܢܚܫܟܘܢ. ܘܟܘܟ̈ܒܐ ܢܟܢܫܘܢ ܢܘܗܪܗܘܢ. 10
* ܘܡܪܝܐ ܢܬܠ ܩܠܗ ܩܕܡ ܚܝܠܗ. ܡܛܠ ܕܣܓܝܐܐ ܗܝ ܛܒ ܡܫܪ̈ܝܬܗ. ܘܥܫܝܢ ܥܒܕܐ 11
ܕܡܠܬܗ. ܡܛܠ ܕܪܒ ܗܘ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܘܕܚܝܠ ܛܒ. ܘܡܢܘ ܡܨܐ ܡܣܝܒܪ ܠܗ.
* ܘܡܛܠ ܗܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܬܘܒܘ ܠܘܬܝ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܟܘܢ. ܒܨܘܡܐ: ܘܒܒܟܝܐ ܘܒܡܪܩܕܐ. 12
* ܨܪܘ ܠܒܘܬܟܘܢ. ܘܠܐ ܢܚܬܝܟܘܢ. ܘܬܘܒܘ ܠܘܬ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܪܚܡܢܐ ܗܘ 13
ܘܚܢܢܐ. ܘܢܓܝܪ ܪܘܚܐ. ܘܣܓܝ ܛܝܒܘܬܐ. ܘܡܬܬܘܐ ܥܠ ܒܝܫܬܐ. * ܡܢ ܝܕܥ ܐܢ ܢܬܦܢܐ 14
ܘܢܬܪܚܡ ܥܠܝܢ. ܘܢܫܒܘܩ ܒܘܪܟܬܐ ܒܕܘܟܬܗ. ܩܘܪܒܢܐ ܘܢܣܟܐ. ܠܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. * ܐܩܥܘ 15
ܫܝܦܘܪܐ ܒܨܗܝܘܢ. ܩܕܫܘ ܨܘܡܐ. ܩܪܘ ܟܢܘܫܬܐ. ܟܢܫܘ ܥܡܐ. ܩܕܫܘ ܥܕܬܐ. ܟܢܫܘ ܣܒ̈ܐ. 16
ܘܟܢܫܘ ܥܠܝܡ̈ܐ. ܘܝܢܘܩܝ ܬܕ̈ܝܐ. ܢܦܘܩ ܚܬܢܐ ܡܢ ܩܝܛܘܢܗ. ܘܟܠܬܐ ܡܢ
ܓܢܘܢܗ. * ܒܝܬ ܐܣܩܘܦܬܐ ܠܡܕܒܚܐ ܢܒܟܘܢ ܟܗ̈ܢܐ ܡܫܡܫܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܐܡܪܘܢ. 17
ܚܘܣ ܡܪܝܐ: ܥܠ ܥܡܟ. ܘܠܐ ܬܬܠ ܝܪܬܘܬܟ ܠܚܣܕܐ ܘܠܡܫܠܛܢܘܬܐ ܕܥܡ̈ܡܐ. ܕܠܐ ܢܐܡܪܘܢ
ܒܥܡ̈ܡܐ ܐܝܟܘ ܐܠܗܗܘܢ. * ܘܛܢ ܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܥܗ ܘܚܣ ܥܠ ܥܡܗ. * ܘܥܢܐ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪ 18
ܠܥܡܗ. ܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܠܟܘܢ. ܥܒܘܪܐ ܘܚܡܪܐ ܘܡܫܚܐ. ܘܬܣܒܥܘܢ ܡܢܗ. ܘܠܐ ܐܬܠܟܘܢ ܬܘܒ ܚܣܕܐ ܒܥܡ̈ܡܐ. 19

Ut ſonitus curruum ſtrepitantiū ſuper cacu- 5
mina montium, & ut crepitus flammæ igneæ
ſtipulā devorantis, utque populus præpotens
ad bellum inſtructus. A conſpectu ejus con- 6
tremiſcent populi, & omnes vult' nigreſcent
inſtar nigredinis ollæ. Ut gigantes current, 7
& ut viri bellatores mœnia conſcendent:
quiſque viâ ſuâ incedet, & non deflectent à
viis ſuis. Nullus alterū impellet, ſed quiſque 8
ſemitâ ſuâ incedet: præ armorū ſuorum pon-
dere cadent, & rem ad exitum non pducent.
Per urbes aſcendent, & ſuper muros diſcur- 9
rent: ſuper domos aſcendent, & p feneſtras in-
trabunt furum inſtar. Ante ipſum turbabitur 10
terra, & commovebuntur cœli: ſol & luna
obſcurabuntur, & occidet lumen ſtellarum.
Dominus quoque dabit vocem ſuam ante ex- 11
ercitū ſuum; quia multa ſunt admodū caſtra
ipſius, & potens opus ſermonis ejus: magnus
eſt enim futurus dies Dñi, multūmque formi-
dabilis; & quis poterit ſuſtinere eum? Qua- 12
propter dicit Dñs; Convertimini ad me toto
animo veſtro, jejunio, fletu, & lamentis; Et 13
ſcindite corda veſtra, non veſtimenta veſtra,
& convertimini ad Dñm Deum veſtrū; quia
miſericors eſt & clemens, longanimis, & mul-
tæ bonitatis, & avertens malū. Quis ſcit an 14
converſus miſereatur noſtri, & reliquā faciat
in loco ſuo benedictionem, & ſimilā atque li-
bamen Dño Deo veſtro? Clangite buccinā in 15
Sione, ſanctificate jejuniū, convocate cœtū;
Congregate populū, ſanctificate eccleſiā, con- 16
gregate ſenes, & congregate juvenes & ubera
ſugentes: exeat ſponſ' è cubiculo ſuo, & ſpon-
ſa de thalamo ſuo. Inter ſcamnū & altare fle- 17
ant ſacerdotes miniſtri Dñi, & dicant; Parce
Dñe populo tuo, & ne des hæreditatem tuam
probro & dominio gentiū: ut ne dicant gen-
tes, Ubi eſt Deus eorū? Zelavit Dñs pro terra 18
ſua, & pepercit populo ſuo: Et reſpondens 19
Dñs dixit populo ſuo, Ecce mittam vobis fru-
mentū, vinū, & oleum, ut ſaturemini: & non
exponam vos ampliùs probro gentium.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* مثل صوت مركبات على روس الجبال يطفرون * ومثل صوت لهيب نار تاكل القصب * ومثل 5
شعب كثير وقوي مصطف للقتال * من وجهه تنكسر الشعوب * كل وجه كسخام القدر * مثل 6 7
محاربين يعدون * وكرجال متحاربين يصعدون على الاسوار * وكل واحد في طريقه يسير * ولا
يميلون عن سبلهم * وكل واحد من اخيه لا يهرب * يسيرون مثقلين باسلحتهم * وبسهامهم 8
يسقطون ولا يكملون * ياخذون المدينة * وعلى الاسوار يعدون * وعلى المنازل يصعدون * ومن 9
الكوى يدخلون مثل السراق * تختلط الارض * وتتزلزل السما * الشمس والقمر يظلما * 10
والكواكب تغيب ضوءها * والرب يعطي صوته قدام وجه جيشه * لان معسكره كثير جدا هو * 11
لان اعمال كلماته قوية * من اجل ان يوم الرب عظيم وظاهر جدا * ومن يكون له كفوا * والان 12
يقول الرب الهكم * ارجعوا الي من كل قلبكم * بالصوم والبكاء والنوح * وشقوا قلوبكم ولا 13
ثيابكم * وارجعوا الى الرب الهكم * لانه رؤوف ومتراف هو * طويل الروح وكثير الرحمة *
ونادم على قبائح البشر * من علم هل يرجع الرب ويتوب * ويفضل خلفه بركة ذبيحة 14
وقارورة للرب الهنا *

Ut ſtrepitus quadrigarum ſuper cacumi- 5
na montium exilient, & ut ſtrepitus flam-
mæ ignis devorantis arundines, & ut po-
pulus amplus & fortis inſtructus ad præ-
lium. A conſpectu ejus conterentur po- 6
puli: omnes vultus ſimiles erunt nigrori
ollæ: ut pugnatores current, & ſicut 7
viri belligerantes aſcendent ſuper muros,
& ſinguli in via ſua ambulabunt, neque
deflectent à ſemitis ſuis: Unuſquiſque 8
à fratre ſuo non fugiet: incedent armis
ſuis onuſti, jaculiſque ſuis corruent, &
rem *ad exitum non perducent. Urbem* 9
capient, ſuper muros diſcurrent, domos
conſcendent, & per feneſtras ingredien-
tur more furum. Commiſcebitur terra, 10
concutietur cœlum, ſol & luna obſcura-
buntur, ſtellæ lumen ſuum occultabunt,
Et Dominus edet vocem ſuam ante con- 11
ſpectum exercitûs ſui: quoniam caſtra
ipſius multa ſunt admodùm: quoniam
effectus verborum ejus potentes; quoni-
am dies Domini magnus eſt futurus &
valdè apertus; ecquis erit ad eum ſuffi-
ciens? Nunc itaque dicit Dominus De- 12
us veſter; Revertimini ad me toto corde
veſtro per jejunium, fletum, & plan-
ctum: Lacerate corda veſtra, ac non 13
veſtes veſtras, & revertimini ad Domi-
num Denm veſtrum; quia miſericors &
clemens eſt, longanimis & multæ miſeri-
cordiæ, & quem pœnitet ſcelerum huma-
norum. Quis novit num revertatur 14
Dominus, & pœniteat ſe, & relinquat
poſt ſe benedictionem, ſacrificium, et ala-
baſtrum Domino Deo noſtro?

* الاصحاح السابع * وهو الثاني من النبوة *

Textus ſeptimus, qui eſt hujus Prophetiæ ſecundus.

* بوقوا بالبوق في صهيون * قدسوا الصيام * نادوا بالخدمة * اجمعوا الشعب * قدسوا الجماعة * 15 16
اختاروا الشيوخ * اجمعوا الاطفال راضعي الثدي * ليخرج العريس من حجلته * والعروس من
خدرها * وسط اس المذبح يبكي الكهنة خدام الرب * ويقولون اشفق يا رب على شعبك * ولا 17
تعط ميراثك للعار * لتروس عليه الامم * كيلا يقولون في الامم اين هو الاههم * وغار الرب 18
لارضه * وشفق على شعبه * واجاب الرب وقال لشعبه * ها انا ارسل لكم قمحا وخمرا وزيتا * 19
وتمتلون منهم * ولا اعطيكم بعد للعار في الامم *

Clangite buccinâ in Sion, ſanctificate je- 15
junium, proclamate miniſterium, Con- 16
gregate populum, ſanctificate cœtum, eli-
gite ſenes, colligite parvulos ubera ſu-
gentes, egrediatur ſponſus è ſtrato cu-
biculo ſuo, et ſponſa è thalamo ſuo: In 17
media crepidine altaris fleant ſacerdotes
miniſtri Domini, dicantque; Parce O Do-
mine populo tuo, et ne exponas hæredita-
tem tuam opprobrio, ut dominentur ei
gentes; ut non dicant inter gentes, ubi
eſt Deus eorum? Jam Zelotypia motus 18
eſt Dominus erga terram ſuam, et peper-
cit populo ſuo: Reſponditque Dominus, 19
et ait populo ſuo, Ecce ego mittam vobis
frumentum, vinum, et oleum, ut iis ex-
pleamini; et non exponam vos ampliùs
opprobrio inter gentes.

יוֹאֵל : ג

eũ faciã expellere & ,vobis *deſuper* faciã elongare Aquilonarem Et
20 וְאֶת־הַצְּפוֹנִי אַרְחִיק מֵעֲלֵיכֶם וְהִדַּחְתִּיו
,Orientale mare ad ej° *facies* , *deſolationis & ,ariditatis* terram ad
אֶל־אֶרֶץ צִיָּה וּשְׁמָמָה אֶת־פָּנָיו אֶל־הַיָּם הַקַּדְמֹנִי
aſcendet & ,ejus fœtor aſcendet & : noviſſimum mare ad ejus finem &
וְסֹפוֹ אֶל־הַיָּם הָאַחֲרוֹן וְעָלָה בָאְשׁוֹ וְתַעַל
. *humus* timeas Ne .*faciendum ad* magnificavit quia ,ej° *graveolentia*
21 צַחֲנָתוֹ כִּי הִגְדִּיל לַעֲשׂוֹת׃ אַל־תִּירְאִי אֲדָמָה
.*faciendum ad* , Dominus magnificavit quia , lætare & , exulta
גִּילִי וּשְׂמָחִי כִּי־הִגְדִּיל יְהוָה לַעֲשׂוֹת׃
quia : deſerti paſcua germinaverunt quia ,agri animalia timeatis Ne
22 אַל־תִּירְאוּ בַּהֲמוֹת שָׂדַי כִּי דָשְׁאוּ נְאוֹת מִדְבָּר כִּי־
.*ſuam facultatem* dederunt vitis & ficus , ſuum fructum attulit *lignum*
עֵץ נָשָׂא פִרְיוֹ תְּאֵנָה וָגֶפֶן נָתְנוּ חֵילָם׃
dedit quia ,veſtro Deo Domino in lætamini *&*,exultate Sijon filii Et
23 וּבְנֵי צִיּוֹן גִּילוּ וְשִׂמְחוּ בַּיהוָה אֱלֹהֵיכֶם כִּי־נָתַן
,pluviam ,imbrem vobis faciet deſcẽdere & : juſtitiæ doctorem vobis
לָכֶם אֶת־הַמּוֹרֶה לִצְדָקָה וַיּוֹרֶד לָכֶם גֶּשֶׁם מוֹרֶה
ſtridebunt & ;frumẽto areæ implebuntur Et .primo in ,ſerotinam &
24 וּמַלְקוֹשׁ בָּרִאשׁוֹן׃ וּמָלְאוּ הַגֳּרָנוֹת בָּר וְהֵשִׁיקוּ
annos vobis reddam Et .*recenti* oleo & , *muſto* torcularia
25 הַיְקָבִים תִּירוֹשׁ וְיִצְהָר׃ וְשִׁלַּמְתִּי לָכֶם אֶת־הַשָּׁנִים
me° exercitus :*Ghazam* & , chaſil & , bruchus ,locuſta comedit quos
אֲשֶׁר אָכַל הָאַרְבֶּה הַיֶּלֶק וְהֶחָסִיל וְהַגָּזָם חֵילִי
;ſaturando &,comedendo comedetis Et .vos in miſi quem , magnus
26 הַגָּדוֹל אֲשֶׁר שִׁלַּחְתִּי בָּכֶם׃ וַאֲכַלְתֶּם אָכוֹל וְשָׂבוֹעַ
vobiſcum fecit qui ,veſtri Dei Domini nomen laudabitis &
וְהִלַּלְתֶּם אֶת־שֵׁם יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם אֲשֶׁר־עָשָׂה עִמָּכֶם
ſcietis Et .ſeculum in me° populus afficientur pudore non & :*mirificando*
27 לְהַפְלִיא וְלֹא־יֵבֹשׁוּ עַמִּי לְעוֹלָם׃ וִידַעְתֶּם
non & ,veſter Deus Dominus ego & , *ego* Iſrael *interiori* in quòd
כִּי בְקֶרֶב יִשְׂרָאֵל אָנִי וַאֲנִי יְהוָה אֱלֹהֵיכֶם וְאֵין
.ſeculum in meus populus *pudefient* non & : amplius
עוֹד וְלֹא־יֵבֹשׁוּ עַמִּי לְעוֹלָם׃

CAP. III. ג

,carnem omnem ſuper meũ ſpiritum effundam ,hæc poſt erit Et
1 וְהָיָה אַחֲרֵי־כֵן אֶשְׁפּוֹךְ אֶת־רוּחִי עַל־כָּל־בָּשָׂר
; ſomniabũt ſomnia veſtri Senes .veſtræ filiæ &,veſtri filii prophetabunt &
וְנִבְּאוּ בְּנֵיכֶם וּבְנוֹתֵיכֶם זִקְנֵיכֶם חֲלֹמוֹת יַחֲלֹמוּן
ſuper & , ſervos ſuper etiam Et .videbunt viſiones veſtri *electi*
2 בַּחוּרֵיכֶם חֶזְיֹנוֹת יִרְאוּ׃ וְגַם עַל־הָעֲבָדִים וְעַל־
dabo Et .meum ſpiritum effundam illis diebus in ancillas
3 הַשְּׁפָחוֹת בַּיָּמִים הָהֵמָּה אֶשְׁפּוֹךְ אֶת־רוּחִי׃ וְנָתַתִּי
.fumi columnas &,ignem &,ſanguinem :terra in & , cœlis in prodigia
מוֹפְתִים בַּשָּׁמַיִם וּבָאָרֶץ דָּם וָאֵשׁ וְתִימֲרוֹת עָשָׁן׃
venire facies ad :ſanguinẽ in Luna & ,*tenebroſitatem* in convertetur Sol
4 הַשֶּׁמֶשׁ יֵהָפֵךְ לְחֹשֶׁךְ וְהַיָּרֵחַ לְדָם לִפְנֵי בּוֹא
Invocaverit qui omnis ,erit Et .*terribilem & ,magnum* Domini *diem*
5 יוֹם יְהוָה הַגָּדוֹל וְהַנּוֹרָא׃ וְהָיָה כֹּל אֲשֶׁר־יִקְרָא
Jeruſalaim *in* & , Sijon monte in quia : evadet Domini *nomine in*
בְּשֵׁם יְהוָה יִמָּלֵט כִּי בְּהַר־צִיּוֹן וּבִירוּשָׁלַ͏ִם
quos , ſuperſtitibus in & ,Dominus dixit ſicut , evaſio erit
תִּהְיֶה פְלֵיטָה כַּאֲשֶׁר אָמַר יְהוָה וּבַשְּׂרִידִים אֲשֶׁר
.*vocans* Dominus
יְהוָה קֹרֵא׃

Verſio VULG. LAT.

20 Et eum, qui ab Aquilone eſt, procul faciam à vobis : & expellam eum in terram inviam & deſertam : faciem ejus contra mare Orientale, & extremum ejus ad mare noviſſimum : & aſcendet fœtor ejus, & aſcendet putredo ejus, quia ſuperbè egit.

21 Noli timere, terra; exulta & lætare : quoniam magnificavit Dominus ut faceret.

22 Nolite timere, animalia regionis : quia germinaverunt ſpecioſa deſerti, quia lignum attulit fructum ſuum, ficus & vinea dederunt virtutem ſuam.

23 Et filii Sion, exultate, & lætamini in Domino Deo veſtro : quia dedit vobis doctorem juſtitiæ, & deſcendere faciet ad vos imbrem matutinum & ſerotinum, ſicut in principio.

24 Et implebuntur areæ frumento, & redundabunt torcularia vino & oleo.

25 Et reddam vobis annos, quos comêdit locuſta, bruchus, & rubigo, & eruca : fortitudo mea magna, quam miſi in vos.

26 Et comedetis veſcentes, & ſaturabimini : & laudabitis nomen Domini Dei veſtri, qui fecit mirabilia vobiſcum : & non confundetur populus meus in ſempiternum.

27 Et ſcietis quia in medio Iſrael ego ſum : & ego Dominus Deus veſter, & non eſt ampliùs : & non confundetur populus meus in æternum.

28 Et erit poſt hæc : Effundam ſpiritum meum ſuper omnem carnem : & prophetabunt filii veſtri, & filiæ veſtræ : ſenes veſtri ſomnia ſomniabunt, & juvenes veſtri viſiones videbunt.

29 Sed & ſuper ſervos meos & ancillas in diebus illis effundam ſpiritum meum.

30 Et dabo prodigia in cœlo, & in terra, ſanguinem, & ignem, & vaporem fumi.

31 Sol convertetur in tenebras, & luna in ſanguinem : antequàm veniat dies Domini magnus, & horribilis.

32 Et erit : omnis qui invocaverit nomen Domini, ſalvus erit : quia in monte Sion, & in Jeruſalem erit ſalvatio, ſicut dixit Dominus, & in reſiduis, quos Dominus vocaverit.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

20 Καὶ τὸν ἀπὸ Βορρᾶ ἐκδιώξω ἀφ' ὑμῶν, καὶ ἐξώσω αὐτὸν εἰς γῆν ἄνυδρον, καὶ ἀφανιῶ τὸ πρόσωπον αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν τὴν πρώτην, καὶ τὰ ὀπίσω αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν τὴν ἐσχάτην· καὶ ἀναβήσεται ἡ σαπρία αὐτοῦ, καὶ ἀναβήσεται ὁ βρόμος αὐτοῦ, ὅτι (τ) ἐμεγάλυνε τὰ ἔργα αὐτοῦ.

21 Θάρσει γῆ, χαῖρε καὶ εὐφραίνου, ὅτι ἐμεγάλυνε κύριος τοῦ ποιῆσαι.

22 Θαρσεῖτε κτήνη τοῦ πεδίου, ὅτι βεβλάστηκε τὰ πεδία τῆς ἐρήμου, ὅτι ξύλον ἤνεγκε τὸν καρπὸν αὐτοῦ, (υ) συκῆ καὶ ἄμπελος ἔδωκαν τὴν ἰσχὺν αὐτῶν.

23 Καὶ τὰ τέκνα Σιὼν χαίρετε καὶ εὐφραίνεσθε ἐπὶ τῷ κυρίῳ θεῷ ὑμῶν, διότι ἔδωκεν ὑμῖν τὰ βρώματα εἰς δικαιοσύνην, καὶ βρέξει ὑμῖν ὑετὸν πρώϊμον καὶ ὄψιμον, καθὼς ἔμπροσθεν.

24 Καὶ (˜) πλησθήσονται αἱ ἅλωνες σίτου, καὶ (˝) ὑπερεκχυθήσονται αἱ ληνοὶ οἴνου καὶ ἐλαίου.

25 Καὶ ἀνταποδώσω ὑμῖν ἀντὶ τῶν ἐτῶν ὧν κατέφαγεν ἡ ἀκρὶς, καὶ ὁ βροῦχος, καὶ ἡ (φ) ἐρυσίβη, καὶ ἡ κάμπη, ἡ δύναμίς μου ἡ μεγάλη, ἣν ἐξαπέστειλα (χ) εἰς ὑμᾶς.

26 Καὶ φάγεσθε ἐσθίοντες, καὶ ἐμπλησθήσεσθε, καὶ αἰνέσετε τὸ ὄνομα κυρίου (ψ) τοῦ θεοῦ ὑμῶν, ἃ ἐποίησε μεθ' ὑμῶν εἰς θαυμάσια· καὶ οὐ μὴ καταισχυνθῇ ὁ λαός μου εἰς τὸν αἰῶνα.

27 Καὶ ἐπιγνώσεσθε ὅτι ἐν μέσῳ τοῦ Ἰσραὴλ ἐγώ εἰμι, καὶ ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς ὑμῶν, καὶ οὐκ ἔστιν ἔτι πλὴν ἐμοῦ· καὶ οὐ μὴ (ω) καταισχυνθῶσιν ἔτι ὁ λαός μου εἰς τὸν αἰῶνα.

28 Καὶ ἔσται μετὰ ταῦτα, (·) καὶ ἐκχεῶ ἀπὸ τοῦ πνεύματός μου ἐπὶ πᾶσαν σάρκα, καὶ προφητεύσουσιν οἱ υἱοὶ ὑμῶν, καὶ αἱ θυγατέρες ὑμῶν, καὶ οἱ πρεσβύτεροι ὑμῶν (α) ἐνύπνια ἐνυπνιασθήσονται, καὶ οἱ νεανίσκοι ὑμῶν ὁράσεις ὄψονται.

29 (β) Καὶ ἐπὶ τοὺς δούλους μου καὶ ἐπὶ τὰς δούλας (γ) ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις ἐκχεῶ ἀπὸ τοῦ πνεύματός μου.

30 Καὶ δώσω τέρατα ἐν (δ) οὐρανῷ, καὶ ἐπὶ τῆς γῆς αἷμα καὶ πῦρ καὶ ἀτμίδα καπνοῦ.

31 Ὁ ἥλιος μεταστραφήσεται εἰς σκότος, καὶ ἡ σελήνη εἰς αἷμα, πρὶν ἐλθεῖν τὴν ἡμέραν κυρίου τὴν μεγάλην, καὶ ἐπιφανῆ.

32 Καὶ ἔσται πᾶς ὃς ἂν ἐπικαλέσηται τὸ ὄνομα κυρίου, σωθήσεται. ὅτι ἐν τῷ ὄρει Σιὼν (ε) καὶ ἐν Ἱερουσαλὴμ ἔσται ἀνασωζόμενος, καθότι εἶπε κύριος, καὶ εὐαγγελιζόμενοι οὓς κύριος προσκέκληται.

20 Et eum, qui ab Aquilone eſt, repellam à vobis, & expellam eum in terram, quæ eſt ſine aqua: & diſperdam faciem ejus in mare primum, & poſteriora ejus in mare noviſſimum : & aſcendet putredo ejus, & aſcendet fœtor ej°: quia magnificavit opera ſua.

21 Confide, terra; gaude, atque lætare: quia magnificavit Dominus, ut faceret.

22 Confidite, jumenta campi: quoniam germinaverunt campi ſolitudinis, quia lignum attulit fructum ſuum, ficus, & vitis dederunt fortitudinem ſuam.

23 Et, filii Sion, gaudete, atque lætamini in Domino Deo veſtro : quoniam dedit vobis (i) eſcas in juſtitia, & pluet vobis imbrem temporaneum, & ſerotinum, ſicut principio :

24 Et replebuntur areæ tritico, & redundabunt torcularia vino, & oleo.

25 Et reddam vobis pro annis, quos comêdit locuſta, et bruchus, & rubigo, & eruca: fortitudo mea magna, quam miſi in vos.

26 Et veſcemini comedentes, & ſaturabimini, & laudabitis nomen Domini Dei veſtri, quæ fecit vobiſcũ (k) in mirabilia: & non confundetur populus meus in æternum.

27 (l) Et ſcietis, quia in medio Iſrael ego ſum: & ego Dominus Deus veſter: & non eſt amplius præter me : & non confundetur ultrà populus meus in æternum.

28 Et erit poſt hæc, & effundam de ſpiritu meo ſuper omnem carnem, & prophetabunt filii veſtri, & filiæ veſtræ, & ſenes veſtri ſomnia ſomniabunt, & juvenes veſtri viſiones videbunt.

29 Et ſuper ſervos meos, & ſuper ancillas in diebus illis effundam de ſpiritu meo.

30 Et (m) dabo prodigia in cœlo, & ſuper terram ſanguinem, & ignem, & vaporem fumi.

31 Sol convertetur in tenebras, et Luna in ſanguinem; antequàm veniat dies Domini magnus, et illuſtris.

32 Et erit : Omnis, qui invocaverit nomen Domini, ſalvus erit. Quia in monte Sion, et in Hieruſalem erit (n) ſalvatus, ſicut dixit Dominus, et (o) evangelizati, quos Dominus vocavit.

MS. A. (τ) ἐμεγαλύνθη (υ) ἄμπελος καὶ συκῆ (˜) ἐμπλησθήσονται (˝) ὑπερεκχυθήσονται (φ) * ἐρισύβη, (χ) ἐφ' ὑμᾶς. (ψ) θεοῦ ἡμῶν, (ω) καταισχυνθῇ οὐκ ἔτι πᾶς ὁ λαός μου (·) ἐκχεῶ (α) ἐνυπνίοις (β) Καί γε ἐπὶ (γ) μου ἐν (δ) τῷ οὐρανῷ, (ε) καὶ Ἱερουσαλήμ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 ויַת עַמָא דַאתֵי מִצִפּוּנָא אַרְחֵיק מִנְכוֹן וְאַגְלְנֵיהּ לְאַרְעָא צַדְיָא וַחֲרָבָא רֵישֵׁיהּ לְיַמָא
מַדְנְחָא וְסוֹפֵיהּ לְיַמָא מַעַרְבָאָה וְתִסַק סְרוּחֵיהּ וִיהָךְ רוּחֵיהּ אֲרֵי אַסְגֵי לְמֶעְבַּד בִּישָׁן׃
21 לָא תִדְחֲלִין אַרְעָא דְיִשְׂרָאֵל בּוּעִי וַחֲדִי אֲרֵי אַסְגֵי יְיָ לְמֶעְבַּד בִּיךְ טָבִין לְעַמֵיהּ׃ 22 לָא
תִדְחֲלוּן חֵיוַת בָּרָא אֲרֵי אִתְעַטַרוּ דִירוֹת מַדְבְּרָא אֲרֵי אִילָנָא אַצְלַח אִבֵּיהּ תֵּינַיָא
23 וְגוּפְנַיָא טְעַנוּ פֵּירְהוֹן׃ וּבְנֵי צִיוֹן בּוּעוּ וַחֲדוּ בְּמֵימְרָא דַייָ אֱלָהֲכוֹן אֲרֵי אֲתִיב לְכוֹן יַת
24 מַלְפְכוֹן בִּזְכוּ וּמַחֵית לְכוֹן מְטַר בְּכִיר בְּעִדָנֵיהּ וְלָקִישָׁא בְּיַרְחָ נִיסָן׃ וְיִתְמְלוּן אִדְּרַיָא
25 עֲבוּרָא וְיִטוּפוּן נַעֲוַיָא חַמְרָא וּבֵירַיָא מִשְׁחָא׃ וַאֲשַׁלֵם לְכוֹן שְׁנַיָא טָבְתָא חֲלָף שְׁנַיָא
דִבְזוּ יָתְכוֹן עַמְמַיָא אוּמַיָא וְלִישָׁנַיָא וְשָׁלְטוֹנַיָא וּמַלְכְוָתָא פּוּרְעֲנוּת חֵילִי רַבָּא דְשַׁלְחִית
26 בְּכוֹן׃ וְתֵיכְלוּן מֵיכַל וְתִסְבְּעוּן וּתְשַׁבְּחוּן יַת שְׁמָא דַייָ אֱלָהֲכוֹן דַעֲבַד עִמְכוֹן פְּרִישָׁן
27 וְלָא יִבְהֲתוּן עַמִי לְעָלַם׃ וְתִדְעוּן אֲרֵי בְגוֹ בֵית יִשְׂרָאֵל אַשְׁרֵיתִי שְׁכִנְתִּי וַאֲנָא יְיָ
28 אֱלָהֲכוֹן וְלֵית עוֹד וְלָא יִבְהֲתוּן עַמִי בֵית יִשְׂרָאֵל לְעָלַם׃ וִיהֵי בָּתַר כֵּן אֶשְׁפּוֹךְ יַת רוּחַ
קוּדְשִׁי עַל כָּל בִּסְרָא וְיִתְנַבּוּן בְּנֵיכוֹן וּבְנָתֵיכוֹן סָבֵיכוֹן חֶלְמִין יַחְלְמוּן עוּלֵימֵיכוֹן חֶזְוָנִין
29 יֶחֱזוּן׃ וְאַף עַל עַבְדִין וְעַל אַמְהָן בְּיוֹמַיָא הָאִנוּן אֶשְׁפּוֹךְ יַת רוּחַ קוּדְשִׁי׃ 30 וְאֶתֵּן אָתִין
31 בִּשְׁמַיָא וּבְאַרְעָא דַם וְאֶשָׁא וְתִימְרַת תְּנָן׃ שִׁמְשָׁא יִתְהַפֵּיךְ לְקִבְלָא וְסִיהֲרָא לִדְמָא קֳדָם
32 מֵיתֵי יוֹמָא דַעֲתִיד לְמֵיתֵי מִן קֳדָם יְיָ רַבָּא וּדְחִילָא׃ וִיהֵי כָּל דִצְלֵי בִּשְׁמָא דַייָ יִשְׁתֵּיזֵיב
אֲרֵי בְטוּרָא דְצִיוֹן וּבִירוּשְׁלֵם תְּהֵי שֵׁיזָבְתָא כְּמָא דַאֲמַר יְיָ וּבְמִשְׁזְבַיָא דַיְיָ
מְזַמֵן׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

20 Populum verò qui venit ab Aquilone procul abigam à vobis, & ablegabo eum in terram deſolatam & deſertam : prima frons ejus ad mare Orientale [*pertinget*], & extremum ejus ad mare Occidentale, et aſcendet fœtor ejus atque abibit odor ejus, quamplurima enim patravit maleficia. Ne timeas terra Iſrael, exulta & lætare, quia magnificatus eſt Dominus ut agat in te munifice populo ſuo. Ne timeatis beſtiæ agri, quia coronata fuerunt [*bonis*] habitacula deſerti, quoniam arbor feliciter protulit fructum ſuum, ficus & vites attulerunt fructus ſuos. O filii Sion exultate & lætamini in verbo Domini Dei veſtri, quoniam reddidit vobis doctorem veſtrum in juſtitiam, demiſitque vobis primitivam pluviam tempeſtivè, & ſerotinam in menſe Niſan. Et replebuntur areæ frumento, & redundabunt torcularia muſto atque *lacus* oleo. Et rependam vobis annos bonos pro annis quibus diripuerunt vos populi, *gentes* & linguæ, imperatores atque regna vindictæ, exercitus meus magnus quem immiſi in vos. Tunc comedetis veſcentes & ſaturabimini, & laudabitis nomen Domini Dei veſtri, qui geſſit vobiſcum mirabilia : nec erubeſcet populus meus in æternum. Sed ſcietis quòd intra filios Iſrael collocaverim majeſtatem meam : profectò ego ſum Dominus Deus veſter, & non eſt amplius [*ullus*] ideò non confundetur populus meus *domus Iſrael* in æternum. Sed erit poſt hæc, effundam ſpiritum ſanctum meum ſuper omnem carnem, & prophetabunt filii veſtri & filiæ veſtræ, ſenes veſtri ſomnia ſomniabunt, & juvenes veſtri viſiones videbunt. Quin etiam ſuper ſervos & ancillas in diebus illis effundam ſpiritum ſanctum meum. Atque dabo ſigna in cœlis & in terra, ſanguinem, & ignem atque columnas fumi. Sol convertetur in tenebras, & Luna in ſanguinem, antequam adveniat dies magnus & formidabilis. Eritque omnis qui oraverit in nomine Domini, liberabitur ; quia in monte Sion & in Jeruſalem erit liberatio , quemadmodum dixit Dominus : & liberabuntur illi quos Dominus deſtinat

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܓܪܒܝܐ ܐܪܚܩ ܡܢܟܘܢ. ܘܐܕܚܝܘܗܝ ܠܐܪܥܐ ܨܗܝܬܐ ܘܡܚܪܒܬܐ. ܐܦܘܗܝ 20
ܠܝܡܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܣܘܦܗ ܠܝܡܐ ܐܚܪܝܐ. ܘܢܣܩ ܣܪܝܘܬܗ ܘܬܣܩ ܒܐܫܘܬܗ. ܡܛܠ
ܕܐܘܪܒ ܠܡܥܒܕ. * ܠܐ ܬܕܚܠܝܢ ܐܪܥܐ: ܕܘܨܝ ܘܚܕܝ. ܡܛܠ ܕܐܘܪܒ ܡܪܝܐ ܠܡܥܒܕ. 21
* ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ ܚܝܘܬܐ ܕܒܪܐ. ܡܛܠ ܕܢܦܩ ܕܬܐܐ ܒܡܪܥܝܐ ܕܡܕܒܪܐ. ܘܐܝܠܢܐ ܝܗܒ 22
ܦܐܪܘܗܝ. ܘܓܦܬܐ ܘܬܬܐ ܝܗܒ ܚܝܠܗܘܢ. * ܒܢܝ ܨܗܝܘܢ. ܕܘܨܘ. ܘܚܕܘ. ܒܡܪܝܐ 23
ܐܠܗܟܘܢ. ܕܝܗܒ ܠܟܘܢ ܡܐܟܘܠܬܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܡܚܬ ܠܟܘܢ ܡܛܪܐ ܒܟܝܪܐ
ܘܠܩܝܫܐ. ܐܝܟ ܕܩܕܡ ܠܩܘܕܡ. * ܘܢܬܡܠܘܢ ܐܕܪ̈ܐ ܚܛܐ. ܘܢܦܝܩܘܢ ܡܥܨܪ̈ܬܐ 24
ܚܡܪܐ ܘܡܫܚܐ. * ܘܐܦܪܘܥܟܘܢ ܫܢܝܐ ܕܐܟܠ ܩܡܨܐ ܦܪܚܐ. ܘܙܚܠܐ ܘܩܘܙܐ ܘܫܘܥܐ. 25
ܚܝܠܝ ܪܒܐ ܕܫܕܪܬ ܠܟܘܢ. * ܘܬܐܟܠܘܢ ܘܬܣܒܥܘܢ. ܘܬܫܒܚܘܢ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ 26
ܐܠܗܟܘܢ. ܕܥܒܕ ܥܡܟܘܢ ܬܕܡܪ̈ܬܐ. ܘܠܐ ܢܒܗܬ ܥܡܝ ܠܥܠܡ. * ܘܬܕܥܘܢ 27
ܕܒܓܘ ܐܝܣܪܝܠ ܐܢܐ. ܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ. ܘܠܝܬ ܬܘܒ ܠܒܪ ܡܢܝ. ܘܠܐ
ܢܒܗܬ ܥܡܝ ܠܥܠܡ. * ܘܒܬܪ ܗܠܝܢ ܐܫܘܕ ܪܘܚܝ ܥܠ ܟܠ ܒܣܪ. ܘܢܬܢܒܘܢ 28
ܒܢܝܟܘܢ ܘܒܢܬܟܘܢ. ܘܣܒܝܟܘܢ ܚܠܡܐ ܢܚܠܡܘܢ. ܘܥܠܝܡܝܟܘܢ ܚܙܘܢܐ
ܢܚܙܘܢ. * ܘܐܦ ܥܠ ܥܒܕ̈ܐ ܘܥܠ ܐܡܗ̈ܬܐ. ܐܫܘܕ ܪܘܚܝ ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ. 29
* ܘܐܬܠ ܬܕܡܪ̈ܬܐ ܒܫܡܝܐ ܘܒܐܪܥܐ. ܕܡܐ ܘܢܘܪܐ. ܘܥܛܪܐ ܕܬܢܢܐ. * ܫܡܫܐ 30 31
ܢܬܗܦܟ ܠܚܫܘܟܐ. ܘܣܗܪܐ ܠܕܡܐ. ܩܕܡ ܕܢܐܬܐ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܪܒܐ ܘܕܚܝܠܐ.
* ܘܟܠ ܕܢܩܪܐ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܢܬܦܨܐ. ܡܛܠ ܕܒܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܘܒܐܘܪܫܠܡ 32
ܬܗܘܐ ܦܘܪܩܢܐ. ܐܝܟ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܡܫܘܙܒܐ ܕܩܪܐ ܡܪܝܐ.

Aquilonarem repellam à vobis; repellam inquam, 20
eum in terram ſiticuloſam atque deſertam;
faciem ejus ad mare primum, & poſtremum
ejus ad mare ultimum; adeóque feriet
odor ejus, & aſcendet fœtor ejus, eò quòd
inſolenter egerit. Ne timeto terra, exulta 21
& lætare; quoniam Dominus magnificè aget.
Ne timeto beſtia terræ; quoniam exorietur 22
gramen in habitaculis deſerti, arbor edet fructum
ſuum, & vitis ac ficus præbebunt virtutem
ſuam. Filii Sionis, exultate & gaudete 23
in Domino Deo veſtro; quia daturus
eſt vobis eſcam juſtitiæ, & demiſſurus vobis
imbrem temporaneum & ſerotinum, ut antea.
Et implebuntur areæ frumento, & 24
redundabunt torcularia vino & oleo. Et 25
compenſabo vobis annos quos comêdit locuſta
volans, bruchus, gryllus, & eruca, exercitus
ille meus magnus quem in vos miſeram.
Et comedetis, ac ſaturabimini, & laudabitis 26
nomen Domini Dei veſtri qui mira
facturus eſt erga vos; & non pudefiet populus
meus in æternum. Et ſentietis quòd ego 27
ſim in medio Iſraelis, ego ſim Dominus Deus
veſter, nec ſit alius præter me: & non pudefiet
populus meus in æternum. Tum poſtea 28
effundam ſpiritum meum ſuper omnem carnem,
& prophetabunt filii veſtri & filiæ veſtræ,
ſenes veſtri ſomnia ſomniabunt, & juvenes
veſtri viſiones videbunt. Sed etiam 29
ſuper ſervos & ſuper ancillas effundam ſpiritum
meum iis diebus. Et mira faciam in 30
cœlo & in terra, ſanguinem, ignem, & exhalationes
fumi. Sol vertetur in tenebras, 31
& luna in ſanguinem, antequam veniat dies
Domini magna & horrenda. Et quicunque 32
invocaverit nomen Domini, liberabitur; nam
in monte Sionis & in Jeruſalem erit ſalvatio,
prout dixit Dominus liberatis quos Dominus
vocavit.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* والذي من الجربياء اطرده عنكم * واقصيه الي ارض عديمة الماء وابيد وجهه 20
الي البحر الاول * وما خلفه الي البحر الاخر * ويصعد نتنه ويرتفع رايحته * لان اعماله عظمت *
* ثقي ايتها الارض * افرحي وسري * لان الرب عظم صنيعه * ثقي يا بهايم 21 22
الصحراء * لان بقاع البرية اينعت * لان الشجر اخرجت ثمرها * الكرمة والتينة
اعطتا قوتها * يا اولاد صهيون افرحوا * وابتهجوا بالرب الهكم * من اجل انه 23
اعطي لكم الاطعمة للعدل * ويمطر لكم مطرا اولا واخيرا كما من قبل * وتمتلي 24
البيادر من الحنطة * وتندفق المعاصر من الخمر والزيت * واعوضكم عوض 25
السنين التي اكلها الجراد والجندب والقمل والدود * قوتي العظيمة التي ارسلها
اليكم * فتاكلون يا اكلين وتمتلون * وتسبحون اسم الرب الهكم الذي صنع معكم 26
هذه العجايب * ولا يخزي شعبي الي الابد * وتعلمون اني وسط اسرايل * اقول انا 27
وانا الرب الهكم * وليس ايضا سواي * ولا يخزي شعبي الي الابد * ويكون بعد 28
هذه افيض من روحي على كل ذي لحم * وتتنبي بنوكم وبناتكم * ومشايخكم
يحلمون الاحلام * وشبانكم يرون المناظر * وعلي عبيدي وعلي امايي في تلك 29
الايام افيض من روحي * واعطي الجرايح في السماء والايات على الارض * دما ونارا 30
وبخار الدخان * الشمس تنقلب الي الظلمة * والقمر الي الدم * قبل ان ياتي يوم 31
الرب العظيم الظاهر * ويكون كل من يدعوا باسم الرب يخلص * لان في جبل 32
صهيون وفي ايروسليم يكون المخلص * كما ان قال الرب * والمبشرون الذين
دعاهم الرب *

Eum qui eſt ex Aquilone, repellam à 20
vobis, & exterminabo ad terram aquâ
carentem: perdamque faciem ejus ad mare
primum; & quod poſt eum erit, ad
mare poſtremum; ita ut aſcendat fœtor
ejus, & odor ejus erumpat: nam opera
ejus grandia ſunt. Tuta ſis O terra, 21
gaude & lætare; quia Dominus magnificavit
facinus ſuum. Confidite O 22
jumenta ſolitudinis: quia planities
deſerti germinaverunt, quia arbor
protulit fructum ſuum, vitis & ficus
ediderunt vim ſuam. O filii Sionis, 23
gaudete & exhilaramini in
Domino Deo veſtro, quia dedit vobis
cibos ad æquitatem, demittetque
vobis pluviam priorem ac poſteriorem,
ut antea. Areæ frumento replebuntur, 24
& torcularia vino oleoque redundabunt.
Et rependam vobis pro annis 25
illis quos devoraverunt locuſtæ,
bruchi, pediculi, atque vermes; fortitudinem
meam maximam quam mittam
vobis. Et comedetis O comedentes, & 26
explebimini, ac laudabitis nomen Domini
Dei veſtri qui talia edidit erga vos miracula:
& non erubeſcet populus meus
in perpetuum. Sed cognoſcetis me eſſe in 27
medio Iſraelis, me inquam; meque eſſe
Dominum Deum veſtrum, nec ampliùs
eſſe præter me: & non erubeſcet populus
meus in perpetuum. Eritque poſt 28
hæc, ut effundam ex meo ſpiritu
ſuper omnem carne præditum, & prophetent
filii veſtri & filiæ veſtræ, ſenes
veſtri ſomnient ſomnia, & juvenes
veſtri videant viſiones. Etiam ſuper 29
ſervos meos & ſuper ancillas meas
in iis diebus effundam ex meo ſpiritu.
Edamque portenta in cœlo, & ſigna 30
ſuper terram; ſanguinem, & ignem,
& vaporem fumi. Sol vertetur in tenebras, 31
& luna in ſanguinem, antequam
veniat dies Domini magnus &
apertus. Et erit ut quicunque invocaverit 32
nomen Domini, ſalvetur: nam
in monte Sion & in Jeruſalem erit is
qui ſalvabitur, (quemadmodum dixit
Dominus) & ii quibus evangelizabitur,
quos Dominus vocavit.

יואל : ג

convertam quo : illo tempore in & , illis diebus in ecce Quia
6 כִּי הִנֵּה בַּיָּמִים הָהֵמָּה וּבָעֵת הַהִיא אֲשֶׁר אָשׁוּב
congregabo Et .Jeruſalaim & , Jehudah captivivitatem
7 אֶת־שְׁבוּת יְהוּדָה וִירוּשָׁלָם׃ וְקִבַּצְתִּי אֶת־
: Jehoſaphat vallem in eas faciam deſcendere & , gentes omnes
כָּל־הַגּוֹיִם וְהוֹרַדְתִּים אֶל־עֵמֶק יְהוֹשָׁפָט
meam hæreditatem & ,meũ populum ſuper ibi eis cum *ſubibo judicium* &
וְנִשְׁפַּטְתִּי עִמָּם שָׁם עַל־עַמִּי וְנַחֲלָתִי
.diviſerunt meam terram & ,*gentes* in diſperſerunt quos , Iſrael
יִשְׂרָאֵל אֲשֶׁר פִּזְּרוּ בַגּוֹיִם וְאֶת־אַרְצִי חִלֵּקוּ׃
,*meretrice in* puerum *dederunt* & : ſortem projecerunt meum populum *ad* Et
8 וְאֶל־עַמִּי יַדּוּ גוֹרָל וַיִּתְּנוּ הַיֶּלֶד בַּזּוֹנָה
mihi vos quid etiam Et .biberent *&* vino *in* vendiderunt puellam &
9 וְהַיַּלְדָּה מָכְרוּ בַיַּיִן וַיִּשְׁתּוּ׃ וְגַם מָה־אַתֶּם לִי
retributionem Nunquid ? Paleſtinæ termini omnes & , Sidon & ,Sor
צֹר וְצִידוֹן וְכֹל גְּלִילוֹת פְּלָשֶׁת הַגְּמוּל
,leviter ? *me ſuper vos retribuentes* num & ,*me ſuper reddentes* vos
אַתֶּם מְשַׁלְּמִים עָלָי וְאִם־גֹּמְלִים אַתֶּם עָלַי קַל
Quia .veſtrum caput in veſtram retributionem reddam citò
10 מְהֵרָה אָשִׁיב גְּמֻלְכֶם בְּרֹאשְׁכֶם׃ אֲשֶׁר־
mea deſiderabilia & : tuliſtis meum aurum & , meum argentum
כַּסְפִּי וּזְהָבִי לְקַחְתֶּם וּמַחֲמַדַּי
filios & , Jehudah filios Et .*veſtra palatia* in intuliſtis *bona*
11 הַטֹּבִים הֲבֵאתֶם לְהֵיכְלֵיכֶם׃ וּבְנֵי יְהוּדָה וּבְנֵי
eos *faciendum* elongare *ad* : *Jevanim* filiis vendidiſtis Jeruſalaim
יְרוּשָׁלַם מְכַרְתֶּם לִבְנֵי הַיְּוָנִים לְמַעַן הַרְחִיקָם
quo loco de eos *Juſcitans ego* Ecce .ſuo termino *deſuper*
12 מֵעַל גְּבוּלָם׃ הִנְנִי מְעִירָם מִן־הַמָּקוֹם אֲשֶׁר־
veſtram retributionem convertam & : *ibi* eos vendidiſtis
מְכַרְתֶּם אֹתָם שָׁמָּה וַהֲשִׁבֹתִי גְמֻלְכֶם
veſtras filias & , veſtros filios vendam Et .veſtrum caput in
13 בְּרֹאשְׁכֶם׃ וּמָכַרְתִּי אֶת־בְּנֵיכֶם וְאֶת־בְּנוֹתֵיכֶם
gentem ad Sabæis eos venundabunt & : Jehudah filiorum manu in
בְּיַד בְּנֵי יְהוּדָה וּמְכָרוּם לִשְׁבָאיִם אֶל־גּוֹי
,gentibus in hoc Clamate .eſt locutus Dominus quia : *longinquam*
14 רָחוֹק כִּי יְהוָה דִּבֵּר׃ קִרְאוּ־זֹאת בַגּוֹיִם
omnes aſcendant ,accedant , robuſtos ſuſcitate : bellum *ſanctificate*
קַדְּשׁוּ מִלְחָמָה הָעִירוּ הַגִּבּוֹרִים יִגְּשׁוּ יַעֲלוּ כֹּל
veſtras falces & ,gladios in *veſtros ligones Contundite* .*belli* viri
15 אַנְשֵׁי הַמִּלְחָמָה׃ כֹּתּוּ אִתֵּיכֶם לַחֲרָבוֹת וּמַזְמְרוֹתֵיכֶם
venite & ,vos *Conglobate* .*ego* fortis , dicat Debilis : lanceas in
16 לִרְמָחִים הַחַלָּשׁ יֹאמַר גִּבּוֹר אָנִי׃ עוּשׁוּ וָבֹאוּ
fac deſcendere illuc : vos congregate & , circuitu de gentes omnes
כָל־הַגּוֹיִם מִסָּבִיב וְנִקְבָּצוּ שָׁמָּה הַנְחַת
vallem ad gentes aſcendant & ,ſe Suſcitent .tuos robuſtos *Domine*
17 יְהוָה גִּבּוֹרֶיךָ׃ יֵעוֹרוּ וְיַעֲלוּ הַגּוֹיִם אֶל־עֵמֶק
gentes omnes judicandum ad ſedebo ibi quia : Jehoſaphat
יְהוֹשָׁפָט כִּי שָׁם אֵשֵׁב לִשְׁפֹּט אֶת־כָּל־הַגּוֹיִם
,Venite .meſſis maturavit quoniam , falcem Mittite .circuitu de
18 מִסָּבִיב׃ שִׁלְחוּ מַגָּל כִּי בָשַׁל קָצִיר בֹּאוּ
quia , torcularia exuberant , torcular eſt plenum quia ,deſcendite
רְדוּ כִּי־מָלְאָה גַּת הֵשִׁיקוּ הַיְקָבִים כִּי
quia : conciſionis valle in *turbæ Turbæ* .eorum malitia multa
19 רַבָּה רָעָתָם׃ הֲמֹנִים הֲמֹנִים בְּעֵמֶק הֶחָרוּץ כִּי
Luna & Sol .conciſionis valle in Domini dies *propinquus*
20 קָרוֹב יוֹם יְהוָה בְּעֵמֶק הֶחָרוּץ׃ שֶׁמֶשׁ וְיָרֵחַ
.ſuum ſplendorem retraxerunt ſtellæ & : *nigruerunt*
קָדָרוּ וְכוֹכָבִים אָסְפוּ נָגְהָם׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. III.

1 Quia ecce in diebus illis, & in tempore illo, cùm convertero captivitatem Juda et Jeruſalem: 2 Congregabo omnes Gentes, & deducam eas in vallem Joſaphat: & diſceptabo cum eis ibi ſuper populo meo, & hæreditate mea Iſrael, quos diſperſerunt in nationibus, & terram meam diviſerunt. 3 Et ſuper populum meum miſerunt ſortem: & poſuerunt puerum in proſtibulo, et puellam vendiderunt pro vino ut biberent. 4 Verùm quid mihi & vobis, Tyrus et Sidon, & omnis terminus Palæſtinorum? numquid ultionem vos reddetis mihi? et ſi ulciſcimini vos contra me, citò velociter reddam viciſſitudinem vobis ſuper caput veſtrum. 5 Argentum enim meum et aurum tuliſtis: deſiderabilia mea et pulcherrima intuliſtis in delubra veſtra. 6 Et filios Juda, & filios Jeruſalem vendidiſtis filiis Græcorum; ut longè faceretis eos de finibus ſuis. 7 Ecce ego ſuſcitabo eos de loco, in quo vendidiſtis eos: & convertam retributionem veſtram in caput veſtrum. 8 Et vendam filios veſtros, & filias veſtras in manibus filiorum Juda, & venumdabunt eos Sabæis genti longinquæ, quia Dominus locutus eſt. 9 Clamate hoc in Gentibus, ſanctificate bellum, ſuſcitate robuſtos: accedant, aſcendant omnes viri bellatores. 10 Concidite aratra veſtra in gladios, et ligones veſtros in lanceas. Infirmus dicat; Quia fortis ego ſum. 11 Erumpite, & venite omnes gentes de circuitu, & congregamini: ibi occumbere faciet Dominus robuſtos tuos. 12 Conſurgant, & aſcendant Gentes in vallem Joſaphat: quia ibi ſedebo ut judicem omnes gentes in circuitu. 13 Mittite falces, quoniam maturavit meſſis: venite, & deſcendite, quia plenum eſt torcular, exuberant torcularia: quia multiplicata eſt malitia eorum. 14 Populi populi in valle conciſionis: quia juxta eſt dies Domini in valle conciſionis. 15 Sol et luna obtenebrati ſunt, et ſtellæ retraxerunt ſplendorem ſuum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. γʹ.

1 (α) Ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις καὶ ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ὅταν ἐπιστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν Ἰούδα καὶ Ἱερουσαλήμ, 2 Καὶ συνάξω πάντα τὰ ἔθνη, καὶ κατάξω αὐτὰ εἰς τὴν κοιλάδα Ἰωσαφάτ, καὶ διακριθήσομαι πρὸς αὐτοὺς ἐκεῖ ὑπὲρ τοῦ λαοῦ μου καὶ τῆς κληρονομίας μου Ἰσραήλ, οἳ διεσπάρησαν ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ τὴν γῆν μου κατεδιείλαντο, 3 Καὶ ἐπὶ τὸν λαόν μου ἔβαλον κλήρους, καὶ ἔδωκαν τὰ παιδάρια πόρναις, καὶ τὰ κοράσια ἐπώλουν (·) ἀντὶ τοῦ οἴνου, καὶ ἔπινον. 4 Καὶ τί (β) ὑμεῖς ἐμοὶ Τύρος, καὶ Σιδὼν, καὶ πᾶσα Γαλιλαία ἀλλοφύλων; μὴ ἀνταπόδομα ὑμεῖς ἀνταποδίδοτέ μοι; ἢ μνησικακεῖτε ὑμεῖς ἐπ' ἐμοί; ὀξέως καὶ ταχέως ἀνταποδώσω τὸ ἀνταπόδομα ὑμῶν εἰς κεφαλὰς 5 ὑμῶν, Ἀνθ' ὧν τὸ ἀργύριόν μου καὶ τὸ χρυσίον μου ἐλάβετε, καὶ τὰ ἐπίλεκτά μου (γ) τὰ καλὰ εἰσηνέγκατε 6 εἰς τοὺς (δ) ναοὺς ὑμῶν, Καὶ τοὺς υἱοὺς Ἰούδα καὶ τοὺς υἱοὺς Ἱερουσαλὴμ ἀπέδοσθε τοῖς υἱοῖς τῶν Ἑλλήνων, ὅπως ἐξώσητε 7 αὐτοὺς ἐκ τῶν ὁρίων αὐτῶν. (ε) Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω αὐτοὺς ἐκ τοῦ τόπου, οὗ ἀπέδοσθε αὐτοὺς ἐκεῖ, καὶ ἀνταποδώσω τὸ ἀνταπόδομα ὑμῶν εἰς κεφαλὰς ὑμῶν. 8 Καὶ ἀποδώσομαι τοὺς υἱοὺς ὑμῶν καὶ τὰς θυγατέρας ὑμῶν εἰς χεῖρας (ζ) τῶν υἱῶν Ἰούδα, καὶ ἀποδώσονται αὐτοὺς εἰς αἰχμαλωσίαν εἰς ἔθνος μακρὰν ἀπέχον, 9 ὅτι κύριος ἐλάλησε. Κηρύξατε ταῦτα ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ἁγιάσατε πόλεμον, ἐξεγείρατε τοὺς μαχητὰς, προσαγάγετε καὶ ἀναβαίνετε πάντες ἄνδρες 10 πολεμισταὶ, Συγκόψατε τὰ ἄροτρα ὑμῶν εἰς ῥομφαίας, καὶ τὰ δρέπανα ὑμῶν εἰς σειρομάστας· ὁ ἀδύνατος λεγέτω, 11 Ὅτι ἰσχύω ἐγώ. Συναθροίζεσθε, καὶ εἰσπορεύεσθε πάντα τὰ ἔθνη κυκλόθεν, καὶ συνάχθητε ἐκεῖ· ὁ πραῢς ἔστω μαχη-12 τής. (η) Ἐξεγειρέσθωσαν, ἀναβαινέτωσαν πάντα τὰ ἔθνη εἰς τὴν κοιλάδα Ἰωσαφὰτ, διότι ἐκεῖ καθιῶ τοῦ διακρῖ-13 ναι πάντα τὰ ἔθνη κυκλόθεν. Ἐξαποστείλατε δρέπανα, ὅτι παρέστηκεν ὁ τρυγητός· εἰσπορεύεσθε, πατεῖτε, διότι πλήρης ἡ ληνός· (θ) ὑπερεκχεῖται τὰ ὑπολήνια, 14 ὅτι πεπλήθυνται τὰ κακὰ αὐτῶν. Ἦχοι ἐξήχησαν ἐν τῇ κοιλάδι τῆς δίκης, (ι) ὅτι ἐγγὺς ἡμέρα κυρίου ἐν τῇ κοιλάδι 15 τῆς δίκης. Ὁ ἥλιος καὶ ἡ σελήνη συσκοτάσουσι, καὶ οἱ ἀστέρες δύσουσι (κ) φέγγος αὐτῶν.

CAP. III.

Quia ecce ego in diebus illis, & in tempore illo, quando convertero captivitatem Juda, & Hieruſalem; 2 *Et congregabo omnes gentes, & detraham eas (a) in vallem Joſaphat, & diſceptabo cum eis ibi pro populo meo, & hereditate meâ Iſrael, qui diſperſi ſunt in gentibus; & terram meam diviſerunt,* 3 *Et ſuper populum meum miſerunt ſortes, & dederunt pueros (b) meretricibus, & puellas vendebant pro vino, & bibebant. (c)* 4 *Et quid vos mihi, Tyrus, & Sidon, & omnis (d) Galilæa alienigenarum? Nunquid retributionem vos redditis mihi, aut iram in corde retinetis vos adverſùm me? Velociter, & citò reddam retributionem veſtram in capita veſtra;* 5 *Pro eo quòd argentum meum, & aurum meum tuliſtis, & electa mea, (e) optima intuliſtis in templa veſtra,* 6 *Et filios Juda, & filios Hieruſalem vendidiſtis filiis Græcorum; ut ejiceretis eos de finibus ſuis.* 7 *Et ecce ego (f) ſuſcito eos de loco, in quo vendidiſtis eos ibi, & reddam retributionem veſtram in capita veſtra:* 8 *Et vendam filios veſtros, & filias veſtras in manus filiorum Juda: & venundabunt eos (g) in captivitatem genti, quæ procul abeſt: quoniam Dominus loquutus eſt.* 9 *Prædicate hæc in gentibus, (h) ſanctificate bellum, ſuſcitate pugnatores: adducite, & aſcendite omnes viri bellatores.* 10 *Concidite aratra veſtra in gladios, & falces veſtras in lanceas. (i) Infirmus dicat; Quia prævaleo ego.* 11 *Congregamini, & introite, omnes gentes per circuitum, & congregamini illuc: manſuetus ſit pugnator.* 12 *Conſurgant, aſcendant omnes gentes in vallem Joſaphat: quia ibi ſedebo, ut judicem omnes gentes in circuitu.* 13 *Emittite falces, quoniam abeſt vindemia: introite, calcate, quia plenum eſt torcular; (k) ſupereffundite torcularia, quia repleta ſunt mala eorum.* 14 *Sonitus exauditi ſunt in valle (l) judicii: quia juxta eſt dies Domini in valle judicii.* 15 *Sol, & Luna obtenebrabuntur, & ſtellæ occidere facient ſplendorem ſuum.*

MS. A. (α) Διότι (·) ἀντὶ οἴνου, (β) καὶ ὑμεῖς (γ) καὶ τὰ καλά μου (δ) θησαυροὺς (ε) Ἰδοὺ ἐγὼ (ζ) υἱῶν (η) Ἐγειρέσθωσαν, καὶ ἀναβαινέτωσαν (θ) ὑπερχεῖται (ι) διότι ἐγγὺς ἡ ἡμέρα (κ) τὸ φέγγος

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ג

1 ארי הא ביומיא האנון ובעדנא ההיא דאתיב ית גלות אנש יהודה ויתבי ירושלם׃
2 ואכנוש ית כל עממיא ואחתנון למישר פלוג דינא ואתפרע מנהון תמן על עמי
3 ואחסנתי ישראל דבדרו ביני עממיא וית ארעי פליגו׃ ובעמי רמו עדבין ויהבו
4 עולימא באגר זניתא ועולימתא זבינו בחמרא ואשתיאו׃ ואף מא אתון חשיבין
קדמי צור וצידן וכל תחומי פלשתאי הגמלא אתון משלמין קדמי ואם גמלין אתון
5 קדמי קליל בפריע אתיב גמליכון ברישיכון׃ די כספי ודהבי נסבתון ומני חמדתא
6 טביא אעלתון להכלכון׃ ובני יהודה ובני ירושלם זבנתון לבני יונאי בדיל
7 לארחקותהון מעל תחומיהון׃ הא אנא מיתי להון בגלי מן אתרא דזבנתון יתהון
8 לתמן ואתיב גמליכון ברישיכון׃ ואמסר ית בניכון וית בנותיכון ביד בני יהודה
9 ויזבנונון לבני שבא לעמא רחיקא ארי במימרא דיי גזיר כן׃ אכלו דא בעממיא
10 זמינו עבדי קרבא ייתון בגלי גבריא יתקרבון ויסקון כל גברי עבדי קרבא׃ אתקינו
11 סככון לסיפין ומגליכון למורנין דחליש יימר גבר אנא׃ יתכנשון וייתון כל עממיא
12 מסחור סחור ויתקרבון תמן יתבר יי תקוף גבריהון׃ ייתון בגלי ויסקון עממיא
13 למישר פלוג דינא ארי תמן אתגלי למדן ית כל עממיא מסחור סחור׃ אושיטו בהון
חרבא ארי מטא זמן קצהון חותו דושו קטילי גבריהון כבעוט דמתבעט במעצרתא
14 אשידו דמהון ארי סגיאת בישתהון׃ משרין משרין במישר פלוג דינא ארי קריב
15 יומא דעתיד למיתי מן קדם יי במישר פלוג דינא׃ שמשא וסהרא קבלו וכוכביא
כנשו זהורהון׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. III.

1 Ecce enim in diebus illis eodémque tempore quo convertero captivitatem virorum Jehuda & incolarum Jeruſalem: 2 Congregabo univerſos populos, & deſcendere faciam eos in vallem diviſionis judicii, et vindictam ſumam ab eis ibi pro populo meo, & hæreditate mea Iſrael, quos diſperſerunt inter populos, atque terram meam diviſerunt. 3 Et in populum meum projecerunt ſortes, & dederunt puerum pro mercede meretricis, & puellam vendiderunt pro vino, & biberunt. 4 Vos quoque Tyrus atque Sidon, omnéſque termini Philiſtinorum quanti æſtimati eſtis aqud me? nunquid retributionem redditis coram me? quòd ſi in præſentia mea rependitis, protinus in momento convertam retributionem in caput veſtrum. 5 Qui argentum meum & aurum accepiſtis, & vaſa deſiderii mei bona intuliſtis in palatia veſtra. 6 Et filios Jehuda filióſque Jeruſalem vendidiſtis filiis Græcorum, ut longe amandaretis eos à terminis ſuis. 7 Ecce ego adducam eos publicè de loco in quo vendidiſtis eos, ut reddam mercedem veſtram in caput veſtrum. 8 Tradam ergo filios veſtros & filias veſtras in poteſtatem filiorum Jehuda, qui venundabunt eos filiis Sabba populo longinquo; quia verbo Domini decretum eſt ita. 9 Proclamate hoc in gentibus, præparate bellatores, veniant publicè robuſti, accedant & conſcendant omnes viri bellatores. 10 Dirigite vomeres veſtros in gladios, & falces veſtras in lanceas: qui infirmus eſt, dicat, Fortis ego ſum. 11 Congregentur & veniant omnes populi de circuitu & accedant, ibi confringet Dominus robur fortium eorum. 12 Venient apertè, & aſcendent populi in vallem diviſionis judicii: ibi námque revelabor ut judicem omnes gentes circumvicinas. 13 Protendite in eos gladium: etenim pervenit tempus finis eorum, deſcendite conculcate interfectos fortes eorum ſicut quod calcari ſolet in torculari: fundite ſanguinem eorum, quia multiplicata eſt illorum malignitas. 14 Exercitus creberrimi [*ſint*] in valle diviſionis judicii; inſtat enim dies qui venturus eſt à facie Domini in valle diviſionis judicii. 15 Sol & Luna obtenebrati ſunt, nec non ſtellæ reſtrinxerunt ſplendorem ſuum.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

* ܡܛܠ ܕܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ ܘܒܙܒܢܐ ܗܘ ܕܐܗܦܘܟ ܐܢܐ ܫܒܝܬܐ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ܀ 1
* ܐܟܢܫ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܘܐܚܬ ܐܢܘܢ ܠܢܚܠܐ ܕܝܘܫܦܛ. ܘܐܬܕܝܢ ܥܡܗܘܢ ܬܡܢ. ܡܛܠ 2
ܥܡܝ ܘܡܛܠ ܐܝܣܪܝܠ ܝܪܬܘܬܝ: ܕܐܬܒܕܪܘ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. ܡܛܠ ܕܦܠܓܘܗ ܐܪܥܝ.
* ܘܡܛܠ ܕܥܠ ܥܡܝ ܐܪܡܝܘ ܦܣܐ. ܘܝܗܒܘ ܛܠܝܐ ܒܐܓܪܐ ܕܙܢܝܬܐ. ܘܛܠܝܬܐ ܙܒܢܘ ܒܚܡܪܐ 3
ܘܐܫܬܝܘ. * ܡܢܐ ܐܢܬܘܢ ܠܝ ܨܘܪ ܘܨܝܕܢ. ܘܟܠܗ ܓܠܝܠܐ ܕܦܠܫܬ. ܕܠܡܐ 4
ܦܘܪܥܢܐ ܦܪܥܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ. ܘܐܢ ܓܡܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ. ܒܥܓܠ ܘܡܣܪܗܒܐܝܬ
ܐܗܦܘܟ ܦܘܪܥܢܟܘܢ ܒܪܝܫܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܢܣܒܬܘܢ ܟܣܦܝ ܘܕܗܒܝ. ܘܡܐܢܝ ܫܦܝܪܐ ܐܥܠܬܘܢ 5
ܠܗܝܟܠܝܟܘܢ. * ܒܢܝ ܝܗܘܕܐ ܘܒܢܝ ܐܘܪܫܠܡ ܙܒܢܬܘܢ ܠܒܢܝ ܝܘܢܝܐ. ܕܬܪܚܩܘܢ 6
ܐܢܘܢ ܡܢ ܬܚܘܡܝܗܘܢ. * ܗܐ ܐܢܐ ܡܥܝܪ ܐܢܐ ܠܗܘܢ. ܡܢ ܐܬܪܐ ܕܙܒܢܬܘܢ ܐܢܘܢ ܠܬܡܢ. 7
ܘܐܗܦܘܟ ܦܘܪܥܢܟܘܢ ܒܪܝܫܟܘܢ. * ܘܐܫܠܡ ܠܒܢܝܟܘܢ ܘܠܒܢܬܟܘܢ ܒܐܝܕܝ ܒܢܝ ܝܗܘܕܐ. 8
ܘܢܙܒܢܘܢ ܐܢܘܢ ܠܫܒܝܐ ܠܥܡܐ ܪܚܝܩܐ. ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ. * ܐܟܪܙܘ ܗܕܐ ܒܝܬ ܥܡܡܐ. 9
ܩܕܫܘ ܩܪܒܐ. ܐܥܝܪܘ ܠܓܢܒܪܐ. ܢܬܩܪܒܘܢ ܘܢܣܩܘܢ ܟܠܗܘܢ ܓܒܪܐ ܩܪܒܬܢܐ. * ܥܒܕܘ 10
ܣܟܝ ܦܕܢܝܟܘܢ ܠܣܝܦܐ. ܘܡܓܠܝܟܘܢ ܠܪܘܡܚܐ. ܘܡܢ ܕܡܚܝܠ ܢܐܡܪ. ܕܓܢܒܪܐ ܐܢܐ.
* ܐܬܟܢܫܘ ܘܬܘ ܟܠܟܘܢ ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܢ. ܐܬܩܪܒܘ ܘܬܡܢ ܢܬܒܪ ܡܪܝܐ ܠܓܢܒܪܘܬܟܘܢ. 11
* ܢܬܥܝܪܘܢ ܘܢܣܩܘܢ ܥܡܡܐ ܠܥܘܡܩܐ ܕܝܘܫܦܛ. ܡܛܠ ܕܬܡܢ ܐܬܒ ܠܡܕܢ ܠܟܠܗܘܢ 12
ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܢ. * ܫܕܪܘ ܡܓܠܐ. ܡܛܠ ܕܐܬܐ ܩܛܦܐ. ܥܘܠܘ ܕܘܫܘ. ܡܛܠ ܕܡܠܘ 13
ܡܥܨܪܬܐ. ܘܫܦܥܘ ܡܥܨܪܬܐ. ܡܛܠ ܕܣܓܝܐܬ ܒܝܫܘܬܗܘܢ. * ܩܠܐ ܕܐܘܫܢܐ ܒܥܘܡܩܐ 14
ܕܦܘܣܩܢܐ. ܡܛܠ ܕܩܪܝܒ ܗܘ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܒܥܘܡܩܐ ܕܦܘܣܩܢܐ. * ܫܡܫܐ ܘܣܗܪܐ 15
ܢܚܫܟܘܢ. ܘܢܥܪܒ ܢܘܗܪܐ ܕܟܘܟܒܐ.

CAP. III.

Quoniam iis diebus & eo tempore quo 1
reducam captivos Judæ & Jeruſalem, Con- 2
gregabo cunctos populos & deducam eos ad
vallem Joſaphati, ibique diſceptabo cum eis
causâ populi mei & causâ Iſraelis hæredita-
tis meæ, qui diſperſi ſunt inter gentes; eò
quòd partiti ſint terram meam, Et ſuper 3
populum meum jecerint ſortes, dederint pu-
eros pro mercede meretricum, & puellas ven-
diderint pro vino, ac biberint. Cujus mo- 4
menti eſtis apud me Tyre & Sidon, totáque
Galilæa Paleſtinæ? num retributionem re-
penditis mihi? Quòd ſi beneficiis me cumu-
latis, brevi ac velociter reddam vobis retri-
butionem veſtram in caput veſtrum. Eò 5
quòd acceperitis argentum & aurum meum,
vaſa mea pulcherrima intuleritis in templa
veſtra, Filios Judæ & filios Jeruſalem ven- 6
dideritis filiis Græcorum, ut procul abigere-
tis eos à limitibus ſuis; Ecce ego ſuſcita- 7
turus ſum eos de loco in quem vendidiſtis
eos & redditurus retributionem veſtram in
caput veſtrum. Tradam enim filios filiáſque 8
veſtras in manum filiorum Judæ, qui vendent
eos Sabæis genti longinquæ: quoniam Domi-
nus locutus eſt. Prædicate hoc inter gentes, 9
ſanctificate bellum, excitate gigantes; acce-
dant & aſcendant omnes viri bellatores.
Tundite vomeres aratrorũ veſtrorum in gla- 10
dios, & falces veſtras in lanceas; & qui de-
bilis eſt, dicat; Gigas ego ſum. Congrega- 11
mini & venite omnes gentes circunjacentes;
accedite, atque ibi franget Dominus fortitu-
dinem veſtram. Excitentur & aſcendant po- 12
puli ad vallem Joſaphati, quoniam illic ſede-
bo ad judicandum omnes gentes circunjacen-
tes. Redintegrate falces, quia maturuit vin- 13
demia: ingredimini, calcate; quia impleti ſunt
lacus, & redundaverunt torcularia: ſiquidem
multiplicata eſt malitia eorum. Senſus tu- 14
multûs eſt in valle deciſionum, quia proxi-
mus eſt dies Domini in valle deciſionum. Sol 15
& luna obſcurabuntur, & occidet lumen
ſtellarum:

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثالث *

* من اجل اني ها انا في تلك الايام وفي ذلك الزمان اذ ارد سبي يهوذا وايروسليم * واجمع 1 2
جميع الامم * واحدرهم الي وادي يوسافاط * واحاكم معهم هناك من اجل شعبي وميراثي اسرائيل
الذين تبددوا في الامم * وقسموا ارضي * ووضعوا على شعبي قرعا * واعطوا الصبيان 3
للزواني * والجواري باعوهن عوض الخمر وشربوا * فماذا انتم لي يا صور وصيدا وكل جليل 4
القبايل الغريبة * هل كافيتموني انتم مكافاة * او ذكرتم الشر علي * بحق وسرعة اكافي
مكافاتكم في روسكم * لانكم اخذتم فضتي وذهبي * وخياراتي وجيداتي ادخلتموها الي 5
هياكلكم * وبني يهوذا وبني ايروسليم بعتموهم لبني اليونانيين * كي تقصوهم من حدودهم * 6
* ها انا انهضهم من الموضع حيث بعتموهم هناك * واكافي مكافاتكم في روسكم * وادفع 7 8
بنيكم وبناتكم في ايدي بني يهوذا * ويسلموهم للسبي الي امة بعيدة قاصية * لان الرب
تكلم * نادوا بهذه الي الامم * قدسوا الحرب * انهضوا المحاربين * اجتمعوا واصعدوا يا جميع 9
الرجال المقاتلين * اقطعوا فداديتكم للسيوف * ومناجلكم للحسوب * الذي لا قوة له ليقل 10
اني اقوى انا * اجتمعوا وادخلوا يا جميع الامم المحيطين * واجتمعوا هناك * الوديع يكون 11
محاربا * لينهض ويصعد جميع الامم الي وادي يوسافاط * من اجل اني هناك اجلس لاميز 12
جميع الامم المحيطين * سرحوا المناجل * لان القطاف حضر * ادخلوا دوسوا * لان المعصر 13
مملوه * فاضت المعاصر * لان شرورهم كثرت * الالحان كثرت في وادي القضاء * 14
من اجل ان يوم الرب قريب في وادي القضاء * الشمس والقمر يظلما * والنجوم 15
تغيب ضوها *

CAP. III.

Nam ecce ego diebus illis & tempore 1
illo quo reducam captivos Judæ & Je-
roſolymorum; Congregabo etiam cunctas 2
gentes, & deducam eas ad vallem Jo-
ſaphati, & diſceptabo cum eis ibi pro
populo meo & hæreditate meâ Iſraele
qui diſperſi ſunt inter gentes, quòd di-
viſerint terram meam, Et miſerint ſuper 3
populum meum ſortes, dederint pueros
meretricibus, & puellas vendiderint pro
vino, biberintque. Quid eſtis apud me O 4
Tyre & Saida, totaque Galilæa gentium
exterarum? num retribuiſtis mihi vos
retributionem ullam? an verò memoriâ
tenetis malum contra me? cum ira &
celeriter rependam retributionem veſtram
in caput veſtrum: Quia rapuiſtis argen- 5
tum & aurum meum, & ſelectiſſima
atque optima quæque mea intuliſtis in
templa veſtra: Et filios Judæ filioſque 6
Jeroſolymorum vendidiſtis filiis Græ-
corum, ut longè amandaretis eos à ter-
minis ſuis. En ego excitabo eos è loco 7
ubi vendidiſtis eos, & rependam retribu-
tionem veſtram in caput veſtrum: Tra- 8
damque filios veſtros & filias veſtras in
manus filiorum Judæ, ut captivos tra-
dant eos genti procul remotæ: quia Do-
minus locutus eſt. Prædicate hæc genti- 9
bus, ſanctificate bellum, excitate bella-
tores; congregamini, & aſcendite O
omnes viri belligeri: Concidite aratra 10
veſtra in gladios, & falces veſtras in
ſagittas: qui vires non habet, dicat,
Equidem valens ego ſum. Congregamini 11
et introite O omnes gentes adjacentes, et
convenite illuc: qui manſuetus eſt, bel-
lator eſto. Surgant et aſcendant omnes 12
gentes ad vallem Joſaphati; quoniam
ibi ſeſſurus ſum ad diſcernendas omnes
gentes circunjacentes. Mittite falces, 13
quoniam adeſt vindemia: ingredimini,
calcate, quia lacus plenus eſt: redun-
daverunt torcularia, quia horum ſcelera
multiplicata ſunt. Concentus perſonue- 14
runt in valle judicii, quia dies Domini
proximus eſt in valle judicii. Sol & 15
luna obtenebrabuntur, & ſtellæ occul-
tabunt lucem ſuam:

עמוס : א

cōtremiſcēt &,ſuā vocē dabit Jeruſalaim de &,rugiet Sijon de Dominus Et
21 ויהוה מציון ישאג ומירושלם יתן קולו ורעשו
filiorum fortitudo & ,ſui populi ſpes Dominus & : terra & cœli
שמים וארץ ויהוה מחסה לעמו ומעוז לבני
Sijon in *habitans* veſter Deus Dominus *ego* quòd ſcietis Et .Iſrael
22 ישראל : וידעתם כי אני יהוה אלהיכם שכן בציון
tranſibunt non alieni & ,*ſanctitas* Jeruſalaim erit Et .*meæ ſanctitatis* monte
הר־קדשי והיתה ירושלם קדש וזרים לא־יעברו
,muſtum montes ſtillabunt illa die in ,erit Et .amplius eam *in*
23 בה עוד : והיה ביום ההוא יטפו ההרים עסיס
.aquæ ibunt Jehudah rivi omnes & , *lacte diffluent* colles &
והגבעות תלכנה חלב וכל־אפיקי יהודה ילכו מים
.*Sittim* torrentem *irrigabit* & ,egredietur Domini domo è fons Et
ומעין מבית יהוה יצא והשקה את־נחל השטים :
: erit ſolitudinis deſertum in Edom & , erit deſolationē in Ægyptus
24 מצרים לשממה תהיה ואדום למדבר שממה תהיה
innocentē ſanguinē effuderunt quia , Jehudah filiorum injuriā propter
מחמס בני יהודה אשר־שפכו דם־נקיא
generationē in Jeruſalaim & :habitabit ſeculum in Jehudah Et .eorū terra in
25 בארצם : ויהודה לעולם תשב וירושלם לדור
: mundavi non ,eorum ſanguinem mundabo Et .generationem &
26 ודור : ונקיתי דמם לא־נקיתי
.Sijon in *habitans* Dominus &
ויהוה שכן בציון :

Verſio VULG. LAT.

16 Et Dominus de Sion rugiet, &
de Jeruſalem dabit vocem ſuam:
& movebuntur cœli, & terra: &
Dominus ſpes populi ſui, & fortitudo
17 filiorum Iſrael. Et ſcietis
quia ego Dominus Deus veſter,
habitans in Sion monte ſancto
meo: & erit Jeruſalem ſancta, &
alieni non tranſibunt ꝑ eam amplius.
18 Et erit in die illa: ſtillabunt
montes dulcedinem, & colles
fluent lacte: & per omnes
rivos Juda ibunt aquæ: & fons
de domo Domini egredietur, &
irrigabit torrentem ſpinarum.
19 Ægyptus in deſolationem erit, &
Idumæa in deſertū perditionis:
pro eo quòd iniquè egerint in
filios Juda, & effuderint ſanguinē
20 innocentē in terra ſua. Et Judæa
in æternum habitabitur, & Jeruſalem
in generationem & generationem.
21 Et mundabo ſanguinem
eorum, quem non mundaveram:
& Dominus commorabitur
in Sion.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

16 Ὁ δὲ κύριος ἐκ Σιὼν (λ) ἀνακεκράξεται, καὶ
ἐξ Ἱερουσαλὴμ δώσει φωνὴν αὐτοῦ, καὶ σεισθήσεται
ὁ οὐρανὸς καὶ ἡ γῆ· ὁ δὲ κύριος φείσεται
τοῦ λαοῦ αὐτοῦ, καὶ ἐνισχύσει τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ.
17 Καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ κύριος
ὁ θεὸς ὑμῶν, ὁ κατασκηνῶν ἐν Σιὼν ὄρει
ἁγίῳ μου. καὶ ἔσται Ἱερουσαλὴμ ἁγία, καὶ
ἀλλογενεῖς οὐ διελεύσονται δι᾽ αὐτῆς οὐκέτι.
18 Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ἀποσταλάξει
τὰ ὄρη γλυκασμὸν, καὶ οἱ βουνοὶ ῥυήσονται
γάλα, καὶ πᾶσαι αἱ ἀφέσεις Ἰούδα ῥυήσονται
ὕδατα, καὶ πηγὴ ἐξ οἴκου κυρίου ἐξελεύσεται, καὶ
19 ποτιεῖ τὸν χειμάῤῥουν τῶν σχοίνων. Αἴγυπτος εἰς
ἀφανισμὸν ἔσται, καὶ ἡ Ἰδουμαία εἰς πεδίον
ἀφανισμοῦ ἔσται, ἐξ ἀδικιῶν υἱῶν Ἰούδα, ἀνθ᾽
ὧν ἐξέχεαν αἷμα δίκαιον ἐν τῇ γῇ αὐτῶν.
20 Ἡ δὲ Ἰουδαία εἰς τὸν αἰῶνα κατοικηθήσεται,
21 καὶ Ἱερουσαλὴμ εἰς γενεὰς γενεῶν. Καὶ (μ)
ἐκζητήσω τὸ αἷμα αὐτῶν, καὶ οὐ μὴ (ν) ἀθῳώσω,
καὶ κύριος κατασκηνώσει ἐν Σιών.

ἸΩΗ͂Λ Δ΄.

Dominus autem de Sion (m) clamavit, & de Hieruſalem dabit 16
vocem ſuam: & movebitur cœlū, & terra: Dominus autem parcet populo ſuo, & confortabit filios Iſrael. Et ſcietis, quia ego Dominus 17
Deus veſter, habitans in Sion monte (n) ſancto meo. Et erit Hieruſalem ſancta: & alienigenæ non tranſibunt per eam amplius. Et 18
erit, in die illa ſtillabunt montes dulcedinē, & colles fluent lacte, & omnes emiſſiones Judæ fluent aquis. Et fons de domo Domini egredietur, & irrigabit torrentem (o) funiculorum. Ægyptus in 19
perditione erit: & Idumæa in campum deſolationis erit, ex iniquitatibus filiorum Juda, pro eo, quòd effuderunt ſanguinem juſtum in terra ſua. Judæa autem 20
in æternū habitabitur, & Hieruſalē in generationes generationū. Et requiram ſanguinem eorum, 21
inultumque eſſe non patiar: & Dominus habitabit in Sion.

MS.A. (λ) ἀνακράξεται, (μ) ἐκδικήσω (ν) ἀθωώσω,
ἸΩΗ͂Λ Δ΄.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 ויי מציון יכלי ומירושלם ירים מימריה ויזועון שמיא וארעא ויי סמך לעמיה וסעיד
17 לבני ישראל : ותדעון ארי אנא יי אלהכון אשריתי שכנתי בציון טורא דקודשי ותהי
18 ירושלם קודשא ונוכראין לא יעדון בה עוד : ויהי בעדנא ההיא ירבון טוריא חמר
מרת ורמתא יגרן טובא וכל פצידי דבית יהודה יהכון מיא ומבוע מבית מקדשא דיי
19 יהי נפיק ומשקי ית מישר שטין : מצרים לצדו תהי ואדום למדבר צדו תהי מחטוף
20 בני יהודה דאשדו דם זכי בארעהון : ויהודה לעלם תתב וירושלם לדר ודר :
21 ודאתפרעית דמהון מן עממיא תוב אנא עתיד לאתפרע אמר יי דאשרו שכנתיה
בציון :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et Dominus de Sion rugiet, & de Jeruſalem ſublimabit verbum ſuum: tunc 16
commovebuntur cœli & terra: Dominus autem ſuſtentaculum eſt populo ſuo,
& auxilium filiis Iſrael. Scietíſque quòd ego Dominus Deus veſter cùm manentem 17
poſuero majeſtatem meam in Sion monte ſanctitatis meæ, erit Jeruſalem
ſancta, neque extranei tranſibunt per eam amplius. Et in tempore illo, 18
ſtillabunt montes vinum inebrians, & colles bonis decurrent, ac per omnes
latices domus Jehuda obambulabunt aquæ, quin & fons de domo ſanctuarii
Domini prodibit, qui irrigabit vallem Sittim. Ægyptus in deſolationem fiet, 19
& Idumæa in deſertum vaſtitatis erit, ob id quòd violenter oppreſſerunt
filios Jehuda, qui effuderunt ſanguinem innocentem in terra ſua. Juda autem 20
in æternum permanebit, & Jeruſalem in cunctas generationes. Quòd verò 21
ultus ſum ſanguinem eorum ex populis, iterum vindicaturus ſum, ait Dominus,
qui manentem locavit majeſtatem ſuam in Sion.

ספר עמוס

CAPUT I. א

vidit quæ : Tecoah *de pecuariis in* fuit qui , Hamos Verba
1 דברי עמוס אשר־היה בנקדים מתקוע אשר חזה
Jarobham diebus in & ,Jehudah regis Huzijahu diebus in Iſrael ſuper
על־ישראל בימי עזיה מלך־יהודה ובימי ירבעם
.*commotionis facies ad* annis duobus , Iſrael regis Joas filii
בן־יואש מלך ישראל שנתים לפני הרעש :
:ſuam vocem dabit Jeruſalaim de & ,rugiet Sijon de Dominus,Dixitque
2 ויאמר יהוה מציון ישאג ומירושלם יתן קולו
.Carmel *caput* areſcétque , paſtorum habitacula lugebunt &
ואבלו נאות הרעים ויבש ראש הכרמל :
,Dammeſec prævaricationibus tribus Super : Dominus dixit Sic
3 כה אמר יהוה על־שלשה פשעי דמשק
ferreis plauſtris in *eos trituraſſe ſuper:eum convertā* non quatuor ſuper &
ועל־ארבעה לא אשיבנו על־דושם בחרצות הברזל
devorabit & : Chaſael domum in ignem mittam Et .Ghilhad ipſam
4 את־הגלעד : ושלחתי אש בבית חזאל ואכלה
faciā excidere &,Dammeſec *vectem* conteram Et .hadad-Ben *ædes*
5 ארמנות בן־הדד : ושברתי בריח דמשק והכרתי
: Heden domo de ſceptrum tenentem & , Aven valle de habitatorem
יושב מבקעת־און ותומך שבט מבית עדן
:Dominus dixit Sic .Dominus dixit, Chir in ,Aram populus *migrabunt* &
6 וגלו עם־ארם קירה אמר יהוה : כה אמר יהוה
eū convertā non quatuor ſuper &,Hazzah prævaricationibus tribus Super
על־שלשה פשעי עזה ועל־ארבעה לא אשיבנו
.Edom *in concludendum ad* ,perfectam *tranſmigrationem eos tranſportaſſe ſuper*
על־הגלותם גלות שלמה להסגיר לאדום :

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA

AMOS.

CAP. I.

1 VERBA Amos, qui fuit in
paſtoribus de Thecue: quæ vidit
ſuper Iſrael in diebus Oziæ regis
Juda, & in diebus Jeroboam filii
Joas regis Iſrael, ante duos annos
2 terræmotûs. Et dixit; Dn̄s de Sion
rugiet, & de Jeruſalem dabit vocem
ſuam: & luxerunt ſpecioſa
paſtorum, & exiccatus eſt vertex
3 Carmeli. Hæc dicit Dominus;
Super tribus ſceleribus Damaſci,
& ſuper quatuor non convertam
eum: eò quòd trituraverint in
4 plauſtris ferreis Galaad. Et mittam
ignem in domum Azael, &
5 devorabit domos Benadad. Et
conteram vectem Damaſci: &
diſperdam habitatorem de campo
idoli, & tenentem ſceptrum
de domo voluptatis: & transferetur
populus Syriæ Cyrenen,
6 dicit Dominus. Hæc dicit Dominus;
Super tribus ſceleribus Gazæ,
& ſuper quatuor non convertam
eum: eò quòd tranſtulerint
captivitatem perfectam, ut concluderent
eam in Idumæa.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ἈΜΩ͂Σ Β΄.

ΚΕΦ. α΄.

1 ΛΟ΄γοι Ἀμὼς οἳ ἐγένοντο ἐν ἀκκαρεὶμ
ἐκ Θεκουὲ, οὓς εἶδεν ὑπὲρ Ἱερουσαλὴμ, ἐν ἡμέραις
Ὀζίου βασιλέως Ἰούδα, καὶ ἐν ἡμέραις
Ἱεροβοὰμ τοῦ Ἰωὰς βασιλέως Ἰσραὴλ, πρὸ
2 δύο ἐτῶν τοῦ σεισμοῦ. Καὶ εἶπε, Κύριος ἐκ
Σιὼν ἐφθέγξατο, καὶ ἐξ Ἱερουσαλὴμ ἔδωκε
φωνὴν αὐτοῦ· καὶ ἐπένθησαν αἱ νομαὶ τῶν ποιμένων,
καὶ ἐξηράνθη ἡ κορυφὴ τοῦ Καρμήλου.
3 Καὶ εἶπε κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις
Δαμασκοῦ, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ
ἀποστραφήσομαι αὐτὸν, ἀνθ᾽ ὧν ἔπριζον πρίοσι
σιδηροῖς τὰς ἐν γαστρὶ ἐχούσας (α) τῶν ἐν
4 Γαλαάδ. Καὶ (β) ἀποστελῶ πῦρ εἰς τὸν οἶκον
Ἀζαὴλ, καὶ καταφάγεται (γ) τὰ θεμέλια υἱοῦ
5 Ἄδερ. Καὶ συντρίψω μοχλοὺς Δαμασκοῦ,
καὶ (δ) ἐξολοθρεύσω κατοικοῦντας ἐκ πεδίου
Ὢν, καὶ κατακόψω φυλὴν ἐξ ἀνδρῶν Χαῤῥὰν,
καὶ (ε) αἰχμαλωτευθήσεται λαὸς Συρίας
6 ἐπίκλητος, λέγει κύριος. Τάδε λέγει κύριος,
Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις Γάζης, καὶ ἐπὶ
ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτοὺς, ἕνεκεν
τοῦ αἰχμαλωτεῦσαι αὐτοὺς αἰχμαλωσίαν
τοῦ Σαλωμὼν, τοῦ συγκλεῖσαι εἰς τὴν Ἰδουμαίαν.

AMOS.

CAP. I.

SERMONES Amos, 1
qui facti ſunt in (a) Accarim, de Thecue: quos vidit (b) pro Hieruſalem in diebus Oziæ regis Juda, & in diebus Hieroboam filii Joas regis Iſrael, ante duos annos terræmotûs; Et ait; Dominus 2
de Sion effatus eſt: & de Hieruſalem dedit vocem ſuam. Et luxerunt paſcua paſtorum, & arefactus eſt vertex Carmeli. Et 3
dixit Dominus; Super tribus impietatibus Damaſci, & ſuper quatuor non averſabor eum: pro eo, quòd ſecuerunt (c) ſerris ferreis prægnantes eorum, qui in Galaad. Et mittam ignem in domum 4
Azael: & devorabit fundamenta filii Ader. Et conteram vectes 5
Damaſci: et diſperdā habitatores de campo (d) On: & concidā (e) tribum ex viris Charran. Et captivus ducetur populus Syriæ nominatus, dicit Dominus. Hæc 6
dicit Dominus; Super tribus impietatibus Gazæ, & ſuper quatuor non averſabor eos: eò quòd captivā duxerunt ipſi captivitatē (f) Salomonis, ut concluderent in Idumæam,

MS.A. ἈΜΩ͂Σ Β΄. (α) τῆς Γαλαάδ. (β) ἐξαποστελῶ (γ) θεμέλια
(δ) ἐξολεθρεύσω (ε) αἰχμαλωτισθήσεται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 פתגמי עמוס דהוה מרי גיתין מתקוע דאתנבי על ישראל ביומי עזיה מלך שבטא דבית
2 יהודה וביומי ירבעם בר יואש מלכא דישראל תרתין שנין קדם מיתי זיעא : ואמר יי
מציון יכלי ומירושלם ירים מימריה ויצדון מדורי מלכיא ויחרב תקוף כרכיהון :
3 כדנן אמר יי על תלתא חובי דמשק ועל ארבעא לא אשבוק להון על דדשו במוריגי
4 ברזלא ית יתבי ארע גלעד : ואשלח אשתא בבית חזאל ותשצי בירנית בר הדד :
5 ואתבר תקוף דמשק ואשצי יתיב מבקעת און ועביד שולטן מבית עדן ויגלון עמא
6 דארם לקרני אמר יי : כדנן אמר יי על תלתא חובי עזה ועל ארבעא לא אשבוק להון
על דאגליאונון גלו שלמא לממסר לאדום :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

Verba Amos qui erat paſtor pecorum de Thecua, quæ prophetavit ſuper 1
Iſrael diebus Oziæ regis *tribus* domus Juda, atque diebus Hieroboam filii
Joas regis Iſrael, duobus annis antequam eveniret terræmotus. Dixit igitur: 2
Dominus De Sion rugiet, & de Jeruſalem levabit verbum ſuum, & deſolabuntur
habitacula regum, atque deſertum fiet præſidium arcium illorum. In 3
hunc modum dicit Dominus: Super tribus ſceleribus Damaſci & ſuper quatuor
non parcam eis, eò quòd trituraverint tribulis ferreis habitatores terræ
Galaad. Et immittam ignem in domum Azael, qui conſumet palatia Benhadad. 4
Et conteram robur Damaſci, & diſperdam habitatorem de Bikath-Aven, 5
& rerum potientem de domo Eden: & migrabit populus Syriæ in Cirenen,
ait Dominus. Ita inquit Dominus: Super tribus ſceleribus Gazæ & 6
ſuper quatuor non ignoſcam eis, eò quòd relegaverint eos exilio perfecto
quò traderent ipſos Idumææ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

16 * ܘܡܪܝܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܢܢܗܡ. ܘܡܢ ܐܘܪܫܠܡ ܢܬܠ ܩܠܗ. ܘܢܬܬܙܝܥܘܢ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ.
17 ܘܡܪܝܐ ܢܚܘܣ ܥܠ ܥܡܗ. ܘܢܚܝܠ ܠܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܬܕܥܘܢ ܕܐܢܐ ܐܢܐ ܡܪܝܐ
ܐܠܗܟܘܢ. ܕܫܪܐ ܐܢܐ ܒܨܗܝܘܢ ܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ. ܘܬܗܘܐ ܐܘܪܫܠܡ ܩܕܝܫܬܐ. ܘܢܘܟܪܝܐ
18 ܠܐ ܢܥܒܪܘܢ ܒܗ ܬܘܒ. * ܘܢܗܘܐ ܒܗܘ ܝܘܡܐ. ܢܛܦܘܢ ܛܘܪܐ ܚܠܝܘܬܐ. ܘܪܡܬܐ ܢܪܕܝܢ
ܚܠܒܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܦܨܠܐ ܕܝܗܘܕܐ ܢܪܕܘܢ ܡܝܐ. ܘܡܒܘܥܐ ܡܢ ܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܢܦܘܩ.
19 ܘܢܫܩܐ ܢܚܠܐ ܕܫܛܝܡ. * ܡܨܪܝܢ ܠܚܘܪܒܐ ܬܗܘܐ. ܘܐܕܘܡ ܠܡܕܒܪܐ ܚܪܒܐ. ܡܢ ܚܛܘܦܝܐ
20 ܕܒܢܝ ܝܗܘܕܐ. ܕܐܫܕܘ ܕܡܐ ܙܟܝܐ ܒܐܪܥܗܘܢ. * ܝܗܘܕܐ ܕܝܢ ܠܥܠܡ ܬܬܝܬܒ. ܘܐܘܪܫܠܡ
21 ܠܕܪ ܕܪܝܢ. * ܘܐܬܒܥ ܕܡܗܘܢ ܘܠܐ ܐܚܘܣ. ܘܡܪܝܐ ܢܫܪܐ ܒܨܗܝܘܢ.

* ܫܠܡ ܝܘܐܝܠ *

Et Dominus è Sione rugiet, déque Jeruſalem edet vocem ſuam, & contremiſcent cœli ac terra: parcétque Dominus populo ſuo, & confortabit filios Iſraelis. 16

17 Ita ſcietis me eſſe Dominum Deum veſtrum qui habito in Sione monte ſanctitatis meæ: & Jeruſalem erit ſacroſancta, & alieni non habitabunt ampliùs in ea.

18 Eodem illo die ſtillabunt montes dulcedinem, & colles fluent lacte, omnéſque alvei Judæ manabunt aquis: & fons è domo Domini prodibit, & irrigabit vallem Setim.

19 Ægyptus in vaſtitatem redigetur, & Adum in ſolitudinem deſertam; propter violentiam illatam filiis Judæ, quòd effuderint ſanguinem innoxium in terra eorum.

20 Judæa manebit in ſeculum, & Jeruſalem in generationem generationum.

21 Et ulciſcar ſanguinem eorum, neque parcam: & Dominus habitabit in Sione.

Finis Joelis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

16 * والرب من صهيون يصرخ * ومن ايروسليم يعطي صوته * ويتزلزل السماء والارض * والرب
17 يشفق على شعبه * ويقوي الرب بني اسرائيل * وتعلمون اني انا الرب الهكم الساكن في صهيون
18 في جبل المقدس * وتكون ايروسليم مقدسة * والغرباء الجنس لا يجوزون فيها ايضا * ويكون في
ذلك اليوم تقطر الجبال حلاوة * والآكام تسيل لبنا * وجميع غدران يهوذا تفيض المياه * ويخرج
19 ينبوع من بيت الرب * ويسقي وادي الجبال * مصر تصير للفساد * وادوم تصير بقعة فساد *
20 من مظالم بني يهوذا * لانهم اهرقوا دما عادلا في ارضهم * واليهودية تسكن الى الابد *
21 وايروسليم الى جيل الاجيال * وانتقم دمهم ولا اعفو * والرب يسكن في صهيون *

* تمت نبوة يوئيل النبي * بركاته تكون معنا * امين *

Dominus è Sione clamabit, & è Jeruſalem edet vocem ſuam; & concutientur cœlum & terra: parcet autem Dominus populo ſuo, & corroborabit Dominus filios Iſraelis. 16

17 *Tum ſcietis me eſſe Dominum Deum veſtrum habitantem in Sione in monte ſancto meo: eritque Jeruſalem ſancta, & alienigenæ non tranſibunt ampliùs per eam.*

18 *Erit etiam die illo, ut ſtillent montes dulcedinem, & colles lacte maneant, omneſque rivuli Judæ redundent aquis; & egrediatur fons è domo Domini, irrigetque vallem funium.*

19 *Ægyptus erit in excidium, & Edom fiet campus exitii, propter ſcelera filiorum Judæ, eò quòd effuderint ſanguinem juſtum in terra ſua.*

20 *Judæa verò habitabitur in æternum, & Jeruſalem in generationem generationum.*

21 *Et ulciſcar ſanguinem eorum, neque parcam: & Dominus habitabit in Sione.*

Abſoluta eſt Prophetia Joelis Prophetæ, cujus benedictiones nobiſcum ſint, Amen.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܢܒܝܘܬܗ ܕܥܡܘܣ *   * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

1 * ܦܬܓܡܘܗܝ ܕܥܡܘܣ ܕܗܘܐ ܡܢ ܢܩܕܐ ܕܒܢܝ ܬܩܘܥ. ܕܚܙܐ ܥܠ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ.
ܒܝܘܡܘܗܝ ܕܥܘܙܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܒܝܘܡܘܗܝ ܕܝܘܪܒܥܡ ܒܪ ܝܘܐܫ ܡܠܟܐ
2 ܕܐܝܣܪܝܠ. ܩܕܡ ܬܪܬܝܢ ܫܢܝܢ ܡܢ ܙܘܥܐ. * ܘܐܡܪ. ܡܪܝܐ ܡܢ ܨܗܝܘܢ ܢܢܗܡ. ܘܡܢ
3 ܐܘܪܫܠܡ ܢܬܠ ܩܠܗ. ܘܢܬܒܠܘܢ ܕܝܪܐ ܕܪܥܘܬܐ. ܘܢܝܒܫ ܪܫܗ ܕܟܪܡܠܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗ̈ܐ ܕܕܪܡܣܘܩ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ ܠܐ ܐܗܦܟ ܡܢܗܘܢ. ܕܕܫܘ ܒܡܪܓܐ ܕܦܪܙܠܐ
4 ܠܓܠܥܕ. * ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܒܝܬܗ ܕܚܙܐܝܠ. ܘܬܐܟܘܠ ܐܪܡܠܘܬܗ ܕܒܪ ܗܕܕ. * ܘܐܬܒܪ ܡܘܟܠܐ
5 ܕܕܪܡܣܘܩ. ܘܐܘܒܕ ܥܡܪܐ ܡܢ ܦܩܥܬܐ ܕܐܘܢ. ܘܐܚܝܕ ܫܒܛܐ ܡܢ ܒܝܬ ܥܕܢ. ܘܢܫܬܒܘܢ
6 ܥܡܐ ܕܐܪܡ ܠܩܝܪ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗ̈ܐ ܕܥܙܐ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ
ܠܐ ܐܗܦܟ ܡܢܗܘܢ. ܥܠ ܕܐܫܒܝܘ ܫܒܝܬܐ ܫܠܡܬܐ ܕܢܫܠܡܘܢܗ ܠܐܕܘܡ.

PROPHETIA *AMOSI.*

CAP. I.

1 Sermones Amoſi qui fuit ex paſtoribus filiorum Tecue, quos vidit de filiis Iſraelis in diebus Uziæ regis Judæ, & diebus Jorobaami filii Joaſi regis Iſraelis, biennio ante terræmotum.

2 Dixit ergò; Dominus è Sione rugiet, & è Jeroſolymis edet vocem ſuam; & ſedebunt in luctu habitacula paſtorum, & areſcet vertex Charmeli.

3 Sic dicit Dominus; Propter tria ſcelera Damaſci, etiam quartum non avertam ab eis. Quia conculcaverunt clavis ferreis Gelaadem,

4 Mittam ignem in domum Hezaelis, conſumétque palatia filii Hadadis:

5 Et confringam vectes Damaſci, perdámque habitatorem de planitie Aven, & ſuſtinentem ſceptrum de domo Aden, & captivus abducetur populus Aram in Kir, dicit Dominus.

6 Sic dicit Dominus; Propter tria ſcelera Azæ, quartum etiam non avertam ab eis. Quia deportaverunt captivitatem integram, ut traderent Adumæis;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الرؤوف الرحيم * بدو ترجمة عاموص النبي * بركاته معنا * امين *

* الفصل الاول * الاصحاح الثامن * وهو الاول من النبوة *

1 * اقوال عاموص التي صارت في اكاريم من تقوع * التي راها من اجل ايروسليم * في ايام عوزيا
2 ملك يهوذا * وفي ايام يوربعام بن يواس ملك اسرائيل * من قبل سنتين من الزلزلة * وقال
الرب من صهيون نطق * ومن ايروسليم اعطي صوته * خربت مراعي الرعاة * ويبس راس
3 الكرمل * وقال الرب * على ثلاث ذنوب دمشق * والرابع لا ارده عنها * من اجل انهم نشروا
4 بمناشير حديد الحوامل اللاتي في جلعاد * فارسل نارا الى بيت حزاييل * وتاكل اساسات بن
5 هدد * واكسر طرق دمشق * واستاصل السكان من صحراء اون * واقطع قبيلة من رجال حران
6 ويسبي شعب سوريه المسمي يقول الرب * هكذا يقول الرب على ثلاث خطايا غزة * وعلى الرابع
لا اصرفه عنهم * من اجل انهم سبوا سبي سالومون ليحبسوا في ايدوميا *

IN NOMINE DEI CLEMENTIS, MISERICORDIS.

Initium interpretationis AMOSI PROPHETÆ, CUJUS BENEDICTIONES adſint nobis. Amen.

CAPUT PRIMUM.

Textus octavus, qui eſt hujus Prophetiæ primus.

1 *Sermones Amoſi, qui facti ſunt in Acearim de Tecue, quos vidit pro Jeroſolymis in diebus Uziæ regis Judæ, & in diebus Jeroboami filii Joaſi regis Iſraelis, biennio ante terræmotum.*

2 *Et dixit; Dominus è Sione locutus eſt, & è Jeruſalem edidit vocem ſuam: unde luxerunt paſcua paſtorum, & exaruit vertex Charmeli.*

3 *Dixitque Dominus; Propter tria crimina Damaſci, quartum etiam non avertam ab ea. Quia ferris ferreis ſecuerunt gravidas quæ erant in Galaade,*

4 *Mittam ignem in domum Hazaelis: devorabitque fundamenta filii Haderis:*

5 *Frangam vias Damaſci, & evellam habitatores è campo On, excindam familiam de viris Hirræ, & captivus abducetur populus Syriæ celeberrimus, dicit Dominus.*

6 *Sic dicit Dominus de tribus Gizæ criminibus, quod autem ad quartum, non avertam illud ab eis. Quia ceperunt captivitatem Salomun, ut carceribus traderent in Idumæa;*

.ejus ædes devorabit & : Hazzah murum in ignem mittam Et
וְשִׁלַּחְתִּי אֵשׁ בְּחוֹמַת עַזָּה וְאָכְלָה אַרְמְנֹתֶיהָ׃ 7
: Aſchelon de ſceptrū tenenté & ,Aſdod de habitatorem faciā excidere Et
וְהִכְרַתִּי יוֹשֵׁב מֵאַשְׁדּוֹד וְתוֹמֵךְ שֵׁבֶט מֵאַשְׁקְלוֹן 8
, Peliſtim reſiduum peribunt & ,Hecron ſuper meā manum convertam &
וַהֲשִׁיבוֹתִי יָדִי עַל־עֶקְרוֹן וְאָבְדוּ שְׁאֵרִית פְּלִשְׁתִּים
tribus Super : Dominus dixit Sic .Dominus Dominus dixit
אָמַר אֲדֹנָי יֱהוִֹה׃ כֹּה אָמַר יְהוָה עַל־שְׁלֹשָׁה 9
ipſos concluſiſſe ſuper :eū covertam non quatuor ſuper &,Sor prævaricationib⁹
פִּשְׁעֵי־צֹר וְעַל־אַרְבָּעָה לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־הַסְגִּירָם
.fratrum fœderis ſunt recordati non &,Edom ipſi perfectam transmigrationē
גָּלוּת שְׁלֵמָה לֶאֱדוֹם וְלֹא זָכְרוּ בְּרִית אַחִים׃
.ejus ædes devorabit & : Sor murum in ignem mittam Et
וְשִׁלַּחְתִּי אֵשׁ בְּחוֹמַת צֹר וְאָכְלָה אַרְמְנוֹתֶיהָ׃ 10
, Edom prævaricationibus tribus Super :Dominus dixit Sic
כֹּה אָמַר יְהוָה עַל־שְׁלֹשָׁה פִּשְׁעֵי אֱדוֹם 11
gladio in ipſum perſequi ſuper : eum convertam non quatuor ſuper &
וְעַל־אַרְבָּעָה לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־רָדְפוֹ בַחֶרֶב
perpetuum in rapuerit & ,ſuas miſericordias corruperit & ,ſuum fratrem
אָחִיו וְשִׁחֵת רַחֲמָיו וַיִּטְרֹף לָעַד
ignem mittam Et .perpetuò ſervavit ſuam iram & , ejus naſus
אַפּוֹ וְעֶבְרָתוֹ שְׁמָרָה נֶצַח׃ וְשִׁלַּחְתִּי אֵשׁ 12
: Dominus dixit Sic .Boſrah ædes devorabit & :Theman in
בְּתֵימָן וְאָכְלָה אַרְמְנוֹת בָּצְרָה׃ כֹּה אָמַר יְהוָה 13
quatuor ſuper & ,Hammon filiorum prævaricationibus tribus Super
עַל־שְׁלֹשָׁה פִּשְׁעֵי בְנֵי־עַמּוֹן וְעַל־אַרְבָּעָה
dilatandum ad ,Ghilhad prægnantes eos ſcidiſſe ſuper : eum convertam non
לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־בִּקְעָם הָרוֹת הַגִּלְעָד לְמַעַן הַרְחִיב
, Rabbah muro in ignem ſuccendam Et .ſuum terminum
אֶת־גְּבוּלָם׃ וְהִצַּתִּי אֵשׁ בְּחוֹמַת רַבָּה 14
,turbine in , belli die in vociferatione in : ejus ædes devorabit &
וְאָכְלָה אַרְמְנוֹתֶיהָ בִּתְרוּעָה בְּיוֹם מִלְחָמָה בְּסַעַר
, ipſe : captivitatem in eorum rex ibit Et .tempeſtatis die in
בְּיוֹם סוּפָה׃ וְהָלַךְ מַלְכָּם בַּגּוֹלָה הוּא 15
.Dominus dixit , ſimul ejus principes &
וְשָׂרָיו יַחְדָּו אָמַר יְהוָה׃

CAP. II. ב

ſuper & ,Moab prævaricationibus tribus Super : Dominus dixit Sic
כֹּה אָמַר יְהוָה עַל־שְׁלֹשָׁה פִּשְׁעֵי מוֹאָב וְעַל־ 1
Edom regis oſſa eum combuſſiſſe ſuper :eum convertam non quatuor
אַרְבָּעָה לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־שָׂרְפוֹ עַצְמוֹת מֶלֶךְ־אֱדוֹם
ædes devorabit & , Moab in ignem mittam Et .calcem in
לַשִּׂיד׃ וְשִׁלַּחְתִּי־אֵשׁ בְּמוֹאָב וְאָכְלָה אַרְמְנוֹת 2
voce in , vociferatione in , Moab ſonitu in morietur & : Cherijoth
הַקְּרִיּוֹת וּמֵת בְּשָׁאוֹן מוֹאָב בִּתְרוּעָה בְּקוֹל
omnes & : ejus interiori de judicem faciam excidere Et .tubæ
שׁוֹפָר׃ וְהִכְרַתִּי שׁוֹפֵט מִקִּרְבָּהּ וְכָל־ 3
dixit Sic .Dominus dixit ,eo cum interficiam ejus principes
שָׂרֶיהָ אֶהֱרוֹג עִמּוֹ אָמַר יְהוָה׃ כֹּה אָמַר 4
ſuper & , Jehudah prævaricationibus tribus Super : Dominus
יְהוָה עַל־שְׁלֹשָׁה פִּשְׁעֵי יְהוּדָה וְעַל־
,Domini legem eos reprobaſſe ſuper : eum convertam non quatuor
אַרְבָּעָה לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־מָאֳסָם אֶת־תּוֹרַת יְהוָה
quæ ,ſua mendacia eos fecerūt errare & :ſervaverint non ej⁹ ſtatuta &
וְחֻקָּיו לֹא שָׁמָרוּ וַיַּתְעוּם כִּזְבֵיהֶם אֲשֶׁר־
; Jehudah in ignem mittam Et .ea poſt eorum patres abierunt
הָלְכוּ אֲבוֹתָם אַחֲרֵיהֶם׃ וְשִׁלַּחְתִּי אֵשׁ בִּיהוּדָה 5
.Jeruſalaim ædes devorabit &
וְאָכְלָה אַרְמְנוֹת יְרוּשָׁלִָם׃

Verſio VULG. LAT.

7 Et mittam ignem in murum Gazæ, & devorabit ædes ejus. 8 Et diſperdam habitatorem de Azoto, & tenentem ſceptrum de Aſcalone: & convertam manum meam ſuper Accaron, & peribunt reliqui Philiſthinorum, dicit Dominus Deus. 9 Hæc dicit Dominus; Super tribus ſceleribus Tyri, & ſuper quatuor non convertam eum: eò quòd concluſerint captivitatem perfectam in Idumæa, & non ſint recordati fœderis fratrum. 10 Et mittam ignem in murum Tyri, & devorabit ædes ejus. 11 Hæc dicit Dominus; Super tribus ſceleribus Edom, & ſuper quatuor non convertam eum: eò quòd perſecutus ſit in gladio fratrem ſuum, & violaverit miſericordiam ejus, & tenuerit ultrà furorem ſuum, & indignationem ſuam ſervaverit uſque in finem. 12 Mittam ignem in Theman: & devorabit ædes Boſræ. 13 Hæc dicit Dominus; Super tribus ſceleribus filiorum Ammon, & ſuper quatuor non convertam eum: eò quòd diſſecuerit prægnantes Galaad ad dilatandum terminum ſuum. 14 Et ſuccendam ignem in muro Rabba: & devorabit ædes ejus in ululatu in die belli, & in turbine in die commotionis. 15 Et ibit Melchom in captivitatem, ipſe, & principes ejus ſimul, dicit Dominus.

CAP. II.

1 Hæc dicit Dominus; Super tribus ſceleribus Moab, & ſuper quatuor non convertam eum: eò quòd incenderit oſſa regis 2 Idumææ uſque ad cinerem. Et mittam ignem in Moab, & devorabit ædes Carioth: & morietur in ſonitu Moab, in clangore tubæ: 3 Et diſperdam judicem de medio ejus, & omnes principes ejus interficiam cum eo, dicit Dominus. 4 Hæc dicit Dominus; Super tribus ſceleribus Juda, & ſuper quatuor non convertam eum: eò quòd abjecerit legem Domini, & mandata ejus non cuſtodierit: deceperunt enim eos idola ſua, poſt quæ abierant 5 patres eorum. Et mittam ignem in Juda, & devorabit ædes Jeruſalem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ ἐπὶ τὰ τείχη Γάζης, καὶ καταφάγεται (ζ) τὰ θεμέλια αὐτῆς. 8 Καὶ ἐξολοθρεύσω κατοικοῦντας ἐξ Ἀζώτου, καὶ ἐξαρθήσεται φυλὴ ἐξ Ἀσκάλωνος, καὶ ἐπάξω τὴν χεῖρά μου ἐπὶ Ἀκκάρων, καὶ ἀπολοῦνται οἱ κατάλοιποι τῶν ἀλλοφύλων, 9 λέγει κύριος. Τάδε λέγει κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις Τύρου, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτὴν, ἀνθ᾽ ὧν συνέκλεισαν αἰχμαλωσίαν τοῦ Σαλωμὼν εἰς τὴν (η) Ἰδουμαίαν, καὶ οὐκ ἐμνήσθησαν 10 διαθήκης ἀδελφῶν. Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ ἐπὶ τὰ τείχη Τύρου, καὶ καταφάγεται (θ) τὰ θεμέλια αὐτῆς. 11 Τάδε λέγει κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις τῆς Ἰδουμαίας, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτοὺς, (") ἕνεκα τοῦ διῶξαι αὐτοὺς ἐν ῥομφαίᾳ (¨) τὸν ἀδελφὸν αὐτῶν, καὶ ἐλυμήνατο (ι) μητέρα ἐπὶ γῆς, καὶ ἥρπασεν εἰς μαρτύριον φρίκην αὐτοῦ, καὶ τὸ ὅρμημα αὐτοῦ ἐφύλαξεν εἰς 12 νῖκος. Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ εἰς (κ) Θαιμὰν, καὶ καταφάγεται θεμέλια τειχέων αὐτῆς. 13 Τάδε λέγει κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις υἱῶν Ἀμμὼν, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι (λ) αὐτὸν, ἀνθ᾽ ὧν ἀνέσχιζον τὰς ἐν γαστρὶ ἐχούσας τῶν Γαλααδιτῶν, 14 ὅπως (μ) ἐμπλατύνωσι τὰ ὅρια ἑαυτῶν. Καὶ ἀνάψω πῦρ ἐπὶ (ν) τείχη Ῥαββὰθ, καὶ καταφάγεται θεμέλια αὐτῆς μετὰ κραυγῆς ἐν ἡμέρᾳ πολέμου, καὶ σεισθήσεται ἐν (ξ) ἡμέραις 15 συντελείας αὐτῆς, Καὶ πορεύσονται οἱ βασιλεῖς αὐτῆς ἐν αἰχμαλωσίᾳ, οἱ ἱερεῖς αὐτῶν καὶ οἱ ἄρχοντες αὐτῶν ἐπὶ τὸ αὐτὸ, λέγει κύριος.

MS. A. (ζ) θεμέλια αὐτῆς. Καὶ ἐξολεθρεύσω (η) Ἰδουμαίαν, (θ) θεμέλια (") ἕνεκεν (¨) ἕκαστος τὴν (ι) μήτραν (κ) Θαιμὰν, (λ) αὐτοὺς, (μ) ἐμπλατύνοισιν τὰ ὅρια αὐτῶν. (ν) τὰ τείχη Ῥαββὰ, (ξ) ἡμέρᾳ

Et emittam ignem ſuper muros Gazæ: & devorabit fundamenta ejus. 7 Et diſperdam habitatores de Azoto: & auferetur tribus de Aſcalone: & inferam manum meam in Accaronem: & peribunt reliqui alienigenarum, 8 dicit Dominus. Hæc dicit Dominus; Super tribus impietatibus Tyri, & ſuper quatuor non averſabor eam, pro eo quòd concluſerunt captivitatem Salomonis in Idumæa: & non ſunt recordati teſtamenti fratrum. 9 Et emittam ignem ſuper muros Tyri: & devorabit fundamenta ejus. 10 Hæc dicit Dominus; Super tribus impietatibus Idumææ, & ſuper quatuor non averſabor eos; eò quòd (g) ipſi perſequuti ſint in gladio fratrem ſuum. Et violavit (h) matrē ſuper terrā, & rapuit in teſtimonium horrorem ſuum, & impetum ſuum cuſtodivit in (i) victoriam. 11 Et emittam ignē in Thaman: & devorabit (k) fundamenta murorum ejus. 12 Hæc dicit Dominus; Super tribus impietatibus filiorum Ammon, & ſuper quatuor non averſabor eū, eò quòd deſecuerint prægnantes Galaaditarum, ut dilatarent terminos ſuos. 13 Et ſuccendam ignē ſuper muros Rabbath: & devorabit fundamenta ejus cum clamore in die belli: & commovebitur in die conſummationis ſuæ. 14 Et ibunt reges ejus in captivitatem, (l) ſacerdotes eorum, & principes eorum ſimul, dicit Dominus. 15

ΚΕΦ. β'.

1 Τάδε λέγει κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις Μωὰβ, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι αὐτὸν, ἀνθ᾽ ὧν κατέκαυσαν τὰ 2 ὀστᾶ βασιλέως τῆς Ἰδουμαίας εἰς κονίαν. Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ (α) εἰς Μωὰβ, καὶ καταφάγεται (β) τὰ θεμέλια τῶν πόλεων αὐτῆς, καὶ ἀποθανεῖται ἐν ἀδυναμίᾳ Μωὰβ μετὰ κραυ- 3 γῆς καὶ μετὰ φωνῆς σάλπιγγος. Καὶ (γ) ἐξολοθρεύσω κριτὴν ἐξ αὐτῆς, καὶ (δ) πάντας αὐτῆς ἀποκτενῶ μετ᾽ αὐτοῦ, λέγει κύ- 4 ριος. Τάδε λέγει κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβείαις υἱῶν Ἰούδα, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστραφήσομαι (ε) αὐτὸν, ἕνεκα τοῦ ἀπώσασθαι αὐτοὺς τὸν νόμον (ζ) τοῦ κυρίου, καὶ τὰ προστάγματα αὐτοῦ οὐκ ἐφυλάξαντο, καὶ ἐπλάνησεν αὐτοὺς τὰ (η) μάταια αὐτῶν ἃ ἐποίησαν, οἷς ἐξηκολούθησαν οἱ πατέρες αὐτῶν ὀπίσω αὐ- 5 τῶν. Καὶ ἐξαποστελῶ πῦρ ἐπὶ Ἰούδαν, καὶ καταφάγεται θεμέλια Ἱερουσαλήμ.

MS. A. (α) ἐπὶ (β) θεμέλια τῶν πόλεων αὐτῶν, (γ) ἐξολεθρεύσω (δ) πάντας τοὺς ἄρχοντας αὐτῶν (ε) αὐτοὺς, ἕνεκεν (ζ) κυρίου, (η) αἵματα

CAP. II.

Hæc dicit Dominus; Super 1 tribus impietatibus Moab, & ſuper quatuor non averſabor eum, pro eo quòd incenderunt oſſa regis Idumææ in cinerem. Et emittam ignem in Moab: & devorabit fundamenta civitatum ejus: 2 & morietur in infirmitate Moab cum clamore, & cum voce tubæ. Et diſperdam judicem ex 3 ea: & omnes [principes] ejus interficiam cum eo, dicit Dominus. Hæc dicit Dominus; Super tribus impietatibus filiorum Juda, 4 & ſuper quatuor non averſabor eum: quia repulerunt illi legem Domini, & præcepta illius non cuſtodierunt: & deceperunt eos vanitates ſuæ, (a) quas fecerunt, quas ſequuti ſunt patres eorum poſt eas. Et emittam ignem in 5 Judam, & devorabit fundamenta Hieruſalem.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ואשלח אשתא בשורי עזא ותשיצי ברניתהא: ואשיצי יתיב מאשדוד ועביד שולטן 7
מאשקלון ואתיב מחת גבורתי על עקרון וייבדון שארא דפלשתאי אמר יי אלהים: 8
כדנן אמר יי על תלתא חובי צור ועל ארבעא לא אשבוק להון על דמסרנון גלו 9
שלמא לאדום ולא אדכרו קים אחין: ואשלח אשתא בשורי צור ותשיצי ברניתהא: 10
כדנן אמר יי על תלתא חובי אדום ועל ארבעא לא אשבוק להון על דרדפיה בחרבא 11
אחוהי וחבל רחמוהי וקטיל קטל עלמין רוגזיה וחמתיה נטרא לאפרש: ואשלח 12
אשתא בדרומא ותשיצי ברנית בצרה: כדנן אמר יי על תלתא חובי בני עמון ועל 13
ארבעא לא אשבוק להון על דבזעו מעדית ארע גלעד בדיל לאפתאה ית תחומיהון:
ואדליק אשתא בשורי רבה ותשיצי ברניתהא ביבבא ביומא דקרבא בעלעול ביום 14
רוח: ויהך מלכהון בגלותא הוא ורברבוהי כחדא אמר יי:

ב

כדנן אמר יי על תלתא חובי מואב ועל ארבעא לא אשבוק להון על דאוקיד גרמי 1
מלכא דאדום וסדנון כגירא בביתא: ואשלח אשתא במואב ותשיצי ברנית כרכהא 2
וימות באתרגושא מואב ביבבא בקל שופרא: ואשיצי דינהא מגוה וכל רברבהא 3
אקטול עמיה אמר יי: כדנן אמר יי על תלתא חובי יהודה ועל ארבעא לא אשבוק 4
להון על דקצו באוריתא דיי וקימוהי לא נטרו ואטעיאונון כדביהון דהליכו
אבהתהון בתריהון: ואשלח אשתא בדבית יהודה ותשיצי ברנית ירושלם: 5

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Mittam ergo ignem in muros Gazæ, qui palatia ejus devorabit. 7 Et abſumam habitatorem de Azoto & dominio potientem ab Aſcalone; 8 convertámque plagam potentiæ meæ in Ackaron, ita ut pereant reliquiæ Philiſthinorum, ait Dominus Deus. Hoc modo dicit Dominus: 9 Super tribus ſceleribus Tyri, & ſuper quatuor non veniam dabo eis, eò quòd tradiderint eos exilio perfecto Idumæis, nec ſint recordati fœderis fraterni. 10 Propterea immittam ignem in muros Tyri, & ejus palatia comburet. 11 Hæc dicit Dominus: Super tribus ſceleribus Edom, & ſuper quatuor non condonabo ei culpam, pro eo quòd perſecutus ſit gladio fratrem ſuum, & violaverit miſericordiam ſuam, occidítque ſtrage perpetua furor ejus, & indignatio ejus reſervata ſit in æternum. 12 Itaque mittam ignem in Auſtrum qui abſumet palatia Boſra. 13 Sic dicit Dominus: Super tribus ſceleribus filiorum Ammon & ſuper quatuor non dimittam eis, eò quòd diſſecuerint prægnantes terræ Galaad, ut dilatarent terminos ſuos. 14 Ideò ſuccendam ignem in muros Rabba, & conſumet palatia ejus cum concrepatione in die belli, cum turbine in die venti. Et abibit rex eorum in captivitatem, ipſe & principes ejus ſimul, ait Dominus.

CAP. II.

1 Ita dicit Dominus: Super tribus ſceleribus Moab & ſuper quatuor non parcam eis, eò quòd incenderit oſſa regis Idumææ, & obliniverit eis pro calce domum. 2 Propterea mittam ignem in Moab, & conſumet palatia arcis, & morietur in tumultu Moab, in vociferatione & voce tubæ. 3 Et diſperdam judicem ejus de medio ejus, & omnes principes ejus occidam cum eo, ait Dominus. 4 Hoc pacto dicit Dominus, Super tribus ſceleribus Jehuda, & ſuper quatuor non ignoſcam eis, eò quòd ſint deteſtati Legem Domini, nec decreta ejus obſervarint, ſed ſeduxerint eos mendacia ſua, poſt quæ patres eorum abierant. 5 Quare immittam ignem in domum Jehuda qui vorabit palatia Jeruſalem.

Verſio *S Y R I A C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

7 8 *ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܫܘܪܝܗ̇ ܕܥܙܐ. ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܝܗ̇. * ܘܐܘܒܕ ܠܥܡܘܪܐ ܡܢ ܐܫܕܘܕ. ܘܐܚܝܕ
ܫܒܛܐ ܡܢ ܐܫܩܠܘܢ. ܘܐܗܦܟ ܐܝܕܝ ܥܠ ܥܩܪܘܢ. ܘܢܐܒܕܘܢ ܫܪܟܐ ܕܦܠܫܬܝܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ
9 ܡܪܘܬܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗ̈ܝܗ̇ ܕܨܘܪ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ. ܠܐ ܐܗܦܟ ܡܢܗܘܢ. ܥܠ
10 ܕܐܫܠܡܘ ܫܒܝܬܐ ܫܠܡܬܐ ܠܐܕܘܡ. ܘܠܐ ܐܬܕܟܪܘ ܩܝܡܐ ܕܐܚܘܬܐ. * ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܫܘܪܝܗ̇
11 ܕܨܘܪ. ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܝܗ̇. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗ̈ܝܗ̇ ܕܐܕܘܡ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ. ܠܐ
ܐܗܦܟ ܡܢܗܘܢ. ܥܠ ܕܪܕܦ ܒܣܝܦܐ ܠܐܚܘܗܝ ܘܚܒܠ ܪ̈ܚܡܘܗܝ. ܘܢܛܪ ܠܥܠܡ
12 ܪܘܓܙܗ. ܘܚܡܬܗ ܢܛܪ ܠܥܠܡܝܢ. * ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܠܬܝܡܢ. ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܝܗ̇ ܕܒܨܪܐ.
13 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗ̈ܝܗܘܢ ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ. ܠܐ ܐܗܦܟ ܡܢܗܘܢ.
14 ܥܠ ܕܨܪܘ ܥܒܪ̈ܬܐ ܕܓܠܥܕ ܕܢܦܬܘܢ ܬܚܘ̈ܡܝܗܘܢ. * ܐܫܠܚ ܢܘܪܐ ܒܫܘ̈ܩܝܗ̇ ܕܪܒܬ.
15 ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܝܗ̇. ܒܩܥܬܐ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ. ܒܥܠܥܠܐ ܒܝܘܡܐ ܕܥܪܦܠܐ. * ܘܢܐܙܠ
ܡܠܟܘܡ ܒܫܒܝܬܐ. ܘܟܘܡܪ̈ܘܗܝ ܘܪܘܪ̈ܒܢܘܗܝ ܐܟܚܕܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

1 * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗ̈ܝܗܘܢ ܕܡܘܐܒ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ. ܠܐ ܐܗܦܟ ܡܢܗܘܢ. ܥܠ
2 ܕܐܘܩܕܘ ܓܪ̈ܡܘܗܝ ܕܡܠܟܐ ܕܐܕܘܡ ܒܟܠܫܐ. * ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܥܠ ܡܘܐܒ. ܘܬܐܟܘܠ
3 ܗܝܟܠܝܗ̇ ܕܩܪܝܘܬ. ܘܢܡܘܬ ܡܘܐܒ ܒܫܓܘܫܝܐ. ܒܩܥܬܐ ܘܒܩܠܐ ܕܫܝܦܘܪܐ. * ܘܐܘܒܕ ܕܝܢܐ
4 ܡܢ ܓܘܗ̇. ܘܟܠܗܘܢ ܪ̈ܘܪܒܢܘܗܝ ܐܩܛܘܠ ܥܡܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗ̈ܝܗܘܢ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ. ܠܐ ܐܗܦܟ ܡܢܗܘܢ. ܥܠ ܕܐܫܠܝܘ ܢܡܘܣܗ
ܕܡܪܝܐ ܘܦܘܩ̈ܕܢܘܗܝ ܠܐ ܢܛܪܘ. ܘܐܛܥܝܘ ܐܢܘܢ ܣܪ̈ܝܩܘܬܐ ܕܐܙܠܘ ܒܬܪܗܝܢ ܐܒܗ̈ܝܗܘܢ.
5 *ܐܫܕܪ ܢܘܪܐ ܒܝܗܘܕܐ. ܘܬܐܟܘܠ ܗܝܟܠܝܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ.

Mittam ignem in muros Azæ, conſumétque 7
palatia ejus: Et perdam habitatorem ex 8
Aſdod, & ſuſtinentem ſceptrum ex Aſcalon:
convertámque manum meam contra Ecronem, & peribunt reliquiæ Paleſtinorum, dicit Dominus dominorum. Sic dicit Dominus; 9
Propter tria ſcelera Tyri, quartum non avertam ab eis. Quia tradiderunt captivitatem integram Adumæis, & non ſunt recordati fœderis fraternitatis? Mittam ignem in mu- 10
ros Tyri, qui conſumet palatia ejus. Sic di- 11
cit Dominus; Propter tria ſcelera Adum, quartum non avertam ab eis. Quia perſecutus eſt gladio fratrem ſuum, & corrupit miſerationes ſuas, ſervavit in perpetuum iram ſuam,
& odium ſuum ſervavit in ſecula; Mittam 12
ignem in Theman, qui conſumet palatia Boſar. Sic dicit Dominus; Propter tria ſcele- 13
ra Ammonitarum, quartum non avertam ab eis. Quia exenterárunt gravidas Gelaadis, ut
ampliarent limites ſuos; Dimittam ignem 14
in vicos Rabath, qui conſumet palatia ejus, cum clamore in die belli, cum turbine in die
caliginis. Et abibit Malchom in captivita- 15
tem unà cum ſacrificulis ſuis & magnatibus ſuis, dicit Dominus.

CAP. II.

Sic dicit Dominus; Propter tria ſcelera 1
Moabitarum, quartum non avertam ab eis.
Quia combuſſerunt oſſa regis Adum in calcé, 2
Mittam ignem ſuper Moabum, & conſumet palatia Kerjoth, & morietur Moab in perturbatione, in clamore, & in ſonitu buccinæ:
Et perdam judicem de medio ejus, & omnes 3
magnates ejus occîdam cum eo, dicit Dominus. Sic dicit Dominus; Propter tria ſce- 4
lera Judæ, quartum non avertam ab eis. Quia ſpreverunt legem Domini, & præcepta ejus non ſervaverunt, ſed ſeduxerunt eos vani-
tates quas ſectati ſunt patres eorum; Mit- 5
tam ignem in Judam, qui vorabit palatia Jeroſolymorum.

Verſio *A R A B I C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

7 8 * فارسل نارا علي اسوار غزه وتاكل اساساتها * واستاصل السكان من اشدود وينزع قبيله
9 من عسقلان * واقبل بيدي علي عقرون * وتهلك بقايا القبايل الغريبه يقول الرب * هكذا يقول
الرب على ثلاث ذنوب صور وعلي الرابع لا اصرفه عنها * من اجل انهم حبسوا سبي سالومون في
10 11 ايدوماا * ولم يذكروا عهد الاخوه * فارسل نارا على اسوار صور وتاكل اساساتها * هكذا يقول
الرب على ثلاث ذنوب ادوم * وعلي الرابع لا اصرفه عنهم * من اجل انهم يطردون اخاهم بالسيف *
12 وافسد مستودعا على الارض * واختطف هيبته للشهاده * وحفظ غضبه للظفر * فارسل نارا على
13 المشرق * وتاكل اساسات اسوارها * هكذا يقول الرب على ثلاث ذنوب بني عمون * وعلي الرابع
14 لا اصرفه عنهم * من اجل انهم شقوا حوامل الجلعاديين كي يوسعوا حدودهم * واشعل
نارا على اسوار الربه * وتاكل اساساتها بصراخ في يوم الحرب * وتتزلزل في ايام انقضايها *
15 * ويسير ملوكها في السبي * كهنتهم ورؤساوهم جميعا يقول الرب *

* الفصل الثاني *

1 * هكذا يقول الرب على ثلاث ذنوب مواب * وعلي الرابع لا اصرفه عنهم * من اجل انهم احرقوا
2 عظام ملك ايدوماا للكلس * فارسل نارا على مواب * فتاكل اساسات مدنها * ويموت مواب
3 بعدم القوه * بصراخ وبصوت البوق * واستاصل الحاكم منها * وجميع روساها اقتلهم معه
4 يقول الرب * هكذا يقول الرب على ثلاث ذنوب بني يهوذا * والرابع لا اصرفه
عنهم * من اجل انهم ابعدوا ناموس الرب * ولم يحفظوا اوامره * واضلتهم
5 اباطيلهم التي صنعوها * التي تبعها اباوهم خلفها * فارسل نارا على يهوذا * وتاكل
اساسات اورشليم *

Mittam ignem ſuper muros Gazæ, devo- 7
rabitq; fundamenta ejus: Evellam ha- 8
bitatores ex Aſdod, & auferetur familia ex Aſcalan: admovebo manũ meam ſuper Ecron, & peribunt reliquiæ familiarum exterarum, dicit Dominus. Sic dicit Do- 9
minus de tribus criminibus Tyri; quod ad quartum, non avertam illud ab ea. Quia clauſerunt captivitatem Salomunis in Idumæa, & non ſunt recordati fœderis fraterni: Ideo mittam ignem ſuper 10
muros Tyri, devorabitq; fundamenta ejus.
Sic ait Dominus de tribus criminibus 11
Edom; quod autem ad quartum, non avertam illud ab eis. Quia perſequuntur fratrem ſuum gladio, & extinxit tranquillum ſuper terram, & rapuit reverentiam ejus in teſtimonium, ſervavitque iram ſuam ad victoriam; Ideo mit- 12
tam ignem ſuper Orientem, devorabitq; fundamenta murorum ejus. Sic ait Do- 13
minus de tribus criminibus filiorum Ammon; quod autem ad quartum, non avertam illud ab eis; quia diſſecuerunt prægnantes Galaaditarum, ut ampliarent terminos ſuos. Et accendam ignem ſuper 14
mœnia Rabbath, devorabitque fundamenta ejus cum clamore in die belli, & contremiſcet in diebus excidii ſui. Et abi- 15
bunt reges ejus in captivitatem, ſacerdotes eorum, & principes eorum ſimul, dicit Dominus.

CAP. II.

Sic ait Dominus de tribus criminibus 1
Moabi; quod autem ad quartum, non avertam illud ab eis. Quia combuſſerunt oſſa regis Idumææ ad calcem conficien-
dam; Ideo mittam ignem ſuper Moabum, 2
devorabitque fundamenta urbium ejus, & morietur Moab in defectu virium cum clamore & clangore buccinæ. Evellam 3
ex ea judicem, & omnes principes ejus occîdam cum iſto, dicit Dominus. Sic 4
ait Dominus de tribus criminibus filiorum Judæ, & quartum non avertam ab eis. Quia repulerant legem Domini, & non ſervaverunt mandata ejus, ſed ſeduxerunt eos vanitates ſuæ quas fecerunt, poſt quas adhæſerant patres eorum: Ideo mittam ignem ſuper Ju- 5
dam, vorabitque fundamenta Jeroſolymæ.

עָמוֹס : ב

ſuper & , Iſrael prævaricationib⁹ tribus Super : Dominus dixit Sic
6 כֹּה אָמַר יְהוָה עַל־שְׁלֹשָׁה פִּשְׁעֵי יִשְׂרָאֵל וְעַל־
, juſtum argento *in eos vendidiſſe ſuper : eum convertam* non quatuor
אַרְבָּעָה לֹא אֲשִׁיבֶנּוּ עַל־מִכְרָם בַּכֶּסֶף צַדִּיק
pulverem ſuper *Anhelantes* .duo calceamenta propter *egenum* &
7 וְאֶבְיוֹן בַּעֲבוּר נַעֲלָיִם׃ הַשֹּׁאֲפִים עַל־עֲפַר־
, vir & : fecerunt declinare humilium viam & ,pauperum caput *in* terræ
אֶרֶץ בְּרֹאשׁ דַּלִּים וְדֶרֶךְ עֲנָוִים יַטּוּ וְאִישׁ
.*meæ ſanctitatis* nomen *violandum ad* ,puellam ad iverunt ej⁹ pater &
וְאָבִיו יֵלְכוּ אֶל־הַנַּעֲרָה לְמַעַן חַלֵּל אֶת־שֵׁם קָדְשִׁי׃
: altare omne apud *faciebant declinare oppignoratis* veſtimentis ſuper Et
8 וְעַל־בְּגָדִים חֲבֻלִים יַטּוּ אֵצֶל כָּל־מִזְבֵּחַ
ego Et ſuorum deorum domo biberunt *multatorum* vinum &
9 וְיֵין עֲנוּשִׁים יִשְׁתּוּ בֵּית אֱלֹהֵיהֶם׃ וְאָנֹכִי
cedrorum altitud. ſicut cujus ,*corā facieb⁹* à Emoræum feci diſperdere
הִשְׁמַדְתִּי אֶת־הָאֱמֹרִי מִפְּנֵיהֶם אֲשֶׁר כְּגֹבַהּ אֲרָזִים
ej⁹ fructum feci perdere & : quercus ſicut *ipſe* fortis & ,*ejus* altitudo
גָּבְהוֹ וְחָסֹן הוּא כָּאַלּוֹנִים וָאַשְׁמִיד פִּרְיוֹ
vos feci aſcendere ego Et .deorſum ejus radices & , ſurſum
10 מִמַּעַל וְשָׁרָשָׁיו מִתָּחַת׃ וְאָנֹכִי הֶעֱלֵיתִי אֶתְכֶם
, annis quadraginta deſertum *in* vos feci ambulare & : Ægypti terra è
מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם וָאוֹלֵךְ אֶתְכֶם בַּמִּדְבָּר אַרְבָּעִים שָׁנָה
veſtris filiis de ſuſcitavi Et .Emoræi terram *poſſidendum ad*
11 לָרֶשֶׁת אֶת־אֶרֶץ הָאֱמֹרִי׃ וָאָקִים מִבְּנֵיכֶם
filii hoc non *etiā* Nunquid *:ſeparatos in* veſtris juvenib⁹ de &,*prophetas in*
לִנְבִאִים וּמִבַּחוּרֵיכֶם לִנְזִרִים הַאַף אֵין־זֹאת בְּנֵי
: vinum Neziræis dediſtis potum Et ? Dominus dixit , Iſrael
12 יִשְׂרָאֵל נְאֻם־יְהוָה׃ וַתַּשְׁקוּ אֶת־הַנְּזִרִים יָיִן
.prophetabitis Non : dicendo , præcipiebatis prophetis *ſuper* &
וְעַל־הַנְּבִיאִים צִוִּיתֶם לֵאמֹר לֹא תִּנָּבְאוּ׃
plauſtrum *coarctares* quemadmodum *: vos ſubter coarctans* ego Ecce
13 הִנֵּה אָנֹכִי מֵעִיק תַּחְתֵּיכֶם כַּאֲשֶׁר תָּעִיק הָעֲגָלָה
non fortis & ,levi à fuga peribit Et .*manipulo ſibi* plenum
14 הַמְלֵאָה לָהּ עָמִיר׃ וְאָבַד מָנוֹס מִקָּל וְחָזָק לֹא־
.ſuam animam eruet non robuſtus & : ſuam fortitudinem fortificabit
יְאַמֵּץ כֹּחוֹ וְגִבּוֹר לֹא־יְמַלֵּט נַפְשׁוֹ׃
: evadet non ſuis pedibus *in* levis & ; ſtabit non , arcum *tenens* Et
15 וְתֹפֵשׂ הַקֶּשֶׁת לֹא יַעֲמֹד וְקַל בְּרַגְלָיו לֹא יְמַלֵּט
ſui cordis roborator Et .ſuam animam ſalvabit non , equum *equitans* &
16 וְרֹכֵב הַסּוּס לֹא יְמַלֵּט נַפְשׁוֹ׃ וְאַמִּיץ לִבּוֹ
.Dominus dixit ,illa die in fugiet nudus *: potentibus in*
בַּגִּבּוֹרִים עָרוֹם יָנוּס בַּיּוֹם־הַהוּא נְאֻם־יְהוָה׃

CAP. III. ג

filii ,vos ſuper Dominus eſt locutus quod , hoc verbum Audite
1 שִׁמְעוּ אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה אֲשֶׁר דִּבֶּר יְהוָה עֲלֵיכֶם בְּנֵי
, Ægypti terra è feci aſcendere quam,cognationem omnem ſuper : Iſrael
יִשְׂרָאֵל עַל כָּל־הַמִּשְׁפָּחָה אֲשֶׁר הֶעֱלֵיתִי מֵאֶרֶץ מִצְרַיִם
cognationibus omnibus ex cognovi vos Tantum : dicendo
2 לֵאמֹר׃ רַק אֶתְכֶם יָדַעְתִּי מִכֹּל מִשְׁפְּחוֹת
.veſtras iniquitates omnes vos ſuper viſitabo idcirco : *humi*
הָאֲדָמָה עַל־כֵּן אֶפְקֹד עֲלֵיכֶם אֵת כָּל־עֲוֺנֹתֵיכֶם׃
? convenerint niſi : pariter duo ambulabunt Nunquid
3 הֲיֵלְכוּ שְׁנַיִם יַחְדָּו בִּלְתִּי אִם־נוֹעָדוּ׃
dabit nunquid ? ei non præda *&* , ſylva in leo rugiet Nunquid
4 הֲיִשְׁאַג אַרְיֵה בַּיַּעַר וְטֶרֶף אֵין לוֹ הֲיִתֵּן
? apprehenderit niſi , ſuo habitaculo de ſuam vocem leunculus
כְּפִיר קוֹלוֹ מִמְּעֹנָתוֹ בִּלְתִּי אִם־לָכָד׃
? ei non laqueus & ,terræ laqueum *ſuper* avis cadet Nunquid
5 הֲתִפֹּל צִפּוֹר עַל־פַּח הָאָרֶץ וּמוֹקֵשׁ אֵין לָהּ
? capiet non capiendo & , *humo* è laqueus aſcendet Nunquid
הֲיַעֲלֶה־פַּח מִן־הָאֲדָמָה וְלָכוֹד לֹא יִלְכּוֹד׃

Verſio VULG. LAT.

6 Hæc dicit Dominus; Super tribus
ſceleribus Iſrael, & ſuper quatuor
non convertam eum: pro eo quòd
vendiderit pro argento juſtum, &
7 pauperem pro calceamentis. Qui
conterunt ſuper pulverem terræ
capita pauperum, & viam humi-
lium declinant: & filius ac pater
ejus ierunt ad puellam, ut viola-
8 rent nomen ſanctum meum. Et
ſuper veſtimentis pignoratis ac-
cubuerunt juxta omne altare: &
vinum damnatorum bibebant in
9 domo Dei ſui. Ego autem ex-
terminavi Amorrhæum à facie
eorum: cujus altitudo, cedrorum
altitudo ejus: & fortis ipſe quaſi
quercus: & contrivi fructum e-
jus deſupèr, & radices ejus ſub-
10 tér. Ego ſum, qui aſcendere vos
feci de terra Ægypti, & duxi vos
in deſerto quadraginta annis, ut
11 poſſideretis terram Amorrhæi. Et
ſuſcitavi de filiis veſtris in pro-
phetas, & de juvenibus veſtris
Nazaræos: numquid non ita eſt,
12 filii Iſrael, dicit Dominus? Et
propinabitis Nazaræis vinum,
& prophetis mandabitis, dicen-
13 tes; Ne prophetetis. Ecce ego
ſtridebo ſubter vos, ſicut ſtridet
14 plauſtrum onuſtum fœno. Et
peribit fuga à veloce, & fortis
non obtinebit virtutem ſuam, &
robuſtus non ſalvabit animam
15 ſuam: Et tenens arcum non ſta-
bit, & velox pedibus ſuis non
ſalvabitur, & aſcenſor equi non
16 ſalvabit animam ſuam: Et robu-
ſtus corde inter fortes nudus fu-
giet in illa die, dicit Dominus.

CAP. III.

1 Audite verbum quod locutus
eſt Dominus ſuper vos, filii Iſra-
el: ſuper omnem cognationem,
quam eduxi de terra Ægypti, di-
2 cens; Tantummodò vos cogno-
vi ex omnibus cognationibus ter-
ræ: idcircò viſitabo ſuper vos
3 omnes iniquitates veſtras. Num-
quid ambulabunt duo pariter, niſi
4 convenerit eis. Numquid rugiet
leo in ſaltu, niſi habuerit præ-
dam? numquid dabit catulus leo-
nis vocem de cubili ſuo, niſi ali-
5 quid apprehenderit? Numquid
cadet avis in laqueum terræ abſ-
que aucupe? numquid auferetur
laqueus de terra antequàm quid
ceperit?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

6 Τάδε λέγει κύριος, Ἐπὶ ταῖς τρισὶν ἀσεβεί-
αις Ἰσραήλ, καὶ ἐπὶ ταῖς τέσσαρσιν οὐκ ἀποστρα-
φήσομαι αὐτόν, ἀνθ' ὧν ἀπέδοντο ἀργυρίου
δίκαιον, καὶ πένητα ἕνεκεν ὑποδημάτων,
7 Τὰ πατοῦντα ἐπὶ τὸν χοῦν τῆς γῆς, καὶ ἐκον-
δύλιζον εἰς κεφαλὰς πτωχῶν, καὶ ὁδὸν τα-
πεινῶν ἐξέκλιναν, καὶ υἱὸς καὶ πατὴρ αὐτοῦ εἰσ-
επορεύοντο πρὸς τὴν αὐτὴν παιδίσκην, ὅ-
πως (ϑ) βεβηλῶσι τὸ ὄνομα τοῦ θεοῦ αὐτῶν.
8 Καὶ τὰ ἱμάτια αὐτῶν δεσμεύοντες σχοινίοις,
παραπετάσματα ἐποίουν ἐχόμενα τοῦ θυσι-
αστηρίου, καὶ οἶνον ἐκ συκοφαντιῶν ἔπινον ἐν
9 τῷ οἴκῳ τοῦ θεοῦ αὐτῶν. Ἐγὼ δὲ (ι) ἐξῆρα τὸν
Ἀμορραῖον ἐκ προσώπου αὐτῶν, οὗ ἦν, καθὼς
ὕψος κέδρου, τὸ ὕψος αὐτοῦ, καὶ ἰσχυρὸς ἦν ὡς
δρῦς, καὶ ἐξήρανα τὸν καρπὸν αὐτοῦ (κ) ἐπά-
10 νωθεν, καὶ τὰς ῥίζας αὐτοῦ ὑποκάτωθεν. Καὶ
ἐγὼ ἀνήγαγον ὑμᾶς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ
περιήγαγον ὑμᾶς ἐν τῇ ἐρήμῳ (λ) τεσσαρά-
κοντα ἔτη, τοῦ κατακληρονομῆσαι τὴν γῆν τῶν
11 Ἀμορραίων. Καὶ ἔλαβον ἐκ τῶν υἱῶν ὑμῶν
εἰς προφήτας, καὶ ἐκ τῶν νεανίσκων ὑμῶν εἰς
ἁγιασμόν. μὴ οὐκ ἔστι ταῦτα υἱοὶ Ἰσραήλ;
12 λέγει κύριος. Καὶ ἐποτίζετε τοὺς ἡγιασμέ-
νους οἶνον, καὶ τοῖς προφήταις ἐνετέλλεσθε
13 λέγοντες, Οὐ μὴ προφητεύσητε. Διατοῦτο
ἰδοὺ ἐγὼ (μ) κυλίω ὑποκάτω ὑμῶν, ὃν τρόπον
14 κυλίεται ἡ ἅμαξα ἡ γέμουσα καλάμης. Καὶ
ἀπολεῖται φυγὴ ἐκ δρομέως, καὶ ὁ κραταιὸς
οὐ μὴ κρατήσῃ τῆς ἰσχύος αὐτοῦ, καὶ ὁ (ν) μαχη-
15 τὴς οὐ μὴ σώσῃ τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, Καὶ ὁ τοξό-
της οὐ μὴ ὑποστῇ, καὶ ὁ ὀξὺς τοῖς ποσὶν αὐτοῦ
οὐ μὴ διασωθῇ, (ξ) καὶ ὁ ἱππεὺς οὐ μὴ σώσῃ
16 τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, (ο) Καὶ ὁ κραταιὸς οὐ μὴ εὑ-
ρήσει τὴν καρδίαν αὐτοῦ ἐν δυναστείαις, ὁ
γυμνὸς διώξεται ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, λέγει
κύριος.

Hæc dicit Dominus; Super tri- 6
bus impietatibus Iſrael, & ſu-
per quatuor non averſabor eum;
pro eo quòd vendiderint argento
juſtum, & pauperem propter cal-
ceamenta, Quæ calcant ſuper 7
pulverem terræ: & pugno per-
cutiebant in capita pauperum, &
viam humilium declinabant: &
filius, & pater ejus ingredieban-
tur ad eandem puellam; ut con-
taminarent nomen Dei ſui. Et 8
veſtimenta ſua alligantes funi-
bus, faciebant velamina juxta al-
tare, & vinum de calumniis bi-
bebant in domo Dei ſui. Ego au- 9
tem abſtuli Amorrhæum à facie
eorum, cujus erat ſicut altitudo
cedri, ſublimitas ejus, & fortis
erat, quaſi quercus: & areſeci
fructum ejus deſupèr, & radices
ejus deorſum. Et ego eduxi vos 10
de terra Ægypti, & circundu-
xi vos in deſerto quadraginta
annis; ut poſſideretis terram A-
morrhæorum. Et aſſumpſi de fi- 11
liis veſtris in prophetas, & de
juvenibus veſtris in ſanctificatio-
nem. Nunquid non ſunt hæc, filii
Iſrael? dicit Dominus. Et pro- 12
pinabatis ſanctificatis vinum, &
prophetis mandabatis, dicentes;
Ne prophetetis. Quapropter ecce 13
ego volvo ſubter vos, ſicut volvi-
tur plauſtrum plenum ſtipulâ: Et 14
peribit fuga à curſore: & fortis
non obtinebit fortitudinem ſuam:
& pugnator non ſalvabit animã
ſuam: Et ſagittarius non ſub- 15
ſiſtebit: & velox pedibus ſuis
ſalvari non poterit: & eques non
ſalvabit animã ſuã: (b) Et fortis 16
non inveniet cor ſuũ in potenta-
tibus: nudus (c) perſequetur in
die illa, dicit Dominus.

MS. A. (ϑ) βεβηλώσωσιν (ι) ἐξήγειρα (κ) ἀπάνωθεν, (λ) τεσσεράκοντα (μ) κωλύω (ν) μαχητὴς *, Καὶ ὁ τοξότης (ξ) οὐδὲ ὁ (ο) Καὶ * εὑρήσει τὴν

ΚΕΦ. γʹ.

1 Ἀκούσατε τὸν λόγον τοῦτον, ὃν ἐλάλησε
κύριος ἐφ' ὑμᾶς, οἶκος Ἰσραήλ, καὶ κατὰ πά-
σης φυλῆς, ἧς ἀνήγαγον ἐκ γῆς Αἰγύπτου,
2 λέγων, Πλὴν ὑμᾶς ἔγνων ἐκ πασῶν τῶν
φυλῶν τῆς γῆς, διατοῦτο ἐκδικήσω ἐφ' ὑ-
3 μᾶς πάσας τὰς ἁμαρτίας ὑμῶν. Εἰ πορεύ-
σονται δύο ἐπιτοαυτὸ καθόλου, ἐὰν μὴ
4 γνωρίσωσιν ἑαυτούς; Εἰ ἐρεύξεται λέων
ἐκ τοῦ δρυμοῦ αὐτοῦ θήραν οὐκ ἔχων; εἰ δώσει
σκύμνος φωνὴν αὐτοῦ ἐκ τῆς μάνδρας αὐτοῦ
5 καθόλου, ἐὰν μὴ ἁρπάσῃ τί; Εἰ πεσεῖται
ὄρνεον ἐπὶ τῆς γῆς ἄνευ ἰξευτοῦ; εἰ χα-
λασθήσεται παγὶς ἐπὶ τῆς γῆς ἄνευ τοῦ συλ-
λαβεῖν τί;

CAP. III.

Audite verbum hoc, quod 1
loquutus eſt Dominus ſuper vos,
domus Iſrael, & contra omnem
tribum, quam eduxi de terra
Ægypti, dicens; Veruntamen 2
vos cognovi de univerſis tribu-
bus terræ: idcircò ulciſcar ſu-
per vos omnia (a) peccata ve-
ſtra. Si ambulabunt duo ſimul 3
omninò; niſi (b) cognoverint ſe?
Si ructabit leo de ſaltu ſuo, præ- 4
dam non habens? Si dabit catu-
lus leonis vocem ſuam de cubili
ſuo omninò; niſi aliquid rapue-
rit? Si cadet avis ſuper terram 5
ſine aucupe? Si deponetur laque-
us ſuper terram; niſi aliquid ap-
prehenderit?

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 כדנן אמר יי על תלתא חובי ישראל ועל ארבעא לא אשבוק להון על דזבינו בכספא
7 זכאין וחשיכיא בדיל דיחסנון : דשיטין בעפרא דארעא דריש מסכיניא ודין
8 חשיכיא מסטן וגבר ואבוהי אזלין על עולמתא בדיל לאחלא ית שמא דקודשי : ועל
9 שוין דמשכון מסחרין בסטר כל אגוריהון וחמר אונסא שתן בית טעותהון : ואנא
שציתי ית אמוראה מן קדמיהון דכרום ארזין רומיה וחסין הוא כבלוטין ושציתי
10 אביה מלעלא ושרשוהי מלרע : ואנא אסקית יתכון מארעא דמצרים ודברית יתכון
11 במדברא ארבעין שנין למירת ית ארעא דאמוראה : ואקימית מבניכון לנביאין
12 ומטולסכון למלפין האף לית דא בני ישראל אמר יי : ואטעיתון ית מלפיכון בחמרא
13 ועל נבייא פקדתון למימר לא תתנבון נבואה : הא אנא מיתי עליכון עקא ומעיק
14 לכון באתרכון כמא דעיקא עגלתא דטעינא עמירא : וייבד בית ערוקי מדקליל
15 ודתקיף לא יחסין חיליה וגבר לא ישזיב נפשיה : ואחיד קשתא לא יקום ודקליל
16 ברגליה לא ישתזיב ורכיב סוסיא לא ישזיב נפשיה : ודתקיף לביה בגבריא ערטילא
דלא זין יערוק ביומא ההוא אמר יי :

ג

1 קבילו ית פתגמא הדין די גזר יי עליכון בית ישראל על כל זרעיתא דאסקית מארעא
2 דמצרים למימר : לחוד בכון אתרעיתי מכל זרעית ארעא על כן אסער עליכון ית כל
3 חוביכון : היהכון תרין כחדא אלהן אם אזדמנו : הינהום אריא בחורשא וצידא לית
4 ליה הירים בר אריון קליה ממרבועתיה אלהן אם אחד : התפול צפרא בקולא על
5 ארעא וצידא לית ליה הישור קולא מן ארעא ומחד לא אחד :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sic dicit Dñs, Super tribus ſceleribus Iſrael & ſuper quatuor non condonabo 6
eis culpam, eò quòd vendiderint pro argento juſtos & pauperes, quò opes
poſſideant. Qui contemnunt quaſi pulverem terræ, caput mendicorum, & 7
cauſam obſcurorum pervertunt, & vir ac pater ejus divertunt ad puellam, ut
contaminent nomen ſacroſanctum meum. Atque in lectulis pignoratis ac- 8
cumbunt, juxta omnes aras ſuas, vinúmque rapinæ bibunt in æde idolorum
ſuorum. Licet diſperdiderim Amorrhæum à facie eorum, cujus celſitudo erat 9
qualis altitudo cedrorum, ac ipſe robuſtus erat quaſi quercus; diſperdidi ta-
men fructum ejus ſurſum, & radices ejus deorſum. Ego verò aſcendere vos 10
feci de terra Ægypti, & deduxi vos per deſertum quadraginta annis, ut hæ-
reditario jure terram Amorrhæi caperetis. Et ſuſcitavi de filiis veſtris Pro- 11
phetas, & de juvenibus veſtris Doctores: nunquid non ita eſt filii Iſrael, di-
cit Dominus? Et in errorem impuliſtis Doctores veſtros vino, & Prophetis 12
mandâſtis dicentes, Ne vaticinemini prophetiam. Ecce ego adducam ſuper 13
vos tribulationem quæ coarctabit vos in *loco veſtro*, ſicut coarctatur plauſtrum
manipulis onuſtum. Itáque interibit domus refugii à veloce, & fortis non 14
roborabitur virtute ſua, nec robuſtus ſalvabit animam ſuam. Et arcitenens 15
non conſiſtet, & præpes pedibus ſuis non evadet, nec aſcenſor equorum ſalva-
bit animam ſuam. Nec non cordatus inter fortes, nudus & inermis fugiet in 16
illa die, ait Dominus.

CAP. III.

Suſcipite verbum iſtud quod decrevit contra vos Dominus, filii Iſrael, ad- 1
verſum omnem cognationem quam aſcendere feci de terra Ægypti, dicens:
Tantùm vos elegi de omnibus terræ cognationibus: ideò viſitabo contra vos 2
omnia peccata veſtra. Nunquid unà duo iter facient niſi convenerint? Nun- 3
quid rugiet leo in ſylva, præda illi deficiente? an extollet leonum catulus vo- 4
cem ſuam de accubitu ſuo, niſi apprehenderit? Nunquid cadet avis in la- 5
queum ſuper terram, nullo imminente ei aucupe? nunquid ſolvetur laqueus
de terra, & arripiendo nihil prehenderit?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܬܠܬܐ ܚܛܗܘܗܝ ܕܐܝܣܪܝܠ ܘܥܠ ܐܪܒܥܐ. ܠܐ ܐܗܦܟ ܡܢܗܘܢ. ܥܠ 6
ܕܙܒܢܘ ܒܟܣܦܐ ܙܕܝܩܐ ܀ ܘܡܣܟܢܐ ܡܛܠ ܡܣܢܐ ܕܕܝܫܝܢ ܥܠ ܥܦܪܐ ܕܐܪܥܐ.
* ܘܡܥܩܡܝܢ ܠܡܣܟܢܐ ܀ ܘܐܘܪܚܐ ܕܡܣܟܢܐ ܡܨܠܝܢ. ܘܓܒܪܐ ܘܐܒܘܗܝ ܐܙܠܝܢ ܠܘܬ ܐܢܬܬܐ. 7
ܡܛܠ ܕܢܛܢܦܘܢ ܫܡܐ ܕܩܘܕܫܝ. * ܘܥܠ ܠܒܘܫܐ ܒܚܒܠܐ ܐܣܝܪܝܢ ܗܘܘ. ܥܠ ܓܢܒ ܟܠ 8
ܡܕܒܚ. ܘܚܡܪܐ ܥܬܝܩܐ ܫܬܝܢ ܗܘܘ ܒܒܝܬ ܐܠܗܝܗܘܢ. * ܘܐܢܐ ܐܘܒܕܬ ܠܐܡܘܪܝܐ ܡܢ 9
ܩܕܡܝܗܘܢ ܀ ܕܪܘܡܗ ܐܝܟ ܪܘܡܐ ܕܐܪܙܐ. ܘܚܣܝܢ ܗܘܐ ܐܝܟ ܒܠܘܛܐ. ܘܐܘܒܕܬ ܦܐܪܘܗܝ ܡܢ
ܠܥܠ. ܘܥܩܪܘܗܝ ܡܢ ܠܬܚܬ. * ܘܐܢܐ ܐܣܩܬܟܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ ܀ ܘܕܒܪܬܟܘܢ 10
ܒܡܕܒܪܐ ܐܪܒܥܝܢ ܫܢܝܢ. ܘܐܝܬܝܬܟܘܢ ܠܐܬܪܐ ܗܢܐ ܀ ܠܡܐܪܬ ܐܪܥܐ ܕܐܡܘܪܝܐ. * ܘܐܩܝܡܬ 11
ܡܢ ܒܢܝܟܘܢ ܢܒܝܐ ܀ ܘܡܢ ܓܠܝܡܝܟܘܢ ܢܙܝܪܐ. ܕܠܡܐ ܠܐ ܐܝܬܝܗܝܢ ܗܟܢ ܒܢܝ
ܐܝܣܪܝܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܀ * ܘܐܫܩܝܬܘܢ ܠܢܙܝܪܐ ܚܡܪܐ. ܘܠܢܒܝܐ ܦܩܕܬܘܢ ܕܠܐ ܢܬܢܒܘܢ. 12
* ܗܐ ܐܢܐ ܡܥܝܩ ܐܢܐ ܠܬܚܬܝܟܘܢ ܀ ܐܝܟ ܕܡܥܝܩܐ ܥܓܠܬܐ ܕܡܠܝܐ ܫܒܠܐ. * ܘܢܐܒܕ ܪܗܛܐ 13
ܡܢ ܩܠܝܠܐ. ܘܕܥܫܝܢ ܠܐ ܢܣܝܒܪ ܚܝܠܗ. ܘܕܓܢܒܪ ܠܐ ܢܦܨܐ ܢܦܫܗ. * ܘܩܫܬܐ ܠܐ ܢܩܘܡ. 14 15
ܘܩܠܝܠܐ ܒܪܓܠܘܗܝ ܠܐ ܢܬܦܨܐ. ܘܦܪܫܐ ܠܐ ܢܦܨܐ ܢܦܫܗ. * ܘܕܥܫܝܢ ܠܒܗ ܐܝܟ ܕܓܢܒܪܐ. 16
ܥܪܛܠܝܐ ܢܥܪܘܩ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

* ܫܡܥܘ ܡܠܬܐ ܗܕܐ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ ܥܠܝܟܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ ܀ ܥܠ ܟܠܗ ܫܪܒܬܐ ܕܐܣܩܬ 1
ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܐܡܪܬ ܕܒܪܡ ܠܟܘܢ ܝܕܥܬ ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܀ ܘܡܢ 2
ܟܠܗܘܢ ܫܪܒܬܐ ܕܐܪܥܐ. ܡܛܠܗܢܐ ܐܦܩܘܕ ܥܠܝܟܘܢ ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝܟܘܢ. * ܕܠܡܐ 3
ܐܙܠܝܢ ܬܪܝܢ ܐܟܚܕܐ ܀ ܐܠܐ ܐܢ ܐܫܬܘܝܘ ܀ * ܕܠܡܐ ܢܓܥܐ ܐܪܝܐ ܒܥܒܐ ܀ ܟܕ ܕܠܝܬ ܠܗ 4
ܛܪܦܐ ܀ ܐܘ ܕܠܡܐ ܢܪܝܡ ܩܠܗ ܐܪܝܐ ܡܢ ܡܥܪܬܗ ܀ ܐܠܐ ܐܢ ܐܚܕ. * ܕܠܡܐ ܢܦܠ ܨܦܪܐ 5
ܒܦܚܐ ܕܐܪܥܐ ܀ ܟܕ ܠܝܬ ܡܢ ܨܝܕܐ ܀ ܐܘ ܕܠܡܐ ܢܣܩ ܦܚܐ ܡܢ ܐܪܥܐ ܘܐܚܕ.

Sic dicit Dominus, Propter tria ſcelera Iſraelis, 6
quartum non avertam ab eis. Quia juſtum
pecuniâ vendunt, & pauperem pro calceis
quibus terunt pulverem terræ; Exagitant 7
pauperes, & viam egenorum pervertunt;
& vir cum patre ſuo *eandem* mulierem
adeunt ad contaminandum nomen ſanctitatis
meæ; Super veſtes funibus accingebantur 8
ad latus cujuſlibet altaris; & vinum
vetus bibebant in domo deorum ſuorum:
Quanvis ego perdiderim Amoræum à conſpectu 9
eorum, cujus altitudo par erat altitudini
cedri, & durus erat ut quercus; perdiderim
fructus ejus supernè, & radices ejus infernè:
Et ego eduxerim vos è terra Ægypti, 10
rexerimque vos per deſertum quadraginta
annos, & adduxerim vos ad locum
iſtum, ut poſſideretis terram Amoræorum:
Et ſuſcitaverim è filiis veſtris prophetas, & 11
Nazaræos è juvenibus veſtris. Annon hæc ita
ſunt filii Iſraelis, dicit Dominus? Vos autem 12
Nazaræis bibendum dediſtis vinum, &
prophetis præcepiſtis ne prophetarent: Ecce 13
ego ſub vobis comprimam, ut comprimit
plauſtrum plenum ariſtis: Et peribit curſus 14
à veloci; & qui robuſtus eſt, vires ejus non
ſuſtinebunt; & qui gigas eſt, non eripiet ſeipſum:
Sagittarius non ſubſiſtet, curſu celer 15
non evadet, eques non liberabit ſeipſum:
Et qui generoſus eſt animo ceu gigas, nudus 16
fugiet eo die, dicit Dominus.

CAP. III.

Audite verbum iſtud quod locutus eſt Dominus 1
de vobis filii Iſraelis, de tota familia
quam extraxi de terra Ægypti, Dicendo; 2
Duntaxat vos agnovi ex omnibus gentibus &
ex omnibus terræ nationibus: idcircò viſitabo
in vobis omnia ſcelera veſtra. Num irent 3
duo ſimul, niſi convenirent? An rugiret leo 4
in ſylva, dum nulla adeſſet præda? an attolleret
vocem ſuam leo è luſtro ſuo, niſi prædâ
captâ? Num caderet avis in laqueum in terra 5
ſine aucupe? an exiliret laqueus è terra, &
caperet?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يقول الرب على ثلاث ذنوب اسرايل * وعلى الرابع لا اصرفه عنه * من اجل انهم باعوا 6
الصديق بالفضة * والفقير الماشي على تراب الارض من اجل الاحذية * وقمعوا روس المساكين * 7
وامالوا طريق المتواضعين * وابن وابوه دخلا الى جارية هي بعينها * كي يدنسا ناموس الههم *
* ربطوا ثيابهم بحبال * صنعوا حجابا بجانب المذبح * وشربوا خمرا من المباغي في بيت الههم * 8
* وانا نزعت الاموراني من وجههم * الذي كان كارتفاع الارز ارتفاعه * وقوي كان 9
كالبلوطة * ويبست ثمرته من فوق * واصوله من تحت * وانا اصعدتكم من ارض مصر * 10
واحطت بكم في البرية اربعين سنة * لترثوا ارض الامورانيين * واخذت من ابنائكم 11
انبياء * ومن شبانكم تقديسا * هل هكذا لم تكن يا بني اسرايل يقول الرب *
* وسقيتم المتقدسين خمرا * وامرتم الانبياء قايلين لا تتنبوا * لاجل هذا ها انا امرغ 12 13
تحتكم كما تمرغ العجلة المملوة قصبا * ويهلكون بالهرب من السريع * والقوي لا يبلغ 14
قوته * والمحارب لا يخلص نفسه * ويجد قلبه في مقدرات * والعريان يهرب في ذلك اليوم 16
يقول الرب *

Sic ait Dominus de tribus criminibus Iſraelis, 6
quod autem ad quartum, non avertam
illud ab eo. Quia juſtum pecuniâ
vendiderunt, & pauperem ambulantem
ſuper terræ pulverem, pro calceis. Baculis 7
tutuderunt capita pauperum; & perverterunt
viam humilium: & filius ac pater
ejus ingreſſi ſunt ad puellam eandemmetipſam,
ut profanarent legem Dei ſui:
Veſtes ſuas funibus ligaverunt, fecerunt 8
velum ad latus altaris, & biberunt vinum
ex fallaciis in domo Dei ſui: Quum ego 9
abſtuliſſem Amoræum à conſpectu eorum,
cujus proceritas par erat altitudini cedri,
quique fortis erat ut quercus; & areſeciſſem
fructum ejus ſupernè, & radices
ejus infernè: Ego etiam eduxiſſem vos 10
è terra Ægypti, & circumduxiſſem vos
per deſertum quadraginta annos, ut poſſideretis
terram Amoræorum: Et accepiſſem 11
è filiis veſtris prophetas, &
è juvenibus veſtris ſanctificationem.
Annon hæc fuerunt O filii Iſraelis, ait
Dominus? Vos autem propinâſtis vinum 12
ſanctificatis, & prophetis præcepiſtis
dicentes; Ne vaticinemini: Propterea 13
ecce ego volutor ſubter vos quemadmodum
volutatur plauſtrum plenum arundinibus.
Et peribitis fugientes à celeri, 14
& robuſtus non obtinebit vires ſuas, &
bellator non ſervabit ſeipſum, Imò vix 16
reperiet cor ſuum; & qui nudus fuerit,
fugiet eo die, dicit Dominus.

* الفصل الثالث *

* اسمعوا هذا القول الذي تكلم الرب عليكم به يا بيت اسرايل * وعلى كل القبيلة التي 1
اصعدتها من مصر * قايلا * اياكم عرفت من جميع قبايل الارض * لاجل هذا انتقم منكم 2 3
جميع خطاياكم * اينطلق اثنان معا بالكلية ان لم يعرفا بعضهما بعضا * ايزار الاسد من 4
الغابة اذا لم يكن له فريسة * ايعطي الشبل صوته من عرينه بالكلية ان لم يخطف شيا *
* ايسقط طير على الارض من غير قانص * ايطفر الفخ على الارض من غير ان يضبط شيا * 5

CAP. III.

Audite ſermonem iſtum quem locutus 1
eſt Dominus de vobis O domus Iſraelis,
deque tota familia quam eduxi de terra
Ægypti, Dicens; Vos cognovi ex omnibus 2
terræ gentibus; idcirco ulciſcar à vobis
omnia peccata veſtra. An duo omnino 3
ſimul irent, niſi alter alterũ cognoſceret?
An rugiret leo è ſylva cùm nulla fuerit 4
ei præda? an prorſus ederet leunculus
vocem ſuam è luſtro ſuo, niſi aliquid rapuerit?
An caderet avis ſuper terram ſine 5
aucupe? an reſiliret laqueus ſuper terram,
niſi ceperit aliquid?

עמוס: ד

Num ? *expaveſcent* non populus & ,civitate in tuba clangetur Nunquid
אם־יתקע שופר בעיר ועם לא יחרדו אם 6
non Quia ? fecerit non Dominus & , civitate in malum erit
תהיה רעה בעיר ויהוה לא עשה: כי לא 7
ſuū ſecretum revelaverit niſi ; verbum *Dominus* Dominus faciet
יעשה אדני יהוה דבר כי אם־גלה סודו
? timebit non quis , rugiit Leo .*prophetas* *ſuos ſervos* ad
אל־עבדיו הנביאים: אריה שאג מי לא יירא 8
Promulgate ? prophetabit non quis ,eſt locutus *Dominus* Dominus
אדני יהוה דבר מי לא ינבא: השמיעו 9
: Ægypti terra in ædes ſuper & , Aſdod in ædes ſuper
על־ארמנות באשדוד ועל־ארמנות בארץ מצרים
contritiones videte & ,Someron montes ſuper vos Congregate : dicite &
ואמרו האספו על־הרי שמרון וראו מהומת
neſcierunt Et .ejus medio in oppreſſos & , ejus medio in multas
רבות בתוכה ועשוקים בקרבה: ולא־ידעו 10
prædam & ,*rapinam* *recondentes* : Dominus dixit , rectum facere
עשות־נכחה נאם־יהוה האוצרים חמס ושד
,*tribulatio* ,Deus Dominus dixit ſic Propterea .ſuis ædibus in
בארמנותיהם: לכן כה אמר אדני יהוה צר 11
diripientur &,tuā fortitudinē te à faciet deſcēdere & : *terram* *circum* &
וסביב הארץ והוריד ממך עזך ונבזו
ore de paſtor eruat Quomodo :Dominus dixit Sic .tuæ ædes
ארמנותיך: כה אמר יהוה כאשר יציל הרעה מפי 12
Iſrael filii eruentur ſic : auris *tenerum* vel , crura duo leonis
הארי שתי כרעים או בדל־אזן כן ינצלו בני ישראל
.*ſtrati* angulo *in* & , lecti angulo in Someron in habitantes
הישבים בשמרון בפאת מטה ובדמשק ערש:
Dominus Dominus dixit : Jahacob domo in facite conteſtari & , Audite
שמעו והעידו בבית יעקב נאם־אדני יהוה 13
Iſrael prævaricationes *me viſitare* die in Quia .exercituum Deus
אלהי הצבאות: כי ביום פקדי פשעי־ישראל 14
amputabuntur & , el--Beth altaria ſuper viſitabo *&* : eum ſuper
עליו ופקדתי על־מזבחות בית־אל ונגדעו
domum faciam percutere Et .terram in cadent & , altaris cornua
קרנות המזבח ונפלו לארץ: והכיתי בית־ 15
domus deficient & ,*dentis* domus peribunt & : *æſtatis* domo *ſuper* , *hyemis*
החרף על־בית הקיץ ואבדו בתי השן וספו בתים
.Dominus dixit : multæ
רבים נאם־יהוה:

CAP. IV. ד

,Someron monte in quæ , Baſan vaccæ hoc verbum Audite
שמעו הדבר הזה פרות הבשן אשר בהר שמרון 1
: *ſuis* dominis *dicentes* : *egenos* *allidentes* , pauperes *opprimentes*
העשקות דלים הרצצות אביונים האמרות לאדניהם
DOMINUS Dominus Juravit .bibemus & , *Affer*
הביאה ונשתה: נשבע אדני יהוה 2
vos tollet & : vos ſuper *venientes* dies ecce quia : *ſua ſanctitate in*
בקדשו כי הנה ימים באים עליכם ונשא אתכם
interruptiones Et .*piſcis* *ollis* *in* veſtrā poſteritatem & , ſpinis *in*
בצנות ואחריתכן בסירות דוגה: ופרצים 3
dixit , palatium facietis projicere & : *eam* contra unaquæque exibitis
תצאנה אשה נגדה והשלכתנה ההרמונה נאם־
, Ghilghal prævaricamini & , el---Beth Venite .DOMINUS
יהוה: באו בית־אל ופשעו הגלגל 4
tribus , veſtra ſacrificia manè afferte & : *prævaricandū ad* multiplicate
הרבו לפשע והביאו לבקר זבחיכם לשלשת
.veſtras decimas diebus
ימים מעשרתיכם:

Verſio VULG. LAT.

6 Si clanget tuba in civitate, & populus non expaveſcet? ſi erit malum in civitate, quod Dominus
7 non fecerit? Quia non facit Dominus Deus verbum, niſi revelaverit ſecretū ſuum ad ſervos ſuos
8 prophetas. Leo rugiet, quis non timebit? Dominus Deus locutus
9 eſt, quis non prophetabit? Auditum facite in ædibus Azoti, & in ædibus terræ Ægypti: & dicite; Congregamini ſuper montes Samariæ, & videte inſanias multas in medio ejus, & calumniam
10 patientes in penetralibus ejus. Et neſcierunt facere rectū, dicit Dominus, theſaurizantes iniquitatem
11 & rapinas in ædibus ſuis. Propterea hæc dicit Dominus Deus; Tribulabitur, & circuietur terra: & detrahetur ex te fortitudo tua,
12 & diripientur ædes tuæ. Hæc dicit Dominus; Quomodò ſi eruat paſtor de ore leonis duo crura, aut extremum auriculæ: ſic eruentur filii Iſrael, qui habitant in Samaria in plaga lectuli, & in
13 Damaſci grabato. Audite, & conteſtamini in domo Jacob, dicit Dominus Deus exercituum:
14 Quia in die cùm viſitare cœpero prævaricationes Iſrael, ſuper eum viſitabo, & ſuper altaria Bethel: & amputabuntur cornua
15 altaris, & cadent in terram. Et percutiam domum hyemalem cū domo æſtiva: & peribunt domus eburneæ, & diſſipabuntur ædes multæ, dicit Dominus.

CAP. IV.

1 Audite verbū hoc, vaccæ pingues, quæ eſtis in monte Samariæ: quæ calumniam facitis egenis, & confringitis pauperes: quæ dicitis dominis veſtris; Afferte, &
2 bibemus. Juravit Dominus Deus in Sancto ſuo: quia ecce dies venient ſuper vos, & levabunt vos in contis, & reliquias veſtras in
3 ollis ferventibus. Et per aperturas exibitis altera contra alteram, & projiciemini in Armon, dicit
4 Dominus. Venite ad Bethel, & impiè agite: ad Galgalam, & multiplicate prævaricationem: & afferte manè victimas veſtras, tribus diebus decimas veſtras.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Εἰ φωνήσει σάλπιγξ ἐν πόλει, καὶ λαὸς οὐ πτοηθήσεται; εἰ ἔσται κακία ἐν πόλει ἣν
7 κύριος οὐκ ἐποίησεν; Διότι οὐ μὴ ποιήσῃ κύριος ὁ θεὸς πρᾶγμα, ἐὰν μὴ ἀποκαλύψῃ παιδείαν(˜) πρὸς τοὺς δούλους αὐτοῦ τοὺς
8 προφήτας. Λέων ἐρεύξεται, καὶ τίς οὐ φοβηθήσεται; κύριος ὁ θεὸς ἐλάλησε, καὶ
9 τίς οὐ προφητεύσει; Ἀναγγείλατε χώραις ἐν Ἀσσυρίοις, καὶ ἐπὶ τὰς χώρας (α) τῆς Αἰγύπτου, καὶ εἴπατε, Συνάχθητε ἐπὶ τὸ ὄρος Σαμαρείας, καὶ ἴδετε θαυμαστὰ πολλὰ ἐν μέσῳ αὐτῆς, (β) καὶ καταδυναστείαν
10 τὴν ἐν αὐτῇ. Καὶ οὐκ ἔγνω ἃ ἔσται (γ) ἐναντίον αὐτῆς, λέγει κύριος, οἱ θησαυρίζοντες ἀδικίαν καὶ ταλαιπωρίαν ἐν ταῖς
11 χώραις αὐτῶν. Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς, Τύρος κυκλόθεν ἡ γῆ σου ἐρημωθήσεται, καὶ κατάξει ἐκ σοῦ ἰσχύν σου, καὶ διαρπαγήσονται αἱ χῶραί σου.
12 Τάδε λέγει κύριος, Ὃν τρόπον ὅταν ἐκσπάσῃ ὁ ποιμὴν ἐκ στόματος τοῦ λέοντος δύο σκέλη ἢ λοβὸν ὠτίου, οὕτως ἐκσπασθήσονται οἱ υἱοὶ Ἰσραὴλ οἱ κατοικοῦντες ἐν Σαμαρείᾳ κατέναντι (δ) τῆς φυλῆς, καὶ ἐν
13 Δαμασκῷ. Ἱερεῖς ἀκούσατε, καὶ ἐπιμαρτύρασθε τῷ οἴκῳ Ἰακὼβ, λέγει κύριος ὁ θεὸς ὁ
14 παντοκράτωρ. Διότι ἐν τῇ ἡμέρᾳ ὅταν (ε) ἐκδικῶ ἀσεβείας τοῦ Ἰσραὴλ ἐπ᾽ αὐτὸν, καὶ ἐκδικήσω ἐπὶ τὰ θυσιαστήρια Βαιθήλ· καὶ κατασκαφήσεται τὰ κέρατα τοῦ θυσιαστη-
15 ρίου, καὶ πεσοῦνται ἐπὶ τὴν γῆν. Συγχεῶ καὶ πατάξω τὸν οἶκον τὸν περίπτερον ἐπὶ τὸν οἶκον τὸν θερινὸν, καὶ ἀπολοῦνται οἶκοι ἐλεφάντινοι, καὶ προστεθήσονται (ζ) ἕτεροι οἶκοι πολλοὶ, λέγει κύριος.

Si clanget tuba in civitate, & populus non timebit? Si erit (c) malitia in urbe, quam Dominus non fecit? Quia non faciet 7 *Dominus Deus aliquid, niſi revelaverit (d) eruditionem [ſuam] ad ſervos ſuos prophetas. Leo* 8 *ructabit: & quis non timebit? Dominus Deus loquutus eſt: & quis non prophetabit? Annuntiate* 9 *regionibus in Aſſyriis, & ad regiones Ægypti, & dicite; Congregamini ſuper montem Samariæ: & videte mirabilia multa in medio ejus, & oppreſſionem, (e) quæ in ea. Et ignoravit,* 10 *quæ futura ſint coram ea, dicit Dominus: qui theſaurizant iniquitatem, & (f) miſeriam in regionibus ſuis. Propterea hæc* 11 *dicit Dominus Deus; (g) Tyrus, in circuitu terra tua deſerta erit: & detrahet de te fortitudinem tuam: & diripientur regiones tuæ. Hæc dicit Dominus;* 12 *Quomodò ſi avellat paſtor de ore leonis duo crura, aut extremum auriculæ; ſic avellentur filii Iſrael, qui habitant in Samaria contra tribum, & in Damaſco. (h) Sacerdotes, audite, &* 13 *conteſtamini domum Jacob, dicit Dominus Deus omnipotens. Quia in die, quâ ulciſcar impietates* 14 *Iſrael ſuper eum; ulciſcar & ſuper altaria Bæthel. Et ſuffodientur cornua altaris, & cadent ſuper terram. Confundam,* 15 *& percutiam domum (i) pinnatam ſuper domum æſtivam: & peribunt domus eburneæ: & adjicientur domus aliæ multæ, dicit Dominus.*

MS. A. (˜) αὐτοῦ πρὸς (α) Αἰγύπτου, (β) καὶ τὴν καταδυναστείαν (γ) ἐν αὐτῇ, λέγει (δ) φυλῆς, (ε) ἐκδικήσω ἀσέβειαν (ζ) οἶκοι ἕτεροι πολλοί,

ΚΕΦ. Δ'.

1 Ἀκούσατε τὸν λόγον τοῦτον δαμάλεις τῆς Βασανίτιδος, αἱ ἐν τῷ ὄρει τῆς Σαμαρείας, αἱ καταδυναστεύουσαι (α) πτωχοὺς, καὶ καταπατοῦσαι (β) πένητας, αἱ λέγουσαι τοῖς κυρίοις αὐτῶν, Ἐπίδοτε ἡμῖν ὅπως
2 πίωμεν. Ὀμνύει κύριος κατὰ τῶν ἁγίων αὐτοῦ, (γ) διότι ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται ἐφ᾽ ὑμᾶς, καὶ λήψονται ὑμᾶς ἐν ὅπλοις, καὶ τοὺς μεθ᾽ ὑμῶν εἰς (δ) λέβητας ὑποκαιομένους
3 ἐμβαλοῦσιν ἔμπυροι λοιμοὶ, Καὶ ἐξενεχθήσεσθε γυμναὶ κατέναντι ἀλλήλων, καὶ ἀπορριφήσεσθε εἰς τὸ ὄρος τὸ (ε) Ῥομμὰν,
4 λέγει κύριος. Εἰσήλθατε εἰς Βαιθὴλ, καὶ (ζ) ἠσεβήσατε, καὶ εἰς Γάλγαλα ἐπληθύνατε τοῦ ἀσεβῆσαι· καὶ ἠνέγκατε εἰς τὸ πρωῒ θυσίας ὑμῶν, εἰς τὴν τριημερίαν τὰ ἐπιδέκατα ὑμῶν.

CAP. IV.

Audite verbum, hoc (a) vaccæ 1 *Baſanitidis, quæ eſtis in monte Samariæ, quæ opprimitis pauperes, & conculcatis egenos, quæ dicitis dominis veſtris, Date nobis, ut bibamus. Jurat Dominus* 2 *per (b) Sanctos ſuos, quoniam ecce dies veniunt ſuper vos: & tollent vos in (c) armis, & eos, qui vobiſcum ſunt, (d) in ollas ſuccenſas injicient, (e) ferventes, peſtilentes: Et ejiciemini* 3 *nudæ contra invicem: et projiciemini in montem (f) Remman, dicit Dominus. Intraſtis in* 4 *Bæthel, et impie egiſtis: et in Galgala multiplicaſtis impiè agere: & intuliſtis manè hoſtias veſtras, in (g) triduum decimas veſtras.*

MS.A. (α) πένητας, (β) πτωχοὺς, (γ) ὅτι (δ) λέβητας ἔμπυροι (ε) Ῥεμμὰν, λέγει κύριος ὁ θεός. (ζ) ἠνομήσατε,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

אם יתקע שופרא בקרתא בלא זמניה ועמא די בה לא יזועון אם תהי בישתא בקרתא 6
ומן קדם יי לא אתעבדת: ארי לא כשרין פתגמין דמתעבדין מן קדם יי אלהים אלהן 7
גלא רזיה לעבדוהי נבייא: אריה נהים מן לא ידחל יי אלהים מליל מן לא יקביל 8
נבואתא: בסרו על ברנית באשדוד ועל ברנית בארעא דמצרים ואמרו אתכנשו 9
על טורי שמרון וחזו שגושיא סגיאן בגוה ואנוסין בגוה: ולא ידעין למעבד אוריתא 10
אמר יי די מלן אוצריהון חטוף ובוזא בברניתהון: בכן כדנן אמר יי אלהים עקא 11
תקיפא לארעא ויבטל מניך תוקפיך ויתבזון ברניתיך: כדנן אמר יי כמא דמשויב רעיא 12
מפומא דאריא תרתין כרעין או חסחוס דאודן כן ישתזבון בני ישראל דיתבין
בשמרון בתקוף שולטן ועל דמשק רחיצין: קבילו ואסהידו בבית יעקב אמר יי 13
אלהים אלהי צבאות: ארי ביום אסערותי חובי ישראל עלוהי ואסער על דפלחין 14
לאגוריא בבית אל ויתקטפן קרנת אגורא ויפלון לארעא: ואמחי בית סתוא על בית 15
קיטא ויבדון בתין דמכבשין בשן דפיל ויסופון בתין סגיאין אמר יי:

ד

קבילו פתגמא הדין עתירי נכסיא דבטורא דשמרון דעשקין מסכניא ואנסין חשכיא 1
דאמרין לרבוניהון אשלטונא ונבוז: קים יי אלהים במימריה בקודשיה ארי הא יומיא 2
אתן עליכון ויטלון יתכון עממיא על תריסהון ובנתכון בדוגית צידין: ויתרעון 3
עליכון שורא ויפקון יתכון כנישין גבר לקבליה ויגלון יתהון להלאה מן טורי הרמיני
אמר יי: אתו לבית אל ומרדו בגלגלא אסגיאו למחטי ומיתן לצפרא דבחיכון לתלתא 4
יומין מעשרתכון:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

An clangetur tuba in civitate extra ſuum tempus; quin popul⁹ qui in ea eſt, non 6 contremiſcat? num erit afflictio in civitate, quæ à Domino non ſit facta? Quo- 7 niam haud rectè res fieri Dño Deo viderentur, niſi revelaret ſecretum ſuum ſervis ſuis prophetis. Leone rugiente quis non timebit? Dño Deo loquente 8 quis non ſuſcipiet prophetiam? Annuntiate in palatiis Azoti & in prætoriis 9 terræ Ægypti, & dicite: Congregamini ſuper montes Samariæ, & videte conturbationes ingentes in medio ejus, & oppreſſores intra eam. Certè neſciunt 10 exequi legem, ait Domin⁹, cùm impleant cellaria ſua rapina, atque prædam in ædib⁹ ſuis [*recondant*] Quamobrem ſic dicit Dñs De⁹: Tribulatio gravis erit in 11 terra, quæ abolebit à te fortitudinem tuam, & ædes tuæ diripientur. Hæc dicit 12 Domin⁹: Quemadmodum erueret paſtor de ore leonis duo crura, aut extremum auriculæ: ſic liberabuntur filii Iſrael qui habitant in Samaria, in fortitudine poteſtatis, & in Damaſco innitentes. Audite & proteſtamini in domo Ja- 13 hacob, ait Domin⁹ De⁹ exercituum. Quia in die qua viſitavero peccata Iſrael 14 contra eum, viſitabo quoque ſuper colentes in altaribus Bethel, & ſuccidentur cornua *altaris*, & cadent in terram. Et percutiam domum hyemalem cum do- 15 mo æſtivali, & peribunt domus quæ ſtratæ ſunt ebore, & diſſipabuntur domus multæ, ait Dominus.

CAP. IV.

Audite ſententiam iſtam divites ſubſtantiarum qui eſtis in monte 1 Samariæ, qui vim infertis egenis, opprimitiſque pauperes: qui dicunt principibus ſuis: *Facite nobis poteſtatem*, ut diripiamus. Juravit Dominus 2 Deus *in verbo ſuo* per ſanctitatem ſuam, quòd ecce dies venient ſuper vos & tollent vos populi ſuper ſcuta ſua, & filias veſtras in ſcapha piſcatorum. Et confringent ſuper vos murum, & educent vos *collectos* ſingula- 3 tim ante ſe, & transferent vos ultra montes Armeniæ, dicit Dominus. Venerunt 4 ad Bethel, & prævaricati ſunt; in Galgal multiplicarunt peccare, ſed offertis manè victimas veſtras, in tribus diebus decimas veſtras.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܐܢ ܢܬܩܥ ܫܝܦܘܪܐ ܒܡܕܝܢܬܐ. ܘܥܡܐ ܠܐ ܙܐܥ. ܐܘ ܬܗܘܐ ܒܝܫܬܐ 6
ܒܡܕܝܢܬܐ ܕܡܪܝܐ ܠܐ ܥܒܕܗ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܥܒܕ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܡܕܡ. ܐܠܐ ܐܢ ܓܠܐ ܐܪܙܗ 7
ܠܥܒܕܘܗܝ ܢܒܝܐ. * ܐܪܝܐ ܢܗܡ ܡܢ ܠܐ ܢܕܚܠ. ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܡܠܠ ܡܢ ܠܐ ܢܬܢܒܐ. * ܐܫܡܥܘ 8
ܥܠ ܒܝܪܬܗ ܕܐܫܕܘܕ. ܘܥܠ ܒܝܪܬܗ ܕܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܐܡܪܘ. ܐܬܟܢܫܘ ܟܠܟܘܢ ܠܛܘܪܐ 9
ܕܫܡܪܝܢ. ܘܚܙܘ ܕܘܘܕܐ ܣܓܝܐܐ ܕܒܓܘܗ. ܘܡܥܫܘܩܝܐ ܕܒܗ. * ܘܠܐ ܝܕܥܝܢ ܠܡܥܒܕ 10
ܡܟܣܢܘܬܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܣܝܡܝܢ ܚܛܘܦܝܐ ܘܒܙܬܐ ܒܒܝܪܬܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ 11
ܡܪܝܐ. ܐܘܠܨܢܐ ܢܚܕܪܝܗ ܠܐܪܥܐ. ܘܢܚܘܬ ܡܢܗ ܥܘܫܢܗ. ܘܢܬܒܙܙܢ ܒܝܪܬܗ. * ܗܟܢܐ 12
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܕܡܦܨܐ ܪܥܝܐ ܡܢ ܦܘܡܗ ܕܐܪܝܐ. ܬܪܬܝܢ ܟܪܥܝܢ ܐܘ ܚܪܘܦܐ ܕܐܕܢܐ. ܗܟܢܐ
ܢܬܦܨܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܐܝܠ ܕܝܬܒܝܢ ܒܫܡܪܝܢ. ܒܫܘܒܛܐ ܕܡܢ ܫܠܝ ܘܒܥܡܐ ܕܡܢ ܕܪܡܣܘܩ.
* ܫܡܥܘ ܘܐܣܗܕܘ ܒܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ. 13
* ܡܛܠ ܕܒܝܘܡܐ ܕܦܩܕ ܐܢܐ ܥܘܠܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ ܥܠܘܗܝ. ܐܦܩܘܕ ܥܠ ܡܕܒܚܐ ܕܒܝܬ 14
ܐܝܠ. ܘܢܬܦܣܩܢ ܩܪܢܬܗ ܕܡܕܒܚܐ. ܘܢܦܠܢ ܥܠ ܐܪܥܐ. * ܘܐܥܩܘܪ ܒܝܬ ܣܬܘܐ ܥܡ 15
ܒܝܬ ܩܝܛܐ. ܘܢܐܒܕܘܢ ܒܬܐ ܕܫܢܐ. ܘܢܫܬܦܩܘܢ ܒܬܐ ܣܓܝܐܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ * * ܫܡܥܘ ܦܬܓܡܐ ܗܢܐ ܬܘܪܬܐ ܕܡܬܢܢ. 1
ܕܒܛܘܪܐ ܕܫܡܪܝܢ. ܕܥܫܩܢ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܡܟܟܢ ܠܒܝܫܐ. ܘܐܡܪܢ ܠܡܪܘܬܗܝܢ. ܐܝܬܘ
ܠܢ ܢܫܬܐ. * ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܒܩܘܕܫܗ. ܕܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܥܠܝܟܝܢ. 2
ܘܢܫܩܠܘܢܟܝܢ ܒܙܝܢܐ. ܘܚܪܬܟܝܢ ܒܩܕܣܐ ܕܨܝܕܐ. * ܘܠܬܘܪܥܬܐ ܬܦܩ ܐܢܬܬܐ 3
ܠܘܩܒܠܗ. ܘܢܫܬܕܝܢ ܠܛܘܪܐ ܕܐܪܡܢܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܥܘܠܘ ܠܒܝܬ ܐܝܠ. ܘܐܥܘܠܘ 4
ܘܠܓܠܓܠܐ ܐܣܓܝܘ ܠܡܥܘܠ. ܐܝܬܘ ܒܨܦܪܐ ܕܒܚܝܟܘܢ. ܘܠܬܠܬܐ ܝܘܡܝܢ ܡܥܣܪܝܟܘܢ.

Num clangeretur buccina in urbe, & populus non trepidaret? an contingeret calamitas 6
in urbe, quam Dominus non cauſaret? Neq; 7
enim facit Dominus dominorum quicquam,
niſi cùm revelaverit ſecretum ſuum ſervis ſuis
prophetis. Leo rugivit, quis non paveat? 8
Dominus dominorum locutus eſt, quis non
prophetet? Promulgate ſuper palatia Aſ- 9
dodis, & ſuper palatia terræ Ægypti, ac dicite;
Congregamini omnes ad montem Samariæ,
& videte tumultum plurimum qui in ea
eſt, & oppreſſionem quæ eſt in ipſa: Attamen 10
ignorant arguere, dicit Dominus, & violentiam
rapinamque condunt in palatiis ſuis.
Etenim ſic dicit Dominus; Anguſtia circundabit 11
terram, & labetur ex ea robur ejus, &
diripientur palatia ejus. Sic dicit Dominus;
Quemadmodum eruit paſtor ex ore leonis duo 12
crura aut extremum auris, ita vindicabuntur
filii Iſraelis qui commorantur in Samaria, baculo
ſubitò & populo Damaſceno. Audite, 13
& teſtamini in domo Jacobi, dicit Dominus
dominorum potentiſſimus, Deus Iſraelis;
Quòd quâ die viſitabo ſcelus Iſraelis contra 14
ipſum, viſitabo altaria Beth-il, & reſecabuntur
cornua altarium, & cadent in terram:
Et deſtruam ædem hyemalem cum æde æſtivali: 15
& peribunt domus eburneæ, & deficient
domus permultæ, dicit Dominus.

CAP. IV.

Audite verbū iſtud O vaccæ Baiſanis, quæ 1
eſtis in monte Samariæ, quæ opprimitis pauperes,
vexatis egenos, & dicitis dominis veſtris,
Afferte nobis ut bibamus. Juravit Dominus 2
dominorum per ſanctitatem ſuam, quòd
ecce dies ſupervenient vobis, quibus tollent
vos armis, & finē veſtrum cacabo piſcatorū:
Et ad rupturam accurret mulier *quæque* ante 3
ſe, projicientque ſe ad montem Armeniæ, dicit
Dominus. Ingredimini in Beth-el, & per- 4
fidè agite; & in Galgala multiplicate perfidiam:
afferte manè ſacrificia veſtra, & tertio
quoque die decimas veſtras.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

6 * أيصوت بوق في مدينة ولا يهلع الشعب. أيكون بلاء في مدينة لم يصنعه الرب * من 7
أجل انه لا يصنع الرب الاله امرا ان لم يكشف التأديب لعبيده الانبياء * الاسد يزار فمن 8
ذا لا يخاف * الرب الاله تكلم فمن ذا لا يتنبى * اخبروا الكور في الموصليين وعلى كور 9
مصر * وقولوا اجتمعوا على جبل سامرة * وانظروا عجايب كثيرة في وسطها * والتسلط
الذي فيها * ولم تعلم ما يكون امامها يقول الرب * الذين يكنزون ظلما وشقوة في 10
كورهم * لاجل هذا هكذا يقول الرب الاله * يا صور والارض التي من حولك تخرب * ويزول 11
عنك قوتك * وتختطف كورك * هكذا يقول الرب * كما يخرج الراعي من فم الاسد ساقين 12
او شحمة اذن * هكذا يخرجون بنو اسرائيل السكان في سامرة * امام القبيلة التي بدمشق *
13 * اسمعوا ايها الكهنة * واشهدوا البيت يعقوب يقول الرب الاله الضابط الكل * من اجل انه 14
في اليوم اذ اقضي بنفاق اسرائيل عليه * واقضي على مذابح بيت ايل * ويهدم قرون
المذبح * ويسقط على الارض * اخلط واضرب البيت الشتوي على البيت الصيفي * وتهلك 15
البيوت العاجية * ويستزاد بيوت اخر كثيرة يقول الرب *

* الفصل الرابع * * الاصحاح التاسع * وهو الثاني من النبوة *

* اسمعوا هذا القول يا جودرات البيسانية اللاتي في جبل سامرة * المغويات على الفقير * 1
والدايسات المساكين القايلات لاربابهن * اعطونا كي نشرب * يقسم الرب بقديسيه 2
من اجل انه ها ايام تأتي عليكم * ويأخذونكم بالاسلحة والذين معكم * المحرقون
المفسدون في المراجل * وتساقون عراة تجاه بعضكم البعض * وتطرحون على جبل الرامة 3
يقول الرب الاله * دخلتم الى بيت ايل واثمتم * والى الجلجال اكثرتم لتنافقوا * وقدمتم 4
بالغداة ذبائحكم * لثلاثة ايام اعشاركم *

*An ſonum ederet buccina in urbe, & 6
non extimeret populus? an accideret infortunium
in urbe, quod non fecerit Dominus?
Non enim facit Dominus Deus 7
quicquam, niſi revelaverit punitionem
ſervis ſuis prophetis. Leone rugiente quis 8
non formidet? Domino Deo loquente
quis non vaticinetur? Annuntiate regi- 9
onibus inter Aſſyrios, & regionibus Ægypti,
ac dicite; Congregamini ſuper
montem Samariæ, & videte miracula
multa in medio ejus, & tyrannidem quæ
in ipſa eſt: Attamen ignorat quid futu- 10
rum ſit ante ipſam, dicit Dominus: qui
theſaurizant impietatem & miſeriam
in regionibus ſuis. Propterea ſic ait Do- 11
minus Deus; O Tyre, ut & terra quæ
circa te eſt, vaſtaberis; abſcedet à te
robur tuum, & regiones tuæ diripientur.
Sic ait Dominus, Quemadmodum ex- 12
trahit paſtor ex ore leonis duo crura,
aut auris auriculam, ita extrahentur filii
Iſraelis habitantes in Samaria coram
familia quæ eſt in Damaſco. Audite O 13
ſacerdotes, & conteſtamini domum Jacobi,
dicit Dominus Deus omnitenens:
Quòd eo die quo judicavero impieta- 14
tem Iſraelis adverſùs eum, judicabo
etiam altaria Beth-il, & deſtruentur
cornua altaris, & corruent ſuper ter- 15
ram: Confundam & allidam domum
hyemalem ad domum æſtivam; & peribunt
domus eburneæ, & adjicientur domus
aliæ permultæ, dicit Dominus.*

CAP. IV.

Textus nonus, hujus autem Prophetiæ ſecundus.

*Audite ſermonem iſtum O juvencæ 1
Baſanitides quæ eſtis in monte Samariæ,
quæ vim infertis inopi, quæ conculcatis
pauperes, quæ dicitis dominis veſtris,
Date nobis ut bibamus. Juravit 2
Dominus per ſanctos ſuos, quòd
ecce dies venturi ſunt ſuper vos, quibus
capient vos armis & eos qui vobiſcum
ſunt, qui comburunt, qui corrumpunt in
lebetibus: Et nudi abducemini alter 3
coram altero, & projiciemini ſuper
montem Ramæ, dicit Dominus Deus. In- 4
greſſi eſtis in Beth-il, & crimen commiſiſtis,
& in Galgale multiplicâſtis impiè
agere: obtuliſtis manè victimas veſtras,
tertio quoque die decimas veſtras:*

עמוס : ד

: promulgate voluntaria , vocate & ,confeſſionem fermento de adole Et
5 וְקַטֵּר מֵחָמֵץ תּוֹדָה וְקִרְאוּ נְדָבוֹת הַשְׁמִיעוּ
etiam Et .Dominus Dominus dixit , Iſrael filii dilexiſtis ſic quia
6 כִּי כֵן אֲהַבְתֶּם בְּנֵי יִשְׂרָאֵל נְאֻם אֲדֹנָי יְהוִה : וְגַם
defectum & ,veſtris urbibus cunctis in dentium munditiē vobis dedi ego
אֲנִי נָתַתִּי לָכֶם נִקְיוֹן שִׁנַּיִם בְּכָל־־עָרֵיכֶם וְחֹסֶר
dixit ,me ad eſtis reverſi non & : veſtris locis cunctis in panis
לֶחֶם בְּכֹל מְקוֹמֹתֵיכֶם וְלֹא־שַׁבְתֶּם עָדַי נְאֻם־
adhuc in , imbrem vobis à prohibui ego etiam Et .Dominus
7 יְהוָה : וְגַם אָנֹכִי מָנַעְתִּי מִכֶּם אֶת־הַגֶּשֶׁם בְּעוֹד
,unam civitatem ſuper faciam pluere & ,meſſem ad menſes tres
שְׁלֹשָׁה חֳדָשִׁים לַקָּצִיר וְהִמְטַרְתִּי עַל־־עִיר אֶחָת
,compluetur una pars : faciam pluere non unam civitatem ſuper &
וְעַל־־עִיר אַחַת לֹא אַמְטִיר חֶלְקָה אַחַת תִּמָּטֵר
ſe movebunt Et .areſcet , eam ſuper pluet non quam pars &
8 וְחֶלְקָה אֲשֶׁר־לֹא־תַמְטִיר עָלֶיהָ תִּיבָשׁ : וְנָעוּ
non & ,aquam bibendum ad ,unam civitatem ad civitates tres duæ
שְׁתַּיִם שָׁלֹשׁ עָרִים אֶל־עִיר אַחַת לִשְׁתּוֹת מַיִם וְלֹא
Percuſſi .Dominus dixit ,me ad eſtis reverſi non & : ſatiabuntur
9 יִשְׂבָּעוּ וְלֹא־שַׁבְתֶּם עָדַי נְאֻם־יְהוָה : הִכֵּיתִי
,veſtras vineas &,veſtros hortos multiplicando,rubigine in &,uredine in vos
אֶתְכֶם בַּשִּׁדָּפוֹן וּבַיֵּרָקוֹן הַרְבּוֹת גַּנּוֹתֵיכֶם וְכַרְמֵיכֶם
,me ad rediſtis non & : Ghazam comedet veſtra oliveta & ,veſtra ficeta &
וּתְאֵנֵיכֶם וְזֵיתֵיכֶם יֹאכַל הַגָּזָם וְלֹא־שַׁבְתֶּם עָדַי
, Ægypti via in peſtilentiam vos in Miſi .Dominus dixit
10 נְאֻם־יְהוָה : שִׁלַּחְתִּי בָכֶם דֶּבֶר בְּדֶרֶךְ מִצְרַיִם
: veſtrorum equorum captivitate cum ,veſtros electos gladio in occidi
הָרַגְתִּי בַחֶרֶב בַּחוּרֵיכֶם עִם שְׁבִי סוּסֵיכֶם
non & ; veſtrum naſum in & veſtrorum caſtrorum fœtorem feci aſcendere &
וָאַעֲלֶה בְּאֹשׁ מַחֲנֵיכֶם וּבְאַפְּכֶם וְלֹא־
ſubverſionem ſecundum vos in Subverti .Dominus dixit ,me ad rediſtis
11 שַׁבְתֶּם עָדַי נְאֻם־יְהוָה : הָפַכְתִּי בָכֶם כְּמַהְפֵּכַת
erutus torris ſicut fuiſtis & ,Hamorah & , Sedom Dei
אֱלֹהִים אֶת־סְדֹם וְאֶת־עֲמֹרָה וַתִּהְיוּ כְּאוּד מֻצָּל
ſic Quapropter .Dominus dixit ,me ad rediſtis non & : incendio de
12 מִשְּׂרֵפָה וְלֹא־שַׁבְתֶּם עָדַי נְאֻם־יְהוָה : לָכֵן כֹּה
teipſum præpara ,tibi faciam hoc quod eo pro : Iſrael tibi faciam
אֶעֱשֶׂה־לְּךָ יִשְׂרָאֵל עֵקֶב כִּי־זֹאת אֶעֱשֶׂה־לָּךְ הִכּוֹן
creans & ,montes formans ecce Quia .Iſrael tui Dei occurſum in
13 לִקְרַאת־אֱלֹהֶיךָ יִשְׂרָאֵל : כִּי הִנֵּה יוֹצֵר הָרִים וּבֹרֵא
,auroram faciens ,ejus meditatio quid homini annuntians & ,ventum
רוּחַ וּמַגִּיד לְאָדָם מַה־־־שֵּׂחוֹ עֹשֵׂה שַׁחַר
Deus Dominus : terræ excelſa ſuper calcans & ; obſcuritatem
עֵיפָה וְדֹרֵךְ עַל־בָּמֳתֵי אָרֶץ יְהוָה אֱלֹהֵי־
.ejus nomen exercituum
צְבָאוֹת שְׁמוֹ :

CAP. V. ה

lamentum vos ſuper tollens ego quod ,hoc verbum Audite
1 שִׁמְעוּ אֶת־הַדָּבָר הַזֶּה אֲשֶׁר אָנֹכִי נֹשֵׂא עֲלֵיכֶם קִינָה
: Iſrael virgo ſurgere addet non ,Cecidit .Iſrael domus
2 בֵּית יִשְׂרָאֵל : נָפְלָה לֹא־תוֹסִיף קוּם בְּתוּלַת יִשְׂרָאֵל
dixit ſic Quia .eam ſuſcitans non ,ſuam humum ſuper eſt derelicta
3 נִטְּשָׁה עַל־אַדְמָתָהּ אֵין מְקִימָהּ : כִּי כֹה אָמַר
: centum faciet dimittere ,mille prodiens Urbe : Dominus Dominus
אֲדֹנָי יְהוִה הָעִיר הַיֹּצֵאת אֶלֶף תַּשְׁאִיר מֵאָה
Quia .Iſrael domui decem faciet relinquere ,centum prodiens &
4 וְהַיּוֹצֵאת מֵאָה תַּשְׁאִיר עֲשָׂרָה לְבֵית יִשְׂרָאֵל : כִּי
.vivetis & ,me Quærite : Iſrael domui Dominus dixit ſic
כֹה אָמַר יְהוָה לְבֵית יִשְׂרָאֵל דִּרְשׁוּנִי וִחְיוּ :

Verſio VULG. LAT.

5 Et ſacrificate de fermentato laudem: & vocate voluntarias oblationes,& annuntiate: ſic enim voluiſtis,filii Iſrael,dicit Dñs De⁹.
6 Unde & ego dedi vobis ſtuporem dentium in cunctis urbibus veſtris, & indigentiam panum in omnibus locis veſtris: & non eſtis reverſi ad me, dicit Dominus.
7 Ego quoque prohibui à vobis imbrem, cùm adhuc tres menſes ſupereſſent uſque ad meſſem: & plui ſuper unam civitatem,& ſuper alteram civitatem non plui: pars una compluta eſt; & pars,
8 ſuper quam non plui, aruit. Et venerunt duæ & tres civitates ad unam civitatẽ ut biberent aquã, & non ſunt ſatiatæ: & non rediſtis ad me, dicit Dominus.
9 Percuſſi vos in vento urente, & in aurugine, multitudinem hortorum veſtrorum, & vinearum veſtrârum: oliveta veſtra, & ficeta veſtra comêdit eruca: & non rediſtis ad me, dicit Dñs.
10 Miſi in vos mortem in via Ægypti, percuſſi in gladio juvenes veſtros, uſque ad captivitatem equorum veſtrorum: & aſcendere feci putredinem caſtrorũ veſtrorum in nares veſtras: & non rediſtis ad me,
11 dicit Dominus. Subverti vos,ſicut ſubvertit Deus Sodomam & Gomorrhã,& facti eſtis quaſi torris raptus ab incendio:et non rediſtis ad me,dicit Dñs.
12 Quapropter hæc faciam tibi,Iſrael: poſtquàm autem hæc fecero tibi, præparare
13 in occurſum Dei tui,Iſrael. Quia ecce formans montes, & creans ventum, & annuntians homini eloquium ſuum, faciens matutinam nebulam, & gradiens ſuper excelſa terræ: Dominus Deus exercituum nomen ejus.

CAP. V.

1 Audite verbum iſtud,quod ego levo ſuper vos planctum: Domus Iſrael cecidit, & non adjiciet ut
2 reſurgat. Virgo Iſrael projecta eſt in terram ſuam, non eſt qui ſuſcitet eam.
3 Quia hæc dicit Dominus Deus; Urbs de qua egrediebantur mille,relinquentur in ea centum: & de qua egrediebantur centum, relinquentur in ea
4 decem in domo Iſrael. Quia hæc dicit Dominus domui Iſrael; Quærite me, & vivetis.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

5 Καὶ ἀνέγνωσαν ἔξω νόμον, καὶ ἐπεκαλέσαντο ὁμολογίας. (η) ἀναγγείλατε, ὅτι ταῦτα ἠγάπησαν οἱ υἱοὶ Ἰσραήλ, λέγει (θ) κύριος.
6 Καὶ ἐγὼ δώσω ὑμῖν γομφιασμὸν ὀδόντων ἐν πάσαις ταῖς πόλεσιν ὑμῶν, καὶ ἔνδειαν ἄρτων ἐν (ι) πᾶσι τοῖς τόποις ὑμῶν· καὶ οὐκ
7 ἐπεστρέψατε πρὸς μὲ, λέγει κύριος. Καὶ ἐγὼ ἀνέσχον ἐξ ὑμῶν τὸν ὑετὸν πρὸ τριῶν μηνῶν τοῦ τρυγητοῦ, καὶ βρέξω ἐπὶ πόλιν μίαν, ἐπὶ δὲ πόλιν μίαν οὐ βρέξω· μερὶς μία βραχήσεται, καὶ μερὶς, ἐφ' ἣν οὐ βρέ-
8 ξω (κ), ξηρανθήσεται. Καὶ συναθροισθήσονται (λ) δύο καὶ τρεῖς πόλεις εἰς πόλιν μίαν τοῦ πιεῖν ὕδωρ, καὶ οὐ μὴ ἐμπλησθῶσι· καὶ (μ) οὐκ
9 ἐπεστράφητε πρὸς μὲ, λέγει κύριος. Ἐπάταξα ὑμᾶς ἐν πυρώσει, καὶ ἐν ἰκτέρῳ. ἐπληθύνατε κήπους ὑμῶν, ἀμπελῶνας ὑμῶν, καὶ (ν) συκεῶνας ὑμῶν, καὶ ἐλαιῶνας ὑμῶν κατέφαγεν ἡ κάμπη· καὶ οὐδ' ὧς ἐπεστρέψα-
10 τε πρὸς μὲ, λέγει κύριος. Ἐξαπέστειλα εἰς ὑμᾶς θάνατον ἐν ὁδῷ Αἰγύπτου, καὶ ἀπέκτεινα ἐν ῥομφαίᾳ τοὺς νεανίσκους ὑμῶν, μετὰ αἰχμαλωσίας ἵππων σου, καὶ ἀνήγαγον ἐν πυρὶ τὰς παρεμβολὰς (ξ) ἐν τῇ ὀργῇ ὑμῶν· καὶ οὐδ' ὧς ἐπεστρέψατε πρὸς μὲ, λέ-
11 γει κύριος. Κατέστρεψα ὑμᾶς, καθὼς κατέστρεψεν ὁ θεὸς Σόδομα καὶ Γόμορρα, καὶ ἐγένεσθε ὡς δαλὸς ἐξεσπασμένος ἐκ πυρός· καὶ οὐδ' ὧς ἐπεστρέψατε πρὸς μὲ, λέγει κύ-
12 ριος. Διατοῦτο οὕτως ποιήσω σοι Ἰσραήλ· πλὴν ὅτι οὕτως ποιήσω σοι, ἑτοιμάζου τοῦ
13 ἐπικαλεῖσθαι τὸν θεόν σου Ἰσραήλ. Διότι ἰδοὺ ἐγὼ στερεῶν βροντὴν, καὶ κτίζων πνεῦμα, καὶ ἀπαγγέλλων εἰς ἀνθρώπους τὸν χριστὸν αὐτοῦ, ποιῶν ὄρθρον καὶ ὁμίχλην, καὶ ἐπιβαίνων ἐπὶ τὰ (ο) ὑψηλὰ τῆς γῆς· Κύριος ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ.

5 Et legerunt foras legem, & invocaverunt confeſſiones. Annuntiate, quia hæc dilexerunt filii Iſrael, dicit Dominus. 6 Et ego dabo vobis (h) ſtuporem dentium in cunctis urbibus veſtris, & indigentiam panum in omnibus locis veſtris. Et non eſtis reverſi ad me, dicit Dominus. 7 Et ego repreſſi à vobis pluviam ante tres menſes (i) vindemiæ: & pluam ſuper civitatem unam, & ſuper civitatem unam non pluam. Pars una irrigabitur: & pars, ſuper quam non pluero, areſcet. 8 Et congregabuntur duæ, & tres civitates in civitatem unam, ut bibant aquã: & non ſatiabuntur. Et non eſtis reverſi ad me, dicit Dominus. 9 Percuſſi vos in (k) ardore, & in aurugine. Multiplicâſtis hortos veſtros, vineas veſtras: & ficeta veſtra, & oliveta veſtra comêdit eruca. Et ne ſic quidem converſi eſtis ad me, dicit Dominus. 10 Emiſi in vos mortem in via Ægypti, & occîdi in gladio juvenes veſtros, cum captivitate equorum veſtrorum. Et eduxi in igne (l) caſtra in ira veſtra: Et ne ſic quidem reverſi eſtis ad me, dicit Dominus. 11 Subverti vos, ſicut ſubvertit Deus Sodomam, et Gomorrham: & facti eſtis ſicut torris erutus de igne. Et ne ſic quidem converſi eſtis ad me, dicit Dominus. 12 Propterea ſic faciam tibi, Iſrael. (m) Veruntamen, quia ſic faciam tibi, (n) præparare, ut invoces Deum tuum, Iſrael. 13 Quia ecce ego firmans (o) tonitruum, & creans ſpiritum, & annuntians in homines (p) Chriſtum ſuum, faciens manè, & nebulam, & aſcendens ſuper excelſa terræ: Dominus Deus omnipotens nomen ei.

MS.A. (η) ἀπαγγείλατε, (θ) κύριος ὁ θεός. (ι) πάσαις ταῖς πόλεσιν (κ) ἐπ' αὐτὴν, (λ) δύο πόλεις, καὶ τρεῖς πόλεις (μ) οὐδ' ὧς ἐπεστρέψατε (ν) συκῶνας (ξ) ὑμῶν ἐν τῇ ὀργῇ μου (ο) ὕψη τῆς

ΚΕΦ. ε'.

1 Ἀκούσατε τὸν λόγον κυρίου τοῦτον, ὃν ἐγὼ λαμβάνω ἐφ' ὑμᾶς, θρῆνον. Οἶκος Ἰσραὴλ ἔπεσεν, οὐκέτι μὴ (α) προσθήσει
2 τοῦ ἀναστῆναι· Παρθένος τοῦ Ἰσραὴλ ἔσφαλεν ἐπὶ τῆς (β) γῆς αὐτοῦ, οὐκ ἔστιν ὁ ἀναστήσων
3 αὐτήν. (γ) Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος κύριος, Ἡ πόλις ἐξ ἧς (δ) ἐξεπορεύοντο χίλιοι, ὑπολειφθήσονται ἑκατόν. καὶ ἐξ ἧς (ε) ἐξεπορεύοντο ἑκατὸν, ὑπολειφθήσονται δέκα τῷ
4 οἴκῳ Ἰσραήλ. Διότι τάδε λέγει κύριος πρὸς τὸν οἶκον Ἰσραὴλ, Ἐκζητήσατέ με, καὶ ζήσεσθε.

CAP. V.

1 Audite verbum (a) Domini iſtud, quod ego aſſumo ſuper vos, planctum. Domus Iſrael cecidit: nô adjiciet ampliùs, ut reſurgat. 2 Virgo Iſrael projecta eſt ſuper terram ejus: non eſt, qui ſuſcitet eam. 3 Propterea hæc dicit Domin⁹ Dominus: Urbs, de qua egrediebantur mille, relinquentur centum: & de qua egrediebantur centum, relinquentur decem domui Iſrael. 4 Quia hæc dicit Dominus ad domum Iſrael; Quærite me, & vivetis:

MS.A. (α) πρόσθη (β) γῆς, οὐκ ἔστιν (γ) Διότι (δ) ἐπορεύοντο (ε) ἐπορεύοντο

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 וּמִגְּבַן מִן אוֹנֵס תּוֹדְתָא וּמַיְתַן לֵיהּ בְּזְמַר וְאָמְרִין דֵּין לְרַעֲוָא אֲרֵי כֵן רְחֶמְתּוּן בֵּית
6 יִשְׂרָאֵל אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים : וְאַף אֲנָא יְהָבִית לְכוֹן אַקְהָיוּת שִׁנִּין בְּכָל קִרְוֵיכוֹן וַחֲסֵרוּת
7 מְזוֹן בְּכָל אַתְרֵיכוֹן וְלָא תַבְתּוּן לְפֻלְחָנִי אֲמַר יְיָ : וְאַף אֲנָא מְנָעִית מִנְּכוֹן יָת מִטְרָא
בְּסוֹף תְּלָתָא יַרְחִין לִזְמַן חֲצָדָא וְאַחֵיתִית מִטְרָא עַל קַרְתָּא חֲדָא וְעַל קַרְתָּא חֲדָא לָא
אַחֵיתִית מִטְרָא אַחְסַנְתָּא חֲדָא יְחוּת עֲלַהּ מִטְרָא וְאַחְסַנְתָּא דְּלָא יְחוּת עֲלַהּ מִטְרָא
8 תִּיבַשׁ : וְיִשְׁתַּלְהוֹן תַּרְתֵּין תְּלָת קִרְוִין לְקַרְתָּא חֲדָא לְמִשְׁתֵּי מַיָּא וְלָא יִסְבְּעוּן וְלָא
9 תַבְתּוּן לְפֻלְחָנִי אֲמַר יְיָ : מְחֵיתִי יָתְכוֹן בְּשִׁדְפָנָא וּבְיַרְקָנָא סַגִּיוּת גַּנֵּיכוֹן וְכַרְמֵיכוֹן
10 וְתִינֵיכוֹן וְזֵיתֵיכוֹן אֲכַלָא זַחֲלָא וְלָא תַבְתּוּן לְפֻלְחָנִי אֲמַר יְיָ : שַׁלַּחִית בְּכוֹן מוֹתָא כַּד
בְּאוֹרַח מִצְרַיִם קְטָלִית בְּחַרְבָּא עוּלֵימֵיכוֹן עִם שְׁבִי סוּסָוָתְכוֹן וְאַסֵּקִית סְרוּת מַשְׁרְיָתְכוֹן
11 וּבְאַפֵּיכוֹן וְלָא תַבְתּוּן לְפֻלְחָנִי אֲמַר יְיָ : רְחִיק מֵימְרִי יָתְכוֹן כְּמָא דְּרְחִיק יְיָ יָת סְדוֹם
12 וְיָת עֲמוֹרָה וַהֲוֵיתוּן כְּאוּד מְשֵׁיזַב מִיקְדָא וְלָא תַבְתּוּן לְפֻלְחָנִי אֲמַר יְיָ : בְּכֵן מָה
אַעְבֵּיד לָךְ יִשְׂרָאֵל חֲלַף דְּלָא תַבְתְּ לְאוֹרַיְתָא דָא אַעְבֵּיד לָךְ אִתְקַשַּׁט לְקַבָּלָא אוּלְפַן
13 אוֹרַיְתָא דֶאֱלָהָךְ יִשְׂרָאֵל : אֲרֵי הָא מִתְגְּלֵי דִיצַר טוּרַיָּא וּבְרָא רוּחָא לְחַוָּאָה לֶאֱנָשָׁא
מָה עוֹבָדוֹהִי לְאַתְקָנָא נְהוֹר לְצַדִּיקַיָּא כִּנְהוֹר צַפְרָא דְּאָזִיל וְתַקֵּין לְאַיְתָאָה חֲשׁוֹךְ
לְרַשִׁיעַיָּא לְמִתְבַּר רַשִׁיעֵי אַרְעָא יְיָ אֱלָהֵי צְבָאוֹת שְׁמֵיהּ :

ה

1-2 קַבִּילוּ יָת פִּתְגָּמָא הָדֵין דִּי אֲנָא נָטֵיל עֲלֵיכוֹן אִלְיָא בֵּית יִשְׂרָאֵל : נְפַלַת לָא תוֹסִיף לְמֵקָם
3 שְׁתָא הָדָא כְּנִשְׁתָּא דְיִשְׂרָאֵל אִתְרְטִישַׁת עַל אַרְעֲהוֹן לֵית דִּי קְיִמְנַהּ : אֲרֵי כְדְנַן אֲמַר יְיָ
אֱלֹהִים קַרְתָּא דְּיִפְקוּן מִנַּהּ אַלְפָא יִשְׁתַּאֲרוּן בַּהּ מְאָה וּדְיִפְקוּן מִנַּהּ מְאָה יִשְׁתַּאֲרוּן בַּהּ
4 עֲשְׂרָא לְבֵית יִשְׂרָאֵל : אֲרֵי כְדְנַן אֲמַר יְיָ לְבֵית יִשְׂרָאֵל תְּבַעוּ דַחְלְתִּי וְאִתְקַיְמוּ :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

5 Colligunt autem ex rapina ſacrificium gratiarũ actionis, & adducunt illud cum cantico, dicentes: Hoc eſt in beneplacitũ, ſic enim dilexiſtis filii Iſrael, ait Dñs Deus. 6 Ego quoque dedi vobis ſtuporem dentiũ in omnibus urbib⁹ veſtris, & indigentiam cibi in omnib⁹ locis veſtris: attamen non convertimini ad cultũ meum, dicit Dñs. 7 Deindè ego prohibui à vobis pluviam in fine trium menſium tempore meſſis: ac imbrem demiſi ſuper civitatem unam, ſed ſuper aliam non demiſi: ſuper hæreditatem unam deſcendet pluvia; at hæreditas ſuper quam minimè deſcenderit pluvia, areſcet. 8 Et cum laſſitudine duæ vel tres civitates aſpirabunt ad urbem unam ut bibant aquam, ſed non ſaturabuntur: nec tamen convertimini ad cultum meum, dicit Dñs. 9 Percuſſi vos uredine & ærugine, multitudinem hortorum veſtrorum, vinearum veſtrarũ, ficuum veſtrarum, olearúmq; veſtrarum corroſit bruchus: nec eſtis converſi ad cultum meum, dicit Dñs. 10 Miſi contra vos peſtilentiam quando in via Ægypti eratis: occidi gladio juvenes veſtros cum captivitate equorum veſtrorum, atq; aſcendere feci fœtorem caſtrorum veſtrorum idq; in nares veſtras: nec min⁹ converſi eſtis ad cultũ meũ, dicit Dñs. 11 Abominatum eſt Verbum meum vos, non aliter ac averſatus eſt Dñs Sodomam & Gomorrham; & facti eſtis quaſi torris erutus ab incendio: nihilomin⁹ non eſtis converſi ad cultum meũ, dicit Dñs. 12 Propterea *quod* faciã tibi Iſrael, propterea quòd nequaquam converſus es ad Legem, hoc tibi faciam: adorna te ut ſuſcipias doctrinam Legis Dei tui Iſrael. 13 Ecce námque fit conſpicuus qui plaſmavit montes, & creavit ventum, ut annuntiet hominib⁹ quanta ſint ej⁹ opera, & ut præparet lumen juſtis quaſi lumẽ matutinũ: qui incedit & præparat adducere tenebras impiis, ut conterat impios terræ. Dñs Deus exercituũ nomen ejus.

CAP. V.

1 Suſcipite verbũ iſtud quod ego aſſumo ſuper vos in lamentũ, dom⁹ Iſrael. 2 Cecidit, nec addet ut reſurgat anno *hoc* cœt⁹ Iſrael: proſtrata eſt ſuper terrã; nec eſt qui ſuſcitet eam. 3 Nam ſic inquit Dominus, In civitate de qua egrediebantur mille, remanebunt centum; & de qua centum exibant, uſque ad decẽ ſuperſtites erunt in domo Iſrael. 4 Quandoquidem ita dicit Dominus domui Iſrael, Requirite timorem meũ, & vivetis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

5 * ܘܩܪܒܘ ܡܢ ܚܡܝܥܐ ܬܘܕܝܬܐ . ܘܢܕܪܘ ܢܕܪܐ ܘܫܠܡܘ. ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܪܚܡܬܘܢ
6 ܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܦ ܐܢܐ ܝܗܒܬ ܠܟܘܢ ܩܗܝܘܬ ܫܢ̈ܐ ܒܟܠܗܝܢ
ܡܕܝܢ̈ܬܟܘܢ. ܘܚܣܝܪܘܬ ܠܚܡܐ ܒܟܠܗܘܢ ܐܬܪ̈ܘܬܟܘܢ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܬܘܢ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
7 * ܐܦ ܐܢܐ ܟܠܝܬ ܡܢܟܘܢ ܡܛܪܐ . ܡܢ ܩܕܡ ܬܠܬܐ ܝܪ̈ܚܝܢ ܕܚܨܕܐ. ܘܐܚܬ ܡܛܪܐ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ
ܚܕܐ ܘܥܠ ܚܕܐ ܠܐ. ܘܥܠ ܦܠܓܗ̇ ܗܕܐ ܢܚܬ ܡܛܪܐ. ܘܡܢܬܐ ܕܠܐ ܢܚܬ ܥܠܝܗ̇
8 ܡܛܪܐ ܝܒܫܬ. * ܢܬܟܢܫܢ ܬܪܬܝܢ ܬܠܬ ܡܕܝ̈ܢܢ ܠܡܕܝܢܬܐ ܚܕܐ. ܕܢܫܬܘܢ ܡܝܐ. ܘܠܐ
9 ܢܣܒܥܘܢ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܬܘܢ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܚܝܬܟܘܢ ܒܫܘܒܐ ܘܒܝܪܩܢܐ ܘܒܒܪܕܐ.
ܘܣܘܓܐܐ ܕܦܪ̈ܕܝܣܝܟܘܢ ܘܕܟܪ̈ܡܝܟܘܢ ܘܕܬܐ̈ܢܝܟܘܢ ܘܕܙܝ̈ܬܝܟܘܢ. ܐܟܠ ܩܡܨܐ. ܘܠܐ
10 ܐܬܦܢܝܬܘܢ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܫܕܪܬ ܒܟܘܢ ܡܘܬܐ ܒܐܘܪܚܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܩܛܠܬ ܒܚܪܒܐ
ܠܥܠܝ̈ܡܝܟܘܢ. ܥܡ ܫܒܝܬܐ ܕܪ̈ܟܫܟܘܢ. ܘܐܣܩܬ ܪܝܚ ܣܪܝܘܬܟܘܢ ܒܐܦ̈ܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܬܘܢ
11 ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܗܦܟܬ ܒܟܘܢ. ܐܝܟ ܕܗܦܟ ܐܠܗܐ ܠܣܕܘܡ ܘܠܥܡܘܪܐ. ܘܗܘܝܬܘܢ
12 ܐܝܟ ܐܘܕܐ ܕܐܬܦܨܝ ܡܢ ܝܩܕܢܐ. ܘܠܐ ܐܬܦܢܝܬܘܢ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܗܟܢܐ
ܐܥܒܕ ܠܟ ܐܝܣܪܝܠ ܒܚܪܬܐ. ܡܛܠ ܕܗܢܐ ܐܥܒܕ ܐܢܐ ܠܟ. ܐܬܛܝܒ ܐܝܣܪܝܠ ܕܬܩܪܐ ܠܐܠܗܟ.
13 * ܡܛܠ ܕܗܘ ܕܒܪܐ ܛܘܪܐ : ܘܡܚܘܐ ܠܒܢܝ̈ܢܫܐ ܡܢܘ ܫܘܒܚܗ.
ܕܥܒܕ ܨܦܪܐ ܠܥܡܛܢܐ . ܘܕܪܟ ܥܠ ܪܘܡܝ̈ܗ ܕܐܪܥܐ. ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ *

1 * ܫܡܥܘ ܡܠܬܐ ܗܕܐ ܕܐܢܐ ܢܣܒ ܥܠܝܟܘܢ ܐܘܠܝܬܐ. ܒܝܬ
2 ܐܝܣܪܝܠ :· * ܢܦܠܬ ܘܠܐ ܬܘܣܦ ܠܡܩܡ ܒܬܘܠܬܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܫܬܒܩܬ ܥܠ ܐܪܥܐ.
3 ܘܠܝܬ ܕܡܩܝܡ ܠܗ̇. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪ̈ܘܬܐ. ܡܕܝܢܬܐ ܕܢܦܩܝܢ ܗܘܘ ܡܢܗ̇
ܐܠܦ . ܢܫܬܚܪܘܢ ܒܗ̇ ܡܐܐ. ܘܕܢܦܩܝܢ ܗܘܘ ܡܢܗ̇ ܡܐܐ . ܢܫܬܚܪܘܢ ܒܗ̇ ܥܣܪܐ
4 ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܒܥܘܢܝ ܘܚܝܘ.

5 * Offerte de fermentato gratiarum actionem; vovete votum, & ſolvite. Quandoquidē ita amâſtis Iſraelitæ, dicit Dominus; 6 Ego quoq; dedi vobis ſtuporem dentium in cunctis urbibus veſtris, & penuriam panis in omnibus regionibus veſtris; attamen non converſi eſtis ad me, dicit Dominus. 7 Præterea ego negavi vobis pluviam tribus menſibus ante meſſem; & demiſi pluviam ſuper urbem unam, ſuper alteram verò non; & ſuper mediā hanc partē decidit pluvia, pars autē ſuper quam nō decidit pluvia, exaruit: 8 Concurrebant duæ vel tres urbes ad urbē unā, ut biberent aquā, & non ſaturabantur; nec tamen converſi eſtis ad me, dicit Dominus. 9 Percuſſi vos vento calido, uredine, & grandine: & multitudinem hortorum, vinearum, ficuum, & olearum veſtrarum comēdit eruca; tamen non eſtis converſi ad me, dicit Dominus. 10 Miſi in vos peſtē in itinere Ægypti, & peremi gladio juvenes veſtros cum captivitate equorum veſtrorum, percuſſiq; odore fœtoris veſtri facies veſtras; nec tamen converſi eſtis ad me, dicit Dominus. 11 Subverti *urbes* in vobis, quemadmodum ſubvertit Deus Sodomam & Gomorram, & fuiſtis quaſi titio erutus è flamma; nec tamen converſi eſtis ad me, dicit Dominus. 12 His de rebus ita facturus tandē ſum tibi Iſrael. *Et* quoniā id factur⁹ ſum tibi, paratus eſto Iſrael, ad invocandum Deum tuum. 13 Nam qui creavit montes, & oſtendit hominibus quanta ſit gloria ſua, *quique* reddit aurorā caliginē, & terit altitudinē terræ; Dn̄s Deus potentiſſimus eſt nomen ejus.

CAP. V.

1 Audite verbum hoc lamentabile quod ego profero de vobis Iſraelitæ. 2 Cecidit, nec ampliùs reſurget virgo Iſraelis: relicta eſt humi, nec eſt qui erigat eam. 3 Sic enim ait Dominus dominorum; In ea urbe, è qua egrediebantur mille, centum remanebunt; & in ea, è qua centum egrediebantur, decem remanebunt Iſraelitis. 4 Nam ſic ait Dominus Iſraelitis; Quærite me, ut vivatis:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

5 * وقروا الناموس خارجا * ودعوا اعترافا * اخبروا من اجل ان هذه كلها احبها بنو اسرائيل
6 يقول الرب الاله * وانا اعطيتكم ضرس الاسنان في جميع مدنكم وقلة الخبز في جميع
7 مواضعكم * ولم ترجعوا الي يقول الرب * وانا امسكت عنكم المطر قبل ثلاثة شهور
من القطاف * وامطر على مدينة واحدة وعلى مدينة واحدة لا امطر * مارس واحد يمطر *
8 والمارس الذي لم امطر عليه يجف * وتجمع مدينتان وثلاثة مدن الى مدينة واحدة
9 ليشرب ماء فلا يمتلين * وهكذا لم ترجعوا الي يقول الرب * ضربتكم بالسموم واليرقان *
اكثرتم بساتينكم * وكرومكم وتينكم وزيتونكم اكلهم الدود * وهكذا لم ترجعوا الي
10 يقول الرب * ارسلت اليكم موتا في طريق مصر * وقتلت بالسيف شبابكم مع سبي خيولكم *
11 واذهبت عساكركم بنار بغضبي * وهكذا لم ترجعوا الي يقول الرب * خسفت بكم كما خسف
الله بسدوم وعامورا * وصرتم مثل العود المخرج من النار * وهكذا لم ترجعوا الي يقول الرب *
12 * من اجل هذا هكذا اصنع بك يا اسرائيل * لكني اني هكذا اصنع بك * استعد
13 لتدعوا الهك يا اسرائيل * من اجل اني ها انا مثبت الرعد * وخالق الريح * ومخبر
البشر بمسيحه * الصانع غلسا وضبابا * والراكب على اعالي الارض * الرب الضابط
الكل اسمه *

* الفصل الخامس *

1 * اسمعوا هذا القول الذي انا احدث عليكم مرثية * 2 بيت اسرائيل سقط * ومنذ الان لا
3 يعود ان يقوم * عذراء اسرائيل سقطت على ارضها * وليس يكون من يقيمها * من اجل
انه هكذا يقول الرب الرب * المدينة التي منها خرج الف فيبقى مائة * والتي خرج منها مائة
4 يبقى عشرة لبيت اسرائيل * من اجل انه هكذا يقول الرب لبيت اسرائيل * اطلبوني واحيون *

5 * *Et legem foris legerunt, & hoc confeſſionem vocaverunt. Annuntiate quòd hæc omnia dilexerunt filii Iſraelis, ait Dominus Deus.* 6 *Et ego dedi vobis ſtuporem dentium in cunctis urbibus veſtris, & defectum panis in cunctis locis veſtris: attamen non eſtis ad me reverſi, dicit Dominus.* 7 *Ego etiam detinui à vobis imbrem tribus menſibus ante vindemiam: pluviam demitto ſuper urbem unam, & ſuper alteram urbem non demitto pluviam: ager unus incultus pluviâ irrigatur, & ager ſuper quem non demitto pluviam, areſcit:* 8 *Confluunt duæ urbes & tres urbes ad urbem unam ut bibant aquam, & non explentur: ſed ne hoc pacto reverſi eſtis ad me, dicit Dominus.* 9 *Percuſſi vos vento calido & aurigine: multiplicâſtis hortos veſtros, at vineas, veſtras, ficus, & oleas veſtras comederunt vermes; ſed ne ſic reverſi eſtis ad me, dicit Dominus.* 10 *Miſi in vos mortem in via Ægypti, occîdi gladio juvenes veſtros cum captivitate equorum veſtrorum, & igne abripui exercitus veſtros in furore meo; at ne ſic reverſi eſtis ad me, dicit Dominus.* 11 *Subverti vos quemadmodum ſubvertit Deus Sodomam & Gomorram, & facti eſtis ut lignum extractum ex igne; at ne ſic reverſi eſtis ad me, dicit Dominus:* 12 *Proptereà ſic faciam tibi O Iſrael. Quoniam autem ſic tibi facturus ſum, præpara te ad invocandum Deum tuum O Iſrael.* 13 *Nam ecce ego ſum qui firmo tonitruum, qui ventum creo, & annuntio hominibus Chriſtum ejus, qui matutinum & caliginem facio, quique inſideo excelſis terræ: Dominus Deus omnia tenens eſt nomen ejus.*

CAP. V.

1 *Audite ſermonem iſtum quem ego ſumo de vobis in luctum.* 2 *Domus Iſraelis cecidit, & poſthac iterum non ſurget: virgo Iſraelis cecidit ſuper terram ſuam, nec erit qui erigat eam.* 3 *Nam ita dicit Dominus Dominus; urbs è qua prodibant mille, redigetur ad centum, & è qua prodibant centum, redigetur ad decem, in domo Iſraelis.* 4 *Nam ita dicit Dominus domui Iſraelis; Quærite me, & vivetis:*

עמוס : ה

ſcbah-Beer & ,ingredie mini non Ghilghal & , el--Beth quæratis ne Et
5 ואל־תדרשו בית־אל והגלגל לא תבאו ובאר שבע
el--Beth & ,demigrabit demigrando Ghilghal quia : tranſibitis non
לא תעברו כי הגלגל גלה יגלה ובית אל
fortè ne : vivetis & ,Dominum Quærite .nihilum in erit
6 יהיה לאון : דרשו את־יהוה וחיו פן־
extinguens non & , *comedat* & , Joſeph domum ignis quaſi findat
יצלח כאש בית יוסף ואכלה ואין־מכבה
terra in juſtitiam & : judicium abſinthium in *Vertentes* .el--Beth in
7 לבית־אל : ההפכים ללענה משפט וצדקה לארץ
mane in convertens & ,Orionem & ,Arcturum *Faciens* .reliquerunt
8 הניחו : עשה כימה וכסיל והפך לבקר
aquas *vocans* : *fecit* tenebreſcere noctem diem & ,mortis umbram
צלמות ויום לילה החשיך הקורא למי־
.ejus nomen Dominus , terræ *faciebus ſuper* eas effundit & , maris
הים וישפכם על־פני הארץ יהוה שמו :
munitionem ſuper vaſtator & : robuſtum ſuper vaſtatorem *Confortans*
9 המבליג שד על־עז ושד על־מבצר
perfectè loquentem & , corripientem porta in Oderunt .veniet
10 יבוא : שנאו בשער מוכיח ודבר תמים
tritici onus & , *tenuem ſuper vos conculcare pro* Idcirco .ſunt abominati
11 יתעבו : לכן יען בושסכם על־דל ומשאת־בר
: eis in habitabitis non & , ædificâſtis *inciſionis domos* , eo ab tuliſtis
תקחו ממנו בתי גזית בניתם ולא־תשבו בם
Quia .earum vinum bibetis non & , plantâſtis *deſiderii* vineas
12 כרמי־חמד נטעתם ולא תשתו את־יינם : כי
hoſtes : veſtra peccata fortia & ,veſtras prævaricationes multas cognovi
ידעתי רבים פשעיכם ועצמים חטאתיכם צררי
.fecerunt declinare porta in *egenos & , propitiationem* accipientes *juſti*
צדיק לקחי כפר ואביונים בשער הטו :
malum tempus quia : tacebit ipſo tempore in intelligens Ideo
13 לכן המשכיל בעת ההיא ידם כי עת רעה
ſic erit & : vivatis ut , malum non & ,bonum Quærite *.ipſum*
14 היא : דרשו־טוב ואל־רע למען תחיו ויהי־כן
.dixiſtis ſicut , vobiſcum exercituum Deus Dominus
יהוה אלהי־צבאות אתכם כאשר אמרתם :
: judicium porta in conſtituite & ,bonum diligite & ,malum habete Odio
15 שנאו־רע ואהבו טוב והציגו בשער משפט
.Joſeph reſiduo exercituum Deus Dominus miſereatur fortè ſi
אולי יחנן יהוה אלהי־צבאות שארית יוסף :
: dominator exercituum Deus Dominus dixit ſic Propterea
16 לכן כה־אמר יהוה אלהי צבאות אדני
,heu : dicent plateis cunctis in & , planctus plateis omnibus In
בכל־רחבות מספד ובכל־חוצות יאמרו הו־
ſcientes ad planctum & ,luctum ad agricolam vocabunt Et .heu
הו וקראו אכר אל־אבל ומספד אל־יודעי
,*tuo interiori in* tranſibo quia :planctus vineis omnibus in Et *.querimoniam*
17 נהי : ובכל־כרמים מספד כי־אעבר בקרבך
: Domini diem deſiderantibus Væ .Dominus dixit
18 אמר יהוה : הוי המתאוים את־יום יהוה
.lux non & ,*tenebroſitas* , hæc Domini dies ? vobis hoc quid ut
למה־זה לכם יום יהוה הוא־חשך ולא־אור :
: urſus ei occurrat & , leonis *faciebus* à vir fugiat Quomodo
19 כאשר ינוס איש מפני הארי ופגעו הדב
eũ mordeat & , *pariete ſuper* ſua manu innitatur & ,domum ingrediatur &
ובא הבית וסמך ידו על־הקיר ונשכו
? coluber
הנחש :

Verſio VULG. LAT.

5 Et nolite quærere Bethel, & in
Galgalam nolite intrare, & in
Berſabee non tranſibitis : quia
Galgala captiva ducetur, & Beth-
6 el erit inutilis. Quærite Do-
minum, & vivite : ne fortè com-
buratur ut ignis domus Joſeph, &
devorabit, & non erit qui ex-
7 tinguat Bethel. Qui convertitis
in abſinthium judicium, & juſti-
8 tiam in terra relinquitis. Faci-
entem Arcturum & Orionem, &
convertentẽ in manè tenebras, &
diẽ in noctẽ mutantẽ : qui vocat
aquas maris, & effundit eas ſuper
faciem terræ : Dominus nomen
9 eſt ejus. Qui ſubridet vaſtitatem
ſuper robuſtum, & depopulatio-
10 nem ſuper potentem affert. Odio
habuerunt corripientem in por-
ta: & loquentẽ perfectè abomina-
11 ti ſunt. Idcircò, pro eo quòd di-
ripiebatis pauperem, & prædam
electam tollebatis ab eo : domos
quadro lapide ædificabitis, &
non habitabitis in eis : vineas
plantabitis amantiſſimas, & non
12 bibetis vinum earum. Quia cog-
novi multa ſcelera veſtra, &
fortia peccata veſtra : hoſtes juſti
accipientes munus, & pauperes
13 deprimentes in porta : Ideò pru-
dens in tempore illo tacebit,
14 quia tempus malum eſt. Quærite
bonum, & non malum, ut vivatis:
& erit Dominus Deus exercituũ
15 vobiſcum, ſicut dixiſtis. Odite
malum, & diligite bonum, &
conſtituite in porta judicium : ſi
fortè miſereatur Dominus Deus
16 exercituum reliquiis Joſeph. Pro-
pterea hæc dicit Dominus Deus
exercituum dominator; In omni-
bus plateis planctus: & in cunctis,
quæ foris ſunt, dicetur; Væ, væ: &
vocabunt agricolam ad luctum,
& ad planctum eos qui ſciunt
17 plangere. Et in omnibus vineis
erit planctus : quia pertranſibo
18 in medio tui, dicit Dominus. Væ
deſiderantibus diem Domini :
ad quid eam vobis? dies Do-
mini iſta, tenebræ, & non lux.
19 Quomodò ſi fugiat vir à facie
leonis, & occurrat ei urſus : &
ingrediatur domum, & innitatur
manu ſuâ ſuper parietem, &
mordeat eum coluber.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Καὶ μὴ ἐκζητεῖτε Βαιθὴλ, ϗ εἰς Γάλγαλα
μὴ εἰσπορεύεσθε, ϗ ἐπὶ τὸ φρέαρ τοῦ ὅρκου μὴ
(ε) διαβαίνετε, ὅτι Γάλγαλα αἰχμαλωτευ-
ομένη αἰχμαλωτευθήσεται, ϗ Βαιθὴλ ἔσται
6 ὡς οὐχ ὑπάρχουσα. Ἐκζητήσατε τὸν κύριον,
ϗ (˙) ζήσατε, ὅπως μὴ ἀναλάμψῃ ὡς πῦρ ὁ
οἶκος Ἰωσὴφ, ϗ (ʻ) καταφάγῃ αὐτὸν, ϗ οὐκ
7 ἔσται ὁ σβέσων τῷ οἴκῳ Ἰσραήλ. (ζ) Ὁ ποι-
ῶν εἰς ὕψος κρίμα, ϗ δικαιοσύνην εἰς γῆν
8 ἔθηκεν· (η) Ὁ ποιῶν πάντα ϗ μετασκευά-
ζων, ϗ ἐκτρέπων εἰς τὸ πρωῒ σκιὰν, ϗ ἡ-
μέραν εἰς νύκτα συσκοτάζων, ὁ προσκαλού-
μενος τὸ ὕδωρ τῆς θαλάσσης, ϗ ἐκχέων αὐ-
τὸ ἐπὶ (θ) πρόσωπον τῆς γῆς· Κύριος ὄνο-
9 μα αὐτῷ· Ὁ διαιρῶν συντριμμὸν ἐπὶ
ἰσχὺν, ϗ ταλαιπωρίαν ἐπὶ ὀχύρωμα ἐπά-
10 γων. Ἐμίσησαν ἐν πύλαις ἐλέγχοντα,
11 ϗ λόγον ὅσιον ἐβδελύξαντο. Διατοῦτο
ἀνθ᾽ ὧν κατεκονδύλιζον (ι) πτωχοὺς, ϗ δῶρα
ἐκλεκτὰ ἐδέξασθε παρ᾽ αὐτῶν, οἴκους (κ) ξε-
στοὺς ᾠκοδομήσατε, ϗ οὐ μὴ κατοικήσητε ἐν
αὐτοῖς· (λ) ἀμπελῶνας ἐπιθυμητοὺς (μ) ἐ-
φυτεύσατε, ϗ οὐ μὴ πίητε τὸν οἶνον αὐτῶν.
12 Ὅτι ἔγνων πολλὰς ἀσεβείας ὑμῶν, ϗ ἰσχυ-
ραὶ αἱ ἁμαρτίαι ὑμῶν, καταπατοῦντες δίκαι-
ον, λαμβάνοντες ἀλλάγματα, ϗ πένητας
13 ἐν πύλαις ἐκκλίνοντες. Διατοῦτο ὁ συνιῶν
ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ σιωπήσεται, ὅτι καιρὸς
14 (ν) πονηρῶν ἐστιν. Ἐκζητήσατε τὸ καλὸν,
ϗ μὴ (ξ) πονηρὸν, ὅπως ζήσητε, ϗ ἔσται οὕτως
μεθ᾽ ὑμῶν κύριος ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ὃν
15 τρόπον εἴπατε, Μεμισήκαμεν (ο) τὰ πονηρὰ,
ϗ ἠγαπήσαμεν τὰ καλά· ϗ ἀποκαταστήσατε
ἐν πύλαις κρίμα, ὅπως (ʻ) ἐλεήσῃ κύριος ὁ
θεὸς ὁ παντοκράτωρ τοὺς περιλοίπους τοῦ Ἰ-
16 ωσήφ. Διατοῦτο τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς
ὁ παντοκράτωρ, Ἐν πάσαις (π) ταῖς πλατείαις
κοπετὸς, ϗ ἐν (˜) πάσαις ταῖς ὁδοῖς ῥηθήσεται,
Οὐαὶ, οὐαί. κληθήσεται γεωργὸς εἰς πένθος
17 ϗ κοπετὸν, ϗ εἰς (ρ) εἰδότας θρῆνον. Καὶ
ἐν πάσαις ὁδοῖς κοπετὸς, διότι (σ) ἐλεύσο-
18 μαι διὰ μέσου σου, εἶπε κύριος. Οὐαὶ οἱ
ἐπιθυμοῦντες τὴν ἡμέραν κυρίου. ἵνα τί αὕτη
ὑμῖν ἡ ἡμέρα τοῦ κυρίου; ϗ αὕτη ἐστὶ σκότος
19 ϗ οὐ φῶς. Ὃν τρόπον (τ) ἐὰν φύγῃ ἄνθρω-
πος ἐκ προσώπου τοῦ λέοντος, ϗ ἐμπέσῃ
αὐτῷ ἡ ἄρκος, ϗ (¨) εἰσπηδήσῃ εἰς τὸν οἶκον
αὐτοῦ, ϗ (υ) ἀπερείσηται τὰς χεῖρας αὐτοῦ
(φ) ἐπὶ τὸν τοῖχον, ϗ δάκῃ αὐτὸν ὄφις.

Et nolite quærere Bethel, & in 5
Galgala ne ingrediamini, & ſu-
per Puteum juramenti non tranſ-
eatis : quia Galgala captivata
captivabitur : & Bethel erit,
quaſi non ſit. Quærite Domi- 6
num, & vivite, ne ſuccendatur,
ut ignis, domus Joſeph, & devo-
ret eam, & non erit, qui extin-
guat domui Iſrael. Qui facit in 7
excelſo judicium, & juſtitiam in
terra poſuit : Qui facit (b) o- 8
mnia, & transformat, & con-
vertit in manè (c) umbram, &
diem in noctem contenebrat: Qui
vocat aquam maris, & effundit
eam ſuper faciem terræ: (d) Do-
minus nomen ei. Qui (e) divi- 9
dit contritionem ſuper fortitudi-
nem, & miſeriam ſuper munitio-
nem adducit. Odio habuerunt in 10
portis arguentem, & (f) verbum
ſanctum abominati ſunt. Propter- 11
ea, quia pugno (g) percutiebant
pauperes, & munera electa ac-
cipiebatis ab eis; domos dolatis
lapidibus ædificâſtis, & non
habitabitis in eis : vineas deſide-
rabiles plantâſtis, & non bibetis
vinum earum. Quia cognovi 12
multas impietates veſtras : &
fortia ſunt peccata veſtra: con-
culcantes juſtum, accipientes (h)
commutationes, & pauperes in
portis (i) declinantes. Ideò qui 13
intelligit, in tempore illo ſilebit :
quia tempus (k) malorum eſt.
Quærite bonum, & non malum, 14
ut vivatis. Et erit ſic vobiſcum
Dominus Deus omnipotens ; ſicut
dixiſtis; Odio habuimus mala, & 15
dileximus bona. Et reddite in
portis judicium ; ut miſereatur
Dominus Deus omnipotens his,
qui reliqui ſunt de Joſeph. Ideò 16
hæc dicit Dominus Deus omnipo-
tens; In cunctis plateis planctus:
& in omnibus viis dicetur; Væ,
væ. Vocabitur agricola ad lu-
ctum, & planctum : (l) & in eis,
qui ſciunt lamentationem, Et in 17
omnibus viis planctus : quia (m)
pertranſibo per medium tui, dicit
Dominus. Væ deſiderantibus di- 18
em Domini. Ut quid hæc vobis
dies Domini ? Et ea eſt tenebræ,
& non lux. Quomodò ſi fugiat 19
homo à facie leonis, & (n) in-
cidat in eum urſus ; & introeat
in domum ſuam, & innitatur
manibus ſuis ſuper parietem, & mordeat eum coluber.

MS.A. (ε) ἀναβαίνετε, (˙) ζήσετε, (ʻ) καταφάγεται (ζ) Κύριος ὁ θεὸς ὁ ποι-
ῶν (η) Ποιῶν (θ) προσώπου τῆς γῆς· Κύριος ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ ὄνο-
μα αὐτῷ· Διαιρῶν (ι) εἰς κεφαλὰς πτωχῶν, (κ) ξυστοὺς οἰκοδομήσετε,
(λ) ϗ ἀμπελῶνας (μ) φυτεύσετε, (ν) πονηρός (ξ) τὸ πονηρὸν, (ο) τὸ
πονηρὸν, ϗ ἠγαπήκαμεν τὸ καλόν·)(ʻ) ἐλεήσει (π) πλατείαις (˜) πάσαις
ὁδοῖς (ρ) ἰδόντας (σ) ἐπελεύσομαι (τ) ὅταν ἐκφύγῃ (¨) εἰσπηδήσει (υ) ἀπ-
ερίσῃ (φ) πρὸς

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 ולא תתבעון למהך לביתאל ולגלגלא לא תיתון ולבאר שבע לא תעברון ארי די
6 בגלגלא מגלא יגלון ודפלחין לטעותא בביתאל יהון ללמא : תבעו ית דחלתא
דיי ואתקימו דלמא ידלק כאשתא רוגזיה בבית יוסף וישיצי ולא יהי חיס בחובין
7 דהויתון פלחין לטעותא בבית אל : דהפכין לגידא דינא וזכותא לארעא רמשו :
8 שבקו למדחל מן קדם דעבד כימה וכסילא והפך לנהור קבל ויממא ללילי מקביל
9 דאמר לכנשא משרין סגיאן כמי ימא ומבדר להון על אפי ארעא יי שמיה : דמגבר
10 חלשין על תקיפין ובזוזין על כרכי תקיפין משליט : סנן לדמוכח להון בשערי בתי
11 דינא פתגמי אוריתא ולדממלל כיונתא מעקמין : בכן חלף במבוזכון מסכניא
ומנסבכון חשיכיא בתי גזירת בניתון ולא תתבון בהון כרמי חמדתא נצבתון ולא תשתון
12 ית חמרהון : ארי גלי קדמי דסגיאין מרדיכון ותקיפן חובתכון מעיקין ליה לזכאה בדיל
13 לקבלא ממון דשקר ודין חשיכיא בבית כנשתהון מסטן : בכן מלפיא בעדנא
14 ההיא מן קדם רשיעיא שתיקו ארי עדן ביש הוא : תבעו לאוטבא ולא לאבאשא
15 בדיל דתתקימון ויהי כען מימרא דיי אלהים צבאות בסעדכון כמא דאמרתון : סנו
לאבאשא ורחמו לאיטבא ואתקינו בבית כנישתכון דינא מאים יתרחם מן קדם יי אלהא
16 צבאות על שארא דיוסף : בכן כדנן אמר יי אלהי צבאות יי בכל רחוביא מספדא
17 ובכל שוקיא יימרון וי וי ויערעון אכר לאבל ועביד מספדא לדידעי אליא : ובכל כרמיא
18 מספדא ארי אתגלי למעבד פורענות דין בגויך אמר יי : וי למחמדין ליומא דעתיד
למיתי מן קדם יי למא דנן לכון יומא דעתיד למיתי מן קדם יי הוא חשוך ולא נהור :
19 כמא די יערוק גברא מן קדם אריא ויערעניה דובא ויעול לביתא ויסמוך ידיה על כתלא
ונכתניה חויא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Non quæratis verò pergere ad Bethel, & ad Galgalam ne veniatis, & per 5
Beerſabee ne tranſeatis, quia qui in Galgala, certiſſimè multabuntur exilio;
& qui colunt idola Bethel, redigentur in nihilũ. Quærite timorẽ Dñi, ut vita 6
potiamini, ne fortè ſuccendatur ſicut ignis furor ejus in domo Joſeph, qui vo-
ret, nec ſit qui extinguat propter peccata veſtra, qui ſerviebatis idolis in
Bethel. Qui convertunt in abſinthiũ judiciũ, & juſtitiã in terrã projiciunt. 7
Deſierunt timere à facie [*ejus*] qui fecit Arctũ & Orionẽ, & convertit 8
in lucẽ tenebras, & diẽ in noctem obtenebrat : qui jubet congregari exer-
citꝰ multos inſtar aquarũ maris & diſpergit eos ſuper faciẽ terræ: Dñs no-
men ejꝰ. Qui vires auget infirmis contra fortes, & direptoribus ſuper pro- 9
pugnacula fortiſſimorum imperiũ donat. Odio proſequuntur eum qui cor- 10
ripit eos in *portis domorũ* judicii verbis Legis, & loquentem recta pravita-
tis inſimulant. Idcircò pro eo quod diripiebatis egenum, & vim paupe- 11
ribus inferebatis : domos dolato lapide conſtruxiſtis, in quibus non habi-
tabitis: vineas deſiderabiles plantâſtis quarũ vinum haudquaquam bibetis.
Siquidẽ notũ eſt mihi quod permultæ ſint veſtræ prævaricationes, & for- 12
tia peccata veſtra: contribulant juſtũ ut ſuſcipiant mammona iniquitatis, &
judiciũ obſcurorũ pervertunt in domo congregationis ipſorũ. Propterea 13
doctores tunc temporis propter impios conticuerunt, tempus enim malum
erat. Quærite benefacere & non malè, quò vivatis : tunc aderit Verbum 14
Dñi Dei exercituũ in auxiliũ veſtrũ ſicut dixiſtis. Odite malefacere, & be- 15
ne operari diligite: & dirigite judiciũ in domo congregationis veſtræ: for-
tè miſericordia tribuetur à conſpectu Dñi Dei exercituum ſuper reliquias
Joſephi. Quamobrem ſic dicit Dñs Deus exercituum, Dñs ipſe: In omnibus 16
plateis erit planctus, & in omnibꝰ compitis dicent, Væ, væ: & convocabunt
agricolam ad luctum, & planctum emittentem ad *eos* qui ejulandi *ſunt*
periti. Atque in omnibus vineis erit planctus; quia apparebo ut faciam 17
ultionẽ judicii in medio tui, dicit Dñs. Væ deſiderantibus diẽ qui venturus 18
eſt à conſpectu Dñi: ad quid conducet vobis dies qui adventurꝰ eſt à facie
Dñi? ipſe obſcuritas eſt & non lux. Quomodo vir qui fugit à facie leonis, 19
& occurret ei urſus, & ingreditur domum, & innitetur manu ſua ſuper
parietem, & mordebit eum coluber.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 * ܘܠܐ ܬܒܥܘܢ ܒܝܬ ܐܝܠ. ܘܠܓܠܓܠܐ. ܠܐ ܬܐܥܠܘܢ. ܘܠܒܝܪ ܫܒܥ. ܠܐ ܬܥܒܪܘܢ܆
6 ܡܛܠ ܕܓܠܓܠܐ. ܡܫܒܐ ܡܫܬܒܝܐ ܠܫܒܝܬܐ. ܘܒܝܬ ܐܝܠ ܬܗܘܐ ܐܝܟ ܕܠܐ ܗܘܬ܀ * ܒܥܘ
ܠܡܪܝܐ. ܘܚܝܘ. ܕܠܐ ܢܕܠܩ ܐܝܟ ܢܘܪܐ ܒܝܬܗ ܕܝܘܣܦ. ܘܬܐܟܘܠ ܠܒܝܬ ܐܝܠ. ܘܠܝܬ
7 8 ܕܡܕܥܟ. * ܕܗܦܟܘ ܕܝܢܐ ܠܡܪܪܬܐ. ܘܙܕܝܩܘܬܐ ܠܐܪܥܐ. * ܫܒܩܘܗ ܠܡܢ ܕܥܒܕ ܥܝܘܬܐ
ܘܓܢܒܪܐ. ܘܗܘ ܕܗܦܟ ܠܨܦܪܐ ܛܠܠܐ ܕܡܘܬܐ. ܘܐܝܡܡܐ ܠܠܝܐ ܡܚܫܟ. ܕܩܪܐ ܠܡܝܐ ܕܝܡܐ.
9 ܘܐܫܕ ܐܢܘܢ ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ. ܡܪܝܐ ܫܡܗ. * ܕܡܫܠܛ ܡܚܝܠܐ ܥܠ ܥܫܝܢܐ. ܘܡܟܝܟܐ
10 ܥܠ ܪܡܐ ܡܥܠܐ. * ܣܢܝܘ ܠܡܟܣܢܐ ܒܬܪܥܐ. ܘܠܡܢ ܕܡܡܠܠ ܬܪܝܨܬܐ. ܒܣܪܘ.
11 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܚܠܦ ܕܕܫܬܘܢ ܠܡܣܟܢܐ: ܘܡܘܗܒܬܐ ܓܒܝܬܐ ܢܣܒܬܘܢ ܡܢܗ܆
ܒܬܐ ܕܦܣܝܠܬܐ ܕܒܢܝܬܘܢ. ܠܐ ܬܬܒܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܟܪܡܐ ܕܪܓܝܓܐ ܕܢܨܒܬܘܢ. ܠܐ ܬܫܬܘܢ
12 ܚܡܪܗܘܢ. * ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܐܢܐ. ܕܣܓܝܐܝܢ ܣܟܠܘܬܟܘܢ. ܘܥܫܝܢܝܢ ܚܛܗܝܟܘܢ.
13 ܠܐܠܘܨܝܗܘܢ ܕܙܕܝܩܐ. ܢܣܒܝܢ ܫܘܚܕܐ. ܘܡܣܟܢܐ ܒܬܪܥܐ ܨܠܝܘ. * ܡܛܠܗܢܐ ܗܘ
14 ܕܡܣܬܟܠ. ܒܗܘ ܙܒܢܐ ܢܫܬܘܩ. ܡܛܠ ܕܙܒܢܐ ܒܝܫܐ ܗܘ. * ܒܥܘ ܛܒܬܐ ܘܠܐ ܒܝܫܬܐ
15 ܕܬܚܘܢ. ܘܢܗܘܐ ܗܟܢܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܡܟܘܢ. ܐܝܟ ܕܐܡܪܬܘܢ. * ܣܢܘ ܒܝܫܬܐ ܘܐܚܒܘ
ܛܒܬܐ. ܘܐܩܝܡܘ ܒܬܪܥܐ ܕܝܢܐ. ܟܒܪ ܢܬܪܚܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܠ ܫܪܟܐ
16 ܕܝܘܣܦ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܒܟܠܗܘܢ ܫܘܩܐ. ܡܪܩܕܬܐ.
ܘܒܟܠܗܘܢ ܫܒܝܠܐ ܢܐܡܪܘܢ. ܘܝ ܘܝ. ܘܢܩܪܘܢ ܠܐܟܪܐ ܠܐܒܠܐ. ܘܡܪܩܕܬܐ ܠܝܕܥܝ
17 18 ܐܘܠܝܬܐ. * ܘܒܟܠܗܘܢ ܟܪܡܐ ܡܪܩܕܬܐ. ܡܛܠ ܕܥܒܪ ܐܢܐ ܒܓܘܟ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܝ
ܠܪܓܝܓܝ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܠܡܢܐ ܗܘ ܠܟܘܢ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܚܫܘܟܐ ܗܘ ܓܝܪ. ܘܠܐ ܢܘܗܪܐ.
19 * ܐܝܟ ܕܥܪܩ ܓܒܪܐ ܡܢ ܩܕܡ ܐܪܝܐ. ܘܦܓܥ ܒܗ ܕܒܐ: ܘܥܐܠ ܠܒܝܬܐ. ܘܣܡܟ ܐܝܕܗ
ܥܠ ܐܣܬܐ. ܘܢܟܬܗ ܚܘܝܐ܀

5 Ac ne quæratis Beth-el, & Galgalam ne adeatis, néve tranſeatis ad Bir-ſebaa: quia Galgala procul dubio ibit in captivitatem, & Beth-el erit quaſi non fuiſſet. 6 Quærite Dominum, ut vivatis; ne ardeat velut ignis domus Joſephi, devoretque Bethelem, nemine extinguente: 7 Quòd judicium vertant in abſynthium, juſtitiam in terram: 8 Dereliquerint eum qui fecit Arcturum & Orionem, qui tenebras mortiferas vertit in lucem matutinam, & diem nocte obtenebrat; qui advocat aquas maris, & refundit eas ſuper faciem terræ; cujus nomen Dominus eſt; 9 Qui dominatum præbet imbecilli in fortem, & humilem ſuper excelſum attollit. 10 Quòd pauperem odio proſequantur in porta, & eum qui recta loquitur, deſpiciant: 11 Iccirco, quia pauperem exagitâſtis, & munera ſelecta accepiſtis ab eo; in domibus cæſi lapidis quas ædificâſtis, non habitabitis; & vinearum expetibilium quas conſeviſtis, vinum nequaquam bibetis. 12 Novi enim multa eſſe ſcelera veſtra, & ingentia peccata veſtra. Oppreſſores juſti acceperunt munus, & pauperem in porta perverterunt. 13 Propterea qui prudens eſt, eo tempore ſilebit; quia tempus calamitoſum erit. 14 Quærite bona, non mala, ut vivatis: atque ita aderit vobis Dominus potentiſſimus, quemadmodum dixiſtis. 15 Odio habete mala, & amate bona, & in porta jus conſervate: forſitan miſerebitur Dominus Deus potentiſſimus reliquiis Joſephi. 16 Sic enim ait Dominus Deus potentiſſimus; In omnibus vicis erit luctus, & in omnibus plateis, dicent, Eheu eheu; & vocabunt agricolas ad planctum, ad luctum eos qui nôrunt lamentationes; 17 In omnibus quoque vineis erit luctus; quia tranſibo per medum tui, dicit Dominus. 18 Væ exoptantibus diem Domini: ad quid proderit vobis dies Domini? obſcura namque eſt, non lucida. 19 Perinde ac cui leonem fugienti occurrat urſus; aut domum ingreſſus, manu ſuâ innitatur parieti, & mordeat eum ſerpens.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

5 * ولا تطلبوا بيت ايل * والي الجلجال لا تدخلوا * وعلي بير الحلف لا تصعدوا * لأن
6 الجلجال يسبي * وبيت ايل يكون كانه لم يكن * اطلبوا الرب فتحيون كيلا يلتهب
7 مثل النار بيت يوسف وتاكله * وليس يكون من يطفي في بيت اسرايل * الرب الصانع
8 الي العلا حكما * ووضع عدلا في الارض * الصانع كلا ومهييه ومبدله بالغداة ظلا * ومظلم
النهار ليلا * الداعي ماء البحر * ومهرقه علي وجه كل الارض * الرب الاله الضابط الكل اسمه *
9 10 * المقسم كسرا علي قوة * والجالب شقوة علي حصن * ابغضوا المبكت في الابواب * والقول
11 البار رذلوه * لاجل هذا من اجل انهم اقمعوا روس المساكين * وقبلتم الهدايا الخيار منهم *
بنيتم بيوتا صخرية ولن تسكنوا فيها * وغرستم كروما مشتهاة ولن تشربوا منها خمرا *
12 * لاني علمت بذنوبكم الكثيرة * وخطاياكم قوية * تدوسون الصديق * وتاخذون
13 المقايضات المبكتات الفقراء في الابواب * لاجل هذا الفهم في ذلك الزمان يسكت * لان الزمان
14 شرير هو * اطلبوا الجيد لا الشرير كي تحيوا * ويكون هكذا معكم الرب الاله الضابط
15 الكل * هكذا قولوا * ابغضنا الشرورات واحببنا الجيدات * وردوا الحكم في الابواب * كي
16 يرحم الرب الاله الضابط الكل بقايا يوسف * لاجل هذا هكذا يقول الرب الاله الضابط الكل
في كل الشوارع مناحة * وفي جميع الطرقات يدعي ويل ويل * يدعا الفلاح للحزن والمناحة *
17 والذين يعلمون المراثي * وفي جميع الطرق مناحة * من اجل اني اجوز في وسطك يقول
18 الرب * ويل الذين يشتهون يوم الرب * لماذا هو لكم يوم الرب * هذا هو لكم ظلمة وليس
19 نور * كما اذا هرب انسان من وجه الاسد ويسقط له الذيب ويدخل الي بيته ويقر يداه علي
الحايط فتنهشه الحية *

5 *Et ne quæratis Beth-il, & ad Galgalem ne ingrediamini, & ſuper puteum juramenti ne aſcendatis: nam Galgal captiva erit, & Beth-il erit ac ſi non fuiſſet.* 6 *Quærite Dominum, & vivetis: ne ſuccendatur ſicut ignis domus Joſephi, & devoret eam; nec adſit qui extinguat in domo Iſraelis.* 7 *Dominus qui exercet in excelſis judicium, & poſuit æquitatem in terra,* 8 *Qui omnia fecit, diſponit, & matutino tempore mutat in umbram, quique diem obſcurat in noctem, qui maris aquam evocat, refunditque eam ſuper totius terræ ſolum; Dominus Deus omnipotens eſt nomen ejus:* 9 *Qui fractionem diſtribuit ſuper fortitudinem, & adducit miſeriam ſuper munitionem.* 10 *Odio habuerunt arguentem in portis, & ſermonem juſtum aſpernati ſunt:* 11 *Idcirco, quia fuſti tutuderunt capita pauperum, & dona ſelecta ab eis accepiſtis; ædificâſtis ædes lapideas, at nequaquam habitabitis in eis; plantâſtis vineas exquiſitas, at nequaquam bibetis ex eis vinum.* 12 *Nam plurimas culpas veſtras agnoſco, & peccata veſtra gravia ſunt: conculcatis juſtum, & accipitis permutationes quæ arguunt egenos in portis.* 13 *Ideo prudens eo tempore ſilebit, quia tempus malum erit.* 14 *Quærite bonum, non malum, ut vivatis: atque ita erit vobiſcum Dominus Deus omnipotens.* 15 *Sic dicite, Odio habemus mala, & bona diligimus: & reddite judicium in portis; miſereatur Dominus Deus omnipotens reliquiarum Joſephi.* 16 *Propterea, ſic ait Dominus Deus omnipotens; In omnibus vicis erit luctus, & in viis omnibus clamabitur; Væ, væ; vocabitur agricola ad mœrorem & luctum, ac ii qui nôrunt lamentationes:* 17 *In omnibus, inquam, viis erit luctus, quia tranſibo per medium tui, ait Dominus.* 18 *Væ iis qui expetunt diem Domini: quid prodeſt vobis dies Domini? ea vobis erit tenebræ non lux:* 19 *Quemadmodum cùm fugit aliquis à facie leonis, & incidit in eum urſus; vel ingreſſus domum ſuam imponit manum ſuam parieti, mordetque eum coluber.*

עָמוֹס : ו

non & , caligo & ? : lux non & , Domini dies tenebroſitas Nónne

20 הֲלֹא־חֹשֶׁךְ יוֹם יְהוָה וְלֹא־אוֹר וְאָפֵל וְלֹא־

odorabo non & : veſtras ſolennitates reprobavi , Odivi ? ei ſplendor

21 נֹגַהּ לוֹ׃ שָׂנֵאתִי מָאַסְתִּי חַגֵּיכֶם וְלֹא אָרִיחַ

, aſcenſiones mihi obtuleritis ſi Quia .veſtras retentiones in

22 בְּעַצְּרֹתֵיכֶם׃ כִּי אִם־תַּעֲלוּ־לִי עֹלוֹת

non veſtrorum pinguium pacificationem & : volam non veſtra munera &

וּמִנְחֹתֵיכֶם לֹא אֶרְצֶה וְשֶׁלֶם מְרִיאֵיכֶם לֹא

cantum & : tuorum canticorum turbam me deſuper Remove .reſpiciam

23 אַבִּיט׃ הָסֵר מֵעָלַי הֲמוֹן שִׁרֶיךָ וְזִמְרַת

: judicium , aquæ ſicut ſe volvat Et .audiam non tuorum nablorum

24 נְבָלֶיךָ לֹא אֶשְׁמָע׃ וְיִגַּל כַּמַּיִם מִשְׁפָּט

munus & , ſacrificia Nunquid .fortis torrens veluti juſtitia &

25 וּצְדָקָה כְּנַחַל אֵיתָן׃ הַזְּבָחִים וּמִנְחָה

domus annis quadraginta , deſerto in mihi feciſtis appropinquare

הִגַּשְׁתֶּם־לִי בַמִּדְבָּר אַרְבָּעִים שָׁנָה בֵּית

Saturnum & , veſtrum regem Zichuth portâſtis Et ? Iſrael

26 יִשְׂרָאֵל׃ וּנְשָׂאתֶם אֵת סִכּוּת מַלְכְּכֶם וְאֵת כִּיּוּן

feciſtis quos , veſtrorum deorum ſtellam : veſtrarum imaginum

צַלְמֵיכֶם כּוֹכַב אֱלֹהֵיכֶם אֲשֶׁר עֲשִׂיתֶם

dixit : Dammeſec trans vos faciam migrare Et .vobis

27 לָכֶם׃ וְהִגְלֵיתִי אֶתְכֶם מֵהָלְאָה לְדַמָּשֶׂק אָמַר

.ejus nomen exercituum Deus Dominus

יְהוָה אֱלֹהֵי־צְבָאוֹת שְׁמוֹ׃

Verſio VULG. LAT.

20 Numquid non tenebræ dies Do-
mini, & non lux : & caligo, &
21 non ſplendor in ea? Odi, &
projeci feſtivitates veſtras : &
non capiam odorem cœtuum
22 veſtrorum. Quòd ſi obtuleritis
mihi holocautomata, & munera
veſtra, non ſuſcipiam : & vota
pinguium veſtrorum non reſpici-
23 am. Aufer à me tumultum car-
minum tuorum : & cantica lyræ
24 tuæ non audiam. Et revelabi-
tur quaſi aqua judicium, & ju-
25 ſtitia quaſi torrens fortis. Num-
quid hoſtias & ſacrificiũ obtuli-
ſtis mihi in deſerto quadraginta
26 annis, domus Iſrael? Et portâ-
ſtis tabernaculum Moloch veſtro,
& imaginem idolorum veſtro-
rum, ſidus Dei veſtri, quæ feciſtis
27 vobis. Et migrare vos faciam
trans Damaſcum, dicit Dominus:
Deus exercituum nomen ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

20 Οὐχὶ σκότος ἡ ἡμέρα τοῦ κυρίου, καὶ οὐ
φῶς, καὶ γνόφος οὐκ ἔχων φέγγος αὐτῇ;
21 Μεμίσηκα, ἀπῶσμαι ἑορτὰς ὑμῶν, καὶ οὐ μὴ
ὀσφρανθῶ θυσίας ἐν ταῖς πανηγύρεσιν ὑ-
22 μῶν. Διότι (χ) ἐὰν ἐνέγκητέ μοι (ˇ) ὁλοκαυ-
τώματα καὶ θυσίας ὑμῶν οὐ προσδέξομαι (ψ),
καὶ σωτηρίους ἐπιφανείας ὑμῶν οὐκ ἐπι-
23 βλέψομαι. Μετάστησον ἀπ' ἐμοῦ ἦχον ᾠ-
δῶν σου, καὶ ψαλμὸν ὀργάνων σου οὐκ ἀκού-
24 σομαι. Καὶ κυλισθήσεται ὡς ὕδωρ κρίμα,
25 καὶ δικαιοσύνη ὡς χειμάῤῥους ἄβατος. Μὴ
σφάγια καὶ θυσίας προσηνέγκατέ μοι (ω)
οἶκος Ἰσραὴλ τεσσαράκοντα ἔτη ἐν τῇ ἐ-
26 ρήμῳ; Καὶ ἀνελάβετε τὴν σκηνὴν τοῦ
Μολὸχ, καὶ τὸ ἄστρον τοῦ θεοῦ ὑμῶν Ῥαιφὰν,
τοὺς (α) τύπους αὐτῶν οὓς ἐποιήσατε ἑαυ-
27 τοῖς. Καὶ μετοικιῶ ὑμᾶς ἐπέκεινα Δαμα-
σκοῦ, λέγει κύριος· ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ
ὄνομα αὐτῷ.

Nónne tenebræ dies Domini, & 20
non lux? & caligo non habens
ſplendorem hæc? Odio habui, 21
repuli feſtivitates veſtras, nec
odorabor hoſtias in conventioni-
bus veſtris : Quia, ſi obtuleritis 22
mihi holocauſta, & ſacrificia ve-
ſtra; non ſuſcipiam, & (o) ſalu-
tares præſentiæ veſtræ non reſpi-
ciam. (p) Transfer à me ſo- 23
nitum carminum tuorum : &
pſalmum organorum tuorum non
audiam. Et volvetur, ſicut aqua, 24
judicium; & juſtitia, ſicut tor-
rens invius. Nunquid victimas, 25
& hoſtias obtuliſtis mihi, domus
Iſrael, quadraginta annis in ere-
mo? Et aſſumpſiſtis (q) taber- 26
naculum (r) Moloch, & ſydus
Dei veſtri (ſ) Rhephan, figuras
eorum, quas feciſtis vobis. Et 27
transferam vos trans Damaſcũ,
dicit Dominus: Deus omnipotens
nomen ei.

MS. A. (χ) καὶ ἐὰν (ˇ) τὰ ὁλοκαυτώματα (ψ) αὐτὰ, καὶ σωτηρίου (ω) ἐν τῇ ἐρήμῳ οἶκος Ἰσραὴλ τεσσαράκοντα ἔτη, λέγει κύριος. Καὶ (α) τύπους οὓς

CAP. VI. ו

Væ quietis in Sijon , & fidentibus in monte Someron , nuncupatis

1 הוֹי הַשַּׁאֲנַנִּים בְּצִיּוֹן וְהַבֹּטְחִים בְּהַר שֹׁמְרוֹן נְקֻבֵי

principium gentium , & venerunt ad eos domus Iſrael. Tranſite

2 רֵאשִׁית הַגּוֹיִם וּבָאוּ לָהֶם בֵּית יִשְׂרָאֵל׃ עִבְרוּ

Calneh , & videte , & ite inde Chamath magnam : & deſcendite

כַלְנֵה וּרְאוּ וּלְכוּ מִשָּׁם חֲמַת רַבָּה וּרְדוּ

Ghath Peliſtim. Nunquid bonæ præ regnis iſtis ? num

גַת־פְּלִשְׁתִּים הֲטוֹבִים מִן־הַמַּמְלָכוֹת הָאֵלֶּה אִם־

multus terminus eorum præ termino veſtro ? Elongantes ad diem malum :

3 רַב גְּבוּלָם מִגְּבֻלְכֶם׃ הַמְנַדִּים לְיוֹם רָע

& appropinquare feciſtis habitare rapinæ. Jacentes ſuper lectis

4 וַתַּגִּישׁוּן שֶׁבֶת חָמָס׃ הַשֹּׁכְבִים עַל־מִטּוֹת

dentis , & diſtenti ſuper ſtratis ſuis : & comedentes agnos de grege ,

שֵׁן וּסְרֻחִים עַל־עַרְשׂוֹתָם וְאֹכְלִים כָּרִים מִצֹּאן

& vitulos de medio ſaginarii. Particularizantes ſuper os nabli

5 וַעֲגָלִים מִתּוֹךְ מַרְבֵּק׃ הַפֹּרְטִים עַל־פִּי הַנָּבֶל

ſicut David excogitaverunt ſibi inſtrumenta cantici. Bibentes

6 כְּדָוִיד חָשְׁבוּ לָהֶם כְּלֵי־שִׁיר׃ הַשֹּׁתִים

in phialis vinum , & præcipuo unguentorum ungunt ſe : & non condolent

בְּמִזְרְקֵי יַיִן וְרֵאשִׁית שְׁמָנִים יִמְשָׁחוּ וְלֹא נֶחְלוּ

ſuper contritione Joſeph. Quapropter nunc migrabunt in capite

7 עַל־שֵׁבֶר יוֹסֵף׃ לָכֵן עַתָּה יִגְלוּ בְּרֹאשׁ

tranſmigrantiũ : & recedet convivium funeris extenſorum. Juravit Dominus

8 גֹּלִים וְסָר מִרְזַח סְרוּחִים׃ נִשְׁבַּע אֲדֹנָי

Dominus in anima ſua , dixit Dominus Deus exercituum : Abominans

יֱהֹוִה בְּנַפְשׁוֹ נְאֻם־יְהוָה אֱלֹהֵי צְבָאוֹת מְתָאֵב

ego ſuperbiam Jahacob , & palatia ejus odi : & concludam

אָנֹכִי אֶת־גְּאוֹן יַעֲקֹב וְאַרְמְנֹתָיו שָׂנֵאתִי וְהִסְגַּרְתִּי

civitatem , & plenitudinem ejus. Et erit , ſi remanſerint decem

9 עִיר וּמְלֹאָהּ׃ וְהָיָה אִם־יִוָּתְרוּ עֲשָׂרָה

viri in domo una , & morientur.

אֲנָשִׁים בְּבַיִת אֶחָד וָמֵתוּ׃

CAP. VI.

1 VÆ qui opulenti eſtis in Sion,
& confiditis in monte Samariæ :
optimates capita populorum, in-
gredientes pompaticè domum Iſ-
2 rael. Tranſite in Chalane, & vi-
dete, & ite indè in Emath ma-
gnam : & deſcendite in Geth Pa-
læſtinorum, & ad optima quæque
regna horum : ſi latior terminus
3 eorum termino veſtro eſt. Qui
ſeparati eſtis in diem malum : &
appropinquatis ſolio iniquitatis.
4 Qui dormitis in lectis eburneis,
& laſcivitis in ſtratis veſtris : qui
comeditis agnum de grege, &
5 vitulos de medio armenti. Qui
canitis ad vocem pſalterii : ſicut
David putaverunt ſe habere vaſa
6 cantici. Bibentes vinum in phia-
lis, & optimo unguento delibu-
ti : & nihil patiebantur ſuper con-
7 tritione Joſeph. Quapropter nunc
migrabũt in capite tranſmigran-
tium : & auferetur factio laſcivi-
8 entium. Juravit Dominus Deus
in anima ſua, dicit Dominus Deus
exercituum : Deteſtor ego ſuper-
biam Jacob, & domos ejus odi,
& tradam civitatem cum habita-
9 toribus ſuis. Quòd ſi reliqui fue-
rint decem viri in domo una, &
ipſi morientur.

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 Οὐαὶ τοῖς ἐξουθενοῦσι Σιὼν, καὶ τοῖς
πεποιθόσιν ἐπὶ τὸ ὄρος Σαμαρείας, ἀπετρύ-
γησαν ἀρχὰς ἐθνῶν, καὶ εἰσῆλθον αὐτοί.
2 οἶκος τοῦ Ἰσραὴλ Διάβητε πάντες καὶ
ἴδετε, καὶ διέλθατε ἐκεῖθεν εἰς (α) Ἐμα-
ραββὰ, καὶ κατάβητε ἐκεῖθεν εἰς Γὲθ ἀλ-
λοφύλων, τὰς κρατίστας ἐκ πασῶν τῶν (β)
βασιλειῶν τούτων, εἰ (ˇ) πλέονα τὰ ὅρια αὐτῶν
3 ἐστι τῶν ὑμετέρων ὁρίων. Οἱ (γ) ἐρχόμενοι
εἰς ἡμέραν κακὴν, οἱ ἐγγίζοντες καὶ ἐφα-
4 πτόμενοι σαββάτων ψευδῶν, Οἱ καθεύ-
δοντες ἐπὶ κλινῶν ἐλεφαντίνων, καὶ κατα-
σπαταλῶντες ἐπὶ ταῖς στρωμναῖς αὐτῶν,
καὶ ἔσθοντες ἐρίφους ἐκ ποιμνίων, καὶ μοσχά-
ρια (δ) ἐκ μέσου βουκολίων γαλαθηνὰ,
5 Οἱ (ε) ἐπικρατοῦντες πρὸς τὴν φωνὴν τῶν
ὀργάνων, ὡς (ζ) ἑστηκότα ἐλογίσαντο, καὶ
6 οὐχ ὡς φεύγοντα, Οἱ πίνοντες τὸν διυ-
λισμένον οἶνον, καὶ τὰ πρῶτα μύρα χριό-
μενοι, καὶ οὐκ ἔπασχον οὐδὲν ἐπὶ τῇ συντριβῇ
7 Ἰωσήφ. Διὰ τοῦτο νῦν αἰχμάλωτοι ἔ-
σονται ἀπ' ἀρχῆς δυναστῶν, καὶ ἐξαρθήσε-
8 ται χρεμετισμὸς ἵππων ἐξ Ἐφραίμ· Ὅτι
ὤμοσε κύριος καθ' ἑαυτοῦ, (η) Διότι βδε-
λύσσομαι ἐγὼ πᾶσαν τὴν ὕβριν Ἰακὼβ, καὶ
τὰς χώρας (θ) αὐτοῦ μεμίσηκα, καὶ ἐξαρῶ
πόλιν σὺν πᾶσι τοῖς κατοικοῦσιν αὐτήν.
9 Καὶ ἔσται, ἐὰν ὑπολειφθῶσι δέκα ἄνδρες ἐν
οἰκίᾳ μιᾷ, (ι) καὶ ἀποθανοῦνται.

CAP. VI.

VÆ, (a) qui deſpiciunt Sion, 1
& qui confidunt in monte Sa-
mariæ. (b) Vindemiârunt primi-
tias gentium : & ingreſſi ſunt
ipſi. Domus Iſrael, Tranſite o- 2
mnes, & (c) videte : & per-
tranſite indè in (d) Emaraaba :
& deſcendite indè in Geth alie-
nigenarum, optimas ex omnibus
regnis his : ſi ampliores ſunt ter-
mini eorum terminis veſtris. Ve- 3
nientes in diem malum, appropin-
quantes, & tangentes ſabbata
mendacia; Dormientes in lectis 4
eburneis, affluentes deliciis in
ſtratis ſuis, & comedentes hœdos
de gregibus, & lactentes vitulos
de medio armentorum, (e) Præ- 5
valentes ad vocem organorum.
(f) Quaſi ſtantia putaverunt,
& non quaſi fugientia. Qui bi- 6
bunt vinum (g) defæcatum, &
primis unguentis unguntur, &
nihil patiebantur ſuper contritio-
ne Joſeph. Proptereà nunc ca- 7
ptivi erunt ab initio (h) fortium :
& auferetur hinnitus equorum
ex Ephraem : Quia juravit 8
Dominus per (i) ſemetipſum ;
Quia abominor ego omnẽ contu-
meliam Jacob, et regiones ejus
odi, et auferam civitatem cum
omnibus habitatoribus ſuis. Et 9
erit, ſi remanſerint decem viri
in domo una ; et morientur.

MS. A. (α) Αἱμαθραββὰ, (β) βασιλέων (ˇ) πλίονα (γ) εὐχόμενοι (δ) ἐκ βουκολίων (ε) ἐπικροτοῦντες (ζ) ἑστῶτα (η) Ὅτι (θ) αὐτῶν (ι) ἀποθανοῦν)

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 הלא חשוך יומא דעתיד למיתי מן קדם יי ולא נהור וקבל ולא זהור ליה: סניתי רחיקית
21 חגיכון ולא אקבל ברעוא קורבן כנשתכון: ארי אם תסקון קדמי עלון וקורבניכון לא
22 לרעוא ונכסת קודשיכון לא יתקבלון קדמי: אעדי מן קדמי אתרגושת זמרך ונגון
23 כנרך לא אשמע: ויתגלי כמיא דינא וזכותא כנחל מגבר: הנכסת קודשין וקורבנין
24 25 קרבתון קדמי במדברא ארבעין שנין בית ישראל: ונטלתון ית סכות פתכומרכון
26 27 וית כיון צלמיכון כוכב טעותכון די עבדתון לכון: ואגלי יתכון מהלאה לדמשק
אמר יי אלהים צבאות שמיה:

ו

1 ווי דשלן שלוא בציון ומתרחצין על כרכא דשומרון מקימין שום בניהון כשום בני
2 עממיא וכל דמן דיסתמכון עליהון בית ישראל: עברו לכלנה וחזו ואזילו מתמן
לחמת רבה וחותו לגת דפלשתאי דטבין מן מלכותא האלין אם סגי תחומהון
3 מתחומכון: אנון מרחקין יום ביש ואתון מקרבין בבית כנשתכון חטוף: דשכבין
4 על ערסן דמכבשן בשן דפיל ועומקין על ערסיהון ואכלין פטימין מענא ועגלין
5 מגו רבקא: דמנגן על פום נבלא כדויד אתקינו להון מני זמרא: דשתן בפילון
6 דכסף חמר וריש משחין טבין מתמשחין ולא כאב להון על תבריה דיוסף: בכן
7 כען יגלן בריש גלן ויעדון מנהון מרוחין ומפנקין: קים יי אלהים במימריה אמר יי
8 אלהא דישראל מנבל אנא ית בית מקדשא דביתיה דיעקב ובירניתיה רחקית ואמסר
9 קרתא ומלאה: ויהי אם ישתארון עסרא גברין בביתא חד ימותון:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Nónne tenebroſus eſt dies qui venturus eſt à facie Domini & non 20
lucidus? & caligo erit in eo, & non ſplendor? Odio habui, repro- 21
bavique feſtivitates veſtras, nec benevolè excipiam oblationem congre-
gationis veſtræ. Quoniam ſi offeratis coram me holocauſtomata & ob- 22
lationes veſtras, non erunt acceptabiles, & victimæ ſanctificatæ ve-
ſtræ non recipientur à me. Aufer à conſpectu meo ſonitum carmi- 23
num tuorum, & modulationem citharæ tuæ non audiam. Et revela- 24
bitur tanquam aqua judicium, & juſtitia ſicut torrens inundans. Nun- 25
quid hoſtias ſanctificatas & oblationes obtuliſtis coram me in deſerto
quadraginta annis domus Iſrael? Et portâſtis tabernaculum Sa- 26
cerdotum veſtrorum, & Chiun imaginem veſtram, Sydus idolum ve-
ſtrum quod feciſtis vobis. Et ablegabo vos ultra Damaſcum, ait Dominus, 27
Deus exercituum nomen ejus.

CAP. VI.

VÆ quietè degentibus in Sion, & qui confidunt in arce Samariæ, im- 1
ponentibus nomen filiorum ſuorum ſecundùm nomen filiorum genti-
um, & omnium quibus innititur domus Iſrael. Tranſite in Calne & 2
videte, & contendite indè in Emath magnam, atque deſcendite in Gath
Philiſtinorum : num meliores ſunt regnis his, an latior eſt terminus eo-
rum termino veſtro? Ipſi prorogabant diem malum, vos autem prope 3
facitis in domo congregationis veſtræ rapinas. Qui dormiunt in lectis 4
ſtratis ebore, & ſubmergunt ſe in lectis ſuis, & comedunt pinguia ex
ovibus & vitulos de medio ſaginarii. Qui modulos concinunt ſuper os na- 5
bli, ſicut David præparaverunt ſibi inſtrumenta muſica. Qui bibunt in 6
phialis argenteis vinum, & præſtantiſſimis optimiſque unguentis ſeſe in-
ungunt : nec tangit eos dolor ex contritione Joſephi. Quapropter nunc 7
exulabunt ipſi inter primos captivos, & recedent ab eis gaudia ac ſtra-
gula ſubtilia. Juravit Dominus Deus per verbum ſuum, dixit Dominus 8
Deus *Iſrael*. Abominor ego domum ſanctuarii *domus* Jacob, & palatia ejus execror, quin & tradam civitatem &
plenitudinem ejus. Accidetque ſi remanſerint ſuperſtites decem viri in domo una, ut mortem oppetant. 9

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܗܘ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ. ܚܫܘܟܐ ܗܘ. ܘܠܐ ܢܗܝܪ. ܥܡܛܢܐ ܗܘ ܘܠܝܬ ܒܗ ܢܘܗܪܐ. 20
* ܣܢܝܬ ܘܐܣܠܝܬ ܥܐܕܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܐܪܝܚ ܒܕܒܚܝܟܘܢ. * ܐܦܢ ܬܣܩܘܢ ܠܝ ܥܠܘܬܐ 21 22
ܡܫܡܠܝܐ . ܒܩܘܪܒܢܝܟܘܢ ܠܐ ܐܨܛܒܐ. ܘܫܘܦܪܐ ܕܡܦܛܡܝܟܘܢ ܠܐ ܐܚܘܪ. * ܐܥܒܪ 23
ܡܢܝ ܩܠܐ ܕܙܡܪܟ. ܘܙܡܪܐ ܕܟܢܪܟ ܠܐ ܐܫܡܥ. * ܘܢܬܓܠܐ ܕܝܢܐ ܐܝܟ ܡܝܐ. 24
ܘܙܕܝܩܘܬܐ. ܐܝܟ ܢܚܠܐ ܥܫܝܢܐ. * ܕܒܚܐ . ܘܩܘܪܒܢܐ ܩܪܒܬܘܢ ܠܝ 25
ܐܪܒܥܝܢ ܫܢܝܢ ܒܡܕܒܪܐ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ . * ܐܠܐ ܫܩܠܬܘܢ ܡܫܟܢܗ ܕܡܠܟܘܡ . 26
ܘܟܝܘܢ ܨܠܡܟܘܢ. ܟܘܟܒܐ ܕܥܒܕܬܘܢ ܠܟܘܢ ܐܠܗܐ. * ܐܫܒܝܟܘܢ ܠܗܠ ܡܢ ܕܪܡܣܘܩ. 27
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

* ܘܝ ܠܒܣܝܢܝܢ ܠܨܗܝܘܢ: ܘܠܬܟܝܠܝܢ ܒܛܘܪܐ ܕܫܡܪܝܢ. ܕܒܙܘ ܠܪܫܐ ܕܥܡܡܐ ܘܐܥܠܘ 1
ܠܗܘܢ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܥܒܪܘ ܠܟܠܢܐ. ܘܚܙܘ. ܘܙܠܘ ܡܢ ܬܡܢ ܠܚܡܬ ܪܒܐ ܘܢܚܬܘ. 2
ܠܓܬ ܕܦܠܣܛܝܐ . ܕܫܦܝܪܐ ܗܝ ܡܢ ܟܠܗܝܢ ܡܠܟܘܬܐ ܗܠܝܢ. ܐܢ ܣܓܝ ܬܚܘܡܗܘܢ
ܡܢ ܬܚܘܡܟܘܢ. * ܕܡܣܟܝܢ ܠܝܘܡܐ ܒܝܫܐ. ܘܡܩܪܒܝܢ ܠܫܒܬܐ ܕܚܛܘܦܝܐ. * ܘܫܟܒܝܢ 3 4
ܥܠ ܥܪܣܬܐ ܕܫܢܐ . ܘܡܬܦܪܩܕܝܢ ܥܠ ܫܘܝܗܘܢ. ܘܐܟܠܝܢ ܡܦܛܡܐ ܡܢ ܥܢܐ .
ܘܥܓܠܐ ܡܢ ܓܘ ܒܩܪܐ. * ܕܢܩܫܝܢ ܥܠ ܦܘܡܐ ܕܟܢܪܐ . ܘܐܝܟ ܕܘܝܕ ܚܫܒܝܢ ܠܗܘܢ 5
ܡܐܢܝ ܙܡܪܐ. * ܕܫܬܝܢ ܚܡܪܐ ܡܙܠܓܐ . ܘܡܫܚܐ ܪܫܝܐ ܡܫܝܚܝܢ. ܘܠܐ ܟܪܝܐ ܠܗܘܢ 6
ܥܠ ܬܒܪܗ ܕܝܘܣܦ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܫܬܒܘܢ ܒܪܝܫ ܫܒܝܐ. ܘܢܫܬܩܠ ܙܡܪܐ ܡܢ 7
ܫܠܝܛܢܝܗܘܢ. * ܝܡܐ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ ܒܢܦܫܗ .. ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ . 8
ܕܡܣܠܐ ܐܢܐ ܠܫܘܒܗܪܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܠܒܝܪܬܗ ܣܢܝܬ. ܘܐܫܠܡ ܡܕܝܢܬܐ ܒܡܠܝܗ.
* ܘܐܢ ܢܫܬܚܪܘܢ ܥܣܪܐ ܓܒܪܝܢ ܒܒܝܬܐ ܚܕ. ܢܡܘܬܘܢ. 9

* Talis eſt dies Domini : obſcura eſt, non lucida ; caliginoſa eſt, nec ullus eſt in ea ſplendor. 20 Odi & execror ſolennitates veſtras, & non 21 odorabor ſacrificia veſtra. Etiamſi obtuleritis 22 mihi holocauſta perfecta, oblationibus veſtris non delectabor, neque pulchritudinem ſaginatorum veſtrorum aſpiciam. Amovebo à 23 me vocem cantûs tui, & concentum lyræ tuæ non ſum ampliùs auditurus. Sed prodet ſe judicium 24 ſicut aquæ, & juſtitia ceu torrens validus. Num ſacrificia & munera obtuliſtis mihi 25 quadraginta annis in deſerto, Iſraelitæ ? Imò portâſtis tabernaculum Malchomi & Chevanis 26 idoli veſtri, ſydus quod feciſtis vobis deum. Efficiam ut captivi abducamini ultra Damaſcum, 27 dicit Dominus, cujus nomen eſt Deus potentiſſimus.

CAP. VI.

VÆ ſpernentibus Sionem, & fiduciam collocantibus 1 in monte Samariæ, diſſipantibus principes populorum, & deportantibus ſibi filios Iſraelis. Tranſite ad Cheliam, & videte 2 : illinc abite ad Hemath-rabba, & deſcendite ad Gath Paleſthinorum, quæ eſt optima omnium regnorum iſtorum ; num amplior ſit terminus eorum termino veſtro. *Væ iis* qui 3 præſtolantur diem malum, & promovent ad ſabbathum violentiæ, Cubant ſuper lectis 4 eburneis, & luxuriantur ſuper ſtratis ſuis : qui comedunt ſaginatos è gregibus, & vitulos ex armentis : Qui pulſant ad os lyrarum, 5 & ut David æſtimant inſtrumenta muſica : Qui bibunt vinum limpidiſſimum, & unguentis 6 præſtantiſſimis unguntur ; neque ſolliciti ſũt de fractione Joſephi. Idcircò captivi abducentur 7 in fronte captivorũ, & auferetur exultatio à principibus eorum. Juravit Dominus 8 dominorum per ſemetipſum, & Dominus Deus potentiſſimus dixit ; Deteſtor faſtum Jacobi, & palatia ejus odi : ideo tradam urbem integram ; Et ſi fortè reliqui manſerint 9 decem homines in eadem domo, morientur :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

20 * أليس يوم الرب ظلمة وليس نور * وضبابة ليس له ضوء * أبغضت وأقصيت أعيادكم * 21
22 ولست أشم ذبيحة في مواسمكم * من أجل أنه إن قدمتم لي محرقاتكم وذبائحكم لست
23 أقبلها * ولست منذ الآن أنظر خلاص ظهوركم * أبعد عني لحن تسابيحك * ومزمار أراغنك
24 25 لست أسمعه * ويتدحرج الحكم مثل الماء * والعدل مثل الوادي الذي لا يسلك * هل
26 ذبائح وضحايا قدمتم لي في البرية أربعين سنة يا بيت إسرائيل يقول الرب * واحتملتم خيمة
27 مولوخ * وكوكب إلهكم رافان * مثالاتهم التي صنعتموها لكم * فأسبيكم لأبعد من
دمشق يقول الرب الإله الضابط الكل اسمه *

1 * ويل للذين يزدرون بصهيون * · الإصحاح العاشر * · الفصل السادس ·
2 ويتوكلون على جبل سامرة اقتطفوا رؤساء الأمم وهم دخلوا * يا بيت إسرائيل اعبروا جميعا
وانظروا وجوزوا من هناك إلى حماة العظمى * وانزلوا من هناك إلى جات التي للقبائل الغريبة
3 الغريبات من جميع تلك المملكات * أحدودهم هي أكثر من حدودكم * أيها المصلون
4 في يوم السوء * المقتربون واللامسون السبوت الكاذبة * الراقدون على الأسرة العاجية * والهائمون
5 على فرشهم * والآكلون الجداء من القطعان * والعجول الرضع من أدوار البقر * الذين
6 يصفرون على أصوات العيدان * واحسبوه مثل قائم وليس مثل هارب * الذين يشربون
7 الخمر المروقة * ويدهنون بالأطياب البكرية * ولم يتألموا البتة بانكسار يوسف * لأجل
8 هذا الآن يصيرون مسبيين من رأس الأقوياء * وينزع صهيل الخيل من أفرام * لأن الرب
أقسم بذاته * من أجل أني أنا أرذل كل كبرياء يعقوب * وأبغضت كوره * وأنزع
9 مدينته مع جميع سكانها * ويكون إن تبقى عشرة رجال في بيت واحد فيموتون *

* *Nonne dies Domini tenebræ eſt, non lux ; & caligo ejus non habet lucem ?* 20 *Odi & repuli ſolennitates veſtras, & non* 21 *odorabor hoſtiam in conventibus veſtris. Nam licèt obtuleritis mihi holocauſta &* 22 *ſacrificia veſtra, nequaquam accipiam illa, neque reſpiciam poſthac ſalutem compacitionis veſtræ. Repellam à me* 23 *concentum hymnorum tuorum, & pſalterium organorum tuorum non audiam. Et volvetur judicium ſicut aqua, &* 24 *æquitas quaſi torrens impervius. An ſacrificia* 25 *& hoſtias obtuliſtis mihi in deſerto quadraginta annis, O domus Iſraelis, ait Dominus ? Imò tuliſtis tabernaculum* 26 *Molochi, & ſydus dei veſtri Raphanis, figuras eorum quas feceratis vobis. Ideo captivos amandabo vos longius* 27 *quàm Damaſcum, ait Dominus Deus, cujus nomen eſt Omnipotens.*

CAP. VI.

Textus decimus.

V*Æ iis qui neglectâ Sione confidunt* 1 *in monte Samariæ ; vindemiârunt principes gentium, & ipſi ingreſſi ſunt. O domus* 2 *Iſraelis, tranſite ſimul & videte, indeque pertranſite ad Hemath magnam, & illinc deſcendite in Gath quæ pertinet ad nationes exteras, omnium iſtorum regnorum fortiſſimas, utrum limites eorum plures ſint limitibus veſtris. O* 3 *qui preces funditis in die malo, qui accedentes tangitis ſabbatha falſa ; Qui* 4 *decumbitis in lectis eburneis, & libidine exardeſcitis ſuper cubilibus veſtris, comeditis hœdos è gregibus, & lactentes vitulos è præſepibus boum ; Qui pulſatis* 5 *propter ſonos fidium, idque exiſtimatis ut rem ſtabilem, ac non ut fugientem ; Qui bibitis vinum limpidum,* 6 *& ungitis vos unguentis matutinis, & nullatenus doletis contritionem Joſephi. Proptereà nunc captivi fient à prin-* 7 *cipe fortium, & auferetur hinnitus equorum ab Aphremo. Juravit enim Dominus* 8 *per ſemetipſum, quòd ego abominor totam ſuperbiam Jacobi, & odi regiones ejus auferamque urbem ipſius cum omnibus civibus ejus. Fietque, ſi remanſerint* 9 *decem viri in domo una, ut moriantur :*

עמוס : ז

de offa educendum ad ,eum cremabit & ,ſuus patruus eum tollet Et
10 ונשאו דודו ומסרפו להוציא עצמים מן
? tecum adhuc Num : domus lateribus in qui ei dicet & , domo
הבית ואמר לאשר בירכתי הבית העוד עמך
.Domini nomine in memorandum ad non quia,Tace ,dicet Et .Finis : dicet &
ואמר אפס ואמר הס כי לא להזכיר בשם יהוה׃
magnam domum faciet percutere & ,præcipiens Dominus ecce Quia
11 כי־הנה יהוה מצוה והכה הבית הגדול
petra in current Nunquid .ſciſſionibus parvam domum & : rimis
12 רסיסים והבית הקטן בקעים׃ הירצון בסלע
venenum in convertiſtis quoniam ? bobus in arabit Num ? equi
סוסים אם־יחרוש בבקרים כי־הפכתם לראש
: verbo non in Lætantes ? abſinthium in juſtitiæ fructum & ,judicium
13 משפט ופרי צדקה ללענה׃ השמחים ללא דבר
? cornua nobis aſſumpſimus noſtra fortitudine in Nónne : dicentes
האמרים הלוא בחזקנו לקחנו לנו קרנים׃
Deus Dominus dixit , Iſrael domus vos ſuper ſuſcitans ego ecce Quia
14 כי הנני מקים עליכם בית ישראל נאם־יהוה אלהי
ad uſque ,Chamath introitu ab vos oppriment & : gentem ,exercituum
הצבאות גוי ולחצו אתכם מלבוא חמת עד־
.deſerti torrentem
נחל הערבה׃

CAP. VII. ז

locuſtarum fictor ecce Et : Dominus Dominus mihi oſtendit Sic
1 כה הראני אדני יהוה והנה יוצר גבי
poſt ſerotina herba ecce Et : ſerotinam herbam aſcendendi principio in
בתחלת עלות הלקש והנה־לקש אחר
, terræ herbam comedere finierit ſi ,fuit Et .regis tonſiones
2 גזי המלך׃ והיה אם־כלה לאכול את־עשב הארץ
: Jahacob ſuſcitabit quis : obſecro parce Domine Domine : dixi &
ואמר אדני יהוה סלח־נא מי יקום יעקב
, erit Non : hoc ſuper Dominum Pœnituit ? ipſe parvulus quia
3 כי קטן הוא׃ נחם יהוה על־זאת לא תהיה
ecce Et : Dominus Dominus mihi oſtendit Sic .Dominus dixit
4 אמר יהוה׃ כה הראני אדני יהוה והנה
voraginem conſumpſit & : Dominus Dominus igne in litem ad vocans
קרא לרב באש אדני יהוה ותאכל את־תהום
ceſſa , Domine Domine : dixi Et .partem conſumpſit & ,magnam
5 רבה ואכלה את־החלק׃ ואמר אדני יהוה חדל־
Dominum Pœnituit ? ipſe parvus quia : Jahacob ſuſcitabit Quis .nunc
6 נא מי יקום יעקב כי קטן הוא׃ נחם יהוה
Sic .Dominus Dominus dixit , erit non iſtud etiam : hoc ſuper
7 על־זאת גם־היא לא תהיה אמר אדני יהוה׃ כה
, perpendiculi murum ſuper ſtans Dominus ecce & : mihi oſtendit
הראני והנה אדני נצב על־חומת אנך
Quid : me ad Dominus dixit Et .perpendiculum ejus manu in &
8 ובידו אנך׃ ויאמר יהוה אלי מה־
; Dominus dixit & : Perpendiculum , dixi & ? Hamos videns tu
אתה ראה עמוס ואמר אנך ויאמר אדני
adjiciam non : Iſrael mei populi intimo in perpendiculũ ponens ego Ecce
הנני שם אנך בקרב עמי ישראל לא־אוסיף
ſanctuaria & , Iſchac excelſa devaſtabuntur Et .eum pertranſire ultrà
9 עוד עבור לו׃ ונשמו במות ישחק ומקדשי
.gladio in Jarobham domum ſuper conſurgam & : deſolabuntur Iſrael
ישראל יחרבו וקמתי על־בית ירבעם בחרב׃
regem Jarobham ad el---Beth ſacerdos Amaliah miſit Et
10 וישלח אמציה כהן בית־אל אל־ירבעם מלך־
: Iſrael domus interiore in Hamos te ſuper Conjuravit : dicendo , Iſrael
ישראל לאמר קשר עליך עמוס בקרב בית ישראל
.ejus verba omnia ſuſtinere terra poſſet non
לא־תוכל הארץ להכיל את־כל־דבריו׃

Verſio VULG. LAT.

10 Et tollet eum propinquus ſuus, & comburet eum, ut efferat oſſa de domo: & dicet ei, qui in penetralibus domûs eſt; Numquid adhuc eſt penes te? 11 Et reſpondebit; Finis eſt. Et dicet ei; Tace, & non recor- 12 deris nominis Domini. Quia ecce Dominus mandabit, & percutiet domum majorem ruinis, & domum minorem ſciſſionibus. 13 Numquid currere queunt in petris equi, aut arari poteſt in bubalis, quoniam convertiſtis in amaritudinem judicium, & fructum juſtitiæ in abſynthium? 14 Qui lætamini in nihilo: qui dicitis; Numquid non in fortitudine noſtra aſſumpſimus no- 15 bis cornua? Ecce enim ſuſcitabo ſuper vos, domus Iſrael, dicit Dominus Deus exercituum, gentem: & conteret vos ab introitu Emath, uſque ad torrentem deſerti.

CAP. VII.

1 HÆc oſtendit mihi Dominus Deus: & ecce fictor locuſtæ in principio germinantium ſerotini imbris, & ecce ſerotinus poſt 2 tonſionem regis. Et factum eſt: cùm conſummâſſet comedere herbam terræ, dixi; Domine Deus, propitius eſto, obſecro: quis ſuſcitabit Jacob, quia parvulus 3 eſt? Miſertus eſt Dominus ſuper hoc: Non erit, dixit Dominus. 4 Hæc oſtendit mihi Dominus Deus: & ecce vocabat judicium ad ignem Dominus Deus: & devoravit abyſſum multam, & comê- 5 dit ſimul partem. Et dixi; Domine Deus, quieſce, obſecro: quis ſuſcitabit Jacob, quia parvulus 6 eſt? Miſertus eſt Dominus ſuper hoc: Sed & iſtud non erit, dixit 7 Dominus Deus. Hæc oſtendit mihi Dominus: & ecce Dominus ſtans ſuper murum litum, & in manu ejus trulla cæmentarii. Et dixit Dominus ad me; Quid tu vides, Amos? Et dixi; Trullam 8 cæmentarii. Et dixit Dominus; Ecce ego ponam trullam in medio populi mei Iſrael: non adji- 9 ciam ultrà ſuperinducere eum. Et demolientur excelſa idoli, & ſanctificationes Iſrael deſolabuntur: & conſurgam ſuper domum Je- 10 roboam in gladio. Et miſit Amaſias ſacerdos Bethel ad Jeroboam regem Iſrael, dicens; Rebellavit contra te Amos in medio domûs Iſrael: non poterit terra ſuſtinere univerſos ſermones ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Καὶ ὑπολειφθήσονται οἱ κατάλοιποι, καὶ λήψονται οἱ οἰκεῖοι αὐτῶν, (κ) καὶ παραβιῶνται τοῦ ἐξενέγκαι τὰ ὀστᾶ αὐτῶν ἐκ τοῦ οἴκου. καὶ ἐρεῖ τοῖς προεστηκόσι τῆς οἰκίας, Εἰ ἔτι ὑπάρ- 11 χει παρὰ σοί; Καὶ ἐρεῖ, Οὐκ ἔτι. καὶ ἐρεῖ, Σίγα ἕνεκα τοῦ μὴ ὀνομάσαι τὸ ὄνομα κυρί- 12 ου. Διότι ἰδοὺ κύριος ἐντέλλεται, καὶ πατάξει τὸν οἶκον τὸν μέγαν θλάσμασι, καὶ τὸν οἶκον 13 τὸν μικρὸν (λ) ῥάγμασιν. Εἰ διώξονται ἐν πέτραις ἵπποι; εἰ παρασιωπήσονται ἐν θηλείαις; (μ) ὅτι ἐξεστρέψατε εἰς θυμὸν κρί- 14 μα, καὶ καρπὸν δικαιοσύνης εἰς πικρίαν, Οἱ εὐφραινόμενοι ἐπ' οὐδενὶ λόγῳ, οἱ λέγοντες, 15 Οὐκ ἐν τῇ ἰσχύϊ ἡμῶν ἔσχομεν κέρατα; Διότι ἰδοὺ ἐγὼ (·) ἐπεγερῶ ἐφ' ὑμᾶς οἶκος (ν) Ἰσραὴλ ἔθνος, λέγει κύριος τῶν δυνάμεων, καὶ ἐκθλίψουσιν ὑμᾶς τοῦ (ξ) μὴ εἰσελθεῖν εἰς Αἱμὰθ, καὶ (ο) ὡς τοῦ χειμάῤῥου τῶν δυσμῶν.

Et (k) remanebunt reliqui, & tollent domeſtici eorum, & conabuntur, ut efferant oſſa eorum de domo. Et dicet his qui præſunt domui; Si adhuc eſt apud te? Et dicet; Nequaquam. Et 11 dicet; Tace: ut non nomines nomen Domini. Propterea ecce 12 Dominus (l) mandat, & percutiet domum magnam ruinis, & domum parvam ſciſſionibus. Si 13 perſequentur in petris equi? ſi reticebunt ad fœminas? quoniam convertiſtis in furorem judicium, & fructum juſtitiæ in amaritudinem. Qui lætamini ſuper 14 nullo (m) verbo, qui dicitis; Nónne in fortitudine noſtra habuimus cornua? Quia ecce ego 15 ſuſcitabo ſuper vos, domꝰ Iſrael, gentem, ait Dominus virtutum, & conterent vos, ut non introeatis in Emath, & uſque ad torrentem Occidentis.

MS. A. (κ) καὶ οἱ * παραβιῶνται (λ) ῥήγμασιν. (μ) ὅτι ὑμεῖς (·) ἐπεγείρω (ν) τοῦ Ἰσραὴλ ἔθνος, καὶ ἐκθλίψουσιν (ξ) μὴ εἰς Ἐμὰθ, (ο) ἕως

ΚΕΦ. ζ΄.

1 ΟΥτως ἔδειξέ μοι (α) κύριος ὁ θεός· καὶ ἰδοὺ ἐπιγονὴ ἀκρίδων ἐρχομένη ἑωθινή, καὶ 2 ἰδοὺ βροῦχος εἷς Γὼγ ὁ βασιλεύς. Καὶ ἔσται ἐὰν συντελέσῃ τοῦ καταφαγεῖν τὸν χόρτον τῆς γῆς, καὶ εἶπα, Κύριε κύριε, ἵλεως γενοῦ· τίς ἀναστήσει τὸν Ἰακώβ; ὅτι ὀλιγοστός ἐστι. 3 Μετανόησον κύριε ἐπὶ τούτῳ. Καὶ τοῦτο οὐκ 4 ἔσται, λέγει κύριος. Οὕτως ἔδειξέ μοι (β) κύριος· καὶ ἰδοὺ ἐκάλεσε τὴν δίκην ἐν πυρὶ κύριος, καὶ κατέφαγε τὴν ἄβυσσον τὴν πολλήν, καὶ κατέφαγε τὴν (γ) μερίδα κυρίου. 5 Καὶ εἶπα, Κύριε κόπασον δή, τίς ἀναστήσει 6 τὸν Ἰακώβ; ὅτι ὀλιγοστός ἐστι. Μετανόησον κύριε ἐπὶ τούτῳ. Καὶ τοῦτο οὐ μὴ γένηται, λέ- 7 γει κύριος. Οὕτως ἔδειξέ μοι κύριος· καὶ ἰδοὺ (δ) ἑστηκὼς ἐπὶ τείχους ἀδαμαντίνου, καὶ 8 ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ ἀδάμας. Καὶ εἶπε κύριος πρός με, Τί σὺ ὁρᾷς Ἀμώς; καὶ εἶπα, Ἀδάμαντα. καὶ εἶπε κύριος πρός με, Ἰδοὺ ἐγὼ ἐντάσσω ἀδάμαντα (ε) ἐν μέσῳ λαοῦ μου Ἰσραήλ, οὐκ ἔτι μὴ (ζ) προσθῶ τοῦ παρ- 9 ελθεῖν αὐτόν. Καὶ ἀφανισθήσονται βωμοὶ τοῦ γέλωτος, καὶ αἱ τελεταὶ τοῦ Ἰσραὴλ (η) ἐρημωθήσονται, καὶ ἀναστήσομαι ἐπὶ τὸν οἶ- 10 κον Ἱεροβοὰμ ἐν ῥομφαίᾳ. Καὶ ἐξαπέστειλεν Ἀμασίας ὁ ἱερεὺς Βαιθὴλ πρὸς Ἱεροβοὰμ βασιλέα Ἰσραήλ, λέγων, Συστροφὰς ποιεῖται κατὰ σοῦ Ἀμὼς ἐν μέσῳ οἴκου Ἰσραήλ, οὐ μὴ (θ) δύνηται ἡ γῆ ὑπενεγκεῖν (ι) πάντας τοὺς λόγους αὐτοῦ.

CAP. VII.

SIc oſtendit mihi Dominus De- 1 us: Et ecce fœtus locuſtarum veniebat matutinus: & ecce bruchus unus Gog rex. Et erit, 2 ſi compleverit, ut devoret fœnum terræ: & dixi; Domine, (a) Domine, propitius eſto. Quis ſuſcitabit Jacob? quoniam modicus eſt. Pœniteat te, Domine, ſuper hoc. Et hoc non erit, dicit Do- 3 minus. Sic oſtendit mihi Do- 4 minus. Et ecce vocavit judicium in igne Dominus, & devoravit abyſſum multam, & comêdit partem (b) Domini. Et di- 5 xi; Domine, deſine nunc. Quis ſuſcitabit Jacob? quoniam parvulus eſt. Pœniteat te, Domine, 6 ſuper hoc. Et hoc non fiet, dicit Dominus. Sic oſtendit mihi Do- 7 minus. Et (c) ecce ſtabat ſuper murum (d) adamantinum: & in manu ejus adamas. Et dixit 8 Dominus ad me; Quid tu vides, Amos? Et dixi; Adamantem. Et dixit Dominus ad me; Ecce ego impono adamantem in medio populi mei Iſrael: nequaquam ultrà addam, ut pertranſeam eum. Et diſſipabuntur aræ riſûs: 9 & ſacrificia Iſrael deſolabuntur: & conſurgam ſuper domum Hieroboam in gladio. Et miſit 10 Amaſias ſacerdos Bethel ad Hieroboam regem Iſrael, dicens; Congregationes facit contra te Amos in medio domûs Iſrael. Non poterit terra ſuſtinere omnes ſermones ejus.

MS. A. (α) κύριος· καὶ ἰδοὺ (β) κύριος ὁ θεός· (γ) μερίδα. Καὶ εἶπα, Κύριε κύριε (δ) ἀνὴρ ἑστηκὼς (ε) εἰς μέσον (ζ) προσθήσω (η) ἐξερημωθήσονται, (θ) γένηται (ι) ἅπαντας

תרוגם יונתן Targum JONATHAN.

10 ויטלניה קריביה מיקידא לאפקא גרמיא מן ביתא ויימר לדי בשדא דביתא העוד כען
11 עמך ויימר ספו ויימר סלק ארי כד הוו קימין לא הוו מצלן בשמא דיי׃ ארי הא יי מפקד
12 וימחי מלכו רבא מחא תקיפא ומלכו זעירא מחא חלשא׃ הירהטון בכיפא סוסון אם
13 יתרדי בתוריא ארי הפכתון לריש חוין בישין דינא ופרי זכותא לגידין׃ דחדן ללא
14 מדעם דאמרין הלא בתוקפנא קנינא לנא נכסין׃ ארי הא אנא מקים עליכון בית
ישראל אמר יי אלהים צבאות עם וידחקון יתכון ממעלנא דחמת עד נחלא דמישרא׃

ז

1 כדין אחזיני יי אלהים והא ברית גובי באול צמוח לקיש והא צמוח דעדק בתר דאתגזיזת
2 שחתא דמלכא׃ ויהי כד שיצי למיכל ית עסבא דארעא ואמרית קבל בעותי יי אלהים
3 שבוק כען לחובי שארא דיעקב מן יקום ויבעי על חטאהון ארי מטלטלין אנון׃ אתיב
4 יי רוגזיה על דא לא תתקים אמר יי׃ כדנן אחזיני יי אלהים והא עתיד למדן באשתא יי
5 אלהים ואכלת ית תהום רבא ושיצאת ית אחסנתא׃ ואמרית קבל בעותי יי אלהים
שבוק כען לחובי שארא דבית יעקב מן יקום ויבעי על חטאיהון ארי מטלטלין אנון׃
6 אתיב יי רוגזיה על דא לא תתקים אמר יי אלהים׃ כדנן אחזיני והא יי קאים על
7
8 שור דדין וקדמוהי דין׃ ואמר יי לי מה את חזי עמוס ואמרית דין ואמר יי הא אנא
9 עביד דין בגו עמי ישראל לא אוסיף עוד למשבק להון׃ ויצדון במת ישחק ומקדשי
10 ישראל יחרבון ואקים על בית ירבעם דקטלין בחרבא׃ ושלח אמציה רבא
דביתאל לות ירבעם מלכא דישראל למימר מריד עלך עמוס בגו בית ישראל לא
תכול ארעא לסוברא ית כל פתגמוהי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et tollet eum propinquꝰ ejꝰ ab incendio ad educendũ oſſa de domo, & di- 10
cet ei qui in angulo domꝰ verſabitur, Nunquid adhuc eſt penes te aliquis?
qui dicet, Perierunt: dicet verò, Remove, quandoquidẽ dum vita fruebantur,
in nomine Dñi non preces fundebant. Ecce enim Dñs mandat, & percuti- 11
et regnũ magnũ percuſſione forti, regnũ verò minꝰ plaga remiſſiore. Nun- 12
quid per petrã currunt equi, an arat quiſpiã bobꝰ? quandoquidẽ conver-
tiſtis in caput ſerpentũ maleficorũ judiciũ, & fructꝰ juſtitiæ in abſinthium.
Qui lætantur in re nihili, & dicunt: Nónne fortitudine noſtra comparavimꝰ 13
nobis divitias? Etenim ecce ego ſuſcito adverſũ vos, domꝰ Iſrael, inquit 14
Dñs Deus exercituum, populum qui affliget vos ab introitu Emath uſque
ad torrentem planitiei.

CAP. VII.

HÆc oſtendit mihi Dñs Deꝰ: Ecce creatio locuſtarũ in principio germi- 1
nationis ſerotinæ, et ecce germinatio minima poſtquã tonſa eſt farrago regis.
Et factũ eſt cùm conſummaſſet comedere herbã terræ, ut dicerẽ: Suſcipe de- 2
precationẽ meã Dñe Deꝰ, ignoſce obſecro peccatis reliquiarũ Jacob: quis
conſurget & veniã exorabit pro peccatis eorũ? quia diſpalati ſunt. Avertit 3
Dñs irã ſuã ob id, non ſtabit, dicit Dñs. Sic oſtendit mihi Dñs Deꝰ: Ecce ju- 4
dicaturꝰ erat igne Dñs Deus, & voraverat abyſſũ magnã, & conſumpſerat
hæreditatẽ. Et dixi, Exaudi deprecationẽ meã Dñe Deꝰ, parce quæſo pec- 5
catis reliquiarũ domꝰ Jacob: quis conſurget & veniã exorabit pro peccatis
eorũ? vagi ſunt enim ipſi. Avertit [*iterum*] Dñs furorẽ ſuũ hac de cauſa: 6
nec etiã iſtud ſtabit, dicit Dñs Deus. Sic oſtendit mihi: Et ecce Dñs ſtabat 7
ſup murũ judicii, & corã illo erat judiciũ. Dixit autẽ mihi *Dñs*: Quid vides 8
Amos? & reſpondi: Judiciũ. Dixit proinde Dñs ad me: Ecce ego judicium
exercebo in medio populi mei Iſrael, non ultrà additurꝰ eis dimittere. De- 9
vaſtabuntur ergo excelſa Iſaac, & ſacra Iſrael deſolabuntur: ſuſcitabóque
contra familiã Jeroboã eos qui trucidant gladio. Et miſit Amaſias princeps 10
Bethel ad Jeroboã regẽ Iſrael cum his verbis: Conjuravit contra te Amos in
medio domus Iſrael; haud valebit terra ſuſtinere omnes ſermones ejus.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

10 * ܘܢܫܩܠܘܢܝܗܝ ܕܕܗ ܐܘ ܡܢ ܕܩܪܝܒ ܠܗ ܕܢܦܩ ܓܪ̈ܡܘܗܝ ܡܢ ܒܝܬܐ. ܘܢܐܡܪ ܠܡܢ ܕܐܝܬ ܒܗ
ܒܒܝܬܐ. ܕܠܡܐ ܐܝܬ ܐܢܫ ܥܡܟ ܒܒܝܬܐ. ܘܢܐܡܪ ܠܗ ܠܝܬ. ܡܛܠ ܕܫܠܡܘ ܠܗܘܢ. ܠܐ
ܡܬܕܟܪܝܢ ܗܘܘ ܫܡܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܡܪܝܐ ܢܦܩ. ܘܢܡܚܐ ܠܒܝܬܐ ܪܒܐ 11
ܘܢܪܥܠܝܗܘܢ. ܘܠܒܝܬܐ ܙܥܘܪܐ ܘܢܚܪܒܝܗܘܢ. * ܕܠܡܐ ܪܗܛܝܢ ܥܠ ܫܘܥܐ ܣܘ̈ܣܘܬܐ. ܐܘ 12
ܕܪܕܝܢ ܒܗܘܢ ܬܘܪܐ. ܡܛܠ ܕܗܦܟܬܘܢ ܕܝܢܐ ܠܓܕܐ. ܘܦܐܪܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ ܠܡܪܪܬܐ.
* ܕܚܕܝܢ ܥܠ ܠܐ ܡܕܡ. ܘܐܡܪܝܢ. ܕܠܐ ܗܘܐ ܒܚܝܠܢ ܢܣܒܢ ܠܢ ܩܪܝܬܐ. * ܡܛܠ 13 14
ܕܗܐ ܐܢܐ ܡܩܝܡ ܐܢܐ ܥܠܝܟܘܢ ܥܡܐ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܚܝܠܬܢܐ.
ܘܢܣܩܘܢܟܘܢ. ܡܢ ܡܥܠܢܐ ܕܚܡܬ. ܘܥܕܡܐ ܠܢܚܠܐ ܕܥܪܒܐ. * ܫܠܡܬ ܘ * ܙ *

1 * ܗܟܢܐ ܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܒܪܝܬܐ ܕܩܡܨܐ ܒܪܫ ܡܦܩܬܐ ܕܠܩܝܫܐ. ܘܗܘܐ ܠܩܝܫܐ ܒܬܪ
ܓܙܐ ܗܘܐ ܕܡܠܟܐ. * ܘܟܕ ܓܡܪ ܠܡܐܟܠܗ ܠܥܣܒܐ ܕܐܪܥܐ. ܐܡܪܬ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܚܘܣ. 2
ܥܠܝܢ ܡܢܘ ܢܩܝܡܝܗܝ ܠܝܥܩܘܒ. ܡܛܠ ܕܙܥܘܪ ܗܘ. * ܐܬܬܘܝ ܡܪܝܐ ܥܠ ܗܕܐ. ܘܠܐ ܬܗܘܐ. 3
* ܗܟܢܐ ܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܘܗܐ ܩܪܐ ܠܡܕܢ ܒܢܘܪܐ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ. ܘܐܟܠܬ ܠܬܗܘܡܐ 4
ܪܒܐ. ܘܐܟܠܬ ܠܦܠܓܘܬܐ. * ܘܐܡܪܬ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܚܘܣ. ܥܠܝܢ ܡܢܘ ܢܩܝܡܝܗܝ 5
ܠܝܥܩܘܒ. ܡܛܠ ܕܙܥܘܪ ܗܘ. * ܐܬܬܘܝ ܡܪܝܐ ܥܠ ܗܕܐ. ܘܐܦ ܗܝ ܠܐ ܬܗܘܐ * ܗܟܢܐ ܚܘܝܢܝ. ܘܗܐ 6 7
ܡܪܝܐ ܩܐܡ ܥܠ ܫܘܪܐ ܕܐܕܡܘܣ. ܘܒܐܝܕܗ ܐܕܡܘܣ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܡܢܐ ܚܙܐ ܐܢܬ 8
ܥܡܘܣ. ܘܐܡܪܬ ܐܕܡܘܣ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܐܢܐ ܣܐܡ ܐܢܐ ܐܕܡܘܣ ܒܓܘ ܥܡܝ
ܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܐܘܣܦ ܬܘܒ ܕܐܥܒܪ ܥܠܘܗܝ. * ܘܢܬܚܪܒܘܢ ܦܘܠܚܢܐ ܕܓܘܚܟܐ. ܘܡܩܕ̈ܫܐ 9
ܕܐܝܣܪܝܠ ܢܚܪܒܘܢ. ܘܐܩܘܡ ܥܠ ܒܝܬ ܝܘܪܒܥܡ ܒܚܪܒܐ. * ܘܫܠܚ ܐܡܘܨܝܐ ܟܘܡܪܐ 10
ܕܒܝܬ ܐܝܠ. ܠܘܬ ܝܘܪܒܥܡ ܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܡܪܕ ܒܟ ܥܡܘܣ
ܒܓܘ ܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܡܫܟܚܐ ܐܪܥܐ ܠܡܣܝܒܪܘ ܡܠܘܗܝ.

Et aſportabit eum amicus ejus, aut is qui fuerit cognatus ejus, ut oſſa domo efferat: tum dicet ei qui eſt in eadem domo, Superéſtne aliquis tecum in domo? & reſpondebit ei, Nemo: nam penitùs conſumpti ſunt, eò quòd nullam haberent memoriam nominis Dñi. 10 Ecce enim Dñs egreſſurus eſt, & percuſſurus domũ altam, ac tremefacturus eam; & domum parvam, ac deſolaturus eam. 11 Num currunt ſuper petras equi? an iis aratrum ducunt? quia judicium in abſynthium, & fruct⁹ juſtitiæ in fel mutâſtis: 12 Qui gaudetis de re nihili; & dicitis, Annon virtute noſtrâ cepimus nobis civitatem? 13 Quoniam ecce ego ſuſcitaturus ſum contra vos, Iſraelitæ, populum, dicit Dñs Deus potentiſſimus, qui propulſabunt vos ab ingreſſu Hamathæ uſque ad torrentem Arabæ. 14

CAP. VII.

Sic oſtendit mihi Dñs dominorum creaturâ locuſtæ in principio germinis ſerotini: erat autem ſerotinum *germen* poſt detonſionẽ regiam:) 1 Et cùm abſolviſſet comedere herbam terræ, dixi; Dñe dominorum, parce nobis: ecquis erigeret Jacobum? parvus enim eſt. 2 Averte hoc Dñe, & ne contingat. 3 Sic oſtendit mihi Dñs dominorum: ecce Dominus dominorum proclamavit ad judicandum igne, qui conſumpſit abyſſum magnam, conſumpſerat enim mediam partem. 4 Sed dixi; Domine dominorum, parce nobis: quis erigeret Jacobum? ſiquidem parvus eſt. 5 Averte hoc Domine, ac nedum id fiat. 6 Sic oſtendit mihi: ecce Dominus ſtabat ſuper murum adamantinum, ſuâq; manu *tenebat* adamantem. 7 Dixítq; mihi Dominus, Quid vides Amos? Reſpondi, Adamantem. Tum dixit mihi Dominus, Ecce poſiturus ſum adamantem in medio populi mei Iſraelis, & non pergam ultrà præterire eos. 8 Deſtruentur enim fana ridicula, & ſanctuaria Iſraelis deſolabuntur, & domum Jorobaami gladio invadam. 9 Poſt hæc miſit Amoſia ſacrificulus Bethelis ad Jorobaamum regem Iſraelis, & dixit illi; Rebellavit in te Amos in medio domûs Iſraelis, nec poteſt terra tolerare verba ejus. 10

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ويخلف البقية فياخذهم خواصهم * ويعمدون ليخرجوا عظامهم من البيت * ويقول للقيام 10
في البيت * أعندك أحد أيضا موجود * فيقول لا * فيقول من أجل أنهم لم يسموا باسم الرب *
* من أجل أنه ها الرب يأمر ويضرب البيت العظيم بسحقات * والبيت الصغير بتشقيقات * 11
* أتركض الخيل في الصخور * أيسكنون في الإناث * لأنكم أبدلتم الحكم للغضب * 12
وثمر العدل للمرارة * أيها الفرحون بالكلمة الواحدة * القائلون أليس بقوتنا نمسك القرون * 13
* من أجل أني ها أنا أثير عليكم يا بيت إسرائيل أمة * فتضايقكم ألا تدخلوا إلى حماة 14
حتى وادي عارابا *

* الفصل السابع *

1 * هكذا أظهر لي الرب * وها خلقة الجراد الآتي سحرا * وها الجندبة جوج الملك * ويكون
2 إذ أكمل ليأكل عشب الأرض * فقلت يا رب يا رب كن راحما * من يقيم يعقوب لأنه
3 صغير * تب يا رب على هذا * وهذا لا يكون يقول الرب * هكذا أراني الرب * وهوذا دعا الرب 4
قضاء بنار * فأكلت العمق الكثير * وأكلت المارس * فقلت يا رب يا رب أكفف * من يقيم 5
6 يعقوب لأنه قليل * تب يا رب على هذا * وهذا لا يكون يقول الرب * هكذا أراني الرب * وهوذا 7
رجل واقف على سور من ماس وبيده ماس * وقال لي الرب * ما ترى يا عاموص * فقلت ماسا * 8
وقال لي الرب * ها أنا أضع ماسا في وسط شعبي إسرائيل * ولا أعود أزيله أيضا * وتفنى هياكل 9
الضحك * ومذابح إسرائيل * ويخربون * وأقوم على بيت يوربعام بالسيف * وأرسل أموصيا 10
كاهن بيت إيل إلى يوربعام ملك إسرائيل قائلا * صنع معك عاموص فتنا في وسط بيت
إسرائيل * وليس تستطيع الأرض تحمل جميع أقواله *

Qui reliqui manſerint, ad eos pertinentes, aſſument illos, & conabuntur educere oſſa eorum è domo: & dicet aſtantibus in domo, An extat aliquis apud te ſuperſtes? dicétque, Nequaquam: & ſubdet, Quia non vocaverunt nomen Domini. 10 *Nam ecce Dominus præcipiet, percutiétque contritionibus domum magnam, & domum parvam ſciſſuris.* 11 *An currerent equi in petris? an quieſcerent in fœminis? vos enim vertiſtis judicium in furorem, & fructum juſtitiæ in amaritudinem,* 12 *O qui in unico verbo lætamini, qui dicitis; Nónne viribus noſtris tenemus cornua?* 13 *Nam en ego excitabo in vos O domus Iſraelis, gentem quæ obſidebit vos quominus ingrediamini Himath uſque ad vallem Arabæ.* 14

CAP. VII.

Ita oſtendit mihi Dominus: & ecce creatura locuſtarum diluculò ventura, & ecce bruchus Gog rex, 1 *Qui manſurus eſt quoad abſolvat comedere herbam terræ. Et dixi, O Domine, O Domine eſto miſericors: quis erigeret Jacobum, quandoquidem parvus eſt?* 2 *Pœniteat te O Domine hujus rei: & hoc non erit, dicit Dominus.* 3 *Ita oſtendit mihi Dominus: & ecce proclamavit Dominus judicium igne exercendum, qui cùm devorâſſet abyſſum multam, devorâſſétque agrum,* 4 *Dixi, O Domine, O Domine deſiſte: quis erigeret Jacobum, quandoquidem paucus eſt?* 5 *Pœniteat te O Domine hujus rei: & hoc non erit, dicit Dominus.* 6 *Ita oſtendit mihi Dominus: & ecce vir ſtans ſuper murum adamantinum, & in manu ejus adamas.* 7 *Et dixit mihi Dominus, Quid vides O Amos? cui dixi, Adamantem. Dixítque mihi Dominus, En ego ponam adamantem in medio populi mei Iſraelis, nec amoturus ſum eum ampliùs.* 8 *Et peribunt templa riſûs, & menſæ Iſraelis, & deſtruentur: & inſurgam in domum Jerobaami gladio.* 9 *Tum miſit Amoſia ſacerdos Bethil ad Jerobaamum regem Iſraelis, dicens; Excitavit contra te Amos ſeditionem in medio domûs Iſraelis, neque poteſt terra ferre omnes ſermones ejus.* 10

Israel & : Jarobham morietur gladio *In* : Hamos dixit sic Quia
11 כי־כה אמר עמוס בחרב ימות ירבעם וישראל
: Hamos ad Amasiah dixit Et .sua *humo desuper* migrabit migrando
12 גלה יגלה מעל אדמתו׃ ויאמר אמציה אל־עמוס
, panem ibi comede & : Jehudah terram ad tibi fuge , vade , Videns
חזה לך ברח־לך אל־ארץ יהודה ואכל־שם לחם
quia .*prophetandū ad* ultrà adjicies non el-Beth Et .prophetabis ibi &
13 ושם תנבא׃ ובית־אל לא־תוסיף עוד להנבא כי
Respondítque .*ipsum* regni domus & ,*ipsum* regis sanctuarium
14 מקדש־מלך הוא ובית ממלכה הוא׃ ויען
filius neque , *ego* propheta Non : Amasiah ad dixit & , Hamos
עמוס ויאמר אל־אמציה לא־נביא אנכי ולא בן־
.sycomoros *disquirens* & , *ego* armentarius sed : *ego* prophetæ
נביא אנכי כי־בוקר אנכי ובולס שקמים׃
, Vade , Dominus me ad dixit & : *pecus* post *de* Dominus me tulit Et
15 ויקחני יהוה מאחרי הצאן ויאמר אלי יהוה לך
: Domini verbum audi nunc Et .Israel meum populum ad propheta
16 הנבא אל־עמי ישראל׃ ועתה שמע דבר־יהוה
domum super stillabis non & , Israel super prophetabis non :*dicens* Tu
אתה אמר לא תנבא על־ישראל ולא תטיף על־בית
, fornicabitur civitate in tua Uxor : Dominus dixit sic Propterea .Ischac
17 ישחק׃ לכן כה־אמר יהוה אשתך בעיר תזנה
: dividetur funiculo in tua humus & , cadent gladio *in* tuæ filiæ & tui filii &
ובניך ובנתיך בחרב יפלו ואדמתך בחבל תחלק
migrabit migrando Israel & , morieris pollutam *humum* super tu &
ואתה על־אדמה טמאה תמות וישראל גלה יגלה
.sua *humo desuper*
מעל אדמתו׃

CAP. VIII. ח

: dixit Et .*æstatis* canistrum ecce Et .*Dominus* Dominus mihi ostendit Sic
1 כה הראני אדני יהוה והנה כלוב קיץ׃ ויאמר 2
dixit Et .*æstatis* Canistrum : dixi & ? Hamos *videns* tu Quid
מה־אתה ראה עמוס ואמר כלוב קיץ ויאמר
non : Israel meum populum *ad* finis Venit : me ad Dominus
יהוה אלי בא הקץ אל־עמי ישראל לא־
die in *palatii* cantica *ululabunt* Et .eum *transire* ultrà adjiciam
3 אוסיף עוד עבור לו׃ והילילו שירות היכל ביום
loco *omni* in cadaver multiplex Deus : Dominus dixit , illa
ההוא נאם אדני יהוה רב הפגר בכל־מקום
abolendum ad & ,*egenum* *absorbentes* hoc Audite .*tace* projecit
4 השליך הס׃ שמעו־זאת השאפים אביון ולשבית
venundabimus & , mensis transibit Quando : Dicendo .terræ *mansuetos*
5 ענוי־ארץ׃ לאמר מתי יעבר החדש ונשבירה
, *Ephah* *imminuendum ad* , frumentum aperiemus & , *sabbatum &* ; venale
שבר והשבת ונפתחה־בר להקטין איפה
emendum Ad .*doli* *bilances pervertendum ad &* , Sechel *magnificandum ad &*
6 ולהגדיל שקל ולעות מאזני מרמה׃ לקנות
frumenti *labile &* , calceamenta propter *egenum &* , egenos argento *in*
בכסף דלים ואביון בעבור נעלים ומפל בר
fuero oblitus Si , Jahacob *celsitudine in* Dominus Juravit .vendemus
7 נשביר׃ נשבע יהוה בגאון יעקב אם־אשכח
, terra se movebit non hoc super Nunquid .eorum opera omnia *æternū in*
8 לנצח כל־מעשיהם׃ העל זאת לא־תרגז הארץ
, ejicietur & , *ipsa tota amnis ut* ascendet Et ? ea in *habitans* omnis lugebit &
ואבל כל־יושב בה ועלתה כאר כלה ונגרשה
, illa die in erit Et .Ægypti fluvius veluti absorbebitur &
9 ונשקה כיאור מצרים׃ והיה ביום ההוא
, meridie in Solem faciam *ingredi &* , Deus Dominus dixit
נאם אדני יהוה והבאתי השמש בצהרים
.luminis die in terram faciam tenebrescere &
והחשכתי לארץ ביום אור׃

Versio VULG. LAT.

11 Hæc enim dicit Amos; In gladio morietur Jeroboam, & Israel captivus migrabit de terra sua. 12 Et dixit Amasias ad Amos; Qui vides, gradere, fuge in terram Juda: & comede ibi panem, & prophetabis ibi. 13 Et in Bethel non adjicies ultrà ut prophetes: quia sanctificatio regis est, & domus regni est. 14 Respondítque Amos, & dixit ad Amasiam; Non sum propheta, & non sum filius prophetæ: sed armentarius ego sum vellicans sycomoros. 15 Et tulit me Dominus cùm sequerer gregem: & dixit Dominus ad me; Vade, propheta ad populum meum Israel. 16 Et nunc audi verbum Domini: Tu dicis; Non prophetabis super Israel, & non stillabis super domum idoli. 17 Propter hæc dicit Dominus; Uxor tua in civitate fornicabitur: & filii tui & filiæ tuæ in gladio cadent, & humus tua funiculo metietur: & tu in terra polluta morieris, & Israel captivus migrabit de terra sua.

CAP. VIII.

1 HÆc ostendit mihi Dominus Deus: & ecce uncinus pomorum. 2 Et dixit; Quid tu vides, Amos? Et dixi; Uncinum pomorum. Et dixit Dominus ad me; Venit finis super populum meum Israel: non adjiciam ultrà ut pertranseā eum. 3 Et stridebunt cardines templi in die illa, dicit Dominus Deus: multi morientur: in omni loco projicietur silentium. 4 Audite hoc qui conteritis pauperem, & deficere facitis egenos terræ, 5 Dicentes; Quando transibit mensis, & venumdabim⁹ merces; & sabbatum, & aperiemus frumentum: ut imminuamus mensuram, & augeamus siclum, & supponamus stateras dolosas, 6 Ut possideamus in argento egenos, et pauperes pro calceamentis, & quisquilias frumenti vendamus? 7 Juravit Dominus in superbiam Jacob; Si oblitus fuero usque ad finem omnia opera eorum. 8 Numquid super isto non commovebitur terra, & lugebit omnis habitator ejus: & ascendet quasi fluvius universus, & ejicietur, & defluet quasi rivus Ægypti? 9 Et erit in die illa, dicit Dominus De⁹: occidet Sol in meridie, & tenebrescere faciam terram in die luminis:

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

11 Διότι τάδε λέγει Ἀμώς, Ἐν ῥομφαίᾳ τελευτήσει Ἱεροβοάμ, ὁ δὲ Ἰσραὴλ αἰχμάλωτος ἀχθήσεται ἀπὸ τῆς γῆς αὐτοῦ. 12 Καὶ εἶπεν Ἀμασίας πρὸς Ἀμώς, Ὁ ὁρῶν βάδιζε, ἐκχώρησον (κ) σὺ εἰς γῆν Ἰούδα, ϗ ἐκεῖ καταβίου, ϗ ἐκεῖ προφητεύσεις, 13 (λ) Εἰς δὲ Βαιθὴλ οὐκ ἔτι προσθήσεις τοῦ προφητεῦσαι, ὅτι ἁγίασμα βασιλέως ἐστί, ϗ οἶκος βασιλείας ἐστί. 14 Καὶ ἀπεκρίθη Ἀμώς, ϗ εἶπε πρὸς Ἀμασίαν, Οὐκ ἤμην προφήτης ἐγώ, οὐδὲ υἱὸς προφήτου, ἀλλ᾽ ἢ αἰπόλος ἤμην, (μ) ϗ κνίζων συκάμινα. 15 Καὶ ἀνέλαβέ με κύριος ἐκ τῶν προβάτων, ϗ εἶπε κύριος πρὸς μέ, Βάδιζε, (ν) ϗ προφήτευσον ἐπὶ τὸν λαόν μου Ἰσραήλ. 16 Καὶ νῦν ἄκουε λόγον κυρίου· σὺ λέγεις, Μὴ προφήτευε ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ, ϗ οὐ μὴ ὀχλαγωγήσῃς ἐπὶ τὸν οἶκον Ἰακώβ. 17 Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἡ γυνή σου ἐν τῇ πόλει πορνεύσει, ϗ οἱ υἱοί σου ϗ αἱ θυγατέρες σου ἐν ῥομφαίᾳ πεσοῦνται, ϗ ἡ γῆ σου ἐν σχοινίῳ καταμετρηθήσεται, ϗ σὺ ἐν γῇ ἀκαθάρτῳ τελευτήσεις, ὁ δὲ Ἰσραὴλ αἰχμάλωτος ἀχθήσεται ἀπὸ τῆς γῆς αὐτοῦ. οὕτως ἔδειξέ (ξ) μοι κύριος κύριος.

Hæc enim dicit Amos; In gladio morietur Hieroboam: Israel autem captivus ducetur de terra sua. Et dixit Amasias ad Amos; Qui vides, egredere: recede tu in terram Juda. Et ibi vive: & ibi prophetabis: In Bethel autem non adjicies ultrà prophetare: quia sanctificatio regis est, & domus regni est. Et respondit Amos, & dixit ad Amasiam; Non eram propheta ego, neque filius prophetæ: sed (e) pastor eram, & (f) vellicans Sycamina. Et tulit me Dominus ex ovibus: et dixit Dominus ad me; Vade, & prophetiza super populum meum Israel. Et nunc audi sermonem Domini: Tu dicis; Noli prophetare super Israel, et ne congreges turbas contra domum Jacob. Propterea hæc dicit Domin⁹; Uxor tua in civitate (g) fornicabitur: & filii tui, & filiæ tuæ in gladio cadent: & terra tua in funiculo dimensurabitur: & tu in terra immunda morieris: Israel autem captivus ducetur de terra sua. Sic ostendit mihi Dominus. 11 12 13 14 15 16 17

MS. A. (κ) εἰς γῆν (λ) Εἰς Βαιθὴλ οὐκ ἔτι μὴ προσθῇς (μ) κνίζων (ν) προφήτευσον ἐπὶ τὸν λαόν μου τὸν Ἰσραήλ. (ξ) μοι κύριος.

ΚΕΦ. η΄.

1 ΚΑὶ ἰδοὺ ἄγγος ἰξευτοῦ. 2 Καὶ εἶπε, Τί σὺ (α) βλέπεις Ἀμώς; ϗ εἶπα, Ἄγγος ἰξευτοῦ. ϗ εἶπε κύριος πρὸς μέ, Ἥκει τὸ πέρας ἐπὶ τὸν λαόν μου Ἰσραήλ, (β) οὐ προσθήσω ἔτι τοῦ παρελθεῖν αὐτόν. 3 Καὶ ὀλολύξει τὰ φατνώματα τοῦ ναοῦ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει (γ) κύριος κύριος. πολὺς ὁ πεπτωκὼς ἐν παντὶ τόπῳ, (δ) ἐπιρρίψω σιωπήν. 4 Ἀκούσατε δὴ ταῦτα οἱ ἐκτρίβοντες εἰς τὸ πρωῒ πένητα, (ε) ϗ καταδυναστεύοντες πτωχοὺς ἀπὸ τῆς γῆς, 5 (ζ) Λέγοντες, Πότε διελεύσεται ὁ μήν, ϗ ἐμπολήσομεν, ϗ τὰ σάββατα, ϗ ἀνοίξομεν (η) θησαυρὸν τοῦ ποιῆσαι (θ) μέτρον μικρόν, ϗ (ι) τοῦ μεγαλῦναι στάθμιον, ϗ ποιῆσαι ζυγὸν ἄδικον, 6 Τοῦ κτᾶσθαι ἐν ἀργυρίῳ (κ) ϗ πτωχούς, ϗ πένητα ἀντὶ ὑποδημάτων, ϗ ἀπὸ παντὸς γεννήματος ἐμπορευσόμεθα. 7 Ὀμνύει κύριος (λ) κατὰ τῆς ὑπερηφανίας Ἰακώβ, Εἰ ἐπιλησθήσεται εἰς νῖκος πάντα τὰ ἔργα ὑμῶν. 8 Καὶ ἐπὶ τούτοις οὐ ταραχθήσεται ἡ γῆ, ϗ πενθήσει πᾶς ὁ κατοικῶν ἐν αὐτῇ; ϗ ἀναβήσεται ὡς ποταμὸς συντέλεια, ϗ καταβήσεται ὡς ποταμὸς Αἰγύπτου. 9 Καὶ ἔσται ἐν (μ) τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος κύριος, δύσεται ὁ ἥλιος μεσημβρίας, ϗ συσκοτάσει ἐπὶ τῆς γῆς ἐν ἡμέρᾳ τὸ φῶς,

CAP. VIII.

ET ecce vas aucupis. Et dixit; Quid tu vides, Amos? Et dixi; Vas aucupis. Et dixit Dominus ad me; Venit finis super populum meum Israel: non addam ultrà, ut pertranseam eum: Et ululabunt laquearia templi in die illa, dicit Dominus Dominus. Multi cadentes erunt, in omni loco, injiciam silentium. Audite nunc hæc, qui conteritis manè pauperem, & opprimitis egenos de terra, Dicentes: Quando pertransibit mensis, & negotiabimur? & sabbata, & aperiemus thesaurum, ut faciamus mensuram parvam, & pondus magnum, & faciamus stateram iniquam, ut possideamus in pecunia, & (a) pauperes, & egenum pro calceamentis: & de omni (b) genimine negotiabimur? Jurat Dominus contra superbiam Jacob; Si oblivioscetur in (c) finem omnia opera vestra. Et super his non conturbabitur terra? & lugebit omnis habitator ejus: & ascendet quasi flumen (d) consummatio: et descendet quasi fluvius Ægypti. Et erit in die illa, dicit Dominus Dominus, occidet Sol meridie, & contenebrescet super terram (e) in die lux. 1 2 3 4 5 6 7 8 9

MS. A. (α) ὁρᾷς (β) οὐκ ἔτι μὴ προσθῶ τοῦ (γ) κύριος. πολὺς (δ) ἐπιρρίψω (ε) καταδυναστεύοντες (ζ) Οἱ λέγοντες, (η) θησαυροὺς (θ) μικρὸν μέτρον, (ι) μεγαλῦναι στάθμια, (κ) πτωχούς, ϗ ταπεινὸν ἀντὶ (λ) κατ᾽ ὑπερηφανείας Ἰακώβ, Εἰ ἐπιλήσεται (μ) ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, λέγει κύριος ὁ θεός, ϗ δύσεται

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

11 ארי כדנן אמר עמוס בחרבא יתקטל ירבעם וישראל מגלא יגלון מעל ארעהון׃
12 ואמר אמציה לעמוס נביא אתא אזל לך לארעא דבית יהודה ואכול תמן לחמא
13 ותמן תתנבי׃ ובביתאל לא תוסיף עוד לאתנבאה ארי מקדש מלכא הוא ובית
14 מלכותא הוא׃ ואתיב עמוס ואמר לאמציה לא נביא אנא ולא בר נביא אנא ארי
מרי גיתי אנא ושקמין אית לי בשפלתא מן קדם חובי עמא ישראל אנא מסגיף נפשי
15 16 ודברני יי מן דירא מבתר ענא ואמר לי יי אזל אתנבי על עמי ישראל׃ וכען קבל
פתגמא דיי את אמרת לא תתנבי בשמא דיי על ישראל ולא תליף על בית ישחק׃
17 בכן כדנן אמר יי אתתך בקרתא תטעי ובנך ובנתך בחרבא יתקטלון וארעך בעדבא
תתפלג ואת על ארעא מסאבא תמות וישראל מגלא יגלון מעל ארעהון׃

ח

1 2 כדין אחזיני יי אלהים והא מן מלי סיופי קיטא׃ ואמר מה את חזי עמוס ואמרית מן
מלי סיופי קיטא ואמר יי לי מטת פורענות קצא למיתי על עמי ישראל לא אוסיף עוד
3 למשבק להון׃ ויילילון חלף זמרא בבתיהון בעדנא ההיא אמר יי אלהים סגי פגרי
4 קטילין בכל אתר יימר רמי וסלק׃ שמעו דא דשיטין כעפרא דארעא ריש מסכניא
5 ומדמן לבטלא מלי חשיכיא מן ארעא׃ דאמרין אימתי ימטי ירח עבורא ונזבן עבורא
ושמטתא ונפתח אוצרין לאזערא מכלתא ולאוספא על סלעא ולשקרא במזנין
6 דנכיל׃ למקני בכספא מסכניא וחשיכיא בדיל דיחסנון ומהממת עבורא נזבן׃
7 8 קים יי דיהב רבותא ליעקב אם יתנשון לעלמין כל עובדיהון׃ העל דא לא תחרוב
ארעא ויצדי כל דיתיב בה ויסק עלה מלך במשריתיה דסגי כמי נהרא ויחפנה
9 כולה ויתרך ית יתבהא ותשתקע כנהר מצרים׃ ויהי בעדנא ההיא אמר יי אלהים
ואכסי שמשא כד בטהרא ואקביל לארעא ביום נהור׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Sic enim dixit Amos: Gladio perimetur Jeroboam, & Israel certissimè in 11 exilium agetur de terra sua. Dixit verò Amasias ad Amos prophetam: Veni 12 & perge in terram domus Juda, comedéque ibi panem ac vaticinare. At in 13 Bethel ne adjicias ultrà prophetare, quoniam sanctuarium regis est, ac domus regia. Et respondit Amos, & dixit ad Amasiam: Nec propheta nec pro- 14 phetæ filius, sed pecuarius sum ego, suntq; mihi sycomori in campestri: atq; propter peccata populi mei Israel ego animam meam affligo. Assumpsit me 15 autem Dñs de ovili sequentem oves, & ad me dixit Dñs: Vade prophetiza de populo meo Israel. Idcircò nunc audi verbum Dñi, tu qui dicis: Non 16 prophetabis *in nomine Domini* contra Israel, neque in domo Isaac docebis. Proinde sic dicit Dñs: Uxor tua in civitate fornicabitur, & filii tui filiæque 17 tuæ gladio occidentur, & terra tua sorte dividetur: tu verò in terra immunda morieris, etiámque Israel de terra sua captivus migrabit.

CAP. VIII.

TAle quid ostendit mihi Dominus Deus, & ecce vas plenum extremis æsta- 1 tis frugibus. Et ait: Quid tu vides Amos? & dixi: Vas plenum novissi- 2 mis æstatis frugibus. Tunc dixit Dñs ad me: Ultio finalis advenit ut adoriatur populum meum Israel: non adjiciam ultrà illis dimittere. Et ulu- 3 labunt loco cantici in domibus suis tunc temporis, ait Dñs Deus: multa erunt occisorum cadavera ubivis loci, adeò ut dicatur, Projice & tolle. Audite istud qui perinde flocci penditis capita pauperum ac pulverem ter- 4 ræ, & putatis posse nulla reddere pauperum eloquia in terra. Qui dicitis, 5 Quando continget mensis frumenti, ut frumentum vendamus? & annus remissionis, ut aperiamus horrea diminuendæ mensuræ, atque augendi sicli, staterísque dolosis decipiendi causa? Ut coemant argento egenos & pau- 6 peres quò bona possideant, & quisquilias frumenti venundemus. Juravit 7 Dñs qui magnitudinem dedit Jacobo, Si oblivioni tradentur in secula omnia opera eorum. Nunquid propter istud non desolabitur terra, & con- 8 sumetur omnis qui habitat in ea? & ascendet adversus eam rex cum exercitu suo ad instar aquarum fluminis copioso, qui operiet eam totam, & expellet habitatores ejus, & demerget velut fluvius Ægypti. Erit autem in tempore 9 illo, dicit Dñs Deus, operiam Solem quasi in meridie, & tenebras offundam terræ in die luminis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

11 * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܥܡܘܣ. ܕܒܚܪܒܐ ܢܡܘܬ ܝܘܪܒܥܡ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܡܫܒܝܐ ܢܫܬܒܐ
12 ܡܢ ܐܪܥܗ. * ܘܐܡܪ ܐܡܘܨܝܐ ܠܥܡܘܣ ܚܙܝܐ. ܙܠ ܥܪܘܩ ܠܟ ܠܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܐܟܘܠ ܬܡܢ
13 ܠܚܡܐ. ܘܬܡܢ ܐܬܢܒܐ. * ܘܒܒܝܬ ܐܝܠ ܠܐ ܬܘܣܦ ܬܘܒ ܠܡܬܢܒܝܘ. ܡܛܠ ܕܡܩܕܫܐ ܗܘ
14 ܕܡܠܟܐ. ܘܒܝܬ ܡܠܟܘܬܐ. * ܘܥܢܐ ܥܡܘܣ. ܘܐܡܪ ܠܐܡܘܨܝܐ. ܐܢܐ ܠܐ ܗܘܝܬ ܢܒܝܐ. ܐܦܠܐ ܒܪ
15 ܢܒܝܐ. ܐܠܐ ܪܥܝܐ ܐܢܐ ܘܡܠܩܛ ܫܩܡܐ. * ܘܕܒܪܢܝ ܡܪܝܐ ܡܢ ܒܬܪ ܥܢܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ.
16 ܙܠ ܐܬܢܒܐ ܥܠ ܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. * ܘܗܫܐ ܫܡܥ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܢܬ ܐܡܪ ܐܢܬ. ܠܐ ܬܬܢܒܐ
17 ܥܠ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܬܠܦ ܠܒܝܬܗ ܕܐܝܣܚܩ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܢܬܬܟ
ܒܡܕܝܢܬܟ ܬܙܢܐ. ܘܒܢܝܟ ܘܒܢܬܟ ܒܚܪܒܐ ܢܦܠܘܢ. ܘܐܪܥܟ ܒܚܒܠܐ ܬܬܦܠܓ. ܘܐܢܬ
ܒܐܪܥܐ ܛܡܐܬܐ ܬܡܘܬ. ܘܐܝܣܪܝܠ ܡܫܒܝܐ ܢܫܬܒܐ ܡܢ ܐܪܥܗ. * ܫܠܡ * ܙ *

1 * ܗܟܢܐ ܚܘܝܢܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܘܗܐ ܢܝܫܐ ܕܩܨܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܡܢܐ ܚܙܝܬ ܥܡܘܣ.
2 ܘܐܡܪܬ. ܢܝܫܐ ܕܩܨܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܡܛܝ ܩܨܐ ܥܠ ܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܠܐ ܐܘܣܦ ܬܘܒ
3 ܠܡܥܒܪܘ ܥܠܘܗܝ ܡܢܗܘܢ. * ܘܢܦܣܩܘܢ ܬܫܒܚܬܗ ܕܗܝܟܠܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ
4 ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܢܣܓܘܢ ܦܓܪܐ ܒܟܠ ܐܬܪ. ܘܢܫܬܕܘܢ ܠܐܒܕܢܐ. * ܫܡܥܘ ܗܕܐ ܗܢܘܢ
5 ܕܫܐܛܝܢ ܠܡܣܟܢܐ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܡܪܝܢ ܕܐܡܬܝ ܢܥܒܪ ܝܪܚܐ. ܘܢܙܒܢ ܥܒܘܪܐ. ܘܢܥܒܪ
ܫܒܬܐ ܘܢܦܬܚ ܐܘܨܪܐ. ܘܢܙܥܪ ܟܝܠܬܐ ܘܢܘܪܒ ܡܬܩܠܐ. ܘܢܥܒܕ ܡܣܐܬܐ ܕܢܟܠܐ.
6 * ܘܢܙܒܢ ܒܟܣܦܐ ܠܡܣܟܢܐ. ܘܠܒܝܫܐ ܚܠܦ ܡܣܐܢܐ. ܘܥܡܐ ܕܐܘܨܪܐ ܢܙܒܢ. * ܘܝܡܐ ܡܪܝܐ
7
8 ܒܬܘܩܦܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܕܠܐ ܐܛܥܐ ܠܥܠܡ ܟܠܗܘܢ ܥܒܕܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܠܐ ܬܬܙܝܥ
ܐܪܥܐ. ܘܢܬܒܠܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ: ܘܬܣܩ ܐܝܟ ܢܗܪܐ ܟܠܗ. ܘܬܬܕܚܐ
9 ܘܬܫܬܩܠ ܐܝܟ ܢܗܪܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܐܥܪܒ ܫܡܫܐ
ܒܛܗܪܐ. ܘܐܚܫܟ ܠܐܪܥܐ ܒܝܘܡܐ ܢܗܝܪܐ.

* Sic enim dicit Amos; Gladio perimetur Jo- 11
robaam, & Iſrael captivus abducetur è terra
ſua. Deinde dixit Amoſia ad Amos videntem; 12
Fuge, confer te in terram Judæ, & illic panem
comede, ibíq; prophetato: In Beth-ele verò 13
ne pergas ampliùs prophetare; quia ſanctuarium
eſt regis & ſedes regia. Reſpondens A- 14
mos dixit Amoſiæ; Ego neq; propheta eram,
neque filius prophetarum, ſed paſtor eram, &
colligens groſſos. Tulit autem me Dñs cùm 15
ſequerer oves, dixítque mihi Dñs; Vade prophetatum
de populo meo Iſraele. Jam audi 16
verbum Dñi: Tu dicis, Ne prophetato de Iſraelitis,
néve doceto familiã Iſhaci. Propter- 17
ea ſic dicit Dominus; Uxor tua in urbe tua
ſcortabitur, & filii filiæque tuæ gladio occumbent,
terra tua fune menſorio diſtribuetur, tu
in terra immunda morieris, & Iſrael captivus
abducetur è terra ſua.

CAP. VIII.

SIc oſtendit mihi Dominus dominorum: ecce 1
metam finis. Dixítq; mihi Dñs; Quid vidiſti 2
Amos? Reſpondi, Metam finis. Tum dixit
mihi Dominus; Appropinquavit finis ſuper
populum meũ Iſraelem, & non pergam ultrà
transferre eum ab ipſis. Et concident cantica 3
templi eo die; eodémque die, dicit Dominus
dominorum, multiplicabuntur cadavera in
omni loco, & projicientur ad interitum. Au- 4
dite hæc qui deſpicitis pauperes terræ, Et di- 5
citis, Quandonam tranſibit menſis, ut vendamus
triticum? & defluet ſabbathum, ut aperiamus
horrea? diminuemus menſuras, augebimus
pondera, faciemus ſtateram doloſam; Et 6
pecuniâ vendemus pauperibus, & egenis pro
quiſquiliis, & fundum horreorum vendemus.
Verùm juravit Dñs potens Jacobi, quòd non 7
obliviſcar in perpetuum omnia opera iſtorum.
Propter hujuſcemodi res annon contremiſce- 8
ret terra, & in luctu ſederent omnes habitatores
ejus, intumeſceret fluminis inſtar finis
ejus, & impelleret ruerétq; ceu flumen Ægypti?
Imò erit eo die, dicit Dominus, ut ſolem 9
occidere faciam ipſo meridie, & obſcuram
reddam terram in die lucida.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* من اجل انه هكذا يقول عاموص * بسيف يموت يوربعام * واسرايل يساق مسبيا من ارضه * 11
* وقال اموصيا لعاموص * يا ناظر امض واهرب الي ارض يهودا * وهناك عش * وهناك تنبي * 12
13 * وعلي بيت ايل لا تتنبا بعد * لانه قدس الملك وبيت المملكة * فاجاب عاموص وقال 14
لاموصيا * لم اكن انا نبيا ولا ابن نبي * لكن راعي المعز كنت ولقاط توت * فاخذني الرب 15
من الغنم وقال لي الرب * امض تنبا علي شعبي اسرايل * والان اسمع قول الرب * انت تقول لا 16
تتنبا علي شعبي اسرايل * ولا تجمع جموعا علي بيت يعقوب * لاجل هذا هكذا يقول الرب * 17
امراتك في المدينة تزني * وبنوك وبناتك بالسيف يسقطون * وارضك تقاس بالحبل * وانت في
ارض نجسة تموت * واسرايل يساق مسبيا من ارضه *

* الفصل الثامن *

1 * هكذا اراني الرب * واذا اناء قانص * وقال لي ما تري يا عاموص * فقلت اناء قانص * فقال لي 2
الرب * اتي الاجل علي شعبي اسرايل * ولست اعود ازيله عنهم بعد * وتولول مذابح الهيكل في 3
ذلك اليوم يقول الرب * الساقطون كثير * وفي كل موضع اطرح سكوتا * اسمعوا هذا ايها 4
الذين يضايقون الفقير بالغداة * ويسطون علي المساكين من الارض * القايلون متي يجوز 5
الشهر فنبيع * والسبوت فنفتح الكنوز * لنصنع كيلا صغيرا * ونكبر الصنجة * ونصنع
ميزانا ظالما * لنبتاع المساكين بالورق * والمتواضع عوض الاحذية * ومن كل غلة نتجر * الرب 6 7
يقسم علي كبرياء يعقوب ان ينسي جميع اعمالكم للغاية * وبهذا لا تتزلزل الارض * وينوح 8
كل ساكن فيها * ويصعد مثل النهر اجلها * وينزل مثل نهر مصر * ويكون في ذلك اليوم 9
يقول الرب الاله * تغيب الشمس نصف النهار * ويظلم النور علي الارض في النهار *

* *Nam ita dicit Amos; Gladio morietur* 11
Jerobaam, & Iſrael abducetur captivus
è terra ſua. Deinde dixit Amoſia ad 12
Amos; O Videns, age, fuge ad terram
Judæ, ibique vive, ibique vaticinare:
Et contra Beth-il ne vaticineris inpoſte- 13
rùm, quia ſanctuarium regis eſt, & do-
mus regni. Reſpondit Amos, ac dixit 14
Amoſiæ; Non eram ego propheta, neque
filius prophetæ, ſed paſtor caprarum eram
& colligens moros. Aſſumpſit me autem 15
Dominus ex ovibus, dixitque mihi Domi-
nus; Age, vaticinare contra populum
meum Iſraelem. Jam verò audi ſer- 16
monem Domini: Tu dicis; Ne vaticineris
contra populum meum Iſraelem, néve
conciones cogas adverſus domum Jaco-
bi. Idcircò ſic ait Dominus; Uxor tua 17
in urbe fornicabitur, & filii filiæque tuæ
gladio cadent, terra tua fune dimetie-
tur, tu quoque in terra immunda morie-
ris, & Iſrael abducetur captivus è ter-
ra ſua.

CAP. VIII.

* I*Ta oſtendit mihi Dominus: & ecce* 1
vas aucupis. Dicente verò mihi, Quid 2
vides O Amos? Dixi, Vas aucupis. Di-
xitque mihi Dominus, Venit finis ſuper
populum meum Iſraelem, neque ſum ite-
rum amoturus eum ab ipſis. Et ulula- 3
bunt altaria templi eo die, dicit Dominus;
occumbentes erunt multi, & in omnem lo-
cum injiciam ſilentium. Audite hæc O qui 4
pauperem manè vexatis, & vim infertis
egenis terræ; Qui dicitis; Quando la- 5
betur menſis, ut vendamus? & ſabbatha,
ut aperiamus theſauros, ut faciamus men-
ſuram parvam, ampliemus lancem, & fa-
ciamus ſtateram iniquam; Ut pauperes 6
emamus argento, & humilem pro calcea-
mentis, & omnigenarum frugum merca-
turam exerceamus. Dominus jurat con- 7
tra ſuperbiam Jacobi, ſe non oblíturum o-
mnia opera veſtra, in finem uſque. Et ob 8
hæc non tremeret terra, & lugeret omnis
habitans in ea? aſcenderet ut fluvius finis
ejus, deſcenderétque ut fluvius Ægypti?
Imò erit eo die, dicit Dominus Deus, ut 9
ſol occidat ipſo meridie, & tenebreſcat
lux ſuper terram in ipſo die.

,lamentũ in veſtra[cantica omnia & ,luctũ in veſtras feſtivitates convertã Et
10 והפכתי חגיכם לאבל וכל־שיריכם לקינה
caput omne ſuper & ,ſaccum lumbos omnes ſuper faciam aſcendere &
והעליתי על־כל־מתנים שק ועל־כל־ראש
ejus noviſſimum & , unigeniti luctum tanquam eam ponam & : calvitium
קרחה ושמתיה כאבל יחיד ואחריתה
, Deus Dominus dixit , *venientes* dies Ecce .amarum diem ut
11 כיום מר׃ הנה ימים באים נאם אדני יהוה
, aquæ ſitim neque , panis famem non ; terram in famem mittam &
והשלחתי רעב בארץ לא־רעב ללחם ולא־צמא למים
,mare ad uſq; mari à ſe movebunt Et.Domini verba audiendi *quinimo*
12 כי אם־לשמע את דברי יהוה׃ ונעו מים עד־ים
,Domini verbum quærendo,*diſcurrent*;Orientẽ ad uſq; &, Aquilone ab &
ומצפון ועד־מזרח ישוטטו לבקש את־דבר־יהוה
virgines *patientur animi deliquium* illa die In .invenient non &
13 ולא ימצאו׃ ביום ההוא תתעלפנה הבתולות
, Someron delicto in *Jurantes* .ſiti *in* juvenes & , pulchræ
14 היפות והבחורים בצמא׃ הנשבעים באשמת שמרון
,cadent & : ſebah Beer via vivit & ,Dan tuus Deus Vivit : *dixerunt* &
ואמרו חי אלהיך דן וחי דרך באר־שבע ונפלו
.ultrà reſurgent non &

CAP. IX. ט
ולא־יקומו עוד׃

Percute : dixit & , altare ſuper ſtantem Dominum Vidi
1 ראיתי את־אדני נצב על־המזבח ויאמר הך
, capite in eos concidam & , poſtes contremiſcent & , *ſphærulam*
הכפתור וירעשו הספים ובצעם בראש
eis fugiet Non .interficiam gladio *in* eorum noviſſimum & ,ipſos omnes
כלם ואחריתם בחרב אהרג לא־ינוס להם
, infernum in *perfoderint* Si .evaſor eis evadet non & ,fugiens
2 נס ולא־ימלט להם פליט׃ אם־יחתרו בשאול
inde , cœlos aſcenderint ſi & : eos tollet mea manus inde
משם ידי תקחם ואם־יעלו השמים משם
inde , Carmel *capite* in ſe abſconderint ſi Et .eos faciam deſcendere
3 אורידם׃ ואם־יחבאו בראש הכרמל משם
meorum oculorum regione à ſe celaverint ſi & : eos tollam & , ſcrutabor
אחפש ולקחתים ואם־יסתרו מנגד עיני
.eos mordebit & , ſerpenti mandabo inde , maris pavimento in
בקרקע הים משם אצוה את־הנחש ונשכם׃
mandabo inde ,*ſuorum inimicorum facies ad* captivitatem in abierint ſi Et
4 ואם־ילכו בשבי לפני איביהם משם אצוה
,malum in eos ſuper *meum oculum* ponam & : eos occidet & , gladio
את־החרב והרגתם ושמתי עיני עליהם לרעה
, terram *in tangens* exercituum DEUS Dominus Et .bonum in non &
5 ולא לטובה׃ ואדני יהוה הצבאות הנוגע בארץ
aſcendet Et .ea in habitatores omnes lugebunt & , *liqueſcet* &
ותמוג ואבלו כל־יושבי בה ועלתה
Ædificans .Ægypti *fluvim* quaſi ſubmergetur & , ipſa tota fluvius ſicut
6 כיאר כלה ושקעה כיאר מצרים׃ הבונה
: *eum* fundavit terram ſuper *ſuum faſciculum* & ,ſuas aſcenſiones cœlos in
בשמים מעלותו ואגדתו על־ארץ יסדה
Dominus , terræ *facies ſuper* eas effundit & , maris aquas *vocans*
הקורא למי־הים וישפכם על־פני הארץ יהוה
, Iſrael filii mihi *vos* Chuſiim filii ſicut Nónne .ejus nomen
7 שמו׃ הלוא כבני כשיים אתם לי בני ישראל
terra è feci aſcendere Iſrael Nónne ? Dominus dixit
נאם־יהוה הלוא את־ישראל העליתי מארץ
? Chir de Aram & , Caphthor de Peliſtim & , Ægypti
מצרים ופלשתיים מכפתור וארם מקיר׃

Verſio VULG. LAT.

10 Et convertam feſtivitates veſtras
in luctum, & omnia cantica veſtra
in planctum : & inducam ſuper
omne dorſum veſtrũ ſaccum,
& ſuper omne caput calvitium :
& ponam eam quaſi luctum unigeniti,
& noviſſima ejus quaſi diẽ
11 amarum. Ecce dies veniunt, dicit
Dominus : & mittam famem
in terram : non famem panis :
neque ſitim aquæ, ſed audiendi
12 verbum Domini. Et commovebuntur
à Mari uſque ad mare, &
ab Aquilone uſque ad Orientem:
circuibunt quærentes verbũ Domini,
13 & non invenient. In die
illa deficient virgines pulchræ, &
14 adoleſcentes in ſiti. Qui jurant
in delicto Samariæ, & dicunt; Vivit
Deus tuus,Dan; &,Vivit via
Berſabee : & cadent, & non reſurgent
ultrá.

CAP. IX.

1 Vidi Dominum ſtantem ſuper
altare : & dixit ; Percute cardinem,
& commoveantur ſuperliminaria
: avaritia enim in capite
omnium, & noviſſimum eorum
in gladio interficiam : non erit
fuga eis. Fugient, & non ſalvabitur
2 ex eis qui fugerit. Si deſcenderint
uſque ad infernũ,indè
manus mea educet eos: & ſi aſcenderint
uſque in cœlum, indè detraham
3 eos. Et ſi abſconditi fuerint
in vertice Carmeli,indè ſcrutans
auferam eos : & ſi celaverint
ſe ab oculis meis in profundo maris,
ibi mandabo ſerpenti,& mor-
4 debit eos. Et ſi abierint in captivitatem
coram inimicis ſuis, ibi
mandabo gladio, & occîdet eos :
& ponam oculos meos ſuper eos
in malum, & non in bonum. Et
5 Dominus Deus exercituum, qui
tangit terram, & tabeſcet : & lugebunt
omnes habitantes in ea :
& aſcendet ſicut rivus omnis, &
6 defluet ſicut fluvius Ægypti. Qui
ædificat in cœlo aſcenſionem ſuã,
& faſciculum ſuum ſuper terram
fundavit : qui vocat aquas maris,
& effundit eas ſuper faciem terræ,
7 Dominus nomen ejus. Numquid
non ut filii Æthiopum vos
eſtis mihi, filii Iſrael, ait Dominus
? numquid non Iſrael aſcendere
feci de terra Ægypti, & Palæſtinos
de Cappadocia,& Syrios
de Cyrene ?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Καὶ μεταστρέψω τὰς ἑορτὰς ὑμῶν εἰς πένθος,
καὶ πάσας τὰς ᾠδὰς ὑμῶν εἰς θρῆνον,
καὶ ἀναβιβῶ ἐπὶ πᾶσαν ὀσφὺν σάκκον, καὶ ἐπὶ
πᾶσαν κεφαλὴν φαλάκρωμα· καὶ θήσομαι αὐτὸν
ὡς πένθος ἀγαπητοῦ, καὶ τοὺς μετ' αὐτοῦ ὡς
11 ἡμέραν ὀδύνης. Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει
κύριος, καὶ ἐξαποστελῶ λιμὸν ἐπὶ τὴν γῆν, οὐ
λιμὸν (ν) ἄρτων, οὐδὲ δίψαν ὕδατος, ἀλλὰ
12 λιμὸν τοῦ ἀκοῦσαι (ξ) τὸν λόγον κυρίου. Καὶ
(ο) σαλευθήσονται ὕδατα ἀπὸ τῆς θαλάσσης
ἕως θαλάσσης, καὶ ἀπὸ Βορρᾶ ἕως ἀνατολῶν
περιδραμοῦνται ζητοῦντες τὸν λόγον τοῦ κυρίου,
13 καὶ οὐ μὴ εὕρωσιν. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ
ἐκλείψουσιν αἱ παρθένοι αἱ καλαί, καὶ οἱ νεανίσκοι
14 ἐν δίψει, Οἱ ὀμνύοντες κατὰ τοῦ ἱλασμοῦ
Σαμαρείας, καὶ οἱ λέγοντες, Ζῇ (π) ὁ θεός
σου Δάν, καὶ ζῇ ὁ θεός σου Βηρσαβεέ· καὶ
πεσοῦνται, καὶ οὐ μὴ ἀναστῶσιν ἔτι.

MS.A. (ν) ἄρτου, (ξ) λόγον (ο) σαλευθήσεται ὕδατα ἕως θαλάσσης, (π) κύριος ὁ θεός

Et convertã ſolennitates veſtras 10
in luctum, & omnia cantica veſtra
in lamentationem:et inducam
ſuper omnem lumbum ſaccum, et
ſuper omne caput calvitiũ:& ponam
eum quaſi luctum dilecti,&
eos, qui cum eo ſunt, quaſi diem
doloris. Ecce dies veniunt, dicit 11
Dominus: & emittã famẽ ſuper
terrã,non famẽ panũ,neque ſitim
aquæ, ſed famẽ audiendi verbũ
Domini.Et commovebũtur aquæ 12
de Mari uſque ad mare,& ab Aquilone
uſque ad Orientem circuibunt
quærentes verbum Domini,
& non invenient. In die illa deficient 13
virgines pulchræ,& juvenes
in ſiti:Qui jurant per propitiationẽ 14
Samariæ,& qui dicunt,
Vivit Deus tuus,Dan; &, Vivit
Deus tuus,Berſabee. Et cadent,et
non reſurgent ampliùs.

ΚΕΦ. Θ'.

1 Εἶδον τὸν κύριον ἐφεστῶτα ἐπὶ τοῦ θυσιαστηρίου,
καὶ εἶπε, Πάταξον ἐπὶ (α) τὸ ἱλαστήριον,
καὶ σεισθήσεται τὰ πρόπυλα, καὶ διάκοψον
εἰς κεφαλὰς πάντων· καὶ τοὺς καταλοίπους αὐτῶν
ἐν ῥομφαίᾳ ἀποκτενῶ, οὐ μὴ (β) διαφύγῃ
ἐξ αὐτῶν φεύγων, (γ) καὶ οὐ μὴ διασωθῇ
2 ἐξ αὐτῶν ἀνασωζόμενος. Ἐὰν (δ) κατακρυβῶσιν
εἰς ᾅδου, ἐκεῖθεν ἡ χείρ μου ἀνασπάσει
αὐτούς· καὶ ἐὰν ἀναβῶσιν εἰς τὸν οὐρανόν,
3 ἐκεῖθεν κατάξω αὐτούς· Ἐὰν (ε) ἐγκατακρυβῶσιν
εἰς τὴν κορυφὴν τοῦ Καρμήλου, ἐκεῖθεν
ἐξερευνήσω, καὶ λήψομαι αὐτούς· καὶ
ἐὰν καταδύσωσιν ἐξ ὀφθαλμῶν μου εἰς τὰ
βάθη τῆς θαλάσσης, ἐκεῖ ἐντελοῦμαι τῷ δράκοντι,
4 καὶ δήξεται αὐτούς. Καὶ ἐὰν πορευθῶσιν
ἐν αἰχμαλωσίᾳ πρὸ προσώπου τῶν ἐχθρῶν
αὐτῶν, ἐκεῖ ἐντελοῦμαι τῇ ῥομφαίᾳ, καὶ ἀποκτενεῖ
αὐτούς. καὶ στηριῶ (ζ) τοὺς ὀφθαλμούς μου
5 ἐπ' αὐτοὺς εἰς κακά, καὶ οὐκ εἰς ἀγαθά. Καὶ
κύριος κύριος ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ, ὁ ἐφαπτόμενος
τῆς γῆς, καὶ σαλεύων αὐτήν, καὶ πενθήσουσι
πάντες οἱ κατοικοῦντες αὐτήν, καὶ ἀναβήσεται
ὡς ποταμὸς συντέλεια αὐτῆς, καὶ
6 καταβήσεται ὡς ποταμὸς Αἰγύπτου. Ὁ οἰκοδομῶν
εἰς τὸν οὐρανὸν ἀνάβασιν αὐτοῦ, καὶ τὴν
ἐπαγγελίαν αὐτοῦ (η) ἐπὶ τῆς γῆς θεμελιῶν,
ὁ προσκαλούμενος τὸ ὕδωρ τῆς θαλάσσης, καὶ
ἐκχέων αὐτὸ ἐπὶ πρόσωπον τῆς γῆς· Κύριος
7 (¨) παντοκράτωρ ὄνομα αὐτῷ. Οὐχ ὡς υἱοὶ
Αἰθιόπων ὑμεῖς ἐστε ἐμοὶ υἱοὶ Ἰσραήλ; λέγει
κύριος. οὐ τὸν Ἰσραὴλ ἀνήγαγον ἐκ γῆς
Αἰγύπτου, καὶ τοὺς ἀλλοφύλους ἐκ Καππαδοκίας,
καὶ τοὺς Σύρους ἐκ βόθρου;

MS.A. (α) τὸ θυσιαστήριον, (β) διαφεύξῃ (γ) οὐδὲ μὴ (δ) κατορυγῶσιν (ε) ἐγκρυβῶσιν (ζ) τὸ πρόσωπόν μου (η) ἐπὶ γῆς (¨) ὁ παντοκράτωρ

CAP. IX.

Vidi Dominum ſtantem ſuper 1
altare:et dixit;Percute ſuper propitiatorium,
& commovebuntur
veſtibula: & diſcide in capita omnium.
Et reliquos eorum in gladio
interficiam.Non fugiet ex eis,
qui fugerit: & non ſalvabitur ex
illis,qui fuerit reſalvatus. Si(a) 2
abſconditi fuerint in inferno,inde
man⁹ mea evellet eos.Et,ſi aſcenderint
in cœlum; indè detrahã illos.
Si abſconditi fuerint in vertice 3
Carmeli; indè ſcrutans auferã
eos:& ,ſi demerſerint ſe ab oculis
meis in profunda maris; ibi mandabo
draconi,et mordebit eos: Et, 4
ſi abierint in captivitatẽ ante faciem
inimicorum ſuorũ; ibi præcipiam
gladio,& interficiet eos. Et
obfirmabo oculos meos ſuper illos
in mala,& non in bona. Et Dominus 5
Domin⁹ Deus omnipotens,
qui tangit terram, & commovet
eam: et lugebunt omnes habitatores
ejus:et aſcendet, ſicut fluvius
conſummatio ejus: & deſcendet,
ſicut flumen Ægypti. Qui ædificat 6
in cœlo aſcenſionẽ ſuã,et promiſſionem
ſuam ſuper terrã fundat:
qui vocat aquam maris, &
effundit eam ſuper faciem terræ:
Dominus omnipotens nomen ei.
Nónne ut filii Æthiopum vos eſtis 7
mihi, filii Iſrael? dicit Dominus.
Nónne Iſrael eduxi de terra
Ægypti, & alienigenas de Cappadocia,
& Syros de fovea?

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 ואהפיך חגיכון לאבלא וכל תושבחתכון לאליא ואסק על כל חרצין סק ועל כל ריש
11 מרט ואשוניה כאבל יחיד וסופה כיום מריר׃ הא יומיא אתן אמר יי אלהים ואשלח
כפנא בארעא לית דכפן למיכל ולית די צחי למשתי אלהן לקבלא ית פתגמא דיי׃
12 וישתלהון מימא עד מערבא ומצפונא עד מדנחא יהכון למתבע אולפן מן קדם יי ולא
13 ישכחון׃ ביומא ההוא ישתלהין כנישתא דישראל דאנון דמין לבתולן שפירן דטעאה
14 בשפרהן עם עולמין חיבין ויהון מטרפין ורמן בצחותא׃ די מקימין בחובת שמרון
ואמרין קימא דחלתא די בדן וקימין נימוסי באר שבע ויפלון ולא יקומון עוד׃

ט

1 אמר עמוס נביא חזיתי ית יקרא דיי אסתלק מכרובא ושרא על מדבחא ואמר אם לית
עמא בית ישראל תיבין לאוריתא טפי מנרתא אתקטיל מלכא יאשיה ויחרב
ביתא ויתפגרן עזרתא ומני בית מקדשא בשביא יהכון ושארהון בחרבא אקטול
2 לא יערוק להון דעריק ולא ישתזיב להון דמשתזיב׃ אם ידמון לאטמרא כרבשאול
מתמן במימרי ידברנון שנאיהון ואם יסקון בטורין דרמין עד צית שמיא מן תמן
3 במימרי יחתונון׃ ואם ידמון לאטמרא ברישי מגדלי כרכיא מתמן אפקיד בלושין
ויבלשונון ואם יטמרון מן קדם מימרי בניסי ימא מתמן אפקיד ית עממיא
4 דתקיפין כחויא ויקטלונינון׃ ואם יהכון בשביא קדם בעלי דבביהון מתמן
אפקיד ית דקטלין בחרבא ויקטלונון ואשוי מימרי עליהון לבישא ולא לטיבא׃
5 ויי אלהים צבאות די נזיף בארעא וזיעא ויצדון כל דיתבין בה ויסיק עלה מלך
6 במשריתיה דסגי כמי נהרא ויחפנה כולה ותשתקע כנהר מצרים׃ די אשרי בתקוף
רומא שכינת יקריה וכנשתיה על ארעא קשטה די אמר לכנשא משרין דסגיאין
7 כמי נהרא ומבדר להון על אפי ארעא יי שמיה׃ הלא כבנין רחימין אתון חשיבין
קדמי בית ישראל אמר יי הלא ית ישראל אסקית מארעא דמצרים ופלשתאי
מקפוטקיא וארם מקירני׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et convertam ſolennitates veſtras in luctum, & omnia veſtra cantica in la- 10
mentum, & efficiam ut aſcendat ſuper omnium lumbos ſaccus, & ſuper quod-
libet caput calvitium : & ponam eam tanquam luctum unici, & finem ejus
velut diem amaram. Ecce dies veniunt, dicit Dñs Deus, cùm mittam famem 11
in terram : non erit qui eſuriat ad comedendum [*panem*,] nec qui ſitiat ad
bibendas[*aquas*,]ſed ad recipienda verba Dñi. Et laſſabunt ſe à mari ad Oc- 12
cidentem uſque, & ab Aquilone uſque ad Orientem pergent quæſitum do-
ctrinam à facie Dñi, non invenient tamen. Tempore illo patientur deliqui- 13
um cœtus Iſrael, qui ſimiles ſunt virginibus pulcherrimis, quæ pulchritu-
dine ſua cum juvenibus peccatoribus fornicatæ ſunt, erunt proinde proſter-
nati & ſiti dejecti. Qui jurant per delictum Samariæ, & dicunt, Vivit Deus 14
qui eſt in Dan, & ſtabiles ſunt leges Berſabee : corruent tamen, nec ultrà
ſubſiſtent.

CAP. IX.

Dixit Amos propheta : Vidi gloriam Dñi conſcendentis à Cherub qui 1
manſit ſuper altare, & ait : Niſi populus domus Iſrael convertatur ad
legem, extinguetur candelabrum : occidetur rex Joſias, & deſtruetur domus,
& diſſipabuntur atria, & vaſa domus ſanctuarii in captivitatem ibunt, &
reliquias eorum occidam gladio : non aufugiet ex eis qui fugam arripuerit,
nec liberabitur ex eis qui evaſerit. Si putaverint abſcondi velut in inferno, 2
indè verbo meo tollent eos inimici ſui ; & ſi aſcenderint montes excelſos ad
cœli ſummitatem uſque, indè detrahent eos verbo meo. Et ſi exiſtimaverint 3
abſcondi in cacumine turrium caſtellorum, indè mandabo ſcrutatoribus ut
ſcrutentur eos : præterea ſi *delituerint* à facie *Verbi mei* in inſulis maris,
indè injungam populis fortibus inſtar ſerpentum ; ut eos enecent. Deindè
ſi in captivitatem iverint ante hoſtes ſuos , indè mandatum dabo gladio 4
cædentibus ut occidant eos, atq; ponam Verbum meum contra eos in ma-
lum, & non in bonum. Et Dñs Deus exercituum eſt qui terram increpat ita 5
ut commoveatur : diſſipabuntur ſanè omnes qui habitant in ea : *& aſcendere*
faciet contra eam *regem* cum exercitu ſuo numeroſo inſtar aquarum flumi-
nis, qui illam totam contegat, & demergatur velut Ægypti fluvio. Qui collo- 6
cavit in præſidio excelſo majeſtatẽ gloriæ ſuæ, & Eccleſiã ſuam in terra deco-
ravit: qui dixit ſe congregaturũ exercit⁹ quamplurimos quaſi aquas *fluminis*,
atq; diſperſurum eos ſuper faciem terræ, Dñs nomen ejus. Nunquid non ut filii 7
dilecti reputati eſtis vos coram me dom⁹ Iſrael, dicit Dñs ? nónne Iſrael aſcen-
dere feci de terra Ægypti, & Palæſtinos de Cappadocia, & Syros de Cyrene ?

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܘܐܗܦܘܟ ܥܐܕܝܟܘܢ ܠܐܒܠܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܙܡܪܝܟܘܢ ܠܐܘܠܝܬܐ. ܘܐܣܩ ܣܩܐ ܥܠ ܟܠܗܘܢ
ܚܨܝܟܘܢ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܪܫܝܟܘܢ ܩܪܚܘܬܐ. ܘܐܥܒܕܝܗ ܐܝܟ ܐܒܠܐ ܕܝܚܝܕܝܐ. ܘܚܪܬܗ ܐܝܟ
11 ܝܘܡܐ ܡܪܝܪܐ. * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.. ܘܐܫܕܪ ܟܦܢܐ ܒܐܪܥܐ. ܠܐ ܟܦܢܐ ܠܠܚܡܐ.
12 ܘܠܐ ܨܗܝܐ ܠܡܝܐ. ܐܠܐ ܠܡܫܡܥ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܢܬܬܙܝܥܘܢ ܡܢ ܝܡܐ ܘܥܕܡܐ ܠܝܡܐ.
ܘܡܢ ܓܪܒܝܐ ܘܥܕܡܐ ܠܡܕܢܚܐ. ܘܢܗܕܪܘܢ ܠܡܒܥܐ ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܫܟܚܘܢ.
13 * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ.. ܢܬܥܠܦܢ ܒܬܘܠܬܐ ܫܦܝܪܬܐ. ܘܥܠܝܡܐ ܒܨܗܝܐ. * ܕܝܡܝܢ
14 ܗܘܘ ܒܦܬܟܪܐ ܕܫܡܪܝܢ ܘܐܡܪܝܢ.. ܚܝ ܐܠܗܟ ܕܢ. ܘܚܝܐ ܐܘܪܚܐ ܕܒܝܪ ܫܒܥ. ܘܢܦܠܘܢ.
ܘܠܐ ܢܩܘܡܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܛ *

1 * ܚܙܝܬܗ ܠܡܪܝܐ ܕܩܐܡ ܥܠ ܡܕܒܚܐ. ܘܐܡܪ.. ܡܚܝ ܒܝܫܬܐ. ܘܢܙܘܥܘܢ ܐܣܩܘܦܬܐ.
ܘܢܟܠܗܘܢ ܒܪܫ ܟܠܗܘܢ. ܘܚܪܬܗܘܢ ܒܣܝܦܐ ܐܩܛܘܠ. ܠܐ ܢܥܪܘܩ ܡܢܗܘܢ ܕܥܪܩ. ܘܠܐ
2 ܢܬܦܨܐ ܡܢܗܘܢ ܕܡܬܦܨܐ. * ܐܢ ܢܚܬܘܢ ܠܫܝܘܠ. ܡܢ ܬܡܢ ܬܣܒ ܐܢܘܢ ܐܝܕܝ.
3 ܘܐܢ ܢܣܩܘܢ ܠܫܡܝܐ. ܡܢ ܬܡܢ ܐܚܬ ܐܢܘܢ. * ܘܐܢ ܢܛܫܘܢ ܒܪܫܗ ܕܟܪܡܠ.. ܡܢ
ܬܡܢ ܐܒܨܐ ܘܐܣܒ ܐܢܘܢ. ܘܐܢ ܢܛܫܘܢ ܡܢ ܥܝܢܝ ܒܥܘܡܩܘܗܝ ܕܝܡܐ.. ܬܡܢ
4 ܐܦܩܕ ܚܘܝܐ ܘܢܢܟܬ ܐܢܘܢ. * ܘܐܢ ܢܐܙܠܘܢ ܒܫܒܝܐ ܩܕܡ ܒܥܠܕܒܒܝܗܘܢ.. ܬܡܢ ܐܦܩܕ
5 ܠܚܪܒܐ ܘܬܩܛܘܠ ܐܢܘܢ. ܘܐܣܝܡ ܥܝܢܝ ܥܠܝܗܘܢ ܠܒܝܫܬܐ.. ܘܠܐ ܠܛܒܬܐ. * ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܡܪܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܕܩܪܒ ܠܐܪܥܐ. ܘܬܙܘܥ. ܘܢܬܐܒܠܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ. ܘܬܣܩ ܐܝܟ
6 ܐܝܟ ܢܗܪܐ. ܘܢܚܘܬ ܐܝܟ ܢܗܪܐ ܕܡܨܪܝܢ. * ܕܒܢܐ ܒܫܡܝܐ ܡܣܩܢܘܬܗ. ܘܡܘܠܟܢܗ ܥܠ ܐܪܥܐ
7 ܫܪܪܗ. ܕܩܪܐ ܠܡܝܐ ܕܝܡܐ.. ܘܐܫܕ ܐܢܘܢ ܥܠ ܐܦܝ ܐܪܥܐ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܡܗ. * ܗܐ
ܐܝܟ ܒܢܝ ܟܘܫܝܐ ܐܝܬܝܟܘܢ ܠܝ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ.. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܠܐܝܣܪܝܠ ܐܣܩܬ ܡܢ
ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ.. ܘܦܠܫܬܝܐ ܡܢ ܩܦܘܕܩܝܐ. ܘܠܐܪܡ ܡܢ ܩܝܪ.

* Vertam ſolennitates veſtras in luctum, & 10
omnia cantica veſtra in lamentationes: præcingam ciliciis omnes lumbos veſtros, & ſuper
omnia capita veſtra cicatrices: deniq; diſponā
illam quaſi luctū unigeniti, & finem ejus tanquam diem amariſſimā. Ecce dies adveniunt, 11
dicit Dñs, quibꝰ mittā famē in terrā; non ejus
qui ad panē famelicus eſt, neq; illius qui ſitibundus eſt ad aquas, ſed ad audiendū ſermonē
Dñi. Et congregabuntur à mari uſq; ad mare, 12
& ab Aquilone ad Orientem uſque; & diſcurrent ad quærendū ſermonē Dñi, & non invenient. Eodem illo die virgines formoſæ & 13
adoleſcentuli ſiti exagitabuntur. Qui jurabant 14
per idola Samariæ, & dicebant, Per vitam dei
tui O Dan, & per vitam viæ Bir-ſebaa; corruent, nec reſurgent.

CAP. IX.

Vidi Dñm ſtantem ſuper altari, ac dicentem; Percute malum iſtam ut commoveantur 1
limina: & dolus eorum in caput ipſorum
omnium *recidat*, & poſteritatē eorum gladio
interficiā: non evadet ex eis, qui fugiat; neque
liberabitur ex eis, qui ſe eripiat. Si deſcenderent ad inferos, inde extraheret eos manus 2
mea; & ſi aſcenderent ad cœlum, illinc detraherem eos: Si abderent ſe in vertice Charmeli, inde perſcrutans caperē eos: & ſi latitarent ab oculis meis in abyſſis maris, illic præ- 3
ciperē ſerpenti, & morderet eos: Si abirent 4
in captivitatē ante hoſtes ſuos, illic præciperē
gladio, & interficeret eos: adhibebo enim
oculum meum ſuper eos in malum, non in bonum, Dicit Dñs dominorum potentiſſimus; 5
qui tangit terram, & contremiſcit, ſedéntque
in luctu omnes habitatores ejus, & intumeſcit
quaſi flumen exitium ejus, irruítq; ceu flumen
Ægypti: Qui ædificavit in cœlo aſcenſus ſu- 6
os, & promiſſum ſuum in terra confirmat: qui
evocat aquas maris, & effundit eas ſuper terræ ſolum; cujus nomen eſt Dominus potentiſſimus. Ecce ſicut filii Æthiopum eſtis mihi O 7
filii Iſraelis, dicit Dominos: ecce Iſraelem
eduxi de terra Ægypti, Paleſtinos è Cappadocia, & Aramæum è Kir.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10 * واقلب اعيادكم الي حزن * وجميع تسابيحكم الي نوح * وارفع علي كل حقو مسحا * وعلي كل
11 راس قرعا * واصيره مثل حزن الحبيب * والذين معه مثل يوم الوجع * ها ايام تاتي يقول الرب *
وارسل جوعا علي الارض * ليس جوع خبز ولا عطش ماء * لكن جوعا لسماع قول الرب *
12 * ويتزعزع المياه الي البحر * ومن الجربياء الي المشارق يسرعون طالبين قول الرب * ولا يجدونه
13 14 يقول الرب * في ذلك اليوم تفني العذاري الحسان والشبان بالعطش * الذين يحلفون بغفران
سامرين * ويقولون حي الهك يا دان * وحي الهك يا بير سبع * ويسقطون ولا يقومون بعد *

* الفصل التاسع * الاصحاح الحادي عشر *

1 * رايت الرب قايما علي المذبح * وقال اضرب المذبح فتتزلزل الدهاليز * واقطع في روس الجميع *
2 وبقاياهم اقتلهم بالسيف * ولا يهرب منهم هارب * ولا ينجو منهم ناج * ان يهبطوا الي الجحيم
3 من هناك تصعدهم يدي * وان يصعدوا الي السماء * من هناك احدرهم * ان يختفوا في
راس الكرمل * من هناك افتش واخذهم * وان يتغيبوا عن عيني في اعماق البحر * من هناك
4 امر التنين فينهشهم * وان يمضوا في السبي امام وجه اعدايهم * هناك امر السيف فيقتلهم *
5 واثبت عيني عليهم للشرور لا للخيرات * والرب الرب الاله الضابط الكل يلمس كل الارض
فيزلزلها * ويحزن جميع ساكنيها * ويصعد مثل النهر انقضاوها * وينحدر مثل نهر مصر *
6 * الباني في السماء صعوده * والموسس علي الارض وعده * الداعي ماء البحر ومهرقه علي
7 وجه الارض * الرب الاله الضابط الكل اسمه * اليس مثل بني الحبوش انتم لي يا بني اسرايل
يقول الرب * اليس اسرايل اصعدته من مصر * والقبايل الغريبة من قبادوقية * والشاميين
من الحفرة *

* *Vertam ſolennitates veſtras in mœrorem,* 10
*& omnia cantica veſtra in luctum: imponam omni lumbo cilicium, & omni capiti calvitiem: & diſponam eum ut luctum
dilecti; & eos qui cum ipſo ſunt, ut diem
doloru. Ecce dies venturi ſunt, ait Do-* 11
*minus, quibus mittam famem ſuper terram; non famem panis, neque ſitim aquæ,
ſed famem audiendi ſermonem Domini.
Et commovebuntur aquæ uſque ad mare,* 12
*& ab Aquilone ad Orientem uſque accurrent quærentes ſermonem Domini, & non
invenient eum, ait Dominus. Eo die vir-* 13
gines pulchræ & adoleſcentuli conficientur ſiti; Qui jurant per indulgentiam 14
*Samariæ, & dicunt, Vivit deus tuus O
Dan, & vivit deus tuus O Bir-ſebaa: &
cadent, nec amplius reſurgent.*

CAP. IX.

Textus undecimus.

Vidi Dominum ſtantem ſuper altari, 1
*& dixit; Percute altare, & contremiſcent porticus: incîdam capita omnium,
& reliquos eorum occîdam gladio: non
effugiet ex eis ullus profuga, neque evadet
ex eis ullus liber. Si deſcenderint in in-* 2
*fernum, inde extrahet eos manus mea:
& ſi aſcenderint in cœlum, inde deturbabo eos: Si abdiderint ſe in vertice Char-* 3
*meli, inde perveſtigans auferam eos: ſi
occultaverint ſe ab oculis meis in profundis maris, inde præcipiam draconi, & mordebit eos: Si abierint in captivitatem* 4
*ante faciem inimicorum ſuorum, ibi mandabo gladio, & interficiet eos: & oculos
meos firmos habebo ſuper eos in mala, non
in bona. Nam Dominus, Dominus Deus* 5
*omnipotens tanget univerſam terram, &
concutiet eam; & lugebunt omnes habitatores ejus: & aſcendet ſicut fluvius
excidium ejus, deſcendétque ſicut fluvius Ægypti. Ædificans in cœlo aſcen-* 6
*ſum ſuum, & fundans ſuper terram
promiſſum ſuum: advocans aquam maris, & effundens eam ſuper faciem terræ: Dominus Deus omnipotens eſt nomen
ejus. Annon ut filii Æthiopum eſtis* 7
*mihi O filii Iſraelis, dicit Dominus?
Annon Iſraelem extraxi ex Ægypto, nationes exteras è Cappadocia, & Damaſcenos è fovea?*

עֹבַדְיָה : א

faciam diſperdere & ,peccati regnum in DEI Domini oculi Ecce
8 הִנֵּה עֵינֵי ׀ אֲדֹנָי יֱהֹוִה בַּמַּמְלָכָה הַחַטָּאָה וְהִשְׁמַדְתִּי
delebo delendo non veruntamen :humi faciebus deſuper illud
אֹתָהּ מֵעַל פְּנֵי הָאֲדָמָה אֶפֶס כִּי לֹא הַשְׁמֵיד אַשְׁמִיד
,præcipiens ego ecce Quia .Dominus dixit ,Jahacob domum
9 אֶת־בֵּית יַעֲקֹב נְאֻם־יְהוָה׃ כִּי־הִנֵּה אָנֹכִי מְצַוֶּה
quemadmodum;Iſrael domum gentibus omnibus in faciā commovere &
וַהֲנִעוֹתִי בְכָל־הַגּוֹיִם אֶת־בֵּית יִשְׂרָאֵל כַּאֲשֶׁר
morientur gladio In .terram lapillus cadet non & , cribro in agitatur
10 יִנּוֹעַ בַּכְּבָרָה וְלֹא־יִפּוֹל צְרוֹר אָרֶץ׃ בַּחֶרֶב יָמוּתוּ
anticipabit nec , accedet Non , dicentes , mei populi peccatores omnes
כֹּל חַטָּאֵי עַמִּי הָאֹמְרִים לֹא־תַגִּישׁ וְתַקְדִּים
David tabernaculum erigam illa die In .malum nos propter
11 בַּעֲדֵינוּ הָרָעָה׃ בַּיּוֹם הַהוּא אָקִים אֶת־סֻכַּת דָּוִיד
, erigam ejus diruta & , earum rupturas ſepiam & , collabens
הַנֹּפֶלֶת וְגָדַרְתִּי אֶת־פִּרְצֵיהֶן וַהֲרִסֹתָיו אָקִים
reſiduum poſſideant Ut .ſeculi diebus ſicut illud ædificabo &
12 וּבְנִיתִיהָ כִּימֵי עוֹלָם׃ לְמַעַן יִירְשׁוּ אֶת־שְׁאֵרִית
dixit ,eos ſuper meum nomen eſt invocatum quas gentes omnes & ,Edom
אֱדוֹם וְכָל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר־נִקְרָא שְׁמִי עֲלֵיהֶם נְאֻם־
, Dominus dixit , venientes dies Ecce .hoc faciens ,Dominus
13 יְהוָה עֹשֶׂה זֹּאת׃ הִנֵּה יָמִים בָּאִים נְאֻם־יְהוָה
, ſemen trahentem ad uvarum calcator & ,meſſorem ad arator attinget &
וְנִגַּשׁ חוֹרֵשׁ בַּקֹּצֵר וְדֹרֵךְ עֲנָבִים בְּמֹשֵׁךְ הַזָּרַע
.liquefient colles omnes & ,muſtum montes ſtillabunt &
וְהִטִּיפוּ הֶהָרִים עָסִיס וְכָל־הַגְּבָעוֹת תִּתְמוֹגַגְנָה׃
urbes ædificabunt & ,Iſrael mei populi captivitatem convertam Et
14 וְשַׁבְתִּי אֶת־שְׁבוּת עַמִּי יִשְׂרָאֵל וּבָנוּ עָרִים
bibent & , vineas plantabunt & : inhabitabunt & , deſolatas
נְשַׁמּוֹת וְיָשָׁבוּ וְנָטְעוּ כְרָמִים וְשָׁתוּ אֶת־
eos plantabo Et.eorum fructum comedent &,hortos facient &:earum vinū
15 יֵינָם וְעָשׂוּ גַנּוֹת וְאָכְלוּ אֶת־פְּרִיהֶם׃ וּנְטַעְתִּים
quam , ſua humo deſuper ultrà evellentur non & ,ſuam humum ſuper
עַל־אַדְמָתָם וְלֹא יִנָּתְשׁוּ עוֹד מֵעַל אַדְמָתָם אֲשֶׁר
.tuus Deus Dominus dixit ,eis dedi
נָתַתִּי לָהֶם אָמַר יְהוָה אֱלֹהֶיךָ׃

Verſio VULG. LAT.

8 Ecce oculi Domini Dei ſuper regnum peccans, & conteram illud à facie terræ: veruntamen conterens non conteram domum Jacob, dicit Dominus. 9 Ecce enim mandabo ego, & concutiam in omnibus gentibus domum Iſrael, ſicut concutitur triticū in cribro: & non cadet lapillus ſuper terram. 10 In gladio morientur omnes peccatores populi mei: qui dicunt; Non appropinquabit, & non veniet ſuper nos malum. 11 In die illa ſuſcitabo tabernaculum David, quod cecidit: & reædificabo aperturas murorum ejus, & ea quæ corruerant inſtaurabo: & reædificabo illud ſicut in diebus antiquis. 12 Ut poſſideant reliquias Idumææ, & omnes nationes, eò quòd invocatum ſit nomen meum ſuper eos: dicit Dominus faciens hæc. 13 Ecce dies veniunt, dicit Dominus: & comprehendet arator meſſorem, & calcator uvæ mittentem ſemen: & ſtillabunt montes dulcedinem, & omnes colles culti erunt. 14 Et convertam captivitatem populi mei Iſrael: & ædificabunt civitates deſertas, & inhabitabunt: & plantabunt vineas, & bibent vinum earum: & facient hortos, & comedent fructus eorum. 15 Et plantabo eos ſuper humum ſuam: & non evellam eos ultrà de terra ſua, quam dedi eis, dicit Dominus Deus tuus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

8 Ἰδοὺ οἱ ὀφθαλμοὶ κυρίου τοῦ θεοῦ ἐπὶ τὴν βασιλείαν τῶν ἁμαρτωλῶν, καὶ ἐξαρῶ αὐτὴν ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς· πλὴν ὅτι οὐκ εἰς τέλος ἐξαρῶ τὸν οἶκον (θ) Ἰακώβ, λέγει κύριος. 9 (ι) Διότι ἐγὼ ἐντέλλομαι, καὶ (κ) λικμήσω ἐν πᾶσι τοῖς ἔθνεσι τὸν οἶκον (λ) Ἰσραήλ, ὃν τρόπον λικμᾶται ἐν τῷ λικμῷ, καὶ οὐ μὴ πέσῃ σύντριμμα ἐπὶ τὴν γῆν. 10 Ἐν ῥομφαίᾳ τελευτήσουσι πάντες ἁμαρτωλοὶ λαοῦ μου, οἱ λέγοντες, Οὐ μὴ ἐγγίσῃ, (μ) οὐδὲ μὴ γένηται ἐφ' ἡμᾶς τὰ κακά. 11 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἀναστήσω τὴν σκηνὴν Δαυὶδ τὴν πεπτωκυῖαν, καὶ ἀνοικοδομήσω τὰ πεπτωκότα αὐτῆς, καὶ τὰ (ν) κατεσκαμμένα αὐτῆς ἀναστήσω, καὶ ἀνοικοδομήσω αὐτὴν καθὼς αἱ ἡμέραι τοῦ αἰῶνος· 12 (ξ) Ὅπως ἐκζητήσωσιν οἱ κατάλοιποι τῶν ἀνθρώπων (ο) καὶ πάντα τὰ ἔθνη, ἐφ' οὓς ἐπικέκληται τὸ ὄνομά μου ἐπ' αὐτούς, λέγει κύριος (π) ὁ ποιῶν πάντα ταῦτα. 13 Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται, λέγει κύριος, καὶ καταλήψεται ὁ (ρ) ἀμητὸς τὸν τρυγητόν, καὶ περκάσει ἡ σταφυλὴ ἐν τῷ σπόρῳ, καὶ ἀποσταλάξει τὰ ὄρη γλυκασμόν, καὶ πάντες οἱ βουνοὶ σύμφυτοι ἔσονται. 14 Καὶ ἐπιστρέψω τὴν αἰχμαλωσίαν τοῦ λαοῦ μου Ἰσραήλ, καὶ οἰκοδομήσουσι πόλεις τὰς ἠφανισμένας, καὶ κατοικήσουσι, καὶ (σ) φυτεύσουσιν ἀμπελῶνας, καὶ πίονται τὸν οἶνον αὐτῶν, καὶ (τ) ποιήσουσι κήπους, καὶ φάγονται τὸν καρπὸν αὐτῶν. 15 Καὶ καταφυτεύσω αὐτοὺς ἐπὶ τῆς γῆς αὐτῶν, καὶ οὐ μὴ ἐκσπασθῶσιν οὐκέτι ἀπὸ τῆς γῆς (υ), ἧς ἔδωκα αὐτοῖς, λέγει κύριος ὁ θεὸς (φ) παντοκράτωρ.

8 Ecce oculi Domini Dei ſuper regnum peccatorū: & auferam illud à facie terræ. Veruntamen non in finem auferam domū Jacob, dicit Dominus. 9 Quia (b) ego præcipio, & ventilabo in cunctis gentibus domum Iſrael, ſicut ventilatur in ventilabro: & non cadet contritio ſuper terram. 10 In gladio morientur omnes peccatores populi mei, qui dicūt; Non appropinquabit, neque venient ſuper nos mala. 11 In die illa ſuſcitabo tabernaculū David, quod ceciderat, & reædificabo ea quæ corruerant ex ipſo, & quæ ſuffoſſa ſunt ex eo, ſuſcitabo, & inſtaurabo illud, ſicut dies ſeculi; 12 ut (c) quærant reliqui hominum et omnes gentes, ſuper quos invocatum eſt nomen meum ſuper eos, dicit Dominus, faciens hæc omnia. 13 Ecce dies veniunt, dicit Dominus, et apprehendet (d) meſſis vindemiam, et matureſcet uva in ſemente. Et ſtillabunt montes dulcedinē, et omnes colles conſiti erunt. 14 Et convertam captivitatem populi mei Iſrael, & ædificabunt civitates (e) diſſipatas, & habitabunt: et plantabunt vineas, et bibent vinum earum: et facient hortos, et comedēt fructū eorum. 15 Et plantabo eos ſuper terram ſuam: et non avellentur ampliùs de terra, quam dedi eis, dicit Dominus Deus omnipotens.

ΑΜΩΣ Β'.

MS.A. (θ) Ἰσραήλ, (ι) Διότι ἰδοὺ ἐγὼ (κ) λικμιῶ (λ) τοῦ Ἰσραήλ, (μ) οὐδ' οὐ μὴ (ν) κατεστραμμένα (ξ) Ὅπως ἂν (ο) τὸν κύριον, καὶ (π) ὁ θεὸς ὁ ποιῶν ταῦτα. (ρ) ἀλοητὸς (σ) καταφυτεύσουσιν (τ) καταφυτεύσουσιν κήπους, (υ) αὐτῶν, (φ) ὁ παντοκράτωρ.

† ΑΜΩΣ Β'.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 הָא קֳדָם יְיָ אֱלֹהִים גְלַן עוֹבָדֵי מַלְכוּתָא חַיַבְתָּא וְאֲשֵׁיצֵי יָתַהּ מֵעַל אַפֵּי אַרְעָא בְּרַם
9 אֲרֵי לָא גְמִירָא וְשֵׁיצָאָה אֲשֵׁיצֵי יָת בֵּית יִשְׂרָאֵל אֲמַר יְיָ׃ אֲרֵי הָא אֲנָא מְפַקֵד וַאֲבַדַר
בְּכָל עַמְמַיָא יָת בֵּית יִשְׂרָאֵל כְּמָא דִמְחַזְרִין בְּעַרְבְּלָא וְלָא נָפֵל מִנֵיהּ אֶבֶן מִבֵּינֵיהּ
10 לְאַרְעָא׃ בְּחַרְבָּא יִתְקַטְלוּן כָּל חַיָבֵי עַמִי דְאָמְרִין לָא תֵיתֵי וְתוּחֵי עֲלָנָא בִּישְׁתָּא׃
11 בְּעִדָנָא הַהִיא אֲקִים יָת מַלְכוּתָא דְבֵית דָוִד דִנְפַלַת וְאֶבְנֵי יָת כְּרַכֵּיהוֹן וּכְנִישָׁתְהוֹן
אַתְקִין וְתִשְׁלוֹט בְּכָל מַלְכוּתָא וּתְגַמַר וּתְשֵׁיצֵי סַגִי מַשְׁרְיָתָא וְהִיא תִתְבְּנֵי וְתִשְׁתַּכְלַל
12 כְּיוֹמֵי עָלְמָא׃ בְּדִיל דְיֵירְתוּן יָת שְׁאָרָא דֶאֱדוֹם וְכָל עַמְמַיָא בֵּית יִשְׂרָאֵל דְאִתְקְרֵי
13 שְׁמִי עֲלֵיהוֹן בְּכֵן אֲנָא יְיָ עָבֵד דָא׃ הָא יוֹמַיָא אָתַן אֲמַר יְיָ וְיֵעֲרַע רָדְיָא בְּחָצוֹדָא
14 וְעָצַר עִנְבִין בְּמַפַּק בַּר זַרְעָא וְיַרְבּוּן טוּרַיָא חֲמַר מֵרַת וְכָל רָמָתָא יִתְפַּלְחָן׃ וַאֲתִיב יָת
גָלוּת עַמִי יִשְׂרָאֵל וְיִבְנוּן קִרְוִין דְצַדְיָן וְיִתִּיבוּן וְיִצְבוּן כַּרְמִין וְיִשְׁתּוּן יָת חַמְרֵהוֹן
15 וְיַעְבְּדוּן גַנִין וְיֵיכְלוּן יָת אִבֵּיהוֹן׃ וַאֲקִימִנוּן עַל אַרְעֲהוֹן וְלָא יִטַלְטְלוּן עוֹד מֵעַל אַרְעֲהוֹן
דִיהָבֵית לְהוֹן אֲמַר יְיָ אֱלָהָךְ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

8 Ecce coram Dño Deo palam ſunt opera regni nefarii, proinde diſperdam illud à facie terræ: veruntamen non totali conſumptione conſumam domum Iſrael, dicit Dñs. 9 Ecce namque mandabo & diſpergam per univerſas gentes domum Iſrael, quemadmodum ſolent convolvere [*triticum*] in cribro, de cujus medio ne lapillus quidem intercidit in terram. 10 Gladio occidentur omnes peccatores populi mei, qui dicunt: Non adveniet neq; feſtinabit adverſum nos malum. 11 Tempore illo ſuſcitabo regnum domus David quod collapſum fuerat, & condam propugnacula eorum, & *eccleſias* eorum reparabo: dominabitúrq; in omnia regna, confringet & diſperdet copioſas legiones: ipſum verò ædificabitur fundabitúrq; ſicut dieb⁹ ſeculi. 12 Ut poſſideant reliquias Idumæorum, & omnes populos dom⁹ Iſrael ſuper quos invocatum eſt nomen meum, ideò *ego Dominus* hoc facio. 13 Ecce dies venient, dicit Dñs, & occurret arator meſſori, & calcator uvarum ſementem educenti: & plurimum vini meri producent montes, colléſq; omnes erunt culti. 14 Quamobrem convertam captivitatem populi mei Iſrael, qui vaſtatas reædificabunt urbes quas inhabitabunt; & plantabunt vineas, & bibent vinum earum, faciéntq; hortos quorum veſcentur fructibus. 15 Et firmabo eos ſuper terram ſuam adeò ut non transferantur ultrà à terra ſua quam dedi eis, dixit Dominus Deus tuus.

סֵפֶר עֹבַדְיָה : א

CAP. I. א

auditum : Edom ad DEUS Dominus dixit Sic .Hobadiah Viſio
1 חֲזוֹן עֹבַדְיָה כֹּה־אָמַר אֲדֹנָי יֱהֹוִה לֶאֱדוֹם שְׁמוּעָה
, Surgite : eſt miſſus gentes in legatus & ,Domino cum à audivimus
שָׁמַעְנוּ מֵאֵת יְהוָה וְצִיר בַּגּוֹיִם שֻׁלָּח קוּמוּ
te dedi parvulum Ecce .prælium in eam ſuper ſurgamus &
2 וְנָקוּמָה עָלֶיהָ לַמִּלְחָמָה׃ הִנֵּה קָטֹן נְתַתִּיךָ
te extulit tui cordis Superbia .valde tu contemptus ; gentibus in
3 בַּגּוֹיִם בָּזוּי אַתָּה מְאֹד׃ זְדוֹן לִבְּךָ הִשִּׁיאֶךָ
dicens , ejus habitationis celſitudine , petræ ſciſſuris in habitantem
שֹׁכְנִי בְחַגְוֵי־סֶלַע מְרוֹם שִׁבְתּוֹ אֹמֵר
exaltaveris Si ? terram me faciet deſcendere Quis : ſuo corde in
4 בְּלִבּוֹ מִי יוֹרִדֵנִי אָרֶץ׃ אִם־תַּגְבִּיהַּ
inde , tuum nidum pone ſtellas inter ſi & , aquila ut
כַּנֶּשֶׁר וְאִם־בֵּין כּוֹכָבִים שִׂים קִנֶּךָ מִשָּׁם
.Dominus dixit , te faciam deſcendere
אוֹרִידְךָ נְאֻם־יְהוָה׃

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA
ABDIÆ.

1 Viſio Abdiæ. Hæc dicit Domin⁹ Deus ad Edom; Auditum audivimus à Domino, & legatum ad gentes miſit: Surgite, & conſurgamus adverſùs eum in prælium. 2 Ecce parvulum dedi te in Gentibus: contemptibilis tu es valdè. 3 Superbia cordis tui extulit te, habitantem in ſciſſuris petrarum, exaltantem ſolium tuum: qui dicis in corde tuo; Quis detrahet me in terram? 4 Si exaltatus fueris ut aquila, & ſi inter ſidera poſueris nidum tuum: indè detraham te, dicit Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

(α) ΟΒΔΙΟΥ Ε'.
ΚΕΦ. α'.

1 Ὅρασις (β) Ὀβδιού. Τάδε λέγει κύριος ὁ θεὸς τῇ Ἰδουμαίᾳ, Ἀκοὴν ἤκουσα παρὰ κυρίου, καὶ περιοχὴν εἰς τὰ ἔθνη ἐξαπέστειλεν· Ἀνάστητε, καὶ ἐξαναστῶμεν ἐπ' αὐτὴν εἰς πόλεμον. 2 Ἰδοὺ ὀλιγοστὸν δέδωκά σε ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ἠτιμωμένος (γ) εἶ σὺ σφόδρα. Ὑπερηφανία τῆς καρδίας σου ἐπῆρέ σε 3 κατασκηνοῦντα ἐν ταῖς ὀπαῖς τῶν πετρῶν ὑψῶν κατοικίαν αὐτοῦ, λέγων ἐν (δ) καρδίᾳ αὐτοῦ, 4 Τίς (ε) κατάξει με ἐπὶ τὴν γῆν; Ἐὰν μετεωρισθῇς, ὡς ἀετός, καὶ (ζ) ἐὰν ἀναμέσον τῶν ἄστρων θῇς νοσσιάν σου, ἐκεῖθεν κατάξω σε, λέγει κύριος.

OBDIU.
CAP. I.

1 Viſio Obdiu. Hæc dicit Dominus Deus Idumææ; Auditum audivi à Domino: & munitionem in gentes miſit: Surgite, & conſurgamus adverſus eam in prælium. 2 Ecce minimum dedi te in gentibus: inhonoratus es tu valdè. Superbia cordis tui elevavit te 3 habitantem in foraminibus petrarum, exaltans habitaculum ſuum, dicens in corde ſuo; Quis me detrahet in terram? 4 Si exaltatus fueris, ut aquila, & ſi inter media ſydera poſueris nidum tuum; inde te detraham, dicit Dominus.

MS.A. (α) ΑΒΔΕΙΟΥ Ε'. (β) Ἀβδιού. (γ) σὺ εἶ (δ) τῇ καρδίᾳ (ε) με κατάξει ἐπὶ (ζ) ἀναμέσον

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 נְבוּאַת עוֹבַדְיָה כִּדְנַן אֲמַר יְיָ אֱלֹהִים לֶאֱדוֹם בְּסוֹרָא שְׁמַעְנָא מִן קֳדָם יְיָ וְאִזְגַד
2 בְּעַמְמַיָא שְׁלִיחַ קוּמוּ וְנִתְעַתַּד עֲלַהּ לִקְרָבָא׃ הָא חֲלַשׁ יְהַבְתָּךְ בְּעַמְמַיָא בְּסִיר אַתְּ
3 לַחֲדָא׃ רְשַׁע לִבָּךְ אַטְעִיךְ דְאַתְּ דָמֵי לְנִשְׁרָא דְשָׁרֵי בְּשִׁנֵי כֵיפָא בְּרוּמָא מוֹתְבֵיהּ
4 אֲמַר בְּלִבֵּיהּ מַן יַחְתִּנַנִי לְאַרְעָא׃ אִם תָּרִים כְּנִשְׁרָא וְאִם בֵּינֵי כוֹכְבַיָא תְּשַׁוֵי מְדוֹרָךְ
מִתַּמָן אֲחַתִּנָךְ אֲמַר יְיָ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.
CAPUT. I.

1 Prophetia Abdiæ: Sic dixit Dominus Deus de Edom: Nuntium audivimus à facie Domini, & legatus ad gentes miſſus eſt: ſurgite & conſiſtamus adverſum eam in prælio. 2 Ecce infirmum dedi te inter populos: contemptibilis tu es valdè. 3 Impietas cordis tui ſeduxit te, quippe qui ſis ſimilis aquilæ in ſcopulis petrarum commoranti, cujus habitaculum cùm ſit in excelſo, dicit in corde ſuo: Quis detrahet me in terram? 4 Etiamſi exaltaveris te ſicut aquila, & licet inter ſtellas habitaculum tuum poſueris, indè [*tamen*] detraham te, ait Dominus.

Verſio *S Y R I A C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

8 * ܗܐ ܥܝܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܒܡܠܟܘܬܐ ܚܛܝܬܐ. ܘܐܘܒܕܝܗ ܡܢ ܐܦܝ ܐܪܥܐ. ܒܪܡ ܠܐ
9 ܡܘܒܕܘ ܐܘܒܕܝܘܗܝ ܠܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܐܢܐ ܦܩܕ ܐܢܐ. ܘܐܒܕܪ
ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܠܒܝܬܗ ܕܐܝܣܪܝܠ .· ܐܝܟ ܕܡܬܕܪܝܢ ܒܢܦܘܬܐ. ܘܠܐ ܢܦܠ ܙܥܘܪܗܘܢ ܥܠ
10 ܐܪܥܐ. * ܒܣܝܦܐ ܢܦܠܘܢ ܟܠ ܚܛܝܐ ܕܥܡܝ ܕܐܡܪܝܢ : ܠܐ ܬܬܩܪܒ ܘܠܐ ܬܡܛܐ ܥܠܝܢ ܒܝܫܬܐ.
11 * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ.· ܐܩܝܡ ܡܫܟܢܗ ܕܕܘܝܕ ܕܢܦܠ. ܘܐܓܕܪ ܬܪܥܝܗܘܢ. ܘܡܦܘܠܬܗܘܢ
12 ܐܩܝܡ. ܘܐܒܢܝܗ ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܥܠܡ. ܘܐܝܟ ܫܢܝܐ ܕܕܪܕܪܝܢ. * ܡܛܠ ܕܢܐܪܬܘܢ ܫܪܟܐ ܕܐܕܘܡ.
13 ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܬܩܪܝ ܫܡܝ ܥܠܝܗܘܢ.· ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܕܥܒܕ ܗܠܝܢ. * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܐܬܝܢ
ܐܡܪ ܡܪܝܐ.· ܘܢܕܪܟ ܐܕܪܐ ܠܩܛܘܦܐ. ܘܥܨܪܐ ܕܥܢܒܐ ܠܙܪܥܐ. ܘܢܪܕܘܢ ܛܘܪܐ ܚܠܝܘܬܐ. ܘܟܠܗܘܢ
14 ܪܡܬܐ ܢܬܒܣܡܢ. * ܘܐܗܦܘܟ ܫܒܝܬܐ ܕܥܡܝ ܐܝܣܪܝܠ. ܘܢܒܢܘܢ ܡܕܝܢܬܐ ܚܪܒܬܐ
ܘܢܬܒܘܢ. ܘܢܢܨܒܘܢ ܟܪܡܐ ܘܢܫܬܘܢ ܚܡܪܗܘܢ. ܘܢܥܒܕܘܢ ܓܢܐ.· ܘܢܐܟܠܘܢ ܦܐܪܝܗܘܢ.
15 * ܘܐܢܨܒ ܐܢܘܢ ܒܐܪܥܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܬܥܩܪܘܢ ܬܘܒ ܡܢ ܐܪܥܗܘܢ ܕܝܗܒܬ ܠܗܘܢ.· ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܐܠܗܟ.

* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܥܡܘܣ *

Ecce oculi Dñi dominorũ in regnũ ſcelera- 8
tum, ut perdã illud è ſuperficie terræ : at non
ita perdã domũ Jacobi, dicit Dñs. Nam ecce 9
ego mandaturus ſum, & Iſraelitas diſperſurus
inter omnes gentes, quemadmodũ cribro cri-
bratur ; & ne minutiſſimus quidem eorum de-
cidet ſuper terram. Gladio occumbent omnes 10
peccatores populi mei, qui dicunt, Non attin-
get, neq; eveniet nobis malum. Eodem illo 11
die erigam tabernaculũ Davidis quod decide-
rat, & ſepiam rupturas eorum, collapſa eorũ
inſtaurabo, & reædificabo illud ut dies ſeculi,
& ut annos generationis generationum : Ut 12
hæreditate poſſideant reliquias Adum, &
omnes populos ſuper quos invocatum eſt no-
men meum, dicit Dñs qui hæc præſtiturus eſt.
Ecce dies adveniunt, dicit Dñs, quibus area 13
vindemiam aſſequetur, & uvarũ expreſſio ſe-
mentem ; manabunt montes dulcedine, &
omnes colles ſuaveſcent : Reducam captivos 14
populi mei Iſraelis, & reædificabunt urbes de-
ſtructas, & conſidebunt : plantabunt vineas, &
bibent vinũ earum : conſerent hortos, & com-
edent fructus eorum. Deniq; plantabo eos in 15
terra eorum, ac non evellentur ampliùs è ter-
ra ſua quam dedi eis, dicit Dñs Deus tuus.

Prophetiæ Amoſi finis.

Verſio *A R A B I C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

8 * ها عينا الرب الاله على مملكة الخطاة واريلها من وجه الارض * لكني انه ليس الي الانقضاء
9 انزع بيت يعقوب يقول الرب * من اجل انه ها انا امر وادري بيت اسرايل في جميع الامم * كما
10 يغربل بالغربال * ولا يسقط الانكسار على الارض * بالسيف يسقطون جميع خطاة شعبي * القايلين
11 لا تقترب ولا تكون علينا الشرور * في ذلك اليوم اقيم خيمة داود التي سقطت * وابني ما سقط
12 منها * واقيم مهدوماتها وابنيها كايام الدهر * كي تطلب بقايا الناس الرب * وجميع الامم الذين
13 دعي اسمي عليهم يقول الرب الصانع هذه * ها ايام تاتي يقول الرب * فيدرك الدارس القطاف
14 وينضج العنب في الزرع * ويقطر الجبال حلاوة * وجميع الاكام تصير غروسا * وارد سبي شعبي
اسرايل * ويبنون المدن الفانية ويسكنونها * ويغرسون كروما ويشربون خمرها * ويغرسون بساتين
15 وياكلون ثمارها * واغرسهم على ارضهم * ولا يقلعون منذ الان من ارضهم التي اعطيتهم
اياها * يقول الرب الضابط الكل * * تمت نبوة عاموص النبي *

Ecce oculi Domini Dei ſuper regnum ſce- 8
leſtorum ; & quidem amovebo illud è
ſuperficie terræ : veruntamen haudqua-
quam ad finem uſque auferam domum Ja-
cobi, dicit Dominus. Quoniam ecce ego 9
præcipiam, & diſpergam domum Iſraelis
per omnes gentes, quemadmodum cribro
cribratur ; & non cadet confractum ſuper
terram. Gladio corruent omnes peccato- 10
res populi mei, dicentes ; Non accedent, ne-
que contingent nobis mala. In illo die 11
erigam tabernaculũ Davidis quod corruit,
& reædificabo quod ex eo decidit, erigam
ruinas ejus, & ædificabo eas ſicut dies æ-
ternitatis : Ut reliqui homines Dominum 12
quærant, omnéſque gentes ſuper quas in-
vocatum fuerit nomen meum, dicit Domi-
nus qui facturus eſt. Ecce dies venturi 13
ſunt, dicit Dominus, quibus triturator vin-
demiatorem aſſequetur, & matureſcent
uvæ tempore ſementis, & ſtillabunt mon-
tes dulcedinem, omnéſque colles fient plan-
taria : Et reducam captivitatem populi 14
mei Iſraelis, & reædificabunt urbes col-
lapſas, & inhabitabunt eas : plantabunt vi-
neas, & bibent vinum earum : conſerent
hortos, & comedent fructus eorum. Et 15
plantabo eos ſuper terram ipſorum, & non
evellentur poſthac è terra ſua quam dedi
ipſis, dicit Dominus omnipotens.

Finis Prophetiæ Amoſi Prophetæ.

Verſio *S Y R I A C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܥܘܒܕܝܐ ܢܒܝܐ *

1 * ܚܙܘܐ ܕܥܘܒܕܝܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܡܪܘܬܐ ܠܐܕܘܡ. ܫܡܥܐ ܫܡܥܢ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܝܙܓܕܐ
2 ܒܥܡܡܐ ܐܫܬܕܪ. ܩܘܡܘ ܘܢܩܘܡ. ܥܠܝܗ ܠܩܪܒܐ. * ܗܐ ܙܥܘܪܐ ܝܗܒܬܟ
3 ܒܥܡܡܐ. ܘܡܫܝܛ ܐܢܬ ܛܒ. * ܫܘܒܗܪܐ ܕܠܒܟ ܐܛܥܝܟ. ܕܫܪܐ ܒܫܘܩܦܐ ܕܫܘܥܐ.
4 ܘܪܘܡܐ ܡܘܬܒܗ. ܘܐܡܪ ܒܠܒܗ. ܡܢܘ ܢܚܬܢܝ ܠܐܪܥܐ. * ܐܢ ܬܬܪܝܡ ܐܝܟ ܢܫܪܐ : ܘܐܢ
ܒܝܬ ܟܘܟܒܐ ܬܣܝܡ ܩܢܟ.· ܡܢ ܬܡܢ ܐܚܬܟ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

Sequitur Prophetia

OBADIÆ PROPHETÆ.

VIſio Obadiæ. Sic dicit Dñs dominorũ ad 1
Adum ; Rumorem audivimus à Dño, &
legatus ad gentes miſſus eſt. Surgite, invada-
mus eam prælio. Ecce minimũ poſuerã te in- 2
ter gentes, & es valdè abjectus : Arrogantia 3
tamen cordis tui te decepit ô qui habitas in
fortiſſima rupe, & cujus ſedes eſt in ſublimi, ac
dicis apud temetipſum, Quis me dejiceret in
terrã ? Si te efferres ut aquila, & ſi inter aſtra 4
collocares nidum tuum ; inde te dejicerem, dicit
Dominus.

Verſio *A R A B I C A* cum Interpretatione *L A T I N A.*

* بسم الله الروف الرحيم

* نبتدي بترجمة نبوة عوبديا * بركاته تكون معنا * امين *

* الاصحاح الثاني عشر * وهو الاول من النبوة *

1 * رويا عوبديا * هكذا يقول الرب الاله لادوم * سمعتم سماعا من قبل الرب * وارسل احتواء
2 الي الامم * قوموا ونقم عليها للحرب * ها اعطيتك صغيرا في الامم * انت مهان الي الغاية *
3 كبرياء قلبك رفعك ايها الساكن في شقوق الصخور المرتفعة مسكنه * قايلا في قلبه
4 من يحدرني على الارض * ان ارتفعت مثل النسر * وان وضعت بين الكواكب عشك من
هناك احدرك يقول الرب *

IN NOMINE DEI
Clementis, Miſericordis, aggre-
dimur interpretationem
Prophetiæ O B A D I Æ, cujus
benedictiones nobis adſint,
Amen.

Textus duodecimus, hujus autem
Prophetiæ primus.

V*Iſio Obadiæ. Sic dicit Dominus Deus* 1
ad Edom ; Auditum audiſtis à Do-
mino, miſitque compendium ad gentes.
Surgite, & ſurgamus adverſùs eam in
prælium. Ecce dedi te parvum in genti- 2
bus, deſpectus es tu præter modum. Su- 3
perbia cordis tui extulit te O cujus domi-
cilium habitat in hiatibus petrarum ſub-
limium, dicens in corde tuo, Quis me de-
turbet in terram ? Si te elevaveris ut 4
aquila, & ſi poſueris inter ſidera nidum
tuum ; indè te deturbabo, dicit Domi-
nus.

עובדיה : א

? noctis prædatores num , te ad introierunt fures Num
5 אם־גנבים באו־לך אם־שודדי לילה
? suam sufficientiam fuissent furati Nonne ? es succisus Quomodo
איך נדמיתה הלוא יגנבו דים
? racemos dimisissent nonne ,te ad introiissent vindemiatores Si
אם־בצרים באו לך הלוא ישאירו עללות:
.ejus abscondita sunt inquisita , Hesau fuerunt quæsita Quomodo
6 איך נחפשו עשו נבעו מצפניו:
,te deceperunt *: tui fœderis* viri omnes te miserunt terminum ad Usque
7 עד־הגבול שלחוך כל אנשי בריתך השיאוך
languorem ponent , tuum Panem *.tuæ pacis* viri tibi invaluerunt
יכלו לך אנשי שלמך לחמך ישימו מזור
, illa die In Nonne .eo in intelligentia Non .te subter
8 תחתיך אין תבונה בו: הלוא ביום ההוא
intelligentiam & ,Edom de sapientes faciam perdere & ,Dominus dixit
נאם־יהוה והאבדתי חכמים מאדום ותבונה
succidatur ut , Teman tui fortes *frangentur* Et ? Hesau monte de
9 מהר עשו: וחתו גבוריך תימן למען יכרת־
,Jahacob *tui fratris rapina A .occisione ab* , Hesau monte de vir
10 איש מהר עשו מקטל: מחמס אחיך יעקב
te stare die In .seculum in succidêris & , pudor te operiet
11 תכסך בושה ונכרת לעולם: ביום עמדך
extranei & , ejus exercitum *alienos captivare* die in ,adverso ex
מנגד ביום שבות זרים חילו ונכרים
, fortem projiciebant Jerusalaim super & , ejus portas ingrediebantur
באו שערו ועל־ירושלם ידו גורל
,tui fratris die in *intuearis ne Et* .eis ex unus tanquam tu etiam
12 גם־אתה כאחד מהם: ואל־תרא ביום אחיך
,ipsos perire die in Jehudah filiis *in læteris* nec *,ipsius alienare* die in
ביום נכרו ואל־תשמח לבני־יהודה ביום אבדם
ingrediaris Neque .angustiæ die in tuum os *magnifices ne &*
13 ואל־תגדל פיך ביום צרה: אל־תבוא
etiam aspicias nec ,eorum contritionis die in mei populi portam *in*
בשער־עמי ביום אידם אל־תרא גם־
mittant nec : ejus contritionis die in ejus malum *in* tu
אתה ברעתו ביום אידו ואל־תשלחנה
super stes Neque .ejus contritionis die in ejus substantiam in
14 בחילו ביום אידו: ואל־תעמד על־
ejus superstites *concludas* nec : ejus evasores *succidendum ad* bivio
הפרק להכרית את־פליטיו ואל־תסגר שרידיו
omnes super Domini dies *propinqua* Quoniam .angustiæ die in
15 ביום צרה: כי־קרוב יום־יהוה על־כל־
convertetur tua retributio : tibi fiet fecisti sicut : gentes
הגוים כאשר עשית יעשה לך גמלך ישוב
montem super bibistis quemadmodum Nam .tuum caput in
16 בראשך: כי כאשר שתיתם על־הר
,deglutient &,bibent & : jugiter gentes omnes bibent , meæ sanctitatis
קדשי ישתו כל־הגוים תמיד ושתו ולעו
, evasio erit Sijon monte in Et .fuissent non si ac erunt &
17 והיו כלוא היו: ובהר ציון תהיה פליטה
.suas possessiones Jahacob domus possidebunt & *: sanctitas* erit &
והיה קדש וירשו בית יעקב את מורשיהם:
domus & ,flamma Joseph domus & , ignis Jahacob domus erit Et
18 והיה בית־יעקב אש ובית יוסף להבה ובית
erit non & : eos consument & ,eos *in* succendent & *; stipulam in* ,Hesau
עשו לקש ודלקו בהם ואכלום ולא־יהיה
.est locutus Dominus quia : Hesau domui superstes
שריד לבית עשו כי יהוה דבר:

Versio VULG. LAT.

5 Si fures introîssent ad te, si latrones per noctem, quomodò conticuisses? nónne furati essent sufficientia sibi? si vindemiatores introîssent ad te, numquid saltem 6 racemum reliquissent tibi? Quomodò scrutati sunt Esau, investi- 7 gaverunt abscondita ejus? Usque ad terminum emiserunt te: omnes viri fœderis tui illuserunt tibi: invaluerunt adversùm te viri pacis tuæ: qui comedunt tecum, ponent insidias subter te: non est pru- 8 dentia in eo. Numquid non in die illa, dicit Dominus, perdam sapientes de Idumæa, & pruden- 9 tiam de monte Esau? Et timebunt fortes tui à Meridie, ut in- 10 tereat vir de monte Esau. Propter interfectionem, & propter iniquitatem in fratrem tuum Jacob, operiet te confusio, & peri- 11 bis in æternum. In die cùm stares adversùs eum, quando capiebant alieni exercitum ejus, & extranei ingrediebantur portas ej⁹, & super Jerusalem mittebant sortem: tu quoque eras quasi unus 12 ex eis. Et non despicies in die fratris tui, in die peregrinationis ejus: & non lætaberis super filios Juda in die perditionis eorum: & non magnificabis os 13 tuum in die angustiæ. Neque ingredieris portam populi mei in die ruinæ eorum: neque despicies & tu in malis ejus in die vastitatis illius: & non emittêris adversùs exercitum ejus in die va- 14 stitatis illius. Neque stabis in exitibus ut interficias eos qui fugerint: & non concludes reliquos 15 ejus in die tribulationis. Quoniam juxtà est dies Domini super omnes gentes: sicut fecisti, fiet tibi: retributionem tuam con- 16 vertet in caput tuum. Quomodò enim bibistis super montem sanctum meum, bibent omnes Gentes jugiter: & bibent, & absorbebunt, & erunt quasi non sint. 17 Et in monte Sion erit salvatio, & erit sanctus: & possidebit domus Jacob eos qui se possede- 18 rant. Et erit domus Jacob ignis, & domus Joseph flamma, & domus Esau stipula: & succendentur in eis, & devorabunt eos: & non erunt reliquiæ domûs Esau, quia Dominus locutus est.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

5 Εἰ κλέπται εἰσῆλθον πρὸς σὲ, (η) ἢ λῃσταὶ νυκτὸς, ποῦ ἂν ἀπεῤῥίφης, οὐκ ἂν ἔκλεψαν τὰ ἱκανὰ ἑαυτοῖς; καὶ εἰ τρυγηταὶ εἰσῆλθον πρὸς σὲ, οὐκ ἂν (θ) ἐπελείποντο ἐπι- 6 φυλλίδα; Πῶς (ι) ἐξηρευνήθη Ἡσαῦ, καὶ 7 κατελήφθη (κ) τὰ κεκρυμμένα αὐτοῦ; Ἕως τῶν ὁρίων (λ) ἐξαπέστειλάν σε· πάντες οἱ ἄνδρες τῆς διαθήκης σου ἀντέστησάν σοι, ἠδυνάσθησαν πρὸς σὲ ἄνδρες εἰρηνικοί σου, ἔθηκαν ἔνεδρα ὑποκάτω σου, οὐκ ἔστι (μ) σύνε- 8 σις αὐτοῖς. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος, ἀπολῶ σοφοὺς ἐκ τῆς Ἰδουμαίας, καὶ 9 σύνεσιν ἐξ ὄρους Ἡσαῦ. Καὶ πτοηθήσονται οἱ μαχηταί σου οἱ ἐκ Θαιμὰν, ὅπως ἐξαρ- 10 θῇ ἄνθρωπος ἐξ ὄρους Ἡσαῦ. Διὰ τὴν σφαγὴν, καὶ τὴν ἀσέβειαν (ν) ἀδελφοῦ σου Ἰακὼβ, καλύψει σε αἰσχύνη, καὶ ἐξαρθήσῃ εἰς τὸν αἰῶ- 11 να. Ἀφ᾽ ἧς ἡμέρας ἀντέστης ἐξεναντίας, ἐν (ξ) ἡμέραις αἰχμαλωτευόντων ἀλλογενῶν δύναμιν αὐτοῦ, καὶ ἀλλότριοι εἰσῆλθον εἰς (ο) πύλας αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ ἔβαλον κλή- 12 ρους, καὶ σὺ ἦς ὡς εἷς ἐξ αὐτῶν. Καὶ μὴ (π) ἐπίδῃς ἡμέραν ἀδελφοῦ σου ἐν ἡμέρᾳ ἀλλοτρίων, καὶ μὴ ἐπιχαρῇς ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Ἰούδα ἐν ἡμέρᾳ ἀπωλείας αὐτῶν, καὶ μὴ (ρ) με- 13 γαλοῤῥημονῇ ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως, Μηδὲ εἰσέλθῃς εἰς πύλας (σ) λαῶν ἐν ἡμέρᾳ πόνων αὐτῶν, μηδὲ ἐπίδῃς καὶ σὺ τὴν συναγωγὴν αὐτῶν ἐν ἡμέρᾳ ὀλέθρου αὐτῶν, (τ) καὶ μὴ συνεπιθῇ ἐπὶ τὴν δύναμιν αὐτῶν ἐν 14 ἡμέρᾳ ἀπωλείας αὐτῶν, Μηδὲ (υ) ἐπιστῇς ἐπὶ τὰς διεκβολὰς αὐτῶν, (φ) ἐξολοθρεῦσαι τοὺς ἀνασωζομένους αὐτῶν, μηδὲ συγκλείσῃς τοὺς φεύγοντας (χ) αὐτοῦ ἐν 15 ἡμέρᾳ θλίψεως· Διότι ἐγγὺς (ψ) ἡμέρα κυρίου ἐπὶ πάντα τὰ ἔθνη· ὃν τρόπον ἐποίησας, οὕτως (ω) ἔσται σοι· τὸ (α) ἀνταπόδομά σου ἀνταποδοθήσεται εἰς κεφαλήν σου. (β) 16 Διότι ὃν τρόπον ἔπιες ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου, πίονται πάντα τὰ ἔθνη οἶνον, πίονται καὶ καταβήσονται, καὶ ἔσονται καθὼς οὐχ ὑπάρ- 17 χοντες. Ἐν δὲ τῷ ὄρει Σιὼν ἔσται (γ) σωτηρία, καὶ ἔσται ἅγιον· καὶ κατακληρονομήσουσιν ὁ οἶκος Ἰακὼβ τοὺς κατακληρονομήσαντας 18 αὐτούς. Καὶ ἔσται ὁ οἶκος Ἰακὼβ πῦρ, ὁ δὲ οἶκος Ἰωσὴφ φλὸξ, ὁ δὲ οἶκος Ἡσαῦ εἰς καλάμην, καὶ (δ) ἐκκαυθήσονται εἰς αὐτοὺς, καὶ καταφάγονται αὐτοὺς, καὶ οὐκ ἔσται πυροφόρος (ε) τῷ οἴκῳ Ἡσαῦ, διότι κύριος ἐλάλησε.

Si fures introîssent ad te, vel latrones per noctem, ubicunque projectus esses; nónne furati essent sufficientia sibi? Et, si vindemiatores introîssent ad te; nónne reliquissent racemum? 5 *Quomodò investigatus est Esau, & deprehensa sunt abscondita ejus?* 6 *usque ad terminos dimiserunt te: omnes viri testamenti tui restiterunt tibi: prævaluerunt adversùm te viri pacifici tui, posuerunt insidias subter te: non est intellectus eis.* 7 *In die illa, dicit Dominus, perdam sapientes ex Idumæa, & intelligentiam de monte Esau.* 8 *Et pavebunt pugnatores tui, qui de Theman; ut auferatur homo de monte Esau.* 9 *Propter interfectionem, & impietatem (a) fratris tui Jacob, operiet te confusio, & auferêris in æternum.* 10 *Ex die, quâ restitisti contrà, in diebus captivantium alienigenarum fortitudinem ejus; & alieni ingressi sunt in portas ejus, & super Hierusalem miserunt sortes: & tu eras quasi unus ex eis.* 11 *Et non despicies diem fratris tui in die alienorum: & non lætaberis super filios Juda in die perditionis eorum: & non magna loquêris in die angustiæ:* 12 *Neque ingredieris in portas populorũ in die laborum eorum. Et non despicies etiam tu congregationem eorum in die perditionis eorum: neque simul apponêris fortitudini eorum in die perditionis eorum.* 13 *Neque stabis in egressibus eorum, ut interficias eos, qui salvi fuerint ex eis, neque concludes fugitivos ejus in die tribulationis:* 14 *Quia juxta est dies Domini super omnes gentes: Sicut fecisti, sic erit tibi. Retributio tua reddetur in caput tuum.* 15 *Quia, quomodò bibisti super montem sanctum meum; bibent omnes gentes vinum: bibent, & (b) descendent & erunt, quasi non sint.* 16 *In monte autem Sion erit salvatio: & erit sanctus: & possidebunt domus Jacob eos, qui se possiderant.* 17 *Et erit domus Jacob ignis, & domus Joseph flamma; domus autem Esau in stipulam: & succendentur in eos, & devorabunt illos: & non erit (c) frumentarius domui Esau: quia Dominus loquutus est.* 18

MS.A. (η) εἰ (θ) ὑπελείποντο (ι) ἐξηραυνήθη (κ) αὐτοῦ τὰ κεκρυμμένα; Ἕως (λ) σου (μ) σοι σύνεσις ἐν αὐτοῖς. Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, (ν) τῆς εἰς τὸν ἀδελφόν σου Ἰακὼβ, καὶ καλύψει (ξ) ἡμέρᾳ (ο) τὰς πύλας (π) ἐπίδοις (ρ) μεγαλορημονήσῃς (σ) λαοῦ σου ἐν ἡμέρᾳ πόνου (τ) μηδὲ (υ) στῇς (φ) τοῦ ἐξολεθρεῦσαι (χ) ἐξ αὐτῶν ἐν (ψ) ἡ ἡμέρα τοῦ κυρίου (ω) ἔστω (α) ἀνταπόδωμά σου ἀνταποδωθήσεται (β) Διὰ τοῦτο ὃν (γ) ἡ σωτηρία, (δ) ἐκκαυθήσεται (ε) ἐν τῷ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 אם גנבין אתו עלך אם בזוזי ליליא איכדין הויתא דמיך עד דגנבו מסתהון ואם
6 חטופין כקטופין אתו עלך הלא משארין עוללן: אכדין אתבלש עשו אתגלין
7 מטמורוהי: מן תחומא אגליוך כל אנשי קימך אטעיוך יכילו לך אנשי שלמך אכלי
8 פתורך שויאו תקלא תחותך מדלית בך סוכלתנו: הלא בעדנא ההיא אמר יי ואוביד
9 חכימין מאדום וכל גבר דביה סוכלתנותא מכרכא דעשו: ויתברון גברך יתבי
10 דרומא בדיל דישתצי גבר דביה צורבא מכרכא דעשו מקטול: מחטוף אחוך
11 יעקב תחפנך בהתא ותשתצי לעלם: ביום מקימך מקבל ביומא דבזו עממיא נכסוהי
12 ונכראין עלו בקרוהי ועל ירושלם רמו עדבין אף את כחד מנהון: ודחזיתא ביומא
דאחוך ביום תביריה ודחדית לבני יהודה ביום תברהון ודאסגיתא למללא רברבן
13 בעדן עקא: ודעלתא בתרעי עמי ביום תברהון ודחזיתא אף את בבישתיה ביום
14 תביריה ודאושיטתא ידך בנכסוהי ביום תבריה: ודקמתא על פרקא לשצאה ית
15 מערקוהי ודמסרתא משזבוהי בעדן עקא: ארי קריב יומא דעתיד למיתי מן קדם יי
16 על כל עממיא כמא דעבדת יתעביד לך גמלך יתתב ברישך: ארי כמא דחדיתון על
מחת טורא דקודשי ישתון כל עממיא כס פורענותהון תדירא וישתון ויסתלעמון
17 ויהון כדלא הוו: ובטורא דציון תהי משזבתא ויהון קדישין ויחסנון דבית יעקב נכסי
18 עממיא דהוו מחסנין להון: ויהון דבית יעקב תקיפין כאשתא ודבית יוסף חסינין
כשלהוביתא ודבית עשו חלשין כקשא וישלטון בהון ויקטלונון ולא יהי שיזבא
לבית עשו ארי יי גזיר כן:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

5 Si fures venerunt ad te, si prædones de nocte, quomodo ita soporatus es ut quod sufficiebat eis sint furati? si raptores velut vindemiatores ad te venissent, an non racemos aliquos fecissent? 6 Quomodo pervestigatus est Esau, detecta sunt abscondita ejus? 7 A termino in exilium deportarunt te omnes confœderati tui: seduxerunt te, invaluerunt adversum te pacifici tui: vescentes [*pane*] mensæ tuæ, posuerunt offendiculum sub te, eò quòd non sit in te prudentia. 8 Nonne per id tempus, dicit Dñs, perdam sapientes de Idumæa, & quemlibet virum prudentia præditum ex arce Esau? 9 Et conterentur fortes tui habitantes ad Meridiem, ut excindatur vir robore pollens ex arce Esau præ cæde. 10 Propter rapinam in fratrem tuum Jacob [*à te illatam*,] operiet te confusio, atque in perpetuum excidêris. 11 Quo die è contra stabas, die quo diripiebant populi substantiam ejus, & extranei ingrediebantur civitatem ejus, ac super Jerusalem projiciebant sortes, tu quoq; velut unus ex eis eras. 12 Et quia vidisti diem fratris tui, diem confractionis ejus, & quia lætatus es super filios Juda die interitus eorum, & quia multa magnificè locutus es in *tempore* tribulationis. 13 Atque ingressus es in portas populi mei die interitus ejus, & vidisti etiamnum malum ejus die exitii ejus, & extendisti manum tuam in ejus facultates die excidii ejus. 14 Quiq; stetisti in bivio ad excidendos eorum profugos, atq; tradidisti eorum superstites tempore adverso. 15 Instat enim dies qui venturus est à facie Dñi contra gentes omnes: ut fecisti, fiet tibi: retributio tua in caput tuum retorquebitur. 16 Quoniam quemadmodum lætitiam cepistis de subversione montis sanctitatis meæ, bibent omnes populi calicem ultionis suæ jugiter: bibent certè & absorbebuntur, eruntq; ac si non fuissent. 17 At in monte Sion erit evasio, eruntq; sancti, & possidebunt prognati domus Jacob substantiam populorum qui eos possidebant. 18 Erunt præterea qui de domo Jacob, fortes sicut ignis; qui verò de domo Joseph, robusti instar flammæ, sed [*orti*] domus Esau debiles velut stipula: & dominabuntur eis, atq; trucidabunt eos, ita ut non sint reliquiæ domui Esau: sic quidem *Dominus* ita *statuit*.

Verſio S Y R I A C A cum Interpretatione L A T I N A.

* ܐܢ ܓܢܒ̈ܐ ܐܬܘ ܠܟܝ ܐܘ ܒܙܘܙ̈ܐ ܒܠܠܝܐ܀ ܐܝܟܢܐ ܫܬܩܬ ܥܕܡܐ ܕܓܢܒܘ ܣܦܩܘܬܗܘܢ܂ 5
ܐܘ ܩܛܘܦ̈ܐ ܐܬܘ ܠܟܝ܂ ܠܐ ܫܒܩܝܢ ܗܘܘ ܥܘܠܠܬܐ܀ * ܐܝܟܢܐ ܐܬܒܨܝ ܥܣܘ܂ ܘܐܬܓܠܝܘ 6
ܡܛܫܝ̈ܬܗ܂ * ܥܕܡܐ ܠܬܚܘܡܟܝ ܫܕܪܘܟܝ܂ ܟܠܗܘܢ ܓܒܪ̈ܐ ܕܩܝܡܟܝ ܐܛܥܝܘܟܝ܂ ܘܐܬܟܫܪܘ 7
ܠܟܝ܂ ܓܒܪ̈ܐ ܕܫܠܡܟܝ ܘܕܠܚܡܟܝ܂ ܣܡܘ ܟܡܝܢ̈ܐ ܬܚܘܬܝܟܝ܂ ܕܠܝܬ ܒܗ ܣܘܟܠܐ܀
* ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܐܘܒܕ ܚܟܝܡ̈ܐ ܡܢ ܐܕܘܡ܂ ܘܣܘܟܠܬܢ̈ܐ ܡܢ ܛܘܪܐ 8
ܕܥܣܘ܂ * ܘܢܬܒܙܙܘܢ ܓܢܒܪ̈ܝܟܝ ܬܝܡܢ܀ ܘܢܐܒܕ ܐܢܫܐ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܥܣܘ܂ * ܡܛܠ ܩܛܠܐ 9 10
ܘܡܛܠ ܚܛܘܦܝܐ ܕܐܚܘܟܝ ܝܥܩܘܒ܂ ܬܚܦܝܟܝ ܒܗܬܬܐ܂ ܘܬܐܒܕܝܢ ܠܥܠܡ܂ * ܒܝܘܡܐ ܕܩܡܬ
ܠܘܩܒܠܗ܂ ܒܝܘܡܐ ܕܫܒܘ ܢܘܟܪ̈ܝܐ ܚܝܠܗ܀ ܘܢܘܟܪ̈ܝܐ ܥܠܘ ܠܬܪ̈ܥܘܗܝ܀ ܘܥܠ 11
ܐܘܪܫܠܡ ܐܪܡܝܘ ܦܣ̈ܐ܂ ܐܦ ܐܢܬܝ ܐܝܟ ܚܕ ܡܢܗܘܢ ܗܘܝܬܝ܂ * ܘܠܐ ܬܚܙܝܢ ܒܝܘܡܐ ܕܐܚܘܟܝ 12
ܒܝܘܡܐ ܕܢܘܟܪܝܐ܂ ܘܠܐ ܬܚܕܝܢ ܥܠ ܒܢ̈ܝ ܝܗܘܕܐ ܒܝܘܡܐ ܕܐܒܕܢܗܘܢ܂ ܘܠܐ ܬܘܪܒܝܢ ܦܘܡܟܝ
ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ܀ * ܘܠܐ ܬܥܠܝܢ ܠܬܪܥܗ ܕܥܡܝ ܒܝܘܡܐ ܕܬܒܪܗܘܢ܂ ܘܠܐ ܬܚܙܝܢ ܐܦ 13
ܐܢܬܝ ܒܒܝܫܬܗ ܒܝܘܡܐ ܕܬܒܪܗ܂ ܘܠܐ ܬܫܕܪܝܢ ܒܚܝܠܗ ܒܝܘܡܐ ܕܬܒܪܗ܂ * ܘܠܐ 14
ܬܩܘܡܝܢ ܥܠ ܡܦܩ̈ܢܐ ܠܡܚܒܠܘ ܠܦܠܝܛ̈ܘܗܝ܂ ܘܠܐ ܬܫܠܡܝܢ ܫܪ̈ܟܢܘܗܝ ܒܝܘܡܐ
ܕܐܘܠܨܢܐ܀ * ܡܛܠ ܕܩܪܝܒ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡ̈ܐ܀ ܐܝܟ 15
ܕܥܒܕܬܝ܂ ܗܟܢܐ ܢܗܘܐ ܠܟܝ܂ ܘܦܘܪܥܢܟܝ ܢܗܦܘܟ ܥܠ ܪܝܫܟܝ܀ * ܡܛܠ ܕܐܝܟܢܐ 16
ܕܐܫܬܝܬܘܢ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ܂ ܢܫܬܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡ̈ܐ ܐܡܝܢܐܝܬ܂ ܢܫܬܘܢ܂
ܘܢܬܕܡܪܘܢ܂ ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܕܠܐ ܗܘܘ܀ * ܘܒܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ ܢܗܘܐ ܦܘܪܩܢܐ܂ 17
ܘܢܗܘܐ ܩܕܝܫܐ܂ ܘܢܐܪܬܘܢ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ ܠܝܪ̈ܬܝܗܘܢ܀ * ܘܢܗܘܐ ܒܝܬ ܝܥܩܘܒ 18
ܢܘܪܐ: ܘܒܝܬ ܝܘܣܦ ܫܠܗܒܝܬܐ܂ ܘܒܝܬ ܥܣܘ ܠܩܫܐ܂ ܘܢܕܠܩܘܢ ܒܗܘܢ܂ ܘܢܐܟܠܘܢ
ܐܢܘܢ܂ ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܫܪܟܢܐ ܠܒܝܬ ܥܣܘ܂ ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܡܠܠ܀

Si te fures aut direptores nocte ſunt aggreſſi, 5
quomodo ſiluiſti donec furarentur quod ſibi
ſatis erat? & ſi vindemiatores invaſiſſent te,
annon reliquiſſent racemationem? Quomo- 6
do perveſtigatus eſt Eſau, & emanârunt ab-
dita ejus? Ad terminum uſque te perduxe- 7
runt, omnes viri fœderati tui deceperunt te,
& prævaluerunt tibi: viri pacis & panis (*i.*
amici & convivæ) tui, ſub te poſuerunt in-
ſidias, O expers rationis. Eo die, dicit Do- 8
minus, perdam ſapientem ex Adum, & pru-
dentem ex monte Eſau; Et diripientur gigan- 9
tes tui O Theman, & peribit homo de mon-
te Eſau. Propter cædem & rapinam illatam 10
fratri tuo Jacobo, obruet te pudor, & peribis
in æternum: *illatam inquam* eo die quo in- 11
ſurrexiſti adversùs eum, quo die prædati ſunt
alieni robur ejus, & alieni per portas ejus in-
greſſi ſortes jecerunt ſuper Jeruſalem: ſed tu
quoque ut unus ex eis eris. Ne *geſtiens* in- 12
tuearis diem fratris tui, diem alienorum:
& ne aſpicias filios Judæ in die interitûs eo-
rum: néve amplifices os tuum in die cala-
mitatis. Ne ingrediaris portam populi mei 13
die tribulationum eorum: néve geſtias tu
quoque de infortunio ejus die doloris ejus:
neque pavorem injicias in exercitum ejus die
mœroris ejus: Ne ſteteris in *anguſto* aditu ad 14
perimendum profugas ejus: neque prodas
ſuperſtites ejus die anguſtiæ. Nam propin- 15
quus eſt dies Domini ſuper omnes gentes;
quemadmodum feciſti, ita fiet tibi: retribu-
tio tua recidet in caput tuum. Quemadmo- 16
dum enim bibiſtis ſuper monte ſancto meo,
bibent jugiter omnes gentes: bibentes ob-
ſtupeſcent & conturbabuntur, eruntque acſi
non fuiſſent. At in monte Sionis erit ſa- 17
lus, erit enim ſanctus: & poſſidebunt do-
mus Jacobi eos qui ſe poſſederant: Et erit 18
domus Jacobi ignis, & domus Joſephi flam-
ma, domus autem Eſau ſtipula; & accen-
dentur in eis, & conſument eos; ita ut non
ſit ſuperſtes domui Eſau: quia Dominus lo-
cutus eſt.

Verſio A R A B I C A cum Interpretatione L A T I N A.

* إِنْ كَانَ ٱلسُّرَّاقُ دَخَلُوا إِلَيْكَ * أَوْ لُصُوصُ ٱللَّيْلِ حَيْثُ طُرِحْتَ * أَلَيْسَ سَرَقُوا ٱلْكَفَافَ لَهُمْ 5
وَإِنْ كَانَ ٱلْقَطَّافُونَ دَخَلُوا * أَمَا تَرَكُوا بُعَاقًّا * كَيْفَ فُتِّشَ عِيسُوا * وَأُخِذَتْ خَبِيَّاتُهُ * 6
* إِلَى حُدُودِكَ أَرْسَلُوكَ * جَمِيعُ رِجَالِ عَهْدِكَ قَاوَمُوكَ * تَقَوَّوْا عَلَيْكَ رِجَالُكَ ٱلْمُسَالِمُونَ * وَضَعُوا 7
مَكَامِنَ تَحْتَكَ * لَيْسَ لَكَ فَهْمٌ بِهِمْ * فِي ذَلِكَ ٱلْيَوْمِ يَقُولُ ٱلرَّبُّ * أُهْلِكُ ٱلْحُكَمَاءَ مِنْ أَدُومَ * 8
وَٱلْفَهْمَ مِنْ جَبَلِ عِيسُوا * وَيَجْزَعُ مُحَارِبُوكَ ٱلَّذِينَ مِنْ تَامَانَ * كَيْ يُنْزَعَ ٱلْإِنْسَانُ مِنْ جَبَلِ 9
عِيسُوا * لِأَجْلِ ٱلذَّبْحِ وَٱلنِّفَاقِ ٱلَّذِي لِأَخِيكَ يَعْقُوبَ * وَيَغْشَاكَ ٱلْخِزْيُ * وَتُنْزَعُ إِلَى ٱلْأَبَدِ * 10
* مُنْذُ ٱلْيَوْمِ ٱلَّذِي قُمْتَ تُجَاهَهُ * فِي يَوْمِ سَبَوْا ٱلْغُرَبَاءُ ٱلْجَيْشَ قُوَّتَهُ * وَٱلْغُرَبَاءُ دَخَلُوا إِلَى 11
أَبْوَابِهِ * وَعَلَى أَيْرُوسَلِيمَ وَضَعُوا قُرْعًا * وَأَنْتَ كُنْتَ مِثْلَ وَاحِدٍ مِنْهُمْ * وَلَا تَنْظُرْ يَوْمَ أَخِيكَ 12
فِي يَوْمِ ٱلْغُرَبَاءِ * وَلَا تَشْمَتْ بِبَنِي يَهُودَا فِي يَوْمِ هَلَاكِهِمْ * وَلَا تَتَعَظَّمْ بِٱلْقَوْلِ فِي يَوْمِ ٱلشِّكِّ *
* وَلَا تَدْخُلْ إِلَى أَبْوَابِ ٱلشُّعُوبِ فِي يَوْمِ أَتْعَابِهِمْ * وَلَا تَنْظُرْ أَنْتَ تَجَمُّعَهُمْ فِي يَوْمِ مَوْتِهِمْ * وَلَا 13
تُحِطْ عَلَى جَيْشِهِمْ فِي يَوْمِ هَلَاكِهِمْ * وَلَا تَقُومُ عَلَى مَغَارَاتِهِمْ لِتَسْتَأْصِلَ ٱلْمُتَخَلِّصِينَ مِنْهُمْ * 14
وَلَا تَحْبِسِ ٱلْهَارِبِينَ مِنْهُمْ فِي يَوْمِ ٱلضِّيقِ * مِنْ أَجْلِ أَنَّ يَوْمَ ٱلرَّبِّ قَرِيبٌ عَلَى كُلِّ ٱلْأُمَمِ * كَمَا 15
صَنَعْتَ هَكَذَا يَكُونُ لَكَ * تُكَافَأُ مُكَافَاتُكَ عَلَى رَأْسِكَ * مِنْ أَجْلِ أَنَّهُ كَمَا شَرِبْتَ عَلَى جَبَلِي 16
ٱلْمُقَدَّسِ * تَشْرَبُ جَمِيعُ ٱلْأُمَمِ خَمْرًا * يَشْرَبُونَ وَيَنْزِلُونَ * وَيَكُونُونَ كَأَنَّهُمْ لَمْ يَكُونُوا * وَفِي جَبَلِ 17
صَهْيُونَ يَكُونُ ٱلْخَلَاصُ * وَيَكُونُ مُقَدَّسًا * وَيَرِثُ بَيْتُ يَعْقُوبَ ٱلَّذِينَ وَرِثُوهُمْ * وَيَكُونُ بَيْتُ 18
يَعْقُوبَ نَارًا * وَبَيْتُ يُوسُفَ لَهِيبًا * وَبَيْتُ عِيسُوا قَصَبًا * وَيَحْتَرِقُونَ بِهِمْ وَيَأْكُلُونَهُمْ * وَلَا يَكُونُ
حَامِلُ نَارٍ فِي بَيْتِ عِيسُوا * مِنْ أَجْلِ أَنَّ ٱلرَّبَّ تَكَلَّمَ *

Si latrones ingrederentur ad te aut fures 5
nocturni, ubi projectus es; annon furaren-
tur ſufficientiam ſuam? & ſi vindemia-
tores ingrederentur, annon relinquerent
racemationem? Quomodo perquiſitus eſt 6
Eſau, & ablata ſunt abſtruſa ejus? Ad 7
terminos tuos miſerunt te, omnes viri fœ-
deris tui adverſati ſunt tibi, niſi ſunt con-
tra te viri pace conjuncti, poſuerunt in-
ſidias ſub te; non animadvertis eos. In 8
illo die, dicit Dominus, perdam ſapientes
ex Edom, & intelligentiam de monte E-
ſau: Et expaveſcent bellatores tui qui 9
ſunt de Theman; ut excindatur homo de
monte Eſau: Propter cædem & impie- 10
tatem quam exercuiſti *in fratrem tuum*
Jacobum: operiétque te pudor, & ex-
cindêris in perpetuum: Inde ab eo die 11
quo ſurrexiſti adverſùs eum, quâ die
diripuerunt alienigenæ robur ejus, & in-
greſſi ſunt exteri ad portas ejus, et ſuper
Jeruſalem poſuerunt ſortes, & tu eras
ut unus ex eis. Et non videbis diem 12
fratris tui in die exterorum, neque inſul-
tabis filiis Judæ in die interitûs eorum,
neque verbis inſoleſces in die calamita-
tis. Neque ingredieris ad portas popu- 13
lorum in die laborum ſuorum, neque vi-
debis tu cœtum eorum in die mortis ſuæ,
neque obſidebis exercitum eorum in die
interitûs ſui. Neque ſtabis ad ſaltus 14
eorum ut excindas eos qui ſe eripuerunt
ex ipſis, neque carceribus detinebis profu-
gas eorum in die anguſtiæ: Quoniam 15
dies Domini propinquus eſt ſuper omnes
populos: ſicuti feciſti, ſic erit tibi: re-
tributio tua tibi rependetur ſuper caput
tuum. Nam quemadmodum bibiſti ſuper 16
monte meo ſancto, bibent omnes gentes
vinum; bibent, ac deſcendent, eruntque
quaſi non fuiſſent. In monte autem Si- 17
onis erit ſalus, eritque ſacer: & poſſide-
bit domus Jacobi eos qui poſſidebant
ipſos. Eritque domus Jacobi ignis, & 18
domus Joſephi flamma, domus autem
Eſau arundines; ardebunt in eos, &
devorabunt eos, ita ut non remaneat fe-
rens ignem in domo Eſau; quia Domi-
nus locutus eſt.

יונה : א

, Peliſtim *cum* planitiem &, Heſau monte *cum*, Meridiem hæreditabũt Et
19 וירשו הנגב את־הר עשו והשפלה את־פלשתים
Binjamin &, Someron agrum & , Ephraim agrum poſſidebunt &
וירשו את־שדה אפרים ואת שדה שמרון ובנימן את־
Chenaanim qui , Iſrael filiorũ huj⁹ exercit⁹ trãſmigratio Et. Ghilhad
20 הגלעד : וגלת החל־הזה לבני ישראל אשר־כנענים
, Sepharad in quæ , Jeruſalaim tranſmigratio & , Sarphath ad uſque
עד־צרפת וגלת ירושלם אשר בספרד
montem in ſervatores aſcendent Et . Auſtri civitates poſſidebunt
21 ירשו את ערי הנגב : ועלו מושעים בהר
. regnum Domino erit & ; Heſau montem judicandum ad Sijon
ציון לשפט את־הר עשו והיתה ליהוה המלוכה :

Verſio VULG. LAT.

19 Et hæreditabunt hi qui ad Auſtrum ſunt, montem Eſau, & qui in campeſtribus Philiſthiim : & poſſidebunt regionem Ephraim, & regionem Samariæ : & Benjamin poſſidebit Galaad. 20 Et tranſmigratio exercitûs hujus filiorum Iſrael, omnia loca Chananæorum uſque ad Sareptam : & tranſmigratio Jeruſalem, quæ in Boſphoro eſt, poſſidebit civitates Auſtri. 21 Et aſcendent ſalvatores in montem Sion judicare montem Eſau: & erit Domino regnum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

19 Καὶ κατακληρονομήσουσιν οἱ ἐν ναγὲβ τὸ ὄρος τὸ Ἡσαῦ, ϗ οἱ ἐν τῇ Σεφηλᾷ τοὺς ἀλλοφύλους· ϗ κατακληρονομήσουσι τὸ ὄρος Ἐφραῒμ, ϗ τὸ πεδίον Σαμαρείας, ϗ Βενιαμὶν, ϗ τὴν Γαλααδῖτιν. 20 Καὶ τῆς μετοικεσίας ἡ ἀρχὴ αὕτη τοῖς υἱοῖς Ἰσραὴλ, γῆ τῶν Χαναναίων ἕως Σαρεπτῶν· ϗ ἡ μετοικεσία Ἱερουσαλὴμ ἕως Ἐφραθὰ (ζ) κληρονομήσουσι τὰς πόλεις τοῦ ναγέβ. 21 Καὶ ἀναβήσονται (ι) ἀνασωζόμενοι ἐξ ὄρους Σιὼν, τοῦ ἐκδικῆσαι τὸ ὄρος Ἡσαῦ, ϗ ἔσται τῷ κυρίῳ ἡ βασιλεία.

† ʼΟΒΔΙΟΥ Ε΄.

Et poſſidebunt, qui in (d) Nageb, montem Eſau, & qui in Sephela, alienigenas. Et poſſidebunt montem (e) Ephraim, et campũ Samariæ, et Benjamin, et Galaaditin. 19 *Et tranſmigrationis principiũ iſtud filiis Iſrael, terra Chananæorũ uſq; Sareptam, & tranſmigratio Hieruſalem uſq; Ephratha. Poſſidebunt civitates Nageb: Et aſcendent, (f) qui ſalvi fuerint, de monte Sion, ut puniant montem Eſau. Et erit Domino regnum.* 20 21

E΄.

MS.A. (ζ) ϗ κληρονομήσουσι (η) ἄνδρες σεσωσμένοι † ʼΑΒΔΙΟΥ Ε΄.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

19 ויחסנון יתבי דרומא ית כרכא דעשו ויתבי שפלתא ית ארעא דפלשתאי ויחסנון
20 ית קרוי אפרים וית קרוי שמרון ודבית בנימן ית יתבי ארעא דגלעד : וגלות עמא
הדין דבני ישראל דבארעא כנענאי עד צרפת וגלות ירושלם דבאספמיא יחסנון ית
21 קרוי ארעא דדרומא : ויסקון משיזבין בטורא דציון למדן ית כרכא דעשו ותתגלי
מלכותא דיי על כל יתבי ארעא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et poſſidebunt Auſtrum incolentes arcem Eſau, & campeſtria habitantes 19 terram Philiſtinorum, & occupabunt civitates Ephraim, & civitates Samariæ, & progeniti familiæ Benjamin habitatores terræ Galaad. Tandem 20 tranſmigratio populi hujus, filiorum ſcilicet Iſrael qui ſunt in terra Chananæorum uſq; ad Sareptam, & tranſmigratio Jeruſalem quæ eſt in Hiſpania, poſſidebunt civitates terræ Auſtralis. Tunc aſcendent ſalvatores in montem 21 Sion, ad judicandam arcem Eſau, ac revelabitur regnum Domini omnibus terræ incolis.

ספר יונה : א

CAP. I. א

ad vade, Surge. dicendo, Amithai filiũ Jonah ad Domini verbum fuit Et
1 ויהי דבר־יהוה אל־יונה בן־אמתי לאמר : קום לך אל־ 2
eorum malitia aſcendit quòd , ea in prædica & , magnam civitatem Nineveh
נינוה העיר הגדולה וקרא עליה כי־עלתה רעתם
, Domini *faciebus* à Tarſis in *fugiendum ad* Jonah ſurrexit Et . *meas facies ad*
3 לפני : ויקם יונה לברח תרשישה מלפני יהוה
dedit & , Tarſis *venientem* navem invenit & , Japho deſcendit &
וירד יפו וימצא אניה באה תרשיש ויתן
, Tharſis in eis cum *veniendum ad* , eam in deſcendit & , ejus mercedem
שכרה וירד בה לבוא עמהם תרשישה
mare ad magnum ventum *extulit* Dominus Et . Domini *faciebus* à
4 מלפני יהוה : ויהוה הטיל רוח־גדולה אל־הים
. conteri *putabat* navis & ; mari in magnus turbo fuit &
ויהי סער־גדול בים והאניה חשבה להשבר :
, ſuum Deum ad *vir* clamaverunt & , nautici timuerunt Et
5 וייראו המלחים ויזעקו איש אל־אלהיו
alleviandum ad , mare *ad* navi in quæ , inſtrumenta projecerunt &
ויטלו את־הכלים אשר באניה אל־הים להקל
, *jacebat* & , navis *latera* ad deſcenderat Jonah Et . eis *deſuper*
מעליהם ויונה ירד אל־ירכתי הספינה וישכב
dixit & , gubernator magnus eum ad acceſſit Et . erat ſoporatus &
6 וירדם : ויקרב אליו רב החבל ויאמר
fortè ſi , tuum Deum ad clama , Surge ? ſoporato tibi Quid : ei
לו מה־לך נרדם קום קרא אל־אלהיך אולי
vir dixerunt Et . pereamus non & , nobis Deus *recogitet*
7 יתעשת האלהים לנו ולא נאבד : ויאמרו איש
quem propter ſciamus ut , ſortes projiciamus & , *Ite* , ſuum *ſocium* ad
אל־רעהו לכו ונפילה גורלות ונדעה בשלמי
ſors cecidit & , ſortes projecerunt Et . nobis hoc malum
הרעה הזאת לנו ויפלו גורלות ויפל הגורל
propter , nobis nunc Indica : eum ad dixerunt Et . Jonah ſuper
8 על־יונה : ויאמרו אליו הגידה־נא לנו באשר
, *venies* unde & , tuum opus quod : nobis hoc malum quem
למי־הרעה הזאת לנו מה־מלאכתך ומאין תבוא
Hebræus : eos ad dixit Et *? tu* populo quo de & , tua terra quæ
9 מה ארצך ואי־מזה עם אתה : ויאמר אליהם עברי
fecit qui , *timens ego* cœlorum Deum Dominum & , *ego*
אנכי ואת־יהוה אלהי השמים אני ירא אשר־עשה
. aridam & , mare
את־הים ואת־היבשה :

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA

JONÆ.

CAP. I.

1 ET factum eſt verbum Domini ad Jonam filium Amathi, dicens; 2 Surge, & vade in Niniven civitatem grandem, & prædica in ea: quia aſcendit malitia ejus coram 3 me. Et ſurrexit Jonas, ut fugeret in Tharſis à facie Domini, & deſcendit in Joppen, & invenit navem euntem in Tharſis : & dedit naulum ejus, & deſcendit in eam ut iret cum eis in Tharſis à facie 4 Domini. Dominus autem miſit ventum magnum in mare : & facta eſt tempeſtas magna in mari, & navis periclitabatur conteri. 5 Et timuerunt nautæ, & clamaverunt viri ad deum ſuum : & miſerunt vaſa, quæ erant in navi, in mare, ut alleviaretur ab eis: & Jonas deſcendit ad interiora navis, 6 & dormiebat ſopore gravi. Et acceſſit ad eum gubernator, & dixit ei; Quid tu ſopore deprimeris? ſurge, invoca Deum tuum, ſi fortè recogitet Deus de nobis, & 7 non pereamus. Et dixit vir ad collegam ſuum; Venite, & mittamus ſortes, & ſciamus quarè hoc malum ſit nobis. Et miſerunt ſortes: 8 & cecidit ſors ſuper Jonam. Et dixerunt ad eum; Indica nobis cujus cauſâ malum iſtud ſit nobis : quod eſt opus tuum? quæ terra tua, & quò vadis? vel ex quo po9 pulo es tu? Et dixit ad eos; Hebræus ego ſum, & Dominum Deũ cœli ego timeo, qui fecit mare & aridam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ʼΙΩΝΑΣ. ς΄. *JONAS.*

ΚΕΦ. α΄.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἰωνᾶν 2 τὸν τοῦ Ἀμαθὶ, λέγων, Ἀνάστηθι, ϗ (α) πορεύθητι εἰς Νινευὴ τὴν πόλιν τὴν μεγάλην, ϗ κήρυξον ἐν αὐτῇ, ὅτι ἀνέβη ἡ 3 κραυγὴ τῆς κακίας αὐτῆς πρὸς μέ. Καὶ ἀνέστη Ἰωνᾶς τοῦ φυγεῖν εἰς Θαρσὶς (β) ἐκ προσώπου κυρίου· ϗ κατέβη εἰς Ἰόππην, ϗ εὗρε πλοῖον βαδίζον εἰς Θαρσὶς, ϗ ἔδωκε τὸ ναῦλον αὐτοῦ, ϗ (γ) ἀνέβη εἰς αὐτὸ, τοῦ πλεῦσαι (δ) μετ᾽ αὐτῶν εἰς Θαρσὶς 4 ἐκ προσώπου κυρίου. Καὶ κύριος ἐξήγειρε πνεῦμα (δ) ἐπὶ τὴν θάλασσαν, ϗ ἐγένετο κλύδων μέγας ἐν τῇ θαλάσσῃ, ϗ τὸ πλοῖον 5 ἐκινδύνευε τοῦ (ε) συντριβῆναι. Καὶ ἐφοβήθησαν οἱ ναυτικοὶ, ϗ (ζ) ἀνεβόησαν ἕκαστος πρὸς τὸν θεὸν (η) αὐτοῦ, ϗ ἐκβολὴν ἐποιήσαντο τῶν σκευῶν τῶν ἐν τῷ πλοίῳ εἰς τὴν θάλασσαν, τοῦ κουφισθῆναι ἀπ᾽ αὐτῶν· Ἰωνᾶς δὲ κατέβη εἰς τὴν κοίλην τοῦ πλοίου, ϗ ἐ6 κάθευδε, ϗ ἔρεγχε. Καὶ προσῆλθε πρὸς αὐτὸν ὁ πρωρεὺς, ϗ εἶπεν (θ) αὐτῷ, Τί σὺ ῥέγχεις; ἀνάστα, ϗ ἐπικαλοῦ τὸν θεόν σου, (ι) ὅπως διασώσῃ ὁ θεὸς ἡμᾶς, ϗ οὐ μὴ 7 ἀπολώμεθα. Καὶ εἶπεν ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ, Δεῦτε βάλωμεν κλήρους, ϗ ἐπιγνῶμεν, τίνος ἕνεκεν ἡ κακία αὕτη ἐστὶν ἐν ἡμῖν. ϗ ἔβαλον κλήρους, ϗ ἔπεσεν ὁ 8 κλῆρος ἐπὶ Ἰωνᾶν. Καὶ (κ) εἶπον πρὸς αὐτὸν, Ἀπάγγειλον ἡμῖν, (λ) τίς σου ἡ ἐργασία ἐστὶ, ϗ πόθεν ἔρχῃ, ϗ ἐκ ποίας χώ9 ρας, ϗ ἐκ ποίου λαοῦ εἶ σύ; Καὶ εἶπε πρὸς αὐτοὺς, Δοῦλος κυρίου (μ) εἰμὶ ἐγὼ, ϗ τὸν κύριον θεὸν τοῦ οὐρανοῦ ἐγὼ σέβομαι, ὃς ἐποίησε τὴν θάλασσαν ϗ τὴν ξηράν.

CAP. I.

ET factum eſt verbum Domini 1 *ad Jonam filiũ Amathi, dicens; Surge, & vade in Nineven civitatem magnam, & prædica in* 2 *ea: quia aſcendit clamor malitiæ ejus ad me. Et ſurrexit Jonas ut* 3 *fugeret in Tharſis à facie Domini: & (a) deſcendit in Joppen, et invenit navem euntē in Tharſis, dedit que naulum ſuum, et aſcendit in eam, ut navigaret cum eis in Tharſis à facie Domini. Et* 4 *Dominus ſuſcitavit (b) ſpiritum in mare: & facta eſt tempeſtas magna in mari: & navis periclitabatur conteri. Et timuerũt nau-* 5 *tæ, & clamaverunt unuſquiſque ad deum ſuum: & jactum fecerunt vaſorum, quæ erant in navi, in mare, ut alleviaretur ab eis. Jonas autem deſcendit in ventrem navis, & dormiebat, & ſtertebat. Et acceſſit ad eum pro-* 6 *reta, & dixit ei; Quid tu ſtertis? Surge, et invoca Deum tuum; (c) ut ſalvos faciat nos Deus, & non pereamus. Et dixit unuſquiſque* 7 *ad proximum ſuum; Venite, mittamus ſortes, & cognoſcamus, cujus gratiâ malitia hæc eſt ſuper nos. Et miſerunt ſortes: & cecidit ſors ſuper Jonam. Et di-* 8 *xerunt ad eum: Annuntia nobis, (d) quod eſt opus tuum, & unde (e) venis, & ex qua regione, & ex quo populo es tu. Et dixit ad eos; (f) Servus Do-* 9 *mini ego ſum; & Dominum Deum cœli ego colo, qui fecit mare, & aridam.*

MS.A. ʼΙΩΝΑΣ ς΄. (α) πορεύου εἰς τὴν Νινευὴ (β) ἀπὸ (γ) ἐνέβη (δ) εἰς Θαρσεὶς μετ᾽ αὐτῶν (δ) εἰς (ε) διαλυθῆναι. (ζ) ἐβόων (η) αὐτῶν, (θ) πρὸς αὐτὸν, (ι) εἴπως (κ) εἶπαν (λ) τίνος ἕνεκεν ἡ κακία αὕτη ἐστὶν ἐν ἡμῖν; τίς (μ) ἐγώ εἰμι,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 והוה פתגם נבואה מן קדם יי עם יונה בר אמתי למימר : קום איזל לנינוה קרתא 2
3 רבתא ואתנבי עלה ארי סליקת בישתהון קדמי : וקם יונה למערק לימא מן קדם
דאתנבי בשמא דיי ונחת ליפו ואשכח אלפא דאזלא לימא ויהב אגרה ונחת בה למיזל
4 עמהון בימא מן קדם דאתנבי בשמא דיי : ויי ארים רוח רבא על ימא והוה נחשול
5 רב בימא ואלפא בעיא לאתברא : ודחילו ספניא ובעו גבר מן דחלתיה וחזו ארי
לית בהון צרוך ורמו ית מניא דבאלפא לימא לאקלא מנהון ויונה נחית לארעית
6 שדא דאלפא ושכיב ודמוך : וקרב לותיה רב ספניא ואמר ליה מא את דמיך קום
7 צלי קדם אלהך מאם יתרחים מן קדם יי עלנא ולא נאביד : ואמרו גבר לחבריה
אתו ונרמי עדבין ונדע בדיל מה בישתא הדא לנא ורמו עדבין ונפל עדבא על יונה :
8 ואמרו ליה חוי כען לנא בדיל מא בישתא הדא לנא מה עבידתך ומנן את אתי אי דא
9 היא מדינתך ואי מדין עמא את : ואמר להון יהודאה אנא ומן קדם יי אלהא דשמיא
אנא דחיל דעבד ית ימא וית יבשתא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. I.

ET factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi cum Jona filio Amithai dicendo. 1 2 Surge, vade in Niniven civitatem grandem, & prophetiza in eam: aſcendit enim malitia eorum ante conſpectum meum. Et ſurrexit Jonas fugiendi cauſa ad mare, ne in nomine Dñi prophetaret: & deſcendit in Joppen, 3 ubi navem offendit quæ pergebat in mare: & cùm dediſſet mercedem ejus deſcendit in eam, ut iret cum eis per mare, ne in nomine Dñi vaticinaretur. Dñs autē excitavit ventũ magnũ ſup mare, & facta eſt tempeſtas magna in 4 mari, adeò ut navis quæreret conteri. Qua de cauſa timuerunt nautæ, & de5 precati ſunt unuſquiſque deum ſuum: ſed cùm vidiſſent quòd nulla eſſet in eis utilitas, projecerunt quæ erant in navi vaſa in mare, quò hiſce levaretur. Jonas autem deſcenderat ad infimum navis latus qui decumbens dormiebat. Et 6 acceſſit ad eum princeps nautarum, & dixit ei: Quid tu ſomno indulges? Surge, ora coram Deo tuo, ſi fortè miſericordia concedatur à Dño nobis, quò minimè pereamus. Et dixerunt unuſquiſque ad proximum ſuum: Venite & 7 projiciamus ſortes, ut ſciamus propter quem hoc malum ſit nobis: miſerunt ergo ſortes, & cecidit ſors ſuper Jonam. Et itaque dixerunt ei: Indica no8 bis quamobrem malum hoc impendeat nobis; quod ſit opus tuum, unde venis, & quæ ſit provincia tua, & ex qua gente ſis. Et reſpondit eis: Judæus 9 ſum: & à conſpectu Dñi Dei cœli ego timeo, qui mare fecit & aridam.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܢܐܪܬܘܢ ܕܒܬܝܡܢܐ ܠܛܘܪܐ ܕܥܣܘ . ܘܕܒܫܦܠܬܐ ܠܦܠܣܛܝܢܝܐ. ܘܢܐܪܬܘܢ ܚܩܠܐ ܕܐܦܪܝܡ 19
ܘܚܩܠܐ ܕܫܡܪܝܢ. ܘܒܢܝܡܝܢ ܠܓܠܥܕ. * ܘܫܒܝܬܐ ܩܕܡܝܬܐ ܗܕܐ ܕܒܢܝ̈ ܐܝܣܪܝܠ. ܕܡܢ 20
ܟܢܥܢ ܥܕܡܐ ܠܨܪܦܬ. ܘܫܒܝܬܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܕܒܐܣܦܢܝܐ. ܢܐܪܬܘܢ ܠܡܕܝܢܬܐ ܕܬܝܡܢܐ.
* ܘܢܣܩܘܢ ܦܪ̈ܝܩܐ ܠܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ. ܠܡܕܢ ܠܛܘܪܐ ܕܥܣܘ. ܘܬܗܘܐ ܡܠܟܘܬܐ ܕܡܪܝܐ. 21
* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܥܘܒܕܝܐ ܢܒܝܐ *

Et poſſidebunt Aquilonares montem Eſau; & qui ſunt in planitie, Paleſtinos; & poſſidebunt agrum Aphremi & agrum Samariæ; & Benjamen Gelaadem. 19 Et captivitas prior iſta filiorũ Iſraelis, erit à Chanaane Sarphath uſque: & captivitas Jeroſolymorum quæ erit in Hiſpania, poſſidebit urbes Auſtrales. 20 Et aſcendent qui ſervati fuerint, in montem Sionis, ad judicandum montem Eſau: & regnum Dño erit. 21

Prophetiæ Obadiæ Prophetæ finis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ويرث الذين في جات جبل عيسوا * والذين في الصحراء القبايل العربيه * ويرثون جبل افرام 19
وبقعة سامرن * وبنيامين والجلعاديه * ورأس السبي هو لبني إسرايل ارض الكنعانيين والى 20
الصوارف * وسبي ايروسليم الى افراتا * يرثون مدن ناجاب * ويصعد الرجال المتخلصون من جبل 21
صهيون لينتقموا من جبل عيسوا ويكون المملكة للرب * * تمت نبوه عوبديا *

Et poſſidebunt qui ſunt in Geth, montem Eſau; et qui ſunt in deſerto, nationes exteras: et poſſidebunt montem Aphremi, et planitiem Samariæ, et Benjaminum, et Galaaditin. 19 *Principium prædæ erit filiis Iſraelis terra Chananæorum uſque ad Savareph; & præda Jeroſolymorum, uſque ad Ephratam: poſſidebunt urbes Nageb;* 20 *Et aſcendent viri qui evaſerint, è monte Sionis, ad ſumendum ultionem ex monte Eſau: eritque regnum Domino.* 21

Finis Prophetiæ Obadiæ.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܬܘܒ ܕܢܒܝܘܬܗ ܕܝܘܢܢ ܢܒܝܐ * * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܝܘܢܢ ܒܪ ܡܬܝ ܟܕ ܐܡܪ. * ܩܘܡ ܙܠ ܠܢܝܢܘܐ ܡܕܝܢܬܐ 1 2
ܪܒܬܐ. ܘܐܟܪܙ ܥܠܝܗ. ܡܛܠ ܕܣܠܩܬ ܒܝܫܘܬܗܘܢ ܩܕܡܝ. * ܘܩܡ ܝܘܢܢ ܠܡܥܪܩ ܠܬܪܫܝܫ 3
ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܢܚܬ ܠܝܘܦܐ. ܘܐܫܟܚ ܐܠܦܐ ܕܐܙܠܐ ܠܬܪܫܝܫ. ܘܝܗܒ ܐܓܪܗ. ܘܢܚܬ
ܠܗ. ܠܡܐܙܠ ܥܡܗܘܢ ܠܬܪܫܝܫ. ܠܡܥܪܩ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܡܪܝܐ ܐܪܡܝ ܪܘܚܐ ܪܒܬܐ 4
ܒܝܡܐ. ܘܗܘܐ ܡܚܫܘܠܐ ܪܒܐ ܒܝܡܐ. ܘܐܠܦܐ ܡܬܛܪܦܐ ܗܘܬ ܠܡܬܬܒܪܘ. * ܘܕܚܠܘ 5
ܡܠܚܐ. ܘܩܥܘ ܐܢܫ ܠܘܬ ܐܠܗܗ. ܘܫܕܘ ܡܐܢܐ ܡܢ ܐܠܦܐ ܒܝܡܐ. ܕܢܩܠܘܢ ܡܢܗܘܢ.
ܝܘܢܢ ܕܝܢ ܢܚܬ ܗܘܐ ܠܫܘܠܝܗ ܕܐܠܦܐ. ܘܕܡܟ. * ܘܩܪܒ ܠܘܬܗ ܪܒ ܡܠܚܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. 6
ܡܢܐ ܕܡܟ ܐܢܬ. ܩܘܡ ܩܪܝ ܠܐܠܗܟ. ܕܠܡܐ ܢܦܪܩܢ ܐܠܗܐ. ܘܠܐ ܢܐܒܕ. * ܘܐܡܪܘ ܓܒܪ 7
ܠܚܒܪܗ. ܬܘ ܢܪܡܐ ܦܣܐ. ܘܢܕܥ ܡܢܘ ܥܠܬܐ ܗܕܐ ܒܝܫܬܐ ܕܗܘܬ ܠܢ. ܘܐܪܡܝܘ ܦܣܐ.
ܘܢܦܠ ܦܣܐ ܥܠ ܝܘܢܢ. * ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܚܘܝܢ ܡܢܘ ܥܠܬܐ ܗܕܐ ܒܝܫܬܐ ܕܗܘܬ ܠܢ. ܡܢܐ 8
ܥܒܕܟ. ܘܡܢ ܐܝܟܐ ܐܬܝܬ. ܘܐܝܢܐ ܐܪܥܟ. ܘܡܢ ܐܝܢܐ ܥܡܐ ܐܢܬ. * ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ ܝܘܢܢ. 9
ܥܒܪܝܐ ܐܢܐ. ܘܠܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܕܫܡܝܐ ܕܚܠ ܐܢܐ. ܕܥܒܕ ܝܡܐ ܘܝܒܫܐ.

Sequitur Prophetia

JONÆ PROPHETÆ.

CAPUT. I

Fuit ſermo Dñi ad Jonam filium Mathæi, dicendo; 1 Surge, vade in Ninivem urbẽ magnam, & prædica illi: aſcendit enim malignitas eorum in conſpectũ meũ. 2 Surrexit ergo Jonas ad fugiendum in Tharſis à conſpectu Dñi: cúmq; deſcendiſſet in Joppen, reperit navim euntem in Tharſis; datóq; naulo deſcendit in eam, ut abiret cum eis in Tharſum, ut fugeret à conſpectu Dñi. 3 Verùm Dñs excitavit ventum vehementem in mari, tactáque eſt ſumma tempeſtas in mari, adeóq; navis in illa volutabatur ad fracturam patiendam. 4 Quare perterriti nautæ, clamabant quiſque ad deum ſuum: & vaſa è navi projecerunt in mare, ut ſeſe levarent: Jonas autem deſcenderat in profundum carinæ, & dormierat. 5 Sed accedens ad eum princeps nautarũ, dixit illi; Quid ſomnolentꝰ es? ſurge, invoca Deum tuum: forſitan ſervabit nos Deus quin pereamus. 6 Deinde dixit alter alteri; Agite, projiciamus ſortes ut cognoſcamꝰ cujus cauſâ tantũ infortuniũ contigerit nobis. Cùm ergò ſortes jeciſſent, & ſors Jonæ aſcendiſſet; 7 Dixerunt ei, Indica nobis qua de cauſa infortunium iſtud acciderit nobis: quæ ars tua? & unde es? quænam eſt patria tua? & ex qua gente es tu? 8 Reſpondit eis Jona; Hebræus ſum, & Dominum Deum cœli colo, factorem maris & continentis. 9

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* بدو ترجمة نبوة يونان ابن اماثي * بركاته تسلمنا *

* امين *

* الفصل الاول * * الاصحاح الثالث عشر * وهو الاول من النبوه *

* وكان قول الرب الى يونان ابن اماثي قايلا * قم وامض الى نينوى المدينة العظيمة وناد فيها * 1 2
لان صراخ شرها صعد الي * فقام يونان ليهرب الى ترسيس من وجه الرب * وانحدر الى يافا * فوجد 3
سفينة سايرة الى ترسيس * فاعطى كراها وصعد اليها ليقلع معهم الى ترسيس من وجه الرب *
* والرب اقام ريحا عظيما في البحر * وصار موجا عظيما في البحر * وتورطت السفينة لتنكسر * ففرق 4 5
الملاحون وصرخوا الى الرب الههم * وصنعوا حذفا من الاواني التي في السفينة الى البحر ليخففوا
منهم * فنزل يونان الى بطن السفينة ونام ونخر * فتقدم اليه الرايس وقال له * ما بالك تنخر * قم 6
وادع الهك لعل يخلصنا الله ولا نهلك * وقال كل واحد لرفيقه * تعالوا نضع قرعا ونعرف 7
من اجل من صار علينا هذا الشر * فوضعوا قرعا * فوقعت القرعه على يونان * فقالوا له 8
اخبرنا من اجل ماذا صار فينا هذا الشر * ما هو عملك * ومن اين اتيت * والى اين تمضي *
ومن اية كورة انت * ومن اي شعب انت * فقال لهم * انا عبد للرب * وانا اعبد الرب اله السماء * 9
والذي اعبده هو الذي صنع البحر واليابسة *

Principium Interpretationis
PROPHETIÆ JONÆ
filii AMATHI, cujus benedictiones circundent nos,
Amen.

CAP. I.

Textus decimus tertius, hujus autem Prophetiæ primus.

Fuit ſermo Domini ad Jonam filium Amathi, dicens; 1 *Surge, & abi in Ninivem urbem magnam, & proclama in ea: clamor enim malitiæ ejus aſcendit ad me.* 2 *Surrexit itaque Jona ut fugeret in Tharſis à facie Domini: cumque deſcendiſſet ad Japha, invenit navim proficiſcentem ad Tharſis, datóque naulo conſcendit eam ut vela faceret cum eis in Tharſis à facie Domini.* 3 *At Dominus excitavit ventum vehementem in mari, factáque eſt procella atrox in mari, adeò ut navis labefactationis periculum ſubiret.* 4 *Quare pertimeſcentes nautæ clamaverunt ad Dominum Deum ſuum, jactúmque fecerunt vaſorum quæ erant in navi, in mari, ut allevarent ſeſe. Interim Jonas deſcenderat in ventrem navis, & dormiens ſtertebat.* 5 *Acceſſit autem ad eum nauclerus, & dixit ei; Quid ſtertis? Surge, & invoca Deum tuum, ut liberet nos Deus, nec pereamus.* 6 *Tum dixit quiſque ſocio ſuo; Venite ponamus ſortes, ut ſciamus propter quem acciderit nobis malum iſtud: poſitis ergò ſortibus, cecidit ſors ſuper Jonam?* 7 *Tunc dixerunt ei; Indica nobis qua de cauſa acciderit nobis malum iſtud: quod eſt opus tuum? unde venis, & quò vadis? quanam ex regione, & quanam ex gente es tu?* 8 *Dixit eis, Ego ſum ſervus Domini, & ego Dominum Deum cœli adoro; & quem adoro, is eſt qui fecit mare & aridam.* 9

יונה : ב

Cur : eum ad dixerunt & , magno timore viri timuerunt Et
10 וַיִּירְאוּ הָאֲנָשִׁים יִרְאָה גְדוֹלָה וַיֹּאמְרוּ אֵלָיו מַה־
ipſe Domini *faciebus* à quòd viri cognoverunt nam ? feciſti hoc
זֹּאת עָשִׂיתָ כִּי־יָדְעוּ הָאֲנָשִׁים כִּי־מִלִּפְנֵי יְהוָה הוּא
, tibi faciemus Quid : eum ad dixerunt Et .eis indicaverat quia:*fugiens*
11 בֹרֵחַ כִּי הִגִּיד לָהֶם׃ וַיֹּאמְרוּ אֵלָיו מַה־נַּעֲשֶׂה לָּךְ
dixit Et .*tumultuans & vadens* mare quia ?nobis *deſuper* mare *ſilebit &*
12 וְיִשְׁתֹּק הַיָּם מֵעָלֵינוּ כִּי הַיָּם הוֹלֵךְ וְסֹעֵר׃ וַיֹּאמֶר
:vobis *deſuper* mare tacebit &,mare *ad* me projicite &,me Tollite : eos ad
אֲלֵיהֶם שָׂאוּנִי וַהֲטִילֻנִי אֶל־הַיָּם וְיִשְׁתֹּק הַיָּם מֵעֲלֵיכֶם
.vos ſuper hæc magna tempeſtas me propter quòd ego *ſciens nam*
כִּי יוֹדֵעַ אָנִי כִּי בְשֶׁלִּי הַסַּעַר הַגָּדוֹל הַזֶּה עֲלֵיכֶם׃
mare quia :valebãt non & ,aridam ad *reducendum ad* viri *fodiebant* Et
13 וַיַּחְתְּרוּ הָאֲנָשִׁים לְהָשִׁיב אֶל־הַיַּבָּשָׁה וְלֹא יָכֹלוּ כִּי הַיָּם
:dixerunt &,Dominum ad clamaverunt Et .eos ſuper *turbinans & vadens*
14 הוֹלֵךְ וְסֹעֵר עֲלֵיהֶם׃ וַיִּקְרְאוּ אֶל־יְהוָה וַיֹּאמְרוּ
des ne & ,iſtius viri *anima in* pereamus *nunc* ne ,Domine Quæſumus
אָנָּה יְהוָה אַל־נָא נֹאבְדָה בְּנֶפֶשׁ הָאִישׁ הַזֶּה וְאַל־תִּתֵּן
, voluiſti ſicut Domine tu quia ,innocentem ſanguinem nos ſuper
עָלֵינוּ דָּם נָקִיא כִּי־אַתָּה יְהוָה כַּאֲשֶׁר חָפַצְתָּ
mare ſtetit & , mare in eum projecerunt &,Jonah tulerunt Et .feciſti
15 עָשִׂיתָ׃ וַיִּשְׂאוּ אֶת־יוֹנָה וַיְטִלֻהוּ אֶל־הַיָּם וַיַּעֲמֹד הַיָּם
, Dominum magno timore viri timuerunt Et .ſua ira ab
16 מִזַּעְפּוֹ׃ וַיִּירְאוּ הָאֲנָשִׁים יִרְאָה גְדוֹלָה אֶת־יְהוָה
.vota voverunt & ,Domino hoſtiam immolaverunt &
וַיִּזְבְּחוּ־זֶבַח לַיהוָה וַיִּדְּרוּ נְדָרִים׃

CAP. II. ב

fuit & ;Jonah *deglutiendum ad*,grandem piſcem Dominus præparavit Et
1 וַיְמַן יְהוָה דָּג גָּדוֹל לִבְלֹעַ אֶת־יוֹנָה וַיְהִי
oravit Et .noctibus tribus & ,diebus tribus piſcis *viſceribus* in Jonah
2 יוֹנָה בִּמְעֵי הַדָּג שְׁלֹשָׁה יָמִים וּשְׁלֹשָׁה לֵילוֹת׃ וַיִּתְפַּלֵּל
Clamavi : dixit Et .piſcis *viſceribus à* ſuum Deum Dominum ad Jonah
3 יוֹנָה אֶל־יְהוָה אֱלֹהָיו מִמְּעֵי הַדָּגָה׃ וַיֹּאמֶר קָרָאתִי
, clamavi inferi ventre *à* : *mihi reſpondit* &,Dominum ad *mihi anguſtia præ*
מִצָּרָה לִי אֶל־יְהוָה וַיַּעֲנֵנִי מִבֶּטֶן שְׁאוֹל שִׁוַּעְתִּי
;marium *cor in* , profundum me feciſti projicere Et .meam vocẽ exaudiſti
4 שָׁמַעְתָּ קוֹלִי׃ וַתַּשְׁלִיכֵנִי מְצוּלָה בִּלְבַב יַמִּים
.tranſierũt me ſuper tui fluctus &,tuæ *illiſiones* omnes :me circundedit flumẽ &
וְנָהָר יְסֹבְבֵנִי כָּל־מִשְׁבָּרֶיךָ וְגַלֶּיךָ עָלַי עָבָרוּ׃
addam veruntamen,tuorum oculorũ *regione* è ſum *Expulſus* : dixi ego Et
5 וַאֲנִי אָמַרְתִּי נִגְרַשְׁתִּי מִנֶּגֶד עֵינֶיךָ אַךְ אוֹסִיף
animam ad uſq; aquæ me Circunderũt .*tuæ ſanctitatis* templum ad *reſpicere*
6 לְהַבִּיט אֶל־הֵיכַל קָדְשֶׁךָ׃ אֲפָפוּנִי מַיִם עַד־נֶפֶשׁ
montium *exciſiones* Ad.meo capiti *alligatum carectum*,me circundedit vorago
7 תְּהוֹם יְסֹבְבֵנִי סוּף חָבוּשׁ לְרֹאשִׁי׃ לְקִצְבֵי הָרִים
feciſti aſcendere & : ſeculum in me propter ſuis vectibus *terram* , deſcendi
יָרַדְתִּי הָאָרֶץ בְּרִחֶיהָ בַעֲדִי לְעוֹלָם וַתַּעַל
,*meam animam me ſuper deficiendo In* .mi Deus Domine ,*meas vitas* foveâ è
8 מִשַּׁחַת חַיַּי יְהוָה אֱלֹהָי׃ בְּהִתְעַטֵּף עָלַי נַפְשִׁי
templum ad mea oratio *te ad* venit & ; ſum recordatus Domini
אֶת־יְהוָה זָכָרְתִּי וַתָּבוֹא אֵלֶיךָ תְּפִלָּתִי אֶל־הֵיכַל
ſuam miſericordiam , *mendacii* vanitates Cuſtodientes .*tuæ ſanctitatis*
9 קָדְשֶׁךָ׃ מְשַׁמְּרִים הַבְלֵי־שָׁוְא חַסְדָּם
quod , tibi immolabo confeſſionis voce in ego Et .derelinquent
10 יַעֲזֹבוּ׃ וַאֲנִי בְּקוֹל תּוֹדָה אֶזְבְּחָה־לָּךְ אֲשֶׁר
, piſci Dominus dixit Et .Domini ſalus , reddam vovi
11 נָדַרְתִּי אֲשַׁלֵּמָה יְשׁוּעָתָה לַיהוָה׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה לַדָּג
.aridam *ad* Jonah evomuit &
וַיָּקֵא אֶת־יוֹנָה אֶל־הַיַּבָּשָׁה׃

Verſio VULG. LAT.

10 Et timuerunt viri timore magno, & dixerunt ad eum; Quid hoc feciſti? (cognoverunt enim viri quòd à facie Domini fugeret, quia 11 indicaverat eis.) Et dixerunt ad eum; Quid faciemus tibi, & ceſſabit mare à nobis? quia mare 12 ibat, & intumeſcebat. Et dixit ad eos; Tollite me, & mittite in mare, & ceſſabit mare à vobis: ſcio enim ego quoniam propter me tempeſtas hæc grandis venit 13 ſuper vos. Et remigabant viri ut reverterentur ad aridã, & non valebant: quia mare ibat, & in- 14 tumeſcebat ſuper eos. Et clamaverunt ad Dominum, & dixerunt; Quæſumus, Domine, ne pereamus in anima viri iſtius, & ne des ſuper nos ſanguinem innocentem: quia tu, Domine, ſicut voluiſti, fe- 15 ciſti. Et tulerunt Jonam, & miſerunt in mare: & ſtetit mare à 16 fervore ſuo. Et timuerunt viri timore magno Dominum, & immolaverunt hoſtias Domino, & voverunt vota.

CAP. II.

1 Et præparavit Dominus piſcẽ grandem ut deglutiret Jonam: & erat Jonas in ventre piſcis tribus 2 diebus, & tribus noctibus. Et oravit Jonas ad Dominum Deum 3 ſuum de ventre piſcis. Et dixit; Clamavi de tribulatione mea ad Dominum, & exaudivit me: de ventre inferi clamavi, & exaudi- 4 ſti vocem meam. Et projeciſti me in profundum in corde maris, & flumen circumdedit me: omnes gurgites tui, & fluctus tui ſuper me 5 tranſierunt. Et ego dixi; Abjectus ſum à conſpectu oculorum tuorũ: veruntamen rurſus videbo tem- 6 plum ſanctum tuum. Circumdederunt me aquæ uſque ad animã: abyſſus vallavit me, pelagus ope- 7 ruit caput meum. Ad extrema montium deſcendi: terræ vectes concluſerunt me in æternum: & ſublevabis de corruptione vitam 8 meam, Domine Deus meus. Cùm anguſtiaretur in me anima mea, Domini recordatus ſum: ut veniat ad te oratio mea ad templum ſan- 9 ctum tuum. Qui cuſtodiunt vanitates fruſtrà, miſericordiam ſuã 10 derelinquunt. Ego autem in voce laudis immolabo tibi: quæcunq; vovi, reddam pro ſalute Domino. 11 Et dixit Dominus piſci: & evomuit Jonam in aridam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Καὶ ἐφοβήθησαν οἱ ἄνδρες φόβον μέγαν, καὶ εἶπαν πρὸς αὐτόν, Τί τοῦτο ἐποίησας; διότι ἔγνωσαν οἱ ἄνδρες, ὅτι ἐκ προσώπου κυρίου ἦν φεύγων, ὅτι ἀπήγγελεν αὐτοῖς· 11 Καὶ εἶπαν πρὸς αὐτόν, (υ) Τί ποιήσομέν σοι, καὶ κοπάσει ἡ θάλασσα ἀφ' ἡμῶν; ὅτι ἡ θάλασσα ἐπορεύετο καὶ ἐξήγειρε μᾶλλον 12 κλύδωνα. Καὶ εἶπεν Ἰωνᾶς πρὸς αὐτούς, Ἄρατέ με, καὶ (ξ) ἐμβάλετέ με εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ κοπάσει ἡ θάλασσα ἀφ' ὑμῶν· διότι ἔγνωκα ἐγώ, ὅτι δι' ἐμὲ ὁ κλύδων ὁ 13 μέγας οὗτος ἐφ' ὑμᾶς ἐστι. Καὶ παρεβιάζοντο οἱ ἄνδρες τοῦ ἐπιστρέψαι πρὸς τὴν γῆν, καὶ οὐκ (ο) ἠδύναντο, ὅτι ἡ θάλασσα ἐπορεύε- 14 το, καὶ ἐξηγείρετο μᾶλλον ἐπ' αὐτούς. Καὶ ἀνεβόησαν πρὸς κύριον, καὶ εἶπαν, Μηδαμῶς κύριε· μὴ ἀπολώμεθα ἕνεκεν τῆς ψυχῆς τοῦ ἀνθρώπου τούτου, καὶ μὴ δῷς ἐφ' ἡμᾶς αἷμα δίκαιον, (π) διότι σὺ κύριε, ὃν τρόπον 15 ἐβούλου, πεποίηκας. Καὶ ἔλαβον τὸν Ἰωνᾶν, καὶ (ρ) ἐξέβαλον αὐτὸν εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ ἔστη ἡ θάλασσα ἐκ τοῦ σάλου (σ) αὐ- 16 τῆς. Καὶ ἐφοβήθησαν οἱ ἄνδρες φόβῳ μεγάλῳ τὸν κύριον, καὶ ἔθυσαν θυσίαν τῷ κυρίῳ, καὶ ηὔξαντο (τ) τὰς εὐχάς.

MS.A. (υ) Τί σοι ποιήσωμεν, καὶ κοπάσει (ξ) ἐμβάλετε εἰς (ο) ἐδύναντο, (π) ὅτι (ρ) ἐνέβαλον (σ) ἑαυτῆς (τ) εὐχάς.

ΚΕΦ. β'.

1 Καὶ προσέταξε κύριος κήτει μεγάλῳ καταπιεῖν τὸν Ἰωνᾶν. καὶ ἦν Ἰωνᾶς ἐν τῇ κοιλίᾳ τοῦ κήτους τρεῖς ἡμέρας καὶ τρεῖς νύ- 2 κτας. Καὶ προσηύξατο Ἰωνᾶς πρὸς κύριον 3 τὸν θεὸν αὐτοῦ ἐκ τῆς κοιλίας τοῦ κήτους, Καὶ εἶπεν, (ᵘ) † Ἐβόησα ἐν θλίψει μου πρὸς κύριον τὸν θεόν μου, καὶ εἰσήκουσέ μου, † ἐκ κοιλίας ᾅδου κραυγῆς μου, ἤκουσας φωνῆς μου, 4 † Ἀπέρριψάς με εἰς βάθη καρδίας θαλάσσης, καὶ (α) ποταμοὶ ἐκύκλωσάν με, † πάντες οἱ μετεωρισμοί σου καὶ τὰ κύματά σου 5 ἐπ' ἐμὲ διῆλθον. † (β) Καὶ ἐγὼ εἶπα, Ἀπῶσμαι ἐξ ὀφθαλμῶν σου· † ἆρα προσθήσω τοῦ ἐπιβλέψαι (γ) με πρὸς ναὸν τὸν ἅγιόν σου; 6 † Περιεχύθη μοι ὕδωρ ἕως ψυχῆς, † ἄβυσσος ἐκύκλωσέ με ἐσχάτη, † ἔδυ ἡ κε- 7 φαλή μου Εἰς σχισμὰς ὀρέων, † κατέβην εἰς γῆν, ἧς οἱ μοχλοὶ αὐτῆς κάτοχοι αἰώνιοι· † καὶ ἀναβήτω (δ) φθορὰ ζωῆς μου 8 κύριε ὁ θεός μου. † Ἐν τῷ ἐκλείπειν (ε) ἀπ' ἐμοῦ τὴν ψυχήν μου, τοῦ κυρίου ἐμνήσθην, † καὶ ἔλθοι πρὸς σὲ ἡ προσευχή μου εἰς ναὸν 9 (ζ) τὸν ἅγιόν σου. † Φυλασσόμενοι μάταια 10 καὶ ψευδῆ ἔλεος αὐτῶν ἐγκατέλιπον. † Ἐγὼ δὲ μετὰ φωνῆς αἰνέσεως καὶ ἐξομολογήσεως θύσω σοι, † ὅσα ηὐξάμην ἀποδώσω 11 (η) σοι σωτηρίου τῷ κυρίῳ. Καὶ προσετάγη (θ) ἀπὸ κυρίου τῷ κήτει, καὶ ἐξέβαλε τὸν Ἰωνᾶν ἐπὶ τὴν ξηράν.

MS.A. (ᵘ) ᾨΔΗ'. (α) ποταμοί με ἐκύκλωσαν, (β) Κἀγὼ (γ) πρὸς ναὸν (δ) ἐκ φθορᾶς ἡ ζωή μου (ε) τὴν ψυχήν μου ἀπ' ἐμοῦ, (ζ) ἅγιόν (η) εἰς σωτήριόν μου τῷ (θ) τῷ κήτει, καὶ

Et timuerunt viri timore magno, 10 *et dixerũt ad eum, Quid hoc feciſti? Cognoverũt enim viri, quòd à facie* Domini *fugeret, eò quòd indicâſſet eis. Et dixerunt ad e-* 11 *um; Quid tibi faciemus, & quieſcet mare à nobis? Quia mare ibat, et ſuſcitabat magis fluctum. Et dixit Jonas ad eos; Tollite* 12 *me, & mittite me in mare: & quieſcet mare à vobis. Ego enim novi, quòd propter me fluctus iſti magni contra vos ſunt. Et cona-* 13 *bantur viri, ut reverterentur ad terram, & non poterant: quia mare ibat, & inſurgebat magis contra eos. Et clamaverunt ad Do-* 14 *minum, et dixerunt; Nequaquam, Domine: ne pereamus propter animam viri hujus: & non des ſuper nos ſanguinem juſtum: tu enim, Domine, ſicut voluiſti, feciſti. Et* 15 *tulerunt Jonam, & miſerunt eum in mare: et ſtetit mare à commotione ſua. Et timuerunt viri* 16 *timore magno Dominum, & immolaverunt hoſtiam Domino, & voverunt vota.*

CAP. II.

Et præcepit Dominus ceto ma- 1 *gno devorare Jonam. Et erat Jonas in ventre ceti tribus diebus, et tribus noctibus. Et oravit Jonas* 2 *ad Dominum Deum ſuum de utero piſcis, Et dixit; Clamavi in* 3 *tribulatione mea ad Dominum Deum meum: et exaudivit me; de (a) ventre inferi clamoris mei audîſti vocem meam: Projeciſti me* 4 *in profunda cordis maris, & flumina me circundederunt. Omnes elevationes tuæ, & fluctus tui ſuper me tranſierunt. Et ego dixi;* 5 *Abjectus ſum ex oculis tuis: (b) putas ne, addam, ut videam templum ſanctum tuum? Circumfuſa* 6 *eſt mihi aqua uſque ad animam, abyſſus vallavit me noviſſima: intravit caput meum In ſciſſuras* 7 *montium: deſcendi in terram, cujus vectes ejus ſunt retinacula ſempiterna. Et aſcendat (c) corruptio vitæ meæ, Domine Deus meus. Cùm deficeret ex me ani-* 8 *ma mea; Domini recordatus ſum: & veniat ad te oratio mea in templum ſanctum tuum. Qui cu-* 9 *ſtodiunt vana, & mendacia; miſericordiam ſuam reliquerunt. Ego autem cum voce laudis, &* 10 *confeſſionis immolabo tibi: quæcunque vovi, reddam tibi (d) ſalutaris Domino. Et à Domino* 11 *præceptum eſt ceto: & ejecit Jonam ſuper ſiccam.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 ודחילו גבריא דחילא רבא ואמרו ליה מה דא עבדתא ארי ידעו גובריא ארי מן קדם
11 יי הוא ערק ארי חוי להון : ואמרו ליה מה נעביד לך ויניח ימא מננא ארי ימא
12 אזיל ונחשוליה תקיף : ואמר להון טלוני ורמוני לימא ויניח ימא מעליכון ארי ידע
13 אנא ארי בדילי נחשולא רבא הדין עליכון : ושיטין גבריא לאתבא ליבשתא ולא
14 יכילו ארי ימא אזיל ונחשוליה תקיף עליהון : וצליאו קדם יי ואמרו קביל בעותנא יי
לא כען ניבד בחובת נפש דגברא הדין ולא תתן עלנא חובת דם זכי ארי את יי כמא
15 16 דרעוא קדמך עבדתא : ונסיבו ית יונה ורמוהי לימא ונח ימא מנחשוליה : ודחילו
גבריא דחילא רבא מן קדם יי ואמרו לדבחא דבח קדם יי ונדרו נדרין :

ב

1 וזמן יי נונא רבא למבלע ית יונה והוה יונה במעיא דנונא תלתא יומין ותלתא לילון :
2 3 וצלי יונה קדם יי אלהיה ממעיא דנונא : ואמר צליתי מדעקת לי קדם יי וקביל
4 צלותי מארעית תהומא בעיתי עבדתא בעותי : ורמיתני בעומקיא בלבא דימא ונהר
5 סחור סחור לי כל נחשולוהי דימא וגלוהי עלי עדו : ואנא אמרית אתרכית מן קדם
6 מימרך ברם אוסיף לאסתכלא בהיכלא דקודשך : אקפוני מיא עד מותא תהומא
7 סחור סחור לי ימא דסוף תלי עיל מרישי : לעקרי טוריא נחתית ארעא נגדת
8 בתוקפהא עיל מני עלמין ואת קריב קדמך לאסקא מחבלא חיי יי אלהי: באשתלהיות
9 עלי נפשי פולחנא דיי אדכרית ועלת לקדמך צלותי להיכלא דקודשך : לא כעממיא
10 פלחי טעותא מאתר דאתוטב להון לית אנון ידעין : ואנא בתושבחת אודאה
11 קורבני אקריב קדמך דנדרית אשלם פורקן נפשי בצלו קדם יי : ואמר יי לנונא
ופלט ית יונה ליבשתא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Timuerunt ergo viri ingenti timore, & dixerunt ei: Cur hoc feciſti? cogno- 10 verunt enim viri quòd à facie Dñi fugeret, quippe qui indicâſſet eis. Et di- 11 xerunt ei: Quid faciemus tibi ut quieſcat mare à nobis? ſiquidem ibat mare, & tempeſtas ejus increbreſcebat. Qui dixit eis: Tollite me atq; in mare projicite, 12 & tranquillum erit vobis mare: ſcio enim quòd tempeſtas hæc magna propter me ſuper vos ſit exorta. Intereà remigabant viri ut reducerent [*navem*] 13 ad aridam, ſed nequivere: quandoquidem mare ibat & tempeſtas ejus invaleſcebat ſuper eos. Quapropter oraverunt coram Dño, & dixerunt: Suſcipe 14 deprecationem noſtram Dñe, ne nunc pereamus propter peccatum animæ viri iſtius, neq; imputes nobis peccatum ſanguinis innocentis; quia tu Dñe quemadmodum placuit coram te, feciſti. Tulerunt ergo Jonam, & eum in mare 15 projecerunt, quievitque mare à tempeſtate ſua. Prætereà viri illi timuerunt 16 permagno timore à facie Dñi, & dixerunt ſe *ſacrificium* ſacrificaturos coram Dño, & vota voverunt.

CAP. II.

PRæparaverat autem Dñs piſcem grandem qui Jonam deglutiret, & fuit Jo- 1 nas in ventre piſcis tribus diebus ac tribus noctibus. Oravit verò Jonas 2 coram Dño Deo ſuo de viſceribus piſcis. Et ait: Oravi præ anguſtia mea ad 3 Dñm qui ſuſcepit orationem meam: de infima abyſſo deprecatus ſum, deprecationem meam executus es. Tu quidem projeciſti me in profunditates, in 4 cor maris, & flumen cùm circumquaq; me circundet, omnes maris tempeſtates & fluctus ejus ſuper me tranſierunt. Ego verò dixeram: Ejectus ſum à 5 conſpectu Verbi tui: veruntamen addam aſpicere ſacroſanctum templum tuum. Circundederunt me aquæ uſq; ad mortem, abyſſo circumquaq; me am- 6 biente: mare carectoſum ſuſpenſum erat capiti meo. Ad radices mon- 7 tium deſcenderam, & terra ſerrârat robora ſua ſuper me in perpetuum: ſed proclive fuit tibi educere à corruptione vitam meam, Dñe Deus meus. Cùm 8 deliquio laboraret in me anima mea, cultus Dñi ſum recordatus: & penetravit corã te oratio mea in templũ ſanctitatis tuæ. Non more gentium idola 9 colentiũ quæ quo ex loco beneficiũ conferatur ipſis, neſciunt. At ego in laude 10 confeſſionis offeram oblationẽ meam corã te: quod vovi reddã pro ſalute animæ meæ in oratione corã Dño. Tum dixit Dñs piſci, & evomuit Jonam in arida. 11

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 ܘܕܚܠܘ ܓܒܪܐ ܗܢܘܢ ܕܚܠܬܐ ܪܒܬܐ. ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܡܢܐ ܥܒܕܬ. ܡܛܠ ܕܝܕܥܘ ܓܒܪܐ *
11 ܗܢܘܢ. ܕܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܥܪܩ. * ܘܟܕ ܚܘܝ ܐܢܘܢ. ܐܡܪܘ ܠܗ. ܡܢܐ ܢܥܒܕ ܠܟ. ܘܢܫܠܐ ܝܡܐ
12 ܡܢܢ. ܡܛܠ ܕܝܡܐ ܐܙܠ ܘܡܬܥܠܐ ܥܠܝܢ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ ܝܘܢܢ. ܫܩܘܠܘܢܝ
ܘܐܪܡܘܢܝ ܒܝܡܐ. ܘܢܫܠܐ ܝܡܐ ܡܢܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܐܢܐ ܕܡܛܠܬܝ ܥܠܥܠܐ ܪܒܐ ܗܢܐ
13 ܗܘܐ ܥܠܝܟܘܢ. * ܘܐܬܟܫܦܘ ܓܒܪܐ ܗܢܘܢ ܕܢܗܦܟܘܢ ܠܝܒܫܐ. ܘܠܐ ܐܫܟܚܘ. ܡܛܠ ܕܝܡܐ
14 ܐܙܠ ܗܘܐ ܘܡܬܥܠܐ ܥܠܝܗܘܢ. * ܘܩܪܘ ܠܡܪܝܐ ܘܐܡܪܘ. ܒܥܘ ܡܪܝܐ. ܠܐ ܢܐܒܕ ܒܢܦܫܗ
ܕܓܒܪܐ ܗܢܐ. ܘܠܐ ܬܬܠ ܥܠܝܢ ܕܡܐ ܙܟܝܐ. ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܕܨܒܝܬ
15 ܥܒܕܬ. * ܘܫܩܠܘܗܝ ܠܝܘܢܢ ܘܐܪܡܝܘܗܝ ܒܝܡܐ. ܘܫܠܐ ܝܡܐ ܡܢ ܡܫܬܥܠܢܘܬܗ.
16 * ܘܕܚܠܘ ܓܒܪܐ ܗܢܘܢ ܕܚܠܬܐ ܪܒܬܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܕܒܚܘ ܕܒܚܐ ܠܡܪܝܐ. ܘܢܕܪܘ ܢܕܪܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

1 * ܘܙܡܢ ܡܪܝܐ ܢܘܢܐ ܪܒܐ ܘܒܠܥܗ ܠܝܘܢܢ. ܘܗܘܐ ܝܘܢܢ ܒܡܥܘܗܝ ܕܢܘܢܐ. ܬܠܬܐ ܝܘܡܝܢ
2 ܘܬܠܬܐ ܠܠܝܢ. * ܘܨܠܝ ܝܘܢܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗ ܡܢ ܡܥܘܗܝ ܕܢܘܢܐ. ܘܐܡܪ. * ܩܪܝܬ
3 ܠܡܪܝܐ ܒܐܘܠܨܢܝ. ܘܥܢܝܢܝ. ܘܡܢ ܟܪܣܗ ܕܫܝܘܠ ܩܥܝܬ. ܘܫܡܥܬ ܩܠܝ. * ܘܐܪܡܝܬܢܝ
4 ܒܥܘܡܩܐ ܒܠܒܗ ܕܝܡܐ. ܘܢܗܪܐ ܐܚܕܢܝ. ܟܠܗܘܢ ܡܫܒܪܝܟ ܘܓܠܠܝܟ ܥܠܝ ܥܒܪܘ.
5 * ܐܢܐ ܐܡܪܬ. ܕܐܬܛܪܕܬ ܡܢ ܩܕܡ ܥܝܢܝܟ. ܟܡܐ ܐܘܣܦ ܐܢܐ ܠܡܚܙܐ ܠܗܝܟܠܐ
6 ܕܩܘܕܫܟ. * ܚܕܪܘܢܝ ܡܝܐ ܥܕܡܐ ܠܢܦܫܝ. ܬܗܘܡܐ ܚܕܪܢܝ. ܘܒܥܘܡܩܐ ܕܝܡܐ ܐܬܚܒܫ
7 ܪܫܝ. * ܘܠܥܩܪܝܗܘܢ ܕܛܘܪܐ ܢܚܬܬ. ܘܐܪܥܐ ܐܚܕܬ ܡܘܟܠܝܗ ܩܕܡܝ ܠܥܠܡ. ܘܐܣܩܬ
8 ܡܢ ܚܒܠܐ ܚܝܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ. * ܟܕ ܐܬܟܪܝܬ ܢܦܫܝ. ܠܡܪܝܐ ܐܬܕܟܪܬ. ܘܬܥܘܠ
9 ܩܕܡܝܟ ܨܠܘܬܝ ܠܗܝܟܠܐ ܕܩܘܕܫܟ. * ܟܠ ܕܢܛܪܝܢ ܕܓܠܘܬܐ ܣܪܝܩܬܐ. ܛܝܒܘܬܗܘܢ
10 ܫܒܩܘ. * ܐܢܐ ܕܝܢ ܒܩܠܐ ܕܬܘܕܝܬܐ ܐܕܒܚ ܠܟ. ܘܡܕܡ ܕܢܕܪܬ. ܐܦܪܘܥ ܦܘܪܥܢܐ
11 ܠܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܡܪܝܐ ܠܢܘܢܐ. ܘܐܦܩܗ ܠܝܘܢܢ ܠܝܒܫܐ.

Tunc homines illi ingenti formidine perculſi, 10
dixerunt ei; Quid feciſti? noverant enim homines illi quòd à conſpectu Dñi fugiſſet. Et 11
cùm indicâſſet illis, dixerunt ei; Quid faciemus
tibi ut tranquillũ reddatur nobis mare; quandoquidem ecce mare magìs magíſque agitatur contra nos? Dixit eis Jona; Tollite me, & 12
abjicite in mare, tum tranquillum reddetur
vobis mare: agnoſco enim hanc tempeſtatem
magnam propter me vobis accidiſſe. Tunc conati ſunt homines illi appellere ad aridam: 13
ſed cùm non potuiſſent, eò quòd mare magìs
magiſq; concitaretur in eos; Clamaverunt ad 14
Dñm, & dixerunt; Eja Dñe, ne *quaſo* pereamus pro anima viri iſtius, & ne culpæ vertas
nobis ſanguinem innoxium: nam tu Dominus
es, & quemadmodum vis, facis. Deinde tollentes Jonam, abjecerunt eum in mare, deſti- 15
títque mare à procellis ſuis. Quare homines 16
illi timuerunt Dominum timore magno, & ſacrificaverunt ſacrificia Dño, votáq; voverunt.

CAP. II.

PAraverat autem Domin⁹ piſcem magnum, 1
qui Jonam abſorbuit: manſitq; Jona in viſceribus piſcis illius tribus diebus & tribus noctibus. Et oravit Jona Dominum Deum ſuum 2
è viſceribus piſcis illius, ac dixit; Invocavi 3
Dominum in calamitate mea, & exaudivit me;
& de ventre inferi clamavi, & audîſti vocem
meam. Dejeciſti me in profundum in cor ma- 4
ris, & fluvius circundedit me: omnes fluctus
tui & undæ tuæ ſuper me tranſierunt: Adeò 5
ut dixerim longè me remotũ à conſpectu oculorum tuorum: num poſthac rurſus videbo
templum ſanctum tuum? Circundederunt me 6
aquæ uſq; ad animam, abyſſus vallavit me, &
in profundo maris concluſum eſt caput meum: Ad imum montium deſcendi, clauſerátq; 7
terra feras ſuas in faciem meã in perpetuum:
attamen extraxiſti vitam meam è corruptione,
Domine Deus meus. Dum exagitaretur ani- 8
ma mea, Domini ſum recordatus, & ingreſſa
eſt coram te oratio mea in templum ſanctum
tuum. Quicunq; obſequuntur numinibus fal- 9
ſis, clementiam tuam derelinquunt. Ego autem 10
cum voce gratiarum actionis ſacrificabo tibi:
& quòd vovi, perſolvam in retributionem
Domino. Deinde mandavit Dominus piſci, 11
dimiſitque Jonam in aridam.

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10 * فخاف الرجال خوفا عظيما وقالوا له لماذا صنعت هذا * من اجل ان الرجال علموا انه من وجه
11 الرب كان هاربا * لانه اخبرهم * فقالوا له ماذا نصنع بك فيسكن البحر عنا * لان البحر هاج
12 واقام بالاكثر موجا * فقال لهم يونان * ارفعوني والقوني في البحر فيسكن البحر عنكم * من اجل
13 اني انا علمت ان لاجلي هذا الموج العظيم صار عليكم * فجهد الرجال ان يردوها الي الارض
14 فلم يستطيعوا * لان البحر هاج وقام بالاكثر عليهم * فصرخوا الي الرب وقالوا * لا يا رب لا تهلكنا
من اجل نفس هذا الانسان * ولا تعط علينا دما عادلا * من اجل انك انت يا رب كما اردت
15 16 صنعت * واخذوا يونان والقوه في البحر * ووقف البحر من زعزعه * وخاف الرجال الرب خوفا
عظيما * وذبحوا ذبايح للرب * ونذروا نذورا *

* الفصل الثاني *

1 * وامر الرب حوتا عظيما ليبتلع يونان * وكان يونان في بطن الحوت ثلثة ايام وثلث ليال *
2 3 * وصلي يونان الي الرب الهه من بطن الحوت وقال * صرخت في حزني الي الرب الهي *
4 فاجابني من جوف الجحيم صراخي * سمعت صوتي * طرحتني الي اعماق قلب البحر * واحاطت
5 بي الانهار * جميع اهوالك وامواجك جازت علي * وانا قلت بعدت عن عينيك * ترى اعود
6 ان انظر الي هيكلك المقدس * اكتنفني الماء الي نفسي * احاط بي العمق الاخير * ارسخت
7 راسي في سقوف الجبال * نزلت الي الارض التي متاريسها ضابطة دهرية * فلتصعد من
8 الفساد حياتي اليك ايها الرب الهي * عند ما فنيت نفسي ذكرت الرب * فلياتي اليك صلاتي
9 10 الي هيكلك المقدس * حافظوا الاباطيل والكذب تركوا رحمهم * وانا بصوت تسبيح
11 واعتراف اذبح لك * والذي نذرته اوفيك اياه لخلاصي يا رب * وامر الرب الحوت فالقي
يونان الي اليبس *

Quare homines illi magno timore perter- 10
riti, dixerunt ei; Quarè hoc feciſti? homines enim illi noverant quòd à facie Domini fugeret, quoniam ipſe indicaverat
eis. Et dixerunt ei; Quid faciemus tibi, 11
ut quieſcat à nobis mare? nam mare furebat, majoréſque fluctus excitabat. Ait 12
eis Jonas; Tollite me, & projicite me in
mare, quieſcétque à vobis mare: nam ego
novi quòd mei causâ tam ingens procella vobis acciderit. Tunc conati ſunt 13
homines illi ut eam reducerent ad terram,
ſed non potuerunt; quia mare furens erat,
& magìs magiſque intumeſcebat in eos.
Quare clamaverunt ad Dominum, & di- 14
xerunt; Ne O Domine, ne pereamus propter animam hujus hominis, & ne des ſuper nos ſanguinem juſtum: quia tu O Domine, prout voluiſti feciſti. Tum ſubla- 15
tum Jonam projecerunt in mare, deſtititque mare ab agitatione ſua. Quapropter 16
timuerunt homines illi Dominum timore
magno, & immolaverunt ſacrificia Domino, & vota voverunt.

CAP. II.

P*Ræcepit autem Dominus ceto magno* 1
ut deglutiret Jonam: fuitque Jona in
ventre ceti tribus diebus & tribus noctibus: Et oravit Jona Dominum Deum 2
ſuum de ventre ceti, et ait; Clamavi in 3
mœrore meo ad Dominum Deum meum;
& exaudivit me, de ventre inferi clamorem meum, audîſti vocem meam. Pro- 4
jeciſti me in profunda cordis maris, &
circundederunt me flumina: omnes terrores tui & fluctus tui tranſierunt ſuper
me. Quapropter dixi, Receſſi ab oculis 5
tuis: fierine poteſt ut iterum videam
templum tuum ſanctum? Cinxit me 6
aqua uſque ad animam meam, ſepivit me
abyſſus ultima, infixiſti caput meum in
hiatibus montium: Deſcendi in terram 7
cujus aggeres ſolidi ſunt ac ſempiterni:
jam verò aſcendat è corruptione vita mea
ad te O Domine mi Deus. Ubi deficeret 8
anima mea, recordatus ſum Domini: veniat igitur ad te oratio mea in templum
ſanctum tuum. Obſervatores vanita- 9
tum & mendacii dereliquerunt miſericordiam ſuam. Ego autem cum voce 10
laudis & gratiarum actionis immolabo
tibi; & quod vovi, perſolvam tibi pro
ſalute O Domine. Præcepitque Dominus 11
ceto, & is Jonam ejecit in aridam.

CAP. III. ג

1 , Surge : dicendo ,secundò Jonah ad Domini verbum fuit Et
וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֶל־יוֹנָה שֵׁנִית לֵאמֹר : קוּם 2
eam ad prædica & ,magnam civitatem Nineveh *ad* vade
לֵךְ אֶל־נִינְוֵה הָעִיר הַגְּדוֹלָה וּקְרָא אֵלֶיהָ אֶת־
abiit & ,Jonah surrexit Et .te ad *loquens ego* quam,prædicationem
הַקְּרִיאָה אֲשֶׁר אָנֹכִי דֹּבֵר אֵלֶיךָ : וַיָּקָם יוֹנָה וַיֵּלֶךְ 3
civitas erat Nineveh & ; Domini verbum juxta Nineveh ad
אֶל־נִינְוֵה כִּדְבַר יְהוָה וְנִינְוֵה הָיְתָה עִיר־
Jonah cœpit Et .dierum trium itinere , *Deo* magna
גְּדוֹלָה לֵאלֹהִים מַהֲלַךְ שְׁלֹשֶׁת יָמִים : וַיָּחֶל יוֹנָה 4
Adhuc : dixit & clamavit & , unius diei itinere civitate in introire
לָבוֹא בָעִיר מַהֲלַךְ יוֹם אֶחָד וַיִּקְרָא וַיֹּאמַר עוֹד
viri crediderunt Et .*subversa* Nineveh & , dies quadraginta
אַרְבָּעִים יוֹם וְנִינְוֵה נֶהְפָּכֶת : וַיַּאֲמִינוּ אַנְשֵׁי 5
, saccis sunt vestiti & , jejunium prædicaverunt & ,Deo *in* Nineveh
נִינְוֵה בֵּאלֹהִים וַיִּקְרְאוּ־צוֹם וַיִּלְבְּשׁוּ שַׂקִּים
ad verbum *pertigit* Et .eorum minorem ad usque & eorum majore à
מִגְּדוֹלָם וְעַד־קְטַנָּם : וַיִּגַּע הַדָּבָר אֶל־ 6
suam magnificā vestē fecit transire &,suo solio de surrexit &,Nineveh regem
מֶלֶךְ נִינְוֵה וַיָּקָם מִכִּסְאוֹ וַיַּעֲבֵר אַדַּרְתּוֹ
fecit proclamare Et .cinerem super sedit & ,sacco se operuit &,se *desuper*
מֵעָלָיו וַיְכַס שַׂק וַיֵּשֶׁב עַל־הָאֵפֶר : וַיַּזְעֵק 7
: dicendo , ejus *magnatum* & ,*regis* decreto ex Nineveh in *dixit &*
וַיֹּאמֶר בְּנִינְוֵה מִטַּעַם הַמֶּלֶךְ וּגְדֹלָיו לֵאמֹר
, quicquam gustent non , *pecus &* , *bos* , *jumentum &* , *Homo*
הָאָדָם וְהַבְּהֵמָה הַבָּקָר וְהַצֹּאן אַל־יִטְעֲמוּ מְאוּמָה
homo saccis operiantur Et .bibant non aquam & ,pascantur nec
אַל־יִרְעוּ וּמַיִם אַל־יִשְׁתּוּ : וְיִתְכַּסּוּ שַׂקִּים הָאָדָם 8
vir convertantur & fortitudine in Deum ad clament & , *jumentum &*
וְהַבְּהֵמָה וְיִקְרְאוּ אֶל־אֱלֹהִים בְּחָזְקָה וְיָשֻׁבוּ אִישׁ
sciens Quis .suis *volis in* quæ , *rapina à* & , mala sua via à
מִדַּרְכּוֹ הָרָעָה וּמִן־הֶחָמָס אֲשֶׁר בְּכַפֵּיהֶם : מִי־יוֹדֵעַ 9
non & , suæ *naris* furore à avertatur & , Deum pœniteat & convertatur
יָשׁוּב וְנִחַם הָאֱלֹהִים וְשָׁב מֵחֲרוֹן אַפּוֹ וְלֹא
sunt conversi quia : eorum opera Deus vidit Et ? peribimus
נֹאבֵד : וַיַּרְא הָאֱלֹהִים אֶת־מַעֲשֵׂיהֶם כִּי־שָׁבוּ 10
quod , *malo super* Deum pœnituit & : mala sua via à
מִדַּרְכָּם הָרָעָה וַיִּנָּחֶם הָאֱלֹהִים עַל־הָרָעָה אֲשֶׁר־
.fecit non & , eis *faciendum ad* fuerat locutus
דִּבֶּר לַעֲשׂוֹת־לָהֶם וְלֹא עָשָׂה :

CAP. IV. ד

oravit Et .ei *fuit ira &* , *magnum malum* , *Jonah ad fuit malum* Et
וַיֵּרַע אֶל־יוֹנָה רָעָה גְדוֹלָה וַיִּחַר לוֹ : וַיִּתְפַּלֵּל 1 2
hoc nonne , Domine Obsecro : dixit & , Dominum ad
אֶל־יְהוָה וַיֹּאמַר אָנָּה יְהוָה הֲלוֹא־זֶה
præoccupavi Ideò ? mea *humo super me existiente adhuc* ,meum verbum
דְבָרִי עַד־הֱיוֹתִי עַל־אַדְמָתִי עַל־כֵּן קִדַּמְתִּי
, *gratiosus* Deus tu quòd novi quia : Tarsis in *fugere*
לִבְרֹחַ תַּרְשִׁישָׁה כִּי יָדַעְתִּי כִּי אַתָּה אֵל־חַנּוּן
super pœnitens &,misericordiæ *multus &* ,*narium longus* , misericors &
וְרַחוּם אֶרֶךְ אַפַּיִם וְרַב־חֶסֶד וְנִחָם עַל־
; me à meam animam quæso tolle , Domine nunc Et .malo
הָרָעָה : וְעַתָּה יְהוָה קַח־נָא אֶת־נַפְשִׁי מִמֶּנִּי 3
benefacere Num : Dominus dixit Et .*meis vitis præ* mea mors *bona* quia
כִּי טוֹב מוֹתִי מֵחַיָּי : וַיֹּאמֶר יְהוָה הַהֵיטֵב 4
? tibi est ira
חָרָה לָךְ :

Versio VULG. LAT.

CAP. III.

1 ET factum est verbum Domini
2 ad Jonam secundò, dicens; Surge,
& vade in Ninivem civitatem
magnam : & prædica in ea prædicationem,
quam ego loquor ad
3 te. Et surrexit Jonas, & abiit in
Ninivem juxta verbum Domini :
& Ninive erat civitas magna itinere
4 trium dierum. Et cœpit Jonas
introire in civitatem itinere
diei unius : & clamavit, & dixit;
Adhuc quadraginta dies, & Ninive
5 subvertetur. Et crediderunt
viri Ninivitæ in Deum : & prædicaverunt
jejunium, & vestiti
sunt saccis à majore usque ad minorem.
6 Et pervênit verbum ad
regem Ninive : & surrexit de solio
suo, & abjecit vestimentum
suum à se, & indutus est sacco, &
7 sedit in cinere. Et clamavit, &
dixit in Ninive ex ore regis &
principum ejus, dicens; Homines,
& jumenta, & boves, & pecora
non gustent quidquam : nec
pascantur, & aquam non bibant.
8 Et operiantur saccis homines, &
jumenta, & clament ad Dominum
in fortitudine, & convertatur vir
à via sua mala, & ab iniquitate,
9 quæ est in manibus eorum. Quis
scit si convertatur & ignoscat
Deus : & revertatur à furore iræ
10 suæ, & non peribimus? Et vidit
Deus opera eorum, quia conversi
sunt de via sua mala : & misertus
est Deus super malitiam, quam
locutus fuerat ut faceret eis, &
non fecit.

CAP. IV.

1 ET afflictus est Jonas afflictione
2 magnâ, & iratus est : Et oravit
ad Dominum, & dixit; Obsecro,
Domine, numquid non est
hoc verbum meum, cùm adhuc
essem in terra mea? propter hoc
præoccupavi ut fugerem in Tharsis :
scio enim quia tu De⁹ clemens
& misericors es, patiens & multæ
miserationis, & ignoscens super
3 malitia. Et nunc Domine,
tolle quæso, animam meam à me :
quia melior est mihi mors quàm
4 vita. Et dixit Dominus; Putásne
benè irasceris tu?

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ΚΕΦ. γʹ.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἰωνᾶν
2 ἐκ δευτέρου, λέγων, Ἀνάστηθι, (˜) πορεύθητι
εἰς Νινευὴ τὴν πόλιν τὴν μεγάλην, καὶ κήρυξον
ἐν αὐτῇ κατὰ τὸ κήρυγμα τὸ ἔμπροσθεν,
3 ὃ ἐγὼ ἐλάλησα πρὸς σέ. Καὶ ἀνέστη
Ἰωνᾶς, καὶ ἐπορεύθη εἰς Νινευὴ, (α)
καθὰ ἐλάλησε κύριος. ἡ δὲ Νινευὴ ἦν πόλις
μεγάλη τῷ Θεῷ, ὡσεὶ πορείας ὁδοῦ (β)
4 τριῶν ἡμερῶν· Καὶ ἤρξατο Ἰωνᾶς τοῦ (γ)
εἰσελθεῖν εἰς τὴν πόλιν, ὡσεὶ πορείαν ἡμέρας
μιᾶς· καὶ ἐκήρυξε, καὶ εἶπεν, Ἔτι τρεῖς ἡμέραι,
5 καὶ Νινευὴ καταστραφήσεται. Καὶ ἐνεπίστευσαν
οἱ ἄνδρες Νινευὴ τῷ Θεῷ, καὶ ἐκήρυξαν
νηστείαν, καὶ ἐνεδύσαντο σάκκους
ἀπὸ (δ) μεγάλου αὐτῶν ἕως μικροῦ αὐτῶν.
6 Καὶ ἤγγισεν ὁ λόγος πρὸς τὸν βασιλέα τῆς
Νινευὴ, καὶ ἐξανέστη ἀπὸ τοῦ θρόνου αὐτοῦ, καὶ
περιείλατο τὴν στολὴν αὐτοῦ ἀφ' ἑαυτοῦ, καὶ περιεβάλετο
σάκκον, καὶ ἐκάθισεν ἐπὶ σποδοῦ.
7 Καὶ ἐκηρύχθη, καὶ ἐῤῥέθη ἐν τῇ Νινευὴ
παρὰ τοῦ βασιλέως καὶ παρὰ τῶν μεγιστάνων
αὐτοῦ, λέγων, Οἱ ἄνθρωποι, καὶ
τὰ κτήνη, καὶ οἱ βόες, καὶ τὰ πρόβατα μὴ
(ε) γευσάσθωσαν, μηδὲ νεμέσθωσαν, μηδὲ
8 ὕδωρ πιέτωσαν. Καὶ (¨) περιεβάλλοντο σάκκους
οἱ ἄνθρωποι, καὶ τὰ κτήνη, καὶ ἀνεβόησαν
πρὸς τὸν Θεὸν ἐκτενῶς. καὶ (ζ) ἀπέστρεψαν
ἕκαστος ἀπὸ τῆς ὁδοῦ (η) αὐτῶν τῆς πονηρᾶς,
καὶ ἀπὸ τῆς ἀδικίας τῆς ἐν χερσὶν αὐτῶν, λέγοντες,
9 Τίς οἶδεν εἰ μετανοήσει ὁ Θεὸς,
καὶ ἀποστρέψει ἐξ ὀργῆς θυμοῦ αὐτοῦ, καὶ οὐ
10 μὴ ἀπολώμεθα; Καὶ εἶδεν ὁ Θεὸς τὰ ἔργα
αὐτῶν, ὅτι ἀπέστρεψαν ἀπὸ τῶν ὁδῶν
αὐτῶν τῶν πονηρῶν, καὶ μετενόησεν ὁ Θεὸς
ἐπὶ (θ) τῇ κακία, ᾗ ἐλάλησε τοῦ ποιῆσαι
αὐτοῖς, καὶ οὐκ ἐποίησε.

CAP. III.

ET factus est sermo Domini ad 1
Jonam secundò, dicens; Surge, 2
vade in Nineven civitatem magnam :
& prædica in ea juxta
prædicationem priorem, quam ego
loquutus sum ad te. Et surrexit 3
Jonas, & abiit in Nineven, sicut
[ei] loquutus fuerat Dominus. Erat
autem Nineve civitas magna
Deo, quasi itinere viæ dierum
trium. Et cœpit Jonas ingredi in 4
civitatem, quasi itinere diei unius :
& prædicavit, & dixit;
Adhuc (a) tres dies, & Nineve
subvertetur. Et crediderunt viri 5
Nineve Deo, & prædicaverunt
jejunium, & vestiti sunt saccis à
magno eorum usque ad parvum
eorum. Et appropinquavit sermo 6
ad regem Nineve : & surrexit
de throno suo, & abstulit stolam
suam à se, & coopertus est sacco,
& sedit in cinere. Et prædicatum est, 7
(b) & dictum est in Nineve à rege,
& à magnatibus ejus, dicendo; Homines, &
jumenta, & boves, & oves non
gustent quicquam, nec pascantur,
& aquam non bibant. Et cooperti 8
sunt saccis homines, & jumenta,
& clamaverunt ad Dominum
vehementer. Et reversi sunt unusquisque
de via sua mala, &
ab iniquitate, quæ erat in manibus
eorum, dicentes; Quis scit, 9
(c) si pœniteat Deum, & avertatur
ab ira furoris sui, & non
peream us? Et vidit Deus opera 10
eorum, quoniam reversi sunt de
viis suis malis : & egit pœnitentiam
Deus super malitia, quam loquutus
fuerat, ut faceret eis :
et non fecit.

MS.A. (˜) καὶ πορεύθητι (α) καθὼς (β) ἡμερῶν τριῶν· (γ) εἰσπορεύεσθαι εἰς τὴν πόλιν, ὡσεὶ πορίας ὁδοῦ ἡμέρας (δ) μικροῦ ἕως μεγάλου αὐτῶν. (ε) γευέσθωσαν μηδὲν, μηδὲ (¨) περιεβάλοντο (ζ) ἀπέστρεψεν (η) αὐτοῦ (θ) τὰ κακὰ, ἃ

ΚΕΦ. δʹ.

1 ΚΑὶ ἐλυπήθη Ἰωνᾶς λύπην μεγάλην·
2 καὶ συνεχύθη, Καὶ (α) προσεύξατο πρὸς
κύριον, καὶ εἶπεν, Ὦ κύριε, οὐχ οὗτοι οἱ
λόγοι μου, (β) ἔτι ὄντος μου ἐν τῇ γῇ μου;
διατοῦτο προέφθασα τοῦ φυγεῖν εἰς Θαρσὶς,
διότι ἔγνων ὅτι σὺ ἐλεήμων καὶ οἰκτίρμων,
μακρόθυμος καὶ πολυέλεος, καὶ μετανοῶν
3 ἐπὶ ταῖς κακίαις. Καὶ νῦν δέσποτα κύριε,
λάβε τὴν ψυχήν μου ἀπ' ἐμοῦ, ὅτι καλὸν
4 τὸ ἀποθανεῖν με ἢ (γ) ζῆν με. Καὶ
εἶπε κύριος πρὸς Ἰωνᾶν, Εἰ σφόδρα λελύπησαι
σύ;

CAP. IV.

ET contristatus est Jonas tristitiâ 1
magnâ : & confusus est :
Oravitque ad Dominum, & (a) 2
ait; O Domine, nonne isti sunt
sermones mei, cùm adhuc essem
in terra mea? Propterea præoccupavi
fugere in Tharsis; quia
sciebam, quòd tu misericors, &
miserator, patiens, & multæ miserationis,
& agens pœnitentiam
super malitiis. Et nunc, Dominator 3
Domine, tolle animam meam
à me : quia melius est mihi mori,
quàm vivere. Et dixit Dominus 4
ad Jonam, (b) Si vehementer
contristatus es tu?

MS.A. (α) προσηύξατο (β) οὓς ἐλάλησα ἔτι (γ) ζῆν. Καὶ εἶπε

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ג

וַהֲוָה פִּתְגָם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ עִם יוֹנָה תִּנְיָנוּת לְמֵימַר : קוּם אֵיזִיל לְנִינְוֵה קַרְתָּא 1 2
רַבְּתָא וְאִתְנַבֵּי עֲלַהּ יָת נְבוּאֲתָא דִּי אֲנָא מְמַלֵּל עִמָּךְ : וְקָם יוֹנָה וַאֲזַל לְנִינְוֵה כְּפִתְגָמָא 3
דַּייָ וְנִינְוֵה הֲוָת קַרְתָּא רַבְּתָא קֳדָם יְיָ מַהֲלַךְ תְּלָתָא יוֹמִין : וּשְׁרֵי יוֹנָה לְמֵיעַל בְּקַרְתָּא 4
מַהֲלַךְ יוֹמָא חַד וְאַכְרִיז וַאֲמַר בְּסוֹף אַרְבְּעִין יוֹמִין וְנִינְוֵה מִתְהַפְכָא : וְהֵימִינוּ אֱנָשֵׁי 5
נִינְוֵה בְּמֵימְרָא דַייָ וּגְזַרוּ צוֹמָא וַאֲסַרוּ שַׂקִּין מֵרַבְּהוֹן וְעַד זְעֵירְהוֹן : וּמְטָא פִּתְגָמָא 6
לְוַת מַלְכָּא דְנִינְוֵה וְקָם מִכּוּרְסֵי מַלְכוּתֵיהּ וְאַעְדִּי לְבוּשֵׁי יְקָרֵיהּ מִנֵּיהּ וְאִתְכַּסִּי שַׂקָּא
וִיתִיב עַל קִטְמָא : וְאַכְרִיז וַאֲמַר בְּנִינְוֵה מִגְּזֵירַת מַלְכָּא וְרַבְרְבָנוֹהִי לְמֵימַר אֱנָשָׁא 7
וּבְעִירָא תּוֹרָא וְעָנָא לָא יִטְעֲמוּן מִדַּעַם וְלָא יִרְעוּן וּמַיָּא לָא יִשְׁתּוּן : וְיִתְכַּסּוּן 8
סַקִּין אֱנָשָׁא וּבְעִירָא וִיצַלּוּן קֳדָם יְיָ בִּתְקוֹף וִיתוּבוּן גְּבַר מֵאוֹרְחֵיהּ בִּישְׁתָּא וּמִן
חֲטוֹפָא דִּבְידֵיהוֹן : מַן יָדַע דְּאִית בִּידֵיהּ חוֹבִין יְתוּב מִנְּהוֹן וְיִתְרַחֵם עֲלוֹהִי מִן קֳדָם יְיָ 9
וִיתוּב מִתְּקוֹף רוּגְזֵיהּ וְלָא נוֹבַד : וּגְלֵן קֳדָם יְיָ עוֹבָדֵיהוֹן אֲרֵי תָבוּ מֵאוֹרְחָתְהוֹן בִּישְׁתָּא 10
וְתָב יְיָ מִן בִּישְׁתָּא דִּי מַלֵּיל לְמֶעְבַּד לְהוֹן וְלָא עֲבַד :

ד

וּבְאֵשׁ לְיוֹנָה בִּישָׁא רַבָּא וּתְקֵיף לֵיהּ : וְצַלִּי קֳדָם יְיָ וַאֲמַר קַבֵּל בָּעוּתִי יְיָ הֲלָא 1 2
דֵּין פִּתְגָמִי עַד דַּהֲוֵיתִי עַל אַרְעִי עַל כֵּן אוֹחֵיתִי לְמֶעְרַק לְיַמָּא אֲרֵי יְדַעְנָא אֲרֵי אַתְּ
אֱלָהָא חַנָּנָא וְרַחֲמָנָא מַרְחִיק רְגַז וּמַסְגֵּי לְמֶעְבַּד טָבְוָן וּמְתִיב מֵימְרֵיהּ מִלְאַיְתָאָה
בִּישְׁתָּא : וּכְעַן יְיָ סַב כְּעַן יָת נַפְשִׁי מִנִּי אֲרֵי טָב דְּאֵמוּת מִדְּאֵחֵי : וַאֲמַר יְיָ הֲלַחְדָּא 3 4
תְּקֵיף לָךְ :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. III.

FActum est autem verbum prophetiæ à facie Dñi cum Jona iterum dicendo: 1
Surge, vade in Niniven civitatem magnam, & vaticinare contra eam prophetiam 2
quam ego tecum loquor. Surrexit itaq; Jonas, & ad Niniven contendit 3
juxta sermonem Dñi. Ninive autem erat civitas permagna coram Dño,
itinere trium dierum. Cœpit autem Jonas intrare civitatem itinere unius 4
diei, & præconizavit, dixitque : Post finem quadraginta dierum Ninive subvertenda
est. Et crediderunt viri Ninivitæ verbo Dñi : indixeruntq; jejunium, 5
& induerunt se saccis à maximo eorum usq; ad eorundem minimum.
Pervenit quoq; verbum ad regem Ninive, qui surrexit de solio regni sui, & 6
depositis gloriæ suæ *indumentis*, sacco opertus est, ac in cinere sedit. Atque 7
per præconem proclamare jussit ac dicere per Niniven ex regis ac principum
ejus decreto, in hæc verba : Vir, jumentum, boves & oves, ne quicquam
degustent, neq; pascantur, sed neq; aquas bibant. Sed operiantur saccis homines 8
& jumenta, & orent coram Dño cum instantia, atque convertatur
unusquisque à via sua mala, & à rapina quæ est in manibus suis. Quisquis 9
penes se existere peccata agnorit, avertatur ab eis, & misericordia fiet illi
à Dño, atque avertetur à vehementia iræ suæ, nec peribimus. Et manifesta 10
facta sunt coram Dño opera eorum, quòd conversi essent à via sua mala : quapropter
conversus est Dñs à malo quod locut⁹ fuerat se facturum eis, nec fecit.

CAP. IV.

ET molestum fuit Jonæ dolore maximo, iratusq; est. Et oravit coram Dño,
dicens : Suscipe deprecationem meam Dñe : nunquid non erat hoc verbum
meum dum adhuc *eram* in terra mea? ideò festinaram confugere ad mare,
quod compertum haberem te Deum esse clementem, misericordem, qui iram
cohibeas, & multa beneficia conferas, & sententiam revoces, quò minus
infligas. Nunc ergo Dñe, tolle obsecro animam meam à me : melius enim est
ut moriar, quàm ut vivam. Dixit itaq; Dñs : Nunquid vehementer irasceris

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

* ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܝܘܢܢ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ. ܟܕ ܐܡܪ. * ܩܘܡ ܙܠ ܠܢܝܢܘܐ 1
ܡܕܝܢܬܐ ܪܒܬܐ. ܘܐܟܪܙ ܒܗ ܟܪܘܙܘܬܐ ܕܐܡܪ ܐܢܐ ܠܟ. * ܘܩܡ ܝܘܢܢ ܘܐܙܠ ܠܢܝܢܘܐ ܐܝܟ 2
ܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܢܝܢܘܐ ܡܕܝܢܬܐ ܗܘܬ ܪܒܬܐ ܠܐܠܗܐ. ܡܪܕܝܬܐ ܕܬܠܬܐ ܝܘܡܝܢ. * ܘܫܪܝ ܝܘܢܢ 3
ܠܡܥܠ ܠܢܝܢܘܐ ܡܪܕܝܬܐ ܕܝܘܡܐ ܚܕ. ܘܐܟܪܙ ܘܐܡܪ. ܥܕܡܐ ܠܐܪܒܥܝܢ ܝܘܡܝܢ ܢܝܢܘܐ ܡܬܗܦܟܐ. 4
* ܘܗܝܡܢܘ ܐܢܫܝܗ ܕܢܝܢܘܐ ܒܐܠܗܐ. ܘܩܪܘ ܨܘܡܐ. ܘܠܒܫܘ ܣܩܐ. ܡܢ ܪܘܪܒܢܝܗܘܢ 5
ܘܥܕܡܐ ܠܙܥܘܪܝܗܘܢ. * ܘܡܛܬ ܡܠܬܐ ܠܡܠܟܐ ܕܢܝܢܘܐ. ܘܩܡ ܡܢ ܟܘܪܣܝܗ. ܘܐܥܒܪ 6
ܬܓܗ ܡܢܗ. ܘܠܒܫ ܣܩܐ. ܘܝܬܒ ܥܠ ܩܛܡܐ. * ܘܐܟܪܙܘ ܘܐܡܪܘ ܒܢܝܢܘܐ. ܡܢ ܦܘܩܕܢܐ 7
ܕܡܠܟܐ ܘܕܪܘܪܒܢܘܗܝ. ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. ܬܘܪܐ ܘܥܢܐ. ܠܐ ܢܛܥܡܘܢ ܡܕܡ. ܘܠܐ ܢܪܥܘܢ.
ܘܐܦ ܠܐ ܡܝܐ ܢܫܬܘܢ. * ܐܠܐ ܢܬܟܣܘܢ ܣܩܐ ܒܢܝܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. ܘܢܩܪܘܢ ܠܐܠܗܐ. ܒܬܢܚܬܐ. 8
ܘܢܬܦܢܘܢ ܐܢܫ ܡܢ ܐܘܪܚܗ ܒܝܫܬܐ. ܘܡܢ ܚܛܘܦܝܐ ܕܐܝܬ ܒܐܝܕܝܗܘܢ. * ܡܢ ܝܕܥ ܐܢ 9
ܡܬܦܢܐ ܐܠܗܐ ܘܡܪܚܡ ܥܠܝܢ. ܘܡܗܦܟ ܡܢܢ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܘܠܐ ܢܐܒܕ. * ܘܚܙܐ 10
ܐܠܗܐ ܠܥܒܕܝܗܘܢ ܕܗܦܟܘ ܡܢ ܐܘܪܚܬܗܘܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܐܗܦܟ ܡܢܗܘܢ ܚܡܬܐ
ܕܪܘܓܙܗ. ܘܠܐ ܐܘܒܕ ܐܢܘܢ.

CAP. III.

FUitque ſermo Domini ad Jonam ſecundâ vice, dicendo; Surge, vade in Niniven urbem 1
magnam, & prædica ei prædicationem quam dico tibi. Surgens itaque Jona abiit in Niniven juxta verbum Domini. (porrò Ninive 2
urbs erat maxima Deo, itinere trium dierum) 3
Cúmq; cœpiſſet Jona ingredi Niniven itinere die unius, prædicavit, ac dixit; Hinc ad quadraginta dies Ninive ſubvertetur. 4
Credentes itaque Ninivitæ Deo, indixerunt jejunium, & ſaccos induerunt tam maximi eorum quàm minimi. 5
Et cùm perveniſſet verbum iſtud ad regem Ninives, ſurrexit è ſolio ſuo, depoſitóq; diademate ſuo induit ſe cilicio, ſedítq; ſuper cinere. 6
Deinde proclamaverunt, & dixerunt in Ninive; Ex decreto regis & procerum ejus, homines & jumenta, boves & oves quicquam ne guſtent, non paſcantur, ac ne aquam bibant: 7
Sed operiantur ciliciis tam homines quàm jumenta, Deum cum gemitu invocent, & deſiſtat quiſque à via ſua mala, & à rapina quæ eſt in manibus ejus. 8
Quis ſcit an reverſus Deus miſereatur noſtrî, & avertat à nobis æſtum iræ ſuæ ne pereamus. 9
Videns ergò Deus opera eorum, quòd *ſcilicet* reverſi eſſent à viis ſuis pravis; avertit ab eis æſtum iræ ſuæ, & non perdidit eos. 10

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܘܒܐܫ ܠܝܘܢܢ ܒܝܫܬܐ ܪܒܬܐ. ܘܥܩܬ ܠܗ ܛܒ. * ܘܨܠܝ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܡܪ. ܐܘ 1
ܡܪܝܐ. ܠܐ ܗܘܐ ܗܢܐ ܡܠܬܝ ܟܕ ܐܝܬ ܗܘܝܬ ܒܐܪܥܝ. ܡܛܠ ܗܢܐ ܩܕܡܬ ܥܪܩܬ ܠܝ 2
ܠܬܪܫܝܫ ܝܕܥ ܗܘܝܬ ܓܝܪ ܕܐܠܗܐ ܐܢܬ ܚܢܢܐ ܘܡܪܚܡܢܐ. ܘܢܓܝܪ ܪܘܚܐ
ܘܣܓܝܐ ܛܝܒܘܬܐ. ܘܡܬܬܘܐ ܐܢܬ ܥܠ ܒܝܫܬܐ. * ܘܗܫܐ ܡܪܝܐ. ܣܒ ܢܦܫܝ ܡܢܝ. ܡܛܠ 3
ܕܦܩܚ ܠܝ ܕܐܡܘܬ. ܝܬܝܪ ܡܢ ܕܐܚܐ. * ܘܐܡܪ ܠܗ ܡܪܝܐ. ܝܬܝܪ ܥܩܬ ܠܟ. 4

CAP. IV.

DIſplicuit id autem Jonæ vehementer, & doluit ei admodum. 1
Proinde oravit Dominum, & dixit; Eja Domine, annon erat hic verbum meum dum eſſem in terra mea? ob id fugam in Tharſis maturaveram, quippe qui nôſſem te Deum eſſe clementem atque miſericordem, longanimem, & copioſæ bonitatis, teque malum avertere. 2
Jam ergò mi Domine, tolle à me animam meam; quia ſatius mihi fuerit mori quàm vivere. 3
Dixit ei Dominus, Adeóne tibi diſplicuit? 4

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* الفصل الثالث * الاصحاح الرابع عشر وهو الثاني من النبوة *

1 * وكان قول الرب الي يونان ثانية قايلا * قم وامض الي نينوي المدينة العظيمة * وناد فيها 2
3 كالنداء الذي من قبل * الذي تكلمت به معك * فقام يونان ومضي الي نينوي كما
4 كلمه الرب * وكانت نينوي مدينة عظيمة لله نحو مسلك طريق ثلاثة ايام * وابتدي يونان
ان يدخل الي المدينة نحو مسلك طريق يوم واحد * ونادي وقال * الي ثلاثة ايام ونينوي
5 تخسف * فامنت رجال نينوي بالله * ونادوا صوما * ولبسوا مسوحا من كبيرهم الي صغيرهم
6 * واقترب القول الي ملك نينوي * فقام عن كرسيه * ونزع حلته عنه ولبس مسحا * وجلس
7 علي الرماد * ونودي وقيل في نينوي من قبل الملك ومن قبل عظمايه قايلين * الناس
8 والبهايم * والبقر والغنم لا يذوقوا شيا * ولا يرتعوا * ولا يشربوا ماء * ولبس المسوح الناس
9 والبهايم * وصرخوا الي الله بامتداد * ورجع كل واحد عن طريقه الشرير * وعن الظلم
الذي في يديهم قايلين * من علم هل يتوب الله ويتعطف * ويرجع عن غضبه ولا نهلك *
10 * ونظر الله اعمالهم انهم رجعوا عن طرقهم الشريرة * وتاب الله علي الشر الذي تكلم به
ليصنعه بهم * ولم يصنعه *

CAP. III.

Textus decimus quartus, hujus autem prophetiæ ſecundus.

ET fuit ſermo Domini ad Jonam ſecundò, dicens; 1
Surge, & abi in Niniven urbem magnam, & proclama in ea ſecundum proclamationem illam priorem quam tibi dixeram. 2
Surrexit ergò Jona, & adivit Niniven, quemadmodum allocutus eſt eum Dominus. Erat autem Ninive urbs maxima Deo, circiter ſpatium itineris trium dierum. 3
Et cùm cœpiſſet Jona urbem penetrare circa ſpatium itineris diei unius, proclamavit, ac dixit; Ad tres dies Ninive ſubvertetur. 4
Crediderunt Ninivitæ Deo, & indixerunt jejunium, indueruntque ſe ciliciis à maximo ad minimum. 5
Imò accedente ejuſmodi ſermone ad regem Ninives, ſurrexit è throno ſuo, depoſitaque à ſe chlamyde ſuâ induit ſeditque ſuper cinerem. 6
Et proclamatum dictúmque fuit in Ninive nomine regis & nomine principum ejus, hiſce verbis; Homines & jumenta, boves & oves ne guſtent quicquam, ne veſcantur, néve aquam bibant. 7
Itaque ciliciis induti ſunt homines & jumenta, & clamaverunt ad Deum prolixè, & retraxit ſe quiſque à via ſua mala & ab iniquitate quæ erat in manibus eorum, dicentes; 8
Quis novit an Deum pœniteat, clementiâ utatur, deſiſtátque ab ira ſua, neque pereamus? 9
Quare cùm vidiſſet Deus opera eorum, quòd retraxiſſent ſe à viis ſuis malis; pœnituit Deum calamitatis quam eis illaturum ſe dixerat, & non intulit eam. 10

* الفصل الرابع *

1 * حزن يونان حزنا عظيما * وانقبض * وصلي الي الرب وقال * يا رب اليس هذه كلماتي التي 2
تكلمت بها اذ كنت في ارضي * لاجل هذا سبقت لاهرب الي ترسيس * من اجل اني علمت
3 انك انت رحوم متراف * وطويل الروح * وكثير الرحمة * وتايب علي شرور الناس * والان
4 ايها السيد الرب خذ نفسي مني * لانه جيد لي ان اموت بالاكثر من ان احيا * فقال الرب
ليونان * قد حزنت انت جدا *

CAP. IV.

COntriſtatus eſt autem Jona triſtitiâ magnâ, & frontem contraxit: 1
Oravitque ad Dominum, & ait, O Domine, nónne hæc ſunt verba mea quæ locutus fueram dum eſſem in terra mea? hac de re anteverteram fugiendo in Tharſis, quia noveram te eſſe miſericordem, clementem, longanimum, & multæ miſericordiæ, teque pœnitere malorum hominum. 2
Nunc itaque O Here Domine, tolle à me animam meam; quia conſultius eſt mihi mori potiùs quàm vivere. 3
Dixit autem Dominus ad Jonam; Jam tu vehementer contriſtatus es? 4

מיכה : א

, civitatis Oriente ab fedit & , civitate de Jonah eſt egreſſus Et
וַיֵּצֵא יוֹנָה מִן־הָעִיר וַיֵּשֶׁב מִקֶּדֶם לָעִיר 5
, umbra in illud ſubter ſedebat & , tabernaculum ibidem ſibi fecit &
וַיַּעַשׂ לוֹ שָׁם סֻכָּה וַיֵּשֶׁב תַּחְתֶּיהָ בַּצֵּל
præparavit Et .*civitate in* futurum eſſet quid videret donec
עַד־אֲשֶׁר יִרְאֶה מַה־יִּהְיֶה בָּעִיר׃ וַיְמַן 6
exiſtendum ad , Jonah *deſuper* aſcendit & *: ricimum* Deus Dominus
יְהוָה־אֱלֹהִים קִיקָיוֹן וַיַּעַל מֵעַל לְיוֹנָה לִהְיוֹת
eſt lætatus & : ejus malo à eum *eruendum ad* , ejus caput ſuper *umbram*
צֵל עַל־רֹאשׁוֹ לְהַצִּיל לוֹ מֵרָעָתוֹ וַיִּשְׂמַח
Deus præparavit Et .magna lætitia *ricino* ſuper Jonah
יוֹנָה עַל־הַקִּיקָיוֹן שִׂמְחָה גְדוֹלָה׃ וַיְמַן הָאֱלֹהִים 7
, *ricinum* percuſſit & : craſtino in *auroram aſcendendo in* vermem
תּוֹלַעַת בַּעֲלוֹת הַשַּׁחַר לַמָּחֳרָת וַתַּךְ אֶת־הַקִּיקָיוֹן
ventum Deus præparavit & , *Solem oriri juxta* fuit Et .aruit &
וַיִּיבָשׁ׃ וַיְהִי כִּזְרֹחַ הַשֶּׁמֶשׁ וַיְמַן אֱלֹהִים רוּחַ 8
, Jonah caput ſuper Sol percuſſit & , *exurdantem* Orientalem
קָדִים חֲרִישִׁית וַתַּךְ הַשֶּׁמֶשׁ עַל־רֹאשׁ יוֹנָה
: dixit & , *mori* ſuæ animæ petivit & *: patiebatur deliquium* &
וַיִּתְעַלָּף וַיִּשְׁאַל אֶת־נַפְשׁוֹ לָמוּת וַיֹּאמֶר
: Jonah ad Deus dixit Et .*meis vitis præ* mea mors *Bona*
טוֹב מוֹתִי מֵחַיָּי׃ וַיֹּאמֶר אֱלֹהִים אֶל־יוֹנָה 9
Bene : dixit & *? ricimum ſuper* tibi eſt ira *benefacere* Nónne
הַהֵיטֵב חָרָה־לְךָ עַל־הַקִּיקָיוֹן וַיֹּאמֶר הֵיטֵב
pepercisti Tu : Dominus dixit Et .mortem ad uſque mihi eſt ira
חָרָה־לִי עַד־מָוֶת׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אַתָּה חַסְתָּ 10
, *illud* feciſti creſcere nec ,*eo in* laborâſti non *quo ricino ſuper*
עַל־הַקִּיקָיוֹן אֲשֶׁר לֹא־עָמַלְתָּ בּוֹ וְלֹא גִדַּלְתּוֹ
parcam non ego Et .periit *noctis filius* & , fuit *noctis filius quòd*
שֶׁבִּן־לַיְלָה הָיָה וּבִן־לַיְלָה אָבָד׃ וַאֲנִי לֹא אָחוּס 11
præ multum ea in eſt qua , *magna civitate* Nineveh *ſuper*
עַל־נִינְוֵה הָעִיר הַגְּדוֹלָה אֲשֶׁר יֶשׁ־בָּהּ הַרְבֵּה מִשְׁתֵּים־
, ſuam dexteram inter *ſcivit non* qui , *hominis myriadibus duodecim*
עֶשְׂרֵה רִבּוֹ אָדָם אֲשֶׁר לֹא־יָדַע בֵּין־יְמִינוֹ
.*multum jumentum* & , ſuam ſiniſtram *ad*
לִשְׂמֹאלוֹ וּבְהֵמָה רַבָּה׃

Verſio VULG. LAT.

5 Et egreſſus eſt Jonas de civitate, & ſedit contra Orientem civitatis: & fecit ſibimet umbraculum ibi, & ſedebat ſubter illud in umbra, donec videret quid accideret civitati. 6 Et præparavit Dominus Deus hederam, & aſcendit ſuper caput Jonæ, ut eſſet umbra ſuper caput ejus, & protegeret eum: (laboraverat enim:) & lætatus eſt Jonas ſuper hedera, lætitiâ magnâ. 7 Et paravit Deus vermem aſcenſu diluculi in craſtinum: & percuſſit hederam, & exaruit. 8 Et cùm ortus fuiſſet Sol, præcepit Dominus vento calido & urenti: & percuſſit Sol ſuper caput Jonæ, & æſtuabat: & petivit animæ ſuæ ut moreretur, & dixit; Melius eſt mihi mori, quàm vivere. 9 Et dixit Dominus ad Jonam; Putáſne benè iraſceris tu ſuper hedera? Et dixit; Benè iraſcor ego uſque ad mortem. 10 Et dixit Dominus; Tu doles ſuper hederam, in qua non laborâſti, neque feciſti ut creſceret: quæ ſub una nocte nata eſt, & ſub una nocte periit. 11 Et ego non parcam Ninive civitati magnæ, in qua ſunt plus quàm centum viginti millia hominum, qui neſciunt quid ſit inter dexteram & ſiniſtram ſuam, & jumenta multa?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

5 Καὶ ἐξῆλθεν Ἰωνᾶς ἐκ τῆς πόλεως, καὶ ἐκάθισεν ἀπέναντι τῆς πόλεως, καὶ ἐποίησεν (δ) αὐτῷ ἐκεῖ σκηνὴν, καὶ ἐκάθητο ὑποκάτω αὐτῆς (ε), ἕως οὗ ἀπίδῃ τί ἔσται τῇ πόλει. 6 Καὶ προσέταξε κύριος ὁ θεὸς (ζ) κολοκύνθῃ, καὶ ἀνέβη ὑπὲρ κεφαλῆς (ⁿ) τοῦ Ἰωνᾶ, τοῦ εἶναι σκιὰν ὑπεράνω τῆς κεφαλῆς αὐτοῦ, τοῦ σκιάζειν αὐτῷ ἀπὸ τῶν κακῶν αὐτοῦ. καὶ ἐχάρη Ἰωνᾶς ἐπὶ τῇ (η) κολοκύνθῃ χαρὰν μεγάλην. 7 Καὶ προσέταξεν (θ) ὁ θεὸς σκώληκι ἑωθινῇ τῇ ἐπαύριον, καὶ ἐπάταξε τὴν (ι) κολόκυνθαν, καὶ ἀπεξηράνθη. 8 Καὶ ἐγένετο ἅμα τῷ ἀνατεῖλαι τὸν ἥλιον, καὶ προσέταξεν (κ) ὁ θεὸς πνεύματι καύσωνι συγκαίοντι, καὶ ἐπάταξεν ὁ ἥλιος ἐπὶ τὴν κεφαλὴν (λ) τοῦ Ἰωνᾶ· καὶ ὠλιγοψύχησε, καὶ ἀπελέγετο τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καὶ εἶπε, 9 Καλόν μοι (μ) ἀποθανεῖν με ἢ ζῆν. Καὶ εἶπεν (ν) ὁ θεὸς πρὸς Ἰωνᾶν, Εἰ σφόδρα λελύπησαι σὺ ἐπὶ τῇ (ξ) κολοκύνθῃ; καὶ εἶπε, Σφόδρα λελύπημαι ἐγὼ ἕως θανάτου. 10 Καὶ εἶπε κύριος, Σὺ ἐφείσω ὑπὲρ τῆς (ο) κολοκύνθης, ὑπὲρ ἧς οὐκ ἐκακοπάθησας ἐπ' (π) αὐτὴν, καὶ οὐκ ἐξέθρεψας αὐτὴν, ἣ (ρ) ἐγενήθη ὑπὸ νύκτα, καὶ ὑπὸ νύκτα ἀπώλετο· 11 Ἐγὼ δὲ οὐ φείσομαι ὑπὲρ Νινευὴ τῆς (σ) πόλεως τῆς μεγάλης, ἐν ᾗ κατοικοῦσιν πλείους ἢ δώδεκα μυριάδες ἀνθρώπων, οἵτινες οὐκ ἔγνωσαν δεξιὰν αὐτῶν (τ) ἢ ἀριστερὰν αὐτῶν, καὶ κτήνη πολλά;

5 Et egreſſus eſt Jonas de civitate, & ſedit contra civitatem: & fecit ſibi tabernaculum ibi, & ſedebat (c) ſubter illud, donec videret, quid eſſet civitati. 6 Et præcepit Dominus Deus (d) cucurbitæ & aſcendit ſuper caput Jonæ, ut eſſet umbraculum ſuper caput ejus, ut protegeret eum à ſuis malis. Lætatuſque eſt Jonas ſuper cucurbita gaudio magno. 7 Et præcepit Deus vermi mane in craſtinum: & percuſſit cucurbitam, & arefacta eſt. 8 Et factum eſt, ſimul atque exortus eſt Sol, et præcepit Deus ſpiritui ardenti, urenti: & percuſſit Sol ſuper caput Jonæ: & anguſtiatus eſt, & tæduit eum animæ ſuæ, & dixit; Melius eſt mihi mori, quàm vivere. 9 Et dixit Deus ad Jonam; Si valdè contriſtatus es tu ſuper cucurbita? Et ait; Valdè contriſtatus ſum ego uſque ad mortem. 10 Et dixit Dominus; Tu pepercisti ſuper cucurbita, pro qua non laborâſti ſuper eam, neque nutrîſti eam, quæ nata eſt ſub noctem, & ſub noctem periit: 11 Ego autem non parcam ſuper Niniveve civitate magna, in qua habitant plures, quàm (e) centum viginti millia hominum, qui non noverunt dextram ſuam, & ſiniſtram ſuam, & pecora multa?

ἸΩΝΑ͂Σ ς'.

MS.A. (δ) ἐκεῖ σκηνὴν ἑαυτῷ, (ε) ἐν σκιᾷ, ἕως οὗ ἀφείδῃ (ζ) κολοκύντῃ, (ⁿ) Ἰωνᾶ, (η) κολοκύντῃ (θ) κύριος ὁ θεὸς (ι) κολόκυνταν, (κ) κύριος ὁ θεὸς πνεύματι καύσωνος (λ) Ἰωνᾶ· (μ) τὸ ἀποθανεῖν (ν) κύριος ὁ θεὸς (ξ) κολοκύντῃ; (ο) κολοκύντης, (π) αὐτῆς, καὶ οὐκ (ρ) ὑπὸ νύκτα ἐγενήθη, (σ) πόλεως, ἐν ᾗ (τ) οὐδὲ ἸΩΝΑ͂Σ προφήτης ς'.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ונפק יונה מן קרתא ויתיב ממדנח לקרתא ועבד ליה תמן מטלתא ויתיב תחותה 5
בטולא עד דיחזי מה יהי בסוף קרתא׃ וזמין יי אלהים קיקיון וסליק עיל מן יונה 6
למהוי טולא על רישיה לאגנא ליה מבישתיה וחדי יונה על קיקיון חדוא רבא׃
וזמין יי ית תולעתא במסק צפרא ביומא דבתרוהי ומחא ית קיקיון וייבש׃ והוה 7 8
כמדנח שמשא וזמין יי רוח קדומא שתיקא וטפחת שמשא על רישא דיונה ואשתלהי
ושאל ית נפשיה לממת ואמר טב דאמות מדאחי׃ ואמר יי ליונה הלחדא תקיף 9
לך על קיקיון ואמר לחדא תקוף לי עד מותא׃ ואמר יי את חסתא על קיקיון 10
דלא עמלת ביה ולא רביתיה די בליליא הדין הוה ובליליא אוחרנא אבד׃ ואנא 11
לא אחוס על נינוה קרתא רבתא דאית בה סגי מתרתא עסרי רבון אנשא דלא ידע בין
ימיניה לסמליה ובעירא סגי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

5 Et egreſſus eſt Jonas de civitate, & habitavit ad Orientem civitatis, ac ſibi eo loci fecit umbraculum, ſubter quod conſedit in umbra, donec videret quid tandem futurum eſſet civitati. 6 Præparavit autem Dñs Deus cucurbitam, quæ & aſcendit ſuper Jonam, ut eſſet umbra capiti ejus, & eum à malo ſuo protegeret. Proinde lætatus eſt Jonas ſuper cucurbita lætitia magna. 7 Sed paravit Dñs vermem ſub auroræ aſcenſum ſequentis diei, qui percuſſit cucurbitam, atque exaruit. 8 Poſteà factum eſt oriente Sole ut præpararet Dñs ventum Orientalem quietum, atque percuſſit Sol caput Jonæ, qui animi deliquium patiens, optabat animæ ſuæ mori: & dicebat; Melius eſt ut moriar, quàm ut vivam. 9 Dixitq; Dñs Jonæ: Nunquid vehementer iraſceris pro cucurbita? & ait: Admodum iraſcor ad mortem uſque. 10 Et dixit Dñs, Tu cucurbitæ miſertus es, in qua non laborâſti, nec eam nutriviſti: quæ in hac nocte fuit, ſed nocte altera periit. 11 Ego verò non parcam Ninivæ civitati magnæ, in qua ſunt pluſquàm centum & viginti hominum millia, qui neſciunt inter dextram & ſiniſtram ſuam diſcernere, nec non & jumenta multa.

ספר מיכה : א

CAP. I. א

diebus in Moraſtiten Michah ad fuit quod Domini Verbum
דְּבַר־יְהוָה אֲשֶׁר הָיָה אֶל־מִיכָה הַמֹּרַשְׁתִּי בִּימֵי 1
ſuper vidit quod , Jehudah regum Jehizchijah , Achaz , Jotham
יוֹתָם אָחָז יְחִזְקִיָּה מַלְכֵי יְהוּדָה אֲשֶׁר־חָזָה עַל־
attende , *ipſi* omnes populi Audite .Jeruſalaim & Someron
שֹׁמְרוֹן וִירוּשָׁלָםִ׃ שִׁמְעוּ עַמִּים כֻּלָּם הַקְשִׁיבִי 2
, teſtem in vobis *in* DEUS Dominus ſit & ; ejus plenitudo & , terra
אֶרֶץ וּמְלֹאָהּ וִיהִי אֲדֹנָי יְהוִה בָּכֶם לְעֵד
egrediens Dominus ecce Quia *ſuæ ſanctitatis palatio* de Dominus
אֲדֹנָי מֵהֵיכַל קָדְשׁוֹ׃ כִּי־הִנֵּה יְהוָה יֹצֵא 3
.terræ excelſa ſuper calcabit & , deſcendet & , ſuo loco è
מִמְּקוֹמוֹ וְיָרַד וְדָרַךְ עַל־בָּמוֹתֵי־אָרֶץ׃

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA
MICHÆÆ.

CAP. I.

1 VErbum Domini, quod factum eſt ad Michæam Moraſthiten, in dieb⁹ Joathan, Achaz, & Ezechiæ, regum Juda: quod vidit ſuper Samariam, & Jeruſalem. 2 Audite populi omnes, & attendat terra, & plenitudo ejus: & ſit Dñs Deus vobis in teſtẽ, Dñs de templo ſancto ſuo. 3 Quia ecce Dñs egredietur de loco ſuo: & deſcendet, et calcabit ſuper excelſa terræ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

ΜΙΧΑΊΑΣ Γ'. | MICHÆAS.

ΚΕΦ. α'. | CAP. I.

1 ΚΑὶ ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Μιχαίαν τὸν τοῦ (ⁿ) Μωρασθεὶ, ἐν ἡμέραις Ἰωάθαμ, καὶ Ἄχαζ, καὶ Ἐζεκίου (α) βασιλέων Ἰούδα, ὑπὲρ ὧν εἶδε περὶ Σαμαρείας καὶ περὶ Ἱερουσαλήμ. 2 Ἀκούσατε λαοὶ λόγους, καὶ προσεχέτω ἡ γῆ, καὶ πάντες οἱ ἐν αὐτῇ· καὶ (β) ἔσται κύριος κύριος ἐν ὑμῖν εἰς μαρτύριον, 3 κύριος ἐξ οἴκου ἁγίου αὐτοῦ. Διότι ἰδοὺ κύριος ἐκπορεύεται ἐκ τοῦ τόπου αὐτοῦ, (γ) καὶ καταβήσεται, καὶ ἐπιβήσεται ἐπὶ τὰ ὕψη τῆς γῆς,

1 ET (a) factum eſt verbum Domini ad Michæam Moraſthiten in diebus Joatham, & Achaz, & Ezeciæ regum Juda, de quibus vidit de Samaria, & de Hieruſalem. 2 Audite, populi, (b) verba, & auſcultet terra, & omnes, qui ſunt in ea: & (c) erit Dominus Dominus in vobis in teſtimonium, Dominus ex domo ſancta ſua. 3 Ecce enim Dominus egreditur de loco ſuo, & deſcendet, & aſcendet ſuper excelſa terræ:

MS.A. ΜΙΧΑΊΑΣ Γ'. (ⁿ) Μωραθεὶ, (α) βασιλέως (β) ἔσται κύριος ἐν ὑμῖν (γ) καὶ ἐπιβήσεται ἐπὶ τὰ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.
א

פתגם נבואה מן קדם יי די הוה עם מיכה ממרשה ביומי יותם אחז יחזקיה מלכיא 1
דבית יהודה דאתנבי על שומרון וירושלם׃ שמעו עממיא כלהון אציתי ארעא 2
ומלהא ויהי מימרא דיי אלהים בכון לסהיד יי מהיכלא דקודשיה׃ ארי הא יי מתגלי 3
מאתר בית שכנתיה ויתגלי וירמוס ית תוקפי ארעא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.
CAPUT. I.

1 VErbum prophetiæ à facie Domini quod factum eſt cum Michæa de Mareſa, in diebus Jotham, Achaz, & Ezechiæ regum domus Juda, qui prophetavit contra Samariam & Jeruſalem. 2 Audite populi univerſi, & eſtote attenti terra & plenitudo ejus; ſitque verbum Dñi Dei contra vos in teſtem, Dñs de templo ſancto ſuo. 3 Ecce enim Dñs conſpicuum ſe oſtendit de loco domus majeſtatis ſuæ, & apparebit, conculcabitque terræ robora.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܦܩ ܝܘܢܢ ܠܒܪ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ . ܘܝܬܒ ܠܗ ܒܡܕܢܚܗ ܕܡܕܝܢܬܐ. ܘܥܒܕ 5
ܠܗ ܡܛܠܬܐ ܬܡܢ . ܘܝܬܒ ܬܚܬܝܗ ܒܛܠܠܐ. ܕܢܚܙܐ ܡܢܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܠܡܕܝܢܬܐ.
* ܘܦܩܕ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܠܩܪܥܬܐ ܕܩܪܐ . ܘܣܠܩܬ ܠܥܠ ܡܢ ܝܘܢܢ. ܘܗܘܬ ܛܠܠܐ ܥܠ 6
ܪܫܗ . ܘܐܪܘܚ ܠܗ ܡܢ ܒܝܫܬܗ. ܘܚܕܝ ܝܘܢܢ ܒܗ ܒܩܪܥܬܐ ܕܩܪܐ ܚܕܘܬܐ ܪܒܬܐ.
* ܘܠܡܚܪܬܗ ܦܩܕ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܠܬܘܠܥܬܐ ܒܡܕܢܚܐ ܕܨܦܪܐ. ܘܡܚܬܗ ܠܩܪܥܬܐ ܕܩܪܐ 7
ܘܝܒܫܬܗ. * ܘܟܕ ܕܢܚ ܫܡܫܐ. ܦܩܕ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܠܪܘܚܐ ܕܫܘܒܐ ܕܐܘܒܫܬܗ 8
ܠܩܪܥܬܐ. ܘܡܚܬܗ ܫܡܫܐ ܥܠ ܪܫܗ ܕܝܘܢܢ. ܘܐܫܬܪܝ. ܘܫܐܠ ܡܘܬܐ ܠܢܦܫܗ. ܘܐܡܪ. ܡܫܠܛ
ܒܐܝܕܝܟ ܡܪܝܐ ܠܡܫܩܠ ܢܦܫܝ ܡܢܝ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܐ ܛܒ ܐܢܐ ܡܢ ܐܒܗܝ. * ܘܐܡܪ 9
ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ ܠܝܘܢܢ. ܛܒ ܟܪܝܐ ܠܟ ܥܠ ܩܪܥܬܐ ܕܩܪܐ. ܘܐܡܪ ܝܘܢܢ. ܛܒ ܟܪܝܐ ܠܝ
ܥܕܡܐ ܠܡܘܬܐ. * ܘܐܡܪ ܠܗ ܡܪܝܐ. ܐܢܬ ܚܣܬ ܥܠ ܩܪܥܬܐ ܕܩܪܐ: ܕܠܐ ܠܐܝܬ ܒܗ ܘܠܐ 10
ܪܒܝܬܗ ∴ ܕܒܪ ܠܠܝܐ ܗܘܬ . ܘܒܪ ܠܠܝܐ ܐܒܕܬ ∴ * ܐܢܐ ܕܝܢ ܠܐ ܐܚܘܣ ܥܠ ܢܝܢܘܐ 11
ܡܕܝܢܬܐ ܪܒܬܐ . ܕܐܝܬ ܒܗ ܝܬܝܪ ܡܢ ܬܪܬܥܣܪܐ ܪܒܘܢ ܒܢܝܢܫܐ: ܕܠܐ ܝܕܥܝܢ ܒܝܢ
ܝܡܝܢܗܘܢ ܠܣܡܠܗܘܢ . ܘܒܥܝܪܐ ܣܓܝܐܐ.

* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܝܘܢܢ *

Tum Jona extra urbé egreſſus ſedit ad Ori- 5
entalem plagam urbis ; ibíque tugurio ſibi
facto, ſedit ſubter illud in umbra, ut videret
quid eventurum eſſet urbi. Et præcepit Do- 6
minus plantæ cucurbitæ, quæ crevit aſcendít-
que ſuper Jonam, fuitque umbra ſuper caput
ejus, & recreavit eum ab afflictione ipſius ; &
lætatus eſt Jonas de planta illa cucurbitæ læti-
tiâ magnâ. Verùm poſterâ die præcepit 7
Dominus Deus vermi ſub ortum auroræ, qui
feriens plantam cucurbitæ ſecuit illam. Et 8
cùm ortus eſſet ſol, præcepit Dominus Deus
vento torrido, qui arefecit cucurbitam ; a-
deóque ſol exarſit in caput Jonæ, ut excrucia-
tus poſtularet ſibi mortem, ac diceret ; Facul-
tas eſt in manibus tuis Domine, tollendi à
me animam meam ; neque enim melior ſum
patrib⁹ meis. Dixitauté Dñs Deus ad Jonam ; 9
Vehementer doles propter cucurbitæ plan-
tam. Reſpondit Jona ; Vehementer doleo ad
mortem uſque. Ait illi Dominus ; Tu miſe- 10
ricordiâ motus es propter cucurbitæ plan-
tam pro quâ non laboráſti, & quam non edu-
cáſti, quæ unâ nocte nata eâdé nocte exaruit:
Ego verò non misererer Ninives urbis ma- 11
gnæ, in qua extant pluſquàm duodecim my-
riades hominum qui *deſcernere* neſciunt dex-
teram ſuam à ſiniſtra ſua, & multitudo ju-
mentorum ?

Prophetiæ Jonæ finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

فقال حزنت جدا انا الي الموت * وخرج يونان من المدينة * وجلس قبالة المدينة * وصنع له 5
هناك مظلة * وجلس تحتها في الظل الي ان يري ما يكون في المدينة * فامر الرب الاله يقطينا 6
فصعد على راس يونان ليكون ظلا فوق راسه ليظلله من كربه * ففرح يونان باليقطين
فرحا عظيما * وامر الله دودة سحرية بالغداة وضربت اليقطين وجف * وكان لما اشرقت الشمس * 7 8
فامر الرب الاله ريح سموم محرقة * وضربت الشمس على راس يونان * فصغرت نفسه * ورثى نفسه
وقال * جيد لي ان اموت بالاكثر من ان احيا * فقال الرب الاله ليونان * احزنت انت جدا على 9
اليقطين * فقال حزنت جدا الي الموت * فقال الرب انت شفقت على اليقطين الذي من اجله لم 10
تتعب فيه * ولم تربه * الذي صار من ليلته وهلك في ليلته * فانا لا اشفق على نينوي 11
المدينة العظيمة * التي فيها سكان اكثر من اثني عشر ربوة من الناس * قوم لا يعلمون
يمينهم ولا شمالهم * وبهائمهم كثيرين * تمت نبوة يونان النبي *

*Vehementer, inquit, contriſtatus ſum ad
mortem uſque. Egreſſuſque eſt Jona ex* 5
*urbe, ſeditque è regione urbis; & fecit
illic ſibi tabernaculum, ſeditque ſub eo
in umbra uſque dum videret quid futu-
rum eſſet de urbe. Præceperat enim Do-* 6
*minus Deus cucurbitæ, quæ aſcenderat
ſupra caput Jonæ, ut eſſet umbra ſuper
caput ejus, ut protegeret eum à dolore
ipſius : lætatuſque fuerat Jona ob cu-
curbitam illam lætitiâ magnâ. Sed præ-* 7
*cepit Deus vermi ſub auroram craſtinæ
diei, qui percuſſit cucurbitam, & are-
facta eſt. Et cùm ortus eſſet ſol, præce-* 8
*pit Dominus Deus vento auræ torridæ,
ferìtque ſol caput Jonæ : unde puſillani-
mis redditus deploravit animam ſuam,
& ait ; Melius eſt mihi mori potiùs
quàm vivere. Dixit autem Dominus De-* 9
*us ad Jonam; An vehementer contri-
ſtatus es propter cucurbitam? Vehementer
inquit, contriſtatus ſum ad mortem uſque.
Dixit Domin⁹ Tu clementiâ moveris erga* 10
*cucurbitã cuj⁹ gratiâ non laboráſti, quã
non nutriviſti, quæ eâdem nocte nata, eâ-
dem quoque nocte periit : Et ego non mo-* 11
*verer clementiâ erga Niniven urbem
magnam, in qua ſunt habitantium myria-
des pluſquam duodecim, hominum neſci-
entiũ dexteram ſuam neq; ſiniſtram ſuã;
& erga jumenta ipſorum plurima ?*

Finis Prophetiæ Jonæ Prophetæ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܡܝܟܐ ܢܒܝܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܡܝܟܐ ܡܪܫܬܝܐ ܒܝܘܡܝ ܝܘܬܡ ܘܐܚܙ ܘܚܙܩܝܐ 1
ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܚܙܐ ܥܠ ܫܡܪܝܢ ܘܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. * ܫܡܥܘ ܥܡܡܐ ܟܠܗܘܢ. ܘܬܨܝܬ 2
ܐܪܥܐ ∴ ܘܡܠܝܗ. ܘܢܗܘܐ ܠܟܘܢ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܠܣܗܕܐ. ܡܪܝܐ ܡܢ ܗܝܟܠ ܩܘܕܫܗ. * ܡܛܠ 3
ܕܗܐ ܡܪܝܐ ∴ ܢܦܩ ܡܢ ܐܬܪܗ . ܘܢܚܘܬ ܘܢܕܘܫ ܥܠ ܪܘܡܐ ܕܐܪܥܐ.

Sequitur Prophetia

MICHÆ PROPHETÆ

CAP. I.

SErmo Domini qui fuit ad Micham Mirſi- 1
tem, in diebus Jothami, Ahazi, & Hezeciæ
regum Judæ ; quem vidit contra Samariam
& contra Jeruſalem. Audite omnes popu- 2
li, & attende terra univerſa, ſitque Dominus
dominorum teſtis contra vos, Dominus de
templo ſanctitatis ſuæ. Nam ecce Dominus 3
proditurus eſt è loco ſuo, deſcenſurus, & greſ-
ſurus ſuper excelſa terræ :

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* باسم الله الخالق الحي الناطق * بدو ترجمة ميخا النبي * بركاته علينا * امين *

* الفصل الاول * الاصحاح الخامس عشر * وهو الاول من النبوة *

* وكان قول الرب الي ميخا بن موراثي * في ايام يواثام * واحاز * وحزقيا ملك يهودا * من اجل 1
الذين راهم على سامرة واورشليم * اسمعوا ايها الشعوب الاقوال * ولتنصت الارض وجميع 2
الذين فيها * ويكون الرب فيكم للشهادة * الرب من بيته المقدس * من اجل انه ها الرب 3
يخرج من موضعه * ويطا ويصعد على اعالي الارض *

IN NOMINE DEI CREATORIS,
VIVI, RATIONALIS.
Initium interpretationis
MICHÆ PROPHETÆ,
CUJUS BENEDICTIONES
nobis adſint, Amen.
CAPUT PRIMUM.
Textus decimus quintus, hujus
autem Prophetiæ primus.

*ET fuit ſermo Domini ad Michã filiũ
Morathi, in dieb⁹ Joathami, Ahaz, et* 1
*Hezeciæ regis Judæ, de iis quæ vidit con-
tra Samariam & Jeroſolymam. Audite O
populi ſermones iſtos, & auſcultet terra* 2
*cum omnib⁹ qui ſunt in ea, ſitq; Dominus
in vos teſtimonio, Dominus de domo ſua
ſancta. Nam ecce Dominus egredietur è
loco ſuo, & conculcabit, conſcendetque* 3
editiſſima terræ loca :

מיכה : ב

cera ſicut : ſe ſcindent valles & ,eum ſubtus montes liqueſcent Et
4 ונמסו ההרים תחתיו והעמקים יתבקעו כדונג
prævaricationē Propter .præceps in effuſæ aquæ ſicut ; ignis facieb⁹ à
5 מפני האש כמים מגרים במורד : בפשע
prævaricatio Quæ .Iſrael domus peccata propter & ,hoc totum Jahacob
יעקב כל־זאת ובחטאות בית ישראל מי־פשע
? Jeruſalaim nónne ,Jehudah excelſa quis & ? Someron Nónne ? Jahacob
יעקב הלוא שמרון ומי במות יהודה הלוא ירושלם :
diffundam & ,vineæ plantationes in , agri acervum in Someron ponam Et
6 ושמתי שמרון לעי השדה למטעי כרם והגרתי
omnia Et .revelabo ejus fundamenta & , ejus lapides vallem in
7 לגי אבניה ויסדיה אגלה : וכל־
comburentur ejus mercedes omnes & , contundentur ejus ſculptilia
פסיליה יכתו וכל־אתנניה ישרפו
mercede de quia : deſolationem ponam ejus dolores omnes & , igni in
באש וכל־עצביה אשים שממה כי מאתנן
.revertentur meretricis mercedem ad uſque & , congregavit meretricis
זונה קבצה ועד־אתנן זונה ישובו :
: nudus & ſpoliatus vadam : ululabo & , plangam hoc Super
8 על־זאת אספדה ואילילה אילכה שילל וערום
.ululæ filiarum veluti luctum & ,draconum velut planctum faciam
אעשה מספד כתנים ואבל כבנות יענה :
ad uſque pertigit,Jehudah ad uſque venit quia ; ejus plagæ deſperata Quia
9 כי אנושה מכותיה כי־באה עד־יהודה נגע עד־
,annuntietis ne Gath In .Jeruſalaim ad uſque ,mei populi portam
10 שער עמי עד־ירושלם : בגת אל־תגידו
.teipſam involve pulvere , pulveris domo in , fleveritis ne flendo
בכו אל־תבכו בבית לעפרה עפר התפלשתי :
habitatrix eſt egreſſa Non .pudore nuda , pulchrè habitans vobis Tranſi
11 עברי לכם יושבת שפיר עריה־בשת לא יצאה יושבת
.ſuam ſtationem vobis à accipiet : haeſel--Beth planctum Saanan
צאנן מספד בית האצל יקח מכם עמדתו :
deſcendit quia : Maroth habitatrix bonum propter doluit Siquidem
12 כי־חלה לטוב יושבת מרות כי־ירד
veloci equo currum Apta .Jeruſalaim portam ad Domino cum à malū
13 רע מאת יהוה לשער ירושלם : רתם המרכבה לרכש
te in quia , Sijon filiæ ipſa peccati principium : Lachis habitatrix
יושבת לכיש ראשית חטאת היא לבת־ציון כי־בך
ſuper miſſiones dabis Propterea .Iſrael prævaricationes ſunt inventæ
14 נמצאו פשעי ישראל : לכן תתני שלוחים על־
.Iſrael regibus mendacium in Achzib domus : Ghath Moreſeth
מורשת גת בתי אכזיב לאכזב למלכי ישראל :
veniet Hadulam ad uſque:Mareſah habitatrix tibi adducā hæredem Adhuc
15 עד הירש אבי לך יושבת מרשה עד־עדלם יבוא
filios ſuper temetipſam tonde & , teipſam Decalva .Iſrael gloria
16 כבוד ישראל : קרחי וגזי על־בני
.te à trāſmigraverūt quia,aquila ſicut tuū calvitiū dilata:tuarū deliciarū
תענוגיך הרחבי קרחתך כנשר כי־גלו ממך :

CAP. II. ב

.ſuis cubilibus ſuper malum operantibus & ,iniquitatem cogitantibus Væ
1 הוי חשבי־און ופעלי רע על משכבותם
.illorum manus facultate in eſt quoniam ,illud facient mane illucendo In
באור הבקר יעשוה כי יש־לאל ידם :
oppreſſerunt & ;tulerunt &,domos & :rapuerunt &,agros concupierunt Et
2 וחמדו שדות וגזלו ובתים ונשאו ועשקו
.ejus hæreditatem & virum & ,ejus domum & virum
גבר וביתו ואיש ונחלתו :

Verſio VULG. LAT.

4 Et conſumentur montes ſubtus eum : & valles ſcindentur ſicut cera à facie ignis, & ſicut aquæ, 5 quæ decurrunt in præceps. In ſcelere Jacob omne iſtud, & in peccatis domûs Iſrael. Quod ſcel⁹ Jacob? nónne Samaria? & quæ excelſa Judæ? nónne Jeruſalem? 6 Et ponam Samariam quaſi acervum lapidū in agro cùm plantatur vinea : & detraham in vallem lapides ej⁹, & fundamenta ej⁹ re-7 velabo. Et omnia ſculptilia ejus concidentur, & omnes mercedes ejus comburentur igne, & omnia idola ejus ponam in perditionē : quia de mercedibus meretricis congregata ſunt,& uſque ad mer-8 cedem meretricis revertentur. Super hoc plangā,& ululabo: vadā ſpoliatus,& nudus : faciam planctum velut draconum, & luctum 9 quaſi ſtruthionū. Quia deſperata eſt plaga ejus, quia venit uſque ad Judam, tetigit portam populi 10 mei uſque ad Jeruſalem. In Geth nolite annuntiare, lachrymis ne ploretis,in domo pulveris pulvere 11 vos conſpergite. Et tranſite vobis habitatio pulchra, confuſa ignominiâ : non eſt egreſſa quæ habitat in exitu:planctum Domus vicina accipiet ex vobis, quæ ſtetit 12 ſibimet. Quia infirmata eſt in bonum,quæ habitat in amaritudinibus: quia deſcendit malum à Do-13 mino in portam Jeruſalem. Tumultus quadrigæ ſtuporis habitanti Lachis : principium peccati eſt filiæ Sion, quia in te in-14 venta ſunt ſcelera Iſrael. Propterea dabit emiſſarios ſuper hæreditatem Geth : domus mendacii in deceptionem regibus Iſra-15 el. Adhuc hæredem adducam tibi quæ habitas in Mareſa : uſque ad 16 Odollam veniet gloria Iſrael. Decalvare, & tondere ſuper filios deliciarum tuarum : dilata calvitium tuum ſicut aquila : quoniam captivi ducti ſunt ex te.

CAP. II.

1 VÆ qui cogitatis inutile, & operamini malum in cubilibus veſtris : in luce matutina faciunt illud, quoniam contra Deum eſt 2 manus eorum. Et concupierunt agros, & violenter tulerunt, & rapuerunt domos : & calumniabantur virum, & domum ejus; virum, & hæreditatem ejus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ σαλευθήσεται τὰ ὄρη ὑποκάτωθεν αὐτοῦ, καὶ αἱ κοιλάδες τακήσονται ὡς κηρὸς ἀπὸ προσώπου πυρὸς, καὶ ὡς ὕδωρ κατα-5 φερόμενον ἐν καταβάσει. (δ) Δι᾽ ἀσέβειαν Ἰακὼβ πάντα ταῦτα, καὶ (ε) δι᾽ ἁμαρτίαν οἴκου Ἰσραήλ. τίς ἡ ἀσέβεια (ζ) τοῦ Ἰακώβ; οὐχ ἡ Σαμάρεια; καὶ τίς ἡ ἁμαρτία οἴκου Ἰούδα; 6 οὐχὶ Ἱερουσαλήμ; Καὶ θήσομαι Σαμάρειαν (η) εἰς ὀπωροφυλάκιον ἀγροῦ, καὶ εἰς φυτείαν ἀμπελῶνος, καὶ κατασπάσω εἰς χάος τοὺς λίθους αὐτῆς, καὶ τὰ θεμέλια αὐτῆς ἀποκαλύψω. 7 Καὶ πάντα τὰ γλυπτὰ αὐτῆς κατακόψουσι, καὶ πάντα τὰ μισθώματα αὐτῆς ἐμπρήσουσιν ἐν πυρὶ, καὶ πάντα τὰ εἴδωλα αὐτῆς θήσομαι εἰς ἀφανισμόν· διότι ἐκ μισθωμάτων πορνείας συνήγαγε, καὶ ἐκ μισθωμάτων πορνείας 8 συνέστρεψεν. Ἕνεκεν τούτου κόψεται, καὶ θρηνήσει, πορεύσεται ἀνυπόδετος, καὶ γυμνὴ (θ) ποιήσεται κοπετὸν ὡς δρακόντων, καὶ πένθος 9 ὡς θυγατέρων σειρήνων. Ὅτι κατεκράτησεν ἡ πληγὴ αὐτῆς, διότι ἦλθεν ἕως Ἰούδα, καὶ ἥψατο ἕως πύλης λαοῦ μου, ἕως Ἱερουσαλήμ. 10 Οἱ ἐν Γὲθ μὴ μεγαλύνεσθε, (ι) καὶ οἱ Ἐνακεὶμ μὴ ἀνοικοδομεῖτε ἐξ οἴκου κατὰ (κ) γέλωτα, γῆν καταπάσασθε καταγέλωτα ὑμῶν, 11 Κατοικοῦσα καλῶς τὰς πόλεις αὐτῆς, οὐκ ἐξῆλθε κατοικοῦσα Σενναὰρ, κόψασθαι οἶκον ἐχόμενον αὐτῆς, λήψεται ἐξ ὑμῶν πληγὴν ὀ-12 δύνης. Τίς ἤρξατο εἰς ἀγαθὰ κατοικούσῃ ὀδύνας; ὅτι κατέβη κακὰ παρὰ κυρίου ἐπὶ πύ-13 λας Ἱερουσαλήμ, Ψόφος ἁρμάτων καὶ ἱππευόντων. κατοικοῦσα Λαχεὶς, ἀρχηγὸς ἁμαρτίας (λ) αὕτη ἐστὶ τῇ θυγατρὶ Σιὼν, ὅτι ἐν σοὶ 14 εὑρέθησαν (μ) ἀσέβειαι τοῦ Ἰσραήλ. Διὰ τοῦτο (ν) δώσει ἐξαποστελλομένους ἕως κληρονομίας Γὲθ, οἴκους ματαίους, εἰς (ξ) κενὸν ἐγένοντο 15 τοῖς βασιλεῦσιν (ο) τοῦ Ἰσραήλ, Ἕως τοὺς κληρονόμους ἀγάγωσι, κατοικοῦσα Λαχεὶς· κληρονομία ἕως Ὀδολλὰμ ἥξει, ἡ δόξα τῆς 16 θυγατρὸς Ἰσραήλ. Ξύρησαι, καὶ κεῖραι ἐπὶ τὰ τέκνα τὰ τρυφερά σου, ἐμπλάτυνον τὴν χηρείαν σου ὡς ἀετὸς, ὅτι ᾐχμαλωτεύθησαν ἀπὸ σοῦ.

4 Et commovebuntur montes ſubter eum: & valles tabeſcent, ſicut cera à facie ignis, & ſicut aqua profluens in deſcenſu. 5 Propter impietatē Jacob omnia hæc, & propter peccatum domûs Iſrael. Quæ eſt impietas (d) Jacob? nónne Samaria? Et quod eſt peccatum domûs Juda? nonne Hieruſalem? 6 Et ponam Samariam in pomorum cuſtodiam in agro, & in plantationem vineæ, & detraham in voraginem lapides ejus, & fundamenta ejus revelabo. 7 Et cuncta ſculptilia ejus concident, & omnes mercedes ejus comburent in igni: & cuncta idola ejus ponam in perditionem. Quia ex mercedibus fornicationū congregavit, & ex mercedibus fornicationis (e) convertit. 8 Propter hoc planget, & lamentabitur, ibit diſcalceata, & nuda : faciet planctum quaſi draconum, & luctum, quaſi filiarum Sirenarum. 9 Quia obtinuit plaga ejus, quia venit uſque ad Judam, & tetigit uſq; ad portam populi mei uſque Hieruſalem. 10 Qui in Geth, nolite magnificari : & (f) Enacim, nolite reædificare ex domo (g) in deriſum: terrā aſpergite deriſum veſtrum: 11 Quæ habitas benè civitates ejus: non eſt egreſſa (h) habitatrix Sennaar. Plangite domum juxta eam: accipiet ex vobis plagam doloris. Quis cœpit in bona (i) ei, quæ habitat dolores? Quia deſcenderunt mala à Domino ſuper portas Hieruſalem, 13 Sonitus curruum, & equitum: Quæ habitas Lachis, princeps peccati hæc eſt filiæ Sion: quia in te inventæ ſunt impietates Iſrael. 14 Ideò dabit emiſſarios uſq; ad hæreditatem Geth, domos vanas, in vanum factæ ſunt regibus Iſrael: 15 Donec hæredes (k) adducāt, quæ habitas Lachis: hæreditas uſque Odollam veniet : Gloria filiæ (l) Iſrael, 16 Decalvare, & detondere ſuper filios delicatos tuos : Dilata (m) tonſuram tuam, ſicut aquila : quoniam captivi ducti ſunt ex te.

MS. A. (δ) Διὰ (ε) διὰ (ζ) οἴκου Ἰακώβ; οὐχὶ Σαμάρεια; (η) ὡς (θ) καὶ ποιήσαιτε (ι) οἱ Ἐνακεὶμ (κ) γέλωτα ὑμῶν, καταπάσασθαι (λ) αὐτῇ (μ) αἱ ἀσέβειαι (ν) δώσεις (ξ) κενὰ ἐγένετο (ο) Ἰσραήλ,

ΚΕΦ΄. β΄.

1 ἘΓένοντο λογιζόμενοι κόπους, καὶ ἐργαζόμενοι κακὰ ἐν ταῖς κοίταις αὐτῶν, καὶ ἅμα τῇ ἡμέρᾳ συνετέλουν αὐτὰ, διότι οὐκ ἦραν πρὸς τὸν 2 θεὸν (α) χεῖρας αὐτῶν. Καὶ ἐπεθύμουν ἀγροὺς, καὶ διήρπαζον ὀρφανοὺς, καὶ οἴκους κατεδυνάστευον, καὶ διήρπαζον ἄνδρα καὶ τὸν οἶκον αὐτοῦ, (˜) καὶ ἄνδρα καὶ τὴν κληρονομίαν αὐτοῦ.

MS. A. (α) τὰς χεῖρας (˜) ἄνδρα

CAP. II.

1 FActi ſunt cogitantes labores, & operantes mala in cubilibus ſuis : & ſimul cum die conſummabant ea. Quia non levaverunt ad Deum manus ſuas: 2 Et deſiderabant agros, & diripiebant pupillos, & domos opprimebant, & rapiebant virū, & domum ejus; & virum, & hæreditatem ejus.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 ויתמסון טוריא תחותוהי ומישריא יתבזעון כשעותא מן קדם נורא כמיא דאשידין
5 במורדון : בחובי בית יעקב כל דא ובחטא דבית ישראל היכא חבו דבית יעקב הלא
6 בשמרון והיכא חטו דבית יהודה הלא בירושלם : ואשוי שמרון ליגרי חקלין בית
7 צדות מצבת כרם וארמי לחילתא אבנהא ואושהא אגלי : וכל צלמנהא ידקרון וכל
טעותהא יתוקדון בנורא וכל בתי דחלתהא אשוי לצדו ארי מאגר זניתא אתכנשו
8 ולבית פלחי טעותא יתמסרון : על דא יספדון וילילון יהכון בשוללייא ערטלאין
9 יעבדון מספדא כירודין ואבלא כבנת נעמין : ארי ממרעא מחתהא ארי מטת עד
10 דבית יהודה קריבת למעל בתרעי עמי עד ירושלם : בגת לא תחוון מבכא לא תבכון
11 דיתבין בבתיא בעפרא יתפלשון בקטמא חפו רישיהון : עברו לכון דיתבין בשפיר
גלן עריא ערטלאין בהתין לא יפקון משזבין יתבי צאנן עבידו לכון מספד במרד על
קטילי גבריכון בירת צולאי בתי חמדתכון דהויתון אנסין ומקרבין דין לטטר דין בכן
12 יתנסיב מנכון שפר ארעכון : ארי דהות יתבא על שפר ארעא ומסברא לטב ומסברא
למתב לאוריתא מה תעבדון ארי נחתת בישתא מן קדם יי למעל בתרעי ירושלם :
13 טקיסו רתיכיא רמו על רכשא דיתבין בלכיש ריש חובין היא לכנשתא דציון ארי ביך
14 אשתכחו מרודי ישראל : בכן תשדרין קורבנין למחסיני גת בתי אכזיב יתמסרון
15 לעממיא בחובין די פלחו בהון לטעותא מלכי ישראל : עוד מחסנין אייתי עליכון
16 דיתבין במרשה עד עדלם יסקון ויעלון בתחום ארעא דישראל : תלושי ורמא על בני
תפנוקיך הא כנשרא דנתרו גנפוהי כן אסגי מרט ברישך על בניך ארי גלו מניך :

ב

1 וי די מחשבין למינס למעבד דביש על ערסתיהון מקדמין בצפרא ועבדין ארי אית
2 חילא בידיהון : וחמדין חקליא וגזלין ובתיא ואנסין ועשקין גבר וביתיה גבר
ואחסנתיה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

4 Propterea liquefient montes ſubtus eum, atque valles ſcindentur velut cera ab aſpectu ignis, ut aquæ quæ per declive funduntur. 5 Propter ſcelera familiæ Jahacob [eveniet] iſtud, atq; ob dom⁹ Iſraeliticæ peccatū : ubinam ſcel⁹ commiſerunt [exorti] domus Jacob, an non in Samaria? & quo loco peccaverunt [prognati] dom⁹ Juda, nonne in Jeruſalem? 6 Proindè ponam Samariam in acervos agrorū, domū deſolatā in plantationes vineæ, & projiciam in vallem lapides ej⁹, inſup & fundamenta ipſius detegam. 7 Adeò ut omnia ej⁹ ſimulachra concidantur, & omnia ej⁹ idola igni ſuccendantur: domúmq; quamlibet deorū eorū ponā in vaſtitatem, quandoquidem mercede meretricis cùm ſint congregata, in domū colentiū idola tradentur. 8 Ob id plangent et ululabunt, ibunt nudi inter ſpoliatores, planctū edent more draconū, & luctū velut filiæ ſtruthionum. 9 Gravis enim eſt plaga ej⁹, quoniā pervenit uſq; ad domū Juda, acceſſit ingreſſura portas populi mei uſq; Jeruſalē. 10 In Gath ne annuntietis, planctu nolite plorare qui habitatis in domib⁹ pulverulentis, cinere conſpergant ſe, operiant capita ſua. 11 Tranſite vobis qui habitatis in pulchritudine diſcoopertis verendis nudi & pudefacti : non exierunt ſalvi habitatores Saanan: planctum vobis edite cum pervicacia ob interfectos fortiū veſtrorū in domo profunda, propter domos deſiderabiles veſtras quas violenter abſtuliſtis hanc ad iſtā adjungentes : ideò elegantia terræ veſtræ tolletur à vobis. 12 Nam illa quæ habitabat in amœnitate terræ, & expectabat bona, et ad Legem converti ſperavit: quid facietis? deſcendit enim à facie Dñi malū, ut ingrediatur portas Jeruſalem. 13 Aptate quadrigas, projicite vos ſuper veredos, qui habitatis in Lachis. Initium ſcelerum fuit ipſa cœtui Sion, in te námq; deprehenſi ſunt prævaricatores Iſrael. 14 Propterea mittes munera hæredibus Geth : dom⁹ Achzib tradentur populis propter peccata quib⁹ venerari ſunt idola reges Iſrael. 15 Adhæc adducā hæredes in vos qui habitatis in Mareſſa, uſque ad Odolam aſcendent, atq; terminum terræ Iſraeliticæ ingredientur. 16 Evelle tibi capillos, & projice ſuper filios delicioſos tuos, ſicut aquila cujus alæ delapſæ ſunt : ſic adauge tuum calvitium in capite tuo cauſa filiorum tuorum, ſiquidem à te tranſmigraverunt.

CAP. II.

1 VÆ cogitantibus ad rapinam ut perpetrent quod facinoroſum eſt in cubilibus ſuis: manè conſurgentes patrant illud ; in manu enim eorum adeſt poteſtas. 2 Qui concupiſcunt agros quos rapiunt, & domos quas per vim auferunt, diripiuntq; virum & domum ejus, virum inſuper & hæreditatem ejus.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܬܦܫܪܘܢ ܛܘܪܐ ܬܚܘܬܘܗܝ. ܘܒܩܥܬܐ ܢܬܒܩܥܢ ܐܝܟ ܫܥܘܬܐ ܡܢ ܩܕܡ ܢܘܪܐ. ܘܐܝܟ ܡܝܐ 4
ܕܢܓܕܝܢ ܒܡܫܦܠܐ. * ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܡܛܠ ܥܘܠܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܘܡܛܠ ܚܛܗܐ ܕܒܝܬ 5
ܐܝܣܪܝܠ. ܡܢܘ ܥܘܠܗ ܕܝܥܩܘܒ. ܐܠܐ ܐܢ ܫܡܪܝܢ. ܘܡܢܘ ܚܛܗܗ ܕܝܗܘܕܐ: ܐܠܐ ܐܢ
ܐܘܪܫܠܡ. * ܘܐܥܒܕܝܗ ܠܫܡܪܝܢ ܐܝܟ ܕܒܪܐ ܕܚܩܠܐ ܘܢܨܒܬܐ ܕܟܪܡܐ. ܘܐܪܡܐ ܟܐܦܝܗ 6
ܠܓܠܐ. ܘܐܓܠܐ ܫܬܐܣܝܗ. * ܘܟܠܗܘܢ ܦܬܟܪܝܗ ܢܬܕܩܩܘܢ. ܘܟܠܗܘܢ 7
ܐܓܪܝܗ ܢܬܘܩܕܘܢ ܒܢܘܪܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܨܠܡܝܗ ܐܥܒܕ ܠܚܒܠܐ. ܡܛܠ ܕܡܢ ܐܓܪܐ
ܕܙܢܝܬܐ ܐܬܟܢܫܘ. ܘܠܐܓܪܐ ܕܙܢܝܬܐ ܢܗܦܟܘܢ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܐܪܩܘܕ ܘܐܝܠܠ. 8
ܘܐܗܠܟ ܚܦܝܐ. ܘܥܪܛܠܝܐ. ܘܐܥܒܕ ܡܪܩܕܬܐ ܐܝܟ ܕܝܪܘܪܐ. ܘܐܒܠܐ ܐܝܟ ܕܒܢܬ ܝܪܘܪܐ.
* ܡܛܠ ܕܟܪܝܗ ܡܚܘܬܗ. ܘܡܛܬ ܠܝܗܘܕܐ. ܘܡܛܝܐ ܠܬܪܥܗ ܕܥܡܝ 9
ܠܐܘܪܫܠܡ. * ܒܓܬ ܠܐ ܬܚܕܘܢ. ܘܡܒܟܐ ܠܐ ܬܒܟܘܢ. ܒܒܝܬܐ ܕܥܦܪܐ ܐܬܦܠܦܠܘ ܒܥܦܪܐ. 10
* ܥܒܕܝ ܠܟܝ ܥܡܘܪܬܐ ܕܫܦܝܪ. ܥܪܛܠ ܢܦܩܬ. ܘܠܐ ܒܗܬܬ ܥܡܘܪܬܐ ܕܨܥܢܢ. ܡܪܩܕܬܐ 11
ܕܒܝܬ ܐܘܨܠ ܬܣܒ ܡܢܟܘܢ ܡܚܘܬܗ. * ܡܛܠ ܕܐܬܡܚܝܬ ܠܛܒܬܐ ܥܡܘܪܬܐ. ܘܡܪܪܬ. 12
ܡܛܠ ܕܢܚܬܬ ܒܝܫܬܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܠܬܪܥܐ ܕܐܘܪܫܠܡ ܫܘܝ ܡܪܟܒܬܐ ܕܪܟܫܐ. 13
ܥܡܘܪܬܐ ܕܠܟܝܫ. ܪܫ ܚܛܗܐ ܗܘ ܠܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܡܛܠ ܕܒܟܝ ܐܫܬܟܚܘ ܚܛܗܘܗܝ
ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܬܬܠܘܢ ܫܘܠܚܢܐ ܥܠ ܝܪܬܘܬܐ ܕܓܬ. ܒܬܐ ܕܐܟܙܝܒ ܗܘܘ 14
ܠܐܟܙܝܒܐ. ܠܡܠܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܬܘܒ ܐܝܬܐ ܠܟܝ ܝܪܬܐ ܥܡܘܪܬܐ ܕܡܪܫܐ. ܥܕܡܐ 15
ܠܥܠܡ ܢܐܬܐ ܐܝܩܪܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܩܪܚܝ ܘܓܙܝ. ܥܠ ܒܢܝ ܦܘܢܩܝܟܝ. ܐܪܘܚܝ 16
ܩܪܚܘܬܟܝ ܐܝܟ ܢܫܪܐ. ܡܛܠ ܕܐܫܬܒܝܘ ܡܢܟܝ. * ܫܠܡ ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *
* ܘܝ ܠܐܝܠܝܢ ܕܡܬܚܫܒܝܢ ܥܘܠܐ. ܘܥܒܕܝܢ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܡܫܟܒܝܗܘܢ. ܘܡܩܕܡܝܢ 1
ܒܨܦܪܐ. ܘܥܒܕܝܢ ܡܕܡ ܕܐܬܚܫܒܘ. ܘܡܪܝܡܝܢ ܐܝܕܝܗܘܢ ܠܘܬ ܐܠܗܐ. * ܘܪܓܝܢ ܚܩܠܐ 2
ܘܒܬܐ. ܘܢܣܒܝܢ ܠܗܘܢ ܒܩܛܝܪܐ. ܘܛܠܡܝܢ ܠܓܒܪܐ ܘܠܒܝܬܗ ܘܠܝܪܬܘܬܗ.

Colliqueſcent ſub illo montes, & valles ſeſe 4
diſcindent perinde ac cera à conſpectu ignis,
et ſicut aquæ ſeſe profundētes in locū declivē.
Hæc omnia propter ſcelus Jacobi, & propter 5
peccata domûs Iſraelis. Quodnam eſt ſcelus
Jacobi, niſi Samaritæ? & quod eſt peccatū Judæ,
niſi Jeruſalē? Ideò redigam Samariam in 6
arvum ruris & plantariū vineæ, congerā lapides
ejus in acervū, & retegam fundamenta ipſius:
Omnia ſculptilia ejꝰ minutiſſimè frangentur, 7
omnia numina ejꝰ igne comburentur,
omniáque ſimulacra ipſius redigam in corruptionē:
quoniā ex mercede meretricis congeſta
ſunt, ideò in mercedē meretricis redibunt.
Propter hæc luge & ulula, nudipes ac nuda incede, 8
& planctum ede veluti canis ſylveſtris,
& luctum veluti filiæ canis ſylveſtris: Quòd 9
dolorifica ſit plaga ejus, & pervenerit ad Judam
uſque, & appropinquaverit uſq; ad portam
populi mei, Jeroſolymam uſque. De Gath 10
ne lætemini, neque flendo fleatis: in domibus
Ophræ volutate vos in pulvere. Fac tibi ipſi 11
O habitatrix quod bonū eſt: nuda egreſſa eſt
nec erubuit habitatrix Soanis: luctꝰ Beth-uſel
accipiet à vobis plagā ſuam. Quoniam infirmata 12
eſt ad bonū *agendum* habitatrix, & rebellavit:
ſiquidē malum ejus à conſpectu Dñi
deſcendit. Ad portas Jeroſolymæ habenas aptavit 13
curribꝰ equorū. Habitatrix Lachis origo
peccati eſt filiæ Sionis, quoniā in te reperta
ſunt peccata Iſraelis. Propterea miſſā fa- 14
cies hæreditatē Gath: domus vanitatis fuerunt
vanitati regibus Iſraelis. Adhuc adducam ad 15
te hæredem habitatrix Mirſæ: in ſeculum uſque
extollet gloriam Iſraelis. Depila teipſā,
téque tonde propter filios tuos delicatos: 16
auge pilorum avulſionem ſicut aquilæ, quia
captivi abducti ſunt ex te.

CAP. II.

VÆ iis qui machinantur dolum & aſtruunt 1
malū ſuꝑ cubili ſuo, deinde manè antevertentes
exequuntur ꝙ machinati ſunt: attollūt manus
ſuas ad Deū, Et concupiſcunt agros & 2
domos, & ꝑ vim rapiunt eas; opprimentes virum
propter poſſeſſionē & hæreditatē ipſius.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويتزعزع الجبال من تحته * وتذوب الاودية مثل الشمع من وجه النار * ومثل الماء النازل في 4
الانحدار * من اجل نفاق يعقوب هذه كلها * ولاجل خطية بيت اسرائيل * ما هو نفاق يعقوب * 5
اليس سامرين * وما هي خطية بيت يهوذا * اليس ايروشليم * واصنع سامرين عريشة حقل وغرسة 6
كرم * واطرح حجارتها للفضاء * واكشف اساساتها * ويقطعون كل منحوتاتها * ويحرقون جميع 7
اجرها بالنار * وجميع اوثانها اصنعهم للهلاك * من اجل انها جمعت من اجر الزانية * ومن اجر
الزانية انكسفت * من اجل هذا تتنهد وتنوح * تسير حافية وعريانة * تصنع مناحة مثل التنانين * 8
وحزنا مثل بنات آوى * لان ضربتها تشتدت * من اجل انها اتت الى يهوذا * ولمست حتى باب 9
شعبي الى ايروشليم * ايها الذين في جات لا تتعظموا * والذين في اكيم لا تبنوا من بيت 10
للضحك * احثوا الارض لضحككم * الساكنة مدنها حسنا * لم تخرج الساكنة العراق لتندب 11
بيتا بجانبها * تاخذ ضربة الوجع منكم * من ابتداء بالصالحات لساكنة الاوجاع * لان الشرور 12
نزلت من قبل الرب على باب ايروشليم * فقعقعت المركبات والفرسان * ساكنة لخيس راس 13
خطيتها هي لابنة صهيون * لانه فيك وجدت ذنوب اسرائيل * لاجل هذا تعطي المرسولين الى 14
ميراث جات * البيوت القوية صارت فرغا لملوك اسرائيل * حتى يجلبوا ورثة * ساكنة لخيس 15
الميراث الى ادلام ياتي مجد ابنة اسرائيل * احلقي وجزي على اولادك المترفهة * اوسعي نتفك 15
مثل النسر * لانهم سبيوا منك *

* الفصل الثاني *

* صار مفكري الاتعاب وفاعلي الشرور في مراقدهم * ويكملونها في النهار معا * من اجل 1
انهم لم يرفعوا الى الله ايديهم * واشتهوا الحقول * واختطفوا الايتام * وتسلطوا على البيوت * 2
واختطفوا الرجل وبيته * الرجل وميراثه *

Et contremiſcent ſub eo montes, & liqueſcent valles quaſi cera à facie ignis, & ſicut aqua in declivum defluens. 4
Propter impietatem Jacobi hæc omnia, & propter peccatum domûs Iſraelis. Quænam eſt impietas Jacobi? nonne Samaria? Et quodnam peccatum domûs Judæ? nonne Jeruſalem? 5
Et ponam Samariam in pergulam agreſtem & plantationem vineæ, projiciamq; lapides ejus in apertum campum, *et retegam fundamenta ipſius:* 6
Et concîdent omnia ſculptilia ejus omneſq; mercedes ejꝰ igne comburent, & cuncta ipſius idola excidio exponam. Quia collegit hæc *ex mercedibus fornicariæ, ob mercedes quoq; fornicariæ ſubvertetur.* 7
Hac de cauſa ſuſpirabit ac lugebit, nudipes incedet ac nuda, luctum faciet more draconum, et mœſtitiam more canum ſylveſtrium. 8
Atrox enim erit plaga ejus, quia venit ad Judā uſq;, & pertigit uſq; ad portas populi mei, ad Jeruſalem. 9
O qui eſtis in Gath, ne ſuperbiatis; & qui eſtis in Achim, nullam domū ædificetis ad ridendū, terrā effodite riſui veſtro. 10
Quæ commodè habitat urbes ſuas, non eſt egreſſa quæ habitat in Arac ad plangendā domum ſibi adjacentem: plagam doloris accipiet à vobis. 11
Quis inchoabit beneficia erga habitatricem dolorū? nam mala deſcenderunt à Domino ſuper portam Jeroſolymorum, 12
Stridorem ediderunt currus & equites. Origo peccati habitatricis Lachis tribuenda *eſt filiæ Sionis. Quoniā in te inventæ ſunt culpæ Iſraelis;* 13
Ideo dabis legatos ad hæreditatem Geth (domus potentes factæ ſunt vacuæ, regibus Iſraelis) ut adducant 14
hæredes. O habitatrix Lachis quæ os *hæreditas, ad Odollam veniet gloria filiæ Iſraelis.* 15
Rade & tonde te propter filios tuos delicatè enutritos: dilata plumarum tuarum avulſionem ſicut aquilæ, quia captivi ducti ſunt ex te. 16

CAP. II.

FActi ſunt excogitatores laborum & authores malorum in cubilibus ſuis, eaq; ſimul perficiunt in die. Quia non extulerunt ad Deum manus ſuas, 1
Sed concupierunt agros, diripuerunt pupillos, domos oppreſſerunt; virum ac domum ejus, virum ac hæreditatem ejus rapuerunt: 2

מיכה : ג

hanc familiam ſuper *cogitans* ego Ecce : Dominus dixit ſic Idcirco
3 לָכֵן כֹּה אָמַר יְהוָה הִנְנִי חֹשֵׁב עַל־הַמִּשְׁפָּחָה הַזֹּאת
ambulabitis non & ,veſtra colla *inde* removebitis non quo ,malum
רָעָה אֲשֶׁר לֹא־תָמִישׁוּ מִשָּׁם צַוְּארֹתֵיכֶם וְלֹא תֵלְכוּ
vos ſuper *tollet* ,illa die In .*ipſum* malum tempus quoniã ,ſuperbè
רוֹמָה כִּי עֵת רָעָה הִיא׃ בַּיּוֹם הַהוּא יִשָּׂא עֲלֵיכֶם 4
,ſumus vaſtati *Vaſtando* : dixit,*lamenti* lamentũ lamentabitur &,parabolam
מָשָׁל וְנָהָה נְהִי נִהְיָה אָמַר שָׁדוֹד נְשַׁדֻּנוּ
reſtituendum ad mihi removit quomodo : mutavit mei populi partem
חֵלֶק עַמִּי יָמִיר אֵיךְ יָמִישׁ לִי לְשׁוֹבֵב
funiculum projiciens tibi erit non Idcirco .dividit ,noſtros agros
שָׂדֵינוּ יְחַלֵּק׃ לָכֵן לֹא־יִהְיֶה לְךָ מַשְׁלִיךְ חֶבֶל 5
ſtillabunt non : ſtillabunt ,ſtilletis Ne .Domini cœtu in , *ſorte in*
בְּגוֹרָל בִּקְהַל יְהוָה׃ אַל־תַּטִּפוּ יַטִּיפוּן לֹא־יַטִּפוּ 6
,Jahacob domus dicta O .ignominias comprehendet non , iſtis
לָאֵלֶּה לֹא יִסַּג כְּלִמּוֹת׃ הֶאָמוּר בֵּית־יַעֲקֹב 7
?ejus *ſtudia* hæc nónne ?Domini ſpiritus eſt abbreviatus nunquid
הֲקָצַר רוּחַ יְהוָה אִם־אֵלֶּה מַעֲלָלָיו
me⁹ populus heri Et ? *eunte recto cum* benefacient mea verba Nónne
הֲלוֹא דְבָרַי יֵיטִיבוּ עִם הַיָּשָׁר הוֹלֵךְ׃ וְאֶתְמוּל עַמִּי 8
expoliabatis pallium , *veſtem* adverſo ex : *inſurrexit inimicum in*
לְאוֹיֵב יְקוֹמֵם מִמּוּל שַׂלְמָה אֶדֶר תַּפְשִׁטוּן
mei populi Uxores .prælio *reverſis* ,confidenter tranſeuntibus à
מֵעֹבְרִים בֶּטַח שׁוּבֵי מִלְחָמָה׃ נְשֵׁי עַמִּי 9
tollebatis *ejus* parvulis *deſuper* ,*ejus deliciarum* domo è faciebatis *expellere*
תְּגָרְשׁוּן מִבֵּית תַּעֲנֻגֶיהָ מֵעַל עֹלָלֶיהָ תִּקְחוּ
: requies hæc non quia ,ite & ,Surgite .ſeculum in *meum decorem*
הֲדָרִי לְעוֹלָם׃ קוּמוּ וּלְכוּ כִּי לֹא־זֹאת הַמְּנוּחָה 10
Si .*acri* corruptione & corrumpet immunda eſt *quod propter*
בַּעֲבוּר טָמְאָה תְּחַבֵּל וְחֶבֶל נִמְרָץ׃ לוּ־ 11
tibi ſtillabo,fuerit mentitus mendacium & ,*ventum perambulans* quiſpiam
אִישׁ הֹלֵךְ רוּחַ וָשֶׁקֶר כִּזֵּב אַטִּף לְךָ
Congregando .iſti populo *ſtillans* erit & :ſechar *pro* & ,vino pro
לַיַּיִן וְלַשֵּׁכָר וְהָיָה מַטִּיף הָעָם הַזֶּה׃ אָסֹף 12
: Iſrael reſiduum congregabo congregando ,*te totum* Jahacob cõgregabo
אֶאֱסֹף יַעֲקֹב כֻּלָּךְ קַבֵּץ אֲקַבֵּץ שְׁאֵרִית יִשְׂרָאֵל
,*ſui ductus* medio in gregem tanquã ;Boſrah pecus veluti illũ ponam pariter
יַחַד אֲשִׂימֶנּוּ כְּצֹאן בָּצְרָה כְּעֵדֶר בְּתוֹךְ הַדָּבְרוֹ
,effregerunt ;*eorum facies ad effractor* Aſcendit .*homine* præ tumultuabunt
תְּהִימֶנָה מֵאָדָם׃ עָלָה הַפֹּרֵץ לִפְנֵיהֶם פָּרְצוּ 13
eorum rex tranſivit Et .eam per ſunt egreſſi & , portam tranſierunt &
וַיַּעֲבֹרוּ שַׁעַר וַיֵּצְאוּ בוֹ וַיַּעֲבֹר מַלְכָּם
.eorum capite in Dominus & ,*eorum facies ad*
לִפְנֵיהֶם וַיהוָה בְּרֹאשָׁם׃

CAP. III. ג

: Iſrael domus *gubernatores* & ,Jahacob capita quæſo Audite : dixi Et
1 וָאֹמַר שִׁמְעוּ־נָא רָאשֵׁי יַעֲקֹב וּקְצִינֵי בֵּית יִשְׂרָאֵל
: malum *diligentes* &,bonũ *Odientes* ? judicium ſcire *vobis* Nónne
2 הֲלוֹא לָכֶם לָדַעַת אֶת־הַמִּשְׁפָּט׃ שֹׂנְאֵי טוֹב וְאֹהֲבֵי רָעָה
.eorum oſſibus *deſuper* eorũ carnem & , eis *deſuper* eorũ pellem *rapientes*
גֹּזְלֵי עוֹרָם מֵעֲלֵיהֶם וּשְׁאֵרָם מֵעַל עַצְמוֹתָם׃
eis *deſuper* eorum pellem & ,mei populi carnem comederunt qui Et
3 וַאֲשֶׁר אָכְלוּ שְׁאֵר עַמִּי וְעוֹרָם מֵעֲלֵיהֶם
,lebete in ſicut cõciderunt & :confregerunt eorum oſſa & ,nudaverunt
הִפְשִׁיטוּ וְאֶת־עַצְמֹתֵיהֶם פִּצֵּחוּ וּפָרְשׂוּ כַּאֲשֶׁר בַּסִּיר
.*caldarii* medio in carnem ſicut &
וּכְבָשָׂר בְּתוֹךְ קַלָּחַת׃

Verſio VULG. LAT.

3 Idcircò hæc dicit Dominus;Ecce ego cogito ſuper familiam iſtam malum:unde non auferetis colla veſtra,& non ambulabitis ſuperbi,quoniam tempus peſſimũ eſt. 4 In die illa ſumetur ſuper vos parabola, & cantabitur canticũ cũ ſuavitate, dicentium ; Depopulatione vaſtati ſumus ; pars populi mei commutata eſt : quomodò recedet à me, cùm revertatur,qui regiones noſtras dividat ? 5 Propter hoc non erit tibi mittens funiculum ſortis in cœtu Domini. 6 Ne loquamini loquentes ; Non ſtillabit ſuper iſtos, non comprehendet confuſio. 7 Dicit domus Jacob ; Numquid abbreviatus eſt ſpiritus Dñi, aut tales ſunt cogitationes ejus? Nónne verba mea bona ſunt cum eo, qui rectè graditur ? 8 Et econtrariò populus me⁹ in adverſariũ conſurrexit : deſup tunica pallium ſuſtuliſtis : & eos, qui tranſibant ſimpliciter, convertiſtis in bellum. 9 Mulieres populi mei ejeciſtis de domo deliciarum ſuarum:à parvulis earum tuliſtis laudem meam in perpetuum. 10 Surgite, & ite, quia non habetis hic requiem : propter immunditiam ejus corrumpetur putredine peſſimâ. 11 Utinam non eſſem vir habens ſpiritũ, & mendacium potiùs loquerer : ſtillabo tibi in vinum, & in ebrietatem : & erit ſuper quem ſtillatur populus iſte. 12 Congregatione congregabo,Jacob,totum te : in unũ conducam reliquias Iſrael, pariter ponam illum quaſi gregem in ovili, quaſi pecus in medio caularum , tumultuabuntur à multitudine hominum. 13 Aſcendet enim pandens iter ante eos : divident, & tranſibunt portam, & ingredientur per eam : & tranſibit rex eorum coram eos, & Dominus in capite eorum.

CAP. III.

1 ET dixi ; Audite, principes Jacob,& duces domûs Iſrael:Numquid non veſtrum eſt ſcire judicium, 2 Qui odio habetis bonum, & diligitis malum : qui violenter tollitis pelles eorum deſuper eis, & carnem eorum deſuper oſſibus eorum ? 3 Qui comederunt carnem populi mei, & pellem eorum deſupèr excoriaverunt : & oſſa eorum confregerunt , & conciderunt ſicut in lebête, & quaſi carnem in medio ollæ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Διὰ τοῦτο τάδε λέγει κύριος, Ἰδοὺ ἐγὼ λογίζομαι ἐπὶ τὴν φυλὴν ταύτην κακά, ἐξ ὧν οὐ μὴ ἄρητε τοὺς τραχήλους ὑμῶν, καὶ οὐ μὴ πορευθῆτε (β) ὀρθοὶ ἐξαίφνης, ὅτι καιρὸς πονηρός ἐστιν. 4 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ληφθήσεται ἐφ᾽ ὑμᾶς παραβολή, καὶ θρηνηθήσεται θρῆνος ἐν μέλει, λέγων, Ταλαιπωρίᾳ ἐταλαιπωρήσαμεν· μερὶς λαοῦ μου κατεμετρήθη ἐν σχοινίῳ, καὶ οὐκ ἦν ὁ (γ) κωλύων αὐτὸν τοῦ ἀποστρέψαι. οἱ ἀγροὶ ὑμῶν (δ) διεμερίσθησαν. 5 Διὰ τοῦτο οὐκ ἔσται σοι βάλλων σχοινίον ἐν 6 κλήρῳ. ἐν ἐκκλησίᾳ κυρίου Μὴ κλαίετε δάκρυσι, μηδὲ δακρυέτωσαν ἐπὶ (ε) τούτοις· 7 οὐδὲ γὰρ ἀπώσεται ὀνείδη, Ὁ λέγων, Οἶκος Ἰακὼβ παρώργισε πνεῦμα κυρίου. (ζ) οὐ ταῦτα τὰ ἐπιτηδεύματα αὐτοῦ ἐστιν; οὐχ οἱ λόγοι αὐτοῦ εἰσι καλοὶ μετ᾽ αὐτοῦ; καὶ ὀρθοὶ πεπόρευνται; 8 Καὶ ἔμπροσθεν ὁ λαός μου εἰς ἔχθραν (η) ἀντέστη, κατέναντι τῆς εἰρήνης αὐτοῦ· τὴν δορὰν αὐτοῦ ἐξέδειραν, τοῦ ἀφελέσθαι (θ) 9 ἐλπίδας, συντριμμὸν πολέμου. (ι) Ἡγούμενοι λαοῦ μου ἀπορριφήσονται ἐκ τῶν οἰκιῶν τρυφῆς αὐτῶν, διὰ τὰ πονηρὰ ἐπιτηδεύματα αὐτῶν ἐξώσθησαν. ἐγγίσατε ὄρεσιν αἰωνίοις. 10 Ἀνάστηθι καὶ πορεύου, ὅτι οὐκ ἔστι σοι αὕτη (") ἀνάπαυσις ἕνεκεν ἀκαθαρσίας. διεφθάρητε 11 φθορᾷ, κατεδιώχθητε (·) οὐδενὸς διώκοντος. πνεῦμα ἔστησε ψεῦδος, ἐστάλαξέ σοι εἰς οἶνον καὶ μέθυσμα. καὶ ἔσται, ἐκ τῆς σταγόνος τοῦ 12 λαοῦ τούτου Συναγόμενος συναχθήσεται Ἰακὼβ σὺν πᾶσιν· ἐκδεχόμενος ἐκδέξομαι τοὺς καταλοίπους τοῦ (κ) Ἰσραήλ, ἐπὶ τὸ αὐτὸ θήσομαι τὴν ἀποστροφὴν (λ) αὐτοῦ· ὡς πρόβατα ἐν θλίψει, ὡς ποίμνιον ἐν μέσῳ κοίτης αὐ-13 τῶν· ἐξαλοῦνται ἐξ ἀνθρώπων Διὰ τῆς διακοπῆς πρὸ προσώπου αὐτῶν. διέκοψαν, (μ) καὶ διῆλθον πύλην, καὶ ἐξῆλθον δι᾽ αὐτῆς, καὶ ἐξῆλθεν ὁ βασιλεὺς αὐτῶν πρὸ προσώπου αὐτῶν, ὁ δὲ κύριος ἡγήσεται αὐτῶν.

Propterea hæc dicit Dominus; 3 Ecce ego cogito ſuper tribum iſtã mala,de quibus non auferetis colla veſtra: & non ambulabitis recti ſubitò: quia tempus peſſimum eſt. 4 In die illa ſumetur ſuper vos parabola, & plangetur planctus in cantico,dicendo; Miſeriâ miſeri facti ſumus: pars populi mei dimenſa eſt in funiculo : & non erat,qui prohiberet eum, ut averteretur. Agri (a) veſtri diviſi ſunt : 5 Propter hoc non erit tibi mittens funiculum in hæreditate. 6 In eccleſia Domini (b) Nolite flere lachrymis:neque plorent ſuper his. Non enim abjiciet opprobria, 7 Qui dicit; Domus Jacob ad iram provocavit ſpiritum Domini. Nonne hæ ſunt adinventiones ejus ? nónne ſermones ejus boni ſunt cum eo ? & recti ambulaverunt ? 8 Et anteà populus meus(c)in inimicitia reſtitit contra pacem ſuam. Pellem ejus excoriaverunt,ut auferrent(d)ſpẽ, contritionem belli. 9 Duces populi mei projicientur de domibus deliciarum ſuarum : propter malas adinventiones ſuas ejecti ſunt. Propinquate montibus æternis. 10 Surge, & ambula, quia non eſt tibi hæc requies. Propter immunditiam conſumpti eſtis corruptione : 11 Fugiſtis nemine perſequente. Spiritus ſtatuit mendacium : ſtillavit tibi in vinum,& ebrietatẽ. 12 Et erit,de ſtilla populi hujus Congregandus congregabitur Jacob. Cum omnibus ſuſcipiens ſuſcipiam reliquos de Iſrael in idipſum. Ponam averſionẽ ejus, ſicut oves in tribulatione, quaſi (e) gregem in medio cubilis ſui : exilient ex hominibus (f) 13 Per diviſionem ante faciem eorum, diviſerunt, & tranſierunt portam, & egreſſi ſunt per eam: & exivit rex eorum ante faciem eorum : Dominus autem princeps erit eorum.

MS.A. (β)* ὄρθροι (γ) κωλύσων (δ) διεμετρήθησαν. (ε) τούτῳ· οὐ γὰρ (ζ) ἡ ταῦτα (η) ἀντικατέστη, (θ) ἐλπίδα, (ι) Διὰ τοῦτο ἡγούμενοι (") ἡ ἀνάπαυσις (·) οὐθενὸς (κ) λαοῦ τούτου, ἐπὶ τὸ αὐτὸ (λ) αὐτῶν· (μ) διῆλθον

ΚΕΦ. γʹ.

1 ΚΑὶ ἐρεῖ, Ἀκούσατε δὴ ταῦτα αἱ ἀρχαὶ οἴκου Ἰακὼβ, καὶ οἱ κατάλοιποι οἴκου Ἰσραήλ· 2 οὐχ ὑμῖν ἐστι τοῦ γνῶναι τὸ κρίμα; (α) Μισοῦντες τὰ καλά, καὶ ζητοῦντες τὰ πονηρά, ἁρπάζοντες τὰ δέρματα αὐτῶν ἀπ᾽ αὐτῶν, καὶ τὰς σάρκας αὐτῶν ἀπὸ τῶν ὀστέων αὐτῶν. 3 Ὃν τρόπον κατέφαγον τὰς σάρκας τοῦ λαοῦ μου, καὶ τὰ δέρματα αὐτῶν (β) ἀπ᾽ αὐτῶν ἐξέδειραν, καὶ τὰ (γ) ὀστέα αὐτῶν (δ) συνέθλασαν, καὶ ἐμέλισαν ὡς σάρκας εἰς λέβητα, καὶ ὡς κρέα εἰς χύτραν,

CAP. III.

1 ET dicet; Audite nunc hæc, (a)principia domûs Jacob,& reliqui dom⁹ Iſrael. Nonne veſtrũ eſt cognoſcere judicium? 2 Qui odio habetis bona, & quæritis mala, diripientes pelles eorum ab eis,& carnes eorũ ab oſſibus eorum. 3 Sicut devoraverunt carnes populi mei,& pelles eorum ab eis excoriaverunt, & oſſa eorum confregerunt,& conciderunt ſicut carnes in lebete, & ſicut carnem in olla;

MS. A. (α) Οἱ μισοῦντες (β) ἀπὸ τῶν ὀστέων αὐτῶν (γ) ὀστᾶ (δ) συνέκλασαν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 בכן כדנן אמר יי הא אנא מחשיב על דרא הדין בישא דלא תעדון מתמן צוריכון ולא
4 תהכון בקומה זקופה ארי עדן בישׁ הוא : בעדנא ההיא יטול עליכון מתל ואליא
ובעניתיה יימר אתבוזא אתבוזנא מחולקהון דעמי מעדן להון מאחסנתהון טרדין
5 6 להון תאבין חלקתהון מפלגין : בכן לא יהי לך מתח חוט משח בעדבא בקהלא דיי :
7 לא תתנבון נבואה לא תילפון לעמא הדין ארי לא מקבלין אתכנעו : הכדין כשר
דאמרין דבית יעקב היתקפד מימר מן קדם יי אם אלין עובדוהי הלא כל פתגמי
8 תקניא דאמרית לאיתאה איתיתי על כל דמהלכין בקשוט : מקביל חוביהון עמי
לבעל דבבא מסירין מקבלהון עממיא קימין מחסנין יתהון ממון יקרהון
9 מנהון נסבין עדן בארעהון לרוחצן תיבין בהון כתבירי קרבא : כנישת
עמי תתרכון מבית חדותהון מנהון בניהון דברין גלא יקרהון דהוו אמרין
10 קים לעלמין : קומו וגלו ארי לא דא ארעא בית ניחא לרשיעיא בדיל טמיותה
11 אנון מחבלין בדיל לסאבותה אתון מסתיעין עלה : על דטעו בתר נביי שקרא
דמתנבן להון רוח די שקר ומלפין להון לחמר ולרויו ויהי כמא דאליפו למטעי בתר
12 נביי שקרא כן יגלון לארעא שקרא עם דרא הדין : בסופא כנשא אכנשכון דבית
יעקב כלכון קרבא אקריב גלותכון שארא דישראל כחדא אשוינון כענא בגו חוטרא
13 כעדרא בגו דירא תמן מסני אנשא : יסקון משזבין כד בקדמיתא ויסק מלך מדבר
ברישיהון ויתבר בעלי דבבא דמעיק להון ויכביש כרכין תקיפין קרוי עממיא יחסנונון
ויהי מלכהון מדבר ברישיהון ומימרא דיי בסעדהון :

ג

1 ואמרית שמעו כען רישי יעקב ושלטוני דבית ישראל הלא לכון למדע ית דינא : סנן 2
3 לאטבא ורחמין לאבאשא אנסין נכסי עמא מנהון וממון יקירהון מנהון נסבין : ודי
בזו נכסי עמי וממון יקירהון מנהון נסבין וית שארהון מגמרין תיבין ומפלגין יתהון
כמא דפלגין אבריא לגו דודא וחלקיא לגו קדרא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

3 Idcircò hæc dicit Dominus: Ecce ego molior contra *iſtam generationem* perniciem; unde minimè auferetis colla veſtra, nec erecti ambulabitis, quandoquidem tempus adverſum eſt. 4 Per id temp⁹ aſſumet de vobis parabolam atq; lamentationem [*quiſpiam*,] & dicet in afflictione ſua, Penit⁹ direpti ſumus, & partes populi mei auferuntur ab eis, ab hæreditatibus ſuis detruduntur; reverſi partes eorum dividunt. 5 Propterea non erit tibi tendens funiculum menſuræ in ſortem in Eccleſia Dñi. 6 Ne prophetetis prophetiã neq; doceatis populum iſtũ, nam non admittunt confuſionem. 7 Nunquid rectum iſtud eſt, dicit domus Jacob? nunquid abbreviatum eſt verbum à facie Dñi ? an illa ſunt ejus opera ? nonne omnia verba mea recta erant? quæ me adducturum dixeram, adduxi equidem omnibus in veritate ambulantibus. 8 Propter peccata populi mei inimico traditi ſunt, è regione eorum populi ſtantes poſſident eos, pecuniam eorum pretioſam ab eis tollunt : tranſeuntes per terrã eorum confidenter, convertuntur in eos velut bello confractos. 9 Cœtum populi mei ejeciſtis de domo eorum delicioſa, ab ipſis filios eorum tollentes : tranſlata eſt gloria eorum quam dixerant in æternum permanſuram. 10 Surgite & migrate; ſiquidem non hæc eſt terra domus requiei impiis : ut eam *polluant*, perditè *agunt* ; ut eam efficiatis immundam, contra eam conſociamini. 11 Pro eo quòd aberrarunt poſt pſeudoprophetas, qui eis ſpiritu mendaci prophetabant, quique illos vino & ebrietati aſſuefaciebant, erit profectò ſicuti didicere poſt pſeudoprophetas ab errare, ſic exulabit in terram mendaciorum populus iſtius generationis. 12 In fine planè congregabo vos qui de domo Jahacob univerſos ; captivitatem veſtram reliquias Iſraelis unà applicando copulabo : ponam eos ovium inſtar in medio ovilis, qui gregis more media in caula tumultum edent præ hominũ frequentia. 13 Aſcendent ſalvati ſicut in principio, & aſcendet rex ductor à fronte eorũ, qui conteret inimicum opprimentem eos, atq; expugnabit arces munitas, urbes gentiũ poſſidebunt: rexq; eorũ ducet à fronte eorum, verbo Domini auxilium eis tribuente.

CAP. III.

1 DIxi autem: Audite nunc principes Jahacob & præfecti domus Iſrael: Nonne veſtra referebat judicium cognoſcere ? 2 Odientes benefacere, malefacere verò diligentes, violenter populi facultates ab eo rapientes, pecuniamq; eorũ pretioſam ab ipſis tollentes. 3 Et qui diripuerunt ſubſtantiam populi mei, & pecuniam eorum pretioſam tollunt, reliquiaſq; eorũ conſumunt, converſi dividunt eos quemadmodum qui concidunt membra in fruſta in medio lebetis & particulas in ollæ medio.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܠܗܐ. ܗܐ ܡܬܚܫܒ ܐܢܐ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܫܪܒܬܐ ܗܕܐ. ܕܠܐ
ܬܪܝܡܘܢ ܡܢܗ ܨܘܪܝܟܘܢ. ܘܠܐ ܬܗܠܟܘܢ ܒܩܘܡܬܐ ܦܫܝܛܬܐ. ܡܛܠ ܕܙܒܢܐ ܕܒܝܫܬܐ.
4 * ܗܘ ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܣܒܘܢ ܥܠܝܟܘܢ ܡܬܠܐ. ܘܢܐܠܐ ܐܘܠܝܐ ܒܙܡܪܐ. ܘܢܐܡܪ ܒܙܘܙ
ܒܙܝܢ. ܘܦܠܓܘܬܗ ܕܥܡܝ ܒܚܒܠܐ ܕܡܫܘܚܬܐ. ܘܠܝܬ ܕܢܗܦܘܟ ܚܩܠܬܢ ܒܡܫܘܚܬܐ.
5 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܠܐ ܢܗܘܐ ܠܟ ܕܢܪܡܐ ܚܒܠܐ ܘܢܦܠܓ ܒܦܨܐ. * ܒܟܢܘܫܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܐ 6
ܬܪܡܘܢ ܕܡܥܐ. ܘܠܐ ܬܒܟܘܢ ܥܠ ܗܠܝܢ. * ܕܠܐ ܢܕܪܟܟܘܢ ܚܣܕܐ ܕܐܡܝܪ ܠܒܝܬܗ ܕܝܥܩܘܒ. 7
ܕܐܪܓܙ ܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ ܒܗܠܝܢ ܥܒܕܘܗܝ. ܗܐ ܡ̈ܠܝ ܡܘܬܪܢ ܥܡ ܬܪ̈ܝܨܐ ܕܪܕܘ. ܘܐܫܬܠܡܘ.
8 * ܥܡܝ ܐܝܟ ܓܢܒܐ ܩܐܡ ܗܘܐ ܠܘܩܒܠ ܫܠܡܗ. ܡܫܟܗ ܫܠܚܬܘܢ. ܕܬܥܒܪܘܢ ܣܒܪܗ.
ܘܬܚܕܬܘܢ ܩܪܒܐ. * ܢܫ̈ܐ ܕܥܡܝ ܐܦܩܬܘܢ ܡܢ ܒܝܬ ܦܘܢܩܝܗܝܢ. ܘܡܢ ܒܢܝܗܝܢ ܢܣܒܬܘܢ 9
10 ܫܘܒܚܐ ܠܥܠܡ. * ܩܘܡܘ ܙܠܘ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܗܘܬ ܗܕܐ ܢܝܚܬܐ. ܡܛܠ ܕܛܢܦܘܬܐ ܡܚܒܠܐ
11 ܚܒܠܐ. ܘܚܒܠܗ ܣܓܝ. * ܓܒܪܐ ܕܗܠܟ ܒܪܘܚܐ ܘܒܫܘܩܪܐ ܕܓܠ. ܢܛܦ ܠܟ ܚܡܪܐ
12 ܘܪܘܝܘܬܐ. ܘܗܘ ܡܢ ܢܛܘܦܬܗ ܕܥܡܐ ܗܢܐ. * ܡܟܢܫܘ ܐܟܢܫ ܟܠܟ ܝܥܩܘܒ. ܘܩܒܠܘ
ܐܩܒܠܟܘܢ. ܐܟܚܕܐ ܫܪܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܐܣܝܡܝܘܗܝ ܐܝܟ ܥܢܐ ܕܐܠܝܨܐ. ܘܐܝܟ ܥܕܪܐ
13 ܒܓܘ ܛܝܪܗ ܕܥܪܩ ܡܢ ܐܢܫܐ. * ܣܠܩ ܦܪܘܨܐ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܦܪܨܘ
ܦܪܨܘܬܐ. ܘܥܒܪܘ ܘܢܦܩܘ ܒܗ. ܘܥܒܪ ܡܠܟܗܘܢ ܩܕܡܝܗܘܢ. ܘܡܪܝܐ ܒܪܝܫܗܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

1 * ܘܐܡܪ: ܫܡܥܘ ܗܟܝܠ ܗܠܝܢ ܪ̈ܫܐ ܕܒܝܬ ܝܥܩܘܒ. ܘܫܠܝ̈ܛܢܐ ܕܒܝܬ ܐܝܣܪܝܠ. ܠܐ ܗܘܐ
ܠܟܘܢ ܗܘ ܠܡܕܥ ܕܝܢܐ. * ܣܢܝ̈ ܛܒܬܐ. ܘܪ̈ܚܡܝ ܒܝ̈ܫܬܐ. ܕܚܛܦܝܢ ܡܫܟܝܗܘܢ ܡܢܗܘܢ 2
ܘܒܣܪܗܘܢ ܡܢ ܓܪ̈ܡܝܗܘܢ. * ܕܐܟܠܘ ܒܣܪܗ ܕܥܡܝ. ܘܡܫܟܗܘܢ ܡܢܗܘܢ 3
ܐܦܫܛܘ. ܘܓܪ̈ܡܝܗܘܢ ܬܒܪܘ. ܘܪܡܝܘ ܐܝܟ ܕܒܩܕܪܐ. ܘܐܝܟ ܒܣܪܐ ܒܩܕܪܐ.

Propter hæc ſic dicit Dominus Deus ; Ecce 3
malum cogitabo contra generationem iſtam,
ita ut non elevetis ex eo collum veſtrum, neque
rectâ ſtaturâ incedatis ; quia tempus calamitoſum
erit. Eo die proferet de vobis 4
proverbium, & cum cantu lamentum edet, ac
dicet ; Prædo nos diripiet, & portionem populi
mei menſorio fune dividet, nec erit qui
agros noſtros menſorio fune reſtituat. Icc- 5
circo non erit tibi qui funiculo metiatur, &
ſortibus dividat. In cœtu Domini ne fun- 6
datis lachrymas, néve lachrymemini propter
iſta ; Ne aſſequatur vos opprobrium quod 7
dictum eſt de domo Jacobi, quæ ad iram concitavit
ſpiritum Domini hujuſmodi facinoribus
ſuis. Ecce verba mea profuturà ſunt rectis
qui profecerunt & perfectos ſe reddiderunt.
Populus meus tanquam fur reſiſtebat 8
paci ſuæ : pellem ejus deglubitis, ut amoveatis
ſpem ejus, & redintegretis bellum. Mu- 9
lieres populi mei ejicitis è loco delitiarum
ſuarum, & à filiis earum aufertis honorem in
perpetuum. Surgite, abſcedite ; quia non 10
eſt hæc requies : impuritas enim corruptionem
parit, & corruptio ejus maxima eſt. Vir 11
qui in ſpiritu mendaciter & falsò ambulabat,
ſtillavit tibi vinum & ebrietatem : hoc autem
eſt ex ſtilla populi hujus. Omnino congre- 12
gabo te totum, Jacobe ; & omnino recipiam
vos ſimul, reliquiæ Iſraelis : reddam eum ſicut
oves aſtipatas, & ut gregem in caula ſua
hominibus occulta. Aſcendit perruptor an- 13
te eos, rupit rupturam, & tranſierunt egreſſique
ſunt; tranſivítque rex eorum ante ipſos,
& Dominus à fronte eorum.

CAP. III.

Et dixit, Audite ergò hæc principes do- 1
mûs Jacobi, & præfecti domûs Iſraelis. Nonne
ad vos pertinet nôſſe judicium, Oſores 2
bonorum, & amatores malorum, qui rapitis
cutem iſtorum ab eis, & carnem eorum ab
oſſibus ipſorum ? Qui comediſtis carnem 3
populi mei, & cutem eorum ab eis nudâſtis,
oſſa eorum fregiſtis, & quaſi in cacabum injeciſtis,
& veluti carnem in ollam ?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 *لاجل هذا هكذا يقول الرب * ها انا افكر علي هذه القبيلة شرورا لا ترفعون رقابكم منها * ولا
4 تمشون مستقيمين * لان الوقت الشرير يكون بغتة *في ذلك اليوم يوخذ عليكم مثل * وينوح
5 نوح بتلحين قايلا * شقينا بشقوة * مارس شعبي قسم بالحبل * ولم يكن من يمنعه ليرده * حقولكم
6 قيست * لاجل هذا لا يكون لك واضع حبل بالقرعة في جماعة الرب * لا تبكوا بدموع * ولا
تدمعوا على هذه *لان القايل لا يقضي العار * بيت يعقوب اغضب روح الرب * اهذه الاعمال لهم
8 هي * اليس اقواله جيدة هي معه * وسلك مستقيمة * ومن قدام * شعبي قام للعداوة قبالة
9 سلامته * سلخوا جلده ليزيلوا الرجاء مكسورا من الحرب *لاجل هذا مقدموا شعبي يطردون
10 من بيوت نعمتهم * لاجل اعمالهم الشريرة افسدوا * اقتربوا للجبال الدهرية * قم وامض لانه
ليست لك هذه راحة * من اجل النجاسة فسدتم بفساد * طردتم وليس من واحد يطرد * روح
اقام كذبا * قطر لك خمرا وسكرا * ويكون من قطر هذا الشعب * اجمع يعقوب فيجتمع
مع الكل * مقبل اقبلهم * بقايا اسرايل جميعا * اضع انصرافهم مثل خراف في ضيقة
مثل قطيع في وسط مرقدهم * يفرون من الناس لاجل الثلمة قدام وجههم * والرب
يتقدمهم *

* الفصل الثالث *

* ويقول * اسمعوا هذه يا روساء بيت يعقوب * ويا بقايا بيت اسرايل * اليس ينبغي لكم ان
تعرفوا الحكم * يا مبغضي الحسنات * وطالبي الشرور * خاطفي جلودهم منهم * ولحومهم من
عظامهم * كما اكلوا لحوم شعبي * وسلخوا جلودهم من عظامهم * ورضوا عظامهم * وبضعوها
مثل اللحم في المرجل * ومثل اللحم في القدر *

Iccirco ſic dicit Dominus ; En ego mala 3
meditor contra gentem iſtam, quibus non
exeretis colla veſtra, neque recti incedetis ;
quia tempus peſſimum erit ſubitò.
Eâ die ſumetur de vobis proverbium, 4
& plangetur planctus cum cantu, his verbis :
Miſeriam paſſi ſumus : ager populi
mei ſuniculo diviſus eſt, nec fuit qui
probiberet eum, ut reſtitueret. Agri veſtri 5
menſurati ſunt ; ideo non erit tibi funiculum
in ſorte ponens in cœtu Domini.
Ne flexis cum lachrymis, néve lachry- 6
memini propter hæc : Nam qui dicit, 7
non perficit opprobrium. Domus Jacobi
irritavit ſpiritum Domini : an hujuſmodi
actiones, ipſorum ſunt ? annon
ſermones ejus optimi ſunt cum eo, rectáque
incedunt ? Antea tamen populus 8
meus ad inimicitiam ſurrexit contra
pacem ſuam. Detraxerunt pellem ejus,
ut ſpem auferrent bello contritam. Pro- 9
pterea duces populi mei ejicientur è domibus
delitiarum ſuarum, propter opera
ſua mala exterminati ſunt, acceſſerunt
ad montes æternos. Surge, & abi ; quia 10
non eſt tibi hæc requies : propter immunditiam
planè corrupti eſtis : ex-
pulſi eſtis nemine proſequente. Spiritus 11
quidam aſſeruit mendacium, ſtillavit
tibi vinum & ebrietatem. Et erit ut ex
hujus populi ſtilla Congregem Jaco- 12
bum, & quidem congregetur cum omnibus :
libenter ſuſcipiam eos, nempe reliquias
Iſraelis ſimul : ponam commigrationem
eorum velut oves in anguſtia,
velut gregem in medio cubilis ſui :
Fugient ab hominibus propter rupturam 13
faciei ſuæ objectam. Dominus autem
præveniet eos,

CAP. III.

Dicetque ; Audite hæc O princi- 1
pes domûs Jacobi, & O reliquiæ domûs
Iſraelis. Nonne vos decet nôſſe judicium
O bonorum oſores, amatores 2
verò malorum, rapientes pelles eorum
ab ipſis, & carnes eorum ab oſſibus
eorum ? Quemadmodum comederunt 3
carnes populi mei, pelles eorum ex eorum
oſſibus detraxerunt, oſſaque contuderunt,
& diſſecuerunt eos ut carnem
in lebete, & ut carnem in
olla :

מִיכָה : ד

abſcondet & : eos exaudiet non & ,Dominum ad clamabunt Tunc
4 אָז יִזְעֲקוּ אֶל־יְהוָה וְלֹא יַעֲנֶה אוֹתָם וְיַסְתֵּר
.ſua *ſtudia* mala fecerunt ſicut , illo tempore in eis ab *ſuas facies*
פָּנָיו מֵהֶם בָּעֵת הַהִיא כַּאֲשֶׁר הֵרֵעוּ מַעַלְלֵיהֶם׃
,meu populum *facientes errare* , prophetas ſuper Dominus dixit Sic
5 כֹּה אָמַר יְהוָה עַל־הַנְּבִיאִים הַמַּתְעִים אֶת־עַמִּי
dederit non qui & , pacem *prædicaverunt* & ,ſuis dentibus *in mordentes*
הַנֹּשְׁכִים בְּשִׁנֵּיהֶם וְקָרְאוּ שָׁלוֹם וַאֲשֶׁר לֹא־יִתֵּן
vobis nox Propterea .bellum *eum ſuper ſacraverunt* & ,eorum ore in
6 עַל־פִּיהֶם וְקִדְּשׁוּ עָלָיו מִלְחָמָה׃ לָכֵן לַיְלָה לָכֶם
ſuper Sol *intrabit* & ; divinatione ex vobis *obtenebreſcet* & ,viſione ex
מֵחָזוֹן וְחָשְׁכָה לָכֶם מִקְּסֹם וּבָאָה הַשֶּׁמֶשׁ עַל־
, videntes afficientur pudore Et .dies eos ſuper *nigreſcet* & ,prophetas
7 הַנְּבִיאִים וְקָדַר עֲלֵיהֶם הַיּוֹם׃ וּבֹשׁוּ הַחֹזִים
quia : ipſi univerſi *myſtacem ſuper* operient & , divini erubeſcent &
וְחָפְרוּ הַקֹּסְמִים וְעָטוּ עַל־שָׂפָם כֻּלָּם כִּי
fortitudine ſum repletus ego verè Et .Dei *reſponſum* non
8 אֵין מַעֲנֵה אֱלֹהִים׃ וְאוּלָם אָנֹכִי מָלֵאתִי כֹחַ
indicandum ad , fortitudine & , judicio & , Domini ſpiritus
אֶת־רוּחַ יְהוָה וּמִשְׁפָּט וּגְבוּרָה לְהַגִּיד
Audite .ſuum peccatum Iſrael & ,ſuam prævaricationem Jahacob
9 לְיַעֲקֹב פִּשְׁעוֹ וּלְיִשְׂרָאֵל חַטָּאתוֹ׃ שִׁמְעוּ־
, Iſrael domus *imperatores* & ,Jahacob domus capita hoc quæſo
נָא זֹאת רָאשֵׁי בֵּית יַעֲקֹב וּקְצִינֵי בֵּית יִשְׂרָאֵל
Ædificans .diſtorquetis rectum omne & ,judicium *abominabile facientes*
10 הַמְתַעֲבִים מִשְׁפָּט וְאֵת כָּל־הַיְשָׁרָה יְעַקֵּשׁוּ׃ בֹּנֶה
munere in ejus *Capita* .iniquitate *in* Jeruſalaim & ,*ſanguinibus in* Sijon
11 צִיּוֹן בְּדָמִים וִירוּשָׁלַם בְּעַוְלָה׃ רָאשֶׁיהָ ׀ בְּשֹׁחַד
ejus prophetæ & , docebant pretio *in* ejus ſacerdotes & , judicabant
יִשְׁפֹּטוּ וְכֹהֲנֶיהָ בִּמְחִיר יוֹרוּ וּנְבִיאֶיהָ
Nonne : dicendo ,innitebantur Domino *ſuper* & : divinabant argento *in*
בְּכֶסֶף יִקְסֹמוּ וְעַל־יְהוָה יִשָּׁעֵנוּ לֵאמֹר הֲלוֹא
Idcirco .malum nos ſuper veniet non *? noſtro interiori in* Dominus
12 יְהוָה בְּקִרְבֵּנוּ לֹא־תָבוֹא עָלֵינוּ רָעָה׃ לָכֵן
, erit acervi Jeruſalaim & ; arabitur ager Sijon vos propter
בִּגְלַלְכֶם צִיּוֹן שָׂדֶה תֵחָרֵשׁ וִירוּשָׁלַם עִיִּין תִּהְיֶה
.ſylvæ excelſa *in domus* mons &
וְהַר הַבַּיִת לְבָמוֹת יָעַר׃

Verſio VULG. LAT.

4 Tunc clamabunt ad Dominum, & non exaudiet eos : & abſcondet faciē ſuam ab eis in tempore illo, ſicut nequiter egerunt in adinventionibus ſuis. 5 Hæc dicit Dominus ſuper prophetas, qui ſeducunt populum meum : qui mordent dentibus ſuis, & prædicant pacem : & ſi quis non dederit in ore eorum quidpiam, ſanctificant 6 ſuper eum prælium. Propterea nox vobis pro viſione erit, & tenebræ vobis pro divinatione : & occumbet Sol ſuper prophetas, & obtenebrabitur ſuper eos dies. 7 Et confundentur qui vident viſiones, & confundentur divini : & operient omnes vultus ſuos, quia 8 non eſt reſponſum Dei. Veruntamen ego repletus ſum fortitudine ſpiritûs Domini, judicio, & virtute : ut annuntiem Jacob ſcelus ſuum, & Iſrael peccatum ſuū. 9 Audite hoc, principes domûs Jacob, & judices domûs Iſrael : qui abominamini judicium, & omnia 10 recta pervertitis. Qui ædificatis Sion in ſanguinibus, & Jeruſa- 11 lem in iniquitate. Principes ejus in muneribus judicabant, & ſacerdotes ejus in mercede docebant, & prophetæ ejus in pecunia divinabant : & ſuper Dominum requieſcebant, dicentes ; Numquid non Dominus in medio noſtrûm ? non venient ſuper nos 12 mala. Propter hoc, cauſâ veſtri, Sion quaſi ager arabitur, & Jeruſalem quaſi acervus lapidum erit, & mons templi in excelſa ſylvarum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

4 Οὕτως κεκράξονται πρὸς (ε) τὸν κύριον, καὶ οὐκ εἰσακούσεται αὐτῶν· καὶ ἀποστρέψει τὸ πρόσωπον αὐτοῦ ἀπ᾽ αὐτῶν ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ἀνθ᾽ ὧν ἐπονηρεύσαντο ἐν τοῖς 5 ἐπιτηδεύμασιν αὐτῶν ἐπ᾽ αὐτούς. Τάδε λέγει κύριος ἐπὶ τοὺς προφήτας τοὺς πλανῶντας τὸν λαόν μου, τοὺς δάκνοντας ἐν τοῖς ὀδοῦσιν αὐτῶν, καὶ κηρύσσοντας (ζ) εἰρήνην ἐπ᾽ αὐτὸν, καὶ οὐκ ἐδόθη εἰς τὸ στόμα 6 αὐτῶν, ἤγειραν ἐπ᾽ αὐτὸν πόλεμον· Διατοῦτο νὺξ ὑμῖν ἔσται ἐξ ὁράσεως, καὶ σκοτία (η) ἔσται ὑμῖν ἐκ μαντείας, καὶ δύσεται ὁ ἥλιος ἐπὶ τοὺς προφήτας, καὶ συσκοτάσει ἐπ᾽ 7 αὐτοὺς ἡ ἡμέρα. Καὶ καταισχυνθήσονται οἱ ὁρῶντες τὰ ἐνύπνια, καὶ καταγελασθήσονται οἱ μάντεις, καὶ καταλαλήσουσι κατ᾽ αὐτῶν πάντες αὐτοὶ, διότι οὐκ ἔσται ὁ (θ) ἐπ- 8 ακούων αὐτῶν· Ἐὰν μὴ (ι) ἐγὼ ἐμπλήσω ἰσχὺν ἐν πνεύματι κυρίου καὶ κρίματος καὶ δυναστείας, τοῦ ἀπαγγεῖλαι τῷ Ἰακὼβ ἀσεβείας αὐτοῦ, καὶ τῷ Ἰσραὴλ ἁμαρτίας αὐτοῦ. Ἀκού- 9 σατε δὴ ταῦτα οἱ ἡγούμενοι οἴκου (κ) Ἰακὼβ, καὶ οἱ κατάλοιποι οἴκου (λ) Ἰσραὴλ, οἱ βδελυσσόμενοι κρίμα, καὶ πάντα τὰ ὀρθὰ 10 διαστρέφοντες, Οἱ οἰκοδομοῦντες (μ) Σιὼν ἐν αἵμασι, καὶ Ἱερουσαλὴμ ἐν ἀδικίαις. 11 Οἱ ἡγούμενοι αὐτῆς μετὰ δώρων ἔκρινον, καὶ οἱ ἱερεῖς αὐτῆς μετὰ μισθοῦ ἀπεκρίνοντο, καὶ οἱ προφῆται αὐτῆς μετὰ ἀργυρίου ἐμαντεύοντο, καὶ ἐπὶ τὸν κύριον ἐπανεπαύοντο, 12 λέγοντες, Οὐχὶ (ν) ὁ κύριος ἐν ἡμῖν ἐστιν; οὐ μὴ ἐπέλθῃ ἐφ᾽ ἡμᾶς (ξ) κακά. Διατοῦτο δι᾽ ὑμᾶς Σιὼν ὡς ἀγρὸς ἀροτριαθήσεται, καὶ Ἱερουσαλὴμ (ο) ὡς ὀπωροφυλάκιον ἔσται, καὶ τὸ ὄρος τοῦ οἴκου (π) εἰς ἄλσος δρυμοῦ.

MA. A. (ε) κύριον, (ζ) ἐπ᾽ αὐτὸν εἰρήνην, (η) ὑμῖν ἔσται (θ) ἐπακούσων (ι) ἐμπλήσω ἐγὼ (κ) Ἰσραὴλ, (λ) Ἰακὼβ, (μ) ἐν αἵμασιν, καὶ (ν) κύριος (ξ) τὰ κακά. (ο) εἰς (π) ὡς

Sic clamabunt ad Dominum, & non exaudiet eos : & avertet faciem ſuam ab eis in tempore illo, eò quòd peſſimè egerunt in adinventionibus ſuis (b) ſuper eos. Hæc dicit Dominus ſuper prophetas, qui ſeducunt populum meum, qui mordent dentibus ſuis, & prædicant ſuper eum pacem : & non eſt data in ore eorum. (c) Excitaverunt ſuper eum prælium. Propterea nox vobis erit ex viſione : & tenebræ erunt vobis ex divinatione : & occumbet Sol ſuper prophetas : & contenebreſcet ſuper eos dies : Et confundentur, qui vident ſomnia : & irridebuntur arioli : & loquentur adverſùm eos omnes iſti : quia non erit, qui exaudiat eos : Niſi ego implevero fortitudinem in ſpiritu Domini, (d) & judicii, & potentiæ ; ut annuntiem Jacob impietates ejus, & Iſrael peccata ejus. Audite nunc hæc, duces domûs Jacob, & reliqui domûs Iſrael : qui abominamini judicium, & omnia recta pervertitis : Qui ædificatis Sion in ſanguinibus, & Hieruſalem in iniquitatibus. Duces ejus cum muneribus judicabant, & ſacerdotes ejus cum mercede reſpondebant : & prophetæ ejus cum pecunia divinabant : & ſuper Dominum requieſcebant, dicentes ; Nonne Dominus in nobis eſt ? Non venient ſuper nos mala. (e) Idcircò propter vos Sion quaſi ager arabitur, & Hieruſalem, ut cuſtodia pomarii erit, & mons (f) domûs in lucum ſaltûs. 4 5 6 7 8 9 10 11 12

CAP. IV. ד

præparatus Domini domus mons erit dierum noviſſimo in ,erit Et
1 וְהָיָה ׀ בְּאַחֲרִית הַיָּמִים יִהְיֶה הַר בֵּית־יְהוָה נָכוֹן
.populi eum ad fluent &:collibus *præ ipſe exaltabitur* &,montium *capite* in
בְּרֹאשׁ הֶהָרִים וְנִשָּׂא הוּא מִגְּבָעוֹת וְנָהֲרוּ עָלָיו עַמִּים׃
montem ad aſcendamus & ,Venite : dicent & ,multæ gentes ibunt Et
2 וְהָלְכוּ גּוֹיִם רַבִּים וְאָמְרוּ לְכוּ ׀ וְנַעֲלֶה אֶל־הַר־
,*ſuis viis de* nos docebit & , Jahacob Dei domum ad & , Domini
יְהוָה וְאֶל־בֵּית אֱלֹהֵי יַעֲקֹב וְיוֹרֵנוּ מִדְּרָכָיו
verbum & ,lex egredietur Sijon de quia : ejus ſemitis in ambulabimꝰ &
וְנֵלְכָה בְּאֹרְחֹתָיו כִּי מִצִּיּוֹן תֵּצֵא תוֹרָה וּדְבַר
, multos populos inter judicabit Et .Jeruſalaim de Domini
3 יְהוָה מִירוּשָׁלָם׃ וְשָׁפַט בֵּין עַמִּים רַבִּים
ſuos gladios *contundent* &:longinquum in uſque fortes gentes corripiet &
וְהוֹכִיחַ לְגוֹיִם עֲצֻמִים עַד־רָחוֹק וְכִתְּתוּ חַרְבֹתֵיהֶם
gentem contra gens *tollent* non : falces in ſuas haſtas & , ligones in
לְאִתִּים וַחֲנִיתֹתֵיהֶם לְמַזְמֵרוֹת לֹא־יִשְׂאוּ גּוֹי אֶל־גּוֹי
.bellum ultrà diſcent nec , gladium
חֶרֶב וְלֹא־יִלְמְדוּן עוֹד מִלְחָמָה׃

CAP. IV.

1 ET erit : In noviſſimo dierum erit mons domûs Domini præparatus in vertice montium, & ſublimis ſuper colles : & fluent ad 2 eum populi. Et properabunt gentes multæ, & dicent ; Venite, aſcendamus ad montem Domini, & ad domum Dei Jacob : & docebit nos de viis ſuis, & ibimus in ſemitis ejus : quia de Sion egredietur lex, & verbum Domi- 3 ni de Jeruſalem. Et judicabit inter populos multos, & corripiet gentes fortes uſque in longinquum : & concident gladios ſuos in vomeres, & haſtas ſuas in ligones : non ſumet gens adverſùs gentem gladium : & non diſcent ultrà belligerare.

ΚΕΦ. δ΄.

1 ΚΑὶ ἔσται ἐπ᾽ ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν ἐμφανὲς τὸ ὄρος (α) κυρίου, ἕτοιμον ἐπὶ τὰς κορυφὰς τῶν ὀρέων, καὶ μετεωρισθήσεται ὑπεράνω τῶν βουνῶν. καὶ σπεύσουσιν πρὸς 2 αὐτὸ λαοὶ, Καὶ πορεύσονται (β) ἔθνη πολλὰ καὶ ἐροῦσι, Δεῦτε, ἀναβῶμεν εἰς τὸ ὄρος (˝) κυρίου, καὶ εἰς τὸν οἶκον τοῦ θεοῦ Ἰακώβ· καὶ δείξουσιν ἡμῖν τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, καὶ πορευσόμεθα ἐν ταῖς τρίβοις αὐτοῦ· ὅτι ἐκ Σιὼν ἐξελεύσεται νόμος, καὶ λόγος κυρίου ἐξ 3 Ἱερουσαλήμ. Καὶ κρινεῖ ἀναμέσον λαῶν πολλῶν, καὶ (˝) ἐξελέγξει ἔθνη ἰσχυρὰ ἕως εἰς (γ) μακράν· καὶ κατακόψουσι τὰς ῥομφαίας αὐτῶν εἰς ἄροτρα, καὶ (δ) τὰ δόρατα αὐτῶν εἰς δρέπανα, καὶ οὐκέτι (ε) μὴ ἀντάρῃ ἔθνος ἐπ᾽ ἔθνος ῥομφαίαν, καὶ (ζ) οὐκέτι μὴ μάθωσι πολεμεῖν.

MS. A. (α) τοῦ κυρίου, (β) πρὸς αὐτὸ ἔθνη (˝) τοῦ κυρίου, (˝) ἐλέγξει (γ) τοῦ μακράν· (δ) τὰς ζιβύνας (ε) οὐ μὴ ἄρῃ (ζ) οὐ μὴ μάθωσιν ἔτι πολεμεῖν.

CAP. IV.

ET erit in noviſſimis dierum manifeſtus mons Domini, præparatus ſuper (a) vertices montium : et elevabitur ſuper colles. Et feſtinabunt ad eum populi, Et ibunt gentes multæ, & dicent ; Venite, aſcendamus ad (b) montem Domini, & in domum Dei Jacob : & (c) oſtendent nobis viam ejus : & ambulabimus in ſemitis ejus : quia de Sion exibit lex, & verbum Domini de Hieruſalem. Et judicabit inter populos multos, & arguet gentes fortes uſque in longinquum : & concident gladios ſuos in aratra, & (d) haſtas ſuas in falces : & ultrà non tollet gens contra gentem gladium, & nequaquam ultrà diſcent bellare. 1 2 3

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 בְּכֵן יְצַלּוֹן קֳדָם יְיָ וְלָא יְקַבֵּל צְלוֹתְהוֹן וִיסַלֵּק שְׁכִנְתֵּיהּ מִנְהוֹן בְּעִדָּנָא הַהִיא כְּמָא
5 דְּאַבְאִישׁוּ עוֹבָדֵיהוֹן׃ כִּדְנַן אֲמַר יְיָ עַל נְבִיַּיָא דְּשִׁקְרָא דְּמַטְעַן יָת עַמִּי דְּמַן מוֹכִיל לְהוֹן
6 שֵׁרוּן דִּבְסַר מִתְנַבַּן עֲלוֹהִי שְׁלָמָא וּדְלָא מוֹכִיל לְהוֹן מְזַמְּנִין עֲלוֹהִי קְרָבָא׃ בְּכֵן
תִּבְהֲתוּן מִלְּאִתְנַבָּאָה וְתִתְכַּנְעוּן מִלְּאַלָּפָא וְתַחְפֵּי עָקָא כְּקִבְלָא יָת נְבִיֵּי שִׁקְרָא וְיִקְבַּל
7 עֲלֵיהוֹן עִדָּנָא׃ וְיִבְהֲתוּן נְבִיֵּי שִׁקְרָא וְיִתְכַּנְעוּן מִלְּאַלָּפָא וְיִתְעַטְּפוּן עַל שְׂפָם כְּאַבְלִין
8 כּוּלְּהוֹן אֲרֵי לֵית בְּהוֹן רוּחַ נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ׃ וּבְרַם אֲנָא אִתְמְלֵיתִי בִּתְקוֹף רוּחַ נְבוּאָה
9 מִן קֳדָם יְיָ וְדִין דִּקְשׁוֹט וּגְבוּרְתָּא לְחַוָּאָה לְיַעֲקֹב חוֹבוֹהִי וּלְיִשְׂרָאֵל חַטָּאוֹהִי׃ שְׁמַעוּ
כְּעַן דָּא רֵישֵׁי בֵּית יַעֲקֹב וְשִׁלְטוֹנֵי בֵּית יִשְׂרָאֵל דִּי מְקַלְקְלִין אוֹרְחַת דִּינָא וְיָת כָּל כֵּוָּנְתָּא
10 11 מְעַקְמִין׃ דְּבָנַן בָּתֵּיהוֹן בְּצִיּוֹן בְּדַם אֲשִׁיד וִירוּשְׁלֵם בִּנְכָלִין׃ רֵישָׁהָא בְּשׁוֹחֲדָא דָּיְנִין
וְכָהֲנָהָא בְּמָמוֹן מוֹרַן וּנְבִיָּהָא בְּכַסְפָּא מַלְּפִין וְעַל מֵימְרָא דַּייָ מִסְתַּמְּכִין לְמֵימַר הֲלָא
12 שְׁכִנְתָּא דַּייָ בֵּינָנָא אָמְרִין לָא תֵיתֵי עֲלָנָא בִּישְׁתָּא׃ בְּכֵן בְּדִיל חוֹבֵיכוֹן צִיּוֹן חֲקַל תִּתְרְדֵי
וִירוּשְׁלֵם לְיִגְרִין תְּהֵי וְטוּר בֵּית מַקְדְּשָׁא לְחֵישַׁת חוּרְשָׁא׃

ד

1 וִיהֵי בְּסוֹף יוֹמַיָּא יְהֵי טוּר בֵּית מַקְדְּשָׁא דַּייָ מְתַקַּן בְּרֵישׁ טוּרַיָּא וּמְנַטַּל הוּא מֵרָמָתָא
2 וְיִתְפְּנוּן לְמִפְלַח עֲלוֹהִי מַלְכְוָתָא׃ וִיהָכוּן עַמְמִין סַגִּיאִין וְיֵימְרוּן אֱתוֹ וְנִסַּק לְטוּר בֵּית
מַקְדְּשָׁא דַּייָ מְתַקַּן וּלְבֵית שְׁכִינַת אֱלָהֵיהּ דְּיַעֲקֹב וְיַלְּפִנָּנָא מֵאוֹרְחָן דְּתַקְנָן קֳדָמוֹהִי וּנְהָךְ
3 בְּאוּלְפַן אוֹרָיְתֵיהּ אֲרֵי מִצִּיּוֹן תִּפּוֹק אוֹרָיְתָא וְאוּלְפַן פִּתְגָמָא דַּייָ מִירוּשְׁלֵם׃ וְיִדּוֹן בֵּין
עַמְמִין סַגִּיאִין וְיוֹכַח לְמַלְכִין תַּקִּיפִין עַד עָלְמָא וִיעַפְּפוּן סַיְפֵיהוֹן לְסִכִּין וּמוּרְנְיָתֵיהוֹן
לְמַגְּלִין לָא יִטְּלוּן עַם בְּאַפֵּי עַם סַיְפִין וְזֵין וְלָא יִתְאַלְּפוּן עוֹד מֵעֲבַד קְרָבָא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Tunc orabunt ad Dominum, & non exaudiet orationem eorum : quin potius 4 majeſtatem ſuam ſubducet ab eis tempore illo, prout ipſi mala fecerunt opera ſua. Sic dicit Dominus contra pſeudoprophetas qui ſeducunt populum 5 meum, quòd qui offert eis convivium carnis, pacem ei vaticinantur : adverſus autem eum qui non offert eis, bellum inſtruunt. Ideò confundemini quo mi- 6 nus prophetetis, & erubeſcetis ne doceatis, operietque tribulatio velut caligo falſos prophetas, inſuper obtenebrabitur ſuper eos tempus. Confundentur 7 porrò pſeudoprophetæ & pudefient, ita ut non doceant ; involventque ſuperum labrum ſuum velut lugentes, eorum ſinguli, quandoquidem non ſit in eis ſpiritus propheticus à facie Domini. Verumenimverò repletus ſum ego 8 virtute ſpiritus prophetiæ à facie Domini, atque judicio veritatis ac fortitudinis, ut annuntiem Jahacob ſcelera ejus, & Iſrael ſua peccata. Audite nunc 9 iſtud principes familiæ Jahacob & præfecti domus Iſraeliticæ, qui conſuetudinem judicii corrumpitis, omniaque recta pervertitis. Condentes domos 10 ſuas in Sion cum ſanguine effuſo, & Jeruſalem dolis. Principes ejus pro mu- 11 nere jus dicunt, & Sacerdotes ejus pro pecunia erudiunt, atque *prophetæ ejus* pro argento docent, ac in verbum Domini innituntur, dicentes : An non majeſtas Domini inter nos eſt? non adorietur nos malum, inquiunt. Propter- 12 eà ob peccata veſtra Sion [*ut*] ager arabitur, & Jeruſalem in acervos redigetur, atque mons domus ſanctuarii in arundinetum ſaltus.

CAP. IV.

FUturum eſt autem poſtremis diebus, ut ſit mons ſanctuarii Domini præparatus in vertice montium atque collibus excelſior, & vultus vertent ut ſerviant ſuper eo regna. Ibunt itaque populi complures, & dicent : Venite & aſcendamus in montem domus ſanctuarii Domini *præparatum*, & ad domum majeſtatis Dei Jacob : docebit nos ſanè vias quæ corā ſe rectæ ſint, & ambulabimus in doctrina Legis ejus : quia de Sion prodibit Lex, & doctrina ſermonis Domini de Jeruſalem. Et judicabit inter populos multos, atq; arguet reges fortes in perpetuum uſque : conflabunt verò gladios ſuos in vomeres, & lanceas ſuas in falces : nec aſſumet gens contra gentem gladios nec arma, neque diſcent deinceps prœliari.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܝܕܝܢ ܢܩܥܘܢ ܠܘܬ ܡܪܝܐ܂ ܘܠܐ ܢܥܢܐ ܐܢܘܢ܂ ܘܢܗܦܘܟ ܐܦܘܗܝ ܡܢܗܘܢ ܒܙܒܢܐ ܗܘ܂ 4
ܥܠ ܕܐܒܐܫܘ ܒܥܒܕܝܗܘܢ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܥܠ ܢܒܝܐ ܕܡܛܥܝܢ ܠܥܡܝ܂ ܕܢܟܬܝܢ 5
ܒܫܢܝܗܘܢ ܘܩܪܝܢ ܫܠܡܐ܂ ܘܡܢ ܕܠܐ ܝܗܒ ܒܦܘܡܗܘܢ܂ ܡܩܕܫܝܢ ܥܠܘܗܝ ܩܪܒܐ܂
* ܡܛܠ ܗܢܐ܂ ܠܠܝܐ ܠܟܘܢ ܡܢ ܚܙܘܐ܂ ܘܢܚܫܟ ܠܟܘܢ ܡܢ ܩܣܡܐ܂ ܘܬܥܪܒ ܫܡܫܐ ܥܠ 6
ܢܒܝܐ܂ ܘܢܚܫܟ ܥܠܝܗܘܢ ܝܘܡܐ܂ * ܘܢܒܗܬܘܢ ܐܝܠܝܢ ܕܚܙܝܢ ܚܙܘܢܐ ܘܢܬܚܦܪܘܢ 7
ܩܨܘܡܐ܂ ܘܢܬܟܪܟܘܢ ܟܠܗܘܢ ܒܣܦܘܬܗܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܠܐ ܥܢܐ ܠܗܘܢ ܐܠܗܐ܂ * ܒܪܡ 8
ܐܢܐ ܡܠܝܬ ܚܝܠܐ ܕܪܘܚܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܘܕܝܢܐ ܘܓܢܒܪܘܬܐ܂ ܕܐܚܘܐ ܠܝܥܩܘܒ ܥܘܠܗ
ܘܠܐܝܣܪܝܠ ܚܛܗܝܗ܂ * ܫܡܥܘ ܗܟܝܠ ܗܕܐ ܪ̈ܝܫܐ ܕܒܝܬ ܝܥܩܘܒ܂ ܘܡܕܒܪ̈ܢܐ ܕܒܝܬ 9
ܐܝܣܪܝܠ܂ ܕܡܣܠܝܢ ܕܝܢܐ܂ ܘܡܥܩܡܝܢ ܟܠܗܝܢ ܬܪܝܨܬܐ܂ * ܕܒܢܝܢ ܨܗܝܘܢ ܒܕܡܐ܂ 10
ܘܠܐܘܪܫܠܡ ܒܥܘܠܐ܂ * ܪܝܫܝܗ ܒܫܘܚܕܐ ܕܐܢܝܢ܂ ܘܟܗܢܝܗ ܒܐܓܪܐ ܡܠܦܝܢ܂ ܘܢܒܝܝܗ 11
ܒܟܣܦܐ ܩܣܡܝܢ܂ ܘܥܠ ܡܪܝܐ ܡܬܬܟܠܝܢ܂ ܘܐܡܪܝܢ܂ ܗܐ ܡܪܝܐ ܒܝܢܬܢ܂ ܠܐ ܐܬܝܐ ܥܠܝܢ
ܒܝܫܬܐ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܒܥܠܬܟܘܢ ܨܗܝܘܢ ܐܝܟ ܚܩܠܐ ܬܬܕܒܪ܂ ܘܐܘܪܫܠܡ ܚܪܒܐ ܬܗܘܐ܂ 12
ܘܛܘܪ ܒܝܬܐ܂ ܠܕܘܟܬ ܥܒܐ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܘܢܗܘܐ ܒܚܪܬܐ ܕܝܘܡܬܐ܂ ܢܗܘܐ ܛܘܪ ܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܬܩܢ ܒܪܝܫ ܛܘܪ̈ܐ܂ ܘܪܡ ܡܢ ܪ̈ܡܬܐ܂ 1
ܘܢܬܟܢܫܘܢ ܠܗ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡ̈ܐ܂ * ܘܢܐܙܠܘܢ ܥܡܡ̈ܐ ܣܓܝܐܐ ܘܢܐܡܪܘܢ܂ ܬܘ ܢܣܩ 2
ܠܛܘܪܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܘܠܒܝܬܗ ܕܐܠܗܗ ܕܝܥܩܘܒ܂ ܘܢܚܘܝܢ ܡܢ ܐܘܪܚܬܗ܂ ܘܢܗܠܟ
ܒܫܒܝ̈ܠܘܗܝ܂ ܡܛܠ ܕܡܢ ܨܗܝܘܢ ܢܦܘܩ ܢܡܘܣܐ܂ ܘܡܠܬܗ ܕܡܪܝܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ܂ * ܘܢܕܘܢ 3
ܒܝܬ ܥܡܡ̈ܐ܂ ܘܢܟܣ ܠܥܡܡ̈ܐ ܥܫܝܢܐ ܕܪܘܚܩܐ܂ ܘܢܚܒܛܘܢ ܣܦܣܝܪ̈ܝܗܘܢ ܠܣܟ̈ܐ ܕܦܕ̈ܢܐ܂
ܘܪ̈ܘܡܚܝܗܘܢ ܠܡܓܠ̈ܐ܂ ܘܠܐ ܢܫܩܘܠ ܥܡܐ ܥܠ ܥܡܐ ܣܝܦܐ܂ ܘܠܐ ܢܐܠܦܘܢ ܬܘܒ ܩܪܒܐ܂

* Tunc clamabunt ad Dominum, & non exaudiet eos; ſed faciem ſuam avertet ab eis illo tempore, quòd actiones ſuas depravârint. 4 Sic dicit Dominus de prophetis qui ſeducunt populum meum, qui dentibus ſuis mordent, & prædicant pacem; ei autem qui in os eorum nil jacit, bellum denuntiant. 5 Idcircò nox *provenict* vobis ex viſione, & tenebræ orientur vobis ex divinatione, ſol occidet ſuper prophetas, & obtenebreſcet ſuper eos dies: 6 Ita obſtupeſcent ii qui vident viſiones, pudefient divini, & faſciâ obvolventur omnes ſuper labiis ſuis; quia non reſpondebit illis Deus. 7 At verò ego plenus ſum virtute ſpiritûs Domini, & judicio ac fortitudine; ut indicem Jacobo ſcelus ſuum, & Iſraeli peccatum ſuum. 8 Audite igitur hoc primores domûs Jacobi, & præfecti domûs Iſraelis, qui contemnitis judicium, & recta quæque pervertitis: 9 Qui Sionem ſanguine ædificatis, & Jeroſolymam iniquitate. 10 Primores ejus munere judicant, ſacerdotes ejus mercede docent, prophetæ ejus pecuniâ divinant: Domino tamen fidunt, ac dicunt; Ecce Dominus inter nos eſt, non accidet nobis malum. 11 Proinde cauſâ veſtri Sion *ut* ager arabitur, & Jeruſalem in ruinam abibit, & mons domûs in locum ſylvæ. 12

CAP. IV.

ET erit poſtremis diebus mons domûs Domini firmus in vertice montium, & excelſior collibus; & ad eum congregabuntur omnes populi. 1 Ibúntque gentes multæ, ac dicent; Agite, aſcendamus ad montem Domini ad domum Dei Jacobi, ut doceat nos de viis ſuis, & ambulemus in ſemitis ejus: nam de Sione prodibit lex & verbum Domini de Jeruſalem: 2 Ipſáque jus dicet inter populos, & arguet gentes potentes procul diſſitas: tundéntque gladios ſuos in aratrorum vomeres, & lanceas ſuas in falces, non elevabit gens in *alteram* gentem gladium, nec addiſcent ampliùs bellum: 3

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يصرخون للرب ولا يستجيب لهم * ويصرف وجهه عنهم في ذلك الزمان * من اجل انهم 4
خبثوا باعمالهم عليهم * هكذا يقول الرب على الانبياء الذين يضلون شعبي * الذين يعضون 5
باسنانهم * وينادون له سلامة * ولم اعطها في فمهم * اقاموا عليه حربا * لاجل هذا يكون لكم 6
ليل من الرويا * ويكون لكم الظلمة من التعريف * وتغرب الشمس على الانبياء * ويظلم عليهم
النهار * ويخزي الذين يرون المنامات * ويضحك على العرافين ويتم عليهم جميع هاولاء * من 7
اجل انه لا يكون من يسمعهم * ان كنت انا لا اكمل قوة بروح الرب * ليخبروا يعقوب 8
بنفاقه واسرائيل بخطاياه *

* الاصحاح السادس عشر *

* اسمعوا هذا يا مقدمي بيت يعقوب * وبقايا بيت اسرائيل * الذين يرذلون الحكم * ويعوجون 9
جميع المستقيمات * الذين يبنون صهيون بالدماء * وايروشليم بالمظالم * مقدموها حكموا 10 11
بالرشا * وكهنتها اجابوا بالاجر * وانبياوها نجموا بالفضة * وعلى الرب استراحوا * قايلين اليس
الرب هو فينا * لا ياتي علينا شرور * لاجل هذا من اجلكم صهيون تخرب مثل حقل * وايروشليم 12
تكون مثل عريشة * وجبل البيت مثل روضة الغاب *

* الفصل الرابع *

* ويكون في الايام الاخيرة جبل الرب ظاهرا معدا على روس الجبال * ويتعالى فوق الاكام * 1
ويسرع اليه الشعوب * وينطلق اليه امم كثيرين * ويقولون * تعالوا نصعد الى جبل الرب * والى 2
بيت اله يعقوب * ويظهرون لنا طريقه * ونسير في سبله * لان من صهيون تخرج الناموس *
وكلمة الرب من ايروشليم * ويحكم بين شعوب كثيرين * ويبكت امما قوية * حتى الى الارض 3
البعيدة * ويكسرون سيوفهم للحرث * ومزاريقهم للمناجل * ولا تحمل امة على امة سيفا ايضا *
ولا يتعلمون ان يحاربوا ايضا *

Ita clamabunt ad Dominum, & non exaudiet eos; imò faciem ſuam avertet ab eis tunc temporis, eò quòd iniquè ſe geſſerint actionibus ſuis adverſùs illos. 4 *Sic dicit Dominus de prophetis qui ſeducunt populum meum, qui dentibus ſuis mordent, & prædicant illi pacem quam non indidi in os eorum: bellum concitaverunt in illum.* 5 *Propterea nox vobis erit ex viſione, & tenebræ vobis erunt ex divinatione, ſol occumbet ſuper prophetas, & obſcurabitur ſuper eos dies:* 6 *Erubeſcent qui ſomnia vident, ridebunt divinos, & de ipſis obloquentur omnes iſti; quia nemo erit qui audiat illos;* 7 *Niſi ego virtutem perfecero per ſpiritum Domini, ut annuntient Jacobo impietatem ejus, & Iſraeli peccata ipſius.* 8

Textus decimus ſextus.

Audite hæc O duces domûs Jacobi, & reliquiæ domûs Iſraelis, qui ſpernitis judicium, & pervertitis quæcunque recta ſunt: 9 *Qui Sionem ſanguinibus, & Jeroſolymam iniquitatibus ædificatis:* 10 *Duces ejus munere judicabant, ſacerdotes ejus mercede reſpondebant, prophetæ ejus pecuniâ divinabant, & in Domino requieſcebant, dicentes; Nonne Dominus in nobis eſt? non venient ſuper nos mala.* 11 *Idcirco propter vos Sion deſtruetur ut ager, Jeruſalem erit ut pergula, & mons domûs ut pratum ſylveſtre.* 12

CAP. IV.

SEd erit poſtremis diebus mons Domini manifeſtus diſpoſitus ſuper cacumina montium, & attolletur ſuper colles; & accurrent ad eum populi, 1 *Pergentque ad eum gentes multæ, & dicent; Venite aſcendamus ad montem Domini, & ad domum Dei Jacob, ut oſtendant nobis viam ejus, & ambulemus in ſemitis ejus: quoniam è Sione egredietur lex, & verbum Domini de Jeruſalem:* 2 *Et judicabit inter populos multos, & arguet gentes fortes uſque ad terram remotiſſimam: & confringent gladios ſuos ad arandum, & lanceas ſuas in falces: & poſthac non geſtabit gens contra gentem gladium, nec addiſcent ampliùs bellum gerere:* 3

מִיכָה : ד

, ſuam ficum ſubtus & , ſuam vitem ſubtus *vir* manebunt Et
4 וְיָשְׁבוּ אִישׁ תַּחַת גַּפְנוֹ וְתַחַת תְּאֵנָתוֹ
Quia .eſt locutum exercituum DOMINI os quia *exterrens* non &
5 וְאֵין מַחֲרִיד כִּי־פִי יְהוָה צְבָאוֹת דִּבֵּר׃ כִּי
nos & : ſui Dei nomine in *vir* ambulabunt populi omnes
כָּל־הָעַמִּים יֵלְכוּ אִישׁ בְּשֵׁם אֱלֹהָיו וַאֲנַחְנוּ
.*perpetuum* & ſeculum in noſtri Dei Domini nomine in ambulabimus
נֵלֵךְ בְּשֵׁם־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ לְעוֹלָם וָעֶד׃
, claudicantem congregabo , DOMINUS dixit , illa die In
6 בַּיּוֹם הַהוּא נְאֻם־יְהוָה אֹסְפָה הַצֹּלֵעָה
ponam Et .*affeci malo* quam & ,congregabo *expulſam* &
7 וְהַנִּדָּחָה אֲקַבֵּצָה וַאֲשֶׁר הֲרֵעֹתִי׃ וְשַׂמְתִּי אֶת־
regnabit & : robuſtam gentem in ejectã procul & ,reſiduũ in claudicantẽ
הַצֹּלֵעָה לִשְׁאֵרִית וְהַנַּהֲלָאָה לְגוֹי עָצוּם וּמָלַךְ
.ſeculum in uſque & *nunc* ex Sijon monte in eos ſuper Dominus
יְהוָה עֲלֵיהֶם בְּהַר צִיּוֹן מֵעַתָּה וְעַד־עוֹלָם׃
: veniet te ad uſque Sijon filia *locus editus* , gregis turris *tu* Et
8 וְאַתָּה מִגְדַּל־עֵדֶר עֹפֶל בַּת־צִיּוֹן עָדֶיךָ תֵּאתֶה
.Jeruſalaim filiæ regnum , primum dominium veniet &
וּבָאָה הַמֶּמְשָׁלָה הָרִאשֹׁנָה מַמְלֶכֶת לְבַת־יְרוּשָׁלִָם׃
non rex Nunquid ? vociferationem vociferabis quid ut Nunc
9 עַתָּה לָמָּה תָרִיעִי רֵעַ הֲמֶלֶךְ אֵין־
dolor te apprehendit quia ? periit tuus conſiliarius *An* ? te in
בָּךְ אִם־יוֹעֲצֵךְ אָבָד כִּי־הֶחֱזִיקֵךְ חִיל
,parturiens veluti Sijon filia ingemiſce & , Dole .parturientis tanquã
10 כַּיּוֹלֵדָה׃ חוּלִי וָגֹחִי בַּת־צִיּוֹן כַּיּוֹלֵדָה
ad uſque venies & ,agro in habitabis &,civitate de egredieris nunc quia
כִּי־עַתָּה תֵצְאִי מִקִּרְיָה וְשָׁכַנְתְּ בַּשָּׂדֶה וּבָאת עַד־
.tuorũ inimicorũ *vola* de Dominus te redimet ibi : eruêris ibi : Babel
בָּבֶל שָׁם תִּנָּצֵלִי שָׁם יִגְאָלֵךְ יְהוָה מִכַּף אֹיְבָיִךְ׃
: *dicentes* , multæ gentes te ſuper ſe congregaverunt nunc E-
11 וְעַתָּה נֶאֶסְפוּ עָלַיִךְ גּוֹיִם רַבִּים הָאֹמְרִים
cognoverunt non ipſæ Et .noſter oculus Sijon in aſpiciet & ,*ſe Profanabit*
12 תֶּחֱנָף וְתַחַז בְּצִיּוֹן עֵינֵינוּ׃ וְהֵמָּה לֹא יָדְעוּ
eas cõgregavit quia ;ej⁹ conſilium intellexerunt nec ,Domini cogitationes
מַחְשְׁבוֹת יְהוָה וְלֹא הֵבִינוּ עֲצָתוֹ כִּי קִבְּצָם
quia : Sijon filia tritura & Surge .aream ad manipulum veluti
13 כֶּעָמִיר גֹּרְנָה׃ קוּמִי וָדוֹשִׁי בַת־צִיּוֹן כִּי
, *æs* ponam tuas ungulas & , *ferrum* ponam tuum cornu
קַרְנֵךְ אָשִׂים בַּרְזֶל וּפַרְסֹתַיִךְ אָשִׂים נְחוּשָׁה
,earũ deſiderium Domino *anathematizabo* & ,multos populos conteres &
וַהֲדִקּוֹת עַמִּים רַבִּים וְהַחֲרַמְתִּי לַיהוָה בִּצְעָם
Nunc .terræ univerſæ Domino earum fortitudinem &
14 וְחֵילָם לַאֲדוֹן כָּל־הָאָרֶץ׃ עַתָּה
percutient virga *in* :nos *ſuper* poſuit obſidionẽ,turmæ filia *turmatim excurres*
תִּתְגֹּדְדִי בַת־גְּדוּד מָצוֹר שָׂם עָלֵינוּ בַּשֵּׁבֶט יַכּוּ
.Iſrael *judicem* maxillam *ſuper*
עַל־הַלְּחִי אֵת שֹׁפֵט יִשְׂרָאֵל׃

CAP. V. ה

millibus in *exiſtendum ad* , parvulus , Ephrathah lechem-Beth tu Et
1 וְאַתָּה בֵּית־לֶחֶם אֶפְרָתָה צָעִיר לִהְיוֹת בְּאַלְפֵי
: Iſrael in *dominatorem exiſtendum ad* ,egredietur mihi te Ex .Jehudah
יְהוּדָה מִמְּךָ לִי יֵצֵא לִהְיוֹת מוֹשֵׁל בְּיִשְׂרָאֵל
eos dabit Propterea .ſeculi diebus à *quondam à* ejus egreſſiones &
2 וּמוֹצָאֹתָיו מִקֶּדֶם מִימֵי עוֹלָם׃ לָכֵן יִתְּנֵם
revertentur,ej⁹ *fratrum reſiduum* & : pepererit parturiens ,tempus ad uſque
עַד־עֵת יוֹלֵדָה יָלָדָה וְיֶתֶר אֶחָיו יְשׁוּבוּן
.Iſrael filios *ſuper*
עַל־בְּנֵי יִשְׂרָאֵל׃

Verſio VULG. LAT.

4 Et ſedebit vir ſubtus vitem ſuam, & ſubtus ficum ſuam, & non erit qui deterreat: quia os Domini ex-5 ercituum locutum eſt. Quia omnes populi ambulabunt unuſquiſque in nomine dei ſui: nos autem ambulabimus in nomine Domini Dei noſtri in æternum & 6 ultrà. In die illa, dicit Dominus, congregabo claudicantem: & eam, quam ejeceram, colligam; 7 & quam affixeram: Et ponam claudicantem in reliquias: & eam, quæ laboraverat, in gentem robuſtam: & regnabit Dominus ſuper eos in monte Sion, ex hoc 8 nunc & uſque in æternum. Et tu, turris gregis, nebuloſa filia Sion, uſque ad te veniet: & veniet poteſtas prima, regnum filiæ Jeru-9 ſalem. Nunc quarè mœrore contraheris? numquid rex non eſt tibi, aut conſiliarius tuus periit, quia comprehendit te dolor ſicut 10 parturientem? Dole, & ſatage, filia Sion, quaſi parturiens: quia nunc egredieris de civitate, & habitabis in regione, & venies uſque ad Babylonem: ibi liberaberis, ibi redimet te Dominus de 11 manu inimicorum tuorum. Et nunc congregatæ ſunt ſuper te gentes multæ, quæ dicunt; Lapidetur: & aſpiciat in Sion oculus 12 noſter. Ipſi autem non cognoverunt cogitationes Domini, & non intellexerunt conſilium ejus: quia congregavit eos quaſi fœ-13 num areæ. Surge, & tritura, filia Sion: quia cornu tuum ponam ferreum, et ungulas tuas ponam æreas: & comminues populos multos, & interficies Domino rapinas eorum, & fortitudinem eorum Domino univerſæ terræ.

CAP. V.

1 Nunc vaſtaberis, filia latronis: obſidionem poſuerunt ſuper nos, in virga percutient maxillam ju-2 dicis Iſrael. ET TU BETHLEHEM Ephrata parvulus es in millibus Juda: ex te mihi egredietur qui ſit dominator in Iſrael, & egreſſus ejus ab initio, à 3 diebus æternitatis. Propter hoc dabit eos uſque ad tempus, in quo parturiens pariet: & reliquiæ fratrum ejus convertentur ad filios Iſrael.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ ἀναπαύσεται ἕκαστος ὑποκάτω ἀμπέλου αὐτοῦ, καὶ ἕκαστος ὑποκάτω συκῆς αὐτοῦ, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἐκφοβῶν, διότι τὸ στόμα κυρίου 5 παντοκράτορος ἐλάλησε ταῦτα. Ὅτι πάντες οἱ λαοὶ πορεύσονται ἕκαστος τὴν ὁδὸν αὐτοῦ, ἡμεῖς δὲ πορευσόμεθα ἐν ὀνόματι (η) κυρίου θεοῦ ἡμῶν εἰς τὸν αἰῶνα, καὶ ἐπέ-6 κεινα. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, (θ) λέγει κύριος, συνάξω τὴν συντετριμμένην, καὶ τὴν ἐξωσμένην εἰσδέξομαι, καὶ οὓς ἀπωσά-7 μην. Καὶ θήσομαι τὴν συντετριμμένην εἰς ὑπόλειμμα, καὶ τὴν ἀπωσμένην εἰς ἔθνος (ι) δυνατόν· καὶ βασιλεύσει κύριος ἐπ' αὐτοὺς ἐν ὄρει Σιὼν ἀπὸ τοῦ νῦν (κ) ἕως 8 εἰς τὸν αἰῶνα. Καὶ σὺ πύργος ποιμνίου αὐχμώδης, θυγάτηρ Σιών, ἐπὶ σὲ ἥξει, καὶ εἰσελεύσεται ἡ ἀρχή, ἡ πρώτη βασιλεία ἐκ 9 Βαβυλῶνος τῇ θυγατρὶ Ἱερουσαλήμ. Καὶ νῦν ἱνατί ἔγνως κακά; μὴ βασιλεὺς οὐκ ἦν σοι; ἢ ἡ βουλή σου ἀπώλετο, ὅτι κατεκράτησάν (λ) σου ὠδῖνες ὡς τικτούσης; 10 Ὤδινε καὶ ἀνδρίζου (μ), καὶ ἔγγιζε θυγάτηρ Σιὼν ὡς τίκτουσα· διότι νῦν ἐξελεύσῃ ἐκ πόλεως, καὶ κατασκηνώσεις ἐν πεδίῳ, καὶ ἥξεις ἕως Βαβυλῶνος· ἐκεῖθεν ῥύσεταί σε, καὶ ἐκεῖθεν λυτρώσεταί σε κύριος ὁ θεός 11 σου ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν σου. Καὶ νῦν (ν) ἐπισυνήχθησαν ἐπὶ σὲ (ξ) ἔθνη πολλά, λέγοντες, Ἐπιχαρούμεθα, καὶ ἐπόψονται ἐπὶ 12 Σιὼν οἱ ὀφθαλμοὶ ἡμῶν. (ο) Αὐτοὶ δὲ οὐκ ἔγνωσαν τὸν λογισμὸν κυρίου, καὶ οὐ συνῆκαν τὴν βουλὴν αὐτοῦ, ὅτι συνήγαγεν αὐτοὺς ὡς 13 δράγματα ἅλωνος. (π) Ἀνάστηθι, καὶ ἀλόα αὐτοὺς (ρ) θυγάτηρ Σιών, ὅτι τὰ κέρατά σου θήσομαι σιδηρᾶ, καὶ τὰς ὁπλάς σου θήσομαι χαλκᾶς· καὶ (σ) κατατήξεις λαοὺς πολλούς, καὶ ἀναθήσεις τῷ κυρίῳ τὸ πλῆθος αὐτῶν, καὶ τὴν ἰσχὺν αὐτῶν τῷ κυρίῳ πάσης τῆς γῆς.

Et (e) requieſcet unuſquiſque 4 ſub vite ſua, & unuquiſque ſub ficu ſua: & non erit, qui exterreat: quia os (f) Domini omnipotentis loquutum eſt hæc: Quia omnes populi ibunt, (g) 5 unuſquiſque viam ſuam: nos autem ibimus in nomine Domini Dei noſtri in æternum, & ultrà. In die illa, dicit Dominus, con- 6 gregabo (h) eam, quæ contrita eſt; (i) & eam quæ ejecta fuerat, ſuſcipiam, & quos repuleram. Et ponam contritam in re- 7 liquias, & repulſam in gentem fortem: & regnabit Dominus ſuper eos in monte Sion ex hoc nunc uſque in ſeculum. Et tu, 8 turris gregis, (k) ſqualens (l) filia Sion, ad te veniet, & ingredietur principatus, primum regnum de Babylone filiæ Hieruſalem. Et nunc quarè cognoviſti 9 mala? Nunquid rex non erat tibi, aut conſilium tuum periit; quia obtinuerunt te dolores, ſicut parturientis? Dole, & viri- 10 liter age, & (m) appropinqua, filia Sion, quaſi pariens: quia nunc egredieris de civitate, & habitabis in campo, & venies uſque ad Babylonem. Indè liberabit te, & indè redimet te Dominus Deus tuus de manu inimicorum tuorum. Et nunc congregatæ ſunt 11 ſuper te gentes multæ, dicentes; (n) Inſultabimus, & videbunt in Sion oculi noſtri. Ipſi autem 12 neſcierunt cogitationem Domini: & non intellexerunt conſilium ejus: Quia congregavit eos ut manipulos areæ. Surge, & tri- 13 tura eos, filia Sion: quia cornua tua ponam ferrea, & ungulas tuas ponam æreas: & (o) conſumes populos multos, & (p) conſecrabis Domino (q) multitudinem eorum, & robur eorum Domino univerſæ terræ.

MS. A. (η) θεοῦ ἡμῶν (θ) συνάξω τὴν συντετριμμένην, λέγει κύριος, καὶ τὴν ἀπωσμένην εἰσδέξομαι, (ι) ἰσχυρόν· (κ) καὶ ἕως (λ) σε (μ) θύγατερ Σιὼν ὡς (ν) ἐπισυνήχθη (ξ) ἔθνη, πολλοὶ (ο) Καὶ αὐτοὶ οὐκ (π) Ἀνάστα, θύγατερ (σ) λεπτυνεῖς

ΚΕΦ. ε'.

1 Νῦν ἐμφραχθήσεται θυγάτηρ (α) ἐμφραγμῷ, συνοχὴν ἔταξεν ἐφ' (β) ἡμᾶς, ἐν ῥάβδῳ πατάξουσιν ἐπὶ (γ) σιαγόνα τὰς φυλὰς τοῦ Ἰσραήλ. 2 Καὶ σὺ Βηθλεὲμ οἶκος (δ) Ἐφραθά, ὀλιγοστὸς εἶ τοῦ εἶναι ἐν χιλιάσιν Ἰούδα· ἐκ σοῦ μοι ἐξελεύσεται (ε), τοῦ εἶναι εἰς ἄρχοντα (ζ) τοῦ Ἰσραήλ, καὶ αἱ ἔξοδοι αὐτοῦ ἀπ' ἀρχῆς ἐξ ἡμερῶν αἰῶνος. 3 Διατοῦτο δώσει αὐτοὺς ἕως καιροῦ τικτούσης, τέξεται, καὶ οἱ ἐπίλοιποι τῶν ἀδελφῶν αὐτῶν ἐπιστρέψουσιν ἐπὶ τοὺς υἱοὺς Ἰσραήλ.

CAP. V.

Nunc obſtruetur filia obſtru- 1 ctione: anguſtiam poſuit ſuper nos: in virga percutient ſuper maxillam tribus Iſrael. Et tu 2 Bethleem dom⁹ Ephratha, (a) minima es, (b) ut ſis in millibus Juda. Ex te mihi (c) egredietur, ut ſit in principem Iſrael: & egreſſus ejus ab initio ex diebus ſeculi. Propterea dabit eos uſque 3 ad tempus parientis: pariet, & reliquiæ fratrum eorum revertentur ad filios Iſrael.

MS.A. (α) Ἐφραὶμ ἐνφραγμῷ, (β) ὑμᾶς, (γ) σιαγόνας, (δ) τοῦ Ἐφραθά, (ε) ἡγούμενος, τοῦ (ζ) ἐν τῷ Ἰσραήλ, καὶ αἱ ἔξοδοι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 ויתובון גבר תחות פרי גופנוהי ותחות פרי תינוהי ולית דמניד ארי במימרא דיי
5 צבאות גזר כן ׃ ארי כל עממיא יהכון על די פלחו לטעותא ואנחנא נתרחץ במימרא
6 דיי אלהנא לעלמא ולעלמי עלמיא ׃ בעדנא ההיא אמר יי אכנוש מטלטליא ומבדריא
7 אקרב ודאבאשית להון מן קדם חובי עמי ׃ ואשוי ית מטלטליא לשארא ומבדריא
8 לעם תקיף ויתגלי מלכותא דיי עליהון בטורא דציון מכען ועד עלמא ׃ ואת משיחא
דישראל דטמיר מן קדם חובי כנשתא דציון לך עתידא מלכותא למיתי וייתי שלטונא
9 קדמאה למלכות כנשתא דירושלם ׃ וכען למה את מתחברא לעממיא המלכא
10 לית ביך אם מלכי מלכיך אבדו ארי תקפוך עקא וזיעא כחבלין ללידתא ׃ מרעי וזועי
כנשתא דציון כיולדתא ארי כען תפקין מקרתא ותשרין בחקלא ותהכין עד בבל תמן
11 תשתזבין תמן יפרקניך יי מיד בעלי דבביך ׃ וכען יתכנשון עליך עממין סניאין דאמרין
12 אימתי תחוב ותחזי במפלת ציון עיננא ׃ ואנון לא ידעין רזיא דיי ולא מסתכלין
13 במלכיה ארי קריבנון כעמירא לאדרא ׃ קומי וקטלי כנשתא דציון ארי עמא די ביך
אשוי תקיפין כברזלא ושארהון חסינין כנחשא ותקטלין עממין סניאין ותגמרין קדם
יי נכסיהון וממון יקרהון קדם רבון כל עלמא ׃

ה

1 כען תסתיעין במשרין קרתא דצירין עלה בציר דהוו מחן בחטרא על לסתא ית דיני
2 ישראל ׃ ואת בית לחם אפרתה כזעיר הויתא לאתמנאה באלפיא דבית יהודה מנך
קדמי יפוק משיחא למהוי עביד שולטן על ישראל די שמיה אמיר מלקדמין מיומי
3 עלמא ׃ בכן יתמסרון כעדן ילדתא למילד ושאר אחיהון יסתמכון עליהון בני ישראל ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sed ſedebunt unuſquiſq; ſub fructu vitis ſuæ ſubq; fructu ficulneæ ſuæ: nec 4 erit qui exterreat: quia verbo Dñi exercituum decretum eſt ita. Etenim uni- 5 verſi populi *abibunt* ad ea quæ venerati ſunt idola; nos vero fiduciam collocabimus in *verbo* Dñi Dei noſtri in ſeculum & in ſecula ſeculorum. Eo tem- 6 pore, dicit Dñs, congregabo tranſlatos & diſperſos, colligam & illos quibus maleſeci, propter peccata populi mei. Ponámque deportatos in reliquias, & 7 diſperſos in populum potentem, atq; revelabitur regnum Dñi ſuper eos in monte Sion à modò & uſq; in ſeculum. Tu autem Chriſte Iſraelis, qui abſ- 8 conditus es propter peccata cœtus Sion, tibi venturum eſt regnum: ſed & dominatio priſca adveniet regno cœtus Jeruſalem. Nunc autem quare tu po- 9 pulis adjungeris? an non in te rex eſt? aut conſiliarii tui perierunt? quoniam circundederunt te tribulatio ac tremor, ſicut agones parturientem. Dole & 10 contremiſce cœtus Sion more parturientis, nunc etenim de civitate egredieris & habitabis in agro, ibiſq; uſque ad Babylonem, ubi liberaberis, ibi redimet te Dominus de manu inimicorum tuorum. Mox verò congregabuntur 11 adverſum te gentes permultæ quæ dicant: *Quando* impiè aget, & videbit ruinam Sion oculus noſter? Ipſi autem minimè ſecreta Domini cognoſcunt, 12 nec intelligunt *conſilium* ejus, quippe accumulat eos quaſi manipulos in aream. Surge & occide congregatio Sion, populum enim qui in te eſt, ponam 13 fortem ſicut ferrum, & reliquias eorum robuſtas ſicut æs, & occides populos permultos: *conſumes* autem coram Domino facultates eorum, & pretioſam eorum pecuniam coram dominatore *univerſi mundi*.

CAP. V.

Nunc per turmas ſociaberis, civitas, quam obſidione obſidebant illi, qui percutiebant virga maxillas judicum Iſrael. Et tu Bethlehem Ephrata quæ minima fuiſti, adeò ut computareris inter millia domus Jehuda, ex te coram me prodibit Chriſtus, ut ſit dominium exercens in Iſrael, cujus nomen dictum eſt ab æternitate à diebus ſeculi. Propterea tradentur tempore quo parturiens pariet, & reſiduo fratrum ſuorum adjungentur filii Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܬܒܘܢ܂ ܐܢܫ ܬܚܝܬ ܓܦܬܗ ܘܬܚܝܬ ܬܐܢܬܗ܂ ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܕܡܙܝܥ ܠܗܘܢ܂ ܡܛܠ 4
ܕܦܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܡܠܠ܂ * ܡܛܠ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܢܗܠܟܘܢ ܐܢܫ ܒܫܡ 5
ܐܠܗܗ܂ ܘܚܢܢ ܢܗܠܟ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܢ܂ ܠܥܠܡ ܘܠܥܠܡܝ ܥܠܡܝܢ܂ * ܒܗ ܕܝܢ ܒܥܕܢܐ 6
ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܐܟܢܫ ܠܪ̈ܚܝܩܐ܂ ܘܡܒܕܪ̈ܐ ܐܩܪܒ܂ ܠܐܝܠܝܢ ܕܐܒܐܫܬ ܠܗܘܢ܂ * ܘܐܥܒܕ 7
ܫܪܟܐ ܠܡܒܕܪ̈ܐ܂ ܘܪ̈ܚܝܩܐ ܠܥܡܐ ܥܫܝܢܐ܂ ܘܢܡܠܘܟ ܡܪܝܐ ܥܠܝܗܘܢ ܒܛܘܪܐ ܕܨܗܝܘܢ
ܘܒܐܘܪܫܠܡ܂ ܡܟܝܠ ܘܥܕܡܐ ܠܥܠܡ܂ * ܐܢܬ ܕܝܢ ܡܓܕܠܐ ܪܥܝܐ ܘܥܡܛܢܐ ܕܒܪܬ ܨܗܝܘܢ 8
ܙܒܢܟܝ ܡܛܝ܂ ܘܐܬܐ ܫܠܝܛܐ ܩܕܡܝܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܒܪܬ ܐܘܪܫܠܡ܂ * ܗܫܐ ܠܡܢܐ 9
ܥܒܕܬܝ ܒܝܫܬܐ܂ ܕܡܠܟܐ ܠܝܬ ܒܟܝ܂ ܐܘ ܡܠܟܢܝܟܝ ܐܒܕܘ܂ ܕܐܚܕܘܟܝ ܚܒܠܐ
ܐܝܟ ܕܝܠܕܬܐ܂ * ܚܒܠܝ ܘܐܬܚܒܠܝ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ ܐܝܟ ܝܠܕܬܐ܂ ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܢܦܩܬܝ ܡܢ 10
ܡܕܝܢܬܐ܂ ܘܬܫܪܝܢ ܒܚܩܠܐ܂ ܘܬܐܬܝܢ ܥܕܡܐ ܠܒܒܠ܂ ܘܬܡܢ ܬܬܦܨܝܢ܂ ܘܬܡܢ ܢܦܪܩܟܝ
ܡܪܝܐ ܡܢ ܐܝܕܐ ܕܒܥܠܕܒܒܝܟܝ܂ * ܘܗܫܐ ܢܬܟܢܫܘܢ ܥܠܝܟܝ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ܂ ܐܝܠܝܢ 11
ܕܐܡܪܝܢ ܬܬܛܢܦ ܨܗܝܘܢ ܘܬܚܙܐ ܒܗ ܥܝܢܢ܂ * ܗܢܘܢ ܕܝܢ ܠܐ ܝܕܥܘ ܡܚܫܒܬܗ 12
ܕܡܪܝܐ܂ ܘܠܐ ܐܣܬܟܠܘ ܡܠܟܗ܂ ܕܟܢܫ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܫܒ̈ܠܐ ܠܐܕܪܐ܂ * ܩܘܡܝ ܘܕܘܫܝ ܐܢܝܢ 13
ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܩܪ̈ܢܬܟܝ ܐܥܒܕ ܕܦܪܙܠܐ܂ ܘܦܪ̈ܣܬܟܝ ܕܢܚܫܐ܂ ܘܬܕܘܩܝܢ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ܂
ܘܬܚܪܡܝܢ ܩܢܝܢܗܘܢ ܠܡܪܝܐ܂ ܘܢܟܣܝܗܘܢ ܠܡܪܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ܂ * ܡܛܠ ܕܗܫܐ 14
ܬܬܓܕܕܝܢ ܒܪܬ ܓܝܣܐ ܓܢܒܪ̈ܐ܂ ܕܩܡܘ ܥܠܝܢ܂ ܘܒܫܒܛܐ ܡܚܘ ܦܟܗ ܕܪܥܝܐ
ܕܐܝܣܪܝܠ܂ * ܩܦܠܐܘܢ * ܗ * * ܐܢܬ ܕܝܢ ܒܝܬ ܠܚܡ 1
ܐܦܪܬܐ܂ ܙܥܘܪܐ ܐܝܬܝܟܝ ܠܡܗܘܐ ܒܐܠܦ̈ܐ ܕܝܗܘܕܐ܂ ܡܢܟܝ ܢܦܘܩ ܠܝ ܕܢܗܘܐ ܪܝܫܐ ܠ
ܐܝܣܪܝܠ܂ ܘܡܦܩܢܘܗܝ ܡܢ ܩܕܝܡ ܡܢ ܝܘܡ̈ܝ ܥܠܡܐ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܢܫܠܡ ܐܢܘܢ 2
ܥܕܡܐ ܠܙܒܢܐ ܕܝܠܕܬܐ ܬܐܠܕ܂ ܘܫܪܟܐ ܕܐܚܘܗܝ ܢܗܦܟܘܢ ܠܘܬ ܒܢܝ ܐܝܣܪܝܠ܂

Sed conſidebunt quiſque ſub vitibus ſuis, & 4
ſub ficubus ſuis; nec erit qui infeſtet eos:
quoniam os Domini potentiſſimi locutum eſt.
Omnium enim gentium quælibet ambulabit 5
in nomine dei ſui, nos autem ambulabimus
in nomine Domini Dei noſtri in æternum &
in ſecula. Eo quidem tempore, dicit Dominus, 6
congregabo remotos, & diſperſos recipiam,
quibus malum intuleram: Finem 7
fauſtum faciam diſperſis, & remotos in populum
potentem: regnabitque Dominus ſuper
eos in monte Sionis & in Jeruſalem, hinc
ad ſeculum uſque. Tu verò turris depaſta & 8
obſcura filiæ Sionis, tempus tuum appropinquavit,
& advênit princeps primus regni filiæ
Jeruſalem. Jam quarè commiſiſti ſcelus? num 9
rex non extat in te, an conſiliarii tui perierunt,
quòd te dolores ut parturientis occupârint?
Dole, & enitere filia Sionis ut parturiens; 10
jam enim egredieris ab urbe, & habitabis
in deſerto, ac ibis Babylonem uſque: at
ibi liberaberis, ibique eruet te Dominus è
manu inimicorum tuorum. Jam congregabuntur 11
adverſùm te gentes multæ quæ dicebant,
Contaminetur Siôn, & aſpiciat in ea oculus
noſter. Ipſæ verò ignorabant cogitationem 12
Domini, nec intelligebant conſilium
ejus, quòd ipſe congregâſſet eas ut ſpicas ad
aream. Surge, & tritura eas filia Sionis; nam 13
cornua tua reddam ferrea, & ungulas tuas æneas:
comminues gentes multas, & poſſeſſionem
earum Domino devovebis, & opes earum
Domino univerſæ terræ. Nunc prodibis 14
cum turma O filia turmarum potentium:
quia inſurrexerunt in nos, & paſtoris Iſraelis
maxillam fuſte percuſſerunt.

CAP. V.

Tu verò Beth-lehem oppidum, num parvũ 1
es ut cenſearis inter myriadas Judæ? ex te
prodibit princeps qui præſit Iſraeli, cujus exitus
à principio eſt, à diebus æternis. Nunc 2
tradet eos uſque ad tempꝰ quo pepererit parturiens,
ac reliquiæ fratrum ejus convertentur
ad filios Iſraelis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويستريح كل واحد تحت كرمته * وكل واحد تحت تينته * ولا يكون من يخوف * من اجل ان 4
فم الرب الضابط الكل تكلم بهذه * لان جميع الشعوب يسير كل واحد في طريقه * ونحن نسير 5
باسم الرب الهنا * الى الابد وفيما بعد * في ذلك اليوم يقول الرب * اجمع المنكسر والمبعودة اقبلها 6
والذين ابعدتهم * واضع المنكسر للبقية * والمبعودة الى امة قوية * ويملك الرب عليهم في 7
جبل صهيون * منذ الان والى الابد * وانت يا برج القطيع ابنة صهيون الكريبة * اليك ياتون *
ويدخل الرياسة الاولى المملكة من بابل لابنة اورسليم * والان لماذا علمت الشرور * هل ليس 8
لك ملك * مشورتك هلكت * لان الطلقات مسكتك مثل طلقات الوالدة * فتشجعي واقتربي 9
يا ابنة صهيون مثل التي تلد * من اجل انك الان تخرجين من المدينة * وتسكنين في 10
الصحراء * وتاتين الى بابل * من هناك ينجيك ومن هناك يفتديك الرب الهك من يد اعدايك *
* والان تجتمع اليك امم كثيرة * القايلون نشمت وتنظر الى صهيون عيوننا * فهم لم يعرفوا 11 12
فكر الرب * ولم يفهموا رايه * لان جمعهم مثل اعمار البيادر * قومي وادرسيهم يا ابنة صهيون * 13
لاني اصير قرونك حديدا * واظلافك نحاسا * وتدوسين شعوبا كثيرة * وتحرمين للرب كثيرهم *
وقوتهم لرب الارض كلها * والان تسيج ابنة افرام بسياج * رتب علينا نروسا * بعصا يضربون 14
على خد قبايل اسرايل *

* الفصل الخامس *

* وانت يا بيت لحم بيت افراتا * لست بصغيرة انت ان تكوني في الوف يهودا * لان منك يخرج لي من 1
يكون رييسا في اسرايل * وخارجه في اسرايل منذ ايام الدهر * لاجل هذا تسلمهم الى زمان 2
الوالدة تلد * وبقايا اخوتهم يرجعون الى بني اسرايل *

Sed quieſcent unuſquiſque ſub viti ſua, 4
& unuſquiſque ſub ficu ſua; nec erit
qui terreat: quia os Domini omnia tenentis
locutum eſt hæc. Omnium enim populorum 5
quiſque ambulabit in via ſua, ſed
nos ambulabimus in nomine Domini Dei
noſtri, in æternum & ultrà. Eo die, dicit 6
Dominus, congregabo confractam; ejectam
& quos amoveram, recipiam: Et 7
confractam ponã in reliquias, & ejectam
in potentẽ: regnabitque Dominus ſuper eos
in monte Sionis, ex nunc in æternum uſq;.
Porrò ad te O turris gregis, filia Sionis 8
miſera, ad te venient; & primus principatus,
regnum ſcilicet *ex Babele, ingredietur*
in filiam Jeruſalem. Nunc ergò 9
cur agnoviſti mala? annon habes regem?
conſilium tuum periit, quòd occupârint te
dolores ſimiles doloribus parturientis. Verùm 10
forti ſis animo, & accede O filia Sionis
ut ea quæ parturit: nunc enim egrediêris
ab urbe, & habitabis in deſerto,
venies in Babelem, & inde liberabit te,
indeque te redimet Dominus Deus tuus
de manu inimicorum tuorum. Et nunc 11
congregabuntur ad te gentes multæ quæ
dicebant; Inſultabimus, & videbunt in
Sione oculi noſtri. Nam ipſæ neſciebant 12
cogitationem Domini, nec intelligebant
conſilium ejus, quòd ipſe congregâſſet eos
ut manipulos areæ. Surge, & tritura eas 13
O filia Sionis: nam cornua tua reddam
ferrea, & ungulas tuas æneas, & triturabis
populos multos, & anathemate devovebis
Domino multitudinem eorum,
& robur eorum Domino totius terræ. Et 14
nunc filia Aphremi ſepi circumſepietur:
præſcripſit nobis decreta: fuſti percutient
genam familiarum Iſraelis.

CAP. V.

Et tu O Beth-lehem domûs Ephratæ, 1
nequaquam ita parva es, ut non ſis in
millibus Judæ; quandoquidem ex te egreſſurus
mihi eſt qui princeps erit in Iſraele,
cujus egreſſus in Iſraele ſunt ab
æternis diebus. Propterea trades eos uſque 2
ad tempus quo parturiens pariet,
& reliquiæ fratrum eorum revertentur
ad filios Iſraelis.

מיכה : ו

Domini nominis ſublimitate in ,Domini fortitudine in paſcet & ſtabit Et
וְעָמַד וְרָעָה בְּעֹז יְהוָה בִּגְאוֹן שֵׁם יְהוָה 3
.terræ terminos ad uſque magnificabitur nunc quia :manebunt & ;ſui Dei
אֱלֹהָיו וְיָשָׁבוּ כִּי־עַתָּה יִגְדַּל עַד־אַפְסֵי־אָרֶץ :
cùm & ,noſtram terram in venerit cùm Aſſur ,pax iſte erit Et
וְהָיָה זֶה שָׁלוֹם אַשּׁוּר ׀ כִּי־יָבֹא בְאַרְצֵנוּ וְכִי 4
,paſtores ſeptem eum *ſuper* ſtatuemus & ,noſtris ædibus in calcaverit
יִדְרֹךְ בְּאַרְמְנֹתֵינוּ וַהֲקֵמֹנוּ עָלָיו שִׁבְעָה רֹעִים
Aſſur terram *depaſcent Et* .hominum principes octo &
וּשְׁמֹנָה נְסִיכֵי אָדָם : וְרָעוּ אֶת־אֶרֶץ אַשּׁוּר 5
,Aſſur ab eruet & :ſuis gladiis in Nimrod terram & ,gladio in
בַּחֶרֶב וְאֶת־אֶרֶץ נִמְרוֹד בִּפְתָחֶיהָ וְהִצִּיל מֵאַשּׁוּר
.noſtris *terminis* in calcaverit cùm & ,noſtram terram in venerit cùm
כִּי־יָבוֹא בְאַרְצֵנוּ וְכִי יִדְרֹךְ בִּגְבוּלֵנוּ :
ros ſicut ,multorum populorum *interiore* in Jahacob reſiduum erit Et
וְהָיָה ׀ שְׁאֵרִית יַעֲקֹב בְּקֶרֶב עַמִּים רַבִּים כְּטַל 6
expectabit non quæ ,herbam ſuper imbres tanquam ,Domino *cum* à
מֵאֵת יְהוָה כִּרְבִיבִים עֲלֵי־עֵשֶׂב אֲשֶׁר לֹא־יְקַוֶּה
reſiduum erit Et .*hominis* filios *præſtolabitur* nec ,virum
לְאִישׁ וְלֹא יְיַחֵל לִבְנֵי אָדָם : וְהָיָה שְׁאֵרִית 7
leo ſicut ,multorum populorum *interiori* in ,gentibus in Jahacob
יַעֲקֹב בַּגּוֹיִם בְּקֶרֶב עַמִּים רַבִּים כְּאַרְיֵה
,tranſierit ſi qui :*pecoris greges* inter *leunculus ut* ,ſylvæ jumenta inter
בְּבַהֲמוֹת יַעַר כִּכְפִיר בְּעֶדְרֵי־צֹאן אֲשֶׁר אִם־עָבַר
tua manus Exaltabitur .*eruens* non & ,rapuerit & ,conculcaverit &
וְרָמַס וְטָרַף וְאֵין מַצִּיל : תָּרֹם יָדְךָ 8
erit Et .ſuccidentur tui inimici omnes & ;tuos hoſtes ſuper
עַל־צָרֶיךָ וְכָל־אֹיְבֶיךָ יִכָּרֵתוּ : וְהָיָה 9
,*tuo interiori* de tuos equos faciã ſuccidere &,Dominus dixit ,illa die in
בַיּוֹם־הַהוּא נְאֻם־יְהוָה וְהִכְרַתִּי סוּסֶיךָ מִקִּרְבֶּךָ
urbes faciam ſuccidere Et .tuas quadrigas faciam perdere &
וְהַאֲבַדְתִּי מַרְכְּבֹתֶיךָ : וְהִכְרַתִּי עָרֵי 10
faciam ſuccidere Et .tuas munitiones omnes diruam & ,tuæ terræ
אַרְצֶךָ וְהָרַסְתִּי כָּל־מִבְצָרֶיךָ : וְהִכְרַתִּי 11
.tibi erunt non *præſtigiatores* & ,tua manu de maleficia
כְשָׁפִים מִיָּדֶךָ וּמְעוֹנְנִים לֹא יִהְיוּ־לָךְ :
non & :*tuo interiori* de tuas ſtatuas & ,tua ſculptilia faciam ſuccidere Et
וְהִכְרַתִּי פְסִילֶיךָ וּמַצֵּבוֹתֶיךָ מִקִּרְבֶּךָ וְלֹא־ 12
tuos lucos evellam Et .tuarum manuum operi ultrà te incurvabis
תִשְׁתַּחֲוֶה עוֹד לְמַעֲשֵׂה יָדֶיךָ : וְנָתַשְׁתִּי אֲשֵׁירֶיךָ 13
naſo in faciam Et .tuas civitates delebo & :*tuo interiori* de
מִקִּרְבֶּךָ וְהִשְׁמַדְתִּי עָרֶיךָ : וְעָשִׂיתִי בְּאַף 14
.audierunt non quæ ,gentibus *cum* ultionem ira in &
וּבְחֵמָה נָקָם אֶת־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר לֹא שָׁמֵעוּ :

CAP. VI. ו

,montibus *cum litiga* ,Surge :*dicens* Dominus quod quæſo Audite
שִׁמְעוּ־נָא אֵת אֲשֶׁר־יְהוָה אֹמֵר קוּם רִיב אֶת־הֶהָרִים 1
litem montes Audite .tuam vocem colles audient &
וְתִשְׁמַעְנָה הַגְּבָעוֹת קוֹלֶךָ : שִׁמְעוּ הָרִים אֶת־רִיב 2
Domino *lis* quia ,terræ fundamenta fortia & ,DOMINI
יְהוָה וְהָאֵתָנִים מֹסְדֵי אָרֶץ כִּי רִיב לַיהוָה
mi Popule .*argumentabitur* Iſrael cum & ,ſuo populo cum
עִם־עַמּוֹ וְעִם־יִשְׂרָאֵל יִתְוַכָּח : עַמִּי 3
Quia .me *in reſponde* ? te feci laborare quo & ,tibi feci quid
מֶה־עָשִׂיתִי לְךָ וּמָה הֶלְאֵתִיךָ עֲנֵה בִי : כִּי 4
:te redemi ſervorum domo è & ,Ægypti terra è te feci aſcendere
הֶעֱלִתִיךָ מֵאֶרֶץ מִצְרַיִם וּמִבֵּית עֲבָדִים פְּדִיתִיךָ
.Mirjam & ,Aharon ,Moſeh *tuas facies ad* miſi &
וָאֶשְׁלַח לְפָנֶיךָ אֶת־מֹשֶׁה אַהֲרֹן וּמִרְיָם :

Verſio VULG. LAT.

4 Et ſtabit, & paſcet in fortitudine Domini, in ſublimitate nominis Domini Dei ſui: & convertentur, quia nunc magnificabitur uſque ad terminos terræ. 5 Et erit iſte pax: cùm venerit Aſſyrius in terram noſtram, & quando calcaverit in domibus noſtris: & ſuſcitabimus ſuper eum ſeptem paſtores, & octo primates homines. 6 Et paſcent terram Aſſur in gladio, & terram Nemrod in lanceis ejus: & liberabit ab Aſſur cùm venerit in terram noſtram, & cũ calcaverit in finibꝰ noſtris. 7 Et erunt reliquiæ Jacob in medio populorum multorum quaſi ros à Domino, & quaſi ſtillæ ſuper herbam, quæ non expectat virum, & non præſtolatur filios hominum. 8 Et erunt reliquiæ Jacob in Gentibus in medio populorum multorum, quaſi leo in jumentis ſylvarum, & quaſi catulus leonis in gregibus pecorum: qui cùm tranſierit, & conculcaverit, & ceperit, non eſt qui eruat. 9 Exaltabitur manus tua ſuper hoſtes tuos, & omnes inimici tui interibunt. 10 Et erit in die illa, dicit Dominus: auferam equos tuos de medio tuî, & diſperdam quadrigas tuas. 11 Et perdam civitates terræ tuæ, & deſtruam omnes munitiones tuas, & auferam maleficia de manu tua, & divinationes non erunt in te. 12 Et perire faciam ſculptilia tua, & ſtatuas tuas de medio tuî: & non adorabis ultrà opera manuum tuarum. 13 Et evellam lucos tuos de medio tuî, & conteram civitates tuas. 14 Et faciam in furore & in indignatione ultionem in omnibus gentibus, quæ non audierunt.

CAP. VI.

1 Audite quæ Dominus loquitur; Surge, contende judicio adverſùm montes, & audiant colles vocem tuam. 2 Audiant montes judicium Domini, & fortia fundamenta terræ: quia judicium Domini cum populo ſuo, & cum Iſrael dijudicabitur. 3 Popule meus, quid feci tibi, aut quid moleſtus fui tibi? Reſponde mihi. 4 Quia eduxi te de terra Ægypti, & de domo ſervientium liberavi te: & miſi ante faciem tuam Moyſen, & Aaron, & Mariam?

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

4 Καὶ στήσεται, καὶ ὄψεται, καὶ ποιμανεῖ τὸ ποίμνιον αὐτοῦ ἐν ἰσχύϊ κύριος, καὶ ἐν τῇ δόξῃ (η) ὀνόματος κυρίου θεοῦ αὐτῶν ὑπάρξουσι· διότι νῦν 5 μεγαλυνθήσονται ἕως ἄκρων τῆς γῆς. Καὶ ἔσται αὕτη (θ) εἰρήνη, Ἀσσοὺρ ὅταν ἐπέλθῃ ἐπὶ τὴν γῆν ὑμῶν, καὶ ὅταν ἐπιβῇ ἐπὶ τὴν χώραν ὑμῶν, καὶ ἐπεγερθήσονται ἐπ᾽ αὐτὸν ἑπτὰ ποι- 6 μένες, καὶ ὀκτὼ δήγματα ἀνθρώπων. Καὶ ποιμανοῦσι τὸν Ἀσσοὺρ ἐν ῥομφαίᾳ, καὶ τὴν γῆν τοῦ Νεβρὼδ ἐν τῇ τάφρῳ αὐτῆς· καὶ ῥύσεται ἐκ τοῦ Ἀσσοὺρ ὅταν ἐπέλθῃ ἐπὶ τὴν γῆν ὑμῶν, καὶ 7 ὅταν ἐπιβῇ ἐπὶ τὰ ὅρια ὑμῶν. Καὶ ἔσται τὸ ὑπόλειμμα τοῦ Ἰακὼβ ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἐν μέσῳ λαῶν πολλῶν, ὡς δρόσος παρὰ κυρίου πίπτουσα, καὶ ὡς ἄρνες (ι) ἐπὶ ἄγρωστιν, ὅπως μὴ συναχθῇ μηδεὶς, μηδὲ ὑποστῇ ἐν υἱοῖς 8 ἀνθρώπων. Καὶ ἔσται τὸ ὑπόλειμμα (κ) Ἰακὼβ ἐν τοῖς ἔθνεσιν ἐν μέσῳ λαῶν πολλῶν, ὡς λέων ἐν κτήνεσιν ἐν τῷ δρυμῷ, καὶ ὡς σκύμνος ἐν ποιμνίοις προβάτων, ὃν τρόπον ὅταν διέλθῃ, καὶ διαστείλας ἁρπάσῃ, 9 καὶ μὴ ᾖ ὁ ἐξαιρούμενος. Ὑψωθήσεται ἡ χείρ σου ἐπὶ τοὺς θλίβοντάς σε, καὶ πάντες οἱ ἐ- 10 χθροί σου (λ) ἐξολοθρευθήσονται. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος, (μ) ἐξολοθρεύσω τοὺς ἵππους ἐκ μέσου σου, καὶ ἀπολῶ 11 τὰ ἅρματά σου, Καὶ (˝) ἐξολοθρεύσω τὰς πόλεις τῆς γῆς σου, καὶ ἐξαρῶ πάντα τὰ ὀχυρώματά σου· καὶ (ν) ἐξολοθρεύσω τὰ φάρμακά σου ἐκ τῶν χειρῶν σου, καὶ ἀποφθεγγόμενοι οὐκ 12 ἔσονται ἐν σοί· Καὶ (˝) ἐξολοθρεύσω τὰ γλυπτά σου, καὶ τὰς στήλας σου ἐκ μέσου σου, καὶ οὐκέτι μὴ προσκυνήσεις τοῖς ἔργοις τῶν χει- 13 ρῶν σου. Καὶ ἐκκόψω τὰ (ξ) ἄλση ἐκ μέσου 14 σου, καὶ ἀφανιῶ τὰς πόλεις σου. Καὶ ποιήσω (ο) ἐν ὀργῇ καὶ ἐν θυμῷ ἐκδίκησιν ἐν τοῖς ἔθνεσιν, ἀνθ᾽ ὧν οὐκ (π) εἰσήκουσαν.

Et ſtabit, & videbit, & paſcet 4 gregem ſuum in fortitudine Dominus: & in gloria nominis Domini Dei ſui erunt: quia nunc magnificabuntur uſque ad terminos terræ. Et erit hæc pax: Aſ- 5 ſur quando ſupervenerit in terram veſtram, & quando aſcenderit ſuper regionem veſtram, & conſurgent ſuper eum ſeptem paſtores, & octo (d) morſus hominum: Et paſcent Aſſur in gla- 6 dio: & terram Nebrod in (e) fovea ejus. Et liberabit de Aſſur, cùm venerit ſuper terram veſtram, & cũ aſcenderit ſuper terminos veſtros. Et erunt reli- 7 quiæ Jacob in gentibus in medio populorum multorum, quaſi ros à Domino cadens, & quaſi (f) agni ſuper gramen: ut non congregetur quiſquam, neque ſit in filiis hominum. Et erunt reliquiæ Ja- 8 cob in gentibus in medio populorum multorum, quaſi leo in jumentis in ſaltu, & quaſi catulus leonis in gregibus pecorum, quomodò ſi pertranſeat, & dividens rapiat, & non ſit, qui eruat. Ele- 9 vabitur manus tua ſuper eos, qui tribulant te: & omnes inimici tui perdentur. Et erit in die il- 10 la, dicit Dominus, Interficiam equos tuos de medio tuî, & diſperdam currus tuos, Et ſubver- 11 tam civitates terræ tuæ, & auferam omnes munitiones tuas: & auferam veneficia tua de manibus tuis: & (g) qui loquuntur, non erunt in te: Et diſperdam 12 ſculptilia tua, & ſtatuas tuas de medio tuî: & ultrà non adorabis opera manuum tuarum: Et 13 ſuccîdam lucos de medio tuî: & demoliar civitates tuas: E faci- 14 am in ira & in furore ultionem in gentibus pro eo, quòd non exaudierunt.

MS. A. (η) τοῦ ὀνόματος κυρίου τοῦ θεοῦ (θ) ἡ εἰρήνη, ὅταν Ἀσσύριος ἐπέλθῃ (ι) ἐπ᾽ (κ) τοῦ Ἰακὼβ (λ) ἐξολεθρευθήσονται. (μ) ἐξολεθρεύσω τοὺς ἵππους σου ἐκ (˝) ἐξολεθρεύσω (ν) ἐξαρῶ πάντα τὰ φάρμακά (˝) ἐξολεθρεύσω (ξ) ἄλση σου ἐκ (ο) ἐν θυμῷ καὶ ἐν ὀργῇ (π) εἰσήκουσάν μου.

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 Ἀκούσατε δὴ (α) λόγον· Κύριος κύριος εἶπεν, Ἀνάστηθι, κρίθητι πρὸς τὰ ὄρη, καὶ ἀκουσάτωσαν (˝) βουνοὶ φωνήν σου. 2 Ἀκούσατε (β) ὄρη τὴν κρίσιν τοῦ κυρίου, καὶ αἱ φάραγγες θεμέλια τῆς γῆς, ὅτι κρίσις τῷ κυρίῳ πρὸς τὸν λαὸν αὐτοῦ, καὶ μετὰ τοῦ Ἰσραὴλ διελεγχθήσεται. 3 Λαός μου, τί ἐποίησά σοι, ἢ τί ἐλύπησά σε, ἢ τί παρηνώχλησά σοι; ἀποκρίθητί μοι. 4 Διότι ἀνήγαγόν σε ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ ἐξ οἴκου δουλείας ἐλυτρωσάμην σε, καὶ ἐξαπέστειλα πρὸ προσώπου σου τὸν Μωσῆν, καὶ Ἀαρὼν, καὶ Μαριάμ.

CAP. VI.

Audite (a) nunc verbum: 1 Dominus Dominus dixit, Surge, judicare apud montes: & audiant colles vocem tuam. Audite 2 (b) montes judicium Domini, & valles fundamenta terræ: quia judicium Domino adverſus populum ſuum: & cum Iſrael judicabitur. Populus meus, quid 3 feci tibi, aut quid contriſtavi te, aut in quo moleſtus fui tibi? reſponde mihi. Quia eduxi te de 4 terra Ægypti, & de domo ſervitutis redemi te, & miſi ante faciem tuam Moyſem, & Aaron, & Mariam?

MA. A. (α) λόγον κυρίου, ἃ ὁ κύριος εἶπεν, Ἀνάστηθι καὶ κρίθητι (˝) οἱ βουνοὶ (β) βουνοὶ τὴν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ויקום וישלוט בתקוף מן קדם יי ברבות שמא דיי אלהיה ויתובון מביני גלותהון ארי 4
כען יסגי שמיה עד סיפי ארעא : ויהי מבכן שלמא לנא אתוראה ארי יעל בארענא 5
וארי ידרוך בברניתנא ונמני עלנא שבעא מלכין ותמניא רברבי אנשא : וירעון ית 6
ארעא דאתור בחרבא וית ארעא נמרוד בתקוף כרכהא וישזבננא מאתור דלא יעל
בארענא ולא ידרוך בתחומנא : ויהי שארא דבית יעקב בגו עממין סגיאין כטלא מן 7
קדם יי וכרסיסי מלקושא די על עסבא די לא מוריך לאנשא ולא מכתר לבר אנשא :
ויהי שארא דיעקב בעממיא בגו עממין סגיאין כאריא בבעירא בחורשא וכליתא 8
בעדרי ענא דאם יעדי וירמוס ויקטול ולית די משיזיב : סגי מבכן תתקף ידך ישראל 9
על סנאך וכל בעלי דבבך ישתצון : ויהי בעדנא ההיא אמר יי ואשצי סוסות עממיא 10
מבינך ואוביד רתיכיהון : ואשצי קרוי עממיא מארעך ואפגר כל כרכיהון תקיפיא : 11
ואשצי חרשין מבינך ומעננין לא יהון לך : ואשצי צלמי עממיא וקמתהון מבינך ולא 12 13
תשתעבד עוד לעובדי ידך : ואעקר שתילי עממיא מבינך ואשצי בעלי דבבך : ואעבד 14 15
ברגז ובחמא ית פורענות דין מן עממיא דלא קבילו אולפן אוריתא :

ו

שמעו כען ית דיי אמר קום דון עם טוריא וישמען רמתא קלך : שמעו טוריא ית 2
דיניא דיי ועקריא מיסודי ארעא ארי דינא קדם יי עם עמיה ועם ישראל עביד
תוכחה : עמי מה טבא אמרית למעבד לך ולא עבדית או מרועא קשיא אסגיתי 3
עליך אסהד בי : ארי אסקתך מארעא דמצרים ומבית עבדותא פרקתך ושלחית 4
קדמך תלתא נביין משה לאלפא מסירת דינין אהרן לכפרה על עמא ומרים לאוראה
לנשיא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Proinde ſtabit & dominabitur fortitudine à præſentia Dñi [*promanante*,] & 4 magnitudine nominis Dñi Dei ſui, atq; convertentur de medio captivitatis ſuæ: nam magnificabitur nomen ejꝰ uſq; ad fines terræ. Et erit deinceps pax 5 nobis: ꝙ ſi Aſſyrius terram noſtrã ingreſſus fuerit, atq; ædes noſtras calcaverit, ſup nos conſtituemus ſeptẽ reges, & octo hominum principes. Qui de- 6 paſcent terram Aſſur gladio, & terrã Nemrod in fortitudine turriũ ejus: & liberabit nos ab Aſſur, ut non ingrediatur in terrã noſtram, nec calcet terminos noſtros. Erunt autẽ reliquiæ domus Jahacob in medio populorũ multo- 7 rum, ſicut ros à facie Dñi [*defluens*,] & ſicut guttæ imbris ſerotini ſup herbã, quæ non expectat virũ nec filium hominis præſtolatur. Erunt demum 8 reliquiæ Jahacob inter gentes in medio populorum multorum ſicut leo in beſtiis ſylvæ, & velut leæna in gregibꝰ oviũ: quæ ſi tranſierit & conculcaverit occideritque, non erit qui eruat. Multum deinceps prævalebit manus tua, 9 ô Iſrael, ſup hoſtes tuos, atq; omnes inimici tui abſcindentur. Et fiet illo tem- 10 pore, dicit Dñs, diſperdã equos populorum de medio tui, atque currus eorum perdam. Subvertam etiam gentiũ civitates de terra tua; nec non omnes 11 eorum arces munitas deſtruam. Succidam & maleficos de medio tui, & præ- 12 ſtigiatores non erunt tibi. Concîdam inſuper ſimulachra populorum & ſta- 13 tuas eorum de medio tui, & non ſubjicieris ultrà operibus manuum tuarum. Denique eradicabo plantationes gentium de tui medio, ac extermina- 14 bo inimicos tuos. Atque exequar cum ira & furore ultionem judicii in popu- 15 los, eò quòd haud doctrinam Legis ſuſceperint.

CAP. VI.

Audite nunc quæ Dñs ait: Surge, judicio contende cum *montibus*, et audiant 1 *colles* vocem tuam. Audite montes *diſceptationes* Dñi, et radices fundamen- 2 torum terræ, ſiquidem judicium eſt coram Dño cum populo ſuo, et cum Iſrael diſputationẽ inſtituit. Populc mi, quid boni dixi me facturũ tibi ꝙ non fe- 3 cerim? aut quam infirmitatẽ gravem multiplicavi ſup te, teſtimoniũ perhibe in me. Quoniã aſcendere te feci de terra Ægypti, et de domo ſervitutis rede- 4 mi te: miſique ante te tres prophetas, Moyſen [*videlicet*] ut doceret judiciorũ traditionẽ, Aharon ut expiaret populum, et Mariã ut inſtruet mulieres.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

3 * ܘܢܩܘܡ. ܘܢܪܥܐ ܒܥܘܫܢܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܒܫܘܒܚܐ ܕܫܡܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܗ. ܘܢܬܦܢܘܢ.
4 ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܢܪܒܐ. ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. * ܘܢܗܘܐ ܫܠܡܐ. ܘܐܬܘܪܝܐ ܡܐ ܕܐܬܐ
ܠܐܪܥܢ. ܘܕܪܟ ܒܦܠܛܝܢ. ܢܩܝܡ ܥܠܘܗܝ ܫܒܥܐ ܪܥܘܬܐ. ܘܬܡܢܝܐ ܪܘܪܒܢܐ ܕܒܢܝܢܫܐ.
5 * ܘܢܪܥܘܢ ܠܐܪܥܐ ܕܐܬܘܪ ܒܣܝܦܐ. ܘܠܐܪܥܐ ܕܢܡܪܘܕ ܒܪܘܓܙܗ. ܘܢܦܪܘܩ ܠܢ ܡܢ ܐܬܘܪܝܐ ܕܠܐ ܢܐܬܐ
6 ܠܐܪܥܢ. ܘܠܐ ܢܕܘܫ ܒܬܚܘܡܝܢ. * ܘܢܗܘܐ ܫܪܟܗ ܕܝܥܩܘܒ ܒܥܡܐ ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ.
ܐܝܟ ܛܠܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܐܝܟ ܪܣܣܐ ܕܥܠ ܥܣܒܐ. ܕܠܐ ܡܣܬܟܐ ܠܓܒܪܐ. ܘܠܐ
7 ܡܣܟܐ ܠܒܢܝܢܫܐ. * ܘܢܗܘܐ ܫܪܟܗ ܕܝܥܩܘܒ ܒܥܡܡܐ ܒܝܬ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܐܝܟ
ܐܪܝܐ ܒܚܝܘܬܐ ܕܥܢܐ. ܘܐܝܟ ܓܘܪܝܐ ܕܐܪܝܐ ܒܓܙܪܐ ܕܥܢܐ. ܕܡܐ ܕܥܒܪ ܘܕܫ ܘܛܪܦ.
8 ܘܠܝܬ ܕܡܦܨܐ. * ܬܬܪܝܡ ܐܝܕܟ ܥܠ ܣܢܐܝܟ. ܘܟܠܗܘܢ ܒܥܠܕܒܒܝܟ ܢܬܚܪܒܘܢ. * ܘܢܗܘܐ
9 10 ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܘܒܕ ܪܟܫܝܟ ܡܢ ܓܘܟܝ. ܘܐܘܒܕ ܡܪܟܒܬܟܝ. * ܘܐܘܒܕ
11 ܩܘܪܝܐ ܕܐܪܥܟܝ. ܘܐܗܦܘܟ ܟܠܗܘܢ ܚܨܢܝܟܝ. * ܘܐܘܒܕ ܚܪܫܐ ܡܢ ܐܝܕܝܟܝ. ܘܡܟܫܦܐ
12 ܠܐ ܢܗܘܘܢ ܠܟܝ. * ܘܐܘܒܕ ܦܬܟܪܝܟܝ ܘܩܝܡܬܟܝ ܡܢ ܓܘܟܝ. ܘܠܐ ܬܣܓܕܝܢ
13 ܠܥܒܕ ܐܝܕܝܟܝ. * ܘܐܘܒܕ ܐܫܝܪܝܟܝ ܡܢ ܓܘܟܝ. ܘܐܚܪܒ ܡܕܝܢܬܟܝ. * ܘܐܥܒܕ ܒܪܘܓܙܐ
14 ܘܒܚܡܬܐ ܬܘܥܪܬܐ ܡܢ ܥܡܡܐ ܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܫܡܥܘ.

Et ſurget, paſcétque in fortitudine Domini, 3 & in gloria nominis Domini Dei ſui; & convertentur: quia tum creſcet uſque ad fines terræ, Et erit pax. Cúmque venerit Aſſyrius in patriam noſtram, & deambulaverit 4 in palatiis noſtris; ſuſcitabimus in eum ſeptem paſtores, & octo homines magnates; Qui terræ Aſſyriæ gladio occurrent, & terræ 5 Nemrodi, iræque ipſius: & liberabit nos ab Aſſyrio, ne veniat in patriam noſtram, neque gradiatur in terminis noſtris. Et erunt reliquiæ Jacobi in populo inter gentes multas, 6 tanquam ros à Domino, & tanquam ſtillæ ſuper gramen, qui nemini ſupereſt, nullíque reſiduus eſt. Erúntque reliquiæ Jacobi in populo inter gentes multas, ut leo inter animalia ovina, & ut catulus leonis in grege ovium; qui cùm decreverit ac deliberaverit, 7 prædatur nemine eripiente. Attolletur manus tua ſuper oſores tuos, & omnes inimici 8 tui peribunt. Die enim illo, dicit Dominus, 9 perdam equos tuos de medio tui, perdam currus tuos, Perdámque civitates terræ tuæ, 10 & evertam omnes urbes tuas: Magos perdam è manibus tuis, & præſtigiatores non 11 erunt ampliùs tibi: Perdam ſculptilia tua 12 & excelſa tua de medio tui, & non adorabis ampliùs opus manuum tuarum: Perdam 13 quoque plantas tuas de medio tui, & urbes tuas vaſtabo: Denique perſequar in ira 14 & furore vindictam à gentibus quæ non auſcultaverint.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

CAP. VI.

1 * ܫܡܥܘ ܡܟܝܠ ܡܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܩܘܡ ܕܘܢ ܥܡ ܛܘܪܐ. ܘܢܫܡܥܘܢ ܡܠܝܟ ܪܡܬܐ.
2 * ܫܡܥܘ ܛܘܪܐ ܕܝܢܗ ܕܡܪܝܐ ܘܡܥܡܩܐ ܕܫܬܐܣܝܗ̇ ܕܐܪܥܐ. ܕܕܝܢܐ ܠܡܪܝܐ ܥܡ ܥܡܗ.
3 ܘܠܐܝܣܪܝܠ ܡܟܣ. * ܥܡܝ ܡܢܐ ܥܒܕܬ ܠܟ. ܐܘ ܒܡܢܐ ܐܠܐܝܬܟ. ܐܣܗܕ ܒܝ ܣܗܕܘܬܐ. * ܠܐ
4 ܐܣܩܬܟ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ: ܘܡܢ ܒܝܬ ܥܒܕܘܬܐ ܦܪܩܬܟ. ܘܫܕܪܬ ܩܕܡܝܟ ܠܡܘܫܐ
ܘܠܐܗܪܘܢ ܘܠܡܪܝܡ.

Audite jam quid dixerit Dominus; Surge, 1 contende cum montibus, & audiant vocem tuam colles. Audite montes & profunda 2 fundamentorum terræ, litem Domini: contendit enim Dominus cum populo ſuo, & Iſraelem arguit. Popule mi, quid feci tibi? 3 aut quam moleſtiam intuli tibi? produc mihi teſtes. Nónne extraxi te de terra Ægypti, & 4 de domo ſervitutis liberavi te, & miſi ante te Moſen, Aharonem, & Mariam?

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

3 * ويقوم ويرا ويرعى الرب قطيعه بقوة * ومجد اسم الرب الههم يوجدون * من اجل انهم
4 الان سيعظمون الى اقطار الارض *ويكون هنك السلامه اذا اتى الموصلي الى ارضنا واذا وطي
5 على كورتنا ويقوم عليه سبعه رعاة وثمانيه عظماء من الناس *ويرعون الموصل بسيف
وارض نمرود بحفرتها وينقذهم اذا اتى على ارضنا واذا وطي على حدودنا *ويصير بقيه
6 يعقوب في الامم في وسط شعوب كثيرة مثل نداء هابط من قبل الرب ومثل خراف على
7 نجيل كيلا يجمع ولا واحد ولا يبقى في بني البشر *ويصير بقيه يعقوب في الامم في وسط شعوب
كثيرة مثل اسد في بهايم في الفلاة ومثل الشبل في قطعان الغنم كما انه اذا جاز وقطع
8 9 يفترس ولا يكون من يخلص *ترتفع يدك على محزنيك وجميع اعدايك يستاصلون *ويكون
10 في ذلك اليوم يقول الرب استاصل خيولك من وسطك وابيد مركباتك *واستاصل مدن
11 ارضك واهلك جميع حصونك *وانزع السحر من يديك والمتكلمون لا يكونون فيك
12 13 *واستاصل منحوتاتك ونصباتك من وسطك ولا تسجدين بعد لاعمال يديك *واكسر
14 النصبات من وسطك وابيد مدنك *واصنع برجز وبغضب انتقاما في الامم من اجل انهم
لم يسمعوا

Et ſtabit, ac videbit, paſcetque Dominus 3 gregem ſuum in fortitudine, & in gloria nominis Domini Dei ſui invenientur, quia nunc magnificabuntur uſq; ad fines terræ. Erit autem pax iſta cùm venerit Aſſyrius in terram noſtram, cúmque calcaverit regionem noſtram. Surgent enim 4 adverſùs eum ſeptem paſtores & octo magna es ex hominibus; Et Aſſyriam 5 gladio paſcent, & terram Nemrodi cum fovea ipſius: & redimet eos cùm venerit ſuper terram noſtram, cúmque calcaverit terminos noſtros. Et fient reliquiæ Jacobi inter gentes in medio populorum multorum, ſicut ros à Domino 6 deſcendens, & ſicut agni ſuper gramen: ut ne vel unus congregetur, neque maneat inter filios mortalium. Et fient reliquiæ Jacobi inter gentes in medio populorum multorum, ceu leo inter jumenta in campo, & ut leunculus inter greges ovium. Quemadmodum tranſiens 7 & diſſecans prædatur nemine evadente; Elevabitur manus tua ſuper affligentes te, & omnes inimici tui eradicabuntur. 8 Et erit eo die, dicit Dominus, 9 ut evellam equos tuos è medio tui, & perdam currus tuos: Excindam urbes 10 terræ tuæ, & perdam omnes arces tuas: Auferam magiam è manibus tuis, & 11 loquentes non ſint in te: Evellam ſculptilia tua & ſtatuas tuas è medio tui, 12 nec adores in poſterum opificia manuum tuarum: Confringam ſtatuas è medio 13 tui, perdamque urbes tuas: Et faciam 14 cum ira & exardeſcentia vindictam in gentibus, eò quòd non audierint.

* الفصل السادس *

CAP. VI.

1 * اسمعوا الان ما قاله الرب قم تحاكم مع الجبال ولتسمع الاكام صوتك *اسمعوا ايها
2 الشعوب حكم الرب والاوديه اساسات الارض لان للرب حكومه مع شعبه ومع اسرايل
3 يتناظر *يا شعبي ماذا صنعت بك او ماذا احزنتك او ماذا ضربت بك اجبني *من اجل
4 اني اصعدتك من ارض مصر ومن بيت العبوديه انقذتك وارسلت قدام وجهك موسي
وهرون ومريم *

Audite nunc quid dixerit Dominus: 1 Surge, litem inſtitue cum montibus, & audiant colles vocem tuam. Audite O 2 populi judicium Domini, & valles fundamenta terræ: eſt enim Domino lis cum populo ſuo, & cum Iſraele contendit. O mi popule, quid feci tibi? aut qua in 3 re contriſtavi te? aut quâ in re læſi te? reſponde mihi. Nam ego te eduxi de 4 terra Ægypti, & de domo ſervitutis liberavi te, miſique ante faciem tuam Moſen, Haronem, & Mariam.

מיכה : ו

quid & ,Moab rex Balac *consuluerit* quid nunc memento ,mi Popule
5 עמי זכר־נא מה־יעץ בלק מלך מואב ומה־
,Ghilghal ad usque Sithim de ,Behor filius Bilham ei responderit
ענה אתו בלעם בן־בעור מן־השטים עד־הגלגל
? Dominum præoccupabo quo In .Domini justitias *sciendum* ad
6 למען דעת צדקות יהוה: במה אקדם יהוה
,*ascensionibus* in eum præoccupabo Nunquid .*celsitudinis* Deo me curvabo
אכף לאלהי מרום האקדמנו בעולות
millibus in Dominus volet Nunquid ? *anni filiis* vitulis in
7 בעגלים בני שנה: הירצה יהוה באלפי
meũ primogenitum dabo nunquid ? olei torrentium *myriadibus in*,arietum
אילים ברבבות נחלי־שמן האתן בכורי
Indicat ? meæ animæ *peccatum* ,mei ventris fructum ? *meum scelus*
8 פשעי פרי בטני חטאת נפשי: הגיד
,te à *quærens* Dominus quid & ,bonum quid homo tibi
לך אדם מה־טוב ומה־יהוה דורש ממך
se humiliare & ,misericordiam diligere & ,judicium facere *nisi*
כי אם־עשות משפט ואהבת חסד והצנע
,*clamabit* civitatem ad Domini Vox .tuo Deo cum ambulando
9 לכת עם־אלהיך: קול יהוה לעיר יקרא
? eã constituit quis & ,virgam Audite .tuum nomen timebit *sapientia &*
ותושיה יראה שמך שמעו מטה ומי יעדה:
.*abominatus tenuitatis* modius &,*impietatis* thesauri impii domo *vir num* Adhuc
10 עוד האש בית רשע אצרות רשע ואיפת רזון זעומה:
? *fraudis lapidum loculo in &* ,*impietatis bilancibus in ero purus* Nunquid
11 האזכה במאזני רשע ובכיס אבני מרמה:
sunt locuti ejus habitatores & ,*rapina* sunt repleti *ejus* divites Cujus
12 אשר עשיריה מלאו חמס וישביה דברו־
ego etiam Et .eorum ore in fraudulenta eorum lingua & ,mendacium
13 שקר ולשונם רמיה בפיהם: וגם־אני
Tu .tua peccata *super* desolando ,te percutiendo feci ægrotare
14 החליתי הכותך השמם על־חטאתיך: אתה
,*apprehendet &* : *tuo interiore in* tua *depressio* & ,saturaberis non & ,comedes
תאכל ולא תשבע וישחך בקרבך ותסג
,seminabis Tu .dabo gladio ,*produxerit* quem & : *producet non &*
15 ולא תפליט ואשר תפלט לחרב אתן: אתה תזרע
,*mustum* & : oleo te unges non & ,*olivam* calcabis tu : metes non &
ולא תקצור אתה תדרך־זית ולא־תסוך שמן ותירוש
omne & ,Homri *statuta est custoditum* Et .vinum bibes non &
16 ולא תשתה־יין: וישתמר חקות עמרי וכל
pro ,eorum consiliis in ambulâstis & ,Achab domus opus
מעשה בית־אחאב ותלכו במעצותם למען
opprobrium & ,sibilum in *ejus* habitatores &,desolationem in te *me dare*
תתי אתך לשמה וישביה לשרקה וחרפת
.*portabitis* mei populi
עמי תשאו:

CAP. VII. ז

.vindemiæ racemi sicut ,æstatis *collectiones* sicut fui quia ,mihi Væ
1 אללי לי כי הייתי כאספי־קיץ כעללת בציר
.mea anima desideravit *primitivum* ,comedendum ad botrus Non
אין־אשכול לאכול בכורה אותה נפשי:
.non *hominem* inter rectus & ,terra de misericors Periit
2 אבד חסיד מן־הארץ וישר באדם אין
.*sagena venabuntur* suũ fratrem *vir* ,*insidiabuntur sanguinibus ipsi* Universi
כלם לדמים יארבו איש את־אחיהו יצודו חרם:
judicans & ,*postulans* princeps benefaciendo pro ,*volis* malefaciendo Pro
3 על־הרע כפים להיטיב השר שאל והשפט
,*ipse suæ* animæ *contritionem loquens* magnus & : retributionem propter
בשלום והגדול דבר הות נפשו הוא
.*eam complicarunt &*
ויעבתוה:

Versio VULG. LAT.

5 Populé meus, memento, quæso, quid cogitaverit Balach rex Moab, & quid responderit ei Balaam filius Beor, de Setim usque ad Galgalam, ut cognosceres justitias Domini. 6 Quid dignum offeram Domino? curvabo genu Deo excelso? numquid offeram ei holocautomata, & vitulos anniculos. 7 Numquid placari potest Dominus in millib⁹ arietum, aut in multis millib⁹ hircorũ pinguium? numquid dabo primogenitũ meũ pro scelere meo, fructũ ventris mei pro peccato animæ meæ? 8 Indicabo tibi, ô homo, quid sit bonum, & quid Domin⁹ requirat à te: Utique facere judicium, & diligere misericordiam & solicitum ambulare cum Deo tuo. 9 Vox Domini ad civitatem clamat, & sal⁹ erit timentib⁹ nomen tuũ: Audite tribus, & quis approbabit illud? 10 Adhuc ignis in domo impii thesauri iniquitatis, & 11 mensura minor iræ plena. Numquid justificabo stateram impiam, 12 & saccelli pondera dolosa? In quibus divites ejus repleti sunt iniquitate, & habitantes in ea loquebantur mendacium, & lingua eorum fraudulenta in ore 13 eorum. Et ego ergò cœpi percutere te perditione super pec- 14 catis tuis. Tu comedes, & non saturaberis: & humiliatio tua in medio tuî: & apprehendes, & non salvabis: & quos salva- 15 veris, in gladium dabo. Tu seminabis, & non metes: tu calcabis olivam, & non ungêris oleo; & mustum, & non bibes vinum. 16 Et custodîsti præcepta Amri, & omne opus domûs Achab, & ambulâsti in voluntatibus eorum, ut darem te in perditioné, & habitantes in ea in sibilum: & opprobrium populi mei portabitis.

CAP. VII.

1 VÆ mihi, quia factus sum sicut qui colligit in autumno racemos vindemiæ: non est botrus ad comedendum, præcoquas ficus de- 2 sideravit anima mea. Periit Sanctus de terra, & rectus in hominibus non est: omnes in sanguine insidiantur, vir fratrem suum ad 3 mortem venatur. Malum manuũ suarum dicunt bonum: princeps postulat, & judex in reddendo est: & magnus locutus est desiderium animæ suæ, & conturbaverunt eam.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

5 Λαός μου μνήσθητι δὴ, τί ἐβουλεύσατο κατὰ σοῦ Βαλὰκ βασιλεὺς Μωὰβ, καὶ τί ἀπεκρίθη αὐτῷ Βαλαὰμ υἱὸς τοῦ Βεὼρ, ἀπὸ τῶν σχοίνων ἕως τοῦ Γαλγὰλ, ὅπως γνωσθῇ ἡ δικαιοσύνη τοῦ κυρίου. 6 Ἐν τίνι καταλάβω τὸν κύριον, ἀντιλήψομαι θεοῦ μου ὑψίστου; εἰ καταλήψομαι αὐτὸν ἐν ὁλοκαυτώμασιν, ἐν μόσχοις ἐνιαυσίοις; 7 Εἰ προσδέξεται (α) κύριος ἐν χιλιάσι κριῶν, ἢ ἐν μυριάσι (β) χιμάρων πιόνων; εἰ δῶ πρωτοτόκα (γ) μου ὑπὲρ ἀσεβείας, καρπὸν κοιλίας μου ὑπὲρ ἁμαρτίας ψυχῆς μου; 8 Εἰ ἀνηγγέλη σοι ἄνθρωπε τί καλόν; ἢ τί κύριος ἐκζητεῖ παρὰ σοῦ, ἀλλ' ἢ τοῦ ποιεῖν κρίμα, καὶ ἀγαπᾶν (δ) ἔλεον, καὶ ἕτοιμον εἶναι τοῦ πορεύεσθαι 9 μετὰ κυρίου (ε) θεοῦ σου; Φωνὴ κυρίου τῇ πόλει ἐπικληθήσεται, καὶ σώσει (ς) φοβουμένους τὸ ὄνομα αὐτοῦ. ἄκουε φυλὴ, καὶ (ζ) 10 τίς κοσμήσει πόλιν; Μὴ πῦρ καὶ οἶκος (η) ἀνόμου θησαυρίζων θησαυροὺς (θ) ἀνό- 11 μοις, καὶ μετὰ ὕβρεως ἀδικίας; Εἰ δικαιωθήσεται ἐν ζυγῷ ἄνομος, καὶ ἐν μαρσίπῳ 12 στάθμια δόλου, Ἐξ ὧν τὸν πλοῦτον αὐτῶν ἀσεβείας (ι) ἔπλησαν, καὶ οἱ κατοικοῦντες αὐτὴν ἐλάλουν ψευδῆ, καὶ ἡ γλῶσσα αὐτῶν 13 ὑψώθη ἐν τῷ στόματι αὐτῶν; Καὶ ἐγὼ ἄρξομαι τοῦ πατάξαι σε, (κ) ἀφανιῶ σε ἐν ταῖς 14 ἁμαρτίαις σου. Σὺ φάγεσαι, καὶ οὐ μὴ ἐμπλησθῇς, καὶ (λ) συσκοτάσει ἐν σοὶ, καὶ ἐκνεύσει, καὶ οὐ μὴ διασωθῇς, καὶ ὅσοι ἂν διασω- 15 θῶσιν, εἰς ῥομφαίαν παραδοθήσονται. Σὺ σπερεῖς, καὶ οὐ μὴ ἀμήσῃς, σὺ πιέσεις ἐλαίαν, καὶ οὐ μὴ ἀλείψῃ ἔλαιον, καὶ οἶνον, καὶ οὐ μὴ πίητε, καὶ ἀφανισθήσεται νόμιμα λαοῦ μου. 16 Καὶ ἐφύλαξας τὰ δικαιώματα Ζαμβρὶ, καὶ πάντα τὰ ἔργα οἴκου Ἀχαὰβ, καὶ ἐπορεύθητε ἐν ταῖς (ν) ὁδοῖς αὐτῶν, ὅπως (μ) παραδῶ σε εἰς ἀφανισμὸν, καὶ τοὺς κατοικοῦντας αὐτὴν εἰς συρισμὸν, καὶ ὀνείδη λαῶν λήψεσθε.

MS.A. (α) ὁ κύριος (β) ἀρνῶν (γ) μου* ἀσεβείας, (δ) ἔλεος, (ε) τοῦ θεοῦ (ς) τοὺς φοβουμένους (ζ) τί (η) ἀνόμων (θ) ἀνομίας, μετὰ ὕβρεως ἀδικίᾳ; Καὶ ἡ (ι) ἐνέπλησε, (κ) καὶ ἀφανιῶ σε ἐπὶ ταῖς (λ) σκοτάσει (ν) βουλαῖς (μ) παραδώσω

ΚΕΦ. ζ΄.

1 (α) ΟἼμοι, ὅτι ἐγενήθην ὡς συνάγων καλάμην ἐν ἀμητῷ, καὶ ὡς ἐπιφυλλίδα ἐν τρυγητῷ, οὐχ ὑπάρχοντος βότρυος τοῦ φα- 2 γεῖν τὰ πρωτόγονα. (β) οἴμοι ψυχὴ, Ὅτι ἀπόλωλεν εὐσεβὴς ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ κατορθῶν ἐν ἀνθρώποις οὐχ ὑπάρχει. πάντες εἰς αἵματα δικάζονται, ἕκαστος τὸν πλη- 3 σίον αὐτοῦ ἐκθλίβουσιν ἐκθλιβῇ, Ἐπὶ τὸ κακὸν τὰς χεῖρας αὐτῶν ἑτοιμάζουσιν. ὁ ἄρχων αἰτεῖ, καὶ ὁ κριτὴς εἰρηνικοὺς λόγους ἐλάλησε, καταθύμιον ψυχῆς αὐτοῦ ἐστιν. καὶ ἐξελοῦμαι τὰ ἀγαθὰ αὐτῶν

MS.A. (α) Οἴμμοι, ὅτι ἐγενόμην (β) οἴμμοι ψυχὴ, Ὅτι ἀπόλωλεν εὐλαβὴς ἀπὸ

Populus meus, recordare nunc, 5 *quid cogitaverit adversum te Balac rex Moab, & quid responderit ei Balaam filius Beor de (c) Schœnu usq; ad Galgal; ut cognosceretur justitia Domini.* 6 *In quo apprehendam Dominum, suscipiam Deum meum excelsum? si apprehendam eum in holocaustis, in vitulis anniculis?* 7 *Si suscipiet Dominus in millibus arietum, vel in decem millibus hircorum pinguium? Si dabo primogenita mea pro impietate, fructum ventris mei pro peccato animæ meæ?* 8 *(d) Si annuntiatum est tibi, homo, quid bonum? aut quid Dominus quærat à te? nisi ut facias judicium, & diligas misericordiam, & (e) paratus sis ambulare cum Domino Deo tuo?* 9 *Vox Domini civitati (f) clamabit, & salvabit timentes nomen ejus. Audi, tribus: & quis ornabit civitatem?* 10 *Numquid ignis, & domus iniqui thesaurizans thesauros iniquos, & cum contumelia injurias?* 11 *Si justificabitur in statera iniquus, & in sacello pondera fraudulenta;* 12 *De quibus divitias suas impietatis repleverunt, & qui habitant in ea, loquuti sunt (g) mendacia, & lingua eorum exaltata est in ore eorum?* 13 *Et (h) ego incipiã percutere te, delebo te in peccatis tuis.* 14 *Tu comedes, & non saturaberis, & contenebrescet in te, & declinabit, & (i) non salvaberis: & quicunque salvati fuerint, gladio tradentur.* 15 *Tu seminabis, & non metes: tu premes olivã, & non ungêris oleo, et (k) vinũ, & non bibetis: & dissipabuntur legitima populi mei.* 16 *Et (l) custodîsti justificationes Zambri, & omnia opera domûs Achab: & ambulâstis in viis eorum; ut traderem te in perditionem, & habitatores ejus in sibilum: & opprobria populorum accipietis.*

CAP. VII.

VÆ mihi, quia factus sum, 1 *sicut qui congregat stipulam in messe, & sicut (a) racemum in vindemia, cùm non sit botrus ad comedendum (b) primitiva. Væ mihi, anima,* 2 *Quia periit (c) pius de terra: & qui corrigat, in hominibus non est. Omnes in sanguines judicantur; unusquisque proximum suum tribulat tribulatione:* 3 *In malum manus suas præparant. Princeps postulat, & judex verba pacifica loquutus est: desiderium animæ suæ est. Et auferam bona eorum,*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 עמי אדכר כען מה מלך בלק מלכא דמואב ומא אתיב יתיה בלעם בר בעור הלא
6 גבורן אתעבידא לכון ממישר שטין עד בית גלגלא בדיל למדע זכותא דיי: במה
אפלח קדם יי אשתעבד לאלהא דשכנתיה בשמי מרומא האפלח קדמוהי בעלון
7 בעגלין בני שנא: היתרעי יי באלפי דכרין ברבבת נחלין דמשח האתן בוכרי חלף
8 חובי חבוב מעי חלף חטאי נפשי: היחוה לך אנשא מה טב ומה יי תבע מנך אלהן
9 למעבד דין דקשוט ולמרחם גמילות חסדא והוי צניע להלכא בדחלתא דאלהך: קל
נבייא דיי על קרתא מכלן ומלפיא דחלין לשמא שמע מלכא ושלטונא ושאר עמא
10 11 דארעא: עוד האית בית רשיעא אוצרין דרשע ומכילן דשקר מיתין לוט: היזכון
12 במוזנין דרשע ובכיס דביה מתקלין רברבין ודעדקין: דעתירהא מלן אוצריהון חטוף
13 ויתבהא ממללין שקר ולישנהון נכלין בפומהון: ואף אנא איתיתי עלך מרע ומחא
14 אצדנך על דחטתא: את תיכול ולא תסבע ויהי לך למרע במעך ותדביק ולא תשזיב
15 ודי תשזיב לחרבא אמסר: את תזרע ולא תחצוד את תדרך זיתין ולא תשוף משח
16 ותעצר ענבין ולא תשתי חמר: ועל די נטרתון גזירת בית עמרי ועבדתון עובדי בית
אחאב והלכתון בנימוסיהון בדיל למסר יתך לצדו ויתבהא לאשתממו וחסודי עמי
תקבלון:

ז

1 אמר נביא וי לי ארי הויתי כמסף טביא בעדן דאבדו חסידיא מן ארעא הא כסיופי
2 קיטא כעוללן בתר קטוף לית גבר דביה עובדין טבין לטביא חמדת נפשי: אבדו
חסידיא מן ארעא ודקשיט באנשא לית כולהון למשפך דם זכי כמנין גבר ית אחוהי
3 מסרין לגמירא: מבאשין בידיהון ולא מוטיבין שלטונא שאל ודינא אמר עביד לי
דאשלם לך ורבא ממלל תחמודי נפשיה ווי עליהון על דקלקלוהא:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Populé mi, memento quæso quid consultârat Balach rex Moab, quidque re- 5 sponderat ei Balham filius Beor: nonne egregia facinora edita sunt in vestri gratiã à convalle Sittim usq; ad domum Galgalæ, quò agnoscerentur justitiæ Domini? 6 In quo serviã corã Domino, me submittã Deo cuj⁹ in cœlis altissimis residet majestas? nunquid corã illo venerabor cum holocaustis, [*aut*] vitulis anniculis? 7 Num sibi Domin⁹ complacet in millibus arietũ, in myriadib⁹ torrentiũ olei? Nunquid dabo primogenitũ meũ pro flagitio meo, dilectũ viscerum meorum pro peccatorũ expiatione animæ meæ? 8 Num annuntiabit tibi homo quid bonũ sit? quid verò Domin⁹ requirit à te, nisi ut judiciũ veritatis exerceas, atq; diligas misericordiæ retributionem? Eris ergo humilis ambulando in timore Dei tui. 9 Voce Prophetæ Domini ad civitaté clamant, & doctores timent nomen [*Domini*:] audite rex & præfecti, residuúsq; terræ popul⁹: 10 Nunquid adhuc extat dom⁹ impii? thesauri impietatis & mensuræ iniquitatis adducunt maledictioné. 11 Nunquid justi habebuntur in stateris impietatis, & in sacculo in quo sunt pondera majora & minima? 12 Cuj⁹ divites replent thesauros suos rapina, & habitatores ej⁹ loquuntur mendaciũ, & linguæ eorum fraudulentæ sunt in ore eorũ. 13 Ego quoq; adduxi contra te infirmitaté & plagam, destruam te eò ꝗ peccâsti. 14 Tu comedes, & non saturaberis; sed erit tibi in infirmitatem in utero tuo: & assequêris, & non eripies, & quos tu salvaveris, gladio tradam. 15 Tu seminabis & non metes, tu excuties olivas, nec oleo ungêris: calcabis & uvas, quarũ vinum non bibes. 16 Sed eò ꝗ decreta dom⁹ Amri custodistis, & fecistis opera domus Achab, atq; ambulâstis in legitimis eorũ, ut traderé te in desolationem, & habitatores ejus in stuporem: opprobria populi mei recipietis.

CAP. VII.

1 DIxit Propheta: Væ mihi, quia fui quando deficiebant boni, tempore quo perierunt misericordes de terra: ecce sicut fruct⁹ æstivales, sicut racemi post vindemiã: non est vir qui habeat opera bona, bonos [*tamen*] appetit anima mea. 2 Perierunt misericordes de terra, & verax inter homines non est: omnes parant insidias sanguinis justi effundendi causa, unusquisq; fratré suũ ad exterminiũ *produnt*. 3 Mala operantur manib⁹ suis, & non benefaciunt: princeps postulat, & judex dicit, Fac pro me, *ut* retribuam tibi: & magnus loquitur desideria animæ suæ: væ eis *quia* depravarunt eam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܥܡܝ ܐܬܕܟܪ ܗܫܐ ܡܢܐ ܐܬܪܥܝ ܥܠܝܟ ܒܠܩ ܡܠܟܐ ܕܡܘܐܒ. ܘܡܢܐ ܥܢܝܗܝ 5
ܒܠܥܡ ܒܪ ܒܥܘܪ. ܡܢ ܫܛܝܢ ܘܥܕܡܐ ܠܓܠܓܠ. ܡܛܠ ܕܝܕܥ ܙܕܝܩܘܬܗ ܕܡܪܝܐ.
* ܒܡܢܐ ܐܩܕܡ ܠܡܪܝܐ: ܘܐܣܓܘܕ ܠܐܠܗܐ ܡܪܝܡܐ. ܐܩܕܡܝܘܗܝ ܒܥܠܘܬܐ ܫܡܠܝܬܐ. ܐܘ 6
ܒܥܓܠܐ ܒܢܝ ܫܢܬܐ. * ܠܐ ܡܬܪܥܐ ܡܪܝܐ ܒܐܠܦܐ ܕܕܟܪܐ. ܐܦܠܐ ܒܪܒܘܬܐ ܕܬܘܪܐ ܕܥܓܠܬܐ. 7
ܐܢ ܐܬܠ ܒܘܟܪܝ. ܚܘܠܗܘ ܠܝ. ܘܦܐܪܐ ܕܟܪܣܝ ܚܛܝܬܐ ܐܢܘܢ ܕܢܦܫܝ. * ܚܘܝܬܟ ܒܪܢܫܐ: 8
ܡܢܐ ܕܦܩܚ. ܘܡܢܐ ܒܥܐ ܡܢܟ ܡܪܝܐ. ܐܠܐ ܠܡܥܒܕ ܕܝܢܐ. ܘܠܡܪܚܡ ܛܝܒܘܬܐ. ܘܠܡܗܘܐ ܡܛܝܒ ܠܡܐܙܠ
ܒܬܪ ܐܠܗܟ. * ܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ. ܡܟܪܙ ܝܘܠܦܢܐ ܠܕܚܠܝ ܫܡܗ. ܫܡܥܘ 9
ܫܒܛܐ: ܡܢ ܢܣܗܕܝܗ̇. * ܥܕܟܝܠ ܢܘܪܐ ܒܒܝܬܗ ܕܥܘܠܐ. ܘܐܘܨܪܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܡܟܝܠܬܐ ܙܥܘܪܬܐ 10
ܕܢܟܠܐ. * ܐܝܟܢܐ ܢܙܕܕܩܘܢ ܒܡܣܐܬܐ ܕܥܘܠܐ. ܘܒܟܝܣܐ ܕܡܬܩܠܐ ܕܢܟܠܐ. * ܕܥܬܝܪܝܗ̇ 11 12
ܡܠܝܢ ܢܟܠܐ. ܘܥܡܘܪܝܗ̇ ܡܡܠܠܝܢ ܕܓܠܘܬܐ. ܘܠܫܢܗܘܢ ܢܟܝܠ ܒܦܘܡܗܘܢ. * ܐܦ ܐܢܐ 13
ܐܫܪܐ ܠܡܡܚܝܟ. ܘܐܚܒܠܟ. ܡܛܠ ܚܛܗܝܟ. * ܘܬܐܟܘܠ ܘܠܐ ܬܣܒܥ. ܘܡܥܪܬܐ ܬܗܘܐ 14
ܒܡܥܝܟ. ܘܬܕܪܟ. ܘܠܐ ܬܦܠܛ. ܘܡܢܐ ܕܬܦܠܛ. ܠܚܪܒܐ ܐܫܠܡ. * ܐܢܬ ܬܙܪܘܥ. ܘܠܐ ܬܚܨܘܕ. ܐܢܬ 15
ܬܥܨܪ ܙܝܬܐ. ܘܠܐ ܬܬܡܫܚ ܡܫܚܐ. ܘܬܥܨܪ ܚܡܪܐ. ܘܠܐ ܬܫܬܐ. * ܡܛܠ ܕܢܛܪܬ ܦܘܩܕܢܘܗܝ 16
ܕܥܡܪܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܥܒܕܐ ܕܒܝܬܗ ܕܐܚܒ: ܘܗܠܟܬܘܢ ܒܡܠܟܝܗܘܢ. ܡܛܠܗܢܐ
ܐܬܠܝܗ̇ ܠܬܡܗܐ. ܘܥܡܘܪܝܗ̇ ܠܫܪܘܩܝܬܐ. ܘܚܣܕܗ ܕܥܡܝ ܬܩܒܠܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *

* ܘܝ ܠܝ ܕܗܘܝܬ ܐܝܟ ܠܩܛܐ ܕܩܝܛܐ. ܘܐܝܟ ܥܘܠܠܬܐ ܕܩܛܦܐ. ܠܝܬ ܣܓܘܠܐ ܠܡܐܟܠ. 1
ܘܠܒܟܘܪܐ ܪܓܬ ܢܦܫܝ. * ܐܒܕ ܚܣܝܐ ܡܢ ܐܪܥܐ. ܘܠܝܬ ܕܬܪܝܨ ܒܒܢܝܢܫܐ. ܟܠܗܘܢ 2
ܒܕܡܐ ܟܡܢܝܢ. ܓܒܪ ܠܐܚܘܗܝ. ܨܝܕܝܢ ܠܚܪܒܐ. * ܐܝܕܝܗܘܢ ܡܛܝܒܢ ܠܒܝܫܬܐ. ܘܠܐ 3
ܡܛܝܒܝܢ. ܫܠܝܛܐ ܫܐܠ ܗܒ. ܘܕܝܢܐ ܐܡܪ ܗܒ ܫܘܚܕܐ. ܘܪܒܐ ܡܡܠܠ ܨܒܝܢܐ ܕܢܦܫܗ.

5 Populemi, recordare jam quid contra te cogitârit Balac Rex Moabi, & quid reſponderit ei Belaam filius Beoris, à Setim ad Galgalem uſque; eò quòd agnoverit juſtitiam Domini. 6 Quânam re antevertam ad Dominum, & placebo Deo excelſo? num antevertam ad eum cum holocauſtis perfectis, an vitulis anniculis? 7 Non delectatur Dominus millibus arietum, neque myriadibus armenti juvencarum. Si offeram primogenitũ meum, crimini mihi eſt; ſi fructus ventris mei, peccato ſunt animæ meæ. 8 Indicabo tibi homo quid proſit, quid requirat à te Dominus: Ut facias judicium, beneficentiam diligas, & ſis paratus ad ſequendum Deum tuum. 9 Vox Domini ſuper urbem doctrinam prædicat reverentibus nomen ejus. Audi O Tribus eum qui conteſtatur, 10 Adhuc ignem eſſe in domo ſcelerati, horrea iniquitatis, & menſuram parvam doloſam. 11 Quonam pacto juſtificarentur cum ſtatera iniqua, & cum marſupio ponderum fraudulentorum? 12 Quia divites ejus pleni ſunt dolo, & habitatores ejus loquuntur mendacium, & lingua eorum doloſa eſt in ore ipſorum; 13 Ego quoque incipiam te percutere; & corrumpam te propter peccata tua. 14 Comedes, & non ſaturaberis; & dyſenteria erit in inteſtinis tuis: aſſequêris *bona*, ſed non ſervabis; & quicquid ſervaveris, gladio tradam. 15 Tu ſeres, at non metes: tu olivas exprimes, at non ungêris oleo: vinũ exprimes, at nõ bibes. 16 Quia obſervâſti præcepta Amri, et omnia facinora domûs Ahabi, & ambulâſtis in conſiliis eorum: idcircò exponã illam ſtupori, & cives ejus ſibilo, & opprobrium populi mei reportabitis.

CAP. VII.

1 VÆ mihi, quia facta ſum tanquam ſpicilegium æſtatis, & quaſi racematio vindemiæ: nullus extat botrus ad comedendum, & *fructum* præcocem expetit anima mea. 2 Periit integer de terra, nec eſt qui ſit rectus inter homines: omnes ſtruunt inſidias, & quiſque fratrem ſuum venatur ad interitum. 3 Manus eorum promptæ ſunt ad malum, nec benefaciunt: præfectus poſtulat *dicens*; Affer: judex dicit, Da munus: & princeps loquitur voluntatem animi ſui:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* يا شعبي اذكر ما روي عليك به بالاق ملك مواب * وماذا اجابه بلعام بن باعور * من الجبال 5
الي الجلجال * كي يعرف عدل الله * الاصحاح السابع عشر * وهو الثالث من النبوة *
6 * بماذا ادرك الرب * واعتصد بالهي العلي * ادركه بمحرقات * بعجول حولية * ايقبل الرب 7
بالوف كباش * او بربوات تيوس سمان * عملت بكوري * نفاق * وعن بطني من اجل الخطية
لنفسي * قد اخبرتك ايها الانسان ما هو الحسن * او ما يطلبه الرب منك * الا ان تصنع حكما * 8
وتحب الرحمة * وتكون مستعدا ان تسير مع الرب الهك * صوت الرب في المدينة يدعو ويخلص 9
خايفي اسمه * اسمع ايها السبط * فانه يزين كثيرا ليس نار * وبيت الاثمة كنز كنوز الاثم * 10
ومع الكبرياء مظالم * فهل يتبرر الاثيم بالميزان وصنجات الغش بالمقدار * التي منها اكملوا 11 12
غنا نفاقهم * وسكانها يخطبون الكذب * ولسانهم ارتفع في فمهم * وانا ابتدي ان اضربك * 13
وابيدك بخطاياك * تاكل ولا تشبع * ويظلم فيك وتطرد * وانت لا تخلص * والذين يخلصون 14
للسيف يسلمون * انت تزرع ولا تحصد * انت تعصر الزيتونة ولا تدهن بالزيت * ولا تشربون 15
خمرا * ويبيد نظر شعبي * وحفظت حقوق عمري * وجميع اعمال بيت احاب * وسلكتم في رواياتهم * 16
كي اسلمك للفناء * وسكان هذا للصفير * وياخذون تعيير الشعوب *

* الفصل السابع *

* الويل لي لاني صرت مثل لقاط قصبة في الحصاد * وكلقاط بعارق في القطاف * ليس عنقود موجودا 1
للاكل اول ما يخرج * الويل لنفسي لان الورع هلك من الارض * وليس مقوم في البشر موجودا * 2
جميعهم على الدماء يقصون * كل واحد يضطهد قريبه اضطهادا * يعدون ايديهم للشر * الرئيس 3
يطلب * والحاكم يتكلم بكلمات سلامة بهوي نفسه هو *

5 *O mi popule, recordare quod conſilium habuerit contra te Balac rex Moabi, & quid reſponderit ei Balaam filius Beoris, à montibus ad Galgalem uſque; ut innoteſceret juſtitia Dei.*

Textus decimus ſeptimus, hujus autem Prophetiæ tertius.

6 *Quânam re aſſequar Dominum, & opem impetrabo ab altiſſimo Deo meo? an aſſequar eum holocauſtis, vitulis anniculis?* 7 *An ſuſcipiet Dominus millia arietum, aut myriades hircorum pinguium? Facere (i.* ſacrificare*) primogenitos meos & fructum ventris mei pro peccato animæ meæ, impium eſſet.* 8 *Jam indicavi tibi O homo, quid rectum ſit: ecquid poſtulat à te Dominus, niſi ut facias judicium, & diligas miſericordiam, & paratus ſis ambulare cum Domino Deo tuo?* 9 *Vox Domini in urbe clamat, & eruit timentes nomen ſuum. Audi O tribus: nam ipſe multùm ornat, non ignis.* 10 *At domus iniquorum condit theſauros iniquitatis, & cum ſuperbia impietates.* 11 *Num juſtificabitur iniquus per ſtateram & lances in pondere doloſas,* 12 *Ex quibus perfectas reddidêre divitias impietatis ſuæ? & habitatores ejus loquuntur mendacium, & lingua eorum extollitur in ore ipſorum.* 13 *Ego etiam incipiam percutere te, teque perdam in peccatis tuis.* 14 *Comedes, & non ſaturaberis; tenebræ tibi erunt, & expellêris, & tu non evades; & qui evaſerint, gladio tradentur:* 15 *Tu ſeres, & non metes: tu exprimes olivam, & non ungêris oleo; neq; bibetis vinum: & peribit judicium populi mei.* 16 *Obſervâſti decreta Amri, & omnes actiones domûs Achabi; & ambulâſtis in cogitationibus eorum: ut traderem te excidio, & hujus incolas ſibilo; & reportarent opprobrium populorum.*

CAP. VII.

1 *VÆ mihi, quia factus ſum ut collector arundinis in meſſe, et ut collector racemationis in vindemia: non extat botrus ad comedendum primo exortu.* 2 *Væ animæ meæ, quia pius periit de terra, nemoq; rectus inter mortales invenitur: omnes ad cædem condemnant, unuſquiſq; proximum ſuum acerrimè perſequitur.* 3 *Manus ſuas ad malum parant: princeps exigit: judex loquitur verba pacifica, ad libitum mentis ſuæ eſt.*

מִיכָה : ז

,tuorũ ſpeculatorũ Dies .implicatione præ rectus ,paliurus ut eorũ Optimus
4 טוֹבָם כְּחֵדֶק יָשָׁר מִמְּסוּכָה יוֹם מְצַפֶּיךָ
,ſodali in credatis Ne .eorũ perplexitas erit nunc ,venit tua viſitatio
5 פְּקֻדָּתְךָ בָאָה עַתָּה תִהְיֶה מְבוּכָתָם׃ אַל־תַּאֲמִינוּ בְרֵעַ
.tui oris oſtia cuſtodi ,tuo ſinui incumbente ab : duce in fidatis ne
אַל־תִּבְטְחוּ בְּאַלּוּף מִשֹּׁכֶבֶת חֵיקֶךָ שְׁמֹר פִּתְחֵי־פִיךָ׃
,ſuam matrem in ſurgens filia ,patrem vilipendens filius Quia
6 כִּי־בֵן מְנַבֵּל אָב בַּת קָמָה בְאִמָּהּ
ego Et .ejus domus viri ,viri inimici : ſuam ſocrum in nurus
7 כַּלָּה בַּחֲמֹתָהּ אֹיְבֵי אִישׁ אַנְשֵׁי בֵיתוֹ׃ וַאֲנִי
me audiet : meæ ſalutis Deum expectabo ,ſpeculabor Domino in
בַּיהוָה אֲצַפֶּה אוֹחִילָה לֵאלֹהֵי יִשְׁעִי יִשְׁמָעֵנִי
,ceciderim quòd me propter mea inimica læteris Ne .meus Deus
8 אֱלֹהָי׃ אַל־תִּשְׂמְחִי אֹיַבְתִּי לִי כִּי נָפַלְתִּי
.mihi lux DOMINUS ,tenebroſitate in ſedero cùm : ſurrexi
קַמְתִּי כִּי־אֵשֵׁב בַּחֹשֶׁךְ יְהוָה אוֹר לִי׃
litiget donec ,ei peccavi quoniam ,feram DOMINI Iram
9 זַעַף יְהוָה אֶשָּׂא כִּי חָטָאתִי לוֹ עַד אֲשֶׁר יָרִיב
videbo ,lucem in me educet : meum judicium faciat & ,meam litem
רִיבִי וְעָשָׂה מִשְׁפָּטִי יוֹצִיאֵנִי לָאוֹר אֶרְאֶה
, pudor eam operiet & ,mea inimica aſpiciet Et .ejus juſtitiam in
10 בְּצִדְקָתוֹ׃ וְתֵרֶא אֹיַבְתִּי וּתְכַסֶּהָ בוּשָׁה
mei Oculi ?tuus Deus DOMINUS ipſe Ubi : me ad dicens
הָאֹמְרָה אֵלַי אַיּוֹ יְהוָה אֱלֹהָיִךְ עֵינַי
.platearum lutum ut conculcationem in erit nunc ,eam in videbunt
תִּרְאֶינָּה בָּהּ עַתָּה תִּהְיֶה לְמִרְמָס כְּטִיט חוּצוֹת׃
.ſtatutum elongabitur illa die ,tuas macerias ædificandi Die
11 יוֹם לִבְנוֹת גְּדֵרָיִךְ יוֹם הַהוּא יִרְחַק־חֹק׃
civitates & ,Aſſur ipſo de veniet te ad uſque & illa Die
12 יוֹם הוּא וְעָדֶיךָ יָבוֹא לְמִנִּי אַשּׁוּר וְעָרֵי
,mari à mare & ,flumen ad uſque & munitione ipſa ab & ,munitionis
מָצוֹר וּלְמִנִּי מָצוֹר וְעַד־נָהָר וְיָם מִיָּם
ſuper deſolationem in terra erit Et .montem ad monte &
13 וְהַר הָהָר׃ וְהָיְתָה הָאָרֶץ לִשְׁמָמָה עַל־
Paſce .eorum ſtudiorum fructum propter ,ſuis habitatoribus
14 יֹשְׁבֶיהָ מִפְּרִי מַעַלְלֵיהֶם׃ רְעֵה
ſolitariè habitans ,tuæ hæreditatis pecus ,tua virga in tuum populum
עַמְּךָ בְשִׁבְטֶךָ צֹאן נַחֲלָתֶךָ שֹׁכְנִי לְבָדָד
dies juxta Ghilhad & Baſan paſcent : Carmel medio in ſylvam
יַעַר בְּתוֹךְ כַּרְמֶל יִרְעוּ בָשָׁן וְגִלְעָד כִּימֵי
ei oſtendam : Ægypti terra è te egrediendi dies Juxta .ſeculi
15 עוֹלָם׃ כִּימֵי צֵאתְךָ מֵאֶרֶץ מִצְרָיִם אַרְאֶנּוּ
.ſua fortitudine omni ab pudebunt & ,gentes Videbunt .mirabilia
16 נִפְלָאוֹת׃ יִרְאוּ גוֹיִם וְיֵבֹשׁוּ מִכֹּל גְּבוּרָתָם
Lingent .obſurdeſcent eorum aures ,os ſuper manum Ponent
17 יָשִׂימוּ יָד עַל־פֶּה אָזְנֵיהֶם תֶּחֱרַשְׁנָה׃ יְלַחֲכוּ
.ſuis clauſuris de ſe movebunt terræ reptilia ſicut,ſerpens ſicut pulverem
עָפָר כַּנָּחָשׁ כְּזֹחֲלֵי אֶרֶץ יִרְגְּזוּ מִמִּסְגְּרֹתֵיהֶם
.te à timebunt & ,formidabunt noſtrum Deum DOMINUM Ad
אֶל־יְהוָה אֱלֹהֵינוּ יִפְחָדוּ וְיִרְאוּ מִמֶּךָּ׃
prævaricationem ſuper tranſiens &,iniquitatem tollens ,tu ſicut Deus Quis
18 מִי־אֵל כָּמוֹךָ נֹשֵׂא עָוֹן וְעֹבֵר עַל־פֶּשַׁע
,ſuum naſum perpetuum in tenuit non ?ſuæ hæreditatis reſidui
לִשְׁאֵרִית נַחֲלָתוֹ לֹא־הֶחֱזִיק לָעַד אַפּוֹ
.ipſe miſericordiam voluit quoniam
כִּי־חָפֵץ חֶסֶד הוּא׃

Verſio VULG. LAT.

4 Qui optimus in eis eſt, quaſi paliurus: & qui rectus, quaſi ſpina de ſepe. Dies ſpeculationis tuæ, & viſitatio tua venit: nunc erit 5 vaſtitas eorum. Nolite credere amico: & nolite confidere in duce: ab ea, quæ dormit in ſinu tuo, 6 cuſtodi clauſtra oris tui. Quia filius contumeliam facit patri, & filia conſurgit adverſùs matrem ſuam, nurus adverſùs ſocrum ſuã: & inimici hominis domeſtici ejus. 7 Ego autem ad Dominum aſpiciam, expectabo Deum Salvatorem meum: audiet me Deus meus. 8 Ne læteris, inimica mea, ſuper me, quia cecidi: conſurgam, cùm ſedero in tenebris, Dominus lux 9 mea eſt. Iram Domini portabo, quoniam peccavi ei, donec cauſam meam judicet, & faciat judicium meum: educet me in 10 lucem, videbo juſtitiam ejus. Et aſpiciet inimica mea, & operietur confuſione, quæ dicit ad me; Ubi eſt Dominus Deus tuus? Oculi mei videbunt in eam: nunc erit in conculcationem ut lutum 11 platearum. Dies, ut ædificentur maceriæ tuæ: in die illa longè fiet 12 lex. In die illa & uſque ad te veniet de Aſſur, & uſque ad civitates munitas; & à civitatibus munitis uſque ad flumen, & ad mare de mari, & ad montem de 13 monte. Et terra erit in deſolationem propter habitatores ſuos, & propter fructum cogitationum 14 eorum. Paſce populum tuum in virga tua, gregem hæreditatis tuæ, habitantes ſolos in ſaltu, in medio Carmeli: paſcentur Baſan & Galaad juxta dies antiquos. 15 Secundùm dies egreſſionis tuæ de terra Ægypti oſtendam ei mi-16 rabilia. Videbunt gentes, & confundentur ſuper omni fortitudine ſua: ponent manum ſuper os, au-17 res eorum ſurdæ erunt. Lingent pulverem ſicut ſerpentes, velut reptilia terræ perturbabuntur in ædibus ſuis: Dominum Deum noſtrum formidabunt, & time-18 bunt te. Quis Deus ſimilis tuì, qui aufers iniquitatem, & tranſis peccatum reliquiarum hæreditatis tuæ? non immittet ultrà furorem ſuum, quoniam volens miſericordiam eſt.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

4 Ὡς σὴς ἐκτρώγων, καὶ βαδίζων ἐπὶ κανόνος ἐν ἡμέρᾳ σκοπιᾶς. οὐαὶ οὐαὶ, αἱ ἐκδικήσεις σου ἥκασι, νῦν ἔσονται 5 κλαυθμοὶ αὐτῶν. Μὴ καταπιστεύετε ἐν φίλοις, καὶ μὴ ἐλπίζετε ἐπὶ ἡγουμένοις· ἀπὸ τῆς συγκοίτου σου φύλαξαι, τοῦ ἀναθέσθαι 6 (γ) τι αὐτῇ. Διότι υἱὸς ἀτιμάζει πατέρα, θυγάτηρ ἐπαναστήσεται ἐπὶ τὴν μητέρα αὐτῆς, (δ) νύμφη ἐπὶ τὴν πενθερὰν αὐτῆς, ἐχθροὶ πάντες (ε) ἀνδρὸς οἱ ἐν 7 τῷ οἴκῳ αὐτοῦ. Ἐγὼ δὲ ἐπὶ τὸν κύριον ἐπιβλέψομαι, ὑπομενῶ ἐπὶ τῷ θεῷ τῷ σωτῆρί μου, εἰσακούσεταί μου ὁ θεός μου. 8 Μὴ ἐπίχαιρέ μοι ἡ ἐχθρά μου, ὅτι πέπτωκα, καὶ ἀναστήσομαι· διότι ἐὰν καθίσω 9 ἐν τῷ σκότει, (ζ) κύριος φωτιεῖ μοι. Ὀργὴν κυρίου ὑποίσω, ὅτι ἥμαρτον αὐτῷ, (η) ἕως τοῦ δικαιῶσαι αὐτὸν τὴν δίκην μου· καὶ (θ) ποιήσει τὸ κρίμα μου, καὶ ἐξάξει με εἰς τὸ φῶς. ὄψομαι τὴν δικαιοσύνην 10 αὐτοῦ, Καὶ ὄψεται ἡ ἐχθρά μου, καὶ περιβαλεῖται αἰσχύνην, ἡ λέγουσα (ι), Ποῦ κύριος ὁ θεός σου; οἱ ὀφθαλμοί μου ἐπόψονται αὐτήν, νῦν ἔσται εἰς καταπάτημα 11 ὡς πηλὸς ἐν ταῖς ὁδοῖς. (κ) Ἡμέρα ἀλοιφῆς πλίνθου, ἐξάλειψίς σου ἡ ἡμέρα ἐκείνη, καὶ (λ) ἀποτρίψεται νόμιμά σου 12 ἡ ἡμέρα ἐκείνη. Καὶ αἱ πόλεις σου ἥξουσιν εἰς ὁμαλισμὸν, καὶ εἰς διαμερισμὸν Ἀσσυρίων, καὶ αἱ πόλεις σου αἱ ὀχυραὶ εἰς διαμερισμὸν ἀπὸ Τύρου ἕως τοῦ ποταμοῦ (μ), καὶ ἀπὸ θαλάσσης ἕως θαλάσσης, καὶ ἀπὸ 13 (ν) ὄρους ἕως τοῦ ὄρους. Καὶ ἔσται ἡ γῆ εἰς ἀφανισμὸν (ξ) σὺν τοῖς κατοικοῦσιν αὐτὴν, ἀπὸ καρπῶν ἐπιτηδευμάτων αὐτῶν. 14 Ποίμαινε λαόν σου ἐν ῥάβδῳ (ο) σου, πρόβατα κληρονομίας σου, κατασκηνοῦντας καθ' ἑαυτοὺς δρυμὸν ἐν μέσῳ τοῦ Καρμήλου, νεμήσονται τὴν Βασανῖτιν καὶ τὴν Γαλααδῖτιν, καθὼς 15 αἱ ἡμέραι τοῦ αἰῶνος. Καὶ κατὰ τὰς ἡμέρας ἐξοδίας σου ἐξ Αἰγύπτου, ὄψεσθε θαυμαστά. 16 Ὄψονται ἔθνη καὶ καταισχυνθήσονται (π) καὶ ἐκ πάσης τῆς ἰσχύος αὐτῶν, ἐπιθήσουσι (ρ) χεῖρας ἐπὶ τὸ στόμα αὐτῶν, τὰ ὦτα 17 αὐτῶν ἀποκωφωθήσεται, Λείξουσι χοῦν ὡς ὄφεις σύροντες γῆν, συγχυθήσονται ἐν συγκλεισμῷ αὐτῶν· ἐπὶ τῷ κυρίῳ θεῷ ἡμῶν ἐκστήσονται, καὶ φοβηθήσονται ἀπὸ 18 σοῦ. Τίς θεὸς ὥσπερ σὺ, ἐξαίρων (σ) ἀνομίας, καὶ ὑπερβαίνων ἀσεβείας τοῖς καταλοίποις τῆς κληρονομίας αὐτοῦ; καὶ οὐ συνέσχεν εἰς μαρτύριον ὀργὴν αὐτοῦ, ὅτι θελητὴς ἐλέους ἐστίν.

4 Quaſi tinea comedens, & ambulans ſuper regulam, in die (d) ſpeculationis. Væ (e) væ ultiones tuæ venerunt: nunc erunt fletus eorum. 5 Nolite credere in amicis, neque ſperetis in ducibus. Ab ea, quæ cubat tecum, cave (f) concedere quicquam ei. 6 Quia filius contumeliam facit patri: filia inſurget adverſùs matrem ſuam: nurus contra ſocrum ſuam: inimici omnes viri, domeſtici ejus. 7 Ego autem in (g) Dominum intuebor: expectabo Deum Salvatorem meum: exaudiet me Deus meus. 8 Ne inſultes mihi, inimica mea: quia cecidi, & reſurgam: quia ſi ſedero in tenebris, Dominus illuminavit me. 9 Iram Domini ſuſtinebo, quia peccavi ei: donec ipſe juſtificet cauſam meam. Et faciet judicium meum, & educet me in lucem: videbo juſtitiam ejus, 10 Et videbit inimica mea, & operietur confuſione, quæ dicit; ubi eſt Dominus Deus tuus? Oculi mei videbunt eam: nunc erit in conculcationem, ſicut lutum in viis. 11 Dies lituræ laterum, deletio tua, (h) dies illa, & (i) atteret legitima tua dies illa: 12 Et urbes tuæ venient in (k) complanationem, & in diviſionem Aſſyriorum: & civitates tuæ munitæ in diviſionem à (l) Tyro uſque ad flumen, & à mari uſque ad mare: et de monte uſque ad (m) montem: 13 Et erit terra in diſſipationem cum habitatoribus ſuis propter fructus adinventionum eorum. 14 Paſce populum tuum in virga tua, oves hæreditatis tuæ, habitantes ſeorſùm in ſaltu, in medio Carmeli: paſcentur Baſanitin, & Galaaditin, ſicut dies ſeculi, 15 Et juxta dies egreſſionis tuæ de Ægypto. (n) Videte mirabilia: 16 Videbunt gentes, & confundentur (o) & ex omni fortitudine ſua: imponent manus ſuper os ſuum: aures eorum ſurdæ erunt: 17 Lingent humum, ſicut ſerpentes, quæ trahunt terram: turbabuntur in concluſione ſua: ſuper Domino Deo noſtro formidabunt: & timebunt à te. 18 Quis Deus, ſicut tu, auferens iniquitates, & tranſcendens impietates his, qui reliqui ſunt de hæreditate tua? Et non tenuit (p) in teſtimonium iram ſuam: quia cupidus miſericordiæ eſt.

MS. A. (γ) αὐτῇ τι. (δ) καὶ νύμφη (ε) οἱ ἄνδρες οἱ (ζ) ὁ κύριος (η) ἕως οὗ (θ) ὑποίσει (ι) πρός με, Ποῦ (κ) Ἡμέρας (λ) ἀπώσεται νόμιμα ἡ ἡμέρα (μ) Συρίας, (ν) τοῦ ὄρους ἕως τοῦ ὄρους, ἡμέρα ὕδατος καὶ θορύβου. Καὶ (ξ) μετὰ τῶν κατοικούντων αὐτῶν, ἐκ καρπῶν (ο) φυλήν σου, πρόβατα (π) ἐκ πάσης (ρ) χεῖρα ἐπὶ στόμα αὐτῶν, καὶ τὰ ὦτα αὐτῶν ἀποκωφωθήσονται, (σ) ἀδικίας,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

4 טבא דבהון קשי למפק מן ידיה כד מן חדקא ודקשיט בהון מסיוגרת סיג ביש יום
5 סבורך לטב עדן סעורת בישתך מטת כען יהי ערבו להון : לא תהמנון ברחים ולא
6 תתרחצון בקריב מאתת קימך טר מלי פומך : ארי ברא מנבל אבא ברתא מנציא עם
7 אמה כלתא מקילא בחמתה סנאוהי דגברא אנשי ביתיה : ואנא במימרא דיי אבוע
8 ארוץ לאלהא עביד פורקני יקבל צלותי אלהי : לא תחדון בעיל דבבותי לי דנפלית
9 אקום ארי יתיבת כדבקבלא יי ינהר עלי : אמרת ירושלם לוט מן קדם יי קבלית ארי
10 חבית קדמוהי עד דידין דיני ויתפרע עולבני יפקנני לנהור אחזי בזכותיה : ותחזי
בעיל דבבותי ותחפינה בהתא דהות אמרה לי אן דאתפרקתא במימרא דיי אלהך
11 עיני יחזין במפלתהון כען תהי לדיש כטין שוקין : בעדנא ההיא יתבנין כנשתא
12 דישראל בעדנא ההיא יתבטלן גזירת עממיא : בעדנא ההיא יתכנשון גלותא דמן
אתור וקרוי תוקפא ודמן חורמיני רבתא וקרוי צירא ועד פרת וימא מערבאה וטורי
13 14 טורא : ותהי ארעא לצדו על יתבהא מפרי עובדיהון : פרנס עמך במימרך עמא
דאחסנתך בעלמא דהוא עתיד לאתחדתא ישרון בלחודיהון דהוו צדין בחורשא
15 יתיתבון בכרמלא ויתפרנסון בארעא מתנן וגלעד כיומי עלמין : כיומי מפקהון מארעא
16 דמצרים אחזנון פרישן : יחזון עממיא ויבהתון מכל גבורתהון ישוון ידיהון על
17 פומהון ואודניהון יתחרשן : ישתטחון על אפיהון על ארעא כחויא כזחלי עפרא יזועון
18 מברניתיהון מן קדם יי אלהנא יתברון וידחלון מן קדמך : לית בר מנך את הוא
אלהא שבק לעוין ומעבר על חובין לשארא דאחסנתיה לא מוריד לעלמין רוגזיה
ארי רעי לאיטבא הוא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

4 Bonus qui inter eos eſt, durus eſt, ita ut exeat de manu ejus ſicut de ſpina, & qui verax eſt in eis de ſepe ſpinoſa: dies mala, in qua bonũ expectabas, tempus viſitationis malitiæ tuæ pervenit, nunc erit perplexitas eorũ. 5 Ne credatis vos amico, nec confidatis in propinquo, ab uxore fœderis tui obſerva verba oris tui. 6 Quia filius vilipendit patrem, filia litigat cum matre ſua, nurus opprobriis afficit ſocrũ ſuã, & inimici cujuſvis domeſtici ej⁹ ſunt. 7 Ego autem in verbo Dñi exultabo, lætabor in Deo qui adimplet ſalutem meam: ſuſcipiet orationẽ meã Deus meus. 8 Ne læteris inimica mea ſup me, ꝙ ceciderim, conſurgam: cùm ſedero quaſi in tenebris, Dñs illuminabit me. 9 Dixit Jeruſalẽ: *Maledictionem* ſuſcepi à facie Dñi, ſiquidẽ peccavi coram eo, donec judicet judiciũ meum, & injuriã meam ulciſcatur: tunc educet me in lucẽ & conſpiciam juſtitiam ejus. 10 Videbit autem inimica mea & operiet eam confuſio, quæ mihi dicebat: Ubi es quæ redempta es verbo Dñi Dei tui? oculi mei ruinã *eorum* conſpicient, nunc erit in conculcationẽ ſicut lutũ platearũ. 11 Tunc temporis *ædificabuntur* cœt⁹ Iſrael, in tempore illo irrita fient decreta gentiũ. 12 Illo tempore congregabuntur tranſmigrationes ex Aſſur & civitatibus fortitudinis, ab Armenia etiam grandi, & civitatibus munitis, & uſq; ad Euphratem & mare Occidentale & montana montis. 13 Eritq; terra in deſolationẽ propter habitatores ejus ob fructus operum ſuorum. 14 Paſce populum tuum verbo tuo, populum hæreditatis tuæ, in ſeculo quod innovandum eſt, habitabunt ſoli qui erant deſerti *in* ſylva, & habitabunt in Carmelo, & paſcentur in terra Baſan & Galaad, juxta dies priſtinos. 15 Juxta diem quo egreſſi ſunt de terra Ægypti, oſtendã eis res mirandas. 16 Videbunt populi & pudefient ab omni fortitudine ſua: ponent manus ſuas ſuper os ſuum, aures eorum obſurdeſcent. 17 Diſtendentur in faciẽ ſuam in terra ſicut ſerpens, velut qui repunt in terra, commovebuntur de ædib⁹ ſuis, à conſpectu Dñi Dei noſtri conterentur, ac timebunt à facie tua. 18 Nullus eſt præter te, tu es Deus ignoſcens iniquitatibus, et miſſa faciens ſcelera reliquiarum hæreditatis ejus: non retinet in æternum furorem ſuum, placet enim ei beneficia conferre.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܣܠܝܘ ܛܒܬܗܘܢ܂ ܐܝܟ ܐܣܠܝܘܬܐ ܕܐܟܠܐ ܣܣܐ܂ ܝܘܡܐ ܕܕܘܩܝܟ ܘܦܘܪܥܢܟ ܐܬܐ܂ 4
ܗܫܐ ܢܗܘܐ ܒܗ ܒܟܝܬܗܘܢ܂ * ܠܐ ܬܗܝܡܢܘܢ ܒܪܚܡܝܟܘܢ܂ ܘܠܐ ܬܬܟܠܘܢ ܥܠ ܡܕܒܪܢܝܟܘܢ܂ 5
ܘܡܢ ܕܫܟܒܐ ܒܥܘܒܟ ܛܪ ܬܪܥܝ ܦܘܡܟ܂ * ܡܛܠ ܕܒܪܐ ܡܨܥܪ ܠܐܒܘܗܝ܂ ܘܒܪܬܐ ܩܝܡܐ ܠܘܩܒܠ 6
ܐܡܗ܂ ܘܟܠܬܐ ܠܘܩܒܠ ܚܡܬܗ܂ ܘܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܕܓܒܪܐ ܒܢܝ ܒܝܬܗ܂ * ܐܢܐ ܕܝܢ 7
ܠܡܪܝܐ ܐܚܘܪ܂ ܘܐܣܟܐ ܠܐܠܗܐ ܦܪܘܩܝ܂ ܘܢܫܡܥܢܝ ܐܠܗܝ܂ * ܠܐ ܬܚܕܝܢ ܒܝ 8
ܒܥܠܕܒܒܬܝ܂ ܕܢܦܠܬ܂ ܗܐ ܩܡܬ ܐܢܐ܂ ܘܐܢ ܝܬܒܬ ܒܚܫܘܟܐ܂ ܡܪܝܐ ܢܢܗܪ ܠܝ܂
* ܡܚܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܣܝܒܪ܂ ܡܛܠ ܕܚܛܝܬ ܠܗ܂ ܥܕܡܐ ܕܢܕܘܢ ܕܝܢܝ ܘܢܥܒܕ ܬܒܥܬܝ܂ 9
ܘܢܦܩܢܝ ܠܢܘܗܪܐ܂ ܘܐܚܙܐ ܙܕܝܩܘܬܗ܂ * ܘܬܚܙܐ ܒܥܠܕܒܒܬܝ܂ ܘܬܟܣܝܗ ܒܗܬܬܐ܂ 10
ܕܐܡܪܐ ܗܘܬ ܠܝ܂ ܐܝܟܘ ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܝ܂ ܥܝܢܝ ܢܚܙܝܢ ܒܗ܂ ܗܫܐ ܬܗܘܐ ܠܕܘܫܐ܂
ܐܝܟ ܛܝܢܐ ܕܫܘܩܐ܂ * ܝܘܡܐ ܗܘ ܠܡܒܢܐ ܣܝܓܝܟܝ܂ ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܬܬܪܝܡܝܢ܂ 11
* ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܢܐܬܘܢ ܠܟܝ ܡܢ ܐܬܘܪ܂ ܘܡܢ ܡܕܝܢܬܐ ܥܫܝܢܬܐ܂ ܘܡܢ ܨܘܪ ܘܥܕܡܐ 12
ܠܢܗܪܐ܂ ܘܡܢ ܝܡܐ ܘܥܕܡܐ ܠܝܡܐ܂ ܘܥܕܡܐ ܠܛܘܪܐ ܕܚܘܪ܂ * ܘܬܗܘܐ ܐܪܥܐ ܠܚܒܠܐ 13
ܥܡ ܥܡܘܪܝܗ܂ ܡܛܠ ܦܐܪܐ ܕܥܒܕܝܗܘܢ܂ * ܪܥܝ ܥܡܟ ܒܫܒܛܟ܂ ܘܥܢܐ ܕܝܪܬܘܬܟ 14
ܢܫܪܘܢ ܒܠܚܘܕܝܗܘܢ܂ ܐܝܟ ܥܢܐ ܒܓܘ ܟܪܡܠܐ܂ ܢܪܥܘܢ ܒܡܬܢܝܢ ܘܒܓܠܥܕ܂ ܐܝܟ
ܝܘܡܬܐ ܕܡܢ ܥܠܡ܂ * ܘܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܢܦܩܘ ܒܗ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ܂ ܐܚܘܐ ܐܢܘܢ 15
ܬܕܡܪܬܐ܂ * ܘܢܚܙܘܢ ܥܡܡܐ܂ ܘܢܒܗܬܘܢ ܡܢ ܟܠܗ ܓܢܒܪܘܬܗܘܢ܂ ܢܣܝܡܘܢ 16
ܐܝܕܝܗܘܢ ܥܠ ܦܘܡܗܘܢ܂ ܘܐܕܢܝܗܘܢ ܢܬܚܪܫܢ܂ * ܘܢܠܚܟܘܢ ܥܦܪܐ܂ ܐܝܟ ܚܘܝܐ܂ 17
ܘܐܝܟ ܪܚܫܐ ܕܐܪܥܐ܂ ܢܙܘܥܘܢ ܡܢ ܚܘܪܝܗܘܢ܂ ܘܡܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܢ ܢܕܚܠܘܢ܂
ܘܢܙܘܥܘܢ܂ * ܡܢܘ ܐܠܗܐ ܐܟܘܬܟ܂ ܕܫܒܩ ܥܘܠܐ ܘܡܥܒܪ ܚܛܗܐ ܕܫܪܟܐ ܕܝܪܬܘܬܗ܂ 18
ܘܠܐ ܐܚܝܕ ܐܢܬ ܠܥܠܡ ܪܘܓܙܟ܂ ܡܛܠ ܕܨܒܐ ܐܢܬ ܒܛܝܒܘܬܐ܂

Denique abominati ſunt probitatẽ ſuam tanquam pannum tineâ corroſum. Dies ſpeculatorum tuorum *vaticinio prænuntiatus*, & ſalutis tuæ, jam venit : mox erunt funera eorum. 4
Ne creditote amicis veſtris, & propinquis veſtris ne fiditote; & ab uxore tua caveto verba oris tui. 5
Nam filius convitiatur patri ſuo, filia inſurgit contra matrem ſuam, & nurus contra ſocrum ſuam : demum inimici hominis, ſunt domeſtici ejus. 6
Ego quidem Dominum ſpectabo, & præſtolabor Deum Servatorem meum, & exaudiet me Deus meus. 7
Ne læteris de me inimica mea : ſi cecidi, adhuc reſurgam : ſi in tenebris ſedeo, Dominus mihi lucem præbebit. 8
Plagam Domini tolerabo, quia peccavi in eum : donec cauſam meam agat, & ſumat ultionem meam, producatque me in lucem, & videam juſtitiam ejus. 9
Videbit inimica mea, & obruet eam pudor: dicebat enim mihi, Ubi eſt Deus tuus? oculi mihi *læti* videbunt eam, jam exponetur conculcationi tanquam lutum platearum. 10
Dies eſt reficiendi macerias tuas: dies eſt quo extollaris : 11
Dies eſt quo tempus tuum veniat *redeundi* ab Aſſyria & ab urbibus munitis, à Tyro ad flumen uſque, & à mari uſque ad mare, & uſque ad montem Hor : 12
Cùm verſa fuerit terra illa in corruptionem habitatoribus ſuis, propter fructus actionum ſuarum. 13
Paſce populum tuum & oves hæreditatis tuæ virgâ tuâ: habitent ſoli tanquam oves in medio Charmeli : paſcantur in Mathnin & in Gelaade, ut priſcis diebus, 14
Et ut eâ die quâ egreſſi ſunt è terra Ægypti. Oſtendam illis miracula ; 15
Quæ cùm aſpexerint gentes, obſtupeſcent cum tota fortitudine ſua, imponent manus ſuas ori ſuo, & aures earum obſurdeſcent : 16
Pulverem ceu ſerpens lingent, & more *inſectorum* ſub terra latentium ſuccenſebunt è cuniculis ſuis, & à Domino Deo noſtro contremiſcent ac formidabunt. 17
Non eſt O Deus tibi ſimilis, qui condonas iniquitatem & transfers peccatum reliquiarum hæreditatis tuæ, neque retines iram in perpetuum; quia benignitate delectaris. 18

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فاردل خيراتهم مثل سوس ياكل * ويمضي بقانون في يوم الظلمة * ويل ويل * انتقامك قد 4
حضر * الان يكون بكاوهم * لا تومنوا بالاصدقاء * ولا تتكلوا على المقدمين * تحفظ من 5
امراتك ان لا تظهر لها شيا * من اجل ان الابن يهين الاب * البنت تقوم على امها * العروس 6
على حماتها * الاعداء هم جميع الرجال الذين في بيته * وانا انظر الى الرب * واتوقع الاله 7
مخلصي * يسمعني الهي * لا تشمتي بي يا عدوتي لاني سقطت * واقوم من اجل اني ان 8
اجلس في الظلمة الرب ينير لي * احتمل غضب الرب لاني اخطات اليه * الى ان يبرر 9
قضيتي * ويصنع حكمي * ويخرجني الى النور * انظر عدله * وترى عدوتي 10
وتلبس الخزي * القايلة لي اين الرب الهك * عيناي تنظر انها الان تكون للدوس
كالطين في الطرق * يوم تكلسين اللبن * ذلك اليوم تحوك * ويعود ذلك اليوم 11 12
ناموسا * وياتون مدنك للتمهيد وحصة الموصليين * ومدنك الحصينة للحصة * من
صور الى النهر * ومن البحر الى البحر * ومن الجبل الى جبل سوريا * يوم ماء وهيج 13
ويصير الارض للفساد مع سكانها من ثمرات اعمالهم * ارع شعبك بعصاي * فيلتك 14
خراف ميراثك يسكنون وحدهم في الغاب * في وسط الكرمل يرعون البيسانية والجلعادية
كايام الدهر * وكايام خروجك من مصر تعاينون العجايب * يرون الامم ويخزون من كل 15 16
قوتهم * يضعون الايدي على فمهم * تطرش اذانهم * يلحسون التراب مثل الحية يسحبون 17
على الارض * يختلطون في انغلاقهم * بالرب الهنا يبهتون * ويخافون منك * من اله مثلك 18
الرافع المظالم * والمتجاوز عن المظالم ببقايا ميراثه * ولم يمسك غضبه للشهادة * لانه
مريد الرحمة هو *

Ideò execror bona eorum ut tineam devorantem, & regulariter euntem in die tenebrarum. Væ, væ ; ultio tua jam inſtat, jam erit fletus eorum. 4
Ne credatis amicis, & ne fidatis ducibus : cave ab uxore tua, ne quid aperias illi. 5
Nam filius contemnit patrem, filia inſurgit in matrem ſuam, ſponſa in ſocrum ſuam : inimici ſunt omnes ii viri qui in domo ſunt. 6
Ego verò Dominum intuebor, & expectabo Deum Salvatorem meum, exaudiet me Deus meus. 7
Ne inſultes mihi O inimica mea quòd ceciderim : reſurgam equidem, quia licèt ſedeam in tenebris, Dominus mihi lucem admovebit. 8
Iram Domini ſuſtinebo, quia peccavi in eum ; donec juſtificet cauſam meam, faciatque judicium meum, & educat me ad lucem : videbo tandem *juſtitiam ejus.* 9
Inimica verò mea videbit, & induetur pudore, quæ mihi dicit, Ubi eſt Dominus Deus tuus? oculi mei videbunt quòd ipſa jamjam futura eſt conculcationi tanquam lutum in viis. 10
Quo die lateres calce linies, eodem die te delebunt : 11
Et vertetur dies ille in legem : veniéntque urbes tuæ in complanationem & in ſortem Aſſyriorum, & urbes tuæ munitæ in partitionem, à Tyro ad flumen uſq;, à mari ad mare, & à monte ad montem Syriæ. 12
Dies aquæ erit ille *et furentis impetûs: abibitq; terra in corruptionem cum incolis ſuis, propter fructus operũ ſuorũ.* 13
Paſce populum tuum virgâ; familia tua, oves hæreditatis tuæ, ſeorſim habitabunt in ſylvis, in medio Charmeli depaſcent Baiſanitin & Galaaditin, ut diebus æternis. 14
Et ut diebus egreſſûs tui ex Ægypto, videbitis miracula. 15
Videbunt gentes, et pudebit eas totius potentiæ ſuæ : manus imponent ori ſuo, ſurdeſcent aures earum : 16
Pulverem lingent ut ſerpens, trahentur ſuper terram, cõmiſcebuntur in concluſione ſua: per Dominum Deum noſtrum obſtupeſcent, teq; formidabunt. 17
Quis deus par tibi eſt, auferens iniquitates, et præteriens impietates in reliquiis hæreditatis ſuæ, neque retinens iram ſuam in teſtimonium? Ipſe enim amens eſt miſericordiæ, 18

נחום : א

proiicies & : noſtras iniquitates ſubjiciet ,noſtri miſerebitur Revertetur

19 ישוב ירחמנו יכבוש עונתינו ותשליך

,Jahacob veritatem Dabis .eorum peccata omnia maris profunda in

20 במצלות ים כל־חטאתם: תתן אמת ליעקב

dictus à noſtris patribus jurâſti quam ,Abraham miſericordiam

חסד לאברהם אשר־נשבעת לאבתינו מימי

.quondam

קדם:

Verſio VULG. LAT.

19 Revertetur, & miſerebitur noſtri: deponet iniquitates noſtras, & projiciet in profundum maris o-20 mnia peccata noſtra. Dabis veritatem Jacob, miſericordiam Abraham: quæ jurâſti patrib⁹ noſtris à diebus antiquis.

Verſ. GRÆ. LXX. Interp. cum Tranſl. LAT.

19 (τ) Ἐπιστρέψει, καὶ οἰκτειρήσει ἡμᾶς, (υ) καταδύσει τὰς ἀδικίας ἡμῶν, καὶ (φ) ἀποῤῥιφήσονται εἰς τὰ βάθη τῆς θαλάσσης, πάσας τὰς 20 ἁμαρτίας ἡμῶν. Δώσει εἰς ἀλήθειαν τῷ Ἰακὼβ, (χ) ἔλεον τῷ Ἀβραὰμ, καθότι ὤμοσας τοῖς πατράσιν ἡμῶν, κατὰ τὰς ἡμέρας τὰς ἔμπροσθεν. ΜΙΧΑΙΑΣ Γʹ.

Revertetur, & miſerebitur noſtri: demerget peccata noſtra: & projicientur in profunda maris, omnia peccata noſtra. Dabit in 19 veritatem Jacob, miſericordiam Abraham: ſicut jurâſti patribus noſtris juxta dies priores. 20

MS. A. (τ) Αὐτὸς ἐπιστρέψει, (υ) καὶ καταδύσει (φ) ἀποῤῥίψει (χ) ἔλεος

ΜΙΧΑΙΑΣ Γʹ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

יתוב מימריה לרחמא עלנא ויכבוש על חובנא ברחמתיה וירמי לעומקי ימא כל 19

חטאי ישראל: תתן קושטיה דיעקב לבנוהי כמא דקימתא ליה בביתאל טבותן 20

אברהם לזרעיה בתרוהי כמא דקימתא ליה בין בתריא תדכר לנא עקידת יצחק

דאתעקד על גבי מדבחא קדמך תעביד עמנא טבון דקימתא לאבהתנא מיומי קדם:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Revertetur verbū ej⁹ ut miſereatur noſtri: ſubjiciet iniquitates noſtras ſuæ 19 miſericordiæ, projicietq; in profundū maris univerſa Iſraelis peccata. Dabis 20 veritatem Jacobi filiis ej⁹ quemadmodum juramento pollicit⁹ es ei in Bethel, miſericordiā Abrahæ, ſemini ej⁹ poſt eū, ſicut jurâſti ei inter diviſiones: memor eris in noſtri gratiā alligationis Iſaac qui alligat⁹ eſt ſup altare corā te: facies tandē nobiſcū bona *quæ* à diebus priſcis patrib⁹ noſtris jurejurādo promiſiſti.

נחום : א

CAP. I. א

,zelotes Deus ·Elchoſei Nachum viſionis Liber .Nineveh Onus

1 משא נינוה ספר חזון נחום האלקשי: אל קנוא 2

Dominus ulciſcens ,*iræ compos* & ,Dominus ulciſcens ,Dn̄s ulciſcens &

ונקם יהוה נקם יהוה ובעל חמה נקם יהוה

,*narium longus* Dominus .ſuis inimicis ipſe reſervans & ,ſuis hoſtibus

3 לצריו ונוטר הוא לאיביו: יהוה ארך אפים

tempeſtate in Domini : *mundabit non mundando* & ,*virtute* magnus &

וגדול־כח ונקה לא ינקה יהוה בסופה

,mare *in* Increpans .ejus pedum pulvis nubes & ; *ejus* via turbine in &

4 ובשערה דרכו וענן אבק רגליו: גוער בים

Baſan eſt *infirmatus* : fecit exiccare flumina omnia & ,illud exiccavit &

ויבשהו וכל־הנהרות החריב אמלל בשן

, eo ab tremuerunt Montes .eſt *infirmatus* Lebanon flos & , Carmel &

5 וכרמל ופרח לבנון אמלל: הרים רעשו ממנו

omnes & orbis & ;ejus *faciebus* à terra *conflagravit &* ,*liquefacti ſunt* colles &

והגבעות התמגגו ותשא הארץ מפניו ותבל וכל־

ſtabit quis & ,ſtabit quis ejus *indignationis facies Ad* .eo in habitantes

6 יושבי בה: לפני זעמו מי יעמוד ומי יקום

ſunt confractæ petræ & ,ignis ſicut eſt effuſa ejus Ira ? ejus *naſi* ira in

בחרון אפו חמתו נתכה כאש והצרים נתצו

ſperantes ſciens & : anguſtiæ die in *robur ad* ,Dominus Bonus .eo ab

7 ממנו: טוב יהוה למעוז ביום צרה וידע חוסי

: ejus loci faciet conſummationem tranſeunte inundatione in Et .eo in

8 בו: ובשטף עבר כלה יעשה מקומה

? Dominum *ad cogitabitis* Quid .*tenebroſitas perſequetur* ejus inimicos &

9 ואיביו ירדף־חשך: מה־תחשבון אל־יהוה

Quia .anguſtia bis conſurget non ,*faciens* ipſe conſummationem

10 כלה הוא עשה לא־תקום פעמים צרה: כי

,*ſunt conviti* , *potores eos potare ſecundum* & ,complexas ſpinas ad uſque

עד־סירים סבכים וכסבאם סבואים אכלו

Dominum *ſuper cogitans* eſt egreſſus te Ex .plena ariditate ſtipula ſicut

11 כקש יבש מלא: ממך יצא חשב על־יהוה

? *pacifici* num ,Dominus dixit Sic .*Belijahal conſulens* ,malum

12 רעה יעץ בליעל: כה אמר יהוה אם־שלמים

non ,te affixi Et .tranſibit & ,excindentur *certè &* , multi *certè &*

וכן רבים וכן נגזו ועבר ועניתך לא

tua vincula & ,te *deſuper* ejus jugum conteram nunc Et .ultrà te affligam

13 אענך עוד: ועתה אשבר מטהו מעליך ומוסרתיך

tuo nomine *de ſeminabitur* non ,Domine te ſuper præcipiet Et .dirumpam

14 אנתק: וצוה עליך יהוה לא־יזרע משמך

conflatile & , ſculptile faciam ſuccidere tui Dei domo De .amplius

עוד מבית אלהיך אכרית פסל ומסכה

.fuiſti deſpectus quia ,tuum ſepulchrum ponam

אשים קברך כי קלות:

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA

NAHUM.

CAP. I.

1 ONus Ninive: Liber viſionis Na-2 hum Elceſæi. Deus æmulator, & ulciſcens Dn̄s: ulciſcens Dn̄s, & habens furorem: ulciſcens Dn̄s in hoſtes ſuos, & iraſcens ipſe inimi-3 cis ſuis. Dn̄s patiens, et magn⁹ fortitudine, & mundans non faciet innocentē. Dn̄s in tempeſtate & turbine viæ ej⁹, & nebulæ pulvis 4 pedū ejus. Increpans mare, & exiccans illud: & omnia flumina ad deſertum deducens. Infirmatus eſt Baſan, & Carmelus: & flos Libani 5 elanguit. Montes commoti ſunt ab eo, & colles deſolati ſunt: & contremuit terra à facie ej⁹, & orbis, 6 & omnes habitantes in eo. Ante faciē indignationis ej⁹ quis ſtabit? & quis reſiſtet in ira furoris ej⁹? indignatio ej⁹ effuſa eſt ut ignis: 7 & petræ diſſolutæ ſunt ab eo. Bonus Dn̄s, & confortans in die tribulationis: & ſciens ſperantes in 8 ſe. Et in diluvio prætereunte, conſummationē faciet loci ej⁹: & inimicos ejus perſequentur tenebræ. 9 Quid cogitatis contra Dn̄m? conſummationē ipſe faciet: non con-10 ſurget duplex tribulatio. Quia ſicut ſpinæ ſe invicē complectuntur, ſic conviviū eorū pariter potantiū: conſumentur quaſi ſtipula 11 ariditate plena. Ex te exibit cogitans contra Dominū malitiam: mente pertractans prævaricatio-12 nem. Hæc dicit Dn̄s; Si pfecti fuerint, & ita plures; ſic quoque attondentur, & ptranſibit: afflixi te, 13 & non affligā te ultrà. Et nunc conteram virgā ej⁹ de dorſo tuo, 14 & vincula tua diſrumpam. Et præcipiet ſuper te Dn̄s, non ſeminabitur ex nomine tuo ampliùs: de domo Dei tui interficiam ſculptile, & conflatile, ponam ſepulchrum tuum, quia inhonoratus es.

Verſio GRÆCA LXX. interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΝΑΟΥΜ Ζʹ.

ΚΕΦʹ. αʹ.

1 ΛΗμμα Νινευῆ, βιβλίον ὁράσεως Ναοὺμ 2 τοῦ Ἐλκεσαίου. Θεὸς ζηλωτὴς, καὶ ἐκδικῶν (ψ) κύριος, ἐκδικῶν κύριος μετὰ θυμοῦ, ἐκδικῶν κύριος τοὺς ὑπεναντίους αὐτοῦ, καὶ ἐξαίρων 3 αὐτὸς τοὺς ἐχθροὺς αὐτοῦ. Κύριος μακρόθυμος, καὶ μεγάλη ἡ ἰσχὺς αὐτοῦ, καὶ (α) ἀθῷον οὐκ ἀθῳώσει κύριος· ἐν συντελείᾳ, καὶ ἐν (β) συσσεισμῷ ἡ ὁδὸς αὐτοῦ, καὶ νεφέλαι κονιορτὸς 4 ποδῶν αὐτοῦ. Ἀπειλῶν θαλάσσῃ, καὶ ξηραίνων αὐτὴν, καὶ πάντας τοὺς ποταμοὺς ἐξερημῶν. ὠλιγώθη ἡ Βασανῖτις, καὶ ὁ Κάρμηλος, 5 καὶ τὰ ἐξανθοῦντα τοῦ Λιβάνου ἐξέλιπε. Τὰ ὄρη ἐσείσθησαν ἀπ᾽ αὐτοῦ, καὶ οἱ βουνοὶ ἐσαλεύθησαν· καὶ ἀνεστάλη ἡ γῆ ἀπὸ προσώπου αὐτοῦ, ἡ σύμπασα καὶ πάντες οἱ κατοικοῦντες 6 ἐν αὐτῇ. Ἀπὸ προσώπου ὀργῆς αὐτοῦ τίς ὑποστήσεται; καὶ τίς ἀντιστήσεται ἐν ὀργῇ θυμοῦ αὐτοῦ; ὁ θυμὸς αὐτοῦ τήκει ἀρχὰς, καὶ αἱ 7 πέτραι διεθρύβησαν ἀπ᾽ αὐτοῦ. Χρηστὸς κύριος τοῖς ὑπομένουσιν αὐτὸν ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως, καὶ γινώσκων τοὺς εὐλαβουμένους αὐτόν. 8 Καὶ ἐν κατακλυσμῷ πορείας συντέλειαν ποιήσεται, τοὺς ἐπεγειρομένους καὶ τοὺς ἐχθροὺς 9 αὐτοῦ διώξεται σκότος. Τί λογίζεσθε ἐπὶ τὸν κύριον; συντέλειαν αὐτὸς ποιήσεται, οὐκ ἐκ-10 δικήσει δὶς ἐπιτοαυτὸ ἐν θλίψει. Ὅτι ἕως θεμελίου (γ) αὐτοῦ χερσωθήσεται, καὶ ὡς σμῖλαξ περιπλεκομένη βρωθήσεται, καὶ ὡς καλά-11 μη ξηρασίας μεστή. Ἐκ σοῦ ἐξελεύσεται λογισμὸς κατὰ τοῦ κυρίου πονηρὰ, (δ) βουλευόμενος 12 ἐναντία. Τάδε λέγει κύριος κατάρχων ὑδάτων πολλῶν, Καὶ οὕτως διασταλήσονται, καὶ ἡ 13 ἀκοή σου οὐκ ἐνακουσθήσεται ἔτι. Καὶ νῦν συντρίψω τὴν ῥάβδον αὐτοῦ ἀπὸ σοῦ, καὶ τοὺς (ε) δε-14 σμοὺς διαῤῥήξω. Καὶ ἐντελεῖται (ζ) περὶ σοῦ κύριος, οὐ σπαρήσεται ἐκ τοῦ ὀνόματός σου ἔτι. (η) ἐξ οἴκου θεοῦ σου ἐξολοθρεύσω τὰ γλυπτὰ, καὶ χωνευτὰ, θήσομαι ταφήν σου, ὅτι ταχεῖς.

NAUM.

CAP. I.

ASSUMPTIO (a) Ninive, 1 libri viſionis Naum Elceſæi. Deus 2 æmulator, & ulciſcens Dominus, ulciſcens Dominus cū furore, ulciſcens Dominus adverſarios ſuos, & tollens ipſe inimicos ſuos. Dominus longanimis, & magna 3 fortitudo ejus: & (b) innocentem non faciet innocentem. Dominus in conſummatione, & in commotione via ejus, & nubes, pulvis pedum ejus: Increpans mare, & 4 exiccans illud, & omnia flumina ad deſertum perducens. Imminuta eſt Baſanitis, & Carmelus, & quæ florebant Libani defecerunt. Montes commoti ſunt ab 5 eo, & colles concuſſi ſunt: & (c) contracta eſt terra à facie ejus; univerſa, & omnes, qui habitant in ea. A facie iræ ejus quis ſuſti-6 nebit? & quis reſiſtet in ira furoris ejus? Furor ejus (d) conſumit principatus: & petræ contritæ ſunt ab eo. Suavis Domin⁹ expe-7 ctantibus eū in die tribulationis, & cognoſcens timentes ſe. Et in 8 diluvio (e) tranſeunte conſummationem faciet: (f) conſurgentes & inimicos ejus perſequentur tenebræ. Quid cogitatis contra Do-9 minū? Conſummationem ipſe faciet: (g) non vindicabit bis in idipſum in tribulatione. Quia uſque 10 ad fundamentū ſuum redigetur in vepres, & quaſi volvola circundata comedetur, & quaſi ſtipula ariditate plena. Ex te exibit 11 cogitatio contra Dominū peſſima, cogitans contraria. Hæc dicit Do-12 minus imperans aquis multis; Et ſic dividentur: & auditus tuus non audietur ampl⁹. Et nunc con-13 teram virgam ejus à te, & vincula diſrumpam: Et præcipiet de 14 te Dominus: non ſeminabitur ex nomine tuo ampliùs: de domo Dei tui diſperdam ſculptilia, & conflatilia; ponam ſepulchrum tuum; (h) quia veloces.

MS. A. ΝΑΟΥΜ Ζʹ. (ψ) κύριος μετὰ (α) ἀθῷον οὐκ ἀθῳώσει (β) συσσεισμῷ (γ) αὐτῆς χερσωθήσονται (δ) λογιζόμενος ποιήσει ἐναντία. (ε) δεσμούς σου (ζ) ὑπὲρ (η) καὶ ἐξ οἴκου θεοῦ σου ἐξολεθρεύσω τὰ γλυπτά σου, καὶ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

מטל כס דלוט לאשקאה ית נינוה מלקדמין אתנבי עלה יונה בר אמתי נביא דמגת 1

חפר ותבת מחובהא וכדו דאוסיפת למחטי תב ואתנבי עלה נחום מבית קושי כמא

דכתיב בספרא הדין: אלהא דין ופורען יי מתפרע יי וסני חילא קדמוהי עתיד יי 2

לאתפרע מסנאי עמיה וברגז חסין מבעלי דבבוהי: יי מרחיק רגז וסני חילא קדמוהי 3

עתיד יי לאתפרע וסלח לדתיבין לאוריתא ולדלא תיבין לא מזכי יי בעלעולא וברוח

מדבר וענן אמטתא כבש קדמוהי: דנזיף בימא ומיבש ליה וכל נהרותא מחריב צדי 4

מתנן וכרמלא ואילני לבנן נתרו: טוריא זעו מן קדמוהי ורמתא אתפרקא וחרובת 5

ארעא מן קדמוהי ותבל וכל דיתבין בה: כד אתגלי ברחמתא למתן אוריתא לעמיה 6

כן זע עלמא מן קדמוהי בכן כד אתגלי ברגז לאתפרע מסנאי עמיה קדם פורענותיה

מן יקום ומן יסובר באבאשות רוגזיה רוגזיה כאשתא ממסי וטינריא אתפרקן מן

קדמוהי: טב יי לישראל לאסתמכא עלוהי בעדן עקא וגלי קדמוהי דרחיצין על 7

מימריה: וברגז חסין ובחמא תקיפא גמירא יעביד עם עממיא דקמו ואחריבו ית בית 8

מקדשא דיי ובעלי דבבוהי ימסר לגהנם: עממיא דבזו ית ישראל מא אתון חשבין 9

קדם יי גמירא היא עתיד למעבד עמכון לא תתקים עליכון כבית ישראל תרתין זמנין

רוח בתר עקא: ארי שלטוני עממיא דבזו ית בית ישראל וכמא דטען בחמרא כן 10

אטעיאונון שציאונון כמא דמשציא אשתא בקשא יבישא סגי: מניך נינוה נפק מלכא 11

דחשיב על עמיה דיי בישא דמלך מלך דרשע: כדנן אמר יי אם יהון שלמין בעיצה 12

וסגיאין באתמניותא עממיא דמתכנשין לאעקא ליך ירושלם ויגוזון ית דגלת ויעברון

ית פרת ויתון לעניותיך ודשעבדתיך לא אשעבדנך עוד: וכען אתבר ניר עממיא 13

מצואריכון וחנקיכון אפסיק: ויפקיד עלך יי ית מלכא דאתור ולא יהי דכרן משמך עוד 14

מבית טעותך אשצי צלם ומתכא תמן אשוי קבריך ארי קלילא דא קדמי:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

ONus calicis maledictionis ad propinandum ipſi Ninive, contra quam vaticinat⁹ eſt à principio Jonas fili⁹ Amithai, *Propheta* qui erat ex Gath-Chaphar, & ipſa pœnitentiā egit de ſuis peccatis: ſed quando addidit flagitia committere, reverſ⁹ eſt ac prophetavit adverſ⁹ eam Nachū de Beth-Koſſi, prout ſcriptū eſt in hoc libro. Dn̄s Judex & ultor Dn̄s, vindictā ſumptur⁹ eſt Dn̄s, cúmq; 2 multa ſit potentia corā eo, futurū eſt ut vindictā ſumat de iis qui oderunt populū ſuū, & in ira vehementi de hoſtib⁹ ſuis. Dn̄s longè propellit iram, & cū 3 multa potentia corā eo: *quando ultur⁹ eſt Domin⁹*, parcit iis qui converſi fuerint ad Legē, qui verò converſi non fuerint, haudquaquā dimiſſurus eſt inſontes. Dn̄s in turbine & ſpiritu ducē ſe præbet, ac nubē caliginis ſubjecit corā ſe. Qui increpat mare, ipſúmq; exſiccat, & omnia flumina areſacit, va-4 ſtat⁹ eſt Mathnan & Carmel⁹, & arbores Libani defluunt. Montes commoti 5 ſunt à conſpectu ejus, & diſrupti ſunt colles, ac vaſtata eſt terra ab ejus præſentia, nec non orbis, & omnes qui habitant in eo. Quando ſe patefecit cum 6 miſericordia ut daret Legē populo ſuo, ſic cōmotus eſt mund⁹ à conſpectu ej⁹: ita quando ſeſe demonſtrabit in furore ad ſumendā vindictā de oſorib⁹ populi ſui, corā ipſi⁹ ultione quis ſubſiſtat, & quis ſuſtineat malū iræ ejus? Ira ejus ignis inſtar diſſipat, & rupes confringuntur à conſpectu ej⁹. Bon⁹ eſt Dn̄s Iſ-7 raeli ut innitatur ei tempore anguſtiæ, & manifeſti ſunt corā eo qui fiduciam ſuā collocant in verbo ipſi⁹. Sed in ira forti & furore vehementi extermina-8 tionē faciet cum gentib⁹, quæ inſurrexerunt & vaſtaverunt ædē ſanctuarii Dn̄i, ac inimicos ſuos tradet gehennæ. Gentes quæ expilaverūt Iſrael, quid vos co-9 gitatis corā Dn̄o? futurū eſt ut fiat exterminatio vobiſcū: nō conſurget vobis, *ſicut* domui Iſrael, bis *reſpiratio poſt anguſtiam*. Quoniā principes gentiū 10 qui deprædati ſunt domū Iſrael, quemadmodū erraverunt in vino, ita ſeduxerunt atq; conſumpſerunt eos, ſicut conſumit ignis ſtipulā aridā multā. Ex te 11 prodibit Ninive rex qui molitur⁹ eſt adverſū populū Dn̄i malū, qui initur⁹ eſt conſiliū impietatis. Sic ait Dn̄s: Etſi fuerint perfectæ conſilio, multæq; numero 12 gentes, quæ congregantur ut te ad anguſtias adigant, Jeruſalē, vadoq; trajecerint Tigrim, & tranſierint Euphratē, atq; venerint ad affligendū te, cùm te ſubjecerim, non ampli⁹ te ſubjiciā. Nunc autē frangā jugū gentiū à collo ve-13 ſtro, & vincula veſtra præcidā. Porro conſtituet ſup te Dn̄s regē Aſſyriæ, nec 14 erit ampli⁹ memoria nominis tui: de domo idolorū tuorū delebo ſimulachrū et conflatile: ibi reponā ſepulchrū tuum, quoniā hoc perfacile eſt coram me.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܢܬܘܒ ܢܪܚܡ ܥܠܝܢ. ܘܢܟܒܘܫ ܟܠܗ ܥܘܠܢ. ܘܢܪܡܐ ܒܥܘܡܩܐ ܕܝܡܐ 19

ܟܠܗܘܢ ܚܛܗܝܢ. * ܬܬܠ ܫܪܪܐ ܠܝܥܩܘܒ. ܘܛܝܒܘܬܐ ܠܐܒܪܗܡ. ܐܝܟ ܕܝܡܐ ܠܐܒܗܝܢ ܡܢ 20

ܝܘܡܬܐ ܩܕܡܝܐ. * ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܡܝܟܐ *

Converſus miſerebitur noſtri, & omne ſcelus 19 noſtrum colliget, projicietq; in profunda maris omnia peccata noſtra: Præſtabis verita- 20 tem illam Jacobo & gratiam Abrahamo, pro qua juraſti patribus noſtris inde à priſcis diebus.

Prophetiæ Michæ finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وهو يرجع ويتراف علينا . يغفر مظالمنا . ويطرح في اعماق البحر جميع خطايانا * يعطي 19 20

الحق ليعقوب * الرحمة لابرهيم . كما اقسم لابائنا * كالايام التي من قبل *

* تمت نبوة ميخا النبي *

Ipſeque reverſus miſerebitur noſtri, demerget iniquitates noſtras, et injiciet in profunda maris omnia peccata noſtra: Dabit veritatem Jacobo, miſericordiam Abrahamo, quemadmodum juravit patribus noſtris, ut præteritis diebus. 19 20

Prophetiæ Michæ Prophetæ finis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܢܚܘܡ ܢܒܝܐ * * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

1 * ܡܫܩܠܐ ܕܢܝܢܘܐ ܕܟܬܒܐ ܕܚܙܘܐ ܕܢܚܘܡ ܐܠܩܘܫܝܐ. * ܐܠܗܐ ܛܢܢܐ ܘܬܒܘܥܐ ܡܪܝܐ. 2

ܬܒܥ ܡܪܝܐ ܒܪܘܓܙܐ. ܬܒܥ ܡܪܝܐ ܡܢ ܣܢܐܘܗܝ. ܘܢܛܪ ܠܒܥܠܕܒܒܘܗܝ. * ܢܓܝܪܐ ܪܘܚܗ 3

ܕܡܪܝܐ. ܘܣܓܝ ܚܝܠܗ. ܘܡܙܟܘ ܠܐ ܡܙܟܐ ܡܪܝܐ ܒܥܠܥܠܐ ܘܒܣܥܘܪܐ ܐܘܪܚܗ. ܘܥܢܢܐ

ܚܠܐ ܕܪ̈ܓܠܘܗܝ. * ܟܐܐ ܒܝܡܐ ܘܡܘܒܫ ܠܗ. ܘܟܠܗܘܢ ܢܗܪܘܬܐ ܡܚܪܒ. ܐܬܟܪܝܬ ܡܬܢܝܢ 4

ܘܟܪܡܠܐ. ܘܦܪܥܐ ܕܠܒܢܢ ܚܪܒ. * ܛܘܪܐ ܙܥܘ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܘܪ̈ܡܬܐ ܐܬܦܪܩܘ. ܐܪܥܐ ܐܬܬܙܝܥܬ 5

ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ. ܬܐܒܝܠ ܘܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗ. * ܩܕܡ ܪܘܓܙܗ ܡܢܘ ܢܩܘܡ. ܘܡܢܘ ܢܣܝܒܪ 6

ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ. ܚܡܬܗ ܢܦܩܐ ܐܝܟ ܢܘܪܐ. ܘܛܘܪܐ ܐܬܦܫܪܘ ܡܢܗ. * ܛܒ ܗܘ ܡܪܝܐ 7

ܠܡܥܕܪܘ ܒܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ. ܘܝܕܥ ܠܐܝܠܝܢ ܕܬܟܝܠܝܢ ܥܠܘܗܝ. * ܘܒܛܘܦܢܐ ܥܒܪ 8

ܓܡܘܪܬܐ ܢܥܒܕ ܠܐܬܪܗ. ܘܒܥܠܕܒܒܘܗܝ ܢܪܕܘܦ ܚܫܘܟܐ. * ܡܢܐ ܡܬܚܫܒܝܢ ܐܢܬܘܢ 9

ܥܠ ܡܪܝܐ ܕܓܡܘܪܬܐ ܥܒܕ. ܘܠܐ ܢܩܘܡ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ ܐܘܠܨܢܐ. * ܡܛܠ ܕܥܕܡܐ 10

ܠܫܠܝܛܢܝܗܘܢ ܡܡܪܝܢ. ܘܒܪܘܝܘܬܗܘܢ ܪܘܝܢ. ܘܐܬܐܟܠܘ ܐܝܟ ܩܫܐ ܝܒܝܫܐ.

* ܡܢܟܝ ܢܦܩ ܕܡܬܚܫܒ ܒܝܫܬܐ ܥܠ ܡܪܝܐ. ܘܡܡܠܟ ܥܘܠܐ .·. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ: 11 12

ܥܠ ܪ̈ܫܝ ܡܝܐ ܣܓܝܐܐ ܕܚܛܦܘ ܘܥܒܪܘ. ܘܐܢ ܐܥܢܝܬܟܝ ܬܘܒ ܠܐ ܐܥܢܝܟܝ. * ܘܗܫܐ ܐܬܒܪ 13

ܢܝܪܗ ܡܢܟܝ. ܘܐܫܪܐ ܐܣܘܪ̈ܝܟܝ. * ܘܢܦܩܘܕ ܥܠܝܟܝ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܢܙܕܪܥ ܬܘܒ ܡܢ ܫܡܟܝ 14

ܒܒܝܬ ܐܠܗܟܝ. ܘܐܘܒܕ ܓܠܝܦܐ ܘܢܣܟܐ. ܘܐܣܝܡܝܗ̇ ܩܒܪܟܝ ܒܥܓܠ.

Sequitur Prophetia

NAHUM PROPHETÆ.

CAPUT. I.

Plaga Ninives extans in libello viſionum 1 Nahumi Elcoſæi. Deus zelotes eſt, & ul- 2 tor Dñs: ulciſcitur Dñs in ira, & vindictam ſumit ab oſoribus ſuis, et *iram* ſervat in hoſtes ſuos. Longa eſt patientia Dñi, et copioſa fortitudo ejus; at nullo pacto impunè dimittens: 3 Dñi via in turbine eſt et in procella, et nubes pulvis ſunt pedum ejus. Increpat mare, et arefacit ipſum, omneſq; fluvios vaſtat: ingemiſcit 4 Mathnin et Charmel⁹, et germen Libani exiccatur. Montes contremiſcunt à conſpectu ej⁹, 5 & colles diſrumpuntur: terra quatitur à conſpectu ipſi⁹, orbis & omnes habitatores ejus. Ante iram ejus quis conſiſtat? & quis ferat æ- 6 ſtum furoris ejus? æſtus ej⁹ ardet ſicut ignis, et montes liqueſcunt ab eo. Bon⁹ eſt Dñs ad pro- 7 tegendum in die calamitoſo, et agnoſcit eos qui confidunt in ipſo. Diluvio imponet finē: 8 tranſibit ad regionē illius, et hoſtes ej⁹ perſequentur tenebræ. Quid machinamini adver- 9 ſùs Dominum, quòd imponat finem ita ut calamitas non oboriatur ſecundâ vice? Nam vel 10 ipſi principes eorum refractarii ſunt, & in ebrietate ſua ebrii: comederunt & impleverunt ſe ſtipulâ ſiccâ. Ex tēne prodiret cogi- 11 tans malum contra Dominum, & machinator impietatis? Sic dicit Dñs de capitibus aqua- 12 rum multarum quæ rapuerunt & elapſæ ſunt; Si te *aliàs* exaudivi, annon exaudirem te ite- 13 rum? Jam fracturus ſum jugum ejus à te, & lora tua rupturus. Præcipiet enim contra te 14 Dominus, & non feretur ampliùs de nomine tuo in æde dei tui: perdamq; ſculptilia, & vertam illam in ſepulcrum tuum citò.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ترجمة نبوة ناحوم النبي . بركاته علينا . امين .

. الفصل الاول . الاصحاح الثامن عشر . وهو الاول من النبوة *

* صدرية نينوى . سفر رؤيا ناحوم الالقوسي * الله غيور ورب منتقم بغضب . ينتقم من معانديه 1 2

وهو يدرع اعداءه * الرب طويل الروح . وعظيمة قوته . ولم يزكي تزكية . الرب في الانقضاء 3

وفي الزلزلة طريقه . والسحاب غبار قدميه * يتهدد البحر ويجففه . ويخرب جميع الانهار فلبث 4

البيسانية والكرمل وازهار لبنان فنيت * الجبال تزلزلت منه . والاكام تزعزعت . اخلت 5

الارض كلها من وجهه . وجميع السكان فيها من وجه غضبه * من يثبت ومن يعاند في 6

رجز غضبه * غضبه يذيب الرؤساء . والصخور ذابت منه * الرب صالح للذين يرجونه في 7

يوم الشدة . وعارف بمورعيه * وبطوفان المسلك يصنع الانقضاء . والظلمة تطرد المنتصبين . 8

* واعداوه ماذا يفكرون على الرب . هو يصنع الانقضاء . ليس ينتقم مرتين في الشدة معا 9

* لأن الى اساسهم ييبس . ومثل الذباب المشتبك يوكل . ومثل القصبة المملوة جفافا * منك 10 11

يخرج الفكر على الرب . مروي المضادات الشرير * هكذا يقول الرب على مبادي المياه 12

الكثيرة وهكذا يعبرون . وسماعك لا يسمع بعد * والآن اكسر عصاه عنك . واصرم 13

رباطاتك * ويوصي الرب من اجلك . لا يزرع من اسمك ايضا من بيت الهك استاصل 14

المنحوتات والمسبوكات . واصنع دفنك .

Interpretatio prophetiæ

NAHUMI PROPHETÆ,

CUJUS BENEDICTIONES nobis adſint, Amen.

CAP. I.

Textus decimus octavus, hujus autem prophetiæ primus.

P*Laga Ninives, liber viſionis Nahumi Elcoſæi. Deus zelotes eſt & Dominus cum furore ulciſcens; ulciſcitur ab adverſariis ſuis, ipſeque aufert inimicos ſuos. Dominus longanimis eſt, at maxima eſt fortitudo ejus, neque juſtificando juſtificat: Domini via in excidio eſt & terræmotu, & nubes pulvis ſunt pedum ejus. Minitatur mari, & exiccat illud, vaſtatque cuncta flumina: deficit Biſanitis & Charmelus, florida Libani deficiunt. Montes ab eo contremuerunt, & colles commoti ſunt: diſſoluta eſt univerſa terra à facie ejus, & omnes habitantes in ea à facie furoris ejus. Quis conſiſtat, aut quis reſiſtat in ira indignationis ejus? Indignatio ejus liquefacit principes, petræque ipſæ liqueſcunt ab eo. Dominus bonus eſt erga eos qui præſtolantur eum in die tribulationis, & cognoſcens religioſos ſuos. Diluvio itineris faciet conſummationem, & tenebræ perſequentur aggreſſores. Hoſtes igitur ejus quid contra Dominum cogitant? ipſe conſummationem faciet: nequaquam bis ſimul ulciſcitur in tribulatione. Nam uſque ad fundamentum eorū areſcet, ut muſca circunvoluta comedetur, & ut arundo ſiccitate plena. Ex te prodibit cogitatio contra Dominum, excogitator contradictionū malarū. Sic dicit Dominus de originibus aquarū multarū, & ſic tranſibunt, & fama tua non audietur ampliùs. Nunc frangam baculū ejus à te, & diſrumpam vincula tua: Præcipiet enim de te Dominus. Non ſeminabitur ampliùs de nomine tuo: e domo dei tui eruam ſculptilia & conflatilia, ponamq; ſepulturam tuam.* 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14

נחום : ב

CAP. II. ב

.pacem facientis audire evangelizantis pedes montes super Ecce
1 הנה על־ההרים רגלי מבשר משמיע שלום
ultrà addet non quia : tua vota redde, tuas festivitates Jehudah Celebra
חגי יהודה חגיך שלמי נדריך כי לא יוסיף עוד
super dissipator Ascendit .est succisus ipse totus ,belijahal te per transire
2 לעבור־בך בליעל כלה נכרת : עלה מפיץ על־
,lumbos conforta ,viam contemplare : munitionẽ custodiendo ,tuas facies
פניך נצור מצורה צפה־דרך חזק מתנים
superbiam Dominus convertit Quia .valde potentiam robora
3 אמץ כח מאד : כי שב יהוה את־גאון
,evacuantes eos evacuaverunt quia : Israel superbiam sicut ,Jahacob
יעקב כגאון ישראל כי בקקום בקקים
,est rubefactus ejus fortium Clypeus .corruperunt eorum propagines &
4 וזמריהם שחתו : מגן גבריהו מאדם
:se præparare die in ,currus lampadarũ igne in ,vermiculati exercitus viri
אנשי־חיל מתלעים באש־פלדות הרכב ביום הכינו
,currus insanient plateis In .fuerunt venenatæ abietes &
5 והברשים הרעלו : בחוצות יתהוללו הרכב
fulgura tanquã ,faces veluti eorum aspectus : plateas per coxis collident
ישתקשקון ברחבות מראיהן כלפידם כברקים
: eorum ambulatione in impingent ,suorũ fortium Recordabitur .discurrent
6 ירוצצו : יזכר אדיריו יכשלו בהליכותם
Portæ .operimentum præparabitur & , ejus murum ad festinabunt
7 ימהרו חומתה והכן הסכך : שערי
,est ducta captiva Hussab Et.est liquefactũ palatium & ;sunt apertæ fluminum
8 הנהרות נפתחו וההיכל נמוג : והצב גלתה
tundentes ,columbarũ vocem juxta adducentes ej⁹ ancillæ &,est ascendere jussa
העלתה ואמהתיה מנהגות כקול יונים מתפפות
ipsi & : ipsa diebus à aquis piscina sicut Nineveh Et .sua corda super
9 על־לבבהן : ונינוה כברכת־מים מימי היא והמה
diripite ,argentum Diripite .respiciens non & , state , State .fugientes
10 נסים עמדו עמדו ואין מפנה : בזו כסף בזו
.desiderii vase omni præ gloria ,præparationem ad finis non & ; aurum
זהב ואין קצה לתכונה כבד מכל כלי חמדה :
collisio & ,est liquefactum cor & : interrupta & ,exaninata & ,est Evacuata
11 בוקה ומבוקה ומבלקה ולב נמס ופק
ipsorum universorum facies & , renibus cunctis in i valetudo & ,genuum
ברכים וחלחלה בכל־מתנים ופני כלם
ipsum pascuum & , leonum habitaculum Ubi .fuliginem contraxerunt
12 קבצו פארור : איה מעון אריות ומרעה הוא
, leonis catulus , ibi major leo , leo ivit quod ,leonum catulorũ
לכפרים אשר הלך אריה לביא שם גור אריה
suffocans & ,suis catulis sufficientia in rapiens Leo .exterrens non &
13 ואין מחריד : אריה טרף בדי גרותיו ומחנק
.rapina sua habitacula & ,sua foramina præda implevit & : suis leænis
ללבאתיו וימלא־טרף חריו ומענתיו טרפה :
fumo in faciam succendere & ,exercituum Dominus dixit ,te ad ego Ecce
14 הנני אליך נאם יהוה צבאות והבערתי בעשן
terra de faciam succidere & : gladius comedet tuos leunculos & ,ejus currum
רכבה וכפיריך תאכל חרב והכרתי מארץ
.tuorum nunciorum vox ultrà audietur non & ,tuam prædam
טרפך ולא־ישמע עוד קול מלאככה :

CAP. III. ג

non ,est plena extorsione mendacio ipsa universa ; sanguinum civitati Væ
1 הוי עיר דמים כלה כחש פרק מלאה לא
,subsilientis equi & , rotæ commotionis vox & ,flagelli Vox .præda recedit
2 ימיש טרף : קול שוט וקול רעש אופן וסוס דהר
subsilientis currus &
ומרכבה מרקדה :

Versio VULG. LAT.

15 Ecce super montes pedes evangelizantis, & annuntiantis pacẽ : celebra, Juda, festivitates tuas, & redde vota tua: quia non adjiciet ultrà ut pertranseat in te Belial : universus interiit.

CAP. II.

1 Ascendit qui dispergat coram te, qui custodiat obsidionem : contemplare viam, conforta lumbos, 2 robora virtutem valdé. Quia reddidit Dñs superbiam Jacob, sicut superbiã Israel : quia vastatores dissipaverunt eos, & propagines eorum corruperunt. 3 Clypeus fortium ejus ignitus, viri exercitûs in coccineis: igneæ habenæ currûs in die præparationis ejus, & agitatores consopiti sunt. 4 In itinerib⁹ conturbati sunt: quadrigæ collisæ sunt in plateis: aspectus eorum quasi lampades, quasi 5 fulgura discurrentia. Recordabitur fortium suorum, ruent in itineribus suis: velociter ascendent muros ejus, & præparabitur umbraculum. 6 Portæ fluviorum apertæ sunt, & templum ad solum dirutum. 7 Et miles captivus abductus est: & ancillæ ejus minabantur gementes ut columbæ, 8 murmurantes in cordibus suis. Et Ninive quasi piscina aquarum aquæ ejus : ipsi verò fugerunt : state, state, & non est qui revertatur. 9 Diripite argentum, diripite aurum : & non est finis divitiarum ex omnib⁹ vasis desiderabilibus. 10 Dissipata est, & scissa, & dilacerata : & cor tabescens, & dissolutio geniculorum, & defectio in cunctis renibus : & facies omnium eorum sicut nigredo 11 ollæ. Ubi est habitaculum leonum, & pascua catulorum leonum, ad quam ivit leo ut ingrederetur illuc, catulus leonis, & 12 non est qui exterreat? Leo cepit sufficienter catulis suis, et necavit leænis suis : et implevit prædâ speluncas suas, et cubile suum 13 rapinâ. Ecce ego ad te, dicit Dominus exercituum, et succendam usque ad fumum quadrigas tuas, et leunculos tuos comedet gladi⁹: et exterminabo de terra prædam tuam, et non audietur ultrà vox nuntiorum tuorum.

CAP. III.

1 VÆ, civitas sanguinum, universa mendacii dilaceratione plena : 2 non recedet à te rapina. Vox flagelli, et vox impetûs rotæ, et equi frementis, et quadrigæ ferventis,

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

15 Ἰδοὺ ἐπὶ τὰ ὄρη οἱ πόδες εὐαγγελιζομένου, καὶ ἀπαγγέλλοντος εἰρήνην. ἑόρταζε Ἰούδα τὰς ἑορτάς σου, ἀπόδος τὰς εὐχάς σου, διότι οὐ μὴ (θ) προσθήσωσιν ἔτι τοῦ διελθεῖν διὰ σοῦ εἰς παλαίωσιν.

MS. A. (θ) προσθῶσιν ἔτι τοῦ διελθεῖν εἰς παλαίωσιν.

ΚΕΦ. β΄.

15/1 Συντετέλεσαι, ἐξῆρται. Ἀνέβη ἐμφυσῶν εἰς πρόσωπόν σου, (α) ἐξαιρούμενος ἐκ θλίψεως. σκόπευσον ὁδὸν, κράτησον ὀσφύος, 2 ἄνδρισαι τῇ ἰσχύϊ (β) σφόδρα. Διότι ἀπέστρεψε κύριος τὴν ὕβριν Ἰακὼβ, καθὼς ὕβριν τοῦ Ἰσραὴλ, διότι ἐκτινάσσοντες ἐξετίναξαν αὐτοὺς, καὶ τὰ κλήματα αὐτῶν δι-3 έφθειραν. Ὅπλα δυναστείας αὐτῶν ἐξ ἀνθρώπων, ἄνδρας δυνατοὺς ἐμπαίζοντας ἐν πυρί· αἱ ἡνίαι τῶν ἁρμάτων αὐτῶν ἐν ἡμέρᾳ ἑτοιμασίας αὐτοῦ, καὶ οἱ ἱππεῖς θορυβηθή-4 σονται Ἐν ταῖς ὁδοῖς, καὶ συγχυθήσονται τὰ ἅρματα, καὶ συμπλακήσονται ἐν ταῖς πλατείαις. ἡ ὅρασις αὐτῶν ὡς λαμπάδες πυρὸς, καὶ 5 ὡς ἀστραπαὶ διατρέχουσαι. Καὶ μνησθήσονται οἱ μεγιστᾶνες αὐτῶν, καὶ φεύξονται ἡμέρας, καὶ ἀσθενήσουσιν ἐν (γ) τῇ πορείᾳ αὐτῶν, καὶ σπεύσουσιν ἐπὶ τὰ (δ) τείχη αὐτῆς, καὶ ἑ-6 τοιμάσουσι τὰς προφυλακὰς αὐτῶν. Πύλαι τῶν πόλεων διηνοίχθησαν, καὶ τὰ βασίλεια (ε) 7 διέπεσε, καὶ ἡ ὑπόστασις ἀπεκαλύφθη· Καὶ αὕτη ἀνέβαινε, καὶ αἱ δοῦλαι αὐτῆς ἤγοντο, καθὼς περιστεραὶ φθεγγόμεναι ἐν (ζ) καρδί-8 αις αὐτῶν. Καὶ Νινευὴ ὡς κολυμβήθρα ὕδατος τὰ ὕδατα αὐτῆς, καὶ αὐτοὶ φεύγοντες 9 οὐκ ἔστησαν, καὶ οὐκ ἦν ὁ (η) ἐπιβλέπων. Διήρπαζον τὸ ἀργύριον, διήρπαζον τὸ χρυσίον, καὶ οὐκ ἦν πέρας τοῦ κόσμου αὐτῆς· βεβάρυνται (θ) ἐπὶ πάντα τὰ σκεύη τὰ ἐπιθυμητὰ 10 αὐτῆς. Ἐκτιναγμὸς, καὶ ἀνατιναγμὸς, καὶ (") ἐκβρασμὸς, καὶ καρδίας θραυσμὸς, καὶ ὑπόλυσις γονάτων, καὶ ὠδῖνες ἐπὶ πᾶσαν ὀσφύν· καὶ τὸ πρόσωπον πάντων ὡς πρόσ-11 καυμα χύτρας. Ποῦ ἐστι τὸ κατοικητήριον τῶν λεόντων, καὶ ἡ νομὴ ἡ οὖσα (ι) τοῖς σκύμνοις; (κ) οὗ ἐπορεύθη λέων, τοῦ εἰσελθεῖν ἐκεῖ (λ) 12 σκύμνον λέοντος, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἐκφοβῶν; Λέων ἥρπασε τὰ ἱκανὰ τοῖς σκύμνοις αὐτοῦ, καὶ ἀπέπνιξε τοῖς λέουσιν αὐτοῦ, καὶ ἔπλησε θήρας νοσσιὰν αὐτοῦ, καὶ τὸ κατοικητήριον 13 αὐτοῦ ἁρπαγῆς. Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ, λέγει κύριος (") παντοκράτωρ, καὶ ἐκκαύσω ἐν καπνῷ πλῆθός σου, καὶ τοὺς λέοντάς σου καταφάγεται ῥομφαία, καὶ (μ) ἐξολοθρεύσω ἐκ τῆς γῆς τὴν θήραν σου, καὶ (ν) οὐ μὴ ἀκουσθῇ οὐκέτι τὰ ἔργα σου.

ΚΕΦ. γ΄.

1 Ὦ Πόλις αἱμάτων, ὅλη ψευδὴς, (α) ἀδικίας πλήρης, οὐ ψηλαφηθήσεται θήρα. 2 Φωνὴ μαστίγων, καὶ φωνὴ σεισμοῦ τροχῶν, καὶ ἵππου διώκοντος, καὶ ἅρματος ἀναβράσσοντος,

MS. A. (α) ἐξερυόμενός σε ἐκ θ(β) σου σφόδρα. (γ) ταῖς πορείαις (δ) τείχη, καὶ ἑτοιμάσουσιν (ε) διέπεσε, (ζ) ταῖς καρδίαις αὐτῶν. Καὶ Νινευὴ ἦν κολυμβήθρα ὕδατος, τείχη ὕδατα αὐτῆς, (η) βλέπων. (θ) ὑπὲρ (") ἐκβρασμὸς, (ι) ἐν τοῖς (κ) οὗ (λ) σκύμνος (") ὁ (μ) ἐξολεθρεύσω (ν) οὐκέτι οὐ μὴ ἀκουσθῇ τὰ Κεφ. γ΄. MS. A. (α) πλήρης ἀδικίας,

Ecce super montes pedes evangelizantis, & annuntiantis pacem. Celebra, Juda, festivitates tuas, redde vota tua: quia nequicquam apponent ultrà transire (i) per te in vetustatem. 15

CAP. II.

Consummatus (a) est, sublatus est: Ascendit insufflans in faciem tuam, eruens de tribulatione. Contemplare viam, tene lumbum, confortare robore valdè: Quoniã 2 avertit Dominus contumeliã Jacob, sicut contumeliã Israel: quia excutientes excusserũt eos, et propagines eorũ corruperunt. Arma 3 potentiæ (b) eorum ex hominibus, viros fortes illudẽtes in igne. habenæ curruum eorũ in die præparationis ejus: et equites timebunt In (c) viis, & confundentur cur- 4 rus, et collidentur in plateis. Aspect⁹ eorũ, quasi lampades ignis, & quasi fulgura discurrentia. Et 5 commemorabuntur optimates eorũ: & fugient die, et infirmabuntur in itinere suo, & festinabunt ad muros ej⁹, et præparabunt propugnacula sua. Portæ civitatũ a- 6 pertæ sunt: et regalia conciderunt, et substantia revelata est. Et ipsa 7 ascendebat, & ancillæ ejus ducebantur, sicut columbæ, loquentes in cordibus suis. Et Nineve, sicut 8 piscina (d) aquæ, aquæ ejus: & ipsi fugientes non steterunt, et non erat, qui respiceret. Diripiebant ar- 9 gentum, diripiebant aurũ, & non erat finis ornamenti ejus: (e) aggravati sunt super omnia vasa desiderabilia ejus. Excussio, et 10 discussio, & ebullitio, & cordis confractio, & dissolutio genuum, & dolores super omnem lumbum: & facies omnium, sicut adustio ollæ. Ubi est habita- 11 culum leonum, & pascua, quæ erat catulis leonum? quò ivit leo, ut (f) ingrederetur illuc catulus leonis, & non est qui exterreat? Leo rapuit sufficientia catulis 12 suis, & suffocavit leonibus suis, & implevit prædã nidum suum, & habitaculum suum rapinã. Ecce ego ad te, dicit Dominus 13 omnipotens: & succendam in fumo multitudinem tuam: & leones tuos comedet gladius: & auferam de terra prædam tuam: & non audientur ultrà opera tua.

CAP. III.

O Civitas sanguinum; tota 1 mendax, (a) iniquitate plena: non contrectabitur venatio: Vox 2 flagellorum, & vox commotionis rotarum, & equi persequentis, & currûs ferventis,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 הא על טורי ארעא דישראל רגלי מבסר משמע שלם חוגי יהודה חגך שלימי נדרך
ארי לא יוספון עוד דיעדון ביך רשיעין כולהון אשתיציאו :

ב

1 דהוו סלקין ומתבדרין על ארעיך צירין עלך בציר מקימין סכואין על אורחתך תקיפי
2 קדל חסיני חיל לחדא : ארי אתיב יי תוקפיה ליעקב רבותיה לישראל ארי בזונון בזוזין
3 וקרוי תושבחתהון חבילו : תריסי גברהון מסמקין גברי עבדי קרבא לבישין זהוריתא
באשתא פילי רתיכיהון זמינין ליום קשוטהון ורבני משריתהון מסרבלין בצבעונין :
4 בשוקיא משתגשין רתיכיא קל נקיש זיניהון משתמע ברחובי קרויא חזויהון
5 כבעורין כברקין טרידין : ימנון רבני משריתהון יתקלון במהכהון יוחון יכבשון שורא
6 יבנון מגדליא : גשרי נהרותא אתפסקא ומלכא בהיכליה זע : ומלכתא יתבת צבא
7 בגליא נפקת ואמהתהא מדברן אולן בתרהא מנהמן כקל יונים מטרפן על לביהון :
8 ונינוה כבית כנישת מיא מיומי קדם היא ואנון ערקו קימו קומו ולית דמפני למקם :
9 בזו כספא בזו דהבא ולית סוף לאוצריא ספו מכל מני חמדתא : בזיזא ומתבזזא ופתיח
10 תרעא לסנאה ולב מסי ונקיש רכובין וזיוע בכל חרצין ואפי כלהון אתחפיאו אכרום
11 אוכמין כקדרא : אן מדורי מלכיא ובית מישרי שלטוניא אתר דהוו אזלין מלכיא תמן
12 בניהון שבקין הא כאריא דשרי על צידיה לרוחצן ולית דמניד : מלכיא מיתן חטוף
13 לנשיהון ובזיא לבניהון וממלן אוצריהון חטוף וברניתהון בזא : הא אנא שלח
רוגזי עלך אמר יי צבאות ואדליק באשתא רתיכך וכרכך תקטיל חרבא ואשיצי מארעא
סחורתיך ולא ישתמע עוד קל אזגדך :

ג

1 וי קרתא אשדת דם כולה כדבין בזא מלא לא פסיק קטול : קל נקיש מניא וקל
2 זיוע גלגלין וסוסון מפכין ורתיכין מקפצן :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Ecce super montes *terræ* Israel pedes evangelizantis facientis audire pacẽ: 15 celebra Juda festivitatem tuam, persolve votum tuum, quoniam non addent ultrà ut transeant per te impii, omnes deleti sunt.

CAP. II.

Qui ascendebant ac dispergebantur sup terrã tuam; obsidebant te ob- 1 sidione, erigentes speculas juxta vias tuas: *obfirmati* cervicem, *corroborati* vires vehementer. Etenim restituit Dñs robur ipsi Jacob, celsitudinẽ Israe- 2 li: quoniã expilaverunt eos expilatores, & civitates decoris eorũ destituxerunt. Scuta fortiũ eorum rubea, viri bellũ gerentes induti sunt coccineo: 3 igni faces curruũ eorũ apparatæ sunt ad diẽ ornat⁹ ipsorũ, & magnates exercit⁹ eorũ coruscant vestibus coloratis. In plateis perstrepunt curr⁹, sonit⁹ 4 concussionis armorũ ipsorũ auditur in compitis urbiũ: aspectus eorũ sicut lampades, tanquã fulgura discurrunt. Præficient duces sui exercit⁹, corruent 5 in itinere suo, festinantes subjicient murũ, turres ædificabunt. Pontes fluvi- 6 orum ipsorũ excisi sunt, & rex in palatio suo commot⁹ est. Et regina quæ 7 sedebat assistens in transmigrationib⁹, exiit, & ecce ancillæ ej⁹ abductæ post eam incedunt gementes sicut vox columbarũ perstrepentiũ super corde suo. Cæterùm Ninive instar loci collectionis aquarũ à dieb⁹ antiquis 8 est: & ipsi fugerunt: obsistite, obsistite, sed nemo est qui vultũ vertit ad obsistendũ. Diripite argentũ, diripite aurũ, & non est finis thesauris: consu- 9 mite omnia vasa desiderabilia. Direpta, expilata, & aperta est porta inimico, 10 & cor liquefactũ, & genuũ collisio, & commotio per totos lumbos, omniũ deniq; facies opertæ fuerunt nigredine instar ollæ denigratæ. Ubi sunt habi- 11 tacula regũ, & ædes habitabiles principum, quò loci proficiscebantur reges, ibi filios suos relinquunt, ecce sicut leo qui habitat sup venationẽ suã præfi- 12 denter, nec est qui terreat. Reges adferunt rapinã uxoribus suis, & prædas 13 filiis suis, complentq; thesauros suos rapina, & palatia sua expilatione. Ecce ego immittã furorẽ meũ in te, dixit Dñs exercituũ, & accendã igne curr⁹ tuos, & oppida tua concidet gladi⁹, & delebo de terra negotiationẽ tuam, nec audietur ultrà vox legatorum tuorum.

CAP. III.

VÆ civitati effundenti sanguinẽ, universæ mendaciis prædaq; referta est, 1 non desinit occisio. Sonit⁹ concussionis pinæ, & sonit⁹ commotionis 2 rotarũ, & equorum frementium, curruumq; subsilientium

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ * ܗܐ ܥܠ ܛܘܪܐ ܪ̈ܓܠܘܗܝ ܕܡܣܒܪܢܐ ܘܡܫܡܥܢܐ ܫܠܡܐ. ܥܒܕܝ 1
ܝܗܘܕܐ ܥܐܕܝܟܝ. ܘܫܠܡܝ ܢܕܪܝܟܝ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܡܘܣܦܐ ܬܘܒ ܠܡܥܒܪ ܒܟܝ ܥܘܠܐ. ܡܛܠ
ܕܟܠܗ ܐܒܕ. * ܣܠܩ ܡܕܒܪܢܐ ܩܕܡܝܟܝ. ܢܛܘܪ ܢܛܘܪܬܐ. ܕܘܩ ܐܘܪܚܐ. ܐܚܕ ܚܨܐ. ܘܐܬ 2
ܢܥܫܢ ܚܝܠܗ. * ܡܛܠ ܕܡܦܢܐ ܐܢܐ ܫܘܒܚܗ ܕܝܥܩܘܒ ܐܝܟ ܫܘܒܚܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܡܛܠ ܕܕܫܘ 3
ܐܢܘܢ ܕܫܘ̈ܫܐ. ܘܚܒܠܘ ܫܒ̈ܒܝܗܘܢ. * ܡܓܢ̈ܐ ܕܓܢܒܪ̈ܝܗܘܢ ܡܣܡܩܝܢ. ܘܓܒܪ̈ܐ 4
ܓܢܒܪ̈ܐ ܡܫܬܥܝܢ ܒܡܫܥܠܢ̈ܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܒܡܪ̈ܟܒܬܐ ܒܝܘܡܐ ܕܡܛܝܒܝܢ. ܘܦܪ̈ܫܐ
ܡܬܕܡܪܝܢ. * ܘܒܫܘ̈ܩܐ ܡܫܬܒܗܪܝܢ ܒܡܪ̈ܟܒܬܗܘܢ. ܘܡܫܬܒܗܪܝܢ. ܚܙܘܗܘܢ. ܐܝܟ 5
ܠܡܦ̈ܐܕܐ. ܘܐܝܟ ܒܪ̈ܩܐ ܪܗܛܝܢ. * ܢܬܐܚܕܘܢ ܪ̈ܘܪܒܢܝܗܘܢ. ܘܢܬܬܩܠܘܢ ܒܗܠܟ̈ܬܗܘܢ. 6
ܘܢܣܪܗܒܘܢ ܠܫܘܪܐ. ܘܢܛܝܒܘܢ ܟܫ̈ܡܝܐ. * ܬܪ̈ܥܐ ܕܝܗܘܕܐ ܢܬܦܬܚܘܢ. ܘܗܝܟܠܐ ܢܙܘܥ. 7
* ܘܐܙܝܥܬ ܦܪ̈ܫܝܗ ܘܣܠܩܬ. ܘܐܡܗ̈ܬܗ ܡܢܗܡ̈ܢ ܗܘܝ ܒܠܒ̈ܘܬܗܝܢ. ܐܝܟ ܝܘ̈ܢܐ. 8
* ܘܢܝܢܘܐ ܐܝܟ ܡܥܝܢܐ ܕܡ̈ܝܐ ܗܝ. ܘܒܝܬ ܡ̈ܝܐ ܗܝ. ܘܗܢܘܢ ܥܪܩܝܢ. ܩܘܡܘ ܩܘܡܘ. ܘܠܝܬ 9
ܕܡܬܦܢܐ. * ܒܙܘ ܣܐܡܐ. ܒܙܘ ܕܗܒܐ. ܘܠܝܬ ܣܟܐ ܠܨܒܬܗ. ܣܓܝܐܝܢ ܡܐܢ̈ܝܗ ܓܒ̈ܝܐ 10
ܕܪܓܝܓܝܢ. * ܕܝܫܐ ܘܡܫܬܚܠܦܐ ܘܡܬܦܪܥܐ. ܘܠܒܐ ܡܬܬܒܪ. ܘܒܘܪ̈ܟܐ ܡܫܬܪ̈ܝܢ. ܘܙܘܥܐ ܒܟܠ 11
ܚܨܝܢ. ܘܐܦܝ̈ ܟܠܗܘܢ ܐܝܟ ܐܘܟܡܘܬܐ ܕܩܕܪܐ. * ܐܝܟܐ ܗܘ ܡܥܪܬܗ ܕܐܪܝܐ. ܘܡܪܥܝܬܐ 12
ܕܓܘܪ̈ܝܐ ܕܐܪܝܐ. ܕܐܙܠ ܐܪܝܐ ܠܡܥܠ ܠܬܡܢ. ܘܓܘܪܐ ܕܐܪܝܐ ܘܠܝܬ ܕܡܙܝܥ. * ܐܪܝܐ ܚܛܦ 13
ܣܦܘܩܐ ܠܓܘܪ̈ܘܗܝ. ܘܚܢܩ ܠܠܒܝ̈ܬܗ. ܘܡܠܐ ܚܛܘܦܝܐ ܡܥܪ̈ܬܗ. ܘܡܥܘܢܘܗܝ
ܚܛܘܦܝܐ. * ܗܐ ܐܢܐ ܥܠܝܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܘܩܕ ܒܥܛܢܐ ܪ̈ܟܒܝܟܝ. ܘܓܘ̈ܪܝܟܝ 14
ܬܐܟܘܠ ܚܪܒܐ. ܘܐܘܒܕ ܡܢ ܐܪܥܐ ܚܛܘܦܝܟܝ. ܘܠܐ ܢܫܬܡܥ ܬܘܒ ܥܒ̈ܕܝܟܝ.
* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ * ܘܝ ܠܟܝ ܡܕܝܢܬܐ ܕܕܡ̈ܐ. ܕܟܠܗ ܕܓܠܘܬܐ ܘܡܠܝܐ ܥܘܠܐ. ܘܠܐ ܡܬܪܓܫ 2
ܒܗ ܬܒܪܐ. * ܩܠܐ ܕܢܓܕܐ. ܘܩܠܐ ܕܙܘܥܐ ܕܓܝܓ̈ܠܐ. ܘܣܘܣܝܐ ܕܪܗܛ. ܘܡܪܟܒܬܐ ܕܡܬܕܪܟܐ. 1

CAP. II.

ECce ſuper montes pedes præconis & præ- 1
dicantis pacem: Celebra Juda ſolennitates tu-
as, & perſolve vota tua; quia non eſt poſthac
tibi malū illatur⁹, totus enim periit. Aſcendit 2
rector ante te, excubiarum excubitor, viæ ſpe-
culator, ſuſtentator lumborum, cujus validiſſi-
mum eſt robur. Nam ego reſtituam gloriam 3
Jacobi, ut gloriā Iſraelis: conculcaverunt e-
nim eos conculcatores, & corruperunt propa-
gines eorum. Clypei heroum ipſorum rubent; 4
& viri heroes inter faces ignitas ludunt & in
curribus, quo die inſtruunt ſeſe *ad bellum*; nec-
non equites admirationi ſunt. In plateis glo- 5
riantur de curribus ſuis, ſeſeque jactant: aſpe-
ctus eorum ſimilis eſt lampadibus, & quaſi ful-
gura diſcurrunt. Capientur principes eorum, 6
& *ipſi* in ſuis greſſibus impingent: feſtinabūt
ad murum, & pinnas aptabunt, Portæ Judæ 7
aperientur, & templum concutietur. Nam ex- 8
citavit *illa* equites ſuos, & aſcendit: & ancillæ
ejus canebant in cordibus ſuis tanquam co-
lumbæ. Porrò Ninive ſimilis eſt lacui aquarū, 9
& inter aquas eſt; ſed ipſæ fugiunt. Siſtite,
inclamant, ſiſtite; ſed nemo eſt qui ſe conver-
tit. Diripuerunt argentum, diripuerunt aurū: 10
& quidē infinitus erat ornatus ejus, immenſa
omnia vaſa ejus exquiſita. *Jam* conculcata, 11
dejecta, & perrupta *evaſit*: animus confra-
ctus, luxatio genuum, & tremor omnes lum-
bos occupabit, & omnium vultus reddam ni-
gros ut fuliginem ollæ. Ubinam eſt luſtrum 12
leænæ, & paſcuum catuli leænæ? venit enim
leo illuc ingreſſurus cum catulo leonis, & ne-
mo interturbat. Leo prædatus eſt ſufficientem 13
catulis ſuis eſcā, imò diſcerpſit etiā pro cibis
ſuis lecundis, luſtra ſua & cubile ſuum prædâ
replevit. Ecce me contra te, dicit Dñs poten- 14
tiſſimus; & perdā in fumū turmas tuas, catu-
loſq; tuos conſumet gladius; & perdam è terra
prædā tuā, nec audietur ampliùs rumor faci-
norum tuorum.

CAP. III.

VÆ urbi ſanguinariæ, quæ tota mendaci- 1
um eſt, & plena ſcelere, nec tamen ſenti-
tur in ea contritio. Sonus flagelli, & ſtrepi- 2
tus motûs rotarum, equus anhelans, & currus
ſeſe agitans *deprehendetur*:

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* الفصل الثاني * لان ها اقدام المبشر على الجبال * المخبر بالسلامة * عيد يا يهوذا 1
اعيادك * واوف للرب نذورك من اجل انه لا يعودون ايضا ان ياتوا الى العتيق * قد تكملت
نزعت * صعد النافخ في وجهك * يخلصك من الشدة * ارصد الطريق * امسك الحقو * تشجع 2
بقوة جدا * من اجل ان الرب صرف كبرياء يعقوب مثل كبرياء اسرائيل * من اجل 3
ان النافضين نفضوهم * وافسدوا قضبانهم * اسلحة اقتدارهم من البشر * رجالا اقوياء 4
لاعبين بنار * لجم مراكبهم في يوم تهيئته * الفرسان يقلقون في الطرق * ويخلطون 5
المركبات ويلتبكون في الشوارع * منظرهم مثل مصابيح نار * وكبروق يسرعون * ويذكر 6
عظماوهم ويهربون نهارا * ويضعفون في مسلكهم ويسرعون على الاسوار * ويهيون نواطيرهم *
* ابواب المدن فتحت والممالك سقطت * والقوام كشف * وهي صعدت واماوها قد كن 7 8
كمثل حمامات مترنمات في قلوبهن * ونينوى مثل بركة ماء مياهها * وهم هاربون لم 9
يقفوا * ولم يكن من ينظر * اختطفوا الفضة واختطفوا الذهب * ولم يكن نهاية لزينتها 10
ثقلوا اكثر من جميع اوانيها المشتهاة * انتفاض وهول * وتبديد وانكسار قلب وانحلال 11
ركب * وطلقات على كل حقو * ووجوه الكل سخام قدر * اين هو عرين الاسد * والمرعى الكاين 12
للاشبال * اين مضى الاسد * اين دخل هناك شبل الاسد ولم يكن من يخوف * الاسد اختطف 13
ما يكفي اشباله وخنق لاسوده الذين له * وملا وكره صيدا ومسكنه اختطافا * ها انا عليك 14
يقول الرب الضابط الكل * واحرق بالدخان كثرتك * واسودك ياكلهم السيف * واستاصل
من الارض صيدك * ولا تسمع اعمالك بعد *
* الفصل الثالث * واه يا مدينة الدماء * الكذوبة كلها المملوة ظلما لا يحس صيدك * 1
* صوت الضربات * وصوت زلزلة البكرات * والفرس الراكض * والمركبة التي تصر * 2

CAP. II.

N*Am ecce pedes præconis ſuper* 1
montes ſunt, annuntiantis pacem, ac di-
centis, *Celebra O Juda ſolennitates tu-
as, perſolve Domino vota tua; quia
non ſunt ampliùs in antiquationem ven-
turæ. Jam abſolutum eſt, ablatum eſt.
Aſcendit inſufflans in faciem tuam*, 2
*eripiens te de tribulatione. Explora
viam, tene lumbum, ſume animos ma-
gna cum fortitudine: Quia Dominus* 3
*amovit ſuperbiam Jacobi ut ſuperbiam
Iſraelis. Nam excuſſores excuſſerunt
eos, & corruperunt virgulta eorum;
Arma potentiæ ipſorum ex hominibus*, 4
*viros fortiſſimos igne ludentes; habe-
nas curruum eorum, in die præparati-
onis ſuæ: equites augentur in viis:
Commiſcebunt currus, & implicabun-* 5
*tur in plateis: aſpectus eorum ſimilis
erit facibus ignis, & ſicut fulgura
veloces erunt. Recordabuntur principes* 6
*eorum, & fugient interdiu, & langue-
ſcent in viis ſuis: diſcurrent ſuper mu-
ros, & præparabunt cuſtodes ſuos.
Portæ urbium apertæ ſunt, regna col-* 7
lapſa ſunt, Et ſubſtantia detecta eſt: 8
*Ipſáque aſcendit, & ancillæ ejus præ-
ibant veluti columbæ canentes in cor-
dibus ſuis. Nínives autem aquæ ſunt* 9
*ut piſcina aquæ. Dum ipſi fugerent,
non ſubſiſtebant, nec erat qui reſpi-
ceret. Diripuerunt argentum, & diri-* 10
*puerunt aurum; neque enim erat mo-
dus ornamento ipſius: graviores facti
ſunt omnibus vaſis ejus expetibilibus.
Excuſſio, & formido, diſſipatio, &* 11
*confractio cordis, diſſolutio genuum,
& dolores partûs ſuper omnes lumbos,
vultuſque omnium ceu nigredo ollæ.
Ubi eſt luſtrum leonum, & paſcuum* 12
*quod erat leunculorum? quò abiit leo?
quò ingreſſus eſt catulus leonis, nec
fuit qui deterreret? Leo rapuit, quan-* 13
*tum ſatis erat leunculis ſuis, & ſuf-
focavit leonibus qui ſecum erant, im-
plevitque luſtrum ſuum venatione, &
habitaculum ſuum prædâ. Ecce ego* 14
*contra te, dicit Dominus omnia te-
nens, & comburam fumo multitu-
dinem tuam, & leones tuos vorabit
gladius, & evellam è terra venationem
tuā, nec audientur inpoſterùm opera tua.*

CAP. III.

H*Eu O urbs ſanguinum, tota mendax*, 1
*plena iniquitatis, non contrectabitur vena-
tio, Sonus ictuum, et ſonus motûs rota-* 2
rum, equus currens, auriga gradiens,

multitudinis & ,haſtæ fulguris & ,gladii laminæ & ,aſcendere facientis Equitis
3 פרש מעלה ולהב חרב וברק חנית ורב
impingent ,corporum finis non & ;cadaveris ponderis & ,interfectæ
חלל וכבד פגר ואין קצה לגויה יכשלו
,gratiæ bonæ meretricis fornicationũ multitudinẽ Propter.eorũ corpora in
4 בגויתם׃ מרב זנוני זונה טובת חן
familias & ,ſuis fornicationibus in gentes vendentis ,maleficiorum patronæ
בעלת כשפים המכרת גוים בזנוניה ומשפחות
revelabo & ,exercituũ Dominus dixit ,te ad ego Ecce .ſuis maleficiis in
5 בכשפיה׃ הנני אליך נאם יהוה צבאות וגליתי
,tuã turpitudinem gentibus oſtendam & : tuis faciebus ſuper tuas fimbrias
שוליך על־פניך והראיתי גוים מערך
,abominationes te ſuper faciam projicere Et .tuã ignominiã regnis &
6 וממלכות קלונך׃ והשלכתי עליך שקצים
,te videntes omnes ,erit Et .ſtercus tanquã te ponam & :te faciã vilipendere &
7 ונבלתיך ושמתיך כראי׃ והיה כל־ראיך
unde ,ei condolebit quis ,Nineveh eſt Vaſtata : dicet & ,te à vagabitur
ידוד ממך ואמר שדדה נינוה מי ינוד לה מאין
ſedente ,Amon No à es melior Nunquid ? tibi conſolatores quæram
8 אבקש מנחמים לך׃ התיטבי מנא אמון הישבה
mari à ,mare antemurale cujus : ei undique Aquæ ? flumina inter
ביארים מים סביב לה אשר־חיל ים מים
Put .finis non & ,Ægyptus & ,ejus fortitudo Chus .ejus murus
9 חומתה׃ כוש עצמה ומצרים ואין קצה פוט
, ivit tranſmigrationẽ in ipſa Etiam .tuo auxilio in fuerunt Lubim &
10 ולובים היו בעזרתך׃ גם־היא לגלה הלכה
:platearum omnium capite in ſunt eliſi ejus parvuli etiam ; captivitatẽ in
בשבי גם עלליה ירטשו בראש כל־חוצות
ejus magnates omnes & , ſortem projecerunt ejus inclytos ſuper &
ועל־נכבדיה ידו גורל וכל־גדוליה
: abſcondita eris ,inebriaberis tu Etiam .compedibus in ſunt conſtricti
11 רתקו בזקים׃ גם־את תשכרי תהי נעלמה
ficus tuæ munitiones Omnes .hoſte ab robur quæres tu etiam
12 גם־את תבקשי מעוז מאויב׃ כל־מבצריך תאנים
.comedentis os ſuper cadent & ,fuerint commotæ ſi ,primitivis cum
עם־בכורים אם־ינועו ונפלו על־פי אוכל׃
aperiendo tuis Inimicis .tuo interiori in mulieres tuus populus Ecce
13 הנה עמך נשים בקרבך לאיביך פתוח
Aquas .tuos vectes ignis comedit ,tuæ terræ portæ ſunt apertæ
14 נפתחו שערי ארצך אכלה אש בריחיך׃ מי
,lutum in intra : tuas munitiones fortifica ,tibi hauri munitionis
מצור שאבי לך חזקי מבצריך באי בטיט
te ſuccidet ,ignis te comedet Ibi .laterariam tene ,lutum in calca &
15 ורמסי בחמר החזיקי מלבן׃ שם תאכלך אש תכריתך
.locuſta ut aggravare ,bruchus ut aggravare : bruchus ut te comedet,gladius
חרב תאכלך כילק התכבד כילק התכבדי כארבה׃
,eſt graſſatus bruchus :cœlorum ſtellis præ tuos negotiatores Multiplicâſti
16 הרבית רכליך מכוכבי השמים ילק פשט
,locuſtarũ locuſta ut tui principes & ,locuſta ſicut tui Coronati .avolavit &
17 ויעף׃ מנזריך כארבה וטפסריך כגוב גובי
non &,evagatus & ;eſt ortus Sol ,frigoris die in ſepibus in caſtrametantiũ
החונים בגדרות ביום קרה שמש זרחה ונודד ולא־
. Aſſur rex tui paſtores Dormitaverũt .ipſæ ubi ejus locus cognitus eſt
18 נודע מקומו אים׃ נמו רעיך מלך אשור
non & , montes ſuper tuus populus ſunt diſperſi ,tui illuſtres jacebunt
ישכנו אדיריך נפשו עמך על־ההרים ואין
Omnes .tua plaga eſt infirmata ,tuæ fracturæ reſtrictio Non .congregans
19 מקבץ׃ אין־כהה לשברך נחלה מכתך כל
quem ſuper nam : te ſuper vola plauſerunt ,tuam auditionem audientes
שמעי שמעך תקעו כף עליך כי על־מי
? ſemper tua malitia tranſivit non
לא־עברה רעתך תמיד׃

Verſio VULG. LAT.

3 & equitis aſcendentis: Et micantis gladii, & fulgurantis haſtæ, & multitudinis interfectæ, & gravis ruinæ: nec eſt finis cadaverum, & corruent in corporibꝰ ſuis. 4 Propter multitudinem fornicationum meretricis ſpecioſæ, & gratæ, & habentis maleficia, quæ vendidit gentes in fornicationibus ſuis, & familias in maleficiis ſuis: 5 Ecce ego ad te, dicit Dominꝰ exercituũ, & revelabo pudenda tua in facie tua, & oſtendam Gentibus nuditatem tuam, & regnis ignominiam tuam. 6 Et projiciam ſuper te abominationes, & contumeliis te afficiam, & ponã te in exemplum. 7 Et erit: omnis, qui viderit te, reſiliet à te, & dicet; Vaſtata eſt Ninive: quis commovebit ſuper te caput? unde quæram conſolatorem tibi? 8 Numquid melior es Alexandriâ populorũ, quæ habitat in fluminibus? aquæ in circuitu ejus: cujus divitiæ, mare: aquæ, muri ejus. 9 Æthiopia fortitudo ejus, & Ægyptus, & non eſt finis: Africa & Libyes fuerunt in auxilio tuo. 10 Sed & ipſa in tranſmigrationem ducta eſt in captivitatem: parvuli ejꝰ eliſi ſunt in capite omniũ viarũ, & ſuper inclytos ejus miſerunt ſortẽ, & omnes optimates ejꝰ confixi ſunt in compedibꝰ. 11 Et tu ergò inebriaberis, & eris deſpecta: & tu quæres auxiliũ ab inimico. 12 Omnes munitiones tuæ ſicut ficꝰ cũ groſſis ſuis: ſi concuſſæ fuerint, cadent in os comedentis. 13 Ecce populus tuus mulieres in medio tuî: inimicis tuis adapertione pandentur portæ terræ tuæ, devorabit ignis vectes tuos. 14 Aquã propter obſidionẽ hauri tibi: exſtrue munitiones tuas: intra in lutũ, & calca, ſubigens tene laterẽ. 15 Ibi comedet te ignis: peribis gladio, devorabit te ut bruchꝰ: cõgregare ut bruchꝰ: multiplicare ut locuſta. 16 Plures feciſti negotiationes tuas, quàm ſtellæ ſint cœli: bruchus expanſus eſt, & avolavit. 17 Cuſtodes tui quaſi locuſtæ: & parvuli tui quaſi locuſtæ locuſtarũ, quæ conſidunt in ſepibus in die frigoris: Sol ortus eſt, & avolaverunt, & non eſt cognitus locus earum ubi fuerint. 18 Dormitaverunt paſtores tui, rex Aſſur: ſepelientur principes tui: latitavit populꝰ tuꝰ in montibꝰ, & nõ eſt qui congreget. 19 Non eſt obſcura cõtritio tua, peſſima eſt plaga tua: omnes qui audierunt auditionem tuam, compreſſerunt manum ſuper te: quia ſuper quem non tranſiit malitia tua ſemper?

Verſio GRÆCA LXX. Interp. Cum Tranſlatione LATINA.

3 καὶ ἱππέως ἀναβαίνοντος, Καὶ στιλβούσης ῥομφαίας, καὶ ἐξαστραπτόντων ὅπλων, καὶ πλήθους τραυματιῶν, καὶ βαρείας πτώσεως, καὶ οὐκ ἦν πέρας τοῖς ἔθνεσιν αὐτῆς· καὶ ἀσθενήσουσιν ἐν τοῖς σώμασιν αὐτῶν 4 Ἀπὸ πλήθους πορνείας. πόρνη καλὴ, καὶ (β) ἐπίχαρις ἡγουμένη φαρμάκων, ἡ πωλοῦσα ἔθνη ἐν τῇ πορνείᾳ αὐτῆς, καὶ (γ) λαοὺς ἐν τοῖς φαρμάκοις αὐτῆς. 5 Ἰδοὺ ἐγὼ ἐπὶ σὲ, λέγει κύριος ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ, καὶ ἀποκαλύψω τὰ ὀπίσω σου ἐπὶ (δ) τὸ πρόσωπόν σου, καὶ δείξω ἔθνεσι τὴν (ε) αἰσχύνην σου, καὶ βασιλείαις τὴν ἀτιμίαν σου. 6 Καὶ (ζ) ἀπορρίψω ἐπὶ σὲ βδελυγμὸν κατὰ τὰς ἀκαθαρσίας σου, καὶ θήσομαί σε εἰς παράδειγμα. 7 Καὶ ἔσται, πᾶς ὁ ὁρῶν σε καταβήσεται ἀπὸ σοῦ, καὶ ἐρεῖ, Δειλαία Νινευή· τίς στενάξει (η) αὐτήν; πόθεν ζητήσω (θ) παράκλησιν αὐτῇ; 8 Ἑτοιμάσαι μερίδα, ἁρμόσαι χορδὴν, ἑτοιμάσαι μερίδα Ἀμμών· ἡ κατοικοῦσα ἐν ποταμοῖς, ὕδωρ κύκλῳ αὐτῆς, ἧς ἡ ἀρχὴ (ι) θάλασσα, καὶ ὕδωρ τὰ τείχη αὐτῆς, 9 Καὶ Αἰθιοπία (κ) ἰσχὺς αὐτῆς, καὶ Αἴγυπτος· καὶ οὐκ (λ) ἔστι πέρας τῆς φυγῆς (μ)· καὶ Λίβυες ἐγένοντο βοηθοὶ αὐτῆς. 10 Καὶ αὐτὴ εἰς μετοικεσίαν πορεύσεται αἰχμάλωτος, καὶ τὰ νήπια αὐτῆς ἐδαφιοῦσιν ἐπ᾽ ἀρχὰς πασῶν τῶν ὁδῶν αὐτῆς, καὶ ἐπὶ πάντα τὰ ἔνδοξα αὐτῆς βαλοῦσι κλήρους· καὶ πάντες οἱ μεγιστᾶνες αὐτῆς δεθήσονται χειροπέδαις. 11 (ν) Καὶ σὺ μεθυσθήσῃ, καὶ ἔσῃ ὑπερεωραμένη, καὶ σὺ ζητήσεις σεαυτῇ στάσιν ἐξ ἐχθρῶν. 12 Πάντα τὰ ὀχυρώματά σου συκαῖ σκοποὺς ἔχουσαι, ἐὰν σαλευθῶσι, (ξ) πεσοῦνται εἰς στόμα ἔσθοντος. 13 Ἰδοὺ ὁ λαός σου ὡς γυναῖκες ἐν σοὶ, τοῖς ἐχθροῖς σου ἀνοιγόμεναι ἀνοιχθήσονται πύλαι τῆς γῆς σου, (ο) καταφάγεται πῦρ τοὺς μοχλούς σου. 14 Ὕδωρ περιοχῆς ἐπίσπασαι σεαυτῇ, (*) καὶ κατακράτησον τῶν ὀχυρωμάτων σου· ἔμβηθι εἰς πηλὸν, καὶ (π) συμπατήθητι ἐν ἀχύροις, κατακράτησον ὑπὲρ πλίνθον. 15 Ἐκεῖ καταφάγεταί σε πῦρ, (ρ) ἐξολοθρεύσει σε ῥομφαία, (σ) καταφάγεταί σε ὡς ἀκρὶς, καὶ βαρυνθήσῃ ὡς βροῦχος. 16 Ἐπλήθυνας τὰς ἐμπορίας σου ὑπὲρ τὰ ἄστρα τοῦ οὐρανοῦ· βροῦχος ὥρμησε, καὶ ἐξεπετάσθη. 17 Ἐξήλατο ὡς (¨) ἀττέλεβος ὁ σύμμικτός σου, ὡς ἀκρὶς ἐπιβεβηκυῖα ἐπὶ φραγμὸν ἐν (τ) ἡμέρᾳ πάγους· ὁ ἥλιος ἀνέτειλε, καὶ ἀφήλατο, καὶ οὐκ ἔγνω τὸν τόπον αὐτῆς· (υ) οὐαὶ αὐτοῖς. 18 Ἐνύσταξαν οἱ ποιμένες σου, βασιλεὺς Ἀσσύριος (φ) ἐκοίμισε τοὺς δυνάστας σου, ἀπῆρεν ὁ λαός σου ἐπὶ τὰ ὄρη, καὶ οὐκ ἦν ὁ ἐκδεχόμενος. 19 Οὐκ ἔστιν ἴασις τῇ συντριβῇ σου, ἐφλέγμανεν ἡ πληγή σου, πάντες οἱ (χ) ἀκούοντες τὴν ἀγγελίαν σου, κροτήσουσι χεῖρας ἐπὶ σέ· διότι ἐπὶ τίνα οὐκ ἐπῆλθεν ἡ κακία σου διαπαντός; ΝΑΟΥ'Μ Ζ'.

& equitis aſcendentis, Et ſplendentis gladii, & fulgentium armorum, & multitudinis vulneratorum, & gravis ruinæ: & non (b) fuit finis gentibus ejus: et infirmabuntur in corporibus (c) ſuis A multitudine fornicationis. 4 Meretrix ſpecioſa, & grata, (d) dux maleficiorũ, quæ vendit gentes in fornicatione ſua, & (e) populos in maleficiis ſuis. 5 Ecce ego ad te, dicit Dominus Deus omnipotens: & diſcooperiam poſteriora tua ſuper faciem tuam; & oſtendam gentibus confuſionem tuam, et regnis ignominiã tuã: 6 Et projiciã ſuper te abominationẽ ſecundũ immunditias tuas: et ponã te in exemplũ. 7 Et erit, (f) omnis, qui viderit te, deſcendet à te, et dicet; Miſera Nineve, quis gemet eam? unde quærã conſolationem illi? 8 (g) Parare partẽ, aptare chordã, parare partem Ammon: quæ habitas in fluminibꝰ: aqua in circuitu ejus: cujus principiũ mare eſt, & aquæ muri ejus: 9 Et Æthiopia fortitudo ejus, & Ægyptus, & (h) non ſtetit finis fugæ. (i) Et Lybes facti ſunt auxiliatores illius: 10 Et ipſa in tranſmigrationẽ ibit captiva: & parvulos ejus allident (k) in principiis omniũ viarũ ejus: et ſuper omnia inclyta ejus mittent ſortes. Et univerſi optimates ejus alligabuntur compedibus. 11 Et tu inebriaberis, et eris deſpecta, et tu quæres tibi (l) ſtationem ab inimicis. 12 Omnes munitiones tuæ, ficus, quæ (m) ſcopos habent: ſi commotæ fuerint, cadent in os comedentis. 13 Ecce populus tuus, quaſi mulieres in te. Inimicis tuis aperiendo, aperientur portæ terræ tuæ, comedet ignis vectes tuos. 14 Aquã obſidionis hauri tibi, & obtine munitiones tuas: ingredere in lutũ, et conculcare in paleis, obtine ſuper laterẽ. 15 Ibi comedet te ignis, diſperdet te gladius, comedet te, quaſi locuſta, et aggravaberis, quaſi (n) bruchus. 16 Multiplicâſti negotiationes tuas ſuper ſtellas cœli: bruchus irruit, & evolavit. 17 Exiliit, quaſi attelabꝰ, commiſtus tuus, ſicut locuſta, quæ aſcendit ſuper ſepem in die gelûs: Sol ortus eſt; & exilivit, et non cognovit locũ ſuum. Væ ipſis. 18 Dormitaverunt paſtores tui; rex Aſſyrius conſopivit fortes tuos: abiit populꝰ tuus ſuper montes, et non erat, (o) qui ſuſciperet. 19 Non eſt ſanatio contritioni tuæ: intumuit plaga tua: omnes, qui audierint nuntium tuum, plaudent manibus ſuper te. Quia ſuper quem non ſupervenit malitia tua ſemper?

MS. A. (β) ἐπιχαρὴς (γ) φυλὰς ἐν (δ) πρόσωπόν (ε) ἀσχημοσύνην (ζ) ἐπιρίψω (η) ἀπὸ σοῦ; (θ) παράκλησις (ι) αὐτῆς θάλασσα, (κ) ἡ ἰσχὺς (λ) ἔσται (μ) σου· (ν) Καίγε (ξ) καὶ πεσοῦνται (ο) καὶ καταφάγεται (*) κατακράτησον (π) Συμπάτει (ρ) ἐξολεθρεύσει (σ) καὶ καταφάγεται (¨) ἀττέλαβος (τ) ἡμέραις πάγου. (υ) οὐαὶ οὐαὶ (φ) *ἐκοίμησεν (χ) ἀκούσαντες χεῖρα

ΝΑΟΥ'Μ Ζ'.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 פרש מסיק ולהוב וצלהוב סיפין וצחצוח מורנין וסגי קטילין והמון פגרין ולית סוף
לקטילא יתקלון בקטיליהון׃ 4 מסגיאות אתרגושת קרתא דהיא כטעיתא נפקת ברא
שפירת רוו ידעא חרשין דמסרא עממיא בטעותהא ומלכותא בחרשהא׃ 5 הא אנא
שלח רוגזי עלך אמר יי צבאות ואגלי בהתת חובך על אפך ואחוי עממיא בהתתיך
6 ומלכותא קלניך׃ ואירמי עלך שקוצין ואנבלניך ואשוניך מבערא לעיני כל חזך׃ 7 ויהי
כל די יחזניך יתרחק מניך ויימר אתבזיזת נינוה מן ידוי עלך איכא אשכח מנחמין לך׃
8 הא את טבא מאלכסנדריא רבתא דיתבא בין נהרותא מיא סחור סחור לה דשורהא
9 ימא מימא שורהא׃ כוש סומכתהא ומצרים ולית סוף פוטאי ולובאי הוו בסעדיך׃ 10 אף
היא בגלותא תהך בשביא אף עולימהא יתרטשון בריש כל שוקיא ועל יקירהא רמו עדבין
11 וכל רברבהא יתקרקון בשלשלן׃ אף את דמיא לרויא תהי מטלטלא אף את תבעין
12 סעיד מבעל דבבא׃ כל כרכך דמן לתינין בכירן דאם ירעדונונין יתרון וישתארון בהון
13 צמוקין דכשרין למיכל׃ הא עמך חלשין כנשיא בגויך לבעלי דבביך אתפתחו תרעי
14 ארעיך אכלת אשתא תוקפיך׃ מיא בצירא כנושי לגויך תקפי כרכך אסגא מרווא
15 ושעבידי בטינא אתקיפי בנינך׃ לתמן יתון עלך עממיא דתקיפין כאשתא ישיצונך
קטולי חרבא יתכנשון עלך משרית עממין דסגיאין כזחלא יחפונך כקמצא יחסלונך
16 כגובא׃ אסגית תגריך מכוכבי שמיא הא כזחלא דשלח ופרח׃ 17 הא מטכסך מצלהבין כגובא
וטפסריך כזחיל גובאי די שרן בכתליא ביום קריר דכד שמשא דנחא עליהון מתבדרין
18 ולא אתידע אתרהון לאן ערקין׃ אתברו גיברך מלכא דאתור גלו עם משריתך אתבדרו
19 עמך על טוריא ולית דמכניש׃ לית דכאב ליה על תבריך ממרעא מחתך כל די שמעו
שמעתך טפחו ידיהון עלך חדיאו ארי על מן לא עדת מחת בישתיך תדירא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

3 Eques aſcendit, & flamma acieſq; gladiorũ, & polities haſtarũ, & abũdantia occiſorũ, et multitudo cadaverũ, nec eſt finis trucidatis, impingent in trucidatos ſuos. 4 Præ multitudine ſtrepitꝰ civitatis quæ eſt ſicut meretrix & ſcortũ, eleganti venuſtate præditũ, ſciẽs magicas artes, ut prodat gentes idolis ſuis, et regna veneficiis ſuis. 5 Ecce ego immittã furorẽ meũ ſup te, inquit Dñs exercituũ, ac patefaciã confuſionẽ ſceleris tui in vultũ tuũ, & oſtendã gentibꝰ pudendũ dedecꝰ tuũ, et regnis ignominias tuas. 6 Et projiciã in te abominationes, teq; reddã execrandã, & ponã te fœdiſſimã oculis omniũ videntiũ te. 7 Et futurũ eſt ut quiſquis te conſpexerit, procul recedat à te, dicatque; Expilata eſt Ninive, quis condolebit tibi, ubi inveniã tibi conſolatores? 8 An es melior quã Alexandria magna, quæ ſedet inter fluvios aquarũ undiquaq; circũdata, cujꝰ murꝰ eſt mare, *a mari* murꝰ ejꝰ? 9 Æthiopia præſidiũ ejꝰ ac Ægyptꝰ, nec eſt finis: Libyi Lidiiq; tibi fuerunt auxilio. 10 Sed & ipſa in exilio ambulabit in captivitate, etiã adoleſcentes ejꝰ allidentur in capite omniũ platearũ, & ſup inclytos ejꝰ conjicientur ſortes, & omnes ejꝰ principes comminuentur catenis. 11 Tu quoq; temulento ſimilis eris, peſſundata; tu etiã auxiliũ flagitabis ab inimico. 12 Omnes arces tuæ erunt ſimiles ficubus temporaneis, quæ ſi excutiantur defluent, & remanebunt in eis uvæ paſſæ, quæ aptæ ſũt ad comedendũ. 13 Ecce populꝰ tuꝰ imbecillis eſt inſtar mulierũ in medio tui; hoſtibꝰ tuis apertæ fuerunt portæ terræ tuæ, devoravit ignis robur tuum. 14 Aquas munitionis congrega intra te, obfirma tuas arces, multiplica cæmenta & ſubige lutum, fortifica ædificia tua. 15 Ibi venient ſup te gentes quæ ſunt validæ ſicut ignis, delebunt te interfectores gladio, congregabuntur adverſũ te exercitꝰ gentiũ quæ multæ ſunt ut reptilia, operient te ſicut bruchus, vaſtabunt te tanquam locuſta. 16 Multiplicâſti mercatores tuos præ ſtellis cœlorũ, en ſicut locuſta quæ ſeſe diffundit & volat. 17 Ecce laminæ tuæ flammicant ut bruchus, & duces tui ſicut vermes locuſtarum quæ habitant in parietibus in die frigoris, quæ ſimul atq; ſol exortus eſt ſup ipſas, diſperguntur, neq; innoteſcit locꝰ earũ quò fugiunt. 18 Fracti ſunt fortes tui rex Aſſyriæ, exulant populꝰ tuorũ exercituũ: diſperſi ſũt populi tui ſup montes, nec eſt qui congreget. 19 Non eſt qui doleat ſibi de fractione tua, infirmatum eſt vulnus tuum: quot audierunt rumorem tui comploſerunt manibus ſuis ſuper te lætantes: ad quem enim non penetravit plaga nequitiæ tuæ jugiter?

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܦܪ̈ܫܐ ܪ̈ܕܝܢ. ܘܣܝܦܐ ܕܡܒܪܩ. ܘܢܝܙܟܐ ܕܡܙܠܓ. ܘܣܘܓܐܐ ܕܩܛܝ̈ܠܐ ܘܬܘܩܠܐ ܕܦܓܪ̈ܐ. 3
ܘܠܝܬ ܣܟܐ ܠܦܓܪ̈ܐ. ܢܬܬܩܠܘܢ ܒܦܓܪ̈ܝܗܘܢ. * ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܙܢܝܘܬܗ ܕܙܢܝܬܐ. 4
ܫܦܝܪܬ ܚܙܘܐ ܘܡܪܬ ܚܪ̈ܫܐ. ܕܙܒܢܬ ܥܡ̈ܡܐ ܒܙܢܝܘܬܗ. ܘܫܪ̈ܒܬܐ ܒܚܪ̈ܫܝܗ. * ܗܐ ܐܢܐ 5
ܥܠܝܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܓܠܐ ܫܘ̈ܠܝܟܝ ܥܠ ܐ̈ܦܝܟܝ. ܘܐܚܘܐ ܠܥܡ̈ܡܐ ܥܘܪܛܠܝܟܝ.
ܠܡܠܟܘ̈ܬܐ ܨܥܪܟܝ. * ܘܐܪܡܐ ܥܠܝܟܝ ܛܢܦܘܬܐ. ܘܐܨܥܪܟܝ. ܘܐܣܝܡܟܝ ܚܙܘܐ. 6
* ܘܢܗܘܐ ܟܠ ܕܚܙܐ ܠܟܝ ܢܢܕ ܡܢܟܝ. ܘܢܐܡܪ. ܐܬܒܙܙܬ ܢܝܢܘܐ. ܡܢܘ ܢܬܬܥܝܩ ܠܟܝ. ܘܐܝܟܐ 7
ܐܒܥܐ ܠܟܝ ܡܒܝܐܢܐ. * ܕܠܡܐ ܛܒܐ ܐܢܬܝ ܡܢ ܝܘܢ ܕܐܡܘܢ: ܕܝܬܒܐ ܒܝܢܬ ܢܗܪ̈ܘܬܐ. ܘܡܝ̈ܐ 8
ܚܕܪܝܢ ܠܗ. ܕܥܘܫܢܗ ܝܡܐ. ܘܫܘܪܐ ܡܝ̈ܐ ܗܘܘ. * ܟܘܫ ܘܡܨܪܝܢ ܚܝܠܗ. ܘܠܝܬ ܠܗ ܣܟ. 9
ܦܘܛ ܘܠܘܒܝ̈ܐ ܗܘܘ ܒܥܘܕܪܢܗ. * ܐܦ ܗܝ ܒܫܒܝܬܐ ܐܙܠܬ. ܘܥܘ̈ܠܠܝܗ ܐܬܪܛܫܘ ܒܪܫ 10
ܟܠܗܘܢ ܫܘ̈ܩܝܗ. ܘܥܠ ܝܩܝܪ̈ܝܗ ܐܪܡܝܘ ܦܣ̈ܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܪ̈ܘܪܒܢܝܗ ܐܬܐܣܪܘ ܒܫܝ̈ܫܠܬܐ.
* ܐܦ ܐܢܬܝ ܬܪܘܝܢ. ܘܬܗܘܝܢ ܫܝܛܐ. ܐܦ ܐܢܬܝ ܬܒܥܝܢ ܥܘܕܪܢܐ ܡܢ ܒܥܠܕܒܒ̈ܝܟܝ. 11
* ܟܠܗܘܢ ܚܘ̈ܣܢܝܟܝ. ܐܝܟ ܬܐ̈ܢܐ ܐܝܬܝܗܘܢ ܒܟܘܪ̈ܐ. ܕܡܐ ܕܢܬܬܙܝܥܘܢ ܢܦܠܝܢ ܒܦܘܡܐ ܕܐܟܘܠܐ. 12
* ܘܥܡܟܝ ܐܝܟ ܢܫ̈ܐ ܐܝܬܝܗܘܢ ܒܓܘܟܝ. ܠܒܥܠܕܒܒ̈ܝܟܝ. 13
ܢܬܦܬܚܘܢ ܬܪ̈ܥܝܟܝ. ܘܬܐܟܘܠ ܢܘܪܐ ܡܘ̈ܫܚܝܟܝ. * ܡܝ̈ܐ ܕܨܘܪܐ ܡܠܝ ܠܟܝ. ܘܚܣܢܝ ܩܘܪ̈ܝܟܝ. ܥܘܠܝ 14
ܒܛܝܢܐ. ܘܕܘܫܝ ܒܛܝܢܐ. ܘܐܚܕܝ ܡܠܒܢܐ. * ܬܡܢ ܬܐܟܠܟܝ ܢܘܪܐ. ܘܬܚܪܒܟܝ ܚܪܒܐ. 15
ܘܬܐܟܠܟܝ ܐܝܟ ܩܡܨܐ. ܐܣܓܝܬܝ ܐܝܟ ܩܡܨܐ. ܐܬܝܩܪܬܝ ܐܝܟ ܩܡܨܐ. * ܘܐܣܓܝܬܝ 16
ܬܓܪ̈ܝܟܝ ܝܬܝܪ ܡܢ ܟܘܟ̈ܒܝ ܫܡܝܐ. ܩܡܨܐ ܦܫܛ ܘܦܪܚ. * ܢܙܝܪ̈ܝܟܝ ܐܝܟ ܩܡܨܐ. 17
ܘܦܠܚ̈ܝܟܝ ܐܝܟ ܩܡܨܐ ܕܫܪܐ ܒܣܝܓܐ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܝܪܐ. ܘܡܐ ܕܕܢܚ ܫܡܫܐ ܢܦܩܝܢ. ܘܠܐ
ܡܬܝܕܥ ܐܬܪܗܘܢ. * ܕܡܟܘ ܪ̈ܚܡܝܟܝ ܡܠܟܐ ܕܐܬܘܪ. ܘܫܪܘ ܩܪ̈ܝܒܝܟܝ. ܐܬܒܕܪ ܥܡܟܝ ܥܠ 18
ܛܘܪ̈ܐ. ܘܠܝܬ ܕܟܢܫ ܠܗܘܢ. * ܘܠܝܬ ܕܚܐܫ ܥܠ ܬܒܪܟܝ. ܡܪܝܥܐ ܡܚܘܬܟܝ. ܟܠ 19
ܕܫܡܥܘ ܫܡܥܟܝ ܢܩܫܘܢ ܟܦ̈ܐ ܥܠܝܟܝ. ܡܛܠ ܕܥܠ ܡܢܘ ܠܐ ܥܒܪܬ ܒܝܫܘܬܟܝ ܐܡܝܢܐܝܬ. * ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܢܚܘܡ *

Eques *equum* agens, gladius coruſcans, haſta 3
fulgurans, multitudo interfectorum, vis ingens
cadaverum, imò infinita cadavera, *adeo ut* im-
pingant in cadaveribus eorum. Propter multi- 4
tudinē ſcortationis meretricis aſpectu formo-
ſæ, & magorum dominæ, quæ nutrit gentes
ſcortatione ſuâ, & nationes magiis ſuis. Ecce 5
me contra te, dicit Dn̄s potentiſſim⁹; & rejiciā
limbos tuos ſuper faciē tuā, & oſtendā gentib⁹
pudenda tua, & turpitudinē tuā regnis. Proji- 6
ciā ſuper te ſordes, & infamē te reddā, propo-
namq; te ſpectaculum: Ut quiſquis te viderit, 7
abominetur te, dicatque, Direpta eſt Ninive.
Quis condoleat tibi? aut unde quærerem tibi
conſolatorē? An melior es quàm Javan Ammo- 8
nitarum, quæ ſita inter amnes, quam circunda-
bant aquæ, cujus fortitudo erat mare, & murus
erant aquæ? Cujus robur Æthiopia & Ægypt⁹, 9
quæ immenſa erat, cui præſidio erant Putæi &
Lybies? Etiam hæc in captivitatem abiit, par- 10
vuli ejus illiſi fuerunt in capite omnium vico-
rum ej⁹, et ſup honeſtiſſimos ej⁹ jecerunt ſortes,
omneſq; magnates ej⁹ catenis vincti fuerunt. Tu 11
quoque infœlix eris & abjecta, tu quoq; præſi-
diū quæres ab hoſtib⁹ tuis. Omnes munitiones 12
tuæ ſimiles erunt ficub⁹ præcocibus, quæ cùm
matureſcunt, decidunt in os comedentis: Et 13
populus tuus ut fœminæ erunt in medio tui:
aperientur portæ tuæ inimicis tuis, & conſu-
met ignis vectes tuos. Aquas in obſidione hauri 14
tibi, & muni urbes tuas: ingredere lutum, cal-
ca argillam, & auge promiſſum. Ibi conſumet 15
te ignis, & extinguet te gladi⁹, devorabitq; te
ut bruchus: creviſti enim ut bruchus, numero-
ſa facta es ut locuſta, Et multiplicâſti mercato- 16
res tuos pluſquam ſtellas cœli. Bruchus emiſit
alas & volavit. Nazaræi tui ſunt ſicut locuſtæ, 17
& bellantes pro te ſicut locuſta ſepi hærens die
frigido, quæ orto ſole abſcedit, & ignoratur lo-
cus ej⁹. Dormiunt amici tui reges Aſſyriæ, de- 18
ſident propinqui tui, diſſipat⁹ eſt popul⁹ tu⁹ ſu-
per montes, nec eſt qui congreget eos: Neque 19
tamen eſt qui doleat ob fractionē tuam. Acer-
bum eſt vulnus tuum, quicunq; audierint famā
tuam, plaudent ſuper te manibus: quia ad
omnes ſemper homines pervaſit malitiā tua.

Prophetiæ Nahumi finis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* والفارس الصاعد * والسيف اللامع * والاسلحة المبرقة * وكثرة الجرحا * وثقل السقطة * وليس 3
كان انتهآء لأممها * ويضعفون في اجسادهم * من كثرة الزناء * زانية حسنة وفرحة * معلّمة السحر 4
التي اباعت الامم بزناها * والقبايل بسحرها * ها انا عليك يقول الرب الاله الضابط الكل * واكشف 5
ماوراءك علي وجهك * واظهر للامم فضيحتك * وللممالك اهانتك * واطرح عليك رذالا كحسب 6
نجاساتك * واصيّرك شهرة * ويكون كل من يراك يزول عنك * ويقول يا نينوي الشقية من يتنهّد 7
عليها * من اين اطلب سلوة لها * هيّي جزوا * اوصلي وترا * هيّي نصيبا * يا امون الساكنة في 8
الانهار * الماء حولها * مبتداها البحر * الماء اسوارها * والحبشة قوتها ومصر * وليس نهاية لهروبك * 9
والنوبة كانوا معينوها * وهي في الجلوة تمضي مسبية * ويصرعون اطفالها بالارض على بدء 10
جميع طرقها * وعلى كل حدودها يضعون قرعا * وجميع عظمائها يربطون بالكتافات * وانت 11
تسكرين وتكونين تحقرين * وليس تطلبين لك رفدا من الاعداء * جميع حصونك اشجار 12
تين لهن راصدون * ان زعزعوا فيسقطون في فم الآكل * ها شعبك مثل النساء فيك * 13
لاعدائك مفتوحات تفتح ابواب ارضك * وتاكل النار متاريسك * ماء زمام استقي لذاتك * 14
وامسكي حصونك * انزلي الى الطين * ودوسي في التبن * وامسكي اللبن * هناك تاكلك النار 15
يستاصلك السيف * وياكلك الجراد * وتثقلي مثل الجندب * كثرت تجاراتك اكثر من 16
نجوم السماء * الجندب وثب وطار * وثب مثل جرادة سوداء * خلطك مثل جرادة راكبة على 17
سياج في ايام البرد الشمس اشرقت * رحلت ولم يعرف موضعها * ويل لهم * رعاتك نعسوا 18
ملك الموصل رقد جبابرتك * طلع شعبك على الجبال * ولم يكن من يقبل * وليس شفا 19
لانكسارك * ضربتك احدثت * جميع الذين يسمعون بخبرك يصفقون بالايدي عليك * من
اجل انه على من لم ياتِ شرك كل حين * تمت نبوة ناحوم النبي *

Eques aſcendens, gladi⁹ coruſcans, arma 3
fulgentia, multitudo vulneratorū, & pon-
dus ruinæ: infinitæ enim erant gentes ejus:
& infirmabuntur in corporibus ſuis, Pro- 4
pter multitudinem fornicationis. Meretrix
formoſa & lætabunda, dux magorum,
quæ venum expoſuit gentes fornicatione
ſuâ, & nationes magiis ſuis: Ecce me 5
contra te, dicit Dominus Deus omnipotens,
& retegam poſteriora tua ſuper faciem
tuam, oſtendamque gentibus turpitudinem
tuam, & regnis ignominiam tuam: Pro- 6
jiciam ſuper te abominationem pro ratione
obſcœnitatum tuarum, proponamque te
ſpecimen. Et erit ut quicunq; te viderit, di- 7
labatur à te, dicatq; O Ninive miſerrima,
quis propter te ſuſpiret? unde quæram ti-
bi conſolationem? Præpara partem, apta 8
chordam, præpara portionem O Ammon
quæ habitas in fluminibus, quā aquæ cir-
cunſtant, cujus principium eſt mare, aquæ
muri; Cujus fortitudo Æthiopia eſt & Æ- 9
gyptus: nullus erit finis fugæ tuæ. Etiamſi
Nubæ fuerint adjutores ejus, Tamen ipſa 10
quoque in transmigrationem ibit captiva,
infantes ejus ad terram allident in princi-
pio omnium viarum ejus, ſuper omnes ter-
minos ejus ponent ſortes, & omnes prin-
cipes ejus loris vincientur. Tu quoq; ine- 11
briaberis, & eris deſpecta, neque petes tibi
auxilium ab hoſtibus. Omnes arces tuæ 12
arbores ficuum obſervatores habentium:
ſi quatiantur, incidunt in os comedentis.
Ecce populus tuus ut mulieres in te ſunt: 13
inimicis tuis omninò aperientur portæ ter-
ræ tuæ, & devorabit ignis vectes tuos.
Aquam obſidionis hauri tibi, & tene 14
munitiones tuas: deſcende in lutum,
paleas conculca, & tene lateres. Ibi te 15
devorabit ignis, excindet te gladius, com-
edetque locuſta, & gravis eris ut bru-
chus. Multiplicatæ ſunt merces tuæ 16
pluſquam ſtellæ cœli: bruchus exiliit &
volavit, exiluit ut locuſta nigra. Miſcel- 17
lanea turba tua ſimilis eſt locuſtæ inſi-
denti ſepi in diebus frigoris, quæ orto ſole
commigrat, nec agnoſcitur locus ejus: Væ
ipſis. Paſtores tui ſomno correpti ſunt, 18
rex Aſſyriæ conſopivit heroes tuos, con-
ſcendit populus tuus montes, nec fuit qui
reciperet. Non eſt medela fracturæ tuæ, 19
plaga tua exacuta eſt: omnes qui au-
diunt famam tuam, plaudent ſuper te
manibus; quia ſuper quem non venit
malitia tua ſemper?

Prophetiæ Prophetæ
Nahumi finis.

חבקוק : א

CAP. I. א

Domine ego Usquequo .propheta Chabbacuc vidit *quod* Onus
1 המשא אשר חזה חבקוק הנביא: עד־אנה יהוה 2
non & ,*rapinam* te ad vociferabor ? exaudies non & ,*clamavi*
שועתי ולא תשמע אזעק אליך חמס ולא
,*facies* aspicere *miseriam* & ,iniquitatem mihi *ostendes* quid Ut ? salvabis
3 תושיע: למה תראני און ועמל תביט
contentionem & litem fuit & ? me contra iniquitatem & ,vastitatem &
ושד וחמס לנגדי ויהי ריב ומדון
sæculum in egredietur non & , lex est debilitata Propterea .*tulit*
4 ישא: על־כן תפוג תורה ולא־יצא לנצח
egredietur ideo , justum coronæ instar *circundans* in pius quia ,judicium
משפט כי רשע מכתיר את־הצדיק על־כן יצא
: *estote attoniti* & ,aspicite & ,gentibus in Videte .perversum judicium
5 משפט מעקל: ראו בגוים והביטו והתמהו
cùm credetis non ,vestris diebus in *operans* opus quia : obstupescite
תמהו כי־פעל פעל בימיכם לא תאמינו כי
,*amaram* gentem Chasdim *suscitans* ego ecce Quia .narrabitur
6 יספר: כי־הנני מקים את־הכשדים הגוי המר
habitacula *possidendum ad* , terræ *latitudine* in ambulantem ,*properatam &*
והנמהר ההולך למרחבי ארץ לרשת משכנות
,ejus judicium ipsa se ex : *ipsa* terribilis & Horribilis .*sibi* non
7 לא־לו: אים ונורא הוא ממנו משפטו
, ejus equi pardis *præ* erunt *leves* Et .egredietur ejus exaltatio &
8 ושאתו יצא: וקלו מנמרים סוסיו
ejus equites & : ejus equites *patebunt latè &* ,*vesperæ* lupis *præ* erunt *acuti* &
וחדו מואבי ערב ופשו פרשיו ופרשיו
.comedendum ad festinans aquila tanquam volabunt ,venient longè de
מרחוק יבאו יעפו כנשר חש לאכול:
; Orientem ad *eorum* facierum *oppositio* : veniet rapinam *ad* ipsa Tota
9 כלה לחמס יבוא מגמת פניהם קדימה
regibus *in* ipse Et .captivitatem arenam tanquam congregabit &
10 ויאסף כחול שבי: והוא במלכים
,irridebit *munitionem* omnem ipse : ei risus *gubernatores &* ,*erit illusor*
יתקלס ורוזנים משחק לו הוא לכל־מבצר ישחק
,spiritus *pertransiit* Tunc .eam capiet & , pulverem *coacervabit* &
11 ויצבר עפר וילכדה: אז חלף רוח
tu Nonne .ejus Dei *ejus* potentia hæc : delinquet & ,*præteriit* &
12 ויעבר ואשם זו כחו לאלהו: הלוא אתה
Domine .moriemur non ? meus sanctus meus Deus Dominus ,*quondam à*
מקדם יהוה אלהי קדשי לא נמות יהוה
.eum fundâsti increpandum ad *petram* & , eum posuisti judicium ad
למשפט שמתו וצור להוכיח יסדתו:
non *laborem ad* respiciendo & , malum *videndo à* oculis Mundus
13 טהור עינים מראות רע והביט אל־עמל לא
impio *deglutiendo in tacebis ,prævaricatores respicies* quid Ut .poteris
תוכל למה תביט בוגדים תחריש בבלע רשע
reptile tanquam ,maris pisces veluti *hominem facies* Et ? se *præ justum*
14 צדיק ממנו: ותעשה אדם כדגי הים כרמש
illud congregabit ,faciet ascendere hamo *in* Totum .*eo in dominator* non
15 לא־משל בו: כלה בחכה העלה יגרהו
,lætabitur propterea : suo reti *in* illud congregabit & ,sua sagena *in*
בחרמו ויאספהו במכמרתו על־כן ישמח
.exultabitque
ויגיל:

Versio VULG. LAT.

PROPHETIA

HABACUC.

CAP. I.

1 ONus, quod vidit Habacuc 2 propheta. Usquequò, Domine, clamabo, & non exaudies? vociferabor ad te vim patiens, & non 3 salvabis? Quarè ostendisti mihi iniquitatem & laborem, videre prædam & injustitiam contra me? & factum est judicium, & contra- 4 dictio potentior. Propter hoc lacerata est lex, & non pervenit usq; ad finem judicium: quia impius prævalet adversùs justum, proptereà egreditur judicium per- 5 versum. Aspicite in gentibus, & videte: admiramini, & obstupescite: quia opus factum est in dieb° vestris, quod nemo credet cùm 6 narrabitur. Quia ecce ego suscitabo Chaldæos, gentem amaram & velocem, ambulantem super latitudinem terræ, ut possideat ta- 7 bernacula non sua. Horribilis, & terribilis est: ex semetipsa judici- 8 um, & onus ejus egredietur. Leviores pardis equi ejus, & velociores lupis vespertinis; & diffundentur equites ejus: equites namque ejus de longè venient, volabunt quasi aquila festinans ad 9 comedendum. Omnes ad prædam venient, facies eorum ventus urens: & congregabit quasi arenâ, 10 captivitatem. Et ipse de regibus triumphabit, & tyranni ridiculi ejus erunt: ipse super omnem munitionem ridebit, & comportabit 11 aggerem, & capiet eam. Tunc mutabitur spiritus, & pertransibit, & corruet: hæc est fortitudo 12 ejus dei sui. Numquid non tu à principio, Domine Deus meus, Sancte meus, & non moriemur? Domine, in judiciũ posuisti eum: & fortem, ut corriperes, fundâsti 13 eum. Mundi sunt oculi tui, ne videas malum; & respicere ad iniquitatem non poteris: quarè respicis super iniqua agentes, & taces devorante impio justiorem 14 se? Et facies homines quasi pisces maris, & quasi reptile non 15 habens principem. Totum in hamo sublevabit, traxit illud in sagena sua, & congregavit in rete suum. Super hoc lætabitur & exultabit.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

ἈΜΒΑΚΟΎΜ Η΄.

ΚΕΦ. α΄.

1 ΤΟ λῆμμα ὃ εἶδεν Ἀμβακοὺμ ὁ προφή- 2 της. Ἕως τίνος κύριε κεκράξομαι, ϗ οὐ μὴ (α)εἰσακούσεις; βοήσομαι πρὸς σὲ ἀδικούμε- 3 νος, ϗ οὐ σώσεις; Ἵνα τί(β)ἔδειξάς μοι κόπους ϗ πόνους ἐπιβλέπειν(γ), ταλαιπωρίαν ϗ ἀσέβειαν; ἐξεναντίας μου γέγονε κρίσις, 4 ϗ ὁ κριτὴς λαμβάνει. Διὰ τοῦτο διεσκέδασται νόμος, ϗ οὐ διεξάγεται εἰς τέλος κρίμα, ὅτι (˜)ἀσεβὴς καταδυναστεύει τὸν δίκαιον, ἕνεκεν 5 τούτου ἐξελεύσεται τὸ κρίμα διεστραμμένον. Ἴδετε οἱ καταφρονηταὶ, ϗ ἐπιβλέψατε, ϗ θαυμάσατε θαυμάσια, ϗ ἀφανίσθητε· διότι ἔργον ἐγὼ ἐργάζομαι ἐν ταῖς ἡμέραις ὑμῶν, ὃ οὐ 6 μὴ πιστεύσητε, ἐάν τις ἐκδιηγῆται(δ). Διότι ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω τοὺς Χαλδαίους, τὸ ἔθνος τὸ πικρὸν, ϗ τὸ ταχινὸν, τὸ πορευόμενον ἐπὶ (ε) τὰ πλάτη τῆς γῆς, τοῦ κατακληρονομῆσαι 7 σκηνώματα οὐκ αὐτοῦ. Φοβερὸς ϗ ἐπιφανής ἐστιν, ἐξ αὐτοῦ τὸ κρίμα αὐτοῦ ἔσται, ϗ τὸ λῆμ- 8 μα αὐτοῦ ἐξ αὐτοῦ ἐξελεύσεται. Καὶ ἐξαλοῦνται ὑπὲρ παρδάλεις οἱ ἵπποι αὐτοῦ, ϗ ὀξύτεροι ὑπὲρ τοὺς λύκους τῆς Ἀραβίας. ϗ ἐξιππάσονται οἱ ἱππεῖς αὐτοῦ, ϗ ὁρμήσουσι μακρόθεν, ϗ πετασθήσονται ὡς ἀετὸς πρόθυμος 9 εἰς τὸ φαγεῖν. Συντέλεια (ζ)εἰς ἀσεβεῖς ἥξει, ἀνθεστηκότας προσώποις αὐτῶν ἐξεναντίας, ϗ συνάξει ὡς ἄμμον αἰχμαλωσίαν· 10 Καὶ αὐτὸς ἐν βασιλεῦσιν ἐντρυφήσει, ϗ τύραννοι παίγνια αὐτοῦ, ϗ αὐτὸς εἰς πᾶν ὀχύρωμα ἐμπαίξεται, ϗ βαλεῖ χῶμα, ϗ κρατή- 11 σει αὐτοῦ. Τότε μεταβαλεῖ τὸ πνεῦμα, ϗ διελεύσεται, ϗ ἐξιλάσεται· αὕτη ἡ ἰσχὺς τῷ θεῷ 12 μου. Οὐχὶ σὺ ἀπ᾽ ἀρχῆς κύριε ὁ (η) θεὸς ὁ ἅγιός μου; ϗ οὐ μὴ ἀποθάνωμεν. κύριε εἰς κρίμα τέταχας(θ) αὐτὸ, ϗ ἔπλασέ με τοῦ ἐλέγ- 13 χειν παιδείαν αὐτοῦ. Καθαρὸς (ι)ὁ ὀφθαλμὸς τοῦ μὴ ὁρᾷν πονηρὰ, ϗ ἐπιβλέπειν ἐπὶ πόνους(κ)ὀδύνης· ἵνα τί ἐπιβλέπεις ἐπὶ καταφρονοῦντας; παρασιωπήσῃ ἐν τῷ καταπίνειν 14 ἀσεβῆ τὸν δίκαιον; Καὶ ποιήσεις τοὺς ἀνθρώπους ὡς τοὺς ἰχθύας τῆς θαλάσσης, ϗ ὡς 15 τὰ(˜)ἑρπετὰ τὰ οὐκ ἔχοντα ἡγούμενον; Συντέλειαν ἐν ἀγκίστρῳ ἀνέσπασε, ϗ εἵλκυσεν αὐτὸν ἐν ἀμφιβλήστρῳ, ϗ συνήγαγεν αὐτὸν ἐν ταῖς σαγήναις αὐτοῦ· ἕνεκεν τούτου εὐφρανθήσεται ϗ χαρήσεται ἡ καρδία αὐτοῦ.

AMBACUM.

CAP. I.

1 ASSUMPTIO, quam vidit Ambacum propheta. 2 Usquequò, Domine, clamabo, & non exaudies? vociferabor ad te vim patiens, & non salvabis? 3 Quarè mihi ostendisti labores & dolores, videre miseriam, & impietatem? Contra me factum est judicium: & judex accipit. 4 Proptereà lacerata est lex, & non pervenit ad finem judicium: quia impius prævalet adversus justum. Proptereà egreditur judicium perversum. 5 (a)Videte contemptores, & respicite & admiramini mirabilia, & disperdimini: (b) quia opus ego operor in diebus vestris, quod non credetis, siquis narraverit. 6 Quia ecce ego suscito Chaldæos, gentem amaram, & velocem, quæ ambulat super latitudines terræ, ut possideat tabernacula non sua. 7 Terribilis, & illustris est: (c)ex ipsa judicium ejus erit: & assumptio ejus ex se egredietur. 8 Et exilient super pardos equi ejus, & velociores lupis Arabiæ. (d)Et equitabunt equites ejus, & impetu venient de longinquo, & volabunt quasi aquila prompta ad comedendum. 9 (e) Consummatio in impios veniet, resistentes faciebus ipsorum ex adverso. Et congregabit quasi arenam captivitatem: 10 Et ipse in regibus delectabitur, & tyranni ludibria ejus; & ipse in omnem munitionem illudet, & mittet aggerem, & obtinebit eam. 11 Tunc mutabit spiritum, & pertransiet, & (f)propitiabitur. Hæc est fortitudo Deo meo. 12 Nonne tu à principio, Domine Deus sancte meus? & non moriemur. Domine, in judicium posuisti (g) ipsam: & plasmavit me, ut arguam disciplinam ejus: 13 Mundus oculus ne videat mala, & aspiciat super labores (h) doloris. Quarè aspicis super contemptores? (i) taces, dum impius devorat justum? 14 Et facies homines quasi pisces maris, & quasi reptilia non habentia ducem? 15 Consummationem in hamo sublevavit, & attraxit eum in reti, & congregavit eum in sagenis suis. Propter hoc lætabitur, et gaudebit cor ejus.

MS.A. ἈΜΒΑΚΟΎΜ Η΄. (α) εἰσακούσῃς; (β) μοι ἔδειξας (γ) ϗ ταλαιπωρίαν (˜) ὁ ἀσεβὴς (δ) ὑμῖν. Ὅτι ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω ἐφ᾽ ὑμᾶς τοὺς Χαλδαίους τοὺς μαχητὰς, τὸ ἔθνος τὸ ταχινὸν ϗ τὸ πικρὸν, τὸ (ε) τὸ πλάτος (ζ) ἐπ᾽ (η) θεός μου ὁ ἅγιός μου; ϗ (θ) αὐτὸν, (ι) ὀφθαλμός μου τοῦ (κ) οὐ δυνήσῃ· εἰς τί (˜) ἑρπετὰ ἐκ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 מטל נבואתא דאתנבי חבקוק נביא: עד אימתי יי אנא מצלי הלא גלי קדמך קבלנא 2
קדמך על חטופין הלא יכלא קדמך למפרק: למא אנא חזי אנוסין ומסתכל בעבדי 3
לאות שקר בזוזין וחטופין לקבלי דבתחרותא ובזדונא אנון מתגברין: על כן פגת 4
אוריתא ולא נפיק לאפרש דינא ארי רשיעיא מסלעמין לצדיקיא על כן לא נפיק דינא
כון: חזו בעממיא ואסתכלו אתרפו שהו ארי עובדא אתעביד ביומיכון לא תהימנון 5
ארי ישתעון לכון: ארי הא אנא מקים ית כסדאי עמא מוחיא וקלילא דאזיל לפתאי 6
ארעא לאחסנא קרוין דלא דיליה: אמתנין ודחילין אנון מניה דיניה וגזרתיה נפקין: 7
וקלילין מנמריא סוסותיה וחריפין מדיבי רמשא וירבון פרשוהי ופרשוהי מרחיק 8
דייתון משתדן כנשרא דטאס למיכל: כולהון לחטוף אתן מקבל אפיהון דמן כרוח 9
קדים קדומא וכנש כחלא שביא: והוא על מלכיא מתלעב ועל שלטוניא מחיך הוא 10
לכל כרך תקיף מעיק וצבר מליתא וכבשה: בכן על דרמת רוחיה עלוהי עדא 11
מלכותיה וחב על דאסני יקרא לטעותיה: הלא את יי ברית עלמא מבראשית את 12
אלהא דין קשוט על כל בריתך קדיש בעובדי הימנותא מימרך קים לעלמין יי למעבד
דינא בריתיה ותקיף לאתפרעא אתקנתיה: ברי מימרך מלמחזי בעובדי ביש 13
ומלאסתכלא בעבדי לאות שקר הלא גלי קדמך ולמא את [illegible]
ארכא לרשיעיא ומסלעמין לדטבין מנהון: ועבדת אנשא [illegible] 14
שולטן עלוהי: כלהון דמן לצידין דאחיד נונא בחכתא [illegible] 15
במצדתיה על כן חדי ודאיץ:

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAPUT I.

ONus prophetiæ quã vaticinat° est Chabacuc propheta. Quousque Dñe ego precatur° sum? annon manifestum est corã te me clamitare in conspectu tuo propter rapinas? nunquid est apud te servandi potestas? Quare ego video oppressores, & conspicio operantes laborẽ falsitatis? direptores & raptores corã me sunt, atq; contentione & superbia ipsi prævalent. Propterea languescit Lex, nec prodit in æternũ judiciũ, quoniã impii devorant justos, ideo non prodit judiciũ rectũ. Intuemini gentes & conspicite; admiramini, & obstupescite: op° enim factũ est in dieb° vestris, q̃ nequaquã credituri estis cùm vobis narrabitur. Quoniã ecce ego suscito Caldæos populũ celerẽ & velocem, qui pervadat latitudines terræ, ut possideat civitates quæ ipsi° non sũt. Horrendi & terribiles sũt, ab ipsomet [*populo Caldæorũ*] ipsi° judiciũ & decretũ promanãt. Et velociores sunt pardis equi ej°, & acutiores lupis vespertinis: & multiplicabuntur equites ej°, equites ej° [*inquam*] de longinquo venient, sese diffundentes aquilæ in morẽ quæ volat ad comedendũ. Omnes ad rapiendũ veniunt, aspect° eorũ persimilis est vento *Orientali* vehementi: qui collegit quasi arenã captivitatẽ. Et ipse reges subsannat, ac principes irridet: ipse omnẽ arcẽ validã in angustias adigit, & coacervat aggeres ac subjicit eam. Ideò propter elationẽ spirit° ej°, ab eo translatũ est ej° regnũ, & flagitiũ admisit, eò quòd multiplicaverit gloriã idolo suo. Nónne tu Dñe creâsti mundũ ab initio? tu De° judex veritatis in omnes creaturas tuas, sanctus in operib° fidei: verbũ tuũ in secula permanet Dñe, ut exequatur judiciũ creâsti illud, potens ad vindictã sumendã ipsũ præparâsti. Purus est verbũ tuũ quã ut videat opera mala, & contempletur operantes laborem falsitatis: nónne manifestũ est corã te? quare ergo respicis in oppressores & das longitudinẽ [*vitæ*] sceleratis, et devorant seipsis meliores? Tu autẽ facis homines quasi pisces maris, sicut reptilia qu[illegible] null° est princeps. Omnes similes sunt piscatori qui cùm ceperit piscem hamo, colligit eum in sagena sua, & projicit eum in rete suum: [illegible] gaudet & exultat.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܚܒܩܘܩ * * ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܚܙܘܐ ܕܚܙܐ ܚܒܩܘܩ ܢܒܝܐ. * ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܪܝܐ ܐܩܥܐ ܐܢܐ ܘܠܐ ܫܡܥܬ ܠܝ. ܘܩܥܝܬ 1 2
ܐܢܐ ܠܘܬܟ ܥܠ ܛܠܘܡܐ ܘܠܐ ܡܦܪܩ ܐܢܬ. * ܠܡܢܐ ܡܚܘܐ ܐܢܬ ܠܝ ܥܘܠܐ ܘܥܡܠܐ. ܘܚܙܝܐ ܐܢܐ 3
ܚܛܘܦܝܐ ܘܥܘܠܐ. ܩܕܡܝ ܗܘܐ ܕܝܢܐ. ܘܕܝܢܐ ܫܩܠ ܫܘܚܕܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܦܫܓ ܢܡܘܣܐ. 4
ܘܠܐ ܢܦܩ ܕܝܢܐ ܒܬܪܝܨܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܥܘܠܐ ܕܚܩ ܚܩ ܠܙܕܝܩܐ. ܘܢܦܩ ܕܝܢܐ ܟܕ ܡܥܩܡ.
* ܚܙܘ ܡܡܪܚܢܐ ܘܚܘܪܘ ܘܐܬܕܡܪܘ ܘܬܘܗܘ. ܡܛܠ ܕܥܒܕܐ ܥܒܕ ܐܢܐ ܒܝܘܡܝܟܘܢ. ܘܠܐ 5
ܡܗܝܡܢܝܬܘܢ ܐܢ ܐܢܫ ܢܫܬܥܐ ܠܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܐܢܐ ܡܩܝܡ ܐܢܐ ܠܟܠܕܝܐ ܥܡܐ 6
ܡܪܝܪܐ ܘܡܪܗܒܐ. ܕܐܙܠ ܒܦܬܝܗ ܕܐܪܥܐ ܠܡܐܪܬ ܡܫܟܢܐ ܕܠܐ ܕܝܠܗ. * ܚܣܝܢ ܗܘ ܘܕܚܝܠ. 7
ܘܕܝܢܗ ܡܢܗ. ܘܡܢܗ ܗܘ ܦܪܨܘܦܗ. * ܩܠܝܠܝܢ ܪܟܫܘܗܝ ܡܢ ܢܫܪܐ. ܘܚܪܝܦܝܢ ܡܢ ܕܐܒܐ ܕܪܡܫܐ. 8
ܘܢܦܪܚܘܢ ܦܪܫܘܗܝ ܡܢ ܪܘܚܩܐ. ܘܢܦܪܚܘܢ ܐܝܟ ܢܫܪܐ ܕܪܗܛ ܠܡܐܟܘܠܬܐ. * ܟܠܗܘܢ 9
ܠܚܛܘܦܝܐ ܢܐܬܘܢ. ܚܙܘܐ ܕܐܦܝܗܘܢ ܣܪܝܩ. ܘܢܟܢܫܘܢ ܫܒܝܬܐ ܐܝܟ ܚܠܐ. * ܘܗܘ ܒܡܠܟܐ 10
ܡܒܙܚ. ܘܫܠܝܛܢܐ ܡܓܚܟ. ܘܒܟܠ ܟܪܟܝܢ ܚܣܝܢܝܢ ܓܚܟ. ܘܡܥܒܪ ܥܦܪܐ. ܘܐܚܕ ܠܗ.
* ܗܝܕܝܢ ܢܫܚܠܦ ܪܘܚܗ ܘܢܥܒܪ. ܘܢܬܘܕܐ ܚܝܠܗ ܠܐܠܗܗ. * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܗܘ ܡܢ 11
ܫܘܪܝܐ ܡܪܝܐ. ܐܠܗܐ ܩܕܝܫܐ ܕܝܠܝ: ܠܐ ܡܫܬܥܒܕ ܐܢܬ ܡܪܝܐ: ܣܡܬܝܗܝ ܠܕܝܢܐ. ܘܓܒܠܬܢܝ 12
ܠܡܟܣܘܬܗ. * ܕܟܝܢ ܥܝܢܝܟ ܡܢ ܕܢܚܙܝܢ ܒܝܫܬܐ. ܘܠܡܚܙܐ ܒܥܘܠܐ ܠܐ ܡܫܟܚ ܐܢܬ 13
ܠܡܚܙܐ. ܠܡܢܐ ܚܙܐ ܐܢܬ ܠܡܡܪܚܢܐ ܘܫܬܝܩ ܐܢܬ. ܟܕ ܒܠܥ ܥܘܠܐ ܠܙܕܝܩܐ. * ܘܥܒܕܬ ܐܢܫܐ 14
ܐܝܟ ܢܘܢܐ ܕܝܡܐ. ܘܐܝܟ ܪܚܫܐ ܕܠܝܬ ܠܗ ܡܕܒܪܢܐ. * ܟܠܗ ܒܚܟܐ ܐܣܩ 15
ܗܘܐ. ܘܢܓܕܗ ܒܡܨܝܕܬܗ. ܘܟܢܫܗ ܒܡܟܡܘܪܬܗ. ܘܡܛܠ ܗܢܐ ܚܕܐ ܘܪܘܙ.

SEQUITUR
PROPHETIA HABACUC
CAPUT. I.

1 Viſio quam vidit Habacuc propheta. 2 Quouſq; Domine vociferabor, & non audies? clamabo ad te cauſâ violentorum, & non liberabis? 3 Cur oſtendis mihi impietatem ac dolum? & violentiam ac ſcelus video? me præſente cùm jus diceretur, judex accepit mun⁹. 4 Propter hoc tepeſcit lex, neq; prodit judicium cum æquitate; impius peſſime tractat juſtum: hinc eſt quòd perverſum prodeat judicium. 5 Videte impudentes, & conſiderate, admiramini, & obſtupeſcite: nam rem facturus ſum in diebus veſtris, quam non crederetis ſi quis enarraret vobis. 6 Ecce enim ego excitaturus ſum Chaldæos gentē audacē & acerbam, quæ terræ latitudinē perluſtrat ad acquirenda tabernacula non ſua. 7 Fortis eſt ac formidabilis, judicium ejus ab ipſamet eſt, frontemq; ſuam exerit. 8 Equi ejus ſunt aquilis velociores, & acriores lupis veſpertinis: volant equites ejus è longinquo, volant inquam, ſicut aquila cibum inhians. 9 Omnes ad rapinam venient: aſpectus vultuum eorum teterrimus, & colligent captivos ut arenam. 10 Eadem reges ludibrio habet, & principibus illudit, omnes urbes munitas deridet, pulveremque congerit & capit. 11 Tunc immutabis ſpiritum ejus, & tranſibit: & robur ejus victū ſe fatebitur à Deo ſuo. 12 Nam tu inde à principio Domine, Deus ſanctus meus es: nequaquam ſubditus es legi Dñe: expoſuiſti illam judicio, meque formâſti ad arguendū eā. 13 Puri ſunt oculi tui, nec aſpicere *poſſunt* nequitiam, neque impios intueri potes: cur *itaq;* impudentes intueris, ac taces; dum iniquus juſtum abſorbet? 14 Homines feciſti ſimiles piſcibus qui ſunt in mari, & pares equis non habentibus moderatorem? 15 Omnes enim hamo extrahuntur, trahuntur reti, & congregantur in ſagena: cúmq; congregati fuerint, lætatur *piſcator* & exultat,

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* بسم الله الرحمن الرحيم *

* نبتدي بترجمة حبقوق النبي بركاته علينا * امين *

* الفصل الاول *

* الاصحاح التاسع عشر * وهو الاول من النبوة *

1 * الرويا التي راها حبقوق النبي * 2 الي متي يا رب اصرخ فلا تسمع * اصيح اليك مظلوم فلا
تخلص * 3 لماذا اريتني الاتعاب والاوجاع * لانظر شقوة ونفاقا * امامي صار الحكم * والحاكم
ياخذ * 4 لاجل هذا تعطل الناموس * ولا يخرج الحكم الي الغاية * لان المنافق يقوى على
الصديق * من اجل هذا يخرج الحكم معوجا * 5 انظروا يا متغافلون وارجعوا فتعجبون
عجايب وتبيدون * من اجل اني انا اعمل عملا في ايامكم * هذا الذي لا تصدقوه ان اخبركم
به احد * 6 من اجل اني انا ها انا اثير عليكم الكلدانيين المحاربين * امة مرة وسريعة تسير على
سعة الارض لترث مساكن ليست لها * 7 مخوفة وظاهرة هي منها حكمها يكون * ومنظرها
منها يخرج * 8 خيولها اسرع من النمور * واحد من ذياب ارابيا وفرسانها يركضون ويثبون من
بعد * ويطيرون مثل نسر مستعد لياكل * 9 الانقضاء ياتي للمنافقين المصادين بوجوههم من
قدام * ويجمع مثل الرمل سبيا * 10 هو بالملوك يتنعم * والولاة لعبه * وهو يلعب بالحصون ويضع
ترابا ويمسكهم *

* الاصحاح العشرون * وهو الثاني من النبوة *

11 * حينئذ يبدل روحا ويجوز ويسال * هذه القوة لالهي * 12 اليس انت منذ البدء الرب الاله
قدوسي * ولا نموت يا رب بحكم رتبته * وجبلتني لاوبخ ادبه * 13 العين نقية ان لا ترى
الخبايث * ولا تستطيع ان تنظر الي الاوجاع * لماذا تنظر المتغافلين وتسكت عند ما يبتلع
المنافق البار * 14 وتصنع البشر مثل حيتان البحر * ومثل الهوام التي ما لها مقدم * 15 اصعد
الانقضاء بالصنارة * جذبه بالشص * وجمعه في شباكه من اجل هذا يسر ويفرح قلبه *

IN NOMINE DEI MISERICORDIS,
CLEMENTISSIMI,
Aggredimur Interpretationem
HABACUC PROPHETÆ,
CUJUS BENEDICTIONES
adſint nobis, Amen.

CAPUT PRIMUM.

Textus decimus nonus, hujus autem Prophetiæ primus.

1 *Viſio quam vidit Habacuc Propheta.* 2 *Quouſque O Domine clamabo, & non audies? oppreſſus vociferabor ad te, nec eripies?* 3 *Cur oſtendiſti mihi labores & dolores, ut viderem miſeriam & impietatem? Coram me inſtitutâ cauſâ, judex accipit.* 4 *Propterea abrogata eſt lex, nec aſſequitur judicium finem ſuum. Quia ſceleratus inſultat juſto, propterea judicium prodit perverſum.* 5 *Videte O negligentes, & revertimini, ut mira admiremini & pereatis: opus enim præſtiturus ſum in diebus veſtris tale, ut non credatis ſi quis illud vobis enarret.* 6 *Nam ecce ego ſuſcitabo contra vos Chaldæos belligeros, gentem acerbam & velocem, ambulantem ſuper terræ latitudinem ut poſſideat habitationes non ſuas.* 7 *Terribilis eſt ac illuſtris, ex ipſamet erit judicium ipſius, & ſpectabilitas ejus ex ipſamet procedet.* 8 *Equi ejus velociores tigribus, & Arabiæ lupis acriores: equites ejus current & inſilient à longinquo, & volabunt inſtar aquilæ paratæ ad comedendum.* 9 *Conſummatio adveniet impiis refractariis, in facies eorū à fronte. Et congregabit ſicut arenam captivos:* 10 *Ipſe regibus delectabitur, & præfecti ludibrium ejus erunt: ipſeque munitiones irridebit; pulverem enim ponet, & capiet eas.*

Textus vigeſimus, hujus autem Prophetiæ ſecundus.

11 *Tunc mutabit ſpiritum, & tranſibit, atque precabitur. Hæc fortitudo Dei mei eſt.* 12 *Nonne tu es à principio Dominus Deus ſanctus meus: & ne moriamur O Domine ex ſententia diſpoſitionis ejus? etenim plaſmâſti me ad arguendam diſciplinam ejus.* 13 *Mundus eſt oculus quominus videat ſcelera, nec poteſt aſpicere dolores: quare vides neglectores, & ſiles dum abſorbet impius innocentem?* 14 *Facisque homines ut piſces maris, & ut inſecta quæ non habent ducem?* 15 *Excidium extraxit hamo, unco traxit illud, & collegit illud retibus ſuis: propterea exultabit & lætabitur cor ejus:*

ipsis in quia : suo reti suffiet & ,suæ sagenæ sacrificabit Propterea
16 על־כן יזבח לחרמו ויקטר למכמרתו כי בהמה
ea propter Nunquid .pinguis ejus cibus & ,ejus pars est incrassata
17 שמן חלקו ומאכלו בראה׃ העל כן
? parcet non gentes interficere semper & ?suã sagenam evacuabit
יריק חרמו ותמיד להרג גוים לא יחמול׃

CAP. II. ב

,munitionem super subsistam & ,stabo meam custodiam Super
1 על־משמרתי אעמדה ואתיצבה על־מצור
respondeam quid & ,me in loquatur quid videndum ad contemplabor &
ואצפה לראות מה־ידבר־בי ומה אשיב
Scribe : dixit & ,Dominus mihi respondit Et .mea increpatione super
2 על־תוכחתי׃ ויענני יהוה ויאמר כתב
.ea in legens percurrat ut ,tabulis super explana & ,visionem
חזון ובאר על־הלחות למען ירוץ קורא בו׃
.mentietur non & ,finem ad efflabit &,tempus statutum in visio adhuc Quia
3 כי עוד חזון למועד ויפח לקץ ולא יכזב
.tardabit non ,veniet veniendo quia : eum expecta ,fecerit moram Si
אם־יתמהמה חכה־לו כי־בא יבא לא יאחר׃
sua fide in justus & : eo in ejus anima recta non ,est elata Ecce
4 הנה עפלה לא־ישרה נפשו בו וצדיק באמונתו
non & ,superbus vir prævaricans vinum quia etiam Et .vivet
5 יחיה׃ ואף כי־היין בוגד גבר יהיר ולא
,mors veluti ipse & ,suam animam infernus sicut dilatavit qui : habitabit
ינוה אשר הרחיב כשאול נפשו והוא כמות
coadunabit & , gentes omnes se ad congregabit & : saturabitur non &
ולא ישבע ויאסף אליו כל־הגוים ויקבץ
eum super ipsi omnes illi Nónne .populos omnes se ad
6 אליו כל־העמים׃ הלוא־אלה כלם עליו
Væ : dicet & : ei ænigmatum interpretationem & ,sument parabolam
משל ישאו ומליצה חידות לו ויאמר הוי
? lutum densum se super aggravans & quo usque : sibi non multiplicanti
המרבה לא־לו עד־מתי ומכביד עליו עבטיט׃
,te commoventes evigilabunt & ,te mordentes consurgent repentè Nónne
7 הלוא פתע יקומו נשכיך ויקצו מזעזעיך
,multas gentes spoliâsti tu Quia ?eis rapinas in eris &
8 והיית למשסות למו׃ כי־אתה שלות גוים רבים
rapina & ,hominis sanguinibus à : populorum residuum omne te spoliabunt
ישלוך כל־יתר עמים מדמי אדם וחמס־
concupiscenti Væ .ea in habitantium omnium & ,civitatis terræ
9 ארץ קריה וכל־ישבי בה׃ הוי בצע
,suum nidum excelso in ponendum ad ,suæ domui malam concupiscentiam
בצע רע לביתו לשום במרום קנו
decurtando ,tuæ domui pudorem Consuluisti .mali vola de se eruendum ad
10 להנצל מכף־רע׃ יעצת בשת לביתך קצות־
pariete è lapis Quia .tua anima peccans & ,multos populos
11 עמים רבים וחוטא נפשך׃ כי־אבן מקיר
ædificanti Væ .ei respondebit ligno è rudimentum & ; clamabit
12 תזעק וכפיס מעץ יעננה׃ הוי בנה
Nónne .iniquitate in civitatem constituenti & ,sanguinibus in civitatem
13 עיר בדמים וכונן קריה בעולה׃ הלוא
sufficientia in populi laborabunt & ,exercituum Domino cum à ecce
הנה מאת יהוה צבאות וייגעו עמים בדי־
replebitur Nam .lassabuntur vacui sufficientia in gentes & ,ignis
14 אש ולאמים בדי־ריק יעפו׃ כי תמלא
operient aquæ tanquam ,Domini gloriam sciendum ad ,terra
הארץ לדעת את־כבוד יהוה כמים יכסו
.mare super
על־ים׃

Versio VULG. LAT.

16 Propterea immolabit sagenæ suæ,
& sacrificabit reti suo: quia in
ipsis incrassata est pars ejus, &
17 cibus ejus electus. Propter hoc
ergò expandit sagenam suam, &
semper interficere Gentes non
parcet.

CAP. II.

1 Super custodiam meam stabo, &
figam gradũ super munitionem:
& contemplabor, ut videam quid
dicatur mihi, & quid respondeã
2 ad arguentem me. Et respondit
mihi Dñs, & dixit; Scribe visum,
& explana eum super tabulas,
ut percurrat qui legerit eum.
3 Quia adhuc visus procul, & apparebit in finem, & non mentie-
tur: si moram fecerit, expecta
illum, quia veniens veniet, & non
4 tardabit. Ecce qui incredulus est,
non erit recta anima ejus in se-
metipso: justus autem in fide sua
5 vivet. Et quomodò vinum potan-
tem decipit: sic erit vir super-
bus, & non decorabitur: qui di-
latavit quasi infernus animã suã:
& ipse quasi mors, & non adim-
pletur: & congregabit ad se
omnes gentes, & coacervabit ad
6 se omnes populos. Numquid non
omnes isti super eum parabolam
sument, & loquelam ænigmatum
ejus: & dicetur; Væ ei, qui mul-
tiplicat non sua? usquequò &
aggravat contra se densum lu-
7 tum? Numquid non repentè con-
surgent qui mordeant te: & sus-
citabuntur lacerantes te, & eris
8 in rapinam eis? Quia tu spoliâsti
gentes multas, spoliabunt te
omnes qui reliqui fuerint de po-
pulis, propter sanguinẽ hominis,
& iniquitatem terræ civitatis, &
9 omnium habitantiũ in ea. Væ qui
congregat avaritiã malam domui
suæ, ut sit in excelso nidus ejus, &
liberari se putat de manu mali.
10 Cogitâsti confusionẽ domui tuæ,
concidisti populos multos, & pec-
11 cavit anima tua. Quia lapis de
pariete clamabit: & lignum,
quod inter juncturas ædificiorum
12 est, respondebit. Væ qui ædificat
civitatem in sanguinibus, & præ-
13 parat urbem in iniquitate. Numquid non hæc sunt à Dño exerci-
tuum? Laborabunt enim populi
in multo igne, & gentes in vacuũ,
14 et deficient. Quia replebitur
terra, ut cognoscant gloriam
Domini, quasi aquæ operientes
mare.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

16 Ἕνεκεν τούτου θύσει (λ) τῇ σαγήνῃ αὐτοῦ, καὶ θυμιάσει (μ) τῷ ἀμφιβλήστρῳ αὐτοῦ, ὅτι ἐν αὐτοῖς ἐλίπανε μερίδα αὐτοῦ, καὶ τὰ βρώματα αὐτοῦ ἐκλεκτά. 17 Διατοῦτο ἀμφιβαλεῖ τὸ ἀμφίβληστρον αὐτοῦ, καὶ διαπαντὸς ἀποκτένειν ἔθνη οὐ φείσεται.

MS. A. (λ) τῷ ἀμφιβλήστρῳ (μ) τῇ σαγήνῃ αὐτοῦ,

ΚΕΦ. β΄.

1 Ἐπὶ τῆς φυλακῆς μου στήσομαι, καὶ ἐπιβήσομαι ἐπὶ πέτραν, καὶ ἀποσκοπεύσω τοῦ ἰδεῖν τί λαλήσει ἐν ἐμοί, καὶ τί ἀποκριθῶ ἐπὶ 2 τὸν ἔλεγχόν μου. Καὶ ἀπεκρίθη (α) πρὸς μὲ κύριος, καὶ εἶπε, Γράψον ὅρασιν, καὶ σαφῶς (β) εἰς πυξίον, ὅπως διώκῃ ὁ ἀναγινώσκων αὐτά. 3 (γ) Διότι ἔτι ὅρασις εἰς καιρόν, καὶ ἀνατελεῖ (˝) εἰς πέρας, καὶ οὐκ εἰς κενόν. ἐὰν (˝) ὑστερήσῃ, ὑπόμεινον αὐτόν, ὅτι ἐρχόμενος ἥξει, καὶ οὐ μὴ χρονίσῃ. 4 Ἐὰν ὑποστείληται, οὐκ εὐδοκεῖ ἡ ψυχή μου ἐν αὐτῷ. ὁ 5 δὲ (δ) δίκαιος ἐκ πίστεώς μου ζήσεται. Ὁ δὲ κατοιόμενος, καὶ καταφρονητής, ἀνὴρ ἀλαζών, οὐθὲν μὴ περάνῃ· ὃς ἐπλάτυνε καθὼς (ε) ᾅδης τὴν ψυχὴν αὐτοῦ, καὶ οὗτος ὡς θάνατος οὐκ ἐμπιπλάμενος, καὶ ἐπισυνάξει (ζ) ἐπ' αὐτὸν πάντα τὰ ἔθνη, καὶ εἰσδέξεται 6 πρὸς αὐτὸν πάντας τοὺς λαούς. Οὐχὶ ταῦτα πάντα (η) κατ' αὐτοῦ παραβολὴν λήψονται, καὶ πρόβλημα εἰς διήγησιν αὐτοῦ; καὶ ἐροῦσιν, Οὐαὶ ὁ πληθύνων (θ) ἑαυτῷ τὰ οὐκ ὄντα αὐτοῦ ἕως τίνος, καὶ βαρύνων 7 τὸν κλοιὸν αὐτοῦ στιβαρῶς. Ὅτι ἐξαίφνης ἀναστήσονται δάκνοντες αὐτόν, καὶ ἐκνήψουσιν οἱ ἐπίβουλοί σου, καὶ ἔσῃ εἰς διαρπαγὴν 8 αὐτοῖς. Διότι (ι) ἐσκύλευσας ἔθνη πολλά, (κ) σκυλεύσουσι πάντες οἱ ὑπολελειμμένοι λαοί, δι' αἵματα ἀνθρώπων, καὶ (λ) ἀσεβείας γῆς καὶ πόλεως, καὶ πάντων τῶν κατ9οικούντων αὐτήν. Ὦ ὁ πλεονεκτῶν πλεονεξίαν κακὴν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ, τοῦ τάξαι εἰς ὕψος νοσσιὰν αὐτοῦ, τοῦ (μ) ἐκσπασθῆναι ἐκ 10 χειρὸς κακῶν. Ἐβουλεύσω αἰσχύνην τῷ οἴκῳ σου, συνεπέρανας (ν) πολλοὺς λαούς, 11 καὶ ἐξήμαρτεν ἡ ψυχή σου. Διότι λίθος ἐκ τοίχου βοήσεται, καὶ κάνθαρος ἐκ ξύ12λου φθέγξεται αὐτά. Οὐαὶ ὁ οἰκοδομῶν πόλιν ἐν αἵμασι, καὶ ἑτοιμάζων πόλιν ἐν 13 ἀδικίαις. Οὐ ταῦτά ἐστι παρὰ κυρίου παντοκράτορος; καὶ ἐξέλιπον λαοὶ ἱκανοὶ ἐν 14 πυρί, καὶ ἔθνη πολλὰ ὀλιγοψύχησε. (ξ) Ὅτι ἐμπλησθήσεται ἡ γῆ τοῦ γνῶναι τὴν δόξαν κυρίου, ὡς ὕδωρ (ο) κατακαλύψει αὐτούς.

MA. A. (α) κύριος πρὸς μέ, (β) ἐπὶ (γ) Ὅτι (˝) * ἑσπέρας, (˝) ὑστερήσῃ, (δ) δίκαιός μου ἐκ πίστεως ζήσεται. (ε) ὁ ᾅδης (ζ) πρὸς (η) παραβολὴν κατ' αὐτοῦ (θ) αὐτῷ (ι) σὺ ἐσκύλευσας (κ) σκυλεύσουσί σε πάντες (λ) ἀσέβειαν (μ) ἐκσπασθῆναι (ν) λαοὺς πολλούς, (ξ) Καὶ ἐνεπλήσθη ἡ σύμπασα γῆ (ο) πολύ

Propterea immolabit sagenæ 16
suæ, & incendet reti suo: quia
in ipsis incrassavit partem suam:
& escæ ejus electæ. Propterea 17
expandet rete suum: & semper
interficere gentes non parcet.

CAP. II.

Super custodiam meam stabo, 1
& ascendam super (a) petram,
& contemplabor: ut videam
quid loquatur in me, & quid
respondeam ad correptionem me-
am. Et respondit ad me Domi- 2
nus, & dixit; Scribe (b) visio-
nem, & manifestè in (c) buxum,
ut persequatur qui legit ea: Quia 3
adhuc visio in tempus, & orietur
in finem, & non in vacuum. Si
defecerit; sustine (d) eum:
quia veniens veniet, & non tar-
dabit. Si retraxerit te, non pla- 4
cet animæ meæ in eo. Justus au-
tem ex fide (e) mea vivet. Qui 5
autem (f) arrogans est, & con-
temptor, vir superbus nihil per-
ducet ad finem: qui dilatavit,
sicut infernus, animam suam:
& iste, quasi mors, non adimple-
tur: & congregabit ad se o-
mnes gentes, & accipiet ad se
omnes populos. Nónne universa 6
hæc adversum eum parabolam
sument, & propositionem ad nar-
rationem ejus? Et dicent; Væ,
qui multiplicat sibi, quæ non sunt
sua: usquequò (g) & aggra-
vat torquem suam graviter.
Quia subitò consurgent mor- 7
dentes eum, & vigilabunt
insidiatores tui, & eris in rapinã
illis. Quia (h) expoliâsti gentes 8
multas; expoliabunt omnes reli-
qui populi, propter sanguines ho-
minum, & impietates terræ, &
civitatis, & omnium habitato-
rum ejus. O qui multiplicat a- 9
varitiam malam domui suæ, ut
ponat in excelso nidum suum, ut
eruatur de manu malorum. Co- 10
gitâsti confusionem domui tuæ:
consumpsisti populos multos: &
peccavit anima tua. Propter 11
quod lapis de pariete clamabit,
& (i) scarabeus de ligno loque-
tur ea. Væ, qui ædificat civi- 12
tatem in sanguinibus, et præparat 13
urbem in iniquitatibus. (k) Non
hæc sunt à Domino omnipotente.
Et defecerunt populi multi in
igne, & gentes multæ (l) contri- 14
gustatæ sunt. Quia replebitur
terra, ut cognoscat gloriam Domini, (m) quasi aqua operiet eos.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

16 על כן מדבח לזיניה ומסיק בוסמין לסמותיה ארי בהון טב מיכליה ושירותיה מטעמא׃
17 העל אלין ישלח משריתיה בתדירא לאוספא עממין ולא בחים׃

ב

1 אמר נביא על מטרתי אנא קאים עתיד משמש על מצודתי ומסכינא למחזי מה יתמלל
2 עמי ומה אתותב על בעותי׃ ואתותבית מן קדם יי ואמר כתיבא נבואתא ומפרשא
3 על ספרא דאוריתא בדיל דיוחי למחכם מן דקרי ביה׃ ארי עתידא נבואתא לזמן
ומתקן קצא ולא יבטל אם יהי ארכא לפתגמא סברו לה ארי בזמניה ייתי ולא יתעכב׃
4 הא רשיעיא אמרין לית כל אלין וצדיקיא על קושטהון יתקימון׃ ואף הא כטעי בחמר
5 גבר יהיר ברשע ולא יתקים דאפתי כשאול נפשיה והוא כמותא ולא שבע וכנש לותיה
6 כל עממיא וקריב לותיה כל מלכותא׃ הלא אלין כולהון עלוהי מתלן יטלון ושעי
חודין ימרון ליה ויימר וי דמסגי נכסין דלא דיליה עד אימתי את מתקף עלך תקוף
7 חובין׃ הלא בתכף יקומון אנסך ויתגלון מזועזך ותהי לעדי להון׃ ארי את
8 בזתא עממין סגיאין יבזונך כל שאר שבטיא מדמי אנשא וחטוף ארעא דישראל
9 קרתא ירושלם וכל דיתבין בה׃ וי דאנס ממון דרשע לביתיה לשואה במרומא
10 מדוריה לאשתזבא מיד ביש׃ מלכתא בהתא לביתך בזתא עממין סגיאין ועל נפשך
11 חטיתא׃ ארי אבנא מכותלא צוחא על דאנס לה ושפא מגו מרישא עני לה׃ וי דבני
12 קרתא בדם אשיד ומשכלל קריא בנכלין׃ הא מחן תקיפן ונחתן מן קדם יי
13 צבאות ולאות עממיא תקיפין באשתא ומלכותא לריקנו ישתלהון׃ ארי תתמלי
14 ארעא למידע ית דחלתא דיי כמיא די לימא חפן׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Propterea sacrificat armis suis, & adolet aromata retiaculo suo, ipsis enim 16
bonus est cibus ejus, ejusque convivium suave. Nunquid propterea mittet 17
exercitus suos, ut perpetuo consumat gentes, idque sine ulla misericordia?

CAP. II.

Dixit Propheta: Super custodiam meam sto paratus, ministro munitioni 1
meæ, & speculabor eam visurus quid dicetur mihi, & quid respondebitur
ad deprecationem meam. Et responsum tuli à conspectu Dñi, & dixit: Scri- 2
be prophetiã & explana eam in libro Legis, ut festinet ad sapientiã asse-
quendã quicunq; legerit in eo. Quoniam futura est prophetia illa [suo] tem- 3
pore, & parat⁹ est finis qui non obsolescet: si fuerit longitudo verbo, ipsũ
expectate, quandoquidem tempore suo eveniet, nec tardabit. En impii 4
dicunt: Illa omnia futura non sunt: justi verò in veritate sua permanebunt.
Quinetiam ecce quemadmodum homo errat in vino, superbus in impietate 5
& non permanebit, qui dilatat tanquã infern⁹ animam suam: & ipse est si-
cut mors, neque satiatur, sed colligit ad se omnes gentes, sibique propinqua
ducit omnia regna. Nónne illi omnes de ipso proverbia ferent, & narrati- 6
ones ænigmatum dicent de eo? diceturque: Væ qui multiplicat divitias non
suas: usquequo aggravat⁹ es in te gravitatem peccatorum? Nónne statim 7
surgent qui te opprimant, & revelabuntur qui te perterrefaciant, et eris eis
in prædam? Quia tu expilâsti gentes multas, expilabunt te omnes reliquiæ 8
tribuũ, ob sanguines hominũ, & rapinã terræ Israel, urbis Jerusalẽ & omni-
um habitantiũ in ea. Væ qui per vim accumulat divitias impietatis domi 9
suæ, ut ponat in celsitudine habitationem suam, ut liberetur à manu mali.
Consiliũ cepisti ignominiosũ domui tuæ, deprædatus es gentes multas, sed in 10
animam tuam peccâsti. Quoniam lapis de pariete clamat, quòd vim ei in- 11
feras: & putamen de medio trabis respondet ei. Væ qui ædificat civitatem 12
sanguine effuso, et jacit fundamenta urbis fraudibus. *Ecce* plaga validæ et 13
vehementis venient à conspectu Domini exercituum: et labor gentium
robustarum tanquam ignis, et regna in vanum sese fatigabunt. Quoniam 14
replebitur terra ad cognoscendum timorem Domini, sicut aquæ quæ mare operiunt.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

16 * ܘܕܒܚ ܠܡܨܝܕܬܗ. ܘܣܐܡ ܒܣܡܐ ܠܚܪܡܗ. ܡܛܠ ܕܒܗܘܢ ܫܡܝܢܐ ܡܢܬܗ
17 ܘܡܐܟܘܠܬܗ ܓܒܝܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܕܐ ܡܨܝܕܬܗ ܒܟܠܙܒܢ. ܘܩܛܠ ܥܡܡܐ ܘܠܐ ܚܝܣ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

1 * ܥܠ ܕܘܟܬܝ ܐܩܘܡ. ܘܐܩܝܡ ܪܓܠܝ ܥܠ ܟܐܦܐ. ܘܐܣܟܐ ܘܐܚܙܐ. ܡܢܐ ܢܡܠܠ ܥܡܝ.
2 ܘܡܢܐ ܢܦܢܐ ܠܝ ܥܠ ܡܟܣܢܘܬܝ. * ܘܥܢܐ ܡܪܝܐ ܘܐܡܪ. ܟܬܘܒ ܚܙܘܐ. ܘܦܫܩ ܥܠ
3 ܠܘܚܐ. ܕܢܪܗܛ ܒܗ ܡܢ ܕܩܪܐ ܠܗ. * ܡܛܠ ܕܚܙܘܐ. ܠܙܒܢܗ ܗܘܐ. ܘܢܐܬܐ ܣܦܐ. ܘܠܐ
4 ܢܕܓܠ. ܘܐܢ ܢܬܘܚܪ. ܠܐ ܬܬܟܪܐ ܠܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܡܐܬܐ ܐܬܐ. ܘܠܐ ܢܘܚܪ. * ܘܒܥܘܠܐ ܠܐ
5 ܨܒܝܐ ܢܦܫܗ. ܘܙܕܝܩܐ ܒܗܝܡܢܘܬܗ ܢܚܐ. * ܘܓܒܪܐ ܡܪܚܐ ܘܢܟܝܠܐ. ܠܐ ܢܣܒܥ. ܕܐܪܘܚ
ܢܦܫܗ ܐܝܟ ܫܝܘܠ. ܘܠܐ ܣܒܥ ܐܝܟ ܡܘܬܐ. ܟܢܫ ܠܘܬܗ. ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܩܪܒ
6 ܠܘܬܗ. ܟܠܗܘܢ ܐܡܘܬܐ. * ܗܠܝܢ ܟܠܗܘܢ. ܡܬܠܐ ܢܫܩܠܘܢ ܥܠܘܗܝ. ܘܦܠܐܬܐ ܘܐܘܚܕܬܐ
ܘܐܡܪܝܢ. ܘܝ ܠܡܟܢܫܢܐ ܡܣܓܝܢܐ ܠܗ ܕܠܐ ܕܝܠܗ. ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ ܡܝܩܪ ܥܠܘܗܝ
7 ܥܢܢܐ ܕܛܝܢܐ. * ܗܐ ܡܢ ܫܠܝܐ ܢܩܘܡܘܢ ܢܟܘܬܝܟ. ܘܢܬܬܥܝܪܘܢ ܡܙܝܥܢܝܟ.
8 ܘܬܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܒܙܬܐ. * ܡܛܠ ܕܐܢܬ ܒܙܬ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܢܒܙܘܢܟ ܥܡܡܐ
9 ܕܐܫܬܚܪܘ. ܡܢ ܕܡܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܘܥܘܠܐ ܕܐܪܥܐ. ܕܡܕܝܢܬܐ ܘܕܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ. * ܘܝ
ܠܡܥܠܒ ܘܡܟܢܫ ܒܝܫܬܐ ܠܢܦܫܗ. ܘܣܐܡ ܩܢܗ ܒܪܘܡܐ. ܕܢܬܦܨܐ ܡܢ ܒܝܫܬܐ.
10 * ܐܬܪܥܝܬ ܒܗܬܬܐ ܠܒܝܬܟ. ܒܙܬ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ. ܘܐܚܛܝܬ ܢܦܫܟ. * ܡܛܠ
11 ܕܟܐܦܐ. ܡܢ ܐܣܬܐ ܬܩܥܐ. ܘܣܟܬܐ. ܡܢ ܩܝܣܐ ܬܥܢܐ. * ܘܝ ܠܕܒܢܐ ܡܕܝܢܬܐ
12 ܒܕܡܐ. ܘܡܬܩܢ ܩܪܝܬܐ ܒܥܘܠܐ. * ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ. ܡܢ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܢܬܥܡܠܘܢ
13 ܥܡܡܐ ܒܢܘܪܐ. ܘܐܡܘܬܐ. ܒܣܪܝܩܘܬܐ ܢܠܐܘܢ. * ܡܛܠ ܕܬܬܡܠܐ ܐܪܥܐ ܠܡܕܥ ܐܝܩܪܗ
14 ܕܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܡܝܐ ܕܡܟܣܝܢ ܠܝܡܐ.

Sacrificat reti ſuo, & thus adolet ſagenæ ſuæ; 16
quia per hæc piguior fit portio ejus, & cibus
ejus, exquiſitus. Propterea jacit rete ſuum 17
quovis tempore, gentes occîdit nullâ adhibitâ clementiâ.

CAP. II.

IN loco meo conſiſtam, veſtigia habens ſuper 1
petra; ut præſtoler, ac videam quid loquatur
mihi, quidve reſpondeat mihi de correptione
mea. Reſpondit autem mihi Dominus, & ait; 2
Scribe viſionem, & diſtingue ſuper tabulas;
ut percurrat eam qui eam legerit. Nam viſio 3
hæc ſuo tempore futura eſt, terminus adveniet,
neque fallet: ſi cunctetur, ne pigeat vos;
citò enim veniet, neque tardabit. Iniquitate 4
non oblectatur anima ejus: Juſtus per fidem 5
vivet: Homo temerarius & avidus non ſatiatur:
Qui ampliavit animam ſuam ut infernum,
neque ſaturatur ut mors; congregavit
ad ſe omnes populos, & admovit ad ſe
omnes gentes. Hæc omnia proverbia, para- 6
bolas, & ænigmata de ipſo proferent, ac dicent;
Væ coacervanti & multiplicanti ſibi
quæ ſua non ſunt: quouſque tandem aggerabit
ſuper ſe nubem luti? En illicò ſurgent 7
qui te morſuri ſunt, evigilabunt qui te
concuſſuri ſunt, & eris illis direptioni.
Quia tu depopulatus es gentes multas, depo- 8
pulabuntur te gentes quæ ſuperſunt; propter
cædes humanas, & violentiam *illatam* terræ,
urbi, et omnibus habitatoribus ejus. Væ 9
opprimenti et congreganti malum animæ
ſuæ, et nidum ſuum in excelſo collocanti
ut malum effugiat. Ignominiam cogitâſti 10
domui tuæ, diripuiſti gentes multas, & teipſum
ad peccatum adegiſti. Nam lapis è 11
pariete exclamat, & clavus è ligno reſpondet;
Væ ædificanti urbem cædibus, & ſtabi- 12
lienti civitatem ſceleribus. Hæc omnia ſunt 13
à Deo potentiſſimo. Populi igne exagitabuntur,
& nationes in vanitate fatigabuntur;
Ad hoc ut impleatur terra agitatione majeſta- 14
tis Domini, ut aquæ tegentes mare.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

16 * مِنْ أَجْلِ هٰذَا يَذْبَحُ لِشَصِّهِ وَيُبَخِّرُ لِشَبَكَتِهِ * لِأَنَّ بِهِمَا دَسِمَ نَصِيبُهُ وَأَطْعِمَتُهُ ٱلْمُخْتَارَةُ * مِنْ 17
أَجْلِ هٰذَا يُلْقِي شَصَّهُ لِيَقْتُلَ ٱلْأُمَمَ كُلَّ حِينٍ * وَلَا يُشْفِقُ *

* ٱلْفَصْلُ ٱلثَّانِي *

1 * عَلَى مَحْرَسِي أَقِفُ * وَأَطْلُعُ عَلَى صَخْرٍ وَأَتَفَرَّسُ * لِأَنْظُرَ مَاذَا يَتَكَلَّمُ فِيَّ * وَمَاذَا أُجَاوِبُ عَلَى
2 تَبْكِيتِي * فَأَجَابَ ٱلرَّبُّ وَقَالَ لِي * أُكْتُبِ ٱلرُّؤْيَا بِإِيضَاحٍ عَلَى لَوْحٍ * كَيْ يُسْرِعَ قَارِئُهَا * مِنْ أَجْلِ 3
أَنَّ ٱلرُّؤْيَا أَيْضًا إِلَى زَمَانٍ * وَلَيْسَ تُشْرِقُ نِهَايَةً وَلَا بَاطِلًا * وَإِنْ أَبْطَأَ ٱنْتَظِرْهُ * لِأَنَّ ٱلْآتِيَ يَأْتِي * وَلَنْ
4 يُبْطِئَ * وَإِنْ ضَجِرَ لَمْ تُسَرَّ نَفْسِي بِهِ * وَعَدْلِي مِنَ ٱلْإِيمَانِ يَحْيَى * وَٱلْمُتَعَظِّمُ وَٱلْمُتَهَاوِنُ * وَٱلرَّجُلُ 5
ٱلْأَحْمَقُ لَا يُكْمِلُ شَيْئًا * ٱلَّذِي عَرَّضَ نَفْسَهُ كَٱلْجَحِيمِ * وَهُوَ مِثْلُ ٱلْمَوْتِ لَا يَمْتَلِئُ * وَيَجْمَعُ
6 إِلَيْهِ كُلَّ ٱلْأُمَمِ * وَيَقْبَلُ إِلَيْهِ كُلَّ ٱلشُّعُوبِ * أَلَيْسَ هٰذِهِ كُلُّهَا يَأْخُذُونَهَا عَلَيْهِ مَثَلًا * وَمَعْنًى
لِلْأَخْبَارِ عَنْهُ * وَيَقُولُونَ وَيْلُ ٱلْمُكْثِرِ لَهُ مَا لَمْ يَكُنْ لَهُ * حَتَّى مَتَى وَيُثْقِلُ طَوْقَهُ * لِأَنَّهُ يَثْقُلُ *
7 * لِأَنَّهُمْ يَقُومُونَ بَغْتَةً لَادِغُوهُ * وَيَنْتَبِهُونَكَ ٱلْمُشِيرُونَ عَلَيْكَ * وَتَصِيرُ ٱخْتِطَافًا لَهُمْ * مِنْ أَجْلِ 8
أَنَّكَ غَنِمْتَ أُمَمًا كَثِيرِينَ وَيَغْنَمُوكَ جَمِيعُ ٱلشُّعُوبِ ٱلْمُتَبَقِّينَ * لِأَجْلِ دِمَاءِ ٱلْبَشَرِ * وَنِفَاقِ ٱلْأَرْضِ
9 وَٱلْمَدِينَةِ وَجَمِيعِ ٱلسُّكَّانِ فِيهَا * وَاهِ ٱلَّذِي يَشْرَهُ شَرَهًا رَدِيًّا لِبَيْتِهِ * لِيُرَتِّبَ فِي ٱلْعُلَا عُشَّهُ *
10 لِيُفْلِتَ مِنْ يَدِ ٱلْأَشْرَارِ * رَوَّأْتَ لِبَيْتِكَ خِزْيًا * ٱسْتَأْصَلْتَ شُعُوبًا كَثِيرِينَ * وَأَخْطَأَتْ نَفْسُكَ *
11 * مِنْ أَجْلِ أَنَّ ٱلْحَجَرَ مِنَ ٱلْحَائِطِ يَصْرُخُ * وَٱلْوَتَدُ مِنَ ٱلشَّجَرِ يَنْطِقُ * وَيْلُ ٱلْبَانِي 12
13 مَدِينَةً بِٱلدِّمَاءِ * وَمُهَيِّئٍ مُدُنًا بِٱلْمَظَالِمِ * أَلَيْسَ هٰذِهِ هِيَ مِنْ قِبَلِ ٱلرَّبِّ ٱلضَّابِطِ ٱلْكُلِّ * وَفَنِيَتْ
14 ٱلشُّعُوبُ ٱلْكَثِيرِينَ بِٱلنَّارِ * وَأُمَمٌ كَثِيرِينَ صَغُرَتْ نُفُوسُهَا * لِأَنَّ ٱلْأَرْضَ كُلَّهَا ٱمْتَلَأَتْ لِتَعْرِفَ
مَجْدَ ٱلرَّبِّ * مِثْلَ مَاءٍ كَثِيرٍ يَغْشَاهُمْ *

Propterea immolabit unco ſuo, & thus 16
adolebit reti ſuo; quia per ea pinguem
reddidit portionem ſuam, cibóſque ſuos
electos. Propterea jacit uncum ſuum 17
ad occidendas gentes quocunque tempore,
neque parcit.

CAP. II.

Super cuſtodiam meam ſtabo, ſuper pe- 1
tram aſcendam, & contemplabor; ut videam
quid loquatur in me, & quid reſpondeam
ad correptionem meam. Et re- 2
ſpondit Dominus, dixitque mihi; Scribe
viſionem hanc dilucidè ſuper tabellam, ita
ut non immoretur legens eam: Quoniam 3
viſio adhuc ad tempus erit, & non orietur
finis, neque fruſtrà. Quòd ſi cunctetur,
expecta eum; quia qui venturus eſt,
veniet, & haudquaquam tardabit. Si 4
tædeat illum, non delectabitur eo anima
mea: & juſtitia mea ex fide vivit. Su- 5
perbus autem, & neglector, & homo ſtolidus
nihil ad finem perducet; qui animam
ſuam ut infernum dilatat, quique
mortis inſtar minimè ſaturatur, ſed colligit
ad ſe omnes gentes, & recipit ad ſe omnes
populos. Nónne hæc omnia aſſu- 6
ment de ipſo in proverbium & modum
narrandi de ipſo, ac dicent? Væ multiplicanti
ſibi quæ ſua non ſunt: quouſque
tandem aggravabit collare ſuum? jam
enim graviſſimum eſt. Nam ſubitò con- 7
ſurgent mordentes eum, diripiéntque te
qui conſilium contra te ineunt, & fies illis
ad rapinam. Quia deprædatus es gentes 8
multas, deprædabuntur te omnes populi
reſidui; propter ſangines humanos, & impietatem
terræ & urbis, omniúmque habitantium
in ea. Væ illi qui aviditate 9
peſſimâ cupidus eſt pro domo ſua, ut diſponat
in ſublimi nidū ſuum, ut effugiat manum
malignorum. Excogitâſti domui tuæ 10
pudorem: eradicâſti populos multos, &
peccare feciſti animam tuam. Nam lapis 11
è pariete clamat, & paxillus ex arbore loquitur;
Væ urbem ſanguinibus ædificanti, 12
& urbis ex impietatibus aptanti. Nónne 13
hæc ab omnipotente Domino ſunt? populi
multi ſunt igne conſumpti, & gentes
multæ puſillanimes factæ ſunt. Quia 14
tota terra implebitur ad cognoſcendam
gloriam Domini: velut aqua multa operiet eos.

חבקוק : ג

,inebriando etiam &,tuum *venenum* adjungenti ,ſuo *ſocio* propinanti Væ
15 הוֹי מַשְׁקֵה רֵעֵהוּ מְסַפֵּחַ חֲמָתְךָ וְאַף שַׁכֵּר
:gloria *præ*,ignominia es Saturatus .eorum nuditates *ſuper aſpiciendum ad*
16 לְמַעַן הַבִּיט עַל־מְעוֹרֵיהֶם׃ שָׂבַעְתָּ קָלוֹן מִכָּבוֹד
dexteræ calix te ſuper ſe vertet :præputium *denudare* & , tu etiam bibe
שְׁתֵה גַם־אַתָּה וְהֵעָרֵל תִּסּוֹב עָלֶיךָ כּוֹס יְמִין
Lebanon rapina Quia .tuam gloriam ſuper ignominioſus vomitꝰ & ,Dñi
17 יְהוָה וְקִיקָלוֹן עַל־כְּבוֹדֶךָ׃ כִּי־חֲמַס לְבָנוֹן
rapinā & ,*hominis ſanguines* propter,ea conteret *jumentorū* præda &,te operiet
יְכַסֶּךָּ וְשֹׁד בְּהֵמוֹת יְחִיתַן מִדְּמֵי אָדָם וַחֲמַס־
quia ?ſculptile *profuit* Quid .ea in habitantium omniū &,civitatis ,terræ
18 אֶרֶץ קִרְיָה וְכָל־יֹשְׁבֵי בָהּ׃ מָה־הוֹעִיל פֶּסֶל כִּי
fictor ſperavit quia:mendaciū docens &,conflatile,ejus fictor illud ſculpſit
פְסָלוֹ יֹצְרוֹ מַסֵּכָה וּמוֹרֶה שָּׁקֶר כִּי־בָטַח יֹצֵר
: ligno dicenti Væ ?muta *vana faciendum ad,eo ſuper* ſuo figmēto
19 יִצְרוֹ עָלָיו לַעֲשׂוֹת אֱלִילִים אִלְּמִים׃ הוֹי אֹמֵר לָעֵץ
coopertus *ipſe* Ecce *? docebit* ipſe : tacenti lapidi,te ſuſcita,Expergiſcere
הָקִיצָה עוּרִי לְאֶבֶן דּוּמָם הוּא יוֹרֶה הִנֵּה־הוּא תָּפוּשׂ
Dominus Et .ejus *interiori in* non ſpiritus omnis & ,argento & ,auro
20 זָהָב וָכֶסֶף וְכָל־רוּחַ אֵין בְּקִרְבּוֹ׃ וַיהוָה
.terra omnis ejus *faciebus à ſile : ſuæ ſanctitatis* templo in
בְּהֵיכַל קָדְשׁוֹ הַס מִפָּנָיו כָּל־הָאָרֶץ׃

CAP. III. ג

audivi Domine .*Sigionoth* ſuper prophetæ Chabbacuc Oratio
1 תְּפִלָּה לַחֲבַקּוּק הַנָּבִיא עַל שִׁגְיֹנוֹת׃ יְהוָה שָׁמַעְתִּי 2
,illud vivifica annorū *interiori* in tuum opus Domine ,timui ,tuum auditū
שִׁמְעֲךָ יָרֵאתִי יְהוָה פָּעָלְךָ בְּקֶרֶב שָׁנִים חַיֵּיהוּ
Deus .*recordaberis* miſericordiæ ira in *: facies* notū annorum *interiori* in
3 בְּקֶרֶב שָׁנִים תּוֹדִיעַ בְּרֹגֶז רַחֵם תִּזְכּוֹר׃ אֱלוֹהַּ
cœlos Operuit .Selah : Paran monte de Sanctus & ,veniet *Theman* à
מִתֵּימָן יָבוֹא וְקָדוֹשׁ מֵהַר־פָּארָן סֶלָה כִּסָּה שָׁמַיִם
, erat lux ut ſplendor Et .terra eſt plena ejus laudis &,ejus *decor*
4 הוֹדוֹ וּתְהִלָּתוֹ מָלְאָה הָאָרֶץ׃ וְנֹגַהּ כָּאוֹר תִּהְיֶה
ejus *facies Ad* .ejus fortitudinis abſconſio ibi Et .ei ejus manu de *cornua*
5 קַרְנַיִם מִיָּדוֹ לוֹ וְשָׁם חֶבְיוֹן עֻזֹּה׃ לְפָנָיו
eſt menſus & , Stetit .*ejus pedes ad carbo* egrediebatur & , peſtis ivit
6 יֵלֶךְ דָּבֶר וְיֵצֵא רֶשֶׁף לְרַגְלָיו׃ עָמַד וַיְמֹדֶד
,*perpetuitatis* montes ſunt contriti & ,gentes fecit *exſilire* & , vidit:terram
אֶרֶץ רָאָה וַיַּתֵּר גּוֹיִם וַיִּתְפֹּצְצוּ הַרְרֵי־עַד
iniquitate Sub ei ſeculi itinera ,*ſeculi* colles ſe incurvaverunt
7 שַׁחוּ גִּבְעוֹת עוֹלָם הֲלִיכוֹת עוֹלָם לוֹ׃ תַּחַת אָוֶן
.Midian terræ cortinæ ſe moverunt , Cuſan tentoria vidi
רָאִיתִי אָהֳלֵי כוּשָׁן יִרְגְּזוּן יְרִיעוֹת אֶרֶץ מִדְיָן׃
?tuus *naſus* flumina *in* Num ? Dominus eſt iratus flumina *in* Nunquid
8 הֲבִנְהָרִים חָרָה יְהוָה אִם בַּנְּהָרִים אַפֶּךָ
tuas quadrigas ,tuos equos ſuper *equitabis* quia ? tua ira mare *in* num
אִם־בַּיָּם עֶבְרָתֶךָ כִּי תִרְכַּב עַל־סוּסֶיךָ מַרְכְּבֹתֶיךָ
, *tribuum* juramenta , tuus arcus *denudabitur Denudatione* .ſalutem
9 יְשׁוּעָה׃ עֶרְיָה תֵעוֹר קַשְׁתֶּךָ שְׁבֻעוֹת מַטּוֹת
.*terram* ſcidiſti fluvios : Selah *dictum*
אֹמֶר סֶלָה נְהָרוֹת תְּבַקַּע־אָרֶץ׃

Verſio VULG. LAT.

15 Væ qui potum dat amico ſuo mit-
tens fel ſuum, & inebrians ut aſpi-
16 ciat nuditatē ejus. Repletus es i-
gnominiâ pro gloria: bibe tu quo-
que, & conſopire: circumdabit te
calix dexteræ Domini, & vomi-
tus ignominiæ ſuper gloriam tuā.
17 Quia iniquitas Libani operiet te,
& vaſtitas animalium deterrebit
eos de ſanguinibus hominum, &
iniquitate terræ, & civitatis, & o-
18 mnium habitantium in ea. Quid
prodeſt ſculptile, quia ſculpſit il-
lud fictor ſuus, conflatile, & ima-
ginem falſam ? quia ſperavit in
figmento fictor ejus, ut faceret ſi-
19 mulachra muta. Væ qui dicit li-
gno; Expergiſcere : Surge, lapidi
tacenti: numquid ipſe docere po-
terit ? Ecce iſte coopertus eſt auro
& argento: & omnis ſpiritus non
20 eſt in viſceribus ejus. Dominus
autem in templo ſancto ſuo: ſileat
à facie ejus omnis terra.

1 ORATIO HABACUC PROPHETÆ PRO IGNORANTIIS.

CAP. III.

2 Domine, audivi auditionē tuā,
& timui. Domine, opus tuum, in
medio annorum vivifica illud. In
medio annorum notum facies :
cùm iratus fueris, miſericordiæ re-
3 cordaberis. Deus ab Auſtro ve-
niet, & Sanctus de monte Pharan.
Operuit cœlos gloria ejus: & lau-
4 dis ejus plena eſt terra. Splen-
dor ejus ut lux erit: cornua in ma-
nibus ejus: Ibi abſcondita eſt for-
5 titudo ejus: Ante faciem ejus ibit
mors. Et egredietur diabolus ante
6 pedes ejus. Stetit, & menſus eſt
terram. Aſpexit, & diſſolvit Gen-
tes: & contriti ſunt montes ſeculi.
Incurvati ſunt colles mundi, ab
7 itineribus æternitatis ejus. Pro
iniquitate vidi tentoria Æthio-
piæ, turbabuntur pelles terræ Ma-
8 dian. Numquid in fluminibus ira-
tus es, Domine ? aut in fluminibus
furor tuus ? vel in mari indigna-
tio tua? Qui aſcendes ſuper equos
tuos : & quadrigæ tuæ ſalvatio.
9 Suſcitans ſuſcitabis arcum tuum,
juramenta tribubus quæ locutus
es. Fluvios ſcindes terræ :

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 Ὦ ὁ ποτίζων τὸν πλησίον αὐτοῦ ἀνατροπῇ θο-
λερᾷ, καὶ μεθύσκων ὅπως ἐπιβλέπῃ ἐπὶ τὰ
16 σπήλαια αὐτῶν. Πλησμονὴν ἀτιμίας ἐκ
δόξης πίε καὶ σὺ· καρδία σαλεύθητι, καὶ σεί-
σθητι· ἐκύκλωσεν ἐπὶ σὲ ποτήριον δεξιᾶς
κυρίου, καὶ συνήχθη ἀτιμία ἐπὶ τὴν δόξαν σου.
17 Διότι ἀσέβεια τοῦ Λιβάνου καλύψει σε, καὶ τα-
λαιπωρία θηρίων πτοήσει σε, (ʺ) δι' αἵματα
ἀνθρώπων, καὶ (π) ἀσεβείας γῆς καὶ πόλεως,
18 καὶ πάντων τῶν κατοικούντων (ρ) αὐτήν. Τί ὠ-
φελεῖ γλυπτὸν, ὅτι ἔγλυψαν αὐτό; ἔπλα-
σεν αὐτὸ χώνευμα, φαντασίαν ψευδῆ, ὅτι
πέποιθεν ὁ πλάσας ἐπὶ τὸ πλάσμα αὐτοῦ,
19 τοῦ ποιῆσαι εἴδωλα κωφά. Οὐαὶ ὁ λέγων
τῷ ξύλῳ, Ἔκνηψον, ἐξεγέρθητι· καὶ τῷ λί-
θῳ, Ὑψώθητι· καὶ αὐτό ἐστι φαντασία· τοῦτο
δέ ἐστιν ἔλασμα χρυσίου καὶ ἀργυρίου, καὶ πᾶν
20 πνεῦμα οὐκ ἔστιν ἐν αὐτῷ. Ὁ δὲ κύριος ἐν
ναῷ ἁγίῳ αὐτοῦ· εὐλαβείσθω ἀπὸ προσώπου
αὐτοῦ πᾶσα ἡ γῆ.

MS.A. (ʺ) διὰ (π) ἀσέβειαν (ρ) αὐτῶν.

1 ΠΡΟΣΕΥΧῊ ἈΜΒΑΚΟῪΜ ΤΟΥ͂ ΠΡΟΦΉΤΟΥ, (α) ΜΗΤᾺ ᾨΔΗ͂Σ.

2 † Κύριε εἰσακήκοα τὴν ἀκοήν σου, καὶ ἐφοβή-
θην· † κατενόησα τὰ ἔργα σου, καὶ ἐξ-
έστην. † ἐν μέσῳ δύο ζώων γνωσθήσῃ, † ἐν
τῷ ἐγγίζειν τὰ ἔτη ἐπιγνωσθήσῃ· † ἐν
τῷ παρεῖναι τὸν καιρὸν ἀναδειχθήσῃ· † ἐν τῷ
ταραχθῆναι τὴν ψυχήν μου, ἐν ὀργῇ ἐλέους
3 μνησθήσῃ. † Ὁ θεὸς ἐκ Θαιμὰν ἥξει, † καὶ ὁ
ἅγιος ἐξ ὄρους Φαρὰν κατασκίου (ʺ) δασέος.
ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † ἐκάλυψεν οὐρανοὺς ἡ ἀ-
ρετὴ αὐτοῦ, † καὶ αἰνέσεως αὐτοῦ πλήρης ἡ γῆ.
4 † Καὶ φέγγος αὐτοῦ ὡς φῶς ἔσται· † κέρατα
ἐν χερσὶν αὐτοῦ, † καὶ ἔθετο ἀγάπησιν κρα-
5 ταιὰν ἰσχύος αὐτοῦ. † Πρὸ προσώπου αὐτοῦ
πορεύσεται λόγος, † καὶ (β) ἐξελεύσεται εἰς πε-
6 δία· κατὰ πόδας αὐτοῦ † Ἔστη, καὶ ἐσαλεύθη ἡ
γῆ. † ἐπέβλεψε, καὶ διετάκη ἔθνη· † (ʺ) δι-
εθρύβη τὰ ὄρη βίᾳ, † ἐτάκησαν βουνοὶ αἰώνιοι
7 † πορείας (ς) αἰωνίας αὐτοῦ. Ἀντὶ κόπων
εἶδον † σκηνώματα Αἰθιόπων, πτοηθήσονται
8 † καὶ αἱ σκηναὶ γῆς Μαδιάμ. † Μὴ ἐν ποτα-
μοῖς (˜) ὠργίσθης κύριε; † ἢ ἐν ποταμοῖς ὁ
θυμός σου; † ἢ ἐν θαλάσσῃ τὸ ὅρμημά σου;
† ὅτι ἐπιβήσῃ ἐπὶ τοὺς ἵππους σου, † καὶ ἡ
9 ἱππασία σου σωτηρία. † Ἐντείνων (δ) ἐνέ-
τεινας τόξον σου † ἐπὶ σκῆπτρα, λέγει κύρι-
ος. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. † ποταμῶν ῥαγήσεται γῆ.

MS.A. (α) ΜΕΤ' (ʺ) δασέως. (β) ἐξελεύσεται ἐν πεδίλοις οἱ πόδες αὐτοῦ. Ἔστη,
(ʺ) καὶ (ς) αἰωνίους αὐτοῦ. (˜) ὠργίσθης (δ) ἐνέτεινες τὸ τόξον σου ἐπὶ τὰ σκῆπτρα,

*O, qui propinat proximo ſuo (n) 15
ſubverſionem turbidā, et inebriat,
ut aſpiciat in (o) ſpeluncas eorū:
Saturitatem ignominiæ de gloria 16
bibe (p) et tu: cor commovere, &
concutere: circundedit te calix
dexteræ Domini: & congregata
eſt ignominia ſuper gloriā tuam.
Quia impietas Libani operiet te, 17
& miſeria beſtiarum terrebit te:
propter ſanguines hominū, et im-
pietates terræ, & civitatis, & o-
mnium habitantium in ea. Quid 18
prodeſt ſculptile, * quia ſculpſerūt
illud? Formavit illud conflatile,
imaginem falſam: quia confidit fi-
ctor in figmento ſuo, ut faciat i-
dola (q) muta. Væ, qui dicit ligno;
Evigila, exurge: et lapidi; Eleva- 19
re: & ipſum eſt imago: illud verò
eſt productio auri, et argēti: et (r)
omnis ſpiritꝰ non eſt in eo. Domi- 20
nus autē in templo ſancto ſuo: re-
vereatur à facie ejus omnis terra.*

*ORATIO AMBACUM PRO-
PHETÆ, (a) CUM CANTICO.* 1

*Domine, audivi auditum tu- 2
um, & timui: (b) conſidera-
vi opera tua, & obſtupui. In me-
dio duorum (c) animalium cog-
noſcēris: cùm appropinquaverint
anni; cognoſcēris: (d) cùm adve-
nerit tempus, demonſtraberis: cùm
turbata fuerit anima mea in ira;
miſericordiæ recordaberis. Deus 3
à (e) Thæman veniet, & Sanctus
de monte (f) Pharan umbroſo
condenſo. (g) DIAPSALMA. O-
peruit cœlos virtus ejus, & lau-
dis ejus plena eſt terra. Et ſplen- 4
dor ejus, quaſi lux erit. Cornua in
manibus ejus: et poſuit dilectionē
robuſtā (h) fortitudinis ſuæ. Ante 5
faciem ejus ibit (i) verbū, et (k) e-
gredietur in campos: ad pedes ejus
Stetit, et commota eſt terra. Aſpe- 6
xit, & diſtabuerunt gentes: con-
triti ſunt montes violentiâ: tabue-
runt colles (l) ſempiterni (m) i-
tineris ſempiterni ejus. Pro labo- 7
ribꝰ vidi tabernacula Æthiopū:
pavebunt & tabernacula terræ
Madiā. Nunquid in fluminibꝰ i- 8
ratus es, Domine? aut in fluminibꝰ
furor tuus? vel in mari impetus
tuus? Quia aſcendes ſuper equos
tuos, et equitatio tua ſalus. Inten- 9
dens (n) intendiſti arcum tuum
ſuper ſceptra, dicit Dominus. DIAPSALMA. (o) Fluviorum ſcindetur terra.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 ווי דמשקי לחבריה וזליף בחמא בדיל דישתי ויתרוי ויתגלי קלניה : שבעת קלנא מן
16 יקרא תשת אף את ואתערטל יסתחר עלך כס דלוט מן קדם יי ויתי קלנא על יקרך :
17 ארי חטוף בית מקדשא יחפנך ובזת עמיה תתברנך מדמי אנשא וחטוף ארע דישראל
18 קרתא ירושלם וכל דיתבין בה : מא אהני צלמא ארי אתכיה עבדיה מתכא ודחלת
19 שקר ארי אתרחיץ לבא דעבדיה עלוהי למעבד טעון דלית בהון צרוך : ווי דאמר
לצלם אעא קום ולדחלת אבנא אתערי והיא שתקא ודמיא הוא מכלי הא הוא מחפי
20 דהב וכסף וכל רוח לית במעוהי : ויי אתרעי לאשראה שכנתיה בהיכלא דקודשיה
ויסופון מן קדמוהי כל דחלת ארעא :

ג

1 צלותא דצלי חבקוק נביא כד אתגלי ליה על ארכא דיהב לרשיעיא דאם יתובון
לאוריתא בלבב שלים ישתבק להון ויהון כל חוביהון דחבו קדמוהי הא כשלותא :
2 יי שמעית שמע גבורתך דחלית יי רברבין עובדך די את יהב ארכא לרשיעיא דאם
יתובון לאוריתך ולא תבו ואנון מרגזין קדמך בגו שניא דיהבתא להון חייא בכן את
עתיד להודע גבורתך בגו שניא דאמרתא לחדתא עלמא לאתפרעא מרשיעיא
3 דעברו על מימרך וצדיקיא עבדי רעותך ברחמין תדכר : במתן אוריתא לעמיה
אלהא מדרומא אתגלי וקדישא מטורא דפארן בגבורת עלמין אתחפיאו שמיא
4 זיו יקריה ואמרי תושבחתיה מליא ארעא : וזהור יקריה כזהור בראשית אתגלי
וזקוקין מרכבת יקריה נפקין תמן גלא ית שכנתיה דהות מטמרא מבני אנשא
5 בתקוף רומא : מן קדמוהי משתלח מלאך מותא ונפיק בשלהובית אשתא מימריה :
6 אתגלי ואזיע ארעא ואיתי מבולא על עם דרא דעברו על מימריה ואף בתניתא כד חבו
קדמוהי בחוביהון כן בלבלינון לעממיא ואתפרקו טוריא דמלקדמין מכא רמתא דמן
7 עלמא גבורת עלמא דיליה : כד פלחו בית ישראל לטעותא מסרתנון ביד כושן
חיבא וכד תבו למעבד אוריתא עבדית להון נסין וגבורן ופרקתנון מיד מדינאי על
8 יד גדעון בר יואש : הא על מלכיהון ומשריתהון דסגיאין כמי נהרא הוה רגז מן קדמך
יי על מלכיא הוה רוגזך ובימא הודעתא בהון פורענות גבורתך ארי אתגליתא
9 על מרכבת יקרך שכנתך לעמך תקוף ופורקן : אתגלאה אתגליתא בגבורתך
בדיל קימך דעם שבטיא מימרך קים לעלמין להון בזועתא טנרין תקיפין נפקו
נהרין שטפין ארעא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Væ qui propinat ſocio ſuo , & fundit cum calore ut bibat & inebrietur, 15
patefiatq; ejus ignominia. Satiatus es ignominia pluſquam honore : tu quoq; 16
bibe & denudare: revertetur in te calix maledictionis à conſpectu Dñi, & ve-
niet ignominia ſuper decus tuum. Siquidem rapina domus ſanctuarii operiet 17
te, & præda populi ejus conteret te, ob ſanguines hominum, & rapinam ter-
ræ Iſrael, urbis Jeruſalem & omnium habitantium in ea. Quid profuit ſimu- 18
lachrū ꝙ conflaverit illud factor ipſius? conflatile & numē falſum quod con-
fiſum ſit in eo cor factoris ipſiꝰ, ut faceret idola in quibꝰ nulla eſt utilitas? Væ 19
qui dicit ſimulachro, Lignū ſurge; & idolo lapideo Expergiſcere: ipſū autē ta-
cet, licet ſimilitudine illud referat clamantē: ecce ipſū obductū eſt auro & ar-
gento, nullusq; ſpiritꝰ ineſt viſceribꝰ ejꝰ. Dñs autē voluit collocare majeſtatē 20
ſuā in tēplo ſanctitatis ſuæ , à cujꝰ conſpectu conſumētur omnia idola terræ.

CAP. III.

ORatio quā oravit Chabacuc propheta, quando revelatū eſt ei de lōgitudi- 1
ne [*temporis*] quam dedit [*Deus*] impiis: quòd ſi cōvertantur ad Legē corde
perfecto, remittetur eis, eruntq; omnia eorum ſcelera quæ admiſerunt in con-
ſpectu ejus tanquam ignorantia. Dñe audivi famam potentiæ tuæ: timui Dñe 2
grandia opera tua, quippe qui dederis longitudinem impiis ſi convertātur ad
Legem tuam : quòd ſi non convertantur, ſed ipſi provocaverint te ad iram in
medio annorum quibus dediſti eis vitam, tandem ita futurum eſt ut notam fa-
cias potentiam tuam in medio annorum, quibus dixiſti te renovaturum mun-
dum, ut vindictā ſumas de impiis qui tranſgreſſi ſunt verbū tuū: juſtorū autē
qui præſtant voluntatē tuā, cum miſerationibꝰ memineris. Quum daret Le- 3
gem populo ſuo Deus, ab Auſtro revelatꝰ eſt, & Sanctꝰ à monte Pharan: per
potentiā æternā operti ſunt cœli ſplendore gloriæ ipſiꝰ, & eloquiis laudis ejꝰ
repleta eſt terra. Porrò ſplendor gloriæ ejꝰ ſicut ſplendor primigeniꝰ appa- 4
ruit, & ſcintillæ à quadriga gloriæ ejꝰ prodierunt, ibi patefecit majeſtatē ſuā,
quæ abſcondita eſt à filiis hominū cum potentia ſublimi. Ab ejꝰ conſpectu 5
emiſſus eſt angelꝰ mortis, & prodiit in flamma ignis verbū ejꝰ. Revelatꝰ eſt 6
& commovit terrā, & adduxit diluviū ſuper populū generationis eorū qui
tranſgreſſi fuerāt verbū ſuum: & etiā ſecundò quando peccaverunt corā ipſo
peccatis ſuis, ſic confudit ipſas gentes & fracti ſunt montes qui erāt ab anti-
quo, depreſſi colles qui exſtiterant à ſeculo, ejꝰ eſt mundi potentia. Quando 7
coluit domꝰ Iſrael idola, tradidi eos in manu Cuſſan ſcelerati ; ſed quando
converſi ſunt ut præſtarēt Legē, edidi ipſis ſigna & virtutes, & liberavi eos à
manu Madianitarū ꝑ manū Gedeonis filii Joas. En ſup *reges eorū* & exer- 8
citꝰ ipſorū qui multi ſunt ut aquæ fluminis exſtitit ira à cōſpectu tuo Dñe, &
ſup reges fuit furor tuꝰ, ac per mare notā feciſti in eos ultionē potentiæ tuæ,
quoniā patefactꝰ es ſup quadrigā gloriæ tuæ : majeſtas tua populo tuo robur
fuit & redemptio. Revelādo revelatus es cum potētia tua propter fœdus 9
tuum quod cum tribubus Verbum tuum pepigit in ſecula ipſis ; ſcidiſti eis
rupes fortes, & manarunt flumina inundantia terram.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܝ ܠܡܫܩܝܢܐ ܠܚܒܪܗ ܬܠܝܐ ܕܚܡܬܐ ܘܡܪܘܐ ܠܗ. ܕܢܚܙܐ ܥܪܛܠܝܘܬܗܘܢ. * ܣܒܥܬ 15
ܨܥܪܐ ܡܢ ܐܝܩܪܐ. ܐܫܬܝ ܐܦ ܐܢܬ ܘܐܬܬܙܝܥ. ܢܬܗܦܟ ܥܠܝܟ ܟܣܐ ܕܝܡܝܢܗ ܕܡܪܝܐ. 16
ܘܨܥܪܐ ܥܠ ܐܝܩܪܟ. * ܡܛܠ ܕܚܛܘܦܝܐ ܕܠܒܢܢ ܢܟܣܝܟ. ܘܒܙܬܐ ܕܚܝܘܬܐ ܬܒܥܬܟ. 17
ܡܢ ܕܡܐ ܕܒܢܝܢܫܐ. ܘܚܛܘܦܝܐ ܕܐܪܥܐ. ܕܡܕܝܢܬܐ ܘܕܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ. * ܡܢܐ 18
ܐܘܬܪ ܦܣܠܐ ܕܦܣܠܗ ܐܘܡܢܗ. ܘܢܣܟܐ ܗܘ ܘܡܠܦܢܐ ܕܓܠܐ. ܕܬܟܠ ܥܠܘܗܝ ܠܒܐ
ܕܐܘܡܢܗ ܠܡܥܒܕ. ܕܢܥܒܕ ܦܬܟܪܐ ܫܬܝܩܐ. * ܘܝ ܠܕܐܡܪ ܠܩܝܣܐ ܐܬܬܥܝܪ. 19
ܘܠܟܐܦܐ ܫܬܝܩܬܐ ܕܩܘܡ. ܣܪܝܩܝܢ ܐܢܘܢ. ܘܕܗܒܐ ܡܚܦܝܢ. ܘܪܘܚܐ ܠܝܬ ܒܗܘܢ.
* ܘܡܪܝܐ ܒܗܝܟܠܐ ܕܩܘܕܫܗ. ܬܙܘܥ ܡܢ ܩܕܡܘܗܝ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. 20

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

* ܨܠܘܬܗ ܕܚܒܩܘܩ * 1

* ܡܪܝܐ ܫܡܥܬ ܫܡܥܟ ܘܕܚܠܬ. ܡܪܝܐ ܥܒܕܝܟ ܒܓܘ ܫܢܝܐ ܕܚܝܐ. ܒܓܘ ܫܢܝܐ 2
ܬܬܝܕܥ. ܒܪܘܓܙܐ ܪܚܡܝܟ ܬܬܕܟܪ. * ܐܠܗܐ ܡܢ ܬܝܡܢܐ ܢܐܬܐ. ܘܩܕܝܫܐ ܡܢ ܛܘܪܐ ܕܦܐܪܢ. 3
ܐܬܚܦܝܘ ܫܡܝܐ ܡܢ ܙܝܘܐ ܕܡܫܒܚܐ. ܘܡܢ ܬܫܒܘܚܬܗ ܐܬܡܠܝܬ ܐܪܥܐ. * ܘܙܗܘܪܗ ܐܝܟ 4
ܢܘܗܪܐ ܢܗܘܐ. ܒܡܕܝܢܬܐ ܕܐܝܕܘܗܝ ܢܣܝܡ ܚܝܠܗ ܒܦܪܘܡܐ. * ܩܕܡܘܗܝ ܢܐܙܠ ܡܘܬܐ. 5
ܘܢܦܩܢ ܦܪܚܬܐ ܠܪܓܠܘܗܝ. * ܩܡ ܘܡܫܚܗ ܠܐܪܥܐ. ܚܪ ܘܐܬܦܫܪܘ ܥܡܡܐ. ܐܬܒܕܪܘ 6
ܛܘܪܐ ܕܡܢ ܥܠܡ. ܘܐܬܡܟܟܘ ܪܡܬܐ ܕܡܢ ܥܠܡܝܢ. ܕܝܠܗ ܐܢܝܢ ܗܠܟܬܐ ܕܡܢ
ܥܠܡ. * ܬܚܝܬ ܐܘܢ. ܚܙܝܬ ܡܫܟܢܐ ܕܟܘܫܢ. ܢܬܙܝܥܘܢ ܡܫܟܢܝ ܐܪܥܐ ܕܡܕܝܢ. 7
* ܠܐ ܒܢܗܪܘܬܐ ܪܓܙ ܡܪܝܐ. ܒܢܗܪܘܬܐ ܪܘܓܙܟ. ܘܒܝܡܐ ܚܡܬܟ. ܕܪܟܒܬ ܥܠ 8
ܪܟܫܟ. ܘܥܠ ܡܪܟܒܬܐ ܕܦܘܪܩܢܟ. * ܡܬܥܝܪܐ ܬܬܥܝܪ ܩܫܬܟ. ܘܢܣܒܥܘܢ ܓܐܪܐ 9
ܒܡܐܡܪܟ ܡܫܒܚܐ. ܘܐܪܥܐ ܒܢܗܪܘܬܐ ܬܬܒܙܥ.

Væ bibendam exhibenti ſocio ſuo fæcem iræ, 15 & inebrianti eum, ut conſideret nuditatem eorum. Saturatus es ignominiâ pluſquam honore: bibe etiam tu, & vexare: redeat ſuper te calix dexteræ Domini, & ignominia 16 ſuper honorem tuum. Nam violentia Libani 17 operiet te, & rapina ferarum exagitabit te; propter cædes humanas, & vim illatam terræ, urbi, & omnibus habitatoribus ejus. Quid prodeſt ſculptile quod ſculpſit artifex 18 ejus, & fuſile illud, atque doctrina falſa; cui animus artificis adeò confiſus eſt, ut faceret ſimulacrum mutum? Væ illi qui ligno dicit, 19 Expergiſcere; & lapidi muto, Surge. Inania ſunt, licèt auro obducta, neque ſpiritus ineſt eis. Dominus autem in templo ſuæ ſancti- 20 tatis eſt: trepidet à conſpectu ejus univerſa terra.

CAP. III.

Oratio Habacuc. 1

Domine, audivi nomen tuum, ac timui. 2 Domine, opera tua *pateſcent* in medio annorum vitæ, in medio annorum innoteſces, tempore iræ memento miſerationum tuarum. Deus ab Auſtro venit, & Sanctus de monte 3 Pharan; operti ſunt cœli ſplendore Glorioſiſſimi, & majeſtate ejus impleta eſt terra. Nitor ejus ut lux etiam erit, in civitate ma- 4 nuum ſuarum collocabit robur ſuum in ſuburbio. Ante ipſum præcedet mors, & egre- 5 dientur volucres ad pedem ejus. Surrexit, & 6 menſus eſt terram: aſpexit, & liquati ſunt populi; diſſipati ſunt montes qui à ſeculo erant, & humiliati colles qui erant à ſeculis: ipſius *enim* ſunt greſſus æterni. Subter On 7 vidi tentorium Chuſan: tremefacta ſunt aulæa terræ Madian. Contra flumina iratus 8 eſt Dominus: in fluminibus ira tua, & in mari eſt impetus tuus. Conſcendiſti equos tuos & currum ſalutis tuæ. Evigilans evigilabit ar- 9 cus tuus, & ſaturabuntur ſagittæ, ad juſſum tuum glorioſum; & terra fluminibus diſcindetur.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ويل الساقي قريبه دردياً عكراً فيسكر كي ينظر الى معايرهم * امتل اهانة من الرأي * 15 16
اشرب وتصور * ترعرع وتزلزل * احاط بك كاس يمين الرب * واجتمعت الاهانة على شرفك *
* من اجل ان نفاق لبنان يغشاك * وشقوة الوحوش تفزعك * من اجل دماء البشر * ونفاق 17
الارض والمدينة وجميع سكانها * ما ينفع المنحوت لانهم نحتوه * جبلوه سبيكا * خيالا كذبا * 18
لان جابلك توكل على جبلته * ليصنع اصناما بكما * ويل القايل للخشبة انتبه وقم * 19
وللحجر ارتفع * وهذا هو خيال * وهذا هو قرمة من ذهب وفضة * ولم يكن فيها روح بالكلية *
* والرب في هيكل قدسه * ليرتاع من وجهه كل الارض * 20

* الفصل الثالث *

* صلاة حبقوق النبي بتسبحة *

* يا رب سمعت سماعك فخفت * تأملت اعمالك فبهت * في وسط حيوانين تعرف * عند ما تقرب 1
السنون تعلم * عند ما يحضر الزمان تظهر * عند ما تضطرب نفسي بالغضب تذكر الرحمة * 2
* الله من المشرق ياتي * والقدوس من جبل ظليل حسن * غشت السموات فضيلته * ومن 3
تسبحته الارض مملوة * وضوءه مثل نور يكون * قرون في يديه * وضع محبة قوته من قوته * 4
* قدام وجهه يسير القول * ويخرج الادب مع قدميه * قام فتزعزعت الارض * نظر فذابت 5 6
الامم * تفتت الجبال عسفا * ذابت الاكام الدهرية * نظروا مسالكهم الابدية عوض الاتعاب * 7
مساكن الحبوش تجزع * ومظال ارض مدين * هل في الانهار تزجر يا رب * او في الانهار غضبك * 8
او في البحر غضبك * لانك تركب على خيلك * وفروسيتك خلاص * ماد مدا قوسك على 9
الوية * يقول الرب من المياه تشق الارض *

Væ propinanti proximo ſuo fæcem turbidam unde inebrietur, ut inſpiciat ſpeluncas eorum. Implere ignominiâ ex mente, bibe & contorquere, commovere & concutere: obſedit te calix dexteræ Domini, & congregata eſt ignominia contra faſtum tuum. 15 16 *Impietas enim Libani obruet te, & miſeria belluarum terrebit te; propter ſanguines humanos; & impietatem terræ & urbis, omniúmque habitatorum ejus.* 17 *Quid prodeſt ſculptile quòd ſculpſerint illud, formaverint conſtatile, imaginem falſam? nam fictor tuus figmento ſuo confiſus eſt, ut conficeret idola muta.* 18 *Væ dicenti ligno, Evigila & ſurge; & lapidi, Erige te: cùm hoc ſit imago, idémque ſit fragmentum auri & argenti, quibus nullus omninò ineſt ſpiritus.* 19 *Dominus autem in templo ſanctitatis ſuæ eſt: vereatur à facie ejus univerſa terra.* 20

CAP. III.

Oratio Habacuc Prophetæ in *modum* Cantici. 1

O *Domine, audivi auditum tuum, & timui: contemplatus ſum opera tua, & obſtupui. In medio duorum animalium cognoſcêris; cùm appropinquaverint anni, notus eris; cùm advenerit tempus, apparebis; cùm turbata fuerit anima mea, in ira miſericordiæ recordaberis.* 2 *Deus ab Oriente veniet, & Sanctiſſimus è monte umbroſo aſpero. Operuit cœlos excellentia ejus, & laude ipſius plena eſt terra:* 3 *Et ſplendor ejus ut lux erit: cornua in manibus ejus: poſuit amorem potentem ex potentia ſua.* 4 *Ante faciem ejus gradietur ſermo, & diſciplina prodibit cum veſtigiis ejus.* 5 *Surrexit, & contremuit terra: aſpexit, & liquefactæ ſunt gentes: comminuti ſunt montes præ violentia: liquati ſunt colles æterni.* 6 *Viderunt vias ſuas æternas pro laboribus: habitacula Æthiopum formidabunt, & tentoria terræ Madian.* 7 *Num fluvios increpares O Domine? an contra fluvios ira tua? an contra mare indignatio tua? quòd equos tuos conſcenderis, cùm equitatus tuus ſit ſalus?* 8 *Tendens tetenderis arcum tuum ſuper vexilla? Dicit Dominus, Præ aquis diffindetur terra.* 9

צפניה : א

vorago dedit:tranſiit aquarum inundatio,montes tremuerunt,te Viderũt
10 ראוך יחילו הרים זרם מים עבר נתן תהום
:ſuo habitaculo ſtetit Luna Sol .elevavit *ſuas manus* altitudo,ſuũ ſonitũ
קולו רום ידיהו נשא: שמש ירח עמד זבלה 11
ira In .tuæ haſtæ fulguris ſplendorem ad ,*ibunt* tuarũ ſagittarũ lucem ad
12 לאור חציך יהלכו לנגה ברק חניתך: בזעם
, tui populi ſalutẽ in es Egreſſus .gentes *triturabis naſo* in ,terram *incedes*
13 תצעד־ארץ באף תדוש גוים: יצאת לישע עמך
denudando ,impii domo de caput Transfixiſti .tuo Chriſto cum ſalutẽ in
לישע את־משיחך מחצת ראש מבית רשע ערות
caput ejus baculis *in* Perfodiſti .Selah , collum ad uſque fundamentum
14 יסוד עד־צואר סלה: נקבת במטיו ראש
comedendũ ad quaſi eorũ exultatio:me diſpergendũ ad *turbinabunt*,ejꝰ *paganorũ*
פרזו יסערו להפיצני עליצתם כמו־לאכל
aquarum acervo ,tuos equos mari in feciſti Calcare .abſcondito in *afflictum*
15 עני במסתר: דרכת בים סוסיך חמר מים
,mea labia *palpitarunt* vocẽ ad,meꝰ venter expavit & , Audivi .multarum
16 רבים: שמעתי ותרגז בטני לקול צללו שפתי
die in *requieſcam* qui ,expavi *me ſubtus* &,mea oſſa in putredo eſt ingreſſa
יבוא רקב בעצמי ותחתי ארגז אשר אנוח ליום
, *florebit* non ficus Quia .eum *excidet* ,populum *ad aſcendendo* ,anguſtiæ
17 צרה לעלות לעם יגודנו: כי־תאנה לא־תפרח
non arva & ,olivæ opus mentiebatur ; vitibus in *germen* non &
ואין יבול בגפנים כחש מעשה־זית ושדמות לא־
ego Et .*bovilibus* in bos non & ,pecus ovili de *abſcidit* : cibum *fecit*
18 עשה אכל גזר ממכלה צאן ואין בקר ברפתים: ואני
Dominus DEUS .mea ſalute Deo in lætabor , exultabo Domino in
19 ביהוה אעלוזה אגילה באלהי ישעי: יהוה אדני
mea excelſa ſuper & ,*cervarum* tanquam meos pedes ponet & ,mea *virtus*
חילי וישם רגלי כאילות ועל־במותי
.meis *modulationibus* in victorem : me faciet calcare
ידרכני למנצח בנגינותי:

Verſio VULG. LAT.

10 Viderunt te, & doluerunt montes: gurges aquarum tranſiit. Dedit abyſſus vocẽ ſuam: altitudo manus 11 ſuas levavit. Sol & Luna ſteterunt in habitaculo ſuo, in luce ſagittarum tuarũ, ibunt in ſplendore fulgurantis haſtæ tuæ. 12 In fremitu conculcabis terrã: in furore obſtupefacies Gentes. 13 Egreſſus es in ſalutem populi tui, in ſalutem cum Chriſto tuo. Percuſſiſti caput de domo impii: denudâſti fundamentum ejus uſque ad collũ. 14 Maledixiſti ſceptris ejus, capiti bellatorũ ejꝰ, venientibꝰ ut turbo ad diſpergendũ me. Exultatio eorum, ſicut ejus qui devorat pauperẽ in abſcondito. 15 Viam feciſti in mari equis tuis, in luto aquarum multarum. 16 Audivi, & conturbatus eſt venter meus: à voce contremuerunt labia mea. Ingrediatur putredo in oſſibus meis, & ſubter me ſcateat. Ut requieſcam in die tribulationis: ut aſcendam ad populum accinctũ noſtrum. 17 Ficus enim non florebit: & non erit germen in vineis. Mentietur opus olivæ: & arva non afferent cibum. Abſcindetur de ovili pecus: & non erit armentum in præſepibus. 18 Ego autem in Domino gaudebo: & exultabo in Deo Jeſu meo. 19 Deus Dominus fortitudo mea: & ponet pedes meos quaſi cervorum. Et ſuper excelſa mea deducet me victor in Pſalmis canentem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 † Ὄψονταί σε, καὶ ὠδινήσουσι λαοί, † σκορπίζων ὕδατα πορείας (ε)· † ἔδωκεν ἡ ἄβυσσος φωνὴν αὐτῆς, † ὕψος φαντασίας αὐτοῦ. 11 † Ἐπήρθη ὁ ἥλιος, καὶ ἡ σελήνη ἔστη ἐν τῇ τάξει αὐτῆς· † εἰς φῶς βολίδες σου πορεύσονται, 12 † εἰς φέγγος ἀστραπῆς ὅπλων σου. † Ἐν ἀπειλῇ (ζ) ὀλιγώσεις γῆν, † καὶ ἐν θυμῷ 13 (η) καταάξεις ἔθνη. † Ἐξῆλθες εἰς σωτηρίαν λαοῦ σου, † τοῦ σῶσαι (θ) τοὺς χριστούς σου. † (ι) Βαλεῖς εἰς κεφαλὰς ἀνόμων θάνατον, † ἐξήγειρας δεσμοὺς ἕως τραχήλου. ΔΙΑΨΑΛΜΑ. 14 † Διέκοψας ἐν ἐκστάσει κεφαλὰς δυναστῶν, † σεισθήσονται ἐν αὐτῇ· † διανοίξουσι χαλινοὺς 15 αὐτῶν, † ὡς ἔσθων πτωχὸς λάθρα. † Καὶ (κ) ἐπεβίβασας εἰς θάλασσαν τοὺς ἵππους σου, 16 ταράσσοντας ὕδωρ πολύ. † Ἐφυλαξάμην, καὶ ἐπτοήθη ἡ κοιλία μου † ἀπὸ φωνῆς προσευχῆς χειλέων μου, † καὶ εἰσῆλθε τρόμος εἰς τὰ ὀστᾶ μου, † καὶ ὑποκάτωθέν μου ἐταράχθη ἡ ἕξις μου. † ἀναπαύσομαι ἐν ἡμέρᾳ θλίψεως, † τοῦ ἀναβῆναι εἰς λαὸν παροικίας 17 μου. † Διότι συκῆ οὐ καρποφορήσει, † καὶ οὐκ ἔσται γεννήματα ἐν ταῖς ἀμπέλοις· † ψεύσεται ἔργον ἐλαίας, † καὶ τὰ πεδία οὐ ποιήσει βρῶσιν· † (λ) ἐξέλιπεν ἀπὸ βρώσεως πρόβατα, † καὶ (μ) οὐχ ὑπάρχουσι βόες ἐπὶ φάτναις (ν). 18 † Ἐγὼ δὲ ἐν τῷ κυρίῳ ἀγαλλιάσομαι, † χαρήσομαι ἐπὶ τῷ θεῷ τῷ σωτῆρί μου. 19 † Κύριος ὁ θεὸς δύναμίς μου, † καὶ τάξει τοὺς πόδας μου εἰς συντέλειαν· † ἐπὶ τὰ ὑψηλὰ ἐπιβιβᾷ με, † τοῦ (ξ) νικῆσαι ἐν τῇ ᾠδῇ αὐτοῦ.

ἈΜΒΑΚΟΥ͂Μ Η΄.

10 Videbunt te, et dolebunt (ſive parturient) populi: (p) diſpergens aquas itineris. Dedit abyſſus vocem ſuam, altitudo phantaſiæ (q) ejus. Elevatus eſt Sol, & Luna 11 ſtetit in ordine ſuo. In luce jacula tua ibunt, in ſplendore coruſcationis armorum tuorum. 12 In comminatione imminues terram, & in furore detrahes gentes. 13 Egreſſus es in ſalutem populi tui, ut ſalvares (r) Chriſtum tuum. Mittes in capita iniquorum mortem: ſuſcitâſti vincula uſque ad (ſ) collum. DIAPSALMA. 14 Diviſiſti in ſtupore capita potentium: commovebuntur in (t) eo: aperient frænos ſuos, ſicut comedens pauper in abſconſo. 15 Et (u) ſuperduxiſti in mare equos tuos, conturbantes (x) aquam multam. 16 Cuſtodivi, & extimuit (y) venter meus à voce orationis labiorum meorum. Et ingreſſus eſt tremor in oſſa mea: & ſubter me conturbata eſt (z) habitudo mea. Requieſcam in die tribulationis, ut aſcendam ad populum peregrinationis meæ. 17 Quia ficus non afferet fructum, & non erunt germina in vineis: mentietur opus olivæ, & campi non facient eſcam. Defecerunt (ω) ab eſca oves, & non ſunt boves in præſepibus. 18 Ego autem in Domino exultabo: gaudebo ſuper Deo Salvatore meo. 19 Dominus Deus fortitudo mea: & ponet pedes meos in conſummationem. Super excelſa aſcendere facit me, ut vincam in cantico ejus.

MS.A. (ε) αὐτοῦ· (ζ) σου ὠλιγώσεις (η) σου (θ) τοὺς χριστούς (ι) ἔβαλας (κ) ἐπεβίβασας (λ) ἐξέλιπον (μ) οὐχ (ν) ἐξιλάσεως αὐτῶν. (ξ) νικῆσαί με ἈΜΒΑΚΟΥ͂Μ Η΄.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 באתגליותך על טורא דסיני חזו יקרך זעו טוריא ענני מטרא עדו ארים תהומא
11 קליה חילי מרומא תמהו קמו: אף במעבדך נסין ליהושע במישר גבעון שמשא
12 וסהרא קמו במדוריהון עמך במימרך אתגברו בתקוף נצחן גבורתך: באיתיותך
לוט על סנאי עמך באתגליותך למתבר רשיעי ארעא ברוגזך תקטול בעממיא:
13 אתגליתא למפרק ית עמך למפרק ית משיחך שציתא מן קדמיהון מלכיא ושלטוניא
מבתיהון תרכת חיבא ותברתא חיליהון רגלי עמך על צורי סנאיהון מימרך קים
14 לעלמין: בזעתא ימא בחטריה דמשה וגברי רישי משרית פרעה דחשיבו מחשבן על
עמך דברתנון ברוח עלעולין וטבעתנון בימא דסוף על דרחיקו ושעבידו ית עמך
15 ויהבו עצה בסתרא לאובדהון: אתגליתא על ימא במרכבת יקרך בדגור מין סגיאין:
16 אמרת בבל שמעית וזעו מלכיא מן קדם דינא די אתדנו מצרים לקל מליא אלין צלא
ספותי אחד זיעא לחכימיא ובאתר דשרינא זעית דשבקני ליום עקא לעדן אסקא גלות
17 עמי מני יתברנני: ארי מלכות בבל לא תתקים ולא תעבד שולטן על ישראל יתקטלון
18 מלכי מדי וגברי יון לא יצלחון ישתיצון רומאי ולא יגבון קסומא מירושלם: בכן
על נסא ופורקנא דתעבד למשיחך ולשארא דעמך די ישתארון יודון למימר אמר
19 נביא ואנא במימרא דיי אבוע אדוץ לאלהא עביד פורקני: אלהים יי דסעיד ליבחילא
ומשוי רגלי קלילין כאילתא ועל בית תוקפי יקימנני לדיליה נצחנין וגבורן וקדמוהי
אנא מנגן בתושבחתי:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

10 In patefactione tui ſuper montem Sinai viderunt gloriam tuam, commoti ſunt montes, nubes nimboſæ tranſierunt, elevavit abyſſus vocem ſuam, virtutes excelſæ mirabundæ ſubſtiterunt. 11 Quando etiam edidiſti ſigna ipſi Jehoſua in planitie Gabaon, Sol & Luna ſubſtiterunt in habitationibus ſuis, populus tuus verbo tuo prævaluit in robore victoriæ potentiæ tuæ. 12 Cùm inducis maledictionem ſuper oſores populi tui, cùm tete patefacies ad frangendum impios terræ, in ira tua interficies gentes. 13 Revelatus es ad liberandum populum tuum, ad liberandum Chriſtum tuum, deleviſti à conſpectu eorum reges & principes à domibus ſuis, expuliſti ſceleſtos ac fregiſti exercitus eorum: pedibus populi tui colla inimicorum ipſorum [*calcâſti*:] verbum tuum ſtat in æternum. 14 Scidiſti mare virga ipſius Moſis, & ſtrenuos duces exercitus Pharao qui machinabantur machinationes adverſus populum tuum, *egiſti* eos vento turbinum, eoſque demerſiſti in mare Suph, eò quòd *abominati eſſent* ac ſervituti ſubjeciſſent populum tuum, dediſſéntque conſilium in abſcondito ut eum perderent. 15 Manifeſtatus es ſuper mare in quadriga gloriæ tuæ, in acervo aquarum multarum. 16 Dixit Babel: Audivi & commoti ſunt reges propter judicium quo judicati ſunt Ægyptii: à voce ſermonum illorum tremuerunt labia mea, invaſit tremor ſapientes, & in loco quo manebam commota ſum quòd reliquiſſet me in diem anguſtiæ, quo tempore aſcendet tranſmigratio populi mei ex me, conteret me. 17 Etenim regnũ Babel non permanebit, nec exercebit dominium in Iſrael, trucidabuntur reges Mediæ, & fortes Græciæ non proſperabuntur: delebuntur Romani, nec colligent tributũ de Jeruſalem. 18 Itaq; propter *ſignum* & redemptionẽ quæ facies Chriſto tuo & reliquiis populi tui, qui remanebunt, confitebuntur dicendo. Ait Propheta: Ego verò in verbo Dñi gaudebo, exultabo in Deo factore redemptionis meæ. 19 Deus Dñs qui auxiliatur mihi virtute, redditque pedes meos æquè veloces ac cervarum, ac ſuper domum potentiæ meæ conſtituet me, cujus ſunt victoriæ & virtutes: proindè coram eo ego fides pulſo cum hymno meo.

ספר צפניה : א

CAP. I. א

,Ghedaliah filii,Chuſi filium Sephaniah ad fuit quod Domini Verbum
1 דבר־יהוה אשר היה אל־צפניה בן־כושי בן־גדליה
regis Amon filii Joſijahu diebus in , Chizchijah filii , Amariah filii
בן־אמריה בן־חזקיה בימי יאשיהו בן־אמון מלך
dixit , *humi faciebus deſuper* omnia faciam deficere Deficiendo .Jehudah
2 יהודה: אסף אסף כל מעל פני האדמה נאם־
volatile faciam deficere ,*jumentum* & ,hominem faciam Deficere .Dominus
3 יהוה: אסף אדם ובהמה אסף עוף־
faciã ſuccidere & ,impiis *cum* offendicula &,maris piſces &,cœlorum
השמים ודגי הים והמכשלות את־הרשעים והכרתי
extendam Et .Dominus dixit , *humi faciebus deſuper* hominem
4 את־האדם מעל פני האדמה נאם־יהוה: ונטיתי
: Jeruſalaim habitatores omnes ſuper & , Jehudah ſuper meam manum
ידי על־יהודה ועל כל־יושבי ירושלם
,Bahal reſiduum iſto loco de faciam ſuccidere &
והכרתי מן־המקום הזה את־שאר הבעל את־
.ſacerdotibus cum *pullatorum* nomen
שם הכמרים עם־הכהנים:

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA

SOPHONIÆ.

CAP. I.

1 Verbum Domini, quod factum eſt ad Sophoniam filium Chuſi, filii Godoliæ, filii Amariæ, filii Ezechiæ, in diebꝰ Joſiæ filii Amon regis Judæ. 2 Congregans congregabo omnia à facie terræ, dicit Dñs: 3 Congregans hominem & pecus, congregans volatilia cœli & piſces maris: & ruinæ impiorum erunt: & diſperdam homines à facie terræ, dicit Dominus. 4 Et extendam manũ meam ſuper Judam, & ſuper omnes habitantes Jeruſalẽ: & diſperdã de loco hoc reliquias Baal, & nomina æditorum cum ſacerdotibus;

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΣΟΦΟΝΙΑΣ Θ΄.

ΚΕΦ. α΄.

1 Λόγος κυρίου, ὃς ἐγενήθη πρὸς Σοφονίαν τὸν τοῦ Χουσί, υἱὸν Γοδολίου, τοῦ Ἀμορίου, τοῦ Ἐζεκίου, ἐν ἡμέραις Ἰωσίου υἱοῦ (α) Ἀμὼν 2 βασιλέως Ἰούδα. Ἐκλείψει ἐκλιπέτω ἀπὸ 3 προσώπου τῆς γῆς, λέγει κύριος. Ἐκλιπέτω ἄνθρωπος καὶ κτήνη, (β) ἐκλιπέτω τὰ πετεινὰ τοῦ οὐρανοῦ καὶ οἱ ἰχθύες τῆς θαλάσσης· καὶ ἀσθενήσουσιν οἱ ἀσεβεῖς, καὶ ἐξαρῶ τοὺς ἀνόμους ἀπὸ προσώπου τῆς γῆς, λέγει κύριος. 4 Καὶ ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου ἐπὶ Ἰούδα, καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλήμ· καὶ ἐξαρῶ ἐκ τοῦ τόπου τούτου τὰ ὀνόματα τῆς Βάαλ, καὶ τὰ ὀνόματα τῶν ἱερέων,

SOPHONIAS.

CAP. I.

1 Verbum Domini, quod factũ eſt ad Sophoniam filiũ Chuſi, (a) filium Godoliæ, filii Amoriæ, filii Ezeciæ, in diebꝰ Joſiæ filii Amon regis Juda. 2 Defectione (b) deficiat à facie terræ, dicit Dominus: 3 Deficiat homo & jumenta: deficiant volatilia cœli, & piſces maris. (c) Et infirmabuntur impii: et auferam iniquos à facie terræ, dicit Dominus. 4 Et extendam manum meã ſuper Judã, et ſuper omnes qui habitant Hieruſalem. Et auferam de loco hoc nomina ipſius Baal, et (d) nomina ſacerdotum,

MS.A. ΣΟΦΟΝΙΑΣ Θ΄. (α) Ἀμὼς (β) ἐκλιπέτωσαν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 פתגם נבואה דהוה קדם יי עם צפניה בר כושי בר גדליה בר אמריה בר חזקיה
2 ביומי יאשיהו בר אמון מלך שבטא דבית יהודה: שצאה אשצי כולא מעל אפי ארעא
3 אמר יי: אסף אנשא ובעירא אסף עופא דשמיא ונוני ימא על דסגיאה תקלת
4 רשיעיא ואשצי ית אנשא מעל אפי ארעא אמר יי: ואריים מחת גבורתי על אנש
יהודה ועל כל יתבי ירושלם ואשצי מן אתרא הדין ית שאר בעלא וית שום פלחיהון
עם כומריהון:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

1 Verbum Prophetiæ quod factum eſt coram Domino cum Sophonia filio Cuſſi, filii Ghedaliæ, filii Amariæ, filii Chizkiæ, in diebus Joſiæ filii Amon regis tribus domus Juda. 2 Delendo delebo omnia à ſuperficie terræ, dicit Dñs. 3 Conficiam homines & jumenta, conficiam avem cœlorum & piſces maris, eò quòd multiplicatum ſit offendiculum impiorum, & delebo homines à ſuperficie terræ, dicit Dñs. 4 Et elevabo vulnus potentiæ meæ in hominem Juda, & in omnes habitatores Jeruſalem: delebo quoque ex hoc loco reliquias [*idolorum*] Baal, & nomen colentium ipſa cum ſacrificulis ſuis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

10 * ܚܙܐܘܟ ܛܘܪ̈ܐ ܘܙܥܘ. ܘܙܪܡܐ ܕܡ̈ܝܐ ܥܒܪ. ܘܝܗܒ ܬܗܘܡܐ ܩܠܗ. ܘܪܘܡܐ ܕܐܝ̈ܕܘܗܝ
11 ܐܪܝܡ. * ܫܡܫܐ ܘܣܗܪܐ ܩܡܘ ܒܡܕܝܪ̈ܝܗܘܢ. ܘܒܢܘܗܪܐ ܕܓܐܪ̈ܝܟ ܢܗܠܟܘܢ. ܘܒܙܠܝܩܐ
12 ܕܒܪ̈ܩܐ ܕܙܝܢܝܟ. * ܒܪܘܓܙܐ ܕܪܫܬ ܥܠ ܐܪܥܐ. ܘܒܚܡܬܐ ܕܫܬ ܥܡ̈ܡܐ. * ܢܦܩܬ ܠܦܘܪܩܢܐ
13 ܕܥܡܟ. ܘܠܡܦܪܩܘ ܠܡܫܝܚܟ. ܡܚܝܬ ܪܫܐ ܡܢ ܒܝܬܗ ܕܥܘܠܐ. ܘܥܪܛܠܬܝܗܝ ܡܢ
ܫܬܐܣ̈ܘܗܝ ܥܕܡܐ ܠܨܘܪܐ. ܠܥܠܡ. * ܢܩܒܬ ܒܫܒܛ̈ܘܗܝ ܪ̈ܫܐ ܕܓܢܒܪ̈ܘܗܝ. 14
15 ܕܐܬܬܟܠܘ ܒܡܪܚܘܬܗܘܢ. ܕܢܐܟܠܘܢ ܠܡܣܟܢܐ ܒܛܘܫܝܐ. * ܕܪܫܬ ܒܝܡܐ ܥܠ ܪ̈ܟܫܟ.
16 ܘܒܥܘܪܡܐ ܕܡ̈ܝܐ ܣܓܝ̈ܐܐ. * ܫܡܥܬ ܘܐܬܬܙܝܥ ܟܪܣܝ ܡܢ ܩܠܐ ܕܣܦܘ̈ܬܝ. ܥܠ ܪܬܝܬܐ
17 ܒܓܪ̈ܡܝ. ܘܒܪ̈ܟܝ ܐܬܬܙܝܥ. ܕܐܟܪܙ ܘܚܘܝܢܝ ܝܘܡܐ ܕܐܘܠܨܢܐ. ܕܢܐܬܐ ܥܠ ܥܡܐ. * ܡܛܠ
ܕܬܐܬܐ ܠܐ ܬܦܪܥ. ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܛܪ̈ܦܐ ܒܓܦܬܐ. ܢܕܓܠ ܥܒܕܐ ܕܙܝܬܐ. ܘܩܪ̈ܝܬܐ ܠܐ ܢܥܒܕܘܢ ܥܒܘܪܐ.
18 ܢܬܓܙܪ ܥܢܐ ܡܢ ܛܝܪܐ. ܘܠܐ ܢܗܘܘܢ ܬܘܪ̈ܐ ܒܐܘܪ̈ܝܐ. * ܐܢܐ ܕܝܢ ܒܡܪܝܐ ܐܚܕܐ. ܘܐܪܘܙ ܒܐܠܗܐ
19 ܦܪܘܩܝ. * ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܚܝܠܝ. ܕܬܩܢ ܪ̈ܓܠܝ ܐܝܟ ܕܐܝܠ̈ܐ. ܘܥܠ ܪ̈ܡܬܐ ܐܩܝܡܢܝ. ܕܐܙܡܪ
ܠܬܫܒܘܚܬܗ.

* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܚܒܩܘܩ *

Viderunt te montes, & tremuerunt: & procella aquarũ tranſiit, extulítq; abyſſus ſonitũ ſuum, & altitudiné manuum ſuarũ exaltavit. 10 Sol & luna conſtiterunt in manſionibus ſuis: & ad lucé ſagittarũ tuarũ ac ſplendoré fulgurũ telorũ tuorum ambulabunt. 11 Cum indignatione inceſsiſti ſuper terrã, & cum furore conculcâſti gentes. 12 Egreſſus es ad ſalvandũ populum tuum, & ſalvandum chriſtum tuum: amputâſti caput è domo impii, & nudâſti eum à fundamentis ejus uſq; ad collum ipſius, in æternum. 13 Perfodiſti baculis ejus capita principũ ipſius, qui audaciæ ſuæ confidebant ſe comeſturos in abdito pauperes. 14 Inceſsiſti in mari equis tuis inſidens, & *in* congerie aquarũ multarũ. 15 Audivi, & cõmotus eſt venter meus ſtatim ad ſermoné labiorũ meorum: pervaſit tremor oſſa mea, & genua mea tremuerunt; quia prænuntiavit & oſtendit mihi dié calamitatis quæ ſuperventura eſt populo. 16 Nam ficus non progerminabit, nec erunt folia in vite, fallet fructus oleæ, & areæ non producent frumentũ, conſumentur pecudes è gregibus, & non erunt boves in armentis. 17 Ego verò in Dño exultabo, & geſtiam in Deo Servatore meo. 18 Dominus dominorum eſt robur meum, qui reddidit pedes meos ut cervinos, & ſuper locum editum meum conſtituit me, ut canerem laudes ejus. 19

Prophetiæ Habacuc finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

10 * تراك الشعوب ويطلقون * مفرق المياه مسلكا * أعطي العمق صوته * ارتفاع خياله * رفعت
11 الشمس * والقمر وقف في رتبته * سهامك تسير في النور * في ضوء برق اسلحتك * بالتهدد تقلل
12 الارض * وبالغضب تكدر الامم * خرجت لخلاص شعبك * اتيت لتخلص مسحاءك * وضعت علي
13 روس الاثمة موتا * اصعدت الاغلال الي الرقبة الي الانقضاء * قطعت روس الاقوياء ببهتة
14 يتزلزلون بها * يفتحون لجمهم مثل مسكين يأكل سرا * وركبت علي البحر خيولك * اقلقت
15 المياه الكثيرة * حفظت وحشي قلبي من صوت صلاة شفتي * ودخلت الرعدة في عظامي * قلقت
16 قوتي في * استريح في يوم شدتي * لاصعد الي شعب غربتي * من اجل ان التينة لا تحمل ثمرا * وليس
17 يكون غلات في الكرمات * يكذب عمل الزيتونة * والبقاع لا تصنع طعاما * فنيت الغنم من
18 الطعام * والبقر لا تدوم علي المذاود * وانا اهلل بالرب * افرح بالاله مخلصي * الرب الهي قوتي *
19 ويرتب قدمي الي التمام * وعلي المشارف يرفعني لاغلب بتسبحته * تمت نبوة حبقوق النبي *

Videbunt te populi, et partûs doloribus afficientur, O diviſor aquarum in iter. Edidit gurges fremitum ſuum, altitudinem phantaſmatis ſui. 10 *Elevatus eſt ſol, & luna manſit in gradu ſuo. Jacula tua ibunt in luce, in ſplendore fulguris armatura.* 11 *Minis terram imminues, & indignatione dejicies gentes.* 12 *Egreſſus es ad ſalutem populi tui, veniſti ad ſalvandos unctos tuos: impoſuiſti capitibus iniquorum mortem; evexiſti lora ad collum uſque, in interitum.* 13 *Præcidiſti capita potentium in ſtupore quo conterriti ſunt: aperient fræna ſua ſicut pauper clanculùm comedens.* 14 *Feciſti ut mare conſcenderent equi tui, conturbaverunt aquas multas.* 15 *Cuſtodivi, & extimuit cor meum à voce orationis labiorum meorum: ingreſſus eſt tremor in oſſa mea, conturbata eſt in me fortitudo mea. Requieſcam in die calamitatis meæ, ut aſcendam ad populum peregrinationis meæ.* 16 *Quia ficus non afferet fructum, neque erunt proventus in vitibus: mentietur opus olivæ, et campi non producent cibum: deſinent oves ab eſca, & boves non permanebunt ſuper præſepia.* 17 *Ego autem in Domino jubilabo, gaudebo in Deo Salvatore meo.* 18 *Dominus Deus meus eſt robur meũ, diſponetque pedes meos ad perfectionem, & ſuper excelſa elevabit me, ut vincam in cantico ejus.* 19

Prophetiæ Habacuc Prophetæ finis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܐ ܕܨܦܢܝܐ ܢܒܝܐ * * ܦܘܠܓܗ * ܐ *

* ܦܬܓܡܐ ܕܡܪܝܐ ܕܗܘܐ ܥܠ ܨܦܢܝܐ. ܒܪ ܟܘܫܝ. ܒܪ ܓܕܠܝܐ. ܒܪ ܐܡܪܝܐ. ܒܪ ܚܙܩܝܐ. ܒܝܘܡ̈ܝ ܝܘܫܝܐ 1.
ܒܪܗ ܕܐܡܘܢ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. * ܡܓܡܪܘ ܡܓܡܪ ܐܢܐ ܟܠ ܡܢ ܐܦܝ ܐܪܥܐ 2
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܡܓܡܪ ܐܢܐ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܘܒܥܝܪܐ. ܡܓܡܪ ܐܢܐ ܦܪܚܬܐ ܕܫܡܝܐ ܘܢܘܢ̈ܐ ܕܝܡܐ. 3
ܘܬܘܩܠܬܐ ܐܝܬܐ ܥܠ ܥܘܠ̈ܐ. ܘܐܘܒܕ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܡܢ ܐܦܝ ܐܪܥܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܐܪܝܡ 4
ܐܝܕܝ ܥܠ ܝܗܘܕܐ. ܘܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܐܘܒܕ ܡܢ ܐܬܪܐ ܗܢܐ ܫܪܟܐ
ܕܒܥܠ. ܘܫܡܐ ܕܟܘܡܪ̈ܐ ܥܡ ܟܗ̈ܢܐ.

Sequitur Prophetia

SEPHONIÆ PROPHETÆ.

CAPUT. I

SErmo Domini qui fuit ad Sephoniam filiũ Chuſi filii Gedaliæ, filii Amariæ, filii Helciæ; in dieb⁹ Joſiæ filii Amonis regis Judæ. 1 Omnia omninò ſum ablaturus è ſuperficie terræ, dicit Dominus. 2 Ablaturus ſum homines, & jumenta: ablaturus ſum aves cœli, & piſces maris: offendiculum adducam ſuper peccatores, & homines perdam è ſuperficie terræ, dicit Dominus. 3 Attollam enim manum meam ſuper Judam, & ſuper omnes cives Jeruſalem; perdámq; ex hoc loco reliquias Baalis, & nomen ſacrificulorum ac ſacerdotum ſimul: 4

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الخالق الحي الناطق *

* نبتدا بترجمة نبوة صفونيا النبي * بركاته علينا *

* الفصل الاول * الاصحاح الحادي والعشرون * وهو الاول من النبوة *

1 * قول الرب الذي صار الي صفونيا بن كوشي * بن غودليا * بن امريا * بن حزقيا * في
2 ايام يوسيا بن اموص ملك يهودا * ليفني بفناء من وجه الارض يقول الرب * ليفني
3 الانسان والبهائم * ليفني طيور السماء وحيتان البحر * ويضعف المنافقون * وانزع الاثمة عن
4 وجه الارض يقول الرب * وامد يدي علي يهودا * وعلي جميع سكان ايروسليم * وانزع من
هذا الموضع اسماء باعال واسماء الكهنة *

IN NOMINE DEI
Creatoris, vivi, rationalis,

Aggredimur Interpretationem
SOPHONIÆ Prophetæ, cujus
benedictiones nobis adſint.

CAP. I.

Textus vigeſimus primus, hujus autem Prophetiæ primus.

SErmo Domini qui factus eſt ad Sophoniam filium Chuſi, filii Godoliæ, filii Amoriæ, filii Hezeciæ; in diebus Joſiæ filii Amos regis Judæ. 1 *Pereant omninò de ſuperficie terræ, dicit Dominus;* 2 *Pereant homo & jumenta, pereant volucres cœli & piſces maris: & infirmabuntur impii, auferámque ſceleratos de ſuperficie terræ, dicit Dominus.* 3 *Et extendam manum meam ſuper Judam, & ſuper omnes habitatores Jeruſalem; auferámque ex hoc loco nomina Baalis & nomina ſacerdotum;* 4

צפניה : א

& ,cœlorum militiæ tecta ſuper ſe incurvantes Et
ואת־המשתחוים על־הגגות לצבא השמים ואת־ 5
.Malcham *in* *jurantes* & ,Dominum per *jurantes* ſe incurvantes
המשתחוים הנשבעים ליהוה והנשבעים במלכם :
quæſierunt non qui & ,Dominum poſt *à* *retrocedentes* Et
ואת־הנסוגים מאחרי יהוה ואשר לא־בקשו את־ 6
,DEI Domini *faciebus* à Tace .eum inveſtigaverunt neque ,Dominum
יהוה ולא־דרשהו : הס מפני אדני יהוה 7
,ſacrificium Dominus fecit præparare quia : Domini dies prope quia
כי קרוב יום יהוה כי־הכין יהוה זבח
viſitabo & ,Domini ſacrificii die in erit Et .ſuos vocatos *ſanctificavit*
הקדיש קראיו : והיה ביום זבח יהוה ופקדתי 8
indumento indutos omnes *ſuper* & ,regis filios *ſuper* & ,principes *ſuper*
על־השרים ועל־בני המלך ועל כל־הלבשים מלבוש
die in limen *ſuper* tranſilientem omnem *ſuper* viſitabo Et .peregrino
נכרי : ופקדתי על כל־הדולג על־המפתן ביום 9
.dolo & rapina ſuorum dominorum domum *implentes* ,illa
ההוא הממלאים בית אדניהם חמס ומרמה :
porta à clamoris vox ,Dominus ait ,illa die in erit Et
והיה ביום ההוא נאם־יהוה קול צעקה משער 10
.collibus à magna contritio & ,*ſecunda* à vlulatus & ,piſcium
הדגים ויללה מן־המשנה ושבר גדול מהגבעות :
populus omnis eſt ſucciſus quia ,Machtes habitatores Ululate
הילילו ישבי המכתש כי נדמה כל־עם 11
tempore in ,erit Et .argentum ferentes omnes ſunt ſucciſi ,Chenahan
כנען נכרתו כל־נטילי כסף : והיה בעת 12
ſuper viſitabo & ,lucernis in Jeruſalaim ſcrutabor illo
ההיא אחפש את־ירושלם בנרות ופקדתי על־
: ſuo corde in *dicentes* ,ſuis fæcibus *ſuper* *coagulatos* viros
האנשים הקפאים על־שמריהם האמרים בלבבם
eorum ſubſtantia erit Et .malefaciet nec ,Dominus benefaciet Non
לא־ייטיב יהוה ולא ירע : והיה חילם 13
,domos ædificabunt & : deſolationem in eorum domus & ,direptionem in
למשסה ובתיהם לשממה ובנו בתים
.earum vinum bibent non & ,vineas plantabunt & :habitabũt non &
ולא ישבו ונטעו כרמים ולא ישתו את־יינם :
vox : nimis feſtinus & ,*propinquus* ,magnus Domini dies *Propinquus*
קרוב יום־יהוה הגדול קרוב ומהר מאד קול 14
dies iræ Dies .fortis ibi *clamans* ,amara Domini diei
יום יהוה מר צרח שם גבור : יום עברה היום 15
dies ,deſolationis & tumultus dies ,*arctationis* & anguſtiæ dies ,illa
ההוא יום צרה ומצוקה יום שאה ומשואה יום
,*ovationis* & tubæ Dies .*obſcuritatis* & nubis dies ,caliginis & *tenebroſitatis*
חשך ואפלה יום ענן וערפל : יום שופר ותרועה 16
afficiã anguſtiis Et .excelſas *pinnas* ſuper & ,munitas civitates ſuper
על הערים הבצרות ועל הפנות הגבהות : והצרתי 17
: peccaverunt Domino quia ,cæci ut ambulabunt & ,*hominem*
לאדם והלכו כעורים כי ליהוה חטאו
.ſordes ſicut ,eorum *panis* & ,humus ſicut eorum ſanguis effundetur &
ושפך דמם כעפר ולחמם כגללים :
eos eruere poterit non eorum aurum etiam ,eorum argentum Etiam
גם־כספם גם־זהבם לא־יוכל להצילם 18
: terra omnis conſumetur ejus zeli igne *in* & ,Domini iræ die in
ביום עברת יהוה ובאש קנאתו תאכל כל־הארץ
omnibus cum faciet feſtinatam profectò conſummationem quia
כי כלה אך־נבהלה יעשה את כל־
.terræ habitatoribus
יושבי הארץ :

Verſio VULG. LAT.

5 Et eos qui adorant ſuper tecta
militiam cœli, & adorant & jurant
in Domino, & jurant in Melchom.
6 Et qui avertuntur de poſt
tergum Domini, & qui non quæſierunt
Dominum, nec inveſtigaverunt
7 eum. Silete à facie Domini
Dei : quia juxtà eſt dies Domini,
quia præparavit Dominus
hoſtiam, ſanctificavit vocatos
8 ſuos. Et erit : in die hoſtiæ Domini,
viſitabo ſuper principes,&
ſuper filios regis, & ſuper omnes
qui induti ſunt veſte peregrinâ :
9 Et viſitabo ſuper omnem, qui arroganter
ingreditur ſuper limen
in die illa : qui complent domum
Domini Dei tui iniquitate & dolo.
10 Et erit in die illa, dicit Dominus,
vox clamoris à porta piſcium,
& ululatus à Secunda, &
11 contritio magna à collibus. Ululate
habitatores Pilæ : conticuit
omnis populus Chanaan, diſperierunt
omnes involuti argento.
12 Et erit in tempore illo : ſcrutabor
Jeruſalem in lucernis : & viſitabo
ſuper viros defixos in fæcibꝰ ſuis :
qui dicunt in cordibus ſuis ; Non
faciet benè Dominus, & non faciet
13 malé. Et erit fortitudo eorum
in direptionem, & domus
eorum in deſertum : & ædificabunt
domos,& non habitabunt :
& plantabunt vineas, & non bibent
14 vinum earum. Juxtà eſt dies
Domini magnus, juxtà eſt & velox
nimis : vox diei Domini amara,
15 tribulabitur ibi fortis. Dies
iræ dies illa, dies tribulationis &
anguſtiæ, dies calamitatis & miſeriæ,
dies tenebrarum & caliginis,
16 dies nebulæ & turbinis, Dies tubæ
& clangoris ſuper civitates
munitas, & ſuper angulos excelſos.
17 Et tribulabo homines, &
ambulabunt ut cæci, quia Domino
peccaverunt : & effundetur
ſanguis eorum ſicut humus, &
18 corpora eorum ſicut ſtercora. Sed
& argentum eorum, & aurum
eorum non poterit liberare eos in
die iræ Domini : in igne zeli ejus
devorabitur omnis terra, quia
conſummationem cum feſtinatione
faciet cunctis habitantibus terram.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Καὶ τοὺς προσκυνοῦντας ἐπὶ τὰ δώματα τῇ
στρατιᾷ τοῦ οὐρανοῦ, (γ) καὶ τοὺς προσκυνοῦντας
καὶ τοὺς ὀμνύοντας κατὰ τοῦ κυρίου, καὶ
τοὺς ὀμνύοντας κατὰ τοῦ βασιλέως αὐτῶν,
6 Καὶ τοὺς ἐκκλίνοντας ἀπὸ τοῦ κυρίου,
καὶ τοὺς μὴ (δ) ζητοῦντας τὸν κύριον, καὶ τοὺς
7 μὴ ἀντεχομένους τοῦ κυρίου. Εὐλαβεῖσθε ἀπὸ
προσώπου κυρίου τοῦ θεοῦ, διότι ἐγγὺς (ε)
ἡμέρα τοῦ κυρίου, ὅτι ἡτοίμακε κύριος τὴν
θυσίαν αὐτοῦ, (ζ) καὶ ἡγίακε τοὺς κλητοὺς
8 αὐτοῦ. Καὶ ἔσται, ἐν ἡμέρᾳ θυσίας κυρίου, καὶ
ἐκδικήσω ἐπὶ τοὺς ἄρχοντας, καὶ ἐπὶ τὸν οἶκον
τοῦ βασιλέως, καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς ἐνδεδυμένους
9 ἐνδύματα ἀλλότρια. Καὶ ἐκδικήσω
(η) ἐμφανῶς ἐπὶ τὰ πρόπυλα ἐν ἐκείνῃ
τῇ ἡμέρᾳ, τοὺς πληροῦντας τὸν οἶκον κυρίου
10 (θ) θεοῦ αὐτῶν ἀσεβείας καὶ δόλου. Καὶ
ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος,
φωνὴ κραυγῆς ἀπὸ πύλης ἀποκεντούντων,
καὶ ὀλολυγμὸς ἀπὸ τῆς δευτέρας, καὶ
11 συντριμμὸς μέγας ἀπὸ τῶν βουνῶν. Θρηνήσατε
οἱ κατοικοῦντες τὴν κατακεκομμένην,
ὅτι ὡμοιώθη πᾶς ὁ λαὸς Χαναάν, (ι) καὶ ἐξωλοθρεύθησαν
πάντες οἱ ἐπηρμένοι ἀργυρίῳ.
12 Καὶ ἔσται ἐν (κ) τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ,
ἐξερευνήσω τὴν Ἰερουσαλὴμ μετὰ λύχνου, καὶ
ἐκδικήσω ἐπὶ τοὺς ἄνδρας τοὺς καταφρονοῦντας
ἐπὶ τὰ φυλάγματα αὐτῶν. οἱ δὲ
(λ) λέγοντες ἐν ταῖς καρδίαις αὐτῶν, Οὐ
μὴ ἀγαθοποιήσῃ κύριος, οὐδὲ μὴ κακώσῃ·
13 Καὶ ἔσται ἡ δύναμις αὐτῶν εἰς διαρπαγὴν,
καὶ οἱ οἶκοι αὐτῶν εἰς ἀφανισμόν· καὶ
οἰκοδομήσουσιν οἰκίας, καὶ οὐ μὴ κατοικήσουσιν
ἐν αὐταῖς· καὶ (*) καταφυτεύσουσιν
ἀμπελῶνας, καὶ οὐ μὴ πίωσι τὸν οἶνον
14 αὐτῶν. Ὅτι ἐγγὺς (μ) ἡμέρα κυρίου
ἡ μεγάλη, ἐγγὺς καὶ ταχεῖα σφόδρα·
φωνὴ ἡμέρας κυρίου πικρὰ καὶ σκληρὰ
15 τέτακται. δυνατὴ Ἡμέρα ὀργῆς, ἡ
ἡμέρα ἐκείνη, ἡμέρα (ν) θλίψεως καὶ ἀνάγκης,
ἡμέρα ἀωρίας καὶ ἀφανισμοῦ, ἡμέρα
(ξ) γνόφου καὶ σκότους, ἡμέρα νεφέλης καὶ
16 ὁμίχλης, Ἡμέρα σάλπιγγος καὶ κραυγῆς
ἐπὶ τὰς πόλεις τὰς (ο) ὀχυρὰς, καὶ
17 ἐπὶ τὰς γωνίας τὰς ὑψηλάς. Καὶ ἐκθλίψω
τοὺς ἀνθρώπους, καὶ πορεύσονται ὡς
τυφλοὶ, ὅτι τῷ κυρίῳ ἐξήμαρτον· καὶ ἐκχεεῖ
τὸ αἷμα αὐτῶν ὡς χοῦν, καὶ τὰς σάρκας
18 αὐτῶν ὡς βόλβιτα. Καὶ τὸ ἀργύριον
αὐτῶν καὶ τὸ χρυσίον αὐτῶν οὐ μὴ δύνηται
ἐξελέσθαι αὐτοὺς ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς κυρίου· καὶ ἐν πυρὶ ζήλου (π) αὐτοῦ
καταναλωθήσεται πᾶσα ἡ γῆ, διότι συντέλειαν καὶ σπουδὴν ποιήσει
ἐπὶ πάντας τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν.

Et eos qui adorant ſuper tecta 5
militiam cœli, & eos (e) qui adorant,
& jurant per Dominum,
& jurant per (f) regem ſuum. Et 6
eos qui declinant à Domino, &
qui non requirunt Dominum, &
qui non retinent Dominum. Timete 7
à facie Domini Dei : quia
juxtà eſt dies Domini: quia paravit
Dominus ſacrificium ſuum,
& ſanctificavit (g) vocatos ſuos.
Et erit, in die hoſtiæ Domini, & 8
ulciſcar ſuper principes, & ſuper
domum regis, & ſuper omnes, qui
induti ſunt veſtimentis alienis. Et 9
ulciſcar (h) manifeſtè ſuper veſtibula
in die illa, qui complent
domum Domini Dei ſui, impietate
& dolo. Et erit in illa die, 10
dicit Dominus, vox clamoris de
porta compungentium, & ululatus
à ſecunda, & contritio magna
à collibus. Plangite, qui habitatis 11
(i) conciſam : quia aſſimilatus
eſt omnis populus Chanaan
: & diſperierunt omnes qui
erecti ſunt argento. Et erit, in 12
die illa ſcrutabor Hieruſalem
cum lucerna ; & ulciſcar ſuper
viros, qui contemnunt cuſtodias
ſuas. (k) Qui autem dicunt in
cordibꝰ ſuis; Non faciet benè Dominus,
& non faciet malè : Et 13
erit fortitudo eorum in rapinam,
& domus eorum in diſſipationem.
Et ædificabunt domos, &
non habitabunt in eis : & plantabunt
vineas, & non bibent vinum
earum : Quia juxtà eſt 14
dies Domini magnus, juxtà, &
velox nimis. Vox diei Domini
amara, & dura poſita eſt fortis:
Dies iræ, dies illa, dies tribulationis 15
& neceſſitatis, dies (l) immaturitatis
& perditionis, dies
caliginis & tenebrarum, dies
nubis & nebulæ, Dies tubæ 16
& clamoris ſuper civitates munitas,
& ſuper angulos excelſos.
Et tribulabo homines, & 17
ambulabunt ut cæci : quia Domino
peccaverunt. Et effundet ſanguinem
eorum ſicut pulverem, et
carnes eorum ſicut ſtercora boum
: Et argentum eorum, & 18
aurum eorum non poterit eruere
eos in die iræ Domini : & in
igne zeli ejus conſumetur omnis
terra : conſummationem enim
& feſtinationem faciet ſuper
omnes habitantes terram.

MS.A. (γ) καὶ τοὺς ὀμνύοντας κατὰ τοῦ βασιλέως (δ) ζητήσαντας (ε) ἡ
ἡμέρα τοῦ κυρίου, ὅτι ἡτοίμασεν (ζ) ἡγίασεν (η) ἐπὶ πάντας ἐμφανῶς (θ)
τοῦ θεοῦ αὐτῶν ἀνομίας, καὶ δόλου. Καὶ ἔσται ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, (ι) ἐξωλεθρεύθησαν
(κ) ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, (λ) λέγοντες, Οὐ μὴ ἀγαθοποιήσῃ
κύριος, οὐδ᾽ οὐ μὴ (*) καταφυτεύσωσιν (μ) ἡ ἡμέρα (ν) ἀωρίας καὶ ἀφανισμοῦ,
(ξ) σκότους καὶ γνόφου, (ο) ἰσχυρὰς, ἐπὶ τὰς (π) ἑαυτοῦ

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 וית דסגדין לאגוריא לחילי שמיא וית דסגדין די מקימין בשמא דיי תיבין וימין
6 בשום פתכריהון : וית דאסתחרו לאחורא מבתר פולחנא דיי ודלא תבעו ית דחלתא
7 דיי ולא בעו מן קדמוהי : ספו כל רשיעיא מן קדם יי אלהים ארי קריב יומא דעתיד
8 למיתי מן קדם יי ארי אתקין יי קטול ערע מזמנוהי : ויהי ביום קטלא דעתיד למיתי
מן קדם יי ואסער על רברביא ועל בני מלכא ועל כל דמתרגשין למפלח לטעותא :
9 ואסער על כל דמהלכין בנימוסי פלשתאי בעדנא ההיא דמלן בית רבוניהון חטוף
10 ונכלין : ויהי בעדנא ההיא אמר יי קל צוחתא מתרע נוניא ויללא מן עופא ותבירא
11 רבא מן גבעתא : אילילו כל דיתבין בנחלא דקדרון ארי אתבר כל עמא דדמן
12 עובדיהון לעובדי עמא דארעא דכנען אשתציאו כל עתירי נכסיא : ויהי בעדנא
ההיא אפקיד בלושין ויבלשון ית ירושלם כמא דבלשין בנברשתא ואסער על גבריא
דשלן שלוא על נכסהון דאמרין בלבהון לא רעוא קדם יי לאיטבא ואף לאבאשא :
13 ויהון נכסהון לעדי ובתיהון לבזא ויבנון בתין ולא יתבון ויצבון כרמין ולא ישתון ית
14 חמרהון : קריב יומא דעתיד למיתי מן קדם יי רבא קריב ומוחי לחדא קל יומא דעתיד
15 למיתי מן קדם יי די בידה מריר וצוח תמן גבריא מתקטלין : יומא תעבור יומא
ההוא יום עקא ועיוק יום רגוש ואתרגישא יום חשוך וקבלא יום עננא ואמטתא :
16 יום שופרא ויבבא על קרויא כריכתא ועל רמתא מנטלתא : ואעיק לבני אנשא
17 ויהכון כסמן ארי קדם יי חבו וישתפך דמהון לעפרא ונבלתהון כסחיתא : אף כספהון
18 אף דהבהון לא יוכל לשזבותהון ביום רוגזא דיי ובאשא דפורענותיה יסופון כל
רשיעי ארעא ארי גמירא ברם שצאה יעביד עם כל יתבי ארעא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et qui adorãt in tectis exercitus cœlorũ, & adoratores qui jurãt in nomine 5
Dñi revertẽtes ut jurẽt in nomine idolorũ ſuorũ. Quiq; avertũtur retrorſũ à 6
cultu Dñi, nec perquiſierũt timorẽ Dñi, neq; precibꝰ poſtularũt à conſpectu
ipſius. Pereatis funditus omnes impii à conſpectu Dñi Dei, quoniã propinquus 7
eſt dies qui venturus eſt à conſpectu Dñi, quoniam præparavit Dñs
occiſionem, convocavit invitatos ſuos. Porrò futurum eſt in die occiſionis 8
qui venturus eſt à conſpectu Dñi, ut animadvertam in magnates & in
filios regis, in omnes denique qui preſtrepunt ad cultum idolorum. Et animadvertam 9
in omnes qui ambulant in legibus Palæſtinorum in illo tempore
qui complent ædes dominorum ſuorum rapina, & dolis. Et erit in illo 10
tempore, inquit Dñs, vox clamoris à porta piſcium, & ululatus à [*porta*]
avis, magnaque contritio à collibus. Ululate omnes qui habitatis in torrente 11
Cedron, quoniam fractus eſt totus populus, cujus opera ſimilia ſunt operibus
populi terræ Chanaan, exciſi ſunt omnes divites opibus. Et futurum eſt in 12
illo tempore ut conſtituam perveſtigatores, & perveſtigabunt Jeruſalem, ut
ii qui ſcrutantur cum lucerna : & animadvertam in homines qui ſumma
tranquillitate fruuntur in divitiis ſuis : qui dicunt in cordibus ſuis : Non eſt
voluntas coram Dño benefaciendi, ſive etiam malefaciendi. Erunt itaque 13
divitiæ eorum in ſpolium, & domꝰ eorum in prædam: & ædificabunt domos,
ſed non habitabunt: & plantabunt vineas, ſed non bibent vinum earum. Propinquus 14
eſt dies qui venturus eſt à conſpectu Dñi magnus; propinquus eſt, &
feſtinat valdè vox diei qui venturus eſt à conſpectu Dñi, in quo eſt mœror &
clamor : ibi potentes interficientur. Dies tranſibit, dies ille dies afflictionis 15
& anguſtiæ, dies tumultus & commotionis, dies tenebrarum & caliginis, dies
nubiloſꝰ & obſcurꝰ. Dies buccinæ & jubilationis ſup civitatibus munitis, & 16
ſup collibꝰ exaltatis. Et in anguſtias adigam filios hominũ, & ambulabũt tanquã 17
cæci : quoniã corã Dño peccaverũt, & effundetur ſanguis eorũ *in pulverem*,
& cadavera eorũ ſicut ſtercꝰ. Nec argentũ ſuũ nec aurũ ſuũ poterit liberare 18
eos in die iræ Dñi, ſed igne ultionis ipſiꝰ conſumẽtur omnes impii terræ,
quoniam exterminationẽ, & exciſionẽ faciet cum omnibꝰ habitatoribꝰ terræ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

ܘܟܠܗܘܢ ܕܣܓܕܝܢ ܗܘܘ ܥܠ ܐܓܪܐ. ܠܚܝܠܘܬܐ ܕܫܡܝܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܕܣܓܕܝܢ ܗܘܘ .. ܘܝܡܝܢ * 5
6 ܒܡܪܝܐ. ܘܝܡܝܢ ܒܡܠܟܘܡ. * ܘܟܠܗܘܢ ܕܗܦܟܝܢ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܕܠܐ ܒܥܝܢ ܠܡܪܝܐ
7 ܘܠܐ ܡܬܒܥܝܢ ܠܘܬܗ. * ܙܘܥܘ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܡܪܐ ܡܪܘܬܐ. ܡܛܠ ܕܩܪܝܒ ܗܘ ܝܘܡܗ
ܕܡܪܝܐ. ܘܛܝܒ ܡܪܝܐ ܕܒܚܬܐ. ܘܩܪܐ ܠܡܙܡܢܘܗܝ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܕܕܒܚܬܗ ܕܡܪܝܐ ..
8 ܐܬܦܩܕ ܥܠ ܪܘܪܒܢܐ. ܘܥܠ ܒܢܝ ܡܠܟܐ. ܘܥܠ ܟܠ ܕܠܒܫܝܢ ܗܘܘ ܠܒܘܫܐ ܢܘܟܪܝܐ.
9 * ܘܐܬܦܩܕ ܥܠ ܟܠܗܘܢ ܥܠܘܒܐ ܘܚܛܘܦܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܕܡܡܠܝܢ ܗܘܘ ܒܝܬ ܡܪܗܘܢ
10 ܒܚܛܘܦܝܐ ܘܒܢܟܠܐ. * ܘܢܗܘܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ .. ܩܠܐ ܕܩܥܬܐ ܡܢ ܬܪܥܐ ܕܨܝܕܐ.
11 ܘܝܠܠܬܐ ܡܢ ܬܪܬܝܢ. ܘܬܒܪܐ ܪܒܐ ܡܢ ܪܡܬܐ. * ܐܝܠܠܘ ܥܡܘܪܝ ܡܟܬܫ .. ܡܛܠ
12 ܕܐܫܬܬܩ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܟܢܥܢ. ܘܐܬܚܪܒܘ ܟܠܗܘܢ ܫܩܠܝ ܣܐܡܐ. * ܘܢܗܘܐ ܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ ܐܡܪ
ܡܪܝܐ .. ܐܒܨܝܗ ܠܐܘܪܫܠܡ ܒܫܪܓܐ. ܘܐܬܦܩܕ ܥܠ ܓܒܪܐ ܕܡܫܘܝܛܝܢ ܠܢܛܘܪܗܘܢ ..
13 ܘܐܡܪܝܢ ܒܠܒܗܘܢ .. ܠܐ ܡܛܐܒ ܡܪܝܐ. ܐܦ ܠܐ ܡܒܐܫ. * ܢܗܘܐ ܩܢܝܢܗܘܢ ܠܒܙܬܐ.
ܘܒܬܝܗܘܢ ܠܚܪܒܐ. ܘܢܒܢܘܢ ܒܬܐ ܘܠܐ ܢܥܡܪܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܢܨܒܘܢ ܟܪܡܐ ܘܠܐ ܢܫܬܘܢ
14 ܚܡܪܗܘܢ. * ܩܪܝܒ ܗܘ ܝܘܡܐ ܪܒܐ ܕܡܪܝܐ. ܩܪܝܒ ܗܘ ܛܒ. ܘܡܣܪܗܒ ܩܠܐ ܕܝܘܡܗ
15 ܕܡܪܝܐ. ܡܪܝܪ ܘܩܫܐ ܘܥܫܝܢ. * ܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܐ ܝܘܡܐ ܗܘ. ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܐܘܠܨܢܐ ܘܕܥܩܬܐ.
ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܫܓܘܫܝܐ ܘܕܚܒܠܐ. ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܚܫܘܟܐ ܘܕܥܡܛܢܐ. ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܥܢܢܐ
16 ܘܕܥܪܦܠܐ. * ܝܘܡܐ ܗܘ ܕܩܪܢܐ ܘܕܝܒܒܐ ܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܚܣܝܢܬܐ. ܘܥܠ ܙܘܝܬܐ ܪܡܬܐ.
17 * ܘܐܥܝܩ ܠܒܢܝܢܫܐ ܕܢܗܠܟܘܢ ܐܝܟ ܣܡܝܐ. ܡܛܠ ܕܚܛܘ ܠܡܪܝܐ. ܘܢܐܫܕ ܕܡܗܘܢ
18 ܐܝܟ ܥܦܪܐ. ܘܒܣܪܗܘܢ ܐܝܟ ܙܒܠܐ. * ܘܕܗܒܗܘܢ ܘܣܐܡܗܘܢ .. ܠܐ ܢܫܟܚ ܠܡܦܪܩܘ
ܐܢܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܒܢܘܪܐ ܕܚܣܡܗ ܬܬܐܟܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܫܘܓܫܐ
ܘܣܘܦܐ. ܥܒܕ. ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܘܪܝܗ ܕܐܪܥܐ.

* Omnes qui ſuper tectis adorabant exercitus 5
cæleſtes, & omnes qui adorantes jurabant per
Dominum & jurabant per Malchom: Deniq; 6
omnes qui avertunt ſe à Domino, & omnes qui
non petunt Dominum, neque requirunt eum,
Horreſcite à conſpectu Domini dominorum; 7
quia propinquus eſt dies Domini, præparavit
Dominus victimas, & vocatos ſuos invitavit.
Erit autem in die victimæ Domini, ut animad- 8
vertam in magnates, & in filios regum, & in
omnes qui induuntur veſtibus peregrinis: Et 9
animadvertam in omnes violentos & raptores in die illa, qui replent cellaria ſua rapinâ
& fraude. Eritque eâ die dicit Dominus, vox 10
clamoris, à porta piſcatorum, & ejulatus ab
altera, & contritio magna è collibus. Ejulate 11
habitatores Mechtas, quia obſtupuerunt univerſus populus Chanaanis, & perierunt omnes
argentum portantes. Erit etiam eodem illo 12
tempore, dicit Dominus, ut Jeroſolymam lucernâ perſcruter, & animadvertam in viros
illos qui parvipendunt cuſtodem ſuum, & dicunt in corde ſuo; Neque benefacit Dominus, neque malefacit. Horum poſſeſſio di- 13
reptioni erit, & domus eorum deſolationi:
domos ædificabunt, at non habitabunt in eis;
plantabunt vineas, at non bibent vinum earum. Proxima eſt magna dies Domini, proxi- 14
ma eſt admodum ac feſtina vox diei Domini,
amara eſt, dura & gravis. Dies excandeſcen- 15
tiæ eſt illa dies, dies eſt anguſtiæ & calamitatis,
dies perturbationis & corruptionis, dies tenebrarum & obſcuritatis, dies nubis & caliginis; Dies buccinæ & clangoris ſuper urbes 16
munitas & ſuper angulos altiſſimos: Et co- 17
get homines ambulare more cæcorum; eò
quòd peccaverint in Dominum: & effundetur ſanguis eorum ut pulvis, & caro eorum
ut ſtercora. Nec aurum nec argentum eorum 18
poterit eos liberare in die iræ Domini; ſed
igne zeli ejus conſumetur univerſa terra: quia
perturbationem & exitium illaturus eſt omnibus habitatoribus terræ.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

5 * والذين يسجدون على الاسطحة لاجناد السماء * الذين يحلفون بملكهم * والذين
6 يميلون عن الرب * والذين لم يطلبوا الرب * والذين لم يتخصصوا للرب * ارتاعوا من
7 وجه الرب الاله * من اجل ان يوم الرب قريب * لان الرب هيا ذبيحته * قدس مدعويه *
8 * ويكون في يوم ذبيحة الرب * اقضي على الروساء * وعلى بيت الملك * وعلى جميع
9 اللابسين الثياب الغريبة * واحكم على جميع الذين على الدهاليز ظاهرا في ذلك اليوم *
10 الذين يملون بيت الرب الههم نفاقا وغشا * ويكون في ذلك اليوم يقول الرب * صوت
صرخة من الباب من الذين يطعنون * وولولة من الثانية * وانكسار عظيم من الاكام *
11 * نوحوا يا سكان المنصجعة * لان كل الشعب اشبه كنعان * استوصلوا جميع المرتفعين بالفضة *
12 * ويكون في ذلك اليوم * افتش ايروسليم بسراج * واحكم على الرجال المتغافلين على
13 رذالاتهم * القايلين في قلوبهم * لم يصنع الرب خيرا * ولم يصنع شرا * ويكون قوتهم
للاختطاف * وبيوتهم للهلاك * ويبنون بيوتا ولا يسكنون فيها * ويغرسون كروما ولا يشربون
14 خمرها * لان يوم الرب العظيم قريب * قريب ومسرع جدا صوت يوم الرب مر وصعب ترتيب *
15 * يوم الرجز قوي * ذلك اليوم يوم ضيقة وشك * يوم عدم وقت وفساد * يوم ظلمة وضباب
16 يوم سحابة وضبابة * يوم بوق وصرخة على المدن القوية * وعلى الزوايا المرتفعة * واضايق
17 البشر * ويسيرون مثل عميان * لانهم اخطوا للرب * ويهرق دمهم مثل التراب * ولحومهم مثل
18 الرجيع * وفضتهم وذهبهم لن يقدرا ان يخلصاهم في يوم رجز الرب * لان بنار غيرته توكل
كل الارض * من اجل انه يصنع انقضاء وسرعة على جميع سكان الارض *

Eos qui adorant ſuper tectis militiam cæleſtem, & eos qui jurant per regem ſuum; 5
Eos qui deflectunt à Domino, & eos qui 6
non requirunt Dominum, eos demum qui
non dediderunt ſe Domino. Reveremi- 7
ni faciem Domini Dei, quia dies Domini
propinquus eſt: præparavit enim Dominus
victimam ſuam, ſanctificavit invitatos
ſuos. Et erit in die victimæ Domini, ut 8
ſententiam feram in principes, & in domum regiam, & in omnes indutos veſtibus peregrinis: Et omnes eos qui ſunt 9
ſuper porticibus, publicè judicem eo die,
qui domum Domini Dei ſui impietate
fraudéque replent. Et erit eo die, dicit 10
Dominus, vox clamoris de porta ab iis
qui confodient, ululatus è ſecunda, &
contritio magna è collibus. Plangite O 11
habitatores decumbentis, quia totus populus ſimilis factus eſt Chanaani, eradicati
ſunt omnes argento elati. Erit præterea 12
eo die, ut Jeroſolymam lucernâ perveſtigem, & condemnem viros qui negligunt
abominationes ſuas, qui dicunt in cordibus ſuis; Neque bonum fecit Dominus, neque malum fecit. Horum facul- 13
tas erit direptioni, & domus eorum excidio: domus ædificabunt, & non habitabunt in eis; vineas conſerent, & non
bibent vinum earum: Nam dies Domi- 14
ni magnus proximus eſt, proxima eſt &
feſtina admodum vox diei Domini, amara atque difficilis diſpoſita eſt; Dies 15
iræ durus eſt, dies ille, dies calamitatis
et anguſtiæ; dies defectûs temporis, & corruptionis; dies tenebrarum & caliginis;
dies nubis & nebulæ; Dies buccinæ & 16
clamoris ſuper urbes munitas & ſuper
angulos ſublimes. Et vexabo morta- 17
les, & ambulabunt ut cæci, eò quòd peccaverint in Dominum: effundétque ſanguinem eorum ut pulverem, & carnes
eorum ut ſtercus: Et argentum aurúm- 18
que eorum haudquaquam poterunt eripere
eos in die furoris Domini; quandoquidem igne zeli ejus conſumetur tota terra: quia conſummationem & feſtinationem facturus eſt ſuper omnes habitatores terræ.

צפניה : ב

CAP. II. ב

, ſtatutum parere Ante .deſiderabilis non gens congregamini & , vos Colligite
1 2 התקוששו וקושו הגוי לא נכסף׃ בטרם לדת חק
naſi ira vos ſuper veniat quàm prius , die tranſit , gluma ut
כמץ עבר יום בטרם לא־יבוא עליכם חרון אף
Quærite .Domini naſi dies vos ſuper veniat quàm antè ,Domini
3 יהוה בטרם לא־יבוא עליכם יום אף־יהוה׃ בקשו
: ſunt operati ejus judicium qui , terræ manſueti omnes Dominum
את־יהוה כל־ענוי הארץ אשר משפטו פעלו
naſi die in vos abſcondetis fortè ſi, humilitatem quærite , juſtitiam quærite
בקשו־צדק בקשו ענוה אולי תסתרו ביום אף
Aſdod ;deſolationẽ in Aſchelon & , erit relicta Hazzah Quia.Domini
4 יהוה׃ כי עזה עזובה תהיה ואשקלון לשממה אשדוד
portum habitantibus Væ.eradicabitur Hecron & ,eam ejicient Meridie in
5 בצהרים יגרשוה ועקרון תעקר׃ הוי ישבי חבל
terra , Chenahan vos ſuper Domini Verbum .Cerethim genti , maris
הים גוי כרתים דבר־יהוה עליכם כנען ארץ
,maris portus erit Et .habitatore non à te faciam perdere &,Palæſtinorum
6 פלשתים והאבדתיך מאין יושב׃ והיתה חבל הים
reſiduo regio erit Et .pecoris ſepta &,paſtorum caularum habitacula
7 נות כרת רעים וגדרות צאן׃ והיה חבל לשארית
veſpera in , Aſchelon domibus in ,paſcentur eis ſuper ,Jehudah domus
בית יהודה עליהם ירעון בבתי אשקלון בערב
.eorũ captivitatẽ avertet &,eorũ Deꝰ Dominꝰ eos viſitavit quia :accubabũt
ירבצון כי יפקדם יהוה אלהיהם ושב שבותם׃
exprobraverũt quibꝰ,Hammon filiorũ convicia &,Moab opprobrium Audivi
8 שמעתי חרפת מואב וגדופי בני עמון אשר חרפו
vivens Propterea .eorum terminum ſuper magnificabant & ,meum populum
9 את־עמי ויגדילו על־גבולם׃ לכן חי־
Sedom ſicut Moab quia , Iſrael Deus exercituum Dominus dixit,ego
אני נאם יהוה צבאות אלהי ישראל כי מואב כסדם
, Salis fodina & , urticæ ſtridor ,Hamorah ſicut Hammon filii & , erit
תהיה ובני עמון כעמרה ממשק חרול ומכרה־מלח
reſiduũ &,eos diripiẽt mei populi reſiduũ , ſeculum in uſque deſolatio &
ושממה עד־עולם שארית עמי יבזום ויתר
quia , eorum ſuperbiam propter eis Hoc .eos poſſidebunt meæ gentis
10 גוי ינחלום׃ זאת להם תחת גאונם כי
.exercituum Domini populũ ſuper magnificaverunt & , affecerunt probris
חרפו ויגדלו על־עם יהוה צבאות׃
, terræ Deos omnes confecit macie quia ,eos ſuper Dominus Terribilis
11 נורא יהוה עליהם כי רזה את כל־אלהי הארץ
.gentium inſulæ omnes ſuo loco de vir illi ſe incurvabunt &
וישתחוו־לו איש ממקומו כל איי הגוים׃
extendet Et ipſi meo gladio interfecti Chuſim vos Etiam
12 גם־אתם כושים חללי חרבי המה׃ ויט
13 ponet & : Aſſur perdet &,Aquilonem ſuper ſuam manum
ידו על־צפון ויאבד את־אשור וישם את־
accubabunt Et .deſertum ſicut ſiccitatem deſolationem in Nineveh
14 נינוה לשממה ציה כמדבר׃ ורבצו
etiam ,pellicanus etiam ,gentis ejus beſtia omnis , greges ejus medio in
בתוכה עדרים כל־חיתו־גוי גם־קאת גם־
, feneſtra in cantabit Vox .commorabuntur ejus ſphærulis in ericius
קפד בכפתריה ילינו קול ישורר בחלון
civitas Hæc .nudavit ejus cedrum quoniam , limine in deſolatio
15 חרב בסף כי ארזה ערה׃ זאת העיר
me præter & Ego :ſuo corde in dicens , fiducia in habitans , exultans
העליזה היושבת לבטח האמרה בלבבה אני ואפסי
omnis ? beſtiæ cubile deſolationem in fuit Quomodo .ultrà
עוד איך היתה לשמה מרבץ לחיה כל
.ſuam manum movebit ,ſibilabit , eam ſuper tranſiens
עובר עליה ישרק יניע ידו׃

Verſio VULG. LAT.

CAP. II.

1 Convenite, congregamini, gens
2 non amabilis : Priuſquàm pariat
juſſio quaſi pulverem tranſeuntem
diem, antequàm veniat ſuper vos
ira furoris Domini, antequàm veniat
ſuper vos dies indignationis
3 Domini. Quærite Dominum omnes
manſueti terræ, qui judicium
ejus eſtis operati : quærite juſtum,
quærite manſuetum : ſi quomodò
abſcondamini in die furoris
4 Domini. Quia Gaza deſtructa
erit, & Aſcalon in deſertum,
Azotum in meridie ejicient, &
5 Accaron eradicabitur. Væ qui
habitatis funiculum maris, gens
perditorum : verbum Domini ſuper
vos Chanaan, terra Philiſthinorum,
& diſperdam te, ita ut
6 non ſit inhabitator. Et erit funiculus
maris requies paſtorum,
7 & caulæ pecorum : Et erit funiculus
ejus, qui remanſerit de domo
Juda : ibi paſcentur, in domibus
Aſcalonis ad veſperam requieſcent
: quia viſitabit eos Dominus
Deus eorum, & avertet captivitatem
8 eorum. Audivi opprobrium
Moab, & blaſphemias
filiorum Ammon : quæ exprobraverunt
populo meo, & magnificati
ſunt ſuper terminos eorum.
9 Propterea, Vivo ego, dicit Dominus
exercituum Deus Iſrael, quia
Moab ut Sodoma erit, & filii
Ammon quaſi Gomorrha, ſiccitas
ſpinarum, & acervi ſalis, &
deſertum uſque in æternum : reliquiæ
populi mei diripient eos,
& reſidui gentis meæ poſſidebunt
10 illos. Hoc eis eveniet pro ſuperbia
ſua : quia blaſphemaverunt,
& magnificati ſunt ſuper populũ
11 Domini exercituũ. Horribilis Dominꝰ
ſuper eos, & attenuabit omnes
deos terræ : & adorabunt
eum viri de loco ſuo, omnes inſulæ
12 Gentium. Sed & vos, Æthiopes,
interfecti gladio meo
13 eritis. Et extendet manũ ſuam
ſuper Aquilonem, & perdet Aſſur
: & ponet ſpecioſam in ſolitudinem,
& in inviũ, & quaſi deſertum.
14 Et accubabunt in medio
ejus greges, & omnes beſtiæ
Gentium : & onocrotalꝰ & ericius
in liminibꝰ ejus morabuntur:
vox cantantis in feneſtra, corvus
in ſuperliminari, quoniã attenuabo
15 robur ejꝰ. Hæc eſt civitas glorioſa
habitans in confidentia :
quæ dicebat in corde ſuo ; Ego
ſum, & extra me non eſt alia ampliùs
: quomodò facta eſt in deſertum
cubile beſtiæ ? omnis qui
tranſit per eam, ſibilabit, & movebit
manum ſuam.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΚΕΦ. β'.

1 Συνάχθητε, καὶ συνδέθητε τὸ ἔθνος τὸ
2 ἀπαίδευτον, Πρὸ τοῦ γενέσθαι ὑμᾶς ὡς ἄνθος
παραπορευόμενον, πρὸ τοῦ ἐπελθεῖν ἐφ' ὑμᾶς
ὀργὴν κυρίου, πρὸ τοῦ ἐπελθεῖν ἐφ' ὑμᾶς
3 ἡμέραν θυμοῦ κυρίου. Ζητήσατε τὸν κύριον
πάντες ταπεινοὶ γῆς, κρίμα ἐργάζεσθε, καὶ
δικαιοσύνην ζητήσατε, καὶ (˜) ἀποκρίνασθε
αὐτὰ, ὅπως σκεπασθῆτε ἐν ἡμέρᾳ ὀργῆς
4 κυρίου. Διότι Γάζα διηρπασμένη ἔσται, καὶ
Ἀσκάλων (α) εἰς ἀφανισμὸν, καὶ Ἄζωτος
μεσημβρίας (β) ἐκριφήσεται, καὶ Ἀκκαρὼν
5 (γ) ἐκριζωθήσεται. Οὐαὶ οἱ κατοικοῦντες τὸ
σχοίνισμα τῆς θαλάσσης, πάροικοι Κρητῶν.
λόγος κυρίου (δ) ἐφ' ὑμᾶς Χαναὰν, γῆ
ἀλλοφύλων, καὶ ἀπολῶ ὑμᾶς ἐκ κατοικίας.
6 Καὶ ἔσται Κρήτη νομὴ ποιμνίων, καὶ μάνδρα
7 προβάτων. Καὶ ἔσται τὸ σχοίνισμα τῆς
θαλάσσης τοῖς καταλοίποις οἴκου Ἰούδα,
ἐπ' (ε) αὐτοὺς νεμήσονται ἐν τοῖς οἴκοις Ἀσκάλωνος,
δείλης καταλύσουσιν ἀπὸ
προσώπου υἱῶν Ἰούδα, ὅτι ἐπέσκεπται αὐτοὺς
κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν, καὶ (ζ) ἀποστρέψει
8 τὴν αἰχμαλωσίαν αὐτῶν. Ἤκουσα ὀνειδισμοὺς
Μωὰβ, καὶ κονδυλισμοὺς υἱῶν Ἀμμὼν,
ἐν οἷς ὠνείδιζον τὸν λαόν μου, καὶ ἐμεγαλύνοντο
9 ἐπὶ τὰ ὅριά μου. Διατοῦτο, ζῶ
ἐγὼ, λέγει κύριος τῶν δυνάμεων ὁ θεὸς
Ἰσραὴλ, διότι Μωὰβ ὡς Σόδομα ἔσται, καὶ
(˜) υἱοὶ Ἀμμὼν ὡς Γόμορρα, καὶ Δαμασκὸς
ἐκλελειμμένη ὡς θημωνία ἅλωνος, καὶ ἠφανισμένη
εἰς τὸν αἰῶνα· καὶ οἱ (η) κατάλοιποι
λαοῦ μου διαρπῶνται αὐτοὺς, καὶ οἱ κατάλοιποι
ἔθνους μου κληρονομήσουσιν αὐτούς.
10 Αὕτη αὐτοῖς ἀντὶ τῆς ὕβρεως αὐτῶν, διότι
ὠνείδισαν, καὶ ἐμεγαλύνθησαν ἐπὶ τὸν κύριον τὸν
11 παντοκράτορα. Ἐπιφανήσεται κύριος ἐπ'
αὐτοὺς, καὶ (θ) ἐξολοθρεύσει πάντας τοὺς
θεοὺς τῶν ἐθνῶν τῆς γῆς, καὶ προσκυνήσουσιν
αὐτῷ ἕκαστος ἐκ τοῦ τόπου (ι) αὐτοῦ, πᾶσαι
12 αἱ νῆσοι τῶν ἐθνῶν. Καὶ ὑμεῖς Αἰθίοπες
13 τραυματίαι ῥομφαίας μού ἐστε. Καὶ (κ) ἐκτενεῖ
τὴν χεῖρα αὐτοῦ ἐπὶ Βορρᾶν, καὶ ἀπολεῖ
τὸν Ἀσσύριον, καὶ θήσει τὴν Νινευὴ εἰς ἀφανισμὸν
14 ἄνυδρον, ὡς ἔρημον. Καὶ νεμήσονται
ἐν μέσῳ αὐτῆς ποίμνια, καὶ πάντα
τὰ θηρία τῆς γῆς, καὶ χαμαιλέοντες, καὶ
ἐχῖνοι ἐν τοῖς φατνώμασιν αὐτῆς κοιτασθήσονται·
καὶ θηρία φωνήσει ἐν τοῖς διορύγμασιν
αὐτῆς, (λ) καὶ κόρακες ἐν τοῖς
πυλῶσιν αὐτῆς, διότι κέδρος τὸ (μ)
ἀνάστημα αὐτῆς.

ΚΕΦ. γ'.

15 Αὕτη ἡ πόλις ἡ φαυλίστρια, ἡ κατοικοῦσα
ἐπ' ἐλπίδι, ἡ λέγουσα ἐν καρδίᾳ αὐτῆς, Ἐγώ
εἰμι, καὶ οὐκ ἔστι μετ' ἐμὲ ἔτι. πῶς ἐγενήθη εἰς
ἀφανισμὸν, νομὴ θηρίων; πᾶς ὁ (α) διαπορευόμενος
δι' αὐτῆς συριεῖ, καὶ κινήσει τὰς
χεῖρας αὐτοῦ.

MS. A. (˜ ἀποκρίνεσθε (α) ἔσται εἰς (β) ἐκριζωθήσεται, (γ) ἐκριφήσεται. (δ) πρὸς (ε) αὐτοὺς (ζ) ἀπέστρεψεν (˜) οἱ υἱοὶ (η) καταλοίπου τοῦ λαοῦ (θ) ἐξολεθρεύσει (ι) αὐτῶν, (κ) ἐκτενῶ τὴν χεῖρά μου (λ) κόρακες (μ) ἀνάστεμα MS. A. Κεφ. γ'. (α) παραπορευόμενος

CAP. II.

*Congregamini, & (a) colligamini, 1
gens ineudita, Antequã 2
ſitis vos, ſicut flos (b) pertranſiens,
antequã veniat ira Domini ſuper
vos, antequàm ſuper vos irruat
dies (c) furoris Dni. Quærite Dominũ, 3
omnes humiles terræ: judiciũ
operamini, & juſtitiam quærite,
& reſpondete ea : ut protegamini
in die iræ Domini. Quia 4
Gaza direpta erit, & Aſcalon in
deſolationẽm, & Azotus meridiè
projicietur, & Accaron eradicabitur.
Væ, qui habitatis funiculum 5
maris, (d) advenæ Cretenſium.
Verbum Domini ſuper vos
Chanaan, terra Allophylorum: &
perdam vos de habitatione. Et 6
erit Creta paſcua gregum, & ovile
pecorum. Et erit funiculus 7
maris his, qui reliqui ſunt de domo
Juda : ſuper ipſos paſcentur
in domibus Aſcalonis : ad veſperam
divertent (e) à facie filiorum
Juda : quia viſitat eos Dominus
Deus eorum : & avertet
captivitatem eorum. Audivi 8
opprobria Moab, & contumelias
filiorum Ammon, in quibus exprobrabant
populo meo, & magnificabantur
ſuper terminos meos.
Propterea, Vivo ego, dicit 9
Dominus virtutũ Deus Iſrael :
quia Moab, ſicut Sodoma erit, &
filii Ammon quaſi Gomorrha, et
Damaſcus derelicta, quaſi acervus
(f) areæ, & diſſipata uſque
in ſempiternum. Et, qui reliqui
fuerint de populo meo, diripient
eos, & reſidui gentis meæ poſſidebunt
eos. (g) Hæc erit eis pro 10
contumelia ſua : quia exprobraverunt,
& magnificati ſunt ſuper
Dominum omnipotentem. (h)
Apparebit Dominus ſuper eos, & 11
diſperdet omnes deos gentium
terræ : & adorabunt eum ſinguli
de loco ſuo, omnes inſulæ gentium.
Et vos Æthiopes vulnerati 12
(i) eſtis gladii mei. Et (k) extendet 13
manum ſuam ſuper Aquilonem,
& perdet Aſſyrium, &
ponet Ninevem in deſolationem,
inaquoſam, quaſi deſertum. Et 14
paſcentur in medio ejus greges,
& omnes beſtiæ terræ : & chamæleontes,
& ericii in præſepibus
ejus cubabunt : & beſtiæ
clamabunt in foveis ejus, & (l)
corvi in portis ejus, quia cedrus
(m) altitudo ejus.*

CAP. III.

*Hæc eſt civitas (a) vilipendens, 15
quæ habitat in ſpe, quæ dicit
in corde ſuo ; Ego ſum, & non
eſt poſt me ampliùs. Quomodò
facta eſt in ſolitudinem, paſcua
beſtiarum ? Omnis, qui
tranſit per eam, ſibilabit, & movebit
manus ſuas.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ב

1 אתכנשו ואתו ואתקרבו עמא הדא דלא חמיד למתב לאוריתא׃ עד לא תפוק עליכון 2
גזירת בית דינא ותהון דמן לכמוצא דנשבא ביה רוחא וכטולא דעדי מן קדם יומא
3 עד דלא ייתי עליכון תקוף רוגזא דיי עד לא ייתי עליכון יום רוגזא דיי׃ תבעו ית דחלתא
דיי כל ענותני ארעא דדיני רעותיה עבדו תבעו קושטא תבעו ענותנותא מאים יתגן
4 עליכון ביום רוגזא דיי׃ ארי עזה שביקא תהי ואשקלון לצדו אשדוד בטהרא יתרכונה
5 ועקרון תתעקר׃ וי דיתבין בספר ימא עמא דחיבין לאשתצאה גזירת פתגמא דיי
6 עליכון דיתבין בכנען ארעא דפלשתאי ואבדנך מבלי יתיב׃ ותהי ספר ימא דירות בית
7 משרי רעין וחוטרין דען׃ ויהי עדבא לשארא דבית יהודה עליהון יתפרנסון בבתי
אשקלון כד ברמשא יביתון ארי יעול דכרנהון קדם יי אלההון ויתיב גלותהון׃
8 שמיע קדמי חסודי מואב ואתרברבות בני עמון דחסידו ית עמי ואתרברבו על
9 תחומהון׃ בכן קים אנא אמר יי צבאות אלהא דישראל ארי מואב כסדום תהי
ובני עמון כעמורה משמט מלוחין ומחפורין דמלח וצדו עד עלמא שארא דעמי
10 יבזונון ושאר שבטיא יחסנינון׃ דא להון חלף אתרברבותהון ארי חסידו
11 ואתרברבו על עמיה דיי צבאות׃ דחילא דיי למפרקהון ארי אמאיך ית כל דחלת
12 ארעא ויבעון מן קדמוהי גבר מאתריה כל נגות עממיא׃ אף אתון כושאי קטילי
13 חרבי תהון׃ וירים מחת גבורתיה על צפונא ויאבד ית אתוראה וישוי ית נינוה לצדו
14 אשתממו כמדברא׃ וישרון בגוה עדרין דכל חיות ברא אף קתין ואף קופדין בפתוח
15 תרעיא יביתון קל עופא דמנצף בכואת [illegible] תרעא וטללה סתרו׃ דא קרתא תקיפתא
דיתבא לרוחצן דאמרה בלבבה אנא ולית בר מני עוד איכדין הות לצדו בית משרי
חיתא כל די עבר עלה יכלי ויניד ידיה׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. II.

Congregamini & venite & accedite populus generationis nolentis converti 1
ad Legem : Antequàm prodeat in vos edictum domus judicii, & ſitis ſimiles 2
glumæ quam perflat ventus; & umbræ quæ tranſit à conſpectu diei, antequàm
venerit ſup vos vehemens ira Dñi, antequàm veniat ſup vos dies furoris
Dñi. Quærite timorem Dñi omnes manſueti terræ, qui judicia voluntatis 3
ejus præſtiterunt: quærite veritatẽ, quærite manſuetudinẽ, ſi forſan fiat protectio
ſup vos in die iræ Dñi. Gaza enim derelicta erit, & Aſcalon in vaſtationẽ: 4
Aſdod in Meridie expelletur, & Acaron eradicabitur. Væ qui habitant 5
in portu maris, populꝰ qui peccat ut deleatur: decretũ verbi Dñi ſup vos qui
habitatis in Canaan terra Palæſtinorũ; perdam te ut ſis abſq; habitatore. Eritq; 6
portus maris habitaculum, locus manſionis paſtorum, & caulæ ovium. Et erit 7
ſors reliquiis domus Juda : ſup ipſas paſcentur in domibus Aſcalon, quando
veſperè pernoctabunt, ſiquidem introibit eorum memoria coram Dño Deo
ipſorum, ac reducet eorum tranſmigrationẽ. Audita ſunt corã me opprobria 8
Moab, & elatio filiorum Ammon, qui probro affecerunt populum meum, &
magnificaverunt ſeſe ſup fines eorum. Quapropter juro ego, inquit Dñs exercituũ 9
Deus Iſrael, quòd Moab ſicut Sodoma erit, & filii Ammon ſicut Gomorra,
locus derelictus carduis, & fodinæ ſalis & deſolatio in æternum uſque:
reliquiæ populi mei expilabunt eos, & reliquiæ tribuum poſſidebunt eas.
Hoc illis eveniet propter faſtũ ipſorum, quoniã probris affecerunt & magnificaverunt 10
ſeſe adverſus populum Dñi exercituum. Terribilis Dñs ad redimendum 11
eos, quoniam depreſſit omnes deos terræ : & requirent à conſpectu
ejus unuſquiſq; de loco ſuo, omnes inſulæ gentium. Vos quoq; Æthiopes interfecti 12
gladio meo eritis. Et altè inferet vulnus potentiæ ſuæ in Aquilonẽ, 13
& perdet Aſſyrium, ac rediget Niniven in deſolationem, vaſtationem [inquam]
quaſi deſertum. Et habitabunt in medio ejus greges omnium ferarũ, 14
etiam onocrotali & ericii quoque in oſtio *portarum* pernoctabunt : vox avis
garrientis in feneſtra [*audietur:*] deſolarunt portã, & tabulatũ deſtruxerunt.
Hæc eſt civitas potens quæ ſedet confidenter, quæ dicit in corde ſuo : Ego 15
ſum, & nulla eſt præter me: quomodo facta eſt in deſolationẽ, locꝰ habitationis
ferarum ? quiſquis tranſibit juxta eam clamabit et movebit manum ſuam.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ * * ܐܬܟܢܫܘ ܘܐܬܐܣܪܘ ܥܡܐ ܕܠܐ ܪܕܝܐ. * ܥܕܠܐ ܬܗܘܘܢ ܐܝܟ ܥܘܪܐ ܕܥܒܪ. 1
ܘܥܕܠܐ ܢܐܬܐ ܥܠܝܟܘܢ ܚܡܬܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܥܕܠܐ ܢܐܬܐ ܥܠܝܟܘܢ ܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. 2
* ܒܥܘܗܝ ܠܡܪܝܐ ܟܠܟܘܢ ܡܟܝܟܝ ܐܪܥܐ. ܘܥܒܕܘ ܕܝܢܐ. ܘܒܥܘ ܙܕܝܩܘܬܐ ܘܡܟܝܟܘܬܐ. 3
ܕܠܡܐ ܬܬܛܫܘܢ ܒܝܘܡܐ ܕܪܘܓܙܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܛܠ ܕܥܙܐ ܫܒܝܩܬܐ ܬܗܘܐ. ܘܐܫܩܠܘܢ 4
ܠܚܘܪܒܐ. ܠܐܫܕܘܕ ܒܛܗܪܐ ܢܛܪܕܘܢܗ̇. ܘܥܩܪܘܢ ܬܬܥܩܪ. * ܘܝ ܠܥܡܘܪܝ ܚܒܠܐ ܕܝܡܐ 5
ܘܠܥܡܐ ܕܩܪܛܝܐ. ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠܝܟܘܢ ܟܢܥܢ ܘܐܪܥܐ ܕܦܠܫܬܝܐ. ܘܐܘܒܕܟܘܢ ܡܢ
ܡܥܡܪ. * ܘܢܗܘܐ ܚܒܠܐ ܕܝܡܐ ܕܪܥܘܬܐ. ܘܩܪܛܐ ܕܘܟܬܐ ܕܪܥܝܐ ܠܓܙܪܐ ܕܥܢܐ. * ܘܢܗܘܐ ܚܒܠܐ 6
ܝܡܐ ܠܫܪܟܐ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. ܕܢܪܥܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܒܒܬܐ ܕܐܫܩܠܘܢ ܒܪܡܫܐ ܢܫܪܘܢ. ܡܛܠ 7
ܕܣܥܪ ܐܢܘܢ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ. ܘܢܗܦܘܟ ܫܒܝܗܘܢ. * ܫܡܥܬ ܚܣܕܗ ܕܡܘܐܒ ܘܓܘܕܦܐ 8
ܕܒܢܝ ܥܡܘܢ. ܕܚܣܕܘ ܠܥܡܝ. ܘܐܬܪܘܪܒܘ ܥܠ ܬܚܘܡܝܗܘܢ. * ܡܛܠ ܗܠܝܢ ܚܝ ܐܢܐ ܐܡܪ 9
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܕܡܘܐܒ ܐܝܟ ܣܕܘܡ ܬܗܘܐ. ܘܒܢܝ ܥܡܘܢ ܐܝܟ
ܥܡܘܪܐ. ܕܐܬܚܒܠܬ ܢܨܒܬܗܘܢ ܘܐܒܕܬ ܡܠܚܘܬܐ ܘܗܘܘ ܚܒܠܐ ܠܥܠܡ. ܫܪܟܐ ܕܥܡܝ
ܢܒܙܘܢ ܐܢܘܢ. ܘܫܪܟܐ ܕܥܡܡܐ ܢܐܪܬܘܢ ܐܢܘܢ. * ܗܕܐ ܬܗܘܐ ܠܗܘܢ. ܚܠܦ 10
ܫܘܚܪܗܘܢ. ܥܠ ܕܚܣܕܘ ܘܐܬܪܘܪܒܘ ܥܠ ܥܡܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܥܠ ܐܝܣܪܝܠ.
* ܢܬܓܠܐ ܠܗܘܢ. ܡܪܝܐ ܠܟܠܗܘܢ. ܕܢܘܒܕ ܟܠܗܘܢ ܡܠܟܝ ܐܪܥܐ. ܘܢܣܓܕܘܢ ܠܗ ܐܢܫ 11
ܡܢ ܐܬܪܗ. ܟܠܗܘܢ ܓܙܪܬܐ ܕܝܡܡܐ. * ܐܦ ܐܢܬܘܢ ܟܘܫܝܐ ܩܛܝܠܝ ܚܪܒܐ. * ܘܢܪܝܡ 12 13
ܐܝܕܗ ܥܠ ܬܝܡܢܐ. ܘܢܘܒܕ ܠܐܬܘܪ. ܘܢܥܒܕܝܗ̇ ܠܢܝܢܘܐ ܚܘܪܒܐ ܘܨܕܝܐ ܐܝܟ
ܡܕܒܪܐ. * ܘܢܪܒܥܘܢ ܒܓܘܗ̇ ܓܙܪܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܚܝܘܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܐܦ ܩܩܐ ܘܩܘܦܕܐ 14
ܒܒܬܝܗ̇ ܢܒܘܬܘܢ. ܘܚܝܘܬܐ ܢܩܥܘܢ ܒܗ̇. ܘܚܪܒܐ ܒܬܪܥܝܗ̇. ܡܛܠ ܕܥܩܪܗ̇
ܐܬܦܫܚ. * ܗܕܐ ܗܝ ܡܕܝܢܬܐ ܚܣܝܢܬܐ ܕܝܬܒܐ ܗܘܬ ܒܬܘܟܠܢܐ. ܘܐܡܪܐ ܗܘܬ ܒܠܒܗ̇. 15
ܐܢܐ ܐܢܐ. ܘܠܝܬ ܥܘܕ ܐܚܪܬܐ ܕܕܡܝܐ ܠܝ. ܐܝܟܢܐ ܗܘܬ ܠܚܘܪܒܐ ܘܡܪܒܥܐ ܠܚܝܘܬܐ. ܟܠܡܢ
ܕܥܒܪ ܥܠܝܗ̇ ܢܬܕܡܪ ܘܢܫܪܩ. ܘܢܢܝܕ ܐܝܕܗ ܘܢܐܡܪ.

CAP. II.

Colligite voſipſos & accingimini gens indiſciplinabilis, 1
Antequàm ſitis ut gluma prætervolans, 2
antequàm ſuperveniat vobis ira furoris Domini, & antequàm invadat vos dies
furoris Domini. Quærite Dominum omnes 3
humiles terræ, & facite judicium, quærite juſtitiam
& humilitatem : fortaſſe protegemini
die furoris Dñi. Nam Aza derelicta erit, Aſcalon 4
excidio, Aſdodem ipſo meridie abducent,
Ecron eradicabitur. Væ habitantibus in tractu 5
maritimo, & populo Cretenſi ; ſermo Domini
contra vos eſt Chanaan & terra Paleſtinorũ :
vos enim perdam quominùs ſitis habitabiles.
Eritque tractus maritimus tuguria, & Creta 6
locus paſcuus gregibus pecudum. Et erit tractus 7
maritimus reliquiis domûs Judæ, ut in iis
paſcant, & in domibus Aſcalonis veſpertino
tempore cubent : viſitaturus enim eſt eos
Dominus Deus ipſorum, & captivos eorum
reducturus. Audivi contumelias Moabi, & 8
blaſphemias filiorum Ammon quibus convitiati
ſunt populum meum ; & inſultaverunt
termino eorum. His de rebus, Per vitam meam, 9
dicit Domin⁹ potentiſſimus Deus Iſraelis,
Moab ut Sodoma erit, & filii Ammon ut Gomorra,
quarum planta corrupta eſt, periit ſalina,
& factæ ſunt corruptio ſempiterna : reliquiæ
populi mei diripient eas ; & quod reliquum
eſt de gente mea, poſſidebit eas. Hoc 10
fiet eis pro inſolentia eorum, quia contumeliis
affecerunt & inſultaverunt populo Domini
potentiſſimi, *nempe* Iſraeli. Apparebit eis 11
Dominus, ut perdat omnes reges terræ : &
adorabunt eum quæque de loco ſuo omnes
inſulæ marium. Vos etiam Æthiopes interficiemini 12
gladio. Et attollet manuum ſuam ſuper 13
Auſtralem, & perdet Aſſyrium, & Niniven
reddet vaſtam & deſolatam ut deſertum:
Ita ut accubent in ea greges & omnia gentium 14
animantia ; quin etiam picæ & hericii
in domibus ejus pernoctabunt, belluæ rugient
in ea, & gladius in portis ejus ; eò quòd
radix ejus denudata ſit. Hæc eſt urbs illa munita 15
quæ tuta reſidebat, & dicebat in corde
ſuo ; Ego ſum, & nulla præterea ſimilis eſt
mihi. Quomodo redacta eſt in ruinam & in
cubile ferarum ? quicunque ſecus eam tranſierit,
obſtupeſcet, & ſibilabit, manu ſuâ motabit,
ac dicet ;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثاني * * اجمعوا واربطوا الامة الغير متادبة * من قبل ان تصيروا انتم 1 2
مثل زهر ذاهبة * من قبل ان ياتي عليكم يوم غضب الرب * اطلبوا الرب يا جميع متواضعي 3
الارض * اعملوا حكما واطلبوا عدلا وجاوبوهما * لكي تستروا في يوم رجز الرب * من اجل 4
ان غزة تصير تخطفة * وعسقلان تصير للفساد * وازدود تقلع نصف النهار * ويل يا سكان حبل 5
البحر غرباء الافريطسيين * قول الرب عليكم يا كنعان ارض الغرباء القبايل * واهلككم من
المنزل * وتصير افريطس مرعي للقطعان * ومربضا للخراف * ويصير حبل البحر لبقايا بيت 6 7
يهودا * يرعون عليهم في بيوت عسقلان * وعند مغيب الشمس يستريحون من وجه بني يهودا * لان
الرب الههم افتقدهم ورد سبيهم * سمعت تعييرات مواب * وممارقات بني عمون الذين بهن 8
عيروا شعبي * وعظموا علي حدودي * لاجل هذا حي انا يقول رب القوات اله اسرايل * ان مواب 9
تصير مثل سدوم * وعمون مثل عامورا * ودمشق مسترخية مثل عرمة البيدر * وهالكة الي الابد *
وبقايا شعبي يخطفونهم * والمتبقيون من امتي يرثونهم * هذا لهم بدل شتمهم * من اجل انهم 10
عيروا وتعظموا علي الرب الضابط الكل * يظهر الرب عليهم * ويستاصل جميع الهة امم الارض * 11
ويسجدون له كل واحد من موضعه جميع جزاير الامم * وانتم ايها الحبوش تصيرون جرحا 12
سيفي * وامد يدي علي الجربياء * واهلك الموصلي * واضع نينوي للفساد عديمة الماء مثل 13
قفر * وترعي في وسطها القطعان * وكل وحوش الارض * والحربايات والقنافذ في سقوفها يرقدون * 14
والوحوش تصوت في دراعها * الغربان في ابوابها * من اجل ان الارز ارتفاعها * هذه المدينة 15
المنيعة * الساكنة علي الرجاء * القايلة في قلبها انا انا * وليس بعدي احد ايضا * كيف
صارت للفساد مرعي للوحوش * كل المار بها يصفر ويحرك يديه *

CAP. II.

Congregamini, & colligate gentem 1
ineruditam, Antequàm vos ſiatis ut flos
præteriens ; antequàm veniat ſuper vos 2
dies iræ Domini, Quærite Dominum
O omnes humiles terræ facite judicium, 3
& quærite juſtitiam, iiſque reſpondete ;
ut protegamini in die iræ Domini. Nam 4
Gaza erit in prædam Aſcalan erit in corruptionem,
& Azdod ipſo meridie eradicabitur.
Væ O habitatores oræ maritimæ, 5
advenæ Cretenſium. Sermo Domini
contra vos eſt O Chanaan terra alienigenarum :
vos perdam ex habitatione : Fiétque 6
Creta paſcuum gregibus, & caulæ
agnis : Et ora maritima reliquiarum 7
domûs Judæ : ſuper his paſcentur in
domibus Aſcalanis, & ſub ſolis occaſum
requieſcent à facie filiorum Judæ :
quia Dominus Deus eorum viſitabit eos,
& reſtituet captivitatem eorum. Audivi 8
probra Moabi, & detractiones filiorum
Ammon, quibus convitiati ſunt populum
meum, & extulerunt ſe contra
terminos meos. Propterea, Vivo ego dicit 9
Dominus virtutum Deus Iſraelis, Moab
fiet ſicut Sodoma, & Ammon ſicut Gomorra,
& Damaſcus mollis ut acervus
areæ, & in æternum peritura : & reliquiæ
populi mei diripient eos, & reſidui
gentis meæ poſſidebunt eos. Hoc erit eis 10
pro contumelia ipſorum, quia convitiati
ſunt & ſuperbiverunt contra Dominum
omnipotentem. Apparebit Dominus ſuper 11
eos, & eradicabit omnes deos gentium
terræ : & adorabunt eum, quiſque de
loco ſuo, omnes inſulæ gentium. Et vos 12
O Æthiopes eritis gladio meo vulnerati.
Et extendam manum meam ſuper Aquilonem, 13
perdámque Aſſyrium, & Niniven
ponam in corruptionem, aquâ carentem
ceu deſertum. Et paſcentur in medio 14
ejus greges omnéſque terræ beſtiæ, &
lacertæ atque hericii in tectis ejus cubabunt,
belluæ vocem edent in oſtiis ejus,
corvi in portis ejus ; quia cedrus eſt altitudo
ejus. Hæc eſt urbs inacceſſa, ſecurè 15
habitans, dicens in corde ſuo ; Ego,
ego, nec unus eſt adhuc poſt me. Quomodo
redacta eſt in corruptionem, paſcuum
belluarum? omnis per eam tranſiens
ſibilabit, manúſque movebit.

צְפַנְיָה : ג

CAP. III. ג

1 audivit Non *.columbæ* civitati , inquinatæ & fœdatæ Væ
הוֹי מֹרְאָה וְנִגְאָלָה הָעִיר הַיּוֹנָה׃ לֹא שָׁמְעָה 2
ad ; fidit non Domino *in* : disciplinam suscepit nec , *voce in*
בְּקוֹל לֹא לָקְחָה מוּסָר בַּיהוָה לֹא בָטָחָה אֶל־
, ejus *interiori* in ejus Principes .appropinquavit non *suum Deum*
אֱלֹהֶיהָ לֹא קָרֵבָה׃ שָׂרֶיהָ בְקִרְבָּהּ 3
excesserunt non , *vesperæ* lupi , ejus judices ; rugientes leones
אֲרָיוֹת שֹׁאֲגִים שֹׁפְטֶיהָ זְאֵבֵי עֶרֶב לֹא גָרְמוּ
ejus sacerdotes : *prævaricationum* viri , *leves* ejus Prophetæ .mane in
לַבֹּקֶר׃ נְבִיאֶיהָ פֹּחֲזִים אַנְשֵׁי בֹּגְדוֹת כֹּהֲנֶיהָ 4
justus DOMINUS .legem *oppresserunt* , sanctitatem polluerunt
חִלְּלוּ־קֹדֶשׁ חָמְסוּ תּוֹרָה׃ יְהוָה צַדִּיק 5
suum judicium *mane in mane in* ,iniquitatem faciet non , ejus *interiori* in
בְּקִרְבָּהּ לֹא יַעֲשֶׂה עַוְלָה בַּבֹּקֶר בַּבֹּקֶר מִשְׁפָּטוֹ
.pudorem iniquus scit nec , deficit non , lucem in dabit
יִתֵּן לָאוֹר לֹא נֶעְדָּר וְלֹא־יוֹדֵעַ עַוָּל בֹּשֶׁת׃
feci desolare , earum anguli sunt desolati , gentes feci Succidere
הִכְרַתִּי גוֹיִם נָשַׁמּוּ פִּנּוֹתָם הֶחֱרַבְתִּי 6
absque , eorum civitates sunt desolatæ: *transeunte absque* , earum plateas
חוּצוֹתָם מִבְּלִי עוֹבֵר נִצְדּוּ עָרֵיהֶם מִבְּלִי־
suscipies , me timebis profectò , Dixi .*habitatore non à* , *viro*
אִישׁ מֵאֵין יוֹשֵׁב׃ אָמַרְתִּי אַךְ־תִּירְאִי אוֹתִי תִּקְחִי 7
, visitavi quod omne , ejus habitaculū succidetur non & ,disciplinam
מוּסָר וְלֹא־יִכָּרֵת מְעוֹנָהּ כֹּל אֲשֶׁר־פָּקַדְתִּי
.sua *studia* omnia corruperunt ,surrexerunt mane *certè* : eam super
עָלֶיהָ אָכֵן הִשְׁכִּימוּ הִשְׁחִיתוּ כֹּל עֲלִילוֹתָם׃
: *spolium* ad *me surgere* diem ad,Dominus dixit , me expectate Quapropter
לָכֵן חַכּוּ־לִי נְאֻם־יְהוָה לְיוֹם קוּמִי לְעַד 8
, regna *me congregandum ad* ,gentes *colligendum ad* meum judicium quia
כִּי מִשְׁפָּטִי לֶאֱסֹף גּוֹיִם לְקָבְצִי מַמְלָכוֹת
quia : mei *nasi* iram omnem , meam iram eas super *effundendum ad*
לִשְׁפֹּךְ עֲלֵיהֶם זַעְמִי כֹּל חֲרוֹן אַפִּי כִּי
convertam tunc Quia .terra omnis *comedetur* mei zeli igne in
בְּאֵשׁ קִנְאָתִי תֵּאָכֵל כָּל־הָאָרֶץ׃ כִּי־אָז אֶהְפֹּךְ 9
,Domini *nomine in ipsos omnes invocandum ad* , *purum* labium *populos* ad
אֶל־עַמִּים שָׂפָה בְרוּרָה לִקְרֹא כֻלָּם בְּשֵׁם יְהוָה
, Hatharai , Chus flumina trans A .uno *humero ei serviendum ad*
10 לְעָבְדוֹ שְׁכֶם אֶחָד׃ מֵעֵבֶר לְנַהֲרֵי־כוּשׁ עֲתָרַי
die In .meum munus deferent , meorum dispersorum filia
בַּת־פּוּצַי יוֹבִלוּן מִנְחָתִי׃ בַּיּוֹם 11
quibus , tuis *studiis* omnibus ab afficieris pudore non , illa
הַהוּא לֹא תֵבוֹשִׁי מִכֹּל עֲלִילֹתַיִךְ אֲשֶׁר
, *tuo interiori* de faciam removere tunc quia : me in es prævaricata
פָּשַׁעַתְּ בִּי כִּי־אָז אָסִיר מִקִּרְבֵּךְ
monte in amplius *extolli* adjicies non & , tui superbia *gaudio gestientes*
עַלִּיזֵי גַּאֲוָתֵךְ וְלֹא־תוֹסִפִי לְגָבְהָה עוֹד בְּהַר
populum *tuo interiori* in faciam relinquere Et .meæ sanctitatis
12 קָדְשִׁי׃ וְהִשְׁאַרְתִּי בְקִרְבֵּךְ עַם
Residuum .Domini nomine in sperabunt & ,*tenuem* & , humilem
13 עָנִי וָדָל וְחָסוּ בְּשֵׁם יְהוָה׃ שְׁאֵרִית
neque ,mendacium *loquentur* nec ,iniquitatem *facient* non Israel
יִשְׂרָאֵל לֹא־יַעֲשׂוּ עַוְלָה וְלֹא־יְדַבְּרוּ כָזָב וְלֹא־
pascentur ipsi quoniam ,*fraudis* lingua eorum ore in invenietur
יִמָּצֵא בְּפִיהֶם לְשׁוֹן תַּרְמִית כִּי־הֵמָּה יִרְעוּ
clamate , Sijon filia *Præconiza* .*exterrens* non & ,accubabunt &
14 וְרָבְצוּ וְאֵין מַחֲרִיד׃ רָנִּי בַּת־צִיּוֹן הָרִיעוּ
.Jerusalaim filia corde toto *in* exulta & ,lætare , Israel
יִשְׂרָאֵל שִׂמְחִי וְעָלְזִי בְּכָל־לֵב בַּת יְרוּשָׁלִָם׃

Versio VULG. LAT.

CAP. III.

1 VÆ provocatrix, & redempta
2 civitas, columba. Non audivit
vocem, & non suscepit disciplinam : in Domino non est confisa, ad Deum suum non appro-
3 pinquavit. Principes ejus in medio ejus quasi leones rugientes :
judices ejus lupi vesperè, non re-
4 linquebant in mané. Prophetæ
ejus vesani, viri infideles : sacerdotes ejus polluerũt Sanctum, in-
5 justè egerunt contra legem. Dominus justus in medio ejus non
faciet iniquitatem : manè manè
judicium suum dabit in lucem, &
non abscondetur : nescivit autem
6 iniquus confusionem. Disperdidi Gentes, & dissipati sunt anguli
earum : desertas feci vias eorum,
dum non est qui transeat : desolatæ sunt civitates eorum, non remanente viro, neque ullo habita-
7 tore. Dixi ; Attamen timebis me,
suscipies disciplinam: & non peribit habitaculum ejus, propter omnia in quibus visitavi eam : veruntamen diluculò surgentes corruperũt omnes cogitationes suas.
8 Quapropter expecta me, dicit
Dominus, in die resurrectionis
meæ in futurum, quia judicium
meum ut congregem Gentes, &
colligam regna : & effundam super eos indignationem meam, omnem iram furoris mei : in igne
enim zeli mei devorabitur omnis
9 terra. Quia tunc reddam populis
labium electum, ut invocent omnes in nomine Domini, & ser-
10 viant ei humero uno. Ultra flumina Æthiopiæ, indè supplices
mei, filii dispersorum meorum de-
11 ferent munus mihi. In die illa non
confunderis super cunctis adinventionibus tuis, quibus prævaricata es in me : quia tunc auferam de medio tuî magniloquos
superbiæ tuæ, & non adjicies exaltari ampliùs in monte sancto
12 meo. Et derelinquam in medio
tuî populum pauperem & egenum: & sperabunt in nomine Do-
13 mini. Reliquiæ Israel non facient
iniquitatem, nec loquentur mendacium, & non invenietur in ore
eorum lingua dolosa : quoniam
ipsi pascentur, & accubabunt, &
14 non erit qui exterreat. Lauda, filia Sion : jubila, Israel : lætare, &
exulta in omni corde, filia Jerusalem.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

[1 Ὦ ἡ ἐπιφανὴς καὶ ἀπολελυτρωμένη πόλις,
2 ἡ περιστερά. Οὐκ εἰσήκουσε φωνῆς· οὐκ ἐδέξατο παιδείαν, ἐπὶ τῷ κυρίῳ οὐκ (β) ἐπεποίθει, καὶ πρὸς τὸν Θεὸν αὐτῆς οὐκ ἤγγισεν.
3 Οἱ ἄρχοντες αὐτῆς ἐν αὐτῇ ὡς λέοντες
ὠρυόμενοι, οἱ κριταὶ αὐτῆς ὡς λύκοι τῆς
Ἀραβίας, οὐχ ὑπελίποντο εἰς τὸ πρωΐ. Οἱ
4 προφῆται αὐτῆς πνευματοφόροι, ἄνδρες
καταφρονηταί· (γ) ἱερεῖς αὐτῆς βεβηλοῦσι
5 τὰ ἅγια, καὶ ἀσεβοῦσι νόμον. Ὁ δὲ κύριος
δίκαιος ἐν μέσῳ αὐτῆς, καὶ οὐ μὴ ποιήσῃ
ἄδικον· πρωῒ πρωῒ δώσει (δ) κρίμα αὐτοῦ
εἰς φῶς, καὶ οὐκ ἀπεκρύβη, καὶ οὐκ ἔγνω ἀδικίαν ἐν ἀπαιτήσει, καὶ οὐκ εἰς νεῖκος ἀδι-
6 κίαν. Ἐν διαφθορᾷ κατέσπασα ὑπερηφάνους, ἠφανίσθησαν γωνίαι αὐτῶν· ἐξερημώσω τὰς ὁδοὺς αὐτῶν τοπαράπαν, τοῦ
μὴ διοδεύειν· ἐξέλιπον αἱ πόλεις αὐτῶν, (ε) παρὰ τὸ μηδένα ὑπάρχειν,
7 μηδὲ κατοικεῖν. Εἶπα, Πλὴν φοβεῖσθέ
με, καὶ δέξασθε παιδείαν, καὶ οὐ μὴ (ζ)
ἐξολοθρευθῆτε ἐξ ὀφθαλμῶν αὐτῆς πάντα
ὅσα (η) ἐξεδίκησα ἐπ᾽ αὐτήν. ἑτοιμάζου,
ὄρθρισον, (θ) ἔφθαρται πᾶσα ἡ ἐπι-
8 φυλλὶς αὐτῶν. Διατοῦτο ὑπόμεινόν με,
λέγει κύριος, εἰς ἡμέραν ἀναστάσεώς μου
εἰς μαρτύριον· (ι) διότι τὸ κρίμα μου εἰς συναγωγὰς ἐθνῶν, τοῦ εἰσδέξασθαι βασιλεῖς,
τοῦ ἐκχέαι ἐπ᾽ αὐτοὺς πᾶσαν ὀργὴν θυμοῦ
μου· (κ) διότι ἐν πυρὶ ζήλου μου καταναλω-
9 θήσεται πᾶσα ἡ γῆ. Ὅτι τότε μεταστρέψω ἐπὶ λαοὺς γλῶσσαν εἰς (λ) γενεὰν
αὐτῆς, τοῦ ἐπικαλεῖσθαι πάντας τὸ ὄνομα
κυρίου, τοῦ δουλεύειν αὐτῷ ὑπὸ ζυγὸν ἕνα.
10 Ἐκ περάτων ποταμῶν Αἰθιοπίας (μ)
προσδέξομαι ἐν διεσπαρμένοις μου, οἴ-
11 σουσι θυσίας μοι. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, οὐ μὴ
καταισχυνθῇς ἐκ πάντων τῶν ἐπιτηδευμάτων σου, ὧν ἠσέβησας εἰς ἐμέ· ὅτι τότε
περιελῶ ἀπὸ σοῦ τὰ φαυλίσματα τῆς ὕβρεώς
σου, καὶ οὐκέτι μὴ προσθῇς, τοῦ μεγαλαυχῆσαι
12 ἐπὶ τὸ ὄρος τὸ ἅγιόν μου. Καὶ (-) ὑπολείψομαι ἐν σοὶ λαὸν (ν) πραῢν καὶ ταπεινὸν, καὶ
εὐλαβηθήσονται ἀπὸ τοῦ ὀνόματος (ξ) κυ-
13 ρίου Οἱ κατάλοιποι τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ οὐ ποιήσουσιν ἀδικίαν, (ο) καὶ οὐ λαλήσουσι μάταια,
καὶ οὐ μὴ εὑρεθῇ (π) ἐν τῷ στόματι αὐτῶν
γλῶσσα δολία· διότι αὐτοὶ νεμήσονται, καὶ
κοιτασθήσονται, καὶ οὐκ ἔσται ὁ ἐκφοβῶν αὐτούς.
14 Χαῖρε θύγατερ Σιὼν, κήρυσσε θύγατερ Ἱερουσαλήμ· εὐφραίνου καὶ κατατέρπου ἐξ ὅλης τῆς
καρδίας σου θύγατερ Ἱερουσαλήμ.

O illustris, & redempta civitas, 1]
columba Non audivit vocem: non
suscepit disciplinam, in Domino 2
non est confisa, & ad Deum
suum non appropinquavit. Prin- 3
cipes ejus in ea, veluti rugientes
leones: judices ejus, sicut lupi (b)
Arabiæ, non dimittebant in mane:
Prophetæ ejus (c) portantes spiri- 4
tum, viri contēptores: sacerdotes
ejus polluunt Sancta, et impiè fa-
ciunt (d) legem : Dominus au- 5
tem justus in medio ejus, & non
faciet iniquitatem. Manè manè
judicium suum dabit in luce: &
non est absconditus, & nescit
iniquitatem in (e) exactione, nec
in contentione injustitiam. In 6
corruptione detraxi superbos:
dissipati sunt anguli eorum: (f)
desertas faciam vias eorum penitùs, ut non transeant : defece-
runt civitates eorum, eò quòd
nullus subsisteret, neque habita-
ret. Dixi; Veruntamen (g) timete 7
me, & suscipite disciplinam: &
(h) non peribitis de oculis ejus in
omnibus, in quibus ultus sum
super eam. Præparare, consurge
diluculò : (i) dissipata est omnis
frondositas eorum. Propterea ex- 8
pecta me, dicit Dominus, in diem
resurrectionis meæ in testimonium:
Quia judicium meum in congre-
gationes gentium : ut suscipiam
reges, ut effundam super (k) eos
omnem iram furoris mei. Quia 9
in igne zeli mei consumetur o-
mnis terra: (l) quia tunc conver-
tam super populos linguam in
generationem ejus ; ut invocent
omnes nomen Domini, ut serviant
ei sub jugo uno. De finibus flu- 10
minum Æthiopiæ suscipiam (m)
in dispersis meis : offerent victi-
mas mihi. In die illa non con- 11
funderis ex omnibus adinventio-
nibus tuis, quibus impiè egisti in
me : quia tunc auferam à te vi-
lipendia contumeliæ tuæ: & ultrà
non adjicies, ut magnificè glorie-
ris super montem sanctum meum.
Et relinquam in te populum man- 12
suetum, & humilem : & vere-
buntur à (*) nomine Domini, Qui 13
fuerint reliqui de Israel, & non
facient iniquitatem, & non lo-
quentur vana: & non invenietur
in ore eorum lingua dolosa. Quo-
niam ipsi pascentur, & accuba-
bunt: & non erit, qui exterreat
eos. Gaude, filia Sion; prædica, filia 14
Hierusalē: exulta, & delectare de
toto corde tuo, filia Hierusalem.

MS.A.

(β) ἐπεποίθησεν, (γ) οἱ ἱερεῖς (δ) τὸ κρίμα αὐτοῦ, καὶ οὐκ εἰς νῖκος ἀδικίαν. (ε) διὰ τὸ (ζ) ἐξολεθρευθῆτε (η) ἐκδίκησα (θ) διέφθαρται (ι) διότι (κ) ὅτι ἐν πυρὶ τοῦ ζήλου (λ) γενεὰς αὐτῶν, (μ) οἴσουσιν θυσίας (-) ὑπολείψομαι (ν) πολὺν καὶ ταπεινὸν, (ξ) τοῦ κυρίου (ο) οὐδὲ μὴ (π) ἐν στόματι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ג

וַיְ דְמוֹחִיָא וּמִתְפָּרְקָא קַרְתָּא דְּמַסְנְיָא לְאַרְגָּזָא׃ לָא שְׁמַעִית בְּקָל עַבְדוֹהִי נְבִיַּיָא וְלָא 1 2
קַבִּילַת אוּלְפַן בְּמֵימְרָא דַּיְיָ לָא אִתְרְחִיצַת וּלְפוּלְחַן דֶּאֱלָהָא לָא אִתְקָרְבַת׃ רַבְרְבָהָא 3
בְּגַוַּהּ כְּאַרְיָוָן נָהֲמִין דַּיָּנַהָא דִּיבֵי רַמְשָׁא לָא מוֹרִיכִין לְצַפְרָא׃ נְבִיֵּי שִׁקְרָא דִּי בְגַוַּהּ 4
בָּאשִׁין גֻּבְרִין שַׁקְרִין כָּהֲנַהָא מְפַסִּין קוּדְשָׁא חָטְפִין בְּאוֹרָיְתָא׃ יְיָ זַכָּאָה אֲמַר לְאַשְׁרָאָה 5
שְׁכִנְתֵּיהּ בְּגַוַּהּ לֵית קֳדָמוֹהִי לְמֶעְבַּד שְׁקַר הָא כִּנְהוֹר צַפְרָא דְּאָזֵל וְתַקִּין כֵּן דִּינֵיהּ נָפֵק
לְאַפְרָשׁ לָא מִתְעַכַּב וְלָא יָדְעִין עוּלַיָּא בַּהֲתָא׃ שֵׁצֵיתִי עַמְמַיָּא אַצְדִיאָה בִּירָנְיָתְהוֹן 6
אַחְרֵבִית שְׁקָקֵיהוֹן מִבְּלִי עֲדֵי צַדְיָאָה קִרְוֵיהוֹן מִבְּלִי אֱנָשׁ מִבְּלִי יָתֵב׃ אֲמָרִית בְּרַם 7
תִּדְחֲלִין מִן קֳדָמַי תְּקַבְּלוּן אוּלְפַן וְלָא יִפְסוֹק מְדוֹרֵיהוֹן מֵאַרְעָא בֵּית שְׁכִנְתִּי כָּל טַבְוָן
דַּאֲמָרִית לְהוֹן אֵיתֵי לְהוֹן בְּכֵן אַקְדִּימוּ חַבִּילוּ כָּל עוֹבָדֵיהוֹן׃ בְּכֵן סַבַּרוּ לְמֵימְרִי אֲמַר 8
יְיָ לְיוֹם אִתְגְּלָיוּתִי לְמִדָּן אֲרֵי דִּינִי לְכַנָּשָׁא עַמְמַיָּא לְקָרָבָא מַלְכְוָתָא לְמִשְׁפַּךְ עֲלֵיהוֹן
חֵימְתִי כָּל תְּקוֹף רוּגְזִי אֲרֵי בְּאֵשַׁת פּוּרְעָנוּתִי יִסּוֹפוּן כָּל רַשִׁיעֵי אַרְעָא׃ אֲרֵי בְכֵן אֲשַׁנֵּי 9
עַל עַמְמַיָּא מְמַלַּל חַד בְּחִיר לְצַלָּאָה כּוּלְּהוֹן בִּשְׁמָא דַּיְיָ לְמִפְלַח קֳדָמוֹהִי כִּתַף חַד׃
מֵעִבַּר לְנַהֲרֵי הוֹדוּ בְּרַחֲמִין יְתוּבוּן גָּלְוַת עַמִּי דְּאִתְגְּלִיאָה וִיהוֹן מַיְתָן לְהוֹן הָא 10
כְּקוּרְבָּנִי׃ בְּעִדָּנָא הַהִיא לָא תִבְהֲתִין מִכָּל עוֹבָדַיִךְ בִּישַׁיָּא דִּי מְרַדְתְּ בְּמֵימְרִי אֲרֵי בְכֵן 11
אֲגַלֵּי מִגַּוִּיךְ תַּקִּיפֵי תִּשְׁבַּחְתִּיךְ וְלָא תוֹסְפִין לְאִתְרַבְרְבָא עוֹד בְּטוּרָא דְקוּדְשִׁי׃ וְאַשְׁאַר 12
בְּגַוִּיךְ עַם עִנְוְתָן וּמְקַבֵּל עוּלְבָּן וְיִתְרַחֲצוּן בִּשְׁמָא דַּיְיָ׃ שְׁאָרָא דְיִשְׂרָאֵל לָא יַעְבְּדוּן 13
שְׁקַר וְלָא יְמַלְּלוּן כִּדְבִין וְלָא יִשְׁתְּכַח בְּפוּמְהוֹן לִישָׁן דִּנְכְלִין אֲרֵי אִנּוּן יִתְפַּרְנְסוּן וְיִשְׁרוּן
וְלֵית דְּמָנִיד׃ שַׁבַּחִי כְּנִשְׁתָּא דְצִיּוֹן וּבוּעוּ יִשְׂרָאֵל חֲדַי וּבוּעִי בְּכָל לִבָּא כְּנִשְׁתָּא 14
דִּירוּשְׁלֵם׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

CAP. III.

VÆ festinanti & redemptæ civitati quæ multiplicat iræ provocationem. 1
Non audiit vocem servorum ejus prophetarum, neque recepit doctrinam, 2
in verbo Dñi non confisa est, & ad cultum Dei sui non accessit. Principes 3
ejus in medio ipsius sunt sicut leones rugientes, judices ejus lupi vespertini
non prorogantes in tempus matutinum. Pseudoprophetæ qui sunt in medio 4
ejus malè agunt, homines mendaces, Sacerdotes ejus contaminant sanctitatem, iniquè agentes in Legem. Dñs purus dixit se collocaturum majestatem 5
suam in medio ipsius, coram eo non fit mendacium: ecce sicut lux auroræ
quæ progreditur ac dirigitur; sic judiciũ ejus prodit ut discernat: non tardat,
neq; norunt improbi confusionem. Excidi gentes, vastata sunt palatia earum, 6
desolavi plateas earum ut non sit qui transeat: vastatæ sunt urbes earum ut
nemo sit, ut nullus sit incola. Dixi, Enimverò timeas à conspectu meo, re- 7
cipias doctrinam, neq; excîdet habitationes eorum à terra domus majestatis
meæ: omnia bona quæ dixi eis adducam eis: idcircò manè prævenerunt,
destruxerunt omnia opera sua. Quapropter sperate in verbo meo, ait Dñs, 8
quo die revelabor ad judicandum; quoniam judicium meum [*erit*] ad congregandum gentes, ad propè sistendum regna, ad effundendum in eas furorem meum, omnem vehementiam iræ meæ, etenim igne ultionis meæ con-
sumentur omnes impii terræ. Siquidem ita convertam in omnes gentes lo- 9
cutionem unam electam, ut precentur omnes in nomine Dñi, ut serviant coram eo humero uno. Ab ulteriore ripa fluviorum Indiæ cum miserationibus 10
revertetur transmigratio populi mei quæ in exilium abducta est, & afferẽt sibi
ecce quasi *oblationẽ meam*. In illo tẽpore non pudefies ex omnib⁹ operib⁹ tuis 11
malis quib⁹ rebellâsti in Verbũ meũ, quoniã sic patefaciam è medio tui fortes
gloriæ tuæ, ut non addas ultrà ad tete magnificandũ in monte sanctitatis meæ.
Et relinquã in medio tui populũ mansuetũ & excipientem afflictioné, fiduci- 12
ámq; suã collocabũt in nomine Dñi. Reliquiæ Israel non faciẽt falsitaté, neq; 13
loquẽtur mendacia, neq; invenietur in ore ipsorũ lingua dolosa: quoniam ipsi
pascentur & habitabunt, nec erit qui terreat [*eos*.] Hymnos cane congregatio 14
Sion, & exultate Israel: gaude & lætare in toto corde congregatio Jerusalẽ.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܦܘܠܓܐ * ܓ *

1 * ܘܝ ܡܕܝܢܬܐ ܡܫܒܚܬܐ ܘܦܪܝܩܬܐ܃ ܡܕܝܢܬܗ ܕܝܘܢܢ܂ * ܕܠܐ ܫܡܥܬ ܩܠܐ܂ ܘܠܐ ܩܒܠܬ
2 ܡܪܕܘܬܐ܂ ܘܒܡܪܝܐ ܠܐ ܣܒܪܬ܂ ܘܠܘܬ ܐܠܗܗ ܠܐ ܩܪܒܬ܂ * ܪܘܪ̈ܒܢܝܗ ܒܓܘܗ܂ ܐܝܟ ܐܪ̈ܝܘܬܐ
3 ܢܗܡܝܢ܂ ܘܕܝ̈ܢܝܗ܂ ܐܝܟ ܕܐܒ̈ܐ ܕܪܡܫܐ܂ ܘܠܐ ܡܟܬܪܝܢ ܠܨܦܪܐ܂ * ܢܒ̈ܝܝܗ܂ ܦܚܙܝܢ܂ ܘܓܒܪ̈ܐ
4 ܥܘܠ̈ܐ܂ ܟܗ̈ܢܝܗ܂ ܛܘܫܘ ܩܘܕܫܐ܂ ܘܛܠܡܘ ܢܡܘܣܐ܂ * ܘܡܪܝܐ ܙܕܝܩܐ ܒܓܘܗ܂ ܘܠܐ ܥܒܕ
5 ܥܘܠܐ܂ ܨܦܪܐ ܨܦܪܐ ܕܝܢܗ ܝܗܒ ܠܢܘܗܪܐ܂ ܘܠܐ ܡܬܟܣܐ܂ ܥܘܠܐ܂ ܠܐ ܝܕܥ ܒܗܬܬܐ܂
6 * ܐܘܒܕܬ ܥܡ̈ܡܐ܂ ܘܐܬܚܒܠܬ ܕܘܝܬܐ܂ ܐܚܪܒܬ ܫܘܩܝܗܘܢ܂ ܡܢ ܕܠܐ ܕܥܒܪ܂ ܐܬ
7 ܚܪ̈ܒܢܝܗܘܢ܂ ܡܢ ܕܠܐ ܐܢܫ܂ ܘܡܢ ܕܠܐ ܕܥܡܪ * ܐܡܪܬ ܕܒܪ ܬܕܚܠܝܢ ܠܝ܂ ܘܬܩܒܠܝܢ
ܡܪܕܘܬܐ܂ ܘܠܐ ܢܐܒܕ ܡܢ ܥܝ̈ܢܝܟܝ ܟܠ ܡܕܡ ܕܦܩܕܬܟܝ܂ ܐܬܛܝܒܘ ܩܘܡܘ ܘܚܒܠܘ
8 ܟܠܗܘܢ ܥܒ̈ܕܝܗܘܢ܂ * ܡܛܠ ܗܢܐ ܣܟܘ ܠܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܠܝܘܡܐ ܕܐܩܘܡ ܐܢܐ ܠܣܗܕܘܬܐ܂ ܡܛܠ
ܕܩܪܒ ܕܝܢܝ܂ ܠܡܟܢܫܘ ܥܡ̈ܡܐ܂ ܘܠܡܩܪܒܘ ܡܠܟܘ̈ܬܐ܂ ܠܡܫܕ ܥܠܝܗܘܢ ܪܘܓܙܝ܂
ܘܟܠܗ ܚܡܬܐ ܕܚܡܬܝ܂ ܡܛܠ ܕܒܢܘܪܐ ܕܛܢܢܝ ܬܬܐܟܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ܂ * ܗܝܕܝܢ ܐܗܦܘܟ 9
ܠܥܡ̈ܡܐ ܣܦܬܐ ܓܒܝܬܐ܂ ܕܢܩܪܘܢ ܟܠܗܘܢ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܘܢܦܠܚܘܢܝܗܝ ܒܢܝܪܐ
10 ܚܕ܂ * ܡܢ ܥܒܪ ܢܗܪ̈ܘܬܐ ܕܟܘܫ܂ ܢܝܬܘܢ ܠܝ ܕܒܚ̈ܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ܂ * ܠܐ ܬܒܗܬܝܢ ܗܝ ܡܢ
11 ܟܠܗܘܢ ܥܒ̈ܕܝܟܝ ܕܐܥܘܠܬܝ ܒܝ܂ ܗܝܕܝܢ ܐܥܒܪ ܡܢܟܝ ܫܘܒܗܪܐ ܕܪܘܪܒܢܘܬܟܝ܂ ܘܠܐ
12 ܬܘܣܦܝܢ ܬܘܒ ܠܡܫܬܥܠܝܘ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܩܘܕܫܝ܂ * ܘܐܘܬܪ ܒܟܝ ܥܡܐ ܡܣܟܢܐ ܘܡܟܝܟܐ܂
13 ܕܡܣܒܪܝܢ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ܂ * ܘܫܪܟܐ ܕܐܝܣܪܝܠ܂ ܠܐ
ܢܥܒܕܘܢ ܥܘܠܐ܂ ܘܠܐ ܢܡܠܠܘܢ ܕܓܠܘܬܐ܂ ܘܠܐ ܢܫܬܟܚ ܒܦܘܡܗܘܢ ܠܫܢܐ ܕܢܟܠܐ܂ ܡܛܠ
ܕܗܢܘܢ ܢܪܥܘܢ ܘܢܪܒܥܘܢ܂ ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗܘܢ ܡܙܝܥܢܐ܂ * ܫܒܚܝ܂ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ܂ 14
ܘܢܒܥܝ܂ ܐܝܣܪܝܠ܂ ܚܕܝ ܘܐܬܒܣܡܝ ܡܢ ܟܠܗ ܠܒܟܝ܂ ܒܪܬ ܐܘܪܫܠܡ܀

CAP. III.

EHeu urbs celebris & liberata, urbs Jonæ; 1
Quæ nec voci auſcultavit, neque diſciplinam 2
admiſit, in Domino minimè ſperavit, ad Deum
ſuum non acceſſit. Principes ejus in medio 3
ipſius ut leones rugiunt; judices ejus ſimiles
ſunt lupis veſpertinis, & non expectant ad
matutinum uſque: Prophetæ ejus libidinoſi 4
ſunt & homines impii; ſacerdotes ejus polluunt Sanctuariũ & vim inferunt legi. Domi- 5
nus autem juſtus eſt in medio ejus, & non facit iniquitatem; ſingulis matutinis judicia ſua
exercet, palàm reddit, & non cunctatur: at
impius neſcit erubeſcere. Perdidi gentes, & 6
everſa eſt miſera; deſtruxi vicos eorum penuriâ tranſeuntium, deſolatæ ſunt urbes eorum
ob penuriam hominum & penuriam incolarum. Dixeram, ut me timeretis, & à me di- 7
ſciplinam acciperetis, & nihil deperiret ab
oculis tuis, eorum quæ præcepi tibi. Parate
vos, adeſte, & deſtruite omnia opera eorum.
Quapropter expectate me, dicit Dominus; 8
uſque ad diem quâ ſurgam ad teſtimonium:
appropinquavit enim judicium meum ad congregandum populos & ſiſtendum regna, quatenus effundam ſuper eos excandeſcentiam
meam totúmque æſtum indignationis meæ:
nam igne zeli mei conſumenda eſt tota terra.
Tunc reſtituam gentibus labium electum, ut 9
invocent omnes nomẽ Domini, & colant eum
pari jugo. Ex ultrafluvialibus Æthiopiæ *pa-* 10
rtibus afferent mihi ſacrificia in die illo.
Annon erubeſceres ob tot facinora tua quæ 11
contra me ſceleratè geſſiſti? Tunc amovebo
à te magnitudinem arrogantiæ tuæ, & non
perges ultrà inſultare monti ſanctitatis meæ:
Et relinquam in te populum pauperem & hu- 12
milem, qui ſperabunt in nomine Domini.
Et qui reſidui manſerint ex Iſraelitis, non fa- 13
cient iniquitatem, neque loquentur mendacium, neque reperietur in ore ipſorum lingua
doloſa: quoniam ipſi paſcentur & cubabunt,
nemóque erit illis infenſus. Cane filia Sionis, 14
jubila Iſrael, gaude & geſti ex toto animo
tuo, filia Jeruſalem.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الفصل الثالث *

1 * واه الطاهرة والمنجاة المدينة الحمامة * لم تسمع صوتا ولم تقبل ادبا ولم تتوكل على الرب 2
ولم تقرب الى الهها * رؤساوها فيها مثل اسد يزارون * قضاتها مثل ذياب ارابيا لا يبقون الى الغداة * 3
* انبياوها لابسوا روحا رجال متغافلون كهنتها ينجسون الاقداس ويتنافقون على الناموس * والرب 4
عدل في وسطها ولم يصنع ظلما بالغداة بالغداة يعطي حكمه وليس ظلما للظفر في الفساد * 5
* احدرت المتكبرين * فنيت زواياهم * ساخرب مخارجهم ان لا يسلكوا بالكلية * فنيت مدنهم * 6
من اجل انه لم يبق ولا واحد * ولا من يسكن * قلت ان تخافوني * وتقبلوا الادب * ولا 7
تستاصلون من عينيها بكلما انتقمت به فيها * استعد بكر وفسدت كل بعارهم *
* الاصحاح الثاني والعشرون * وهو الثاني من النبوة * * من اجل هذا انتظرني يقول 8
الرب ليوم قيامتي للشهادة * من اجل ان حكمي في مجامع الامم ليقبلوا ملوكا * لافيض
عليهم كل رجز غضبي * من اجل ان بنار غيرتي توكل الارض * لاني حينئذ ارد على الشعوب 9
لسانا الى جيلهم ليدعوا الكل باسم الرب ليتعبدوا له تحت نير واحد * من اقاصي انهار الحبشة 10
اقبلوا الذين يتضرعون الي مع المتبددين يقدمون لي ذبائحه * في ذلك اليوم لا تخزين من 11
جميع اعمالك التي نافقت بها علي لاني حينئذ انزع منك عظمتك ولا تعودين ايضا ان تتعظمي
12 على جبل قدسي * وابقي فيك شعبا وديعا متواضعا * ويرتاع من اسم الرب بقايا اسرائيل * ولا 13
يصنعون ظلما ولا يتكلمون بالاباطيل ولا يوجد في فمهم لسان غاش * من اجل انهم يرعون
ويضطجعون ولا يكون من يروعهم * افرحي يا ابنة صهيون جدا نادي يا ابنة ايروشليم * 14
سري واطربي من كل قلبك يا ابنة ايروشليم *

CAP. III.

HEu, illuſtris & redempta, urbs, co- 1
lumba, Non audivit vocem, neque ſuſ- 2
cepit eruditionem, neque confiſa eſt in Domino, neque acceſſit ad Deum ſuum.
Principes ejus in ipſa ceu leones rugiunt; 3
judices ejus ceu lupi Arabiæ, nihil reliquebant ad matutinum uſque: Prophe- 4
tæ ejus induti ſpiritu, viri negligentes ſacerdotes ejus prophanant Sancta, & impiè
agunt in legem. Dominus autem juſtiſſi- 5
mus eſt in medio ejus, nec ullam agit iniquitatem: manè manè prodit judicium
ſuum, non autem injuſtitiam, & ad victoriam aſſequendam per corruptionem.
Dejeci ſuperbos, perierunt anguli eorum, 6
deſtruam effugia eorum, ut nullatenus incedant: perierunt urbes eorum, quia ne unus quidem remanſit, neque qui habitaret.
Dixi ut me timeretis, & eruditionem ac- 7
ciperetis; ut non eradicaremini ex oculis
ejus per tot ultiones quas exercui in ea.
Paratus eſto, ſurge diluculò: corrupta eſt
tota racematio eorum.

Textus vigeſimus ſecundus, hujus
autem Prophetiæ ſecundus.

Propterea expectate me, dicit Dominus, uſ- 8
*que ad diem quâ ſurgam ad teſtimonium:
nam judicium meum erit in cœtibus gentium, ut ſuſcipiant reges, ut effundam
ſuper eos totam iram furoris mei: quoniam igne zeli mei conſumetur terra. Tunc* 9
*enim reſtituam populis linguam in generationem eorum, ut invocent omnes nomen
Domini, ut ſe ſubdant ei ſub eodem jugo.
Ab extremis Æthiopiæ fluminibus veni-* 10
ent qui me deprecabuntur unà cum diſperſis, offerent mihi ſacrificium. Eo die 11
*non pudebit te omnium operum tuorum
quibus contra me impiè egiſti; quia tunc
auferam à te ſuperbiam tuam, & non
perges ampliùs ſuperbire in montem ſanctitatis meæ: Et relinquam in te populum* 12
*mitem humilem, & verebuntur nomen
Domini reliquiæ Iſraelis, Et non faci-* 13
*ent iniquitatem, neque loquentur vanitates, neque reperietur in ore ipſorum lingua
fraudulenta: paſcentur enim & cubabunt: nec erit qui terreat eos. Gaude O* 14
*filia Sionis vehementer, clama O filia Jeroſolymæ, exulta & geſti ex toto corde
tuo, O filia Jeroſolymæ.*

חגי : א

: tuum inimicum *complanavit* , tua judicia Dominus fecit Removere
15 הֵסִיר יְהוָה מִשְׁפָּטַיִךְ פִּנָּה אֹיְבֵךְ
.ultrà malum *videbis* non ,*tuo interiori in* Dominus Iſrael rex
מֶלֶךְ יִשְׂרָאֵל ׀ יְהוָה בְּקִרְבֵּךְ לֹא־תִירְאִי רָע עוֹד :
ne ,Sijon : timeas ne ,Jeruſalaim dicetur ,illa die In
16 בַּיּוֹם הַהוּא יֵאָמֵר לִירוּשָׁלַםִ אַל־תִּירָאִי צִיּוֹן אַל־
potens *tuo interiori* in tuus Deus Dominus .tuæ manus debilitentur
17 יִרְפּוּ יָדָיִךְ : יְהוָה אֱלֹהַיִךְ בְּקִרְבֵּךְ גִּבּוֹר
,ſuâ dilectione propter ſilebit ,lætitia *in* te ſuper gaudebit ſervabit
יוֹשִׁיעַ יָשִׂישׂ עָלַיִךְ בְּשִׂמְחָה יַחֲרִישׁ בְּאַהֲבָתוֹ
:congregavi tempore à affectos *Mæſtitia,præconio cum* te *ſuper* faciet exultare
18 יָגִיל עָלַיִךְ בְּרִנָּה : נוּגֵי מִמּוֹעֵד אָסַפְתִּי
conficiens ego Ecce .opprobrii eam ſuper onus ,fuerunt te ex
19 מִמֵּךְ הָיוּ מַשְׂאֵת עָלֶיהָ חֶרְפָּה : הִנְנִי עֹשֶׂה
,claudicantem faciam ſervare & ,illo tempore in te affligentes omnes
אֶת־כָּל־מְעַנַּיִךְ בָּעֵת הַהִיא וְהוֹשַׁעְתִּי אֶת־הַצֹּלֵעָה
, nomen in & , laudem in eos ponam & , congregabo *expulſam* &
וְהַנִּדָּחָה אֲקַבֵּץ וְשַׂמְתִּים לִתְהִלָּה וּלְשֵׁם
, vos adducam illo tempore In .eorum pudoris terra omni in
20 בְּכָל־הָאָרֶץ בָּשְׁתָּם : בָּעֵת הַהִיא אָבִיא אֶתְכֶם
,nomen in vos dabo nam : vos *me congregandi* tempore in &
וּבָעֵת קַבְּצִי אֶתְכֶם כִּי־אֶתֵּן אֶתְכֶם לְשֵׁם
me convertendo in , terræ populis omnibus in laudem in &
וְלִתְהִלָּה בְּכֹל עַמֵּי הָאָרֶץ בְּשׁוּבִי אֶת־
.Dominus dixit , veſtris oculis in veſtras captivitates
שְׁבוּתֵיכֶם לְעֵינֵיכֶם אָמַר יְהוָה :

Verſio VULG. LAT.

15 Abſtulit Domin⁹ judicium tuum, avertit inimicos tuos : rex Iſrael Dominus in medio tuî, non timebis malum ultrà. 16 In die illa dicetur Jeruſalem ; Noli timere: Sion, 17 non diſſolvantur manus tuæ. Dominus Deus tuus in medio tuî fortis, ipſe ſalvabit : gaudebit ſuper te in lætitia, ſilebit in dilectione ſua, exultabit ſuper te in laude. 18 Nugas, qui à lege receſſerant, congregabo, quia ex te erant : ut non ultrà habeas ſuper eis opprobrium. 19 Ecce ego interficiam omnes, qui afflixerunt te in tempore illo : & ſalvabo claudicantem: & eam, quæ ejecta fuerat, congregabo : & ponam eos in laudem, & in nomen, in omni terra confuſionis eorum: 20 In tempore illo, quo adducam vos, & in tempore, quo congregabo vos ; dabo enim vos in nomen, & in laudem omnibus populis terræ, cùm convertero captivitatem veſtram coram oculis veſtris, dicit Dominus.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

15 Περιεῖλε κύριος τὰ ἀδικήματά σου, λελύτρωταί σε ἐκ χειρὸς ἐχθρῶν σου. (ρ) βασιλεὺς Ἰσραὴλ κύριος ἐν μέσῳ σου, οὐκ ὄψῃ κακὰ οὐκέτι. 16 Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ ἐρεῖ κύριος τῇ Ἱερουσαλήμ, Θάρσει Σιών, μὴ παρείσθωσαν αἱ χεῖρές σου. 17 Κύριος ὁ θεός σου ἐν σοί, (σ) ὁ δυνατὸς σώσει σε, ἐπάξει ἐπὶ σὲ εὐφροσύνην, καὶ καινιεῖ σε ἐν τῇ ἀγαπήσει αὐτοῦ· καὶ εὐφρανθήσεται ἐπὶ (τ) σὲ ἐν τέρψει 18 ὡς ἐν ἡμέρᾳ ἑορτῆς. Καὶ συνάξω τοὺς συντετριμμένους σου. οὐαί, τίς ἔλαβεν (υ) ἐπ' αὐτὴν ὀνειδισμόν; 19 Ἰδοὺ ἐγὼ ποιῶ ἐν σοὶ (φ) ἕνεκέν σου ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, λέγει κύριος, καὶ σώσω τὴν ἐκπεπιεσμένην, καὶ τὴν ἀπωσμένην εἰσδέξομαι, καὶ θήσομαι αὐτοὺς εἰς καύχημα, καὶ ὀνομαστοὺς ἐν πάσῃ τῇ γῇ. καὶ καταισχυνθήσονται. 20 Ἐν τῷ καιρῷ ἐκείνῳ, ὅταν καλῶς ὑμῖν ποιήσω, καὶ ἐν τῷ καιρῷ, ὅταν (χ) εἰσδέξομαι ὑμᾶς· διότι δώσω ὑμᾶς ὀνομαστούς, καὶ εἰς καύχημα ἐν πᾶσι τοῖς λαοῖς τῆς γῆς, ἐν τῷ ἐπιστρέφειν με τὴν αἰχμαλωσίαν ὑμῶν ἐνώπιον ὑμῶν, λέγει κύριος.

15 Abſtulit Domin⁹ iniquitates tuas, redemit te de manu inimicorum tuorum : rex Iſrael Dominus in medio tuî : non videbis mala ultrà. 16 In tempore illo dicet Dominus Hieruſalem, Confide, Sion: non diſſolvantur manus tuæ: 17 Domin⁹ Deus tuus in te: Fortis ſalvabit te: adducet ſuper te lætitiam, & innovabit te in charitate ſua, et lætabitur in te in delectatione, quaſi in die ſolenni. 18 Et congregabo contractos tuos. Væ, quis accepit ſuper eam opprobrium. 19 Ecce ego facio in te propter te in tempore illo, (n) dicit Dominus: et ſalvabo expreſſam: et repulſam ſuſcipiam: et ponam eos in gloriam, et nominatos in omni terra. Et (o) confundentur. 20 In tempore illo, quando bene vobis fecero, & in tempore, cùm ſuſcepero vos. Quia dabo vos nominatos, & in gloriam in cunctis populis terræ, quando convertero captivitatem veſtram coram vobis, dicit Dominus.

ΣΟΦΟΝΙ'ΑΣ Θ'.

MS.A. (ρ) βασιλεύσει ὁ κύριος ἐμ μέσῳ σου, καὶ οὐκ (σ) δυνατὸς (τ) σοὶ (υ) ὀνειδισμὸν ἐπ' αὐτήν; (φ) ἕνεκά (χ) εἰσδέξωμαι ΣΟΦΟΝΙ'ΑΣ Θ'.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

15 אַגְלִי יְיָ דַיָּנֵי שִׁקְרָא מִגַּוִּיךְ פַּלִּי בַּעֲלֵי דְבָבִיךְ מַלְכֵּיהּ דְיִשְׂרָאֵל יְיָ אֲמַר לְאַשְׁרָאָה שְׁכִנְתֵּיהּ
16 בְּגַוִּיךְ לָא תִדְחֲלִין מִן קֳדָם בִּישָׁא עוֹד : בְּעִדָּנָא הַהִיא יִתְאֲמַר לִירוּשְׁלֵם לָא תִדְחֲלִין
17 צִיּוֹן לָא יִתְרַשְׁלָן יְדָךְ : יְיָ אֱלָהָךְ אֲמַר לְאַשְׁרָאָה שְׁכִנְתֵּיהּ בְּגַוִּיךְ גִּבָּר פָּרִיק יֶחְדֵּי עֲלָךְ
18 בְּחֶדְוָא יִכְבּוֹשׁ עַל חוֹבָךְ בְּרַחֲמָתֵיהּ יְדוּץ עֲלָךְ בְּדִיץ : דִּי הֲווֹ מְעַכְּבִין בִּיךְ זִמְנֵי מוֹעֲדָךְ
19 אַרְחֵיקִית מִנִּיךְ וַי עֲלֵיהוֹן עַל דַּהֲווֹ נָטְלִין זֵינֵיהוֹן לְקִבְלִיךְ וּמְחַסְּדִין לִיךְ : הָא אֲנָא
עָבֵיד גְּמִירָא עִם כָּל מְשַׁעְבְּדַיִךְ בְּעִדָּנָא הַהִיא וְאֶפְרוֹק יָת מְטַלְטְלַיָּא וּמְבַדְּרַיָּא אֲקָרֵב
20 וַאֲשַׁוֵּינוּן לְתוּשְׁבְּחָא וּלְשׁוּם בְּכָל אַרְעָא בַּהֲתָתְהוֹן : בְּעִדָּנָא הַהִיא אַכְנֵישׁ יָתְכוֹן
וּבְעִדָּנָא הַהִיא אֲקָרֵב גָּלְוָתְכוֹן אֲרֵי אֶתֵּן יָתְכוֹן לְשׁוּם וּלְתוּשְׁבְּחָא בְּכָל עַמְמֵי אַרְעָא
כַּד אֲתִיב יָת גָּלְוָתְכוֹן לְעֵינֵיכוֹן אֲמַר יְיָ :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Manifeſtavit Dñs judices falſos è medio tui, extirpavit inimicos tuos rex 15 Iſrael : Dñs dixit ſe collocaturum majeſtatem ſuam in medio tui, non expaveſces à conſpectu mali amplius. In illo tempore dicetur ipſi Jeruſalem : Ne 16 timeas Sion, ne remittantur manus tuæ. Dñs Deus tuus dixit ſe collocaturum 17 majeſtatem ſuam intra te : fortis redemptor lætabitur ſuper te, cum gaudio ſubjiciet ſcelus tuum cum miſericordia ſua, ſuper te exultabit exultatione. Qui remorati ſunt in te tempora ſolennitatis tuæ, procul expuli à te : væ 18 illis quoniam portaverunt arma ſua contra te, & opprobriis te affecerunt. Ecce ego faciam exterminationem cum omnibus qui te ſubjecerunt in illo 19 tempore ; & redimam extorres, & diſperſos accerſam ; & collocabo eos in laudem & nomen in univerſa terra confuſionis ipſorum. In illo tempore 20 congregabo vos, & in illo tempore poſtliminio reſtituam exules veſtros, quoniam ponam vos in nomen & in gloriam inter omnes gentes terræ, quum reduxero exules veſtros in oculis veſtris, dixit Dominus.

ספר חגי : א

CAP. I. א

die in ,ſexto menſe in ,regis Dariaves ſecundo anno In
1 בִּשְׁנַת שְׁתַּיִם לְדָרְיָוֶשׁ הַמֶּלֶךְ בַּחֹדֶשׁ הַשִּׁשִּׁי בְּיוֹם
prophetæ Chagghai manu in Domini verbum fuit , menſis *una*
אֶחָד לַחֹדֶשׁ הָיָה דְבַר־יְהוָה בְּיַד־חַגַּי הַנָּבִיא
ad & ,Jehudah ducem Sealthiel filium Zerubabel ad
אֶל־זְרֻבָּבֶל בֶּן־שְׁאַלְתִּיאֵל פַּחַת יְהוּדָה וְאֶל־
Sic *: dicendum ad* ,magnum ſacerdotem Jehoſadac filium Jehoſuah
יְהוֹשֻׁעַ בֶּן־יְהוֹצָדָק הַכֹּהֵן הַגָּדוֹל לֵאמֹר : כֹּה 2
: dixerunt iſte Populus : dicendo , exercituum Dominus dixit
אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת לֵאמֹר הָעָם הַזֶּה אָמְרוּ
fuit Et *.ædificandæ* Domini domus tempus , *venire* tempus Non
לֹא עֶת־בֹּא עֶת־בֵּית יְהוָה לְהִבָּנוֹת : וַיְהִי 3
tempus Numquid *: dicendum ad*,prophetæ Chagghai manu in Domini verbum
4 דְּבַר־יְהוָה בְּיַד־חַגַּי הַנָּבִיא לֵאמֹר : הַעֵת
iſta domus & , laqueatis veſtris domibus in *habitare vos* ,vobis
לָכֶם אַתֶּם לָשֶׁבֶת בְּבָתֵּיכֶם סְפוּנִים וְהַבַּיִת הַזֶּה
Ponite : exercituum Dominus dixit ſic nunc Et ? deſerta
5 חָרֵב : וְעַתָּה כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת שִׂימוּ
:parum *inferre &* ,multum Seminâſtis .veſtras vias ſuper veſtrum cor
6 לְבַבְכֶם עַל־דַּרְכֵיכֶם : זְרַעְתֶּם הַרְבֵּה וְהָבֵא מְעָט
, *induere : inebriandum ad* non & , *bibere : ſaturandum ad non &* , *comedere*
אָכוֹל וְאֵין־לְשָׂבְעָה שָׁתוֹ וְאֵין־לְשָׁכְרָה לָבוֹשׁ
ſacculo in *ſe locans* mercede ,*ſe elocans* mercede &*:ſibi calefiendum ad non &*
וְאֵין־לְחֹם לוֹ וְהַמִּשְׂתַּכֵּר מִשְׂתַּכֵּר אֶל־צְרוֹר
.pertuſo
נָקוּב :

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA AGGÆI.

CAP. I.

1 IN anno ſecundo Darii regis, in menſe ſexto, in die una menſis, factum eſt verbum Domini in manu Aggæi prophetæ, ad Zorobabel filium Salathiel, ducem Juda, & ad Jeſum, filium Joſedec, ſacerdotem magnum, dicens ; 2 Hæc ait Dominus exercituum, dicens ; Populus iſte dicit ; Nondum venit tempus domûs Domini ædificandæ. 3 Et factum eſt verbum Domini in manu Aggæi prophetæ, dicens ; 4 Numquid tempus vobis eſt ut habitetis in domibus laqueatis, 5 & domus iſta deſerta ? Et nunc hæc dicit Dominus exercituum ; Ponite corda veſtra ſuper vias veſtras. 6 Seminâſtis multum, & intuliſtis parum: comediſtis, & non eſtis ſatiati : bibiſtis, & non eſtis inebriati : operuiſtis vos, & non eſtis calefacti : & qui mercedes congregavit, miſit eas in ſacculum pertuſum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

'ΑΓΓΑΙ͂ΟΣ Ι'.

ΚΕΦ. α'.

1 ΕΝ τῷ δευτέρῳ ἔτει ἐπὶ Δαρείου τοῦ βασιλέως, ἐν τῷ μηνὶ τῷ ἕκτῳ, μιᾷ τοῦ μηνός, ἐγένετο λόγος κυρίου ἐν χειρὶ Ἀγγαίου τοῦ προφήτου, λέγων, Εἰπὸν (α) πρὸς Ζοροβάβελ τὸν τοῦ Σαλαθιὴλ (β) ἐκ φυλῆς Ἰούδα, καὶ πρὸς Ἰησοῦν τὸν τοῦ Ἰωσεδὲκ τὸν ἱερέα τὸν 2 μέγαν, λέγων, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, λέγων, Ὁ λαὸς οὗτος λέγουσιν, (γ) Οὐχ ἥκει ὁ καιρὸς τοῦ οἰκοδομῆσαι τὸν 3 οἶκον κυρίου. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου ἐν χειρὶ Ἀγγαίου τοῦ προφήτου, λέγων, 4 Εἰ καιρὸς (δ) μὲν ὑμῖν ἐστι τοῦ οἰκεῖν ἐν οἴκοις (ε) ὑμῶν κοιλοστάθμοις, ὁ δὲ 5 οἶκος (ζ) ἡμῶν ἐξηρήμωται; Καὶ νῦν τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Τάξατε δὴ (") καρδίας ὑμῶν εἰς τὰς ὁδοὺς ὑμῶν. (η) 6 Ἐσπείρατε πολλὰ καὶ εἰσηνέγκατε ὀλίγα, ἐφάγετε καὶ οὐκ εἰς πλησμονήν, ἐπίετε καὶ οὐκ εἰς μέθην, περιεβάλεσθε καὶ οὐκ ἐθερμάνθητε ἐν αὐτοῖς, καὶ ὁ τοὺς μισθοὺς συνάγων, συνήγαγεν εἰς δεσμὸν τετρυπημένον.

AGGÆUS.

CAP. I.

1 IN anno ſecundo Darii regis in menſe ſexto, unâ menſis, factum eſt verbum Domini in (a) manu Aggæi prophetæ, dicens; Dic ad Zorobabel filium Salathiel de (b) tribu Juda, & ad Jeſum filium Joſedec ſacerdotem magnum, dicens ; 2 Hæc dicit Dominus omnipotens, dicens ; Populus iſte dicunt ; Non venit tempus ædificandi domum Domini. 3 Et factum eſt verbum Domini in manu Aggæi prophetæ, dicens ; 4 Si tempus quidem vobis eſt habitandi in domibus veſtris (c) concavis, domus autem noſtra deſerta eſt ? 5 Et nunc hæc dicit Dominus omnipotens, Ponite nunc corda veſtra ad vias veſtras. 6 Seminâſtis multa, & intuliſtis pauca : comediſtis, & non ad ſaturitatem : bibiſtis, & non ad ebrietatem : operuiſtis vos, et non eſtis calefacti in ipſis : & qui mercedes congregabat, congregavit in ſacculum pertuſum.

MS.A. 'ΑΓΓΑΙ͂ΟΣ Ι'. (α) δὴ πρὸς (β) τὸν ἐκ (γ) Οὐκ ἥκει (δ) ὑμῖν μὲν (ε) κοιλοστάθμοις, (ζ) οὗτος ἐξερήμωται; (") τὰς καρδίας (η) διότι τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἐσπείρατε

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 בִּשְׁנַת תַּרְתֵּין לְדָרְיָוֶשׁ מַלְכָּא בְּיַרְחָא שְׁתִיתָאָה בְּיוֹמָא חַד לְיַרְחָא הֲוָה פִּתְגַם
נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ בְּיַד חַגַּי נְבִיָּא לְוָת זְרֻבָּבֶל בַּר שְׁאַלְתִּיאֵל רַבָּא דְבֵית יְהוּדָה וּלְוָת
2 יְהוֹשֻׁעַ בַּר יְהוֹצָדָק כַּהֲנָא רַבָּא לְמֵימַר : כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת לְמֵימַר עַמָּא הָדֵין אָמְרִין
3 עַד כְּעַן לָא מְטָא עִדָּן בֵּית מַקְדְּשָׁא דַיְיָ לְאִתְבְּנָאָה : וַהֲוָה פִּתְגַם נְבוּאָה מִן קֳדָם יְיָ בְּיַד
4 חַגַּי נְבִיָּא לְמֵימַר : הַכְדֵין כָּשַׁר לְכוֹן דְּאַתּוּן יָתְבִין בְּבָתַּיָּא דִּי מְטַלְּלִין בִּנְסָרֵי אַרְזַיָּא
5 6 וּבֵית מַקְדְּשָׁא הָדֵין חָרוּב : וּכְעַן כִּדְנַן אֲמַר יְיָ צְבָאוֹת שַׁוּוֹ לִבְּכוֹן עַל אוֹרְחָתְכוֹן : זָרְעִין
אַתּוּן סַגִּיאִין וּמַעֲלִין זְעֵיר אָכְלִין וְלָא סָבְעִין שָׁתַן וְלָא רָוַן לָבְשִׁין וְלָא שָׁחַן לְהוֹן
וּדְמִתְגַּר מִתְגַּר לְמֵאָרְתָּא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAP. I.

ANno ſecundo Darii regis menſe ſexto, die prima menſis, factum eſt verbum 1 prophetiæ à conſpectu Dñi per manum Chaggæi prophetæ ad Zerubbabelem filium Sealthielis principem domus Juda, & ad Jehoſuam filium Jehozadac ſummum Sacerdotem, dicendo : Sic ait Dominus exercituum, 2 dicendo : Populus iſte inquit, Uſquequò non veniet tempus domus ſanctuarii Domini, ut ædificetur ? Et exſtitit verbum à conſpectu Dñi per manum 3 Chaggæi prophetæ, dicendo : Siccine decet vos ut habitetis in domibus 4 quæ tectæ ſunt, in tabulatis cedrinis, cùm hæc ædes ſanctuarii deſtructa ſit ? Nunc itaque ſic ait Dominus exercituum : Apponite cor veſtrum ad vias 5 veſtras. Seminatis multa, & introducitis modicum : comeditis, & non ſatiamini : 6 bibitis, & non inebriamini : induti eſtis, nec vobis ineſt calor : & qui operas ſuas locat, mercedem reportat maledictionem.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

15 * ܐܥܒܪ ܡܪܝܐ ܕܝܢܝܟܝ܂ ܘܦܢܝ ܒܥܠܕܒܒܝܟܝ܂ ܡܠܟܗ ܕܐܝܣܪܐܝܠ܂ ܡܪܝܐ
16 ܒܓܘܟܝ܂ ܬܘܒ ܠܐ ܬܚܙܝܢ ܒܝܫܬܐ܂ * ܒܗܘ ܝܘܡܐ ܗܘ܂ ܢܬܐܡܪ ܠܐܘܪܫܠܡ܂ ܠܐ ܬܕܚܠܝܢ܂
17 ܘܠܨܗܝܘܢ܂ ܠܐ ܢܬܪܦܝܢ ܐܝܕܝܟܝ܂ * ܡܪܝܐ ܐܠܗܟܝ ܒܓܘܟܝ܂ ܓܢܒܪܐ ܘܦܪܘܩܐ܂
ܢܚܕܝܟܝ ܒܚܕܘܬܐ܂ ܘܢܚܕܬܟܝ ܒܚܘܒܗ܂ ܘܢܕܝܨܟܝ ܒܬܫܒܘܚܬܐ܆ ܐܝܟ ܕܒܝܘܡܐ
18 19 ܕܥܐܕܐ܂ * ܘܐܥܒܪ ܡܢܟܝ ܐܝܠܝܢ ܕܡܨܚܝܢ ܗܘܘ ܒܟܝ ܨܚܝܐ܂ * ܗܐ ܥܒܕ ܐܢܐ
ܠܟܠܗܘܢ܂ ܠܡܟܝܟܐ ܕܒܓܘܟܝ܂ ܒܙܒܢܐ ܗܘ܂ ܘܐܦܪܘܩ ܠܡܬܒܪܬܐ܂ ܘܠܡܛܪܕܬܐ
20 ܐܟܢܫ܂ ܘܐܥܒܕ ܐܢܘܢ ܠܫܡܐ ܘܠܫܘܒܚܐ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ܂ * ܘܒܗ ܒܙܒܢܐ ܗܘ
ܐܟܢܫܟܘܢ܂ ܘܐܥܒܕܟܘܢ ܠܫܡܐ܂ ܘܠܫܘܒܚܐ ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܪܥܐ܂ ܡܐ ܕܐܗܦܘܟ ܐܢܐ
ܫܒܝܬܟܘܢ ܠܥܝܢܝܟܘܢ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ * ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܨܦܢܝܐ ܢܒܝܐ *

* Abſtulit à te Dominus judicia tua, & repulit à te hoſtes tuos rex Iſraelis, Dominus in medio tui eſt, poſthac non experieris malum. 15

Eo die dicetur Jeroſolymæ, Ne timeas; & Sioni, Ne remittantur manus tuæ. 16

Dominus Deus tuus in medio tui, Fortiſſimus ac Servator oblectabit te lætitiâ, redintegrabit te in amore ſuum, & efficiet ut glorioſè geſtias, perinde ac in die ſolennitatis: 17

Et auferam à te eos qui contumelioſa de te loquebantur. 18

Ecce reddam eos omnes humiles in medio tui, eo tempore; & liberabo ſubjectam, remotámque colligam: reddam vos celebres, & reſtituam vos in gloriam: 19

Vos inquam, eodem illo tempore colligam, & reddam celebres & glorioſos inter omnes terræ populos, quum reduxero captivitatem veſtram ipſis cernentibus, dicit Dominus. 20

Prophetiæ Sophoniæ prophetæ finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الرب انتزع ظلاماتك * انقذك من يد اعدائك * يملك الرب في وسطك يا ايروشليم * ولا 15
تعاينين شرورا بعد * في ذلك الزمان يقول الرب لايروشليم ثقي * يا صهيون لا تسترخي يداك 16
* الرب الهك فيك قوي يخلصك * يجلب عليك سرورا * ويجددك بحبه * ويسر بك بطرب * مثل 17
في يوم العيد * ويجمع منهشميك * ويل من اخذ عليها تعييرا * ها انا اصنع بك حسنا من 18 19
اجلي يقول الرب في ذلك الزمان * واخلص المسبية * واقبل المقصية * واصيرهم فخرا وسميين
في كل الارض * ويخزون في ذلك الزمان اذ اصنع بكم حسنا * وفي زمان اذ اقبلكم * من 20
اجل اني ادفعكم مسميين وللفخر في جميع شعوب الارض * عند ما ارد سبيكم تجاهكم *

* تمت نبوة صفونيا النبي *

Dominus abſtulit iniquitates tuas, eripuit te de manu inimicorum tuorum: regnabit Dominus in medio tui O Jeruſalem, & mala poſthac non videbis. 15

Eo tempore dicet Dominus Jeroſolymæ, Tuta eſto; O Sion, ne remittantur manus tuæ. 16

Dominus Deus tuus in te fortiſſimus ſalvabit te, adducet ſuper te exultationem, renovabit te charitate ſuâ, téque geſtabundus oblectabitur, ut in die ſolennitatis; 17

Et congregabit dilaceratos tuos. Væ iis qui contumeliis affecerunt eam. 18

Ecce ego bene tibi faciam propter meipſum, dicit Dominus, eo tempore; & captivam redimam; expulſámque recipiam: & reddam eos glorioſos ac celebres in tota terra. Et erubeſcent eo tempore cùm benefecero vobis, & quo tempore vos recepero: 19

quandoquidem reddam vos celebres & glorioſos inter omnes terræ populos, ubi captivitatem veſtram coram vobis reduxero. 20

Prophetiæ Sophoniæ Prophetæ finis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܚܓܝ ܢܒܝܐ *   * ܦܘܠܓܗ * ܐ *

1 * ܒܫܢܬ ܬܪܬܝܢ ܕܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ܂ ܒܝܪܚܐ ܫܬܝܬܝܐ܂ ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ܂ ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ
ܒܝܕ ܚܓܝ ܢܒܝܐ܂ ܠܘܬ ܙܪܘܒܒܠ ܒܪ ܫܠܬܐܝܠ ܪܫܐ ܕܝܗܘܕܐ܂ ܘܠܘܬ ܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܨܕܩ
2 ܟܘܡܪܐ ܪܒܐ܂ ܟܕ ܐܡܪ܂ * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܥܡܐ ܗܢܐ ܐܡܪܝܢ܂ ܠܐ ܡܛܝ ܙܒܢܐ
3 4 ܕܢܬܒܢܐ ܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ܂ * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܒܝܕ ܚܓܝ ܢܒܝܐ܂ ܟܕ ܐܡܪ܂ * ܙܒܢܐ ܗܘ
ܠܟܘܢ܂ ܗܘܐ: ܕܬܬܒܘܢ ܐܢܬܘܢ ܒܒܬܝܟܘܢ ܟܕ ܡܛܠܠܝܢ܂ ܘܒܝܬܐ ܗܢܐ ܚܪܝܒ܂
5 6 * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܣܝܡܘ ܠܒܟܘܢ ܠܐܘܪܚܬܟܘܢ܂ * ܙܪܥܬܘܢ
ܐܢܬܘܢ܂ ܣܓܝ ܘܡܥܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܨܝܪ܂ ܘܐܟܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܘܠܐ ܣܒܥܝܢ ܐܢܬܘܢ܂ ܘܫܬܝܢ
ܐܢܬܘܢ܂ ܘܠܐ ܪܘܝܢ ܐܢܬܘܢ܂ ܘܠܒܫܝܢ ܐܢܬܘܢ܂ ܘܠܐ ܫܚܢܝܢ ܐܢܬܘܢ܂ ܘܕܐܓܪ
ܒܗ ܕܡܬܐܓܪ܂ ܡܬܐܓܪ܂ ܠܟܝܣܐ ܢܩܝܒܐ܂

Sequitur Prophetia

HAGÆI PROPHETÆ.

CAPUT. I.

ANno ſecundo Darii regis, menſe ſexto, primâ *die* menſis, fuit ſermo Domini per Hagæum prophetam, de Zorbabele filio Selathielis principe Judæ, et de Jeſu filio Jozedec ſacerdote maximo, dicendo; 1

Sic ait Dominus potentiſſimus; Populus hic dicunt, Nondum advênit tempus ædificandi domum Domini. 2

En itaque ſermo Domini per Hagæum prophetam, dicendo; 3

An tempus hoc eſt vobis ſedendi in domibus veſtris laqueatis, dum domus iſta deſtructa eſt? 4

Jam ſic dicit Dominus potentiſſimus; Adhibete animos veſtros ad vias veſtras: 5

Quòd multum ſeratis, parum colligatis: edatis, nec ſaturemini: bibatis, nec inebriemini: induamini, neque calefiatis: & quicunque inter vos negotiatur, in ſacculum pertuſum lucrum indat. 6

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الخالق الحي الناطق *

* نبدا ترجمة نبوة حجي النبي * بركاته علينا * امين *

* الفصل الاول *   * الاصحاح الثالث والعشرون * وهو الاول من النبوة *

* في السنة الثانية لداريوس الملك * في الشهر السادس * في اول يوم من الشهر كان قول الرب 1
بيد حجي النبي قايلا * قل لزربابل بن شلتاييل من قبيلة يهودا * وليشوع الكاهن العظيم
قايلا * هكذا يقول الرب الضابط الكل قايلا * هذا الشعب يقول لم ياتي الزمان لنبني بيت 2
الرب * فصار قول الرب بيد حجي النبي قايلا * ان كان هذا الزمان لكم ان تسكنوا في بيوت 3 4
حريزة * وهذا البيت خراب * والان هكذا يقول الرب الضابط الكل * ردوا الان قلوبكم 5
لطرقكم * تزرعون كثيرا وتستغلون قليلا * تاكلون وليس للشبع * تشربون وليس للسكر 6
تلبسون وليس تستدفون بهم * والذي يجمع الاجر * في صرة مثقوبة *

IN NOMINE DEI
Creatoris, Vivi, Rationalis,

Aggredimur Interpretationem
prophetiæ HAGGÆI Prophetæ, cujus benedictiones adſint
nobis, Amen.

CAP. I.

Textus vigeſimus tertius, hujus autem Prophetiæ primus.

ANno ſecundo Darii regis, menſe ſexto, primâ die menſis, fuit ſermo Domini per Haggæum Prophetam, dicens; Dic Zorobabeli filio Salathielis de familia Judæ, & Jeſu ſacerdoti maximo, dicens; 1

Sic dicit Dominus omnipotens, dicens; Hic populus dicit, Nondum vênit tempus ædificandi domum Domini: 2

Ideò factus eſt ſermo Domini per Haggæum prophetam, dicens; 3

Num tempus hoc eſſet vobis habitandi in ædibus firmis, dum domus hæc deſtructa eſt? 4

Nunc itaque ſic ait Dominus omnipotens; Adjicite jam corda veſtra ad vias veſtras: 5

Multum ſeritis, parum reconditis: comeditis, ſed non ad ſatietatem: bibitis, ſed non ad ebrietatem: veſtes adhibetis, ſed iis minimè caleſcitis: & qui mercedem congregat, in marſupium pertuſum infert. 6

חגי : ב

.veſtras vias ſuper veſtrum cor Ponite : exercituum Dñs dixit Sic
7 כה אמר יהוה צבאות שימו לבבכם על־דרכיכם׃
complacebo & ,domum ædificate &,*lignum afferetis &* ,montem in Aſcendite
8 עלו ההר והבאתם עץ ובנו הבית וארצה־
, multum ad *Reſpicere* .Dominus dixit,meipſum glorificabo &,ea in
9 בו ואכבד אמר יהוה׃ פנה אל־הרבה
,quid Propter.illud *in* ſufflavi &,domum in intuliſtis & : parum *ad* ecce &
והנה למעט והבאתם הבית ונפחתי בו יען מה
,deſerta *ipſa* quæ ,meam domum Propter ? exercituum Dominus dixit
נאם יהוה צבאות יען ביתי אשר־הוא חרב
ſe clauſerunt vos ſuper Propterea .*ſuam* domum in *vir currentes* vos &
10 ואתם רצים איש לביתו׃ על־כן עליכם כלאו
ſuper ſiccitatem vocavi Et .*ſuum germen recluſit* terra & , rore à cœli
11 שמים מטל והארץ כלאה יבולה׃ ואקרא חרב על־
ſuper & , *muſtum* ſuper &,triticum ſuper & , montes ſuper & ,terram
הארץ ועל־ההרים ועל־הדגן ועל־התירוש ועל־
ſuper & , *hominem* ſuper & ; humus proferet quod ſuper & , oleum
היצהר ועל אשר תוציא האדמה ועל־האדם ועל־
filius Zerubbabel audivit Et .*volarum* laborem omnem ſuper & , *animal*
12 הבהמה ועל כל־יגיע כפים׃ וישמע זרבבל בן־
omne & , magnus ſacerdos Jehoſadac filius Jehoſuah & ,Sealthiel
שלתיאל ויהושע בן־יהוצדק הכהן הגדול וכל
Chagghai verba *ſuper* & , ſui Dei Domini *voce in* populi reſiduum
שארית העם בקול יהוה אלהיהם ועל־דברי חגי
timuerunt & : eorum Deus Dominus *eum* miſit *quemadmodum* , prophetæ
הנביא כאשר שלחו יהוה אלהיהם וייראו
Domini nuncius Chagghai dixit Et .Domini *faciebus* à populus
13 העם מפני יהוה׃ ויאמר חגי מלאך יהוה
.Dominus dixit vobiſcum Ego : dicendo populo Domini *legatione* in
במלאכות יהוה לעם לאמר אני אתכם נאם־יהוה׃
ducis Sealthiel filii Zerubabel ſpiritum Dominus ſuſcitavit Et
14 ויער יהוה את־רוח זרבבל בן־שלתיאל פחת
, magni ſacerdotis Jehoſadac filii Jehoſuah ſpiritum & , Jehudah
יהודה ואת־רוח יהושע בן־יהוצדק הכהן הגדול
fecerunt & , ſunt ingreſſi & ; populi reſidui omnis ſpiritum &
ואת־רוח כל שארית העם ויבאו ויעשו
.ſui Dei exercituum Domini domo in opus
מלאכה בבית־יהוה צבאות אלהיהם׃

CAP. II. ב

ſecundo anno in ,*ſexto in* menſis quarta & vigeſima die In
1 ביום עשרים וארבעה לחדש בששי בשנת שתים
fuit , menſis *una* & vigeſima *in* ſeptimo In .regis Dariaves
2 לדריוש המלך׃ בשביעי בעשרים ואחד לחדש היה
ad nunc Dic : dicendo ,prophetæ Chagghai manu in Domini verbum
3 דבר־יהוה ביד־חגי הנביא לאמר׃ אמר־נא אל־
filium Jehoſuah ad & , Jehudah ducem Sealthiel filium Zerubabel
זרבבל בן־שלתיאל פחת יהודה ואל־יהושע בן־
Quis : dicendo , populi reſiduum ad & ,magnum ſacerdotem Jehoſadac
4 יהוצדק הכהן הגדול ואל־שארית העם לאמר׃ מי
? prima ſua gloria in iſtam domum viderit qui ,derelictus vobis *in*
בכם הנשאר אשר ראה את־הבית הזה בכבודו הראשון
nihil quaſi *illa ſicut* Nonne ? nunc eam *videntes* vos *quam* &
ומה אתם ראים אתו עתה הלוא כמהו כאין
te robora & ,Dominus dixit,Zerubabel te robora nunc Et ?veſtris oculis in
5 בעיניכם׃ ועתה חזק זרבבל נאם־יהוה וחזק
,terræ populus omnis te robora &,magne ſacerdos Jehoſadac fili Jehoſuah
יהושע בן־יהוצדק הכהן הגדול וחזק כל־עם הארץ
.exercituum Dominus dixit ,vobiſcum ego quia:facite &,Dominus dixit
נאם־יהוה ועשו כי־אני אתכם נאם יהוה צבאות׃

Verſio VULG. LAT.

7 Hæc dicit Dominus exercituum; Ponite corda veſtra ſuper vias 8 veſtras: Aſcendite in montem, portate ligna, & ædificate domum: & acceptabilis mihi erit, & glorificabor, dicit Dominus. 9 Reſpexiſtis ad amplius,& ecce factum eſt minus: & intuliſtis in domum,& exufflavi illud: quam ob cauſam, dicit Dominus exercituum? quia domus mea deſerta eſt, & vos feſtinatis unuſquiſque 10 in domum ſuam. Propter hoc ſuper vos prohibiti ſunt cœli ne darent rorem, & terra prohibita 11 eſt ne daret germen ſuum: Et vocavi ſiccitatem ſuper terram, & ſuper montes, & ſuper triticum, & ſuper vinum, & ſuper oleum, & quæcunque profert humus, & ſuper homines, & ſuper jumenta, & ſuper omnem labo-12 rem manuum. Et audivit Zorobabel filius Salathiel, & Jeſus filius Joſedec ſacerdos magnus, & omnes reliquiæ populi, vocẽ Domini Dei ſui,& verba Aggæi prophetæ, ſicut miſit eum Dominus Deus eorum ad eos:& timuit po-13 pulus à facie Domini. Et dixit Aggæus nuntius Domini de nuntiis Domini, populo, dicens; Ego 14 vobiſcum ſum,dicit Dominus. Et ſuſcitavit Dominus ſpiritum Zorobabel filii Salathiel,ducis Juda, & ſpiritum Jeſu filii Joſedec, ſacerdotis magni, & ſpiritum reliquorum de omni populo: & ingreſſi ſunt, & faciebant opus in domo Domini exercituum Dei ſui.

CAP. II.

1 In die vigeſima & quarta menſis, in ſexto menſe,in anno ſecun-2 do Darii regis. In ſeptimo menſe, vigeſimâ & primâ menſis, factum eſt verbum Domini in manu 3 Aggæi prophetæ,dicens; Loquere ad Zorobabel filium Salathiel ducem Juda, & ad Jeſum filium Joſedec ſacerdotem magnum, & 4 ad reliquos populi, dicens; Quis in vobis eſt derelictus, qui vidit domũ iſtam in gloria ſua prima? & quid vos videtis hanc nunc? numquid non ita eſt, quaſi non ſit 5 in oculis veſtris? Et nunc confortare, Zorobabel, dicit Dominus: & confortare, Jeſu fili Joſedech ſacerdos magne, & confortare omnis populus terræ, dicit Dominus exercituum: & facite (quoniam ego vobiſcum ſum,dicit Dominus exercituum)

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Θέσθε τὰς καρδίας ὑμῶν εἰς τὰς ὁδοὺς ὑμῶν. 8 Ἀνάβητε (θ)εἰς τὸ ὄρος, καὶ κόψατε ξύλα, (ι) οἰκοδομήσατε τὸν οἶκον, καὶ εὐδοκήσω ἐν αὐτῷ, καὶ ἐνδοξασθήσομαι, εἶπε κύριος. 9 Ἐπεβλέψατε εἰς πολλά, καὶ (κ) ἐγένετο ὀλίγα· καὶ εἰσηνέχθη εἰς τὸν οἶκον, καὶ ἐξεφύσησα αὐτά. διατοῦτο τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἀνθ' ὧν ὁ οἶκός μου ἐστὶν ἔρημος, ὑμεῖς δὲ διώκετε ἕκαστος εἰς τὸν οἶκον 10 αὐτοῦ, Διατοῦτο ἀνέξει ὁ οὐρανὸς ἀπὸ δρόσου, καὶ ἡ γῆ ὑποστελεῖται τὰ ἐκφόρια αὐτῆς. 11 Καὶ ἐπάξω ῥομφαίαν ἐπὶ τὴν γῆν, καὶ ἐπὶ τὰ ὄρη, καὶ ἐπὶ τὸν σῖτον, καὶ ἐπὶ τὸν οἶνον, καὶ ἐπὶ τὸ ἔλαιον, καὶ ὅσα ἐκφέρει ἡ γῆ, καὶ ἐπὶ τοὺς ἀνθρώπους, καὶ ἐπὶ τὰ κτήνη, καὶ ἐπὶ πάντας τοὺς πόνους τῶν χειρῶν αὐτῶν. 12 Καὶ ἤκουσε Ζοροβάβελ ὁ τοῦ Σαλαθιὴλ (λ) ἐκ φυλῆς Ἰούδα, καὶ Ἰησοῦς ὁ τοῦ Ἰωσεδὲκ ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας, καὶ πάντες οἱ κατάλοιποι τοῦ λαοῦ τῆς φωνῆς κυρίου τοῦ θεοῦ αὐτῶν, καὶ τῶν λόγων (μ) τοῦ Ἀγγαίου τοῦ προφήτου, καθότι ἐξαπέστειλεν αὐτὸν κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν πρὸς αὐτούς, καὶ ἐφοβήθη ὁ λαὸς ἀπὸ προσώπου 13 κυρίου. Καὶ εἶπεν Ἀγγαῖος ἄγγελος (ν κυρίου ἐν ἀγγέλοις κυρίου τῷ λαῷ, Ἐγώ εἰμι 14 μεθ' ὑμῶν, λέγει κύριος. Καὶ ἐξήγειρε κύριος τὸ πνεῦμα Ζοροβάβελ τοῦ Σαλαθιὴλ ἐκ φυλῆς Ἰούδα, καὶ τὸ πνεῦμα Ἰησοῦ τοῦ Ἰωσεδὲκ τοῦ ἱερέως τοῦ μεγάλου, καὶ τὸ πνεῦμα τῶν καταλοίπων παντὸς τοῦ λαοῦ, καὶ εἰσῆλθον, καὶ ἐποίουν (ξ) ἔργα ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου παντοκράτορος θεοῦ αὐτῶν,

Hæc dicit Dominus omnipotens; 7 Ponite corda veſtra in vias veſtras, Aſcendite in montem, & 8 præcidite ligna: ædificate domum: & placebit mihi in ea, & glorificabor, dicit Dominus. Reſpexiſtis in multa,& facta ſunt pauca: 9 & (d) illata ſunt in domum: & exſufflavi ea. Quamobrèm hæc dicit Dominus omnipotens; Eò quòd domus mea deſerta eſt, vos autem ſectamini unuſquiſque in domum ſuam; Proptereà abſtinebit cœlum à rore, & terra 10 (e) ſubtrahet procreationes ſuas. Et inducam gladium ſuper terram, & ſuper montes, & ſuper 11 triticum, & ſuper vinum, & ſuper oleum, & quæcunque profert humus, & ſuper homines, & ſuper jumenta, & ſuper omnes labores manuum eorum. Et 12 audivit Zorobabel filius Salathiel de tribu Juda, & Jeſus filius Joſedec ſacerdos magnus, & omnes reſidui de populo, vocem Domini Dei ſui, & verba Aggæi prophetæ, ſicut miſit eum Dominus Deus eorum ad eos. Et timuit populus à facie Domini. Et dixit 13 Aggæus nuntius Domini in nuntiis Domini populo. Ego ſum vobiſcum,dicit Dominus. Et ſuſcitavit 14 Dominus ſpiritum Zorobabel filii Salathiel de tribu Juda, & ſpiritum Jeſu filii Joſedec ſacerdotis magni, & ſpiritum reliquorum de omni populo: & ingreſſi ſunt: & faciebant opera in domo Domini omnipotentis Dei ſui,

MS. A. (θ) ἐπὶ (ι) καὶ οἰκοδομήσατε (κ) ἐγένοντο (λ) ὁ ἐκ (μ) Ἀγγαίου (ν) κυρίου τῷ λαῷ, (ξ) τὰ ἔργα

ΚΕΦ. β'.

1 Τῇ τετράδι καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς τοῦ ἕκτου, τῷ δευτέρῳ ἔτει, ἐπὶ Δαρείου τοῦ βασι-2 λέως. (α)Τῷ μηνὶ τῷ ἑβδόμῳ, μιᾷ καὶ εἰκάδι τοῦ μηνός, ἐλάλησε κύριος ἐν χειρὶ 3 Ἀγγαίου τοῦ προφήτου, λέγων, Εἰπὸν δὴ πρὸς Ζοροβάβελ τὸν τοῦ Σαλαθιὴλ ἐκ φυλῆς Ἰούδα, καὶ πρὸς Ἰησοῦν (β) τὸν τοῦ Ἰωσεδὲκ τὸν ἱερέα τὸν μέγαν, καὶ πρὸς πάντας τοὺς κα-4 ταλοίπους τοῦ λαοῦ, λέγων, Τίς ἐξ ὑμῶν, ὃς (-) εἶδε τὸν οἶκον τοῦτον ἐν τῇ δόξῃ αὐτοῦ τῇ ἔμπροσθεν; καὶ πῶς ὑμεῖς βλέπετε αὐτὸν νῦν καθὼς οὐχ ὑπάρχοντα ἐνώ-5 πιον ὑμῶν; Καὶ νῦν κατίσχυε Ζοροβάβελ, λέγει κύριος, καὶ κατίσχυε Ἰησοῦ ὁ τοῦ Ἰωσεδὲκ ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας, καὶ κατισχυέτω πᾶς ὁ λαὸς τῆς γῆς, λέγει κύριος, καὶ ποιεῖτε, διότι (·) μεθ' ὑμῶν ἐγώ εἰμι, λέγει κύριος (γ) ὁ παντοκράτωρ,

CAP. II.

In (a) quarta, & vigeſima men- 1 ſis ſexti, anno ſecundo Darii regis. In menſe ſeptimo, unâ & vi- 2 geſimâ menſis, loquutus eſt Dominus in manu Aggæi prophetæ, dicens; Dicito nunc ad Zorobabel 3 filium Salathiel de tribu Juda, & ad Jeſum Joſedec filium ſacerdotem magnum, & ad omnes reliquos populi, dicens; Quis ex vo- 4 bis, qui vidit domum iſtam in gloria ſua prima? & quomodò vos videtis ipſam nunc, quaſi non ſit coram vobis? Et nunc confortare, 5 Zorobabel, dicit Dominus: & confortare, Ieſu fili Joſedec ſacerdos magne, & confortetur omnis populus terræ, dicit Dominus: & facite; quoniam ego vobiſcum ſum, dicit Dominus (b) omnipotens:

MS. A. (α)Τῷ ἑβδόμῳ μηνί, (β) τὸν τοῦ (-) οἶδεν (·)ἐγὼ μεθ' ὑμῶν εἰμι, (γ) παντοκράτωρ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 כדנן אמר יי צבאות שוו לבכון על אורחתכון׃ סקו לטוריא ואיתו אעין ובנו ביתא
8 ואתרעי לאשראה שכנתי ביה ביקר אמר יי׃ מתפנן אתון לסגי והוי לזעיר ומעלין 9
אתון ליה לביתא ואנא שלח ביה מארתא חלף מה אמר יי צבאות חלף בית מקדשי
10 דהוא חרוב ואתון רהטין גבר לביתיה׃ על כן בדיל חוביכון פסקו שמיא מלאחתא
11 מטרא וארעא פסקת מלמעבד פרין׃ וקרית חורבא על ארעא ועל טוריא ועל עבורא
ועל חמרא ועל משחא ועל כל די מפקא ארעא ועל אנשא ועל בעירא ועל כל
12 לאות ידין׃ ושמע זרבבל בר שאלתיאל ויהושע בר יהוצדק כהנא רבא וכל
שארא דעמא למימרא דיי אלההון ולפתגמי חגי נביא כמא דשלחיה יי אלההון
13 ודחילו עמא מן קדם יי׃ ואמר חגי נביא דיי בשליחות מן קדם יי לעמא למימר
14 מימרי בסעדכון אמר יי׃ ואער יי ית רוח זרבבל בר שאלתיאל רבא דבית יהודה וית
רוח יהושע בר יהוצדק כהנא רבא וית רוח כל שארא דעמא ואתו ועבדו עבדתא
בבית מקדשא דיי צבאות אלהא׃

ב

1 ביום עסרין וארבעא לירחא בשתיתאה בשנת תרתין לדריוש מלכא׃ 2 בשביעאה
3 בעסרין וחד לירחא הוה פתגם נבואה מן קדם יי ביד חגי נביא למימר׃ אמר כען
לזרבבל בר שאלתיאל רבא דבית יהודה וליהושע בר יהוצדק כהנא רבא ולשארא
4 דעמא למימר׃ מן בכון דישתאר דחזא ית ביתא הדין ביקריה קדמאה ומה אתון חזן
5 יתיה כען הלא כדליתוהי כן הוא בעיניכון׃ וכען תקף זרבבל אמר יי ותקף יהושע
בר יהוצדק כהנא רבא ותקיף כל עמא דארעא אמר יי ועבידו ארי מימרי
בסעדכון אמר יי צבאות׃

PARAPH. CHALD Verſio Latina.

Sic ait Dñs exercituum: Apponite corda veſtra ad vias veſtras. Conſcendite 7 montes, & afferte ligna, & ædificate ædem, & placebit mihi collocare ma- 8 jeſtatem meam in ea in gloria, dicit Dñs Reſpicitis ad multum & fit modi- 9 cum: & introducitis illud in domum: ego verò immittam in ipſum maledictionem: propter quid? ait Dñs exercituum propter ædem ſanctuarii mei, quæ deſtructa eſt, cùm unuſquiſq; veſtrum excurrat in domum ſuam. Idcircò 10 propter ſcelera veſtra ceſſaverunt cœli ab immittenda pluvia, & terra ceſſavit ab edendo fructus. Et vocavi ſiccitatem ſuper terram, & ſuper montes, 11 & ſuper frumentum, & ſuper vinum, & ſuper oleum, & ſuper quodcunque producit terra, & ſuper homines, & ſuper beſtias, deniq; ſuper omnem laborem manuum. Audivit autem Zerubabel filius Sealthielis, & Jehoſua 12 filius Jehozadak ſummus Sacerdos, & omnes reliquiæ populi verbum Dñi Dei ſui, & ſermones Chaggæi prophetæ, prout miſerat eum Deus ipſorum: timuitque populus à conſpectu Dñi. Et dixit Chaggæus propheta Dñi, in 13 legatione [*quam ſuſcepit*] à conſpectu Dñi ad populum, dicendo: Verbum meum vobis eſt auxilio, dicit Dñs. Et excitavit Dñs ſpiritum Zerubabelis 14 filii Sealthielis principis domus Juda, & ſpiritum Jehoſua filii Jehozadac ſummi Sacerdotis, & ſpiritum omnium reliquiarum populi: venerunt itaq; & fecerunt opus in æde ſanctuarii Domini exercituum Dei.

CAP. II.

Die viceſima & quarta menſis, in ſexto [*menſe,*] anno ſecundo Darii regis: 1 In ſeptimo [*menſe*] viceſima & prima menſis factum eſt verbum prophe- 2 tiæ à conſpectu Dñi per manum Chaggæi prophetæ, dicendo: Dic nunc 3 Zerubabeli filio Sealthielis principi domus Juda, & Jehoſuæ filio Jehozadac ſummo Sacerdoti, & reſiduo populi, dicendo: Quis eſt inter vos qui re- 4 manſerit, qui viderit domum iſtam in primo decore ſuo, ecquid vos videtis eam nunc, nonne quaſi res nihili, ſic & ipſa eſt in oculis veſtris? Nunc ergò 5 roborare Zerubabel, dicit Dñs, & roborare Jehoſua fili Jehozadac ſumme Sacerdos, ac roborare omnis popule terræ, ait Dñs: & agite, quoniam Verbum meum [*erit*] vobis auxilio, dicit Dominus exercituum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܣܝܡܘ ܒܠܒܘܬܟܘܢ ܥܠ ܐܘܪܚܬܟܘܢ. * ܣܩܘ ܠܛܘܪܐ. ܐܝܬܘ 7 8
ܩܝܣܐ. ܘܒܢܘ ܒܝܬܐ ܗܢܐ. ܘܐܬܪܥܐ ܒܗ. ܘܐܫܬܒܚ ܒܗ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܣܟܝܬܘܢ 9
ܠܣܘܓܐܐ. ܘܗܘܐ ܠܒܨܝܪܘ. ܘܡܥܠܝܬܘܢ ܠܒܝܬܐ. ܘܢܦܚܬ ܐܢܐ ܒܗ. ܘܥܠ
ܡܢܐ ܗܠܝܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܥܠ ܕܒܝܬܝ ܚܪܒ. ܘܐܢܬܘܢ ܪܗܛܝܢ ܐܢܫ ܠܒܝܬܗ.
* ܡܛܠܬܟܘܢ ܐܬܟܠܝܘ ܫܡܝܐ ܡܢ ܛܠܐ. ܘܐܪܥܐ ܟܠܬ ܦܐܪܝܗ. * ܘܩܪܝܬ ܚܪܒܐ ܥܠ ܐܪܥܐ 10
ܘܥܠ ܛܘܪܐ. ܘܥܠ ܥܒܘܪܐ ܘܥܠ ܚܡܪܐ ܘܥܠ ܡܫܚܐ. ܘܥܠ ܟܠܡܕܡ ܕܡܦܩܐ ܐܪܥܐ. ܘܥܠ 11
ܒܢܝܢܫܐ ܘܥܠ ܒܥܝܪܐ ܘܥܠ ܟܠܗ ܥܡܠܐ ܕܐܝܕܝܗܘܢ. * ܘܫܡܥ ܙܪܘܒܒܠ ܒܪ ܫܠܬܐܝܠ. 12
ܘܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܙܕܩ ܟܗܢܐ ܪܒܐ. ܘܟܠܗ ܫܪܟܐ ܕܥܡܐ. ܠܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ.
ܘܠܡܠܘܗܝ ܕܚܓܝ ܢܒܝܐ. ܕܫܕܪܗ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ ܠܘܬܗܘܢ. ܘܕܚܠܘ ܥܡܐ ܡܢ
ܩܕܡ ܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪ ܚܓܝ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܒܡܠܐܟܘܬܗ ܕܡܪܝܐ ܠܥܡܐ. ܐܢܐ ܥܡܟܘܢ ܐܡܪ 13
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܐܥܝܪ ܡܪܝܐ ܪܘܚܗ ܕܙܪܘܒܒܠ ܒܪ ܫܠܬܐܝܠ ܪܫܐ ܕܝܗܘܕܐ: ܘܪܘܚܗ 14
ܕܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܙܕܩ ܟܗܢܐ ܪܒܐ: ܘܪܘܚܗ ܕܟܠܗ ܫܪܟܐ ܕܥܡܐ. ܘܐܙܠܘ ܘܥܒܕܘ ܥܒܕܐ ܒܒܝܬܗ
ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗܘܢ. * ܩܦܠܐܘܢ * ܒ * * ܒܝܘܡ ܥܣܪܝܢ 1
ܘܐܪܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܫܬܝܬܝܐ. ܒܫܢܬ ܬܪܬܝܢ ܕܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ. * ܘܒܝܪܚܐ ܫܒܝܥܝܐ ܒܥܣܪܝܢ 2
ܘܚܕ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܡ ܚܓܝ ܢܒܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܡܪ ܠܙܪܘܒܒܠ ܒܪ 3
ܫܠܬܐܝܠ ܪܫܐ ܕܝܗܘܕܐ: ܘܠܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܙܕܩ ܟܗܢܐ ܪܒܐ. ܘܠܟܠܗ ܫܪܟܐ ܕܥܡܐ.
* ܡܢܘ ܕܐܫܬܚܪ ܒܟܘܢ ܕܚܙܝܗ ܠܒܝܬܐ ܗܢܐ ܒܫܘܒܚܗ ܩܕܡܝܐ. ܘܗܫܐ ܐܝܟܢܐ ܚܙܝܢ 4
ܐܢܬܘܢ ܠܗ. ܠܐ ܗܘܐ ܐܝܟ ܠܐ ܡܕܡ ܚܫܝܒ ܒܥܝܢܝܟܘܢ. * ܘܗܫܐ ܐܬܚܝܠ ܙܪܘܒܒܠ 5
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܬܚܝܠ ܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܙܕܩ ܟܗܢܐ ܪܒܐ. ܘܐܬܚܝܠܘ ܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ.
ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܥܒܕܘ. ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܥܡܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ.

Sic dicit Dominus potentiſſimus; Perpendite 7
cordib⁹ veſtris vias veſtras. Aſcendite in mon- 8
tem, afferte ligna, & ædificate domum iſtam;
& grata mihi erit, & glorificabor in ea, dicit
Dñs. Expectatis multum, ſed reducitur ad pa-
rum: infertis in domum, ſed illud efflo. Et 9
cur hæc, dicit Domin⁹? quia deſtructa eſt do-
mus mea, vos autem curritis quiſq; domum
ſuam. Cauſâ veſtri abſtinuerunt ſe cœli à ro- 10
re, & terra prohibuit fruct⁹ ſuos: Et advoca- 11
vi gladium contra terrã, contra montes, con-
tra frumentum, contra vinũ, contra oleum, &
contra quicquid producit tellus; contra homi-
nes etiam, contra jumenta, & contra omnem
laborem manuum eorum. Auſcultaverunt au- 12
tem Zorbabel filius Selathielis, Jeſus filius Jo-
zedec ſacerdos maximus, totúſq; reliquus po-
pulus, voci Dñi Dei ſui, & ſermonibus Hagæi
prophetæ quem Dñs Deus corũ miſit ad illos;
timuerúntq; populus Dñm. Tunc dixit Hagæ- 13
us legatus Dñi in legatione Dñi ad populum;
Ego vobiſcum ſum, dicit Dñs potentiſſimus.
Concitavítq; Dñs ſpiritum Zorbabelis filii Se- 14
lathielis principis Judæ, & ſpiritum Jeſu filii
Jozedec ſacerdotis maximi, necnon ſpiritum
totius reliqui populi: & abeuntes fecerunt
opus in domo Domini potentiſſimi Dei ſui.

CAP. II.

Die vigeſimâ quartâ, menſe ſexto, anno ſe- 1
cundo Darii regis; Et menſe ſeptimo, *die* vi- 2
geſimâ primâ, fuit ſermo Domini per Hagæum
prophetam, dicendo; Dic Zorbabeli filio Se- 3
lathielis principi Judæ, & Jeſu filio Jozedec
ſummo ſacerdoti, totíq; reſiduo populo; Quis 4
inter vos ſupereſt qui domum hanc viderit in
priſtino ſplendore? & nunc qualem videtis
eam? nónne ut nihil æſtimatur apud vos?
Age jam, confortare Zorbabel, dicit Domi- 5
nus; confortare Jeſu fili Jozedec, ſumme ſa-
cerdos; confortamini & vos univerſe po-
pule terræ, dicit Dominus, & opus aggredi-
mini: ſum enim vobiſcum, dicit Dominus
potentiſſimus.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يقول الرب الضابط الكل. ضعوا قلوبكم لطرقكم * اصعدوا الي الجبل. واقطعوا 7 8
خشبا. وابنوا البيت. واسر به واتمجد يقول الرب * نظرتم الي الكثيرات فقد صارت قليلات. 9
وادخلت الي البيت ونفختها. لاجل هذا هكذا يقول الرب الضابط الكل. من اجل ان بيتي
هو خراب. وانتم تسرعون كل واحد الي بيته * لاجل هذا تمنع السماء من الندا. والارض 10
منعت ثمارها * واجلب سيفا على الارض وعلي الجبال. وعلي القمح والخمر والزيت. وعلي كل ما 11
تخرج الارض. وعلي البشر والبهايم. وعلي جميع اتعاب ايديهم * فسمع زربابل بن سلثاييل 12
الذي من سبط يهودا. ويسوع بن يوساداك الكاهن العظيم. وجميع بقايا الشعب. صوت الرب
الههم واقوال حجي النبي كما ارسله الرب الههم اليهم. وخاف الشعب من وجه الرب * وقال حجي 13
ملاك الرب للشعب. انا انا معكم يقول الرب * وانهض الرب روح زربابل بن سلثاييل من 14
سبط يهودا. وروح يسوع بن يوساداك الكاهن العظيم. وروح بقايا الشعب. فدخلوا وعملوا اعمالا
في بيت الرب الضابط الكل الههم * الفصل الثاني.
* في اربعة وعشرين من الشهر السادس. في السنة الثانية. على عهد داريوس الملك * في 1 2
الشهر السابع. في احد وعشرين من الشهر. تكلم الرب بيد حجي النبي قايلا * قل 3
لزربابل بن سلثاييل من قبيلة يهودا. وليسوع بن يوساداك الكاهن العظيم. ولجميع
بقايا الشعب قايلا * من منكم راي هذا البيت في مجده من قبل. وكيف انتم تنظروه 4
الان. كما لم يكن قدامكم * والان تقويا زربابل يقول الرب. وتقويا يسوع بن يوساداك 5
الكاهن العظيم. وليتقوكل شعب الارض يقول الرب واصنعوا. من اجل اني انا معكم
انا يقول الرب الضابط الكل.

Sic ait Dominus omnipotens; Adjicite a- 7
nimos veſtros ad vias veſtras. Conſcen- 8
dite montem, cædite ligna, & ædificate
domum iſtam; & oblectabor ipſâ, & glo-
rificabor, dicit Dominus. Reſpexiſtis ad 9
multa, jam autem facta ſunt pauca: il-
lata ſunt domum, at exſufflavi ea. Pro-
pterea ſic dicit Dominus omnipotens;
Quia domus mea deſtructa eſt, vos au- 10
tem curritis quiſque in domum ſuam: Ideò
abſtinet cœlum à rore, & terra ſubtra-
hit fructus ſuos: Gladium adduco ſu- 11
per terram & ſuper montes, ſuper fru-
mentum, vinum, & oleum, & ſuper
quicquid producit tellus; ſuper homines
& jumenta, & ſuper omnes labores ma-
nuum eorum. Auſcultavit ergò Zoro- 12
babel filius Salathielis, qui erat ex tribu
Judæ, & Jeſus filius Joſedechi ſacer-
dos maximus, omnéſque populi reliquiæ,
voci Domini Dei ſui & ſermonibus Hag-
gæi prophetæ, quemadmodum miſerat eum
Dominus Deus eorum ad ipſos: timuitque
populus à facie Domini. Dixitque Hag- 13
gæus nuntius Domini ad populum; Ego
ſum vobiſcum, dicit Dominus. Et ſuſ- 14
citavit Dominus ſpiritum Zorobabelis filii
Salathielis de tribu Judæ, & ſpiritum
Jeſu filii Joſedechi ſacerdotis maximi,
& ſpiritum reliquiarum populi; & in-
greſſi fecerunt opera in domo Domini o-
mnipotentis Dei ſui,

CAP. II.

Vigeſimâ quartâ menſis ſexti, anno 1
ſecundo, tempore Darii regis. Menſe 2
ſeptimo, vigeſimâ primâ menſis, locutus
eſt Dominus per Haggæum prophetam, di-
cens; Dic Zorobabeli filio Salathielis 3
de tribu Judæ, & Jeſu Joſedechi filio,
ſacerdoti maximo, omnibúſque populi re-
liquiis, dicens; Quis veſtrûm vidit
olim domum iſtam in gloria ſua? jam 4
autem qualem vos eum videtis, ac ſi non
eſſet coram vobis? Itaque confortare O 5
Zorobabel, dicit Dominus; confortare O
Jeſu fili Joſedechi, ſacerdos maxime,
& confortetur univerſus terræ populus,
& operamini; quia ego vobiſcum ſum,
dicit Dominus omnipotens,

, Ægypto ex *vos egrediendo in* vobiſcum *excidi* quod Verbum
6 את־הדבר אשר כרתי אתכם בצאתכם ממצרים
ſic Quia .timeatis ne : veſtri medio in *ſtans* meus ſpiritus &
7 ורוחי עמדת בתוככם אל־תיראו ׃ כי כה
ego & , *ipſum* puſillum unum Adhuc : exercituum Dominus dixit
אמר יהוה צבאות עוד אחת מעט היא ואני
& , mare & , terram & , cœlos *faciens* tremere
מרעיש את־השמים ואת־הארץ ואת־הים ואת־
deſiderium *venient* & , gentes omnes faciam tremere Et .aridam
8 החרבה ׃ והרעשתי את־כל־הגוים ובאו חמדת
dixit , gloria hanc domum implebo & , gentium omnium
כל־הגוים ומלאתי את־הבית הזה כבוד אמר
dixit , aurum *mihi* & , argentum *Mihi* .exercituum Dominus
9 יהוה צבאות ׃ לי הכסף ולי הזהב נאם
noviſſimæ hujus domus gloria erit *Magna* .exercituum Dominus
10 יהוה צבאות ׃ גדול יהיה כבוד הבית הזה האחרון
dabo iſto loco in & : exercituum Dominus dixit , primæ quàm
מן־הראשון אמר יהוה צבאות ובמקום הזה אתן
quarta & viceſima In .exercituum Dominus dixit pacem
11 שלום נאם יהוה צבאות ׃ בעשרים וארבעה
Domini verbum fuit , Dariaves ſecundo anno *in* , noni
לתשיעי בשנת שתים לדריוש היה דבר־יהוה
Dominus dixit Sic : dicendo , *prophetæ* Chagghai *manu in*
12 ביד־חגי הנביא לאמר ׃ כה אמר יהוה
En : dicendo , legem ſacerdotes modò Interroga : exercituum
13 צבאות שאל־נא את־הכהנים תורה לאמר ׃ הן
tetigerit & , ſui veſtimenti ora in *ſanctitatis* carnem quiſpiam *feret*
ישא־איש בשר־קדש בכנף בגדו ונגע
, oleum *ad* & , vinum *ad* & , pulmentum *ad* & , panem *ad* ſua ora *in*
בכנפו אל־הלחם ואל־הנזיד ואל־היין ואל־שמן
reſponderunt Et ? ſanctificabitur nunquid , cibum omnem *ad* &
ואל־כל־מאכל היקדש ויענו
immundus tetigerit Si : Chagghai dixit Et .Non : dixerunt & , ſacerdotes
14 הכהנים ויאמרו לא ׃ ויאמר חגי אם־יגע טמא־
, ſacerdotes reſponderunt Et ? erit immundus nónne , hæc omnia *in* anima
נפש בכל־אלה היטמא ויענו הכהנים
Sic : dixit & , Chagghai reſpondit Et .erit Immundus : dixerunt &
15 ויאמרו יטמא ׃ ויען חגי ויאמר כן
: Dominus dixit , *meas facies ad* iſta gens ſic & , iſte populus
העם־הזה וכן־הגוי הזה לפני נאם־יהוה
immundum , ibi *offerent* quod & , eorum manuum opus omne ſic &
וכן כל־מעשה ידיהם ואשר יקריבו שם טמא
hac die à veſtrum cor quæſo ponite nunc Et .*ipſum*
16 הוא ׃ ועתה שימו־נא לבבכם מן־היום הזה
.Domini templo in lapidem *ad lapidem poni* antequam : ſuprà &
ומעלה מטרם שום־אבן אל־אבן בהיכל יהוה ׃
: decem *erat* & , viginti acervum ad veniebat *eorum exiſtere Ab*
17 מהיותם בא אל־ערמת עשרים והיתה עשרה
erat & , torculari quinquaginta *hauriendum ad* torcular ad *veniens*
בא אל־היקב לחשף חמשים פורה והיתה
, rubigine *in* & , *ſegetum percuſſione in* vos Percuſſi .viginti
18 עשרים ׃ הכיתי אתכם בשדפון ובירקון
vos *non &* : veſtrarum manuum opus omne , grandine *in* &
ובברד את כל־מעשה ידיכם ואין־אתכם
die à veſtrum cor nunc Ponite .Dominus dixit , me ad
19 אלי נאם־יהוה ׃ שימו־נא לבבכם מן־היום
die à : noni quarta & vigeſima die à , ſuprà & , iſta
הזה ומעלה מיום עשרים וארבעה לתשיעי למן־היום
.veſtrum cor ponite , Domini templum eſt fundatum qua
אשר־יסד היכל־יהוה שימו לבבכם ׃

Verſio VULG. LAT.

6 Verbum quod pepigi vobiſcum, cùm egrederemini de terra Ægypti: & ſpiritus meus erit in medio veſtrûm, nolite timere. 7 Quia hæc dicit Dominus exercituum; Adhuc unum modicum eſt, & ego commovebo cœlum, & terram, 8 & mare, & aridam. Et movebo omnes Gentes: ET VENIET DESIDERATUS cunctis Gentibus: et implebo domū iſtam gloriâ, dicit Dominus exercituum. 9 Meum eſt argentum, & meum eſt aurum, dicit Dominus exercituū. 10 Magna erit gloria domûs iſtius noviſsimæ plus quàm primæ, dicit Dominus exercituum: & in loco iſto dabo pacem, dicit Do- 11 minus exercituum. In vigeſima & quarta noni menſis, in anno ſecundo Darii regis, factum eſt verbū Domini ad Aggæum prophe- 12 tam, dicens; Hæc dicit Dominus exercituum; Interroga ſacerdotes 13 legem, dicens; Si tulerit homo carnem ſanctificatam in ora veſtimenti ſui, & tetigerit de ſummitate ejus panem, aut pulmentum, aut vinum, aut oleum, aut omnē cibum: numquid ſanctificabitur? Reſpondentes autem ſacerdotes, 14 dixerunt; Non. Et dixit Aggæus; Si tetigerit pollutus in anima ex omnibus his, numquid contaminabitur? Et reſponderunt ſacerdotes, & dixerunt; Contamina- 15 bitur. Et reſpondit Aggæus, & dixit; Sic populus iſte, & ſic gens iſta ante faciem meam, dicit Dominus, & ſic omne opus manuū eorum: & omnia quæ obtulerunt 16 ibi, contaminata erunt. Et nunc ponite corda veſtra à die hac & ſuprà, antequàm poneretur lapis ſuper lapidem in templo Domini. 17 Cùm accederetis ad acervum viginti modiorum, & fierent decē: & intraretis ad torcular, ut exprimeretis quinquaginta lagenas, & 18 fiebant viginti. Percuſsi vos vento urente, & aurugine, & grandine omnia opera manuum veſtrarum: & non fuit in vobis, qui reverteretur ad me, dicit Domi- 19 nus. Ponite corda veſtra ex die iſta, & in futurum, à die vigeſima & quarta noni menſis: à die, quâ fundamenta jacta ſunt templi Domini, ponite ſuper cor veſtrum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

[6 Καὶ τὸ πνεῦμά μου ἐφέστηκεν ἐν μέσῳ ὑμῶν. θαρσεῖτε, Διότι τάδε λέγει κύριος παν- 7 τοκράτωρ, Ἔτι ἅπαξ ἐγὼ σείσω τὸν οὐρανὸν, καὶ τὴν γῆν, καὶ τὴν θάλασσαν, καὶ τὴν ξηρὰν, 8 Καὶ συσσείσω πάντα τὰ ἔθνη, καὶ ἥξει τὰ ἐκλεκτὰ πάντων τῶν ἐθνῶν· καὶ (δ) πλήσω τὸν οἶκον τοῦτον δόξης, λέγει κύ- 9 ριος παντοκράτωρ. Ἐμὸν τὸ ἀργύριον, καὶ ἐμὸν τὸ χρυσίον, λέγει κύριος παντο- 10 κράτωρ. Διότι μεγάλη ἔσται ἡ δόξα τοῦ οἴκου τούτου, ἡ ἐσχάτη ὑπὲρ τὴν πρώτην, λέγει κύριος παντοκράτωρ· καὶ ἐν τῷ τόπῳ τούτῳ δώσω εἰρήνην, λέγει κύριος παντοκράτωρ, καὶ εἰρήνην ψυχῆς εἰς περιποίησιν παντὶ τῷ κτίζοντι, τοῦ ἀναστῆσαι 11 τὸν ναὸν τοῦτον. Τετράδι καὶ εἰκάδι (ε) τοῦ ἐνάτου μηνὸς, ἔτους δευτέρου, ἐπὶ Δαρείου, ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ἀγγαῖον τὸν προ- 12 φήτην, λέγων, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, (ᶜ) Ἐπερώτησον δὴ τοὺς ἱερεῖς νό- 13 μον, λέγων, Ἐὰν λάβῃ ἄνθρωπος κρέας ἅγιον ἐν τῷ ἄκρῳ τοῦ ἱματίου αὐτοῦ, καὶ ἅψηται τὸ ἄκρον τοῦ ἱματίου αὐτοῦ ἄρτου, ἢ (ᶠ) ἑψήματος, ἢ οἴνου, ἢ ἐλαίου, ἢ παντὸς βρώματος, εἰ ἁγιασθήσεται; καὶ ἀπεκρίθησαν οἱ 14 ἱερεῖς, καὶ εἶπαν, Οὔ. Καὶ εἶπεν Ἀγγαῖος, Ἐὰν ἅψηται (ζ) μεμιασμένος ἀκάθαρτος ἐπὶ ψυχῇ ἐπὶ παντὸς τούτων, εἰ μιανθήσεται; καὶ ἀπεκρίθησαν οἱ ἱερεῖς, καὶ εἶπαν, 15 Μιανθήσεται. Καὶ ἀπεκρίθη Ἀγγαῖος, καὶ εἶπεν, Οὕτως ὁ λαὸς οὗτος, καὶ οὕτως τὸ ἔθνος τοῦτο ἐνώπιον ἐμοῦ, λέγει κύριος, καὶ οὕτως πάντα τὰ ἔργα τῶν χειρῶν αὐτῶν· καὶ ὃς ἐὰν ἐγγίσῃ ἐκεῖ, μιανθήσεται ἕνεκεν τῶν λημμάτων αὐτῶν τῶν ὀρθρινῶν, ὀδυνηθήσονται ἀπὸ προσώπου πόνων αὐτῶν, καὶ ἐμισεῖτε ἐν 16 πύλαις (η) ἐλέγχοντα. Καὶ νῦν θέσθε δὴ (θ) εἰς τὰς καρδίας ὑμῶν ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύτης καὶ (ι) ὑπεράνω, πρὸ τοῦ θεῖναι λίθον ἐπὶ λί- 17 θον ἐν τῷ ναῷ κυρίου τίνες ἦτε, Ὅτε ἐνεβάλλετε εἰς κυψέλην κριθῆς εἴκοσι σάτα, καὶ ἐγένετο κριθῆς δέκα σάτα· καὶ εἰσεπορεύεσθε εἰς τὸ ὑπολήνιον ἐξαντλῆσαι πεντήκοντα μετρητὰς, καὶ ἐγένοντο εἴκοσι. 18 Ἐπάταξα ὑμᾶς ἐν (κ) ἀφορίᾳ, καὶ ἐν ἀνεμοφθορίᾳ, καὶ ἐν χαλάζῃ πάντα τὰ ἔργα τῶν χειρῶν ὑμῶν, καὶ οὐκ ἐπεστρέψατε πρὸς 19 με, λέγει κύριος. (λ) Ὑποτάξατε δὴ τὰς καρδίας ὑμῶν ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύτης, καὶ ἐπέκεινα, ἀπὸ τῆς τετράδος καὶ εἰκάδος τοῦ ἐνάτου μηνὸς, καὶ ἀπὸ τῆς ἡμέρας ἧς (μ) τεθεμελίωται ὁ ναὸς κυρίου· θέσθε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν,

Et ſpiritus meus ſtetit in medio veſtrûm. Confidite; Quia hæc dicit Dominus omnipotens; Adhuc ſemel ego cōmovebo cœlum, et terram, & mare, & aridam, Et commovebo omnes gentes: & venient (c) electa omnium gentium: & implebo domum iſtam gloriâ, dicit Dominus omnipotens. Meum eſt argentum, & meum eſt aurum, dicit Dominus omnipotens. Quarè magna erit gloria domûs iſtius, noviſſima ſuper primam, dicit Dominus omnipotens. Et in loco iſto dabo pacem, dicit Dominus omnipotens, & (d) pacem animæ in acquiſitionem omni condenti, ut ſuſcitet templum iſtud. Quartâ & vigeſimâ noni menſis anno ſecundo ſub Dario, factus eſt ſermo Domini ad Aggæum prophetam, dicens; Hæc dicit Dominus omnipotens; Interroga nunc ſacerdotes legem, dicens; Si ſumpſerit homo carnem ſanctam in ſummitate veſtimenti ſui, et tetigerit ſūmitas veſtimēti ejus panē, aut coctionē, aut vinū, aut oleū, aut omnem cibū, ſi ſanctificabitur? & reſponderunt ſacerdotes, & dixerunt; Non. Et dixit Aggæus; Si tetigerit pollutus (e) immundus in anima de omnibus his, ſi contaminabitur? Et reſponderunt ſacerdotes & dixerunt; Contaminabitur. Et reſpondit Aggæus, & dixit; Sic populus iſte, & ſic gens hæc coram me, dicit Dominus, & ſic omnia opera manuum eorum: & quicunque appropinquaverit ibi, contaminabitur: propter munera eorum matutina, dolebunt à facie (f) laborum ſuorum, & oderatis in portis arguentem. Et nunc ponite, quæſo, in corda veſtra à die hac, et ſuprà, antequàm poneretur lapis ſuper lapidem in templo Domini, qui eratis, Quando mittebatis in cypſelen hordei viginti ſata, et fiebāt decē ſata hordei, et ingrediebamini torcular, ut hauriretis quinquaginta amphoras, et fiebant viginti. Percuſſi vos ſterilitate, et corruptione aeris, et grandine omnia opera manuum veſtrarum, et non reverſi eſtis ad me, dicit Dominus. (g) Supponite nunc corda veſtra à die iſta, et in futurum, à quarta et vigeſima noni menſis, et à die quâ fundamenta jacta ſunt templi Domini: ponite in cordibus veſtris;

MS. A. (δ) πληρώσω (ε) μηνὶ τῷ ἐνάτῳ ἔτους (ᶜ) Ἐπερώτησον τοὺς (ᶠ) ἑψέματος, (ζ) μεμιαμμένος ἢ ἀκάθαρτος ψυχῇ ἐπὶ ψυχῇ ἀπὸ παντὸς (η) ἐλέγχοντας. (θ) ἐπὶ (ι) ἐπάνω, τοῦ (κ) (*) ἀφθορίᾳ (λ) Τάξατε (μ) ἐθεμελιώθη

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 ית פתגמא די גזרית עמכון במפקכון ממצרים ונביאי מלפין ביניכון לא תדחלון ׃
7 ארי כדנן אמר יי צבאות עוד חדא זעירא היא ואנא מזיע ית שמיא וית ארעא וית
8 ימא וית יבשתא ׃ ואזיע ית כל עממיא וייתון חמדת כל עממיא ואמלי ית ביתא
9 10 הדין יקרא אמר יי צבאות ׃ דילי כספא ודילי דהבא אמר יי צבאות ׃ סגי יהא
יקריה דביתא הדין בתראה מן קדמאה אמר יי צבאות ובאתרא הדין אתן שלמא
11 אמר יי צבאות ׃ בעסרין וארבעא לתשיעאה בשנת תרתין לדריוש הוה פתגם
12 נבואה מן קדם יי ביד חגי נביא למימר ׃ כדנן אמר יי צבאות שאיל כען ית
13 כהניא אוריתא למימר ׃ הא יטול גבר בסר קודשא בכנף לבושיה ויקריב בכסותיה
ללחמא ולתבשילא ולחמרא ולמשחא וכל דמתאכל היסתאב ואתיבו כהניא ואמרו
14 לא ׃ ואמר חגי אם יקרב טמא נפשא בכל אלין היסתאב ואתיבו כהניא ואמרו יסתאב ׃
15 ואתיב חגי ואמר כן עמא הדין וכן כנשתא הדא קדמי אמר יי וכן כל עובדי ידיהון
16 ודיקרבון תמן מסאב הוא ׃ וכען שוו כען לבכון מן יומא הדין ולעילא עד לא יתשם
17 נדבך על נדבך בהיכלא דיי ׃ מדהויתון עלין לערימת עסרין והויא עסרא עלין
18 אתון למעצרתא דבה חמשין גרבין דחמר והויא עסרין ׃ מחיתי יתכון בשדפונא
19 ובירקונא ובברדא ית כל עובדי ידיכון וליתיכון תיבין לפולחני אמר יי ׃ שוו כען
לבכון מן יומא הדין ולעלא מיומא עסרין וארבעא לתשיעאה למן יומא דישרי
לאשתכללא היכלא דיי שוו לבכון ׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Verbum quod decrevi vobiſcū cùm eduxi vos ex Ægypto, & Prophetæ mei docent vos, ne timeatis. Quoniam ſic ait Dn̄s exercituum: Adhuc hoc modicum eſt, & ego commotur° ſum cœlos & terram, & mare & aridam. Et commovebo univerſas gentes, & veniet deſiderium omnium gentium, & implebo hanc domum gloria, ait Dn̄s exercituum. Meum eſt argentum, & meum eſt aurum, dicit Dominus exercituum. Major futura eſt gloria hujus domus poſtremæ, quàm primæ, ait Dn̄s exercituum: & in hoc loco ponam pacem, ait Dominus exercituum. Viceſima & quarta noni menſis anno ſecundo Darii, factum eſt verbum prophetiæ à conſpectu Dn̄i per manum Chaggæi prophetæ, dicendo: Sic ait Dn̄s exercituum: Roga nunc Sacerdotes Legem dicendo: Ecce feret vir aliquis carnem ſanctitatis ora veſtimenti ſui, & tanget operimento ſuo panem, & pulmentum, & vinum, & oleum, quicquid denique comeditur, nonne *contaminabitur*? Et reſponderunt Sacerdotes ac dixerunt: Minimè. Et dixit Chaggæus: Si tetigerit pollutum animæ in illis omnibus, nónne contaminabitur? & reſponderunt Sacerdotes ac dixerunt, Contaminabitur. Et reſpondit Chaggæus & ait: Sic populus iſte & ſic iſta congregatio coram me, inquit Dn̄s: & ſic omnia opera manuum ipſorum, quodq; offerent ibi, pollutum eſt. Nunc itaque apponite nunc cor veſtrum ab hoc die & ſuprà, priuſquam ordo ordini apponeretur in templo Domini. Ex quo ingrediebamini ad acervum viginti modiorum, & fiebant decem: ingrediebamini in torcular in quo erant quinquaginta dolia vini & fiebant viginti. Percuſſi vos uredine & rubigine & grandine omnia opera manuum veſtrarum, nec vos converſi eſtis ad cultum meum, dicit Dominus. Apponite nunc cor veſtrum ab hoc die & ſuprà, à die viceſima & quarto noni menſis, à die quo cœperunt jaci fundamenta templi Domini apponite cor veſtrum.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

6 * ܦܬܓܡܐ ܕܩܝܡܬ ܥܡܟܘܢ ܟܕ ܢܦܩܬܘܢ ܡܢ ܡܨܪܝܢ. ܘܪܘܚܝ ܩܝܡܐ ܒܡܨܥܬܟܘܢ. ܠܐ
7 ܬܕܚܠܘܢ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܬܘܒ ܚܕܐ ܙܒܢ ܡܙܝܥ ܐܢܐ ܫܡܝܐ
8 ܘܐܪܥܐ. ܘܝܡܐ ܘܝܒܫܐ. * ܘܐܙܝܥ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܢܐܬܘܢ ܓܒܝܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ.
9 ܘܐܡܠܝܘܗܝ ܠܒܝܬܐ ܗܢܐ ܫܘܒܚܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܕܝܠܝ ܗܘ ܣܐܡܐ ܘܕܝܠܝ ܗܘ
10 ܕܗܒܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܢܗܘܐ ܪܒ ܫܘܒܚܗ ܕܒܝܬܐ ܗܢܐ ܐܚܪܝܐ: ܝܬܝܪ ܡܢ ܩܕܡܝܐ
11 ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܒܐܬܪܐ ܗܢܐ. ܐܬܠ ܫܠܡܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܒܥܣܪܝܢ
ܘܐܪܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܬܫܥܝܐ: ܒܫܢܬ ܬܪܬܝܢ ܕܕܪܝܘܫ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܒܝܕ ܚܓܝ
12 13 ܢܒܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܫܐܠܘ ܠܐ ܢܡܘܣܐ ܡܢ ܟܗܢܐ. * ܐܢ
ܢܣܒ ܓܒܪܐ ܒܣܪܐ ܕܩܘܕܫܐ ܒܟܢܦܐ ܕܡܪܛܘܛܗ: ܘܢܩܪܒ ܒܟܢܦܗ ܠܠܚܡܐ ܘܠܒܫܘܠܐ.
ܘܠܚܡܪܐ ܘܠܡܫܚܐ. ܘܠܟܠ ܡܐܟܘܠܬܐ. ܕܠܡܐ܇ ܢܬܩܕܫ. ܘܥܢܘ ܟܗܢܐ
14 ܘܐܡܪܘ ܠܐ. * ܐܡܪ ܚܓܝ. ܐܢ ܢܩܪܒ ܐܢܫ ܕܛܡܐ ܒܢܦܫܐ ܠܟܠܗܘܢ ܗܠܝܢ. ܠܐ ܡܬܛܡܐܝܢ
15 ܘܥܢܘ ܟܗܢܐ ܘܐܡܪܘ ܠܗ. ܡܬܛܡܐܝܢ. * ܘܥܢܐ ܚܓܝ ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܗܘ ܥܡܐ ܗܢܐ
ܘܗܟܢܐ ܗܝ ܫܪܒܬܐ ܗܕܐ ܩܕܡܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܗܟܢܐ ܐܢܘܢ ܥܒܕܝ ܐܝܕܝܗܘܢ.
16 ܘܡܐ ܕܡܩܪܒܝܢ ܬܡܢ ܡܬܛܡܐ ܗܘ. * ܘܗܫܐ ܣܝܡܘ ܠܒܟܘܢ ܡܢ ܝܘܡܐ ܗܢܐ
17 ܘܠܥܠ. ܥܕܠܐ ܢܬܬܣܝܡ ܟܐܦܐ ܥܠ ܟܐܦܐ ܒܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. * ܡܢ ܟܕ ܐܬܝܬܘܢ ܗܘܝܬܘܢ
ܠܟܪܝܐ ܕܥܣܪܝܢ. ܘܗܘܐ ܥܣܪܐ. ܘܐܬܝܬܘܢ ܠܡܥܨܪܬܐ ܠܡܕܠܐ ܚܡܫܝܢ ܘܗܘܝܢ
18 ܥܣܪܝܢ. * ܡܚܝܬܟܘܢ ܒܫܘܕܦܢܐ ܘܒܝܪܩܢܐ ܘܒܒܪܕܐ. ܠܟܠܗ ܥܒܕܐ ܕܐܝܕܝܟܘܢ. ܘܠܐ
19 ܐܬܦܢܝܬܘܢ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܣܝܡܘ ܗܫܐ ܒܠܒܟܘܢ ܡܢ ܝܘܡܐ ܗܢܐ ܘܠܥܠ.
ܡܢ ܝܘܡ ܥܣܪܝܢ ܘܐܪܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܬܫܥܝܐ. ܡܢ ܝܘܡܐ ܕܐܬܣܝܡ ܫܬܐܣܬܐ ܕܗܝܟܠܗ
ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܫܘܠܡܗ.

* Sermo quem vobiſcum firmavi cùm exiſſetis 6
ex Ægypto, & ſpiritus meus perſeverat inter
vos; ne timeatis. Sic enim dicit Dominus 7
potentiſſimus; Adhuc ſemel commoturus ſum
cœlum ac terram, mare & continentem: Et 8
excitaturus ſum omnes gentes, ut afferant o-
ptatiſſimam quamque rem cunctarum genti-
um; & iſtam domum gloria repleturus, dicit
Dominus potentiſſimus. Meum eſt argentũ, 9
& meum eſt aurũ, dicit Dñs potentiſſimus. Et 10
erit gloria domûs hujus poſterioris multò ma-
jor quàm prioris, dicit Dominus potentiſſi-
mus: & hoc in loco largiar pacem meam, di-
cit Dominus potentiſſimus. Deinde vigeſi- 11
mâ quartâ *die*, menſe nono, anno ſecundo Da-
rii; fuit ſermo Domini per Hagæum prophe-
tam, dicendo; Sic dicit Dominus potentiſ- 12
ſimus; Interrogate ſacerdotes de lege: Si 13
portaverit quiſpiam carnem ſanctam in ala
pallii ſui, aut alâ ſuâ tetigerit panem, aut
pulmentum, aut vinum, aut oleum, aut quem-
cunque cibum; num ſanctificari poteſt? Re-
ſponderunt ſacerdotes, ac dixerunt, Minimé.
Dixit Hagæus; Si tetigerit is cujus immunda 14
eſt anima *quicquam* horum omnium, annon
polluetur? Reſponderunt ſacerdotes, & dixe-
runt ei; Polluetur. Reſpondit Hagæus & 15
dixit; Talis eſt populus iſte, & talis eſt ge-
neratio iſta coram me, dicit Dominus, ac ta-
lia ſunt omnia opera manuum eorum: &
quicquid efferunt ibi, immundum erit. Jam 16
adjicite animum veſtrum ab hac die & anteá.
Priuſquam poſitus fuiſſet lapis ſuper lapidem
in templo Domini, Quando ingrediebami- 17
ni ad acervum viginti, decem erat; & ingre-
diebamini ad torcular quinquaginta, erant
autem viginti: Percuſſi vos vento calido, 18
uredine, & grandine, quodlibet opus ma-
nuum veſtrarum; attamen non eſtis ad me
converſi, dicit Dominus. Itaque ſubjicite 19
corda veſtra ab hac die & deinceps à die vi-
geſima quarta menſis noni, à die quâ collo-
catum eſt fundamentum domûs Domini po-
tentiſſimi, ut ædificetur.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

6 * وروحي وقف في وسطكم * ثقوا من اجل انه هكذا يقول الرب الضابط الكل. انا انا ازلزل من 7
ايضا السماء والارض والبحر واليابسة * وازلزل كل الامم. وتاتي مختارات جميع الامم. واملا 8
هذا البيت مجدا يقول الرب الضابط الكل * الفضة لي والذهب لي يقول الرب الضابط الكل. 9
* من اجل ان المجد العظيم الاخير لهذا البيت يكون افضل من الاول يقول الرب الضابط 10
الكل. وفي هذا الموضع اعطي سلامه يقول الرب الضابط الكل. وسلامة نفس للاقتناء. لكل
صانع ليقيم هذا الهيكل * وفي اربعة وعشرين من الشهر التاسع من السنة الثانية. على عهد 11
داريوس. صار قول الرب الي حجي النبي قايلا * هكذا يقول الرب الضابط الكل. سل الكهنة فقط 12
قايلا * ان ياخذ انسان لحما مقدسا في طرف ثوبه. ويلمس طرف ثوبه خبزا او طبيخا او خمرا 13
او زيتا او كل طعام. ايتقدس. فاجابوا الكهنة وقالوا لا * فقال حجي. ان تلمس نفس نجسة 14
او غير طاهرة نفسا من جميع هولاء. اتتنجس. فاجابوا الكهنة وقالوا تتنجس * فاجاب حجي 15
وقال. هكذا هذا الشعب. وهكذا هذه الامة امامي يقول الرب. وهكذا جميع اعمال ايديهم. وان
يدنوا احد هناك يتنجس. من اجل ضراباتهم السحرية يوجعون من وجه اتعابهم. وابغضتم
المبكتين في الابواب.

الاصحاح الرابع والعشرون. وهو الثاني من النبوة.

16 * والان ضعوا في قلوبكم منذ هذا اليوم وما فوقه. من قبل ان تضعوا حجرا في هيكل الرب.
17 * من كنتم. لما اوعيتم في الصبة من اوعية الحنطة عشرين قفيزا شعيرا. فصارت عشر اقفزة
18 شعيرا. ودخلتم الي المعصر لتستقوا خمسين مطرا. فصارت عشرين * ضربتكم بالجدب وفساد
19 الهوا. وبالبرد جميع اعمال ايديكم. ولم ترجعوا الي يقول الرب * ضعوا الان قلوبكم منذ هذا
اليوم وما بعده. من الرابع والعشرين من الشهر التاسع. ومنذ اليوم الذي اسس فيه
هيكل الرب.

Et ſpiritus meus ſtat in medio veſt.ũ. Con- 6
fidite, quia ſic ait Dominus omnipotens, 7
Ego ego ſemel adhuc commovebo cæ-
lum & terram, mare & aridam: Et 8
commovebo cunctas gentes, & venient
ſelectiſſima quæque cunctarum gentium,
& implebo domum iſtam gloriâ, dicit
Dominus omnipotens. Meum eſt argen- 9
tum, & meum aurum, dicit Dominus
omnipotens. Nam gloria magna poſterior 10
hujus domûs, præſtantior erit priore, dicit
Dominus omnipotens: & in loco iſto pa-
cem dabo, dicit Dominus omnipotens;
pacem inquam, animæ poſſidendam omni
laboranti ad erigendum hoc templum.
Præterea vigeſimâ quartâ menſis noni,
anni ſecundi, tempore Darii, factus eſt 11
ſermo Domini ad Haggæum prophetam,
dicens; Sic dicit Dominus omnipotens; 12
Interroga ſacerdotes tantùm, dicens; Si 13
quis ſumpſerit carnem ſacram in fimbria
ſuæ veſtis, tetigeritque fimbria veſtis ejus
panem, aut pulmentum, aut vinum, aut
oleum, aut quemcunque cibum; num ſan-
ctificabitur? Reſponderunt ſacerdotes, ac
dixerunt, Nequaquam. Dixit Haggæus; 14
Si tetigerit aliqua anima immunda aut
impura ullam horum omnium animam,
num contaminabitur? Reſponderunt ſa-
cerdotes, ac dixerunt, Contaminabitur.
Reſpondit Haggæus, ac dixit; Ita popu- 15
lus iſte, & ita gens iſta coram me, dicit
Dominus, atque ita omnia opera manuum
eorum: & ſi quis illuc accedat, contami-
nabitur: propter plagas ſuas matutinas
dolebunt à facie laborum ſuorum; & o-
diſtis arguentes in portis.

Textus vigeſimus quartus, qui eſt
hujus Prophetiæ ſecundus,

Jam ergò ponite in cordibus veſtris ab 16
hac die & ſuprà. Antequàm ullum pone-
retis lapidem in templo Domini, Quales 17
eratis? Quando econdebatis in capſa vi-
ginti ſata hordei annonæ frumentariæ, fi-
ebant decem hordei ſata: & ingredieba-
mini ad torcular ut hauriretis quinqua-
ginta metretas, fiebantque viginti.
Percuſſi vos penuriâ & corruptione 18
aëris, & omnia opera manuum veſtrarum
grandine; neque tamen reverſi eſtis ad
me, dicit Dominus. Jam diſponite 19
corda veſtra ab hac die & deinceps à
vigeſima quarta menſis noni, & à die quâ
fundatum eſt templum Domini:

זכריה : א

,malogranatū & ,*ficum & vitem ad usque* & ,horreo in semen adhuc Nónne
20 העוד הזרע במגורה ועד־הגפן והתאנה והרמון
verbum fuit Et .benedicam hac die A ? tulit non oleæ *lignum* &
21 ועץ הזית לא נשא מן־היום הזה אברך : ויהי דבר־
:*dicendum ad*,mensis quarta & vigesima in ,Chagghai ad secundò Domini
יהוה שנית אל־חגי בעשרים וארבעה לחדש לאמר :
faciens tremere Ego : dicendo ,Jehudah ducem Zerubabel ad Dic
22 אמר אל־זרבבל פחת־יהודה לאמר אני מרעיש את־
disperdā & ,regnorum solium subvertam Et .terram & , cœlos
23 השמים ואת־הארץ : והפכתי כסא ממלכות והשמדתי
;*eam equitantes & quadrigam* subvertam & : gentium regnorum fortitudinem
חזק ממלכות הגוים והפכתי מרכבה ורכביה
.sui fratris gladio *in vir* , eorum ascensores & , equi descendent &
וירדו סוסים ורכביהם איש בחרב אחיו :
fili Zerubbabel te *capiam* ,exercituum Dominus dixit , illa die In
24 ביום ההוא נאם־יהוה צבאות אקחך זרבבל בן־
:signaculū sicut te ponam &,DOMINUS dixit ,mi serve Sealthiel
שאלתיאל עבדי נאם־יהוה ושמתיך כחותם
.exercituum DOMINUS dixit ,elegi te *in* quia
כי־בך בחרתי נאם יהוה צבאות :

Versio VULG. LAT.

20 Numquid jam semen in germine est : & adhuc vinea, & ficus, & malogranatum, & lignum olivæ non floruit ? ex die ista benedicam. 21 Et factum est verbum Domini secundò ad Aggæum in vigesima & quarta mensis, dicens; 22 Loquere ad Zorobabel ducem Juda, dicens; Ego movebo cœlum pariter & terram. 23 Et subvertam solium regnorum, & conteram fortitudinem regni Gentium : & subvertam quadrigam, & ascensorem ejus : & descendent equi, & ascensores eorum : vir in gladio fratris sui. 24 In die illa, dicit Dominus exercituum, assumam te, Zorobabel, fili Salathiel serve meus, dicit Dominus : & ponam te quasi signaculum, quia te elegi, dicit Dominus exercituum.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

20 (ν) Εἰ ἐπιγνωσθήσεται ἐπὶ τῆς ἅλω, (ξ) καὶ εἰ ἔτι ἡ ἄμπελος, καὶ ἡ συκῆ, καὶ ἡ ῥοὰ, καὶ τὰ ξύλα τῆς ἐλαίας τὰ οὐ φέροντα καρπὸν, ἀπὸ τῆς ἡμέρας ταύτης (ο) εὐλογήσω. 21 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου ἐκ δευτέρου πρὸς Ἀγγαῖον τὸν προφήτην, τετράδι καὶ εἰκάδι τοῦ μηνὸς, λέγων, 22 Εἰπὸν πρὸς Ζοροβάβελ τὸν τοῦ Σαλαθιὴλ ἐκ φυλῆς Ἰούδα, λέγων, Ἐγὼ σείω τὸν οὐρανὸν 23 καὶ τὴν γῆν, καὶ τὴν θάλασσαν καὶ τὴν ξηράν, Καὶ καταστρέψω θρόνους βασιλέων, καὶ (π) ὀλοθρεύσω δύναμιν βασιλέων τῶν ἐθνῶν, καὶ καταστρέψω ἅρματα καὶ ἀναβάτας, (ρ) καὶ καταβήσονται ἵπποι καὶ ἀναβάται αὐτῶν, ἕκαστος 24 ἐν ῥομφαίᾳ πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ. Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος παντοκράτωρ, λήψομαί σε Ζοροβάβελ τὸν τοῦ Σαλαθιὴλ, τὸν δοῦλόν μου, λέγει κύριος, καὶ θήσομαί σε (σ) ὡς σφραγῖδα, διότι σὲ ᾑρέτισα, λέγει κύριος παντοκράτωρ. ΑΓΓΑΙΟΣ Ι'.

(ν) Si cognoscetur super aream, & si adhuc vinea, & ficus, & malogranatum, & ligna olivæ, quæ non ferunt fructū, à die hac benedicā. Et factum est verbū Domini secundò ad Aggæum prophetā quartâ & vigesimâ mensis, dicens; Dic ad Zorobabel filium Salathiel de tribu Juda, dicens; Ego commoveo cœlum, & terrā, & mare, & aridā: Et subvertā thronos regum, & disperdā fortitudinem regū gentiū, & subvertā currus, & ascensores: & ascendent equi, & ascensores eorum, unusquisque in gladio adversùs fratrem suū. In die illa, dicit Dominus omnipotens, assumā te, Zorobabel, filium Salathiel, servum meum, dicit Dominus, & ponam te, quasi signaculum: quia te elegi, dicit Dominus omnipotens.

MS. A. (ν) Εἰ ἔτι (ξ) καὶ ἡ ἄμπελος, (ο) καὶ ἐπάνω εὐλογήσω αὐτά. (π) ἐξολεθρεύσω (ρ) καὶ καταστρέψω πᾶσαν τὴν δύναμιν αὐτῶν, καὶ καταβαλῶ τὰ ὅρια αὐτῶν, καὶ ἐνισχύσω τοὺς ἐκλεκτούς μου, καὶ ἀναβήσονται ἵπποι (σ) εἰς σφραγῖδα, ὅτι σὲ ΑΓΓΑΙΟΣ Ι'.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

20 העוד כען עבורא באדרא ועד כען גופניא ותיניא ורמוניא ואילני זיתא לא טענו יומא
21 הדין אבריך : והוה פתגם נבואה מן קדם יי תנינות עם חגי בעסרין וארבעא לירחא
22 למימר : אמר לזרבבל רבא דבית יהודה למימר אנא מזיע ית שמיא וית ארעא :
23 ואהפוך כורסי מלכותא ואתבר תוקף מלכות עממיא ואהפוך רתיכין ורכביהון
24 ויתקטלון סוסון ורכביהון גבר בחרבא דאחוהי : בעדנא ההיא אמר יי צבאות
אקרבנך זרבבל בר שאלתיאל עבדי אמר יי ואשוינך כגלוף דעזקא על יד ארי בך
אתרעיתי אמר יי צבאות :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

An adhuc frumentum in area, & an adhuc vites. & ficus, & mala punica, & arbores olivæ non ferunt ? die ista benedicam. Et factum est verbum prophetiæ à conspectu Domini secundò cum Chaggæo vicesima & quarta mensis, dicendo : Dic Zerubabeli principi domus Juda dicendo : Ego commoveo cœlos & terram. Et subvertam solia regnorum, & frangam robur regnorum gentium, ac subvertam currus & assessores eorum, & interficientur equi & equites ipsorum unusquisque gladio fratris sui. In illo tempore, ait Dominus exercituum, accersam te Zerubabel fili Sealthielis serve mi, dicit Dominus : & ponam te sicut sculpturam annuli super manum : quoniam in te mihi complacui, dicit Dominus exercituum.

ספר זכריה
CAPUT I. א

Domini verbum fuit ,Dariaves secundo anno *in* , octavo mense In
1 בחדש השמיני בשנת שתים לדריוש היה דבר־יהוה
: dicendo , *prophetæ* Hiddo filii Berechjah filium Zecharjah ad
אל־זכריה בן־ברכיה בן־עדו הנביא לאמר :
, eos ad *dices Et* .iracundia vestros patres *super* Dominus est Iratus
2 קצף יהוה על־אבותיכם קצף : ואמרת אלהם
3 Dominus dixit ,me ad Convertimini : exercituum Dominus dixit Sic
כה אמר יהוה צבאות שובו אלי נאם יהוה
.exercituum Dominus dixit , vos ad convertar & , exercituum
צבאות ואשוב אליכם אמר יהוה צבאות :
prophetæ *eos ad* clamaverunt quos , vestri patres sicut sitis Ne
4 אל־תהיו כאבתיכם אשר קראו־אליהם הנביאים
Convertimini : exercituum Dominus dixit Sic : dicendo , priores
הראשנים לאמר כה אמר יהוה צבאות שובו
, audierunt non & : malis vestris *studiis* & ,malis vestris viis à nunc
נא מדרכיכם הרעים ומעליליכם הרעים ולא שמעו
? ipsi ubi vestri Patres .Dominus dixit , *me ad* attenderunt neque
5 ולא הקשיבו אלי נאם־יהוה : אבותיכם איה־הם
,mea Verba Veruntamen ? vivent *seculum* in nunquid prophetæ &
6 והנבאים הלעולם יחיו : אך ׀ דברי
nonne , prophetis meis servis mandavi quæ , mea statuta &
וחקי אשר צויתי את־עבדי הנביאים הלוא
: dixerunt & , sunt conversi Et ? vestros patres comprehenderunt
השיגו אבתיכם וישובו ויאמרו
nobis *faciendum ad* , exercituum Dominus cogitavit Quemadmodum
כאשר זמם יהוה צבאות לעשות לנו
.nobiscum fecit sic ,nostra opera secundùm & ,nostras vias secundùm
כדרכינו וכמעללינו כן עשה אתנו :

Versio VULG. LAT.
PROPHETIA
ZACHARIÆ.
CAP. I.

1 IN mense octavo, in anno secundo Darii regis, factū est verbū Dñi ad Zachariam, filium Barachiæ filii Addo, prophetam, dicens; 2 Iratus est Dñs sup patres 3 vestros iracundiâ. Et dices ad eos; Hæc dicit Dñs exercituum; Convertimini ad me, ait Dñs exercituum : & convertar ad vos, dicit 4 Dñs exercituum. Ne sitis sicut patres vestri, ad quos clamabant prophetæ priores, dicentes; Hæc dicit Dñs exercituū; Convertimini de viis vestris malis, & de cogitationibus vestris pessimis : & non audierunt, neque attende-5 runt ad me, dicit Dominus. Patres vestri ubi sunt ? & Prophetæ numquid in sempiternum vi-6 vent ? Veruntamen verba mea, & legitima mea, quæ mandavi servis meis prophetis, numquid non comprehenderunt patres vestros, & conversi sunt, & dixerunt; Sicut cogitavit Dominus exercituum facere nobis secundùm vias nostras, & secundùm adinventiones nostras, fecit nobis ?

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.
ΖΑΧΑΡΙΑΣ ΙΑ'.
ΚΕΦ. α'.

1 ἘΝ τῷ ὀγδόῳ μηνὶ, ἔτους δευτέρου ἐπὶ Δαρείου, ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ζαχαρίαν τὸν τοῦ Βαραχίου υἱὸν Ἀδδὼ τὸν προφήτην, 2 λέγων, Ὠργίσθη κύριος ἐπὶ τοὺς πατέρας 3 (α) ὑμῶν ὀργὴν μεγάλην· Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτοὺς, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἐπιστρέψατε πρὸς μὲ, λέγει κύριος τῶν δυνάμεων, καὶ ἐπιστραφήσομαι πρὸς ὑμᾶς, λέγει (β) 4 κύριος τῶν δυνάμεων. Καὶ μὴ γίνεσθε καθὼς οἱ πατέρες ὑμῶν, οἷς ἐνεκάλεσαν αὐτοῖς οἱ προφῆται (γ) ἔμπροσθεν λέγοντες, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἀποστρέψατε ἀπὸ τῶν ὁδῶν ὑμῶν τῶν πονηρῶν, καὶ ἀπὸ τῶν ἐπιτηδευμάτων ὑμῶν τῶν πονηρῶν· καὶ (δ) οὐκ εἰσήκουσαν, καὶ οὐ προσέσχον τοῦ εἰσακοῦσαί μου, 5 λέγει κύριος. Οἱ πατέρες ὑμῶν ποῦ εἰσι καὶ 6 οἱ προφῆται; μὴ τὸν αἰῶνα ζήσονται; Πλὴν τοὺς λόγους μου καὶ τὰ νόμιμά μου δέχεσθε, ὅσα ἐγὼ ἐντέλλομαι ἐν πνεύματί μου τοῖς δούλοις μου τοῖς προφήταις, οἳ κατελάβοσαν τοὺς πατέρας ὑμῶν, καὶ ἀπεκρίθησαν, καὶ εἶπαν, Καθὼς παρατέτακται κύριος παντοκράτωρ τοῦ (ε) ποιῆσαι ἡμῖν κατὰ τὰς ὁδοὺς ἡμῶν καὶ κατὰ τὰ ἐπιτηδεύματα (ζ) ἡμῶν, οὕτως ἐποίησεν (η) ἡμῖν.

ZACHARIAS.
CAP. I.

IN octavo mense anni secundi sub Dario, factum est verbum Domini ad Zachariam Barachiæ filium Addo prophetam, dicens; Iratus est Dominus super patres vestros irâ magnâ: Et dices ad eos; Hæc dicit Dominus omnipotens; Convertimini ad me, dicit Dominus virtutū: et convertar ad vos, dicit Dñs virtutū. Et nolite fieri, sicut patres vestri, quos arguerunt eos prophetæ, qui priùs fuerant, dicentes; Hæc dicit Dominus omnipotens; Avertimini à viis vestris pessimis, & ab adinventionibus vestris malis. Et (δ) non exaudierunt, & non attenderunt, ut exaudirent me, dicit Dominus. Patres vestri ubi sunt, & prophetæ? Nunquid in sempiternum vivent? Veruntamen sermones meos, & legitima mea suscipite, quæ ego præcipio in spiritu meo servis meis prophetis, qui comprehenderunt patres vestros, & responderunt, & dixerunt; Sicut præparatus est Dominus omnipotens, ut faceret nobis secundùm vias nostras, & secundùm adinventiones nostras; sic fecit nobis.

MS. A. ΖΑΧΑΡΙΑΣ ΙΑ'. (α) ἡμῶν (β) κύριος παντοκράτωρ. (γ) οἱ ἔμπροσθεν (δ) οὐ προσέσχον (ε) ποιῆσαι κατὰ τὰς ὁδοὺς ὑμῶν (ζ) ὑμῶν, (η) ὑμῖν.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.
א

1 בירחא תמינאה בשנת תרתין לדריוש הוה פתגם נבואה מן קדם יי עם זכריה בר
2 ברכיה בר עדו נביא למימר : הוה רגז מן קדם יי על אבהתכון על דארגיזו קדמוהי :
3 ותימר להון כדנן אמר יי צבאות תובו לפולחני אמר יי צבאות ואתפני במימרי
4 לאיטבא לכון אמר יי צבאות : לא תהון כאבהתכון דאתנביאו להון נבייא קדמאי
למימר כדנן אמר יי צבאות תובו כען מאורחתכון בישתא ומעובדיכון מקלקליא
5 ולא קבילו ולא אציתו למימרי אמר יי : אבהתכון אן אנון ואם תימרון נבייא הלא
6 לעלמא קימין : ברם פתגמי וקימי די פקדית ית עבדי נבייא הלא אדביקו אבהתכון
ותבו ואמרו כמא דחשיב יי צבאות למעבד לנא כארחתנא וכעובדנא כן עבד
עמנא :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.
CAPUT I.

IN mense octavo, anno secundo Darii, factum est verbum prophetiæ à facie Dñi cum Zacharia filio Barachiæ filii Addo propheta, dicendo : Ira fuit à facie Domini contra patres vestros, pro eo quòd iracundiam concitassent coram eo. Et dices ad eos : Hæc dicit Dominus exercituum : Convertimini ad cultum meum, dicit Dominus exercituum, & respiciam in verbo meo ut benefaciam vobis, dicit Dominus exercituum. Ne sitis sicut patres vestri, quibus prophetaverunt Prophetæ priores, dicendo : Sic dicit Dominus exercituum : Convertimini nunc à viis vestris pessimis, & ab operibus vestris corruptis : sed non obedierunt, nec auscultaverunt verbum meum, dicit Dominus. Patres vestri ubi sunt ? & si dixeritis, Prophetæ nonne in æternum subsistent ? Veruntamen verba mea & pacta mea quæ mandavi servis meis Prophetis nonne comprehenderunt patres vestros ? & conversi sunt & dixerunt : Sicut cogitaverat Dominus exercituum facere nobis, juxta vias nostras & secundùm opera nostra, sic fecit nobiscum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܣܝܡܘ ܒܠܒܟܘܢ. ܕܥܕܟܝܠ ܙܪܥܐ ܒܐܕܪܐ. ܘܓܦܬܐ ܘܬܐܬܐ ܘܪܘܡܢܐ 20
ܘܐܝܠܢܐ ܕܙܝܬܐ ܠܐ ܥܒܕܘ. ܘܡܢ ܝܘܡܢܐ. ܗܢܐ ܐܢܐ ܡܒܪܟ ܠܗܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܗܘܐ
ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܠܘܬ ܚܓܝ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ. ܒܥܣܪܝܢ ܘܐܪܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܟܕ ܐܡܪ. 21
* ܐܡܪ ܠܙܘܪܒܒܠ ܪܫܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܐܢܐ ܐܙܝܥ ܫܡܝܐ ܘܐܪܥܐ. * ܘܐܗܦܘܟ ܟܘܪܣܝܐ ܕܡܠܟܘܬܐ. 22 23
ܘܐܘܒܕ ܚܝܠܐ ܕܡܠܟܘܬܐ ܕܥܡܡܐ. ܘܐܗܦܘܟ ܡܪܟܒܬܐ. ܥܠ ܪܟܒܝܗܝܢ. ܘܢܦܠܘܢ
ܪܟܫܐ ܘܪܟܒܝܗܘܢ. ܓܒܪ ܒܣܝܦܐ ܕܐܚܘܗܝ. * ܒܗܘ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. 24
ܐܕܒܪܟ. ܙܘܪܒܒܠ ܒܪ ܫܠܬܐܝܠ ܥܒܕܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܣܝܡܟ ܐܝܟ ܚܬܡܐ: ܡܛܠ
ܕܒܟ ܨܒܝܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ.

* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܚܓܝ ܢܒܝܐ *

20 Animadvertite quomodo non extet ſemen in area: vitis, ficus, malogranata, & arbores olivæ non protulerint: ab hac autem die benedicturus ſim eis, dicit Dominus. 21 Fuit etiam ſermo Domini ad Hagæum ſecundâ vice, vigeſimo quarto *die* menſis, dicendo; 22 Dic Zorbabeli principi Judæ: Ego cœlum terrámque concitiam, Et ſubvertam ſolia regnorum, & perdam robur regnorũ gentium. 23 Subvertam currus ſuper conſcenſores eorum, cadentque equi & iis inſidentes, quiſque gladio fratris ſui. 24 Eo die, dicit Dominus potentiſſimus, aſſumam te Zorbabel fili Selathielis ſerve mi, dicit Dominus, ponámque te ut ſigillum: quia te elegi, dicit Dominus potentiſſimus.

Prophetiæ Hagæi prophetæ finis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ضعوا في قلوبكم انه يعرف ايضا من البيدر لان الكرمة والتينة ايضا والرمانة وشجر الزيتون 20
التي لم تحمل ثمر * منذ هذا اليوم سأباركهم * وكان قول الرب ثانية الى حجي النبي في الرابع 21
والعشرين من الشهر قايلا * قل لزربابل بن سلتاييل من سبط يهودا قايلا * انا ازلزل السماء 22
والارض والبحر واليبس * واقلب كراسي الملوك * واستاصل قوة ملوك الامم * واقلب المركبات 23
والركاب * وينزل الخيول وركابها كل واحد بالسيف على اخيه * في ذلك اليوم يقول الرب الضابط 24
الكل * آخذك يا زربابل بن سلتاييل عبدي يقول الرب * واصنعك مثل خاتم * من اجل اني
ارتضيتك يقول الرب الضابط الكل * * تمت نبوة حجي *

20 *Ponite in cordibus veſtris quòd adhuc ab area cognoſcetur: nam viti, & ficui etiam, & malogranato, & arbori olivæ, quæ fructum non afferebant, ab hac die benedicam.* 21 *Fuit etiam ſermo Domini ſecundò ad Haggæum prophetam, vigeſimâ quartâ menſis, dicens;* 22 *Dic Zorobabeli filio Salathielis de tribu Judæ, dicens, Ego commovebo cœlum ac terram, mare & aridam;* 23 *Subvertam ſolia regum, evellam robur regum gentium, ſubvertam currus & equites: deſcendentque equi & conſcenſores eorum, quiſque contra fratrem ſuum gladio.* 24 *Eo die, dicit Dominus omnipotens, accipiam te O Zorobabel fili Salathielis ſerve mi, dicit Dominus; & ponam te quaſi ſignaculum: quia te oblectatus ſum, dicit Dominus omnipotens.*

Prophetiæ Haggæi Finis.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܙܟܪܝܐ ܢܒܝܐ *

* ܩܦܠܐܘܢ * ܐ *

* ܒܝܪܚܐ ܕܬܡܢܝܐ ܒܚܕ ܒܝܪܚܐ. ܒܫܢܬ ܬܪܬܝܢ ܕܕܪܝܘܫ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ 1
ܠܘܬ ܙܟܪܝܐ ܒܪ ܒܪܟܝܐ ܒܪ ܥܕܘ ܢܒܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܪܓܙ ܡܪܝܐ ܥܠ ܐܒܗܝܟܘܢ. ܪܘܓܙܐ 2
ܪܒܐ. * ܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܬܦܢܘ ܠܘܬܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ 3
ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܬܦܢܐ ܠܘܬܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܠܐ ܬܗܘܘܢ ܐܝܟ ܐܒܗܝܟܘܢ. 4
ܕܩܪܘ ܠܘܬܗܘܢ ܢܒܝܐ ܩܕܡܝܐ ܘܐܡܪܘ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܬܦܢܘ ܡܢ
ܐܘܪܚܬܟܘܢ ܒܝܫܬܐ ܘܡܢ ܥܒܕܝܟܘܢ ܒܝܫܐ. ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܘܠܐ ܨܘܬܘ ܠܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܝܟܐ 5
ܐܢܘܢ ܐܒܗܝܟܘܢ ܘܢܒܝܝ. ܕܠܥܠܡ ܚܝܝܢ. * ܒܪܡ ܦܬܓܡܝ ܘܦܘܩܕܢܝ 6
ܕܦܩܕܬ ܠܥܒܕܝ ܢܒܝܐ. ܐܬܕܟܪܘ ܐܒܗܝܟܘܢ. ܘܐܬܦܢܝܘ ܘܐܡܪܘ. ܐܝܟ ܕܐܬܪܥܝ
ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܡܥܒܕ ܠܢ. ܐܝܟ ܐܘܪܚܬܢ ܘܐܝܟ ܥܒܕܝܢ. ܗܟܢܐ ܥܒܕ ܠܢ.

Sequitur Prophecia
ZECHARIÆ PROPHETÆ.

CAPUT. I.

1 MEnſe octavo, primâ *die* menſis, anno ſecundo Darii, fuit ſermo Domini ad Zechariam filium Berachiæ, filii Addo prophetæ, dicendo; 2 Iratus eſt Dominus patribus veſtris iracundiâ magnâ. 3 Dic eis, Ita dicit Dominus potentiſſimus; Revertimini ad me, dicit Dominus potentiſſimus, & revertar ad vos, ait Dominus potentiſſimus: 4 Et ne ſitis ſimiles patribus veſtris, quibus prædicaverunt prophetæ priores, ac dixerunt; Sic dicit Dominus potentiſſimus; Convertimini à viis veſtris pravis & ab actionibus veſtris peſſimis: attamen non audierunt neque auſcultaverunt mihi, dicit Dominus. 5 Ubinam ſunt patres veſtri & prophetæ mei? num in ſeculum vivunt? 6 At ſermonum & præceptorum meorum quæ mandaveram ſervis meis prophetis, recordati ſunt patres veſtri, ſecúmque cogitantes dixerunt; Quemadmodum decreverat Dominus potentiſſimus facere nobis ſecundùm vias noſtras & ſecundùm facinora noſtra; ita fecit nobis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* بسم الله الرووف الرحيم *

* نبتداء بترجمة نبوة زكريا النبي * بركاته تكون معنا * امين *

* الفصل الاول * الاصحاح الخامس والعشرون * وهو الاول من النبوة *

* كان قول الرب الى زكريا بن براشيا بن عدو النبي قايلا * غضب الرب على ابايكم غضبا عظيما 1 2
* وتقول لهم هكذا يقول الرب الضابط الكل * ارجعوا الي فارجع اليكم يقول الرب الضابط الكل * 3
* ولا تكونوا كمثل ابايكم الذين دعتهم الانبياء الذين من قبل قايلين * هكذا يقول الرب 4
الضابط الكل * ارجعوا من طرقكم الشريرة ومن اعمالكم الخبيثة * فلم يصغوا ان يسمعوا لي يقول
الرب * اباوكم اين هم * والانبياء هل يعيشون الى الدهر * لكن اقبلوا اقوالي وسنني التي انا 5 6
اوصيت بها بروحي لعبيدي الانبياء * الذين ادركوا اباءكم فاجابوا وقالوا * كما امر الرب
الضابط الكل ان يصنع كطرقكم وكاعمالكم * هكذا اصنع بكم *

IN NOMINE DEI MISERICORDIS, CLEMENTISSIMI,

Aggredimur interpretationem Prophetæ
ZACHARIÆ PROPHETÆ,
CUJUS BENEDICTIONES
adſint nobis, Amen.

CAPUT PRIMUM.

Textus vigeſimus quintus, hujus autem Prophetiæ primus.

1 *FUit ſermo Domini ad Zachariã filiũ Barachiæ filii Addo, prophetã dicens;* 2 *Iratus eſt Dominus patribus veſtris irâ magnâ.* 3 *Et dices eis: Sic dicit Dominus omnipotens; Revertimini ad me, & revertar ad vos, dicit Dominus omnipotens:* 4 *Et ne ſitis ut patres veſtri quos priſci prophetæ vocaverunt, dicentes; Sic ait Dominus omnipotens; Retrahite vos à viis veſtris malis & ab operibus veſtris nefandis: attamen aurem non præbuerunt ad audiendum me, dicit Dominus.* 5 *Patres veſtri ubi ſunt? et prophetæ num vivent in perpetuũ?* 6 *Veruntamen ſuſcipite ſermones meos et leges meas quas per ſpiritum meum præcepi ſervis meis prophetis, qui patres veſtros aſſecuti reſponderunt, ac dixerunt; Quemadmodum præcepit Dominus omnipotens actiarum ſe ſecundùm vias veſtras et ſecundùm opera veſtra, ita agam vobiſcum.*

זְכַרְיָה: א

menſis ipſe , menſis undecimi quarta & vigeſima die In
7 בְּיוֹם עֶשְׂרִים וְאַרְבָּעָה לְעַשְׁתֵּי־עָשָׂר חֹדֶשׁ הוּא־חֹדֶשׁ
ad DOMINI verbum fuit , Dariaves ſecundo anno *in* ,Sebat
שְׁבָט בִּשְׁנַת שְׁתַּיִם לְדָרְיָוֶשׁ הָיָה דְבַר־יְהוָה אֶל־
: dicendo , *prophetæ* Hiddo filii Berechjahu filium Zecharjah
זְכַרְיָה בֶּן־בֶּרֶכְיָהוּ בֶּן־עִדּוֹא הַנָּבִיא לֵאמֹר:
ipſe & ,rufum equum ſuper *equitans* vir ecce & , nocte Vidi
8 רָאִיתִי הַלַּיְלָה וְהִנֵּה־אִישׁ רֹכֵב עַל־סוּס אָדֹם וְהוּא
equi eum poſt & ; profundo in quæ ,myrtos inter *ſtans*
עֹמֵד בֵּין הַהֲדַסִּים אֲשֶׁר בַּמְּצֻלָה וְאַחֲרָיו סוּסִים
? mi Domine ii Qui : dixi Et .albi & , *nigri* , rufi
9 אֲדֻמִּים שְׂרֻקִּים וּלְבָנִים: וָאֹמַר מָה־אֵלֶּה אֲדֹנִי
.iſti *ipſi* qui tibi oſtendã Ego:me in *loquens* angelus me ad dixit Et
וַיֹּאמֶר אֵלַי הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי אֲנִי אַרְאֶךָּ מָה־הֵמָּה אֵלֶּה:
quos Ii : dixit & ,myrtos inter *ſtans* vir reſpondit Et
10 וַיַּעַן הָאִישׁ הָעֹמֵד בֵּין־הַהֲדַסִּים וַיֹּאמַר אֵלֶּה אֲשֶׁר
reſponderunt Et .terram *in deambulandum ad* DOMINUS miſit
11 שָׁלַח יְהוָה לְהִתְהַלֵּךְ בָּאָרֶץ: וַיַּעֲנוּ
: dixerunt & , myrtos inter *ſtanti* DOMINI angelo
אֶת־מַלְאַךְ יְהוָה הָעֹמֵד בֵּין הַהֲדַסִּים וַיֹּאמְרוּ
.*quieſcens & ſedens* terra omnis ecce & , terram Perambulavimus
הִתְהַלַּכְנוּ בָאָרֶץ וְהִנֵּה כָל־הָאָרֶץ יֹשֶׁבֶת וְשֹׁקָטֶת:
;exercituum DOMINE : dixit & , Domini angelus reſpondit Et
12 וַיַּעַן מַלְאַךְ־יְהוָה וַיֹּאמַר יְהוָה צְבָאוֹת
Jehudah urbium & ,Jeruſalaim miſereberis non tu quo-uſque
עַד־מָתַי אַתָּה לֹא־תְרַחֵם אֶת־יְרוּשָׁלִַם וְאֵת עָרֵי יְהוּדָה
reſpondit Et ? annos ſeptuaginta jam es iratus quibus
13 אֲשֶׁר זָעַמְתָּה זֶה שִׁבְעִים שָׁנָה: וַיַּעַן
.conſolatoria verba , bona verba me in *loquenti* ,angelo Dominus
יְהוָה אֶת־הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי דְּבָרִים טוֹבִים דְּבָרִים נִחֻמִים:
dixit Sic : dicendo ,Clama : me in *loquens* ,angelus me ad dixit Et
14 וַיֹּאמֶר אֵלַי הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי קְרָא לֵאמֹר כֹּה אָמַר
.magno zelo Sijon & ,Jeruſalaim ſum Zelatus :exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת קִנֵּאתִי לִירוּשָׁלִַם וּלְצִיּוֹן קִנְאָה גְדוֹלָה:
ego quia , *pacatas* gentes *ſuper iraſcens ego* magna ira Et
15 וְקֶצֶף גָּדוֹל אֲנִי קֹצֵף עַל־הַגּוֹיִם הַשַּׁאֲנַנִּים אֲשֶׁר אֲנִי
Propterea .malum in ſunt auxiliati ipſi & , parum ſum iratus
16 קָצַפְתִּי מְּעָט וְהֵמָּה עָזְרוּ לְרָעָה: לָכֵן
.miſericordiis in Jeruſalaim ad ſum Reverſus : Dominus dixit ſic
כֹּה־אָמַר יְהוָה שַׁבְתִּי לִירוּשָׁלִַם בְּרַחֲמִים
: exercituum DOMINUS ait , ea in ædificabitur mea Domus
בֵּיתִי יִבָּנֶה בָּהּ נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת
, clama Adhuc .Jeruſalaim ſuper extendetur perpendiculum &
17 וְקָוֶה יִנָּטֶה עַל־יְרוּשָׁלִָם: עוֹד קְרָא
diſpergentur Adhuc : exercituum Dominus dixit Sic : dicendo
לֵאמֹר כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת עוֹד תְּפוּצֶנָה
adhuc DOMINUS conſolabitur & : bonitate præ meæ civitates
עָרַי מִטּוֹב וְנִחַם יְהוָה עוֹד
levavi Et .Jeruſalaim *in* adhuc eliget & , Sijon
18 אֶת־צִיּוֹן וּבָחַר עוֹד בִּירוּשָׁלִָם: וָאֶשָּׂא אֶת־
dixi Et .cornua quatuor ecce & , vidi & , meos oculos
19 עֵינַי וָאֵרֶא וְהִנֵּה אַרְבַּע קְרָנוֹת: וָאֹמַר
: me ad dixit Et ? hæc Quid : me in *loquentem* angelum ad
אֶל־הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי מָה־אֵלֶּה וַיֹּאמֶר אֵלַי
, Iſrael , Jehudah ventilaverunt quæ cornua Hæc
אֵלֶּה הַקְּרָנוֹת אֲשֶׁר זֵרוּ אֶת־יְהוּדָה אֶת־יִשְׂרָאֵל
quatuor DOMINUS mihi oſtendit Et .Jeruſalaim &
20 וִירוּשָׁלִָם: וַיַּרְאֵנִי יְהוָה אַרְבָּעָה
.fabros
חָרָשִׁים:

Verſio VULG. LAT.

7 In die vigeſima & quarta undecimi
menſis Sabath, in anno ſecundo
Darii factum eſt verbum
Domini ad Zachariam filiũ Barachiæ,
filii Addo, prophetam, dicens ;
8 Vidi per noctem, & ecce
vir aſcendens ſuper equum rufum,
& ipſe ſtabat inter myrteta,
quæ erant in profundo : & poſt
9 eum equi rufi, varii, & albi. Et
dixi ; Quid ſunt iſti, domine mi?
& dixit ad me Angelus, qui loquebatur
in me ; Ego oſtendam
10 tibi quid ſint hæc. Et reſpondit
vir, qui ſtabat inter myrteta,
& dixit ; Iſti ſunt, quos miſit Dominus
ut perambulent terram.
11 Et reſponderunt Angelo Domini,
qui ſtabat inter myrteta, &
dixerunt ; Perambulavimus terram,
& ecce omnis terra habitatur,
12 & quieſcit. Et reſpondit
Angelus Domini, & dixit ; Domine
exercituum, uſquequò tu non
miſereberis Jeruſalem, & urbium
Juda, quibus iratus es ? Iſte jam
13 ſeptuageſimus annus eſt. Et reſpondit
Dominus Angelo, qui loquebatur
in me verba bona, verba
14 conſolatoria. Et dixit ad me
Angelus, qui loquebatur in me ;
Clama, dicens ; Hæc dicit Dominus
exercituum ; Zelatus ſum
Jeruſalem & Sion zelo magno.
15 Et irâ magnâ ego iraſcor ſuper
gentes opulentas : quia ego iratus
ſum parùm, ipſi verò adjuverunt
16 in malum. Propterea hæc
dicit Dominus ; Revertar ad Jeruſalem
in miſericordiis : & domus
mea ædificabitur in ea, ait
Dominus exercituum : & perpendiculum
extendetur ſuper Jeruſalem.
17 Adhuc clama, dicens ;
Hæc dicit Dominus exercituum ;
Adhuc affluent civitates meæ bonis :
& conſolabitur adhuc Dominus
Sion, & eliget adhuc Jeruſalem.
18 Et levavi oculos meos,
& vidi : & ecce quatuor cornua.
19 Et dixi ad Angelum, qui loquebatur
in me ; Quid ſunt hæc ? &
dixit ad me ; Hæc ſunt cornua,
quæ ventilaverunt Judam, & Iſrael,
20 et Jeruſalem. Et oſtendit
mihi Dominus quatuor fabros.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

7 Τῇ τετράδι καὶ εἰκάδι, τῷ ἑνδεκάτῳ μηνὶ,
οὗτός ἐστιν ὁ μὴν Σαβὰτ, ἐν τῷ δευτέρῳ
ἔτει ἐπὶ Δαρείου, ἐγένετο λόγος κυρίου
πρὸς Ζαχαρίαν τὸν τοῦ Βαραχίου υἱὸν Ἀδδὼ
8 τὸν προφήτην, λέγων, (η) Ἑώρακα
τὴν νύκτα, καὶ ἰδοὺ ἀνὴρ ἐπιβεβηκὼς (θ) ἐπὶ
ἵππον πυῤῥὸν, καὶ οὗτος εἱστήκει ἀναμέσον
(ι) τῶν ὀρέων τῶν κατασκίων, καὶ ὀπίσω
αὐτοῦ ἵπποι πυῤῥοὶ, καὶ ψαροὶ, καὶ ποικίλοι,
9 καὶ λευκοί. Καὶ εἶπα, Τί οὗτοι κύριε;
καὶ εἶπε πρὸς μὲ ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν
ἐν ἐμοὶ, Ἐγὼ δείξω σοι τί ἐστι ταῦτα.
10 Καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἀνὴρ ὁ ἐφεστηκὼς ἀναμέσον
τῶν ὀρέων, καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Οὗτοί εἰσιν
οὓς (κ) ἐξαπέστειλε κύριος, περιοδεῦσαι
11 τὴν γῆν. Καὶ ἀπεκρίθησαν τῷ ἀγγέλῳ κυρίου
τῷ ἐφεστῶτι ἀναμέσον τῶν ὀρέων, καὶ
(λ) εἶπον, Περιωδεύσαμεν πᾶσαν τὴν γῆν,
καὶ ἰδοὺ πᾶσα ἡ γῆ κατοικεῖται, καὶ ἡσυχάζει.
12 Καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἄγγελος κυρίου, καὶ
εἶπε, Κύριε παντοκράτωρ ἕως τίνος οὐ
μὴ (μ) ἐλεήσῃς τὴν Ἱερουσαλὴμ, καὶ τὰς
πόλεις Ἰούδα, ἃς ὑπερεῖδες, τοῦτο ἑβδομηκοστὸν
13 ἔτος; Καὶ ἀπεκρίθη κύριος παντοκράτωρ
τῷ ἀγγέλῳ τῷ λαλοῦντι ἐν ἐμοὶ,
14 ῥήματα καλὰ καὶ λόγους παρακλητικούς. Καὶ
εἶπε πρὸς μὲ ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ,
Ἀνάκραγε λέγων, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ,
Ἐζήλωκα τὴν Ἱερουσαλὴμ καὶ
15 τὴν Σιὼν ζῆλον μέγαν, Καὶ ὀργὴν μεγάλην
ἐγὼ ὀργίζομαι ἐπὶ τὰ ἔθνη τὰ συνεπιτιθέμενα,
ἀνθ᾽ ὧν (ν) μὲν ἐγὼ ὠργίσθην
ὀλίγα, αὐτοὶ δὲ συνεπέθεντο εἰς κακά.
16 Διατοῦτο τάδε λέγει (ξ) κύριος, Ἐπιστρέψω
ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ ἐν οἰκτιρμῷ, καὶ ὁ
οἶκός μου ἀνοικοδομηθήσεται ἐν αὐτῇ, λέγει
κύριος παντοκράτωρ, καὶ μέτρον (ο) ἐκταθήσεται
17 ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ Ἔτι. καὶ εἶπε
πρὸς μὲ ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, (π)
Ἔτι ἀνάκραγε λέγων, Τάδε λέγει κύριος
παντοκράτωρ, Ἔτι διαχυθήσονται πόλεις
ἐν ἀγαθοῖς, καὶ ἐλεήσει κύριος ἔτι τὴν Σιὼν,
18 καὶ αἱρετιεῖ (ρ) τὴν Ἱερουσαλήμ. Καὶ
ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ
19 (ς) τέσσαρα κέρατα. Καὶ εἶπα πρὸς τὸν
ἄγγελον τὸν λαλοῦντα ἐν ἐμοὶ, Τί ἐστι ταῦτα
κύριε; καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Ταῦτα τὰ κέρατα
τὰ διασκορπίσαντα τὸν Ἰούδαν, καὶ
20 τὸν (σ) Ἰσραὴλ, καὶ Ἱερουσαλήμ. Καὶ
ἔδειξέ μοι κύριος τέσσαρας τέκτονας.

Quartâ & vigeſimâ, undecimo menſe (hic eſt menſis Sabat) in ſecundo anno ſub Dario, factus eſt ſermo Domini ad Zachariam Barachiæ filium Addo prophetam, dicens ; 7 *Vidi nocte : & ecce vir aſcendens ſuper equum rufum : & ipſe ſtabat inter* (c) *montes umbroſos : & poſt eum equi rufi,* & cineritii, *& varii, & albi.* 8 *Et dixi ; Quid ſunt iſti domine? Et dixit ad me angelus, qui loquebatur in me ; Ego oſtendam tibi, quid ſunt hæc.* 9 *Et reſpondit vir, qui ſtabat inter montes, & dixit ad me ; Iſti ſunt, quos miſit Dominus, ut circumeant terram.* 10 *Et reſponderunt angelo Domini, qui ſtabat inter montes, & dixerunt ; Circuivimus omnem terram : & ecce omnis terra habitatur, & quieſcit.* 11 *Et reſpondit angelus Domini, & dixit ; Domine omnipotens, uſquequò non miſereberis Hieruſalem, & urbium Juda,* (d) *quas deſpexiſti, hic eſt ſeptuageſimus annus?* 12 *Et reſpondit Dominus omnipotens angelo, qui loquebatur in me, verba bona, & ſermones conſolatorios.* 13 *Et dixit ad me angelus, qui loquebatur in me ; Clama, dicens ; Hæc dicit Dominus omnipotens ; Zelatus ſum Hieruſalem, & Sion zelo magno :* 14 *Et irâ magnâ ego iraſcor ſuper gentes, quæ ſuperimpoſitæ ſunt : pro eo quòd ego quidem iratus ſum modicùm : ipſi verò ſuperimpoſuerunt ſunt in mala.* 15 *Propterea hæc dicit Dominus ; Convertar ad Hieruſalem in miſericordia : & domus mea inſtaurabitur in ea, dicit Dominus omnipotens : & menſura extendetur ſuper Hieruſalem Adhuc.* 16 *Et dixit ad me angelus qui loquebatur in me ; Adhuc clama, dicens ; Hæc dicit Dominus omnipotens ; Adhuc diffundentur civitates in bonis : & miſerebitur Dominus adhuc Sion, & eliget Hieruſalem.* 17 *Et levavi oculos meos, & vidi : & ecce quatuor cornua.* 18 *Et dixi ad angelum,* 19 *qui loquebatur in me ; Quid ſunt hæc, domine? Et dixit ad me ; Hæc ſunt cornua, quæ diſperſerunt Judam, & Iſrael, & Hieruſalem. Et oſtendit mihi* 20 *Dominus quatuor fabros.*

MS. A. (η) Ἑόρακα (θ) ἐφ᾽ (ι) τῶν δύο ὀρέων (κ) ἐξαπέσταλκεν κύριος, τοῦ περιοδεῦσαι (λ) εἶπαν, Περιωδεύκαμεν (μ) ἐλεήσῃς (ν) ἐγὼ μὲν (ξ) κύριος παντοκράτωρ, (ο) ἐκτεθήσεται (π) Ἀνάκραγε (ρ) κύριος τὴν Ἱερουσαλὴμ ἔτι. (ς) τέσσερα (σ) Ἰσραήλ. Καὶ ἔδειξέν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

7 ביום עשרין וארבעא לחד עשר ירחא הוא ירחא שבט בשנת תרתין לדריוש הוה
8 פתגם נבואה מן קדם יי עם זכריה בר ברכיהו בר עדוא נביא למימר : חזיתי בליליא
והא גבר רכיב על סוסי סמוק והוא קאם בין אילניא דהדסיא די בבבל ובתרוהי
9 סוסון סומקין קוחין וחורין : ואמרית מן אלין רבוני ואמר לי מלאכא די מליל עמי אנא
10 אחזנך מה אנון אלין : ואתיב גברא דקאם בין אילני הדסיא ואמר אלן די שלח יי
11 להלכא בארעא : ואתיבו ית מלאכא דיי דקאם בין אילני הדסיא ואמרו הלכנא
12 בארעא והא כל ארעא יתבא שלוא ושקיטא : ואתיב מלאכא דיי ואמר יי צבאות עד
אימתי את לא תרחם על ירושלם ועל קרויא דבית יהודה דאיתיתא עליהון לוט
13 דנן שבעין שנין : ואתיב יי ית מלאכא די מלל עמי פתגמין תקנין פתגמין דניחומין :
14 ואמר לי מלאכא די מליל עמי אתנבי למימר כדנן אמר יי צבאות מתפרע אנא
15 פורענות ירושלם ולציון קנאה רבא : ורגז רב אנא רגיז על עממיא דשרן שלוא די אנא
16 רגזית על עמי זעיר ואנון מסיעין לאבאשא : בכן כדנן אמר יי אתוב לירושלם
ברחמין בית מקדשי יתבני בה אמר יי צבאות וחוט דמשחתא יתנגיד על בנין כתלי
17 18 ירושלם : עוד אתנבי למימר כדנן אמר יי צבאות עוד יתמלין קרוי עמי טובא וינחם יי
19 עוד ית ציון ויתרעי עוד בירושלם : וזקפית ית עיני וחזית והא ארבע מלכון : ואמרית
למלאכא דממליל עמי מן אלין ואמר לי אלין מלכותא דבדרא ית אנש יהודה וית
20 ישראל ויתבי ירושלם : ואחזיני יי ארבעא אומנין :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

In die viceſima quarta undecimi menſis, ipſe eſt menſis Sebat, anno ſecundo Darii, factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi cum Zacharia filio Barachiæ filii Addo propheta, dicendo : Vidi nocte, & ecce vir aſcendens ſuper equum rufum, & ipſe ſtabat inter arbores myrthinas quæ ſunt in Babylone, & poſt eum equi rufi, varii, & albi. Et dixi : Quid ſunt iſti, domine mi? Et dixit ad me angelus qui loquebatur mecum : Ego oſtendam tibi quinam ſint iſti. Et reſpondit vir qui ſtabat inter arbores myrthinas, & dixit : Iſti ſunt quos miſit Dominus ut perambulent terram. Et reſponderunt ad angelum Domini qui ſtabat inter arbores myrthinas, atque dixerunt : Perambulavimus terram : & ecce omnis terra habitatur pacifica & quieta. Et reſpondit angelus Domini & dixit : Domine exercituum, uſquequo non miſereberis Jeruſalem & urbium domus Juda, ſuper quas adduxiſti maledictionem iſtis ſeptuaginta annis ? Et reſpondit Dominus angelo qui loquebatur mecum verba recta, verba conſolatoria. Et dixit ad me angelus qui loquebatur mecum : Vaticinare dicendo : Sic dicit Dominus exercituum : Ego ulciſcar ultionem Jeruſalem & Sion zelo magno. Et ira magna ego iraſcar in gentes quæ degunt ſecurè : quia iratus ſum parum contra populum meum, & ipſi auxiliati ſunt ad malefaciendum. Propterea ſic dicit Dominus : Convertar ad Jeruſalem cum miſerationibus : domus ſanctuarii mei ædificabitur in ea, dicit Dominus exercituum : & funiculus perpendiculi extendetur ſuper ædificium parietum Jeruſalem. Adhuc vaticinare, dicendo : Sic dicit Dominus exercituum : Adhuc implebuntur bono urbes populi mei, & conſolabitur adhuc Dominus Sion, & complacebit adhuc ſibi in Jeruſalem. Et levavi oculos meos & vidi, & ecce quatuor regna. Et dixi ad angelum qui mecum verba faciebat, Quid ſunt iſta ? qui dixit mihi, Iſta ſunt regna quæ diſperſerunt viros Juda, & Iſraelem, & habitatores Jeruſalem. Et oſtendit mihi Dominus quatuor artifices.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܒܝܘܡ ܥܣܪܝܢ ܘܐܪܒܥܐ ܒܝܪܚܐ ܕܚܕܥܣܪ ܕܗܘ ܫܒܛ. ܒܫܢܬ ܬܪܬܝܢ ܠܕܪܝܘܫ. 7
ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܙܟܪܝܐ. ܒܪ ܒܪܟܝܐ ܒܪ ܥܕܘ ܢܒܝܐ ܠܡܐܡܪ. * ܚܙܝܬ 8
ܒܠܠܝܐ ܘܗܐ ܓܒܪܐ ܪܟܝܒ ܥܠ ܣܘܣܝܐ ܣܘܡܩܐ. ܘܩܐܡ ܒܝܢܬ ܐܝܠܢܐ ܕܡܛܠܠܝܢ.
ܘܒܬܪܗ ܪܟܫܐ ܣܘܡܩܐ. ܘܦܨܝܚܐ ܘܚܘܪܐ. * ܘܐܡܪܬ ܡܢܐ ܐܢܘܢ ܗܠܝܢ ܡܪܝ. 9
ܘܐܡܪ ܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܐܢܐ ܐܚܘܝܟ ܡܢܐ ܐܢܘܢ ܗܠܝܢ. * ܘܥܢܐ 10
ܓܒܪܐ ܕܩܐܡ ܒܝܢܬ ܐܝܠܢܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܠܝܢ ܐܢܘܢ ܕܫܕܪ ܡܪܝܐ ܠܡܗܠܟܘ ܒܐܪܥܐ.
* ܘܥܢܘ ܘܐܡܪܘ ܠܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܕܩܐܡ ܒܝܢܬ ܐܝܠܢܐ. ܗܠܟܢ ܒܐܪܥܐ. ܘܗܐ ܟܠܗ 11
ܐܪܥܐ. ܝܬܒܐ ܘܫܠܝܐ. * ܘܥܢܐ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܘܐܡܪ. ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܥܕܡܐ ܠܐܡܬܝ 12
ܠܐ ܡܪܚܡ ܐܢܬ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܘܥܠ ܡܕܝܢܬܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܕܪܓܙܬ ܥܠܝܗܝܢ ܗܐ ܫܒܥܝܢ
ܫܢܝܢ. * ܘܥܢܐ ܡܪܝܐ ܠܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܡܠܐ ܛܒܬܐ ܘܦܬܓܡܐ ܕܒܘܝܐܐ. 13
* ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܐܟܪܙ ܘܐܡܪ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. 14
ܛܢܢܬ ܠܐܘܪܫܠܡ ܘܠܨܗܝܘܢ ܛܢܢܐ ܪܒܐ. * ܘܪܘܓܙܐ ܪܒܐ ܪܓܝܙ ܐܢܐ ܥܠ ܥܡܡܐ 15
ܕܡܫܬܓܫܝܢ. ܐܢܐ ܓܝܪ ܪܓܙܬ ܩܠܝܠ. ܘܗܢܘܢ ܥܕܪܘ ܠܒܝܫܬܐ. * ܡܛܠ ܗܢܐ ܗܟܢܐ 16
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܬܦܢܝܬ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ ܒܪܚܡܐ. ܘܒܝܬܝ ܢܬܒܢܐ ܐܢܐ
ܒܓܘܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܚܒܠܐ ܢܬܡܬܚ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. * ܬܘܒ ܐܟܪܙ ܘܐܡܪ. 17
ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܬܘܒ ܢܣܬܦܩܢ ܡܕܝܢܬܐ ܡܢ ܛܒܬܐ. ܘܢܒܢܐ
ܬܘܒ ܡܪܝܐ ܠܨܗܝܘܢ. ܘܢܓܒܐ ܬܘܒ ܠܐܘܪܫܠܡ. * ܘܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ 18
ܘܗܐ ܐܪܒܥ ܩܪܢܢ. * ܘܐܡܪܬ ܠܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܡܢܐ ܐܢܝܢ ܗܠܝܢ ܡܪܝ. 19
ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܠܝܢ ܐܢܝܢ ܩܪܢܬܐ ܕܒܕܪ ܠܝܗܘܕܐ ܘܠܐܝܣܪܝܠ ܘܠܐܘܪܫܠܡ. * ܘܚܘܝܢܝ 20
ܡܪܝܐ ܐܪܒܥܐ ܢܓܪܐ.

Die vigeſimâ quartâ, menſe undecimo, nempe 7
Sebat, anno ſecundo Darii; fuit ſermo Domi-
ni ad Zechariam filium Berachiæ, filii Addo
prophetæ, dicendo; Vidi nocte virum inſi- 8
dentem equo rufo, & ſtantem inter arbores
umbriferas: & poſt ipſum equos rufos, ver-
ſicolores, & albos. Et dixi, Quid ſunt iſti 9
domine mi? Reſpondit angelus qui loqueba-
tur in me, dixitque mihi; Ego oſtendam tibi
quid ſint iſti. Reſpondens vir ille qui ſtabat 10
inter arbores, dixit mihi; Hi ſunt quos miſit
Dominus ad perambulandum terram. Re- 11
ſponderunt autem & dixerunt angelo Domi-
ni qui ſtabat inter arbores; Perambulavimus
terram, totáque terra ſedet & tranquilla eſt.
Tunc prolocutus angelus Domini, dixit; Do- 12
mine potentiſſime, quouſque non miſerebe-
ris Jeroſolymæ & urbium Judæ, quibus iratus
es jam ſeptuaginta annis? Reſpondit Do- 13
minus angelo qui loquebatur in me, verba
jucunda & ſermones conſolatione *plenos*.
Quapropter dixit mihi angelus qui loque- 14
batur in me; Prædica, & dic; Sic dicit Do-
minus potentiſſimus, Commotus ſum erga
Jeruſalem & Sionem zelo magno. Et irâ ma- 15
gnâ excandeſco in gentes tumultuantes: ego
enim parum iratus fueram, ipſæ verò auxilia-
tæ ſunt ad malum. Propterea ſic dicit Do- 16
minus potentiſſimus; Converſus ſum ad Je-
ruſalem cum miſericordia, & domum meam
collocabo in medio ipſius, dicit Dominus po-
tentiſſimus, & funiculus menſorius extende-
tur ſuper Jeruſalem. Præterea prædica, & 17
dic; Sic ait Dominus potentiſſimus, Jam ur-
bes bonis evacuabuntur, & iterum ædifica-
bit Dominus Sionem, iterumque eliget Jeru-
ſalem. Deinde ſublatis oculis vidi, & ecce 18
quatuor cornua: Et dicenti mihi ad ange- 19
lum qui loquebatur in me, Quid iſta ſunt mi
domine? reſpondit; Hæc ſunt cornua quæ
diſperſerunt Judam, Iſraelem, & Jeroſoly-
mam. Deinde oſtendit mihi Dominus qua- 20
tuor fabros:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* وفي الرابع والعشرين في الشهر الحادي عشر * هذا هو شهر سباط * في السنة الثانية 7
على عهد داريوس * كان قول الرب إلى زكريا بن براشيا بن عدو النبي قايلا * رايت 8
ليلا * واذا رجل راكب على فرس احمر * وهو واقف بين جبلين ظليلين * وخلفه
خيل حمر وشقر وبلق وشهب * فقلت من هاولاء يا سيد * فقال لي الملاك المتكلم في * 9
انا اظهر لك من هم هاولاء * فاجاب الرجل القايم بين الجبال وقال لي * هاولاء هم الذين 10
ارسلهم الرب ليطوفوا الارض * فاجابوا ملاك الرب القايم بين الجبال وقالوا * طفنا كل 11
الارض * واذا كل الارض ساكنة وهادية * فاجاب ملاك الرب * ايها الرب الضابط 12
للكل الى متى لا ترحم ايروسليم ومدن يهودا التي تغافلت عنها هذه السنة السبعون *
* فاجاب الرب الضابط الكل للملاك المتكلم في بكلمات حسنة واقوال عزايية * فقال 13 14
لي الملاك المتكلم في * اصرخ قايلا * هكذا يقول الرب الضابط الكل * غرت
لايروسليم وصهيون غيرة عظيمة * وانا ازجر زجرا عظيما على الامم المجتمعين عليها * لاني 15
انا غضبت قليلا * وهم اجتمعوا للشرور * لاجل هذا هكذا يقول الرب * ارجع الى 16
ايروسليم برافة * ويبني بيتي فيها يقول الرب الضابط الكل * ويمد القياس على ايروسليم
ايضا * وقال لي الملاك المتكلم في * اصرخ قايلا * هكذا يقول الرب الضابط الكل * 17
تفرح المدن بالخيرات ايضا * ويترحم الرب على صهيون ايضا * ويرتضي بايروسليم ايضا *
* ورفعت عيني فنظرت * واذا اربعة قرون * فقلت للملاك المتكلم في * ما هي هذه يا 18 19
سيد * فقال لي * هذه القرون التي فرقت يهودا واسرايل وايروسليم * واراني الرب 20
اربعة نجارين *

Et vigeſimâ quartâ menſis undecimi, is 7
eſt menſis Sebat, anno ſecundo, tempore
Darii; fuit ſermo Domini ad Zachariam
filium Barachiæ filii Addo, prophetiam,
dicens; Videbam nocturno tempore, & 8
ecce vir quidam inſidens equo ru-
beo ſtabat inter duos montes umbroſos:
& à tergo ipſius equi rubei, rufi, verſi-
colores, & cinerei. Et dixi; Quinam 9
iſti ſunt O domine? Dixit mihi ange-
lus in me loquens, Ego indicabo tibi
quinam ſint iſti. Et reſpondit vir ille qui 10
ſtabat inter montes, dixitque mihi; Hi
ſunt quos miſit Dominus ad perluſtran-
dam terram. Tunc reſponderunt angelo 11
Domini qui ſtabat inter montes, & dixe-
runt; Perluſtravimus totam terram, &
ecce tota terra quieta eſt atque tran-
quilla. Reſpondens angelus Domini, 12
dixit; O Domine omnipotens, quouſque
non miſereberis Jeroſolymæ & urbium
Judæ, quas neglexiſti ſeptuaginta abhinc
annis? Reſpondit Dominus omnipotens 13
angelo in me loquenti verba bona, &
ſermones conſolatorios. Quare dixit mi- 14
hi angelus in me loquens; Clama di-
cens, Sic ait Dominus omnipotens; Com-
motus ſum erga Jeroſolymam & Si-
onem zelo magno: Ideò indignatione 15
magnâ iraſcor gentibus adverſus eam
congregatis: quoniam ego parum indi-
gnatus fueram, inde ipſæ congregatæ ſunt
ad mala. Idcircò ſic ait Dominus; Con- 16
vertar clementèr ad Jeruſalem, &
domus mea ædificabitur in ea, dicit
Dominus omnipotens: & extendetur
adhuc menſura ſuper Jeruſalem. Et di- 17
xit mihi angelus in me loquens, Clama
dicens; Sic ait Dominus omnipotens,
urbes bonis adhuc fruentur, & Domi-
nus adhuc miſerebitur Sionis, &
adhuc placabitur Jeroſolymæ. Deinde 18
ſublatis oculis vidi, & ecce quatuor
cornua. Quapropter dixi angelo in 19
me loquenti, Quid ſunt hæc O do-
mine? Dixit mihi; Hæc ſunt cor-
nua quæ diſſipaverunt Judam, &
Iſraelem, & Jeroſolymam. Præter- 20
ea oſtendit mihi Dominus quatuor fa-
bros:

זכריה : ב ג

Ista : dicendo ,dixit Et ?faciendū ad venientes ipsi Quid : dixi Et
21 ואמר מה אלה באים לעשות ויאמר לאמר אלה
levavit non vir ut adeò ,Jehudah ventilaverunt quæ , cornua
הקרנות אשר־זרו את־יהודה כפי־איש לא־נשא
cornua projicienda ad ,eos terrendū ad isti venerunt & :suū caput
ראשו ויבאו אלה להחריד אתם לידות את־קרנות
.eam ventilandū ad ,Jehudah terram ad cornu levantium gentium
הגוים הנשאים קרן אל־ארץ יהודה לזרותה :

CAP. II. ב

funiculus ej⁹ manu in & , vir ecce & ,vidi & ,meos oculos levavi Et
1 ואשא עיני וארא והנה־איש ובידו חבל־
metiendum Ad :me ad dixit Et ? videns tu Quò :dixi Et.mensuræ
2 מדה : ואמר אנה אתה הלך ויאמר אלי למד את־
.ejus longitudo quanta & ,ejus latitudo quanta videndum ad ,Jerusalaim
ירושלם לראות כמה־רחבה וכמה ארכה :
egrediens alius angelus et : exiens ,me in loquens angelus ecce Et
3 והנה המלאך הדבר בי יצא ומלאך אחר יצא
,istum puerum ad loquere,Curre : eum ad dixit Et .ejus occursum in
4 לקראתו : ויאמר אלו רץ דבר אל־הנער הלז
animalis & hominis multitudine præ Jerusalaim habitabitur Villæ :dicendo
לאמר פרזות תשב ירושלם מרב אדם ובהמה
murus ,Dominus dixit ,ei ero ego Et .ejus medio in
5 בתוכה : ואני אהיה־לה נאם־יהוה חומת
fugite & ,Væ ,Væ .ejus medio in ero gloriā in & : circum ignis
6 אש סביב ולכבוד אהיה בתוכה : הוי הוי ונסו
ventos quatuor juxta quia : Dominus dixit , Aquilonis terra de
מארץ צפון נאם־יהוה כי כארבע רוחות
,te erue , Sijon Væ .Dominus dixit , vos dispersi cœlorum
7 השמים פרשתי אתכם נאם־יהוה : הוי ציון המלטי
: exercituum Dominus dixit sic Quia .Babel filiæ habitatrix
8 ישבת בת־בבל : כי כה אמר יהוה צבאות
tangens quia : vos spoliantes gentes ad me misit gloriam Post
אחר כבוד שלחני אל־הגוים השללים אתכם כי הנגע
meā manum agitans ego ecce Quia .ejus oculi pupillam tangens ,vos in
9 בכם נגע בבבת עינו : כי הנני מניף את־ידי
Dominus quod scietis & : suis servis spolium erunt & , eos super
עליהם והיו שלל לעבדיהם וידעתם כי־יהוה
ego ecce quia ,Sijon filia lætare & Præconiza .me miserit exercituum
10 צבאות שלחני : רני ושמחי בת־ציון כי הנני־
adhærebunt Et .Dominus ait , tui medio in habitabo & ,veniens
11 בא ושכנתי בתוכך נאם־יהוה : ונלוו
:populum in mihi erunt & , illa die in Dominum ad multæ gentes
גוים רבים אל־יהוה ביום ההוא והיו לי לעם
exercituum Dominus quod scies & : tui medio in habitabo &
ושכנתי בתוכך וידעת כי־יהוה צבאות
Jehudah Dominus possidebit Et .te ad me miserit
12 שלחני אליך : ונחל יהוה את־יהודה
.Jerusalaim in adhuc eliget & ,sanctitatis humum super suam partem
חלקו על אדמת הקדש ובחר עוד בירושלם :
habitaculo de est excitatus quia : Domini faciebus à caro omnis Sile
13 הס כל־בשר מפני יהוה כי נעור ממעון
.suæ sanctitatis
קדשו :

CAP. III. ג

angeli facies ad stantem,magnum sacerdotē Jehosuah mihi ostendit Et
1 ויראני את־יהושע הכהן הגדול עמד לפני מלאך
.ei adversandum ad ,ejus dexteram super stans Satan & : Domini
יהוה והשטן עמד על־ימינו לשטנו :

Versio VULG. LAT.

21 Et dixi; Quid isti veniunt facere? Qui ait, dicens; Hæc sunt cornua quæ ventilaverunt Judam per singulos viros, & nemo eorum levavit caput suum: & venerunt isti deterrere ea, ut dejiciant cornua gentium, quæ levaverunt cornu super terram Juda ut dispergerent eam.

CAP. II.

1 ET levavi oculos meos, & vidi: & ecce vir, & in manu ejus funiculus mensorum. 2 Et dixi; Quò tu vadis? Et dixit ad me; Ut metiar Jerusalem, & videam quanta sit latitudo ejus, & quanta longitudo ejus. 3 Et ecce angelus, qui loquebatur in me, egrediebatur, & angelus alius egrediebatur in occursum ejus. 4 Et dixit ad eum; Curre, loquere ad puerum istum, dicens; Absque muro habitabitur Jerusalem, præ multitudine hominum & jumentorum in medio ejus. 5 Et ego ero ei, ait Dominus, murus ignis in circuitu: & in gloria ero in medio ej⁹. 6 O, ô fugite de terra Aquilonis, dicit Dominus, quoniam in quatuor ventos cœli dispersi vos, dicit Dominus. 7 O Sion, fuge quæ habitas apud filiā Babylonis: 8 Quia hæc dicit Dominus exercituum; Post gloriam misit me ad gentes, quæ spoliaverunt vos: qui enim tetigerit vos, tangit pupillam oculi mei: 9 Quia ecce ego levo manum meam super eos, & erunt prædæ his, qui serviebant sibi: & cognoscetis quia Dominus exercituum misit me. 10 Lauda & lætare, filia Sion: quia ecce ego venio, & habitabo in medio tui, ait Dominus. 11 Et applicabuntur Gentes multæ ad Dominū in die illa, & erunt mihi in populum, & habitabo in medio tui: & scies quia Dominus exercituum misit me ad te. 12 Et possidebit Dominus Judam partem suam in terra sanctificata: & eliget adhuc Jerusalem. 13 Sileat omnis caro à facie Domini: quia consurrexit de habitaculo sancto suo.

CAP. III.

1 ET ostendit mihi Dominus Jesum sacerdotem magnum stantem coram angelo Domini: & Satan stabat à dexteris ejus ut adversaretur ei.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

21 Καὶ εἶπα, Τί οὗτοι ἔρχονται ποιῆσαι; καὶ εἶπε (τ), Ταῦτα τὰ κέρατα τὰ διασκορπίσαντα τὸν (υ) Ἰούδα καὶ τὸν Ἰσραὴλ κατέαξαν, καὶ οὐδεὶς αὐτῶν ἦρε κεφαλήν· καὶ (φ) ἐξήλθοσαν οὗτοι τοῦ ὀξῦναι αὐτὰ εἰς χεῖρας αὐτῶν, τὰ (χ) τέσσαρα κέρατα, τὰ ἔθνη τὰ ἐπαιρόμενα κέρας ἐπὶ τὴν γῆν κυρίου, τοῦ διασκορπίσαι αὐτήν.

21 *Et dixi; Quid isti veniunt facere? Et dixit; Hæc sunt cornua, quæ disperserunt Judam, & Israël confregerunt: & nullus eorum levavit caput. Et egressi sunt isti, ut exacuant ea in manibus suis, quatuor cornua, gentes, quæ levaverunt cornu super terram Domini, ut dispergerent eam.*

MS.A. (τ) πρός με, (υ) Ἰούδαν (φ) εἰσῆλθον (χ) τέσσερα

ΚΕΦ. β΄.

1 ΚΑὶ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ ἀνήρ, καὶ ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ σχοινίον γεωμετρικόν. 2 Καὶ εἶπα πρὸς αὐτόν, Ποῦ σὺ πορεύῃ; καὶ εἶπε πρός με, Διαμετρῆσαι τὴν Ἱερουσαλήμ, τοῦ ἰδεῖν πηλίκον τὸ πλάτος αὐτῆς ἐστι, καὶ πηλίκον τὸ μῆκος. 3 Καὶ ἰδοὺ ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ εἱστήκει, καὶ ἄγγελος ἕτερος ἐξεπορεύετο εἰς (α) συνάντησιν αὐτῷ, 4 Καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, λέγων, Δράμε, καὶ λάλησον πρὸς τὸν νεανίαν ἐκεῖνον, λέγων, Κατακάρπως κατοικηθήσεται Ἱερουσαλὴμ ἀπὸ πλήθους ἀνθρώπων καὶ κτηνῶν (β) ἐν μέσῳ αὐτῆς· 5 Καὶ ἐγὼ ἔσομαι αὐτῇ, (γ) λέγει κύριος, τεῖχος πυρὸς κυκλόθεν, καὶ εἰς δόξαν ἔσομαι ἐν μέσῳ (δ) αὐτῆς. 6 Ὦ ὢ φεύγετε ἀπὸ γῆς Βορρᾶ, λέγει κύριος· διότι ἐκ τῶν τεσσάρων ἀνέμων τοῦ οὐρανοῦ συνάξω ὑμᾶς, λέγει κύριος, 7 Εἰς Σιὼν, ἀνασώζεσθε οἱ κατοικοῦντες θυγατέρα Βαβυλῶνος. 8 Διότι τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ὀπίσω δόξης ἀπέσταλκέ με ἐπὶ τὰ ἔθνη τὰ σκυλεύσαντα ὑμᾶς, διότι ὁ ἁπτόμενος ὑμῶν ὡς ὁ ἁπτόμενος τῆς κόρης τοῦ ὀφθαλμοῦ αὐτοῦ. 9 Διότι ἰδοὺ ἐγὼ ἐπιφέρω τὴν χεῖρά μου ἐπ' αὐτοὺς, καὶ ἔσονται σκῦλα τοῖς (ε) δουλεύουσιν αὐτοῖς, καὶ γνώσεσθε (ζ) ὅτι κύριος παντοκράτωρ ἀπέσταλκέ με. 10 Τέρπου καὶ εὐφραίνου θύγατερ Σιών, διότι (η) ἰδοὺ ἐγὼ ἔρχομαι, καὶ κατασκηνώσω ἐν μέσῳ σου, λέγει κύριος. 11 Καὶ καταφεύξονται ἔθνη πολλὰ ἐπὶ τὸν κύριον ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ ἔσονται αὐτῷ εἰς λαὸν, καὶ κατασκηνώσουσιν ἐν μέσῳ σου, καὶ ἐπιγνώσῃ ὅτι κύριος παντοκράτωρ (˜) ἐξαπέσταλκέ με πρὸς σέ. 12 Καὶ κατακληρονομήσει κύριος τὸν Ἰούδαν (θ) τὴν μερίδα αὐτοῦ ἐπὶ τὴν γῆν τὴν ἁγίαν· καὶ αἱρετιεῖ ἔτι τὴν Ἱερουσαλήμ. 13 Εὐλαβείσθω πᾶσα σὰρξ ἀπὸ προσώπου κυρίου, (ι) ὅτι ἐξεγήγερται ἐκ νεφελῶν ἁγίων αὐτοῦ.

CAP. II.

1 *ET levavi oculos meos, & vidi: & ecce vir, & in manu ejus funiculus geometricus.* 2 *Et dixi ad eum; Quò tu vadis? Et dixit ad me; Ut dimetiar Hierusalē, ut videam, quanta sit latitudo ejus, & quanta longitudo.* 3 *Et ecce angelus, qui loquebatur in me, stabat: & angelus alius egrediebatur in occursum ejus.* 4 *Et dixit ad eum, dicens; Curre, & loquere adolescentulo illi, dicens; (a) Frugiferè habitabitur Hierusalem, à multitudine hominum, & jumentorum in medio ejus:* 5 *Et ego ero illi, dicit Dominus, murus ignis in circuitu, & in gloriam ero in medio ejus.* 6 *O, ô fugite de terra Aquilonis, dicit Dominus: quia de quatuor ventis cœli congregabo vos, dicit Dominus,* 7 *In Sion, salvamini, qui habitatis filiam Babylonis.* 8 *Hæc enim dicit Dominus omnipotens; Post gloriam misit me ad gentes, quæ spoliaverunt vos: quia, qui tetigerit vos, quasi qui tangat pupillam oculi ejus.* 9 *Quia ecce ego infero manum meam super eos: & erunt prædæ iis qui serviebant eis. Et cognoscetis, quia Dominus omnipotens misit me.* 10 *Lætare, & gaude, filia Sion: quia ecce ego venio, & habitabo in medio tui, dicit Dominus.* 11 *Et (b) confugient gentes multæ ad Dominum in die illa: & erunt ei in populum, & habitabunt in medio tui: & (c) scies, quoniam Dominus omnipotens misit me ad te.* 12 *Et possidebit Dominus Judam (d) parte suâ in terra sancta: & ( ) eliget adhuc Hierusalem.* 13 *Timeat omnis caro à facie Domini: quoniam surrexit de nubibus sanctis suis.*

MS. A. (α) ἀπάντησιν αὐτῷ, (β) τῶν ἐμ μέσῳ (γ) φησὶν (δ) αὐτῇ.
(ε) δουλεύσασιν (ζ) διότι (η) ἰδοὺ ἔρχομαι, (˜) ἀπέσταλκέν (θ) καὶ τὴν μερίδα
(ι) διότι

ΚΕΦ. γ΄.

1 ΚΑὶ ἔδειξέ μοι κύριος (α) τὸν Ἰησοῦν τὸν ἱερέα τὸν μέγαν, ἑστῶτα πρὸ προσώπου ἀγγέλου κυρίου, καὶ ὁ διάβολος εἱστήκει ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ, (¨) τοῦ ἀντικεῖσθαι αὐτῷ.

CAP. III.

1 *ET ostendit mihi Dominus Jesum sacerdotem magnum, stantem ante faciem angeli Domini: & diabolus stabat à dextris ejus, ut adversaretur ei.*

MSA. (α) Ἰησοῦν (¨) ἀντικεῖσθαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

ואמרית מה אלין אתן למעבד ואמר למימר אלין מלכותא דבדרא ית אנש יהודה 21
ולא שבקא להלכא בקומה זקופא ואתו אלין לאזעא יתהון למתבר ית מלכות עממיא
דנטלא זין על ארעא דבית יהודה לאגליותה :

ב

וזקפית עיני וחזית והא גברא ובידיה חוט דמשחתא : ואמרית לאן את אזיל ואמר לי 1 2
למשח ית ירושלם למחזי כמא פותיה וכמא אורכה : והא מלאכא דמלל עמי נפק 3
ומלאכא אוחרנא נפק לקדמותיה : ואמר ליה רהוט מלל עם עולמא דיכי למימר 4
פצחין תיתב ירושלם מסגי אנשא ובעירא בגוה : ומימרי יהי לה אמר יי כשור דאשא 5
מקיף לה סחור סחור וביקר אשרי שכנתי בגוה : אכלו למבדריא ואמרו להון 6
אתכנשו מארעא צפונא אמר יי ארי כארבע רוחי שמיא בדרית יתכון אמר יי : אכלו 7
לכנשתא דציון ואמרו לה אשתזבי ואתא דיתבא במדינת בבל : ארי כדנן אמר יי 8
צבאות בתר יקרא דאמיר לאיתאה עליכון שלחני על עממיא דבזזין יתכון ארי דמנזק
בכון כד מושיט ידיה למקרב בגלגלי עינוהי : ארי הא אנא מרים ית מחת גבורתי 9
עליהון ויהון עדי לפלחיהון ותדעון ארי יי צבאות שלחני : בועי והדי כנשתא דציון 10
ארי הא אנא מתגלי ואשרי שכנתי בגויך אמר יי : ויתוספון עממין סגיאין על עמיה 11
דיי בעדנא ההיא ויהון קדמי לעם ואשרי שכנתי בגויך ותדעון ארי יי צבאות שלחני
לאתנבאה עלך : ויחסין יי לדבית יהודה חולקהון על ארעא דקודשא ויתרעי עוד 12
בירושלם : ספו כל רשיעיא מן קדם יי ארי אתגלי ממדור קודשיה : 13

ג

ואחזיני ית יהושע כהנא רבא קאים קדם מלאכא דיי וחטאה כאים על ימיניה 1
לאסטנא ליה :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

21 Et dixi, Quid isti acturi veniunt? & ait, dicendo, Hæc sunt regna quæ dispersere viros Judæos, nec [*virum*] permiserunt erectum incedere: veniunt autem ipsi ut commoveant ea, & ut conterant regna populorum quæ tulêre arma in terram domus Jehuda, ad deportandam eam in exilium.

CAP. II.

1 ERexi verò oculos meos & vidi, & ecce vir, cujus in manu funiculus mensorius. 2 Cui dixi, Quò te confers? & dixit mihi Mensuratum Jerusalem, ut videam quanta sit latitudo ejus, quantáque longitudo. 3 Ecce autem angelus qui me alloquebatur, egrediebatur, in cujus occursum alius prodibat angelus. 4 Et dixit ei, Curre, loquere cum juvene isto, dicens: Vicatim habitabitur Jerusalem præ multitudine hominum jumentorúmque in medio ejus. 5 Verbúmque meum erit ei, dicit Dominus, veluti murus igneus illam per circuitum ambiens, atq; gloriosè majestatem meam in medio ejus reponā. 6 Proclamate dispersis, & dicite eis, Congregamini de terra Aquilonari, dicit Dominus: nam in quatuor cœli ventos dispersi vos, ait Dominus. 7 Clamate cœtui Sion, & dicite ei, Evade & veni qui habitas in provincia Babylonis. 8 Etenim sic dicit Dominus exercituum, Post gloriam quam vobis adducturum se dixit, misit me ad populos qui vos diripiunt: quisquis enim detrimentum infert vobis, peræquè ac si manum suam extendat ut tangat pupillam oculi sui. 9 Ecce enim tollo plagam potentiæ meæ super eos, & patebunt prædæ famulis suis; scietísque certò Dominum exercituum me misisse. 10 Exulta & lætare cœtus Sion, ecce enim revelabor & collocabo majestatem meam in medio tui, dicit Dominus. 11 Et adjicientur populi multi plebi Domini tunc temporis, qui coram me in populum erunt, ponámque meam majestatem in tui medium, scietísque quòd Dominus exercituum me miserit ad *vaticinandum* ad te. 12 Atque in hæreditatem donabit Dominus domui Juda partem suam in terra sanctitatis, adhúcque gratam habebit Jerusalem. 13 Dispereant omnes impii à conspectu Domini, quoniam de habitaculo sanctitatis suæ apparebit.

CAP. III.

1 OStendit autem mihi Josue sacerdotem magnum stantem coram angelo Domini, ad cujus dexteram stabat adversarius, ut ei adversaretur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

*ܘܐܡܪܬ ܡܢܐ ܐܬܝܢ ܗܠܝܢ ܠܡܥܒܕ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܠܝܢ ܩܪܢܬܐ ܕܒܕܪ ܠܝܗܘܕܐ. ܐܝܟ 21
ܦܘܡܗ ܕܓܒܪܐ ܕܠܐ ܐܪܝܡ ܪܫܗ. ܘܐܬܘ ܗܠܝܢ ܠܡܙܝܥܘ ܐܢܝܢ. ܘܠܡܫܕܝܘ ܩܪܢܬܐ
ܕܥܡܡܐ. ܕܡܪܝܡܝܢ ܗܘܘ ܩܪܢܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܝܗܘܕܐ ܠܡܒܕܪܘܬܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

*ܘܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ ܓܒܪܐ. ܘܒܐܝܕܗ ܚܒܠܐ ܕܡܫܘܚܬܐ. * ܘܐܡܪܬ ܠܗ. ܠܐܝܟܐ 1 2
ܐܙܠ ܐܢܬ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܠܡܫܚܘܗ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܘܠܡܚܙܐ ܟܡܐ ܐܘܪܟܗ. ܘܟܡܐ ܦܬܝܗ. *ܘܢܦܩ 3
ܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܘܡܠܐܟܐ ܐܚܪܢܐ ܢܦܩ ܠܐܘܪܥܗ. * ܘܐܡܪ ܠܗ. ܪܗܛ ܐܡܪ ܠܥܠܝܡܐ 4
ܗܘ. ܕܦܨܝܠܬܐ ܬܬܥܡܪ ܐܘܪܫܠܡ. ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܒܢܝܢܫܐ ܘܕܒܥܝܪܐ ܕܒܓܘܗ. * ܘܐܢܐ ܐܗܘܐ 5
ܒܓܘܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܫܘܪܐ ܕܢܘܪܐ. ܘܠܫܘܒܚܐ ܐܗܘܐ ܒܓܘܗ. * ܐܘ ܐܘ. ܥܪܘܩܘ 6
ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܒܐܪܒܥ ܪܘܚܐ ܕܫܡܝܐ ܒܕܪܬܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܐܘ 7
ܨܗܝܘܢ ܐܫܬܘܙܒܝ. ܥܡܘܪܬܐ ܕܒܪܬ ܒܒܠ. * ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܒܬܪ 8
ܐܝܩܪܐ ܫܕܪܢܝ. ܥܠ ܥܡܡܐ ܕܒܙܘ ܠܟܘܢ. ܘܡܢ ܕܩܪܒ ܠܟܘܢ. ܠܒܒܬܐ ܗܘ ܕܥܝܢܗ ܩܪܒ.
* ܡܛܠ ܕܗܐ ܐܢܐ ܡܪܝܡ ܐܢܐ ܐܝܕܝ ܥܠܝܗܘܢ. ܘܢܗܘܘܢ ܒܙܬܐ ܠܥܒܕܝܗܘܢ. ܘܬܕܥܘܢ 9
ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܕܪܢܝ. * ܫܒܚܝ ܘܚܕܝ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܡܛܠ ܕܗܐ ܐܢܐ ܐܬܐ. ܘܐܫܪܐ ܐܢܐ 10
ܒܓܘܟܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. * ܘܢܬܠܘܘܢ ܥܡܡܐ ܣܓܝܐܐ ܠܡܪܝܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܗ 11
ܠܥܡܐ. ܘܢܫܪܐ ܒܓܘܟܝ. ܘܬܕܥܝܢ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܫܕܪܢܝ ܠܘܬܟܝ. * ܘܢܐܪܬ ܡܪܝܐ ܠܝܗܘܕܐ 12
ܡܢܬܗ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܩܘܕܫܗ. ܘܢܬܪܥܐ ܬܘܒ ܒܐܘܪܫܠܡ. *ܘܢܕܚܠ ܟܠ ܒܣܪ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. 13
ܕܐܬܬܥܝܪ ܡܢ ܡܕܝܪܐ ܕܩܘܕܫܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܓ *

*ܘܚܘܝܢܝ ܠܝܫܘܥ ܟܘܡܪܐ ܪܒܐ. ܟܕ ܩܐܡ ܩܕܡ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܣܛܢܐ ܩܐܡ ܗܘܐ 1
ܡܢ ܝܡܝܢܗ ܕܢܣܛܢܝܘܗܝ.

Et cùm dixiſſem, Quid veniunt iſti facturi? 21
Dixit mihi, Ad commovendũ iſta cornua quæ
diſperſerunt Judam velut os viri qui non extulit
caput ſuum, hi venerunt; & ad evellendum
cornua gentiũ quæ elevabant cornu contra
terram Judæ ad diſſipandum illam.

CAP. II.

Rurſum ſublatis oculis vidi virũ manu tenentem 1
funiculum menſorium: Cui cùm dixiſſem, 2
Quò vadis? Reſpondit mihi, ad metiendum
Jeruſalem, & videndum quanta ſit
longitudo ejus, & quanta latitudo ipſius. Tum 3
egreſſo angelo qui loquebatur in me, angelus
alter proceſſit obviàm ei: Et dixit illi; Curre, 4
& dic juveni illi; In turribus habitabit Jeruſalem
propter multitudinem hominum &
jumentorum quæ erunt in ea. Et ego ero in 5
medio ipſius, dicit Dominus, tanquam murus
ignis, & ad gloriam ero in medio ipſius. Io, 6
io, fugite de terra Aquilonis, dicit Dominus;
quoniam ad quaternos cœli ventos diſperſeram
vos, dicit Dominus. Heus Sion evade, 7
hoſpita apud filiam Babylonis. Sic enim dicit 8
Dominus potentiſſimus, Ad proſequendum
honorem miſit me contra gentes quæ
vos prædabantur: & qui tetigerit vos, pupillam
ſanè oculi ejus tanget. Nam ecce ego 9
ſublaturus ſum manum meam contra illas, &
erunt prædæ opera earum: & agnoſcetis
quòd Dominus potentiſſimus me miſit. Cane 10
& lætare filia Sionis, quia ecce ego venturus
ſum & habitaturus in medio tui, dicit
Dominus. Et adhærebunt Domino gentes 11
multæ eo die erúntque ei populus: & habitabit
in medio tui, & agnoſces Dominum potentiſſimum
me ad te miſiſſe. Et poſſidebit 12
Dominus Judam portionem ſuam in terra
ſancta ſua, & gratam habebit rurſùs Jeroſolymam.
Et timebit omnis caro à conſpectu 13
Domini, quòd evigilârit ab excelſo ſanctitatis
ſuæ.

CAP. III.

Poſtea oſtendit mihi Jeſum ſummum ſacerdotem 1
ſtantē coram angelo Dñi, & Satanam
ſtantem ad dexteram ejus ut noceret ei.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

*فقلت ماذا جاء هولاء ان يصنعوا * فقال لي * هذه القرون التي فرقت يهودا وايروسليم هبطوا * 21
وليس واحد منهم رفع راسا * فدخلوا هاولاء ليحركوها بايديهم * الاربعة قرون هم الامم التي رفعت
قرنا على ارض الرب لتفرقها *

* الفصل الثاني *

*ورفعت عيني ونظرت * واذا رجل وفي يده حبل المساحة *فقلت له الي اين تمضي انت * فقال لي * 1 2
لاقيس ايروسليم * لانظر مقدار عرضها ما هو * ومقدار طولها * واذا الملاك المتكلم في واقف * 3
وملاك اخر خرج لاستقباله * وقال له قايلا * اعد وتكلم مع ذلك الشاب قايلا * بثمر تسكن 4
ايروسليم من كثرة الناس والبهايم الذين في وسطها * وانا اصير لها قال الرب سور نار 5
من حولها * واصير لهم مجدا * آه آه * اهربوا من ارض الجربياء يقول الرب * من اجل اني من 6
اربعة رياح السماء اجمعكم يقول الرب الي صهيون * لتخلصوا يا سكان ابنة بابل * من اجل 7 8
انه هكذا يقول الرب الضابط الكل * خلف المجد ارسلني على الامم التي غنمتكم * من اجل ان
لامسكم مثل لامس حدقة عينه * من اجل اني ها انا ارفع يدي عليهم * ويصيرون غنايم 9
للذين استعبدوهم * وتعلمون ان الرب الضابط الكل ارسلني * اطربي وسري يا ابنة صهيون * من 10
اجل اني ها انا اتي واسكن في وسطك يقول الرب * وتهرب الامم الكثيرة الي الرب في ذلك اليوم * 11
ويصيرون له شعبا * ويسكنون في وسطك * وتعلمين ان الرب الضابط الكل ارسلني اليك * ويورث 12
الرب يهودا نصيبه على الارض المقدسة * ويرتضي الرب بايروسليم * ليرتاع كل ذي لحم من 13
وجه الرب * من اجل انه قام من سحبه المقدسة *

* الفصل الثالث *

* الاصحاح السادس والعشرون * وهو الثاني من النبوة *

* واراني الرب يشوع الكاهن العظيم قايما امام وجه ملاك الرب * والشيطان قايم عن 1
يمينه ليضاده *

Et dixi, Quid veniunt hi factum? Dixit 21
mihi; Cornua iſta quæ diſſipaverunt
Judam & Jeroſolymam, corruerunt, nullumque
eorum caput extulit: proinde
ingreſſi ſunt iſti ad illa ſuis manibus concutienda.
Quatuor illa cornua, ſunt eæ
gentes quæ cornu levaverunt contra terram
Domini ad diſſipandum eam.

CAP. II.

Sublatis iterum oculis vidi, & ecce 1
vir quidam manu ſuâ portans *funiculum*
menſorium. Huic dicenti mihi; Quò vadis? 2
Dixit; Ad metiendum Jeruſalem,
ut videam quanta ſit latitudo ejus, &
quanta longitudo. Dumque angelus in 3
me loquens, ſtaret, alius angelus egreſſus
eſt in occurſum ejus: Et dixit ei, 4
dicens; Curre, & alloquere juvenem
illum, dicens; Frugiferè habitabit Jeruſalem
propter multitudinem hominum
& jumentorum quæ erunt in ipſa. Et 5
ego fiam ipſi, ait Dominus, murus ignis
circumquaque; & ero ipſis gloriæ. Ah, 6
ah, fugite de terra Aquilonari, dicit
Dominus: quoniam è quatuor cœli ventis
congregabo vos, dicit Dominus ad
Sionem. Eripite vos O habitatores filiæ 7
Babelis. Nam ita dicit Dominus omnipotens, 8
Poſt gloriam miſit me contra
gentes quæ deprædatæ ſunt vos: tangens
enim vos, eſt quaſi tangens pupillam
oculi ejus. Ecce enim ego levabo ſuper 9
eos manum meam, eruntque in prædam
iis quos ſervitute premebant: & ſcietis
quòd Dominus omnipotens miſerit me.
Concine, et exulta O filia Sionis, quoniam 10
ecce ego veniam et habitabo in medio
tui, dicit Dominus: Et confugient gentes 11
multæ ad Dominum eo die, eruntque
ei populus, et habitabunt in medio tui:
et ſcies quòd Dominus omnipotens me
miſerit ad te. Efficietque Dominus ut 12
poſſideat Juda portionem ſuam ſuper
terra ſancta, et placabitur Dominus erga
Jeruſalem. Timeat omnis carne præditus 13
à facie Domini; quoniam ſurrexit
è nubibus ſuis ſanctis.

CAP. III.

Textus vigeſimus ſextus, hujus
autem Prophetiæ ſecundus.

Deinde oſtendit mihi Dominus Jeſum 1
ſacerdotem maximum ſtantem ante
faciem angeli Domini, et Satanam
ſtantem à dextera ipſius ut noceret
ipſi.

זכריה: ד

,Satan te in Dominus Increpet : Satan ad Dominus dixit Et
2 ויאמר יהוה אל־השטן יגער יהוה בך השטן
torris hic nonne : Jerusalaim *in eligens* , te in Dominus increpet &
ויגער יהוה בך הבחר בירושלם הלוא זה אוד
stans &,sordidis vestibus indutus erat Jehosuah Et ? igne de erutus
3 מצל מאש׃ ויהושע היה לבוש בגדים צואים ועמד
,*ejus facies ad* stantes ad dixit &,respondit Et .*angeli facies ad*
4 לפני המלאך׃ ויען ויאמר אל־העמדים לפניו
: eum ad dixit Et .eo *desuper* sordida vestimenta Removete : dicendo
לאמר הסירו הבגדים הצאים מעליו ויאמר אליו
.mutatoriis te induere &,tuā iniquitatē te *desuper* feci transire,Vide
ראה העברתי מעליך עונך והלבש אתך מחלצות׃
cidarim posuerunt Et .ejus caput super mundam cidarim Ponant :dixi Et
5 ואמר ישימו צניף טהור על־ראשו וישימו הצניף
Domini angelus Et .vestibus eum induerunt & ,ejus caput super mundam
הטהור על־ראשו וילבשהו בגדים ומלאך יהוה
: dicendo ,Jehosuah *in* DOMINI angelus contestabatur Et .*stans*
6 עמד׃ ויעד מלאך יהוה ביהושע לאמר׃
si &,ambulaveris meis viis in Si : exercituum Dominus dixit Sic
7 כה־אמר יהוה צבאות אם־בדרכי תלך ואם
,meam domum judicabis tu etiam &,custodieris meā custodiā
את־משמרתי תשמר וגם־אתה תדין את־ביתי
inter *itinera* tibi dabo & : mea atria custodies etiam &
וגם תשמר את־חצרי ונתתי לך מהלכים בין
,tu , magne sacerdos Jehosuah nunc Audi .ipsos stantes
8 העמדים האלה׃ שמע־נא יהושע הכהן הגדול אתה
quia : *ipsi portenti* viri quia *: tuas facies ad habitantes* ,tui *socii* &
ורעיך הישבים לפניך כי־אנשי מופת המה כי־
lapis ecce Quia .germen meum servum *adducens ego* ecce
9 הנני מביא את־עבדי צמח׃ כי הנה האבן
: oculi septem unum lapidem super ,Jehosuah *facies ad dedi* quem
אשר נתתי לפני יהושע על־אבן אחת שבעה עינים
, exercituum Dominus dixit , ejus *apertionem aperiens ego* ecce
הנני מפתח פתחה נאם יהוה צבאות
die In .una die in illius terræ iniquitatem removebo &
10 ומשתי את־עון הארץ־ההיא ביום אחד׃ ביום
suum *socium ad vir* vocabitis ,exercituum Dominus dixit , illa
ההוא נאם יהוה צבאות תקראו איש אל־רעהו
.ficum subter *ad* & ,vitem subter *ad*
אל־תחת גפן ואל־תחת תאנה׃

CAP. IV. ד

qui virum sicut me suscitavit & ;me in *loquens* angelus est reversus Et
1 וישב המלאך הדבר בי ויעירני כאיש אשר־
: dixi Et ? *videns* tu Quid : me ad dixit Et .suo somno è suscitatur
2 יעור משנתו׃ ויאמר אלי מה אתה ראה ויאמר
super lenticula & ,*ipsum* totum aureum candelabrum ecce & , Vidi
ראיתי והנה מנורת זהב כלה וגלה על־
septem & , Septem .illud super ejus lucernæ septem & ,ejus caput
ראשה ושבעה נרתיה עליה שבעה ושבעה
olivæ duæ Et .ejus caput super quæ , lucernis infusoria
3 מוצקות לנרות אשר על־ראשה׃ ושנים זיתים
.ejus sinistram *super una* & , lenticulæ dextera à una : illud super
עליה אחד מימין הגלה ואחד על־שמאלה׃
Quid : dicendo ,me in *loquentem* angelum ad dixi & ,respondi Et
4 ואען ואמר אל־המלאך הדבר בי לאמר מה
dixit & , me in *loquens* angelus respondit Et ? Domine hæc
5 אלה אדני׃ ויען המלאך הדבר בי ויאמר
.mi Domine Non : dixi & ? hæc *ista* quid nôsti Nonne : me ad
אלי הלוא ידעת מה־המה אלה ואמר לא אדני׃

Versio VULG. LAT.

2 Et dixit Dominus ad Satan; Increpet Dominus in te, Satan: & increpet Dominus in te, qui elegit Jerusalem: numquid non iste torris est erutus de igne? 3 Et Jesus erat indutus vestibus sordidis: & 4 stabat ante faciem angeli. Qui respondit, & ait ad eos qui stabant coram se, dicens; Auferte vestimenta sordida ab eo. Et dixit ad eum; Ecce abstuli à te iniquitatem tuam, & indui te mutatoriis. 5 Et dixit; Ponite cidarim mundā super caput ejus. Et posuerunt cidarim mundam super caput ejus, & induerunt eum vestibus: & an6gelus Domini stabat. Et contestabatur angelus Domini Jesum, di7cens; Hæc dicit Dominus exercituum; Si in viis meis ambulaveris, & custodiam meam custodieris: tu quoque judicabis domum meā, & custodies atria mea, & dabo tibi ambulantes de his 8 qui nunc hîc assistunt. Audi, Jesu sacerdos magne, tu & amici tui, qui habitant coram te, quia viri portendentes sunt: ecce enim ego ADDUCAM SERVUM 9 MEUM ORIENTEM. Quia ecce lapis, quem dedi coram Jesu: super lapidem unum septem oculi sunt: ecce ego cælabo sculpturam ejus, ait Dominus exercituum: & auferam iniquitatē ter10ræ illius in die una. In die illa, dicit Dominus exercituum, vocabit vir amicum suum subter vitē, & subter ficum.

CAP. IV.

1 ET reversus est angelus, qui loquebatur in me, & suscitavit me, quasi virū qui suscitatur de somno 2 suo. Et dixit ad me; Quid tu vides? Et dixi; Vidi, & ecce candelabrum aureum totum, & lampas ejus super caput ipsius, & septem lucernæ ejus super illud: & septem infusoria lucernis, quæ erant 3 super caput ejus. Et duæ olivæ super illud, una à dextris lampa4dis, & una à sinistris ejus. Et respondi, & aio ad angelum, qui loquebatur in me, dicens; Quid sunt 5 hæc, domine mi? Et respondit angelus, qui loquebatur in me, & dixit ad me; Numquid nescis quid sunt hæc? Et dixi; Non, domine mi.

Versio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Translatione LATINA.

2 Καὶ εἶπε κύριος πρὸς τὸν διάβολον, Ἐπιτιμήσαι κύριος ἐν σοὶ διάβολε, καὶ ἐπιτιμήσαι κύριος ἐν σοὶ ὁ ἐκλεξάμενος τὴν Ἱερουσαλήμ· οὐκ ἰδοὺ τοῦτο ὡς δαλὸς ἐξεσπασμένος ἐκ πυρός; 3 Καὶ Ἰησοῦς ἦν ἐνδεδυμένος ἱμάτια ῥυπαρὰ, καὶ εἱστήκει πρὸ προσώπου τοῦ ἀγγέλου. 4 Καὶ ἀπεκρίθη καὶ εἶπε πρὸς τοὺς ἑστηκότας πρὸ προσώπου αὐτοῦ, λέγων, Ἀφέλετε τὰ ἱμάτια τὰ ῥυπαρὰ ἀπ' αὐτοῦ· καὶ εἶπε πρὸς αὐτὸν, Ἰδοὺ ἀφήρηκα τὰς ἀνομίας σου· καὶ ἐνδύσατε αὐτὸν ποδήρη, 5 Καὶ ἐπίθετε κίδαριν καθαρὰν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν (β) αὐτοῦ. καὶ ἐπέθηκαν κίδαριν καθαρὰν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καὶ περιέβαλον αὐτὸν ἱμάτια. καὶ ὁ ἄγγελος κυρίου εἱστήκει. 6 Καὶ διεμαρτύρατο ὁ ἄγγελος κυρίου (γ) πρὸς 7 Ἰησοῦν, λέγων, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἐὰν ταῖς ὁδοῖς μου πορεύῃ, καὶ ἐν τοῖς προστάγμασί μου (δ) φυλάξῃ, καὶ σὺ διακρινεῖς τὸν οἶκόν μου· καὶ ἐὰν (ε) διαφυλάσσῃς τὴν αὐλήν μου, καὶ δώσω σοι ἀναστρεφομένους 8 ἐν μέσῳ τῶν ἑστηκότων τούτων. Ἄκουε δὴ Ἰησοῦ ὁ ἱερεὺς ὁ μέγας, σὺ καὶ οἱ πλησίον σου (ζ) οἱ καθήμενοι πρὸ προσώπου (η), διότι ἄνδρες τερατοσκόποι εἰσὶ, διότι ἰδοὺ 9 ἐγὼ ἄγω τὸν δοῦλόν μου Ἀνατολήν. Διότι ὁ λίθος, ὃν ἔδωκα πρὸ προσώπου (θ) τοῦ Ἰησοῦ, ἐπὶ τὸν λίθον τὸν ἕνα ἑπτὰ ὀφθαλμοί εἰσιν. ἰδοὺ ἐγὼ ὀρύσσω βόθρον, λέγει κύριος παντοκράτωρ, καὶ ψηλαφήσω πᾶσαν τὴν ἀδικίαν τῆς γῆς ἐκείνης ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ. 10 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος παντοκράτωρ, (ι) συγκαλέσετε ἕκαστος τὸν πλησίον αὐτοῦ ὑποκάτω ἀμπέλου, καὶ ὑποκάτω συκῆς.

MS. A. (β) αὐτοῦ. καὶ περιέβαλον αὐτὸν ἱμάτια, καὶ ἐπέθηκαν κίδαριν καθαρὰν ἐπὶ τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ. καὶ ὁ (γ) λέγων πρὸς Ἰησοῦν, Τάδε (δ) φυλάσσῃ, (ε) φυλάξῃς καίγε τὴν (ζ) καὶ οἱ (η) σου, (θ) Ἰησοῦ, (ι) συγκαλέσατε

ΚΕΦ. δʹ.

1 ΚΑὶ ἐπέστρεψεν ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, καὶ ἐξήγειρέ με ὃν τρόπον ὅταν (α) ἐξ2εγερθῇ ἄνθρωπος ἐξ ὕπνου αὐτοῦ, Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Τί σὺ βλέπεις; καὶ (β) εἶπα, Ἑώρακα, καὶ ἰδοὺ λυχνία χρυσῆ ὅλη, καὶ τὸ λαμπάδιον ἐπάνω αὐτῆς, καὶ ἑπτὰ λύχνοι ἐπάνω αὐτῆς, καὶ ἑπτὰ (γ) ἐπαρυστρίδες τοῖς λύχνοις τοῖς ἐπάνω αὐτῆς, 3 Καὶ δύο ἐλαῖαι ἐπάνω αὐτῆς, μία ἐκ δεξιῶν τοῦ λαμπαδίου αὐτῆς, καὶ μία ἐξ εὐω4νύμων. Καὶ ἐπηρώτησα, καὶ εἶπα πρὸς τὸν ἄγγελον τὸν λαλοῦντα ἐν (δ) ἐμοὶ, λέ5γων, Τί ἐστι ταῦτα κύριε; Καὶ ἀπεκρίθη ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοὶ, καὶ (ε) εἶπε πρὸς μὲ, λέγων, Οὐ γινώσκεις τί ἐστι ταῦτα; καὶ εἶπα, Οὐχὶ κύριε.

MS. A. (α) ἐξεγερθῇ (β) * εἶπεν, Ἑόρακα, (γ) * ἐπαρυστίδες (δ) ἐμοὶ, Τί ἐστιν (ε) εἶπεν, Οὐ γινώσκεις

Et dixit Dominus ad diabolum; 2 *Increpet Dominus in te, diabole: & increpet in te Dominus, qui elegit Hierusalem. Nonne ecce (a) hoc, ut torris est erutus de igne? Et Jesus indutus erat* 3 *vestibus sordidis: & stabat ante faciem angeli. Et respondit* 4 *& ait ad adstantes coram facie sua, dicens; Auferte vestimenta sordida ab eo. Et dixit ad eum; Ecce abstuli (b) iniquitates tuas. Et induite eum pode*5*rem: Et imponite cidarim mundā super caput ejus. Et imposuerunt cidarim mundā super caput ejus: et circumdederūt eū vestimentis: & angelus Domini adstabat. Et* 6 *contestabatur angelus Domini ad Jesum, dicens; Hæc dicit* 7 *Dominus omnipotens; Si (c) viis meis ambulaveris, & præcepta mea custodieris: & tu judicabis domum meam: &, si custodieris atrium meum; & dabo tibi, qui conversentur in medio stantium istorum. Audi* 8 *ergò, Jesu sacerdos magne, tu, & proximi tui, qui sedent ante (d) faciem: quia viri portentorum spectatores sunt: quia ecce ego adduco servum meum Orientem: Quia lapis, quem dedi* 9 *ante faciem Jesu: super lapidem unum septem oculi sunt. Ecce ego (e) fodio foveam, dicit Dominus omnipotens, & contrectabo omnem iniquitatem terræ illius in die una. In die illo,* 10 *dicit Dominus omnipotens, (f) convocabitis unusquisque proximum suum subter vitem, & subter ficum.*

CAP. IV.

ET reversus est angelus, qui 1 *loquebatur in me: & suscitavit me, sicut suscitari solet homo de somno suo: Et dixit ad me;* 2 *Quid tu vides? Et dixi; Vidi, & ecce candelabrum aureum totum, & lampas super ipsum: & septem lucernæ super illud, & septem infusoria lucernis, quæ erant super illud: Et duæ olivæ* 3 *super illud, una à dextris lampadis ejus, & una à sinistris. Et* 4 *interrogavi, & dixi ad angelum, qui loquebatur in me, dicens; Quid sunt hæc, domine?* 5 *Responditque angelus, qui loquebatur in me, & dixit ad me, dicens; Non cognoscis, quid sunt hæc? Et dixi, Non, domine.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

2 ואמר יי ליחטא יזוף יי בך יחטא ויזוף יי בך דאתרעי לאשראה שכנתיה בירושלם
3 הלא דין אוד משיזב מיקידא׃ ויהושע הוו ליה בנין דנסבין להון נשין דלא כשרן
4 לכהונתא וקאם קדם מלאכא׃ ואתיב ואמר לדמשמשין קדמוהי למימר ואמרו ליה
ויפיק נשין דלא כשרין לכהונתא מביתיה ואמר ליה חזי דאעדיתי מנך חובך ואלבישת
5 יתך זכו׃ ואמרית שוו מצנפא דכיא על רישיה ושויאו מצנפא דכיא על רישיה
6 ואסבוהי אתתא דכשרא לכהונתא ומלאכא דיי קאם׃ ואסהיד מלאכא דיי ביהושע
7 למימר׃ כדנן אמר יי צבאות אם באורחן דתקנן קדמי תהך ואם ית מטרת מימרי
תטר ואף את תדין לדמשמשין בבית מקדשי ואף תטר ית עזרתי ובאחיות מיתיא
8 אחינך ואתן לך רגלין מהלכן בין סרפיא האלין׃ שמע כען יהושע כהנא רבא את
וחברך דיתבין קדמך ארי גברין כשרין למעבד להון נסין אנון ארי הא אנא מיתי ית
9 עבדי משיחא ויתגלי׃ ארי הא אבנא דיהבית קדם יהושע על אבנא חדא שבעא עינין
חזיאן לה הא אנא גלי חזיתהא אמר יי צבאות ואעדי ית חוב ארעא ההיא ביומא חד׃
10 בעדנא ההיא אמר יי צבאות תערעון גבר לחבריה לתחות פרי גופנוהי ולתחות פרי
תינוהי׃

ד

1 ותב מלאכא דממלל עמי ואעירני כגברא דמתער משנתיה׃ 2 ואמר לי מה את חזי
ואמרית חזיתי והא מנרתא דדהבא כלה וגולתה על רישה ושבעא בוצינהא דעלה
3 שבעא ושבעא דמריקין מנהון משחא לבוציניא דעל רישה׃ ותרתין זיתין דעלה חד
4 מימין גולתא וחד על סמלתה׃ ואתיבית ואמרית למלאכא דממלל עמי למימר מא
5 אלין רבוני׃ ואתיב מלאכא דממלל עמי ואמר לי הלא ידעתא מן אנון אלין ואמרית
לא רבוני׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Et dixit Dominus ad adversarium, Increpet te Dominus adversarie, increpet [*inquam*] Dominus te, ille cui placuit collocare majestatē suam in Jerusalem: annon torris est iste erutus ab incendio? 3 Erant autem ipsi Josue filii, qui duxerant uxores quæ non erant dignæ sacerdotio, & stabat coram angelo. 4 Et respondit & dixit his qui coram se ministrabant, dicendo: Dicite *etiam* ei ut ejiciat de domo sua uxores quæ non sunt decentes sacerdotio: eique dixit, Vide; quòd abstulerim à te iniquitatem tuam, & te induerim justitiis. 5 Tunc dixit, Imponite cidarim mundam capiti ejus: imposuerúntque cidarim mundam capiti ejus, & acceperunt ei uxorem decentem sacerdotio: & angelus Domini stabat. 6 Et contestatus est angelus Domini Josue, dicendo: Sic inquit 7 Dominus exercituum, Si per vias quæ mihi rectæ videntur perrexeris, & si observationem verbi mei custodieris, tu quidem judicabis eos qui in domo sanctuarii mei ministrant; & præterea servabis atria mea, & in mortuorum resurrectione resuscitabo te, pedesque inter Seraphim istos ambulantes tibi donabo. 8 Agedum audi Josue summe sacerdos tu cum tuis, qui tibi adstant, sociis; digni sunt enim viri quibus fiant miracula: Equidem ecce ego servum meum Christum adduco, qui revelabitur. 9 En enim lapis quem disposui ante Josue, super lapidem unum quem septem cernunt oculi, ecce ego visionem ejus revelo, dicit Dominus exercituum, & die una *scelus* terræ illius auferam. 10 Eo tempore, ait Dominus exercituum, invitabitis unusquisque proximum suum subter fructus vineæ suæ & subter fructus ficus suæ.

CAP. IV.

1 ET reversus angelus qui mecum colloquebatur, suscitavit me quasi virum, qui de somno suo excitatur. 2 Dixitque mihi, Quid tu vides? & dixi, Video, et ecce candelabrum totum aureum quod habet in sua summitate lenticulam, & septem lucernæ quæ super illud erant, septenæ erant ex quibus infundebatur oleum lucernis quæ in fastigio ejus [*eminebant.*] 3 Duarum quoque olivarum quæ juxta illud erant, una erat à dextera lenticulæ, & altera ab ipsius læva. 4 Tum respondi & dixi ad angelum qui me alloquebatur dicendo, Quæ sunt ista Domine mi? 5 Et respondit angelus qui mecum loquebatur, ac dixit: Nostine quid hæc sunt? cui dixi, Minimè Domine mi.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA*.

* ܘܐܡܪ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܠܣܛܢܐ. ܣܛܢܐ. ܢܟܐܐ ܒܟ ܡܪܝܐ. ܢܟܐܐ ܒܟ ܡܪܝܐ 2
ܕܓܒܐ ܠܐܘܪܫܠܡ. ܗܢܘ ܐܘܕܐ ܕܐܬܦܨܝ ܡܢ ܢܘܪܐ. * ܘܝܫܘܥ ܠܒܝܫ ܗܘܐ ܡܐܢܐ ܨܐܝܐ. 3
ܘܩܐܡ ܗܘܐ ܩܕܡ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܥܢܐ ܡܠܐܟܐ ܘܐܡܪ ܠܗܢܘܢ ܕܩܝܡܝܢ ܩܕܡܘܗܝ. 4
ܐܥܒܪܘ ܡܢܗ ܡܐܢܐ ܨܐܝܐ. ܘܐܡܪ ܠܗ. ܚܙܝ ܕܐܥܒܪܬ ܡܢܟ ܚܛܗܝܟ. ܘܐܠܒܫܬܟ ܡܐܢܐ
ܫܦܝܪܐ. * ܘܐܡܪ ܢܣܝܡܘܢ ܟܠܝܠܐ ܕܟܝܐ ܒܪܝܫܗ. ܘܣܡܘ ܟܠܝܠܐ ܕܟܝܐ ܒܪܝܫܗ. 5
ܘܐܠܒܫܘܗܝ ܡܐܢܐ ܫܦܝܪܐ. ܘܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܩܐܡ. * ܘܐܣܗܕ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܒܝܫܘܥ 6
ܘܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܢ ܒܐܘܪܚܬܝ ܬܗܠܟ. ܘܦܘܩܕܢܝ ܬܛܪ. ܐܦ ܐܢܬ 7
ܬܕܘܢ ܠܒܝܬܝ. ܘܬܛܪ ܕܪܬܝ. ܘܐܬܠ ܠܟ ܕܡܗܠܟܝܢ ܒܝܬ ܗܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ.
* ܫܡܥ ܝܫܘܥ. ܟܗܢܐ ܪܒܐ. ܐܢܬ ܘܚܒܪܝܟ ܗܠܝܢ ܕܩܝܡܝܢ ܩܕܡܝܟ. ܡܛܠ ܕܓܒܪܐ 8
ܐܢܬܘܢ ܕܬܕܡܘܪܬܐ. ܗܐ ܡܝܬܐ ܐܢܐ ܠܥܒܕܝ ܕܢܚܐ. * ܡܛܠ ܕܗܐ ܟܐܦܐ ܕܝܗܒܬ ܩܕܡ 9
ܝܫܘܥ. ܥܠ ܟܐܦܐ ܚܕܐ ܫܒܥܐ ܥܝܢܝܢ. ܗܐ ܦܬܚ ܐܢܐ ܬܪܥܝܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ.
ܘܐܡܘܫ ܥܘܠܗ ܕܐܪܥܐ ܗܝ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. 10
ܬܩܪܘܢ ܐܢܫ ܠܚܒܪܗ ܠܬܚܝܬ ܓܦܬܐ ܘܠܬܚܝܬ ܬܐܬܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

* ܘܗܦܟ ܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܘܐܥܝܪܢܝ ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܡܬܬܥܝܪ ܡܢ ܫܢܬܗ. * ܘܐܡܪ 1
ܠܝ. ܡܢܐ ܚܙܝܬ. ܘܐܡܪܬ. ܚܙܝܬ ܡܢܪܬܐ ܕܕܗܒܐ. ܘܩܒܠܐ ܥܠ ܪܫܗ. ܘܫܒܥܐ ܫܪ̈ܓܝܢ 2
ܥܠܝܗ. ܘܫܒܥܐ ܫܒܥܐ ܦܘܡܝܢ ܠܫܪ̈ܓܐ ܕܐܝܬ ܒܪܫܗ. * ܘܙܝܬܝܢ ܬܪܬܝܢ ܐܝܬ ܥܠܝܗ. 3
ܚܕ ܡܢ ܝܡܝܢܗ ܕܩܒܠܐ. ܘܚܕ ܡܢ ܣܡܠܗ. * ܘܥܢܝܬ ܘܐܡܪܬ ܠܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. 4
ܡܢܐ ܐܢܘܢ ܗܠܝܢ ܡܪܝ. * ܥܢܐ ܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ. ܡܢܐ 5
ܐܢܘܢ ܗܠܝܢ. ܘܐܡܪܬ. ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܐ ܡܪܝ.

2 Dixit autem angelus Domini ad Satanam; Satana, increpet te Dominus, increpet *inquam* te Dominus qui elegit Jeroſolymam; hic eſt titio qui ſe eripuit ex igne. 3 Porrò Jeſus indutus erat veſtibus ſordidis, ſtabátque coram angelo Domini. 4 Quarè locutus angelus dixit ad eos qui aſtabant coram eo; Amovete ab eo veſtes ſordidas: tum dixit illi; Vide quòd amoverim à te iniquitatem tuam, & induerim te veſtibus optimis. 5 Dixit etiam, Imponite coronam mundam capiti ejus: & impoſuerunt coronam mundam capiti ejus, & induerunt eum veſtibus optimis, aſtante angelo Domini. 6 Tum conteſtatus eſt angelus Domini Jeſum, & dixit; 7 Sic dicit Dominus potentiſſimus; Si in via mea ambulaveris, & mandata mea cuſtodieris; judicabis domum meam, & cuſtodies atria mea; & dabo tibi qui ambulent inter hos aſtantes. 8 Audi Jeſu ſumme ſacerdos, tu & ſocii tui iſti qui ſtant coram te; quandoquidem viri eſtis miraculi: ecce adducam ſervum meum Orientem. 9 Nam ecce lapis quem poſui ante Jeſum, ſuper lapidem unum ſeptem ſunt oculi. Ecce aperiam portas ejus, dicit Dominus potentiſſimus, & attrectabo iniquitatem terræ illius, eo die. 10 Eodem die, dicit Dominus potentiſſimus, vocabitis quiſque ſocium ſuum ſubter vitem & ſubter ficum.

CAP. IV.

1 DEinde reverſus eſt angelus qui loquebatur in me, & excitavit me ut virum qui excitatur à ſomno ſuo: 2 Dixítque mihi, Quid vidiſti? Cui dixi, Vidi candelabrum aureum, & lancem ſuper ſummitatem ejus, & ſuper hanc ſeptem lucernas, & ora ſeptena ſingulis lucernis quæ erant ſupra ſummitatē illius. 3 Duæ quoque oleæ erant ſuper ipſam, una ad dexteram lancis, altera ad ſiniſtram. 4 Et reſpondens dixi angelo qui loquebatur in me; Quid iſta ſunt domine mi? 5 Reſpondit angelus qui loquebatur in me, dixitque mihi, Neſcis quid iſta ſint? Dixi, Neſcio domine mi.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA*.

* فقال الرب للشيطان. ينتهرك الرب يا شيطان. وينتهرك الرب الذي اختار ايروسليم. أليس 2
هذا هو مثل عود افلت من النار * ويشوع كان لابسا ثيابا وسخة * وواقفا قدام وجه ملاك 3
الرب * فاجاب وقال للقيام امام وجهه قايلا. انزعوا الثياب الوسخة عنه * وقال له. ها نزعت 4
آثامك. والبسوه مدرعة * وضعوا طيلسانا نقيا على رأسه. فالبسوه ثيابا. ووضعوا طيلسانا 5
نقيا على رأسه. وملاك الرب قايم * وشهد ملاك الرب ليشوع قايلا * هكذا يقول الرب الضابط 6 7
الكل. ان سرت في طرقي. وتحفظ باوامري. فانت تحكم في بيتي. وان حفظت داري فاعطيك
المتصرفين في وسط هاولاء القيام * اسمع يا يشوع الكاهن العظيم انت واصحابك والجلوس 8
امام وجهك. من اجل انهم رجال يرون العجب هم. من اجل اني ها انا آتي بعبدي
المشرق * من اجل ان الحجر الذي اعطيته امام وجه يشوع. على الحجر الواحد سبع اعين 9
هم * ها انا احفر حفرا يقول الرب الضابط الكل. وافتش كل ظلم تلك الارض في يوم واحد.
* في ذلك اليوم يقول الرب الضابط الكل. ادعوا كل واحد صاحبه تحت كرمة وتحت 10
شجرة تين *

2 *Dixitque Dominus ad Satanam; Increpet te Dominus O Satana, increpet inquam te Dominus qui elegit Jeruſalem: nonne iſte eſt ut lignum quod erupit ex igne?* 3 *Jeſus autem indutus erat veſtibus ſordidis, & ſtabat ante faciem angeli Domini:* 4 *Quapropter reſpondens dixit aſtantibus coram facie ſua, dicens; Auferte veſtes ſordidas ab eo, (Dixitque ei; En abſtuli iniquitates tuas) & induite eum togâ,* 5 *Cidarimque mundam imponite capiti ejus. Itaque induerunt eum veſtibus, & impoſuerunt cidarim mundam capiti ejus, angelo Domini aſtante.* 6 *Et conteſtatus eſt angelus Domini Jeſum; dicens;* 7 *Sic dicit Dominus omnipotens, Si ambulaveris in viis meis, & obſervaveris præcepta mea; tu judicabis in domo mea: & ſi cuſtodieris atrium meum, dabo tibi converſantes in medio horum aſtantium.* 8 *Audi O Jeſu ſacerdos maxime, tu & ſocii tui, & qui ſedent ante faciem tuam; ſiquidem iſti, viri ſunt miraculum viſuri: quoniam ecce ego adducturus ſum ſervum meum Orientem.* 9 *Nam lapis quem propoſui ante faciem Jeſu, ſuper unico lapide ſeptem ſunt oculi. En ego fodiam foveam, ait Dominus omnipotens; & perſcrutabor omnem perverſitatem illius terræ, unâ die.* 10 *Eâ die, dicit Dominus omnipotens, vocate quiſque ſocium ſuum ſub vitem & ſub arborem fici.*

* الفصل الرابع *

* ورجع الملاك المتكلم في. وايقظني كما اذا استيقظ انسان من نومه * وقال لي. ماذا ترى 1 2
انت. فقلت رأيت واذا منارة كلها ذهب. والمصباح فوقها. وسبعة سرج فوقها. وسبعة افواه
للسرج التي فوقها * وزيتونتان فوقها. واحدة عن يمين مصباحها. وواحدة عن اليسار * فسألت 3 4
وقلت للملاك المتكلم في قايلا. ما هي هذه يا سيد * فاجاب الملاك المتكلم في وقال لي قايلا 5
اما تعلم ما هي هذه. فقلت لا يا سيد *

CAP. IV.

1 *ET reverſus eſt angelus in me loquens, excitavitque me ut cùm quis excitatur à ſomno ſuo:* 2 *Dixitque mihi, Quid tu vides? Dixi; Vidi, & ecce candelabrum totum aureum, & facem ſuper illud, ſeptemque lucernas ſuper illud, ſeptemque ora lucernis quæ erant ſuper illud:* 3 *Præterea geminæ erant ſuper illud olivæ, una ad dexteram facis ejus, altera ad ſiniſtram.* 4 *Et interrogavi, ac dixi angelo in me loquenti, dicens; Quid ſunt hæc O Domine?* 5 *Reſpondit angelus qui loquebatur in me, dixitque mihi, dicens; Annon ſcis quid ſint hæc? Dixi, Nequaquam O Domine.*

זכריה: ה

ad Domini verbum Hoc : dicendo ,me ad dixit & reſpondit Et
6 וַיַּעַן וַיֹּאמֶר אֵלַי לֵאמֹר זֶה דְּבַר־יְהוָה אֶל־
,meo ſpiritu in ſed ,potentia in nec,exercitu in Non :dicendo,Zerubabel
זְרֻבָּבֶל לֵאמֹר לֹא בְחַיִל וְלֹא בְכֹחַ כִּי אִם־בְּרוּחִי
facies ad magne mons tu Quis .exercituum Dominus dixit
7 אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת׃ מִי־אַתָּה הַר־הַגָּדוֹל לִפְנֵי
; ſtrepitibus primarium lapidem educet Et ? planitiem in Zerubabel
זְרֻבָּבֶל לְמִישֹׁר וְהוֹצִיא אֶת־הָאֶבֶן הָרֹאשָׁה תְּשֻׁאוֹת
: dicendo ,me ad Domini verbum fuit Et .ei gratia , gratia
8 חֵן חֵן לָהּ׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה אֵלַי לֵאמֹר׃
:illā elaborabunt ejus manus &,iſtam domum fundaverunt Zerubabel Manus
9 יְדֵי זְרֻבָּבֶל יִסְּדוּ הַבַּיִת הַזֶּה וְיָדָיו תְּבַצַּעְנָה
quis Quia .vos ad me miſit exercituum Dominus quod ſcies &
10 וְיָדַעְתָּ כִּי־יְהוָה צְבָאוֹת שְׁלָחַנִי אֲלֵיכֶם׃ כִּי מִי
lapidem videbunt & , lætabuntur & ? exiguarum diem deſpexit
בַז לְיוֹם קְטַנּוֹת וְשָׂמְחוּ וְרָאוּ אֶת־הָאֶבֶן
ipſi , Domini oculi illi ſeptem , Zerubabel manu in ſtanni
הַבְּדִיל בְּיַד זְרֻבָּבֶל שִׁבְעָה־אֵלֶּה עֵינֵי יְהוָה הֵמָּה
Quid : eum ad dixi & ,reſpondi Et .terram univerſam in diſcurſantes
11 מְשׁוֹטְטִים בְּכָל־הָאָרֶץ׃ וָאַעַן וָאֹמַר אֵלָיו מַה־
?ejus ſiniſtram ſuper & ,candelabri dexteram ſuper iſtæ olivæ duæ
שְּׁנֵי הַזֵּיתִים הָאֵלֶּה עַל־יְמִין הַמְּנוֹרָה וְעַל־שְׂמֹאולָהּ׃
,olivarum ſpicæ duæ Quid : eum ad dixi & , ſecundò reſpondi Et
12 וָאַעַן שֵׁנִית וָאֹמַר אֵלָיו מַה־שְׁתֵּי שִׁבְּלֵי הַזֵּיתִים
? aurum ſe deſuper evacuantium , auri ampullarum duarū manu in quæ
אֲשֶׁר בְּיַד שְׁנֵי צַנְתְּרוֹת הַזָּהָב הַמְרִיקִים מֵעֲלֵיהֶם הַזָּהָב׃
Non : dixi Et ? hæc quid nôſti Nonne : dicendo ,me ad ait Et
13 וַיֹּאמֶר אֵלַי לֵאמֹר הֲלוֹא יָדַעְתָּ מָה־אֵלֶּה וָאֹמַר לֹא
ſuper ſtantes , olei filii duo Iſti : dixit Et .mi Domine
14 אֲדֹנִי׃ וַיֹּאמֶר אֵלֶּה שְׁנֵי בְנֵי־הַיִּצְהָר הָעֹמְדִים עַל־
.terræ univerſæ Dominatorem
אֲדוֹן כָּל־הָאָרֶץ׃

CAP. V. ה

.volans volumen ecce Et .vidi & ,meos oculos levavi &,ſum cōverſus Et
1 וָאָשׁוּב וָאֶשָּׂא עֵינַי וָאֶרְאֶה וְהִנֵּה מְגִלָּה עָפָה׃
.volans volumen videns Ego :dixi Et ? videns tu Quid : me ad dixit Et
2 וַיֹּאמֶר אֵלַי מָה אַתָּה רֹאֶה וָאֹמַר אֲנִי רֹאֶה מְגִלָּה עָפָה
.cubito in decem ejus latitudo & , cubito in viginti ejus Longitudo
אָרְכָּהּ עֶשְׂרִים בָּאַמָּה וְרָחְבָּהּ עֶשֶׂר בָּאַמָּה׃
.terræ univerſæ facies ſuper egrediens execratio Hæc : me ad dixit Et
3 וַיֹּאמֶר אֵלַי זֹאת הָאָלָה הַיּוֹצֵאת עַל־פְּנֵי כָל־הָאָרֶץ
inde , jurans omnis & :eſt ſucciſus ipſi ſicut hinc fur omnis Quia
כִּי כָל־הַגֹּנֵב מִזֶּה כָּמוֹהָ נִקָּה וְכָל־הַנִּשְׁבָּע מִזֶּה
,exercituum Dominus dixit , eam feci Exire .eſt ſucciſus illa ſicut
4 כָּמוֹהָ נִקָּה׃ הוֹצֵאתִיהָ נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת
meo nomine in jurantis domum ad & , furis domum ad veniet &
וּבָאָה אֶל־בֵּית הַגַּנָּב וְאֶל־בֵּית הַנִּשְׁבָּע בִּשְׁמִי
& ,eā conſumet & ,ejus domus medio in commorabitur & : falſitate in
לַשָּׁקֶר וְלָנֶה בְּתוֹךְ בֵּיתוֹ וְכִלַּתּוּ וְאֶת־
dixit & ,me in loquens angelus eſt egreſſus Et .ejus lapides &,ej⁹ ligna
5 עֵצָיו וְאֶת־אֲבָנָיו׃ וַיֵּצֵא הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי וַיֹּאמֶר
.hoc egrediens quid vide & , tuos oculos nunc Leva : me ad
אֵלַי שָׂא נָא עֵינֶיךָ וּרְאֵה מָה הַיּוֹצֵאת הַזֹּאת׃
Hæc : dixit & : egrediens Ephah Hæc : dixit Et ? ipſum Quid :dixi Et
6 וָאֹמַר מַה־הִיא וַיֹּאמֶר זֹאת הָאֵיפָה הַיּוֹצֵאת וַיֹּאמֶר זֹאת
:portabatur plumbi talentum ecce Et .terra univerſa in eorū oculus
7 עֵינָם בְּכָל־הָאָרֶץ׃ וְהִנֵּה כִּכַּר עֹפֶרֶת נִשֵּׂאת
.Ephah medio in ſedens una mulier hæc &
וְזֹאת אִשָּׁה אַחַת יוֹשֶׁבֶת בְּתוֹךְ הָאֵיפָה׃

Verſio VULG. LAT.

6 Et reſpondit, & ait ad me, dicens; Hoc eſt verbum Domini ad Zorobabel, dicens; Non in exercitu, nec in robore, ſed in ſpiritu meo, dicit Dominus exercituum. 7 Quis tu, mons magne, corā Zorobabel? in planum: & educet lapidem primarium, & exæquabit gratiam gratiæ ejus. 8 Et factum eſt verbum Domini ad me, 9 dicens; Manus Zorobabel fundaverunt domum iſtam, & manus ejus perficient eam: & ſcietis quia Dominus exercituum miſit 10 me ad vos: Quis enim deſpexit dies parvos? & lætabuntur, & videbunt lapidem ſtanneum in manu Zorobabel. Septem iſti oculi ſunt Domini, qui diſcur- 11 runt in univerſam terram. Et reſpondi, & dixi ad eum; Quid ſunt duæ olivæ iſtæ, ad dexteram candelabri, & ad ſiniſtram ejus? 12 Et reſpondi ſecundò, & dixi ad eum; Quid ſunt duæ ſpicæ olivarum, quæ ſunt juxta duo roſtra aurea, in quibus ſunt ſuffuſoria 13 ex auro? Et ait ad me, dicens; Numquid neſcitis quid ſunt hæc? 14 Et dixi; Non, domine mi. Et dixit; Iſti ſunt duo filii olei, qui aſſiſtunt Dominatori univerſæ terræ.

CAP. V.

1 ET converſus ſum, & levavi oculos meos: & vidi, & ecce 2 volumen volans. Et dixit ad me; Quid tu vides? Et dixi; Ego video volumen volans: longitudo ejus viginti cubitorū, & latitudo 3 ejus decem cubitorum. Et dixit ad me; Hæc eſt maledictio, quæ egreditur ſuper faciem omnis terræ: quia omnis fur, ſicut ibi ſcriptum eſt, judicabitur: et omnis jurans, ex hoc ſimiliter judicabi- 4 tur. Educam illud, dicit Dñs exercituū: & veniet ad domū furis, & ad domū jurantis in nomine meo mendaciter: & commorabitur in medio domûs ejus, & conſumet eam, & ligna ej⁹ et lapides 5 ejus. Et egreſſus eſt angelus, qui loquebatur in me: & dixit ad me; Leva oculos tuos, & vide quid eſt 6 hoc, quod egreditur. Et dixi; Quidnam eſt? Et ait; Hæc eſt amphora egrediens. Et dixit; Hæc eſt oculus eorum in univerſa ter- 7 ra. Et ecce talentum plumbi portabatur, & ecce mulier una ſedens in medio amphoræ.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Καὶ ἀπεκρίθη, καὶ εἶπε πρὸς μὲ, λέγων, Οὗτος ὁ λόγος κυρίου πρὸς Ζοροβάβελ, λέγων, Οὐκ ἐν δυνάμει μεγάλῃ, οὐδὲ ἐν ἰσχύϊ, (ζ) ἀλλὰ ἐν πνεύματί μου, λέγει κύριος παν- 7 τοκράτωρ. Τίς εἶ σὺ τὸ ὄρος τὸ μέγα τὸ πρὸ προσώπου Ζοροβάβελ τοῦ κατορθῶσαι; καὶ ἐξοίσω τὸν λίθον τῆς κληρονομίας, ἰσότητα 8 χάριτος χάριτα αὐτοῦ. Καὶ ἐγένετο λόγος 9 κυρίου πρὸς μὲ, λέγων, Αἱ χεῖρες Ζοροβάβελ ἐθεμελίωσαν τὸν οἶκον τοῦτον, καὶ αἱ χεῖρες αὐτοῦ (ε) ἐπιτελέσουσιν αὐτόν καὶ ἐπιγνώσῃ διότι κύριος παντοκράτωρ (η) ἐξαπέσταλκέ με 10 πρὸς σέ. Διότι τίς ἐξουδένωσεν εἰς ἡμέρας μικράς; καὶ (θ) χαροῦνται, καὶ ὄψονται τὸν λίθον τὸν κασσιτέρινον ἐν χειρὶ Ζοροβάβελ. ἑπτὰ οὗτοι ὀφθαλμοί εἰσιν (ι) οἱ ἐπιβλέποντες ἐπὶ 11 πᾶσαν τὴν γῆν. Καὶ ἀπεκρίθην, καὶ εἶπα πρὸς αὐτὸν, Τί αἱ δύο ἐλαῖαι αὗται, αἱ ἐκ 12 δεξιῶν τῆς λυχνίας καὶ ἐξ εὐωνύμων; Καὶ ἐπηρώτησα ἐκ δευτέρου, καὶ εἶπα πρὸς αὐτὸν, Τί οἱ δύο κλάδοι τῶν ἐλαιῶν οἱ ἐν ταῖς χερσὶ τῶν δύο μυξωτήρων τῶν χρυσῶν τῶν ἐπιχεόντων, καὶ ἐπαναγόντων τὰς ἐπαρυστρίδας 13 τὰς χρυσᾶς; Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Οὐκ οἶδας τί ἐστι ταῦτα; καὶ εἶπα, Οὐχὶ κύριε. 14 Καὶ εἶπεν, Οὗτοι οἱ δύο υἱοὶ τῆς πιότητος παρεστήκασι (κ) κυρίῳ πάσης τῆς γῆς.

MS. A. (ζ) ἀλλ' ἢ ἐν (ε) ἐπιτελέσουσιν (η) ἐξαπέσταλκέν (θ) χαρήσονται, (ι) κυρίου οἱ (κ) τῷ κυρίῳ

6 Et reſpondit, & ait ad me, dicens; Iſte eſt ſermo Domini ad Zorobabel, dicens; Non in fortitudine magna, neq; in robore, ſed in ſpiritu meo, dicit Dominus omnipotens. 7 Quis es tu, mons magne, qui ante faciem Zorobabel, ut corrigas? Et educam lapidem hæreditatis, æqualitatem gratiæ, gratiam ejus. 8 Et factus eſt ſermo Domini ad me, dicens; 9 Manus Zorobabel fundaverunt domum iſtam: & manus ejus complebunt eam. Et ſcies, quoniam Dominus omnipotens miſit me ad te. 10 Quis enim deſpexit in dies parvos? Et lætabuntur, & videbunt lapidem ſtanneū in manu Zorobabel. Septem iſti ſunt (a) oculi, qui reſpiciunt ſuper omnem terram. 11 Et reſpondi, & dixi ad eum; Quid ſunt duæ olivæ iſtæ, quæ à dextris candelabri, & à ſiniſtris? 12 Et interrogavi ſecundò, & dixi ad eum; Quid ſunt duo rami olivarum, qui ſunt in manibus duarum (b) narium aurearum, quæ infundunt, & retrahunt ſuffuſoria aurea? 13 Et dixit ad me; Non noſti quid ſunt hæc? Et dixi; Nequaquam, domine. 14 Et ait; Iſti duo filii (c) pinguedinis aſſiſtunt Domino univerſæ terræ.

ΚΕΦ. ε΄.

1 ΚΑὶ ἐπέστρεψα, καὶ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, 2 καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ δρέπανον πετόμενον. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Τί σὺ βλέπεις; καὶ εἶπα, (α) Ἐγὼ ὁρῶ δρέπανον πετόμενον (β) μήκους πηχέων 3 εἴκοσι, καὶ (γ) πλάτους πηχέων δέκα. Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Αὕτη ἡ ἀρὰ ἡ ἐκπορευομένη ἐπὶ (δ) πρόσωπον πάσης τῆς γῆς· διότι πᾶς ὁ κλέπτης ἐκ τούτου ἕως θανάτου ἐκδικηθήσεται, καὶ πᾶς ὁ ἐπίορκος ἐκ τούτου (ε) ἐκδι- 4 κηθήσεται. Καὶ ἐξοίσω (ζ) αὐτὸ, λέγει κύριος παντοκράτωρ, καὶ (η) εἰσελεύσεται εἰς τὸν οἶκον τοῦ κλέπτου, καὶ εἰς τὸν οἶκον τοῦ ὀμνύοντος τῷ ὀνόματί μου ἐπὶ ψεύδει, καὶ καταλύσει ἐν μέσῳ τοῦ οἴκου αὐτοῦ, καὶ συντελέσει αὐτὸν, 5 καὶ τὰ ξύλα αὐτοῦ, καὶ τοὺς λίθους αὐτοῦ. Καὶ ἐξῆλθεν ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοί, καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Ἀνάβλεψον τοῖς ὀφθαλμοῖς 6 σου, καὶ ἴδε τὸ ἐκπορευόμενον τοῦτο. Καὶ εἶπα, Τί ἐστι; καὶ εἶπε, Τοῦτο τὸ μέτρον τὸ ἐκπορευόμενον. καὶ εἶπεν, Αὕτη ἡ ἀδικία αὐ- 7 τῶν ἐν πάσῃ τῇ γῇ. Καὶ ἰδοὺ τάλαντον (θ) μολίβδου ἐξαιρόμενον· καὶ ἰδοὺ γυνὴ μία ἐκάθητο ἐν μέσῳ τοῦ (ι) μέτρου.

MS. A. (α) Ὁρῶ ἐγὼ (β) μῆκος (γ) πλάτος (δ) προσώπου (ε) ἕως θανάτου ἐκδικηθήσεται. (ζ) αὐτὰ, (η) εἰσελεύσομαι (θ) μολίβου (ι) ταλάντου.

CAP. V.

1 ET converſus ſum, & levavi oculos meos, & vidi: & ecce (1) falx volans. 2 Et dixit ad me; Quid tu vides? Et dixi; Ego video falcem volantem longitudinis cubitorum viginti, & latitudinis cubitorum decem. 3 Et dixit ad me; Hæc eſt maledictio, quæ egreditur ſuper faciem omnis terræ: quia omnis fur ex hoc uſque ad mortem punietur, & omnis perjurus ex hoc (b) cruciabitur. 4 Et educam illud, dicit Dominus omnipotens, & ingredietur in domum furis, & in domum jurantis nomine meo ſuper mendacio: & requieſcet in medio domus ejus, & conſummabit eam, & ligna ejus, & lapides ejus. 5 Et egreſſus eſt angelus, qui loquebatur in me, & dixit ad me; Suſpice oculis tuis, & vide hoc, quod egreditur. 6 Et dixi; Quid eſt? Et ait; Hæc eſt menſura, quæ egreditur. Et ait; Hæc eſt iniquitas eorum in omni terra. 7 Et ecce talentum plumbi elevatum: & ecce mulier una ſedebat in medio menſuræ.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 ואתיב ואמר לי למימר דין פתגמא דיי עם זרבבל למימר לא בחילא ולא בגבורא
7 אלהן במימרי אמר יי צבאות : מא את חשיבא מלכותא טפשתא קדם זרבבל הלא
8 כמשרא ויגלי ית משיחיה דאמיר שמיה מלקדמין וישלוט בכל מלכותא : והוה פתגם
9 נבואה מן קדם יי עמי למימר : ידי זרבבל שריאה למבני ביתא הדין וידוהי ישכללוניה
10 ותדעון ארי יי צבאות שלחני לאתנבאה לכון : ארי מן הוא דין דבסר יומא דין על
בנינא דהוא זעיר הלא יתוב ויחדי כד יחזיית אבן משקולתא בידא דזרבבל שבעא
11 נדבכין כאלין קדם יי גלן עובדי בני אנשא בכל ארעא : ואתיבית ואמרית ליה מא
12 תרין זיתיא האלין על ימין מנרתא ועל סמלא : ואתיבית תנינות ואמרית ליה מא
תרין שובלי זיתיא דביד תרין אסקריטון דדהב דמריקין מנהון משחא לבוציני דדהבא :
13 14 ואמר לי למימר הלא ידעת מן אלין ואמרית לא רבוני : ואמר אלין תרין בני רברביא
דקימין קדם רבון כל ארעא :

ה

1 ותבית וזקפית עיני וחזית והא מגלא פרחא : ואמר לי מה את חזי ואמרית אנא חזי
2 מגלה פרחא אורכה עשרין אמין ופותיה עשר אמין : ואמר לי דא מומתא דעתידא
3 למפק על אפי כל ארעא ארי כל דגנב ומכדב מדא לקי וכל דקים בשמי לשקר מדא
4 לקי : אפקתה אמר יי צבאות ותעול לבית גנבא ולבית דמקים בשמי לשקר ותבית
5 בגו ביתיה ותשיציניה וית אעוהי וית אבנוהי : ונפק מלאכא דממלל עמי ואמר לי זקוף
6 כען עינך וחזי מן דגלן אלין : ואמרית מן אנון ואמר אלין עמא דהוו נסבין ויהבין
7 במכילתא דשקרא ואמר הא אנון גלן קדם כל יתבי ארעא : והא עממיא קלילין מגלן
יתהון בקלילו ואתו עממין אוחרנין ויתיבו באתרהון על דהוו נסבין ויהבין במכילתא
דשקרא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et reſpondens ait mihi, dicendo: Hoc eſt verbum Domini ad Zorobabel, dicendo: Non exercitu nec fortitudine, ſed *verbo meo*, dicit Dominus exercituum. Quale tu cum Zorobabele reputaris regnum ſtolidum? nónne ſicut vallis? & emerget Chriſtus *ejus*, cujus ab æterno nomen dictum eſt, qui imperio potietur omnium regnorum. Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Dñi mecum, dicens. Manus Zorobabel inceperunt ædificare domum iſtam, & manus ejus perficient eam: & ſcietis, quia Dominus exercituum miſit me *ut vaticinarer vobis*. Quoniam quis eſt iſte qui contempſit diem hunc? eò quòd ædificium ſit exiguum. Nonne convertetur & lætabitur quando viderit lapidem perpendiculi in manu Zorobabel? ſeptem lapidum ordines *quaſi hos*. Coram Domino revelata ſunt opera filiorum hominis in univerſa terra. Et reſpondi, & dixi ad eum, Quid ſunt duæ olivæ iſtæ ad dexteram candelabri, & ad ſiniſtram? Et reſpondi ſecundò, & dixi, Quid ſunt duæ ſpicæ olivarum quæ ſunt juxta duos lecythos aureos, ex quibus effunditur oleum in lucernas aureas? Et ait ad me, dicens: Nónne ſcis quid ſunt hæc? & dixi, Non Domine mi. Et dixit, Iſti ſunt duo filii principum qui ſtant coram gubernatore univerſæ terræ.

CAP. V.

ET converſus ſum, & ſuſtuli oculos meos, & vidi, & ecce volumen volans. Et dixit ad me: Quid tu vides? & dixi, Ego video volumen volans: longitudo ejus viginti cubitorum, & latitudo ejus decem cubitorum. Et dixit ad me: Hæc eſt maledictio quæ egreſſura eſt ſuper faciem univerſæ terræ: Omnis enim qui furatur & mentitur, percutietur ab iſta; et omnis qui juraverit falsò in nomine meo, percutietur ab iſta. Eduxi eam, dicit Dominus exercituum, et ingredietur in domum ejus qui furatur, et in domum ejus qui jurat in nomine meo falsò; et habitabit in medio domus ejus, et conſumet eum, et ligna ejus, et lapides ejus. Et egreſſus eſt angelus qui loquebatur mecum, et dixit ad me: Attolle nunc oculos tuos, et vide quinam ſunt hi qui apparent? Et dixi, Quinam ſunt? dixit autem, Iſti ſunt populi qui accipiebant et dabant menſura falſa: et dixit, Ecce illi revelantur coram omnibus habitatoribus terræ. Et ecce populi celeres transferunt illos velociter: et venerunt populi alii, qui habitaverunt in loco eorum, pro eo quòd accipiebant et dabant menſura falſa.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܢܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܙܪܘܒܒܠ. ܠܐ ܒܚܝܠܐ ܘܠܐ ܒܥܘܫܢܐ. ܐܠܐ ܐܢ 6
ܒܪܘܚܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕܟܠ. * ܡܢܘ ܐܢܬ ܛܘܪܐ ܪܒܐ ܩܕܡ ܙܪܘܒܒܠ ܀ ܐܠܐ ܐܢ ܦܩܥܬܐ. 7
ܘܐܦܩ ܟܐܦܐ ܪܫܝܬܐ ܕܫܘܝܘܬܐ ܘܪܚܡܐ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. 8
* ܐܝܕܘܗܝ ܕܙܪܘܒܒܠ ܣܡ ܫܬܐܣܘܗܝ ܕܒܝܬܐ ܗܢܐ ܀ ܘܐܝܕܘܗܝ ܢܫܡܠܘܢܝܗ ܗܘ. 9
ܘܬܕܥܘܢ ܕܡܪܝܐ ܐܚܝܕܟܠ ܫܕܪܢܝ ܠܘܬܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܡܢܘ ܒܣܪ ܠܗ ܠܝܘܡܬܐ ܙܥܘܪܐ. 10
ܘܢܚܕܘܢ ܘܢܚܙܘܢ ܟܐܦܐ ܕܦܘܪܫܢܐ ܒܐܝܕܘܗܝ ܕܙܪܘܒܒܠ. ܘܗܠܝܢ ܐܢܝܢ ܫܒܥ
ܥܝܢܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܕܚܝܪܢ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܥܢܝܬ ܘܐܡܪܬ ܠܗ. ܡܢܐ ܐܢܘܢ ܗܠܝܢ ܬܪܬܝܢ 11
ܙܝܬܝܢ ܀ ܕܡܢ ܝܡܝܢܗ ܕܡܢܪܬܐ ܘܡܢ ܣܡܠܗ. * ܥܢܝܬ ܕܬܪܬܝܢ ܙܒܢܝܢ ܘܐܡܪܬ ܠܗ. 12
ܡܢܐ ܐܢܘܢ ܗܠܝܢ ܬܪܝܢ ܫܘܟܐ ܕܙܝܬܐ. ܕܒܐܝܕܝ ܬܪܝܢ ܢܚܝܪܝܢ ܕܕܗܒܐ ܀ ܕܢܓܕܝܢ 13
ܡܢܗܘܢ ܕܗܒܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܠܐ ܝܕܥ ܐܢܬ ܀ ܡܢܐ ܐܢܘܢ ܗܠܝܢ. ܘܐܡܪܬ ܠܐ ܡܪܝ. * ܘܐܡܪ 14
ܠܝ. ܗܠܝܢ ܐܢܘܢ ܬܪܝܢ ܒܢܝ ܡܫܚܐ ܀ ܕܩܝܡܝܢ ܩܕܡ ܡܪܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܗ * ܘܗܦܟܬ ܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ ܡܓܠܬܐ 1
ܕܦܪܚܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܡܢܐ ܚܙܝܬ. ܘܐܡܪܬ ܚܙܝܬ ܡܓܠܬܐ ܕܦܪܚܐ. ܐܘܪܟܗ ܥܣܪܝܢ 2
ܐܡܝܢ. ܘܦܬܝܗ ܥܣܪ ܐܡܝܢ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܕܐ ܗܝ ܠܘܛܬܐ ܕܢܦܩܐ ܥܠ ܐܦܝ ܟܠܗ 3
ܐܪܥܐ. ܡܛܠ ܕܟܠ ܕܓܢܒ ܀ ܡܢܗ ܐܟܘܬܗ ܙܕܩ. ܘܟܠ ܕܝܡܐ ܀ ܡܢܗ ܐܟܘܬܗ ܙܕܩ.
* ܐܦܩܝܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕܟܠ ܀ ܘܬܥܘܠ ܠܒܝܬܗ ܕܓܢܒܐ ܀ ܘܠܒܝܬܗ ܕܟܠ 4
ܕܝܡܐ ܒܫܡܝ ܒܕܓܠܘܬܐ. ܘܬܫܪܐ ܒܓܘ ܒܝܬܗ ܀ ܘܬܓܡܪ ܩܝܣܘܗܝ ܘܟܐܦܘܗܝ.
* ܘܢܦܩ ܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܗܘܐ ܒܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܀ ܐܪܝܡ ܥܝܢܝܟ ܘܚܙܝ ܡܢܐ ܗܝ ܗܕܐ 5
ܕܢܦܩܐ. * ܘܐܡܪܬ ܡܢܐ ܗܝ. ܘܐܡܪ ܠܝ ܀ ܗܕܐ ܗܝ ܡܟܝܠܬܐ ܕܢܦܩܐ. ܘܒܗ ܐܝܬܝ ܚܘܒܬܐ 6
ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܘܗܐ ܟܟܪܐ ܕܐܒܪܐ ܫܩܝܠܐ. ܘܐܢܬܬܐ ܚܕܐ ܝܬܒܐ ܗܘܬ ܒܓܘ ܡܟܝܠܬܐ. 7

6 Dixit mihi; Hic eſt ſermo Domini de Zorbabele, Neque vi, neque robore, ſed tantùm ſpiritu, dicit Dominus potentiſſimus. 7 Quid es magne mons corā Zorbabele, niſi ut planities? tum protulit lapidem præſtantiſſimum æqualitatis & miſericordiæ. 8 Et fuit ad me ſermo Domini, dicendo; 9 Manus Zorbabelis poſuerunt fundamenta hujus domûs, & manus ejus perficient eam. Ita ſcietis quòd Dominus potentiſſimus me miſerit ad vos. 10 (Quis enim ſpernat paucos dies?) & intuebuntur ac videbunt lapidem ſeparationis in manu Zorbabelis: hi ſunt ſeptem oculi Domini, qui intuentur univerſam terram. 11 Reſpondi, & dixi ei; Ecquid ſibi volunt duæ iſtæ oleæ quæ ſunt ad dexteram lancis & ad ſiniſtram ejus? 12 Reſpondi ſecundâ vice, & dixi ei; Quid ſunt hi duo rami oleæ, qui ſunt inter duo roſtra aurea effundentia ex ſe aurum? 13 Dixit mihi; Annon nôſti quid iſti ſint? Dixi, Non domine mi. 14 Dixit mihi; Hi ſunt duo filii pinguedinis aſtantes coram Domino totius terræ.

CAP. V.

Rurſum attollens oculos meos, vidi ſchedam volantem. 1 2 Cúmque diceret mihi, Quid vidiſti? dixi, Vidi ſchedam volantem, longitudine viginti cubitorum, & latitudine decem cubitorum. 3 Tum dixit mihi; Hæc eſt maledictio preditura ſuper faciem totius terræ: nam quicunque furatur, ex ea ſecundùm ipſam juſtificabitur; & quicunque pejerat, ex ea ſecundùm ipſam juſtificabitur. 4 Hanc educam, dicit Dominus potentiſſimus, & ingredietur domum furis, & domum cujuſvis per nomen meum falſò jurantis: & habitabit in domo ejus, abſumétque ligna ejus & lapides ejus. 5 Poſtea egreſſus eſt angelus qui loquebatur in me, dixítque mihi; Attolle oculos tuos, & vide quid ſit hoc quod egreditur. 6 Dicenti verò mihi, Quid eſt? Dixit, Hæc eſt menſura quæ egreditur, in qua continentur culpæ totius terræ. 7 Et ecce talento plumbeo ſublato, mulier quædam ſedebat in ea menſura.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* فاجاب وقال لي قايلا * هذا قول الرب الي زربابل قايلا * ليس بجيش عظيم ولا بقوة * ولكن 6
بروحي يقول الرب الضابط الكل * ما انت ايها الجبل العظيم الذي امام وجه زربابل لتقوم * واخرج 7
حجر الميراث * مساواة النعمة نعماها * وكان قول الرب الي قايلا * يدا زربابل اسست هذا البيت * 8 9
ويداه يكملانه * وتعلم ان الرب الضابط الكل ارسلني اليك * من اجل انه من احتقر اياما 10
صغارا * فيفرحون وينظرون الحجر القصديري في يد زربابل * هولاء سبع اعين الرب هن
الناظرات علي كل الارض * فاجبت وقلت له * ما هاتان الزيتونتان اللتان عن يمين المنارة 11
ويسارها * وسالت ثانية وقلت له * ما هذان الغصنان من الزيتون اللذان في يدي المنخرين 12
الذهب اللذين يسكبان ويعليان السبعة الافواه الذهب * فقال لي * ما تعلم ما هي هاتان * 13
فقلت لا يا سيد * فقال * هذان ابنا الدسم قاما لرب كل الارض * 14

* الفصل الخامس *

* فرجعت رفعت عيني ونظرت * واذا منجل طاير * فقال لي * ماذا تنظر انت * فقلت انا انظر 1 2
منجلا طايرا * طوله عشرون ذراعا * وعرضه عشر اذرع * فقال لي * هذه اللعنة الخارجة علي 3
وجه كل الارض * من اجل ان كل سارق من هذا الي الموت ينتقم منه * وكل حانث من هذا الي
الموت ينتقم منه * واخرجه يقول الرب الضابط الكل * ويدخل الي بيت السارق والي بيت 4
الحالف باسمي بالكذب * ويحل في وسط بيته * ويفنيه وخشبه وحجارته * وخرج الملاك المتكلم 5
في وقال لي * تفرس بعينيك وانظر هذا الخارج * فقلت ما هو * فقال * هذا المكيال الخارج * 6
وقال * هذا ظلمهم في كل الارض * وها قنطار من رصاص محمول * واذا امراة واحدة جالسة 7
في وسط المكيال *

6 Reſpondit, ac dixit mihi; dicens, Is eſt ſermo Domini ad Zorobabelem, dicens; Nequaquam per exercitum magnum, neq; per potentiam, ſed per ſpiritum meum, ait Dominus omnipotens. 7 Quid es O mons ingens qui es coram facie Zorobabelis, ut reſiſtas? & proferam lapidem hæreditatis, cujus gratia eſt æqualitas gratiæ. 8 Et fuit ſermo Domini ad me, dicens, 9 Manus Zorobabelis fundaverunt hanc domum, et manus ejus abſolvent illam. Et ſcies quòd Dominus omnipotens me miſerit ad te. 10 Quis enim ſpreverit dies parvos? & lætabuntur, & videbunt lapidem ſtanneum in manu Zorobabelis. Hi ſunt ſeptem oculi Domini reſpicientes ad totam terram. 11 Reſpondi, ac dixi ei, Quid ſunt geminæ iſtæ olivæ quæ ſunt ad dexteram candelabri & ſiniſtram ejus? 12 Et interrogavi ſecundò, & dixi ei; Quid ſunt hi gemini rami olivæ, qui ſunt in manibus geminorum roſtrorum aureorum quæ infundunt, & eminent ſeptem oribus aureis? 13 Dixit mihi, Annon ſcis quid iſta ſint? Dixi, Nequaquam O Domine. 14 Dixit, Iſti duo filii pinguedinis aſſiſtunt Domino totius terræ.

CAP. V.

1 Converſus autem levavi oculos meos, ac vidi, & ecce falcem volantem. 2 Dixitq; mihi, Quid tu vides? Dixi, Video falcem volantem longitudinis viginti cubitorum, & latitudinis decem cubitorum. 3 Dixit mihi; Hæc eſt maledictio proceſſura ſuper faciem totius terræ: omnis enim fur per hanc ad mortem punietur, & omnis perjurus per hanc ad mortem punietur. 4 Hanc educam, ait Dominus omnipotens, & ingredietur domum furis, & domum falsò jurantis per nomen meum: & habitabit in medio domûs ejus, conſumetque illam cum lignis & lapidibus illius. 5 Deinde egreſſus angelus in me loquens, dixit mihi; Rimare oculis tuis, & vide id quod egreditur. 6 Cùmq; dixiſſem, Quid eſt? dixit, Hæc eſt menſura quæ egreditur: dixitque, Hæc eſt iniquitas eorum in tota terra. 7 Et ecce quintale plumbi ſublatum: & ecce mulier quædam ſedit in medio menſuræ.

זְכַרְיָה ו

: Ephah medium ad eam projecit & , impietas Hæc : dixit Et
8 וַיֹּאמֶר זֹאת הָרִשְׁעָה וַיַּשְׁלֵךְ אֹתָהּ אֶל־תּוֹךְ הָאֵיפָה
,vidi & ,meos oculos levavi Et .ejᵘs os ad plumbi lapidem projecit &
9 וַיַּשְׁלֵךְ אֶת־אֶבֶן הָעֹפֶרֶת אֶל־פִּיהָ׃ וָאֶשָּׂא עֵינַי וָאֵרֶא
eis & ,earum alis in ſpiritus & , egredientes mulieres duæ ecce &
וְהִנֵּה שְׁתַּיִם נָשִׁים יוֹצְאוֹת וְרוּחַ בְּכַנְפֵיהֶם וְלָהֵנָּה
,terram inter Ephah levaverunt & : ciconiæ alæ ſicut alæ
כְנָפַיִם כְּכַנְפֵי הַחֲסִידָה וַתִּשֶּׂנָה אֶת־הָאֵיפָה בֵּין הָאָרֶץ
: me in loquentem angelum ad dixi Et .cœlos inter &
10 וּבֵין הַשָּׁמָיִם׃ וָאֹמַר אֶל־הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר בִּי
: me ad dixit Et ? Ephah deducentes iſtæ Quò
11 אָנָה הֵמָּה מוֹלִכוֹת אֶת־הָאֵיפָה׃ וַיֹּאמֶר אֵלַי
reponatur & præparetur & , Sinhar terra in domum ei ædificandum Ad
לִבְנוֹת־לָה בַיִת בְּאֶרֶץ שִׁנְעָר וְהוּכַן וְהֻנִּיחָה
.ſuam baſem ſuper ibi
שָּׁם עַל־מְכֻנָתָהּ׃

CAP. VI. ו

quatuor ecce & ,vidi & , meos oculos levavi & , ſum converſus Et
1 וָאָשֻׁב וָאֶשָּׂא עֵינַי וָאֶרְאֶה וְהִנֵּה אַרְבַּע
montes montes & : montes duos inter ab egredientes , quadrigæ
מַרְכָּבוֹת יֹצְאוֹת מִבֵּין שְׁנֵי הֶהָרִים וְהֶהָרִים הָרֵי
; rufi equi prima quadriga In .æris
2 נְחֹשֶׁת׃ בַּמֶּרְכָּבָה הָרִאשֹׁנָה סוּסִים אֲדֻמִּים
quadriga in Et .nigri equi ſecunda quadriga in &
3 וּבַמֶּרְכָּבָה הַשֵּׁנִית סוּסִים שְׁחֹרִים׃ וּבַמֶּרְכָּבָה
equi quarta quadriga in & : albi equi tertia
הַשְּׁלִשִׁית סוּסִים לְבָנִים וּבַמֶּרְכָּבָה הָרְבִעִית סוּסִים
loquentem angelum ad dixi & , reſpondi Et .fortes , grandinati
4 בְּרֻדִּים אֲמֻצִּים׃ וָאַעַן וָאֹמַר אֶל־הַמַּלְאָךְ הַדֹּבֵר
ait & , angelus reſpondit Et ? mi Domine hæc Quid : me in
5 בִּי מָה־אֵלֶּה אֲדֹנִי׃ וַיַּעַן הַמַּלְאָךְ וַיֹּאמֶר
conſiſtendo à egredientes , cælorum venti quatuor Iſti : me ad
אֵלָי אֵלֶּה אַרְבַּע רֻחוֹת הַשָּׁמַיִם יוֹצְאוֹת מֵהִתְיַצֵּב
equi ea in Qua .terræ univerſæ Dominatore ſuper
6 עַל־אֲדוֹן כָּל־הָאָרֶץ׃ אֲשֶׁר־בָּהּ הַסּוּסִים
ſunt egreſſi albi & , Aquilonis terram ad egredientes , nigri
הַשְּׁחֹרִים יֹצְאִים אֶל־אֶרֶץ צָפוֹן וְהַלְּבָנִים יָצְאוּ
.Auſtri terram ad ſunt egreſſi grandinati & : eos poſt ad
אֶל־אַחֲרֵיהֶם וְהַבְּרֻדִּים יָצְאוּ אֶל־אֶרֶץ הַתֵּימָן׃
ambulatum ire quærebant & , ſunt egreſſi fortes Et
7 וְהָאֲמֻצִּים יֵצְאוּ וַיְבַקְשׁוּ לָלֶכֶת לְהִתְהַלֵּךְ
ambulaverunt & : terram in ambulate , Ite : dixit Et .terram in
בָּאָרֶץ וַיֹּאמֶר לְכוּ הִתְהַלְּכוּ בָאָרֶץ וַתִּתְהַלַּכְנָה
: dicendo ,me ad eſt locutus & , me vocavit Et .terram in
8 בָּאָרֶץ׃ וַיַּזְעֵק אֹתִי וַיְדַבֵּר אֵלַי לֵאמֹר
fecerunt requieſcere , Aquilonis terram ad egredientes Vide
רְאֵה הַיּוֹצְאִים אֶל־אֶרֶץ צָפוֹן הֵנִיחוּ אֶת־
Domini verbum fuit Et .Aquilonis terra in meum ſpiritum
9 רוּחִי בְּאֶרֶץ צָפוֹן׃ וַיְהִי דְבַר־יְהוָה
à , Cheldai à , tranſmigratione à Accipe : dicendo , me ad
10 אֵלַי לֵאמֹר׃ לָקוֹחַ מֵאֵת הַגּוֹלָה מֵחֶלְדַּי מֵאֵת
intrabis & , illa die in tu venies & : Jedajah à & , Thobijahu
טוֹבִיָּהוּ וּמֵאֵת יְדַעְיָה וּבָאתָ אַתָּה בַּיּוֹם הַהוּא וּבָאתָ
ſumes Et .Babel de venerunt qui ,Sephanjah filii Joſijah domum
11 בֵּית יֹאשִׁיָּה בֶן־צְפַנְיָה אֲשֶׁר־בָּאוּ מִבָּבֶל׃ וְלָקַחְתָּ
Jehoſuah capite in pones & , coronas facies & , aurum & , argentum
כֶסֶף־וְזָהָב וְעָשִׂיתָ עֲטָרוֹת וְשַׂמְתָּ בְּרֹאשׁ יְהוֹשֻׁעַ
.magni ſacerdotis Jehoſadac filii
בֶּן־יְהוֹצָדָק הַכֹּהֵן הַגָּדוֹל׃

Verſio VULG. LAT.

8 Et dixit; Hæc eſt impietas. Et
projecit eam in medio amphoræ,
& miſit maſſam plumbeam in os
9 ejus. Et levavi oculos meos, &
vidi: & ecce duæ mulieres egre-
dientes, & ſpiritus in alis ea-
rum, & habebant alas quaſi alas
milvi: & levaverunt amphoram
10 inter terram & cœlum. Et dixi
ad angelum, qui loquebatur in
me; Quò iſtæ deferunt ampho-
11 ram? Et dixit ad me; Ut ædifi-
cetur ei domus in terra Sennaar,
& ſtabiliatur, & ponatur ibi ſu-
per baſem ſuam.

CAP. VI.

1 ET converſus ſum, & levavi
oculos meos, & vidi; & ecce
quatuor quadrigæ egredientes de
medio duorũ montiũ: & montes,
2 montes ærei. In quadriga prima
equi rufi, & in quadriga ſe-
3 cunda equi nigri, Et in quadri-
ga tertia equi albi, & in qua-
driga quarta equi varii, & fortes.
4 Et reſpondi, & dixi ad angelum
qui loquebatur in me; Quid ſunt
5 hæc, domine mi? Et reſpondit
angelus, & ait ad me; Iſti ſunt
quatuor venti cœli, qui egredi-
untur, ut ſtent coram Domina-
6 tore omnis terræ. In qua erant
equi nigri, egrediebantur in ter-
ram Aquilonis: & albi egreſſi
ſunt poſt eos: & varii egreſſi
7 ſunt ad terram Auſtri. Qui au-
tem erant robuſtiſſimi, exie-
runt & quærebant ire & diſcur-
rere per omnem terram. Et
dixit; Ite, perambulate ter-
8 ram: & perambulaverunt terram.
Et vocavit me, & locutus eſt ad
me, dicens; Ecce qui egrediun-
tur in terram Aquilonis, requie-
ſcere fecerunt ſpiritum meum in
9 terra Aquilonis. Et factum eſt
verbum Domini ad me, dicens;
10 Sume à tranſmigratione, ab
Holdai, et à Tobia, et ab Idaia;
et venies tu in die illa, et intrabis
domum Joſiæ, filii Sophoniæ, qui
11 venerunt de Babylone. Et ſumes
aurum et argentum: et facies
coronas, et pones in capite Jeſu
filii Joſedec ſacerdotis magni,

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

8 Καὶ εἶπεν, Αὕτη ἐστὶν ἡ ἀνομία. καὶ ἔῤῥιψεν
αὐτὴν (λ) εἰς μέσον τοῦ μέτρου, καὶ ἔῤῥιψε
τὸν λίθον τοῦ μολίβου εἰς τὸ στόμα αὐ-
9 τῆς. Καὶ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ ἴδον,
καὶ ἰδοὺ δύο γυναῖκες ἐκπορευόμεναι, καὶ
πνεῦμα ἐν ταῖς πτέρυξιν αὐτῶν, καὶ αὗται εἶχον
(μ) πτέρυγας ἔποπος· καὶ ἀνέλαβον τὸ μέ-
τρον ἀναμέσον τῆς γῆς, καὶ ἀναμέσον τοῦ οὐ-
10 ρανοῦ. Καὶ εἶπα πρὸς τὸν ἄγγελον τὸν
λαλοῦντα ἐν ἐμοί, Ποῦ αὗται ἀποφέρουσι τὸ
11 μέτρον; Καὶ εἶπε πρὸς μὲ, Οἰκοδομῆσαι
αὐτῷ οἰκίαν ἐν γῇ Βαβυλῶνος, καὶ ἑτοιμά-
σαι, καὶ θήσουσιν αὐτὸ ἐκεῖ ἐπὶ τὴν ἑτοιμα-
σίαν αὐτοῦ.

Et dixit; Hæc eſt iniquitas. Et 8
projecit eã in medium menſuræ:
& projecit lapidem plumbi in os
ejus. Et elevavi oculos meos, 9
& vidi: & ecce duæ mulieres
egredientes, & ſpiritus in alis
earum: & ipſæ habebant alas
(c) upupæ. Et elevaverunt
menſuram inter terram & cœ-
lum. Et dixi ad angelum, qui 10
loquebatur in me; Quò iſtæ de-
ferunt menſuram? Et dixit ad 11
me; Ut ædificent ei domum in
terra Babylonis, & præparent, &
ponant eam ibi ſuper præparatio-
nem ſuam.

MS. A. (λ) ἐμ μέσῳ (μ) πτέρυγας ὡς πτέρυγας ἔποπος·

ΚΕΦ. ϛʹ.

1 ΚΑὶ ἐπέστρεψα, καὶ ἦρα τοὺς ὀφθαλμούς
μου, καὶ ἴδον, καὶ ἰδοὺ (˜) τέσσαρα ἅρματα ἐκ-
πορευόμενα ἐκ μέσου δύο ὀρέων, καὶ τὰ ὄρη
2 ἦν ὄρη χαλκᾶ. Ἐν τῷ ἅρματι τῷ πρώτῳ ἵπ-
ποι (α) πυῤῥοί, καὶ ἐν τῷ ἅρματι τῷ δευτέρῳ
3 ἵπποι μέλανες, Καὶ ἐν τῷ ἅρματι τῷ τρί-
τῳ ἵπποι λευκοί, καὶ ἐν τῷ ἅρματι τῷ τε-
4 τάρτῳ ἵπποι ποικίλοι ψαροί. Καὶ ἀπε-
κρίθην, καὶ εἶπα πρὸς τὸν ἄγγελον τὸν λα-
5 λοῦντα ἐν ἐμοί, Τί ἐστι ταῦτα κύριε; Καὶ ἀπε-
κρίθη ὁ ἄγγελος ὁ λαλῶν ἐν ἐμοί, καὶ εἶπε,
(β) Ταῦτά ἐστιν οἱ τέσσαρες ἄνεμοι τοῦ οὐρα-
νοῦ, ἐκπορεύονται παραστῆναι τῷ κυρίῳ πά-
6 σης τῆς γῆς. Ἐν ᾧ ἦσαν (γ) ἵπποι οἱ μέ-
λανες, ἐξεπορεύοντο ἐπὶ γῆν Βοῤῥᾶ, καὶ οἱ
λευκοὶ ἐξεπορεύοντο κατόπισθεν αὐτῶν, καὶ οἱ
ποικίλοι ἐξεπορεύοντο ἐπὶ γῆν Νότου,
7 Καὶ οἱ ψαροὶ ἐξεπορεύοντο, καὶ ἐπέβλεπον
τοῦ πορεύεσθαι (δ) τοῦ περιοδεῦσαι τὴν γῆν.
καὶ εἶπε, Πορεύεσθε, καὶ περιοδεύσατε τὴν
8 γῆν. καὶ περιώδευσαν τὴν γῆν. Καὶ ἀνεβό-
ησε, καὶ ἐλάλησε πρὸς μὲ, λέγων, Ἰδοὺ οἱ
ἐκπορευόμενοι ἐπὶ γῆν Βοῤῥᾶ, (ε) καὶ ἀνέ-
9 παυσαν τὸν θυμόν μου ἐν γῇ Βοῤῥᾶ. Καὶ ἐ-
γένετο λόγος κυρίου πρὸς μὲ, λέγων,
10 Λάβε τὰ ἐκ τῆς αἰχμαλωσίας παρὰ τῶν ἀρ-
χόντων, καὶ παρὰ τῶν χρησίμων αὐτῆς, καὶ
παρὰ τῶν ἐπεγνωκότων (ζ) αὐτήν, καὶ εἰσε-
λεύσῃ σὺ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ εἰς τὸν οἶκον
Ἰωσίου τοῦ Σοφονίου τοῦ ἥκοντος ἐκ Βαβυ-
11 λῶνος, Καὶ λήψῃ ἀργύριον καὶ χρυσίον, καὶ
ποιήσεις στεφάνους, καὶ ἐπιθήσεις ἐπὶ τὴν κε-
φαλὴν Ἰησοῦ τοῦ Ἰωσεδὲκ τοῦ ἱερέως τοῦ με-
γάλου·

CAP. VI.

ET converſus ſum, & levavi 1
oculos meos, & vidi: Et ecce
quatuor quadrigæ egredientes de
medio duorum montium: &
montes erant montes ænei. In 2
quadriga prima equi rufi: &
in quadriga ſecunda equi ni-
gri: Et in quadriga ter- 3
tia equi albi: & in quadriga
quarta equi varii (a) ſtur-
nini. Et reſpondi, & dixi 4
ad angelum, qui loquebatur in
me; Quid ſunt hæc, domine?
Et reſpondit angelus, qui loque- 5
batur in me, & dixit; Hi ſunt
quatuor venti cœli: (b) egre-
diuntur, ut aſſiſtant Domino o-
mnis terræ. In qua erant equi 6
nigri, egrediebantur ſuper terram
Aquilonis: & albi egrediebantur
poſt eos: & varii exibant in terrã
Auſtri: Et ſturnini egredie- 7
bantur, & conſiderabant, (c) ut
irent circuire terram. Et dixit;
Ite, & circuite terram. Et cir-
cuierunt terram. Et clamavit, 8
& loquutus eſt ad me, dicens;
Ecce, qui egrediuntur ſuper ter-
ram Aquilonis: & requieſcere
fecerant furorem meum in terra
Aquilonis. Et factus eſt ſermo 9
Domini ad me, dicens; Accipe, 10
quæ de captivitate ſunt, à prin-
cipibus, & ab utilibus ejus, &
ab iis qui cognoverunt eam: &
ingredieris tu in die illa in do-
mum Joſiæ filii Sophoniæ, qui
venit de Babylone: Et accipies 11
argentum, & aurum, & facies
coronas, & impones ſuper caput
Jeſu Joſedec ſacerdotis ma-
gni:

MS.A. (˜) τέσσερα (α) πυῤῥοί, (β) Οὗτοί εἰσιν (γ) οἱ ἵπποι (δ) καὶ
περιοδεῦσαι (ε) ἀνέπαυσαν (ζ) αὐτῶν,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 ואמר על דא אתחיבו וגלו על דהוו נסבין ויהבין במכילתא דשקרא ואתו עממין
9 אוחרנין ויתיבו באתריהון׃ וזקפית עיני וחזית והא תרתין מדינן גלין לביני מלכות
עממי ארעא ועממין קלילין מגלן יתהון בקלילו כמא דמשתדי נשרא ואגליאו ית עמא
דהוו נסבין ויהבין במכילתא דשקרא לביני מלכות עממיא דארעא דתחות כל שמיא׃
10 ואמרית למלאכא דממלל עמי לאן אנון מגלן ית עמא דהוו נסבין ויהבין במכילתא
11 דשקרא׃ ואמר לי לאתקנאה להון אתר במדינת בבל ויתעכבון ויתאחדון תמן עד
דימטי זמנהון׃

ו

1 ותבית וזקפית עיני וחזית והא ארבע רתיכיא נפקן מבין תרין טוריא וטוריא טורי
2 דנחשא׃ ברתיכא קדמיתא סוסון סומקין וברתיכא תניתא סוסון אוכמין׃ וברתיכא 3
4 תליתאה סוסון חורין וברתיכא רביעתא סוסון פציחין קטמנין׃ ואתיבית ואמרית
5 למלאכא דממלל עמי מה אלין רבוני׃ ואתיב מלאכא ואמר לי אלין ארבע מלכון
6 דאנון כארבע רוחי שמיא גלין מלאתעתדא קדם רבון כל ארעא׃ דבה סוסון אוכמין
7 נפקין לארעא צפונא וחורין נפקו בתריהון ופציחין נפקו לארעא דרומא׃ וקטמנין
8 נפקו ובעו למיזל להלכא בארעא ואמר אזילו והליכו בארעא׃ ואכרז
עלי ומלל עמי למימר חזי דנפקין לארעא צפונא אמר להון עבידו ית רעותי בארעא
9 צפונא׃ והוה פתגם נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ סב מן בני גלותא מחלדי ומן 10
טוביה ומן ידעיה ותיתי את ביומא ההוא ותעול לבית יאשיה בר צפניה דאתי מבבל׃
11 ותסב כסף ודהב ותעביד כליל רב ותשוי בריש יהושע בר יהוצדק כהנא רבא׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dixit, Propter hoc condemnati ſunt & in exilium tranſlati ſunt, pro eo quòd accipiebant & dabant menſura falſa, & venerunt populi alieni, qui habitaverunt in loco eorum. Et levavi oculos meos, & vidi, & ecce duæ provinciæ revelabantur *inter regna populorum terræ*, & populi celeres transferebant illos velociter, ſicut volat aquila: & migrare fecerunt populum, qui accipiebant & dabant menſura falſa inter regna populorum terræ, quæ ſunt ſub omnibus cœlis. Et dixi ad angelum qui mecum loquebatur: Quò iſti migrare faciunt populum, qui accipiebat & dabat menſura falſa? Et dixit ad me, Ut præparetur eis locus in provincia Babylonis, & retineantur & demorentur ibi donec perveniat tempus eorum.

CAP. VI.

ET converſus ſum & ſuſtuli oculos meos & vidi, & ecce quatuor quadrigæ egredientes de medio duorum montium; & montes erant montes ærei. In quadriga prima erant equi rufi, et in quadriga ſecunda equi nigri. Et in quadriga tertia equi albi, et in quadriga quarta equi varii, et coloris cinerei. Et reſpondi, et dixi ad angelum qui loquebatur mecum, Quid ſunt hæc Dñe mi? Et reſpondit angelus et dixit ad me: Hæc ſunt quatuor regna quæ ſunt *quaſi* quatuor *venti* cœli, apparentia, quò minus ſtent coram dominatore omnis terræ. In qua equi nigri erant, egrediebantur in terram Aquilonis; et albi egrediebantur poſt eos, et varii egrediebantur in terram Auſtralem. Cinerei egrediebantur et quærebant ire et deambulare per terram: et dixit, Ite et perambulate terram: itaque terram perambulavere. Et clamavit ad me, et locutus eſt mecum, dicens: Vide illos qui egrediuntur in terram Aquilonis: dic eis, Facite voluntatem meam in terra Aquilonis. Et factus eſt ſermo prophetiæ à facie Domini ad me, dicendo: Aſſume à filiis tranſmigrationis ab Holdai et à Tobia, et ab Idaia, et venies tu in die illa, et intrabis in domum Joſiæ filii Sophoniæ, qui venerunt de Babylone. Et tolles argentum et aurum, et facies coronam magnam, et pones in capite Joſue filii Joſedech ſacerdotis magni.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

8 ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܕܐ ܗܝ ܚܛܝܬܐ. ܘܐܪܡܝܗ ܒܓܘ ܡܟܝܠܬܐ. ܘܐܪܡܝ ܟܟܪܐ ܕܐܒܪܐ ܥܠ ܦܘܡܗ. *
9 ܘܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ. ܘܗܐ ܬܪܬܝܢ ܢܫܝܢ ܢܦܩܢ. ܘܪܘܚܐ ܒܟܢܦܝܗܝܢ. ܘܟܢܦܐ *
ܐܝܬ ܠܗܝܢ. ܐܝܟ ܟܢܦܐ ܕܚܘܪܬܐ. ܘܫܩܠܗ ܠܡܟܝܠܬܐ ܒܝܢ ܐܪܥܐ ܠܫܡܝܐ. * ܘܐܡܪܬ 10
11 ܠܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܠܐܝܟܐ ܡܘܒܠܝܢ ܠܗ ܠܡܟܝܠܬܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ. ܕܢܒܢܘܢ
ܠܗ ܒܝܬܐ ܒܐܪܥܐ ܕܒܒܠ. ܘܢܬܩܢܘܢܗ. ܘܢܣܝܡܘܢܗ ܬܡܢ ܥܠ ܬܘܩܢܗ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܘ *

Dixitque mihi; Hæc eſt peccatum: tum conjecit eam in menſuram, & talentum plumbeum impoſuit ori ejus. 8 Deinde attollens oculos meos vidi, quum ecce duæ mulieres egrediebantur, & ventus in alis earum; alas enim habebant ſimiles alis ciconiæ; ſuſtulerúntque menſuram illam terram inter ac cœlum. 9 Quarè dicenti mihi ad angelum qui loquebatur in me; Quonam deferunt hanc menſuram? 10 Dixit, Ut extruant ei domum in terra Babylonis, ſtabiliant eam, & ibi collocent eam ſuper fulcimento ſuo. 11

CAP. VI.

1 ܘܗܦܟܬ ܐܪܝܡܬ ܥܝܢܝ ܘܚܙܝܬ. ܘܗܐ ܐܪܒܥ ܡܪܟܒܢ ܢܦܩܢ ܡܢ ܒܝܬ ܬܪܝܢ *
2 ܛܘܪܝܢ. ܘܛܘܪܐ ܗܢܘܢ ܛܘܪܐ ܕܢܚܫܐ. * ܒܡܪܟܒܬܐ ܩܕܡܝܬܐ ܪܟܫܐ ܣܘܡܩܐ.
3 ܘܒܡܪܟܒܬܐ ܕܬܪܬܝܢ. ܪܟܫܐ ܐܘܟܡܐ * ܘܒܡܪܟܒܬܐ ܕܬܠܬ. ܪܟܫܐ ܚܘܪܐ.
4 ܘܒܡܪܟܒܬܐ ܕܐܪܒܥ. ܪܟܫܐ ܦܪܝܓܐ. * ܘܥܢܝܬ. ܘܐܡܪܬ ܠܡܠܐܟܐ ܕܡܡܠܠ ܒܝ. ܡܢܐ
5 ܗܠܝܢ ܡܪܝ. * ܥܢܐ ܡܠܐܟܐ. ܘܐܡܪ ܠܝ. ܗܠܝܢ ܐܢܝܢ ܐܪܒܥ ܪܘܚܝ ܫܡܝܐ.
6 ܕܩܝܡܝܢ ܗܘܘ ܩܕܡ ܡܪܐ ܕܟܠܗ ܐܪܥܐ. * ܕܐܝܬ ܒܗ ܪܟܫܐ ܐܘܟܡܐ. ܢܦܩܝܢ ܠܐܪܥܐ
7 ܕܓܪܒܝܐ. ܘܚܘܪܐ ܢܦܩܝܢ ܒܬܪܗܘܢ. ܘܦܪܝܓܐ ܢܦܩܝܢ ܠܐܪܥܐ ܕܬܝܡܢܐ. * ܘܣܘܡܩܐ
ܢܦܩܘ. ܘܒܥܘ ܠܡܐܙܠ ܠܡܬܗܠܟܘ ܒܐܪܥܐ. ܘܐܡܪ ܠܗܘܢ. ܙܠܘ ܗܠܟܘ ܒܐܪܥܐ.
8 ܘܗܠܟܘ ܒܐܪܥܐ. * ܘܩܥܐ ܘܐܡܪ ܠܝ. ܚܙܝ ܗܠܝܢ ܕܢܦܩܝܢ ܠܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. ܘܐܢܝܚܘ
9 10 ܪܘܚܝ ܒܐܪܥܐ ܕܓܪܒܝܐ. * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܣܒ ܡܢ
ܫܒܝܬܐ. ܡܢ ܚܠܕܝ. ܘܡܢ ܛܘܒܝܐ. ܘܡܢ ܝܕܥܝܐ. ܘܬܐܬܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܘܬܥܘܠ
11 ܠܒܝܬܗ ܕܝܘܫܝܐ ܒܪ ܨܦܢܝܐ ܕܐܬܐ ܡܢ ܒܒܠ. * ܘܣܒ ܣܐܡܐ ܘܕܗܒܐ. ܘܥܒܕ
ܟܠܝܠܐ. ܘܣܝܡ ܒܪܫܗ ܕܝܫܘܥ ܒܪ ܝܘܨܕܩ ܟܗܢܐ ܪܒܐ.

DEnuò attollens oculos meos vidi, quum ecce quatuor currus prodibant è medio duorum montium, qui montes erant montes æneï. 1 In primo curru equi rufi erant, in ſecundo curru equi nigri, 2 In tertio curru equi albi, & in quarto curru equi verſicolores. 3 Cúmque reſpondens dixiſſem angelo qui loquebatur in me; Quid hæc ſunt, domine mi? 4 Reſpondit angelus, dixitque mihi; Hi ſunt quatuor venti cœli, qui ſtabant coram Domino totius terræ. 5 Is in quo equi nigri ſunt, egrediuntur ad terram Aquilonarem, & albi egrediuntur poſt eos; verſicolores autem egrediuntur ad terram Auſtralem: 6 Porrò rufis egreſſis & ire petentibus ad obambulandam terram, dixit; Ite obambulate terram: & obambulavêre terram. 7 Et inclamans dixit mihi; Vide hos qui egrediuntur ad terram Aquilonarem tranquillaturi ſpiritum meum in terra Aquilonari. 8 Deinde fuit ad ad me ſermo Domini, dicendo; 9 Accipe à captivis, ab Holdai, à Tobia, & ab Idaia; eodémque die veni & ingredere domum Joſiæ filii Sephaniæ qui rediit è Babylone. 10 Accipe hujus argentum & aurum, confice coronam, & impone capiti Jeſu filii Jozedec ſacerdotis maximi? 11

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

8 * فقال • هذا هو الاثم * وطرحها في وسط المكيال * وطرح الحجر الرصاص علي فمها * ورفعت 9
عيني ونظرت • واذا امرأتان خارجتان * وروح في اجنحتهما * وكانت لهما اجنحة مثل اجنحة
10 العقعق • وحملتا المكيال فيما بين الارض والسماء * فقلت للملاك المتكلم في • اين يذهبان
11 هاتان بالمكيال * فقال لي • لتبنيا له بيتا في بابل * وتهيئانه وتضعانه هناك علي تهيئته *

* الفصل السادس *

1 * ورجعت ورفعت عيني ونظرت واذا اربع مراكب خرجن من وسط جبلين • والجبال كانت
2 3 جبال نحاس * في المركبة الاولي خيول حمر • وفي المركبة الثانية خيول دهم * وفي المركبة
4 الثالثة خيول شهب • وفي المركبة الرابعة بلق شقر * فاجبت وقلت للملاك المتكلم في • ما هي
5 هذه يا سيدي * فاجاب الملاك المتكلم في وقال • هذه هي اربعة رياح السماء • تخرجن لتقفن
6 لرب كل الارض * الذي به كانت الخيول الدهم • خرجت الي ارض الجربياء • والشهب خرجت
7 في اثرها • والبلق خرجت علي ارض التيمن * والشقر خرجت • ونظرت لتسير وتطوف الارض *
8 فقال • سيروا وطوفوا الارض • فطافوا الارض * فصرخ وتكلم معي قايلا • ها الذين خرجوا
الي ارض الجربياء كفوا غضبي في ارض الجربياء •

* الاصحاح السابع والعشرون • وهو الثالث من النبوة *

9 10 * وكان قول الرب الي قايلا * خذ الذين من السبي • من الروساء • ومن خبرايه •
ومن العارفين به • وتدخل انت في ذلك اليوم الي بيت يوسيا بن صفونيا الذي قدم
11 من بابل * وتاخذ فضة وذهبا • وتصنع اكاليل • وتضعها علي راس يسوع بن يوصاداق
الكاهن العظيم •

Et dixit, Hæc eſt iniquitas: tum injecit eam in medium menſuræ, projecitque lapidem illum plumbeum ſuper os ejus. 8 *Poſthæc ſublatis oculis vidi, & ecce duæ mulieres egrediebantur, & ſpiritus in alis earum (habebant enim alas ſimiles alis picarum) & levaverunt menſuram illam terram inter ac cœlum.* 9 *Dicenti vero mihi ad angelum in me loquentem; Quò deferunt iſtæ menſuram illam?* 10 *Dixit mihi, ut ædificent ei domum in Babele, & præparent eam, ponantque eam ibi ſuper præparationem ejus.* 11

CAP. VI.

DEinde converſus ſum, & ſublatis oculis vidi; & ecce quatuor currus egreſſi ſunt è medio duorum montium: erant autem illi montes, montes ænei. 1 *In primo curru erant equi rubei,* 2 *in ſecundo curru equi nigri, In tertio curru equi cinerei, & in quarto curru verſicolores rufi.* 3 *Reſpondens itaque dixi ad angelum in me loquentem; Quid ſunt hæc O domine?* 4 *Reſpondit angelus in me loquens, & ait; Hi ſunt quatuor cœli venti: egrediuntur ut aſtent Domino totius terræ.* 5 *In quo erant equi nigri, egreſſi ſunt ad terram Aquilonarem, & cinerei egreſſi ſunt per eorum veſtigia, & verſicolores egreſſi ſunt in terram Auſtralem:* 6 *Rufi autem egreſſi, contendebant ire terramque perluſtrare: quibus dixit; Ite, & terram perluſtrate: & perluſtravêre terram.* 7 *Tum clamans allocutus eſt me, dicens; Ecce qui ingreſſi ſunt terram Aquilonarem, ſedaverunt iram meam in terra Aquilonari.* 8

Textus vigeſimus ſeptimus, hujus autem Prophetiæ tertius.

Deinde fuit ſermo Domini ad me, dicens; 9 *Duc eos qui ſunt de captivitate, ex principibus, ex expertis & peritis rerum illius: tuque eâ die ingrediens domum Joſiæ filii Sophoniæ qui remeavit è Babele:* 10 *Capieſque argentum & aurum, & conficies coronas, poneſque eas ſuper caput Jeſu filii Joſedechi ſacerdotis maximi.* 11

זכריה׃ ז

: dicendo ,exercituum Dominus dixit Sic : dicendo ,eum ad dices Et
12 ואמרת אליו לאמר כה אמר יהוה צבאות לאמר
ædificabit & ,germinabit eum ſubter & ,ejus nomen germen vir Ecce
הנה־איש צמח שמו ומתחתיו יצמח ובנה
,Domini templum exſtruet ipſe Et .Domini templum
13 את־היכל יהוה׃ והוא יבנה את־היכל יהוה
: eius ſolio *ſuper* dominabitur & ſedebit & , gloriam portabit ipſe &
והוא ישא הוד וישב ומשל על־כסאו
inter erit pacis conſilium & ,ejus ſolio *ſuper* ſacerdos erit &
והיה כהן על־כסאו ועצת שלום תהיה בין
,Thobiah *ipſi* & , Chelem *ipſi* *erit* ,*diademata* Et .*ipſos ambos*
14 שניהם׃ והעטרת תהיה לחלם ולטוביה
templo in memoriale in , Sephanjah filio Chen & : Jedahjah *ipſi* &
ולידעיה ולחן בן־צפניה לזכרון בהיכל
: Domini templo in ædificabunt & , venient longinqui Et .Domini
15 יהוה׃ ורחוקים יבאו ובנו בהיכל יהוה
, erit Et .vos ad me miſerit exercituum Dominus quod ſcietis &
וידעתם כי־יהוה צבאות שלחני אליכם והיה
.veſtri Dei Domini *voce in* audieritis audiendo ſi
אם־שמוע תשמעון בקול יהוה אלהיכם׃

CAP. VII. ז

DOMINI verbum fuit , regis Dariaves quarto anno in fuit Et
1 ויהי בשנת ארבע לדריוש המלך היה דבר־יהוה
miſit *Et* .Chiſleu *in* noni menſis quarta in , Zecharjah ad
2 אל־זכריה בארבעה לחדש התשעי בכסלו׃ וישלח
: ejus viros & , melech-Reghem & , Sareſer ipſum Dei domum
בית־אל שראצר ורגם מלך ואנשיו
ſacerdotes ad *dicendum Ad* .DOMINI *facies* orandum ad
3 לחלות את־פני יהוה׃ לאמר אל־הכהנים
: dicendo , prophetas ad & ,exercituum Domini domo in qui
אשר לבית־יהוה צבאות ואל־הנביאים לאמר
quemadmodum , me ſeparando , quinto menſe in flebo Nunquid
האבכה בחדש החמשי הנזר כאשר
exercituum Domini verbum fuit Et ? annis tot jam feci
4 עשיתי זה כמה שנים׃ ויהי דבר־יהוה צבאות
ad & , terræ populum omnem ad Dic : dicendo me ad
5 אלי לאמר׃ אמר אל־כל־עם הארץ ואל־
quinta in *plangere* & , jejunaretis Cùm : dicendo ſacerdotes
הכהנים לאמר כי־צמתם וספוד בחמישי
jejunium nunquid , annis ſeptuaginta jam & ſeptima in &
ובשביעי וזה שבעים שנה הצום
nonne , *bibetis* cùm & , *comedetis* quando Et ? *ego* *mihi* jejunâſtis
6 צמתני אני׃ וכי תאכלו וכי תשתו הלוא
verba Nonne ? *bibentes* vos & , *comedentes* vos
7 אתם האכלים ואתם השתים׃ הלוא את־הדברים
prophetarum manum per DOMINUS prædicavit quæ
אשר קרא יהוה ביד הנביאים
ej⁹ urbes & ,*quietam* & ,*habitantem* *Jeruſalaim* *exiſtendo in* , priorum
הראשנים בהיות ירושלם ישבת ושלוה ועריה
verbum fuit Et ? *ſedentem* *planitiem* & *meridiem* & ; ej⁹ *circuitus*
8 סביבתיה והנגב והשפלה ישב׃ ויהי דבר־
DOMINUS dixit Sic : dicendo ,Zecharjah ad DOMINI
9 יהוה אל־זכריה לאמר׃ כה אמר יהוה
,miſericordiã & ; judicate *veritatis* Judicium : dicendo ,exercituum
צבאות לאמר משפט אמת שפטו וחסד
.ſuo fratre cum unuſquiſque facite miſerationes &
ורחמים עשו איש את־אחיו׃

Verſio VULG. LAT.

12 Et loquêris ad eum, dicens; Hæc ait Dominus exercituum, dicens; ECCE VIR ORIENS NOMEN EJUS: & ſubter eum orietur, & ædificabit templum Domino. 13 Et ipſe extruet templum Domino: & ipſe portabit gloriam, & ſedebit, & dominabitur ſuper ſolio ſuo: & erit ſacerdos ſuper ſolio ſuo, & conſilium pacis erit inter illos duos. 14 Et coronæ erunt Helem, & Tobiæ, & Idaiæ, & Hem, filio Sophoniæ, memoriale in templo Domini. 15 Et qui procul ſunt, venient, & ædificabunt in templo Domini: & ſcietis quia Dominus exercituum miſit me ad vos. Erit autem hoc, ſi auditu audieritis vocẽ Domini Dei veſtri.

CAP. VII.

1 ET factum eſt in anno quarto Darii regis, factum eſt verbum Domini ad Zachariam, in quarta 2 menſis noni, qui eſt Caſleu. Et miſerunt ad domum Dei, Saraſar, & Rogommelech, & viri qui erant cum eo, ad deprecandam fa3 ciem Domini: Ut dicerent ſacerdotibus domûs Domini exercituum, & prophetis, loquentes; Numquid flendum eſt mihi in quinto menſe, vel ſanctificare me debeo, ſicut jam feci multis annis? 4 Et factum eſt verbum Domini ex5 ercituum ad me, dicens; Loquere ad omnem populum terræ, & ad ſacerdotes, dicens; Cùm jejunaretis, & plangeretis in quinto & ſeptimo per hos ſeptuaginta annos: numquid jejunium je6 junâſtis mihi? Et cùm comediſtis, & bibiſtis, numquid non vobis comediſtis, & vobiſmetipſis 7 bibiſtis? Numquid non ſunt verba, quæ locutus eſt Dominus in manu prophetarum priorum, cùm adhuc Jeruſalem habitaretur, & eſſet opulenta, ipſa & urbes in circuitu ejus, et ad Auſtrum, et in 8 campeſtribus habitaretur? Et factum eſt verbum Domini ad Za9 chariam, dicens; Hæc ait Dominus exercituum, dicens; Judicium verum judicate, & miſericordiam & miſerationes facite, unuſquiſque cum fratre ſuo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

12 Καὶ ἐρεῖς πρὸς αὐτὸν, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἰδοὺ ἀνὴρ, Ἀνατολὴ ὄνομα αὐτῷ· ϗ ὑποκάτωθεν αὐτοῦ 13 ἀνατελεῖ, Καὶ οἰκοδομήσει τὸν οἶκον κυρίου, καὶ αὐτὸς λήψεται ἀρετὴν, καὶ καθιεῖται, ϗ κατάρξει ἐπὶ τοῦ θρόνου αὐτοῦ, ϗ ἔσται (η) ἱερεὺς ἐκ δεξιῶν αὐτοῦ, καὶ βουλὴ εἰρηνικὴ ἔσται ἀναμέσον ἀμφοτέ14 ρων. Ὁ δὲ στέφανος ἔσται τοῖς ὑπομένουσι (θ), ϗ τοῖς χρησίμοις αὐτῆς, καὶ τοῖς ἐπεγνωκόσιν αὐτὴν, ϗ εἰς χάριτα (ι) υἱοῦ Σοφονίου, ϗ εἰς ψαλμὸν ἐν οἴκῳ 15 κυρίου. Καὶ οἱ μακρὰν ἀπ᾽ αὐτῶν ἥξουσι, ϗ οἰκοδομήσουσιν ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου, ϗ (κ) γνώσεσθε διότι κύριος παντοκράτωρ ἀπέσταλκέ με πρὸς ὑμᾶς. ϗ ἔσται, ἐὰν εἰσακούοντες εἰσακούσητε τῆς φωνῆς κυρίου τοῦ θεοῦ ὑμῶν.

Et dices ad eum; Hæc dicit Do12 minus omnipotens; Ecce vir, (d) Oriens nomen ejus: & ſubter eum orietur: Et ædificabit 13 domum Domini: & ipſe accipiet (e) virtutem, & ſedebit, & imperabit ſuper throno ſuo. Et erit ſacerdos à dextris ejus: & conſilium pacis erit inter utroſque. Corona au14 tem erit expectantibus, & utilibus ejus, & qui cognoverunt eam, & in gratiam filii Sophoniæ, & in pſalmum in domo Domini. Et qui longè ſunt ab 15 eis; venient, & ædificabunt in domo Domini. Et ſcietis, quia Dominus omnipotens miſit me ad vos. Et erit, ſi exaudientes exaudieritis vocem Domini Dei veſtri.

MS. A. (η) ὁ ἱερεὺς (θ) αὐτὸν, (ι) τοῖς υἱοῖς (κ) ἐπιγνώσεσθε

ΚΕΦ. ζ΄.

1 ΚΑὶ ἐγένετο ἐν τῷ τετάρτῳ ἔτει ἐπὶ Δαρείου τοῦ βασιλέως, ἐγένετο λόγος κυρίου πρὸς Ζαχαρίαν (α) τετράδι τοῦ μηνὸς 2 τοῦ ἐνάτου, ὅς ἐστι Χασελεῦ. Καὶ ἐξαπέστειλεν εἰς Βαιθὴλ, Σαρασὰρ ϗ (˜) Ἀρβεσεὲρ ὁ βασιλεὺς, ϗ οἱ ἄνδρες αὐτοῦ, 3 (β) ἐξιλάσασθαι τὸν κύριον, Λέγων πρὸς τοὺς ἱερεῖς τοὺς ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου παντοκράτορος, ϗ πρὸς τοὺς προφήτας, λέγων, (γ) Εἰσελήλυθεν ὧδε ἐν τῷ μηνὶ τῷ πέμπτῳ τὸ ἁγίασμα, καθότι (δ) ἐ4 ποίησεν ἤδη ἱκανὰ ἔτη. Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου τῶν δυνάμεων πρὸς ἐμὲ, 5 λέγων, (ε) Εἰπὸν πρὸς ἅπαντα τὸν λαὸν τῆς γῆς, ϗ πρὸς τοὺς ἱερεῖς, λέγων, Ἐὰν νηστεύσητε ἢ κόψησθε ἐν ταῖς πέμπταις, ἢ ἐν ταῖς ἑβδόμαις, ϗ ἰδοὺ ἑβδομήκοντα ἔτη, μὴ νηστείαν νενηστεύκα6 τέ μοι; Καὶ ἐὰν φάγητε (ζ) ἢ πίνητε, 7 οὐχ ὑμεῖς (η) ἔσθετε ϗ πίνετε; Οὐχ οὗτοι οἱ λόγοι (θ), οὓς ἐλάλησε κύριος ἐν χερσὶ τῶν προφητῶν τῶν ἔμπροσθεν, ὅτε ἦν Ἱερουσαλὴμ κατοικουμένη, ϗ εὐθηνοῦσα, ϗ αἱ πόλεις (ι) κυκλόθεν αὐτῆς, ϗ ἡ ὀρεινὴ ϗ ἡ πεδινὴ 8 κατῳκεῖτο; Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου 9 πρὸς Ζαχαρίαν, λέγων, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Κρίμα δίκαιον (˜) κρίνετε, καὶ ἔλεος καὶ οἰκτιρμὸν ποιεῖτε ἕκαστος πρὸς τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ,

CAP. VII.

ET factum eſt in quarto an1 no ſub Dario rege: factus eſt ſermo Domini ad Zachariam quartâ die menſis (a) noni, qui eſt Chaſeleu. Et miſit (b) 2 in Bathel, Saraſar, & Arbeſeer rex, & viri ejus ad deprecandum Dominum; Di3 cens ad ſacerdotes, qui in domo Domini omnipotentis, & ad prophetas, Dicens; Ingreſſa eſt huc in menſe quinto ſanctificatio, juxta quod fecit jam annis pluribus. Et factus eſt ſermo 4 Domini virtutum ad me, dicens; Dic ad omnem populum terræ, 5 & ad ſacerdotes, dicens; Si jejunatis, & plangitis in quintis, aut ſeptimis, & ecce ſeptuaginta anni; nunquid jejunium jejunâſtis mihi? Et ſi comedi6 tis, aut bibitis; nonne vos comeditis, (c) & bibitis? Nun7 quid non iſta ſunt verba, quæ loquutus eſt Dominus in manibus prophetarum, qui fuerunt priùs, quando Hieruſalem habitabatur, & erat (d) abundans, & civitates ejus per circuitum, & montana, & campeſtria habitabantur? Et factus eſt ſer8 mo Domini ad Zachariam, dicens; Hæc dicit Dominus omni9 potens; Judicium juſtum judicate: & miſericordiam, & miſerationem facite unuſquiſque ad fratrem ſuum:

MS. A. (α) τῇ τετράδι ϗ εἰκάδι τοῦ (˜) Ἀρβεσεσὲρ (β) τοῦ ἐξιλάσασθαι (γ) Εἰ εἰσελήλυθεν ὧδε τὸ ἁγίασμα ἐν τῷ μηνὶ τῷ πέμπτῳ, (δ) ἐποίησαν (ε) Εἰπὲ πρὸς πάντα (ζ) ϗ πίνητε, (η) ἐσθίετε ϗ ὑμεῖς πίνετε; (θ) εἰσὶν, (ι) αὐτῆς κυκλόθεν, καὶ (˜) κρίνατε

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 ותימר ליה למימר כדנן אמר יי צבאות למימר הא גברא משיחא שמיה עתיד דיתגלי
13 ויתרבי ויבני ית היכלא דיי׃ והוא יבני ית היכלא דיי והוא יטול זיו ויתיב וישלוט על
14 כורסוהי ויהי כהן רב על כורסוהי ומלכא דשלמא תהי בין תרויהון׃ ותשבחתא
15 תהי לחלם ולטוביה ולידעיה ולחן בר צפניה לדכרנא בהיכלא דיי׃ ומארעא רחיקא
ייתון ויבנון בהיכלא דיי ותדעון ארי יי צבאות שלחני לאתנבאה לכון ויהי אם קבלא
תקבלון למימרא דיי אלהכון׃

ז

1 והוה בשנת ארבע לדריוש מלכא הוה פתגם נבואה מן קדם יי עם זכריה בארבעא
2 לירחא תשיעאה בכסלו׃ ושלח לביתאל שראצר ורגם מלך וגברוהי לצלאה קדם
3 יי׃ למימר לכהניא די משמשין בבית מקדשא דיי צבאות ולספריא למימר האבכי
4 בירחא חמישאה האמנע נפשי מתפנוקין כמא דעבדית דנן כמה שנין׃ והוה פתגם
5 נבואה מן קדם יי עמי למימר׃ אמר לכל עמא דארעא ולכהניא למימר ארי צימין
אתון וספדין בחמשא ובשביעאה דנן שבעין שנין הצום תעני אתון מתענין קדמי׃
6 ודאתון אכלין ודאתון שתן הלא לאיטבא לכון אתון שתן׃ הלא ית פתגמא דשלח
7 יי ביד נביאיא קדמאי כד הות ירושלם יתבא ושליא וקרוהא סחרנהא ודרומא
8 ושפלתא יתב׃ והוה פתגם נבואה מן קדם יי עם זכריה למימר׃ כדנן אמר יי
9 צבאות למימר דין דקשוט דינו וחסדא ורחמי עבידו גבר עם אחוהי׃

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et dices ei, dicendo: Sic ait Dominus exercituum, dicens: Ecce vir, Chri- 12
ſtus nomen ejus, qui revelandus eſt & magnificandus, & ædificaturus templum Domini. Ipſe enim ædificabit templum Domini & ipſe portabit glo- 13
riam; & ſedebit, & dominabitur in ſolio ſuo: erit & ſummus ſacerdos in ſolio ſuo, & conſilium pacis erit inter utrumque. Et laus erit Helem & Tobiæ, 14
& Idaiæ, & Hen filio Sophoniæ in memoriam in templo Domini. Et de ter- 15
ra longinqua venient & ædificabunt templum Domini. Et ſcietis quia Dominus exercituum miſit me ut prophetarem vobis: erit autem hoc, ſi ſuſcipiendo ſuſceperitis verbum Domini Dei veſtri.

CAPUT VII.

ET factum eſt in anno quarto Darii regis, factum eſt verbum prophetiæ à 1
facie Domini ad Zachariam in quarta die menſis noni in Caſleu. Et miſit ad 2
Bethel Saraſar & Rogomelech & viros ejus ut orarent coram Domino: Et 3
ut dicerent ſacerdotibus qui miniſtrabant in domo ſanctuarii Domini exercituum & ſcribis, dicendo: Nunquid plorabo in menſe quinto? Nunquid prohibebo animam meam à deliciis, ſicut feci jam multis annis? Et factum eſt 4
verbum prophetiæ à facie Domini ad me, dicens: Dic omni populo terræ & 5
ſacerdotibus, dicens: Quando vos jejunabatis & lamentabamini in quinto & in ſeptimo menſe iſtis ſeptuaginta annis: nunquid jejunio afflictionis vos afflixiſtis coram me? Et quod vos comeditis & bibitis, nonne ut benefaciatis 6
vobiſmetipſis vos bibitis? Nonne hæc ſunt verba quæ miſit Dominus per 7
manum prophetarum priorum, quando Jeruſalem habitabatur, et erat opulenta, et urbes ejus in circuitu ejus; et Auſtralis plaga, et planities incolebatur? Et factum eſt verbum prophetiæ à facie Domini ad Zachariam, di- 8
cens: Sic dicit Dominus exercituum, dicendo: Judicium verum judica- 9
te, et miſericordiam et miſerationes facite unuſquiſque cum fratre ſuo.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

12 * ܘܐܡܪ ܠܗ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܗܐ ܓܒܪܐ ܕܫܡܗ ܕܢܚܐ. ܘܡܢ ܠܬܚܬ ܢܕܢܚ.
13 * ܘܗܘ ܢܒܢܐ ܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ܆ ܘܗܘ ܢܩܒܠ ܫܘܒܚܐ. ܘܢܬܒ ܘܢܫܬܠܛ ܥܠ
ܟܘܪܣܝܗ. ܘܢܗܘܐ ܟܗܢܐ ܥܠ ܟܘܪܣܝܗ. ܘܡܠܟܐ ܕܫܠܡܐ ܢܗܘܐ ܒܝܬ ܬܪܝܗܘܢ.
14 * ܘܟܠܝܠܐ ܢܗܘܐ ܠܚܘܠܕܝ܂ ܘܠܛܘܒܝܐ ܘܠܝܕܥܝܐ܆ ܘܠܝܘܫܝܐ ܒܪ ܨܦܢܝܐ܆ ܠܕܘܟܪܢܐ
15 ܒܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܢܐܬܘܢ ܪܚܝܩܐ ܘܢܒܢܘܢ ܗܝܟܠܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܬܕܥܘܢ ܕܡܪܝܐ
ܐܚܝܕ ܟܠ ܫܕܪܢܝ ܠܘܬܟܘܢ. ܐܢ ܬܫܡܥܘܢ ܒܩܠܗ ܕܡܪܝܐ ܐܠܗܟܘܢ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܙ *

1 * ܘܗܘܐ ܒܫܢܬ ܐܪܒܥ ܕܕܪܝܘܫ ܡܠܟܐ. ܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܙܟܪܝܐ܆ ܒܐܪܒܥܐ
2 ܒܝܪܚܐ ܬܫܝܥܝܐ ܕܗܘ ܟܢܘܢ. * ܘܫܕܪ ܠܒܝܬ ܐܝܠ܆ ܠܫܪܐܨܪ ܘܪܒܡܓ. ܘܫܕܪ
3 ܡܠܟܐ ܘܓܢܒܪܘܗܝ ܠܡܨܠܝܘ ܩܕܡ ܡܪܝܐ܆ * ܘܠܡܐܡܪ ܠܟܗܢܐ
4 ܕܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܘܠܢܒܝܐ. ܐܒܟܐ ܒܝܪܚܐ ܚܡܝܫܝܐ ܐܘ ܐܬܢܙܪ܆ ܐܝܟ ܡܐ
5 ܕܥܒܕܬ ܗܘܝܬ ܗܐ ܟܡܐ ܫܢܝܢ܆ * ܘܗܘܐ ܥܠܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܐܡܪ
ܠܟܠܗ ܥܡܐ ܕܐܪܥܐ ܘܠܟܗܢܐ܆ ܕܟܕ ܨܡܬܘܢ ܘܐܪܩܕܬܘܢ ܒܝܪܚܐ ܚܡܝܫܝܐ ܘܫܒܝܥܝܐ܆
6 ܗܐ ܫܒܥܝܢ ܫܢܝܢ: ܨܘܡܐ ܨܡܬܘܢ ܠܝ܆ * ܘܐܢ ܐܟܠܬܘܢ ܘܫܬܝܬܘܢ
7 ܘܫܬܝܬܘܢ: ܠܐ ܗܘܐ ܐܢܬܘܢ ܐܟܠܝܢ ܘܫܬܝܢ: * ܗܠܝܢ ܐܢܘܢ ܡ̈ܠܐ ܕܐܡܪ ܡܪܝܐ ܒܐܝܕ
ܢܒܝܐ ܩܕܡܝܐ. ܟܕ ܐܘܪܫܠܡ ܗܘܬ ܝܬܝܒܐ ܘܫܠܝܐ. ܘܩܘܪܝܐ ܚܕܪܝܗ. ܘܛܘܪܐ
8 ܘܦܩܥܬܐ ܡܬܝܬܒܝܢ ܗܘܘ. * ܘܗܘܐ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܙܟܪܝܐ ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ
9 ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܕܝܢܐ ܕܩܘܫܬܐ ܕܘܢܘ. ܘܛܝܒܘܬܐ ܘܪ̈ܚܡܐ ܥܒܕܘ ܐܢܫ
ܥܡ ܐܚܘܗܝ.

Et dic ei, Sic dicit Dominus potentiſſimus; 12 Ecce virum cujus nomen eſt Oriens, infernè enim orietur. Is ædificabit templum Domi- 13 ni, idémque gloriam aſſequetur, & ſedebit, ac dominabitur ſuper ſolio ſuo, eritque ſacerdos ſuper ſolio ſuo, & conſilium pacis erit inter utrumque. Et corona erit Holdaio, & 14 Tobiæ, Idaiæ, & Joſiæ filio Sephaniæ, ad monimentum in templo Domini. Et venient 15 remoti, & ædificabunt templum Domini: Ita cognoſcetis quòd Dominus potentiſſimus me miſerit ad vos, dummodo audiatis vocem Domini Dei veſtri.

CAP. VII.

PRæterea contigit anno quarto Darii regis, 1 ut eſſet ſermo Domini ad Zechariam, quartâ *die* menſis noni, nempe Novembris: (Quum 2 expedivíſſet ad Beth-il Saraſarem & Rabmogum, miſiſſétque rex & heroes ejus ad orandum pro ſe Dominum, Et dicendum ſacer- 3 dotibus qui erant in domo Domini potentiſſimi, atque prophetis; Flebóne menſe quinto, an abſtinentiam colam, uti facere conſuevi jam tot annis?) Eſſet inquam, ad me 4 ſermo Domini, dicendo; Dic univerſo ter- 5 ræ populo, & ſacerdotibus; Quando jejunâſtis & planxiſtis menſe quinto & ſeptimo per annos ſeptuaginta, num jejunium mihi jejunâſtis? Et cùm comeditis ac bibitis, 6 nonne vos comeditis ac bibitis? Hæc ſunt 7 verba quæ prædicavit Dominus per prophetas ſuos priores, dum Jeruſalem frequens eſſet *populo* & tranquilla, oppida circunſtarent eam, & montes valléſque eſſent habitatæ. Fuit itaque ſermo Domini ad Zecha- 8 riam, dicendo; Sic dicit Dominus poten- 9 tiſſimus; Judicium veritatis judicate, & benignitatem atque miſericordiam exercete quiſque in fratrem ſuum:

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

12 * وتقول له * هكذا يقول الرب الضابط الكل * ها رجل اسمه مشرق * ومن تحته يشرق *
13 * ويبني بيت الرب * وهو ياخذ فضيلة * ويجلس ويراس على كرسيه * ويكون الكاهن عن
14 يمينه * ويكون مشورة سلامية بينهما كلاهما * ويكون الاكليل للصابرين * ولخبرايه
15 وللعارفين به * وانعاما لبني صفونيا * وتهليلا في بيت الرب * والمتباعدون منهم ياتون ويبنون
في بيت الرب * وتعلمون ان الرب الضابط الكل ارسلني اليكم * ويكون ان كنتم تسمعون
صوت الرب الهكم *

* الفصل السابع *

1 * وكان في السنة الرابعة لداريوس الملك * كان قول الرب الي زكريا * في الرابع من الشهر
2 التاسع الذي هو كسلاو * فارسل الملك ورجاله صاراصار وربماغ الي بيت ايل ليصلوا
3 للرب * قايلا للكهنة الذين في بيت الرب الضابط الكل * وللانبياء قايلا * دخل القدس
4 هاهنا في الشهر الخامس * كما صنع منذ الف سنين كثيرة * وكان قول رب القوات الي
5 قايلا * قل لجميع شعب الارض وللكهنة قايلا * ان كنتم تصومون وتنوحون في الخوامس
6 وفي السوابع فها سبعون سنة * هل صمتم لي صوما * وان اكلتم وشربتم * اليس انتم
7 تاكلون وانتم تشربون * اليس هذه الكلمات هي التي تكلم الرب بها بايدي
الانبياء الذين من قبل * لما كانت ايروسليم مسكنة وخصبة * والمدن من
8 حولها * والجبال والصحاري عامرات * وكان قول الرب الي زكريا قايلا * هكذا
9 يقول الرب الضابط الكل قايلا * احكموا حكما عدلا * واصنعوا رحمة ورافة كل
واحد مع اخيه *

Et dices ei, Sic ait Dominus omnipotens; Ecce vir cui nomen eſt Oriens: nam ſubter eum orietur, 12 *Et ædificabit domum Domini: & ipſe præſtantiam accipiet, & ſedebit imperabitque ſuper ſolio ſuo: & erit ſacerdos ad dexteram ipſius, eritque conſilium pacificum inter utrunque.* 13 *Erit autem corona patientibus, & expertis atque peritis rerum illius; & in gratiam filiorum Sophoniæ, & in jubilationem in domo Domini.* 14 *Et remoti inter eos, venient & ædificabunt in domo Domini: Et ſcietis quòd Dominus omnipotens me miſerit ad vos. Atque* id quidem *erit, ſi audieritis vocem Domini Dei veſtri.* 15

CAP. VII.

*P*ostbæc *factum eſt anno quarto Darii regis, ut eſſet ſermo Domini ad Zachariam, quartâ* die *menſis noni, qui eſt Caſleu:* 1 *Quum miſiſſet rex & viri ejus Saraſarem & Rabmagum in Beth-il ad orandum Dominum:* 2 *Dicens ad ſacerdotes qui erant in domo Domini omnipotentis, & ad prophetas, dicens; Ingreſſa eſt huc ſanctitas menſe quinto, quemadmodum fecerat multis jam abhinc annis.* 3 *Fuit igitur ſermo Domini exercituum ad me, dicens;* 4 *Dic univerſo terræ populo & ſacerdotibus, dicens; Si jejunabatis & plangebatis quinto & ſeptimo quoque* menſe, *en jam ſeptuaginta annis; num jejunium mihi jejunâſtis?* 5 *Pari modo, ſi vos comedatis ac bibatis; nonne vos ipſi comeditis, voſque bibitis?* 6 *Annon hæc ſunt verba quæ locutus eſt Dominus per prophetas priores, quando Jeruſalem erat habitata & abundans; & urbes undique, montes, atque campi eſſent exculti?* 7 *Fuit igitur ſermo Domini ad Zachariam, dicens;* 8 *Sic ait Dominus omnipotens, dicens; Judicate judicium æquum, & miſericordiam atque clementiam impendite quiſque in fratrem ſuum:* 9

זכריה׃ ח

malum & : opprimatis ne *afflictum* & ,peregrinum,pupillum &,viduam Et
10 ואלמנה ויתום גר ועני אל־תעשקו ורעת
renuerunt Et .vestro corde in cogitetis ne *sui fratris* unusquisque
11 איש אחיו אל־תחשבו בלבבכם׃ וימאנו
aggravaverunt suas aures & ,*deflectentem* scapulam dederunt & ,attendere
להקשיב ויתנו כתף סררת ואזניהם הכבידו
audiendo ab ,adamantem posuerunt suum cor Et .*audiendo ab*
12 משמוע׃ ולבם שמו שמיר משמוע את־
,suo spiritu *in* exercituũ Dominus misit quæ verba & , legem
התורה ואת־הדברים אשר שלח יהוה צבאות ברוחו
Domino à magna ira fuit Et .priorum prophetarum manũ per
ביד הנביאים הראשנים ויהי קצף גדול מאת יהוה
; audierunt non & ,prædicavit quemadmodum ,fuit Et .exercituum
13 צבאות׃ ויהי כאשר־קרא ולא שמעו
.exercituum Dominus dixit , exaudiam non & ,clamabunt sic
כן יקראו ולא אשמע אמר יהוה צבאות׃
terra & , *illas* nescierunt quas gentes omnes in eos *exturbavi* Et
14 ואסערם על כל־הגוים אשר לא־ידעום והארץ
terram posuerunt & : *redeunte à & transeunte à* ,eos post est desolata
נשמה אחריהם מעבר ומשב וישימו ארץ־
.desolationem in *desiderii*
חמדה לשמה׃

CAP. VIII. ח

dixit Sic : dicendo , exercituum DOMINI verbum fuit Et
1 2 ויהי דבר־יהוה צבאות לאמר׃ כה אמר
: magno zelo Sijon sum Zelatus : exercituum DOMINUS
יהוה צבאות קנאתי לציון קנאה גדולה
: Dominus dixit Sic .eam sum zelatus magna ira &
3 וחמה גדולה קנאתי לה׃ כה אמר יהוה
vocabitur & :Jerusalaim medio in habitabo & ,Sijon ad sum Reversus
שבתי אל־ציון ושכנתי בתוך ירושלם ונקראה
.*sanctitatis* mons ,exercituũ Domini mons & ,veritatis Civitas,Jerusalaim
ירושלם עיר האמת והר־יהוה צבאות הר הקדש׃
senes habitabunt Adhuc : exercituum Dominus dixit Sic
4 כה אמר יהוה צבאות עד ישבו זקנים
sua manu in *ejus fulcrum viri* & ,Jerusalaim plateis in anus &
וזקנות ברחבות ירושלם ואיש משענתו בידו
pueris implebuntur civitatis plateæ Et .dierum multitudine præ
5 מרב ימים׃ ורחבות העיר ימלאו ילדים
DOMINUS dixit Sic .ejus plateis in ludentibus puellis &
6 וילדות משחקים ברחבתיה׃ כה אמר יהוה
: illis diebus in illius populi residui oculis in erit *mirum* Si :exercituũ
צבאות כי יפלא בעיני שארית העם הזה בימים ההם
? exercituum DOMINUS dixit ,erit *mirum* meis oculis in etiam
גם־בעיני יפלא נאם יהוה צבאות׃
meũ populũ *faciens* salvũ ego Ecce :exercituum Dominus dixit Sic
7 כה אמר יהוה צבאות הנני מושיע את־עמי
,eos adducam Et .Solis occasus terra de & , orientis terra de
8 מארץ מזרח ומארץ מבוא השמש׃ והבאתי אתם
ego & ,populũ in mihi erunt & : Jerusalaim medio in habitabunt &
ושכנו בתוך ירושלם והיו־לי לעם ואני
dixit Sic .justitia in & veritate in Deum in eis ero
9 אהיה להם לאלהים באמת ובצדקה׃ כה־אמר
diebus in *audientes* ,vestræ manus Confortentur : exercituum Dominus
יהוה צבאות תחזקנה ידיכם השמעים בימים
die in qui ,prophetarum ore de hæc verba istis
האלה את הדברים האלה מפי הנביאים אשר ביום
.ædificari templum ,exercituum Domini domus est fundata
יסד בית־יהוה צבאות ההיכל להבנות׃

Versio VULG. LAT.

10 Et viduam, & pupillum, & advenam, & pauperem nolite calumniari: et malũ vir fratri suo non 11 cogitet in corde suo. Et noluerunt attendere, & averterunt scapulam recedentem, & aures suas 12 aggravaverunt ne audirent. Et cor suum posuerunt ut adamantem, ne audirent legem, & verba quæ misit Dominus exercituum in spiritu suo per manum prophetarum priorũ: & facta est indignatio magna à Domino exercituum. 13 Et factum est sicut locutus est, & non audierunt: sic clamabunt, & non exaudiam, dicit Dominus ex- 14 ercituum. Et dispersi eos per omnia regna, quæ nesciunt: & terra desolata est ab eis, eò quòd non esset transiens & revertens: & posuerunt terram desiderabilem in desertum.

CAP. VIII.

1 Et factum est verbum Domini 2 exercituum, dicens; Hæc dicit Dominus exercituũ; Zelatus sum Sion zelo magno, & indignatio- 3 ne magnâ zelatus sum eam. Hæc dicit Dominus exercituum; Reversus sum ad Sion, & habitabo in medio Jerusalem: & vocabitur Jerusalem civitas veritatis, & mons Domini exercituum, mons 4 sanctificatus. Hæc dicit Dominus exercituum; Adhuc habitabunt senes & anus in plateis Jerusalem: & viri baculus in manu e- 5 jus præ multitudine dierum. Et plateæ civitatis complebuntur infantibus & puellis, ludentibus 6 in plateis ejus. Hæc dicit Dominus exercituum; Si videbitur difficile in oculis reliquiarum populi hujus in diebus illis, numquid in oculis meis difficile erit, dicit 7 Dominus exercituum? Hæc dicit Dominus exercituũ; Ecce ego salvabo populum meum de terra Orientis, & de terra Occasûs So- 8 lis. Et adducam eos, & habitabunt in medio Jerusalem: & erunt mihi in populum, & ego ero eis in Deum, in veritate & in ju- 9 stitia. Hæc dicit Dominus exercituum; Confortentur manus vestræ, qui auditis in his diebus sermones istos per os prophetarum, in die quâ fundata est domus Domini exercituum, ut templum ædificaretur.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

10 Καὶ χήραν, καὶ ὀρφανὸν, καὶ προσήλυτον, καὶ πένητα μὴ καταδυναστεύετε, καὶ κακίαν ἕκαστος τοῦ ἀδελφοῦ αὐτοῦ μὴ μνησικακείτω ἐν 11 ταῖς καρδίαις ὑμῶν. Καὶ ἠπείθησαν τοῦ προσέχειν, καὶ ἔδωκαν νῶτον παραφρονοῦντα, καὶ τὰ ὦτα αὐτῶν ἐβάρυναν τοῦ μὴ εἰσακούειν. 12 Καὶ τὴν καρδίαν αὐτῶν ἔταξαν ἀπειθῆ, τοῦ μὴ (κ) εἰσακούειν τοῦ νόμου μου, καὶ τοὺς λόγους, οὓς ἐξαπέστειλε κύριος παντοκράτωρ ἐν πνεύματι αὐτοῦ ἐν χερσὶ τῶν προφητῶν τῶν ἔμπροσθεν· καὶ ἐγένετο (λ) ὀργὴ 13 μεγάλη παρὰ κυρίου παντοκράτορος. Καὶ ἔσται, ὃν τρόπον εἶπε, καὶ οὐκ εἰσήκουσαν (μ), οὕτως κεκράξονται, καὶ οὐ μὴ εἰσακούσω (ν), 14 λέγει κύριος παντοκράτωρ. Καὶ ἐκβαλῶ αὐτοὺς εἰς πάντα τὰ ἔθνη, ἃ οὐκ ἔγνωσαν· καὶ ἡ γῆ ἀφανισθήσεται κατόπισθεν αὐτῶν ἐκ διοδεύοντος καὶ ἐξ ἀναστρέφοντος· καὶ ἔταξαν γῆν ἐκλεκτὴν εἰς ἀφανισμόν.

MS.A. (κ) εἰσακοῦσαι (λ) ὁρμὴ (μ) αὐτοῦ, (ν) αὐτῶν,

ΚΕΦ. η΄.

1 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου παντοκράτο- 2 ρος, λέγων, Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, (α) Ἐζήλωκα τὴν Ἱερουσαλὴμ καὶ τὴν Σιὼν ζῆλον μέγαν, καὶ θυμῷ μεγάλῳ 3 (β) ἐζήλωκα αὐτήν. Τάδε λέγει κύριος, (γ) Ἐπιστρέψω ἐπὶ Σιὼν, καὶ κατασκηνώσω ἐν μέσῳ Ἱερουσαλὴμ, καὶ κληθήσεται (δ) ἡ Ἱερουσαλὴμ πόλις ἀληθινὴ, καὶ τὸ ὄρος 4 κυρίου παντοκράτορος, ὄρος ἅγιον. Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἔτι καθήσονται πρεσβύτεροι καὶ πρεσβύτεραι ἐν ταῖς πλατείαις Ἱερουσαλὴμ, ἕκαστος τὴν ῥάβδον αὐτοῦ ἔχων (˜) ἐν τῇ χειρὶ αὐτοῦ, ἀπὸ πλήθους 5 ἡμερῶν. Καὶ αἱ πλατεῖαι τῆς πόλεως πλησθήσονται παιδαρίων καὶ κορασίων παι- 6 ζόντων ἐν ταῖς πλατείαις αὐτῆς. Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, (ε) Εἰ ἀδυνατήσει ἐνώπιον τῶν καταλοίπων τοῦ λαοῦ τούτου ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, μὴ καὶ (ζ) ἐνώπιόν μου ἀδυνατήσει; λέγει κύριος 7 παντοκράτωρ. Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἰδοὺ ἐγὼ (η) σώζω τὸν λαόν μου ἀπὸ γῆς ἀνατολῶν καὶ ἀπὸ γῆς δυσμῶν, 8 Καὶ εἰσάξω αὐτοὺς, καὶ κατασκηνώσω ἐν μέσῳ Ἱερουσαλὴμ, καὶ (θ) ἔσονταί μοι εἰς λαὸν, (¨) κἀγὼ ἔσομαι αὐτοῖς εἰς θεὸν ἐν 9 ἀληθείᾳ καὶ ἐν δικαιοσύνῃ. Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Κατισχυέτωσαν αἱ χεῖρες ὑμῶν τῶν ἀκουόντων ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις τοὺς λόγους τούτους ἐκ στόματος τῶν προφητῶν, ἀφ᾽ ἧς ἡμέρας τεθεμελίωται ὁ οἶκος κυρίου παντοκράτορος, καὶ ὁ ναὸς ἀφ᾽ οὗ ᾠκοδόμηται.

MA. A. (α) Ἐζήλωσα (β) ἐζήλωσα (γ) Καὶ ἐπιστρέψω (δ) Ἱερουσαλὴμ (˜) ἐν χειρὶ (ε) Διότι εἰ (ζ) ἐνώπιον ἐμοῦ (η) ἀνασώζω (θ) ἔσονταί μοι (¨) καὶ ἐγὼ

Et viduam, & pupillum, (e) & advenam, & pauperem non opprimatis: & malitiæ unusquisque fratris sui (f) nolite meminisse in cordibus vestris. 10 *Et noluerunt attendere, & dederunt dorsum contemnens: & aures suas aggravaverunt, ut non audirent:* 11 *Et cor suum posuerunt inobediens, ut non audirent legem meam, & verba, quæ misit Dominus omnipotens in spiritu suo in manibus prophetarum priorum. Et facta est ira magna à Domino omnipotente.* 12 *Et erit, sicut dixit, et non audierunt; sic clamabunt, et non exaudiã, dicit Domin⁹ omnipotens.* 13 *Et ejiciam eos in omnes gentes, quas ignoraverunt: & terra desolabitur post eos à perambulante, & à revertente. Et posuerunt terram electam in solitudinem.* 14

CAP. VIII.

Et factus est sermo Domini omnipotentis, dicens; 1 *Hæc dicit Dominus omnipotens; Zelatus sum Hierusalem, & Sion zelo magno: & furore maximo zelatus sum eam.* 2 *Hæc dicit Dominus; Revertar ad Sion, & habitabo in medio Hierusalem: & vocabitur Hierusalem civitas vera: & mons Domini omnipotentis, mons sanctus.* 3 *Hæc dicit Dominus omnipotens; Adhuc sedebunt senes, & anus in plateis Hierusalem, unusquisque virgam suam habens in manu sua præ multitudine dierum:* 4 *Et plateæ civitatis replebuntur pueris, & puellis ludentibus in plateis ejus.* 5 *Hæc dicit Dominus omnipotens; Si impossibile erit coram reliquis populi hujus in diebus illis; nunquid & coram me impossibile erit? dicit Dominus omnipotens.* 6 *Hæc dicit Dominus omnipotens; Ecce ego salvo populum meum de terra Orientis, & de terra Occasûs.* 7 *Et introducam eos, & habitabo in medio Hierusalem: & erunt mihi in populum: & ego ero eis in Deum in veritate, & in justitia.* 8 *Hæc dicit Dominus omnipotens; Confortentur manus vestræ, qui auditis in diebus his sermones istos ex ore prophetarum, ex quo die fundata est domus Domini omnipotentis, & ex quo templum ædificatum est.* 9

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 וארמלא ויתם וגיור ומסכן לא תינסון ובישת גבר עם אחוהי לא תחשבון בלבבון׃
11 וסריבו לקבלא ויהבו כתפהון מריד ואודניהון יקירו מלמשמע׃ ולבהון שויאו תקיף
12 כשמירא מלקבלא אוריתא וית פתגמיא די שלח יי צבאות במימריה ביד נבייא
13 קדמאי והוה רגז רב מן קדם יי צבאות׃ ויהי כמא דאתנביאו להון נבייא ולא קבילו
14 כן יצלון קדמי ולא אקבל אמר יי צבאות׃ ואבדרנון בין עממיא די לא ידעונון וארעא
תצדי בתריהון מדעדי ומדתאב על דשויאו ארעא דחמדתא לצדו׃

ח

1 2 והוה פתגם נבואה מן קדם יי צבאות עמי למימר׃ כדנן אמר יי צבאות מתפרע אנא
3 פורענות ציון קנאה רבא ורגז רב מן קדמי על עממיא דאקניאוה׃ כדנן אמר יי אתוב
לציון ואשרי שכנתי בגו ירושלם ותתקרי ירושלם קרתא דקושטא וטור בית מקדשא
4 דיי צבאות טורא קדישא׃ כדנן אמר יי צבאות עוד יתבון סבין וסבן בשוקי ירושלם
5 וגבר עובדוהי תקניא יגנון עלוהי מסגי יומיא׃ ורחובי קרתא ירושלם יתמלון
6 עולימין ועולימן משבחין בפתהא׃ כדנן אמר יי צבאות כד תיקר דחלתי בעיני שארא
7 דעמא הדין ביומיא האנון אף קדמי ייקרון אמר יי צבאות׃ כדנן אמר יי צבאות הא
8 אנא פריק ית עמי מארעא מדנחא ומארעא מעלני שמשא׃ ואעיל יתהון וישרון בגו
ירושלם ויהון קדמי לעם ואנא אהוי להון לאלהא בקשוט ובזכו׃ כדנן אמר יי צבאות
9 יתקפן ידיכון דשמעין ביומיא האנון ית פתגמיא האלין מפום נבייא די ביומא דשרי
לאשתכללא בית מקדשא דיי צבאות היכלא לאתבנאה׃

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

10 Et viduam, & pupillum, & advenam, & pauperem ne opprimatis: nec cogitetis malum vir cum fratre suo in cordibus vestris. 11 Et noluerunt obedire, & dederunt humerum suum recedentem, & aures suas aggravaverunt ne audirent. 12 Et cor suum posuerunt durum, sicut adamantem ne susciperent legem, & verba quæ misit Dominus exercituum in verbo suo per manum prophetarum priorum: & fuit ira magna à facie Domini exercituum. 13 Et factum est sicut prophetaverunt eis prophetæ, & non obedierunt: sic orabunt coram me, & non suscipiam [*orationem eorum,*] dixit Dominus exercituum. 14 Et dispergam eos inter populos quos nescierunt, & terra desolabitur post eos, ita ut non sit transiens & revertens, eò quòd posuerunt terram meam desiderabilem in desolationem.

CAP. VIII.

1 Et factum est verbum prophetiæ à facie Domini exercituum ad me, dicens: 2 Hæc dicit Dominus exercituum, Ultione ego ulciscar Sion zelo magno, & ira magna à facie mea super populos qui ad æmulationem provocârunt eam. 3 Hæc dicit Dominus, Revertar ad Sion, & habitare faciam majestatem meam in medio Jerusalem, & vocabitur Jerusalem civitas veritatis, & mons domus sanctuarii Domini exercituum mons sanctitatis. 4 Hæc dicit Dominus exercituũ, Adhuc habitabunt senes et anus in plateis Jerusalem, et opera recta uniuscujusque protegent eum præ multitudine dierũ. 5 Et plateæ civitatis Jerusalẽ implebuntur pueris et puellis cantantibus in locis ejus spatiosis. 6 Hæc dicit Dominus exercituũ, Sicut honorabilis erit timor meus in oculis residui populi hujus in diebus illis: sic etiam coram me erunt pretiosi, dicit Dominus exercituũ. 7 Hæc dicit Dominus exercituum, Ecce ego redimã populũ meũ de terra Orientali, et de terra occasus Solis. 8 Et adducam eos ut habitent in medio Jerusalẽ: et erunt corã me in populũ; et ego ero eis in Deũ in veritate et in justitia. 9 Hæc dicit Dñs exercituũ, Confortentur manus vestræ qui auditis in his diebus sermones istos ex ore prophetarũ, quia in die quo cœpit fundari domus sanctuarii Dñi exercituũ, ut templũ ædificaretur.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܠܐܪܡܠܬܐ ܘܠܝܬܡܐ ܘܠܡܣܟܢܐ ܀ ܘܠܕܡܬܦܢܐ ܠܘܬܝ ܠܐ ܬܥܠܒܘܢ. ܘܠܐ ܬܛܠܡܘܢ. 10
ܘܒܝܫܬܐ ܓܒܪ ܠܚܒܪܗ ܠܐ ܬܚܫܒܘܢ ܒܠܒܘܬܟܘܢ. * ܘܠܐ ܨܒܘ ܠܡܫܬܡܥܘ ܠܝ. ܘܝܗܒܘ 11
ܟܬܦܬܗܘܢ ܡܪܘܕܐܝܬ. ܘܐܕܢܝܗܘܢ ܝܩܪܘ. ܕܠܐ ܢܫܡܥܘܢ. * ܘܠܒܗܘܢ ܣܡܘ ܐܝܟ ܫܡܝܪܐ 12
ܕܠܐ ܢܫܡܥܘܢ ܢܡܘܣܐ ܘܦܘܩܕܢܐ ܀ ܕܫܕܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܪܘܚܗ ܒܝܕ ܢܒܝܐ ܩܕܡܝܐ ܀
ܘܗܘܐ ܪܘܓܙܐ ܪܒܐ ܡܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܐܝܟ ܕܩܪܝܬ ܐܢܘܢ ܘܠܐ ܫܡܥܘ ܀ ܗܟܢܐ 13
ܢܩܪܘܢܢܝ. ܘܠܐ ܐܫܡܥ ܐܢܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܐܒܕܪ ܐܢܘܢ ܒܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܠܐ 14
ܝܕܥܘ ܐܢܘܢ. ܘܐܪܥܐ ܬܚܪܒ ܒܬܪܗܘܢ. ܡܢ ܕܠܐ ܕܥܒܪ ܘܕܗܦܟ. ܘܥܒܕܘ ܐܪܥܐ ܕܪܓܝܓܬܐ
ܠܚܘܪܒܐ. * ܫܠܡ * ܙ *

* ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. 1
ܟܕ ܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܛܢܢܬ ܠܨܗܝܘܢ ܛܢܢܐ ܪܒܐ. ܘܒܚܡܬܐ ܪܒܬܐ 2
ܛܢܢܬ ܠܗ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܡܬܒܝܐ ܐܢܐ ܒܨܗܝܘܢ ܀ ܘܫܪܐ ܐܢܐ ܒܓܘ ܐܘܪܫܠܡ. 3
ܘܬܬܩܪܐ ܐܘܪܫܠܡ ܡܕܝܢܬܐ ܩܕܝܫܬܐ. ܘܛܘܪܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܛܘܪܐ ܩܕܝܫܐ. * ܗܟܢܐ 4
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܬܘܒ ܢܬܒܘܢ ܣܒܐ ܘܣܒܬܐ ܒܫܘܩܘܗ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܓܒܪ
ܫܒܛܗ ܢܗܘܐ ܐܚܝܕ ܒܐܝܕܗ ܡܢ ܣܘܓܐܐ ܕܝܘܡܬܐ. * ܘܫܘܩܘܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܀ ܢܬܡܠܘܢ 5
ܛܠܝܐ ܘܛܠܝܬܐ ܕܡܫܬܥܝܢ ܒܫܘܩܘܗ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܢ ܬܬܥܛܠ ܗܕܐ 6
ܒܥܝܢܝܗܘܢ ܕܫܪܟܗ ܕܥܡܐ ܗܢܐ: ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ: ܐܦ ܒܥܝܢܝ ܕܝܠܝ ܬܬܥܛܠ ܐܡܪ ܡܪܝܐ
ܚܝܠܬܢܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܗܐ ܦܪܩ ܐܢܐ ܠܥܡܝ. * ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܕܢܚܐ ܘܡܢ 7
ܐܪܥܐ ܕܡܥܪܒ ܫܡܫܐ. * ܘܐܝܬܐ ܐܢܘܢ ܘܢܫܪܘܢ ܒܓܘ ܐܘܪܫܠܡ. ܘܢܗܘܘܢ ܠܝ ܠܥܡܐ. ܘܐܢܐ 8
ܐܗܘܐ ܠܗܘܢ ܠܐܠܗܐ. ܒܫܪܪܐ ܘܒܙܕܝܩܘܬܐ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܬܬܚܝܠܢ 9
ܐܝܕܝܐ ܕܟܠ ܕܫܡܥܘ ܒܝܘܡܬܐ ܗܠܝܢ ܀ ܦܬܓܡܐ ܗܠܝܢ ܡܢ ܦܘܡܗܘܢ ܕܢܒܝܐ ܀ ܡܢ
ܝܘܡܐ ܕܐܬܬܣܝܡ ܫܬܐܣܬܐ ܕܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܡܬܒܢܝܘ.

Viduas, pupillos, & pauperes, & eum qui 10
convertitur ad me, moleſtiâ ne afficiatis néve
opprimatis: & malum alter in alterum ne
cogitetis in corde veſtro: At renuerunt ob- 11
temperare mihi, imò humerum ſuum rebel-
lem reddiderunt, & aures ſuas obturârunt ne
audirent; Et cor ſuum ut adamantem reddi- 12
derunt, ne acquieſcerent legibus & præce-
ptis quæ miſerat Dñs potentiſſim⁹ per ſpiritũ
ſuum per prophetas priores: Unde oborta eſt
ira magna à conſpectu Domini. Quia vocavi 13
eos, & non audierunt; ita vocabunt me, &
non audiam eos, dicit Dñs potentiſſimus: Et 14
diſperdam eos inter omnes gentes quas non
cognoſcunt; & terra deſolabitur poſt eos,
propter penuriam tranſeuntis: eò quòd ter-
ram exoptatiſſimam redegerint in deſertum.

CAP. VIII.

Fuit etiam ad me ſermo Domini potentiſſi- 1
mi, dicendo; Sic dicit Dñs potentiſſimus; 2
Zelotypiâ magnâ motus ſum in Sionem, & fer-
vore magno zelotypiâ motus ſum in eam. Sic 3
ait Dominus; Conſolationem percepturus
ſum in Sione, & habitaturus in medio Jeruſa-
lem: & vocabitur Jeruſalem, urbs ſancta;
& mons Domini potentiſſimi, mons ſanctus.
Sic ait Dominus potentiſſimus; Poſthac ſede- 4
bunt ſenes & anus in vicis Jeroſolymæ, &
quiſque baculum ſuum tenebit manu ſuâ præ
multitudine dierum: Et vici urbis implebun- 5
tur pueris & puellis ludentibus in vicis ejus.
Sic ait Dñs potentiſſimus; Etiamſi arduum 6
ſit hoc in oculis reliquiarum iſtius populi, iis
diebus; an etiam in oculis meis arduum eſſet,
dicit Dñs potentiſſimus? Sic ait Dñs poten- 7
tiſſimus; Ecce liberaturus ſum populũ meum
de terra Orientis & de terra Occaſûs ſolis. Et 8
adducturus eos ut habitent in Jeruſalẽ: erunt-
que mihi popul⁹, & ego ero ipſis Deus in ve-
ritate & juſtitia. Sic ait Dominus potentiſſi- 9
mus; Confirmentur man⁹ omnium eorum qui
iis diebus audierunt ſermones iſtos ex ore pro-
phetarum, ab eo die quo poſitum fuit funda-
mentum templi Domini potentiſſimi ut ædifi-
caretur.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ولا تبغوا على الارملة واليتيم * والغريب والفقير * وكل واحد لا يحقد سرا على اخيه في 10
قلوبكم * فعصوا ان لا يصغوا * واعطوا ظهرا متهاونا * وثقلوا اذانهم ان لا يسمعوا * 11
* وربّوا قلبهم عاصيا ان لا يصغوا لناموسي والاقوال التي ارسلها الرب الضابط الكل 12
بروحه بايدي الانبياء الذين من قبل * وكان رجز عظيم من قبل الرب الضابط الكل *
* ويكون كما قال * ولم يسمعوا * هكذا يصرخون ولا يستجيب لهم * يقول الرب الضابط الكل * 13
* واطرحهم في كل الامم التي لم يعرفوها * والارض تفسد من خلفهم من الوارد والصادر * 14
وربّوا الارض المختارة للفساد * * الفصل الثامن *
* وكان قول الرب الضابط الكل قائلا * هكذا يقول الرب الضابط الكل * غرت لايروسليم 1 2
ولصهيون غيرة عظيمة * وبغضب عظيم غرت لها * هكذا يقول الرب * وارجع الى صهيون * 3
واسكن في وسط ايروسليم * وتدعى ايروسليم مدينة حقيقية * وجبل الرب الضابط الكل
مقدس * هكذا يقول الرب الضابط الكل * تجلس الشيوخ والعجائز ايضا في شوارع 4
ايروسليم * كل واحد معه عصا في يده من كثرة الايام * وشوارع المدينة تمتلي صبيانا 5
وجواري يلعبون في رحابها * هكذا يقول الرب الضابط الكل * ان كانت هذه لا تمكن 6
امام بقية هذا الشعب في تلك الايام * العلها امامي لا تمكن يقول الرب الضابط الكل *
* هكذا يقول الرب الضابط الكل * ها انا اخلص شعبي من ارض المشارق * ومن ارض 7
المغارب * وادخلهم الى ارضهم * واسكنهم في وسط ايروسليم * ويكونوا لي شعبا * وانا اكون لهم الها 8
بالحق والعدل * هكذا يقول الرب الضابط الكل * لتقوى ايديكم ايها السامعون في هذه الايام 9
الكلمات التي من فم الانبياء * منذ يوم تاسس بيت الرب الضابط الكل * ومنذ بني الهيكل *

Viduam & pupillum, advenam & pau- 10
perem ne opprimatis: odium clandeſtinum
nemo ſervet contra fratrem ſuum in
cordibus veſtris. Sed rebellârunt quo- 11
minùs attenderent, dederuntque dorſum
contemnens, & aggravaverunt aures
ſuas quominùs audirent; Et cor ſuum 12
rebelle reddiderunt, quominùs attende-
rent ad legem meam & ſermones quos
Dominus omnipotens per ſpiritum ſuum
miſerat per prophetas priores: proinde
fuit indignatio à Domino omniptoente.
Et erit quemadmodum dixit. Cúmque 13
non audierint, vice verſâ clamabunt,
& non exaudiet eos, ait Dominus omni-
potens: Sed abjiciam eos in omnes gentes 14
quas non cognoverunt: & terra poſt
eos deſtituetur eunte & redeunte; quòd
terram electam in vaſtitatem rede-
gerint.

CAP. VIII.

Deinde fuit ſermo Domini omnipo- 1
tentis, dicens; Sic dicit Dominus omni- 2
potens; Zelo maximo flagravi pro Je-
ruſalem & pro Sione, & magno cum
furore zelo exarſi propter eas. Sic ait 3
Dominus; Revertar etiam in Sionem,
& habitabo in medio Jeroſolymæ: vo-
cabiturque Jeroſolyma, urbs vera; &
mons Domini omnipotentis, ſanctus.
Ita dicit Dominus omnipotens; Sede- 4
bunt adhuc ſenes & anus in vicis Je-
roſolymæ, quiſque manu ſuâ baculum
tenens ob multitudinem dierum: Et vici 5
urbis implebuntur pueris ac puellis luden-
tibus in plateis ejus. Ita dicit Dominus 6
omnipotens; Si hoc eſt impoſſibile coram
reliquiis hujus populi iis diebus, an co-
ram me erit impoſſibile, dicit Dominus
omnipotens? Sic ait Dominus omnipo- 7
tens; Ecce ego ſalvabo populum meum
de terra ortûs & de terra occaſûs, Et 8
introducam eos in terram ſuam, faci-
amque ut habitent in medio Jeroſolymæ:
eruntque mihi populus, & ego ero ipſis
Deus in veritate & juſtitia. Sic ait 9
Dominus omnipotens; Confortentur ma-
nus veſtræ O qui auditis hiſce diebus
verba quæ prodeunt ex ore prophetarum,
inde ab illa die quâ fundata eſt ædes
Domini omnipotentis, & ex quo ædifica-
tum eſt templum.

זכריה : ח

,fuit non hominis merces *illorum dierum facies ad* Quia
10 כִּי לִפְנֵי הַיָּמִים הָהֵם שְׂכַר הָאָדָם לֹא נִהְיָה
pax non introeunti & ,exeunti & : *ipsa* non animalis merces &
וּשְׂכַר הַבְּהֵמָה אֵינֶנָּה וְלַיּוֹצֵא וְלַבָּא אֵין־שָׁלוֹם
.suum *socium* in *virum* ,*hominem omnem* *misi* & ,angustia præ
מִן־הַצָּר וַאֲשַׁלַּח אֶת־כָּל־הָאָדָם אִישׁ בְּרֵעֵהוּ׃
populi residuo *ego* priores dies juxta non nunc Et
11 וְעַתָּה לֹא כַיָּמִים הָרִאשֹׁנִים אֲנִי לִשְׁאֵרִית הָעָם
vitis :pacis semen Sed .exercituum Dominus dixit :hujus
12 הַזֶּה נְאֻם יְהוָה צְבָאוֹת׃ כִּי־זֶרַע הַשָּׁלוֹם הַגֶּפֶן
cœli & ,suum *germen* dabit terra & ,suum fructum dabit
תִּתֵּן פִּרְיָהּ וְהָאָרֶץ תִּתֵּן אֶת־יְבוּלָהּ וְהַשָּׁמַיִם
hujus populi residuum faciam possidere & :suum rorem dabunt
יִתְּנוּ טַלָּם וְהִנְחַלְתִּי אֶת־שְׁאֵרִית הָעָם הַזֶּה
gentibus in maledictio eratis sicut erit Et .hæc universa
13 אֶת־כָּל־אֵלֶּה׃ וְהָיָה כַּאֲשֶׁר הֱיִיתֶם קְלָלָה בַּגּוֹיִם
eritis & , vos servabo sic , Israel domus & , Jehudah domus
בֵּית יְהוּדָה וּבֵית יִשְׂרָאֵל כֵּן אוֹשִׁיעַ אֶתְכֶם וִהְיִיתֶם
dixit sic Quia .vestræ manus confortentur ,timeatis ne : benedictio
14 בְּרָכָה אַל־תִּירָאוּ תֶּחֱזַקְנָה יְדֵיכֶם׃ כִּי כֹה אָמַר
, vobis *malefacere* cogitavi Quemadmodum : exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת כַּאֲשֶׁר זָמַמְתִּי לְהָרַע לָכֶם
: exercituum Dominus dixit , me *vestros* patres *faciendo* irasci *in*
בְּהַקְצִיף אֲבֹתֵיכֶם אֹתִי אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת
istis diebus in cogitavi ,sum conversus Sic .sum misertus non &
15 וְלֹא נִחָמְתִּי׃ כֵּן שַׁבְתִּי זָמַמְתִּי בַּיָּמִים הָאֵלֶּה
.timeatis ne : Jehudah domui & , Jerusalaim benefacere
לְהֵיטִיב אֶת־יְרוּשָׁלַםִ וְאֶת־בֵּית יְהוּדָה אַל־תִּירָאוּ׃
cum unusquisque veritatem Loquimini .facietis quæ verba Hæc
16 אֵלֶּה הַדְּבָרִים אֲשֶׁר תַּעֲשׂוּ דַּבְּרוּ אֱמֶת אִישׁ אֶת־
.vestris portis in judicate pacis judicium & , veritatem ; suo *socio*
רֵעֵהוּ אֱמֶת וּמִשְׁפַּט שָׁלוֹם שִׁפְטוּ בְּשַׁעֲרֵיכֶם׃
,vestris cordibus in cogitetis ne sui *socii* malum unusquisque Et
17 וְאִישׁ אֶת־רָעַת רֵעֵהוּ אַל־תַּחְשְׁבוּ בִּלְבַבְכֶם
quæ hæc omnia quia : diligatis ne *falsitatis* juramentum &
וּשְׁבֻעַת שֶׁקֶר אַל־תֶּאֱהָבוּ כִּי אֶת־כָּל־אֵלֶּה אֲשֶׁר
exercituum Domini verbum fuit Et .Dominus dixit , odi
18 שָׂנֵאתִי נְאֻם־יְהוָה׃ וַיְהִי דְּבַר־יְהוָה צְבָאוֹת
Jejunium : exercituum Dominus dixit Sic : dicendo , me ad
19 אֵלַי לֵאמֹר׃ כֹּה־אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת צוֹם
jejunium & , septimi jejunium & , quinti jejunium & , quarti
הָרְבִיעִי וְצוֹם הַחֲמִישִׁי וְצוֹם הַשְּׁבִיעִי וְצוֹם
, lætitiam in & , gaudium in Jehudah domui erit , decimi
הָעֲשִׂירִי יִהְיֶה לְבֵית־יְהוּדָה לְשָׂשׂוֹן וּלְשִׂמְחָה
dixit Sic .diligite pacem & veritatem Et .*bonas* solennitates in &
20 וּלְמֹעֲדִים טוֹבִים וְהָאֱמֶת וְהַשָּׁלוֹם אֱהָבוּ׃ כֹּה אָמַר
habitatores & , populi venient quo Adhuc : exercituum Dominus
יְהוָה צְבָאוֹת עֹד אֲשֶׁר יָבֹאוּ עַמִּים וְיֹשְׁבֵי
: dicendo , *unam* ad unius habitatores ibunt Et .*multarum* urbium
21 עָרִים רַבּוֹת׃ וְהָלְכוּ יֹשְׁבֵי אַחַת אֶל־אַחַת לֵאמֹר
quærendum ad & , Domini *facies* *deprecandum ad* , eundo Eamus
נֵלְכָה הָלוֹךְ לְחַלּוֹת אֶת־פְּנֵי יְהוָה וּלְבַקֵּשׁ
populi venient Et .ego etiam , vadam : exercituum Dominum
22 אֶת־יְהוָה צְבָאוֹת אֵלְכָה גַּם־אָנִי׃ וּבָאוּ עַמִּים
exercituum Dominum quærendum ad robustæ gentes & multi
רַבִּים וְגוֹיִם עֲצוּמִים לְבַקֵּשׁ אֶת־יְהוָה צְבָאוֹת
.Domini *facies* deprecandum ad & : Jerusalaim in
בִּירוּשָׁלָםִ וּלְחַלּוֹת אֶת־פְּנֵי יְהוָה׃

Versio VULG. LAT.

10 Siquidem ante dies illos merces
hominũ non erat,nec merces jumentorũ
erat, neq; introeunti ,
neq; exeunti erat pax præ tribulatione:
& dimisi omnes homines,
unumquemque contra proximũ
11 suum. Nunc autem non juxta
dies priores ego faciam reliquiis
populi hujus , dicit Dñs exercituum,
12 Sed semen pacis erit: vinea
dabit fructum suum , & terra
dabit germen suũ , & cœli dabunt
rorẽ suũ : & possidere faciam
reliquos populi hujus
13 universa hæc. Et erit : sicut
eratis maledictio in Gentibus ,
domus Juda, & domus Israel: sic
salvabo vos, & eritis benedictio:
nolite timere, confortentur manus
14 vestræ. Quia hæc dicit Dominus
exercituum ; Sicut cogitavi
ut affligerem vos, cùm ad
iracundiam provocâssent patres
15 vestri me, dicit Dominus, Et non
sum misertus : sic conversus cogitavi
in diebus istis ut benefaciã
domui Juda, & Jerusalem : nolite
16 timere. Hæc sunt ergò verba,
quæ facietis: Loquimini veritatem
unusquisque cum proximo
suo : veritatem, & judicium
pacis judicate in portis vestris.
17 Et unusquisque malum contra
amicum suum ne cogitetis in cordibus
vestris : & jumentum
mendax ne diligatis: omnia enim
hæc sunt, quæ odi, dicit Dominus.
18 Et factum est verbum Domini
exercituum ad me, dicens ;
19 Hæc dicit Dominus exercituũ ;
Jejunium quarti, & jejunium
quinti, & jejunium septimi, &
jejunium decimi erit domui Juda
in gaudium , & lætitiam,
& in solennitates præclaras :
veritatem tantùm , & pacem
20 diligite. Hæc dicit Dominus
exercituum ; Usquequò veniant
populi, & habitent in civitatibus
21 multis , Et vadant habitatores,
unus ad alterum,dicentes;
Eamus , et deprecemur faciem
Domini, et quæramus Dominum
exercituum : vadam etiam ego.
22 Et venient populi multi, et
gentes robustæ ad quærendum
Dominum exercituum in Jerusalem
, et deprecandam faciem
Domini.

Versio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Translatione LATINA.

10 Διότι πρὸ τῶν ἡμερῶν ἐκείνων ὁ μισθὸς
τῶν ἀνθρώπων οὐκ ἔσται εἰς ὄνησιν , καὶ
ὁ μισθὸς τῶν κτηνῶν οὐχ (ι) ὑπάρξει,
καὶ τῷ ἐκπορευομένῳ καὶ τῷ εἰσπορευομένῳ
οὐκ ἔσται εἰρήνη ἀπὸ τῆς θλίψεως· καὶ
ἐξαποστελῶ πάντας τοὺς ἀνθρώπους, ἕκαστον
11 ἐπὶ τὸν πλησίον αὐτοῦ. Καὶ νῦν, οὐ κατὰ τὰς
ἡμέρας τὰς ἔμπροσθεν ἐγὼ ποιῶ τοῖς καταλοίποις
τοῦ λαοῦ τούτου, λέγει κύριος παντοκράτωρ,
12 Ἀλλ' ἢ δείξω εἰρήνην. ἡ ἄμπελος
δώσει τὸν καρπὸν αὐτῆς, καὶ ἡ γῆ
δώσει τὰ (κ) γενήματα αὐτῆς, καὶ ὁ οὐρανὸς
δώσει τὴν δρόσον αὐτοῦ, καὶ κατακληρονομήσω
τοῖς καταλοίποις τοῦ λαοῦ (λ)
13 μου τούτου ταῦτα πάντα. Καὶ ἔσται ὃν
τρόπον ἦτε ἐν κατάρᾳ ἐν τοῖς ἔθνεσιν
(μ) ὁ οἶκος Ἰούδα καὶ οἶκος Ἰσραήλ,
οὕτως διασώσω ὑμᾶς, καὶ ἔσεσθε ἐν εὐλογίᾳ.
θαρσεῖτε, καὶ κατισχύετε ἐν ταῖς χερσὶν
14 ὑμῶν. Διότι τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ,
Ὃν τρόπον διενοήθην τοῦ κακῶσαι
ὑμᾶς ἐν τῷ παροργίσαι με τοὺς πατέρας
15 ὑμῶν, λέγει κύριος παντοκράτωρ, Καὶ οὐ μετενόησα·
οὕτως παρατέταγμαι , καὶ διανενόημαι
ἐν ταῖς ἡμέραις ταύταις , τοῦ
καλῶς ποιῆσαι τὴν Ἰερουσαλὴμ , καὶ τὸν οἶκον
16 Ἰούδα· θαρσεῖτε. Οὗτοι οἱ λόγοι οὓς
ποιήσετε· λαλεῖτε ἀλήθειαν ἕκαστος
πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ , (ν) ἀλήθειαν καὶ
κρίμα εἰρηνικὸν κρίνατε ἐν ταῖς πύλαις ὑμῶν,
17 Καὶ ἕκαστος τὴν κακίαν τοῦ πλησίον
αὐτοῦ μὴ λογίζεσθε ἐν ταῖς καρδίαις ὑμῶν,
καὶ ὅρκον ψευδῆ μὴ ἀγαπᾶτε· διότι (ξ)
ταῦτα πάντα ἐμίσησα, λέγει κύριος παντοκράτωρ.
18 Καὶ ἐγένετο λόγος κυρίου παντοκράτορος
19 πρὸς μὲ, λέγων, Τάδε λέγει
κύριος παντοκράτωρ, Νηστεία ἡ τετρὰς, καὶ
νηστεία ἡ πέμπτη, καὶ νηστεία ἡ ἑβδόμη, καὶ
νηστεία ἡ δεκάτη ἔσονται τῷ οἴκῳ Ἰούδα
εἰς χαρὰν καὶ (ο) εὐφροσύνην, καὶ εἰς ἑορτὰς
ἀγαθάς· καὶ εὐφρανθήσεσθε , καὶ τὴν ἀλήθειαν
20 καὶ τὴν εἰρήνην ἀγαπήσατε. Τάδε
λέγει κύριος παντοκράτωρ , Ἔτι ἥξουσι
λαοὶ πολλοὶ, καὶ κατοικοῦντες πόλεις πολλὰς,
21 Καὶ συνελεύσονται κατοικοῦντες πέντε
πόλεις εἰς (π) μίαν πόλιν, λέγοντες, Πορευθῶμεν
δεηθῆναι τοῦ προσώπου κυρίου,
καὶ ἐκζητῆσαι τὸ πρόσωπον κυρίου παντοκράτορος·
22 πορεύσομαι κἀγώ. Καὶ ἥξουσι
λαοὶ πολλοὶ καὶ ἔθνη πολλὰ ἐκζητῆσαι τὸ
πρόσωπον κυρίου παντοκράτορος ἐν Ἰερουσαλὴμ,
καὶ (ρ) ἐξιλάσασθαι τὸ πρόσωπον κυρίου.

Quia ante dies illos merces hominum non erit in lucrum , &
merces jumentorum non subsistet:
& egredienti , & ingredienti
non erit pax præ tribulatione:
& emittam omnes homines unumquemque super proximum
suum. Et nunc, non juxta dies 11
priores ego facio reliquis populi
hujus , dicit Dominus omnipotens :
Sed pacem monstrabo. 12
Vinea dabit fructum suum , &
terra dabit germina sua , &
cælum dabit rorem suum: &
possidere faciam reliquos populi
mei hujus hæc omnia. Et erit, 13
sicut eratis in maledictione inter
gentes domus Juda, et domus
Israel ; sic salvabo vos, et eritis
in benedictione. Confidite, et
confortamini in manibus vestris:
Quia hæc dicit Dominus omnipotens; 14
Sicut cogitavi, ut affligerem
vos in eo , quòd me ad
iracundiam provocâssent patres
vestri,dicit Dominus omnipotens,
Et non me pœnituit ; sic paratus 15
sum, et cogitavi in diebus istis,
ut benefaciam Hierusalem, et
domui Juda. Confidite. Isti 16
sermones sunt , quos facietis:
Loquimini veritatem unusquisque
ad proximum suum : veritatem
, et judicium (a) pacificum
judicate in portis vestris:
Et unusquisque malum proximi 17
sui non cogitate in cordibus vestris
, et juramentum mendax ne
diligatis : quia hæc omnia odi,
dicit Dominus omnipotens. Et 18
factus est sermo Domini omnipotentis
ad me, dicens ; Hæc dicit 19
Dominus omnipotens ; Jejunium
(b) quartum , et jejunium quintum,
et jejunium septimum, et
jejunium decimum erunt domui
Juda in gaudium , et lætitiam,
et in festivitates bonas. Et lætamini
: et veritatem, et pacem
diligite. Hæc dicit Dominus 20
omnipotens ; Adhuc venient populi
multi, et habitatores urbium
multarum : Et congregabuntur, 21
qui habitant (c) quinque civitates
, in unam civitatem, dicentes;
Eamus,ut deprecemur faciem
Domini , et quæramus vultum
Domini omnipotentis : Vadam 22
etiam ego. Et venient populi
multi, et gentes plurimæ , ut
quærant faciem Domini omnipotentis
in Hierusalem, et ut exorent
faciem Domini.

MS. A. (ι) ὑπάρχει, (κ) γενήματα (λ) μου πάντα ταῦτα. (μ) οἶκος Ἰούδα καὶ ὁ οἶκος Ἰσραήλ, (ν) καὶ κρίμα δίκαιον κρίνετε (ξ) πάντα ταῦτα (ο) εἰς εὐφροσύνην, (π) πόλιν μίαν, (ρ) τοῦ ἐξιλάσκεσθαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 ארי קדם מיתי יומיא האנון אגרא דאנשא לא הוה ואגרא דבעירא ליתוהי ולנפקיא
11 ולעליא לית שלמא מן מעיקא ואגרי ית כל אנשא גבר בחבריה : וכען לא כיומיא
12 קדמאי אנא לשארא דעמא הדין אמר יי צבאות : ארי בעדנא ההיא זרעא יהי שלם
גופנא תתן אבה וארעא תתן ית עללתה ושמיא ישמשנון בטלהון ואחסין לשארא
13 דעמא הדין ית כל ברכתא האלין : ויהי כמא דהויתון לוטא בעממיא בית יהודה
14 ובית ישראל כן אפרוק יתכון ותהון מברכין לא תדחלון יתקפן ידיכון : ארי
כדנן אמר יי צבאות כמא דחשיבית לאבאשא לכון כד ארגיזו אבהתכון קדמי
15 אמר יי צבאות ולא תבית ממימרי : כן תבית חשיבית ביומיא האלין לאיטבא ליתבי
16 ירושלם ולדבית יהודה לא תדחלון : אלין פתגמיא די תעבדון מלילו קושטא גבר
17 בחבריה קושטא ודינא דשלמא דונו בקרויכון : וגבר ית בישת חבריה לא
תחשבון בלבכון ושבועתא דשקרא לא תרחמון ארי ית כל אלין די רחיקית
18 19 אמר יי : והוה פתגם נבואה מן קדם יי צבאות עמי למימר : כדנן אמר יי
צבאות צומא רביעאה וצומא חמישאה וצומא שביעאה וצומא עשיראה יהי לבית
20 יהודה לביע ולחדוא ולמועדין טבין וקושטא ושלמא רחימו : כדנן אמר יי
21 צבאות עוד דייתון עממין ויתבי קרוין סגיאן : ויהכון יתבי חדא עם חדא למימר
נזיל מיזל לצלאה קדם יי ולמתבע אולפן מן קדם יי צבאות דין לדין ייזיל
22 אף אנא : וייתון עממין סגיאין ומלכין רברבין למתבע אולפן מן קדם יי צבאות
בירושלם ולצלאה קדם יי :

PARAPH. CHALD. Versio Latina.

Quia antequam venirent dies illi , merces hominis non erat,& merces jumentorũ 10
non erat,& ingredientibus & egredientibus non erat pax propter
tribulationẽ; & pugnare feci omnes homines unumquemq; contra proximũ
suũ. Nunc autẽ non juxta dies antiquos reliquiis populi istius [*faciam*,] 11
ait Dñs exercituũ. Quoniã in tempore illo semen erit perfectũ; vitis producet 12
fructũ suũ, & terra dabit suũ proventũ, quib⁹ cœli rore suo subministrabunt,
atque pro hæreditate donabo reliquias populi istius universis hisce
benedictionibus. Erit ergo non secus ac maledicti fuistis, inter populos domus 13
Jehuda, domus itẽ Israel, sic asseram vos, eritisque benedicti : ne timeatis,
roborentur manus vestræ. Sic namque, inquit Dñs exercituum, Quemadmodũ 14
commentus sum damna vobis inferre, cùm me ad iracundiã provocâssent
patres vestri, ait Dñs exercituũ ; nec pœnituit *me verbi mei*. Ita 15
conversus proposui istis diebus bona elargiri habitatoribus Jerusalẽ, & domui
Jehuda, ne timeatis. Hæc sunt verba quæ opere complebitis : veritatẽ 16
loquimini quisq; cùm proximo suo, & judiciũ pacificũ in civitatibus vestris
judicate. Nec ull⁹ perniciẽ proximi sui in cordibus vestris cogitetis, & juramentũ 17
falsum ne diligatis, quia hæc sunt omnia quæ aversor, dicit Dñs. Et 18
factũ est propheticũ verbum à Dño exercituũ mecum, dicendo : Sic dicit 19
Dñs exercituum, Jejunium quartum & jejunium quintum, jejuniumq; septimum
ac jejunium decimum vertetur domui Jehuda in gaudium & lætitiam,
& in jocundas festivitates : veritatis & pacis propterea estote
studiosi. Sic dicit Dominus exercituum , Adhuc populi venient & urbium 20
habitatores plures. Et ibunt unius incolæ cum alterius [*urbis*
habitatoribus,] dicentes : Euntes eamus oratum faciem Domini, & quæsitum 21
doctrinam à Domino exercituum. Iste huic dicet, Ibo etiam ego
Quamobrem populi complures et regna magna confluent in Jerusalem 22
postulandæ doctrinæ causa à Domino exercituum, et ut conspectum ejus
exorent.

Versio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܡܛܠ ܕܩܕܡ ܡܢ ܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ. ܘܩܕܡ ܡܢ ܙܒܢܐ ܗܘ .· ܐܓܪܐ ܕܒܢܝ̈ܢܫܐ ܠܐ ܗܘܐ. ܐܦ 10
ܠܐ ܐܓܪܐ ܕܒܥܝܪܐ. ܘܠܢܦܩܐ ܘܠܥܐܠܐ .· ܠܝܬ ܗܘܐ ܫܠܡܐ ܡܢ ܩܕܡ ܐܠܘܨܐ. ܘܗܐ ܫܕܪܬ
ܠܟܠܗܘܢ ܒܢܝ̈ܢܫܐ ܐܢܫ ܒܚܒܪܗ. * ܘܗܫܐ ܠܐ ܗܘܝܬ ܐܝܟ ܕܒܩܕܡܝܬܐ 11
ܡܢ ܩܕܝܡ. ܠܫܪܟܗ ܕܥܡܐ ܗܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܡܛܠ ܕܙܪܥܐ ܢܗܘܐ ܒܫܠܡܐ. 12
ܘܓܦܬܐ ܬܬܠ ܦܐܪܗ. ܘܐܪܥܐ ܬܬܠ ܥܠܠܬܗ. ܘܫܡܝܐ ܢܬܠܘܢ ܛܠܗܘܢ. ܘܐܘܪܬ ܠܫܪܟܗ
ܕܥܡܐ ܗܢܐ. ܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ. * ܐܝܟ ܕܗܘܝܬܘܢ ܠܠܘܛܬܐ ܒܥܡ̈ܡܐ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܘܕܒܝܬ 13
ܐܝܣܪܝܠ .· ܗܟܢܐ ܐܦܪܘܩܟܘܢ ܘܬܗܘܘܢ ܠܒܘܪܟܬܐ. ܘܢܬܚܝܠܢ ܐܝܕܝܟܘܢ ܘܠܐ ܬܕܚܠܘܢ.
* ܡܛܠ ܕܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܐܝܟ ܕܐܬܚܫܒܬ ܠܡܒܐܫܘ ܠܟܘܢ .· ܟܕ ܐܪܓܙܘܢܢܝ 14
ܐܒܗ̈ܝܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܘܐܬܬܘܝܬ .· * ܗܟܢܐ ܐܬܦܢܝܬ ܘܐܬܚܫܒܬ ܒܝܘ̈ܡܬܐ 15
ܗܠܝܢ .· ܕܐܛܐܒ ܠܐܘܪܫܠܡ ܘܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ. ܠܐ ܬܕܚܠܘܢ. * ܗܠܝܢ ܦܬܓܡܐ ܥܒܕܘ. 16
ܡܠܠܘ ܩܘܫܬܐ ܐܢܫ ܥܡ ܚܒܪܗ. ܘܩܘܫܬܐ: ܘܕܝܢܐ ܘܫܠܡܐ ܕܘܢܘ ܒܬܪ̈ܥܝܟܘܢ.
* ܘܐܢܫ ܥܠ ܚܒܪܗ ܒܝܫܬܐ. ܠܐ ܬܬܚܫܒܘܢ ܒܠܒܟܘܢ. ܘܡܘܡܬܐ ܕܕܓܠܐ. ܠܐ ܬܪܚܡܘܢ. 17
ܡܛܠ ܕܗܠܝܢ ܟܠܗܝܢ ܣܢܝܬ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܗܘܐ ܠܘܬܝ ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ 18
ܚܝܠܬܢܐ ܠܡܐܡܪ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܨܘܡܐ ܕܪܒܝܥܝܐ ܘܨܘܡܐ ܚܡܝܫܝܐ .· ܘܨܘܡܐ 19
ܫܒܝܥܝܐ ܘܨܘܡܐ ܥܣܝܪܝܐ. ܢܗܘܘܢ ܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܠܚܕܘܬܐ .· ܘܠܒܣܝܡܘܬܐ ܘܠܥܐܕ̈ܐ ܛܒ̈ܐ.
ܘܫܠܡܐ ܘܩܘܫܬܐ ܪܚܡܘ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܬܘܒ ܢܐܬܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܘܥܡܘܪ̈ܝ 20
ܡܕܝܢ̈ܬܐ ܣܓܝܐܬܐ. * ܘܢܐܙܠܘܢ ܥܡܘܪ̈ܝ ܚܕܐ ܠܚܕܐ: ܘܢܐܡܪܘܢ .· ܬܘ ܢܐܙܠ. ܘܢܨܠܐ ܩܕܡ 21
ܡܪܝܐ. ܘܢܒܥܐ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܐܙܠ ܐܦ ܐܢܐ. * ܘܢܐܙܠܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܣܓܝ̈ܐܐ ܘܥܡ̈ܡܐ 22
ܥܫܝ̈ܢܐ .· ܠܡܒܥܐ ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܒܐܘܪܫܠܡ .· ܘܠܡܨܠܝܘ ܩܕܡ ܡܪܝܐ.

* Nam ante dies illos & ante tempus illud nulla erat merces homini aut jumento, neque ulla egredienti aut ingredienti pax erat à conſpectu obſidentis; nam ecce committebam omnes homines alterum cum altero. 10
Poſthac non me geram ut priſtinis diebus, cum reliquiis hujus populi, dicit Dominus potentiſſimus: 11
Quoniam ſementis erit in pace, vinea proferet fructum ſuum, terra dabit proventū ſuum, cœli ſuppeditabunt rorem ſuum; & efficiam ut reliquiæ hujus populi poſſideant hæc omnia. 12
Quemadmodum fuiſtis maledictioni inter gentes O Judæi & Iſraelitæ, ita ſervabo vos, & eritis benedictioni. Itaque confortentur manus veſtræ, & ne timeatis; 13
Quia ſic dicit Dominus potentiſſimus; Quemadmodum propoſuerā malo vos afficere quando ad iram provocaverunt me patres veſtri, dicit Dominus potentiſſimus, tamen *propoſitū* revocavi: 14
Ita converſus decrevi diebus iſtis bono afficere Jeroſolymam & Judæos: ne timeatis. 15
Res iſtas facite: loquimini veritatē alter cum altero: veritatem, judiciū, & pacē judicate in portis veſtris: 16
Alter in alterum ne cogitetis malum in corde veſtro: & juramenta falſa ne diligatis: quoniā hæc omnia odi, ait Dominus potentiſſimus. 17
Et factus eſt ad me ſermo Domini potentiſſimi, dicendo; 18
Sic ait Dñs potentiſſimus; Jejuniū quartum, jejuniū quintū, jejunium ſeptimum, et jejuniū decimum, erunt Judæis in exultationem, & lætitiam, & ſolennitates fauſtas: pacem autem & veritatē diligite. 19
Sic ait Dominus potentiſſimus; Deinceps venient populi cives urbium multarū, 20
Ibuntque cives unius ad alteram, et dicent; Agite, eamus ad orandum coram Domino, et deprecandum Dominum potentiſſimum: et *reſpondebit*, Ibo etiam ego: 21
Sic ibunt gentes multæ & ingentes populi ad rogandum Dominum potentiſſimum in Jeruſalem, et ad orandum coram Domino. 22

Versio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* من اجل انه قبل تلك الايام اجر البشر لم تكن للنفع * واجر البهايم ليست موجودة * 10
والخارج والداخل ليست له سلامة من المضطهد * وارسل كل البشر كل واحد على صاحبه *
* والان ليس كالايام التي من قبل انا اصنع لبقايا هذا الشعب * يقول الرب الضابط 11
الكل * لكي اظهر سلامة * الكرمة تعطي ثمرها * والارض تعطي غلاتها * والسماء تعطي 12
طلها * واورث لبقايا شعبي هذه كلها * ويكون كما كنتم في لعنة في الامم يا بيت يهودا 13
وبيت اسرائيل * هكذا ساخلصكم * وتكونون في بركة * تقووا وتقووا بايديكم *
* من اجل انه هكذا يقول الرب الضابط الكل * كما فكرت ان اضربكم عندما 14
اغضبني اباوكم يقول الرب الضابط الكل * ولم ارجع * هكذا امرت وهممت في هذه 15
الايام ان احسن الى ايروسليم وبيت يهودا * تقووا * هذه الاقوال التي تصنعونها * تكلموا بالحق 16
كل واحد مع صاحبه بالحقيقة * واحكموا حكما سلاميا في ابوابكم * وكل واحد 17
لا يفكر سرا في صاحبه في قلوبكم * ولا تحبوا اليمين الكاذبة * من اجل اني ابغضت هذه
كلها يقول الرب الضابط الكل * وكان قول الرب الضابط الكل الي قايلا * هكذا يقول 1
الرب الضابط الكل * الصوم الرابع * والصوم الخامس * والصوم السابع * والصوم العاشر *
يكون لبيت يهودا للفرح والسرور * وللاعياد الصالحة * وتسرون * فاحبوا الحق والسلامة *

* الاصحاح الثامن والعشرون * وهو الرابع من النبوة *

* هكذا يقول الرب الضابط الكل * ياتي ايضا شعوب كثيرين * وتسكن مدنا كثيرين * 20
* ويجمع سكان خمس مدن الى مدينة واحدة * قايلين نمضي لنطلب من وجه الرب 21
ونبتغي وجه الرب الضابط الكل * وانطلق انا * وياتي شعوب كثيرين وامم كثيرين 22
لنطلب وجه الرب الضابط الكل في ايروسليم * وليستغفروا وجه الرب *

Nam ante dies illos merces hominum non erat in emolumentum, & merces jumentorum non exiſtebat, & ingrediens atque egrediens pacem non habebat, propter perſecutorem: & omnes mortales mittebam quemque in ſocium ſuum. 10
Nunc autem nequaquam ut præteritis diebus, faciam reliquiis hujus populi, dicit Dominus omnipotens; 11
Sed pacem oſtendam. Vitis dabit fructum ſuum, terra dabit fruges ſuas, & cœlum dabit rorem ſuum; & poſſidendum dabo reliquiis populi mei hæc omnia. 12
Et fiet, ut quemadmodum fuiſtis in maledictione inter gentes, O domus Judæ & domus Iſraelis; ita liberem vos, & ſitis in benedictione. Confortamini, & corroboramini in manibus veſtris; 13
Quia ſic ait Dominus omnipotens, Quemadmodum decernebam percutere vos quando irritabant me patres veſtri, nec à propoſito diſcedebam: 14
Ita præcipio & ſtudeo hiſce diebus benefacere Jeroſolymis & domui Judæ: confidite. 15
Hi ſunt ſermones quos facietis: Loquimini veritatem quiſque cum ſocio ſuo ſincere: judicate judicium pacificum in portis veſtris: 16
Nemo machinetur malum contra ſocium ſuum in cordibus veſtris: & ne diligatis juramentum falſum: quia hæc omnia odi, ait Dominus omnipotens. 17
Et fuit ſermo Domini omnipotentis ad me, dicens; 18
Sic dicit Dominus omnipotens; Jejunium quartū, jejuniū quintum, jejunium ſeptimū, & jejunium decimum, erunt domui Judæ in lætitiam & exultationem, & in ſolennitates bonas, ac lætamini: verum diligite & pacem. 19

Textus vigeſimus octavus, hujus autem prophetiæ quartus.

Sic dicit Dominus omnipotens; Venient adhuc populi multi, & habitabunt urbes multas: 20
Et convenient cives quinque urbium in urbem unam, dicentes; Eamus deprecatum vultum Domini, & quæſitum faciem Domini omnipotentis: Vadam & ego. 21
Et venient populi multi & gentes copioſæ quæſitum faciem Domini omnipotentis in Jeruſalem, & veniam poſtulatum à facie Domini. 22

זכריה : ט

apprehendent quum ,illis diebus In : exercituum Dominus dixit Sic
23 כה־אמר יהוה צבאות בימים ההמה אשר יחזיקו
oram *in* apprehendent & : gentium linguis omnibus ex homines decem
עשרה אנשים מכל לשנות הגוים והחזיקו בכנף
Deum audivimus quia ,vobiſcum Ibimus : dicendo ,Jehudæi viri
איש יהודי לאמר נלכה עמכם כי שמענו אלהים
.vobiſcum
עמכם:

CAP. IX. ט

Dammeſec & , Chadrach terra in Domini verbi *Onus*
1 משא דבר־יהוה בארץ חדרך ודמשק
tribuum omnium & , hominis oculus Dominum ad quia : ejus requiei
מנחתו כי ליהוה עין אדם וכל שבטי
,Sidon & ,Sor , ea in terminabit Chamath etiam Et .Iſrael
2 ישראל: וגם־חמת תגבל־בה צר וצידון
: ſibi munitionem Sor ædificavit Et .valde fuit ſapiens quia
3 כי חכמה מאד: ויבן צור מצור לה
lutum ut , aurum & , *pulverem* tanquam argentum coacervavit &
ותצבר־כסף כעפר וחרוץ כטיט
mari in percutiet & ,eam faciet expellere Dominus Ecce .platearum
4 חוצות: הנה אדני יורשנה והכה בים
, Aſchelon Videbit .*comedetur* igni in ipſa & : ejus fortitudinem
5 חילה והיא באש תאכל: תרא אשקלון
pudebit quoniam ,Hecron & ; valde dolebit & ,Hazzah & ; timebit &
ותירא ועזה ותחיל מאד ועקרון כי־הביש
.habitabitur non Aſchelon & ,Hazzah de rex peribit & : ejus aſpectus
מבטה ואבד מלך מעזה ואשקלון לא תשב:
.Peliſtim ſuperbiam faciam ſuccidere & :Aſdod in ſpurius habitabit Et
6 וישב ממזר באשדוד והכרתי גאון פלשתים:
ejus abominationes & , ejus ore de ejus *ſangumes* faciam removere Et
7 והסרתי דמיו מפיו ושקציו
erit & : noſtro Deo ipſe etiam relinquetur & , ejus *dentes* *inter* ex
מבין שניו ונשאר גם־הוא לאלהינו והיה
caſtrametabor Et .Jebuſæus ſicut Hecron & , Jehudah in dux velutì
8 כאלף ביהודה ועקרון כיבוסי: וחניתי
tranſibit non & ; redeunte à & , tranſeunte à exercitu ab ,meæ domui
לביתי מצבה מעבר ומשב ולא־יעבר
Exulta .meis oculis in vidi nunc quia : exactor ultrà eos ſuper
9 עליהם עוד נגש כי־עתה ראיתי בעיני: גילי
veniet tuus rex Ecce .Jeruſalaim filia jubila , Sion filia valde
מאד בת־ציון הריעי בת ירושלם הנה מלכך יבוא
ſuper & ,aſinum ſuper equitans & humilis: ipſe ſalvatus & , juſtus tibi
לך צדיק ונושע הוא עני ורכב על־חמור ועל־
, Ephraim de *currum* faciam ſuccidere Et .*aſinarum* filium pullum
10 עיר בן־אתנות: והכרתי־רכב מאפרים
pacem loquetur & , *belli* arcus *ſuccidetur* & : Jeruſalaim de *equum* &
וסוס מירושלם ונכרתה קשת מלחמה ודבר שלום
ad uſque flumine à & , mare ad uſque mari à eju poteſtas & : gentibus
לגוים ומשלו מים עד־ים ומנהר עד־
emiſi : tui fœderis ſanguine in tu Etiam .terræ *fines*
11 אפסי־ארץ: גם־את בדם־בריתך שלחתי
,*munitionem* ad Convertimini .*ea in* aqua non ciſterna de tuos vinctos
12 אסיריך מבור אין מים בו: שובו לבצרון
.tibi reddam *duplum* annuntians hodie etiam : *ſpei* vincti
אסירי התקוה גם־היום מגיד משנה אשיב לך:

Verſio VULG. LAT.

23 Hæc dicit Dominus exercituum; In diebus illis, in quibus apprehendent decem homines, ex omnibus linguis gentium, & apprehendent fimbriam viri Judæi, dicentes; Ibimus vobiſcum: audivimus enim quoniam Deus vobiſcum eſt.

CAP. IX.

1 ONus verbi Dñi in terra Hadrach, & Damaſci requiei ejꝰ: quia Dñi eſt oculus hominis, & 2 omniũ tribuũ Iſrael. Emath quoque in terminis ejus, & Tyrus, & Sidon: aſſumpſerunt quippe ſibi 3 ſapientiam valdé. Et ædificavit Tyrus munitionem ſuam, et coacervavit argentum quaſi humum, & aurum ut lutum pla- 4 tearum. Ecce Dominus poſſidebit eam, & percutiet in mari fortitudinem ejus, & hæc igni devora- 5 bitur. Videbit Aſcalon, & timebit; & Gaza, & dolebit nimis; & Accaron, quoniã confuſa eſt ſpes ejus: & peribit rex de Gaza, & 6 Aſcalon non habitabitur. Et ſedebit ſeparator in Azoto, & diſperdam ſuperbiam Philiſthinorum. 7 Et auferam ſanguinem ejus de ore ejus, & abominationes ejus de medio dentium ejus, & relinquetur etiam ipſe Deo noſtro, & erit quaſi dux in Juda, & Accaron quaſi Jebuſæus. 8 Et circumdabo domũ meã ex his qui militant mihi euntes & revertentes, & non tranſibit ſuper eos ultrà exactor: quia nunc vi- 9 di in oculis meis. Exulta ſatìs, filia Sion; jubila, filia Jeruſalem: ECCE REX TUUS veniet tibi juſtus, & ſalvator: ipſe pauper, & aſcendens ſuper aſinam, & ſuper pullum filium aſinæ. 10 Et diſperdam quadrigam ex Ephraim, & equum de Jeruſalem, & diſſipabitur arcus belli: & loquetur pacem Gentibus, & poteſtas ejus à mari uſque ad mare, & à fluminibus uſque ad fines 11 terræ. Tu quoque in ſanguine teſtamenti tui emiſiſti vinctos tuos de lacu, in quo non eſt 12 aqua. Convertimini ad munitionem, vincti ſpei: hodiè quoque annuntians duplicia reddam tibi.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

23 Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ἐν ταῖς ἡμέραις ἐκείναις, ἐὰν ἐπιλάβωνται δέκα ἄνδρες ἐκ πασῶν τῶν γλωσσῶν τῶν ἐθνῶν, ϗ ἐπιλάβωνται τοῦ κρασπέδου ἀνδρὸς Ἰουδαίου, λέγοντες, Πορευσόμεθα μετὰ σοῦ, διότι ἀκηκόαμεν ὅτι (σ) ὁ θεὸς μεθ' ὑμῶν ἐστίν.

Hæc dicit Dominus omnipotens; In diebus illis, ſi apprehenderint decem viri de omnibus linguis gentium, & tenuerint fimbriam viri Judæi, dicentes; Ibimus tecum, quia audivimus, quòd Deus vobiſcum eſt. 23

MS.A. (σ) θεὸς μετὰ σοῦ ἐστίν.

ΚΕΦ. Θ.

1 Λῆμμα λόγου κυρίου ἐν γῇ (α) Σεδράχ, ϗ Δαμασκοῦ θυσία αὐτοῦ, διότι κύριος ἐφορᾷ ἀνθρώπους ϗ πάσας φυλὰς τοῦ Ἰσραήλ. 2 Καὶ (β) ἐν Ἡμὰθ ἐν τοῖς ὁρίοις αὐτῆς Τύρος ϗ Σιδών, διότι ἐφρόνησαν σφόδρα. 3 Καὶ ᾠκοδόμησε Τύρος ὀχυρώματα αὐτῇ, ϗ ἐθησαύρισεν ἀργύριον ὡς χοῦν, ϗ συνήγαγε 4 χρυσίον ὡς πηλὸν ὁδῶν. (γ) Καὶ διατοῦτο κύριος κληρονομήσει (δ) αὐτούς, ϗ πατάξει εἰς θάλασσαν δύναμιν αὐτῆς, ϗ αὕτη 5 ἐν πυρὶ καταναλωθήσεται. Ὄψεται Ἀσκάλων, ϗ φοβηθήσεται, ϗ Γάζα, ϗ ὀδυνηθήσεται σφόδρα, ϗ Ἀκκάρων, ὅτι ᾐσχύνθη (ε) ἐπὶ τῷ παραπτώματι αὐτῆς. ϗ ἀπολεῖται (ζ) βασιλεὺς ἐκ Γάζης, ϗ Ἀσκάλων οὐ μὴ 6 κατοικηθῇ. Καὶ κατοικήσουσιν ἀλλογενεῖς ἐν Ἀζώτῳ, ϗ καθελῶ ὕβριν ἀλλοφύλων, 7 Καὶ ἐξαρῶ τὸ αἷμα αὐτῶν ἐκ στόματος αὐτῶν, ϗ τὰ βδελύγματα (η) αὐτῶν ἐκ μέσου ὀδόντων αὐτῶν. ϗ ὑπολειφθήσονται ϗ οὗτοι τῷ θεῷ ἡμῶν, ϗ ἔσονται ὡς χιλίαρχος ἐν Ἰούδᾳ, ϗ Ἀκκάρων ὡς ὁ Ἰεβουσαῖος. 8 Καὶ ὑποστήσομαι τῷ οἴκῳ μου (θ) ἀνάστημα, τοῦ μὴ διαπορεύεσθαι, μηδὲ ἀνακάμπτειν, ϗ οὐ μὴ ἐπέλθῃ ἐπ' αὐτοὺς οὐκέτι ἐξελαύνων, διότι νῦν ἑώρακα (ι) ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς 9 μου. Χαῖρε σφόδρα θύγατερ Σιών, κήρυσσε θύγατερ Ἱερουσαλήμ· ἰδοὺ ὁ βασιλεύς σου ἔρχεταί σοι δίκαιος ϗ σώζων, αὐτὸς πραΰς, καὶ ἐπιβεβηκὼς ἐπὶ ὑπο- 10 ζύγιον ϗ πῶλον νέον. Καὶ (κ) ἐξολοθρεύσει ἅρματα ἐξ Ἐφραίμ, ϗ ἵππον ἐξ Ἱερουσαλήμ, ϗ (λ) ἐξολοθρευθήσεται τόξον πολεμικόν, ϗ πλῆθος ϗ εἰρήνη ἐξ ἐθνῶν, ϗ κατάρξει ὑδάτων ἕως θαλάσσης, ϗ πο- 11 ταμῶν διεκβολὰς γῆς. Καὶ σὺ ἐν αἵματι διαθήκης (μ) σου ἐξαπέστειλας δεσμίους σου 12 ἐκ λάκκου οὐκ ἔχοντος ὕδωρ. (ν) Καθήσεσθε ἐν ὀχυρώμασι δέσμιοι τῆς συναγωγῆς, ϗ ἀντὶ μιᾶς ἡμέρας παροικεσίας σου διπλᾶ ἀνταποδώσω σοι,

CAP. IX.

ASſumptio verbi Domini in terra (a) Sedrach, & Damaſci (b) ſacrificium ejus: quia Dominus reſpicit homines, & omnes tribus Iſrael. 1 Et in Emath in (c) finibus ejus Tyrus, & Sidon: quoniam ſapientes fuerunt nimis: 2 Et ædificavit Tyrus munitiones ſuas, & theſaurizavit argentum, ut humum, & congregavit aurum, ut lutum viarum. 3 Et propterea Dominus poſſidebit eos, et percutiet in mari fortitudinem ejus: & ipſa in igne conſumabitur. 4 Videbit Aſcalon, & timebit: & Gaza, & dolebit nimis: & Accaron, quoniam confuſa eſt (d) ſuper ruina ſua. Et peribit rex de Gaza: & Aſcalon non habitabitur: 5 Et habitabunt alienigenæ in Azoto. 6 Et deſtruam injuriam alienigenarum, Et auferam ſanguinem eorum de ore illorum, & abominationes eorum de medio dentium illorum. 7 Et relinquentur & iſti Deo noſtro, & erunt, ut Chiliarchus in Juda, & Accaron, ſicut Jebuſæus. Et ſupponam domui meæ elevationem, 8 ut non pertranſeat, neque (e) revertatur, & nequaquam ſuperveniat eis ultrà abactor: quia nunc vidi in oculis meis. Gaude vehementer, filia Sion; (f) prædica, filia Hieruſalem. 9 Ecce rex (g) tuus venit tibi juſtus, & ſalvans, ipſe (h) manſuetus, & aſcendens ſuper ſubjugalem, & pullum (i) novum. Et diſperdet quadrigas ex Ephraem, & equum de Hieruſalem: 10 & (k) diſperdetur arcus bellicus, & (l) multitudo, & pax ex gentibus: & dominabitur (m) aquis uſque ad mare, & fluminibus exitus terræ. Et tu in ſanguine teſtamenti (n) tui emiſiſti vinctos tuos de lacu, qui non habet aquam. 11 Sedebitis in munitionibus vincti congregationis: et pro una die peregrinationis tuæ duplicia reddam tibi: 12

MS. A. (α) Σεδράκ, (β) Ἡμὰθ (γ) Διατοῦτο (δ) αὐτήν, ϗ πατάξει εἰς θάλασσαν τὴν δύναμιν (ε) ἀπὸ τῆς ἐλπίδος αὐτῆς. (ζ) βασιλεία ἀπὸ Γάζης, (η) * αὐτοῦ (θ) ἀνάστεμα, (ι) τοῖς (κ) ἐξολεθρεύσει (λ) ἐξολεθρευθήσεται (μ) ἐξαπέστειλας τοὺς δεσμίους (ν) Καὶ θήσονται ἐν ὀχυρώμασι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

23 כדנן אמר יי צבאות ביומיא האנון די יתקפון עשרא גברין מכל לישני עממיא ויתקפון
בכנף גבר יהודי למימר ניזל עמכון ארי שמענא דמימרא דיי בסעדכון:

ט

1 מטל פתגמא דיי בארעא דרומא ודמשק תתוב למהוי מארע בית שכנתיה ארי קדם יי
2 גלן עובדי בני אנשא אתרעי בכל שבטיא דישראל: ואף חמת תתוב למהוי מארע בית
3 שכנתיה צור וצידון ארי תקיפא לחדא: ובנת צור תקיפת לה וכנשת כספא כעפרא
4 ודהבא כסין שוקין: הא יי מתריך להוירם בימא עתרה והיא בנורא תתוקד: תחזי
5 אשקלון ותדחל ועזה ותזוע לחדא ועקרון ארי בהיתת מבית רוחצנהא ויבד מלכא
6 מעזה ואשקלון לא תתיתב: ויתיבון בית ישראל באשדוד דהוו בה כנכריאין
7 ואבטל רבות פלשתאי: ואשצי אכלי דמא ושקצא מביניהון ויסוף חילהון וגיורין
די ישתארון בהון יתוספון אף אנון על עמא דאלהנא ויהון כרברבין דבית יהודה
8 ועקרון תתמלי בית ישראל כירושלם: ואשרי בבית מקדשי שכינת יקרי ותקוף
דרע גבורתי כשור דאשא מקיף לה סחור סחור מדעדי ומדתאב ולא יעבר עליהון
9 עוד שולטן ארי כעי גליית גבורתי לאוטבא להון: בועי לחדא כנשתא דציון
ובועי כנשתא דירושלם הא מלכיך אתי לויך זכי ופריק הוא ענותן ורכב על
10 חמרא ועל עיר בר אתנן: ואשצי רתיכין מאפרים וסוסון מירושלם ואתבר תקיף עבדי
קרב משרית עממיא וידין שלמא למלכותא ושולטניה יהי מן ימא עד ימא ומנהרא עד סופי
11 ארעא: אף אתון די על דמא [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Sic dicit Dñs exercituum: In diebus illis in quibus apprehendent decem viri ex omnibus linguis populorum, apprehendent [*inquam*] fimbriam viri Judæi, dicentes: Ibimus vobiſcum: audivimus enim quòd verbum Domini ſit in adjutorium veſtrum. 23

CAPUT. IX.

ONus verbi Dñi in terra Auſtrali, & Damaſcꝰ convertetur ut ſit de terra 1 domus majeſtatis ejus, quia coram Dño manifeſta ſunt opera filiorum hominum, & ſibi complacet in omnibus tribubus Iſrael. Emath quoq; conver- 2 tetur ut ſit de terra domus majeſtatis ejus; & Tyrus & Sidon, quia confortatæ ſunt valde. Et ædificavit Tyrus munitionem ſibi, & congregavit argen- 3 tum quaſi pulverem, & aurũ quaſi lutum platearum. Ecce Dñs ejiciet eam 4 & projiciet divitias ejus in mare: & ipſa igne ſuccendetur. Videbit Aſcalon 5 & timebit; & Gaza, & contremiſcet nimis; & Acharon, quoniam confuſa eſt à domo confidentiæ ſuæ: & peribit rex de Gaza, & Aſcalon non habitabitur. Et habitabunt domus Iſrael in Azoto qui erant in ea quaſi alieni, 6 & ceſſare faciam magnitudinem Philiſtinorum. Et diſperdam comedentes 7 ſanguinem et abominationem de medio eorum, & deficiet virtus eorum: & proſelyti qui remanſerint in eis, adjicientur etiam ipſi ad populum Dei noſtri; & erunt quaſi principes domus Juda: & Acharon implebitur de domo Iſrael ſicut Jeruſalem. Et habitare faciam majeſtatem gloriæ meæ in domo 8 ſanctuarii mei: & fortitudo brachii potentiæ meæ erit ſicut murus ignis in circuitu ejus propter tranſeuntes & redeuntes: & non tranſibit per eos ampliùs tyrannus quia nunc conſpicuam feci potentiam meam ut benefacirem eis. Exulta vehementer cœtꝰ Sion: & exulta cœtus Jeruſalem: ecce rex 9 tuus veniet tibi juſtus ipſe & ſalvator manſuetꝰ, equitans in aſino & pullo filio aſinæ. Et diſperdã quadrigas ex Ephraim & equos de Jeruſalẽ, & 10 conteram fortitudinem bellatorũ & exercitus populorũ & judicabit in pace regna et dominabitur à mari uſque ad mare, ab Occidente et ab Euphrate uſq; ad fines terræ. Vos quoque quibus in ſanguine ſancitũ eſt pactũ, redemi vos de 11 ſubjectione Ægyptiorum [illegible] in deſerto [illegible] [illegible] Convertimini [illegible] hodie quoque [illegible] adducam vobis. 12

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܒܝܘܡܬܐ ܗܢܘܢ. ܢܐܚܕܘܢ ܥܣܪܐ ܓܒܪ̈ܝܢ ܡܢ ܟܠ ܠܫܢ̈ܝ 23
ܥܡ̈ܡܐ. ܘܢܐܚܕܘܢ ܒܟܢܦܗ ܕܓܒܪܐ ܝܗܘܕܝܐ. ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܗ. ܢܐܙܠ ܥܡܟ. ܡܛܠ ܕܫܡܥܢ
ܕܐܠܗܐ ܥܡܟܘܢ.

23 Sic ait Dominus potentiſſimus; Iis diebus prehendent decem homines ex quibuſcunque linguis gentium, fimbriam hominis Judæi, & dicent illi; Tecum ibimus, quoniam audivimus Deum eſſe vobiſcum.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܛ *

* ܦܬܓܡܗ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܪܥܐ ܕܚܕܪܟ ܘܕܪܡܣܘܩ ܩܘܪܒܢܗ. ܡܛܠ ܕܠܡܪܝܐ ܓܠܝܢ 1
ܒܢܝ̈ܢܫܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܫܒܛ̈ܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. * ܘܐܦ ܚܡܬ. ܬܬܚܡ ܒܗ. ܘܨܘܪ ܘܨܝܕܢ 2
ܕܚܟܝܡܢ ܛܒ: * ܘܒܢܬ ܨܘܪ ܚܣܢܐ ܠܗ: ܘܟܢܫܬ ܣܐܡܐ ܐܝܟ ܥܦܪܐ: ܘܕܗܒܐ ܐܝܟ ܛܝܢܐ 3
ܕܫܘܩܐ. * ܡܛܠܗܢܐ ܡܪܝܐ ܢܘܪܬܝܗ. ܘܢܪܡܐ ܒܝܡܐ ܚܝܠܗ. ܘܗܝ ܒܢܘܪܐ ܬܬܐܟܠ. 4
* ܘܬܚܙܐ ܐܫܩܠܘܢ ܘܬܕܚܠ. ܘܥܙܐ ܬܬܟܪܗ ܛܒ. ܘܥܩܪܘܢ ܕܒܗܬ ܣܒܪܗ. 5
ܘܢܐܒܕ ܡܠܟܐ ܡܢ ܥܙܐ. ܘܐܫܩܠܘܢ ܠܐ ܬܬܝܬܒ. * ܘܢܬܒܘܢ ܢܘܟܪ̈ܝܐ ܒܐܫܕܘܕ. ܘܐܒܛܠ 6
ܫܘܒܗܪܗܘܢ ܕܦܠܫ̈ܬܝܐ. * ܘܐܥܒܪ ܕܡܗܘܢ. ܡܢ ܦܘܡܗܘܢ. ܘܛܢܦܘܬܗܘܢ. ܡܢ 7
ܒܝܬ ܫܢ̈ܝܗܘܢ. ܘܢܫܬܚܪܘܢ ܐܦ ܗܢܘܢ ܠܐܠܗܢ. ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܪܫܢ̈ܐ ܕܝܗܘܕܐ.
ܘܥܩܪܘܢ ܢܗܘܐ. ܐܝܟ ܥܒܪܘܢ. * ܘܐܫܪܐ ܠܘܬ ܒܝܬܝ ܡܫܪܝܬܐ ܡܢ ܕܥܒܪ ܘܗܦܟ 8
ܘܠܐ ܢܥܒܪ ܬܘܒ ܥܠܝܗܘܢ ܡܫܥܒܕܢܐ. ܡܛܠ ܕܗܫܐ ܚܙܝܬ ܒܥܝܢ̈ܝ. * ܚܕܝ 9
ܛܒ ܒܪܬ ܨܗܝܘܢ. ܘܐܟܪܙܝ ܒܪܬ ܐܘܪܫܠܡ. ܗܐ ܡܠܟܟܝ ܐܬܐ ܠܟܝ. ܙܕܝܩܐ ܘܦܪܘܩܐ.
ܘܪܟܝܒ ܥܠ ܚܡܪܐ ܘܥܠ ܥܝܠܐ ܒܪ ܐܬܢܐ. * ܘܢܘܒܕ ܡܪܟܒܬܐ ܡܢ ܐܦܪܝܡ. 10
ܘܪܟܫܐ ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. ܢܬܒܪ ܩܫܬܐ ܕܩܪܒܐ. ܘܢܡܠܠ ܫܠܡܐ ܥܡ ܥܡ̈ܡܐ.
ܘܫܘܠܛܢܗ ܡܢ ܝܡܐ ܠܝܡܐ. ܘܡܢ ܢܗܪܐ ܥܕܡܐ ܠܣܘܦܝܗ ܕܐܪܥܐ. * ܘܐܦ ܐܢܬ 11
ܒܕܡܐ ܕܩܝܡܟ ܫܪܝܬ ܐܣܝܪ̈ܝܟ ܡܢ ܓܘܒܐ ܕܠܝܬ ܒܗ ܡܝܐ. * ܬܒܘ ܒܚܣܢܐ 12
ܐܣܝܪ̈ܝ ܕܟܢܘܫܬܐ. ܘܚܠܦ ܚܕ ܝܘܡ. ܬܪܝܢ ܐܦܪܘܥ ܠܟܘܢ.

CAP. IX.

Sermo Domini de terra Hadrach & Dama- 1
ſci oblatione ipſius: quia Domino manifeſti
ſunt homines & omnes tribus Iſraelis. Eti- 2
am Hemath illâ terminabitur, nec non Ty-
rus ac Sidon quæ plurimum ſapiunt. Ædifi- 3
cavit ſibi Tyrus munitionem, & congeſſit ar-
gentum ut pulverem, & aurum ut lutum pla-
tearum: Propterea Dominus perdet eam, 4
& projiciet in mare divitias ejus, & ipſa igne
conſumetur. Aſcalon videns timebit, Aza 5
infirmabitur admodum; & Ecron, quòd
ſpes ejus pudefacta ſit: & peribit rex de
Aza: & Aſcalon erit inhabitabilis: Et ha- 6
bitabunt exteri in Aſdod: & perdam arro-
gantiam Paleſtinorum, Auferamque ſangui- 7
nem eorum ex ore ipſorum, & immunditiam
eorum è dentibus ipſorum; & manebunt
ipſi quoque Deo noſtro, eruntque ſicut prin-
cipes Judæ: & Ecron erit ſicut Ebron. Et 8
caſtrametari jubebo circa domum meam præ-
fectum, contra tranſeuntem ac redeuntem, ut
non tranſeat poſthac ſecus eos domitor: quia
nunc vidi oculis meis. Exulta vehementer 9
filia Sionis, & exclama filia Jeruſalem:
ecce rex tuus adveniet tibi, juſtus, & ſalva-
tor, & inſidens aſino pulloque aſinæ. Is 10
perdet currum ex Aphremo, & equum de
Jeruſalem, franget arcum in bello, & loque-
tur pacem cum gentibus, & dominabitur à
mari ad mare, & à flumine uſque ad extrema
terræ. Et tu quoque per ſanguinem fœderis 11
tui dimiſiſti vinctos è fovea in qua non extant
aquæ. Manete in arce O vincti eccleſiæ, & 12
pro uno die duos rependam vobis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* هكذا يقول الرب الضابط الكل * في تلك الايام تاخذ عشرة رجال من جميع 23
السنة الامم * وتمسك ذيل رجل يهودي * قايلين ننطلق معك * من اجل انا سمعنا
ان الله معكم هو *

23 *Sic ait Dominus omnipotens; Iis diebus prehendent decem viri ex omnigenis linguis, & tenebunt fimbriam viri Judæi, dicentes; Tecum ibimus, quoniam audivimus Deum vobiſcum eſſe.*

* الفصل التاسع *

* وحي قول الرب في ارض سدراخ ودمشق ذبيحته * من اجل ان الرب ينظر البشر 1
وجميع اسباط اسرايل * وحماة في حدودها * صور وصيدا * لاجل هذا تعقلوا جدا * 2
* وبنت صور حصونا لها * وكثرت فضة مثل التراب * وجمعت ذهبا مثل طين الطرقات * 3
* لاجل هذا الرب يرثها * ويحدر الى البحر قوتها * وهي توكل بالنار * ترى عسقلان 4 5
وتخاف * غزة وتوجع جدا * وعقرون * لانها خزيت بزلاتها * ويهلك الملك من غزة * وعسقلان
لا تسكن * وتسكن الغرباء الجنس في اشدود * واهدم كبرياء القبايل الغريبة * 6
* وانزع دمهم من فمهم * ورجاساتهم من بين اسنانهم * ويبقى هذا لالهنا * ويصيرون 7
مثل روساء الوف في يهوذا * وعقرون مثل اليابوسي * واثبت لبيتي قواما * ان لا يبرح ولا 8
يجي * ولا يعبر بهم ايضا مخرج * من اجل اني الان رايت بعيني * افرحي جدا يا ابنة صهيون 9
نادي يا ابنة اورشليم * ها ملكك يقبل اليك * عدل ومخلص هو متواضع وراكب على
اتان وجحش شاب * ويستاصل المركبات من افرام والفرس من اورشليم ويستاصل القوس 10
الحربي والكثرة والسلامة من الامم ويراس على المياه من البحر الى البحر ومن الانهار الى منتهى
الارض * وانت بدم عهدك سرحت اسراك من جب لا ماء فيه * اجلسوا في الحصن يا 11 12
اسرى الجماعة * وبدل يوم واحد من غربتك اكافيك اضعافا *

CAP. IX.

Revelatio ſermonis Domini contra 1
terram Sedrach & Damaſci victimam
ſuam. Quia Dominus videt homines, &
omnes tribus Iſraelis, Et Hemath cum 2
terminis ejus, Tyrum, ac Sidonem; ideò
vehementer ſapuerunt: Et ædificavit 3
ſibi Tyrus arces, multiplicavit argentum
ceu pulverem, & cumulavit aurum ceu
lutum viarum. Propterea Dominus poſ- 4
ſidebit eam, detraheique in mare poten-
tiam ejus, & ipſa igne conſumetur. Vi- 5
debit Aſcalan, & timebit: Gaza, mul-
tùmque dolebit unà cum Acrone; quia
pudefacta eſt propter iniquitates ſuas:
Rex peribit è Gaza: Aſcalan non ha-
bitabitur: Habitabunt alienigenæ in Aſ- 6
dod. Et deſtruam arrogantiam alieni-
genarum, Auferamque ſanguinem eo- 7
rum ex ore ipſorum, & abominationes
eorum è dentibus ipſorum; & relin-
quetur iſte Deo noſtro: ſientque ut chi-
liarchi in Juda, & Acron ut Jebuſæus.
Et ſtabiliam domui meæ fulcrum, ne eat 8
redeatque; néve ſuperveniat eis poſthac
expulſor: quia nunc vidi oculis meis.
Gaude vehementer O filia Sionis, pro- 9
clama O filia Jeruſalem: ecce rex tuus
veniet ad te: juſtus & ſalvator eſt, hu-
milis, & inſidens aſinæ pulloque adole-
ſcenti. Evellet quadrigas ex Aphremo, & 10
equum de Jeruſalem: & eradicabit
gladium bellicum, & multitudinem, at-
que pacem è gentibus: & domina-
bitur aquis à mari ad mare, & à flu-
minibus uſque ad penitiſſima terræ.
Et tu per ſanguinem teſtamenti tui di- 11
miſiſti vinctos tuos è fovea in qua
non eſt aqua. Sedete in arce O vincti 12
congregationis, & pro uno die pere-
grinationis tuæ multiplices rependam
tibi.

זכריה : ט

, Ephraim implevi , arcum Jehudah mihi extendi Quoniam
13 כי־דרכתי לי יהודה קשת מלאתי אפרים
te ponam & : Javan tuos filios ſuper Sijon tuos filios ſuſcitavi &
ועוררתי בניך ציון על־בניך יון ושמתיך
exibit & ,conſpicietur eis *ſuper* Dominus Et .fortis gladium veluti
14 כחרב גבור : ויהוה עליהם יראה ויצא
vadet & ,clanget tuba in Deus Dominus & : ejus jaculum fulgur ut
כברק חצו ואדני יהוה בשופר יתקע והלך
, eos *ſuper* proteget exercituum Dominus .*auſtri* *turbinibus in*
15 בסערות תימן : יהוה צבאות יגן עליהם
tumultuabuntur ,bibéntque , fundæ lapidibus ſubjicient & ,*comedent* &
ואכלו וכבשו אבני־קלע ושתו המו
.altaris anguli tanquam , pelvis ut ſe replebunt & : vinum ſicut
כמו־יין ומלאו כמזרק כזוית מזבח :
pecus ſicut , illa die in eorum Deus Dominus eos ſervabit Et
16 והושיעם יהוה אלהיהם ביום ההוא כצאן
.ejus *humum* ſuper *ſe elevantes* coronæ lapides quia : ſuum populum
עמו כי אבני־נזר מתנוססות על־אדמתו :
frumentum ? ejus pulchritudo quanta & , ejus bonitas quanta Quia
17 כי מה־טובו ומה־יפיו דגן
.virgines faciet *germinare* novum vinum & , juvenes
בחורים ותירוש ינובב בתלות :

CAP. X. י

Dominus , ſerotinam tempore *in* pluviam Domino à Petite
1 שאלו מיהוה מטר בעת מלקוש יהוה
unicuique , eis dabit imbris pluviam & : coruſcationes *faciens*
עשה חזיזים ומטר־גשם יתן להם לאיש
divini & ,vanitatem ſunt *locutæ* imagines Quia .agro in herbam
2 עשב בשדה : כי התרפים דברו־און והקוסמים
:conſolabantur vanè ,ſunt locuti *vanitatis* ſomnia & ,mendacium viderunt
חזו שקר וחלמות השוא ידברו הבל ינחמון
.paſtor non quia,ſe humiliaverunt ,*pecus* ſicut ,ſunt profecti idcirco
על־כן נסעו כמו־צאן יענו כי־אין רעה :
: viſitabo hircos contra & ,meus *naſus* eſt iratus paſtores Contra
3 על־הרעים חרה אפי ועל־העתודים אפקוד
domum ,ſuum gregem exercituum Dominus viſitavit quia
כי־פקד יהוה צבאות את־עדרו את־בית
ipſo Ex .bello in ſuæ gloriæ equum tanquā eos poſuit & ,Jehudah
4 יהודה ושם אותם כסוס הודו במלחמה : ממנו
egredietur ipſo ex : bello arcus ipſo ex ,palus ipſo ex ,angulus
פנה ממנו יתד ממנו קשת מלחמה ממנו יצא
luto in conculcantes fortes ſicut erunt Et .ſimul *exactor* omnis
5 כל־נוגש יחדו : והיו כגברים בוסים בטיט
: eis cum Dominus quia , pugnabunt & , bello in platearum
חוצות במלחמה ונלחמו כי יהוה עמם
domum roborabo Et .equorum aſcenſores afficientur pudore &
6 והבישו רכבי סוסים : וגברתי את־בית
quia ,eos convertam & ; ſervabo Joſeph domum & ; Jehudah
יהודה ואת־בית יוסף אושיע והושבותים כי
ego quia : eos elongavi non quando ſicut erunt & ,eorum ſum miſertus
רחמתים והיו כאשר לא־זנחתים כי אני
, Ephraim *fortis ut* erunt Et .eos exaudiam & ,eorum Deus Dominus
7 יהוה אלהיהם ואענם : והיו כגבור אפרים
;lætabitur &,videbunt eorum filii & :vinum *tanquam* corū cor lætabitur &
ושמח לבם כמו־יין ובניהם יראו ושמחו
.Domino in eorum cor exultabit
יגל לבם ביהוה :

Verſio VULG. LAT.

13 Quoniam extendi mihi Judam quaſi arcum, implevi Ephraim: & ſuſcitabo filios tuos, Sion, ſuper filios tuos, Græcia: et ponā te quaſi gladiū fortiū. 14 Et Dominus Deus ſuper eos videbitur; & exibit ut fulgur, jaculū ejus: & Dominus Deus in tuba canet, & vadet in turbine Auſtri. 15 Dominus exercituum proteget eos: & devorabunt, & ſubjicient lapidibus fundæ: & bibentes inebriabuntur quaſi à vino, & replebuntur ut phialæ, & quaſi cornua altaris. 16 Et ſalvabit eos Dominus Deus eorum in die illa, ut gregem populi ſui: quia lapides ſancti elevabuntur ſuper terram ejus. 17 Quid enim bonum ejus eſt, & quid pulchrum ejus, niſi frumentum electorum, & vinum germinans virgines?

CAP. X.

1 PEtite à Domino pluviam in tempore ſerotino, & Dominus faciet nives, & pluviam imbris dabit eis, ſingulis herbam in agro. 2 Quia ſimulacra locuta ſunt inutile, & divini viderunt mendacium, & ſomniatores locuti ſunt fruſtrá: vanè conſolabantur: idcircò abducti ſunt quaſi grex: affligentur, quia non eſt eis paſtor. 3 Super paſtores iratus eſt furor meus, & ſuper hircos viſitabo: quia viſitavit Dominus exercituum gregem ſuum, domum Juda, & poſuit eos quaſi equum gloriæ ſuæ in bello. 4 Ex ipſo angulus, ex ipſo paxillus, ex ipſo arcus prælii, ex ipſo egredietur omnis exactor ſimul. 5 Et erunt quaſi fortes conculcantes lutum viarū in prælio: et bellabunt, quia Dominus cum eis: & confundentur aſcenſores equorum. 6 Et confortabo domum Juda, & domum Joſeph ſalvabo: et convertam eos, quia miſerebor eorum: et erunt ſicut fuerunt quando non projeceram eos: ego enim Dominus Deus eorum, & exaudiam eos. 7 Et erūt quaſi fortes Ephraim, et lætabitur cor eorum quaſi à vino: et filii eorum videbunt, et lætabuntur, et exultabit cor eorum in Domino.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

13 Διότι ἐνέτεινά σε Ἰούδα ἐμαυτῷ (ξ) τόξον, ἔπλησα τὸν Ἐφραὶμ, καὶ (῀) ἐξεγερῶ τὰ τέκνα σου Σιὼν ἐπὶ τὰ τέκνα τῶν Ἑλλήνων, καὶ ψηλαφήσω σε ὡς ῥομφαίαν μαχητοῦ. 14 Καὶ (ο) κύριος ἔσται ἐπ' αὐτοὺς, καὶ ἐξελεύσεται ὡς ἀστραπὴ βολὶς, καὶ κύριος παντοκράτωρ ἐν σάλπιγγι σαλπιεῖ, καὶ (π) πορεύσεται ἐν σάλῳ ἀπειλῆς αὐτοῦ. 15 Κύριος παντοκράτωρ ὑπερασπιεῖ (ρ) αὐτοὺς· καὶ καταναλώσουσιν αὐτοὺς, καὶ καταχώσουσιν αὐτοὺς ἐν λίθοις σφενδόνης, καὶ ἐκπίονται (σ) αὐτοὺς ὡς οἶνον, καὶ πλήσουσι (τ) τὰς φιάλας ὡς θυσιαστήριον. 16 Καὶ σώσει αὐτοὺς (υ) κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ὡς πρόβατα λαὸν αὐτοῦ, διότι λίθοι ἅγιοι κυλίονται ἐπὶ (φ) γῆς αὐτοῦ. 17 Ὅτι εἴ τι ἀγαθὸν αὐτοῦ, καὶ εἴ τι καλὸν (χ) αὐτοῦ, σῖτος νεανίσκοις, καὶ οἶνος εὐωδιάζων εἰς παρθένους.

Quoniam tetendi te, Juda, mihi 13 arcum, implevi Ephræm. & ſuſcitabo filios tuos, Sion, ſuper filios Græcorum, & attrectabo te quaſi gladium pugnatoru: Et 14 Dominus erit ſuper eos: & egredietur, ſicut fulgur, ſagitta: & Dominus omnipotens in tuba ſonabit, & ibit in commotione terroris ſui: Dominus omnipo- 15 tens proteget eos. Et conſument eos, & obruent eos in lapidibus fundæ: & bibent (o) eos, ſicut vinum: & implebunt (p) phialas, ſicut altare. Et ſalvabit eos 16 Dominus Deus eorum in die illa, ſicut oves, populum ſuum: quia lapides ſancti volvuntur ſuper terram ejus. Quia, ſi quid optimum illius, 17 & ſi quid bonum ejus, frumentum juvenibus, & (q) vinum boni odoris ad virgines.

MS. A. (ξ) εἰς τόξον, (῀) ἐπεγερῶ (ο) ἔσται κύριος (π) πορεύσονται (ρ) αὐτῶν· καὶ καταναλώσωσιν (σ) τὸ αἷμα αὐτῶν ὡς (τ) ὡς φιάλας θυσιαστήριον. (υ) κύριος ἐν τῇ ἡμέρᾳ (φ) τῆς γῆς (χ) παρ' αὐτοῦ,

ΚΕΦ. ι'.

1 ΑἸτεῖσθε (α) παρὰ κυρίου ὑετὸν καθ' ὥραν, πρώϊμον καὶ ὄψιμον. κύριος ἐποίησε φαντασίας, καὶ ὑετὸν χειμερινὸν δώσει αὐτοῖς, 2 ἑκάστῳ βοτάνην ἐν ἀγρῷ. Διότι οἱ ἀποφθεγγόμενοι ἐλάλησαν κόπους, καὶ οἱ μάντεις ὁράσεις ψευδεῖς, καὶ τὰ ἐνύπνια ψευδῆ ἐλάλουν, μάταια παρεκάλουν· διατοῦτο ἐξήρθησαν ὡς πρόβατα, καὶ ἐκακώθησαν, 3 (β) διότι οὐκ ἦν ἴασις. Ἐπὶ τοὺς ποιμένας παρωξύνθη ὁ θυμός μου, καὶ ἐπὶ τοὺς ἀμνοὺς ἐπισκέψομαι. καὶ (γ) ἐπισκέψεται κύριος ὁ θεὸς ὁ παντοκράτωρ τὸ ποίμνιον αὐτοῦ, τὸν οἶκον Ἰούδα, καὶ τάξει αὐτοὺς ὡς ἵππον εὐπρεπῆ αὐτοῦ ἐν πολέμῳ, 4 Καὶ (δ) ἀπ' αὐτοῦ ἐπέβλεψε, καὶ (ε) ἀπ' αὐτοῦ ἔταξε, καὶ (ζ) ἀπ' αὐτοῦ τόξον ἐν θυμῷ, (η) ἀπ' αὐτοῦ ἐξελεύσεται πᾶς ὁ (θ) ἐξελαύνων ἐν τῷ αὐτῷ. 5 Καὶ ἔσονται ὡς μαχηταὶ πατοῦντες πηλὸν ἐν ταῖς ὁδοῖς ἐν πολέμῳ, καὶ παρατάξονται, διότι (ι) κύριος μετ' αὐτῶν· καὶ καταισχυνθήσονται ἀναβάται ἵππων. 6 Καὶ κατισχύσω τὸν οἶκον Ἰούδα, καὶ τὸν οἶκον Ἰωσὴφ σώσω, καὶ κατοικιῶ αὐτοὺς, ὅτι (κ) ἠγάπησα αὐτοὺς, καὶ ἔσονται, ὃν τρόπον οὐκ ἀπεστρεψάμην αὐτούς· διότι ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς αὐτῶν, καὶ ἐπακούσομαι 7 αὐτοῖς, Καὶ ἔσονται ὡς μαχηταὶ τοῦ Ἐφραὶμ, καὶ χαρήσεται ἡ καρδία αὐτῶν ὡς ἐν οἴνῳ· καὶ τὰ τέκνα αὐτῶν (λ) ὄψονται, καὶ εὐφρανθήσονται, καὶ χαρεῖται (μ) ἡ καρδία αὐτῶν ἐπὶ τῷ κυρίῳ.

CAP. X.

PEtite à Domino pluviam op- 1 portunam, temporaneam, & ſerotinam. Dominus fecit phantaſias: & pluviam hyemalem dabit eis, unicuique herbam in agro. Quoniam hi qui loque- 2 bantur, loquuti ſunt labores, & divini viſiones falſas, & ſomnia falſa loquebantur: vana conſolabantur. Ideò avecti ſunt, ſicut oves: & afflicti ſunt, quia non erat ſanatio. Su- 3 per paſtores concitatus eſt furor meus: & ſuper agnos viſitabo. E viſitabit Dominus Deus omnipotens gregem ſuum, domum Judæ: & ponet eos ſicut equum decorum ſuum in prælio: Et ex 4 ipſo reſpexit, & ex ipſo poſuit, (a) & ex ipſo arcum in furore: ex ipſo egredietur omnis, qui abigit in eo. Et erunt quaſi bella- 5 tores conculcantes lutum in viis in prælio: & in acie ſtabunt, quia Dominus cum eis eſt. Et confundentur aſcenſores equorū: Et 6 confortabo domū Judæ et domū Joſeph ſalvabo: & habitare eos faciam, quia dilexi eos; & erunt, (b) ſicut non evertiſſem eos. Quia ego Dominus Deus eorum, & exaudiam eos, Et erunt quaſi 7 bellatores Ephræm. & lætabitur cor eorum, quaſi in vino: & filii eorum videbunt, & lætabuntur: et gaudebit cor eorum in Domino.

MS. A. (α) ὑετὸν παρὰ κυρίου (β) ὅτι (γ) ἐπισκέψεται (δ) ἐξ αὐτοῦ (ε) ἐξ αὐτοῦ (ζ) ἐξ αὐτοῦ τὸ τόξον (η) ἐξ αὐτοῦ (θ) ἐλαύνων (ι) κύριος παντοκράτωρ μετ' (κ, ἠγάπηκα αὐτοὺς, καὶ ἔσται, ὃν (λ) ὄψεται, καὶ εὐφρανθήσεται, (μ) αὐτῶν καρδία

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

13 ארי תקפית קדמי דבית יהודה כקשת מתיחא בבית אזינין מלית גבורא בית ישראל
ואגבר בנך ציון על בני עממיא ואשונך כחרבא ביד גברא : 14 ויי עליהון יתגלי
ויהון נפקין כברקין פתגמוהי ומן קדם יי אלהים בשופרא יתקע וידבר בעלעול רוח
מדרומא : 15 יי צבאות ירחם עליהון וישלטון בעממיא ויקטלונון ושארהון יגמרון
כמא דשדן אבנא בקלעא ויבזון ית נכסיהון ויסבעון מנהון כשתי חמר ותהי נפשהון
מליא תפנוקין כמזרק דמלי סלתא ומשח ויהון מזהרין כדמא דמזהר על כתלא
דמדבחא : 16 ויפרקנון יי אלההון בעדנא ההיא על דאתבדרו כענא עמיה ארי יבחרנון
כאבני איפודא ויקרבנון לארעהון : 17 ארי מה טב ומה יאי אולפן אוריתא לנגודיא ודין
דקשוט מתקן בכנשתא :

י

1 שאילו מן קדם יי מטרא בעדן לקיש יי עביד רוחין ומחית מטרא לבני אנשא למתן להון
עבורא למיכל ועסבא לבעירא בחקלא : 2 ארי פלחי צלמיא ממללין אונס וקוסמיא
מתנבן שקר ונביי שקרא בנבואת שקריהון שקרא ממללין לא מדעם מנחמין על כן
אתבדרו כבדור ענא גלו ארי לית מלך : 3 על מלכיא הוה רוגזי ועל שלטוניא אנא מסער
עליהון חוביהון ארי דכיר יי צבאות ית עמיה ית דבית יהודה וישוי יתהון כסוסי תקוף
רוותן בקרבא : 4 מניה מלכיה מניה משיחיה מניה תקוף קרביה מניה יתרבון כל
פרנסוהי כחדא : 5 ויהון גברי בית ישראל דישין קטילי עממיא כסין שוקין בקרבא ויגיחון
קרב ארי מימרא דיי בסעדהון ויבהתון רכבי סוסון : 6 ואגבר ית דבית יהודה וית דבית
יוסף אפרוק ואכנוש גלותהון וארחם עליהון ויהון כדלא טלטלתנון ארי אנא יי אלההון
ואקביל צלותהון : 7 ויהון כגברין דבית אפרים ויחדי לבהון כשתי חמר ובניהון יחזון
ויחדון יביע לבהון במימרא דיי :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Quoniam roboravi coram me domū Juda, ſicut arcum extenſum in domo 13 armorum, replevi fortitudine domū Iſrael, & prævalere faciam filios tuos Sion ſuper filios populorum, & ponam te quaſi gladium in manu fortis. Et 14 Dñs ſuper eos revelabitur, & verba ejus egredientur quaſi fulgura: & à facie Domini Dei clangetur tuba, & ducet in turbine venti Auſtralis. Dñs 15 exercituum miſerebitur eorum, & dominabuntur populis & occident eos, & reliquias eorum conſument, ſicut qui mittunt lapidem funda, & diripient ſubſtantias eorum, & ſaturabuntur ex eis, in morem bibentium vini: & erit anima eorum plena deliciis, ſicut phiala quæ plena eſt ſimila & oleo: & ſplendebunt ſicut ſanguis qui ſplendet in pariete altaris. Et redimet 16 eos Dominus Deus ſuus in tempore illo, eo quod diſperſi ſunt ſicut oves populus ejus, Quoniam eliget eos ſicut lapides ſuperhumeralis, & congregabit eos in terram ſuam. Quoniam quàm bona & quàm pulchra eſt! 17 doctrina legis ducibus, & judicium veritatis directum in congregatione!

CAP. X.

PEtite à facie Dñi pluviā in tempore ſerotino: Dñs faciet ventos, & deducet pluviam filiis hominū, ut det eis frumentū ad comedendū, & herbam jumentis in agro. Quoniā cultores ſimulachrorum loquuntur rapinā, et divini prophetant falſitatem, et pſeudoprophetæ in prophetia ſua falſa mendacia loquuntur, et vanè conſolantur. Ideo diſperſi ſunt ſicut diſperguntur oves, tranſlati ſunt quia non eſt eis rex. In reges factus eſt furor meus et in principes, ego viſitabo eorum peccata, quia recordatus eſt Dominus exercituū populi ſui domus Iuda, et ponet eos quaſi equum fortem, ſplendentem in bello. Ex ipſo rex ejus, ex ipſo Chriſtus ejus, ex ipſo fortitudo belli ſui, ex ipſo magnificabuntur omnes gubernatores ejus ſimul. Et fortes domus Iſrael triturabunt interfectos populorum ſicut lutum viarum in bello, et prælia committent: quia Verbum Domini erit in auxilium eorum, et confundentur aſcenſores equorum. Et roborabo domum Juda, & domū Joſeph redimam, et congregabo captivitatem eorum, & miſerebor eorū, et erunt ſicut non tranſmigraſſent, quia ego Dominus Deus eorum ſuſcipiam orationem eorum. Et erunt quaſi fortes viri domus Ephraim, et lætabitur cor eorum in morem bibentium vinum: et filii eorum videbunt, et lætabuntur, et exultabit cor eorum in Verbo Domini.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

13 * ܡܛܠ ܕܡܬܚܬ ܩܫܬܝ ܥܠ ܝܗܘܕܐ܂ ܘܡܠܝܬ ܥܠ ܐܦܪܝܡ܂ ܘܫܕܝܬ ܒܢܝܟܝ ܨܗܝܘܢ
14 ܥܠ ܒܢܝܟܝ ܝܘܢ܂ ܘܥܒܕܬܟܝ ܐܝܟ ܣܝܦܐ ܕܓܢܒܪܐ܂ * ܘܡܪܝܐ ܥܠܝܗܘܢ ܢܬܓܠܐ܂
ܘܢܦܘܩ ܓܐܪܗ ܐܝܟ ܒܪܩܐ܂ ܘܡܪܐ ܡܪܘܬܐ ܢܩܪܐ ܒܩܪܢܐ܂ ܘܢܐܙܠ ܒܥܠܥܠܐ ܕܬܝܡܢܐ܂
15 * ܘܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܢܓܢ ܥܠܝܗܘܢ܂ ܘܢܐܟܠܘܢ܂ ܘܢܟܒܫܘܢ ܟܐܦܐ ܒܩܠܥܐ܂ ܘܢܫܬܘܢ
16 ܕܘܘܢܐ ܐܝܟ ܚܡܪܐ܂ ܘܢܬܡܠܘܢ ܐܝܟ ܡܙܓܐ܂ ܘܐܝܟ ܙܘܝܬܐ ܕܡܕܒܚܐ܂ * ܘܢܦܪܘܩ ܐܢܘܢ
ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܠܥܡܗ ܐܝܟ ܥܢܐ܂ ܡܛܠ ܕܟܐܦܐ ܗܘܝ ܩܕܝܫܬܐ ܕܡܫܬܕܝܢ ܗܘܘ
17 ܒܐܪܥܗ܂ * ܡܐ ܛܒ܂ ܘܡܐ ܫܦܝܪ ܥܒܘܪܐ ܠܥܠܝܡܐ܂ ܘܚܡܪܐ ܡܒܣܡ ܠܒܬܘܠܬܐ܂

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝ *

1 * ܫܐܠܘ ܡܛܪܐ ܡܢ ܡܪܝܐ ܒܙܒܢܐ ܕܠܩܝܫܐ܂ ܘܡܪܝܐ ܥܒܕ ܢܛܦܐ܂ ܘܡܛܪܐ ܕܒܟܝܪܐ
2 ܢܬܠ ܠܟܘܢ܂ ܐܝܟ ܕܢܪܒܐ ܥܣܒܐ ܒܚܘܪܒܐ܂ * ܡܛܠ ܕܩܨܘܡܐ ܡܠܠܘ ܥܘܠܐ܂ ܘܚܙܘܝܐ ܚܙܘ
ܕܓܠܐ܂ ܘܚܠܡܐ ܕܓܠܐ ܡܠܠܘ܂ ܘܒܣܪܝܩܘܬܐ ܒܝܐܘ܂ ܡܛܠ ܗܢܐ ܫܢܘ ܐܝܟ ܥܢܐ܂
3 ܘܐܬܡܟܟܘ ܡܛܠ ܕܠܝܬ ܠܗܘܢ ܪܥܝܐ܂ * ܥܠ ܪܥܘܬܐ ܐܬܚܡܬ ܪܘܓܙܝ܂ ܘܥܠ ܬܝܫܐ ܐܣܥܘܪ܂ ܡܛܠ
ܕܣܥܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܠܥܢܗ ܠܒܝܬ ܝܗܘܕܐ܂ ܘܥܒܕ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܣܘܣܝܐ ܕܫܘܒܗܪܐ ܒܩܪܒܐ܂
4 * ܡܢܗܘܢ ܙܘܝܬܐ܂ ܘܡܢܗܘܢ ܣܟܬܐ܂ ܘܡܢܗܘܢ ܩܫܬܐ ܕܩܪܒܐ܂ ܘܡܢܗܘܢ ܢܦܩܘܢ
5 ܟܠܗܘܢ ܫܠܝܛܢܝܗܘܢ ܐܟܚܕܐ܂ * ܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܓܒܪܐ ܕܕܝܫܝܢ ܛܝܢܐ ܒܫܘܩܐ܂ ܒܩܪܒܐ
6 ܢܬܟܬܫܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܡܪܝܐ ܥܡܗܘܢ܂ ܘܢܒܗܬܘܢ ܪܟܒܝ ܣܘܣܝܐ܂ * ܘܐܚܝܠ ܠܒܝܬ
ܝܗܘܕܐ܂ ܘܐܦܪܘܩ ܠܒܝܬ ܝܘܣܦ܂ ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܐܬܪܚܡܬ ܥܠܝܗܘܢ܂
7 ܘܢܗܘܘܢ ܐܝܟ ܕܠܐ ܛܥܝܬ ܐܢܘܢ܂ ܡܛܠ ܕܐܢܐ ܡܪܝܐ ܐܠܗܗܘܢ ܘܐܥܢܐ ܐܢܘܢ܂ * ܘܢܗܘܘܢ
ܐܝܟ ܓܢܒܪܐ ܕܐܦܪܝܡ܂ ܘܢܚܕܐ ܠܒܗܘܢ ܐܝܟ ܕܡܢ ܚܡܪܐ܂ ܘܒܢܝܗܘܢ ܢܚܙܘܢ ܘܢܚܕܘܢ܂
ܘܢܪܘܙ ܠܒܗܘܢ ܒܡܪܝܐ܂

13 * Nam tetendi arcum meum contra Judam, & *eum ſagittâ* implevi contra Aphremum, & jaculatus ſum filios tuos Sion in filios tuos Javan, reddidique te ſicut gladium gigantis. 14 Dominus ſuper eos apparebit, & egredietur ſagitta ejus ut fulgur, & Dominus dominorum clanget buccinâ, & ibit in turbine ad Auſtrum. 15 Hos autem proteget Dn̄s potentiſſimus; & comedent, petraſque fundâ domabunt; & bibent perturbationem ut vinum, & implebuntur ut *vinum* miſtum, & ut angulus altaris. 16 Et redimet Dn̄s Deus eorum eâ die populum ſuum tanquam oves; quia lapides erant ſancti projecti in terra ipſius. 17 Quàm bonum & quàm utile eſt frumentum adoleſcentibus! et vinum jucundas reddit virgines.

CAP. X.

1 * Poſtulate pluviam à Domino tempore ſerotino, & Dominus edet ſtillas; & pluviam primitiam dabit vobis, ut herba nutriatur in deſerto. 2 Quia divini locuti ſunt iniquitatem, & harioli viderunt mendacium, ſomnia falſa locuti ſunt, & vanitate conſolati: idcirco migrârunt ut oves, & humiliati ſunt quia non habent paſtorem. 3 Contra paſtores extuli iram meam, & greges viſitabo: viſitabit enim Dominus potentiſſimus gregem ſuum, familiam Judæ, & efficiet eos velut equum in bello ſuperbum. 4 Ex ipſis erit angulus ex ipſis clavus, ex ipſis arcus in bello, ex ipſis prodibunt omnes principes eorum ſimul. 5 Erunt ſicut viri conculcantes lutum in plateis: in bello dimicabunt, quia Dominus aderit illis: & pudefient conſcenſores equorum. 6 Corroborabo domum Judæ, & liberabo domum Joſephi, & reducam eos: quia miſerturus ſum eis, & erunt perinde ac ſi non oblitus eſſem eorum. Nam ego Dominus Deus exaudiam eos. 7 Et erunt ſicut gigantes Aphremi, & lætabitur cor eorum perinde ut ex vino, & filii eorum videbunt & lætabuntur, & exultabit cor eorum in Domino.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

13 * من اجل اني مددتك يا يهوذا لذاتي مثل قوس * ملأت افرام * وانهض اولادك يا صهيون
14 على اولاد اليونانيين * وامسك مثل سيف محارب * والرب يظهر عليهم * ويبرز سهمه
15 مثل البرق * والرب الاله الضابط الكل يبوق ببوق * ويسير بزعزع وعيده * والرب الضابط
الكل يسترهم * ويبيدونهم بحجارة المقلاع * ويشربونهم مثل الخمر * ويملؤون المذبح مثل الآنية *
16 * ويخلصهم الرب في ذلك اليوم شعبه مثل خراف * من اجل ان الحجارة المقدسة يتدحرجون
17 على ارضه * لانه ان كان خير ما منه * وان كان حسن ما من قبله * قمح الشبان * والخمر
يطيب العذارى *

* الفصل العاشر *

1 * سلوا مطرا من قبل الرب كل ساعة * اولا واخيرا * الرب صنع خيالات * ومطرا شتويا
2 يعطيهم * لكل واحد نباتا في الحقل * من اجل ان المتفوهين يتكلمون اتعابا * والعرافين
مرايا كاذبة * واحلام كاذبة تكلموا * طلبوا الاباطيل * لاجل هذا جفوا كالغنم * واتضرروا
3 من اجل انه لم يكن شفا * على الرعاة احد غضبي * وعلى الحملان اتعهد * ويتعهد الرب
4 الضابط الكل قطيعه بيت يهوذا * ويرتبهم مثل فرس لايق في حربه * ومنه نظر * ومنه
5 رتب * ومنه القوس * بغضب يخرج كل من يطرد بذاته * ويصيرون مثل محاربين يدوسون
طينا في الطرق في الحرب * ويصطفون * من اجل ان الرب معهم * ويخزى ركاب الخيل
6 * وساقوي بيت يهوذا * واخلص بيت يوسف * واسكنهم * لاني احببتهم * ويكونون كما لم
7 اصرفهم * من اجل اني انا الرب الههم واستجيب لهم * ويصيرون مثل محاربي افرام * ويفرح
قلبهم كالخمر ويرى اولادهم ويسر * ويفرح قلبهم بالرب *

13 *Nam tetendi te O Juda mihi ſicut arcum, implevi Aphremum; & ſuſcitabo filios tuos O Sion contra filios Græcorum, & perquiram te ut gladium belligerantis.* 14 *Et Dominus apparebit ſuper eos, & prodibit fulguris inſtar ſagitta ipſius: & Domino omnipotente buccinâ clangente, procedet cum tremitu minarum ejus.* 15 *Dominus omnipotens proteget illos, & perdent eos lapidibus fundæ, bibentque eos ut vinum, & implebunt altare ut vaſa.* 16 *Et ſalvabit eos Dominus eâ die,* nempè *populum ſuum, ſicut agnos; quia lapides ſancti volvuntur ſuper terram ejus.* 17 *Nam ſiquid ab eo eſt, & ſiquid pulchri eſt ab ipſo; frumentum adoleſcentium, & vinum, ſuavem confert odorem virginibus.*

CAP. X.

1 P*Etite pluviam à Domino quâlibet horâ, temporaneam & ſerotinam. Dominus fecit phantaſias: & pluviam hyemalem dabit eis, cuique herbam in agro.* 2 *Quoniam qui loquuntur, labores loquuntur; & divini viſiones falſa, & ſomnia falſa loquuti ſunt, quæſierunt vanitates: ideò exaruerunt ſicut oves, & detrimentum paſſi ſunt, quia non erat medela.* 3 *Contra paſtores acuam iram meam, & agnos viſitabo: & viſitabit Dominus omnipotens gregem ſuum, domum Judæ, & diſponet eos velut equum decorum in prælio ſuo.* 4 *Ex ipſo proſpiciet, & ex ipſa diſponet, & ex ipſo erit arcus: cum furore prodibit quicunque per ſeipſum perſequetur.* 5 *Et erunt ſicut bellatores conculcantes lutum in viis, in pugna, & inſtruent ſeſe; quia Dominus erit cum eis, & pudefient conſcenſores equorum.* 6 *Confortabo enim domum Judæ, & ſalvabo domum Joſephi, & habitare faciam eos; quia dilexi eos: & erit ac ſi non ejeciſſem eos; quoniam ego ſum Dominus Deus eorum, & exaudiam eos.* 7 *Eruntque ſicut bellatores Aphræmi, & lætabitur cor eorum quaſi vino: & videbunt filii eorum, & exultabunt, & gaudebit cor eorum in Domino.*

זכריה : יא

,multiplicabūtur & :eos redemi quia,illos congregabo & ,eis Sibilabo
8 אשרקה להם ואקבצם כי פדיתים ורבו
longinquis in & ,populos in eos ſeminabo Et .fuerunt multiplicati ſicut
9 כמו רבו : ואורעם בעמים ובמרחקים
eos reducam Et .revertentur & ,ſuis filiis cum vivent & :mei recordabūtur
10 יזכרוני וחיו את־בניהם ושבו : והשבותים
,Ghilhad terram ad & :eos congregabo Aſſur de & , Ægypti terra è
מארץ מצרים ומאשור אקבצם ואל־ארץ גלעד
mare in tranſibit Et .eis *invenietur* non & ,eos adducam Lebanon &
11 ולבנון אביאם ולא ימצא להם : ועבר בים
profunda omnia ſiceabuntur & ,fluctus mari in percutiet & ,anguſtia
צרה והכה בים גלים והבישו כל מצולות
.recedet Ægypti ſceptrum & , Aſſur ſuperbia deponetur & : fluminis
יאור והורד גאון אשור ושבט מצרים יסור :
dixit ,ambulabunt ejus nomine in & , Domino in eos roborabo Et
12 וגברתים ביהוה ובשמו יתהלכו נאם
.Dominus
יהוה :

CAP. XI. יא

Ulula .tuas cedros *in* ignis *comedat* & : *tuas fores* Lebanon Aperi
1 פתח לבנון דלתיך ותאכל אש בארזיך : הילל 2
ululate : ſunt vaſtati magnifici quoniam ,cedrus cecidit quia , abies
ברוש כי־נפל ארז אשר אדירים שדדו הילילו
ululatus Vox .munita ſylva *cecidit* quoniam , Baſan quercus
3 אלוני בשן כי ירד יער הבצור : קול יללת
, *leunculorum* rugitus vox : eorum *fortitudo* eſt vaſtata quoniam ,paſtorum
הרעים כי שדדה אדרתם קול שאגת כפירים
Dominus dixit Sic .Jarden ſuperbia eſt vaſtata quoniam
4 כי שדד גאון הירדן : כה אמר יהוה
,*ea* occident *ea* ementes Quæ .occiſionis *pecus* Paſce : meus Deus
5 אלהי רעה את־צאן ההרגה : אשר קניהן יהרגן
, Dominus benedictus ; dicet , ea *vendentes* & , delinquent non &
ולא יאשמו ומכריהן יאמר ברוך יהוה
non *Nam* .eis *ſuper* parcet non eorum paſtor & : ſum *ditatus* &
6 ואעשר ורעיהם לא יחמול עליהן : כי לא־
ecce & : Dominus dixit , terræ habitatoribus *ſuper* ultrà parcam
אחמול עוד על־יושבי הארץ נאם־יהוה והנה
manu in & ,ſui *ſocii* manu in *virum* *hominem* *faciens* inveniri ego
אנכי ממציא את־האדם איש ביד־רעהו וביד
paſcam Et .eorum manu de eruam non & ,terram *contundent* & ,ſui regis
7 מלכו וכתתו את־הארץ ולא אציל מידם : וארעה
duas mihi aſſumpſi & : *pecoris* *afflictos* profectò , occiſionis *pecus*
את־צאן ההרגה לכן עניי הצאן ואקח־לי שני
, *Chobelim* vocavi *unam* & , *Noham* vocavi unam , virgas
מקלות לאחד קראתי נעם ולאחד קראתי חבלים
menſe in paſtores tres feci ſuccidere Et .*pecus* pavi &
8 וארעה את־הצאן : ואכחד את־שלשת הרעים בירח
nauſeavit eorum anima etiam & , *eis in* mea anima eſt *abbreviata* & : uno
אחד ותקצר נפשי בהם וגם־נפשם בחלה
: moriatur *moribundum* : vos paſcam Non : dixi Et .me in
9 בי : ואמר לא ארעה אתכם המתה תמות
unaquæque , devorent reliquæ & : ſuccidatur *abſcindendum* &
והנכחדת תכחד והנשארות תאכלנה אשה את־
.*ſuæ ſociæ* carnem
בשר רעותה :

Verſio VULG. LAT.

8 Sibilabo eis, & congregabo illos, quia redemi eos: & multiplicabo eos ſicut antè fuerant multiplicati. 9 Et ſeminabo eos in populis, & de longè recordabuntur meî: & vivent cum filiis ſuis, & 10 revertentur. Et reducam eos de terra Ægypti, & de Aſſyriis congregabo eos, & ad terram Galaad & Libani adducam eos, & 11 non invenietur eis locus: Et tranſibit in maris freto, & percutiet in mari fluctus, & confundentur omnia profunda fluminis, & humiliabitur ſuperbia Aſſur, & ſceptrum Ægypti recedet. 12 Confortabo eos in Domino, & in nomine ejus ambulabunt, dicit Dominus.

CAP. XI.

1 Aperi, Libane, portas tuas, & 2 comedat ignis cedros tuas. Ulula, abies, quia cecidit cedrus, quoniam magnifici vaſtati ſunt: ululate, quercus Baſan, quoniam ſucciſus eſt ſaltus munitus. 3 Vox ululatûs paſtorum, quia vaſtata eſt magnificentia eorum: vox rugitûs leonum, quoniam vaſtata eſt 4 ſuperbia Jordanis. Hæc dicit Dominus Deus meus; Paſce pecora occiſionis, 5 Quæ qui poſſederant, occidebant, & non dolebant, & vendebant ea, dicentes; Benedictus Dominus, divites facti ſumus: & paſtores eorum 6 non parcebant eis. Et ego non parcam ultrà ſuper habitantes terram, dicit Dominus: ecce ego tradam homines, unumquemque in manu proximi ſui, & in manu regis ſui: & concîdent terram, 7 & non eruam de manu eorum. Et paſcam pecus occiſionis propter hoc, ô pauperes gregis. Et aſſumpſi mihi duas virgas, unam vocavi Decôrem, & alteram vocavi Funiculum: 8 & pavi gregem. Et ſuccidi tres paſtores in menſe uno, & contracta eſt anima mea in eis: ſiquidem & anima eorū 9 variavit in me. Et dixi; Non paſcam vos: quod moritur, moriatur: & quod ſucciditur, ſuccidatur: & reliqui devorent unuſquiſque carnem proximi ſui.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

8 Σημανῶ (ν) αὐτοῖς, καὶ εἰσδέξομαι αὐτοὺς, διότι λυτρώσομαι αὐτοὺς, καὶ πληθυνθήσονται καθότι ἦσαν πολλοί. 9 Καὶ σπερῶ αὐτοὺς ἐν (ξ) λαοῖς, καὶ οἱ μακρὰν μνησθήσονταί μου, (ο) ἐκθρέψουσι τὰ τέκνα αὐτῶν, 10 καὶ ἐπιστρέψουσι. Καὶ ἐπιστρέψω αὐτοὺς ἐκ γῆς Αἰγύπτου, καὶ ἐξ Ἀσσυρίων εἰσδέξομαι αὐτοὺς, καὶ εἰς τὴν Γαλααδῖτιν, καὶ εἰς τὸν Λίβανον εἰσάξω αὐτοὺς, καὶ οὐ μὴ ὑπολειφθῇ ἐξ αὐτῶν οὐδὲ εἷς. 11 Καὶ διελεύσονται ἐν θαλάσσῃ στενῇ, καὶ πατάξουσιν ἐν θαλάσσῃ κύματα, καὶ (π) ξηρανθήσεται πάντα τὰ βάθη ποταμῶν, καὶ ἀφαιρεθήσεται πᾶσα ὕβρις Ἀσσυρίων, καὶ σκῆπτρον Αἰγύπτου περιαιρεθήσεται. 12 Καὶ κατισχύσω αὐτοὺς ἐν κυρίῳ θεῷ αὐτῶν, καὶ ἐν τῷ ὀνόματι αὐτοῦ κατακαυχήσονται, λέγει κύριος.

Significabo eis, & ſuſcipiam illos, quia redimam eos: & multiplicabuntur, ſicut erant plurimi: Et ſeminabo eos in populis: & qui de longè, recordabuntur meî: nutrient filios ſuos, & convertentur. Et convertam eos de terra Ægypti: & de Aſſyriis ſuſcipiam illos: & in Galaaditin & in Libanum introducam eos, & nullus ex eis deerit. Et pertranſibunt in mari anguſto, & percutient in mari fluctus, & ſiccabuntur omnia profunda fluviorum, & auferetur univerſa injuria Aſſyriorum: & ſceptrum Ægypti tolletur. Et confortabo eos in Domino Deo ſuo: & in nomine ejus (c) gloriabuntur, dicit Dominus. 8 9 10 11 12

MS. A. (ν) αὐτοὺς, διότι λυτρώσομαι αὐτοὺς, καὶ εἰσδέξομαι αὐτοὺς, καὶ πληθυνθήσονται (ξ) * ἀλλήλοις, καὶ (ο) καὶ ἐκθρέψουσιν (π) ξηρανθήσονται

ΚΕΦ. ια΄.

1 Διάνοιξον ὁ Λίβανος τὰς θύρας σου, 2 καὶ καταφαγέτω πῦρ τὰς κέδρους σου. Ὀλολυξάτω πίτυς, διότι πέπτωκε κέδρος, ὅτι μεγάλως μεγιστᾶνες ἐταλαιπώρησαν· ὀλολύξατε δρύες τῆς Βασανίτιδος, ὅτι 3 κατεσπάσθη ὁ δρυμὸς ὁ σύμφυτος. Φωνὴ θρηνούντων ποιμένων, ὅτι τεταλαιπώρηκεν ἡ μεγαλωσύνη αὐτῶν· φωνὴ ὠρυομένων λεόντων, ὅτι τεταλαιπώρηκε τὸ φρύαγ-4 μα τοῦ Ἰορδάνου. Τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Ποιμαίνετε τὰ πρόβατα τῆς 5 σφαγῆς, Ἃ οἱ κτησάμενοι κατέσφαζον, καὶ οὐ (α) μετεμέλλοντο, καὶ οἱ πωλοῦντες αὐτὰ ἔλεγον, Εὐλογητὸς κύριος, καὶ πεπλουτήκαμεν· καὶ οἱ ποιμένες αὐτῶν οὐκ ἔπασχον 6 οὐδὲν ἐπ᾽ αὐτοῖς. Διατοῦτο οὐ φείσομαι οὐκέτι ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας τὴν γῆν, λέγει (β) κύριος. καὶ ἰδοὺ ἐγὼ παραδίδωμι τοὺς ἀνθρώπους, ἕκαστον εἰς χεῖρας τοῦ πλησίον αὐτοῦ, καὶ εἰς χεῖρας βασιλέως αὐτοῦ, καὶ κατακόψουσι τὴν γῆν, καὶ οὐ μὴ (γ) ἐξέ-7 λωμαι ἐκ χειρὸς αὐτῶν· Καὶ ποιμανῶ τὰ πρόβατα τῆς σφαγῆς εἰς τὴν (δ) Χαναανῖτιν. καὶ λήψομαι ἐμαυτῷ δύο ῥάβδους, (ε) τὴν μὲν μίαν ἐκάλεσα Κάλλος, καὶ τὴν ἑτέραν ἐκάλεσα Σχοίνισμα, καὶ 8 ποιμανῶ τὰ πρόβατα. Καὶ ἐξαρῶ τοὺς τρεῖς ποιμένας ἐν μηνὶ ἑνὶ, καὶ βαρυνθήσεται ἡ ψυχή μου ἐπ᾽ αὐτοὺς, καὶ γὰρ αἱ ψυχαὶ 9 αὐτῶν ἐπωρύοντο ἐπ᾽ ἐμέ. Καὶ εἶπα, Οὐ ποιμανῶ ὑμᾶς. τὸ ἀποθνῆσκον ἀποθνησκέτω, καὶ τὸ ἐκλεῖπον ἐκλιπέτω, καὶ τὰ κατάλοιπα κατεσθιέτωσαν ἕκαστος τὰς σάρκας τοῦ πλησίον αὐτοῦ.

CAP. XI.

Aperi, Libane, portas tuas, & comedat ignis cedros tuas. Ululet pinus, quia cecidit cedrus; quia valdè miſeri facti ſunt optimates. Ululate, quercus Baſanitidis, quia ſucciſus eſt ſaltus conſitus. Vox lugentium paſtorum; quoniam miſera facta eſt magnificentia eorum. Vox rugientium leonum: quia afflictus eſt fremitus Jordanis. Hæc dicit Dominus omnipotens; Paſcite oves occiſionis, Quas qui poſſederunt, interficiebant, & non agebant pœnitentiam: & qui vendebant eas, dicebant; Benedictus Dominus, & divites facti ſumus. Et paſtores earum nihil patiebantur ſuper eis. Ideò non parcã ultrà ſuper habitatores terræ, dicit Dominus. Et ecce ego trado homines; unumquemque in manum proximi ſui, & in manum regis ejus. Et concîdent terram; & non eruam de manu eorum: Et paſcam oves occiſionis in (a) Chanaanitide. Et aſſumam mihi duas (b) virgas: unam vocavi Decorem: & alteram vocavi Funiculum. Et paſcam oves. Et auferam tres paſtores in menſe uno: & ingraveſcet anima mea ſuper eos: ſiquidem & animæ eorum (c) rugiebant ſuper me. Et dixi; Non paſcam vos. Quod moritur; moriatur: & quod deficit; deficiat: & reliquiæ, devorent unuſquiſque carnes proximi ſui. 1 2 3 4 5 6 7 8 9

MS. A. (α) μετεμέλοντο, (β) κύριος παντοκράτωρ. (γ) ἐξέλωμαι (δ) Χανανῖτιν. (ε) τὴν μίαν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

8 אכלי לכנשא גלותהון ואקרבנון ארי פרקתנון ויסגון כמא די אמר עליהון יסגון : וכמא
9 דבדרתנון ביני עממיא ובארעא רחיקא הוו דכירין לדחלתי ויורכון שני חיין עם בניהון
10 ויתובון : וכמא דאפקתנון מארעא דמצרים כן מאתור אקרב גלותהון ולארעא גלעד
11 ומקדשא אעלנון ולא יספק להון : ויתעבדון להון נסין וגבורן כמא דאתעבידו
לאבהתהון בימא ויחזון בפורענות סנאיהון כמא דאטרפו גבריא בגלי ימא ויבהתון
12 כל מלכי עממיא ויבטל תוקפא מאתוראה ושלטן מצרים יעדי : ואגברנון במימרא דיי
ובשמיה יהכון פריקין אמר יי :

יא

1 פתחו עממיא תרעיכון ותשצי אשתא תוקפיכון : אלילו מלכיא ארי אתברו שלטוניא
2 דעתירי נכסיא מתבזזין אלילו טורני מדינתא ארי אתבזיז מחוז תוקפיכון : קל צוחת 3
מלכיא ארי אתבזיזו מחוזיהון קל ניהמתהון כבני אריון כד יביש עליהון רום ירדנא :
4 כדנן אמר יי אלהי אתנבי על פרנסיא דאתמניאו לפרנסא עמא ואנון שליטו בהון כענא
5 לנכסתא : די קניהין קטלין להין אמרין לא עלנא חובא ומזבניהין אמרין בריך יי די
6 אעתרנא ורעיהן לא חיסין עליהין : ארי לא אחוס עוד על יתבי ארעא אמר יי הא אנא
מסר ית אנשא גבר ביד חבריה וביד מלכיה ויבזון ית ארעא ולא אשזיב מידהון :
7 ומניתי פרנסיא על עמא ואנון שלטו בהון כענא לנכסתא מסכינו וטלטלו ית עמי
ואתפלינו קדמי לתרתין פלגון אתפליגו בית ישראל על דבית יהודה וקצו במלכותא
8 דבית דוד די בהון רעוא קדמי למהוי פרנסין על עמי : ושציתי ית תלתא פרנסיא בירחא
9 חד ורחיק מימרי יתהון על דנפשתהון קצת בפולחני : ואמרית דלא למנאה עליכון
פרנס דמיתין ימותון ודמשתיצן ישתיצן ודישתארון יבזון גבר ית נכסי קריביה :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Clamabo ut congregẽ captivitatem eorum; & coadunabo eos quia redemi 8
eos: & multiplicabuntur ſicut dictum eſt eos multiplicatum iri. Et ſicut diſ- 9
perſi eos inter populos, & in terra longinqua recordabantur timoris mei: &
prolongabunt annos vitæ cum filiis ſuis, & revertentur. Et ſicut eduxi eos de 10
terra Ægypti, ſic congregabo captivitatem eorum de Aſſur, & ad terrã Ga-
laad, & ſanctuarii adducã eos, & non ſufficiet eis. Et fient eis miracula & 11
magnalia ſicut facta ſunt patrib⁹ eorũ in *mari*; & videbũt ultionẽ inimicorũ
ſuorũ, ut involuti ſunt viri in fluctib⁹ maris, & confundentur omnes reges
populorũ, & ceſſabit fortitudo ab Aſſyriis; & dominiũ Ægyptiorũ aufere-
tur. Et roborabo eos in verbo Dñi, & in nomine ej⁹ ambulabunt redempti, 12
dicit Dominus.

CAP. XI.

APerite populi portas veſtras, & conſumet ignis munitiones veſtras. Ulu- 1
late reges quia contriti ſunt principes, qui opib⁹ erant divites, vaſtati 2
ſunt. Ululate ſatrapæ provinciarũ quia vaſtata eſt regio fortitudinis veſtræ.
Vox clamoris regũ quia vaſtatæ ſunt provinciæ eorũ: vox rugit⁹ eorũ ut ca- 3
tulorũ leonũ, quoniã exiccata eſt propter eos elatio Jordanis. Sic dicit Dñs 4
Deus, Vaticinare adverſ⁹ gubernatores qui conſtituti ſunt ad gubernãdum
populũ meũ, & ipſi dominati ſunt in eos quaſi in oves occiſionis. Qui poſ- 5
ſident eas occidunt eas, dicentes: Non imputabitur nobis peccatũ: & ven-
dentes eas dicunt, Benedict⁹ Dñs quia divites facti ſum⁹, & paſtores earum
non parcunt eis. Non enim parcã ultrà habitatorib⁹ terræ, ait Dñs: Ecce ego 6
tradam unumquemq; in manũ proximi ſui, & in manũ regis ſui: & diripi-
ent terrã, & non eruam de manib⁹ eorũ. Et conſtitui gubernatores ſuper po- 7
pulũ, & ipſi dominati ſunt in eos, ſicut in oves occiſioni [*deſtinatas*,] & de-
pauperaverunt & migrare fecerunt populũ meũ. Et diviſi ſunt corã me in
duas diviſiones: et diviſa eſt dom⁹ Iſrael à domo Juda: et deteſtati ſunt regnũ
dom⁹ David, ex qua placitũ erat mihi ut eſſent gubernatores ſuper populum
meũ. Et conſumpſi tres gubernatores in menſe uno. Et projecit eos Verbũ 8
meũ, eò quòd deteſtata eſt anima eorum cultum meum. Et dixi quòd non 9
conſtituerem ſuper vos gubernatorẽ: qui moriuntur moriantur, & qui con-
ſumuntur conſumantur, et qui reliqui fuerint, diripiat unuſquiſque ſubſtantiã proximi ſui.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

8 * ܐܫܪܘܩ ܠܗܘܢ. ܘܐܟܢܫ ܐܢܘܢ. ܡܛܠ ܕܦܪܩܬ ܐܢܘܢ. ܘܢܣܓܘܢ. ܐܝܟ ܕܣܓܝܐܝܢ ܗܘܘ.
9 * ܘܐܙܪܘܥ ܐܢܘܢ ܒܥܡ̈ܡܐ. ܘܒܐܬܪ̈ܘܬܐ ܪ̈ܚܝܩܬܐ ܢܥܗܕܘܢܢܝ. ܘܢܪܒܘܢ ܒܢ̈ܝܗܘܢ.
10 ܘܢܬܦܢܘܢ. * ܘܐܗܦܟ ܐܢܘܢ ܡܢ ܐܪܥܐ ܕܡܨܪܝܢ. ܘܡܢ ܐܬܘܪ ܐܟܢܫ ܐܢܘܢ. ܘܠܐܪܥܐ
11 ܕܓܠܥܕ ܘܠܠܒܢܢ ܐܝܬܐ ܐܢܘܢ. ܘܠܐ ܢܣܦܩܘܢ ܠܗܘܢ. * ܘܢܥܒܪ ܒܝܡܐ ܐܘܠܨܢܐ.
ܘܢܡܚܐ ܒܝܡܐ ܓܠ̈ܠܐ. ܘܢܒܗܬܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܘܡ̈ܩܝ ܢܗܪܐ. ܘܢܬܒܛܠ ܫܘܒܗܪܗ
12 ܕܐܬܘܪ. ܘܫܘܠܛܢܗ ܕܡܨܪܝܢ ܢܥܒܪ. * ܘܐܚܝܠ ܐܢܘܢ ܒܡܪܝܐ. ܘܒܫܡܗ
ܢܣܒܪܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.

* Sibilabo eis, & congregabo eos, quandoquidem redemi eos: & multiplicabuntur quemadmodum multi erant. 8 Et diſſeminabo eos 9 inter gentes, & in regionibus remotis laudabunt me, & educabunt filios ſuos, & revertentur. Et reducam eos de terra Ægypti, & ex 10 Aſſyria colligam eos; adducámque ad terram Galaadis & Libani, & non ſufficient eis. Per 11 mare tranſibit anguſtia, & fluctus volutabit in mari, & obſtupeſcent cuncta profunda fluminis, ceſſabit faſtus Aſſyrii, & dominium Ægyptii deficiet. Eos autem in Domino cor- 12 roborabo, & nomen ejus ſperabunt, dicit Dominus.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܐ *

1 * ܦܬܚ ܠܒܢܢ ܬܪ̈ܥܝܟ. ܘܬܐܟܘܠ ܢܘܪܐ ܠܐܪ̈ܙܝܟ. * ܢܝܠܠ ܫܘܪܒܝܢܐ ܡܛܠ
2 ܕܢܦܠ ܐܪܙܐ. ܘܡܥܫܢܐ ܐܬܒܙܙܘ. ܢܝܠܠܘܢ ܒܠܘܛܐ ܕܡܬܢܢ. ܕܢܦܠ ܥܒܐ ܥܫܝܢܐ.
3 * ܩܠܐ ܕܝܠܠܬܐ ܕܪ̈ܥܘܬܐ. ܕܐܬܒܙܙܬ ܫܘܒܚܗܘܢ. ܩܠܐ ܕܐܪ̈ܝܘܬܐ ܕܢܗܡܝܢ. ܕܐܬܒܙܙ ܥܘܫܢܗ
4 ܕܝܘܪܕܢܢ. * ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ. * ܪܥܝ ܥܢܐ ܡܚܝܠܬܐ. ܕܡܙܒܢܝܗܘܢ
5 ܩܛܠܝܢ ܠܗܝܢ. ܘܠܐ ܡܬܚܝܒܝܢ. ܘܡܙܒܢܢܝܗܝܢ ܐܡܪܝܢ. ܒܪܝܟ ܡܪܝܐ ܕܐܥܬܪܢ.
6 ܘܪ̈ܥܘܬܗܝܢ ܠܐ ܚܝܣܝܢ ܥܠܝܗܝܢ. * ܡܛܠ ܕܠܐ ܚܝܣ ܐܢܐ ܬܘܒ ܥܠ ܥܡܘܪܝܗ
ܕܐܪܥܐ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܐ ܡܫܠܡ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܠܒܢܝ̈ܢܫܐ. ܐܢܫ ܒܐܝܕ ܚܒܪܗ. ܘܒܐܝܕ
7 ܡܠܟܗ. ܘܢܦܠܓܘܢܗ ܠܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܐܦܪܘܩ ܡܢ ܐܝܕܝܗܘܢ. * ܘܐܪܥܐ ܠܥܢܐ
ܕܩܛܠܐ ܡܛܠ ܡܣܟܢܐ ܕܥܢܐ. ܘܢܣܒܬ ܠܝ ܬܪܬܝܢ ܚܘܛܪܝܢ. ܠܚܕ ܩܪܝܬ
8 ܫܘܦܪܐ. ܘܠܐܚܪܢܐ ܩܪܝܬ ܚܒܠܐ. ܘܪܥܝܬ ܥܢܐ. * ܘܐܘܒܕܬ ܬܠܬܐ ܪ̈ܥܘܬܐ ܒܝܪܚܐ ܚܕ. ܘܥܩܬ
9 ܢܦܫܝ ܒܗܘܢ. ܘܐܦ ܢܦܫܗܘܢ ܥܩܬ ܒܝ. * ܘܐܡܪܬ ܕܠܐ ܐܪܥܝܟܘܢ. ܕܡܝܬܐ ܬܡܘܬ.
ܘܕܐܒܕܐ ܬܐܒܕ. ܘܕܫܪܟܐ ܬܐܟܘܠ ܒܣܪܐ ܕܚܒܪܬܗ.

CAP. XI.

* APeri Libane portas tuas, ut devoret ignis 1 cedros tuas: Ejulet abies, quia corruit cedrus, 2 & potentes direpti ſunt: ejulent quercus Baiſanis, quia concidit ſylva illa ingens. Vox 3 ululatûs paſtorum, quia vaſtata eſt magnificentia eorum: vox leonum rugientium, quia vaſtatum eſt robur Jordanis. Sic dicit mihi 4 Dominus Deus meus; Paſce oves tenues, quas 5 emptores interficiunt, nec rei ſunt; quarum venditores dicunt, Benedictus Dominus qui ditavit nos; quarum paſtores nullâ erga eas utuntur clementiâ. Non ſum enim poſthac 6 uſurus clementiâ erga habitatores terræ, dicit Dominus; ſed ecce traditurus ſum eos hominibus, alterum in alterius manum, & in manum regis ſui: dividéntque terram, & non eripiam eam de manibus eorum. Itaque pavi 7 oves tenues propter congregationem ovium: & aſſumptis mihi duobus baculis, quorum unum vocavi Benignum, alterû verò Funem; pavi oves illas. Et perdidi tres paſtores uno 8 menſe, abhorruerat enim ab eis anima mea, & animæ ipſorum contra me gemuerant: Et 9 dixi, Non paſcam vos: quæ moritura eſt, moriatur; & quæ peritura, pereat; & quæ reſidua fuerit, comedat carnem ſociarum ſuarum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

8 * واعطيهم علامة واقبلهم * من اجل اني انقذهم * ويكثرون كما كانوا كثيرين * وابذرهم
9 في الشعوب * والذين بعيدا يذكروني * يعولون اولادهم ويرجعون * واردهم من ارض
10 مصر * ومن الموصليين اقبلهم * والي الارض الجلعادية والي لبنان ادخلهم * ولا يتخلف
11 منهم ولا واحد * ويجوزون في بحر ضيق * ويضربون في البحر امواجا * ويجف كل اعماق
12 الانهار * ويتضع كل كبرياء الموصليين * ويزول لواء مصر * وساقويهم بالرب الههم * وباسمه
يفتخرون يقول الرب *

* *Signum dabo eis, & recipiam eos; quia* 8 *redimam eos: & multiplicabuntur quemadmodum erant plurimi; Et diſſemi-* 9 *nabo eos inter populos; & qui procul ſunt, recordabuntur mei: nutrient filios ſuos, & revertentur. Et reducam eos* 10 *de terra Ægypti, & ex Aſſyriis recipiam eos: & in terram Galaaditis & in Libanum introducam eos, & ne unus quidem ex eis relinquetur. Et tranſibunt* 11 *per mare anguſtum, & percutient in mari fluctus, & areſcent omnia profunda fluviorum, & auferetur tota ſuperbia Aſſyriorum, deficiétque vexillum Ægypti. Et confortabo eos in Domino* 12 *Deo ſuo, & in nomine ejus gloriabuntur, dicit Dominus.*

* الفصل الحادي عشر *

1 * افتح يا لبنان ابوابك * ولتاكل النار ارزاتك * لتولول الصنوبر * من اجل ان
2 الارز سقطت * لان العظماء شقيوا عظيما * ولولوا يا بلوط البيسانية * لان الغابة العرين
3 سقطت * صوت رعاة باكين لان عظمتهم شقيت * صوت اسود زائرين * لان زهوة الاردن
4 شقيت * هكذا يقول الرب الضابط الكل * ارعوا غنم الذبيحة اللاتي ذبحوهن المفسدون
5 ولم يشفقوا * وباعتهن قالوا مبارك الرب قد استغنينا * ورعاتهن لم يتألموا عليهن شيا *
6 * لاجل هذا لا اشفق بعد على سكان الارض يقول الرب * وها انا ادفع الناس كل واحد
7 في يدي صاحبه وفي يدي ملكه * ويقطعون الارض ولا اخلصها من يديهم * وارعي
غنم الذبيحة بالكنعانية * واخذ عليهم عصايين * الواحدة دعوتها حسنا * والاخرى
8 دعوتها حبلا * وارعي الغنم * وانزع الثلاثة رعاة في شهر واحد * ويثقل نفسي عليهم *
9 لان نفوسهم عوت علي * وقلت لا ارعاكم * المايت ليمت * والهالك ليهلك * والتي تبقى
لتاكل كل واحد لحوم صاحبه *

CAP. XI.

* *APeri O Libane portas tuas, devo-* 1 *re que ignis cedros tuas: ululet pinus,* 2 *quia cedrus cecidit, quia magnates miſerrimi facti ſunt: ululate O quercus Baiſanitidis, quia ſylva defixa concidit. Vox paſtorum lugentium, quia magnifi-* 3 *centia eorum miſera facta eſt: vox leonum rugientium, quia fremitus Jordanis miſer factus eſt. Sic dicit Dominus* 4 *omnipotens; Paſcite oves mactationis* 5 *quas mactaverunt depravatores, nec pepercerunt; quarum venditores dixerunt, Benedictus ſit Dominus, jam divites facti ſumus; quarum paſtores nullo propter eas tangebantur dolore. Propterea non* 6 *parcam amplius habitatoribus terræ, dicit Dominus; ſed ecce ego tradam hominum quemque in manus ſocii ſui, & in manus regis ſui: excindéntque terram, nec eruam eam de manu eorum. Et pa-* 7 *ſcam oves mactationis in Chanaanitide: aſſumptiſque ſuper eas duabus virgis, quarum unam vocavi Pulchritudinem, alteram vocavi Funiculum, & paſcam oves. Et auferam tres paſtores uno menſe; &* 8 *grave erit ſuper eos anima mea quia animæ ipſorum ululaverunt contra me. Et* 9 *dixi, Non paſcam vos: qui moriturus eſt, moriatur; qui periturus, pereat; & eorum qui ſuperfuerint, comedat quiſque carnes ſocii ſui.*

זכריה : יב

diſſipandum ad : eam abſcidi & , *Noham* meam virgam tuli Et
10 וָאֶקַּח אֶת־מַקְלִי אֶת־נֹעַם וָאֶגְדַּע אֹתוֹ לְהָפֵיר
eſt irritum Et .populis omnibus cum pepigi quod , meum pactum
11 אֶת־בְּרִיתִי אֲשֶׁר כָּרַתִּי אֶת־כָּל־הָעַמִּים׃ וַתֻּפַר
, me *cuſtodientes* , *pecoris afflicti* ſic cognoverunt & : illa die In
בַּיּוֹם הַהוּא וַיֵּדְעוּ כֵן עֲנִיֵּי הַצֹּאן הַשֹּׁמְרִים אֹתִי
,veſtris oculis in bonum Si : eos ad dixi Et .*ipſum* Domini verbum quòd
12 כִּי דְבַר־יְהוָה הוּא׃ וָאֹמַר אֲלֵיהֶם אִם־טוֹב בְּעֵינֵיכֶם
appenderunt & : ceſſate , *non ſi &* , meam mercedem afferte
הָבוּ שְׂכָרִי וְאִם־לֹא חֲדָלוּ וַיִּשְׁקְלוּ אֶת־
: me ad Dominus dixit Et .argenteis triginta meam mercedem
13 שְׂכָרִי שְׁלֹשִׁים כָּסֶף׃ וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלַי
ſum appretiatus *qua gloriæ magnificentiam* ,*fictorem* ad *illum* Projice
הַשְׁלִיכֵהוּ אֶל־הַיּוֹצֵר אֶדֶר הַיְקָר אֲשֶׁר יָקַרְתִּי
domum *illud* projeci & ; argenteos triginta tuli & : eis *deſuper*
מֵעֲלֵיהֶם וָאֶקְחָה שְׁלֹשִׁים הַכֶּסֶף וָאַשְׁלִיךְ אֹתוֹ בֵּית
, ſecundam meam virgam præcidi Et .*fictorem* ad Domini
14 יְהוָה אֶל־הַיּוֹצֵר׃ וָאֶגְדַּע אֶת־מַקְלִי הַשֵּׁנִי אֵת
.Iſrael inter &,Jehudah inter fraternitatem *diſſipandum ad* , *Chobelim*
הַחֹבְלִים לְהָפֵר אֶת־הָאַחֲוָה בֵּין יְהוּדָה וּבֵין יִשְׂרָאֵל׃
.ſtulti paſtoris vas tibi ſume Adhuc : me ad Dominus dixit Et
15 וַיֹּאמֶר יְהוָה אֵלָי עוֹד קַח־לְךָ כְּלִי רֹעֶה אֱוִלִי׃
non ſuccisa , terra in paſtorem *ſuſcitans* ego ecce Quia
16 כִּי הִנֵּה־אָנֹכִי מֵקִים רֹעֶה בָּאָרֶץ הַנִּכְחָדוֹת לֹא־
ſtantem : ſanabit non contritum & , quæret non *juvenem* , viſitabit
יִפְקֹד הַנַּעַר לֹא־יְבַקֵּשׁ וְהַנִּשְׁבֶּרֶת לֹא יְרַפֵּא הַנִּצָּבָה
.abrumpet eorũ ungulas &,comedet pinguis carnem & ,*ſuſtentabit* non
לֹא יְכַלְכֵּל וּבְשַׂר הַבְּרִיאָה יֹאכַל וּפַרְסֵיהֶן יְפָרֵק׃
, ejus brachium ſuper Gladius .*pecoris* derelictor , *vani* paſtor *Væ*
17 הוֹי רֹעִי הָאֱלִיל עֹזְבִי הַצֹּאן חֶרֶב עַל־זְרוֹעוֹ
oculus & ,areſcet areſcendo ejus brachium:ejus dextrum oculum ſuper &
וְעַל־עֵין יְמִינוֹ זְרֹעוֹ יָבוֹשׁ תִּיבָשׁ וְעֵין
.*caligabit caligando* ejus dexter
יְמִינוֹ כָּהֹה תִכְהֶה׃

CAP. XII. יב

extendens Dominus Dixit : Iſrael ad Domini verbi *Onus*
1 מַשָּׂא דְבַר־יְהוָה עַל־יִשְׂרָאֵל נְאֻם־יְהוָה נֹטֶה
.ejus *interiori* in hominis ſpiritum *formans* & , terram *fundans* & , cœlos
שָׁמַיִם וְיֹסֵד אָרֶץ וְיֹצֵר רוּחַ־אָדָם בְּקִרְבּוֹ׃
omnibus *ſoporis ſcyphum* Jeruſalaim *ponens* ego Ecce
2 הִנֵּה אָנֹכִי שָׂם אֶת־יְרוּשָׁלַםִ סַף־רַעַל לְכָל־
contra obſidione in erit Jehudah ſuper etiam & : *circum* populis
הָעַמִּים סָבִיב וְגַם עַל־יְהוּדָה יִהְיֶה בַמָּצוֹר עַל־
Jeruſalaim ponam , illa die in erit Et .Jeruſalaim
3 יְרוּשָׁלָםִ׃ וְהָיָה בַיּוֹם־הַהוּא אָשִׂים אֶת־יְרוּשָׁלַםִ
:*incidentur incidendo*,*eoſe onerantes* omnes:populis omnibus *oneris* lapidem
אֶבֶן מַעֲמָסָה לְכָל־הָעַמִּים כָּל־עֹמְסֶיהָ שָׂרוֹט יִשָּׂרֵטוּ
illa die In .terræ gentes omnes eum adverſus colligentur &
4 וְנֶאֶסְפוּ עָלֶיהָ כֹּל גּוֹיֵי הָאָרֶץ׃ בַּיּוֹם הַהוּא
ejus aſcenſorem & ,ſtupore in equum omnem Percutiam ,Dominus dixit
נְאֻם־יְהוָה אַכֶּה כָל־סוּס בַּתִּמָּהוֹן וְרֹכְבוֹ
omnem & ,meos oculos aperiam Jehudah domum ſuper & : amentia in
בַּשִּׁגָּעוֹן וְעַל־בֵּית יְהוּדָה אֶפְקַח אֶת־עֵינַי וְכֹל
.cæcitate in percutiam populorum equum
סוּס הָעַמִּים אַכֶּה בַּעִוָּרוֹן׃

Verſio VULG. LAT.

10 Et tuli virgam meam, quæ vocabatur Decus; & abſcidi eam, ut irritum facerem fœdus meum, quod percuſſi cum omnibus po-
11 pulis. Et in irritum deductum eſt in die illa: & cognoverunt ſic pauperes gregis, qui cuſtodiunt mihi,
12 quia verbum Domini eſt. Et dixi ad eos; Si bonum eſt in oculis veſtris, afferte mercedem meam, & ſi non, quieſcite. Et appenderunt mercedem meam triginta argen-
13 teos. Et dixit Dominus ad me; Projice illud ad ſtatuarium, decorum pretium, quo appretiatus ſum ab eis. Et tuli triginta argenteos, & projeci illos in domum
14 Domini ad ſtatuarium. Et præcidi virgam meam ſecundam, quæ appellatur Funiculus, ut diſſolverem germanitatem inter Judam
15 & Iſrael. Et dixit Dominus ad me; Adhuc ſume tibi vaſa paſto-
16 ris ſtulti. Quia ecce ego ſuſcitabo paſtorem in terra, qui derelicta non viſitabit, diſperſum non quæret, & contritum non ſanabit; & id quod ſtat nou enutriet, & carnes pinguium comedet, &
17 ungulas eorum diſſolvet. O paſtor, & idolum derelinquens gregem: gladius ſuper brachium ejus, & ſuper oculum dextrum ejus: brachium ejus ariditate ſiccabitur, & oculus dexter ejus tenebreſcens obſcurabitur.

CAP. XII.

1 ONus verbi Domini ſuper Iſrael. Dicit Dominus extendens cœlum, & fundans terram, & fingens ſpiritum hominis in eo;
2 Ecce ego ponam Jeruſalem ſuperliminare crapulæ omnibus populis in circuitu: ſed & Juda erit
3 in obſidione contra Jeruſalem. Et erit: in die illa ponam Jeruſalem lapidem oneris cunctis populis: omnes, qui levabunt eam, conciſione lacerabuntur: & colligentur adverſùs eam omnia regna terræ.
4 In die illa, dicit Dominus, percutiam omnem equum in ſtuporem, & adſcenſorē ejus in amentiam: & ſuper domum Juda aperiam oculos meos, & omnem equum populorum percutiam cæcitate.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

10 Καὶ λήψομαι τὴν ῥάβδον μου τὴν καλήν, καὶ ἀποῤῥίψω αὐτήν, τοῦ διασκεδάσαι τὴν διαθήκην μου, ἣν διεθέμην πρὸς πάντας τοὺς
11 λαούς, Καὶ (ζ) διασκεδασθήσεται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, καὶ γνώσονται οἱ Χαναναῖοι τὰ πρόβατα τὰ (η) φυλασσόμενά μοι, διότι
12 λόγος κυρίου ἐστί. Καὶ ἐρῶ πρὸς αὐτούς, Εἰ καλὸν ἐνώπιον ὑμῶν ἐστι, δότε (θ) τὸν μισθόν μου, ἢ ἀπείπασθε. καὶ ἔστησαν τὸν μισθόν
13 μου τριάκοντα ἀργυροῦς. Καὶ εἶπε κύριος πρός με, Κάθες αὐτοὺς εἰς τὸ χωνευτήριον, καὶ (ι) σκέψομαι εἰ δόκιμόν ἐστιν, ὃν τρόπον ἐδοκιμάσθην ὑπὲρ αὐτῶν. καὶ ἔλαβον τοὺς τριάκοντα ἀργυροῦς, καὶ ἐνέβαλον αὐτοὺς (κ) εἰς τὸν οἶκον κυρίου εἰς τὸ χωνευτήριον.
14 Καὶ ἀπέῤῥιψα τὴν ῥάβδον τὴν δευτέραν τὸ Σχοίνισμα, τοῦ διασκεδάσαι τὴν (λ) κατάσχεσιν ἀναμέσον Ἰούδα, καὶ ἀναμέσον
15 (ʰ) Ἰσραήλ. Καὶ εἶπε κύριος πρός με, Ἔτι λάβε σεαυτῷ (μ) σκεύη ποιμενικὰ ποι-
16 μένος ἀπείρου. Διότι ἰδοὺ ἐγὼ ἐξεγείρω ποιμένα ἐπὶ τὴν γῆν, τὸ ἐκλιμπάνον οὐ μὴ ἐπισκέψηται, καὶ τὸ (ν) ἐσκορπισμένον οὐ μὴ ζητήσῃ, καὶ τὸ συντετριμμένον οὐ μὴ ἰάσηται, καὶ τὸ ὁλόκληρον οὐ μὴ κατευθύνῃ, καὶ τὰ κρέα τῶν ἐκλεκτῶν καταφάγεται, καὶ τοὺς ἀστραγάλους αὐτῶν (ξ) ἐκ-
17 στρέψει. Ὦ οἱ ποιμαίνοντες τὰ μάταια, (ο) καταλελοιπότες τὰ πρόβατα, μάχαιρα ἐπὶ τοὺς βραχίονας αὐτοῦ, καὶ ἐπὶ τὸν ὀφθαλμὸν τὸν δεξιὸν αὐτοῦ, ὁ βραχίων αὐτοῦ ξηραινόμενος ξηρανθήσεται, καὶ ὁ ὀφθαλμὸς (π) ὁ δεξιὸς αὐτοῦ ἐκτυφλούμενος ἐκτυφλωθήσεται.

MS. A. διασκεδασθήσονται (η) φυλασσόμενα, διότι (θ) στήσατέ τε (ι) σκέψαι αὐτὸ (κ) εἰς οἶκον (λ) διαθήκην μου ἀναμέσον (ʰ) τοῦ Ἰσραήλ. (μ) *σκεῦος ποιμένος ἀπείρου ποιμανικά· (ν) διεσκορπισμένον (ξ) ἐκστρίψει. (ο) καὶ οἱ καταλελοιπότες (π) αὐτοῦ ὁ δεξιὸς

Et aſſumam virgam meam Pulchram, & projiciam eam: ut diſſipem teſtamentum meum, quod diſpoſui ad omnes populos. 10
Et diſſipabitur in die illa: & cognoſcent Chananæi oves, quæ cuſtodiuntur mihi, quia verbum Domini eſt. 11
Et dicam ad eos; Si bonum eſt in conſpectu veſtro; date mercedem meam, aut renuite. Et ſtatuerunt mercedem meam triginta argenteos. 12
Et dixit Dominus ad me; Depone eos in (d) conflatorium: & (e) conſiderabo, ſi probatum eſt; ſicut probatus ſum pro eis. Et tuli triginta argenteos, & miſi eos in domum Domini in conflatorium. 13
Et abjeci virgam[meam] ſecundam, Funiculum, ut diſſiparem (f) poſſeſſionem inter Judam & Iſrael. 14
Et dixit Dominus ad me; Adhuc ſume tibi vaſa paſtoralia paſtoris (g) imperiti: 15
Quia ecce ego ſuſcito paſtorem ſuper terram: quod deficit, non viſitabit: & diſperſum non requiret, & contritum non ſanabit, & integrum non diriget: & carnes electorum devorabit, & talos eorum pervertet. 16
O qui paſcitis vana, qui dereliquiſtis oves, gladius ſuper brachium ejus, & ſuper oculum ejus dextrum: brachium ejus areſcens areſiet, & oculus dexter ejus excæcatus excæcabitur. 17

ΚΕΦ. ιβ΄.

1 ΛΗμμα λόγου κυρίου ἐπὶ τὸν Ἰσραήλ. λέγει κύριος, ἐκτείνων οὐρανόν, καὶ θεμελιῶν γῆν, καὶ πλάσσων πνεῦμα (α) ἀνθρώπου ἐν αὐ-
2 τῷ, Ἰδοὺ ἐγὼ τίθημι τὴν Ἱερουσαλὴμ ὡς πρόθυρα σαλευόμενα πᾶσι τοῖς λαοῖς κύκλῳ, καὶ ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ (β) ἔσται περιοχὴ ἐπὶ Ἱε-
3 ρουσαλήμ. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ θήσομαι τὴν Ἱερουσαλὴμ λίθον καταπατούμενον πᾶσι τοῖς ἔθνεσι· πᾶς ὁ καταπατῶν αὐτὴν ἐμπαίζων ἐμπαίξεται, καὶ ἐπισυναχθήσονται ἐπ᾽ αὐτὴν πάντα τὰ ἔθνη τῆς γῆς.
4 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει κύριος παντοκράτωρ, πατάξω πάντα ἵππον ἐν ἐκστάσει, καὶ τὸν ἀναβάτην αὐτοῦ ἐν παραφρονήσει, ἐπὶ δὲ τὸν οἶκον Ἰούδα διανοίξω τοὺς ὀφθαλμούς μου, καὶ πάντας τοὺς ἵππους τῶν λαῶν πατάξω ἐν ἀποτυφλώσει.

CAP. XII.

ASſumptio verbi Domini ſuper Iſrael. Dicit Dominus extendens cœlum, & fundans terram, & fingens ſpiritum hominis in eo; 1
Ecce ego pono Hieruſalem, ut ſuperliminaria, quæ moventur, omnibus populis in circuitu. Et in Judæa erit obſidio ſuper Hieruſalem. 2
Et erit, in die illo ponam Hieruſalem lapidem, qui conculcatur, cunctis gentibus: omnis, qui conculcaverit eam illudens illudet. Et congregabuntur ſuper eam omnes gentes terræ. 3
In die illa, dicit Dominus omnipotens, percutiam omnem equum in ſtupore, & aſcenſorem ejus in amentia: ſuper domum autem Juda aperiam oculos meos: & omnes equos populorum percutiam in cæcitate. 4

MS.A. (α) αὐτοῦ ἐν (β) καὶ ἔσαι

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

10 ואיתיתי ית סנחריב מלכא דאתור על מלכא דישראל ואגליתי יתיה על די אשניאו
11 קימא דגזר עמהון דלא למפלח לטעותא בכן גלו בני עממיא : ועל דאשניאו
קימא גלן בעדנא ההיא וידעון כן ענותניא חשיבי עמא די עבדו רעותי ארי פתגמא
12 דיי הוא : ואמרית להון אם תקין בעיניכון עבידו רעותי ואם לא אתמנעו ועבדו ית
13 רעותי גברין מקצת : ואמר יי לי כתוב דכרן עובדיהון בחילש כתבא ורמי יתיה
לבית מקדשא ורמי לתחות יד אמרכלא חלף דיקרית דחלתי בעיניהון וכתבית
דכרן עובדיהון בחילש כתבא ורמיתי יתיה לבית מקדשא דיי לתחות יד אמרכלא
14 רבא : ואיתיתי נבוכד נצר מלכא דבבל על צדקיה מלך שבטא דבית יהודה ואגליתי
15 יתיה על דאשניאו קימא אף אנון דבית יהודה כאחיהון בית ישראל : ואמר יי לי
16 עוד איזיל אתנבי על פרנסא טפשא : ארי הא אנא מקים פרנסא בארעא
דשגן לא יבעי דאטלטלו לא יתבע דתבירין לא יסי דקימין לא יסובר ונכסי עתיריא
17 יבוז ושארהון ינסר : וי על פרנסא טפשא דאתפקיד ליה עמא לפרנסא די הוא דמי
לטבחא די סכיניה בידיה ועיניה על שמינתא למכס דרעיה מיבש תיבש ועיניה
דימינא מכהא תכהי :

יב

1 מטל פתגמא דיי על ישראל אמר יי דתלא שמיא ושכליל ארעא וברא רוחא דאנשא
2 במעוהי : הא אנא משוי ית ירושלם מן מלי מרוי לכל עממיא סחור סחור ואף דבית
3 יהודה ייתונון עממיא ביד אניסין בצירא לירושלם : ויהי בעדנא ההיא אשוי ית
ירושלם אבן תקלא לכל עממיא כל אנסהא אתבזזא יתבזזון ויתכנשון עלה כל
4 עממי ארעא : בעדנא ההיא אמר יי אמחי כל סוסות עממיא בטפשותא ורוכביהון
בשעממותא ועל דבית יהודה אגלי ית גבורתי לאטבא להון וכל סוסות עממיא
אמחי בסמיותא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et adduxi Senacherib regem Aſſur contra regem Iſrael, & migrare feci 10
eum, eò quòd irritum fecerunt pactum quod pepigi cum eis, ut non ſervirent idolis: ideò migraverunt *filii populorum*. Et quia irritum fecerunt 11
pactum, migraverunt in tempore illo: ut ſcirent poſtea manſueti pauperes populi, qui fecerunt voluntatem meam, quia verbum Dñi eſt. Et dixi eis, 12
Si rectum eſt in oculis veſtris, facite voluntatem meam; ſi non, finite: & fecerunt voluntatem meam viri ex parte. Et dixit Dñs ad me, Scribe me- 13
moriam operum eorum in archivo ſcripturarum, & projice illud in domo ſanctuarii Domini, *projice inquam* ſub manu præpoſiti: pro eo quòd pretioſum feci timorem mei in oculis eorum, & ſcripſi memoriam operum eorum in archivo ſcripturarum: & projeci illud in domo ſancturii Dñi ſub manu præpoſiti magni. Et adduxi Nabuchodonoſor regem Babyloniæ con- 14
tra Sedechiam regem tribus domus Juda: & captivum *duxi* eum, eò quòd irritum fecerant pactum etiam illi viri domus Juda, ſicut fratres eorum viri domus Iſrael. Et dixit Dñs ad me, Adhuc vade, vaticinare ſuper gubernatorem 15
inſipientem. Quia ecce ego inſtituo gubernatorem in terra: illos qui erraverunt, non quæret; & illos qui migraverunt, non requiret; & illos qui contriti ſunt non ſanabit; & illos qui ſtant non ſuſtentabit, & ſubſtantias divitum diripiet, & reliquias eorum conſumet. Væ ſuper gubernatorem inſipientem, 16 17
qui commendatus eſt populo ut gubernet illum: qui ſimilis eſt lanioni, qui habet gladium in manu ſua, & oculus ipſius reſpicit ad pinguia ut juguler ea. Brachium ej⁹ ariditate areſcet, & ocul⁹ ej⁹ dexter obſcuratione obſcurabitur.

CAP. XII.

ONus verbi Dñi ſuper Iſrael, dixit Dñs qui appendit cœlos, et fundavit 1
terram, et creavit ſpiritum hominis in viſceribus ejus. Ecce ego ponam Je- 2
ruſalem vas plenum ebrietate omnibus populis in circuitu, et etiam viros domus Juda adducent populi per vim in obſidione Jeruſalem. Et erit in 3
tempore illo, ponam Jeruſalem lapidem offenſionis omnib⁹ populis. Omnes qui vim intulerint ei, vaſtatione vaſtabuntur: congregabuntur autem contra eam omnes populi terræ. In tempore illo, dicit Dñs, percutiam omnes equos 4
populorum amentia, et aſcenſores eorum ſtupore; et ſuper viros domus Juda revelabo potentiam meam, ut benefaciam eis; et omnes equos populorum percutiam cæcitate.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܣܒܬ ܚܘܛܪܝ ܒܣܝܡܐ ܘܬܒܪܬܗ. ܕܐܒܛܠ ܩܝܡܐ ܕܐܩܝܡܬ ܥܡ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. 10
* ܘܐܬܒܛܠ ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܘܝܕܥܘ ܡܣܟܢܐ ܕܥܢܐ ܕܢܛܪܝܢ ܗܘܘ ܠܝ. ܕܦܬܓܡܗ ܗܘ 11
ܕܡܪܝܐ. * ܘܐܡܪܬ ܠܗܘܢ. ܐܢ ܫܦܝܪ ܒܥܝܢܝܟܘܢ. ܗܒܘ ܠܝ ܐܓܪܝ. ܐܘ ܬܟܠܘܢ ܕܝܠܝ 12
ܠܝ. ܘܬܩܠܘ ܠܐܓܪܝ ܬܠܬܝܢ ܕܟܣܦܐ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܐܪܡܝܗܝ ܒܒܝܬ ܓܙܐ. 13
ܝܩܪܐ ܘܐܝܩܪܐ ܕܐܬܝܩܪܬ ܡܢܗܘܢ. ܘܢܣܒܬ ܬܠܬܝܢ ܕܟܣܦܐ. ܘܐܪܡܝܬ ܐܢܘܢ ܒܒܝܬ
ܓܙܐ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܬܒܪܬ ܚܒܠܐ ܚܘܛܪܝ ܐܚܪܢܐ. ܕܐܒܛܠ ܫܝܢܐ ܕܐܝܬ ܗܘܐ ܒܝܢ 14
ܝܗܘܕܐ ܠܐܝܣܪܐܝܠ. * ܘܐܡܪ ܠܝ ܡܪܝܐ. ܬܘܒ ܣܒ ܠܟ ܡܐܢܐ ܕܪܥܝܐ ܣܟܠܐ. * ܡܛܠ 15 16
ܕܗܐ ܐܢܐ ܡܩܝܡ ܐܢܐ ܪܥܝܐ ܒܐܪܥܐ. ܕܐܒܝܕܐ ܠܐ ܢܣܥܘܪ. ܘܛܥܝܐ ܠܐ ܢܒܥܐ. ܘܬܒܝܪܬܐ ܠܐ
ܢܕܒܪ. ܘܟܪܝܗܬܐ ܠܐ ܢܐܣܐ. ܘܚܠܝܡܬܐ ܠܐ ܢܬܪܣܐ. ܘܒܣܪܐ ܕܫܡܝܢܬܐ ܢܐܟܘܠ.
ܘܦܪܣܬܗܝܢ ܢܦܪܘܩ. * ܐܘ ܪܥܝܐ ܣܟܠܐ. ܕܫܒܩܬ ܥܢܐ ܥܠ ܕܪܥܗ. ܘܥܠ ܥܝܢܗ 17
ܝܡܝܢܝܬܐ. ܕܪܥܗ ܕܝܡܝܢܐ ܬܝܒܫ. ܘܥܝܢܗ ܕܝܡܝܢܐ ܬܥܘܪ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܒ *

* ܡܫܩܠܐ ܕܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܕܡܬܚ ܫܡܝܐ. ܘܫܬܐܣ 1
ܫܬܐܣܝܗ ܕܐܪܥܐ. ܘܒܪܐ ܪܘܚܗ ܕܒܪܢܫܐ ܒܓܘܗ. * ܗܐ ܐܢܐ ܥܒܕ ܐܢܐ ܠܗ ܠܐܘܪܫܠܡ. 2
ܬܪܥܐ ܕܙܘܥܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܗ. ܘܐܦ ܥܠ ܝܗܘܕܐ ܢܗܘܐ ܐܘܠܨܢܐ
ܥܡ ܐܘܪܫܠܡ. * ܘܢܗܘܐ ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܕܐܥܒܕܝܗ ܠܐܘܪܫܠܡ ܟܐܦܐ 3
ܕܕܝܫܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܘܟܠܗܘܢ ܕܕܝܫܝܢ ܠܗ. ܡܣܬܪܩܘ ܢܣܬܪܩܘܢ. ܘܢܬܟܢܫܘܢ
ܥܠܝܗ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܪܥܐ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܐܡܚܐ 4
ܠܟܠܗܘܢ ܪܟܫܐ ܒܬܡܗܐ. ܘܠܪܟܒܝܗܘܢ ܒܫܢܝܐ. ܘܥܠ ܒܝܬ ܝܗܘܕܐ ܐܦܬܚ
ܥܝܢܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܪܟܫܐ ܕܥܡܡܐ ܐܡܚܐ ܒܥܘܝܪܘܬܐ.

10 * Tuli deinde baculum meum Benignum, & fregi eum; ut irritum facerem fœdus quod pepigeram cum omnibus populis: 11 * Irritóque facto eodem die, cognoverunt humiles inter oves quæ me obſervabant, ſermonem eſſe Domini. 12 Et dixi eis; Si rectum vobis videtur, date mihi mercedem meam: an verò denegaretis mihi? & appenderunt mercedem meam triginta argenteos. 13 Dixit autem mihi Dominus; Injice eam in ærarium, gloriam *ſcilicet* illam & honorem quo honeſtatus ſum ab eis; accepi ergò illos triginta argenteos, & injeci in ærarium in domo Domini. 14 Poſtea fregi Funem, *nempè* baculum meum alterum; ut irritam facerem concordiam quæ erat inter Judam & Iſraelem. 15 Et dixit mihi Dominus; Iterum ſume tibi inſtrumenta paſtoris ſtolidi: 16 Quoniam ecce ego ſuſcitaturus ſum paſtorem in terra, qui pereuntes non inviſet, errantes non requiret, fractas non conſolidabit, infirmis non medebitur, integras non alet; ſed carnem pinguium comedet, & crura earum corrodet, 17 Heus paſtor ſtolide, cujus brachio & oculo dextero oves commiſi, brachium tuum dexterum areſcet, & oculus tuus dexter excæcabitur.

CAP. XII.

1 * VIſio ſermonum Domini de Iſraele. Dicit Dominus qui cœlos extendit, & firmavit fundamenta terræ, & creavit ſpiritum hominis intra ipſum: 2 En ego effecturus ſum Jeroſolymam, oſtium tremoris omnibus gentibus circunjacentibus ei. Quin etiam contra Judam cum Jeroſolymis erit obſidio. 3 Eritque eo die, ut efficiam Jeroſolymam lapidem conculcationis omnibus gentibus; omnes tamen conculcantes eam planè dilanientur: etiamſi congregentur adversùs eam omnes terræ populi. 4 Eodem die, dicit Dominus, omnes equos ejus ſtupore percutiam, et conſcenſores eorum ſtupiditate: at ſuper domum Judæ aperiam oculos meos, et omnes populorum equos cæcitate percutiam.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح التسع والعشرون * وهو الخامس من النبوة *

* واخذ عصاي الجيدة واطرحها * لابطل عهدي الذي عهدته مع جميع الشعوب * 10
* ويبطل في ذلك اليوم * ويعلم الكنعانيون الاغنام المحروسة لي * من اجل ان قول الرب 11
هو * واقول لهم ان كان هو حسن امامكم اعطوني اجرتي * او تظلموني * فاقاموا اجرتي 12
ثلاثين من الفضة * وقال الرب لي * القها في الكور * وتعهد ان كان هو مجربا كما جربت 13
من اجلهم * واخذت الثلاثين الفضة * ووضعتها والقيتها في بيت الرب في الكور * كما امرني
الرب * وطرحت عصاي الثانية الحبل * لابطل الضبط بين يهودا وبين اسرائيل * وقال الرب 14 15
لي ايضا * خذ لك آنية راع ابله رعيه * من اجل اني ها انا اقيم راعيا على الارض لا يرد 16
الهالك * ولا يطلب الشارد * ولا يشفي المكسور * ولا يقوم الصحيح * وياكل لحوم المختار *
ويعرق اكارعها * الا يا ايها الذين يرعون الاباطيل وتاركي الغنم السيف على ذراعه وعلى 17
عينه اليمني * ذراعه يابس ييبس * وعينه اليمني عميا تعمي *

* الفصل الثاني عشر *

* وحي قول الرب على اسرائيل * هكذا يقول الرب الذي مد السماء * واسس الارض وجبل 1
روح الانسان فيها * ها انا اصنع ايروشليم مثل دهاليز مزعزعة لكل الشعوب المحيطين * 2
ويكون في اليهودية زحام على ايروشليم * ويكون في ذلك اليوم اصنع ايروشليم حجرا 3
مداسا عند الامم * كل من يدوسها يلعب لعبا * ويجتمع عليها كل امم الارض * في ذلك 4
اليوم يقول الرب الضابط الكل * اضرب كل فرس بالبهتة * وراكبه بالجهل * على بيت يهودا
افتح عيني * وجميع خيول الشعب اضربهم بالعمى *

Textus vigeſimus nonus, hujus autem prophetiæ quintus.

10 * *Et accipiam virgam meam Bonam, et projiciam eam; ut irritum faciam fœdus meum quod inieram cum omnibus populis:* 11 * *Et cùm irritum factum fuerit eo die, cognoſcent Chananæi oves mihi reſervatas: quia ſermo Domini eſt.* 12 *Et dicam eis, Si conſentaneum eſt apud vos, date mihi mercedem meam; alioqui fraudaretis me. Et ſtatuerunt mercedem meam triginta argenteos.* 13 *Dixitque mihi Dominus; Injice eos in furnum, & explora utrùm illi ſint probati, quemadmodum probatus ſum propter eos: quare accepi triginta illos argenteos, poſuique & injeci eos in domo Domini in furnum, quemadmodum præceperat mihi Dominus.* 14 *Deinde abjeci virgam meam ſecundam, nempe Funiculum, ut abolerem cohærentiam inter Judam & inter Iſraelem.* 15 *Dixit etiam mihi Dominus; Accipe tibi vaſa paſtoris ſtolidi in paſcendo.* 16 *Ecce enim ego ſuſcitabo ſuper terram paſtorem, qui pereuntem non reducet, errantem non quæret, fractam non medebitur, & integram non diriget; ſed carnes electarum comedet, & earum crura corrodet.* 17 *Aunon O qui paſcitis vanitates, & derelinquitis oves, gladius imminet brachio ejus & oculo ejus dextro? brachium ejus penitùs areſcet, & oculus ejus dexter penitùs excæcabitur.*

CAP. XII.

1 * *REvelatio ſermonis Domini de Iſraele. Sic dicit Dominus qui cœlum extendit, terram fundavit, & ſpiritum hominis formavit in ea;* 2 *Ecce ego ponam Jeruſalem ut podia vacillantia omnibus populis adjacentibus: & erit in Judæa obſidio contra Jeroſolymam.* 3 *Fiétque eo die, ut ponam Jeroſolymam lapidem conculcatum apud gentes: quicunque conculcabit eam, ludum ludet: & congregabuntur adverſùs eam omnes terræ gentes.* 4 *Eo die, dicit Dominus omnipotens, omnem equum ſtupore percutiam, & conſcenſorem ejus amentiâ. Super domum Judæ aperiam oculos meos, omnes autem populi equos cæcitate percutiam.*

habitatores mihi Robur : ſuo corde in Jehudah duces dicent Et
5 ואמרו אלפי יהודה בלבם אמצה לי ישבי
illa die In .ſuo Deo exercituum Domino in Jeruſalaim
6 ירושלם ביהוה צבאות אלהיהם : ביום ההוא
, ligna inter ignis focum ſicut , Jehudah duces ponam
אשים את־אלפי יהודה ככיור אש בעצים
ſuper &,dexteram ſuper devorabunt & ,*manipulo in* ignis lampadem ſicut &
וכלפיד אש בעמיר ואכלו על־ימין ועל־
adhuc Jeruſalaim habitabitur &:*circum* populos omnes ſiniſtram
שמאול את־כל־העמים סביב וישבה ירושלם עוד
Jehudah *tentoria* Dominus ſervabit Et .Jeruſalaim in *ſe ſubter*
7 תחתיה בירושלם : והושיע יהוה את־אהלי יהודה
, David domus gloria magnificetur non ut : principio in
בראשנה למען לא־תגדל תפארת בית־דויד
illa die In .Jehudah contra Jeruſalaim habitatoris gloria &
8 ותפארת ישב ירושלם על־יהודה : ביום ההוא
corruens erit & , Jeruſalaim habitatorem *ſuper* Dominus proteget
יגן יהוה בעד יושב ירושלם והיה הנכשל
, Deus tanquam David domus & : David ſicut illa die in *eis in*
בהם ביום ההוא כדויד ובית דויד כאלהים
quæram : illa die in ,erit Et .*eorum facies ad* Domini angelus tanquam
9 כמלאך יהוה לפניהם : והיה ביום ההוא אבקש
.Jeruſalaim contra *venientes* ,gentes omnes *diſperdendum ad*
להשמיד את־כל־הגוים הבאים על־ירושלם :
Jeruſalaim *habitatorem* ſuper & , David domum ſuper effundam Et
10 ושפכתי על־בית דויד ועלי יושב ירושלם
quem me ad aſpicient & , miſerationum & , gratiæ ſpiritum
רוח חן ותחנונים והביטו אלי את אשר־
,unigenitum ſuper planctum veluti eum ſuper plangent &:transfixerunt
דקרו וספדו עליו כמספד על־היחיד
illa die In .primogenitum ſuper *amarificare ut*,eum ſuper *amarificare* &
11 והמר עליו כהמר על־הבכור : ביום ההוא
Hadadrimmon planctus ſicut , Jeruſalaim in planctus erit magnus
יגדל המספד בירושלם כמספד הדדרמון
familiæ familiæ , terra planget Et .Meghiddon campo in
12 בבקעת מגדון : וספדה הארץ משפחות משפחות
: ſeorſum eorum mulieres & ,ſeorſum David domus familia : ſeorſum
לבד משפחת בית־דויד לבד ונשיהם לבד
Familia .ſeorſum eorum mulieres &,ſeorſum Nathan domus familia
13 משפחת בית־נתן לבד ונשיהם לבד : משפחת
Simei familia : ſeorſum eorum mulieres & ,ſeorſum Levi domus
בית־לוי לבד ונשיהם לבד משפחת השמעי
, *reliquæ* familiæ Omnes .ſeorſum eorum mulieres & ,ſeorſum
14 לבד ונשיהם לבד : כל המשפחות הנשארות
.ſeorſum eorum mulieres & ,ſeorſum *familiæ* familiæ
משפחת משפחת לבד ונשיהם לבד :

CAP. XIII. יג

David domui patens vena erit illa die In
1 ביום ההוא יהיה מקור נפתח לבית דויד
die in erit Et .*menſtruum in &,peccatum in* Jeruſalaim habitatoribus &
2 ולישבי ירושלם לחטאת ולנדה : והיה ביום
faciam ſuccidere , exercituum DOMINUS dixit , illa
ההוא נאם יהוה צבאות אכרית
memorabuntur non & , terra è *idolorum* nomina
את־שמות העצבים מן־הארץ ולא יזכרו
immundum ſpiritum & , prophetas etiam & : amplius
עוד וגם את־הנביאים ואת־רוח הטמאה
.terra è faciam tranſire
אעביר מן־הארץ :

Verſio VULG. LAT.

5 Et dicent duces Juda in corde ſuo; Confortentur mihi habitatores Jeruſalem in Domino exercituum Deo eorum. 6 In die illa ponam duces Juda ſicut caminum ignis in lignis, & ſicut facem ignis in fœno; & devorabunt ad dexteram & ad ſiniſtram omnes populos in circuitu: & habitabitur Jeruſalem rurſus in loco ſuo in Jeruſalem. 7 Et ſalvabit Dominus tabernacula Juda, ſicut in principio: ut non magnificè glorietur domus David, & gloria habitantium Jeruſalem contra Judam. 8 In die illa proteget Dominus habitatores Jeruſalem, & erit qui offenderit ex eis in die illa, quaſi David, & domus David quaſi Dei, ſicut angelus Domini in conſpectu eorum. 9 Et erit in die illa: quæram conterere omnes Gentes, quæ veniunt contra Jeruſalem. 10 Et effundam ſuper domum David, & ſuper habitatores Jeruſalem ſpiritum gratiæ & precum: & aſpicient ad me, quem confixerunt: et plangent eum planctu quaſi ſuper unigenitum, & dolebunt ſuper eum, ut doleri ſolet in morte primogeniti. 11 In die illa magnus erit planctus in Jeruſalem, ſicut planctus Adrademmon in campo Mageddon. 12 Et planget terra: familiæ & familiæ ſeorſum: familiæ domûs David ſeorſum, & mulieres eorum ſeorſum: 13 Familiæ domûs Nathan ſeorſum, & mulieres eorum ſeorſum: familiæ domûs Levi ſeorſum, & mulieres eorum ſeorſum: familiæ Semei ſeorſum, & mulieres eorum ſeorſum. 14 Omnes familiæ reliquæ, familiæ & familiæ ſeorſum, & mulieres eorum ſeorſum.

CAP. XIII.

1 IN die illa erit fons patens domui David, & habitantibus Jeruſalem, in ablutionem peccatoris 2 & menſtruatæ. Et erit in die illa, dicit Dominus exercituum: Diſperdam nomina idolorum de terra, & non memorabuntur ultrá: & pſeudoprophetas, & ſpiritum immundum auferam de terra:

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

5 Καὶ ἐροῦσιν οἱ χιλίαρχοι Ἰούδα ἐν τ(αῖς) καρδίαις αὐτῶν, Εὑρήσομεν ἑαυτοῖς τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλὴμ ἐν κυρίῳ παντοκράτορι θεῷ αὐτῶν. 6 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ θήσομαι τοὺς χιλιάρχους Ἰούδα ὡς δαλὸν πυρὸς ἐν ξύλοις, καὶ ὡς λαμπάδα πυρὸς ἐν καλάμῃ, καὶ καταφάγονται ἐκ δεξιῶν, καὶ ἐξ εὐωνύμων πάντας τοὺς λαοὺς κυκλόθεν, καὶ κατοικήσει Ἱερουσαλὴμ ἔτι καθ' (γ) ἑαυτὴν ἐν Ἱερουσαλήμ. 7 Καὶ σώσει κύριος τὰ σκηνώματα Ἰούδα, καθὼς ἀπ' ἀρχῆς, ὅπως μὴ μεγαλύνηται καύχημα οἴκου Δαυὶδ καὶ (δ) ἔπαρσις τῶν κατοικούντων Ἱερουσαλὴμ ἐπὶ τὸν (ε) Ἰούδα. 8 Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ὑπερασπιεῖ κύριος ὑπὲρ τῶν κατοικούντων Ἱερουσαλήμ, καὶ ἔσται ὁ ἀσθενῶν ἐν αὐτοῖς ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ ὡς (ζ) Δαυίδ, ὁ δὲ οἶκος Δαυὶδ ὡς οἶκος θεοῦ, ὡς 9 ἄγγελος κυρίου ἐνώπιον αὐτῶν. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, ζητήσω (η) ἐξᾶραι πάντα τὰ ἔθνη τὰ (θ) ἐρχόμενα ἐπὶ Ἱερουσαλήμ. 10 Καὶ ἐκχεῶ ἐπὶ τὸν οἶκον Δαυίδ, καὶ ἐπὶ τοὺς κατοικοῦντας Ἱερουσαλὴμ πνεῦμα χάριτος καὶ οἰκτιρμοῦ. καὶ ἐπιβλέψονται πρός με, ἀνθ' ὧν κατωρχήσαντο. καὶ κόψονται ἐπ' (ι) αὐτὸν κοπετόν, ὡς ἐπ' (κ) ἀγαπητῷ, καὶ ὀδυνηθήσονται ὀδύνην, ὡς (ϛ) ἐπὶ τῷ πρωτοτόκῳ. 11 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ μεγαλυνθήσεται ὁ κοπετὸς ἐν Ἱερουσαλήμ, ὡς κοπετὸς 12 ῥοῶνος ἐν πεδίῳ ἐκκοπτομένου. Καὶ κόψεται ἡ γῆ κατὰ φυλὰς φυλάς. (λ) φυλὴ οἴκου Δαυὶδ καθ' ἑαυτήν, καὶ αἱ γυναῖκες 13 αὐτῶν καθ' ἑαυτάς· Φυλὴ οἴκου Νάθαν καθ' ἑαυτήν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καθ' ἑαυτάς. φυλὴ οἴκου Λευὶ καθ' ἑαυτήν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καθ' ἑαυτάς· φυλὴ τοῦ Συμεὼν καθ' ἑαυτήν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καθ' 14 ἑαυτάς. Πᾶσαι (μ) αἱ ὑπολελειμμέναι φυλαί, φυλὴ καθ' ἑαυτήν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καθ' ἑαυτάς.

5 Et dicent Tribuni Juda in cordibus ſuis; (a) Inveniemus nobis eos, qui habitant Hieruſalem in Domino omnipotente Deo eorum. 6 In die illa ponam tribunos Iuda, ſicut torrem ignis in lignis, & ſicut facem ignis in ſtipula: & devorabunt à dextris, & à ſiniſtris omnes populos per circuitum: & habitabit adhuc Hieruſalem (b) per ſeipſam in Hieruſalem. 7 Et ſalva faciet Dominus tabernacula Juda, ſicut à principio: ut non magnificetur gloria domûs David, & elatio habitatorum Hieruſalem ſuper Judam. 8 Et erit, in die illa proteget Dominus habitatores Hieruſalem: & qui infirmus in eis fuerit; in die illa erit ſicut (c) David, & domus David, quaſi domus Dei, (d) ſicut angelus Domini in conſpectu eorum: 9 Et erit, in die illa quæram auferre omnes gentes, quæ veniunt contra Hieruſalem. 10 Et effundam ſuper domum David, & ſuper habitatores Hieruſalem ſpiritum gratiæ, et miſericordiæ. Et aſpicient in me pro eo, quòd (e) inſultaverunt: et plangent ſuper eum planctum, quaſi ſuper dilectum, et dolebunt dolore, quaſi ſuper primogenito. 11 In die illa magnus erit planctus in Hieruſalem: ſicut planctus (f) malogranati, quod in campo ſucciditur. 12 Et planget terra per tribus tribus: tribus domus David ſeorſum, et mulieres eorum (g) ſeorſum: 13 Tribus domûs Nathan ſeorſum, et mulieres eorum ſeorſum: tribus domûs Levi ſeorſum, et mulieres eorum ſeorſum: tribus Symeon ſeorſum, et mulieres eorum ſeorſum: 14 Omnes reliquæ tribus, tribus ſeorſum, et mulieres eorum ſeorſum.

MS. A. (γ) ἑαυτήν. Καὶ δώσει κύριος τὰ (δ) ἔπαρξις (ε) Ἰούδαν. (ζ) οἶκος Δαυίδ, ὡς οἶκος θεοῦ, (η) τοῦ ἐξᾶραι (θ) ἐπερχόμενα (ι) αὐτὸν (κ) ἀγαπητόν, (ϛ) ἐπὶ πρωτοτόκῳ. (λ) φυλὴ φυλὴ καθ' ἑαυτήν, καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν καθ' ἑαυτάς. φυλὴ οἴκου Δαυίδ (μ) αἱ φυλαὶ αἱ ὑπολελειμμέναι, φυλὴ

ΚΕΦ. ιγ'.

1 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται πᾶς τόπος διανοιγόμενος (α) τῷ οἴκῳ Δαυίδ, καὶ τοῖς κατοικοῦσιν Ἱερουσαλὴμ εἰς τὴν μετα-2 κίνησιν, καὶ εἰς τὸν (β) χωρισμόν. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέγει (γ) κύριος σαβαώθ, ἐξολεθρεύσω τὰ ὀνόματα τῶν εἰδώλων ἀπὸ τῆς γῆς, καὶ οὐκ ἔτι (δ) αὐτῶν ἔσται μνεία· καὶ τοὺς ψευδοπροφήτας, καὶ τὸ πνεῦμα τὸ ἀκάθαρτον ἐξαρῶ ἀπὸ τῆς γῆς.

CAP. XIII.

1 IN die illa erit omnis locus apertus (a) domui David, et habitantibus Hieruſalem in tranſmutationem et in (b) ſeparationem. 2 Et erit in die illa, dicit Dominus Sabaoth, diſperdam nomina idolorum de terra: et non erit ultrà eorum memoria. Et pſeudoprophetas, et ſpiritum immundum auferam de terra.

MS. A. (α) ἐν τῷ (β) ῥαντισμόν. (γ) κύριος, ἐξολεθρεύσω (δ) ἔσται αὐτῶν

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

5 ויימרון רברבי יהודה בלבהון אשתכח פורקן ליתבי ירושלם במימרא דיי צבאות
6 אלההון : בעדנא ההיא אשוי ית רברבי יהודה כלבוש די נור באעיא וכבעור דאשא
בעמירא ויבזון מן דרומא ומן צפונא ית כל נכסי עממיא סחור סחור ותתיב ירושלם
7 עוד באתרה ותצלח ירושלם : ויפרוק יי ית קרויא דבית יהודה בקדמיתא בדיל דלא
8 תסגי אתרברבות בית דוד ואתרברבות יתבי ירושלם על דבית יהודה : בעדנא
ההיא ירחים יי על יתבי ירושלם ויהי דחלש בהון בעדנא ההיא כדוד ובית דוד
9 כרברבין יצלחון כמלאכא דיי קדמיהון : ויהי בעדנא ההיא אתבע לשצאה ית כל
10 עממיא די מתכנשין ואתן על ירושלם : ואשפוך על דבית דוד ועל יתבי ירושלם
רוח חסדא ורחמין ויבעון מן קדמי על די אטלטלו ויספדון עלוהי כמא דספדין על
11 יחידא וימרון עלוהי כמא דממרין על בוכרא : בעדנא ההיא יסגי מספדא בירושלם
כמספדא דאחאב בר עמרי די קטל יתיה הדדרמון בר טברמון וכמספד יאשיה בר
12 אמון די קטל יתיה פרעה חגירא בבקעת מגדון : ויספדון דיירי ארעא זרעין זרעין גבריהון
לחוד ונשיהון לחוד זרעית בית דוד לחוד גבריהון לחוד ונשיהון לחוד זרעית בית
13 נתן גבריהון לחוד ונשיהון לחוד : זרעית בית לוי לחוד גבריהון לחוד ונשיהון לחוד
14 זרעית בית שמעי גבריהון לחוד ונשיהון לחוד : כל זרעיתא די אשתארא זרעין זרעין
גבריהון לחוד ונשיהון לחוד :

יג

1 בעדנא ההיא יהי אלפן אוריתא גלי כמבוע דמיין לבית דוד וליתבי ירושלם ואשבוק
2 לחוביהון כמא דמדכן במי אדיותא ובקטם תורתא דחטאתא : ויהי בעדנא ההיא
אמר יי צבאות אשצי ית שום טעות עממיא מן ארעא ולא יהי דכרן משומהון עוד ואף
ית נביי שקרא וית רוח מסאבא אבטל מן ארעא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

5 Et dicent principes Juda in cordib⁹ ſuis, Inventa eſt ſalus habitatorib⁹ Jeruſalem per verbum Domini exercituum Dei ipſorum. 6 In tempore illo ponam principes Juda ſicut veſtimentũ ignitum inter ligna, & quaſi lampadem ignis inter manipulos: & vaſtabunt ab Auſtro, & ab Aquilone omnes ſubſtantias populorum per circuitum, habitabitúrq; rurſus Jeruſalem in loco ſuo, & proſperabitur Jeruſalem. 7 Et ſalvabit Dñs civitates domus Juda in principio, ut non multiplicetur magnitudo dom⁹ David, & magnitudo habitatorum Jeruſalem ſuper viros dom⁹ Juda. 8 In tempore illo miſerebitur Dñs habitatorum Jeruſalem: & qui infirm⁹ fuerit in eis, in tempore illo erit ſicut David, & dom⁹ David inſtar heroum feliciter agent, acſi angelus Dñi in conſpectu eorum eſſet. 9 Et erit in tempore illo, quæram conſumere omnes populos qui congregantur ut veniant contra Jeruſalem. 10 Et effundam ſuper domum David, & ſuper habitatores Jeruſalem, ſpiritum miſericordiæ & miſerationum: & rogabunt à facie mea, eò quòd tranſlati fuerint: & plangent ſuper eum, ſicut qui plangunt ſuper unigenitum: & mœrebunt ſuper eum ſicut ii qui contriſtantur ſuper primogenitum. 11 In tempore illo multiplicabitur planctus in Jeruſalem ſicut planctus Achab filii Amri quem occîdit Hadar Remon filius Tabremon in Ramoth Galaad: & ſicut planctus Joſiæ filii Amon quem occîdit Pharao claudus in campo Magedo. 12 Et plangent habitatores terræ per familias ſingulas, viri ſeorſum, & uxores eorum ſeorſum. Viri familiæ dom⁹ David ſeorſum, & uxores eorum ſeorſum. 13 Viri familiæ domus Nathan ſeorſum, & uxores eorum ſeorſum. Viri familiæ domus Levi ſeorſum, & uxores eorum ſeorſum: viri dom⁹ Simghi ſeorſum, & uxores eorũ ſeorſum. 14 Omnes familiæ quæ reliquæ fuerint per familias, viri ſeorſum, & uxores ſeorſum.

CAP. XIII.

1 IN tempore illo erit doctrina legis patens ſicut ſcaturigo aquarum domui David, & habitatoribus Jeruſalem, & dimittam peccata eorum ſicut mundantur aqua aſperſionis & cinere vaccæ quæ [*oblata*] eſt pro peccato. 2 Et erit in tempore illo, dicit Dñs exercituum, diſperdam nomen idolorum populorum de terra, & non erit ultrà memoria nominis eorum: & etiam pſeudoprophetas, et ſpiritum immundum abolebo de terra.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܘܢܐܡܪܘܢ ܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܒܠܒܗܘܢ܂ ܐܬܚܝܠܘ ܠܢ ܥܡܘܪ̈ܝܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ܂ ܒܡܪܝܐ 5
ܚܝܠܬܢܐ ܐܠܗܗܘܢ܂ * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ܂ ܐܥܒܕ ܠܪ̈ܘܪܒܢܐ ܕܝܗܘܕܐ܂ ܐܝܟ ܓܘܡܪܬܐ 6
ܕܢܘܪܐ ܒܩܝ̈ܣܐ܂ ܘܐܝܟ ܫܠܗܒܝܬܐ ܕܢܘܪܐ ܒܚܫܝܫܐ܂ ܘܢܐܟܠܘܢ ܠܝܡܝܢܐ ܘܠܣܡܠܐ܂
ܠܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܕܚܕܪܝܗܘܢ܂ ܘܬܬܒ ܬܘܒ ܐܘܪܫܠܡ ܒܕܘܟܬܗ̇ ܒܐܘܪܫܠܡ܂
* ܘܢܦܩܘܕ ܡܪܝܐ ܠܡܫܟܢܐ ܕܝܗܘܕܐ ܐܝܟ ܕܡܢ ܩܕܝܡ܂ ܡܛܠ ܕܠܐ ܬܣܓܐ ܬܫܒܘܚܬܐ 7
ܕܒܝܬ ܕܘܝܕ܂ ܘܬܫܒܘܚܬܐ ܕܥܡܘܪ̈ܝܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ܂ ܥܠ ܕܒܝܬ ܝܗܘܕܐ܂ * ܘܒܗ ܒܝܘܡܐ 8
ܗܘ܂ ܢܓܢ ܡܪܝܐ ܥܠ ܥܡܘܪ̈ܝܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ܂ ܘܢܗܘܐ ܡܚܝܠܐ ܕܒܗܘܢ ܒܝܘܡܐ ܗܘ܂ ܐܝܟ
ܕܘܝܕ܂ ܘܒܝܬ ܕܘܝܕ ܐܝܟ ܐܠܗܐ܂ ܐܝܟ ܡܠܐܟܗ ܕܡܪܝܐ ܕܩܕܡܝܗܘܢ܂ * ܘܢܗܘܐ ܒܗ ܒܝܘܡܐ 9
ܗܘ܂ ܐܒܥܐ ܠܡܘܒܕܘ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡ̈ܡܐ ܕܐܬܝܢ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ܂ * ܘܐܫܘܕ ܥܠ ܒܝܬ ܕܘܝܕ 10
ܘܥܠ ܥܡܘܪ̈ܝܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ܂ ܪܘܚܐ ܕܛܝܒܘܬܐ ܘܕܪ̈ܚܡܐ܂ ܘܢܚܘܪܘܢ ܠܘܬܝ ܒܡܢ ܕܕܩܪܘ܂
ܘܢܪܩܕܘܢ ܥܠܘܗܝ ܐܝܟ ܕܡܪܩܕܝܢ ܥܠ ܝܚܝܕܐ܂ ܘܢܬܟܪܝܘܢ ܥܠܘܗܝ ܐܝܟ ܕܡܬܟܪܝܢ ܥܠ
ܒܘܟܪܐ܂ * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ܂ ܢܣܓܐ ܡܪܩܕܐ ܒܐܘܪܫܠܡ܂ ܐܝܟ ܡܪܩܕܐ ܕܒܪ ܐܡܘܢ 11
ܒܦܩܥܬܐ ܕܡܓܕܘ܂ * ܘܬܪܩܘܕ ܐܪܥܐ ܫܪ̈ܒܢ ܫܪ̈ܒܢ ܠܚܘܕܝܗ܂ ܫܪܒܬܐ ܕܒܝܬ ܕܘܝܕ ܠܚܘܕܝܗ܂ 12
ܘܢܫ̈ܝܗܘܢ ܠܚܘܕܝܗ܂ ܫܪܒܬܐ ܕܒܝܬ ܢܬܢ ܠܚܘܕܝܗ܂ ܘܢܫ̈ܝܗܘܢ ܠܚܘܕܝܗ܂ * ܫܪܒܬܐ ܕܒܝܬ ܠܘܝ 13
ܠܚܘܕܝܗ܂ ܘܢܫ̈ܝܗܘܢ ܠܚܘܕܝܗ܂ ܫܪܒܬܐ ܕܒܝܬ ܫܡܥܘܢ ܠܚܘܕܝܗ܂ ܘܢܫ̈ܝܗܘܢ ܠܚܘܕܝܗ܂ * ܘܟܠܗܝܢ 14
ܫܪ̈ܒܬܐ ܕܐܫܬܚܪ̈ܝ܂ ܢܪܩܕܢ ܫܪ̈ܒܢ ܫܪ̈ܒܢ ܠܚܘܕܝܗ܂ ܘܢܫ̈ܝܗܘܢ ܠܚܘܕܝܗ܂

Dicéntque magnates Judæ in corde ſuo; Præ- 5
valuerunt nobis cives Jeruſalem per Dominum
fortiſſimum Deum ſuum. Eodem die ef- 6
ficiam magnates Judæ tanquam carbonē ignis
inter ligna, & quaſi facem ignis inter ſtipulas;
comedéntque dextrorſum & ſiniſtrorſum populos
omnes ſibi circumjacentes: & permanebit
adhuc Jeruſalem in loco ſuo in Jeruſalem;
Viſitabítq; Dominus tabernaculum Judæ, 7
ut antea, ut non ſit amplior gloria domûs Davidis
& gloria civium Jeroſolymæ, quàm Judæ.
Eodémque die proteget Dominus cives 8
Jeroſolymæ, & erit imbecillimus eorum illo
die ſimilis Davidi, & domus Davidis ut Deus,
ut angelus Domini qui adeſt coram ipſis. Et 9
fiet eodem die ut quæram perdere omnes gentes
quæ invadent Jeroſolymam: Super do- 10
mum autem Davidis, & ſuper cives Jeruſalem
effundam ſpiritum clementiæ & misericordiæ:
& reſpicient ad me per eum quem tranſfixerint;
& plangent eum, ut plangi ſolet unigenitus;
& *dolore* frangentur propter eum,
ut frangi ſolet propter primogenitum. Eo die 11
multus erit planctus in Jeruſalem, ſimilis planctui
filii Amonis in valle Mageddo. Luge- 12
bítque terra per ſingulas familias ſeorſim: familia
domûs Davidis ſeorſim, & fœminæ eorum
ſeorſim: familia domûs Nathanis ſeorſim,
& fœminæ eorū ſeorſim: Familia domûs 13
Levi ſeorſim, & fœminæ eorum ſeorſim: familia
domûs Simeonis ſeorſim, & fœminæ
eorum ſeorſim: Omnes familiæ quæ ſuper- 14
ſunt, plangent per ſingulas familias ſeorſim, &
fœminæ eorum ſeorſim.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܓ *

CAP. XIII.

* ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ܂ ܢܗܘܐ ܡܒܘܥܐ ܕܡܬܦܬܚ ܠܒܝܬ ܕܘܝܕ ܘܠܥܡܘܪ̈ܝܗ̇ ܕܐܘܪܫܠܡ܂ 1
ܠܡܪܣܣܘ ܘܠܡܕܟܝܘ܂ * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ܂ ܐܘܒܕ ܫܡܗܐ ܕܦܬܟܪ̈ܐ ܡܢ 2
ܐܪܥܐ܂ ܘܠܐ ܢܬܕܟܪܘܢ܂ ܘܐܥܒܪ ܡܢ ܐܪܥܐ܂ ܢܒܝ̈ܐ ܕܓ̈ܠܐ ܘܪܘܚܐ ܛܢܦܬܐ܂

Eo die erit fons qui aperietur pro domo 1
Davidis & civibus Jeruſalem, in aſperſionem
& emundationem. Eodem die, dicit Domi- 2
nus potentiſſimus, perdam nomen idolorum
de terra, ita ut poſthac nulla ſit eorum memoria:
& auferam de terra prophetas mendaces
& ſpiritus immundos;

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* ويقول روساء الوف يهودا في قلوبهم * سنجد لنا السكان في ايروسليم بالرب الضابط الكل 5
الههم * في ذلك اليوم اصنع روساء الوف يهودا مثل جمر نار في الحطب * ومثل مصباح نار 6
في القصب * وياكلون عن اليمين وعن اليسار جميع الشعوب من حولهم * وتسكن ايروسليم
ايضا في ذاتها * ويخلص الرب مساكن يهودا كما منذ القديم * كيلا يعظم فخر داود * 7
وارتفاع سكان ايروسليم على يهودا * ويكون في ذلك اليوم يستر الرب على سكان ايروسليم * 8
ويكون الضعيف فيهم في ذلك اليوم مثل بيت داود * وبيت داود مثل بيت الله * مثل ملاك
الرب امامهم * ويكون في ذلك اليوم ساطلب لانزع جميع الامم الاتيين الى ايروسليم * 9
* واصب على بيت داود على سكان ايروسليم روح النعمة والرافة * وينظرون الي * من اجل 10
انهم رقصوا * وينوحون عليهم مناحة مثل على وحيد * ويوجعون وجعا مثل على بكر * في 11
ذلك اليوم تعظم المناحة علي ايروسليم مثل مناحة الرمان التي في صحراء المقطوع * وتنوح 12
الارض * كلها قبايل قبايل * القبيلة علي ذاتها * ونساوهم على ذواتهن * قبيلة بيت يهودا على
ذاتها * ونساوهم على ذواتهن * قبيلة بيت ناثان علي ذاتها * ونساوهم علي ذواتهن * قبيلة بيت 13
لاوي علي ذاتها * ونساوهم علي ذواتهن * قبيلة سمعون علي ذاتها * ونساوهم علي ذواتهن * جميع 14
القبايل المتبقيات القبيلة علي ذاتها * ونساوهم علي ذواتهن *

Dicéntque tribuni Judæ in cordibus 5
ſuis; Inveniemus nobis habitantes in Jeruſalem
in omnipotente Domino Deo ipſorum. *Eo die ponam tribunos Judæ ſic* 6
ut carbonem ignis in lignis, & ſicut facem
gattam in arundinibus; devorabúntque
à dextera & à ſiniſtra omnes
undequaque populos: & habitabit adhuc
Jeruſalem in ſemetipſa. *Et libera-* 7
bit Dominus habitacula Judæ, ut olim;
ne magnificetur faſtus Davidis & ſuperbia
civium Jeroſolymæ ſupra Judam.
Et erit eo die, ut protegat Do- 8
minus cives Jeruſalem, & infirmus inter
eos ſit illo die, ut domus Davidis;
domus autem Davidis, ut domus Dei, ut
angelus Domini ante ipſos. *Erit etiam* 9
eo die, ut quæram auferre omnes gentes
venientes in Jeruſalem: *Super do-* 10
mum verò Davidis, ſuper cives Jeruſalem,
effundam ſpiritum gratiæ & clementiæ;
& reſpiciant ad me, eò quòd
ſaltaverint; & lugeant illos quaſi luctu
unigeniti, & afficiantur dolore quaſi pro
primogenito. *Eo die magnus erit plan-* 11
ctus de Jeruſalem, quaſi planctus malogranatorum
quæ ſunt in deſerto, amputatorum.
Et lugebit univerſa terra per 12
ſingulas familias; quælibet familia ſeorſim,
& mulieres eorum ſeorſim: familia
domûs Judæ ſeorſim, & mulieres
eorum ſeorſim: familia domûs Nathanis
ſeorſim, & mulieres eorum ſeorſim:
Familia domûs Levi ſeorſim, & mulie- 13
res eorum ſeorſim: familia Simeonis
ſeorſim, & mulieres eorum ſeorſim: *O-* 14
mnium reliquarum familiarum quælibet
familia ſeorſim, & mulieres eorum
ſeorſim.

* الفصل الثالث عشر *

CAP. XIII.

* في ذلك اليوم يكون كل موضع مفتوحا في بيت داود * ويكون في ذلك اليوم يستاصل 1 2
الرب اسماء الاوثان من الارض * ولا يكون لهم ذكر بعد * والانبياء الكذبة والروح النجس
احرقهم من الارض *

In illo erit omnis locus apertus in domo 1
Davidis. *Et erit in illo die, ut extirpet* 2
Dominus nomina idolorum è terra, neque
maneat eis ampliùs memoria: & prophetas
mendaces ſpiritúmque immundum
è terra comburam.

eum ad dicent & , ultrà quiſpiam prophetaverit cùm , erit Et
3 והיה כי־ינבא איש עוד ואמרו אליו
mendacium quia , vives Non : ejus genitores ejus mater & , ejus pater
אביו ואמו ילדיו לא תחיה כי שקר
ejus mater & , ejus pater eum configent & : Domini nomine in es locutus
דברת בשם יהוה ודקרהו אביהו ואמו
afficientur pudore , illa die in erit Et . *ipſum prophetando in*, ejus genitores
4 ילדיו בהנבאו : והיה ביום ההוא יבשו
non & : *ipſum prophetando in* , ſua viſione à unuſquiſque , prophetæ
הנביאים איש מחזינו בהנבאתו ולא
Non : dicet Et . *mentiendum ad* , *pili* pallio induentur
5 ילבשו אדרת שער למען כחש : ואמר לא
Adam quoniam , *ego humum colens* vir : *ego* propheta
נביא אנכי איש עבד אדמה אנכי כי אדם
plagæ Quid : eum ad dicet Et . *meis pueritiis* à me *fecit acquirere*
6 הקנני מנעורי : ואמר אליו מה המכות
domo ſum percuſſus quibus : dicet & ? tuas manus inter iſtæ
האלה בין ידיך ואמר אשר הכיתי בית
ſuper & , meum paſtorem ſuper te ſuſcita , gladie O . me diligentium
7 מאהבי : חרב עורי על־רעי ועל־
percute : exercituum DOMINUS dixit , meum proximum virum
גבר עמיתי נאם יהוה צבאות הך
meam manum convertam & , *pecus* diſpergentur & , paſtorem
את־הרעה ותפוצין הצאן והשבתי ידי
, DOMINUS dixit , terra omni in erit Et . parvulos ſuper
8 על־הצערים : והיה בכל־הארץ נאם־יהוה
. ea in relinquetur tertia & : *obibunt* , ſuccidentur ea in *duorum os*
פי־שנים בה יכרתו יגועו והשלשית יותר בה :
conflare juxta eos conflabo & , ignem per *partem* tertiam inducam Et
9 והבאתי את־השלשית באש וצרפתים כצרף
invocabit Ipſe . aurum *probare juxta* eos probabo & ; argentum
את־הכסף ובחנתים כבחן את־הזהב הוא יקרא
: ipſe meus Populus , Dixi . eum exaudiam ego & , *meo nomine in*
בשמי ואני אענה אתו אמרתי עמי הוא
. meus Deus DOMINUS , dicet ipſe &
והוא יאמר יהוה אלהי :

CAP. XIV. יד

. *tuo interiore in tuum ſpolium dividetur* & : Domini venit dies Ecce
1 הנה יום־בא ליהוה וחלק שללך בקרבך :
, prælium in Jeruſalaim *ad* gentes omnes congregabo Et
ואספתי את־כל־הגוים אל־ירושלם למלח
[illegible] mulieres & , domus diripientur & , civitas capietur &
ונלכדה העיר ונשסו הבתים והנשים [illegible]
[illegible] reliquum & , captivitatem in civitatis dimidium egredietur Et
ויצא חצי העיר בגולה ויתר העם
præliabitur & , Dominus egredietur Et . urbe ex ſuccidetur non
3 לא יכרת מן־העיר : ויצא יהוה ונלחם
. *conflictus* die in *eum bellare* diem ſecundùm : illas gentes contra
בגוים ההם כיום הלחמו ביום קרב :
qui , olivarum montem ſuper illa die in ejus pedes ſtabunt &
4 ועמדו רגליו ביום־ההוא על־הר הזיתים אשר
olivarum mons ſcindetur & : oriente ab Jeruſalaim *facies ſuper*
על־פני ירושלם מקדם ונבקע הר הזיתים
recedet & : valde grandi valle , *mare ad & orientem ad* ſui dimidio de
מחציו מזרחה וימה גיא גדולה מאד ומש
. meridiem ad ejus medium & , aquilonem ad montis dimidium
חצי ההר צפונה וחציו נגבה :

Verſio VULG. LAT.

3 Et erit, cùm prophetaverit quiſpiam
ultrà, dicent ei pater ejus &
mater ejus, qui genuerunt eum;
Non vives: quia mendacium locutus
es in nomine Domini, &
configent eum pater ejus & mater
ejus, genitores ejus, cùm prophetaverit.
4 Et erit: In die illa
confundentur prophetæ, unuſquiſque
ex viſione ſua cùm prophetaverit:
nec operientur pallio
5 ſaccino, ut mentiantur: Sed dicet;
Non ſum propheta, homo agricola
ego ſum: quoniam Adam
exemplum meum ab adoleſcentia
6 mea. Et dicetur ei; Quid ſunt
plagæ iſtæ in medio manuum tuarum?
Et dicet; His plagatus ſum
in domo eorum, qui diligebant
7 me. Framea, ſuſcitare ſuper paſtorem
meum, & ſuper virum cohærentem
mihi, dicit Dominus
exercituum: percute paſtorem, &
diſpergentur oves: & convertam
8 manum meam ad parvulos. Et
erunt in omni terra, dicit Dominus:
partes duæ in ea diſpergentur,
& deficient; & tertia pars
9 relinquetur in ea. Et ducam tertiam
partem per ignem, & uram
eos ſicut uritur argentum, & probabo
eos ſicut probatur aurum.
Ipſe vocabit nomen meum, &
ego exaudiam eum. Dicam; Populus
meus es: & ipſe dicet; Dominus
Deus meus.

CAP. XIV.

1 Ecce venient dies Domini, &
dividentur ſpolia tua in medio
2 tuî. Et congregabo omnes Gentes
ad Jeruſalem in prælium, &
capietur civitas, & vaſtabuntur
domus, & mulieres violabuntur:
& egredietur media pars civitatis
in captivitatem, & reliquum populi
3 non auferetur ex urbe. Et
egredietur Dominus, & præliabitur
contra Gentes illas, ſicut
4 præliatus eſt in die certaminis. Et
ſtabunt pedes ejus in die illa ſuper
Montem olivarũ, qui eſt contra
Jeruſalem ad Orientem: &
ſcindetur Mons olivarum ex media
parte ſui ad Orientem, & ad
Occidentem, prærupto grandi
valdè; & ſeparabitur medium
montis ad Aquilonem, & mediũ
ejus ad Meridiem.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.
Cum Tranſlatione LATINA.

3 Καὶ ἔσται ἐὰν προφητεύσῃ ἄνθρωπος
ἔτι, καὶ ἐρεῖ πρὸς αὐτὸν ὁ πατὴρ αὐτοῦ,
καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ, οἱ γεννήσαντες αὐτὸν,
(ε) Οὐ ζήσῃ, ὅτι ψευδῆ ἐλάλησας (*) ἐπ'
ὀνόματι κυρίου· καὶ συμποδιοῦσιν αὐτὸν ὁ
πατὴρ αὐτοῦ, καὶ ἡ μήτηρ αὐτοῦ, οἱ γεννήσαντες
αὐτὸν, ἐν τῷ προφητεύειν αὐτόν.
4 Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ καταισχυνθήσονται
οἱ προφῆται, ἕκαστος ἐκ τῆς ὁράσεως
αὐτοῦ, ἐν τῷ προφητεύειν αὐτὸν, καὶ
ἐνδύσονται δέῤῥιν τριχίνην, ἀνθ' ὧν
5 ἐψεύσαντο. Καὶ ἐρεῖ, Οὐκ εἰμὶ προφήτης
ἐγὼ, διότι (ζ) ἄνθρωπος ἐργαζόμενος
τὴν γῆν ἐγώ εἰμι, ὅτι ἄνθρωπος ἐγέννησέ
6 με ἐκ νεότητός μου. Καὶ ἐρῶ πρὸς αὐτὸν,
Τί αἱ πληγαὶ αὗται ἀναμέσον τῶν χειρῶν
σου; καὶ ἐρεῖ, Ἃς ἐπλήγην ἐν τῷ οἴκῳ (η)
7 τῷ ἀγαπητῷ μου. Ῥομφαία ἐξεγέρθητι ἐπὶ
(θ) τοὺς ποιμένας μου, καὶ ἐπὶ ἄνδρα πολίτην
μου, λέγει κύριος παντοκράτωρ, (ι)
πατάξατε τοὺς ποιμένας, καὶ ἐκσπάσατε
8 τὰ πρόβατα· καὶ ἐπάξω τὴν χεῖρά μου ἐπὶ
τοὺς (κ) μικρούς. Καὶ ἔσται ἐν πάσῃ τῇ
γῇ, λέγει κύριος, τὰ δύο μέρη αὐτῆς (λ)
ἐξολοθρευθήσεται, καὶ ἐκλείψει, τὸ δὲ τρίτον
9 ὑπολειφθήσεται ἐν αὐτῇ. Καὶ διάξω
τὸ τρίτον διὰ πυρὸς, καὶ πυρώσω αὐτοὺς,
ὡς πυροῦται τὸ ἀργύριον, καὶ δοκιμῶ
αὐτοὺς, ὡς δοκιμάζεται τὸ χρυσίον. αὐτὸς
ἐπικαλέσεται τὸ ὄνομά μου, (μ) κἀγὼ
ἐπακούσομαι αὐτῷ, καὶ ἐρῶ, Λαός μου οὗτός
ἐστι· καὶ αὐτὸς ἐρεῖ, Κύριος ὁ θεός μου.

MS. A. (ε) ἐν τῷ προφητεύειν αὐτὸν, Οὐ ζήσῃ, ὅτι (*) ἐν ὀνόματι (ζ) ἄνθρωπος * ἐγέννησέν με ἐκ (η) τοῦ ἀγαπητοῦ μου. (θ) τὸν ποιμένα μου, καὶ ἐπ' ἄνδρα πολίτην αὐτοῦ, (ι) πάταξον τὸν ποιμένα, καὶ διασκορπισθήσονται τὰ πρόβατα τῆς ποίμνης· καὶ ἐπάξω (κ) ποιμένας. Καὶ ἔσται ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ, λέξει (λ) ἐξολεθρευθήσεται, (μ) καὶ ἐγὼ

Et erit, ſi prophetaverit homo 3
ultrà; & dicet ad eum pater
ſuus, & mater ſua, qui genuerunt
eum; Non vives: quoniam mendacia
loquutus es in nomine Domini:
& (c) compedient eum
pater ejus, & mater ejus, qui
genuerunt eum, dum ipſe prophetat.
Et erit, in die illa confundentur 4
prophetæ, unuſquiſque
ex viſione ſua, cùm ipſe prophetaverit:
& induentur pelle cilicinâ,
quia mentiti ſunt. Et dicet; 5
Non ſum propheta ego, quia homo
operans terram ego ſum: quia
homo genuit me à juventute mea.
Et dicam ad eum; Quid ſunt 6
plagæ iſtæ in medio manuum tuarum?
Et dicet; Quibus percuſſus
ſum in domo (d) dilecta
mea. (e) Framea, conſurge ſuper 7
(f) paſtores meos, & ſuper virum
(g) civem meum, dicit Dominus
omnipotens: (h) percutite
paſtores, & avellite oves. Et
inducam manum meam ſuper (i)
parvulos. Et erit, (k) in omni 8
terra, dicit Dominus, duæ partes
ejus peribunt, & deficient: &
tertia relinquetur in ea. Et tranſducã 9
tertiam [partem] per ignem:
& uram eos, ſicut uritur argentum:
& probabo eos, ſicut probatur
aurum. Ipſe invocabit nomen
meum: & ego exaudiam
eum: & dicam; Populus meus
iſte eſt: Et ipſe dicet; Dominus
Deus meus.

ΚΕΦ. ιδ'.

1 Ἰδοὺ ἡμέραι ἔρχονται (α) κυρίου, καὶ διαμερισθήσονται
τὰ σκῦλά σου ἐν σοί.
2 Καὶ ἐπισυνάξω πάντα τὰ ἔθνη ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ
εἰς πόλεμον, καὶ ἁλώσεται ἡ πόλις,
καὶ διαρπαγήσονται αἱ οἰκίαι, καὶ αἱ
γυναῖκες μολυνθήσονται, καὶ ἐξελεύσεται τὸ
ἥμισυ τῆς πόλεως ἐν αἰχμαλωσίᾳ, οἱ δὲ
κατάλοιποι τοῦ λαοῦ μου οὐ μὴ (β) ἐξολοθρευθῶσιν
3 ἐκ τῆς πόλεως. Καὶ ἐξελεύσεται
κύριος, καὶ παρατάξεται ἐν τοῖς
ἔθνεσιν ἐκείνοις, καθὼς (γ) ἡμέρα παρατάξεως
4 αὐτοῦ ἐν ἡμέρᾳ πολέμου. Καὶ
στήσονται οἱ πόδες αὐτοῦ ἐν τῇ ἡμέρᾳ
ἐκείνῃ ἐπὶ τὸ ὄρος τῶν (δ) ἐλαιῶν, τὸ κατέναντι
Ἱερουσαλὴμ ἐξ ἀνατολῶν. καὶ σχισθήσεται
τὸ ὄρος τῶν ἐλαιῶν, τὸ ἥμισυ αὐτοῦ
πρὸς ἀνατολὰς (ε) καὶ θάλασσαν, χάος
μέγα σφόδρα· καὶ κλινεῖ τὸ ἥμισυ τοῦ
ὄρους (ζ) πρὸς τὸν Βοῤῥᾶν, καὶ τὸ ἥμισυ αὐτοῦ
πρὸς Νότον.

MS. A. (α) τοῦ κυρίου, (β) ἐξολεθρευθῶσιν (γ) ἡμέραι (δ) ἐλαιῶν, * τὸ ἥμισυ (ε) καὶ τὸ ἥμισυ αὐτοῦ πρὸς θάλασσαν, (ζ) πρὸς Βοῤῥᾶν,

CAP. XIV.

Ecce dies (a) Domini veniunt: 1
& dividentur ſpolia tua in te:
Et congregabo omnes gentes ſuper 2
Hieruſalem ad bellum: & capietur
civitas, & diripientur domus,
& mulieres polluentur, &
egredietur dimidia pars civitatis
in captivitate: reliqui autem populi
mei non peribunt de civitate.
Et egredietur Dominus, & præliabitur 3
contra gentes illas, ſicut
dies commiſſionis ejus in die prælii.
Et ſtabunt pedes ejus in die 4
illa ſuper montem Olivarum, qui
eſt contra Hieruſalem ab Oriente.
Et ſcindetur mons Olivarum: dimidium
ejus ad Orientem, (b)
& mare, voragine magnâ nimis:
& inclinabit dimidium
montis ad Aquilonem, & dimidium
ejus ad Auſtrum.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 ויהי ארי אתנבי גבר עוד ויימרון ליה אבוהי ואמיה ילדוהי לא תתקים ארי שקרא
4 אתנביתא בשמא דיי ויחדון ביה אבוהי ואמיה ילדוהי באתנביותיה : ויהי בעדנא
ההיא יבהתון נביי שקרא גבר מנבואתיה באתנביותיה ולא יתנבון עוד שקר בדיל
5 לאלפא כדיבין : ויימר לא נביא אנא גבר פלח בארעא אנא ארי אנשא אקנינ
6 מזעורי : ויימר ליה מה מחתא האלין דאתאה עלנא הלא בעובדי ידך ויימר יאות
7 לקינא בחובין דרחמנא : חרבא אתגלא על מלכא ועל שלטונא חבריה דכותיה
דדמי ליה אמר יי צבאות קטול ית מלכא ויתבדרון שלטוניא ואתיב ית מחת גבורתי
8 על תניניא : ויהי בכל ארעא אמר יי תרין חולקין דבה ישתיצון יסופון ותלתא
9 ישתאר בה : ואעיל ית תלתא בעקא בכור דאשא ואצרופנון כמא דצרפין ית כספא
ואבחרנון כמא דבחרין ית דהבא הוא יצלי בשמי ואנא אקבל צלותיה אמרית
עמי הוא והוא יימר יי אלהי :

יד

1 הא יומא דעתיד למיתי מן קדם יי ויפלגון בית ישראל נכסי עממיא בגויך ירושלם :
2 ואכניש ית כל עממיא לירושלם לאגחא קרבא ותתכביש קרתא ויתבזון בתיא
ונשיא ישתכבן ויפוק פלגא דקרתא בגלותא ושאר עמא לא יפסק מן קרתא :
3 ויתגלי יי ויגיח קרבא בעממיא האנון כיום אגחותיה קרב על ימא דסוף : ויתגלי
4 בגבורתיה בעדנא ההוא על טור זיתא דעל אפי ירושלם ממדינחא ויתבזע טור זיתיא
מפלגיה למדנחא ולמערבא חילא רבא לחדא ויתזח פלגיה דטורא לצפונא
ופלגותיה לדרומא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et erit ſi prophetaverit aliquis ultrà, dicent ei pater & mater ejus genitores 3
ejus; Non vives, quia mendacium prophetâſti in nomine Dñi: & configent
eum pater ejus & mater ejus genitores ejus, cùm prophetaverit. Eritque 4
in tempore illo, confundentur pſeudoprophetæ quiſq; à prophetia ſua cùm
prophetaverit: & non prophetabunt ultrà mendacium, ut doceant mendacia.
Et dicet, Non ſum ego propheta, vir agricola ego ſum, quia homo docuit 5
me ut eſſem paſtor ab adoleſcentia mea. Et dicetur ei, Quæ ſunt plagæ 6
iſtæ, quæ venerunt ſuper nos? nónne propter opera manuum tuarum?
& dicet, Meritò percuſſi ſumus propter peccata quæ diliximus. Gladie denudare 7
ſuper regem & *principem*, & ſuper ſocium ejus qui eſt ſimilis ei, dicit
Dñs exercituum: Interfice regem & diſpergentur principes: & convertam
plagam potentiæ meæ ſuper ſecundos. Et erit in omni terra, dicit 8
Dñs, Duæ partes quæ in ea ſunt conſumentur & deficient, & tertia pars relinquetur
in ea. Et inducam tertiam partem in tribulationem in caminum 9
ignis, & conflabo eos more eorum qui conflant argentum, & probabo eos
more eorum qui probant aurum: ipſe preces fundet in nomine meo, & ego
ſuſcipiã orationem ejus: dicam, Populus meus eſt: & ipſe dicet, Dñs Deus meus.

CAP. XIV.

Ecce dies venturus à facie Dñi, & divident domus Iſrael ſubſtantias populorum 1
in medio tui Jeruſalem. Et congregabo omnes gentes ad Jeruſalem 2
oppugnandam, & capietur civitas, & vaſtabuntur domus, & cum mulieribus
dormient, & ibit media pars urbis in captivitatem, & reliquus populus
non ſuccidetur ab urbe. Et revelabitur Dñs, & præliabitur contra 3
populos illos, ſicut in die quo præliatus eſt in mari carectoſo. Et revelabitur 4
in fortitudine ſua tempore illo ſuper montem Olivarum, qui eſt è regione
Jeruſalem ab Oriente, & ſcindetur mons Olivarum ex media parte ſui ad
Orientem & ad Occidentem valle magna admodum: & evellet media
pars montis ad Aquilonem, & media pars ejus ad Auſtrum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ܘܐܢ ܬܘܒ ܢܬܢܒܐ ܓܒܪܐ܂ ܢܐܡܪܘܢ ܠܗ ܐܒܘܗܝ ܘܐܡܗ܂ ܠܐ ܬܚܐ܂ ܡܛܠ ܕܕܓܠܘܬܐ 3
ܡܠܠܬ ܒܫܡܗ ܕܡܪܝܐ܂ ܘܢܐܣܪܘܢܗ ܐܒܘܗܝ ܘܐܡܗ ܕܝܠܕܘܗܝ܂ ܟܕ ܡܬܢܒܐ܂ * ܒܗܘ 4
ܝܘܡܐ܂ ܢܒܗܬܘܢ ܢܒܝܐ ܕܓܠܐ ܐܢܫ ܡܢ ܚܙܘܐ ܕܢܒܝܘܬܗ܂ ܘܠܐ ܢܬܟܣܘܢ
ܡܫܟܐ ܕܣܥܪܐ܂ ܡܛܠ ܕܟܕܒܘ܂ * ܘܢܐܡܪ܂ ܠܐ ܗܘܝܬ ܢܒܝܐ܂ ܐܠܐ ܓܒܪܐ ܐܢܐ ܕܦܠܚ 5
ܐܪܥܐ܂ ܘܓܒܪܐ ܐܛܢܢܝ ܡܢ ܛܠܝܘܬܝ܂ * ܘܢܐܡܪܘܢ ܠܗ܂ ܡܢܐ ܐܢܝܢ ܗܠܝܢ 6
ܡܚܘܬܐ ܕܒܝܬ ܐܝܕܝܟ܂ ܘܢܐܡܪ܂ ܗܠܝܢ ܡܚܘܬܐ ܕܐܬܡܚܝܬ ܒܒܝܬ ܪܚܡܝ܂ * ܣܝܦܐ ܐܬܬܥܝܪ ܥܠ 7
ܪܥܝܐ ܕܝܠܝ܂ ܘܥܠ ܓܒܪܐ ܚܒܪܝ܂ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ܂ ܡܚܝ ܠܪܥܝܐ܂ ܘܢܬܒܕܪܘܢ ܥܢܗ܂
ܘܐܗܦܟ ܐܝܕܝ ܥܠ ܙܥܘܪܐ܂ * ܘܢܗܘܐ ܒܟܠܗ ܐܪܥܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ܂ ܬܪܬܝܢ ܡܢܘܬܐ ܕܒܗ 8
ܢܬܦܣܩܢ ܘܢܐܒܕܢ܂ ܘܬܠܝܬܝܬܐ ܬܫܬܚܪ ܒܗ܂ * ܘܐܥܠܝܗ ܠܬܠܝܬܝܬܐ ܕܐܫܬܚܪܬ 9
ܒܢܘܪܐ܂ ܘܐܨܪܘܦ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܕܨܪܝܦ ܟܣܦܐ܂ ܘܐܒܩܐ ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܕܒܩܐ ܕܗܒܐ܂ ܗܘ
ܢܩܪܐ ܒܫܡܝ܂ ܘܐܢܐ ܐܥܢܝܘܗܝ܂ ܘܐܡܪ܂ ܕܥܡܝ ܗܘ܂ ܘܗܘ ܢܐܡܪ܂ ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ܂

* Ut ſiquis deinceps prophetet, dicant ei pater 3
ac mater ipſius, Ne vivas, quandoquidem mendacium locutus es in nomine Dñi: & vincient
eum pater ac mater ipſius qui genuerunt eum,
cùm prophetaverit. Eo die pudefient falſi pro- 4
phetæ quiſq; à viſione prophetiæ ſuæ, & non
involvent ſe pellibus villoſis; eò quòd mentiti
ſint: Sed dicat, Non ſum propheta, ſed homo 5
ſum terræ cultor, zelum autem mihi movit homo quidam à pueritia mea. Quòd ſi dixerint 6
ei, Quid ſibi vulnera iſta quæ ſunt in manibus
tuis? dicat, Hæc ſunt vulnera quibus ſauciatus
ſum in domo amantium me. Gladie, evigila 7
contra paſtoré meum, & contra virum amicum meum, dicit Dñs potentiſſimus: percute
paſtoré, ut diſſipetur grex ejus: reducámque
manum meam contra ſuperiores. Erítq; id in 8
tota terra, dicit Dominus: adeò ut duæ partes
quæ ſunt in ea, conſumantur ac pereant; &
tertia pars ſuperſit in ea: Et hanc tertiam par- 9
tem quæ ſupererit, inducam in ignem, & conflabo eos quemadmodum conflatur argentum,
& probabo eos quemadmodum probatur aurum. Ipſe invocabit nomen meum, & ego exaudiam eum: dicámque, Hic eſt populus meus;
& ipſe dicet, Dominus eſt Deus meus.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܝܕ *

1 * ܗܐ ܝܘܡܬܐ ܕܡܪܝܐ ܐܬܝܐ܂ ܘܢܬܦܠܓܘܢ ܥܕܘܝܟܝ ܒܓܘܟܝ܂ * ܘܐܟܢܫ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ 2
ܠܐܘܪܫܠܡ ܠܩܪܒܐ܂ ܘܬܬܐܚܕ ܡܕܝܢܬܐ܂ ܘܢܬܒܙܙܘܢ ܒܬܐ܂ ܘܢܫܐ ܢܬܛܢܦܢ܂ ܘܢܦܘܩ
ܦܠܓܗ ܕܡܕܝܢܬܐ ܒܫܒܝܐ܂ ܘܦܠܓܗ ܕܥܡܐ ܠܐ ܢܐܒܕ ܡܢ ܡܕܝܢܬܐ܂ * ܘܢܦܘܩ 3
ܡܪܝܐ ܘܢܬܟܬܫ ܥܡ ܥܡܡܐ ܗܢܘܢ܂ ܐܝܟ ܝܘܡܐ ܕܐܬܟܬܫ ܒܝܘܡܐ ܕܩܪܒܐ܂ * ܘܢܩܘܡܢ 4
ܪ̈ܓܠܘܗܝ ܥܠ ܛܘܪܐ ܕܙܝܬܐ܂ ܕܠܘܩܒܠ ܐܘܪܫܠܡ ܡܢ ܡܕܢܚܗ܂ ܘܢܬܦܠܓ ܛܘܪܐ
ܕܙܝܬܐ܂ ܦܠܓܗ ܠܡܕܢܚܐ܂ ܘܦܠܓܗ ܠܡܥܪܒܐ܂ ܘܢܗܘܐ ܒܗ ܢܚܠܐ ܪܒܐ ܛܒ܂
ܘܢܫܬܒܩ ܦܠܓܗ ܕܛܘܪܐ ܠܓܪܒܝܐ܂ ܘܦܠܓܗ ܠܬܝܡܢܐ܂

CAP. XIV.

* Ecce dies Domini venit, & ſpolia tua in 1
medio tui dividentur. Congregabo enim 2
omnes gentes contra Jeruſalem ad bellum, &
capietur urbs, diripientur domus, fœminæ ſtuprabuntur & egredietur media pars urbis in
captivitatem, media verò pars populi non peribit ab urbe. Et procedens Dominus pugna- 3
bit contra gentes illas, ut die quâ pugnavit in die belli. Et ſtabunt pedes ejus ſuper 4
montem Olearum qui eſt è regione Jeruſalem
ad plagam ipſius Orientalem, & ſcindetur
mons Olearum, media pars ejus ad Orientem, & media pars ad Occidentem; ita ut
fiat in eo vallis perquam magna, manente mediâ parte montis ad Aquilonem, et mediâ
parte ad Auſtrum.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ويكون ان يتنبا انسان ايضا * ويقول له ابوه وامه اللذان ولداه * لا تعش لانك تكلمت 3
كذبا باسم الرب * ويوثقاه ابوه وامه اللذان ولداه عند ما يتنبي * ويكون في ذلك اليوم 4
يخزي الانبياء كل واحد من رؤياه عند ما يتنبي * ويلبسون جلدا شعريا من اجل انهم
كذبوا * ويقول لست انا نبيا * من اجل ان انسانا ولدني منذ صباي * واقول له ما 5 6
هذه الضربات وسط يديك * فيقول هذه التي ضربت بها في بيتي الحبيب * استيقظ ايها 7
السيف علي راعيّ وعلي رجل بلدي يقول الرب الضابط الكل * اضرب الراعي فتتفرق
الغنم * واجلب يدي علي الرعاة * ويكون في كل الارض يقول الرب الجزوان يستاصلان 8
ويفنيان * والثالث يبقي فيها * فادخل الثالث في النار * واحميهم كما تحمي الفضة * 9
وامتحنهم كما يمتحن الذهب * وهو يدعوا اسمي * وانا اسمعه * واقول هذا هو شعبي * وهو
يقول * الرب الهي *

* Et erit ut ſiquis adhuc prophetet, dicant 3
ei pater ac mater ipſius, qui genuerunt
ipſum; Ne vivas, quia falsò locutus es
in nomine Domini: imò vinculis addicant eum pater ac mater ipſius, qui genuerunt ipſum, cùm prophetaverit. E- 4
rit etiam eo die, ut pudefiat quiſque prophetarum à viſione ſua, cùm prophetaverit; & induantur pelle villoſâ, eò quòd
mentiti ſint: Dicatque, Non ſum ego 5
propheta; quia homo genuit me ab adoleſcentia mea. Et dicam illi, Quid ſunt 6
hæ plagæ in medio manuum tuarum?
Dicétque, Hæ ſunt quibus vapulavi in
domo mea dilecta. Expergiſcere O gla- 7
die contra paſtorem meum, & contra virum concivem meum, dicit Dominus omnipotens: percutiam paſtorem, & diſpergentur oves: & adducam manum
meam ſuper paſtores, & erit in tota 8
terra, dicit Dominus, ut duabus partibus
exciſis perditiſque, tertia remaneat in
illa: Et hanc tertiam immittam in i- 9
gnem, ſuccendámque eos quemadmodum
ſuccenditur argentum, & probem illos
quemadmodum probatur aurum: ipſa
invocet nomen meum, & ego exaudiam illam; dicámque, Hic eſt populus meus; & ipſe dicat, Dominus eſt
Deus meus.

* الفصل الرابع عشر *

1 * ها ايام الرب تاتي * ويقسم غنائمك فيك * واجمع جميع الامم الي اورشليم للحرب * 2
وتسلب المدينة * وتنهب المنازل * وتنجس النساء * ويخرج نصف المدينة في السبي * والمتبقون
من شعبي لا يستاصلون من المدينة * ويخرج الرب ويجاهد في اوليك الامم * كيوم 3
مصافة في يوم الحرب * وتقف قدماه في ذلك اليوم * علي جبل الزيتون تجاه اورشليم 4
من المشارق * وينشق جبل الزيتون * نصفه الي المشارق ونصفه الي البحر * فضاء عظيم جدا *
ويميل نصف الجبل الي الجربياء ونصفه الي الجنوب *

CAP. XIV.

* Ecce dies Domini venturi ſunt, qui- 1
bus dividentur ſpolia tua in te: Et con- 2
gregabo omnes gentes in Jeruſalem ad
bellum, & ſpoliabitur urbs, & diripientur habitationes, & polluentur mulieres; egredietur dimidia pars urbis in captivitatem, qui autem reſidui manſerint
ex populo meo, non evellentur ex urbe.
Nam egredietur Dominus & pugnabit in 3
illas gentes, ut die inſtructionis aciei in
die belli. Et ſtabunt pedes ejus in illa 4
die ſuper montem Olivarum contra Jeruſalem ab Oriente, & ſcindetur mons Olivarum, dimidia pars ejus ad Orientem,
& dimidia pars ad Mare, ſpatio valdè
amplo; vergétque media pars montis ad
Aquilonem, & media pars ad Auſtrum.

זכריה : יד

montium vallis pertinget quia , montium vallem fugietis Et
5 וְנַסְתֶּם גֵּיא־הָרַי כִּי־יַגִּיעַ גֵּיא־הָרִים
terræmotus *faciebus* à fugiſtis quemadmodum fugietis Et .Aſal ad
אֶל־אָצַל וְנַסְתֶּם כַּאֲשֶׁר נַסְתֶּם מִפְּנֵי הָרַעַשׁ
DOMINUS veniet & : Jehudah regis Huzziah diebus in
בִּימֵי עֻזִּיָּה מֶלֶךְ־יְהוּדָה וּבָא יְהוָה
, illa die in , erit Et .*tecum* ſancti omnes ,meus Deus
6 אֱלֹהַי כָּל־קְדֹשִׁים עִמָּךְ׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא
, unus dies erit Et .*coagulationis &*,*pretioſitatum* lux erit non
7 לֹא־יִהְיֶה אוֹר יְקָרוֹת יְקִפָּאוֹן׃ וְהָיָה יוֹם־אֶחָד
erit ſed : nox neque dies non , DOMINO *erit* notus ipſe
הוּא יִוָּדַע לַיהוָה לֹא־יוֹם וְלֹא־לָיְלָה וְהָיָה
egredientur , illa die in , erit Et .lux erit *veſperæ* tempore in
8 לְעֵת־עֶרֶב יִהְיֶה־אוֹר׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא יֵצְאוּ
, orientale mare ad earum medium;Jeruſalaim de vivæ aquæ
מַיִם־חַיִּים מִירוּשָׁלַם חֶצְיָם אֶל־הַיָּם הַקַּדְמוֹנִי
.erit hyeme in & æſtate in:noviſſimum mare ad earum medium &
וְחֶצְיָם אֶל־הַיָּם הָאַחֲרוֹן בַּקַּיִץ וּבָחֹרֶף יִהְיֶה׃
die In .terram omnem ſuper *regem in* DOMINUS erit Et
9 וְהָיָה יְהוָה לְמֶלֶךְ עַל־כָּל־הָאָרֶץ בַּיּוֹם
.unum ejus nomen & , unus DOMINUS erit illa
הַהוּא יִהְיֶה יְהוָה אֶחָד וּשְׁמוֹ אֶחָד׃
Rimmon ad Ghebah à planities veluti terra omnis *Circundabitur*
10 יִסּוֹב כָּל־הָאָרֶץ כָּעֲרָבָה מִגֶּבַע לְרִמּוֹן
ſe ſub habitabitur & , exaltabitur & : Jeruſalaim auſtrum ad
נֶגֶב יְרוּשָׁלַם וְרָאֲמָה וְיָשְׁבָה תַחְתֶּיהָ
ad uſque , prioris portæ locum ad uſque Binjamin porta à
לְמִשַּׁעַר בִּנְיָמִן עַד־מְקוֹם שַׁעַר הָרִאשׁוֹן עַד־
.regia torcularia ad uſque Chananel turre à & , angulorum portam
שַׁעַר הַפִּנִּים וּמִגְדַּל חֲנַנְאֵל עַד יִקְבֵי הַמֶּלֶךְ׃
habitabitur & : amplius erit non *anathema* & ,ea in habitabunt Et
11 וְיָשְׁבוּ בָהּ וְחֵרֶם לֹא יִהְיֶה־עוֹד וְיָשְׁבָה
qua , plaga erit hæc Et .*fiducia in* Jeruſalaim
12 יְרוּשָׁלַם לָבֶטַח׃ וְזֹאת תִּהְיֶה הַמַּגֵּפָה אֲשֶׁר
militaverunt qui , populos omnes DOMINUS percutiet
יִגֹּף יְהוָה אֶת־כָּל־הָעַמִּים אֲשֶׁר צָבְאוּ
ſuper *ſtans* ipſe & , ejus *carnem tabefacere* : Jeruſalaim adverſus
עַל־יְרוּשָׁלָם הָמֵק בְּשָׂרוֹ וְהוּא עֹמֵד עַל־
ejus lingua & ,ſuis foraminibus in liquefient ejus oculi & , ſuos pedes
רַגְלָיו וְעֵינָיו תִּמַּקְנָה בְחֹרֵיהֶן וּלְשׁוֹנוֹ
contritio erit , illa die in , erit Et .eorum ore in liqueſcet
13 תִּמַּק בְּפִיהֶם׃ וְהָיָה בַּיּוֹם הַהוּא תִּהְיֶה מְהוּמַת־
manum unuſquiſque *apprehendent* Et : eis in magna DOMINI
יְהוָה רַבָּה בָּהֶם וְהֶחֱזִיקוּ אִישׁ יַד
etiam Et .ſui *ſodalis* manum ſuper ejus manus *aſcendet* & , ſui *ſocii*
14 רֵעֵהוּ וְעָלְתָה יָדוֹ עַל־יַד רֵעֵהוּ׃ וְגַם־
omnium *facultas colligetur* & : Jeruſalaim in pugnabit Jehudah
יְהוּדָה תִּלָּחֵם בִּירוּשָׁלָם וְאֻסַּף חֵיל כָּל־
multitudine in veſtes & , argentum & , aurum , *circum* gentium
הַגּוֹיִם סָבִיב זָהָב וָכֶסֶף וּבְגָדִים לָרֹב
, *aſini &* , *cameli* , *muli* , *equi* plaga erit ſic Et .valde
15 מְאֹד׃ וְכֵן תִּהְיֶה מַגֵּפַת הַסּוּס הַפֶּרֶד הַגָּמָל וְהַחֲמוֹר
plaga ſicut , illis caſtris in *erit quod animalis omnis &*
וְכָל־הַבְּהֵמָה אֲשֶׁר יִהְיֶה בַּמַּחֲנוֹת הָהֵמָּה כַּמַּגֵּפָה
venientibus gentibus univerſis de reſiduum omne , erit Et .hæc
16 הַזֹּאת׃ וְהָיָה כָּל־הַנּוֹתָר מִכָּל־הַגּוֹיִם הַבָּאִים
ſe incurvandum ad annum in *anni ſufficientia* à aſcendent & : Jeruſalaim contra
עַל־יְרוּשָׁלָם וְעָלוּ מִדֵּי שָׁנָה בְשָׁנָה לְהִשְׁתַּחֲוֹת
feſtivitatem celebrandum ad &,exercituum DOMINO *regi*
לְמֶלֶךְ יְהוָה צְבָאוֹת וְלָחֹג אֶת־חַג
.tabernaculorum
הַסֻּכּוֹת׃

Verſio VULG. LAT.

5 Et fugietis ad vallem montium
eorum, quoniam conjungetur vallis
montiũ uſque ad proximũ : &
fugietis ſicut fugiſtis à facie terræmotûs
in diebus Oziæ regis Juda: & veniet Dominus Deus meꝰ,
6 omnéſque Sancti cum eo. Et erit
in die illa : Non erit lux, ſed frigus
7 & gelu. Et erit dies una, quæ
nota eſt Domino, non dies neque nox : & in tempore veſperi
8 erit lux. Et erit in die illa : Exibunt aquæ vivæ de Jeruſalem :
medium earum ad mare Orientale, & medium earum ad mare noviſſimum : in æſtate & in hyeme
9 erunt. Et erit Dominus Rex ſuper omnem terram : in die illa
erit Dominus unus, & erit nomen
10 ejus unum. Et revertetur
omnis terra uſque ad deſertum,
de colle Remmon ad Auſtrum Jeruſalem : & exaltabitur, & habitabit in loco ſuo, à porta Benjamin uſque ad locum portæ prioris, & uſque ad portam angulorum : & à turre Hananeel uſque
11 ad torcularia regis. Et habitabunt in ea, & anathema non erit
amplius : ſed ſedebit Jeruſalem
12 ſecura. Et hæc erit plaga, quâ
percutiet Dominus omnes Gentes, quæ pugnaverunt adverſùs
Jeruſalem : tabeſcet caro uniuſcujuſque ſtantis ſuper pedes ſuos,
& oculi ejus contabeſcent in foraminibus ſuis, & lingua eorum
13 contabeſcet in ore ſuo. In die illa erit tumultus Domini magnus
in eis : & apprehendet vir manum proximi ſui, & conſeretur
manus ejus ſuper manum proximi
14 ſui. Sed & Judas pugnabit
adverſùs Jeruſalem : & congregabuntur divitiæ omnium Gentium in circuitu, aurum, & argentum,
15 & veſtes multæ ſatis. Et ſic
erit ruina equi, & muli, & cameli, & aſini, & omnium jumentorum, quæ fuerint in caſtris illis,
16 ſicut ruina hæc. Et omnes qui
reliqui fuerint de univerſis Gentibus, quæ venerunt contra Jeruſalem, aſcendent ab anno in annum, ut adorent Regem, Dominum exercituum, & celebrent feſtivitatem tabernaculorum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

5 Καὶ (η) φραχθήσεται ἡ φάραγξ τῶν ὀρέων
μου, ϗ ἐγκολληθήσεται φάραγξ (θ) ὀρέων
ἕως Ἰασὸδ, ϗ ἐμφραχθήσεται καθὼς ἐνεφράγη
ἐν ταῖς ἡμέραις τοῦ (ι) συσσεισμοῦ,
ἐν ἡμέραις Ὀζίου βασιλέως Ἰούδα. ϗ ἥξει
κύριος ὁ θεός μου, ϗ πάντες οἱ ἅγιοι μετ'
6 αὐτοῦ. (κ) Καὶ ἔσται ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ οὐκ
7 ἔσται φῶς, ϗ ψύχη ϗ πάγος ἔσται μίαν
ἡμέραν, ϗ ἡ ἡμέρα ἐκείνη γνωστὴ τῷ κυρίῳ,
ϗ οὐχ ἡμέρα, ϗ οὐ νὺξ, (λ) ϗ πρὸς ἑσπέραν
8 ἔσται φῶς. Καὶ ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἐξελεύσεται
ὕδωρ ζῶν ἐξ Ἱερουσαλὴμ, τὸ ἥμισυ
αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν τὴν πρώτην, ϗ τὸ
ἥμισυ αὐτοῦ εἰς τὴν θάλασσαν τὴν ἐσχάτην· ϗ
9 ἐν θέρει ϗ ἐν (μ) ἔαρι ἔσται οὕτως. Καὶ ἔσται
κύριος εἰς βασιλέα ἐπὶ πᾶσαν τὴν γῆν. ἐν
τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται κύριος εἷς, ϗ τὸ
10 ὄνομα αὐτοῦ ἕν, (ν) Κυκλῶν πᾶσαν τὴν γῆν,
ϗ τὴν ἔρημον ἀπὸ (ξ) Γαβὲ ἕως Ῥεμμὼν
κατὰ Νότον Ἱερουσαλήμ. Ῥαμὰ δὲ ἐπὶ τόπου
μενεῖ· ἀπὸ τῆς πύλης Βενιαμὶν (ο) ἕως τοῦ
τόπου τῆς πύλης τῆς πρώτης, ἕως τῆς πύλης
τῶν γωνιῶν, ϗ ἕως τοῦ πύργου Ἀναμεὴλ,
11 (π) ἕως τῶν ὑπολινίων τοῦ βασιλέως (ρ)
Κατοικήσουσιν ἐν αὐτῇ, ϗ (σ) ἀνάθεμα
οὐκ ἔσται ἔτι, ϗ κατοικήσει Ἱερουσαλὴμ
12 πεποιθότως. Καὶ αὕτη ἔσται ἡ πτῶσις ἣν
κόψει κύριος πάντας τοὺς λαοὺς, ὅσοι
ἐπεστράτευσαν ἐπὶ Ἱερουσαλήμ· τακήσονται
αἱ σάρκες αὐτῶν, ἑστηκότων (τ) ἐπὶ τοὺς
πόδας αὐτῶν, ϗ οἱ ὀφθαλμοὶ αὐτῶν ῥυήσονται
(υ) ἐκ τῶν ὀπῶν αὐτῶν, ϗ ἡ γλῶσσα αὐτῶν
13 τακήσεται ἐν τῷ στόματι αὐτῶν· Καὶ ἔσται
ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔκστασις κυρίου (φ) μεγάλη
ἐπ' αὐτούς· ϗ (ᵗ) ἐπιλήψονται ἕκαστος
τῆς χειρὸς τοῦ πλησίον αὐτοῦ, ϗ συμπλακήσεται
ἡ χεὶρ αὐτοῦ (χ) πρὸς τὴν χεῖρα τοῦ
14 πλησίον αὐτοῦ. Καὶ (ψ) Ἰούδας παρατάξεται ἐν
Ἱερουσαλὴμ, ϗ συνάξει τὴν ἰσχὺν πάντων
τῶν λαῶν κυκλόθεν, χρυσίον ϗ ἀργύριον
15 ϗ ἱματισμὸν εἰς πλῆθος σφόδρα. (ω) Καὶ
αὕτη ἔσται ἡ πτῶσις τῶν ἵππων, ϗ τῶν
ἡμιόνων, ϗ τῶν καμήλων, ϗ τῶν ὄνων,
ϗ πάντων τῶν κτηνῶν τῶν ὄντων ἐν ταῖς
παρεμβολαῖς ἐκείναις, κατὰ τὴν πτῶσιν
16 ταύτην. Καὶ ἔσται, ὅσοι (α) ἐὰν καταλειφθῶσιν
ἐκ πάντων τῶν ἐθνῶν τῶν ἐλθόντων
ἐπὶ Ἱερουσαλὴμ, ϗ ἀναβήσονται
κατ' ἐνιαυτὸν, τοῦ προσκυνῆσαι τῷ βασιλεῖ
κυρίῳ παντοκράτορι, ϗ τοῦ (β) ἑορτάσαι
τὴν ἑορτὴν τῆς σκηνοπηγίας.

Et (c) obturabitur vallis montium meorum : & adjungetur vallis montium uſque (d) Jaſod, & replebitur, ſicut repleta eſt (e) in diebus terræmotûs, in diebus Oziæ regis Juda. Et (f) veniet Dominus Deus meus, & omnes Sancti cum eo. 6 *Et erit in illa die non erit lux ; (g) & frigus, & gelu* 7 *Erit unâ die : & dies illa nota Domino : & non dies, neque nox : & ad veſperam erit lux.* 8 *Et in die illa egredietur aqua vivens de Hieruſalem, dimidium ejus ad mare primum, & dimidium ejus ad mare noviſſimum: et in æſtate, & in vere erit ſic.* 9 *Et erit Dominus in regem ſuper omnem terram. In die illa erit Dominus unus, & nomen ejus unum,* 10 *Circumiens omnem terram, & deſertum à Gabee uſque Remmon ad Auſtrum Hieruſalem. Rhama verò in loco permanebit : à porta Benjamin uſque ad locum portæ primæ, uſque ad portam angulorum ; & uſque ad turrim (b) Anameel, uſque ad torcularia regis* 11 *Habitabunt in ea : & anathema ultrà non erit : & habitabit Hieruſalem confidenter.* 12 *Et hæc erit ruina, quâ percutiet Dominus omnes populos, quicunque militaverunt contra Hieruſalem. Tabeſcent carnes eorum, ſtantium ſuper pedes ſuos : & oculi eorum defluent de foraminibus ſuis : & lingua eorum tabeſcet in ore eorum.* 13 *Et erit in die illa ſtupor Domini magnus ſuper eos, et apprehendent unuſquiſque manum proximi ſui* et complicabitur manus ejus manui proximi ſui. 14 *Et Judas præparabitur in Hieruſalem : et congregabit robur omniũ populorum per circuitum, aurum, et argentũ, et veſtes in multitudine* 15 *nimis. Et hæc erit ruina equorum, et mulorum, et camelorum, et aſinorum, et omnium jumentorum, quæ fuerint in caſtris illis juxta* 16 *ruinam hanc. Et erit, quicunque relicti fuerint de cunctis gentibus, quæ venerint contra Hieruſalem; et aſcendent per annos ſingulos, ut adorent regem Dominum omnipotentem, et celebrent feſtivitatem tabernaculorum.*

MS. A. (η) ἐμφραχθήσεται φάραγξ ὀρέων (θ) ὀρέων ἕως Ἀσαὴλ, καθὼς (ι) σεισμοῦ, (κ) Ἐν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ οὐκ ἔσται φῶς, ϗ ψῦχος ϗ πάγος Ἔσται μιᾷ ἡμέρᾳ, (λ) πρὸς ἑσπέραν (μ) * ἀέρι (ν) Κυκλοῦν (ξ) Γαβεὲ (ο) ἕως τῆς πύλης (π) ϗ ἕως τῶν ὑπολινίων (ρ) Κατοικοῦσιν (σ) οὐκ ἔσται ἀνάθεμα ἔτι, (τ) αὐτῶν ἐπὶ (υ) ἀπὸ (φ) ἐπ' αὐτοὺς μεγάλη (ᵗ) ἐπιλήμψεται (χ) πρὸς χεῖρα (ψ) ὁ Ἰούδας (ω) Αὕτη (α) ἂν καταλημφθῶσιν (β) ἑορτάζειν

תרגם יונתן

Targum JONATHAN.

5 ויסתתים חילא דטוריא ארי ימטי חילא דטוריא לאצל ותערקון כמא דערקתון
מן קדם זיעא דהוה בימי עזיה מלך שבטא דבית יהודה ויתגלי יי אלהי וכל קדישוהי
6 עמיה : ויהי בעדנא ההיא לא יהי נהורא אלהין עדי וגליד : ויהי יומא חד הוא 7
8 ידיע קדם יי לא כנהור יימם ולא כקבל לילי ויהי לעדן רמשא יהי נהורא : ויהי
בעדנא ההיא יפקון מי מבוע מירושלם פלגיהון לימא מדנחא ופלגהון לימא
9 מערבאה בקיטא ובסתוא יהון נפקין : ותתגלי מלכותא דיי על כל יתבי ארעא בעדנא
10 ההיא יפלחון קדם יי כתף חד ארי שמיה יציב בעלמא וליתבר מניה : יקפא כל
ארעא כמישרא מגבע לרמון דרום ירושלם ותתרבי ותתב באתריה למתרע שבטא
11 בנימן עד אתר תרע קדמאה עד תרע זויתא ומגדל פקוס עד שיחי מלכא : ויתבון
12 בה קטלא לא יהי עוד ותיתב ירושלם לרוחצן : ודא תהי מחתא דימחי יי ית כל
עממיא דמתכנשין ואתן על ירושלם יתמסי בסריה והוא קאם על רגלוהי ועינוהי
13 יתמסין בגלגלהון ולישנהון יתמסי בפומהון : ויהי בעדנא ההיא יהי שגוש קטלא
14 קדם יי סגי בהון ויתקפון גבר ביד חבריה ותתלש ידיה עם ידא דחבריה : ואף
דבית יהודה ייתונון עממיא כד אניסין לאגחא קרבא בירושלם ויתכנשון נכסי
15 חיל כל עממיא סחור סחור דהבא וכספא ולבושין סגי לחדא : וכן תהי מחת סוסיא
16 כודניא גמלא וחמרא וכל בעירא דיהי במשריתא האנון כמחתא הדא : ויהי כל
דישתאר מכל עממיא דמתכנשין ואתן על ירושלם יסקון בזמן שנא בשנא למסגיד
קדם מלך עלמיא יי צבאות ולמחג ית חגא דמטליא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et obturabitur vallis montium, quia pertinget vallis montium ad Aſal: fugietiſque
ſicut fugiſtis à facie terræmotus qui fuit in diebus Oziæ regis tribus
domus Juda, & revelabitur Dñs Deus meus, & omnes ſancti ejus cum eo. 6
Et fiet in tempore illo, non erit lux, ſed præda & gelu. Eritq; dies una quæ, 7
nota eſt coram Dño, non ſicut lux diei, nec ſicut tenebræ noctis : verùm fiet
ut in tempore veſpertino ſit lux. Et erit in tempore illo, egredientur aquæ 8
ſcaturiginis de Jeruſalem ; medium earum ad mare Orientale, & medium
earum ad mare Occidentale : in æſtate, & in hyeme erunt promanantes. Et 9
revelabitur regnum Dñi ſuper omnes habitatores terræ : in tempore illo ſervient
coram Dño humero uno, quia nomen ejus verum eſt in æternum, nec
eſt præter illud. Et circundabitur omnis terra quaſi valle à Gabaa uſque ad 10
Remon ad Auſtrũ Jeruſalẽ, & magnificabitur & inhabitabitur in loco ſuo,
à porta tribꝰ Benjamin, uſq; ad locum portæ prioris & uſq; ad portam angulorum,
& à turre Peches uſq; ad torcularia regis. Et habitabunt in ea, nec 11
occiſio erit amplius: ſed ſedebit Jeruſalem confidenter. Et hæc erit percuſſio 12
qua percutiet Dñs omnes populos qui congregantur & veniunt contra Jeruſalem
: tabeſcet caro ejus ipſo ſtante ſuper pedes ſuos, & oculi ejus tabeſcent
in orbibꝰ ſuis ; & lingua eorum tabeſcet in ore ipſorum. Eritq; in tempore 13
illo, erit conturbatio ſtragis coram Dño magna in eis, & apprehendet unuſquiſq;
manum proximi ſui, & evelletur manus ejus cum manu proximi ſui.
Et etiam viros domus Juda adducent populi quaſi violenter, ut oppugnent 14
Jeruſalem : & congregabuntur ſubſtantiæ *roboris* omnium populorum in circuitu
, aurum & argentum , & veſtes multæ nimis. Et ſic fiet percuſſio 15
equorum, mulorum, camelorum, & aſinorum, omnium deniq; jumentorum
quæ fuerint in caſtris illis, ſicut percuſſio hæc. Et erit, omnes qui remanſerint 16
ex omnibus populis qui congregati ſunt & veniunt contra Jeruſalem
aſcendent in tempore ab anno in annum, ut adorent coram rege ſeculorum
Dño exercituum, & celebrent feſtivitatem tabernaculorum.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

5 * ܘܬܥܪܩܘܢ ܠܚܝܠܐ ܕܛܘܪܐ. ܡܛܠ ܕܢܕܒܩ ܢܚܠܘܗܝ ܕܛܘܪܐ. ܠܐܘܠܨܢܐ. ܘܬܥܪܩܘܢ
ܐܝܟ ܕܥܪܩܬܘܢ ܡܢ ܩܕܡ ܙܘܥܐ ܕܗܘܐ ܒܝܘܡܬܗ ܕܥܘܙܝܐ ܡܠܟܐ ܕܝܗܘܕܐ. ܘܢܐܬܐ
ܡܪܝܐ ܐܠܗܝ. ܘܟܠܗܘܢ ܩܕܝܫܘܗܝ ܥܡܗ. * ܒܗܘ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܠܐ ܢܗܘܐ ܢܘܗܪܐ. 6
ܐܠܐ ܩܘܪܫܐ ܘܓܠܝܕܐ. * ܘܢܗܘܐ ܝܘܡܐ ܚܕ. ܘܝܘܡܐ ܗܘ ܝܕܝܥ ܠܡܪܝܐ. ܠܐ ܠܠܝܐ. 7
ܘܠܐ ܐܝܡܡܐ. ܘܠܥܕܢ ܪܡܫܐ. ܢܗܘܐ ܢܘܗܪܐ. * ܒܗܘ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܦܩܘܢ ܡܝܐ ܚܝܐ 8
ܡܢ ܐܘܪܫܠܡ. ܦܠܓܗܘܢ ܠܝܡܐ ܡܕܢܚܝܐ. ܘܦܠܓܗܘܢ ܠܝܡܐ ܡܥܪܒܝܐ.
ܒܩܝܛܐ ܘܒܣܬܘܐ. * ܘܢܗܘܐ ܡܪܝܐ ܡܠܟܐ ܥܠ ܟܠܗ ܐܪܥܐ. ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܗܘܐ ܡܪܝܐ 9
ܚܕ. ܘܫܡܗ ܚܕ. * ܘܢܚܕܪܝܘܗ̇ ܠܟܠܗ̇ ܐܪܥܐ. ܐܝܟ ܦܩܥܬܐ. ܡܢ ܓܒܥ. ܘܥܕܡܐ 10
ܠܪܡܘܢ ܕܒܬܝܡܢܐ ܕܐܘܪܫܠܡ. ܘܬܬܪܝܡ ܘܬܬܒ. ܒܕܘܟܬܗ̇. ܡܢ ܬܪܥܐ ܕܒܢܝܡܝܢ.
ܘܥܕܡܐ ܠܐܬܪܐ ܕܬܪܥܐ ܩܕܡܝܐ. ܘܥܕܡܐ ܠܬܪܥܐ ܕܙܘܝܬܐ. ܘܡܢ ܡܓܕܠܐ ܕܚܢܢܐܝܠ.
ܘܥܕܡܐ ܠܡܥܨܪܬܐ ܕܡܠܟܐ. * ܘܢܬܒܘܢ ܒܗ̇. ܘܬܘܒ ܚܪܡܐ ܠܐ ܢܗܘܐ. ܘܬܬܒ ܐܘܪܫܠܡ 11
ܒܫܠܝܐ. * ܘܗܕܐ ܬܗܘܐ ܡܚܘܬܐ ܕܢܡܚܐ ܡܪܝܐ ܠܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܬܟܢܫܘ ܥܠ 12
ܐܘܪܫܠܡ. ܢܬܡܣܐ ܒܣܪܗܘܢ. ܟܕ ܩܝܡܝܢ ܥܠ ܪܓܠܝܗܘܢ. ܘܥܝܢܝܗܘܢ ܢܬܡܣܝܢ
ܒܓܠܓܠܝܗܝܢ. ܘܠܫܢܗܘܢ. ܢܬܡܣܐ ܒܦܘܡܗܘܢ. * ܒܗܘ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܬܗܘܐ ܒܗܘܢ 13
ܬܗܘܬܐ ܪܒܬܐ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܢܐܚܘܕ ܓܒܪ ܐܝܕܗ ܕܚܒܪܗ. ܘܬܬܩܦ ܐܝܕܗ ܒܐܝܕܐ ܕܚܒܪܗ. * ܘܐܦ 14
ܝܗܘܕܐ ܢܬܟܬܫ ܒܐܘܪܫܠܡ. ܘܢܬܟܢܫ ܚܝܠܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܚܕܪܝܗ̇ ܠܗ̇. ܕܗܒܐ
ܘܣܐܡܐ. ܘܢܚܬܐ ܣܓܝܐܐ ܛܒ. * ܘܗܟܢܐ ܬܗܘܐ ܡܚܘܬܐ ܕܣܘܣܘܬܐ ܘܕܟܘܕܢܐ: ܘܕܓܡܠܐ 15
ܘܕܚܡܪܐ. ܘܕܟܠܗ ܒܥܝܪܐ ܕܢܗܘܐ ܒܡܫܪܝܬܐ ܗܠܝܢ. ܐܝܟ ܡܚܘܬܐ ܗܕܐ. * ܘܢܗܘܐ. ܟܠ 16
ܕܡܫܬܚܪ: ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܕܐܬܘ ܥܠ ܐܘܪܫܠܡ. ܢܣܩܘܢ ܡܢ ܫܢܐ ܠܫܢܐ.
ܠܡܣܓܕ ܠܡܠܟܐ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ: ܘܠܡܥܒܕ ܥܐܕܐ ܕܡܛܠܐ.

* Fugietiſque ad vallem montium : (perveniet enim vallis montium ad anguſtum uſque locum) fugietis inquam, quemadmodum fugiſtis à terræmotu qui contigit diebus Uziæ regis Judæ : & ingredietur Dominus Deus meus, omneſque ſancti ejus cum eo. 5 Eo die non erit lux, ſed frigus & gelu : 6 Eritque dies ille unicus : & dies ille notus erit Domino : neque nox erit, neque dies : & ſub tempus veſpertinum erit lux. 7 Eodem die effluent aquæ vivæ è Jeruſalem : dimidium earum ad mare Orientale, dimidium verò ad mare Occidentale, tam æſtate quàm hyeme : 8 Eritque Dominus rex ſuper univerſam terram. Eo die erit Dominus unus, & nomen ejus unum. 9 Et circundabit univerſam terram quaſi planities, à Gebaa uſque ad Remmon quæ eſt in Auſtrali plaga Jeroſolymæ : & exaltabitur *urbs*, manebitq; in loco ſuo, à porta Benjaminis uſq; ad locũ portæ primæ, uſq; ad portã anguli : & à turri Hananaelis uſq; ad torcular regis : 10 Et habitabunt in ea, nec erit ampliùs anathema, ſed reſidebit Jeruſalem in tranquillitate. 11 Hæc autem erit plaga quâ percutiet Dominus cunctas gentes quæ nitentur contra Jeruſalem : putreſcet caro eorum ipſis adhuc ſtantibus ſuper pedes ſuos, oculi eorũ putreſcent in locis ſuis, & lingua eorum putreſcet in ore ipſorum. 12 Eodem die erit in eis horror ingens à Domino ; nam altero alterum apprehendente, hærebit manus unius manui alterius. 13 Juda quoque pugnabit in Jeruſalem, colligetque opes omnium gentium illi *urbi* circunjacentium, aurum, argentum, & veſtes multas admodùm. 14 Eademque erit plaga equi, muli, cameli, aſini, & cujuſcunque jumenti quod fuerit in iis caſtris ; qualis plaga prædicta. 15 Eritque ut quicunque reſidui fuerint ex omnibus gentibus quæ invaſuræ ſunt Jeruſalem, aſcendant annuatim ad adorandũ regem Dominum potentiſſimum, & ad celebrandum feſtum tabernaculorum. 16

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

* ويسد وادي جبالي * ويلتصق وادي الجبال الي ياصود * كما سد في ايام الزلزلة * في ايام عوزيا 5
ملك يهودا * وياتي الرب الهي وجميع قديسيه معه *

* الاصحاح الثلاثون * وهو السادس من النبوة *

6 * في ذلك اليوم لا يكون نور * وبرد وجليد لا يكون * يوم واحد * وذلك اليوم معروف 7
للرب * وليس نهار ولا ليل * وعند المساء يكون النور * وفي ذلك اليوم يخرج ما حي من 8
ايروسليم * نصفه الي البحر الاول * ونصفه الي البحر الاخر * وفي صيف وربيع يكون هكذا *
* ويكون الرب ملكا على كل الارض * في ذلك اليوم يكون الرب واحد * واسمه واحد * 9
* يحيط بالارض كلها والبرية * من غابال الي رمون في جنوب ايروسليم * والرامة على الموضع 10
تثبت * من باب بنيامين الي باب الزوايا * والي برج اناميل * الي معاصير الملك يسكنون
فيها * ولا يكون حرم ايضا * وتسكن ايروسليم مطمانة * وهذه السقطة تكون التي 11 12
بها يقطع الرب جميع الشعوب الذين عسكروا على ايروسليم * تذوب لحومهم وهم قايمون
على اقدامهم * وتسيل عيونهم من انقابها * ولسانهم يذوب في فمهم * وتكون في ذلك اليوم 13
دهشة الرب العظيمة عليهم * وياخذ كل واحد بيد صاحبه * وتشتبك يد بيد صاحبه *
* ويهودا يصطف في ايروسليم * ويجمع قوة جميع الشعوب من حوله * ذهبا وفضة وقماشا 14
كثير جدا * وتكون هناك سقطة الخيل والبغال والجمال والحمير وجميع البهايم التي 15
تكون في تلك العساكر كسقطة الجميع * ويكون كل من يبقى من جميع الامم 16
الاتيين الي ايروسليم * فيصعدون في السنة ليسجدوا للملك الرب الضابط الكل الاله *
ويعيدوا عيد نصب المظلة *

Et obturabitur vallis montium meorum, & connectetur vallis montium cum Jaſod ; quemadmodum obturata fuit in diebus terræmotûs, in diebus Oziæ regis Judæ : venietque Dominus Deus meus, & omnes Sancti ejus cum eo. 5

Textus trigeſimus, hujus prophetiæ ſextus.

In illa die non erit lux, & frigus ac gelu non erit. 6 *Dies eſt unica, eaque dies nota Domino : neque dies erit, neque nox : & ad veſperam erit lux.* 7 *Et eâ die egredietur aqua viva de Jeruſalem, cujus media pars effluet ad mare primum, media verò pars ad mare poſtremum : & tam æſtivo quàm verno tempore ſic erit :* 8 *Eritque Dominus rex ſuper univerſam terram. In illa die erit Dominus unus, & nomen ejus unum,* 9 *Complectens totam terram & deſertum à Gabel ad Remmon, versùs Meridionalem plagam Jeroſolymorum : Rama verò loco conſiſtet : à porta Benjamin ad portam angulorum uſque, & ad turrim Anameelis, ad torcularia regis habitabunt in ea.* 10 *Et non erit ampliùs anathema, ſed habitabit Jeruſalem ſecurè.* 11 *Hujuſmodi autem erit ruina quâ exſcindet Dominus omnes populos qui caſtrametati fuerint contra Jeruſalem : liqueſient carnes eorum ipſis ſtantibus ſuper pedes ſuos, effluent oculi eorum è foraminibus ſuis, & lingua eorum liqueſcet in ore ipſorum.* 12 *Erit etiam eâ die ſtupor Domini maximus ſuper eos : & apprehendet quiſque manum proximi ſui, & agglutinabitur manus ejus ad manum proximi ſui.* 13 *Et Juda inſtruet acies ſuas in Jeruſalem, & congeret undique robur omnium populorum, aurum, & argentum, & ſupellectilem ſummâ copiâ.* 14 *Ejuſmodi quoque erit ruina equorum, mulorum, camelorum, aſinorum, omniúmque jumentorum quæ fuerint in iis exercitibus ; qualis ſcilicet omnium ruina.* 15 *Et erit ut quicunque remanſerint ex omnibus gentibus venturis in Jeruſalem, aſcendant in annum ad adorandum regem Dominum omnipotentem, Deum ; & celebrandum ſolennitatem erectionis tabernaculi.* 16

מלאכי : א

in terræ familiis de aſcenderit non qui , erit Et
17 וְהָיָה אֲשֶׁר לֹא־יַעֲלֶה מֵאֵת מִשְׁפְּחוֹת הָאָרֶץ אֶל־
: exercituum DOMINO regi *ſe incurvandum ad* , Jeruſalaim
יְרוּשָׁלִַם לְהִשְׁתַּחֲוֹת לְמֶלֶךְ יְהוָה צְבָאוֹת
Ægypti familia ſi Et .imber erit eos ſuper non Et
18 וְלֹא עֲלֵיהֶם יִהְיֶה הַגָּשֶׁם׃ וְאִם־מִשְׁפַּחַת מִצְרַיִם
erit , eos ſuper neque , venerit non & aſcenderit non
לֹא־תַעֲלֶה וְלֹא בָאָה וְלֹא עֲלֵיהֶם תִּהְיֶה
non quæ , gentes DOMINUS percutiet qua , plaga
הַמַּגֵּפָה אֲשֶׁר יִגֹּף יְהוָה אֶת־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר לֹא
Hoc .tabernaculorum feſtivitatem celebrandum ad aſcenderint
19 יַעֲלוּ לָחֹג אֶת־חַג הַסֻּכּוֹת׃ זֹאת
quæ , gentium omnium *peccatum* & : Ægypti *peccatum* erit
תִּהְיֶה חַטַּאת מִצְרָיִם וְחַטַּאת כָּל־הַגּוֹיִם אֲשֶׁר
die In .tabernaculorum feſtivitatem celebrandum ad aſcenderint non
20 לֹא יַעֲלוּ לָחֹג אֶת־חַג הַסֻּכּוֹת׃ בַּיּוֹם
: DOMINO ſanctitas *equi* tintinnabula ſuper erit illa
הַהוּא יִהְיֶה עַל־מְצִלּוֹת הַסּוּס קֹדֶשׁ לַיהוָה
.altari coram pelves ſicut , DOMINI domo in lebetes *erit* &
וְהָיָה הַסִּירוֹת בְּבֵית יְהוָה כַּמִּזְרָקִים לִפְנֵי הַמִּזְבֵּחַ׃
ſanctitas Jehudah in & , Jeruſalaim in lebes omnis erit Et
21 וְהָיָה כָּל־סִיר בִּירוּשָׁלִַם וּבִיהוּדָה קֹדֶשׁ
ſument & , immolantes omnes venient Et .exercituum DOMINO
לַיהוָה צְבָאוֹת וּבָאוּ כָּל־הַזֹּבְחִים וְלָקְחוּ
domo in ultrà *mercator* erit non Et .eis *in* coquent & , eis ex
מֵהֶם וּבִשְּׁלוּ בָהֶם וְלֹא־יִהְיֶה כְנַעֲנִי עוֹד בְּבֵית־
.illa die in exercituum DOMINI
יְהוָה צְבָאוֹת בַּיּוֹם הַהוּא׃

Verſio VULG. LAT.

17 Et erit: qui non aſcenderit de familiis terræ ad Jeruſalem, ut adoret Regem, Dominum exercituū, 18 non erit ſuper eos imber. Quòd & ſi familia Ægypti non aſcenderit, & non venerit: nec ſuper eos erit, ſed erit ruina, quâ percutiet Dominus omnes Gentes, quæ non aſcenderint ad celebrandam feſtivitatem tabernaculorum. 19 Hoc erit peccatum Ægypti, & hoc peccatū omniū Gentium, quæ non aſcenderint ad celebrandam feſtivitatem tabernaculorum. 20 In die illa erit quod ſuper frænum equi eſt, ſanctum Domino: & erunt lebetes in domo Domini quaſi phialæ coram altari. 21 Et erit omnis lebes in Jeruſalem & in Juda ſanctificatus Domino exercituum: & venient omnes immolantes, & ſument ex eis, & coquent in eis: & non erit mercator ultrà in domo Domini exercituum in die illo.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Καὶ ἔσται, ὅσοι ἐὰν μὴ ἀναβῶσιν (γ) ἐκ πασῶν τῶν φυλῶν τῆς γῆς εἰς Ἱερουσαλὴμ, τοῦ προσκυνῆσαι τῷ βασιλεῖ κυρίῳ παντοκράτορι, ϗ οὗτοι ἐκείνοις προστεθήσονται. 18 Ἐὰν δὲ φυλὴ Αἰγύπτου μὴ ἀναβῇ, μηδὲ (δ) ἔλθῃ, ϗ ἐπὶ τούτους ἔσται ἡ πτῶσις, ἣν πατάξει κύριος πάντα τὰ ἔθνη, ὅσα (ε) ἂν μὴ ἀναβῇ, τοῦ ἑορτάσαι τὴν ἑορτὴν τῆς σκηνοπηγίας. 19 Αὕτη (ζ) ἔσται ἡ ἁμαρτία Αἰγύπτου, ϗ ἡ ἁμαρτία πάντων τῶν ἐθνῶν, (η) ὃς ἂν μὴ ἀναβῇ (θ) ἑορτάσαι τὴν ἑορτὴν τῆς σκηνοπηγίας. 20 Ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ ἔσται τὸ ἐπὶ τὸν χαλινὸν τοῦ ἵππου ἅγιον τῷ κυρίῳ παντοκράτορι· ϗ ἔσονται οἱ λέβητες (ι) ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου ὡς φιάλαι πρὸ προσώπου τοῦ θυσιαστηρίου. 21 Καὶ ἔσται πᾶς λέβης ἐν Ἱερουσαλὴμ ϗ ἐν τῷ Ἰούδᾳ (κ) ἅγιος τῷ κυρίῳ παντοκράτορι. ϗ ἥξουσι πάντες οἱ θυσιάζοντες, ϗ λήψονται ἐξ αὐτῶν, ϗ ἑψήσουσιν ἐν αὐτοῖς. ϗ οὐκ ἔσται Χαναναῖος (λ) ἔτι ἐν τῷ οἴκῳ κυρίου παντοκράτορος ἐν τῇ ἡμέρᾳ ἐκείνῃ.

Et erit, qui non aſcenderint ex omnibus tribubus terræ ad Hieruſalem, ut adorent regem Dominum omnipotentem; & (i) iſti illis apponentur. 17 *Sin autem tribus Ægypti non aſcenderit, nec venerit; & ſuper eos erit ruina, quâ percutiet Dominus omnes gentes, quæ non aſcenderunt, ut agerent ſolennitatem ſcenopegiæ.* 18 *Hoc erit peccatum Ægypti, et peccatum omnium gentium, quicunque non aſcenderit, ut celebret feſtivitatem ſcenopegiæ.* 19 *In die illa erit, quod ſuper (k) frænum equi eſt, ſanctum Domino omnipotenti. Et erunt lebetes in domo Domini, ſicut phialæ ante faciem altaris.* 20 *Et erit omnis lebes in Hieruſalem, & in Juda ſanctus Domino omnipotenti. Et venient omnes, qui immolant, & ſument ex iis, et coquent in illis: & non erit (l) Chananæus ultrà in domo Domini (m) omnipotentis in die illa.* 21

ΖΑΧΑΡΙ΄ΑΣ ΙΑ΄.

MS. A. (γ) ἐκεῖ ὀκ (δ) ἔλθῃ ἐκεῖ, ἐπὶ τούτοις (ε) ἐὰν (ζ) ἐστὶν (η) ὅσα ἐὰν (θ) τοῦ ἑορτάσαι (ι) οἱ ἐν τῷ (κ) ἅγιον (λ) οὐκέτι

ΖΑΧΑΡΙ΄ΑΣ ΙΑ΄.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 ויהי דלא יסק מן זרעית עממי ארעא לירושלם למסגיד קדם מלך עלמא יי צבאות ולא
18 עליהון יהי מטרא: ואם מלכות מצרים לא תסק ולא תיתי לא להון יסק נילוס ברם
19 עליהון תהי מחתא דימחי יי ית עממיא דלא יסקון למחג ית חגא דמטליא: דא תהי
20 פורענות מצרים ופורענות כל עממיא דלא יסקון למחג ית חגא דמטליא: בעדנא ההיא
יהי על כרובת סוסיא קודשא קדם יי ויהון דודיא בבית מקדשא דיי סגיאין כמזרקיא
21 קדם מדבחא: ויהי כל דוד בירושלם וביהודה קודשא קדם יי צבאות וייתון כל
דבחין ויסבון מנהון ויבשלון בהון ולא יהי עביד תגרא עוד בבית מקדשא דיי
צבאות בעדנא ההיא:

PARAPH CHALD. Verſio Latina.

Eritque qui de cognationibus gentium terræ non aſcenderint Jeruſalem, ad adorandum coram rege *ſeculi* Domino exercituum: non erit ſuper eos pluvia. 17 Et ſi regnum Ægypti non aſcenderit nec venerit, non creſcet eis Nilus. 18 Veruntamen erit ſuper eos percuſſio qua percutiet Dominus populos qui non aſcenderint ut celebrent feſtivitatem tabernaculorum. Ejuſmodi erit ultio Ægyptiorum & punitio omnium populorum qui non aſcenderint ut celebrent diem feſtum tabernaculorum. 19 In tempore illo *erit ſuper phaleras equorum ſanctitas* coram Domino, & erunt lebetes domꝰ ſanctuarii Domini multæ quaſi phialæ coram altari. 20 Et erit omnis lebes in Jeruſalem & in Juda ſanctificatus coram Dño exercituum, & venient omnes immolantes, & tollent ex eis & coquent in eis: & non erit mercator ultrà in domo *ſanctuarii* Domini exercituum in tempore illo. 21

ספר מלאכי : א

CAP. I. א

.Malachi manum per Iſrael ad DOMINI verbi *Onus*
1 מַשָּׂא דְבַר־יְהוָה אֶל־יִשְׂרָאֵל בְּיַד מַלְאָכִי׃
quo In : dixiſtis Et .DOMINUS dixit , vos Dilexi
2 אָהַבְתִּי אֶתְכֶם אָמַר יְהוָה וַאֲמַרְתֶּם בַּמָּה
, DOMINUS dixit , Jahacob *ipſi* Eſau frater Nónne ? nos dilexiſti
אֲהַבְתָּנוּ הֲלוֹא־אָח עֵשָׂו לְיַעֲקֹב נְאֻם־יְהוָה
poſui & , odivi Heſau Et ? Jahacob dilexi &
3 וָאֹהַב אֶת־יַעֲקֹב׃ וְאֶת־עֵשָׂו שָׂנֵאתִי וָאָשִׂים אֶת־
.deſerti dracones in ejus hæreditatem & , ſolitudinem ejus montes
הָרָיו שְׁמָמָה וְאֶת־נַחֲלָתוֹ לְתַנּוֹת מִדְבָּר׃
ædificabimus & , revertemur & , ſumus pauperes Effect : Edom dixerit *Cùm*
4 כִּי־תֹאמַר אֱדוֹם רֻשַּׁשְׁנוּ וְנָשׁוּב וְנִבְנֶה
Ipſi : exercituum DOMINUS dixit ſic : deſolata
חֳרָבוֹת כֹּה אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת הֵמָּה
, impietatis Terminum eos vocabunt & : deſtruam ego & , ædificabunt
יִבְנוּ וַאֲנִי אֶהֱרוֹס וְקָרְאוּ לָהֶם גְּבוּל רִשְׁעָה
.ſeculum in uſque DOMINUS eſt deteſtatus quem , populum &
וְהָעָם אֲשֶׁר־זָעַם יְהוָה עַד־עוֹלָם׃
DOMINUS Magnificetur : dicetis vos & , videbunt veſtri oculi Et
5 וְעֵינֵיכֶם תִּרְאֶינָה וְאַתֶּם תֹּאמְרוּ יִגְדַּל יְהוָה
.Iſrael terminum *deſuper*
מֵעַל לִגְבוּל יִשְׂרָאֵל׃

Verſio VULG. LAT.

PROPHETIA MALACHIÆ.

CAP. I.

1 ONus verbi Domini ad Iſrael 2 in manu Malachiæ. Dilexi vos, dicit Dominus; & dixiſtis; In quo dilexiſti nos? Nonne frater erat Eſau Jacob, dicit Dominus; & dilexi Jacob, 3 Eſau autem odio habui? & poſui montes ejus in ſolitudinem, & hæreditatem ejus in 4 dracones deſerti. Quòd ſi dixerit Idumæa; Deſtructi ſumus, ſed revertentes ædificabimus quæ deſtructa ſunt: Hæc dicit Dominus exercituum; Iſti ædificabunt, & ego deſtruam: & vocabuntur termini impietatis, & populus cui iratus eſt Dominus uſque in æter-5 num Et oculi veſtri videbunt: & vos dicetis; Magnificetur Dominus ſuper terminum Iſrael.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

ΜΑΛΑΧΙ΄ΑΣ ΙΒ΄.

ΚΕΦ. α΄.

1 Λῆμμα λόγου κυρίου ἐπὶ τὸν Ἰσραὴλ ἐν χειρὶ ἀγγέλου αὐτοῦ, Θέσθε δὴ ἐπὶ τὰς 2 καρδίας ὑμῶν. Ἠγάπησα ὑμᾶς, λέγει κύριος· ϗ εἴπατε, Ἐν τίνι ἠγάπησας ἡμᾶς; οὐκ ἀδελφὸς ἦν Ἡσαῦ τοῦ Ἰακὼβ, λέγει κύριος, ϗ ἠγάπησα τὸν Ἰακὼβ, 3 Τὸν δὲ Ἡσαῦ ἐμίσησα, ϗ ἔταξα τὰ ὅρια αὐτοῦ εἰς ἀφανισμὸν, ϗ τὴν κληρονομίαν 4 αὐτοῦ εἰς δώματα ἐρήμου; Διότι ἐρεῖ, Ἡ Ἰδουμαία κατέστραπται, ϗ ἐπιστρέψωμεν, ϗ ἀνοικοδομήσωμεν τὰς (α) ἐρήμους· τάδε λέγει κύριος παντοκράτωρ, Αὐτοὶ οἰκοδομήσουσι, ϗ ἐγὼ καταστρέψω· ϗ ἐπικληθήσεται αὐτοῖς ὅρια ἀνομίας, ϗ λαὸς ἐφ᾽ ὃν παρατέτακται κύριος ἕως αἰῶνος. 5 Καὶ οἱ ὀφθαλμοὶ ὑμῶν ὄψονται, ϗ ὑμεῖς ἐρεῖτε, Ἐμεγαλύνθη κύριος ὑπεράνω τῶν ὁρίων τοῦ Ἰσραήλ.

MALACHIAS.

CAP. I.

ASſumptio verbi Domini ſuper Iſrael in manu (a) angeli ejus. (b) Ponite nunc ſuper corda veſtra. 1 *Dilexi vos, dicit Dominus.* 2 *Et dixiſtis; In quo dilexiſti nos? Nónne frater erat Eſau Jacob, dicit Dominus; & dilexi Jacob, Eſau autem odio habui: & poſui terminos ejus in deſolationem,* 3 *& hæreditatem ejus in domata deſerti? Quia dicet; Idumæa deſtructa eſt: & revertamur,* 4 *& reædificemus deſerta. Hæc dicit Dominus omnipotens; Iſti ædificabunt, & ego deſtruam: & vocabuntur eis termini iniquitatis, & populus ſuper quem (c) præparatus eſt Dominus uſque in æternum. Et oculi veſtri videbunt: & vos dicetis; Magnificatus eſt Dominus ſuper terminos Iſrael.* 5

MS. A. ΜΑΛΑΧΙ΄ΑΣ ΙΒ΄. (α) ἠρημωμένας·

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

א

1 מטל פתגמא דיי על ישראל ביד מלאכי דיתקרי שמיה עזרא ספרא: 2 רחימית יתכון
אמר יי ואם תימרון במה רחמתנא הלא אח עשו ליעקב אמר יי ורחימית ית
3 יעקב: וית עשו רחיקית ושויתי ית טורוהי לצדו וית אחסנתיה לצדות מדברא:
4 ארי יימרון אדומאי אתמסכננא כען עתרנא נתיב ונבני חרבתא כדנן אמר יי
צבאות אנון יבנון ואנא אפגר ויקרון להון תחומא דעמיה רשיעא ועמא דאיתי
5 עליהון לוט עד עלמא: ועיניכון יחזין ואתון תימרון יסגי יקרא דיי ואפתי ית
תחום ישראל:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

CAPUT I.

ONus verbi Domini ſuper Iſrael per manum Malachiæ, *qui appellatus eſt Ezra ſcriba.* 1 Amavi vos, dixit Dominus: quod ſi dixeritis, In quo amaviſti nos? nónne erat frater Eſau ipſi Jacob, ait Dñs? At dilexi Jaacob. 2 Eſau verò reprobavi, & redegi montes ejus in deſolationem, & poſſeſſionem ejus in vaſtationem deſerti. 3 Quòd ſi dixerint Ædumæi, Ad paupertatem redacti fuimus, nunc divites facti revertamur, & ædificemus quæ deſtructa ſunt: 4 Sic ait Dñs exercituum, Ipſi ædificabunt, ego verò demoliar; & vocabunt eos Terminum populi impii, & populum ſuper quem *adducam* maledictionem in perpetuum uſque. Et oculi veſtri videbunt, & vos dicetis, 5 Multiplicetur gloria Domini, etenim dilatavit fines Iſrael.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

17 * ܘܢܗܘܐ. ܕܡܢ ܕܠܐ ܢܣܩ. ܡܢ ܟܠܗܘܢ ܫܪܒܬܐ ܕܐܪܥܐ ܠܐܘܪܫܠܡ: ܠܡܣܓܕ ܠܡܠܟܐ
18 ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܠܐ ܢܚܘܬ ܥܠܝܗܘܢ ܡܛܪܐ. * ܘܐܢ ܫܪܒܬܐ ܕܡܨܪܝܢ ܠܐ ܢܣܩ ܘܠܐ ܬܐܬܐ. ܐܦ
ܥܠܝܗܘܢ ܬܗܘܐ ܡܚܘܬܐ ܕܢܡܚܐ ܡܪܝܐ ܠܥܡܡܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܣܠܩܝܢ ܠܡܥܒܕ ܥܐܕܐ
19 ܕܡܛܠܠܐ. * ܘܗܕܐ ܬܗܘܐ ܚܛܗܐ ܕܡܨܪܝܐ ܘܚܛܗܐ ܕܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ. ܐܝܠܝܢ ܕܠܐ ܣܠܩܝܢ
20 ܠܡܥܒܕ ܥܐܕܐ ܕܡܛܠܠܐ. * ܒܗ ܒܝܘܡܐ ܗܘ. ܢܗܘܐ ܟܬܝܒ ܥܠ ܦܓܘܕܐ ܕܣܘܣܝܐ. ܩܘܕܫܐ
21 ܠܡܪܝܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܩܕܪܐ ܕܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܐܝܟ ܦܝܠܟܐ ܕܩܕܡ ܡܕܒܚܐ. * ܘܢܗܘܘܢ ܟܠ
ܩܕܪܐ ܕܒܐܘܪܫܠܡ ܘܒܝܗܘܕܐ. ܩܘܕܫܐ ܠܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܢܐܬܘܢ ܟܠ ܕܕܒܚܝܢ.
ܘܢܣܒܘܢ ܡܢܗܘܢ. ܘܢܒܫܠܘܢ ܒܗܘܢ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܬܘܒ ܟܢܥܢܝܐ ܒܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ
ܚܝܠܬܢܐ ܒܝܘܡܐ ܗܘ.

* ܫܠܡܬ ܢܒܝܘܬܗ ܕܙܟܪܝܐ ܢܒܝܐ *

* Et erit ut ſuper eos qui ex omnibus terræ nationibꝰ 17
non aſcenderint Jeroſolymam ad adorandum
regem Dominum potentiſſimum, non
decidat pluvia. Quòd ſi natio Ægyptia non 18
aſcenderit, neque venerit; etiam ipſis ſuperveniet
plaga quâ percutiet Dominus gentes
illas quæ non aſcendent ad celebrandũ feſtum
tabernaculorum. Atque hoc erit peccatum 19
Ægyptiorum & peccatum omnium gentium
quæ non aſcenderint ad celebrandum feſtum
tabernaculorum. Eo die erit *inſcriptum* fræno 20
equi, Sacrum Domino: & lebetes qui ſunt
in domo Domini, erunt ut pelves quæ ſunt
ante altare: Imò lebetes omnes qui ſunt in 21
Jeruſalem & in Juda, erunt ſacri Domino potentiſſimo:
& venientes omnes qui ſacrificaverint,
accipient ex eis, & coquent in eis:
& non erit ampliùs Chananæus in domo Domini
potentiſſimi, eo die.

Prophetiæ Zechariæ prophetæ finis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

17 * ويكون الذين لا يصعدون من جميع قبايل الارض الي ايروسليم ليسجدوا للرب الضابط
18 الكل * فهولاء لاوليك يضافون * وان لم تصعد قبيلة مصر ولا تاتي هناك. وعلي هاولاء
19 تكون السقطة * ويضرب الرب كل الامم التي لم تصعد لتعيد عيد نصب المظلة * هذه
20 تكون خطية مصر وخطية جميع الامم التي لم تصعد وتعيد عيد نصب المظلة * في
ذلك اليوم يكون الذي علي لجام الفرس قدسا للرب الضابط الكل. وتصير المراجل التي
21 في بيت الرب مثل اهنية امام وجه المذبح * ويكون كل مرجل في ايروسليم وفي يهودا قدسا
للرب الضابط الكل * وياتي جميع الذين يذبحون * فياخذون منها ويطبخون فيها. ولا يكون
كنعاني ايضا في بيت الرب الضابط الكل في ذلك اليوم *

* تمت نبوة زكرياء النبي *

* *Et erit ut qui non aſcenderint ex omnibus* 17
terræ nationibus in Jeruſalem, ad
adorandum Dominum omnipotentem; ii
illis adjungantur. Item niſi aſcenderit 18
gens Ægypti, eóque venerit; ſuper iſtos
quoque erit ruina: percutiétque Dominus
cunctas gentes quæ non aſcenderint ad celebrandum
feſtum erectionis tabernaculi.
Hoc erit peccatum Ægypti & peccatum 19
cunctarum gentium quæ non aſcendent
& celebrabunt feſtum erectionis tabernaculi.
In illa die, quod fuerit ſuper 20
habenas equi, ſacrum erit Domino omnipotenti: & lebetes qui ſunt in domo Domini,
erunt ut vaſa ante faciem altaris:
Et omnes lebetes qui ſunt in Jeruſalem 21
& in Juda, erunt ſacri Domino omnipotenti: & venient omnes qui ſacrificabunt,
& accipient ex eis, coquéntque in eis: & non erit ampliùs Chananæus in
domo Domini omnipotentis in die illa.

Prophetiæ Zachariæ prophetæ finis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܬܘܒ ܢܒܝܘܬܗ ܕܡܠܐܟܝ ܢܒܝܐ *

* ܦܘܠܓܗ * ܐ *

1 * ܚܙܘܐ ܕܦܬܓܡܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܥܠ ܐܝܣܪܝܠ ܒܝܕ ܡܠܐܟܝ. * ܐܚܒܬܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ.
2 ܘܐܡܪܬܘܢ ܐܝܟܢܐ ܐܚܒܬܢ. ܕܠܡܐ ܥܣܘ ܠܐ ܗܘܐ ܐܚܘܗܝ ܕܝܥܩܘܒ ܐܡܪ
3 ܡܪܝܐ. ܘܐܚܒܬ ܠܝܥܩܘܒ. ܘܠܥܣܘ ܣܢܝܬ. * ܘܫܘܝܬ ܛܘܪܘܗܝ ܠܚܘܒܠܐ.
4 ܘܝܪܬܘܬܗ ܠܡܥܡܪܐ ܕܡܕܒܪܐ. * ܘܐܢ ܢܐܡܪܘܢ ܐܕܘܡܝܐ ܐܬܡܣܟܢܢ. ܢܬܘܒ ܢܒܢܐ
ܚܘܪܒܐ. ܗܟܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܗܢܘܢ ܢܒܢܘܢ. ܘܐܢܐ ܐܣܚܘܦ. ܘܢܩܪܘܢ ܐܢܘܢ
5 ܬܚܘܡܐ ܕܚܛܝܬܐ. ܘܥܡܐ ܕܪܓܙ ܥܠܘܗܝ ܡܪܝܐ ܠܥܠܡ. * ܘܥܝܢܝܟܘܢ ܢܚܙܝܢ.
ܘܐܢܬܘܢ ܬܐܡܪܘܢ. ܢܪܒܐ ܡܪܝܐ ܠܥܠ ܡܢ ܬܚܘܡܐ ܕܐܝܣܪܝܠ.

Sequitur Prophetia
MALACHIÆ
PROPHETÆ.

CAP. I.

Viſio ſermonum Domini de Iſraele per Malachiam, 1
Dilexi vos, dicit Dominus: vos autem 2
dicitis, Quâ in re dilexiſti nos? Annon
Eſau frater erat Jacobi, dicit Dominus? & tamen
Jacobum dilexi, Eſau verò odio habui:
Redegi montes ejus in deſtructionem, & hæreditatem 3
ejus in turguria deſerta. Quòd ſi 4
dicant Adumæi, Depauperati ſumus, iterum
ædificemus ruinas; ita dicit Dominus; Ipſi
ædificabunt, ego verò deſtruam: & vocabunt
eos terminũ peccati & populum cui indignatus
eſt Dominus in perpetuum: Et quidem 5
oculi veſtri ſpectabunt. Vos autem dicetis,
Magnificetur Dominus ſupra terminum Iſraelis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* بسم الله الروف الرحيم *

نبدا بترجمة نبوة ملاخيا النبي * بركاته علينا * امين *

* الفصل الاول * الاصحاح الحادي والثلثون * وهو الاول من النبوة *

1 * وحي قول الرب علي اسرايل بيد ملاكه * ضعوا الان في قلوبكم * احببتكم
2 وقلتم باي شي احببتنا * اليس عيسوا كان اخو يعقوب يقول الرب * فاحببت يعقوب
3 وابغضت عيسوا * وربيت حدوده للفساد * وميراثه عطايا القفر * من اجل انه يقول
4 الادومية سقطت * فنرجع ونبني البراري * هكذا يقول الرب الضابط الكل. هم يبنون وانا
اهدم * ويدعي لهم حدود الاثم * والشعب الذي عليه غضب الرب الي الدهر * واعينكم
5 ترى * وانتم تقولون عظم الرب فوق حدود اسرايل *

IN NOMINE DEI
Clementis, Miſericordis,

Aggredimur Interpretationem
prophetiæ MALACHIÆ prophetæ, cujus benedictiones adſint
nobis, Amen.

CAP. I.

Textus trigeſimus primus, hujus autem prophetiæ primus.

Revelatio ſermonis Domini de Iſraele 1
per angelum ſuum. Ponite jam in 2
cordibus veſtris: Dilexi vos; & dixiſtis,
Quâ in re dilexiſti nos? Nónne Eſau erat
frater Jacobi, dicit Dominus, & dilexi
Jacobum, Eſau verò odi, Et redegi 3
terminos ejus in corruptionem, & hæreditatem
ejus in dona deſerti. Quia dicit, 4
Edomæa ſubverſa eſt, revertamur, & ædificemus
deſerta; ſic dicit Dominus omnipotens,
Ipſi ædificabunt, ego verò deſtruam:
& vocabuntur eis termini iniquitatis,
& populus cui iratus eſt Dominus in
æternum. Oculi veſtri ſpectabunt, et vos 5
dicetis, Magnificetur Dominus ſuper terminos Iſraelis.

מלאכי : ב

ubi , ego pater si & : suum dominum servus & ,patrem *honorabit* Filius
6 בן יכבד אב ועבד אדניו ואם־אב אני איה
Dominus dixit ? mei timor ubi , ego Dominus si & ? meus honor
כבודי ואם־אדונים אני איה מוראי אמר יהוה
: dixistis Et .meum nomen despicientibus sacerdotibus vobis exercituum
צבאות לכם הכהנים בוזי שמי ואמרתם
panem meum altare super *accedere Facientes* ? tuum nomẽ despexim⁹ quo In
במה בזינו את־שמך : מגישים על־מזבחי לחם 7
Domini Mensa *: vos dicendo In* ? te polluimus quo In : dixistis & ,pollutum
מגאל ואמרתם במה גאלנוך באמרכם שלחן יהוה
Non ,immolandum ad cæcum *facietis accedere* quando Et .*ipsa* despecta
8 נבזה הוא : וכי־תגשון עור לזבח אין
illud Offer.malum Non:*morbidum* &,claudũ *facietis accedere cum* Et.malum
רע וכי תגישו פסח וחלה אין רע הקריבהו
, *tuas facies* suscipiet nunquid vel,tibi complacebit nunquid:tuo duci nunc
נא לפחתך הירצך או הישא פניך
, Dei *facies* quæso deprecamini nunc Et ? exercituum Dominus dixit
9 אמר יהוה צבאות : ועתה חלו־נא פני־אל
suscipiet Nunquid .hoc fuit vestra manu De .nostri miserebitur &
ויחננו מידכם היתה זאת הישא
vobis in etiam Quis ? exercituum Dominus dixit , *facies* vobis ex
10 מכם פנים אמר יהוה צבאות : מי גם־בכם
mihi Non ? gratis meum altare *facietis lucere* non & ? ostia claudet &
ויסגר דלתים ולא־תאירו מזבחי חנם אין־לי
volam non munus & exercituum Dominus dixit ,vobis in voluntas
חפץ בכם אמר יהוה צבאות ומנחה לא־ארצה
magnum ejus occasum ad usque & , Solis ortu ab Nam.vestra manu de
11 מידכם : כי ממזרח־שמש ועד־מבואו גדול
,meo nomini *oblatum suffumigatum* loco omni in & ,gentes inter meũ nomẽ
שמי בגוים ובכל־מקום מקטר מגש לשמי
dixit ,gentes inter meum nomen magnum quia : munda oblatio &
ומנחה טהורה כי־גדול שמי בגוים אמר
Mensa *: vos dicendo in* ,illud *polluentes* vos Et .exercituum Dominus
12 יהוה צבאות : ואתם מחללים אותו באמרכם שלחן
: dixistis Et .ejus esca *contempta* ejus *fructus* & ,*ipsa* contaminata Domini
13 יהוה מגאל הוא וניבו נבזה אכלו : ואמרתם
,exercituum Dominus dixit , *illam efflastis* & , *defatigatio* Ecce
הנה מתלאה והפחתם אותו אמר יהוה צבאות
intulistis & , *morbidum* & , claudum & , raptum intulistis &
והבאתם גזול ואת־הפסח ואת־החולה והבאתם את־
? Dominus dixit , vestra manu de illud volam num : munus
המנחה הארצה אותה מידכם אמר יהוה :
immolans & vovens & ,masculus *ejus* grege in *est &* dolosus maledictus Et
14 וארור נוכל ויש בעדרו זכר ונדר וזבח
Dominus dixit , *ego* magnus rex quia : Domino corruptum
משחת לאדני כי מלך גדול אני אמר יהוה
.gentes inter terribile meum nomen & ,exercituum
צבאות ושמי נורא בגוים :

CAP. II. ב

non Si .sacerdotes , hoc mandatum vos ad nunc Et
1 ועתה אליכם המצוה הזאת הכהנים : אם־לא
2 gloriam *dandum ad* ,cor super posueritis non si & , audieritis
תשמעו ואם־לא תשימו על־לב לתת כבוד
vos in mittam & , exercituum Dominus dixit ,meo nomini
לשמי אמר יהוה צבאות ושלחתי בכם את־
:ei maledixi etiam & : vestris benedictionibus maledicam & maledictionem
המארה וארותי את־ברכותיכם וגם ארותיה
.cor super *ponentes vos* non quoniam
כי אינכם שמים על־לב :

Verſio VULG. LAT.

6 Filius honorat patrem, & ſervus dominum ſuum: ſi ergò Pater ego ſum, ubi eſt honor meus? & ſi Dominus ego ſum, ubi eſt timor meus? dicit Dominus exercituum, ad vos, ô ſacerdotes, qui deſpicitis nomen meum, & dixiſtis; In quo deſpeximus nomen tuum?
7 Offertis ſuper altare meum panẽ pollutum, & dicitis; In quo polluimus te? In eo quòd dicitis;
8 Menſa Domini deſpecta eſt. Si offeratis cæcum ad immolandum, nónne malum eſt? & ſi offeratis claudum, & languidum, nónne malum eſt? offer illud duci tuo, ſi placuerit ei, aut ſi ſuſceperit faciem tuam, dicit Dominus exer-
9 cituum. Et nunc deprecamini vultum Dei, ut miſereatur veſtrî (de manu enim veſtra factum eſt hoc) ſi quomodò ſuſcipiat facies veſtras, dicit Domin⁹ exercituum.
10 Quis eſt in vobis, qui claudat oſtia, & incendat altare meum gratuitó? non eſt mihi voluntas in vobis, dicit Dominus exercituum: & munus non ſuſcipiam
11 de manu veſtra. Ab ortu enim Solis uſque ad occaſum, magnum eſt nomen meum in Gentibus: & in omni loco ſacrificatur, & offertur nomini meo oblatio munda: quia magnũ eſt nomen meum in Gentibus, dicit Dominus exerci-
12 tuum. Et vos polluiſtis illud in eo quòd dicitis; Menſa Domini contaminata eſt: & quod ſuperponitur, contemptibile eſt, cum
13 igne qui illud devorat. Et dixiſtis; Ecce de labore, & exufflâſtis illud, dicit Dominus exercituum, & intuliſtis de rapinis claudum, & languidum, & intuliſtis munus: numquid ſuſcipiam illud de
14 manu veſtra, dicit Dominus? Maledictus doloſus, qui habet in grege ſuo maſculum, & votum faciens immolat debile Domino: quia Rex magnus ego, dicit Dominus exercituũ, & nomen meum horribile in Gentibus.

CAP. II.

1 ET nunc ad vos mandatum hoc,
2 ô ſacerdotes. Si nolueritis audire, & ſi nolueritis ponere ſuper cor ut detis gloriam nomini meo, ait Dominus exercituum: mittam in vos egeſtatem, & maledicam benedictionibus veſtris, & maledicam illis: quoniam non poſuiſtis ſuper cor.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

6 Υἱὸς δοξάζει πατέρα, καὶ δοῦλος τὸν κύριον (β) ἑαυτοῦ. καὶ εἰ πατήρ εἰμι ἐγὼ, ποῦ ἐστιν ἡ δόξα μου; καὶ εἰ κύριός εἰμι ἐγὼ, ποῦ ἐστιν ὁ φόβος μου; λέγει κύριος παντοκράτωρ. ὑμεῖς οἱ ἱερεῖς οἱ φαυλίζοντες τὸ ὄνομά μου, καὶ εἴπατε, Ἐν τίνι ἐφαυλίσαμεν
7 τὸ ὄνομά σου; Προσάγοντες πρὸς τὸ θυσιαστήριόν μου ἄρτους ἠλισγημένους, καὶ εἴπατε, Ἐν τίνι ἠλισγήσαμεν αὐτούς; ἐν τῷ λέγειν ὑμᾶς, Τράπεζα κυρίου ἠλισγημένη ἐστὶ,
8 καὶ τὰ ἐπιτιθέμενα (γ) ἐξουδενώσατε. Διότι ἐὰν προσαγάγητε τυφλὸν εἰς (δ) θυσίας, οὐ κακόν; καὶ ἐὰν προσαγάγητε χωλὸν ἢ ἄρρωστον, οὐ κακόν; πρόσαγε δὴ αὐτὸ τῷ ἡγουμένῳ σου, εἰ (ε) προσδέξεταί σε, εἰ λήψεται πρόσωπόν σου, λέγει κύριος
9 παντοκράτωρ· Καὶ νῦν ἐξιλάσκεσθε τὸ πρόσωπον τοῦ θεοῦ ὑμῶν, καὶ δεήθητε αὐτοῦ. Ἐν χερσὶν ὑμῶν γέγονε ταῦτα, εἰ λήψομαι ἐξ ὑμῶν πρόσωπα ὑμῶν; λέγει κύριος
10 παντοκράτωρ. Διότι καὶ ἐν ὑμῖν συγκλεισθήσονται θύραι, καὶ οὐκ ἀνάψεται τὸ θυσιαστήριόν μου δωρεάν. οὐκ ἔστι μου θέλημα ἐν ὑμῖν, λέγει κύριος παντοκράτωρ, καὶ θυσίαν οὐ προσδέξομαι ἐκ τῶν χειρῶν ὑμῶν.
11 Διότι ἀπὸ ἀνατολῶν ἡλίου (ζ) καὶ ἕως δυσμῶν τὸ ὄνομά μου δεδόξασται ἐν τοῖς ἔθνεσι, καὶ ἐν παντὶ τόπῳ θυμίαμα (η) προσάγεται τῷ ὀνόματί μου, καὶ θυσία καθαρά· διότι μέγα τὸ ὄνομά μου ἐν
12 τοῖς ἔθνεσι, λέγει κύριος παντοκράτωρ. Ὑμεῖς δὲ βεβηλοῦτε αὐτὸ ἐν τῷ λέγειν ὑμᾶς, Τράπεζα κυρίου ἠλισγημένη ἐστὶ, καὶ τὰ ἐπιτιθέμενα (θ) ἐξουδένωται βρώματα αὐτοῦ.
13 Καὶ εἴπατε, Ταῦτα ἐκ κακοπαθείας ἐστὶ καὶ ἐξεφύσησα αὐτὰ, λέγει κύριος παντοκράτωρ. καὶ εἰσεφέρετε (ι) ἁρπάγματα, καὶ τὰ χωλὰ, καὶ τὰ ἐνοχλούμενα· καὶ ἐὰν φέρητε (κ) τὴν θυσίαν, εἰ προσδέξομαι αὐτὰ ἐκ τῶν χειρῶν ὑμῶν; λέγει κύριος
14 παντοκράτωρ. Καὶ ἐπικατάρατος, ὃς ἦν δυνατὸς, καὶ ὑπῆρχεν (λ) ἐν τῷ ποιμνίῳ αὐτοῦ ἄρσεν, καὶ εὐχὴ αὐτοῦ ἐπ' αὐτῷ, καὶ θύει διεφθαρμένον τῷ κυρίῳ· διότι (μ) βασιλεὺς μέγας ἐγώ εἰμι, λέγει κύριος παντοκράτωρ, καὶ τὸ ὄνομά μου ἐπιφανὲς ἐν τοῖς ἔθνεσι.

MS.A. (β) αὐτοῦ. (γ) βρώματα ἐξουδενωμένα. (δ) θυσίαν, (ε) προσδέξεται αὐτὸ, (ζ) ἕως (η) προσαγάγετε ἐπὶ τῷ (θ) ἐξουδένωνται (ι) τὰ ἁρπάγματα (κ) θυσίαν, (λ) αὐτῷ ἐν τῷ ποιμνίῳ ἄρσεν, (μ) μέγας βασιλεὺς

ΚΕΦ. β'.

1 Καὶ νῦν ἡ ἐντολὴ αὕτη πρὸς ὑμᾶς οἱ
2 ἱερεῖς· Ἐὰν μὴ (α) ἀκούσητε, καὶ ἐὰν μὴ θῆσθε εἰς τὴν καρδίαν ὑμῶν, τοῦ δοῦναι δόξαν τῷ ὀνόματί μου, λέγει κύριος παντοκράτωρ· καὶ ἐξαποστελῶ ἐφ' ὑμᾶς τὴν κατάραν, καὶ ἐπικαταράσομαι τὴν εὐλογίαν ὑμῶν, καὶ καταράσομαι αὐτήν· καὶ διασκεδάσω τὴν εὐλογίαν ὑμῶν, καὶ οὐκ ἔσται ἐν ὑμῖν, ὅτι ὑμεῖς οὐ τίθεσθε εἰς τὴν καρδίαν ὑμῶν·

MS. A. (α) ὑπακούσητε,

*Filius glorificat patrem, & ſervus dominum (d) ſuum. Et, ſi pater ego ſum; ubi eſt gloria mea? Et, ſi Dominus ſum ego; ubi eſt timor meus? dicit Dominus omnipotens. Vos ſacerdotes, qui deſpicitis nomen meum: & dixiſtis; In quo deſpeximus nomen tuum? Offerentes ad altare meum panes (e) pollutos: & dixiſtis; In quo polluimus ipſos? In eo, quòd dicitis; Menſa Domini (f) polluta eſt: & (g) quæ ſuperpoſita ſunt, deſpexiſtis. Quia, ſi offeratis cæcum in ſacrificia; nonne malum eſt? Et, ſi offeratis claudum, aut languidum; nonne malum eſt? Offer nunc * illud duci tuo; ſi ſuſcipiet te, ſi accipiet faciem tuam, dicit Dominus omnipotens? Et nunc deprecamini faciem Dei veſtri, & rogate eum. In manibus veſtris facta ſunt hæc: ſi accipiam ex vobis facies veſtras, dicit Dominus omnipotens? Quia & in vobis claudentur oſtia: & non ſuccendetur altare meum gratis. Non eſt voluntas mea in vobis, dicit Dominus omnipotens: & ſacrificium (h) non ſuſcipiam de manibus veſtris: Quia ab ortu Solis, et uſque ad occaſum clarificatum eſt nomen meum in gentibus: & in omni loco (i) incenſum offertur nomini meo, & ſacrificium mundum: quia (k) magnum eſt nomen meum in gentibus, dicit Dominus omnipotens. Vos autem contaminatis illud in eo quòd dicitis; Menſa Domini polluta eſt: & qui ſuperponuntur, deſpecti ſunt cibi ejus: Et dixiſtis: Hæc de afflictione ſunt. Et (l) exufflavi ea, dicit Dominus omnipotens. Et inferebatis rapinas, & clauda, & debilia: &, (m) ſi afferatis ſacrificium; ſi ſuſcipiam ea de manibus veſtris, dicit Dominus omnipotens? Et maledictus, qui erat potens, & habebat in grege ſuo maſculum, & votum ejus ſuper eo: & immolat corruptum Domino. Quia rex magnus ego ſum, dicit Dominus omnipotens: et nomen meum illuſtre in gentibus.* 6 7 8 9 10 11 12 13 14

CAP. II.

ET nunc mandatum hoc ad vos, ô ſacerdotes. Si non audieritis, & ſi non poſueritis in cor veſtrum, ut detis gloriam nomini meo, dicit Dominus omnipotens; & mittam ſuper vos maledictionem, & maledicam benedictioni veſtræ, & maledicam ei: & diſſipabo benedictionem veſtram: & non erit in vobis: quia vos non ponitis in cor veſtrum. 1 2

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

6 הא על ברא אמיר ליקרא ית אבא ועבדא למדחל מן קדם רבוניה אם כאב אנא אן
דאתון מיקרין קדמי ואם כרבון אנא אן דאתון דחלין מן קדמי אמר יי צבאות לכון
7 כהניא דמבסרין על שמי ואם תימרון במה בסרנא על שמך : מקרבין אתון על מדבחי
קרבן מרחק ואם תימרון במה מרחק כדאתון אמרין פתורא דיי בסיר הוא :
8 ודאתון מקרבין דעויר לדבחא הלא ביש ודאתון מקרבין דחגיר ודמריע הלא ביש
9 קריבוהי כען לשלטונך דעלך היתרעי בך או היסב אפך אמר יי צבאות : וכען צלו
כען קדם אלהא ויקבל צלותנא מידכון הות דא היתנסבון לכון אפין אמר יי צבאות :
10 מן אף הכא בכון ויניף דשי בית מקדשי ולא תקרבו על מדבחי קרבן מרחק לא
11 רעוא קדמי בכון אמר יי צבאות וקורבן לרעוא לא אקבל מידכון : ארי ממדנח שמשא
ועד מעליה רב שמי בני עממיא ובכל עדן דאתון עבדין רעותי אנא אקבל צלותכון
ושמי רבא מתקדש על ידיכון וצלותכון כקורבן דכי קדמי ארי רב שמי בני עממיא
12 אמר יי צבאות : ואתון מחללין יתיה בדאתון אמרין פתורא דיי בסיר הוא ובסרן
13 מתנתא מניה : ואם תימרון הא דאיתינא מלאותנא ושניקתון יתיה אמר יי צבאות
ומיתן אתון דאנים ודחגיר ודמריע ומיתן אתון ליה בקורבנא האקבל יתיה ברעוא
14 מידכון אמר יי : וליט דיעביד בנכיל ואית בעדריה דכר והוא חיב לנדר ודבח דמחבל
קדם יי ארי מלך רב אנא אמר יי צבאות ושמי חסין בעממיא :

ב

1 וכען לכון תפקדתא הדא כהניא : אם לא תקבלון ואם לא תשוון דחלתי על לבא 2
למתן יקרא לשמי אמר יי צבאות ואשלח בכון ית מארתא ואלוט ית ברכתכון
ואף אלוטניה ארי ליתכון משוין דחלתי על לבא :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ecce de filio edictum eſt ut honoret patrem, & de ſervo ut revereatur conſpectum heri ſui: ſi tanquam pater ego ſum, ubinam *vos honorem præſtatis mihi?* & ſi tanquam Dñs ego ſum, ubinam vos reveremini præſentiam meam, dixit Dñs exercituum? vobis ſacerdotes qui contemnitis nomen meum: quòd ſi dixeritis, In quo contemnimus nomen tuum? Vos offertis ſuper altare meum oblationem execrandam: quòd ſi dixeritis, In quo execrandam? quando vos dicitis, Menſa Dñi deſpectui habetur. Et quòd vos offeratis quod cæcum eſt ad immolandum, nonne malum eſt? & quod vos offeratis quod claudum eſt, & quod infirmum, nónne malum eſt? offerte illud nunc principi tuo qui tibi [*præeſt,*] num ſibi complacebit in te; aut num accipiet faciem tuam, dicit Dñs exercituum? Nunc itaq; orate nunc coram Deo, ut recipiat orationem noſtram: à manibus veſtris hoc factum eſt: num recipientur vobis facies dicit Dñs exercituum? Quis eſt etiam hic inter vos qui claudat oſtium ædis ſanctuarii mei, & non offeratis ſuper altare meum oblationem execrandam: non eſt voluntas coram me in vobis, ait Dñs exercituum; & oblationem gratam non accipiam à manibus veſtris. Quoniam ab ortu Solis & uſq; ad occaſum ejus magnum eſt nomen meum inter gentes: ſed quocunq; tempore vos executuri eſtis voluntatem meam; ego recipiam preces veſtras, & nomen meum magnum ſanctificabitur per manus veſtras, & oratio veſtra [*erit*] ſicut oblatio munda coram me, quoniam magnum eſt nomen meum inter gentes, dicit Dominus exereituum. Vos autem prophanatis illud, quando vos dicitis, Menſa Dñi deſpicatui habita eſt, ac deſpiciuntur dona ex ea. Quòd ſi dixeritis, Ecce quod attulimus, ex labore noſtro [*eſt;*] & ſuffocatis illud, ait Dñs exercituum: at affertis quod raptum & quod claudum, & quod infirmũ eſt; & affertis illud in oblationẽ: num illud gratum accipiam de manu veſtra, ait Dñs? Et maledict⁹ qui agit cum fraude cùm habeat in grege ſuo maſculũ, & abnoxi⁹ ſit voto, tamen immolat quod corruptũ eſt coram Dño. Enimverò rex magn⁹ ego ſum, ait Dñs exercituũ, & nomen meũ potens eſt inter gentes.

CAP. II.

NUnc autem ad vos præceptum hoc ſacerdotes: Niſi recipiatis, & niſi ponatis timorem mei ſuper cor ad dandum gloriam nomini meo, ait Dñs exercituum; tunc immittam in vos maledictionem, & maledicam benedictioni veſtræ, & etiam execrabor eam, quoniam vos non ponitis timorem mei ſuper cor.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

6 * ܒܪܐ ܡܝܩܪ ܠܐܒܘܗܝ. ܘܥܒܕܐ ܠܡܪܗ. ܘܐܢ ܐܒܐ ܐܢܐ. ܐܝܟܘ ܐܝܩܪܐ ܕܝܠܝ. ܘܐܢ
ܡܪܐ ܐܢܐ. ܐܝܟܘ ܕܕܚܠܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܠܟܘܢ ܟܗ̈ܢܐ܇ ܕܒܣܝܢ
7 ܐܢܬܘܢ ܫܡܝ. ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܒܡܢܐ ܐܒܣܢ ܫܡܟ. * ܥܠ ܕܡܩܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܠ
ܡܕܒܚܝ ܠܚܡܐ ܡܣܝܒܐ. ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܒܡܢܐ ܣܝܒܢܝܗܝ. ܒܕܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ. ܕܫܝܛܐ ܗܝ
8 ܦܬܘܪܗ ܕܡܪܝܐ. * ܘܡܩܪܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܕܒܚܐ ܣܡܝܐ. ܠܐ ܒܝܫ. ܘܡܩܪܒܝܢ
ܐܢܬܘܢ ܚܓܝܪܐ ܘܟܪܝܗܐ. ܠܐ ܒܝܫ. ܩܪܒܝܗܝ ܕܝܢ ܠܫܠܝܛܢܟ. ܐܢ ܪܥܐ ܒܟ. ܐܘ
9 ܢܣܒ ܒܐܦܝܟ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܘܗܫܐ ܒܥܘ ܗܘ ܡܢ ܡܪܝܐ. ܘܢܪܚܡ ܥܠܝܢ.
10 ܕܐܝܕܝܟܘܢ ܗܘܬ ܗܕܐ. ܠܐ ܐܣܒ ܒܐܦܝܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܡܢܘ ܐܝܬ ܒܟܘܢ ܕܐܚܘܕ
ܬܪ̈ܥܐ. ܠܐ ܬܐܦܘܢ ܥܠ ܡܕܒܚܝ ܡܓܢ. ܠܐ ܨܒܐ ܐܢܐ ܒܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܘܩܘܪܒܢܐ
11 ܠܐ ܐܩܒܠ ܡܢ ܐܝܕܝܟܘܢ. * ܡܛܠ ܕܡܢ ܡܕܢܚܘܗܝ ܕܫܡܫܐ ܘܥܕܡܐ ܠܡܥܪܒܘܗܝ. ܪܒ ܗܘ
ܫܡܝ ܒܥܡܡܐ. ܘܒܟܠ ܐܬܪ ܡܩܛܪܝܢ ܒܣܡܐ. ܘܡܩܪܒܝܢ ܠܫܡܝ ܩܘܪܒܢܐ ܕܟܝܐ. ܡܛܠ
12 ܕܪܒ ܗܘ ܫܡܝ ܒܥܡܡܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܘܐܢܬܘܢ ܡܛܢܦܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܗ ܟܕ ܐܡܪܝܢ
13 ܐܢܬܘܢ. ܕܦܬܘܪܗ ܕܡܪܝܐ ܡܛܢܦܐ ܗܝ. ܘܡܐܟܘܠܬܗ ܐܝܟ ܡܣܠܝܢ ܠܗ. * ܘܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܗܢܐ
ܡܢ ܕܥܡܠܢ ܗܘ. ܘܢܦܚܬ ܒܗ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܘܡܝܬܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢ ܚܛܘܦܝܐ
ܩܘܪ̈ܒܢܐ ܚܓܝܪܐ ܘܟܪܝܗܐ. ܠܐ ܡܩܒܠ ܐܢܐ ܠܗܘܢ ܡܢ ܐܝܕܝܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ.
14 * ܘܠܝܛ ܡܢ ܕܐܝܬ ܠܗ ܒܥܢܗ ܕܟܪܐ. ܘܢܕܪ ܘܡܕܒܚ ܟܪܝܗܐ ܠܡܪܝܐ. ܡܛܠ ܕܡܠܟܐ
ܐܢܐ ܪܒܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܘܫܡܝ ܕܚܝܠ ܒܥܡܡܐ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܒ *

1 * ܘܗܫܐ ܦܘܩܕܢܐ ܗܢܐ ܠܟܘܢ ܗܘ ܟܗ̈ܢܐ. * ܐܢ ܠܐ ܬܫܡܥܘܢ. ܘܐܢ ܠܐ ܬܣܝܡܘܢ
2 ܠܒܟܘܢ: ܠܡܬܠ ܐܝܩܪܐ ܠܫܡܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܐܫܕܪ ܒܟܘܢ ܠܘܛܬܐ.
ܘܐܠܘܛ ܠܒܘܪܟܬܟܘܢ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܣܝܡܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܒܟܘܢ.

6 Filius honorat patrem ſuũ, & ſervus dominum ſuum. Si pater ſum, quomodo honoratis me? ſi dñs ſum, quomodo metuitis me, dicit Dñs potentiſſimus? Heus ſacerdotes qui diripitis nomen meum. Quòd ſi dicatis, Quâ in re diripiſivimus nomen tuum? 7 Quia offertis ſuper altare meum panem pollutum. Quòd ſi dicatis, Quâ in re polluimus te? in eo quòd dicitis, Contemptibilis eſt menſa Dñi. 8 Et quandoquidem offertis cæcum ad altare, annon malũ eſt? & cùm offertis claudum & ægrotũ, annon malum eſt? Offer illud quæſo duci tuo, an applauſurus ſit tibi, aut vultũ tuum acceptum habiturus, dicit Dñs potentiſſimus. 9 Jam deprecamini Dñm, ut miſereatur noſtrî; quoniam per vos id factum eſt, acceptos non habebo vultus veſtros, ait Dñs potentiſſimus. 10 Quis inter vos eſt qui claudat oſtium meum? Ne offeratis ſuper altare meũ quod eſt gratuitum. (i. *nihilo ſtetit.*) Non delector vobis, ait Dñs potentiſſimus, & oblationem haud accipiam à vobis. 11 Nam ab ortu ſolis uſque ad occaſum ejus magnum erit nomen meum inter gentes, & in omni loco thus adolebunt, & offerent nomini meo oblationes puras: quia magnum erit nomen meum inter gentes, ait Dominus potentiſſimus. 12 Vos autem polluitis illud, quum dicatis menſam Domini eſſe pollutam, ejuſque cibos eſſe contemptibiles. 13 Et dicitis, Hoc ex labore noſtro eſt; at ego inſufflavi in illud, ait Dominus potentiſſimus. Quoniam ex rapina defertis oblationes claudas & ægrotas, non accipiam eas de manibus veſtris, ait Dominus potentiſſimus. 14 Imò maledictus ille qui habet in grege ſuo arietem *ſanum*, tamen vovet & ſacrificat ægrotum Domino; nam rex ſum magnus, ait Dñs potentiſſimus, & nomen meum formidabile eſt inter populos.

CAP. II.

1 NUnc præceptum hoc ad vos ſpectat ſacerdotes. 2 Si non audieritis, ſi non adhibueritis animũ veſtrum ad exhibendũ honoré nomini meo, dicit Dñs potentiſſimus; immittam in vos maledictiones, & maledicam benedictionibus veſtris, eò quòd non adhibeatis animum veſtrum.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

6 * الابن يمجد اباه والعبد سيده فان كنت انا ابا اين هو مجدي وان كنت انا سيدا
اين هو خوفي يقول الرب الضابط الكل وانتم ايها الكهنة الذين يسيئون الي اسمي ويقولون
7 بماذا اسأنا لاسمك * تقدمون على مذبحي خبزا نجسا ويقولون بماذا نجسناهم عند ما تقولون
8 مائدة الرب حقيرة هي والاطعمة الموضوعة محقورة * من اجل انكم ان قدمتم اعمي
للذبيحة اليس رديء وان قدمتم اعرجا او مريضا اليس رديء قدمه لمقدمك ان كان
9 يقبله او ياخذ بوجهك يقول الرب الضابط الكل * والان استغفروا لوجه الاهكم واطلبوا
10 منه بيدكم صار هذا آخذ منكم لوجوهكم يقول الرب الضابط الكل * من اجل
انه بكم تغلق الابواب ولا تقدموا على مذبحي مجانا ليست هذه ارادتي فيكم يقول الرب
11 الضابط الكل ولا اقبل ذبيحة من ايديكم * من اجل انه من مشارق الشمس الي المغارب
تمجد اسمي في الامم وفي كل موضع يقدم بخور لاسمي في الامم يقول الرب الضابط
12 الكل * وانتم تنجسوه عند ما تقولون مائدة الرب نجسة هي وتحقرون اطعمته الموضوعة
13 * وتقولون هذه من الم رديء وتنفخها يقول الرب الضابط الكل وتدخلون الاختطاف
والعرج والسقيمين وان قدمتم ذبيحة لن اقبلها من يديكم يقول الرب الضابط الكل
14 * وملعون الذي هو قوي وعنده في القطيع ذكر وينذر به ويذبح الفاسدات للرب من
اجل اني ملك عظيم انا انا يقول الرب الضابط الكل واسمي ظاهر في الامم

الفصل الثاني

1 * والان هذه الوصية لكم ايها الكهنة * وان لم تسمعوا وان لم
2 تضعوا في قلوبكم لتعطوا مجدا لاسمي يقول الرب الضابط الكل فارسل عليكم اللعنة
والعن بركتكم وابطل بركتكم وليست تكون فيكم لانكم انتم لم تضعوا في قلوبكم

6 *Filius glorificat patrem ſuum, & ſervus dominum ſuum. Quòd ſi ego pater ſum, ubi eſt gloria mea? quòd ſi dominus ego ſum, ubi eſt reverentia mea, dicit Dominus omnipotens? Jam vos O ſacerdotes, qui injuriam facitis nomini meo, & dicitis; Qua in re injuriam fecimus nomini tuo?* 7 *Offertis ſuper altare meum panes pollutos; & dicitis, Quâ in re polluimus eos? quando dicitis, Menſa Domini contemptibilis eſt, & cibi ſuperpoſiti viles ſunt.* 8 *Nam cùm cæcum offertis in ſacrificium, nonne malum eſt? cùmque claudum aut ægrotum offertis, nonne malum eſt? Offer illud duci tuo, an accipiat illud, an ſuſcipiat vultum tuum, dicit Dominus omnia tenens.* 9 *Itaque veniam petite à Deo veſtro, eumque deprecamini: Per manum veſtram factum eſt hoc: num accipiam à vobis propter vultus veſtros, dicit Dominus omnia tenens?* 10 *Nam per vos clauduntur portæ: & ne offeratis gratuitum ſuper altare meum. Non eſt hæc voluntas mea in vobis, dicit Dominus omnia tenens: neque ſuſcipiam ſacrificium de manibus veſtris.* 11 *Ab ortu enim ſolis ad occaſum uſque glorificabitur nomen meum inter gentes, & in omni loco offeretur incenſum nomini meo inter gentes, dicit Dominus omnia tenens.* 12 *Vos autem profanatis illud, cùm dicitis; Menſa Domini immunda eſt; & contemnitis cibos ſuperpoſitos,* 13 *Ac dicitis, Hæc ſunt ex dolore peſſimo: ideò expui illa, dicit Dominus omnipotens. Et infertis rapinam, & clauda, atque ægrota; ideò licèt offeratis ſacrificium, non accipiam illud è manibus veſtris, ait Dominus omnipotens.* 14 *Verùm maledictus ille qui cùm potens ſit, habeátque in grege maſculum, & de eo ſit votum ipſius; tamen vitioſa Domino ſacrificat. Nam rex maximus ego ſum, ait Dominus omnipotens; & nomen meum illuſtre inter gentes.*

CAP. II.

1 *HOc igitur mandatum vos ſpectat O ſacerdotes.* 2 *Quòd ſi non audieritis, & niſi ex animo ſtudueritis gloriam dare nomini meo, dicit Dominus omnipotens; mittam ſuper vos maledictionem, & maledicam benedictioni veſtræ, veſtrámque benedictionem abolebo, ut non ſit in vobis: eò quòd non adhibeatis animum veſtrum.*

מלאכי : ב

ſuper ſtercus diſpergam & , ſemen vobis *corrumpens ego* Ecce
3 הנני גער לכם את־הזרע וזריתי פרש על־
.ſe ad vos aſſumet & : veſtrarum ſolennitatum ſtercus, veſtros vult*
פניכם פרש חגיכם ונשא אתכם אליו:
exiſtendum ad , hoc mandatum vos ad miſi quòd ſcietis Et
4 וידעתם כי שלחתי אליכם את המצוה הזאת להיות
meum Pactum .exercituum Dominus dixit , Levi cum meum pactum
5 בריתי את־לוי אמר יהוה צבאות: בריתי
, timorem illi ea dedique , pacis & , *vitarum* eo cum fuit
היתה אתו החיים והשלום ואתנם־לו מורא
Lex .*ipſe* eſt contritus mei nominis *faciebus* à &, me timuit *&*
6 ויראני ומפני שמי נחת הוא: תורת
ejus labiis in eſt inventa non iniquitas &, ejus ore in fuit veritatis
אמת היתה בפיהו ועולה לא־נמצא בשפתיו
avertit multos & , mecum ambulavit *rectitudine* in & pace in
בשלום ובמישור הלך אתי ורבים השיב
legem & , ſcientiam cuſtodient ſacerdotis labia Nam .iniquitate ab
7 מעון: כי־שפתי כהן ישמרו־דעת ותורה
vos Et .*ipſe* exercituum Domini angelus quia : ejus ore ex requirent
8 יבקשו מפיהו כי מלאך יהוה־צבאות הוא: ואתם
pactum corrupiſtis : lege in multis fuiſtis offendiculo , via de receſſiſtis
סרתם מן־הדרך הכשלתם רבים בתורה שחתם ברית
vos dedi ego etiam Et .exercituum Dominus dixit , Levi
9 הלוי אמר יהוה צבאות: וגם־אני נתתי אתכם
vos non quòd *os* ſecundùm , populo omni humiles & contemptibiles
נבזים ושפלים לכל־העם כפי אשר אינכם
pater Nónne .lege in *facies aſſumentes* & , meas vias *ſervantes*
10 שמרים את־דרכי ונשאים פנים בתורה: הלוא אב
fraudatur Cur ? nos creavit unus Deus nónne ? nobis omnibus unus
אחד לכלנו הלוא אל אחד בראנו מדוע נבגד
fecit Fraudem ? noſtrorum patrum pactum violando , *ſuo fratre in vir*
איש באחיו לחלל ברית אבתינו: בגדה
quia : Jeruſalaim in & , Iſrael in eſt facta abominatio & , Jehudah
11 יהודה ותועבה נעשתה בישראל ובירושלם כי
uxorem duxit & , dilexit *quam* , Domini *ſanctitatem* Jehudah contaminavit
חלל יהודה קדש יהוה אשר אהב ובעל
vigilantem, hoc fecit qui virum Dominus Succidet .alieni Dei *filiam*
12 בת־אל נכר: יכרת יהוה לאיש אשר יעשנה ער
exercituum Domino munus offerentem &, Jahacob *tentoriis de reſpondentẽ &*
וענה מאהלי יעקב ומגיש מנחה ליהוה צבאות
Domini altare *lachryma operire* , *facietis* ſecundò hoc Et
13 וזאת שנית תעשו כסות דמעה את־מזבח יהוה בכי
fletu & , *munus* ad *reſpiciendo* ultrà non à , clamore &
ואנקה מאין עוד פנות אל־המנחה ולקחת
quod Propterea ? quid Propter : dixiſtis Et .veſtra manu de *beneplacitum*
רצון מידכם: ואמרתם על־מה על כי־
quam , *tuarum pueritiarum* uxorem inter & te inter ſit teſtificatus Dominus
14 יהוה העיד בינך ובין אשת נעוריך אשר
ne Et .tui fœderis uxor & , tua ſocia *ipſa & , eam in es prævaricatus* tu
אתה בגדתה בה והיא חברתך ואשת בריתך: ולא־
ſemen *quærens* ? unus quid & , ei ſpiritus *reſiduum* & , fecit unus
15 אחד עשה ושאר רוח לו ומה האחד מבקש זרע
ne *tuarum pueritiarum* uxorem in & , *veſtro ſpiritu in cauti eſtote Et* .Dei
אלהים ונשמרתם ברוחכם ובאשת נעוריך אל־
, Iſrael Deus Dominus dixit , dimitte , *oderit Cùm* .*prævaricetur*
16 יבגד: כי־שנא שלח אמר יהוה אלהי ישראל
: exercituum Dominus dixit , ejus veſtimentum *ſuper rapina* operiet &
וכסה חמס על־לבושו אמר יהוה צבאות
.fraudetis ne & , veſtro ſpiritu in vos *cuſtodietis* &
ונשמרתם ברוחכם ולא תבגדו:

Verſio VULG. LAT.

3 Ecce ego projiciam vobis bra-
chium, & diſpergam ſuper vultũ
veſtrum ſtercus ſolennitatum ve-
4 ſtrarum, & aſſumet vos ſecum. Et
ſcietis quia miſi ad vos mandatũ
iſtud, ut eſſet pactum meum cum
Levi, dicit Dominus exercituum.
5 Pactum meum fuit cum eo vitæ &
pacis: & dedi ei timorem, & ti-
muit me, à facie nominis mei pa-
6 vebat. Lex veritatis fuit in ore
ejus, & iniquitas non eſt inventa
in labiis ejus: in pace & in æqui-
tate ambulavit mecum, & mul-
7 tos avertit ab iniquitate. Labia
enim ſacerdotis cuſtodient ſcien-
tiam, & legem requirent ex ore
ejus: quia Angelus Domini exer-
8 cituum eſt. Vos autem receſſiſtis
de via, & ſcandalizâſtis plurimos
in lege: irritum feciſtis pactum
Levi, dicit Dominus exercituum.
9 Propter quod & ego dedi vos
contemptibiles, & humiles omni-
bus populis, ſicut non ſervâſtis
vias meas, & accepiſtis faciem in
10 lege. Numquid non pater unus
omnium noſtrûm? numquid non
Deus unus creavit nos? quarè
ergò deſpicit unuſquiſque no-
ſtrûm fratrem ſuum, violans pa-
11 ctum patrum noſtrorum? Tranſ-
greſſus eſt Juda, & abominatio
facta eſt in Iſrael, & in Jeruſalem:
quia contaminavit Judas ſanctifi-
cationem Domini, quam dilexit;
12 & habuit filiam dei alieni. Diſ-
perdet Dominus virum qui fece-
rit hoc, magiſtrum & diſcipulum
de tabernaculis Jacob, & offeren-
tem munus Domino exercituum.
13 Et hoc rurſum feciſtis, operieba-
tis lachrymis altare Domini, fle-
tu, & mugitu, ita ut non reſpi-
ciam ultrà ad ſacrificium, nec ac-
cipiam placabile quid de manu
14 veſtra. Et dixiſtis; Quam ob cau-
ſam? quia Dominus teſtificatus
eſt inter te, & uxorem pubertatis
tuæ, quam tu deſpexiſti: & hæc
particeps tua, & uxor fœderis
15 tui. Nónne unus fecit; & reſi-
duũ ſpiritûs ejus eſt? Et quid u-
nus quærit, niſi ſemen Dei? Cu-
ſtodite ergo ſpiritum veſtrum, &
uxorem adoleſcentiæ tuæ noli de-
16 ſpicere. Cùm odio habueris, di-
mitte, dicit Dominus Deus Iſra-
el: operiet autem iniquitas veſti-
mentũ ejus, dicit Dominus exer-
cituum: cuſtodite ſpiritũ veſtrum,
& nolite deſpicere.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

3 Ἰδοὺ ἐγὼ ἀφορίζω ὑμῖν τὸν ὦμον, καὶ σκορπιῶ
ἔνυςρον ἐπὶ τὰ πρόσωπα ὑμῶν, ἔνυςρον (α)
4 ἑορτῶν ὑμῶν, καὶ λήψομαι ὑμᾶς (β) εἰς τὸ αὐτό.
Καὶ ἐπιγνώσεσθε διότι ἐγὼ (γ) ἐξαπέςαλκα
πρὸς ὑμᾶς τὴν ἐντολὴν ταύτην, τοῦ εἶναι τὴν
διαθήκην μου πρὸς τοὺς Λευίτας, λέγει
5 κύριος παντοκράτωρ. Ἡ διαθήκη μου ἦν
μετ᾽ αὐτοῦ τῆς ζωῆς καὶ τῆς εἰρήνης, καὶ ἔδωκα αὐ-
τῷ ἐν φόβῳ φοβεῖσθαί με, καὶ ἀπὸ προσώπου
6 (δ) ὀνόματός μου ςέλλεσθαι αὐτόν. Νόμος ἀ-
ληθείας ἦν ἐν τῷ ςόματι αὐτοῦ, καὶ ἀδικία
οὐχ εὑρέθη ἐν χείλεσιν αὐτοῦ· ἐν εἰρήνῃ
κατευθύνων ἐπορεύθη μετ᾽ ἐμοῦ, καὶ πολλοὺς
7 ἐπέςρεψεν ἀπὸ ἀδικίας. Ὅτι χείλη ἱε-
ρέως φυλάξεται γνῶσιν, καὶ νόμον ἐκζητή-
σουσιν ἐκ ςόματος αὐτοῦ, διότι ἄγγελος
8 κυρίου παντοκράτορός ἐςιν. Ὑμεῖς δὲ ἐξεκλί-
νατε ἐκ τῆς ὁδοῦ, καὶ (ε) ἠσθενήσατε πολλοὺς ἐν
νόμῳ, (ϛ) διεφθείρατε τὴν διαθήκην τοῦ Λευὶ,
9 λέγει κύριος παντοκράτωρ. (ζ) Κἀγὼ δέδω-
κα ὑμᾶς ἐξουδενωμένους καὶ ἀπεῤῥιμμένους
εἰς πάντα τὰ ἔθνη, ἀνθ᾽ ὧν ὑμεῖς οὐκ ἐφυ-
λάξασθε τὰς ὁδούς μου, (ϛ) ἀλλὰ ἐλαμβάνετε
10 πρόσωπα ἐν νόμῳ. (η) Οὐχὶ πατὴρ εἷς
πάντων ὑμῶν; οὐχὶ Θεὸς εἷς ἔκτισεν ὑμᾶς;
τί ὅτι ἐγκατελίπετε ἕκαςος τὸν ἀδελφὸν
αὐτοῦ, τοῦ βεβηλῶσαι τὴν διαθήκην τῶν πατέ-
11 ρων ὑμῶν; Ἐγκατελείφθη Ἰούδας, καὶ βδέ-
λυγμα ἐγένετο ἐν τῷ Ἰσραὴλ καὶ ἐν Ἱερου-
σαλὴμ, διότι ἐβεβήλωσεν Ἰούδας τὰ ἅγια
κυρίου, ἐν οἷς ἠγάπησε, καὶ ἐπετήδευσεν εἰς
12 θεοὺς ἀλλοτρίους. (θ) Ἐξολοθρεύσει κύριος τὸν
ἄνθρωπον τὸν ποιοῦντα ταῦτα, ἕως καὶ ταπει-
νωθῇ ἐκ σκηνωμάτων Ἰακὼβ, καὶ ἐκ προσ-
αγόντων θυσίαν (ι) τῷ κυρίῳ παντοκράτορι.
13 Καὶ ταῦτα, ἃ ἐμίσουν, ἐποιεῖτε· ἐκαλύπτετε
δάκρυσι τὸ θυσιαςήριον κυρίου, καὶ κλαυθμῷ
καὶ ςεναγμῷ ἐκ κόπων. ἔτι ἄξιον ἐπιβλέψαι
εἰς θυσίαν, ἢ λαβεῖν δεκτὸν ἐκ τῶν χειρῶν
14 ὑμῶν; Καὶ εἴπατε, (κ) Ἕνεκεν τίνος;
ὅτι κύριος διεμαρτύρατο ἀναμέσον σου,
καὶ ἀναμέσον γυναικὸς νεότητός σου, ἣν ἐγ-
κατέλιπες, καὶ αὕτη κοινωνός σου, καὶ γυνὴ
15 διαθήκης σου. Καὶ οὐ (λ) καλὸν ἐποίησε;
καὶ ὑπόλειμμα πνεύματος αὐτοῦ. καὶ εἴπατε,
Τί ἄλλο ἢ σπέρμα ζητεῖ ὁ Θεός; καὶ φυ-
λάξασθε ἐν τῷ πνεύματι ὑμῶν, καὶ γυναῖκα
16 νεότητός σου μὴ ἐγκαταλίπῃς· (ϛ) Ἀλλὰ ἐὰν
μισήσας ἐξαποςείλῃς, λέγει κύριος ὁ Θε-
ὸς (μ) τοῦ Ἰσραὴλ, καὶ καλύψει ἀσέβεια ἐπὶ
τὰ ἐνθυμήματά σου, λέγει κύριος παντο-
κράτωρ. καὶ φυλάξασθε ἐν τῷ πνεύματι
ὑμῶν, καὶ οὐ μὴ ἐγκαταλίπητε,

Ecce ego (a) ſeparo vobis hu- 3
merum, & diſpergam ventricu-
lum ſuper facies veſtras, ventri-
culum ſolennitatum veſtrarum:
& ſuſcipiam vos ſimul. Et cog- 4
noſcetis, quia ego miſi ad vos
mandatum hoc, ut eſſet (b) te-
ſtamentum meum ad Levitas,
dicit Dominus omnipotens. Teſta- 5
mentum meum fuit cum eo vitæ
& pacis: & dedi ei ut in timo-
re timeret me, & à facie nominis
mei formidaret. Lex veritatis 6
fuit in ore ejus: & iniquitas
non eſt inventa in labiis ejus. In
(c) pace dirigens ambulavit me-
cum: & multos convertit ab ini-
quitate: Quoniam labia ſacerdo- 7
tis cuſtodient ſcientiam: et legem
requirent ex ore ejus: quia an-
gelus Domini omnipotentis eſt.
Vos autem declinâſtis de via, & 8
(d) infirmos feciſtis multos in
lege: corrupiſtis teſtamentum
Levi, dicit Dominus omnipotens.
Et ego dedi vos contemptos, & 9
(e) abjectos in omnes gentes, pro
eo quòd vos non cuſtodiſtis vias
meas, ſed (f) accipiebatis perſonas
in lege. Nónne pater unus omniũ 10
veſtrûm? nónne Deus unus crea-
vit vos? Quarè reliquiſtis u-
nuſquiſque fratrem ſuum: ut
abominabile faceret teſtamentum
patrum veſtrorum? Derelictus 11
eſt Judas: & abominatio facta
eſt in Iſrael, & in Hieruſalem:
quia contaminavit Judas Sancta
Domini, in quibus dilexit, &
adinvenit in diis alienis. Diſ- 12
perdet Dominus hominem, qui
facit hæc; donec & humilietur
de tabernaculis Jacob, & ab his
qui offerunt ſacrificium Domino
omnipotenti. Et hæc, quæ oderam, 13
faciebatis: operiebatis lachrymis
altare Domini, & planctu &
gemitu de (g) laboribus. Adhuc
dignum reſpicere ſacrificium, aut
ſuſcipere acceptabile de manibus
veſtris? Et dixiſtis; Propter 14
quid? Quia Dominus teſtifica-
tus eſt inter te & uxorem ado-
leſcentiæ tuæ, quam reliquiſti: &
hæc particeps tua, & uxor teſta-
menti tui. Et (h) nónne bonum 15
fecit, et reliquiæ ſpiritûs (i) ejus?
Et dixiſtis; Quid aliud præter
ſemen quærit Deus? Et cuſtodite
in ſpiritu veſtro: & uxorem ad-
oleſcentiæ tuæ ne derelinquas.
Sed, ſi odio habẽs dimiſeris [eam], 16
dicit Dominus Deus Iſrael; &
operiet impietas ſuper cogitatio-
nes tuas, dicit Dominus omni-
potens. Et cuſtodite in ſpiritu
veſtro, & nolite derelinquere:

MS.A. (α) ἑορτῆς (β) ἐπὶ (γ) κύριος (δ) τοῦ ὀνόματός (ε) πολλοὺς ἠσθενήσατε (ϛ) καὶ * διέφθειρα (ζ) Καὶ ἐγὼ (ϛ) ἀλλ᾽ (η) Οὐχὶ Θεὸς εἷς ἔκτισεν ὑμᾶς; οὐχὶ πατὴρ εἷς πάντων ὑμῶν; τί ὅτι (θ) Ἐξολεθρεύσει (ι) κυρίῳ (κ) Ἕνεκα τίνος; ὁ κύριος (λ) κάλλος (ϛ) Ἀλλ᾽ (μ) ὁ παντοκράτωρ Θεὸς Ἰσραὴλ,

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

3 הא אנא נזיף לכון בעללת בר זרעא ואגלי בהתת חוביכון על אפיכון ואבטל רבות
4 חגיכון ויתמנע חולקכון מניה: ותדעון ארי שלחית לותכון ית תפקדתא הדא
5 למהוי קימי דעם לוי אמר יי צבאות: קימי הוה עמיה חיי ושלמא ויהבית ליה אולפן
6 אורייתי שלים ודחיל מן קדמי ומן קדם שמי דחיל הוא: אוריתא דקושטא הוה
בפומיה ושקרא לא אשתכח בספותיה בשלמא ובתריצותא הלך קדמי וסגיאין אתיב
7 מחובא: ארי שפתי כהין יטרון מדע ואוראה יבעון מפומיה ארי משמש קדם יי צבאות
8 הוא: ואתון סטיתון מן אורחא אתקלתון סגיאין באוריתא חבלתון קימא דעם לוי
9 אמר יי צבאות: ואף אנא יהבית יתכון בסירין וחלשין לכל עמא כמא דליתכון
10 נטרין ית אורחן דתקנן קדמי ונסבין אפין באוריתא: הלא אבא חד לכלנא הלא אלהא
חד ברא יתנא מא דין נשקר גבר באחוהי לאפסא קימא די עם אבהתנא: שקרו
11 דבית יהודה ותועבתא אתעבידת בישראל ובירושלם ארי אפיסו דבית יהודה
נפשהון דהות קדישא קדם יי דרחם ואתרעיאו למסב להון נשין בנת עממיא:
12 ישצי יי לגבר דיעבדנה בר ובר בר מקרוי יעקב ואם כהין הוא לא יהי ליה מקריב
13 קורבנא בבית מקדשא דיי צבאות: ודא תנינות די אתון עבדין חפת דמעתא ית
מדבחא דיי די בכן ודי מדנקין מדלית עוד אתפנאה לקורבנא ולקבלא יתיה
14 ברעוא מידכון: ואם תימרון על מה על דיי אסהיד בינך ובין אתת ינקותך די את שקרת
15 בה והיא שותפתך ואתת קימך: הלא חד הוה אברהם יחידי די מניה אתברי עלמא
ומה חד בעי אלהין דיתקים ליה ולד מן קדם יי ותסתמרון בנפשתכון ובאתת
16 ינקותך לא תשקר: ארי אם סניתה פטרה אמר יי אלהא דישראל ולא תכסי חטאה
בלבושך אמר יי צבאות ותסתמרון בנפשתכון ולא תשקרון:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Ecce ego increpo vos ob proventum natum è ſemine, & patefaciam confu- 3
ſionem ſcelerum veſtrorum in facies veſtras, & abolebo magnificentiam ſo-
lennitatum veſtrarum; ac prohibebitur pars veſtra ab eo. Et ſcietis quòd ego 4
miſerim ad vos præceptum hoc, ut ſit pactum meum cum Levi, dicit Dñs ex-
ercituum. Pactum meum fuit cum eo vitæ & pacis: & dedi ei doctrinam le- 5
gis perfectam ut timeret à facie mea: & à facie nominis mei timuit ipſe. Lex 6
veritatis fuit in ore ejus, & falſitas non eſt inventa in labiis ejus: in pace & in
æquitate ambulavit coram me, & multos avertit ab iniquitate. Labia enim 7
ſacerdotis cuſtodient ſcientiam, & diſciplinam requirent ab ore ejus; quia
miniſter eſt coram Dño exercituum. Vos autem declinâſtis à via, & ſcanda- 8
lizâſtis plurimos in lege: corrupiſtis pactum quod erat cum Levi, dicit Dñs
exercituum. Ego quoq; dedi vos contemptibiles & infirmos omnibus popu- 9
lis, ſicut vos non ſervâſtis vias quæ rectæ ſunt coram me; & accepiſtis faciem
in lege. Nónne pater unus eſt omnium noſtrûm? nónne unus Deus creavit 10
nos? quare igitur iniquè agimus quiſque contra fratrem ſuum, violando
pactum quod eſt cum patribus noſtris? Iniquè egerunt viri domus Juda, & 11
abominatio facta eſt in Iſrael, & in Jeruſalem; quia violaverunt viri do-
mus Juda animam ſuam, quæ erat ſanctificata coram Dño, & dilecta: & vo-
luerunt accipere ſibi uxores filias populorum. Diſperdet Dñs viro qui fece- 12
rit hoc, filium & nepotem de urbibus Jacob: & ſi fuerit ſacerdos, *non erit*
ei qui offerat oblationem in domo ſanctuarii Domini exercituum. Et hoc 13
ſecundò facitis: Operitis lachrymis altare Dñi plorantium & gementium,
ita ut ultrà non reſpiciam oblationem nec ſuſcipiam illam cum beneplacito
de manibus veſtris. Et ſi dixeritis, Quamobrem? Eò quòd Dñs teſtificatus eſt 14
inter te & uxorẽ adoleſcentiæ tuæ, contra quam tu iniquè egiſti, & ipſa eſt
particeps tui, & uxor fœderis tui. Nónne unꝰ fuit Abraham ſolꝰ, ex quo pro- 15
pagatũ eſt ſeculũ? & quid unꝰ quæſivit, niſi ut permaneret ſibi proles in con-
ſpectu Dñi? Cavete igitur vobiſmetipſis: & contra uxorẽ adoleſcentiæ tuæ 16
ne iniquè agas. Quòd ſi oderis eam, dimitte eam, dicit Dñs exercituum
Deus Iſrael, & ne operias peccatum veſtimento tuo, dicit Dominus exer-
cituum. Cavete igitur animabus veſtris, & ne iniquè agatis.

Verſio SYRIACA cum Interpretatione LATINA.

* ܗܐ ܡܟܐ ܐܢܐ ܒܙܪܥܐ ܕܐܪܥܐ . ܘܐܙܪܐ ܦܪܬܐ ܥܠ ܐܦܝܟܘܢ. ܘܦܪܬܐ ܥܠ ܥܐܕܝܟܘܢ. 3
ܘܐܫܩܘܠܟܘܢ ܥܡܗ. * ܘܬܕܥܘܢ ܕܫܕܪܬ ܠܟܘܢ ܦܘܩܕܢܐ ܗܢܐ. ܕܢܗܘܐ ܩܝܡܝ ܥܡ ܠܘܝ 4
ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܩܝܡܝ ܗܘܐ ܥܡܗ. ܚܝܐ ܘܫܠܡܐ. ܝܗܒܬ ܐܢܘܢ ܠܗ ܕܒܕܚܠܬܐ ܢܕܚܠܢܝ 5
ܩܕܡܝ. ܘܡܢ ܩܕܡ ܫܡܝ ܙܐܥ ܗܘܐ. * ܢܡܘܣܐ ܕܩܘܫܬܐ ܗܘܐ ܒܦܘܡܗ. ܘܥܘܠܐ ܠܐ ܐܫܬܟܚ 6
ܒܣܦܘܬܗ. ܒܫܠܡܐ. ܘܒܬܪܝܨܘܬܐ. ܗܠܟ ܥܡܝ. ܘܣܓܝܐܐ ܐܗܦܟ ܡܢ ܥܘܠܐ. * ܣܦܘܬܐ 7
ܕܟܗܢܐ ܢܛܪܢ ܝܕܥܬܐ. ܘܢܡܘܣܐ ܢܒܥܘܢ ܡܢ ܦܘܡܗ. ܡܛܠ ܕܡܠܐܟܗ ܗܘ
ܕܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܐܢܬܘܢ ܕܝܢ ܣܛܝܬܘܢ ܡܢ ܐܘܪܚܐ. ܘܐܬܩܠܬܘܢ ܠܣܓܝܐܐ ܡܢ ܢܡܘܣܐ. 8
ܘܚܒܠܬܘܢ ܩܝܡܗ ܕܠܘܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܐܦ ܐܢܐ ܐܬܠܟܘܢ ܫܝܛܐ 9
ܘܡܟܝܟܐ ܒܟܠ ܥܡ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܛܪܬܘܢ ܐܘܪܚܬܝ. ܘܢܣܒܬܘܢ ܒܐܦܐ ܒܢܡܘܣܐ. * ܕܠܡܐ 10
ܠܐ ܗܘܐ ܚܕ ܐܒܐ ܠܟܠܢ. ܘܠܐ ܗܘܐ ܚܕ ܐܠܗܐ ܒܪܢ. ܠܡܢܐ ܡܥܠܝܢܢ ܚܕ ܒܐܚܘܗܝ.
ܘܡܛܢܦܝܢ ܚܢܢ ܩܝܡܐ ܕܐܒܗܝܢ. * ܐܥܠ ܝܗܘܕܐ. ܘܛܢܦܘܬܐ ܐܬܥܒܕܬ ܒܐܝܣܪܝܠ 11
ܘܒܐܘܪܫܠܡ. ܡܛܠ ܕܛܢܦ ܝܗܘܕܐ ܩܘܕܫܗ ܕܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܘܪܚܡ ܘܦܠܚ ܠܐܠܗܐ
ܢܘܟܪܝܐ. * ܢܘܒܕ ܡܪܝܐ ܠܓܒܪܐ ܕܥܒܕ ܗܕܐ. ܘܠܒܪܗ ܘܠܒܪ ܒܪܗ. ܡܢ ܡܫܟܢܗ 12
ܕܝܥܩܘܒ. ܘܠܐ ܢܗܘܐ ܠܗ ܕܡܩܪܒ ܩܘܪܒܢܐ ܠܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܘܗܕܐ ܬܢܝܢܘܬ ܥܒܕܬܘܢ. 13
ܟܣܝܐ ܕܡܥܬܐ ܠܒܝܬܗ ܕܡܪܝܐ. ܘܒܟܝܬܐ ܘܬܢܚܬܐ. ܡܛܠ ܕܠܐ ܢܚܘܪ ܠܩܘܪܒܢܝܟܘܢ.
ܘܠܐ ܢܩܒܠ ܨܒܝܢܐ ܡܢ ܐܝܕܝܟܘܢ. * ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܥܠ ܡܢܐ. ܥܠ ܕܣܗܕ ܡܪܝܐ 14
ܒܝܢܟ ܠܒܝܢ ܐܢܬܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟ. ܕܐܢܬ ܒܓܕܬ ܒܗ. ܘܗܝ ܫܘܬܦܬܟ ܘܐܢܬܬܐ ܕܩܝܡܟ. * ܕܠܡܐ ܠܐ 15
ܗܘܐ ܚܕ ܥܒܕ. ܘܫܪܟܐ ܕܪܘܚܐ ܕܝܠܗ ܗܘ. ܚܕ ܒܥܐ ܙܪܥܐ ܡܢ ܐܠܗܐ. ܐܙܕܗܪܘ ܒܪܘܚܟܘܢ. 16
ܘܒܐܢܬܬܐ ܕܛܠܝܘܬܟ ܠܐ ܬܒܓܘܕ. * ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ ܐܠܗܐ ܕܐܝܣܪܝܠ. ܘܥܘܠܐ.
ܒܬܟܣܝܬܗ ܠܐ ܢܟܣܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܐܙܕܗܪܘ ܒܪܘܚܟܘܢ. ܘܠܐ ܬܒܓܕܘܢ.

* Ecce increpabo ſemen terræ, ſpargamque fimum 3
in facies veſtras, & fimum in ſolennitates
veſtras, eoque tollam vos : Et ſcietis me 4
præceptum iſtud ad vos miſiſſe, ut ſit fœdus
cum Levi, dicit Dominus potentiſſimus. Fœdus 5
meum fuit cum ipſo, vitam & pacem ipſi
dedi, reverentèr coluit me, & nomen meum
extimeſcebat : Lex veritatis erat in ore ipſius, 6
& iniquitas non eſt inventa in labiis ejus, pacificè
& rectè ambulavit mecum, & multos
ab iniquitate retraxit. Nam labia ſacerdotis 7
ſtillant ſcientiam, & legem poſtulant ab
ore ejus, quippe qui ſit angelus Domini potentiſſimi.
At vos aberrâſtis à via, & ſcandalizaviſtis 8
multos *ut recederent* à lege, & corrupiſtis
fœdus Levi, dicit Dominus potentiſſimus.
Ego viciſſim reddam vos contemptibiles 9
& abjectos in omni gente, eò quòd non
obſervaveritis vias meas, & vultuum rationē
habueritis in lege. Annon idem pater eſt nobis 10
omnibus? annon idem Deus creavit nos?
quare perfidi ſumus alter in alterū, & polluimus
fœdus patrum noſtrorum? Perfidè egit 11
Juda, & abominatio cōmiſſa eſt in Iſraele &
Jeroſolyma : profanavit enim Juda Sanctuarium
Domini potentiſſimi, & dilexit coluitque
deos alienos. Perdat Dominus hominem 12
illum qui hoc fecerit, & filium ac nepotem
ejus, de tabernaculo Jacobi, & non ſit ei
quiſquam offerens oblationem Domino potentiſſimo.
Hoc aliud etiam facitis : operit 13
lachryma domum Domini, & fletus atque
ſuſpiria, adeo ut non reſpiciat ad oblationes
veſtras, neque ſuſcipiat ſpontaneum de manibus
veſtris. Quòd ſi dicatis, Qua de cauſa? 14
Quia teſtatus eſt Dominus inter te & uxorem
adoleſcentiæ tuæ, in quam tu perfidè agis,
quum ipſa ſit conſors tua & uxor tibi fœderata.
Annon vir unus, cujus ſunt reliqui ſpiritus, 15
unus *inquam* poſtulavit ſemen à Deo?
Cavete vobis ipſis & nemo in uxorem adoleſcentiæ 16
ſuæ perfidè agat. Dicit Dominus
potentiſſimus Deus Iſraelis; & iniquitatem
pallio ſuo ne tegat, dicit Dñs potentiſſimus.
Cavete vobiſipſis, & perfidè ne agatis.

Verſio ARABICA cum Interpretatione LATINA.

* الاصحاح الثاني والثلثون * وهو الثاني من النبوة *

* ها انا افرز لكم اليمين * وافرق رجيعا على وجوهكم * رجيع اعيادكم * واخذكم به * 3
* وتعلمون اني انا ارسلت اليكم هذه الوصية * ليكون عهدي مع اللاويين يقول الرب 4
الضابط الكل * عهدي كان معه للحياة والسلامة * واعطيته خوفا ليخافني وليرتعد من وجه 5
اسمي * ناموس حق كان في فمه * وظلم لم يوجد في شفتيه * بسلامة سار معي مقوما * ورد 6
كثيرين من الظلم * لان شفاه الكاهن تحفظ العلم ويطلبون الناموس من فمه * من اجل 7
انه ملاك الرب الضابط الكل هو * وانتم حدتم عن الطريق * واسقمتم كثيرين بالناموس * 8
وافسدتم عهدي اللاوي يقول الرب الضابط الكل * وانا دفعتكم محقورين ومطرحين 9
في كل الامم * من اجل انكم انتم لم تحفظوا طرقي * بل اخذتم بالوجوه في الناموس * اليس 10
اله واحد خلقكم * اليس اب واحد لجميعكم لماذا انتم تركتم كل واحد اخاه لينجس عهد
ابائكم * ترك يهوذا * والرذلة صارت في اسرائيل وفي اورشليم * من اجل ان يهوذا نجس اقداس 11
الرب التي بها احب * وعمل للالهة الغرباء * يستاصل الرب الانسان الذي يصنع هذا * 12
حتى يذل من مساكن يعقوب * ومن الذين يقدمون ذبيحة للرب الضابط الكل * فهذه 13
التي ابغضها تصنعون * غطيتم بالدموع مذبح الرب وبالبكاء والتنهد من الاتعاب * ايضا
واجب ان ينظر للذبيحة او ياخذ مقبولا من ايديكم * وتقولون من اجل ماذا * من اجل 14
ان الرب شهد بينك وبين امراة صباك التي تركتها وهي شريكتك وامراة عهدك *
* وليس اخر صنع * وبقية روحه * وتقولون لماذا يطلب الله زرعا اخر لاخرى * فاحفظوا 15
بروحكم وامراة شبابك لا تترك * لكن ان ابغضتها سرحها يقول الرب اله اسرائيل * ويغطي 16
النفاق على ثيابك يقول الرب الضابط الكل * واحفظوا بروحكم ولا تتركوا *

Textus trigeſimus ſecundus, hujus autem Prophetiæ ſecundus.

* *Ecce ego ſeparabo vobis dexteram, &* 3
ſpargam ſtercus ſuper facies veſtras,
ſtercus ſolennitatum veſtrarum, eoque
* *ſuſcipiam vos. Et ſcietis quòd ego miſerim* 4
ad vos mandatum iſtud, ut ſit fœdus
meum cum Levitis, ait Dominus omnipotens.
Fœdus meum fuit cum ipſo 5
ad vitam & pacem, & dedi ei timorem,
ut me timeret, & à facie nominis mei
trepidaret. Lex veritatis fuit in ore 6
ipſius, & iniquitas non eſt inventa in labiis
ejus : cum pace ambulavit mecum
rectè : & multos ab iniquitate revocavit.
Nam labia ſacerdotis doctrinam cuſtodiunt, 7
& legem poſtulant ab ore ipſius;
quoniam ipſe eſt angelus Domini omnipotentis,
Vos autem deflexiſtis à via, 8
& multos per legem reddidiſtis ægrotos.
& violâſtis fœdus meum Leviticum,
dicit Dominus omnipotens. Ideò deſpectos 9
reddam vos & abjectos inter omnes
gentes; eò quòd vos non ſervaveritis
vias meas, ſed perſonas acceperitis in
lege. Nónne Deus unus creavit vos? 10
nónne unus eſt omnium veſtrûm pater?
quare vos relinquitis unuſquiſque fratrem
ſuum, ut contaminet fœdus patrum
veſtrorum? Derelictus eſt Juda, & 11
abominatio facta eſt in Iſraele & in Jeruſalem;
quoniam Juda contaminavit
ſancta Domini, quæ diligebat, & fecit
diis alienis. Evellat Dominus hominem 12
talia facientem, ita ut deponatur de habitaculis
Jacobi, & de iis qui ſacrificium
offerunt Domino omnipotenti. Hæc quæ 13
odi, facitis : altare Domini lachrymis
operitis, & fletu atque ſuſpiriis de laboribus :
& adhuc decens eſſet ut ſacrificium
reſpiceret, aut quicquam gratum acciperet
è manibus veſtris? Et dicitis, 14
Quam ob cauſam? Quia Dominus teſtatus
eſt inter te & inter uxorem adoleſcentiæ
tuæ, quam reliquiſti; quum ipſa ſit
conſors tua & uxor fœderis tui : Nec 15
alius fecerit, & reliquiæ ſpiritûs ejus.
Et dicitis, Cur petit Deus ſemen aliud
alteri fœminæ? Cavete igitur vobiſipſis,
et uxorem adoleſcentiæ tuæ ne reliqueris.
Sed ſi oderis eam, dimitte illam, dicit Dominus 16
Deus Iſraelis, & operiet impietas
veſtimenta tua, dicit Dominus omnipotens.
Cavete igitur vobiſipſis, & ne relinquatis.

quo In : dixiſtis & , veſtris verbis *in* Dominum feciſtis Laborare

17 הוֹגַעְתֶּם יְהוָה בְּדִבְרֵיכֶם וַאֲמַרְתֶּם בַּמָּה

oculis in bonus ,malum *faciens* Omnis *: vos dicendo In* ? fecimus laborare

הוֹגָעְנוּ בֶּאֱמָרְכֶם כָּל־עֹשֵׂה רָע טוֹב בְּעֵינֵי

? judicii Deus ubi aut ,placuit ipſe eis in & , Domini

יְהוָה וּבָהֶם הוּא חָפֵץ אוֹ אַיֵּה אֱלֹהֵי הַמִּשְׁפָּט :

CAP. III. ג

ſtatim & , *meas facies ad* viam vertet & , meum angelum *mittens ego* Ecce

1 הִנְנִי שֹׁלֵחַ מַלְאָכִי וּפִנָּה־דֶרֶךְ לְפָנָי וּפִתְאֹם

angelus & , *quærentes* vos quem ,Dominator ſuum *palatium* ad veniet

יָבוֹא אֶל־הֵיכָלוֹ הָאָדוֹן אֲשֶׁר־אַתֶּם מְבַקְשִׁים וּמַלְאַךְ

.exercituum Dominus dixit ,venit ecce *: volentes* vos quem ,fœderis

הַבְּרִית אֲשֶׁר־אַתֶּם חֲפֵצִים הִנֵּה־בָא אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת :

? eum conſpici in ſtans quis & *? eum veniendi* diem *ſuſtinens* quis Et

2 וּמִי מְכַלְכֵּל אֶת־יוֹם בּוֹאוֹ וּמִי הָעֹמֵד בְּהֵרָאוֹתוֹ

.fullonum borith tanquam & , conflans ignis tanquam ipſe nam

כִּי־הוּא כְּאֵשׁ מְצָרֵף וּכְבֹרִית מְכַבְּסִים :

,Levi filios purgabit & , argentum emundans & , conflans ſedebit Et

3 וְיָשַׁב מְצָרֵף וּמְטַהֵר כֶּסֶף וְטִהַר אֶת־בְּנֵי־לֵוִי

offerentes Domino *erunt* & : argentum ſicut &,aurum ſicut eos *excoquet* &

וְזִקַּק אֹתָם כַּזָּהָב וְכַכָּסֶף וְהָיוּ לַיהוָה מַגִּישֵׁי

, Jehudah *munus* Domino dulceſcet Et .juſtitia in munus

4 מִנְחָה בִּצְדָקָה : וְעָרְבָה לַיהוָה מִנְחַת יְהוּדָה

.antiquos annos ſecundùm & , ſeculi dies ſecundùm , Jeruſalaim &

וִירוּשָׁלָם כִּימֵי עוֹלָם וּכְשָׁנִים קַדְמֹנִיּוֹת :

, maleficos in velox teſtis ero & , judicium ad vos ad accedam Et

5 וְקָרַבְתִּי אֲלֵיכֶם לַמִּשְׁפָּט וְהָיִיתִי עֵד מְמַהֵר בַּמְכַשְּׁפִים

mercedem *ſubtrahentes in & ; falſitate in* jurantes in & , adulteros in &

וּבַמְנָאֲפִים וּבַנִּשְׁבָּעִים לַשָּׁקֶר וּבְעֹשְׁקֵי שְׂכַר־

nec ,peregrinum pervertentes & ,pupillum & , viduam , mercenarii

שָׂכִיר אַלְמָנָה וְיָתוֹם וּמַטֵּי־גֵר וְלֹא

non Dominus ego Nam .exercituum Dominus dixit , me timuerunt

6 יְרֵאוּנִי אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת : כִּי אֲנִי יְהוָה לֹא

diebus A .eſtis conſumpti non Jahacob filii vos & : ſum mutatus

7 שָׁנִיתִי וְאַתֶּם בְּנֵי־יַעֲקֹב לֹא כְלִיתֶם : לְמִימֵי

.cuſtodiſtis non & , meis inſtitutis ab receſſiſtis veſtrorum patrum

אֲבֹתֵיכֶם סַרְתֶּם מֵחֻקַּי וְלֹא שְׁמַרְתֶּם

.exercituum Dominus dixit , vos ad revertar & , me ad Revertimini

שׁוּבוּ אֵלַי וְאָשׁוּבָה אֲלֵיכֶם אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת

quia *: Deum* homo *vi auferet* Nunquid ? revertemur quo In : dixiſtis Et

8 וַאֲמַרְתֶּם בַּמֶּה נָשׁוּב : הֲיִקְבַּע אָדָם אֱלֹהִים כִּי

decima *? te vi abſtulimus* quo In : dixiſtis Et *? me vi auferentes* vos

אַתֶּם קֹבְעִים אֹתִי וַאֲמַרְתֶּם בַּמֶּה קְבַעֲנוּךָ הַמַּעֲשֵׂר

vos *me* & , maledicti *vos* maledictione *In* .oblatione &

9 וְהַתְּרוּמָה : בַּמְּאֵרָה אַתֶּם נֵאָרִים וְאֹתִי אַתֶּם

domum *ad* decimam omnem Auferte *ipſa* omnis gens *,vi rapientes*

10 קֹבְעִים הַגּוֹי כֻּלּוֹ : הָבִיאוּ אֶת־כָּל־הַמַּעֲשֵׂר אֶל־בֵּית

dixit , hoc in *nunc* me probent & , mea domo in *præda* ſit & , theſauri

הָאוֹצָר וִיהִי טֶרֶף בְּבֵיתִי וּבְחָנוּנִי נָא בָּזֹאת אָמַר

cataractas vobis aperuero non ſi : exercituum Dominus

יְהוָה צְבָאוֹת אִם־לֹא אֶפְתַּח לָכֶם אֵת אֲרֻבּוֹת

.ſufficiens non ad uſque , benedictionem vobis evacuavero & , cœlorum

הַשָּׁמַיִם וַהֲרִיקֹתִי לָכֶם בְּרָכָה עַד־בְּלִי־דָי :

vobis corrumpet non & , devorantem *in* vobis increpabo Et

11 וְגָעַרְתִּי לָכֶם בָּאֹכֵל וְלֹא־יַשְׁחִת לָכֶם אֶת־

dixit , agro in vitis vobis orbabit nec , *humi* fructum

פְּרִי הָאֲדָמָה וְלֹא־תְשַׁכֵּל לָכֶם הַגֶּפֶן בַּשָּׂדֶה אָמַר

.exercituum Dominus

יְהוָה צְבָאוֹת :

Verſio VULG. LAT.

17 Laborare feciſtis Dominum in ſermonibus veſtris, & dixiſtis; In quo eum fecimus laborare? In eo quòd dicitis; Omnis qui facit malum, bonus eſt in conſpectu Domini, & tales ei placent: aut certè ubi eſt Deus judicii?

CAP. III.

1 Ecce ego mitto angelũ meum, & præparabit viam ante faciem meam. Et ſtatim veniet ad templum ſuum Dominator, quem vos quæritis; & angelus teſtamenti, quem vos vultis. Ecce venit, di- 2 cit Dominus exercituum: Et quis poterit cogitare diem adventûs ejus, & quis ſtabit ad videndum eum? Ipſe enim quaſi ignis conflans, & quaſi herba fullonum: 3 Et ſedebit conflans, & emundans argentum, & purgabit filios Levi, & colabit eos quaſi aurum, & quaſi argentum, & erunt Domino offerentes ſacrificia in juſtitia. 4 Et placebit Domino ſacrificium Juda & Jeruſalem, ſicut dies ſe- 5 culi, & ſicut anni antiqui. Et accedam ad vos in judicio, & ero teſtis velox maleficis, & adulteris, & perjuris, & qui calumniantur mercedem mercenarii, viduas, & pupillos: & opprimunt peregrinum, nec timuerunt me, 6 dicit Dominus exercituum. Ego enim Dominus, & non mutor: & vos filii Jacob non eſtis conſum- 7 pti. A diebus enim patrum veſtrorũ receſſiſtis à legitimis meis, & non cuſtodîſtis. Revertimini ad me, & revertar ad vos, dicit Dominus exercituum. Et dixiſtis; 8 In quo revertemur? Si affiget homo Deum, quia vos configitis me? Et dixiſtis; In quo configimus te? In decimis, & in primitiis. 9 Et in penuria vos maledicti eſtis, & me vos configitis gens tota. 10 Inferte omnem decimam in horreum, & ſit cibus in domo mea, & probate me ſuper hoc, dicit Dominus: ſi non aperuero vobis cataractas cœli, & effudero vobis benedictionem uſque ad ab- 11 undantiam, Et increpabo pro vobis devorantem, & non corrumpet fructum terræ veſtræ; nec erit ſterilis vinea in agro, dicit Dominus exercituum.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranſlatione LATINA.

17 Οἱ (ν) παροξύναντες τὸν θεὸν ἐν τοῖς λόγοις ὑμῶν· καὶ εἴπατε, Ἐν τίνι (ξ) παρωξύναμεν αὐτόν; ἐν τῷ λέγειν ὑμᾶς, Πᾶς ποιῶν πονηρὸν, καλὸν ἐνώπιον κυρίου, καὶ ἐν αὐτοῖς αὐτὸς εὐδόκησε, καὶ, Ποῦ ἐστιν ὁ θεὸς τῆς δικαιοσύνης;

MS. A. (ν) παροξύνοντες (ξ) παρωξύναμεν; ἐν τῷ

ΚΕΦ. γʹ.

1 Ἰδοὺ (α) ἐξαποστέλλω τὸν ἄγγελόν μου, καὶ ἐπιβλέψεται ὁδὸν πρὸ προσώπου μου, καὶ ἐξαίφνης ἥξει εἰς τὸν ναὸν (β) ἑαυτοῦ κύριος, ὃν ὑμεῖς ζητεῖτε, καὶ ὁ ἄγγελος τῆς διαθήκης, ὃν ὑμεῖς θέλετε· ἰδοὺ ἔρχεται, 2 λέγει κύριος παντοκράτωρ. Καὶ τίς ὑπομενεῖ ἡμέραν εἰσόδου αὐτοῦ; (γ) ἢ τίς ὑποστήσεται ἐν τῇ ὀπτασίᾳ αὐτοῦ; διότι αὐτὸς εἰσπορεύεται ὡς πῦρ χωνευτηρίου, 3 καὶ ὡς ποία πλυνόντων. (δ) Καθιεῖται χωνεύων καὶ καθαρίζων ὡς τὸ ἀργύριον, καὶ ὡς τὸ χρυσίον, καὶ καθαριεῖ τοὺς υἱοὺς Λευὶ, καὶ (ε) χεεῖ αὐτοὺς ὥσπερ τὸ χρυσίον καὶ τὸ ἀργύριον· καὶ ἔσονται τῷ κυρίῳ προσάγοντες 4 θυσίαν ἐν δικαιοσύνῃ. Καὶ ἀρέσει τῷ κυρίῳ θυσία Ἰούδα καὶ Ἱερουσαλὴμ, καθὼς αἱ ἡμέραι τοῦ αἰῶνος, καὶ καθὼς τὰ ἔτη τὰ 5 ἔμπροσθεν. Καὶ προσάξω (ζ) πρὸς ὑμᾶς ἐν κρίσει, καὶ ἔσομαι μάρτυς ταχὺς ἐπὶ * τὰς φαρμακοὺς, καὶ ἐπὶ τὰς μοιχαλίδας, καὶ ἐπὶ τοὺς ὀμνύοντας τῷ ὀνόματί μου ἐπὶ ψεύδει, καὶ ἐπὶ τοὺς ἀποστεροῦντας μισθὸν μισθωτοῦ, καὶ τοὺς καταδυναστεύοντας χήρας, καὶ τοὺς κονδυλίζοντας ὀρφανοὺς, καὶ τοὺς ἐκκλίνοντας κρίσιν προσηλύτου, καὶ τοὺς μὴ φοβουμένους με, λέγει κύριος παντοκράτωρ. 6 Διότι ἐγὼ κύριος ὁ θεὸς ὑμῶν (η), καὶ οὐκ ἠλλοίωμαι. καὶ ὑμεῖς (θ) οἱ υἱοὶ Ἰακὼβ οὐκ (ι) ἀπέχεσθε ἀπὸ τῶν ἀδικιῶν 7 τῶν πατέρων ὑμῶν, ἐξεκλίνατε νόμιμά μου, καὶ οὐκ ἐφυλάξασθε. (κ) Ἐπιστρέψατε πρὸς μὲ, καὶ ἐπιστραφήσομαι πρὸς ὑμᾶς, λέγει κύριος παντοκράτωρ. καὶ εἴπατε, Ἐν 8 τίνι (λ) ἐπιστρέψομεν; Μήτι πτερνιεῖ ἄνθρωπος θεόν; διότι ὑμεῖς πτερνίζετέ με· καὶ (μ) ἐρεῖτε, Ἐν τίνι (") ἐπτερνίσαμέν σε; ὅτι τὰ ἐπιδέκατα, καὶ αἱ ἀπαρχαὶ 9 μεθ' ὑμῶν εἰσιν. Καὶ ἀποβλέποντες ὑμεῖς 10 ἀποβλέπετε, καὶ ἐμὲ ὑμεῖς πτερνίζετε. Τὸ ἔτος συνετελέσθη, καὶ εἰσηνέγκατε πάντα τὰ ἐκφόρια εἰς τοὺς θησαυροὺς, (ν) καὶ ἔσται ἡ διαρπαγὴ αὐτοῦ ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ. ἐπιστρέψατε δὴ ἐν τούτῳ, λέγει κύριος παντοκράτωρ· ἐὰν μὴ ἀνοίξω ὑμῖν τοὺς (") καταῤῥάκτας τοῦ οὐρανοῦ, καὶ ἐκχεῶ (ξ) τὴν εὐλογίαν μου ὑμῖν, ἕως τοῦ ἱκανωθῆναι. 11 Καὶ διαστελῶ ὑμῖν (ο) εἰς βρῶσιν, καὶ οὐ μὴ (") διαφθείρω ὑμῶν τὸν καρπὸν τῆς γῆς, καὶ οὐ μὴ (π) ἀσθενήσῃ ὑμῶν ἡ ἄμπελος ἡ ἐν τῷ ἀγρῷ, λέξει κύριος παντοκράτωρ.

MS.A. (α) ἐγὼ ἐξαποστέλλω (β) αὐτοῦ (γ) καὶ τίς (δ) Καὶ καθιεῖται (ε) χεεῖ αὐτοὺς ὡς τὸ ἀργύριον καὶ ὥσπερ τὸ χρυσίον· (ζ) ὑμᾶς (η) οὐκ ἠλλοίωμαι. (θ) υἱοὶ (ι) ἀπέχεσθε (κ) Ἐπιστράφητε (λ) ἐπιστρέψωμεν; Εἰ (μ) εἴπατε, ἐπτερνίκαμέν (ν) καὶ ἐν τῷ οἴκῳ αὐτοῦ ἔσται ἡ διαρπαγὴ αὐτοῦ. (") καταῤῥάκτας, (ξ) ὑμῖν τὴν εὐλογίαν μου, (ο) τὴν βρῶσιν, (") διαφθερῶ (π) ἀσθενήσει ἡ ἄμπελος ὑμῶν ἡ ἐν ἀγρῷ,

17 Qui provocâſtis Deum in ſermonibus veſtris, & dixiſtis; In quo provocavimus eum? In eo quòd dicitis; Omnis qui facit malum, (k) bonum eſt in conſpectu Domini: & in his ſibi complacuit: &, Ubi eſt Deus juſtitiæ?

CAP. III.

1 Ecce (a) mitto angelum meum, & (b) reſpiciet viam ante faciem meam: & ſubitò veniet ad templum ſuum Dominus, quem vos quæritis, & angelus teſtamenti, quem vos vultis. Ecce venit, dicit Dominus omnipotens: 2 Et quis ſuſtinebit diem introitus ejus? aut quis ferre poterit, ut aſpiciat eum? Quia ipſe ingreditur, quaſi ignis conflatorii, & quaſi (c) herba lavantium. 3 Sedebit conflans, & emundans ſicut argentum, & ſicut aurum: & emundabit filios Levi, & fundet eos, ſicut aurum, & argentum. Et erunt Domino offerentes (d) hoſtiam in juſtitia. 4 Et placebit Domino ſacrificium Juda, & Hieruſalem, ſicut dies ſeculi, & ſicut anni priſtini. 5 Et accedam ad vos in judicio: & ero teſtis velox ſuper maleficos, & ſuper (e) adulteras, & ſuper eos qui jurant nomine meo in mẽdacio, & ſuper eos qui fraudãt mercedẽ mercenarii, & qui opprimunt per potentiam viduam, & percutiunt pupillos, & pervertunt judicium advenæ, et qui non timent me, dicit Dominus omnipotens. 6 Quoniam ego Dominus Deus veſter, & non mutor. Et vos filii Jacob non ceſſiſtis ab (f) injuſtitiis Patrum 7 veſtrorum, declinâſtis legitima mea, et non cuſtodîſtis. Revertimini ad me: et revertar ad vos, dicit Dominus omnipotens. Et dixiſtis; In quo revertemur? 8 (g) Nunquid ſupplantabit homo Deum; quia vos ſupplantatis me? Et (h) dicetis; In quo ſupplantavimus te? Quia decimæ et primitiæ vobiſcum ſunt: 9 Et reſpicientes reſpicitis: et me vos 10 ſupplantatis. Annus implevit ſe, et intuliſtis omnes fructus in theſauros: et erit rapina (i) ejus in domo ejus. (k) Revertimini ergò in hoc, dicit Dominus omnipotens; niſi aperuero vobis cataractas cœli, et effudero benedictionem meam vobis, uſque dum ſufficiat: 11 Et dividam vobis in (l) cibum: et non diſperdam fructum terræ veſtræ: et non infirmabitur vinea veſtra in agro, dicit Dominus omnipotens.

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

17 אלהיתון קדם יי בפתגמיכון ואם תימרון במה אלהינא קדמוהי כד אתון אמרין כל דעביד ביש תקין קדם יי ובהון רעוא קדמוהי או איכא אלהא דעביד דינא :

ג

1 הא אנא שלח מלאכא ויפני אורחא קדמי ובתכיף יעול להיכליה רבונא די אתון בען ביה ומלאך קימא די אתון צבן ביה הא אתי אמר יי צבאות : 2 ומן מסובר ית יום מיתוהי ומן יקום באתגליותיה ארי רוגזיה כאשתא ממסי וכבוריתא דמחורין בה : 3 ויתגלי לצרפא ולדכאה כגבר די מצרף ומדכי כספא וידכי ית בני לוי ויזקיק יתהון כדהבא וככספא ויהון קדם יי מקרבין קורבן בזכו : 4 ויתגלי קדם יי קורבן אנש יהודה ויתבי ירושלם כיומי עלמא וכשנין דמלקדמין : 5 ואתגלי עליכון למעבד דינא ויהי מימרי בכון לסהיד מוחי בחרשיא ובניפיא ובדמשתבעין לשקרא ובאנסי אגרא דאגירא ארמלא ויתם ומסטן דין גיורא ולא דחילו מן קדמי אמר יי צבאות : 6 ארי אנא יי לא אשניתי קימי דמן עלמא ואתון בני ישראל אתון מדמן דמן דמאית בעלמא הדין דיניה פסיק : 7 למיומי אבהתכון סטיתון מן קימי ולא נטרתון תובו לפולחני ואתפני במימרי לאיטבא לכון אמר יי צבאות ואם תימרון במא נתוב : 8 הירגז גבר קדם דינא ארי אתון מרגזין קדמי ואם תימרון במא ארגזנא קדמך במעשריא 9 ובתרומתא : בלוטא אתון מתלטין וקדמי אתון מרגזין עמא כולהון : 10 אמר נביא איתו ית כל מעסריא לבית אוצרא ויהי פרנוס לדמשמשין בבית מקדשי ונסו כען קדמי בהדא אמר יי צבאות אם לא אפתח לכון ית כוי שמיא ואחית לכון טובא עד דתימרון 11 מסת : ואזוף לכון במחבלא ולא יחבל לכון ית אבא דארעא ולא תתכיל לכון גופנא בחקלא אמר יי צבאות :

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Faceſſiſtis negotium coram Domino ſermonibus veſtris. Et ſi dixeritis, In quo faceſſimus negotium coram eo? in eo quod dicitis, Omnis qui operatur malum, rectus eſt coram Domino, & in ipſis eſt voluntas coram eo: aut ubi eſt ergo Deus qui facit judicium?

CAP. III.

Ecce ego mitto angelum & complanabit viam coram me, & ſubitò veniet ad templum ſuum Dñs quem vos quæritis: & angelus teſtamenti quem vos deſideratis, ecce venit, dicit Dñs exercituum. Ecquis ſuſtinebit diem adventus ejus, ecquis conſiſtet cùm revelatꝰ fuerit? quia furor ejus ſicut ignis *liquefaciens*, & ſicut ſapo quo [*panni*] dealbantur. Et revelabitur ut conflet & mundet, ſicut vir qui conflat et mundat argentum, & mundabit filios Levi, & expurgabit eos, quaſi aurum et quaſi argentum. Et coram Dño offerent oblationem in juſtitia. Et *comparebit* coram Dño oblatio virorum Juda, & habitatorum Jeruſalem, ſicut in diebus ſeculi, & ſicut in annis antiquis. Et revelabor ſuper vos ut faciam judicium: & erit Verbum meum contra vos in teſtem velocem, contra maleficos, & contra adulteros, & contra eos qui jurant falſò, & contra eos qui auferunt violenter mercedem mercenarii: & [*opprimunt*] viduam & pupillum, & pervertunt judicium peregrini, & non timent à facie mea, dicit Dñs exercituum. Ego enim Dominus non mutavi pactum meum quod à ſeculo eſt: vos verò domus Iſrael putatis quòd quicunque moritur in hoc ſeculo, judicium ejus ceſſet. A diebus patrum veſtrorum declinâſtis à mandatis meis, & non cuſtodiſtis ea: convertimini ad cultum meum, et reſpiciam in verbo meo ut bene faciam vobis, dicit Dñs exercituum: quòd ſi dixeritis, In quo revertemur? Nunquid ad iracundiam provocat vir judicem? quia vos me provocâſtis ad iracundiam. Et ſi dixeritis, In quo provocavimus te? In decimis et in primitiis. Maledictione vos maledicti eſtis, et vos ad iram me provocatis, populus univerſus. Dixit propheta, Inferte omnes decimas in domum theſauri, ut ſit alimentum iis qui miniſtrant in æde ſanctuarii mei, et experiamini nunc coram me in hoc, ait Dñs exercituum, niſi aperiam vobis feneſtras cœlorum, & demittam vobis bonum, adeò ut dicatis, Satis eſt. Et increpabo pro vobis corruptorem, neque corrumpet vobis fructum terræ, nec ſterileſcet vobis vitis in agro, dicit Dominus exercituum.

Versio SYRIACA cum Interpretatione *LATINA*.

17 * ܐܠܐܝܬܘܢ ܠܡܪܝܐ ܒܡܠܝܟܘܢ. ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܡܢܐ ܐܠܐܝܢܝܗܝ. ܟܕ ܐܡܪܝܢ
ܐܢܬܘܢ ܕܟܠ ܕܥܒܕ ܒܝܫܬܐ ܫܦܝܪ ܩܕܡ ܡܪܝܐ. ܘܒܗܘܢ ܗܘ ܨܒܐ. ܘܐܢ ܠܐ ܐܝܟܘ ܐܠܗܐ
ܕܕܝܢܐ. * ܦܨܠܐ * ܓ * * ܗܐ ܐܢܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܡܠܐܟܝ. ܘܢܦܢܐ 1
ܐܘܪܚܐ ܩܕܡܝ. ܘܡܢ ܫܠܝܐ ܢܐܬܐ ܠܗܝܟܠܗ ܡܪܝܐ ܕܐܢܬܘܢ ܒܥܝܢ ܠܗ. ܘܡܠܐܟܐ ܕܩܝܡܐ
ܕܨܒܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܗ. ܗܐ ܐܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܘܡܢܘ ܡܣܝܒܪ ܠܝܘܡܐ ܕܡܐܬܝܬܗ. 2
ܘܡܢܘ ܢܩܘܡ ܒܓܠܝܢܗ. ܡܛܠ ܕܐܝܟ ܢܘܪܐ ܕܨܪܦܐ ܗܘ. ܘܐܝܟ ܟܒܪܝܬܐ
ܕܡܚܘܪܐ. * ܢܬܒ ܠܡܨܪܦ ܘܠܡܕܟܝܘ ܐܝܟ ܣܐܡܐ. ܘܢܕܟܐ ܠܒܢܝ ܠܘܝ. ܘܢܓܒܐ 3
ܐܢܘܢ ܐܝܟ ܕܗܒܐ ܘܐܝܟ ܣܐܡܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܡܩܪܒܝܢ ܩܘܪܒܢܐ ܠܡܪܝܐ ܒܙܕܝܩܘܬܐ. * ܘܬܒܣܡ 4
ܠܡܪܝܐ ܩܘܪܒܢܗ ܕܝܗܘܕܐ ܘܕܐܘܪܫܠܡ. ܐܝܟ ܝܘܡܬܐ ܕܥܠܡ. ܘܐܝܟ ܫܢܝܐ ܕܡܢ ܩܕܡ.
* ܘܐܬܩܪܒ ܠܘܬܟܘܢ ܒܕܝܢܐ. ܘܐܗܘܐ ܣܗܕܐ ܡܣܪܗܒܐ ܥܠ ܚܪܫܐ ܘܥܠ ܓܝܪܐ. ܘܥܠ ܐܝܠܝܢ 5
ܕܝܡܝܢ ܒܫܘܩܪܐ. ܘܥܠ ܐܝܠܝܢ ܕܥܠܡܝܢ ܐܓܪܐ ܕܐܓܝܪܐ: ܘܕܡܥܠܒܝܢ ܠܐܪܡܠܬܐ ܘܠܝܬܡܐ.
ܘܨܠܝܢ ܠܐ ܕܝܢܐ ܕܬܘܬܒܐ ܠܘܬܝ. ܘܠܐ ܕܚܠܝܢ ܡܢܝ. ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. * ܡܛܠ ܕܐܢܐ 6
ܐܢܐ ܡܪܝܐ. ܘܠܐ ܐܫܬܚܠܦܬ. ܘܐܢܬܘܢ ܒܢܘܗܝ ܕܝܥܩܘܒ ܠܐ ܫܠܝܬܘܢ ܡܢ ܥܘܠܟܘܢ. * ܡܢ 7
ܝܘܡܝ ܐܒܗܝܟܘܢ ܣܛܝܬܘܢ ܡܢ ܦܘܩܕܢܝ. ܘܠܐ ܢܛܪܬܘܢ ܐܢܘܢ. ܐܬܦܢܘ ܠܘܬܝ
ܘܐܬܦܢܐ ܠܘܬܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܡܢܐ ܢܬܦܢܐ. * ܕܠܡܐ 8
ܢܠܘܡ ܒܪܢܫܐ ܠܐܠܗܐ. ܐܝܟ ܕܐܢܬܘܢ ܠܐܡܝܢ ܐܢܬܘܢ ܠܝ. ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܒܡܢܐ
ܠܡܢܟ: ܒܡܥܣܪܐ ܘܒܪܫܝܬܐ. * ܒܠܘܛܬܐ ܡܬܠܛܝܬܘܢ ܐܢܬܘܢ. ܘܠܝ ܠܐܡܝܢ 9
ܐܢܬܘܢ. * ܟܠܗ ܥܡܐ ܐܝܬܘ ܡܥܣܪܐ ܠܐܘܨܪܐ. ܘܢܗܘܘܢ ܡܬܪܣܝܢܐ ܒܒܝܬܝ. 10
ܘܢܣܘܢܝ ܒܗܕܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ. ܘܐܦܬܚ ܠܟܘܢ ܟܘܝ ܫܡܝܐ. ܘܐܪܩܘܢ ܠܟܘܢ
ܒܘܪܟܬܐ. ܥܕܡܐ ܕܬܐܡܪܘܢ ܣܓܝ. * ܘܐܟܐܐ ܒܡܘܫܐ. ܕܠܐ ܢܚܒܠ ܦܐܪܐ ܕܐܪܥܐ. ܘܠܐ ܬܐܒܕ 11
ܠܟܘܢ ܐܦ ܠܐ ܓܦܬܐ ܕܒܚܩܠܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܐܚܝܕ ܟܠ.

* Fatigâſtis Dominum ſermonibus veſtris: quòd 17 ſi dicatis, Quâ in re fatigavimus eum? In eo quòd dicitis; Quicunque malum operatur, rectus eſt in oculis Domini, & talibus oblectatur: alioquin ubi eſt Deus judicans judicia?

CAP. III.

Ecce ego miſſurus ſum angelum meum qui 1 complanabit viam ante me: & repentè veniet ad templum Domini is quem expectatis; & angelus fœderis quo delectamini, ecce venturus eſt, ait Dominus potentiſſimus. Quis 2 ſuſtineat diem quo veniet? aut quis conſiſtere queat cùm apparebit? erit enim velut ignis conflans, & veluti ſulphur dealbans: Ut re- 3 vertatur ad conflandum & purgandum velut argentum. Purgabit autem filios Levi, ſeligétque eos tanquam aurum & tanquam argentum: & erunt offerentes oblationem Domino in juſtitia: Et jucunda erit Domino 4 oblatio Judæ & Jeroſolymæ, uti priſtinis diebus & ut annis antiquis. Et accedam con- 5 tra vos in judicio, eróque teſtis feſtinus contra magos, adulteros, & eos qui falsò jurant, contra eos qui denegant mercedē mercenarii, advenæ, pupilli, & viduæ; & propenſi ſunt adversùs eum qui convertitur ad me, non timentes me, dicit Domin⁹ potentiſſimus. Nam 6 ego Dominus ſum, nec unquam mutatus; & vos filii Jacobi, non deſiſtitis ab iniquitate veſtra. Indè à diebus majorum veſtrorum ab- 7 errâſtis à præceptis meis, nec obtemperâſtis eis. Revertimini ad me, & revertar ad vos, ait Dominus potentiſſimus. Quòd ſi dixeritis, 8 Quâ in re revertēmur? An fraudaret homo Deum, quemadmodum vos fraudatis me? Quòd ſi dixeritis, Quâ in re fraudavimus te? in decimis & primitiis. Maledictionibus 9 maledicimini quum me fraudatis. Univer- 10 ſe populi, afferte decimas in horrea mea, ut ſint cibo in domo mea. Probate me in hoc, ait Dñs potentiſſimus, & aperiā vobis cœli feneſtras, effundámque vobis benedictiones, donec dicatis, Sufficit: Et increpabo tineā 11 ne corrumpat fructus terræ, néve vaſtetur vobis ne ulla quidem vitis in terra, dicit Dominus potentiſſimus.

Versio ARABICA cum Interpretatione *LATINA*.

17 * يا عابطي الله باقوالكم * ويقولون بماذا اعطناه * عند ما تقولون كل صانع شر حسن امام
الرب * وبهم هو يسر * واين هو اله العدل * * الفصل الثالث *
1 ها انا ارسل ملاكي * وينظر الطريق امام وجهي * وبغتة ياتي الي هيكل الرب الذي انتم
تطلبونه * وملك العدل الذي انتم تريدونه * ها يقبل يقول الرب الضابط الكل * فمن 2
يصطبر ليوم مدخله * او من يثبت في ظهوره * من اجل انه هو يدخل مثل نار كور
ومثل حشيشة الغسالين * ويجلس يسبك وينقي مثل الفضة والذهب * وينقي بني لاوي * 3
ويفرغهم مثل الذهب والفضة * ويصيرون للرب يقدمون ذبيحة بالعدل * ويرضي الرب ذبيحة 4
يهودا وايروسليم * كمثل ايام الدهر * وكمثل السنين التي من قبل * واقرب اليكم بالحكم * 5
واكون شاهدا عجولا على الساحرات * وعلي الفاسقات * وعلي الذين يحلفون باسمي بالكذب * وعلي
الذين يظلمون اجر الاجير * وعلي الذين يعتوون على الارملة ويحيفون على الايتام * والذين
يميلون حكم الغريب * والذين لا يخافوني يقول الرب الضابط الكل * من اجل اني انا الرب 6
الهكم ولست ابتدل * وانتم يا بني يعقوب لستم تبعدون من مظالم ابائكم * املتم شريعتي 7
ولم تحفظوها * ارجعوا الي فارجع اليكم * يقول الرب الضابط الكل * وتقولون بماذا نرجع *
* ايعرقب انسان الله * من اجل انكم انتم تعرقبوني * وتقولون بماذا عرقبناك * لان العشور 8
والاوايل معكم هي * وتتغافلون انتم تتغافلون * ولي تعرقبون * السنة كملت * وادخلتم 9 10
جميع الغلات الي الاهراء * وفي بيته يكون اختطافه * تعهدوا الان بهذا يقول الرب الضابط
الكل * ان لم افتح لكم طاقات السماء * واصب لكم بركتي الي ان تكتفوا * وارسل لكم طعاما * 11
ولا افسد ثمر ارضكم * ولا تضعف كرومكم التي في الحقل يقول الرب الضابط الكل *

O qui Deum provocatis ad iram ſermo- 17 *nibus veſtris, & dicitis, Quâ in re provocavimus iram ejus? Quum dicitis, Omnis malum agens bonus eſt coram Domino, & talibus ipſe delectatur; & Ubi eſt Deus juſtitiæ?*

CAP. III.

En ego mittam angelum meum, & 1 *conſiderabit viam ante faciem meam: & confeſtim veniet ad templum Domini is quem vos petitis, & angelus juſtitiæ quem vos vultis. Ecce veniet, dicit Dominus omnipotens: At quis* 2 *patietur diem ingreſsûs ejus? aut quis conſiſtet in apparitione ipſius? nam is ingreſſurus eſt ut ignis fornacis, & ut herba fullonum: Et ſedebit conflans* 3 *& purgans quaſi argentum & aurum: & purgabit filios Levi, & fundet eos ut aurum & argentum: & erunt Domino offerentes ſacrificium juſtè. Et* 4 *gratum habebit Dominus ſacrificium Judæ & Jeroſolymæ, ut diebus ſeculi, & ut annis præcedentibus. Et acce-* 5 *dam ad vos in judicio, eroque teſtis velox adverſùs maleficas, & adverſùs adulteras, adverſùs eos qui falsò jurant per nomen meum, adverſùs eos qui mercede fraudant mercenarium, adverſùs eos qui vim inferunt viduæ, & opprimunt pupillos, et eos qui pervertunt jus peregrini, et eos qui me non timent, dicit Dominus omnipotens. Nam ego ſum Dominus Deus veſter,* 6 *et non mutor: vos autem O filii Jacobi, non receditis ab iniquitatibus patrum veſtrorum: Obliquâſtis legem meam, et* 7 *non ſervâſtis eam. Revertimini ad me, et revertar ad vos, dicit Dominus omnipotens. Dicitis autem. In quo revertemur? An ſupplantabit homo De-* 8 *um? vos enim ſupplantatis me, et dicitis, In quo ſupplantavimus te? quia decimæ et primitiæ vobiſcum ſunt. Et* 9 *vos omninò negligitis, meque ſupplantatis. Annus elapſus eſt, et intuliſtis* 10 *omnes proventus in horrea: et in domo ejus erit rapina ejus. Memores itaque ſitis hujus rei, dicit Dominus omnipotens; niſi aperuero vobis feneſtras cœli, et infudero vobis benedictionem meam donec ſatis habeatis. Mittam vobis cibum,* 11 *et non corrumpam fructum terræ veſtræ, neque infirmabitur vitis veſtra quæ eſt in agro, dicit Dominus omnipotens.*

מלאכי : ג

,*beneplaciti* terra vos eritis quia : gentes omnes vos beatificabunt Et
12 וְאִשְּׁרוּ אֶתְכֶם כָּל־הַגּוֹיִם כִּי־תִהְיוּ אַתֶּם אֶרֶץ חֵפֶץ
,veſtra verba me contra Invaluerunt .exercituum Dominus dixit
13 אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת׃ חָזְקוּ עָלַי דִּבְרֵיכֶם
? te contra ſumus locuti Quid : dixiſtis Et .Dominus dixit
אָמַר יְהוָה וַאֲמַרְתֶּם מַה־נִּדְבַּרְנוּ עָלֶיךָ׃
quòd ,emolumenti quid & ,*Deo ſervire* Vanum ,Dixiſtis
14 אֲמַרְתֶּם שָׁוְא עֲבֹד אֱלֹהִים וּמַה־בֶּצַע כִּי
faciebus à obſcurè ambulaverimus quòd & ,ej° cuſtodiam cuſtodierimus
שָׁמַרְנוּ מִשְׁמַרְתּוֹ וְכִי הָלַכְנוּ קְדֹרַנִּית מִפְּנֵי
etiam ,ſuperbos *beatificantes* nos nunc Et .exercituum Domini
15 יְהוָה צְבָאוֹת׃ וְעַתָּה אֲנַחְנוּ מְאַשְּׁרִים זֵדִים גַּם־
.evaſerunt & ,Deum probaverunt etiam,impietatẽ facientes ſunt ædificati
נִבְנוּ עֹשֵׂי רִשְׁעָה גַּם בָּחֲנוּ אֱלֹהִים וַיִּמָּלֵטוּ׃
: ſuum *ſocium ad vir* Dominum timentes ſunt locuti Tunc
16 אָז נִדְבְּרוּ יִרְאֵי יְהוָה אִישׁ אֶל־רֵעֵהוּ
,*ejus facies ad memoriæ* liber eſt ſcriptus &,audivit &,Dominus attendit &
וַיַּקְשֵׁב יְהוָה וַיִּשְׁמָע וַיִּכָּתֵב סֵפֶר זִכָּרוֹן לְפָנָיו
,mihi erunt Et .ejus nomen cogitantibus & , Dominum timentibus
17 לְיִרְאֵי יְהוָה וּלְחֹשְׁבֵי שְׁמוֹ׃ וְהָיוּ לִי
;peculium *faciens* ego qua die in , exercituum Dominus dixit
אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת לַיּוֹם אֲשֶׁר אֲנִי עֹשֶׂה סְגֻלָּה
.ſibi ſervienti ſuo filio *ſuper* vir *parceret* ſicut ,eis *ſuper* parcam &
וְחָמַלְתִּי עֲלֵיהֶם כַּאֲשֶׁר יַחְמֹל אִישׁ עַל־בְּנוֹ הָעֹבֵד אֹתוֹ׃
ſervientẽ inter ;impiũ *ad* juſtum inter *videbitis* & , convertemini Et
18 וְשַׁבְתֶּם וּרְאִיתֶם בֵּין צַדִּיק לְרָשָׁע בֵּין עֹבֵד
.ei ſervit non qui eum *ad* , Deo
אֱלֹהִים לַאֲשֶׁר לֹא עֲבָדוֹ׃

CAP. IV. ד

omnes erunt & ;clibanus tanquam ardens *veniens* dies ecce Nam
1 כִּי־הִנֵּה הַיּוֹם בָּא בֹּעֵר כַּתַּנּוּר וְהָיוּ כָל־
eos inflammabit & ,ſtipula ,impietatem *faciens omnis* & , ſuperbi
זֵדִים וְכָל־עֹשֵׂה רִשְׁעָה קַשׁ וְלִהַט אֹתָם
derelinquet non quia : exercituum Dominus dixit ,*veniens* dies
הַיּוֹם הַבָּא אָמַר יְהוָה צְבָאוֹת אֲשֶׁר לֹא־יַעֲזֹב
meũ nomen timentibus vobis orietur Et .ramum & ,radicem eis
2 לָהֶם שֹׁרֶשׁ וְעָנָף׃ וְזָרְחָה לָכֶם יִרְאֵי שְׁמִי
creſcetis & , egrediemini & : ejus alis in ſanitas & , juſtitiæ Sol
שֶׁמֶשׁ צְדָקָה וּמַרְפֵּא בִּכְנָפֶיהָ וִיצָאתֶם וּפִשְׁתֶּם
pulvis fuerint cùm impios *conculcabitis* Et .*ſaginarii* vituli ſicut
3 כְּעֶגְלֵי מַרְבֵּק׃ וְעַסּוֹתֶם רְשָׁעִים כִּי־יִהְיוּ אֵפֶר
Dominus dixit ,*faciens ego* quam die in ,veſtrorũ pedũ plantis ſub
תַּחַת כַּפּוֹת רַגְלֵיכֶם בַּיּוֹם אֲשֶׁר אֲנִי עֹשֶׂה אָמַר יְהוָה
mandavi quam ,mei ſervi Moſeh legis Mementote .exercituum
4 צְבָאוֹת׃ זִכְרוּ תּוֹרַת מֹשֶׁה עַבְדִּי אֲשֶׁר צִוִּיתִי
.judicia & ,ſtatuta , Iſrael omnem *ſuper* Choreb in ei
אוֹתוֹ בְחֹרֵב עַל־כָּל־יִשְׂרָאֵל חֻקִּים וּמִשְׁפָּטִים׃
diem venire ante , prophetam Elijah vobis *mittens* ego Ecce
5 הִנֵּה אָנֹכִי שֹׁלֵחַ לָכֶם אֵת אֵלִיָּה הַנָּבִיא לִפְנֵי בּוֹא יוֹם
ſuper patrum cor convertet Et .*terribilem* & ,*magnum* DOMINI
6 יְהוָה הַגָּדוֹל וְהַנּוֹרָא׃ וְהֵשִׁיב לֵב־אָבוֹת עַל־
percutiam & ,veniam fortè ne ,eorũ patres *ſuper* filiorum cor & ,filios
בָּנִים וְלֵב בָּנִים עַל־אֲבוֹתָם פֶּן־אָבוֹא וְהִכֵּיתִי
.*anathemate* terram
אֶת־הָאָרֶץ חֵרֶם׃

Verſio VULG. LAT.

12 Et beatos vos dicent omnes Gentes : eritis enim vos terra deſiderabilis, dicit Dominus exercituũ.
13 Invaluerunt ſuper me verba veſtra, dicit Dominus.
14 Et dixiſtis ; Quid locuti ſumus contra te ? Dixiſtis ; Vanus eſt, qui ſervit Deo : & quod emolumentum quia cuſtodivimus præcepta ejus, & quia ambulavimus triſtes coram Domino exercituum ?
15 Ergò nunc beatos dicimus arrogantes : ſiquidem ædificati ſunt facientes impietatem ; & tentaverunt Deum, & ſalvi facti ſunt.
16 Tunc locuti ſunt timentes Dominum, unuſquiſque cum proximo ſuo : Et attendit Dominus, & audivit : & ſcriptus eſt liber monumenti coram eo timentibus Dominum, & cogitantibus nomen ejus.
17 Erunt mihi, ait Dominus exercituum, in die quâ ego facio, in peculium : & parcam eis, ſicut parcit vir filio ſuo ſervienti ſibi.
18 Et convertemini,& videbitis quid ſit inter juſtum & impium ; & inter ſervientem Deo, & non ſervientem ei.

CAP. IV.

1 ECce enim dies veniet ſuccenſa quaſi caminus: & erunt omnes ſuperbi, & omnes facientes impietatem, ſtipula : & inflammabit eos dies veniens, dicit Dominus exercituum , quæ non derelinquet eis radicem , & germen.
2 Et orietur vobis timentibus nomen meum Sol juſtitiæ, & ſanitas in pennis ejus : & egrediemini , & ſalietis ſicut vituli de armento.
3 Et calcabitis impios, cùm fuerint cinis ſub planta pedum veſtrorum, in die quâ ego facio, dicit Dominus exercituũ.
4 Mementote legis Moyſi ſervi mei, quam mandavi ei in Horeb ad omnem Iſrael, præcepta & judicia.
5 Ecce ego mittam vobis Eliam prophetam, antequàm veniat dies Domini magnus, &
6 horribilis. Et convertet cor patrum ad filios, & cor filiorum ad patres eorum : ne fortè veniam, & percutiam terram anathemate.

Verſio GRÆCA LXX. Interp.

Cum Tranlatione LATINA.

12 Καὶ μακαριοῦσιν ὑμᾶς πάντα τὰ ἔθνη, διότι ἔσεσθε ὑμεῖς γῆ θελητὴ, λέγει κύριος παντοκράτωρ.
13 Ἐβαρύνατε ἐπ' ἐμὲ τοὺς λόγους ὑμῶν, λέγει κύριος· Καὶ εἴπατε, Ἐν τίνι κατελαλήσαμεν κατὰ σοῦ;
14 Εἴπατε, Μάταιος ὁ δουλεύων θεῷ, καὶ τί πλέον, ὅτι ἐφυλάξαμεν τὰ φυλάγματα αὐτοῦ, (ρ) καὶ διότι ἐπορεύθημεν ἱκέται πρὸ προσώπου κυρίου παντοκράτορος;
15 Καὶ νῦν ἡμεῖς μακαρίζομεν ἀλλοτρίους, καὶ ἀνοικοδομοῦνται (σ) πάντες ποιοῦντες ἄνομα, καὶ ἀντέστησαν τῷ θεῷ, καὶ
16 ἐσώθησαν. Ταῦτα (τ) κατελάλησαν οἱ φοβούμενοι τὸν κύριον, ἕκαστος πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ. καὶ προσέσχε κύριος, καὶ εἰσήκουσε, καὶ ἔγραψε βιβλίον μνημοσύνου ἐνώπιον αὐτοῦ τοῖς φοβουμένοις τὸν κύριον, καὶ εὐλαβουμένοις τὸ ὄνομα αὐτοῦ.
17 Καὶ ἔσονταί μοι, λέγει κύριος παντοκράτωρ, εἰς ἡμέραν, ἣν ἐγὼ ποιῶ, εἰς περιποίησιν, καὶ αἱρετιῶ αὐτοὺς, ὃν τρόπον αἱρετίζει ἄνθρωπος τὸν υἱὸν
18 αὐτοῦ, τὸν δουλεύοντα αὐτῷ. Καὶ ἐπιστραφήσεσθε, καὶ ὄψεσθε ἀναμέσον δικαίου, καὶ ἀναμέσον (υ) ἀνόμου, καὶ ἀναμέσον τοῦ δουλεύοντος (φ) θεῷ, καὶ τοῦ μὴ δουλεύοντος.

MS. A. (ρ) διότι (σ) ποιοῦντες ἄνομα, ἀντέστησαν θεῷ, (τ) ἐλάλησαν (υ) ἀδίκου, (φ) τῷ θεῷ,

12 *Et beatos vos dicent omnes gentes: quia eritis vos terra (m) accepta, dicit Dominus omnipotens.*
13 *Ingravâſtis ſuper me verba veſtra, dicit Dominus: Et dixiſtis;*
14 *In quo locuti ſumus contra te? Dixiſtis; Vanus eſt qui ſervit Deo: & quid amplius, quia cuſtodivimus cuſtodias ejus, & quia ambulavimus ſupplices ante faciem Domini omnipotentis?*
15 *Et nunc nos beatos dicimus alienos: & ædificantur omnes qui faciunt iniqua: & reſtiterunt Deo, & ſalvi facti ſunt.*
16 *Hæc obloquuti ſunt, qui timent Dominũ, unuſquiſque ad proximum ſuum. Et attendit Dominus, & audivit, & ſcripſit librum monumenti in conſpectu ſuo his qui timent Dominum, & qui reverentur nomẽ ej°.*
17 *Et erunt mihi, dicit Dominus omnipotens, in die quâ ego facio, in (n) acquiſitionẽ: et (o) eligã eos, ſicut eligit homo filiũ ſuum, qui ſervit ei.*
18 *Et convertemini, & videbitis inter juſtum, & iniquum, & inter ſervientem Deo, & non (p) ſervientem.*

ΚΕΦ. δʹ.

1 ΔΙότι ἰδοὺ (α) ἡμέρα ἔρχεται καιομένη ὡς κλίβανος, καὶ φλέξει αὐτοὺς, καὶ ἔσονται πάντες οἱ ἀλλογενεῖς, καὶ πάντες οἱ ποιοῦντες ἄνομα, καλάμη, καὶ ἀνάψει αὐτοὺς ἡ ἡμέρα ἡ ἐρχομένη, λέγει κύριος παντοκράτωρ, καὶ οὐ μὴ ὑπολειφθῇ ἐξ αὐτῶν ῥίζα οὐδὲ κλῆμα.
2 Καὶ ἀνατελεῖ ὑμῖν τοῖς φοβουμένοις τὸ ὄνομά μου ἥλιος δικαιοσύνης, καὶ ἴασις ἐν ταῖς πτέρυξιν (β) αὐτοῦ· καὶ ἐξελεύσεσθε, καὶ σκιρτήσετε ὡς μοσχάρια ἐκ δεσμῶν ἀνει-
3 μένα. Καὶ (˜) καταπατήσετε ἀνόμους, διότι ἔσονται σποδὸς ὑποκάτω τῶν ποδῶν ὑμῶν ἐν τῇ ἡμέρᾳ, ᾗ ἐγὼ ποιῶ, λέγει κύριος παντοκράτωρ.
5 Καὶ ἰδοὺ ἐγὼ (γ) ἀποστελῶ ὑμῖν Ἡλίαν τὸν Θεσβίτην, πρὶν ἐλθεῖν (δ)
6 τὴν ἡμέραν κυρίου τὴν μεγάλην καὶ ἐπιφανῆ, Ὃς ἀποκαταστήσει καρδίαν πατρὸς πρὸς υἱὸν, καὶ καρδίαν ἀνθρώπου πρὸς τὸν πλησίον αὐτοῦ,
4 μὴ ἔλθω καὶ πατάξω τὴν γῆν ἄρδην. Μνήσθητε νόμου (ε) Μωσῆ τοῦ δούλου μου, καθότι ἐνετειλάμην αὐτῷ ἐν Χωρὴβ πρὸς πάντα τὸν Ἰσραὴλ, προστάγματα καὶ δικαιώματα.

ΜΑΛΑΧΙΑΣ ΙΒʹ.

MS. A. (α) ἡμέρα κυρίου (β) αὐτῶν· (˜) καταπατήσατε (γ) ἀποστέλλω (δ) ἡμέραν (ε) Μωυσῆ

ΠΡΟΦΗΤΗΣ ΑΓΓΕΛΟΣ ΜΑΛΑΧΙΑΣ ΙΒʹ.

CAP. IV.

1 *QUia ecce dies venit ardens, ſicut clibanus: & comburet eos: & erunt omnes (a) alienigenæ, & univerſi, qui faciunt iniqua, ſtipula: & ſuccendet eos dies veniens, dicit Dominus omnipotens: & non relinquetur ex eis radix, neque ramus.*
2 *Et orietur vobis, qui timetis nomen meum, Sol juſtitiæ: & ſanitas in pennis ejus: & egrediemini, & ſalietis, ſicut vituli de vinculis relaxati:*
3 *Et conculcabitis iniquos; (b) quia erunt cinis ſubter pedes veſtros in die, quâ ego facio, dicit Dominus (c) omnipotens.*
5 *Et ecce ego mittã vobis Eliã Teſbiten, antequàm veniat dies Domini magna, & illuſtris,*
6 *Qui convertet cor patris ad filium, & cor hominis ad proximum ſuum: ne fortè veniam, & percutiam terram penitùs.*
4 *Mementote legis Moyſi ſervi mei, ſicut mandavi ei in Choreb ad omnem Iſrael, præcepta, & juſtificationes.*

תרגום יונתן Targum JONATHAN.

12 וישבחון יתכון כל עממיא ארי תהון אתון יתבין בארע בית שכנתי ועבדין בה רעותי
13 אמר יי צבאות: תקיפו קדמי פתגמיכון אמר יי ואם תימרון מה אסגינא למללא קדמך:
14 אמרתון לא להנאה מן דפלח קדם יי ומה ממון נתהני לנא ארי נטרנא מטרת
15 מימריה וארי הלכנא במכיכות רוח מן קדם יי צבאות: וכען אנחנא משבחין רשיעין
16 אף אתקיימו עבדי חטאה אף נסיאו קדם יי ואישתיזבו: בכן ממללין דחליא דיי גבר
עם חבריה ושמיע קדם יי וגלי קדמוהי ואתכתיב ספר דכרניא קדמוהי לדחליא דיי
17 ולדמחשבין ליקרא שמיה: ויהון קדמי אמר יי צבאות ליומא די אנא עתיד למעבד
18 סגלתא ואחוס עליהון כמא דאחיס גברא על בריה דפלח יתיה: ותתובון ותחזון
בין צדיקיא לרשיעיא בין דפלחו קדם יי לדלא פלחו קדמוהי:

ד

1 ארי הא יומא אתא בעיר כתנורא ויהון כל רשיעיא וכל עבדי חטאה חלשין בקשא
2 וילחיך יתהון יומא דאתי אמר יי צבאות דלא ישבוק להון בר ובר בר: ותדנח לכון
3 דחלי שמי שמשא בזכו ואסותא בכנפהא ותפקון ותטלון כעגלי רבקא: ותדושון
רשיעין ארי יהון קטמא תחות פרסת רגליכון ביומא די אנא עביד אמר יי צבאות:
4 אדכרו אוריתא דמשה עבדי די פקדית יתיה בחורב על כל ישראל לאלפא יתהון
5 קימין ודינין: הא אנא שלח לכון ית אליה נביא קדם מיתי יומא דעתיד למיתי מן
6 קדם יי רבא ודחילא: ויתיב לב אבהן על בנין ולב בניא על אבההון דלמא אתגלי
ואשצי כל ארעא בחובהא ואמחנה גמירא:

PARAPH. CHALD. Verſio Latina.

Et laudabunt vos omnes gentes, quoniam vos habitabitis in terra domus majeſtatis meæ, & fiet in ea voluntas mea, dicit Dominus exercituum. Invaluerunt coram me verba veſtra, ait Dominus : quòd ſi dixeritis, In quo multiplicavimus ſermonem coram te? Dixiſtis, Nihil lucratur qui colit coram Domino : & quid divitiarum nobis lucro ceſſit quòd ſervaverimus cuſtodiam verbi ejus, & quòd ambulaverimus in depreſſione ſpiritus coram Domino exercituum ? Nunc autem nos laudamus impios, etiam ſtabiliti ſunt facientes peccatum, etiam tentaverunt coram Dño, & liberati ſunt. Ideò loquuntur timentes Dominum unuſquiſque cum ſocio ſuo, & auditum eſt coram Domino, ac manifeſtatum coram eo, & ſcriptus eſt liber memoriarum coram eo timentibus Dominum, & cogitantibus gloriam nominis ejus. Et erunt coram me, ait Dominus exercituum quo die facturus ſum, in peculium ; & parcam eis ſicut parcit vir filio ſuo ſervienti ſibi. Et convertemini, & diſpicietis inter juſtos & impios, inter eos qui colunt coram Domino, & eos qui non colunt coram eo.

CAP. IV.

SIquidem ecce dies venit ſuccenſa ſicut furnus, & erunt omnes impii omneſque patratores ſceleris debiles ſicut ſtipula, atque abſumet eos dies quæ ventura eſt, ait Dominus exercituum : qui non derelinquet eis filium nec nepotem. Cæterùm orietur vobis, qui reveremini nomen meum, Sol *in puritate*; & ſanitas in alis ejus : & exibitis, ac *geſtietis* quaſi vituli ſaginati. Et conculcabitis impios, erunt enim cinis ſubter plantam pedum veſtrorum in die quo ego acturus ſum, ait Dominus exercituum. Revocate in memoriam legem Moſis ſervi mei, quam præcepi ei in Oreb ad univerſum Iſrael, ut doceret eos pacta & judicia. Ecce ego mittam vobis Eliam prophetam, ante adventum diei qui venturus eſt à conſpectu Domini, magnus & terribilis. Et reſtituet cor patrum in filios, & cor filiorum in patres ſuos, ne reveler, & inveniam univerſam terram in ſcelere ſuo, ac feriam eam exterminatione.

Verſio *SYRIACA* cum Interpretatione *LATINA.*

12 * ܘܢܛܘܒܘܢܟܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܡܡܐ ܀ ܡܛܠ ܕܬܗܘܘܢ ܐܪܥܐ ܕܨܒܝܢܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ.
13 * ܝܩܪ ܥܠܝ ܡܠܝܟܘܢ ܐܡܪ ܡܪܝܐ. ܘܐܢ ܐܡܪܝܢ ܐܢܬܘܢ ܡܢܐ ܐܡܪܢ ܥܠܝܟ: * ܐܡܪܬܘܢ
14 ܕܣܪܝܩܐܝܬ ܦܠܚܝܢܢ ܠܡܪܝܐ. ܘܡܢܐ ܝܘܬܪܢ ܕܢܛܪܢ ܡܛܪܬܗ ܀ ܘܕܗܠܟܢ
15 ܡܬܟܦܦܝܢ ܩܕܡ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܘܡܢ ܗܫܐ ܛܘܒܐ ܡܛܘܒܝܢ ܚܢܢ ܠܥܘܠܐ. ܘܡܬܒܢܝܢ
16 ܥܒܕܝ ܥܘܠܐ. ܘܡܢܣܝܢ ܠܐܠܗܐ ܘܡܬܦܨܝܢ. * ܗܟܢܐ ܡܠܠܘ ܕܚܠܘܗܝ ܕܡܪܝܐ ܚܕ
ܥܡ ܚܒܪܗ. ܘܨܘܬ ܡܪܝܐ ܘܫܡܥ. ܘܟܬܒ ܒܟܬܒܐ ܕܕܘܟܪܢܐ ܩܕܡܘܗܝ. ܠܕܚܠܘܗܝ ܘܠܐܝܠܝܢ
17 ܕܡܫܒܚܝܢ ܫܡܗ. * ܘܢܗܘܘܢ ܠܝ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ ܀ ܠܝܘܡܐ ܕܥܒܕ ܐܢܐ ܟܢܘܫܬܐ.
18 ܘܐܚܘܣ ܥܠܝܗܘܢ ܀ ܐܝܟ ܕܚܝܣ ܓܒܪܐ ܥܠ ܒܪܗ ܕܦܠܚ ܠܗ. * ܘܬܬܦܢܘܢ
ܘܬܚܙܘܢ ܒܝܬ ܙܕܝܩܐ ܠܥܘܠܐ. ܒܝܬ ܕܦܠܚ ܠܐܠܗܐ. ܠܕܠܐ ܦܠܚܘܗܝ.

* ܩܦܠܐܘܢ * ܕ *

1 * ܡܛܠ ܕܗܐ ܝܘܡܐ ܐܬܐ ܘܝܩܕ ܐܝܟ ܬܢܘܪܐ ܪܘܓܙܝ. ܘܢܗܘܘܢ ܟܠܗܘܢ ܥܘܠܐ ܘܥܒܕܝܗܘܢ
ܥܒܕܝ ܚܛܝܬܐ ܩܫܐ. ܘܢܘܩܕ ܐܢܘܢ ܝܘܡܐ ܕܐܬܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. ܘܠܐ ܢܫܒܘܩ
2 ܠܗܘܢ ܥܩܪܐ ܘܣܘܟܐ. * ܘܢܕܢܚ ܠܟܘܢ ܠܕܚܠܝ ܫܡܝ ܫܡܫܐ ܕܙܕܝܩܘܬܐ. ܘܐܣܝܘܬܐ ܬܚܝܬ
3 ܠܫܢܗ ܀ ܘܬܦܩܘܢ ܘܬܕܝܨܘܢ ܐܝܟ ܥܓܠܐ ܕܒܩܪܐ. * ܘܬܕܘܫܘܢ ܠܥܘܠܐ. ܡܛܠ ܕܢܗܘܘܢ
4 ܩܛܡܐ ܬܚܝܬ ܦܣܬ ܪܓܠܝܟܘܢ. ܒܝܘܡܐ ܕܥܒܕ ܐܢܐ ܐܡܪ ܡܪܝܐ ܚܝܠܬܢܐ. * ܐܬܕܟܪܘ
ܢܡܘܣܗ ܕܡܘܫܐ ܥܒܕܝ ܕܦܩܕܬܗ ܒܚܘܪܝܒ ܀ ܥܠ ܟܠܗ ܐܝܣܪܐܝܠ. ܦܘܩܕܢܐ ܘܕܝܢܐ.
5 * ܗܐ ܡܫܕܪ ܐܢܐ ܠܟܘܢ ܠܐܠܝܐ ܢܒܝܐ. ܩܕܡ ܕܢܐܬܐ ܝܘܡܗ ܕܡܪܝܐ ܪܒܐ ܘܕܚܝܠܐ. * ܕܢܗܦܘܟ ܠܒܐ
6 ܕܐܒܗܐ ܥܠ ܒܢܝܐ ܀ ܘܠܒܐ ܕܒܢܝܐ ܥܠ ܐܒܗܝܗܘܢ. ܕܠܐ ܐܬܐ ܘܐܡܚܝܘܗܝ ܠܐܪܥܐ ܠܚܪܡ.

* ܫܠܡ ܟܬܒܐ ܕܬܪܥܣܪ ܢܒܝܝܢ *

Ita celebrabunt vos omnes populi, quum fue- 12
ritis terra mihi grata, dicit Dominus poten-
tiſſimus. Gravia ſunt mihi verba veſtra, di- 13
cit Dominus. Quòd ſi dicatis, Quid contra te
diximus? Dixiſtis, In vanum coluimus Do- 14
minum; & quid profuit nobis ſtatuta ejus cu-
ſtodiſſe, & humiliter ambulâſſe coram Domi-
no potentiſſimo? Ex nunc beatos prædica- 15
mus iniquos; nam facientes peccatum ædifi-
cantur, Deum tentant, & liberantur. Hæc 16
locuti ſunt timentes Dominum alter cum al-
tero: auſcultavítque Dominus, & audivit,
ſcripſitque in libro memorialis coram ſe; in
gratiam timentium eum, & eorum qui lau-
dant nomen ejus: Ut ſint mei, dicit Domi- 17
nus potentiſſimus, quo die fecero congrega-
tionem; & clementiâ utar erga eos, quemad-
modum clementiâ utitur quiſpiam erga filiũ
ſuum obſequentem ſibi. Tunc converſi vi- 18
debitis *quantum interſit* inter juſtos & ini-
quos, inter eos qui Deum coluerunt, & eos
qui non coluerunt eum.

CAP. IV.

Nam ecce dies veniunt, quibus ardebit ſic- 1
ut fornax ira mea: & erunt omnes iniqui &
omnes facientes peccatum, ſtipula; & com-
buret eos dies ille venturus, ait Dominus po-
tentiſſimus, neque relinquet eis radicem aut
frondẽ. Exorietur autẽ vobis timentibus no- 2
men meũ ſol juſtitiæ, ſanitatẽ *ferens* ſup lin-
guam ſuam: & egrediemini atque ſalietis ut
vituli armentorum: Et conculcabitis ini- 3
quos; quia cinis erunt ſub veſtigio pedum ve-
ſtrorum in die quo acturus ſum, ait Dominus 4
potentiſſimus. Memores eſtote legis Moſis
ſervi mei, quam præcepi ei in Horib, impoſi-
tam toti Iſraeli, *continentem* præcepta & ju- 5
dicia. Ecce miſſurus ſum vobis Eliam prophe-
tam, antequã veniat dies Dñi magnus & for-
midandus? Ut reducat cor patrum filios, & 6
cor filiorum in patres ſuos, antequàm veniam
& percutiam terram ad excidium.

Libri duodecim prophetarum finis.

Verſio *ARABICA* cum Interpretatione *LATINA.*

12 * ويطوبكم جميع الامم * من اجل انكم تصيرون انتم ارضا مراده يقول الرب الضابط الكل *
13 * ثقلتم علي اقوالكم يقول الرب * وتقولون بماذا عبنا عليك * تقولون المتعبد لله باطل *
14 ولماذا * كثير انا حفظنا محافظاته * ولماذا * انا سرنا سايلين قدام وجه الرب الضابط الكل *
15 * والان نحن نطوب الغرباء * ويبنون صانعوا الاثم * قاوموا الله وخلصوا * هذا ثم بها خايفوا
16 الرب كل واحد مع صاحبه * فنصت الرب وسمع * وكتب سفر الذكر امامه * لخايفي الرب
17 ومتورعي اسمه * ويكونون لي يقول الرب الضابط الكل لليوم الذي انا اصنعه * للاقتناء *
18 وارضيهم كما يرضي الانسان ابنه المتعبد له * وترجعون وتعاينون بين العدل وبين الظلم *
وبين من يتعبد لله والذي لا يتعبد *

* الفصل الرابع *

1 * من اجل انه ها يوم الرب يقبل موقد مثل التنور ويحرقهم * ويصير جميع الغرباء الجنس
وجميع صانعي الاثم هشيما * ويشعلهم اليوم الاتي يقول الرب الضابط الكل * ولن يبقى منهم
2 اصل ولا فرع * ويشرق لكم يا خايفي اسمي شمس العدل * والشفا في اجنحته * وتخرجون
3 وتطربون مثل عجيلات من رباط محلولين * وتدوسون الاثمة * من اجل انهم يكونون رمادا
5 تحت اسافل ارجلكم * في ذلك اليوم الذي انا اصنعه يقول الرب الضابط الكل * وها انا
6 ارسل لكم ايليا التسبيتي قبل ان ياتي يوم الرب العظيم الظاهر * هذا يرد قلب الاب للابن
4 وقلب الانسان لصاحبه * لست اتي فاضرب الارض رديا * اذكروا شريعة موسى عبدي كما
اوصيته في حوريب لجميع اسرائيل * الاوامر والمعادل *

* تمت نبوة ملاخيا النبي *

Et beabunt vos omnes gentes, quia vos e- 12
ritis terra optabilis, dicit Dominus omni-
potens. Aggravâſtis contra me ſermones 13
veſtros, dicit Dominus. Sed dicitis, Quâ
in re oblocuti ſumus contra te? Dicitis, 14
Religioſus erga Deum vanus eſt: & ad
quid? multum eſt cuſtodire nos cuſtodi-
as ejus: & ad quid? ſanè ſupplices
ambulamus coram facie Domini omnipo-
tentis. Jam nos beatos dicimus alienos: 15
ædificantur enim qui faciunt iniquita-
tem: reſiſtunt Deo, & ſalvantur. Hæc 16
oblocuti ſunt timentes Dominum, quiſ-
que cum ſocio ſuo: & auſcultavit Do-
minus, audivitque, & ſcripſit librum
memorialis coram ſe, pro timentibus Do-
minum, & reverentibus nomen ejus. Et 17
erunt mihi, dicit Dominus omnipotens,
die quem ego facturus ſum, in poſſeſſio-
nem: & blandiar eis, ut quis blanditur
filio ſuo ſibi obſequenti. Et revertemini, 18
ac videbitis quid interſit *inter juſtitiam*
& inter iniquitatem, inter obſequentem
Deo & eum qui non obſequitur.

CAP. IV.

Nam ecce dies Domini veniet ardens 1
ut clibanus, & comburet eos: & erunt
omnes alieni generis & omnes operantes
iniquitatem, ſtipula: & ſuccendet eos
dies veniens, dicit Dominus omnipotens;
& non relinquetur ex eis radix, neque
ramus. Orietur autem vobis O timentes 2
nomen meum, ſol juſtitiæ, & ſanitas in
alis ejus: & egrediemini, et geſtietis
veluti juvenculæ, vinculo ſoluti: Et 3
conculcabitis iniquos; nam cinis futuri
ſunt ſub imis pedibus veſtris eo die quem
ego facturus ſum, dicit Dominus omni-
potens. Ecce ego mittam vobis Eliam 5
Theſbiten, antequàm veniat dies Domini
magna & illuſtris. Is reducet cor patris 6
ad filium, et cor hominis ad ſocium
ſuum: non veniam ut terram atrociter
percutiam. Mementote legis Moſis ſervi 4
mei quemadmodum mandavi ei in Horeb
ad omnem Iſraelem, præceptorum ſcilicet
& juſtitiarum.

Prophetiæ Malachiæ prophetæ
Finis.